

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

संस्कृत हिन्दी कोश

लेखक
वामन शिवराम आप्टे

प्रकाशक
मोतीलाल बनारसीदास

(परम्परानायक)



परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

संस्कृत-हिन्दी कोश

(दस हजार नये शब्दों तथा लेखक द्वारा संकलित छन्द एवं साहित्यिक तथा भारत के प्राचीन इतिहास में प्राप्त भौगोलिक नामों के परिशिष्टों सहित)

लेखक
वामन शिवराम आप्टे

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली :: पटना :: वाराणसी

● मोतीलाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७
चौक, वाराणसी-१ (उ० प्र०)
अशोक राजपथ, पटना-४ (बिहार)

प्रकाशक के आधीन सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य पन्द्रह रुपए

प्रथम संस्करण १९६६
द्वितीय संस्करण १९६९

श्री सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
द्वारा प्रकाशित तथा श्री शान्तीलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा मुद्रित

स्वर्गीय श्री वामन शिवराम आप्टे द्वारा सकलित संस्कृत-इंगलिश तथा इंग्लिश-संस्कृत कोशों से सभी लोग परिचित हैं। हमने उपर्युक्त दोनों कोशों के बहुत सस्ते संस्करण जिनके मूल्य इस समय बीस रुपए प्रति सेट, जिसका पहले ३२ रु० मूल्य था—प्रकाशित किए। लोगों ने इनको कितना अपनाया इसका ज्वलंत उदाहरण इस बात से मिलता है कि तीन वर्षों के अन्दर ही इनके बीस-बीस हजार के संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गये और इनकी मांग दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है।

संस्कृत से हिन्दी में अभी तक कोई अच्छा कोश उपलब्ध नहीं था। जो दो-एक उपलब्ध भी हैं उनमें बहुत थोड़े ही शब्दों को स्थान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों की आवश्यकताएं पूरी नहीं होतीं। इनके मूल्य भी इतने अधिक हैं कि साधारण संस्कृत के विद्यार्थी को खरीदना कठिन-सा हो जाता है। हम लोगों को इसका अभाव बहुत दिनों से खटक रहा था। अन्त में आप्टे के 'स्टूडेन्ट्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी' का ही अनुवाद प्रस्तुत करने की योजना हमलोगों ने निश्चित की। इस संस्कृत-हिन्दी कोश में लगभग कुल सत्तर हजार शब्द हैं जिनमें लगभग दस हजार शब्द नये सिरे से लिए गये हैं। इन्हें स्वर्गीय आप्टे ने अपने संस्करण में नहीं लिया था। इस तरह यह कोश एक बहुत बड़ी कमी को पूरा करता है।

दिल्ली
१-३-६६

प्रकाशक

दो शब्द

प्रस्तुत 'संस्कृत-हिन्दी कोश' श्री वी० एस० आप्टे की विख्यात 'दी स्टुडेंट्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी' का राष्ट्रभाषा हिन्दी में सर्वप्रथम अनुवाद है।

आप्टे की 'डिक्शनरी' का छात्रवृन्द में सर्वत्र सर्वाधिक मान है। इसी से इसकी उपादेयता निर्विवाद और सर्वसम्मत है।

प्रस्तुत हिन्दी-संस्करण में तीन विशेषताएँ हैं। एक तो प्रायः सभी मूल शब्दों की व्युत्पत्ति इसमें दे दी गई है--जिससे यह छात्रों के लिए और भी अधिक उपयोगी बन गया है। दूसरे विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी के लिए उपसर्ग और प्रत्यय का संक्षिप्त दिग्दर्शन करा दिया गया है। तीसरी बात यह है कि इस कोश के अन्त में परिशिष्ट के रूप में शब्दों का नया संकलन जोड़ दिया गया है। इसीलिए यह कोश अब न केवल छात्रवृन्द के लिए ही उपादेय है अपितु संस्कृत भाषा के सभी प्रेमी पाठकों के लिए अपरिहार्य हो गया है।

अनुवादक

भूमिका

[कोशकार का हृदय आवेदन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करना है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के परवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण है। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से महाकाव्य, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी को जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभाँति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, सदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी की विशेषतः आवश्यकता को उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूँढने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों को, विशेषतः व्याकरण, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों को—अन्यथा इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—प्रकृति प्रत्यय, उपनिषद् सूत्र, मीमांसा स्थापित्याय, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों को भी यथा स्थान रखा है उदाहरण के लिए देखो—मनु मेरु, मत्स्य मयूर दंड आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणार्थ देखो—इंद्र, कार्तिकेय प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अनिर्वि पुत्र, आत्मा, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मंडल, मानस वेद इत्यादि। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

छन्दों के विषय में है—इसमें गण, मात्रा, तथा परिभाषा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यत वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरी का ही आश्रय लिया है। परन्तु उन छंदों को भी जो माघ, भारवि, दण्डी, अथवा भट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में कालिदास, भवभूति और बाण आदि संस्कृत के महाकवियों की कृति, तथा जन्म विवरण आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इंडिया' तथा बल्लभदेव की सुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीसरा परिशिष्ट भौगोलिक नामों का संग्रह है, इसमें मैंने कनिंगहम के 'एन्शेंट ज्याग्राफी' से तथा इंग्लिश संस्कृत डिक्शनरी में उपलब्ध की बोकह के विषय से बड़ी सहायता प्राप्त की है तदर्थ मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के शब्दक्रम का ज्ञान आगे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निर्देश" से भली-भाँति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान लीजना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में सर्वत्र 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वदा सही न हो, तो भी छपाई की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का कृतज्ञ हूँ जिनसे इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफेसर तारानाथ तर्कवाचस्पति की 'वाचस्पत्य' है। इस कार्य में दी गई सामग्री का अधिकांश उसी से लिया गया है यद्यपि कई स्थानों पर संशोधन भी करना पड़ा है। वर्तमान संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरियों में जो शब्द, अर्थ और उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश से लिये गये हैं। दूसरा कोश 'दी संस्कृत-इंग्लिश-डिक्शनरी" प्रो० मोनियर विलियम्स का है जिनका मैं बहुत ऋणी हूँ। इस कोष का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अत मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'ग्रीक लेक्सिकन' के कर्ता डा० रॉथ और बॉथलिंक को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्धरण और शब्द हैं—परन्तु अधिकांश वैदिक साहित्य से लिये गये हैं। इसके विपरीत मैंने अधिकांश उद्धरण अपने उस संग्रह से लिये हैं जो भवभूति, जगन्नाथ पंडित, राजशेखर, बाण, काव्य प्रकाश, शिशुपालवध, किरातार्जुनीय नैषधचरित, शंकर-भाष्य और वेणीसंहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त उन ग्रन्थकर्ताओं और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्टूडेंट्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी' केवल उन विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है—बल्कि संस्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे। कोई भी कृति चाहे वह कितनी ही सावधानी से क्यों न तैयार की गई हो —सर्वथा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इसे छापने की शीघ्रता की गई हो। अत मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, यह निवेदन करता हूँ कि जहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, तो मैं दूसरे संस्करण में उनको समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

पूना, १५ फरवरी, १८९०।

वी० एस० आप्टे

कोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१ शब्दों को देवनागरी वर्णों में अकारादि क्रम से रखा गया है।

२. पुंल्लिंग शब्दों का कर्तृकारक एकवचन रूप लिखा गया है, इसी प्रकार नपुंसक लिंग शब्दों का भी प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त रूप लिखा है। जो शब्द विभिन्न लिङ्गों में प्रयुक्त होता है, उसके आगे स्त्री०, या पु० एवं नपुं० लिखकर दर्शाया गया है।

विशेषण शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।

३ जो शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषण या संज्ञा से व्युत्पन्न होते हैं उन्हें उस संज्ञा या विशेषण के अन्तर्गत कोष्टक के अन्दर रखा गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत परेण या परे अथवा 'समीप' के अन्तर्गत समीपम् या समीपे।

४ (क) शब्दों के केवल भिन्न-भिन्न अर्थों को पृथक् अंग्रेजी क्रमांक देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थाभास को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक पर्याय रखे गये हैं।

(ख) उद्धृत प्रमाणों के उल्लेख में देवनागरी के अंकों का प्रयोग किया गया है।

५ जहाँ तक हो सका है शब्दों का प्रयोगाधिक्य तथा महत्त्व की दृष्टि से क्रमबद्ध किया गया है।

६ प्रत्येक मूल शब्द की संक्षिप्त व्युत्पत्ति [ ] कोष्टक में दे दी गई है जिससे कि शब्द का यथार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उपसर्ग की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ संलग्न है।

७ (क) समस्त शब्दों को मूल शब्द के अन्तर्गत ही पहिले रेखा (–मूल शब्द) के पश्चात् रखा गया है, जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—ज्ञेय, 'अग्निहोत्र' प्रकट करना है।

(ख) समस्त शब्दों में—मूल शब्दों के पश्चात उत्तरखण्ड—को मिलाने में संधि के नियमानुसार जो परिवर्तन होते हैं उन्हें पाठक को स्वयं जानने का अभ्यास होना चाहिये—यथा 'पूर्व' के साथ 'अपर' को मिलाने में 'पूर्वापर', 'अयस्' के आगे 'गति' को मिलाने में 'अधोगति' बनता है। कई स्थानों पर उन समस्त शब्दों को जो सरलता से न समझे जा सके पूरा का पूरा कोष्टक में लिख दिया गया है।

(ग) जहाँ एक समस्त शब्द ही दूसरे समस्त शब्द के प्रथम खण्ड के रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस पूर्वखण्ड को रेखा के साथ ' लगा कर दर्शाया गया है जैसे—द्विज (समस्त शब्द) में 'इन्द्र' या 'राज' जोड़ना है तो लिखेंगे—'इन्द्र,—'राज, और इसे पढ़ेंगे 'द्विजेन्द्र' या 'द्विजराज'।

(घ) सभी कृत्, तद्धित समासयुक्त (उदा० कृत्तोपाय, मनस्विन्, हृषिकेशवृक् आदि) शब्द पृथक् रूप से यथास्थान रखे गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं जोड़ा गया।

८ कृदन्त और तद्धित प्रत्ययों से युक्त शब्दों को मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप से यथास्थान रखा गया है। फलतः 'कृष्णत्व' 'जयकर' 'अन्नमय' 'प्रातःस्तन' और 'हिमवत्' आदि शब्द 'कृष्ण' और अन्न आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं मिलेंगे।

९ स्त्रीलिंग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप से लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुंल्लिंग रूप के साथ ही स्त्रीलिंग रूप दे दिया गया है।

१० (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ संक्षेपक चिह्न भी लगा दिये गये हैं।

(ख) प्रत्येक धातु का गण, वर्ग, प्रकार ( ) कोष्ठ के अन्दर धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।

(ग) धातु के कृत् प्रकार का, प्रथम पुरुष का एक वचनान्त रूप ही लिखा गया है।

(च) धातुओं के साथ उनके उपसर्गयुक्त रूप अकारादिक्रम से धातु के अन्तर्गत ही दिखलाये गये हैं।

(छ) पद, वाक्य, विशेष अर्थ अथवा उपसर्ग के कारण धातुओं के परिवर्तित रूप ( ) कोष्ठकों में दिखलाये गये हैं।

११. धातुओं के तव्य, अनीय, और य प्रत्ययसयुक्त कृदन्त रूप प्राय नहीं दिये गये। शतृन्त और शानजन्त विशेषण तथा क्त, क्तवतु और य प्रत्यय के लगाने से बने भावबोधक संज्ञा शब्दों को भी पृथक् रूप से नहीं दिया गया। ऐसे शब्दों के ज्ञान के लिए विद्यार्थी को व्याकरण का आश्रय लेना अपेक्षित है।
जहां ऐसे शब्दों की रूपरचना या अर्थों में कोई विशेषता है उन्हें यथास्थान रख दिया गया है।

१२ शब्दों से सबद्ध पौराणिक अल्प कथाओं को शब्दार्थ के यथार्थ ज्ञान के लिए —( ) कोष्ठकों में सक्षिप्त रूप से रक्खा गया है।

१३. *जो शब्द या सबद्ध पौराणिक उपाख्यान मूल कोश में स्थान न पा सके उन्हें परिशिष्ट के रूप में कोश के अन्त* में जोड़ दिया गया है।

१४. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, तथा अन्य भौगोलिक शब्द एवं साहित्यकारों की सामान्य जानकारी के लिए कोश के अन्त में परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं।

विशेष वक्तव्य

छात्रों की आवश्यकता का विशेष ध्यान रखकर इस कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने के लिए प्रायः सभी मूल शब्दों के साथ उनकी संक्षिप्त व्युत्पत्ति दे दी गई है।

शब्दों की रचना में उपसर्ग और प्रत्ययों का बड़ा महत्व है इनकी पूरी जानकारी तो व्याकरण के पढ़ने से ही होगी। फिर भी इसका यहाँ दिग्दर्शन अत्यन्त लाभदायक रहेगा।

उपसर्ग—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार संहारविहारपरिहारवत्॥"

उपसर्ग धातुओं के पूर्व लग कर उनके अर्थों में विभिन्नता ला देते हैं —

उपसर्ग	उदाहरण	उप	उपगमनम्
		दुस्	दुस्तरम्
अति	अत्यधिकम्	दुर्	दुर्लभम्
अधि	अधिष्ठानम्	नि	निदेश
अनु	अनुगमनम्	निस्	निस्सारणम्
अप	अपयश	निर्	निर्धन
अभि	अभिधानम्	परा	पराजय
अभि	अभिमानम्	परि	परिव्राजक
अव	अवतरणम्	प्र	प्रबन्ध
आ	आगमनम्	प्रति	प्रतिक्रिया
उत्	उत्थान उद्गमनम्	वि	विज्ञानम्
		सु	सुकर

प्रत्यय—धातुओं के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। शब्दों के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय तद्धित कहलाते हैं।

कृत्प्रत्यय	उदाहरण	कृत	प्रत्ययक
		क (अ)	अ, क,
अ, अक	लिपिका	कि (इ)	चक्रि,
	क्रिया	कु (उ)	विदुर,
अच् अप्	पच, जय	क्त (त क)	हृत, क्षिप्त,
	कर	क्तवत् (क्तवतु)	उक्तवत्,
अन्	कुम्भकार	क्तिन् (क्ति)	कृति
अनीय्	करणीय, दर्शनीय,	क्त्वा (त्वा)	पठित्वा
आनक्	स्मृत्यानक	कृ (तृ)	गृध्नु
इक्	पथि,	क्यप्	पुत्रीयति
इन्	स्तनयित्नु	क्यप् (य)	कृत्य,
इष्णुच्	शायिष्णु	कृ (ऋ)	कीर्ति
उ	जिष्णवित्नु	ल्युट् (अन)	नायक
उक्	कार,	ण्वुल् (अक)	स्मारक, हारक

विनुन् (इन्)	योगिन्, स्थायिन्
भुरच् (उर)	भञ्जुर
ड (अ)	दूरग,
डु (उ)	प्रभु
ण (अ)	ग्राह
णिनि (इन्)	स्थायिन्
तमुल (अम्)	स्मार स्मार
त्यत् (य)	कार्य
त्वुल् (अक)	पाठक
तृच्	कर्तृ,
तुमुन् (तुम्)	कर्तुम्
तव्य	प्रश्न
यत्	ज्ञेय, देय
र	क्षिप्र
ल्यप् (य)	आदाय
ल्युट् (अन)	पठन, करणम
वनिप्	दयावन्
वरच्	ईश्वर
वुञ् वुन् (अक)	निन्दक
श (अ)	क्रिया
शानच् (आन या मान)	शयान कर्तमान
ष्ट्रन् (त्र)	शस्त्रम्, अस्त्रम
तद्धित तथा उणादि प्रत्यय	**उदाहरण**
अञ् (अ)	औत्स,
अण् (अ)	शैव
अमुन् (अम्)	मरम, तपम्
अस्तात् (अस्तात्)	अधस्तात्
आलच्	दयाल
आलुच्	दयालु
इञ्	दाशरथि,
इतच्	कुसुमित
इमनिच् (इमन्)	गरिमन्,
इलच्	फेनिल
इष्ठन्	गरिष्ठ
इस्	ज्योतिस्
ईकक् (ईक)	शाकनीक,
ईयसुन् (ईयस्)	लघीयस्
ईरच्	शरीर
उरच्	शत्रुर
उलच्	हृषुल
ऊङ्	कर्कन्धू

ढ	देय्
एधस्तुच् (एधस्)	अन्येद्यु
क	राष्ट्रकम्, सुवर्णकम्
कप् (क)	कुरुनम्
कञ् (ईन)	कुलाकुलीन
कीष् (ई)	मृगी,
कृत्वसुच्	अक्षरकृत्व,
छ (ईय)	त्वदीय, भवदीय,
ञ (अ)	पौर्वशाल
ञ्य (य)	पाञ्चजन्य
ट्युल् (तन)	मायतन
ठक् ठञ् ठन् (इक)	धार्मिक, नैशिक वैद्यिक
डतमच् (अतम)	चरतम
डतर (अतर)	कतर
डट् (त्य)	कौन्तेय या, य
ण्य (य)	दैत्य
तरप् तमप् (तर, तम)	प्रियतर प्रियतम
तामल् (तम)	मात्र
त्यक ल्यप्	पाश्चात्य अवश्य
थाल	कृत्व, सवन
दा	सर्वदा
दृघच्	जानूदघ्न
फक् फञ् (आयन)	आश्वलायन दाक्ष्यायन
म	अग्रिम
मतुप् (मत्)	श्रीमत
मतुप् (वत)	कल्पवत
मयट्	अन्नमय
मात्रच्	ऊष्मात्र
य	सख्य
यञ्	गार्ग्य
र	मधुर
लच्	मामल
वलच्	रजस्वला
विनि	यशस्विन्
वुञ् (अ)	पथिक
व्यञ् (य)	सौन्दर्य, नैपुण्य
सप् (स)	त्रिवारिवार
ह	इह

संकेत सूचि

अ०	अव्यय
अक०	अकर्मक
अलु० स०	अलुक् समास
अव्य० स०	अव्ययीभाव समास
आ०	आत्मने पद
उदा०	उदाहरण
उप० स०	उपपद समास
उभ०	उभयपदी
कर्म० स०	कर्मधारय समास
त० स०	तत्पुरुष समास
तृ० त०	तृतीया तत्पुरुष समास
दे०	देखो
द्व० स०	द्वन्द्व समास
द्वि० क०	द्विकर्मक
द्वि० स०	द्विगु समास
द्वि० त०	द्वितीया तत्पुरुष समास
ष० त०	षष्ठी तत्पुरुष समास
न० स०	नञ् समास
तुल०	तुलनात्मक
ना० धा०	नामधातु
नाप्र०	नामप्रदान कारक
नि०	निमित्त पद
नि०	निन्दा करो
प्र०	प्रेरणार्थक
ज्यो०	ज्योतिष
उ० अ०	उत्तमाक्रम्या
ए० व०	एक वचन
सा० वि०	सार्वनामिक (निर्देशक) विशेषण
वि०	विशेषण
वी० भ०	वीप्सागर्भित
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
वर्त०	वर्तमानकाल
भूत०	भूत काल
प्रा० स०	प्रादि समास
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि समास
न० त०	नञ् तत्पुरुष समास
पु०	पुंल्लिंग
नपुं०	नपुंसक लिंग
स्त्री०	स्त्री लिंग
सक०	सकर्मक
पृषो०	पृषोदरादिरूपात्
पर०	परस्मैपद
प्या०	प्यामिनि
कर्म० वा०	कर्म वाच्य
कर्तृ० वा०	कर्तृ वाच्य
ब० व०	बहु वचन
म० अ०	मध्यमाक्रम्या
अ० पु०	अन्यपुरुष
म० पु०	मध्यम पुरुष
उ० पु०	उत्तम पुरुष
ब० स०	बहुव्रीहि समास
भवि०	भविष्यत्काल
इच्छा०	इच्छार्थक, सन्नन्त
भू० क० कृ०	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त (क्त)
स० कृ०	समाप्य कृदन्त (त्वान्त)
वर्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त (शतृन्त या शानचन्त)
वि०	विपरीतार्थक
करण०	करणकारक
कर्तृ०	कर्तृकारक
कर्म०	कर्मकारक
आल०	आलंकारिक
वार्ति०	वार्तिक
व०	वैदिक
अन० पा०	नाना पाठान्तर
सको०	सकोपन
यङ्०	यङ्लुगन्त
सब०	सबध
त०	तदेव
शब्दा०	शब्दार्थ
अधि०	अधिकरण कारक
उप०	उपसर्ग
भ्वा०	भ्वादिगण
अदा०	अदादिगण
जु०	जुहोत्यादिगण
स्वा०	स्वादिगण
दि०	दिवादिगण
तु०	तुदादिगण
क्र्या०	क्र्यादिगण
चु०	चुरादिगण
रु०	रुधादिगण
तना०	तनादिगण

संकेताक्षर—सूचि

अ० पु०	अग्नि पुराण
अ० श०	अन्यापदेश शतक
अ० सं०	अगस्त्य संहिता
अथर्व०	अथर्व वेद
अनर्घ०	अनर्घराघव
अन्न०	अन्नपूर्णाष्टक
अमर०	अमरकोश
अमरु०	अमरुशतक
अवि०	अविमारक
आनन्द०	आनन्द लहरी
आर्या०	आर्या सप्तशती
आश्व०	आश्वलायनसूत्र
ईश०	ईशोपनिषद्
उ० दू०	उद्धव दूत
उ० स०	उद्धव संदेश
उणादि०	उणादि सूत्र
उत्त०	उत्तर रामचरित
ऋक्०	ऋग्वेद
एकार्थ०	एकाक्षरनाममाला
ऐत० उ०	ऐतरेय उपनिषद्
ऐत० ब्रा०	ऐतरेय ब्राह्मण
कठ०	कठोपनिषद्
कथा०	कथासरित्सागर
कनक०	कनकधारास्तव
कर्पूर०	कर्पूर मञ्जरी
कलि०	कलिविडंबन नीलकण्ठ दीक्षित कृत
कवि०	कविरहस्य
का०	कादम्बरी
कात्या०	कात्यायन
कामं०	कामन्दकी नीति
काव्य०	काव्यप्रकाश
काव्या०	काव्यादर्श
काशि०	काशिकावृत्ति
कि०	किरातार्जुनीय
कौमु०	कौमुदीमंदी
कुमा०	कुमार संभव
कुव०	कुवलयानन्द
कृष्ण०	कृष्णकर्णामृत
केन०	केनोपनिषद्
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र
कांश०	काशकृत्स्नधातु
कौशि०	कौशिकसूत्र
कौषी०	कौषीतकी उपनिषद्
ग० ल०	गंगा लहरी
घोषाल०	Ghosal's System of Revenue
चण्ड०	चण्ड कौशिक
चण०	चण्डरत्नमहोदधि—वर्धमान कृत
चन्द्रा०	चन्द्रालोक
चाण०	चाणक्य शतक
चातकाष्ट०	चातकाष्टक
चोल चम्पू	चोल चम्पू
चौरपञ्चाशिका	चौरपञ्चाशिका
छन्दोम०	छन्दोमञ्जरी
छा०	छान्दोग्योपनिषद्
जानकी०	जानकीहरण
जै०	जैमिनी सूत्र
जै० न्या०	जैमिनीय न्यायमाला विस्तर
ज्यो०	ज्योतिष
तर्क कौ०	तर्क कौमुदी
तारा०	तारानाथ वाचस्पत्यम्
तैत्ति० आ०	तैत्तिरीय आरण्यक
तैत्ति० उ०	तैत्तिरीय उपनिषद्
त्रिका०	त्रिकांड शेष
त्रै० सं०	त्रैलिंगीय संहिता
त्र० वा०	त्रैवर्णिक
दाय०	दायभाग
दु० स०	दुर्गासप्तशती
दूत०	दूतवाक्यम
दे० म०	देवी महात्म्य
नवरत्न०	नवरत्नमाला
ना० भा०	नारायण भाष्य
नागा०	नागानन्द
नाना०	नानार्थ मञ्जरी
नाम०	नारायण भट्ट
नारा०	नारायणीय
निघ०	निघण्टु
नी०	नीतिसार
नीति०	नीति प्रदीप
नील०	नीलकण्ठ
नैष०	नैषध
पञ्च०	पञ्चतन्त्र

पञ्च०	पञ्चवटी
पञ्च०	पञ्चराजम्
पा०	पाणिनि की अष्टाध्यायी
पा० यो०	पातञ्जल योगशास्त्र
पुष्प०	पुष्पदन्त
प्रताप०	प्रतापरुद्रीय
प्रति०	प्रतिमा
प्रबोध०	प्रबोधचन्द्रोदय
प्रस०	प्रसन्नराघव
ब० शि०	बंगाल शिलालेख
बाल०	बालचरित
बाल० रा०	बालरामायण
बु०	बुद्ध साहित्य (बुद्धिस्ट लेख)
बु० च०	बुद्धचरितम्
बृ० उ० (बृहदा०)	बृहदारण्यक उपनिषद्
बृ० क०	बृहत् कथा
बृ० सं०	बृहत्संहिता—वराहमिहिर-कृत
भ० पु०	भविष्योत्तर पुराण
भग०	भगवद्गीता
भट्टि०	भट्टिकाव्य
भर्तृ०	भर्तृहरिशतकत्रयम् १ शृंगार, २ नीति ३ वैराग्य
भा०	भारत मञ्जरी
भा० प्र०	भावप्रकाश
भाग०	भागवत
भामि०	भामिनी विलास
भाषा०	भाषा परिच्छेद
भोज०	भोज चरित
महानारा०	महानारायण उपनिषद्
मत्स्य	मत्स्य पुराण
मनु०	मनुस्मृति
महाभा० (महाभा०)	महाभाष्य
महा०	महाभारत
महावीर०	महावीर चरित
मा०	मालतीमाधव
मान०	मानसार
मार्क०	मार्कण्डेय पुराण
माल०	मालतीमाधव
मालवि०	मालविकाग्निमित्र
मी० सू०	मीमांसा सूत्र
मुद्र०	मुद्रकोपनिषद्
मुख०	मुग्धबोध
मुग्ध०	मेघदूत
मेघ०	

वृक्ष०	मृच्छकटिक
याज्ञ०	याज्ञवल्क्य स्मृति
याद०	यादवाभ्युदय
योग०	योगसूत्र
रत्ना०	रत्नावली
रघु०	रघुवंश
रस०	रसगंगाधर
रसम०	रसमञ्जरी
रा०	रामायण
रति०	रतिमञ्जरी
राज०	राजप्रशस्ति
राजत०	राजतरंगिणी
राम०	रामचरितम्
लक्षि०	लक्ष्मी सहस्रनाम
वन०	वनस्पतिशास्त्र
वराह०	वराहमिहिर की बृहत्संहिता
वाज०	वाजसनेयि संहिता
वा० प०	वाक्पदीय
वास०	वासवदत्ता
वि०	विक्रमोर्वशीयम्
वि० पु०	विष्णु पुराण
विक्रम०	विक्रमाङ्कदेवचरित
विज्ञ०	विज्ञ गुणादर्श चम्पू
वे० दे०	वेदान्त देशिका
वे० सा०	वेदान्त सार
वेणी०	वेणीसंहार
वेदपा०	वेदपादस्तव
वैज०	वैजयन्ती
श०	शकुन्तला नाटक
शंकर०	शंकर दिग्विजय
शब्दार्थ चि०	शब्दार्थ चिन्तामणि
शत ब्रा०	शतपथ ब्राह्मण
शत श्लोकी	शत श्लोकी
शार्ङ्ग०	शार्ङ्गधर
शब्द०	शब्दकल्पद्रुम
शारी० भा०	शारीर भाष्य
शालि०	शालिहोत्र
शि०	शिशुपालवध
शि० पु०	शिवपुराण
शि० म०	शिवमहिम्न स्तोत्र
शिव०	शिव भारत-
शिवान्त०	शिवानन्द लहरी
शिशु०	शिशुपालवध
शुक्र०	शुक्रनीति
शु०	शुल्वसूत्र
शृंगार०	शृंगार तिलक

श्याम०	श्यामलादण्डक
श्रुत	श्रुतबोध
श्वेत० (श्वेता०)	श्वेताश्वतरोपनिषद
सर० क०	सरस्वती कण्ठाभरण
सुधा०	सुधालहरी
स्वप्न०	स्वप्नवासवदत्तम्
सर्व०	सर्वदर्शन संग्रह
सा० द०	साहित्य दर्पण
सा० का०	सांख्य कारिका
सा० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य
सि०	सिद्धान्त कौमुदी
सि० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली
सू० मु०	सूत्र सूत्र
सि० सं०	सिद्धान्तैक संग्रह

सु० (सुश्रु०)	सुश्रुत
सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
सुधान्धु०	सुधान्धु की आत्मकथा
सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाण्डागार
सू० सि०	सूर्य सिद्धान्त
सौ०	सौन्दर्य लहरी
हम०	हनुमन्नाटक
हनु०	हनुमच्छतक
हर०	हरविजय
हरि०	हरिवंशपुराण
हला०	हलायुध
हर्ष०	हर्षचरित
हि०	हितोपदेश
हेम०	हेमचन्द्र

आप्टे

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अ. [अव् + क] 1 विष्णु, पवित्र 'ओम्' की प्रकट करने वाले तीन (अ + उ + म्) ध्वनियों में से पहली ध्वनि —अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वर। मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मक॥ 2 शिव, ब्रह्मा, वायु, या वैश्वानर।

(अव्य०) 1 ग्रीक के इव (α), अंग्रेजी के इन (in) या अन (un) तथा पुरानी के अ (a) या (un) के समान नकारात्मक अर्थ देने वाला उपसर्ग जो कि निषेधात्मक अव्यय शब्द, के स्थान पर संज्ञाओं, विशेषणों एवं अव्ययों के (क्रियाओं के भी) पूर्व लगाया जाता है। यह 'अ' ही 'अनृचिन्' शब्द को छोड़कर शेष स्वरादि शब्दों से पूर्व 'अन्' बन जाता है।

'न' के सामान्यतया छ अर्थ गिनाये गये हैं —(क) सादृश्य समानता या सकलता यथा 'अब्राह्मण' ब्राह्मण के समान (जैसेऊ आदि पहने हुए) परन्तु ब्राह्मण न होकर, क्षत्रिय वैश्य आदि। (ख) अभाव —अनृचिन्हित निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा 'अज्ञातम्' ज्ञान का न होना, इसी प्रकार, अफीक, अनय, अकण्टक, अघट' आदि। (ग) भिन्नता —अन्य या भेद यथा 'अट' कपड़ा नहीं, कपड़े से भिन्न या अन्य कोई वस्तु। (घ) अल्पता लघुता न्यूनता, अप्रशस्तवाची अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पतली कमर वाली (कृशोदरी या तनुमध्यमा)। (ङ) अप्राशस्त्य=बुराई, अयोग्यता तथा तत्सदृश का अर्थ प्रकट करना एवं 'अकाल' यानी अनुपयुक्त समय 'अकार्यम्' न करने योग्य, अनुचित, अयोग्य या बुरा काम। (छ) विरोध विरोधी प्रतिक्रिया, वैपरीत्य तथा 'अनीति' नीति-विरुद्धता, अनैतिकता, 'अधिक' जो उचित न हो, कमतर। उपर्युक्त छ अर्थों जिनका निर्देश ऊपर किया गया है सम्बन्धात्मकमाश्रयत्वं तदन्यत्वं तदन्यता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च तत्सदृशं षड् प्रकीर्तिता॥ दे० न भी।

कृदन्त शब्दों के साथ इसका अर्थ सामान्यतः 'नहीं' होता है यथा 'अदृश्यमान' न दिखाई देता हुए। इसी प्रकार 'अनश्वर' एक बार नहीं।

कभी-कभी 'न' उत्तरपद के अर्थ को प्रभावित नहीं करता यथा 'अमूल्य', 'अमूल्य', इत्यादि।

2 विस्मयादि द्योतक अव्यय —यथा (क) 'अ अकरुणम्' यहाँ दया (आह, अरे) (ख) 'अ रे खलु त्वं ब्राह्मणः' यहाँ भर्त्सना, निंदा (धिक्, छि) अर्थ को प्रकट करना है। दे० 'अकरणि' 'अजीवाम' भी। (ग) संबोधन में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ अनन्त' (घ) इसका प्रयोग निषेधात्मक अव्यय के रूप में भी होता है। 3 भूतकाल के लकारों (लङ्, लुङ् और लृङ्) की क्रियारचना के समय धातु के पूर्व आगम के रूप में जोड़ा जाता है यथा अगच्छत्, अगमत्, अगमिष्यत् में।

अकृन्तिन् (वि०) [नास्ति कृन्त यस्य न० ब०] (यहाँ 'न' का व्यञ्जन ध्वनि माना गया) जो कृंतदार न हो, कृन्तमुक्त ('अनृन्तिन्' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।)

अक्ष् (चुरा० उभ० अक्षयति-ते) काटना, विभाग करना, आपस में हिस्सा बाँटना, 'अक्षापयति' जो इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। वि 1 काटना 2 धोखा देना।

अंश [अक्ष् अच्] 1 हिस्सा, भाग, टुकड़ा, सहदायी विभक्ति —मनु० ९।१४३ रघु० ८।१६ —अंशेन दक्षिणस्यां कृष्णता का० २५९ अमर०. 2 सम्पत्ति में हिस्सा, दाय स्वतोंशम् —मनु० ८।४०८, ९।२०१, याज्ञ० २।११५ 3 भिन्न की संख्या कभी-कभी भिन्न के लिए भी प्रयुक्त 4 अक्षांश या रेखांश की कोटि ५ कला (सामान्यतः अर्थ के अर्थ में, अर्थ का प्रयोग होता है। दे०)। सम०—ग्रहः अक्षावतार, हिस्से का हिस्सा, अंशि (कि० वि०) हिस्सेदार, अवतरण अवतार —पृथ्वी पर देवताओं के अंश को लेकर जन्म लेना आत्मिक अवतार, 'तार इव धर्मस्य दश० १५३, महाभारत के आदिपर्व के ६४-६७ तक अध्याय, आहु हर, हारिन् (वि०) उत्तर अधिकारी, सहदा० गामी पितृपितामहप्रपितामहेषु पूर्वाभावे क्रम पर याज्ञ० २।१३२-१३३ संक्रमणम्— भिन्नों को एक समान हर में लाना, स्वर मुख्य स्वर, मूलस्वर।

अंशक: [अंश + स्वार्थे कन्] 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, सबधी 2 हिस्सा, खण्ड, भाग, अंश और विभाग।

अंशनम् [अंश् - ल्युट्] काटने की क्रिया।

अंशयितृ (पु०) [अंश्+णिच्+तृच्] विभाजक, बाटने वाला।

अंशल (वि०) [अंश लाति - ला+क] साझीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी। 2=असल दे०

अंशिन् (वि०) (अंश्+इनि) 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, -(पुनर्विभागकरणे) मदं वा स्यु समांशिन, याज्ञ० २।११४, 2 भागी वाला, साझीदार।

अंशु [अंश्+कु] 1 किरण, प्रकाशकिरण, चंद्र०, घर्म० गरम किरणों वाला, सूर्य,-सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् कु० १।३४, चमक, दमक 2 बिन्दु या किनारा 3 एक छोटा या सूक्ष्म कण 4 धागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 मनि। सम० उदकम् ओस का पानी, जालम् रश्मिपुंज या प्रभामण्डल, धर, -पति,-भृत्,-माण,---भर्तृ स्वामिन्—हस्त —सूर्य (किरणों को धारण करने वाला या उनका स्वामी), -पट्टम् एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, माला प्रकाश की माला, प्रभामण्डल, मालिन् (पु०) सूर्य।

अंशुकम् [अंश्+क-अंशव सूत्राणि विषया यस्य] 1 कपड़ा, सामान्यतः पोशाक। सिताशुका-विक्रम० ३।१२ -यत्राशुकाक्षेपविलज्जितानाम्-कु० १।१४, श० १।३२, 2 महीन या सफेद कपड़ा -मेघ० ६४, प्रायः रेशमी कपड़ा या मलमल। 3 ऊपर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र, लबादा, अधोवस्त्र भी, 4 पत्ता 5 प्रकाश की मद लौ।

अंशुमत् (वि०) [अंशु मतुप्] 1 प्रभायुक्त, चमकदार, -ज्योतिषा रविरंशुमान् भग० १०।२१ 2 नोकदार। मान्(पु०) 1 सूर्य, -मालिभिर्मेरिवांशुमान् रघु० १५।१० 2 सगर का पौत्र, दिलीप का पिता और असमञ्जस का पुत्र।

अंशुमत्फला—केले का पौधा।

अंशुल (वि०) [अंशु प्रभा प्रतिज्ञा वा लाति-ला+क] चमकदार, प्रभायुक्त ---ल जाफरान मुनि।

अंस् (चु० पर० असयति-असापयति) दे० अंश्।

अंस [अंस्+अच्] 1 भाग, बड़ा दे० अंश, 2 कंधा, असफलक, कंधे की हड्डी। सम० कूट बैल या साँड का डिल्ला अथवा कुब्ब, कंधों के बीच का उभार, -त्रम् 1 कंधों की रक्षा के लिए कवच 2 धनुष, फलक सीढ़ का ऊपरी भाग भार कंधे पर रखा गया भार या जूआ,—भारिक, भारिन् (वि०) (अंसे) कंधे पर जूआ या भार ढोने वाला -विवर्तिन् (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ,—मलमसविवर्ति पक्ष्मलाक्ष्या,---मा० ३।२४।

अंसल (वि०) [अंस्+लच्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली मजबूत कंधे वाला,—युवा पुंगव्यायतबाहुरंसल रघु० ३।३४।

अंह् (म्वा० आ० अंहते, अंहितुं, अंहित) जाना, समीप जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भेजना 2 चमकना 3 बोलना।

अंहति स्त्री (स्त्री०) [हन्+अति-अंहादेशश्च] 1 भेंट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, चिंता, दुःख, बीमारी (वेद०)।

अंहस् (नपु०)-(अंह-हंसो वादि) [अंह्+असुन् हुक् च] 1 पाप-अंहसा संहतिमंहसां विहन्तुं, अंहसम् कि० ५।१७ 2 व्याकुलता, कष्ट, चिन्ता।

अंहिति स्त्री (स्त्री०) [अंह्+क्तिन् ग्रहादित्वात् इट्] उपहार, दान।

अंहि (अंह्+क्रिन्-अंहति गच्छत्यनेन) 1 पैर 2 पेड़ की जड़ तु० अघ्रि, 3 चार की संख्या। सम० ज (पैर) से पीने वाला, वृक्ष, स्कन्ध पैर के तलवे का ऊपरी हिस्सा।

अक् (भ्वा० पर० अकति, अकित) जाना, साँप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलना।

अकम् [न कम्—सुखम्] सुख का अभाव पीड़ा, विपत्ति, पाप।

अकच (वि०) [न कच] गंजा चः केनु (अवपतनशील शिरोबिंदु)।

अकनिष्ठ (वि०) [न कनिष्ठ—न० त०] जो सबसे छोटा न हो (जैसे सबसे बड़ा, महत्ता) बड़ा, श्रेष्ठ वह गौरव बुद्ध।

अकन्या [न त] जो कुमारी न हो जो अब कुमारी न रही हो।

अकर (वि०) (न क) 1 लूला अपाहिज 2 कर या चुंगी से मुक्त 3 अक्रिय, निकम्मा, अकर्मण्य।

अकरणम् [कृ भावे ल्युट् न त] अक्रिया, कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरणं श्रेय नु० अंग्रेजी की कहावत 'सम थिंग इज बैटर दैन नथिंग' (Something ... better than nothing) बैटर लेट दैन नैवर (Better late than never) न होने से कुछ होना भला है, कभी न होने से देर में होना अच्छा है।

अकरणि (स्त्री०) [अकृ+क्त+अनि] असफलता निराशा, अप्राप्ति, अधिकांशतः कोसने या शाप देने में प्रयुक्त, -तस्याकरणिरेवास्तु सिद्धा० भगवान् करे उसकी आशा पूरी न हो, उसे असफलता मिले।

अकर्ण (वि०) [न क] 1 जिसके कान न हो, बहरा 2 कर्णरहित जैसे साँप।

अकर्तन (वि०) [अकृ+क्त+ल्युट् न त] छिनना।

अकर्मन् (वि०) (न. ब) 1 निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा 2 दुष्ट, पतित 3 (व्या०) अकर्मक ---र्म (नपु०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप। सम० -अन्वित (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, खाली, निठल्ला 2 अपराधी, कृत् (वि०) कर्म से मुक्त या अनुचित कार्य करनेवाला,-क्षेम कर्मफल भोगने से मुक्ति का अनुभव।

अकर्मक (वि०) [नास्ति कर्म यस्य, ब० व्रीः] वह क्रिया जिसका कर्म न हो (स्त्री० –कर्मिका)।

अकल (वि०) [नास्ति कला अवयवो यस्य, न० ब०] अखंड, भागरहित, परब्रह्म की उपाधि।

अकलंक (वि०) [न० ब०] 1 कलंकरहित, शुद्ध 2 निष्पाप (स्त्री०–अकलंका) चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश।

अकल्प (वि०) [न० ब०] 1 अनियंत्रित, जिस पर कोई नियंत्रण न हो, 2 दुर्बल, अयोग्य 3 अनुचलनीय।

अकस्मात् (अव्य०) [न कस्मात् - न० त०] अचानक, एकाएक, सहसा आकस्मिक रूप से अकस्मादागतुना सह विस्त्रम्भो न युक्त –हि० १।१७, अकारण, बिना किसी कारण के, व्यर्थ ही अकस्मात् क्रीडिसी-मानां विक्रीणासि निर्व्यलिकान् प० २।६४–कथं त्वां त्यजेयमकस्मात्पतिरार्यसुत रघु० १४।५५, ७३।

अकाण्ड (वि०) [न० ब०] 1 आकस्मिक, अप्रत्याशित, –सहसा पुनरकाण्डविवर्तनदारुण उत्तर० ४।१५, मा० ५।३१, 2 जिसमें तना या डाली न हो। सम० –अज (वि०) सहसा उत्पन्न या उत्पादित, –ताण्डव-नृत्य क्रोध पार्वतिपति का अप्रत्याशित प्रदर्शन - पात आकस्मिक घटना वातजात (वि०) जन्म होते ही मर जाने वाला, शूलव अचानक मृत्यु का दर्द।

अकाण्डे (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से, एकाएक, सहसा, –दर्भाङ्कुरेण चरण क्षत इत्यकाण्डे तन्वीति धन्य कपिल-देव पदानि गत्वा शं० २।१२।

अकाम (वि०) [न० ब०] 1 इच्छा, राग या प्रेम से मुक्त 2 अनिच्छुक, अनभिलाषी 3 प्रेम से अप्रभावित प्रेम की अधीनता से मुक्त, रघु० १।२३ 4 अवैवाहिक अविवाहित।

अकामतः (क्रि० वि०) [अकाम–तसिल्] अनिच्छापूर्वक देखना से, बिना इरादे के अजानपने में, अनजाने कृतवतस्तु पापान्येतान्यकामत मनु० ९।२४०।

अकाम (वि०) [न० ब०] 1 शरीररहित अशरीरी 2 शिव की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि।

अकारण (वि०) [न० ब०] कारणरहित, निराधार, व्यर्थ –स्पृहं,—क्लृप् कारण प्रयोजन या आधार का अभाव—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रमणे न दीयते –कु० ४।७ अकारणम्, अकारणात्, अकारणे–(क्रि० वि०) बिना कारण के, अयोजनवश, व्यर्थ।

अकार्य (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त –कृत् अनुचित या बुरा काम, अपराधपूर्ण कार्य। सम० –कारिन् बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्तव्य विमुख।

अकाल (वि०) [न० ब०] असामयिक प्राक्कालिक या गलत समय, असमय या कुसमय, (किसी बात के लिए) अनुपयुक्त समय –अत्यागसो हि दारीणामकालमरणो वधः—रघु० १२।३१। सम० –कुसुमम्, कुसुमम् असमय पर खिलने वाला फूल,—कूष्माण्ड बिना ऋतु के उपजा हुआ कुम्हड़ा (काल०) व्यर्थ जन्म,—ज, —जन्मन्,– जात (वि०) बिना ऋतु के उपजा हुआ, प्राक्कालिक, —जलधरोदय,—मेघोदय 1 असमय में बादलों का उठना या इकट्ठा होना, 2 कुहरा, धुंध, – वेला ऋतु के विपरीत या अनुपयुक्त समय, – सह (वि०) 1 समय की हानि या देरी को सहन न करने वाला, अधीर, 2 गदु की भाँति शुद्धता के साथ अधिक समय तक न टिकने वाला।

अकिंचन (वि०) [नास्ति किंचन यस्य न० ब०] जिसके पास कुछ भी न हो, बिल्कुल गरीब, नितांत निर्धन–अकिंचनः सन् प्रभव न सम्पदाम् – कु० ५।७७।

अकिंचित्कर (वि०) [अकिंचित् + डा + क] कुछ न करने वाला, निपट अप्रभावी, भर्तृ० २।८।

अकिंचित्करत्व (वि०) [उप० स०] 1 अर्थहीनता,—परतंत्र-मिदमकिंचित्करत्व च – वेणी० ३ । 2 मौका, सीधा।

अकुण्ठ (वि०) [न० त०] 1 जो ठंडा न हो, जिसकी गति अबाध हो आशस्त्रवह्णादकुठधारो – वेणी० २।२, 2 प्रबल, काम करने योग्य 3 स्थिर 4 अत्यधिक।

अकुतः (क्रि० वि०) कहीं से नहीं (इसका प्रयोग केवल प्रश्नवाचक शब्दों में होता है)। सम० –भय शिव का नाम, भय (वि०) सुरक्षित, जिसे कहीं से भी भय न हो मादृशानामपि अकुतोभय सञ्चारो जात - उत्तर० २ यानि त्रैलोक्यकुतोभयानि च पदान्यासन्नराद्धोधने (पाठान्तर) अपराजयुक्तानि –उत्त० ५।३५।

अकुप्यक (न०) [न० त०] 1 बिना खोट की धातु, सोना चाँदी 2 कोई भी खोट की धातु।

अकुशल (वि०) [न० त०] 1 अशुभ, दुर्भाग्यग्रस्त, 2 जो चतुर या होशियार न हो,—कर्म अमंगल, दुर्भाग्य।

अकूपार [नञ् + कूप + अण्] 1 समुद्र 2 सूर्य 3 कछुआ 4 कछुआ का राजा जिस पर पृथ्वी का भार है 5 पत्थर या चट्टान।

अकृच्छ्र (वि०) [न० ब०] कठिनाई से मुक्त,—त्वम् कठिनाई का अभाव, सरलता सुविधा।

अकृत (वि०) [नञ् + कृ + क्त] 1 जो किया न गया हो, 2 गलत या भिन्न तरीके से किया गया 3 अपूरा, जो तैयार न हो (जैसे रसोई), 4 अनियंत्रित 5 जिसने कोई काम न किया हो 6 अपक्व, कच्चा, –ता जो बेटी होने पर भी बेटी न मानी जाकर पुत्रों के समकक्ष समझी जाय, –त्य(नपु०) कार्य जो किया न गया हो, काम का न किया जाना, जो काम कभी सुना न गया हो। सम० –अस्त्र (वि०) अस्त्रज्ञ, –अस्त्र (वि०) जिसे हथियार चलाने का अभ्यास न हो, अहस्त्र (वि०) 1 अज्ञानी, मूर्ख, असंतुलित मस्तिष्क का 2 परब्रह्म या ब्रह्मा के स्वरूप से भिन्न, –हस्त (वि०)

अविवाहित,—एनस् (वि०) अनपराधी, - ज्ञ (वि०) कृतघ्न - धी, - बुद्धि (वि०) अज्ञानी।

अकृष्ट (वि०) [नञ् +कृष्+क्त] जो जोता न गया हो। सम०—पच्य, —रोहिन् (वि०) बिना जुते खेत में बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुतायत से बढ़ने वाला —अकृष्टपच्या इव सस्यसंपद —कि० १।१७, रघु० १४।७७।

अकेका (स्त्री०) [अक्+कन्+टाप्] माता, माँ।

अक्त (वि०) [अक्+क्त] सना हुआ, अभिषिक्त, (इसका प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे घृताक्त) —क्ता रात।

अक्तत्र [अक्त्+कत्र] कवच (वर्मन्)।

अक्रम (वि०) [नास्ति क्रमो यस्य—न० ब०] अव्यवस्थित —मः [न क्रम न० त०] 1 क्रम या व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अनियमितता 2 औचित्य का उल्लंघन।

अक्रिय (वि०) [नास्ति क्रिया यस्य—न० ब०] क्रिया शून्य, सुस्त - या [न० त०] क्रियाशून्यता कर्तव्य की उपेक्षा।

अक्रूर (वि०) [न० त०] जो निर्दय न हो — रः एक यादव जो कृष्ण का मित्र और चाचा था।

अक्रोध (वि०) [नास्ति क्रोधो यस्य - न० ब०] क्रोध रहित - धः [न० त०] क्रोध का अभाव या उसका दमन।

अक्लिष्ट (वि०) [नञ्+क्लिश्+क्त] 1 न थका हुआ, क्लेश रहित, अनथक 2 जो बिगड़ा न हो अविकल शा० ५।२९।

अक्ष् [स्वा० स्वा० पर० अक० सेट्] (अक्षति—अक्षणीत, अक्षित) 1 पहुँचना, 2 व्याप्त होना, फैलना 3 सचित होना।

अक्षः [अक्ष्-अच् अक्ष् + घञ् वा] 1 धुरी, धुरा 2 गाड़ी के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लोहे या लकड़ी की वह छड़ फंसाई हुई होती है जिस पर पहिया चलता है 3 गाड़ी, छकड़ा, पहिया 4 तराजू की डंडी 5 मौलिक अक्षांश 6 चौसर, चौसर का पासा 7 रुद्राक्ष 8 कर्ष नामक १६ माशे की एक तौल 9 बहेड़े (विभीतक) का पौधा 10 साँप 11 गरुड़ 12 आत्मा 13 ज्ञान 14 कानूनी कार्य विधि, मुकदमा 15 जन्मांध, —क्ष 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 सामुद्रिक लवण 3 नीला पौधा। सम० - अक्षकोल (-लक्ष) घुरे की कील —आवपन चौसर का तख्ता, आवाप जुआरी —कर्णः सम त्रिकोण में सामने की रेखा, —कुशल (वि०) -शौंड (वि०) जुआ खेलने में निपुण, —क्षुद्रः आंख की पुतली कोविद (वि०) -ज्ञ (वि०) चौसर खेलने में कुशल जह, जुआ खेलना, चौसर खेलना ज्ञ 1 प्रत्यक्षज्ञान, सज्ञान, 2 बुद्ध 3 हीरा—ज्ञ विद्या, तत्त्व विद्या जुआ खेलने की कला या विद्या, दर्शक वृक्ष 1 न्यायाधीश 2 जुए का अधीक्षक, -देविन् जुआरी द्यूतराज, - द्यूत चौसर का खेल, जुआ, - धूर्त जुएबाज, जुआरी, धूर्तिल गाड़ी में जुता हुआ बैल या साँड पटल 1 न्यायालय 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान पादकः कानून का पंडित, न्यायाधीश, पात पासा फेंकना, पाद गौतम ऋषि, न्यायदर्शन के प्रवर्तक या उसके अनुयायी, —भाग अक्षः अक्षरखा, अक्षांश। भार गाड़ीभर बोझ, —माला सूत्र रुद्राक्षमाला, हार हतोऽक्षधूर्वहणयो मया कर कु० ५।११ राज जुए का व्यसनी, पाशा मे प्रधान, कलि नामक पासा, वाट, जुआ-खाना, शय को सेज, हृदय जुए में पूर्ण दक्षता या निपुणता।

अक्षणिक (वि०) [न० त०] स्थिर, दृढ़, जो चंचल न हो, जो थोड़ी देर रहने वाला न हो, दृढ़तापूर्वक जमा हुआ, (ताक लगाने या टकटकी के समान)।

अक्षत (वि०) [नञ्+क्षण्+क्त न० त०] (क) जिसे चोट न लगी हो स्वस्थांग कर्मक्षमता रघु० कु० ६।९, (ख) जो टूटा न हो, सम्पूर्ण अविभक्त म 1 शिव 2 कूट-कूटकर धूप में सुखाए गए चावल। -क्षा (बहु०) अनटूटा अनाज, सब प्रकार के धार्मिक उत्सवों पर काम आने वाले पिछोड़े, कपड़े रघु० जल से धोये हुये चावल साधनसामग्रहणा रघु० २।२१ 3 जौ, यव न 1 धान्य, किसी भी प्रकार का अनाज 2 हिजड़ा (पु०भी) ता कुमारी कन्या। सम० योनि (स्त्री०) वह कन्या जिसने साथ सभोग न किया गया हो। मनु० ९।९७।

अक्षम (वि०) [न० त०] अशक्त असमर्थ अयोग्य, अधीर, रघु० १३।१६ मा 1 अशक्ति, असमर्थता 2 कायरता, अधैर्य।

अक्षय (वि०) [न० ब०] जिसका नाश न हो अनश्वर, —त्रिसाधनाक्षिस्त्रिवाधेक्षयम् रघु० ८।९०, सम० तृतीया (स्त्री०) वैशाखमास के शुक्लपक्ष की तीज।

अक्षय्य (वि०) [न० त०] जो क्षय न हो सके अविनाशी सप्तपदभागमक्षय्य दक्षिणाग्नेरकरोत् न० २।९३।

अक्षर (वि०) [न० त०] (क) अविनाशी, अनश्वर कु० २।१०, भग० १५।१६ 2 स्थिर दृढ़ 3 शिव 2 विष्णु। -रः (क) वर्णमाला का एक अक्षर अक्षरात्समकारादिम नव० १०।३३ ओम् आदि। (ख) कोई एक वर्ण एकाक्षर पद्य मनु० २।८३ (ग) एक या अनेक वर्ण, समष्टिरूप से भाषा अविनाशिनमग्रेयं धातुं दारुमयं यथा रघु० ३।२५ 2 वर्णमाला, लिपिकर (बहु०), 3 अविनाशी आत्मा, ब्रह्म 4 पानी 5 आकाश 6 परमानन्द मोक्ष। सम०—अर्थ शब्दों का अर्थ, -आख्य (-ख्य) घुन, -कक्ष (-क्ष)

लिपिक, लेखक, लकलनवीस। इसी प्रकार 'अक्षरिक' 'अक्षरी, अक्षरिकः ऐसेवर लेखक। अनुवर्त किसी अक्षर के लुप्त होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना।

अक्षय (नपु०) वृक्ष वर्षों की संख्या में बड़ा छेद या बल जलाने बुलिका अरकंडा या कलम। -- (वि) स्याही 1 लिखना, वर्णक्रम 2 वर्णमाला 3 वेद भूमिका लक्ष्मी रघु० १८।४६ शुक्रः विद्वान्, विद्यार्थी। **अक्षित** (वि०) अशिक्षित, बिना पढ़ा लिखा। **शिक्षा** (स्त्री) शुद्ध अक्षरों की विद्या। **संस्थान** वर्णविन्यास लिखना, वर्णमाला।

अक्षरक [स्वार्थे कन्] स्वर, अक्षर।

अक्षरशस् (क्रि० वि०) [अक्षर शस् (दीप्तार्थे)] एक एक अक्षर करके 2 शब्दशः, शब्द शब्द करके।

अक्षरसंज्ञा (स्त्री०) [अक्ष - मतुप् - ङीप्] बेल, पासे द्वारा खेल, जुए का खेल।

अक्षरासि (स्त्री०) [न० त०] असहिष्णुता, स्पर्धा, ईर्ष्या।

अक्षार (वि०) [न० ब०] कृत्रिम लवणरहित। २ प्राकृतिक लवण।

अक्षि (नपु०) [अक्नुत् विषयान् अक्ष् क्सि] (अक्षिणी, अक्षीणि, अक्षणा, अक्षभ्यां आदि) 1 आँख 2, दो की संख्या। सम० कूप अपाकी-रघु० १४।६७। कूट-कटक लोक सारा आँख का ढेला, आँख की पुतली। **गत** (वि०) 1 दृश्यमान उपस्थित -शि० ९।८१, 2 आँख में रखकर्ने वाला, आँख का कोटा, घृणित नेत्रहस्तम्य क्षम्या जाल दश० १५०। -पक्ष्मन् --लोमन् (न०) पलक पटल 1 आँख की झिल्ली 2 झिल्ली से संबद्ध आँख का रोग विकुंचित, विवर्तित तिरछी नजर, अधखुली आँख से देखना।

अक्षण्ण (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, अक्षत 2 अविच्छिन्न सफल,-अक्षण्णोऽनुनय वेणी० १।२, 3 जो कूटा पीटा न गया हो, असाधारण शि० १।३७।

अक्षेत्र (वि०) [न० ब०] क्षेत्र से रहित, बिना जमीन। -श्रः अराब खेत 2 (आल०) बुरा विद्यार्थी, कुपात्र। सम० ज्ञ (वि०) आत्मज्ञान से विरहित।

अक्षोट: [अक्ष+ओट] अखरोट, (अरा० जोगरी अक्रोड)।

अक्षोभ्य (वि०) [न० त०] स्थिर, धीर-रघु १७।७४।

अक्षौहिणी (स्त्री) [अक्षाणां रथानां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी प० त०] [अक्ष-ऊह् - इनि + ङीप्] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें २१८७० रथ, २१८७० हाथी, १५६१० घोड़े तथा १०९३५० पदाति हों।

अक्षत (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, संपूर्ण, समस्त --अक्षत पुण्यानां फलमिव--श० २।१० --क्षम् (क्रि० वि०) निरन्तर, अविराम।

अक्षण्ण (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा, संपूर्ण, --ण्ण न टूटना, विराम न करना, --ण्णः समय।

अक्षण्डित (वि०) [न खण्डित -न० त०] 1 न टूटा हुआ, 2 विश्रामरहित, बाधारहित। सम० -उत्सव (वि०) सदा आमोदप्रिय, ऋतु वह समय या ऋतु जिसमें सदा को भांति पुष्पादि उत्पन्न हों, (वि०) फलदायी।

अक्षत (वि०) [न० त०] 1 जो बौना या छोटे कद का न हो, जिसकी शारीरिक वृद्धि न रुकी हो 2 अनस्य, बड़ा, --अक्षतेन सर्वेण विराजमान दश० 3।

अक्षात (वि०) [न० त०] न खुदा हुआ, न तराशा हुआ न:, न 1 प्राकृतिक आल 2 मंदिर के सामने का पत्थर।

अक्षिल (वि०) [नास्ति क्षिलम् अवशिष्टम् यस्य -न० ब०] 1 संपूर्ण, समस्त, पूरा, इसका प्रयोग प्रायः सर्व के साथ पाया जाता है एतद्धि सर्वोत्कृष्टमेव सर्वमेवोत्क्षिलं मुनि -मनु० १।५९ °क्षेल (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से 2 भूमि जो परती की न हो, जुती हुई हो।

अक्षेटिक (पु०) [नञ् क्षिट - ठिकन् न० त०] 1 वृक्ष-मात्र 2 शिकारी कुत्ता।

अक्ष्यादि [न० त०] अपवोनि, अपयश। सम० -कर (वि०) अपकीर्तिकर, लज्जाजनक।

अक्ष् (स्वा० पर० अक० सेट्) अक्षति, आक्षीत्, अक्षिष्यति, अक्षित) 1 संपिंड गति से जाना, टेढ़े मेढ़े चलना, 2 जाना (अक्षति आक्षीत-आदि)।

अक्ष (वि०) [न गच्छतीति-गम् + ड, न० त०] 1 चलने में असमर्थ, अगम्य, --क्षः 1. वृक्ष 2. पहाड़, पत्थर 3 साँप 4 सूर्य 5 सात की संख्या। सम० -आत्मजा पर्वत की पुत्री, पार्वती।--ओकस् (पु०) 1 पहाड़ी 2 पक्षी (वृक्षवासी) 3 'शरभ' नामक जन्तु जिसकी आठ टांगें मानी जाती हैं 4 सिंह,--ज (वि०) पहाड़ों में घूमने वाला, जंगली,---अन्त जिताक्षीत।

अक्षर (वि०) [गम्-आहुलकात् ड-न० त०] न जाने वाला। -क्षः (पु०) वृक्ष।

अक्षति: (स्त्री०) [न० त०] 1 आश्रय या उपाय का अभाव, आवश्यकता 2 प्रवेश न होना (आ० और आल०)।

अक्षति (ती) क (वि०) [न० ब०] निस्सहाय, निरुपाय, निराश्रय,--बालमेनामक्षतिमादाय--दश ९, दक्षस्यक्षति-का गति या० १।३४६।

अक्षय (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ, रोगरहित।---क्षः 1 औषधि, दवाई 2, स्वास्थ्य 3. विषहरण विद्या।

अक्षयंकरः (पु०) [अक्षय करोति--अक्षय+कृ+अच् वृद्धागमश्च] वैद्य, चिकित्सक।

अक्षम्य (वि०) [न क्षन्तुमर्हति--क्षम्+यत् न० त०] 1. दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर (आ० और

आर्क०) बोधितामप्यधम्यः आदि 2 अकल्पनीय, अबोध्य—वाः संपदस्ता मनसोऽप्यगम्या —शि० ३।५९। 'गम्य' के अन्तर्गत भी देखिए। सम०—रूप (वि०) अकल्पनीय तथा अनतिक्रान्त रूप या स्वभाव वाला—°रूपा पदवीं प्रपित्सुना -कि० १।९।

अगम्या (स्त्री०) वह स्त्री जिसके पास मैथुन के लिए जाना उचित नहीं, एक नीची जाति 'गमन चैव जातिभ्रंशकराणि वा इत्यादि। सम०—गमन अनुचित मैथुन, व्यभिचार—गामिन् (वि०) अनुचित मैथुन करने वाला, व्यभिचारी।

अगरु (न०) [न गिरति, गृ—उ, न० त०] अगर—एक प्रकार का चंदन।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याचलम् अगम् अस्यति, अस्+क्तिच्—वाक०] [अग विन्ध्याचल स्तम्भयति स्तम्भाति—स्तम्भ्+क, वा अग कुम्भ तत्र स्थान सहत इत्यगस्त्य] 1 'कुम्भज' एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. एक नक्षत्र का नाम।

अगस्त्यः—अगस्ति, दे० ऊपर।

अगाध (वि०) [न० ब०] अथाह, बहुत गहरा, अतल-अगाध-सलिलास्समुद्रात् - हि० १।५८, (आल०) गभीर, सविवेक, बहुत गहरा—°सत्व-रघु० ६।२१, —यस्य ज्ञान दयासिंधोरगाधस्यानघा गुणा—अमर०, अथाह, अबोध्य, —ह्रदः—ब गहरा छेद या दरार, सम०—जलः गहरा तालाब, गहरी झील।

अगारं [अग न गच्छन्तम् ऋच्छति प्राप्नोति-अस् - ऋ + अण्] घर, शून्यानि चाप्यगाराणि—मनु० ९।२६९, °दाहिन् घरफूक आदमी।

अगिरः [न गीर्यते दुःखेन—गृ का० क—न० त०] स्वर्ग। सम०—ओकस् (वि०) स्वर्ग में रहने वाला (जैसे देवता)।

अगुण (वि०) [न० ब०] 1 निर्गुण (परमात्मा के संबंध में), 2 जिसमें अच्छे गुण न हों गुणहीन—अगुणः प्रमदाजनः—मालवि० ३, —णः दोष, अवगुण।

अगुरु (वि०) [न० त०] 1 जो भारी न हो, हल्का, 2 (छन्द में) लघु 3 जिसका कोई शिक्षक न हो, —रुः (नपुं० भी) अगर की सुगन्धित लकड़ी और पेड़।

अगृहः (वि०) [न० ब०] बिना घर बार का घुमक्कड़, साधु।

अगोचर (वि०) [नास्ति गोचरो यस्य—न० ब०] जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष न हो, अस्पष्ट, —वाचामगोचरा दुर्वारस्वामस्पृशत्—दश० १६९, —रः 1 अतीन्द्रिय, 2 अदृश्य, अज्ञेय 3 ब्रह्म।

अग्नायी (स्त्री०) [अग्नि+ऐक+ङीष्] 1 अग्नि की पत्नी, अग्निदेवी स्वाहा 2 त्रेतायुग।

अग्निः [अंगति ऊर्ध्वं गच्छति—अञ्च्+नि नलोपश्च] आग 1 क्रोध°, चिन्ता° आदि, 2 आग का देवता 3. तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण 4 अजठराग्नि, पाचनशक्ति 5 पित्त 6 सोना 7 तीन की संख्या, द्वन्द्व समास में जब कि प्रथम पद में देवताओं के नाम या विशिष्ट शब्द हों तो 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' हो जाता है जैसे 'विष्णु, °मरुतौ, 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' भी हो जाता है जैसे - पर्जन्यौ, वरुणौ, सोमौ। सम०—ग (आ) गारं—र०,—आलयः—गृह अग्नि का मन्दिर रघु ५।२५। अस्त्र आग बरसाने वाला अस्त्र, राकेट, इसी प्रकार °बाण आधान अग्नि की प्रतिष्ठा करना, इसी प्रकार °आहिताग्नि, आधेय वह ब्राह्मण जो अग्नि को प्रतिष्ठित रखता है, दे० आहिताग्नि, उत्पात अग्निसंबंधी उत्पात, उल्का या धूमकेतु आदि उपस्थानं अग्नि की पूजा, अग्निपूजा का सूक्त या मंत्र कार्यः,—स्तोकः चिनगारी, —कर्मन् (नपुं०) 1 अग्नि क्रिया 2 अग्नि में आहुति, अग्नि की पूजा, इसी प्रकार °कार्यं, —निर्वर्तितनैगमकार्यः —का० १६, कारिका 1 पवित्र अग्नि को प्रतिष्ठित करने का साधन, अग्न्याधान नामक ऋचा, 2 अग्नि कार्य, काष्ठ अरणि -कुण्डं अग्नि-शलाका, -कुड अग्नि को स्थापित करने के लिए स्थान, अग्नि पात्र, कुमार —तनय —सुत, कार्तिकेय ने अग्नि से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं दे० कार्तिकेय, कोण —दिक् दक्षिण-पूर्व कोना जिसका देवता अग्नि है, —क्रिया अन्त्येष्टिक्रिया और्ध्वदैहिक संस्कार 2 दाह क्रिया, क्रीड़ा अग्निशलाओं खेलना, गर्भ (वि०) आभ्यन्तर में आग रखते हुए, जो शमीवृक्ष या० स्मृ० १।२७३, नि० २।१७, सूर्यकान्त मणि जिस पर सूर्य की किरणों के स्पर्श से आग उत्पन्न होने वाली मानी जाती है, वृ०-सं० २।३ (—भा) 1 शमीवृक्ष 2 पृथ्वी, -चित् (पुं०) अग्नि का प्रज्वलित स्थल बनाना—गार्हपत्य साधनार्थमग्निचित्—रघु० ८।२४, —चय —चयन —क्रिया अग्नि का प्रतिष्ठापन स्थल बनाना, अग्न्याधान, ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न होने वाला, —ज—जातः 1. कार्तिकेय 2 विष्णु, —जं—जातमात्रा इसी प्रकार जन्मन्, —जिह्वा आग की लपट अग्नि की सात जिह्वाओं (कराला धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वाः सप्त विभावसो ॥ म म एक, —तत्त्व (वि०) वरुण का अग्नि के समान चमकने या चलने वाला, —त्रय त्रेता (स्त्री०) तीन अग्नियां (अग्नि के अन्तर्गत देखिए), द (वि०) 1 पौष्टिक, बलवर्धक 2 दाहक, —दग्ध (पुं०) मनुष्य का दाहकर्म करने वाला, -दीपन (वि०) बलवर्धक, पौष्टिक, —दीप्ति, —बुद्धिः बढ़ी हुई पाचन शक्ति, अच्छी भूख, —देव

कृत्तिका नक्षत्र, —आर्द्र पवित्र अग्नि को रखने का पात्र या स्थान, अग्निहोत्री का घर; —आधेय अग्नि को सदा प्रतिष्ठित रखना, —आरणि (स्त्री) वह अग्नि-पूजा —आरिच्छत् यज्ञ के सारे उपकरण—मनु० ६।४, —आरोहा (स्त्री०) अग्नि द्वारा परीक्षा; —आर्वाक्: ज्वालामुखी पहाड़, —आवास व्यास प्रणीत १८ पुराणों में से एक, —आहिता (स्त्री०) अग्नि की स्थापना, विशेष कर विवाह संस्कार की, —आवेशः —आवेशन अग्नि में इस प्रकार अपने पति की चिता पर किसी विधवा का सती होना,—आस्तर: फलीता, चकमक पत्थर, —आहुः भृगी, —इ 1 कृत्तिका 2 सोना, —इध् (नपु०) 1 जल 2 सोना, —इन्: अग्नि से उत्पन्न कार्तिकेय, —इन्धिः सूर्यकान्त मणि, फलीता, —इन्ध —संघन घर्षण या रगड़ द्वारा आग पैदा करना, —इन्द्धे पाचनशक्ति का मंद होना, भूख न लगना, —इन्धः 1 देवता 2 ब्राह्मणमात्र 3 मुंह में आग रखने वाला, आग से काटने वाला, खटमल का विशेषण—दग्ध० १, —इन्धी रसोई घर, —इन्धन पवित्र गार्हपत्य या अग्निहोत्र की अग्नि को प्रतिष्ठित रखना, इन्ध —इन्धस् (पु०) 1 द्यूतक्रीड़ा संबंधी एक मिट्टी की क्रीड़ा 2 अग्नि की शक्ति 3 लोक, —लोक अग्नि का यह संसार जो मेरु शिखर के नीचे स्थित है —अग्नु (स्त्री०) स्वाहा, दक्ष की पुत्री और अग्नि की पत्नी, —उद्गम (वि०) पौष्टिक —उद्य 1 पूजा 2 बकरी, —उर्वी 1 अग्नि की शक्ति 2 सोना —उरस्-आशा—आशा अग्नि का मन्दिर, वह स्थान या घर जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय—°रक्षणाय स्थापिताः हम् °वि० 3, —ऋचः 1 दीपक राकेट, 2 अग्निमय बाण 3 बलराम 4 कुसुम या केसर का पौधा 5 केसर, —ऋतु 1 केसर 2 सोना, — ऋषु, —ऋषु, —ओम आदि दे० —°स्तुत्, — स्तुभ् आदि—संस्कार 1 अग्नि की प्रतिष्ठा 2 विधा एवं शव को दाह किया—लाक्षण कार्याग्नि-संस्कार — मनु० ५।६९ रघु० १२।५६, —अङ्ग. —अङ्गार 1 ईंधा 2 जलती कड़ेवर 3 मूंगा, आग्निक (वि० या कि०वि०) अग्नि को आगे बढ़ाना अग्नि के सामने, —°पञ्चाश° मार्कडे० ५।१० — स्तुत (पु०) एक दिन से अधिक चलने वाले यज्ञ का एक भाग, —स्तोम (°स्तोम) बसन्त में कई दिन तक चलने वाला यज्ञ० अनुष्ठान या दीर्घकालिक संस्कार जो ज्योतिष्टोम का एक आवश्यक अंग है, —होत्र 1 अग्नि में आहुति देना, 2 होम की अग्नि को स्थापित रखना और उसमें आहुति देना,—होत्रिन् (वि०) अग्निहोत्र करने वाला, जो यह व्यवस्था की अग्निहोत्र द्वारा होमादिक को सुरक्षित रखता है।

अग्निकल्पम् (अव्य०) अग्नि की तरह तक, इसका प्रयोग समासपद में 'कृ' धातु (जलाना, भस्म करना) के साथ किया जाता है—'न चकार शरीरमग्निकल्पम्—रघु० ८।७२, °भू जलाया जाना।

अग्र (वि०) [अञ्च्+रन् नलोपश्च] 1 प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख, °महिषी मुख्य रानी, 2 अत्यधिक, —ग्रं 1 (क) सर्वोपरि स्थल या उच्चतम बिन्दु (विप०—मूलम्, मध्यम्), (आलं०) श्रेष्ठता, प्रखरता, नासिका°—नाक का अग्रभाग, समस्या एवं विद्या जिह्वाग्रेऽवस्थान्—का० ३४६—जिह्वा के अग्र भाग पर थी, (ख) चोटी, शिखर, समूह—कैलास°, पर्वत° आदि 2 सामने 3 किसी भी प्रकार से सर्वोत्तम 4 लक्ष्य, उपदेश्य 5 आरम्भ 6 आधिक्य, अतिरेक, समस्त पदों में जब यह प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है— 'पूर्वभाग' 'सामने' 'नोक' आदि, उदा० °पाद-चरण। सम०—अणी (स्त्री) रु.(कस्) सैन्यमुख—मनु० ७।१९३—आसनं प्रमुख आसन, मान-आसन— मुद्रा० १।१२,—कर: = अग्रहस्त —गा नेता, मार्गदर्शक, सबसे आगे चलने वाला —गण्य (वि०) श्रेष्ठ, प्रथम श्रेणी में रखे जाने योग्य, —ज पहले पैदा हुआ या उत्पन्न हुआ, —ज: अग्रजन्मा, बड़ा भाई—अस्त्येव मन्युर्भरतस्यजे मे—रघु० १४।७३ 2 ब्राह्मण—जा बड़ी बहन, इसी प्रकार °जात, °जातक, °जानि। अग्रजन्मन् (पु०) 1 पहले जन्मा हुआ, बड़ा भाई 2 ब्राह्मण उत्त०१३ —जिह्वा जिह्वा की नोक, —दानिन् (वि०) पतित ब्राह्मण जो मृतक श्राद्ध में दान लेता है, —दूत: आगे-आगे जाने वाला दूत—कृष्णाकोधात्प्रहितं दूत —वेणी० १।२२, रघु० ६।१२,—नी: (स्त्री.) प्रमुख सेना—अप्यक्षणोर्मन्यकृतामधीनाम्—रघु० ५।४, —पाद. पैर का अगला हिस्सा, पैर का अगला पंजा,—पूजा आदर या सम्मान का सर्वोत्तम या प्रथम चिह्न,—पेय पीने में प्राथमिकता—भाग: 1. प्रथम या सर्वोत्तम भाग 2 शेष, शेष भाग 3 नोक, सिरा,—भाजिन् (वि०) (शेषभाग) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला, —भू —ज,— भूमि (स्त्री०) महत्त्वाकांक्षा का स्थल या उद्दिष्ट पदार्थ,—मांस हृदय का मांस, हृदय— °मे वानीतम्—वेणी० ३ —यायिन् (वि०) नेतृत्व करना, सेना के आगे चलना पुरुषस्य ते रणाग्रिरम्य-मसमग्रयायी —का० ७।२६, योधिन् (पु०) मुख्य वीर, मुख्य योद्धा, कृतान्ती यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का लेखा—जोखा रखने की डायरी, —संध्या (स्त्री०) प्रभात काल, कर्कन्धनाम्यरे मुहिव रंजयन्त्यग्रसन्ध्या—का० ४ (पाठ०)।—सर=यायिन्—नेतृत्व करने वाला—रघु० ९।२१, ५।७१,—हस्त: (पु०) (—°कर,—°पाणि.)

हाथ या भुजा का अगला भाग, हाथी की सूंड का सिरा, कभी २ उंगली या उंगलियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, दाहिना हाथ —अग्राह्यहस्ते मुकुलीकृतासुली कुमा० ५।६३—ह्रायणः(णी) —वर्ष का आरम्भ मार्गशीर्ष (मंगसिर) महीने का नाम, —हार राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को जीवननिर्वाहार्थ दान में दी गई भूमि —कक्षिमद्विद्यग्रहारे—दश० ८।०।

अग्रतः (कि० वि०, [अग्रे अग्राद्वा—तसिल्] (सम्बन्धकारक के साथ) 1. सामने, के आगे के ऊपर, आगे 2 की उपस्थिति में, 3 प्रथम। सम० —सर होना।

अग्रिय (वि०) [अग्रे भव- अग्र यत्] 1 प्रथम (क्रम, श्रेणी आदि में), प्रमुख, मुख्य 2 बड़ा, श्रेष्ठ, —ज बड़ा भाई।

अग्रिम (वि०) [अग्रे भव -अग्र - इमन्] प्रमुख आदि। ज बड़ा भाई।

अग्रीय (वि०) [अग्रेभव -अग्र+छ] प्रमुख, सर्वोत्तम आदि। दे० अग्रिम।

अग्रे (कि० वि०) 1 के सामने, पहले (काल और देश वाचक) 2 की उपस्थिति में, 3 के ऊपर 4 बाद में चलना —एवमग्रे वर्त्तते, एवमग्रेऽपि द्रष्टव्यम् आदि 5 सबसे पहले, पहले 6 ओरों से पहले। सम०—गा नेता, —विधिषु-ढ़ पहले तीन वर्णों में से कोई एक पुरुष जो विवाहित स्त्री से विवाह [illegible] भी विवाहकारी), —विधिषू (स्त्री०) एक विवाहित स्त्री जिसकी बड़ी बहन अभी अविवाहित है —ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यामादूय्यतेऽन्यजा, सा चाग्रेदिधिषूप्रोक्ता पूर्वा च दिधिषू स्मृता), पति अग्रेदिधिषू स्त्री का पति, —सर-ज अगल को सीमा या अन्तिम सिरा, —सर (वि०) आगे २ चलने वाला, नेता —मानिमत्रता-मग्रेसरं केसरी —भट्टि० २।२१।

अग्र्य (वि० [अग्रे जात—अग्र+यत्] 1 प्रमुख, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सर्वोच्च, प्रथम—यदङ्गमग्र्य मघवन् महाक्रतौ —रघु० ३।४६, मल्लिनी १०।६६ अधिकरण के साथ भी, मनु० ३।१८४, —र्य बड़ा भाई।

अघ् =अघ्—दे० (चु० उभ०) बुरा करना, पाप करना।

अघ [अघ्—अच्] 1 पाप - अघौघविध्वंसविधौ पटीयसी —शि० २।१८, २६ मथन आदि 2 कुकृत्य, अपराध, दोष शि० ४।३३ 3 अपकृत्य, दुर्घटना विपत्ति—क्रियादधानो मघवा विघातम्—कि० ३।५२, दे० अनर्थ 4 अपवित्रता, (अशौच) 5 व्यथा, कष्ट —घः एक राक्षस का नाम, बक और पूतना का भाई जो कंस के यहां मुख्य सेनापति था। सम०—अरि दे० ऊपर 'अघ', —अह्नः (अहन्) अपवित्रता का दिन, अशौच दिन;—आमुक् (वि०) गर्हित कर्म करने वाला, —नाश—नाशन (वि०) पापनाशक, —मर्षण (वि०) विशोधक, पाप को हटाने वाला, ऋग्वेद के मन्त्र जिनका सस्वर-प्रार्थना के समय प्रायः ब्राह्मणों द्वारा पाठ होता है (ऋग्० १० सू० १९०) सर्वेनमामपश्यन्ति अघ विध्वंसमघंमम् अमर० विध मांस,—हन् दुष्ट आदमी जैसे चोर, शशिन् (वि०) किसी के पाप या अपराध को बतलाने वाला।

अघर्म (वि०) [न० ब०] जो गरम न हो, ठंडा, अनु, —धामन्-चन्द्रमा जिसकी किरणें ठंडी होती हैं।

अघोर (वि०) [न० त०] जो भयानक न हो भीषण न हो २ शिव या शिव का कोई रूप जिसमें अघोर =घोर हो। सम० पथ ज्ञान शिव का अनुयायी, - प्रकाशं भीषण दाहय या अग्नि परीक्षा।

अघोष (वि०) [नास्ति घोषो यस्य यत्र वा न० ब०] ध्वनिहीन, निःशब्द ख प्रत्येक वर्ग के प्रथम दो अक्षर श, ष, स तथा ह।

अङ्क (भ्वा० आ०) टेढ़ा-मेढ़ा चलना, [वि०उभ०—अङ्कयति-ते अङ्कयित् अङ्कित] 1 चिह्नित करना ज्ञात कराना-स्वनामधेयाङ्कित—रघु० ५ नामाङ्कित नामादीकरणि अङ्कित स्वनामाङ्कम्-विक्रम० ४।३, 2 लिखना 3 चलना सताना, कलङ्कित करना—सकलो नाम गुणो यत्र न्यूनतामेति दुर्जनैर्नाङ्कित —अर्थ० ती० ५८ 4 चलना, हटाना जाना।

अङ्कु (पु०) [अङ्कु+अच्] 1 सांड़, बैल० श्रो, —अङ्कुरा यावदङ्कुशैरिवाजौ —कु० ३।८ 2 चिह्न लक्षण अङ्कुर-का हुआ पदवी सवान—रघु० ७।० पदवी लक्षण करङ्कु दाम—इन्दो किरणेश्विवाङ्कु —कु० १।५,—करणं हस्तङ्कु निर्वाह —मनु० ८।८८), 3 अङ्कु संख्या ९ की संख्या 4 पार्श्व पक्ष, सान्निध्य पहुंच -मय मुक्ताङ्कु मुरौनि निर्दिष्ट —कि० ३।४०—मिता प्रसवकम ङ्कुमाहवमर्पय त्यकत्वा निर्मित्रि टिप्पम् —मृ० श्रो० १० ६ नाटक का एक अंक 6 कौड़ियां या अंक हुआ उपकरण ? नाटक-रचना का एक प्रकार स्पष्ट के दस भेदों में से एक दे० सा० द० ५१० ८ पंक्ति लिखी हुई पंक्ति साधारण एक माप मात्रा में प्रयोग। सम०—अवतार, अंक नाटक के आरम्भ में अङ्कु में वर्तमान प्रकट करना हुआ पूर्वांक के अन्त में-अङ्कुमुखम्-किया जाता है उस अङ्कावतार कहते हैं जैसे कि अङ्कुमाला का छठा अङ्कु अंकक मात्रागणितम् का दूसरा अङ्कु,—तन्त्र संख्या-विज्ञान (अंकगणित आ बीजगणित), —कारक-का (त्रि० स्त्री०) 1 किसी लगाना या संकेत करना 2 आकृति या संख्या को आंकने की रीति परिशिष्ट 1 दूसरी ओर संकेत 2 किसी की ओर से झुकाव या प्रेम के साथ भाव दिखाना (आलिंगन के अवसर पर) —वासिन् -वासी (स्त्री०) 1

आलिंगन-नायद्गाढ वितर मदुदय्य कुपाली प्रसीद-माल० ८।२, 2. बाई, सर्प; - -पाशः अकगणित में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसमें १–२ आदि संख्याओं के अदल-बदल से एक विचित्र शृंखला सी बन जाती है, —भाज् (वि०) 1 गोद में बैठा हुआ या लिया हुआ जैसे कि एक बच्चा 2 सुलभ, निकटस्थ, सुलभ कि० ५।५२, - मूलं (या आरब्धं) अङ्क का वह भाग जहाँ सब अङ्कों का विषय सूचित किया गया हो अङ्कमुख कहलाता है, इसी से बीज और फल का संकेत होता है—उदा० मालवि० १ में कामदेवी और अवलोकिता उस अंश का संकेत करती है जिसका अभिनय भरितम् और अन्य पात्रों का करना है। इसमें कथावस्तु का क्रम भी संक्षेप में बतला दिया जाता है, -विद्या संख्या-विज्ञान, अंकगणित।

अङ्कन (अङ्क् + ल्युट्) 1 चिह्न, दाग़ 2 चिह्नित करने की क्रिया 3 चिह्न लगाने के साधन, मुहर लगाना आदि।

अङ्कनिः (अङ्क + अनि, कुत्वम्—अङ्के को या—अङ्कयति अङ्कनिका) 1 हवा 2 अग्नि 3 कड़ा 4 वह आदमी जो अग्निहोत्र करता है।

अङ्कपूट (अङ्क - उत्व) गोदी, कूखी

अङ्कपूर (अङ्क + उरच्) 1 अङ्कुश किसमद, कायल -दर्शयाङ्कपूरेण करणं छेद -सा० ३।१०, समस्तपद के अन्त में प्रायः इसका 'नोकदार' या 'तीक्ष्ण' अर्थ होता है-मकरकेतनदन्दशूकपुरान्-भ० २।४ बर्छीसी दाढ़, (आलं०) कलम सयान, प्रखर—अनेन कस्यापि कुलाङ्कपूरेण सा० ३।१० 2 पानी 3 स्थिर 4 बाण 5 रमणी, सुभग।

अङ्कपूरित (वि०) (अङ्कपूर + इतच्) नखक्षत-अंकित उत्पन्न, न मर्मभिरनेन विक्रम० ४।१- बाना काम ने किस तरह पैदा कर दिये हैं।

अङ्कपूश, (अङ्क + उरच्) (लोहे का) काँटा या हाँकने की छड़ी (आलं०) नियन्ता, संयोजक, प्रशासक निदेशक दबाव या रोक-निरङ्कुशा कवयः, कवि नियम से मुक्त होते हैं या उन पर कोई बन्धन नहीं होता। समः -ग्रहः पीलवान -अनेनुकार्योऽवलाङ्कुशग्रह जि० १२।१६, दुर्धर दुरोदर, खारिवह (पु०) हाथीवान।

अङ्कपूशित (वि०) (अङ्कुश + इतच्) अङ्कुश से हाँका गया।

अङ्कपूशिन् (वि०) (अङ्कुश + इनि) अङ्कुश रखने वाला।

अङ्कपूर, अङ्कुरा—दे० 'अङ्कुर'।

अङ्कपूरय—दे० अङ्कुरय।

अङ्कपूरीट-क-कः (अङ्क + ऋट-ऊ-क) पिसने का बटखरा।

अङ्कोपालिका (अङ्क + उप + ली + टाप् या अङ्क—पालिका का षत्वाभाव) आलिंगन।

अङ्क्य (वि०) (अङ्क् + ण्यत्) दागने योग्य, चिह्नित या अंकित करने योग्य, -क्यः एक प्रकार का ढोल या मृदंग।

अङ्क्ष् (च० पर० अक० सेट्) (अङ्क्षयति-अङ्क्षित) 1 पेट के बल सरकना 2 चिपटना 3 रोकना।

अङ्क्ष् (भ्वा० पर० अक० सेट्) (अङ्क्षति, आनङ्क्ष, अङ्क्षितुम्, अङ्क्षित) जाना, चलना, (चु० पर०) 1 चलना, चक्कर काटना 2 चिह्न लगाना।

अङ्ग (अव्य०) (अङ्ग + अच्) संबोधक अव्यय जिसका अर्थ है "अच्छा' 'अच्छा, श्रीमान्' निस्सन्देह 'सच' 'हाँ' (जैसा कि 'अङ्गीकृ में), -अङ्ग कल्पितकुलस्त्री जात -का० २२१, किस जोर कर इसको अर्थ होता है 'कितना कम' 'कितना अधिक -नयेन कार्यं प्रथमावलोकिना किमङ्ग सामस्त्यवता नरेण-रघु० ६।३१। काशकृत्स्न ने इसके निम्नांकित अर्थ बताये हैं-'क्षिप्रे च पुनरर्थे च संशयासूययोरपि। हर्षे संबोधने चैव ह्यङ्गशब्द प्रयुज्यते।' 'संस्कृत-रचना-छात्र निर्देशिका' का § ४६३ भी देख। सं-1 शरीर 2 अंग या शरीर का अवयव-लोकाङ्गविमर्दनं-विधे विधातुं -कुमा० १।५२ 3 (क) किसी संपूर्ण वस्तु का प्रभाग या विभाग एक खण्ड या अंश जैसे सप्ताङ्ग राज्यम्-चतुरङ्ग बलम्, अंग (ख) सहायक या सहायक साधन पुरुष (ग) अवयव, सारभूत घटक -सदङ्गमध्ये मघवन् महाक्रतौ —रघु० ३।४६, (घ) विशेषणात्मक या गौणभाग, गौण, सहायक या आश्रित अंग (जो मुख्य वस्तु का सहायक है), (इसका विप० है प्रधान या अङ्गिन्) -अङ्गौ गौद्रवस्तत्र सर्वेऽङ्गानि रसा पुनः —सा० द० ५।३ (च) सहायक साधन या युक्ति 4 (व्याक०) शब्द का मूल रूप 5 (क) नाटक में पात्रों सन्धियों के उपभाग (ख) गौण नक्षत्रों में एक समस्त शरीर 6 छः की संख्या के लिए आलंकारिक कथन 7 मन, —गा (पु० ब० व०) एक देश का नाम, उस देश के वासी—यह प्रदेश बंगाल के वर्तमान भागलपुर के आस पास स्थित है। समः—अङ्गि-अङ्गीभाव शरीर के अंगों का संबंध, गौण अंगों का मुख्य अंग से संबंध या पोष्य अंग का पोषक अंग से संबंध (गौणमुख्यभाव उपकार्योपकारकभावश्च), अविभाज्यजुषाभाव-मङ्गाङ्गित्वं तु संकर —का० द० १०, (अनुग्राह्यानुग्राहकत्वम्) —अधीश —अधीश अंगों का स्वामी, कर्ण (पु० राज, पति, ईश्वर अधीश्वर। —ज्वर ऐंठन —ज,—जात (वि०) 1 शरीर पर उपजा हुआ, या शरीर में जन्मा हुआ, शारीरिक 2 सुन्दर, अंगभूत, —(ज्ञः) —जन्मन् 1 पुत्र 2 शरीर के बाल (नपुं० भी), 3 प्रेम, काम, प्रेमावेश 4 शराबखोरी, मस्ती 5 एक रोग, —(जा) पुत्री, —(जं)

कवित; —हीन : छोटे छः हीनों में से एक; —स्पर्शः उपयुक्त मंत्रों के साथ हाथ से शरीर के अंगों को स्पर्श करना; —यष्टिः (स्त्री०) आलिंगन, —यष्टिका=दे० अंकपालि —अवयवः छोटे बड़े सब अंग; —भूः 1 पुत्र 2 कामदेव, —अङ्ग 1 शाबो-पघात, अवज्ञा—°विकल इव भूत्वा स्थास्यामि—श० २, 2 अंगड़ाई लेना (जैसा कि सोकर उठते ही मनुष्य करता है) —मंत्र एक मंत्र का नाम,—मर्द 1 जो अपने स्वामी के शरीर पर मालिश करता है, 2 मालिश करने की क्रिया, इसी प्रकार °मर्दक या °मर्दिन, —मर्म गठिया रोग, —यज्ञ,—याग यज्ञ से संबद्ध गौण क्रिया,—रक्षक शरीर रक्षक, व्यक्तिगत सेवक, पद०,३—रक्षण किसी व्यक्ति की रक्षा, —रक्षणी कवच, पोशाक — रागः 1 सुगन्धित लेप, शरीर पर सुगंधित उबटन का लेप, सुगन्धित उबटन, —रघु० १२।२७, ६।६० कुमा० ५।११, 2 लेपन क्रिया,—विकल (वि०) 1 अपाहज, लकवा मारा हुआ, 2 मूर्छित, —विकृतिः (स्त्री०) 1 शरीर में कोई विकार होना, अवसाद 2 मिरगी का दौरा, मिरगी —विकारः शारीरिक दोष,—विक्षेपः अंगों का हिलाना, शारीरिक चेष्टा, — विद्या 1 ज्ञान के साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र 2 अंगों की चेष्टा या चिन्हों को देखकर शुभाशुभ कहने की विद्या, बृहत्संहिता का ५१वा अध्याय जिसमें इस विद्या का पूर्ण विवरण निहित है —विधिः गौण या सहायक अधिनियम जो कि मुख्य नियम का सहकारी है, —वीर मुख्य या प्रधान नायक,—वेक्षणं 1 संकेत, इंगित या इशारा 2 सिर हिलाना, आंख झपकना, 3 परिवर्तित शारीरिक रूप; —संस्कारः, —संस्क्रिया शरीर को आभूषणों से सुशोभित करना, शारीरिक अलंकरण,—संहतिः (स्त्री०) अंगसंघटि, अंगों का सामंजस्य शरीर, देहयष्टि,—संग- शारीरिक संपर्क, मैथुन, संभोग, —सेवकः निजी नौकर,—हारः हाव भाव, नृत्य, —हारिः 1 हावभाव 2 रंग-भूमि, रंग-शाला, —हीन (वि०) 1 अपाहिज, विकलांग, 2 विकृत अंगवाला।

अङ्गक [अङ्ग् + अच्, स्वार्थे कन्] 1. अङ्ग —अङ्गसमधुर-रम्भाणां म कुतूहलमङ्गके.—उत्त० २।२०, २४ 2 शरीर—शि० ४।६६।

अङ्गर्व=दे० अङ्गवम्।

अङ्गतिः [अङ्ग + अति] 1 तलवार, घास (स्त्री० भी), 2 अग्नि 3 ब्रह्मा 4 अग्निहोत्री ब्राह्मण।

अङ्गद [अङ्गं दायति ददाति वा, दै—दो + क] बाजूबन्द, कलाई को कोहनी के ऊपर भुजा में पहना जाता है, बाजूबन्द, -तप्तकाञ्चनीकराङ्गद —विक्रम० १।१४, सवदंटकाङ्गदमङ्गदेन—रघु० ६।७३,—कः 1 किष्किन्धा के वानरराज बालि का पुत्र, 2 अंगिरस से उत्पन्न सत्यश्रवा का पुत्र—रघु० १५।९०, इसकी राजधानी का नाम अंगदीया था।

अङ्गणं-णं [अङ्ग् + ल्युट्] 1 टहलने का स्थान, आंगन, चौक, सहन, बगड, गृहं, गलं व्यापक अन्तरिक्ष, °भुव केसरवृक्षस्य मालं० १, 2 सवारी 3 जाना, चलना आदि।

अङ्गना [प्रशस्तम् अङ्गम् अस्ति अस्या —अङ्ग + न + टाप्] 1 स्त्रीमात्र, नृ°, गज°, हरिण° इत्यादि, 2 सुन्दर स्त्री 3 (ज्यो०) कन्या राशि। सम०—जन 1 स्त्री जाति 2 स्त्रियां, —प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रिय —प्रिय अशोकवृक्ष।

अङ्गनस् (पु०) [अङ्ग् + असुन् कुत्वम्] पक्षी।

अङ्गार-र [अङ्ग् + आरन्] 1 कोयला (जलता हुआ या बुझा हुआ, ठंडा)। —उल्मो दहति चाङ्गार शीत कृष्णायते करम्—हि० १।८०,—स्वयं स्वहस्तेनाङ्गारः कर्षितः —पञ्च० १ तुमने स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी, तु० 'अपने लिए स्वयं खाई खोदना' 2 मंगल ग्रह,—र लाल रंग। सम०—वल्लिका अंगीठी, कांगड़ी —वाटी, —शकटी अंगीठी कांगड़ी, —शस्त्री —वल्ली नाना प्रकार के पौधों का नाम विशेषतः 'बूटा' बंधनी।

अङ्गारक:-कं [अङ्गार + स्वार्थे कन्] 1 कोयला 2 मंगल ग्रह —°विद्धस्य प्रशोलस्य बृहस्पते —मृच्छ० १।३३, —°वारः मंगल ग्रह का वार 3 मंगलवार (दिन °वासर),—क एक छोटी चिनगारी। सम०—शिखः मुर्गा।

अङ्गारयित (वि०) [अङ्गारक + इतच्] भुलसा हुआ भूना हुआ।

अङ्गारिः (स्त्री०) [अंगार-मत्वर्थे ठन पृषो० कलोप] कांगड़ी, अंगीठी।

अङ्गारिका [अंगार-मत्वर्थे ठन-कप् च] 1 कांगड़ी 2 सूखे की पोरी 3 किंशुक वृक्ष की कली।

अङ्गारिणी [अंगार + इन् - ङीप्] 1 छोटी अंगीठी 2 लता।

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार - इतच्] भुलसा हुआ, भूना हुआ, अधजला —पः-रं पलाश वृक्ष की कली,—ता 1 =दे० अङ्गारिणी 2 कली 3 लता।

अङ्गारीय (वि०) [अङ्गार - छ] कोयला तैयार करने की सामग्री।

अङ्गिका [अङ्ग + क + टाप्] चोली, अंगिया।

अङ्गिन् (वि०) [अङ्ग - इन्] 1 शारीरिक, देहधारी,—धर्मार्थकाममोक्षाणामवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, १८, 2 गौण अंगों वाला, मुख्य, प्रधान—वे रक्षणाङ्गिनो धर्मा, एक एव समेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा-सा० द०।

अङ्गिरस्, अङ्गिरस् (पु०) [अङ्ग+गम्+डस्] ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि; —(ब० व०) अंगिरा ऋषि की सन्तान।

अङ्गीकरणम्, अङ्गीकारः, अङ्गीकृतिः (स्त्री०) [अङ्ग+च्वि+कृ+ल्युट्,—कृ+घञ्, कृ+क्तिन्] 1. स्वीकृति 2. सहमति, प्रतिज्ञा, जिम्मेदारी आदि।

अङ्गीय (वि०) [अङ्ग+छ] शरीर सम्बन्धी।

अङ्गुः [अङ्ग्+उन्] हाथ।

अङ्गुरिः-री=दे० अङ्गुलि।

अङ्गुष्कः [अङ्ग्+उष्कन्] 1. अंगूठी 2 अंगूठा (नपुं० भी), 3 अंगुल भर की नाप (नपुं० भी) जो ८ जौ के बराबर होती है, १२ अंगुलियों की एक 'वितस्ति' या बालिश्त और २४ अंगुलियों का एक 'हाथ' का नाप होता है।

अङ्गुलिः-ली, अङ्गुरिः-री(स्त्री०) [अङ्ग्+उलि] 1. अंगुली (पाचों अंगुलियों के नाम—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका हैं) · पैरकी पञ्चा-पाच सी अंगुली कहलाती हैं 2 अंगूठा, पैर का अंगूठा 3 हाथी की सूंड की नोक 4 'अंगुल' नाप विशेष। सम०- -तोरणं मस्तक पर चन्दन का अर्ध चन्द्राकार तिलक, -त्रं—त्राणं अंगूठे की रक्षा के निमित्त बना एक प्रकार का दस्ताना जिसे अंगुष्ठेर पहनते हैं, -दात्रं, -वृक्षिका सोहर लगाने की अंगूठी -दोटनं, -स्फोटनं चटकी बजाना, अंगुली चटकाना, -संज्ञा अंगुलियों से संकेत—अङ्गालिसंज्ञयैव—कुमा० ३।४१, —संकेतः अंगुलियों के इशारे से संकेत करना, —संभूतः नाखून।

अङ्गुलिका=अंगुलि।

अङ्गुली (स्त्री०) सं,-क-अयं [अंगुलि (नि)+ङ—स्वार्थे कन्] अंगुली—नव सूचयित्वाङ्गुलीय नूनं प्रतनु मन्यसे—मा० १।१०, —(पु०भी)—काकुत्स्थस्याङ्गुलीयक भट्टि० ८।११८।

अङ्गुष्ठ [अंगु+स्था+क] 1. अंगूठा, पैर का अंगूठा 2 'अंगूठा भर' नाप विशेष जो अंगुल के समान होती है। सम०—मात्र (वि०) अंगूठे की लम्बाई के बराबर "न पुरुष निरवकर्षं वकाक्षम्—महा०।

अङ्गुष्ठ्य, [अङ्गुष्ठे भव—यत्] अंगूठे का नाखून।

अङ्गूष [अङ्ग्+ऊषन्] 1. नेवला 2. तीर।

अङ्ग्य (ना० धा० अक० सेट्) [अङ्कते—अङ्कित] 1 जाना 2 आरंभ करना 3. चीत्रना करना 4 बनवाना।

अङ्घस् (न०) [अङ्घ्+असुन्] पाप—केनो० १।१२, (पाठांतर)

अंघ्रिः-अंहिः-[अङ्घ्+क्रिन्] 1. पैर 2. वृक्ष की जड़ 3. श्लोक का चौथा चरण। सम०—प वृक्ष—विभु मूढाङ्घ्रिपाङ्गु—केनो० २।१८,—आम (वि०) अपने पैर की भांति अपने पैर का अंगूठा चूसने वाला—स्थलम् टखना।

अच् (भ्वा० उभ० इदित् अक० सेट्) [अचति—ते, अञ्चयति, आनञ्च, अञ्चित,—अक्त] 1 जाना, हिलना; 2 सम्मान करना, प्रार्थना करना आदि, दे० 'अञ्च्' से तुलना —च् (पु०) [ना०] स्वरों के लिए प्रयुक्त शब्द।

अचक्षुस् (वि०) [न० ब०] नेत्रहीन, अंधा, 'विषय (वि०) अदृश्य, (नपुं०) [न० त०] खराब आँख, रोगी आँख।

अचण्ड (वि०) [न० त०] जो क्रोधी स्वभाव का न हो, शान्त, सौम्य।

अचतुर (वि०) [न० ब०] 1 'चार' की संख्या से रहित 2 [न० त०] अनाड़ी।

अचर (वि०) [न० त०] स्थिर—चराचर विश्व—कुमा० २।५; —चराणामन्नमचरा.—मनु० ५।२८.।

अचल (वि०) [न० त०] दृढ़, स्थिर, निश्चित, स्थायी—चित्तन्यस्तमिवाचलम् चामरम्—विक्रम० १।४,—लः 1 पहाड़, (बड़ी २) चट्टान 2 काहला या कील 3 शून्य की संख्या का पूरक, ल द्वीप। सम० -कन्यका, -तनया, -दुहिता, -सुता हिमालय पर्वत की पुत्री 'पार्वती' -कीला पृथ्वी, -स्थ, -स्थित (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, -आ, -आत्मजा पार्वती, -द्विष् (पु०) कोयल, -द्विष् (पु०) पर्वतों का शत्रु, इन्द्र का विशेषण जिसने पहाड़ों के पंख काट दिये थे।

अचापल न्य (वि०) [न० ब०] चंचलतारहित, स्थिर, न्यम् [न० त०] स्थिरता।

अचित् (वि०) वै० [नञ्+चित्+क्विप् न० त०] 1 समझदारी से रहित, 2 धर्मशून्य 3 जड़।

अचित (वि०) वै० [न चित+क्त न० त०] 1 पूजा हुआ 2 अधिकारित 3 एकत्र न किया हुआ।

अचित्त (वि०) [न० ब०] 1 अकल्पनीय 2. बुद्धिरहित, अज्ञान, मूर्ख 3 न सोचा हुआ।

अचिन्तनीय-अचिन्त्य (वि०) [नञ्+चिन्त्+अनीयर्, चिन्त्+यत्] जो सोचा भी न जा सके, समझ से परे, -°यस्य नव प्रभाव—रघु० ५।३३, -त्यः शिव।

अचिन्तित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, आकस्मिक, पद्य० २।३।

अचिर (वि०) [न० त०] 1 संक्षिप्त, अधिक, अल्पस्थायी, दे० 'चूर्णि, °वात्, °प्रभा आदि 2. नया—रघु० ८।२०; समस्त पदों में 'अचिर' का अर्थ है 'हाल में, अभी, कुछ ही पहले—प्रवृत्तं शीघ्रसंघट्टनचिह्नम्—मृच्छ० १; अभी अभी, °प्रसूता—मृच्छ० ४—अभी २ जिसने अपने को पैदा किया है (यह एक हरिणी के विषय में कहा गया है जो प्रसवोपरान्त चल बसती है)—अथवा पाप जिसने

बछड़े को जन्म दिया है –रं [क्रि० वि०] [अचिरेण, अचिराय, अचिरात् और अचिरस्य भी इसी अर्थ के द्योतक हैं] 1 बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2. हाल ही में, अभी, 3 शीघ्र, जल्दी, बहुत देर न करके। सम०– अंशु,– आभा,– द्युति,– प्रभा,– भासु,– रोचिस् (स्त्री०) बिजली–°शुविलासचपला लक्ष्मी– कि० २।१९, °भासा तेजसा चानुलिप्तैः–शि० ७।७।

अचेतन (वि०) [न० ब०] 1 निर्जीव, अबोध,–चेतन °नेषु– मेघ० ५, 2 बोधरहित, अज्ञानी।

अच्छ (वि०) [नञ्+छो+क] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक, विशुद्ध–मुक्ताच्छदृस्तच्छविदन्तुरेयम्–उत्त० ६।२७, मेघ० ५१; –कि रत्नमच्छा मति –मालवि० १।१६, –च्छः 1 स्फटिक 2. भालू–तु० °भल्ल भी। सम०– उदन् [अच्छोद] (वि०) स्वच्छ जल वाला –द कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत पर स्थित एक झील,–अन्ध रीछ।

अच्छ-पच्छा (अव्य०) वै०–की ओर, (कर्म कारक के साथ) की तरफ।

अच्छन्दस् (वि०) [न० ब०] 1 उपनीत न होने के कारण या शूद्र होने के कारण वेद को न पढ़ने वाला, 2 छन्दरहित रचना।

अच्छावाकः [अच्छ+वच+घञ्] सोमयाग का ऋत्विक् जो होता का सहायक होता है।

अच्छिद्र (वि०) [न० ब०] छिद्ररहित, अक्षत, निर्दोष, दोषरहित–अपच्छिद्रः प्रपच्छिद्र यच्छिद्र श्राद्धकर्मणि. सर्वं भवतु मेऽच्छिद्र ब्राह्मणाना प्रसादत , –द्रं [न० त०] निर्दोष कार्य या दशा, दोष का अभाव, °छेद, बिना रुके, आदि से अन्त तक।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 अटूट, लगातार चलने वाला, अनवरत 2 जो कटा न हो, अविभक्त, अक्षत, अखण्ड।

अच्छोटनम् [नञ्–छुट्+णिच्+ल्युट्] आखेट, शिकार।

अच्युत (वि०) [न० त०] 1 अपने स्वरूप से न गिरा हुआ, दृढ, स्थिर, निर्विकार, अचल 2 अनश्वर, स्थायी, –तः विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु,–गच्छाम्यच्युतदर्शनेन–काव्य० ५ (यहां अ° का भी अर्थ है–वृद्ध, जो वासनाओं का शिकार न हो)। सम०–अग्रजः बलराम या इन्द्र,–अग्रजः,–आत्मजः,–सुतः कामदेव, कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र,–आश्रितः,–श्रयः पीपल का वृक्ष।

अज् (भ्वा० पर० अक० सेट्०–आर्धधातुक प्रकारों में विकल्प से 'वी' आदेश होता है) [अजति, अजीत्, अजितुम्, अजित–वीत] 1 जाना 2 हाँकना, नेतृत्व करना 3 फेंकना (उपसर्गों के साथ इस धातु का प्रयोग केवल वेद में ही पाया जाता है)।

अज (वि०) [न० त०–न जायते नञ्–जन्+ड] अजन्मा, अनादि,–अजस्य गृहतो जन्म–रघु० १०।२४,–जः 1 'अज' सर्वशक्तिमान् प्रभु का विशेषण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा 2 आत्मा, जीव 3. मेढ़ा, बकरा 4 मेषराशि 5 अस्त्र का एक प्रकार 6 चन्द्रमा, कामदेव। सम० –अजी (स्त्री) कटीली काकमाची, मकोय, –अजिका छोटा पशु,–अज बकरे और घोड़े,–एडकं बकरे और मेढ़े,–गर अजगर नामक भारी साप जो बकरों को निगल जाता है,–(री) एक पौधे का नाम–मल्ल० नी० 'अजागल',–जीव,–जीविक. गड़रिया, इसी प्रकार–°पः,–°पालः,–°भारः 1 कसाई, 2 एकप्रदेश का नाम (वर्तमान अजमेर),–जीवः 1 अजमेर नामक स्थान का नाम, 2 युधिष्ठिर की उपाधि,–जोवा,–जोविका अजमोद–एक औषध का नाम जिसे मराठी में 'ओवा' कहते हैं –पूर्णी 'मेढासिंगी' पौधे का नाम।

अजकव–वं [अज विष्णु के लक्ष्माण वातीति–वा+क] शिव का धनुष।

अजका-अजिका [स्वार्थे कन+टाप्] छोटी बकरी बकरी का बच्चा।

अजकाव–वं [अज विष्णु के लक्ष्माणम् अर्जति ऋति अज्–अण्] शिव का धनुष पिनाक।

अजगव [अजगा विष्णुस्त्र वातीति–वा+क] शिव का धनुष, पिनाक।

अजगाव [अजगो विष्णुस्तमवतीति–अव+अण्] शिव का धनुष, पिनाक।

अजड (वि०) [न० ब०] जो जड न हो, समझदार।

अजन (वि०) [न० ब०] जनशून्य बियाबान।

अजपा (स्त्री०) [अज+अण्+टाप्] पथ मार्ग।

अजस्रम् (वि०) अनुपम, 'अजस्रा' प्रभु का विशेषण, (पु०) परमानन्द, छुटकारा, अपमुक्ति।

अजस्य (वि०) [न० त०] उत्पन्न होने के अयोग्य, मानव-जाति के प्रतिकूल, या अपशकुनसूचक अशुभ घटना जैसे कि भूचाल।

अजाक [न० ब०] वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासना उचित रूप से नहीं करता है।

अजक्षम (वि०) [न० ब०] दांत रहित,–क्षः 1 मेंढक, 2 सूर्य 3 बच्चे की वह अवस्था जब उसके दांत नहीं निकले हैं।

अजय (वि०) [न० ब०] जो जीता न जा सके, जो हराया न जा सके, नाम,–यः हार, पराजय,–या भाग।

अजय्य (वि०) [नञ्+जि+यत् न० त०] जो जीता न जा सके, स० ६।२९, रघु० १८।८।

अजर वि० [न० त०] 1 जिसे कभी बुढ़ापा न आवे, सदा

अथवा 2. जो कभी न मुर्झाये, बनावर; –पुराणमजरं विद्धि –रघु० १०।१९—ए देवता,—रं परमात्मा।

अजर्य (नञ्+जृ+यत् न० त०) (अभिहित या अभ्याहृत 'सगर' के साथ) जिसका–मुनिरजर्यं जरसोपदिष्टम्–रघु० १८।७।

अजस्र (वि०) [नञ्+जस्+र न० त०] अविच्छिन्न, अनवरत, लगातार रहने वाला, –"दीक्षाप्रयतस्य–रघु० ३।४४, –स्रं (अव्य०) सदा, अनवरत, लगातार–तस्य धुरीत्यजस्रम्- उत्त० ४।२६।

अजहत्स्वार्था [न जहत् स्वार्थांऽत्र–हा+शतृ न० ब०] लक्षणा शक्ति का एक भेद जिसमें मुख्यार्थ पद-शक्यता के कारण नष्ट नहीं होता, जैसे कुला प्रविशति=कुल धारिण पुरुषा, इसे उपादान लक्षणा भी कहते हैं।

अजहल्लिङ्गं [न जहत् लिङ्गं यत्र, हा+शतृ न० ब०] लक्षणा शब्द जिसका लिंग नहीं बदलता चाहे वह विशेषण को आदि हो क्यों न प्रयुक्त किया जाय–उदा०–वेद (अथवा) श्रुति प्रमाणम् (प्रमाण अथवा प्रमाणा नहीं)।

अजा (स्त्री०) [नञ्+जन्+ड+टाप्] 1 (सांख्य दर्शन के मतानुसार) प्रकृति या माया, 2 बकरी। सम० –गलस्तन, बकरियों के गल में लटकने वाला थन, (आलं०) किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में इसका उपयोग होता है। धर्मार्थ-कामयोर्नाशो यत्रैकोऽपि न विद्यते। "स्तनस्तस्य तस्य जन्म निरर्थकम्॥ जीव पालक: सहस्रिया ८० अजजीव आदि।

अजाजि जी (स्त्री०) [अजेन आज्य त्याग वस्त्राय – अज+आज+इन्] सफेद या काला जीरा।

अजात (वि०) [न० त०] अनुत्पन्न –अजातमनसूयेभ्यो मनाजाती सुतो वरम् –पंच० १, जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, पैदा न किया गया हो अविकसित हो, 'कचुक्' 'पक्ष' इत्यादि। सम० –अरि, अत्रु (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो, जो किसी का शत्रु न हो, (–रि–त्रु:) 'युधिष्ठिर' की उपाधियों–श्रुत आतमजालारे श्रवणेन त्वयारिणा –शिशु० २।१०२, न हि यज्ञजनमनस्त्वमजातशत्रु –वेणी० ३।१३; शिव तथा दूसरे अनेक देवताओं की उपाधि, –अश्रुत् –श्रु (पु०) थोड़ी उम्र का बैल जिसका कूबड़ अभी न निकला हो, –अञ्जन (वि०) जिसके दाढ़ी आदि अभिज्ञान चिह्न न हों, –अवहार, अवयव, नाबालिग जिसकी अभी तक सयानता न बिती हो।

अजानि [नास्ति जाया यस्य–जायाया निङादेश –न० ब०] जिसके स्त्री न हो, पत्नीहीन, विधुर।

अजालिक: [अजेन जीवति अज–ठन्] बहरिया, बकरियों का व्यापारी।

अजानेय (वि०) [अजेऽपि जानेय –अजाभ्यान आपनीय:–इति अज+अज–आ+नी+यत्] उत्तम कुल का, निर्भय (जैसे घोड़ा)।

अजित (वि०) [नञ्+जि+क्त] 1. जो जीता न जा सके, अजेय, दुर्धर "त पृथ्य····· महं–उत्त० ५।२७ 2 न जीता हुआ (देश आदि) अनियन्त्रित, अनिरुद्ध, "आत्मन्, "इन्द्रिय=जिसने अपने मन या इन्द्रियों का दमन नहीं किया है, –त: विष्णु, शिव, या बुद्ध।

अजिनं [अज्+इनच्] बाघ, सिंह या हाथी आदि, विशेषकर काले हिरन की रोएँदार खाल जिसके आसन बनते हैं या जो पहनने के काम आती है–अजाजिनाधाहधर–कुमा०५।३०, ६७, शि० ११।१५. 2. चमड़े का बैला या बीकची। सम०–चर्मन्,–वासस्,–वस्त्र,–धारिन्, चमड़ा पहनने वाला, –योनि: हरिण, कृष्णसार मृग–वासिन् (वि०) मृग-चर्म पहनने वाला,–सेन: मृगचर्म का व्यवसाय करने वाला।

अजिर (वि०) [अज्+किरच्] शीघ्रगामी, स्फूर्तिवान्; –र 1. आंगन, अहाता, मैदान, उटजाजिरप्रकीर्ण–का० १९, 2. शरीर 3 इन्द्रियगम्य पदार्थ 4 वायु, हवा 5 मेंढक,–रा 1 एक नदी का नाम 2. दुर्गा का नाम।

अजिह्म (वि०) [न० त०] 1. सीधा 2 खरा, ईमानदार, –०गामिभि –शि० १।६२, बेलाग और खरा; –ह्म: मेंढक। सम०–ग (वि०) सीधा चलने वाला,–गतिर्ऋजुजिह्मग –मनु० ६।३१–ग तीर।

अजिह्मु [न० ब०] मेंढक।

अजीकवं [अजया छागलेयेन क वह्नाय वाति प्रीणाति वा+क] शिव का धनुष।

अजीगर्त: [अजं गमनाय गर्त यस्य–ब० स०] साँप।

अजीर्ण (वि०) [न० त०] न पचा हुआ, न सड़ा हुआ, –र्णं अपच।

अजीर्णि: (स्त्री०) [नञ्+जृ+क्तिन्] 1 मन्दाग्नि–कैर-जीर्णभयाद् भ्रातर्भोजनं परिहीयते–हि० २।५७ 2. शक्ति, सक्षिप्त, क्षय का अभाव।

अजीव (वि०) [न० ब०] निर्जीव, जीव रहित, –व: [न० त०] सत्ता का अभाव, मृत्यु।

अजीवनि: (स्त्री०) [नञ्+जीव्+अनि] मृत्यु, सत्ता का अभाव (अभिशाप के रूप में प्रयुक्त)–अजीवनिस्ते मठ भूयात्–सिद्धा०–अरे दुष्ट! भगवान् तुम्हें मृत्यु दे, भगवान् करे, तुम मर जाओ।

अजीवन्तं 1 ब्याज 2 अमरता हुआ कोषफल।

अज्ञ (वि०) [नञ्+ज्ञा+क न० त०] 1 न जानने वाला, ज्ञान रहित, अनुभवहीन –अज्ञो भवति वै बाल:–मनु० २।१५३ 2 अज्ञानी, अनजान, मूर्ख, मूढ़, बुद्धू (मनुष्यों और पशुओं के विषय में भी कहा जाता है)–अज्ञ:

सुखमाराध्य –भर्तृ० २० 3. अज्ञान, समझ की शक्ति से हीन।

अज्ञात (वि०) [न० त०] न जाना हुआ, अनुत्पादित, अनजान–°पत सलिले मममज्ज–रघु० १६।७२। सम० –चर्या,–वासः छिप कर रहना (पाण्डवों के विषय में–'अज्ञातवास' प्रसिद्ध है)।

अज्ञान (वि०) [न० ब०] अनजान, बेसमझ,–नं [न० त०] 1 अनजानपना, 2 विशेष करके आध्यात्मिक अज्ञान–अर्थात् अविद्या जिसके वशीभूत हो कर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से पृथक् समझता है तथा भौतिक संसार की वास्तविकता को मानता है। समस्तपदों में 'अज्ञान' का अनुवाद 'अनजाने में' 'अनवधानता में' बेसमझी से किया जा सकता है। °आचरित, °उच्चारित इत्यादि।

अञ्च् (स्वा० उभ० सक० वेट्) [अञ्चति-ते, आनञ्च पञ्चितुं अञ्चयात्–अञ्चयात्, अक्त–अञ्चित] 1 झुकाना, शिरोऽञ्चित्वा –भट्टि० ९।८० 2 जाना हिलना, झुकाव होना–स्वतन्त्रो कथमञ्चसि भट्टि० ४।२२ त्वं वेदञ्चसि लोभम्–भामि० १।४६ लालायित होना 3 पूजा करना सम्मान करना, आदर करना, सुशोभित करना, सम्मानित करना दे० आगे 'अञ्चित' 4 प्रार्थना करना, इच्छा करना, 5 बुदबुदाना, अस्पष्ट बोलना। प्रेर० या चु० उभ०–प्रकट करना प्रकाशित करना,–मुदमञ्चय गीत० १०। उपसर्गों के साथ प्रयोग, अप–दूर करना, हटाना हटवाना, आ झुकाना, उत्–1 ऊपर उठना 2 उन्नत होना, प्रकट होना, उदञ्चनमात्रमस्य ग० ल० ६ उप खींचना, (जल) ऊपर निकालना, नि–1 झुकाना, इच्छा करना 2. कम करना, अपेक्षा करना–न्यञ्चति वयसि प्रथम–भामि० २।४७ परा–मोड़ना, मुड़ना–यावान्यञ्चन्ति पराञ्चन्ति द्विरदाना रदा इव–भामि० १।६५, परि–घुमाना भंवर में डालना, मरोड़ना, वि–खींचना, नीचे को झुकना, फैलना फैलाना, सम् भींच करना, इकट्ठे हांकना, इकट्ठे झुकना।

अञ्चल–ल [अञ्च्+अलच्] 1 वस्त्र का छोर या किनारा, गोट या झालर औष्ठाञ्चलमिव पीनस्तनजघनाया —उद्भट 2 कोना या आंख का बाहरी कोण–दृगञ्चलै पश्यति केवल मनाक्–उद्भट।

अञ्चित (भू० क० कृ०) [अञ्च्+क्त] 1 (क) झुका हुआ, झुका हुआ, रघु० १८।५८, (ख) धनुषाकार, सुन्दर (जैसे कि भौंह), °अञ्चितपक्ष्मन् रघु० ५।७६, छल्लेदार, घुंघराले (जैसे कि बाल); 2 सम्मानित, अलङ्कृत, सुशोभित, शोभायमान, सुन्दर; पदेषु लीलाञ्चितविक्रमेषु–कु० १।३४, °ताम्यां गताभ्याम्–रघु २।१८, ९।२४, 3 खिला हुआ, बुना हुआ, व्यवस्थित–अर्थान्वितता सत्वरमुत्थितायां (रचनायां)–रघु० ७।१०, अर्थयुक्त या पिरोया हुआ। सम०–भ्रू धनुषाकार या सुन्दर भौंहों वाली स्त्री।

अञ्च् (चुरा० पर० सक० अञ्चित्) [कहीं कहीं–आत्मनेपद] अनक्ति–अञ्चते, अञ्चत) 1. देखना, जानना, रंग पोतना 2. स्पष्ट करना, प्रस्तुत करना, चित्रण करना 3 जाना 4 चमकना 5 सम्मानित करना, सत्कार करना 6 सजाना, प्रेर०–1 जानना, 2 बोलना, चमकना उपसर्गों के साथ, अभि–उपकरण जुटाना, सुसज्जित करना, अभि–1 लीपना, सानना 2. कलुषित करना, मलिन करना, अभिव्यि– प्रकट करना, व्यक्त करना; आ– 1 लेप करना 2. सरस बनाना, तैयार करना, 3 सम्मानित करना, वि–प्रकट करना, व्यक्त करना, जाहिर करना–अकिञ्चनत्वं मम जन्मनि व्यनक्ति रघु० ५।१६, शि० २६।

अञ्जन [अञ्ज्+ल्युट्] (पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम दिशा के) रक्षक हाथी,–न 1 लीपना पोतना, मिलाना 2 प्रकट करना, व्यक्त करना 3 काजल या सुरमा जो आंखों में लगाया जाता है,–विलोचने दक्षिणमञ्जनेन सम्भाव्य–रघु० ७।८ अमुनैव उत्त० ४।१९, मृच्छ० १।३४, (आल० भी) अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नम ॥ शिक्षा० ४५.(तु० दारिद्र्य परमाञ्जनम्) 4 लेप सौन्दर्यवर्धक उबटन 5 मसी 6 आग 7 रात्रि 8 (–नं, –ना) (मा० शा०) व्यञ्जनार्थ, व्यञ्जनार्थ के प्रकट होने की प्रक्रिया, अनेकार्थक शब्द का प्रयोग जिसका प्रसङ्गविशेष अर्थ होता है–अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद्व्यापृतिरञ्जनम् ॥ काव्य २, दे० व्यञ्जना भी। सम०–औघस् (नपु०) आंख का पानी, आंसू का सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जना (अञ्ज्+ल्युट्+टाप्) 1 उत्तर भारत की हथिनी 2. हनुमान् या मारुति की माता।

अञ्जलि [अञ्ज्+अलि] 1 दोनों खुले हाथों का मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसंपुट, अञ्जलिभर बन्धु–नूपुरो मृधिकाञ्जलिः– पंच० १।२५, प्रवीणं पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्–वेणी० १।१, अञ्जलिभर फूल, इसी प्रकार–अञ्जल्याञ्जल्यो दत्त– आ० ३।१०५, दस अंजलियां अर्थात् जल से तर्पण, –यथाञ्जलिपुटपेयम्–वेणी० १।४, अंजलि रघु,–बंध, कृ या –बांधा, हाथ जोड़कर नमस्कार करना 2 अत एव सम्मान या नमस्कार का चिह्न, रघु० ११।७८, 3 अनाज की नाप=कुडव। सम०–कर्मन् (नपु०) हाथ जोड़ना, आदरपूर्वक नमस्कार;–कारिका मिट्टी की गेंडिया,–पुटः–ट दोनों खुले हाथों को जोड़ने से बने कटोरे के आकार का गर्त, हाथ की खुली हथेलियां।

अक्षशलिका [अक्षशलिरिव कायति प्रकाशते-कै+क+टाप्] एक छोटा चूहा।

अक्षत (वि०) [क्षिमयाम्-अक्षयती, अक्ष्+अतच्] कुटिल, टेढ़ा, ईमानदार, सच्चा।

अक्षतात (अव्य०) 1. ठीक तरह से 2. यथावत्, उचित रूप से, ठीक तरह से-दिधक्षे अह पलायनव्यक्षताक्ष-क्षतया-रघु० १९।३१ 3. शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

अक्षिश्रवस् -वस् [अक्ष्+इण्क्ष् इण्वच् वा] सूर्य।

अक्षीरः-र [अक्ष्+ईरन्] अक्षीर वृक्ष की जातियों और उनके फल।

अट् (भ्वा० पर० अक० सेट् आ० विरल) [अटति, अटित] इधर उधर घूमना (अधि० के साथ), (कई बार कर्म० के साथ), जो बटो विक्षामट-सिद्धा० 'भिक्षा मागने आओ - आट नैकटिकाध्वान्-भट्टि० ८।१२, (सन्नन्त) अटाट्यते, स्वभावतः इधर उधर घूमना जैसे कि कोई साधु संत घूमता है।

अट (वि०) [अट्+अच्] घूमने वाला; (समास-प्रयोग) :

अटनं [अट्+ल्युट्] घूमना, भ्रमण करना—भिक्षा°, रात्रि° आदि।

अटनिः-नी (स्त्री०) [अट्+अनि ङीष् वा] धनुष का सर्वोच्च सिरा, निम्नतः स्थलनिवेशिनाटनी कोटिमेव धनुषो अधिरूढवान्-रघु० ११।१४।

अटा [अट्+अच्+टाप्] साधु संतों की भाँति इधर उधर घूमने की आदत, इसी प्रकार अट्वर्या।

अटच (क) प [अट+कच्+क] अडूसा वासक का पौधा।

अटवि-वी (स्त्री०) [अट्+अवि ङीष् वा] वन, जंगल -आरुह्यतामटव्या अटवीम्-म० २।

अटविकः [अटवि—ठन्] वन में काम करने वाला, दे० 'आटविक'।

अटट् (भ्वा० आ०) 1. वध करना 2 अतिक्रमण करना, पार जाना (आलं० कर्म० के भी)।, -प्रेर०-1 हटाना, कम करना 2. चुना करना, तिरस्कृत करना।

अटट (वि०) [अट्ट्+अच्] 1. ऊँचा, उच्चस्वरयुक्त 2 बार-बार होनेवाला, लगातार आने वाला 3 मूर्ख, सुस्त -टः [अट्ट्+घञ्] 1. अटारी 2 कमरा, मीनार, बुर्ज-अरेरमार्गाट्ट इव-रघु० ६।६७ 3 हाट, मंडी 4 महल, विशाल भवन,-टं भोजन, खाना, अट्टहास अनपदा -महा० (अट्टन् अट्टम् मूल विशेष देखो ते-नीलकंठ)। सम०-अट्टहासः ठहाका,-हासः-दूषितं, -हासं खोर की हंसी या ठहाका, शिव का अट्टहास -व्यवकस्य-शेष० ५८; -हासिन् (पुं०) 1.शिव, 2. ठहाका लगाकर हँसने वाला।

अट्टकः [अट्ट्+अच् स्वार्थे कन्+टाप्] चौबारा, महल।

अट्टालः-अट्टालकः [अट्टं इव अलति-अल्+अच् स्वार्थे कन्] अटारी, बालाखाना, चौबारा, महल।

अट्टालिका [अट्टाल्+स्वार्थे कन्] महल, उत्तम भवन। सम०-कारः राज, चिनाई करने वाला, (राजमहलों का निर्माता)।

अट्टूषं [अट्ट्+स्यूट्] डाल।

अड् (भ्वा० पर०) 1. शब्द करना 2. (दिवा० आ०) सांस लेना, जीना ('अन्' के स्थान पर)।

अण (ण) क (वि०) [अण्—अच् कुत्सायां कप् च] बहुत छोटा, तुच्छ, नगण्य, अणम इत्यादि, समास में-'हलका' और 'हीनावस्था' अर्थ को प्रकट करता है, 'कुलाल-सिद्धा० हेम कुम्हार।

अणिः (स्त्री०-अणी) [अण्+इन् ङीष् वा] 1. सुई की नोक 2 धुरे की कील, कील या काबला जो गाड़ी के चक्र को रोकने के लिए लगाया जाय 3. सीमा।

अणिमन् (पुं०) अणुता, अणुत्वं [अणु+इमनिच्, अणु+ता, अणु+त्व] 1. सूक्ष्मता, 2 लाघव प्रकृति 3. आठ सिद्धियों में से एक वैशेषिकों जिसके बल से मनुष्य 'अणु' जैसा छोटा बन सकता है।

अणु (वि०) (स्त्री०-णु-णवी) [अण्+उन्] सूक्ष्म, बारीक, नन्हा, अल्प, परमाणु-तावची-अणोरणीयान्-गम० ८।९, -णुः 1. अणु=अणु पर्यंतीकृत-सां० 2. जौ, बड़ा दाना-तु० "तिल का ताड़" से 2. समय का अंश 3 शिव का नाम। सम०-आ विश्लेषी,-शैषु लाघव प्रेम,-वादः अणु-सिद्धान्त, अणुवाद।

अणुक (वि०) [स्वार्थे कन्] 1 अतिसूक्ष्म, अत्यन्तह्रस्व, 2 सूक्ष्म, अत्यंत बारीक 3. तीक्ष्ण।

अणीयस्, अणिष्ठ (वि०) (अणु+ईयसुन्, अणु+इष्ठन्] तुच्छतर, तुच्छतम, अत्यंत तुच्छ; अणोरणीयांसम्-भग० ८।९।

अण्डः-डं [अद्+ड] 1. अण्डकोष 2. फोता, 3. अंडा-ब्रह्मा के बीजभूत अंडे से उत्पन्न होने के कारण 'संसार' की बहुधा 'ब्रह्मांड' कहलाता है 4. मृगनाभि या कस्तूरीकोष 5. वीर्य, 6. शिव। सम०-आवर्तनं बधिया करना, -आकार, -आकृति (वि०) अंडे के आकार का, अंडाकार, अंडाकृतिकार, (-रः-तिः) अंडकृत-कोशज(ज):-कोषकः फोते,-ज (वि०) अंडे से उत्पन्न, (-जः) 1. पक्षी, पंखदार जन्तु-मनु० ३।४२ 2. मछली 3. साँप 4 छिपकली 5. ब्रह्मा, (-जा) कस्तूरी,-टारः शिव का नाम,-वर्धनं,-वृद्धिः (स्त्री०) फोतों का बढ़ जाना,-नु (वि०) पंखदार जन्तु।

अण्डकः [अण्ड-स्वार्थे कन्] फोता,-कं छोटा अंडा-अण्डकंटकरक्षार्थमिव-शि० ९।९।

अण्डजः [अण्ड+जन्+ड] गरुड़।

अत्यारूढः [अत्य+ईरच्] पूर्ण विकसित पुरुष, बलवान् हृष्टपुष्ट पुरुष।

अत् (भ्वा० पर० अक० सेट्) [अतति, अत-अतित] 1 जाना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2 प्राप्त करना (बहुधा वै०) 3 बाधना।

अत्त (वि०) [न० ब०] नटरहित, खड़ी ढाल वाला,—ट्टः चट्टान, ढलवा चट्टान।

अत्तथा (अव्य०) [नञ्+तत्+था] ऐसा नहीं, °उचित (वि०) अनधिकारी, अनभ्यस्त।

अत्तदहेन (अव्य०) [नञ्+तदर्हेण न० त०] अनुचित रूप से, अनधिकृत रूप से।

अतत्त्वगुण (सा० शा०) 'अतद्गुणी', एक अलंकार का नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ—कारण के विद्यमान रहते हुए भी दूसरे के गुण को ग्रहण नहीं करता—काव्य० १०।

अतन्त्र (वि०) [स्त्री० —त्री] [न० ब०] 1 बिना डोरी का, या बिना संगीत के तार का 2 बिना लगाम का 3 विचारणीय नियम की कोटि से बाहर की वस्तु जो अनिवार्य रूप से बंधन की कोटि में न हो—ह्रस्व-ग्रहणमतन्त्रम् सिद्धा० 4 सूत्ररहित या अनुभव सिद्ध किया।

अतन्द्र-अतन्द्रित-अतन्द्रिल—(वि०) [नास्ति तन्द्रा यस्य—न० ब०, न तन्द्रित न० त०,न० त०] नीरोग, अम्लान, सतर्क, जागरूक, अतंद्रिता या स्वयमेव वृक्ष-कान्—कु० ५।१४, रघु० १७।२९।

अतपस्-अतपस्क वि० [न० ब०] धार्मिक तपश्चर्या की अवहेलना करने वाला।

अतर्क (वि०) [न० ब०] तर्कहीन युक्तिरहित,—क [न० त०] 1 युक्ति या तर्क का अभाव बुरा तर्क 2 तर्कहीन बहस करने वाला।

अतर्कित (वि०) [न० त०] न सोचा हुआ अप्रत्याशित,—तम् (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से। सम० आगत,—उपनत (वि०) अप्रत्याशित रूप से होने वाला, अकस्मात् होने वाला—उपनत दर्शनम्—कु० ६।५४।

अतल (वि०) [न० ब०] तल रहित न [न० त०] पाताल—ल शिव। सम०—स्पृश्,—स्पर्श (वि०) तल रहित, बहुत गहरा अथाह।

अतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1 इसकी अपेक्षा, इससे (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किमु पुरस्तात् ततश्चापि सामु—मृच्छ० ३, ६ 2 इस या उस कारण से, फलतः, सो, इस लिए ('यत्' 'यस्मात्' और 'हि' का सहसंबंधी—अभिहित या अध्याहृत) रघु० २।४३, ३।५०, कु० २।५ 3 यहाँ से, अब से या इस स्थान से, (—परम्,—ऊर्ध्वम्) इसके पश्चात्। सम०—अर्थ,—निमित्त इस कारण, फलतः, इस कारण से,—कृच्छ्र (अव्य०) इस ही लिए—ऊर्ध्वं अब से लेकर, इसके बाद,—परम् (क) इसके आगे, और फिर, (अपा० के साथ) इसके पश्चात् (ख) इसके परे, इससे आगे, भाग्यायत्तमतः परम्—शं० ४।१६।

अतसः [अत्+असच्] 1 हवा, वायु 2 आत्मा 3 अलसी के रेशों से बना हुआ कपड़ा (यह शब्द बहुधा तप० होता है)।

अतसी [अत्+असिच् ङीप्] 1 सन 2 पटसन 3 अलसी।

अति (अव्य०) [अत्+इ] 1 विशेषण और क्रिया-विशेषणों से पूर्व प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग—बहुत, अधिक, अतिशय, अत्यधिक उत्कर्ष का भी यह शब्द प्रकट करता है, अतिबूढ़े अत्यधिक दूर नहीं, क्रिया और कृदन्त रूपों से पूर्व भी प्रयुक्त होता है—स्वजातीं हयतिरिच्यते आदि 2 (क्रियाओं के साथ) ऊपर, परे, अति इ—परे जाना इसी प्रकार °क्रम, °वृ और °वह आदि ऐसे अवसरों पर 'अति' उपसर्ग समझा जाता है। 3 (क) (संज्ञा के संज्ञाओं के साथ) परे, पार करते हुए, ओर छोर, प्रमुख, पूज्य, उच्चतर, ऊपर, कर्मप्रवचनीय के रूप में द्वितीया विभक्ति के साथ, या बहुव्रीहि के प्रथम पद के रूप में, अथवा तत्पुरुष समास में सामान्यतः उत्कृष्टता और प्रमुखता के अर्थ को प्रकट करता है अतिगो, °गार्यः प्रशस्ता गौः आदि 'सजाकर' अधिक रखा, अथवा द्वितीय पद के साथ मिल कर इसका अर्थ—'अतिक्रान्त' होता है, परन्तु इस अवस्था में द्वितीय पद में दूसरी विभक्ति होती है अतिकर्म °मन्वेतिनिद्रा-न, °आदि अतिक्रान्ता मालाम् इसी प्रकार अतिमाल्य, इ० इसी प्रकार अति पेषम् कृत्वा—सिद्धा०। (ख) (कृदन्त शब्दों से पूर्व) अतिशय अत्यधिक, अतिबाढ़, उदा० °आदर अत्यधिक आदर, आज्ञा° अतिरिक्त आज्ञा, इसी प्रकार °अयम, °पूजा, °आलस्य इत्यादि (ग) अपादान, अनादर अवहेलना (अनुकम्पा) घृणा क्रोध (निन्दा) के अर्थ में यथा—अतिनिद्रय न सिद्धा सर्वाणि न कुरुते—सिद्धा०।

अतिकथा 1 अतिरंजित कहानी 2 निरर्थक भाषण।

अतिकदन [अति+कृत+ल्युट्] बहुत अधिक परिश्रम, अत्यधिक थकावट।

अतिकर (वि०) [अतिक्रान्तः कराम्—ब० स०] कोड़े को न मानने वाला, कोड़े की मार तक में न आने वाला।

अतिकराल (वि०) [अत्युत्कटं कराल यस्य—ब० ब०] भारी डील डौल वाला, विशालकाय।

अतिकर्कश (वि०) [अत्युत्कटः कर्कशः—प्रा० ब०] अति कठिन—शः बहुत बड़ा शब्द, १२ रात्रियों तक कठिन तपस्या करने का व्रत; मनु० ११।२१३—४।

अतिक्रमः [अति+क्रम्+घञ्] 1. सीमा का अतिक्रमण, हद से आगे बढ़ना 2. कर्तव्य या अधिकार का भंग, उल्लंघन, मर्यादा का अतिक्रमण, अनधिकार प्रवेश, अवज्ञा, चोट, विरोध, आक्रमण" स्वामी अवस्था-क्रमेण भूतये—महावीर० ३।१०, 3. बीतना (समय का) गुजरना—अनेकशतवत्सरातिक्रमेऽपि—उत्त० ४, 4. जीत लेना, बढ़ जाना (बहुधा 'पुर' के साथ)—त्वयातिपुरातिक्रमः 5. उपेक्षा, भूल, अशिष्टता 6. चोरी आक्रमण 7. आधिक्य 8. दुष्कर्म 9. दुर्व्यवहार।

अतिक्रमणं [अति+क्रम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, समय का बीतना, आधिक्य, दोष, अपराध।

अतिक्रमणीय (वि०) [अति+क्रम्+अनीयर्] मर्यादा भंग करने के योग्य, उपेक्षा करने के योग्य अथवा उल्लंघन करने के योग्य "मे ये सुहृदाज्ञाम्—उ० २, ३, ६, ७।

अतिक्रान्त (वि०) [अति+क्रम्+क्त] आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, परे पहुंचा हुआ आदि—ओऽतिक्रान्त. अवणविषयं—वेणी० १०।१, बीता हुआ गया हुआ, पहला, (—तं) अतीत विषय, अतीत की बात, अतीत।

अतिक्रान्तद्रुह (वि०) [अतिक्रान्त. चदुहाम्—प्रा० स०] चारपाई रहित, चारपाई के बिना काम चलाने वाला।

अतिग (वि०) [अति+गम्+ड] (समास में) बढ़ने वाला, बढ़चढ़कर काम करने वाला, सर्वोत्कृष्ट रहने वाला सर्वलोक" मुद्रा० १।२, किंवौषधपथातिगैरुपहतो महाव्याधिभि—मुद्रा० ६, औषधियों के प्रभाव को अनादृत करने वाले रोगों के द्वारा।

अतिगम्य (वि०) [अतिगमिनो मार्गो पन्थ—ब० स०] अत्यन्त सीधा मार्ग वाला, —यः पथिक।

अतिगत (वि०) [गामतिक्रान्त प्रा० स०] 1. अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल बड़ा 2 मर्यादातीत।

अतिगुण (वि०) [गुणमतिक्रान्त प्रा० स०] 1. बड़े बड़े गुणों वाला, 2 गुणरहित, निकम्मा, —णः अत्यन्त अच्छे गुण।

अतिगौ (स्त्री०) [गामतिक्रम्य तिष्ठति] अत्यन्त बढ़िया गाय।

अतिग्रह (वि०) [ग्रहम् अतिक्रान्त—प्रा० स०] दुर्दोष,—हः, —ग्रहः 1 आनेन्द्रियों के विषय—जैसे त्वचा का स्पर्श जिह्वा का रस आदि, 2. सत्य ज्ञान 3. आगे बढ़ जाना, दूसरों को पीछे छोड़ देना—आदि।

अतिग्रह (वि०) [शत्रूनतिक्रान्त—प्रा० ब०] शत्रुओं के ऊपर विजय प्राप्त करने वाला।

अतिघट (वि०) [अति+घट+अच्] बहुत परिमाणशील, अत्यधिक, —टा कमलिनी का पौधा, पद्मिनी, स्थल-पद्मिनी, पद्मचारिणी लता।

अतिघटनं [अति+घट्+ल्युट्] आत्यधिक अभ्यास, अधिक से अधिक करना।

अतिचरः [अति+चर्+घञ्] 1. मर्यादा का उल्लंघन, 2. आगे बढ़ जाना 3. अतिक्रमण 4. ग्रहों की स्वरित गति, ग्रहों का एक राशि पर योगफल समाप्त हुए बिना दूसरी राशि पर चले जाना।

अतिचारः, अतिचरणं, अतिचर्या [अतिचरः घञ्—प्रा० स०] कुकुरमुत्ता, खुंब; सोवा, सौंफ का पौधा।

अतिचित्त (वि०) [अतिक्रान्तो मनस्] अनुचित, जो आवश्यक न हो।

अतिजात (वि०) [अतिक्रान्त. जातं—जातिं जनकं वा] पिता से बढ़ा हुआ।

अतिजीवं [अति+जीव्+क्त] (पक्षियों की) असाधारण उड़ान।

अतितराम्-अतितमाम् (अव्य०) [अति+तरप् (तमप्)+आम्] अधिक, उच्चतर (अथवा के साथ) 2. अत्यधिक, अत्यंत, बहुत अधिक, बहुत।

अतितृष्णा [तृष्णामतिक्रम्य—प्रा० स०] तृष्णा, अत्यधिक लालच या लालसा, "त्या न कर्तव्या—पंच० ५—अत्यधिक लालच नहीं करना चाहिए।

अतिथिः [अतति अश्नाति, न तिष्ठति—अत्+इथिन्] मनु के अनुसार 'यात्री' का यथार्थ—एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्बाह्मण स्मृत। अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते। मनु० ३।१०२, अभ्यागत (आत्म० भी) अतिथिनेव निवेदितम्—म० ४, कुसुमलतामिवातिथे—म० ६—शिव अथवा स्वागत के योग्य अभ्यागत। सत्य०—क्रिया,—पूजा,—सत्कार,—सत्क्रिया,—सेवा अभ्यागतों का सत्कारयुक्त स्वागत, आतिथ्यक्रिया, अभ्यागतों की सेवा,—धर्मः आतिथ्य करने का अधिकार, अभ्यागतों का सत्कार।

अतिदानं [अति+दा+ल्युट्] बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता,—अतिदाने बलिर्बद्धः—चाण० ५०।

अतिदेशः [अति+दिश्+घञ्] 1. हस्तान्तरण, समर्पण, सुपुर्दगी करना 2 (व्या०) अन्यत्र लागू होने वाली प्रक्रिया, सादृश्य के कारण प्रक्रिया, एक वस्तु के धर्म का दूसरी वस्तु पर आरोपण—अतिदेशो नाम इतरधर्मस्य इतरस्मिन् प्रयोजनाद आदेशः (मीमांसा), या, अन्यत्रैव प्रवृत्तायाः कृत्स्नायाः धर्मसंहतेः। अन्यत्र कार्यतः प्राप्तिरतिदेशः स उच्यते। "गौरवयो गवयः" यह अतिदेश या सादृश्य का निदर्शन है।

अतिदेश (वि०) [देशमतिक्रान्त—प्रा० स०] देशों से बढ़ा हुआ, अनौचित्य, अनुपयुक्त, अनुचितीय, बेमौके—विषा विरुद्धदेशवर्तिनश्च कथा—का० ५—देशों (दूरत्व और व्यवधान) से परे हुई।

अतिदेशकः (पुं०) [अतिदेशमर्हति वुल्] अतिदेशों का अनुवेदन या घोषणा।

अतिदेशिक (वि०) [विद्यामतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1. बहुत बोलने

वाला, 2 निद्रा से वंचित, निद्रारहित,—ं निद्रा के अभाव से परे—ा बहुत अधिक सोना ।

अतिनु-अतिनी (वि०) [अतिक्रान्त. नावम्—प्रा० स०] नाव से उतरा हुआ, नाव से भूमि पर आया हुआ ।

अतिपञ्चमी [पञ्चवर्षमतिक्रान्ता प्रा० स०] पांच वर्ष से अधिक अवस्था की लड़की ।

अतिपतनं [अति+पत्+ल्युट्] उड़कर आगे निकल जाना, भूल, उपेक्षा, अतिक्रमण, अत्यधिक, सीमा से बाहर जाना ।

अतिपतिः [अति+पत्+क्तिन्] 1 सीमा से परे जाना, समय का बीतना, 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

अतिपत्रः [अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य-ब० स०] सागौन का वृक्ष ।

अतिपथिन् (पु०) [पन्थानमतिक्रान्त—प्रा० स०] सामान्य सड़कों की अपेक्षा अच्छा मार्ग, सन्मार्ग ।

अतिपर (वि०) [अतिक्रान्त परान्—प्रा० स०] जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया है, —र वह शत्रु जो शक्ति में बढ़ा चढ़ा हो ।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक जान पहचान या घनिष्टता—कि० – अतिपरिचयादवज्ञा— (अतिपरिचय से होत है अवहि अनादर भाय) ।

अतिपातः [अति+पत्+घञ्] 1 (समय का) बीत जाना 2 उपेक्षा, भूल, अतिक्रमण—न वेदन्यकार्यातिपात श० १, (यदि इस प्रकार दूसरे कर्तव्य की उपेक्षा न की गई), सर्वसम्मत नियम या प्रथाओं का उल्लंघन, 3 आ पड़ना, घटना 4 दुर्व्यवहार या दुष्प्रयोग 5 विरोध, वैपरीत्य ।

अतिपातकः [अतिपात–स्वार्थे कन्] बड़ा जघन्य पाप, व्यभिचार ।

अतिपातिन् (वि०) [अति+पत्+णिच्+णिनि] गति में आगे बढ़ जाने वाला, शिप्रतर (समास में) रघु० ३ ।३० ।

अतिपात्य (वि०) [अति+पत्+णिच्+यत्] विलंबित या स्थगित करने योग्य–कामममनिपात्य धर्मकार्यं देवस्य–श ५ ।

अतिप्रबंधः [अतिशयित प्रबन्ध –प्रा० स०] अत्यत सातत्य, बिल्कुल लगा होना, °प्रहितास्त्रवृष्टिभि –रघु० ३।५८ ।

अतिप्रगे (अव्य०) [अति+प्र+गै+के] प्रभात में बहुत सवेरे, प्रभात काल में–मनु० ४।९२ ।

अतिप्रश्नः [अति–प्रच्छ्+नङ्] इन्द्रियातीत सत्यता के विषय में प्रश्न, तंग करने वाला तर्कहीन प्रश्न–उदा० बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य के प्रति ब्रह्म विषयक प्रश्न ।

अतिप्रसङ्गः, अतिप्रसक्तिः (स्त्री०) [अति+प्र+सञ्ज्+घञ् क्तिन् वा] 1 अत्यधिक लगाव, 2 घृष्टता 3 किसी (व्या०) नियम का व्यर्थ अधिक विस्तार अर्थात् अतिव्याप्ति 4 बहुत बना सपर्क 5. प्रपञ्च, अलमतिप्रसंगेन–मुद्रा० १ ।

अतिबल (वि०) [ब० स०] बहुत बलवान् या शक्तिशाली,—लः अग्रगण्य या बेजोड़ योद्धा,—लं बड़ा बल, भारी शक्ति,—ला एक शक्ति शाली मंत्र या विद्या जिसे विश्वामित्र ने राम को सिखाया ।

अतिबाला [अतिक्रान्ता बाला बाल्यावस्थाम्—प्रा० स०] दो वर्ष की अवस्था की गाय ।

अतिभर (आ) रः [प्रा० स०] अत्यधिक बोझ, भारी वजन, सा मुक्त कठ व्यसनातिभारात् चन्द–रघु० १४।६८ अत्यधिक रज के कारण । सम०–ग. लक्षण ।

अतिभवः [अति+ भू०+णिच्+अच्] उत्कृष्टता ।

अतिभीः (स्त्री०) [अति+भी+क्विप्] बिजली, इन्द्र के वज्र की कौंध ।

अतिभूमिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 आधिक्य, पराकाष्ठा, उच्चतम स्तर °मि गम्, या, आधिक्य या पराकाष्ठा तक पहुंचना—तत्र सर्वलोकस्य °मिगत प्रवाद—माल०७, दूर तक प्रसिद्ध,—शि० १।७८, १०।८० 2 साहसिकता, अनौचित्य, औद्धत्य की सीमाओं का उल्लंघन करना—शि० ८।२० 3 प्रमुखता, उत्कृष्टता ।

अतिमतिः (स्त्री०) —मान [प्रा० स०] अहंकार, बहुत अधिक घमंड, अतिमाने च कौरवा —वाण० ५० ।

अतिमर्त्य-मानुष (वि०) अतिमानव ।

अतिमात्र (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम् —प्रा० स०] मात्रा से अधिक, अत्यधिक, अतिशय—°मुद्यमानि—श० ४।३, जिसका बिल्कुल समर्थन न किया जा सके, —मुनिसुतैस्त्वामतिमात्रकशिताम्—कु० ५।४८, –त्र —त्रम्, त्रः (अव्य०) मात्रा से अधिक, अतिशय अत्यधिक ।

अतिमाय (वि०) [अतिक्रान्तो मायाम्—प्रा० स०] पूर्णतः मुक्त, सामाजिक माया से मुक्त ।

अतिमुक्त (वि०) [अतिशयेन मुक्त —प्रा० स०] 1 पूर्णरूप से मुक्त 2 बजर 3 मोतियों (की माला) से बढ़ कर,—क्तः,—क्तकः एक प्रकार की लता (माधवी) जो आम की प्रिया के रूप में आम के वृक्ष पर लिपटी रहती है ।

अतिमुक्ति (स्त्री०) अतिमोक्ष [प्रा० स०] (मृत्यु से) बिल्कुल छुटकारा ।

अतिरंहस् (वि०) [अतिशयित रंहो यस्मिन्—ब० स०] बहुत फुर्तीला या शिप्रतर —सारथेर्नातिरंहसा—रघु० १।५ ।

अतिरथः [अतिक्रान्तो रथम् –प्रा० स०] एक अद्वितीय योद्धा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही युद्ध करता है (अमितान्योधवेद्यस्तु सप्रोक्तोऽतिरथस्तु स) ।

अतिरथः [प्रा० स०] बड़ी चाल, द्रुत गमन, हड़बड़ी।
अतिरथन् (पु०) [प्रा० स०] 1 असाधारण या उत्कृष्ट राजा 2 राजा से बढ़-चढ़ कर।
अतिरात्रः [प्रा० ब०] 1 ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग 2 रात्रि का मध्य भाग।
अतिरिक्त (वि०) [अति+रिच्+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ 2 फालतू 3 अत्यधिक 4 अद्वितीय, उत्तम।
अतिरिच् (स्त्री०) रेफः [अति+रिच्+क्विप्] 1 आधिक्य, अतिशयता, महत्ता, गौरव 2 समधिकता, अधिशेष, बाहुल्य 3 अन्तर।
अतिरिच् (पु०) [अति+रच्+क्विप्] 1 छुटना, (स्त्री०—च्) एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री।
अतिरोमन् (स्त्री) लक्ष (वि०) [अति+रोमन् (लोमन्)+अच्] बहुत बालों वाला, बहुत रोम वाला,—कः 1 एक जंगली बकरा 2 बड़ा बन्दर।
अतिलंघनं [अति+लङ्+ल्युट्] 1. अत्यधिक उपवास रखना 2 अतिक्रमण।
अतिलङ्घिन् (वि०) [अति+लङ्+णिनि] लांघनेवाला या भूलें करने वाला।
अतिलम्बत् (वि०) [अतिशयित लम्ब+शतृ—ब० स०] बहुत बड़ा, बड़ा, अधिक आगे का।
अतिलम्बीयस्क (पु०) [प्रा० स०] जो वर्ण और आश्रमों की मर्यादा से परे हो।
अतिलवनं [अति+लू+ल्युट्] क्षम्य अपराध, सामान्य अपराध, दण्ड से मुक्ति-इस प्रकार के दस अपराधों का वर्णन मनु ने किया है—मनु० ८।३१०
अतिलविन् (वि०) पार करने वाला, दूसरे से आगे निकलने वाला, आगे बढ़ने वाला, अतिक्रमण करने वाला, उल्लंघन करने वाला।
अतिवादः [अति+वद्+घञ्] अतिकठोर, गाली और अपमान युक्त वचन, अभर्त्सना जिसको-अतिवादांस्तितिक्षेत मनु० ६।४७।
अतिवादिन् [अति+वद्+णिनि] बहुत बोलनेवाला, वाग्मी।
अतिवाहनं [अति+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 बिताना, यापन 2 बहुत अधिक परिश्रम करना या बहुत बोझा उठाना 3 प्रेषण, भेजना, छुटकारा पाना।
अतिविकट (वि०) [प्रा० स०] भीषण—टः दुष्ट हाथी।
अतिविषा [प्रा० स०] अतीस नामक विषैली औषधि का पौधा।
अतिविस्तरः [प्रा० स०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता।
अतिवृत्तिः (स्त्री०) [अति+वृत्+क्तिन्] आगे बढ़ जाना, अतिक्रमण, अतिरंजना।
अतिवृष्टिः (स्त्री०) [अति+वृष्+क्तिन्] अत्यधिक या भारी वर्षा, ऋतु विध्वंसक ६ विपत्तियों में से एक; दे० ईति।
अतिवेल (वि०) [अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां कूलं वा—प्रा० स०] अत्यधिक, फालतू, सीमारहित,—लं (क्रि० वि०) 1 अत्यधिकता से, 2 बिना ऋतु के, बिना मौसम के।
अतिव्याप्तिः (स्त्री०) [अति-वि+आप्+क्तिन्] 1 किसी नियम या सिद्धान्त का अनुचित विस्तार 2 प्रतिज्ञा में अनभिप्रेत वस्तु का मिला लेना, 3 लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य अनभिप्रत वस्तु का भी आ जाना, (न्याय में) जिसके फलस्वरूप वह वस्तुएँ भी सम्मिलित हो जायँ जो लक्षण के अनुसार नहीं आनी चाहिए, लक्षण के तीन दोषों में से एक।
अतिशयः [अति+शी+अच्] 1 आधिक्य, प्रमुखता, उत्कृष्टता; वीर्य° रघु० ३।६२, तस्मिन् विधानातिशये विधातुः रघु० ६।११, 2 श्रेष्ठता (गुण, पद और परिमाण आदि की दृष्टि से); समास में प्रायः विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर "अधिकता के साथ" अर्थ होता है· आलीढातिशयप्रेक्ष्यः—रघु० १७। २५, (वि०) श्रेष्ठ, प्रमुख, अत्यधिक, बहुत बड़ा, बहुल। सम०—उक्तिः (स्त्री०) 1 बढ़ाकर या अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहे हुए वचन, अतिरंजना 2 अलंकार जिसके भा० द० कार ने ५ भेद तथा काव्य प्रकाशकार ने ८ भेद माने हैं।
अतिशयन (वि०) [अति+शी+ल्युट्] आगे बढ़ने वाला (समास में) बड़ा, प्रमुख, बहुल —नं आधिक्य, बहुतायत, बहुलता।
अतिशयालु (वि०) [अति+शी+आलुच्] आगे बढ़ जाने या बढ़-चढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला।
अतिशायिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया, प्रमुख इदमुत्तममतिशायिनि व्यग्ये बाध्याद् व्यनिर्वुदैः कथित - काव्य० १, विक्रम० ५।२१, 2 अत्यधिक, बहुल।
अतिशायनं [अति+शी+ल्युट्] उत्कृष्टता, श्रेष्ठता।
अतिशायिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] आगे रहने वाला, आगे बढ़ जाने वाला 2 अत्यधिक।
अतिशेषः [अति+शिष्+अच्] अवशिष्ट भाग, बचा हुआ भाग (जैसे कि सभय का), कुछ अवशेष।
अतिशेषिन् [शेषसीमतिक्रान्त—प्रा० स०] सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ पुरुष।
अतिशय (वि०) [स्थानमतिक्रान्त—प्रा० स०] 1 क्रम में कुछ से बड़ा हुआ (जैसे कि सूअर) 2 कुछ से भी बड़ा नीचा; क्षुद्र सेवा।
अतिसक्तिः (स्त्री०) [अति+सञ्ज्+क्तिन्] घनिष्ठ संपर्क या आसक्ति, भारी आसक्ति।
अतिसंधानं [अति+सं+धा+ल्युट्] छल करना, धोखा देना, परातिसंधान° स० ५।२५, चालाकी, जालसाजी।

अतिसारः [अति+सृ+अच्] 1 आगे बढ़ने वाला 2 नेता
अतिसर्गः [अति+सृज्+घञ्] 1 स्वीकार करना, देना—रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो इच्छा हो) 3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।
अतिसर्जनं [अति+सृज्+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, सौंपना-कु० ३।३२, 2 उदारता, दानशीलता 3 वध करना 4 वियोग।
अतिसर्वे (वि०) [प्रा० स०] सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ,—र्वं परब्रह्म—अतिसर्वाय शर्वाय—मुग्ध०।
अति- (ती)सारः [अति—सृ+णिच्+अच्] पेचिश, अरोडों के साथ दस्तों का आना।
अति(ती)सारिन् (पु०) [अत्यत सारयति मल] अतिसार नाम का रोग जिसमें बारबार शौच जाना पडता है, (वि०) —अति(ती)सारकिन् (वि०) [अतिसारो यस्यास्ति—इनि, कुक् च] अतिसार रोग से पीडित, पेचिश रोग से ग्रस्त।
अतिस्नेह [प्रा० स०] अत्यधिक अनुराग, °हः पापशङ्की—श० ४, बुराई की आशंका में प्रकट होता है।
अतिस्वार्थ [प्रा० स०] अर्धस्वर तथा स्वरों के लिए पारिभाषिक शब्द।
अतीत (वि०) [अति+इ+क्त] 1 परे गया हुआ, पार गया हुआ 2 आगे बढ़ने वाला, परे जाने वाला, गत, बीता हुआ आदि, मृत, संख्यातीत या संख्यातीत अगण्य।
अतीन्द्रिय (वि०) [प्रा०स०] ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच के बाहर, —यः आत्मा या पुरुष (सांख्य दर्शन); परमात्मा, —यं 1 प्रधान या प्रकृति (सां० द०) 2 मन (वेदान्त)।
अतीव (अव्य०) [अति+इव] खूब, अधिकता के साथ, बहुत अधिक, बिल्कुल, बहुत ही, °पीडित, °हृष्ट आदि।
अतुल (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड, अद्वितीय, अतुलनीय, —लः 'तिल' का पौधा, तिल।
अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड।
अतुषार (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो। सम०-कर सूर्य, इसी प्रकार अतुहिनकर °रश्मि, °धामन्, °रुचि आदि।
अतृण्या [न० त०] थोडा सा घास।
अतेजस् (वि०) [न० ब०] 1 जो चमकीला न हो, धुंधला 2 दुर्बल, निर्बल 3 निरर्थक, इसी प्रकार अतेजस्क, अतेजस्विन्, —स् (पु०) [न० त०] धुंधलापन, छाया, अंधकार।
अत्ता [अद्+तक्+टाप्] 1 माता 2 बडी बहन 3 सास।
अत्ति (स्त्री०) अत्तिका [अद्+क्तिन्, स्वार्थे कन् च] बडी बहन आदि।
अत्न, अत्नु [अतति सतत गच्छति—अत्+न, नु वा] 1 हवा 2, सूर्य।
अत्यग्नि [प्रा० स०] पाचन शक्ति की बहुत अधिकता।
अत्यग्निष्टोम [प्रा० स०] ज्योतिष्टोम यज्ञ का दूसरा ऐच्छिक भाग।
अत्यङ्कुश (वि०) [प्रा० स०] निरंकुश, नियन्त्रण में रहने के अयोग्य, उच्छृंखल जैसे हाथी।
अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्त अन्तम् सीमाम्—प्रा० स०] 1 अत्यधिक, अधिक, बहुत बडा, बहुत बलवान्, °वैरम्—बडी शत्रुता, इसी प्रकार °मैत्री 2 सपूर्ण, पूरा, नितांत 3 अनन्त, नित्य, चिरस्थायी; कि वा तवात्यन्तवियोगमोघं हृतजीवितं—रघु० १४।६५, कस्यात्यन्तं सुखमुपनतम्—मेघ० १०९,—तं (अव्य०) 1 अत्यधिक, बहुत अधिक, 2 हमेशा के लिए, आजीवन, जीवनभर। सम०—अभाव नितान्त या पूर्ण सत्ताहीनता, नितान्त अनस्तित्व,—गत (वि०) सदा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आवेगा, कथमत्यन्तगता न मां दहेत्—रघु० ८।५६,—गामिन् (वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज या शीघ्र चलने वाला, 2. अत्यधिक, अधिक, —वासिन् (पु०) जो विद्यार्थी की भांति लगातार अपने गुरु के साथ रहता है, —संयोग 1 घनिष्ट सामीप्य, अबाध नैरन्तर्य, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे—, 2 अविच्छेद्य सहअस्तित्व।
अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] 1 बहुत अधिक या बहुत तेज चलने वाला 2 बहुत निकट 3 जो समीप न हो, दूर,—कं घनिष्ट सामीप्य, अव्यवहित पडौस या अत्यन्त समीप होना।
अत्यन्तीन (वि०) [अत्यन्त+ख] 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज चलने वाला—लक्ष्मी परपरीक्षां स्वमत्यन्तीनत्वमुन्नयं—भट्टि०।
अत्यय [अति+इ+अच्] 1 चला जाना, बीत जाना, काल° 2 समाप्ति उपसंहार, अवसान, अनुपस्थिति अन्तर्धान 3 मृत्यु, नाश 4 भय, चोट, बुराई—प्राणात्यये च सम्प्राप्ते—मनु० १।१७९, 5 दुःख 6 दोष, अपराध, अतिक्रमण 7. आक्रमण, अभियान।
अत्ययिक=दे० आत्ययिक।
अत्ययित (वि०) [अत्यय+इतच्] 1 बढा हुआ, आगे निकला हुआ, 2 उत्पीडन किया हुआ, जिस पर अत्याचार किया गया है।
अत्ययिन् (वि०) [अति+इ+णिनि] बढने वाला, आगे निकलने वाला।
अत्यर्थं (वि०) [प्रा० स०] अत्यधिक, बहुत बडा, बेहद, र्थं (क्रि० वि०) बहुत अधिक, निहायत, अत्यन्त।
अत्यह्न (वि०) [प्रा० स०] अवधि में एक दिन से अधिक रहने वाला।

अत्याकार [प्रा० स०] 1. घृणा, कलंक, निन्दा, इलाघात्याकारतदेवेषु पा० ५।११३४, 2 बड़ा ढील ढौल, विशाल शरीर।

अत्याचार (वि०) [आचार अति क्रान्त] बाधी हुई प्रथाओं और आचारों के विपरीत चलने वाला, उपेक्षक; —र आचारानुमोदित कार्यों का न करना, धर्म के विपरीत आचरण।

अत्यादित्य (वि०) [प्रा० स०] सूर्य की ज्योति से अधिक चमकने वाला, —अत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः—मेघ० ४३।

अत्यानन्दता [प्रा० स०] मैथुन के प्रति उदासीनता।

अत्याय [प्रा० स०] 1 अतिक्रमण, उल्लंघन 2 आधिक्य।

अत्यारूढ (वि०) [प्रा० स०] बहुत बढ़ा हुआ, —ढं,—ढि (स्त्री०) बहुत ऊँची पदवी, अभ्युदय।

अत्यावश्यक [प्रा० स०] 1 जीवन का सबसे बड़ा आश्रम —सन्यास 2 इस आश्रम में स्थित सन्यासिन्।

अत्याहितं [अति+आ+धा+क्त] 1 बड़ी विपत्ति भय, दुर्भाग्य, अनर्थ, दुर्घटना न किमप्यत्याहितम्—स० १, प्रायः विस्मयादिद्योतक के रूप में प्रयोग हाय गई, हाय रे 2 उद्दण्ड तथा साहसिक कार्य पांडुपुत्रैर्न किमप्यत्याहितमाचेष्टित भवेत् वेणी० २।

अत्युक्ति (स्त्री०) [अति-वच्+क्तिन्] बढ़ा चढ़ा कर कहना, अतिशयोक्ति, अधिकृष्ट रचीन विवरण—अत्युक्तौ यदि न प्रकुप्यसि मृषावादं च नो मन्यसे—उद्भट०, दे० अतिशयोक्ति भी।

अत्यूढ (वि०) [उपयमनतिक्रान्त—प्रा० स०] परीक्षित, विदग्ध।

अत्यूह [प्रा० स०] 1 गहन चिन्तन या मनन गंभीर तर्कना, 2 अनुमान।

अत्र (अव्य०) [इदम्+त्रल्—प्रकृते अधिकरणत्वम्] 1 इस स्थान पर, यहां—अपि संनिहितोऽत्र कुरुपतिः—स० १, 2 इस विषय में, बात में, मामले में, इस संबंध में। सम० अन्तरे (क्रि० वि०) इसी बीच में, —अर्घ्य (पुं०—अर्घ्यः) सम्मानसूचक विशेषण जो 'आदरणीय' 'सम्माननीय' 'माननीय श्रीमान्' अर्थ को प्रकट करता है तथा उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है जो वक्ता के पास उपस्थित या निकट विद्यमान हो, दूरवर्ती या परोक्ष के लिए तत्रभवत् शब्द है, °भवती =आदरणीय श्रीमती, (पूज्यं तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि), अत्र भवान् प्रकृतिमापन्न—स० २, वृक्षरोपणादेव परिज्ञातात्रभवती भवति—स० १।

अत्रत्य (वि०) [अत्रभव—अत्र+त्यप्] 1. इस स्थान का, या यहां से संबंध रखने वाला 2 यहां उत्पन्न, यहां पाया गया, या इस स्थान का, स्थानीय।

अत्रप (वि०) [न० ब०] निर्लज्ज, अविनीत, अशिष्ट।

अत्रि (सं० अत्रिन्) [अद्+त्रिन्] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेद के कई सूक्तों के द्रष्टा हैं। सम०——ज, —जात, —पुत्र, —नेत्रसमुद्भव, —प्रभव, —भवः चन्द्रमा, पु०,—अत्र नयन-समुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः—रघु० २।७५।

अथ (अव्य०) [अर्थ्+क पृषो० रलोपः] 1. मंगलसूचक शब्द जो किसी रचना के आरंभ में प्रयुक्त होता है—और जिसका अनुवाद 'यहां' 'अब'=मंगल, आरंभ, अधिकार, किया जाता है। परन्तु यदि सही रूप से देखा जाय तो 'अथ' का अर्थ 'मंगल' नहीं है, तो भी इस शब्द का उच्चारण या श्रवणमात्र 'मंगल' का सूचक समझा जाता है, क्योंकि यह शब्द ब्रह्मा के कण्ठ से निकला हुआ माना जाता है—ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेन मांगलिकावुभौ। और इसी लिए हम शांकरभाष्य में देखते हैं—अर्थान्तरप्रयुक्तः अथशब्दः श्रुत्वा मंगलमारचयति, अथ निर्बंधनम्, अथ योगानुशासनम् (बहुधा अथ में 'इति' शब्द का प्रयोग पाया जाता है—इति प्रथमोऽङ्कः समाप्तः—आदि) 2 तब, उसके पश्चात्—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते जायां वेनुं मुमोच—रघु० २।१, प्रायः 'यदि' या 'चेत्' का सहसंबन्धी 3. यदि, कल्पना करते हुए, अच्छा तो, ऐसी स्थिति में, परन्तु यदि—अथ कौतुकमावेदयामि—का० १४४, अथ मरणमवश्यमेव जन्तो किमिति मया मलिन यशः कुरुध्वम्—वेणी० ४, 4 और, इसी में तो और भी, इसी भांति-श्रीरोऽर्जुन—गंग० 5 प्रश्न आरंभ करते समय या पूछते समय, बहुधा प्रश्नवाचक शब्द के साथ—अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षे पत्नी—श० ७, 6. समाप्ति, सम्पूर्णता, अथ शब्दं व्याख्यास्यामः—वेद०, अब हम 'अर्थ' की (विवरण सहित) पूरी व्याख्या करेंगे 7. संदेह, अनिश्चितता-अथो नित्योऽनित्यः—गंग०। सम०—अपि (अव्य०) और भी, और फिर आदि (='अथ' बहुधा स्थानों पर),—किम् (अव्य०) और क्या, हां, ठीक ऐसा ही, बिल्कुल ऐसा ही, अवश्य ही, —च (अव्य०) और भी, इसी प्रकार, —वा (अव्य०) 1 या, 2. अधिकतर, क्यों, कदाचित्, पिछली बात को संशुद्ध करते हुए—गमिष्यामुपहास्यताम्—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्—रघु० १।३-४, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुम्—८।४५, दीवें कि न सहजाद्दमथवा रामेण किं दुष्करम्—उत्त० ६।४०।

अथर्वन् (पुं०)[अथ+च्छ+क्विप्] 1. अग्नि और सोम का उपासक पुरोहित 2 अथर्वा ऋषि की सन्तान-ब्राह्मण, (ब० व०), अथर्वा ऋषि की सन्तान, अथर्ववेद के सूक्त, (पुं०—अथर्वा तथा नपुं०—अथर्व), °वेदः अथर्ववेद को चौथा वेद माना जाता है, तथा विशेषतः

शत्रु—नाश के लिए अनेक अमंगलप्रार्थनाएँ और अपनी सुरक्षा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एवं दुर्भाग्य से बचाव के लिए असंख्य प्रार्थनाएं पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त दूसरे वेदों की भांति इसमें भी धार्मिक एवं औपचारिक संस्कारों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रार्थनाओं के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम०—वित्, —विद् (पुं०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, अथवा अथर्व-ज्ञान से संपन्न —गुरुणा अथर्ववित्ता कृतस्मित्य'—रघु० ८।४, १।५९।

अथर्वशिरस् [अथर्वन्+इस्, न टि] अथर्ववेद में निष्णात ब्राह्मण इसमें विदिष्ट संस्कारों के अनुष्ठान में कुशल ब्राह्मण।

अथर्वशिरस् [अथर्वन्+अच्-पृषो० दीर्घ] अथर्ववेद की अनुक्रमणिका पढ़ति।

अथवा =दे० 'अथ' के अन्तर्गत।

अद् (अदा० पर० सक० अनिट्) [अत्ति, अत्त—अद्य] 1 खाना, निगलना, 2 नष्ट करना 3 दे० 'अद्', प्रेर० खिलवाना, सन्नन्त० जिघत्सति—खाने की इच्छा करना।

अद, अद (वि०) [अद्+क्विप्, अच् वा] (समास के अन्त में) खाने वाला, निगलने वाला।

अदंष्ट्र (वि०) [न० ब०] दन्तहीन, —ष्ट्रः वह सांप जिसके जहरीले दांत तोड़ दिये गये हैं।

अदक्षिण (वि०) [न० त०] 1 जो दाता न हो अर्थात् दाता 2 जिसमें पुरोहितों को दक्षिणा न दी जाय, बिना दक्षिणा का (जैसे यज्ञ) 3 सरल, दुर्बलमना, मूर्ख 4 अनुपस्थित, अदक्ष या अपटु, गंवार, 5 प्रतिकूल।

अदक्षिण्य (वि०) [न० त०] 1 दक्ष का अनधिकारी, 2 दक्ष से मुक्त या बरी।

अदत् (वि०) [न० ब०] दन्तरहित, बिना दांतों का।

अदत्त (वि०) [न० त०] 1 न दिया हुआ 2 अनुचित तरीके से दिया हुआ 3 जो विवाह में न दिया गया हो, —ता अविवाहित कन्या—त्त वह दान जो रद्द कर दिया गया हो। सम०—आदायिन् (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जाता है—जैसे कि चोर, —पूर्वा वह कन्या जिसकी सगाई न हुई हो—अदत्ता पूर्वत्याज्यते—मालवि० ४।

अदन्त (वि०) [न० ब०] 1 दन्त रहित 2 वह शब्द जिसके अन्त में 'अत्' या 'अ' हो,—त्त अक।

अदन्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो दांतों से संबंध न रखता हो 2 दांतों के लिए अनुपयुक्त, दांतों के लिए हानिकारक।

अदभ्र (वि०) [न० ब०] अनल्प, प्रचुर, पुष्कल।

अदर्शनं [न० त०] 1 न दिखना, अनवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2. (व्या०) अन्तर्धान, लोप, लुप्ति -अदर्शनं लोपः पा० १।१।६०।

अदस् (सर्व०) [पु०-स्त्री०—असौ, नपुं०—अदः] वह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करना जो अनुपस्थित हो या वक्ता के समीप न हो)-इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्। अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्। 'यह' 'वहां' 'सामने' अर्थ को भी प्रकट करता है। 'अदस्' के सहसंबंधी 'तत्' के अर्थ में भी प्रायः प्रयुक्त होता है। परन्तु जब कभी यह 'संबंध वाचक सर्वनाम' के तुरन्त बाद प्रयुक्त होता है (योऽसौ, ये अमी आदि) तो इस का अर्थ होता है 'प्रसिद्ध' 'सुविख्यात' 'पूज्य', दे० तद् भी।

अदायु (वि०) [न० त०] 1 न देने वाला, कृपण 2 अपनी का विवाह न करने वाला।

अदादि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धातुओं का समूह, जो 'अद्' से आरम्भ होता है।

अदाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य—न० ब०] जो (संपत्ति में) हिस्से का अधिकारी न हो।

अदायाद (वि०) [न० त०] 1 जो उत्तराधिकारी न बन सके, 2 [न० ब०] जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो।

अदायिक (वि०) [स्त्री० —अदायिकी] [न दायमर्हति—नञ्+दाय+ठक् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी दावेदार न हो, जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो,—अदायिक धन राज्यगामि—काव्य० 2 [न० त०] उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला।

अदिति (स्त्री०) [दाप् लवने+क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 अदिति देवता, आदित्यों की माता, पुराणों में इसका वर्णन देवों की माता के रूप में किया गया है, 3 वाणी 4 गाय। सम०—ज, —नंदन देवता, दिव्य प्राणी।

अदुर्ग (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्गम न हो, जहां पहुंचना कठिन न हो 2 [न० ब०] वह स्थान जहां किला न हो—°विषय एक दुर्गरहित देश।

अदूर (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न हो, समीप (काल और देश की स्थिति में),—रे सामीप्य, पड़ोस -वसन्तदूरे किल चन्द्रमौलेः—रघु० ६।२४, जिसको दूरे वसंते इति अदूरभवः सिद्धा०, अदूरे-अ,-तः-रात्,-रे,-रेण (सम्प्रदान या संबंध के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अदृक् (वि०) [नास्ति दृग् अक्षि यस्य न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अदृष्ट (वि०) [नञ्-दृश्+क्त] अदृश्य, अनदेखा, °पूर्व=जो पहले न देखा गया हो; 2 अननुभूत 3 अदृष्टपूर्व, अनवलोकित, बिना खोजा हुआ, अज्ञात 4

अननुमत, अनभीप्सित, अनिष्ट,—वः 1 अदृष्ट 2 विपत्ति आपद, आरब्ध (शुभ या अशुभ) 3 शुभ तथा अशुभ दो कि सुख तथा दुःख के अनुवर्ती कारण हैं; 4 दैवी विपत्ति या वध (जैसा कि आग या पानी आदि से)। सम०—अर्थ (वि०) आध्यात्मिक या गूढ अर्थ वाला, आध्यात्मिक,—कर्मन् (वि०) अव्यावहारिक, अनुपयोगी —फल (वि०) जिसके परिणाम अदृश्य हों,—वश अदृष्ट कर्मों का आगे आने वाला फल।

अदृष्टिः (स्त्री०) [न० त०] बुरी या दैवप्रेरित दृष्टि, कुदृष्टि —दिष्ट (वि०) [न० ब०] अंधा।

अदेय (वि०) [न० त०] जो देने के लिए न हो, जो दिया न जा सके या दिया न जाना चाहिए,—वम् जिसका देना न उचित है और न आवश्यक है, इस श्रेणी में पत्नी, पुत्र, घरबार और कुछ अन्य वस्तुएँ आती हैं।

अदेव (वि०) [न० त०] 1 जो देवताओं की भाँति न हो, या दिव्य न हो 2 देवविहीन, अपवित्र, अधार्मिक—वः जो देवता न हो। सम०—मातृक (वि०) जहाँ वर्षा न हुई हो, माता की भाँति दूध पिलाने या पानी देने के लिए जहाँ वर्षा का देवता काम न करता हो,—विनश्यति क्षेमंदेवमातृकाधिराय तस्मिन्कुरवश्चकालते कि० १।१३।

अदेश [न० त०] 1 अनुपयुक्त स्थान 2 बुरा देश। सम०—काल अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त समय (वि०) अनुपयुक्त स्थान पर ठहरा हुआ उपयुक्त स्थान से विरहित।

अदोष (वि०) [न० ब०] 1 दोष बुराई और त्रुटि आदियों से मुक्त 2 अनालोचना आलोचना आदि साहित्य के दोषों से मुक्त द० दोष—अदोषौ शब्दार्थौ —काव्य० १ अथाप्त गुणदोषकाव्यम् सर० क० १।

अदोह [न० ब०] 1 वह समय जो दोहने के लिये अव्यावहारिक न हो 2 [न० त०] न दुहा जाना।

अद्धा (अव्य०) 1 सचमुच बिल्कुल, अवश्य, निस्सन्देह—रघु० १३।६५ 2 प्रकटन, स्पष्टता में—व्यालोलिप व्यनक्ति परिरब्धमद्धा —माघ० १।९५।

अद्भुत (वि०) [अद्-भू-क्त-तुक् —न भूतम् इति वा] आश्चर्यजनक विचित्र, °कर्मन्, °गुण, °दर्शन, °रूप, गूढ अलौकिक;—तः 1 आश्चर्य, आश्चर्यजनक बात या घटना, विलक्षण घटना चमत्कार 2 अचम्भा, अचरज, आश्चर्य (पु०) भी; —तः आठ या नौ रसों में से एक, अद्भुत (अनोखा) रस। सम०—आकरः —मन्दिर या और की आश्चर्यजनक खान,—रसः शिवका नाम।

अद्यग्नि—[अद्+मनिन्] अग्नि।

अद्यर (वि०) [अद्+क्यरच्] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

अद्य (वि०) [अद्+क्यप्] खाने के योग्य—द्यम् भोजन, खाने के योग्य पदार्थ, (अव्य०) आज, इस दिन—अद्य स्थां स्थरयति दारुण हृतात्मा:—आर्या० ५।२५, °रात्री—आज की रात, यह रात। सम०—अपि अभी, अब तक, आज तक, अभी नहीं, —गुप्त खेद जिसने यदि जयति नाद्यापि कुरुन्—वेणी० १।११, (चौरपंचाशिका के ५० श्लोक 'अद्यापि' से आरंभ होते हैं),—अवधि (अव्य०) 1 आज से लेकर, 2 आज तक—पूर्वम् पहले, अब, —प्रभृति (अव्य०) आज से, इस दिन से लेकर, अद्य प्रभृत्यवनतांगि तवास्मि दास —कु० ५।८६,—प्रसोत्र (वि०) आसन्नप्रसवा, वह स्त्री जिसका प्रसव काल निकट है—अद्यप्रसोत्रामवघट्टमे —पा० ५।२।१३।

अद्यतन (वि०) (स्त्री० —नी) [अद्य+ट्युल्, तुट् च] 1आज से संबंध रखने हुए, संकेत करते हुए या विस्तृत होते हुए; 2 आधुनिक,—नः चालू दिन, यह दिन, चालू दिन की अवधि, दे० 'अनद्यतन' भी,—नी (अर्थात् वृत्ति) कुछ प्रकार का नाम (=°भूत)।

अद्यतनीय=अद्यतन 1 आज का 2 आधुनिक।

अद्रव्यम्—[न० त०] तुच्छ वस्तु, निकम्मा पदार्थ; नाट्यशास्त्रे विहिता काचित्क्रिया कर्मकरी भवेत्—हि० प्र० ४३; निकम्मा या अकर्मण्य छात्र या विद्यार्थी।

अद्रि—[अद्+क्रिन्] 1 पहाड़ 2 पत्थर 3 बज्र 4 वृक्ष 5 सूर्य 6 मेघ-राशि, बादल 7 एक प्रकार का माप 8 सात की संख्या। सम०—इन्द्रः,—नाथः,—पतिः, —राजः आदि, 1 पर्वतों का स्वामी, हिमालय 2 शिव (कैलासपति) —कीला पृथ्वी —कन्या,—तनया,—नंदिनी,—सुता आदि पार्वती, —कूट लाल खड़िया, —भिद्,—भिद् (पु०) पहाड़ों का शत्रु या उन्हें तोड़ने वाला, इन्द्र का विशेषण, —द्रोणि-णी (स्त्री०) 1 पहाड़ की घाटी 2 पर्वत से निकलने वाली नदी,—पतिः,—राजः आदि, देखिये °ईश, —सम्भवः शिव, —शृंगम्, —शृङ्ग पहाड़ की चोटी,—सारः पहाड़ों का सत्व, लोहा।

अद्रोह—[न० त०] द्वेषराहित्य, बुराई का न होना परिमितता, मृदुता—मनु० ४।१२।

अद्वय (वि०) [नास्ति द्वय यस्य न० ब०] 1 दो नहीं, 2 अद्वितीय, अनुपम, एकमात्र,—यः बुद्ध का नाम, —यम् [न० त०] द्वैत का अभाव, एकता, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म और विश्व का तादात्म्य या प्रकृति और आत्मा का तादात्म्य, परम सत्य। सम०—वादिन् (=°वादिन्°) 1 विश्व और ब्रह्म तथा प्रकृति एवं आत्मा के तादात्म्य का प्रतिपादक 2 बुद्ध।

अद्वारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता जो नियमित रूप से द्वार न हो; —अद्वारेण न यातीयाद् द्वारं वेश्म वा पुरम्—मनु० ४।७३।

अद्वितीय (वि०) [न० ब०] 1 जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी,—न केवलं रूपे विशेष्यद्वितीया मालविका—मालवि० २; 2 बिना साथी के, अकेला, —यम् ब्रह्मा।

अद्वैत (वि०) [न० ब०] 1 द्वैत हीन, एकस्वरूप, एकस्वभाव, समभाव, अपरिवर्तनशील, न सुखदु खयो.—उत्त० १।३९, 2 बेजोड़, लासानी, एकमात्र, अनन्य, —तम् 1 द्वैत का अभाव, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म का विश्व या आत्मा के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ; दे० 'अद्वय' भी 2 परमसत्य या स्वयं ब्रह्म। सम०—वादिन्—अद्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी।

अधम (वि) [अध् + अम, धस्य स्थाने धादेश] निम्नतम, अवन्यतम, अत्यन्त कमीना, बहुत बुरा, नीच या निकृष्ट (गुण, योग्यता और पदादिक की दृष्टि से) (विप० उत्तम)।—मः निलंज्ज लम्पट,—धानी स्नातुमिती गतासि न पुनस्त्वाधमस्यान्तिकम्—काव्य० १, —मा निकम्मी गृहस्वामिनी। सम०—अङ्गम् पैर, —अर्धम् नाभि से नीचे का शरीर,—ऋणः, —ऋणिकः कर्जदार (विप० उत्तमर्ण),—भूतः, —भृतकः कुली, साइस।

अधर (वि०) [नञ् + धृ + अच्] 1 नीचे का, अवर, निचला 2 नीच, कमीना, अधम्य, गुणों में नीचे दर्जे का, घटिया, 3 निकृष्ट, दलित,—रः नीचे का (कभी ऊपर का) ओष्ठ, ओष्ठमात्र,—पल्लवविडम्बराष्ठी—मे० ८२; पिबसि रतिसर्वस्वमधरम्—श० १।२४,—रम् 1 शरीर का निम्नतर भाग 2 अभिभाषण, व्याख्यान (विप०—उत्तर), कभी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है। सम०—उत्तर (वि०) 1 उच्चतर और निम्नतर अच्छा और बुरा,—राज्ञ समदमेवाधयो व्यक्तिमधिष्यति—मालवि० १, 2 शीघ्र या विलम्ब से, 3 उलटे ढग से, उलट-पलट 4 निकटतर और दूरतर, —ओष्ठः नीचे का ओष्ठ,—कंठः ग्रीवा का निचला भाग, —पानम् चुम्बन, साम्प० अधरोष्ठ को पीना, —मधु,—अमृतम् ओष्ठों का अमृत,—स्वस्तिकम् अधोबिन्दु।

अधरस्थात्,—रतः,—स्थात्,—रात्,—रात्,—रेण (अव्य०) नीचे, तले, निचले प्रदेश में।

अधरीकृ (तना० उभ०) [अधर + च्वि + कृ] आगे बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना।

अधरोष्ठ (वि०) [अधर + ष्ठ] 1 नीचे का 2 निंदित, कलंकित, तिरस्कृत।

अधरेद्युः (अव्य०) [अधर + एद्युस्] 1 पहले दिन 2 परसों (जो बीत गया)।

अधर्म—[न० त०] 1 बेईमानी, दुष्टता, अन्याय; अधर्मेण अन्यायपूर्वक 2 अन्याय्य कर्म, अपराध या दुष्कृत्य, पाप। धर्म और अधर्म, न्यायशास्त्र में वर्णित २४ गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से सबद्ध रहते हैं, ये दोनों क्रमश सुख और दु ख के विशिष्ट कारण हैं, यह इन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं है, परन्तु इसका अनुमान पुनर्जन्म तथा तर्कना के द्वारा लगाया जाता है 3 प्रजापति या सूर्य के एक अनुचर का नाम,—र्मी साकार बेईमानी,—र्म्य विशेषकों से रहित, ब्रह्मा की उपाधि। सम०—आत्मन्, चारिन् (वि०) दुष्ट, पापी।

अधर्मा (न० ब०) विधवा स्त्री।

अधस्, **अधः** (अव्य०) [अधर + असि, अधरशब्दस्य स्थाने अधादेश] 1 तले, नीचे—यत्पल्वलो ध्रुवमपेतरयोऽपि किंचित् मग्नं।—शि० १।२, निम्नप्रदेश में, नारकीय प्रदेशों में या नरक में (प्रकरण के अनुसार 'अध' शब्द का अर्थ कर्तृकारक का होता है— 'अशुक आदि, अपादान के साथ—अधो वृक्षात् पतति या अधिकरण के साथ—अधो गृहे सेते), 2 सबधकारक के साथ सबधबोधक अव्ययों की भाँति प्रयुक्त 'के नीचे' के तले अर्थ को प्रकट करते हैं— नक्तंदिनम्' —श० १।१४, (अब द्विरुक्ति की जाती है या अर्थ होता है)—नीचे-नीचे या तले—अधोऽधो गच्छ पदमुपरिगतो स्वोकम्—भर्तृ० ३० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे में, नीचे हो नीचे—नवनलिनीपत्राधस्तात् पयोहरणम्—शि० १।५। सम० —अक्षजम् अधोवस्त्र, —अक्षज, दिग्—अक्षज दे० ऊपर —उपासनम् मैथुन,—कर हाथ का निचला भाग (करभ),—कर्मन् नीचे बढ़ जाना, हरा देना, अपमानित करना —गमनम् अधर अधर मुख खोदना गति (स्त्री०), गमन् पाल, 1 नीचे की ओर खिसना या उतरना उतरना 2 अपतन हार, —गर्भ (वि०) नीचा - चर नार, जिह्विका पर्यायेच्छा (मराठी में 'वदनीय' कहते हैं) —दिश् (स्त्री०) अधोबिन्दु दक्षिण का दिशा, —दृष्टि (स्त्री०) नीचे की ओर देखना पात 'दृष्टि दे० ऊपर, प्रान्तरः घास का बना आसन बिछाए करने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए, भाग, 1 शरीर का निचला भाग 2 किसी चीज का निचला हिस्सा—मुखवत्,—लोकः पाताल लोक, निम्नतर प्रदेश —मुख, वदन (वि०) नीचे को मुख किये हुए, संज्ञ 1 पतन, साहस 2 बड़ी सख्या रेखा, —वायुः अपानवायु, अपहारः, स्वस्तिकम् अधोबिन्दु।

अधस्तन (वि०) [स्त्री० नी] [अधस् + ट्युल्, तुट् च] निचला, निम्न स्थान पर स्थित।

अधस्तात् (क्रि० वि० या स० हो० अव्य०) नीचे, तले, अवर, के नीचे, के तले आदि (संबंधकारक के साथ) दे० अधः, धर्मेण गमनमूर्ध्वं गमनमधस्ताद्भवत्यधर्मेण—सां० का०।

अधाराग्नि:=अपाग्नि।

अधारक (वि०) [स्वार्थे कन् न० ब०] जो कामधारक न हो -°क मर्मतत्स्वांगम्—पंच० २।

अधि (अव्य०) [आ+धा+कि पृषो० ह्रस्व] 1 (धातु के साथ उपसर्ग के रूप में) ऊर्ध्व, ऊपर,—°रुह्, अधि उगना या ऊपर उगना, अधिकता के साथ भी 2 (पृथक् क्रि० वि० के रूप में) आगे बढ़ कर, ऊपर 3 (सं० हो० अव्य० के रूप में) (कर्म० के साथ) (क) ऊपर, आगे, पर, में (ख) संकेत करते हुए, के संबंध में, के विषय में (ग) (अधि० के साथ) आगे, ऊपर (किसी वस्तु पर प्रभुता या स्वामित्व प्रकट करते हुए) अधिभुवि राम 4 (ष० स० के पूर्व पद के रूप में) (क) मुख्य, प्रमुख, प्रधान,—°देवता प्रमुख देवता (ख) व्यतिरिक्त, फालतू, °अंशः अध्यर्ध दंत, अधिक, °अधिशेष, अत्यधिक परिनिन्दन।

अधिक (वि०) [अधि+क] 1 बहुत, अतिरिक्त, बृहत्तर (समास में संख्याओं के साथ) पंच, से अधिक—अष्टाधिक शतम् १००+८ १०८ 2 (क) परिमाण में बढ़कर, अधिक मूल्यवाला, यथेष्ट, अधिक, बहुल समास में या करण कारक के साथ (ख) अतिमात्र, बढ़ा हुआ, से भरा हुआ, पूर्ण, कुशल त्रिभुवनाधिकतया —शंकी० ३।३०, बड़ा, अधिक आयु का भवेयु रत्नाधिकेषु पूर्वम् शि० ७।२० 3 बहुत, अधिकतर, बलवत्तर ऊन न सत्त्वेष्वाधिको बभाव रघु० २।१४, बलवत्तर जन्तु ने अपने से दुर्बल जन्तु का शिकार नहीं किया 4 प्रमुख, आधारक, विशेष, विशिष्ट इत्याद्यायव्ययदानानि वैश्यस्य चाधिपत्यं च, प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा। या० १।११८, मनु० ७, 5 व्यतिरिक्त, फालतू अन्य व्यतिरिक्त अंग वाला नोद्वहेत्कपिला कन्या नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम् मनु० ३।८, अव्य० 1 अधिशेष, अधिक बहुत—आसो धिक फलम् -अमर०, 2 व्यतिरिक्तता, फालतू होना 3 अतिशयोक्ति के समान अलंकार, (क्रि० वि०) 1 अधिकतर, अधिक मात्रा में रघु० ४।१, समास में इयमधिकमनोज्ञा —श० १।२०, °सूरचि -मेघ० ३१, 2 अत्यन्त, बहुत अधिक। सम०-अंश (वि०) [स्त्री०-शी] व्यतिरिक्त अंग रखने वाला, -अर्थ (वि०) बढ़ा कर कहा हुआ, °अक्षं अतिशय कथन, अतिशयोक्त कथनम् या वचन (चाहे प्रशंसा के हों या निन्दा के), -अर्हि (वि०) प्रचुर पुरस्कार—रघु० १९।५, -तिथिः (स्त्री०), -दिवसः, —दिवसः बढ़ा हुआ चांद दिवस,—वाक्योक्ति (स्त्री०) बढ़ा चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति अलंकार।

अधिकरणम्—[अधि+कृ+ल्युट्] 1 प्रधान स्थान पर रखना, निर्दिष्ट 2 संबंध, उल्लेख, संपर्क 3 (व्या०) अनुक्रमता, लिंग, वचन, कारक और पुरुष की समानता, अन्वय, कारक चिह्नों का इधर सब्दों से संबंध 4 आश्रय, विषय, उपस्तर 5 अधिष्ठान, स्थान, अधिकरण कारक का अर्थ -आधारोऽधिकरणम्—पा० १।४।४५, 6 प्रस्ताव, विषय, किसी विषय पर पूर्ण तर्क, (मीमांसकों के अनुसार पूर्ण अधिकरण के ५ अंग होते हैं —विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम्, निर्णयस्तथेति सिद्धान्त शास्त्रेऽधिकरण स्मृतम्।) 7 न्यायालय, कचहरी, न्यायाधिकरण, स्थानीयान् कथयति नाधिकरणे मृच्छ० ९।३, 8 दावा 9 प्रभुता। सम०—°अधिकः न्यायाधीश, अदालत कचहरी या न्यायभवन,—सिद्धान्तः ऐसा उपसंहार जिसका प्रभाव औरों पर भी पड़े।

अधिकरणिकः [अधिकरण+ठन्] 1 न्यायाधीश, दण्डाधिकारी मृच्छ० ९, 2 राजकीय अधिकारी।

अधिकर्मन्(न०) [प्रा० स०] 1 उच्चतर या बढ़िया कार्य 2 अधीक्षण,—(पु०) जिसके ऊपर अधीक्षण का कार्य भार हो। सम०—करः,—कृत् एक प्रकार का सेवक, कर्मचारियों का अध्यवेक्षक।

अधिकर्मिक [अधिकर्मन्+ठ] किसी मंडी का अध्यवेक्षक जिसका कार्य व्यापारियों से कर उगाहने का हो।

अधिकाम (वि०) [अधिक कामो यस्य] 1 उत्कट अभिलाषी, आवेशपूर्ण, कामातुर,—मः उत्कट अभिलाषा।

अधिकार [अधि+कृ+घञ्] 1 अधीक्षण, देखभाल करना 2 कर्तव्य, कार्यभार, सत्ताधिकार का पद प्रकृत्य—इदमिदानीमस्माकमधिकारो दत्त पंच० १, स्वाधिकारात् प्रमत्त -मेघ० १, अधिकारे मम पूरको नियुक्त मालवि० ५ 3 प्रभुसत्ता, सरकार या प्रशासन, न्यायक्षेत्र, शासन 4 हक, प्राधिकार, दावा स्वत्व (धन, संपत्ति आदि का) स्वामित्व या कब्जे का अधिकार—अधिकार फले स्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभु —सा० द० २९६ 5 विशेषाधिकार (राजा के) 6 प्रकरण, अनुच्छेद या अनुभाग, प्रायश्चित्त —मिता०, दे० 'अधिकरण' 7 (व्या०) प्रधान या आसन्नात्मक नियम। सम०—°नियुक्तिः किसी विशेष कार्य को करने के लिए राजा की नियुक्ति,—स्थ,—अस्थ (वि०) पद पर विराजमान।

अधिकारिन्, अधिकारिक (वि०) [अधिकार+इनि, अधिकार+ठक्] 1 योग्य, उपयुक्त, उचितसम्मान 2 स्वत्व रखने वाला, हकदार, सर्व स्वरधिकारिणि 3 स्वामी,

मालिक 4 उपयुक्त (पु०—री,—वत्) 1 राज पुरुष, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अधीक्षक, प्रधान, निर्देशक, शासक 2 सही दावेदार, मालिक, स्वामी।

अधिकृत (वि०) [अधि+कृ+क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त आदि,—तः राजपुरुष, पदाधिकारी, किसी पद के कार्यभार को सम्भालने वाला।

अधिकृति (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] हक, अधिकार, स्वामित्व, दे० अधिकार।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+(क्त्वा) ल्यप्] उल्लेख करके, के विषय में, के संबंध में—द्रौपदीसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १, शकुंतलामधिकृत्य ब्रवीति—श० २।

अधिकर्म } [अधि+कम्+घञ्, ल्युट् च] हमला,
अधिक्रमणम् } चढ़ाई।

अधिक्षेपः [अधि क्षिप्+घञ्] 1 गाली, दोषारोपण, अपमान, भर्त्सनाधिक्षेप इवानुशासनम्—कि० १।२८ 2 पदच्युत करना।

अधिगत (वि०) [अधि+गम्+क्त] 1 अर्जित, प्राप्त आदि—भर्तृ० २।१७, 2 अधीत, ज्ञात, सीखा हुआ, किमित्येव पृच्छन्यनधिगतरामायण इव—उत्त०६।३०।

अधिगमः } [अधि+गम्+घञ्, ल्युट् च] 1 अर्जन,
अधिगमनम् } प्राप्ति 2 पारगति अध्ययन, ज्ञान 3 व्यापारिक लाभ, लाभ, संपत्ति प्राप्त करना, निश्चयात्मक प्राप्ति—मिता० या वनप्राप्ति, 4 स्वीकृति 5 मैथुन।

अधिगुण (वि०) [अधिका गुणा यस्य] 1 श्रेष्ठ गुण रखने वाला, योग्य, गुणी—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६, 2 जिसकी डोरी कसकर खिंची हो (जैसे धनुष)।

अधिचरणम् [अधि+चर्+ल्युट्] किसी के ऊपर चलना।

अधिजननम् [अधि+जन्+ल्युट्] जन्म।

अधिजिह्व—[ब० स०] साप—ह्वा जिह्विका 1 तालजिह्वा 2 जिह्वा की सूजन (रोग)।

अधिज्य (वि०) [अध्यारूढो ज्या यत्र अधिगता ज्या वा] धनुष की डोरी को कस कर खींचे हुए, या कस कर खिंची हुई डोरी वाला (जैसा कि धनुष)। सम०—धन्वन्,—कार्मुक (वि०) धनुष को डोरी को ताने हुए—त्वमि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६।

अधित्यका [अधि+त्यकन्+टाप्] गिरिपृष्ठ (पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि) उल्बसमभूमि—स्थानुतपस्यन्तमधित्यकायाम्—कु० ३।७३, अधित्यकायामिव धातुमय्याम्—रघु० २।२९।

अधिदन्तः [अध्यारूढो दन्त—प्रा० स०] दांत के ऊपर निकलने वाला दांत।

अधिदेवः, अधिदेवता [प्रा० स० अधिष्ठाता—जो देव देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अधिरक्षक देवता, पवाचे पाण्डुके पवचास्तु राज्याधिदेवते—रघु० १२। १७, १६।९, भामि० ३।१

अधिदैवम्, अधिदैवतम् [अधिष्ठातृ दैवं दैवतं वा] किसी वस्तु की अधिष्ठात्री देवता।

अधिनाथः [प्रा० स०] परमेश्वर।

अधिनायः [अधि+नी+घञ्] मन्त्र, महत्व।

अधिपः, अधिपतिः [अधि+पा+क, अति वा] स्वामी, शासक, राजा, प्रभु, प्रधान—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते—रघु० २।१ (अधिकतर समास में प्रयुक्त)।

अधिपत्नी [प्रा० स०] वैः—शासिका, स्वामिनी।

अधिपुरुष (पुं) पुरुषः [प्रा० स०] पुरुषोत्तम, परमेश्वर।

अधिप्रज (वि०) [अधिका प्रजा यस्य ब० स०] बहुत संतान वाला (स्त्री या पुरुष)।

अधिप्रभुः [अधि+भू+क्विप्] स्वामी, श्रेष्ठ, प्रमुख।

अधिभूतम् [अधि+भू+क्त प्रा० स०—भूत प्राणिमात्रमधिकृत्य कृतमाभम्] परमेश्वर, परमात्मा या तत्संबंधी समस्त व्यापक प्रभाव।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा यस्य ब० स०] मात्रा से अधिक, बहुत अधिक, अपरिमित।

अधिमासः [प्रा० स०] लौंद का महीना, मलमास।

अधियज्ञः [प्रा० स०] 1 प्रधान यज्ञ 2 ऐसे यज्ञ का अधिकर्ता।

अधिरथ (वि०) [अध्यारूढो रथं रथिन वा] रथारूढ,—थः—1 सूत, सारथि 2 सूत का नाम जो अंगदेश का राजा तथा कर्ण का पालक पिता था।

अधिराज्, (पुं०) अधिराजः [अधि+राज्+क्विप् राजन्+टच् वा] प्रभुसत्ता प्राप्त या सर्वशासक सम्राट्, —अथाप्तमेतं भुवनेष्वधिराजशब्दम्—कु० ६।१५, राजा प्रधान, स्वामी (मनुष्य और पक्षादिकों का), हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १।१ इसी प्रकार मृग, नाग आदि।

अधिराज्यम्, अधिराष्ट्रम् [अधिकृतं राज्यं राष्ट्रम् इदं] 1 शाही हुकूमत या सम्राट् का शासन, सर्वोच्चता, शाही मर्यादा 2 साम्राज्य 3 देश का नाम।

अधिरूढ (वि०) [अधि रुह् क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ।

अधिरोह—[अधि रुह् घञ्] 1 सवारोही 2 सवार होना, चढ़ना।

अधिरोहणम् [अधि+रुह्+ल्युट्] चढ़ना, सवार होना, क्रिया—रघु० ८।५३—जो सीढ़ी, सीढ़ी का डंडा (लकड़ी आदि का)।

अधिरोहिन् (वि०) [अधि रुह्+णिनि] चढ़ने वाला, सवार होने वाला, ऊपर उठने वाला,—जो सीढ़ी, चढ़ने की पौड़ी या डंडा।

अधिनेयम् (अव्य०) [अधि० ष०] 1 जिसके संबंध रखने वाला 2 विषय में।

अधिपञ्चमम् [अधि+पञ्च+मुट्] 1 पक्षपातपूर्ण, पक्ष में बोलना, 2 चोरी, उपहरण, अभिहरण।

अधिपतिः [अधि+पत्+क्विप्+घञ्] 1 शासक, निदेशक, स्वामी, तत्पति च ह इव शिरोधिपतिः —का० १।१७, दक्षति, रक्षता 2 करता देखा 3 सर्वोच्च के पूर्व देवता का आवाहन पूजन आदि 4 पोशाक, परिधान, लबादा 5 सुवासित और सुगंधित उबटन लगाना, सुगन्धयुक्त तथा महकदार पदार्थों का सेवन—अधिवासनपूर्वकेन मार्गेण—रघु० ८।३४ वि० २।२०।

अधिवासनम् [अधि+पत्+क्विप्+ल्युट्] सुगंध से बसाना, मूर्ति की प्रारंभिक प्रतिष्ठा, मूर्ति में देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करना।

अधिविन्ना [अधि+विद्+क्त] वह स्त्री जिसके रहते हुए पति दूसरा विवाह कर ले, या० १।७३-४, मनु० ९।८०-८१।

अधिवेत् (पुं०) [अधि+विद्+तृच्] एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करने वाला।

अधिवेदः, अधिवेदनम् [अधि+विद्+घञ्, ल्युट् वा] एक स्त्री के रहते अतिरिक्त स्त्री से विवाह करना।

अधिशयः [अधि+शि+अच्] 1 आधार 2 उपालम्भ, (आग पर रखकर) गर्म करना।

अधिशयनम्, अधिशयम् [अधि+शि (श्री)+ल्युट्] गरम करना, उपालम्भ,- थी [अधिशीङ्स्थासां कर्मत्व—आधारे ल्युट्+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अधिष्ठी (वि०) [अधिका ष्ठीवैस्य] ऊँची प्रतिष्ठा वाला, सर्वश्रेष्ठ, बड़ा बनाकर, प्रभुसत्तासम्पन्न स्वामी—इयं महद्भः प्रभुशक्तिभिरधिष्ठीमानवभाव आत्मनी—कु० ५।५३।

अधिष्ठानम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1 निकट होना, पास में स्थित होना, पहुँच 2 पद, स्थान, आधार, आसन, अवस्था, नगर 3 निवास स्थान, आवास, 4 अधिकार, शक्ति, नियन्त्रणशक्ति 5 संस्कार, उपनिवेश 6 कर्म, (साड़ी आदि का) पहिरना 7 दृष्टान्त, निर्दिष्ट नियम 8 शरीरावयव।

अधिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त] 1 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्थित, विद्यमान (ख) अधिकृत (ग) नियन्त्रण, प्रशासन करना 2 (कर्मवाच्य के रूप में) (क) व्याप्त, अधिकृत (ख) भरा हुआ, ग्रस्त, अभिभूत (ग) परिरक्षित, सुरक्षा प्राप्त, अधीक्षित (घ) गीत, उच्चारित, कथित, प्रशासित किया गया।

अधीकारः =दे० अधिकार, स्वामित्व स्वामीकारात्मवाक्यम्—कु०—२।१८।

अधीतिन् (वि०) [अधीत+इनि] खूब पढ़ा लिखा, विद्वान्—अवाप्ती चतुर्णामपीमेषु—रघु० १२०,(वेद आदि में)।

अधीतिः (स्त्री) [अधि+इ+क्तिन्] 1 अध्ययन, वेदाध्ययन 'वेदाधीतव्रतस्नातैः—रघु० १।९, 2 स्मरण, प्रत्यास्मरण।

अधीन (वि०) [अधिगतम् इमम् अधूत्—प्रा० स०] आश्रित, आत्मसात, निर्भर (बहुधा समस्त पदों में) स्वामी द्वारा कार्यान्वित दुष्यन्तेन स्वयमधीना —मालवि० ३।१४, स्वयमीशं वधू वेद्मिनां सुखम्—कु० ४।१०, इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे स्वयमधीना हि सिद्धय —रघु० १।७२।

अधीनस्थः (व० कृ०) [अधि+इ+खानच्] विद्यार्थी, चेलाकाई।

अधीर (वि०) [न० स०] 1 साहसहीन, भीरु 2 उद्विग्न, उत्तेजित, उत्सुकता 3 अस्थिर 4 धैर्यरहित, चंचल, —रः 1. शिवजी 2 समुद्र का अनुवादक स्त्री।

अधीवासः [अधि+वस्+घञ्—उपसर्गस्य दीर्घत्वम्] एक लंबा कोट जिसके द्वारा शरीर एक बार, लबादा, दे० अधिवास भी।

अधीशः [ष० त०] स्वामी, सर्वोच्च स्वामी का मालिक, प्रभुसत्तासंपन्न राजा—अर्थं, मर्त्य, मनुष्य आदि।

अधीश्वरः [ष० त०] सर्वोच्च स्वामी या नियोक्ता।

अधीक्षा (वि०) [अधि+ईक्ष्+क्त] अवैक्षणिक, प्रार्थित —क्षः अवैक्षणिक पद या कार्यालय, ऐसा कार्य जिसमें सामर्थ्य का उपयोग हो सके, (अधीक्षः—संस्कार-पूर्वको व्यापारः—शिवा०)।

अधुना (अव्य०) [इदमोऽधुनादेशः-पा० ५।३।१७] अब, इस समय प्रवदानामधुना विडंबना—कु० ४।११।

अधुनातन (वि०) [स्त्री०-नी] [अधुना+ट्युल्-तुट्च] वर्तमान काल से संबंध रखने वाला, आधुनिक।

अधूमकः [न० त०] जलती हुई आग।

अधृतिः (स्त्री०) [न०+धृ+क्तिन्] 1 दृढ़ता या संयम का अभाव चित्तस्थिरता 2 असंयम 3 दुःख।

अधृष्य (वि०) [न० त०] 1 अजेय, दुर्धर्ष, अनधिगम्य (विप० अधिगम्य) अधृष्यस्तापिमम्मथस्य वाहोरसौ-रिवार्णव.—रघु० १।१६, 2 अजीता, अजीता 3 दबंदी।

अधोक्ष, अधोक्षज, अधोक्षज—दे० "अक्षज्" के नीचे।

अध्यक्ष (वि०) [अधिगतम् अक्षम् इन्द्रियम्—प्रा० स०, अध्यक्षयतीति आपयति इति—अधि+अक्ष+अच्] गोचर, दृश्य,—वैरध्यक्षैरथ विवृतं गीरदं स्वार-धिकुः—मालवि० ४।१७, २ निरीक्षक, अधिष्ठाता, —क्षः अधीक्षक, प्रधान, मुख्य—अध्यक्षलेख प्रकृति-कुशले कथराचरत्व—मृच्छ० ९।१०, अक्ष. अक्षत पदों में; पद°, सेना°, राज्य°, द्वार°)।

अध्यक्षरम् [प्रा० ब०] रहस्यमय अक्षर 'ओम्'।

अभ्यग्नि (अव्य०) विवाह संस्कार की अग्नि के निकट या ऊपर, (नप्०—न्नि) विवाह के अवसर पर अग्नि को साक्षी करके स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, यथा—विवाहकाले यत्स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्निसन्निधौ, तदध्यग्निकृत सद्भि स्त्रीधन परिकीर्तितम्।

अभ्यधि (अव्य०) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम्—सिद्धा०।

अभ्यधिक्षेपः [प्रा० स०] अत्यन्त अपशब्द या दुर्वचन, कुत्सित गालियां।

अभ्यधीन (वि०) [प्रा० स०] नितान्त अधीन, बिल्कुल वशीभूत, जैसे कि दास सेवक—आ० ३।२२८।

अध्ययः [अधि+इ+अच्] 1 ज्ञान, अध्ययन, स्मरण 2= दे० अध्याय।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदों का), ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक। वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्णों के लिए विहित है, शूद्र के लिए नहीं—मनु० १।८८-९१।

अध्यर्ध (वि०) [अधिकमर्धं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त आधा हो—शतमध्यर्धमायता—महा० अर्थात् १५०, °योजनशतात्—पंच० २।१८।

अध्यवसानम् [अधि+अव+सो+ल्युट्] 1 प्रयत्न, दृढ़निश्चय आदि, दे० अध्यवसाय 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं का इस ढंग से एक रूप करना जिससे कि एक वस्तु दूसरी में विलीन हो जाय, निगीर्याध्यवसान तु प्रकृतस्य परेण यत्—काव्य० १०, इसी प्रकार की एकरूपता पर अतिशयोक्ति अलंकार और साध्यवसाना लक्षणा आश्रित है।

अध्यवसायः [अधि+अव+सो+घञ्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढ़निश्चय, संकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का ग्रहण, 3 धैर्य, उद्यम, लगातार कोशिश।

अध्यवसायिन् (वि०) [अधि+अव+सो+णिनि] प्रयत्नशील, दृढ़संकल्प वाला, धैर्यशाली, उत्साही।

अध्यशनम् [अधि+अश्+ल्युट्] अधिक खाना, एक बार का खाना पचे बिना फिर खा लेना।

अध्यात्म (वि०) [आत्मन संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबंध रखने वाला, —त्मम् (अव्य०) आत्मा से संबद्ध —त्मम् परब्रह्म (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध। सम०—ज्ञानम्,—विद्या आत्मा या परमात्मा संबंधी ज्ञान अर्थात् ब्रह्म एवं आत्म-विषयक जानकारी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रति (वि०) जो परमात्मचिन्तन में सुख का अनुभव करे।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—की] अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला।

अध्यापकः [अधि+इ+णिच्+ण्वुल्] पढ़ाने वाला, गुरु, शिक्षक-विशेषतया वेदों का, व्याकरण°; न्याय°; मृतक अर्थार्थी अध्यापक। विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' जो कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में दीक्षित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीविका कमाने के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, दे० मनु० २।१४०-४१।

अध्यापनम् [अधि+इ+णिच्+ल्युट्] पढ़ाना, सिखाना, व्याख्यान देना, ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक, भारतीय स्मृतिकारों के अनुसार 'अध्यापन' तीन प्रकार का है 1 धर्मार्थ किया जाने वाला 2 मजदूरी प्राप्त करने के लिए 3 की गई सेवा के बदले।

अध्यापयितृ (पुं०) [अधि+इ+णिच्+तृच्] अध्यापक, शिक्षक।

अध्यायः [अधि+इ+घञ्] 1 पढ़ना, अध्ययन, विशेषतः वेदों का, 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ व्याख्यान 4 खण्ड, किसी रचना के भाग, निम्नांकित कुछ ऐसे नाम हैं जो संस्कृत लेखकों ने 'खण्ड' या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये हैं यथा वर्ग परिच्छेदोद्योताध्यायाह्निसंग्रह उच्छ्वास परिवर्तश्च पटल काण्डाननम्, स्थान प्रकरण वैद्य पर्वोल्लासाह्निकानि च, स्कन्धांशौ तु पुराणादौ प्रायशः परिकीर्तितौ।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय+णिनि] अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील।

अध्यारूढ (वि०) [अधि+आ+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ, 2 ऊपर उठा हुआ, उन्नत 3 ऊँचा, श्रेष्ठ, नीचा, निम्नतर।

अध्यारोपः [अधि+आ+रुह्+णिच्+घञ्] 1 उठना उन्नत होना आदि 2 (वे० द० में) भ्रमवश एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के गुण दूसरी वस्तु में आरोपना, भ्रमवश रस्सी को साँप समझना अमर्षभ्रमरज्ज्वां सर्पारोपवत्, अजडरूपं ब्रह्मणि जगद्रूपारोपवत्, वस्तुनि अवस्त्वारोपोऽध्यारोप वे० सा०, 3 भ्रान्तिपूर्ण ज्ञान।

अध्यारोपणम् [अधि+आ+रुह्+णिच्+युक्+ल्युट्] 1 उठना आदि 2 (बीज) बोना।

अध्यावापः [अधि+आ+वप्+घञ्] 1 बीजादिक बखेरना या बोना 2 वह खेत जिसमें बीजादिक बो दिया गया हो।

अध्यावाहनिकम् [अध्यावाहन (पितृगृहात्पतिगृहनयनम्) स्वार्थे ठञ्] छः प्रकार के स्त्रीधनों (वह सम्पत्ति जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को विदा होते समय प्राप्त करती है) में से एक—वस्तुवर्धते नारी नीयमाना तु पैतृकात् (गृहात्) अध्यावाहनिकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।

अध्यासः, अध्यासनम् [अधि+आस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर बैठना, अधिकार में करना, प्रशासना करना 2 आसन, स्थान।

अध्यासः [अधि+आस्+घञ्] 1 मिथ्या आरोपण, मिथ्या ज्ञान, दे० 'अध्यारोप' को भी 2 'परिशिष्ट 3 कुकल्पना —पादाध्यासे सतां दण्डः—मा० २।२१७।

अध्याहारः / अध्याहृत्य [अधि+आ+हृ+घञ्, ल्युट् वा] 1 न्यूनपदता को पूरा करना 2 तर्क करना, अनुमान करना, मई कल्पना, अन्दाजा या अनुमान।

अध्यूढः [अधिगतः ऊढः वाहनत्वेन] ऊँटगाड़ी।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] उठा हुआ, उन्नत,—ढः स्त्रि०—ढा वह स्त्री जिसके पति में उसके रहते हुए दूसरा विवाह कर लिया हो दे० अधिविन्ना।

अध्येषणम् [अधि+इष्+ल्युट्] किसी कार्य को करने की प्रेरणा देना, विशेषतः आचार्य के द्वारा, अर्थात् आदर पूर्वक किसी कार्य में प्रवृत्त करना, —आ निवेदन, याचना।

अध्रुव (वि०) [न० त०] 1 अनिश्चित, सन्दिग्ध 2 अस्थिर, चंचल, पृथक्करणीय, —त्वम् अनिश्चितता, यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते, ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च।

अध्वन् (पु०) [अद्+क्वनिप् दकारस्य धकारः] 1 रास्ता, सड़क, मार्ग, सफर मार्ग २(क) दूरी, स्थान (चलकर पार किया गया और पार करने के निमित्त) -अधि लक्षितमध्वानं धूम्रैर्न वृक्षोपमः —रघु० १।४७ उल्लङ्घिताध्वा —नेष० ४५ (ज) यात्रा, भ्रमण, प्रसरण, प्रस्थान —नैक प्रपञ्चेताध्वानम् मनु० ४।६०, 3 समय (काल), ऋतुकाल 4 आकाश, अन्तरिक्ष 5 उपाय साधन, प्रणाली 6 आत्मन्। सम० —गः 1 मार्ग चलने वाला, यात्री, बटोही -सन्तानकतरुच्छाया-सुप्तविद्याधराध्वगम् —कु० ६।४६ (°गामिन्), 2 ऊँट 3 अक्षर 4 सूर्य, —गा गंगा, —पतिः सूर्य, - रथः 1 बाधा करने के लिए गाड़ी 2 हरकारा जो चलने में चतुर हो।

अध्वनीन / अध्वन्य (वि०) [अध्वन्+ख, यत् वा] मार्ग पर जाने के योग्य, जैसे चलने वाला—जिन स्तोऽध्वन्य-पुरंवाही—भट्टि० २।४४,—नः, —न्यः जैसे चलने वाला यात्री, बटोही।

अध्वरः [अध्वानं हरत्यर्थं राति · ददाति अध्वन्+रा+क अथवा न ध्वरति हिनस्ति न ध्वरति नञ्+ध्वृ+अच्, ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधो निपातः अहिंस—विध०] यज्ञ, धार्मिक संस्कार, सोमयाग, तत्सम्बन्धे विस्तरविधिः —रघु० ५।१, —रः, —रम् आकाश या वायु। सम० —दीक्षनीया अध्वर संबंधी संस्कार, इसी प्रकार °अग्निचयनादिः—प्रायश्चित्त, पापनिष्कृति, —मीमांसा वैदिक की पूर्वमीमांसा।

अध्वर्युः [अध्वर+क्यच्+युच्] 1 ऋत्विक्, पुरोहित, पारिभाषिक रूप से 'होतृ' 'उद्गातृ' तथा 'ब्रह्मन्' से अतिरिक्त ऋत्विक्, 2 यजुर्वेद। सम० —वेदः यजुर्वेद।

अध्वाशिः=अध्वग।

अध्वासनम् [न० त०] सत्ता, अस्तित्व।

अन् (अदा० पर० सेट्) [अनिति, अनित] 1 साँस लेना, 2 हिलना, चलना, प्रेर० आनयति, सन्नन्त० अनिनिषति। (दिवा० आ०) चलना, 'प्र' उपसर्ग के साथ—जीवित रहना—यदह पुनरेव प्राणिमि—का० ३५, प्राणिषच्चैव मामार्यः —भामि० ४।३८।

अनः [अन्+अच्] साँस, प्रश्वास।

अनंश (वि०) [न० ब०] जिसका पैतृक सम्पत्ति पर कोई अधिकार न हो।

अनक्षद्रुहिः=दे० आनक्षद्रुहि।

अनक्षः (वि०) [न० ब०] दृष्टिहीन, अन्धा।

अनक्षरः (वि०) [न० ब०] 1 बोलने में असमर्थ, मूक, गूंगा 2 अशिक्षित 3 बोलने के अयोग्य, —रम् दुर्वचन वाली, निन्दा या अपशब्द, (क्रि० वि०) बिना शब्दों के— °अर्पित चौर्यमिवेक्षणेन रघु० १४।२६।

अनग्निः [न० त०] 1 अग्नि का न होना, अग्नि के अलावा कोई दूसरी वस्तु— अग्नीत्यनग्निमित्याहुः अनेनैव समासते, अवज्ञायाग्निमुक्तेषु न तत्त्वज्ञास्ति कश्चित्। वि० 2 अग्नि का अभाव, (वि०) [न० ब०] 1 जिसे अग्नि की आवश्यकता न हो—विदधे विधिमस्य नैष्किक मतिमि त्यार्थमग्निमग्निचित् —रघु० ८।२५, 2 अग्निहोत्र न करने वाला, 3 श्रौतस्मार्त कर्म से विरहित, अधार्मिक 4 अग्निमांद्य रोग से ग्रस्त 5 अविवाहित।

अनघ (वि०) [न० ब०] 1 निष्पाप, निरपराध—अनघैरि नैनामनघेति—रघु० १४।४०, 2 निर्दोष, सुन्दर, —घम्—ह० २।२३, अस्य ज्ञानवतोऽनघा-दनघत्वमुपागमम्—अमर० 3 अकुशल, अशरीरी, अक्षत, क्षतरहित—कल्पिताभ्युदीक्षाक्षतघा प्रवृत्ति —रघु० ५।७०, पूर्वमनूढा अनघप्रजा भवति—का०४, जिसका प्रसव अकुशल हो चुका हो या जो प्रसव के पश्चात् अकुशल अवस्था पर लौटी हो 4 पवित्र, निष्कलंक,—घः 1 अनेक अक्षरों, 2 विष्णु या शिव का नाम।

अनङ्गकुश (वि०) [न० ब०] 1 उद्दण्ड, उच्छृंखल 2 (कवि की भांति) स्वच्छन्द।

अनङ्ग (वि०) [न० ब०] देहरहित, अशरीरी, आकृतिहीन त्वमनङ्ग. कथञ्चनता रतिः —कु० ४।९, —ङ्गः (देहरहित), कामदेव —ङ्गम् 1 आकाश, वायु, अन्तरिक्ष, 2 मन। सम० —क्रीडा कामक्रीडा, —तेजस्=मदन

शेष, शेषपद, °शेषविभक्तीयचौर्य (अव्यभि) कु० १।७, °शत्रु, °अनुशुत आदि—विष्णु की के नाम।

अनन्यथ (वि०) [न० ब०] बिना अंतर, सर्वथा या वास्तव के—वेने दूर अनन्यथने—ऋ० ८०, —थम् 1 आकाश, वातावरण 2 परब्रह्म विष्णु या नारायण (भू० गी)।

अनन्यहन् (पु०) [अन्तः शब्दं हन्ति—वि०] [अनन्यघ्नान्, °घ्नवाही, °घ्नुघ्नाम् आदि०] 1 बैल, सांड 2 वृषराशि,—ही (अनन्यघ्नही) गाय।

अनति (अव्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनति' से आरम्भ होने वाले समस्त पदों का विवेचन 'अति' से आरम्भ होने वाले शब्दों की भांति किया जा सकता है।

अनतिक्रमणीयता—विलम्ब का अभाव, स्वामभक्तता का एक गुण वात्स्यायनसंहिता, ३५ वाग्गुणों में से एक।

अनद्यतन वि० [स्त्री० —नी] [न० त०] आज या चालू दिन से संबंध न रखने वाला, पाणिनि का एक पारिभाषिक शब्द जो लट् और लुट् लकार के अर्थ को प्रकट करता है, —नः जो चालू दिन न हो, अतीतामा रात्रेः पश्चार्धेन आगामिन्या रात्रेः पूर्वार्धेन सहितो दिवसोऽनद्यतन —सिद्धा०, तद्धित्न काल।

अनधिक (वि०) [न० त०] 1 जो अधिक न हो, 2 असीम पूर्ण।

अनधीनः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला स्वाधीन बढई, कौटलस।

अनध्यायः } [न० त०] न पढ़ना, पढ़ाई में विराम, वह
अनध्यायकम् } समय जब कि इस प्रकार का विराम होना है या होना चाहिए, एक अवकाश का दिन ('दिवस.) अत्र शिष्टानध्याय —उत्तर० ४—किसी पूज्य अतिथि के सम्मान में दिया गया अवकाश।

अनध्यवसाय [अन्+नि+सो] त्रास लेना, जीना।

अनध्यवसायक (वि०) जो समझने के अयोग्य हो।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० ब०] अन्तरहित, अपरिमित, निस्सीम, अक्षय,—°रत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३,—तः 1 विष्णु की संज्ञा शेषनाग, कृष्ण, बलराम, शिव, नागों का पति वासुकि 2 बादल 3 कहानी, 4 चौदह ग्रन्थियों से युक्त रेशमी डोरा जो अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण भुजा पर बांधा जाता है, —ता 1 पृथ्वी (अन्तर्हीन) 2 एक की संख्या 3 पार्वती 4 सारिवा, अनन्तमूल, दुर्वा आदि पौधे, —न्तम् 1 आकाश, वातावरण 2 असीमता 3 मोक्ष 4 परब्रह्म। सम०—तृतीया वैशाख, भाद्रपद और मार्गशीर्ष मास की शुक्लपक्ष की तीज—दृष्टिः शिव, इन्द्र, —देवः 1 शेषनाग 2 नारायण जो शेषनाग के ऊपर सोता है,—पर (वि०) असीम विस्तारयुक्त, निस्सीम, —°र त्रिज्ञ ब्रह्मतत्त्वम्—पंच० १,—फल (वि०) अपरिमित फलवाला, विष्णु,—विजयः युधिष्ठिर का शंख—भग० १।१६।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अंतरं यस्य—न० ब०] 1 अन्तररहित, सीमारहित 2 जिसके बीच देश काल का कोई अन्तर न हो, सटा हुआ, लगा हुआ 3 सलग्न, पड़ोस का, बिल्कुल मिला हुआ, निकटवर्ती (अपादान के साथ) महाभवतोऽनन्तरः—मृच्छ० २।१९, 4 अनुवर्ती, सन्निहित होना (समास में) 5 अपने से ठीक नीचे के वर्ण का,—रम् 1 संलग्नता, सन्निकटता 2 ब्रह्म, परमात्मा,—रम् (अव्य०) तुरन्त बाद, पश्चात् 2 (स्वयं वाचकता की दृष्टि से) बाद में, (अपादान के साथ)—पुराणपत्रापगमानन्तरम्—रघु० ३।७, पोतादविरेनन्तरम्—३।३३ ३६,२,७१। सम०—ज या—जा 1 क्षत्रिय या वैश्य जाति में, अपने से ठीक ऊपर के वर्ण के पिता के द्वारा उत्पन्न संतान—मनु० १०।१४ 2 'सगोत्रिया' भाई बहन, (—जा) छोटी या बड़ी बहन—अनुष्ठितानन्तरजाविवाह —रघु० ७।३२ इसी प्रकार °जात।

अनन्तरीय (वि०) [अनन्तर+छ] क्रमक्रम में ठीक बाद का।

अनन्य (वि०) [न० त०] 1 अभिन्न, समरूप, वही, अद्वितीय 2 एकमात्र, अनुपम, जिसके साथ और दूसरा न हो 3 अविभक्त, एकाग्र, अन्य की ओर न जाने वाला, —अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते—भग० ९।२२, समास में 'अनन्य' शब्द का, अनुवाद किया जा सकता है 'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी ओर मन्न या निर्देशित नहीं' 'एकाग्रमनी'। सम०—गतिः (स्त्री०) एकमात्र सहारे वाला अनन्यगतिकं अन्ने विगतपातके बालके—उद्भट, —चित्त, —चित्त,—चेतस्, —मानस, —हृदय (वि०) एकाग्रचित्त, जिसका मन और कहीं न हो;—जः, —जन्मन् (पु०) कामदेव, प्रेम का देवता—या मृगेक्षणानु मदनमनन्यजन्मा—मा० १।३२,—पूर्वः वह पुरुष जिसके और कोई स्त्री न हो, (—र्वा) कुमारी, बिनब्याही स्त्री—रघु० ८।३, —भाज् (वि०) किसी और व्यक्ति की ओर मनाव न रखने वाला; —अनन्यभाज पतिमाप्नुहि— कु० ३।६३, —विषय (वि०) किसी और से संबंध न रखने वाला, —वृत्ति (वि०) 1 वैसे ही स्वभाव का 2 जिसकी दूसरी जीविका न हो 3 एकनिष्ठ अनोवृत्ति वाला, —शरण्य,—साधारण (वि०) दूसरे से न मिलने वाला, असाधारण, ऐकान्तिक रूप से अपना हुआ, अंतरंग,—अनन्यसाधारणाभ्यां साधाभ्यां दाक्षायणीभ्यां पुरुरवा.—विक्रम० ३।१८ °राजसाधः—रघु० ६।१८;—सदृश (वि०) [स्त्री०—शी] बेजोड़, अनुपम।

अनवयवः [न० त०] 1. संबंध का अभाव 2 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की तुलना उसी से की जाय—और उसको ऐसा बेजोड़ सिद्ध किया जाय जिसका कोई और उपमान ही न हो। जैसे गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः, रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ॥

अनल्प (वि०) [न० ब०] अत्यधिक (जैसे अनल्पालाप)।

अनवकाशत्वम् } [न० त०] 1 चोट न पहुचाना 2 सुपुर्दगी
अनवकाशंदत् } का अभाव 3 (कानून में) क्षुब्ध न
अनवधिया } चुकाना।

अनवकारः (न० त०) अहित का अभाव—कारिन् (वि०) अहित न करने वाला, निर्दोष।

अनवद्य (वि०) [न० ब०] सन्तानहीन, निस्सन्तान, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अनवद्य (वि०) [न० ब०] धृष्ट, निर्लज्ज।

अनवद्यांग. [न० त०] वह शब्द जो भ्रष्ट न हो, व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध शब्द।

अनवसर (वि०) [न० ब०] जिसमें से निकलने का कोई मार्ग न हो, अन्यायोचित, अक्षम्य,—रः बल पूर्वक अधिकार करने वाला।

अनवाय (वि०) [न० ब०] 1 हानि या क्षय से रहित, 2 अनश्वर, अक्षीण, अक्षयी—प्रणमन्त्यनपायभूष्णिनम् (चन्द्रम्) कि० २।२१,—यः [न० त०] 1 अनश्वरता, स्थायित्व 2 शिव।

अनवायिन् (वि०) [अनपाय+णिनि] अनश्वर, ध्रुव, स्थिर, अक्षुण्ण सतत टिकाऊ अचल—प्रसादाधिरयुक्त तस्मिन् श्रीमतीदनपायिनी—रघु० १७।६५, ८।१३, अनपायिनि सतावदुमे गजयूथे पतनाय वल्गरी—कु० ४।३१।

अनपेक्ष—क्षिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] 1 अभावधान 2 लापरवाह, परवाह न करने वाला, उदासीन 3 स्वतन्त्र, दूसरे की अपेक्षा न रखने वाला, 4 निष्पक्ष 5 असबद्ध,—क्षा [न० त०] अभावधानी, उदासीनता अक्षम् (क्रि० वि०) बिना ध्यान के, स्वतन्त्र रूप से, परवाह न करते हुए, बेपरवाही से।

अनपेत (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न गया हो, बीता न हो 2 विचलित न हुआ हो (प्रायः सब० के साथ) अर्थानपेतम् अर्थ्यम्—सिद्धा० 3 अविरहित, सम्पन्न—लोकयात्रानपेक्षोऽयमयं लोकान्तरं सेवते—मुद्रा० १।१८।

अनपेक्षित (वि०) [न० त०] अनवधान अपरिचित, अनभ्यस्त (प्रायः सब० के साथ) °ज्ञ कैतवस्य—मा० ५, °ज्ञ परमेश्वरमुद्राभारस्य—महा० २।

अनभ्यावृत्ति (स्त्री०) [न० त०] पुनरुक्ति का अभाव—मनानभ्यावृत्त्या का काम आम्यतु वः श्रुती—शि० २।४।

अनभ्रक—क (वि०) [न० ब०] जो निकटस्थ न हो, दूरस्थ आदि °क्षमित्य (वि०) दूर से ही विदकने वाला सिद्धा०।

अनभ्र (वि०) [न० ब०] बिना बादलों के, इयमनभ्रा वृष्टि—यह तो बिना ही बादलों के आकाश से वृष्टि होने लगी—अर्थात् अप्रत्याशित या आकस्मिक घटना।

अनमः [न० त०] वह ब्राह्मण जो दूसरों को न तो नमस्कार करता है और न उनके नमस्कार का उत्तर देता है।

अनभिसन्धत्व (=विसंधत्व) (वि०) [न० त०] कपट, मक्कीचूस।

अनम्बर (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा—रः बौद्धभिक्षु।

अनयः [न० त०] 1 दुर्व्यवस्था, दुराचरण, अन्याय, अनीति 2 दुर्नीति, दुराचार, कुमार्ग 3 विपत्ति, दुःख, मनु० १०।९५, 4 दुर्भाग्य, बुरी किस्मत 5 बुरा खेलना।

अनयंजय (वि०) [न० ब०] स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित—नृपमनुत्सृष्टमनयंजयम्—रघु० ३।३९ 2 जिसमें नाला न लगा हो।

अनर्घ (वि०) [न० ब०] अनमोल, अमूल्य, जिसके मूल्य का अनुमान न लगाया जा सके,—र्घः गलत या अनुचित मूल्य।

अनर्घ्य (वि०) [न० त०] अमूल्य, सर्वाधिक सम्मान्य।

अनर्थ (वि०) [न० ब०] 1 अनुपयुक्त, निकम्मा 2 भाग्यहीन, सुखरहित 3 हानिकारक 4 अर्थहीन, निरर्थक,—र्थः [न० त०] 1 उपयोग या मूल्य का न होना 2 निकम्मी या अनुपयुक्त वस्तु 3 विपत्ति, दुर्भाग्य—रक्षोघ्नविधानिषार्थो —श० ६, सिद्धेष्वनर्थो बहुलीभवन्ति 4 अर्थ का न होना, अर्थ का अभाव। सम० कर (वि०) [स्त्री०—री] अनिष्टकर, हानिकर।

अनर्थक, अनर्थक (वि०) [न० त०] 1 अनुपयुक्त, निरर्थक 2 सारहीन 3 अर्थ हीन 4 लाभरहित 5 दुर्भाग्यपूर्ण, वस्तु अर्थहीन या असगत बात।

अनर्ह (वि०) [न० त०] 1 अनधिकारी अयोग्य 2 अनुपयुक्त (सब० के साथ या समास में)।

अनलः [नास्ति अलं पर्याप्तिर्यस्य—न० ब०] 1 आग 2 अग्नि या अग्निदेवता 3 पाचनशक्ति 4 पित्त। सम० द (वि०) [अनलं दयति] 1 गर्मी या आग को नष्ट करने वाला, 2 =दे० अग्निद दीपन (वि०) जठराग्नि या पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला, प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा, शाद्वः अग्नि का नाम, सखिसाद्।

अनलस (वि०) [न० त०] 1 आलस्यरहित, चुस्त, परिश्रमी 2 अथक्य, अलसर्ग।

अनल्प (वि०) [न० त०] 1 बहुमूल्यक 2 जो थोड़ा न हो, उदाराशय, उदार (जैसा कि मनु आदि) अधिक,

जल्पन्यनल्पाक्षरम्—पंच० १।१३६ विकसितवदनाम-नल्पजल्पेपि—भामि० १।१००, २।२३८।

अनवकाश (वि०) [न० ब०] 1 अनाहूत, 3 अप्रयोज्य 2 जिसके लिए कोई गुंजायश या मौका न हो,—शः [न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव।

अनवग्रह (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके—सुकुमार-कायमनवग्रह स्मर (अभिहति) मा० १।३९।

अनवच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 सीमांकन रहित, अपृथक्कृत 2 सीमारहित, अधिक 3 अनिर्दिष्ट, अविभक्त, अविकृत 4 अबाधित।

अनवद्य (वि०) [न० त०] निर्दोष, कलंकरहित, अनिंद्य—रघु० ७।७०। सम०—अंग,—ङ्ग (वि०) निर्दोष या नितान्त सुन्दर अंगों वाला (—ङ्गी) रूपवती स्त्री।

अनवधान (वि०) [न० ब०] निरपेक्ष, ध्यान न देने वाला, —नम् [न० त०] प्रमाद, असावधानता, °ता—लापरवाही।

अनवधि (वि०) [न० ब०] असीमित, अपरिमित।

अनवम (वि०) [न० त०] जो नीच या तुच्छ न हो, बड़ा, श्रेष्ठ, सुधर्मानवमा सभाम्—रघु० १६।२७, ९।१४।

अनवरत (वि०) [न० त०] अविराम, निरंतर °धनुर्ज्या-स्फालनक्रूरपूर्वम् शं० २।४, तम् (क्रि० वि०) बिना रुके लगातार।

अनवरार्घ्य (वि०) [अवरस्मिन् अर्घे भवः - इत्यर्थे नञ् + अवरार्घ + यत् न० त०] मूल्य, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

अनवलम्ब—बम्ब (वि०) [न० त०] अवलंबहीन, निराश्रित—ब,—बम्बन स्वतन्त्रता।

अनवलोभनम् [न० त०] गर्भ के तीसरे मास किया जाने वाला एक संस्कार।

अनवसर (वि०) [न० ब०] 1 व्यस्त 2 निरवकाश, —रः [न० त०]। अवकाश का अभाव, कुसमय होना, असामयिकता, क यत्र यत्र ध्रुवमनवसरस्तत्र एवार्थिभावः—मा० ९।२०।

अनवस्कर (वि०) [न० ब०] मलरहित, स्वच्छ, साफ।

अनवस्था (वि०) [न० त०] अस्थिर, स्था [न० त०] 1 अस्थिरता 2 अनिश्चित अवस्था 2 चरित्रभ्रष्टता, लम्पटता 3 (दर्शन० में) किसी अन्तिम निर्णय पर न पहुँचना, कार्य-कारण की ऐसी परंपरा जिसका अन्त न हो, तर्क का एक दोष—एकमप्यनवस्था भ्रान्ता मूल-क्षतिकरिणी—काव्य० २ एवं च °प्रसङ्ग—या०।

अनवस्थान (वि०) [न० ब०] अस्थायी, अस्थिर, चंचल, —न, वायु - नम् [न० त०] 1 अस्थिरता, 2 आचार-भ्रष्टता लम्पटता।

अनवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अस्थिर, अस्थिरचित्त 2 परिवर्तित 3 आवारा।

अनवेक्षक (वि०) [न० त०] असावधान, बेपरवाह, उदासीन।

अनवेक्षा-क्षा=दे० अनपेक्ष-क्षा।

अनवेक्षणम् [नञ् + अव् + ईक्ष + ल्युट्] लापरवाही, असावधानता।

अनशनम् [नञ् + अश् + ल्युट्] उपवास, आमरण उपवास।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०—री] [न० त०] अविनाशी।

अनस् (पु०) [अन् + असुन्] 1 गाड़ी 2 भोजन आदि 3 जन्म, 4 प्राणी 5 रसोईघर।

अनसूय-यक (वि०) [न० ब०] द्वेष रहित, ईर्ष्यारहित, —या [न० त०] 1 ईर्ष्या का अभाव, 2 अत्रि की पत्नी, स्त्रियोचित पतिभक्ति और सतीत्व का ऊँचा नमूना।

अनहन् (नपुं०) [न० त०] कुरादिन, दुर्दिन।

अनाकाल [न० त० नि०] 1 कुसमय 2 दुर्भिक्ष (अन्यत्र "अन्नाकाल" शब्द का अनियमित रूप)। सम०—भृत्य—जो व्यक्ति दुर्भिक्ष में भूख से अपने आपको बचाने के लिए स्वयं दूसरे का दास बन जाता है।

अनाकुल (वि०) [न० त०] 1 शान्त, प्रकृतिस्थ, स्वस्थ 2 अटल।

अनागत (वि०) [न० त०] 1 न आया हुआ, न पहुंचा हुआ यावद्भूयस्य भेनम्य यावद्भूयमागतम्—हि० १।५७, 2 अप्राप्त, जो न मिला हो 3 भविष्यत्, आने वाला, पं० नीच सम० को 4 अज्ञात—तम् भविष्य-काल, भविष्य। सम०—अवेक्षणम् भविष्य की ओर देखना आगे की ओर दृष्टि रखना,—आपदः आने वाला भौतिक कष्ट या विपत्ति,—आर्तवा वह कन्या जिसका मासिक स्राव अभी आरम्भ न हुआ हो, और जरा,—विधातृ (पु०) आने वाले अनिष्ट का पहले से ही निराकरण करने वाला भविष्य के विषय में सावधान दूरदर्शी (पंच० १।११८ तथा हि० ४।५ में इस नाम की एक मछली)।

अनागस [न० त०] 1 न आना 2 अशान्ति।

अनाघ्रात (वि०) [न० त०] निष्पराध, निर्दोष—आत्म-कर्माय न दोषं न प्रभुरनुभवानागसि—श० १।११।

अनाचार [न० त०] अनुचित आचरण, दुराचरण, कुरीति।

अनातप (वि०) [न० ब०] धूप या गर्मी से मुक्त, ताप रहित, ठंडा।

अनातुर (वि०) [न० त०] 1 अनुत्सुक, उदासीन 2 न थका हुआ, अक्लान्त—भेजे धर्मसनातुर—रघु० १।२१ 3 अच्छा, स्वस्थ।

अनात्मन् (वि०) [न० ब०] 1 आत्मा या मन से रहित 2 अनात्मिक 3 जिसने अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रक्खा है,—(पु०) जो आत्मिक न हो, आत्मा से भिन्न अर्थात् नश्वर शरीर। सम०—ज्ञ,—ज्ञिन् (वि०)

अपने आपको न जानने वाला, मूर्ख, अज्ञ—मा तावदनात्मज्ञो—श० ६,—संवेद्य (वि०) मूर्ख।

अनात्मनीय (वि०) [नञ्+आत्मन्+छ] जो अपने ही लाभ के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो, निःस्वार्थ, स्वार्थ रहित।

अनात्मवत् (वि०) [आत्मा अस्यास्तीत्यर्थे—नञ्+आत्मन्+मतुप् न० त०] असंयमी, इन्द्रिय परायण।

अनाथ (वि०) [न० ब०] असहाय, निर्धन, त्यक्त, मातृ-पितृहीन, बिना मा-बाप का बच्चा, विधवा स्त्री, सामान्यतः जिसका कोई रक्षक न हो—अनाथवत्सलया लोकान्तरबन्धनाथा किमस्मासु उत्तर० १।४३। सम० कथा अनाथालय।

अनादर (वि०) [न० ब०] उदासीन उपेक्षाकारक, २ [न० त०] अवहेलना, तिरस्कार, अवज्ञा—यष्टीधानादरे—पा० २।३, ३८।

अनादि (वि०) [न० ब०] आदि रहित, नित्य, अनादिकाल से चला आता हुआ,—अनादादिरनादित्व—कु० २।६। सम०—अनन्त,—अन्त (वि०) आदि और अन्त रहित, नित्य (—त) शिव, शिवन (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति न हो शाश्वत—अभ्यास (वि०) जिसका आदि, मध्य और अन्त कुछ भी न हो, नित्य।

अनादीनव (वि०) [न० त०] निर्दोष—यद्वायुर्नेवादौ समवायासक्तमस्तीत्वम्—शि० २।२२।

अनाद्य (वि०) [न० त०] 1 =दे० अनादि 2 अभक्ष्य, खाने के अयोग्य।

अनानुपूर्व्यम् [न० त०] 1 दूसरे पदों के बीच में आ जाने के कारण समास के विभिन्न पदों का पृथक्करण 2 नियत क्रम में न आना।

अनाप्त (वि०) [न० त०] 1 अप्राप्त 2 अयोग्य, अकुशल, अप्रवीण।

अनाभोग (वि०) [न० ब०] स्वार्थ कन्] बिना नाभि का,

अनामक [अप्रसिद्ध, (पु०) 1 मध्यमा 2 कनिष्ठिका तथा मध्यमा के बीच की अंगुली दे० नीचे 'अनामिका'।—(नपु०) 1 अकाशीर।

अनामय (वि०) [नास्ति आमयः रोगो यस्य न० ब०] स्वस्थ, तन्दुरुस्त,—य, अपु स्वास्थ्य अच्छा होना—महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ का० १९३, उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की, —श विष्णु (कवियों के मत में 'शिव')।

अनामा, अनामिका [नास्ति नाम अस्यानुलिस्वत् यस्या—स्वार्थे कन्] छोटी तथा बिचली अंगुलों के बीच की अंगुली—इसका यह नाम इस लिए पड़ा कि दूसरी अंगुलियों की भाँति इसका कोई नाम नहीं; पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा, अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव। सुभा०।

अनायत्त (वि०) [न० त०] जो दूसरे के वशीभूत न हो, °तो रोषस्य का० ४५ जो क्रोध के वशीभूत न हो, स्वतन्त्र—एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता—हि० २।२२, स्वतंत्र जीविका।

अनायास (वि०) [न० त०] जो कष्टप्रद या कठिन न हो, आसान,—प्रयोज्येकस्मिन् °से कर्मणि त्वया सहायेन भवितव्यम्—श० २,—स 1 सरलता, कठिनाई का अभाव,—°सेन = आसानी से, बिना किसी कठिनाई के।

अनारत (वि०) [न० त०] 1 अनवरत, निरन्तर, अबाध 2 नित्य,—तम् (अव्य०) लगातार, निरन्तर रूप से—अनारतं तेन पयोद् सलिलं। कि० १।१५, ४०।

अनारम्भ [न० त०] आरम्भ न होना—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञानं ° म प्रतीकारस्य—श० ३।

अनार्जव (वि०) [न० त०] कुटिल, बेईमान—वम् 1 कुटिलता, कपट 2 रोग।

अनार्तव (वि०) [स्त्री०—वी] [न० त०] असामयिक—वा वह कन्या जो अभी तक रजस्वला न हुई हो।

अनार्य (वि०) [न० त०] अप्रतिष्ठित, नीच, अधम—र्यं 1 जो आर्य न हो, 2 वह देश जहाँ आर्य न हों, 3 दुष्ट 4 म्लेच्छ 5 कपोतर।

अनार्यकर्म [अनार्यं देशे भवम्—अनार्य+क] अगर की लकड़ी।

अनार्ष (वि०) [न० त०] 1 जो ऋषियों से सम्बन्ध न रखता हो, अवैदिक—सङ्कटो शाकलस्थेनो अनार्षः—पा० १।१।२६, (= अवैदिकः—सिद्धा०) 2 जो ऋषि-प्रोक्त न हो।

अनालम्ब (वि०) [न० ब०] असहाय अवलम्बहीन—बः अवलम्ब का अभाव वैशेषिक, —बी शिव की वीणा।

अनालभ्या (भू) का [न० त०] रजस्वला स्त्री।

अनावर्तिन् (वि०) [न० त०] फिर न होने वाला, फिर न लौटने वाला।

अनाविद्ध (वि०) [न० त०] न बिंधा हुआ, जिसमें छिद्र न किया गया हो।

अनावृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 फिर न लौटना 2 फिर जन्म न होना, मोक्ष।

अनावृष्टि (स्त्री०) [न० त०] सूखा पड़ना, 'ईति' का एक भेद।

अनाश्रमिन् (पु०) [न० त०] जो जीवन के चार आश्रमों में से किसी को न मानता हो, न किसी से सम्बन्ध रखता हो। अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु अल्पमेकमपि द्विजः—स्मृ०।

अनाश्रव (वि०) [नञ्+आ+श्रु+अच्] जो किसी की न सुने, ढीठ, किसी की बात पर ध्यान न दे—विषयानाश्रवः रघु० १९।४९।

अनाशवस् (वि०) [नञ् + अश् + क्वसु वि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला।

अनास्था [न० त०] उदासीनता, तटस्थता, आस्था का अभाव —अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, विशेष्वनास्था खलु भौतिकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्यनास्थैषा वृत्त हि महिलं मताम्—कु० ६।१२, 2 श्रद्धा या विश्वास का अभाव, अनादर।

अनाहत (वि०) [न० त०] 1 आघातरहित, 2 कोरा या नया।

अनाहार (वि०) [न० ब०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला —र [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना।

अनाहुति (स्त्री०) [न० त०] 1 होम का न होना, कोई होम जो होम कहलाने के भी योग्य न हो 2 एक अनुचित आहुति।

अनाहूत (वि०) [न० त०] न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित। सम०—उपअनिमन्त्रित बिना बुलाया हुआ, उपविष्ट (वि०) अनिमन्त्रित अभ्यागत के रूप में बैठा हुआ।

अनिकेत (वि०) [न० ब०] गृहहीन, आवारागर्द, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (जैसे सन्यासी)।

अनिगीर्ण (वि०) [न० त०] 1 न निगला हुआ 2 (मी० शा० में) जो गुप्त या छिपा हुआ न हो, प्रस्तुत, व्यक्त।

अनिच्छ-च्छक / **अनिच्छु-च्छुक** / **अनिच्छत्** (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य न० ब०, नञ् + इच्छुक, नञ् + इष् शतृ न० त०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के।

अनित्य (वि०) [न० त०] 1 जो नित्य न हो, सदा रहने वाला न हो, क्षणभंगुर, अशाश्वत, नश्वर 2 क्षणस्थायी आकस्मिक, जो नियमत अनिवार्य न हो, विशेष, 3 असाधारण, अनियमित, 4 अस्थिर, चंचल, 5 अनिश्चित, संदिग्ध—विजयस्य ह्यनित्यत्वात्—पञ्च० ३। २२, —त्वम् (क्रि० वि०) कदाचित्, अकस्मात्। सम०—कर्मन्, —क्रिया आकस्मिक कार्य जैसा कि किसी विशेष निमित्त से किया जाने वाला यज्ञ, नैच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—दत्त, —दत्तक, —दत्रिम, माता पिता के द्वारा अस्थायी रूप से किसी को दिया गया पुत्र,—भावः क्षणभंगुरता, क्षणभंगुर स्थिति —समासः वह समास जो प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव अलग-अलग विशिष्ट पदों द्वारा भी समान रूप से प्रकट किया जाय)।

अनिद्र (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागने वाला, (आल०) जागरूक।

अनिमित्तम् [न० त०] 1 नर्क 2 जो इन्द्रिय का विषय न हो, मन।

अनिभृत (वि०) [न० त०] 1 सार्वजनिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, 2 धृष्ट, साहसी 3 अस्थिर, अदृढ़। दे० 'निभृत' भी।

अनिमकः [अन् + इमन् —अनिम —जीवन तेन कायते प्रकाशते कै + क] 1 मेंढक 2 कोयला 3 मधुमक्खी।

अनिमित्त (वि०) [न० ब०] निष्कारण, निराधार, आकस्मिक,—आलक्ष्यदन्त मुकुलाननिमित्तहासै —श० ७।१७, —त्तम् 1 पर्याप्त कारण का अभाव 2 अपशकुन, बुरा शकुन—समानिमित्तानि हि लेखयन्ति —मृच्छ० १०, —(क्रि० वि०) °त्तं, अकारण, बिना हेतु के। सम०—निराकिया अपशकुनों का निराकरण।

अनिमि (मे) ष (वि०) [न० ब०] टकटकी लगाये एक स्थान पर जमा रहने वाला, बिना आँख झपके - शनैर्मन्दक्षणामनिमेषवृत्तिभि —रघु० ३।४३, —ष 1 देवता 2 मछली 3 विष्णु। सम०—दृष्टि, —लोचन (वि०) टकटकी लगा कर या स्थिर दृष्टि से देखने वाला।

अनियत (वि०) [न० त०] 1 अनियन्त्रित 2 अनिश्चित, संदिग्ध, अनियमित (रूप आ) °वलम् आहारोऽयमे —श० २, 3 कारणरहित, आकस्मिक 4 नश्वर। सम०—अक्ष अनिश्चित अंक (गणित में) -आत्मन् (वि०) जिसका मन अपने वश में न हो,—पुंस्का दुश्चरणशील स्त्री अनाचारिणी, वृत्ति (वि०) 1 बेपरवा काम करने वाला (शब्द) जिसका प्रयोग निश्चित न हो, जिसकी आय नियत न हो।

अनियन्त्रण (वि०) [न० ब०] अयत्न, अनियन्त्रित स्वतन्त्र °अनुयायी नाम तपस्विजन —श० १।

अनियम [न० त०] 1 नियम का अभाव, नियन्त्रण, अनियमित या निश्चित क्रम का अभाव, निदेश या अवस्थित नियम का अभाव —एकम् लघु सर्वत्र साधनम् हिताहितयो, पाठे पाठे पृथक्त्वेन शास्त्रेष्वनियमो यत : छ० प० 2 अनिश्चितता, नियमाभाव, संदेह 3 अनुचित आचरण।

अनियन्त्रित (वि०) [न० त०] 1 स्पष्ट रूप से न कहा हुआ 2 स्पष्ट रूप से व्याख्या न किया हुआ जिसकी परिभाषा स्पष्ट न दी गई हो अस्पष्ट निर्वचन सहित।

अनिरुद्ध (वि०) [न० त०] बिना रुकावट वाला स्वतन्त्र अनियन्त्रित स्वच्छन्द उच्छृंखल उद्दाम, -द्धः 1 गोत्रनाम 2 प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। सम०—चक्र 1 जैसा चाहे जहाँ कोई रोक न हो, 2 आकाश, अन्तरिक्ष - आदित्यो अनिरुद्ध की पत्नी उषा।

अनिर्णय [न० त०] अनिश्चितता, निर्णय का अभाव।

अनिर्दश / **अनिर्दशाह** (वि०) [न निर्गतानि दशाहानि यस्य ब०] बच्चे के जन्म या मरण के फलस्वरूप अशौच के दस दिन जिसके न बीत हों।

अनिर्देश [न० त०] निश्चित नियम या निर्देश का अभाव।

अनिर्देश्य (वि०) [न० त०] अपरिभाषणीय, अवर्णनीय —इयं परब्रह्म की उपाधि।

अनिर्धारित (वि०) [न० त०] जिसका कोई निर्णय या निश्चय न हुआ हो।

अनिर्वचनीय (वि०) [न० त०] 1 कहने के अयोग्य, अवर्णनीय 2 वर्णन करने के अयोग्य —यम् (वेदान्त में) 1 माया, भ्रम, अज्ञान, 2 संसार।

अनिर्स्नात (वि०) [न० ब०] अनधुला, जिसने अभी स्नान नहीं किया।

अनिर्वेद [न० त०] अनवसाद, विषाद या नैराश्य का अभाव, स्वावलम्बन, उत्साह।

अनिर्विण्ण (वि०) [न० त०] खिन्न, अशान्त, दुःखी।

अनिर्वृतिः / (स्त्री०) [न० त०] 1 बेचैनी, विकलता 2 **अनिर्वृत्तिः** निश्चलता -अनिर्वृतनिशाचरी मम गृहान्तराल गता उद्भट।

अनिलः [अन् + इलच्] 1 वायु 2 वायुदेवता 3 उपदेवता, जो संख्या में ४९ हैं तथा वायु की श्रेणी में आते हैं 4 शरीर में रहने वाली वायु त्रिदोषों में से एक वात 5 गठिया या और कोई रोग जो वातप्रकोप के कारण उत्पन्न माना जाता है। सम० **अयनम्** वायु का मार्ग, आकाश, **आत्मिन्** (वि०) वायुप्रकृति, उपवास करने वाला (पु० ब०) साँप -**आत्मज** वायु का पुत्र, हनुमान् और भीम की उपाधि, **आमय** 1 वातरोग 2 गठिया **सखः** अग्नि (वायु का मित्र) इसी प्रकार **°बन्धु**।

अनिलोद्धित (वि०) [न० त०] जो सूखकर तैयार न हो, सुनिर्णीत न हो—°**कार्यस्य वाक्यात् वाक्यिनां बुधा** शि० २।२७।

अनिशम् (अव्य०) [न० ब०] लगातार, निरन्तर **अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहत्यधिमात्रम्** —शृं० ३।४, भामि० २।१६२।

अनिष्ट (वि०) [न० त०] 1 न चाहा हुआ जिसकी इच्छा न हो अवांछनीय 2 अनर्थ 3 बुरा, दुर्भाग्यपूर्ण, अमंगलसूचक 4 यज्ञ द्वारा अस्वीकृत, **ष्टम्** 1 बुराई, दुर्भाग्य, विपत्ति, 2 अनुचित बात। सम० **आपत्ति** (स्त्री०) -**आपादनम्** अवांछित पदार्थ को प्राप्त करना अवांछित घटना **-कृत्** बुराई या हानिकारक **-फल** अशुभ 1 अनीप्सित घटना 2 सदोष पदार्थ, तर्क या नियम से संबद्ध, —**त्वम्** बुरा परिणाम शका बुराई की आशंका, **हेतु** अपशकुन।

अनिष्पत्तम् (अव्य०) [न० त०] इस प्रकार जिससे कि तीर का पक्षयुक्त पंख दूसरी ओर न निकले -अर्थात् पूरा बलपूर्वक नहीं।

अनिस्तीर्ण (वि०) 1 जो पार न किया गया हो, जिसमें छुटकारा न मिला हो 2 जिसका उत्तर न दिया गया हो, जिसका निराकरण न किया गया हो (दोषारोपण की भाँति)।

अनीकः-कम् [अन् + ईकन्] 1 सेना, सैन्यपंक्ति, सैनिक दस्ता, दल, दुष्ट्वा तु पाण्डवानीकम् -भग० १।२, 2 समूह, वर्ग 3 संग्राम, लड़ाई, युद्ध 4 पंक्ति, श्रेणी, चलती हुई सेना की टुकड़ी 5 अग्रभाग, प्रधान, मुख्य। सम०—**स्थ** 1 योद्धा 2 सिपाही (सुसज्जित), पहरेदार 3 महावत या हाथी का प्रशिक्षक 4 युद्धभेरी या बिगुल 5 संकेतक, चिह्न, संकेत।

अनीकिनी [अनीकानां समूह —अनीक + इनि + ङीप्] 1 सेना, सैन्यदल, सैन्यश्रेणी 2 तीन सेनाएँ या पूर्ण सेना (अक्षौहिणी) का दसवाँ भाग।

अनील (वि०) [न० त०] जो नीला न हो, श्वेत,—**वाजिन्** (पु०) श्वेत घोड़े वाला, अर्जुन।

अनीश (वि०) [न० त०] 1 प्रभुरहित, सर्वोच्च 2 स्वामी या नियंता न होना (सब० के साथ) **गायत्र्यामनीशोऽस्मि मनुज** —शि० २, **शः** विष्णु।

अनीश्वर (वि०) [न० त०] 1 जिसके ऊपर कोई न हो, अनियन्त्रित 2 असमर्थ—शयिता सचिवैरप्यनीश्वरो मयकी कर्तुमहो मनोरथान्—भामि० २।१८२, 3 जो ईश्वर से संबद्ध न रखे 4 नास्तिक। सम०—**वादः** नास्तिक वाद, ईश्वर को सर्वोच्च शासक न मानने वाला, नास्तिक।

अनीह (वि०) [न० त०] उदासीन, इच्छारहित, हा अवहेलना, उदासीनता।

अनु (अव्य०) अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है, या क्रिया अथवा कृदन्त शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, अथवा स्वतन्त्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में कर्मकारक के साथ प्रयुक्त होता है और क्रम प्रदर्शनीय माना जाता है] 1 पश्चात्, पीछे, **सर्वं नारदमनु उपाविशति** विक्रम० ५, क्रमण मुपाधन् सविधेऽप्युपाश्रिता प्रातरनुदयनिष्ठुरं रघु० ८।२४, **अनुविष्णु** विष्णो पश्चात् सिद्धा० 2 साथ-साथ क्रम-क्रम, अल्पाल्पं सा तीरनिलयायुषा बहुत्वयोऽभवदनुरागवतीनाम् -रघु० १३।६१, **अनुराग** रागों—राग के साथ साथ स्थित या बनी हुई, 3 के बाद, उत्तरवर्ती संकेत किया जाता हुआ—**अधमनु** प्रारब्धं 4 के साथ, साथ ही, सबद्ध —**नदीमनु अवसिता** सेना सिद्धा० 5 घटिया या निम्न दर्जे का, **अनुहरि** मुरा हरिहीना, 6 किसी विशेष स्थिति या संबंध—**अवसरे विक्रमम्** सिद्धा० 7 भाग, हिस्सा, या साझा रखने वाला **लक्ष्मीहरिमनु** 8 पुनरावृत्ति, **अनुदिवम्** दिन-ब-दिन, प्रति दिन 9 की ओर, दिशा में, के निकट, पर, **-अनुवनमशनिर्गत** —सिद्धा०—**°वधि**—**नदि** शि० ७।२४, नदी के निकट 10 कथनानुसार, के अनुसार, **अनुक्रमम्**, नियमित क्रम में, **अनुलोमम्**

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भांति, के अनुकरण में—सर्वं मानव्यं ते प्रियाविरहजा त्वं तु व्यर्था मानुषु.—विक्रम० ४।२५; इसी प्रकार अनुमर्ज=बाद में मरजाना, मर्जने की नकल करना, 12 अनुरूप—तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, (अनुपतोऽस्य)।

अनुज (वि०) [अनु+कन्] 1 लालची, लोलुप 2 कामुक, विलासी।

अनुजल्पनम् [अनु+कल्प्+ल्युट्] 1 बाद का कथन 2 संवाद, प्रवचन, वार्तालाप।

अनुजीयस् (वि०) [अनु+अल्प (युवन्)+ईयसुन् कनादेशः] छोटे से बाद का, सबसे छोटा।

अनुजल्पक (वि०) [अनु+कृप्+ण्वुल्] दयालु, करुणा करने वाला।

अनुजल्पनम् [अनु+कृप+ल्युट्] करुणा, तरस, दयालुता, सहानुभूति।

अनुजल्पा (स्त्री०) [अनु+कृप्+अच्+टाप्] करुणा, दया।

अनुजल्प्य (वि०) [अनुकृप्+यत्] दयनीय, सहानुभूति का पात्र,—किं तत्र येनासि ममानुकम्पा—रघु० १४।७४; कु० ३।७६—व्यः हरकारा, दूतगामी दूत।

अनुकरणम्—कृतिः (स्त्री०) [अनुकृ+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुरूपता, समानता, शब्दानुकरणम्=एक अलंकार।

अनुकर्षः—कर्षणम् [अनु+कृष्+अच्, ल्युट् वा] 1 खिंचाव, आकर्षण, 2 (व्या०) पूर्व नियम में आगे वाले नियम का प्रयोग 3 गाड़ी का तख्ता या बुरे का लट्ठा 4 कर्तव्य का विलम्ब से पालन, अनुकर्षन् भी।

अनुकल्पः [अनु+कल्प+अच्] गुरु का गौण अनुदेश जो आवश्यकता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब कि मुख्य निदेश का प्रयोग सम्भव नहीं—प्रभुः प्रथम कल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३०, ३।१४७।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम+खञ्] अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला,—अनुकामीनता स्वञ्—मट्टि०।

अनुकारः=दे० अनुकरणम्।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामयिक।

अनुकीर्तनम् [अनु+कृत्+ल्युट्] कथन, प्रकाशन।

अनुकूल (वि०) [अनु+कूल्+अच्] 1 मनोवाञ्छित, अभिमत, जैसे कि वायु, भाग्य आदि 2 मित्रता पूर्ण कृपापूर्ण 3 अनुरूप,—लः विष्टाबाज तथा कृपालु पति, (एकरति —सा० द० का, एकनिरत एकस्यामेव नायिकायाम् आसक्त) नायक का एक भेद—लम् अनुग्रह, कृपा—नारीणामनुकूलसामाचरसि येन—काव्य० १।

अनुकूलयति (ना० धा०) अनुकूल या मुवाफिक होना, प्रसन्न होना।

अनुकृत्य (वि०) [प्रा० स०] घतुरित, 'बातेवार' जैसा कि आरा।

अनुक्रमः [अनु+क्रम्+अच्] 1 उत्तराधिकार, क्रम, तांता, क्रमस्थापन, क्रमबद्धता, उचितक्रम—प्रथमं वयसनुक्रमम्—रघु० ६।७०, स्वयूथ्यैः सर्वमनुक्रमेण—१४।६०, 2 विषय सूची, विषयतालिका।

अनुक्रमणम् [अनु+क्रम+ल्युट्] 1. क्रम पूर्वक आगे बढ़ना, 2 अनुगमन—णी,—णिका (स्त्री०) विषय सूची विषयतालिका जो किसी ग्रन्थ के क्रमबद्ध विषयों का दिग्दर्शन कराये।

अनुक्रिया=दे० अनुकरणम्।

अनुक्रोशः [अनु+क्रुश्+घञ्] दया, करुणा, दयालुता (अधि० के साथ)—भगवन्कामदेव न ते मय्यनुक्रोशः—श० ३, मेघ० ११५।

अनुक्षणम् (अव्य०) प्रतिक्षण, लगातार, बारबार।

अनुक्षत्तृ (पु०—त्री) [प्रा० स०] सारथि का सारथि का टहलुआ।

अनुक्षेत्रम् [प्रा० स०] उड़ीसा के कुछ मन्दिरों में पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति।

अनुख्यापित (स्त्री०) [अनु+ख्या+क्तिन्] 1 पता लगाना, 2 विवरण देना, प्रकट करना।

अनुग (वि०) [अनु+गम्+ड] (समा०) पीछे चलने वाला, मिलान करने वाला,—गः—अनुचर, आज्ञाकारी सेवक, साथी सद्भूतनायानुग—रघु० २।५८, ९।१२।

अनुगति (स्त्री०) [अनु+गम्+क्तिन्] पीछे चलना—गतानुगतिको लोकः—पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला दे० 'गत' के अन्तर्गत।

अनुगमः,—मनम् [अनु+गम्+अप् ल्युट् वा] 1 अनुसरण 2 सहमरण अपने स्वर्गीय पति की चिता पर विधवा स्त्री का सती होना 3 नकल करना, समीपतर आना 4 समरूपता, अनुरूपता।

अनुगर्जित (वि०) [अनु+गर्ज्+क्त] दहाड़ा हुआ,—तम् दहाड़।

अनुगवीनः [अनु+गो+खञ्] कोपाल, ग्वाला।

अनुगामिन् (पु०) [अनु+गम्+णिच्+णिनि] अनुयायी, सहचर।

अनुगुण (वि०) [ब० स०] समान गुण रखने वाला, उसी स्वभाव का, अनुकूल या रुचिकर, उपयुक्त, अनुरूप, समानशील,—(णा) उत्कण्ठितस्य हृदयानुगुणा वयस्या—मृच्छ० ३।३ मन को सुहाकर, अभिमत, मनोनुकूल (ना० धा० के अनुसार यहाँ °णा से अभिप्राय 'सखीभूता दासी' से है)—णम् (वि० वि०) 1. अनुकूल, इच्छाओं के अनुरूप 2 अधिकारपूर्वक या समरूपता के साथ (समा० में) 3 स्वभावतः।

अनुग्रह—हणम् [अनु+ग्रह्+अप्, ल्युट् वा] 1 प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार—निग्रहानुग्रहकर्ता—पंच० 1 दारार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्—रघु० २।३५, 2 स्वीकृति 3 सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला दल।

अनुग्रासक: [प्रा० स०] कौर, निवाला।

अनुचर: [अनु+चर्+ट] 1 सहचर, अनुयायी, नौकर, सेवक—तेनानुचरेण धेनो.—रघु० २।४, २६।५२, —रा,—री (स्त्री) दासी, सेविका।

अनुचारक: [अनु+चर्+ण्वुल्] अनुचर, सेवक,—रिका दासी सेविका।

अनुचित (वि०) [न० त०] 1 गलत, अनुपयुक्त 2 निराला, अयोग्य।

अनुचिन्तना, चिन्तनम् [अनु+चिन्+अ+टाप्, ल्युट् वा] 1 याद करना, सोचना, मनन करना 2 आत्मस्मरण, फिर से ध्यान में लाना, 3 अनवरत सोच, चिन्ता।

अनुच्छाह [अनु+छद्+णिच्+घञ्] साड़ी या धोती का वह छोर जो कंधे के ऊपर होकर छाती पर लटकता रहता है।

अनुच्छित्ति: (स्त्री०)—च्छेद: [अनु+छिद्+क्तिन्, घञ् वा] कट कर अलग न होना, नाश न होना, अनवरतता।

अनुज—जात (वि०) [अनु+जन्+ड, तत् वा] बाद में उत्पन्न, पीछे जन्मा हुआ, छोटा भाई· असौ कुमार स्तमजाऽनुजात रघु० ६।७८, —ज:,—जात छोटा भाई, —जा,—जाता छोटी बहन।

अनुजन्मन् (पु०) [ब० स०] छोटा भाई—जनलाघ तवानुजन्मनाम् —कि० २।१७।

अनुजीविन् (वि०) [अनुजीव+णिनि] आश्रित परोपजीवी—(पु०—वी) पराश्रयजीवी, सेवक, अनुचर अवश्यनीया प्रभवोऽनुजीविभि—कि० १।४, १०।

अनुज्ञा ज्ञानम् [अनु+ज्ञा+अङ्, ल्युट् वा] 1 अनुमति, सहमति, स्वीकृति 2 जाने की अनुमति या छुट्टी 3 बहाना 4 आज्ञा, आदेश।

अनुज्ञापक: [अनु+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] आज्ञा देने वाला, हुक्म देनेवाला।

अनुज्ञापनम्—णिच् (स्त्री०) [अनु+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, स्त्रियां वा] 1 अधिकृत बनाना 2 आज्ञा या आदेश जारी करना।

अनुज्येष्ठम् (अव्य०) ज्येष्ठता की दृष्टि के अनुसार।

अनुतर्ष: [अनु+तृष्+घञ्] 1 प्यास—सोपचारमुपजात-विचारं सानुतर्षमनुतर्षपदेन—शि० १०।२ (प्यास और छुरा), 2 कामना, इच्छा 3 अम पीने का पात्र 4 मद्य।

अनुताप: [अनु+तप्+घञ्] पश्चात्ताप, संताप—आत्मानुतापेन या विक्रय० ४।३८ संताप से पीड़ित।

अनुतर्षणम्: अनुतर्ष 3 और 4।

अनुतिलम् (अव्य० स०) दाना दाना करके अर्थात् कण कण करके, अत्यन्त सूक्ष्मता से।

अनुत्क (वि०) [न० स०] जो अधिक उत्सुक न हो, जो पश्चात्तापकारी या खेदयुक्त न हो।

अनुत्तम (वि०) [न० त०] 1 जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, प्रमुख रूप से सर्वोपरि—सर्वरत्नेषु विद्वैव हि रत्नमाहुरनुत्तमम्—हि० प्र० ४, —कांक्षन् गतिमनुत्तमाम्—मनु० २।२४२; 2 (व्या० में) जो उत्तम पुरुष में प्रयुक्त न किया जाय।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 प्रधान, मुख्य 2 बढ़िया, सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर का, मूक, उत्तर देने में असमर्थ —अवाप्यवक्ता च भवत्यनुत्तरात्—नै० 4 निश्चित, स्थिर 5 भिन्न, घटिया, छोटा, कमीना 6 दक्षिणी, —रम् उत्तर का अभाव, (टालमटूल या आनाकानी का उत्तर अनुत्तर समझा जाता है) —रां दक्षिण दिशा।

अनुत्तरंग (वि०) [न० ब०] स्थिर, अनुद्वेलित, अविक्षुब्ध —अपामिवाधारमनुत्तरंगम्—कु० ३।४८।

अनुत्थानम् [न० त०] प्रयत्न या उद्यमशीलता का अभाव।

अनुत्सूत्र (वि०) [न० त०] पाणिनि या नैतिकता के सूत्रों से अविरुद्ध, अविरुद्ध रूप, नियमित—°पदन्यासा-सद्गुणि: सन्निवचना —शि० २।११२।

अनुत्सेक: [न० त०] घमंड या अहंकार का अभाव °क्षोभस्या—मृच्छ० २।६३, शालीनता।

अनुत्सेकिन् (वि०) [अनुत्सेक+इनि] जो घमंड के कारण फूला हुआ न हो—आर्येषु °मी भव—श० ४। १७।

अनुदर (वि०) [न० ब०] पतली कमर वाला, पतला, कृश, क्षीण (दे० 'कृ')

अनुदर्शनम् [अनु+दृश्+ल्युट्] निरीक्षण।

अनुदात्त (वि०) [न० त०] मूकस्वर, जो उदात्तस्वर की भांति उच्च स्वर से उच्चरित न होता हो, स्वराघात हीन—त्त: मूकस्वर।

अनुदार (वि०) अनु [न० त०] 1 जो उदार (दानशील) न हो, कंजूस, अनुत्तम, अधम 2 जो अपनी पत्नी के अनुकूल चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुकूल चलने वाली हो—अस्मिन्महीध्रे पुर: स भवान्युदारोऽनुदारश्च-कुमार० ४; ('उदात्त' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला।

अनुदिनम्—दिवम् (अव्य० स०) प्रतिदिन, दिन-ब-दिन।

अनुदेश: [अनु+दिश्+घञ्] 1 पीछे संकेत करना, निर्देश या निदेश जो पीछे किसी पूर्व निर्देश की ओर संकेत करे -यथार्थसंज्ञानुदेश: सतां वाक्—मा० १।३।१०; 2 निदेश, आदेश।

अनुद्धत (वि०) [न० त०] जो अहंकारी या गर्वयुक्त न हो—'ता सत्पुरुषा समृद्धिभि —स० ५।१२ ।

अनुद्धुट (वि०) [न० त०] 1 जो साहसी न हो, विनीत, सौम्य 2 जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो ।

अनुद्रुत (वि०) [अनु+द्रु+क्त] 1 अनुगत, पीछा किया गया (कई बार कर्तृ० में प्रयुक्त) 2 भेजा हुआ या लौटाया हुआ (जैसे कि ध्वनि)—सम् संगीत में काल की माप=आधा द्रुत ।

अनुद्वाहः [न० त०] विवाह न होना, ब्रह्मचर्य पालन ।

अनुधावनम् [अनु+धाव्+ल्युट्] 1 पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुरग° कथितसमे ऋ० २; 2 किसी पदार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनुसंधान, गवेषणा 3 किसी स्त्री को पाने का असफल प्रयत्न करना 4 सफाई, पवित्रीकरण ।

अनुध्यानम् [अनु+ध्या+ल्युट्] 1 विचार, मनन, धार्मिक चिंतन 2 सावधिचार, याद,—या न प्रीतिर्विरूपाक्ष त्वदनुध्यानसंभवा—कु० ६।२१, 3 हितचिन्तन, स्नेहचिन्तन ।

अनुनयः [अनु+नी+अच्] 1 मनाना, प्रार्थना प्रकृतिरेक्ष स कस्यानुनय प्रतिगृह्णाति—स० ४, 2 शालीनता, शिष्टता, सान्त्वनायुक्त आचरण, 3 नम्रनिवेदन, मिन्नत, प्रार्थना, °आसञ्जनम्—विनीत संबोधन 4 अनुशासन, प्रशिक्षण, आचरण के अधिनियम ।

अनुनादः [अनु+नद्+घञ्] शब्द, कोलाहल, गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुनासक (वि०) [अनु+नी+ण्वुल्] सुशील, विनम्र, विनीत ।

अनुनायिक (वि०) [अनु+नय+ठक्] मंत्रीपूर्ण,—का नाटक की मुख्य पात्र नायिका की अनुचरी जैसे कि सखी, धात्री या दासी आदि,—सखी प्रव्रजिता दासी प्रेष्या धात्रेयिका तथा । अन्याश्च शिल्पकारिण्यो विज्ञेया ह्यनुनायिका ।

अनुनासिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] 1 नासिक्य, नासिका से उच्चरित,—कम् गुनगुनाना । सम० —आदि. अनुनासिक वर्ण (ङ ञ् ण न् म्) से आरम्भ होने वाला संयुक्त व्यंजन ।

अनुनिर्देशः [अनु+निर्+दिश्+घञ्] पूर्ववर्ती अनुक्रम के अनुसार वर्णन,—सूयमानमपदिष्टानां क्रियाकालस्य कर्मणाम् । क्रमशो योऽनुनिर्देशो यथाकालं तदुच्यते । सा० द० ।

अनुनीतिः=नु० अनुनय

अनुपक्षयः [न० त०] उपचय या वृद्धि का अभाव, °—अग्नि बिना किसी क्षति के प्राप्त किया ।

अनुपतनम्—पातः [अनु+पत्+ल्युट्, घञ् वा] 1 ऊपर पड़ना, एक के बाद दूसरे का गिरना 2 पीछा करना, अनुसरण 3 भाग 4 वैराशिक—तम् (अव्य०) [पत्+अमुच्] क्रमिक अनुसरण, अनुगमन, —लतानुपात कुसुमान्यगृह्णात्—भट्टि० २।११; (लतानुपात्य—एक लता से दूसरी लता पर जाकर, या लताओं को झुका कर) ।

अनुपथ (वि०) [प्रा० स०] मार्ग का अनुसरण करने वाला,—थम् (क्रि० वि०) सड़क के साथ साथ ।

अनुपद (वि०) [प्रा० स०] नितान्त कदम कदम अनुसरण करता हुआ, दम् सम्मिलित गायन, गीत का टेक, (अव्य०) 1 कदम के साथ—साथ, पैरों के निकट; 2 कदम कदम करके, प्रति पद, 3 शीघ्रता 4 एड़ियों पर, बिल्कुल पीछे, तुरन्त बाद—गच्छतां पुरो भवन्तौ, अहमप्यनुपदमागत एव—श० १ (प्रायः सर्व० के साथ, या समास में इसी अर्थ में) (तौ) आश्रिताभनुपद क्रमस्पृशत् पाणिना रघु० ११।३१, —अन्वीयुः प्रतिगृह्यतामनुपदमित्यं —१।४४ ।

अनुपदवी [प्रा० स०] मार्ग, सड़क ।

अनुपदिन् (वि०) [अनुपद+इनि] अनुसरण करनेवाला पढ़ने वाला अर्थात् अन्वेषक, या पृच्छक—अनुपदमन्वेष्टा एवामनुपदी सिद्धा० ।

अनुपधोना [अनुपध+स—टाप्] घुना, घुट, ऊँची एड़ियों का जूता, या चप्पल ।

अनुपप्लव [न० ब०] उपद्रव रहित, ऐसा अक्षर जिसके पूर्व कोई दूसरा अक्षर न हो ।

अनुपधि (वि०) [न० ब०] छल रहित, कपट रहित —रक्ष्यः सामन्तमनुपधि विशुद्ध विजयते रघु० २।२ ।

अनुपपत्तिः [न० त०] 1 अर्जन न करना, अज्ञान न होना 2 अनिश्चितता, सन्देह, प्रमाणाभाव ।

अनुपपन्नः [न० त०] 1 अनुचित, असंगत, अयुक्तियुक्त, अतर्कसंगत, अनुपयुक्त, अनुपयोगी, अनुपयुक्त, अनुपयोगी, अनुपयुक्त, अनुपयोगी

अनुपशयः [न० त०] रोग को उभाड़ने या भड़काने वाली परिस्थिति।

अनुपसंहारिन् [न० त०] न्यायशास्त्र में हेत्वाभास का एक भेद जिसके अन्तर्गत पक्षसंबंधी सभी ज्ञात बातें ली जाती हैं, और दृष्टान्त द्वारा, चाहे वह विधेयात्मक हो या निषेधात्मक, कार्यकारण-सिद्धांत के सामान्य नियम का समर्थन नहीं हो पाता—यथा सर्वं नित्यं प्रमेयत्वात्।

अनुपसर्गः [न० त०] 1 उपसर्ग की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० ब०) जिसमें कोई उपसर्ग न हो।

अनुपस्थानम् [अनुप + स्था + ल्युट्] अभाव, निकट न होना।

अनुपस्थित [नञ् उप + स्था + क्त] जो उपस्थित नहीं, अप्रस्तुत।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) [अनुप + स्था + क्तिन्] 1 गैरहाजरी 2 याद करने की अयोग्यता।

अनुपहत (वि०) [न० त०] 1 जिसे चोट नहीं लगी 2 अप्रयुक्त, कोरा, नया (कपड़ा)।

अनुपाख्य (वि०) [न० ब०] जो स्पष्ट रूप से दिखलाई न दे या पहचाना न जा सके।

अनुपात: सु० अनपलनम्।

अनुपातकम् [अनु + पत् + णिच् + ण्वुल्] अन्य पातक जैसे चोरी, हत्या, अभिचार आदि, विष्णुस्मृति में ऐसे ३५ तथा मनुस्मृति में ३० पातक गिनाये गये हैं।

अनुपानम् [अनु - पा - ल्युट्] दवा के साथ या पीछे पी जाने वाली वस्तु, औषधि लेने की मात्रा।

अनुपालनम् [अनु - पाल् - ल्युट्] प्रतिपालन, सुरक्षण, आज्ञापालन।

अनुपुत्रः [प्रा० स०] अनुयायी।

अनुपूर्व (वि०) [प्रा० स०] 1 नियमित, उपयुक्त क्रम रखने वाला, क्रमबद्ध - वृत्तानुपूर्वं च न वर्तितव्यं—कु० १।३५ °केश जिसके बाल यथाक्रम हैं, °पात्र जिसके अंग सुगठित हैं, इसी प्रकार °दंष्ट्र, °नाभि, °पाणि 2 क्रमबद्ध मिलमिलेदार 1 मणि०—ब (वि०) नियमित परम्परा में उत्पन्न,—कहा नियमित क्रम से बच्चे देने वाली गाय।

अनुपूर्वशः [(क्रि० वि०) नियमित क्रम में, क्रमागत रीति
अनुपूर्वम्] से।

अनुपेत (वि०) [न० त०] 1 विरहित २ यज्ञोपवीत धारण न किये हुए।

अनुप्रकाशनम् [अनु+प्र + काश् + ल्युट्] पदचिह्नों का अनुसरण, टोह लगाना।

अनुप्रकाशम्, अनुप्रकाशम्—[अव्य० स०] क्रमागत रीतिपूर्वक—गेहं °तम्-दम् आस्ते, गेहम् अनुप्रकाशम्-दम् सिद्धा०।

अनुप्रक्षेपः [प्रा० स०] अतिरिक्त उपक्षेप, आवृत्ति।

अनुप्रवेशः [अनु+प्र+विश्+घञ्] 1 घालना—रघु० ३।२२, १०।५१; 2 अनुकरण—अपने को दूसरे की इच्छा के अनुकूल ढालना।

अनुप्रश्नः [प्रा० स०] बाद में किया जाने वाला प्रश्न। (अध्यापक के पूर्व कथन से संबंद्ध)।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+सञ्ज्+क्तिन्] 1 प्रवाह सबंध 2 शब्दों का अव्यवहित तर्क संगत सम्बन्ध।

अनुप्रसादनम् [अनु+प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] आराधन, संराधन।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+आप्+क्तिन्] आप्त करना, पहुँचना।

अनुप्रासः [अनु+प्र+अस्+घञ्] अनुयायी, सेवक —सानुप्रासप्रभुरपि जनवाराणाम्- रघु० ११।७५।

अनुप्रासः [अनु+प्र+अस्+घञ्] एक समान ध्वनियों अक्षरों या वर्णों की पुनरावृत्ति—वर्णसाम्यमनुप्रासः —काव्य०; परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ६३१–३८, और काव्य० ९वां उल्लास।

अनुबद्ध (वि०) [अनु+बध्+क्त] 1 बँधा हुआ, जकड़ा हुआ, 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, फल स्वरूप आने वाला 3 संबद्ध 4 अनवरत चिपका हुआ, लगातार।

अनुबंधः [अनु+बध्+घञ्] 1 बंधन, कसना, संबंध, आसक्ति, लगाव (प्रायः अप्र०) 2 अबाध परम्परा, सातत्य, श्रेणी, शृंखला—वाच्य कुछ स्थिरतया चिरतानुबध्नन्—शि० ४।१४, धैर्य°, मत्सर°; सानुबंधाः कर्म न स्यु सपदो में निरापद — रघु० १।६४; 3 अनुक्रम, फल (शुभ या अशुभ) 4 इरादा, योजना, प्रयोजन, कारण —अनुबंधं परिज्ञाय देश-कालौ च तत्त्वतः। सारापराधौ वालोक्य दण्डं दशयेत् पातयेत्—मनु० ८।१२६; 5 संबंध जोड़ने वाला, सौष्ठव 6 आरंभिक तर्क (वेदान्त के आवश्यक तत्त्व) 7 (व्या०) एक संकेतक अक्षर जो कि इस शब्द के स्वर या विभक्ति में कुछ विशेषता का द्योतक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो—जैसे कि 'धन्' में ल् 8 बाधा, रुकावट 9 आरंभ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुगमन।

अनुबंधनम् [अनु+बंध्+ल्युट्] संबंध, परम्परा, सिलसिला आदि।

अनुबंधिन् (वि०) [अनुबंध+इनि] [प्रायः समस्त पद के अन्त में] 1 संबद्ध, आसक्त, संयुक्त 2 क्रम, परिणामी, फलस्वरूप-दुःख दुःखानुबंधि—विक्रम०; ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख कभी अकेला नहीं आता 3 फलता फूलता हुआ, उत्पन्न, अबाध—ऊर्ध्वं गत वस्तु न चानुबंधि—रघु० ६।६७, अबाध या सर्व व्यापक।

अनुबंध्य (वि०) [अनु+बध्+ण्यत्] 1 अधीन, सुलभ; 2 बांधे जाने के लिए (जैसे बैल)।

अनुयन्त्रम् [प्रा० स०] पीछे स्थित सैन्यदल, मुख्य सेना की रक्षा के लिए पीछे आती हुई सहायक सेना।

अनुयोगः [अनु+युज्+घञ्] 1 बाद का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कम पढ़ी हुई सूचना को पुनर्जीवित करना।

अनुयोजनम् [अनु+युज्+ल्युट्] प्रत्यास्मरण, पुनःस्मरण।

अनुभवः [अनु+भू+अप्] 1 साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान, व्यक्तिगत निरीक्षण और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान, मन के संस्कार जो स्मृतिजन्य न हो ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैयायिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार साधन मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक इनमें अर्थापत्ति और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं), 2 तजुर्बा—अनुभव बचना सन्धि लुप्तसि—मै० ४।१०५, 3 समझ 4 फल, परिणाम। सम०-सिद्ध (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात।

अनुभावः [अनु—भू+णिच्+घञ्] 1 मर्यादा, व्यक्ति की मर्यादा या गौरव राजसी चमक दमक, वैभवशक्ति, बल, अधिकार,—(परिमेयपुर सरौ)। अनुभाव, विशेषात् सेनापरिवृताधिव—रघु० १।३७;—समाक्षनीयानुभावा अस्याकृति —श० ७, २. (सा० शा० में) वृष्टि, संकेत आदि उपयुक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना,—भाव मनोगत साक्षात् स्वयमेव व्यञ्जयति ये तेऽनुभावा इति स्मृताः, यथा भ्रमण क्षोपन्य व्यञ्जक —दे० सा० द० १९२, 3 दृढ़ संकल्प विश्वास।

अनुभावक (वि०) [अनु+भू+णिच्+ण्वुल्] अनुभव कराने वाला, द्योतक।

अनुभावनम् [अनु+भू+णिच्+ल्युट्] संकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का द्योतक।

अनुभाषणम् [अनु+भाष्+ल्युट्] 1 कही हुई बात को समझने के लिए फिर से कहना, 2 कही हुई बात की पुनरावृत्ति।

अनुभूतिः (स्त्री०)=नु० अनुभव।

अनुभोगः—[अनु+भुज+घञ्] 1 उपभोग 2 की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफी जमीन।

अनुभ्रातृ (पु०) [प्रा० स०] छोटा भाई।

अनुमत (वि०) [अनु+मन्+क्त] 1 सम्मत, अनुज्ञात, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, °ममता—श० ४।९, जाने के लिए अनुज्ञप्त 2 चाहा हुआ, प्रिय,—क्त प्रेमी —म् स्वीकृति, अनुमोदन, अनुज्ञप्ति।

अनुमतिः (स्त्री०) [अनु+मन्+क्तिन्] 1 अनुज्ञा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा। सम० —पत्रम् स्वीकृति सूचक पत्र या लेख।

अनुमननम् [अनु+मन्+ल्युट्] 1 स्वीकृति, रजामंदी 2 स्मरणता।

अनुमन्त्रणम् [अनु+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] मन्त्रों द्वारा आवाहन या प्रतिष्ठा।

अनुमरणम् [अनु+मृ+ल्युट्] पीछे मरना—तन्मरणे चानुमरणं करिष्यामीति मे निश्चयः—हि० ३, विधवा का सती होना।

अनुमा [मा+अङ्] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति।

अनुमानम् [अनु+मा+ल्युट्] 1 अनुमिति के साधन द्वारा किसी निर्णय पर पहुँचना दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान, उपसंहार, न्याय शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार साधनों में से एक 2 अटकल, अन्दाजा 3 सादृश्य 4 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें प्रमाण निर्धारित वस्तु का भाव अनोखे ढंग से प्रकट किया जाता है— सा० द० ७११—एष पत्रभङ्गः बलाना दृष्टिनिक्षिप्ता पक्ष्मलि नत्र शंग, तत्कालपरोपितशरो वाक्यालो पुर स्मरो मन्ये ॥ दे० काव्य० १०। सम०—उक्तिः (स्त्री०) तर्कना, तर्क संगत अनुमान।

अनुमापक (वि०) [स्त्री०—पिका] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आधार बन सके।

अनुमास [प्रा० स०] आगामी महीना, —अम् (अव्य०) प्रतिमास।

अनुमितिः (स्त्री०) [अनु+मा+क्तिन्] दिये हुए कारणों से किसी निर्णय पर पहुँचना, वह ज्ञान जो चिंतन द्वारा या न्यायसंगत तर्क द्वारा प्राप्त हो।

अनुमेय (वि०) [अनु+मा+यत] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला—कलानुमेया प्रारम्भा —रघु० १।२०।

अनुमोदनम् [अनु+मुद्+ल्युट्] सहमति, समर्थन, स्वीकृति, सम्मति।

अनुयाज [अनु+यज्+घञ्] यज्ञीय अनुष्ठान का एक अंग, गौण या पूरक यज्ञानुष्ठान, [प्राय 'अनुयाज' लिखा जाता है 'अनुयाग' भी]।

अनुयातृ (पु०) [अनु+या+तृच्] अनुयायी।

अनुयात्रम्—या [अनु+यातृ+अम् स्त्रियां टाप्] परिजन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण।

अनुयायिक [अनुयाया+ठन्] अनुचर, सेवक, रा० १।२।

अनुयानम् [अनु+या+ल्युट्] अनुसरण।

अनुयायिन् (वि०) [अनु+या+णिनि] अनुयायी, सेवक, अनुवर्ती —(पु०) पीछे चलने वाला (ब० व्यापा०) —रामानुजानुयायिन—परावर्तकों या सेवक,—अथवेति सेवोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, १९।

अनुयोक्तृ (पु०) [अनु+युज्+तृच्] परीक्षक, शिक्षक, अध्यापक।

अनुयोगः [अनु+युज्+घञ्] 1 ध्यान, पूछना, परीक्षा 2 निदा, शिकायत 3 याचना 4 अभ्यास 5 बालिक चिन्तन टीका-टिप्पण । सम०—कृत् (पुं०) 1 प्रश्नकर्ता 2 अध्यापक, अध्यात्म गुरु ।

अनुयोजनम् [अनु+युज्+ल्युट्] ध्यान, पूछना ।

अनुयोक्ता [अनु+युज्+तृच्] सेवक ।

अनुरक्त (वि०) [अनु+रञ्ज्+क्त] 1 लाल किया हुआ, रंगीन 2 प्रसन्न, सन्तुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु+रञ्ज्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति, अनुराग, स्नेह ।

अनुरञ्जक (वि०) [अनु+रञ्ज्+ण्वुल्] प्रसन्न करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला ।

अनुरञ्जनम् [अनु+रञ्ज्+ल्युट्] आराधन, सन्तुष्ट करना, सुख देना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट रखना ।

अनुरणनम् [अनु+रण्+ल्युट्] 1 अनुरूप लगना, नूपुर या घुघरुओं की आवाज से उत्पन्न अनवरत प्रतिध्वनि, 2 'व्यंजना' नामक शब्द शक्ति, सा०, वाच्यार्थ कथन से व्यंजित होने वाला अर्थ व्यंग्य-क्रमव्यंग्यध्वनेर्वाच्यानुरणनरूपो ही व्यंग्य —सा० द० ४ ।

अनुरतिः (स्त्री०) [अनु+रम्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति ।

अनुरम्भा [प्रा० स०] पगडंडी, उपमार्ग ।

अनुरवः,—रितम् [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुरहस् (वि०) [प्रा० स०] गुप्त, एकान्तप्रिय, निजी, —सं (क्रि० वि०) एकान्त में ।

अनुरागः [अनु+रञ्ज्+घञ्] 1 लालिमा 2 भक्ति, आसक्ति, निष्ठा, (विप० अपराग) प्रेम, स्नेह (अधि० के साथ या समास में) कटाक्षैस्तेन प्रथयति मयस्यनुराग कपोलेन—का० ३।१५, रघु० ३।१०, °सूचित संकेत या प्रेम को प्रकट करने वाला एक आशासंकेत ।

अनुरागिन् } (वि०) [अनुराग+इनि, मतुप् वा] आसक्त,
अनुरागवत् } प्रेम से उल्लसित ।

अनुरात्रम् (क्रि० वि०) [अव्य० स०] रात में, हर रात प्रति रात्रि ।

अनुराधा [प्रा० स०] २७ नक्षत्रों में से सत्रहवां नक्षत्र, पद चार नक्षत्रों का समूह है ।

अनुरूप (वि०) [प्रा० स०] 1 सदृश, मिलता-जुलता, तदनुकूल, योग्य, अनुरूप वरम् -रा० १, 2 उपयुक्त या योग्य, अनुकूल, (षष्ठ० के साथ या समास में) —अथ विष्णुरनुरूपश्च सर्वलोकेशानां विश्वम० ५।२१ ।

अनुरूपवत्,—पतः } (वि० वि०) समानरूपता या अभिमति-
—पेण,—पशः } पूर्वक ।

अनुरोधः- धनम् [अनु+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 विनय, आराधना, इच्छापूर्ति करना 2 समानता, अनुरूपता, निदान, विचार धर्मानुरोधात् -का० १३०, १८० १९२, 3 आग्रहपूर्वक प्रार्थना, याचना, निवेदन 4 नियम का पालन ।

अनुरोधिन्—धक (वि०) [अनुरोध+इनि, अविरुद्ध+ण्वुल्] विनयी ।

अनुलापः [अनु+लप्+घञ्] आवृत्ति, पुनरुक्ति ।

अनुलोमः, -मम् [अनुलम्+घञ् मन् वा] ओर ।

अनुलेपः -लेपनम् [अनु+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अभिषेक, देहमर्दन 2 सुगंधित लेप, उबटन —सुरभिकुसुमधूपानुलेपनादि—का० ३२४ ।

अनुलोम (वि०) [प्रा० स०] 1 'बालों में'—ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला—नियमित, स्वाभाविक क्रमानुसार (विप० प्रतिलोम), (अत.) अनुकूल—'कृष्ट क्षेत्र प्रतिलोम कर्षति—सिद्धा०, नियमित दिशा में हल चलाया हुआ, 2 मिश्रित (जैसे कि जाति)—मम् (क्रि० वि०) स्वाभाविक या नियमित क्रम में —ज (ब० व०) मिश्रित जातियां । सम०—अर्क (वि०) पक्ष में बोलने वाला,—अनुलोमप्रतिलोमाभ्यां प्रवाच. कुलिना पिर —शि० २।२५,—ज,—जात (वि०) ठीक क्रम में उत्पन्न, उच्चवर्ण के पिता तथा नीचवर्ण की माता से उत्पन्न सन्तान, मिश्रित जाति का ।

अनुल्बण (वि०) [न० त०] 1 अधिक नहीं, न कम न अधिक 2 स्पष्ट या साफ नहीं ।

अनुवंशः [प्रा० स०] वंशतालिका ।

अनुवक्र (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत टेढ़ा, कुछ टेढ़ा या तिरछा ।

अनुवचनम् [अनु+वच्+ल्युट्] आवृत्ति, सस्वर पाठ, अध्यापन ।

अनुवत्सरम् [प्रा० स०] वर्ष ।

अनुवर्तनम् [अनु+वृत्+ल्युट्] 1 अनुचरण (आत्म० भी), अनुवर्तिता, आज्ञाकारिता, अनुकूलता 2 प्रसन्न करना, अनुग्रह करना 3 स्वीकृति 4 फल, परिणाम 5 पूर्वसूत्र से पुनरुक्तरण ।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु+वृत्+णिनि] 1 अनुचारी, आज्ञाकारी 2 अनुरूप (कर्म० के साथ या समास में) ।

अनुवश (वि०) [प्रा० स०] दूसरे की इच्छा के अधीन, आज्ञाकारी -ता अधीनता, आज्ञाकारिता ।

अनुवाकः [अनु+वच्+घञ्] 1 आवृत्ति करना 2 वेद के उद्धरण, अनुवाद, अध्याय ।

अनुवाचनम् [अनु+वच्+णिच्+ल्युट्] 1 सस्वर पाठ कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्वयं पाठ करना, दे० 'वच् अनु के साथ ।

अनुवातः [प्रा० स०] वह दिशा जिस ओर की हवा हो ।

अनुवादः [अनु+वद्+घञ्] 1 सामान्य रूप से आवृत्ति 2 व्याख्या, उदाहरण, या समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति 3 व्याख्यात्मक आवृत्ति या पूर्वकथित बात का

उल्लेख, विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थों का वह भाग जिसमें पूर्वोक्त निदेश या विधि की व्याख्या, विवरण या उसके टीका-टिप्पण निहित हैं और जो स्वयं कोई विधि या निदेश नहीं है 4 समर्थन 5 विवरण, अफवाह।

अनुवादक, वादिन् (वि०) [अनु+वद्+ण्वुल्—णिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर।

अनुवाद्य (वि०) [अनु+वद्+णिच्+यत्] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाक्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरीतार्थक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या निषेध करता है, वाक्य में पहले से ज्ञात अनुवाद्य या कर्ता की पुनरुक्ति विधेय के साथ सबंध जतलाने के लिए की जाती है, अतः उसे वाक्य में पहले रक्खा जाता है—अनुवाद्यमनुक्तर्वं विधेयमुदीरयेत्।

अनुवारम् (अव्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा।

अनुवास—सनम् [अनु+वास्+घञ्, ल्युट् वा] 1 सामान्यतः घृत आदि सुगंधित द्रव्यों से सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे उठाकर सुगंधित बनाना 3 (न भी) पिचकारी, तेल का एनिमा करना, या स्निग्ध बनाना।

अनुवासित (वि०) [अनु+वास्+क्त] धूपित, धूनी दिया हुआ, सुगंधित किया हुआ।

अनुविधिः (वि०) [अनु+विध्+किन्] निरंतर प्राप्ति।

अनुविद्ध (वि०) [अनु+व्यध्+क्त] 1 छिदा हुआ सूराख किया हुआ, कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन काव्यता—सा० द० 2 ऊपर फैला हुआ, अन्तर्जटित, पूर्ण, व्याप्त, मिश्रित, मिलावट वाला अन्तर्मिश्रित—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, 3 संयुक्त, संबद्ध 4 स्थापित, जड़ा हुआ, चित्रित—रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः—रघु० ६।६३।

अनुविधानम् [अनु+वि+धा+ल्युट्] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुरूप कार्य करना।

अनुविधायिन् (वि०) [अनु+वि+धा+णिनि] आज्ञाकारी विनीत।

अनुविनाशः [अनु+वि+नश्+घञ्] बाद में नष्ट होना।

अनुविधिः [अनु+वि+स्तृभ्+घञ्] फलस्वरूप बाधा का होना।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्+क्त] 1 आज्ञाकारी अनुगामी 2 अबाध, निरन्तर।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु+वृत्+क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुकूलता, अनुगामिता, नैरन्तर्य 3 अनुकूल या उपयुक्त कार्य करना, आज्ञापालन, यौन सहवास सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना-कर्तार° चानुर्यामपि शिक्षितं बत्सेन - उत्त० ३, मा० ९, 4 (व्या०) आगामी नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति या पूर्ति, पिछले नियम का आगामी नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनरुक्ति - वर्णानामनुवृत्तिरनुप्रासः।

अनुवेश - नु० अनुप्रवेश।

अनुवेलम् [अव्य०] [प्रा० स०] कभी कभी बारबार इति स्म पृच्छत्यनुवेलमादृता - रघु० ३।१५।

अनुवेश शनम् [अनु+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अनुगमन बाद में दाखिल होना, 2 बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का विवाह।

अनुव्यञ्जनम् [अनु+वि+अञ्ज्+ल्युट्] गौण लक्षण या चिन्ह।

अनुव्यवसाय [अनु+वि+अव+सै+घञ्] (न्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या चेतना, (वेदा० में) मनोभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण।

अनुव्याध-धेध [अनु+व्यध्+घञ्, विध्+घञ् वा] 1 चोट पहुँचाना, छेदना सूराख करना न हि कीटानुवेधादयो रत्नस्य रत्नत्वं व्याहन्तुमीशाः सा० द० १, 2 गहरा भेद्य मुखामोद मदिरया कृतानुव्याधमुद्गमम्—शि० २।२० 3 मिश्रण 4 बाधा डालना।

अनुव्याहरणम्-व्याहारः [अनुव्या+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1 पुनरुक्ति बारबार कथन 2 अभिनाद कोसना।

अनुव्रजनम्-व्रज्या [अनु+व्रज्+ल्युट्, क्यप् वा] अनुगमन अनुसरण विशेषतया विदा होता हुआ अभ्यागत।

अनुव्रत (वि०) [प्रा० स०] भक्त, निष्ठावान्, समान (कर्म० या सम्ब० के साथ)।

अनुव्रतिक (वि०) [अनु व्रत ठन्] सौ के मोल या सौ में मोल लिया हुआ।

अनुव्रज्या [अनु+व्रज्+अच्] 1 पश्चात्ताप अनुताप अत्र रज, अनुव्रजाम्यहमनुतप्त सा० ८,—इसी तरह या भूयिति शिक्षम० ८ शि० २।१४, 2 क्रोध बैर या द्वेष शिक्षुपालानुशय पर मत - शि० १२। २, —यस्मिन्नमुक्तानुशया सदैव आसीत भूजगी - मा० ९।१ 3 घृणा 4 गहरा सम्बन्ध, जैसा कि कर्मानुशय (किसी पदार्थ से) गहरा आसक्ति 5 (सां० में) दुष्कर्मों का परिणाम या फल जो कि उसके साथ संयुक्त रहता है और पुनर्जन्म में अच्छाई शक्ति का उपभोग कराके फिर जीव को संसार में प्रविष्ट करता है 6 ऋण के मामलों में सूद जिसे पारिभाषिक रूप में 'उत्पादन' कहते हैं दे० कौटानुशय।

अनुशयान (वि०) [अनु+शी+शानच्] सोना प्रकट करता हुआ या नायिका का एक भेद, यह नायिका अपने प्रेमी के विश्राम का ख्याल करके उदास और खिन्न रहती है।

अनुशायिन् (वि०) [अनुशय+णिनि] 1 अनुरक्त, भक्त

अनुतापः 2 पश्चात्ताप करने वाला, पछताने वाला 3 अत्यधिक घृणा करने वाला 4 वाली किसी फल के कारण संबद्ध।

अनुदरः [अनु+दृ+अच्] भूत प्रेत, राक्षस।

अनुदासक,-दासिन् (वि०) [अनु+दास्+ण्वुल्, णिनि तृच् वा] निर्देशक, शिक्षक, शासन करने वाला, दंड देने वाला —कवि पुराणमनुशासितारम्—भग० ८।९, शासन कर्ता,-एष चोदानुशासी राजेति सर्वादुत्पतित —विक्रम० ४।

अनुशासनम् [अनु+शास्+ल्युट्] आदेश, प्रोत्साहन, शिक्षण नियमों विधियों का बनाना —सर्वसंधिक्षेप इवानुशासनम् - कि० १।२८, आदेश या शिक्षा के शब्द; तस्यतोरनुशासनम् - मनु० ८।११९, शासकीय ° राजाओं के लिए संबंधी नियमों का निर्धारण तथा व्याख्या शब्दानुशासनम्—सिद्धा०।

अनुशिक्षिन् [अनुशिक्ष्+णिनि] क्रियाशील, सीखने वाला।

अनुशिष्टि (स्त्री०) [अनुशास्+क्तिन्] शिक्षण, अभ्यापन, आदेश, आज्ञा।

अनुशीलनम् [अनु+शील्+ल्युट्] अविच्छिन्न तथा श्रमपूर्ण प्रयास, सतत प्रयत्न या अभ्यास, सतत या बारबार अभ्यास या अध्ययन।

अनुशोक, शोचनम् [अनु+शुच्+घञ्, ल्युट् वा] रंज, पश्चात्ताप, खेद, इसी अर्थ में अनुशु (शो) क्षितम्।

अनुश्रव [अनु+श्रु+अच्] वैदिक परंपरा।

अनुषक्त (वि०) [अनु+सञ्+क्त] 1 संबद्ध 2 संलग्न या संयुक्त।

अनुषंग [अनु+सञ्+घञ्] 1 गहन लगाव, संबंध, संपर्क साहचर्य, 2 मेल 3 शब्दों का वाक्यात्मिक संबंध 4 आवश्यक परिणाम 5 दया, नरमी, करुणा।

अनुषंगिक (वि०) [अनुषंग+ठक्] अनिवार्य फलस्वरूप, सहवर्ती।

अनुषंगिन् (वि०) अनु+सञ्+घञ्+णिनि] 1 संबद्ध, अनुरक्त संयुक्त 2 अनिवार्य परिणाम के रूप में आने वाला, 3 व्यावहारिक, सामान्य, जो आने वाला —विभूतानुषंगि मयमेति मन.—कि० ६।३५।

अनुषंजनीय (वि०) [अनु+सञ्ज्+अनीय] (शब्द की भांति) गृहवाक्य में जाने।

अनुषेकः, -सेचनम् [अनु+सिच्+घञ्, ल्युट् वा] बौछारा पानी देना, फिर से जल छिड़कना।

अनुष्टुप्तिः (स्त्री०) [अनु+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति-गिरा (छन्दानुसार)।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) [अनु+स्तुभ्+क्विप्] 1 प्रशंसा में अनुगमन, वाणी 2 सरस्वती 3 छन्दों में अक्षरों का एक छंद जिसमें आठ २ अक्षरों के चार २ पाद होते हैं।

अनुष्ठातृ,-ष्ठायिन् (वि०) [अनु+स्था+तृच्, णिनि वा] कार्य करने वाला, अनुष्ठान करने वाला।

अनुष्ठानम् [अनु+स्था+ल्युट्] 1 कार्य करना, धर्मकृत्य करना, कार्य में परिणत करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञापालन, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्—श० ४; धार्मिक तपस्चर्याओं का प्रयोग 2 आरंभ, उत्तरदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपद्धति, कार्यपद्धति, 4 धार्मिक संस्कारों या कृत्यों का प्रयोग।

अनुष्ठापनम् [अनु+स्था+णिच्+ल्युट्] कार्य कराना।

अनुष्ण (वि०) [न० त०] 1 जो गर्म न हो, ठंडा 2 शीतल, सुस्त, शिथिल—क्ष्म शीतरश्मि,—क्ष्मम् कुमुद, नीलकमल।

अनुसंधः [अनु+स्यन्द्+घञ्] पिछला पहिया।

अनुसंधानम् [अनुसम्+धा+ल्युट्] 1 पूछताछ, गवेषण, गहन निरीक्षण या परीक्षण, खोज 2 उद्देश 3 योजना, क्रमबद्ध करना, तत्पर होना 4 उपयुक्त संयोग।

अनुसंहित (वि०) [अनु+सम्+धा+क्त] पूछताछ किया गया, खोज पड़ताल किया गया,—तम् (क्रि० वि०) संहिता-पाठ में, संहिता-पाठ के अनुसार।

अनुसक्थः [प्रा० स०] नियमित और उचित संयोग जैसे कि शब्दों का।

अनुसमापनम् [अनु+सम्+आप्+ल्युट्] नियमितरूप से किसी कार्य की समाप्ति।

अनुसक्त (वि०) [अनु+सम्+सञ्ज्+क्त] संयुक्त।

अनुसरः [अनु+सृ+अच्] अनुगामी, साथी, अनुचर।

अनुसरणम् [अनु+सृ+ल्युट्] 1 अनुगमन, पीछा करना, पीछे जाना 2 समनुरूपता।

अनुसर्पः [अनु+सृप्+अच्] सर्पसदृश जन्तु, सरीसृप।

अनुसवनम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 यज्ञ के पश्चात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण।

अनुसाद (वि०) [प्रा० स०] बनाया हुआ, मित्र संयुक्त, अनुकूल।

अनुसायम् (अव्य०) [प्रा० स०] प्रति सायंकाल।

अनुसूचनम् [अनु+सूच्+ल्युट्] संकेत करना, इशारा करना।

अनुसारः [अनु+सृ+घञ्] 1 पीछे जाना, अनुगमन (आल० भी), पीछा करना -ब्रह्मानुसारेण जयलोभ्य श० ७ शिखर से आवाज आ रही थी उस ओर देखते हुए 2 समनुरूपता, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, 3 प्रथा, रिवाज, रस्म 4 माना हुआ अधिकार।

अनुसारक, -सारिन् (वि०) [अनु+सृ+ण्वुल् णिनि वा] 1 अनुगामी, पीछा करने वाला, पीछे आने वाला, सेवा करने वाला मृगानुसारिणं पिनाकिनम्—श० १।६; -कृपयानुसारि च मनस्—पंच० १।२७८; 2 के

अनुकूल या समनुरूप, बाद में आने वाला—वचाशास्त्रं° मनु० ७।३१; 3 तलाश करना, ढूंढना, खोजना, जाँच करना।

अनुसारणा [अनु+सृ+णिच्+ल्युट्+टाप्] पीछे जाना, पीछा करना—तस्मात्सकलप्रयत्नानां कुर्यात्लाघवानुसारणम् - महा०।

अनुसूचक (वि०) [अनु+सूच्+ण्वुल्] संकेत करने वाला, इशारा करने वाला।

अनुसृतिः (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] पीछे जाना, अनुसरण, अनुरूप होना, अनुसार होना।

अनुसेवम् [प्रा० स०] सेना का पिछला भाग, अनुरक्षक सेना।

अनुस्यूतम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः प्रविष्ट होकर क्रमानुसार अन्दर जाकर -सेहे नेहमनुस्यूतम्-सिद्धा०।

अनुस्तरणम् [अनु+स्तृ+ल्युट्] चारों ओर बखेरना या फैलाना, —णी गाय, विशेषतया वह गाय जिसका अग्निदान अन्त्येष्टि संस्कार के समय किया जाय।

अनुस्मरणम् [अनु+स्मृ+ल्युट्] 1 फिर से ध्यान में लाना, स्मरण करना, 2 बारबार स्मरण करना।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] 1 वह स्मृति या स्मरण जो प्रिय हो 2 अन्य विषयों को छोड़कर केवल एक ही बात का चिन्तन करना।

अनुस्यूत (वि०) [अनु+सिव्+क्त—ऊठ्] 1 निर्बाध तथा निर्बाध रूप से मिला कर बुना हुआ 2 सिला हुआ, बंधा हुआ, 3 सुबद्ध और सुश्रृंखलित।

अनुस्वानः [अनु+स्वन्+घञ्] 1 अनुरूप शब्द करना 2 बाद में शब्द करना, गूंज, दे० 'अनुरणन'।

अनुस्वारः [अनु+स्वृ+घञ्] नासिक्य ध्वनि जो पंक्ति के ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है।

अनुहरणम्, हारः [अनु+हृ+ल्युट्, घञ्, वा] नकल, मिलना-जुलना, समानता।

अनूकः,-कम् [अनु+उच्+क, कुत्वम् नि०] 1 कुल, वंश 2 मनोवृत्ति, स्वभाव, चरित्र, वंश की विशेषता।

अनूचान (वि०) या -नः [अनु+वच्+कानच् नि०] 1 अध्ययनशील, विद्वान् विशेषतया वेद, वेदांगों में ऐसा पारंगत विद्वान् जो उन्हें सुना सके और पढ़ा सके,—इदमनूचानानाम्—कु० ६।१५, 2 सुशील।

अनूढ (वि०) [न० त०] 1 न ले आया गया, 2 अविवाहित, -ढा अविवाहित स्त्री। सम०-भाव (वि०) लज्जालु,—भावम् (°ढा°) कुमारी कन्या से संभोग, —भ्राता (पु०) (°ढा°) 1 अविवाहित स्त्री का भाई 2 राजा की उपपत्नी का भाई।

अनूदकम् [उदकस्य अभावः न० त०] जल का अभाव, सूखा पड़ना।

अनूद्देशः [अनु+उत्+दिश्+घञ्] 'उद्देश क्रम' एक अलंकार का नाम जिसमें कि बाद क्रम पूर्ववर्ती शब्दोंका उल्लेख होता है; —बचार्तेष्वनूद्देश उद्दिष्टानां क्रमेण यत्—सा० द० ७१२।

अनून (वि०) [न० त०] 1 जो घटिया न हो, कम न हो, अभाव वाला न हो—वृत्त्यर्थमे पैकरत्नानने—रघु० ६।५०—गुणैरनूना—रघु० ६।२७; 2 पूर्ण, समस्त, सकल, बड़ा, महान् शि० ४।११।

अनूप (वि०) [अनूपता आप यस्मिन्—अनु+अप्+अच्—ऊदनोर्देशे इति ऊ] जलीय, जलबहुल अथवा दलदल वाला प्रदेश —पः, पम् 1 जलबहुल स्थान या देश 2 एक देश का नाम (पः ब० व०)—रघु० ६।३७, 3 दलदल, कीचड़ 4 पानी का हौज़ 5 नदी का किनारा, पर्वत का पहलू 6 भैंस 7 मेंढक 8 एक प्रकार का तीतर 9 हाथी। सम०-अण्डं आई, अदरक, —ग्राव (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ।

अनूपराज, अनूपराधा=अनुपराज, अनुराधा।

अनूरु (वि०) [न० त०] जिसके जंघा न हो, -रुः सूर्य का सारथि अरुण (जिसका जंघारहित होने का वर्णन पाया जाता है) उषा, दे० अरुण। सम०—सारथि सूर्य (अनूरु जिसका सारथि है); —वत् तिरश्चीनमनूरुसारथे —शि० १।२।

अनूर्जित (वि०) [न ऊर्जित—न० त०] 1 अशक्त, दुर्बल, शक्तिहीन 2 दर्परहित।

अनूषर (वि०) [न ऊषर—न० त०] 1. रेहीला, ऊषर जैसी (भूमि) दे० उत्तम और अनुत्तम 2 जिसमें रेह न हो।

अनृच्—च (वि०) [न० ब०] 1 बिना ऋचा का 2 जो ऋग्वेद का ज्ञाता न हो, या ऋग्वेद का अध्येता न हो, यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो—अनृची याजकः—मुच्छ०।

अनृजु (वि०) [न० त०] जो सरल न हो, कुटिल (आल), अयोग्य, दुष्ट, बेईमान।

अनृण (वि०) [न० ब०] जो कर्जदार न हो—एतामनृणा करोमि—मा० १; —ज्ञानैर्वेदारकल्पैरनृण (गृध्र)—रघु० १२।५४, प्रत्येक द्विज को तीन ऋणों से उऋण होना पड़ता है—ऋषिऋण, देवऋण और पितृऋण। जो व्यक्ति वेदाध्ययन करके यज्ञ में देवताओं का आवाहन करता है, और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्त करता है वही 'अनृण' कहलाता है दे० रघु०८।२०।

अनृणिन् (वि०) [न० त०]=अनृण।

अनृत (वि०) [न० त०] 1 जो सत्य न हो, मिथ्या (सत्य) प्रियं च नानृतं ब्रूयात्—मनु० ४।१३८, —वद असत्यता, झूठ बोलना, धोखा, जालसाजी 2 कृषि (विप० 'सत्य') मनु० ४।५, । सम०—वक्तृ, —भाषणम्,—वाक्यम् झूठ कहना, मिथ्या भाषण,

भाषिन्,—वाच् (वि०) झूठ बोलने वाला,—व्रत (वि०) अपने वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करने वाला।

अनृतु: [न० त०] अनुपयुक्त ऋतु, अनुचित समय, बसन्त। सम०—कन्या वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो।

अनेक (वि०) [न० त०] 1 जो एक न हो, एक से अधिक, बहुत से, —अनेकवस्तुकल्पा तु मितुतो भागकल्पना—या० २।१२०; कि० १।१६; कई, कई एक 2 अलग-अलग, भिन्न भिन्न। सम०—अक्षर,—अच् (वि०) एक से अधिक अक्षर या स्वर वाला, नाना अक्षर सहित,—अंश (वि०) 1 अनिश्चित, संदिग्ध -अस्थिर-स्वादिरवाक्यमनेकांतयाचकम् 2—तु० अनैकांतिक (—क:) 1 अनिश्चित अवस्था, स्थायित्व का अभाव 2 अनिश्चितता, अनावश्यक अंश, जैसे कि कई 'अनुवाद' °वाद: संशयवाद, स्याद्वाद, °वादिन् (पु०) स्याद्वादी, जैनियों के स्याद्वाद को मानने वाला,—अर्थ (वि०) 1 एक से अधिक अर्थ वाला, समनाम जैसे कि गो, अनृत, अक्ष आदि अनेकार्थस्य शब्दस्य—काव्य० २, 2 'अनेक' शब्द के अर्थ वाला 2 बहुत से प्रयोजन या उद्देश्य रखने वाला (—र्थ:) पदार्थों का बाहुल्य, विषयों की विविधता, —आश्रय,—आश्रित (वि०) (वैशे०) एक से अधिक स्थानों (जैसा कि 'संयोग' या 'सामान्य') पर रहने वाला, —कृत्य (वि०) बहुत प्रकार का, विविध प्रकार का, विभिन्न भेदों का,—गोत्र (वि०) दो कुलों से संबंध रखने वाला, एक तो अपने कुल से (जब तक कि गोद न लिया गया हो), तथा गोद लिये जाने पर गोद लेने वाले पिता के कुल से, चित्त (वि०) चंचलमना,—ज (वि) एक से अधिकबार उत्पन्न, —ज: पक्षी, —ज: हाथी तु० 'द्विप' से, अन्येतरानेकपदर्शनेन - रघु० ५।४७; शि० ५।३५, १२।३५, —तुण्ड (वि०) [स्त्री०—डी] (वि०) 1 बहुत मुंह वाला 2 तितर बितर, बहुत सी दिशाओं में फैलने वाला (बलानि) बभाहिरेऽनेकमुखानि मारुतान्-भट्टि० २।५१, —बुद्धिचित्तिन्, —विधित्व (वि०) बहुत से मुद्दों का विधेय, —रूप (वि०) 1 नाना रूपों का, बहुत रूपों वाला, 2 नाना प्रकार का 3 चंचल, परिवर्तनीय विविध स्वभाव वाला —देवानामेव मनोरितिरनेकरूपा पंच० १।४२५, —लोचन: शिवजी, इन्द्र,—वचनम् बहुवचन, द्विवचन, —वर्ण (वि०) एक से अधिक रंगों वाला —विध (वि०) विविध, विभिन्न,—वर्ण (वि०) कटे हुए कानों वाला, —साधारण (वि०) बहुतों के लिए सामान्य।

अनेकधा (अव्य०) [नञ् + एक + धा] विविध रीति से, नाना प्रकार से; —धनाकृतस्य अधिकस्तनेकधा—मनु० ११।११।

अनेकशः (अव्य०) 1 कई बार, बारंबार—अनेकशो निर्जितराक्षसस्त्वम्—भट्टि २।९२; 2 विविध रीति से, 3 बड़ी संख्या में या बड़े परिमाण में—पुना अनेकशो मृता धारायच द्वि० १।

अनेक: [न एक:—न० त०] मूर्ख पुरुष, बड़ाती व्यक्ति, मूढ़। सम० —मूक (वि०) गूंगा और बहरा 'मूकता-बैरव वसु दोषैरनेकम्—का० ७ 2 संख्या 3 बेईमान दुष्ट, दुःशील।

अनेजत् (वि०) [न० ब०] निष्पाप, कलंकरहित।

अनेजृत् (पु०) [न इष्यते—इष् + अति कालोऽहादेश:—नञ् + इष् + अद्] (हा—इतौ आदि) समय, काल।

अनैकांत (वि०) [न० त०] परिवर्तनीय, अनिश्चित, अस्थिर, सामयिक।

अनैकांतिक (वि०) [नञ् + एकांत + ठक् - न० त०] (स्त्री० - की) 1 अस्थिर, जो बहुत आवश्यक न हो 2 (तर्क० में) हेत्वाभास के मुख्य पांच भागों में से एक, अन्यथा यह 'सव्यभिचार' कहलाता है, और तीन प्रकार का है —(क) 'साधारण' जहां कि हेतु दोनों ओर—स्वपक्ष, तथा विपक्ष में—पाया जाय, फलत: तर्क अतिसामान्य हो जाय, (ख) 'असाधारण' जहां हेतु केवल पक्ष में ही पाया जाय फलत तर्क अतिसामान्य न हो, (ग) 'अनुपसंहारी' जहां पक्ष में अन्वेक्ष्य जात बात तो सम्मिलित है, परन्तु तर्कों की अभी समाप्ति नहीं हुई है।

अनैक्यम् [न० न०] 1 एकता का अभाव, बहुसंख्यकता 2 एकत्व की कमी, अन्यवस्था 3 अशान्ति, अराजकता।

अनैतिह्यम् [न० त०] परंपरागत प्रामाणिकता का अभाव, या जहां इस प्रकार की स्वीकृति अपेक्षित है।

अनो (अव्य०) [न० न०] नहीं, न।

अनोकशायिन् (पु०—नी) [न० त०] घर में न सोने वाला, भिक्षुक।

अनोकहः [अनस शकटस्य अक गति हन्ति-हन् + ड] वृक्ष, —अनोकहा कम्पितपुष्पगन्धी-रघु० २।१३, ५।५९।

अनौचित्यम् [नञ् + उचित + ष्यञ्] अनुपयुक्तता, अनुचितता-अनौचित्यादृते नान्यत्कारणं रसभङ्गस्य—का० ७।

अनौजस्यम् [नञ् + ओजस् + ष्यञ्] शक्ति सामर्थ्य या बल का अभाव, सा० द०—दौर्मनस्याद्यैरनौजस्यं वैद्य मलिनतादिकृत्।

अनौद्धत्यम् [नञ् + उद्धत + ष्यञ्] 1 अहंकार से मुक्ति, आत्मोन्नता, विनय, 2 शान्ति, शरीरनौद्धत्यमपहृता यहीं—कि० ४।२२।

अनौरस (वि०) [न० त०] जो औरस —अर्थात् विवाहिता पत्नी से उत्पन्न न हो, अपना भी न हो, (पुत्र के रूप में) गोद लिया हुआ।

अंत (वि०) [अम्+तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर, मेघ० २३, शि० ४।४० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'छोर' है, यद्यपि 'शब्दार्णव' का उद्धरण देते हुए मल्लिनाथ इसका अर्थ 'रम्य' करते हैं) 4 नीचतम, निकृष्टतम 5 सबसे छोटा, —त (कुछ अर्थों में नपुं०) 1 (वि०) छोर, मर्यादा, (देश-काल की दृष्टि से) सीमा, चरम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा,—स सागरांता पृथिवी प्रशास्ति हि० ४।५०,—दिगंते श्रूयंते भामि० १।२, 2 छोर, सरहद, किनारा परिसर, सामान्य रूप से स्थान या भूमि,—यत्र रम्यो वनांत, उत्त० २।२५,—ओदकांतात् स्निग्धो जलोऽनुगंतव्य—श० ४, रघु० २।५८, 3 मुड़ी हुई किनारी का पल्ला—वस्त्र°, पट°, 4 सामीप्य, सन्निकटता, पड़ोस, विद्यमानता—गंगा प्रपातांतविवृतशय्य (गन्ध-वम्) रघु० २।३६, पुंसो यमात वजत —पच० २।११५, 5 समाप्ति, उपसंहार, अवसान,—सेकांते—रघु० १।५१, दिनांते निहितम् —रघु० ४।१, 6 मृत्यु, नाश, जीवन का अन्त, —राका भवेत्सर्वस्तिमतो त्वदंते—रघु० २।४८, अद्य कांत कृतांतो वा दुरुत्स्यान्ति करिष्यति—उद्भट 7 (व्या० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 समास में अंतिम शब्द 9 (प्रश्न का) निश्चय, निर्णय या अंतिम निश्चय—उभयोरपि दृष्टोऽतस्तत्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि अभि० २।१६; 10 अंतिम अंश, अवशेष—यथा निशांत, वेदांत 11 प्रकृति, दशा, प्रकार, जाति 12 ध्वनि, तत्त्व शूद्रादि। सम०—अवसायिन् (पु०) चाण्डाल अवसायिन् (पु०) 1 नाई 2 चाण्डाल, नीच जाति का, —कर, —करण, —कारिन् (वि०) घातक, मारक, संहारक, —कर्मन् (नपु०) मृत्यु, —काल, —वेला मृत्यु का समय, —कृत् (पु०) मृत्यु, —ग (वि०) किनारे तक जाने वाला, पूरी तरह से जानकार या परिचित, (समास में) —गति, —गामिन् (वि०) नाश होने वाला, —ग्रह-णम् 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —दीपकम् सा० शा० में एक अलंकार, —पाल 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 द्वारपाल लीन (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, —लोप शब्द के अंतिम अक्षर को निकाल देना, —वासिन् ("ती") (वि०) सीमान्त प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पु०) विद्यार्थी (जो शिक्षा ग्रहण करने के निमित्त सदैव गुरु के निकट रहता है), चाण्डाल (जो गांव के किनारे रहता है) —वेला=तु० °काल —शय्या 1 मृत्युशय्या 2 अंतिम शय्या, मृत्युशय्या 3 कब्रिस्तान या श्मशान भूमि, —संस्क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, —स्थ (पु०) विद्यार्थी, उपासते गुरुमिवांतस्थ —कि० २।३८।

अंतक (वि०) [अन्तयति—अन्तं करोति ण्वुल्] मारने वाला, नाश करने वाला, घातक रघु० ११।२१, —क 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, यम, मृत्यु का देवता,—ऋषिप्रभावान्मयि नांतकोऽपि प्रभु प्रहर्तुम् रघु० २।६२।

अंततः (अव्य) [अन्त+तसिल्] 1 किनारे से 2 आखिर कार, अन्त में, अततोगत्वा, निदान 3 अंशतः, कुछ 4 भीतर, अन्दर 5 अधम रीति से ('अंत' के सभी अर्थ 'अंततः' में समा जाते हैं)

अंते (अव्य०) ['अन्त' का अधि०, कि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में, आखिरकार 2 भीतर 3 (को) उपस्थिति में, निकट, पास ही। सम० —वास 1 पड़ोसी, साथी, 2 छात्र शि० ३।५५, वेणी० ३।६ —वासिन् तु० अंतेवासिन्।

अंतर् (अव्य०) [अम्+अन्तर् तुडागमश्च] 1 [क्रियाओं के साथ उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होता है तथा मध्यम बोधक अव्यय समझा जाता है] (क) बीच में, के मध्य, में, के अन्दर °हन्, °धा, °गम्, °भू, इ, °ली आदि (ख) के बीच 2 (वि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान, के अन्दर, मध्य में या अंदर, भीतर (विप० बहिः) अदृश्यतांतः रघु० २।१७, अन्तर्यच्च मृग्यते विक्रम० १।१, आन्तरिक रूप से, मन में (ख) ग्रहण करके या पकड़कर °गृहीत (हस्त परिगृह्य) 3 (विद्युक्त होने योग्य अव्यय-बोधक के रूप में) (क) में, के मध्य बीच में, के अन्दर (अधि० के साथ) निवसन्नरदीप्तिषु लाक्षया वह्नि —पंच० १।३१, अन्यवस्तुमनस्यं —भट्ट १।२ (ख) के मध्य (कर्म० के साथ) वेद० —हिरण्मय्याः कुण्ड्योरन्तरवस्थिते आत्म —शत० (ग) में के अन्दर भीतर, बीच में (सर्व० के साथ) प्रतिबिंबे जलस्येव रोचिर्यमाणे देणी० ३।५, अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकाय रत्न० २।३, —लघुवृत्तितया भिद्य गत बहिरतश्च नृपस्य मंडलम् —कि० २।५३, 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो अग्रुक्त निम्नांकित अर्थ होते हैं आंतरिक रूप से, के अन्दर, भीतर भीतर रह कर, मरा हुआ, अन्दर की ओर आन्तरिक, गुप्त, नपुंसक तथा बहुव्रीहि समास के विशेषणा-त्मक रूप बनाने वाला। समस्त पदों में अन्तर् का र् वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण तथा श् ष् स् के पूर्व विसर्ग का रूप धारण कर लेता है जैसे अन्तः करण अन्तः स्थ आदि)। सम० अग्नि: आन्तरिक आग वह अग्नि जो पाचन शक्ति को उत्तेजित करे, —अंग (वि०) 1 अंदर की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अप० के साथ), क्षमस्वान्तरंग पुत्रेभ्य —पातञ्जल० 2 शब्द के मूलरूप या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या उसका उल्लेख करने वाला, 3 प्रिय, प्रियतम (—गम्) 1 अंतरतम अंग

हृदय, मन 2 घनिष्ठ मित्र, या विश्वस्त व्यक्ति; -आकाशः तेजोमय गुप्त या ब्रह्म जो मनुष्य के हृदय में रहता है (उपनिषदों में प्राय यह शब्द पाया जाता है) —आकूतम् गुप्त और छिपा हुआ प्रयोजन, —आत्मन् (पु०-त्मा) 1 अंतस्तम प्राण या आत्मा, मन या आत्मा, आन्तरिक भावना, हृदय,- औत्सर्गो-त्तरात्मान्य —मनु० १२।१३, भग० ६।४७, 2 (दर्श० में) अन्तर्हित सर्वोपरि प्राण या आत्मा (मानव के भीतर रहने वाला) अंतरात्मानि देहिनाम् --कु० ६। २१, - आराम (वि०) अपने आप में मस्त, अपने आत्मा या हृदय में ही सुख ढूंढने वाला, योग सुखोत्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव स --भग० ५।२४, -- इन्द्रियम् आन्तरिक अंग या ज्ञानेन्द्रिय, —करणम् हृदय, आत्मा, विचार और भावना का स्थान, विचार शक्ति, मन, चेतना—प्रमाण० प्रकरण --सा० १।२२, —कुटिल (वि०) अन्दर से कपटी (आत्म०) (—ता) कपट,—कोपः अन्दर का क्रोध, कोपः गुप्त क्रोध, अन्दरूनी गुस्सा, - कृद् (वि०) अर्थ, अनावश्यक, निष्फल—किमनेनान्तर्गडुना सर्व० --गत्, -गत दे० 'अन्तर्गत' के नीचे, -- गर्भ (वि०) पेट वाली, गर्भवती, गिरम् --गिरि (अव्य०) पहाड़ों में, —गूढ (वि०) अन्दर से छिपा हुआ, °चित्त. हृदय में अंदर छिपाए हुए गृहम्, गेहम्, -- जवनम् घर का भीतरी भाग, जवः, —ज्वलम् घर के अन्दर की खुली जगह, घर (वि०) शरीर में व्याप्त, --दहनम् पेट, ज्वलनम् जलन या सूजन, - ताप (वि०) अन्तर्दाह से युक्त (—प) अन्दरूनी ज्वर या गर्मी, - दा० ३।१३, दहनम्, दाह 1 अन्दरूनी जलन 2 सूजन देश. परिधि के बीच का प्रदेश, -द्वारम् घर के अंदर निजी या गुप्त दरवाजा, धि --हित आदि दे० शब्द के नीचे —पट, - पटम् दो व्यक्तियों के बीच में कपड़े का परदा —पद (अव्य०) पद (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, - परिधानम् सबसे नीचे पहना जाने वाला कपड़ा, --पातः, —पात्य. 1 (व्या०) बीच में अक्षर रखना 2 यज्ञभूमि के मध्य में बनाया हुआ स्तम्भ (संस्कार विधियों में प्रयुक्त), पातित -पातिन् (वि०) 1 बीच में समाविष्ट 2 सम्मिलित या समाविष्ट, अन्तर्गत होने वाला, पुरम् 1 महल का अन्दरूनी भाग जो महिलाओं के उपयोग के लिए नियत किया गया हो, स्त्रियों के रहने का कमरा, रनवास, - कन्यात पुरं कश्चित् प्रविशति - पंच० १, 2 रनवास में रहने वाली स्त्रियां, रानी या रानियाँ, स्त्रियों का समुदाय-°विरहपर्युत्सुकस्य राजर्षे: सा० ३, °अध्यक्षः, °रक्षकः, °वर्ती अन्तःपुर का अधीक्षक या संरक्षक, °चरः—कञ्चुकी, °क्षम महल की स्त्रियां रनवास की महिलाएँ, 'प्रचारः अन्तःपुर की सभ्यें,— कदाचिदन्तःपुरार्थनामात पुरेभ्य. कथयेत् —मा० २, °सहायः अन्तःपुर से संबंध रखने वाला, —पुरिकः कंचुकी—°चर, —प्रकृतिः (स्त्री०) 1 मनुष्य का शरीर या उसका आन्तरिक स्वभाव 2 राजा का मन्त्रालय या मन्त्रिमंडल 3 हृदय या आत्मा, —प्रकोपनम् आन्तरिक विरोध जगाना,—प्रतिष्ठानम् —भीतरी आवास, - प्राय (वि०) 1 जिसने आसुओं को रोका हुआ हो—अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ— मेघ० ३, 2 जिसके आंसू अन्दर ही अन्दर निकल रहे हों, भाव:, - भावना दे० 'अंतर्भू' के अन्तर्गत, —भूमि (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग,— भेदः हृदय-मन्त्र, आन्तरिक विरोध, भौम (वि०) भूमि के नीचे रहने वाला- मनस् (वि०) उदास, व्याकुल, मृत (वि०) गर्भ में ही मर जाने वाला,—यामः वाणी और श्वास को रोकना, --योग (वि०) 1 निहित, गुप्त, अन्दर छिपा हुआ, °मन्य दुःखाने --उत्तर० ३।९, 2. अन्तर्निहित, - यज्ञः —°पुरम्, °शु०,—रक्षिकः, रक्षिकः अन्तःपुर का अधीक्षक,—वत्नी गर्भवती स्त्री, वत्सम्, - वासस् (नपुं.) अधोवस्त्र,— वाणि (वि०) बड़ा विद्वान्, वेग. आन्तरिक बेचैनी या चिन्ता, आन्तरिक ज्वर, - वेदि-दी गंगा और यमुना के बीच का भूभाग,—वेशनम् (न०) घर के अन्दर का कमरा, भीतरी कोठा,—वेशिक: कञ्चुकी,- शरीरम् मनुष्य का आन्तरिक या आत्मिक भाग, शरीर का भीतरी भाग, शिखा विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली नदी, संज्ञ (वि०) अन्तश्चेतन,--सत्त्वा गर्भवती स्त्री, - सलाय आन्तरिक पीड़ा, शोक, खेद,— सलिल (वि०) जिसका पानी भूमि के अन्दर बहता हो,- - नदीमिवान्त सलिलां सरस्वतीम्—रघु० ३।९,—सार (वि०) अन्दर से भरा हुआ, या शक्तिशाली, बलवान् भारी और ठोस °र घन तुलयिष्यन् मानिक शक्यसि-त्वाम्— मेघ० २० (-र:) आन्तरिक कोष या भंडार, आन्तरिक निधि या तत्त्व,—सेनम् (अव्यय) सेनाओं के बीच में, --स्थ ('अंतस्थ' भी) अर्धस्वर, क्योंकि वे स्वर और व्यंजनों के बीच में स्थित हैं, और वागिन्द्रिय के द्वारा में संपर्क से बोले जाते हैं,—स्वेदः बन्द हाथों,—हसः गुप्त या दबाई हुई हँसी,— हृदयम् हृदय का भीतरी भाग।

अन्तर (वि०) [अन्तरात्रिदद्यादि-रा क] 1 अंदर होने वाला, भीतर का, (विप० बाह्य) 2. निकट, समीप 3. संबद्ध, घनिष्ठ, प्रिय-अयमन्तरपन्तरो मम-भारत 4. समान ('अन्तरतम' भी) (ध्वनि और शब्दों के विषय में)-स्थानेऽन्तरतम.-पा० १।१।५० 5. से भिन्न, अन्य (प्राय० के साथ) 6. बाहर का, बाह्यस्थित, बाहर रहने वाला

(इस अर्थ में इसके रूप विकल्प से छठी० ब० व०, अधि० और अधि० एक व० में 'सर्व' की भाँति होते हैं) इसलिए—अन्तरया पुरि, अन्तरायै नगर्यै,—रत्न 1. (क.) भीतर का, अन्दर का—लोयन्ते मुकुलान्तरेषु—रत्न० १।२६, (ख.) छिद्र, सूराख 2. आत्मा, हृदय, मन—सदृशा पुरुषान्तरविदो महेन्द्रस्य—विक्रम० ३, 3. परमात्मा, 4. अन्तराल, मध्यवर्ती काल या देश—अस्तकुलान्तरा—विक्रम ४।२६, बृहद्भुजान्तरम्—रघु० ३।५४, 'अन्तरे' का बहुधा अनुवाद किया जाता है—मध्य में, बीच में—न मृणालसूत्र रचित स्तनान्तरे ह० ६।१७, 5. स्थान, जगह, देश—मृणालसूत्रान्तरमप्यलभ्यम् कु० १।४०, पौरुषं क्षय शांकन्य नान्तर दातुमर्हसि—रा० लोक मत करो, —अन्तरम्-अन्तरम्—मृच्छ० रास्ता छोड़ो, 6. पहुंच, अन्दर जाना, प्रवेश, कदम रखना—लेभेऽन्तर चेतसि नोपदेश —रघु० ६।६६ सख्यान्तरा भावरणेऽपि गेहे -१६।३, 7 अवधि (काल की), निर्दिष्ट अवधि,—मामान्तरे देयम् —अमर०, इति तौ विरहान्तरक्षमौ—रघु० ८।५६, 8 अवसर, सयोग, समय -यावत्त्वामिन्द्रगुप्ते निवेदयिनुमन्तरान्वेषी भवामि -श०, ७, 9 भेद (दो वस्तुओं के बीच) (सब० के साथ या समास में) —तव मम च समुद्रपल्वलयोरिवान्तरम्—मालवि० १, यदन्तर सपदि गैलराजयोर्यदन्तर वायसवैनतेययो —रा०, दृश सानुमता किमन्तरम्—रघु० ८।९०, 10 (गणित) भिन्नता, शेष, 11. (क०) भेद, अन्य, दूसरा, परिवर्तित, बदला हुआ (रीति, प्रकार, ढग आदि) (ध्यान रखिये इस अर्थ में 'अन्तर' सदैव समस्तपद का उत्तर पद रहता है तथा इसका लिंग वही बना रहता है—अर्थात् नपु० चाहे पूर्वपद का कुछ भी लिंग हो—कन्यान्तरम् (अन्याकन्या), राजान्तर (अन्यो राजा), गृहान्तरम् (अन्यद् गृहम्), इसका अनुवाद बहुधा 'अन्य' शब्द से किया जाता है)—इदमवस्थान्तरमारोपिता—श० ३, परिवर्तित दशा, (ख) विविध, विभिन्न (ब० व० में प्रयुक्त)—लोको नियम्यते हेतुभेदान्तरेषु—शा० ४।२, 12. विशेषता, (विशिष्ट) प्रकार, विभेद, या किस्म—सोऽन्तरेऽप्यासु—त्रि०, मीनो राक्षसान्तरे -भट्ट० 13. दुर्बलता, आसोच्य स्थल, असफलता, दोष, सशोध स्थल,—प्रहरेदन्तरे रिपु—शब्द०, सुजय खलु तावदन्तरे—कि. २।५२, 14. बदलना, प्रत्यावृत्ति, प्रतिभूति, 15. सर्व श्रेष्ठता,—गुणान्तर व्रजति शिलाधातु—मालवि० २।६ (यह अर्थ 11 समासान्तर्गत से भी जाना जा सकता है), 16. बहाना (परिहार) 17. प्रयोजन, आशय (प्राय०—रघु० १६।८२) 18. प्रतिनिधि, स्थानापत्ति, 19. हीन होना। सम०—अवस्था गर्भवती स्त्री,—ज (वि०) अन्दर का रहस्य जानने वाला, प्राप्त, दूरवर्ती,—न्तरज्ञ. जिनो वायु त्रिवैराग्यं न मुञ्चते—कि० ११।२४,—दिशा (अन्तरा दिक्) परिधि का मध्यवर्ती प्रदेश या दिशा,—भू (भू) पुं० आन्तरिक मानव, आत्मा (मानव के अन्दर निवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों को देखता है)—ज: मिश्रित जाति में जन्म लेने वाला,—ज —स्थायिन्, —स्थित (वि०) 1 आभ्यन्तरिक, आतरिक, अन्तर्हित 2. अन्त.क्षिप्त, अन्तर्वर्ती।

अन्तरतः (अव्य०) [अन्तर+तसिल्] 1 भीतर, आतरिक रूप में, मध्य, 2 के अन्दर (षष्ठ० के साथ)।

अन्तरतम (वि०) [अन्तर+तमप्] अत्यन्त निकट, आतरिक, निकटतम, घनिष्ठतम, सदृशतम - म ङ्ग्मी अक्षरों का अक्षर।

अन्तरय: राव [अन्तर + अय्—अच्] अवरोध, बाधा, रुकावट,—स चेत् स्वमन्तरायो भवति भूतो विधि रघु० ३।४५, १४।६५, अन्य से हानिप्रवर्धित कृतमात्मन्य अन्तरायो तपस्विनो अवृतो—श० (पाठ०)

अन्तरयति [ना० धा०—पर०] 1 बीच में डालना, हटाना, स्थगित करना, भवतु तावदन्तरयामि--उत्तर० १, 2 विरोध करना, 3 दूर हटाना, पीछे से धकेलना।

अन्तरयन = अन्तरय

अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेनि- इण् + डा] 1- (क्रि० वि० के रूप में) (क) भीतर अन्दर, भीतर की ओर (ख) मध्य में, बीच में, त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ श० २, रघु० १५।२०, (ग) साथ में, बीच में विलक्षणा च मातरा—महावीर० ७।२८ (घ) पास में, निकट ही, लगभग (ङ) इसी बीच में (च) समय समय पर, यहाँ वहाँ, कभी कभी, कुछ समय तक अब, अभी —अन्तरा पितृसकाशमन्तरा मातृसकाशमन्तरा शुकनासस्य कुर्वन्नालाप -का० ११८, 2 (कर्म के साथ स० अव्य० की भाँति) (क) अन्तरा त्वा या च कमण्डलु --महा० (ख) के बिना, सिवाय --न च प्रथो अथान्तरा पाशक्य मनसेपि चेष्टते—मुद्रा० ३। सम०—अंश: छाती,—अवहेह, —अवस्थ- आत्मा या जीवात्मा, जो जन्म और मरण की अवस्थाओं के बीच में रहता है, विष्णु दे०—अन्तर्दिश् -देवि-दी (स्त्री) 1.स्वभाविक बराबरा, दहलीज, ड्योढ़ी 2. एक प्रकार की दीवार रघु० १२।९३,—भूमम् (अव्य०) सीमों के बीच में।

अन्तराः = अन्तरय नु०

अन्तराकम् } [अन्तर अवधानमीक्षाम् आराति गृह्णाति
अन्तराकम् } अन्तर + आ + रा + क रस्य लत्वम्] 1. मध्यवर्ती प्रदेश, स्थान, या काल, अवकाश—दक्षिणस्या पूर्वस्याश्च दिशोरन्तराल दक्षिणपूर्वा—सिद्धा०, अंतराले बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाश के समय, बाल्यान्त. परिपूतनोदयमन्तराले—उत्तर० १।३१,

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यभाग 3. विभिन्न जाति या समुदाय।

अन्तरि (री) क्ष् [अन्त स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्षते—इति—अन्तर्+ईक्ष+क्विप्, पृषो० ह्रस्व, वा] आकाश और पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, वातावरण आकाश। सम०—उदरम् वातावरण का मध्य,—पः, —वर पत्नी,—क्षम् ओस,—लोकः मध्यवर्ती प्रदेश जो कि एक स्वतन्त्र लोक समझा जाता है।

अन्तरित (वि०) [अन्त+इ+क्त] 1. बीच में गया हुआ, अन्तर्वर्ती, 2. अन्दर गया हुआ, गुप्त, ढका हुआ, पृथक् किया हुआ, अदृश्य, पादपान्तरित एष विश्वस्तामेनां पश्यामि—श० १, लता के पीछे छिपा हुआ,—सान्तरेण स्वदेहान्तरितो राजा—हि० ३, पर्दे के पीछे छिपा हुआ 3. अंदर गया हुआ प्रतिबिम्बित—स्फटिकभित्त्यन्तरितान् मृगशावकान् (क) अवरुद्ध, बाधित, रोका गया—स्वद्वाञ्छान्तरितानि साध्वसानि मुद्रा० ४।१५, वीपान्तरय देवान्तरितपौरुष—पञ्च० २।१३, (ख) पृथक्कृत, अदृश्य, कृतदृष्टि, मुहूर्तान्तरितमावयो दुर्मनायमाना मालं० ८, पर्यन्तरित प्रिये नव मुखच्छायानुकारी शशी सा० द० (ग) ढका हुआ, तिरोहित 4 ओझल नष्ट, वियुक्त, गहन—अन्तरिते तस्मिन् शबर-सेनापतौ का० ३३ 5 अतिक्रान्त भूला हुआ।

अन्तरीप [अन्तर्मध्ये गता आपो यस्य द० स०, आत ईत्वम्] भूमि का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर चला गया हो, भूतासिका, द्वीप।

अन्तरीयम् [अन्तर+छ] अधोवस्त्र।

अन्तरेण (अव्य०) [अन्तर+टा+अ] 1 [कर्म० के साथ प्र० अर्था० के रूप में] (क) सिवाय, के बिना, क्रियान्तरासंगयमन्तरेण आर्य दृष्टुमिच्छामि—मुद्रा० 3, न राज्यापराधमन्तरेण प्रजास्वकालमृत्युश्चरति उत्तर० २, मामिकं को मरन्दमामन्तरेण मधुव्रतम् मालवि० १।१।७, (ख) के विषय में, संबंध करते हुए, के संबंध में—अथ सत्यमन्तरेण वोदुर्भोग्या दृष्टिरागं श० २, तदहमेवं वसुमतीमन्तरेण मरणप्रसाधनं गतो स्मि—श० ५, (ग) के बीच में, स्था या व्यवधान करते हुए—मुद्रा० 2 (क्रि० वि०) (क) के बीच में, के मध्य (ख) हृदय में।

अन्तर्गत (वि०)[अन्त—गम्+क्त, तुगिरेषां] 1 बीच में पड़ने में, गया हुआ, (दूसरे शब्द की भांति) बीच में आया हुआ, 2 अन्तःस्थित, अन्तर्भूत, विद्यमान, वर्तमान 3. गुप्त, आन्तरिक, अन्दर की ओर, रहस्य, गूढ़, —अन्तर्गतमपाण्डुत्वे रजसोऽपि परं तव—कु० ६।६०, सौमित्रिरिति चान्तर्गतालक्ष्ये—रघु० १४।५३ गणवयवधिकारेषु स्वयमेवोऽन्तर्गतं मम—पञ्च० १।४४, 4 स्मृतिपथ में रखा हुआ, भूला हुआ, 5. नष्ट हुआ हुआ, ओझल, 6. अदृष्ट। सम०—उपमा गुप्त उपमा,—मनस्—अंतर्मनस् दे०।

अन्तर्चा [अन्तर्+चा+अङ्] आच्छादन, गोपन,—अन्तर्चा-मुपयमुरुकलावतीषु—शि० ८।१२।

अन्तर्धानम् [अन्तर्+धा+ल्युट्] अदृश्य होना, ओझलपना, दृष्टि से चूक जाना—°व्यसनदर्शिका रात्रिका पालि-कीयम्—काव्य० १०; °अन् या इ=अदृश्य होना, ओझल होना।

अन्तर्धिः (स्त्री०) [अन्तर्+धा+कि] ओझल होना, गोपन।

अन्तर्भवः (वि०) [अन्तर् भवतीति—भू+अच्] अन्दर को ओर, आन्तरिक।

अन्तर्भावः [अन्तर्+भू+घञ्] 1 अन्तर्भूत या अन्तर्निहित होना, अन्तर्वास होना,—तेषां गुणानामेवान्यतमभावि —काव्य० ८, 2. अन्तर्हित भाव।

अन्तर्भावित [अन्तर्+भू+णिच्+क्त] 1 अन्तर्निहित करना, 2 अन्तर्विचलन या चिन्ता।

अन्तर्मनस् (वि०) [अन्तर्+मनस्] आन्तरिक, बीच में।

अन्तर्हित (वि०) [अन्तर्+धा+क्त] 1. बीच में रक्खा हुआ, पृथक्कृत, दृष्टिरुद्ध, गुप्त, छिपा हुआ—अन्तर्हिता सकुलस्य अनवस्था—श० ४, 2. ओझल हुआ, नष्ट, अदृश्य—अन्तर्हिते अग्निमि—श० ४।२; । सम०—आत्मन् (पुं०) शिव।

अन्ति (अव्य०) [अन्त+इ] पास में (संब० के साथ), (स्त्री०-तिः) बड़ी बहन (नाटकों में)।

अन्तिका [अन्त+इ स्वार्थे कन् टाप्] 1. बड़ी बहन 2 चूल्हा, अंगीठी, 3. एक पौधे का नाम (सातलाक्य या क्षातलाक्य औषधि)।

अन्तिक (वि०) [अन्त. सामीप्यमस्यास्तीति—अन्त+ठन्] 1 निकट, समीप (संब० या अपा० के साथ), 2 पड़ोस में रहने वाला, 3 टिकाऊ, स्थिर,—कम् निकटता, सामीप्य, पड़ोस, उपस्थिति,—न स्थगयन्ति समान्तिकम्—हि० १।४६, °आगत—रघु० २।२४ कर्म०—°चर—श० १।२४, (क्रि० वि०) [संब० और अपा० के साथ अथवा समास के अन्त में] निकट, पड़ोस में,—अन्तिक आगात् एतस्य या—सिद्धा०, सामीप्य या सन्निधि में, अन्तिकेन—निकट (संब० के साथ) अन्तिकात्—निकट पास से, से (अपा० या संब०) °आगमन,—अन्तिके निकट, —रमयन्त्यन्तिकस्थानिके विनेषु सन्त० १।२१। सम०—आधान पास की वस्तु का सहारा लेने वाला, लगातार सहारा (जैसा कि वृक्ष के द्वारा लता को दिया जाता है)।

अन्तिम (वि०) [अन्त—डिमच्] 1. तुरन्त बाद आनेवाला, 2 आखरी, अन्त का, चरम—अन्तानुगमनाच्चान्तिमो चरणा-दीनां न चान्तिमः—हि० १.। सम०—क्षेत्रः आखरी

अक, गौ की संख्या,—अङ्गुलिः—छोटी (कनिष्ठिका) अंगुली।

अन्ती [अन्त+इ+ङीष्] चूल्हा, अंगीठी।

अन्ते—दे० "अन्तत" के नीचे।

अन्त्य (वि०) [अन्त+यत्] 1 अन्तिम, चरम (अक्षर या शब्द आदि) अन्त में (समय, क्रम या स्थान की दृष्टि से) जैसे कि अक्षरों में 'ह', नक्षत्रों में 'रेवती', अन्त्ये वयसि-वृद्धी अवस्था में—रघु० ९।७९, अन्त्यम् ऋषभ—रघु० १।७१ अन्तिम ऋण, °मदन—८।७१, कु० ४।२२, 2. तुरन्त बाद में, (समा०) 3. निम्नतम, अधम, घटिया, नीच, —न्यः 1 अधम जाति का मनुष्य, 2 शब्द का अंतिम अक्षर 3 अंतिम चान्द्र मास अर्थात् फाल्गुन 4 म्लेच्छ,—न्या अधम जाति की स्त्री,—न्यम् 1 सौ नील की संख्या (१००००००००००००००००) 2 मीन राशि 3 प्रगति का अंतिम अंग। सम०—अवसायिन् (पु०-यी, स्त्री-यिनी) अधम जाति की स्त्री या पुरुष, निम्नांकित सात इसी श्रेणी से संबंध रखने वाले समझे जाते हैं,—चाण्डाल श्वपच क्षत्ता सूतो वैदेहकस्तथा, मागधायोगवौ चैव सप्तैतेऽन्त्यावसायिन। —आहुतिः,—इष्टिः (स्त्री०)—कर्मन्,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार की आहुतियाँ या और्ध्वदैहिक संस्कार, —छन्दस् तीन ऋणों में अंतिम जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को उऋण होना है अर्थात् सन्तानोत्पत्ति करना, दे० अनृण,—ज,—जन्मन् (पुं०) 1 शूद्र 2. सात नीच जातियों (चाण्डाल आदि) में से एक;—जन्मन्,—जाति,—जातीय (वि०) 1 नीच जाति में उत्पन्न होने वाला, 2. शूद्र 3 चाण्डाल -जम् अंतिम चान्द्र नक्षत्र—रेवती,—युगम् अन्तिम अर्थात् कलियुग,—योनि (वि०) नीच वंश का मनु० ८।६८,—लोपः शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप करना,—वर्णः,—वर्ण नीच जाति का पुरुष या स्त्री, शूद्र, या शूद्रा।

अन्त्यकः [अन्त्य एवेति स्वार्थे कन्] नीच जाति का पुरुष।

अन्त्रम् [अन्त्+ष्ट्रन्—अम्+त्र वा] आंत, अंतड़ी—अन्त्रभेदेन क्रियते प्रभवश्च—महावीर० ३। सम०—कूजः, —कूजनम्,—विकूजनम्—आंतों में होने वाली गड़-गड़ाहट की आवाज,—वृद्धि (स्त्री०) आंत उतरने की बीमारी, हरणिया, अंडकोश बढ़ने का रोग, —स्रजा विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली एक नदी —स्रज (°स्री०) अंतड़ियों की माला (जिसको नृसिंह ने धारण किया)।

अन्त्रंवमिः (स्त्री०) अजीर्ण, अफारा।

अन्त्रु—ः (स्त्री०) } [अन्त्र+कु पक्षे ऊङ्, स्वार्थे कन् च]
अन्त्रु (ः) कः } 1. शृंखला, या हथकड़ी बेड़ी, 2 हाथी के पैरों को बांधने के लिए जंजीर, 3. नूपुर।

अन्दोलनम् [अन्दोल्+ल्युट्] झूलना, घुमाऊ, कंपनशील —द्राक् चामरान्दोलनात्—उद्भट०।

अन्ध् (चु० उभ०) 1. अंधा बनाना, अंधा करना—अन्धयन् भुवमालां शि० ११।२९, 2. अंधा होना।

अन्ध (वि०) [अन्ध्+अच्] 1. अंधा (शब्द० और आल० प्रयोग) दृष्टिहीन, देखने में असमर्थ (किसी विशिष्ट समय पर), अंधा किया हुआ, सज्जमपि शिरस्यन्ध क्षिप्ता धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४, मद्यान्ध—नशे में अंधा, इसी प्रकार दर्पान्ध, क्रोधान्धः, 2. अंधा बनाने वाला, दृष्टि को रोकने वाला, नितांत पूर्ण अंधकार, सीदन्नन्धे तमसि—उत्तर० ३।३८—न्धम् 1. अंधकार 2. जल, पंकिल जल। सम०—कारः अंधेरा (शब्द० और आल०), काम°, मदन°, -अन्धकारतामुपयाति चक्षुः का० २६, धूमिल हो जाती है,—कूपः 1 कुआं जिसका मुंह ढंका हुआ होता है, ऐसा कुआं जिसके ऊपर घास उगा हुआ हो 2. एक नरक का नाम, —तमसम्,—तामसम्, अन्धात्तमसम्—गहन अंधकार, पूरा अंधेरा—रघु० ११।२४,—तामिस्रः—स्रम् (तामिस्रम्) नितांत गहन अंधकार,—धी (वि०) मानसिक रूप से अंधा,—पूतना राक्षसी जो बच्चों में रोग फैलाने वाली मानी जाती है।

अन्धकरण (वि०) [अन्धक—ल्युट्] अंधा करने वाला।

अन्धंभविष्णु,—भावुक (वि०) [अन्धम्+इष्णुच्, उकञ् वा] अंधा होने वाला।

अन्धक (वि०) [अन्ध+कन्] अंधा—कः कश्यप और दिति का पुत्र जो राक्षस था और शिव के हाथों मारा गया था। सम०—अरिः,—रिपुः,—जित्,—भिद्,—सूदनः,—हन्,—हन्तृ अंधक को मारने वाला, शिव की उपाधि, —वर्तः पहाड़ का नाम,—वृष्णि (पुं० द्व० व०) अंधक और वृष्णि के वंशज।

अन्धस् (न०) [अद्+असुन् नुम धश्च] भोजन,—द्विजान्नि-र्देशेन यदेतदन्धसां—कि० १।३९।

अन्धिका [अन्ध+ध्वुल् इत्वम् टाप् च] 1 रात्रि, 2. एक प्रकार का रोग, आंखमिचौनी, चुंधा 3 आंख का रोग।

अन्धु [अन्ध+कु] कुआं।

अन्ध्राः [अन्ध्र+अ, ब० व०] 1 एकदेश तथा उसके निवासी 2. एक राजवंश का नाम 3. संकर वर्ण का पुरुष।

अन्नम् [अद्+क्त, अन्+नक् वा] 1 सामान्यतः भोजन, 2 अन्नमयकोष 3. भात—नः सूर्य। सम०—अन्नम् उपयुक्त आहार, सामान्य भोजन—आच्छादनम्, —वस्त्रम् भोजन वस्त्र,—काल° भोजन करने का समय,—क्षित्—°भक् पुं०, —क्षुद्रः भात का बड़ा ढेर, —कोष्ठकः 1. डोली, अनाज की कोठी 2. विष्णु 3. सूर्य, —क्षयः पेचिश दस्तों की बीमारी,

—अन्नम् अन्न और जल,—आशः भोजन मात्र पाकर सेवा करने वाला दास या नौकर, —देवता आहार की सामग्री की अधिष्ठात्री देवी, —दोषः निषिद्ध भोजन के खाने से उत्पन्न पाप, —द्वेषः भोजन में अरुचि, भूख का अभाव,—दुर्गा दुर्गा देवी का एक रूप (अर्थात् सम्पन्नता की देवी) —प्राशः, —प्राशनम् १६ संस्कारों में से एक संस्कार अर्थात् नवजात बालक को पहली बार विधिवत् भोजन देने की क्रिया सम्पादित की जाती है, यह संस्कार ५ से ८ महीने के मध्य (प्राय. छठे मास में—मनु० २।३४) किया जाता है, —ब्रह्मन्, - मात्मन् (पु०) आहार का प्रतिनिधित्व करने वाला ब्रह्म,—भुज् (वि०) भोजन करने वाला, शिव की उपाधि, - मय (वि०) दे० नीचे, —मलम् 1. विष्ठा, 2 अदिग्ध,- -रक्षा भोजन करने में सावधानी, —रसः आहार का सत्, एक जाने पर अन्न के तीसरी धातु से बना रस, - -संस्कृत्य=°संस्कृत्यसंस्कृत्य तु० व्यवहारः खानपान संबंधी प्रथा या विधि अर्थात् दूसरों के साथ मिलकर खाना या न खाना, —शेष पूठन, उच्छिष्ट -संस्कारः देवताओं के निमित्त अन्न का समर्पण।

अन्नमय (वि०) (स्त्री०—यी) [अन्न+मयट्] अन्न खाने या अन्न से बना पदार्थ, °कोशः—शः भौतिक शरीर, स्थूलशरीर, जो अन्न पर ही आधारित है तथा जो कि आत्मा का पाचवां वस्त्र या परिधान है, भौतिक संसार, स्थूलतम तथा निम्नतम रूप जिसके द्वारा ब्रह्म अपने आपको सांसारिक सत्ता के रूप में प्रकट करने वाला माना जाता है,—मय् अन्न की बहुलता।

अन्य (वि०) [सप्तु०—अन्यत्] 1. दूसरा, भिन्न, और, सामान्यतः दूसरा, और—स एव स्वस्य लक्षणं यदतीति भिन्नमेतत्—शारी० भा० ४०, 2. अपेक्षाकृत दूसरा, से भिन्न, की अपेक्षा और (अन्य० के साथ अथवा समास में अन्तिम पद) नान्यं जीवितादन्यदभियातारमिह सर्वजन्तूनाम्—का० २५, उचित बहुशोऽप्रयत्न कथयेऽन्यो न किंचन रघु १२।४९ 3 अनोखा, असाधारण, विशेष अन्या जगद्भितमयी मनसः प्रवृत्तिः—भामि० १।६१, अन्या मृदन्यैव सा—सा० द०, 4 तुच्छ, कोई 5 अतिरिक्त, नया, अधिक, अनावश्यक —इसके अतिरिक्त, इसके साथ ही, तो फिर (वाक्यों का समुच्चय करने वाला), एक-अन्य एक-दूसरा-वेद० ७८, दे०, एक के नीचे भी अन्य-अन्य और और, अन्यान्यपुष्पे अन्यान्यविरोहणे—सुश्रु० ५, अन्यदुच्छ्वासवत् तस्य-मन्यच्छ्वासनिरुद्धम्—शि० २।६२, अन्य-अन्य-अन्य आदि, पहला, दूसरा, तीसरा चौथा आदि। सम०—अङ्गाधारण (वि०) जो दूसरों के प्रति सामान्य न हो, विशेष, —उत्थ (वि०) दूसरे से उत्पन्न (—त्थः) सौतेली माता का पुत्र, सपत्नभ्राता (—त्री) अन्य-योनिनी, —उढा (वि०) दूसरे से विवाहित, दूसरे की पत्नी, —ओजस् 1. दूसरा ओज 2. दूसरा देह या विग्रह 3. दूसरे की पत्नी, —क, —कालिन् (वि०) 1. और के पास जाने वाला, 2. व्यभिचारी, कामुक, —कोष (वि०) दूसरे कुल या वंश का, —क्रिय (वि०) किसी और पदार्थ पर ध्यान लगाने वाला, दे० °अन्यमनस्, —ज, —जात (वि०) भिन्न कुल में उत्पन्न,—जन्मन् (नपुं०) दूसरा जीवन, पुनर्जन्म, आवागमन, —तृष् (वि०) जो दूसरे को सहन न कर सके—देश्य, —देश्य (वि०) दूसरे किसी देवता को संबोधित करने वाला या मंत्र द्वारा उल्लेख करने वाला,—धारिन् (वि०) किसी दूसरे कुल से संबंध रखने वाला, — धार्यः 1. दूसरी वस्तु 2. दूसरे शब्द का भाव, 'प्रधानो बहुव्रीहि—बहुव्रीहि समास निश्चित रूप से अन्यपुरुषप्रधान होता है,—पर (वि०) 1 दूसरों का भक्त 2. किसी दूसरे का उल्लेख करने वाला —पूर्वः—वा,—भृतः—ता दूसरे से पाला हुआ या पाली हुई, कोयल की उपाधि, जो कि कौवे के द्वारा पाली हुई समझी जाती है अतः एव 'अन्यभृत्' कहलाती है—अन्यपुष्टा प्रतिकूलशब्दा कु० १।४५, कलमन्य-भृतासु वाचितम्—रघु० ८।५९, —भूत 1. वह स्त्री जिसका विवाह किसी और के साथ हो चुका है 2. पुन-र्विवाहित विधवा,—भौक्त,—भौक्तभुक्तः,—भुक्तभुक्तः गोद लिया हुआ पुत्र (दूसरे माता पिताओं से उत्पन्न), वह जो कि औरस पुत्र के अभाव में गोद लिया जा सके, —भृत् (पु०) कौवा (दूसरों को पालने वाला), —मत्, —मनस्क, —मानस (वि०) 1. अन्यमनस्क-हीन 2. चंचल, अस्थिर,—मातृकः सपत्नभ्राता (दूसरी मां से उत्पन्न), —रूप (वि०) परिवर्तित या बदले हुए रूप वाला,—लिङ्ग,—वश (वि०) दूसरे शब्द के लिंग वाला अर्थात् नपुंसक, विशेषण, —वाक्यः कोयल,—विवर्जित (वि०)=मुक्त कोयल,—संभव दूसरी स्त्री से रति क्रिया, अवैध मैथुन,—साधारण (वि०) बहुतों के लिए सामान्य,—स्त्री दूसरे की पत्नी, जो अपनी पत्नी न हो (साहित्य शास्त्र में यह तीन मुख्य नायिकाओं—स्वीया, अन्या, साधारणी—में से एक है, 'अन्या' वह तो किसी दूसरे की पत्नी होती है अथवा अविवाहित कन्या जो सुन्दरी तथा कलाओं में होती है, दूसरे की पत्नी आमोद-प्रमोद तथा उत्सवों के लिए उत्सुक रहती है तथा अपने कुल के लिए कलंक एवं नितान्त निरर्थक होती है—सा० द० १०८-११०) °धः व्यभिचारी।

अन्यक = अन्य।

अन्यतम (वि०)[अन्य+तमप्](संज्ञा शब्द की भांति प्रयुक्त के रूप) बहुतों में से एक, बड़ी संख्या में से कोई एक,

अन्यतर (वि०) [अन्य+तरप्](सर्वनाम की भांति रूप),

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई सा एक (सब० के साथ), संत परीक्ष्यान्यतरन्मुञ्जते—मालवि० १।२, अन्यतरस्याम् (°रा का अधि० ए० व०) किसी तरह, दोनों तरह इच्छानुरूप।

अन्यतरतः (कि० वि०) [अन्यतर+तसिल्] दो में से एक ओर।

अन्यतरेद्युः (अव्य०) [अन्यतरस्मिन्नहनि—अन्यतर+एद्यु. नि०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन, दूसरे दिन।

अन्यतः (अव्य०) [अन्य+तसिल्] 1. दूसरे से 2. एक ओर. अन्यतः—अन्यतः, एकतः—अन्यतः—एक ओर—दूसरी ओर, तपनमण्डलदीपितमेकत सततलैषतमोवृतमन्यत—कि० ५।२, 3. किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्यत्र (अव्य०) [अन्य+त्रल्] (प्राय = अन्यस्मिन्—सत्ता या विशेषक के बल से) 1. और जगह, दूसरे स्थान पर 2. किसी दूसरे अवसर पर 3. सिवाय, के बिना 4. अन्यथा, दूसरी अवस्था में,

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+थाल्] 1. करना, दूसरी रीति से, भिन्न तरीके से—यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा—हि० १, अन्यथा-अन्यथा एक प्रकार से—दूसरे ढंग से, अन्यथाकृ दूसरी तरह करना, परिवर्तन करना, बदलना, बिगाड़ना, मिथ्या करना—त्वया कदाचिदपि मम वचनं नान्यथाकृतम् पंच० ४, 2. नहीं तो, वरना, इसके विपरीत—व्यक्तं नास्ति कथमन्यथा वासस्यपि ता न पश्येत्—उत्तर० 3, 3. इसके विपरीत 4. मिथ्यापन से, झूठपने से—किमन्यथा भट्टिनी मया विज्ञापितपूर्वा—विक्रम० २, 5. गलती से, भूल से, बुरे ढंग से जैसा कि अन्यथा सिद्ध दे० नीचे। सम०—अनुपपत्तिः (स्त्री०) दे० अर्थापत्ति,—कारः परिवर्तन, अदल बदल,(—कारम्) [कि० वि०] भिन्न तरीके से, भिन्न ढंग से—पा० ३।४।२७,—ख्यातिः (स्त्री०) शक्ति की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (दर्शनशास्त्र में) मिथ्या अवधारणा,—भावः अदलबदल, परिवर्तन, भिन्नता,—वादिन् (वि०) भिन्न रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपलापी साक्षी—वृत्ति (वि०) 1. परिवर्तित 2. बदला हुआ 3. भावाविष्ट, सबल संवेगों से विक्षुब्ध,—सेव० ३,—सिद्ध (वि०) जो मिथ्या ढंग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एवं दूरगामी परिस्थितियों का उल्लेख करे,—सिद्धत्व,—सिद्धिः (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आकस्मिक या केवल मात्र सहवर्ती परिस्थिति—माया० प० १६,—स्तोत्रम्—व्यंग्योक्ति ताना, व्यंग्य।

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+धा] 1. किसी दूसरे समय, दूसरे अवसर पर, किसी दूसरे मामले में—अन्यथा सुप्तं पुत्रो क्षमा लज्जेव योषिताम् शि० २।४४, रघु० ११।७३, 2. एक बार, एक समय पर, एक अवसर पर, 3. किसी समय।

अन्यदीय (वि०) [अन्यदा+छ] 1 किसी दूसरे से संबंध रखने वाला 2. दूसरे में रहने वाला।

अन्यर्हि (अव्य०) [अन्य+र्हिल्] किसी दूसरे समय (=अन्यदा)।

अन्यादृश्—ग् -श (वि०) [अन्य इव पश्यति—अन्यदृश्+क्स, क्विन्, कंस् वा आरेशम् च] परिवर्तित, असाधारण, अनोखा।

अन्याय (वि०) [न० ब०] न्यायरहित, अनुपयुक्त,—ब. 1. कोई न्याय रहित या अवैधकृत्य—दे० 'न्याय', अन्यायेन अन्याय के साथ, अनुचित ढंग से 2. न्याय का अभाव, औचित्य का अभाव 3. अनियमितता।

अन्यायिन्(वि०) [अन्याय+णिनि] न्यायरहित, अनुचित।

अन्यार्थ्य (वि०) [न० त०] 1. न्याय रहित, अवैध 2. अनुचित, अशोभनीय 3. अप्रामाणिक।

अन्यून (वि०) [न० त०] दोषरहित, त्रुटिहीन, पूर्ण, समस्त सकल,—°अधिक न त्रुटिपूर्ण न आवश्यकता से अधिक। सम०—अङ्ग (वि०) निर्दोष अंगों वाला।

अन्येद्युः (अव्य०) [अन्य+एद्यु नि०] 1 दूसरे दिन, अगले दिन, अन्येद्युरात्मानुचरस्य भाव जिज्ञासमाना—रघु० २।२६, 2 एक दिन, एक बार।

अन्योन्य (वि०) [अन्य—कर्मव्यतिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे सुच्च] एक दूसरे को, परस्पर (सर्वनाम की भांति) प्रायः समस्त पदों में, °कालः पारस्परिक झगड़ा, इसी प्रकार °जातः,—म्यम् (अव्य०) आपस में। सम०—अभावः पारस्परिक सत्ता का न होना, अभाव के दो प्रकारों में से एक, ('भेद' का समानार्थक),—आश्रय (वि०) आपस में एक दूसरे पर निर्भर,(—यः) आपस में या दूसरे की निर्भरता, कार्यकारण का (न्याय में) इतरेतर संबंध,—उक्तिः (स्त्री०) वार्तालाप,—द्वेष. पारस्परिक द्वेष या शत्रुता,—विभाग साझीदारों द्वारा रिक्थ का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी और पक्ष के सम्मिलित हुए),—वृत्तिः (स्त्री०) किसी वस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव,—व्यतिकरः, —संश्रय इतरेतर क्रिया या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक संबंध।

अन्वक्ष (वि०) [अनुगतं अक्षम् इन्द्रियम् - ग० स०] 1 दृढ़ 2 तुरन्त बाद में आने वाला,—क्षम्(अव्य०) 1 बाद में, पश्चात् 2 तुरंत बाद में, सामने, ओर या० ३।२१।

अन्वक् (अव्य०) [अनु+अञ्च्+क्विप् नपुं० ए० व०] 1 बाद में, 2 पीछे से 3. सौजन्यभाव से व्यवहृत, अनुकूल

रूप में, अन्वयभूत्वा,—अवस्थ्,—आसे मित्रतापूर्वक व्यवहार होना 4. (कर्म० के साथ) पश्चात् आना अन्वयौ मध्यमलोकपालम् —रघु० २।१६।

अन्वञ्च् (वि०) [अनु+अञ्च्+क्विप्] पीछे आने वाला, पीछा करने वाला, अनुचि पीछे की ओर, पीछे से।

अन्वयः [अनु+इ+अच्] 1. पीछे आना, अनुगमन, अनुगामी, परिजन, सेवकवर्ग—का त्वमेकाकिनी भीरु निरन्वयवने वने-भट्टि० ५।६९, 2. साहचर्य, मेलजोल, सबंध, 3 वाक्य में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या संबंध, व्याकरण विषयक क्रम या संबंध,-तात्पर्यक्रिया धनिमाह पदार्थान्वयबोधने—सा० द०, शब्दों का युक्तियुक्त संबंध 4 तात्पर्य, अभिप्राय, प्रयोजन 5 जाति, कुल, वंश—रघुणामन्वय वक्ष्ये—रघु० १।९, १२।६, 6 वंशज, सन्तति, बाद में आने वाली सन्तान-नास्य सूने अन्वय —पा० १।१।१३, 7 कार्यकारण का तर्कसंगत संबंध, तर्कसंगत तात्पर्य,-अन्वाख्यस्य यतोऽन्वयादिरत्र —काव्य० ८, (न्या० में) [हेतुसाध्ययोर्व्याप्तिसम्बन्धः]—भारतीय अनुमितिवाद में साध्य और हेतु की संगत तथा अपरिवर्त्य सहवर्तिता का वर्णन। सम०—आगत (वि०) आनुवंशिक,—क्षः वंशावली प्रणेता, रघु० ६।८, —व्यतिरेकः (°की या °कम) 1 विधायक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा, सहमति और वैपरीत्य अर्थात् भिन्नता 2 नियम और अपवाद, -व्याप्ति (स्त्री०) स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति, अंगीकारसूचक सामान्यपद।

अन्वर्थ (वि०) [अनुगतं अर्थम्—प्रा० स०] शब्द की व्युत्पत्ति के द्वारा हो जिसका अर्थ जानी से जाना जा सके भाव के अनुकूल, सार्थक—तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, अन्वर्था तैर्द्विसुन्धरा —कि० ११।६४। सम०—बहुत्वम् शब्द के अर्थ को शब्दशः स्वीकार करना, (क्रिया० कृ), —संज्ञा 1 उपयुक्त नाम, एक पारिभाषिक नाम जो अपना अर्थ स्वयं प्रकट करता है, 2. यथार्थ नाम जिसका अर्थ स्पष्ट है।

अन्ववकिरणम् [अनु+अव+कृ+ल्युट्] क्रमपूर्वक चारों ओर बखेरना।

अन्ववगर्तम् [अनु+अव+गृह्+घञ्] 1. शिथिल करना 2 इच्छानुसार व्यवहार करने देना, कामचारानुज्ञा, 3 स्वेच्छाचारिता।

अन्ववसित [अनु+अव+सो+क्त] (वि०) समृद्ध, संपन्न, युक्त हुआ।

अन्ववाय [अनु+अव+अय्+घञ्] जाति, कुल, वंश।

अन्ववेक्षा [अनु+अव+ईक्ष्+अङ्+टाप्] विचार।

अन्वष्टका [अनुगता अष्टकाम्—प्रा० स०] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा के पश्चात् आने वाले पौष, माघ और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की नवमी।

अन्वष्टकाश्राद्धम् [अन्वष्टका+अण्] अन्वष्टका के दिन होने वाला श्राद्ध या ऐसा ही कोई दूसरा अनुष्ठान।

अन्वष्टप्रतिदिशम् (अव्य०) [प्रा० स०] उत्तर पश्चिम दिशा की ओर।

अन्वहम् (अव्य०) [अनु+अहन्—प्रा० स०] दिन-ब-दिन, प्रति दिन।

अन्वाख्यानम्[अनु+आ+ख्या+ल्युट्]बाद में उल्लेख करना, या गिनना, पूर्वोक्त का उल्लेख करते हुए व्याख्या करना।

अन्वाचयः [अनु+आ+चि+अच्] 1. प्रधान कार्य का कथन करके गौण कार्य की उक्ति, मुख्य पदार्थ के साथ गौण पदार्थ का जोड़ना, 'च' निपात का एक अर्थ—भो भिक्षामट गां चानय—जहां पर भिक्षुक के प्रधान कार्य —(भिक्षार्थ बाहर जाने) के साथ एक गौणकार्य (गाय का ले आना) भी जोड़ दिया गया है 2. इस प्रकार का स्वयं एक पदार्थ।

अन्वाचये (अव्य०) [अनु+आचि+ङे] ('उपदें' की भांति इसका प्रयोग 'कृ' के साथ होता है) दुर्बल की सहायता करना, (यह विकल्प से उपदंश समझा जाता है) °कृत्य, या °कृत्वा।

अन्वाचिख्य (वि०) [अनु+आ+चिख्+क्त] 1 क्रम में या के अनुसार, कहा हुआ, पुनः काम पर लगाया हुआ 2 घटिया, गौण महत्त्व का।

अन्वादेशः [अनु+आ+दिश्+घञ्] एक कथन के पश्चात् दूसरा कथन, पूर्वोक्त की पुनरुक्ति।

अन्वाधानम् [अनु+आ+धा+ल्युट्] अग्निहोत्र की अग्नि में समिधाएँ रखना।

अन्वाधिः [अनु+आ+धा+कि] (व्यवहारविधि में) 1. अमानत, किसी तीसरे व्यक्ति के पास धरोहर या प्रतिभूति जमा करना जिससे कि समय पर वह यथार्थ स्वामी को सौंपी जा सके 2 दूसरी धरोहर 3. अनवरत चिन्ता, क्लेश, पश्चात्ताप।

अन्वाधेय-धनम् [अनु+आ+धा+यत् स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का स्त्री-धन जो विवाह के पश्चात् पितृकुल या पतिकुल की ओर से या उसके अपने संबंधियों की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाय—विवाहात्परतो यत्स्त्री लभते भर्तृकुलात्पितृतो, अन्वाधेयं तु तद्धनं स्मृतं पितृ (मातृ) कुलागतम्।

अन्वारम्भः—णम् [अनु+आ+रभ्+घञ्, ल्युट् वा मुम् च] स्पर्श, छूकर, विशेषतया यजमान (यज्ञ का अनुष्ठाता) को पूर्वोक्त संस्कार के फलस्वरूप का अधिकारी बनाने के लिए स्पर्श करना।

अन्वारोहणम् [अनु+आ+रुह्+ल्युट्] स्त्री का अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

अन्वासनम् [अनु+आस्+ल्युट्] 1. सेवा, परिचर्या, पूजा 2. दूसरे के पीछे आसनग्रहण करना 3. खेद, शोक।

अन्वाहार्यः (-र्यम्), **-र्यकम्** [अनु+आ+हृ+ण्यत् स्वार्थे कन्] पितरों के सम्मान में अमावस्या के दिन किया जाने वाला मासिक श्राद्ध।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—की] दैनिक, प्रतिदिन का।

अन्वाहित=तु० अन्वाधेय

अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] 1. अनुगत, अनुष्ठित, सहित, युक्त, 2 अधिकार प्राप्त, रखने वाला, आहृत, प्रभावित (करण के साथ या समास में) 3. संयुक्त, जोड़ा हुआ, क्रमागत 4. व्याकरण की दृष्टि से संयुक्त। सम०—अर्थ (वि०) प्रकरण से ही जिसके अर्थ आसानी से समझ में आ सकें,—अभिधानवादः —अभिहितान्वयवादः मीमांसकों का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाक्य में शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वतन्त्र रूप से नहीं होता, बल्कि किसी विशेष वाक्य में एक दूसरे से संबद्ध होकर शब्द का जो अर्थ निकलता है, वही होता है। दे० काव्य० २, अभिहितान्वयवाद भी यही सिद्धान्त है।

अन्वीक्षणम्—क्षा [अनु+ईक्ष्+ल्युट्, अच् वा] 1 खोज, ढूंढना, गवेषणा 2 प्रतिविद्या।

अन्वीत=तु० अन्वित।

अन्वृचम् (अव्य०) [प्रा० स०] एक ऋचा के पश्चात् दूसरी ऋचा।

अन्वेषः—णम्—षा [अनु+इष्+घञ्, ल्युट् वा स्त्रियां टाप्] ढूंढना, खोजना, देखभाल करना—यथा मत्वान्वेषान्मधुकर हता—मा० १।२४, रघ्वन्वेषणदक्षाणां क्रियां रघु० १२।११।

अन्वेषक, अन्वेषिन्, अन्वेष्टृ (वि०) [अनु+इष्+ण्वुल्, णिनि, तृच् वा] ढूंढने वाला, खोजने वाला, पूछ ताछ करने वाला।

अप् (स्त्री०) [आप्+क्विप्+ह्रस्वश्च] (परिष्कृत भाषा में केवल ब० व० में ही रूप होते हैं—यथा आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः २, अपाम्, अप्सु, परन्तु वेद में एक वचन और द्विवचन भी होते हैं) पानी, आपो वै सर्वा देवताः —मनु० २।६०, पानी बहुधा सृष्टि के पांच तत्वों में सब से पहला तत्व समझा जाता है यथा—अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, मा० १।१ परन्तु मनु० १।७८ में बतलाया गया है—कि मन, आकाश, वायु और ज्योति अथवा अग्नि के पश्चात् तेजस् या ज्योतिस् से जलों की उत्पत्ति हुई। सम०—ईशः वरुण, जलीय जन्तु, —पतिः 1 जल का स्वामी वरुण 2 समुद्र, दूसरे समस्त पदों को शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अप (अव्य०) 1 (धातु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है)—(क) से दूर, अपयाति अपगच्छति (ख) हटाना,—अपकरोति-बुरी तरह से या गलत ढंग से करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान—अपकर्षति अपचिनोति (घ) वर्ज —अपवह, अपक्षु (प्रेर०), 2. त० और ब० स० का प्रथम पद होने पर इसके उपर्युक्त सभी अर्थ होते हैं— अपवादम्, अपवादः—एक बुरा या भ्रष्ट शब्द,—°भी विदर, अपराधः अमन्तुष्ट (विप० अनुराग), अधिकांश स्थानों पर 'अप' को निम्न प्रकार से अनूदित कर सकते हैं—'बुरा' 'घटिया' 'भ्रष्ट' 'अशुद्ध' 'अयोग्य' आदि 3. पृथक्करणीय अव्यय (अपा० के साथ) के रूप में—(क) से दूर—यत्सप्रत्यपलोकेभ्यो लकाया वसतिभवेत्- भट्टि० ८।८७ (ख) के बिना, के बाहर -अपहरे संसार—सिद्धा० (ग) के अपवाद के साथ, सिवाय—अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देव —सिद्धा०, -के बाहर, को छोड़कर, इन वाक्यों में 'अप' के साथ कि० वि० (अव्ययीभाव समास) भी बनते हैं—°विष्णु संसारः—बिना विष्णु के, °त्रिगर्तेवृष्टो देव - अर्थात् त्रिगर्त को छोड़कर अप निषेध और प्रत्याख्यान को भी अन्तर्लाता है—°काम, °शकम्।

अपकरणम् [अप+कृ+ल्युट्] 1 अनुचित रीति से कार्य करना 2. अनुपयुक्त काम करना, चोट पहुंचाना, दुर्व्यवहार करना, कष्ट पहुंचाना।

अपकर्तृ (वि०) [अप+कृ+तृच्] हानिकारक कष्ट दायक, (पु०—र्ता) शत्रु।

अपकर्मन् [प्रा० स०] 1 ऋण से निस्तार 2 ऋणपरिशोध, —दत्तस्यानपकर्म च —मनु० ८।४, 2. अनुचित, अनुपयुक्त कार्य, दुष्कर्म, दुष्कृत्य 3 दुष्टता, हिंसा, उत्पीड़न।

अपकर्ष [अप+कृष्+घञ्] 1 (क) नीचे की ओर खींचना, कम करना, घटाना, हानि, ह्रास—नैवापकर्षं —वेणी० १, ह्रास (ख) अनादर, अपमान (सभी अर्थों में विप० उत्कर्ष) 2 बाद में आने वाले शब्दों का पूर्व-विचार (व्या० काव्य और मीमांसा आदि में)।

अपकर्षक (वि०) [अप-कृष-ण्वुल्] कम करने वाला घटाने वाला, से निकालने वाला—शोषाल्पत्व (कार्यस्य) अपकर्षका -सा० द० १।

अपकर्षणम् [अप+कृष+ल्युट्] 1 दूर करना, खींचकर दूर करना या नीचे ले जाना, बहिष्कार करना, निकाल देना 2. कम करना, घटाना 3 दूसरे का स्थान ले लेना।

अपकार [अप+कृ+घञ्] 1 हानि, चोट, आघात, कष्ट (विप० उपकार) उपकर्तारिण्या सदिभर्मे अभिलाषोपकारिणि, उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः—शि० २।३७ अपकारोऽप्युपकारायैव सतम् 2. दूसरे का बुरा चिन्तन, दूसरे को चोट पहुंचाना 3. दुष्टता,

हिता, उत्पीडन 4. घिरा हुआ, नीच कर्म। सम०—अक्षिन् (वि०) टेढी, दुरात्मा,—शिर् (स्त्री०—शीः) —शब्दः गालियाँ, भर्त्सना दायक तथा अपमानजनक शब्द।

अपकारक, -कारिन् (वि०) [अप+कृ+ण्वुल् णिनिर्वा] क्षति पहुँचाने वाला, अनिष्टकारी, कष्टप्रद, अहितकारी, पाप० १।९५, शि० २।३७—कः,—री बुरा करनेवाला।

अपकृति=नु० अपकार, इसी प्रकार अपक्रिया- आघात, चोट, अनिष्ट, कुकृत्य, ऋणपरिशोध।

अपकृष्ट (वि०) [अप+कृष्+क्त] 1 नीच कर बाहर किया गया, दूर हटाया गया 2. नीच कमीना, अधम (विप० उत्कृष्ट) न कथिच्छुणानामपकर्षमपकृष्टोऽपि भजते - शि० ५।१०, -ष्टः कौवा।

अपकीर्त्तनी - समाचार, सूचना

अपक्वता (स्त्री०) [नञ्+पच्+क्तिन्+टाप्] 1 कच्चापन, परिपक्वता का अभाव 2. अपच, अजीर्ण।

अपक्रमः [अप+क्रम्+घञ्] 1 दूर चले जाना, पलायन, पीठ दिखाना, 2 (समय का) बीतना,—(वि०) 1 क्रमरहित 2. अनियमित, गलत क्रम वाला।

अपक्रमणम् क्रामः [अप+क्रम्+ल्युट्, घञ् वा] पीछे मुडना हटना, उड़ान, भागना।

अपक्रोशः [अप+क्रुश्+घञ्] गाली, भर्त्सना।

अपक्ष (वि०) [न० ब०] 1 पक्षों से या उड़ान की शक्ति से रहित, 2 किसी पक्ष या दल से संबंध न रखने वाला 3 जिसके मित्र समर्थक न हों 4 निष्पक्ष, पक्षरहित। सम० पात, निष्पक्षता,-पातिन् वि० पक्षपात रहित।

अपक्षयः [अप+क्षि+अच्] क्षीणता, ह्रास, नाश।

अपक्षेपः क्षेपणम् [अप+क्षिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 दूर करना या नीचे फेंकना 2 फेंक देना, नीचे रखना, वैशेषिक दर्शन में निर्दिष्ट पांच कर्मों में से एक कर्म, दे० कर्मन्।

अपगंड [अपगमि (वंश) कर्मणि गड+घञ्] जिसने वयःस्थता प्राप्त कर ली है, दे० अपोगंड।

अपगमः गमनम् [अप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1 दूर जाना, हट जाना, वियोग, समाप्तिमा मापगमा -हि० ४।६५, 2 गिरना, हटना, ओझल होना -पुराणपत्रापगमादनन्तर - रघु० ३।७, 3 मृत्यु, मरण।

अपगतिः (स्त्री०) [अप+गम्+क्तिन्] दुर्भाग्य।

अपगारः [अप+गृ+घञ्] 1 निंदा, भर्त्सना 2 निन्दक, भर्त्सक।

अपगर्जित (वि०) [अप+गर्ज+क्त] (बादल की भांति) गर्जनाशून्य।

अपचयः [अप+चि+अच्] 1 न्यूनता, कमी, ह्रास, क्षीणता, गिरावट (आल० भी)-कार्यापचय दश० ११०, 2 नाश, असफलता, दोष।

अपचरितम् [अप+चर्+क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म—आहोस्वित् प्रसवो ममापचरितैर्विघ्नोऽयमुत्पद्यते—श० ५।९।

अपचारः [अप+चर्+घञ्] 1 प्रस्थान, मृत्यु—विहङ्गो-वदम्ब कांतकापचार लिखित—दश० ७२, 2. कमी, अभाव 3. दोष, अपराध, दुष्कर्म, दुराचरण, बुरा —राजलक्षणेषु ते कश्चिदपचार प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 4. हानिकर या कष्टप्रद आचरण, क्षति 5. दोष या कमी—नापचारमसमञ्जसं क्वचित्क्रियात्—शि० १४।१२, 6 अस्वास्थ्यकर या अपथ्य—कुपापचारोऽपि परैरनाविष्कृतविक्रियः, असाध्य कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा। शि० २।८४, (यहाँ अ० भी आघात या क्षति का अर्थ रखता है)।

अपचारिन् (वि०) [अप+चर्+णिनि] कष्ट पहुँचाने वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, बुरा।

अपचितिः (स्त्री०) [अप+चि+क्तिन्] 1 हानि, क्षीणता, नाश 2 व्यय 3 प्रायश्चित्त, सम्पूर्ति, पाप का प्रायश्चित्त 4 सम्मानना, पूजन, आदर प्रदर्शन, पूजा—विहितापचितिर्महीभृता - शि० १९।९ (इसका अर्थ 'हानि' और 'नाश' भी है)।

अपच्छद (वि०) [ब० स०] बिना छाते के, छतरी के बिना।

अपच्छाय (वि०) [ब० स०] 1 छायारहित 2 चमकरहित, धूमला —क: जिसकी छाया न होती हो, अर्थात् परमात्मा, तु० मैं० १४।२१, अथ भजन्ता कियदस्य देवाश्छाया तवास्यामि तथापि नैवाम्, इतीरयन्तीव तया निरीक्षि सा (छाया) मैवघेन खिद्यसे तेषु।

अपच्छेदः -छेदनम् [अप+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3 बाधा।

अपजयः [अप+जि+अच्] हार, पराजय।

अपजातः [अप+जन्+क्त] कुपुत्र, जो गुणों की दृष्टि से माता पिता से हीन हो—मातृतुल्यगुणो जातस्त्वमपजात पितु समः, अतिजातोऽधिकस्तस्यादपजातोऽसमोऽसम - सुभा०।

अपजानम् [अप+ज्ञा+ल्युट्] मुकरना, गुप्त रखना।

अपञ्चीकृतम् [न० त०] जिसका पञ्चीकरण न हुआ हो, पञ्चमहाभूतों का सूक्ष्म रूप।

अपटी [अस्यः पट्-पटी—न० त०] 1 कपड़े का पर्दा या दीवार विशेष रूप से 'कनात' जो तम्बू को चारों ओर से घेर लेती है 2. पर्दा। सम० —क्षेपः (अपटीक्षेपः) पर्दे के एक ओर मारना, °क्षेपेण (= अकस्मात्) जल्दी से पर्दे को एक ओर करके, (यह शब्द बहुधा रतिबन्ध के विवेचनार्थ प्रयुक्त होता है तथा भय, उतावली या घबराहट के कारण हड़बड़ाहट के

पात्र पात्र के प्रवेश को प्रकट करता है जैसा कि बिना किसी भूमिका (ततः प्रविशति आदि) के, पात्र अकस्मात् पर्दे को उठा कर प्रविष्ट होता है)।

अपटु (वि०) [न० त०] 1. अनिपुण, अदक्ष, मंदबुद्धि, मोंदू, 2 जो बोलने में चतुर न हो 3 रोगी।

अपठ (वि०) [न० त० नञ्+पठ्+अच्] पढ़ने में असमर्थ, न पढ़ने वाला, वृथापाठक तु०, 'अपठ्'।

अपण्डित (वि०) [न० त०] 1 जो विद्वान् या बुद्धिमान् न हो, मूर्ख, अनाड़ी—विभूषणं मौनमपण्डितानाम्—भर्तृ० नी० ७, 2. जिसमें कुशलता, दक्षि तथा गुणों की सराहना करने का अभाव हो।

अपण्य (वि०) [न० त०] जो बिक्री के लिए न हो, —जीविकार्थं चापण्ये—पा० ५।३।९९।

अपतर्पणम् [अप+तृप्+ल्युट्] 1 उपवास रखना (श्रद्धावस्था में) 2 तृप्ति का अभाव।

अपतानकः [अप+तन्+घञ्] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् मूर्छा आती है, दाँत पड़ते हैं तथा पेशियों में सिकुड़न होती है।

अपति,-तिक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वामी न हो, जिसका पति न हो, अविवाहित।

अपत्नीक (वि०) [न० ब०] जिसकी पत्नी न हो।

अपतीर्थम् [प्रा० स०—अप्रकृष्टं तीर्थम्] बुरा तीर्थस्थान।

अपत्यम् [न पतन्ति पितरोऽनेन—नञ्+पत्+यत्] 1 सन्तान, बच्चे, प्रजा, संतति (मनुष्यों की और पशुओं की), बेटा या बेटी, एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र आदि—अपत्य पौत्रप्रभृति गोत्रम्—पा० ४।२।६२,—अपत्यैरिव नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः—रघु० १।५०, 2 अपत्यवाचक प्रत्यय। सम०—काम (वि०) सन्तान का इच्छुक,—कृत्यः सौनि, —प्रत्ययः अपत्यवाची प्रत्यय, —विक्रयिन् (वि०) सन्तान का विक्रेता, वह पिता जो धन के लालच से अपनी कन्या को भावी जामाता के हाथ बेच देता है, —शत्रुः 1 नेवला 2 साँप।

अपत्रप (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेहया, —पा. —वत्रप लज्जा, हया।

अपत्रविन् (वि०) [अप+त्रप्+इष्णुच्] शर्मीला, लज्जीला।

अपत्रस्त (वि०) [अप+त्रस्+क्त] डरा हुआ, अपमीत, तस्मात्रस्त—डरों से किंचित् भीत।

अपथ (वि०) [न० ब०] मार्गरहित, बिना सड़क के —थम् (अपन्थाट) [न० त०] जो मार्ग न हो, मार्ग का अभाव, कुमार्ग (ज्ञाध्य०), (आल०) नैतिक अनियमितता या स्खलन, दुष्पथ या कुमार्ग—अपथे पदमर्पयसि हि श्रुतवत्तोऽपि रजोनिमीलिता—रघु० ९।७४, । सम०—गामिन् (वि०) कुमार्ग पर चलने वाला, विपथगामी।

अपथ्य (वि०) [न० त०] 1 अयोग्य, अनुचित, असंगत, वर्जित—अकार्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्यसन्निभम्—रा० 2. (आयु० में) अस्वास्थ्यकर, रोगजनक (जैसा कि भोजन, पथ्यापथ्य) सन्तापयति कुपथ्यभूयं न रोगा—हि० ३।११७, 3 बुरा दुर्नाम्नियुक्त। सम०—कारिन् (वि०) कष्टप्रद।

अपद: [न० ब०] बिना पैर का, —दम् [न० त०] 1. आवास या स्थान का अभाव, 2 संदोष स्थान या अनुपयुक्त आवास 3 ऐसा शब्द जिसके साथ अभी विभक्ति-चिह्न न जुड़ा हो 4 अन्तरिक्ष। सम०—अंतर (वि०) संलग्न, समीपस्थ, संदीपस्थ (—रम्) सामीप्य, सम्पर्कता।

अपदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] बाईं ओर।

अपदम (वि०) [ब० स०] आत्मसंयम से हीन।

अपदश (वि०) [ब० स०] दस की संख्या से हीन।

अपदानम् -दानकम् [अप+दा+ल्युट् स्वार्थे कन् च] 1 परिष्कारण, मान्य औचित्यों 2 उत्तम कार्य, सर्वोत्तम कार्य (कदाचित् 'अवदानम्' के स्थान पर) 3 भली-भाँति पूर्ण रूप से किया गया कार्य, निष्पन्न कार्य।

अपदार्थः [न० त०] 1. कुछ नहीं, सत्ता का अभाव 2 वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न होना—अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसति-काव्य० 2।

अपदिशम् (अव्य०) [अव्य० स०] मध्यवर्ती प्रदेश में, परिधि के दोनों प्रदेशों के बीच।

अपदेवता [प्रा० स०] पिशाच भूत प्रेत।

अपदेश: [अप+दिश्+घञ्] 1 वक्तव्य उपदेश नाम का उल्लेख करते हुए संकेत करना—नैव व्यायो यदवादुरुपदेश—दश० ६० हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञाया पुनर्वचनं निगमनम् न्या० सू० 2 बहाना, छल कारण, व्याज—केवापदेशेन पुनरायस्य मद्भवनम् श० ३, स्वापदेशान्मनिवासयन्तो रघु० २।४८ 3 कारणों का वर्णन, तर्क प्रस्तुत करना भारतीय न्याय-वाद के पाँच अंगों में से दूसरा- हेतु—(वैशे० के अनुसार) 4 निशाना, चिह्न 5 स्थान दिशा 6 अभिव्यक्ति 7 प्रसिद्धि यश 8 छल।

अपद्रव्यम् [प्रा० स०] बुरा द्रव्य, बेरी वस्तु।

अपद्वारम् [प्रा० स०] बचाव का दरवाजा आपत्ती द्वार के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रवेश द्वार।

अपधूम (वि०) [ब० स०] जिसमें धुआँ न हो, धूमरहित।

अपध्यानम् [प्रा० स०] बुरा विचार अनिष्ट चिन्तन, मन ही मन कामना।

अपध्वंसः [प्रा० स०] अधःपतन गिरावट, ह्रासन। सम०—जः, —जा पितृव्य पतित तथा निन्द्य जाति में उत्पन्न मनु० १०।४१, ४६।

अपध्वस्त (वि०) [अप+ध्वंस्+क्त] 1. छिपाया हुआ,

अविज्ञात, दूषित 2. अपूर्ण रूप से या बुरी तरह पीसा हुआ, 3 त्यक्त, —स्तः दुष्ट, पापी, जिसमें बुरे भले की समझ न हो।

अपनयः [अप+नी+अच्] 1. ले जाना, हटाना, निराकरण करना 2 दुर्नीति या दुराचरण 3. क्षति, अपकार—तत अपत्रपानयनस्मरणानुशयस्फुरत्—शि० २।१४।

अपनयनम् [अप+नी+ल्युट्] 1 ले जाना, हटाना—नाति श्रमापनयनाय—श० ५।६, 2 आरोग्य देना, इलाज करना 3 ऋण परिशोध, कर्तव्य का निर्वाह।

अपनस (वि०) [ब० स०] बिना नाक का,—अस्तिकीर्णेव-मुखस्य चकारापनसं मुखम्—भट्टि० ४।३१।

अपनुत्ति (स्त्री०) } [अप+नुद्+क्तिन्, क्त, ल्युट्

अपनोद-नोदनम् } वा] हटाना, ले जाना, नष्ट करना, प्रायश्चित्त, (पाप का) परिशोधन—पापानामपनुत्तये —मनु० ११।२१५।

अपपाठः [प्रा० स०] अशुद्ध पठन, बुरी तरह पढ़ना, पढ़ने में अशुद्धि,—द्वादशापपाठा अस्य जाता।

अपपात्र (वि०) [ब० स०] सामान्य पात्रों के उपयोग से वर्जित, नीची जाति का।

अपपात्रिकः [पात्रभोजनाद् बहिष्कृतः—अपपात्र+इतच्] किसी बड़े पाप या अपराध के कारण जाति से बहिष्कृत होकर जो अपने सबन्धियों के साथ सामान्य पात्रों में खान-पान के योग्य नहीं है।

अपपानम् [अप+पा+ल्युट्] अपेय, बुरा पेय।

अपपूत (वि०) [ब० स०] जिसके नितंबों या कूल्हों की बनावट सुडौल न हो—सौ बेडौल कूल्हे।

अपप्रजाता [अपगता प्रजा अस्याः ब०स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदानम् [अप+प्र+दा+ल्युट्] घूस, रिश्वत।

अपप्रभ—भी (वि०) निडर, निर्भय, निश्शंक—रघु० ३।५१।

अपप्रवर्षी [अप+पृ+ल्युट्+ङीप्] अन्तिम लक्षकपुंज।

अपप्रायश्चम् [अप+प्राय्+ल्युट्] भर्त्सना, अपवाद।

अपभ्रंशः [अप+भ्रंश्+घञ्] 1 नीचे गिरना, पतन,—अत्याकर्षिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा—श० ४ 2 भ्रष्ट शब्द, भ्रष्टाचार (अत.) अशुद्ध शब्द चाहे वह व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और चाहे वह ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो जो संस्कृत न हो 3. भ्रष्ट भाषा, (काव्य में) बहरियों आदि के द्वारा प्रयुक्त प्राकृत बोली का निम्नतम रूप, (शास्त्र में) संस्कृत से भिन्न कोई भी भाषा—आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः, शास्त्रेषु संस्कृतादन्यत्वपभ्रंशतयोदितम्—काव्यादर्श १।

अपभ्रंशः [ओ० में] [अपभ्रष्ट औपचे—आ+क आ०] कुतुबनुमा में सुई का उत्तर से ठीक पूर्व या पश्चिम की ओर झुकाव, अक्षांशवलय।

अपमार्गः [अप+मृज्+घञ्] जो बुहारा जाता है, धूल, गर्दा।

अपमार्जनम् [अप+मृज्+ल्युट्] झूना, बहारना।

अपमानः [अप+मन्+घञ्] अनादर, सम्मान का न होना लक्षण—सम्मतं बुद्धिमत्ताप्तमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३।

अपमार्गः [अप+मृज्+घञ्] छोटा रास्ता, बगल का मार्ग बुरा रास्ता।

अपमार्जनम् [अप+मार्ज्+ल्युट्] 1. बोहर झाड़ फूंक, मांजना, साफ करना, 2. हजामत बनवाना, नाखून कटाना।

अपमुण्ड (वि०) [ब० स०] 1. औंधे मुंह वाला 2. विरूप, कुरूप।

अपमूर्धन् (वि०) [ब० स०] जिसके सिर न हो, °कलेवर-अमर०।

अपमृत्यु [प्रा० स०] 1. आकस्मिक या अस्वाभाविक मरण, दुर्घटना के कारण मृत्यु, 2. कोई भारी भय या रोग जिससे कि रोगी (जिसके जीने की आशा न रही हो) आशा के विपरीत स्वस्थ हो जाता है।

अपमृष्ट (वि०) [अप+मृज्+क्त] 1 जो समझ में न आ सके, अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वक्तृता 2. जो सभ्य न हो, जिसे कोई पसन्द न करे—विहितं ममाद्य सदसीदमपमृष्टमभ्युतार्चनम्, दत्त—शि० १५।४६।

अपयशस् (न०—अः) [प्रा० स०] बदनामी, कलंक, अपकीर्ति—अपयशो यशस्ति किं मृत्युना—भर्तृ० नी० ५५।

अपयानम् [अप+या+ल्युट्] दूर जाना, शीघ्रता पूर्वक भागना।

अपर (वि०) [न० ब०] (कुछ अर्थों में 'सर्वनाम' की भांति प्रयुक्त होता है) 1. अप्रतिद्वन्द्वी, बेजोड़, तु० अनुत्तम, अनुत्तर 2 [न० स०] (क) दूसरा, अन्य (वि० य नाम की भांति प्रयुक्त) (ख) और, अतिरिक्त (ग) दूसरा, और (घ) भिन्न, अन्य—मनु० १।८५, (ङ) तुच्छ, मध्यम 3. किसी और से संबंध रखने वाला, जो अपना निजी न हो (विप० स्व) 4. पिछला, बाद का, दूसरा, बाद में (काल और देश की दृष्टि से) (विप० पूर्व), अन्तिम—राजेश्वरः कालः शिव०, पद षष्ठीतत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तब 'पिछला भाग' 'उत्तरार्ध' अर्थ होता है;—°भागः भाग का उत्तरार्ध, °पूर्वेद्युः पहिले दो उत्तरार्ध, °पक्षः [illegible] का पिछला भाग, °पूर्वा, °अपरा बरसात का [illegible] का उत्तरार्ध, 5. बाद की, अगला 6. पश्चिमी—शि० ४।१, कु० १।१, 7. पहिला

निम्नतर, 8 (न्या० में) अविस्तृत, अधिक न फैलने वाला; जब 'अपर' शब्द एक वचन में 'एक' (एक, पहला) के सह संबंधी के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है 'दूसरा, बाद का'—एको यथौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान् —रघु० ५।६०, जब यह ब० व० में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'दूसरे' और इसके सहसंबंधी शब्द प्राय 'एके' 'केचित्' 'काश्चित्' 'अपरे' 'अन्ये' आदि है—एके समुद्वेलरेणुसहर्हति शिरोभिराज्ञामपरे महीभृत —शि० १२।४५, कुछ और,—शालिन केचिदध्यक्ष्यन्त्यमाञ्जरूपरेऽम्बुधौ, अन्ये त्वमणिषु शैलान् गुहास्वन्ये व्यलेषत, केचिदासिषत स्तब्धा भयात्केचिदधूणिषु । उदतारिषुरम्भोधि वानरा सेतुनापरे—भट्टि० १५।३१-३३,—रः 1 हाथी का पिछला पैर 2 शत्रु,—रा 1 पश्चिमी दिशा 2 हाथी का पिछला भाग 3 गर्भाशय, गर्भ की झिल्ली 4 गर्भावस्था में रुका हुआ रजोधर्म, —रम् 1. भविष्य 2 हाथी का पिछला हिस्सा,—रम् (क्रि० वि०) पुनः, भविष्य में, अपरंच इसके अतिरिक्त, अपरेण पीछे, पश्चिम में, के पश्चिम में (कर्म० या सब० के साथ)। सम०—अग्नि (अग्नि—द्वि० व०) दक्षिण और पश्चिमी अग्नियां (दक्षिण और गार्हपत्य), —अंगम् काव्य के द्वितीय प्रकार गुणीभूतव्यंग्य के आठ भेदों में से एक भेद, काव्य० ५. इसमें व्यंग्यार्थ किसी और का गौण अर्थ है,उदा०—अय स रसनोत्कर्षी पीनस्तनविमर्दनः, नाभ्यूरुजघनस्पर्शी नीवीविस्रंसन कर। यहाँ शृंगाररस करुण का अंग है, —अंत (वि०) पश्चिमी सीमा पर रहने वाला, (न्तः) 1. पश्चिमी सीमा या किनारा, अन्तिम छोर, पश्चिमी तट 2 (ब० व०) सह्य पर्वत का निकटवर्ती पश्चिमी सीमा प्रदेश या वहां के निवासी—अपरान्तजयोद्यतैः (अनीकैः) रघु० ४।५३, पश्चिमी लोग 3 इस देश के राजा 4 मृत्यु —अन्तकः=°अन्तः (ब०व०)—अपरः,—रे,—राणि दूसरे और दूसरे, कई, बहुत—अर्धम् उत्तरार्ध, —अह्नः दोपहर बाद, दिन का अन्तिम या समापक पहर,—इतरा पूर्वदिशा,—कालः बाद का समय,—जनः पश्चिम देश का वासी, पश्चिमी लोग,—दक्षिणम् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम में,—पक्ष 1 मास का दूसरा या कृष्णपक्ष, 2 दूसरी या विपरीत दिशा, प्रतिवादी (विधि में),—वर (वि०) कई एक, बहुत से, विविध,—अपरपरा सार्था गच्छन्ति—पा० ६।१।१४४ सिद्धा०—कई समुदाय जा रहे है,—पाणिनीयाः पश्चिम के निवासी पाणिनि के शिष्य,—प्रणेय (वि०) जो दूसरों के द्वारा आसानी से प्रभावित हो सके, विनेय, —रात्रः रात्रि का उत्तरार्ध या रात का अन्तिम पहर, —लोकः दूसरी दुनिया, अगला लोक, स्वर्ग,—वयस्तिलम् क्षितिज में पश्चिमी बिन्दु,—शैल (वि०) सर्दी के उत्तरार्ध से संबंध रखने वाला।

अपरक्त (वि०) [अप+रञ्ज्+क्त] 1 रंगहीन, रुधिर-रहित, पीला,—क्वासापरक्तावधर,—शि० ६।५, 2. असन्तुष्ट, सन्तोषरहित।

अपरता-त्वम् [अपर+तल्, त्वलच्वा] दूसरा या भिन्न होना, (२४ गुणों में से एक), भिन्नता, विपर्यय, आपेक्षिकता।

अपरतंत्र (स्त्री०) [अप+रम्+क्तिन्] 1. विच्छेद (=अवरति तु०) 2 असन्तोष।

अपरत्र (क्रि० वि०) [अपर+त्रल्] दूसरे स्थान पर, और कहीं, एकत्र या क्वचित्—अपरत्र एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर।

अपरत्व [प्रा० स०] 1 झगड़ा, विवाद (सम्पत्ति के भोग के विषय में) °अक्षिप्त बिना झगड़े के, बिना विवाद के (किसी वस्तु को अधिकार में करते समय), 2. बदनामी।

अपरस्पर (वि०) [द्व० स०—अपरश्च परश्च, पूर्वपदे सुत्व] एक के बाद दूसरा, निरंतर, अनवरत, °रा सार्था अपरस्पराः गच्छन्ति सन्तमधिकृत्येदं गच्छन्तीत्यर्थः—सिद्धा०।

अपराग (वि०) [ब० स०] रंगहीन,—गः [न० त०] 1 असंतोष, संतोष का अभाव, अनुराग का अभाव अपरागसमीरणे रतं—कि० २।५०, 2 विराग, घृणा।

अपराङ्मुख (वि०) [अपर+अञ्च्+विच्] (°खः, °खी, °खम्) दूर न किया गया, मुंह न फेरा हुआ, सम्मुख होने वाला सामने होनेवाला (अव्य०) (—खम्) के सामने। सम० मुख (वि०) (स्त्री० —खी) 1 मुंह न मोड़े हुए, मुंह सामने किये हुए, 2. साहसपूर्ण पग रखते हुए।

अपराजित (वि०) [न० त०] जो जीता न गया हो, अजेय —तः 1. विष्णु का अन्तु 2 विष्णु, शिव—ता दुर्गादेवी जिसकी पूजा विजया दशमी के दिन की जाती है, एक प्रकार की औषधि जो कि ताबीज के रूप में भुजा में बांधी जाती है, 3 उत्तर-पूर्व दिशा।

अपराद्ध (भू० क० कृ०) [अप+राध्+क्त] 1 जिसने पाप किया है, किसी को कष्ट दिया है, अपराध का करने वाला, कष्ट देने वाला, (कर्तरि में भी प्रयुक्त)—कस्मिन्नपि पूर्वापराद्धेऽपराद्धा शकुन्तला—श० ४, 2. जो चूक गया हो, निशाने पर न लगने वाला (तीर की भांति) —निमित्तादपराद्धेषोर्यान्तुरुक्तस्येव वल्गितम्—शि० २।२६ 3. जिसने उल्लंघन किया है, अतिक्रमण,—द्धम् अपराध, कष्ट।

अपराद्धिः (स्त्री) [अप+राध्+क्तिन्] 1 दोष, अपराध, 2. पाप।

अपराधः [अप+राध्+घञ्] अपराध, दोष, चूक, पाप

—क्रमपराक्रमज्ञं मयि पश्यसि—विक्र० ४।२९,—प्रथमापराध-इवानाम् —रघु० १।९ ।

अपराजित् (वि०) [अप+राज्+क्विप्] कष्टकर, दोषी ।

अपरिग्रहः [न० ब०] जिसके पास न कोई सामान हो, न नौकर चाकर, जो सब प्रकार से हीन हो—विरागीर-परिग्रह, —हः 1. अस्वीकृति, इंकारी 2. दरिद्रता, तंगी ।

अपरिच्छद (वि०) [न० ब०] गरीब, दरिद्र ।

अपरिच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. जिसका अंतर न पहचाना गया हो, 2. सीमा रहित ।

अपरिग्रह [न० त०] चिरकौमार्य, ब्रह्मचर्य ।

अपरिणीता [न० त०] अविवाहित कन्या ।

अपरिलक्ष्यमाणम् [न० त०] अगोचरता, असंलक्ष्यता ।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] 1. बिना परीक्षा किया हुआ बिना जाचा हुआ, अप्रमाणित 2 अविचारित, मूर्खतापूर्ण, विवेकहीन (पुरुष या कर्म) 'कारक नाम पथम नन्यम् यच्च ५, जो कर्ता विचारशील न हो, 3. जो स्पष्ट रूप से स्थापित या सिद्ध न हुआ हो ।

अपरुष (वि०) [न० त०] कोमलशून्य -अपरुषापरुषाक्षरमोक्षिया रघु० ९।८ ।

अपरूप (वि०) [स्त्री०—पा -पी] [ब० स०] कुरूप, विकृत अंगों वाला पत्नी [प्रा० स०] विकृतता ।

अपरेद्यु (अव्य०) [अपर+एद्युस्] अगले दिन ।

अपरोक्ष (वि०) [न० त०] 1. दृश्य 2 प्रत्यक्ष 3. जो दूर न हो अव्य (कि० वि०) की उपस्थिति में (षष्ठ० के साथ), अपरोक्षात् प्रत्यक्ष रूप से, दृश्यतापूर्वक ।

अपरोध [अप+रुध्+घञ्] वर्जन, निषेध ।

अपर्ण (वि०) [न० ब०] बिना पत्तों का, —र्णा पार्वती या दुर्गादेवी, कालिदास इस नाम का कारण बताते हुए कहते हैं स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः, त्वमेव तां कर्मभिरेकवर्णिनीं शिवेतरैरपर्णेति च विदुर्बुधाः कु० ५।४४ ।

अपर्याप्त (वि०) [न० त०] 1 जो यथेष्ट या काफी न हो अपूर्ण जो पर्याप्त न हो 2. अमीमित 3 अवाप्य, असमर्थ,—अपर्याप्त तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् भग० १।१० ।

अपर्याप्तिः (स्त्री०) [नञ्+परि+आप्+क्तिन्] यथेष्टता का अभाव ।

अपर्याय (वि०) [न० ब०] क्रमरहित, —यः क्रम या प्रणाली का अभाव ।

अपर्युषित (वि०) [नञ्+परि+वस्+क्त] जो रात का रक्खा हुआ न हो, ताजा, नूतन ।

अपर्वन् (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो, (नपुं०) [न० त०] 1 जोड़ या संयोग बिन्दु का अभाव 2. जो पर्व का दिन न हो—अर्थात् अनुपयुक्त समय का ऋतु ।

अपल (वि०) [न० ब०] बिना मांस का, —लः कौआ या कुत्ता ।

अपलपनम्-अपलापः [अप+लप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. छिपाना, गोपन 2. छिपाव या जानकारी से मुकर जाना, टालमटोल,—न हि प्रत्यक्षसिद्धस्यापलापः कर्तुं शक्यते—शारी० 3. सत्यता, विचार व भावनाओं को छिपाना, घटाकर बतलाना । सम० —शब्द (विधि में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला जुर्माना जो कि दोष सिद्ध होने पर भी अपने दोष को स्वीकार नहीं करता ।

अपलापिन् (वि०) [अप+लप्+णिनि] मुकरने वाला, दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला ।

अपलालिका [अप+लष्+ण्वुल् स्त्रियां टाप्] अत्यधिक प्यास या इच्छा, या सामान्य तृषा (कई बार इसी अर्थ में 'अपलालिका' शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उसे अशुद्ध समझा जाता है) ।

अपलालिन्-कापुक (वि०) [अप+लष्+णिनि, उकञ् वा] 1. प्यासा 2. प्यास या इच्छा से रहित—प्रलापिनो भविष्यन्ति कदा न्वेतेऽपलापुका —महाभा० ।

अपवन (वि०) [न० ब०] बिना वायु या हवा के, हवा से सुरक्षित—नम् [प्रा० स०] नगर के निकट लगाया हुआ बाग वाटिका या उपवन ।

अपवरक-का [अप+वृ+वुल् स्त्रियां टाप्] 1 भीतर का कमरा, शयनागार 2. बातावन, मोखा —ततश्चैकस्मादपवरकात्—मुद्रा० ।

अपवरणम् [अप+वृ+ल्युट्] 1. आच्छादन, पर्दा 2. पोशाक, वस्त्र ।

अपवर्ग [अप+वृज्+घञ्] 1. पूर्ति, समाप्ति, किसी कार्य की पूर्णता या निष्पन्नता—अपवर्गे तृतीया—पा० २।३।६, क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृता —कि० १।२४, अपवर्गे तृतीयेति भवति पाणिनेरपि—नै० १७।६८, कि० १६।४१, 2 अपवाद, विशिष्ट नियम—अभिव्याप्यापकत्वेसमापवर्गं —मुद्रा० 3 मोक्ष, परमगति, —अपवर्गो महोदयार्थमोभूवमभावि धर्मयोर्गतौ —रघु० ८।१६, 4 उपहार, दान 5. त्याग 6 छोड़ना (जैसे बाण का) ।

अपवर्जनम् [अप+वृज्+ल्युट्] 1. त्याग, (प्रतिज्ञा) पालन, (ऋणादि) परिशोध, 2. उपहार या दान 3. परमगति ।

अपवर्तः [अप+वृत्+घञ्] 1. निकाल लेना, दूर करना 2. (गणि०) सामान्यविभाजक जो दोनों साम्यराशियों में व्यवहृत होता है ।

अपवर्तनम् [अप+वृत्+ल्युट्] 1. दूर करना, स्थानं स्थानान्तरम् 2. निकाल लेना, वञ्चित करना, न

स्यावोऽस्ति क्षिपन्त्यादच न च दायापवर्तनम्—मनु० ९।७९।

अपवादः [अप+वद्+घञ्] 1. निन्दा, भर्त्सना, कलंक —लोकापवादो बलवान्यतो मे—रघु० १४।४०, आक्षेप लोकनिन्दा,—देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जन. —उत्तर० १।६, 2. सामान्य नियम को बाधित करने वाला विशेष नियम (विप० उत्सर्ग)—अपवादैरिवोत्सर्गा. कृतव्यावृत्तय परै —कु० २।२७, रघु० १५।७ 3 आदेश, आज्ञा—ततोपवादेन पताकिनीपतेश्चचाल निर्हादिवती महाजम् —कि० १४।२७, 4. निराकरण, (वेदान्त०) मिथ्यारोपण या मिथ्याविश्वास का निराकरण,—रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुस्वरूपत्ववत्, वस्तुभूतब्रह्मणो विवर्तस्य प्रपञ्चस्य वस्तुभूतरूपतोऽपदेश अपवाद—तारा० 5. भरोसा 6. प्रेम, घनिष्ठता ।

अपवादक } (वि०) [अप+वद्+ण्वुल्, णिनि वा] 1
अपवादिन् } कलंक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने वाला—मृगयापवादिना माद्र्येण श०२, 2. विरोध करने वाला, एक ओर रखने वाला, निकाल देने वाला ।

अपवारणम्] अप+वृ+णिच्+ल्युट्] 1 आच्छादन, छिपाव, 2 ओझल होना ।

अपवारित (भू० क० कृ०) [अप+वृ+णिच्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, —तम्, अपवारितकम् छिपा हुआ या गुप्त ढंग, —क्रम्, अपवारितकेन, अपवार्य (अव्य०) (नाटकों में बहुधा प्रयुक्त) पृथक् 'एक ओर' अर्थ प्रकट करने वाला अव्य० (विप० प्रकाशम्) यह इस ढंग से बोलने को कहते हैं कि केवल वही सुने जिसे कहा गया है—तद्भवेदपवारित रहस्य तु यदन्यस्य परावृत्य प्रकाश्यते, त्रिपताकाकरेणान्यमपवार्यान्तरा कथाम्—सा० द० ६ ।

अपवाह्-हृणम् [अप+वह्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1 दूर ले जाना, हटाना 2 घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि को निकालना ।

अपविद्ध (वि०) [ब० स०] निर्बाध, बाधारहित—रघु० २।३८

अपविद्ध (भू० क० कृ०) [अप+व्यध्+क्त] 1 दूर फेंका हुआ, त्यक्त, अस्वीकृत, उपेक्षित, दूरीकृत, मुक्त, विरहित 2 नीच, कमीना —द्धः, °पुत्र. माता या पिता या दोनों से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने गोद ले लिया हो, हिन्दुओं में १२ प्रकार के पुत्रों में से एक—मनु० ९।१७१, याज्ञ० २।१३२ ।

अपविद्या [प्रा० स०] अज्ञान, आध्यात्मिक अज्ञान, माया या भ्रम (अविद्या),—तत्त्वस्य सवित्तिरिवापविद्याम् कि० १६।३२ ।

अपवीण (वि०) [ब० स०] जिसके पास वीणा न हो, या खराब वीणा हो —णा [प्रा० स०] खराब वीणा ।

अपवृक्तिः (स्त्री०) [अप+वृज्+क्तिन्] पूर्णता, निष्पन्नता, पूर्ति ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृ+क्तिन्] पूरा होना, छिद्र, रन्ध्र ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] अन्त, समाप्ति ।

अपवेधः [प्रा० स०] गलत जगह या बुरे ढंग से (मोती आदि में) छेद करना ।

अपव्ययः [प्रा० स०] अत्यधिक खर्च, अपव्यय ।

अपशकुनम् [प्रा० स०] असगुन, बुरा सगुन ।

अपशङ्क (वि०) [ब० स०] निर्भय, निशंक, —कम् (कि० वि०) निडरता के साथ ।

अपशद = नु० अपसद ।

अपशब्दः [प्रा० स०] 1 अशुद्ध शब्द (व्या० की दृष्टि से), भ्रष्ट शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि से), —न एव शक्तिर्वैकल्यप्रमादालस्यादिभिः, अन्यथोच्चारिता शब्दा अपशब्दा इतीरिता । अपशब्दास्तु भाषैव सुभा० 2 ग्राम्य शब्द 3 व्या० की दृष्टि से अशुद्ध भाषा 4 झिड़की वाला शब्द, गाली, दुर्वचन निंदा ।

अपशिरस् } (वि०) [अपगतं शिरः शीर्षं वा यस्य
अपशीर्ष-र्षन् } ब० स०] सिर रहित, बे सिर का ।

अपशुच् (वि०) [ब० स०] शोकरहित, (पु) आत्मा ।

अपशोक (वि०) [ब० स०] शोकरहित, —कः अशोकवृक्ष ।

अपश्चिम (वि०) [न० त०] 1 जिसके पीछे कोई न हो, अंतिम (अधिकतर 'पश्चिम' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है—तु० उत्तम और अनुत्तम, उत्तर और अनुत्तर),—अयमपश्चिमयोस्तव रामयोः शिरसि पादपङ्कजस्पर्शः—उत्तर० १ प्रसीदतु महाराजो मयानेनापश्चिमेन प्रणामेन—वेणी० ६, 2. अनन्तिम प्रथम, सर्वप्रथम 3 चरम, —अपश्चिमामिमां कष्टामापदं प्राप्तवत्यहम् रामा० ।

अपश्रय [अप—श्रि+अच्] गद्दी, तकिया ।

अपश्री (वि०) [ब० स०] सौन्दर्य से वञ्चित—शि० ११।५४ ।

अपश्वासः = दे० अपान ।

अपस्करः [अप+स्कृ+अच्] हाथी के अंकुश की नोक ।

अपसव्य (वि०) [अप+सव्य+ष्यञ्] 1. विरुद्ध, विपरीत, 2. अनुकूल प्रतिकूल 3 बायाँ,—व्यम् (कि० वि०) 1 विरुद्ध 2 असन्तोषपूर्वक, 3 निर्दयता के साथ अच्छी भांति, ठीक तरह से ।

अपसद् -द (वि०) [अप+सद्+क्विप्, कुत्वम् वा] विरुद्ध, विपरीत ।

अपसद [अप+सद्+अच्] 1 जाति से बहिष्कृत, नीच पुरुष, प्राय. समास के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

है—दुष्ट, पापी, अभिशप्त,—कापालिक° मा० ५, रे रे अभिवादयसदा'—वेणी० ३, 2, इस प्रकार की अनुलोम सन्तान—अर्थात् पहले तीन वर्णों के मनुष्यों द्वारा अपने से नीच वर्ण की स्त्री में उत्पन्न सन्तान—विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोः द्वयो., वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन् षडेतेऽपसदा स्मृताः। मनु० १०।१०

अपसरः [अप+सृ+अच्] 1. प्रस्थान, पलायन 2. उचित कारण।

अपसरणम् [अप+सृ+ल्युट्] जाना, बाधक मुड़ना, पलायन।

अपसव्यम् [अप+सव्य+ष्यञ्] 1 त्याग, उत्सर्ग, 2. उपहार या दान 3. मोक्ष।

अपसर्प—र्पक [अप+सृप्+घञ्, स्वार्थे कन् च] धूर्तचर, जासूस, भेदिया, —सापसर्पैर्जनागार यथाकाल स्वपन्नपि रघु० १७।५४, १४।३१।

अपसर्पणम् [अप+सृप्+ल्युट्] पीछे हटना, लौटना, जासूसी करना।

अपसव्य—सव्यक [ब० स०] 1 जो बायां न हो, दायां —अपसव्येन हस्तेन, —मनु० ३।२१४ 2 विरुद्ध, विपरीत, -अम् (अव्य०) दाईं ओर, दाहिने कंधे के ऊपर से जनेऊ को शरीर के बाम भाग पर लटकाना (विप० सव्यम् -अब कि वह बायें कंधे के ऊपर से लटकता है) अब ही दाहिनी ओर रखते हुए किसी की परिक्रमा करना, जनेऊ को दायें कंधे से लटकाना।

अपसव्यवत् (वि०) [अपसव्य+मतुप्] दाहिने कंधे पर से यज्ञोपवीत पहनने वाला।

अपसारः [अप+सृ+घञ्] 1 बाहर जाना, लौटना 2. निर्गमस्थान, निकास।

अपसारणम्-णा [अप+सृ+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] हटाकर दूर करना, हांकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसारणा क्रियते मुद्रा०, स्थान देना।

अपसिद्धान्तः [मा० स०] गलत या भ्रमयुक्त निर्णय।

अपसृप्तिः (स्त्री०) [अप+सृप्+क्तिन्] दूर चले जाना।

अपस्करः [अप+कृ+अप् सुडागम] 1 पहिये को छोड़कर गाड़ी का कोई भाग (—रम् भी) 2 विष्ठा, मल 3 योनि 4. गुदा।

अपस्नानम् [अप+स्ना+ल्युट्] 1 किसी सम्बन्धी की मृत्यु के उपरान्त किया जाने वाला स्नान 2 मृतक स्नान, स्नान किये हुए पानी में स्नान करना।

अपस्पश (वि०) [ब० व०] जिसके पास भेदिए न हों, —मन्त्रविशेष यो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२।

अपस्पर्श (वि०) [ब० स०] अङ्गहीन।

अपस्मारः—स्मृतिः (स्त्री०) [अपस्मृ+घञ्, क्तिन् वा] 1 स्मरण शक्ति का अभाव 2. मिरगी रोग, मूर्छा रोग।

अपस्मारिन् (वि०) [अप+स्म+णिनि] मिरगी रोग से ग्रस्त।

अपस्मृति (वि०) [ब० स०] विस्मरणशील।

अपह्नु (वि०) [अप+हा+ड] (समास के अन्त में) दूर हटाना, दूर करना, नष्ट करना,—अगिम यदि जीविताप्रहा—रघु० ८।४६।

अपहृतिः (स्त्री०) [अप+हन्+क्तिन्] दूर करना, नष्ट करना।

अपहननम् [अप+हन्+ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना।

अपहरणम् [अप+हृ+ल्युट्] 1 दूर ले जाना, उठा ले जाना, दूर करना 2 चुराना।

अपहसितम्—हास [अप+हस्+क्त, घञ् वा] अकारण हंसी, मूर्खता पूर्ण हंसी, ऐसी हंसी जिससे आंखों में आंसू आ जायें (नीचजनापहसितम्)।

अपहसित (वि०) [अपहस्+इतच्] दूर फेंका हुआ, रद्दी किया हुआ, परित्यक्त।

अपहानि (स्त्री०) [अप+हा+क्तिन्] 1 त्याग, छोड़ देना 2. लुप्त जाना, ओझल होना 3 अपवाद, निकाल देना।

अपहारः [अप+हृ+घञ्] 1. उठा ले जाना, दूर ले जाना, चुरा लेना, नष्ट कर देना,—चित्तापहार, चित्त° 2 छिपाना, मालूम न पड़ने देना,—कथमात्मापहारं करोमि—श० १, अपने आप को, अपने नाम को और अपने चरित्र को मैं किस प्रकार छिपाऊं?

अपह्नवः [अप+ह्नु+अप्] 1 छिपाव, गोपन, अपनी भावना ज्ञान आदि का छिपाना, 2 सचाई से मुकर जाना, दुराव—"वैज्ञ—पा० १।३।४४, 3. प्रेम, स्नेह।

अपह्नुतिः (स्त्री०) [अप+ह्नु+क्तिन्] 1 सत्य को छिपाना, मुकरना 2. एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु के वास्तविक चरित्र को छिपा कर कोई और काल्पनिक या असत्य स्थापना की जाय—वेद नभोमण्डलमय-मूरगणि, नैतानव तारा नवफेनमञ्जरी। काव्य०, १० वीं समुल्लास तथा दे० सा० द० ६८३।८४ पृष्ठ।

अपह्रासः [अप+ह्रस्+घञ्] घटाना, कमी करना।

अपाक् (अव्य०) दे० अपाच्।

अपाकः [न० स०] 1. अपच, अजीर्णता 2. अपरिपक्वता।

अपाकरणम् [अप+आ+कृ+ल्युट्] 1. दूर कर देना, हटाना 2. अस्वीकृति, निराकरण 3. अदायगी, कारबार का समेट लेना।

अपाकर्मन् (न०—र्मन्) [अप+आ+कृ+मनिन्] चुकता कर देना, कारबार उठा देना।

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप+आ+कृ+क्तिन्] 1 अस्वीकृति, दूर करना, 2 क्रोध से उत्पन्न संवेग, जय आदि—वि० १।२७।

अपाक्त (वि०) [अपक्त अक्षविच्छिन्नत्वम्] 1. विजयशील, जयशील 2. [ब० स०] नेत्रहीन, जन्म से आंखों वाला।

अपाङ्क्त, अपाङ्क्तेय, अपाङ्क्तेय (वि०) [न०त०] जो समान पंक्ति में न हो, विशेषतः वह व्यक्ति जो बिरादरी में अपने बन्धु-बान्धवों के साथ एक पंक्ति में बैठने का अधिकारी न हो, जाति बहिष्कृत।

अपाङ्गः—गम् [अपाङ्गति तिर्यक् चलति नेत्र यत्र अप+अञ्च् घञ्, कुत्व] 1 आँख की बाहरी कोर, या आँख की कोण—चलापाङ्गा दृष्टि—श० १।२४, 2. सम्प्रदाय सूचक माथे का तिलक 3. कामदेव, प्रेम का देवता। सम०—दर्शनम्,—दृष्टिः (स्त्री०)—विलोकितम्,—वीक्षणम् तिरछी चितवन, कनखियों से देखना, पलक झपकना, —देशः आँख की कोर, —भेद (वि०) सुन्दर कनखियों से युक्त आँखों वाला (यह प्रायः स्त्रियों का विशेषण है) यदिदं पुनरन्यपाङ्गभेदेना परिवृत्तार्धमुखी मयाथ दृष्टा · विक्रम० १।१७।

अपाच् } [अपाञ्चति—अञ्च्+क्विप्] 1. पीछे की ओर
अपाच् } जाने वाला, या पीछे स्थित, 2 अमुक्त, अस्पष्ट 3 पश्चिमी 4 दक्षिणी—क् (अव्य०) 1 पीछे, पीछे की ओर 2 पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर।

अपाची [अप+अञ्च्+क्विन् स्त्रियां ङीप्] दक्षिण या पश्चिम दिशा, °इतरा—उत्तर दिशा।

अपाचीन (वि०) [अपाची+ख] 1 पीछे की ओर स्थित, पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2 अदृश्य, अप्रत्यक्ष—ऋक् ७।६।४ 3 दक्षिणी 4 पश्चिमी 5 विरोधी।

अपाच्य (वि०) [अपाची+यत्] पश्चिमी और दक्षिणी।

अपाणिनीय (वि०) [न० त०] 1 जो पाणिनि के नियमों के अनुकूल न हो 2. जिसने पाणिनि-व्याकरण को भली भाँति नहीं पढ़ा हो, पल्लवग्राही विद्वान्, संस्कृत का अल्पज्ञान रखने वाला।

अपात्र [न० त०] 1 निकम्मा बर्तन 2 (आल०) अयोग्य या अनधिकारी पुरुष, दान लेने के लिए अयोग्य 3 कुपात्र, जो उपहार दान आदि का अधिकारी न हो। सम० —क्रिया, अपात्रीकरणम् अनुचित तथा निर्मर्यादि कर्म करना, अपात्रता, दे० मनु० ११।७०, —दायिन् अयोग्य पुरुषों को देने वाला, —भृत् (वि०) अयोग्य और निकम्मे व्यक्तियों का भरणपोषण करने वाला—शासेनापात्रभृद्भवति राजा—पञ्च० १।

अपादानम् [अप+आ+दा+ल्युट्] 1 ले जाना, दूर करना, अपसरण 2 (व्या० में) अपा० का अर्थ—ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४।

अपाध्वन् (पु०) [अपकृष्ट अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग, बुरा मार्ग।

अपान [अप+अन्+अच्, अपानयति मूत्रादिकम्—अप+आ+नी+ड वा] श्वास बाहर निकालना, श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पाँच पवनों में से एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है, —नः, —नम् गुदा। सम० —द्वारम् गुदा, —पवनः, —वायु प्राणवायु—जिसे अपान कहते हैं।

अपापात् (वि०) [ब० स०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य।

अपाप-पिन् (वि०) [ब० स०, णिनि वा] निष्पाप, पवित्र पुण्यात्मा।

अपाम् (अप्-जल-का सब० ब० व०) [समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त]—ज्योतिस् (न०) बिजली, —नपात् अग्नि और साविती की उपाधि, —नाथः, —पतिः 1 समुद्र 2. वरुण, —निधिः 1 समुद्र 2 विष्णु, —वासस् (नपुं०) भोजन, —पित्तम् अग्नि —योनि समुद्र।

अपामार्गः [अप+मृज्+घञ्, कुत्वदीर्घौ] चिचड़ा, एक बूटी।

अपामार्जनम् [अप+मृज्+ल्युट्] सफाई करना, शुद्धि करना, (रोग पापादिक) को दूर करना।

अपायः [अप+इ+अच्] 1 चले जाना, विदाई 2 वियोग—ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४, येन जात क्रियापाये कारक हसकोकिलम् मल्लि० ६।७५, 3 ओझल होना, लोप, अभाव 4 नाश, हानि, संहार—करणापायविभिन्नवर्णया—रघु० ८।४२, 5 अनिष्ट, दुर्भाग्य, विपत्ति, भय (विप० उपाय) काय नोपदिशन्त्यपायम्—हि० ४।६५ 6 हानि, क्षति।

अपार (वि०) [न० त०] 1 जिसका पार न हो 2 असीम, सीमारहित 3 जो समाप्त न हो, अत्यधिक 4 पहुँच के बाहर 5 जिसे पार करना कठिन हो, जिस पर विजय न पाई जा सके, —रम् नदी का दूसरा तट।

अपार्श्व (वि०) [अप+अर्+क्त] 1 दूरस्थ, दूरवर्ती, 2. निकटस्थ।

अपार्थ } (वि०) [अपगतः अर्थः यस्मात् ब० स०]
अपार्थक } 1 व्यर्थ, अलाभकर, निकम्मा, 2 निरर्थक, अर्थहीन, —थम् अर्थहीन या असंगत बात या तर्क (मा० शा० की दृष्टि से रचना संबंधी दोष तु० काव्य० ३।२८, समुदायार्थशून्य यत्तदपार्थमितीष्यते)।

अपावरणम् } [अप+आ+वृ+ल्युट्, क्विप् वा]
अपावृतिः (स्त्री०) } 1 उद्घाटन 2 ढकना, लपेटना, ओढ़ना 3 छिपाना, गोपन करना।

अपावर्तनम् } [अप+आ+वृत्+ल्युट्, क्विप्
अपावृत्तिः (स्त्री०) } वा] 1. लौटना, पीछे हटना, अपक्रमण 2. घूमना।

अपाश्रय (वि०) [ब० स०] आश्रयहीन निरवलम्ब, असहाय, —यः शरण, सहारा, जिसका सहारा लिया जाय 2 चौकी, आसियाना, 3. सिरहाना।

अपाश्रयण. [अप+आ+श्रि+ल्युट्] हटकना।

अपक्षालनम् [अप+क्षल्+ल्युट्] 1. फेंक देना, रद्दी कर देना 2. छोड़ देना 3. वर्ज करना।

अपक्षारणम् [अप+क्षा+ल्यु+ल्युट्] विवाद, झगड़ना, दूर हटना—दे० 'अपक्षरण'।

अपक्षु (वि०) [ब० स०] निर्बीज, मृत।

अपि (अव्य०) [कई बार पाणिनि के मतानुसार 'अ' का लोप—दृष्टि पाणिरिरलोपमवाप्योक्तवर्णयोः—लिखा, पिधानम् आदि] 1 (संज्ञा और धातुओं के साथ प्रयुक्त होकर) निकट या ऊपर रखना, की ओर ले आना, तक पहुँचाना, सामीप्य सन्निकटता आदि 2 (पृथक् कि० वि० या संयो० अव्य० के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा, इसके अतिरिक्त—अस्ति मे सोदरस्नेहोप्येतेषु—ह० १, अपनी ओर से तो, अपनी बारी आने पर—विष्णुशर्मणापि राजपुत्रा पाठिता—पञ्च० १, अपि अपि, अपि च, भी, और भी—अपि स्तुहि, अपि सिध—सिद्धा० न वापि न चैव, न वापि, वापि वा, न वापि न—न, 3 'भी' 'अति' 'बहुत' शब्दों के अर्थ पर बल देने के लिए भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अद्यापि—आज भी, इदानीमपि—अब भी, यद्यपि—अवश्य, चाहे, तथापि—तो भी, कई बार केवल 'तथापि' शब्द के प्रयोग से ही 'यद्यपि' का अध्याहार कर लिया जाता है—उदा० कि० १।२८, 4 अवश्य (भी, चाहे)—हरतिदमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, चाहे ऊपर से ढका हुआ, इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० चाहे वल्कल वस्त्र में 5 (वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रश्न सूचक') अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १, अपि शिवार्थमुलब्धं समित्कुशम्.... अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे—कु० ५।३३, ३४, ३५, 6 आज्ञा, प्रत्याशा (प्रायः विधिलिङ् के साथ) कृतं रामसदृशं कर्म, अपि जीवेत् ब्राह्मणशिशुः—उत्तर० २ मुझे आशा है कि ब्राह्मण बालक जी उठेगा। विशे० इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'नाम' के साथ जुड़ कर निम्नांकित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'शक्यता' (ख) शायद, संभवतः (ग) 'क्या ही अच्छा हो यदि', 'मेरी आंतरिक इच्छा या आशा है कि—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णसंबन्धयोग्या स्यात्, श० १, ह० ७, तदपि नाम मनागवतीर्णोसि रतिरभवदाराधनाय—मा० १, शायद, संभवतः—अपि नामाहं पुरस्कृता भवेयम् विक्रम०—क्या ही अच्छा होता यदि मैं पुरस्कृत होता ? (प्रश्नवाचक शब्दों के साथ जुड़ कर 'अनिश्चितता' के अर्थ को बतलाता है) कोई, कुछ, कोऽपि—कोई, किमपि—कुछ, कुत्रापि—कहीं; इस शब्द को 'अवश्य' 'अवश्यमेव' 'अनिवार्य' 'अनिवार्य' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—अतिशयार्थोऽपि पदार्थान्तरः कोऽपि हेतुः—उत्तर० ६।१२, ८. (संख्या वाचक शब्दों के पश्चात् प्रयुक्त होने पर 'कात्स्न्यं' और 'समस्तता' का अर्थ होता है) चतुर्णामपि वर्णानाम्—चारों वर्णों का, 9. (यह अव्यय कभी २ 'संदेह' 'अनिश्चितता' और 'शंका' भी प्रकट करता है)—अपि धीरो भवेत्—मच० शायद वह धीर है 10. (विधिलिङ् के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुयाद्विद्वान्, 11. घृणा, निन्दा—अपि नामायं स्वजनेऽपि धातुं गणिकाधाय्यसे गर्हितमेतत्—सिद्धा०, लज्जा की बात है, धिक्कार है—धिग्जालम देवदत्तमपि लिखेत्पलांडुम्, 12 जोर, अंकार के साथ प्रयुक्त होकर 'वक्ता की उदासीनता' प्रकट करता है और दूसरे को यथारुचि कार्य करने देता है—अपि स्तुहि—सिद्धा० (आप चाहें तो) स्तुति करें,—अपि स्तुह्यपि तेनास्मास्वस्त्यभ्युपैहि नराधिप—भट्टि० ८।८२ 13 कभी विस्मयादि द्योतक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14 'इसलिए' 'फलतः' (अतः एव) के अर्थ में कभी ही प्रयुक्त होता है 15 सम० के साथ प्रयुक्त होकर 'अध्याहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० सर्षपोऽपि स्यात्,—यहाँ (बिन्दुरपि—बड़ा सा, एक बूंद) जैसा कोई शब्द अध्याहृत किया जाता है, समवतः 'एक बूंद भी' अभिप्रेत है।

अपिकीर्त (वि०) [अपि+कृ+क्त] 1. स्तुति किया गया, यशस्वी 2. कथित, वर्णित।

अपिकिञ्चन (वि०) [न० त०] 1 जो संपन्न न हो, स्वल्प अपर्याप्त 2. कंगाल।

अपितृक (वि०) [न० ब०] 1 जिसका पिता जीवित न हो, 2. अपैतृक।

अपित्र्य (वि०) [न० त०] अपैतृक।

अपिधानम्, पिधानम् [अपि+धा+ल्युट्, भागुरि के मत में विकल्प से 'अ' लोप] 1 ढकना, छिपाना 2 आवरण, ढक्कन, आच्छादन (आल० भी)।

अपिधिः (स्त्री०) [अपि+धा+कि] छिपाव।

अपिनद्ध (वि०) [ब० स०-अपि सम्पृष्टं वर्तं भोजनं नित्यमो वा यस्य] धार्मिक कृत्य का सदाचारी, रक्त द्वारा संबद्ध।

अपिनद्ध, पिनद्ध [अपि+धा+क्त—भागुरिमतेन अकार लोप] 1. बद्ध, बंद किया हुआ, ढका हुआ, छिपाया हुआ (आल० भी) वाक्यांशिहित—अंशुकों से ढका हुआ 2 जो छिपा न हो, स्पष्ट, स्पष्ट,—अर्थो विरामपिनद्ध पिनद्धत्व किंचित् सत्य चकास्ति मरहट्टवधूस्तनाग्र—सुभा०।

अपीतिः (स्त्री०) [अपि+इ+क्तिन्] 1. प्रवेश, उपागम 2. विघटन, नाश, हानि 3. प्रलय—अपीतौ तद्वत् प्रसंगादसमञ्जसम्—ब्रह्म०।

अपीनसः [अपीनस्य, अपीनत्वाय दीयते अस्मात् कर्मकर्तरि क—तारा०] नाक की सूजकता, सूजाव।

अपुंस्का (स्त्री०) [नास्ति पुमान् यस्या —न० ब०] बिना पति की स्त्री—नापुत्रकासीति मे मतिः —भट्टि० ५।७०।

अपुत्रः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—पुत्रक(वि०) (स्त्री० —त्रिका) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अपुत्रिका (स्त्री०) [न० ब० कप्, टाप् इत्व च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो, जो पुत्राभाव की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए नियत न की गई हो, तु० 'अकृता'।

अपुनर् (अव्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, मरा के लिए। सम०—आवर्तिन् (वि०) न लौटने वाला, मृत,—आदानम् फिर न लेना, वापिस न लेना—आवृत्तिः (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति, प्राप्य (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके, भव 1 जो फिर उत्पन्न न हो (रोगादिक भी), 2 मोक्ष या परमगति।

अपुष्ट (वि०) [न० त०] 1 जिसका पोषण ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्थूल न हो 2 (स्वर) जो ऊँचा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3 (सा०शा०) जो (अर्थ का) पोषक या सहायक न हो असबद्ध, अर्थदोषों में से एक —उदा० सा० द० ५७५—विलोकय वितते व्योम्नि विभुं मुच रुषं प्रिये—यहाँ आकाश का विशेषण 'वितत' शब्द क्रोध की शान्ति में कोई सहायता नहीं करता —इसलिए असबद्ध है।

अपूप [न पूयते विशोर्यते—पू+प, न० त० तारा०] मालपुआ, शर्करादिक डाल कर बनाया गया रोटी से मोटा पदार्थ, इसे 'पूआ' कहते हैं।

अपूपीय, अपूप्य (वि०) [अपूपाय हितम् —छ, यत् च] अपूप सबन्धी,—प्यम्—आटा, भोजन।

अपूपी (स्त्री०) [न० त०] सेमल का पेड़।

अपूर्ण (वि०) [न० त०] जो पूरा या भरा न हो अधूरा असम्पन्न—अपूर्णमेकेन शतं क्रतूनाम्—रघु० ३।४८, अपूर्ण एव पंचरात्रे दोहदस्य—मालवि० ३।

अपूर्व (वि०) [न० ब०] 1 जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, बिल्कुल नया,—अपूर्वमिदं नाटकम् —श० १।२, 2 अनोखा, असाधारण, अद्भुत, —अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्या स्तनमण्डले, दूरतो वहतीवाग्र हृदि लग्नस्तु शीतल भृगार० १७, निराला अनुपम, अमूलपूर्व—अपूर्वकर्मबन्धाश्चालमपि मुग्धे विमुख मा -उत्तर० १।४६, अप्रतिम शक्तिमत्ता करने वाला 3 अज्ञात 4 अप्रथम, —र्वम् 1 किसी कार्य का हुरवर्ती फल जैसा कि सत्कार्यों के फलस्वरूप स्वर्गप्राप्ति 2 इष्ट और अनिष्ट जो भावी सुख दुःख के अन्तिम कारण हैं,—कः परब्रह्म। सम०—पति (स्त्री०) जिसे अभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, कुमारी कन्या,—विधि. नया आधिकारिक निदेश या आज्ञा।

अपूपवत् (अव्य०) [न० त०] अलग से नहीं, साथ-साथ, समष्टि रूप से।

अपेक्षणम् } [अप्+ईक्ष्+ल्युट्, अप+ईक्ष्+अ] 1
अपेक्षा } प्रत्याशा, आशा, चाह, 2 आवश्यकता, जरूरत, कारण —प्रायः समास में स्फुलिंगावस्थया वह्निरपेक्षा इव स्थिता —श० ७।१५, जलने की प्रतीक्षा में 3. विचार उल्लेख, लिहाज—कर्म के साथ अधि० में, प्रायः समास में, करण० या कभी कभी अधि० में, (अपेक्षया, अपेक्षायाः) समास में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ —'का उल्लेख करते हुए' 'लिहाज करके' 'के निमित्त' नियमापेक्षया —रघु०।४९, प्रथममृक्तापेक्षया —मेघ० १७, अत्र व्यग्य गुणीभूत सदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्-काव्य० १, इसकी तुलना में 4 मेलजोल, सबध 5 देखभाल, ध्यान, सावधानी —वेक्षापेक्षास्तथा यत्र धाता दायागुलीयकम्—भट्टि० ७।४९, 6 सम्मान, समादर 7. (व्या० में) = आकाक्षा।

अपेक्षणीय, अपेक्षितव्य, अपेक्ष्य } (वि०) [अप+ईक्ष+अनीयर्, तव्यत्, ण्यत् वा] अपेक्षा करने के योग्य, जिसकी आवश्यकता या आशा हो, जिसकी प्रत्याशा या विचार किया जा सके, वाञ्छनीय।

अपेक्षित (भू० क० कृ०) [अप+ईक्ष्+क्त] जिसकी तलाश की गई हो, जिसकी आशा की गई हो, जिसकी आवश्यकता हो, जिसका विचार किया गया हो, —तम् चाह, इच्छा, लिहाज, उल्लेख।

अपेत (भू० क० कृ०) [अप+इ+क्त] 1. गया हुआ, आहत हुआ, अपेतबुद्धाभिनिवेशमोक्षा—शि० २।१, 2 वियुक्त या विचलित, विरुद्ध (प्रायः के साथ) अर्थादनपेतम् अध्यम्—सिद्धा०, 3. मुक्त, वर्जित (प्रायः के साथ या समास में) मुक्ताश्चपेत —सिद्धा०, उदयहदनपेक्षा तामवद्यादपेत रघु० ७।१०, निर्दोष।

अपेहि (लोट् म० पु० ए० व०) (मयूरव्यसकादि श्रेणी से सबद्ध समासों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) °करण, °द्वितीया, °स्वागतम् आदि जहाँ इस शब्द का अर्थ होता है "के बिना" "निकाल कर" "अन्तर्भावित न करके" उदा० °वाणिजा—इस प्रकार का सम्बोधन जहाँ व्यापारियों को सन्निविष्ट न किया जाय,—इसी प्रकार °द्वितीया आदि।

अपोनप्तृकः [अपसि (वैधकर्मणि) नप्तृ स्वार्थे अण्—तारा०] 1 अधिक वर्षों वाला, या कम वर्षों वाला 2. जो सोलह वरस से कम आयु का न हो, मनु० २।१४८ 3. विष्णु 4. अतिथि 5 बृहस्पति।

अपोह (वि०) [अप+वह्+घञ्] दूर हटाना नष्ट (प्रायः के साथ); कल्पनापोह=कल्पनाया अपोह; दे० अपपूर्वक 'वह्'।

अपोह् [अप+वह्+घञ्] 1. हटाना, दूर करना, विरोधन 2. तर्क शक्ति के प्रयोग द्वारा वस्तुविचारण 3. तर्क देना, युक्ति देना 4. निषेधात्मक तर्कना (विप० ऊह्: अपरतर्कनिराकाय इतो विपरीतस्तर्कः),—स्वयमूहापोहासमर्थः—महावी०, ऊहापोहविधिं करोत्यनयता याथाहिकतेतराम्—मालवि० २।७४, अत ऊहापोह= किसी प्रश्न से संबद्ध पूर्व चर्चा 5 प्रसंगानुकूल वर्ग के अन्दर न आने वाली बातों को विचार-कोटि से निकाल देना, —तद्ज्ञानपोहो वा शब्दार्थः (यहाँ माई-बर 'अपोह' का अर्थ 'अतद्व्यावृत्ति' अर्थात् 'तद्भिन्नव्यावृत्ति' करते हैं)।

अपोहनम् [अप+वह्+ल्युट्] 1 हटाना=अपोह, 2. तर्कशक्ति—अत स्मृतिज्ञानमपोहन च—भग०१५।१५।

अपोहनीय } (वि०) [अप+वह्+अनीयर्, ण्यत् वा]
अपोह्य } दूर हटाने या ले जाने के योग्य, प्रायश्चित (पाप का) करने के योग्य, तर्क द्वारा स्थापित करने के योग्य।

अपौरुष-अपौरुषेय (वि०) [नास्ति पौरुषं यस्मिन् न० ब० न पौरुषेय —न० त०] 1 पुरुषार्थहीन, कायर, भीरु 2 अलौकिक, अनुष्योचित, ईश्वरकृत—अपौरुषेया वेदा अपौरुषेयप्रतिष्ठ सुवर्णबिन्दुरित्याख्याते—मा० ९, जो मनुष्य द्वारा न स्थापित किया गया हो। —अम्, पौरुषम् 1 कायरता 2 ईश्वरीय शक्ति।

अप्तोर्यामः,—अम् [अप्तो शरीरस्य पावकत्वात् याम इव—अलुक् समास] एक यज्ञ का नाम, सामवेद के एक मंत्र का नाम जो उक्त यज्ञ की समाप्ति पर बोला जाता है, ज्योतिष्टोम यज्ञ का अंतिम या सातवाँ भाग।

अप्यय: [अपि+इ+अच्] 1. उपागमन, सम्मिलन 2 (नदियों का) उतरना 3 प्रवेश, नष्ट होना, अन्तर्धान, लय, किसी एक में लीन हो जाना 4 नाश।

अप्रकरणम् [न० त०] जो मुख्य या प्रधान विषय न हो, अप्रासंगिक या असंबद्ध विषय।

अप्रकाश (वि०) [न० ब०] 1 न चमकने वाला, अंधकारपूर्ण, प्रकाशरहित (आलं० भी)—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचल —रघु० १।६८, 2 स्वतः प्रकाशित 3 गुप्त, रहस्य,—अम्,—शे (अव्य०) गुप्तरूप से, अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) [न० त०] 1 जो मुख्य या प्रधान न हो, आनुषंगिक 2 अप्रस्तुत, विषय से असंबद्ध, दे० प्राकृत, प्रस्तुत, अप्रकृतमनुसंधा—इधर-उधरकी (विषय से बाहर की) बातें बनाना, विषयानुकूल बात न करना, —तम् (सा० शा० में) उपमान अर्थात् तुलना का मानक (विप० उपमेय)।

अप्रगल्भ (वि०) [न० ब०] इतनी तेजी से आगे बढ़ने वाला कि दूसरे जिसका अनुसरण न कर सकें।

अप्रगल्भ (वि०) [न० त०] साहसहीन, शर्मीला, विनीत (विप० धृष्ट)—धृष्टः पार्श्वे वसति नियतं दूरतश्चाप्रगल्भः—मेघ० २।२६।

अप्रचुर (वि०) [न० ब०] विस्मित, व्याकुल।

अप्रजस् (वि०) [न० ब०] 1. निस्संतान, संतान रहित 2. अजात 3. जहाँ प्रजा न हो, बिना प्रजा।

अप्रजस् } (वि०) [न० ब०] संतान रहित, जिसके कोई
अप्रजस्क } बच्चा या संतान न हो—अतीताप्रजस्कतां दाक्षायणस्तदवाप्नुयुः—याज्ञ० २।१४४,—स्त्री निस्संतान स्त्री, बांझ स्त्री।

अप्रतिकर्मन् (वि०) [न० ब०] 1. अनुपम कार्य करने वाला, 2. अनिवार्य।

अप्रकृति (स्त्री०) कार (वि०) [न०ब०] कायरता, असहाय।

अप्रतिघ (वि०) [न० ब०] 1. जिसे हटाया न जा सके, अजेय 2. जिसे रोका न जा सके 3. अचूक।

अप्रतिद्वन्द्व (वि०) [न०ब०] 1. युद्ध में जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, अप्रतिरोध्य 2 अनूठा, लाजवाब।

अप्रतिपक्ष (वि०) [न० ब०] 1 अप्रतियोगी, विपक्षशून्य 2 अनुपम।

अप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न० ब०] 1. कार्य का सम्पन्न न होना, अस्वीकृति, 2 उपेक्षा, अवहेलना 3. समझदारी का अभाव 4 विषय का अभाव, अव्यवस्था, विशृंखलता—°विप्लव आदि का० १५९ (अप्रतिपत्तिर्बोद्धव्या स्यादिष्टानिष्टदर्शनश्रुतिभि) °सिद्धाध्यसंशया—का० २४० 5. (अत) स्मृति का अभाव,—उत्तरस्याप्रतिपत्तिरप्रतिमा—शाकुन्त०।

अप्रतिभाग (वि०) [न० ब०] 1. निर्बाध, बेरोकटोक 2. बिना झगड़े के अन्य से प्राप्त, जिसमें किसी दूसरे का भाग न हो (उत्तराधिकार की भाँति)।

अप्रतिमल्ल (वि०) [न० ब०] अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, अनुपम बलशाली।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] 1. विनीत, सलज्ज 2 अप्रत्युत्पन्नमति, मंदबुद्धि।

अप्रतिमल्ल (वि०) [न० ब०] अप्रतिद्वन्द्वी—ल्ल: बेजोड़ योद्धा।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अनुकरणीय, बेजोड़, अप्रतिद्वन्द्वी इसी प्रकार अप्रतिमान।

अप्रतिरथ (वि०) [न०ब०] ऐसा वीर पुरुष जिसके मुकाबले का योद्धा और कोई न हो, बेजोड़, अप्रतिद्वन्द्वी योद्धा—दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं विजेष्यं—श० ४।२०, ७,७।२३।

अप्रतिरव (वि०) [न० ब०) निर्विरोध, निर्विवाद—अर्थजातमविक्षोभ्यं ततस्तोऽप्रतिरवः स्वयं वशयति—मिता०।

अप्रतिरूप (वि०) [न० ब०] 1. अनुपयुक्त, अयोग्य 2. अनुपम रूप वाला 3. अचूक।

अप्रतिवीर्य (वि०) [न० ब०] अतुलशक्तिशाली।
अप्रतिशासन (वि०) [न० ब०] जिसका प्रतिद्वन्द्वी शासक न हो, जहाँ एक ही व्यक्ति का राज्य हो—रघु० ८।२७।
अप्रतिष्ठ (वि०) [न० ब०] 1 अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी 2 अकाश्वर, व्यर्थ 3. बदनाम।
अप्रतिष्ठानम् [न० त०] अस्थिरता, दृढ़ता का अभाव (आलं० भी)—तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथानुमेयम्—शारी०।
अप्रतिहत (वि०) [न० त०] 1 निर्बाध, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य—अस्मद्गृहे °गति—पंच० १, जृम्भतामप्रतिहतप्रसरश्चार्यस्य कोपज्योति—वेणी० १, °शक्ति वेदोद्य शक्तिसम्पन्न 2 अक्षुण्ण, अक्षत, अप्रभावित; —सा बुद्धिरप्रतिहता—मनु० २।४० पंच० ४।२६, इसी प्रकार °चित्त, °मनस् 3. जो निराश न हो। सम० —नेत्र (वि०) स्वस्थ आँखों वाला।
अप्रतीत (वि०) [न० त०] 1. अप्रसन्न, अप्रहृष्ट 2. (सा० शा० में) जो स्पष्ट रूप से न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता हो, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो)। दे० काव्य० ७।
अप्रत्ता [न० त०] कुमारी कन्या, जिसका दान न किया गया हो।
अप्रत्यक्ष (वि०) [न० ब०] 1 अदृश्य, अगोचर 2 अज्ञात अनुपस्थित।
अप्रत्यय (वि०) [न० ब०] 1 आत्मविश्वास रहित, अविश्वासी—(अधि० के साथ) बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्यय चेत—श० १।२ 2 अनभिज्ञ 3 (व्या० में) प्रत्यय रहित,—अ. 1 आशंका, अविश्वास, विश्वास का अभाव—क्षेमप्रत्ययतानाम्—पंच० १।१९१ 2 समझ में न आने वाला 3 जो प्रत्यय न हो—अर्थवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।
अप्रत्यवसितम् (अव्य०) [न० त०] बाएँ से दाहिनी ओर।
अप्रधान (वि०) [न० त०] अधीन, गौण, घटिया—आवा तावत्प्रधानौ—हि० २,—न्यम् (°ता °त्वम्) 1 अधीनता, गौणस्थिति, घटियापन 2 गौण या अमुख्य कार्य ('अप्रधान' शब्द प्राय. नपु० में प्रयुक्त होता है चाहे वह अकेला प्रयुक्त हो या समास में)।
अप्रधृष्य (वि०) [न० त०] जो जीता न जा सके, अजेय—यदाश्रौष भीष्ममत्यन्तशूर हृत पार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम्—महा०, मालवि० ५।१७।
अप्रभु (वि०) [न० त०] 1 शक्तिहीन, अशक्त 2. असमर्थ, अयोग्य, अक्षम (सब० या अधि० के साथ)।
अप्रमत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, खबरदार, सावधान, जागरूक।
अप्रमद (वि०) [न० ब०] आमोद-प्रमोद से विरत, उदास, अप्रसन्न।
अप्रमा [न० त०] भ्रांत ज्ञान (विप० प्रमा)।
अप्रमाण (वि०) [न० ब०] 1 असीमित, अपरिमित 2 अनधिकृत 3 अप्रामाणिक, अविश्वस्त—श० ५।२५—न्य [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अपरिहार्य न समझा जाय 2. असंबद्धता।
अप्रमाद (वि०) [न० ब०] खबरदार, जागरूक—द [न० त०] खबरदारी, अवधान, जागरूकता।
अप्रमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमित, असीमित, सीमारहित, 2 जिसका भलीभाँति निश्चय न किया जा सके, न समझा जा सके, अज्ञेय—अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभु—मनु० १।३ —यम् ब्रह्म।
अप्रयावि: (स्त्री०) [नञ्+प्र+या+अनि] न जाना, प्रगति न करना, (केवल कोसने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रयाणिस्ते शठ भूयात्—सिद्धा० (भगवान् करे, तुम प्रगति न कर सको) दे० अजीवनि,
अप्रयुक्त (वि०) [न० त०] 1 जो इस्तेमाल न किया गया हो, जो काम में न लाया गया हो, अव्यवहृत, 2 गलत तरीके से काम में लाया गया शब्द 3 विरल, असामान्य (मा० शा० में), (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या लिंग में प्रयुक्त चाहे वह कोशकारों से सम्मत ही क्यों न हो —तथा मन्ये दैवनोऽस्य पिशाचो राक्षसोऽथवा काव्य० ७, यहाँ 'दैवन' शब्द "अमरकोश" द्वारा सम्मत होने पर भी कवियों के द्वारा पुंलिंग में प्रयुक्त नहीं किया जाता—अतः यह 'अप्रयुक्त' है)।
अप्रवृत्ति (स्त्री०) [न० त०] 1 कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना 2. आलस्य, क्रियाशून्यता, उत्तेजन या प्रोत्साहन का अभाव।
अप्रसंग: [न० त०] 1 आसक्ति का अभाव 2. संबंध का अभाव 3. अनुपयुक्त समय या अवसर,—अप्रसङ्गाभिधाने च श्रोतुं श्रद्धा न जायते।
अप्रसिद्ध (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, तुच्छ,—कु० ३।१९, 2 असाधारण, असामान्य।
अप्रस्तावित (वि०) [स्त्री०—की०] [न० त०] विषय से संबंध न रखने वाला, असंगत (=अप्रास्ताविक दे०)।
अप्रस्तुत (वि०) [न० त०] 1. जो समय या विषय के उपयुक्त न हो, जो प्रसंगानुकूल न हो, असंगत 2. बेहूदा मूर्खतापूर्ण 3. आकस्मिक, असंबद्ध। सम० —प्रशंसा—एक अलंकार जिसमें विषय से भिन्न अर्थात् अप्रस्तुत का वर्णन करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संकेत हो

जाता है—अप्रस्तुतप्रशंसा सा यत्र सैव प्रस्तुताश्रया—काव्य० १०, इसके ५ भेद हैं—कार्ये निमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुते सति, तत्सम्बन्ध्य यत्रस्तुल्ये तुल्यस्येति च पञ्चधा—अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय—जिसकी सूचना कारण बतलाकर दी जाती है, (ख) जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया जाय। (ग) जब कोई विशेष निदर्शन देकर सामान्य बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य बात का कथन करके विशेष निदर्शन पर दृष्टिपात किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय, उदा० के लिए का० १० और सा० द० ७०६।

अप्रहत (वि०) [न० त०] 1. जिसे चोट न लगी हो 2 परत की भूमि, अनजुती 2 नया या कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1 जो प्रकरण से सम्बन्ध न रखता हो,—अप्राकरणिकस्यार्थस्य प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुत प्रशंसा—काव्य० १०।

अप्राकृत (वि०) [न० त०] 1 जो गंवारू न हो 2. जो मौलिक न हो 3 जो साधारण न हो, असाधारण 4. विशेष।

अप्राग्य (वि०) [न० त०] गौण, अधीन, घटिया।

अप्राप्त (वि०) [न० त०] 1 जो प्राप्त न किया गया हो, अप्राप्तयौवनु या राशि सैव तयोग ईरित—भाषा० 2. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, 3. नियमन अनधिकृत, अननुयायी 4. न आया हुआ, न पहुँचा हुआ। सम० —अवसर, —काल (वि०) बुरे समय का, असामयिक, जो ऋतु के अनुकूल न हो,—काल वचन बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, लभते बुद्धवज्ञानमपमान च पुष्कलम्—पञ्च० १।६३, —यौवन (वि०) अवयस्क नाबालिग, —व्यवहार, —वयस् (वि०) (विधि में) अल्पवयस्क सार्वजनिक कार्यों में अपने उत्तरदायित्व के भरोसे भाग लेने के लिए जिस की आयु न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का) —अप्राप्तव्यवहारो ऽसौ यावत् षोडशवार्षिक —दक्ष०।

अप्राप्ति (स्त्री०) [न० त०] 1. न मिलना,—तत्प्राप्ति-महादु खविलोनालेषपातका—काव्य० ४, 2 जो किसी नियम से सिद्ध या स्थापित न हुआ हो; —विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियम पाक्षिके सति—मीमा० 3 किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित न होना।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री० —की] [न० त०] 1. जो प्रामाणिक न हो, अनुचितयुक्त,—इद वचनमप्रामाणिकम्—2. अविश्वसनीय, जिस पर भरोसा न किया जा सके।

अप्रिय (वि०) [न० त०] 1. नापसंद, अनभिमत, अरुचिकर,—अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, मनु० ४।१३८, 2. निष्ठुर, अशिष्ट, —कृत्, दुष्कृत,—वच् सच्चाई पूर्ण या अनिष्टकर वर्ण,—वादिन्, साहस्य वाली स्त्री नायरीतिविशिष्टप्रियम्—मनु० ५। १५६, । सम० —कर, —कारिन् —करण, (वि०) अनिष्टकर, अरुचिकर —वच (°च°), —वादिन् (वि०) निष्ठुर और कठोर शब्द बोलने वाला, —वच्चार्थम्यप्रियवदा—या० १।७३, वाला वत्स यूहे नास्ति भार्या अप्रियवादिनी—चाण० ४४।

अप्रीतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. नापसंदगी, अरुचि 2. शत्रुता।

अप्रौढ (वि०) [न० त०] 1. जो ढीठ न हो 2. भीरु, सीधा, असाहसी 3. जो वयस्क न हो, —ा 1. अविवाहित कन्या 2 वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया हो, परन्तु अभी तक वयस्क न हुई हो।

अप्लुत (वि०) [न० त०] वह स्वर जो मात्रा की दृष्टि से लंबा न किया गया हो।

अप्सरस् (स्त्री०) (—रसः, रा) [अङ्कुचः सरन्ति अप्सु-गच्छन्ति—अप्+सृ+असुन्] [तु० रामा० अप्सु निर्मथनादेव रसात्तस्माद्वारिजम्, उत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ तस्मादप्सरसोऽभवन्]। आकाश में रहने वाली देवांगनाएँ जो गन्धर्वों की पत्नियाँ समझी जाती हैं, उन्हें अलकीड़ा बड़ी रुचिकर है, वह अपना रूप बदल सकती हैं तथा दिव्य प्रभाव से युक्त हैं, वह प्रायः इन्द्र की नर्तकियाँ हैं और 'स्वर्वेश्या' कहलाती हैं। मनु ने इस प्रकार की परियों के १४ कुलों का वर्णन किया है—दे० का० ११६, यह शब्द बहुधा बहुवचन में (विरला बहुव्यप्सरस) प्रयुक्त होता है, परन्तु एक वचन में प्रयोग तथा 'अप्सरा' रूप कई बार देखने में आता है—निजघ्नविघ्नकारिणी प्रेमका नाम अप्सरा: प्रेषिता—श० १, एकाप्सर आदि०—रघु० ७।५३, । सम० —तीर्थ अप्सराओं के नहाने के लिए पवित्र तालाब, यह सम्भवतः किसी स्थान का नाम है—दे० श० ६, —पति अप्सराओं का स्वामी इन्द्र की उपाधि।

अफल (वि०) [न० ब०] 1 निष्फल, फलरहित, बंजर (श० और आल०) °ता ओषधय', °कार्य आदि 2. अनुर्वरा, निरर्थक, व्यर्थ,—यथा वन्ध्योऽफल, स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला, यथा वन्ध्योऽफल दानं तथा विप्रो ऽनृचोऽफल। मनु० २।१८। पुरुषत्व से हीन, बधिया किया हुआ,—अफलोऽहं कृतस्तेन कोधात्ता च निराकृता —रामा०। सम०—आकाक्षिन्, —क्षेमु (वि०) जो पारिश्रमिक पाने की इच्छा नहीं रखता, स्वार्थरहित, —अफलाकाक्षिभिर्यज्ञः क्रियते यद्वयादिभिः—गीता०।

अज्ञेय (वि०) [न० ब०] जिसका ज्ञान न किया जा सके, ज्ञान रहित —ब्रह्म अज्ञेयम्।

अञ्जड-धाक (वि०) [न० त०] 1 स्वच्छन्द, न बंधा हुआ, बेरोक 2 अर्थहीन, बेमतलब, बेहूदा, विरोधी—उदा० यावज्जीवमहं मौनी ब्रह्मचारी च मे पिता, माता तु मम वन्ध्यासीद्यद्यस्ति पितामह। (विरोधी)-अरङ्गाव कडलपायुकाम्भां द्वारि स्थितो गायति भङ्ग-लानि—अमर० रायमुकुट। सम०—मुख (वि०) दुर्मुख, गाली से युक्त, बदजबान।

अञ्जन्धु-बान्धव (वि०) [न० ब०] मित्रहीन, एकाकी।

अञ्जस (वि०) [न० ब०] 1 दुर्बल, बलहीन, 2 अरक्षित,—आ स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण),—नून हि ते कविवरा विपरीतबोधा ये नित्य-माहुरबला इति कामिनीनाम्, यामिर्विलोलतरतारक-दृष्टिपातैर् धीरादयोऽपि विजितास्त्वबला कथं ताः—भर्तृ० १।११, °अस स्त्री,—असम् निर्बलता, बल की कमी, दे० बलाबलम् भी।

अञ्जाय (वि०) [न० ब०] 1 अनियन्त्रित, बाधारहित, 2. पीड़ा से मुक्त,—य [न० त०] 1 बाधाहीनता 2 निराकरण का अभाव।

अञ्जात (वि०) [न० त०] 1. जो बालक न हो, जवान, 2 छोटा नहीं, पूर्ण (जैसा कि चन्द्रमा)।

अञ्जाह्य (वि०) [न० त०] 1 जो बाहरी न हो, भीतरी 2 (आल०) परिचित, जानकार।

अञ्जिघ्मन: [आप इन्धन यस्य—ब० स०] बड़वाग्नि, (जो समुद्री पानी पर पलती है)—अविन्धन वह्निमसौ विभर्ति रघु० १३।४।

अञ्जुड (वि०) [न० त०] मूर्ख, नासमझ—अपवादमाश्रम-वृद्धानाम् सा० सू०।

अञ्जुद्धि (स्त्री०) [न० त०] 1 समझ की कमी, 2 अज्ञान, मूर्खता। सम०—पूर्व, —पूर्वक (वि०) अनभिप्रेत (—र्वं,-र्वकम्) (क्रि० वि०) अनजानपने में, अज्ञात रूप से।

अञ्जुन्-मुख (वि०) [न० त०] मूर्ख, मूढ, (पु०) जड़, (स्त्री०—अमुखी) अज्ञान, बुद्धि का अभाव।

अञ्जोष (वि०) [न० ब०] अनजान, मूर्ख, मूढ, ष [न० त०] 1 अज्ञान, जड़ता, समझ का अभाव—°घोषहृताश्चान्ये—भर्तृ० ३।२, निसर्गदुर्बोधमबोध-विकलवा कव भूपतीना चरित्र कव जलव —कि०१।६, 2 न जानना, जानकारी न होना। सम०—गम्य (वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय।

अञ्जज (वि०) [अम्भु जायते—अप्+जन्+ड] जल में पैदा हुआ या जल से उत्पन्न,—ज्म् 1 कमल २ एक अरब की संख्या (१०००००००००)। सम०—कर्णिका कमल का छत्ता,—ज,—भव,—भू, —योनि ब्रह्मा के विशेषण,—बान्धव कमलों का मित्र सूर्य,—वाहन: शिव की उपाधि।

अञ्जा [स्त्रियां टाप्] सीपी।

अञ्जिनी [अब्ज+इनि, स्त्रियां ङीप्] 1 कमलों का समूह 2 कमलों से पूर्ण स्थान 3 कमल का पौधा। सम०—पति: सूर्य।

अञ्ज: [अपो ददाति—दा+क] 1. बादल 2 वर्ष (इस अर्थ में नपु० भी) 3 एक पर्वत का नाम। सम० —अर्धम् आधा वर्ष,—वाहन: शिव,—शतम् शताब्दी, —सार: एक प्रकार का कपूर।

अञ्धि: [आप धीयन्ते अत्र—अप्+धा+कि] 1 समुद्र, जलाशय, (आल० भी) दुःख°, कार्य°, ज्ञान° आदि किसी चीज का भंडार या समूह 2 ताम, सीस, 3 (गण० में) सात की संख्या, कई बार चार की संख्या। सम०—अग्नि: बाडवाग्नि,—कक्ष:,—क्षेम: समुद्रतट,—ज 1 चन्द्रमा, 2 शङ्ख, (—जा) 1 वारुणी (समुद्र से उत्पन्न) 2 लक्ष्मीदेवी, —दीपा पृथ्वी,—नगरी कृष्ण की राजधानी द्वारका, —नीलक: चन्द्रमा,—मेखली मोती की सीप, —शयन: विष्णु,—सार: रत्न।

अब्रह्मचर्य (वि०) [न० ब०] जो ब्रह्मचारी न हो, —र्यम् [न० त०] लम्पटता, कामुकता, 2 मैथुन।

अब्रह्मण्य (वि०) [न० त०—ब्रह्मन्+यत्] 1 जो ब्राह्मण के लिए उपयुक्त न हो,—अब्राह्मण्यस्य वर्णस्य ब्रह्मण्य ब्राह्मणो हितम्—हला० 2 ब्राह्मणों के लिए शास्त्रवत् —कर्म अब्राह्मणोचित कार्य, या जो ब्राह्मण के लिये योग्य न हो। नाटकों में प्राय यह शब्द 'दुहाई देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है —अर्थात् 'रक्षा करो' 'सहायता करो' 'एक अत्यन्त भीषण और अधन्य कर्म हो गया है'—अहैत्य मोहनन्दस्य व्याडिनाक्रन्दित पुरा, अब्राह्मण्यमनुत्क्रान्तजीवो मोह-स्थितो द्विज—बृह० क०।

अब्राह्मण (वि०) [न० ब०] ब्राह्मणों से वियुक्त या विरहित—नाब्राह्मणमधीयीत—मनु० ९।३२२।

अभक्ति (स्त्री०) [न० त०] 1 भक्ति या आसक्ति का अभाव 2 अविश्वास, सन्देहशीलता।

अभक्ष्य (वि०) [न० त०] 1 जो खाने योग्य न हो। 2 खाने के लिये निषिद्ध,—क्ष्यम् खाने का निषिद्ध पदार्थ।

अभग (वि०) [न० ब०] अभागा, बदकिस्मत।

अभद्र (वि०) [न० त०] अशुभ, कुत्सित, दुष्ट,—द्रम् 1. दुष्कर्म, पाप, दुष्टता 2 शोक।

अभय (वि०) [न० ब०] निर्भय, सुरक्षित, अयमुक्त, —वैराग्यमेवाभयम्—भर्तृ० ३।३५,—यम् 1. भय का अभाव, भय से दूर रहना, 2 सुरक्षा, बचाव, भय या

डर से रक्षा,—त्रेया तस्याभयं दत्तम्—पंच० १, । सम०—कृत् (वि०) 1. जो भयानक न हो, मृदु, 2. सुरक्षा देने वाला,—क्षितिज 1. सुरक्षा या विश्वस्तपोषता का विकोश, 2. बुद्धभेरी,—द,—दायिन्,—प्रद (वि) सुरक्षा का वचन देने वाला,—दक्षिणा,—दानम्, —प्रदानम् भय से मुक्ति का वचन या सुरक्षा की गारंटी —सर्वप्रदानेष्वभयप्रदान (प्रधानम्)—पंच० १।२९०, —वचनम् सुरक्षा का विश्वास दिलाने वाला लिखित पत्र, तु० आधुनिक 'सुरक्षा आचरण'—याचना रक्षा के लिए प्रार्थना,—वचनम्—वाच् (स्त्री) सुरक्षा का वचन या भय से मुक्त कर देने की प्रतिज्ञा ।

अभयंकर—कृत (वि०) [न० त०] 1 जो भयानक न हो 2. सुरक्षा करने वाला

अभयः [न० त०] 1 अविद्यमानता,—अत एव अभावती महा०, 2 छुटकारा मोक्ष,—प्राप्तुमभयमभिवाञ्छति या—कि० १२।३०, १८।२७. 3 समाप्ति या प्रलय —अभाव सर्वभूतानामभवाय च रक्षसाम्—रामा० ।

अभव्य (वि०) [न० त०] 1. जो न होना हो 2. अनुपयुक्त, अशुभ 3 दुर्भाग्यपूर्ण, अभागा,—उपनतमभवभी-रवन्त्यभव्या —कि० १०।५१ ।

अभाग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका संपत्ति में कोई हिस्सा न हो, 2. अविभक्त ।

अभावः [न० त०] 1. न होना, अनस्तित्व,—गतो भावो-भावम्—मृच्छ० १ (अन्तर्धान हो गया) 2. अनुपस्थिति, कमी, अप्रकटता,—सर्वेषामप्यभावे तु ब्राह्मणा किल-मागिन —मनु० ९।१८८, अधिकतर समास में, —सर्वाभावे हरेरूप —१८९, सब कुछ विफल हो जाने पर 3. सर्वनाश, मृत्यु, विनाश, सत्ताशून्यता,—सामान्य उपलक्षणे —शारी० 4. (दर्शन० में) लोप, असत्ता, अविद्यमानता या निषेध, कणाद के मतानुसार सातवीं पदार्थ या वर्ग, (इसके दो भेद हैं—संसर्गाभाव और अन्योन्याभाव, पहले के फिर तीन उपभेद हैं प्रागभाव प्रध्वंसाभाव, और अत्यंताभाव) ।

अभावना [न०त०] 1 सत्यविवेचन या निर्णय का अभाव 2 धार्मिक ध्यान का अभाव ।

अभाषित (वि०) [न० त०] न कहा हुआ । सम० —पुंसक यह शब्द जो कभी पु० या स्त्री० में प्रयुक्त न होता हो - अर्थात् नित्यस्त्रीलिंग ।

अभि (अव्य०) [अञ्च्+भा+कि] (धातु और शब्दों से पूर्व लगाया जाने वाला उपसर्ग) अर्थ—(क) 'की ओर', 'की दिशा में', अभिगम् की ओर जाना, अभिया, °गमनम्, °यानम् आदि (ख) 'के लिए' 'के विरुद्ध' °क्रम्, °क्रु आदि (ग) 'पर' 'ऊपर' °क्षिप् पर फिंकवाना आदि (घ) 'ऊपर से' 'ऊपर' 'परे' °भू हावी हो जाना, °क्रम् (ङ) 'अधिकता से' 'बहुत' °क्रोध 2. (विशेषण तथा स्वतन्त्र संज्ञा शब्दों से पूर्व लगने वाला उपसर्ग)—अर्थ—(क) तीव्रता और आधान्य, °अर्थः—प्रधान तात्पर्य, °ताप—अत्यंत ताप °मन-विलक्षण मना (ख) 'की ओर' 'की दिशा में', अभ्यर्थनाम तमाम बनाना °क्षेपक, °गमनम्, °वृद्धि आदि 3. (कर्म० के साथ संज्ञा० शब्द० के रूप में) (क) 'की ओर' 'की दिशा में' 'के विरुद्ध' (कर्म के साथ या इसी अर्थ में समास के साथ) अभ्यक्षि या अभिक्षि तमक्षः पतति, वृक्षमभिरोहति विद्वान्—सिद्धा० (ख) 'विषय' 'पहले' 'सामने' 'उपस्थिति में' (ग) पर ऊपर, संकेत करते हुए, के विषय में—साधु देवदत्तो मातरमभि—सिद्धा० (घ) पृथक् पृथक्, एक-एक करके (विभाग द्वारा)—पृथं पृथगभिषिंचति —सिद्धा० ।

अभि० (की) क (वि०) [अभि+कन्] कामी, लंपट, विलासी,—सोऽभिकारमभिकः कुलोचित कारयन्नपक-मर्तमत्तमा —रघु १९।४, अपि सिंचे कृशानौ स्वं सर्वं वाप्यपि यौवनिक—भट्टि० ८।९२ ।

अभिकांक्षा [अभि+कांक्ष्+अङ्+टाप्] कामना, इच्छा, लालसा ।

अभिकांक्षिन् (वि०) [अभि+कांक्ष्+णिनि] कामना रखने वाला, कामना करने वाला ।

अभिकाम (वि०) [अभिपूर्व कामो भाव—अभि+कम्+घञ् ब० स०] स्नेही, प्रेमी, इच्छुक, कामना-युक्त, कामुक (कर्म० में या समास में)—सर्वे स्वाभिल-काभाहम्—महा०,—मः (प्रा० स०) 1. स्नेह, प्रेम 2 कामना, इच्छा ।

अभिक्रमः [अभि+क्रम्+घञ्, अथवा क्रि] 1. आरम्भ, प्रयत्न, व्यवसाय,—नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते—भग० २।४, 2 निश्चित आक्रमण या धावा, अभियान, हमला 3 आरोहण, सवार होना ।

अभिक्रमण-णी: (स्त्री०) [अभि+क्रम्+ल्युट्, स्त्रियां ङीष् वा] उपागमन, आक्रमण करना=दे०ऊ०अभिक्रम ।

अभिक्रोश [अभि+क्रुश्+घञ्] 1 पुकारना, चिल्लाना 2 अपशब्द कहना, निंदा करना ।

अभिक्रोशक [अभि+क्रुश्+ण्वुल] पुकारने वाला, गाली देने वाला, कलंक लगाने वाला ।

अभिक्षा [अभि+क्षा+अङ्+टाप्] 1, चमक-दमक, शोभा कांति,—काप्यभिक्षा तयोरासीद् यमतो वृद्धसेवयोः रघु० १।४६, सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिक्षाम्- मेघ०, ८० कु० १।४१, ७।२८, 2. कहना, घोषणा करना, 3 पुकारना, संबोधित करना 4. नाम, अभिधान 5 शब्द, पदवि 6. प्रसिद्धि, यश, कुलकीर्ति, माहात्म्य ।

अभिक्षायम् [अभि+क्षा+ल्युट्] ख्याति, यश ।

अभिगम:-नम् [अभिगम्+अप्, ल्युट् वा] 1. (क) उपागमन, पास जाना या आना, दर्शनार्थ गमन, पहुँचना,—तवार्हतो नाभिगमेन तृप्तम्—रघु० ५।११, १७।७२, ज्येष्ठाभिगमनात्पूर्वं तेनाप्यनभिनन्दिता—१२।३५, 2 सम्भोग (स्त्री या पुरुष के साथ)—परदाराभिगमनम्—का० १४७, प्रसह्य वास्यभिगमे—या० २।२९१।

अभिगम्य (स० कृ०) [अभिगम्+य] 1 उपागम्य, दर्शनीय अभिवाद्य, कु० ६।५६, 2 प्राप्य, आमन्त्रक,—भीमकान्तैर्नृपगुणै अधृष्यश्चाभिगम्यश्च—रघु० १।१६।

अभिगर्जनम्-] [अभिगर्ज्+ल्युट्, क्त वा] जोरों तथा
अभिगर्जितम्] भीषण दहाड़, चीत्कार।

अभिगामिन् (वि०) [अभि+गम्+णिनि] निकट जाने वाला, सम्भोग करने वाला।

अभिगुप्ति (स्त्री०) [अभि+गुप्+क्तिन्] संरक्षण, बचाव।

अभिगोप्तृ (पु०) [अभि+गुप्+तृच्] बचाने वाला, संरक्षक।

अभिग्रहः [अभि+ग्रह्+अच्] 1 छीन लेना, ठगना, लूटना 2 धावा, हमला 3 ललकार 4 शिकायत 5 अधिकार, प्रभाव।

अभिग्रहणम् [अभि+ग्रह्+ल्युट्] लूटना, छीन लेना।

अभिघर्षणम् [अभि+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना, संघर्षण, 2 बुरी भावना से अधिकार करना।

अभिघातः [अभि+हन्+घञ्] 1 आघात करना, मारना चोट पहुँचाना, प्रहार,—तटाभिघातादिव लम्बपङ्क्ति—कु० ७।४९, 2 विध्वंस, पूर्ण नाश, मर्मोच्छेदन—दुःखयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ—सां० का० १, —तम् कठोर उच्चारण (सन्धि नियमों की उपेक्षा के कारण)।

अभिघातक (वि०) [स्त्री०—तिका] (मारकर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला।

अभिघातिन् (पु०) [अभि+हन्+णिनि] शत्रु।

अभिघार [अभि+घृ+णिच्+घञ्] 1 घी 2 यज्ञ में घी की आहुति,—प्रणीतपूर्वदाज्याभिघारघोरस्तमूनपात्—महावी० ३।

अभिघारणम् [अभि+घृ+णिच्+ल्युट्] घी छिड़कना।

अभिघ्राणम् [अभि+घ्रा+ल्युट्] सिर सूंघना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिचर [अभि+चर्+अच्] अनुचर, सेवक।

अभिचरणम् [अभि+चर+ल्युट्] 1 झाड़ना-फूंकना, जादू टोना, बुरे कामों के लिए मंत्र पढ़ कर जादू करना, इन्द्रजाल 2 मारना।

अभिचार [अभि+चर्+घञ्] 1. (मन्त्रादि द्वारा) झाड़ फूंक करना, मन्त्रमुग्ध करना, जादू के मन्त्रों का बुरे कामों के लिए प्रयोग करना, जादू करना 2 हत्या करना। सम०—स्वर जादू के मंत्रों द्वारा किया गया हुंकार,—अग्नि जादू का गुरु, जादू करने के लिए मंत्र-फूंकना,—शि० ७।५८,—यज्ञ,—होम जादू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होम।

अभिचारक } (वि०) (स्त्रियाम्—रिकी,—रिणी) [अभि
अभिचारिन् } +चर्+ण्वुल्, णिनि वा] अभिचार करने वाला, जादू टोना करने वाला, —कः,—री ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

अभिजन [अभि+जन्+घञ्, अधिवृद्धि] 1 (क) कुटुम्ब, वंश, अन्वय (ख) जन्म, उत्पत्ति, कुल 2 उत्तम कुल में जन्म, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति, स्तुत्य तन्महाराज्ञ यदभिजनतो यच्च गुणतः—मा० २।१३, शील शील-तटात्पात्रमभिजन सदृक्षता वक्ष्यिना—भर्तृ० २, ३९, 3 जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विप० निवास), अत्र पूर्वकथित सोऽभिजन—सिद्धा० 4 ख्याति, प्रतिष्ठा 5 घर का मुखिया या कुलभूषक (श्रेष्ठव्यक्ति), 6 अनुचर, परिजन।

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन+मतुप्] उच्च कुल का, उत्तम वंश में उत्पन्न,—°वतीमर्तृ श्लाघ्ये स्थिता गृहिणी पदे—शा० ४।१८।

अभिजय [अभि+जि+अच्] जीत पूर्ण विजय।

अभिजात (भू० क० कृ०) [अभि+जन्—क्त] 1 (क) उत्पन्न, भग० १६।३।५, (ख) सर्वथा विकसित (ग) योग्य 2 जन्मा हुआ, पैदा हुआ 3 कुलीन उच्चकुल में उत्पन्न, उच्च वंश में जन्म लेने वाला—आत्मसंभावितेनाभिजातेन शूर शोर्यवता कुल रघु० १७।४, शिष्ट, नम्र अभिजात खल्वस्य वचनम् विक्रम० १ 4 योग्य, उचित उपयुक्त 5 मधुर सुरुचिकर, प्रजल्पितं नाभिजातानवाचि—कु० ५।४५ 6 मनोहर, सुन्दर 7 विद्वान्, बुद्धिमान् विवेकशील—सकीर्णं नाभिजातेषु नाम बुद्धेषु संस्कृतम् (वटेर्)।

अभिजाति (स्त्री०) [अभि+जन्+क्तिन्] उत्तम कुल में जन्म।

अभिजिघ्रणम् [अभि+घ्रा+ल्युट् जिघ्रादेशः] नाक से सिर का स्पर्श करना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिजित् (पु) [अभि+जि+क्विप्] 1 विष्णु 2 एक नक्षत्र का नाम।

अभिज्ञ (वि०) [अभि+ज्ञा+क] 1 जानने वाला, जानकार, अनुभवशील, कुशल (सब० या अधि० के साथ अथवा समास में)—वद्धा कौशलमिन्द्रसूनुदमने तत्रभवान्-भिज्ञो जन—उत्तर० ५।३४, अभिज्ञाश्छेदपाताना क्रियन्ते नन्दनद्रुमा—कु० २।४१, मेघ० १६, रघु० ७।६४, अनभिज्ञो भवान्सेवाधर्मस्य १, 2 कुशल, दक्ष, चतुर—ज्ञा 1 पहचान 2 याद, स्मृति चिह्न।

अभिज्ञानम् [अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1. पहचान,—तदभिज्ञानहेतोर्हि वस्तं तेन महारत्नम्—रत्ना० 2. स्मरण, प्रत्यास्मरण 3. (क) पहचान का चिह्न (पुरुष या वस्तु), —अन्य योगिन्यस्मि मालत्यभिज्ञाने च धारयामि —मा० ९, भट्टि० ८।११८, १२४ इसी प्रकार °शाकुन्तल 4. चन्द्रमंडल में काला चिह्न। सम०—आभरणम् पहचान का भूषण, अंगूठी उ० ४।

अभित (अव्य०) [अभि+तसिल्] (कि० वि० के रूप में अथवा कर्म० के साथ संब० अव्य० के रूप में प्रयुक्त) 1. निकट, की ओर, तक ओर से,—अभितस्तं पुरा-मृतुस्नेहेन परितस्तरे—कि० ११।८, 2 (क) निकट बिठाया हुआ, समीप में, -ततो राजासनीद्वारं मुनिमभ-मित स्थितम् -रामा० (ख) के सामने, की उपस्थिति में,—तत्सन्तमिद्धमभितो गुरुमग्निकाल्पम्—कि० २।५९, 3 सम्मुख, मुंह के आगे, सामने कि० ६।१, ५, १४, 4 दोनों ओर,—चूडाबद्धिलकलपत्रमभितस्तू-णीद्वयं पृष्ठत—उत्तर० ४।२०, भट्टि० ९।१३७, 5 पहले और पीछे 6 सब ओर से, चारों ओर से, (कर्म० या सम० के साथ) -परिजनो यथाव्यापार राजानमभित स्थित - मालवि० १।७, 7 पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, सर्वत्र 8 शीघ्र ही।

अभितप्त [अभितप्+क्त] अत्यंत गर्मी-चाहे शरीर की हो या मन की, भावावेश, कष्ट, अधिक दुःख या पीडा —शि० ९।१, कि० ९।४, बलवान्मुनर्मे मनसोऽभितापं -विक्रम० ३।

अभितात्र (वि०) [प्रा० स०] बहुत लाल, लालसुर्ख —रघु० १५।४९।

अभिदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दक्षिण की ओर (=तु० प्रदक्षिणम्)।

अभिद्रव -द्रवणम् [अभिद्रु+अप+ल्युट् वा] आक्रमण, हमला।

अभिद्रोह [अभि+द्रुह्+घञ्] 1 चोट पहुंचाना, षड्यंत्र रचना, हानि करना 2 गाली, निन्दा।

अभिधर्षणम् [अभि+धृष्+ल्युट्] 1 भूत प्रेतादि से आविष्ट होना 2 अत्याचार।

अभिधा [अभि+धा+अङ्+टाप्] 1 नाम, संज्ञा (प्राय समास में)—कुसुम वसनाख्याभिधः—सा० द० २ 2 शब्द, ध्वनि 3 शाब्दिक शक्ति या अर्थात्, संकेतन, शब्द की तीन शक्तियों में से एक, —वाच्यार्थोऽभिधया बोध्य—सा० द० २ (अभिधा—शब्द के संकेतित अर्थ को बतलाती है) स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते—काव्य० २। सम० —अर्थिन् (वि०) अपने नाम को नष्ट करने वाला —मूल (वि०) शब्द के संकेतित या मुख्यार्थ पर आधारित।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] 1. कहना, बोलना, नाम रखना, संकेत करना,—गुणावताकर्मनिमित्तमभिधानम् सिद्ध० 2. प्रकथन, वचन दे० पा० २।३।२ सिद्धा० 3. नाम, संज्ञा, पद,—अभिधानं तु पञ्चात्तस्याहुर-धीषत्—का० ३२, तदाभिधानात् व्यपदेशं गतानन. कि० १। ह्रूयाभिधानात् २४, (अन्तस्थपद के अन्त में) पुकारा गया, नाम लिया गया—ह्रूयाभिधानात् अवनात्—रघु० ३।२०, 4. वाचक, व्याकरण 5. कोष, शब्दावली, लघुत (अंतिम दो अर्थों में पुं० में भी) 1. सम०—कोश,—माला शब्दकोश।

अभिधायक (स्त्री० -यिका, -यिनी) } (वि०) [अभि+धा
अभिधायिन् } +ण्वुल्, णिनि वा] 1 नाम रखने वाला, वाचक,—कर्तृ. क्षुत्याभिधायिनी —अमर०,—संकेत करता है, अर्थ बतलाता है, भाव रखता है, 2. कहने वाला, बोलने वाला, बतलाने-वाला,—छठमीमित्यभिधायिनि प्रियतमे—अमरु० २३, वाच्याभिधायी पुरुष पृष्ठमासाद उच्यते—भिक्षा०।

अभिधावनम् [अभि+धाव्+ल्युट्] आक्रमण, पीछा करना।

अभिधेय (सं० कृ०) [अभि+धा+यत्] 1 नाम दिये जाने योग्य, कथनीय, वाच्य 2. नाम के योग्य (तर्क० में) अभिधेया: पदार्था,—वह 1. तात्पर्यशक्ति, अर्थ, भाव, तात्पर्य —कि० १४।५, 2. भावावेश 3. विषय, —इहाभिधेय सम्प्रयोजनम्—काव्य० १, इति ग्रन्थो-क्तानभिधेयसंबन्धा —मुक्त० 4 मुख्यार्थ (=अभिधा) —अभिधेयाविनाभूतप्रतीतिर्लक्षणोच्यते- काव्य० २।

अभिध्या [अभि+ध्यै+अङ+टाप्] 1. दूसरे की संपत्ति के लिए ललचाना, 2 प्रबल कामना, चाह, सामान्य इच्छा,—अभिध्योपदेशात्—ब्रह्म० 3 बहुत करने की इच्छा।

अभिध्यानम् [अभि+ध्यै+ल्युट्] 1. चाहना, प्रबल इच्छा करना, ललचाना, कामना करना 2. मनन करना, चिंतन।

अभिनन्द [अभि+नन्द्+घञ्] 1. प्रहर्ष, अभ्युल्लसता, प्रसन्नता 2 प्रशंसा, सराहना, अभिनन्दन, बधाई देना, 3 कामना, इच्छा, 4 प्रोत्साहन, कार्य में प्रेरणा।

अभिनन्दनम् [अभि+नन्द्+ल्युट्] 1. प्रहर्षण, अभिवादन, स्वागत करना, 2 प्रशंसा करना, अनुमोदन करना 3. कामना, इच्छा।

अभिनन्दनीय } (सं० कृ०) [अभि+नन्द्+अनीय, यत्
अभिनन्द्य } वा] प्रहृष्ट होना, प्रशंसित होना, सराहा जाना,—कामनेतरभिनन्दनीयम्—शि० ५, रघु० ५।१२।

अभिनत (वि०) [प्रा० स०] झुका हुआ, विनीत,—तत्पा-शिरोभिस्तमकाभिनम्राम् रघु० १३।३२।

अभिनय: [अभि+नी+अच्] 1 नाटक खेलना, अंग विक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन (किसी मनोभाव या आवेश को

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला)—नृत्याभिनयक्रियाच्युतम्—कु० ५।७९, अभिनयान् परिचेतुमिवोद्यता—रघु० १।३३, नर्तकीरभिनयातिलङ्घिनी, १९।१४ 2 नाटकीय प्रदर्शनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन करना,—ललिताभिनय तमश्च भर्ता मरुतां दृष्टधना सलोकपाल—विक्रम० २।१८, सा० द० अभिनय का निरूपण इस प्रकार करता है —भवेदभिनयोऽवस्थानुकार स चतुर्विध आङ्गिको वाचिकश्चैवमाहार्यं सात्विकस्तथा। १७४। अभिनय—किसी दशा का अनुकरण करना है, यह चार प्रकार का है —(१) आंगिक—शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२) वाचिक—शब्दों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहार्य—वेशभूषा, अलंकार, सजावट आदि से व्यक्त होने वाला (४) सात्विक—स्वेद, रोमांच आदि के द्वारा आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनव (वि०) [प्रा० स०] 1 बिल्कुल नया या ताजा (सर्वथा) पद्यपङ्कितदृश्यतेऽभिनवा—मा० ३।८, ५।१, °वा वधू का० २, नवोढा 2 बहुत छोटा, अनुभवहीन। सम०—यौवन—नवयुवक, नौ जवान, बहुत छोटा।

अभिनहनम् [अभि+नह् ल्युट्] आँख पर बाँधने की पट्टी, अंधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युज्+क्त] काम में लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनिर्मुक्त (वि०)[अभि+निर्+मुच्+क्त] 1 सूर्यास्त होने के कारण छूटा हुआ कार्य या छोड़ा हुआ कार्य 2 सूर्यास्त के समय सोया हुआ।

अभिनिर्याणम् [अभि+निर्+या+ल्युट्]। 1. प्रयाण 2 आक्रमण, किसी शत्रु के सामने अभिप्रस्थान।

अभिनिविष्ट [भू० क० कृ०] [अभि+नि+विश्+क्त] 1 घुसा हुआ, लीन, जुटा हुआ 2 दृढ़ता पूर्वक जमा हुआ सावधान, लगा हुआ 3 सम्पन्न, अधिकार युक्त,—गुरुभिरभिनिविष्ट (गर्भ) लोकपालानुभावै —रघु० २।७५, 4 दृढ़निश्चयी, कृतसंकल्प 5 (कदर्थ०) हठी, दुराग्रही।

अभिनिविष्टता [अभिनिविष्ट+तल्+टाप्] दृढ़संकल्पता, दृढ़निश्चय, निंदाक्षेपापमानादेरमर्षोऽभिनिविष्टता—सा० द०—अर्थात् निंदा, बदनामी या अपमान की परवाह न करते हुए अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से आगे बढ़ते जाना।

अभिनिवृत्ति (स्त्री०) [अभि+नि+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्ति।

अभिनिवेश [अभि+नि+विश्+घञ्]1 लगन, आसक्ति एकनिष्ठता, दृढ़ नियोग (अधि० के साथ या समास में), कतमस्मिंस्ते भावाभिनिवेश —विक्रम० ३, यद्यो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेश का० १२०, बलीयान्क्लमेऽभिनिवेश —श०१, असत्यभूते वस्तुन्यभिनिवेशः —मिता० २ 2 उत्कट अभिलाष, दृढ़ प्रत्याशा 3. दृढ़संकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य,—अमरकारमजायां नित्यासत्संज्ञाभिनिवेशमीक्षाम्—रघु० १४।४३, अनुकूल° शतोविणा कु० ५।७, 4 (योगदर्शन में) एक प्रकार का अज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो, सांसारिक विषय-वासनाओं तथा शारीरिक आमोदप्रमोद में व्यस्त रहना साथ ही यह भय भी लगा रहे कि मृत्यु के द्वारा इन सब से वियोग हो जाता है।

अभिनिवेशिन् (वि०) [अभि+नि+विश्+णिनि] 1 आसक्त, संसक्त 2 जमा रहने वाला, अनन्यचित्त, 3 दृढ़ निश्चयी, कृतसंकल्प।

अभिनिष्क्रमणम् [अभि+निस्+क्रम्+ल्युट्] बाहर निकलना।

अभिनिष्ठानः [अभि+नि+स्था+क्त्र्—सस्य षत्वम्] वर्णमाला का अक्षर।

अभिनिष्पतनम् [अभि+निस्+पत्+ल्युट्] टूट पड़ना, निकल पड़ना।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+निस्+पद्+क्तिन्] पूर्ति, समाप्ति, निष्पन्नता, पूर्णता।

अभिनिह्नवः [अभि+नि+ह्नु+अप्] मुकरना, छिपाना।

अभिनीत (भू० क० कृ०) [अभि+नी+क्त] 1 निकट लाया गया, पहुंचाया गया 2 किया गया, नाटक के रूप में खेला गया 3 सुसज्जित, अलंकृत, अत्यन्त श्रेष्ठ 4 उपयुक्त, उचित, योग्य, -अभिनानन्तर वाक्यमित्युवाच युधिष्ठिर —महा० 5 सहनशील, दयालु, सज्जन चित्त 6 क्रुद्ध 7 कृपालु, मित्र सदृश।

अभिनीति (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] 1 इंगित, भावपूर्ण अंग विक्षेप, 2 कृपालुता, मित्रता, सहिष्णुता, —सान्वपूर्वमभिनीतिहेतुकम् कि० १३।३६।

अभिनेतृ (पु०) नाटक का पात्र,—त्री नाटक की पात्री।

अभिनेतव्य } (स० कृ०) [अभि+नी+यत्, तव्यत् वा]
अभिनेय } नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दृश्य तत्राभिनय तद्वोपारोपान् रूपकम् —सा०द० २७३, तस्य (प्रबन्धस्य) एकदेश अभिनेयार्थ कृत —उत्तर० ४, इसका एक अंश रंग मंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिन्न (वि०) [न० त०] 1 न टूटा हुआ, अखण्ड 2. अविकृत 3 अपरिवर्तित, 4 जो अलग न हो, वही, एकरूप (अपा० के साथ), -अनभिमतोभिन्नमभिन्नमीक्षते—प्रबोध०।

अभिपतनम् [अभि+पत्+ल्युट्] 1 उपागमन 2 टूट पड़ना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना 3 कूच करना, रवानगी।

अभिपत्तिः (स्त्री०) [अभि+पद्+क्तिन्] 1. उपागमन, निकट जाना 2 पूर्ति।

अभिद्रुत (भू० क० कृ०) [अभि+द्रु+क्त] 1. सवीप गया हुआ या आया हुआ, उपगत, की ओर दौड़ा हुआ या गया हुआ 2. भागा हुआ, भयोद्विग्न करभार्थी, 3. पराभूत, पराजित, पीड़ित, तिरस्कार किया हुआ, पकड़ा हुआ,—कालाभिपन्न. सौदन्ति सिक्तासेतवो यथा—राजा०, दोष°, कामक°, व्याध्र° आदि 4 भाग्यहीन, संकटग्रस्त, 5. स्वीकृत 6. दौड़ी।

अभिपरिप्लुत (वि०) [अभि+परि+प्लु+क्त] बूडा हुआ, भरा हुआ, बाढ़ग्रस्त, उजड़ा हुआ,—शोक, क्रोध आदि से।

अभिपूरयत् [अभि+पृ+ल्युट्] भरना, काम में लाना।

अभिपूर्वम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः।

अभिप्रणयनम् [अभि+प्र+नी+ल्युट्] वेदमंत्रों के द्वारा संस्कार करना।

अभिप्रणयः [अभि+प्र+नी+अच्] प्रेम, कृपादृष्टि, अनुरंजन।

अभिप्रणीत (भू०क०कृ०) [अभि+प्र+नी+क्त] 1 संस्कार किया हुआ,—अध्वाल लोकन्यितय स राजा यथाध्वरे अग्निरभिप्रणीत -भट्टि० १।४, 2 लाया हुआ।

अभिप्रथनम् [अभि+प्रथ्+ल्युट्] फैलाना, विस्तार करना, ऊपर से डालना।

अभिप्रदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दाहिनी ओर।

अभिप्रपतनम् [अभि+प्र+पत्+ल्युट्] 1 आगे बढ़ना 2 प्रगमन, आचरण 3 बहना, बाहर आना जैसे पसीने का निकलना।

अभिप्राप्तिः = दे० प्राप्ति।

अभिप्राय [अभि+प्र+इ+अच्] 1 लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आशय, कामना, इच्छा,—अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेद वर्तते जगत्—पञ्च० १।१५८, अभिप्रायस्तपसि पद्मोनि—पञ्च २, गम्भीर भाव, भाव कवेरभिप्राय 2. अर्थ, भाव, तात्पर्य, या अर्थ अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षितभाव, तेषामयमभिप्राय·—इस प्रकार का उनका आशय है, तात्पर्य (परिच्छेद का) 3 सम्मति, विश्वास, 4 संबंध, उल्लेख।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि+प्र+इ+क्त] 1 अभिपूर्ण, उद्दिष्ट, लक्षित, आकलित,—अथायमर्थोऽभिप्रेत, निवेदयामिप्रेतम् -पञ्च० १, 2. इष्ट, अभिलषित, —यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् —हि० १ 3. सम्मत, स्वीकृत 4 प्रिय, रुचिकर।

अभिप्रेतवत् [अभि+प्र+इण्+ल्युट्] शिष्टाचार, शिष्टाचार।

अभिप्लव [अभि+प्लु+अच्] 1. अष्ट, बाढ़ा 2. बाढ़, उतरा कर बहना।

अभिप्लुत (भू० क० कृ०) [अभि+प्लु+क्त] पराभूत, व्याकुल (ज्ञा० तथा आलं०)।

अभिबुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] बुद्धीन्द्रिय या ज्ञानेन्द्रिय (विप० कर्मेन्द्रिय), आंख, जिह्वा, कान, नाक और त्वचा।

अभिभवः [अभि+भू+अप्] 1 हार, पराभव, दमन; —स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोभिभवाद्वहन्ति —श० २।७, (अब दूसरी शक्ति के द्वारा आक्रान्त, अवरुद्ध या पराभूत हो)—अभिभव कुत एव संपालन —रघु० ९।४, 2 पराभूत होना,—अशक्याभिभवविच्छायं— का० ३४६, आक्रान्त या प्रभावित होना, (ज्वरादिक से) मूर्छित होना 3 तिरस्कार, अपमान,—तिरभिभवसाद परकथा.—मनु० २।६४, 4. निरादर, मानभंग,—अकम्यद्धोकाभिभवेयमाकृति.—कु० ५।४९, 5 प्रबलता, उद्भव, विस्तार,—अथर्वाभिभवाकुल्य प्रबुध्यन्ति कुलस्त्रिय —मृग० १।४१, कि० २।३७।

अभिभवनम् [अभि+भू+ल्युट्] हारी होना, पराजित करना, जीतना, पराभूत होना।

अभिभावनम् [अभि+भू+णिच्+ल्युट्] विजयी कराना, पराजित करने वाला बनाना।

अभिभाविन्-भावुक (वृ) क (वि०) [अभि+भू+णिनि, उकञ् वा] 1. पराजित करने वाला, हराने वाला, जीतने वाला 2 दूसरों से आगे बढ़ने वाला, परमोत्कृष्ट, श्रेष्ठ होने वाला,—सर्वतेजोऽभिभाविना—रघु० १।१४, कि० ११।६।

अभिभाषणम् [अभि+भाष्+ल्युट्] सम्बोधित करते हुए बोलना, भाषण देना।

अभिभूतिः (स्त्री०) [अभि+भू+क्तिन्] 1 प्रधानता, प्रभुत्व 2 जीतना, हराना, पराभव,—अभिभूतिभयाद-सूनत मुखमुज्झन्ति न मान मानिनः—कि० २।२०, 3. अनादर, अपमान।

अभिमत (भू० क० कृ०) (अभि+मन्+क्त] इष्ट, अभीष्ट, प्रिय, प्यारा, रुचिकर, वाञ्छनीय—तस्मिन् औचितादन्यदभिमततरमिह जगति सकलमूना—३५, ५८, अभिमतफलाश्लेषो बाव पुण्योर बाहु —भट्टि० १।२७, 2 सम्मत, स्वीकृत, माना हुआ,—न किल भवता स्थान देव्या गृहेऽभिमत तत.—उत्तर० ३।१२, प्रसिद्धनाहात्म्याभिमतानामपि कपिलकणभुक्प्रभृतीना —शारी०, सम्मानित, आदृत,—त्व कामना, इच्छा, —त: प्रियव्यक्ति, प्रेमी।

अभिमनस् (वि०) [प्रा० स०] 1. सुना हुआ, इच्छुक, आतुर, उत्कंठित,—भवतोऽभिमनसा: समीहते सफल कर्तुमुपेत्य मानसम्—शि० १६।२, (यहाँ अभि "निश्चय" अर्थ को प्रकट करता है)।

अभिमन्त्रणम् [अभि+मन्त्र्+ल्युट्] 1 विशेष मंत्रों को पढ़कर संस्कारयुक्त करना, या पवित्र करना,—काम० १।२१७, 2. सुहावना, मनोहर 3. संबोधित करना, आमंत्रित करना, परामर्श देना।

अभिमरः [अभि+मृ+अप्] 1 हत्या, नाश, वध करना 2 युद्ध, संघर्ष 3 अपने ही पक्ष द्वारा विश्वासघात, अपने ही पक्ष वालों से भय 4 बंधन, फंदा, बेड़ी या हथकड़ी।

अभिमर्दः [अभि+मृद्+घञ्] 1 मलना, रगड़, 2 कुचलना, लूटखसोट, (शत्रु द्वारा) देश का उच्छेद, उजाड़ना 3 युद्ध, संग्राम 4 मदिरा, शराब।

अभिमर्दन (वि०) [अभि+मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, दमन करने वाला,—नम् कुचलना, दमन करना।

अभिमर्श:-र्शनम् } [अभि+मृश् (ष्)+घञ्, ल्युट् वा]
अभिमर्षः-र्षणम् } 1 स्पर्श, संपर्क 2 अभ्याघात, हिंसा, बलात्कार, संभोग,—कृताभिमर्शामनुमन्यमान —रघु० ५।२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आलिंगन अथवा सतीत्व भ्रष्ट करना या बलात्कार,—परामिमर्शो न तवास्ति कु० ५।४३ (मल्लि० = परधर्षणम्) मनु० ८।३५२, याज्ञ० २।२८४।

अभिमर्शक-र्षक } (वि०) [अभिमृश् (ष्)+ण्वुल्, णिनि
अभिमर्शिन्-र्षिन् } वा] 1 स्पर्श करने वाला, संपर्क में आने वाला, 2 बलात्कार करने वाला,—त्वत्कलत्राभिमर्शी दैरास्पदं धनमित्र —दश० ६३।

अभिमादः [अभि+मद्+घञ्] नशा, मादकता।

अभिमान [अभि+मन्+घञ्] 1 गौरव, स्वाभिमान, सम्माननीय या योग्य भावना,—सदाभिमानैकधना हि मानिनः —शि० १।६७, 2 अहंकार, घमंड, दर्प, अहमन्यता, °वत् घमंडी, गर्वीला 3 सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित करना, अहंकार की क्रिया, व्यक्तित्व, 4 कल्पना, अवधारणा, अटकल, विश्वास, सम्मति 5 स्नेह, प्रेम 6 इच्छा, कामना 7 चोट पहुँचाना, हत्या करना, चोट पहुँचाने का प्रयत्न करना। सम० —शालिन् (वि०) घमंडी—शून्य (वि०) गर्व या घमंड से रहित, विनीत।

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] 1 आत्माभिमानी 2 अहमन्य, घमंडी, गर्वीला, दम्भी 3 सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित मानने वाला।

अभिमुख (वि०) [स्त्री०—खी] 1 जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, की ओर, किसी की ओर मुड़ा हुआ, सामने, —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, 2 पास आने वाला समीप जाने वाला, निकट पहुँचने वाला, —विक्रम० २।९ 3 विचार करते हुए, प्रवृत्त, उद्यत (कुछ करने के लिए)—अस्मदभिमुखे सूर्ये—मुद्रा० २।१९, प्रसादाभिमुखो वेधा प्रत्युवाच दिवौकसः कु० १।१६, ५।६०, उत्तर० ७।४, मा० १०।१३, 4 अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5 मुंह ऊपर को उठाये हुए,—ख—खं (अव्य०) की ओर, दिशा में सामना करते हुए, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट (कर्म० या सम्ब० के साथ अथवा समास में) —आसीताभिमुखः गुरोः—मनु० २।१९३, शिष्यस्तूनेरभिमुखं स विकीर्णेन्धनोऽग्निः—कि० २।५९, वेपथ्वाभिमुखमवलोक्य, —मा० १, कर्णं ददात्यभिमुखं मधि भाषमाणे—मृ० १।३१।

अभियाचनम्—याच्ञा [अभि+याच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च्] मांगना, प्रार्थना, अनुरोध, नम्र निवेदन।

अभियातिः, अभियातिन् – (पु०—नी) शत्रुता की भावना के साथ पहुँचने वाला- शत्रु, दुश्मन, रघु० १२।४३।

अभियातृ—यायिन् (वि०) [अभि+या+तृच्, णिनि वा] निकट आनेवाला, आक्रमण करने वाला।

अभियानम् [अभि+या+ल्युट्] 1 उपागमन 2 चढ़ाई करना, धावा बोलना, आक्रमण करना,—रथाभियानेन —दश० १०, युद्ध के लिए प्रस्थान।

अभियुक्त (भू० क० कृ०) (वि०) [अभि+युज्+क्त] 1 (क) व्यस्त, लगा हुआ, लीन, जुटा हुआ (ख) परिश्रमी, धैर्यवान्, दृढसंकल्प वाला, तुला हुआ, उपचित, सावधान, —इह विश्व पाल्य विधिवदभियुक्तेन नृपतेः —उत्तर० ३।३०, 2 सुविज्ञ, दक्ष,—शास्त्रार्थेष्वभियुक्तानां पुरुषाणां—कुमारिल 3 (अत) विद्वान्, सुप्रतिष्ठित, सुयोग्य न्यायाधीश, पण्डित (पु०—इसी अर्थ में) न हि शक्यन्ते दैवमन्यथाकर्तुमभियुक्तेनापि —का० ६२, 4 आक्रान्त, जिस पर हमला कर दिया गया हो,—अभियुक्त त्वयैव ते गन्धारस्वामी परे—शि० २।१०१, मुद्रा० ३।२५, 5 जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिस पर दोषों का आरोपण किया गया हो, अभ्यारोपित, मृच्छ० ९।९, अभियोजित, प्रतिवादी,—अभियुक्तोऽभियोगस्य यदि कुर्यादपह्नवम्—नारद० 6 नियुक्त।

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (पु०—क्ता) 1 शत्रु, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, वादी, मुद्दई, अभियोजक, मनु० ८।५२, ५८, याज्ञ० २।९५, 3 मिथ्याभियोगी।

अभियोगः [अभि+युज्+घञ्] 1 लगाव, लगन, मेलजोल,—गुरुकार्यात्—तपस्तप्तुमन्वयोगाभियोगवान्—रघु० १।५१, वीर० ११, 2 धन्धा व्यवसाय, पेशा, शिल्प, प्रयास,—सत्त स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः—भर्तृ० २।७३, 3 (क) किसी चीज को सीखने की लगन, —कस्या कलायामभियोगो न ज्यायसो—मालवि० ५, (ख) सीखना, विद्या, —अभियोगश्च शब्दादेरभिधानानाम् अभियोगश्चैनयेषाम्—सदरस्वामी 4 आक्रमण हमला, चढ़ाई (किसी देश पर अचानक धावा), —कुसुमितवनराजिराभियोगात् —कि० १३।१०, १।४९, 5 (विधि में) आरोप, दोषारोपण, पूर्वपक्ष—अभियोगमनिस्तीर्य नैव प्रत्यभियोजयेत्—याज्ञ० २।५।

अभिरोपित (वि०) [अभि+रुह्+णिच्+क्त] मनोवांछित पूर्वक लगा हुआ, तुला हुआ, 2 आश्चर्यजनकारी, हैरानकर 3. दोषारोपण करने वाला (पुं०) बदमी, बुराई।

अभिरूपवत् } [अभि+रूप्+क्यूट्, अच् वा] रूप और
अभिरूपा } से सम्पन्न, पूरा २ बनाव, —प्रशान्तवपुष विश्वासोऽभिरूपायां कि० १।१८।

अभिरति: (स्त्री०) [अभि+रम्+क्तिन्] आनन्द, हर्ष, सन्तोष, आसक्ति, लगन,—न मृगाभिरतिर्न पुरोदरम् (तमवाहरत्) रघु० ९।७, कि० ६।४४।

अभिराम (वि०) [अभि०+रम्+घञ्] 1. आनन्ददायक, हर्षपूर्ण, मधुर, हृदयहर—अनभिरामा: (केका:) रघु० १।६०, २।७२, 2. सुन्दर, सुहावना, मनोहर, मनोरम, —स्वादम्बादोपमतमयुनात्तूमेवाभिरामा—मेघ०५३, राम इत्यभिरामेण वपुषा तस्य चोदित—रघु० १०।६७, —अम् (अव्य०) सुन्दर रीति से दीक्षा-भङ्गाभिराम—मा० १।७।

अभिरुचि: (स्त्री) [अभि+रुच्+क्तिन्] 1 इच्छा, शौक, पसन्दगी रस, हर्ष, आनन्द,—अभवि चाभिरुचि—भट्टि० २।६३, परस्परामिरुचिविधिज्ञो विवाह:—का० २६७, 2. धन की इच्छा, महत्त्वाकांक्षा।

अभिरुचित: [अभि+रुच्+क्त] प्रेमी,- शि० १०।६८।

अभिरुतम् [अभि+रु+क्त] ध्वनि, चिल्लाहट, कोलाहल।

अभिरूप (वि०) [अभि+रूप्+अच्] 1 अनुरूप, समरूप, उपयुक्त—अभिरूपमस्या वयसो बल्कलम्—श० १ पाठ०,2 सुन्दर, हर्षपूर्ण,—उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च (कन्या दद्यात्) मनु० ९।८८, 3 प्रिय, प्यारा, इष्ट, कृपापात्र 4 विद्वान्, बुद्धिमान्, समझदार, —अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—मा० १,—म 1 जनमना, 2 शिव 3 विष्णु 4 कामदेव। सम०—पति 'रूचि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', नाम का एक संस्कार जो परलोक में अच्छा पति पाने की इच्छा से किया जाता है—मृच्छ० १।

अभिरुहणम् [अभि+रुह्+ल्युट्] कूद कर पार करना, छलांग लगाना।

अभिरोचनम् [अभि+रुच्+ल्युट्] इच्छा करना, चाहना।

अभिरोचित (भू० क० कृ०) [अभि+रुच्+क्त] इच्छित चाहा हुआ, उत्कण्ठित,—नम् इच्छा, कामना, संकल्प।

अभिलाप [अभि+लप्+घञ्] 1. कथन, शब्द, भाषण 2 घोषणा, वर्णन, विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक कर्तव्य या किसी उद्देश्य की प्रतिज्ञा की उद्घोषणा।

अभिलाव: [अभि+लू+घञ्] काटना, कटाई, लवन।

अभिलाष: [कई बार 'ष'] [अभि+लष्+घञ्] इच्छा, कामना, उत्कंठा, अनुराग, प्रियतम से मिलने की उत्कंठा, प्रेम (प्राय. अभि० के साथ) अतोऽभिलाषे प्रथम तवाधिये मनो बबन्ध—रघु० ३।४, न खलु सत्यमेव पश्चुपतस्तस्यां तवाभिलाष:—श० २, पंच० ५।६०।

अभिलाषक, —षिन् (वि०)द् } (वि०) [अभि+लष्+
—षुक } ण्वुल्, णिनि, उकञ् वा] कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अभि० के साथ या समास में) चाहने वाला, आकांक्षित, लालची, —यदार्यमस्याभिलाषि से मन:—श० १।२२, यत्समव-धानं तूलमरातिध्वभिलाषुक.—कि० ११।१८, कि० १५।५९।

अभिलिखित (वि०) [अभि+लिख्+क्त] लिखा हुआ, खुदा हुआ—त्व, अभिलेखनम्, 1. लिखाना, खोदना 2 लेख।

अभिलीन (वि०) [अभि+ली+क्त] 1. चिपटा हुआ, सटा हुआ, आसक्त,—रघु० ३।८ 2. आलिंगन किये हुए, चिपटे हुए—मेघ० ३६।

अभिलुलित (वि०)[अभि+लुड्+क्त ह्रस्व च] 1 क्षुब्ध, बाधायुक्त 2 क्रीडा युक्त, अस्थिर।

अभिलूता (ष० ष०) एक प्रकार की मकड़ी।

अभिलेखनम्[अभि+लिख्+ल्युट्] 1. खोदना 2. लिखना।

अभिवन्दनम् [अभि+वन्द्+ल्युट्] सादर नमस्कार, पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ दूसरों के चरण स्पर्श करना, नीचे दे० 'अभिवादन'।

अभिवर्षणम् [अभि+वृष्+ल्युट्] वर्षा होना, बरसना, पानी पड़ना।

अभिवादः—दनम् [अभि+वद्+घञ्, ल्युट् वा] सम्मान नमस्कार, छोटों के द्वारा बड़ों को प्रणाम, शिष्य के द्वारा गुरु को प्रणाम इसमें तीन बातें निहित हैं—(१) प्रत्युत्थान—अपने स्थान से उठना (२) पादोप-संग्रह —पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद—'प्रणाम' शब्द मुँह से कहना—जिसमें अभिवाद्य व्यक्ति की उपाधि तथा अभिवादक का नाम—कहना है।

अभिवादक (वि०) [स्त्री—विका] 1. नमस्कार करने वाला, 2 नम्र, सम्मान पूर्ण, विनीत।

अभिविधि [अभि+वि+धा+कि] 1. पूरा सम्मिलन या संयोग, 'आ' का एक अर्थ—आङ मर्यादाभिविध्यो —पा० २।१।१३ सीमा (अन्तिम सीमा' का वि तेषी), इसका अनुवाद 'से' के साथ 'मिलाते हुए' शब्दों से किया जाता है उदा०—आवाक्षम्= आबालेभ्य हरिभक्ति, 2 पूर्ण प्रकार।

अभिविश्रुत (वि०) [अभि+वि+श्रु+क्त] सुविख्यात, सुप्रसिद्ध।

अभिवृद्धि: (स्त्री०) [अभि+वृध्+क्तिन्] बढ़ना, विकास, योग, सफलता, सम्पन्नता।

अभिव्यक्त: (भू० क० कृ०) [अभि०+वि+अंज्+क्त] 1 प्रकट किया हुआ,प्रकाशित, उद्घोषित 2. विवेचित, स्पष्ट, साफ।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+अञ्ज्+क्तिन्](कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, दिखावा, प्रदर्शन,—सर्वात्मसौष्ठवाभिव्यक्तये—मालवि० १, धृतिसिद्धयधनार्थी भावाभिव्यक्तिरिष्यते—सा० द० ६।

अभिव्यञ्जनम् [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, प्रकाशन करना, ।

अभिव्यापक,—व्यापिन् (वि०) [अभि+वि०+आप्+ण्वुल्, णिनि वा] सम्मिलित करने वाला, समझने वाला, प्रसार करने वाला ।

अभिव्याप्ति (स्त्री०)[अभि+वि+आप्+क्तिन्] सम्मिलित करना, सदोष, सर्वत्र फैलाव ।

अभिव्याहरणम्,—व्याहार [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1 बोलना, उच्चारण करना, कहना 2 प्राञ्जल तथा सार्थक शब्द, संज्ञा, नाम ।

अभिशंसक,—शंसिन् (वि०) [अभि+शंस्+ण्वुल्, णिनि वा] दोषारोपक, कलंक लगाने वाला, अपमान करने वाला ।

अभिशंसनम् [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, दोष लगाना (चाहे सत्य हो या मिथ्या) मिथ्या°—याज्ञ० २८९, गाली, अपमान, निरादर,—पंचाशद् ब्राह्मणो दण्ड्य क्षत्रियस्याभिशंसने—मनु० ८।२६८।

अभिशङ्का [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] संदेह, आशंका, भय, चिन्ता ।

अभिशापनम्,—शाप [अभि+शप्+ल्युट्, घञ् वा] 1 शाप, किसी का बुरा मनाना 2 गंभीर आरोप, दोषारोपण—याज्ञ० २।९९, अभिशाप: पातकाभियोग—मि० 3 लांछन, मिथ्या आरोप । सम०—उद्भव शाप के उच्चारण से उत्पन्न होने वाला बुखार ।

अभिशाब्दित (वि०) [अभि+शब्द्+क्त] उद्घोषित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ ।

अभिशास्त (भू० क० कृ०)[अभि+शंस्+क्त]1 कलंकित, अभिशप्त, अपमानित—मनु० ८।११६, ३७२, याज्ञ० १।१६१, 2 चोट पहुंचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, आक्रान्त ('अभिशंस्' से बना समझा गया),—देवि । केनाभिशस्तासि कृते वासि विमानिता—रामा० 3 अभिशप्त 4 दुष्ट, पापी ।

अभिशस्तक (वि०)[अभिशस्त+कन्] मिथ्या दोषारोपित, बदनाम ।

अभिशस्ति (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] 1 अभिशाप, 2 दुर्भाग्य, अनिष्ट, संकट 3 निंदा, लांछन, बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना ।

अभिशापनम् [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, कोसना ।

अभिशीत (वि०) [अभि+शी+क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि वायु ।

अभिशोचनम् [अभि+शुच्+ल्युट्] अत्यंत शोक या पीडा, कष्ट ।

अभिश्रवणम् [अभि+श्रु+ल्युट्]श्राद्ध के अवसर पर बैठे हुए ब्राह्मणों द्वारा वेदमंत्रों का पाठ ।

अभिषङ्गः-सङ्गः [अभि+षञ्ज्+घञ्] 1. पूरा संपर्क या मेल, आसक्ति, संयोग 2 हार, वैराग्य, पराजय,—जातामिषङ्गो नृपतिं—रघु० २।३०, 3 अचानक आया हुआ आघात, क्षोभ, दुःख, संकट या दुर्भाग्य—ततोऽभिषङ्गानिलविप्रविद्धा—रघु० १४।५४, ७७, °अह विजृम्भिवान्—रघु० ८।७५, 4 भूत प्रेतादिक से आविष्ट होना,—अभिघातात्प्रियङ्गाभ्यामभिषाराभिषापत—माघ० 5 शपथ 6 आलिंगन, संभोग 7 अभिशाप, कोसना, दुर्वचन कहना 8 मिथ्या दोषारोपण, बदनामी या लांछन 9. घृणा, अनादर ।

अभिषङ्गनम् =तु० अभिषंग ।

अभिषवः [अभि+षु+अप्] 1 सोमरस निचोडना, 2 शराब खींचना 3 धार्मिक कृत्यों या संस्कारों से पूर्व किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4 स्नान या आचमन 5 यज्ञ,—वस्त्र काजी ।

अभिषवणम् [अभि+षु+ल्युट्] स्नान ।

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिच्+क्त] 1 छिडका हुआ, आर्द्र किया हुआ,—सद्भि पुनर्भूतरामृतताभिषिक्तम्—वीर० २९, 2 जिसका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदारूढ ।

अभिषेक [अभि+सिच्+घञ्] 1 छिडकना, पानी के छींटे देना 2 राज्यतिलक करना, राजा या मूर्ति आदि का जलसिंचन द्वारा प्रतिष्ठापन, 3 (विशेषतः) राजाओं का सिंहासनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदारोहण, राज्यतिलक संस्कार,—अथाभिषेक रघुवंशकर्तुः—रघु० १४।७, 4 प्रतिष्ठापन के अवसर पर काम आने वाला पवित्र जल,—रघु० १७।१४, 5 स्नान, आचमन, पवित्र या धर्मस्नान,—अभिषेकोत्तरोर्वीव काश्यपाय—श० ४, अथाभिषेकाय नयोपनीतवान्—रघु० १३।५१ 6 उस देवता पर जल छिडकना जिसकी पूजा की जा रही है । सम०—अह: राज्यतिलक का दिवस,—आला राज्याभिषेक का मंडप ।

अभिषेचनम् [अभि+सिच्+ल्युट्] 1 जल छिडकना 2. राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन ।

अभिषेणनम् [सेनया सह शत्रो अभिगमनम्—इति—अभि+सेना+णिच्+ल्युट्] शत्रु पर चढाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना ।

अभिषेणयति (ना० धा०) (सेना के साथ) कूच करना, आक्रमण करना, सेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,—क सिंधुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, शि० ६।६४ ।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति।
अभिष्यं (स्यं)द [अभि+स्यन्द्+घञ्] 1. आय, बहाव, टपकना 2 आय आना 3. अतिवृद्धि, आधिक्य, अतिरिक्त आय,—स्वर्णाभिष्यन्दचलनं कृत्वेदोपनिवेशितम् (औषधिप्रस्थम्) कु० ६।३७, अतिरिक्त अपक्वता को दूर करके, अर्थात् उत्प्रवासन द्वारा—तु०—रघु० १५।२९।
अभिष्वङ्गः [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] 1 संपर्क 2, अत्यधिक आसक्ति, प्रेम, स्नेह,—विद्यास्वभिष्वंग —दश० १५५, बहो अभिष्वङ्ग —मा० १।
अभिसंधयः [अभि+सम्+धि+अच्] शरण, आश्रय।
अभिसंधानः [अभि+सम्+धा+ल्युट्] गहरी प्रशंसा।
अभिसंघातः [अभि+सम्+हन्+घञ्] युद्ध, संग्राम, संघर्ष —अन्य स्यादभिसंघातः –हला०।
अभिसंधेहः [अभि+सम्+धिह्+घञ्] 1. विनिमय, 2 अनर्नेत्रिय।
अभिसन्धः–धकः [अभि+सम्+धा+क, स्वार्थे कन् च] 1. धोखा देने वाला, वंचक, 2 निन्दक, कलंकन लगाने वाला।
अभिसन्धा [अभि+सम्+धा+अङ्+टाप्] 1 भाषण, उद्घोषणा, शब्द, कथन, प्रतिज्ञा,—तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता – रामा०, वचन का पालन करने वाला, 2 धोखा।
अभिसन्धानम् [अभि+सम्+धा+ल्युट्] 1 भाषण, शब्द, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्याभिसन्धाना–रामा०, 2 ठगना, धोखा देना – परामिसन्धानपर एवास्यस्य विशेषितम्—रघु० १७।७६ 3. उद्देश्य, इरादा, प्रयोजन—अस्माभिरुत्सवानेतान्यथाविधिसन्धकर्तृत्व च—मिता० 4 सन्धि करना।
अभिसन्धायः = अभिसंधि .
अभिसंधिः [अभि+सम्+धा+कि] 1 भाषण, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2 इरादा, लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य 3 निहितार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अथमभिसंधि (व्याख्यात्मक सूचियों में बहुधा प्रयुक्त) 4. सम्मति, विश्वास 5 विशेष अनुबंध, अनुबंध की शर्त, प्रतिबंध, करार।
अभिसन्धायः [अभि+सम्+अय+इ+अच्] एकता।
अभिसन्धृतिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना।
अभिसम्परायः [अभि+सम्+परा+इ+अच्] भविष्यत् काल।
अभिसम्पातः [अभि+सम्+पत्+घञ्] 1 इकट्ठे मिलना, समागम, संगम 2 युद्ध, संग्राम, संघर्ष, 3 अभिशाप।
अभिसम्बन्धः [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] संबंध, रिश्ता, लगाव, संपर्क, मेलजोल—मनु० ५।६३।
अभिसम्मुख (वि०) [ष० त०] सामने होने वाला, सामने खड़ा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला।
अभिसरः [अभि+सृ+अच्] 1 अनुचरी,अनुचर,2. दासी।
अभिसरणम् [अभि+सृ+ल्युट्] 1. उपागमन, मुकाबला करने के लिए जाना, 2. सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—स्वदभिसरणश्रवणेन चलन्ती पतति पदानि किमिति चलन्ती—गीत० ६।
अभिसर्गः [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना।
अभिसर्जनम् [अभि+सृज्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. हत्या।
अभिसर्पणम् [अभि+सृप्+ल्युट्] उपागमन, मुकाबला करने के लिए शत्रु के निकट जाना।
अभिसा (सी)ख्य,—ख्यम् [अभि+साख्य+घञ्, ल्युट् वा] मित्रता, सगाई, दोस्ती, साहस, तत्परता।
अभिसायम् (अव्य०) [अव्य०स०] सूर्यास्त के समय, संध्या-समय—विलोचनाग्रेरभिसायमुज्ज्वलैः—शि० १।१६।
अभिसारः [अभि+सृ+घञ्] प्रिय से मिलने के लिए जाना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिरकरना, —रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम्-गीत० ५. २ वह स्थान जहां नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, संकेतस्थल,—स्थिरसौदामिनी न कथमभिसारम्-गीत० ६, 3 इकट्ठा, जमाव, स्त्रीऽभिसारः पुरस्य सः —रामा०। सम०—स्थानम् मिलने के लिए उपयुक्त स्थान, दे० 'अभिसारिका' के नीचे।
अभिसारिका [अभि+सृ+ण्वुल्+टाप्] वह स्त्री जो अपने प्रिय से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।४३, रघु० १६।१२, —कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साभिसारिका—अमर० सा० द० निम्नांकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) खेत (२) बाग (३) जन्म मंदिर (४) कुटी का घर (५) जंगल (६) तीर्थ स्थान (७) श्मशानभूमि (८) नदीतट, खेत बाटी अग्नदेवालयो द्यूतीयहं वनम्, मालय च श्मशानं च नद्यादीनां तटी तथा।
अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला, जल्दी से बाहर जाने वाला—बुद्धाभिसारिभिः—उत्तर० ५,—नी =दे० ऊपर अभिसारिका।
अभिस्नेहः [अभि+स्निह्+घञ्] आसक्ति, अनुराग, प्रेम, इच्छा, च सर्वत्रानभिस्नेहः—मनु० २।५७।
अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] पूर्ण रूप से खिला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल)।

अभिहत (वि०) [अभि+हन्+क्त] प्रहृत (आल० से भी) पीटा गया, आहत, घायल किया गया—धारा-भिरावप हवाभिहत सरोज —मालवि० ५, अमरु० २, 2 जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत, शोक°, काम°, दुख° 3 बाधामय 4 (गण०) गुणित ।

अभिहतिः (स्त्री०)[अभि+हन्+क्तिन्] 1 प्रहार करना, पीटना, चोट पहुँचाना 2. (गण०) गुणन, गुणा ।

अभिहरणम् [अभि+हृ+ल्युट्] 1 निकट लाना, जाकर लाना—रघु० ११।४३, 2 लूटना ।

अभिहवः [अभि+हू+अप्] 1 आवाहन, आमन्त्रण 2 पूर्ण रूप से यज्ञानुष्ठान 3 यज्ञ, बलिदान ।

अभिहारः [अभि+हृ+घञ्] 1 ले जाना, लूट लेना, चुरा लेना 2 हमला, आक्रमण 3 शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, शस्त्र ग्रहण करना ।

अभिहासः [अभि+हस्+घञ्] दिल्लगी, मजाक, विनोद ।

अभिहित (भू० क० कृ०) [अभि+धा+क्त] 1 कहा गया, बोला गया, घोषित किया गया, 2 सम्बोधित किया गया, पुकारा गया । सम०—अन्वयवाद, —वादिन् (पु०) नैयायिकों का एक विशेष प्रकार का सिद्धान्त (या उस सिद्धान्त के अनुयायी) । इस सिद्धान्त के अनुसार नैयायिकलोग मानते हैं कि शब्द स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ रखते हैं, जो बाद में वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक संयुक्त विचार को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह वाक्य के शब्दों का तर्कसंगत सबंध ही है जो वाक्य के अभीष्ट अर्थ को प्रकट करता है न कि शब्दों का केवल अपना भाव । अतः वे 'तात्पर्यार्थ' में विश्वास रखते हैं जो कि वाच्यार्थ से भिन्न है—काव्य २ ।

अभिहोत्रम् [प्रा० स०] घी की आहुति देना ।

अभी (वि०) [न० ब०] निर्भय, निडर, रघु० ९।६३, १५।८।

अभीक (वि०) [अभि+कन् दीर्घः] 1 प्रबल इच्छा रखने वाला, आतुर 2 कामुक विषयासक्त, विलासी—मेदुरिन सरभसोपगतानभीकान्—शि० ५।६४, 3 निर्भय, निडर ।

अभीक्ष्ण (वि०)[अभि+क्षणु+ड, दीर्घः] 1 दुहराया हुआ, बार २ होने वाला 2 सतत, निरन्तर 3 अत्यधिक, —क्ष्णम् (अव्य०) 1 बारबार पुनः पुनः 2 लगातार 3 अत्यन्त, बहुत अधिक ।

अभीघात = नु० अभिघात ।

अभीप्सित (वि०) [अभि+आप्+सन्+क्त] चाहा हुआ अभीष्ट,—तम् कामना, इच्छा ।

अभीप्सिन् } (वि०) [अभि+आप्+सन्+णिनि, उ वा]
अभीप्सु } इच्छुक, प्राप्त करने की इच्छा वाला ।

अभीरुः [अभिमुखो कृत्य ईरयति गा, अभि+ईर्+अच्] 1 अहीर, ग्वाल, गडरिया 2. ग्वाला, (दे० आभीर) । सम०—पल्ली ग्वालों का गाँव ।

अभीलाषः [अभि+लष्+घञ्] कोमलता, दे० अभिलाष ।

अभीषुः—स्त्री० [अभि+अश्+उन् पृषो० अत इत्वम्—अभि+इष्+कु वा] 1 बागडोर, लगाम—तैल हि सुष्यन्तामभीषव —श० १, 2 प्रकाशकिरण—प्रफुल्लनापि-च्छनिभैरभीषुभि —शि० १।२२, °मत् अत्युज्ज्वल, अत्युत्तम 3. इच्छा 4 आसक्ति ।

अभीषङ्ग=नु० अभिषंग ।

अभीष्ट (भू० क० कृ०) [अभि+इष्+क्त] 1 चाहा हुआ, इच्छित 2 प्रिय, कृपापात्र, प्रियतम—ष्टः प्रियतम, ष्टा गृहस्वामिनी, प्रेमिका—ष्टम् 1 अभीष्ट पदार्थ 2 वांछित पदार्थ —अन्यस्मै हृदयं देहि नान-भीष्टे घटामहे —भट्टि० २०।२४ ।

अभुग्न (वि०) [न० त०] 1 जो झुका हुआ या टेढ़ा मेढ़ा न हो, सीधा 2 स्वस्थ, रोगमुक्त ।

अभुज (वि०) [न० ब०] बाहुरहित, लूला ।

अभुजिष्या [न० त०] जो दासी या सेविका न हो, स्वतन्त्र स्त्री ।

अभूः [न० त०] विष्णु, जो पैदा न हुआ हो ।

अभूत (वि०) [न० त०] सत्ताहीन, जो हुआ न हो, अविद्यमान, अवास्तविक, मिथ्या । सम० आहरणम् असत्य कथन, कपटपूर्ण या व्यंगमय बात कहना, —तद्भाव, जो पहले विद्यमान न हो उसका होना या बनना, या बदलना —अभूततद्भावे क्वि: कृभ्वस्तियोगे दुक् च करोतिं कृणीकरोति —सिद्धा० नु० यथा-धरीभूतवपुः समुद्रम्—रघु० २।३, —पूर्व (वि०) जो पहले न हुआ हो, जिससे आगे कोई न बढ़ा हो—अभूतपूर्वो राजा चिंतामणिर्नाम, मालव० १, वेणी० ३।२,—प्रादुर्भाव जो पहले न हुआ हो उसका प्रकट होना, —बन्धु (वि०) बन्धुहीन, जिसका कोई बन्धु न हो ।

अभूति (स्त्री०) [न०त०] 1 सत्ता हीनता, अविद्यमानता 2 निर्धनता ।

अभूमिः (स्त्री०) [न० त०] 1 भूमि का न होना, भूमि को छोड़कर अन्य कोई पदार्थ, 2 अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ, अनुचित स्थान, —अभूमिरियमविनयस्य श० ७, स खलु मनोरथानामप्यभूमिर्विस्मयनामक्षर-संस्कार —त० मेरी आशाओं से बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ—शि० १।४२ ।

अभृत, अभृतिम (वि०) [न० त०] 1 जिसका भाड़ा न दिया गया हो 2 जिसको समर्थन प्राप्त न हो ।

अभेद (वि०) [न० ब०] 1 अविभक्त 2 समरूप, वही —द: [न० त०] 1 भिन्नता का अभाव, समरूपता या समानता का होना,—तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमे-

अवो:—काव्य० १०, 2. घनिष्ट एकता—कृच्छ्रां सह बन्धुभिरभेदम्—कि० ५।१३, हि० ३।७९, आत्मान्तरे विग्रहयोरभेदम्—भट्टि० १।२४।

अभेद्य, अभेदिक } (वि०) [न० त०] 1. जो बेधा न जा सके 2. अविभाज्य,—ज्ञान हीरा।

अभोज्य (वि०) [न० त०] 1. खाने के अयोग्य, भोजन के लिए निषिद्ध, अपवित्र—°काम (वि०) जिसका भोजन दूसरों के लिये खाने के अनुपयुक्त हो।

अभ्यन्त (वि०) [ब० स०] 1. निकट, समीप 2. खाया, गया—इदं लोभितमभ्यन्तं संग्रहारेऽभुक्तम् तवो:—महा०,—त्व सामीप्य, सान्निध्य।

अभ्यङ्कु (वि०) [प्रा० स०] हाथ ही का चिह्नित।

अभ्यङ्गः [अभि+अञ्ज्+घञ्] 1 किसी तेल या चिकने पदार्थ को शरीर पर मलना, तेल की मालिश—अभ्यङ्गमेघ्यमलञ्चकार—कु० ७।७, 2 मालिश, लेप, 3. उबटन।

अभ्यञ्जनम् [अभि+अञ्ज्+ल्युट्] 1. चिकने पदार्थों को शरीर पर मलना, 2. मालिश करना 3 आँखों में काजल डालना 4. चिकना पदार्थ, तेल, उबटन।

अभ्यधिक (वि०) [प्रा० स०] 1. अपेक्षाकृत अधिक 2 बड़ा बड़ा कर, गुण या परिमाण में अपेक्षाकृत अधिक, अधिक ऊँचा, अधिक बड़ा—अवतस्तमोऽभ्यधिकं कुलोऽभ्य —शि० ११।४३, (कई बार अपा० और करण० के साथ)—वाक्यं दशभ्य कुम्भेभ्यो हुतोऽभ्यधिक यज्ञ—मनु० ८।३२०, 3. सामान्य से अधिक, असाधारण, प्रमुख—यज्ञ पशुभ्योऽधिक -शि० ६।२।

अभ्यनुज्ञा—ज्ञानम् [अभि+अनु+ज्ञा+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1 स्वीकृति, 2 सहमति, अनुमति—कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा -कु० ५।७, रघु० २।६१ 2. आज्ञा, आदेश 3. छुट्टी स्वीकार करना, बर्खास्त करना 4 तर्क को स्वीकार करना।

अभ्यन्तर (वि०) [प्रा० स०] 1 भीतरी भाग, आन्तरिक, अन्दरूनी (विप० बाह्य) रघु० १७।४५, का० ६६, याज्ञ० ३।२९३, 2 अन्तर्वर्त होना, किसी समूह का शरीर का एक अंग—देवी परिचनाभ्यन्तरः मालवि० ५, 3 दीक्षित, परिचित, कुशल (अधि० के साथ या समास में)—संस्कृतेऽभ्यन्तरे स्व—मालवि० ५, बहो प्रयोगाभ्यन्तर. प्राश्निकः—मालवि० २, 4. निकटतम, घनिष्ट, आत्मन सदृश—स्वतन्त्रताभ्यन्तरा सेन—पंच० १।२५९,—रघु 1. भीतर का, भीतरी, अन्दर का, (किसी वस्तु का) अन्दरूनी भाग, भीतरी स्थान अमीमिथाभ्यन्तरलीलयावधूम्—रघु० ३।९, पंच० ५।२७, 2. सम्मिलित किया हुआ स्थान, समय या स्थान का अवकाश—अभ्यासाभ्यन्तरे - पंच० ४, 3. मन। समा०—करण (वि०) अन्दर ही अन्दर घुस जाने वाला, प्रत्यक्षमान की अग्नि को अन्दर रखने वाला, चिकित्सा ४,—कला गुप्त कला, ऐसी कला या हावभाव प्रदर्शित करने की कला।

अभ्यन्तरकः [अभ्यन्तर+कन्] घनिष्ट मित्र।

अभ्यन्तरीकृ [अभ्यन्तर+च्वि+कृ] (तना० उभ०) 1. दीक्षित करना, परिचित करना—आत्मन्याहुरभ्यन्तरीकृता इव—शाक० 2. परिचय कराना—सर्वविद्यासु अभ्यन्तरीकरणीया—का० १०१, दश० १५९, १६२, 3. किसी को निकटमित्र बनाना—आत्मानमभ्यन्तरीकृता—पंच० १।२५९।

अभ्यन्तरीकरणम् [अभ्यन्तर+च्वि+कृ+ल्युट्] दीक्षित करना, परिचय कराना—सर्वोपनिषदीयासु च श्रुतकलास्वभ्यन्तरीकरणम्—दश० ३९।

अभ्यन्तरम् [अभि+अन्+ल्युट्] 1. प्रहार, क्षति 2. रोग।

अभ्यन्वित-अभ्यान्त (भू० क० कृ०) [अभि+अन्+क्त] 1. रोगी, बीमार 2. चोट खाया हुआ, घायल।

अभ्यभियानम् [अव्य० स०] शत्रु के ऊपर आक्रमण (वि० वि०) शत्रु की ओर या शत्रु के विरुद्ध चढ़ाई करना।

अभ्यभियोक्ता:—क्ता } [अभि+अभि+युज्, ज, घञ् वा] वह योद्धा जो वीरतापूर्वक शत्रु का
अभ्यभियुक्त: } सामना करता है—उद्योगमभ्यभियोक्तारो दर्पेष्टं त्व च मंतन् —भट्टि० ५।४७, नारीणां प्रणयस्त्रासाभ्यभियोक्तारं मवाधि ते—४६।

अभ्यवः [अभि+इ+अच्] 1. आना, पहुचना 2. (सूर्य का) अस्त होना।

अभ्यर्चनम्-अभ्यर्चा [अभि+अर्च्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] पूजा, सत्कार, समादर।

अभ्यर्ण (वि०) [अभि+अर्द्+क्त] निकट, समीप, स्थान के निकट या समीप होने वाला, समीप आने वाला—अभ्यर्णमाधवकृतमभ्युद्यिष्णु:—रघु० २।३२,—र्णम् सामीप्य, सान्निध्य अभ्यर्णकारिणि वनाभ्यर्णे क्रियुद्यान्यति गीत० ७, अभ्यर्णं परिरभ्य निर्भरभर. प्रेमान्धया राधया —गीत० १, शि० ३।२१।

अभ्यर्थनम्-ना [अभि+अर्थ्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, दरख्वास्त, सालिश °नाभङ्गभयेन—कु० १।५२।

अभ्यर्थिन् (वि०) [अभि—अर्थ्+णिनि] याचना या प्रार्थना करने वाला।

अभ्यर्हणा [अभि+अर्ह्+युच्, स्त्रियां टाप्] 1 पूजा, 2 आदर, सम्मान, समादर।

अभ्यर्हित (वि०) [अभि+अर्ह्+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, अत्यादरणीय 2 योग्य, सुहावना, उपयुक्त, —अभ्यर्हिता बन्धुषु तुल्यरूपा वृत्तिर्विशेषेण तपोधनानाम्—कि० ३।१२।

अभ्यवकर्षणम् [अभि+अव+कृष्+ल्युट्] निकालना, खींचकर बाहर करना।

अभ्यवकाश: [अभि+अव+काश्+घञ्] खुली जगह।

अभ्यवस्कन्द:—दनम् [अभि+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. डट कर शत्रु का मुकाबला करना, शत्रु पर चढ़ाई करना 2 शत्रु को निश्शस्त्र करने के लिए प्रहार करना 3 आघात।

अभ्यवहरणम् [अभि+अव+हृ+ल्युट्] 1 नीचे फेंक देना 2 भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना (कण्ठादधोनयनम्—मिता०)।

अभ्यवहार: [अभि+अव+हृ+घञ्] 1 भोजन ग्रहण करना, आहार लेना, खाना पीना आदि 2 आहार —जम्भशब्दोऽभ्यवहारार्थवाची—काशी०, °सवादापेक्षी —मालवि० ४।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि+अव+हृ+ण्यत्] खाने के योग्य, भोज्य,—र्यम् आहार, —सर्वत्रौदरिकस्य अभ्यवहार्यमेव विषय —विक्रम० ३।

अभ्यसनम् [अभि+अस्+ल्युट्] 1 बार-बार करना, बार-बार किया गया अभ्यास 2 निरन्तर अध्ययन, अनुशीलन—(ताम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि—रघु० १।८८।

अभ्यसूयक (वि०) [स्त्री—यिका] [अभि+असू+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाहभरा, निन्दक, कलंक लगाने वाला, —मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषतोऽभ्यसूयका—भग० १६।१८।

अभ्यसूया [अभि+असू+यक्+अ+टाप्] डाह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध,—शक्याभ्यसूयाविनिवृत्तये य —रघु० ६।७४, रूपेषु वेषेषु च साभ्यसूया—७।२, ९।६४।

अभ्यस्त (भू० क० कृ०) [अधि+अस्+क्त] 1 बार बार दोहराया गया, बार बार अभ्यास किया गया, —नयनयोरभ्यस्तमामीलनम्—अमरु० ९२, प्रयोग में लाया गया, आदत डाली हुई,—अनभ्यस्तरघर्षा —उत्तर० ५, 2 सीखा हुआ, पढ़ा हुआ,—शैशवेऽभ्यस्तविद्याना —रघु० १।८, भर्तृ० ३।८९, 3 (गण०) गुणा किया गया 4 (व्या० में) द्वित्व किया गया।

अभ्याकर्ष [अभि+आ+कृष्+घञ्] हाथ से छाती ठोक कर ललकारना (जैसे पहलवान कुश्ती के लिए)।

अभ्याकाङ्क्षितम् [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] 1 मिथ्या आरोप, निराधार शिकायत 2 इच्छा।

अभ्याख्यानम् [अभि+आ+ख्या+ल्युट्] मिथ्या आरोप, लाञ्छन, निन्दा, बदनामी।

अभ्यागत (भू० क० कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] 1. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2 अतिथि के रूप में आया हुआ,—सर्वत्राभ्यागतो गुरु —हि० १।१०८,—त: अतिथि, दर्शक।

अभ्यागम: [अभि+आ+गम्+घञ्] 1. निकट आना या आना, पहुँच, दर्शनार्थ गमन—तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुद —शि० १।२३, कि वा महाभ्यागमकारण ते—रघु० १६।८, महावी० २।२२, 2 सामीप्य, पड़ोस, 3 मुकाबला, हमला 4 युद्ध, संग्राम 5 शत्रुता, विद्वेष।

अभ्यागमनम् [अभि+आ+गम्+ल्युट्] उपागमन, पहुँच, दर्शनार्थ गमन, हेतु तदभ्यागमने परीप्सु —कि० ३।४।

अभ्यागारिक: [अभि+आगार+ठन्] परिवार के पालन में सलग्न।

अभ्याघात: [अभि+आ+हन्+घञ्] हमला, आक्रमण।

अभ्याधानम् [अभि+आ+धा+ल्युट्] उपक्रम, प्रारम्भ, सूत्रपात करना।

अभ्याधानम् [अभि+आ+धा+ल्युट्] रखना, डालना (जैसा कि ईंधन)।

अभ्याप्त (वि०)[अभि+आ+आप्+क्त] बीमार हुआ, रोगी।

अभ्यापात: [अभि+आ+पत्+घञ्] संकट, दुर्भाग्य।

अभ्यामर्द:-र्दनम् [अभि+आ+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] युद्ध, संग्राम, संघर्ष, आक्रमण।

अभ्यारोह-रोहणम् [अभि+आ+रुह्+घञ्, ल्युट् वा] चढ़ना, सवार होना, ऊपर तक जाना।

अभ्यावृत्ति: (स्त्री०) [अभि+आ+वृत्+क्तिन्] दोहराना, बार-बार होना, दे० 'अनभ्यावृत्ति' भी।

अभ्याश (वि०) [अभि+अश्+घञ्] निकट, समीप —श: 1 पहुँचना, व्याप्त होना 2 समीपस्थ पड़ोस,आस पास का (दे० 'अभ्यास'),—वायसाभ्याशे समुपविष्ट —पञ्च० २, सहसाभ्यागता मैथीमभ्याशपरिवर्तिनीम्—महा०, दश० ६२, 3 परिणाम, फल 4 अभ्युदय, प्रत्यासत्ति, अत 'शीघ्रता' के अर्थ में प्राय प्रयुक्त।

अभ्यास [अभि+आ+अस्+घञ्] आवृत्ति, —व्याख्याता-व्याख्याता इति पदाभ्यासोऽध्यायपरिसमाप्ति द्योतयति—शारी०, नाभ्यासकर्मभीक्षते-पञ्च १।१५१, 2 बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी कार्य में लगे रहना,—अविरतमभ्यासात्—का० ३०, अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते—भग० ६।३५, ४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पवित्र और अविकृत रहना) १२।१२, °निगृहीतेन मनसा—रघु० १०।२३, इसी प्रकार शर,° अस्त्र' आदि 3 आदत, प्रथा, चलन, —अमङ्गलाभ्याससरतिम्—कु० ५।६५, या० ३।६८, 4 शस्त्रास्त्र विषयक अनुशासन, कवायद, सैनिक कवायद 5. पाठ करना,अध्ययन करना,—काव्यज्ञशिक्षाभ्यास काव्य० १ 6 आसपास का, सामीप्य, पड़ोस ('अभ्याश' के लिए) —धृतयष्टिरिवाभ्यासे (स्थे) मधौ परभृतोन्मुखी —कु०६।२, ('अभ्यासे-से मधौ का यहाँ अर्थ 'मधु' को सबोधित करना है जो कि उसके निकट है—अर्थात् अपने आपको पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके।

यहाँ पार्वती की उपमा पूर्वत: सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं चुप रहते हुए अपनी सखी को संबोधित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना), अर्पितेयं तवास्माभि: सीता पुण्यानुसारत: वधू.—उत्तर० ७।१७, आपकी सौंपी हुई; अभ्यासात् (आ) बारम्बार—सिद्धा० (अभ्यङ् समास के रूप में) 7 (व्या० में) द्वित्व होना 8 द्वित्व हुए धातु-शब्द का प्रथम अक्षर, द्वित्व अक्षर 9. (संगी० में) मुखा 10. सम्मिलित गान, गीत की टेक। सम०—आसन्न (वि०) उपासक, निकट रखा हुआ,—योनि: अनवरत गहन चिंतन से उत्पन्न मनोवेग,—अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय—भग० १२।९,—लोप: द्वित्व किये हुए अक्षर को हटा देना,—स्वर: द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तराल।

अभ्यासादनम् [अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] शत्रु का साधना करना या उस पर हमला करना।

अभ्याहननम् [अभि+आ+हन्+ल्युट्] 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, हत्या करना 2 रोक लगाना, बाधा डालना।

अभ्याहार: [अभि+आ+हृ+घञ्] 1 निकट लाना, ले जाना 2 लपेटना।

अभ्युक्षणम् [अभि+उक्ष्+ल्युट्] 1. (जल) छिड़कना, तर करना,—पश्यताभ्युक्षणात्तासाम् (वासस्य) रघु० १६।५७, 2 अभिषेक द्वारा सम्मान।

अभ्युचित (वि०) [प्रा० स०] प्रचलित, प्रथा के अनुकूल।

अभ्युच्चय: [अभि+उत्+चि+अच्] 1 वृद्धि, आगम 2 सम्पन्नता।

अभ्युच्चैर्भाषणम् [अभि+उत्+चै:+भाष्+ल्युट्] ऊँचे स्वर से चिल्लाना।

अभ्युत्थानम् [अभि+उद्+स्था+ल्युट्] 1. (अपने आसन से) सत्कारार्थ उठना, किसी के सम्मान में खड़े होना। 2 रवाना होना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. उठना (या० आश्र०), उन्नति, समृद्धता, मर्यादा, (तस्य) तवाभ्युत्थानदर्शिनो वनन्दु: सकला प्रजा—रघु० ४।१२, कदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्—भग० ४।७। अभ्युत्पतनम् [अभि+उत्+पत्+ल्युट्] किसी पर उछलना, कूदना, अकस्मात् झपटना, हमला करना अलक्षितोभ्युत्पतनो नृपेण—रघु० २।४७।

अभ्युदय: [अभि+उद्+इ+अच्] 1 सूर्य चन्द्रादि का निकलना, सूर्योदय 2 उन्नति, समृद्धता, सौभाग्य, ऊँचा उठना, सफलता—स्पृशति मे स्वामिनमभ्युदया—रत्न० १. अयो हि लोकाभ्युदयाय सतृताम्—रघु० ३। १४. 3. उत्सव, उत्सव का अवसर 4. उपक्रम, आरम्भ।

अभ्युदाहरणम् [अभि+उद्+आ+हृ+ल्युट्] विपरीत बात के द्वारा उदाहरण का निरसन देना।

अभ्युदित (भू० क० कृ०) [अभि+उद्+इ+त] 1. निकला हुआ 2. उदित 2. सूर्योदय के अवसर पर होता हुआ।

अभ्युद्यत:-यतवत्] [अभि+उद्+यम्+क्त, ल्युट्, अभ्युद्यति: (स्त्री०)] क्तिन् वा] 1. किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अतिथि के सम्मानार्थ उठकर चलना 2. निकलना, होना, उत्पन्न होना।

अभ्युद्यत [भू० क० कृ०] [अभि+उद्+यम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊपर उठाया हुआ, जैसा कि °बाहु, °हस्त 2 तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील ('युयुत्सव' सम्प० अधि० के अपवा समास में) 3. आगे लाया हुआ, निकला हुआ, सामने दिखाई देने वाला, निकट आने वाला,—कुलमभ्युद्यतनूतनेश्वरम्—रघु० ८।१५, 4. अर्पित किया हुआ या लाया हुआ।

अभ्युद्यत (वि०) [अभि+उद्+यम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊँचा किया हुआ, सं० २, 2. ऊपर को उठता हुआ, बहुत ऊँचा—कु० १।३३।

अभ्युद्यति: (स्त्री०) [अभि+उद्+यम्+क्तिन्] बड़ी उन्नति या समृद्धि।

अभ्युपगम: [अभि+उप+गम्+घञ्] 1. उपागमन, पहुँच 2. स्वीकार करना, मानना, सत्य समझना, (दोष) मान लेना 3 जिम्मेदारी, प्रतिज्ञा करना, निर्णय° मालवि० १, सहिदा, करार, प्रतिज्ञा। सम०—सिद्धान्त: मानी हुई प्रस्तावित योजना या युक्ति।

अभ्युपपत्ति: (स्त्री०) [अभि+उप+पद्+क्तिन्] 1. सहायतार्थ निकट आना, दया करना, कृपा करना, अनुग्रह, कृपा,—अनयाभ्युपपत्त्या—रघु० ४, 2. दावत, तश्तरी 3. रक्षा, बचाव,—काङ्क्षाभ्युपपत्ती च सपत्ने नास्ति पातकम्—मनु० ८।११२, 4. इकरार नामा, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 5 स्त्री का गर्भवती होना (विशेषत: भाई की विधवा पत्नी का नियोग द्वारा)।

अभ्युपाय: [अभि+उप+इ+अच्] 1 प्रतिज्ञा, वादा, इकरार 2. साधन, युक्ति, उपचार,—अस्त्रिण्यूरुणां विजयाभ्युपाये—कु० ३।१९।

अभ्युपायनम् [अभि+उप+अय्+ल्युट्] सम्मानसूचक उपहार, प्रलोभन, रिश्वत।

अभ्युपेत (भू० क० कृ०) [अभि+उप+इ+क्त] 1. निकट आया हुआ, उपागत 2. प्रतिज्ञात, स्वीकृत, अंगीकृत—मेघ० १८।

अभ्युपेत्य (अव्य०) [अभि+उप+इ+ल्यप् (क्त्वा)] पहुँच कर, स्वीकार करके, प्रतिज्ञा करके। सम०—असुश्रूषा—हिन्दूधर्मशास्त्र के १८ अधिकारों में से एक, मजदूरी और सेवक के मध्य की हुई संविदा का भंग।

अभ्यूढ:, अभ्यूह:] [अभित: ऊढ:-अभ्यूह: अभिना दहाने—ऊ-] ऊह् वाहुं क] एक प्रकार की रोटी,

बाटी।

अभ्यूह: [अभि+ऊह्+घञ्] 1 तर्क करना, दलील देना, विचार विमर्श करना 2. आगमन (घटाना), अनुमान, अटकल,—पराभ्यूहस्थानान्यपि तनुतराणि स्यगयति —मा० १ १४, 3. अध्याहार करना, 4. समझना।

अभ्र (भ्वा० पर०) [अभ्रति, अभ्रित, अभ्रित] जाना, इधर उधर घूमना—वनेष्वानभ्र निर्भयः —भट्टि० ४।११, १४।११०।

अभ्र [अभ्र्+अच् या अप्+भृ अपो बिभर्ति—भृ+क] 1. बादल 2 वायुमंडल, आकाश—परितो विपाण्डु दयदभ्रशिर —शि० ९।३, दे० अभ्रंलिह आदि 3. बिल-बिल, अबरक 4 (गण०) शून्य। सम० —अवकाश बचाव के लिए केवलमात्र बादल, बारिश होना,—अवकाशिक,—अवकाशिन (वि) बारिश में रहकर (तपस्या करने वाला), बारिश से बचाव का कोई उपाय न करने वाला,—इभ आकाश में उत्पन्न इन्द्र का गज,—काभ: ऐरावत नाम का हाथी जो धरती को धारण किये हुए है,—पथ 1 वायुमंडल 2 गुप्तचारी,—पिशाच,—पिशाचक, राहु की उपाधि, सेवासुर,—पुष्प एक प्रकार की बेंत, पुष्पम् 1 पानी 2 असंभव बात, हवाई किला,—भालव इन्द्र का हाथी ऐरावत,—माला,—वृन्दम् बादलों की पंक्ति या समूह।

अभ्रंलिह (वि०) [अभ्र+लिह्+क्विप् मुमागम] 'बादलों को चूमने वाला' स्पर्श करने वाला अर्थात् बहुत ऊँचा, —अभ्रंलिहाग्रा प्रासादा:—मेघ०६६, प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह—रघु० १४।२९, —ह वायु, हवा।

अभ्रक [अभ्र+कन्] चिलचिल, अबरक। सम०—अस्त्र (नपु०) अबरक का कुश्ता, अबरक की भस्म —सत्त्व इस्पात।

अभ्रकूट (वि०) [अभ्र+कष्+खच् मुमागम] बादलों को छूने वाला, बहुत ऊँचा,—आदायाभ्रकूट प्राया-न्मलय फलशालिनम्—भट्टि०,—ट 1 वायु, हवा 2 पहाड़।

अभ्रमु: (स्त्री०) [अभ्र+मा+उ] इन्द्र के हाथी ऐरावत की सहचरी, पूर्वदिशा के दिग्गज की हथिनी। सम० —प्रिय,—वल्लभ ऐरावत।

अभ्रि-भ्री (स्त्री०) [अभ्र+इन् ङीष् वा] 1. लकड़ी की बनी हुई नोकदार फरही जिससे नाव को सफाई की जाती है, 2 कुदाल, खुरपी।

अभ्रित (वि०) [अभ्र+इतच्] बादलों से आच्छादित, बादलों से घिरा हुआ—रघु० ३।१२।

अभ्रिय (वि०) [अभ्र+घ] बादलों से संबंध रखने वाला, आकाश या मुक्ता अथवा बादलों से उत्पन्न,—य: बिजली, —यम् गरजने वाले बादलों का समूह।

अभ्रेष [न० त०] अध्यवसाय, योग्यता, उपयुक्तता।

अभ्व (अव्य०) [अभ्+क्विप्] 1. अच्छी, सीधा 2. अरा, थोड़ा।

अभ्व् (भ्वा० प०) [अभति, अभितुम्, अभित] 1. जाना, की ओर जाना 2. सेवा करना, सम्मान करना 3. शब्द करना 4. खाना, (भ्वा० प० या प्रेर०) [आभयति] 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, रोग से कष्ट होना, किसी व्याधि से पीड़ित होना 2 रोगी होना, कष्टग्रस्त या रोगग्रस्त होना।

अभ (वि०) [अभ्+घञ् अवृद्धि] कष्टदा (जैसा कि फल),—भ: 1 जाना, 2. कष्टता, रोग 3. सेवक, अनुचर 4. यह, स्वयम्।

अमङ्गल-ल्य (वि०) [न० स०, न० त०] 1. अशुभ, बुरा, अकल्याणकर—रघु० १२।४३,—अमङ्गलरतिम् कु० ५।६५, अमङ्गल्य शील तव भवतु नामैवमखिलम् —पुष्प० 2 भाग्यहीन, दुर्भाग्य पूर्ण, —क: एरण्ड का वृक्ष,—त्व अशोभनीयता, दुर्भाग्य, अकल्याण, प्राय नाट्य-शास्त्र में प्रयुक्त—प्रयत पाप प्रतिहतमङ्गलम्—तु० भगवान् कल्याण करे।

अमद्य (वि०) [न० ब०] 1 बिना मजावट का, अलंकार रहित 2. बिना झाग का या बिना माड़ का (उबला हुआ चावल),—द्य एरण्ड का वृक्ष।

अमत (वि०) [न० त०] 1 अननुभूत मन के लिए असलक्ष्य, अज्ञात 2 नापसन्द, अमान्य,—त: 1 समय 2 रुग्णता, रोग, 3 मृत्यु।

अमति (वि०) [न० ब०] दुर्मना, दुष्ट, दुश्चरित्र, —ति 1 घृणा करना 2 कष्ट 3 संकट,—ति: (स्त्री०) [न० त०] अज्ञान, समझदारी का अभाव, अदूरदर्शिता—अमर्त्यतानि वह अवज्ञा —मनु० ५।२०, ९।२८२,। सम० पूर्व (वि०) समझहीन, विचारशून्य।

अमत्र (वि०) [न० त०] जो नाप में न हो, सही दिमाग का।

अमत्र [अमति मुक्त अलमत्र—अम्+आधारे अत्रन्] 1 बर्तन आसन पात्र 2 सामर्थ्य, शक्ति।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्यालु या डाहयुक्त न हो, उदार।

अमनस् (वि०) [न० ब०, कप् च] 1 बिना मन का ध्यान के 2 बुद्धिहीन (जैसे कि बालक) 3. ध्यान न देने वाला, 4 जिसका अपने मन के ऊपर कोई नियंत्रण न हो 5 स्नेहहीन (अव्य० क:) 1. जो इच्छा का अंग न हो, अनवधान का अभाव 2. ध्यानशून्य (पु०—का) परमेश्वर। सम० —ज्ञ (वि०) अज्ञात, अविचारित,—ज्ञ,—जात, अनजाने, बिना किया गया, विचारहीन,—योग: ध्यान न देना,—स्क (वि०) जो सुखकर न हो, जो अच्छिकर न हो।

अमनस् (अव्य०) [न० त०] चौरा नहीं, बहुत, अत्यधिक।

अमनुष्य (वि०) [न० ब०] 1. अमानुषिक, जो मनुष्योचित न हो 2. जहाँ मनुष्य का आना जाना बहुत कम हो,—क्षः [न० त०] 1 जो मनुष्य न हो, 2 राक्षस।

अमन्त्र,-क (वि०) [न० ब० कप् च] 1 वैदिक मन्त्रों से रहित, वह संस्कार जिसमें वेदमन्त्रों के पाठ की आवश्यकता न हो 2 जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार न हो जैसे शूद्र या स्त्री 3 जो वेदपाठ से अनभिज्ञ हो, —अवतानाममन्त्राज्ञान्—मनु० १२।११४, 4 रोग की वह चिकित्सा जिसमें जादूमन्त्र की क्रिया न की जाती हो,—अथवा कर्ममन्त्रयाचलीला न हि जीवन्ति जना वनाणमन्त्रा —भामि० १।१११।

अमन्द (वि०) [न० त०] 1. जो सुस्त या मंद न हो, फुर्तीला, बुद्धिमान् 2 तेज, प्रबल, प्रचण्ड (वायु आदि) 3 अनल्प, अति, अधिक, बहुत, तीव्र,—अमन्दमदबुद्धिम—उत्तर० ५।५, अमन्दमिलदिन्दिरे निखिलमाधुरीमन्दिरे भामि० ४।१।

अमम (वि०) [न० ब०] बिना अहंकार के, स्वार्थ या सांसारिक आसक्ति से शून्य, ममतारहित,—कारणेष्वमयत्वंच वृक्षमूलनिकेतन —मनु० ६।२६।

अमध्यस्थ-त्वम् [न० त०] उदासीनता, स्वार्थपरता-हित्य।

अमर (वि०) [न० त० मृ—पचाद्यच्] जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो, न मरने वाला, अविनाशी,—अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत्—हि०, पंच० ३, मनु० २।१४८, २ देव, देवता 2. पारा 3 सोना 4. तेलिस की संख्या (क्योंकि जितनी में इतने ही देवता हैं) 5 अमरसिंह 6. हड्डियों का ढेर—रा 1 इन्द्र का आवासस्थान (तु० अमरावती) 2 नाल 3 योनि 4 गृहस्तम्भ,—री 1 देवपत्नी, देवकन्या 2 इन्द्र की राजधानी। सम०—अङ्गना, —स्त्री दिव्य अप्सरा, देवकन्या—सुधाशन स्तानि हरामरङ्गना शि० १।५१, अद्रि देव-पर्वत अर्थात् सुमेरु पहाड़ —अधिप, —इन्द्रः, ईशः, —ईश्वर, —पतिः, —राजा, -राज. देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि, कई बार विष्णु और शिव की भी उपाधि —आचार्यः, —गुरुः, —पूज्यः देवताओं के गुरु, बृहस्पति की उपाधि, —आपगा, —तटिनी, —सरित् (स्त्री) स्वर्गीय नदी, गंगा की उपाधियाँ, —मटिदीरोधसि वसन् —भर्तृ० ३।१२३, आलय. देवताओं का आवासस्थान, स्वर्ग, —कोशलम् विन्ध्यपर्वतश्रेणी के उस भाग का नाम जो नर्मदा नदी के उद्गम स्थान के निकट है —कोशः, —कोषः अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध कोश —तरुः, —द्रुमः 1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष.—अमरतरुकुसुमसौरभसंपूर्णसकलकाननस्य—भामि० १।२८ 2. =देव दारु 3 कल्पवृक्ष, —पतिः देवल ब्राह्मण जो मंदिर या मूर्ति संबंधी कार्य करता हो, मन्दिर का अधीक्षक,—पुरम्, देवताओं का आवासस्थान, दिव्य स्वर्ग, —पुष्पः,—पूजकः कल्पवृक्ष, —प्रभ,—प्रभ (वि०) देवताओं जैसा,—रत्नम् स्फटिक,—लोकः देवताओं की दुनियाँ, स्वर्ग, °स्थ स्वर्गीय सुख,—लेषु सम्बन्धवर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम्—मनु० २।५,—सिंहः अमरकोश के रचयिता का नाम, वह जैन धर्मावलम्बी थे, कहा जाता है कि विक्रमादित्य महाराज के नवरत्नों में एक रत्न थे।

अमरता-त्वम् [अमर+तल्, त्वल् वा] देवत्व।

अमरावती [अमर+मतुप्, ङीष्] देवताओं का आवासस्थान, इन्द्र का घर,—सप्तभ्रमेन्द्रद्युतपालिनार्धसा निमीलितालीव विभाऽमरावती। शिशु०।

अमर्ष (वि०) [न० त०] जो अरुचिकर न हो, दिव्य, अविनाशी,—°शादेऽपि रघु० ७।५३, °भुवनम्—स्वर्ग, °ता अविनश्वरता,—र्षः देवता,। सम०—आपगा देवनदी, गंगा की उपाधि—विक्रमांक० १८।१०४।

अमर्मन् (नपुं०) [न० त०] शरीर का वह अंग जो मर्मस्थल न हो। सम०—वेधिन् मर्मस्थल को न बींधने वाला, मृदु, कोमल।

अमर्यादा (वि०) [न० ब०] 1. उचित सीमाओं को पार करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अनादर करने वाला, अनुचित,—मर्यादामममर्यादाः स्थिरयन्तिष्ठन्ति सर्वदा—पंच० १।१४२, तादृशं त्वममर्यादं कर्म कर्तुं विकोर्षसि—रामा०, 2 सीमारहित, असीम—दा [न० त०] उचित सीमा का उल्लंघन करना, आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की अवहेलना।

अमर्ष (वि०) [न० ब०] असहनशील,—र्षः [न० त०] 1 असहिष्णुता, असहनशीलता, धैर्यशून्यता,—अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः—कि० १।३३, ईर्ष्या, ईर्ष्यायुक्त क्रोध,—किन्तु ममतास्तात-प्रतापोत्कर्षेऽप्यमर्ष —उत्तर० ५, सा० शा० में ३३ व्यभिचारी भावों में से एक—अमर्षो दे० सा० द०; रस० निम्नपरिभाषा बताता है—परकृताक्षेपादिनानापराधजन्यो मौनवाक्यसाध्यादिकारणधृतिविबोधविधिविशेषोऽमर्षः 2 क्रोध, आवेश, कोप,—पुरुषव्यवसायोऽयमर्षदीपितेन गदीकृतः—वेणी० २, सामर्ष क्रुद्ध, कुपित, सामर्षम् क्रोधपूर्वक 3. तीव्रता, प्रचण्डता। सम० ज (वि०) क्रोध या असहनशीलता से उत्पन्न,—हृतः क्रोधपूर्ण हंसी, खिल्ली उड़ाना।

अमर्षण,-शील, } (वि०) [न० ब०, न० त०] धैर्यहीन,
अमर्षिन्,-शयत् } असहनशील, क्षमा न करने वाला—शयः

१।३२६, २ क्रुद्ध, कुपित, प्रचण्ड स्वभाव का -हृदि क्षतो मात्राभिदध्यमर्षेण -रघु० ३।५३-अभिमन्युवधामर्षिते पाण्डुपुत्रै -वेणी० ४, 3 प्रचण्ड, दृढ़-संकल्प ।

अमल (वि०) [न० ब०] 1. मलरहित, मलमुक्त, पवित्र, निष्कलंक, विमल,--अमला सुहृद -पञ्च० २।१७१, विशुद्ध, निष्कपट 2. श्वेत उज्ज्वल,--कर्णावसक्तामल-कनपत्रम्---कु० ७।२५, रघु० ६।८०,---ला 1 लक्ष्मी देवी 2. नाम 3 आंवले का वृक्ष,---लम् 1 पवित्रता 2 अबरक, 3 पन्नाहा । सम०---पतत्रिन् [पु०-त्री] अगली हम,---फलम्,---मणिः स्फटिक पत्थर ।

अमलिन (वि०) [न० त०] स्वच्छ, बेदाग, पवित्र, (नैतिक रूप से भी)---कुलममलिन सत्वेवाय जनो न च जीवितम् --मा० २।२, ।

अमसः [अम्+असच्] 1 राग 2 मूर्खता 3 मूर्ख 4 समय ।

अमा (वि०) [न० त०] अपरिमित---(अव्य०) 1 से, निकट, पास 2. के साथ, से मिलकर, जैसा कि अमात्य, अमावस्या (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन,--अमायां तु सदा सोम ओषधी प्रतिपद्यते - व्यास 2 चन्द्रमा की सोलहवीं कला, पु०---आत्मा । सम०---अन्त नूतन चन्द्रमा के दिन की समाप्ति,---पर्वन् (नप०) अमा का पवित्र काल, नूतन चन्द्रमा का दिवस ।

अमांस (वि०) [न० ब०] 1 बिना मांस का, मांस रहित, 2 दुबला-पतला, बलहीन, ---सम् [न० त०] जो मांस न हो, मांस को छोड़ कर और कोई वस्तु । सम०---औदनिक (वि०)[स्त्री० की] मांसयुक्त बने हुए चावलों से संबंध न रखने वाला ।

अमात्य [अमा+ण्यक्] राजा का सहचर, या अनुयायी, मन्त्री, अमात्यपुत्रै सचिवोभिरन्वित -रघु० ३।२८ ।

अमात्र (वि०) [न० ब०] 1 सीमारहित, अपरिमित अपूर्ण, अमाप्त 3 जो आरम्भिक न हो, -त्र परब्रह्म, ।

अमानमन-ना [न० त०] अनादर, अपमान, अवज्ञा ।

अमानस्यम् [न० त०] गौरव ।

अमानिन् (वि०) [न० त०] विनम्र, विनीत ।

अमानुष (वि०) [स्त्री०---षी] [न० त०] अमानवी, मनुष्य से संबंध न रखने वाला अलौकिक, अपार्थिव, अपौरुषेय --आकृतिरेवानमानुष्यमानुषाणाम् --मा० १३२ ।

अमानुष्य (वि०)[न० त०] अमानवीय, अपौरुषेय आदि ।

अमाम (मा) सी०=अमावस्या या अमावस्या ।

अमाय (वि०) [न० ब०] 1 अकुटिल, सरल, मायारहित, निष्कपट 2 जो मापा न जा सके,---या 1 कपट-शून्यता, ईमानदारी, निष्कपटता 2 (वेदा० में) भ्रम का अभाव, परमात्मा का ज्ञान ब्रह्म परब्रह्म ।

अमायिक,---मायिन् (वि०) [न० त०] मायारहित, निश्छल, ईमानदार ।

अमावस्या,---वास्या } [अमा+वस्+यत्, ष्यञ् वा, अमा
अमावसो,---वासी } +वस्+अप्, ङीष् वा] नूतन
(अमामसी,---मासी) } चन्द्रमा का दिन, वह समय जब कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों संयुक्त रहते हैं, प्रत्येक चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष का पन्द्रहवां दिन---सूर्याचन्द्रमसो र्य पर सन्निकर्षः माऽमावस्या---गौतमि० ।

अमित (वि०) [न० त०] 1 जो मापा न गया हो अमीम, सीमारहित, विशाल---मित ददाति हि पिता मित भ्राता मित सुत, अमितस्य हि दातार भर्तार का न पूजयेत्---रामा० 2 उपेक्षित, अनादृत 3 अज्ञात 4 असम्पूर्ण । सम०---अक्षर (वि०) गद्यात्मक, आभ (वि०) अनिर्वचनीय रूप से, अमीम प्रभावयुक्त, ओजस् (वि०) असीम तेजोयुक्त, अमित्र मित्रसम्पन्न सर्वज्ञानसमान् -तेजस्,---द्युति (वि०) असीम तेज या कान्तियुक्त -विक्रम 1 अमीम बल शाली 2 विष्णु ।

अमित्र [अम+इत्र] जो मित्र न हो, शत्रु [रामायण, वैरी, प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी,---स्यात्सामित्रिमित्रं च सहजप्राकृतौ, वयि स्त्रि० -१२६, तस्य मित्रमथामित्रमभवत् -१०१, प्रकृत्यमित्रा हि सतामसत्क्रिया -कि० १४।२१ । सम०---घ्न, घातिन्, घ्न, हन् [समास के अन्त में] शत्रु को मारने वाला, जित् (वि०) शत्रु को परास्त करने वाला, अमित्रीजनिमर्यादाजग्ध च दत-नै० १।१३ ।

अमिथ्या [कि० वि०] [न० त०] जो मिथ्या न हो, सचमुच नामकर्तुस्ते गिरमभ्यर्थनां या -रघु० १४।६ ।

अमिन् (वि०) [अम+णिनि] मापने वाला ।

अमिश्रम [अम्+ड्रन्] 1 सामान्यतः सूत्र के अनुसार, विशेषतः की सलाह 2 दूरदर्शिता, विचक्षणता, निष्कपटता 3 मान ।

अमीवा [अम्+वन् ईडागम] 1 रोग, बीमारी, रोग 2 दुःख, कष्ट, क्लेश, पीड़ा, चोट ।

अमुक [अदस्+डुकञ्, दस्यमन्त्र ककारः] कोई व्यक्ति या वस्तु, ऐसा (जब व्यक्ति का नाम या गोत्र न लेना हो), यो मे मनुष्यः अमुकशर्मा, अमुकगोत्रः---मालवि० ४, ८ उभयाम्-अमुक अमुकस्य अमुकाय आदि, अमुकेनैव नामकर्मणा ख्यातः, विक्रम० ८४ ।

अमुक्त [वि०] [न० त०] 1 जिसने अभी शरीर न छोड़ा हो, जो जीने से स्वतन्त्र नहीं 2 अनभ्यस्त या बन्धन से जिसे छुटकारा न मिला हो, जिसे मोक्ष प्राप्त न हुआ हो, कवच पक्षी आदि (चोंच या नखवाले आदि) जो सदैव पकड़ा जाता है पकड़ा नहीं जाता । सम०

—हस्त (वि०) मितव्ययी, कंजूस (कदर्थना के लिए) अल्पव्ययी, परिमितव्ययी,—मदा प्रहृष्टया भाव्यं व्यये चामुक्तहस्तया—मनु० ५।१५०।

अमुक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. स्वतन्त्रता का अभाव 2. स्वतन्त्रता या मुक्ति का भाव।

अमुत्रः (अव्य०) [अदस्+तसिल् उत्व-मत्व] 1. वहां से, वहां 2. उस स्थान से, ऊपर से अर्थात् परलोक से या स्वर्ग से 3. इस पर, ऐसा होने पर, अब से आगे।

अमुत्र (अव्य०) [अदस्+त्रल् उत्व-मत्व] (विप० इह) 1. वहां, उस स्थान पर, वहां पर, अमुत्रासन् यवना. दश०१२७ 2. वहां, (जो कुछ पहले हो चुका है या कहा गया है) उस अवस्था में 3. वहां, ऊपर, परलोक में, आगामी जन्म में—यावज्जीवं च तन्मूर्खोऽनाप्नोत्यमुत्र सुखं क्वचित् 4. वहां—अनेनैवाभंका सर्वं मगरेऽमुत्र भक्षितम् —कथा०।

अमुत्रा (अव्य०) [अदस्+त्राल् उत्व-मत्व] इस प्रकार, इस रीति से।

अमुष्य (अदस्-सर्व०) इस का (केवल समास में)। सम०—कुल [अलुक् स०] (वि०) ऐसे कुल से सबंध रखने वाला (—लम्) प्रसिद्ध घराना, —पुत्रः,—पुत्री ऐसे प्रसिद्ध कुल का पुत्र या पुत्री, दे० आमुष्यायण।

अमुष्मद्—क, क (वि०) [स्त्री०—की, —की] [अदस्+दृश+किवन्, कादे०, मस् का स्थिया डीप्] ऐसा, इस प्रकार का, इस रूप या ढंग का।

अमूर्त (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीरी, शरीर रहित (विप० मूर्त-मूर्तत्वम् -अवच्छिन्नपरिमाणवत्त्वम् -मुक्ता०),—र्तः शिव। सम०—गुणः (वैशे० में) धर्म, अधर्म जैसे गुणों को अमूर्त या अशरीरी समझा जाता है।

अमूर्ति (वि०) [न० ब०] आकार हीन, रूपरहित,—र्तिः विष्णु,—र्तिः (स्त्री०) [न० त०] रूप या आकार का न होना।

अमूल—क (वि०) [न० ब०] 1 निर्मूल (आ०), (आल०) बिना किसी आधार के, निराधार, आधार रहित 2 बिना किसी प्रधान के, जो मूल में न हो —नामूलं लिख्यते किंचित्—महाभा०, 3 बिना किसी भौतिक कारण के जैसा कि सांख्य का 'प्रधान'।

अमूल्य (वि०) [न० ब०] अनमोल, बहुमूल्य।

अमृणालम् [नास्ति मृणालं न० त०] एक सुगन्धित घास की जड़, (खस या उशीर) जिस के परदे या टट्टियां बनती हैं।

अमृत (वि०) [न० त०] 1. जो मरा न हो 2. अमर 3. अविनाशी, अनश्वर,—तः 1 देव, अमर, देवता, 2. देवों के वैद्य धन्वन्तरि,—तम् 1. मादक शराब 2. नाना प्रकार के पौधों के नाम,—त्वम् 1. (क) अमरता (ख) परमसुखित, मोक्ष—मनु० १२।१०४, स विधे चामृतस्य च—अमर०, 2 देवों का सामूहिक शरीर 3 अमरता की दुनिया, स्वर्गलोक 4. सुधा, पीयूष, अमृत (विप० विष) जो समुद्र मथन के फल स्वरूप प्राप्त समझा जाता है—देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्मथित्वे —कि० ५।३०, विषादप्यमृतं ग्राह्यम्—मनु० २।२३९, विषमप्यमृतं क्वचिदुद्वेजनीयं जरामरणवतः—रघु० ८।४६, (प्राय. वाच्, वचनम्, वाणी आदि शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारजन्मामृतसंभिताक्षरम्—रघु० ३।१६ 5. क्षीरसागर 6 विष नाशक औषध 7 यज्ञशेष—मनु० ३।२८५, 8 अयाचितमिक्षा (दान), बिना मांगे दान मिलना—मृतं स्यादयाचितं भैक्ष्यममृतं स्यादयाचितम्—मनु० ४।४, ५, 9 जल—अमृताभ्यात जीमूत—उत्तर० ६।२१, सु० भोजन के पूर्व या अन्त में आचमन करते हुए ब्राह्मणों के द्वारा पढ़े जाने वाले मन्त्र (अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, अमृतापिधानमसि स्वाहा) 10 औषधि 11 घी,—अमृत नाम यत्तन्तो मन्त्र त्रिष्टुप् जुहूर्ति—शि० २।१०७, 12 दूध 13 आहार 14 उबले हुए चावल, भात 15 मिष्ट पदार्थ, कोई भी मधुर वस्तु 16 सोना 17 पारा 18 विष 19 परब्रह्म। सम०—अंशु,—कर,—दीधिति,—द्युति,—रश्मि: चन्द्रमा के विशेषण, —अमृतदीधितिनेव विवर्धते—नै० ४।१०४, —अन्धस्,—अशनः,—आशिन् (पु०) वह जिसका भोजन अमृत है, देवता, अमर,—आहरणः महान् जिसने एक बार अमृत चुराया था, —उत्पत्ति—मत्स्यी (—त्स्य), —उद्भवम् एक प्रकार का सुगंधित घास, —कुंभः वह बर्तन जिसमें अमृत रक्खा हो,—कारम् गीतादर, —गर्भ (वि०) अमृत या जल से भरा हुआ, अमृतमय (—भः) 1 आत्मा 2 परमात्मा,—तरंगिणी ज्योत्स्ना, चांदनी, —द्रव (वि०) चन्द्रकिरण जो अमृत छिड़कती है (—वः) अमृत प्रवाह,—धारा 1. एक छन्द का नाम 2. अमृत का प्रवाह,—प 1 अमृत पान करने वाला, देव या देवता 2 विष्णु 3 शराब पीने वाला,—ध्रुवममृतपानामावाऽवधारणम् अमृतपस्तवाजिह्रीते—शि० ७।४२, (यहां अ" का 'अमृत पीनेवाला' भी अर्थ है) —फला अमृत की सृष्टा, अमृती की बेल, दाख, द्राक्षा,—भुज् 1 देव, देवता 2 घोड़ा, चन्द्रमा,—भुज् (पु०) अमर, देव, देवता जो यज्ञशेष का स्वाद लेता है,—भू (वि०) जन्ममरण से मुक्त,—मंथनम् अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र का मथन,—रसः 1 अमृत, पीयूष,—काव्यामृतरसास्वादः—हि०, विधिकाव्यामृतरसान् पिबाम.—मृच्छ० ३।४०, 2 परब्रह्म,—लता, —वल्लिका अमृत देने वाली बेल,—वाच् अमृत जैसे मधुर वचन बोलने वाला,—सार (वि०) अमृतमय (—रः) घी,—सूः—सूतिः 1 चन्द्रमा (अमृत बहाने वाला) 2 देवताओं की माता,—सोदरः अमृत का भाई, "उच्चैः-

अश्वा:" नामक घोड़ा,—अम्बः अमृत का प्रवाह,—कृत् (वि०) अमृत चुवाने वाला—कु० १।४५।

अमृतकल्प [अमृत+कल्प्] अमृत, अमरतत्व प्रदायक रस।

अमृतता—त्वम् [अमृत+तल्, त्वल् वा] अमरत्व, अमरता।

अमृतेशयः [अलुक् स०] विष्णु (और सागर में सोने वाला)।

अमृषा (अव्य०) [न० त०] झूठपने से नहीं, सचमुच।

अमृष्ट (वि०) [न० त०] न मसला हुआ, न रगड़ा हुआ। सम०—मल (वि०) अक्षुण्ण पवित्रता वाला।

अमेदस्क (वि०) [न० ब० कप् च] जिसमें चर्बी न हो, दुबला-पतला।

अमेधस् (वि०) [न० ब०] बुद्धिहीन, मूर्ख, जड़।

अमेध्य (वि०) [न० त०] 1 जो यज्ञ के योग्य, या अनुमत न हो 2 यज्ञ के अयोग्य—नामेध्य प्रक्षिपेदग्नौ —मनु० ४।५३, ५६, ५।५, १३२, 3 अपवित्र, मल-युक्त, मैला, गंदा, अस्वच्छ—भग० १७।१०, भर्तृ० ३।१०६,—ध्यम् 1 विष्ठा, लीद—समुत्सृजेद्राजमार्गे वस्त्रमेध्यमनापदि—मनु० २।२८२, ५।१२६ 2 अपशकुन, अशुभशकुन—अमेध्य दृष्ट्वा सूर्यमुपतिष्ठेत —कात्या०। सम०—कुणपाशिन् (वि०) मुर्दा खाने वाला, —युक्त, —लिप्त (वि०) मलयुक्त, मैला, मलिन, गंदा।

अमेय (वि०) [न० त०] 1 अपरिमेय, सीमारहित —अमेयो मितलोकस्त्वम्—रघु० १०।१८ 2 अज्ञेय। सम०—आत्मन् अपरिमेय आत्मा को धारण करने वाला, महात्मा, महामना, (पु०) विष्णु।

अमोघ (वि०) [न० त०] 1 अचूक, ठीक निशाने पर लगने वाला—धनुष्यमोघ समधत्त बाणम् कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७, कामिलक्ष्येष्वमोघं —मेघ० ७३, 2 निर्भ्रान्त, अचूक (शब्द, वरदान आदि) —अमोघा प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिष—रघु० १।८४, 3 अव्यर्थ, सफल, उपजाऊ—यदमोघसमागमन्तरत्न बीजमज त्वया—कु० ४।५, इसी प्रकार °बलम्, °शक्ति, °वीर्य, °क्रोध आदि, —घ 1 अचूक 2 विष्णु। सम०—दर्शिन् —दृष्टि (वि०) निर्भ्रान्त मन वाला अचूक नजर वाला, —बल (वि०) अटूट शक्ति सम्पन्न —वाच् (स्त्री०) वाणी जो व्यर्थ न जाय, वाणी जो अवश्य पूरी हो (वि०) जिसके शब्द कभी व्यर्थ न हों —वाञ्छित (वि०) जो कभी निराश न हो, —विक्रम अटूट शक्तिशाली, शिव।

अम्ब् (स्वा० पर०) 1 जाना 2 (आ०) शब्द करना।

अम्ब [अम्ब्+घञ्, अच् वा] पिता, —म्बम् 1 आंख, 2 जल, —म्ब (अव्य०) स्वीकृति बोधक 'हां' 'बहुत अच्छा' अव्यय।

अम्बक [अम्ब्+ण्वुल्] 1. आंख ('त्र्यम्बक' में) 2 पिता।

अम्बरम् [अम्ब शब्दं तं राति ददाति इति—अम्ब+रा+क] 1. आकाश, वायुमंडल, अन्तरिक्ष—शब्दगुणमम्बरम्—रघु० १३।४१, 2 कपड़ा, वस्त्र, परिधान, पोशाक—दिव्यमाल्याम्बरधरम्—भग० ११।११, रघु० ३।९, दिगम्बर, सागराम्बरा मही समुद्र की परिधि से युक्त पृथ्वी 3 केसर 4 अबरक 5 एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। सम०—अन्त 1. वस्त्र की किनारी 2. क्षितिज, —ओकस् (पु०) स्वर्ग में रहने वाला, देवता,—(भस्मरज) विलिप्यते मौलिभिरम्बरौकसाम् —कु० ५।७९, —कुसुम कपास,—मणि, सूर्य,—लेखिन् (वि०) गगनचुंबी—रघु० १३।२६।

अम्बरीषम् [अम्ब+ऋष् नि० दीर्घ०] (कुछ अर्थों में 'अम्बरीषम्' भी) 1 भाड़, कड़ाही 2. क्षार, दुग्ध 3. युद्ध, संग्राम 4. नरक का एक भेद 5. छोटा जानवर, बछड़ा 6 सूर्य 7 विष्णु 8 शिव।

अम्बष्ठ [अम्ब+स्था+क] 1 ब्राह्मण पिता तथा वैश्यमाता से उत्पन्न सन्तान—ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते—मनु० १०।८, याज्ञ० १।९१ 2 महावत 3 (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम, —ष्ठा कुछ पौधों के नाम—(क) गणिका, यूथिका (जूही), (ख) पाठा (ग) वृश्चिका (घ) अंबाड़ा, —ष्ठः, —ष्ठौ अम्बष्ठ जाति का स्त्री।

अम्बा [अम्ब्+घञ्+टाप्] (वैदिक संबोधन—अम्बे, बाद की संस्कृत में—अम्ब) 1 माता (स्नेह अथवा आदर पूर्ण संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है) —भद्र महिला, भद्र माता—किमम्बाभि र्गर्हितं अम्बानां कार्यं निर्वर्तय मा० २, कृतोऽम्बालिङ्गनस्तेन पद्मेन मत्तान् —रघु० १६।१६, 2 दुर्गा, भवानी 3. पांच की माता, काशिराज की कन्या [यह और इसकी दो बहनें भीष्म के द्वारा सन्तानहीन विचित्रवीर्य के लिए अपहृत की गई थीं। क्योंकि अम्बा की सगाई पहले ही शाल्व के राजा से हो चुकी थी अत इसे उन्हीं के पास भेज दिया गया। परन्तु दूसरे के घर में रही होने के कारण शाल्व के राजा ने उसे ग्रहण नहीं किया, अत वह वापिस आई और उसने भीष्म से प्रार्थना की कि वह अब उसे स्वीकार करें परन्तु उन्होंने अपना आजन्मब्रह्मचर्य भंग करना उचित नहीं समझा फलतः वह जंगल में जाकर भीष्म से प्रतिशोध लेने की तपश्चर्या करने लगी। शिव उस पर प्रसन्न हुआ और उन्होंने उसे दूसरे जन्म में अभीष्ट प्रतिशोध दिलाने की प्रतिज्ञा की। बाद में वह द्रुपद के घर शिखण्डिनी के रूप में पैदा हुई, और शिखण्डी कहलाने लगी, और अन्त में वही भीष्म की मृत्यु का कारण बनी]।

अम्बाला-ला [अम्बा+ला+क+टाप्—अम्बीरवेशम् अम्बाला यति] माता।

अम्बालिका [अम्बाला+क+टाप् इत्वम्] 1. माता, मद महिला, (सम्मान तथा स्नेहपूर्वक शब्द) 2. अंबाला नामक पौधा 3. काशिराज की सबसे छोटी पुत्री—विचित्रवीर्य की पत्नी, (यह, सत्यवती ने नितान्त विचित्रवीर्य के लिए एक पुत्र पैदा करने के लिए व्यास का आवाहन किया —तब व्यास के द्वारा उत्पन्न 'पाडु' की यह माता बनी)।

अम्बिका [अम्बा+कन्+टाप् इत्वम्] 1. माता, मद महिला, ('अम्बा' की भांति स्नेह और आदर सूचक शब्द),—अम्बिके अम्बिके मृडानि नमस्तेऽस्तु—मृच्छ० १, 2. शिव की पत्नी पार्वती,—आखण्डलेभकुम्भस्थगनाधिरम्बिकाम्—कु० ६।९०, 3. काशिराज की मझली पुत्री, तथा विचित्रवीर्य की ज्येष्ठ पत्नी, अपनी छोटी बहन की भांति इसके भी कोई संतान नहीं हुई, फिर व्यास के द्वारा इसमें उत्पन्न पुत्र 'धृतराष्ट्र' कहलाये ऊपर दे० 'अम्बा'। सम० —पतिः, —भर्ता शिव, —सुतः, —सुतः धृतराष्ट्र।

आम्बिकेयः,—क [अम्बिका+ढक्] [आम्बिक शुद्ध रूप—'आम्बिकेय' है] गणेश या कार्तिकेय, या धृतराष्ट्र।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब्+उ] 1. जल —यागमम्बु सितमम्बु यामुन—काव्य० १०, 2. रुधिर के अन्तर्गत जलीय तत्त्व। सम० —कण पानी की बूंद, —कपोलः (छोटी नाक वाला) घड़ियाल, —किराटः घड़ियाल, —कीलः, —कूर्म कछुवा, —केशरः नीबू का पेड़, —क्रिया जल तर्पण, पितरों को जलदान, —द, —धर, —धारिन् (वि०) जल में रहने वाला, जलचर, —नदः ओला, —चरम् हील, —ज जल में उत्पन्न, जलज (विप० स्थलज)—मुक्तानीव च यान्यानि स्थलजान्यम्बुजानि च—रामा० (ज) 1. चन्द्रमा, 2. कपूर 3 सारस पक्षी 4 शंख, (जम्) 1. कमल, —दृशीवरेण नयन मुखमम्बुजेन -शृङ्गार० ३, 2. इन्द्र का वज्र, °भू, °आसनः कमल से उत्पन्न देवता, ब्रह्मा, °आसना लक्ष्मीदेवी, —जम् (नपुं०) कमल, (पुं०) 1 चन्द्रमा 2 शंख 3. सारस पक्षी,—तस्करः जलचोर, सूर्य, —द (वि०) जल देने वाला (—दः) बादल—नवाम्बुदानीकदुर्दर्शनाहने—रघु० ३।५३,—दः। 1. बादल —दक्षिणस्यामम्बुवरायां योनौ—कु० ४।४३, अरत्नमृष्टाम्बुधरोपरोधः रघु० ६।४४, 2. अंधेरक, —धिः 1. पानी का आशय, जलपात्र, —अम्बुनिर्घोषः —झिल्ली०, 2. समुद्र, —धारः° भर्तृ० २।६, 3. खार की खदान,—निधिः पानी का खजाना, समुद्र, —देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्मथ्य—कि० ५।३०, —प (वि०) पानी पीने वाला (—पः) 1. समुद्र 2. बादल—जल का स्वामी,—प्रायः जलधारा, जलप्रवाह, नदी या झरना यद्भूम्यम्बुपातप्रतिघा गृहेभ्यः—भट्टि० ३।८, —प्रसादः, —प्रसादम् कतक, निर्मली का बीज—प्रसादयत्यम्बु यथाम्बुप्रसादकम्, न वामनत्वप्रतिषेध तस्य वारि प्रसीदति 1. —बन्धः कमल,—भृत् (पुं०) 1. जलवाहक, बादल 2. समुद्र 3. अंधेरक,—भावज (वि०) जो केवल जल में ही उत्पन्न हो (—जः) शंख—भृत् (पुं०) बादल, —मन्थितभूमितमम्बुभूर्धा चमत्—कि० ५।१२,—राशिः 1. समुद्र 2. बादल,—राशीः जलाशय या पानी का संग्रह, समुद्र—त्वयि ज्वलत्यौर्वमिवाम्बुराशौ—कु० ३।६, चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः,—कु० ३।६७, रघु० ६।५७, ९।८२,—रुह (नपुं०) 1. कमल 2. सारस,—रुह,—रुहम् कमल—विपुलिनान्यूरुहा न सरिदम्बु—कि० ५।१०,—रोहिणी कमल,—वाहः 1. बादल —तडित्वन्तमिवाम्बुवाहम्—कि० ३।१, अर्पयिष्यं प्रियमिवाहे विद्धि मामम्बुवाहम् —मेघ० १०१, 2. शंख 3. जलवाहक,—वाहिन् (वि०) पानी ले जाने वाला (—नी) बादल,—वाहिनी काठ का ढोल, एक प्रकार का पानी उलीचने का बर्तन—विहारः जल क्रीडा, —वेतसः एक प्रकार का बेत, नरकुल जो जल में पैदा होता है, —सरस् जलप्रवाह, जलधारा,—स्रुचिका चोंच —सेचनी जल छिड़कने का पात्र।

अम्बुमत् (वि०) [अम्बु+मतुप्] पनीला, जिसमें जल हो, —ती एक नदी का नाम।

अम्बूकृत (वि०) [अम्बु+च्वि+कृ+क्त] बढ़ बढ़ाया हुआ, होठों को बन्द करके अस्पष्ट रूप से कहा हुआ, मुंह में ही कहा हुआ, मुंह से थूक उछालते हुए कहा हुआ। —तम् बड़बड़ाने का शब्द, भालू के घुरने का शब्द—दधति कुहरजाबाजवं मल्लूकमुनाम्बूरसित-गुरुणि स्वानम्बूकृतानि—उत्तर० २।२१, मा० ९।६ महावी० ५।४१।

अम्बय् (भ्वा० आ०)[अम्भते, अम्भित] शब्द करना, आवाज करना।

अम्भस् (नपुं०)[आप्(अम्भ्)+असुन्] 1 जल—कथमप्यम्भसामन्तरालिष्यते प्रतीक्षते—कु० २।२७, स्नेहमानवार प्राय कोऽम्भसा परिषिञ्चति—शि० २।४५, अम्भसाकृतम्—जल द्वारा किया हुआ, या० ६।२६३, 2 आकाश 3 अम्भकुम्भी में जल के चौथा स्थान। सम०, - ज (वि०) जल में उत्पन्न (—जः) 1 चन्द्रमा 2 सारस पक्षी, (—जम्) कमल—बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्—शृङ्गार० १७, इसी प्रकार पाद°, नेत्र°, °खंड—जम् कमलों का समूह—कुमुदवनमयधि श्रीमदम्भोजखण्डम्—शि० ३।६४, °जन्मन् (पुं०), —जन्मिः,—योनिः कमलोत्पन्न देवता, ब्रह्मा की उपाधि,—जन्मन् (नपुं०) कमल,—द,—दः बादल,

—निधिः,—निधिः,—राशिः जल का भंडार, समुद्र—समुद्रास्तोयनिधिमभ्येति महानद्या नगापगा—शि० २।१००, वादवाम्भोनिधीन्लङ्घे वेलेव भवतः क्षमा ५८, इसी प्रकार—अम्भसां निधिः, शिलाभिराहिलष्टं इवाम्भसां निधि—शि० १।२०, °कल्लम् मूंगा,—वह् (नपुं०—ट्) —वृत्तम् कमल · हेमाम्भोरुहसस्यानां तद्वाप्यो वास सात्रलम्—कु० २।४४, (पुं०) सारस पक्षी,—सारम् मोती,—सूः चन्द्रमा, अमावस ।

अम्भोजिनी[अम्भोज+इनि+ङीप्] 1 कमलका पौधा, कमलों का समूह,—°वनविलासविलासम्—भर्तृ० २।१८, 2 कमलों का समूह 3 वह स्थान जहाँ कमल बहुतायत से हों ।

अम्मय (वि०) [स्त्री०—यी] [अप्+मयट्] जलीय, या जल से बना हुआ ।

अम्ब=पुं० आम्र ।

अम्ल (वि०)[अम्+कल्+अच्]1.खट्टा, तीखा,—कटवम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिन (आहारा)—भग० १७।९, 2. खटास, तीक्ष्णापन, 6 प्रकार के रसों में से एक, 2 सिरका 3 नोनिया साग, इमली, 4 नीबू का वृक्ष 5 उद्गम । सम०—अम्ल (वि०) खट्टा किया हुआ,—उद्गारः खट्टी डकार,—केशरः चकोतरे का वृक्ष,—गन्धि(वि०) खट्टी गंध वाला,—चोरस खट्टी छाछ,—जबीर,—निम्बक नीबू का वृक्ष,—पित्तम् एक रोग जिसमें आहार आमाशय में पहुँच कर अम्ल हो जाता है, खट्टा पित्त,—फल इमली का वृक्ष, (-लम्) इमली,—रस (वि०) खट्टे स्वाद वाला (-सः) खटास, तेजाबी अम्ल,—वृक्ष इमली का वृक्ष, —सार. नींबू का पौधा,—हरिद्रा आवाहल्दीका पौधा ।

अम्लक. [अम्ल+कन् (अल्पार्थे)] लकुच, बडहर ।

अम्लान (वि०)[न० त०] 1 जो मुर्झाया न हो (पुष्पादिक) 2 स्वच्छ, साफ उज्ज्वल (चेहरा), निर्मल, बिना बादलों का, पदार्थन्यायवादेषु कथोऽप्यम्लानदर्शन, —म वाणपुष्पवृक्ष, दुपहरिया ।

अम्लानि (वि०) [न० ब०] सशक्त, न मर्झाने वाला,—नि (स्त्री०) [न० त०] 1 शक्ति 2 ताजगी हरियाली ।

अम्लानिन् (वि०)[न० त०] स्वच्छ, साफ, नी बाणपुष्पवृक्षों का समूह ।

अम्लिका (स्त्री) का [अम्ला+कन् ह्रस्वः, अम्ल-ङीष्+क+टाप् वा] 1 मुंह का खट्टा स्वाद, खट्टी डकार 2 इमली का वृक्ष ।

अम्लिमन् (पुं०) [अम्ल+इमनिच्] खटास, खट्टापन ।

अय् (स्वा०आ०) [कई बार भी, प० विशेषत, उद उपसर्ग के साथ] [अयते, अयाचक्रे, अयितुम्, अयित] जाना । अवतर्° अन्त प्रवेश करना, हस्तक्षेप करना,—दर्दुरक उपसृत्यान्तरयति—मृच्छ० २, अभ्युद्° 1 निकलना (जैसा कि चन्द्रमा, सूरज) 2 फलना-फूलना, समृद्ध होना, उद्° 1 निकलना, उगना(जैसा कि सूर्य)—उपयाति हि शशाङ्क कामिनीवदनपार्श्वतः —मृच्छ० १।५७, 2. प्रकट होना, दिखलाई देना—मुहुर्तो यदिह प्राप्तस्तयोदयनलोहं याजकः—महा० 3 फूटना, उदय होना, जन्म लेना, उत्पन्न होना—तदोदयेदन्यबलानिषेधः —नै० ३।९२, यथाग्नेर्धूम उदयते—शत०, परा° (रात को सोया हो जाने पर) भागना, वापिस होना, भाग जाना ।

अय. [इ+अच्] 1 जाना, चलना, फिरना (अधिकतर समास में—अस्तमय), 2 पूर्वजन्म के अच्छे कृत्य 3 अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत—शुद्धपाणिरवाप्तियं —रघु० ४।२६, 4 खेलने का पासा । सम०—अन्वित, अवत् (वि०) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला, —मुखैः सदा नयवतामवता—कि० ५।२० ।

अयक्ष्मन् स्वास्थ्य का होना, नीरोगता ।

अयज (वि०) [न० ब०] यज्ञ न करने वाला—ज [न० त०] यज्ञ का न होना, बुरा यज्ञ ।

अयज्ञिय (वि०) [न० त०] 1 जो यज्ञ के योग्य न हो (जैसा कि उष्ट्र) 2 जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (जैसा कि यज्ञोपवीत से हीन बालक) 3 लौकिक, संसारी ।

अयत्न (वि०) [न० ब०] बिना ही यत्न किये होनेवाला —°पटवामता—रघु० ६।५५- त्न (न० त०) श्रम या उद्योग का अभाव, अयत्नेन, त्नतः -त्नात्, अनायास, बिना परिश्रम के आसानी से तत्परता के साथ ।

अयथा (अव्य०)[न० त०] जिस प्रकार होना चाहिए वैसे न होना, अनुपयुक्त रूप से अनुचित ढंग से, गलत तरीके से । सम०- अर्थ (वि०) 1 जो बिलकुल भाव के अनुकूल न हो, अर्थहीन भावरहित 2 असंगत, अयाय्य, मिथ्या शा० २।२, अशुद्ध, गलत अनुभवो द्विविधो यथार्थोऽयथार्थश्च तर्क सं०, °ज्ञानम् अशुद्ध या असत्य ज्ञान, गलत भाव, -दृष्ट (वि०) 1 जो इच्छानुकूल न हो, नापसंद 2 अपर्याप्त, नाकाफी —उचित(वि०) अयुक्त, अनुपयुक्त,-त्व(वि०)1. जो जैसा होना चाहिए वैसा न हो, अयुक्त, अनुपयुक्त, अयोग्य, इदमयथात्वं स्वामिनश्चेष्टितम्-वेणी० २, 2 अर्थहीन, व्यर्थ, सारहीन (-त्वम्) (अव्य०) 1. अयुक्तता के साथ, अनुपयुक्तता के साथ, 2. व्यर्थ, अकारण, बेकार,- तद्गच्छति यo -मनु० ३।२४० —त्वम् अनुपयुक्तता, असंगतता, व्यर्थता, —भावित्वम् आशातीत घटना का होना, -पूर्व, पूर्वं (वि०) जो पहले कभी न हुआ हो,अननुभूत, अननुभवी,- भुक्त(वि०) गलत तरीके से कार्य करने वाला,—शास्त्रकारिन् (वि०) शास्त्रानुकूल कार्य न करने वाला, अकार्यिक, —अयथाशास्त्रकारी च न विवादे पिता प्रभु—नारद० ।

अयथावत् (अव्य०) ठीक से, अनुचितरीति से।

अयन [अय्+ल्युट्] 1. जाना, हिलना, चलना, जैसा कि 'रामायणम्' में 2. राह, पथ, मार्ग, सड़क—अयनस्थ-विद्धाश्रयनात्—रघु० १६।४४, 3 स्थान, आवास, घर, 4. प्रवेशद्वार, व्यूह में प्रवेश करने का मार्ग—अयनेषु च सर्वेषु यथास्वामनयस्थिताः—भग० १।११ 5. सूर्य का मार्ग, सूर्य की विषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर गति, 6. (अत एव) इस मार्ग का अवधि-काल, छ मास, एक अयनबिंदु से दूसरे अयनबिंदु तक मार्ग का समय—दे० उत्तरायण, दक्षिणायन, 7. विषुव और अयनसंबंधी बिन्दु,—दक्षिणम् अयनम्-शिशिरऋतु का अयन, उत्तरम् अयनम्—ग्रीष्म अयन 8. अभिप्रायः मत —नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय—श्वेता०। सम०—कालः दोनों अयनों के मध्य की अवधि (दोनों अयनों का अधिकाल),—वृत्तम् ग्रहकक्षा।

अयन्त्रित (वि०) [न० त०] अनियंत्रित, जिसको रोका न जा सके, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला।

अयमित (वि०) [न० त०] 1 अनियंत्रित, 2. जिस पर प्रतिबंध न लगा हो 3. जिसकी काट-छांट न की गई हो, असज्जित (जैसा कि नाखून आदि), —केश० ९२।

अयशस् (वि०) [न० ब०] यशोहीन, अदनाम, अकीर्तिकर ('अयशस्क' भी इसी अर्थ में), (नपु०—सः) अदनामी, अपकीर्ति, कुख्याति, अपमान, निन्दा—अयशो महदाप्नोति—मनु० ८।१२८, किमयशो नु घोरमतः परम्—उत्तर० ३।२७, स्वभावलोकेऽयशसः प्रमृष्टम्—रघु० ६।४१, । सम०—कर (वि०) (स्त्री०—री) अदनाम, कलंकी।

अयशस्य (वि०) [न० त०] अदनाम, कलंकी।

अयस् (नपु०) [इ+असुन्] 1 लोहा,—अग्नितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, 2. इस्पात, 3 सोना, 4. धातु, 5. जल नामक लकड़ी। (पु०) अग्नि। सम०—अक्ष,—अक्षम् हथौड़ा, मूसल,—अंशः 1. लोहे का काच 2. बढ़िया लोहा 3. लोहे का बड़ा परिमाण,—आगः (अयस्कान्त) 1. चुंबक, चुंबक पत्थर,—अयोऽयस्कान्तसंयोगाकृष्टमयस्कान्तेन लोहम्—कु० १।५९ स चकर्ष परस्मात्तमयस्कान्त इवायसम् —रघु० १७।६३, उत्तर० ४।२१, 2 मूल्यवान् पत्थर, °अयिः चुंबक पत्थर—अयस्कान्तमणिसङ्काशेन लोहधातु-मयेन करणसमाकृष्टबुद्धी—मा० १,—आरः लुहार, लोहे का काम करने वाला,—ईशम् लोहे का खंभा या खूंटा—ईषः लोहे का बर्तीय, हंसिया का बायलर आदि, इसी प्रकार —कान्तम्,—कारः लोहे का हथौड़ा—अयोऽयसेनेव समाहितेन—रघु० १४।३३,—कूर्चम् लोहे का पूला, —कांस्यम् लोहे की थाली,—कंटः लोहे की कुल्हाड़ी,—कृत् लोहधातु—उत्तर० ४।२१,—क्रिया लोहे की कृति, —खण्डम् लोहे का खंड, इसी प्रकार °खण्डः, °खण्डः, —गुडः लोहे की गोल बनी हुई डाल—लोहजालक गुडक-मयोगुलेन रघु० ५।५५,—गोलः 1. लोहे की गेंद 2. लोहे की कील, लोहकार लोहे की छड़—रघु० १२।९५, —चूर्णम् 1. लोहे का बारूद 2. इस्पात, तीक्ष्ण उपकरण-सिद्धा०, (तु० आयःशूलिक काव्य० १०, अयः-शूलेन अभिव्यक्तोपचारशूलिकः),—चूडम् (वि०) लोह-दृढ़, कठोर, निष्ठुर,—चूडयो हृदय प्रतिपद्य-ताम् रघु० ९।९।

अयस्कार (अयोकार) (नपु०) [स्त्री०—री] [अयस्+ कार] लोहे का और किसी धातु का बना हुआ।

अयाचित (वि०) [न० त०] न मांगा हुआ, अप्रार्थित (भिक्षा, आहार आदि)—अयाचितं स्याद्याचितम्—मनु० ४।५,—तम् अप्रार्थित भिक्षा। सम०—उपनत,—उप-स्थित बिना निमंत्रण या प्रार्थना के पहुंचा हुआ,—अयाचितोपस्थितमन्नं केवलम्—कु० ५।२२,—वृत्तिः बिना मांगे या अप्रार्थित भिक्षा पर जीवित रहना।

अयाज्य (वि०) [न० त०] 1. (व्यक्ति) जिसके लिए यज्ञ नहीं करना चाहिए, या जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (शूद्रादिक), 2. (अत एव) जाति-बहिष्कृत, पतित 3. यज्ञ करने का अनधिकारी। सम०—याजनम्,—संयाजनम् उस व्यक्ति के लिए यज्ञ करना जिसके लिए किसी को यज्ञ नहीं करना चाहिए —मनु० ३।६५, ११।६०।

अयात (वि०) [न० त०] न गया हुआ,। सम०—याम (वि०) जो बासी न हो, ताजा, जो उपयोग में आने के कारण बीते-बीतें न हुआ हो,—°मं च दीपनम् —दश० १२३, ताजा, खिला हुआ।

अयाथार्थिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1. जो सत्य न हो, न्याय विरुद्ध, अनुचित 2. अवास्तविक, असंगत, बेतुका।

अयाथार्थ्य [न० त०] 1 अयोग्यता, अनुचितता 2. बेतुका-पन, असंगतता।

अयानम् [न० त०] 1 न जाना, न हिलना-डुलना, ठहरना, टिकना 2 स्थायी।

अयि (अव्य०) [इ+इण्] 1. निम्नांकित के प्रति मृदु संबोधन, मोह, ए, अरे आदि सामान्य संबोधन द्योतक अव्यय, —अयि विवेकविभ्रान्तसंभ्रान्तिम् —मालवि० १, अयि भो महर्षिपुत्र—श० ७, अयि विधुरजनदानां त्वमपि च दुखं न जानासि—मृच्छ० ५।१२,दे० भामि० १।५, ११,४४ । 2. प्रार्थना या अनु-रोध द्योतक अव्यय – अयि क्षणति देहि दर्शनम्—कु० ४।२८, प्रोत्साहन तथा अनुनय के अर्थ में भी—अयि मन्दस्निग्धमधुरं वक्तुं त्वमपि अयि मयाकुरुषे—भामि० २।१५०, 3. सामान्य सम्बोधन-सूचक द्योतक अव्यय

—अपि दीक्षितनाथ जीवसि—मृ० ५।२,—अयीदमेव परिहास—५।६२ ।

अयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जो जुता न हो, या जिस पर जीन न कसा गया हो, 2. जो मिला हुआ न हो, सबद्ध या समुक्त न हो 3 जो सक्त या धार्मिक न हो. ध्यान रहित, उपेक्षाशील 4 अभ्यासलापेक्ष, अनभ्यस्त, जो नियुक्त न हुआ हो, °बुद्धि, °चार 5 अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त—अयुक्तोऽयं निर्देश.—पा० ४।२। ६४, महा० 6. झूठ, गलत । सम०—कृत् अनुचित या गलत काम करने वाला,—पदार्थः शब्द का वह अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अपि' शब्द,—रूप (वि०) असगत, अनुपयुक्त,—अयुक्तरूप किसमत पर वह—कु० ५।५९ ।

अयुग—ग (वि०) [न० त०] 1 पृथक्, अकेला 2 ह-खाकड, विषम । सम०—अक्षिन् (पु०) बाज,—ग—नयन:,—हर दे० अयुग के अन्तर्गत,—सप्तिः सात घोड़ो वाला, सूर्य ।

अयुगपद् (अव्य०) [न० त०] 1 सब एक साथ नहीं, क्रमश यथाक्रम, । सम०—ग्रहणम् - क्रमपूर्वक समझना,—भाव: अनुक्रम, बानुक्रमिकता ।

अयुग्म (वि०) [न० त०] 1 अकेला, न्यारा 2 निराला, विषम, (सख्या) । सम०—छद:,- पर्ण सप्तपर्ण नामक पौधा, —नयन:,—नेत्र,—लोचन विषम (३) आँखो वाला, शिव—कु० ३।५१।६९, - बाण:,- हर, विषम (५) बाणो वाला, कामदेव, —बाहु:,—सप्ति सात घोड़ो वाला सूर्य ।

अयुज् (वि०) [न० त०] निराला, विषम (विप० युज् =सम) । सम०—इषु:,—बाण:,—हर पाच बाणो वाला, कामदेव, —छद=सप्तपर्ण वसुरपुकुछद-मुच्छसुगन्धय —शि० ६।५०,—पलाश=सप्तपलाश. —पाद,—यमकम् पहले और तीसरे पाद में भिन्न अर्थों वाले एक से अक्षर रखने वाला अनुप्रास का एक भेद,—नेत्र,- लोचन,—अक्ष, शक्ति शिव ।

अयुत (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत, असबद्ध,- सम् दस हजार, दस सहस्र की सख्या । सम०—अध्यापक अच्छा अध्यापक, सिद्ध (वि०) (वैशे० में) अपृथक्करणीय, अन्तर्निहित, सिद्धि (स्त्री०) ऐसा प्रमाण जिससे निश्चय हो कि कुछ वस्तुए तथा मान्यताए अपृथक्करणीय, तथा अन्तर्हित है ।

अये (अव्यय) [इ+एच्] 1 सबोधनात्मक अव्यय या सबोधन का लघु प्रकार (=अयि)- अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शभो त्रिनयन—भर्तृ० ६।१२३ 2 विस्मयादि द्योतक अव्यय—(क) ओह, अये आदि अव्दो में अनूदित आश्चर्य तथा विस्मय की भावना,—अये मातलि —वि० ६ (ख) उदासी, खिन्नता—अये देव-पादपद्मोपजीविनोऽस्वेयम्- मुद्रा० २, श्लोक (ग) क्रोध (घ) खलबली, क्षोभ (ङ) प्रत्यास्मरण (च) भय (छ) बकाबट ।

अयोग [न० त०] 1 अलगाव, वियोग, अन्तराल 2 अयोग्यता, अनौचित्य, असगति 3 अनुचित सबध 4 विधुर, अनुपस्थित प्रेमी या पति 5 हठधर्मी (अयोग तथा अयोगन) 6 अरुचि ।

अयोगवः (स्त्री० - वा,- वी) [अय इव कठिना गौर्यादी दस्य- ब० स० नि० अच्] शूद्र पिता और वैश्य माता की सन्तान दे० आयोगव ।

अयोग्य (वि०) [न० त०] जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, निरर्थक ।

अयोध्य (वि०) [न० त०] जिस पर आक्रमण न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके, —अद्यायोध्या महाबाहो अयोध्या प्रतिभाति न —रामा०, —ध्या सरयू नदी के तट पर स्थित वर्तमान अयोध्या नगरी, रघुवश में उत्पन्न सूर्यवशी राजाओ की राजधानी ।

अयोनि (वि०) [न०ब०] 1 अजन्मा, नित्य, —अगस्योनिरयो-निस्त्वम् कु० २।९ 2 जो कोख से उत्पन्न न हो, अवर्म अथवा अवैध रूप से उत्पन्न, —नि (स्त्री०) [न० त०] जो योनि न हो, -नि ब्रह्मा, शिव, सम०, —ज,- -जन्मन् (वि०) जो अयोनि से न जन्मा हो, सामान्य जन्मपद्धति के अनुसार जिसने जन्म न लिया हो तनयाम् मयोनिजाम् रघु० ८८, कन्या-मलमयोनिजन्म भवतामस्मे मन्यामहे १।३०, ईश. ईश्वर शिव,(-जा) सीता का पुत्री सीता जो कि खेत के खूड से उत्पन्न हुई थी ।

अयौगपद्यम [न० त०] समकालीनता का अभाव ।

अयौगिक (वि०) [स्त्री० - की] [न० त०] व्याकरण के नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अर [ऋ+अप्] पहिये के अरे या पहिये का अर्धव्यास (°रा भी)- अरै सहार्यते नाभि नाभौ चारा प्रतिष्ठिता — पच० १।८१, । सम० अतर (ब० व०) अरो का अन्तराल —विक्रम० १।४, कृत्, —कृत: 1. रहट जिसके द्वारा कूएं मे पानी निकाला जाता है, °वाली रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला छोल,- -कूप-मासाद्य °दीमार्गेण सर्पन्तेनानीत पच० ४, 2 बहेरा कुआं ।

अरजस्, अरज, अरजस्क (वि०) [न० ब०] 1 धूल या गर्द से रहित, साफ स्वच्छ (आल० भी) 2, रज या वासना से मुक्त 3 जिसे मासिक धर्म न होता हो, (स्त्री० - जा:) वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म आरंभ नही हुआ ।

अरण्यु (वि०) [न० ब०] जिसमें रास्ता न सूझे हो, रास्तों से विरहित; (नपुं०) कारागार।

अरणिः (पुं०,स्त्री०) [स्त्री०—णी] आग की लकड़ी का टुकड़ा, जिसके घर्षण से यज्ञ के अवसर पर अग्नि उत्पन्न की जाती है, आग उत्पन्न करने वाली लकड़ी—तु०, पंच० १।२१६,—णी (द्वि० व०) यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने के लिए लकड़ी की दो सलियाएं, —णिः 1. सूर्य, २ आग 3. फलीता, चकमक पत्थर।

अरण्यम् (कई बार पुं० भी) [अर्यते गम्यते ऽत्रेति अरि—ऋ+अन्य] जंगल, वन, उजाड़, —प्रियालाम्बे कुरल किल जगदरण्यं हि सवति उत्तर० ६।३०, माता मन्य यद्दे नालि आर्या चाधिगच्छाहिनी, अरण्यं तेन वनाम संचारण्यं तथा गृहम् —पंच० ४४, जंगली, जंगल में उत्पन्न (यदि समस्त पद का प्रथम अवयव हो), °औषधम् जंगली औषध, इसी प्रकार °आलूकः, °शूकरः। सम०—अध्यक्षः वन की देख रेख करने वाला, रक्षिक,—अयनम्,—यानम् जंगल में चले जाना, वानप्रस्थ लेना,—ओकस्,—सद् (वि०) 1 अरण्यवासी, जंगल में रहने वाला—वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः—श० ४।५, 2 विशेषतः वह जिसने अपना परिवार छोड़ दिया हो और वानप्रस्थी हो गया हो, जंगल में रहने वाला,—कदली जंगली केला, अजः जंगली हाथी (जो पालतू न हो),—कदक जंगली चिड़िया —कार्पासी (स्त्री०) जंगल में बनस्पति का प्रकाश (आलं०) निरर्थक शृंगार या आभूषण, ऐसा बनाव-सिंगार जिसे कोई देखने सराहने वाला न हो, इसी लिए मल्लिनाथ—स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेष - कु० ७।२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं -अन्यथा-ऽरण्यकर्षिका स्यादिति भावः, -चर (°क्षेचर भी), - जीव (वि०) जंगली, ज (वि०) वन्य,- धर्मः जंगली अवस्था या प्रथा, जंगली स्वभाव, तथारण्य-धर्मोद्विजोऽयं ग्राम्यधर्मे नियोजित पंच० १, - नृपतिः -पालः (द्वि०) राजा जंगल का स्वामी, सिंह या व्याघ्र का विशेषण, इसी प्रकार अरण्यानी पतिः,—पंडितः वन में विद्वान् (आलं०) मूर्ख पुरुष जो वन में ही (जहाँ कोई सुनने-टोकने वाला नहीं होता) अपना पाण्डित्य प्रकट कर सके, - पद्म (वि०) जंगल में उत्पन्न, जंगली, -पक्षिका दासः,- यानम् जंगल में चले जाना,- रक्षकः अरण्यपालः, -वसितम् (°क्ये) जंगल में रोना, अरण्यरोदनं (आलं०) ऐसा रोना जिसे कोई सुनने वाला न हो, निष्फल कथन—अरण्ये मया ह्यदितम्—श० २, प्रोक्तं श्रद्धाविहीनस्य अरण्यरुदितोपमम्—पंच० १।३२३, तदलमनुचारण्यरुदितेन —अमरु० ७६,—वासः जंगली कौवा, पहाड़ी कौवा,—वासः,—स्थायिनः जंगल में चले जाना, जंगल में आवास,—वासिन् (वि०) जंगल में रहने वाला (पुं०) अरण्यवासी, वानप्रस्थी,—विलासिन्, —विहारः (°क्षे°) = °वासिन्—शुनः(पुं०) जंगली कुत्ता, भेड़िया,—हस्ती जंगली हाथी की मादा।

अरण्यक [अरण्य+कन्] जंगल, वन।

अरण्यानी-नी (स्त्री०) [अरण्य+आनुक् ङीष् च] एक बड़ा जंगल, या बीहड़ भयभूमि, विस्तृत उजाड़।

अरत (वि०) [न० त०] 1. मन्द, निरस्त, अनासक्त 2. अक्रीड़ायुक्त, तुष्टिरहित, परानुरक्त,—सम् अवैधुन। सम०—कर (वि०) वैधुन करने में न लगाने वाला (—क:) कुशा (धर्मशास्त्र में जिस किसी प्रकार की संख्या के वैधुन करने वाला)।

अरति (वि०) [न० त०] 1. अक्रीड़ायुक्त 2. तुष्ट, निश्चल, —तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. आमोद-प्रमोद का अभाव (ग्रेम की प्रबल उत्कण्ठा से पैदा होने वाला), —स्वाभीष्टसत्यक्तोपेक्षेतरो वा अरतिः सा—का० द० 2. पीड़ा, कष्ट 3. चिन्ता, खेद, बेचैनी, क्षोभ,—अरतेः शुभमरतिं हि सद्भिर्बोधः—कि० ५।५१, 4 असन्तोष, संतोषाभाव, 5. निश्चलता, सुस्ती 6. एक वैदिक रोग।

अरत्निः (पुं० स्त्री०) [ऋ+कनिन्=रत्नि, स वासिद्ध वत्र] 1. कुहनी, कई बार मुक्का, 2. एक हाथ की माप, कुहनी से कानी उंगली के छोर तक की माप, कलाई नापने का पैमाना - अरत्निमात्रं निष्कनिष्ठेन मुष्टिना-अमर०, अध्यर्धमुष्टिकूर्परयोर्मध्ये प्राजापत्यं कर, बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्नि. सकनिष्ठिक. । हला०, कि० १८।६, ।

अरत्निकः [अरत्नि+कन्] कुहनी।

अरम् (अव्य०) [ऋ+अम्] 1 तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित 2 तत्परता के साथ।

अरमण, अरमणाय (वि०) [न० त०] 1 जो सुखकर न हो, असन्तोषजनक, अरुचिकर 2 अविराम, अनवरत।

अररः [ऋ+अरन्] किवाड़ का पल्ला-अररवररावि द्वारपाद्वारय महावी० ६।२७,(—र:-री, रा)—अरव-कोटिविघाटितारररुटो यास्यामहं पञ्जरात्—मालवि० १।५८, 2 ढकना, म्यान,—र: मारी।

अरारे (अव्य०) [अर+रा+के] (क) बड़े उत्तेजनापन (ख) तथा घृणा और अवज्ञा को प्रकट करने वाला संबोधन द्योतक अव्यय —अरारे महाराज प्रति दुरः क्रियया —मच०।

अरविन्दम् [अरान् चक्रावलीव पत्राणि विन्दते—अर+विन्द्+क] 1. कमल (कामदेव के पाँच बाणों में से एक—दे० 'पञ्चबाण' के नीचे)—अस्यारविन्दसुरभेः—श० ३।६, यह सूर्य-कमल है—तु०सूर्यांशुभिन्नमिव विकचारविन्दम् —कु० १।३२; स्वर्ण, चरण°, मुख° आदि 2. आंख या नीला कमल,—द: 1. सारस पक्षी, 2.

तारा। सम०—अक्ष (वि०) कमल जैसी आंखों वाला, विष्णु की उपाधि,—दलप्रभम् तारा, —नाभि, —भः विष्णु,—हृदयो मर्दाय देवदेवकास्तु भगवानरविन्दनाभ — भाग० ४।८,—सद् (पु०) ब्रह्मा।

अरविन्दिनी [अरविन्द+इनि+ङीप्] 1 कमल का पौधा —प्रणीतमधुका भृङ्गै सुदिवेवारविन्दिनी—भट्टि० ५।७०, 2 कमल फूलों का समूह 3 वह स्थान जहां कमल बहुतायत से होते हों।

अरस (वि०) [न० ब०] 1 रसहीन, नीरस, फीका 2 मंद, बुद्धिहीन 3 निर्बल, बलहीन, अयोग्य।

अरसिक (वि०) [न० त०] 1 रूखा, रसहीन, फीका, बिना स्वाद का, 2 भावना या स्वाद से विरहित मन्द, काव्यादि का रस लेने में असमर्थ, कविना के मर्म को न जानने वाला अरसिकेषु कवित्वनिवेदन शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख उद्भट०।

अरागः, अरागिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] शान्त, वासना रहित,—तमहमरागमकृपण कृष्णद्वैपायन वन्दे—वेणी० १।४।

अराजक (वि०) [न० ब०] बिना राजा का, जहां राजा न हो - नाराजके जनपदे राजा०, मनु० ७।३, अराजके जीवलोके दुर्बला बलवत्तरैः, पीडयते न हि किंचिद् प्रभुत्व कस्यचित्तदा। महा०, शोच्य राज्यमराजकम् चाण० ५७।

अराजन् (पु०) [न० त०] जो राजा न हो। सम० - भोगीन (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त, स्थापित (वि०) जो किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया गया हो, अवैध, गैरकानूनी।

-रातिः [न० त०] 1 शत्रु, दुश्मन, -देशं सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् ह्रदा पूरिता—वेणी० ३।३१, 2 छ की संख्या। सम०- भय शत्रुओं का नाश।

अराल (वि०) [ऋ-विच् अरम् आलाति, ला+क] मुड़ा हुआ, टेढ़ा, पादाब्जरागालङ्कृतौ मालवि० २।८, स 1. वक्र भुजा 2 मत्तवाला हाथी,—ला पुश्चली, वेश्या वारांगना। सम० - केशी घुंघराले बालों वाली स्त्री, -स्त्रिय निराक्रामदरालकेश्या—रघु० ६।८१, -पक्ष्मन् (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला—कु० ५।४९।

अरि [ऋ+इन] 1 शत्रु दुश्मन, विजित्यारिपुरं रघु० १।५९, ६१, ४।४ 2 मनुष्य जाति का शत्रु [मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले ६ शत्रु बताये गये हैं काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सर, —कृतारिषड्वर्गजयेन - कि० १।९ 3 छ की संख्या 4 गाड़ी का भाग 5 पहिया। सम०—कर्षण (वि०) शत्रुओं को पीड़ित या पराभूत करने वाला,—कुलम् 1 शत्रुओं का समूह, 2 शत्रु,—घ्न शत्रुओं का नाश करने वाला, -जित्वरम्,—जित् शत्रुओं के नाश के लिए बनाई हुयी योजनाएँ, विशेष विधान का प्रशासन, -नन्दन (वि०) शत्रु को प्रसन्न करने वाला, शत्रु को विजय दिलाने वाला, अद्य बद्धा शक्तिसखी शत्रु—रघु० १६।२१,—सूदन,—हन्,—हिंसक शत्रुओं का नाश करने वाला रघु० ९।१८।

अरिक्थभाज्, अरिक्थीय (वि०) [न० त०] जो पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे कि कोई नपुंसकता आदि अवगुणों के कारण अनधिकृत कर दिया गया हो)।

अरित्रम् [ऋ+इत्र] 1 डांड, खोलैररिभैश्चरणैरिवाभित शि० १७।७१, 2 पतवार, लंगर।

अरिन्दम (वि०) [अरि+दम्+खच्, मुमागम] शत्रुओं का दमन करने वाला शत्रु विजयी शत्रु का जीतने वाला।

अरिष्टम् [न० त०] न्यायालय द्वारा होना -ड एक प्रकार का गठियारोग।

अरिष्ट (वि०) [न० त०] अक्षत, पूर्ण, अविनाशी, निरापद -ष्टः 1 बगुला 2 जंगली कौआ 3 शत्रु 4 नाना प्रकार के पौधों के नाम (क) रीठे का वृक्ष (ख) नीम का वृक्ष 5 लहसुन, -ष्टम् 1 दुर्भाग्य आनन्द बर्द्धिकर्मती 2 दुर्भाग्यसूचित अनिष्टसूचक घटना, अपशकुन 3 प्रतिकूल लक्षण-विशेषतः मृत्युसूचक रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्ष्यते तल्लक्षणमरिष्टं स्यादरिष्टमणीधीयते 4 सौभाग्य, अच्छी किस्मत मुख 5 सोना 6 छाछ 7 मादक शराब -शि० १४।७३, सम०—गृहम् सूतिकागृह, शान्ति (वि०) सौभाग्यशाली या सुखी बनाने वाला, शुभ, —तिः (स्त्री०) सुरक्षा, सौभाग्य का उत्तराधिकार, अनवरत सुख, तदवश्यता विध्यन्त्यरिष्टा काममरिष्टशान्तिमाशास्महे - महावी० १, अरिष्टशिव, विष्णु, सप्तमी प्रसूता का पलंग अरिष्टसप्तमी परिता विभारिणा - रघु० ३।१५, -सूचकः,—सूत्रम् (पु०) अरिष्टनाशक, विष्णु की उपाधि।

अरुचि (स्त्री०) [न० त०] 1 अनिच्छा, किसी वस्तु को अच्छा न लगना,—स्व सा भागानामुपभोगेषु—का० १४६ 2 मुख न लगना, स्वाद न लगना, प्रकृतः आना—सन्निपातलक्षणबालकालहिकाकविघ्नभूत्—सुश्रु० 3 मनोरंजक व्याख्या का अभाव।

अरुचिर, अरुच्य (वि०) [न० त०] अच्छा न लगने वाला अरुचिकर, उकताहट पैदा करने वाला।

अरुज् (वि०) [न० त०] रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग।

अरुक (वि०) [न० त०] स्वास्थ्य, नीरोग।

अरुण (वि०) (स्त्री—णा,—णी) [ऋ+उनन्] 1. अरुणरंग का या कुछ २ लाल, भूरा, पिंगल, लाल, सुनहरी (प्रातःकालिमा के विपरीत प्रभातकालीन सूर्य का रंग) —तपनाभ्यवकाशानि पूर्वमरुणः—कु० ४। १२, 2. विशिष्ट,

अरुण 3. वृक्ष-कः 1. लाल रंग, उषा का रंग या प्रातः कालीन सन्धारागेह, 2. सूर्य का सारथि—सूर्य उषा, —आविष्कृतारुण पुरःसर एकतोऽर्कः—श० ४।१, ७।४ विभावरी यद्यरुणाय कल्पते—कु० ५।४४, रघु० ५।७१, 3. सूर्य—रविरेव बालारुणकोमलेन कु० ३।३०, सस्पृश्यते सरसिजैरनुमित्रभावात्—रघु० ५।६६,—क्ली 1 लाल रंग, 2 सोना 3 केसर। सम०—अक्षः अरुक्ष,—अनुज,—अवरजः अरुण का छोटा भाई, गरुड़, —अश्विन् (पु०) सूर्य,—आत्मजः 1 अरुण का पुत्र जटायु, 2 अग्नि, सावर्णि मनु, कर्ण, सुग्रीव, यम और अश्विनीकुमार (—जा) यमुना, ताप्ती,—ईक्षण (वि०) लाल आँखों वाला -उदयः दिन निकलना, उषा, —यत्तो घटिका प्रातरुदयोदय उच्यते,-उपलः लाल, —कमलम् लाल कमल, —ओतिस् (पु०) शिव,—किंजः लाल फूल या कमलों का प्यारा, सूर्य (—जा) 1. सूर्य पत्नी 2. छाया,—लोचन (वि०) लाल आंखों वाला (—नः) कबूतर,—सारथिः जिसका सारथि अरुण है, सूर्य।

अरुणित, अरुणीकृत (वि०) [अरुण+क्विप् (या० धा०)+क्त, अरुण+च्वि+कृ+त इत्वम्] लाल किया हुआ, लालरंग में रंगा हुआ, सिंदूर रंग का किया हुआ स्तनाङ्गरागार्द्रितताम्र कन्दुकात्—कु० ५।११।

अरुन्तुद (वि०)[अरुंषि मर्माणि तुदति-दृति अरुस्+तुद्+क्विप् मुम् च] मर्मस्थानों को छेदने वाला, घायल करने वाला, पीड़ाजनक, तीक्ष्ण, मर्मवेधी-अरुन्तुदं यद्वचनं ललाट-प्रभिधायास्य दर्शितं -रघु० १।७१, कि० १४।५५, 2 तीक्ष्ण, उग्र कटुस्वभाव।

अरुन्धती [न रुन्धती प्रतिरोधकारिणी] 1 वशिष्ठ की पत्नी—अरुन्धतिसमस्तत्वा स्थास्यंत्र हविर्भुजम्—रघु० १।५६, 2 प्रभात कालीन तारा, वशिष्ठ की पत्नी, सप्तर्षिमण्डल का एक तारा (पुराणों के अनुसार वशिष्ठ सप्तर्षियों में एक हैं तथा अरुन्धती उनकी पत्नी। अरुन्धती, कर्दम प्रजापति की (देवहूति से उत्पन्न) ९ पुत्रियों में से एक थी। वह दाम्पत्य-महत्ता का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, आदर्शोचित भक्ति के कारण विवाह संस्कार में वर के द्वारा उसका आवाहन किया जाता है। स्त्री द्वारा हुए यों उसको यहां सम्मान दिया गया है, या सप्तर्षियों को रघु० कि० ६।१२, अपने पति की भांति वह भी रघुवंश के अपने निजी विभाग की निर्देशिका और नियन्त्रिका रही, राम से परित्यक्त सीता का निर्देशन देवदूत के रूप में उसी ने किया। कहते हैं कि जिनका मरण-काल निकट हो, उन्हें अरुन्धती तारा दिखलाई नहीं देता हि० १।७६)। सम०—आसनः,—गेहः—पतिः वशिष्ठ, सप्तर्षिमण्डल का एक तारा,—वशिष्ठन्यायः दे० 'न्याय' के नीचे।

अरुष्क (वि०) [न० त०] अक्षुब्ध, शांत।

अरुष (वि०) [न० त०] 1. अक्षुब्ध, 2. चमकीला, उज्ज्वल।

अरुष् (वि०) [ऋ+रुषि] घायल, चोट खाया हुआ,—(पुं—क्ष) 1. आक का पौधा, मदार 2. लाल शरीर,—(नपुं०) 1. मर्मस्थल, घाव, क्षत (पुं० भी)। सम०—कर (वि०) क्षतविक्षत करने वाला, घायल करने वाला।

अरूप (वि०) [न० ब०] 1. रूप रहित, आकार शून्य 2. कुरूप, विकृत 3 विषम, असम,—क्ली 1. एक बुरी या बड़ी आकृति 2. सांख्यों का प्रधान तथा वेदान्तियों का ब्रह्म। सम०—मूर्ति (वि०) जो सौन्दर्य से आकृष्ट या वशीभूत न किया जा सके, अकल्पहार्य मदनस्य विग्रहाए—कु० ५।५१।

अरूपक (वि०) [न० ब०] बिना किसी आकृति या रूपक के, जो आलंकारिक न हो, आक्षरिक।

अरे (अव्य०) [ऋ+ए] एक संबोधनात्मक अव्यय—(क) छोटों को बुलाने के लिए—आरात् वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्य, न वा अरे पत्युः कामायात्मा पतिः प्रियो भवति-बृह० (याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा) (ख) क्रोधावेश में—अरे महाराज प्रति कुरु शिक्षां—उत्तर० ४ (ग) ईर्ष्या प्रकट करने के लिए।

अरेपस् (वि०) [न० ब०] 1 निष्पाप, निष्कलंक 2. निर्मल पवित्र।

अरे रे (अव्य०) [अरे-अरे इति वीप्सायां द्वित्वम्] विस्मयादि बोधक अव्यय (क) क्रोध पूर्वक बुलाना अरे रे दुर्योधनप्रभृतां कुरुबलसेनाप्रभव.—वेणी० २. अरे रे बाबाट-त०(ख) अपने से छोटों को संबोधित करना या घृणापूर्वक बुलाना—अरे रे राधागर्भभारभूत सूतापसद-त०।

अरोक (वि०) [न० ब०] कान्तिहीन मलिन,धुंधला।

अरोग (वि०) [न० ब०] रोगमुक्त, नीरोग, स्वस्थ अच्छा,—अरोगा सर्वसिद्धार्थाश्चतुर्वर्षशतायुष.—सुश्रु०, —ग. अच्छा स्वास्थ्य -न नामसादेव करोत्यरोगम्—हि० १।१६७।

अरोगिन्, अरोग्य (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ।

अरोचक (वि०) [स्त्री० चिका] [न० त०] 1. जो चमकीला न हो 2. भूख बंद करने वाला,—कः भूख का कम लगना, अरुचिकर, जुगुप्सा।

अर्क् (चु० प०) 1. अर्चा करना 2. स्तुति करना।

अर्क[1] [अर्क्+अच्,-कुत्वम्] 1 प्रकाशकिरण, बिजली की चमक 2. सूर्य,—आविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः—श० ४।१, 3. अग्नि 4 स्फटिक 5 तांबा 6. रविवार 7 आक का पौधा, मदार—अर्कस्येवोपरि विततिं च्युतमिव नवमल्लिकाकुसुमम्—श० २।९ मयमिव न विभाव्य सुप्तार्कं.यान्ति सेवकाः, वीरबंधस्तपतिरस्कारम्:

सहस्रमुष्टयस्त्रयोऽपि शत्—पंच० १।५१, ३ इन्द्र, ९ आहार 19 बारह की संख्या। सम०—अक्षरम् (पु०) —उदयः सूर्यकान्तमणि,—आह्वः मदार, आक,—इन्दुसूक्ष्मः सूर्य और चन्द्रमा का संयोग,(दर्श, या अमावस्या), —आत्मजा सूर्यपत्नी,—आत्मजः एक प्रकार का रक्तचन्दन, —आः कर्ण की उपाधि, यम, सुग्रीव (—औ) स्वर्ग के वैद्य अश्विनीकुमार,—तनयः सूर्य पुत्र कर्ण का विशेषण, यम और शनि दे० 'अर्कात्मज' (—जा) यमुना और ताप्ती नदियां,—प्रिय (स्त्री०) सूर्य की ज्योति,—प्रिया,—वासरः रविवार,—सन्धनः, —पुष्पः,—मूलः,—मूलकः शनि, कर्ण और यम के नाम, —रत्नम्,—वास्यः कमल (सूर्य-कमल)।—सम्भवम् सूर्यमण्डल,—विवाहः मदार से विवाह (तीसरा विवाह करने वाले पुरुष के लिए पहले मदार से विवाह करने का विधान किया गया है, ताकि तीसरी पत्नी चौथी हो जाय), —चतुर्वादिविवाहार्हं तृतीयं कं समुद्वहेत् काव्यप०।

अर्कः—कम् अर्कला—ली } [अर्च्+कलच् स्वार्थिकवादि कुत्व—टाप्] अगरी, खिल्ली या अर्गल (यह दरवाजे का बन्द करके रखने के लिए लकड़ी के बने यन्त्र हैं) ओंडा सिटकिनी, आगल, —पुरार्कलादीर्घभुजो बुभोज रघु० १८।४ १६।६, अनाकृतार्गलम्—मृच्छ० २, समश्नुवन्तु दुष्प्रापिनार्कलां निमीलिताक्षीव भियाऽवरावलीं—शि० १ अर्गल० से यह शब्द बाधा, रोक या अवरोध के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है—ईप्सित नवयज्ञायार्द्धिं मार्गेण यात्मन—रघु० १।७९, बाधित वायवस्त्रा०ं इव प्रवृत्ता—५।४५, कण्ठे केवलमर्गलं निहितवान् बाष्पस्य निर्गन्तुम्—काव्य० ८, दे० 'अनर्गल' भी 2 अरण्य या झाल।

अर्कलिका [अर्गला+कन्+टाप् इत्वम्] नगर आगल छोटी चटखनी।

अर्घ् (भ्वा० पर०) [अर्घति, अर्घित] मूल्यवान् होना मूल्य रखना, मूल्य आंकना अपरीक्षकाः खलु न जानन्ति रत्नानि समुद्रजानि सुभाषि०।

अर्घ [अर्घ्+घञ्] 1 मूल्य, कीमत —कुर्यूरर्घ यथापथ्य—मनु० ८।३९८ याज्ञ० २।२५१ कुरुष्व न कुपरीक्षकाहि मणयो मैरन्तं पातिता—भर्तृ० २।१०, कालक्रिय मूल्य से घटी हुई, अवमूल्यित, इसी प्रकार अनर्घ अमूल्य, महार्घ मूल्यवान् 2 पूजा की सामग्री, देवताओं या सम्माननीय व्यक्तियों को सादर आहुति या उपहार कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै मेघ० ४ (इस आहुति का सामान निम्नांकित है—आप और कुशाग्र च दधि सर्पि सतण्डुलम्। यव सिद्धार्थकश्चैव अष्टाङ्गोऽर्घ प्रकीर्तित। दे० 'अर्घ्य' नीचे। सम० —अर्ह (वि०) सामान्य उपहार के योग्य,—अवावलम् मूल्य को दर, उचित मूल्य, मूल्यों में घटत बढ़त —अवावलम्, मूल्यावधारण, वस्तुओं का मूल्यनिर्धारण करना, कुर्वीत चैवा (वणिग्भाम्) प्रत्यक्ष धर्मेणमन्त्रापन नृप —मनु० ८।४०२।

अर्घीश (पु०) शिव।

अर्घ्य (वि०) [अर्घ+यत् अर्घमर्हति] 1 मूल्यवान्, **अर्घ्य**—अनमोल दे० ग० के नी० 2 सम्माननीय—तानर्घ्यानर्घ्यमादाय दूरान्प्रत्युद्ययौ गिरिः—कु० ६।५०, शि० १।१४, —र्घ्यम् किसी देवता या सम्माननीय व्यक्ति को सादर आहुति या उपहार, अर्घ्यमस्मै विक्रम० ५, ददतु वार्च पूर्णैरर्घ्यं फलैश्च मधुद्रुहन उत्तर० ३।२४, अर्घ्यमर्घ्यमिति वादिन नृपम् रघु० ११।६९, कु० १।५८, ६।५०।

अर्घ् (भ्वा० उभ०) [अर्घति-ते, अर्घित] 1 (क) पूजा करना, अभिवादन करना, सत्कार करना—रघु० १।६, ९० २।२१, ४।८४, १२।८९, मनु० ३।१०३ —आर्चीद् द्विजानीन् परमार्घविन्दान् भट्टि० १।१५, १४।६३, १७।५ (ख) सम्मान करना अर्थात् अलंकृत करना सजाना—उत्तर० २।९ 2 स्तुति करना (वेद०), (च० पर० या प्रेर०) सम्मान करना, अलंकृत करना पूजा करना स्वर्गं कल्पमचितमर्चयिष्यति—कु० १।९ अभि, समभि—पूजा करना, अलंकृत करना सम्मान करना अभ्यर्चितमभ्यर्च्य मृत सिसक्षति—भट्टि० ६।२१, भग० १।१।६ ग 1 स्तुति करना, प्रतिष्ठान करना 2 सम्मान करना, पूजा करना, प्रत्यर्चनीया जयदक्षिणीयम्—भट्टि० २।२०।

अर्चक (वि० [अर्च्+ण्वुल्] पूजा करने वाला आराधना करने वाला—क पुत्रक पुरुषेद्धिराचक—मनु० ११।२२५।

अर्चन (वि०) [अर्च्+ल्युट्] पूजा करने वाला, स्तुति करने वाला —नम, —ना पूजा, आदर में बड़ों का और देवों का आदर व सम्मान।

अर्चनीय, अर्च्य (वि० कृ०) [अर्च्+अनीय यत् वा] पूजा या आराधना करने के योग्य, सम्माननीय आदरणीय—रघु० २।१० भर्तृ० ९।७८।

अर्चा [अर्च्+अङ् टाप्] 1 पूजा आराधना 2 वह प्रतिमा या मूर्ति जिसकी पूजा की जाय यौगैर्हिरण्यादिभिरिज्यां प्रकल्पिया मद्रा०।

अर्चि (स्त्री०) [अर्च्+इन्] किरण, (बाल की) ज्वाला या (प्रकाश-युक्त या सहित) ज्योति,—आलीढासन्ननिर्वाणप्रदीपार्चिरिवाबभौ—रघु० १२।१, नैवाग्न्यार्चिर्हुतमुज इव स्निग्धमूर्धिष्ठजह्वा—विक्रम०।

अर्चिष्मत् (वि०) [अर्चिस्+मतुप्] चमकदार, उज्ज्वल चमकदार-विक्रम० ३।२, (पुं०) 1 अग्नि, 2 सूर्य।

अर्जिन् (वि०) (—र्जिः) [अर्ज्+इनि] 1. प्रकाशकिरण, लो,—अर्जिनार्चिर्हविराददे—रघु० ३।१४, 2. प्रकाश, चमक,—अजमार्जिषाम् —कु० २।२०, रत्न० ४।१६, (स्त्री० र्जी), (पु०) 1. प्रकाशकिरण 2. अग्नि।

अर्ज् (भ्वा० पर०) [अर्जति, अर्जित] 1. उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाना —आय प्रेर०, इस अर्थ में—पितृद्रव्यार्जितेनैव स्वयमर्जितवर्जितम्—या० २।११८, 2 बढ़ना करना—आनर्जुर्नृपवोऽस्त्राणि भट्टि० १४।७४, (चु० पर०—वा प्रेर०) उपार्जन करना, अधिकार में करना, प्राप्त करना —स्वयमर्जित, स्वार्जित, अपने आप कमाया हुआ। उप— प्राप्त करना या उपार्जन करना।

अर्जक (वि०) [स्त्री०—जिका] [अर्ज्+ण्वुल्] उपार्जन करने वाला, अधिकार में करने वाला, प्राप्त करने वाला।

अर्जयत् [अर्ज्+ल्युट्] प्राप्त करना, अधिग्रहण करना —अर्जनार्जने दुःखम् —पंच० १।१६१, अर्जयित्व्यापारोऽर्जनम्— दाय०।

अर्जुन (वि०) [स्त्री० —ना, —नी] [अर्ज+उनन्, णिलुक् च] 1 सफेद, चमकीला, उज्ज्वल, दिन जैसा रंगीला,—पिशङ्गभौमार्जुनमर्जुनाक्षम्—शि० १।६, 2 धवला,— नः 1 श्वेतरंग 2 मोर 3 धुनकारी काम वाला अर्जुन नामक वृक्ष 4 इन्द्र द्वारा कुन्ती से उत्पन्न तृतीय पाण्डव (इसीलिए इसे 'ऐन्द्रि' भी कहते हैं) [अपने कार्यों में पवित्र और विशुद्ध होने के कारण—वह अर्जुन कहलाया। द्रोणाचार्य से उसने शस्त्रास्त्र की शिक्षा ली, अर्जुन द्रोण का प्रिय शिष्य था। अपने शस्त्र-कौशल के द्वारा ही उसने स्वयंवर में द्रौपदी को जीता। अनिच्छापूर्वक किसी नियम का उल्लंघन हो जाने के कारण उसने स्वयंकालिक निर्वासन ग्रहण किया तथा इसी बीच परशुराम से शस्त्रविज्ञान का अध्ययन किया। उसने नागराजकुमारी उलूपी से विवाह किया —जिससे इरावत् नामक पुत्र पैदा हुआ। उसके पश्चात् उसने मणिपुर के महाराज की कन्या चित्रांगदा से विवाह किया—इससे बभ्रुवाहन का जन्म हुआ। इसी निर्वासन-काल में वह द्वारका गया और वहाँ कृष्ण के परामर्शानुसार सुभद्रा से विवाह करने में सफलता प्राप्त की। सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। उसके पश्चात् उसने खाण्डव-वन को जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे कि उसने 'गाण्डीव' धनुष प्राप्त किया। जब उसके ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज ने जुए में राज्य खो दिया और पाँचों भाई निर्वासित कर दिए गए तो वह देवताओं का अनुग्रहण करने के लिए हिमालय पर्वत पर गया जिससे कि कौरवों के साथ होने वाले युद्ध में उपयोग करने के लिए उसके दिव्य शस्त्रास्त्र प्राप्त हो सकें। वहाँ उसने किरातवेशधारी शिव से युद्ध किया, परन्तु जब उसे अपने विरोधी के वास्तविक परिचय का ज्ञान हुआ तो उसने उनकी पूजा की, शिव ने भी प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपतास्त्र दिये। इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर ने भी अपने-अपने अस्त्र उसे उपहारस्वरूप दिए। अपने निर्वासनकाल के तेरहवें वर्ष में पाण्डव राजा विराट् की नौकरी करने लगे—अर्जुन कंचुकी के रूप में नृत्यगान का शिक्षक बना। कौरवों के साथ महायुद्ध में अर्जुन ने अद्भुत वीर्य का परिचय दिया। उसने कृष्ण की सहायता प्राप्त की, उसे अपना सारथि बनाया। जिस समय युद्ध के पहले ही दिन अर्जुन ने अपने बन्धु-बान्धवों के विरुद्ध धनुष उठाने में संकोच किया—उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'भगवद्-गीता' का उपदेश दिया। उस महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने कौरव सेना के नायक, भीष्म तथा कर्ण आदि अनेक दुर्दान्त योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। जिस समय युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राज्यसिंहासन पर आसीन हुआ—तो उसने अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया—फलतः अर्जुन की संरक्षकता में एक घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन ने अनेक राजाओं से युद्ध किया तथा अनेक नगर और देशों में घोड़े का अनुसरण किया। मणिपुर पहुँचने पर उसे अपने ही पुत्र बभ्रुवाहन से युद्ध करना पड़ा। फलतः अर्जुन, जब इस प्रकार बभ्रुवाहन से लड़ता हुआ युद्ध में मारा गया तो अपनी पत्नी उलूपी द्वारा दिये गए जादू-मन्त्र से वह पुनर्जीवित किया गया। उसने इस प्रकार सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया। जब नाना प्रकार की भेंट, उपहार तथा अपहृत सम्पत्तियों के साथ वह हस्तिनापुर वापिस आया—तो उस समय अश्वमेध यज्ञ किया गया। उसके पश्चात् कृष्ण ने उसे द्वारका में बुलाया—और जब पारस्परिक गृह-युद्ध में यादवों का अंत हो गया तो अर्जुन ने वसुदेव और कृष्ण की अन्त्येष्टि-क्रिया की। इसके बाद शीघ्र ही पाण्डवों ने अभिमन्यु के एक मात्र पुत्र परीक्षित को हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया तथा स्वयं स्वर्ग की यात्रा को चल दिये। पाँचों पाण्डवों में अर्जुन सबसे अधिक पराक्रमी, उदार, शूरवीर, सुंदर और उच्च विचारों का व्यक्ति था—अपने सब भाइयों में वही प्रमुख व्यक्ति था] 5. कार्तवीर्य—जिसे परशुराम ने मौत के घाट उतारा था—दे० कार्तवीर्य, 6. अपनी माता का एक मात्र पुत्र, —नी 1. दूती, कुटनी 2. वी 3. एक बड़े जिले 'फतेहाबाद' कहते हैं, —नद्य नाद। सम०—उपाट दायभाग का पुत्र, —क्षीर (वि०)

उज्ज्वल, उज्ज्वल रंग वाला, —ध्वज केतु-ध्वजा वाला, हनुमान् ।

अर्जुनः [ऋ+न] 1 सागवान का वृक्ष 2 (वर्णमाला का) एक अक्षर ।

अर्णवः [अर्णांसि सन्ति यस्मिन्—अर्णस् + व, सलोपः] (फेनयुक्त) समुद्र, सागर (आल० भी) लोक° शोक का समुद्र, इसी प्रकार चिंता°, जल° जलसमुद्र, संसारार्णवलंघन—भर्तृ० ३।१० । सम०—अन्तः सागर की सीमा,—उडुप चन्द्रमा (—पा) लक्ष्मी, (—मन्थ) अमृत,—पोतः,—यानम् किश्ती या जहाज,—वेलिः 1 सागर वाली वरुण, जलों का स्वामी 2 विष्णु ।

अर्णस् (नपु०) [ऋ+असुन् नुट् च] जल । सम०—दः बादल,—भव जल ।

अर्णस्वत् (वि०) [अर्णस्+मतुप्] बहुत अधिक पानी रखने वाला, (पु०) सागर ।

अर्तनम् [ऋत्+ल्युट्] निन्दा, फटकार, अपशब्द या गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) [अर्द्+क्तिन्] 1 पीडा, शोक, दुःख—शिरोऽर्ति सिर-दर्द 2 धनुष का किनारा ।

अर्तिका [ऋत्+ण्वुल्] बडी बहन (नाटय साहित्य में) ।

अर्थ् (चु० आ०) [अर्थयते, अर्थित] 1 प्रार्थना करना, याचना करना, गिडगिडाना, मागना, अनुरोध करना, दीन भाव से मागना (द्विकर्मक)—वामिममर्थमर्थयते—दश० ७१, तमभिक्रम्य सर्वेऽस्य वयं चार्थमहे वसु—महा०, प्रहस्तमर्थयाञ्चक्रे योद्धुम् भट्टि० १४।९९, 2 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, चाहना, इच्छा करना, अभि—मागना, गिडगिडाना, प्रार्थना करना—इमं सारङ्ग प्रियाप्रवृत्तिनिमित्तमभ्यर्थये—विक्रम० ४, अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददौ—रघु० ४।३८, अभिप्र—1 मागना, प्रार्थना करना 2 चाहना, प्र—1 मागना, प्रार्थना करना, याचना, प्रार्थना—तेन भवन्त प्रार्थयते—श० २ 2 चाहना, आवश्यकता होना, इच्छा करना, प्रबल अभिलाष रखना,—अहो विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धय —श० ३, स्वर्गमिति प्रार्थयन्ते—भग० ९।२०, भट्टि० ७।४८, रघु० ७।५०, ६४, 3 ढूढना, तलाश करना, खोज करना,—प्रार्थयध्वं तथा सीताम् भट्टि० ७।४८ 4 आक्रमण करना, टूट पडना—अमी अश्वानीकेन यवनाना प्रार्थित —मालवि० ५, दुर्योधनो लक्ष्मण-मूर्ती विशल्य भाव्येनाभिमन्युमिति रघु० १५।५ ।७६ प्रति 1 (युद्ध के लिए) ललकारना मुकाबला करना शत्रुवत् व्यवहार करना—एते सीतादुःखस्यान्तं प्रत्यर्थयन्त राक्षसम् भट्टि० ६।२५, 2 किसी को शत्रु बनाना, सम् 1 विश्वास करना, सोचना, ख्याल रखना, चिंतन करना—समर्थये यत्प्रथम प्रिया प्रति विक्रम० ४।३९, मया न साधु समर्थितम् —विक्रम० २, अनुपयुक्तमिदमात्मान समर्थये—श० ७, 2 समर्थन करना, सहायता करना, प्रमाणद्वारा सिद्ध करना—उक्तमेवार्थमुदाहरणेन समर्थयति, समभि—,अव—याचना करना, प्रार्थना करना आदि ।

अर्थ [ऋ+थन्] 1 आशय, प्रयोजन, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिलाष, इच्छा—आतार्थो ज्ञानसबन्ध श्रोतु श्रोता प्रवर्तते, सिद्ध °परिपथी—मुद्रा० ५, समास के उत्तर पद के रूप मे प्राय इसी अर्थ में प्रयुक्त होता तथा निम्नाकित अर्थों में अनूदित किया जाता है 'के लिए' 'के निमित्त' 'की खातिर' 'के कारण' 'के बदले में', सज्ञाओं को विशेषित करने के लिए विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होना है—सन्तानार्थाय विधये—रघु० १।३४ तां देवतापित्रतिथिक्रियार्थां (धेनुम्) २।१६, द्विजार्थो यवागू सिद्धा०, यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र—भग० ३।९, क्रिया विशेषण के रूप में भी यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होना है यथा—अर्थम्, अर्थे या अर्थाय; किमर्थम्—किस प्रयोजन के लिए, वेलोपलक्षणार्थम्—श० ४ तद्दर्शनादभूच्छम्भोर्भूयान्दारार्थमादर —कु० ६।१३, गवार्थे ब्राह्मणार्थे च पच० १।४२०, मदर्थे त्यक्तजीविता —भग० १।९, प्रत्याख्याता मया तत्र नलस्यार्थाय देवना —नल० १३।१९, ऋतुपर्णस्य चार्थाय—२३।९, 2 कारण, प्रयोजन, हेतु, साधन—अलुप्ततत्त्व मुने क्रियार्थ—रघु० २।५५, साधन या हेतु 3 अभिप्राय, तात्पर्य, सार्थकता, आशय—अर्थ तीन प्रकार का है —वाच्य (अभिधात), लक्ष्य (संकेतित या गौण) और व्यग्य (ध्वनित) तद्दर्शी शब्दार्थौ—काव्य० १, अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङ्ग्यश्चेति त्रिधामत —सा० द० २, 4 वस्तु या विषय पदार्थ, सारांश—अर्थो हि कन्या परकीय एव श० ४।२१, जो ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके, ज्ञानेन्द्रिय की वस्तु, इंद्रिय°—हि० १।१४६, कु० ७।३१ इन्द्रियेभ्य पराञ्चार्थां अर्थेभ्यश्च परं मन —कठ० (ज्ञानेन्द्रियों के विषय पाँच हैं रूप रस गध, स्पर्श और शब्द) 5 (क) मामला, व्यापार, काम काज—प्राक् प्रतिपन्नोऽयमर्थीत्युत्तराय—वेणी० ३, अर्थोऽयमर्थान्तरभाव्य एव —कु० ३।१८, अर्थोऽर्थानुबन्धी—दश ५३, सङ्कल्पार्थं—मेघ० ५६, साधन-व्यापार अर्थात् समवेत गात्र (गात्रीकरण), सन्देशार्थां —मेघ० ५, सदेश की बातें अर्थात् सदेश (ख) हित इच्छा (स्वार्थसाधनतत्परः—मनु० ४।१९६, द्वयमेवार्थसाधनम् रघु० १।१९, नापार्थे १।७२, सर्वार्थचिन्तक—मनु० ७।१२१, मालविकाया न मे कश्चिदर्थ —मालवि० (ग) विषय-सामग्री, विषय-सूची—स्वामवलम्बार्थं करिष्यामि—मुद्रा० (मैं आपको विषय-सामग्री से परिचित कराऊँगा),

तेन हि अन्य गृहीतार्थो भवामि—विक्रम० २, (यदि ऐसी बात है तो मुझे इस विषय की जानकारी होनी चाहिए), 6. दौलत, धन, सम्पत्ति, रुपया—स्वलाभ सदृशमर्थलिप्साम्—रघु० १।७, विमर्शो कष्टलभ्यार्थः—पंच० १।१६३, 7. धन या सांसारिक ऐश्वर्य का प्राप्त करना, जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक—अन्य तीन हैं '—धर्म, काम और मोक्ष; धर्म, काम और अर्थ मिलकर प्रसिद्ध त्रिक बनता है, तु० कु० ५।३८,—अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः—रघु० १।२५, 8 (क) उपयोग, हित, लाभ, भलाई; —तथा हि सर्वं तस्यासन् परार्थफलता गुणाः—रघु० १।२१, दाक्षायण्यै उदपात्रे सर्वतः संप्लुतोदके—भग० २।४६, ३० अर्थ और निरर्थक भी (ख) उपयोग, आवश्यकता, जरूरत, प्रयोजन—करण० के साथ; —कोऽर्थः पुत्रेण जातेन—पंच० १ (उस पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ?) करण तेनार्थः—दश० ५९, कोऽर्थस्त्रिभुवनेन—भर्तृ० २।३३, कूर व्यक्ति गुणों की क्या परवाह करते हैं? भर्तृ० २।४८, —योग्येनार्थः कस्य न स्याज्जनेन—शि० १८।६६, सैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन—भग० ३।१८, 9 मांगना, याचना, प्रार्थना, दावा, याचिका 10. कार्यवाही, अभियोग (विधि०) 11 वस्तुस्थिति, याथार्थ्य, जैसा कि यथार्थ, और अर्थेन मे—°तत्त्वविद् 12 रीति, प्रकार, तरीका 13 रोक, दूर रखना—मयाकार्षो श्रमं, प्रतिषेधं, उन्मूलन 14. विष्णु। समः —अधिकारः रुपये-पैसे का कार्यभार, कोषाध्यक्ष का पद०, °रे न नियोक्तव्यो—हि० २,—अधिकारिन् (पुं०) कोषाध्यक्ष,—अन्तरम् 1 अन्य अभिप्राय या भिन्न अर्थ 2 दूसरा कारण या प्रयोजन—अर्थोऽयमर्थान्तरभाव्य एव कु० ३।१८ 3. एक नई बात या परिस्थिति, नया मामला 4 विरोधी या विपरीत अर्थ, अर्थ में भेद, °न्यासः एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष या विशेष से सामान्य का समर्थन होता है, यह एक प्रकार का विशेष से सामान्य अनुमान है अथवा इसके विपरीत - उक्तिरर्थान्तरन्यास स्यात सामान्यविशेषयोः। (१) इन्दुरानन्दयत्यद्य कुमुदं किं महात्मनाम्। (२) गुणवद्वस्तुसंसर्गादाति नीचोऽपि गौरवम्, पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते॥ कुवलय०, तु० काव्य० १० और सा० द० ७०९, अन्वित (वि०) 1. धनवान्, दौलतमंद 2. सार्थक, —अर्थिन् (वि०) जो अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए या धन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, —अलंकारः साहित्यशास्त्र में वह अलंकार जो या तो अर्थ पर निर्भर हो, या जिसका निर्णय अर्थ के किया जाय, शब्द से नहीं (विप० शब्दालंकार), —आगमः 1. धन की प्राप्ति, आय 2. किसी शब्द के अभिप्राय को बतलाना,—आपत्तिः (स्त्री०) 1. परिस्थितियों के आधार पर अनुमान लगाना, अनुमानित वस्तु, फलितार्थ, ज्ञान के पाँच साधनों में से एक अथवा (मीमांसकों के अनुसार) पाँच प्रमाणों में से एक, प्रतीयमान असंगति का समाधान करने के लिए यह एक प्रकार का अनुमान है, इसका प्रसिद्ध उदाहरण है '—मोटा देवदत्त दिन में न खाये, यह देवदत्त के 'मोटेपन' और 'दिन में न खाने' की असंगति का समाधान 'वह रात को अवश्य खाता होगा' अनुमान से किया जाता है; 2. एक अलंकार (कुछ साहित्यशास्त्रियों के अनुसार) जिसमें एक सम्बद्ध उक्ति से ऐसे अनुमान का सुझाव मिलता है जो प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध नहीं रखता—या इसके ठीक विपरीत है; यह कैमुतिकन्याय या दण्डापूपन्याय से मिलता जुलता है; उदा०—हारोऽयं हरिदासीनां मुक्तिः स्तनमण्डले, मुक्तासामान्यसम्बन्धे के वयं स्मरकिङ्कराः। अमरु० १००, अतितप्तमनोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३,—आपत्तिः (स्त्री०) धन प्राप्ति, इसी प्रकार °अर्थागमम्, —°आक्षेपकः (नाटकों में) एक परिच्छेदात्मक दृश्य—अर्थोपक्षेपका. पंच—सा० द० ३०८,—आश्रय जो उपमा अर्थ पर निर्भर रहे, शब्द पर नहीं दे० 'उपमा' के नीचे—उच्चय (पु०) धन की चमक या वर्षा—अर्थोच्चयश्च विरहिष्यु पुरुषस्य एव—भर्तृ० २।४०,—ओघः—राशिः कोष, धन का भंडार,—कर (स्त्री०—री),—कृत् (वि०) 1 धनी बनाने वाला 2. उपयोगी, लाभदायक,—काम (वि०) धन का इच्छुक, (—मी—हि० ब०) धन और चाह या सुख, रघु० १।२५,—कृच्छ्रम् 1. कठिन बात 2. आर्थिक कठिनाई—न मुहुरर्थकृच्छ्रेषु-नीति०—कृत्यम् किसी कार्य का सम्पन्न करना—अभ्युपेतार्थकृत्यता =वेद० ३८,—गौरवम् अर्थ की गहराई—भारवेरर्थगौरवम्—उद्भट०, कि० २।२७,—घ्न (वि०) (स्त्री० घ्नी) अतिव्ययी, अपव्ययी, फिजूलखर्च,—तत्त्व (वि०) अर्थ से परिपूर्ण (—त्वम्) 1 वस्तुओं का संग्रह 2. धन की बड़ी रकम, बड़ी सम्पत्ति,—तत्त्वम् 1. वास्तविक सचाई, यथार्थता, 2. किसी वस्तु की वास्तविक प्रकृति या कारण,—द (वि०) 1. धन देने वाला, 2. लाभदायक, उपयोगी 3. उदार,—दूषणम् 1. अतिव्यय, अपव्यय 2. अन्यायपूर्वक किसी की संपत्ति ले लेना, या किसी का उचित पावना न देना, —दोषः (अर्थ की दृष्टि से) साहित्यिक त्रुटि या दोष, साहित्य-रचना के चार दोषों में से एक—दूसरे तीन हैं '—वाच्य दोष, पदांशदोष और रसस्य दोष, इनकी व्याख्याओं के लिए दे० काव्य० ७,—निबन्धन (वि०)

धन के ऊपर आश्रित,—निश्चयः निर्धारण, निर्णय, —पतिः 1 'धन का स्वामी', राजा,—किंचिदिहस्यार्थपतिं प्रसादये—रघु० १।५९, २।४६, ९।३, १८।१, पंच० १।७४, 2 कुबेर की उपाधि,—पुर,—लुब्ध (वि०) 1 धन प्राप्त करने पर फूटा हुआ, लालची 2 कंजूस, —प्रकृतिः (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख साधन या अवसर, (इन साधनों की संख्या पाँच है,—बीज बिन्दु पताका च प्रकरी कार्यमेव च, अर्थप्रकृतय पञ्च ज्ञात्वा योज्या यथाविधि—सा० द० ३१७), —प्रयोगः व्याजखोरी,—बंधः शब्दों का यथाक्रम रचना, रचना, पाठ, श्लोक, चरण—शि० ७।५ ललितार्थबन्धम् विक्रम० २।१४,—बुद्धि (वि०) स्वार्थी,—बोधः वास्तविक आशय का संकेत,—भेदः अर्थों में भेद—अर्थभेदेन शब्दभेदः,—भाक्, —भाज् सम्पत्ति, धन-दौलत, —युक्त (वि०) सार्थक,—लाभः धन की प्राप्ति,—लोभ लालच,—वादः 1 किसी उद्देश्य की घोषणा, 2 निश्चयात्मक घोषणा, घोषणाविषयक प्रकथन, व्याख्यापरक टिप्पणी, किसी आशय की उक्ति या कथन, वाक्य (इसमें उचित अनुष्ठान के करने से उत्पन्न फलों का वर्णन करते हुए किसी विधि की अनुशंसा की जाती है, साथ ही अपने पक्ष के समर्थन में ऐतिहासिक निदर्शन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित अनुष्ठान न करने से अनिष्ट फल मिलता है) 3 प्रशंसा, स्तुति,—अर्थवाद इव, दोष तु मे कथितवयउत्तर० १,—विक्लवः 1 सचाई से इधर-उधर होना, सत्यों का तोड़-मरोड़, 2 अपलाप, °वैकल्यम् भी, —वृद्धिः (स्त्री०) धन-संचय, —व्ययः धन का खर्च करना, °ज्ञ (वि०) रुपये-पैसे की बातों का जानकार—शास्त्रम् 1 धन-विज्ञान (सार्वजनिक अर्थशास्त्र) २. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजनय —य० १२०, इह खलु अर्थशास्त्रकारास्त्रिविधा सिद्धिमुपवर्णयंति —मुद्रा० ३ °व्यवहारिन् राजनीतिज्ञ, 3 व्यावहारिक जीवन का शास्त्र,—सौचम् रुपये-पैसे के मामले में ईमानदारी या सत्यपन—अर्थेषु चैव सौचात्तामर्थशौच पर स्मृतम्—मनु० ५।१०६, —संग्रहणम् 1 धन का संचय 2. कोष, —संबन्धः वाक्य का शब्द से अर्थ का संबंध, —सारः बहुत धन—पंच० २।४२,—सिद्धि (स्त्री०) अभीष्ट सिद्धि, सफलता।

अर्थतः (अव्य०) [अर्थ+तसिल्] 1 अर्थ या किसी विशेष उद्देश्य का उल्लेख करते हुए,—यथार्थतो गौरवम्—मा० १।७, अर्थ की गहराई, 2 वस्तुतः, वास्तव में, सचमुच,—न नामतः केवलमर्थतोऽपि—शि० ३।५६, 3 धन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए—ऐश्वर्याद्नपेतमीश्वरमय लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४ 4. के कारण।

अर्थना [अर्थ्+युच्+टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, याचिका—नै० ५।११२।

अर्थवत् (वि०) [अर्थ+मतुप्] 1 धनवान् 2. सार्थक, अभिप्राय या अर्थ से परिपूर्ण,—अर्थवान् शब्दः मे राजशब्दः—श० ५, 3 अर्थ रखने वाला—अर्थवद्ग्रहणानुवर्त्यम् प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५ 4. किसी प्रयोजन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी।

अर्थवत्ता [अर्थ+मतुप्+तल्+टाप्] धन-दौलत, सम्पत्ति।

अर्थात् (अव्य०) ['अर्थ' का अपा० का रूप] 1 सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह, वस्तुतः—भूमिकेव दम्भो भणित इत्यनेन तत्सहचरितमपूरणमत्रमर्थादापातं भवति—सा० द० १०, 2 परिस्थिति के अनुसार, तथ्यानुसार 3 कहने का भाव यह है कि, मानो के अनुसार।

अर्थिकः [अर्थयते इत्यर्थी+कन्] 1 चिल्लाने वाला, चौकीदार, 2 विशेषतः आठ जिसका कर्तव्य दिन के विभिन्न निश्चित समयों की (जैसा कि जागने का, सोने का, या भोजन करने का) घोषणा करना है।

अर्थित (भू० क० कृ०) [अर्थ्+क्त] प्रार्थित, याचित, इच्छित—तम् चाह, इच्छा, नालिश।

अर्थित-त्वम् [अर्थिन्+तल् टाप्, त्वम् वा] 1 मांगना, प्रार्थना करना, 2 चाह, इच्छा।

अर्थिन् (वि०) [अर्थ्+इनि] 1 प्राप्त करने की चेष्टा करने वाला, अभिलाषी, इच्छुक—करण० के साथ अथवा समास में—कोषदण्डाभ्याम् —मुद्रा० ५, को वयमेव यमार्थी स्यात्—महा०, अर्थार्थी—पंच० १।४।९, 2. अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला (सब० के साथ)—अर्थी वरुरुचिर्मत्तः—कथा० 3 मनोरथ रखने वाला, (पुं०) 1 याचक, प्रार्थयिता, भिक्षुक, दीन याचक, निवेदक, विवाहार्थी—यथाकामार्थिनार्थिना —रघु० १।६, २।६४, ५।३१, ९।२७, कोऽर्थी गतो गौरवम्—पंच० १।१४६, कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतास्ते वयं चार्थिन —महावी० १।३०, 2 (विधि में) वादी, अभियोक्ता, प्राभियोक्तृ,—स यमर्थयमानश्च शपथैर्धर्मप्रत्यर्थिना स्वयं, दर्शयं सत्यमर्थेभ्यो व्यवहारानतन्द्रित —रघु० १७।३९, 3. सेवक अनुचर। समः —आढ्य याचना, मांगना, प्रार्थना मा० ९।१०, —तस् (क्रि० वि०) भिखारियों के अधिकार में करके —विभज्य देयं धर्मज्ञैरार्थिभ्यस्तदर्थतः - नै० १।१६।

अर्थीय (वि०) [अर्थ+छ] 1. पूर्वनिर्दिष्ट, अभिप्रेत, कष्ट उठाना आदि में व्यय या—शरीर यातनार्थीयं—मनु० १२।१६, 2 संबंध रखने वाला—अर्थं चैव तदर्थीयं—मनु० १७।२७।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+यत्] 1. जिससे सर्वप्रथम याचना की जाय, 2 योग्य, उचित 3. उपयुक्त, आवश्यक के

इधर उधर न हाल वाला, साधक —स्तुत्य स्तुतिभिरर्थिभिरप्यभिरूपतरस्ये वरस्त्रजो—रघु० ४।६, कु० २।३, 4. धनी, दौलतमंद 5 समझदार, बुद्धिमान्,—अर्थम् देखो।

अर्द् (स्वा० पर०) [अर्दति, अर्दित] 1 दुःख देना, व्यथित करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना—रक्षः सहस्राणि चतुर्दशार्दीत्—भट्टि० १२।५६ देखो नीचे प्रेर०, 2 मांगना, प्रार्थना करना, निवेदन करना —निर्गोलिताद्रुगर्भं शरदघन नार्दति चातकोऽपि—रघु० ५।१७, (प्रेर० या स० पर०) 1 (क) सताना, पीड़ित करना, दुःखाना—कामार्दित, कोप°, भय° आदि (ख) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, वध करना येनार्दितम् दैत्यपुरं पितामही—भट्टि० २।४६, अति —अधिक सताना, आक्रमण करना, टूट पड़ना—अत्यार्दीत् बालिनः पुत्रम्—भट्टि० १५।११५, अभि दुःखाना, सताना, पीड़ित करना।

अर्दन (वि०) [अर्द् + ल्युट्] दुःखाने वाला, सतानेवाला, —नम् पीड़ा, कष्ट, चिन्ता, उत्तेजना, क्षोभ,—नम्, -ना 1 आना, हिलना 2 पूछना, माँगना 3 वध करना, चोट पहुँचाना, पीड़ा देना।

अर्ध (वि०) [ऋध् + णिच् + अच्] आधा, आधा भाग बनाने वाला, -र्धम्, -र्धः 1 आधा, आधा भाग —सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डित, गतमर्धं दिवसस्य -विक्रम० २, यदर्धं विच्छिन्न—श० १।९, आधा-आधा बँटा हुआ (अर्ध शब्द को लगभग सब संज्ञा व विशेषण शब्दों के साथ जोड़ा जा सकता है संज्ञा के साथ समास में प्रथमपद के रूप में इसका अर्थ है — आधा °काय -अर्धकायस्य, विशेषणों के साथ इसका अर्थ क्रियाविशेषणात्मक है, °श्याम= आधा काला, क्रमसूचक संख्याओं के साथ "संख्या का आधा" अर्थ होता है, °तृतीयम्= दो और आधा तीसरा अर्थात् अढ़ाई। नम० अक्षि (नपु०) अर्धोन्मीलित दृष्टि, आँख का झपकना—मृच्छ० ८।४२, -अङ्गम् आधा शरीर —अंशः, आधा भाग, आधा हिस्सा, -अंशिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार, —अर्क, —अर्कम् 1 आधे का आधा, चौथाई—चरोरर्धभागाभ्यां तामभोजयतामुभे -रघु० १०।५६, 2 आधा और आधा,—अर्कवेलकः आधासीसी, आधे सिर की पीड़ा,—अवशेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष बचे,—आसनम् 1 आधा आसन —अर्धासन गोदभिदोऽधिसप्ठी —रघु० ६।७३, मम हि दिवौकसो समक्षमर्धासनोपवेशिनस्य—श० ७ (आगन्तुक अतिथि को अपने ही आसन पर अर्धासन देना अत्यधिक सम्मान का चिह्न समझा जाता था) 2 सम्मानपूर्वक अभिवादन करना 3. निन्दा से मुक्ति - इन्दुः 1 आधा चाँद, दूज का चाँद, 2 अंगुली के नाखून की अर्धचन्द्राकार छाप, नखेन्दु के आकार की नख-छाप—नै० ६।२५, 3. बालचन्द्र के आकार के समान सिर वाला बाण (=अर्धचन्द्र नी०), °मौलि शिव,—मेध० ५६,—उक्त (वि०) आधा कहा हुआ,—रामभद्र इति अर्धोक्ते महाराज—उत्तर० १, उक्तिः (स्त्री०) अस्पष्टवाणी, अस्पष्टोच्चरित वाणी, —उदय 1 अर्ध चन्द्रमा का निकलना 2. आंशिक उदय, °आसनम् समाधि में बैठने का एक प्रकार का आसन,—ऊरुकम् स्त्रियों के पहनने का अन्तर्वस्त्र, पेटीकोट, —ऊन (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण, —कारम्, -री एक प्रकार का बाण, आधी आरी —गंगा काबेरी नदी, इसी प्रकार °आह्लवी,—गुच्छः २४ लड़ियों का हार,—गौरः गोलाई,—चंद्र (वि०) बालेन्दु के आकार वाला, (—न्द्रः) 1. आधा चन्द्रमा, बालेन्दु—सार्धचन्द्र विभर्ति यं —कु० ६।७५, 2 मोर की पूँछ पर अर्धचन्द्राकार चिह्न, 3 बालचन्द्र के आकार के सिरे वाला बाण—अर्धचन्द्रमर्धेन्दुशिरश्छेद कदलीषूच्यम्—रघु० १२।९०, 4 बालचन्द्र के आकार की नख-छाप 5. अर्धवृत्त के रूप में झुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पकड़ने के लिए मोड़ा गया हो. °हं दा —गर्दनिया देकर बाहर निकालना—दीयतामेतस्यामर्धचन्द्र —पंच० १, —चन्द्राकार,—चन्द्राकृति (वि०) आधे चन्द्रमा के आकार वाला,—जीवक अलिया,—दिवस् —दिवसः 1 आधा दिन, दिन का मध्यभाग, 2. १२ घण्टे का दिन,—नाराचः बालचन्द्र के आकार का लोहे की नोक वाला बाण,—नारीशः,—नारीश्वरः शिव का एक रूप (आधा पुरुष तथा आधी स्त्री), —निशम् आधी रात्रि,—निशा मध्यरात्रि, आधी रात —पञ्चाशत् (स्त्री०) पचीस,—पक्षः आधे पक्ष की मास, -पथम् आधा मार्ग (—थे) मार्ग के मध्य में, —प्रहरः आधा पहरा, डेढ़ घण्टे का समय,—भागः आधा, आधा भाग या हिस्सा,—तदर्धभागेन समस्य काङ्क्षितम् —कु० ५।५०, रघु० ७।४५,—भागिक (वि०) आधे भाग का साझीदार,—भाज् (वि०) 1 आधे भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधिकारी, 2 साझी, साझीदार,—भास्करः दिन का मध्यभाग, दोपहर,—मागधकः,—मात्रः १२ लड़ियों का हार, (मात्रक २४ लड़ियों का होता है), —मात्रा 1 आधी मात्रा, 2 व्यञ्जन वर्ण,—मार्गे (अव्य०) मार्ग के बीच में—विक्रम० १।३,—मासः आधा महीना, एक पक्ष,—मासिक (वि०) 1. प्रत्येक पक्ष में होने वाला 2 एक पक्ष तक रहने वाला, —मुष्टिः (स्त्री०) आधा भिचा हुआ हाथ,—यामः आधा पहर,—रथः किसी दूसरे के साथ रथ पर बैठ

कर युद्ध करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता)—रणे रणेऽभिमानी च विमुखश्चापि दृश्यते, धृती कर्णे प्रमादी च तेन मेऽर्धरथो मतः महा०, —रात्र आधीरात—अर्धार्धरात्रे स्तिमितप्रदीपे —रघु० १६।४,—विसर्ग,—विसर्जनीय क् ल् तथा प् फ् से पूर्व विसर्गध्वनि,—वीक्षणम् तिरछी चितवन, कनखी,—वृद्ध (वि०) अधेड़ उम्र का, —वैनाशिक कणाद का अनुयायी (अर्धविनाश का तार्किक)—वैशसम् आधा या अपूर्णवध —कु० ४।३१, —व्यास. वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी, —शतम् पचास,—शेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष रहा है,—श्लोक आधाश्लोक या श्लोक के दो चरण,—सीरिन् (पु०) 1 बटाईदार, अपने परिश्रम के बदले आधी फसल लेने वाला किसान —याज्ञ० १।१६६, 2 =दे० अधिक,—हार ६४ लड़ियों का हार,—ह्रस्व लघु स्वर का आधा।

अर्धक (वि०) [अर्ध+कन्] आधा, दे० 'अर्ध'।

अर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्धमर्हति—अर्ध+ठन्] 1. आधी नाप रखने वाला 2 आधे भाग का अधिकारी,—कः वर्णसंकर,—वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः, अर्धिक स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशय —पराशर०।

अर्धिन् (वि०) [अर्ध+इनि] आधे भाग का साझीदार।

अर्पणम् [ऋ+णिच्+ल्युट् पुकागम] 1 रखना, स्थिर करना, जमाना,—पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्—रघु० २।३५, 2. बीच में डालना, रखना, 3 देना, भेंट करना, त्यागना,—स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण—रघु० २।५५, मुखार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भा —१३।९, तत्कुरुष्व मयार्पणम्—भग० ९।२७, 4 वापस करना, देना, लौटा देना आदि° अमर० 5 छेदना, गोदना—तीक्ष्णतुण्डार्पणैर्यावां नखैं सर्वा व्यदारयत्—रामा०।

अर्पित [ऋ+णिच्+इतुच् पुकागम] हृदय, हृदय का मांस।

अर्व् (भ्वा० पर०) [अर्वति, आनर्व, अर्वितुम्] 1 की ओर जाना, 2 वध करना, चोट मारना।

अर्वुद (दं) द्दः—द्दन् [अर्व् (र्दं)+विच्—उद्—द+ड] 1 सूजन, (नाना प्रकार की) रसौली 2 दस करोड़ की संख्या 3 भारत के पश्चिम में स्थित आबू पहाड़, 4 साँप, 5 बादल 6 मांस पिंड 7. साप जैसा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था।

अर्भक (वि०) [अर्भ+कन्] 1 छोटा, क्षुद्र, थोड़ा 2 दुबला, पतला 3 मूर्ख 4 बच्चा, छोना,—कः 1 बालक, बच्चा—भूतस्य यायादयमन्तमर्भकः —रघु० ३।२१, २५; ७।६७, 2 किसी जानवर का बच्चा 3. मूर्ख जड़।

अर्य (वि०) [ऋ+यत्] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया 2. आदरणीय,—र्यः 1 स्वामी, प्रभु 2. तीसरे वर्ण का व्यक्ति, वैश्य, र्या वैश्य की स्त्री। सम०—वर्धः सम्मान्य वैश्य।

अर्यमन् (पु०) [अर्य श्रेष्ठ मिमीते—मा+कनिन् नि०] 1 सूर्य 2 पितरों के प्रधान—पितृणामर्यमा चास्मि —भग० १०।२९, 3 मदार का पौधा।

अर्यावी [अर्य+ङीष्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री।

अर्वन् (पु०) [ऋ+वनिप्] 1. घोड़ा,—हलधरकुलप्रवहभवता हया—शि० १२।३१, 2 चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक 3 इन्द्र 4 लोकसंख्यापरिमाण—नी 1 घोड़ी 2. कुटनी, दूती।

अर्वाच् (वि०) [अवरे काले देशे वा अञ्चति अञ्च+क्विन् पृषो० अवादेशः] 1 इस ओर आते हुए (विप० परञ्च्) 2 की ओर मुड़ा हुआ, किसी से मिलने के लिए आता हुआ 3 इस ओर होने वाला 4 नीचे या पीछे होने वाला 5 बाद में होने वाला, बाद का —क् (अव्य०) 1 इस ओर, इधर की तरफ 2 किसी एक स्थान से 3 पहले (समय या स्थान की दृष्टि से) —यत्पृष्टैरर्वाक् सलिलमय ब्रह्माण्डमभूत् का० १५९ अर्वाक् मदभ्यागतस्वामी हरेन परतो नृप —याज्ञ० २।१७३, ११३, १।२५४, 4 नीचे की ओर, पीछे, नीचे (विप० ऊर्ध्वं) 5 बाद में, पश्चात् 6 (अभि० के साथ) के अन्दर निकट—एते चार्वागुपवनभुवि स्निग्धदर्भाङ्कुरायाम्—श० १।१५। सम०—कालः बाद में आने वाला समय,—कालिक (वि०) आगन्तुकाल से संबंध रखने वाला, आधुनिक, तरा आधुनिकता, उत्तरकालीनता,—कूलम् नदी का निकटस्थ तट।

अर्वाचीन (वि०) [अर्वाच्+ख] 1 आधुनिक, हाल का 2 उलटा, विरोधी, —नम् (अव्य०) (अपा० के साथ) 1 इस ओर 2 के बाद का—यदूर्ध्वं पृथिव्या अर्वाचीनमन्तरिक्षात् शत०।

अर्शस् (नपुं०) [ऋ+असुन् आगमौ धुट् च] बवासीर। सम०—घ्न (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला (—घ्नः) सूरन, मिलावा (क्योंकि कहते हैं कि यह बवासीर नाशक है)।

अर्शस (वि०) [अर्शस्+अच्] बवासीर से पीड़ित।

अर्ह् (भ्वा० पर०) [अर्हति, अर्हितुम्, आनर्ह, अर्हित] (आर्ष प्रयोग—आ०, रावणो नार्हते पूजाम्—रामा०) 1 अधिकारी होना, योग्य होना (कर्म० तथा तुमुन् प्रत्यय के साथ)—किमिव नामुष्यानमरेश्वरत्वमर्हति —शि० ७, 2 अधिकार रखना, अधिकारी बनना—मनु गर्भे पित्र्य रिक्थमर्हति—या० ६, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति—मनु० ९।३ 3 योग्य होना, पात्र बनना —अर्चना मयि मवाद्धि कर्तुमर्हति—भै०५।११३, शब०

१।७, 4. सम्मान होना, योग्य होना—न हैं वाचाप्युपचारमर्हन्ति—शि० ३।१८, सर्व ते सर्वसत्कार कर्तुं नार्हन्ति पोडशीम्—मनु० २।८६, 5. योग्य होना, अनुवाद 'सकना'—न मे वचनमन्यथा वक्तुमर्हति—श० ४ 6. पूजा करना, सम्मान करना नीचे देo दे० 7. (पञ्चम पुरुष के साथ—कभी-कभी अन्यपुरुष के साथ भी—तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है), 'अर्ह' धातु मृदु आदेश, शिष्ट प्रार्थना तथा परामर्श के लिए प्रयुक्त होता है - इसका अनुवाद होता है .—कृपा करना, अनुग्रह करना, प्रसन्न होना—द्विषाञ्चह्यार्हसि सोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, कृपया प्रतीक्षा कीजिए; - नार्हसि मे प्रथम विहन्तुम्—२।५८, [प्रेरo°या चुo परo] सम्मान करना, पूजा करना, —राजार्जिहत्त मधुपर्कपाणि.—भट्टि० १।१७, मनु० ३।११९।

अर्ह (विo) [अर्ह्+अच्] 1. आदरणीय, आदर योग्य, पात्र, अधिकारी—अर्हार्घभोजयन् विप्रो वन्धनार्हति मावकम्—मनु० ८।३९२, 2 योग्य, दावेदार, अधिकारी, (कर्मo, तुमुन्नन्त, तथा समास में)—नैवार्हं पैतृक रिक्थं पतितत्वादितो हि सः—मनु० ९।१४४, सत्कारमर्हस्य न चावमन्यसे—रामा०, तस्मात्त्वार्हो वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्—भग० १।३७, इसी प्रकार मान° वध° दण्ड° आदि 3 सुहावना, उचित, उपयुक्त —केवलं यानमर्हं स्यात्—पञ्च० ३, (सर्व० के साथ भी)—न त्वत्तोऽन्यो महीभुजाम् पञ्च० १।८७-९२, 4 उचित मूल्य का, कीमत का, दे० नीचे,—र्हः 1 इन्द्र 2 विष्णु ; मूल्य (जैसा कि 'महार्ह' में)—महार्हशय्यावरिवर्तमध्युषे—कु० ५।१२, (महार्हाणि यस्याः —मल्लिनाथ)—र्हा पूजा, आराधना।

अर्हण-ना [अर्ह्+भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान, आदर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना—अर्हणामर्हते चक्रुर्नृपा गगचक्षुषे—रघु० १।५५, शि० १५।२२।

अर्हत् (विo) [अर्ह्+शतृ] योग्य, अधिकारी, पूजनीय—(पुo) 1 बुद्ध 2. बौद्धधर्म की पुरोहिताई में उच्चतम पद 3 जैनियों के पूज्य देवता, तीर्थंकर—सर्वज्ञो जितरागादिदोषकैलोक्यपूजित, यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः।

अर्हन्त (विo) [अर्ह्+झ आ०] योग्य, अधिकारी,—तः 1 बुद्ध 2 बौद्धभिक्षु।

अर्हन्ती (स्त्रीo) पूजा के योग्य होने का गुण, सम्मान, पूजा, —योऽर्हन्तीपदवीमुवाह—सिद्धा०।

अर्हा (सo कृo) [अर्ह्+क्वाच्] 1. योग्य, आदरणीय, 2. प्रशंसा के योग्य।

अर्ह् (म्वा० उभ०) [अर्हति-ते, अर्हितुम्, अर्हित] 1. सम्मान करना, 2. योग्य या उचित होना 3. रोकना, दूर रखना, दे० अरह्।

अर्हम् [अर्ह्+अच्] 1. शिव का वह बैल जो उसकी पूजा में होता है 2. पीली हरताल।

अर्हकः [अर्ह्+क्वुन्] 1. घुघराले बाल, घुल्लें, बाल—लकाटिका चन्द्रचूडरालकेव—कु० ५।५५, अलके बालकुन्दानुविद्धम्—मेघ० ६७, (यह शब्द मनु० जो है जैसा कि मल्लिनाथ केशग्रहण—स्वभावसुन्दरालकानि तावत्—से प्रकट होता है) 2. मस्तक के ऊपर 3. शरीर पर पहना हुआ केसर,—का 1. आठ से दस वर्ष तक की आयु की कन्या 2. यक्षों के स्वामी कुबेर की राजधानी—विभाति यस्यां अलिनीलकेशा मनोहरा वैभवतस्य अलकी:—मालवि० २।१०, कन्यका से वस्तिरेवका नाम यक्षेश्वरस्याम्—मेघ० ७। सम० —अधिपः,—ईश्वरः,—पतिः अलका का स्वामी, कुबेर—अलकीवदमरालकेश्वरो—रघु० १९।१५, —जलः कूबर का किनारा या तट,—नन्दा 1. गंगा, गंगा में गिरने वाली नदी, 2 आठ से दस वर्ष के बीच की आयु की लड़की,—भवा कुबेर की राजधानी, —लेखितः घुघरो की पंक्तियाँ—शि० ६।३।

अलक्तः-क्तकः [न रक्तोऽस्मात्, यस्य अलक्तम्—स्वार्थे कन्—तारा०] कुछ वृक्षों से निकलने वाली राल, लाल रंग की लाख महावर (प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा शरीर के कुछ अंग इसके द्वारा रंगे जाते थे—विशेषकर से पैरों के तल और ओष्ठ)—(सम्बन्धसूत्रा) चिरोज्झितालक्तकपाटलेन—कु० ५।१४, मालवि० १।५, अलक्तकाङ्का पदवी ततान—रघु० ७।७, स्त्रियो हतार्थं पुरुष निरर्थं निर्ण्योक्तितालक्तकवस्त्रवन्ति-मृच्छ० ४।२५। सम०—रसः महावर, लाक्षारस—अलक्तरसरक्तामाबलक्तरसपङ्क्तिभिः, अवापि चरणौ तस्या. पद्मकोशसमप्रभौ—रामा०,—रागः महावर का लाल रंग।

अलक्षण (विo) [नo बo] 1. चिह्नरहित 2. परिचायक चिह्न से हीन, परिभाषारहित, 3. जिसमें कोई अच्छा चिह्न न हो, अशुभ, अपशकुन—क्लेशावहा चतुरलक्षणाहम्—रघु० १४।५,—णम् 1. बुरा या अशुभ चिह्न 2 जो परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा।

अलक्षित (विo) [नo तo] अदृष्ट, अनवलोकित—अलक्षितान्यपतनो नृपेण—रघु० २।२७।

अलक्ष्मीः (स्त्रीo) [नo तo] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, निर्धनता।

अलक्ष्य (विo) [नo तo] 1. अदृश्य, अज्ञात, अनवलोकित 2. चिह्नरहित, 3. जिस पर कोई विशिष्ट चिह्न न हो 4. देखने में नगण्य 5. जिसमें कोई महत्ता न हो, छल-कपट से रहित 6. आँखों की दृष्टि से ओझल। सम० —वेधिन् (विo) अदृश्य रूप से फूलने वाला,—सन्धान अज्ञात लक्ष्य, अनवलोकित लक्ष्य

—वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता—कु० ५।७०,—लिंग (वि०) जो वेश बदले हुए हो, जिसका नाम पता छिपा हो,—वाच् (वि०) किसी अदृश्य वस्तु को संबोधित करके बोलने वाला—कु० ५।५७।

अलगर्दः [लगति स्पृशति इति लग्+विच्, लग् अर्दयति इति अर्द्+अच्, स्पृशन् सन्, अर्दो न भवति] पानी का साँप।

अलघु (वि०) [स्त्री० घु—घ्वी] [न० त०] 1 जो हल्का न हो, भारी, बड़ा 2 जो छोटा न हो, लम्बा (छन्द शास्त्र में) 3 संगीन, गम्भीर 4 गहन, प्रचण्ड, बहुत बड़ा। सम०—उपल चट्टान—प्रतिज्ञ (वि०) गम्भीर प्रतिज्ञा करने वाला।

अलङ्करणम् [अलम्+कृ+ल्युट्] 1 सजावट, सजाना 2 आभूषण (शा० तथा आल०)—सृजति तावदशेष-गुणाकर पुरुषरत्नमलङ्करणं भुव—भर्तृ० १।९२।

अलङ्करिष्णु (वि०) [अलम्+कृ+इष्णुच्] 1 आभूषणों का शौकीन, 2 सजाने वाला, सजाने की क्रिया में कुशल।

अलङ्कारः [अलम्+कृ+घञ्] 1 सजावट, सजाने या अलंकृत करने की क्रिया 2 आभूषण (आल० से भी) —अलङ्कार सर्वस्व-विद्याम० १ 3 अलंकार जिसके शब्द°, अर्थ° तथा शब्दार्थ के अनुसार तीन भेद हैं 4 काव्य के गुण दोष बताने वाला आम्र। सम०—शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र, —सुवर्णम् आभूषण बनाने के लिए सोना।

अलङ्कारकः [अलम्+कृ+घञ्, स्वार्थे कन्] आभूषण, सजावट मनु० ७।२२०, [अलम्+कृ+ण्वुल्] सजाने वाला।

अलङ्कृतिः (स्त्री०) [अलम्+कृ+क्तिन्] 1 सजावट 2 आभूषण, कर्णालङ्कृति—अमर० १३, 3 साहित्यिक आभूषण, अलंकार—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि—काव्य० १, यो विद्वान्मन्यते काव्य शब्दार्थावनलङ्कृती, असौ न मन्यते कस्माद्दग्ध्वा-मनलं कृती—चन्द्रा० सालङ्कृतिं अवणकोमलवर्ण-राजि—भामि० ३।९, (यहाँ अं द्वितीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलङ्कृतिः [अलम्+कृ+ग+टाप्] अलंकृत करना, आभूषित करना, सजाना। (आल० भी)।

अलङ्घनीय (वि०) [न० त०] जो लाघा न जा सके, पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचा न जा सके, पहुँच के बाहर।

अलजः [अल+जन्+ड] एक प्रकार की पक्षी।

अलजर,—जूर [अल सामर्थ्यं जूर्णति—जू+अच् पृषो० उत् तारा०] घिट्टी का बर्तन, मर्तबान, घड़ा।

अलम् (अव्य०) [अल्+अम् बा०] 1 (क) पर्याप्त, यथेष्ट, काफी (संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—तस्यास-मेधा क्षुधितस्य तृप्त्यै—रघु० २।३९, अन्यथा प्रात-राशाय कुर्याम त्वामल वयम्—भट्टि० ८।९८, (ख) समकक्ष, तुल्य (संप्र० के साथ) दैत्येन्द्रो हरिरलम् सिद्धा०, अल मल्लो मल्लाय- वहामा० 2 योग्य, सक्षम (तुमुन्नन्त के साथ) अल भोक्तुम्—सिद्धा०, दहेण शमित लोकानल दग्धु हि क्षमते—कु० २।५६, (अधि० के साथ भी) —त्रयाणामपि लोकानामलमस्मिन् निवारणे—रामा० 3 बस, बहुत हो चुका, कोई आवश्यकता नहीं, कोई लाभ नहीं (निषेधात्मक अर्थ रखना), करण० या तत्पुरुष के साथ, अलमन्यथा गृहीत्वा -मालवि० १।२०, अलमप्यालमिदं बन्धोर्यस्य दारानपाहरत्—शिव० २।४०, अल महीपाल तव श्रमेण—रघु० २।३४, कु० ५।८२, अलमियमद्भि कुसुमैः - श० ४, इतने फूल पर्याप्त हैं, 4 (क) पूर्ण-रूप से, पूरी तरह से—अहंत्येनं शमयितुमल वारि-धारा महत्या—मेघ० ५३, त्वमपि विनयमल स्वगिण प्रीणयाऽलम्—शा० ७।३४, (ख) बहुत अत्यधिक, बहुत ही अधिक,—गुदन्ति अलम् का० २, यो गच्छत्यल विप्रियम् प्रति - अमर०। सम०—कर्मीण (वि०) कार्य करने में सक्षम, दक्ष, कुशल कृ दे० 'कृ' के नीचे,—जीविका (वि०) जीविका के लिए यथेष्ट, - धन (वि०) यथेष्ट धन रखने वाला, धनवान्,—निरा-दिष्टधनस्येन्दु प्रतिभु स्याद्दलधन—मनु० ८।१६२, —बुद्धि अधिक बुद्धि, बुद्धिपूर्ण बात का आग्रह -भूमीश (वि०) 1 जो मनुष्य के योग्य हो, मनुष्य के लिए पर्याप्त हो, वंश (वि०) पर्याप्त बल शाली, यथेष्ट शक्तिशाली,—बुद्धि पर्याप्त समझ भूयस् (वि०) योग्य, सक्षम -विनाप्यस्त्रैरलमुरुगिरिज्यार्थ मरुत सुत—शि० २।९।

अलम्पट (वि०) [न० त०] जो लंपट या विषयी न हो, शुद्ध चरित्र वाला द्र० अन्त पुर।

अलम्बुष [अल पुरुजाति इति -पुष्+क पृषो० पस्य ब] 1 यमन, साँप, 2 खुले हुए हाथ की हथेली।

अलय (वि०) [न० ब०] 1 गृहहीन, आवारा 2 नाश न होने वाला, अविनश्वर, यः [न० त०] 1 अन-नश्वरता, स्थायित्व 2 जन्म, उत्पत्ति।

अलर्कः [अलम् अर्कवते अर्च्यते वा अर्क्+अच्, अर्च्+घञ् वा शक० पररूपम्] 1 पागल कुत्ता या मदोन्मत्त व्यक्ति 2 सफेद मदार।

अलले (अव्य०) [अर+ला+ड ले रभ्य च] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त होने वाला पैशाची बोली का शब्द जिसका कोई अपना तात्पर्य नहीं।

अलवालम् [न० त०] वृक्ष में पानी देने के लिए जड़ में बना हुआ स्थान दे० 'आलवाल'।

अलम् (वि०) [न० त० लस्+क्विप्] न चमकने वाला।
अलस (वि०) [न लसति व्याप्नोति—लस्+अच्] 1 अक्षम, स्फूर्तिहीन, सुस्त, आलसी 2. थका हुआ, श्रान्त, क्लान्त,—मार्गश्रमाधवश्रशरीरे पारिजे—मालवि०, ५, अमरु० ४।९०, विक्रम० ३।२, मनु०—श्रमालसम्—मा० १।१७, 3. मृदु, कोमल 4. ढीला, मन्द (गति में)—ओणीभारादलसगमना—मेघ० ८२, अम०—ईक्षणा वह स्त्री जिसकी मदभरी दृष्टि हो।
अलसक (वि०) [अलस+कन्] अकर्मण्य, सुस्त,—कः अफारा, पेट का एक रोग।
अलसः—सम् [न० त०] अंगार, अधजली लकड़ी —निर्वाणालातसाधर्म्यम् कु० २।२१।
अलाबुः—बू (स्त्री) [न—लाभ्यते; न+लम्+उ—लित् वकोपधश्च वृद्धि—तारा०] लंबी लौकी—बू (क्लीब०) 1 तुमड़ी का बना पात्र-पात्र 2. तुमड़ी का हलका फल जो पानी पर तैरता है—किं हि नामैतत् अलाबूनि मज्जन्त्यलाबूनि प्लवन्त इति—महाभा० १, मनु० ६।५४। सम०—छेदनम् लौकी का कटा हुआ पूरा,—पात्रम् तुमड़ी का बना बर्तन।
अलिन्दः [अल्+यङ्, लुक्+अच् रस्य लः] दरवाजा।
अलिः [अल्+इन्] 1 भौंरा 2 बिच्छू 3. कौवा 4 कोयल 5 मदिरा। सम०—कुलम् भौंरों का झुंड, °सङ्कुल अलिकुलों के झुंड से भरा हुआ -अलिकुल सङ्कुलकुसुमनिराकुलबकुलमालतमाले मी० °सङ्कुल फूलने वाला नामक पौधा,—जिह्वा,—जिह्विका गले के भीतर का कौवा, घाटी, कोमल तालु—प्रिय जो भौंरों को अच्छा लगे (—यः) लाल कमल, (—या) बिल्कुल वैसा फूल,—माला भौंरों का समूह,—विरावः, —रवः भौंरों का गुंजार,—वल्लभः=°प्रिय तु०।
अलिन्दम् [अल्यते भूष्यते—अल्+कर्मणि इकन्] मस्तक, —अलिकेन च हेमकान्तिना—भामि० २।१०१, शिशु० ३।६, ।
अलिन् (पु०) [अल्+इनि] 1 बिच्छू 2 भौंरा,—अलिनिमाञ्जिनि माधवयोधिताम्—शि० ६।४,—नी भौंरी का झुंड,—अरमालालिनी शिलीन्ध्रे—शि० ६।७२, अलिनीविलुप्त कथाना क्रम—मालवि० १।५।
अलिन्दः [दे० 'अलगर्द'] एक प्रकार का साँप।
अलिङ्ग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका कोई विशिष्ट चिह्न न हो, चिह्न रहित 2 बुरे चिह्नों वाला 3 (व्या० में) जिसका कोई लिंग न हो।
अलिन्दकः [अलन्द—अलिः अल्=इन् तं अरयति इति अ+अच् पृषो० नुम्] आलवाल, दे० 'आलबाल'।
अलिन्दः [अल्यते भूष्यते, अल्—कर्मणि किदच्] 1. घर के दरवाजे के सामने का चबूतरा—मत्ताकिरतोरणम् —मालवि० ५, 2. दरवाजे पर बनी चौकोर जगह।
अलिन्दकः [न० त०] 1 कौवा 2. भौंरा 3. कुत्ता।
अलिन्दकः=दे० अलिन्दक।
अलिन्दक—वक=दे० अलिन्दक।
अलीक (वि०) [अल्+कीकन्] 1 अप्रिय, अरुचिकर 2. असत्य, मिथ्या, अनवद्यत्व -अलीककोपकारणेन—का० १४७, °वचन—अमरु० २३, ३८, ४३,—कम् 1. मस्तक 2. मिथ्यात्व, असत्यता।
अलीकिन् (वि०) [अलीक+इनि] 1. अरुचिकर, अप्रिय 2. मिथ्या, छलने वाला।
अलुः [अल्+उन्] छोटा बरतन-पात्र।
अलुक् °समास [नास्ति विभक्तेः लुक् लोपो यत्र] एक समास जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता, उदा०—युधिष्ठिरम्, आत्मनेपदम्।
अले, अलेले (अव्य०) [अरे, अरेरे इत्येव रूपम् कः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त निरर्थक शब्द जो विदूषकों बोली में पाये जाते हैं।
अलोकक (वि०) [न० ब० कप्] देखने—कः परछाईं।
अलोक (वि०) [न० ब०] 1 जो दिखाई न दे—जैसा कि—लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८ [न लोक्यते इति अलोकः—मल्लि०] 2. जिसमें लोग न हों 3. (अच्छे कर्म न होनेके कारण) जो मृत्यु के उपरांत किसी दूसरे लोक में नहीं जाता,—कः—कम् [न० त०] 1 जो लोक न हो, 2. संसार की समाप्ति या नाश, लोगों का अभाव—रक्ष सर्वानिमाल्लोकान् नालोकं कर्तुमर्हसि—राजा०। सम०—आलोक अलोकारण्य, अलोकान्य।
अलोकत्वम् [न० त०] अदृश्यता, दिखाई न देना, अंतर्धान होना।
अलोल (वि०) [न० त०] 1 शान्त, क्षोभरहित 2. दृढ़, स्थिर, 3. अचंचल 4 जो प्यासा न हो, इच्छा रहित।
अलोलुप (वि०) [न० त०] 1 इच्छाओं से मुक्त 2. जो लालची न हो, विषयों से उदासीन।
अलौकिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1 जो लोक में प्रचलित न हो, असाधारण, लोकोत्तर 2. जो सामान्य भाषा में प्रचलित न हो, वर्ग-जेलों के लिए विशिष्ट, श्रेष्ठ साहित्य में प्रयुक्त, वैदिक 4 आलंकारिक, °त्वम् किसी शब्द का विरल प्रयोग—अलौकिकत्वादमरः स्वकोषे न वानि नामादि समुल्लिलेख, विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारमस्य प्रयत्न गुरुगौरवस्य—विक्रम०।
अल्प (वि०) [अल्+क] 1. तुच्छ, महत्त्वहीन, नगण्य (विप० महत् या गुरु) मनु० ११।३६, 2. छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म, जरा सा (विप० बहु)—अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७, १, २, 3. अल्पकालीन जो थोड़ी देर जीये 4. कभी-कभी होने वाला, विरल,

—अम्बु,—स्थेय,—स्थात् (क्रि० वि०) 1 जरा 2 जरा से कारण से,—प्रीतिरल्पेन भिद्यते—रामा० 3 अनायास, बिना किसी कष्ट या कठिनाई के। सम०—अल्प (वि०) बहुत ही जरा सा, सूक्ष्म, थोड़ा-थोड़ा करके, —असु = प्राण दे०, —आकांक्षिन् (वि०) थोड़ा चाहने वाला, संतुष्ट, थोड़े से ही संतुष्ट,—आयुस् (वि०) थोड़ी देर जीने वाला—मेघ० ४।१५७, (—युस् पु०) 1 छोटी आयु का, बच्चा, 2 बकरी,—आहार, —आहारिन् (वि०) मिताहारी, खाने में औसतदर्जे का (—र.) परिमितता, भोजन में संयम—उदर (वि०) 1 जो छोटा न हो, बड़ा 2 जो कम न हो, बहुत, जैसे °रा कल्पना, नाना प्रकार के विचार,—ऊन (वि०) ईषद्होनी, अधूरा, —उपाय छोटे साधन,—गंध (वि०) थोड़ी गंध वाला (—न्धम्) लाल कमल, —चेष्टित (वि०) क्रियाशून्य,—छद, —छाद (वि०) थोड़े वस्त्र धारण किये हुए—मृच्छ० १।३७,—ज्ञ (वि०) थोड़ा जानने वाला, उथले ज्ञान वाला, मोटी जानकारी रखने वाला,—तनु (वि०) 1 ठिगना, छोटे कद का 2 दुर्बल, पतला,—दृष्टि (वि०) जिसका मन उदार न हो, अदूरदर्शी,—धन (वि०) जो धनवान् न हो, धनहीन,—मनु० ३।६६, ११।४०,—धी (वि०) दुर्बलमना, मूर्ख, —प्रजस् (वि०) थोड़ी संतान वाला, —प्रमाण,—प्रमाणक (वि०) 1 थोड़े वजन का, थोड़ी माप का, 2 थोड़े प्रमाणों वाला थोड़े से साक्ष्य पर निर्भर रहने वाला,—प्रयोग (वि०) विरलता से प्रयुक्त, कभी-कभी प्रयुक्त,—प्राण,—असु (वि०) थोड़ा श्वास रखने वाला, दमे का रोगी (—णः) 1 थोड़ा श्वास लेना, दुर्बल श्वास 2 (व्या० में) वर्णमाला के महा प्राणताहीन अक्षर—उदा० स्वर, अघोष, अनुनासिक तथा क् च् ट् त् प् ग् ज् ड् द् ब् अक्षर, —बल (वि०) दुर्बल, बलहीन, कम शक्ति रखने वाला, —बुद्धि, —मति (वि०) दुर्बलबुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी —मनु० १२।७४, —भाषिन् (वि०) वाक्-कृपण, थोड़ा बोलने वाला, —मध्यम (वि०) पतली कमर वाला,—मात्रम् (वि०) थोड़ा सा, जरा सा,—मूर्ति (वि०) छोटे कद का, ठिगना (—र्ति—स्त्री०) छोटी आकृति या वस्तु, —मूल्य (वि०) थोड़ी कीमत का सस्ता,—मेधस् (वि०) थोड़ी समझ का, अज्ञानी, मूर्ख, —वयस् (वि०) थोड़ी आयु का, कमसिन, —वादिन् (वि०) अल्पभाषी, —विद्य (वि०) अज्ञानी, अशिक्षित, —विषय (वि०) सीमित परास या धारिता से युक्त,—स्वल्पाल्पविद्या मति —रघु० १।२, —शक्ति (वि०) कमजोर, दुर्बल, —सरस (नपु०) पोखर, छोटा जोहड़ (जो गर्मियों में सूख जाता है)।

अल्पक (वि०) [स्त्री० —ल्पिका] [अल्प+कन्] 1 छोटा, थोड़ा 2 क्षुद्र, नीच।

अल्पकाय (वि०) [अल्प+पच्+कञ्-मुक्] (थोड़ा पकाने वाला) कंजूस, कृपण, मक्खीचूस;—यः कृपण।

अल्पशः (अव्य०) [अल्प+शस्] 1 थोड़े अंश में, जरा, थोड़ा—बहुलो ददाति आभ्युदयिकेषु, अल्पशः आदेषु —पा० ५।४।४२, टीका, 2 कभी-कभी, यदा कदा।

अल्पित (वि०) [अल्प कृतार्थे णिच् कर्मणि—क्त] 1. घटाया हुआ, 2 सम्मान की दृष्टि से नीचा, तिरस्कृत —मया तु चक्रेऽल्पितकल्पराणः—नै० १।१५

अल्पिष्ठ (वि०) [अतिशयेन अल्प—इष्ठन्] न्यूनातिन्यून, छोटे से छोटा, अत्यन्त छोटा।

अल्पीकृ (तना० उभ०) छोटा बनाना, घटाना, संख्या में कमी करना।

अल्पीयस् (वि०) [अतिशयेन अल्प—ईयसुन्] अपेक्षाकृत छोटा, दूसरे से कम, बहुत थोड़ा।

अल्मा [अल्यते इति अल्+विच्, अले भूषार्थे लाति गृह्णाति—ला+क] माता (संबोधन अल्मे)।

अव् (भ्वा० पर०) [अवति, अवित वा ऊत] 1 रक्षा करना, बचाना,—यमवतामवसा च पुरि स्थितं—रघु० ९।११, प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः —श० १।१, 2 प्रसन्न करना, संतुष्ट करना, सुख देना, विक्रमस्ते न मामवति लाजिते त्वयि —रघु० ११।७५, न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी—१।६५, 3 पसन्द करना, कामना करना, इच्छा करना 4 कृपा करना, उन्नत करना (धातुपाठ में इस धातु के और अनेक अर्थ दिये गये हैं, परन्तु श्रेष्ठ साहित्य में उनका प्रयोग विरल होता है)।

अव (अव्य०) [कई बार आरंभिक 'अ' को लुप्त कर दिया जाता है जैसा कि 'पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य' कु० १।१ में] [अव्-अच्] । (स० को० अव्यय के रूप में) दूर, परे, फासले पर, नीचे, 2 (क्रिया से पूर्व उपसर्ग के रूप में) यह प्रकट करता है (क) निश्चय, दृढ़ निश्चय—अवश्य (अ) विस्तार, परिव्याप्ति—अवकर (ग) अनादर —अवज्ञा (घ) थोड़ा पन, हीनावबोधन (ङ) आश्रय लेना, सहारा लेना अवलम्ब् (च) पवित्रीकरण-अवदात (छ) अवमूल्यन, पराजय—अवहृत्य अमुत् (पराजयति) (ज) आदेश देना—अवतृप् (झ) अवसाद, नीचे डूबना—अवट, अवगाह (ञ) आम—अवतप्त—अवह, 3. तत्पुरुष समास के प्रथम अवयव के रूप में इसका अर्थ होता है —अवकृष्ट, उदा०—अवकोकिलः=अवकृष्टः कोकिलया जिह्मः।

अवक्रय (वि०) [अव—क्रयार्थे—कटच्] 1. नीचे की

ओर, पीछे की ओर 2. विपरीत, विरोधी, —अम् विरोध, वैपरीत्य।

अवकरः [अव+कृ+अप्] धूल, धूलहरण।

अवकर्तः [अव+कृत्+घञ्] टुकड़ा, घजजी।

अवकर्तनम् [अव+कृत्+ल्युट्] काटना, कतिया करना।

अवकर्षणम् [अव+कृष्+ल्युट्] 1 बाहर निकालना, खींचना 2 निष्कासन।

अवकलित (वि०) [अव+कल्+क्त] 1. दृष्ट, अवलोकित 2 ज्ञात 3 लिया हुआ, गृहीत।

अवकाशः [अव+काश्+घञ्] 1 अवसर, मौका,—ताते कार्यान्तरीये बहति रघुवृषे को नयस्यावकाशम् —वेणी० ३।३, अम् के साथ प्रयुक्त होकर इसका अर्थ होता है- कार्य के लिए क्षेत्र या अवसर प्राप्त करना, —कस्यावकाशोऽविनयस्य तत्र दस्यो मनोभव - कथा० १।४१ 2 (क) स्थान, जगह, ठौर—अवकाश किलोदन्वान्रामायास्यर्थितो ददौ रघु० ४।५८ इसी प्रकार —अन्यमवकाशमवलाहे --विक्रम० ४, यथावकाशं की उचित स्थान पर ले जाना रघु० ६।१४,—अस्माकमस्ति न कथंचिदिहावकाश - पञ्च० ४।८, अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्यो समागमे- रामा० (ख) पदार्पण, प्रवेश, पहुँच, अन्तर्गमन (छाया) शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा --शृं० ७।३२, अम् के साथ बहुधा इन्हीं अर्थों में प्रयोग--मनोवावकाशो ये मनोरथ शृं०१, शोकावेगदूषिते मे मनसि विवेक एव नावकाशं लभते प्रबो०, कृ या दा से पूर्व लगकर भी अर्थ होता है- 'स्थान देना' 'प्रवेश कराना' 'मार्ग देना'- अथो हि दत्त्वा तिमिरावकाशम्- मृच्छ० २।६, तस्माद्देयो विपुलमनिभिन्नविवरावकाशोऽयमात्मा --पञ्च० १।३६६, अवकाशं दद् - रोकना, बाधा डालना —मनसश्चिलोत्पीडरुद्धावकाशा (सिद्धा) --मेघ० ९१, 3 अन्तराल, बीच का स्थान या समय 4 द्वारक, बिवर।

अवकीर्णिन् (वि०) [अवकीर्ण + इनि] संयम का उल्लंघन करने वाला, ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ देने वाला, (पुं०—नी) धर्मनिष्ठ विद्यार्थी जिसने (मैथुनादिक करके) अपने ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ा और संयमहीनता का परिचय दिया, अवकीर्णी अवेदज्ञश्च ब्रह्मचारी तु योषितम्, गर्दभ पशुमालभ्य नैर्ऋत स विशुध्यति—याज्ञ० ३।२८०, मनु० ३।१५५।

अवकुञ्चनम् [अव+कुञ्च्+ल्युट्] झुकाव, मोड़, निकुंचन।

अवकुण्ठनम् [अव+कुण्ठ्+ल्युट्] 1. घेरना, घेरा डालना 2 आकृष्ट करना, कब्जे में करना।

अवकुण्ठित (वि०) [अव+कुण्ठ्+क्त] 1. घेरा हुआ, परिवेष्टित 2. आकृष्ट।

अवकुब्ज (भू० क० कृ०) [अव+कुब्+क्त] 1. नीचे करके नीचे किया हुआ, 2. दूर हटाया हुआ 3. निष्कासित, बाहर निकाला हुआ 4. पतित, नीच, पतित, बहिष्कृत (विप० उत्कृष्ट या प्रकृष्ट) —ब्जः वह नौकर जो झाड़-बुहारू आदि का काम करता है (अवार्जनशौचकविलियुक्त); —मयो देयोऽवकृष्टस्य, बदुत्कृष्टस्य वैतनम्—मनु० ७।१२५।

अवकल्पिः (स्त्री०) [अव+कल्प्+क्तिन्] 1 संभव समझना, समाकना, समाप्यता—कवेव भोजस्ये अवकल्पतावेव —सिद्धा० (अवकल्पितिरसम्भावना) 2. उपयुक्तता।

अवकेशिन् (वि०) [अवध्वस्त के सुख मस्यात्—अव+कम् (फलशून्यता) तदीशितु शीलमस्य इति अवक+ईश् +णिनि] फलहीन, बंजर (जैसा कि वृक्ष)।

अवकोकिल (वि०) [अवकृष्ट. कोकिलया] कोयल द्वारा तिरस्कृत।

अवक्र (वि०) [न० त०] जो टेढ़ा न हो, (आल०) ईमानदार, सच्चा।

अवक्रन्द (वि०) [अव+क्रन्द्+घञ्] अत्यं २ रुदन करने वाला, दहाड़ने वाला, हिनहिनाने वाला,—दः चिल्लाना, चीख, चीत्कार।

अवक्रन्दनम् [अव+क्रन्द्+ल्युट्] जोर से चिल्लाना, ऊँचे स्वर से रोना।

अवक्रमः [अव+क्रम्+घञ्] नीचे उतरना, उतार।

अवक्रयः [अव+क्री+अच्] 1 मूल्य 2. मजदूरी, किराया, खेत का भाड़ा 3 किराये पर देना, पट्टे पर देना 4 (राजा को दिया जाने वाला) कर या राजस्व, शुल्क (राजग्राह्य द्रव्यम् सिद्धा०)।

अवक्रान्तिः (स्त्री०) [अव+क्रम्+क्तिन्] 1 उतार 2 उपाक्रम।

अवक्षिप्त [अव+कृष्+ण+टाप्] भूल, चूक।

अवक्षेपः [अव+क्षिप्+घञ्] 1 हेमेल ध्वनि 2 कोसना 3. दुर्वचन, निन्दा।

अवक्षेदः [अव+क्षिद्+घञ्] 1 टपकना, बोस पड़ना 2. कफबहु, पीप।

अवक्षेदनम् [अव+क्षिद्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, बोस या कुहरे का गिरना।

अवक्षेपणः [अव+क्षेपण्+अच्] बेसुरा अलाप।

अवक्षेपणम् [अव+क्षेपण्+घञ्] अधूरा पचन या अधूरा उबालना।

अवक्षेपः [अव+क्षि+अच्] नाश, अरबादी, ध्वंस, तबाही।

अवक्षेपणम् [अव+क्षि+ल्युट्] (आग आदि को) बुझाने के साधन।

अवक्षेपः [अव+क्षिप्+घञ्] 1 कोसना क्रिया 2. आक्षेप।

अवक्षेपणम् [अव+क्षिप्+ल्युट्] 1 नीचे की ओर फेंकना, कर्म के पाँच प्रकारों में से एक, दे० 'कर्म' 2 घृणा, नफरत 3 बदनामी, लाछन 4 पराजित करना, दमन करना -- णी दागदोर, लगाम।

अवक्षण्डनम् [अव+खण्ड्+ल्युट्] काटना, नष्ट करना।

अवक्षातम् [प्रा० स०] गहरी खाई।

अवगणनम् [अव+गण्+ल्युट्] 1 अवज्ञा, तिरस्कार, अवहेलना 2 निंदा, लाछन 3 अपमान, मानभंग।

अवगण्ड [प्रा० स०] फोड़ा फुंसी जो गाल पर होती है।

अवगति (स्त्री०) [अव+गम्+क्तिन्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण, समझ, मान्य और निश्चित ज्ञान -ब्रह्मावगतिहि पुरुषाय ब्रह्मावगतिस्तवप्रतिज्ञाता -शत०।

अवगम —**गमनम्** [अव+गम्+घञ्, ल्युट् वा] 1 निकट जाना, नीचे उतरना 2 समझना, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान।

अवगाढ (भू० क० कृ०) [अव+गाह्+क्त] 1 डुबकी लगाया हुआ, घुसा हुआ, डूबा हुआ —अमृतह्रदमिवावगाढोऽस्मि —श० ७, 2 नीचे दबाया गया,—नीचा, गहरा (आ० आल०)—अभ्युन्नता पुरस्तादवगाढा जघनगौरवात्पश्चात्—दश० ३।७, 3 घनीभूत, जमा हुआ (जैसे रक्त)।

अवगाह -गाहनम् [अव+गाह्+घञ्, ल्युट् वा] 1 स्नान, -सुभगसलिलावगाहा -श० १।३ सदावगाहक्षमवारिसंचय —ऋतु० १।१ 2 डुबकी लगाना, डुबाना, घुसना - परदेशावगाहनात्—हि० ३।९५, जलावगाहक्षणमात्रशान्ता—रघु० ५।४७, दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यः सरो निर्मितम्—भुगार० १, 3 (आल०) निष्णात होना, सीख लेना 4 स्नानागार।

अवगीत (भू० क० कृ०) [अव+गै+क्त] 1 बेमेल स्वर से गाया हुआ, बुरी तरह से गाया हुआ 2 धमकाया हुआ, गाली दिया हुआ, कोसा गया 3 दुष्ट बदमाश 4 गान द्वारा व्यंग्यात्मक ढंग से चोट किया गया, -तम् 1 व्यंग्यगान, परिहास 2 धिक्कार, लाछन।

अवगुण [प्रा० स०] अपराध, दोष, बुराई—अन्यदोषपरावगुणम्—शिशु० कि० १३।४८।

अवगुण्ठनम् [अव+गुण्ठ्+ल्युट्] 1 घूघट निकालना, छिपाना, घुर्का ओढना 2 पर्दा (मुंह के लिए) (आल० भी) —अवगुण्ठनसंवीता कुलजाभिमरे-यदि —सा० द०—कुलशीर्षावगुंठन —मुद्रा० ६, 3 घूघट, बुर्का।

अवगुण्ठनवत् (वि०) [अवगुण्ठन+मतुप्] घूघट से ढका हुआ, पर्दे से आवृत, 'वती नारी—श० ५।

अवगुण्ठिका [अव+गुण्ठ्+ण्वुल्+टाप्] 1 घूंघट, पर्दा 2 आवरण 3 चिक या पर्दा।

अवगुण्ठित (भू० क० कृ०) [अव+गुण्ठ्+क्त] पर्दा पड़ा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ - रजनीतिमिरावगुण्ठितैः—कु० ४।११।

अवगुरणम्,-गोरणम् [अव+गुर्+ल्युट्] घूरकना, धमकाना, मार डालने के इरादे से प्रहार करना, अस्त्रों से आक्रमण करना।

अवगूहनम् [अव+गूह्+ल्युट्] 1 छिपाना, प्रच्छन्न रखना 2 आलिंगन करना।

अवग्रह [अव+ग्रह्+घञ्] 1 समस्त पद के घटक शब्दों को अलग अलग करना, सन्धिच्छेद करना 2 इस प्रकार की पृथकता को द्योतन करने वाला चिह्न 3 विराम, सन्धि का न होना (जैसा कि—क्विङ् ति च त च मदन च इमा च मा च—इसमें च+इमा=चेमा सन्धि नहीं हुई) 4 ए और ओ से परे 'अ' का लोप हो जाने पर ऽ चिह्न 5 वर्षा का न होना, सूखा पड़ना अनावृष्टि वृष्टिर्भवति शस्यानामवग्रहविशोषिणाम् -रघु० १।६२, १०।४८, नयोनमस्यवोवृष्टिमवग्रह इवाम्बरे -१२।२९, वृषेव सीता तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१, 6 बाधा, रोक 7 हाथियों का समूह 8 हाथी का मस्तक 9 ग्रहण, मूलग्रहणाय 10) दण्ड (विप० अनुग्रह) 11 कोसना गाली देना।

अवग्रहणम् [अव+ग्रह्+ल्युट्] 1 बाधा, रुकावट 2 अनादर, अवहेलना

अवग्रहः [अव ग्रह्+घञ्] 1 टूटना, वियोजन 2 अड़चन 3 शाप दे० 'अवग्रह'।

अवघट्टः [अव+घट्ट्+घञ्] 1 बिल, गुहा, मांद 2 छिलका, चक्की (अनाज पीसने के लिए), 3 ओर से हिलाना।

अवघर्षणम् [अव+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना 2 मलना 3 पीसना।

अवघातः [अव+हन्+घञ्] 1 प्रहार करना 2 चोट पहुँचाना, मारना 3 प्रचण्ड आघात, तीव्र आघात - कर्णविद्यास्त्रनिपुणेन च साहयमाशा दूरीकृता करिवरेण (भूता) —नीति० २, 4 धान आदि को ओखल में डालकर मूसल से कूटना।

अवघूर्णनम् [अव+घूर्ण्+ल्युट्] घूमेरी आना, चक्कर आना।

अवघोषणम् -णा [अव+घुष्+ल्युट्] 1 घोषणा करना 2 उद्घोषणा।

अवघ्राणम् [अव+घ्रा+ल्युट्] सूंघने की क्रिया।

अवचन (वि०) [न० त०] न बोलने वाला, चुप, वाणी रहित—अकुलीनाः साध्वसादवचना तिष्ठन्ति—श० १, -नम् 1 ध्वनि का अभाव, चुप्पी, मौन 2. निन्दा, लाछन, भर्त्सना —"कर (वि०) आज्ञा न मानने वाला।

अवचनीय (वि०) [न० त०] 1. जो कहने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अश्लील या अशिष्ट (भाषा) —वादेष्ववचनीयेषु तदेव द्विगुणं भवेत्-मनु० ८।२६९, 2 जो निन्दा या कहने के योग्य न हो, निन्दा से मुक्त—लोकैरवचनीया भवति—मृच्छ० २, °ता कहने में अनौचित्य, निन्दा से मुक्ति—सर्वथा व्यवहर्तव्ये कुतो ह्यवचनीयता उत्तर० १।५।

अवचय (चा) क: [अव+चि+अच्, घञ् वा] चयन करना (फल फूल आदि का) -तत प्रविशत कुसुमावचयम-भिनमन्त्र्यौ सखी—शा० ४, अविरतकुसुमावचायखेदात् -शि० ७।७१।

अवचारणम् [अव+चर्+णिच्+ल्युट्] किसी काम पर नियुक्त करना, प्रयोग, प्रशासन की पद्धति।

अवचूड -क: [अवनता चूडा अस्य प्रस्य वा डो ल] रथ के ऊपर लहराता हुआ कपड़ा, ध्वजा के शिरोभाग में बंधा हुआ (चौरी जैसा) अधोलम्ब वस्त्रखंड, पिच्छावचूडमनमाधवधाम जस्मु शि० ५।१३, दिवसकरवारणस्यावचूलकायरकलाप -का० २८।

अवचूर्णनम् [अव+चूर्ण्+ल्युट्] 1 चूरा करना, पीसना, चूर्ण बनाना 2 चूरा बुरकाना विशेषकर कोई सूखी दवा घाव पर बुरकाना।

अवचूल दे० अवचूड।

अवचूलक:-कम् [अवनता चूडा अस्य, अस्य लत्वम् -संज्ञायां कन्] मक्खियों को उड़ाने के लिए झूम या चंवर।

अवच्छद (च्छा) द [अव+छद्+क] आवरण, ढक्कन—काचसावच्छदात् (अगात्) —रामा०।

अवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [अव+छिद्+क्त] 1 काटा हुआ 2 अलगाया हुआ, बंटा हुआ, पृथक् किया हुआ 3 (तर्कशास्त्र में) अपने विशिष्ट विशिष्ट गुणों द्वारा दूसरी सब वस्तुओं से पृथक् की गई वस्तु 4 सीमित, विकृत निश्चित विच्छिन्नावच्छिन्नसंसर्ग० २।१ 5 किसी विशेषण से युक्त, विशिष्ट, विविक्त तथा उपलक्षित।

अवच्छुरित (वि०) [अव+छुर्+क्त] सिंचित तथा अनुलिप्त।

अवच्छेद [अव+छिद्+घञ्] 1 खंड, अंश 2 सीमा, मर्यादा 3 विच्छेद 4 भेद, विभेदन, (विशेषणों द्वारा) विशिष्टीकरण 5 दृढ़ निश्चय, निर्णय, फैसला—पदार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः -काव्य० ६, 6 पदार्थ का वह गुण जो उसे औरों के अलग कर दे, व्यावर्तक गुण 7 सीमा बांधना परिभाषा करना।

अवच्छेदक (वि०) [अव+छिद्+ण्वुल्] 1 विभाजक 2 निर्धारक, निर्णायक 3 सीमा बांधने वाला 4 विभेदक, विशिष्टीकारक 5 विशेष लक्षण क: 1 जो विवरण करे 2 विभेद, लक्षण, गुण।

अवच्छेदक [अव+छि+अच्] पराजय, दूसरों पर विजय, —यमेनलोकानवजाय मुक्त —रघु० ६।६२।

अवच्छित्ति: (स्त्री०) [अव+छि+क्तिन्] विजय, पराजय।

अवज्ञा [अव+ज्ञा+क] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना (कर्म०, करण०, अधि० या सम० के साथ) —आत्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार—रघु० २।४१, मे साम केवित्रिहृ न. प्रथमन्त्यवज्ञाम्—मा० १।६। सम०—दुष्कृत तिरस्कारपीड़ित, नीचा दिखाया गया—दुःखम् नीचा दिखाये जाने की वेदना—मा जीवन् य परावज्ञादु अवज्ञोऽपि जीवति—शि० २।४५।

अवज्ञानम् [अव+ज्ञा+ल्युट्] अनादर, तिरस्कार।

अवट: [अव्+अटन्] 1 बिवर, गुफा 2 गर्त—अवटे चापि मे राम प्रक्षिप्तेम कलेवरं, अवटे ये निधीयते—राजा० 3 कुआ 4 शरीर का कोई दबा हुआ या नीचा भाग, गालीवण, अवटदर्शनमेतावि स्थानान्यस्य शरीरके—याज्ञ० ३।९८ 5 जाजीवर। सम०—कच्छप: गड्ढे में घुसा हुआ कछुवा (आल०) अनुभवशून्य, जिसने संसार का कुछ न देखा हो।

अवटि-टी (स्त्री०) [अव्+अटि पक्षे ङीष्] 1. बिवर 2 कुआं।

अवटीट (वि०) [नासिकाया नत अवटीटच्, अव+टीटन् नासिकायां संज्ञायाम् नासिकाप्यवटीटा, पुरुषोऽप्यवटीट] जिसकी नाक चपटी है, चपटी नाक वाला।

अवटु [अव+टीक्+डु] 1 बिल 2 कुआं 3 गरदन का पृष्ठभाग, 4 शरीर का दबा हुआ अंग—टु: (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग,—टु (नपु०) बिवर, दरार।

अवडीनम् [अव+डी+क्त] पक्षी का उड़ान, नीचे की ओर उड़ना।

अवतंस-सक [अव+तंस्+घञ्] 1 हार 2 कर्णाभूषण, अंगूठी के आकार का आभूषण, कान का गहना (आल० भी)-गण्डे मनेरुमदावतंसा -कु० १।५५, स्वबाहनआमंचलावतंसा -७।३८, रघु० १३।४९, 3 शिरोभूषण मुकुट (आल०) आभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु -तामरसावतंसा अलसनिवेशा —भाग० २।३, पुंडरीकावतंसानि परिष्वाभि —रामा० —पुष्पावतंस मल्लिकस्य—मृच्छ०।

अवतंसक [अव+तंस्+ण्वुल्] कर्णाभूषण, आभूषण।

अवतंसयति (ना० धा० पर०) कर्णाभूषण के रूप में प्रयुक्त करना, कानों को आलिंगन करना -अवतंसयन्ति दयमाना प्रमदा शिरीषकुसुमानि -श० १।४।

अवतंसि (स्त्री०) [अव+तंस्+क्तिन्] फैलाव, प्रसार।

अवतप्त (भू० क० कृ०) [अव+तप्+क्त] तप्त किया हुआ, चमकाया हुआ—अवतप्ते नकुलस्मितम्—आलोटी अवले का गर्व मूर्ति पर खड़ा होना, (कपक के

ढंग से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है)—अवतप्ते नकुलस्येव त एतत्—सिद्धा०।

अवतमसम् [प्रा० स०] मुटपुटा, अल्पान्धकार—क्षीणेऽवतमसं तम—अमर०, अंधकार-अवतमसभिदायै भास्वताभ्युदयतेन—शि० ११।५७, (यहाँ मल्लि० कहता है —यद्यपि क्षीणेऽवतमस तम इत्युक्त तथापि इह विरोधादिशेषतादरेण सामान्यमेव ग्राह्यम्)।

अवतरः [अव+तृ+अप्] उतार, नै० ३।५३, शि० १।४३।

अवतरणम् [अव+तृ+ल्युट्] 1 स्नान करने के लिए पानी में नीचे उतरना, उतार, नीचे आना 2 अवतार दे० 'अवतार' 3 पार करना 4 स्नान करने का पवित्र स्थान 5 एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना 6 परिचय 7 उद्धृत किया हुआ, उद्धरण।

अवतरणिका [अवतरणी+कन् ह्रस्व टाप्] 1 ग्रन्थ के आरम्भ में किया गया मंगलाचरण, जो कि, कहते हैं, सर्वोचित किये गये देवताओं को स्वर्ग से नीचे उतार लाता है, 2 प्रस्तावना, भूमिका।

अवतरणी [अवतरति ग्रन्थोऽनया—अवतृ+करणे ल्युट्] भूमिका।

अवतर्पणम् [अव+तृप्+ल्युट्] शान्ति देने वाला उपचार।

अवताडनम् [अव+ताड्+णिच्+ल्युट्] 1 कुचलना, रौंदना,—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि—उत्तर० १।१४ 2 मारना।

अवतानः [अव+तन्+घञ्] 1 फैलाव 2 धनुष का तनाव 3 आवरण, चंदोवा।

अवतार. [अव+तृ+घञ्] 1 उतार, उदय, आरम्भ —वसन्तावतारसमये—श० १, 2 रूप, प्रकट होना —मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतोऽवतारिणः—काक० 3 देवता का भूमि पर पदार्पण, अवतार लेना—काऽप्येष सम्प्रति नव पुरुषावतार उत्तर० ५।३३ धर्मार्थकामामोक्षाणामवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, 4 विष्णु का अवतार—विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे—भर्तृ० ३।९५, (विष्णु के दस अवतार नीचे लिखे श्लोक में बताये गये हैं —वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते, दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते। पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते, म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥ मत्स्य कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः, रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्ध कल्की च ते दश॥ गीत०) 5 नया दर्शन, विकास, जन्म—नवावतार कमलादिवोत्पलम्—रघु० ३।३६, ५।२४, 6 तीर्थ स्थान 7 (जहाज से) उतरने का स्थान 8. अनुवाद 9. ओहद, तालाब 10 प्रस्तावना, भूमिका।

अवतारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [अव+तृ+णिच्+ण्वुल्] 1 किसी को जन्म देने वाला 2. अवतार लेने वाला।

अवतारणम् [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] 1 उतारना 2. अनुवाद 3 किसी भूत प्रेत का आवेश 4 पूजा, आराधना 5 भूमिका या प्रस्तावना।

अवतीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+तृ+क्त] 1 नीचे आया हुआ, उतरा हुआ 2 स्नात 3 पार गया हुआ, पार किया हुआ—अपि नामावतीर्णोसि बाणगोचरम्—मा० १।

अवनोका [अवपतितं तोकम् अस्याः, प्रा० ब०] स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटना के कारण गर्भ गिर गया हो।

अवत्तिन् (वि०) [अव+दो+इनि] जो विभाजन करता है, काटकर पृथक् करता है, पंख पाँख आदि भागों में बाँटने वाला।

अवदंश [अव+दंश+घञ्] ऐसा चरपरा भोजन जिसके खाने से प्यास लगे, उत्तेजक।

अवदाघ [अव+दह्+घञ्, ह्रस्व च] 1 गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु।

अवदात (वि०) [अव+दै+क्त] 1 सुन्दर—अवदातकान्ति दश० १०७ 2 स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, परिष्कृत—गर्वविद्यावदातचेता—का० ३६, 3 उज्ज्वल, श्वेत—रजनिकरकलावदात कुलम्—का० २३३, कुंदावदाता कलहंसमाला—भट्टि० २।१८, 4. गुणी, सद्गुणी अन्यस्मिन् जन्मनि न कुलमवदात कर्म—का० ६२, 5 पीला—न श्वेत या पीला न।

अवदानम् [अव+दा+ल्युट्] 1 पवित्र एवं मान्यता प्राप्त वृत्ति 2 सम्पन्न कार्य 3 शौर्य सम्पन्न या कीर्तिकर कार्य, पराक्रम, शूरवीरता, प्रशस्त सफलता, गीयमान त्रिपुरावदान -कु० ७।४८, प्रापदवदानवत्तानीतिवृत्तात्—रघु० ११।२१, 4 कथावस्तु 5 काट कर टुकड़े २ करना।

अवदारणम् [अव+दृ+णिच्+ल्युट्] 1 फाड़ना, बाँटना, खोदना, काट कर टुकड़े २ करना 2 कुदाल, खुर्पा।

अवदाह [अव+दह्+घञ्] गर्मी, जलन।

अवदीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+दृ+क्त] 1 बाँटा हुआ, टूटा हुआ 2 पिचकाया हुआ, खंडित 3 हड़बड़ाया हुआ।

अवदोहः [अव+दुह्+घञ्] 1 दुहना, 2. दूध।

अवद्य (वि०) [न० त०] त्याज्य, निंद्य, प्रशंसा के अयोग्य—न चापि काव्य सर्वमित्यवद्यम्—माल्लवि०

१।२, 2. संतोष, दीप बुझना, निश्चाई, अवधिकर, अधिय—उदयहृदनवद्यां तामवद्यापयेत:—रघु० ७।७०, 'अनवद्य' भी 3. चर्चा के अयोग्य, 4. नीच, अधम, —द्यम् 1. अपराध, दोष, त्रुटि 2 पाप, दुर्व्यसन 3 लांछन, निन्दा, झिड़की—उदयहृदनवद्यां तामवद्यापयेन—रघु० ७।७०।

अवद्योतनम् [अव+द्युत् +ल्युट्] प्रकाश।

अवधानम् [अव+धा+ल्युट्] 1 ध्यान—अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने -कु० ४।२, एकाग्रता, सावधानी—अवधानं शृणोति—सावधानतापूर्वक सुनता है 2 लगन, सतर्कता, चौकसी, अवधानात् सतर्कतापूर्वक, ध्यानपूर्वक,—शृणुत अनाद्रधानात् क्रियामिमां कालिदासस्य —विक्रम० १।२, (पाठ०)।

अवधारः [अव+धृ+णिच्+घञ्] सही निश्चय, सीमा।

अवधारक (वि०) [अव+धृ+णिच्+ण्वुल्] सही निश्चय करने वाला।

अवधारण (वि०) [अव+धृ+णिच् +ल्युट्] प्रतिबन्धक, सीमाबन्धन करने वाला, नम, -णा 1 निश्चय, निर्धारण 2. पुष्टीकरण, बल 3 सीमा नियत करना (शब्दों के अर्थों की) —शब्दावधारणे, एवकारश्चावधारणे, मात्र कात्स्न्र्येऽवधारणे— अमर० 4. किसी एक निर्दिष्ट नाम या सबसे पृथक् करके प्रतिबन्ध लगाना।

अवधिः [अव+धा+कि] 1 प्रयोग, ध्यान 2 सीमा, मर्यादा अन्तर्भूतकारी या एकान्तिक—(स्थान और समय की दृष्टि से), सिरा, समाप्ति -स्मरणावधिदिवा सरस्वती—कु० ४।४३, उपसंहार, प्राय. समास के अन्त में अर्थ होता है 'के साथ समाप्त होते हुए' 'पर्यन्त' 'तक' एवं से औचित्यावधि प्रवाद -उत्तर० १, 3 नियतकाल, समय—रघु० १६।५२, क्षेत्रान् खानान् किरहृदिकसस्थापितस्यावधेर्वा —मेघ०८९, यदवधि -यावधि जबसे—तबसे, जबतक —तावत्तक 4 पूर्वनिर्धारित 5 नियुक्ति 6 प्रभाग, जिला, विभाग 7 विवर, गर्त।

अवधीर् (चु० पर०) अवहेलना करना, अनादर करना, तोषा दिखाना,—अवधीरितशुद्धुदनस्य—शि० १, घृणा करना, तिरस्कार करना।

अवधीरणम् [अव+धीर्+ल्युट्] अनादर पूर्वक बर्ताव करना।

अवधीरणा [अव+धीर्+ल्युट्+टाप] अनादर, तिरस्कार, —कृतावज्ञेव भावधीरणामपराद्धेऽपि यदा स्थिरं धत्ते—रघु० ८।४८, मालवि० ३।१९, अथ स ते तिष्ठति मन्युगोचरो विलङ्घ्य सीदं मतोऽवधीरणाम्—शि० ३।१४।

अवधूत (भू० क० कृ०) [अव+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, लहराया हुआ 2. त्यागा हुआ, अस्वीकृत, घृणित —रघु० १९।४३, 3. अपमानित, तिरस्कृत,—तः वह संन्यासी जिसने सांसारिक बन्धनों तथा विषय-वासनाओं को त्याग दिया है—यो विलंघ्याश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थित: पुमान्, अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूत: स उच्यते। या—अवारयात् वरेण्यत्वात् धूतसंसारबन्धनात्, तत्त्वमस्यर्थसिद्धत्वात्सत्यत्वात् तोऽभिधीयते।

अवधूनम् [अव+धू+ल्युट्] 1. हिलाना, लहराना 2. शोक, कष्टकथा 3 अवहेलना।

अवध्य (वि०) [न० त०] मारने के अयोग्य, पवित्र, मृत्यु से मुक्त।

अवध्वंसः [प्रा० स०] 1 परित्याग, उन्मोचन 2 चूरा, राख 3 अनादर, निंदा, लांछन, 4 गिर कर अलग होना 5 बुरकना।

अवन्दम् [अव्+ल्युट्] 1 रक्षा, प्रतिरक्षा—मनो० १।४, 2 तृप्तिकर, प्रसन्नतादायक 3 कामना, इच्छा 4 हर्ष, संतोष।

अवनत (भू० क० कृ०) [अव+नम्+क्त] 1 नीचे झुका हुआ, विनम्र, विनय°, प्रश्रय° 2 झुकता हुआ झुकता हुआ, नीचे गिरता हुआ।

अवनतिः (स्त्री०) [अव+नम्+क्तिन्] 1 झुकना, मस्तक झुकाना, झुकाव,—अवनतिमवने —मुद्रा० १।२, शि० ९।८, 2 पश्चिम में छिपना, डूबना 3 प्रणाम, दण्डवत् 4 झुकाव (जैसे धनुष का)—अनुपायावनति का० (यहाँ अ° का अर्थ 'अवनमन' भी होता है) 5 दासीनता, विनम्रता।

अवनद्ध (भू० क० कृ०) [अव+नह्+क्त] 1 लिपटा हुआ, बना हुआ 2 स्थिर, बैठाया हुआ, बांधा हुआ, चुड़ा हुआ, एक जगह रक्खा हुआ, -द्धम् ढोल।

अवनम्र (वि०) [प्रा० स०] अवनत, झुका हुआ—पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा—कु० ३।५४, चरण° पैरों पर गिरा हुआ।

अवनी (स्त्री) य [अव+नी+अच्, ङीष् वा] 1 नीचे ले जाना 2 नीचे उतारना।

अवनाट (वि०) [नष्टा नासिकायां, अव+नाटच्, दे० अवटोट] चपटी नाक वाला।

अवनाम [अव+नम्+घञ्] 1. झुकना, नमस्कार करना, पैरों पर गिरना 2 नीचे झुकाना।

अवनाह: [अव+नह्+घञ्] बांधना, पेटी लगाना, कसना।

अवनिः - नी (स्त्री०)[अव्+अनि, पक्षे ङीष्] 2. पृथ्वी 2. आकृति 3 नदी। सम०—ईश:,—ईश्वर:, —नाथ:, —पति:,—पाल: भूस्वामी, राजा —पतिरवनिपतीनां तैरवकाशे चतुर्भि: रघु०—१०।८६, ११।९१,

—चर (वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला, आवारागर्द, घुमक्कड़,—थ्र पहाड़,—तलम् पृथ्वीतल,—मंडलम् भूमंडल,—रुह,—रूढ़ वृक्ष।

अवनेजनम् [अव+निज्+ल्युट्] 1 प्रक्षालन, मार्जन—न कुर्यादगुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनम् मनु० २।२०९, 2 धोने के लिए पानी, पैर धोना 3 श्राद्ध में पिंडदान की वेदी पर बिछाये हुए कुशों पर जल छिड़कना।

अवन्तिः—ती (स्त्री०) [अव+झिच् बा०, पक्षे ङीप्] 1 एक नगर का नाम, वर्तमान उज्जयिनी, हिन्दुओं के सात पवित्र नगरों में से एक, कहा जाता है कि यहां मरने से शाश्वत सुख मिलता है—अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका। अवन्ती की स्त्रियां काम-कला में अत्यन्त कुशल होती हैं, तु० आवत्स्य एव निपुणा सुदृशो रतकर्मणि—बालरा० १०।८२, 2 एक नदी का नाम,—(पु०—ब० व०) एक देश का नाम जिसे आजकल मालवा कहते हैं, तथा वहां के निवासी, इसकी राजधानी सिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जयिनी नगरी है—इसके नगराचल में महाकाल का एक मन्दिर भी है, अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहु—रघु० ६।३४, असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः—६।३४, ३५, प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, अवन्तीपूज्जयिनीं नाम नगरीं—का० ५२। सम०—पुरम् अवन्ती नामक नगर, उज्जयिनी।

अवन्ध्य (वि०) [न० त०] जो बंजर न हो, उर्वर, उपजाऊ।

अवपतनम् [अव+पत्+ल्युट्] उतरना, नीचे आना।

अवपक्व (वि०) [अवकृष्टं पाकं यस्य ब० स०] बुरी तरह पकाया हुआ, - क बुरी तरह से पकाना।

अवपात [अव+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना—अधश्चरणावपातम्—भर्तृ० २।३१, पैरों पर गिरना, (आल०) चापलूसी 2 उतरना, नीचे आना 3 विवर, गर्त 4 विशेषकर हाथियों को पकड़ने के लिए बनाया गया बिल या गर्त अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्ते छन्ने तृणादिना—यादव रोधांसि निम्नन्नत्वपातमग्न करीव वन्य पश्च रसास—रघु० १६।७८।

अवपातनम् [अव+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, ठुकराना, नीचे फेंकना।

अवपात्रित (वि०) [अवपात्र (ना० धा०)+णिच्+क्त] अतिविशिष्टजन, ऐसा व्यक्ति जिसको बिरादरी के लोग अपने पात्र में भोजन कराने के लिए अनुमति न देते हों।

अवपीड [अव+पीड्+णिच्+घञ्] 1 नीचे दबाना, दबाव 2 एक प्रकार की औषधि जिसके सूंघने से छींकें आती हैं, नस्य।

अवपीडनम् [अव+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. दबाने की क्रिया 2 नस्य, नस्य क्रिया, आघात।

अवबोध [अव+बुध्+घञ्] 1 जागना, जागरूक होना (विप० स्वप्न)—यौ तु स्वप्नावबोधौ तौ भूतानां प्रलयोदयौ कु० २।८, मेघ० ६।१७, 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण स्वभावनामग्रहणाद्बभूव सान्द्रे रजस्यारभपराङ्मुखोऽपि रघु० ७।४१, ५।६४, प्रतिकूलेषु तैक्ष्ण्यस्यावबोध क्रोध इष्यते सा० द०, 3 विवेचन, निर्णय 4 शिक्षण, समूचन।

अवबोधक (वि०) [अव+बुध्+ण्वुल्] संकेतक, दर्शाने वाला, क 1 सूत्र, 2 भाट 3 अध्यापक।

अवबोधनम् [अव+बुध्+ल्युट्] ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण।

अवभञ्ज [अव+भञ्ज्+घञ्] नीचा दिखाना, जीतना, हराना।

अवभास [अव+भास्+घञ्] 1 चमक-दमक, कान्ति, प्रकाश 2 ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण 3 प्रकट होना, प्रकाशन, अन्त प्रेरणा 4 स्थान, पहुंच क्षेत्र 5 मिथ्याज्ञान।

अवभासक (वि०) [अव+भास्+ण्वुल्] प्रकाशक, कम् परछाई।

अवभुग्न (वि०) [अव+भुज्+क्त] सिकुड़ा हुआ, झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ।

अवभृथ [अव+भृ+क्थन्] 1 मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर वृष्टि के लिए किया जाने वाला स्नान भृथ कोपेन कुण्डाग्नौ मघ्येनादभृदादपि रघु० १।८४, २।२०, १२।३१ १३।६१, 2 मार्जन के लिए जल 3 अनिश्चित यज्ञ जो पूर्वकृत मुख्य यज्ञ की त्रुटियों की शांति के लिए किया जाता है, सामान्य यज्ञानुष्ठान -स्नानक्लमभृथे ततस्त्यजि शि० १४।१०। सम० -स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान।

अवभृथ अपहरण, उठाकर ले जाना।

अवभृट (वि०) [नत नासिकाया —अव+भृट्च्] चपटी नाक वाला।

अवम (वि०) [अव+अमच्] 1 पापपूर्ण 2 दूषित, कलंकित 3 खोटा, नीच, घटिया (विप० परम)—अवमकालनवमा पुरीम्—रघु० ९।१४, दे० 'अवर' 4. अगला, घनिष्ट 5 पिछला, सबसे छोटा।

अवमत (भू० क० कृ०) [अव+मन्+क्त] दूषित, कुत्सित। सम० अङ्कुश, अंकुश को न मानने वाला हाथी, मदमत्त अन्यतुकायाःक्रमताङ्कुशग्रहः—शि० १२।१९।

अवमति (स्त्री०) [अव+मन्+क्तिन्] 1 अवहेलना, अनादर 2 अरुचि, नापसंदगी।

अवमर्द [अव+मृद्+घञ्] 1 कुचलना, 2. बर्बाद करना, अत्याचार करना।

अवमर्श [अव+मृश्+घञ्] स्पर्श, संपर्क।

अवमर्शः [अव+मृष्+घञ्] 1 विचारविमर्श, आलोचना, 2 नाटक की पाँच मुख्य सन्धियों में से एक - अथ मुखप्रतिमुखगर्भावमर्शोपसंहृतिः पञ्च सन्धयः, तापादौ शान्तरायदक्ष सोऽवमर्श इति स्मृत.। सा० द० ३६६; 'विमर्श' भी इसी को कहते हैं. 3 आक्रमण करना।

अवमर्षणम् [अव+मृष्+ल्युट्] 1 असहनशीलता, असहिष्णुता 2 मिटा देना, मिटा डालना, स्मृतिपथ से निष्कासन।

अवमानः [अव+मन्+घञ्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना।

अवमानना-ना [अव+मन्+णिच्+ल्युट् युच् वा] अनादर, तिरस्कार।

अवमानिन् [अव+मन्+णिच्+णिनि] तिरस्कार करने वाला, घृणा करने वाला, अपमान करने वाला चिह्नमात्रपरिज्ञानश्चेत्यवमानिनम् भा० ६, अपि आत्म-गुणावमानिनि--शा० 3।

अवमूर्धन् (वि०) [अवनतो मूर्धाऽस्य] सिर झुकाये हुए। सम०--अय (वि०) सिर को नीचे लटका कर लेटा हुआ, जैसे कि मनुष्य (विप० देव) उत्तानशया देवा अवमूर्धशया मनुष्या।

अवमोचनम् [अव+मुच्+ल्युट्] स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, दीक्षा करना।

अवयव [अव+यु+अच्] 1 (शरीर का) अंग -मुखावयवकल्पना तस्य- रघु० १२।४३ अमर० ४०, ४६, मवस्य,-कस्मिंश्चिदपि जीवति नन्दान्वयावयवे--मुद्रा० १ 2 भाग, अंश 3 तर्कशास्त्र पूर्वोक्त या अनुमान का घटक या अंग (यह पाँच है प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) 4 शरीर 5 घटक, सन्धियों, उपादान (जैसे किसी समिश्रण के)। सम० अर्थशास्त्र के सन्धियों अंगों का आलय।

अवयवशः (अव्य०) [अवयव+शस्] अंश अंश करके, अलग २, टुकड़े टुकड़े करके।

अवयविन् (वि०) [अवयव+इनि] अवयव, अंश या उपभागों से बना हुआ, (पु०-वी) 1 पूर्ण 2 अनुमानवाक्य या कोई तर्कसंगत सन्धि।

अवर (वि०) [न वर इति अवरः न० त०, यु+अप् वा०] 1. (क) आयु में छोटा,- मासेनावर = मासावर--सिद्धा० (ख) बाद का, पश्चवर्ती, पिछला (समय और स्थान की दृष्टि से)-यदवरं कौशाम्ब्या, यदवरमाग्रहायण्या--सिद्धा० 2. अनुवर्ती, उत्तरवर्ती 3 नीचे, अपेक्षाकृत नीचा, घटिया, कम 4. नीच, महत्त्वहीन, सबसे बुरा, निम्नतम (विप० उत्तम) अन्यदन्यदवर स्मृतम्--काव्या० १, दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय--भग० २।४९, यद्यदाचरति श्रेष्ठ तत्तदेवेतरो जनः स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते--भग० ३।२१, अवरश्चाधमश्चैव विद्यात्तावेव वैश्यवत्--मनु० २।२३८ 5 अन्तिम (विप० प्रथम) सामान्यमेवा प्रथमावरत्वम्--कु० ७।४४, 6 न्यूनातिन्यून, (प्राय समास के उत्तरपद के रूप में अकों के साथ)--व्यवरैः सालिभिर्मिश्र्य --मनु० ८।६०, व्यवरा परिषद् ज्ञेया --१२।११२, याज्ञ० २।९९, 7. पश्चिमी, रघु० हाथी की पिछली आंख (- रा स्त्री)। सम० अर्ध: 1 थोड़े से थोड़ा भाग, न्यूनातिन्यून 2. उत्तरार्ध 3 शरीर का पिछला भाग, --अवर (वि०) नीचतम, सबसे घटिया--न हि अकृष्टान् प्रेष्यान्नु प्रेष्यस्यवरावरान् रामा०- उक्त (वि०) अन्त में कहा हुआ,- ज (वि०) अपेक्षाकृत छोटा, कनीयान् (- ज:) छोटा भाई--विदर्भराजावरजा रघु० ६।५८, ८४, १२।३२, - वर्ण (वि०) नीच जाति का (-र्ण:) 1 शूद्र 2 अन्तिम या चौथा वर्ण, वर्णक, -वर्णज: शूद्र --वत: सूर्य,--शैल: पश्चिमी पहाड़ (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ समझा जाता है)।

अवरतः (अव्य०) [अवर+तसिल्] पीछे, बाद में, पिछला, पश्चवर्ती।

अवरति (स्त्री०) [अव+रम्+क्तिन्] 1 ठहरना, रुकना 2 विराम, विश्राम, आराम।

अवरीण (वि०) [अवर+च] 1 पदावनत, ओट लिया हुआ 2 घृणित।

अवरुग्ण (वि०) [अव+रुज्+क्त] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ 2 रोगी।

अवरुद्धिः (स्त्री०) [अव+रुध्+क्तिन्] 1 रुकावट, प्रतिबन्ध 2 घेरा 3 प्राप्ति।

अवरूक्ष (वि०) [न० स०] कुरूप, विकलांग।

अवरोधकः [अव+रुध्+ण्वुल्] भूख न लगना।

अवरोध [अव+रुध्+घञ्] 1 बाधा रुकावट 2 प्रतिबन्ध अन्त प्राणावरोध -मृच्छ० १।१, 3 अन्तःपुर, अन्तःपुरवासी, रनवास निन्ये विनीतैरवरोधदक्षैः--कु० ७।७३, °गृहेषु राज्ञ -- श० ५।३, ६।११, 4. राजा की रानियाँ (समष्टि रूप से) (प्राय ब० व०); --अवरोधे महत्यपि --रघु० १।३२, ४।६८, ८७, ६।४८, १६।५८, 5 घेरा, बन्दीकरण 6 किलाबंदी, नाकेबंदी, 7 दमकन 8 बाड़ा, गोठ 9 चौकीदार 10 हलकापन, खोखलापन।

अवरोधक (वि०) [अव+रुध्+ण्वुल्] 1 बाधा डालने वाला, 2 घेरा डालने वाला, -क: पहरेदार,--कम् रोक, बाड़।

अवरोधनम् [अव+रुध्+ल्युट्] 1 किलाबंदी, नाकेबंदी 2 बाधा, 3. रुकावट, अवरुद्धन 4 राजा का अंतःपुर - राजावरोधजवधूरवतारमन्त - शि० ५।१८।

अवरोधिक (वि०) [अवरोध+ठन्] 1. बाधाजनक, अवरुद्धन डालने वाला 2. घेरा डालने वाला।--क:

अंतःपुर का पहरेदार,—का अंतःपुर की पहरेदार-स्त्री—अयुक्तरूपाधिरुहोऽवरोधिका—शि० १२।२०।

अवरोधिन् (वि०) [अवरोध+इनि] 1 रुकावट डालने वाला, बाधा डालने वाला, 2 घेरा डालने वाला।

अवरोपणम् [अव+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 उन्मूलन 2 नीचे उतारना 3 ले जाना, वञ्चित करना, घटाना।

अवरोहः [अव+रुह्+घञ्] 1 उतार 2 नीचे से चोटी तक वृक्ष के ऊपर लिपटने वाली लता 3 आकाश 4 लटकती हुई शाखा (जैसे बड़ की)—अवरोहशताकीर्णं वटमासाद्य तत्पतुः—रामा० 5 (संगीत में) स्वरों का ऊपर से नीचे आना।

अवरोहणम् [अव+रुह्+ल्युट्] 1 उतरना, नीचे आना 2 चढ़ना।

अवर्ण (वि०) [न० ब०] 1 रंगहीन 2 बुरा, नीचा,—र्णः 1 लोकापवाद, अपकीर्ति, कलंक, बदनामी—सोढुं न तत्पूर्वमवर्णभीरुणा—रघु० १।३८, 2 लांछन, निन्दा—न चावदद्भूतुरवर्णमार्या—५।७, कोई दुर्वचन नहीं कहा।

अवलक्ष (वि०) [अव+लक्ष्+घञ्] ['वलक्ष' भी लिखा जाता है] श्वेत,—क्षः श्वेत वर्ण।

अवलग्न (वि०) [अव+लग्+क्त] चिपका हुआ, लगा हुआ, सटा हुआ,—ग्नम् कमर।

अवलम्ब [अव+लम्ब्+घञ्] 1 नीचे लटकना 2 सहारे लटकना सहारा (आल० भी)—तन्तुजालावलम्बा—मेघ० ७०, कुतूपति भवनद्वार सेवा° भर्तृ० १।६७, 3 स्तंभ, आड, आश्रय (शा० तथा आल०)—सावलम्बगमना—रघु० १९।५०, दूसरों के सहारे चलने वाली,—सन्ततिविच्छेदनिरवलम्बानाम्—शा० ६, दैवेनोप दत्तहस्तावलम्बे—रत्न० १।८, 4 अंत वैसाखी या छड़ी जो सहारे के लिए रखी जाती है।

अवलम्बनम् [अव+लम्ब्+ल्युट्] 1 स्तंभ, सहारा, आड—अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यत करसहस्रमपि—शि० ९।६, प्रम्लानविवलवगतेरवलम्बनार्थं—शा० ५।३, मम पुच्छे करावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ—हि० १, 2 सहायता, मदद।

अवलिप्त (भू० क० कृ०) [अव+लिप्+क्त] 1 घमंडी, उद्धत, अभिमानी 2 लिपा पुता, सना हुआ।

अवलीढ (भू० क० कृ०) [अव+लिह्+क्त] 1 खाया हुआ, चबाया हुआ—दर्भैरवावलीढैं—शा० १।७, 2 चाटा हुआ, लप लप करके पीया हुआ, स्पृष्ट (आल० भी)—नवयौवनावलीढावयवा—दश० १७, जवानी से व्याप्त,—अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेरन्तरौर्वाग्निगर्भे—वेणी० ३।५, चारों ओर से घिरा हुआ 3. निगला हुआ, नष्ट किया हुआ।

अवलीला [अवरा लीला—शा० स०] 1 क्रीडा, खेल, प्रमोद 2 तिरस्कार।

अवलुञ्चनम् [अव+लुञ्च्+ल्युट्] 1 काटना, फाड़ना, उखाड़ना, केश° 2 उन्मूलन।

अवलुण्ठनम् [अव+लुण्ठ्+ल्युट्] 1 भूमि पर लोटना या लुढ़कना 2 लूटना।

अवलेखः [अव+लिख्+घञ्] 1 तोड़ना, खरोंचना, छीलना 2 खुरची हुई कोई वस्तु।

अवलेखा [अव+लिख्+अ+टाप्] 1 रगड़ना 2 किसी को सुसज्जित करना।

अवलेप [अव+लिप्+घञ्] 1 अहंकार, घमंड—प्रियसंगमेऽवनवलेपमदं—शि० ९।५१, (यहां अ° का अर्थ 'लेप करना' भी हो सकता है),—व्यक्तमाला-वलेपा मुद्रा० ३।२२, 2 अत्याचार, आक्रमण, अपमान, बलात्कार किं भवतीनामसुरावलेपेनापराद्धम्—विक्रम० १, ददृशे पवनावलेपजं सृजति व्याप्तमिवाञ्जनाविलम्—रघु० ८।३५, 3 लीपना पोतना, 4 आभूषण 5 सप, समाज।

अवलेपनम् [अव+लिप्+ल्युट्] 1 लीपना पोतना 2 तेल, कोई चिकना पदार्थ 3 संघ 4 घमंड।

अवलेह [अव+लिह्+घञ्] 1 चाटना, लपलपाना 2 अर्क 3 चटनी।

अवलेहिका=अवलेह (3)।

अवलोक [अव+लोक्+घञ्] 1 देखना, दृष्टि डालना, 2 दृष्टि।

अवलोकनम् [अव+लोक्+ल्युट्] 1 अवलोकन करना दृष्टि डालना, देखना,—जो दभूवरवलोकनक्षमा—रघु० ११।६०, 2 दृष्टि में रखना पर्यवेक्षण करना—दीर्घिकावलोकनपरायणा—मालवि० १, 3 दृष्टि, आंख 4 नजर, झांकी योगनिद्रान्तविबुद्धे पार्थैरवलोकनैः—रघु० १०।१४, 5 खोज करना, पूछताछ।

अवलोकित (भू० क० कृ०) [अव+लोक्+क्त] देखा हुआ,—तम् दृष्टि, झांकी।

अववरक [अव+वृ+अप् तत संज्ञायां कुन्] 1 रन्ध्र, छिद्र 2 खिड़की, दे० 'आवरक'।

अववादः [अव+वद्+घञ्] 1 निन्दा 2 धिक्कार, भर्त्सना 3 अवहेलना, अनादर 4 सहारा, आश्रय 5 बुरी रिपोर्ट 6 आदेश।

अवशाख [अव+शक्+अच्] छिपटी, खपची।

अवश (वि) [न० त०] 1 स्वतंत्र, मुक्त 2. जो वश या आज्ञाकारी न हो, अवज्ञाकारी, स्वेच्छाचारी 3 जो किसी के अधीन न हो—अवशो विषयाणाम्—का० ४५, 4 लाचार, इन्द्रियों का दास कु० ६।९५, 5 पराधित, असहाय, शक्तिहीन—कार्यते ह्यवशः—भग० ३।५, कथमवशो ह्यवशीर्ष विधाति—मृच्छ०

१०।१६। सम०—अधिकारिन् (वि०) जिसका मन और इन्द्रियां किसी दूसरे के अधीन न हों।

अवशानुगः [ष० त०] जो दूसरे की इच्छा के अधीन न हो।

अवशातनम् [आ० स०] 1. नष्ट करना 2. काटना, काट गिराना 3. बुझाना, बुझ जाना।

अवशेषः [अव+शिष्+घञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी, —कृतांत°—आत्त वि० ५, कथा का शेष भाग, अर्थ° या नाम° जिसका केवल नाम ही दीक्षित हो या कथा कहानी में ही जिसका वर्णन हो—अथवा जिसका केवल नाम ही शेष रहा हो, आर्त० क्त से भूत भूत के लिए प्रयुक्त, —सावशेषमिव भट्टिनीया वचनम्—मालवि० ४, असमाप्त —भूयः मे सावशेषं वचः—उ० २, मेरी बात सुनो, मुझे अपनी बात पूरी करने दो।

अवश्य (वि०) [न० त०] 1 जो वश में न किया जा सके, जिसको नियन्त्रण में न लाया जा सके 2 अनिवार्य —अवश्यमवश्यमेव फलतो—वेणी० ४।४, 3. अनुपेक्ष्य, आवश्यक। सम० पुत्रः ऐसा बेटा जिसकी सिखावन या शासन में रखना असम्भव हो।

अवश्यम् (अव्य०) [अव+वर्च+डयत् - तारा०] 1 आवश्यकरूप से, अनिवार्य रूप से —स्वामव्यस्त नवजलमयं मोचयिष्यन्नयत्रम्—मेघ० १५, 2 निश्चय से, चाहे कुछ भी हो, सर्वथा, अवश्यन, विन्देह —अवश्य यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया—भर्तृ० ३। १६, तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नीम् (इक्ष्यसि) मेघ०, १०।९३, अवश्यमेव अत्यन्त निश्चयपूर्वक, यदि इसे स० कृ० के साथ जोड़ा जाता है तो इसका अर्थ अनुज्ञात्मिकार्थ लुप्त हो जाता है - अवश्यपाठ्य - जो निश्चित रूप से पढ़ाया जाय, अवश्यकार्य - जो निश्चित रूप से किया जाना है।

अवश्यम्भाविन् (वि०) [अवश्यम् + भू+इनि] अवश्य होने वाला, अनिवार्य—अवश्यम्भाविनो भावा भवन्ति महतामपि—हि० प्र० २८।

अवश्यक (वि०) [अवश्य + कन्] आवश्यक, अनिवार्य, अनुपेक्ष्य।

अवश्या [अव+वर्च+क] कुहरा, पाला, धुंध।

अवश्यायः [अव + वर्च+घ] 1 कुहरा, ओस 2 पाला, सर्दी से ओस—अवश्यायाविलक्षस्य मुखस्यैकस्य चारुताम् —उत्तर० १।२९, 3 बर्फ।

अवष्टब्धम् [अव+स्था+क्त्वा] आम के ऊपर से कोई वस्तु उतारना (वि० 'अवस्थवत्') —अवस्थवताम-मयभाजनविपूर्वपरीभूतो व्यापारकलापः पाकादिकलन व्याख्या —का० प्र० २।

अवष्टब्ध (भू० क० कृ०) [अव+स्तम्भ्+क्त] 1. सहारा दिया गया, थामा गया, पकड़ा गया 2. रोका गया 3. निकटवर्ती, संलग्न 4. थामनेवाला, रुका हुआ 5. बांधा हुआ, घेरा हुआ।

अवष्टम्भः [अव+स्तम्भ्+घञ्] 1. टेक लगाना, सहारा लेना 2. आश्रय, आधार—प्रज्ञाभावैक-सुखावष्टम्भः—का० १४, अहमवष्टम्भनिश्चयः—का० ३, इत्थमात्मानं धैर्यावष्टंभं करोमि—मच० १, 3. अहंकार, घमंड 4. खूंटी, खंभा 5. तोला 6. उपक्रम, आरम्भ 7 ठहराना, रोक 8. आलंब, दृढ़ निश्चय 9. पक्षपात, खुशामद।

अवष्टम्भनम् [अव+स्तम्भ्+ल्युट्] 1. टिकना, सहारा लेना 2.खूंटी, स्तम्भ।

अवष्टम्भवत् (वि०)[स्त्री०—ती] [अवष्टम्भ+मतुप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ, अथवा सोने के बराबर लंबा,—रथीरवष्टम्भमतेव पार्थिवा—रघु० ३।५३ (अ° का अर्थ उपर्युक्त ढंग से किया जाता है, परन्तु प्रस्तुत प्रसंग में इसका अर्थ होगा 'सोनहली, सुनहली')।

अवसक्त (भू० क० कृ०)[अव+सञ्ज्+क्त]1. स्थापित, प्रस्तुत 2. संपर्कशील, स्पर्शी।

अवसक्थिका [अवसक्थे तस्थिनी अस्या कन्] 1. कपड़े की पट्टी जो घुटनों के नीचे पैरों में लपेटी जाती है १६ प्रकार पट्टी या पट्टे से बांधना या पट्टा बांध कर विशेष मुद्रा में होना—अवसाः प्रौढ़ावस्थम् इत्यवा पैशाचसक्थिकाम्—मनु० ४।११२, 2. अतः बेण्टन, पटका या पट्टी।

अवसक्थिका [अव+सञ्+ङी+क्त] पक्षियों के कूल्हे की नीचे की ओर ढलान।

अवसथः [अव+सो+कथन्] 1 आवासस्थान, घर 2. गांव 3 विद्यालय या महाविद्यालय, दे० 'आवसथ'।

अवसथ्यः [अवसथ+यत्] महाविद्यालय, विद्यालय।

अवसन्न (भू० कृ० कृ०) [अव+सद्+क्त] 1 उदास (आल० भी) शिथिल 2 समाप्त, अवसित, बीता हुआ —अवसन्नायां रात्रौ—हि० १, 3. खोया हुआ, अंकित —रघु० ९।७७।

अवसरः [अव+सृ+अच्] 1. मौका, सुयोग, समय —आत्मावसरं दास्यामि—का० २, भवदधिरावसरः प्रदानाय वर्तामि वः—शि० २।७, विसर्जने तस्यावसरः—पं० ७, °प्राप्तम्—मौके के मुताबिक—मालवि० १, २ (अतः) उपयुक्त सुयोग—सखंड सेवावसरं सुरेन्द्रः कु० ७।४०, अवसरोऽयमवधानस्य प्रकाशनिषु—का० १, दे० 'अनवसर' भी 3. स्थान, अवसर, क्षेत्र 4 अवकाश, आनन्द अवसरा 5. अन्तर 6 वर्णन 7. उद्धार 8. कृत्य परायण।

अवसर्जनम् [अव+सृज्+ल्युट्] 1 मुक्त करना, छोड़ा करना 2. स्वेच्छानुसार कार्य करने देना 3. स्थानान्तर।

अवलोकः [अव+लुक्+घञ्] जेंदिरा, गुप्तचर।

अवलोकनम् [अव+लुक्+ल्युट्] नीचे उतरना, नीचे आना।

अवसादः [अव+सद्+घञ्] 1 उदासी, मूर्च्छा, सुस्ती 2. बर्बादी, विनाश—विपदेति तावदवसादकरी—कि० १८।२३, ६।३१, 3 अन्त, समाप्ति, 4. स्मृति का अभाव, थकान, थकावट 5. (विधि में) अभियोग का खराब होना, पराजय, हार।

अवसादक (वि०) [अव+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1 उदास करने वाला, मूर्छित करने वाला, असफल बनाने वाला 2 विनाश लाने वाला, थकान पहुंचाने वाला।

अवसादनम् [अव+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 पतन, नाश, 2. उत्पीडन 3 समाप्त कर देना।

अवसानम् [अव+सो+ल्युट्] 1 ठहरना 2 उपसंहार, समाप्ति, अन्त,—दोहावसाने पुनरेव दोग्धीम्—रघु० २।२३, तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानाम्—१।९५, 3 मृत्यु, रोग—वेणी० ५।३८, मूलपुरुषावसाने सपद परमुपतिष्ठन्ति—शा० ६, 4 सीमा, मर्यादा 5 (व्या० में) किसी शब्द या अवधि का अन्तिम अंश (विप० आदि) 6 विराम 7 स्थान, विश्रामस्थल, आवासस्थान।

अवसायः [अव+सो+घञ्] 1 उपसंहार, अन्त, समाप्ति 2 अवशिष्ट, 3 पूर्ति 4 संकल्प, दृढ़निश्चय, निर्णय।

अवसित (भू० कृ० कृ०) [अव+सो+क्त] 1 समाप्त, अन्त किया गया, पूरा किया गया,—यूपावसितेषु क्रियाविधौ—रघु० ११।३७, अवसितश्च पशुरसौ—शा० ९१, उस पशु का काम तमाम हो चुका है,—वत्सस्यवसिते तस्मिन्नसर्जं पितरमात्मजम्—कु० २।५३, 2 ज्ञात, अवगत 3 व्यवस्थित, निर्धारित, निश्चय किया गया 4 जमा किया हुआ, एकत्र किया हुआ (जैसा कि अन्न), 5 बंधा हुआ, नत्थी किया हुआ, बांधा हुआ।

अवसेकः [अव+सिच्+घञ्] 1 छिड़काव, सिंचाई —देश को नु जलावसेकाद्विचिल—मृच्छ० ३।१२।

अवसेचनम् [अव+सिच्+ल्युट्] 1 छिड़कना 2 छिड़कने के लिए पानी—पार्व°—मनु० ४।१५१ 3. बाहर निकालना।

अवस्कन्दः-दनम् [अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1 आक्रमण करना, आक्रमण, हमला 2 उतार 3. शिविर।

अवस्कन्दिन् (वि०) [अव+स्कन्द+णिनि] आक्रमणकारी, हमलावर, बलात्कार करने वाला।

अवस्करः [अवकीर्यते इति-अवस्कर, कृ+अप, सुट्] 1 विष्ठा, मल 2 गुह्यदेश (योनि लिंग, गुदा आदि) 3 गर्त, बुहारन।

अवस्तरणम् [अव+स्तृ+ल्युट्] बिछौना, बिछावन।

अवस्तात् (अव्य०) [अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरमित्यर्थे —अवर+अस्तातिं अवादेशः] 1 नीचे, नीचे से, नीचे की ओर 2 अवस्तात् नीचे।

अवस्तारः [अव+स्तृ+घञ्] 1 पर्दा, 2. चादर, कनात 3 चटाई।

अवस्तु (नपु०) [न० त०] 1 निकम्मी वस्तु, तुच्छ बात —अवस्तुनिबन्धपरे कथं नु ते—कु० ५।६६, 2 अवास्तविकता, सारहीनता—वस्तुन्यवस्तुसंरोधोऽलंकारः।

अवस्था [अव+स्था+अङ्] 1 हालत, दशा, स्थिति —स्वामिनो महत्यवस्था वर्तते—पञ्च० 1 विषम दशा, —नृपावस्थ स्वसुः कृते—रघु० १२।८०, तां तामवस्थां प्रतिपद्यमानम्—१३।५, ईदृशीमवस्थां प्रापय्यो-प्रेम—श० ५, कु० २।६ (प्रायः समास में) -तदवस्थः पद्य ५, उस दशा को पहुंचा हुआ 2 हालत परिस्थिति —3 काल दशाक्रम, यौवन°, वयोऽवस्था तस्या शृणुत—मा० ९।२९ 4 रूप, छवि 5 दर्जा, अनुपात 6 स्थिरता, दृढ़ता जैसा कि 'अनवस्था' में दे० 7 न्यायालय में उपस्थित होना। सम०—अन्तरम् बदली हुई दशा, -चतुष्टयम् मानवजीवन की चार दशाएँ (बाल्य, कौमार यौवन और वार्धक्य), त्रयम् तीन अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न, तथा सुषुप्ति),—द्वयम् जीवन के दो पहलू -सुख और दुःख।

अवस्थानम् [अव+स्था+ल्युट्] 1 खड़ा होना, रहना, बसना 2 स्थिति, हालत 2 आवासस्थान, घर, ठहरने का स्थान 3 ठहरने का समय।

अवस्थायिन् (वि०) [अव+स्था+णिनि] ठहरने वाला, रहने वाला।

अवस्थित (भू० कृ० कृ०) [अव+स्था+क्त], 1 रहा हुआ, ठहरा हुआ,—एवमवस्थिते -का० १५८, इन परिस्थितियों में, 2 उद्देश्य में स्थिर, दृढ़ 3 टिका हुआ, सहारा लिये हुए।

अवस्थितिः (स्त्री०) [अव+स्था+क्तिन्] 1. निवास करना, बसना 2 निवासस्थान, आवास।

अवस्यन्दनम् [अव+स्यन्द्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, रिसना।

अवस्रंसनम् [अव+स्रंस+ल्युट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना अधःपात।

अवहतिः (स्त्री०) [अव+हन्+क्तिन्] पीटना, कुचलना।

अवहननम् [अव+हन्+ल्युट्] 1 चावल कूटना, पीटना अवहननायोलूखलम्—महा० 2. फेंकना—अपावसावहननम्—याज्ञ० ३।९४, (अवहननम्=फु-फुसः—मिता०)।

अवहरणम् [अव+हृ+ल्युट्] 1 ले जाना, हटाना 2 फेंक देना 3 चुराना, लूटना 4 सुपुर्दगी 5. यज्ञ का अन्यायी स्थगन, सन्धि।

अवहस्त [अवरः हस्तस्य इति—ए० त०] हथेली की पीठ।

अवह्राणिः [ष्ठा० स०] खो जाना, घाटा।

अवहारः [अव+हृ+घञ्] 1. चोर, 2. डाकू लोग की मण्डली 3 अस्थायी युद्धविराम, सन्धि, 4 बुलावा, आमन्त्रण 5. धर्मस्थान 6 सुपुर्दगी, वापस लेना।

अवहारकः [अव+हृ+ण्वुल्] डाकू मण्डली।

अवहार्य (स० कृ०) [अव+हृ+ण्यत्] 1. ले जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2 दण्ड के योग्य, सजा दिये जाने के योग्य, 3 धुल प्राप्त करने योग्य, फिर मोल लेने के योग्य।

अवहालिका [अव+हल्+ण्वुल्+टाप् इत्व] दीवार।

अवहास:] [अव+हस्+घञ्] 1 मुस्कराना, मुस्कान, 2. दिल्लगी, मजाक, उपहास—यच्च(वहासार्थमसत्कृतोऽसि—भग० ११।४२।

अव (व) हित्था-त्थम् [न बहिः निष्ठति इति—स्था+क पृषो०] 1 पाखण्ड, 2. आन्तरिक भावगोपन, ३३ व्यभिचारिभावों में से एक-मदगौरवलज्जादेर्हर्षाद्याकार-गुप्तिरवहित्था—सा० द०, रस० के अनुसार—व्रीडादिना निमित्तेन हर्षाद्यनुभावाना गोपनाय चेष्टितो भावविशेषोऽवहित्थम्—उदा० कु० ६।८४, भामि० २।८०।

अवहेलः—ला [अव+हेल्+क, स्त्रियां टाप्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना—अवहेला कुटज मधुकरे मा गा—भामि० १।६।

अवहेलनम्—ना [अव+हेल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] अवज्ञा।

अवाक् (अव्य०) [अव+अच्+क्विन्] 1. नीचे की ओर 2. दक्षिणी, दक्षिण की ओर। सम०—आनम् अनादर,—आस्य (वि०) दक्षिणी,—मुख (वि०) (स्त्री—खी) 1 नीचे की ओर देखने वाला—अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टि—रघु० २।६०, १५।७८, 2 सिर के बल—शिरस् (वि०) नीचे को सिर लटकाये हुए—स मूढो नरकं याति कालसूत्रमवाक्शिरा—मनु० ३।२४९, ८।९४।

अवाक्ष (वि०) [अवनतान्यक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य—ब० स०] अजितेन्द्रिय, बेसब्र।

अवाक्ष (वि०) [अवनतमक्षमस्य—ब० स०] नीचे को सिर किये हुए, नीचे को झुके हुए।

अवाच् (वि०) [न० ब०] वाणीरहित, मूक—(नपु०)—ब्रह्म।

अवाच्] (वि०) [अव+अञ्च्+क्विन्] 1. नीचे की
अवाञ्च्] ओर झुका हुआ, मुड़ा हुआ—दूर्वान्तश्चित्रशिखरेव नवावनाम्रः—शि० ६।७९, 2. नीचे की ओर स्थित, अपेक्षाकृत नीचा 3. सिर के बल 4 दक्षिणी—(पु० नपु०) ब्रह्म,—ची 1 दक्षिणदिशा, 2. निम्नप्रदेश।

अवाचीन (वि०) [अवाच्+ख] 1. नीचे की ओर, सिर के बल 2. दक्षिणी 3. अवरुद्ध हुआ।

अवाच्य (वि०) [न० त०] 1. जिसे दोषोक्ति करना उचित न हो,—अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना यज्ञेऽनादरणादिषु—मनु० २।१२८, 2. बोले जाने के अयोग्य, निकृष्ट, दुष्ट—अवाच्यं यदतो जिह्वा कथं न पतिता तव—रामा०, सम० २।३६ 3. अस्पष्ट उक्ति, शब्दों द्वारा अकथनीय। सम०—देशः बोलने के अयोग्य स्थान, योनि।

अवाञ्चित (वि०) [अव+अञ्च्+क्त] झुका हुआ, नीचा।

अवाप्तः [अव+आप्+क्त] खाना लेना, स्थान अंदर की ओर ले जाना।

अवान्तर (वि०) [प्रा० स०] 1. बीच में स्थित या खड़ा हुआ—दे० समास 2. अंतर्वर्ती, सम्बन्धित 3. अधीन, गौण 4. घनिष्ट संबंध से रहित, असंबद्ध, अतिरिक्त। सम०—दिश्,—दिशा मध्यवर्ती दिशा (जैसा कि आग्नेयी, ऐशानी, नैर्ऋती और वायवी),—देशः दो स्थानों का मध्यवर्ती स्थान, अन्तःप्रदेश।

अवाप्तिः (स्त्री) [अव+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, ग्रहण करना—तप. किलेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४।

अवाप्य (स० कृ०) [अव+आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य।

अवारः—रम् [न पार्यते अत्रेत्र—पृ+कर्मणि घञ्] 1. नदी का निकटस्थ किनारा 2. इस ओर। सम०—पारः समुद्र,—पारीण (वि०) 1. समुद्र से संबंध रखने वाला 2. समुद्र को पार करने वाला।

अवारीणः [अवार+ख] नदी को पार करने वाला।

अवावः प्रथम पति को छोड़कर उसी जाति के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र—द्वितीयेन तु यः पित्रा सवर्णायां प्रजायते. अवावट इति ज्ञेयः शूद्रधर्मा स दायिकः॥

अवावट्-(पु०) [अव+वट्+क्विप्] चोर, घुसकर के आने वाला।

अवाशस् (वि०) [न० ब०] अस्त न पहुंचे हुए, नंगा (पु०) बुद्ध।

अवाशस्य (वि०) [स्त्री०-खी] 1. अवाशस्त्रिक 2. विवाहार, विवेक शून्य।

अविः [अव्+इन्] 1 भेड़ [इसी अर्थ में—स्त्री० खी]—जीवकार्भुकस्तावीत्—मनु० ११।१३८, ३।१५, 2. सूर्य 3. पहाड़ 4. वायु, हवा 5 ऊनी कपड़ा, 6. शाक 7 दीवार, बाड़ा 8. पृथ्वी,—विः (स्त्री०) 1. भेड़ 2. रजस्वला स्त्री। सम०—अजः देवता,—आरोकः एक प्रकार का उपहार (जो भेड़ों के रूप में दिया जाता है)—कूलम्—कूलम्,—चरीलम्,—क्षीरम् भेड़ का दूध,—चटः भेड़ की खाल, ऊनी कपड़ा,—शाला गड़रिया,—स्थलम् भेड़ों का स्थान, एक प्रकार का

नाम—अविस्मर्तं मुकुन्दस्य माकन्दी कारणावतम् —आद्याधा०।

अविकः [अवि+कन्] भेड़ा,—का भेड़,—कम् ऊन।

अविका [अवि+कन्+टाप्] भेड़, भेड़ी।

अविकत्थ (वि०) [न० ब०] जो शेखी न मारता हो, अभिमान न करता हो।

अविकत्थन (वि०) [न० ब०] जो शेखी न बघारे, जो अभिमान न करे—विद्वांसोऽविकत्थना भवन्ति—मुद्रा० ३।

अविकल (वि०) [न० त०] 1 अक्षत, समस्त, पूरा, सम्पूर्ण, सारा—शालीन्द्रियाण्यविकलानि—भर्तृ० २।८०, °लं फलम् —मेघ० २८।३४, °शरच्चन्द्रमधुर - मा० २।११, पूर्ण, पूर्णगोलाकार 2 नियमित, मुव्यवस्थित, सुसंगत, शास्त्र—कलमविकलताल गायकैर्बोधहेतो शि० ११।१०।

अविकल्प (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय,—प्पः 1 सदेह का अभाव 2 इच्छा या विकल्प का अभाव 3 विधि या नियम,—प्पम् (अव्य०) निस्सन्देह, निस्सकोच।

अविकार (वि०) [न० ब०] निर्विकार—र. अविकृति, अपरिवर्तनशीलता।

अविकृतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 परिवर्तन का अभाव 2 (सांख्य द० में) अचेतन सिद्धान्त जिसे प्रकृति कहते हैं और जो इस विश्व का भौतिक कारण है,—मूल-प्रकृतिरविकृति —सां० का०।

अविक्लव (वि०) [न० ब०] शक्तिहीन, दुर्बल,—व कायरता।

अविक्रियः (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनशील, निर्विकार, —यम् ब्रह्म।

अविक्षत (वि०) [न० त०] अक्षत पूर्ण, समस्त—विक्रेतु प्रतिषेध तत्रास्मिन्नेवाङ्गधविक्षतम्—स्मृति।

अविग्रह (वि०) [न० त०] शरीररहित, परब्रह्म का विशेषण,—हः (व्या० में) नित्यसमास—जिसके विधायक अङ्गों से पृथक्-पृथक् अर्थ की अभिव्यक्ति न हो सके।

अविघात (वि०) [न० ब०] बाधारहित, बिना रुकावट के, °गति (वि०) अपने मार्ग में निर्बाध।

अविघ्न (वि०) [न० ब०] निर्बाध, —घ्नम् बाधा या रुकावट से मुक्ति, कल्याण (यह शब्द नपुंसक लिंग है, यद्यपि 'विघ्न' पुं० है) साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते-रघु० ११।१९ अविघ्नमस्तु ते म्वेषा पितेव पुरि पुरिणाम्—१।९१।

अविचार (वि०) [न त०] विचारशून्य, विवेकरहित—र [न० त०] अविवेक, नासमझी।

अविचारित (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, जो भली-भांति विचारा न गया हो। सम०—सिद्धम्, पक्षपात, पक्षपातपूर्ण सम्मति।

अविचारिन् (वि०) [न० त०] 1. उचित अनुचित का विचार न करने वाला, विवेकहीन 2 लापरवाह।

अविज्ञातृ (वि०) [न० त०] अनजान—(पुं०—ता) परमेश्वर।

अविडीनम् [न० त०] पक्षियों की सीधी उड़ान।

अवितथ (वि०) [न० न०] 1 जो झूठा न हो, सच्चा —तदवितथमसद्वादीर्यन्मामेव प्रियेति—शि० ११।२३, अवितथा कितवा सखि मा शिर -६।१८, 2 पूरा किया हुआ, सफल, थम् [न० त०] सचाई, - अवितथमाह प्रियसदा -शा० 3 प्रियवदा ठीक (सही) कहती है, —थम् (अव्य०) जो मिथ्या न हो, सचाईपूर्वक—मनु० २।१४४।

अविद्यज्ञ-ज्ञ [न० त०] मूर्ख।

अविदूर (वि०) [न० त०] जो दूर न हो, निकटस्थ, समीपस्थ रम् सामीप्य— रम् (अव्य०) निकट, दूर नहीं, इसी प्रकार—अविदूरेण, अविदूरात्,—दूरत,—दूरे।

अविद्या (वि०) [न० त०] अशिक्षित, मूर्ख, नासमझ, —द्या [न० त०] 1 अज्ञान, मूर्खता ज्ञान का अभाव 2 आध्यात्मिक अज्ञान 3 भ्रम, माया (यह शब्द वेदान्त में बहुधा प्रयुक्त होता है, इसी माया के द्वारा अखिल विश्व को (जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व नहीं) ब्रह्म में अन्तर्हित कर दिया है, यह ब्रह्म ही सत् है)।

अविद्यामय (वि०) [अविद्या मयट्] जो अज्ञान या भ्रम के द्वारा उत्पन्न हो।

अविधवा [न० त०] जो विधवा न हो, विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है भर्तुर्मित्र प्रियसविधवे विद्धि-मामम्बुवाहम्—मेघ० ९०।

अविधा (अव्य०) विस्मयादिद्योतक अव्यय जो भय के अवसर पर सहायतार्थ बुलाने के लिए "सहायता, सहायता" बोला जाता है।

अविधेय (वि०) [न० त०] जिसे वश में न किया जा सके, विपरीत, विरोधी—यविधेयविधेयताम् मुद्रा० ६।२।

अविनय (वि०) [न० ब०]अविनीत दुर्विनीत, अशिष्ट—यः [न० त०] 1 शिष्टता या शालीनता का अभाव 2 दुर्व्यवहार उजड्डपन अशिष्टता उजड्डव्यवहार अयमाचरत्यविनय मुग्धासु तपस्विकन्यासु श० १।२५, अभद्रता, आचरण का अनौचित्य, 3 अशिष्टाचार, अनादर 4 अपराध जुर्म दोष 5 घमंड, अहंकार, धृष्टता अविनयमपनय विष्णो श०।

अविनाभाव [न०त०] 1 वियोग का अभाव 2 अनिवार्य सम्बन्ध, अनिवार्य चरित्र, वियुक्त न होने योग्य सम्बन्ध 3. सर्वत्र अविनाभावोऽत्र सम्बन्धमात्रं न तु नान्तरीयकत्वम्—काव्य० २।

अविनीत (वि०) [न० त०] 1 विनयशून्य, दुःशील 2. धृष्ट, उजड्ड।

अविभक्त (वि०)[न० त०] 1. न बटा हुआ, अविभाजित, संयुक्त (जैसे कि पारिवारिक सम्पत्ति) 2. जो दूटा न हो, समस्त।

अविभाग (वि०) [न० ब०] जो बांटा न गया हो, अविभक्त—क: [न० त०] 1. बटवारा न होना 2 बिना बटा हुआ भाग।

अविभाज्य (वि०) [न० त०] जो बांटा न जा सके —क्यप् 1. न बांटा जाना. 2. जो बँटवारे के योग्य न हो (कुछ ऐसी वस्तुएं होती हैं जो बँटवारे के समय भी बांटी नहीं जाती) —उदा० वस्त्रं पात्रमलंकारं कृतान्नमुदक स्त्रिय.. योगक्षेम प्रचार च न विभाज्यं प्रचक्षते – मनु० ९।२१९, °ता न बांटा जाना, बँटवारे की अयोग्यता।

अविरत (वि०) [न० त०] विरामशून्य, न रुकने वाला, सतत, निरन्तर अविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन—मेघ० १०२, को० मन्दोऽप्यविरतोद्योग सर्वत्र विजयी भवेत् 'करत२ अभ्यास के जड़मति होत सुजान'—क्रम् (अव्य०) निरन्तरतापूर्वक, लगातार – अविरत परकार्य-कृता सताम्– भामि० १।११३।

अविरति (वि०) [न० ब०] निरन्तर —ति: (स्त्री०) [न० त०] 1. सातत्य, निरन्तरता 2 कामातुरता।

अविरल (वि०) [न० त०] 1 घना, सघन,—°वारिधारा —उत्तर० ६, तेज बौछार 2. सटा हुआ 3. स्थूल, मोटा, ठोस 4 निर्बाध, लगातार, - क्रम् (अव्य०) 1. घनिष्ठतापूर्वक – अविरलालिङ्गितु पयम —श० ३।७, 2. निर्बाधरूप से, लगातार।

अविरोध: [न० त०] सुसगतता, अनुकूलता – सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृत स्वार्थाविरोधेन ये– मृच्छ० २।७४, अपने स्वार्थ के अनुकूल।

अविलम्ब (वि०)[न० ब०] आशुकारी —ब: [न० त०] विलम्ब का अभाव, आशुकारिता— बम्, अविलम्बेन (अव्य०) बिना देर किये, शीघ्र ही।

अविलम्बित (वि०) [न० त०] बिना देर किये, शीघ्रकारी, शिघ्र, आशुकारी, - तम् (अव्य०) शीघ्रतापूर्वक, बिना देर किये।

अविवा [अव्+इलच्] भेड़।

अविविक्त (वि०) [न० त०] 1. अनभिज्ञेत, अनुदिष्ट —भारत. इत्यत एकवेदग्रहणमविविक्तम् 2 जो बोलने या कहने के लिए न हो।

अविविक्त (वि०) [न०त०] 1. जिसकी छानबीन न की गई हो, जो भली-भांति विचारा न गया हो 2. जो विवेचना का भेद न जानता हो, विस्मित 3. सार्वजनिक।

अविवेक (वि०) [न० ब०] विचारशून्य, विवेकशून्य—क: [न० त०] 1. ठीक ज्ञान या विचार का अभाव, अविचार—अविवेक: परमापदां पदम्—कि० ९।३० 2. अनबाजी, उतावलापन।

अविशङ्कु (वि०) [न० ब०] भयरहित, संदेहशून्य, निडर —का संदेह या भय का अभाव, बेरोखा,—कम्, अविशङ्कम् (अव्य०) निस्संदेह, निस्संकोच।

अविशङ्कित (वि०)[न० त०] 1. निःशंक, निडर 2. निस्संदेह, विश्वासी,—सृजत्यवत्यत्कर्षं मुहास्पदमनिर्वाचिता —काव्य० 1

अविशेष (वि०) [न० ब०] बिना किसी अन्तर या भेद के, बराबर, समान,—ब:,—क्यङ् 1. अन्तर का अभाव, समानता 2. एकता, समता। सम०—ज्ञ दोनों के अन्तर को न समझने वाला, अविवेचक।

अविश्व (वि०) [न० ब०] 1. जो बहुरीला न हो,—श्व: 1. समुद्र 2. राजा—श्वी 1. नदी 2. पृथ्वी 3. आकाश।

अविश्वस्त (वि०) [न० ब०] अनीश्वर, अप्रभु -स्त: [न० त०] 1. अभाव 2. अविश्वसनीयता—एतेनविश्वे हि न दीपस्य प्रकाशनम्– हि० २।७९, 3. निश्चिन्त, जो संदेह के अन्दर न हो, परे, असंदिग्धकर– न चाविश्वासीयताज्ञा-विषयो नाम—का० ४, सकल वचनानामविषय:—का० १।३०, शब्दों की शक्ति से बाहर, 4. इन्द्रियार्थों की उपेक्षा।

अवी [अवस्त्वायां ङ्यां – अव्+ई] रखवाली स्त्री।

अवीचि (वि०) [न० ब०] तरंगशून्य—चि: नरक-विशेष।

अवीर (वि०) [न० ब०] 1. जो वीर न हो, कायर 2. जिसके कोई पुत्र न हो,—रा वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति हो (विप० 'वीरा' जिसकी परिभाषा यह है —पतिपुत्रवती नारी वीरा वीरेति कथ्यते) अनर्चित वृथा नाशयन्वीरानार्यश्च योषित:—मनु० ४। २१६।

अवृत्ति (वि०) [न० ब०] 1. जिसकी सत्ता न हो, जो विद्यमान न हो 2. जिसकी कोई वृत्तिका न हो,—त्ति: (स्त्री०) [न० त०] 1. वृत्तिका अभाव, वृत्तिका का कोई साधन न होना, अपर्याप्त आय—अवृत्ति-कर्षिता हि स्त्री प्रदुष्येत् स्थितिलक्षणे—मनु० ९।७४, १०।१०१, आदत्तेताममेवात्मावृत्तावेकतरादिकम्—अ० २२३, 2. पारिवारिक का अभाव, °र्भय अनशनादय।

अवृथा (अव्य०) [न० त०] व्यर्थ नहीं, सफलता पूर्वक। सम०—कर्मन् (वि०) सफल।

अवृष्टि (वि०) [न० ब०] वारिश न करने वाला,—ष्टि: (स्त्री०) [न० त०] वृष्टि का अभाव, अनावृष्टि।

अवेक्षक (वि०) [अव+ईक्ष्+ण्वुल्] निरीक्षण करने वाला, देखरेख करने वाला, अवेक्षक।

अवेक्षणम् [अव+ईक्ष्+ल्युट्] 1. किसी ओर देखना, नजर डालना 2. रखवाली करना, देखरेख रखना, देखा

करना, अवीक्षण, निरीक्षण—वर्णाश्रमावेक्षणजागरूक —रघु० १४।८५, 3 ध्यान, देखरेख, पर्यवेक्षण 4 ख्याल करना, ध्यान रखना—दे० 'अनवेक्षण'।

अवेक्षणीय (सं० कृ०) [अव+ईक्ष्+अनीयर्] देखने के योग्य, आदर करने के योग्य, ध्यान रखने के योग्य, विचार किये जाने के योग्य—तपस्विसामान्यमवेक्षणीयम्—रघु० १४।६७।

अवेक्षा [अव+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1 देखना, दृष्टि डालना 2 ध्यान, देखरेख, ख्याल।

अवेद्य (वि०) [न० त०] 1 न जानने योग्य, गुप्त 2 प्राप्त करने के योग्य,—य बछड़ा।

अवेल (वि०) [न० ब०] 1. असीम, सीमारहित, निस्सीम 2. असामयिक,—ल [न० त०] जानकारी का छिपाव, —ला प्रतिकूल समय।

अवैध (वि०) [स्त्रियाम्—धी] [न० त०] 1 अनियमित, जो नियम या कानून के अनुसार न हो—अवैध पक्षम कुर्वन् राजा दण्डेन शुध्यति 2 जो शास्त्रविहित न हो।

अवैधत्वम् [न० त०] एकता।

अवोक्षणम् [अव+उक्ष्+ल्युट्] झुके हुए हाथ से छिड़काव करना—उत्तानेनैव हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्तितम्, व्यङ्क्ताभ्युक्षण प्रोक्त तिरश्चावोक्षण स्मृतम्॥

अवोक्षः [अव+उक्ष्+घञ्, नि० न लोप] छिड़काव करना, गीला करना।

अव्यक्त (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट, अप्रकट, अदृश्यमान अनुच्चरित—°वर्ण अस्पष्ट भाषण—शा० ७।१७, 2 अदृश्य, अप्रत्यक्ष, 3 अनिश्चित—अव्यक्तोयमचित्योऽयम् -भग० २।२५, ८।२०, 4 अविकसित, अरचित 5 (बीज० में) अज्ञात,—क्त 1 विष्णु 2 शिव 3 कामदेव 4. मूल प्रकृति 5 मूर्ख,—क्तम् (वेदान्त० में) 1 ब्रह्म, 2 आध्यात्मिक अज्ञान, (सां० द० में) सर्व कारण, प्रजननात्मक नियम का मूलतत्त्व जिससे भौतिक संसार के सारे तत्त्व विकसित हुए हैं—बुद्धेरिहाव्यक्तमुदाहरन्ति—रघु० १३।६०, महत परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुष पर - कठ० 3 आत्मा,—क्तम् (अव्य०) अप्रत्यक्षरूप से, अस्पष्ट रूप से। सम० —अनुकरण अनुच्चरित तथा निरर्थक ध्वनियों की नकल करना,—आदि (वि०) जिसका आरम्भ अगाध हो,—क्रिया बीजगणित का एक हिसाब,—गत (वि०) अनुच्चरित शब्द,—मूलप्रभवः सांसारिक अस्तित्व रूपी वृक्ष (सां० में),—राग (वि०) हलका लाल, गुलाबी (—गः) ऊषा का रंग,—अमर०,—राशि (बीजगणित में) अज्ञात अंक या परिमाण,—लक्षणः,—व्यक्तः शिव—वर्त्मन्,—वार्य (वि०) जिसके मार्ग अगाध और अभेद्य हैं,—वाच् (वि०) अस्पष्ट रूप से बोलने वाला,—साम्यम् अज्ञात परिमाणों की समीकरण राशि।

अव्यग्र (वि०) [न० त०] 1 अक्षुब्ध, अनाकुल, स्थिर, शान्त 2 किसी काम में न लगा हुआ

अव्यङ्ग (वि०) [न० त०] जो अंगविकल या दोषयुक्त न हो, सुनिर्मित, ठीक, पूरा।

अव्यञ्जन (वि०) [न० ब०] 1 चिह्नरहित, लक्षणरहित (जैसे कि लिंगभेदक) °ना कन्या 2. अस्पष्ट,—नः बिना सींग का पशु (सींग आने की आयु होने पर भी)।

अव्यथ (वि०) [न० ब०] पीड़ा से मुक्त,—थः साँप।

अव्ययिन् [न-व्यय+इनि] 1 सूर्य, 2 समुद्र, —नी 1 पृथ्वी 2 आधीरात, रात।

अव्यभि (भी) चार. [न० त०] वियोग का अभाव —अन्योन्यस्याव्यभीचारो भवेदामरणान्तिक मनु० ९।१०१ 2 एकनिष्ठता, वफादारी।

अव्यभिचारिन् (वि०) [न० त०] 1 अविरोधी, अप्रतिकूल, अनुकूल कु० ६।८६, 2 अपवादरहित,—यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये न रूपमित्यध्यभिचारि तद्वच कु० ५।३६ रक्षोपनिपातिनोऽनर्था इति यदुच्यते तदव्यभिचारिच श० ६, 3 सद्गुणी, सदाचारी, ब्रह्मचारी (सती), 4 स्थिर, स्थायी, श्रद्धालु।

अव्यय (वि०) [न० ब०] 1 (क) अपरिवर्तनशील, अविनश्वर, अक्षय्य वेदाविनाशिन नित्य य एनमजमव्ययम्- भग० २।२१, विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति - १७ (ख) नित्य, शाश्वत अक्षयत्वं प्राहुरव्ययम् - भग० १५।१, अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् - २।३४, 2 जो अर्थ न किया गया हो, जो व्यर्थ नष्ट न किया गया हो 3 मितव्ययी 4 शाश्वत फल देने वाला, -यः 1 विष्णु 2. शिव, यम् 1 ब्रह्म, 2 (व्या० में) वह शब्द जिसके रूप में वचन लिंग आदि के कारण कोई विकार नहीं होता —सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। सम० -आत्मन् (वि०) अविनश्वर या नित्य (—त्मा) आत्मा या ब्रह्म -अर्थः अव्ययों की सूची

अव्ययीभाव. [अनव्ययमव्यय भवत्यनेन, अव्यय+च्वि+भू+घञ्] 1 संस्कृतभाषा के चार मुख्य समासों में से एक, क्रियाविशेषण समास (अव्यय से बना हुआ अर्थात् अव्यय अथवा क्रिया विशेषण तथा संज्ञा के मेल से बना हुआ) अविहरि, अनुगङ्गम् आदि 2 व्यय का अभाव (दरिद्रता के कारण)—इच्छो द्विगुरपि चाहं यद्यनेहे नित्यमव्ययीभाव, तत्पुरुष कर्मधारय यमाहु स्यां बहुव्रीहि। उज्जट० (जो संस्कृत के समासों को आसानी के साथ याद रख लेता है) 3 अनश्वरता।

अव्यलीक (वि०) [न० त०] 1 जो झूठा न हो, सच्चा

2. प्रिय, अत्यधिकर भावनाओं से रहित,—इत्थं गिरः प्रियतमा इव लोऽव्यलीकाः सुप्तोत्थिता इव सरोजवनौकसोऽद्य तथा व्यलीकाः—शि० ५।१ ।

अव्यवधान (वि०) [न० ब०] 1. मिला हुआ, पास का, अन्तररहित 2. खुला हुआ 3. जो ढका न हो, नंगा 4. अनावधान, अपरवाह,—नम् अपरवाही ।

अव्यवस्थ (वि०) [न० ब०] 1 जो नियत न हो, हिलने-डुलने वाला, अस्थिर —स्थानादविचलितमव्यवस्थम्—कु० १।३३ 2 अनियन्त्रित, विशृंखल, अनियमित—क्या 1 अनियमितता, मान्यता-प्राप्त नियम से स्खलन 2 शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था ।

अव्यवस्थित (वि०) [न० त०] 1 जो प्रचलित व्यवस्था या कानून के अनुरूप न हो 2 विनियमरहित, चंचल, अस्थिर अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि धनस्य—नीति० ९, 3 जो क्रमबद्ध न हो, विधिपूर्वक न हो ।

अव्यवहार्य (वि०) [न० त०] 1 जो अपने जातिबन्धुओं के साथ खाने पीने का अधिकारी न हो, जातिबहिष्कृत 2 जो मुकदमे का विषय न बनाया जा सके, व्यवहार के अयोग्य ।

अव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधानरहित, साथ मिला हुआ ।

अव्याकृत (वि०) [न० त०] 1 अविकसित, अस्पष्ट —तद्वेदं तर्ह्यव्याकृतमासीत् तद् नामरूपाभ्यामेव्याकृतम्—शत० 2. प्रारम्भिक,- तम् (वेदान्त०) 1. प्रारम्भिक तत्त्व ब्रह्म के समतुल्य –इससे संसार की सभी वस्तुएँ बनी 2 (सांख्य० में) प्रधान– प्रकृति का प्राथमिक अणु ।

अव्याजः—जम् [न० त०] 1 छल-कपट का अभाव, ईमानदारी 2 सादगी, अकृत्रिमता –बहुधा समास में 'सुन्दर' और 'मनोहर' के साथ– प्राकृतिकता या अकृत्रिमता के अर्थ में प्रयुक्त—इदं किलाव्याज-मनोहरवपुः—श० १।१८ ।

अव्यापक (वि०) [न० त०] 1 जो बहुत विस्तीर्ण न हो 2 जिसने समस्त को न व्याप्त हो, विशेष ।

अव्यापार (वि०) [न० ब०] जिसके पास कोई कार्य न हो, काम में न लगा हुआ,—रः [न० त०] 1 काम से विराम 2 ऐसा काम जो न तो किया जा सके, न समझ में आवे 3 जो अपना निजी व्यापार न हो, –अव्यापारेषु व्यापारम्—दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करना ।

अव्याप्तिः (स्त्री) [न० त०] 1 अपर्याप्त विस्तार, या प्रतिज्ञा पर अधूरी व्याप्ति 2. परिभाषा में दिये गये लक्षण का घटित न होना, परिभाषा के तीन दोषों में से एक—अलक्षके वेत्ति लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः ।

अव्याप्य (वि०) [न० त०] जो सारी स्थिति के लिए काम न हो, समस्त विस्तार पर छाया हुआ न हो —वह्निर्धूमस्याव्याप्यः । तुल०—भूमिः (स्त्री)[वैशे० द० में] दोषित प्रयोग की एक कोटी, देशकाल की स्थिति से आंशिक विलगावता– जैसे धूम-धूम – अव्याप्यवृत्तिर्जातिकी विशेषवृत्त इष्यते—भाषा० २७ ।

अव्याहत (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, बराबरहित, निर्बाध; बाधी हुई (आज्ञा)—अप्रतिव्याहतज्ञाना—रघु० १९।५७ ।

अव्युत्पन्न (वि०) [न० त०] 1. अकुशल, अनुभवशून्य, अभ्यासहीन, अनाड़ी—अव्युत्पन्नो बालजनः—का० १९६, 2. (शब्द) जिसकी व्युत्पत्ति निश्चित न हो, —नः भाषा के व्याकरण तथा वाग्द्वारा आदि के ज्ञान से शून्य व्यक्ति, पल्लवग्राही पाण्डित्यहीन ।

अव्रत (वि०) [न० ब०] जो धार्मिक संस्कार तथा अन्य धर्मानुष्ठान का पालन न करता हो--अव्रतादान-मन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्, सहस्रशः सभेतानां परिवर्ज्य न विद्यते । मनु० १२ । ११४, ३ । १७० ।

अश् 1. (स्वा० आ०) [अश्नुते, अशित—अष्ट] 1. व्याप्त होना, पूरी तरह से करना, प्रविष्ट होना—अं हाक्षर्ये-र्यैरिव चामरेऽर्भे.—भट्टि० २।१० कि० १२।२१, 2 पहुँचना, जाना या आना, उपस्थित होना, प्राप्त करना—सर्वमात्मन्यशनुते—मा० १।२६१, 3. प्राप्त करना, ग्रहण करना, आनंद लेना, अनुभव प्राप्त करना—अश्नुवटे पापपुण्येरिहैव पञ्चभवनुते—हि० १।८०, रघु० ९।९ न वेदकलमश्नुते—मनु० १।१०९. कलं दुग्धेरानमिरे महिम्न—कै० १।४३ । भुज—प्राप्त करना, उपभोग करना, ग्रहण करना—न च लोकानुपाश्नुते – महा०, किमाफलमुपाश्नुते —मनु० ६।८२ वि—पूर्ण रूप से करना, व्याप्त होना, स्वाद ग्रहण करना—प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद् व्यानशे दिश –रघु० ४।१५, भट्टि० २।४ १४।१६ ।

अश् 2 (क्रया० पर०) [अशनादिअक्षित] 1 खाना, उपभोग करना – निषेक सूरयोऽश्नीयात्—मनु० २।५१, अश्नीयाद्धि वयं शिक्षाम्—भर्तृ० ३।११७, 2. स्वाद लेना, रस लेना –यद्यदाति यदश्नाति तदेव धनिनो धनम्—हि० १।१६४-६५, अश्नन्ति विप्रास्तिथि देवभोज्यान्—मनु० ९।२०, अश्नन्ति फलमस्येति कर्मणाम्—महा०, (प्रेर०—आशयति) खिलाना, भोजन कराना, खिलवाना खिलवाना (कर्म० के साथ) —आशयन्त्यामृतं देवान्—सिद्धा०, प्र—1. पीना,—न प्राश्नीतोदकमपि—महा०. 2. खाना, निगलना—प्राश्नन्तश्च सुरानिष्टान्—भट्टि० १७।१, १।१३, १५।२९, अश् –1 खाना,—अश्नं पानं

अन्नमयीमात्— मनु० ६।१९, ११।२१९, 2. स्वाद लेना, अनुभव लेना, रस लेना—यथा पक्वं समश्नाति —आदि०।

अशस्त्र—अस्त्र [न० त०] अशुभ या बुरा शकुन।

अशक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 कमजोरी, शक्तिहीनता 2. अयोग्यता, अक्षमता,—अशक्तया तदुक्तया वा न गुणानाक्षियतया—रघु० १०।३२

अशक्य (वि०) [न० त०] असंभव, अव्यवहार्य।

अशङ्कु, अशङ्कित (वि०) [न० ब०, न० त०] 1 निर्भय निश्शंक—अशिक्षत्यशङ्कु —हि० १।८१, 2 सुरक्षित, सन्देह रहित।

अशनम् [अश्+ल्युट्] 1 व्याप्ति, प्रवेशन 2 खाना, खिलाना 3 स्वाद लेना, रस लेना 4 आहार—अशन बाधा मरुत्कल्पित व्यालानाम् —भट्टि० ३।१०, (बहुधा विशेषण (बहुव्रीहि) समास के अन्त में 'खाने वाला' 'जिसका भोजन है ...') फलमूलाशन हुताशन पवनाशन आदि।

अशना—[अशन भिक्षति—अशन+क्यच्+क्विप्] खाने की इच्छा, भूख।

अशनाया [अशनामिच्छति—अशन+क्यच् स्त्रियां आबे अ] भूख, क्षुत्तृष्णनाय फलवद्विमूल्या—भट्टि० ३।४०, अन्नाद्याशनाया निवर्तते पानात्पिपासा—शत०।

अशनायित, अशनायुक (वि०) [अशन+क्यच् (ना० धा०)+क्त, पक्षे उकञ्] भूखा।

अशनिः (पु० स्त्री०) [अश्नुते सहति - अश्+अनि] 1 इन्द्र का वज्र, शक्रस्य महाशनिध्वजम् - रघु० ३।५६ 2. बिजली की चमक—अनुचनमशनिर्गतं —सिद्धा०, अशनि कल्पित एव देवसा रघु० ८।४७, अशनेरमृतस्य चोमयोर्वणिजश्चाद्धुवराज्ञ योनय —कु० ४।४३, 3. फेंक कर मारेजाने वाला अस्त्र 4 अस्त्र की नोक—निः (पु०) 1 इन्द्र 2 अग्नि 3 बिजली से पैदा हुई आग।

अशब्द (वि०) [न० ब०] जो शब्दों में न कहा गया हो —किमर्थमशब्द स्यते—का० ६०, जो सुनाई न दे,—ब्दम् 1 अव्यक्त अर्थात् ब्रह्म 2 (सा० द० में) प्रधान या प्रकृति का आरम्भिक अणु—ईक्षतेर्नाशब्दम्—शारी० १।१।

अशरण्य (वि०) [न० ब०] असहाय, परित्यक्त, शरणरहित —बलवदशरणोऽस्मि—शा० ६, इसी प्रकार 'अशरण्य'।

अशरीर (वि०) [न ब०] शरीररहित, बिना शरीर का —रः 1 परमात्मा, ब्रह्म, 2 कामदेव, प्रेम का देवता 3 सन्यासी जिसने अपने सांसारिक सबध त्याग दिये हैं।

अशरीरिन् (वि०) [न० त०] शरीररहित, अपार्थिव, स्वर्गीय (प्राय. वाणी, वाक् आदि शब्दों के साथ)।

अशास्त्र (वि०) [न० ब०] जो धर्मशास्त्र के अनुकूल न हो, पाखंड। सम०—विहित,—सिद्ध जो धर्मशास्त्र से अनुमोदित न हो।

अशास्त्रीय (वि०) [न० त०] शास्त्रविरुद्ध, विधि-विरुद्ध, अनैतिक।

अशित (भू० क० कृ०) [अश्+क्त] 1 खाया हुआ, तृप्त 2 उपभुक्त।

अशितङ्गवीन (वि०) [अशितास्तृप्ताः गावोऽत्र] वह स्थान जहाँ पहले मवेशी चरा करते थे, पशुओं के चरने का स्थान। दे० "आशितङ्गवीन"।

अशिः [अश्+इन्] 1 चोर 2 चावल की आहुति।

अशिरः [अश्+इरच्] 1 आग 2 सूर्य 3 वायु 4 पिशाच, —रम् हीरा।

अशिरस् (वि०) [न० ब०] बिना सिर का—(पुं०) बिना सिर का शरीर, कबध, धड़, तना।

अशिव (वि०) [न० ब०] 1 अशुभ, अमंगलकारी —अशिवा दिशि दीप्तायां शिवास्तत्र भयावहा (वस्तु) रामा० 2. अभागा, बदकिस्मत,—वम् 1 दुर्भाग्य, बदकिस्मती 2 उपद्रव। सम०—आचारः 1 अनुचित व्यवहार, आचरण की अशिष्टता 2 दुराचरण।

अशिष्ट (वि०) [न० त०] 1 शिष्टताहीन, उजड्ड, 2 असंस्कृत, असभ्य, अयोग्य 3 नास्तिक, भविष्योन्मुख 4 जो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ द्वारा सम्मत न हो 5 जो किसी प्रामाणिक शास्त्र द्वारा विहित न हो।

अशीत (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। सम०—कर,—रश्मि सूर्य।

अशीतिः (स्त्री०) [निपातोऽयम्] अस्सी (यह शब्द सदैव स्त्रीलिंग एक व० में प्रयुक्त होता है चाहे इसका विशेष्य कुछ ही हो)।

अशीर्षक (वि०)=दे० अशिरस्।

अशुचि (वि०)[न० ब०] 1 जो साफ न हो, गंदा, मलिन, अपवित्र,—सोऽशुचि सर्वकर्मसु,—विलाप या मातम के अवसर पर 2 काला,—चिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अपवित्रता 2 अंधेरा, पतन।

अशुद्ध (वि०) [न० त०] 1. अपवित्र 2. अशुद्ध, गलत।

अशुद्धि (वि०) [न० ब०] 1 अपवित्र, मलिन 2. दुष्ट, —द्धिः (स्त्री०) [न० त०] अपवित्रता, मलिनता।

अशुभ (वि०) [न० ब०] 1 अमंगलकारी 2. अपवित्र, मलिन (विप० शुभ) 3 अभागा, बदकिस्मत,—भम् 1 अमंगलता, 2 पाप 3. दुर्भाग्य, विपत्ति—नावे कृतस्वस्त्ययनाशुभ ग्रहानाम्—रघु० ५।१३, 1 सम०—उदयः अशुभ शकुन।

अशून्य (वि०) [न० त०] 1 जो रिक्त या शून्य न हो 2. परिचर्या किया गया, पूरा किया गया, निष्पादित

—स्वविरोधमवधूय कुरु (नाटकों में अंकः प्रयुक्त) अपना कार्य सम्पन्न करो।

अकृत (वि०) [न० त०] बिना पकाया हुआ, कच्चा, अनपका।

अकेश (वि०) [न० ब०] जिसमें कुछ बाकी न बचा हो, सम्पूर्ण, समस्त, पूरा, सकल—अकेशक्लेशयुवीरोद्रेक मानमदनादि केवलम्—उद्भट०, अकोरकेण फलेन मृण्मता—रघु० ३।१५, ४८,—कः [न० त०] जो बाकी न बचा हो,—कम्, अकेशेण, अकेशतः (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से,—तथाविधस्तावदशेषवस्तु ङ—कु० ५।८२, येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि—भग० ४।३५, १०।१६, मनु० १।५९।

अशोक (वि०) [न० ब०] जिसे कोई रंज न हो, जो किसी प्रकार के रंज या शोक का अनुभव न करता हो,—कः 1 काल फलों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष (कहा जाता है कि स्त्रियों के चरणस्पर्श से इसमें फूल खिल जाते हैं) तु० —अशून्य शाखः कुसुमान्यशोक पादेन नापैक्षत सुन्दरीणां सपल्लवाभिर्निजबाहुलतेव—कु० ३।२६, मेघ० ७८, रघु० ८।६२, मालवि० ३।१२, १६, 2 विष्णु 3 मौर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा,—कम् 1 अशोक वृक्ष का फूलना (कामदेव के पाँच बाणों में से एक) 2 पारा। सम०—अरिः कदम्बवृक्ष,—अष्टमी चैत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी,—तरुः,—नगः,—वृक्षः अशोकवृक्ष,—निशाख्यः,—व्रतम् एक उत्सव का नाम जो तीन रात तक रहता है,—वनिका अशोक वृक्षों का उद्यान, °न्याय दे० 'न्याय' के नीचे।

अशोच्य (वि०)[न० त०] जिसके लिए शोक करना उचित नहीं—अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे—भग० २।११।

अशौचम् [न० त०] 1. पवित्रता, निष्कपटता, निर्मलता—रघु० १।९९ 2. (किसी सगे के अन्त के कारण - जननाशौच) सूतक, (किसी मनु की मृत्यु के कारण—मृताशौच) पातक—अहोरात्रमनुपातीरक्षाशौच बान्धवैः सह -मनु० ११।१८३।

अशौचया—मूल।

अशौतपिवता [अशीत पिबत इत्युच्यते यस्यां निदेशक्रियायां—पा० २।१।७२] खाने पीने के लिए नियत्रण, दावत जिसमें खाने पीने के लिए लोग आमन्त्रित किये जाते हैं -अशीतपिवतीयती प्रसना स्मरकर्मणि—भट्टि० ५।९२।

अश्मकः (ब० व०) [अश्मेव स्थिरः, इवार्थे कन्] 1. दक्षिण में एक देश 2. उस देश के निवासी।

अश्मन् (पु०) [अश्+मनिन्] 1 पत्थर—गाराग्रश्लेषणा-दाश्मनस्तिग्धभेदोत्पतितातलक्षम्—रघु० ४।७७ 2 चकमक, चकमक पत्थर 3. बादल 4 वज्र। सम०—अन्तम् शिलाजीत,—कुट्ट,—कुट्टक (वि०) पत्थर पर रखकर चीज तोड़ने वाला (—कुट्टकः) मजदूरों का समुदाय, वासमत्व—याज्ञ० ३।४९, मनु० ६।१७,—अर्क,—पर्वन्,—पर्वतः,—भव्,—योनिः पत्ता,—रः,—वज्र 1. बेर, 2. लोहा,—वर्षु (नपुं०),—वल्कम् —शिलाजीत,—शर्करः पत्ता, —हारकः पत्थर तोड़ने के लिए हथौड़ा,—कुल्यम् शिलाजीत,—हरम् पत्थर की सरल या लोहे का इस्पात,—सार (वि०) पत्थर या लोहे जैसा (—रः, —रम्) 1 लोहा 2. नीलमणि।

अश्मशानम् [अश्मनोऽस्तोऽत्र शक० परुरूपम्] 1 अंगीठी, अलाव 2 खेत, मैदान 3 मृत्यु।

अश्मशानकः—कम् [अश्मानमस्त्यस्मिन् इति—अश्मन्+अंस्+णिच्+क्वुल्] अलाव, अंगीठी,—क एक पौधे का नाम जिसके रेशों से डाढ़ुम की तलाड़ी बनाई जाती है।

अश्मरी (आयु० में)[अश्मान राति इति रा+क+ङीष्] (मूत्राशय में) एक रोग का नाम जिसे पथरी कहते हैं, मूत्रकृच्छ्र।

अश्रम् [अश्नुते नेत्रम्—अश्+रक्] 1. आँसू, 2. रुधिर (प्रायः 'असृज' लिखा जाता है),—कः किनारा (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त होता है)। सम०—प रुधिर पीने वाला, राक्षस, नरभक्षक।

अश्रवण (वि०) [न० ब०] बहरा, जिसके कान न हों, —कः साँप।

अश्राद्ध (वि०) [न० त०] श्राद्ध का अनुष्ठान न करने वाला,—द्धः श्राद्ध का अनुष्ठान न करना। सम० —भोजिन् (वि०) जिसने श्राद्ध-अनुष्ठान में भोजन न करने का व्रत ले लिया है।

अश्रान्त (वि०) [न० त०] 1 न थका हुआ, अथक 2. अनवरत, लगातार—तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार।

अश्रिः—श्री (स्त्री०) [अश्+क्रि पक्षे ङीष्] 1 (कमरे का या घर का) किनारा, कोण समास के अन्त में चतुर्, त्रि, अष्ट तथा और कुछ शब्दों के साथ बदल कर 'अस्र' हो जाता है-दे० चतुरस्र) 2. (अस्त्र की) तेज धार—मृत्यस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठितायीव लक्ष्यते—कु० २।३०, 3 किसी वस्तु का तेज किनारा, धार।

अश्लील—क (वि०) [न० ब० कप्, रस्य लः] 1. बीहड़, असुन्दर, विकट, क्रि० १५।९६ 2. भाग्यहीन, जो सम्पन्न न हो।

अश्रु (नपुं०)[अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय—अश्+क्रुन्] आँसू—पपात भूमौ सह वैनिकाश्रुभि —रघु० ३।६१। सम०—उपहत (वि०) आंसुओं से रहित, आँसुओं से रुका हुआ,—कण आँसू की बूंद, अम्बुबिन्दु,—पूर्ण (वि०) आंसुओं से भरा हुआ, °आस्य आंसुओं से भरी हुई आंखों वाला,—परिप्लुत (वि०) आँसुओं से भरा हुआ, अश्रुस्नात,—प्रायः आँसू गिराना, आँसू।। का

गिराना, —पूर्ण (वि०) आंसुओं से भरा हुआ, °आकुल आंसुओं से भरा हुआ तथा व्याकुल—रघु० २।१, —मुख (वि०) आंसुओं से युक्त, अचानक आंसू गिराने वाला,—लोचन—नेत्र (वि०) आंसुओं से भरी हुई आंखों वाला, जिसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई हों।

अश्रुत (वि०) [न० त०] 1 न सुना हुआ, जो सुनाई न दे 2 मूर्ख, अशिक्षित।

अश्रौत (वि०) [न० त०] अवैदिक, जो वेदों के द्वारा अनुमोदित न हो।

अश्रेयस् (वि०) [न० त०] 1 अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो, घटिया (नपु०-स्) बुराई, दुःख।

अश्लील (वि०) [न श्रिय लाति—ला+क] 1. महा कुरूप 2 ग्राम्य गन्दा, अक्खड़,—अश्लीलप्रायान् कलकलान्—दश० ४९, °परिवाद—याज्ञ० १।३३ 3 अपमानित,—लम् 1 देहाती या गवारू भाषा, गाली 2 (सा० शा० में) रचना का एक दोष जिसमें ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जायँ जिनसे श्रोता के मन में शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा हो—उदा० साधन सुमहदस्य, मुग्धा कुड्मलिताननेन दधती वायुं स्थिता तत्र सा, तथा—मृदुपवनविभिन्नो मत्प्रियायाः विनाशात्—में साधन, वायु और विनाश शब्द अश्लील हैं और क्रमशः शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा करते हैं—'साधन' शब्द तो लिंग (पुरुष की जननेन्द्रिय), 'वायु' शब्द अपान (गुदा से निकलने वाली दुर्गंधयुत वायु) तथा 'विनाश मृत्यु को प्रकट करता है।

अश्लेषा [न श्लिष्यति यत्रोत्पन्नेन शिशुना, श्लिष्+घञ्, तारा०] 1 नवां नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं 2 अनैक्य, वियोग। सम०—ज,—भव,—भ केतुग्रह अर्थात् उतार का शिरोबिन्दु।

अश्व [अश्+क्वन्] 1 घोड़ा 2 सात की संख्या का प्रकट करने वाला प्रतीक 3 (घोड़े जैसा बल रखने वाले) मनुष्यों की दौड़,—काष्ठतुल्यवपुर्धृष्टो मिथ्याचारश्च निर्भयः द्वादशागुलमेढ्रश्च दरिद्रेष्वपि हयो मतः।—श्वौ (द्वि० व०) घोड़ा और घोड़ी। सम०—अजनी हटर, —अधिक (वि०) जो अश्वारोहियों में प्रबल हो, जिसके पास घोड़े अधिक हों,—अध्यक्ष अश्वारोहियों का सेनापति,—अनीकम् अश्वारोहियों की सेना,—अरिः भैंसा,—आयुर्वेद अश्वचिकित्सा-विज्ञान—आरोह (वि०) घोड़े पर चढ़ा हुआ (—हः) 1 घुड़सवार, अश्वारोही 2 घुड़सवारी,—उरस् (वि०) घोड़े की भांति चौड़ी छाती वाला,—कर्ण,—कर्णक 1 एक वृक्ष 2 घोड़े का कान,—कुटी घुड़साल,—कुशल, —कोविद (वि०) घोड़ों को सधाने में चतुर,—खरः खच्चर,—खुरः घोड़े का सुम,—गोष्ठम् घुड़साल, अस्तबल,—घासः घोड़े की चरागाह,—चलनशाला घोड़ों को घुमाने का स्थान,—चिकित्सकः,—वैद्यः शालिहोत्री, पशुओं का डाक्टर,—चिकित्सा घोड़े की चिकित्सा, पशुचिकित्साविज्ञान,—जघनः नरवध (जिसका शरीर घोड़े का, तथा गर्दन मनुष्य की होती है),—दूतः घुड़सवार दूत,—नायः घोड़ों को चराने वाला, घोड़ों का समूह,—निबन्धिका घोड़ों का साहस, घोड़ों को थामने वाला,—नः साहस,—पालः—पालकः,—रक्षः घोड़ों का साईस—बंधः साईस,—मा बिजली,—महिषिका भैंसे और घोड़े के बीच रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता, —मुख (वि०) जिसका मुंह घोड़े जैसा है (—खः) घोड़े के मुंह वाला पक्षी, किन्नर, देवयोनि (—खी) किन्नर स्त्री,-किन्नन्ति मन्दा गतिमस्यमुक्ष्णः-कु० १।११, —मेधः एक यज्ञ जिसमें घोड़े की बलि चढ़ाई जाती है—अश्वमेधं क्रतुराट् सर्वपापापनोदनः—मनु० ११।२६१ —मेधिक—मेधीय (वि०) अश्वमेध के उपयुक्त या अश्वमेध से संबंध रखने वाला (—कः—यः) अश्वमेध के उपयुक्त घोड़ा,—युज् (वि०) जिसमें घोड़े जुते हुए हों (जैसे कि घोड़ागाड़ी), (स्त्री०) 1 एक नक्षत्रपुञ्ज अश्विनी नक्षत्र 2 मेष राशि 3 आश्विन मास,—रक्षः अश्वारोही या घोड़े का रखवाला, साईस,—रथः घोड़ागाड़ी (—थी) गन्धमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी,—रत्नम्, - राजः बढ़िया घोड़ा, या घोड़ों का स्वामी—अर्थात् उच्चैःश्रवा,—राला एक प्रकार का सांप -वत्स=अश्वमुख, दे० किन्नर और गन्धर्व,—वडवम् सांड घोड़ों की जोड़ी, —वह अश्वारोही,—वारः,—वारकः अश्वारोही, साईस,—वाह, वाहकः घुड़सवार,—विद् (वि०) 1. घोड़ों को सधाने में कुशल 2 घोड़ों का दलाल (पु०) 1 रेवंतवर घुड़सवार 2 नल का विशेषण, —वृक्ष बीजाश्व, साड़घोड़ा,—वैद्यः घोड़ों का चिकित्सक,—शाला अस्तबल,—शावः बछेरा, बछेरी, —शास्त्रम् शालिहोत्र, पशु चिकित्सा-विज्ञान की पाठ्यपुस्तक,—शृगालिका घोड़े और गीदड़ की स्वाभाविक शत्रुता,—सादः,—सादिन् (पु०) घुड़सवार, अश्वारोही अश्वसैनिक रघु० ७।४७, —सारथ्यम् कोचवानी, सारथिपना, घोड़ों और रथों का प्रबंध -सुतानामश्वसारथ्यम् मनु० १०।४७, —स्थान (वि०) अस्तबल में उत्पन्न (—नम्) घुड़साल, तबेला, -हारकः घुड़चोर, घोड़ों को चुराने वाला,—हृदयम् 1. घोड़े की इच्छा 2. अश्वारोहिता।

अश्वक (वि०) [अश्व+कन्] घोड़े जैसा—कः 1. छोटा घोड़ा, 2 भाड़े का टट्टू 3. सामान्य घोड़ा।

अश्वकिनी [अश्वस्य कं मुखं तत्सदृशाकारोऽस्यस्य इति ङीप्—तारा०] अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतरः (स्त्री०—री) [अश्व+तरच्] खच्चर।

अश्वत्थः [न श्वस्तिष्ठं छाल्यकीवृक्षादिवत् तिष्ठति—स्था +क पृषो० ताराο] पीपल का पेड़,—ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातन —कठ०, भग० १५।१।

अश्वत्थामन् (पु०) [अश्वस्येव स्थाम बलमस्य, पृषो० सु० महा०—अश्वस्येवास्य प्रस्थाम नदतः प्रहिणोमीतम्, अश्वत्थामैव बालोऽयं तस्मात्तामा भविष्यति] द्रोण और कृपी का पुत्र, कुरुराज दुर्योधन की ओर से लड़ने वाला ब्राह्मण योद्धा व सेनापति (यह अत्यन्त शूरवीर, प्रचण्डक्रोधी, युवक योद्धा था, इसका ब्रह्मतेज कर्ण के साथ वाग्युद्ध में प्रकट हुआ, जब कि द्रोणाचार्य के पश्चात् कर्ण को सेनापतित्व दिया गया —दे० वेणी० तृतीय अंक, यह सात चिरजीवियों में से एक है)।

अश्वस्तन, -स्तनिक (वि०) [न श्वो भव इति -श्वस्+ट्युल् तुट् च, न० त०] [श्वस्तन+ठन् च न० त०] 1. जो आगामी कल का न हो, आज का 2 जो आगामी कल का प्रबंध नहीं रखता है मनु० ४।७, ।

अश्विक (वि०) [अश्व+ठन्] जो घोड़ों से खींचा जाय।

अश्विन् (पु०) [अश्व+इन्] 1 अश्वारोही, घोड़ों का सधाने वाला सौ (द्वि० व०) देवताओं के दो वैद्य जो कि सूर्य के द्वारा घोड़ी के रूप में एक अप्सरा से जुड़वें पैदा हुए थे।

अश्विनी [अश्व+इनि+ङीप्] 1 २७ नक्षत्रों में सबसे पहला नक्षत्र (जिसमें तीन तारे होते हैं), 2 एक अप्सरा जो बाद में अश्विनीकुमारों की माता मानी जाने लगी, सूर्य पत्नी जो कि घोड़ी के रूप में छिपी हुई थी। सम०—कुमारौ,—पुत्रौ दोनों सूर्यपत्नी अश्विनी के यमज पुत्र।

अश्वीय (वि०) [अश्व+छ] घोड़ों से संबंध रखनेवाला घोड़ों का प्रिय, -यम् घोड़ों का समूह, अश्वारोही सेना—शि० १८।५।

अषडक्षीण (वि०) [न षडक्षीणि यस्य-न० ब०, ततः क] जो छ आँखों से न देखा जा सके, जो केवल दो व्यक्तियों के द्वारा निश्चित या निर्णीत किया जाय, -म् रहस्य।

अषाढ [अषाढाया पूर्णमासी आषाढी सा अस्मिन यत्र मासे अण् वा ह्रस्वः] अषाढ़ का महीना (प्रायः 'आषाढ़' लिखा जाता है)।

अष्टक वि० [अष्टन्+कन्] आठ भागों वाला, आठ तह वाला,—क: जो पाणिनि निर्मित आठों अध्यायों का ज्ञानकार है, या उनका अध्ययन करता है,—कम् पूर्णिमा के पश्चात् सप्तमी से आरंभ करके आने वाले तीन (सप्तमी, अष्टमी और नवमी) दिन 2 उन तीन महीनों की अष्टमियां, जबकि पितरों का तर्पण होता है, 3. उपर्युक्त दिनों में किया जाने वाला श्राद्ध-अनुष्ठान,—कम् 1. आठ अवयवों की बनी कोई समूची वस्तु 2. पाणिनिसूत्रों के आठ अध्याय 3. ऋग्वेद का एक खंड (ऋग्वेद ८ अष्टक या खंडों में विभक्त है) 4. आठ वस्तुओं का समूह—यथा वामराष्टकम्, तारोष्टकम्, संध्याष्टकम् आदि 5. आठ की संख्या। सम०—अंशः, —कम् एक प्रकार का फलक या कपड़ा जिस पर आठ खाने बने होते हैं और जो पाँसा खेलने के काम आता है।

अष्टन् (स० वि०) [अश्+कनिन्, तुट् च] (कर्तृ० कर्म०—अष्ट—ष्टौ) आठ, कुछ संज्ञाओं तथा संख्या वाचक शब्दों से मिलकर इसका रूप समास में 'अष्टा' रह जाता है, उदा० अष्टादश, अष्टाधिकशतः, अष्टापद आदि। सम०—अंग वि० जिसके आठ खंड या अवयव हों —अङ्ग 1. शरीर के आठ अंग जिनसे अति नम्र अभिवादन किया जाता है, °पात,—प्रणाम साष्टाङ्गनमस्कार शरीर के आठों अंगों से किया जाने वाला नम्र अभिवादन—बाहुभ्यां च तथा पद्भ्यां पाणिभ्यामुरसा शिरसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः ॥ 2. योगाभ्यास अर्थात् मन की एकाग्रता के आठ भाग 3. पूजा की सामग्री, °अर्घ्यम् आठ वस्तुओं का उपहार, °चूर्ण आठ औषधियों से बनी एक प्रकार की ज्वर उतारने वाली चूर्ण, °जैवृष्कम् आठ प्रकार का संयोग-रस, प्रलय की प्रगति में आठ अवस्थाएँ—स्मरण कीर्तन केलि- प्रेक्षण गुह्यभाषणम्, संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च।,—अध्यायी पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरणग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं,—अश्रम् अष्टकोण,—अश्रिक अष्टकोणीय —अह(न्) (वि०) आठ दिन तक होने वाला, —कर्ण (वि०) आठ कानों वाला, (—र्णः) ब्रह्मा की उपाधि,—कर्मन् (पुं०),—कर्मिक: राजा जिसने अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य—आदाने च विसर्गे च तथा नैयमिनेषयोः, पञ्चमे चार्थसंचये व्यवहारस्य वेक्षणे, दण्डशुद्धयो सदा रक्षास्तेनाष्टगतिको नृपः। -कृत्वस् (अव्य०) आठ बार, —कोण आठ कोण वाला, अठपहलू,—कक्ष्य आठ गाँठों का लहँगा, —गुण (वि०) आठ तह वाला,—दाप्योऽष्टगुणमत्ययम् मनु० ८।४००, (—अम्) वह आठ गुण जो शास्त्रज्ञ में अवश्य पाये जाने चाहिए—दया सर्वभूतेषु क्षान्ति., अनसूया शौचम्, अनायास., मंगलम्, अकार्पण्यम्, अस्पृहा इति- यो०। °आत्मक (वि०) इन आठ गुणों से युक्त,—अद (आ) चत्वारिंशत् (वि०) अड़तालीस, तय (वि०) आठ तहों वाला,—त्रिंशत्, (—आ) (वि०) अड़तीस,—त्रिंशत् चौंतीस, —दलम् 1. आठपंखड़ियों वाला कमल, 2. अठकोन, —दशन् (°श्टा°) सोलह दे०,—दिश् (स्त्री०) आठ

दिग्विन्दु—पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैर्ऋती पश्चिमा तथा, वायवी चोत्तरैशानी दिशा अष्टाविमाः स्मृता । °करिण्यः आठ दिग्विन्दुओं पर स्थित आठ हथिनियाँ, °पाला आठों दिशाओं के आठ दिक्पाल "इन्द्रो वह्नि पितृपति (यम) नैर्ऋतो वरुणो मरुत् (वायु), कुबेर ईश पतय पूर्वादीना दिशा क्रमात्—अमर०, °पक्षाः आठों दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी—ऐरावत पुण्डरीको वामन कुमुदोऽञ्जन, पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीकश्च दिग्गजा—अमर०, —धातुः आठ धातुओं का समुदाय—स्वर्ण रूप्य च ताम्र च रङ्ग यशदमेव च, सीस लौह रसश्चेति धातवोऽष्टौ प्रकीर्तिता ।—पद,—द्रु (°ष्ट° या °ष्ठ°) वि० 1. आठ पैरों वाला, 2 कथा में वर्णित शरभ नाम का जन्तु, 3 सिटकिनी 4 कैलास पर्वत (—द्रः, —द्रम्) 1 सोना—आबद्धिताष्टापदकुम्भतोयैः —कु० ७।१०, शि० ३।२८, 2 पासा खेलने के लिए बिसात या एक फलक, पट्टा,—°पद्मम् सोने की पट्टी, —भद्रकः एक घोड़ा जिसका मुह, पूँछ, अयाल, छाती तथा सुम सफेद हों (—कम्) आठ सौभाग्यसूचक वस्तुओं का समूह, कुछ के मतानुसार वे ये हैं —मुक्ताओं वृषो नाग केशरो व्यजन तथा, वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्टमङ्गलम् । दूसरों के मतानुसार—लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशन, हिरण्य सर्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टम ।—यामम् एक 'कुडव' नामक माप,—यामिक (वि०) आठ महीनों में एक बार होने वाला,—मूर्तिः अष्टरूप, शिव का विशेषण—आठ रूप हैं — पाँच तत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), सूर्य, चन्द्रमा, तथा यज्ञ करने वाला पुरोहित—मनु०, ८० १।१, या सृष्टि अष्टधारा वहति विधिहुत या हविर्या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्त श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् । यामाहु सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिन प्राणवन्त, प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश ॥ या संस्कृत में संक्षेप से कहे गये निम्नांकित क्रमानुसार नाम — जल वह्निस्तथा यष्टा सूर्याचन्द्रमसौ तथा, आकाश वायुरवनी मूर्तयोऽष्टौ पिनाकिन । °रूपः आठ रूपों वाला, शिव,—रत्नम् समष्टि रूप से ग्रहण किये गये आठ रत्न,—रसः नाटकों में प्रयुक्त आठ रस—शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानका, बीभत्साद्भुतसज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसा स्मृता । काव्य० ४, (इनमें नवाँ रस 'शान्त' भी जोड़ दिया जाता है —निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस-त०) °आशय (वि०) आठ रसों से सम्पन्न, या आठ रसों को प्रदर्शित करने वाला—विक्रम० २।१८,—विधि (वि०) आठ तह वाला, या आठ प्रकार का,—विधातिः (स्त्री०) (°ष्टा°) अठाईस,—शवाः,—शवत् वह्वा, (आठ कान या चार सिर रखने वाला) ।

अष्टतय (वि०) [अष्टन्+तयप्] आठ तह या आठ अंगों वाला - दम् सब मिलाकर आठ वाला ।

अष्टधा (अव्य०) [अष्टन्+धा] 1 आठ तह वाला, आठ बार 2 आठ भागों या अनुभागों में —भिन्ना प्रकृतिरष्टधा —भ० ७।४, भिन्नोऽष्टधा विप्रससार यत्र —रघु० १६।३ ।

अष्टम (वि०) [स्त्री० मी] [अष्टन्+डट् मट् च] आठवाँ,—म आठवाँ भाग,—मी कृष्णपक्ष के दोनों पक्षों का आठवाँ दिन । सम०—अंश आठवाँ भाग,—कालिक (वि०) जो व्यक्ति सात समय (पूरे तीन दिन तथा चौथे दिन का प्रातःकाल) भोजन न करके आठवें समय पर ही भोजन ग्रहण करता है —मनु० ६।१९ ।

अष्टमक (वि०) [अष्टम+कन्] आठवाँ, - योगाभ्यष्टक हरेत्— याज्ञ० २।२४४ ।

अष्टमिका [अष्टमी+कन् ह्रस्व, टाप्] चार तोले का वजन ।

अष्टादशन् (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह । सम० —उपपुराणम् गौण या छोटे पुराण, अष्टान्युपपुराणानि मुनिभि कथितानि तु, आद्य सनत्कुमारोक्त नारसिंहमतं परम्, तृतीय नारद प्रोक्त कुमारेण तु भाषितम् चतुर्थं शिवधर्माख्य साक्षाम्नन्दीशभाषितम् दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम्, कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितम्, ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च, माहेश्वरं तथा साम्बं सौरं सर्वार्थसञ्चयम्, पराशरोक्तं प्रवरं तथा मारीचसंहिताम् । इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितम्, चतुर्भी सहितानां प्रभेदतः —हेमाद्रि । - पुराणज्ञ अठारह पुराण, —ब्राह्म पाद्म वैष्णव च शैव भागवतं तथा, नवान्यत्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्, आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यन्नवमं तथा, दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादशं तथा, वाराह द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्, चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं तथा, मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डाष्टादशं तथा ।—विद्यास्थानम् मुकदमेबाजी के अठारह विषय (झगड़े के कारण)—दे० मनु० ८।४-७ ।

अष्टिः (स्त्री०) [अस्+क्तिन् पृषो० तत्वम्] 1 खेल का पासा 2 सोलह की संख्या 3 बीज 4 गुठली ।

अष्ठीला [अष्ठिस्तत्तुल्यकठिनावयवात्र रात्रि-रा+क ह्रस्व च. धीर्यं - तारा०] 1 गोल मटोल शरीर, 2 गोल ककरी या पत्थर 3 गिरी, गुठली 4 बीज का अभाव ।

अस् 1. (अदा० पर०) [आस्ति, आसीत्, अस्तु, स्यात्—आर्धधातुक लकारों में सर्वत्र स्वरादि- अर्थात् भू

धातु है] 1. होना, रहना, विद्यमान होना (केवल सत्ता) नासदासीन्नो सदासीत्--ऋग्० १०।१२९, --सत्येवाहं धातु नासम्--भग० २।१२, आसीद्राजा नलो नाम--नल० १।१, 2 होना (अपूर्ण विधेयक की क्रिया या विधेयक शब्द के रूप में प्रयुक्त, बाद में संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण या और कोई समानार्थक शब्द आता है) वह्निके सति राजनि--मनु० ११।११, आचार्ये संस्थिते सति ५।८०, 3 संबंध रखना, अधिकार में करना (अधिकर्ता में सप्त०)--यत्रमात्मिन हृस्वं तत् पंच० ४।७६, यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा --५।७०, 4 भागी होना तस्य प्रेत्य फलं नास्ति मनु० ३।१३९ 5 उदय होना, घटित होना भावीन्यं मम मनसि--का० १४२, 6. होना 7. नेतृत्व करना, हो जाना, प्रमाणित होना (मप्र० के साथ) स स्थाणु स्थिरभक्तियोगमुलभो निःश्रेयसायास्तु व --विक्रम० १।१. 8 पर्याप्त होना (मप्र० के साथ) या तेषां पावनाय स्यात्--मनु० ११।८६, अलंनृपालै परिदीयमान आकाश की स्यात् लवणाय वा स्यात् --उत्तरा० ४।१, 9 ठहरना, बसना, रहना, बसना, आवास करना, हा पितः क्वासि हे सुभ्रु - भट्टि० ६।११, 10 विधेय सदृश रखना, प्रमाणित होना (अधि० के साथ) किं नु खलु यथा वयमस्यामेवंविधायामवस्थायामिति स्यात् शा० १. अस्तु अच्छा, हाने दो, एवमस्तु, तथास्तु ऐसा ही हो, स्वस्ति, अध्युक्त पूर्ण भूतकालिक क्रिया का रूप बनाने के लिए धातु से पूर्व जोड़ा जाने वाला "आम" कई बार धातु से पृथक् करके लिखा जाता है न यातयां प्रथममासं पपात परवान्--रघु० १।९१, १६।८६, अति समाप्त होना, श्रेष्ठ होना, बढ़ चढ़ कर होना, अधि सम्बद्ध रखना, अपने भाग का हिस्सेदार बनना यन्ममाभिष्यात्--सिद्धा० आविस्-निकलना, उभरना, दिखाई देना आचार्यक विद्यया मान्यधर्माविरासीत् भा० १।२६, प्रादुस् प्रकट होना, ऊपर को उभरना, - प्रादुरासीत्समानत्व मनु० १।६, रघु० ११।१५, व्यति (आ० व्यतिहे, व्यतिमे, व्यतिस्ते) बढ़ जाना का चढ़ कर होना, श्रेष्ठ या बढ़िया होना, मात कर देना अन्या व्यतिस्ते नु यमादि चर्म. भट्टि० २।३५ ।

अस् (दिवा० पर०) [अस्यति, अस्त] 1 फेंकना, छोड़ना, जोर से फेंकना, (अस्त्रक) डालना, बिछाना लगाना, ('बिछाना' में अधि०) तस्मिन्नास्यदिधीकारथम् रघु० १२।२३. भट्टि १५।९१, 2. फेंकना, दे जाना, जाने देना, छोड़ना, छोड़ देना, जैसा कि 'अस्त्र नाम' 'अस्त्रलाक' और 'अस्त्रकोष' में, दे० अस्त्र; अति--, निशाने से परे (तीर गोली आदि) फेंकना, हाथी होना; अस्यन्त दूर परे निशाना लगाकर, बढ़ चढ़ कर, (द्वि० त० स० में बुद्ध कर,) अभि--, 1. एक के ऊपर दूसरी वस्तु रखना 2. ओढ़ना, 3. एक वस्तु की प्रकृति को दूसरी में घटाना,--वाङ्मयमनात्म-त्वेऽध्यस्यति--शारी०, अव--1. फेंक देना, दूर करना, छोड़ना, त्याग देना, रद्दी में डालना, अस्वीकार करना --किमित्यपास्याभरणानि यौवने--कु० ५।४४, सार ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु--पंच० १, शि० १।५५, सगरमपास्य--वेणी० ३।४, इत्यादीनां काव्यलक्षणत्वमपास्तम् स० द०, अस्वीकृत, तिरस्कृत 2. हाक कर दूर कर देना, तितर बितर करना, अभि --, 1 अभ्यास करना, मश्क करना--अभ्यस्यतोऽव्ययनमाशिषां वम्--रघु० १३।६७, मा० ९।३२ 2 किसी कार्य को बार-बार करना, दोहराना- मृदङ्गकुल रोमन्थमभ्यस्यतु--श० २।६, कु० २।५०, 3. अध्ययन करना, सस्वर पढ़ना, पढ़ना- वेदमेव सदाऽभ्यस्येत् मनु० २।१६६, ४।१४७, उद्--, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा करना--मुच्छ्रयुवस्यति सिद्धा०, 2. मुड़ जाना, 3. निकाल देना, बाहर कर देना, दूर करना--1. निकट रखना, धरोहर रखना 2 कहना, संकेत करना सुझाव देना, प्रस्तुत करना-- किमिदमुपन्यस्तम्--स० ५, मदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म य --कि० २।३, 3. सिद्ध करना, 4. किसी की देख रेख में देना, सुपुर्द करना 5 संविवरण वर्णन करना, नि--1. उपक्रम करना, रखना, नीचे फेंकना-- शिखरिषु पद न्यस्य मेघ० १३, दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं--मनु० ६।४६, 2 एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना, तिलांजलि देना --स न्यस्तचिह्नामपि राजलक्ष्मीं--रघु० २।७, न्यस्तशस्त्रस्य वेणी० ३।१८, इसी प्रकार--प्राणान् न्यस्यति--3 अन्दर रखना, किसी वस्तु पर रखना (अधि० के साथ) - शिरस्याधा न्यस्ता अमर ८२, चित्रन्यस्त चित्र में उतारा हुआ- विक्रम० १।४, स्तनन्यस्तोशीरम् - शा० ३।९, लगाया हुआ--अधोमे न महिषो न्यस्यति भारमाशम्--भट्टि० १।२२, मेघ० ५९, 4 सौंपना, हवाले करना, देखरेख में रखना

अङ्गमपि तव सूनौ न्यस्तराज्य - विक्रम० ५।१७, भ्रातरि न्यस्य मां--भट्टि० ५।८२, 5 देना, प्रदान करना, वितरण करना - रामे श्रीर्न्यस्यतामिति--रघु० १२।२, 6 कहना, सामने रखना, प्रस्तुत करना--अथा-नन्तर न्यस्यति--मल्लि० शि० १।१७ पर, निस्--1 निकाल फेंकना, फेंक देना, छोड़ना, छोड़ देना, वापिस छोड़ देना,--निरस्तमाम्बीर्यमपास्तपुण्यकम् - शि० १। ५५, ९।६३ 2. नष्ट करना, दूर करना, हटाना, मारना, मिटाना--अहृष्य तावदक्षेण तमो निरस्तम् --रघु० ५।७१, रक्षांसि वेदी परितो निरस्यत्

—भट्टि० १।१२, २।३६, 3 निकालना, निष्कासन, निर्वासित करना—गृह्णन्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः—रघु० १४।८४, 4 बाहर फेंकना, (तीर) छोड़ना 5. अस्वीकार करना, (सम्मति आदि का) निराकरण करना 6. ग्रहण लगना, छिप जाना, पृष्ठभूमि में गिर पड़ना—भट्टि० १।३, परा—, छोड़ना, त्यागना, त्याग देना,—छोड़ देना—परास्तसमुदो सुधाधिवसति—कि० ५।२७, 2 निकाल देना 3 अस्वीकार करना, निराकरण करना, प्रत्याख्यान करना—इति यदुक्तं तदपि परास्तम्—सा० द० १, परि— 1. चारों ओर फेंकना, सब ओर फैलाना, प्रसार करना 2 फैला देना, घेरना—ताम्रौष्ठपर्यंस्तदृश स्मितस्य—कु० १।४४, 3 मोड़ लेना—पर्यस्त विलोचनेन—कु० ३।६८, 4 (आँसू) गिराना, नीचे फेंकना—रघु० १०।७६, मनु० ११।१८३ 5 उलट देना, पलट देना, 6 बाहर फेंकना—रघु० १३।१३, ५।४९ परिनि—, फैलाना, बिछाना, पर्युद्—, 1 अस्वीकार करना, निकाल देना 2 निषेध करना, आक्षेप करना, प्र—,फेंकना, फेंक देना, उछाल देना, वि- ,उछालना, बखेरना, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना, नष्ट करना —भट्टि० ८।११६, ९।३१, 2 खंडों में विभक्त करना, पृथक्२ करना, क्रम से रखना—स्वयं वेदान् व्यस्यन्—मच० ४।५०, विव्यास वेदान् यस्मात्स तस्माद् व्यास इति स्मृत,—महा०, रघु० १०।८५, 3 अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना—तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने—कु०५।७२, 4 उलट देना, पलट देना 5 निकाल देना, हटा देना—वि नि —, 1. रखना, जमा करना, रख देना—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः—मेघ० ८८, भट्टि० ३।३, 2 जमा देना, किसी की ओर निर्देश करना —रामे विन्यस्तमानसा—रामा०, 3 सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, किसी के जिम्मे कर देना,—सुतविन्यस्तपत्नीक—याज्ञ० ३।४५, 4 क्रम में रखना, सँवारना, विपरि—, 1 उलट देना, पलट देना, औंधा कर देना, 2 बदलना, परिवर्तन करना—उत्तर० १, 3 भ्रमग्रस्त होना, गलत समझना,—प्रतीकारो व्यावृत्तमिति विपर्यस्यति जनः—मृच्छ० ३।१२, 4 परिवर्तित होना (अक०) सम्—1 इकट्ठा, एकत्र करना, मिलाना, जोड़ देना—मनु० ३।८५, ७।५७ 2. समास में जोड़ देना, समासकरना 3 सामुदायिक रूप से ग्रहण करना—समस्तैरथवा पृथक्—मनु० ७।१९८, संयुक्त रूप से या अलग अलग, संनि—, 1 रखना, सामने लाना, जमा करना, 2 एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, छोड़ देना—सन्यस्ताक्षत्र—रघु० २।५९, संन्यस्ताभरणं गात्रम्—मेघ० ९३, कु० ७।६७, 3 दे देना, सौंपना, सुपुर्द करना, हवाले करना—भग० ३।३०, 4 (अक० के रूप में प्रयुक्त) संसार को त्यागना, सांसारिक बंधन तथा सब प्रकार की आसक्तियों को त्याग कर विरक्त हो जाना—सदृशं क्षणभङ्गुरं तदखिलं वस्त्वत्र सन्यस्यति—मृच्छ० ३।१३२, अस् (भ्वा० उभ०) [असति-ते, असित] 1 जाना. 2 लेना, ग्रहण करना, पकड़ना 3 चमकना (इस अर्थ को दर्शाने के लिए प्रायः निम्नांकित उदाहरण दिये जाते हैं—निष्प्रभश्च प्रभुरासं भवताम्—रघु० ११।८१, तेनास लोकः पितृमान् विनेत्रा—१४।२३, लाघवं उत्पाद्य इवास यत्नः—कु० १।३५, क्षीरस्वामी ने महां 'दिदीपे' (चमका) अर्थ को माना है—चाहे यह दुरूह ही है, उपर्युक्त उदाहरणों में 'आस' का 'बभूव' का समानार्थक मान लेना अधिक उपयुक्त है—चाहे इसे शाकटायन की भांति—तिङन्तप्रतिरूपकमव्ययम्—अव्यय मानें, या वरुरुचि की भांति इसे व्याकरणविरुद्ध प्रामादिक प्रयोग—दे० मल्लि० कु० १।३५ पर)।

असंयत (वि०) [न० त०] 1 संयमरहित, अनियन्त्रित 2 संयमहीन, जैसे—अयमनोऽपि मोक्षार्थी—में।

असंयम. [न० त०] संयम होनता, नियन्त्रण का अभाव, विशेषतः ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर।

असंव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधान रहित, अबकाश रहित (समय और काल का)।

असंशय (वि०) [न० ब०] संदेह से मुक्त, निश्चयवान् —अम् (अव्य०) निस्सन्देह, असन्दिग्धरूप से, निश्चय ही,—असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा—रघु० १।२२।

असंश्रव (वि०) [न० ब०] जो सुनने से बाहर हो, जो सुनाई न दे, असंश्रवे—सुनने के क्षेत्र से बाहर—मेघ० २।२०३।

असंसृष्ट (वि०) [न० त०] 1 अमिश्रित, अयुक्त 2. जो सबके साथ मिल कर न रहता हो, संपत्ति का बँटवारा होने के पश्चात् जो फिर न मिला हो (उत्तराधिकारी के रूप में)।

असंस्कृत (वि०) [न० त०] 1 संस्कारहीन, अपरिष्कृत, अपरिमार्जित 2 जो सँवारा न गया हो, सजाया न गया हो 3 जिसका कोई शोधनात्मक या परिष्कारात्मक संस्कार न हुआ हो,—तः व्याकरणविरुद्ध, अपशब्द।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] 1 अज्ञात, अनजाना, अपरिचित—असंस्तुत इव परित्यक्तो बान्धवैः जन—का० १७३, कि० ३।२, 2 असाधारण, विचित्र 3 सामञ्जस्य रहित—वाचति पश्चादसंस्तुत चेतः—मा० १।३४।

असंस्थानम् [न० त०] 1. व्यवस्थित का अभाव 2 अव्यवस्था, गड़बड़ 3 कमी, दरिद्रता।

असंस्थित (वि०) [न० त०] 1. अव्यवस्थित, क्रमरहित 2 असंगृहीत।
असंस्थितिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अव्यवस्था, गड़बड़।
असंहृत (वि०) [न० त०] 1. न जुड़ा हुआ, असंयुक्त, बिखरा हुआ, 2 —तः पुरुष या आत्मा (सां०द० में)।
असकृत् (अव्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुधा- असकृदेकरूपेण तरस्विना—रघु० ९।२३, मेघ० ९२, ९३, । सम०—आवृत्तिः—बारबार चिंतन, मनन, —गर्जनम्: बारबार गर्ज।
असक्त (वि०) [न० त०] 1 अनासक्त, वैराग्यवान, उदासीन असक्तं सुखमन्वभूत्—रघु० १।२१, 2. न फँसा हुआ —श० २।१२, 3. सांसारिक भावनाओं तथा सबधो के प्रति अनासक्त,—क्तम् (अव्य०) 1 अनासक्तिपूर्वक, 2 अनवरत, बिना रुके।
असक्थ्य (वि०) [न० ब०] संबंधरहित।
असक्थिः [न० त०] साँप, बिरोधी।
असगोत्र (वि०) [न०त०] जो एक ही गोत्र का न हो।
असङ्कटुल (वि०) [न०त०] जहाँ भीड़-भड़क्का न हो, खुला हुआ, चौड़ा (जैसे कि सड़क) —ः: चौड़ी सड़क।
असङ्ख्य (वि०) [न० ब०] गिनती से परे, गणनारहित, अनगिनत मनु० १।८०, १२।१५, °ता—त्व अनंतता।
असङ्ख्यात (वि०) [न० त०] गणनारहित, अनगिनत।
असङ्ख्येय (वि०) [न० त०] अगणित, —ः शिव की उपाधि।
असङ्ग (वि०) [न० ब०] 1 अनासक्त, सांसारिक भावनो से मुक्त 2 आधारहीन, निर्बंध, अकुण्ठित 3 असंयुक्त अकेला, निर्लिप्त, गः [न० त०] 1 अनासक्ति मनु० ६।७५, 2 पुरुष या आत्मा (सां० द०)।
असङ्गत (वि०) [न०त०] 1 न जुड़ा हुआ, न मिला हुआ 2 अनुचित, बेमेल 3 उजड्ड, अशिष्ट, अपरिष्कृत।
असङ्गति (स्त्री०) [न०त०] 1 मेल का न होना 2. असंबद्धता, अनौचित्य 3 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें कार्य और कारण की स्थानीय अनुकूलता न पाई जाय जहाँ कारण और कार्य के प्रतीयमान संबंध का उल्लंघन हो।
असङ्गत (वि०) [न० ब०] न मिला हुआ,—तः 1 वियोग, अलगाव 2 असंबद्धता।
असङ्गिन् (वि०) [न० त०] 1 न मिला हुआ, असंबद्ध 2. सांसारिक विषयों में अनासक्त।
असत (वि०) [न० ब०] संज्ञाहीन,—ता वियोग, असहमति, अमात्रज्ञता।
असत् (वि०) [न० त०] 1 अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो- असति त्वयि—कु० ४।१२, मनु० ९।१५४, 2 सत्ताहीन, अवास्तविक,—आत्मनो ब्रह्मणा-श्रेयसस्त क करिष्यति 3 बुरा (विप० सत्) सत्संप्रयोगेहेतव,—रघु० १।१०, 4. दुष्ट, पापी, निंद्य जैसे °विचार 5 अव्यक्त 6. गलत, अनुचित, मिथ्या, असत्य—इति यदुक्तं तदसत् (प्राय. विवादास्पद रचनाओं में प्रयुक्त)—(पुं०—तृ) इन्द्र, (नपु०—त्) 1. अनस्तित्व, असत्ता 2 झूठ, मिथ्यात्व —ती दुश्चरित्रा स्त्री—असती भवति सज्जना—पंच० १।४१८। सम०—अभ्येतु (पु०) वह ब्राह्मण जो पाखंडयुक्त रचनाओं को पढ़ता है, जो अपनी वेदशाखा की उपेक्षा करके दूसरी शाखा का अध्ययन करता है आचारद कहलाता है—स्वशाखां य परित्यज्य अन्यच्च कुरुते श्रमम्, शाखाश्च स विजेयो वर्णवेत्तं क्रियासु च। —आग्रहः 1. धर्मविरुद्ध आग्रह या सिद्धांत 2. अनुचित साधनो से (धन की) प्राप्ति 3. बुरा साधन—आचार (वि०) दुराचारी, बुरा आचरण करने वाला, दुष्ट (—रः) अशिष्ट-आचरण, —आशय,—क्रिया 1 बुरा काम 2. बुरा व्यवहार, —आशया 1. गलत कार्य, 2. मिथ्या प्रपंच,—ग्रह(ग्रा)हः 1 बुरा दाँव 2 बुरी राय, पक्षपात 3 बच्चों जैसी इच्छा,—चेष्टितम् अति, आघात—प्राणिव्यसनेष्टितम्—श० ५।६,—बुद्धि (वि०) बुरी बुद्धि वाला —पथः 1 बुरा मार्ग 2 अनिष्ट-आचरण या सिद्धांत; —नाद्यो हन्त मतामसत्पथयुषामायु. समाना शतम्—भा० ४।३६,—परिग्रहः बुरे मार्ग को ग्रहण करना,—प्रतिग्रहः 1 बुरी वस्तुओं का उपहार 2 (शिक्षक आदि) अनुपयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तियों से लेना,—भावः 1 अनस्तित्व, अभाव 2 बुरी राय या दुर्गति 3 अहितकर स्वभाव,—वृत्ति,—व्यवहार (वि०) अनिष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट —वृत्तिः (स्त्री०)) 1 नीच या अपमानजनक पेशा 2 दुष्टता,—शास्त्रम् 1 गलत सिद्धांत, 2 धर्मविरुद्ध सिद्धांत,—सत्यं: बुरी सगति—हेतुः बुरा या आभासी कारण, दे० 'हेत्वाभास'।
असतामी —दुष्टता।
असत्ता [न० त०] 1 अनस्तित्व, 2. जो सचाई न हो 3. दुष्टता, बुराई।
असत्त्व (वि०) [न० ब०] 1. शक्तिहीन, सत्वरहित 2. जिसके पास कोई पशु न हो,- त्वम् [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. अवास्तविकता, असत्यता।
असत्य (वि०) [न० त०] 1. झूठ, मिथ्या 2. काल्पनिक, अवास्तविक—त्यः झूठा,—त्यम् मिथ्यात्व, झूठ बोलना, झूठ। सम०—वादिन् (वि०) झूठ बोलने वाला,—संध (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहने वाला, झूठा, कमीना, बेईमान; °धे जने सखी पथ कारिता—श०।
असदृश (वि०) [स्त्री०—शी] [न० त०] 1. असमान, बेमेल 2. अयोग्य, अनुपयुक्त, असंबद्ध, °संयोगकारिणि

—का० १२, अयोग्य—भात. किमप्यसदृशं विकृत मवस्ते—वेणी० ५।३ ।

असकृत् (अव्य०) [न० त०] लगातार नहीं, देरी करके ।

असन् (नपु०) (केवल 'असृज्' शब्द की रूपरचना में वि० वि० व० के पश्चात् प्रयुक्त) रुधिर ।

असनम [अस्+ल्युट्] फेंकना, (बन्दूक) दागना, (तीर) चलाना, जैसा कि 'इष्वसन'=धनुष में,—नः पीतसाल नाम का वृक्ष—निरसनैरसनैरवृथार्थता—शि० ६।४७ ।

असन्दिग्ध (वि०) [न० त०] 1 जिसमें सन्देह न हो, स्पष्ट, साफ 2 निश्चित, शंकारहित,—धम् (अव्य०) निश्चय ही, निस्सन्देह ।

असन्धि (वि०) [न० ब०] 1 जिनका जोड़ न हुआ हो (जैसे कि शब्द), 2. बन्धनरहित, अबद्ध, स्वतन्त्र, —धि संधि का अभाव ।

असन्नद्ध (वि०) [न० त०] 1 जो शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित न हो 2 धूर्त, घमंडी, पंडितमन्य ।

असन्निकर्ष [न० त०] 1 पदार्थों का दृष्टिगोचर न होना, मन को वस्तुओं का बोध न होना 2 दूरी ।

असन्निवृत्ति (स्त्री०) [न० त०] बाधित न मुड़ना —असन्निवृत्यै तदतीतमेव श० ६।९ बीत गया सदा के लिए—रघु० ८।४९ ।

असपिण्ड (वि०) [न० त०] जो पिंडदान से संबद्ध न हो, जो रुधिर संबंध से संयुक्त न हो, जो अपने वंश या कुल का न हो ।

असभ्य (वि०) [न० त०] सभा में बैठने के अयोग्य, गँवार, नीच, असंस्कृत, अशिष्ट (शब्द) ।

असम (वि०) [न० त०] 1 जो बराबर न हो, विषम (जैसा कि संख्या) 2 असमान (स्थान, संख्या और मर्यादा की दृष्टि से) असमै समीयमान —पंच० १।७४, 3 असदृश, बेजोड़, अनूठा । सम०=इषु, —बाण, —सायक विषम संख्या के तीरों को धारण करने वाला, कामदेव जिसके पांच बाण हैं,—नयन, —नेत्र,—लोचन (वि०) विषम संख्या की आँखों वाला, शिव जिसके तीन आँखें हैं ।

असमञ्जस (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट, जो बोधगम्य न हो—स्खलदसमञ्जसमुग्धजल्पित ते—उत्तर० ४।४, मा० १०।२, 2 अयुक्त, अनुचित,—यद्यपि न कापि हानिर्दाक्षिण्यस्य रासभे चरति, असमञ्जसमिति मत्वा तथापि तरलायते चेत—उद्भट० 3 बेतुका, निरर्थक, मूर्खतापूर्ण ।

असमवायिन् (वि०) [न० त०] जो घनिष्ट या अन्तर्हित न हो, आनुषंगिक, विच्छेद्य । सम०—कारणम् (तर्कशास्त्र में) आनुषंगिक कारण, अन्तर्हित या घनिष्ट संबन्ध न होना, गुणकर्मसामान्यवृत्तिर्ज्ञेयमयाप्यसमवायिहेतुत्व—भाषा० यथा तंतुयोग पटस्य ।

असमग्र (वि०) [न० त०] 1. अपूर्ण, आंशिक, अधूरा 2 (व्या० में०) समास से युक्त न हो, जिसमें समास न हुआ हो 3 पृथक्, वियुक्त, असंबद्ध (विप० समस्त) —ग्रम् बिना समास की रचना (समास के विग्रह को प्रकट करने वाला वाक्य) ।

असमाप्त (वि०) [न० त०] 1 जो अभी पूरा न हुआ हो, अधूरा रहा हुआ, —रघु० ८।७६, कु० ४।१९, 2. जो पूरी तरह ग्रहण न किया गया हो, अपूर्ण ।

असमीक्ष्य (अव्य०) बिना भली भांति विचार किये । सम०—कारिन् (वि०) बिना विचारे काम करने वाला, अविवेकी, असावधान ।

असम्पत्ति (वि०) [न० ब०] दरिद्र, दुःखी—त्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 दुर्भाग्य 2 कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

असम्पूर्ण (वि०) [न० त०] 1 जो पूरा न हो, अधूरा 2. जो सारा न हो 3 अपूर्ण, आंशिक—जैसा कि चांद —चन्द्रमसंपूर्णमण्डलमिदानीम् —मुद्रा० १।९ ।

असम्बद्ध (वि०) [न० त०] 1 जो जुड़ा हुआ न हो, असंगत 2 निरर्थक, बेतुका, अर्थहीन, °अ(प्र)लापिन् निरर्थक बातें करने वाला—असम्बद्ध प्रलपसि—मृच्छ० ९, बेहूदा व्यक्ति 3 अनुचित, गलत—मनु० १२।६ —द्धम् बेतुका वाक्य, निरर्थक या अर्थहीन भाषण जैसे कोई कहे —यावज्जीवमहं मौनी—आदि—दे० 'अबद्ध' भी ।

असम्बन्ध (वि०) [न० ब०] जिसका कोई सम्बन्ध न हो, किसी से संबन्ध न रखने वाला—न्धः [न० त०] संबन्ध का न होना, संबन्ध का अभाव—यद्वा साध्यव-दन्यस्मिन्नसंबन्ध उदाहृत —भाषा० ६८ ।

असम्बाध (वि०) [न० ब०] 1 जो संकीर्ण न हो, विस्तृत 2 जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ न हो, अकेला, एकान्त 3 खुला हुआ, सुगम ।

असम्भव (वि०) [न० त०] जो संभव न हो, असंभाव्य —वः 1 अनस्तित्व, 2 असंभाव्यता 3 असंभावना ।

असम्भाव्य, असम्भावित् (वि०) [न० त०] 1 असंभव 2 अबोध्य ।

असम्भावना [न० त०] समझने की कठिनाई या असंभवता, असंभाव्यता ।

असम्भृत (वि०) [न० त०] जो कृत्रिम उपायों से प्रकाशित न किया गया हो, अकृत्रिम, प्राकृतिक,—असम्भृत मण्डनमङ्गयष्टें —कु० १।३१ 2 जो भलीभांति पाला पोसा न गया हो ।

असम्मत (वि०) [न० त०] 1 अननुमोदित, अननुज्ञात, अस्वीकृत 2 नापसंद, अरुचिकर 3 असहमत, भिन्न मत रखने वाला, —तः शत्रु—अतु दोर्व्यसम्मतान् काव्य० ७ । सम०—आशयिन् (वि०) स्वामी की

स्वीकृति के बिना उसकी चीज उठा के जाने वाला, चोर।

असम्मतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. विमति, असहमति 2 अस्वीकृति, नापसंदगी।

असम्मोहः [न० त०] 1. मोह का अभाव 2 अव्यग्रता, स्थैर्य, शान्तचित्तता 3 वास्तविक ज्ञान, सच्ची अन्तर्दृष्टि।

असरलम् (वि०) [स्त्री०—लीवी] [न० त०] 1 बुरा, अनुचित, अशुद्ध 2 अपूर्ण, अधूरा।

असलम् [अस्+कलच्] 1. लोहा 2 अस्त्र छोड़ते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र 3 हथियार।

असवर्ण (वि०) [न० त०] भिन्न जाति या वर्ण का अपि नाम कुलपांसनस्यासवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—दा० १।

असह (वि०) [न० ब०] 1. जो सहा न जाय, असह्य, अधीर 2 असहिष्णु, (प्रायः मत्व० के भाव कर्म० के रूप में)—मा स्त्रीत्वभावादसहा भवस्य—मुद्रा० ४।१३।

असहन (वि०) [न० ब०] असहिष्णु, अधैर्यशील, धैर्यहीन, न सहने वाला, न सहन [न० त०] असहिष्णुता, अधीरता, परगुणामर्षणम् असूया।

असहनीय, असहितव्य } (वि०) [न० त०] जो सहा न **असह्य,** } जाय, दुःसह, असहनीय, असह्यपीड़ मथवन्मुक्तमस्त्रमस्मदरेर्हि मे—रघु० १।७१, १८।२५, कु० ४।१।

असहाय (वि०) [न० ब०] 1 मित्रहीन, अकेला, एकाकी 2 बिना सभी साथियों के—मनु० ७।३०, ५५, ता, स्वयं अकेलापन, एकाकीपन।

असाक्षात् (अव्य०) [न० त०] 1 जो आँखों के सामने न हो अदृश्य रूप में, अप्रत्यक्ष रूप से।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री० की] [न० ब०] 1 जिसका कोई गवाह न हो, बिना साक्षी के, जिसका कोई साक्षी न हो असाक्षिकेषु स्वयंग्राह्य सिद्धो विवदमानयो—मनु ८।१०९।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] 1. जो चश्मदीद गवाह न हो 2 जिसका साक्ष्य कानूनी दृष्टि से ग्राह्य न हो 3 जो किसी कानूनी दस्तावेज को प्रमाणित करने का अधिकारी न हो।

असाधनीय } (वि०) [न० त०] 1. जो सम्पन्न न किया **असाध्य** } जा सके, या पूरा न किया जा सके 2 जो प्रमाणित होने के योग्य न हो 3 जिसकी चिकित्सा न हो सके (रोग या रोगी)—असाध्य दुष्टो कोप प्राप्ते काले यथा यमः—शि० २।८४।

असामान्य (वि०) [न० त०] 1. जो सामान्य न हो, असामान्य, विशेष, विशिष्ट, 2. (तर्क शास्त्र में) जो सपक्ष या विपक्ष किसी में भी हेतु के रूप में विद्यमान न हो—वस्तुमयस्वाद् व्यावृत्तः स स्वसाधारणो मतः 3. निजी, जिसका कोई और दावेदार न हो—क. तर्कशास्त्र में हेत्वाभास, अनैकान्तिक के तीन भेदों में से एक।

असाधु (वि०) [न० त०] 1. जो अच्छा न हो, बुरा, स्वादरहित, अप्रिय,—असोढ़ेऽपि क्षन्तुमसाधु वा—कि० १।४, 2. दुष्ट 3. दुश्चरित्र (अधि० के साथ) असाधुमतिरि—सिद्धा० 4. भ्रष्ट, अपभ्रष्ट (शब्द)।

असामयिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] बिना अवसर का, जो ऋतु के अनुकूल न हो—कि० २।२४०।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो साधारण न हो, विशेष—रघु० १५।३९, 2. असाधारण—स्वम् विशेष या विशिष्ट संपत्ति।

असामयिक (वि०) [न० त०] 1. अनुपयुक्त, अशोभन, अनुचित,—क्म् (अव्य०) अनुचित रूप से, अशोभ्यतापूर्वक [क्रियाविशेषण के रूप में बहुधा प्रयुक्त] = असाधुत—विषवल्लीव्यपि संवर्ध्य स्वयं छेतुमसाम्प्रतम्—कु० २।५५, सम्प्रत्यसाम्प्रत बलमुपेक्षितुम्—मुद्रा० ३।३१, रघु० ८।६०।

असार (वि०) [न० ब०] 1 नीरस, स्वादहीन 2 (क) रसहीन, निरर्थक (ख) निकम्मा, अप्रबल, सारहीन—असार संसार परिमुषितरत्न त्रिभुवनम्—मा० ५।३०, उत्तर० १, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्—धर्म० १२।१३, 3. व्यर्थ, अलाभकर 4 निर्बल, कमजोर, बलहीन,—बहूनामप्यसाराणां संहति कार्यसाधिका (समवायो हि दुर्जयः) पंच० १।३३१, शि० २।५०, - रः,—रम् [न० त०] 1 अनावश्यक, या महत्त्वहीन भाग 2 एरण्ड वृक्ष 3. अगर की लकड़ी।

असारता [असार+तल्+टाप्] 1. नीरसता, 2. निकम्मापन, 3 सारहीन प्रकृति, अधमगुण अवस्था—धिगिमा देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१।

असाहसम् [न० त०] बलप्रयोग का अभाव, सुशीलता।

असिः [अस्+इन्] 1 तलवार 2 पशुओं की हत्या करने वाला चाकू—सि (अव्य०) तू, तु० अस्मि। सम०—धेनुः गाली के नीचे रखा जाने वाला छोटा तकिया,—जीविन् तलवार ही जिसकी जीविका का साधन है, वेतन पाने वाला सैनिक योद्धा, बंधुः, —बंधुकः सपरमक्ष, बढ़िया छुरा,—लेखः बढ़िवाल, —धारा तलवार की धार—सुरतज इव दर्शनैर्मन्मथोऽसिधारैः—रघु० १०।८६, ४१,—धारव्रतम् 1 (किन्हीं के मतानुसार) तलवार की धार पर खड़े होने की प्रतिज्ञा -(दूसरों के मतानुसार) दुष्टा पत्नी के साथ रह कर भी उसके साथ मैथुन की इच्छा को दृढ़ता पूर्वक रोकना;—यद्वैकदयनस्यापि प्रमदा रोष-

मुच्यते, असिधारावतं नाम वदन्ति मुनिपुंगवा । अथवा—दुष्टा युवत्या सार्धं यन्मुग्धभर्तृ वदाचरेत्, अन्तर्निवृत्तसंगः स्यादसिधारावतं हि तत्—याज्ञव 2. (व्रत आदि०) कोई भी अत्यन्त कठिन कार्य —सत्ता केनोद्दिष्टं विषममसिधारावतमिदम्—भर्तृ० २।२८, ६४,—आघः,—आघातकः शस्त्रकार, सिकलीगर या शस्त्र-परिष्कारक,—धेनुः,—धेनुका चाकू—विक्रमांक० ४।६९,—पत्र (वि०) जिसके पत्ते तलवार की आकृति के हैं—रघु० १४।४८, (—त्रः) 1 मल्ला, ईख 2 एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले संसार में उगता है, (—त्रम्) 1 तलवार का फल 2 म्यान °व्रत एक प्रकार का नरक जहाँ वृक्षों के पत्ते ऐसे तीक्ष्ण होते हैं जैसे कि तलवार,—पत्रक मल्ला, ईख,—पुच्छ, —पुच्छक सूंस, शिशुमार, सकुची मछली—पुत्रिका, —पुत्री छुरी, - मेय विट्खदिर,—हत्यम् तलवार या छुरियों से लड़ना,—हेति, अस्त्रधारी पुरुष, तलवार रखने वाला ।

असिकम् [असि+कन्] ठोढी और निचले ओठ के बीच का भाग ।

असिक्नी [सिता केशादौ यस्या सा तद्धिरा अवृद्धा —असित—तकारस्य नकादेश ङीप् च] 1 अन्त पुर की युवती परिचारिका 2 पंजाब देश की एक नदी ।

असिक्लिका [सज्ञायां कन् ह्रस्वः] युवती सेविका ।

असित (वि०) [न० त०] जो सफेद न हो, काला, नीला, गहरे रंग का,—असिता मोहरजनी—ला० ३।४, याज्ञ० ३।१६६, °लोचना, °नयना आदि,—तः 1 गहरा नीला रंग 2. चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3 शनिग्रह, 4 काला सांप,—ता 1 नील का पौधा, 2 अन्त पुर की दासी (जिसके बाल अधिक आयु के कारण सफेद न हुए हों) दे० 'असिक्नी' 3. यमुना नदी । सम०—अब्जम् —उत्पलम् नील कमल,—अक्षिन् (पु०) अग्नि, —अञ्जन (पु),—उपलः गहरा नीला पत्थर,—केशा काले बालों वाली स्त्री,—केशान्त (वि०) काली जुल्फों वाला,—गिरिः,—नगः नील गिरि, ग्रीव (वि०) काली गर्दन वाला (—वः) अग्नि,—नयन (वि०) काली आँखों वाला—मेघ० ११२,—पक्ष कृष्ण पक्ष,—फलम् मीठा नारियल—मृगः काला हरिण ।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1 जो पूरा या सम्पन्न न हो 2 अपूर्ण, अधूरा 3 अप्रमाणित 4 अनपका, कच्चा 5 जो अनुमेय न हो,—द्धः हेत्वाभास के पाँच मुख्य भागों में से एक, यह तीन प्रकार का है (1) आश्रयासिद्ध —जहाँ गुण के आश्रय की सत्ता सिद्ध न हो (2) स्वरूपासिद्ध —जहाँ निर्दिष्ट स्वरूप पक्ष में न पाया जाय, तथा (3) व्याप्यत्वासिद्ध —जहाँ सहवर्तिता की उक्त स्थिरता वास्तविक न हो ।

असिद्धिः (स्त्री) [न० त०] 1 अपूर्ण निष्पन्नता, विफलता 2 परिपक्वता की कमी 3. निष्पत्ति का अभाव (योग० में) 4 (तर्क० में) वह उपहार जो प्रतिज्ञा से सम्मोदित न हो ।

असिर [अस्+किरच्] 1 शहतीर, किरण 2. तीर, सिटकिनी ।

असु [अस्+उन्] 1 श्वास, प्राण, आध्यात्मिक जीवन 2 मृतात्माओं का जीवन 3 (ब० व०) शरीर में रहने वाले पाँच प्राण - असुभि स्थास्नु यदाश्रिचक्षीपत —कि० २।१९, (नपु०—सु) शोक, दुःख । सम०—धारणम् —या जीवन धारण, जीवन, अस्तित्व, —भृत् 1 जीवन का नाश, जीवहानि —मलिनमसुभञ्जेष्वसुकरम्—भर्तृ० २।२८, 2 जीवन का भय या आशंका,—भृत् (पु०) जीवित जन्तु, प्राणी, —सम (वि०) प्राणों के समान प्यारा (—मः) पति, प्रेमी ।

असुमत् (वि०) [असु+मतुप्] 1 जीवित, प्राणी—(पु०) 1 जीवित प्राणी ४।२१, 2. जीवन ।

असुख (वि०) [न० ब०] 1 अप्रसन्न, दुःखी 2 जिसका प्राप्त करना आसान न हो, कठिन —खम् [न० त०] दुःख, पीड़ा । सम०—आर्त (वि०) दुःख से पीड़ित,—आविष्ट (वि०) अत्यन्त पीड़ाकर उदय (वि०) अप्रसन्नता पैदा करने वाला मनु० ११।१० —जीविका विषण्ण जीवन ।

असुखिन् (वि०) [न० त०] अप्रसन्न, दुःखी ।

असुत (वि०) [न० ब०] निस्सन्तान, पुत्रहीन ।

असुर [असु+र, न सुर इति न० त० वा] 1 दैत्य, राक्षस रामायण में नामों का कारण बतलाया गया है सुराप्रतिग्रहादेवा सुरा इत्याभिविश्रुताः, अप्रतिग्रहणात्तस्या दैतेयाश्चासुरास्तथा । 2 देवताओं का शत्रु, दैत्य, दानव 3 भूत, प्रेत 4 सूर्य 5 हाथी 6. राहु, 7 बादल —रा 1 रात्रि 2 रात्रिविषयक संकेत 3 वेश्या या दानवी, असुर की पत्नी । सम० —अधिपः,—राज—राजः 1 असुरों का स्वामी 2 अग्नि की उपाधि, प्रह्लाद का पौत्र -आचार्यः, —गुरुः 1 असुरों के गुरु शुक्राचार्य 2 शुक्रग्रह, -आयसम् ताबे और टीन की मिश्रित धातु, -क्षयण, - क्षितिः (वि०) राक्षसों का नाश करने वाला, द्विष् (पु०) राक्षसों का शत्रु अर्थात् देवता, - माया राक्षसी जादू, - रिपुः,— सूदनः राक्षसों का हन्ता, विष्णु हन् (पु०) 1 राक्षसों का नाश करने वाला, अग्नि इन्द्र आदि 2 विष्णु ।

असुरसा [न० ब० न सुष्ठु रसा यस्याः] एक प्रकार का पौधा, तुलसी का एक भेद ।

असुर्य (वि०) [असुराय हितं यत्० यत्] राक्षसी, आसुरी ।

असुलभ (वि०) [न० त०] जो आसानी से उपलब्ध न हो सके, प्राप्त करने में कठिन –विक्रम० २ । ९ ।

असुसू [असून् प्राणान् सूयति—सू+क्विप्] वीर,—स मासि सासुसू सालो येषामेषामसावय —कि० १५ । ५ ।

असुहृद् (पु०) [न० त०] शत्रु—शि० २ । ११७ ।

असूक्षरम् [मूक्ष आदरे+ल्युट्, न० त०] अपमान, अनादर ।

असूत, असूतिक (वि०) [न० त०, न० ब० कप्] जिसने कुछ पैदा नहीं किया है, बांझ ।

असूतिः (स्त्री०) [न० त०] १ पैदा न करना, बांझपना 2 अदर्शन, स्थानान्तरण ।

असूयति (दि० आ० पर०) 1 डाह करना, ईर्ष्यालु होना –कथं चित्रमतो भर्ता मया प्रसूयित –मालवि० २ मान घटाना, अप्रसन्न होना, घृणा करना, असन्तुष्ट होना, क्रुद्ध होना (सप्र० के साथ)—असूयन्ति सचिवोपदेशाय – का० १०८, असूयन्ति मह्यं प्रकृतय विक्रम० ४ अंक० ३ । ३१ ।

असूयक (वि०) [असूय्+ण्वुल्] 1. ईर्ष्यालु, मान घटाने वाला, निंदक 2 असन्तुष्ट, अप्रसन्न, –क अपमान करना, ईर्ष्यालु व्यक्ति,– मनु० २ । ११८, ३।१६, याज्ञ० १ । २८ ।

असूयनम् [असूय्+ल्युट्] 1 अपमान, निन्दा 2. ईर्ष्या, डाह ।

असूया [असूय्+अङ्+टाप्] 1 ईर्ष्या, असहिष्णुता, डाह – कुपदृष्टेर्ष्या सूयार्थानां य प्रति कोप –पा० १।४। ३६, साधूनां ईर्ष्या के भाव, 2 निन्दा, अपमान – असूया परगुणेषु दोषाविष्करणम् – सिद्धा०, रघु० ९ । २३, 3 क्रोध, रोष वधूर सूयाकुटिलं ददर्श –रघु० ६ । ८२ ।

असूयु [असूय्+उ] 1. ईर्ष्यालु डाह करने वाला 2 अप्रसन्न ।

असूर्य (वि०) [न० ब०] सूर्यरहित ।

असूर्यंपश्य (वि०) [सूर्यमपि न पश्यति– दृश्+खश् मुम् च] सूर्य को भी न देखने वाला – (अन्तःपुर की रानियों के विषय में कहा जाता है कि उन्हें सूर्य देखना भी दुर्लभ था) – असूर्यंपश्या राजदारा –सिद्धा० 2 –श्या सती पतिव्रता स्त्री ।

असृक् (नपु०) [न सृज्यते इतररागवत् समुज्यते सहजत्वात् –न+सृज्+क्विप्-तारा०] 1 रुधिर 2 मंगल ग्रह 3 केसर । सम०—अग्रः लसिका,—अग्रा रक्तपा, चमरी—आशा 1. रुधिर की धार 2 चमड़ी,—ह –पा लोहू पीने वाला राक्षस—आस्रव रुधिर का गिरना,—वहा रक्त वाहिका, नाड़ी —विलोडनम् रुधिर का बहना,—स्रा(स्रा)वः रुधिर का बहना ।

असेचन,—नक (वि०) [न० त०] जिसे देखते २ जी न भरे, मनोहर, सुन्दर ।

असेवक (वि०) [न० ब०] 1. सौन्दर्यविहीन, आकर्षणरहित, जो सजीला न हो—शरीरमसेवकम्—भा० १ । १७, 2. कुरूप, विकलांग—कम् 1. विकलांगता, गुणों की हीनता 2. विकलांगता, कुरूपता ।

असंशयित (वि०) [न० त०] 1. अटल, दृढ़, स्थायी 2. अज्ञात 3. अविचलित, साहसी—रघु० ५।३० ।

असक्त (भू० क० कृ०) [अस्+क्त] 1. फेंका हुआ, क्षिप्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ—असमये मयास्तोऽधिभागः –मनु० ९, 2 समाप्त 3. भेजा हुआ । सम०—कर्मन् (वि०) दयारहित—धी (वि०) मूर्ख,—व्यस्त (वि०) इधर उधर बिखरा हुआ अव्यवस्थित, क्रमरहित,—संयत (वि०) अनियमित ।

अस्तः [अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र–अस्+आधारे क्त] अस्ताचल या पश्चिमाचल (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ माना जाता है) —अधिरोहुमस्तविरमम्यपतत्—शि० ९।१, विहस्यवद्यास्तनिमग्नसूर्यम्–रघु० १६।११; ७० ४।१; 2. सूर्य का डूबना 3 डूबना, (आलं०) विरमा, पतन– दे० नीचे, अस्तं+गम्,—या,– इ, अस्तम् (क्र) डूबना, पश्चिमी क्षितिज में मिलना, पश्चोऽस्तमर्कः–सूर्य डूब गया (ख) बुझना, नष्ट होना, दूर हटना, अंतर्धान होना, समाप्त होना—विधयिनः कस्यापधोऽस्तं व्रताः –पंच० १।१४६, धृतिरस्तमिता–रघु० ८।६६; (ग) मरना—अथ चास्तमिता त्वमात्मजा—रघु० ८।९१, १२।११, । सम०—अचलः,—अद्रिः,—गिरिः, —पर्वतः, अस्ताचल पहाड़ या पश्चिमी पहाड़,—अभ्रकल्पनम् क्षितिज के पश्चिमी भाग पर आकाशस्थित सूर्य चन्द्रादिक का डूबते समय आराम करना—उदयौ (द्वि० व०) डूबना और निकलना, उदय और पतन, —अस्तोदयावधिमयप्रविभिन्नकालम्—मुद्रा० ३।१७, —ग (वि०) डूबने वाला, तारे की भांति अदृश्य हो जाने वाला,—गमनम् 1. डूबना, छिपना 2. मृत्यु, जीवन के सूर्य-प्रदीप का बुझना, मा० ९ ।

अस्तगमनम् [अस्+अप् (भा०) अस्तम्=अदर्शनस्थं गमनम् =गति] (सूर्य का) डूबना ।

अस्तमयः [अस्तमीयते गम्यतेऽस्मिन् इति अस्तम्+इ+अच्] 1 (सूर्य का) डूबना—करोत्यकालास्तमयं विकस्वरं –कि० ५।३५, (विप० उदयः) 2. नाश, अन्त, पतन, हानि 3. पात, अभिभव—उदयास्तमयं च रघूद्वहात्–रघु० ९।९ 4 तिरोधान, अन्धकार छाया हुआ, प्रभाप्ररोहास्तमयं रजांसि—रघु० ६।३३, 5. (किसी ग्रह का) सूर्य से संयोग ।

अस्ति (अव्य०) [अस्+तिप्] 1. होना, सत्, विद्यमान, जैसा कि—अस्तिक्षीरा गौ, °नाम, 2. प्रायः किसी घटना

या कहानी के आरंभ में या तो केवल "अनुपूरक" अर्थ में प्रयुक्त होता है, अथवा 'अत यह है कि' अर्थ को प्रकट करता है—अस्ति सिंहल प्रतिवसति स्म—पंच० ४। सम०—काय वर्ग या अवस्था (जैन मतानुसार) —नास्ति (अव्य०) सन्दिग्ध, आंशिक रूप से सत्य।

अस्तित्वम् [अस्ति+त्व] सत्ता, विद्यमानता।

अस्तेयम् [न० त०] चोरी न करना।

अस्थाभम् [न० त०] खिड़की, कलक।

अस्त्रम् [अस्+ष्ट्रन्] 1 फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार,—प्रयुक्तमभ्यस्त्रमिवा वृथा स्यात् रघु० २।३४, प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात् २।४१, ३।५८, अशिक्षितास्त्र पितुरेव—रघु० ३।३१, आयुधविज्ञान 2 तीर, तलवार 3 धनुष। सम०—ग्र (आ) गारम् शस्त्रशाला, तोपखाना, आयुधागार—आघात व्रण, घाव,—कटक तीर,—कार:,—कारक:,—कारिन् हथियार बनाने वाला,—चिकित्सक चीरफाड़ या शल्य क्रिया करने वाला, जर्राह—चिकित्सा चीरफाड़ या शल्य क्रिया, जर्राही,—जीव:—जीविन् (पु०)—धारिन् (पु०) सैनिक, योद्धा,—निवारणम् हथियार के वार को रोकना—मन्त्र अस्त्र चालन या प्रत्याहरण के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र,—मार्ग:—मार्गक मिकलीगर, युद्धम् हथियारों से लड़ना,—लाघवम् अस्त्रधारण या चालन में कुशलता, —विद् (वि०) आयुध विज्ञान में दक्ष,—विद्या,—शास्त्रम् —वेद: अस्त्रचालन विज्ञान या कला, आयुधविज्ञान —वृष्टि (स्त्री०) अस्त्रों की बौछार, शिक्षा सैनिक अभ्यास, अस्त्र चालन व प्रत्याहरण की शिक्षा।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र+इन्] अस्त्र से युद्ध करने वाला, धनुर्धारी।

अस्त्री [न० त०] 1. जो स्त्री न हो 2 (व्या० में) पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग।

अस्थान (वि०) [न० ब०] बहुत गहरा,—नम् [न० त०] 1 बुरा स्थान, 2 अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर।

अस्थाने (अव्य०) बिना ऋतु के, उपयुक्त स्थान से बाहर, बिना अवसर के, गलत जगह पर अयोग्य वस्तु पर—अस्थाने मद्दानयोत्सर्ग क्रियते—मुद्रा० ३।

अस्थावर (वि०) [न० त०] 1 चर, जंगम, अस्थिर 2 (विधि में) निजी चल वस्तु जैसे कि सम्पत्ति, पशु, धन आदि (=जंगम)।

अस्थि (नपु०) [अस्यते—अस्+क्थिन्] 1 हड्डी (कई समस्त पदों के अंत में बदल कर 'अस्थ' रह जाता है—दे० अनस्थ, पुरुषास्थ) 2 फल की गिरी या गुठली—न कार्पासास्थि न तुषान् —मनु० ४।७८। सम०—कृत्, —तेजस् (पु०), —सञ्चय,—सार, —स्नेह, चर्बी, वसा,—ज: 1. चर्बी, 2 वज्र,—तुण्ड एक पक्षी,—धन्वन् (पु०) शिव,—पंजर: हड्डियों का ढांचा, कंकाल,—प्रक्षेप मृतक की हड्डियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, —भक्ष:,—भक् हड्डियों का खाने वाला, कुत्ता —भंग: हड्डी का टूट जाना—भाला 1 हड्डियों का हार 2 हड्डियों की पवित्र,—मालिन् (पु०) शिव,—शेष (वि०) ठठरी मात्र—संचय 1 शवदाह के पश्चात् उसकी हड्डियों और भस्मावशेष को एकत्र करना, 2 हड्डियों का ढेर, संधि जोड़, जोड़बन्दी, संस्कारम् मृतक की अस्थियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, —स्थूण, हड्डियों का स्तम्भ के रूप में धारण करने वाला शरीर।

अस्थिति (स्त्री०) [न० त०] 1 दृढ़ता या जमाव का अभाव (आल० भी) 2 मर्यादा या शिष्ट व्यवहार का अभाव।

अस्थिर (वि०) [न० त०] जो स्थिर या दृढ़ न हो, डावांडोल, चलने।

अस्पर्शनम् [न० त०] संपर्क का न होना, (किसी चीज के) स्पर्श का टालना—प्रशस्तमस्पर्शनं हि दुष्ट्य दूरादस्पर्शनम् वरम्—तु० इलाज से बचाव अच्छा।

अस्पष्ट (वि०) [न० त०] 1 जो स्पष्ट न हो, स्पष्ट रूप से दिखाई न देता हो 2 धुंधला, जो साफ समझ में न आवे, अनिश्चित अस्पष्टवह्निज्वालानि वेदा-नीवाकृतयानि —मालवि०।

अस्पृश्य (वि०) [न० त०] 1 जो छूने के योग्य न हो 2 अशुचि, अपावन।

अस्फुट (वि०) [न० त०] दुरूह, अस्पष्ट सम् दुर्बोध भाषण। सम०—कलम धुंधला या दुरूह परिणाम, —वाच् (वि०) तुतला कर बोलने वाला, अस्पष्ट-भाषी।

अस्मद् (सर्व०) [अस् मदिक्] मदनामविषयक प्रातिपदिक जिसमें कि उत्तमपुरुषसंबंधी पुरुषवाचक सर्वनाम के अनेक रूप बनते हैं यह अहं० का ब० व० का रूप भी है, पं० प्रत्यगात्मा, जीवात्मा। सम०—विध, सदृश (वि०) हमारे समान का हम जैसा।

अस्मदीय (वि०) [अस्मद्+छ] हमारा, हम सब का, —यदस्मदीय न हि तत्परेषाम्—पंच० २।१०५, भग० १।३६।

अस्मार्त (वि०) [न० त०] 1 जो स्मृति के भीतर न हो, स्मरणातीत 2 अवैध, आर्य-धर्मशास्त्रों के विपरीत 3 स्मार्त संप्रदाय में सम्बद्ध न रखने वाला।

अस्मि (अव्य०) [अस्—मिप्] ('अस्' —होना धातु का वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, एक वचन) मैं—अहम्; —आममृतेरस्मि जगत्सु जातु—कि० ३।९, अन्यत्र पुंसः कुसुमायुधाय कुरुष्वमत्वाय्यि करोमि लक्ष्यं—कुमा० ३।

अस्मिता [अस्मि+तल्+टाप्] अहंकार।
अस्मृति (स्त्री०) [न० त०] स्मृति का अभाव, भूलना।
असः [अस्+रन्] 1 किनारा, कोर 2. सिर के बाल, —असृज् 1 आंसू 2 रुधिर। सम०—कंठः बाल,—असृज् मांस,—प. रुधिर पीने वाला राक्षस,—पा जोंक —मातृजा अस्रसंभव, आमरस, ओज।
अस्व (वि०) [न० ब०] 1. अकिंचन, निर्धन 2. जो अपना न हो।
अस्वतंत्र (वि०) [न० त०] 1 आश्रित, अधीन, पराधीन —अस्वतंत्रा स्त्री पुरुषप्रधाना—वसिष्ठ 2 विनीत।
अस्वप्न (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागरूक,—प्नः 1 देवता 2 अतिदा।
अस्वरः [न० त०] 1 मन्द स्वर 2 व्यंजन,— रम् (अव्य०) ऊंचे स्वर में नहीं, धीमी आवाज से।
अस्वर्ग्य (वि०) [न० त०] जो स्वर्ग प्राप्त करने के योग्य न हो—अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्म्यमप्याचरेन्नृ—या० १।१५६।
अस्वस्थ (वि०) [न० त०] 1 जो नीरोग न हो, रोगी बलवत् अस्वस्था—न० ३, अतिरुग्ण।
अस्वाध्यायः [न स्वाध्यायो वेदाध्ययनमस्य —न० ब०] 1 जिसने अभी अध्ययन आरंभ नहीं किया जिसका अभी यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो 2 अध्ययन में रुकावट (जैसे कि अष्टमी, ग्रहण आदि के कारण अनध्याय)।
अस्वामिक (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु का अधिकारी न हो, जो स्वामी न हो। सम० विक्रयः बिना स्वामी बने किसी वस्तु का बेचना।
अह (स्वा० आ० या चुरा० उभ०)- तु० अह्।
अह (अव्य०) [अह्+क्विप् पृषो० न लोप] निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला निपात या अव्यय- (क) स्तुति (ख) वियोग (ग) वृहत्संकल्प या निश्चय (घ) अस्वीकृति (च) प्रेषण तथा (छ) पद्धति या प्रथा की अवहेलना।
अहंयु (वि०) [अहम्+युच्] घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी —भट्टि० १।२०।
अहत (वि०) [न० त०] 1 असत, अनाहत 2 बिना धुला, नया,—तम् बिना धुला (कोरा), या नया कपड़ा, तु० 'अप्रहृत'।
अहन् (नपु०) [न जहाति स्वरूपं सर्वथा परिवर्तनं, न+हा+कनिन् न० त०] (कर्तृ० अहः, अह्नी-अहनी, अहानि—अह्ना अहोभ्याम् आदि) 1 दिन (दिन और रात दोनों को मिलाकर)—अहोरात्रि -मनु० ५। ८४, 2. दिन का समय—संध्यापरामहनि न तथा पीडयेन्महिषीयोग —नैष० ९०,—अह्नः कुरुते पापम्—दिन में, (समस्त पद के अन्त में 'अहन्' बदल कर 'अह्—अहम् या अह्न' रह जाता है परन्तु समस्त पद के आदि में यह 'अहन्—या अहर्' बन जाता है यथा —अहःपति या अहर्पतिः आदि)। सम०—आगमः (अहरा०) दिन का आना,—आदिः उषःकाल,—करः सूर्य,— गणः (°हर्ग०) 1. यज्ञ के दिनों का सिलसिला, 2 महीना,—दिवम् (अव्य०) प्रतिदिन, हर रोज, दिन प्रति दिन,—निशम् दिन-रात,—पतिः सूर्य, —बीजः सूर्य,—मणिः सूर्य,— मुखम् दिन का आरंभ, प्रभात, उषःकाल—निशाटकाला मुहूर्तं स्यादहोरात्रं तु तावत्—मनु० १। ६४, ६५,—शेषः,—सम् सायंकाल।
अहम् (सर्व) ['अस्मद् शब्द का कर्तृ कारक ए० व०] मैं। सम०—अहिका श्रेष्ठता के लिए होड़, प्रतिद्वन्द्विता, —अहमिका 1 होड़, प्रतियोगिता, अपनी श्रेष्ठता का दावा—अहमहमिकया प्रथमवयोलक्षणाम्—का० १४, 2 अहंकार 3. सैनिक अहमन्यता,—कारः 1. अभिमान, आत्मश्लाघा, वेदान्त दर्शन में 'आत्मप्रेम' अविद्या या आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है,—भग० २। ७१, ७। ४, मनु० १। १४, 2 घमंड, स्वाभिमान, गर्व 3. (सा० द० में) सृष्टि के मूलतत्त्व या आठ उत्पादकों में से तीसरा अर्थात् आत्माभिमान या अपनी सत्ता का बोध,—कारिन् (वि०) घमंडी, स्वाभिमानी,—कृतिः (स्त्री०) अहंकार, घमंड,—कूर्म (वि०) होड़ में प्रथम रहने का इच्छुक,—कृतिका, —क्रमिका 1 होड़ के साथ सैनिकों की दौड़, होड़, प्रतियोगिता—अवादहंपूर्विकया वियासुभि- कि० १४। ३२, 2 क्रीड़ा मारना, आत्मश्लाघा,—ग्रहः स्वाभिमान, अपनी श्रेष्ठता का दृढ़ विचार,—ग्रहः 1. घमंड, अहंकार—भाग० ४।१०, २=मति तु०—ग्रहिः (स्त्री०) 1 आत्मरति या स्वानुराग जो आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है (वेदा०) 2. दम्भ, घमंड, अहंकार।
अहरणीय, अहार्य (वि०) [न० त०] 1 जो चुराये जाने के योग्य न हो, या हटाये जाने अथवा दूर के जाये जाने के योग्य न हो—अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः—मनु० ९। १८९, 2. अक्षोभ्य, निश्चायक 3 दृढ़, अविचल, अनम्रनेय—कु० ५। ८,—र्यः पहाड़।
अहल्य (वि०) [न० त०] बिना जोता हुआ,—ल्या गौतम की पत्नी (रामायण के अनुसार अहल्या सबसे पहली स्त्री थी जिसे ब्रह्मा ने पैदा किया—और गौतम को दे दिया, इन्द्र ने उसके पति का रूप धारण करके उसे सतीत्व से फुसलाया इस प्रकार उसे धोखा दिया। दूसरे कथानक के अनुसार यह इन्द्र को चाहती थी और उसके अनुराग तथा नम्रता के वशीभूत हो यह उसकी चापलूसी का शिकार बन गई थी। इसके अतिरिक्त एक और कहानी है जिसके अनुसार इन्द्र ने चन्द्रमा की सहायता प्राप्त की। चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर आधी रात को ही बांग दे दी। इस बांग से

गौतम को अपने प्रति कामीन निष्क्रिय करने के लिए बाध्य किया। इन्द्र ने अन्दर प्रविष्ट होकर गौतम का स्थान ग्रहण किया। जब गौतम को अहल्या के पथभ्रष्ट होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रम से निर्वासित कर दिया और शाप दिया कि वह पत्थर बन जाय तथा तब तक अदृश्य अवस्था में पड़ी रहे जब तक कि दशरथ के पुत्र राम का चरण-स्पर्श न हो, जो कि अहल्या को फिर पूर्वरूप प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस दीन-दशा से उसका उद्धार किया—और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अहल्या प्रात-स्मरणीय उन पाँच सती तथा विशुद्ध चरित्र महिलाओं में एक है जिनका प्रात काल नाम लेना श्रेयस्कर है—अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा मंदोदरी तथा, पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातक—नाशिनीः। सम०—जार इन्द्र,—आनन्दः शतानन्द मुनि, अहल्या का पुत्र।

अहह (अव्य०) [अह् जहाति इति—हा+क पृषो०] विस्मयादि द्योतक निपात निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होता है—(क) शोक, खेद—अहह कष्टमपण्डितता विधे—भर्तृ० ०।९९, ३।११, अहह ज्ञानराशिर्विनष्ट—मुद्रा० २ (ख) आश्चर्य, विस्मय—अहह महता निस्सीमानश्चरित्रविभूतय—भर्तृ० २।३५, ३६. (ग) दया, तरस—भामि० ४।३९ (घ) बुलाना (ङ) बकवाद।

अहि [आहन्ति—आ+हन्+इन् स च डित् आढ्यो ह्रस्वश्च] 1. साँप, अजगर—अहय सविधा सर्वे निर्विषा कुटुमा स्मृता—कथा० १४।८४, 2 सूर्य 3 राहुग्रह 4 दुष्टासुर 5 योगेश्वर, बलराम 6 बादल। सम०—अरि. वायु, हवा,—ओक साँप की केंचुली—कृष्णकम् कुकुरमुत्ता,—जित् (पुं०) 1 कृष्ण (कालिय नाग को मारने वाला) 2 इन्द्र—तुण्डिक साँप पकड़ने वाला, सपेरा, बाजीगर, —द्विष्,—द्विष्—आर,—रिपु,—विद्विष् (पुं०) 1 गरुड़ 2 नेवला 3 मोर 4 इन्द्र 5 कृष्ण—कि० ४।२७, शि० १।३१,—नकुलम् साँप और नेवले, —नकुलिका साँप और नेवले के मध्य स्वाभाविक वैर, —निर्मोकः साँप की केंचुली,—पति. 1 साँपों का स्वामी, वासुकि 2 कोई बड़ा साँप, अजगर साँप —पुच्छः साँप के आकार की बनी किश्ती,—फेन, —मद अफीम,—भयम् किसी छिपे हुए साँप का भय, दोस्त की शङ्का, अपने—मित्रों की ओर से भय,—भुक् (पुं०) 1. गरुड़ 2 मोर 3. नेवला—भूत (पुं०) शिव।

अहिंसा [न० त०] 1 अनिष्टकारिता का अभाव, किसी प्राणी को न मारना, मन वचन कर्म से किसी को पीड़ा न देना—अहिंसा परमोधर्म—भग० १०।५, मनु० १०।६३, ५।४४, ६।७५, 2 सुरक्षा।

अहिंस्र (वि०) [न० त०] अनिष्टकर, निर्दोष, अहिंसक —मनु० ४।२४६।

अहिक एक प्रकार का साँप।

अहित (वि०) [न० त०] 1. जो रक्षा न गया हो, धरा न गया हो, अमाथा न गया हो 2 अयोग्य, अनुचित —मनु० ३।२०, 3 अहितकर, अनिष्टकर 4 अनुपकारक 5 अपकारी, विरोधी,—त शत्रु—अहितानिलोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभि—रघु० ४।२८, ९।१७, ११।६८,—त्व हानि, क्षति।

अहिम (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। सम०—अंशु,—कर,—तेजस्,—द्युति,—रुचि, सूर्य।

अहीन (वि०) [न० त०] 1 अक्षुण्ण, पूर्ण, समस्त 2 जो छोटा न हो, बड़ा—अहीनबाहुर्वृषभेक्षणः शशास—रघु० १८।१४, 3 जो वञ्चित न हो, अधिकार प्राप्त—मनु० २।१८३ 4 जातिबहिष्कृत न हो, दुश्चरित्र न हो,—नः कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (बहु-भी)। सम०—वादिन् (पुं०) गवाही देने में असमर्थ, अयोग्य गवाह।

अहीरः [आभारी+पृषो० साधु] ग्वाला, अहीर।

अहुत (वि०) [न० त०] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) हवन में प्रस्तुत न किया गया हो—मनु० १२।९८,—त धर्मविषयक चिन्तन, यजन, प्रार्थना और वेदाध्ययन (पाँच महायज्ञों और कर्तव्यों में से एक)—मनु० ३।७३ ७४।

अहे (अव्य०) [अह+ए] (क) झिड़की भर्त्सना (ख) खेद तथा (ग) वियोग को प्रकट करने वाला निपात।

अहेतु (वि०) [न० ब०] निष्कारण, स्वतः स्फूर्त अहेतु पक्षपाता य—उत्तर० ५।१७।

अहेतुक (है) तुक (वि०) [न० ब० कप्] निराधार, निष्कारण, निष्प्रयोजन—भग० १८।२२।

अहो (अव्य०) [हा+डो न० त०] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय—(क) आश्चर्य या विस्मय —बहुधा रुचिकर अहो कामी स्वतां पश्यति—श० २।२, अहो मधुरमाभाषा दर्शनम् श० १, अहो अकृत्रिमालिकी—मालवि० १, अहो रूपमहो धैर्यमहो सत्त्वमहो द्युति—रामा० (अहो उसका रूप आश्चर्य जनक है—आदि) (ख) पीड़ाजनक आश्चर्य—अहो ते विगत चेतनत्वम्—का० १४९, 2 शोक या खेद—अहो दुष्यन्तस्य सशयमाकन्दा पिदभाग्य—श० ६, विधिरहो बलवानिति मे मति—भर्तृ० २।९१, 3 प्रशंसा (आवास, बहुत खूब)—अहो देवदत्त पचति शोभनम्—सिद्धा० 4 झिड़की (धिक्) 5 बुलाना, सम्बोधित करना 6 ईर्ष्या, डाह 7. उपभोग, तृप्ति 8. बकवाद 9 कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अहो नु खलु (वा), सामान्य रूप से आश्चर्य जो रोचक हो—अहो नु खलु ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, अहो नु खलु भोजनदेव-

कालीन नाम—आ० ५, 'अहो बत' प्रकट करता है (क) दया, तरस तथा खेद 'अहो बत' महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्—भग० १।४४, (ख) संतोष—अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः—कु० ३।२० (मल्लि० यहाँ 'अहो बत' को संबोधन के रूप में ग्रहण करता है (ग) संबोधित करना, बुलाना (घ) धिक्कार। सम०—पूर्विका=दु० आहोपुरुषिका।

अहोरात्र (अव्य०) [द्वं०+रात्र, वृद्धि, पूर्व० दीर्घ रात्रम्] तुरन्त, शीघ्र, फौरन—अहोरात्र सा निधनम् कलमयुत्सृजे—कु० ५।८६, अहोरात्र तावदवलेप तपो निरस्तम् —रघु० ५।७१ कि० १६।१६।

अहौक(वि०)[ष० व० कप्] निर्लज्ज, ढीठ—क: बौद्ध भिक्षुक।

आ

आ देवनागरी वर्णमाला का द्वितीय अक्षर।

आ 1 विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) स्वीकृति 'हाँ' (ख) दया 'आह' (ग) पीड़ा या खेद (बहुधा—आह् या आ लिखा जाता है) 'हा 'हत' (घ) प्रत्यास्मरण 'अहो—ओह' आ एव किलासीत्—उत्तर० ६ (च) कई बार केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है—आ एव मन्यसे 2 (संज्ञा और क्रियाओं के उपसर्ग के रूप में) (क) 'निकट' 'पास में' 'की ओर' 'सब ओर से' 'सब ओर' (कुछ क्रियाओं को देखो) (ख) गत्यर्थक नयनार्थक, तथा स्थानान्तरणार्थक क्रियाओं से पूर्व लगाकर विपरीतार्थ का बोध कराता है—यथा गम्=जाना, आगम्=आना, दा=देना, आदा=लेना 3 (अपा० के साथ वियुक्त निपात के रूपमें प्रयुक्त होकर) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) आरम्भिक सीमा, (अभिविधि),'से', 'से लेकर' 'से दूर' 'में से'—आमूलात् लोलुमिच्छाधि—शि० १, आ जन्मन —शा०१५।२५ (ख) पृथक्करणीय या उपसंहारक सीमा (मर्यादा) को प्रकट करता है—'तक' 'अवतक कि नहीं' 'यथाशक्ति' 'अवतक कि'—आ परितोषाद्विदुषां न० १।२.—कैलासात्—मेघ० ११, कैलास तक (ग) इन दोनों अर्थों को प्रकट करने में 'आ' या तो अव्ययीभाव समास में अथवा सामासिक विशेषण का रूप धारण कर लेता है—आबालम् (आबालेभ्य) हरिभक्ति, कई बार इस प्रकार का बना हुआ समस्त पद अन्य समासों का प्रथम अवयव बन जाता है—सोऽहमाजन्म शुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्, आ समुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्—रघु०२।५, आगच्छ वित्तम्बि—श० ७।१७ 4 विशेषणों के साथ (कई बार संज्ञाओं के साथ) लग कर 'आ' अल्पार्थवाची हो जाता है—आषाडुर =ईषत्पाण्डुर, कुछ सफेद, आलक्ष्य—श० ७।१७, आकम्प=मृदु कम्पन, इसी प्रकार 'आनील' 'आरक्त'।

आं=दु० आम्।

आः 1.=दु० आम् 2. छठवीं (आ)।

आकलयनम् [आ+कल्+ल्युट्] सीध मारना, सीधी बौछार।

आकम्पः [आ+कम्प्+घञ्] 1. मृदु कंप 2. हिलना, काँपना।

आकम्पनम् [आ+कम्प्+ल्युट्] कंपयुक्त गति, हिलना।

आकम्पित, आकम्प्य [आ+कम्प्+क्त, र का] हिलता हुआ, काँपता हुआ, हिला-डुला, विचलित।

आकरः [आकुर्वन्त्यस्मिन्—आ+कृ+घ] 1. खान—अभिराकरोद्भवं —रघु० ३।१८, आकरे पद्मरागाणां जन्मकाचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४ (आर्या०) खान या किसी वस्तु का समृद्ध साधन—मालतो नु पुण्याकरः —विक्रम० १।९, अशेषगुणाकरम्—भर्तृ० २।६५ कु० २।२९, 3 सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

आकरिक (वि०) [आकर+ठन्] (राजा के द्वारा) नियत व्यक्ति जो खान का अधीक्षण करता है।

आकरिन् (वि०) [आकर+इनि] 1. खान में उत्पन्न, खनिज 2 अच्छी नस्ल का 'दन्तमाकरिनि करिनिः प्रार्थे —कि० ५।७, ।

आकर्णनम् [आ+कर्ण+ल्युट्] सुनना, कान लगा कर सुनना।

आकर्षः [आ+कृष्+घञ्] 1 खिंचाव या (अपनी ओर) खींचना, 2. खींच कर दूर ले जाना, पीछे हटाना 3 (धनुष) तानना 4 प्रलोभन, सम्मोहन 5 पासे से खेलना 6 पासा या चौसर 7 पासों से खेलने का फलक, बिसात 8 ज्ञानेन्द्रिय 9 कसौटी।

आकर्षक (वि०) [आ+कृष्+ण्वुल्] खिंचाव करने वाला, प्रलोभक—क: चुंबक, लोहचुंबक।

आकर्षणम् [आ+कृष्+ल्युट्] 1. खींचना, खींच लेना, सम्मोहन 2. पथभ्रष्ट करने के लिए फुसलाना, —जी वृक्षों से फल फूल आदि उतारने के लिए किनारे पर से मुड़ी हुई लकड़ी, लग्गी।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०—की] [आकर्ष+ठन्] चुंबकीय, सम्मोहक।

आकर्षिन् (वि०) [आ+कृष्+णिनि] खींचने वाला (जैसे कि डूर की गंध)।

आकलनम् [आ+कल्+ल्युट्] 1 हाथ रखना, पकड़ना —वेक्षणकालन—का० १८३, बन्दीगृह में रहना 2 गिनना, हिसाब लगाना, 3. चाह इच्छा 4 पूरा नाश 5 समझ-बूझ।

आकल्पः [आ+कृप्+णिच्+घञ्] 1 आभूषण, अलंकार—आकल्पसारो रूपाजीवाजन — दश० ६३, रघु० १७।२२, १८।५२, 2 वेशभूषा 3 रोग, बीमारी।

आकल्पकः [आ+कृप्+णिच्+ण्वुल्] 1 दुःखपूर्ण स्मृति, स्मृति का लोप 2 मूर्छा 3 हर्ष या प्रसन्नता 4 अलंकार गाठ या जोड़।

आकष [आ+कष्+अच्] कसौटी।

आकर्षिक (वि०) [आकर्षेण चरति-इति आकर्ष+ठक्] घसीटने वाला, कसौटी पर कसने वाला।

आकस्मिक (वि०) (स्त्री०-की)[अकस्मात्+ठक् टिलोप] 1 अचानक होने वाला, अचिंतित, अप्रत्याशित, सहसा 2 निष्कारण, निराधार— नन्वदृष्टानिष्टौ जगद्विचित्र-माकस्मिकं स्यात्—शारी०।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1 इच्छा, चाह-भक्त°—सुश्रु०, अमर ४१, 2 (व्या० में) अर्थ को पूरा करने के लिए आवश्यक शब्द की उपस्थिति, किसी विचार या वाक्य के भाव को पूरा करने के लिए तीन आवश्यक तत्त्वों में से एक (दूसरे दो हैं—योग्यता और आसत्ति) आकाङ्क्षा प्रतीतिपर्यवसानविरह - सा० द० २ अर्थ की पूर्ति का अभाव 3 किसी की ओर देखना 4 प्रयोजन, इरादा 5 पूछ-ताछ 6 शब्द की यथार्थता।

आकाय [आ+चि+कर्मणि घञ्, चितौ कृत्वम्] 1 चिता पर रक्खी हुई अग्नि, 2 चिता।

आकार [आ+कृ+घञ्] 1 रूप, शक्ल, आकृति-द्विधा° दो रूपों को या दो प्रकार की 2 पहलू सूरत, मुखाकृति, चेहरा— आकारसदृशप्रज्ञ रघु० १।१५, १६।७, 3 (विशेषतः) चेहरे का रंग ढंग-जिससे मनुष्य के आन्तरिक विचार तथा मनोवृत्ति का पता लग सके-तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च— रघु० १।२०, भवानपि संवृताकारमास्ताम्—विक्रम० २, 4 इशारा, संकेत, निशानी। सम० -गुप्ति (स्त्री०),—गोपनम्, —गूहनम् छिपाव, मन के भावों का छिपाना।

आकार्य (क) रघु०,—र्या [आ+कृ+णिच्+ण्यत्, युच् वा] 1 आमंत्रण, बुलावा—भवदाकारणाय—दश० १७५, 2 आह्वान।

आकालः [आ+कृ+अल्+अच् को कादेश] ठीक समय।

आकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [अकाल+ठक्] 1 क्षणिक, अल्पकालिक—मनु० ४।१०३, 2 बेमौसिम, अकालपक्व, असामयिक—आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम्—कु० ३।२४, मच्छ० ५।१,—की बिजली।

आकाशः—शम् [आ+काश्+घञ्] 1. आसमान —आकाशभवा सरस्वती— कु० ४।३९, °ग, °चारिन् आदि 2 अन्तरिक्ष (पाँचवाँ तत्त्व) 3 सूक्ष्म और वायविक द्रव्य जो समस्त विश्व में व्याप्त है, वैशेषिक द्वारा माने हुए ९ द्रव्यों में से एक, यह 'शब्द' गुण का आधार है - शब्दगुणकमाकाशम्- तर्क० श्रुतिविषय-गुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्—सा० १। १, अथात्मन शब्दगुण गुणज्ञ पदम् (नासत - आकाश) विमानेन विगाहमान —रघु० १३। १, 4 मुक्त स्थान 5 स्थान - सपर्वतवनाकाशा पृथिवीम्—महा०, भवनाकाश-मजायताम्बुराशि भागि० २। १६५ 6 ब्रह्म (अन्तरिक्ष स्वरूप) आकाशस्तल्लिंगात् ब्रह्म० यावानय-माकाशस्तावानयमन्तर्हृदयाकाश छा० 7 प्रकाश, स्वच्छता, 'वायु में' अर्थ को प्रकट करने वाला आकाशे' शब्द नाटकों में प्रयुक्त होता है जब कि रंग-मंच पर स्थित पात्र प्रश्न किसी ऐसे व्यक्ति से पूछता है जो वहाँ उपस्थित न हो, और ऐसे काल्पनिक उत्तर को सुनता है जो 'किं ब्रवीषि' 'किं कथयसि' आदि शब्दों से आरम्भ होता है- दूरस्थाभाषण मन्यादशरीरनिवेदनम्, परोक्षान्तरित वाक्य नभाकाशे निगद्यते ॥ भरत तु० निम्नांकित आकाशभाषित की (आकाशे) क्रियाएं कस्येदमंशुकमनुत्सवन, मृणा-लवन्ति च नलिनीपत्राणि वीजयते। (श्रुत्वाभिनीय) किं ब्रवीषि आदि० सा० ३। समा० -ईश. 1 इन्द्र 2 (विशे० में) असहाय व्यक्ति (जैसे कि बच्चा, स्त्री, दरिद्र) जिसके पास वायु के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं है —कक्षा श्रितेव कक्ष. वह्ने, -ग पक्षी (—गा) आकाशस्थित गंगा, मन्दाकिनी दिव्य नदी - नदत्याकाशगङ्गायां खेलन्यूहानहिंसकान् -रघु० १। ७८, -चमस चन्द्रमा, -दीपिका (पु) लालटेन, प्राचीन में बना ताप का लालटेन, बन्दूक या तोप आदि चलाने के लिए भित्ति में बना छिद्र 1 —दीपः -प्रदीप 1 कार्तिक मास में दिवाली के अवसर पर लक्ष्मी या विष्णु का स्वागत करने के लिए छतों पर रक्खा हुआ दीपक, 2 बाँस के सिरे पर बाँध कर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन, प्रकाशस्तम्भ पर रक्खा हुआ दीया या लैम्प, -भाषितम् -1. रंग-मंच पर अनुपस्थित व्यक्ति से भाषण करना, एक काल्पनिक भाषण जिसका उत्तर इस प्रकार दिया जाय—मानो यह बात कल्पना कही और सुनी गई है—कि ब्रवीषीति मन्भाव्ये बिना पात्र प्रयुज्यते, श्रुते-रानुकूल्यमप्यर्थं तस्मादाकाशभाषितम्—सा० द० ४२५, 2 आकाश में कही बात या शब्द, —मंडलम् खगोल, यानम् 1 हवाई जहाज, गुब्बारा 2. आकाश में घूमने वाला, रजिन् (पु०) किले की बाहरी दिवारों

की रक्षा करने वाला,—वचनम् °आवित्तम्—दे० —अन्तर्म् (नपुं०) 1. अन्तरिक्ष 2. वायुमण्डल, वायु, —वाणी आकाश से आई हुई आवाज, अशरीरिणी वाणी,—वित्तिलम् वर्षा, ओस—स्थलिकः ओला।

आकिञ्चनम्, आकिञ्च्यम् [अकिञ्चन+अण्, ष्यञ् वा] गरीबी, धन का अभाव।

आकीर्ण (भू० क० कृ०) [आ+कृ+क्त] 1 बिखरा हुआ, फैला हुआ भरा हुआ, व्याप्त, सकुल—खचाखच भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर—जनाकीर्णे मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५। १०, आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वाररोधिभि —रघु० १।५०।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] 1. झुकाना, सिकोड़ना, संकोचन 2 पाँच कर्मों में से एक—सिकुड़न 3 एकत्र करना, ढेर लगाना 4 टेढ़ा होना।

आकुल (वि०) [आ+कुल्+क] 1. भरपूर, भराहुआ —प्रचलदूर्मिमालाकुल (समुद्रम्)—भर्तृ० २।४, बाष्पाकुलां वाचं—मल० ४।१८, आलापकुतूहलाकुलतरे श्रोत्रे—अमरु ८१, 2 प्रभावित, प्रभावग्रस्त, पीड़ित, आहत—हर्ष°, शोक°, विस्मय°, स्नेह° आदि 3 व्यस्त, लीन 4 घबराया हुआ, विक्षुब्ध उद्विग्न—अभिषेक प्रतिष्ठासुरासीत्कार्यद्वयाकुल.—शि० २।१, विस्मित किंकर्तव्यविमूढ, अनिर्धारित, °आकुल, अत्यन्त क्षुब्ध 5 बिखरे बाल वाला, अव्यवस्थित 6 असंगत, विरोधी, —लम् आवाद अगह।

आकुलित (वि०) [आ+कुल+क्त] 1. दुःखी, उद्विग्न, विक्षुब्ध—मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धु —कु० ५।८५ 2 फैला हुआ, 3 मलिन, धूमिल,—धूमदृष्टे —श०४, 4 अभिभूत, पीड़ित,—शोक°, पिपासा° आदि।

आकूजित (वि०) [आ+कूज्+क्त] कुछ संकुचित—अवन शरशल्यवेदनाकूजितभिभागेन—का० १६६, ८१।

आकूतम् [आ+कू+क्त] 1 अर्थ, इरादा, प्रयोजन—इतीरितोकूतमनीलवाजिनम् - कि० १४।२६, 2 भावना, हृदय की स्थिति, संवेग,—चूडामण्डल बन्धन तरलय-त्याकूतज्ञो वेपथु - उत्तर० ५।३६, भावाकूत—अमरु ४ मा० ९।११, साकूतम्—भावनापूर्वक, साभिप्राय (प्रायः नाटकों में रसभङ्ग के निर्देश के रूप में) 3. आशयवर्ण या जिज्ञासा 4. चाह, इच्छा।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1 रूप, प्रतिमा, शक्ल—गोपवेषस्याकृतिरन्वकारि—कि० ३।४, 2. शरीर,काया—किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् —शि० १।२०, विकृताकृति—मनु० ११।५३ इस प्रकार घोर° 3 दर्शन, सुन्दर रूप, भद्रकथ,—न ह्याकृतिः सुलभपूर्वं विभाति वृत्तम्—मृच्छ० ९।१६, यथाकृतिस्तथा वृत्तं वसन्ति—सुभाषित० 4 नमूना, लक्षण 5 श्लोकों, आदि। सम०—अक्षः आकरण के किसी विशेष नियम से संबद्ध रखने वाले शब्दों की सूची—जो केवल नमूनों की सूची है (बहुधा गणपाठ में अंकित) यथा अदादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,—कृत्या घोड़ातकी नाम की लता।

आकृष्टि (स्त्री०) [आ+कृष्+क्तिन्] 1. आकर्षण 2. खिचाव, गुरुत्वाकर्षण (गणित ज्योतिष); —आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्स्वस्थ गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या, आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे। गोलाध०), 3. धनुष का खींचना या झुकाना, ज्या°—अमरु०।

आकेकर (वि०) [आके अल्पिके कीर्यते इति आ+कृ+अप् +टाप्—आकेकरा दृष्टिः सा अस्ति अस्य इति —आकेकरा+अच्] अधमुंदा, अर्धनिमीलित (आँखें) —निमीलिताकेकरलोलचक्षुषा कि० ८।५३,मु० ३।२१, दृष्टिराकेकरा किंचिल्स्फुटापांगे प्रसारिता, मौक्तिकार्थ-पुटालोके तारव्यावर्तनोत्तरा।

आक्रोकेरः (ग्रीक शब्द) मकर राशि।

आक्रन्दः [आ+क्रन्द्+घञ्]1. रोना, चिल्लाना 2. पुकारना, आह्वान करना, 3. शब्द, चिल्लाहट 4 मित्र, रक्षक 5 भाई 6. रोने का स्थान 7 वह राजा जो अपने मित्र राजा की दूसरे की सहायता करने से रोके वह राजा जिसकी राजधानी मिलती हुई किसी दूसरी राजधानी के पास है।—मनु० ७।२०७।

आक्रन्दनम् [आ+क्रन्द्+ल्युट्] 1 विलाप, रुदन 2 ऊँचे स्वर से पुकारना।

आक्रन्दिक (वि०) [आक्रन्दं धावति इति आक्रन्द+ठञ्] वह व्यक्ति जो किसी दुखिया के रोने को सुनकर दौड़ कर उसके पास जाता है।

आक्रन्दित (भू० क० कृ०) आ+क्रन्द्+क्त] 1 चिल्लाने वाला, या फूट २ कर रोने वाला, 2. आहूत, बुलाया हुआ,—तम् चिल्लाना, चिल्लाहट।

आक्रमः—णम्नम् [आ+क्रम्+घञ्, ल्युट् वा] 1. निकट आना, उपागमन 2 टूट पड़ना, आक्रमण करना, हमला 3 पकड़ना, दबाना, कब्जे में करना, 4 पार करना, प्राप्त करना 5 विस्तार करना, बढ़कर लगाना, बढ़ चढ़ कर होना 6. शक्ति से अधिक बोझा लादना।

आक्रान्त (भू० क० कृ०) [आ+क्रम्+क्त] 1. पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, पराजित, पराभूत —आक्रान्तविमानमार्गम्—रघु० १३।१७, तत्र पूर्ण भरपूर, अधिकृत, हका हुआ—वृक्षमूले तेन चाक्रान्तं मङ्गलावतनं महत्—रघु० १७।२९, वनिताभिर्भुवनाक्रान्तम्—भर्तृ० ३।१४, इसी प्रकार मदन° मृत्यु°, शोक° आदि, 2. वधा हुआ (मार्ग पीछा के) 3. बढ़ा हुआ, बहुत लंबा हुआ, आगे बढ़ा हुआ—रघु०

१०।३८, मालवि० ३।५, 4 प्राप्त किया हुआ, अधिकार में किया हुआ।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] 1 ऊपर रखना अधिकार में करना, पददलित करना—आक्रान्तिसभावितपादपीठम्—कु० २।११ 2 पराभूत करना, दबाना, लादना 3 आरोहण, आगे बढ़ जाना 4 शक्ति, शौर्य, बल।

आक्रामकः [आ+क्रम्+ण्वुल्] आक्रमणकर्ता, हमलावर।

आक्रीडः-डम् [आ+क्रीड्+घञ्] 1 खेल, क्रीडा, आमोद 2 प्रमदवन, क्रीडोद्यान आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिता स्वेषु देशमनु—कु० २।४३, कमप्याक्रीडभावाद्य तत्र विश्रिश्रमिषु—दश० १२।

आक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [आ+क्रुश्+क्त] 1 डाट-डपट किया हुआ, निन्दित, तिरस्कृत, कलंकित—शि० १२।२७, 2 ध्वनित, चीत्कारपूर्ण 3 अभिशप्त,—ष्टम् 1 जोर की पुकार 2 घोर शब्द या रुदन, गालीगलौज-युक्त भाषण—मार्जारमूषिकास्पर्श आक्रुष्टे कोधसत्व—कात्या०।

आक्रोशः-शनम् [आ+क्रुश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 पुकारना या जोर से चिल्लाना, उच्चस्वर से रोना या शब्द 2 निन्दा, कलंक, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना—याज्ञ० २।३०२ 3 अभिशाप, कोसना 4 शपथ लेना।

आक्लेदः [आ+क्लिद्+घञ्] आर्द्रता, गीलापन, छिड़काव।

आक्षद्यूतिक (वि०) (स्त्री०-की) [अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् इति—ठक्] जूए से प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आक्षपणम् [आ+क्षप्+ल्युट्] 1 उपवास रखना, उपवास या व्रत द्वारा आत्मशुद्धि, संयम।

आक्षपाटिक [अक्षपट+ठक्] 1 द्यूतक्रीडा का निर्णायक, द्यूतगृह का अधीक्षक 2 न्यायाधीश।

आक्षपाद (वि०) (स्त्री०—दी) [अक्षपाद+अण्] अक्षपाद या गौतम का शिष्य,—दः न्यायशास्त्र का अनुयायी, नैयायिक, तार्किक।

आक्षारः [आ+क्षर्+णिच्+घञ्] कलंक लगाना, (व्यभिचारादिकका) दोषारोपण करना।

आक्षारणम्-णा [आ+क्षर्+णिच्+ल्युट्] कलंक, दोषारोपण (विशेषतः व्यभिचार का)।

आक्षारित (भू० क० कृ०) [आ+क्षर्+णिच्+क्त] 1 कलंकित 2 दोषी, अपराधी।

आक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [अक्षेण दीव्यति जयति जितं वा—अक्ष+ठक्] 1 पासों से जूआ खेलने वाला, 2 जूए से जीता हुआ 3 जूए से संबंध रखने वाला—आक्षिकं कृतम्—मनु० ८।१५९, जूए में किया हुआ कर्जा,—कम् 1 जूए में जीता हुआ धन 2, जूए का ऋण।

आक्षिप्तिका [आ+क्षिप्+क्त+टाप्, क, इत्वम्] रंगमंच पर आते हुए किसी पात्र के द्वारा गान विशेष—विक्रम० ४।

आक्षीब (वि०) [आ+क्षीव्+क्त नि०] 1 जिसने कुछ मद्यपान किया हुआ हो 2 मस्त, नशे में चूर।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] 1 दूर फेंकना, उछालना, खींचकर दूर करना, छीन लेना—अमुकाक्षेपविलज्जिता-नाम्—कु० १।१४, पीछे हटना 2 भर्त्सना, झिड़कना, कलंक लगाना, अपशब्द कहना, अवज्ञापूर्ण निन्दा —°प्रवृत्तया—उत्तर० ५।२९, विरुद्धमाक्षेपकचलि-तिक्षितम्- कि० १४।२५ 3 मन की उचाट, मन का खिंचाव—विषयाक्षेपपर्यन्तबुद्धे—भर्तृ० ३।४७, २३, 4 प्रयुक्त करना, लगाना, भरना (जैसे कि रंग)—गोरोचनाक्षेपनिरन्तगौरैः कु० ७।१७, 5 संकेत करना, (किसी दूसरे शब्दार्थ का) भान लेना, समझ लेना—स्वसिद्धये पराक्षेपः—काव्य० २, 6 अनु-मान 7 घरोहर 8 आपत्ति या संदेह 9 (सा० शा० में) एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तु को एक विशेष अर्थ जतलाने के लिए प्रकटतः वर्जा दिया जाय या निषिद्ध कर दिया जाय—काव्य० १०, सा० द० ७१४, और रसगंगाधर का आक्षेपप्रकरण।

आक्षेपकः [आ+क्षिप्+ण्वुल्] 1 फेंकनेवाला, 2 उचाट करने वाला, कलंक लगाने वाला, दोषारोपण करने वाला 3 शिकारी।

आक्षेपणम् [आ+क्षिप्+ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षोट-ड [आ+अक्ष्+घञ् (ड)+अण्] अखरोट की लकड़ी। दे० 'अक्षोट'।

आक्षोदनम् [आक्षोदनम्] अखरोट शिकार।

आक्ष्ण, आक्ष्णन [आ+क्षन्+ड, ल्युट् वा] फावड़ा, खुर्पा।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान् —आ+खण्ड्+डलच्, ह्रस्य नेत्वम् तारा०] इन्द्र—आखण्डल काम-मिदं बभाषे,—कु० ३।११, तमोभ आखण्डलकामुकाभ-मखण्डलविक्रमम् रघु० ४।८३, मेघ० १५।

आखनिक [आ+खन्+ष्वुन्] 1 खोदने वाला, खनिक 2 चूहा या मूषा 3 सूअर 4 चोर 5 कुदाल।

आखनिकः [आखन्+ठक्] 1 फावड़ा 2 खोदने वाला, खनिक।

आखातः-तम् [आ+खन्+क्त] प्राकृतिक तालाब, या जलाशय, खाड़ी।

आखानः [आ+खन्+घञ्] 1 चारों ओर से खोदना 2 फावड़ा 3 कुदाल, बेलदार।

आखुः [आ+खन्+कु दित्त्व] 1. मूषिक, चूहा, छछूंदर, - आखु वाहति शाभवो गणपतेराखुर्न सुधांशु, फणी —पञ्च० १।१५९, 2 चोर 3. सूअर 4. फावड़ा

5. कम्बूत—विभवे सति नैवादि न ददाति जुहोति न, तमाखुराखुम्—। सम०—उत्करः वल्मीक, बमी,—उत्थ (वि०) चूहों से उत्पन्न (—त्थम्) चूहों का निकलना, चूहों का समूह,—नः,—थः,—रथः,—वाहनः गणेश जिसका वाहन चूहा है,—आलः चूहा, नीचजाति का पुरुष, (ला०) चूहों को पकड़ने और मारने वाला, चूहड़ा,—पाषाणः चुम्बक पत्थर,—भुज्, भुक् बिल्ला, ।

आखेटः [आखिट्यन्ते बाध्यन्ते प्राणिनोऽत्र—आ+खिट्+घञ्, णत्वं०] शिकार करना, पीछा करना। सम०—क्षोभकम् 1 शिकार खेलने के 2. स्थान, गुफा।

आखेटकः (वि०) [आखेट+कन्] शिकार करने वाला —कः शिकारी,—कम् शिकार।

आखेटिकः [आखेटे कुशलः - ठक्] 1 शिकारी 2 शिकारी कुत्ता।

आखोटः [आखं स्वनिलयमिव उटानि पर्णानि अस्य—ब० स०] अखरोट का वृक्ष।

आख्या [आख्यायतेऽनया - आख्या+अङ्] 1. नाम, अभिधान -किं वा शकुन्तलेत्यस्य मानुराख्या -श० ७।७, ३३, पदमादृमाख्या सुमुखी जगाम - कु० १।२६, तदाख्यया भुवि पप्रथे रघु० १५।१०*, बहुधा समास के अन्त में अक प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'नामक' या 'नाम वाला' —अथ किमाख्यस्य राजर्षे या धर्मपत्नी श० ७ रघुवंशाख्य काव्यम् आदि।

आख्यात (भू० क० कृ०) [आ+ख्या+क्त] 1. कहा हुआ, बताया हुआ, घोषणा किया हुआ 2 गिना हुआ, पाठ किया हुआ, जतलाया हुआ 4 नामपद या क्रियापद, तद् किया, आख्यप्रधानमाख्यातम्—नि०, आख्यातेन विशिष्टस्य विधेयत्वेन बोधने, समर्थं स्वार्थसम्बन्धस्य शब्दो आख्यातमुच्यते ॥

आख्यातिः (स्त्री०) [आ+ख्या+क्तिन्] 1 कहना, समाचार, प्रकाशन 2 यश 3. नाम।

आख्यानम् [आ+ख्या+ल्युट्] 1 बोलना, घोषणा करना, जतलाना, समाचार 2. किसी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना —आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः सा० द० (उदा०—देवः सोऽयमरातिसोचितबलैर्मस्मिन् हृता पूरिता देवी० ३।३१) 3 कथा, कहानी विशेषरूप से काल्पनिक या पौराणिक, उपाख्यान - अप्सरा पुरुरवस चक्रम इत्याख्यानविद आचक्षते —मा० २, मनु० ३।२२३, 4. उत्तर—प्रश्नाख्यानयो पा० ८।२।१०५ 5. घोषक वर्ण।

आख्यानकम् [आख्यान+कन्] कथा, छोटी पौराणिक कहानी, कथानक, —आख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन—का० ७।

आख्यायक (वि०) [आ+ख्या+ण्वुल्] कहने वाला, सूचना देने वाला,—कः 1 दूत, हरकारा—आख्यायकेभ्य श्रुतसूनुवृत्तिं—शिशु० २।४४, 2. अग्रदूत, संदेशवाहक।

आख्यायिका [आख्यायक+टाप् इत्वम्] 'गद्य' रचना का नमूना, सुसंगत कहानी,—आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशादिकीर्तनम्, अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं गद्यं क्वचित् क्वचित्, कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति दण्ड्यते। आर्यादिकमापवक्त्रादीनां छन्दसां नेव केनचित्। अस्यामपवेशेनाश्वासमुखे आख्यार्थसूचनम्—सा० द० ५६८, [साहित्य शास्त्र के लेखक 'गद्यरचना' को चार दो (कथा और आख्यायिका) भागों में बाँटते हैं, वह बाण के हर्षचरित को 'आख्यायिका' तथा कादम्बरी को 'कथा' के नाम से पुकारते हैं। दण्डी इस प्रकार के भेद को स्वीकार नहीं करता —काव्या० १।२८—तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयांकिता ॥

आख्यायिन् (वि०) [आ+ख्या+णिनि] जो व्यक्ति कहता है, सूचना या समाचार देता है—रहस्याख्यायीव स्वनति घुघुकमौलिकचरः—श० १।२४।

आख्येय (स० कृ०) [आ+ख्या+यत्] कहने या समाचार देने के योग्य, आख्येः शब्दों में कहने के योग्य, प्रौलिक संदेश मेघ० १०३।

आगतिः (स्त्री०) [आ+गम्+क्तिन्] 1. पहुंचना, आगमन—लोकस्याम्य गतागतिम्—रामा०, इति निश्चित प्रियतमागतम शि० ९।४३ 2. अधिग्रहण 3 वापसी 4 उद्गम।

आगन्तु (वि०) [आ+गम्+तुन्] 1. आने वाला, पहुँचनेवाला, 2 भटका हुआ, 3 बाहर से आने वाला, बाह्य (कारण आदि) 4. नैमित्तिक, आनुषंगिक, आकस्मिक,—तु मेहमानतुक, अजनबी अतिथि। सम०—ज (वि०) आनुषंगिक रूप से या अकस्मात् उत्पन्न होने वाला।

आगन्तुक (वि०) (स्त्री०—का,—की) 1. अपनी इच्छा से आने वाला, बिना बुलाये आने वाला—आगन्तुका स्वयम्—मृच्छ० 2. भूला-भटका (जैसे कि जानवर) —याज्ञ० २।१६३ 3 आनुषंगिक आकस्मिक, नैमित्तिक—इत्यागन्तुका विकारा—आत्म० 4 प्रक्षिप्त, क्षेपक (पाठ)—अत्र यन्थवद्ग्रन्थावतरणित्यागन्तुकः पाठ —मल्लि० कु० ६।४६ पर,—कः 1 अन्तःक्षेपक, हस्तक्षेपक 2. अजनबी, अतिथि, मेहमानतुक।

आगमः [आ+गम्+घञ्] 1 आना, पहुंचना, दर्शन देना—लतायां पूर्वकुसुमाया प्रसूनस्यागमं कुतः —उत्तर० ५।२०, अव्यक्तादयो व्यक्तयः सर्गे प्रभवन्त्यहरागमे, रात्र्यागमे प्रलीयन्ते—भग० ८।१८, रघु० १४।८०, मच० ३।४८, 2. अधिग्रहण—एवोऽत्रया मूढाया

आगम —मुद्रा० १, श० ६, विज्ञागमनिमित्तम् ; —विक्रम० ५, 3 जन्म, मूल, उत्पत्ति—आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत—भग० २।१४, 4 संकलन, संचय (धनका) अर्थ,° धन° आदि 5 प्रवाह, जलमार्ग, धारा (पानी की) रक्त,° फेन° 6 बीजक या प्रमाणक -दे० अनागम 7 ज्ञान —शिष्यप्रदेयागमा —भर्तृ० २।१५ प्रक्रया सदृशागम, आगम सदृशारम्भ —रघु० ११ १५ 8 आय, राजस्व 9. किसी वस्तु का वैध अधिग्रहण—आगमेऽपि बले नैव भुक्ति स्तोकापि यत्र नो—माल० २। २७ 10 संपत्ति की वृद्धि, 11 परंपरागत सिद्धान्त या उपदेश, धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न चागम क्षत —कि० २। २८, परिशुद्ध आगम —३३, 12 शास्त्राध्ययन, वेदाध्ययन 13 विज्ञान, दर्शन,—बहुधाप्यागमैर्भिन्ना पन्थान सिद्धिहेतव - रघु० १०। २६, 14 वेद, धर्मग्रन्थ न्यायनिर्णीतसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे—कि० ११। ३९ 15 चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम जिसे नैयायिक 'शब्द' या 'आप्तवाक्य' कहते हैं ('वेद' ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) 16 उपसर्ग या प्रत्यय 17 (शब्द साधन में) वर्ण की वृद्धि या अन्त क्षेप 18 वृद्धि —इडागम 19 सिद्धान्त का ज्ञान (विप० प्रयोग)। सम०—प्राप्त (वि०) अर्जित, पठित, परीक्षित,—वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ बहुत विद्वान् पुरुष—प्रलोप इत्यागमवृद्धसेवी रघु० ६। ४१, -वेदिन् (वि०) 1 वेदों को जानने वाला 2 शास्त्रनिष्णात—सापेक्ष (वि०) प्रमाणकतापेक्षी, प्रमाणक से समर्थित।

आगमनम् [आ+गम्+ल्युट्] 1 आना, उपागमन पहुँचना—रघु० १२। २४, 2 लौटना 3 अधिग्रहण 4 मैथुनेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना।

आगमिन्, आगामिन् (वि०) [आगम्+णिनि, वा ह्रस्व] 1 आने वाला, भावी 2. आसन्न, पहुँचने वाला।

आगस् (नपु०) [इ+असुन्, आगादेश] 1 दोष, अपराध, उल्लंघन—सहिष्ये शलभागांसि सूनोस्त इति यत्त्वया—शि० २। १०८ द्वौ रिपू मम मतौ समागसौ —रघु० ११। ७४, कृतागा —मुद्रा० ३। ११ 2 पाप। सम०—कृत् (वि०) अपराध करने वाला, अपराधी, जुर्म करने वाला—अभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भि —रघु० २-३२।

आगस्ती [अगस्त्यस्य इयम्, अण्—यलोप] दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) [अगस्त्यस्येदम्, यञ्—यलोप] दक्षिणी।

आगाध (वि०) [अगाध एव स्वार्थे अण्] बहुत गहरा, अथाह, (आल० भी)।

आगामिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगाम+ठक्] 1. भविष्यत्काल से सम्बन्ध रखने वाला—मतिरागामिकी श्रेया बुद्धिस्तत्कालदर्शिनी—हैम० 2. आसन्न, आने वाला।

आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] 1 आने वाला, 2 पहुंचने वाला 3 भावी।

आगारम् [आगमयन्ति—गम्+अण्] घर, आवास। सम०—दाह घर को आग लगा देना,—दाहिन् (वि०) घर फूंक व्यक्ति, गृहदाहक (वध आदि), —धूम किसी घर से निकलने वाला धुआं।

आगुर् (स्त्री०) [आ+गुर्+क्विप्] स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा।

आगु (गू) रणम् [आ+गुर्+ल्युट्] गुप्त सुझाव।

आगू (स्त्री०) सहमति, प्रतिज्ञा।

आग्निक (वि०) (स्त्री० की) [अग्नेरिदं वा०—ठक्] अग्नि से सम्बन्ध रखने वाला, यज्ञाग्नि से सम्बद्ध।

आग्नीध्रम् [अग्निमिन्धे अग्नीध्, तस्य शरणम्, रक् आदेश्च अश् —त्रा०], यज्ञाग्नि जलाने का स्थान, हवनकुंड, —ध्र यज्ञाग्नि जलाने वाला पुरोहित।

आग्नेय (वि०) [स्त्री०—यी] 1 आग से सम्बन्ध रखने वाला, प्रचंड 2 अग्नि को अर्पित,—यः 1 स्कन्द या कार्तिकेय की उपाधि 2 दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) दिशा,—यम् 1 कृत्तिका नक्षत्र 2 सोना 3 सिंदूर 4 घी 5 आग्नेयास्त्र।

आग्रभोजनिक [अग्रभोजन नियतं दीयते अस्मै—ठक्] भोज में सर्वप्रथम या सबसे आगे आसन ग्रहण करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आग्रयण [अग्रे अयन शस्यदर्शने कर्मणा पृषो० ह्रस्व दीर्घ व्यत्यय] अग्निष्टोम याग में सोम की प्रथम आहुति, —णम् वर्षा ऋतु के अन्त में नये अन्न तथा फलादिक से युक्त हवि।

आग्रह [आ+ग्रह+अच्] 1 पकड़ना, ग्रहण करना 2 आक्रमण 3 दृढ़ संकल्प, दृढ़भक्ति, दृढ़ता —अनेकोऽपि कार्यस्य पदार्पणाग्रह —वे०, कु० ५।७ पर अरुणि०, 4 कृपा, संरक्षण।

आग्रहायण [अग्रहायण+अण्] मार्गशीर्ष का महीना, —णी 1 मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा 2. पुष्यनक्षत्र नाम का नक्षत्र-पुंज।

आग्रहायणक (वि०) क [आग्रहायणी पौर्णमास्यस्मिन् मासे —ठक्] मार्गशीर्ष का महीना।

आग्रहारिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आग्रहृष्ण [आ+ग्रह्+क्त+ग्रह्+क्त+ष्ण] 1. हिचकना-झुकना, कांपना, किसी से रगड़ना—रथक्षिरग्राहृष्णया. नभस्वत —शि० १।१० 2. घर्षण, रगड़।

आग्रेय, -यण [आ+ग्रह्+घञ्, ल्युट् वा] आकर्षण

करना, रगड़, किसी से रगड़ना—गजस्थलाभर्षणजन्मदोदकद्रवदुःसहः स्फुरन् निशातविनोऽस्य' शि० १२।६४।

आघाटः [आ+हन्+घञ्, निपात] हद, सीमा।

आघातः [आ+हन्+घञ्] 1. प्रहार करना, मारना, 2 चोट, प्रहार, घाव,—नीवाघातप्रतिहतनवस्कन्धबन्धर्षभाणां—श० १।३३, अभ्यन्वस्ति तटाघातम्—कु० २।५०, 3 बधकिस्मती, विपत्ति 4 कसाई-खाना —आघात नीयमानस्य—हि० ४।६७।

आघारः [आ+घृ+घञ्] 1 छिड़काव 2. विशेषकर यज्ञ की अग्नि में घी डालना 3 घी।

आघूर्णनम् [आ+घूर्ण+ल्युट्] 1 लोटना 2 उछालना, घूमना, चक्कर खाना, तैरना।

आघोषः [आ+घुष्+घञ्] बुलावा, आवाहन।

आघ्रापनम्-ना [आ+घ्रा+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] उद्घोषणा, दिढ़ोरा,- एवमाघोषणायां कृतायाम् पंच० ५।

आघ्राणम् [आ+घ्रा+ल्युट्] 1 सूंघना 2 सनीघ, तृप्ति।

आङ्गारम् [अङ्गाराणां समूहः—अण्] अंगारों का समूह।

आङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) 1 आंगिक, कायिक 2 हाव भाव से युक्त, शारीरिक चेष्टाओं से व्यक्त —आङ्गिकाभिनय, दे० अभिनय'—क नकलची या डालिया।

आङ्गिरस [अंगिरस्+अण्] बृहस्पति, अंगिरा की संतान (पुत्र)।

आचक्षुस् (पु०) [आ+चक्ष्+उसि का०] विद्वान् पुरुष।

आचम्, [आ+चम्+घञ्] कुल्ला करना, आचमन करना (हथेली पर जल लेकर पीना)।

आचमनम् [आ+चम्+ल्युट्] कुल्ला करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और पश्चात् हथेली में जल लेकर घूंट-घूंट करके पीना दशाद्याचमन तत याज्ञ० १।२४२।

आचमनकम् [स्वार्थे आचमने आ कन्] पीकदान।

आचय [आ+चि+अच्] 1 इकट्ठा करना बीनना 2 समूह।

आचरणम् [आ+चर्+ल्युट्] 1 अभ्यास करना, अनुकरण करना अनुष्ठान-धर्म°, मंगल° आदि 2 चाल-चलन, व्यवहार,-अधीतिश्चाचरणप्रचारणी —नै० १।४, उदाहरण (विप० उपदेश) 3 प्रथा, परिपाटी 4 संस्था।

आचान्त (वि०) [आ+चम्+क्त] 1 जिसने कुल्ला करके मुंह शुद्ध कर लिया है, या जिसने आचमन कर लिया है 2 आचमन के योग्य।

आचाम [आ+चम्+घञ्] 1 आचमन करना, कुल्ला करके मुंह साफ करना 2. पानी या गर्म पानी के प्राग।

आचार [आ+चर्+घञ्] 1 आचरण, व्यवहार, काम करने की रीति, चालचलन 2. प्रथा, रिवाज, प्रचलन यस्मिन्देशे य आचार. पारम्पर्यक्रमागतः मनु० २।१८, 2 लोकाचार, प्रथा संबंधी कानून (विप० व्यवहार) समास में प्रथम पद के रूप में यदि प्रयुक्त हो तो अर्थ होता है 'प्रथासंबंधी', 'पूर्ववत्' 'व्यवहार या प्रचलन के अनुसार' —दे० °पूत, °लाज 4 रूप, उपचार,—आचार इत्यथहितेन पथा गृहीता—श० ५।३, महावी० ३।२६ रिवाजी या रूढ़ उपचार - आचार प्रतिपद्यस्व - श० ४। सम०—क्रीयः आरती उतारने का दीप,—धूमग्रहणम् सांस के द्वारा धुंआ ग्रहण करने का संस्कार—विशेष जो कि यज्ञानुष्ठान के समय किया जाता है; —रघु० ७।२७, कु० ७।८२, -पूत (वि०) शुद्धाचारी—रघु० २।१३,—भेदः आचरण संबंधी नियमों का अन्तर,—भ्रष्ट, -पतित (वि०) स्वधर्म भ्रष्ट, जिसका आचार—व्यवहार बिगड़ गया हो, या जो आचरण से पतित हो गया हो,—लाज (पु०, ब० व०) धान की बालें जो कि सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किसी राजा या प्रतिष्ठित महानुभाव पर फेंकी जाती हैं —रघु० २।१०,—वेदी पुण्यभूमि आर्यावर्त।

आचारिक (वि०) [आचार+ठक्] प्रचलन या नियम के अनुरूप, अनुकूल।

आचार्य, [आ+चर्+ण्यत्] 1 सामान्यतः अध्यापक या गुरु 2 आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराता है तथा वेद की शिक्षा देता है)—उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः, सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते। —मनु० २।१४०, दे० 'अध्यापक' शब्द भी 3 विशिष्ट सिद्धान्त का प्रस्तोता 4 (जब व्यक्ति वाचक संज्ञाओं से पूर्व लगता है) विद्वान्, पंडित (अंग्रेजी के 'डाक्टर' शब्द का कुछ समानार्थक),—र्या गुरु (स्त्री), आध्यात्मिक गुरुआनी। सम० उपासनम् धार्मिक गुरु की सेवा करना, -विद्य (वि०) प्रतिष्ठित, सम्मानीय।

आचार्यकम् [आ+चर्+ष्कञ्] 1 शिक्षण, अध्यापन, (पाठादिक का) पढ़ाना-लक्ष्मीस्तेषां पुनरुक्तवदभासे विलासाचार्यकं हरेः —रघु० १२।७८,—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, 2 आध्यात्मिक गुरु की कुशलता।

आचार्यानी [आचार्य+ङीप्-आनुक्] आचार्य या धर्म गुरु की पत्नी, अवमलमनुत्थाय य पुनर्देष्टुमुत्सहे. व्यक्तं देवमाचार्यमाचार्यानी च पार्वती' - महावी० ३।६।

आचित (भू० क० कृ०) [आ+चि+क्त] 1. पूर्ण, भरा हुआ, ढका हुआ—कचाचितो विश्वसिषामजौ सखौ —कि० १।३६, आचितनखाग्रा क्षौः—आदि 2. बंधा हुआ, गुंथा हुआ, बुना हुआ—अर्थाचिता सत्वरचूर्णिताया—रघु० ७।१० कु० ७।६१, 3 एकत्रित, संचित, ढेर किया हुआ,—स 1 गाड़ी भर बोझ 2. (मनु०

भी) दस भार या गाड़ी भर की तोल (८०,००० तोला)।

आक्षणम् [आ+क्षण्+ल्युट्] 1. चूसना, चूस लेना 2 क्षण कर बाहर निकाल देना, (आयु० में) सिंगी लगाना।

आक्षादः [आ+छद्+णिच्+घञ्] कपड़ा, पहनने का वस्त्र।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना 2 ढक्कन, म्यान 3 कपड़ा, वस्त्र —भूषणाच्छादनार्थं —याज्ञ० १।८२, 4 छाजन।

आच्छुरित (वि०) [आ+क्षुर्+क्त] 1. मिश्रित, मिलाया हुआ 2 खुरचा हुआ, खुजलाया हुआ,—तम् 1 नखों को आपस में एक दूसरेसे रगड़ कर एक प्रकार का शब्द पैदा करना, नखवाद 2 ठहाका मार कर हंसना, अट्टहास।

आच्छुरितकम् [आच्छुरित+कन्] 1 नाखून की खरोंच 2 अट्टहास।

आच्छेदः—दनम् [आ+छिद्+घञ्+ल्युट् वा] 1 काट देना, अपच्छेदन 2 जरा सा काटना।

आच्छोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्—पृषो०] अंगुलियां चटकाना।

आच्छोदनम् [आ+छिद्+ल्युट् पृषो० इत ओत्] शिकार करना, पीछा करना।

आजकम् [अजानां समूहः -अज+वुञ्] रेवड़, बकरों का झुंड।

आजगवम् [अजगव+अण्] शिव का धनुष।

आजननम् [आ+जन्+ल्युट्] ऊंचे कुल में जन्म होना, प्रसिद्ध या विख्यात कुल।

आजनः [आ+जन्+घञ्] जन्म, कुल,—नम् जन्मस्थान।

आजानेय (वि०) (स्त्री०—यी) [आजे विक्षेपेऽपि आनेय अश्ववाहो यथास्थानमस्य —ब० स०] 1 अच्छे नस्ल का (जैसे घोड़ा) 2 निर्भय, निश्शंक,—यः अच्छी नस्ल का घोड़ा—शक्तिभिर्भिन्नहृदया स्खलन्तोऽपि पदे पदे, आजानेया यतं सङ्ग्रामाजानेयास्तत स्मृता —शब्दक०।

आजि [अजत्यस्याम्, अज्+इण्] 1 युद्ध, लड़ाई, संघर्ष ते तु यावन्त एवाजौ तावान् स दृढ़ो पुरः —रघु० १२।४५, 2 कुश्ती या दौड़ की प्रतियोगिता 3 रणक्षेत्र—शस्त्राण्याजौ नयनसलिलं चापि तुल्यं मुमोच —विक्रम० ३।९।

आजीव,—वनम् [आ+जीव्+घञ्, ल्युट् वा] 1 जीविका, जीवननिर्वाह का साधन, भरण—मवत्याजीवनं तस्मात्—पञ्च० १।४८,तु० रूपाजीव, अजाजीव, शस्त्राजीव आदि शब्दों की 2 पेशा, वृत्ति,—वः जैन भिक्षुक।

आजीविका [आ+जीव्+अ+कन्+टाप्, अत इत्वम्] पेशा, जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति।

आजुर्—आजू (स्त्री०) [आ+जृ+क्विप्, आ+जू+क्विप् च] 1 बेगार, बिना पारिश्रमिक प्राप्त किये काम करना 2 बेगार में काम करने वाला 3 नरक वास।

आज्ञप्तिः (स्त्री०) [आ+ज्ञा+णिच्+क्तिन्, पुकागम, ह्रस्वश्च] आदेश, हुकुम, आज्ञा।

आज्ञा [आ+ज्ञा+अङ्+टाप्] 1 आदेश, हुकुम—तथेति सेनामिव भर्तुराज्ञाम्— कु० ३।२२ 2 अनुज्ञा, अनुमति। सम०—अनुग,—अनुगामिन्,—अनुयायिन्,—अनुवर्तिन्,—अनुसारिन्,—सपदक,—वह (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती,—कर,—कारिन् (वि०) आज्ञा मानने वाला, आदेश का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, (—रः) सेवक,—करणम्,—पालनम् आज्ञा मानना, आदेश का पालन करना,—पत्रम् हुक्मनामा, लिखित आदेश, —प्रतिघात,—भंग, आज्ञा न मानना, आज्ञा के विरुद्ध कार्य करना —आज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशा सार्वभौमा — मुद्रा० ३।२२।

आज्ञापनम् [आ+ज्ञा+णिच्—ल्युट्, पुकागम] 1 आदेश देना, हुक्म देना 2 जतलाना।

आज्यम् [आज्यते-आ+अञ्ज्+क्यप्] 1 पिघलाया हुआ घी, —मन्त्रोंहमहमेवाज्यम् - श० १ (यह बहुधा 'घृत' से भिन्न समझा जाता है—सर्पिर्द्विलीनमाज्यं स्याद् घनीभूतं घृतं भवेत्)। सम० पात्रम्—स्थाली पिघले हुए घी को रखने का बर्तन,—भुज् (पु०) 1 अग्नि का विशेषण 2 देवता।

आञ्चनम् [आ+अञ्च्+ल्युट्] सींग, तीर या किसी ऐसे ही और शस्त्र को थोड़ा खींच कर शरीर से बाहर निकालना।

आञ्छ् (म्वा० पर०) [आञ्छति, आञ्छित] 1 लंबा करना, विस्तार करना, 2 विनियमित करना, (हड्डी या टांग आदि को) ठीक बैठाना।

आञ्छनम् [आञ्छ्+ल्युट] (हड्डी या टांग का) ठीक बैठाना।

आञ्जनम् [अञ्जनस्येदम् —अण्] 1 मरहम, विशेषतः आंखों के लिए 2 चर्बी,—न, मारुति या हनुमान्,—दाशरथिर्जलैरिवाञ्जननीलनलपरिगतप्रान्तैं —का० ५८।

आञ्जनी [अञ्जनस्येदम् अण्, स्त्रियां ङीप्] आंखों में डालने का मरहम या अंजन। सम०—कारी लेप या उबटन आदि तैयार करने वाली स्त्री।

आञ्जनेयः [अञ्जना+ढक्] हनुमान्।

आटविक [अटव्यां चरति भवो वा—ठक्] 1. वनचारी जंगल में रहने वाला पुरुष 2 मार्गदर्शक, अगुआ।

आटि [आ+अट्+इण्] 1 एक प्रकार का पक्षी (गरारि)।

आटोकनम् [आटीक+ल्युट्] बछड़े की उछल-कूद ।
आटोवारः [आटी+कृ+अण्] साँड ।
आडोपः [आ+तुप्+घञ्, पृषो० टत्वम्] 1 घमंड, स्वाभिमान, हेकड़ी, आडोपम्—घमंड के साथ, राजकीय या शाही ढंग से (रंगमंच के निर्देश के रूप में प्रायः प्रयुक्त) 2 सूजन, फैलाव, विस्तार, फुलाना —सी०—फटाटोपो भयङ्कर —शि० ३।७४ ।
आडम्बरः [आ+डम्ब्+अरन्] 1 घमंड, हेकड़ी 2 दिखावा, सजधज, बाहरी ठाठ-बाट—विरचितभारसिंहरूपाडम्बरम्—का० ५, निर्गुणे शोभते नैव विपुलाडम्बरो ऽपि सः—सामि० १।११५, 3 आक्रमण के संकेतस्वरूप बिगुल का बजना 4 आरंभ 5 प्रचण्डता, रोष, आवेश 6. हर्ष, प्रसन्नता 7 बादलों की गरज, हाथियों की चिंघाड़ 8 युद्धभेरी 9. युद्ध का कोलाहल या शोर-गुल ।
आडम्बरिन् (वि०) [आडम्बर+इनि] हेकड़, घमंडी ।
आढकः—कम् [आ+ढौक्+घञ्, पृषो०] अनाज की माप, चौंसठ सेर—अष्टमुष्टिर्भवेत् कुडवः कुडवोऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलानि च चत्वारि आढक परिकीर्तितः ।
आढ्य (वि०) [आ+ध्यै+क, पृषो०—तारा०] 1 धनी, धनवान आढ्योऽभिजनवानस्मि कौऽन्योऽस्ति सदृशो मया —भग० १६।१५, पंच ५।८, 2. (क) सम्पन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (करण० या समास के अन्तिम पद के रूप में)—सत्यं पंच ३।९, बिल्कुल सच्चा —जगत्पल्लवग्राद्यपाय—दश० १८ (ख) सिंचित, भिजवाया, गन्धाढ्य अज उत्तमगन्धाढ्या —महा० 3 प्रचुर, पर्याप्त । सम० —कर (वि०) [स्त्री०—री] जो कभी ऐश्वर्यशाली रहा हो ।
आढ्यङ्करण (वि०) [स्त्री०—णी] समृद्ध करना,—कम् समृद्ध करने का साधन, धन ।
आढ्यम्भविष्णु,—भावुक (वि०) [आढ्य—भू+इष्णुच्, उकञ् वा] धन सम्पन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।
आणक (वि०) [अणक+अण्] नीच, ओछा, अधम—कम् विशेष आसन में होकर मैथुन करना, रतिबन्ध—आणक सुरत नाम दम्पत्योः पार्श्वसंस्थयोः ।
आणव (वि०) (स्त्री०—वी) [अणु+अण्] अत्यन्त छोटा,—वम् अत्यन्त छोटापन या सूक्ष्मता ।
आणिः (पुं० स्त्री०) [अण्+इन्] 1 गाड़ी के चूरे की कील, अक्षकील 2 घुटने के ऊपर का भाग 3 हर्ष, सीमा 4. तलवार की धार ।
आण्ड (वि०) [अण्डे भवः -अण्] अंडे से पैदा होने वाला (जैसे कि पक्षी),—डः हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि —डम् 1 अंडों का ढेर, पशु-पक्षियों का समूह, पक्षिशावक 2 अण्डकोष, फोता ।
आण्डीर (वि०) [आण्डमस्ति अस्य—ईरच्] 1 बहुत अंडे रखने वाला, 2 वयस्क, पूर्णवयस्क (जैसे कि साँड) ।
आतङ्कः [आ+तङ्क+घञ्, कुत्वम्] 1 रोग, शरीर की बीमारी—दीर्घतीव्रामयग्रस्तं कालूर्णं गामथापि वा, वृष्ट्वा पथि निरातङ्कं कुरुते वा जरद्गवं सुधिः —याज्ञ० ३।२४५ 2 पीड़ा, व्याधि, व्यथा, वेदना—किंग्रिमितोऽयमातङ्कः—श० ३, आतङ्कस्फुरितकठोरमर्मभेदी—उत्तर० १।४९, विक्रम० ३।३, डर, आशंका —पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः—रघु० १।६३, भीति, त्रास 4 ढोल या तबले की आवाज ।
आतञ्चनम् [आ+तञ्च्+ल्युट्] 1. जमाना, गाढ़ा करना, 2. जमा हुआ दूध 3 एक प्रकार की छाछ 4 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 5 भय, संकट 6. ग्लानि, खेद ।
आतत (वि०) [आ+तन्+क्त] 1 फैलाया हुआ, विस्तारित 2 ताना हुआ (जैसे कि धनुष की डोरी) ।
आततायिन् (वि० या—सञ्ज्ञा) [आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य—ताच्छी०] 1 किसी का वध करने के लिए प्रयत्नशील, साहसी—गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्, आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । मनु० ८।३५०-१, भग० १।३६, 2 अवश्य पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहरणकर्ता, हत्यारा, आग लगाने वाला महापातकी आदि—अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैतान् षड् विद्यादाततायिनः —शुक्र० ।
आतपः [आ+तप्+घञ्] 1 गर्मी (सूर्य, अग्नि आदि की) धूप,—आतपायोज्झितं धान्यं—महा०, धूप में डाला हुआ, प्रखर°—ऋतु० १।११ 2 प्रकाश । सम०—आत्ययः सूर्य की गर्मी (धूप) का गुजरना, या ढल आना, सूर्यास्त —आतपात्ययमक्षिण्वन्नीवारान्—रघु० १।५२,—अभावः छाया,—उष्णकम् मरीचिका,—त्रम्,—त्रकम् छाता —तमातपत्रलक्ष्मानमनातपत्रं—रघु० २।१३, ४७, पंच° ४।५ राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्—श० ५।६, —सङ्कुलम् गर्मी या धूप में रहना, लू लग जाना —आतपसङ्कुलाकुलबदरसनाथशरीरा शकुन्तला—श० ३, —वारणम् छाता छतरी—नृपतिकुलं दत्वा यूने सितातपवारणम्—रघु० ३।७०, ९।१५,—शुष्क (वि०) धूप में सुखाया हुआ ।
आतपकः [आ+तप्+णिच्+ण्वुल्] शिव ।
आतः (ता) ह्र [आतरति अनेन आ+तॄ+अप्, घञ् वा] दरिया की उतराई, भाड़ेव्यय, भाड़ा ।
आतर्पणम् [आ+तृप्+ल्युट्] 1 सन्तोष 2 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, 3 दीवार या फर्श पर सफेदी करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।
आतार्पि (नि) मृ [आ+तृप् (ताच्)+णिनि] एक पक्षी, चील ।

आतिथेय (वि०) [स्त्री०—यी] [अतिथिषु साधु—ढक्, अतिथये इदं ढक् वा] 1 अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथियों के उपयुक्त—प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेय रघु० ५।२, १२।२५, तमातिथेयो बहुमानपूर्वया —कु० ५।३१, 2 अतिथि के उचित या उपयुक्त —आतिथेय सत्कार शा० १,—यम् अतिथि-सत्कार —आतिथेयमनिदास्निातिथि —शि० १४।२८, सज्जातिथेया वध—मा० २।५०,—भी सत्कार, मेहमान नवाजी —भामि० १।८५।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि+ष्यञ्] सत्कारशील, अतिथि के लिए उपयुक्त—ध्यः अतिथि,—ध्यम् सत्कारपूर्वक स्वागत, अतिथि-सत्कार—तथातिथ्यक्रियाशातरथक्षोभपरिश्रमम् रघु० १।५८।

आतिदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [अतिदेश+ठक्] (व्या० में) अतिदेश से सम्बद्ध—नु०।

आतिरे (रं) **क्यम्** [अतिरेक+ष्यञ्, पक्षे उभयपद वृद्धि] फालतूपन, अधिकता, बहुतायत।

आतिशय्यम् [अतिशय+ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत, वृहत् परिमाण।

आतु [अत्+उण्] लट्ठों का बना बेड़ा, घड़ई (घड़ों को बांध कर बनाई गई नौका)।

आतुर (वि०) [ईप्सितं आ+अत्+उरच्] 1 चोटिल, घायल 2 (रोग से) ग्रस्त, प्रभावित, पीडित—राक्षणावरजा तत्र राघव मदनातुरा—रघु० १२।३२, काम°, भय° आदि 3 रुग्ण (मन या शरीर से), आकाशेशायिनु विज्ञेया बालवृद्धकृशातुरा मनु० ४।१८३, 4 उत्सुक, उतावला 5 दुर्बल, कमजोर—र रोगी। सम०—शाला हस्पताल।

आतोद्यम्,—द्यकम् [आ+तुद्+ण्यत्, स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—आतोद्यविन्यासादिका विधय —वेणी० १ व्रजमातोद्यशिरोनिवेशिताम्—रघु० ८।३४, १५।८८, उत्तर० ७।

आत्त (भू० क० कृ०) [आ+दा+क्त] 1 लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ—एवमात्तरति—रघु० ११।५७, मालवि० ५।१, 2 अंगीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ 3 आकृष्ट 4 खींचा हुआ, निस्सारित—रामात्तसारा रघुरप्यवेक्ष्य—रघु० ५।२६ इसी प्रकार आत्तबल ११।७६, ले जाया गया। सम०—गन्ध (वि०) 1 जिसका घमंड निकाल दिया गया हो, आक्रान्त, पराजित—केनात्तगन्धो मातंगः—शा० ६ 2 सूंघा हुआ (जैसे कि फूल)—आत्तगन्धमवधूय शत्रुभि—शि० १४।८४ (यहाँ आ° नं० 1 में बताये अर्थ भी रखता है),—गर्व (वि०) अवमानित, तिरस्कृत, अनादृत,—दण्ड (वि०) राजकीय दण्ड को धारण करने वाला,—मनस्क (वि०) जिसका मन (हर्ष आदि के कारण) स्थानान्तरित हो गया हो।

आत्मक (वि०) [आत्मन्+कन्] (समास के अन्त में) से बना हुआ, से रचा हुआ, स्वभाव का, लक्षण का, यथा° पाँच तहों वाला, तथा° = तदिदम् स्वभाव का, इसी प्रकार दुःख°, दहन°।

आत्मकीय, आत्मीय (वि०) [आत्मक (न्)+छ] अपनों से सम्बन्ध रखने वाला, अपना—सर्वं कान्तमात्मीयं पश्यति श० २, स्वामिनमात्मीय करिष्यामि —हि० २, जीत लेना,—प्रसादमात्मीयमिवावमदर्शे —रघु० ७।६८, कु० २।१९, बन्धु, सम्बन्धी, बान्धव।

आत्मन् (पु०) [अत्+मनिन्] 1 आत्मा, जीव—किमात्मनो यो न जितेन्द्रियो भवेत्—हि० १, आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु—कठ० ३।३, 2 स्व, आत्म इस अर्थ में प्राय यह शब्द तीनों पुरुषों में तथा पुंल्लिंग के एक वचन में प्रयुक्त होता है चाहे उस संज्ञा शब्द का लिंग, वचन कुछ ही हो जिसका यह उल्लेख करता है आश्रमदर्शनेन आत्मान पुनीमह—श० १, शुप्त ददशुरात्मान मर्त्या स्वप्नेषु वामनै—रघु० १०।६०, देवी प्राप्तप्रसवमात्मान शङ्कादेव्या विमुञ्चति —उत्तर० ७।२, सायायन्ति कुलस्त्रिय आत्मानमात्मना —महा०, 3 परमात्मा, ब्रह्म तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश सभूत—उप०, उत्तर० १।१, 4 सार, प्रकृति दे० 'आत्मक' ऊपर 5 चरित्र, विशेषता 6 नैसर्गिक प्रकृति या स्वभाव 7 व्यक्ति या समस्त शरीर स्थित सर्वेन्द्रियेनोवाँ कान्तवा मेकरिवात्मना —रघु० १।१४, मनु० १२।१२, 8 मन, बुद्धि—महात्मन्, महात्मन् आदि 9 समझ—नु० आत्मयज्ञश्च, आत्मवत् आदि 10 विचारणशक्ति, विचार और तर्कशक्ति 11 सर्वज्ञता, जीवट, साहस 12 रूप, प्रतिमा 13 पुत्र आत्मा वै पुत्रनामासि 14 देखभाल, प्रयत्न 15 सूर्य 16 अग्नि 17 वायु—'से बना या से युक्त अर्थ को प्रकट करने के लिए 'आत्मन्' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—दे० आत्मक। सम०—अधीन (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित, निराश्रित (—न) 1 पुत्र 2 साला, पत्नी का भाई 3 मसखरा या विदूषक (नाटय साहित्य में),—अनुचरत्व व्यक्तिगत सेवा,—अपहारः—अपने आप को छिपाना—कथ वा आत्मापहार करोमि—श० १,—अपहारक छद्मवेषी, कपटी,—आराम (वि०) 1 ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील (जैसे कि कोई योगी), आत्मज्ञान का अन्वेषक—आत्मारामा विहितरतयो निर्विकल्पे समाधौ—वेणी० १।२३, 2 अपने आप में प्रसन्न,—आशिन् (पु०) मछली (ऐसा समझा जाता है कि मछली अपने बच्चों को या अपनी जाति के

सबसे कमजोर बीजों को खाकर पलती है) तु०—आत्मा इव सखा नित्यं सखायमिह परस्परम्—रामा०,—आत्मनः अपने ऊपर निर्भर करना,—ईश्वर (वि०) आत्मनाथ, अपना स्वामी आप—आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्ना उमाविभेदप्रभवो भवन्ति—कु० ३।४०, —उद्भव 1. पुत्र 2 कामदेव (—वा) पुत्री,—कर्तृ (पुं०) 1. जो अपने परिश्रम पर निर्भर करता है, श्रमिक 2. मजदूर 3. जो अपनी पत्नी के ऊपर आश्रित रहता है (मनु० ८।३६२ पर कुल्लूक), 4 पाप, सार्वजनिक कविनेता,—काम (वि०) 1. अपने आप को प्रेम करने वाला, अभिमान से युक्त, घमंडी 2. ब्रह्म या परमात्मा को प्रेम करने वाला,—जात (वि०) मन में उपजा हुआ,—°तः मनोरथः—सा० १, (—तम्) [अव्य०] एक ओर, जो मन में कहा हुआ समझा जाय (विप० प्रकाशम्—और दे) (यह बहुधा रङ्गमञ्च के निर्देश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त होता है) —यह 'स्वगत' का ही पर्याय है जिसकी परिभाषा यह है—अश्राव्यं तत्तु यद्वस्तु तद्विद्यात् स्वगतं बुधाः—सा० द० ६,—तुण्डि (स्त्री०) मुक्का, किसी जानवर के खिसने का स्थान,—तृप्ति (वि०) स्वार्थी, लालची, —त्यागः 1 आत्महत्या, 2 नास्तिकता,—त्यागिन्, —त्यागिन् (पुं०) 1 आत्महत्यारा अपने आप को स्वयं मारनेवाला, व्यापादयेत् कृच्छ्रात्मान स्वयं वोऽम्बुदकादिभिः, अवैधेनैव मार्गेण आत्मघाती स उच्यते ॥ 2 नास्तिक,—दोष 1. मूर्खा 2. कोढ़ा —द—आत्मन् (पुं०),—जः,—प्रभवः,—सम्भवः 1. पुत्र—तमात्मजन्मानमजं चकार—रघु० ५।३६, तस्यामात्मानुकायामात्मजन्मसमुत्सुकः—रघु० १।३३, मा० १, कु० ६।२८, 2 कामदेव,—जा 1 पुत्री—वक्त्र मुख चरणयोर्जनकात्मजायाः—रघु० १३। ७८, तु० नगात्मजा आदि 2. तर्कशक्ति, समझ,—जयः अपने ऊपर विजय प्राप्त करना, आत्मत्याग, आत्मोत्सर्ग,—ज्ञः,—विद् (पुं०) ऋषि, जो अपने आप को जानता है, —ज्ञानम् 1 आत्मा या परमात्मा की जानकारी, 2 अध्यात्म ज्ञान, - तत्त्वम् आत्मा या परमात्मा की वास्तविक प्रकृति,—त्यागः 1 स्वार्थत्याग 2 दूसरे के भले के लिए अपनी हानि करना, आत्महत्या, —त्यागिन् (पुं०) 1. आत्महत्या करने वाला -आत्म त्यागिन्यो नास्तीत्यौद्दालकयाज्ञवल्क्यौ—याज्ञ० ३।६, 2. नास्तिक —त्राणम् 1. आत्मरक्षा 2 शरीर-रक्षक,—दर्शः आईना -प्रसादमात्मीयमिवात्मदर्शम् -रघु० ७।६०, —दर्शनम् 1. अपने आपको देखना 2 आध्यात्मिक ज्ञान,- दर्शिन् (वि०) 1 अपने आपको पीड़ित करने वाला 2. आत्महत्या करने वाला—दिव्य (वि०) अन्तरात्मा हृदय में होने वाला, अपने आपको यज्ञ में अर्पित करने वाला,—दिव्या अपनी शिक्षा,—निवेदनम् अपने आपको समर्पित करना (जैसे किसी आदमी का किसी देवता के प्रति बलिदान)—निष्ठ (वि०) आत्मज्ञान का अनवरत अन्वेषक,—पर (वि०) स्वयं प्रकाशवान् —प्रकाशः=°श,—प्रत्यय अपने बुद्धि सिद्ध विश्वास, —प्रभुः,—प्रभवः अपना निजी संकल्प—आत्मभू स्वयं भू आत्मभित् स्वयं भुवा, आत्मभावज-पुरायम् शिक्षेत्र ज्ञातव्यमात्मवत्—मनु०। अर्थात् अपनी का पुत्र, पुत्रों का पुत्र, और भाई का पुत्र,—भोगः 1. आध्यात्मिक ज्ञान 2. आत्मा का ज्ञान,—भू, —भूः 1. ब्रह्मा,—मनसाभिलषितं तस्मिन् अवर्णं चिरमात्मभूः—कु० २।५१, 2. विष्णु 3. शिव—रघु० ७। ३५ 4. कामदेव, प्रेम का देवता 5. पुत्र (स्त्री०—भूः) 1. पुत्री 2. बुद्धिवैभव, समझ,—मत परमात्मा का ज्ञान,—मानिन् (वि०) 1. स्वाभिमानी, आदरणीय 2. घमंडी,—यज्ञिन् (वि०) अपने लिए यज्ञ करने वाला, (पुं०) विद्वान् पुरुष जो शाश्वत आनन्द प्राप्त करने के लिए अपने तथा दूसरे व्यक्तियों की आत्मा का अध्ययन करता है, जो सब प्राणियों को अपने समान समझता है—सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि, सम पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यमधिगच्छति —मनु० १२।९१, —योनिः=°भू (पुं०), कु० ३।७० —रक्षा अपना बचाव, —लाभः जन्म, उत्पत्ति, मृत्यु —वैरात्मलाभस्तथा मम —मुद्रा० ३।१,५।२३, कि० ३।२३ १७।१९, —वंचक (वि०) अपने आपको धोखा देने वाला,—वंचना आत्म-प्रवंचना, अपने को धोखा देना, —वश,- वश्य, —वृत्त अपनी इच्छा हटा स्वयं करना, —वत्त (वि०) अपनी इच्छा पर आश्रित रहने वाला (—त्तः) 1. आत्मनिर्भरता, आत्म-प्रशासन 2. अपना नियन्त्रण, अधीनता, °को जी, °अधीन करना, विजय प्राप्त करना,-वश्य (वि०) अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला, आत्मसंयमी, अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखने वाला, —विद् (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि, जैसा कि 'आत्मविद्धोकमात्मविद्' में,—विद्या आत्मा का ज्ञान, अध्यात्म-ज्ञान,- शरीरः 1. पुत्र 2. पत्नी का भाई 3. विदूषक (नाटकों में),—शुद्धि (वि०) आत्मा में रहने वाला (द्धिः—स्त्री०) 1. हृदय की पवित्रता, अपने से सम्बन्ध रखने वाली चेष्टाएँ, अपनी निजी अवस्था या परिस्थिति—विश्वासवत्यः स्त्रिय आत्मवृत्तौ—रघु० २।३३,—शुद्धिः (स्त्री०) अपनी निजी सावधानी या दोषमुक्ति, अन्तर्हित शक्ति का बल —दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, अपनी शक्ति के अनुसार—समाधा,—समुद्भिः (स्त्री०), अपनी प्रशंसा स्वयं करना, डींग मारना,—संयमः अपनी इन्द्रियों पर काबू रखना,

—जन्मन्—जन्मभूः 1. पुत्र—वकार नाम्ना रघुवास्यत्तजन्मन्—रघु० ३।२१, ११।५७, १७।८ 2 प्रेम का देवता, कामदेव 3 ब्रह्मा की उपाधि, शिव, विष्णु (—जः) 1 पुत्री 2 सगा,—जन्मन्(वि०) 1 स्वस्थचित्त, 2 बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली,—ह्नु=घातिन्, —ह्नुत्यम्,—ह्नुत्वा आत्मघात,—हित (वि०) अपने लिए हितकर,(—तम्) अपना निजी भला या कल्याण।

आत्मना (अव्य०) ['आत्मन्' का करण० ए० व०] आत्मवाची कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—अब चास्तमिता स्वमात्मना—रघु० ८।५१, तुम स्वयम्, यह प्रायः क्रमिक संख्यासूचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—उदा०—'द्वितीय आप सहित दूसरा अर्थात् यह तथा स्वयं।

आत्मनीन (वि०) [आत्मन्+खञ्] 1 अपने से संबंध रखने वाला, अपना निजी,—कस्यैष आत्मनीन —मालवि० ४, 2 अपने लिए हितकर—आत्मनीनमुपलिप्सते—कि० १३।६९,—नः 1 पुत्र 2 पत्नी का भाई 3 विदूषक (नाटकों में)।

आत्मनेपदम् [आत्मने आत्मार्थ-फलबोधनाय पदम्—अलुक् स०] 1. आत्मवाची क्रियापद, दो प्रकार के क्रियापदों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से एक जिनमें कि संस्कृत भाषा की धातु—रूपावली पाई जाती है, 2 आत्मनेपद के प्रत्यय।

आत्मम्भरि (वि०) [आत्मानं बिभर्ति इति—आत्मन्+भृ+क्वि, मुम् च] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी ही उदरपूर्ति करता है)—आत्मम्भरित्व चिन्तितेनेराणाम्—भट्टि० २।३३, हि० ३।१२१।

आत्मवत् (वि०) [आत्मन्+मतुप्—मस्य व] 1 स्वस्थचित्त, 2 शान्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान्—किमिवासाद्करमात्मवताम्—कि० ६।१९।

आत्मवत्ता [आत्मवत्+तल्+टाप्] स्वस्थचित्तता, स्वनियन्त्रण, बुद्धिमत्ता—प्रकृतिष्वात्मजमात्मवत्तया - रघु० ८।१०, ८४।

आत्मसात् (अव्य०) [आत्मन्+सात्] अपने अधिकार में, अपना निजी,(प्रायः 'कृ' और 'भू' के साथ)—दुर्निवारपि कर्तुमात्मसात् रघु० ८।२।

आत्यन्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [अत्यन्त+ठञ्] 1 सतत, अनवरत, अनन्त, स्थायी, नित्यस्थायी—न चात्यन्तिकी भविष्यति—मुद्रा०४, विष्णुगुप्तव्रतस्यात्यन्तिकक्षयसे—२।१५, मनु० ६।२१, 2 अत्यधिक, प्रचुर, सर्वाधिक 3 सर्वोच्च, पूर्ण—आत्यन्तिकी स्वत्वनिवृत्तिः—मिता०।

आत्ययिक (वि०) [स्त्री०—की] [अत्यय+ठक्] 1 नाशकारी, सर्वनाशकर 2 पीड़ाकर, अमंगलकर, अशुभसूचक 3. अत्यावश्यक, अपरिहार्य, आपाती।

आत्रेय (वि०) (स्त्री०—यी)[अत्रि+ढक्] अत्रि से संबंध रखने वाला, या अत्रि की संतान,—यः अत्रि का वंशज,—यी 1 अत्रि की पुत्री 2. अत्रि की पत्नी 3 रजस्वला स्त्री।

आत्रेयिका [आत्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्व] रजस्वला स्त्री।

आथर्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [अथर्वन्+अण्] अथर्ववेद या अथर्वा ऋषि से संबंध रखने वाला, —णः 1. अथर्ववेद का अध्येता या ज्ञाता ब्राह्मण 2 यज्ञ का पुरोहित जिससे संबद्ध यज्ञ-कर्म पद्धति का विधान अथर्ववेद में निहित है 3 स्वयं अथर्ववेद 4 गुरु-पुरोहित।

आथर्विकः [अथर्वन्+ठक्] अथर्ववेद का अध्येता ब्राह्मण।

आदंशः [आ+दंश्+घञ्] 1 डंक, डंक मारने से पैदा हुआ घाव 2 डंक, दांत।

आदरः [आ+दृ+अप्] 1 आदर, पूजाभाव, सम्मान, —निर्गुणेष्वपि हि सदाशयलभ्यो दरः—का० १।४१, न जातहार्दस्य न विद्विषादरः—कि० १।३३, कु० ६।२० 2 अवमान, सावधानी, सम्मान्य व्यवहार, कु० ६।९१, 3 उत्सुकता इच्छा, स्नेह—मधान्दारायमादर कुमा० ६।९३, सौन्दर्यवनदरितामादर का० १२२, 4 प्रयत्न चेष्टा—गृहप्रयोगादाद्यादरक्रियाम्—कु० ६।४१, 5 उपक्रम, आरम्भ 6 प्रेम, आसक्ति।

आदरणम् [आ+दृ+ल्युट्] सत्कार, इज्जत, सम्मान।

आदर्शः [आ+दृश्+घञ्] 1 आईना, मुंह देखने का शीशा, दर्पण आत्मानमालोक्य च सोमकान्तमादर्शविधे स्थितामिव लक्ष्मीं कु० ६।२ 2 मुख पांडुलिपि जिससे प्रतिलिपि तैयार की जाय, (आल०) नमूना, प्रतिकृति प्रकार आदर्शं लिखितानाम् - मृच्छ० १।४८ आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् का० १, इसी प्रकार, गणानाम् आदि 3 काव्य की एक प्रति लिपि 4 टीका, भाष्य।

आदर्शकः [आदर्श+कन्] दर्पण, आईना।

आदर्शनम् [आ+दृश्+ल्युट्] 1 दिखलावा, प्रदर्शन 2 दर्पण।

आदलनम् [आ+दल्+ल्युट्] 1 दलन 2. चोट पहुंचाना, हत्या करना 3 घर-बार लूटना, चूरा करना 4 श्मशान।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] 1 लेना, स्वीकार करना, पकड़ना—कुशाङ्कुरादानपरिक्षतानि—कु० ५।११, आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, 2 उपार्जन, प्राप्ति 3 (रोग का) लक्षण।

आदायिन् (वि०) [आ+दा+णिनि] ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

आदि (वि०) [आ+दा+कि] 1 प्रथम, प्राथमिक, आदिम—निदान त्वाधिकारकम्—,अमर०, 2 मुख्य,

पहला, प्रधान, प्रमुख —आद' समास के अन्त में—इसी अर्थ में भी० दे० 3 समय की दृष्टि से प्रथम,—वि. 1 आरम्भ, उपक्रम (विप० 'अन्त') —अथ एव ससर्जादौ नासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, भग० २।४१, जगदादिरनादिस्त्वम् - कु० २।९, समास के अन्त में प्रयुक्त होकर बहुधा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है—'आरम्भ करके' 'वगैरा' २ 'इसी प्रकार और भी (उसी प्रकृति और प्रकार के), 'ऐसे'—इन्द्रादयो देवा'—इन्द्र तथा अन्य देवता, या 'भू' आदि से आरम्भ होने वाले शब्द धातु कहलाते हैं और पाणिनि के द्वारा वह प्रायः व्याकरण के शब्द-समूह को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये गये हैं अदादि, दिवादि, स्वादि इत्यादि, 2. पहला भाग या अंश, 3 मुख्य कारण। सम०—अन्त (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति दोनों हो (—तस्) आरम्भ और अन्त, °वत्—सान्त, समाप्तिका,— ऊक्षरः (वि०) वह शब्द जिसके आरम्भिक अक्षर पर स्वराघात हो, ऊकः, —कर्तृ,—कृत् (पु०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा का विशेषण—भग० ११।३७ कवि. प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि—क्योंकि उसी ने संसार की सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया, वाल्मीकि की उपाधि क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम कविता का पथप्रदर्शन किया—अर्थात् जब कि उसने क्रौंच दम्पती के एक पक्षी को व्याध के द्वारा मारा जाता हुआ देखा, उसने उस दुष्ट व्याध को शाप दिया और उसका वही शोक अपने आप कविता के रूप में प्रकट हुआ (श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः), इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि को राम का चरित लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप संस्कृत साहित्य में प्रथम काव्य 'रामायण' के रूप में प्रकट हुआ,—काण्डम् रामायण का प्रथम खण्ड, —कारणम् (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण, जो कि वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है, तथा नैयायिकों- विशेषतः वैशेषिकों -के अनुसार विश्व का प्रथम या भौतिक कारण 'अणु' है, परमात्मा नहीं,—काव्यम् प्रथम काव्य- अर्थात् वाल्मीकि रामायण दे० 'आदि कवि,'—देवः 1 प्रथम या सर्वोच्च परमात्मा—पुरुषं शाश्वतं दिव्यं आदिदेवमजं विभुम् भग० १०।१२, ११।३८, 2. नारायण या विष्णु 3 शिव 4 सूर्य,—दैत्यः हिरण्यकशिपु की उपाधि, पर्वन् महाभारत का प्रथम खंड, —भू (पुं) पदः 1. सर्वप्रथम या आदिम प्राणी, सृष्टि का स्वामी 2 विष्णु, कृष्ण या नारायण—ते च प्रापुरनन्तं वृत्तं आदिपूरुषं—रघु० १०।६७ तमर्घ्यं-मर्घ्यादिकमादिपूरुषं—शि० १।१४—भवत् जनतात्मक शक्ति, प्रथम कवि,—भव,—भूत (वि०) 1 सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ, (—तः,—तम्) 'आदिभवन' आदिम प्राणी, ब्रह्मा की उपाधि. 2. विष्णु—रक्षसामादिभवेन वृत्ता—रघु० १३।८, 3 ब्रह्म घास,—भूमिः पहली नींव, आदिम कारण,—वराहः 'वराहपूकर' विष्णु की उपाधि—उसके तृतीय अवतार (वराहावतार) की ओर संकेत—शक्तिः (स्त्री०) 1 माया की शक्ति 2. दुर्गा की उपाधि,—सर्गः प्रथम सृष्टि।

आदितः, आदौ (अव्य०) [आदि+तसिल्, आदि० ए० व०] आरंभ से लेकर, सबसे पहले—तदेवेनादितो हृतम्—उत्तर० ५।२०।

आदितेयः [अदिति+ढक्] 1 अदिति का पुत्र 2. देवता, सामान्य देव।

आदित्यः [अदिति+यञ्] 1. अदिति का पुत्र, देव, देवता 2 बारह आदित्यों (सूर्य के नाम) का समुदायवाचक नाम—आदित्यानामहं विष्णुः—भग० १०।२१, कु० २।२४ (यह बारह आदित्य केवल प्रलयकाल में उदित होते हैं)—तु० वेणी० ३।६, वन्दे विश्वं दहनकिरणैर्नोदितो द्वादशार्कैः 3 सूर्य 4 विष्णु का पाँचवाँ अवतार, वामनावतार। सम०- मंडलम् सूर्यमंडल,—सुतः सूर्य का पुत्र, सुग्रीव, यम, शनि, कर्ण।

आदि (दी) क्तः - क्तम् [आ+दो+क्त=आदीनस्य यानम्—आ+क] 1 दुर्भाग्य, कष्ट, 2 दोष—दे० 'अनादीनव'।

आदिम (वि०) [आदौ भवः—आदि+डिमच्] प्रथम, पुरातन, मौलिक।

आदीनव —दे० 'आदिनव'।

आदीपनम् [आ+दीप्+ल्युट्] 1. आग लगाना 2. भड़काना, सवारना 3 उत्सवादिक अवसर पर दीवार घर आदि को चमका देना।

आदृत (भू० क० कृ०) [आ+दृ+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, 2 (कर्मवाच्य के रूप में) (क) उत्साही, परिश्रमी, दत्तचित्त, सावधान, (ख) सम्मान युक्त।

आदेवनम् [आ+दिव्+ल्युट्] 1 जूआ खेलना 2 जूआ खेलने का पासा 3 जूआ खेलने की बिसात, खेलने का स्थान।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] 1 हुक्म, आज्ञा—आदुरादेशमादाय—रामा०, आदेशं देवकाक्षः प्रतिनयाह —रघु० १।९२, राजदिष्टादेशाद्धृत —मालवि० २।३०४, राजा के द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को करने वाला 2. सलाह, निर्देश, उपदेश, शिक्षण 3. विवरण, सूचना, संकेत 4. भविष्यकथन—विज्ञप्तिकादेशवचनानि—का० १४, 5. (व्या०) स्थानापन्न—वातोः स्थाने इवादेशे कृतीर्घ सन्यवेक्षताम्—रघु० १२।५८।

आदेशिन् [आ+दिश्+णिनि] 1 आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला 2 उत्तेजक, भड़काने वाला—रघु० ६८, —(पुं०) 1 सेनापति, आज्ञप्ता 2 ज्योतिषी।

आद्य (वि०) [आदौ भव —यत्] 1 प्रथम, आदि कालीन 2 मुख्य, प्रमुख, अगुआ—आसीन्महीक्षितामाद्य प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११ 3 (समास के अन्तमें) आरम्भ करके, वगैरा २, दे० आदि,—द्या 1 दुर्गा की उपाधि 2 मास का पहला दिन,—द्यम् 1 आरम्भ 2 अनाज, आहार। सम०—कविः 'आदिकवि' ब्रह्मा या वाल्मीकि की उपाधि, दे० 'आदिकवि'।—कारणम् विश्व का मुख्य या भौतिक कारण जो सांख्य मतानुसार 'प्रधान' या जड़नियम कहलाता है।

आद्यून (वि०) [आ+दिव+क्त, ऊठ् नत्व च, 'अद्' खाना से व्युत्पन्न प्रतीत होता है] बहुभोजी, पाउखप, पेटू, भुक्कड़—कि० ११।५।

आद्योतः [आ+द्युत्+घञ्] प्रकाश, चमक।

आधमनम् [आ+धा+ल्युट्] 1 धरोहर, निक्षेप-एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाग्रहणविक्रये कात्या०, योगाधमनविक्रीत योगदानप्रतिग्रहम्—मनु० ८।१६५, 2 बिक्री के सामान का धूर्तता के साथ मूल्य बढ़ाना।

आधमर्ण्यम् [अधमर्ण+ष्यञ्] कर्जदारी।

आधर्मिक (वि०) [अधर्म+ठञ्] अन्यायी, बेईमान।

आधर्षः [आ+धृष्+घञ्] 1 घृणा 2 बलात् चोट पहुँचाना।

आधर्षणम् [आ+धृष्+ल्युट्] 1 दोष या अपराध का निश्चय, दण्डादेश 2 निराकरण 3 चोट पहुँचाना, सताना।

आधर्षित (भू० क० कृ०) [आ+धृष्+क्त] 1 चोट पहुचाया हुआ, 2 तर्क द्वारा निराकृत 3 दण्डादिष्ट, सिद्ध-दोष।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] 1 रखना, ऊपर रख देना 2 लेना, मान लेना, प्राप्त करना, वापिस लेना, 3 यज्ञाग्नि को स्थापित करना (अग्न्याधान)—पुनर्दारक्रियां कुर्यात् पुनराधानमेव च—मनु० ५।१६८ 4 करना कार्य में परिणत करना, निष्पन्न करना 5 बीच में रखना, रख देना,=गुणो विशेषाधानहेतुः सिद्धा वस्तुधर्मः—सा० द० २, प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि—रघु० १।२४ 6 बीजारोपण उत्पादन—कौतुकाधानहेतवे—मेघ० ३, गर्भाधानक्षणपरिचयात्—०, 7 निक्षेप, धरोहर—याज्ञ० २।२३८, २४७।

आधानिक [आधान+ठञ्] नवविवाह के पश्चात् गर्भाधान के निमित्त किया जाने वाला संस्कार।

आधार [आ+धृ+घञ्] 1 आश्रय, स्तंभ, टेक 2 (अतः) सँभाले रखने की शक्ति, सहायता, संरक्षण मदद—स्वमेव धारकाधारं—भर्तृ० २।५०, 3 भाजन आशय—तिष्ठन्त्याप इवाधारे—पंच० १।६७, चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारता गतः—कु० ६।६७, कु० ३।४८, शि०१।१४, 4 आलबाल,—आधारबन्धप्रमुखैः प्रयत्नैः—रघु० ५।६, 5 पुलिया, बाँध, पुश्ता, (तटबन्ध) 6 नहर 7 अधिकरण कारक का भाव, स्थान—आधारोऽधिकरणम्।

आधिः [आ+धा+कि] 1 मानसिक पीड़ा, वेदना, चिन्ता (विप० व्याधि=शारीरिक पीड़ा)—न तेषामापदः सन्ति नाधयो व्याधयस्तथा—महा०, —मनोगतमाधिहेतुम्—शि० ३।११, रघु० ८।२७, ९।५४, भर्तृ० ३।१०५, भामि०४।११, 2 विपत्ति, अभिशाप, सन्ताप—धान्येव गृहिणीपदं युवतयो बाला कुलस्थाधयः—शि० ४।१७, महावी० ६।२८, 3 निक्षेप, धरोहर, गिरवी, रेहन—याज्ञ० २।२३, मनु० ८।१४३, 4 स्थान, आवास 5 अवस्थान, ठिकाना 6 परिवार के भरण-पोषण के लिए चिन्तातुर। सम०—ज्ञ (वि०) पीड़ाग्रस्त, —भोगः धरोहर की चीज का उपयोग (जैसे घोड़े साथ आदि का), स्तेयः स्वामी से पूछे बिना धरोहर की राशि को खर्च करने वाला व्यक्ति।

आधिकरणिकः [अधिकरण+ठक्] न्यायाधीश-मृच्छ० ९।

आधिकारिक (वि०) (स्त्री० -की) 1 सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ 2 अधिकारी।

आधिक्यम् [अधिक+ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत, प्राचुर्य।

आधिदैविक (वि०) (स्त्री०—की) [अधिदेव+ठञ्] 1 अधिदेव या इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देव से सम्बन्ध रखने वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० ६।८३, 2 दैवकृत, भाग्य में लिखी हुई- (पीड़ा आदि), सुश्रुत के अनुसार पीड़ा तीन प्रकार की है—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।

आधिपत्यम् [अधिपति+ष्यञ्] 1 सर्वोपरिता, शक्ति, प्रभुसत्ता- राज्य सुरगणामपि आधिपत्य (अवाप्य)—भग० २।८, 2 राजा का कर्तव्य पाण्डो पुत्र प्रकृष्टमाधिपत्यं—महा०।

आधिभौतिक (वि०) (स्त्री० की) [अधिभूत+ठञ्] 1 प्राणियों पशुपक्षियों-से उत्पन्न (पीड़ा आदि) 2 प्राणियों से सम्बन्ध रखने वाला 3 प्रारम्भिक, भौतिक।

आधिराज्यम् [अधिराज+ष्यञ्] अधिराज का पद या अधिकार, प्रभुसत्ता, सर्वोपरि प्रभुत्व अभौ भूय कुमार्यास्त्वाधिराज्यमवाप्य च—रघु० १७।३०।

आधिवेदनिकम् [अधिवेदनाय हितं ठक्, तत्र काले दत्त ठञ् वा] सम्पत्ति, उपहार आदि जो दूसरा विवाह करने पर पहली पत्नी को सन्तोषार्थ दिया जाय,

—अन्य द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै पारितोषिकं धनं दत्त तदाधिदेवनिकम्- विष्णु०, तु० याज्ञ० २।१४३, १४८।

आधुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अधुना+ठक्] नया, आजकल का, अब का, हाल का।

आधोरणः [आ+धोर्+ल्युट्—धोर्ञ् गतिस्थानयोः] महावत, पीलवान,—आधोरणानां गजसन्निपाते—रघु० ७।४६, ५।४८, १८।३९।

आध्मानम् [आ+ध्मा+ल्युट्] 1. फूंक मारना, फुलाव (आल०) वृद्धि 2 सेंकी बघारना 3. बाँकनी 4. पेट का फूलना, शरीर का फुलाव, उदरोदर।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यात्म+ठक्] 1. परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाला 2. आत्मा सम्बन्धी, पवित्र 3 मन से सम्बन्ध रखने वाला 4 मन से उत्पन्न (पीड़ा, दुख आदि) दे० "आधिदैविक"।

आध्यानम् [आ+ध्यै+ल्युट्] 1. चिन्ता 2 दुख पूर्ण प्रत्यास्मरण 3 मनन।

आध्यापकः [अध्यापक+अण्] शिक्षक, धर्मोपदेष्टा, दीक्षागुरु।

आध्यासिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यास+ठक्] अध्यास द्वारा उत्पन्न अर्थात् (वेदान्त० में) एक वस्तु के गुण व प्रकृति को दूसरी वस्तु पर आरोप करके।

आध्वनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्वन्+ठक्] यात्रा पर, यात्री—कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्याध्वनिकस्य वै—महा०।

आध्वर्यव (वि०) (स्त्री०—वी) [अध्वर्यु+अण्] अध्वर्यु या यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला, —वम् 1 यज्ञ में किया जाने वाला कार्य 2. विशेषतः अध्वर्यु नामक पुरोहित का कार्य।

आध्मः [आ+ध्मा+क्विप्, ततः अण्] 1 वायु भीतर खींचना 2. श्वास लेना, फूंक मारना।

आनकः [आनयति उत्साहयत करोति अण्+णिच्+क्वुल् तारा०] 1 बड़ा सैनिक ढोल—नगाड़ा—पणवानकसोमुखा सहस्रैश्चाभ्यहन्यन्त—भग० १।१३, 2 गरजने वाला बादल। सम०—दुन्दुभिः कृष्ण के पिता वासुदेव की उपाधि (—भिः, —भी (स्त्री०)) बड़ा ढोल, नगाड़ा।

आनतिः (स्त्री०) [आ+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, नमस्कार करना, झुकाव (आल० भी)—मुखवन्यिनमिवानतिं प्रपेदे—कि० १३।१५, 2 नमस्कार या अभिवादन 3 श्रद्धांजलि, सत्कार, श्रद्धा।

आनद्ध (वि०) [आ+नह्+क्त] 1. बांधा हुआ, मढ़ा हुआ 2 बद्धकोष्ठ, अवरुद्धमल (जैसा कि उदर) —द्धः 1. ढोल 2 वस्त्रों का पहनना, बनाव-सिंगार।

आनन्दः [आ+नन्द्+घञ्] 1. मुंह, चेहरा—रघु० ३।१, —नृपस्य कांत्या विवृत सुतानन्दं—१७, 2. किसी ग्रन्थ या पुस्तक के बड़े २ खण्ड (उदा० रत्नाकर के दो आनन)।

आनन्तर्यम् [अनन्तर+ष्यञ्] 1. अव्यवहित उत्तराधिकार 2. व्यवधान रहित आसन्नता।

आनन्त्यम् [अनन्त+ष्यञ्] 1 असमाप्यकता, अनन्तता (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से)—आनन्त्याद् व्यभिचाराच्च—काव्य० २, 2 असीमता 3 अक्षयवरता नित्यता 4. ऊर्ध्वलोक, स्वर्ग, भावी सुख—वस्तु नित्यं कृतमतिर्धर्ममेवाधिपद्यते, अशाश्वतात् फल्गुनि तोऽनुप्रायत्नत्यमश्नुते—महा०।

आनन्दः [आ+नन्द्+घञ्] 1 प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, सुख,—आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् बिभेति कदाचन, 2. ईश्वर, परमात्मा (मनु० भी इसी अर्थ में) 3. शिव। सम० —काननम्, वनम् काशी, —कन्दः दुलहिन के वस्त्र,—पूर्ण (वि०) आनन्द से ओतप्रोत (—र्णः) परमात्मा,—प्रकाशः वीर्य।

आनन्दयु (वि०) [आ+नन्द्+अथुच्] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल, —थुः प्रसन्नता, हर्ष, सुख।

आनन्दन (वि०) [आ+नन्द्+ल्युट्] सुखकर, प्रसन्न करने वाला,—नम् 1. खुश करना, प्रसन्न करना 2. प्रणाम करना 3 मित्र या अतिथियों के स्वागत, मिलने पर अथवा विदा होते समय सम्बोधित व्यवहार, सौजन्य, शिष्टता।

आनन्दमय (वि०) [आनन्द+मयट्] 1 आनन्द से परिपूर्ण, सुख या हर्ष सहित,—यः परमात्मा, कोषः अन्तस्तम आवरण या शरीर का परिधान।

आनन्दिः [आ+नन्द्+इन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. जिज्ञासा।

आनन्दिन् (वि०) [आ+नन्द्+णिनि] 1. प्रसन्न, खुश 2 सुखकर।

आनर्तः [आ+नृत्+घञ्] 1 रंगमंच, नाट्यशाला, नाचघर 2 युद्ध, लड़ाई 3 देश का नाम ('सौराष्ट्र' भी इसी देश का नाम है)।

आनर्थक्यम् [अनर्थक्य भाव—ष्यञ्] 1. अनुपयुक्तता, निरर्थकता—सुस्थानवंक्यमिति चेत्—कात्या०, आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम्—जै० शा० 2. अयोग्यता।

आनायः [आ+नी+घञ्] जाल।

आनायिन् (पुं०) [आनाय+इनि] मछुवा, धीवर —आनायिभिस्तामपकृष्टनक्रम्—रघु० १६।५५, ७५।

आनाय्य (वि०) [आ+नी+ण्यत्, आयादेशः] निकट लाने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई संस्कृत अग्नि ('दक्षिणाग्नि' भी कहलाती है)।

आग्रहः [आ+ग्रह्+घञ्] 1 बन्धन 2. मलावरोध कब्ज 3 लम्बाई (विशेषत कपड़े की)।

आनिल (वि०) (स्त्री०—ली) [अनिल+अण्] वायु से उत्पन्न,—लः,—आनिलिः हनुमान्, भीम।

आनील (वि०) [मा० स०] हल्का काला या नीला,—लः काला घोड़ा।

आनुकूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुकूल+ठक्] हितकर, अनुरूप।

आनुकूल्यम् [अनुकूल+ष्यञ्] 1. हितकारिता, उपयुक्तता —यत्रानुकूल्य दम्पत्योस्त्रिवर्गस्तत्र वर्धते—याज्ञ० १। ७४, 2. कृपा, अनुग्रह।

आनुगत्यम् [अनुगत+ष्यञ्] ज्ञान-पहचान, परिचय।

आनुगुण्यम् [अनुगुण+ष्यञ्] हितकारिता, उपयुक्तता, अनुरूपता।

आनुग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुग्राम+ठञ्] देहाती, ग्रामीण, गँवार।

आनुनासिक्यम् [अनुनासिक+ष्यञ्] अनुनासिकता।

आनुपदिक (वि०)(स्त्री०—की) [अनुपद+ठक्] अनुसरण करने वाला, पीछा करने वाला, पदचिह्न या लीक के सहारे पीछा करने वाला, अध्ययन करने वाला।

आनुपूर्वम्,—र्व्य—र्वी [अनुपूर्वस्य भाव ष्यञ्, ततो वा ङीषि य-लोप] 1 क्रम, परम्परा, सिलसिला मनु० २।४१ 2 (विधि में) वर्णों का नियमित क्रम—यथानुपूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान्—मनु० ३।२३।

आनुपूर्व,—र्व्ये,—र्व्य (अव्य०) एक के बाद दूसरा, ठीक क्रमानुसार।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुमान+ठक्] 1 उपसंहार से सम्बन्ध रखने वाला 2 अनुमान प्राप्त, —कम् सांख्यों का 'प्रधान'—आनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न —ब्रह्म०।

आनुयात्रिक [अनुयात्रा+ठक्] अनुयायी, सेवक, अनुचर।

आनुरक्तिः [आ+अनु+रञ्ज्+क्तिन्] राग स्नेह, अनुराग।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री० -की) [अनुलोम+ठक्] 1. नियमित, क्रमबद्ध 2 अनुकूल।

आनुलोम्यम् [अनुलोम+ष्यञ्] 1 नैसर्गिक या सीधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था—आनुलोम्येन सम्भूता जात्या तेऽपास्त एव ते—मनु० १०।५, १३ 2 नियमित सिलसिला या परम्परा 3 अनुकूलता।

आनुवेश्यः [अनुवेश+ष्यञ्] वह पड़ोसी जिसका घर अपने घर से एक छोड़कर हो—प्रातिवेश्यानुवेश्यौ च कन्याणे विगर्हितौ द्विजैः—मनु० ८।३९२ (इस पर कुल्लूक कहता है —निरन्तर गृहवासी प्रातिवेश्य —तदनन्तरगृहवास्यानुवेश्य) यह शब्द 'अनुवेश्य' लिखा भी पाया जाता है।

आनुषङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुषङ्ग+ठक् स्त्रियां ङीप्] 1 सम्बद्ध, सहवर्ती 2 ध्वनित 3 अनिवार्य, आवश्यक 4 अप्रधान, गौण —अनुभि स्वास्तु यदाचिच्छीपत ननु लक्ष्मो फलमानुषङ्गिकम्—कि० २।१९, अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेऽन्वाचय सिद्धा० दे० 'अन्वाचय' 5 सलग्न, शौकीन 6 आपेक्षिक, आनुपातिक 7 (व्या०) अध्याहार्य।

आनूप (वि०) (स्त्री०—पी) [अनूपदेशे भव —अण्] 1 जलीय, दलदलीय, आर्द्र 2 दलदल—भूमि में उत्पन्न, —पः दलदली भूमि में घूमने वाला पशु (जैसे भैंस)।

आनृण्यम् [अनृण+ष्यञ्] ऋणपरिशोध, दायित्व निभाना, उऋणता, दे० अनृणता।

आनृशंस्य (वि०) [अनृशंस, अण् (स्वार्थे) ष्यञ् वा] मृदु, कृपालु, दयालु —स्य, स्यम् 1 मृदुता 2 कृपा मनु० १।१०१, ८।४११, 3 करुणा, दया, अनुकम्पा।

आनैपुण्यम्-ण्यम् [अनिपुण+अण्, ष्यञ् वा] भद्दापन, जाड्य।

आन्त (वि०) (स्त्री० न्ती) [अन्त+अण् स्त्रियां ङीप्] अन्तिम, अन्त का, —न्तम् (अव्य०) पूर्णरूप से, अन्त तक।

आन्तर (वि०) [आन्तर+अण्] 1 आन्तरिक, गुप्त छिपा हुआ उत्तर० ६।१२, मा० १।२६, 2 अन्तस्तम, अन्तर्वर्ती, रम् अन्तस्तम स्वभाव।

आन्तरिक्ष(क्ष्य)क (वि०) (स्त्री० क्षी) [अन्तरिक्ष+अण् - स्त्रियां ङीप्] 1 वायव्य स्वर्गीय, दिव्य 2 वायु में उत्पन्न, क्षम् व्योम, पृथ्वी और आकाश के बीच का प्रदेश।

आन्तरागारिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तरागार+ठक्] सम्मिलित (जैसे श्रेणी में, सेना में)।

आन्तर्गेहिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तर्गेह+ठक्] घर में रहने वाला, या घर में उत्पन्न।

आन्तिका [अन्तिका+अण्+टाप्] बड़ी बहन।

आन्दोल (भ्वा० पर०) [दोलयति, दोलित] 1 झूलना, इधर से उधर या उधर से इधर स्पन्दन 2 हिलाना, कंपकंपाना।

आन्दोल [आ+दोल्+घञ्] 1 झूलना, झूला 2 हिलना डुलना।

आन्दोलनम् [आन्दोल्+ल्युट्] 1 झूलना 2 हिलना-डुलना, स्पंदन, कंपित होना, हिमवासमरविन्दगुन्दरदृशां दाक्षे वामरवन्दोलनात् उद्भट० 3 कामना।

आन्धस [अन्धस+अण्] साँड़।

आन्धसिक [अन्धस्+ठक्] रसोइया।

आन्ध्यम् [अन्ध+ष्यञ्] अंधापन।

आन्ध्र (वि०) [आ+अन्ध्+रक्] आंध्र देश की (जैसे कि भाषा)—क्रः (ब० व०) तेलुगु देश, वर्तमान तेलंगाना; दे० अंक।

आन्वयिक (वि०) (स्त्री०—की०) [अन्वय+ठक्] 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, सुजात, अभिजात 2 क्रमबद्ध।

आन्वाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्वह+ठञ्] प्रतिदिन होने वाला, प्रतिदिन किया जाने वाला—पञ्चमिं चान्वाहिकीम्—मनु० ३।६७।

आन्वीक्षिकी [अन्वीक्षा+ठञ्+ङीप्] 1 तर्क, तर्कशास्त्र 2. आत्मविद्या—आन्वीक्षिक्यात्मविद्या स्याद्दोषाद्यात्मकुलद्वयी, हैतुकाजस्तथा तर्क्यं हर्षशोकौ व्युदस्यति, —काम० २।११, आन्वीक्षिकी अवलोक्य—मा० १, मनु० ७।४३।

आप् (स्वा० पर०) [आप्नोति आप्त] 1 प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना - युवमेव तपोपेत चक्रवर्तिनमाप्नुहि -श० २।१२, अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्नुयादिति- हि० प्र० ३०, तत्र ऋतुनामपविष्टमाप्त स- -रघु० ३।३८, इसी प्रकार फल कीर्ति, सुख आदि के साथ 2 पहुँचना जाना, पकड़ लेना, मिलना—भट्टि० ६।५९ 3 व्याप्त होना जगह घेरना। 4 भुगतना, कष्ट भोगना, कठिनाइयों का सामना करना दिष्टान्तमाप्स्यति भवान् - रघु० ९।६९। अनु -, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, 2 पहुँचना जाना, पकड़ लेना- यमालदीमनुप्राप्ता महा०, 3 आ पहुँचना, आना, आप - , 1 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना - युवं स्वमपि सम्राज सेव पूरुमवाप्नुहि – श० ४।६, रघु० ३।३३, अवाप्तोत्कण्ठानाम् – मा० २।१२ 2 पहुँचना, पकड़ लेना, परि—, (प्राय 'क्लान्त' रूप प्रयोग में आता है) 1 समर्थ होना पर्याप्त सिद्धयेत्तेषा बल भीष्मार्जिरक्षितम् -भग० १।१०, मनु० ११।७, 2 योग्य होना 3 पूरा होना जैसा कि 'पर्याप्तकाल' और 'पर्याप्तदक्षिण' में है 4. बचाना, रक्षा करना, परिरक्षण करना—इमा परीप्सुर्युजंते —मालवि० ५।११, 5 काम तमाम करना, समाप्त करना, प्र—, 1 हासिल करना, प्राप्त करना, 2 जाना, पहुँचना – यथा महाह्रद प्राप्य क्षिप्त लोष्टं विनश्यति—मनु० ११।२६४, रघु० १।७८, भट्टि० १५।१०६ इसी प्रकार आश्रम, नदी, वनम् आदि के साथ 3 मिल जाना, पकड़ लेना भट्टि० ५।९६, दे० प्राप्त, वि—, 1 पूरी तरह से भर लेना, व्याप्त हो जाना—मुतिविवरमुपा या स्थिता व्याप्य विश्वम् —श० १।१, इसी प्रकार विक्रम० १।१, मृग० १०।१६, रघु० १८।४०, भट्टि० ७।५६, सम्—, 1 हासिल करना, प्राप्त करना, 2. समाप्त करना, पूरा (प्रेरणार्थक रूप भी) करना—आपतयां समाप्योरन् मद्राः पर्वाण्यदक्षिणाः—रघु० १७।१७, २४, तमाप्य साम्यं च विधि—२।२३।

आप्तकर (वि०) (स्त्री०—री) [आप्तकर+अण्, अञ् वा, स्त्रियां ङीप्] अतिशयकर, अतीवपूर्ण, पूराई करने वाला।

आप्तम (वि०)[आ+पद्+क्त] अवधका, अवधका—अन्नम् रसोई, रोटी।

आप्तवा [आपां समूह आपम्, तेन गच्छति–मन्+ठ] नदिया, नदी –केनायमाप्तवतिमापवाहाम्—शि० ३।७२।

आप्तवेयः [आप्तवा+ढक्] नदिया का पुत्र, गौण या कुल्य की उपाधि।

आप्तवः [आपण्+घञ्] मंडी, दुकान।

आपणिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपण्+ठक्] 1. व्यापार या मंडी से सम्बन्ध रखने वाला, व्यापारिक 2. मंडी से प्राप्त किया हुआ,—कः दुकानदार, सौदागर वितरक या विक्रेता।

आपतनम् [आ+पत्+ल्युट्] 1. निकट आना, टूट पड़ना 2 घटित होना, घटना 3 प्राप्त करना 4 आय —नवनिष्पाकरनिकाशवदनाकरनिकस्यार्थस्यापतनम् - मा० ८० १०, 5 नैसर्गिक फल, स्वाभाविक परिणाम।

आपत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपत्+इकन्] आकस्मिक, अदृष्ट, दैवी—कः दास, पर्वत।

आपत्तिः (स्त्री०) [आ+पद्+क्तिन्] 1 घटना, परिघटित होना 2 प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना 3 मुसीबत, संकट 4 (दर्शन० में) अवांछित उपसंहार या अनिष्ट प्रसंग।

आपद् (स्त्री०) [आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, मुसीबत, खतरा –दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्तां स्वमापदाम् —रघु० १।६०, अभिषेक परमापदा पदम्—कि० २।३०, १४—प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः - भर्तृ० २।९०। सम०— -काल: विपत्ति के दिन, कष्ट का समय,—ग्रस्त,—ग्रस्त,—ग्रस्त (वि०) 1 मुसीबत में पड़ा हुआ 2 दुर्भाग्य-ग्रस्त, पीड़ित, —धर्मः असाधारण कष्ट या संकट के समय अनुमति दिए जाने योग्य आचरण या वृत्ति, या कोई कार्य विधि जो अन्य किसी अर्थ या जाति के लिए उपयुक्त न हो।

आपदा [आपद्+टाप्] मुसीबत, संकट।

आपन्नकः [आ+पद्+क्त+कन्] 1. पक्का, नीरोग 2. किराए या असभ्य व्यक्ति।

आपन्न (भू० क० कृ०)[आ+पद्+क्त] 1. अन्दर, प्राप्त —जीविकापन्नः 2. गया हुआ, कब हुआ, घटा—कष्टां दशामापन्नोऽसि —भर्तृ० २।२२ इसी प्रकार दुर्ग',

पीड़ित, कष्टग्रस्त, कठिनाई में फँसा हुआ—आपन्नभयसंभवेषु दीक्षितः खलु पौरवा—श० २।१६, मेघ० ५३। सम०—सत्त्वा पर्यवदाता, पर्यवदात्री, पर्यवदाती स्त्री—समापन्नसत्त्वास्ता रेवुरापाण्डुरत्विषः—रघु० १९।५९।

आपनिधिक (वि०) [अपनिधि परिवर्त्य निर्वृत्तम्—कक्] विनिमय द्वारा प्राप्त,—कम् विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु या सम्पत्ति।

आपराह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपराह्ण+ठक्] तीसरे पहर होने वाला।

आपस् (नपुं०) [आप्+असुन्] 1. जल—आपोभिर्मार्जनं कृत्वा 2 पाप।

आपतनम् [आ+पत्+ल्युट्] 1 टूट पड़ना, गिर पड़ना, हमला करना, आ धमकना, उतरना—तदापातभयात्त्यजि—कु० २।४५, महद्भापातविश्लिष्टमेघनादास्त्रहस्तवत्—रघु० १२।७६ 2 उतरना, गिरना, नीचे डालना 3 (क) वर्तमान क्षण या काल—आपातरम्या विषया पर्यन्तपरितापिन किं० ११।१२, आपातसुरम्ये भोगे निमग्ना किं न कुर्वते—सा० द० भामि० १।११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन—दे० 'आपातत' 4 घटित होना, प्रकट होना।

आपातात् (अव्य०) [आपात+तसिल्] पहली निगाह में, हमला करते ही, तुरत।

आपादः [आ+पद्+घञ्] 1 अवाप्ति, प्राप्ति 2 पारितोषिक, पारिश्रमिक।

आपादनम् [आ+पद्+णिच्+ल्युट्] पहुँचाना, प्रकाशित करना, झुकाव होना—द्रव्यस्य सख्यान्तरापादने—सिद्धा०।

आपानम्—कम् [आ+पा+ल्युट्] 1 मद्यपों की मंडली, पानगोष्ठी—मृच्छ० ८, आपाने पानकलिता दैवेनाभिप्रणोदिता—महा०, 2. मद्यशाला, मदिरालय—ताम्बूलीना दलैस्तत्र रचितापानभूमय—रघु० ४।४२, कु० ६।४२, आपानकमुत्सव—का० ३२।

आपायिन् [आ+पा+णिच्=आपा, तदर्थमलति—अल्+इन्] जू।

आपीड़ः [आ+पीड्+घञ्, अच् वा] 1 पीड़ा देना, चोट पहुँचाना 2 निचोड़ना, भींचना 3 कण्ठहार, माला—चूडापीडकपालसक्तकुलगलन्मन्दाकिनीवारय—मा० १।२, 4 (अत) मुकुटमणि तस्मिन्कुलापीडनिभे विपीडम्—रघु० १८।२९ मा० १।६, ७।

आपीन (भू० क० कृ०) [आ+प्यै+क्त] बलवान्, मोटा, सबल,—नः कुर्जा,—आपीनोऽभू—सिद्धा०,—नम् ऐन, थन का अग्रभाग—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात्—रघु० २।१८।

आपूपिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपूप+ठक्] 1 अच्छे पूए बनाने वाला 2 जिसे पूए अधिक पसंद हों,—कः पूए बनाने वाला, हलवाई,—कम् पूओं का ढेर।

आपूपः [अपूपाय साधु वा० य, अपूप+अण् वा] बाटा।

आपूरः [आ+पृ+घञ्] 1 प्रवाह, धारा, परिणाम—स्वेदापूरो युवतिसरिता व्याप गण्डस्थलानि—शि० ७।७४, 2 भरना, पूरा भरना।

आपूरणम् [आ+पृ+ल्युट्] भरना, भर कर पूरा करदेना, गर्त° कृतम्—पञ्च० १।

आपूर्वम् [आ+पूर्व+घञ्] धातु की एक प्रकार (समवत 'टीन')।

आपृच्छा [आ+प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1 समालाप 2 विदा करना, 3 जिज्ञासा।

आपोशानः [आपसा जलेन अश्नानम् इति—अप्+आनच्] भोजन से पूर्व और पश्चात् आचमन करने के मन्त्र (क्रमशः—अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, और अमृतापिधानमसि स्वाहा) याज्ञ० १।३१, १०६,—नम् भोजन के लिए स्थान बनाना, तथा भोजन को ढक देना।

आप्त (भू० क० कृ०) [आप्+क्त] 1 हासिल किया, प्राप्त किया, उपलब्ध किया °काम, °गाप आदि 2 पहुँचा हुआ, आ पकड़ा हुआ, 3 विश्वास योग्य, विश्वसनीय, प्रामाणिक (समाचार आदि), 4 विश्वस्त, गोपनीय, निष्ठावान (पुरुष)—रघु० ३।१२, ५।३९, 5 घनिष्ट, सुपरिचित 6 तर्कसंगत, समझदारी से युक्त,—प्तः 1 विश्वासयोग्य, विश्वसनीय, योग्य व्यक्ति, विश्वस्त पुरुष या साधन,—आप्त यथार्थवक्ता तर्क स०, 2 संबंधी, मित्र, निग्रहास्त्वसुरापानात् बभाञ्ज धनदानुजः—रघु० १२।५, कथमाप्तवर्गोऽन्यथा मालवि० ५, प्तम् 1 लब्धि 2 आपातसाम्य।

सम० काम (वि०) 1 जिसने अपनी इच्छा पूर्ण करली है 2 जिसने सांसारिक इच्छाओं और आसक्तियों का त्याग कर दिया है (—मः) परमात्मा,—काम गर्भवती स्त्री, -वचनम् किसी विश्वास योग्य या विश्वस्त व्यक्ति के शब्द—रघु० ११।८२, १५।४८,—वाक् विश्वास के योग्य, जिसके शब्द प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं—परातिसन्धानमधीयते हैडिम्बेति ते खलु किलाप्तवाचः श० ५।२५ (—स्त्री०) 1 किसी मित्र या विश्वसनीय पुरुष की सलाह 2 वेद, श्रुति, प्रामाणिक वचन (यह शब्द स्मृति इतिहास और पुराणों पर भी लागू होता है जो कि प्रामाणिक समझे जाते हैं)—आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वामित्थमीक्षते कथा—रघु० १०।२८, श्रुति (स्त्री०) 1 वेद 2. स्मृतियाँ आदि।

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] 1 हासिल करना, प्राप्त करना लाभ, अधिग्रहण 2 आ पहुँचना, (दुर्घटना में) ग्रस्त होना 3. योग्यता, अभिवृत्ति, औचित्य 4 सम्पूर्ति, पूरा करना।

आप्य (वि०) [आपाम् इदम्—अण्, ततः स्वार्थे यञ्] 1. जलमय 2. [आप्+ण्यत्] आप्त करने के योग्य, प्राप्य।

आप्यायन (भू० क० कृ०) [आ+प्याय्+क्त] 1. मोटा, बलवान्, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रसन्न, संतुष्ट,—नम् 1. प्रेम 2. वृद्धि, बढ़ना।

आप्यायनम्—ना [आ+प्याय्+ल्युट्, युच् वा] 1. पूरा भरना, मोटा करना, 2. संतोष, तृप्ति—देवताप्यायना भवति—पंच० १, 3 आगे बढ़ना, पदोन्नति करना 4 मोटापा 5. वन-वर्धक औषधि।

आप्रच्छनम् [आ+प्रच्छ्+ल्युट्] 1 विदा करना, विदा माँगना 2 स्वागत करना, सत्कार करना।

आप्रपदीन (वि०) [आप्रपदं व्याप्नोति—ख] पैरों तक पहुँचनेवाला (वस्त्र आदि)।

आप्लवः, आप्लवनम् [आ+प्लु+अप्, ल्युट् वा] 1. स्नान करना, पानी में डुबा देना 2 चारों ओर पानी का छिड़काव करना। सम०—क्षतिन् वा आप्लुतक्षतिन् (पु०) दीक्षित गृहस्थ (जिसने ब्रह्मचर्य अवस्था पार करके गार्हस्थ्य अवस्था में पदार्पण किया है) तु० 'स्नातक'।

आप्लावः [आ+प्लु+घञ्] 1 स्नान 2 छिड़काव 3 बाढ़, जल-प्लावन।

आफूर्वम् [ईषत्फूत्कार इव फेनोऽत्र—पृषो०] अफीम।

आबद्ध (भू० क० कृ०) [आ+बन्ध्+क्त] 1 बाँधा हुआ, बँधा हुआ 2 जमाया हुआ—रघु० १।४० 3 निर्मित, बना हुआ—आबद्धमण्डला तापसपरिषद्—का० ४९, मण्डलाकार बैठी हुई, 4 प्राप्त 5 वाचित,—द्धम् (अ' भी) 1 बाँधना, जोड़ना 2 जूआ 3 आभूषण 4 स्नेह।

आबन्ध, —न्धनम् [आ—बन्ध्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बन्ध, बन्धान (आल०)—प्रेमाबन्धविधायिन रत्न० ३।१८, अमरु ३८, 2 जूते की रस्सी 3 आभूषण, सजावट 4 स्नेह।

आबर्ह [आ+बर्ह्+घञ्] 1 फाड़ डालना, चीरकर बाहर निकालना 2 मारडालना।

आबाधः [आ+बाध्+घञ्] 1 कष्ट, चोट, तकलीफ, सताना, हानि —न प्राणाबाधमाचरेत्—मनु० ४।५४, ५१, —धा 1. पीड़ा, दुःख 2 मानसिक वेदना, आधि।

आबाधन=दे० आबाध।

आबोधनम् [आ+बुध्+ल्युट्] 1 ज्ञान, समझदारी 2. शिक्षण, सूचन।

आब्द (वि०) (स्त्री०—ब्दी) [अब्द+अण्] बादल संबंधी या बादल से उत्पन्न।

आब्दिक (वि०) (स्त्री०—की) [अब्द+ठक्, स्त्रियां ङीप्] वार्षिक, सालाना—आब्दिक कर:—मनु० ७।१२९, ३।१।

आभरणम् [आ+भृ+ल्युट्] 1 आभूषण, सजावट (आल०)—विभिन्नपात्राभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, प्रसाधनम् परागकः—कि० २।३२ 2. पालन पोषण करना।

आभा [आ+भा+अङ्] 1 प्रकाश, चमक, कान्ति,—दीपाभा इवाग्रे वक्त्रं—पंच० ४, 2. वर्ण, आभास, रूप —शशाङ्कलेखेव सुदर्शनम्—मनु० १२।२० 3. सादृश्य, मिलना-जुलना—इन्हीं दो अर्थों को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—अम्बुदाभम्—पंच० १।५८, सदृशाभासम्—रघु० २।१० 4. प्रतिबिम्बित प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब।

आभाजनः [आ+भज्+ल्युट्] कहार, डोलोवित।

आभाणः [आ+भण्+घञ्] 1. सम्बोधन 2. प्रस्तावना, भूमिका।

आभाषणम् [आ+भाष्+ल्युट्] 1. सम्बोधित करना, सम्बोधन 2. समालाप—अन्यत्समाभाषणपूर्वमाह—रघु० २।५८।

आभासः [आ+भास्+घञ्] 1. चमक, प्रकाश, कान्ति 2 प्रतिबिम्ब —समाङ्गं विद्या सर्वदाभासतु घटं स्फुरेत्—वेदान्त, 3. (क) मिलना-जुलना, समानता (प्रायः समास के अन्त में)—नवजल धरिराभासम् —राजा० (ख) आकृति, छायापुरुष—तत्ताहुत्याभासम्—गी० २, समीक्षक की भाँति दिखाई देता है, 4 अवास्तविक या आभासी रूप (जैसा कि 'हेत्वाभास' में) 5. हेत्वाभास, तर्क का भ्रम दे० 'हेत्वाभास' 6. आभास, प्रलोभन।

आभास्वर (स्त्र) र (वि०) 1. चमकदार, उज्ज्वल,—रः ६४ उपदेवताओं का समुदाय वाचक नाम।

आभिचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिचार+ठक्] 1 जादू संबन्धी 2 अभिशापात्मक, अभिशापपूर्ण, —कम् अभिचार, इन्द्रजाल, जादू।

आभिजन (वि०) (स्त्री०—नी) [अभिजन+अण्, स्त्रियां ङीप्] जन्म से संबन्ध रखने वाला, कुलपूरक (नाम आदि) —तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना—कु० १।२६, —न्यम् कुलीनता, उच्च कुल में जन्म।

आभिजात्यम् [अभिजात+ष्यञ्] 1. जन्म की श्रेष्ठता —रत्न० ३।१८ 2. कुलीनता 3. पाण्डित्य 4. शीघ्रता।

आभिधा [अभिधा+अण्] 1 ध्वनि, शब्द 2. नाम, दर्शन—दे० 'अभिधा'।

आभिधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिधान+ठक्] जो किसी शब्द-कोश में हो,—कः कोशकार।

आभिमुख्यम् [अभिमुख+ष्यञ्] किसी के संमुख होना —'यह वाक्य—आमना करने या मिलने के लिए आता है 2. के सामने होना, आमने सामने—नीहारनिर्मग्नं पुरः—रत्न० १।२, 3. अनुकूलता।

आभिरूप्यम्, आभिरूप्यम् [अभिरूप+वुञ्, ष्यञ् वा] सौन्दर्य, लावण्य।

आभिषेचनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिषेचन+ठक्] राजतिलक से सम्बन्ध रखने वाला—आभिषेचनिकं यत्ते राजार्हमुपकल्पितम्—रामा०, महावी० ४।

आभिहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिहार+ठक्] उपहार के रूप में देय,—कम् भेंट, उपहार।

आभीक्ष्ण्यम् [अभीक्ष्णस्य भावः—ष्यञ्] अनवरत आवृत्ति, बहुलतामीदृग्वे—पा० ३।२।८१।

आभीरः [आ समन्तात् भियं राति-रा+क तारा०] ग्वाला, —आभीरवाक्यलवमात्रहृतप्रसादस्तद्दत्त मनो वसुपते तदिद मृहाण—उद्भट 2. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी,—री 1 ग्वाले की पत्नी 2. आभीरजाति की स्त्री। सम०—पल्लिः,—पल्ली (स्त्री०),—पल्लिका ग्वालों का ग्राम उत्सान, ग्वालों के रहने का थैं।

आभीरक (वि०) [आभिरं जाति ददाति—क क] भयानक, भीषण,—कम् भोट, तारीरिक पीड़ा।

आभुग्न (वि०) [आ+भुज्+क्त] कुछ मुड़ा हुआ या झुका हुआ।

आभोगः [आ+भुज्+घञ्] 1 घेरा, परिधि, विस्तार, विस्तारण (दीर्घीकरण), परिसर, पर्यावरण—अकथितोऽपि जायत एव यदाभवमाभोगस्तदोवनस्येति—शा० १, गगनाभोग—नभो विस्तार 2 लम्बाई-चौड़ाई, परिमाण—गङ्गाभोगात्—मेघ० ९२, विस्तृत थाल से 3 प्रयत्न 4 साँप का विस्तृत फण (जिसे वह छतरी के रूप में प्रयुक्त करता है) 5 उपभोग, तृप्ति-विषयाभोगेषु नैवादर—शान्ति०।

आभ्यन्तर (वि०) (स्त्री०—री) [अभ्यन्तर+अण्] भीतरी, आन्तरिक, अवश्यी।

आभ्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्यवहार+ठक्] भोज्य, खाने के योग्य (आहारादिक)।

आभ्यासिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्यास+ठक्] 1 अभ्यासजनित 2 अभ्यास करने वाला, दोहराने वाला 3 निकटस्थ, पड़ोस में रहने वाला, सलग्न (आभ्यासिक)।

आभ्युदयिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्युदय+ठक्] 1 मङ्गलोन्मुख, समृद्धिजनक—अनाभ्युदयिकं अवमक-दर्शनम्—मृच्छ० ८, 2 उन्नत, गौरवशाली, महत्त्वपूर्ण —कम् श्राद्ध या पितरों को भेंट या उपहार देने का अवसर।

आम् (अव्य०) [अम्+णिच्—आ० ह्रस्वश्चाभ्या —तत, क्विप्] निम्नांकित भावनाओं को प्रकट करने वाला विस्मयादि बोधक अव्यय—(क) अङ्गीकरण, स्वीकृति —'ओह्'—'हाँ'—आ कुर्म—मालवि० १ (ख) प्रत्यास्मरण—आं ज्ञातम्—श० ३—ओह—अब पता लगा (ग) निश्चयेन 'निश्चय ही' 'अवश्य ही'—आ चिरस्य खलु प्रतिबुद्धोऽस्मि (घ) उत्तर।

आम (वि०) [आम्यते ईषत् पच्यते—आ+अम्+कर्मणि घञ्—तारा०] 1 कच्चा, अपक्व, अपक्व (विप० 'पक्व') आमान्नम्—मनु० ४।२२३ 2 हरा, अपरिपक्व 3. आग में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) 4. अनपचा,—मः 1 रोग, बीमारी 2 अजीर्ण, अम्ल 3 भूसी से अलग किया हुआ अनाज। सम०—आशयः अनपचे भोजन का (पेट में) स्थान, उदर का ऊपरी भाग, पेट,—कुम्भ कच्ची मिट्टी का घड़ा—हि० भा ६६,—गन्धि (नपुं०) कच्चे मांस या खून के जलने की दुर्गंध,—ज्वर एक प्रकार का बुखार—तु०—स्वेद-मामज्वर प्राप्त कोऽप्यमसा परिषिञ्चति—शि० २।५४, —त्वच् (वि०) कोमल त्वचा वाला,—पात्रम् बिना तपाया हुआ बर्तन,—विनाश वृजति क्षिप्रमामपाचमि-वामनि—मनु० ३।१७९,—रसम् पेचिश, —शयः आमाशय में बनने वाला भोजन का अम्ल,—वातः अम्ल, —शूलः अजीर्ण की पीड़ा, गुर्दे का दर्द।

आमक्ष्णु (वि०) [प्रा० स०] क्षिप्र, मनोहर।

आमडः [प्रा० स०] एरण्ड का पौधा।

आमय (वा) मत्वर्थम् [अमनस्+ष्यञ्] पीड़ा, शोक।

आमन्त्रयतु-ते [आ+मन्त्र+णिच्+ल्युट्, वुक् वा] 1. सम्बोधित करना, बुलाना, आवाज देना 2 विदा लेना, विदा होना 3 अभिवादन 4 निमन्त्रण अतिनिर्बन्धन-कारुते—याज्ञ० १।११० 5 अनुमति 6 समाकाश, —अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्यात्प्रत्यक्षत्वात्स तज्जनान्तिकम् सा० द० ६, 7 सम्बोधन कारक।

आमन्द (वि०) [आ+मन्द्+अच्] कुछ गम्भीर स्वर वाला, गड़गड़ाहट करने वाला—आमन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यते गर्जितानां—मेघ० ३४,—न्दः जरा गम्भीर स्वर, गड़गड़ाहट।

आमय [आ+मी+करणे अच्—तारा०, आमेन वा अम्यते इति आमय] 1 रोग, बीमारी, मनोव्यथा दर्पामय महावी० ४।२०, आमयस्तु रतिरागसंभव—रघु० १९।४८, शि० २।१०, 2. हानि, क्षति।

आमयाविन् (वि०) [आमय+इनि् नि०] बीमार, बीमारी-ग्रस्त, अस्वास्थ्यपीड़ित, अस्वस्थता रोग से ग्रस्त।

आमरणान्त, तिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रा० स० —आमरणे अन्तो यस्य स० स०] मृत्यु पर्यन्त रहने वाला, आजीवन आमरणान्तं प्रणयो कोपस्तदुपरमे भङ्गुरा—शि० १।११८, अन्योन्यमाश्रयमीयुषोः अमे-वाश्रयणान्तिक—मनु० ९।१०२,

आमर्द [आ+मृद्+घञ्] 1 कुचलना, मसलना, पिसो-ना 2 विषम व्यवहार।

आमर्श [आ+मृश्+घञ्] 1 स्पर्श करना, छूना 2. सलाह, परामर्श।

आमर्ष, -र्षण [आ+मृष्+घञ्, ल्युट् वा] क्रोध, कोप, असहनशीलता दे० 'अमर्ष'।

आमलकः,—की [आ+मल्+वुन्—स्त्रियां ङीप्] आंवले का वृक्ष,—कम् आंवला (फल),—वरमामलकाम्रादि-खाना—भामि० २।८।

आमात्यः [अमात्य+अण्] मन्त्री, परामर्शदाता—दे० 'अमात्य'।

आमात्यम् [अमात्य+ष्यञ्] पीडा, शोक।

आमिक्षा [आमिश्यते क्षिप्यते—मिश्+क्त—टाप्] जमा हुआ दूध व छाछ, उबले और फटे दूध का मिश्रण, छेना।

आमिषम् [अम+इषच्, दीर्घश्च] 1 मांस—उपानयत् पिङ्गलिबाभिधस्य—रघु० २।६९ 2 (आल०) शिकार, बलि, उपभोग्य वस्तु (राज्यम्) -रक्षान्नेपक्षदक्षाणा द्विषामाधिपत्यं यथौ—रघु० १२।१९ शिकार की गया, भग० १६।४, 3 आहार, शिकार के लिए चारा 4 रिश्वत, 5 इच्छा, लालसा 6 उपभोग, सुखद और प्रिय वस्तु।

आमीलनम् [आ+मील्+ल्युट्] आंखों का बन्द करना या मूंदना।

आमृक्षिः (स्त्री०) [आ+मृज्+क्तिन्] पहनना, धारण करना (वस्त्र, कवचादिक)।

आमुखम् [प्रा० स०] 1 आरम्भ 2 (नाटकों में) प्रारम्भिक अंश, प्रस्तावना (सम्पूर्ण नाटक के प्रत्येक नाटक 'आमुख' से आरम्भ होता है) सा० द० में दी गई परिभाषा—नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा, सूत्रधारेण सहिता संलापं यत्र कुर्वते। चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुतार्थोपक्षेपिभिर्मिथः, आमुखं तन्मुखं विद्यात् नाम्ना प्रस्तावनापि सा॥ २८७.—अम् (अव्य०) मुंह के सामने।

आमुष्मिक (वि०) (स्त्री० की) परलोक से सम्बन्ध रखने वाला—आमुष्मिक श्रेयः—मृच्छ, नैवालोच्य गरीयसीरपि चिरादामुष्मिकीयानिना—मा० द०।

आमुष्यायण (वि०)—अ (स्त्री०—ई) [अमुष्य स्यानस्यापत्यं नडा० फक् आयनेयक्] सकुल में उत्पन्न, ऐसे उच्चवंशीय व्यक्ति का पुत्र या सुविख्यात कुल में उत्पन्न, आमुष्यायणो वै त्वमसि—भल०, तदामुष्यायणस्य तत्त्ववत सुगृहीतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्र—मा० १, मद्रामी० १।

आमोक्षणम् [आ+मुच्+ल्युट्] 1 ढीला करना, स्वतन्त्र करना 2 उत्सर्जन, निकालना, सेवामुक्त करना 3 धारण करना, पहनना।

आमोटनम् [आ+मुट्+ल्युट्] कुचलना—भा० ३।

आमोदः [आ+मुद्+घञ्] 1 हर्ष, प्रसन्नता, खुशी 2 सुगंध (व्यापी), सौरभ—आमोदमुद्वहति नन्दनपारिजातो स्वर्गीयदेवतरुकारितमेव धत्ते मन्दारमेव मलयोऽपि न हि कुसुमानि धारयति—सुभाषित, शि० २।२०, मेघ० ३१।

आमोदन (वि०) [आ+मुद्+ल्युट्] खुश करने वाला प्रसन्न करने वाला—नम् 1 खुशी, प्रसन्नता 2 सुगन्धित करना।

आमोदिन् (वि०) [आ+मुद्+णिनि] 1 प्रसन्न, 2 सुगन्धित—भर्तृ० १।३५।

आमोषः [आ+मुष्+घञ्] चोरी, डाका।

आमोषिन् (पुं०) [आ+मुष्+णिनि] चोर।

आम्नात (भू० क० कृ०) [आ+म्ना+क्त] 1. विचार किया हुआ, सोचा हुआ, कथित—सभी हि क्रियोद्देशानां वस्त्वभिधानायत्तः स (धातु) व—शि० २।१०, 2. अभीत, आवृत्त 3. प्रत्यास्मृत 4. परम्पराप्राप्त,—तम् अव्ययन।

आम्नानम् [आ+म्ना+ल्युट्] 1. वेद या वेद के अंशों का संस्कार पाठ या अध्ययन 2. उल्लेख, आवृत्ति।

आम्नायः [आ+म्ना+घञ्] 1. (क) गुरु-परम्परा (ख) अतः वेद, ब्राह्मणों सहित वेद (ब्राह्मण, उपनिषद् तथा आरण्यक सहित)—अधीती चतुर्ष्वाम्नायेषु—मृच्छ० १२०, आम्नायवचनं सत्यमित्यत्र लोकसंग्रहः, आम्नायेभ्यः पुनर्वेदः प्रभृतः सर्वतोमुखः। भट्टा० 2 परम्परा प्राप्त प्रथानल, कुल या राष्ट्रीय प्रथाएँ 3. आदृत सिद्धान्त, 4. परामर्श या विश्वास।

आम्बिकेयः [अम्बिका+ढक्+] धृतराष्ट्र और कार्तिकेय की उपाधि।

आम्बष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) अम्बष्ठ,—कः मछली।

आम्रः [अम्+रन्, दीर्घ] आम का वृक्ष—म्रम् आम का फल। सम०—कूटः एक पहाड़का नाम—मानुमालाम्रकूट—मेघ० १७,—पेशी अमचूर, अमावट, —वनम् आमों का बाग, अमराई—सोहनाम्रवनं छित्त्वा—रामा०।

आम्रातः [आम्रं आम्रवत् अतति—अत्+अच् तारा०] 1 अमरे का पेड़,—तम्—अमरे का फल (अमरा आम जैसा एक बड़ा फल होता है)।

आम्रातकः [आम्रात+कन्] 1 अमरे का वृक्ष 2. अमावट।

आम्रेडनम् [आ+म्रिड्+णिच्+ल्युट्] पुनरुक्ति, शब्द या ध्वनि की आवृत्ति।

आम्रेडितम् [आ+म्रिड्+णिच्+क्त] 1 शब्द या ध्वनि की आवृत्ति 2 (व्या०) द्वित्व होना, (द्वित्व हुए शब्दों में से) दूसरा शब्द।

आम्लः-म्ला [आ सम्यक् अम्लो रसो यस्य—ब० स० स्त्रियां टाप्] इमली का पेड़—म्लम् खटास, अम्लता।

आम्लिः (म्ली) का [आम्ल+कन्+टाप्, इत्वम्, पक्षे पृषो० दीर्घः] 1 इमली का वृक्ष 2. पेट की अम्लता (खटास)।

आय [आ+इ+अच्, अय्+घञ् वा] 1. पहुँचना, आ जाना 2. प्रत्यागम, प्रत्याजन (विप० 'व्यय') 3 आमदनी, राजस्व, प्राप्त द्रव्य—आयेषु स्वामिशब्दो व्यय आय—सिद्धा०, याज्ञ० १।३२२, ३२६, पृष्ठ० २१६,

मनु० ८।४१९, आवाधिकं व्यय करोति—अपनी आमदनी से अधिक खर्च करता है, 4. नफा, लाभ 5 अन्तःपुर का रक्षक। सम०—व्ययौ (द्वि० व०) आय और व्यय।

आयःशूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अयःशूल+ठक्] सक्रिय, परिश्रमी, अथक,—कः जो अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए सबल उपायों का सहारा लेता है (तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको मतः) तु० काव्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छति इति आयःशूलिक।

आयत (भू० क० कृ०) [आ+यम्+क्त] 1. लम्बा —शतमध्यर्धं (योजनम्) आयता महा० 2 विकीर्ण, अतिविस्तृत 3 बड़ा, विस्तृत, गम्भीर 4 खींचा हुआ, आकृष्ट 5 संयत, नियन्त्रित,—तः आयताकार (रेखागणित में)। सम०—अक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी)—ईक्षण,—नेत्र,—लोचन (वि०) बड़ी आंखों वाला,—अयन (वि०) लम्बी कोर की आंखों वाला,—आयति (स्त्री०) दीर्घ निरन्तरता, बहुत देर बाद आने वाला भविष्य—शि० १४।५,—उरुः केले का पौधा (पेड़), —लेख (वि०) दीर्घवक्राकार—कु० १।४७,—स्कुः (पुं०) चारण, भाट।

आयतनम् [आयतन्तेऽत्र आयत्+ल्युट्] 1 स्थान, आवास, घर, विश्रामस्थल (आल० भी)—मूलायतना —मुद्रा० ७, जल्लाद, स्नेहस्तदेकायतन जगाम—कु० ७।५, उसमें केन्द्रित हो गया, रघु० ३।३६, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनम्—का० १०३, (अत) आश्रय, घर 2 यज्ञ अग्नि का स्थान, वेदी 3 पवित्र स्थान, पुण्यभूमि—जैसा कि—देवायतन, महायतनम् आदि में 4 मकान बनाने का स्थान।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+क्तिन्] 1 लम्बाई, विस्तार 2 भावी समय, भविष्यत्, °अर्थः—का० ४०—भूयसी तव यदायतायति शि० १४।५, रहयत्यापदुपेतमायतिम्—कि० २।१४, 3 भावी फल या परिणाम —आयतिं सर्वकार्याणां तदात्वं च विचारयेत्—मनु० ७।१७८, कि० १।१५, २।४३, 4 महिमा, प्रताप 5 हाथ फैलाना, स्वीकार करना, प्राप्त करना 6 कर्म —यथामित्र ध्रुवं लब्ध्वा कृच्छ्रमप्यायतिक्षमम्—मनु० ७।२०८ (कर्मक्षमम्—कुल्लूक) 7 नियन्त्रण, (मन का) निग्रह।

आयत्त (भू० क० कृ०) [आ+यत्+क्त] 1 अधीन, आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० के साथ या समास में)—दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्—केवी० ३।३३, मय्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६, 2 वश्य, विनीत।

आयत्तिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्तिन्] 1 आश्रय, अधीनता 2 स्नेह 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 हद, सीमा 5 युक्ति, उपाय 6 महिमा, प्रताप 7 आचरण की स्थिरता।

आयथातथ्यम् [अयथातथ+ष्यञ्] अयोग्यता, अनुपयुक्तता अनौचित्य—शि० २।५६।

आयतनम् [आ+यम्—ल्युट्] 1 लम्बाई, विस्तार 2 नियन्त्रण, निग्रह 3 (धनुष की भांति) तानना।

आयत्यकः [आयतिम् लोयते अत्र ली+ड (बा०) संज्ञायां कन्] धैर्य का अभाव, प्रबल लालसा।

आयस (वि०) (स्त्री०—सी) [आयसो विकार अण्] लोहे निर्मित, लोहा धातुनिर्मित—आयस दण्डमेव वा—मनु० ८।३१८, सन्ति मा बल्म तदायसी मयङ्गा—भामि० २।५९,—सी कवच, बख्तर,—सम् 1 लोहा, मृद्वङ्गमिवातमानं हैमीभूतमिवायसम्—कु० ६।५५, 2 चुम्बक परस्परासक्तदयस्कान्त इवायसम् रघु० १७।६३, 2 लोहनिर्मित वस्तु 3 हथियार।

आयस्त (भू० क० कृ०) [आ+यस्+क्त] 1 पीड़ित, दुःखी 2 चोट खाया हुआ 3 क्रुद्ध, नाराज 4 लोलुप।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] 1 आना पहुँचना 2 नैसर्गिक मनोभाव, स्वभाव।

आयामः [आ+यम्+घञ्] 1 लम्बाई तिसंगायामशोभी —मेघ० ५७, 2 प्रसार, विस्तार कि० ७।६, 3 फैलाना, विस्तार करना 4 निग्रह, नियन्त्रण, रोकथाम —प्राणायामपरायणा—भग० ४।२९, प्राणायाम पर तप—मनु० २।८३।

आयामवत् (वि०) [आयाम+मतुप्] विस्तारित, लम्बा —विक्रम० १।४, शि० ११।६५।

आयासः [आ+यस्+घञ्] 1 प्रयत्न, प्रयास, कष्ट, कठिनाई, श्रम—बहुलायास—भग० १८।२४, तु० 'अनायास' 2 थकावट, थकन, स्नेहमूलानि दुःखानि देहजानि मयानि च, लोकेऽर्थे तत्रायासः सर्वस्नेहात् प्रवर्तते। महा०।

आयासिन् (वि०) [आ—यस्+णिनि] 1 परिश्रान्त, थका हुआ 2 प्रयास करने वाला, प्रबल उपक्रम करने वाला—मनस्तु तद्भावदर्शनायासि—शि० २।१, ५।१।

आयुक्त (भू० क० कृ०) [आ+युज्+क्त] 1 नियुक्त, कार्यभार-युक्त (सब० या अधि०) भट्टि० ८।११५, 2 संयुक्त, प्राप्त,—क्तः मन्त्री, अभिकर्ता या कर्मिवन्दर।

आयुधः धम् [आ+युध्+घञ्] हथियार, हाथ, शस्त्र (यह तीन प्रकार के हैं—(क) प्रहरणं—असृष्टादिक (ख) हस्तमुक्त—चक्रादिक (ग) यन्त्रमुक्त—बाणादिक,—न मे स्वदर्थेन विसोढमायुधम् रघु० ३।६३। सम०—अ(आ)गारम् शस्त्रागार, हथियार गोदाम —अहमप्यायुधागार प्रविश्यायुधसहायो भवामि—वेणी० १, मनु० ९।२८०,—जीविन् (वि०) अस्त्रास्त्र से जीवन-निर्वाह करने वाला, (—पुं०) योद्धा, सिपाही।

आयुधिक (वि०) [आयुध+ठक्] अस्त्रास्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला—कः सिपाही, सैनिक।

आयुधिन्, आयुधीय (वि०) [आयुध+इनि छ वा] हथियारों को धारण करने वाला, (पु०—यौ)—यीयः, योद्धा।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+मतुप्] 1. जीवित, जीता हुआ 2. दीर्घायु (नाटकों में प्रायः वृद्ध पुरुष छोटे कुल के व्यक्तियों को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं, उदा० एक सारथि राजा को 'आयुष्मन्' कह कर सम्बोधित करता है, ब्राह्मण को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है- तु० मनु० ४।१२५,—आयुष्मान्, भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने)।

आयुष्य (वि०) [आयुस्+यत्] लम्बा जीवन करने वाला, जीवनप्रद, जीवनसंधारक—इदं शरस्यमायुष्यमिदं निःश्रेयसं परम्—मनु० १।१०६, ३।१०६,—ष्यम् जीवन प्रद शक्ति।

आयुस् (नपु०) [आ+इ+उस्] 1 जीवन, जीवनावधि दीर्घमायुः—रघु० ९।६२, शतकेष्वपि दृष्टस्य आयुर्मर्माणि रक्षति हि० २।१६, शतायुर्वै पुरुषः 2 जीवन दायक शक्ति 3 आहार (वाक्य रचना में 'आयुस्' का अन्तिम 'स्' बदलकर अघोष व्यंजनों से पूर्व 'ष्' तथा घोष व्यंजनों से पूर्व 'र्' बन जाता है)। समः—कर (वि०) (स्त्री०—री) दीर्घजीवन करने वाला, - काम (वि०) दीर्घायु या स्वास्थ्य की कामना करने वाला,—द्रव्यम् 1 औषधि 2 घी, - वृद्धि (स्त्री०) लम्बा जीवन दीर्घायु,—वेदः स्वास्थ्य या औषधि-विज्ञान—वेदपुरुषः,—वेदिक, - वेदिन् (वि०) औषध से सम्बन्ध रखने वाला, (-पुं०) वैद्य, डाक्टर,—शेषः जीवन का शेष भाग, °क्षेपतया—पञ्च० १।२, जीवन का ह्रास या अवसान, - स्तोमः (आयुष्टोमः) दीर्घायु पाने के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

आये (अव्य०) [प्रा० स०] स्नेहबोधक सम्बोधनात्मक अव्यय।

आयोग [आ+युज्+घञ्] 1 नियुक्ति 2 क्रिया, कार्यसम्पादन 3 पूर्वोपहार 4 समुद्रतट या नदी किनारा।

आयोगवः [अयोगव+अण्] शूद्र द्वारा वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बढ़ईगिरी है -तु० मनु० १०।४८), - वी इस जाति की स्त्री।

आयोजनम् [आ+युज्+ल्युट्] 1 सम्मिलित होना 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3 प्रयास, प्रयत्न।

आयोधनम् [आ+युध्+ल्युट्] 1 युद्ध, लड़ाई, संग्राम - आयोधने दारुणमाततायि सहाय- रघु० ६।४२, आयोधनाभ्यासरता त्वयि वीर यातें ५।७१, 2 युद्धभूमि।

आरः—रम् [आ+ऋ+कञ्] 1. पीतल 2. अशोधित लोहा 3 कोण, किनारा, - रः 1. मकर ग्रह 2. अग्निग्रह,—रा 1. मोची की रांपी, 2. धातु, शल्य-शलाका। समः—कूटः,—रूप्यं पीतल, उत्तर० ५।१४।

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित,—क्षः, —क्षा 1. प्ररक्षण, परिरक्षण, रक्षक (पहरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मध्यमे स्थितान्—राजा०, शा० ३।५, मनु० ३।२०४ 2. हाथी की झूलवधि, 3 सेना।

आरक्ष (क्षि) क (वि०) [आ+रक्ष्+घञ्, आरक्ष+ठक् वा] 1. पहरेदार, सन्तरी 2. देहाती या पुलिस का थानाधिकारी (सैबिस्ट्रेट)।

आरटः [आ+रट्+अच्] नट, नाटक का पात्र।

आरटिः [आ+ऋ+अनि] भँवर, जलावर्त।

आरण्य (वि०) (स्त्री०—ण्या,—ण्यी) [अरण्य+अण्, स्त्रियां टाप्, ङीप् वा] जंगली, जंगल में उत्पन्न।

आरण्यक (वि०) [अरण्य+वुञ्] वन संबंधी, वन में उत्पन्न, जंगली, जंगल में उत्पन्न,—कः जंगल में रहने वाला, जंगली, वनवासी,—पः-पं. महाभाष्यस्य दशाक्षरस्यैका हि न - श० २।१३,—कम् आरण्यक ग्रंथ, (यह ब्राह्मणग्रंथों से संबद्ध धार्मिक तथा दार्शनिक रचनाओं का एक समुदाय है जो या तो जंगल में रचे गये हैं या वहां उनका अध्ययन किया गया है) —अरण्येऽनूच्यमानत्वात् आरण्यकम्-बृहदा०, अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्।

आरतिः (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] 1 विराम, रोक 2. प्रतिमा के सामने दीप-दान, या कपूर-दीपक घुमाना, आरती उतारना।

आरन्तलम् [आ+रुह्+अच्, नल्+घञ् आरो नालो गवो यस्य ब० स०] सांड, बधिया का पशु।

आरम्भिः (स्त्री०) [आ+रभ्+क्तिन्] आरम्भ, शुरू।

आरभटः [आरभ्+अट] उपक्रमशील या साहसी पुरुष, —टः—टी विदूषक, विदूषक, टी 1. नाट्यकला की शाखा, दे० सा० द० ४२० तथा आगे 2. साहित्य की एक शैली 3 विशेष नृत्यशैली।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ् मुम् च] 1. आरम्भ, शुरू, °उषाः प्रारंभिक दीप्ति —नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छाम् मेघ० ९९, 2. प्रस्तावना 3. कार्य, व्यवसाय, कृत्य, काम—आरभे सदृशारंभः—रघु० १।१५, ७।८१, भट्ट० १२।१६, 4. स्वरा, वेग 5. प्रयास, प्रयत्न—भग०१४।१२, 6. दृश्य, कर्म—चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे—रघु० २।३१, 7. मार डालना, हत्या करना।

आरम्भणम् [आ+रभ्+ल्युट् मुम् च] 1 काम में करना, पकड़ना 2. पकड़ने का स्थान, दस्ता, हाथा।

आरट (रा) कः [आ+ऋ+अप्, घञ् वा] 1 आघात 2. चिल्लाना, गुर्राना ।
आरस्यम् [अरस+ष्यञ्] नीरसता, स्वादहीनता ।
आरा=दे० 'आर' के नीचे ।
आरात् (अव्य०) [आ+रा का० आति- तारा० 'आर' का अपा० ए० व०] 1 निकट, के पास (अपा० के साथ या स्वतन्त्र)–समर्घ्यमाराद्भिवर्तमान–रघु० ३। १०, ५।३ 2 से दूर, (कर्म० के साथ–इन दोनों अर्थों में) शि० ३।३१, दूर, दूरस्थ 3 फासले पर, दूरी से उत्तर० २।२४ ।
आरातिः [आ+रा+क्तिच्] शत्रु ।
आरातीय (वि०) [आरात्+छ] 1 निकट आसन्न 2 दूर का।
आरात्रिकम् [अरात्रावपि निर्वृत्तम् ठञ्] 1 रात के समय भगवान् की मूर्ति के सामने आरती उतारना –सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारान् आरात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् 2 आरती उतारने का दीपक–शिरसि निहित-मार पाशमारात्रिकस्य भ्रमयति मयि भयस्ते कृपार्द्र कटाक्ष–भर्तृ० ।
आराधनम् [आ+राध्+ल्युट्] 1 प्रसन्नता, सन्तोष, सेवा (क्षान्ति)–येषामाराधनाय–उत्तर० १, यदि वा ज्ञानकीमपि आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा–१।१२ 2 सेवा, पूजन उपासना, अर्चना, (देवता की), -आराधनायास्य सर्वीसमेताम्–कु० १।५८, भग० ७।२२ 3 प्रसन्न करने के उपाय इदं तु ते भक्तिनम्र सनामाराधनं वपु –कु० ६।७३ 4 सम्मान करना, आदर करना–उत्तर० ४।१७ 5 पकाना 6 पूर्ति, दायित्व निभाना, निष्पत्ति, -आ सेवा –श्री (देवता की) पूजा, उपासना, अर्चना ।
आराधयितृ (वि०) [आ+राध्+णिच्+तृच्] उपासक, विनम्र सेवक, पूजक ।
आराम [आ+रम्+घञ्] 1 खुशी, प्रसन्नता –इन्द्रियारामआत्मारामा –वेणी० १।३१, एकाराम–याज्ञ० ३।५८ 2 बाग, उद्यान- प्रियारामा हि वैदेहात्सीत् उत्तर० २, आरामाविपतिर्विवेकविकल –मालवि० १।३१
आरामिक [आराम+ठक्] माली ।
आरालिकः [अराल+ठक्] रसोइया ।
आरुः [ऋ+उरु] 1 सूअर 2 केंकड़ा ।
आरुक (वि०) [ऋ+ऊ+णित्] भूरे रंग का ।
आरूढ (भू० क० कृ०) [आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ –आरूढो वृक्षो नवता –सिद्धा०, प्राय कर्तृवाच्य में प्रयुक्त–आरूढमद्रीन्–रघु० ६।७७ ।
आरूढिः (स्त्री०) [आ+रुह्+क्तिन्] चढ़ाव ऊपर उठना, उन्नयन (आल० व भा०)–अत्यारूढिभंवति महता-मर्थपङ्क्तिनिष्ठा–वेणी० ४, ५।१ ।
आरेक [आ+रिच्+घञ्] 1 रिक्त करना, 2. संकुचित करना ।
आरेचित [आ+रिच्+णिच्+क्त] भींची हुई या सिकोड़ी हुई (आँख की भौंहें) ।
आरोग्यम् [अरोग+ष्यञ्] अच्छा स्वास्थ्य ।
आरोप [आ+रुह्+णिच्+घञ्, पुकागम] 1 एक वस्तु के गुणों को दूसरी वस्तु में आरोपित करना– वस्तु-व्यवस्थकारणोऽध्यारोप वे० सू०, गले मढ़ना –दोषारोपा गुणेष्वपि- अमर० 2 मान लेना (जैसा कि 'सारोपा लक्षणा' में) 3 अभ्यारोपण 4 बोझा लादना, दोषारोपण करना, इलजाम लगाना ।
आरोपणम् [आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1. ऊपर रखना या जमाना, रखना आदोक्षतारोपणबन्धभूताम् रघु० ७।२०, कु० ७।२८ (आल) मन्त्रोपन, जमा देना- अधिकारारोपणम्- –मु० ३, 2 दौड़ा लगाना, 3 धनुष पर चिल्ला चढ़ाना ।
आरोह [आ+रुह्+घञ्] 1 चढ़ने वाला, सवार, जैसा कि 'अश्वारोह तथा स्यदनारोह' 2 चढ़ाव, ऊपर जाना, सवारी करना 3 ऊपर उठी हुई जगह उभार, ऊँचाई 4 हेकड़ी, घमंड 5 पहाड़, ढेर 6 स्त्री की छाती, नितम्ब,–मा रामा न वरारोहा उद्भट, आरो-हैर्निबिडबृहन्नितम्बविलसैं –शि० ८।८ 7 लम्बाई, 8 एक प्रकार की माप 9 स्थान ।
आरोहक [आ+रुह्+ण्वुल्] सवार बालक (हाँकने वाला) ।
आरोहणम् [आ+रुह्+ल्युट्] 1 सवार होने, ऊपर चढ़ने या उदय होने की क्रिया–आरोहणार्थं मदयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३९, 2. (घोड़े की) सवारी करना 3 सीढ़ी ।
आर्कि [अर्कस्यापत्यम्–इञ्] अर्क का पुत्र, यम की उपाधि, शनि ग्रह, कर्ण, सुग्रीव, वैवस्वत मनु ।
आर्क्ष (वि०) (स्त्री०–क्षी) [ऋक्ष+अण्] तारकीय, तारों द्वारा व्यवस्थित अथवा तारों से सम्बद्ध ।
आर्घा [आ+अर्घ्+अच्+टाप्] एक प्रकार की पतली मधु-मक्खी ।
आर्घ्यम् [आर्घा+यत्] जंगली शहद ।
आर्घ (वि०) (स्त्री०–र्घी) [अर्घा अस्त्यस्य मत्] अर्घा, पूजा करने वाला, पुण्यात्मा ।
आर्चिक (वि०) (स्त्री०–की) [ऋच्+ठक्] ऋग्वेद संबंधी, या ऋग्वेद की व्याख्या करने वाला,–क: ऋग्वेद का विशेषज्ञ ।
आर्जवम् [ऋजु+अण्] 1 सरलता 2 स्पष्टवादिता, सद्-वृत्ति, ईमानदारी, निष्कपटता, सदाचरण होना–अहिंसा सत्यमार्जवम् –मनु० १०।६३, संजमार्जव-त्व–का० ४५– 3. सादगी, विनम्रता ।

आर्जुनि [अर्जुनस्यापत्यम्—इञ्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।

आर्त (वि०) [ऋ+क्त+तत] 1. कष्ट ग्रस्त, उत्पीड़ित, पीड़ित, प्राय समास में—कामार्त, क्षुधार्त, तृषार्त, आदि 2. बीमार, रोगी—आर्तस्य भषजो यथा—रघु० १।२८, मनु० ४।२३६ 3. दुःखित, कष्टग्रस्त, संकटग्रस्त, अत्याचार-पीड़ित, अभ्युक्त—आर्तत्राणाय व. शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११, रघु० २।२८, ८।३१, १२।१०, १२ । सम०—त्राण,—त्राण, —स्वर दर्दभरी आवाज, —बन्धु,—बान्धव दुःखियों का मित्र।

आर्तव (वि०) (स्त्री०—वी,—वी) [ऋतुरस्य प्राप्त—अण्] 1. ऋतु के अनुरूप ऋतुसम्बन्धी, मौसमी—अभिनवैरिव विभूतिमार्तवीम्—रघु० ८।३६, कु० ४।१८, वसन्त-कालीन—रघु० ९।२८, 2. मासिक स्राव सम्बन्धी, —व अर्थ का अनुप्रास, वर्ष—वी घोड़ी—वम् 1. (स्त्रियों का) मासिक स्राव—गोपनक्षेत्रमनसोरपि विषयमार्तवदर्शने—मनु० ४।४०, ३।४८ 2. मासिक-स्राव के पश्चात् गर्भाधान के लिए उपयुक्त दिन 3. फूल।

आर्तवेयी रजस्वला स्त्री

आर्ति (स्त्री०) [आ+ऋ+क्तिन्] 1 दुःख, कष्ट, व्यथा पीड़ा, क्षति (शारीरिक या मानसिक)—आर्ति न पश्यसि पुरःस्थमस्तदर्थे—विक्रम० २।१६, आर्त्यार्तिप्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम्—मेघ० ५३ 2. मानसिक वेदना, दारुण दुःख—उत्कण्ठार्ति—अमर ३९, 3. बीमारी, रोग 4 मनुष्य की मौत 5 विनाश, विध्वंस।

आर्त्विजीन (वि०)(स्त्री०—नी) [ऋत्विज तत्कर्महेति खञ्] ऋत्विज् के पद के उपयुक्त।

आर्त्विज्यम् [ऋत्विज्+ष्यञ्] ऋत्विज् का पद, मर्यादा।

आर्य (वि०) (स्त्री०—र्या) 1 किसी वस्तु या पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाला 2 अर्थ सम्बन्धी, अर्थान्वित, (विप० शब्द) आर्थी उपमा आदि।

आर्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्थ+ठक्] 1. धार्थक 2. बुद्धिमान् 3 धनवान् 4 तात्पर्यपूर्ण, वास्तविक।

आर्द्र (वि०) [अर्द्+रक् दीर्घश्च] 1. गीला, नमीदार, गीला तन्त्रीमार्द्रा नयनसलिलैः—मेघ० ८०, ४३, 2 अपक्व, हरा, रसीला 3 ताजा, नया—कालीयार्द्रा-पराग—अमर २, कालागरार्द्रपरागम्—माघ० ३। १२, 4 मृदु, कोमल—आर्द्र स्नेह, दया, कृपा इत्यादि कोमल भावों के साथ प्रयुक्त "सिक्त हुआ" "पसीजा हुआ" "पिघला हुआ" अर्थ प्रकट करती है—स्नेहार्द्र-हृदय—दया से पिघले हुए चित्त वाला,—र्द्रा हल्दी। सम०—काण्डम् हरी लकड़ी,—कृत (वि०) गीला हुआ, पिघलाया हुआ—आर्द्रीकृतः शिलानां वाचिन.—श० १,—आर्द्रा गीला आसरक।

आर्द्रकम् [आर्द्रा+कन्] हरा अदरक, गीला अदरक।

आर्द्रयति (ना० धा०—पर०) गीला करना, तर करना —भट्टि० २।९१।

आर्द्र (वि०) [अर्द्+क्त] (वसन्त के आरम्भ में ही प्रफुल्ल) आया। सम०—पालुक (वि०) (स्त्री०—की) (आम० में) आधी पालुओं में काम होने वाला, —(कम्) आर्द्रपालुक का पर्याय रखने वाली विशेषताओं से अलंकृत (विप० शार्दपालुक) —वासिक (वि०) (स्त्री०—की) आधे महीने रहने वाला।

आर्द्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्द्+ठक्] आधे का साझीदार, आधे से अधिक रखने वाला,—क: जो आधी उपज के लिए खेत जोतता है, वैध स्त्री से उत्पन्न सन्तान जिसका पालन-पोषण दाहज के द्वारा होता है, दे० उदाहरण, 'आर्धिक' के नीचे।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्जव, या अर्य के योग्य 2. श्रेष्ठ, आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन, उच्चपदस्थ —अहार्यसत्त्वाभिजनादि मे मनः—श० १।२२, यह शब्द प्राय. नाटकोपयोगी भाषा में सम्मान सूचक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, प्रयोजन की आदरपूर्ण पद्धति है, आर्य सम्माननीय या आदरणीय श्रीमान् जी। आर्ये आदरणीय या सम्माननीय श्रीमती जी। लोगों को सम्बोधित करने के लिए 'आर्य' शब्द के प्रयोग के निम्नांकित नियम हैं—(क) वाक्यी मतीभूतवचाराद्यार्य-मान्यत्व परस्परम् (ख) वयस्यैतुल्यवर्षाभ्यां मध्यैरार्येति भाषणम् (ग) (वयस्यो) अमात्य आर्येति नेतरैः (घ) स्वेच्छया नामभिर्वर्णैश्च आर्येति नेतरैः—मा० द० ४।१, 3 अत्युत्कृष्ट, मनोहर, श्रेष्ठ,—र्यः 1. ईरान के लोग, हिन्दूजाति जो अनार्य, दस्यु तथा दास से भिन्न हैं। 2. जो अपने देश के नियम तथा धर्म के प्रति निष्ठा-वान् है—कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्, तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृत। 3. पहले तीन वर्ण (विप० शूद्र) 4 सम्माननीय या आदरणीय पुरुष प्रतिष्ठित व्यक्ति 5 सत्कुलोत्पन्न पुरुष 6. सच्चरित्र पुरुष 7 स्वामी, मालिक 8 पूज्य, अध्यापक 9. शिव 10. वैश्य 11. श्वसुर (जैसा कि "आर्यपुत्र" में) 12. वृद्धमनुष्य,—र्या 1 पार्वती 2 सासू 3. आदरणीय महिला 4. छन्द, दे० परिशिष्ट। सम०—आवर्त: श्रेष्ठ और उत्तम (आर्य) लोगों का आवास, विशेषत. वह भूमि जो पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैली-हुई है तथा जिसके उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में विन्ध्य पर्वत है—दु० मनु० २।२२, आर्यावर्तात् स पूर्वस्मा-दुदधेरपि पश्चिमात्, तयोरेवान्तरं गिर्यो. (हिमविन्ध्यो:) आर्यावर्तं विदुर्बुधाः। १०।३४ भी—कृत (वि०) 1. श्रेष्ठ पुरुषों से सम्बन्धित, श्रेष्ठ पुरुषों का हित, सभ्य-

नीय व्यक्तियों के पास जिसकी पहुंच अनायास होती है,—तमार्यगृह्य निवृहीतधेनु रघु० २।३३, 2. आदरणीय, भद्र,—देश वह देश जहां आर्य लोग बसे हुए हैं,—पुत्र 1 सम्माननीय व्यक्ति का बेटा 2 आध्यात्मिक गुरु का पुत्र 3 बड़े भाई के पुत्र का सम्मान सूचक पद, पत्नी का पति के लिए तथा सेनापति का राजा के लिए सम्मानसूचक पद 4 श्वसुर का पुत्र अर्थात् पति (प्रत्येक नाटक में, बहुधा संबोधन के रूप में, अन्तिम दो अर्थों के लिए प्रयुक्त), भ्रात (वि०) 1 जहां आर्य लोग बसे हों 2 जहां प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हों,—मिश्र (वि०) आदरणीय, योग्य, पूज्य (—श्रः) सज्जनपुरुष, शीलवाली पुरुष, (ब० व०) 1 योग्य और आदरणीय व्यक्ति, सभ्य या सम्माननीय व्यक्ति—आर्यमिश्रान् विज्ञापयामि—विक्रम० १, 2 श्रद्धेय, मान्यवर (आदरसूचक संबोधन)—मन्त्रार्यमिश्रै प्रथममेव ज्ञापितम्—श० १,—लिपि (पु०) पालकी —वृत्त (वि०) सदाचारी, भद्र—रघु० १४।५५—वेश (वि०) अच्छी वेशभूषा में, आदरणीय वेश धारण किये हुए,—सत्य अत्युत्कृष्ट और अलौकिक सत्य —हूण (वि०) जो श्रेष्ठ व्यक्तियों को धिक्कार हो।

आर्यकः [आर्य+स्वार्थे कन्] 1 सम्माननीय या आदरणीय पुरुष, 2 बाबा, दादा।

आर्यका, आर्यिका [आर्या+कन् ह्रस्व, पक्षे इत्वम्] आदरणीय महिला।

आर्ष (वि०) (स्त्री०—र्षी) [ऋषेरिदम्—अण्] 1 केवल ऋषि द्वारा प्रयुक्त, ऋषिसंबंधी, आर्ष, वैदिक (विप० लौकिक या लोक) —आर्षः प्रयोगः, सर्वत्रौ शाकल्यस्येतावनार्षे—सिद्धा० 2. पवित्र, पावन, अतिमानव, —र्षः विवाह का एक प्रकार, आठप्रकारों में से विवाह का एक भेद जिसमें दुलहिन का पिता वर महोदय से एक या दो जोड़ी गाय प्राप्त करता है—आदायार्षस्तु गोद्वयम्—याज्ञ० १।५९, मनु० ३।१९६, विवाह के आठ प्रकारों के नामों के लिए दे० 'उद्वाह', —र्षम् पावन पाठ, वेद।

आर्षेय्य [ऋषभ+ष्य] बछड़ा जो पर्याप्त बड़ा हो गया हो, काम में लाया जा सके या सांड बनाकर छोड़ा जा सके।

आर्षेय (वि०) (स्त्री०—यी) [ऋषि+ढक्] 1 ऋषि से संबंध रखने वाला 2 योग्य, महानुभाव, आदरणीय।

आर्हत (वि०) (स्त्री०—ती) [अर्हत्+अण्] जैनधर्म के सिद्धान्तों से संबंध रखने वाला,—तः जैन, जैनधर्म का अनुयायी,—तम् जैनधर्म के सिद्धान्त।

आर्हती,—त्वम् [अर्हत्+ष्यञ्, मुम् च] योग्यता।

आल—लम् [आ+अल्+अच्] 1. बड़ों का ढेर, मछली आदि के कांटे, 2. पीला संखिया।

आलकर्दः [अलकर्द+अण्] पलिया सांप।

आलम्बनम् [आ+लम्+ल्युट्] 1 पकड़ना, कब्जा करना 2 छूना 3 मार डालना।

आलम्बः [आ+लम्ब्+घञ्] 1 आश्रय 2 धूनी, टेक (जिसके सहारे मनुष्य खड़ा होकर विश्राम करता है) —नहि पतता नास्त्यालम्बो न वापि निराश्रयम् —भा० ३।२, 3 सहारा, रक्षा—तमालम्बादम्ब स्फुरदलघुमर्मेण सहसा —अम० 4 आशय।

आलम्बनम् [आ+लम्ब्+ल्युट्] 1 आश्रय, 2 सहारा, धूनी, टेक—कि० २।१३, सहारा देते हुए—मेघ० ४, 3 आश्रय, आवास 4 कारण, हेतु 5 (ला० शा० में) जिस पर रस आश्रित रहता है, वह पुरुष या वस्तु जिसके उल्लेख से रस की निष्पत्ति होती है, रस को उत्तेजित करने वाले कारण का रस से नैसर्गिक और अनिवार्य संबंध, रस की निष्पत्ति के कारण (विभाव) के दो भेद हैं—आलंबन और उद्दीपन, उदा० बीभत्स में दुर्गंधयुक्त मांस रस का आलंबन है, तथा दूसरी प्रस्तुत परिस्थितियां जो मांसमय कीड़े आदि की घिनौनी भावनाओं को उत्तेजित करती हैं इसके उद्दीपन हैं, दूसरे रसों के विषय में—दे० सा० द० २१०-२३८।

आलम्बिन् (वि०) [आ+लम्ब्+णिनि] 1 लटकता हुआ, सहारा लेता हुआ, झुकता हुआ 2 सहारा देने वाला, बनाये रखने वाला, थामने वाला 3 पहने हुए।

आलम्भ-आलभ्य [आ+लभ्+घञ्, मुम् च, पक्षे ल्युट्] 1 पकड़ना, कब्जा करना, स्पर्श करना 2 फाड़ना 3 मार डालना (विशेषतः यज्ञ में पशु-बलि देना) अश्वालम्भे, गवालम्भ।

आलय-यम् [आ+ली+अच्] 1 आवास, घर, निवास गृह—न हि दुष्टात्मनामार्या निवसत्यालये चिरम्—रामा०—सर्वाऽऽलयस्थानकृतालयत्वात्—रामा० जो सब स्थान में रहा 2 आश्रय, आसन या ग्रहण—हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १, इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम् आदि।

आलयिन् (वि०) [आलयोऽस्यास्ति—अण्] पास्त्र पुत्रों से संबंध रखने वाला या उनसे संपन्न आलयी विधिमिव सर्वतः प्रसूतम्—उत्तर० १।४०।

आलस्यम् [अलसस्य भावः—ष्यञ्] 1 शीतलता, स्वादहीनता 2 कुण्ठता।

आलवालम् [आलमन्तात् लवं लातीव—आ+ला+क तारा०] (वृक्ष की जड़ के चारों ओर) पानी भरने का स्थान, क्यारी,—°पूरणे निधुवनात्—श० १—विश्वासाय विहगानामालवालाम्बुपायिनम्—रघु० १।५१।

आलस (वि०) (स्त्री०—सी) [आलसति शैथिल्यमाश्रयति —अण्] सुस्त, काहिल, ढीला-ढाला।

आलस्य (वि०) [अलसस्य भावः— ष्यञ्] सुस्त, ढीला-ढाला, काहिल,— स्यम् सुस्ती, शिथिलता, स्मृति का अभाव - शक्तस्य चाप्यनुत्साह कर्मस्वालस्यमुच्यते - मनु, आलस्य (स्मृति का अभाव) ३२ व्यभिचारिभावों में से एक है —उदा० न तथा भूषयत्यङ्गं न तथा भाषते मन्थीम्, जृम्भते मुहुरासीना बाला गर्भभरालसा—मा० द० १८३ ।

आलातम् [अलात+अण्] जलती हुई लकड़ी ।

आलानम् [आ+ला+ल्युट्] 1 वह स्तंभ जिससे हाथी बाँधा जाय, बाँधे जाने वाला खंभा, रस्सा भी जिससे हाथी बाँधा जाता है - अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणमरिन्दम —रघु० १।३१, ४।६९, ८१, आलाने गृह्यते हस्ती -मृच्छ० १।५०, 2 हथकड़ी, बेंड़ 3. जंजीर, रस्सा 4 बाँधना, बाँधना ।

आलानिक (वि०) (स्त्री० - की) [आलान+ठक्] उस खूंटी का काम देने वाली वस्तु जिसके सहारे हाथी बाँधा जाता है, —आलानिक स्थाणुमिव द्विपेन्द्र —रघु० १४।३८ ।

आलाप [आ+लप्+घञ्] 1 बातचीत, भाषण, संभाषण अथ दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते —श० १, 2 कथन, उल्लेख ।

आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] बोलना, बातचीत करना ।

आलाबु-बू (स्त्री०) घीया, बेल कद्दू, कुम्हड़ा । दे० 'अलाबु' ।

आलायवर्तम् [आल पर्याप्तमायवर्त्यते इति—आल+आ+वृत्+णिच्+अच्] कपड़े का बना पर्दा ।

आलि (वि०) [आ—अल्+इन्] 1 निकम्मा, सुस्त 2 ईमानदार— लिः 1 विष्णु 2 मधुमक्खी,- लि, ली (स्त्री०) 1 (किसी स्त्री की) सहेली निवार्यतामालि किमप्ययं बटुः कु० ५।८३,७।६८, अमर २३, 2 पंक्ति, परास, अविच्छिन्न रेखा (नु० आवलि)—नीयन्तामाशु संस्कारलीव रेखे मुनिपरम्परा कु० ६।४९, रघुवंश - अमर ८२, 3 रेखा लकीर 4 पुल 5 पुंश्चली, छाप ।

आलिङ्गनम् [आ+लिङ्ग्+ल्युट्] परिरंभण, गले लगाना, गलबाहीं देना —(स प्राप) आलिङ्गनविधिम् —रघु० १२।६५ ।

आलिङ्गिन् (वि०) [आ+लिङ्ग्+इनि] गलबाहीं देने वाला, (पु०—गी), आलिङ्गय औ के दाने के आकार जैसा बना छोटा ढोल ।

आलिञ्जरः [आलिञ्जर एव स्वार्थे अण्] मिट्टी का बड़ा घड़ा ।

आलिन्द-कः [आलिन्द+अण्, स्वार्थे कन् च] 1 घर के सामने बना चौतरा, चबूतरा 2 सोने के लिए ऊँचा बनाया हुआ स्थान ।

आलिम्पनम् [आ+लिप्+ल्युट्, मुम् च] उपलों के अक्षर पर दीवारों पर सफेदी करना, कर्म लीपना आदि, तु० 'आदीपनम्' ।

आलीढम् [आ+लिह्+क्त] बन्दूक से निशाना लगाते समय दाहिने घुटने को आगे बढ़ा कर और बायें पैर को मोड़ कर बैठना,—अतिष्ठदालीढविशेषशोभिना —रघु० ३।५२, दे० कु० ३।७० पर मल्लि० ।

आलु [आ+लु+डु] 1. उल्लू 2 आलूबुखारा, काला आलूबुखारा,—लु (स्त्री०) घड़ा,—लू (बहु०) लट्ठों को बाँध कर बनाया गया बेड़ा, बन्धाई (दो घड़ों को बाँध कर बनाई गई नौका) ।

आलुञ्चनम् [आ+लुञ्च्+ल्युट्] फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

आलेखनम् [आ+लिख्+ल्युट्] 1 लिखना 2. चित्रण करना 3 खुरचना,—नी कूची, कलम ।

आलेख्यम् [आ+लिख्+ण्यत्] 1 चित्रकारी, चित्र— इति सरम्भिभो वाणीर्बलस्यालेख्यदेवता —शि० २।६७, रघु० ३।१५, 2. लिखना । सम०—कैश बाहरी कपरेखा, चित्रण,—शेष (वि०) चित्र को छोड़ कर जिसका और कुछ शेष न रहा हो अर्थात् मृत, मरा हुआ —आलेख्यप्रेषम्य पितु —रघु० १४।१५,

आलेपः-नम् [आ+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 तेल या उबटन आदि का मलना, लीपना, पोतना 2. लेप ।

आलोक-नम् [आ+लोक्+घञ्, ल्युट् वा] 1 दर्शन करना, देखना 2 दृष्टि, पहुंच, दर्शन—यदालोके सूक्ष्मम् - शा० १।९, कु० ७।२२, ४६ मुख°—विक्रम० ४।२४, 3 दृष्टि-परास—आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा—मेघ० ८५, रघु० ७।५ कु० २।४५, 4 प्रकाश, प्रभा, कान्ति निरालोके लोके—मा० ५।३० ९।३७, 5 भाट, विशेषतः भाट द्वारा उच्चारित स्तुति-शब्द (जैसे 'जय, आलोकय')—यद्यावधीरितालोक - रघु० १७।२७, २१, का० १४ ।

आलोकक (वि०) [आ+लोक्+ण्वुल्] आलोचना करने वाला, देखने वाला,—कम् दर्शन-शक्ति, दृष्टि का कारक ।

आलोकनम्-ना [आ+लोक्+ल्युट्, युच् वा] 1. दर्शन करना, देखना, सर्वेक्षण, समीक्षा 2. विचार करना, विचार-विमर्श ।

आलोडनम्—ना [आ+लुड्+णिच्+ल्युट्] 1 हिलोना हिलाना, क्षुब्ध करना 2 निश्चय करना ।

आलोल (वि०) [आ० स०] 1 कुछ काँपता हुआ, (आँखों को) घुमाता हुआ 2. हिलाया हुआ, विक्षुब्ध—अमर ३, मेघ० ६१ ।

आवलेकः [अवलि+ठक्] भूमिपुत्र, मंगल ग्रह की उपाधि ।

आवन्त्य (वि०) [अवन्ति+ष्यञ्] अवन्ति से आने वाला, या संबन्ध रखने वाला,—त्यः अवन्ती का राजा,

अवन्ती का निवासी, पतित ब्राह्मण की सन्तान --दे० मनु० १०।२१ ।

आवपनम् [आ+वप्+ल्युट्] 1 बोना, फेंकना, बखेरना 2 बीज बोना 3 हजामत करना 4 बर्तन, भर्तवान, पात्र ।

आवरकम् [आ+वृ+ण्वुल्] ढक्कन, पर्दा ।

आवरणम् [आ+वृ+ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना, मूंदना, --सूर्यं अपत्यावरणाय वृष्टे कल्पेन लोकस्य कथ तमिस्रा --रघु० ५।१३, १०।४६, १९।१६, 2 बंद करना, घेरना 3 ढक्कन 4 बाधा 5 बाड़ा, अहाता, चहार-दीवारी --रघु० १६।७, कि० ५।२५, 6 कपड़ा, वस्त्र 7 ढाल । समं०--शक्ति मानसिक अज्ञान (जिससे वास्तविकता पर पर्दा पड़ा रहता है) ।

आवर्त [आ+वृत्+घञ्] 1 चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2 जलावर्त, भंवर - नृप नाभावनमनोज्ञनाभि --रघु० ६।५२, दर्शितावर्तनाभे - - मेघ० १८, आवर्त सखायानाम् - पंच० १।१९१, 3 पर्यालोचन, (मनमें) घुमना 4 बाल के गट्ठे, अयाल 5 घनीभूती (जहां बहुत पुण्य इकट्ठे रहते हों) 6 एक प्रकार का रत्न ।

आवर्तक [आवर्त+कन्] 1 मसे बादल का एक प्रकार --जान वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम् -मेघ० ६, कु० २।५० 2 जलावर्त 3 कान्ति, दमक 4 घुघराले बाल ।

आवर्तनम् [आ+वृत्+ल्युट्] 1 चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2 वलाकार गति, घूर्णन 3 (धातुओं का) पिघलाना, गलाना 4 आवृत्ति करना, दे० विष्णु, भी कुठारी ।

आवलि -ली (स्त्री०) [आ+वल्+इन पक्षे ङीष्] 1 रेखा, पंक्ति, परास - अरावलीम् विक्रम० १।८, इसी प्रकार अलकावली, हारावली आदि 2 सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर ।

आवलित (वि०) [आ+वल्+क्त] जरा सा मुड़ा हुआ ।

आवश्यक (वि०) (स्त्री०--की) [अवश्य+वुञ्] अनिवार्य जरूरी तत्रेश्वरावश्यकस्त्वमी भाषा० २२, --कम् 1 जरूरत, अनिवार्यता, कर्तव्य 2 अनिवार्य फल ।

आवसति (स्त्री०) [प्रा० स०] रात्रि (विश्राम करने का समय), आधीरात ।

आवसथ [आ+वस+अथच्] 1 आवास, आवास-स्थान, घर, निवास- निवसन्नावसथे पुराद्वहि --रघु० ८।१८ 2 विश्राम करने का स्थान, विश्रामस्थल 3 छात्रा-वास, संन्यासाश्रम ।

आवसथ्य (वि०) [आवसथ+ष्यञ्] गृही, घर में विद्यमान, --थ्य (अग्निहोत्र की) पावन अग्नि जो घर में रक्खी जाती है, यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पवित्राग्नियों में से एक, दे० 'पवित्राग्नि,'--थ्य --थ्यम् छात्रावास, संन्यासाश्रम, --थ्यम् घर ।

आवसित (वि०) [आ+अव+सो+क्त] 1 समाप्त, पूर्ण किया गया 2 निर्णीत, निश्चारित, निश्चित, --तम् पका हुआ अनाज (खलिहान से लाया हुआ) ।

आवह (वि०) [आ+वह्+अच्] (समास का अन्तिम पद) उत्पन्न करने वाला, राह दिखाने वाला, देखभाल करने वाला, लाने वाला,--कलेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहम् --रघु० १४।५, इसी प्रकार दुःखावह, भयावह ।

आवाप [आ+वप्+घञ्] 1 बीज बोना 2 बखेरना, फेंकना 3 आलवाल 4 बर्तन, अनाज रखने का मटका 5 एक प्रकार का पेय 6 ककण 7 ऊबड़-खाबड़ भूमि ।

आवापक [आवाप+कन्] ककण ।

आवापनम् [आ+वप्+णिच्+ल्युट्] क्यारी, बगीची ।

आवालम् [आ+वल्+णिच्+अच्] थावला, आलवाल ।

आवास [आ+वस्+घञ्] 1 घर, निवास 2 शरण-स्थान, मकान आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि --रघु० २।१७ ।

आवाहनम् [आ+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 बुलवाना, निमन्त्रण भेजना 2 देवता का (यज्ञ में उपस्थित होने के लिए) आवाहन करना (विप० विसर्जन) 3 अग्नि में आहुति डालना पंच० १।२५१ ।

आविक (वि०) (स्त्री० की) [अवि+ठक्] 1. भेड़ से संबंध रखने वाला --आविकं क्षौमम् मनु० ५।१८, २।४१ 2 ऊनी --कम् ऊनी कपड़ा ।

आविल (वि०) [आ+विल्+क] टुच्चा, कष्टग्रस्त ।

आविद्ध (भू० क० कृ०) [आ+व्यध्+क्त] 1 बिधा हुआ छेदा हुआ 2 पड़ा हुआ देखा 3 बलपूर्वक फेंका हुआ गति दिया हुआ ।

आविर्भाव [आविस्+भू+घञ्] 1 अभिव्यक्ति, उपस्थिति, प्रकट होना 2 अवतार ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति विल्+क नि०] 1 पंकिल, मैला, गंदला पङ्कविच्छिद्य फलस्येव निष्पेषाविलं पयः मालवि० २।८, सम्भावविलाभ्यः परिखाद्भिरेव --रघु० १३।३६ 2 अपवित्र, दूषित (आलं० भी) --स्वदोषैरविलैरात्मा - कु० ५।५७, 3 काले रंग का, हलके काले रंग का 4 धूमला, निष्प्रभ --आविलो मृगलक्ष्मा रघु० ८।४२ ।

आविलयति (ना० धा० पर०) गंदला करना, कलंक लगाना ।

आविष्करणम्, आविष्कारः [आविस्+कृ+ल्युट्+घञ् वा] अभिव्यक्ति, दर्शन देना, प्रकट करना--अभूदा गर्भेषु दोषाविष्करणम् -अमर० ।

आविष्ट (भू० क० कृ०) [आ+विश्+क्त] 1 प्रविष्ट 2 (भूत प्रेतादिक से) ग्रस्त 3. भरपूर, भरा हुआ, घनीभूत,

कार् गाया हुआ, भय° क्रोध° 4 निमग्न, लीन अधिकार में किया हुआ, जुटा हुआ।

आविस् (अव्य०) [आ+अव्+इस्] निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय— 'आखों के सामने' 'खले रूप में' 'प्रकटतः' (प्रायः यह अव्यय अस्, भू और कृ धातु से पूर्व लगता है)—आचार्यक विजयि मान्मथमाविरासीत् —मा० १।२६, (यानि) आविष्कृतानाभरणपुरस्सर एकतोऽर्क —श० ४।१, तेषामाविरभूद्ब्रह्मा—कु० २।२ रघु० ९।५५।

आवीतम् [आ+व्ये+क्त] यज्ञोपवीत (चाहे किसी प्रकार सव्य, अपसव्य पहना हुआ हो)।

आवुक (नाटचशालीय भाषा में) पिता।

आवुत्तः [आप्+क्विप्, आपमुत्तनोति इति उद्+तन्+ड] बहनोई, बीजा,—उत्तर० १, श० ६।

आवृत् (स्त्री०) [आ+वृत्+क्विप्] 1 मुड़ती हुई, प्रविष्ट होती हुई 2 क्रम, आनुपूर्व्य, पद्धति, रीति - अनर्थेवावृता कार्यं पिण्डनिर्वपणं सुतैः - मनु० ३।१४८ याज्ञ० ३।२, 3 रास्ते का मोड़, मार्ग, दिशा 4 शुद्धीकरण संबंधी संस्कार- मनु० २।६६।

आवृत (भू० क० कृ०) [आ+वृत्+क्त] 1 मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, लौटा हुआ 2 दोहराया हुआ, - द्विरावृता दश द्विदशाः - सिद्धा० 3 याद किया हुआ, अध्ययन किया हुआ।

आवृत्ति (स्त्री०) [आ+वृत्+क्तिन्] 1 मुड़ना, लौटना, वापिस आना, - तपोवनावृत्तिपथम् रघु० २।१८, भग० १।२३, 2 प्रत्यावर्तन, प्रतिनिवर्तन 3 चक्कर खाना, चारों ओर आना 4 (सूर्य का) उसी स्थान पर फिर लौटना - उदगावृत्तिपथेन नारद - रघु० ८।३३, 5. जन्म-मरण का बार २ होना, सांसारिक जीवन,—अनावृत्तिभयम् कु० ६।७७ 6 आवृत्ति, दोहराना, संस्करण (आह्निक प्रयोग), 7 दोहराया हुआ पाठ, अध्ययन—आवृत्तिः सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी उद्भट०।

आवृष्टि (स्त्री०) [आ+वृष्+क्तिन्] बरसना, वारिश की बौछार।

आवेग [आ+विज्+घञ्] 1. बेचैनी, चिन्ता, उत्तेजना, विक्षोभ, घबड़ाहट अलमावेगेन श० ३, अमरु ८३ 2 उतावली, हड़बड़ी 3 क्षोभ—(३३ व्यभिचारि-भावों में से एक समझा जाता है)।

आवेदनम् [आ+विद्+णिच्+ल्युट्] 1 समाचार देना, सूचना देना 2 अभ्यावेदन 3 अभियोग का दर्शन (विधि० में) 4. अभिस्वीकार, अर्जीदावा।

आवेश [आ+विश्+घञ्] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेश 2. अधिकार में करना, प्रभाव, अभ्यास, स्वयं अभिमान का अभाव—रघु० ५।१९ 3. एकनिष्ठता, किसी पदार्थ के प्रति अनुरक्ति 4. चमड़, हेकड़ी 5 हड़बड़ी, क्षोभ, क्रोध, प्रकोप 6. आसुरी मूतबाधा 7. लकवे की बेहोशी या मिरगी की मूर्छा।

आवेशनम् [आ+विश्+ल्युट्] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेश 2 आसुरी प्रेतबाधा 3 प्रकोप, क्रोध, प्रचण्डता 4. निर्माणी, कारखाना—मनु० ९।२६५, ९ घर।

आवेशिक (वि०) (स्त्री०—की) 1 विशिष्ट, निजी 2. अन्तर्हित- के अतिरिक्त, दर्शक।

आवेष्टक [आ+वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्] दीवार, बाड़, अहाता।

आवेष्टनम् [आ+वेष्ट्+णिच्+ल्युट्] 1 लपेटना, बाँधना, बाँधना 2. ढकना, लिफ़ाफ़ा 3 दीवार, बाड़, अहाता।

आश (वि०) [अश्+अण्] खानेवाला, भोक्ता (बहुधा समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है) उदा० हुताश, आश्रयाश,—के [अश्+घञ्] खाना (जैसा कि 'प्रातराश' में)।

आशंसनम् [आ+शंस्+ल्युट्] 1 प्रत्याशा, इच्छा- इष्टाशंसनमाशीः—सिद्धा० 2. कहना, घोषणा करना।

आशंसा [आ+शंस्+अ] 1 इच्छा, अभिलाष, आशा - निदधे विजयाशंसा बाणे क्षीता च लक्ष्मणे— रघु० १२।४४, भट्टि० १९।५, 2 मानना, घोषणा 3 कल्पना - आशंसापरिकल्पितास्वपि भवत्यानन्दसान्द्रो लयः - मा० ५।७।

आशंसु (वि०) [आ+शंस्+उ] इच्छुक, आशावान्।

आशङ्का [आ+शङ्क्+अ] 1 भय, भय की सम्भावना, - तप्टाशङ्काहरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१६, आशङ्कया मुक्तम् - भर्तृ० ३।५, 2. सन्देह, अनिश्चयात्मकता, —इत्याशङ्कापराधाहं— मदाचर 3. अविश्वास, शक।

आशङ्कित (भू० क० कृ०) [आ+शङ्क्+क्त] 1. भीत, डरा हुआ,—तम् 1 भय, 2 सन्देह 3 अनिश्चयात्मकता।

आशय [आ+शी+अच्] 1 शयनकक्ष, विश्रामस्थल, शरणागार 2 निवास-स्थान, आवास, आसन, आश्रय-स्थान - वायुर्गन्धाशियाशयात्— भग० १५।८, अपृथक्° —उत्तर० १।४५, 3 पात्र, आधार— विषमोऽपि विगाह्यते नयं कृततीर्थं पयसामिवाशयम् —कि० २।३, तु० जलाशय, आमाशय, रक्ताशय आदि 4. पेट 5. अर्थ, इरादा, प्रयोजन, भाव— इत्याशयः, एवं कवेराशयः (टीकाकारों के द्वारा बहुधा प्रयुक्त दे० 'अभिप्राय') 6. भावनाओं का स्थान, मन, हृदय— अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः —भग० १०।२०, महावी० २।३७, 7. सम्पन्नता 8. कोठार 9. मन, इच्छा 10. भाग्य, किस्मत 11. (जानवरों को पकड़ने के लिए बनाया गया) गर्त— आस्ते परबलक्षपतो गुप्तं सिंह इवाशये—महा०। सम०—आश्रित वृत्ति।

आशार [आ+शृ+अच्] 1. अग्नि 2. असुर, राक्षस 3 वायु।

आशासवम् [आशोर्भाव – अण्] 1 वेग फुर्ती 2 सीधी हुई शराब, अरिष्ट (अधिकतर 'आसव' लिखा जाता है)।

आशा [आ+अश्+अच्] 1 (क) उम्मीद, प्रत्याशा, भविष्य—तामाशां च सुरद्विषाम्—रघु० १२।९६, आशा हि परम दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्—सुभाष०, स्वमांसैर्मोदाशैः 2 मिथ्या आशा या प्रत्याशा 3 स्थान, प्रदेश, दिग्देश, दिशा—अगस्त्याचरितामाशामनाशास्यजयो ययौ—रघु० ४।४४, कि० ७।९। सम० —अन्वित,—आतत (वि०) आशावान्, आशा बढ़ाने वाला,—गज दिग्गज दे० 'अष्टदिग्गज',—तन्तु आशा की डोर, क्षीण आशा—मा० ४।३, ९।२६—पाल दिक्पाल दे० 'अष्टदिक्पाल',—पिशाचिका आशा की काल्पना-सृष्टि,—भङ्ग 1. आशा का बन्धन, विश्वास, भरोसा, प्रत्याशा—गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्ध साहयति—मा० ४।१५, मेघ० १०, 2 तमलकी 3 मकड़ी का जाला,—भंग निराशा, नाउम्मीद,—हीन (वि०) निराश, हताश।

आशाख दे० 'अ(आ)षाढ'।

आशास्य (स० कृ०) [आ+शास्+ण्यत्] 1 वरदान द्वारा प्राप्य 2 अभिलषणीय, वाञ्छनीय—रघु० ४।४४, —स्यम् वाञ्छनीय पदार्थ, चाह, इच्छा,—मालवि० ५।२०, 3 आशीर्वाद, मंगलाचरण—आशास्यमन्यत्पुनरुक्तभूतम्—रघु० ५।३४।

आशिक्षित (वि०) [आ+शिक्ष्+क्त] अनकार (आभूषणों की) कु० ३।२६।

आशित (वि०) [आ+अश्+क्त] 1 भुक्त, खाया हुआ 2. खाकर तृप्त,—तम् भोजन करना।

आशितङ्भावीन (वि०) [आशिता अशनेन तृप्ता गावो यत्र, —खञ्, निपातनात् मुम्] पहले पशुओं द्वारा चरा हुआ।

आशितंभव (वि०) [आशित+भू+खच्, मुम्] तृप्त होने वाला, संतृप्त होने वाला (भोजन के रूप में)—वम् 1. आहार, भोज्य पदार्थ 2 अघाना, तृप्ति (पु० भी)—फलैर्येऽप्याशितंभवम्—भट्टि० ४।११।

आशितर (वि०) [आ+अश्+इतरच्] भोजनभट्ट,—र 1 अग्नि 2 सूर्य 3 राक्षस।

आशिस् (स्त्री०) (°शी., °शीर्भ्याम्-आदि) [आ+शास्+क्विप्, इत्वम्] 1 आशीर्वाद, मंगलकामना (परिभाषा—वात्सल्याद्यत्र मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते, इष्टाशंसात्मकं वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता।) 'आशिस्' और 'वर' भिन्नार्थक शब्द हैं, आशीर्वाद तो केवलमात्र किसी की मंगलकामना या सद्भावना की अभिव्यक्ति है—वह चाहे पूरी हो या न हो, इसके विपरीत 'वर' शब्द की भावना अधिक स्थायी और पूर्णता की निष्कामक है- तुल०—वर देव नाशी—शि० ४, आशिषो गुरुजनविदीर्णा वरतामापद्यन्ते—का० २९१, अमोघा प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः—रघु० १।४४, जयाशी - कु० ७।४७, 2 प्रार्थना, चाह, इच्छा-कु० ५।७६, भग० ४।२१, 3 साप का विषैला दांत (तु० 'आशीविष')। सम० दाह,- वचनम् (आशीर्वाद आदि), आशीर्वाद, मंगलाचरण, किसी प्रार्थना या सद्भावना की अभिव्यक्ति—आशीर्वचनमयुक्तं निम्नं यस्मात् प्रकुर्वते—सा० द० ६, मनु० २।३३, विष (आशीविष) साँप।

आशी [आशीर्यते अनया आ+शृ+क्विप् पृषो०,] 1 साँप का विषैला दांत, 2 एक प्रकार का सर्पविष 3 आशीर्वाद, मंगलाचरण। सम० विष 1 साँप, —गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः - रघु० ३।५७, 2 एक विशेष प्रकार का साँप—कर्णाशीविषभोगिनि प्रणयिनि—वेणी० ६।१।

आशु (वि०) [अश्+उण्] तेज, फुर्तीला, -शुः,-शु (नपुं०) बादल (जो बरसात में ही शीघ्रतापूर्वक एक जाते हैं) -शु (अव्य०) तेजी से, जल्दी से, तुरन्त, सीधा —वत्स भानोरस्यशाशु—मेघ० ३९।२२। सम०—कारिन्, —कृत् (वि०) जल्दी करने वाला, झटपट, फुर्तीला —कोपिन् (वि०) गुस्सैला, चिड़चिड़ा, ग (वि०) फुर्तीला, तेज (—गः) 1 वायु 2 सूर्य 3 साँप पयोऽनास्वादितपूर्वमाशुग - रघु० ३।५४, ११।८२, १२।९१ —तोष (वि०) अनायास प्रसन्न होने वाला (—षः) शिव की उपाधि,- व्रीहि वह धान जो दो एक माह में पक जाने वाले जावल।

आशुशुक्षणि [आ+शुष्+सन्+अनि] 1 वायु, हवा 2 अग्नि मन्त्रपूतानि हवींषि प्रतिगृह्णन्त्यनग्नौ ब्राह्मणा इव आशुशुक्षणि - भट्टि० ४४।

आशोकुटिम् (पुं०) [आशेते अस्मिन् इति—आ+शी+विच् स इव कुटति इति णिनि] पहाड़।

आशोधनम् [आ+शुध्+णिच्+ल्युट्] मुआवजा।

आशौचम् [अशौच+अण्] अपवित्रता दे० 'अशौच' दशाहं शावमाशौचं सांवत्सरिकमेव च। प्राजापत्यं तु त्रिरात्रं स्यादाशौचं ब्राह्मणस्य विधीयते मनु० ५।५९, ६१, ६२, याज्ञ० ३।१८

आश्चर्य (वि०) [आ+चर्+यत् मुट्] चमत्कारपूर्ण, विलक्षण, असाधारण, आश्चर्यजनक, अद्भुत—आश्चर्यो गवां दोहोऽयोपेन - सिद्धा०, तदत्र बत्पुः पुरुषमाश्चर्यमेधा—रघु० १६।८७ आश्चर्यदर्शनो मनुष्यलोक —श० ७,- र्यम् 1 अचम्भा, चमत्कार, कौतुक —किमाश्चर्यं शारदेयो प्रणदा यमद्दलिका - उद्भट, कर्मश्चर्याणि - उत्तर० १—आश्चर्यजनक काम—भग० ११।६, २।२९ 2 अचरज, विस्मय, अचम्भा 3

(विस्मयादि द्योतक अव्य० के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य (कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है)—आश्चर्यं परिपोषितोऽप्रियमसे यच्चातकस्तृष्णया—भर्तृ० २।४।

आश्रवः (स्रवः) तलम् [आ+स्रु (स्रव्) त्+ल्युट्] 1 सिंचन, छिड़काव 2 पलकों के दो चुपड़ना।

आश्मन (वि०) (स्त्री०-नी) [अश्मन्+अण्] पत्थर का बना हुआ, पथरीला।

आश्मनक (वि०) (स्त्री०-की) [अश्मना विकार—अण्] पथरीला, पत्थर का बना हुआ,—क. 1 पत्थर की बनी कोई वस्तु 2 सूर्य का सारथि अरुण।

आश्मिक (वि०) (स्त्री०-की) [अश्मन्+ठण्] 1 पत्थर का बना हुआ 2 पत्थर ढोने वाला।

आश्यान (भू० क० कृ०) [आ+श्यै+क्त] 1. जमा हुआ, सघनित—कि० १६।१०, 2 कुछ सूखा—पश्चाच्छ्यानकर्दमान्—रघु० ४।२६, कु० ७।९, धूएँ के सहारे सुखाये हुए (जैसे बाल)—रघु० १७।२२।

आश्यानम् [आ+श्यै+णिच्+ल्युट्] पकाना, उबालना।

आश्रव [अश्नुते—स्वार्थेऽण्] आँसू।

आश्रम—श्रमः [आ+श्रम्+घञ्] 1 पर्णशाला, कुटिया, कुटी, झोंपड़ी, सन्यासियों का आवास या कक्ष 2 अवस्था, सन्यासियों का धर्मसंघ, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा सन्यास), क्षत्रिय (और वैश्य) भी पहले तीन आश्रमों में पदार्पण कर सकते हैं, तु० शा० ७।२०, विक्रम० ५, कुछ लोगों के विचारानुसार वह चौथे आश्रम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०—स किलाश्रममन्त्यमाश्रित.—रघु० ८।१४)3 महाविद्यालय, विद्यालय 4 जंगल, झाड़ी (जहाँ सन्यासी लोग तपस्या करते हैं)। सम० गुरु धर्मसंघ के प्रधान, प्रशिक्षक, आचार्य,—धर्मः 1 जीवन के प्रत्येक आश्रम के विशिष्ट कर्तव्य 2 वानप्रस्थी के कर्तव्य—य इमामाश्रमधर्मं निषेवते—शा० १, —पदम्,—मण्डलम्,—स्थानम् सन्यासाश्रम (आस-पास की भूमि समेत), तपोवन—शान्तमिदमाश्रमपदम्—श० १।१६—भ्रष्ट (वि०) धर्मसंघ से बहिष्कृत, स्वधर्मच्युत,—वासिन्, आलयः, —स्थ (पु०) सन्यासी, वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) [आश्रम+ठन्, इनि वा] धार्मिक जीवन के चार काल या पदों में किसी एक से सम्बन्ध रखने वाला।

आश्रयः [आ+श्रि+अच्] 1 विश्रामस्थल, सदन, अधिष्ठान—सौहृदादुपगतोऽयमाश्रमम्—उत्तर० १।४५, ५।१, 2. जिसके ऊपर कोई वस्तु आश्रित रहती है 3 ग्रहण करने वाला, भाजन—तमाश्रयं दुष्प्रसहस्य तेजसः—रघु० ३।५८ 4 (क) शरणस्थान, शरणगृह—भर्ता मे ह्याश्रयः स्त्रीणाम्—वेता०, तवहमाश्रयोन्मूलनेनैव स्वामकार्यं करोमि—मुद्रा० २, (ख) आवास, घर 5. सहारा लेने वाला (प्रायः समास में) 6. निर्भर करना (प्रायः समास में) 7 पालक, प्रतिपोषक—विनाश्रयं न तिष्ठन्ति पण्डिता वनिता लताः—उद्भट 8 चुनी, स्तम्भ—रघु० १।६० 9. तरकश—बाणसाश्रयमुद्वहन् रघु० ११।२९ 10 अधिकार, समोदन, प्रमाण, अधिकार पत्र 11 मेलजोल, संसर्ग, साहचर्य 12 दूसरे का सहारा लेने वाला, छः गुणों में से एक। सम०—असिद्धः,—सिद्धिः (स्त्री०) हेत्वाभास का एक प्रकार, असिद्ध के तीन उपभागों में से एक,—आश्रः,—भुज् (वि०) सपर्क में आने वाली वस्तुओं का उपभोग करने वाला (—क्षः,—क्) अग्नि, —दुर्लभं किमपि धूर्तं श्रीमानात्मविबुद्धये, कि नाम कलसंसर्गः कुरुते नाश्रयाश्रयम्—उद्भट,—लिंगम् विशेषण (अपने विशेष्य के अनुरूप अपना लिंग रखने वाला शब्द)।

आश्रयणम् [आ+श्रि+ल्युट्] 1. दूसरे के संरक्षण में रहना, शरण लेना 2 स्वीकार करना, छोड़ना 3. शरण, शरणस्थान।

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय+इनि] 1. सहारा लेने वाला, निर्भर करने वाला 2 सबद्ध, विषयक—विक्रम० ३।१०।

आश्रव (वि०) [आ+श्रु+अच्] आज्ञाकारी, आज्ञापालक—मित्रजामलाश्रव—रघु० १९।४९, शि० ३।८४, —क. 1 नदी, दरिया 2 प्रतिज्ञा, वादा 3 बोध, अतिक्रमण—दे० 'आश्रव' भी।

आश्रिः (स्त्री०) [आ० स०] तलवार की धार।

आश्रित (भू० क० कृ०) [आ+श्रि+क्त] (कर्म० के साथ कर्तृवाच्य में प्रयुक्त) 1. सहारा लेते हुए—कृष्णाश्रित =कृष्णमाश्रित—सिद्धा० 2 रहने वाला, वास करने वाला, किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3 काम में लाने वाला, सेवा में रखने वाला 4 अनुसरण करने वाला, अभ्यास करने वाला, पालन करने वाला—कु० ६।६, भट्टि० ७।४२, 5 निर्भर करने वाला 6. (कर्मवाच्य के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ, बसा हुआ,—तः पराधीन, सेवक, अनुचर, —अस्मदाश्रितानाम्—हि० १, प्रभुणा प्रायशस्ते गौरवमाश्रितेषु कु० ३।१।

आश्रुत (भू० क० कृ०) [आ+श्रु+क्त] 1. सुना हुआ, 2. प्रतिज्ञात, सहमत, स्वीकृत,—तम् पुकार जो दूसरा सुन सके।

आश्रुतिः (स्त्री०) [आ+श्रु+क्तिन्] 1 सुनना 2. स्वीकार करना।

आश्लेषः [आ+श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, परिरंभण. कोला-कोली — आश्लेषक्लेशभुग्नपरुषपृथुलस्तनकार्कश्यलाभिन्नौ

—शि० २।१७, अमरु, १५।७२, ९४, कण्ठाश्लेष-प्रणमिनि जने—मेघ० ३।१०६, 2. सपर्क, घनिष्ट सबध, सगम, -आ ९वां नक्षत्र।

आश्व (वि०) (स्त्री०—श्वी) [अश्व+अण्] घोडे से सम्बन्ध रखने वाला, घोडे के पास से आने वाला, —श्वम् घोडों का समूह।

आश्वत्थ (वि०) (स्त्री० त्थी) [अश्वत्थ+अण्] पीपल के वृक्ष से सबध रखने वाला, या पीपल से बना हुआ,—त्थम् पीपल का फल, बरबटे।

आश्वयुज (वि०) (स्त्री०—जी) [अश्वयुज्+अण्] आश्विन मास से सबध रखने वाला, जो आश्विन मास—मनु० ६।१५,—जी आश्विन की पूर्णिमा का दिन।

आश्वलक्षणिक [अश्वलक्षण+ठक्] भलाचारी, अश्व-चिकित्सक, साइस, (घोडे की देखभाल करने वाला)।

आश्वास [आ—श्वस्+घञ्] 1 साम लेना मुक्त श्वास लेना, चेतना लाभ 2 तसल्ली, प्रोत्साहन 3 रक्षा और सुरक्षा की गारण्टी 4 रोकथाम 5 किसी पुस्तक का पाठ या अनुभाग।

आश्वासनम् [आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] प्रोत्साहन, दिलासा, तसल्ली तदिदं द्वितीयं हृदयाश्वासनम्—श० ७।

आश्विक [अश्व+ठक्] घुडसवार।

आश्विन [अश्वि—तेन तत्र अण्] मास का नाम (जिसमें चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र के निकट होता है)

आश्विनेयौ (द्वि० व०) [अश्विनी+ढक्] 1 दो अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) 2 नकुल और सहदेव के नाम, पाँच पाडवों में से अन्तिम दो।

आश्विन (वि०) (स्त्री० नी) घोडे द्वारा व्याप्त (यात्रा आदि) नाप्पा सिद्धा०।

आषाढ [आषाढी पूर्णिमा अस्मिन्मासे अण्] 1 हिन्दुओं का एक महीना (जून और जुलाई में आने वाला), —आषाढस्य प्रथमदिवसे—मेघ० २, शैते विष्णु सदाषाढे कार्तिके प्रतिबोधिते वि० पु० 2 ढाक की लकडी का दण्ड जिसे सन्यासी धारण करते हैं अथाजिनाषाढधर प्रगल्भवाक् कु० ६।३०, द्वौ २०वां या २१ वां नक्षत्र पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढ, द्वौ आषाढ मास की पूर्णिमा।

आषाढ [आषाढी—ढक्] आठवां भाग।

आस् आ (अव्य०) निम्नांकित अर्थों का प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय (क) प्रत्यास्मरण —आ उपनयनु भवान् भजंपत्रम्—विक्रम० २ (ख) क्रोध आ कथमप्यपि स्मरयत्यास उत्तर० १—आ पापे निष्ठ निष्ठ—मा० ८ (ग) पीडा आ दौर्मन्त्र्य —काव्य १० (घ) अपाकरण (सयोग विरोध) —आ क एष मयि स्थिते—मुद्रा० १—आ कृपा-मयलपाठक—वेणी० १ (ङ) शोक, खेद—विश्रामा-तरमा प्रदर्श्य नृपसूनु भिक्षामहे निस्पृहा—उद्भट।

आस् (अदा० आ०) (आस्ते आसित) 1 बैठना, लेटना, आराम करना—एतदासनमास्यताम् विक्रम० ५ आस्थतामिनिदोनत मन्त्रमीतामिमुख गुरो—मनु० २।१९३ 2 रहना वास करना तावन्नपाख्यासते देव-लोके—महा०, यत्रास्मै रोचते तत्रायमास्ताम् का० १०६ कुरुष्वास्ते सिद्धा० 3 चुपचाप बैठे रहना, सक्रियापूर्ण व्यवहार न करना, बेकार बैठना आसीन स्वामन्धोपयति वृषम् शि० २।५७ 4 होना, अस्तित्व या विद्यमानता होना, 5 स्थिर होना, रुकना होना —जगत्ति यस्या सविकाशमासन—शि० १।२३ 6 मानना, टिके रहना, किसी अवस्था में ठहरना या निरन्तर रहना (अनवरत या निर्बाध क्रिया को प्रकट करने के लिए बहुधा वर्तमान कालिक कृदन्त प्रत्ययों के साथ इस धातु का प्रयोग होता है—विदाम्यलोगजंदधास्ते पच० १ खाता रहा और गरजता रहा 7 परिणत होना परिणाम होना (सम्प्र० के साथ) आस्मा मानसमुदये सुकृतिना नाभिनंदोदेव ब शि० १।२१२ 8 जाने देना, एक ओर कर देना या रख देना,—आस्मा तावत् रहने दो जाने दो, प्रेर० बिठाना, बिठला-वाना, स्थिर करना आसयत्सलिले पृथ्वीम् सिद्धा०, अधि लेटना, बसना, अधिकार करना, प्रविष्ट होना (स्थान में कर्म० के साथ) निदिष्टा कुलपतिना स पणशालामध्यास्य-रघु० १।९५, २।१३ ४।७६, ९।१०, भगवत्या प्राग्निवेशमध्यासितव्यम्—मालवि० १ अनु 1 निकट बैठाया जाना 2 सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना-सदोभ्यासनस्थस्य श० ७, अन्वासितमरुन्मरुद्भ्या रघु० १।५६ 3 करना देना —नामन्वास्य—रघु० ८।२४ उप उदासीन या बेलाग होना निश्चिन्त या निश्चेष्ट होना, निष्क्रिय या अकर्मण्य होना—तत्किमित्युदासते भवन्तः मा० १ विधाय वैर सामर्षे नरपतौ य उदासते शि० २।७२, भग० ९।९, मुद्रा० १, उप 1 सेवा में प्रस्तुत होना, सेवा करना, पूजा करना अभ्युपासीत सदयाम् अस्व० १२, उद्यानपालसामान्यमनवस्तुपासते कु० २।३६ 2 उपागमन करना या आना उपासर्पद्भिरुद्भु देवगन्धर्वकिन्नरा-भट्टि० ५।१०३, ७।८९, 3 भोग लेना, (पुण्य कृत्यों का) अनुष्ठान करना 4 (समय) बिताना उपास्य रात्रिशेष तु-रामा० 5 भागना, होना अरे ते पाशुपुत्राणा मकरणा क्लेश-मुपासिन् महा०, मनु० ११।१८४ 6 आश्रय लेना, काम में लगाना, प्रयोग करना लक्षणोपास्यते यत्र कृते—मा० द० २, 7 धनुर्विद्या का अभ्यास करना 8

आशा करना, प्रतीक्षा करना, पर्युप— 1. उपासना करना, पूजा करना, अर्चना करना—पर्युपास्यन्त लक्ष्म्या —रघु० १०।६२, कु० २।३८, मनु० ७।३७, 2 (रक्षा के लिए) पहुँचना, शरण लेना, या संरक्षण में आना —अजक्ता एव सर्वत्र नरेन्द्र पर्युपासते—पञ्च० १।२४१, 3. घेरना, घेरा डालना 4 भाग लेना. हिस्सा लेना 5. आश्रय लेना, सम्— 1. बैठ जाना प्रत्युवाच समासीन धर्मिष्ठम् रामा० 2 मिल कर बैठना, समुप 1 सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, पूजा करना, सेवा करना— समुपास्यत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रिय श्रिय —रघु० ८।१४, 2 अनुष्ठान करना —ते त्रय मध्या समुपाश्रित— रामा०।

आस [आस्+घञ्] 1 आसन 2 धनुष (—सम्, भी) न सामि मा मुमू. साम - कि० १५।५।

आसक्त (भू० क० कृ०) [आ—सञ्ज्—क्त] 1 अत्यनुरक्त, कृतसकल्प, जुटा हुआ, लगा हुआ (प्राय अधि० के साथ या समास में) 2 स्थिर, टिका हुआ शिखरासक्तनेत्रा - कु० ६।४०, 3 निरन्तर, अनवरत, अहरन। सम०- चित्त,—बोधस्, —मानस् एकनिष्ठ, एकाग्र।

आसक्ति (स्त्री०) [आ + सञ्ज्+क्तिन्] 1 अनुराग, भक्ति, लगाव- वालिदाहारितेष्वासक्ति - का० १२०, 2 उत्सुकता, लगाव।

आसङ्ग [आ - सज्+घञ्] 1 अनुराग, भक्ति —मुक्ताासङ्गलुब्ध —का० १७३, 2. सम्पर्क, अनुरक्ति, चिपकाव - (पङ्कज) स शैवलासङ्गमपि प्रकाशते —कु० ५।९, ३।६६ 3 साहचर्य, सयोग, सम्मिलन,- व्यक्तस्व कर्मफलासङ्ग भग० ६।२०, इसी प्रकार 'कान्तासङ्गम्' आदि 4 स्थिरीकरण, बन्धन।

आसङ्गिनी [आसङ्ग + इनि + ङीप्] चक्रवात, बगूला, हवा।

आसञ्जनम् [आ +सञ्ज्+ल्युट्] 1 बाँधना, जमाना, (शरीर पर) धारण करना 2 फँस जाना, चिपकना - प्रतिबलयासञ्जनात्- श० १।३३, ५।१। 3 अनुराग, भक्ति 4 सम्पर्क, सामीप्य।

आसत्ति [आ— सद्—क्तिन्] 1 मिलन, सयोग 2. अतरग मेल. घनिष्ठ सम्पर्क,- किमपि किमपि मन्द मन्दमासत्तियोगात्— उत्तर० १।२७, 3 उपलब्धि, लाभ, उपार्जन, 4 (तर्क० में) सामीप्य दो या दो से अधिक निकटस्थ राशियों का सम्बन्ध और उनके द्वारा अभिव्यक्त भाव—कारण सन्निधान तु पदस्यासत्तिरुच्यते —भाषा० ८३।

आसन् (नपु०) मुख (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् सभी विभक्तियों में 'आस्य' के स्थान में विकल्प से आदेश होने वाला शब्द)।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1 बैठना, 2. आसन, स्थान, स्टूल —स वामपेनासनमभिक्रुष्टम्—कु० ३।७, आसनं मुच् —अपना आसन छोड़ना, उठना —रघु० ३।११, 3 एक विशेष अगविन्यास या बैठने का ढग—नृ० पद्म° और° 4 बैठ जाना या ठहरना 5. शत्रु की क्रियाओं को विशेष विधि 6 शत्रु के विरुद्ध किसी स्थान पर डटे रहना (विप० यानम्), विदेशनीति के ६ प्रकारों में से एक—सधिर्नाविग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रय:—अमर० मनु० ७।१६०, याज्ञ० १।३४६ 7 हाथी के शरीर का अगला भाग, घोड़े का कन्धा,—आ 1. आसन, तिपाई जिस पर बैठा जाय, टेक 2. बैठने का एक छोटा स्थान स्टूल 3 दुकान, आपणिका। सम० अचलधीर (वि०) बैठने के लिए दृढ सकल्पवाला, अपने आसन पर दृढ, —निषेदुषीमासनबन्धधीर —रघु० २।६।

आसन्दी [आसद्यतेऽस्याम्—आ सद्+ट, मुम् नि० ङीप्] लकियेदार आराम कुर्सी।

आसन्न (भू० क० कृ०) [आ+सद्+क्त] 1 उपागत (काल, स्थान और सख्या की दृष्टि से) निकट, —आसन्नविशा — बीस के लगभग या निकट 2 निकटवर्ती, सन्निहित- आसन्नपतने कूले — शार्ङ्ग०। सम० —काल: 1 मृत्यु का समय 2 जिसकी मृत्यु निकट हो, परिचारक:—चारिका व्यक्तिगत सेवक, शरीर रक्षक।

आसम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यत्र ब० स०] 1 सर्वतरुद्ध, रोका हुआ, (चारों ओर से) घेरा हुआ —आसम्बाधा भविष्यन्ति पन्थान शरवृष्टिभि —रामा०।

आसव [आ+सु—अण्] 1 अर्क, 2 काढ़ा 3 मद्यसिरकर्ष —अनासवास्य करण मदस्य—कु० १।३१, द्राक्षा° आदि।

आसादनम् [आ—सद्+णिच्+ल्युट्] 1 प्राप्त करना, उपलब्ध करना 2 आक्रमण करना।

आसार [आ+सृ—घञ्] 1. (किसी वस्तु की) मूसलाधार बौछार—आसारसिक्तक्षितिखण्डयोगात्—रघु० १२। २९, मेघ० १७ पृषदासारै - ४३, इसी प्रकार तुहिन°, रुधिर° आदि —आसारसैर्वृष्टिवभूव— हि० ३, मूसलाधार वारिश हुई 2 शत्रु का घेरा डालना 3 आक्रमण, अचानक हमला 4 अपने किसी मित्र राजा की सेवा 5 रसद, आहार- पञ्च० ३।४१।

आसिक: [असि—ठक्] खड्गधारी, तलवार लिए हुए।

आसिधारम् [असिधारा इव अस्त्यत्र अण्] एक प्रकार का व्रतविशेष -अभ्यस्तीव व्रतमासिधारम्—रघु० १३।६७, व्याख्या के लिए दे० असि के नीचे 'असिधारा' शब्द।

आसुति: (स्त्री०) [आ + सु +क्तिन्] 1 अर्क, 2. काढ़ा।

आसुर (वि०) (स्त्री०—री) [असुर+अण्] (विप०

हेतौ) 1 असुरों से सबन्ध रखने वाला 2 भूत-प्रेतों से सबध रखने वाला,—आसुरी माया, आसुरी राशि आदि 3 नारकीय, राक्षसी—आसुर भावमाश्रित भग० ७।१५, (आसुर-आचरण के पूर्ण विवरण के लिए दे० भग० १६। ७–२४)—रः 1 राक्षस, 2 आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कि वर, वधू को उसके पिता या पैतृकबान्धवों से खरीद लेता है (दे० उदाह)—आसुरो द्रविणादानात्—याज्ञ० १।६१, मनु० ३।३१,—री 1 शल्यचिकित्सा, जर्राही 2 राक्षसी—सम्भवादासुरीभि —वेणी० १।३।

आसूचित (वि०) [आ+सूच्+क्त] 1 माला पहने हुए या माला के रूप में, 2 अन्तर्ग्रथित।

आसेकः [आ+सिच्+घञ्] गीला करना, सींचना, ऊपर से उंडेलना।

आसेचनम् [आ+सिच्+ल्युट्] ऊपर से उंडेलना, गीला करना, छिड़कना।

आसेधः [आ+सिध्+घञ्] गिरफ्तारी, हिरासत, कानूनी प्रतिबंध यह चार प्रकार का है—स्थानासेध कालरुद्ध प्रवासात् कर्मणस्तथा—नारद।

आसेवा—वनम् [आ० स०] 1. सोत्साह अभ्यास, किसी क्रिया का सतत अनुष्ठान, 2 बारबार होना, आवृत्ति —पा० ८।३।१०२, आसेवन पौनःपुन्यम् -सिद्धा०।

आस्कन्दः—वनम् [आ+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1 आक्रमण, हमला, सतीत्वनाश, परस्त्रीगमन 2 चढ़ना, सवारी करना, रौंदना, 3 भर्त्सना, दुर्वचन 4 घोड़े की सरपट चाल 5 लड़ाई, युद्ध।

आस्कन्दितम्—तकम् [आ+स्कन्द्+क्त, स्वार्थे कन् वा] घोड़े की चाल, घोड़े की सरपट चाल।

आस्कन्दिन् (वि०) [आ+स्कन्द्+णिनि] चढ़ बैठने वाला, टूट पड़ने वाला—रघु० १७।५२।

आस्तरः [आ+स्तृ+अप्] 1 चादर, ओढ़ने का वस्त्र 2 दरी, बिस्तरा, चटाई—शा० २।२० 3 बिस्तरण, फैलाव (वस्त्रादि)।

आस्तरणम् [आ+स्तृ+ल्युट्] 1 बिस्तरण, बिछावन 2 बिस्तरा, तह, कुसुम° फूलों की क्यारी—कु० ४।३५, तमालपत्रास्तरणासु रन्तुम्—रघु० ६।६४ 3 गद्दा, रजाई, बिस्तर के कपड़े 4 दरी 5 हाथी की जीन-पोश, साज-सामान, रंगीन झूल।

आस्तारः [आ+स्तृ+घञ्] फैलाना, बिछाना, बखेरना। सम०—पङ्क्ति छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

आस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [अस्ति+ठक्] 1 जो ईश्वर और परलोक में विश्वास रखता है 2 अपनी धर्म-परम्परा में विश्वास रखने वाला 3 पवित्रात्मा, भक्त, श्रद्धालु—आस्तिक श्रद्दधानश्च—याज्ञ० १।२६८।

आस्तिकता, -त्वम्, आस्तिक्यम् [आस्तिक+तल् त्वल् ष्यञ् वा] 1 ईश्वर और परलोक में विश्वास 2 पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा—भग० १८।४२ आस्तिक्यं श्रद्दधानता परमार्थेष्वागमार्थेषु—शंकर०।

आस्तीकः एक ब्राह्मण मुनि, जरत्कारु का पुत्र (जरत्कारु के बीच से पड़ने से ही जनमेजय ने तक्षक नाग को छोड़ दिया था, जिसके कारण कि सर्पयज्ञ रचा गया था)।

आस्था [आ+स्था+अङ्] 1 श्रद्धा, देखभाल, आदर, विचार, ध्यान रखना (अधि० के साथ) मर्त्येष्वास्थापराङ्मुख—रघु० १०।४३ मय्यप्यास्था न ते चेत्—भर्तृ० ३।३० दे० 'अनास्था' भी 2 स्वीकृति, वादा 3 थूनी, सहारा, टेक 4 आशा, भरोसा 5 प्रयत्न 6. दशा, अवस्था 7 सभा।

आस्थानम् [आ+स्था+ल्युट्] 1 स्थान, जगह 2 नींव, आधार 3 सभा 4 देखभाल, श्रद्धा, दे० 'आस्था' 5 सभागृह 6 विश्रामस्थान,—नी सभा-भवन। सम०—गृहम्,—निकेतनम्, मण्डपः सभाभवन।

आस्थित (भू० कृ० कृ०) (कर्तृवाच्य के रूप में प्रयुक्त) रहने वाला, बसने वाला, आश्रय लेने वाला काम में लगने वाला, अभ्यास करने वाला, अपने आपको डालने वाला।

आस्पदम् [आ पद् घञ् सुट् च] 1 स्थान, जगह आसन ठौर—तस्यास्पदं शीयुवराजसंज्ञितम् रघु० ३।३६ ध्यानास्पदं भूतपतेर्विवेश कु० ३।४३, ५।१० ४८ ६१, 2 (आल०) आवास स्थल, आश्रय कारुण्यास्पदम् -भामि० १।२, 3 श्रेणी, दर्जा, केन्द्र-स्थान 4 मर्यादा प्रामाणिकता, पद 5 व्यवसाय, काम 6 थूनी, आश्रय।

आस्पन्दनम् [आ+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कना, काँपना।

आस्पर्धा [आ० स०] होड़, प्रतिद्वन्द्विता।

आस्फालः [आ+स्फल्+णिच्+अच्] 1 मारना, रगड़ना, ताने २ चलाना 2 फड़फड़ाना 3 विशेष रूप से हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

आस्फालनम् [आ+स्फल्+णिच्+ल्युट्] 1 रगड़ना, हवा कर रगड़ना (पानी आदि का), हिलना फड़फड़ाना —अनवरतचलदुर्व्यास्फालनक्रूरपूर्वम् शि० २।४, आसां जलास्फालनतत्पराणाम् रघु० १६।६२, ३।५५, ६। ७२, अमरु ५४, ऐरावत° कर्कशेन हस्तेन कु० ३।२२ 2 घमंड, हेकड़ी।

आस्फोटः [आ+स्फुट्+अच्] 1 आक या मदार का पौधा 2 ताल ठोकना, ° ता नवमल्लिका का पौधा, जङ्गली चमेली।

आस्फोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्] 1 फटकना 2 काँपना 3 फूंक मारना, फुलाना 4 सिकोड़ना, बन्द करना 5 ताल ठोकना।

आस्माक (वि०) (स्त्री०—की), आस्माकीन (वि०) [अस्मद्+अण्, ख, अस्माक आदेश.] हमारा. हम सब का—आस्माकवल्लिसान्निध्यात्—शि० २।६३, ८।५० ।

आस्यम् [अस्यते क्षामोऽत्र—अस्+ण्यत्] 1 मुंह, जबड़ा आस्यकुहरे विवृतास्य 2 चेहरा, आस्यकमलम् 3. मुख का वह भाग जिससे वर्णोच्चारण में काम लिया जाता है, 4 मुंह, बिवर—ग्रसास्यम्, अक्षास्यम् आदि । सम० आसव क्षार, लुआब,—पद्मम् कमल,—लावुकः 1 कुत्ता, 2 सूअर - लोमन् (नपु०) दाढ़ी ।

आस्यन्दनम् [आ+स्यन्द्+ल्युट्] बहना, रिसना ।

आस्यन्द्य (वि०) [आस्य चर्यति—चे+ख मुम्] मुखचुम्बन करने वाला ।

आस्या—[आस्+क्यप्] दे० आसना ।

आस्रम् [असृ+अण्] रुधिर । सम० —पः खून पीने वाला, राक्षस ।

आस्राव [आ+स्रु+अप्] 1 पीडा, कष्ट, दुःख 2 बहाव, स्रवण 3 (मवाद आदि का) बहना, निकलना, 4 अपराध, अतिक्रमण 5 उबलते हुए चावलों का झाग ।

आस्राव' [आ+स्रु+घञ्] 1 घाव 2. बहाव, निकास 3 लार 4 पीडा, कष्ट

आस्वाद [आ+स्वद्+घञ्] 1 चखना, खाना—नूताम्रकूटरसास्वादकषायकण्ठ - कु० ३।३२, हि० १।१५२ 2 स्वाद लेना आलास्वादो विवृतजघना को विहातुं समर्थः मेघ० ४१, सुखास्वादपर —हि० ४।७६ 3 सुखोपभोग करना, अनुभव करना, °ज्ञ (वि०) स्वादिष्ट, रसीला आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् रघु० २।५ ।

आस्वादनम् [आ+स्वद्+णिच्+ल्युट्] चखना, खाना ।

आह (अव्य०) [आ+हन्+ड] 1 निम्नांकित भावनाओं को द्योतन करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय—(क) झिड़की (ख) कठोरता (ग) आज्ञा (घ) फेंकना, भेजना 2 'कहना' 'बोलना' अर्थ को प्रगट करने वाली सदोष क्रिया के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एक वचन का अनियमित रूप (भारतीय वैयाकरणों के मतानुसार यह रूप 'ब्रू' धातु का है तथा पाश्चात्य विद्वान् इसको 'अह्' से बना हुआ मानते हैं, संस्कृत भाषा में इस धातु के वर्तमान रूप—आह, आहतुः, आहुः आत्थ, और आहथुः हैं) ।

आहत (भू० क० कृ०) [आ+हन्+क्त] 1 जिस पर प्रहार या आघात किया गया हो, पीटा गया (ढोल आदि) 2 रौंदा गया - पादाहत मदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति - हि० २।४६ 3 घायल, मारा हुआ 4 गुणित (गणित में) 5 लुढ़काया हुआ (पासा) 6. बिछा कहा हुआ,—तः ढोल,—म् 1. नई पोशाक, नया वस्त्र 2 भावहीन या निरर्थक भाषण, असम्भावना की वृद्धोक्ति —उदा० एष वंध्यासुतो याति—मुद्रा० । सम० —अक्षर (वि०) = अहितलक्षण ।

आहति. (स्त्री०) [आ+हन्+क्तिन्] 1. हत्या करना 2 प्रहार, चोट, मारना, पीटना 2. यष्टि, छड़ी ।

आहर (वि०) [आ+हृ+अच्] (समास के अन्त में) लाने वाला, ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला—समित्कुशफलाहरैः -रघु० १।४९,—रः 1. ग्रहण करना, पकड़ना 2. पूरा करना, सम्पन्न करना 3 यज्ञ करना ।

आहरणम् [आ+हृ+ल्युट्] 1. ले आना, (निकट) लाना —समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम्—श० १ 2 पकड़ना, ग्रहण करना 3 हटाना, निकालना 4 सम्पन्न करना, (यज्ञादिक) पूरा करना 5 विवाह के समय दुलहिन को उपहार के रूप में दिया जाने वाला धन, दहेज, —सत्त्वानुरूपाहरणीकृतश्री - रघु० ७।३२ ।

आहवः [आ+ह्वे+अप्] 1 युद्ध, संग्राम, लड़ाई—एवं विधेनाहवकौशलेन—रघु० ७।६७, हत्वा स्वजनमाहवे —भग० १।३१ 2 ललकार, चुनौती, आह्वान, °काम्या लड़ने की इच्छा 3 यज्ञ —तत्र नाभवदसौ महाहवे - —शि० १४।४४ ।

आहवनम् [आ+हु+ल्युट्] 1 यज्ञ - - हुष्टुमाहवनमग्नमन्यमनाम्—शि० १४।३८ 2. आहुति ।

आहवनीय (स० कृ०) [आ+हु+अनीयर्] आहुति देने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई अभिमन्त्रित अग्नि, तीन अग्नियों में से एक (पूर्व) जो यज्ञ में प्रज्वलित की जाती है । दे० 'अग्नित्रेता' शब्द 'अग्नि' के नीचे ।

आहारः [आ+हृ+घञ्] 1 लाना, ले आना, या निकट लाना 2. भोजन करना 3 भोजन - °वृत्तिमकरोत् —पञ्च० १, भोजन किया । सम० —पाकः भोजन का पचना,—विरहः भोजन की कमी, भूखा मरना,—सम्भवः —शरीर का रस, लसीका ।

आहार्य (स० कृ०) [आ+हृ+ण्यत्] 1 ग्रहण करने या पकड़ने के योग्य 2 लाने या ले आने के योग्य 3 कृत्रिम, नैमित्तिक, बाह्य आहार्यशोभारहितैरभार्यै —भट्टि० २।१४, न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्—कि० ४।२३, कु० ७।२० पर मल्लि० भी, 4 साभिप्राय, अभिप्रेत, - उदा० रूपक में उपमेय या उपमान का आरोप जिसके विषय में वक्ता पूर्ण रूप से जानकार होता है । 5 शृंगार या आभूषा से संप्रेषित या प्रभावित, अभिनय के चार प्रकारों में से एक ।

आहावः [आ+ह्वे+घञ्] 1 पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएँ के पास बनी कूंड 2. संग्राम, युद्ध 3. आह्वान, ललकार 4. अग्नि ।

आहिण्डिकः [आहिण्ड+ठक्] निषाद पिता और वैदेही माता से उत्पन्न वर्णसंकर,—आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते—मनु० १०।३७।

आहित (भू० क० कृ०) [आ+धा+क्त] 1 स्थापित, जड़ा गया, जमा किया गया (घरोहर के रूप में रक्खा गया) 2 अनुभूत, सञ्चित 3 सम्पन्न, किया गया। सम०-अग्नि ब्राह्मण जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमन्त्रित करता है, -अङ्क (वि०) चिह्नित, चित्तीदार,—लक्षण (वि०) परिचायक चिह्न वाला, —ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभवत् रघु० ६।७१ (मल्लि० के अनुसार 'अच्छे गुणों के कारण प्रख्यात')।

आहितुण्डिक [आहितुण्डेन दीव्यति ठक्] बाजीगर, सपेरा, ऐन्द्रजालिक या जादूगर अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम—मुद्रा० २।

आहुति (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] 1 किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन कुण्ड में डालना —होमुराहुतिसाध्वसम् रघु० १।८२, 2 किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवनसामग्री)।

आहुति (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] चुनौती, ललकार, याह्वान।

आहेय (वि०) [अहि+ढक्] सापों से सबध रखने वाला —पच० १।१११।

आहो (अव्य०) निम्नांकित भावनाओं को व्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय, (क) सन्देह या विकल्प, प्राय 'किम्' का सहसबधी कि वैधानम् वत निर्वेवितव्यम् आहो निवर्तस्यति सम हरिणाङ्गनाभि श० १।२७, दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपासुल श० ५।२६ (ख) प्रश्नवाचकता —। सम०-पुरुषिका 1 अत्यधिक आत्मश्लाघा या घमड—आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सभाष्टनान्मनि —अमर०, आहोपुरुषिकां पश्य मम सदृशकान्तिभि —भट्टि० ५।२७, 2 सैनिक आत्मश्लाघा शेखी बघारना 3 अपने पराक्रम की डींग मारना निज भुजबलाहोपुरुषिकाम्—भामि०१।८४,-स्वित् (अव्य०) 'सदेह' 'सभावना' 'सभाव्यता' आदि भावनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहसबधी)। —आहोस्विदसमो यमापचरितैर्विस्मयितो वीक्ष्यताम् —श० ५।९, किं द्विज पलति आहोस्विद् रुष्यति —मिट्टा०।

आह्नम् [अह्ना समूह अञ्] दिनों का समूह, बहुत दिन।

आह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अह्नि भव, अह्ना निर्वृत्तं साध्य-ठञ्] 1 दैनिक, प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया धार्मिक सस्कार या कर्तव्य जो प्रति दिन नियत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य, जैसे कि भोजन करना, स्नान करना आदि कृताह्निक सवृत्त विक्रम० ४, 2 दैनिक भोजन 3 दैनिक कार्य या व्यवसाय।

आह्लाद [आ+ह्लाद्+घञ्] खुशी, हर्ष साह्लाद वचनम् पच० ४।०

आह्लादनम् [आ+ह्लाद्+ल्युट्] प्रसन्न करना, खुश करना।

आह्व (वि०) [आ-ह्वे+ड] 1 जो पुकारता है, बुलाता है बुलाने वाला ह्वा। आ ह्वे+अच्+टाप्] 1 बुलाना पुकारना 2 नाम, अभिधान (प्राय समास के अन्त में) अमनाह्व शनाह्व आदि।

आह्वय [आ+ह्वे+अच्] 1 नाम अभिधान (समास का अन्तिम पद) काव्य रामायणाह्वयम् रामा० 2 एक प्रकार की अभियोग जो मुर्गों की लड़ाई जैसे पशु-खेलों में होने वाले झगड़ों से पैदा हो (कामन्द के १८ नामों में से एक) —पणापूर्वक पक्षिमेषादियोधन आह्वय मनु० ८।७ पर राघवानन्द की व्याख्या।

आह्वयनम् [आ+ह्वे णिच्+ल्युट्] नाम अभिधान।

आह्वानम् [आ+ह्वे+ल्युट्] 1 ललकार, आमन्त्रण 2 बुलावा, निमन्त्रण, आमन्त्रित करना, सुहृदाह्वानप्रकुर्वीत—पच० ३।४७, 3 कानूनी आमन्त्रण (अदालत या सरकार से किसी न्यायाधिकरण के सम्मुख उपस्थित होने के लिये बुलावा) 4 देवता का सबोधन —मनु० ९।२२६, 5 चुनौती 6 नाम, अभिधान।

आह्वाय [आ+ह्वे+घञ्] 1 बुलावा 2 नाम।

आह्वायक [आ+ह्वे+ण्वुल्] 1 दूत, सदेशवाहक —आह्वायकान् भूमिपतेरयाध्याम्—भट्टि० २।४३।

इ

इ [अ+इङ्] कामदेव (अव्य०) (क) क्रोध (ख) पुकार (ग) करुणा (घ) झिड़की तथा (ङ) आश्चर्य की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

इ (क) (अदा० पर०) (एति, इत) 1. आना, की ओर आना, निकट आना—शशिन पुनरेति शर्वरी—रघु० ८।५६ 2 पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, चले जाना —निर्वृद्धि क्षयमेति—मृच्छ० १।१४, नष्ट हो जाता है, बर्बाद होता है, इसी प्रकार वधं, शरणं, मृत्युवशम् आदि, (क) (भ्वा० उभ०)=दे० अय् (ग) (दिवा० आ०) 1. आना, आ धमकना 2. भागना घूमना 3 शीघ्र आना, बार बार जाना। अति—1 परे चले जाना, पार करना, ऊपर से चले जाना—अवातीत्य हिमवानवोमलं - कि० १४।५४, —स्थानव्य ते नयनविषय यावदस्तेति भानु मेघ० ३४, दृष्टि से ओझल हो जाता है 2 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, पछाड़ देना,—सत्यमतीत्य हरितो हरीश्च वर्तते वाजिन —शि० १, त्रिस्रोतस कान्तिमतीत्य तस्थौ—कु० ७।१५, शि० २।२३ 3 पास से निकल जाना, पीछे छोड़ देना, भूल जाना, उपेक्षा करना —शि० ६।१६, रघु० १५।२७ 4 बिताना, बीतना (समय का) - अत्येति रजनी या तु सामा०, अतीते दशरात्रे, दे० 'अतीत', अधि 1 याद रखना, चिन्तन करना, खेद पूर्वक याद करना (सब० के साथ) —रामस्य दयमानोऽधवर्त्मेति तत्र लक्ष्मण -भट्टि० ८।११, १८।३८, कि० ११।७४ 2 ('अधीते' इस अर्थ में सदैव 'आत्मनेपद') शिक्षा प्राप्त करना, अध्ययन करना, पढ़ना—उपाध्यायादधीते—सिद्धा०, सोऽध्येष्ट वेदान्—भट्टि० १।२, (प्रेर० अध्यापयति, इच्छा०—अधिजिगमिषते) अनु - , 1 अनुसरण करना, पीछे चलना—अयता प्रातरन्वेतु —रघु० १।९० 2 सफल होना 3 अनुगमन (व्या० या रचना में) 4 आज्ञा मानना, अनुरूप होना, अनुकरण करना, अन्वा—, पीछे जाना, अनुसरण करना, अन्तर् - 1 बीच में जाना, हस्तक्षेप करना 2 रोकना, बाधा डालना 3 छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना—दे० 'अन्तर्धान', अप 1 चले जाना, विदा होना, पीछे हटना लौट पड़ना, अपेहि दूर हो जाओ, दूर हटो 2 बचित होना, मुक्त होना 3० 'अपेत 3 मरना, नष्ट होना, अभि- -, 1 जाना, पहुँचना, निकट जाना —अभ्यानतमितोऽभ्येति भट्टि० ७।८४ 2 अनुसरण करना, सेवा करना 3 प्राप्त करना, मिलना, भुगतना, (अच्छी बुरी बातें) भोगना, अभिप्र- , की ओर जाना, इरादा करना, अर्थ रखना, उद्देश्य बना कर —कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्- पा० १।४।३२ अभ्या - पहुँचना, अभ्युद् - , 1 उठना, ऊपर जाना 2 (आलं०) फलना-फूलना, समृद्ध होना, अभ्युप—1. निकट जाना, पहुचना आपहुचना—व्यतीतकालस्वहृदमभ्युपेत —रघु० ५।१४, १६।७२, 2 विशिष्ट दशा को पहुँच जाना, प्राप्त करना—सत्यं न तथाऽऽत्मानमभ्युपैति—हि० ३।६१, 3. जिम्मेवारी लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, (कोई काम करने की) प्रतिज्ञा करना; —मन्दायते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या —मेघ० ३८ 4. मानलेना, अपना लेना, स्वीकार करना, 5 आज्ञा मानना, अधीनता स्वीकार करना, अव—, जानना, ज्ञान प्राप्त करना, स्वीकार होना—अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः—रघु० २।३५, कु० ३।१३, ४।९, आ—, आना, निकट खिसकना, उद्—1 (तारे आदि का) उदय होना, (आलं० भी) आना, ऊपर उठना—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३०, उदेति सविता ताम्र —आदि 2 उठना, उछलना, पैदा किया जाना 3 फलना-फूलना, समृद्ध होना, उप , 1 पहुचना, निकट खिसकना, पास जाना योगो पर स्थानमुपैति यावत्—भग० ८।२८ 2 निकट आना, में से निकलना, प्राप्त करना, (किसी दशा को) पहुच जाना,—उपैति सत्त्व परिणामरम्यताम्—कि० ४।२२, 3 आ पड़ना, निर्—, विदा होना, प्रस्थान करना, परा—, 1. चले जाना, दौड़ जाना, भाग जाना, वापिस मुड़ना,—य परैति स जीवति—पञ्च० ५।८८ 'भागने वाला अपनी जान बचा लेता है', तु०, 'जान बचाने के लिए भागना, 2. पहुँचना, प्राप्त करना—कि० १।३९ 3 इस प्रकार से कूच करना, मरना, दे० परेत, परि—,1. परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना,—चरणन्यास भक्तिनम्र परीता—मेघ० ५५, मनु० ३।४८, 2 घेरना, चारों ओर चक्कर लगाना—हुतवहपरीत गृहमिव—श० ५।१०, विषयस्तिभि परीतामिमर्महीधर्म —रघु० १२।६१, इसी प्रकार 'कोपपरीत' 3 पास जाना, (बीजों का) चिन्तन करना 4 बदलना, रूपान्तरित होना, प्र—,1 निकल जाना, विदा होना,—धीरा प्रेत्यास्मात्लोकादमृता भवन्ति—केन० 2 (अत) जीवन से विदा लेना, मरना, प्रेत्य मर कर—न च तत्प्रेत्य नो इह—भग० १७।२८ मनु० २।९, २६, प्रति—, 1 वापिस आना, लौट आना, —प्रतीयाय पुरी मकरध्वज—रघु० ५।३५, भट्टि० ३।१९ 2 विश्वास करना, भरोसा करना—क प्रत्येति सैवेयमिति—उत्तर० ४, 3 ज्ञान प्राप्त करना, समझना, जानना प्रतीयते चानुरिवेहित फलै—कि० १।२०, शि० १।६९, 4 विख्यात होना, प्रसिद्ध होना—सोऽय वट श्याम इति प्रतीत —रघु० १३।५३ 5 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना - रघु० ३।१२, १६।२१ (प्रेर०—प्रत्याययति) विश्वास दिलाना, भरोसा पैदा करना

बलवत् कुपयमान प्रत्याययतीव मे हृदयम् श० ५।२१, ता स्वचारित्र्यमुद्दिश्य प्रत्याययतु मैथिली—रघु० १५।७२, अभ्युद् , स्वागत या सत्कार करने के लिए

उठ कर अगवानी करना—सपर्यया प्रत्युदियाय पार्वती—कु० ५।३१, वि—, 1 चले जाना, विदा होना—तस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्त - श० ५।१२, इसी प्रकार वीतभय, वीतरोष 2 परिवर्तित होना - -सदृश त्रिषु लिंगेषु यत्न व्येति तदव्ययम्—सिद्धा० 3 अर्थ करना—दे० व्यय, विपरि—, बदलना (बुराई के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, 1. बाहर जाना, पथविचलित होना, अतिक्रमण करना—रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मन परम्, न व्यतीयु प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तय । रघु० १।१७, 2 (समय का) गुजरना, व्यतीत होना - -सप्तव्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु० २।२५, व्यतीते काले-आदि 3 परे चले जाना, पीछे छोडना— रघु० ६।६७, व्यप - 1 विदा होना विचलित होना, मुक्त होना —व्यपेतमत्सर —याज्ञ० १।२६७ स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेण —२।५, 2 चले जाना, जुदा होना, अलग-अलग होना —समेत्य च व्यपेयाताम् —हि० ४।६, मनु० ९।१८२, ११।९७, सम्—,इकट्ठे आना, इकट्ठे मिलना, समनु —, साथ चलना, अनुसरण करना, समव—, 1 एकत्र होना, इकट्ठे आना --समवेता युयुत्सव --मग० १।१, 2 सबद्ध होना, सयुक्त होना दे० समवाय, समा , इकट्ठे आना या मिलना—समेत्य च व्यपेयाताम् - हि० ४।६९, समुद् ,एकत्र होना, सचित होना—अय समुदित सर्वो गुणाना गण —रत्न० १।६, समुप - , उपलब्ध करना, प्राप्त करना, सम्प्रति —, निर्णय करना, निश्चित करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना -- कि तत्कथ वेत्युपलब्धसज्ञा विकल्पयन्नोऽपि न सम्प्रतीयु —भट्टि० ११।१० ।

इक्षव (व० व०) गन्ना, ईख, ऊख ।

इक्षु [इष्यतेऽसौ माधुर्यात्—इष्+क्सु] गन्ना, ईख । सम० काण्ड, -दण्ड गन्ने की दो जातियाँ - काश और मुञ्जतृण,- कुट्टक गन्ने इकट्ठे करने वाला --दा एक नदी का नाम,--पाकः गुड, शीरा, राब, ---भक्षिका गुड और शक्कर से बना भोज्य पदार्थ, मती, -- मालिनी,—मालवी एक नदी का नाम, - मेहः मधुमेहः - यन्त्रम् गन्ना पेलने का कोल्हू, ---रस 1 गन्ने का रस 2 गुड, राब या शक्कर, --वनम् गन्ने का खेत, गन्ने का जगल,- वाटिका, -वाटी, गन्ना का उद्यान, विकार, शक्कर, गुड या राब, सार गुड या राब ।

इक्षुक [स्वार्थे कन्] गन्ना, ईख, दे० इक्षु ।

इक्षुकोशा [इक्षुक+ङ स्त्रियां टाप्] गन्नों की क्यारी ।

इक्षुर [इक्षुम् राति- इति रा+क] गन्ना, ईख ।

इक्ष्वाकु [इक्षुम् इच्छाम् आकरोति इति इक्षु+आ—कृ+डु] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं का पूर्व पुरुष, यह वैवस्वत मनु का पुत्र था—और सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था । —इक्ष्वाकुवशोभिमत प्रजानाम् —उत्तर० १।४ 2 इक्ष्वाकु की सन्तान -गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिद हि कुलव्रतम् —रघु० ३।७० ।

इख्, इङ्ख् (स्वा० पर०) (एखति, इङ्खति) जाना, हिलना-डुलना, (प्राय 'प्र' के साथ) हिलना-डुलना, काँपना—मा० ६ ।

इङ्ग् (स्वा० उभ०) (इङ्गति से, इङ्गित) 1 हिलना, काँपना, क्षुब्ध होना -यया दीपो निवातस्थो नेङ्गते —भग० ६।१९, १४।२३ 2 जाना, हिलना-डुलना ।

इङ्ग (वि०) [इङ्ग्+क] 1 हिलने डुलने योग्य 2 आश्चर्य जनक, विस्मयकारी, - ग 1 इशारा या सकेत 2 इगित द्वारा मनोभाव का सकेत देना ।

इङ्गनम् [इङ्ग्+ल्युट्] 1 हिलना-डुलना, काँपना 2 ज्ञान, दे० इगं ।

इङ्गितम् [इङ्ग्+क्त] 1 घडकना, हिलना 2 आन्तरिक विचार, इरादा, प्रयोजन - आत्मरवेदिभि —का० ७, पच० १।४३, अगुष्ठमङ्गुलीमिलाङ्गितमया कु० ५।६२, रघु० १।२०, शि० ९।६९ 3 इशारा, सकेत, अगविक्षेप—पच० १।४४ 4 विशेषत शरीर के विभिन्न अगों की चेष्टा जो आन्तरिक इरादों का आभास दे देती है अगविक्षेप आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ है आकारैरिङ्गितैर्गत्या गृह्यतेऽन्तर्गत मन —मनु० ८।२६, । मय०—कोविद, —ज्ञ (वि०) बाहरी अगचेष्टाओं के द्वारा आन्तरिक मनोभावों की व्याख्या करने में कुशल, सकेतों को जानने वाला ।

इङ्गुद,-दी [इङ्ग्+उ- इङ्गु त वति खण्डयति इति-दी+क] एक औषधि का वृक्ष, हिंगोट का वृक्ष, मालकगनी —इङ्गुदीपादप सोऽयम् - उत्तर० १।१४, —इम् इगुदी का फल ।

इच्छा [इष्+अ+टाप्] 1 कामना, अभिलाष, रुचि, इच्छया - रुचि के अनुसार 2 (गणित में) प्रश्न या समस्या 3 (व्या० में) सन्नन्त का रूप । सम०—दानम् अभिलाषा का पूर्ण होना,— निवृत्ति (स्त्री०) कामनाओं की शान्ति, सासारिक इच्छाओं के प्रति उदासीनता, —फलम् किसी प्रश्न या समस्या का समाधान -- रत्नम् अभिलषित खेल - मेघ० ८९, -- वसुः कुबेर - संपद् (स्त्री०) किसी की कामनाओं का पूर्ण होना ।

इज्यः [यज्+क्यप्] 1 अध्यापक 2 देवों के अध्यापक बृहस्पति की उपाधि ।

इज्या [इज्य+टाप्] 1 यज्ञ— जगत्प्रकाश तदशेषमिज्यया —रघु० ३।४८ १।६८, १५।२, 2 उपहार, दान 3

प्रतिमा 4. कुटिनी, कुटिका, गाय। सम०—ओक: यज्ञ करने वाला।

इड्वरः [इडा कामेन वरति—इड्+क्विप् इड्+वर्+अच्] बैल या बछड़ा जो स्वच्छन्दता पूर्वक घूमने के लिए छोड़ दिया जाय।

इडा-ला [इल्+अच्, लस्य डत्वम्] 1 पृथ्वी 2. भाषण 3. आहार 4. गाय 5. एक देवी का नाम, मनु की पुत्री 6 बुध की पत्नी तथा पुरूरवा की माता।

इडिका [इडा+क, डत्वम्] पृथ्वी।

इतर (या० वि०) (स्त्री०—रा, नपु० रत्), [इण् कामने तर —इति—तृ+अप्] 1 अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट—इतरो दहने स्वकर्मणाम् रघु० ८।२०, अने० पा० 2 शेष या दूसर (ब० व०) 3 दूसरा, से भिन्न (अपा० के साथ) - इतरतापशतानि यद्येच्छया विहर तानि सह चतुरानन उद्भट, इतरो राक्षणादेव राघवानुचरो यदि -भट्टि० ८।१०६ 4. विरोधी, या तो अकेला स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होता है अथवा विशेषण के साथ, या समास के अन्त में अङ्गमानीतरेषां च रामा०, विजयायेतरायच वा- महा० इसी प्रकार दक्षिण (बायां) वाम (दायां) आदि 5 नीच अधम, गंवार, सामान्य---इतर इव परिभूय ज्ञान मन्मथेन जडीकृत -का०—१५८। सम०—इतर(या० वि०) पारस्परिक, स्व-स्व, अन्योन्य आश्रय - पारस्परिक निर्भरता, अन्योन्य संबंध 'योग' 1. पारस्परिक संबंध या मेल, शि० १०।२४, 2 द्वन्द्व समास का एक प्रकार (विप० समाहार द्वन्द्व) जहाँ कि प्रत्येक अंग पृथक् रूप से देखा जाता है।

इतरत, इतरत्र (अव्य०) [इतर+तसिल्, त्रल् वा] अन्यथा, उससे भिन्न, अन्यत्र दे० अन्यत, अन्यत्र।

इतरथा (अव्य०) [इतर+थाल्] 1 अन्य रीति से, और ढंग से 2 प्रतिकूल रीति से 3 दूसरी ओर।

इतरेद्यु (अव्य०) [इतर+एद्युस्] अन्य दिन, दूसरे दिन।

इतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1 अत, यहाँ से, इधर से, 2 इस व्यक्ति से, मुझ से—इत स दैत्य प्राणप्रोनेन एवार्हति क्षयम् कु० २।२५ 3 इस दिशा में, मेरी ओर, यहाँ—इतो निषीदेति विसृष्टभूमि कु० ३।२, प्रयुक्तमभ्यास्त्रमितो वृथा स्यात् -रघु० २।३८, इत इतो देव —इधर इस ओर महाराज (नाटकों में) 4. इस लोक से, 5. इस समय से, इत:-इत:—एक ओर—दूसरी ओर या एक स्थान में दूसरे स्थान पर, यहाँ—वहाँ।

इति (अव्य०) [इ+क्तिन्] 1 यह अव्यय प्राय किसी के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को वैसा का वैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसको कि हम अंग्रेजी में अवतरणांश चिह्नों द्वारा प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है (क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया हो (शब्दस्वरूपद्योतक)—राम रामेति रामेति कूजन्त मधुराक्षर—रामा०, अहल्या यमित्याह—भर्तृ०, (ख) या कोई प्रातिपदिक जो कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्तृकारक में प्रयुक्त होता है (प्रातिपदिकार्थद्योतक)—अवस्त्रियामित्यवधारित पुरा''''''कथादनु नारद इत्यबोधि स'—शि० १।३, अवैमि वैनामनघेति—रघु० १४।४०, दिलीप इति राजेंदु—रघु० १।१२, (ग) या पूरा वाक्य अब कि 'इति' शब्द वाक्य के केवल अंत में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यार्थद्योतक), —आस्यमि किंयदुभुवो मे रक्षति गौर्दोग्धिकामाक इति —शि० १।१३, 2 इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त 'इति' के निम्नांकित अर्थ हैं (क) 'क्योंकि', 'अत' 'कारण यह कि' आदि शब्दों में व्याख्यान्वय—वैदेहिकोऽस्मीति पृच्छामि —उत्तर० १ पुराणमित्येव न साधु सर्वम्—मालवि० १।२, प्राय 'किम्' के साथ (ख) अभिप्राय या प्रयोजन—रघु० १।३७ (ग) उपसंहार द्योतक (विप० 'अथ'), इति प्रथमोऽङ्क —यहाँ प्रथम अंक का उपसंहार होता है (घ) अत, इस प्रकार, इस रीति से इत्यवस्थान परिस्मय दौर्मनस्यम्—कि० ११।८० (ङ) इस स्वभाव या विवरण वाला—गौरश्व पुरुषो हस्तीनिजाति (च) जैसा कि नीचे है, नीचे लिखे परिमाणानुसार—रामभिधानो हरिरित्युवाच—रघु० १३।१ (छ) जहाँ तक ', की हैसियत से, के विषय में (धारणा और संबंध प्रकट करते हुए)—पितेति स पूज्य, अध्यापक इति निन्द्य, शीघ्रमिति सुकरम्, निश्चलमिति चिन्तनीय भवेत्—शा० ३ (ज) निदर्शन (प्राय 'आदि' के साथ) इन्दुरिन्दुरिव श्रीमानित्यादौ तदनन्वय—चन्द्रा० गौ शुक्लश्चलो दित्थ इत्यादौ—काव्य० २, (झ) मानी हुई सम्मति या उद्धरण—इति पाणिनि, इत्यापिशलि, इत्यमर विश्व आदि (ञ) स्पष्टीकरण। सम०—अर्थ: भावार्थ, सार, - अर्थम् (अव्य०) इस प्रयोजन के लिए, अत,—कथा अर्थहीन या निरर्थक बात, —कर्तव्य, —करणीय (वि०) नियमत उचित या आवश्यक (व्यम्,—यम्) कर्तव्य, दायित्व, ता, —कर्तव्यता, —कर्तव्यता कोई भी उचित या आवश्यक कार्य,—कर्तव्यतामूढ: किं कर्तव्य विमूढ, असमंजस में पड़ा हुआ, व्याकुल, इतबुद्धि,—भाव (वि०) इतने विस्तार वाला, या ऐसे मूल का,—वृत्तम् 1. घटना, बात 2. कथा, कहानी।

इतिह (अव्य०) [इति एव ह किल—इ० स०] ठीक इस प्रकार, बिल्कुल परंपरा के अनुरूप।

इतिहासः [इति+ह+आस (अस् धातु, लिट् लकार, अन्य पु०, ए० व०)] 1 इतिहास (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह)—धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्, पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते। 2 वीरगाथा (जैसा कि महाभारत) 3 ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा (जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते हैं)। सम०—निबन्धनम्—उपाख्यानयुक्त या वर्णनात्मक रचना।

इत्थम् (अव्य०) [इदम्+थम्] इस लिए, अतः, इस रीति से—इत्थं रते किमपि भूतमदृश्यरूपम्—कु० ४।४५, इत्थं गते—इन परिस्थितियों के कारण। सम०—कारम् (अव्य०) इस प्रकार,—भूत (वि०) 1 इस प्रकार परिस्थितियों में फंसा हुआ, ऐसी दशा में ग्रस्त—कु० ६।२९ कथमित्थंभूता—मालवि० ५, का० १४६, 2 मच्छा, यथातथ्य, सही (जैसे कि कहानी),—विध (वि०) 1 इस प्रकार का 2 इस प्रकार के गुणों से युक्त।

इत्य (वि०) [इण्+क्यप्, तुक्] जिसके पास जाया जाय, जहां पहुंचना उपयुक्त हो—इत्यं प्रियेण गुरुवत्,—त्या 1 जाना, मार्ग 2 डोली, पालकी।

इत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [इण्+क्वरप्, तुक्] 1 जाने वाला, यात्रा करने वाला, यायी 2 क्रूर, कठोर 3 नीच, अधम 4 क्षणिक, नित्य 5 निर्धन—रः हिजड़ा—री 1 व्यभिचारिणी, कुलटा 2 अभिसारिका।

इदम् (सा० वि०) [पु०—अयम्, स्त्री०—इयम्, नपु०—इदम्] [इद्+कमिन्] 1 यह—जो यहां है (वक्ता के निकट की वस्तु की ओर संकेत करते हुए—इदमन्तु संनिकृष्टं रूपम्) इदं तत् इति यदुच्यते श० ५, यह है कथन की सत्यता 2 उपस्थित, वर्तमान ('यहां' की भावना को प्रकट करने के लिए कर्तृकारक के रूप प्रयुक्त किये जाते हैं—इयमस्मि—यह रही मैं, इसी प्रकार,—इमे स्म, अयमागच्छामि—यह मैं आता हूं) 3 यह शब्द तुरन्त ही बाद में आने वाली वस्तु की ओर संकेत करता है जब कि 'एतद्' या 'तद्' पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुस्वप्नव्यय अंश सदा सङ्क्षिप्तमुच्चिते—मनु० ३।१४७ (अयम्—वक्ष्यमाण—कुल्लू०) श्रुत्वेतदिदमब्रवीत् 4 किसी वस्तु को अधिक स्पष्टतया या बलपूर्वक बतलाने या कई बार शब्दाधिक्य प्रकट करने के लिए यह शब्द यत्, तत्, एतद्, अदस्, किम् अथवा किसी पुरुष वाचक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है—काऽयमाचरत्यविनयम् श० १।२५, मेयम्, सोऽयम्—यह यहां, —ऽयमहं भोः—श०, ४, अरे यहां तो मैं हूं।

इदानीम् (अव्य०) [इदम्+दानीम्, इदं च] अब, इस समय, इस विषय में, अभी, अब भी—बत्से प्रतिरूपस्वेदानीम् श० ४, आर्यपुत्र इदानीमसि—उत्तर० ३, **इदानीमेव** अभी, **इदानीमपि**—अब भी, इस विषय में भी।

इदानींतन (वि०) (स्त्री० नी) वर्तमान, क्षणिक, वर्तमान कालिक।

इद्ध (भू० क० कृ०) [इन्ध्+क्त] जला हुआ, प्रकाशित —द्धम् 1 धूप, गर्मी 2 दीप्ति, चमक 3 आश्चर्य।

इध्मः—ध्मम् [इध्यतेऽग्निरनेन—इन्ध्+मक्] ईंधन, विशेषकर वह जो यज्ञाग्नि में काम आता है—रघु० १४।७०। सम०—जिह्व अग्नि,—प्रव्रश्चनः कुल्हाड़ी, कुठार (परशु)।

इध्मा [इन्ध् कर्मणि+टाप्] प्रज्वलन प्रकाशन।

इभ (वि०) [इण्+कभ] 1 वीर्य, शक्ति शाली, बलवान् 2 महान्,—भः 1 स्वामी 2 सूर्य—शि० २।६५ 3 राजा न न महीनमहीनपराक्रमम्—रघु० ९।५।

इन्दिंदिर [इन्द्+किरच् नि०] बड़ी मधु-मक्खी—लोभादिन्दिन्दिरेषु निपतन्मु—भामि० २।१८३।

इन्दिरा [इन्द्+किरच्] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी। सम०—आलयम् इन्दिरा का आवास, नील कमल, **रमणः** विष्णु का विशेषण (—रा) नील-कमल।

इन्दीवरिणी [इन्दीवर+इनि+ङीप्] नील-कमलों का समूह।

इन्दीवर [इन्दा वारा वरणम् अच्—ब० स०] नील कमल।

इन्दु [उनत्ति क्लेदयति चन्द्रिकया भुवनम्—उन्द्+उ आदेशश्च] 1 चन्द्रमा दिनांते इति राजेन्दुरिन्दुसौभाग्यनिधाविव—रघु० १।१२, 2 (गणित में) 'एक' की संख्या 3 कपूर। सम०—**कमलम्** सफेद कमल, **कला** चन्द्रमा की कला या अंश (यह कलाएं गिनती में १६ हैं, पौराणिक कथाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक कला क्रमशः १६ देवताओं के द्वारा निकली जाती है)—कलिका 1 केतकी का पौधा 2 चन्द्रमा की एक कला **कान्त** चन्द्रकान्तमणि (—न्तः) रात्रि,—क्षय 1 चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना 2 नूतन-चन्द्र दिवस प्रतिपदा,—ज्ञ,—पुत्र बुधग्रह (—जा) रेवा या नर्मदा नदी, **जनकः** समुद्र,—**खण्डः** चन्द्रमा की कला, अर्धचन्द्र,—**भा** कुमुदिनी, **भृत्**,—**शेखरः**,—**मौलि**, मस्तक पर चन्द्र का आभूषण धारण करने वाला देवता, शिव, **मणिः** चन्द्रकान्तमणि,—**मण्डलम्** चन्द्रमा का परिवेश, चन्द्र मण्डल, रत्नम्—मोती,—**री** (रे) या चन्द्रमा की कला,—**लोहकम्**,—**लौहम्** चांदी, —**वदना** छन्द का नाम है० परिशिष्ट,—**वासरः** सोमवार।

इन्दुमती [इन्दु+मतुप्+ङीप्] 1. पूर्णिमा 2 'अज' की पत्नी, 'भोज' की बहन।

इन्दूरः [इन्दु+र पृषो० ऊत्वम्] चूहा, मूषा।

इन्द्रः [इन्द्+रन्, इन्दतीति इन्द्रः, इदि ऐश्वर्ये--मल्लि०] 1 देवों का स्वामी 2 वर्षा का देवता, वृष्टि 3 स्वामी या शासक (मनुष्यादिक का), प्रथम, श्रेष्ठ (पदार्थों के किसी वर्ग में); सदैव समास के अन्तिम पद के रूप में नरेन्द्र -मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृगेन्द्र -शेर, --गजेन्द्र, योगीन्द्र कपीन्द्र, --आ इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का वृष्टि-देवता है, वेदों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है, परन्तु पुराणों की दृष्टि से यह द्वितीय श्रेणी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अदिति के एक पुत्र हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बिल्कुल नीचे यह निम्नतर हैं, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख हैं और सामान्यतः इन्हें सुरेश या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। जैसा कि वेदों में वर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पूर्व दिशा के अधिष्ठातृ देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्र धारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और वर्षा करते हैं, यह असुरों के साथ प्रायः युद्ध में लगे रहते हैं और उनको भयभीत करते रहते हैं, परन्तु कई बार उनसे पराजित भी हो जाते हैं। पुराणों में वर्णित इन्द्र कामुकता और व्यभिचार के लिए प्रख्यात हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण उनके द्वारा गौतम की पत्नी अहल्या का सतीत्वहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जार कहलाता है। गौतम ऋषि के शाप से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योनि जैसे हजार चिह्न बन जाते हैं इसीलिए उसे सहस्राक्ष कहते हैं, परन्तु बाद में यह चिह्न 'आँख' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए यह सहस्रनेत्र, सहस्र-योनि या सहस्राक्ष कहलाने लगते हैं। रामायण में वर्णन आता है कि रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को पराजित कर दिया तथा वह उसे उठा कर लंका में ले गया, इसी साहसिक कार्य करने के उपलक्ष में मेघनाद को 'इन्द्र-जित्' की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पड़ने पर कहीं इन्द्र का छुटकारा हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सदैव राजाओं को १०० यज्ञ पूरा करने में रोकता रहता है, क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि जो कोई १०० यज्ञ पूरा कर लेगा, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेगा, यही कारण है कि वह नहुष और रघु के यज्ञीय घोड़ों को उठा कर ले गया, दे० रघु० तृतीय सर्ग। यह सदैव घोर तपश्चर्या करने वाले ऋषि-मुनियों से भयभीत रहता है और अप्सराएं भेज कर उनके मार्ग में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है (दे० अप्स-रस्)। कहा जाता है कि उसने पर्वत के पंख काट डाले जब कि वह कष्ट देने लगे थे। उसी सम्बन्ध उसने बल तथा वृत्र की हत्या कर दी। इसकी पत्नी पुलोमा राक्षस की पुत्री है, इसके पुत्र का नाम जयन्त है। यह अर्जुन के पिता भी कहे जाते हैं)। सम०—अनुजः, -अवरजः विष्णु और नारायण की उपाधि,—अरिः एक राक्षस,--आयुधम् इन्द्र का शस्त्र, इन्द्रधनुष् रघु० ७।४, कीलः—1. 'मदर' पर्वत का नाम 2 चट्टान (-लम्) इन्द्र की ध्वजा,—कुञ्जरः इन्द्र का हाथी, ऐरावत,—कूटः एक पर्वत का नाम—कोशः (षः), -कक्षः 1 कील, खूंटा 2 प्लेटफार्म या समतल बना चबूतरा 3 खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार के साथ लगा हो,—गिरिः महेन्द्र पर्वत,—गुरुः, -आचार्यः इन्द्र का अध्यापक, अर्थात् बृहस्पति,—गोपः, --गोपकः एक प्रकार का कीड़ा जो मखमल या लाल रंग का होता है,--चापम्, -धनुस् (नपुं०) 1 इन्द्रधनुष् 2. इन्द्र का कमान,—जालम् 1 एक शस्त्र जिसे अर्जुन ने प्रयुक्त किया था, युद्ध का दाँव-पेंच 2. जादूगरी, बाजीगरी—स्वप्नेन्द्रजालसदृशं खलु जीवलोकम्—शा० २।२, जालिक (वि०) छद्मपूर्ण, अवास्तविक, भयानक (--कः) बाजीगर, जादूगर,—जित् (पुं०) इन्द्र को जीतने वाला, राक्षस का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया। रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रजित्' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था—वह बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा। 'शिव' से अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने अपनी इस जादू की शक्ति का उपयोग किया, फलतः इन्द्र को बांध कर वह उसे लंका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मुक्त कराने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि दी, परन्तु मघवान इन्द्र का मुक्त करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे अमरता का वरदान न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसकी इस अनुचित माँग को मानने से इंकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी माँग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अभीष्ट प्राप्त कर लिया। रामायण में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का सिर काटे जाने का वर्णन है जब कि वह यज्ञ कर रहा था] °हन्तृ,—जिह्वा (पुं०) लक्ष्मण,—द्रुमः, -द्रुमकः रुई का गद्दा,—द्रुः देवदारु का वृक्ष, --नीलः नीलकान्तमणि,—नीलकः पताका, —पत्नी इन्द्र की पत्नी शची,—पुरोहितः बृहस्पति, - प्रस्थम् यमुना के किनारे स्थित एक नगर जहाँ पाण्डव रहते थे (यही नगर आज कल वर्तमान दिल्ली है)।- इन्द्रस्यागमस्तावत्कारि मा भन्तु केवलः—शि० २।६३,--महोत्सवः इन्द्र का शस्त्र, वज्र,—मेघवत्

सोढ,—महः 1 इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव 2. बरसात,- लोकः इन्द्र का संसार, स्वर्गलोक, -वंशा, वज्रा दो छंदों के नाम दे० परिशिष्ट, -शत्रुः 1 इन्द्र का शत्रु या इन्द्र को मारने वाला (जब कि स्वराघात अन्तिम स्वर पर है), प्रह्लाद का उपाधि, रघु० ७।३५, 2 इन्द्र जिसका शत्रु है, वृत्र का विशेषण (जब कि स्वराघात प्रथम स्वर पर है) [यह घटना शतपथ ब्राह्मण के एक उपाख्यान की ओर संकेत करती है, यहाँ बतलाया गया है कि वृत्र के पिता ने अपने पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उसने प्रथम स्वर पर बलाघात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया - तु० शिक्षा-५२-मन्त्रो हीन स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह, स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेंद्रशत्रु स्वरतोऽपराधात् ।] शत्रुभ एक प्रकार का कीड़ा, वीरबहूटी, सुत,—सूनु (क) जयन्त का नाम (ख) अर्जुन का नाम (ग) वानरराज वालि का नाम, —सेनानीः इन्द्र की सेनाओं का नेता, कार्तिकेय की उपाधि ।

इन्द्रकम् [इन्द्रस्य राज्ञः क सुखं यत्र—तारा०] सभा-भवन, बड़ा कमरा ।

इन्द्राणी [इन्द्रस्य पत्नी आनुक्+ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रियम् [इन्द्र+घ—इय] 1 बल, शक्ति (वह गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2 शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, जैसे अवयव (इन्द्रियां) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानेन्द्रियां या बुद्धीन्द्रियां- श्रोत्र त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पञ्चमी (कुछ के अनुसार 'मन' भी) (ख) कर्मेन्द्रियां—पायूपस्थ हस्तपाद वाक् चैव दशमी स्मृता मनु० २।९९, 3 शारीरिक या पुरुषोचित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4 वीर्य 5 पांच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति । सम०—अगोचर (वि०) जो दिखलाई न दे सके,—अर्थः 1 इन्द्रियों के विषय (वह विषय ये हैं - रूप शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी—अमर०), भग० ३।३४, रघु० १४।२५, आयतनम् इन्द्रियों का आवास अर्थात् शरीर,—गोचर (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जा सके (—रः) ज्ञान का विषय, ग्राम, —वर्गः इन्द्रियों का समूह, समष्टि रूप से ग्रहण की गई पांच ज्ञानेन्द्रियां —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, निर्वचार मधुतीन्द्रियवर्ग—शि० १०।३, - ज्ञानम् चेतना, प्रत्यक्ष करने की शक्ति, निग्रहः ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,—बधः अजेयता,— विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मार्गगमन,—सन्निकर्षः ज्ञानेन्द्रिय का संपर्क (चाहे वह बाह्य विषयों से हो या मन से) स्वयं अज्ञेयता, अचेतना, जड़िमा ।

इन्ध् (रु० आ०) (इन्धे या इधे, इद्ध) प्रज्वलित करना, जलाना, आग लगाना, (कर्मवा०—इध्यते) जलाया जाना, प्रदीप्त होना भड़क उठना, सम् , प्रज्वलित करना ।

इन्ध [इन्ध्+घञ्] ईंधन, (लकड़ी कोयला आदि) ।

इन्धनम् [इन्ध्+ल्युट्] 1 प्रज्वलित करना, जलाना 2 ईंधन (लकड़ी आदि) ।

इभ [इ+भन्, किच्च] हाथी, -भी हथिनी । सम० - अरिः सिंह, आनन गणेश तु० 'गजानन' सिंहोचित चतुराई, बुद्धिमत्ता, सतर्कता,—पालकः महावत, —पोतः अल्पवयस्क हाथी, हाथी का बच्चा, यूथिः (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) [इभं गजमर्हति यत्] धनाढ्य, धनवान् — म्यः 1 राजा 2 महावत,—भ्या हथिनी ।

इभ्यक (वि०) [स्वार्थे कन्] धनाढ्य, धनी ।

इयत् (वि०) [इदम्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने विस्तार का—इयत्तावत्, दश० ९३, इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रम् रघु० १३।९७, इतने वर्ष- इय नीतिरितीयमी—शि० २।३०, इतनी ।

इयत्ता, इयत्त्वम् [इयत्+तल्+टाप्, त्वल् वा] 1 (क) इतना, निश्चित मात्रा या परिमाण —इदंत्तया रूपमियत्तया वा—रघु० १३।५, न वयं परिच्छेत्तुमियत्तयालम्—६।७७ (ख) सीमित संख्या, सीमा —न गुणानामियत्तया रघु० १०।३२, 2 सीमा, मानक ।

इरणम् [ऋ+अण् एयो०] 1 मरुस्थल 2 रिहाली या नुनई भूमि, बंजर भूमि, तु० 'इरिण' ।

इरम्मद [इरया जलेन माद्यति वर्धते इति इरा-मद्+क्विप्, ह्रस्व मुम्] 1 बिजली की कौंध, बिजली के गिरने से पैदा हुई आग, 2 वाडवानल ।

इरा [इ+रन्, इ काम रान्ति ग+क वा तारा०] 1 पृथ्वी 2 वक्तृता 3 वाणी की देवता सरस्वती 4 जल 5 आहार 6 मदिरा । सम०—ईशः वरुण, विष्णु, गणेश,—चरम् ओला, इसी प्रकार 'इरावरम्' ।

इरावत् (पु०) [इरा+मतुप्] समुद्र ।

इरिणम् [ऋ+इनच् किदिच्च] नुनई भूमि, रिहाली जमीन ।

इर्वारु (वि०) [उर्व+आरु, पृषो०] नाशक, हिंसक —रुः (पु० स्त्री०) ककड़ी ।

इल् (तु० पर०) (इलति, इलित) या (चु० उभ०) 1 जाना, चलना-फिरना 2 सोना 3 फेंकना, भेजना, डालना ।

इला [इल्+क+टाप्] 1 पृथ्वी 2 गाय 3 वक्तृता —दे० 'इडा' । सम० -भृत् पृथ्वी, धरती मण्डल,—धरः पहाड़ ।

इलिका [इला+कन्, इत्वम्] पृथ्वी, धरती।

इल्वलः—लाः (ब० व०) [इल्+वल, इल्+विच्+वलच् वा] मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर स्थित पाँच तारे।

इव (अव्य०) [इ+वन् वा०] 1 की तरह, जैसा कि (उपमा दर्शाते हुए)—वागर्थाविव संपृक्तौ—रघु० १।१, 2 मानों, (उत्प्रेक्षा को दर्शाते हुए)—पश्यामीव पितामहम्—भट्ट० १।६, लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः—मृच्छ० १।३४ 3 कुछ, थोड़ा सा, कदाचित् -कदाचिदिवाद्यम्,—शाक०, 4. (प्रश्नवाचक शब्दों से जुड़े हुए) 'संभवतः' 'बतलाइये तो' 'निस्सन्देह'—विना सीता देवेव किमिव हि न दुःखं रघुणे—उत्तर० ६।३०, कः इव—किस प्रकार का, किस भाँति का, मुहूर्तमिव—केवल क्षण भर के लिए, किंचिदिव—जरा सा, थोड़ा सा, इसी प्रकार ईषदिव, नाधिराढिव आदि।

इषीका=इषीका।

इष् (क) (तु० पर०) (इच्छति, इष्ट) 1 कामना करना, चाहना, प्रबल इच्छा होना इच्छामि सदक्षिणमाज्ञया ते कु० ३।२, 2 छोड़ना, 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, तलाश करना, ढूंढना, 4 अनुकूल होना 5 हाँ करना, स्वीकृति देना (आ० वा०) 1 चाहा जाना 2 नियत किया जाना हस्तच्छेदनमिष्यते मनु० ८।३२८, अनु—, ढूंढना, कोशिश करना, प्रयत्न करना, अभि —, जो करना, चाहना, परि—, ढूंढना, प्रति —, प्राप्त करना, स्वीकार करना देवस्य शासनं प्रतीष्य- रा० ६, (स) (दि० पर०) (इष्यति, इषित) 1 जाना, चलना-फिरना 2 फैलाना 3 डालना, फेंकना अनु—ढूंढना, ढूंढने के लिए जाना— न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्- कु० ५।८५, प्र—(प्राय 'प्रेर०') 1 भेज देना, डाल देना, फेंक देना—भट्टि० १५।७७ 2 भेजना, प्रेषण करना —किमर्थमयं प्रेषितो राघुः रा० ५, (ग) (स्वा० उभ०) (एषति) जाना, चलना-फिरना, अनु —, अनुसरण करना।

इषः [इष्+अच्] 1 बलशाली, शक्ति सम्पन्न 2 आश्विन मास, —स्वस्तिमितेनिमिषेक्षणमस्तु शिव० ६।४९।

इषि (स्त्री) का [इष्+इन्+ङीष् अत इत्वम्] 1 सरकंडा, नरकुल, °अस्त्रम् रघु० १२।२३ 2 बाण।

इषिरः [इष्+किरच्] अग्नि।

इषुः [इष्+उ] 1. बाण 2. पाँच की संख्या। सम०- अग्रम् —अग्रीयम् बाण की नोक,- असनम्,—अस्त्रम् धनुष्, रघु० ११।७७, - आसः 1 धनुष् 2 धनुर्धर, योद्धा, भग० १।४, १७,—कारः,—कृत् (पु०) बाण बनाने वाला, —घरः- -भृत् धनुर्धर, —पथः,- विक्षेपः तीर आने का स्थान, बाण का परास,—क्षेपः बाण छोड़ना, तीर चलाना।

इषुधिः [इषु+धा+कि] तरकस।

इष्ट (भू० क० कृ०) [इष्+क्त] 1 कामना किया गया, चाहा गया, जो से चाहा हुआ, अभिलषित 2 प्रिय, पसन्द किया गया, अनुकूल, प्यारा 3 पूज्य, आदरणीय 4 प्रतिष्ठित, सम्मानित 5. उत्सृष्ट, यज्ञों से पूजा गया —ष्टः प्रेमी, पति,—ष्टम् 1 चाह, इच्छा 2. संस्कार 3 यज्ञ, (अव्य०) स्वेच्छापूर्वक। सम०—अर्थः अभीष्ट पदार्थ, —आपत्तिः (स्त्री०) चाही हुई बात का होना, दावी का वक्तव्य जो प्रतिवादी के भी अनुकूल हो —इष्टापत्तौ दोषान्तरमाह—अन्न०,—अन्न (वि०) सुगन्ध युक्त (—नः) सुगन्धित पदार्थ (—न्नम्) रेत,—देवः,—देवता अनुकूल देव, अभिभावक देव।

इष्टका [इष्+तकन्] ईंट-मृच्छ० ३। सम०—कृतम् ईंटों का घर,—चित (वि०) ईंटों से बना (इष्टकचित भी), —न्यासः घर की नींव रखना,—वप ईंटों से बना मार्ग।

इष्टापूर्तम् [मयूरव्यंसकादित्वात् मध्यमपदलोपी समासः] यज्ञादिक पुण्यकार्यों का अनुष्ठान, कूएँ खोदना तथा दूसरे धर्मकार्यों का सम्पादन—इष्टापूर्तविधेः सपत्नजयमनात्—महावी० ३।१।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] 1 कामना, प्रार्थना, इच्छा 2 इच्छुक होना या कोशिश करना 3 अभीष्ट पदार्थ 4 अभीष्ट नियम या आवश्यकता की पूर्ति (भाष्यकार द्वारा कात्यायन के वार्तिकों अथवा पतञ्जलि के भाष्य में कुछ अतिरिक्त जोड़ना—इष्टयो भाष्यकारस्य) तु० 'उपसंख्यानम्' 5 आदेश, शिक्षा 6 आमन्त्रण, आदेश 7 यज्ञ। सम०-पशुः यज्ञ में बलि दिया जाने वाला जानवर।

इष्टिका [इष्ट+ठिकन्+टाप्] ईंट आदि, दे० 'इष्टका'।

इष्मः [इष्+मक्] 1 कामदेव 2 वसन्त ऋतु।

इष्मः ष्मन् [इष्+स्मप्] वसन्त ऋतु।

इह् (अव्य०) [इ काम स्यति—सो+क्विप् नि० ओलोपः] क्रोध, पीड़ा और शोक की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

इह (अव्य०) [इदम्+ह इत्यादेशः] 1 यहाँ (काल, स्थान या दिशा की ओर संकेत करते हुए), इस स्थान पर, इस दशा में 2 इस लोक में (विप० परत्र या अमुत्र)। सम०- अमुत्र (अव्य०) इस लोक में और परलोक में, यहाँ और वहाँ,—लोकः यह संसार या जीवन, —स्थ (वि०) यहाँ विद्यमान।

इहत्य (वि०) [इह+त्यप] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का।

ई

ईः (पुं०) [ई+क्विप्] कामदेव (अव्य०) (क) क्षिप्रता (ख) पीडा (ग) शोक (घ) क्रोध (ङ) अनुकंपा (च) प्रत्यक्षज्ञान या चेतना (छ) तथा सबोधन की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

ईं (क) (दिवा० आ०) (ईयते) जाना (ख) (अदा० पर०) 1 जाना 2 चमकना 3 व्याप्त होना 4 चाहना, कामना करना 5 फेंकना 6 जाना 7 प्रार्थना करना (आ०) 8 गर्भवती होना।

ईक्ष् (भ्वा० पर०) (ईक्षते, ईक्षित) 1. देखना, ताकना, आलोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगा कर देखना या चूरना 2 खयाल रखना, विचारना, समझना —सर्वभूतस्थमात्मानं · ईक्षते योगयुक्तात्मा —भग० ६।२९, 3 हिसाब में लगाना, परवाह करना —नाभिजनमीक्षते—का० १०४, न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते—कु० ५।८२ 4 सोचना, विचार करना —ततेज ऐक्षत बहुस्यां प्रजायेय—छा० 5 सावधान रहना या किसी के भले बुरे का ध्यान करना (सम्प्र० के साथ)—कृष्णाय ईक्षते गर्ग —सिद्धा० (शुभाशुभं पर्यालोचयति इत्यर्थः) अभि—, आशंका करना कुहकचकितो लोकः सत्यप्यपायमभीक्षते—हि० ४।१०२, अने० पा०, अनु—ध्यान में रखना, खोज करना, ढूंढना, पूछ-ताछ करना, अप—, 1 प्रतीक्षा करना, इंतजार करना—न कालमपेक्षते स्नेह मृच्छ० ७, कु० ३।२६ 2 आवश्यकता होना, जरूरत होना, कमी होना—शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते—शि० २।८६, विक्रम० ४।१२, कु० ३।१८ 3 सावधान रहना, खयाल रखना, ध्यान रखना—किमपेक्ष्य फलम् कि० २।२१, यत् शब्दोऽयं व्यञ्जकत्वेऽर्थान्तरमपेक्षते —सा० द० ४, हिसाब में लगाना, सोचना, विचार करना, आदर करना (प्राय 'न' के साथ)—तदानपेक्ष्य स्वशरीरमार्दवम्—कु० ५।१८, अभिवि—, की ओर देखना, अव—, 1 दृष्टि डालना, प्रेक्षण करना, अवलोकन करना 2 निशाना लगाना, ध्यान में रखना —यौत्स्यमानानवेक्षेऽहम्—भग० १।२८, सम्मान करना—रघु० ३।२१, त्रिविष्टपस्थमप्यवेक्ष्य मां —८।६०, मेरे सम्मान की खातिर 3 रखवाली करना, रक्षा करना—श्लाघ्या दुहितरमवेक्षस्व—उत्तर० १, 4 सोचना, विचारना—यदवोचदवेक्ष्य वाग्मिनी—कि० २।३, उप—, 1 ढूंढना, खोजना, देखना—सप्रणाममुदीक्षिता—कु० ६।७, ७।६७, 2 प्रतीक्षा करना —त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९।९०, उत्स—, 1 आशा करना, भविष्य में देखना, उत्प्रेक्षमाणा अवनाभिघातम्—मृच्छ० २, 2 अनुमान लगाना, अंदाज करना—किमुत्प्रेक्षसे कुतस्त्योऽयमिति —उत्तर० ४, 3 विश्वास करना, सोचना—उत्प्रेक्षामहे वयं तावन्मलिम्लुचं विभीषणम्—रामा०, ऊहि—, मुंह ताकना, उप—, 1 अवहेलना करना, नजर अंदाज करना, परवाह न करना, —उत्प्रेक्षते य अलघुलम्बिनीर्जटा—कु० ५।४७, रघु० १४।३४, 2 भाग जाने देना, जाने देना, टालमटोल करना, —नोपेक्षेत क्षणमपि राजा साहसिकं नरम्—मनु० ८।३४४ 3 ध्यान से देखना, विचारना, निर्—, 1 टकटकी लगाकर देखना, पूरी तरह से देखना, —श्येनेव ···· निरीक्षमाण सुतरां दयालुः —रघु० २।५२, भग० १।२२, मनु० ४।३८, 2 ढूंढना, खोजना—निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव—विक्रमांक०, परि—, 1 जांच करना, ध्यानपूर्वक जांच पडताल करना—अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषान्सगतं रहः —पं० ५।२४, मालवि० १।२, मनु० ९।१४, 2 परीक्षण करना, जांच करना, परीक्षा लेना—मायां मयोद्भाव्यपरीक्षितोऽसि—रघु० २।६२, यत्नात्परीक्षितं पूर्वं—याज्ञ० १।५५, पौरुष के विषय में ध्यानपूर्वक जांचा गया प्र—, देखना, ताकना, प्रत्यक्ष करना· तमायान्तं प्रेक्ष्य—पञ्च० १, रघु० १२।४४, कु० ६।४७ मनु० ८।१४७ प्रति—, इन्तजार करना —सपत्न्यते व कामोऽस्य काल कश्चित्प्रतीक्ष्यताम्—कु० २।५४ मनु० ९।७७, प्रतिवि—, प्रत्यवलोकन करना, वि०—, देखना, ताकना,—न वीक्ष्य वपुश्चलं—कु० ५।८५, व्यप—, ध्यान करना, खयाल रखना, सम्मान करना (प्राय 'न' के साथ)—न व्यपेक्षन्त समुत्सुका प्रजा —रघु० ९।६, सम्—, 1 देखना, ताकना 2 चिन्तन करना, विचार करना, हिसाब में लगाना —तेजसा हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१, कु० ५।१६, 3 ध्यानपूर्वक जांचना —असमीक्ष्यकारिणं, समव—, 1 देखना, निरीक्षण करना, 2. सोचना समुप—, अवहेलना करना, निरादर करना—दे० 'उप' ऊपर।

ईक्षक [ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक।

ईक्षणम् [ईक्ष्+ल्युट्] 1 देखना, ताकना 2 दृष्टि, दृश्य 3 आंख—इत्याद्विशोभाप्रहितेक्षणेन—रघु० २।२७, इसी प्रकार 'अलसेक्षणा'।

ईक्षणिक [ईक्षण+ठन्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता।

ईक्षतिः [ईक्ष्+क्तिन्] देखना, दृष्टि—ईक्षतेर्लोपश्चास्य अद्य०।

ईक्षा [ईक्ष्+अ+टाप्] 1 दृश्य 2 नजर डालना, विचार करना।

ईक्षिका [ईक्ष्+ण्वुल्, ईक्षा+कन्+टाप् वा इत्वम्] 1. बौद्ध 2. आलोचना, अवलोकन।

ईक्षित (भू० क० कृ०) [ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, ताका हुआ, खयाल किया हुआ,—क्तम् 1. दृष्टि, दृश्य 2. बौद्ध —अभिमुखे मयि सहृतमीक्षितम्—श० २।११।

ईक्ष्, ईक्ष् (भ्वा० पर०) (ईक्षति, ईक्षित) 1. जाना, हिलना-डुलना, डांवाडोल होना, प्रे०—झुलना, घूमना 2 हिलना, अ—हिलाना, डगमगाना —प्रेङ्खन्त्य झुलिता क्षिति —भट्टि० १७।१०८, प्रेङ्खद्भूरिमुक्त—मा० ६।५, अमरु १।

ईक्ष्, इक्षय् (भ्वा० आ०) 1. जाना 2. सिद्ध करना, कार्यान्वित करना।

ईड् (अदा० आ०) (ईडे, ईडित) स्तुति करना—अग्निमीळे पुरोहितम्—ऋक्—१।१।१ शालीनतामनजदीक्षमान —रघु० १८।१७, भट्टि० ९।५७, १८।१५।

ईडा [ईड्+अ+टाप्] स्तुति, प्रशंसा।

ईड्य (स० कृ०) [ईड्+ण्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य—अयमहं भीड्य अवत पितेव —रघु० ५।३४

ईतिः (स्त्री०) [ई+क्तिच्] 1 महामारी, दुःख, मौसम। संकट, ईति कहना ६ कही जाती हैं —1. अतिवृष्टि २ अनावृष्टि ३ टिड्डीदल ४ चूहे ५. तोते और ६ बाहर से आक्रमण —अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषका शुका, प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृता। —निरातंका निरीतय —रघु० १।६१, 2. संक्रामक रोग 3 (विदेश में) घूमना विदेश यात्रा 4 दंगा।

ईदृक्ता [ईदृश्+तल्+टाप्] गुण (विप० 'इदत्ता')—विन्ध्यो रिवास्यानवधारणीयम् ईदृक्तया रूपमियत्तया वा —रघु० १३।५।

ईदृश—क (वि०) (स्त्री०-शी-शी) (ईदृश् भी)—ऐसा, इस प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुणों से युक्त।

ईप्सा [आप्तुमिच्छा—आप्+सन्+अ] 1 प्राप्त करने की इच्छा 2 कामना, इच्छा।

ईप्सित (वि०) [आप्+सन्+क्त] इच्छित अभिलषित, प्रिय—तत् इच्छा, कामना।

ईप्सु (वि०) [आप्+सन्+उ] प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाला, ग्रहण करने की कामना या इच्छा करने वाला (कर्म० और तुमु० के साथ परन्तु प्रायः समास में) —सौरभ्यलोभात्पुरिषे ते मुखमाक्रान्तस्य रघु० ५।६३।

ईर् (अदा० आ०) (ईर्ते, ईर्ते) (भ्वा० पर० भी) (कर्मवा० -ईर्यते) 1 जाना, हिलना-डुलना, हिलाना (अक० भी) 2 उठना, खिसकना, उगना; (चुरा० —उभ०) या प्रेर० (ईरयति, ईरित) 1. फेंकना, छोड़ना, (तीर) चलाना, डालना—ऐरिरन्य महाद्रुमम् —भट्टि० १५।५२ 2. कहना, उच्चारण करना, दोहराना —इतीरयन्तीव तवा गिरोऽपि—नै० १४।२१, शि० ९।६९, शि० १।२६, रघु० ९।८, मा० १।२५ 3. चलाना, हिलना-डुलना, हिलाना—बाहोरितपक्षपातुलिभिः —श० १, 4. नियुक्त करना, काम लेना, क्त—, उठना (प्रेर०) 1. कहना, उच्चारण करना, कथन करना, बोलना,—उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते —पञ्च० १।४१, रघु० २।६, 2. आगे प्रस्तुत करना —यदक्षोभो यमुदीरयिष्यति —रघु० ८।९२ 3. फेंकना, (पासा आदि) लुढ़काना रघु० ६।१८, 4. (घूर्णि आदि) उठाना 5. प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, अ —1. डालना, फेंकना—श० २।२ 2 प्रेरित करना, प्रोत्साहन—रघु० ४।२४, 3. उकसाना, भड़काना, चलाना, क्त—, 1. कहना 2. हिलाना, हिलना-डुलना, क्तवत्—, कहना, बोलना।

ईरकः [ईर्+ण्वुल्] वायु,—कम् 1. शुल्क करने वाला, हिलाने वाला, चलाने वाला, 2. आगे लाने वाला 3.—इरम्।

ईरिण (वि०) [ईर्+इनन्] मरुस्थल, बंजर,—णम् ऊसर, बंजर भूमि—मुहुर्वलित्वा निःश्वसनाकीर्णेरिणसन्निभम् —रामा०।

ईर्ख्य=ईर्ष्य।

ईर्वम् [ईर्+मक्] बाल।

ईर्षा [ईर्ष्+श्यन्+टाप्] (धार्मिक क्रिया के रूप में) इधर उधर घूमना।

ईर्षिकः (पु० स्त्री०) [ईष ह्रस्व+उक् वा०] ककड़ी।

ईर्षा=ईर्ष्या।

ईर्ष्य्, ईर्ष्यय् (भ्वा० पर०) (ईर्ष्यति, ईर्ष्यित) डाह करना, ईर्ष्यालु होना, दूसरों की सफलता को देखकर असहिष्णु होना, (सम० के साथ)—दूरवे ईर्ष्यति—सिद्धा०, शि० ८।१६।

ईर्ष्य, ईर्ष्यु, ईर्ष्यक (वि०) [ईर्ष्य्+अच्, उन्, ण्वुल् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु।

ईर्ष्या, ईर्षा [ईर्ष्य्+अच्, ईर्ष्य्+अङ्, स्त्रीपः] डाह, जलन, दूसरों की सफलता को देखकर जलन पैदा होना।

ईर्ष्यालु (भा) मु, ईर्ष्युः (लु) (वि०) [ईर्ष्य्+आलुच्, उ वा] डाह करने वाला, असहिष्णु।

ईलिः (स्त्री) (स्त्री०) [ईल्+कि ह्रस्व च] एक हथियार, बड़ा, छोटी तलवार।

ईश् (अदा० आ०) (ईष्टे, ईशित) 1. राज्य करना, स्वामी होना, शासन करना, आदेश देना (संप्र० के साथ) —अर्थालाभोविधे स्वं वयमपि च गिरामीशते शब्दार्थम्—भर्तृ० ३।१० 2. योग्य होना, शक्ति रखना, (तुमुन् के साथ) आचूर्णयितुमीष्टे हरिणान् सहोढुम् —रघु० १८।१६, 3. स्वामी होना, अधिकार में करना।

ईश (वि०) [ईश्+क] 1 अपनाने वाला, स्वामी, मालिक, ई० नीचे 2 शक्तिशाली 3 सर्वोपरि,—शः 1. मालिक, स्वामी (सब० के साथ या समास में), सर्वेन्द्रियेशा मनसा वशमृच् -कु० ३।३४ इसी प्रकार वाणीशा और सुरेश आदि 2 पति 3 ग्यारह ४. शिव, —शा 1 दुर्गा 2 ऐश्वर्यशालिनी स्त्री, धनाढ्य महिला। सम०—कोणः उत्तर पूर्वी दिशा,—पुरी, —नगरी बनारस, वाराणसी, सखः कुबेर का विशेषण।

ईशानः [ईश् शानच्] 1 शासक, स्वामी, मालिक 2 शिव—कु० ७।५६ 3 सूर्य (शिव के रूप में) 4 विष्णु,—नी दुर्गा।

ईशिता-त्वम् [ईशिनो भावः—ईशिन्+तल्+टाप्, त्वल् वा] सर्वोपरिता, महत्त्व, शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अणिमन्' या 'सिद्धि'।

ईश्वर (वि०) (स्त्री०—रा—री) 1 शक्तिसम्पन्न, योग्य, समर्थ ('तुमुन्' के साथ) कु० ४।११, 2 धनाढ्य, दौलतमंद,—रः 1 मालिक, स्वामी—ईश्वर लोकोऽयं सेवते—मुद्रा० ३।१४ 2 राजा, राजकुमार, शासक 3 धनाढ्य या बड़ा आदमी—मा प्रयच्छेश्वरे धनम् हि० १।१५, सु० 'उलटे बांस बरेली को' 4 पति—कि० ९।३९, 5 परमेश्वर 6. शिव—विक्रम० १।१ 7 कामदेव, —रा,—री दुर्गा। सम०—निषेधः परमात्मा के अस्तित्व को न मानना, नास्तिकता, —भुवनम् (नपु०) मन्दिर, —सभम् राजकीय दरबार या सभा।

ईष् (स्वा० उभ०) (ईषति-ते, ईषित) 1 उड़ जाना 2 देखना, नजर डालना 3 देना 4 मार डालना।

ईषः [ईष्+क] आश्विन मास, तु० 'ईष्'।

ईषत् (अव्य०) [ईष्+अति] 1 जरा, कुछ सीमा तक, थोड़ा सा—ईषत् चुम्बितानि—शा० १।३। सम०—उष्ण (वि०) गुनगुना -कर (वि०) 1. थोड़ा करने वाला अनायास पूरा हो जाने वाला, —जलम् उबला पानी, —पाण्डु (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद,—पुरुषः अक्षम और धृणित व्यक्ति,—रक्त (वि०) पीला लाल, हल्का लाल,—लम्ब,—प्रलंब (वि०) थोड़े से में झुलम,—हासः थोड़ी हंसी, मुस्कराहट।

ईषा [ईष्+क+टाप्] 1. गाड़ी की कड़, 2 हलस।

ईषिका [ईषा+कन्, इत्वम्] 1 हाथी की आंख की पुतली 2 रणसाज की कूंची 3 हथियार, तीर, बाण।

ईषीरः [ईष्+किरच्] अग्नि, आग।

ईषीका [ईष्+क्वुन्, इत्वम्, दीर्घत्वम्] 1 रणसाज की कूंची, 2 ईंट 3 इषीका।

ईष्म,-ष्मन्=इष्म, इष्मन्।

ईह् (स्वा० आ०) (ईहते, ईहित) 1 कामना करना, चाहना, सोचना (कर्म० या तुमुन् के साथ)—भग० १६।१२, भट्टि० १।११ 2 प्राप्त करने का प्रयत्न करना 3 लक्ष्य बनाना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, कोशिश करना,—माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते—भर्तृ० २।६, याज्ञ० २।११६, तुम्—1 कामना करना, इच्छा करना, 2 करने का प्रयत्न करना, कोशिश करना प्रियाणि वाक्यानि-वसुभिः समीहितुम्—कि० १।१९।

ईहः [ईह्+अ] 1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा मनु० ९।२०५। सम० मृग 1 भेड़िया 2 नाटक का एक खंड जिसमें ४ अंक होते हैं परिभाषा के लिए दे०, सा० द० ५१८. वृक भेड़िया।

ईहित (भू० क० कृ०) [ईह्+क्त] चाहा हुआ, सोचा हुआ, प्रयत्न किया हुआ - तम् 1 कामना, इच्छा 2 प्रयत्न, प्रयास, 3 अध्यवसाय कार्य, कृत्य—कि० १।२२।

उ

उः [अव्+डु] शिव का नाम, ओम्-के तीन अक्षरों (अ+उ+म्) में से दूसरा -दे० अ, -(अव्य०) 1 तुरन्त के रूप में काम में आने वाला अव्यय—उ उमेश —सिद्धा० 2 भिन्न अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिबोधक अव्यय, (क) पुकार,—उ मतिं मात्रा तपसो लिपिद्धां पत्यावृणाना सुमुखी जगाम -कु० १।२६(ख) क्रोध (ग) अनुकम्पा (घ) आदेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रश्न वाचकता या केवल (छ) पूरणार्थक, श्रेष्ठ साहित्य में मुख्य रूप से अथ (अथो), न (नो) और किम् (किमु) के साथ प्रयुक्त होता है, दे० शब्दों को।

उक्त (भू० क० कृ०) [वच्+क्त] 1 कहा हुआ, बोला हुआ 2. कथित, बताया हुआ (विप० अनुक्त या समाक्षित) 3 बोला हुआ, समाधिम - असावनुक्तोऽपि सहाय एव-कु० ३।२६ 4 वर्णन किया गया, बयान किया हुआ,—क्तम् भाषण, शब्दसमूहत्व, वाक्य। सम०—अनुक्त कहा और बिना कहा हुआ,

--उपसंहारः संक्षिप्त वर्णन, सारांश, इतिश्री,—निर्वाहः कही बात का निर्वाह करना, वृत्तः ऐसा शब्द (स्त्री० या नपु०) जो पु० भी हो, और जिसका पु० से भिन्न अर्थ लिङ्ग की भावना से ही प्रकट होता है,—संयुक्त भाषण और उत्तर, व्याख्यान।

उक्ति (स्त्री०) [वच्+क्तिन्] 1. भाषण, अभिव्यक्ति, वक्तव्य उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः, चन्द्रा० ५।१२०, मनु० ८।१०४ 2. वाक्य 3 अभिव्यक्त करने की शक्ति, शब्द की अभिव्यञ्जनाशक्ति —जैसा कि एकयोक्त्या पुण्यवती दिवाकरनिशाकरौ -अमर०।

उक्थम् [वच्+थक्] 1 कथन, वाक्य, स्तोत्र 2. स्तुति, प्रशंसा 3 सामवेद।

उक्ष् (स्वा० उभ०) (उक्षति, उक्षित) 1. छिड़कना, सींचा करना, तर करना, बरसाना -औक्षन् शोणितसम्भावा. —भट्टि० १७।९, ३।५, शि० ५।३०, रघु० ११।५, ७०, कु० १।५४ 2 निकालना, बिखेरना करना, अभि—, पवित्र तथा अभिमन्त्रित जल छिड़कना, --निरभि शकुन्तलामभ्युक्ष्य ग० ४, परि—इधर-उधर छिड़कना, प्र—, पवित्र जल के छींटे देकर अभिमन्त्रित करना,—प्राणान्वये तथा श्राद्धे प्रोक्षित द्विजकाम्यया—याज्ञ० १।१७९ मनु० ५।१२७, संम्—, जल के छींटों से अभिमन्त्रित करना—याज्ञ० १।२४।

उक्षणम् [उक्ष्+ल्युट्] 1. छिड़काव 2 छींटे देकर अभिमन्त्रित करना—वसिष्ठमन्योक्षणजात् प्रभावात्—रघु० ५।२७।

उक्षन् (पु०) [उक्ष्+कनिन्] बैल या साँड़—कु० ७।७० (कुछ समासों में उक्षन् का 'उक्ष' रह जाता है -महोक्ष, वृद्धोक्ष आदि)। सम०—अरः छोटा बैल तु० बस्तनर।

उक्ष्, उक्षय् (म्वा० पर०) (ओक्षति, उक्षयति, ओक्षित, उक्षित) जाना, छिड़कना-डुलना।

उक्षा [उक्ष्+क+टाप्] पतीली, डेगची।

उक्षित (वि०) [उक्षाया संस्कृतम् यत्] 1. पतीली में उबाला हुआ—सूत्यमुक्षितं च होमवत्—भट्टि० ४।९।

उग्र (वि०) [उच्+रन् गच्चान्तादेशः] 1 भीषण, क्रूर, हिंस्र, जंगली (दृष्टि आदि से) °दर्शन 2 प्रबल, डराना, भयानक, भयंकर—सिंहनिपातमुग्रम्—रघु० ३।६०, मनु० ९।७५, १२।७५, 3 शक्तिशाली, मजबूत, दारुण, तीव्र—उग्रा तपो वेदनाम्—ग० ३, अत्यंत गर्म उग्रलोकाम्—वेद० १।१३, अमे० पा० 4 तीक्ष्ण, प्रचण्ड, गर्म 5 ऊँचा, भव्य, —ग्रः 1. शिव या रुद्र 2. वर्णसंकर जाति—क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की संतान 3 केरल देश (वर्तमान मलाबार) 4. रौद्र-रस। सम०—गंध (वि०) तीक्ष्ण गंध वाला (—न्धः) 1 चम्पक वृक्ष 2. लहसुन —चारिणी, —चंडा दुर्गा देवी,—जाति (वि०) नीच वंश में उत्पन्न, बारबर,—दर्शनरूप (वि०) घोर दर्शन वाला, भयानक दृष्टि वाला,—धन्वन् (वि०) मजबूत धनुष को धारण करने वाला, (पु०) शिव, इन्द्र,—शेखरा शिव की चोटी, गंगा,—सेनः मथुरा का राजा और कंस का पिता (कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार कर कारागार में डाला था, परन्तु कृष्ण ने कंस को मार कर उसके पिता को कारागार से मुक्त कर सिंहासनासीन किया)।

उग्रंपश्य (वि०) [उग्र+दृश्+खश्, मुमागमः] भीषण दृष्टिवाला, डरावना, विकराल।

उच् (दिवा० पर०) (उच्यति, उचित या उक्त—अधिकांश में भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त) 1. संचय करना, एकत्र करना, 2. क्षीण होना, अल्पता अनुभव करना 3. उचित या योग्य होना, अभ्यस्त होना।

उचित (भू० क० कृ०) [उच्+क्त] 1 योग्य, ठीक, सही, उपयुक्त—उचितस्तनुपावरणम्य —उत्तर० ३, प्राप्तुमुन् के साथ—उचितं न ते मज्जुकलासे रोषितुम् —ग० ४ 2 प्रचलित, प्रथानुकूल,—उचितेषु करणीयेषु - ग० ४ 3 अभ्यस्त, प्रचलित (समास में)—नीवार-भागधेयोचितैः —रघु० १।५०, २।२५, ३।५४, ६०, ११।९, कि० १।३४, 4 प्रशंसनीय।

उच्च (वि०) [उद्+चित्+ड] 1 (सभी बातों में) ऊँचा, लम्बा—तितिक्षारथोच्चयम्—कु० ७।६३, उच्चात, उत्कृष्ट (परिवार आदि) 2. ऊँचा, ऊँची आवाज वाला—उच्चा पश्चिमया —शि० ४।१८ 3. तीव्र, दारुण, घोर। सम०—तरः नारियल का पेड़,—तालः ऊँचा संगीत, नृत्य आदि,—नीच (वि०) 1. ऊँचा नीचा 2. विविध, —नासा,—शिखा, ऊँचे मस्तक वाली स्त्री, -संभव (वि०) ऊँचा पद ग्रहण करने वाला (ब्राह्मणादिक) रघु० ३।१३, दे० इस पर मल्लि०।

उच्चकैः (अव्य०) [उच्चैस्+वकच्] 1. ऊँचा, ऊँचाई पर, उत्तुंग, (आत्म० भी)—विलोभयाहेरिव तावदुच्चकैः —शि० १।१६, १६।४६ 2. ऊँचे स्वर वाला।

उच्चक्षुस् (वि०) [ब० स०] 1. ऊपर को आँखें किए हुए, ऊपर की ओर देखते हुए 2. जिसकी आँखें निकाल दी गई हों, अंधा।

उच्चतर (वि०) [प्रा० ब०] 1. भीषण, भयानक, उग्र 2 फूहड़ा 3 ऊँची आवाज वाला 4. चोरी, चिड़-चिड़ा।

उच्चतरः (उच्चितरः चोरी सच—अथवा० ब०) रात का अन्तिम पहर।

उच्चयः [उद्+चि+अप्] 1. संग्रह, राशि, समूह, समु-

—क्षयोच्चयेन—श० २।९, तु० 'शिलोच्चय' भी 2 एकत्र करना, संचय करना (फूल आदि) —पुष्पोच्चयं नाटयति—मा० ४, कु० ३।६१, 3 स्त्री के ओढ़ने की चादर 4. समृद्धि, अभ्युदय।

उच्चरणम् [उद्+चर्+ल्युट्] 1 ऊपर या बाहर आना 2. उच्चारण करना।

उच्चल (वि०) [उद्+चल्+अच्] हिलने-डुलने वाला, —लम् मन।

उच्चलनम् [उद्+चल्+ल्युट्] चले जाना, कूच करना।

उच्चलित (भू० क० कृ०) [उद्+चल्+क्त] चलने के लिए तत्पर, प्रस्थान करने वाला—रघु० २।६।

उच्चाटनम् [उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] 1 हाँक कर बाहर करना, निकाल देना 2. वियोग 3 दूर हटाना, (पौधे का) उन्मूलन 4 एक प्रकार का जादू-टोना 5 जादूमंत्र चलाना, शत्रु का नाश करना।

उच्चारः [उद्+चर्+णिच्+घञ्] 1. कथन, उच्चारण, उद्घोषणा 2 विष्ठा, गोबर—मानुषोच्चार एव सः—हि० प्र० १९, मनु० ४।५० 3 छोड़ना।

उच्चारणम् [उद्+चर्+णिच्+ल्युट्] 1 बोलना, कथन करना,—वर्ण-शिक्षा० २, वेद० 2 उद्घोषणा, उच्चारण।

उच्चावच (वि०) [मयूरव्यंसकादिगण—उच्चश्च अवाक्च] 1. ऊँचा,—नीचा, अनियमित—मनु० ६।७३ 2 विविध, विभिन्न—मनु० १।३८, शि० ४।४६।

उच्चूडः—ला [उद्गता चूडा यस्य—ब० स०] ध्वजा पर पहरा देने वाला अहा, ध्वज।

उच्चैः (अव्य०) [उद्+चि+ऐसुन्] 1 उत्तुंग, ऊँचा, ऊँचाई पर, ऊपर (विप० नीचैः—नीचैः)—विपदुच्चैः स्थेयम् -भर्तृ० २।२८, उच्चैरुदास —पा० १।२।२९ 2 ऊँची आवाज से, कोलाहलपूर्वक 3. प्रबलता से, अत्यन्त, अत्यधिक—विदधति मयमुच्चैरुत्क्षिप्यमाणा बलाकाः'—रघु० १।२२ 4. (समास में विशेषण के रूप में प्रयुक्त) (क) उन्नत, कुलीन—अनोऽप्यमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुक —कु० ५।६४, मा० ४।१५, रत्ना० ४। १९ (ख) मुख्य, प्रमुख, प्रसिद्ध—उच्चैरुच्चैः अवास्तोन—कु० २।४७। सम०—कुचम् 1 हंगामा, हल्लागुल्ला, गुलगपाड़ा 2. ऊँची आवाज में की गई घोषणा,—ग्राह् बड़ी प्रशंसा,—शिरस् (वि०) उदाराशय, महानुभाव - कु० १।२२,—श्रवस्,—स (वि०) 1 बड़े कानों वाला 2. बहरा, (पुं०) इन्द्र का घोड़ा (जो 'समुद्र-मन्थन से प्राप्त'— कहा जाता है)।

उच्चैस्तराम् (अव्य०) [उच्चैस्+तमप्+आम्] 1 अत्यन्त ऊँचा 2. बहुत ऊँचे स्वर से।

उच्चैस्तरम्—रात् (अव्य०) [उच्चैस्+तरप्+आम् च] 1 ऊँचे स्वर से 2 अत्यन्त ऊँचा—कु० ७।९८।

उच्छ् (तुदा० पर०) (उच्छति, उच्छ्ट) 1 बोलना 2. पूरा करना 3 छोड़ देना, त्याग देना।

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] 1 नष्ट किया हुआ, उखाड़ा हुआ (कदाचित् 'उत्सन्न') दे० उच्छिन्न 2 लुप्त (रचना आदि)।

उच्छलत् (शत्रन्त—वि०) [उद्+शल्+शतृ] 1 चमकता हुआ, इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ 2 हिलता-डुलता, चलता-फिरता 3 ऊपर को उड़ता हुआ, ऊपर ऊँचाई पर जाता हुआ।

उच्छलनम् [उद्+शल्+ल्युट्] ऊपर को आना, मरकना या उड़ना।

उच्छादनम् [उद्+छद्+णिच्+ल्युट्] 1 चादर ढकना 2 तेल मलना, लेप या उबटन से शरीर पोतना।

उच्छास्त्र (वि०) [उत्क्रान्त शास्त्रम्] नियन्त्रण में न रहने वाला, निरंकुश, उद्दंड।

उच्छास्त्र, °वर्तिन् [उद्गत शास्त्रात् —ग० स०] 1 शास्त्र (नागरिक और धार्मिक—विधि-ग्रन्थ) के विरुद्ध आचरण करने वाला 2 विधि-ग्रंथों का उल्लंघन करने वाला।

उच्छिख (वि०) [उद्गता शिखा यस्य] 1 शिखा युक्त 2 चमकीला, जिसकी ज्वाला ऊपर की ओर जा रही हो—रघु० १९।८७।

उच्छित्तिः (स्त्री०) [उद्+छिद्+क्तिन्] मूलोच्छेदन, विनाश। कौसल्ये—रत्ना० ४।

उच्छिन्न (भू० क० कृ०) [उद्+छिद्+क्त] 1 मूलोच्छिन्न, विनष्ट, उखाड़ा हुआ —उच्छिन्नप्रायकार्यस्य कुलटा गोत्रान्तर श्रीर्यथा—मुद्रा० ६।५ 2 नीच, अधम।

उच्छिरस् (वि०) [उन्नत शिरोऽस्य —ब० स०] 1 ऊँची गर्दन वाला (शा०) 2 उन्नत 3 (अत) कुलीन, श्रेष्ठ, महानुभाव—गौरात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषम्—कु० ३।७५, ६।७०।

उच्छिलीन्ध्र (वि०) [ब० स०] कुकुरमुत्ता (साँप की छतरी) से भरा स्थान,—वनं पक्ष्म प्रभवति महोमुच्छिलीन्ध्रानवन्ध्याम् मेघ० ११,—ध्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी।

उच्छिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+शिष्+क्त] 1 शेष, बचा हुआ, 2 अवशीकृत, त्यक्त—रघु० १७।१५ 3 बासी, °करना, पुराने विचार या आविष्कार, —ष्टम् 1 जूठन, खड, अवशिष्ट (विशेषतः यज्ञ या आहार का)—नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यात्—मनु० ३।५६। सम०—अन्नम् जूठन, भुक्तावशेष—भोजनम् भोम।

उच्छीर्षकम् [उत्थापितं शीर्षं यस्मिन्] 1 तकिया 2 सिर।

उच्छुष्क (वि०) [उद्+शुष्—क तस्य क] सूखा मुर्झाया हुआ।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] 1 सूजा हुआ -प्रबल-रविगोच्छूनमेव प्रियायाः—मेघ० ८९, उत्तानोच्छून-

मन्धूकपाटिलोदरसन्निभम्—काव्य० ७, अनर्घरत्नखचितो-ज्झूनताम्रदृष्टम्—दश० २५ 2. मोटा 3 ऊँचा, उत्तुंग।

उच्छृङ्खल (वि०) [उच्छृङ्खलात —ब० स०] 1 बेलगाम्, अनियन्त्रित, निरंकुश—°धाचा-पंच० ३, अत्यन्तोच्छृङ्खल सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्—शि० २।६२ 2 स्वेच्छाचारी 3 अनियमित, क्रमहीन।

उच्छेदः दनम् [उद्+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर फेंक देना 2 मूलोच्छेदन, उखाड़ देना, काम तमाम कर देना—सता मदोच्छेदकरः पिता ते—रघु० १४।७४ 3 अपच्छेदन।

उच्छेषः—अनम् [उद्+शिष्+घञ्, ल्युट् वा] अवशेष।

उच्छोषण (वि०) [उद्+शुष्+णिच्+ल्युट्] 1 सुखाने वाला, मुर्झा देने वाला—मच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्—भग० २।८ 2 जलना,—नम् सुखा देना, कुम्हलाना, मुर्झाना।

उच्छ्वस् (भ्वा) अक् [उद्+श्वि+अच्+घञ्, वा] 1 (तारा आदि का) उदय होना 2 उठाना, उत्थापन 3 ऊँचाई, उत्सेध (शारीरिक और मानसिक)—भृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविकटैर्यो वितत्य स्थित खम्—मेघ० ६०, कि० ७।२७, ८।२३, 4 विकास, वृद्धि, गहनता, गुण°—कि० ८।२१ शीतोच्छ्रायम्—५।३१, 5 घमंड।

उच्छ्रयणम् [उद्+श्रि+ल्युट्] उन्नयन, उत्थापन।

उच्छ्रित (भू० क० कृ०) [उद्+श्रि+क्त] 1 उठाया हुआ, उत्थापित 2 ऊपर गया हुआ, उद्गत 3 ऊँचा, लंबा, उत्तुंग, उन्नत 4 पैदा किया हुआ, जात 5 वर्धमान, समृद्ध बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 6 अभिमानी।

उच्छ्रिति = उच्छ्राय

उच्छ्वसनम् [उद्+श्वस्+ल्युट्] 1 सांस लेना, आह भरना 2 गहरी सांस लेना।

उच्छ्वसित (भू० क० कृ०) [उद्+श्वस्+क्त] (कर्तरि प्रयोग) 1 गहरी सांस लेना, सांस लेना 2 मुंह से भाप बाहर निकालना 3 पूरा खिला हुआ, विकसित 4 तरोताजा—मेघ० ४२, 5. आश्वसित—उत्कटोच्छ्वसितहृदया—मेघ० १००,—तम् 1 सांस, प्राण—सा कुलपतेरुच्छ्वसितमिव—का० ३. 2 प्रफुल्लन, फूंक मारना 3 सांस बाहर निकालना—रघु० ८।३, 4 गहरी सांस लेना, उभार, धड़कन 5 शरीर में रहने वाले पाँच प्राण।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. सांस, सांस अन्दर खींचना, सांस बाहर निकालना—मुखोच्छ्वासगन्धम्—विक्रम० ४।२२, ऋतु० १।३, मेघ० १०२ 2 प्राणों का आश्रय 3 आह भरना 4 आश्वासन, प्रोत्साहन—अमरु ११, 5 फुफ्फुस 6 पुस्तक का खंड या भाग (जैसे हर्षचरित का) तु० अध्याय।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उच्छ्वास+इनि] 1 सांस लेने वाला 2. गहरी सांस लेने वाला, आह भरने वाला 3. सिसकने वाला, सुबकने वाला।

उज्जयिनी (स्त्री) [ब० स०] एक नगर का नाम, मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्यनगरियों में से एक, (तु० अवन्ति)—शीघ्रोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्या—मेघ० २७।

उज्जासनम् [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] मारना, हत्या करना—चौरस्योज्जासनम्—सिद्धा०।

उज्जिहान (वि०) [उद्+हा+शानच्] ऊपर जाता हुआ, (सूर्य की भांति) उदय होता हुआ—उज्जिहानस्य भानोः—मुद्रा० ४।२१ 2. खिला होता हुआ, बाहर आता हुआ, °जीविता वराकीम्—मा० १०।

उज्जृम्भ (वि०) [ब० स०] 1. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ—उज्जृम्भबदनाम्भोजा भिन्नस्यङ्गानि सङ्गता—सा० द० 2 दरारदार, खुला हुआ,—भः 1 विकार, फुलाव, फूंक मारना 2 तोड़ कर टुकड़े करना, बुरादा२ करना

उज्जृम्भा-जनम् [उद्+जृम्भ्+अ, ल्युट् वा] 1. जम्हाई लेना 2 मुंह बाना, 3. फैलाना, वृद्धि।

उज्ज्य (वि०) [उद्गता ज्या यस्य—ब० स०] वह धनुर्धर जिसके धनुष की डोरी खुली हुई हो।

उज्ज्वल (वि०) [उद्+ज्वल्+अच्] 1. उज्ज्वल, चमकीला, कांतियुक्त—उज्ज्वलकपोलं मुखम्—शि० ९।४८ 2. प्रिय, सुन्दर—सर्गो विसर्गोज्ज्वल.—नै० ३।१३६ 3 फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ 4 अनियंत्रित,—लः प्रेम, राग,—लम् सोना।

उज्ज्वलनम् [उद्+ज्वल्+ल्युट्] 1 जलना, चमकना 2. कान्ति, दीप्ति।

उज्झ् (तुदा० पर०) (उज्झति, उज्झित) 1. त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना—सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झाचकार—रघु० ५।७५, १।४०, ५१ आतपादोज्झितं छान्यम्—महा०, धूप में डाला हुआ 2 टालना, बचना—उदये सविताप्यनुज्झता—रघु० ८।८४ 3. उत्सर्जन करना, बाहर निकालना—अविरतोज्झितवारिविषाङ्कुभिः—कि० ५।६, शि० ४।६३।

उज्झकः [उज्झ्+ण्वुल] 1 बादल 2 भक्त।

उज्झनम् [उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, दूर करना, छोड़ना।

उञ्छ् (तुदा० पर०) (उञ्छति, उञ्छित) बालें इकट्ठी करना, बीनना (एक-एक करके)—शिलाम्बूञ्छत —मनु० ३।१००

उञ्छः [उञ्छ्+घञ्] बालें इकट्ठी करना या अनाज के दाने बीनना, ताम्बूञ्छवृष्ठाञ्छितसैकतानि—रघु० ५।८, मनु० १०।११२,—ञ्छम् बालें इकट्ठी करना। सम०—वृत्ति,—शील (वि०) जो शिलोञ्छन से अपनी जीविका चलाता है, खेत में बचे अनाज के कणों को चुन कर पेट भरने वाला।

उच्चयनम् [उच्च्+ल्युट्] खेत में पड़े अनाज के दानों को एकत्र करना।

उटज [उ+टक्] 1 पत्ता 2. घास। सम०—घः—कम् —(उटजम्बो आयते) झोपड़ी, कुटिया, आश्रम (पर्णशाला)—उटजद्वारविरूढ नीवारबलि विलोकयत —शा० ४।२०, रघु० १।५०, ५२।

उडुः (स्त्री०) **उडु** (नपु०) [उद्+कु वा०] 1 नक्षत्र, तारा —इन्दुमकाशान्तरितोडुतुल्या —रघु० १६।९५, 2 जल (केवल नपु० में)। सम०—कक्ष्य—राशिचक्र,—घः,—पम् लट्ठों का बना बेड़ा,—तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्—रघु० १।२, केनोडुपेन परलोकनदी तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३ (—घः) चन्द्रमा —मृच्छ० ४।२४—पतिः,—राज् चन्द्रमा- जितमुडुपतिना—रत्ना० १।५, रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मय —कु० ५।२२—पथः आकाश, अन्तरिक्ष।

उदुम्बरः [उ मम्बु वृणोति—उ+वृ+अच्, मुम् उत्कृष्ट उम्बर —प्रा० स० दस्य डत्वम्] 1 गूलर का वृक्ष (औदुम्बर), 2 घर की देहली या ड्योढ़ी 3 हिजड़ा 4 एक प्रकार का कोढ़ (—रम् भी),—रम् 1 गूलर का फल 2. तांबा।

उडूपः=उडुप।

उड्डयनम् [उद्+डी+ल्युट्] ऊपर उड़ना, उड़ान लेना —गतो विकल्योड्डयने निराशताम्—नै १।१२५।

उड्डामर (वि०) [प्रा० स०] 1 रुचिकर, श्रेष्ठ 2 प्रबल, भयावह—उड्डामरव्यस्तविस्तारिवो खण्डपर्यासितव्योमचरम् मा० २।२३।

उड्डीन (भू० क० कृ०) [उद्+डी+क्त] उड़ा हुआ, ऊपर उड़ता हुआ,—नम् 1 ऊपर उड़ना, उड़ान लेना 2 पक्षियों की एक विशेष उड़ान।

उड्डीयनम् [उड्ड स इव आचरति—क्यङ, उड्डीय +ल्युट्] उड़ान।

उड्डीशः [उद्+डी+क्विप्—उड्डी तस्य ईश] शिव।

उड्रः [उद्+रक्] देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा, दे० ओड्र।

उण्डेरकः [?] आटे का लड्डू, गोला, रोटी—तर्पयोडेरकसक्तु -याज्ञ० १।१२८।

उत् (अव्य०) [उ+क्विप्] (क) सन्देह (ख) प्रश्न वाचकता (ग) सोचविचार और (घ) तीव्रता।

उत (अव्य०) [उ+क्त] 1 निम्नांकित भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय —(क) सन्देह, अनिश्चितता अनुमान (या),—तत्किमयमातपदोषः स्यादुत यथा मे मनसि वर्तते—शा० ३, स्थाणुरयमुत पुरुष -गीत० (ख) विकल्प, प्रायः 'कि' का सहवर्ती (या),—किमिदं गुरुभिरुपदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमुत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्—का० १५५, कु० ६।२३, 'उत' के स्थान में 'आहो' या 'आहोस्वित्' भी प्रयुक्त होता है, कई बार तो 'आहो' 'आहोस्वित्' या 'किंवा' को 'उत' से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य, संयोग ('और' 'भी' शब्दों द्वारा समुच्चयात्मकता का बोध कराने वाला)—उत बलवानतोबल (घ) प्रश्नवाचकता—उत दग्ध पतिष्यति 2 प्रति—इसके विपरीत, दूसरी ओर, बल्कि—सामवादा सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपका—शि० २।५५ 3 किम् -,कितना अधिक, कितना कम दे० किम्, उत—उत या-या—एकमेव वर पुंसामुत राज्यमुताश्रम -गण०।

उतथ्यः (?) अंगिरा का पुत्र, तथा बृहस्पति का बड़ा भाई।—अनुज., -अनुजाध्वम् (पु०) बृहस्पति, देवताओं का गुरु, तथ्यमुतथ्यानुजवज्रजगादाग्रे गदाग्रजम्—शि० २।६९।

उत्क (वि०) [उद्-स्वार्थे कन्] 1 इच्छुक, लालायित, उत्कंठित (समास में)—अद्रिसुतासमागमोत्क —कु० ६।९५ मानसोत्का—मेघ० ११, कई बार तुमुन् के साथ—शि० ४।१८, 2 विद्यमान, दुःखी, शोकान्वित 3 उन्मना।

उत्कक्षुक (वि०) [ब० स०] बिना अंगिया पहने या बिना कवच धारण किये हुए।

उत्कट (वि०) [उद्+कटच्] 1 बड़ा, प्रशस्त—उत्तर० ४।२९ 2 शक्तिशाली, ताकतवर, भीषण 3. अत्यधिक, ज्यादह—अन्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८५, 4 भरपूर, समृद्ध 5 मदिरासेवी, मदमत्त, उन्मत्त, मदोत्कट 6 श्रेष्ठ, उत्तम 7 विषम,—टः 1. हाथी के मस्तक से बहनेवाला मद 2 मदयुक्त हाथी।

उत्कण्ठ (वि०) [उन्नत कण्ठो यस्य] 1 गर्दन ऊपर को उठाये हुए, (अत) तत्पर, तैयार, करने के लिए उत्सुक (समास में) बाह्यापनोत्कण्ठ शा० २, रथस्वनोत्कण्ठमृगं वाल्मीकीये तपोवने —रघु० १५।११ 2 (अत) चिन्तातुर, उत्सुक,—ण्ठः,—ण्ठा सम्भोग करने की एक रीति।

उत्कण्ठा [उद्+कण्ठ्+अ+टाप्] 1 चिन्तातुरता, बेचैनी—वाष्पस्तब्धः शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया—श० ४।५, 2 प्रिय वस्तु या प्रियतम पाने की लालसा —दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते—अमरु २४, 3 खेद, शोक, किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का नष्ट हो जाना गाढोत्कण्ठा -मा० १।१५, मेघ० ८३।

उत्कण्ठित (भू० क० कृ०) [उद्+कण्ठ्+क्त] 1 चिन्तातुर, व्यथित होनेवाला, शोकान्वित 2 किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के लिए लालायित,—ता अपने अनुपस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा रखने वाली नायिका, आठ नायिकाओं में से एक—सा० द० १२१ में दी गई परिभाषा—आगन्तु कृतचित्तोऽपि दैवात्रायाति यत्प्रिय, तत्समागमबद्धाशा विरहोत्कण्ठिता तु सा।

उत्कन्धर (वि०) [उन्नतः कन्धरोऽस्य—ब० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए, उद्ग्रीव—उत्कन्धरं दारुकमित्युवाच—शि० ४।१८।

उत्कम्प (वि०) [ब० स०] काँपता हुआ, —क,—कम्प् काँपना, कपकपी, क्षोभ—किमधिकमासोत्कम्प दिक्समूहासे—अमरु २८, मालवि० ७२।

उत्कर: [उद्+कृ+अप्] 1 ढेर, समुच्चय 2 अम्बार, गट्ठा 3 मलबा—मृच्छ० ३।

उत्कर्ण [ब० स०] एक प्रकार का बाण-उपकरण, काँटा।

उत्कर्तनम् [उद्+कृत्+ल्युट्] 1 काट देना, फाड़ देना 2 उखाड़ देना, मूलोच्छेदन।

उत्कर्ष: [उद्+कृष्+घञ्] 1 ऊपर को खींचना 2 उन्नति, प्रमुखता, उदय, समृद्धि—निनीषु कुलमुत्कर्षम् मनु० ४।२४४,९।२४ 3. वृद्धि, बहुतायत, अधिकता—पदानामपि मूल्यानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणा—रघु० ४।११ 4 उत्कृष्टता, सर्वोपरि गुण, यश उत्कर्षं मे च धन्विनां यदिहेव सिध्यसि लक्ष्ये चले—श० २, 5 अहमन्यता, शेखी 6. प्रसन्नता।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1 ऊपर खींचना, ऊपर लेना, ऊपर करना।

उत्कल: [उद+कल्+अच्] 1 एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा या उस देश के निवासी (ब० व०), जगन्नाथ-प्रान्तदेश उत्कल परिकीर्तित—दे० 'ओड्र' उत्कलादर्शित पथ—रघु० ४।३८ 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 कुली।

उत्कलाप (वि०) [ब० स०] पूंछ फैलाये हुए और सीधी उठाये हुए—रघु० १६।६४।

उत्कलिका [उद्+कल्+कन्+टाप्] 1. चिन्तातुरता, बेचैनी—आता मोत्कलिका—अमरु ७८, 2 लालसा करना, खेद प्रकाश करना, किसी वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना 3 काम क्रीडा, हेला, 4 कली 5 तरंग—भ्रूभिमुत्कलिकातरल मन—तरंगों द्वारा क्षुब्ध—मा० ३।१०, (यहाँ स्वयं 'उत्कलिका' का अर्थ 'चिन्तातुरता' है) शि० ३।७०। सम०—प्राय् संरचना का एक प्रकार जिसमें समास बहुत हों तथा कठोर वर्ण हों—भवेदुत्कलिकाप्राय समासाढ्यं दुरक्षरम्—काव्य०।

उत्कलनम् [उद्+कल्+ल्युट्] 1 फाड़ना, ऊपर को खींचना 2 जोतना, (हल आदि), खींच कर ले जाना—अथ सीरोत्कलनमुरसि क्षेत्रनालस्य मालम्—वेणी० १७, 3 रगड़ना—भामि० १।७३।

उत्कार: [उद्+कृ+घञ्] 1 अनाज फटकना 2. अनाज की ढेरी लगाना 3 अनाज ढोने वाला।

उत्कास:, सनम्, उत्कासिका [उत्+कस्+घञ्, ल्युट्, ण्वुल् वा] खखारना, गले को साफ करना।

उत्किर (वि०) [उद्+कृ+क] हवा में उड़ता हुआ, ऊपर को बिखरता हुआ, प्रारम्भ करता हुआ—कु० ५।२६, ६।५, रघु० १।३८।

उत्कीर्तनम् [उद्+कृ+ल्युट्] 1 प्रशंसा करना, कीर्तिगान करना 2. घोषणा करना।

उत्कुटम् [उत्कटः कुटो यत्र ब० स०] ऊपर को मुह करके लेटना या सोना, चित लेटना।

उत्कुण: [उद्+कुण्+क] 1 खटमल 2 जूं।

उत्कुल (वि०) [उत्क्रान्त कुलात् अत्या० स०] पतित, कुल को अपमानित करने वाला—यदि यया वदति क्षितिपस्तथा, त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया—श० ५।२७।

उत्कूजः [प्रा० स०] (कोयल की) कूक।

उत्कूट: [उन्नतः कूटमस्य—ब० स०] छाता, छतरी।

उत्कूर्दनम् [उद्+कूर्द्+ल्युट्] कूदना, ऊपर को उछलना।

उत्कूल (वि०) [उत्क्रान्तः कूलात् अत्या० स०] किनारे से बाहर निकल कर बहने वाला।

उत्कूलित (वि०) [उद्+कूल्+क्त] किनारे तक पहुँचने वाला—शि० ३।७०।

उत्कृष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+कृष्+क्त] 1. उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ, उन्नत 2 श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम, सर्वोच्च—मनु० ५।१६३, ८।२८१ दल°—पञ्च० ३।३६, हलकरार 3 जोता हुआ, हल चलाया हुआ।

उत्कोच: [उत्कुच्+घञ्] रिश्वत—उत्कोचमिव ददती—का० २३२ याज्ञ० १।३३८।

उत्कोचक: [उत्कोच्+कन्] 1 घूस, रिश्वत 2 (वि०) [उद्+कुच्+ण्वुल्] रिश्वतखोर, घूस लेने वाला—मनु० ९।२५८।

उत्क्रम: [उद्+क्रम्+घञ्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2 क्रमोन्नति 3. विचलन, अतिक्रमण, उल्लंघन।

उत्क्रमणम् [उद्+क्रम्+ल्युट्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. चढ़ाई 3. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना 4 (शरीर में से) आत्मा का पलायन अर्थात् मृत्यु—मनु० ६।६३।

उत्क्रान्ति: (स्त्री०) [उद्+क्रम्+क्तिन्] 1. बाहर निकलना, ऊपर आना, कूच करना 2. आगे बढ़ जाना 3 उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्रामः [उत्+क्रम्+घञ्] 1 ऊपर या बाहर जाना, प्रस्थान करना 2 आगे बढ़ जाना 3. उल्लंघन अतिक्रमण।

उत्क्रोशः [उद्+क्रुश्+घञ्] 1 हल्ला-गुल्ला, गुलगपाड़ा 2. घोषणा 3 कुररी।

उत्क्लेदः [उद्+क्लिद्+घञ्] गीला या तर होना।

उत्क्लेशः [उद्+क्लिश्+घञ्] 1 उत्तेजना, अशान्ति

2 शरीर का ठीक हालत में न रहना 3. रोग, विशेषकर सामुद्रिक रोग।

उत्क्षिप्त (भू० क० कृ०) [उद्+क्षिप्+क्त] 1 ऊपर को फेंका हुआ, उछाला हुआ, उठाया हुआ 2 पकड़ा हुआ, सहारा दिया हुआ, 3. ध्वस्त, अभिभूत, आहत—विस्मय°—रत्ना०, 4 गिराया हुआ, ध्वस्त, —पः धतूरा, धतूरे का पौधा।

उत्क्षिप्तिका [उत्क्षिप्त+कन्+टाप् इत्वम्] चन्द्रकला के आकार का कान का आभूषण।

उत्क्षेप [उद्+क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, उछालना —पक्ष्मोत्क्षेप—मेघ० ४९, 2 जो ऊपर फेंका या उछाला जाय —बिन्दूत्क्षेपान् पिपासु —मालवि० २।१३ 3 भेजना, प्रेषित करना 4 वमन करना।

उत्क्षेपक (वि०) [उद्+क्षिप्+ण्वुल्] ऊपर फेंकने या उछालने वाला, उन्नत करने वाला या ऊपर उठाने वाला—याज्ञ० २।२७४, कः 1 कपड़े आदि चुराने वाला—वस्त्राद्युत्क्षिप्तत्यप°रतीत्युत्क्षेपक —मिता० 2 भेजने वाला या आदेश देने वाला।

उत्क्षेपणम् [उद्+क्षिप्+ल्युट्] 1 ऊपर फेंकना, उठाना या उछालना—अतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात् —श० १।३० 2 वैशेषिकों के मतानुसार पाँच कर्मों में से एक कर्म 'उत्क्षेपण' 3 वमन करना 4 भेजना, प्रेषित करना 5 (अनाज साफ करने के लिए) छाज 6 पंखा।

उत्खचित (वि०) [उद्+खच्+क्त] मिलाकर बुना हुआ, बुना हुआ या जड़ा हुआ—कुसुमोत्खचितान् बलीभृत —रघु० ८।५३, १३।५४।

उत्खला [उद्+खल्+अच्+टाप्] एक प्रकार का सुगन्ध।

उत्खात (भू० क० कृ०) [उद्+खन्+क्त] 1 खोदा हुआ, खोद कर निकाला हुआ 2 उद्धृत, बाहर निकाला हुआ—उत्तर० ३ 3 जड़ से उखाड़ा हुआ, जड़ समेत तोड़ा हुआ (शा०),—लीला° उत्तर० ३।१६ 4 (आल०) (क) उन्मूलित, बिल्कुल नष्ट किया हुआ, ध्वस्त—किमुत्खात नन्दवंशस्य—मुद्रा० १, °लवनो मधुरेश्वर प्राप्त —उत्तर० ७, (ख) पदच्युत, अधिकार या शक्ति से वंचित किया हुआ—फलं सर्वंसहामासु-रुत्खातप्रतिरोपिता —रघु० ४।३७ (यहाँ 'उत्खात' का अर्थ 'उन्मूलित' भी है),—तम् एक वर्तन, रन्ध्र, ऊबड़-खाबड़ भूमि। सम०—केलिः (स्त्री०) खेल-खेल में सींग या दांत से धरती खोदना—उत्खातकेलि स्मृगाधिपैर्वप्रक्रीडा विगाह्यते।

उत्खातिन् (वि०) [उत्खात+इनि] विषम, ऊँची-नीची, विषम (विप० 'सम')—उत्खातिनी भूमिरिति मया रश्मिसंयमनाद्वयस्य मन्दीकृतो वेग —श० १।

उत्त (वि०) [उन्द्+क्त] आर्द्र, गीला।

उत्तंसः [उद्+तंस+अच्] 1 शिखा, मोर का चूड़ा, मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण —उत्तंसलम्बिरत वारि मूर्धजेभ्य —शि० ८।५७—गु० 'कर्णोत्तंस' 2 कान का आभूषण—मा० ५।१८, भामि० २।५५।

उत्तंसित (वि०) [उत्तंस+इतच्] 1 कानों में आभूषण पहने हुए 2 शिखा में धारण किया हुआ—ऋतु० ३।१२९।

उत्तट (वि०) [उत्क्रान्त तटम्—अत्या० स०] किनारे के बाहर निकल कर बहने वाला—रघु० ११।५८।

उत्तप्त (भू० क० कृ०) [उद्+तप्+क्त] जलाया हुआ, गरम किया हुआ, झुलसाया हुआ—°फलक —का० ४३,—क्वथ् सूखा मांस।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] 1 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (बहुधा समास में) द्विजोत्तम—इसी प्रकार सुर° आदि - आर्ये-णाधममध्यमोत्तममनुष्य सम्पर्गतो जायते—मनु० २।६७, 2 प्रमुख, सर्वोच्च, उच्चतम, 3 उन्नततम, मुख्य, प्रधान 4 सबसे बड़ा, प्रथम, मनु० २।२४९,—मः 1 विष्णु 2 अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी में इसे 'उत्तम पुरुष' को प्रथम पुरुष कहते हैं),—मा श्रेष्ठ महिला। सम०—अङ्गम् शरीर का श्रेष्ठ अंग, सिर, —कपिच्छ द्विपन्यङ्कृतोत्तमाङ्ग —रघु० ७।५१, मनु० १।९३, ८।३०० कु० ७।४१, भग० ११।२७,—अधम (वि०) ऊँचा-नीचा °अध्यम, अच्छा, बीच के दर्जे का, और बुरा,—अर्ण 1 बढ़िया आभा 2 अन्तिम आभा,—अह्न् अन्तिम या बाद का दिन, अच्छा दिन, भाग्यशाली दिन, अहः,—ऋणिकः (उत्तमर्ण) उधार देने वाला, साहूकार (विप० 'अधमर्ण'), —पद ऊँचा पद, पु(पुं) ष० 1 क्रिया के रूपों में अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी वाक्यरचना के अनुसार प्रथम पुरुष) 2 परमात्मा 3 श्रेष्ठ पुरुष,—श्लोक (वि०) उत्तम ख्याति का, श्रीमान्, यशस्वी, सुविख्यात,—संग्रह (°स्त्री°) पर-स्त्री के साथ साठ-गाठ अर्थात् प्रेम सम्बन्धी बातें करना,—साहसः,—सम् उच्चतम आधिक दण्ड, १००० पण का दण्ड (कुछ लोगों के मतानुसार ८०००)।

उत्तमीय (वि०) [उत्तम+छ] सर्वोच्च, उच्चतम, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान।

उत्तम्भ, —भनम् [उद्+स्तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1 सम्भालना, थामे रखना, सहारा देना - मुक्तोत्तम्भनवस्त-म्भान्—का० २६०, 2 खूंटी, टेक, सहारा 3 रोकना, गिरफ्तार करना।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति रूप रचना) 2 उच्चतर, अपेक्षाकृत ऊँचा (विप० 'अवर')—अवन-तोत्तर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाद का, दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० पूर्व) पूर्व मेघ —उत्तर मेघ—°मीमांसा, °उत्तरार्धः आदि—°राज-

चरिष्णु (त्र) आगामी, उपसंहारात्मक 4. बाद (विप० दक्षिण) 5 बढ़िया, मुख्य, श्रेष्ठ 6 अपेक्षाकृत अधिक, से अधिक (बहुधा संख्याओं से युक्त उनमें पदों में अन्तिम शब्द के रूप में प्रयुक्त)—द्वयुत्तरा विंशति =२९, अष्टोत्तर शतम् १०८, 7 से युक्त या संहित, पूर्ण, मुख्यतया से युक्त, से अनुगत (समास के अन्त में)—राज्ञां हु चरितार्थता दुःखोत्तरैव श० ५, अक्षोत्तरमीक्षिता—कु० ५।६१ 8 पार किया जाना,—रः 1 आगामी समय, भविष्यत्काल 2 विष्णु 3 शिव 4 विराट राजा का पुत्र,—रा 1 उत्तर दिशा—अन्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा—कु० १।१ 2 एक नक्षत्र 3 विराट राजा की पुत्री और अभिमन्यु की पत्नी,—रम् 1 अवाद,—प्रक्रमे च प्रतिवचनमुत्तरम्—रघु० ८।४७,—उत्तरादुत्तरं वाक्यं वदता सप्रजायते—पंच० १।६० 2 (विधि में) प्रतिवाद, प्रत्युक्ति 3 समास का अन्तिम पद 4 (मीमांसा में) अधिकरण का चौथा अंग 5 उत्तर 5 उपसंहार 6 अवशेष, अवशिष्ट 7 अधिकता, आवश्यकता से ऊपर, दे० ऊपर उत्तर (वि०) 8 अवशेष, अन्तर (गणित में),

रम् (अव्य०) 1 ऊपर 2 बाद में—तत उत्तरम् इत उत्तरम् आदि। सम०—अधर (वि०) उच्चतर और निम्नतर (आल० भी), —अधिकार,—रिता, त्वम् सम्पत्ति में अधिकार, वरासत, वपौती —अधिकारिन् (पु०) किसी के बाद उसकी सम्पत्ति पाने का हकदार, अयनम् (अयन न को ण हो गया) 1 सूर्य की (मध्य रेखा से) उत्तर की ओर गति मनु० ८।२४ 2 मकर से कर्क संक्रान्ति तक का काल, —अर्ध 1 शरीर का ऊपरी भाग 2 उत्तरी भाग 3 दूसरा आधा—उत्तरार्धं (विप० पूर्वार्धं),—अह्न् आगामी दिन,—आभास मिथ्या उत्तर, —आशा उत्तर दिशा, —अधिपति पति कुबेर का विशेषण,—आषाढा २१ वाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारों का पुंज है, आसङ्गः ऊपर पहनने का वस्त्र—कृतोत्तरासंग का० ४३, शि० २।१९, कु० ५।१६,—इतर (वि०) उत्तर से भिन्न अर्थात् दक्षिणी,(—रः) दक्षिण-दिशा, उत्तर (वि०) 1 अधिक और अधिक उच्चतर और उच्चतर 2 क्रमागत, लगातार वर्धनशील —स्नेहेन दृष्टि —पंच० १, याज्ञ० २।१३६ (—रम्) प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर—अलमुत्तरोत्तरेण—मुद्रा० ३, ओष्ठः ऊपर का होठ(उत्तरो-रौ-ष्ठ),—काण्डम् रामायण का सातवाँ काण्ड,—काय शरीर का ऊपरी भाग—रघु० ९।६०, —कालः भविष्यत्काल,—कुरु (पु० ब० व०) संसार के ९ भागों में से एक, उत्तरी कुरुओं का देश,—कोसलाः (पु० ब० व०) उत्तरी कोशल देश—पितुरनन्तरमुत्तर-कोसलान्—रघु० ९।१,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदेहिक धार्मिक कर्म,—छदः बिस्तर की चादर, बिछावन (सामान्य)—रघु० ५।६५, १७।२१,—ज (वि०) बाद में पैदा होने वाला,—ज्योतिषाः (पु० ब० व०) उत्तरी ज्योतिष प्रदेश,—तालिक (वि०) जो आज्ञाकारी न हो, अवाध देने वाला, धृष्ट,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा °ईशः,—धनदः उत्तर दिशा का पालक या स्वामी कुबेर,—पक्षः 1. उत्तरी पक्ष 2 चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3. किसी विषय का द्वितीय पक्ष—अर्थात् उत्तर, उत्तर में प्रस्तुत तर्क बहस का अवाद सिद्धान्त पक्ष (विप० पूर्वपक्ष)—प्रापयन् पवन व्याधेरिमुत्तरपक्षताम्—शि० २।१५ 4. प्रदर्शन की नई सजावट या उपसंहार 5 अनुमान की प्रक्रिया में मौलिक उक्ति 6. (मी० में) अधिकरण का पाँचवाँ अंग (सदस्य),—पदः 1 ऊपर पहनने का वस्त्र 2. बिछावन या उत्तरच्छद,—पथः उत्तरी मार्ग, उत्तर दिशा को ले जाने वाला मार्ग,—पदम् 1 समास का अन्तिम पद 2 समास में दूसरे शब्द के साथ जोड़ा जाने वाला शब्द, —पश्चिमा उत्तर-पश्चिम दिशा,—फाल्गुनी अभियोग का दूसरा भाग, दावे का अवाद,—पूर्वः =उत्तम पूर्वम्, —पूर्वा उत्तर-पूर्व दिशा,—प्रच्छदः रजाई का खोल या उच्चाल, रजाई,—प्रत्युत्तरम् 1 तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, प्रत्यारोप 2 कानूनी मुकदमे में पक्ष-समर्थन,—फ (फा) ल्गुनी १२ वाँ नक्षत्र जिसमें दो तारों का पुंज होता है,—भाद्रपद्—दा २६ वाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे रहते हैं,—मीमांसा बाद में प्रणीत मीमांसा—वेदान्त दर्शन (मीमांसा—जिसे प्राय पूर्व मीमांसा कहते हैं—से भिन्न),—लक्षणम् वास्तविक उत्तर का संकेत,—वयस्,—स् (नपु०) वृद्धावस्था, जीवन का ह्रासमान काल,—वस्त्र—वासस् (नपु०) ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र, दुपट्टा, चोला या अंगरखा, —वादिन् (पु०) प्रतिवादी, मुद्दालेह,—साधक सहायक, मददगार।

उत्तरङ्ग (वि०) [ब० स०] 1 तरंगित, जलप्लावित, लुब्ध —मुद्रा० ६।३, 2. उछलती हुई लहरों वाला—रघु० ७।३६, कु० ३।४८।

उत्तरतः,—रस् (अव्य०)[उत्तर+तस्, आति वा] 1 उत्तर से, उत्तर दिशा तक 2 बाईं ओर को (विप० दक्षिणतः) 3 पीछे 4 बाद में।

उत्तरत्र (अव्य०) [उत्तर+त्रल्] पश्चात्, बाद में, फिर, नीचे (किसी रचना में), अन्तिम रूप में।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर+आहि] उत्तर दिशा की ओर, (अपा० के साथ) के उत्तर में,—भट्टि० ८।१०७।

उत्तरीयम्—कम् [उत्तर+छ, या कन्] ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।

उत्तरेण (अव्य०) [उत्तर+एनप्] (सर्व०, कर्म० के साथ अथवा समास के अन्त में) उत्तर की ओर, के उत्तर दिशा की ओर—तत्रागार धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्—मेघ० ७५ अरे० पा०, मा० २।२४।

उत्तरेद्युः (अव्य०) [उत्तर+एद्युस्] अगले दिन, आगामी दिन, कल।

उत्तर्जनम् [उद्+तर्ज्+ल्युट्] अवरुद्ध खिड़की।

उत्ताल (वि०) [उदगतस्तानो विस्तारो यस्मात् ब० स०] 1. पसारा हुआ, फैलाया हुआ, विस्तार किया हुआ, प्रसृत किया हुआ—उत्तर० ३।२३, 2 (क) चित लेटा हुआ—मा० ३, - उत्तानोच्छूनमत्कपाटितोदर सन्निभे- काव्य० ७, (ख) सीधा, खड़ा 3 खुला 4 स्पष्ट, निष्कपट, सरा - स्वभावोत्तानहृदय शं० ५, स्पष्टवक्ता 5 नतोदर 6 छिछला। सम० पाद एक राजा, ध्रुव का पिता, °ज ध्रुव (उत्तानपाद का पुत्र), ध्रुव तारा, - शय (वि०) पीठ के बल सोता हुआ, चित लेटा हुआ --कदा उत्तानशय पुत्रक जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम् का० ६२, (—य:—या) छोटा बच्चा, दूध-पीता या दुधमुंहा बच्चा, शिशु।

उत्ताप: [उद्+तप्+घञ्] 1 भारी गर्मी, जलन 2 कष्ट, पीड़ा 3 उत्तेजन 4, जोश।

उत्तार: [उद्+त+घञ्] 1 परिवहन, वहन 2 घाट उतरना 3 तट पर लगना, तट पर उतारना 4 मुक्ति पाना 5 वमन करना।

उत्तारक [उद्+तृ+णिच्+ण्वुल्] 1 उद्धारक, बचाने वाला 2 शिव।

उत्तारणम् [उद्+तृ+णिच्+ल्युट्] उतारना, उद्धार करना, बचाना,—क विष्णु।

उत्तालक (वि०) [अत्या० स०] 1 बड़ा, मजबूत 2 प्रबल, घोर—शि० १२।३१ 3 दुर्धर्ष, भयानक, भीषण—उत्तालास्ते हमे गभीरपयस पुण्या सरिस्तत्क्रमा —उत्तर० २।३०, शि० २०।६८, मा० ५।११, २३, 4 दुष्कर, कठिन 5 उन्नत, उत्तुंग, ऊँचा—शि० ३।८,—क: लंगूर।

उत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] उच्च, ऊँचा, लंबा—करप्रचेयमुत्तुङ्ग प्रभुशक्ति प्रचीयसीम् शि० २।८९, °हेमपीठानि २।५।

उत्तृण: [उद्गत तृणोऽस्मात्—ब० स०]—भूमी से पृथक् किया हुआ या भूना हुआ (लावा) अन्न।

उत्तेजक (वि०) [उद्+तिज्+णिच्+ण्वुल्] 1 भड़काने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक—क्षुधं°, काम° आदि।

उत्तेजनम्,—ना [उद्+तिज्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1 जोश दिलाना, भड़काना, उकसाना—°समर्थं श्लोकं —मुद्रा० ४, महावी० २, 2 उकेलना, हाँकना 3 भेजना, प्रेषित करना 4. तेज करना, धार लगाना, (अस्त्रादिक) चमकाना 5 बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना।

उत्तोरण (वि०) [ब० स०] उठी हुई या खड़ी मेहराबों आदि से सजा हुआ -उत्तोरण राजपथं प्रपेदे—कु० ७। ६३, रघु० १४।१०।

उत्तोलनम् [उद्+तुल्+णिच्+ल्युट्] ऊपर उठाना, उभारना।

उत्त्याग [उद्+त्यज्+घञ्] 1 निलांजलि देना, छोड़ देना 2 फेंकना, उछालना 3 सांसारिक वासनाओं से संन्यास।

उत्त्रास [उद्+त्रस्+घञ्] अत्यन्त भय, आतंक।

उत्थ (वि०) [उद्+स्था+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 से पैदा या उत्पन्न, उदय होने वाला, जन्म लेने वाला -दरीमुखोत्थेन समीरणेन कु० ३।८, ६।५१, रघु० १७।८२ 2 ऊपर उठता हुआ, ऊपर आता हुआ।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1 उदय होने या ऊपर उठने की क्रिया, उठना—तार्तीयकेऽह्युत्थानम्- मनु० ३।९ 2 (नक्षत्रादिक का) उदय होना - रघु० ६।३१ 3 उद्गम, उत्पत्ति 4 मृतोत्थान 5 प्रयत्न, श्रम, चेष्टा - भेदच्छेदकृशोदर लघुभवत्युत्थानयोग्य वपु: शा० २।५, यत्नो-धान भवेन्नृप -मनु० ९।२१५, (धन के लिए) प्रयत्न, सम्पत्ति-अभिप्रयत्न 6 पौरुष 7 हर्ष, प्रसन्नता 8 युद्ध, लड़ाई 9 सेना 10 आंगन, यज्ञमण्डप 11 अवधि सीमा, हद 12 आगना, - एकादशी देवउठनी कार्तिक-सुदी एकादशी, विष्णुप्रबोधिनी।

उत्थापनम् [उद्+स्था - णिच् +ल्युट्, पुक्] 1 उठाना खड़ा करना, जगाना 2 उभारना, उत्प्रेरित करना, 3 उत्तेजित करना, भड़काना 4, जगाना, प्रबुद्ध करना (आल० भी) 5 वमन करना।

उत्थित (भू० क० कृ०) [उद् - स्था+क्त] 1 उदित, या (अपने आसन से) उठा हुआ--बद्धा सिक्थास्थितमुत्थित सत्- रघु० २।६१, ७।१०, ३।६१, कु० ७।६१, 2 उठाया हुआ, ऊपर गया हुआ -शि० ११।३, 3 जात, उत्पन्न, उद्गत,—उत्थितवक्त्र --रघु० २।६१, फूट पड़ा (जैसा कि आम) 4 बढ़ता हुआ, वर्धनशील (बल में), प्रगति करता हुआ 5 सीधा-खड़ा 6 विस्तृत, प्रसृत—अ० ४।४। सम०—अंजलि: फैलाई हुई हथेली।

उत्थिति (स्त्री०) [उद्+स्था+क्तिन्] उन्नति, ऊपर उठना।

उत्पक्ष्मन् (वि०) [ब० स०] उलटी पलकों वाला—उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धदृष्टिम्—शा० ४।१५, विक्रम० २।

उत्पत: [उद्+पत्+अच्] पक्षी।

उत्पतनम् [उद्+पत्+ल्युट्] 1 ऊपर उड़ना, उछलना 2 ऊपर उठना या जाना, चढ़ना।

उत्पताक (वि०) [उच्छ्रिता पताका यस्य—ब. स०] झंडा

ऊपर उठाए हुए, जहाँ झंडे फहरा रहे हों—पुरंदरस्त्री पुरभृत्पताकम्—रघु० २।७४।

उत्पतिष्णु (वि०) [उद्+पद्+इष्णुच्] उड़ता हुआ, ऊपर जाता हुआ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. जन्म विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता—रघु० ८।८३, 2 उत्पादन,—कुसुमे कुसुमोत्पत्तिः श्रूयते न तु दृश्यते—शृंगार० १७, 3 स्रोत, मूल—उत्पत्तिं साधुलोकाया—का० ४५, 4 उठना, ऊपर जाना, दिखाई देना 5 लाभ, उपजाऊपन, पैदावार। सम०—अर्थकः जन्म का एक प्रकार (उपनयन संस्कार करके या यज्ञोपवीत पहना कर छात्र को दीक्षित करना), द्विजत्व का चिह्न—मनु० २।६८।

उत्पथः [उत्क्रान्तः पन्थानम्—प्रा० स०] कुमार्ग (आल० भी)—गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः, उत्पथप्रतिपन्नस्य न्याय्यं भवति शासनम्। बहु०, (परित्यागे विधीयते—पंच० १।३०६,) वि० १२।२४, —थम् (अव्य०) कुमार्ग पर, पथभ्रष्ट (भूला-भटका)।

उत्पन्न (भू० क० कृ०) [उद्+पद्+क्त] 1 जात, पैदा हुआ, उदित 2 उठा हुआ, ऊपर गया हुआ 3 अवाप्त।

उत्पल (वि०) [उत्क्रान्तः पलं मांसम्—उद्+पल्+अच्] मांसहीन, क्षीण, दुबला-पतला, -लम् 1 नील कमल, कमल, कुमुद—नवोत्पल कमलादिकोत्पलम्—रघु० ३।३६, १२।८६, मेघ० २६, नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१८, इसी प्रकार—रक्त 2 सामान्यतः पौधा। सम०—अक्ष—चक्षुस् (वि०) कमल जैसी आँखों वाला, -पत्रम् 1 कमल का पत्ता 2 किसी स्त्री के नाखून से की गई खरोंच, नखक्षत।

उत्पलिन् (वि०) [उत्पल+इनि] कमलों से भरपूर,—नी 1 कमलों का समूह, 2 कमल का पौधा जिसमें कमल लगे हों।

उत्पवनम् [उद्+पू+ल्युट्] मार्जन करना, शोधन करना—मनु० ५।११५।

उत्पाटः [उद्+पट्+णिच्+घञ्] 1 मूलोच्छेदन, उन्मूलन 2 वाद्य कान में क्षोभ।

उत्पाटनम् [उद्+पट्+णिच्+ल्युट्] उखाड़ना, मूलोच्छेदन, उन्मूलन।

उत्पाटिका [उद्+पट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] वृक्ष की छाल।

उत्पाटिन् (वि०) [उद्+पट्+णिच्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त) मूलोच्छेदन करने वाला, फाड़ने वाला—कोलोत्पाटीव बानरः—पंच० १।२१।

उत्पातः [उद्+पत्+घञ्] 1 उड़ान, छलांग, कूदना—एकोत्पातेन एक छलांग में 2. उलट कर आना, ऊपर उठना (आल० भी)—करनिहतकन्दुकसमा पातोत्पाता मनुष्याणाम्—हि० १, बने० पा० 3 अनहोनी, संकटसूचक अशुभ या आकस्मिक घटना,—उत्पातेन ज्ञापिते च—मालवि०, वेणी० १।२२, सापि सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरंपरा केयम्—काव्य० १० 4. कोई सार्वजनिक संकट (महामारी, भूचाल आदि), °केतु—का० ५, °धूमकेतूत्पातः—मा० ५।४८। सम०—पवनः,—वातः,—वातादिः अनिष्टसूचक या प्रचण्ड वायु, बवंडर या आंधी—रघु० १५।२३।

उत्पाद (वि०) [ब० स०] जिसके पैर ऊपर उठे हों,—दः जन्म, उत्पत्ति, प्रादुर्भाव—दुःखे च क्षोभितोत्पादे शाखाभङ्गेऽपि तथा—याज्ञ० २।२२५, °भङ्गुरम् पंच० २।१७७। सम०—अयः,—अन्वयः 1 जन्म या 2 एक प्रकार का तीतर।

उत्पादक (वि०) (स्त्री०—त्रिका) [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] उपजाऊ, फलोत्पादक, पैदा करने वाला, -कः पैदा करने वाला, जनक पिता, -कम् उद्गम, कारण।

उत्पादनम् [उद्+पद्+णिच्+ल्युट्] जन्म देना, पैदा करना, जनन—उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् मनु० ९।२७।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का कीड़ा, दीमक 2 माता।

उत्पादिन् (वि०) [उद्+पद्+णिच्+णिनि] पैदा हुआ, जात—सर्वमुत्पादि भङ्गुरम्—हि० १।२०८।

उत्पाली [उद्+पल्+घञ्+ङीष्] स्वास्थ्य।

उत्पिञ्जर-ल (वि०) [ब० या० स०] 1 मुक्त, जो पिंजड़े में बन्द न हो 2 कमहीन, अव्यवस्थित।

उत्पीडः [उद्+पीड्+घञ्] 1 दबाव 2. (क) धाराप्रवाह, धाराप्रवाही बहाव—बाष्पोत्पीड—का० २९६—उत्पीड इव धूमस्य मोहं प्राणावृणोति माम्—उत्तर० ३।९, नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशम्—मेघ० ९१ (ख) उत्प्रवाह, आधिक्य, —पुरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया—उत्तर० ३।२९ 3. झाग, फेन।

उत्पीडनम् [उद्+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. दबाना, निचोड़ना 2 पेलना, आघात करना—का० ८२।

उत्पुच्छ (वि०) [ब० स०] जिसकी पूंछ ऊपर उठी हो।

उत्पुलक (वि०) [ब० स०] 1 रोमांचित, जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों 2 हर्षोत्फुल्ल, प्रसन्न।

उत्पूत (वि०) [ब० स०] प्रकाश बखेरने वाला,—आत्मपूर्ण,—तः बहकती हुई आग।

उत्प्रस्वेदः [उद्+प्र+स्विद्+घञ्] पसीना।

उत्प्लवनम् [उद्+प्लु+ल्युट्, णुक् वा] 1. फेंकना, पटकना 2 मजाक, मखौल 3. अट्टहास 4. खिल्ली उड़ाना, उपहास करना, अभ्युच्छित।

उत्प्लेषणम् [उद्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. दृष्टिपात करना,

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 2. ऊपर की ओर देखना 3 अनुमान, अटकल 4. तुलना करना।

उत्प्रेक्षा [उद्+प्र+ईक्ष+अ] 1. अटकल, अनुमान 2 उपेक्षा, उदासीनता 3 (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय को कई बातों में समान समझने की कल्पना की जाती है, और उस समानता के आधार पर उनके एकत्व की संभावना की ओर स्पष्ट रूप से या किसी तात्पर्यार्थ के द्वारा संकेत किया जाता है—उदा० लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः —मुद्रा० १।३४ स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड —कु० १।१, तु० सा० द० ६८६-९२, और उत्प्रेक्षा के प्रसंग में रस०।

उत्प्लव [उद्+प्लु+अप्] उछल-कूद, छलांग,—वा किश्ती।

उत्प्लवनम् [उद्+प्लु+ल्युट्] कूदना, उछलना, ऊपर से छलांग लगाना।

उत्फलम् [प्रा० स०] उत्तम फल।

उत्फालः [उद्+फल्+घञ्] 1 कूद, छलांग, द्रुतगति —मृच्छ० ६, 2. कूदने की स्थिति।

उत्फुल्ल (भू० क० कृ०) [उद्+फुल्+क्त] 1 खुला हुआ, (फूल की भांति) खिला हुआ 2 खूब खुला हुआ, प्रसारित, विस्फारित (आंखें) 3 सूजा हुआ, शरीर में फूला हुआ 4 पीठ के बल सोया हुआ, तु० उत्तान,—ल्लम् योनि, भग।

उत्सः [उनत्ति जलेन, उन्द्+स किच्च नलोपः] 1 झरना, फौवारा 2 जल का स्थान।

उत्सङ्गः [उद्+सञ्ज्+घञ्] 1. गोद,—पुत्रपूर्णोत्सङ्गा —उत्तर० १, विक्रम० ५।१० न केवलमुत्सङ्गदिवरा-न्मनोरथोऽपि मे पूर्वं —उत्तर० ४, मेघ० ८७ 2 आलिंगन, संपर्क, संयोग—मा० ८।६, 3 भीतर, पड़ोस —वरीतृहोत्सङ्गनिवर्तमास —कु० १।१०, शय्योत्सङ्गे —मेघ० ९३ 4 सतह, पार्श्व, ढाल—दृषदो वासितोत्सङ्गा —रघु० ४।७४, १४।७६ 5 नितंब के ऊपर का भाग या कूल्हा 6 ऊपरी भाग, शिखर 7 पहाड़ की चढ़ाई-तुङ्ग नवोत्सङ्गमिवारुरोह—रघु० ६।३ 8 घर की छत।

उत्सङ्गित (वि०) [उत्सङ्ग+इतच्] 1 संयुक्त सम्मिलित, संपर्क में लाया हुआ—वि० ३।७९, 2 गोद में लिया हुआ।

उत्सञ्जनम् [उद्+सञ्ज्+ल्युट्] ऊपर को फैंकना, ऊपर उठाना।

उत्सन्न (भू० क० कृ०) [उद्+सद्+क्त] 1 सड़ा हुआ 2 नष्ट, बर्बाद, उखाड़ा हुआ, उजाड़ा हुआ —उत्सन्नोऽस्मि—का० १६४, बर्बाद— रक्ष्यश्च इवोत्सन्नविघ्नग्रहः—का० ५४, मनः १।४४ निद्रा—का० १७१, 3 अनिष्टग्रस्त, आफत का मारा 4. व्यवहार में न आने वाला, विलुप्त (पुस्तकादिक)।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1 एक ओर रख देना, छोड़ देना, तिलांजलि देना, त्यागना—कु० ७।४५, 2 उंडेलना, गिरा देना, निकालना—तोयोत्सर्गद्रुततरगतिं मेघ० १९।३७ 3 उपहार, दान, प्रदान—मनु० ११।९४ 4 व्यय करना 5 ढीला करना, खुला छोड़ देना—जैसा कि 'वृषोत्सर्ग' में 6 आहुति, तर्पण 7 विष्ठा, मल आदि—पुरीष°, मलमूत्र° 8 पूर्ति (अध्ययन या व्रतादिक की) तु० उत्सृष्टा वै वेदा 9 सामान्य नियम या विधि (विप० अपवाद—एक विशेष नियम)- अपवादैरिवोत्सर्गा छलव्याप्तरात्मपरैं -कु० २।२७ अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वर —रघु० १५।७ 10 गदा।

उत्सर्जनम् [उद्+सृज्+ल्युट्] 1 त्याग, तिलांजलि देना, ढीला करना, मुक्त करना आदि 2 उपहार, दान 3 वेदाध्ययन का स्थगन 4 इस स्थगन से संबद्ध एक षाण्मासिक संस्कार- वेदोत्सर्जनाख्यं कर्म करिष्ये —श्रावणी प्रत्र—मनु० ४।९६।

उत्सर्पः, —र्पणम् [उद+सृप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर को जाना या सरकना 2 फैलना, हांकना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उद्+सृप्+णिनि] 1 ऊपर को जाने या सरकने वाला, उठने वाला रघु० १६।६२, 2 उठने वाला, प्रोन्नत—उत्सर्पिणी खलु महता प्रार्थना—मा० ७।

उत्सवः [उद्+सू+अप्] 1 पर्व हर्ष या आनन्द का अवसर, त्रयन्तो, —रत्न° अ० ४।१९, नाटक आनन्द या हर्षनृत्य, उत्तर० ३।१८ मनु० ३।७९, 2 हर्ष, प्रमोद, आमोद—स कृत्वा विरतोत्सवान्- रघु० ४।१७, १६।१०, परामवोऽप्यत्सव एव मानिनाम् —कि० १।४१, 3 ऊँचाई, उन्नति 4 राग 5 कामना, इच्छा। सम०- संकेता (पु० ब० व०) एक जाति, हिमालय स्थित एक जंगली जाति —शरैरुत्सवसंकेतान् स कृत्वा विरतोत्सवान्—रघु० ४।७८।

उत्साद [उद्+सद्+णिच्+घञ्] नाश, अपक्षय, बर्बादी नानि नीतमुत्सादकारि मृगाणाम् —का० ३२।

उत्सादनम् [उद्+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 नाश करना, उखाड़ देना उत्सादनार्थं लोकानां -महा०, मनु० १।१९ 2 स्थगित करना, बाधा डालना 3 शरीर पर सुगंधित पदार्थ मलना —मनु० २।२०९, २११, 4 घास भरना 5 ऊपर जाना, चढ़ना, उठना 6. उन्मूलन करना, उखाड़ना 7 अंग को अच्छी-भांति जोतना।

उत्सारकः [उद्+सृ+णिच्+ण्वुल्] 1 आरक्षी 2 पहरेदार 3 कुली, दरबोढ़ीवान।

उत्सारणम् [उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना, दूर रखना भीड़ में से हटा देना 2 अतिथि का स्वागत करना।

उत्साहः [उद्+सह्+घञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास—कृतोत्साहसमन्वित—भग० १८।२६ 2. शक्ति, उद्यम, इच्छा—मन्दोत्साहमनीप्सितं मृगयापर्यायिणा बाहुजेन—श० २, ममोत्साहभङ्गं मा कृथा—हि० ३, मेरे उत्साह को मत तोड़ो 3. वैर्य, ऊर्जा या तेज, राजा की तीन शक्तियों में से एक (प्रभाव और मंत्र दो शक्तियाँ और हैं) कु० १।२२, 4. दृढ़ संकल्प, दृढ़ निश्चय—हसितेन भविष्यरणोत्साहसूचिता—भामि० १०, 5 सामर्थ्य, योग्यता—मनु० ५।८६ 6 दृढ़ता, सहनशक्ति, बल 7 (अल० शा० में) दृढ़ता और सहनशक्ति वह भावना मानी जाती है जिससे वीर रस का उदय होता है—कार्यारम्भेषु संरम्भ स्थैर्यमुत्साह उच्यते—सा० द० ३, परपराक्रमदानादिस्मृतिजन्मा औन्नत्यात्मा उत्साह रस० 8 प्रसन्नता। सम०—कर्मन् वीररस (-नन्) ऊर्जा या तेज की वृद्धि, वीर्य, —शक्ति (स्त्री०) दृढ़ता, तेज, दे० (३) ऊपर, -हेतुकः (वि०) कार्य करने की दिशा में प्रोत्साहन देने वाला या उत्तेजित करने वाला।

उत्साहनम् [उद्+सह्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रयत्न, अध्यवसाय 2 उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना देना।

उत्सिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+सिच्+क्त] 1 छिड़का हुआ 2 घमण्डी, अहंकारी, उद्धत 3 बाहरफेंका हुआ, उमड़ता हुआ, अत्यधिक दे० सिच् (उद्-पूर्वक) 4 चंचल, अशान्त—आसीयादस्थिरा बाचमुत्सिक्तमनसा तथा मनु० ८।७१।

उत्सुक (वि०) [उद्+सू+क्विप्+कन् ह्रस्व] 1 अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठित, प्रयत्नशील (करण या अधिकरण के साथ अथवा समास में)—निद्रया निद्राया वोत्सुक सिद्धा०, मनोनियोगाधिकयोत्सुक मे—रघु० २।४५, मेघ० ९९, समर—श० ३।१४ 2. बेचैन, उद्विग्न, आतुर—रघु० १२।२४, 3 बहुत चाहने वाला, आसक्त वत्सोत्सुकापि—रघु० २।२२, 4 सिसकियाँ भरने वाला, बुड़बुड़ाने वाला, शोकान्वित।

उत्सूत्र (वि०) [उत्क्रान्तं सूत्रम्—अत्या० स०] 1 डोरी से न बंधा हुआ, ढीला, (रस्सी के) बन्धन से मुक्त—शि० ८।६३, 2 अनियन्त्रित 3 (पाणिनि के नियम के) विपरीत—शि० २।११२।

उत्सूरः [उत्क्रान्तः सूरं=सूर्यम्—अत्या० स०] सायंकाल, संध्या।

उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] 1. छिड़काव, उड़ेलना 2. फुहार छोड़ना, बौछार करना 3 उमड़ना, वृद्धि आधिक्य—रुधिरोत्सेका—महावी० ५।३३ दर्पे°, बल° आदि 4. घमंड, अहंकार, धृष्टता—उपदा विदिषु, तदवन्नोत्सेका कोसलेश्वरम्—रघु० ४।७०, अनुत्सेको लक्ष्म्याम्—मनु० २।६४।

उत्सेचिन् (वि०) [उत्सेक+इनि] 1. उमड़ने वाला, अत्यधिक 2. घमंडी अहंकारी, उद्धत—आम्बेयमुत्सेचिनी—ह० ४।१०।

उत्सेचनम् [उद्+सिच्+ल्युट्] फुहार छोड़ना या बौछार करना।

उत्सेधः [उद्+सिध्+घञ्] 1 ऊँचाई, उन्नतता (आलं० भी)—पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति (वल्कलम्) कु० ५।८, २४, ऊँची या उभरी हुई छाती 2. मोटाई, मोटापा 3. शरीर,—अव् मारना, वध करना।

उत्स्मयः [उद्+स्मि+अच्] मुस्कराहट।

उत्स्वन (वि०) [ब० स०] ऊँची आवाज करने वाला, —नः [प्रा० स०] ऊँची आवाज।

उत्स्वप्नायते (ना० धा० आ०) [उद्+स्वप्न+क्यङ] सुप्तावस्था में बोलना, बड़बड़ाना, उद्विग्नता के कारण स्वप्न आना।

उद् (उप०) [उ+क्विप्, तुक्] नाम और धातुओं में पूर्व लगने वाला उपसर्ग, सम० में निम्नांकित अर्थ उदाहरणसहित बतलाये गये हैं—1 स्थान, पद, या शक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठता, उच्च, उद्गत, ऊपर, पर, अतिरिक्त, ऊँचाई पर (उद्गत) 2. पार्श्वक्य, वियोजन, बाहर, से बाहर, से, अलग अलग आदि (उद्गच्छति) 3 ऊपर उठना (उत्तिष्ठति) 4 अभिग्रहण, उपलब्धि—(उपार्जयति) 5 प्रकाशन (उच्चरति) 6 आश्चर्य, चिन्ता (उत्सुक) 7 मुक्ति—(उद्गत) 8 अनुपस्थिति (उत्पथ) 9 फूंक मारना, फुलाना, सोखना—(उत्फुल्ल) 10 प्रसन्नता—(उद्दिष्ट) 11 शक्ति—(उत्साह)—सज्ञाओं के साथ जुड़कर इससे विशेषण और अव्ययीभाव समास बनाये जाते हैं—उदश्रिस्, उच्छिख, उद्बाहु, उन्निद्रम्, उत्पथम् और उद्दामम् आदि।

उदक् (अव्य०) [उद्+अञ्च्+क्विन्] उत्तर की ओर, के उत्तर में, ऊपर (अपा० के साथ)।

उदकम् [उन्द्+ण्वुल् नि० नलोप] पानी,—अनीत्वा पङ्क्तिं मुखिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४,। सम०—अन्तः पानी का किनारा, तट तीर—आदकान्तात्तिस्रायो अनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते—श० ४,—अर्थिन् (वि०) प्यासा,—आधारः जलाशय, हौज, कुआँ, —आयुधः पानी का बर्तन, सुराही, उदरम् अलोदर (एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है), —कर्मन्, कार्यम्,—क्रिया,—दानम् मृत पूर्वजों या पितरों का जल में तर्पण करना—वृकोदरस्योदककिया कुरु वेणी० ६, याज्ञ० ३।४, —क्षयः पानी का घड़ा,—स्नानः पानी में घुसना, स्नान करना, —हस्तकम् पानी पीना, —दातृ,—दायिन्, दायिक जल देने वाला (—दः) 1. पितरों को जल-दान करने

वाला 2 उत्तराधिकारी, बन्धु-बान्धव,—कर्मन्=°कर्मन्,—गर्भः बादल,—भारः, -वीवध° पानी ढोने की बहंगी,—वज्रः गरज के साथ बौछार,—व्रीहिः कोई भी वनस्पति जो जल में पैदा होती है, —शान्तिः (स्त्री०) ज्वर दूर करने के लिए रोगी के ऊपर अभिमन्त्रित जल छिड़कना -तु० शान्त्युदकम्, -स्पर्शः शरीर के विभिन्न अंगों पर जल के छींटे देना, —हारः पानी ढोने वाला कहार।

उदक (कि) क (वि०) [उदक+कच्, इलच् वा] पनीला, रसेदार, जलमय।

उदकेचरः [अलुक् स०] जलचर, जल में रहने वाला जन्तु।

उदक्त (वि०) [उद्+अञ्च्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर को उभारा हुआ,—उदक्तमुदकं कृपात्—सिद्धा०।

उदक्य (वि०) [उदकमर्हति दण्डा०— उदक+यत्] जल की अपेक्षा करने वाला, -क्या ऋतुमती स्त्री, रजस्वला स्त्री।

उदग्र (वि०) [उद्गतमग्रं यस्य—ब० स०] 1 उन्नत शिखर वाला, उभरा हुआ, ऊपर की ओर संकेत करता हुआ, यथा °दल 2 लंबा, उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत, उच्छ्रित (आल०) -उदग्रदशनाभूमि—शि० २।१, ४।१९ उदग्र क्षत्रस्य शब्द रघु० २।५३, उदग्र-स्तुतत्वात् शि० १।७, ऊँची छलांगें 3 विपुल विशाल, विस्तृत बड़ा अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहु रघु० ६।३२ 4 वयोवृद्ध 5 उत्कृष्ट, पूज्य, श्रेष्ठ, अभिवृद्ध, वर्धित —स मंगलोदग्रतरप्रभावः—रघु० २।७१, ९।६४, १३।५० 6 प्रखर, असह्य (तापादिक), 7 भीषण, भयावह गदत्वे दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९, 8 उत्तेजित प्रचण्ड, उत्क्षिप्त—मदोद्ग्रा ककुभान्त —रघु० ४।२२।

उदङ्कुः [उद्+अञ्च्+घञ्] (तेल आदि रखने के लिए) चमड़े का बर्तन, कुप्पा।

उदच्, उदञ्च् [उद्+अञ्च्+क्विप्] (पु०—उदङ् नपु०—उदक्, स्त्री०—उदीची) 1 ऊपर की ओर मुड़ा हुआ, या जाता हुआ, 2 ऊपर का, उच्चतर 3 उत्तरी, उत्तर की ओर मुड़ा हुआ 4 बाद का। सम०—अद्रिः उत्तरी पहाड़, हिमालय, अयनम् (=उत्तरायण), भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर सूर्य की प्रगति —आवृत्तिः (स्त्री०) उत्तर दिशा से लौटना,—उदगावृत्तिपथेन नारद -रघु० ८।३३,—दक्षः उत्तरी देश, —प्रवण। (वि०) उत्तरोन्मुख, उत्तर की ओर झुका हुआ,—मुख (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर मुंह किये हुए—उत्पतोदङ्मुख खम्—मेघ० १४।

उदञ्चनम् [उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1 डोंका, ढोल,—उदञ्चन सरज्जु पुर. विश्रम—दश० १३०, 2 उदय होना हुआ, चढ़ता हुआ 3 हकना, हकलाना।

उदञ्जलि (वि०) [ब० स०] दोनों हथेलियों को मिला कर संपुट बनाये हुए।

उदण्डपाल. [अल्पा० स०] 1 मछली 2 एक प्रकार का साँप।

उदधि दे० 'उदन्' के नीचे।

उदन् (नपु०) [उन्द् + कनिन=उदक इत्यस्य उदन् आदेश] जल, (यह शब्द प्रायः समास के आरंभ या अन्त में प्रयुक्त होता है, और कर्म० के द्वि० व० के पश्चात् —'उदक' के स्थान में विकल्प से आदेश होता है, सर्वनाम-स्थान में इसका कोई रूप नहीं होता, समास में अन्तिम न् का लोप हो जाता है उदा० उदधि, अब्धोर, क्षीरोद आदि)। सम०—कुंभ. जल का घड़ा—मनु० २।१८२, ३।६८,—ज (वि०) जलीय, पनीला,—धान 1 पानी का बर्तन 2 बादल,—धि 1 पानी का आशय, समुद्र -उदधेरिव निम्नगानलेष्वभवन्नाम्र विमानना क्वचित् रघु० ८।८, 2 बादल, 3 झील, सरोवर 4 पानी का घड़ा —°कन्या, °तनया, °सुता समुद्र की पुत्री लक्ष्मी, °मेखला पृथ्वी, °राज जलों का राजा अर्थात् महासागर,—सुता लक्ष्मी, द्वारका (कृष्ण की राजधानी), —धानम्,— धी पानी का घड़ा, बर्तन,—पाल -वम् कूएँ के निकट का जोहड़ या कुआँ, °मण्डूक (आ०) कुएँ का मेंढक, (आल०) अनुभवहीन, जो केवल अपने आस-पास की वस्तुओं का ही सीमित ज्ञान रखता है -तु० कूप-मण्डूक, पेषम् लेप, लेई, पेस्ट, बिन्दु जल की बूंद कु० ५।२४, भार जल धारण करने वाला अर्थात् बादल, मन्थ जौ का पानी, लाजः धान या चावल का पानी भात - मेद्य पानी बरसाने वाला बादल, लावणिक (वि०) नमकीन या खारी, -वह्न बादल की गरज के साथ बौछार, पानी की फुहार, —वास जल में रहना या बसना, महत्यराक्रीडनवास-लालसा -कु० ५।२७,—वाह (वि०) पानी लाने वाला। (हः) बादल, वाहनम् पानी का बर्तन, शरावः पानी से भरा कसोरा —शित् [उदकेन जलेन शदयति] छाछ, मट्ठा (जिसमें दो भाग पानी तथा एक भाग मट्ठा हो), -हरणः पानी निकालने का बर्तन।

उदन्त [उद्गतोऽन्तो यस्य -ब० स०] 1 समाचार, गुप्तवार्ता, पूरा विवरण, वर्णन, इतिवृत्त- अथवा राम प्रियोदन्त- रघु० १२।६६, कान्तोदन्त सुहृदुपनत-संहृमारिकचिद्वन —मेघ० १०० 2 परिज्ञाता, साधु।

उदन्तक [उदन्त + कन्] समाचार, गुप्त बातें।

उदन्तिका [उद+अन्त+ठिच्+ष्वुल्+टाप् इत्वम्] संतोष, संतृप्ति।

उदन्य (वि०) [उदक +क्यच् वि० उदन् आदेश + क्विप्] प्यासा,— न्या प्यास, निर्वर्ण्यतामुदन्यावतीकार. —वेणी० ६, भट्टि० ३।४०।

उदन्वत् (पु०) [उदक+मतुप्, उदन् आदेश, मस्य व] समुद्र,—उदन्वच्छत्रम्—बालरा० १।८, रघु० ४।५२, ५८, १०।६, कु० ७।७३।

उदय [उद्+इ+अच्] 1. निकलना, उगना (आलं० भी)—चन्द्रोदय इवोत्सर्पे—रघु० १२।३६, २।७३ ऊपर जाना 2 आविर्भाव, उत्पादन—घनोदय. प्राक्—शि० ७।३०, फलोदय—रघु० १।५, फल का निकलना या सिद्धान्त होना—कु० ३।१८ 3 सृष्टि (विप० प्रलय) कु० २।८ 4 पूर्वाद्रि (उदयाचल- जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना माना जाता है)—उदयगुडसक्थाकुमरी-चिभि—विक्रम० ३।६ 5 प्रगति, समृद्धि, उदय (विप० 'व्यसन') - तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम्—शि० ४।१, रघु० ८।८४, ११।७३, 6 उन्नयन, उत्कर्ष, उदय, वृद्धि —उदयमस्तमय च रघुद्वहात्—रघु० ९।८९, 7 फल, परिणाम 8 निष्पन्नता, पूर्णता —उपस्थितोदयम्—रघु० ३।१, प्रारब्धमनुदयोदय १।१५, 9 लाभ नफा 10 आय, राजस्व 11 ब्याज 12 प्रकाश, चमक। सम०—अचलः,—अद्रि,—गिरि,—पर्वतः,—शैलः पूर्व दिशा में होने वाला उदयाचल, जहाँ से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होना माना जाता है—उदयगिरिवनालीकालमन्दारगुल्मान्—उद्भूत, भिनोदयाद्रेरभिनायसूच्चकै शि० १।१६ तत उदयगिरेरिवैक एव मा० ३।१०,—प्रस्थः उदयाचल का पठार जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना समझा जाता है।

उदयनः [उद्+इ+ल्युट्] 1 उगना, चढ़ना, ऊपर जाना 2 परिणाम,—नः 1 अगस्त्य मुनि 2 वत्सदेश का राजा—प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, (उदयन प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा था यह वत्सराज के नाम से विख्यात है। उदयन कौशाम्बी में राज्य करता था। उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता ने उसे स्वप्न में देखा, तथा देखते ही वह उस पर मोहित हो गई। चण्ड महासेन ने उदयन को धोखे से पकड़ लिया और कारागार में डाल दिया, परन्तु बाद में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह वासवदत्ता को उसके पिता तथा अपने शत्रुओं से निकाल कर ले भागा। रत्नावली नामक नाटिका का नायक भी उदयन है। इसके जीवन की घटनाओं के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं) दे 'वत्स' भी।

उदरम् [उद्+दृ+अप्] 1 पेट तुप्युरोदरपूरकाय—भट्ट० २।११९, तु० कृशोदरी, उदरम्भरि आदि 2 किसी वस्तु का भीतरी भाग, गह्वर, तलाई पञ्च० २।१५० रघु० ५।७०, स्था कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्—शि० ६।१९, १।१९, अमरु ८८, 3. जलोदर रोग के कारण पेट का फूल जाना—तस्य हीदरं जज्ञे—ऐत० 4 वध करना। सम०—आध्मानः पेट का फूलना,—आमयः पेचिश, अतिसार,—आवर्तः नाभि,—आवेष्टः केंचुआ, फीताकृमि,—आस्यम् 1. वक्षस्त्राण या कवच, कवच या बिग्रहबख्तर जो केवल छाती पर पहना जाय 2. पेट को कसने वाली पट्टी,—दारकः (वि०) पेटू, खाऊ, (बहुभोजी जिसकी भूख राक्षसों जैसी होती है),(—कः) जीवजन्तु,—पूरम् (अव्य०) जब तक पूरा पेट न भर जाय—उदरपूरं भुंक्ते—सिद्धा०, पेट भर कर खाता है,—पोषणम्,—भरणम् पेट भरना, पालन पोषण करना,—भद्र (वि०) पेट के बल लेट कर सोने वाला (—द्रः) भूत,—भर्तृः पेटू, बहुभोजी, स्वादलोलुप, (जिसके लिए पेट ही सब कुछ है)।

उदरिः [उद्+दृ+अथिन्] 1 समुद्र 2 सूर्य।

उदरंभरि (वि०) [उदर+भृ+इन्, मुमागम] 1. केवल अपना पेट भरने वाला, स्वार्थी 2 पेटू, बहुभोजी।

उदरवत्, -उदरिल—ल (वि०) [उदर+मतुप् मस्य व, उदर+इलच् वा] बड़ी तोंद वाला, स्थूलकाय, मोटा।

उदरिन् (वि०) [उदर+इनि] बड़ी तोंद वाला, मोटा, स्थूलकाय,—नी गर्भवती स्त्री।

उदर्कः [उद्+अर्क् (अर्च्)+घञ्—उद्+ऋच्+घञ्+कञ्] 1 (क) अन्त, उपसंहार,—सुखोदर्कम्—का० ३२८, (ख) फल, परिणाम, किसी क्रिया का भावी फल- किन्तु कस्याप्योदर्कं भविष्यति—उत्तर० ४, प्रयत्न सफलोदर्कं एव—मा० ८, मनु० ४।१७६, ११।१० 2. भविष्यत्काल, उत्तरकाल।

उदर्चिस् (वि०) [ऊर्ध्वमर्चिः शिखाऽस्य ब० स०] चमकने वाला, ऊपर की ओर ज्वाला बिखेरने वाला, ज्योतिर्मय, उज्ज्वल—स्फुरदुदर्चि सहसा तृतीयादक्षः कृशानु किल निष्पपात कु० ३।७१, ७।७९, रघु० ७।२४, १५।७६,—(पुं०) 1. अग्नि—प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे खेरते तेजसिमास्तम्—शि० २।४२ २०।५५, 2 कामदेव 3 शिव।

उदवसितम् [उद्+अव+सो+क्त] घर, आवास।

उदश्रु (वि०) [उद्गतान्यश्रूणि यस्य—ब० स०] फूट-फूट कर रोने वाला, जिसके अविरल आँसू बह रहे हों, रोने वाला - रघु० १२।१४, अमर ११।

उदसनम् [उद्+अस्+ल्युट्] 1. फेंकना, उठाना, सीधा खड़ा करना 2 बाहर निकाल देना।

उदात्त (वि०) [उद्+आ+दा+क्त] 1 उच्च, उन्नत अन्वर्थ का० २२. वेणी० १, 2. महान्, प्रतिष्ठित 3 उदार, वदान्य 4. प्रसिद्ध, विख्यात, महान्—लक्ष्मीदासमक्षिमा- मालवि० १।७६, 5. शिव, शिवतत्व

6. उच्च स्वराघात दे० नी०,—स्वः 1. उच्च स्वर में उच्चरित—उच्चैरुदात्त—पा० १।२।२९, तास्वादिषु स्वानेष्वर्धभागे निष्पन्नोऽनुदात्त —सिद्धा०, अनुदात्त के नीचे भी दे०,—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्त स्वरानिव—शि० २।९५, 2 उपहार, दान 3 एक प्रकार का वाद्य—उपकरण, ढक्का ढोल,—त्रम् (अल० शा०) एक अलंकार—सा० द० ७५२, तु० काव्य० १०, उदात्त वस्तुन सपन्महत्ता चापलक्षणम् ।

उदानः [उद्+अन्+घञ्] 1 ऊपर को सांस लेना 2 सांस लेना, श्वास, 3 पांच प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है—अन्य चार हैं —प्राण, अपान, समान और व्यान, —स्पन्दयत्यधर वक्त्र गात्रनेत्रप्रकोपन, उद्वेजयति मर्माणि उदानो नाम मारुत । 4 नाभि ।

उदायुध (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र उठा लिया है, शस्त्र ऊपर उठाये हुए—मनुजपशुभिर्निर्यादैर्भवद्भिरुदायुधै, वेणी० ३।२२, उदायुधानां ततस्तान्दृप्तान्प्रेक्ष्य राघव —रघु० १२।४४ ।

उदार (वि०) [उद्+आ+रा+क] 1 दानशील, मुक्तहृदय, दानी 2 (क) भद्र, श्रेष्ठ—स तर्पयति विनेतुरुदारमते —रघु० ८।९१ ५।१२, भग० ७।१८ (ख) उच्च, विख्यात, पूज्य,—°कीर्ति —कि० १।१८, 3 ईमानदार, निष्कपट, खरा 4 अच्छा, बढिया, उमदा —उदार कल्प —श० ५ 5 आत्मवान् 6 बड़ा, विस्तृत, विशाल, शानदार—रघु० १३।७९,—उदारनेपथ्यभृताम्—६, 6 मूल्यवान् वस्त्र पहने हुए 7 सुन्दर, मनोहर, प्यारा—कु० ७।१४, शि० ५।२१,—रम् (अव्य०) जोर से—शि० ४।३३ । सम०—आत्मन्, —चेतस् —चरित,—मनस्—तत्त्व (वि०) विशालहृदय, महामना—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् —हि० १, —धी (वि०) उदात्त प्रतिभाशील, अत्यन्त बुद्धिमान्—रघु० ३।३०,—दर्शन (वि) जो देखने में सुन्दर है, बड़ी आंखों वाला— कु० ५।३६ ।

उदारता [उदार+तल्+टाप्] 1 मुक्तहस्तता, 2 समृद्धि (अभिव्यक्ति की) वचसाम्—मा० १।७ ।

उदास (वि०) [उद्+अस्+घञ्] तटस्थ, वीतराग, वेलाग,—सः, 1 निःस्पृह, दार्शनिक 2 तटस्थता, अनासक्ति ।

उदासितृ (वि०) [उद्+आस्+णिनि] 1 निःस्पृह, 2 तटस्थ रहना ।

उदासीन (वि०) [उद्+आस्+शानच्] 1 तटस्थ, वेलाग, निष्क्रिय—तदुदासीनमुदासीन त्वामेव पुरुष विदु—कु० २।१३, (भौतिक संसार की रचना में कोई भाग न लेते हुए) दे० सांख्य 2 (विधि में) अभियोग में असबद्ध व्यक्ति 3 निरपेक्ष (जैसा कि राजा या राष्ट्र),—नः, 1 अजनबी 2. तटस्थ भग० ६।९ 3 सामान्य परिचय ।

उदास्थितः [उद्+आ+स्था+क्त] 1 अधीक्षक 2 द्वारपाल 3 भेदिया, गुप्तचर 4 तपस्वी जिसका व्रत भङ्ग हो गया है ।

उदाहरणम् [उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1 वर्णन, प्रकथन, कहना 2 वर्णन करना, पाठ करना, संभालाप आरंभ करना—अथाङ्गिरसमग्र्यमुदाहरणवस्तुषु—कु० ६।५५, 3 प्रकथनात्मक गीत या कविता, एक प्रकार का स्तुतिगान जो 'जयति' जैसे शब्द से आरंभ हो तथा अनुप्रास से युक्त हो—चरणेष्वस्त्वदीय जयोदाहरण श्रुत्वा—विक्रम० १, जयोदाहरण बाह्वोर्गरिष्ठयामास किन्नरान्—रघु० ४।७८, विक्रम० २।१४, (येन केनापि तालेन गद्यपद्यसमन्वितम्, जयत्यूपक्रम मालिन्यादिप्रासविचित्रितम्, तदुदाहरण नाम विप्रकन्यष्टाङ्गसयुतम्—प्रतापरुद्र । 4 निदर्शन, मिसाल, दृष्टान्त—समूलघातमघ्नन्त पराक्रोशन्ति मानिन, प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरण रवि । शि० २।३३ 5 (न्या० में) अनुमानप्रक्रिया के पांच अंगों में से तीसरा 6 (अल० शा०) 'दृष्टान्त' जो कुछ अलंकारशास्त्रियों द्वारा अलंकार माना जाता है—यह अर्थान्तरन्यास से मिलता जुलता है उदा० अमितगुणोऽपि पदार्थो दोषेणैकेन निन्दितो भवति, निखिलरसायनराजो गन्धेनोग्रेण लशुन इव । रस०, (दोनों अलंकारों में भेद स्पष्ट करने के लिए 'उदाहरण' के नी० दे० रस०) ।

उदाहार [उद्+आ+हृ+घञ्] 1 मिसाल या दृष्टांत 2 किसी भाषण का आरम्भ ।

उदित (भू० क० कृ०) [उद्+इ+क्त] 1 उगा हुआ चढा हुआ—उदितभूयिष्ठ —मा० १, मालवि० २।८, 2 ऊंचा, लंबा, उन्नत 3 बड़ा हुआ, आवर्धित 4 उत्पन्न, पैदा हुआ, 5 कथित, उच्चरित (वद धातु का यङन्त रूप) । सम०—उदित (वि०) शास्त्रों में पूर्ण-शिक्षित ।

उदीक्षणम् [उद्+ईक्ष्+ल्युट्] 1 ऊपर की ओर देखना 2 देखना दृष्टिपात करना ।

उदीची [उद्+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] उत्तर दिशा, —तेनादीची दिगमनुसरे —मेघ० ५३

उदीचीन (वि०) [उदीची+त्व] 1 उत्तर दिशा की ओर मुड़ा हुआ 2 उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला ।

उदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तर दिशा में होने या रहने वाला, च्यः 1 सरस्वती नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देश 2 (ब० व०) इस देश के निवासी रघु० ८।९६, च्यम् एक प्रकार की सुगन्ध ।

उदोष [उदगता आपो यत्र उद्+अप् (ईप्) ब० स०] बहुत पानी, जलप्लावन वाला ।

उदीरयत् [उद्+ईर्+ल्युट्] 1 बोलना, उच्चारण, —अभिव्यञ्जना उद्गतां प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम् —कु० २।१२, 2 बोलना, कहना 3 फेंकना, (शस्त्रादिक का) चलाना।

उदीर्ण (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] 1 बढ़ा हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 2 फूला हुआ, उन्नत 3. वर्धित, गहन।

उदुम्बरः दे० उदुम्बर।

उदूखल=उलूखल।

उदूढा [उद्+वह्+क्त—टाप्] विवाहित स्त्री।

उद्वेजय (वि०) [उद्+एज्—णिच्+अच्] हिलाने वाला, कंपाने वाला, भयंकर—उद्वेजयान् मुहुरमान् स्थगयेत्—भट्टि० १।१५।

उद्गतिः (स्त्री०) [उद्+गम्+क्तिन्] 1 ऊपर जाना उठना, बढ़ना 2 आविर्भाव, उदय, जन्मस्थान 3 वमन करना।

उद्गन्धि (वि०) [उद्गतो गन्धोऽस्य—ब० स० इच्] 1 सुगंधयुक्त, सुखदायक—विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु —रघु० २६।४३ 2 नीच गंध वाला।

उद्गम [उद्+गम्—घञ्] 1 ऊपर जाना, (तारों आदि का), उगना बढ़ना—आज्यधूमोद्गमेन—का० १।१५, 2 (बालों का) सीधे खड़े होना—रोमोद्गम प्रादुरभूदुमयां—कु० ७।७७, मालवि० ४।१ अमरु ३६, 3 बाहर आना, विदा 4 जन्म, उत्पत्ति, रचना —पारिजातस्योद्गम —मा० २, आविर्भाव—फलेन सहकारस्य पुष्पोद्गम इव प्रजा—रघु० ४।९, कलिपय—कुसुमोद्गम कदम्ब —उत्तर० ३।२०, अमरु ८१, 5 उभार, उन्नयन 6 (किसी पौधे का) अंकुरण—हरित-तृणोद्गमशङ्कया मृगीभि —कि० ५।३८, 7 वमन करना, उगलना।

उद्गमनम् [उद्+गम्+ल्युट्] उगना, दिखाई देना।

उद्गमनीय (स० कृ०) [उद्+गम्+अनीयर्] ऊपर जाने या चढ़ने के योग्य, —वस्त्र धुले कपड़ों का जोड़ा (तत्स्यादुद्गमनीय यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्)—धौतोद्गमनीयवासिनी—दश० ४२, गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ (यहाँ मल्लि० 'उ-०' का अनुवाद 'धौतवस्त्र' करते हैं और कहते हैं कि 'युगग्रहणं तु तात्त्विकाभिप्रायम्' दे० वही)।

उद्गाढ (वि०) [उद्+गाह्+क्त] गहरा, गहन, अत्यधिक, अत्यंत—उद्गाढरागोदया—मा० ५।३, ६।६, —घन् आधिक्य,—(अव्य०) अत्यधिक, अत्यन्त।

उद्गातृ (पु०) [उद्+गै+तृच्] यज्ञ के मुख्य चार ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गारः [उद्+गृ+घञ्] 1. (क) निष्कासन, बमन करना, कह डालना, उत्सर्जन—अर्जुनोद्गार-नद्यानां सघोद्गारतुनन्दिषु—रघु० ४।५७, भट्टि० २।३६, मेघ० ६३,६९, शि० १२।९, (ख) डकार, प्रयत्न द्वारा पेट में भरी हुई वायु का बाहर निकालना—रघु० ६।९०, महावी० १।३३, 2. बार बार कहना, वर्णन—मा० २।१३, 3. थूक, खार 4. डकार, कंठस्वर्जन।

उद्गारिन् (वि०) [उद्+गृ+णिनि] 1 ऊपर जाने वाला, उगने वाला 2 वमन करने वाला, बाहर फेंकने वाला—रघु० १३।४७।

उद्गिरत्न् [उद्+गृ+ल्युट्] 1. वमन करना 2. थूक या खार निकालना 3. डकारना 4 उन्मूलन।

उद्गीतिः (स्त्री०) [उद्+गै+क्तिन्] 1. ऊँचे स्वर से गान करना 2. सामवेद के मन्त्रों का गान 3. आर्या छंद का एक भेद—दे० परिशिष्ट।

उद्गीथः [उद्+गै+थक्] 1 सामवेद के मंत्रों का गायन (उद्गाता का पद) 2. सामवेद का उत्तरार्ध—मूर्धानं उद्गीथविदो वदन्ति—उत्तर० २।३, 3. 'ओम्' जो परमात्मा का तीन अक्षरों का नाम है।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गृ+क्त] 1 वमन किया हुआ 2 उगला हुआ, बाहर उडेला हुआ।

उद्गुर्ण (वि०) [उद्+गुर्+क्त] ऊँचा किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ—वेणी० ६।१९।

उद्गृहणम् [उद्+ग्रह्+ल्युट्] अनुग्रहण, अभ्युदय।

उद्ग्रन्थि (वि०) [ब० स०] ग्रन्थनमुक्त (बाल० भी)।

उद्ग्रह—हणम् [उद्+ग्रह्+अच् ल्युट् वा] 1 लेना, उठाना, 2 ऐसा कार्य जो धार्मिक अनुष्ठान अथवा अन्य कृत्यों से सम्पन्न हो सकता है 3. डकार।

उद्ग्रहः [उद्+ग्रह्+घञ्] 1. उठाना या लेना, 2. वाद का उत्तर देना, प्रतिवाद।

उद्ग्रहणिका [उद्+ग्रह्+णिच्+युच्+टाप्+क, इत्वम्] वाद का उत्तर देना।

उद्ग्राहित (भू० क० कृ०) [उद्+ग्रह्+णिच्+क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ या किया हुआ 2. हटाया हुआ 3. श्रेष्ठ, उन्नत 4. न्यस्त, मुक्त किया गया 5. बद्ध, गढ़ 6. प्रत्यास्तृत, वापस किया गया।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीविन् (वि०) [उन्नता ग्रीवा यस्य—ब० स०, उन्नता ग्रीवा—मा० स०—उद्ग्रीवा+इनि] गर्दन ऊपर उठाये हुए—उद्ग्रीवैर्मयूरै—मालवि० १।२१, अमरु ६३।

उद्घः [उद्+हन्+ड] 1 श्रेष्ठता, प्रमुखता (समास के अन्त में) बाहुलोद्घ=एक श्रेष्ठ बाहुवाला—उद्घाटयत्यपि निशाकिञ्जल्कं न तु विशेषविज्ञः —शिशु०, तु० अतिशिक्षाकामधिकां प्रकाशनपूर्वसमयो, प्रकाशनाचकाव्यमुनि—अमर० 2. प्रमुखता 3. श्रेष्ठता 4. अग्नि 5 यमुना 6. अतीतस्मिन् आदिम वर्ष।

उद्घातः [उद्+हन्+घञ्] लकड़ी का तख्ता जिस पर बढ़ई लकड़ी रख कर चलता है, आरा की—लोहोद्घात-मनस्यानां ललितावयवां स्त्रियम्—भट्टि० ७।६२।

उद्घट्टनम्-ना [उद्+घट्ट+ल्युट्, युच् वा] रगड़, ...से रगड़ना—मेघ० ६१।

उद्घर्षणम् [उद्+घृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना, घोटना—यस्यो-द्घर्षणलोष्टकैरपि सदा पृष्ठे न जातः क्षिणः—मृच्छ० २।११, 2. छोटा।

उद्घातः [उद्+घट्+घञ्] चौकीदार या चौकी (जिसमें सैन्य संरक्षक दल ठहरे)।

उद्घातकः [उद्+घट्+णिच्+ण्वुल्] 1. कुंजी 2 कुएँ की रस्सी और डोल, कुएँ की चर्खी (—कम् भी)।

उद्घाटक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्+घट्+णिच्+ल्युट्] खोलना, ताला खोलना—धर्मं यो न करोति विचिन्तयति. स्वर्गापवर्गोद्घाटनम्—हि० १।१५३,—कः 1. प्रकट करना—वेणी० १ 2. उन्नत करना, ऊपर उठाना 3 कुंजी 4 कुएँ पर की रस्सी व डोल, पानी निकालने की चर्खी।

उद्घातः [उद्+हन्+घञ्] 1 आरंभ, उपक्रम—उद्-घात. प्रणयो यावताम्—कु० २।१२, आकुमारकथोद्घात शाक्किनीव्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२० 2 संकेत, उल्लेख 3. प्रहार करना, घायल करना 4. प्रहार, थप्पड़, आघात 5 हथकोला, झकझोरना, (साड़ी आदि का) झटका—शि० १२।२, रघु० २।७२, वेणी० २।२८, 6 उठना, उन्नत होना 7 मुद्गर 8. खण्ड 9. पुस्तक भाग, अध्याय, अनुभाग, परिच्छेद।

उद्घोषः [उद्+घुष्+घञ्] 1 ऊँची आवाज में कहना डिंडोरा पीटना 2 सार्वजनिक प्रिय बात, सामान्य विवरण।

उद्घृष्ट [उद्+घृष्+क्त] 1 खटमल 2 जूँ 3 मच्छर।

उद्घृष्ट (वि०) [भाषा० स०] 1. जिसका नशा, उछल या ज्वार उठा हुआ हो —उद्घृष्टघटम गृहपतीधिकाणाम्—रघु० १६।४६, °घवलातपत्रा. मा० ६, 2 मजबूत, भयानक। सम०—घोषः 1. डंका देने वाला 2 एक प्रकार की मछली 3. एक प्रकार का साँप।

उद्घृष्टर (वि०) [स्त्री० स०] 1. जिसके दाँत लंबे, या बाहर निकले हुए हों 2. ऊँचा, लंबा 3 भयानक, मजबूत।

उद्घातनम् [उद्+घो+ल्युट्] 1 दमन, वश—उद्घाने क्रिय-माणे तु मत्स्यानां तव रज्जुभिः—महा० 2 पालतू बनाना, वश में करना 3. मध्यभाग, कटि 4 चूल्हा, अंगीठी, 5. बड़वानल।

उद्घात्त (वि०) [उद्+घम्+क्त] 1. ऊर्जस्वी 2 विनीत।

उद्घत (वि०) [स० सं०] 1 निर्दय, अनियन्त्रित, निरंकुश, मुक्त—शि० ४।१० 2 (क) सबल, सशक्त—पंच० ३।१४८ (ख) भीषण, नशे में चूर —ओतस्युद्घाम-दिग्गजे—रघु० १।७८—शि० ११।१९ 3. मदमत्त 4 स्वेच्छाचारी 5 अतिबहुल, विशाल, बड़ा, अत्यधिक —मेघ० २५, रत्ना० २।४,—तः 1 यम 2. बड़प्पन, —तम् (अव्य०) प्रचण्डता के साथ, भीषणतापूर्वक, बलपूर्वक - अधोद्घाम ज्वलिष्यत —उत्तर० ३।९।

उद्घातलकम् [उद्+घल्+णिच्+अच्+कन्] एक प्रकार का गहना, लटकने का फल।

उद्घित (वि०) [उद्+घी+क्त] बंधा हुआ, बद्ध।

उद्घिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+घिश्+क्त] 1 बताया हुआ, विशिष्ट, विधेय रूप से कहा गया 2 इच्छित 3 चाहा हुआ 4 समझाया गया, सिखाया गया।

उद्घीपः [उद्+घीप्+घञ्] 1 प्रज्वलित करने वाला, जलाने वाला 2 प्रज्वालक।

उद्घीपक (वि०) [उद्+घीप्+णिच्+ण्वुल] 1 उत्तेजक 2 प्रकाशक, प्रज्वालक।

उद्घीपनम् [उद्+घीप्+णिच्+ल्युट्] 1 जलाने वाला, उत्तेजना देने वाला 2 (अलं० शा०) जो रस को उत्तेजित करे, दे० 'आलंबन' 3 प्रकाश करना, जलाना 4 शरीर को भस्म करना।

उद्घीप्र (वि०) [उद्+घीप्+रन्] चमकता हुआ, दहकता हुआ,—प्रः,—प्रम् सुगन्धि।

उद्घुष्ट [उद्+घुष्+क्त] घमंडी, अभिमानी।

उद्घेशः [उद्+घिश्+घञ्] 1 संकेत करने वाला, निर्देश करने वाला 2 वर्णन, विशिष्ट वर्णन 3 निदर्शन, व्याख्यान, दृष्टान्त 4 निश्चयन, पृच्छा, सम-वेषण, खोज 5 संक्षिप्त वक्तव्य या वर्णन—एष तुद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया— भाग० १०।४०, 6 उत्तम-कार्य 7 अनुबन्ध 8 अभिप्राय, प्रयोजन 9 स्थान, प्रदेश, जगह—महेः प्रवातनुसगोऽयमुद्देशः—श० ३, मालवि० ३।

उद्घेशकः [उद्+घिश्+घञ्+कन्] 1 निदर्शन, दृष्टांत 2 (गणित में) प्रश्न, समस्या।

उद्घेश्य (स० कृ०) [उद्+घिश्+ण्यत्] 1 उदाहरण देकर स्पष्ट करने या समझाये जाने के योग्य 2 अभिप्रेत, लक्ष्य,—श्यम् 1 लक्ष्यार्थ, प्रोत्साहक 2. किसी उक्ति (क्रिया) का कर्ता, (विप० विधेय) दे० 'अनुवाद' भी।

उद्घोतः [उद्+घुत्+घञ्] 1 प्रकाश, प्रभा (शा० और आल०)—विभिर्मैत्रं कृतोद्घोतम्—महा०, कुलोद्घोत-करी तव रामा० अलंकृत करते हुए 2 किसी पुस्तक के प्रभाग, अध्याय, अनुभाग या परिच्छेद।

उद्घावः [उद्+हु+घञ्] भागना, पीछे हटना।

उद्धत (भू० क० कृ०) [उद्+हन्+क्त] 1 ऊँचा किया हुआ, उन्नत, ऊपर उठाया हुआ—लाङ्गूलमुद्धतं धुन्वन् —भट्टि० ९।७ आमोदैरपि रक्षोभिः—शि० २।८, उठाई हुई, रघु० ९।५० हांका हुआ—शि० ८।५३

2. अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक 3. अभिमानी, घिरर्थक, व्यर्थ फूला हुआ—अकथनोद्धतः—रघु० १२।६१ 4 कठोर 5. उत्तेजित, भड़कामा हुआ, प्रचंड °अलोभनरागा—कि० ९।६८, ६९, मदोद्धता अत्यधिकं विचेष्टसे कु० ३।३१ 6. शानदार, राजसी—वीरोद्धता गजयतीव गतिर्वरिष्ठाम्—उत्तर० ६।१९, अक्खड़, अशिष्ट,—तः राज-मल्ल। सम०—मनस्,—मानस (वि०) घमंडी, अहंकारी, घमंडी।

उद्धतिः (स्त्री०) [उद्+हन्+क्तिन्] 1. उच्चारण 2. घमंड, अभिमान, –शि० ३।२८ 3 अस्वीकृपना, धृष्टता 4 प्रहार।

उद्धम [उद्+धमा+क - धमादेश.] 1. आवाज निकालना, बजाना 2. जोर सांस लेना, हाँफना।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] 1 निकालना, बाहर करना, (वस्त्रादिक) उतारना 2 निष्कर्षण, निस्तारण, उखाड़ लेना,—कंटक° मनु० ९।२५२, बाणोद्धरणम्—शिशु०, 3 उद्धार करना, मुक्त करना, अभय करना—दीनोद्धरणोचितस्य—रघु० २।२५, स बन्धुर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः—हि० १।३. 4. उन्मूलन, ध्वंस, पदच्युति 5 उठाना, ऊपर करना 6. वमन करना 7 मोक्ष 8 ऋणपरिशोध।

उद्धर्तृ-उद्धारक (वि०) [उद्+(हृ)तृच्, ण्वुल् वा] 1 ऊपर उठाने वाला 2 साझीदार, सम्पत्ति का हिस्सेदार।

उद्धर्ष (वि०) [उद्+हृष्+घञ्] खुश, प्रसन्न,—र्षः 1 बहुत प्रसन्नता 2 किसी कार्य को सफल करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का साहस 3 उत्साह (सात्विक पर्व)।

उद्धर्षणम् [उद्+हृष्+ल्युट्] 1 प्राण फूकना 2 रोमांच होना, पुलक।

उद्धवः [उद्+हु+अप्] 1 अग्नि 2 उत्सव, पर्व 3 इस नाम का यादव जो कृष्ण का चाचा तथा मित्र था (जब अक्रूर द्वारा कृष्ण मथुरा ले जाये गये, तो गोकुल वासियों ने उद्धव से मथुरा जाने और वहां से कृष्ण को वापिस लिवा लाने की प्रार्थना की। यादवों के अवश्यम्भावी विनाश को देख कर उद्धव कृष्ण के पास गये और पूछा कि अब क्या करें, कृष्ण ने तब उद्धव को बतलाया कि वह बदरिकाश्रम जाकर तपस्या करें तथा स्वर्गलाभ करें। 'उद्धवदूत' और 'उद्धवसंदेश' की रचना का विषय 'उद्धव' है)।

उद्धस्त (वि०) [ब० स०] हाथ आगे पसारे हुए या उठाये हुए।

उद्धानम् [उद्+धा+ल्युट्] 1 चूल्हा, अंगीठी, यज्ञकुण्ड 2 उगल देना, वमन करना।

उद्धान्त (वि०) [उद्+हा+क्त वा०] उगला हुआ, वमन किया हुआ,—तः हाथी जिसके मस्तक से मद चूना बन्द हो गया हो।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. खींचकर बाहर निकालना, निस्तारण 2. मुक्ति, त्राण, बचाव, अभयदान, छुटकारा 3. उठाना, ऊपर करना 4. (विधि में) पैतृक सम्पत्ति में से पृथक् किया गया वह भाग जिसका काम केवल ज्येष्ठ पुत्र ही उठा सके, छोटे भाइयों को दिए जाने वाले भाग के अतिरिक्त वह अंश जो कानूनन बड़े भाई को ही मिले—मनु० ९।११२, 5. लूट का वह भाग जिसका स्वामी राजा होता है—मनु० ७।९७, 6 ऋण, 7. सम्पत्ति का फिर से प्राप्त हो जाना 8 मोक्ष।

उद्धारणम् [उद्+हृ(तृ)+णिच्+ल्युट्] 1. उठाना ऊँचा करना 2 बचाना, भय से निकाल लेना, छुटकारा, मुक्ति।

उद्धुर (वि०) [उद्+धुर्+क] 1 अनियन्त्रित, निरंकुश, मुक्त 2. क्रुद्ध, निर्लज्ज 3 भारी, भरपूर—हि० ५।६४ 4. मोटा, फूला हुआ, स्थूल 5. सीधा, सरल—मालवि० ४।४०।

उद्धूत (भू० क० कृ०) [उद्+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, गिरा हुआ, उठाया हुआ, ऊपर फेंका हुआ—वायूद्धूतोऽपि धूलिश्चय.—वेम० 2 उन्नत, ऊँचा।

उद्धूनम् [उद्+धू+ल्युट्, नुगागमः] 1. ऊपर फेंकना, उठाना 2 हिलाना।

उद्धूपनम् [उद्+धूप्+ल्युट्] धूनी देना, धुपाना।

उद्धूलनम् [उद्+धूल्+णिच्+ल्युट्] धूरा करना, पीसना; धूल या धूरा बुरकना—अस्योद्धूलन —काव्य० १०।

उद्धूषणम् [उद्+धूष्+ल्युट्] रोंगटे खड़े होना, पुलकना, रोमांचित होना।

उद्धृत (भू० क० कृ०) [उद्+हृ (तृ)+क्त] 1. बाहर खींचा हुआ, निकाला हुआ, निचोड़ कर निकाला हुआ 2 उठाया हुआ, उन्नत, ऊँचा किया हुआ 3 उखाड़ा हुआ, उन्मूलित—उद्धृतारि.—रघु० २।६०।

उद्धृतिः (स्त्री०) [उद्+हृ (तृ)+क्तिन्] 1. खींच कर बाहर निकालना, निचोड़ना 2. निचोड़, चुना हुआ सर्वस्व 3 मुक्त करना, बचाना 4. विशेषतः पाप से मुक्ति दिलाना, पवित्र करना, मोक्ष—यत्ते द्रौपदि शस्त्रेतिमिह स्तोत्रैरुद्धृतिविधौ—गंगा० २८।

उद्धृष्टाण्डम् [उद्+धृष्+क्त+ल्युट्] अंगीठी, चूल्हा, स्तोव।

उद्धवः [उच्चात्युदकमिति मलिक०—उद्+उच्च्+क्वप्, नि० उच्चोदकम्] एक वरिष्ठ का नाम · तोयदानेन इवोद्धवमिच्छयो:—रघु० ११।८।

उद्धस्त (वि०) [आत्मा० स०] ढीला किया गया—त्रः,—स्तम् 1. फेंकना, झटकना 2. स्वयं खोली अथवा खोला।

उद्धस्तकः [उद्+धस्त+कन्] वर्णसंकर जाति की स्त्री का काम करती है—पु०—वैश्यया—आयोगवेन

विशावां जातास्तांश्चोपजीवित, तस्यैव वृषलन्यायां जातः सूतिक उच्यते। सूतिकस्य नृपायां तु जाता उद्बन्धका स्मृता, विर्णेजयेयुर्वस्त्राणि वस्तृणाश्चैव धावकाः।

उद्बल (वि०) [ब० स०] सबल, सशक्त।

उद्बलम्ब (वि०) [ब० स०] अभ्युपरिपूर्ण, अभ्युपरिप्लावित कि० ३।५९।

उद्बाहु (वि०) [ब० स०] भुजाएँ ऊपर उठाये हुए, भुजाओं को फैलाये हुए—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः—रघु० १।३।

उद्बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद्+बुध्+क्त] 1 जागा हुआ, जगाया हुआ, उत्तेजित 2 खिला हुआ, फैला हुआ, पूर्ण विकसित—मा० १।४०, 3 याद दिलाया गया 4. प्रत्याहृत।

उद्बोधः,—धनम् [उद्+बुध्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. जगाना, ध्यान दिलाना 2 प्रत्याह्मरण करना, उठाना—मनु कथं रामादिरत्यावुद्बोधकारणैः सीतादिभिः सामाजिकानां रत्युद्बोध—सा० द० ३, इसी प्रकार—रस° ।

उद्बोधक (वि०) [उद्+बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1 ध्यान दिलाने वाला, 2 उत्तेजना देने वाला,—कः सूर्य।

उद्भट (वि०) [उद्+भट्+अच्] 1 श्रेष्ठ, प्रमुख—पदे पदे सन्ति भटा रणोद्भटा—नै० १।१३२ 2 उत्कृष्ट, महानुभाव,—टः 1 अनाज फटकने के लिए छाज 2 कड़ुवा।

उद्भवः [उद्+भू+अप्] 1 उत्पत्ति, रचना, जन्म, प्रसव (शा० तथा आल०) इति हेतुस्तदुद्भवे—काव्य० १, याज्ञ० ३।८०, बहुधा समास के अन्त में "से उत्पन्न" अर्थ को प्रकट करता है—ऊरूद्भवा—विक्रम० १।३ मणिराकरोद्भव —रघु० ३।१८ 2 स्रोत, उद्गमस्थान 3. विष्णु।

उद्भावः [उद्+भू+घञ्] 1 उत्पत्ति, सन्तति 2, औदार्य।

उद्भावनम् [उद्+भू+णिच्+ल्युट्] 1 चिन्तन, कल्पना 2 उत्पत्ति, उत्पादन, सृष्टि 3 अनादर, उपेक्षा अवहेलना।

उद्भावयितृ (वि०) [उद्+भू+णिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उत्कृष्ट बनाने वाला।

उद्भासः [उद्+भास्+घञ्] चमक, प्रभा।

उद्भासिन्, उद्भासुर (वि०) [उद्भास्+इनि, घुरच् वा] देदीप्यमान, चमकीला, उज्ज्वल;—विभूषणोद्भासि विमलभोगि वा—कु० ५।७८ मृच्छ० ८।३८, अमरु ८१।

उद्भिद् (वि०) [उद्+भिद्+क्विप्] उगने वाला, अंकुर फूटने वाला—(पुं०) 1 पौधे का अंकुर—अङ्कुरोद्भिदमयोद्भिदि—अमर० 2 पौधा 3 झरना, फौवारा।

सम०—ज (वि०) (उद्भिज्ज) फूटने वाला, (पौधे की भांति) उगने वाला (—ज्जः) पौधा,—विद्या वनस्पति विज्ञान।

उद्भिद्व (वि०) [उद्भिद्+क] फूटने वाला, उगने वाला।

उद्भूत (भू० क० कृ०) [उद्+भू+क्त] 1 जात, उत्पन्न, प्रसूत 2 (शा० तथा आल०) उत्तुंग 3 गोचर जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाना जा सके (गुणादि)।

उद्भूतिः (स्त्री०) [उद्+भू+क्तिन्] 1 प्रजनन, उत्पादन 2 उन्नयन, उत्कर्षण, समृद्धि—वर सम्भृतसम्भ्रमोद्भूतये विधि—कु० ६।८२।

उद्भेदः—दनम् [उद्+भिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 फूट पड़ना, देखना, दिखाई देना, आविर्भाव, प्रकट होना, उगना—उमास्तनोद्भेदमनुप्रवृद्ध—कु० ७।२४, त यौवनोद्भेदविशेषकान्त—रघु० ५।३८ शि० १८।३६ 3 निर्झर, फौवारा 4 रोमाञ्च जैसा कि 'पुलकोद्भेद' में।

उद्भ्रमः [उद्+भ्रम्+घञ्] 1 आघूर्णन, चक्कर देना, (तलवार आदि का) घुमाना 2 घूमना, 3 खेद।

उद्भ्रमणम् [उद्+भ्रम्+ल्युट्] 1 इधर-उधर—हिलना-जुलना, घूमना 2 उगना, उठना।

उद्यत (भू० क० कृ०) [उद्+यम्+क्त] 1 उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ—°असि, °पाणि आदि 2 सँभाल कर रखने वाला, परिश्रमी, चुस्त 3 तुला हुआ, तना हुआ (धनुष आदि)-कि० १।२१ 4 आमादा, तैयार, तत्पर, उत्सुक, तुला हुआ, लगा हुआ, व्यस्त (सप्त०, अधि० तथा तुमुन्त के साथ या बहुधा समास में)—उद्यत स्वेषु कर्मसु—रघु० १७।६१, हन्तुं स्वजनमुद्यता—भग० १।४५ जय°, वध° आदि।

उद्यम [उद्+यम्+घञ्] 1 उठाना, उन्नयन 2 सतत प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, धैर्य—निष्फल चैना तपसे कृतोद्यमाम् कु० ५।३—शक्राक मेना न नियन्तुमुद्यमात्—५ दृढ संकल्प—उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः—पञ्च० २।१३१ 3 तैयारी, तत्परता। सम०—शील (वि०) घोर परिश्रम करने वाला—भर्तृ० २।७४।

उद्यमनम् [उद्+यम+ल्युट्] उठाना, उन्नयन।

उद्यमिन् (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, सतत प्रयत्नशील।

उद्यानम् [उद्+या+ल्युट्] 1 भ्रमण करना, टहलना 2 बाग, बगीचा प्रमोदवन,—बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ० ७, २६, ३३ 3 अभिप्राय, प्रयोजन। सम०—पाल°,—पालकः,—रक्षकः माली, बाग का रखवाला, ।

उद्यानकम् [उद्+या+ल्युट्+कन्] बाग, बगीचा।

उद्यापनम् [उद्+या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] व्रतादिक का पारण, समाप्ति।

उद्योगः [उद्+युज्+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, काम-धंधा —तदहंमिति संचिन्त्य त्वयेत्योद्योगमात्मन —रघु० २।१४० 2 कार्य, कर्तव्य, पद—तुल्योद्योगस्तव दिनकृतश्चाधिकारो मतो न —विक्रम० २।१, धैर्य, परिश्रम।

उद्योगिन् [उद्+युज्+घिनुण्] चुस्त, उद्यमी, उद्योगशील।

उद्रः [उन्द्+रक्] एक प्रकार का जल जन्तु।

उद्वध. [उद्गतो रथो यस्मात्—ग० स०] 1 रथ के धुरे की कील, सकेल 2 मुर्गा।

उद्राव [उद्+रु+घञ्] शोरगुल, कोलाहल।

उद्रिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+रिच्+क्त] 1 बढा हुआ अत्यधिक, अतिशय 2 विशद, स्पष्ट।

उद्रुज (वि०) [उद्+रुज+क] नष्ट करने वाला, जड खोदने वाला (तट—आदि) यथा 'कूलमुद्रुज' में।

उद्रेकः [उद्+रिच्+घञ्] वृद्धि, आधिक्य, प्राबल्य, प्राचुर्य —ज्ञानोद्रेकाद्विघटिततमोग्रन्थयः सत्त्वनिष्ठाः—वेणी० १।२३, गत्वोद्रेक जघनपुलिने —शि० ७।७४।

उद्वत्सर [उद्+वस्+सरन्] दर्भ।

उद्वपनम् [उद्+वप्+ल्युट्] 1 उपहार, दान 2 उडेलना, उन्डेलना।

उद्वमनम्,-उद्वामिः (स्त्री०) [उद्+वम्+ल्युट्, क्तिन् वा] वमन करना, उगलना।

उद्वर्तः [उद्+वृत्+घञ्] 1 अवशेष, अतिशय्य 2 आधिक्य, बाहुल्य 3 (तेल, उबटन आदि) सुगन्धित पदार्थों की मालिश।

उद्वर्तनम् [उद्+वृत्+ल्युट्] 1 ऊपर आना, उठना 2 उगना, बाढ 3 समृद्धि, उन्नयन 4 करवट बदलना, उछाल लेना -चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि —मेघ० ४० 5 पीसना, चूरा करना 6 सुगन्धित उबटन आदि पदार्थों का शरीर पर लेप करना, या पीडा आदि को दूर करने के लिए सुगन्धित लेप।

उद्वर्धनम् [उद्+वृध्+ल्युट्] 1 वृद्धि, 2 बढाई हुई हँसी।

उद्वह (वि०) [उद्+वह्+अच्] 1 ले जाने वाला, आगे बढने वाला 2 जारी रहने वाला, निरन्तर रहने वाला (वंश आदि), कुल°—उत्तर० ४, इसी प्रकार रघूद्वह° ४।२२, रघु० ९।९, ११।५४,—हः 1 पुत्र 2 वायु के सात स्तरों में से चौथास्तर, 3 विवाह,—हा —पुत्री।

उद्वहनम् [उद्+वह्+ल्युट्] 1 विवाह करना 2 सहारा देना, सभाले रखना, उठाये रखना - भुव प्रयुक्तोद्वहनक्रियाया —रघु० १३।१, १४।२०, रघु० २।१८, कु० ३।१३ 3 ले आया जाना, सवारी करना मनु० ८।३७०।

उद्वान्त (वि०) [उद्+वम्+क्त] वमन किया हुआ, उगला हुआ,—न्तम् 1. उलटना, वमन करना, 2 अंगीठी, स्टोव।

उद्वान्त (वि०) [उद्+वम्+क्त] 1 वमन किया हुआ 2 मद रहित (हाथी)।

उद्वापः [उद्+वप्+घञ्र] 1. उगलना, बाहर फेंकना 2 हजामत करना 3 (तर्क० में) पूर्व पक्ष के अभाव में पक्षधर्ती उत्तराग के अस्तित्व का अभाव (विश्वनाथ)।

उद्वासः [उद्+वस्+घञ्] 1. निर्वासन 2. तिलांजलि देना 3 बन्द करना।

उद्वासनम् [उद्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 बाहर निकालना, निर्वासित कर देना 2. तिलांजलि देना 3. (आय से) निकालकर दूर करना 4 बन्द करना।

उद्वाहः [उद्+वह्+घञ्] 1 सभालना, सहारा देना 2 विवाह, पाणिग्रहण—अवरवर्णास्त्रयो विधिरुद्वाहकर्मणि—मनु० ३।४३ (स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन है—ब्राह्मो दैवस्तथा चार्ष प्राजापत्यस्तथासुर, गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमः स्मृत)।

उद्वाहनम् [उद्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 उठाना 2 विवाह, —नी 1 डलनी, रस्सी 2 कौडी, बराटिका।

उद्वाहिक (वि०) [उद्वाह+ठन्] विवाह से सबन्ध रखने वाला, विवाह विषयक (मन्त्रादिक) मनु० ९।९५।

उद्वाहिन् (वि०) [उद्+वह्+णिनि] 1 उठाने वाला, खींचने वाला 2 विवाह करने वाला,—नी रस्सी, डोरी।

उद्विग्न (भू० क० कृ०) [उद्+विज्+क्त] सन्तप्त, पीडित, शोकग्रस्त, चिंतित।

उद्वीक्षणम् [उद्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] 1 ऊपर की ओर देखना 2. दृष्टि, आँख, देखना, नजर डालना—सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम् – रघु० ३।१।

उद्वीजनम् [उद् +वीज्+ल्युट्] पखा झलना।

उद्वृंहणम् [उद्+वृंह्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

उद्वृत्त (भू० क० कृ०) [उद्+वृत्+क्त] 1 उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2 उमडकर बहता हुआ, उमडा हुआ—उद्वृत्त के इव सुलाचह परेवाह—शि० ८।१८ (यहाँ 'उद्वृत्त' का अर्थ 'विचलित, दुर्वृत्त' है)।

उद्वेगः [उद्+विज्+घञ्] 1 काँपना, हिलना, लहराना 2 क्षोभ, उत्तेजना—भय० १२।१५ 3 आतंक, भय —शान्तोद्वेगस्तिमितनयन दृष्टभक्तिर्भवान्या—मेघ० ३६, रघु० ८।७ 4 चिन्ता, खेद शोक 5. विस्मय, आश्चर्य,—गम् सुपारी।

उद्वेजनम् [उद्+विज्+ल्युट्] 1 क्षोभ, चिन्ता 2. पीडा पहुँचाना, कष्ट देना—उद्वेजनकरैर्दण्डैश्चिह्नयित्वा प्रवासयेत्—मनु० ८।३५२, 3. खेद।

उन्नेदि (वि०) [उन्नता वेदिर्यत्र ब० स०] जहाँ आसन या गद्दी ऊँची हो—विमान नवमुन्नेदि—रघु० १७।९।

उन्नेय [उद्+नी+अच्] हिलना, काँपना, अत्यधिक काँपना।

उन्नेय (वि०) [उत्क्रान्तो वेलाम्—अत्या० स०] 1 अपने तट से बाहर उमड़ कर बहने वाला (नदी आदि) —रघु० १०।३४, का० ३३३ 2 उचित सीमा का उल्लंघन।

उन्नेलित (भू० क० कृ०) [उद्+नेल्+क्त] हिलाया हुआ, उछाला हुआ,—तम् हिलाना, झकझोरना।

उन्नेलन (वि०) [ण० स०] 1. डोला किया हुआ—कथा-विधुन्नेलनधान्तमाल्य—रघु० ७।६, कु० ७।५७, 2 बन्धनमुक्त, बन्धनरहित,—नम् 1 घेरा डालना, 2. बाड़ा, बाड़ 3 पीठ या कूल्हे में पीड़ा।

उन्नेतृ (पु०) [उद्+नह्+तृच्] पति।

उन्नत् (नपु०) [उन्द्+असुन्] ऐन, औढी दे० 'ऊधस्'।

उन्द् (रुधा० पर०) (उनत्ति, उन्न) आर्द्र करना, तर करना, स्नान करना—या पृथिवी पयसोन्दन्ति।

उन्दनम् [उन्द्+ल्युट्] तर करना, आर्द्र करना।

उन्दरः, उन्दुर, उन्दुरु, उन्दूर [उन्द्+उर—उरु वा] मूसा, चूहा।

उन्नत (भू० क० कृ०) [उद्+नम्+क्त] 1 उठाया हुआ, उन्नत किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ (आल० भी)—भर्तृ० ३।२४, शि० ९।७९, ततोन्नतभूमिभागे —रा० ४।१४ 2 ऊँचा (आल० भी) लम्बा, उत्तुंग, बड़ा, प्रमुख—रघु० १।१४, विक्रम० ५।२२, कि० ५। ४५, १४।२३, 3 मामला, भरा-पूरा (स्त्री का वक्षस्थल आदि), तः अजगर,—तम् 1 उन्नयन 2 उत्थान, ऊँचाई। सम०—आनत (वि०) उन्नत और दलित, विषम—उन्नुर तुन्नताननम्—अमर०,—उरस्क (वि०) दुर्बल,—शिरस् (वि०) अहमन्य, बड़ा घमंडी।

उन्नतिः (स्त्री०) [उद्+नम्+क्तिन्] 1 उन्नयन, ऊँचाई (आल० भी) नीचे दे० 'उन्नतिमत्' 2 उत्कर्ष, मर्यादा, अभ्युदय, समृद्धि—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्य-धोगतिम्—पञ्च० १।१५०, शि० १६।२२, मालवि० १। ४०—महाजनस्य संपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः—हि० ३ 3 उठाना। सम०—ईशः राजा, (उन्नति का स्वामी)।

उन्नतिमत् (वि०) [उन्नति+मतुप्] उन्नत, उभरता हुआ, फूला हुआ (जैसे कि स्त्री का वक्षस्थल)—या पीनो-न्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते—अमर० ३०, शि० ९।७२।

उन्नमनम् [उद्+नम्+ल्युट्] 1 ऊपर उठाना ऊँचा करना 2 ऊँचाई।

उन्नस (वि०) [उद्+नस्+रन्] लंबा, सीधा, उत्तुंग, ऊँचा (आल० भी) —उन्नसताम्रपटमण्डपसम्भितम् तत्—शि० ५।३१।

उन्नयः, उन्नायः [उद्+नी+अच्, घञ् वा] 1 उठाना, ऊँचा करना 2 ऊँचाई उन्नयन 3 सादृश्य, समता 4 अटकल।

उन्नयनम् [उद्+नी+ल्युट्] 1 उठाना, ऊँचा करना, ऊपर उठाना 2 पानी खींचना 3 पर्यालोचन, विचार-विमर्श 4 अटकल।

उन्नस (वि०) [उन्नता नासिका यस्य ब० स०] ऊँची नाक वाला,— उन्नस दशती वक्त्रम्— भट्टि० ४।१८।

उन्नाद [उद्+नद्+घञ्] चिल्लाहट, दहाड़, गुंजन, चहचहाना।

उन्नाभ (वि०) [उन्नता नाभिर्यस्य—ब० स०] जिसकी नाभि उभरी हुई हो, तुंदिल, तोंद वाला।

उन्नाह [उद्+नह्+घञ्] 1 उभार, स्फीति 2. बाँधना, बन्धनयुक्त करना,—हम् चावलों के माँड से बनी काँजी।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्य—ब० स०] 1 निद्रा रहित, जागा हुआ—तामुन्निद्रावलिं, यना सौधवातायनस्थ—मेघ० ८८ विगलयत्युन्निद्र एव क्षपा—रा० ६।४, मुद्रा० ४ 2 प्रसृत, पूर्णविकसित मुकुलित (कमल आदि)—उन्निद्रपुष्पालिमहत्सखाजा— शि० ४। १६, ८।२८।

उन्नेतृ [उद्+नी+तृच्] उठाने वाला— (पु०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक।

उन्मज्जनम् [उद्+मस्ज्+ल्युट्] बाहर निकलना, पानी से बाहर निकलना।

उन्मत्त (भू० क० कृ०) [उद्+मद्+क्त] 1 मदोन्मत्त, नशे में चूर 2. विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल—द्वावुन्मत्तौ —विक्रम० २, मनु० ९।७९, 3 फूला हुआ, उच्छृंखल, बहकी पंच० १।१६१, शि० ६।३१ 4 भूत या प्रेत से आविष्ट—याज्ञ० २।३२, मनु० ३।१६१, (वात-पित्तश्लेष्म सन्निपातग्रहभवेनोपसृष्ट —मिता०), तः धतूरा। सम०—कीर्ति, —केशः शिव,—गङ्गा एक देश का नाम (यहाँ गंगा भीषण कल्लोल करती हुई बहती है) —दर्शन,—रूप (वि०) देखने में पागल,—प्रलपित (वि०) पागल की बहक (—तम्) पागल के शब्द।

उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] 1 झाड़ना, फेंक देना 2 वध करना,—अन्योन्यमूरूत्क्षिपतोन्मथनात्—रघु० ७।५२।

उन्मद (वि०) [उद्गतो मदो यस्य—ब० स०] 1 नशे में चूर, शराबी, रघु० २।९, १६।५४ 2 पागल, क्रोधोद्दीप्त, उद्दाम—शि० १०।४, १६।६९ 3 नशा करने वाला, मादक—मधुकरा कुसुमैक मुहुर्मदव्यनिभृता निभृताक्षरमुज्जगुः—शि० ६।२०,—दः 1 विक्षिप्त 2 नशा।

उन्मदन (वि०) [उद्भूतो मदोऽस्य—ब० स०] प्रेम-पीड़ित, प्रेमोद्दीप्त—तदाप्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे—कु० ५।५५।

उन्मदिष्णु (वि०) [उद्+मद्+इष्णुच्] 1 पागल 2 नशे में चूर, जिसने मदिरा पी हुई हो 3. जिसे मद चूता हो (हाथी)।

उन्मनस्-नस्क (वि०) [उद्भ्रान्तं मनो यस्य—ब० स०, कप् च] 1 उत्तेजित, विक्षुब्ध, संक्षुब्ध, बेचैन—रघु० ११।२२, कि० १४।४५ 2. खेद प्रकट करना, किसी विष के विक्षोभ से उदास 3. आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित।

उन्मनायते (ना० धा०, आ०—उन्मनीभू) बेचैन होना, मन में क्षुब्ध होना।

उन्मथः [उद्+मन्थ्+घञ्] 1. क्षोभ 2 वध करना, हत्या करना।

उन्मथनम् [उद्+मन्थ्+ल्युट्] 1. हिलाना, क्षुब्ध करना 2 वध करना, हत्या करना, मारना 3. (लकड़ी आदि से) पीटना।

उन्मयूख (वि०) [ब० स०] प्रकाशमान, चमकीला—रघु० १६।६९।

उन्मर्दनम् [उद्+मृद्+ल्युट्] 1 रगड़ना, मलना 2 मालिश करने के लिए सुगन्धित (तैलादिक)।

उन्माथः [उद्+मथ्+घञ्] 1 यातना, अतिपीड़ा 2 हिला देना, क्षुब्ध करना 3 वध करना, हत्या करना 4 जाल, पाश।

उन्माद (वि०) [उद्+मद्+घञ्] 1 पागल, विक्षिप्त 2 असन्तुलित,—दः 1. पागलपन, विक्षिप्तता- अहो उन्मादः उत्तर० 3 2 तीव्र संक्षोभ 3 विक्षिप्तता, मनक (मानसिक विकार) 4 (अल० शा० में) ३२ सञ्चारिभावों में से एक—विप्रलम्भमोहः उन्मादः काम-शोकभयादिभिः —सा० द० ३, या विप्रलम्भमहाव्याधि-परमानन्दादिजन्याऽऽत्मन्यन्यत्वावभास उन्माद —रस० 5 खिलना—उन्मादं दीक्ष्य पदानाम् —सा० द० २।

उन्मादन (वि०) [उद्+मद्+णिच्+ल्युट्] पागल बना देने वाला, मादक,—नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मानम् [उद्+मा+ल्युट्] 1 तोलना, मापना 2 माप, तोल 3 मूल्य।

उन्मार्ग (वि०) [उत्क्रान्तो मार्गात्—प्रादि० स०] कुमार्ग-गामी,—र्गः 1. कुमार्ग, कुमार्ग से विचलन (आल० भी) 2 अनुचित आचरण बुरी चाल -उन्मार्गप्रस्थितानि इन्द्रियाणि—का० १६५, °प्रवर्तक—१०३,—र्गम् (अव्य०) भूला-भटका—पञ्च० १।१६१।

उन्मार्जनम् [उद्+मृज्+णिच्+ल्युट्] रगड़ना, पोंछना, मिटाना।

उन्मितिः [उद्+मा+क्तिन्] नाप, तोल, मूल्य।

उन्मिश्र (वि०) [प्रा० स०] मिला-जुला, विभ-विधिध।

उन्मिषित (भू० क० कृ०) [उद्+मिष्+क्त] खुला हुआ (आँख आदि), खिला हुआ, फूलाया हुआ, —तम् दृष्टि, झलक—कु० ५।२५।

उन्मीलः—लनम् [उद्+मील्+घञ्, ल्युट् वा] 1. (आखों का) खोलना, आँखें 2 प्रकाशित करना, खोलना —उत्तर० ६।३५ 3 फुलाना, फूक मारना।

उन्मुख (वि०) (स्त्री० खी) [उद्—ऊर्ध्वं मुखं यस्य —ब० स०] 1 मुंह ऊपर की ओर उठाये हुए, ऊपर देखते हुए अहं मुक्त इवति पवनः किंस्विदि-त्युन्मुखीभि —मेघ० १४,१००, रघु० १।३९, ११।२६, आर्या° १।५३ 2 तैयार, तुला हुआ, निकटस्थ, उद्यत तमरण्यसमाधयोन्मुखम्—रघु० ८।१२, वन में चले जाने के लिए तत्पर—१६।९, ३।१३ 3 उत्सुक, प्रतीक्षक, उत्कण्ठित—तस्मिन् सर्वमिनामात्मे जाते परिमयोन्मुखे—कु० ६।३४, रघु० १२।२६, ६।२१, ११।२३ 4 शब्दायमान, शब्द करता हुआ —कु० ६।२।

उन्मुखर (वि०) [प्रा० स०] ऊँचा शब्द करने वाला, कोलाहलमय।

उन्मुद्र (वि०) [उद्गता मुद्रा यस्मात् -ब० स०] 1 बिना मुहर का 2 खुला हुआ, खिला हुआ, (फूल की भाँति) फूला हुआ।

उन्मूलनम् [उद्+मूल्+ल्युट्] जड़ से फाड़ लेना, उखाड़ना, मूलोच्छेदन करना—न परपोन्मूलनशङ्किन रहु —रघु० २।३४।

उन्मेदा [प्रा० स०] स्थूलता, मोटापा।

उन्मेष—षणम् [उद्+मिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 (आखों का) खोलना, पलक मारना—मुद्रा० ३।२१, 2 खिलना, खुलना, फूलना—उन्मेष यो मम न सहते जाति—वैरी निशायाम्—काव्य० १०, दीपिकाकलिकोन्मेष कु० २।३३ 3. प्रकाश, कौंध, दीप्ति सतां प्रज्ञोन्मेष - भर्तृ० २।११४ विद्युदुन्मेषदृष्टिम्—मेघ० ८१ 4 जाग जाना, उठना, दिखलाई देना, प्रकट होना, ज्ञान°—सा० ३।१३।

उन्मोचनम् [उद्+मुच्+ल्युट्] खोलना, ढीला करना।

उप (उप०) 1. यह उपसर्ग क्रिया या संज्ञाओं से पूर्व लग कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) निकटता, संसक्ति—उपविशति, उपगच्छति (ख) शक्ति, योग्यता —उपकरोति (ग) व्याप्ति—उपकीर्ण (घ) पराभव, शिक्षण (जो अध्यापक द्वारा प्राप्त हो) उपदिशति, उपदेश (ङ) मृत्यु, अपरति—उपरत (च) दोष, अपराध—उपघात (छ) देना—उपनयति, उपहरति

(घ) घेरना, प्रवेश—उपस्था नेष्य (ङ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रम (च) अध्ययन—उपाध्याय, (छ) आदर, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति पितर पुत्र. 2 जिस समय यह उपसर्ग क्रियाओं से सबद्ध न होकर संज्ञा शब्दों से पूर्व लगता है तो उस समय—सामीप्य, समता, स्थान, संख्या, काल और अवस्था आदि की संसक्ति, तथा अधीनता की भावना आदि अर्थों को प्रकट करता है। उपकनिष्ठिका—कनिष्ठिका के पास वाली अंगुली, उपपुराणम्—अनुषंगी पुराण, उपगुरु—सहायक अध्यापक, उपाध्यायः—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं अर्थों में इसका उपयोग होता है—उपगङ्गम्=गंगायाः समीपे, उपकूलम्, °वनम् आदि 3 संख्यावाचक शब्दों के साथ लग कर संख्याबहुव्रीहि बन जाता है और 'लगभग' 'प्राय' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता है,—उपत्रिंशाः—लगभग तीस 4 पृथक् रहता हुआ भी यह (क) कर्म के साथ हीनता को प्रकट करता है—उपहरि सुरा.—सिद्धा० देवता हरि के निकट है (ख) अधि० के साथ यह 1 'अधिकता' और 'उत्कृष्टता' को—उपनिषदे कार्षापणम्, उपपरार्धे हरेर्गुणाः 2 तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठः—ण्ठम् [उपगत कण्ठम्—अव्या० स०] 1 सामीप्य, सान्निध्य, पड़ोस—प्राप तालीवनश्यामममुपकण्ठं महोदधेः—रघु० ४।३४, १३।४८ कु० ७।५१ मा० ९।२ 2 ग्राम या उसकी सीमा के पास का स्थान—(अव्य०) 1 गर्दन के ऊपर, गले के निकट 2. के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० स०] छोटी कहानी, किस्सा।

उपकनिष्ठिका कनिष्ठा अंगुली के पास वाली अंगुली।

उपकरणम् [उप+कृ+ल्युट्] 1 सेवा करना, अनुग्रह करना, सहायता करना 2 सामग्री, साधन औजार, उपाय—उपकरणीभावमायाति—उत्तर० ३।३, परोपकारोपकरणं शरीरम्—का० २०७, याज्ञ० २।२७६, मनु० ९।२७० 3 जीविका का साधन, जीवन को सहारा देने वाली कोई बात 4 राजचिह्न।

उपकर्णनम् [उप+कर्ण्+ल्युट्] सुनना।

उपकर्णिका [उपकर्ण (अव्य०)+कन्+टाप् इत्वम्] अफवाह, जनश्रुति।

उपकर्तृ (वि०) [उप+कृ+तृच्] उपकार करने वाला, अनुग्रहकर्ता, उपयोगी, मित्रवत्—हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते—रघु० १७।५८—उपकर्त्री रसादीनाम्—सा० द० ६२४, शि० २।३७।

उपकल्पनम् -ना [उप+कृप्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. तैयारी 2 कपोलकल्पित (तथ्यों का) सृजन करना, गढ़ना।

उपकारः [उप+कृ+घञ्] 1 सेवा, सहायता, मदद, अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार') उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयो—शि० २।३७, शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४० ३।७३, याज्ञ० ३।२८४ 2 तैयारी 3 आभूषण, सजावट,—री 1 राजकीय तंबू 2 महल 3 सराय, धर्मशाला।

उपकार्य (वि०) [उप+कृ+ण्यत्] सहायता करने के उपयुक्त—र्या राजभवन, महल—रम्या रघुप्रतिनिधिषु नवोपकार्यां बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३, शाही सेवा—५।४१, ११।९३, १३।७९, १६।५५, ७३।

उपकुल्लिः, —ल्लिका [उप+कुल्ल्+कि, कन् टाप् च] छोटी इलायची।

उपकुम्भ (वि०) [अव्या० स०] 1 निकटस्थ, समीपस्थ 2 अकेला, निर्जन, एकान्त।

उपकुर्वाणः [उप+कृ+शानच्] ब्राह्मण ब्रह्मचारी जो गृहस्थ बनना चाहता है।

उपकुल्या [उप+कुल+यत्+टाप्] नहर, खाई।

उपकूपम्—पे (अव्य०) [अव्या० स०] कुएँ के निकट, °जलाशयं कुएँ के पास बना चबूतरा जिसमें गाय भैंस पानी पीते हैं।

उपकृतिः (स्त्री०)—उपक्रिया [उप+कृ+क्तिन्, स वा] अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः [उप+क्रम्+घञ्] 1 आरम्भ, शुरू—रामायणकथामेनामारभस्व नवम् रघु० १२।४० राम के द्वारा आरम्भ किया गया 2 उपागमन, साहस° बल पूर्वक आगे बढ़ना—मा० ७, इसी प्रकार योषित्सुकुमारोपक्रमा—न० 3 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय, कार्य, जोखिम का काम 4 योजना, उपाय, तरकीब, युक्ति, उपचार—सामादिभिरुपक्रमैः मनु० ७।१०७, १५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, शि० २०।७६, 5 परिचर्या, चिकित्सा 6. ईमानदारी की जाँच दे० 'उपधा'।

उपक्रमणम् [उप+क्रम+ल्युट्] 1 उपागमन 2 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय 3 आरम्भ 4 चिकित्सा, उपचार।

उपक्रमणिका [उपक्रमण+कीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] भूमिका, प्रस्तावना।

उपक्रीडा [अव्या० स०] खेल का मैदान, खेलने का स्थान।

उपक्रोशः—शनम् [उप+क्रुश्+घञ्, ल्युट्] निन्दा, झिड़की, अपकर्ष—प्रार्थनोपक्रोशमलीमसेषु—रघु० २।५३।

उपक्रोष्टु (पु०) [उप+क्रुश्+तृच्] (जोर से रेंकता हुआ) गधा।

उपवम (वमा)वम् [उप+वमम्+अप् वम्+वा] वीणा की झंकार।

उपवासः [उप+सि+अच्] 1 रद्द करना, ह्रास, हानि 2 व्यय।

उपक्षेपः [उप+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना 2 उल्लेख, इंगित संकेत, सुझाव—कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३—दारुण वज्रोपक्षेप पापस्य—वेणी० ५ 3 धमकी, विशेष दोषारोपण।

उपक्षेपणम् [उप+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे फेंकना, डाल देना 2 दोषारोपण, दोषी ठहराना।

उपग (वि०) [उप+गम्+ड] (केवल समासान्त में) 1 निकट आने वाला, पीछे चलने वाला, सम्मिलित होने वाला 2 प्राप्त करने वाला—मनु० १।४६, शि० १६।६८।

उपगकः [प्रा० स०] अप्रधान श्रेणी।

उपगत (भू० क० कृ०) [उप+गम्+त] 1 गया हुआ, निकट पहुँचा हुआ 2 घटित 3 प्राप्त 4 अनुभूत 5 प्रतिज्ञात, सहमत।

उपगतिः (स्त्री०) [उप+गम्+क्तिन्] 1 उपागमन, निकट आना 2 ज्ञान, जानकारी 3 स्वीकृति 4 उपलब्धि, अवाप्ति।

उपगमः-मनम् [उप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1 आना, आकृष्ट होना, निकट आना सीमन्ते च त्वदुपगमजं मत्र नीप बध्नन्ति—मेघ० ६५, तुम्हारा आना व्याकर्तान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६१, १।५० 2 ज्ञान, जानकारी 3 उपलब्धि, अवाप्ति—विश्वासोपगमाद्—भिज्ञानस्य—श० १।१४ 4 समोग (स्त्री-पुरुष का) 5 समाज, मण्डली—न पुनरुपमानामुपगमः—हि० १।१३६ 6 सेवना, भुगतना, अनुभव करना 7 स्वीकृति 8. करार, प्रतिज्ञा।

उपगिरि-रम् (अव्य०) [अव्य० स०—टच् (सेनकस्य मतेन)] पहाड़ के निकट,—रिः उत्तर दिशा में पहाड़ के समीप स्थित देश।

उपगु (अव्य०) गौ के समीप, -गु· ग्वाला।

उपगुरु [प्रा० स०] सहायक अध्यापक।

उपगूढ (भू० क० कृ०) [उप+गूह्+क्त] गुप्त, आलिंगित,—ढम् आलिंगन—उपगूढानि सङ्गेषधूनि च—कु० ४।१७, शि० १०।८८, कण्ठाश्लेषोपगूढम्—भर्तृ० ३।८२, मेघ० ९७।

उपगूहनम् [उप+गूह्+ल्युट्] 1 गुप्त रखना, छिपाना 2. आलिंगन 3 आश्चर्य, अचम्भा।

उपग्रहः [उप+ग्रह्+अप्] 1 कैद, पकड़ 2. हार, अल्लाबा—मुद्रा० ४।२ 3 कैदी 4 सम्मिलित होना, ओढना 5. अनुग्रह, प्रोत्साहन 6 लघु ग्रह (राहु, केतु आदि)।

उपग्रहणम् [उप+ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना (नीचे से) सहारे रखना, (जैसा कि 'पादोपग्रहणम्' में) 2. पकड़, गिरफ्तारी 3 सहारा देना, बढ़ावा देना 4. वेदाध्ययन —वेदोपग्रहणार्थीव तानग्राहयत प्रभुः—रामा०।

उपग्रहः [उप+ग्रह्+घञ्] 1. उपहार देना 2. उपहार।

उपग्राहः [उप+ग्रह्+घञ्] 1. भेंट या उपहार 2. विशेष रूप से वह भेंट जो किसी राजा या प्रतिष्ठित व्यक्ति को दी जाय, नजराना।

उपघातः [उप+हन्+घञ्] 1. प्रहार, चोट, अभिक्षेप मनु० २।१७९, याज्ञ० २।२५६ 2 विनाश, बर्बादी 3 स्पर्श, संपर्क 4 संप्रहार, उत्पीडन 5 रोग 6 पाप।

उपघोषणम् [उप+घुष्+ल्युट्] ढिंढोरा पीटना, प्रकाशित करना, विज्ञापन देना।

उपचयः [उप+हन्+क] 1 अनवरत सहारा—क्षेदादिवोपचयतरोर्नवैस्तवी—रघु० १४।१ 2 धारण, सहारा, संरक्षा।

उपचक्रः [प्रा० स०] एक प्रकार का काला हंस।

उपचक्षुस् (नपु०) [प्रा० स०] चक्षुताक्ष, चश्मा।

उपचयः [उप+चि+अच्] 1 इकट्ठा होना, जोड़, आ-वृद्धि 2 वृद्धि, बाढ़, आधिक्य—बर्क० का० १०५, स्वशक्त्युपचये शि० २।५७, ९।३२ 3. परिपाक, ढेर 4 समृद्धि, उत्थान, अभ्युदय।

उपचरः [उप+चर्+अच्] 1 इलाज, चिकित्सा 2 निकट आना।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट या समीप जाना।

उपचाग्न्यः [उप+चि+क्यप्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1. सेवा, शुश्रूषा, सम्मान, पूजा, सत्कार—अस्खलितोपचाराम्—रघु० ५।२० 2 शिष्टता, नम्रता, सौजन्य, नम्र व्यवहार (सौजन्य का बाह्य प्रदर्शन) °परिभ्रष्ट—हि० १।१३३, °विधिर्मनस्विनाम्—मालवि० ३।३, °पदं न वेदिद —कु० ४।९ केवल सम्मान सूचक उक्ति, चाटुकारितापूर्ण अभिनन्दन 3 अभिवादन, प्रणामानुकूल नमस्कार अञ्जलि—नोपचारमर्हति—श० ३।१८, °क्षयः —मालवि० ४ °अञ्जलि—रघु० ३।११, नमस्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना 4. संबोधन या अभिवादन की रीति का एक रूप,—राजवद्व इत्येव मां प्रत्युपचार शोभते तातपरिजनस्य—उत्तर० १, यथा मुग्धस्योपचारेण—६ 5 बाह्य प्रदर्शन या रूप, संस्कार, —प्रावृषेण्यैरवे लिङ्गैर्मम राजोपचारः—विक्रम० ४ 6. चिकित्सा, उपचार, इलाज या चिकित्सा का प्रयोग, शिशिर° —दश० १५ 7. अभ्यास, अनुष्ठान, सञ्चालन, प्रबन्ध—व्रतचर्या°—मनु० १।१११, १०।३२, कामोपचारेषु—दश० ८१, प्रेम—बातों के संचालन में 8 अञ्जलि अर्पित करने या सम्मान प्रदर्शित करने के

साधन प्रकीर्णानिवर्तोपचारम् (राजमार्गम्) रघु० ७।४, ५।४१, ७ अत (पूजा, उत्सव या सजावट आदि की) कोई भी आवश्यक वस्तु—सन्मखलोपचाराणाम् —रघु० १०।७७, कु० ७।८८, रघु० ६।१, पूजा की वस्तुओं या उपचारों की संख्या भिन्न-भिन्न (५, १०, १६, १८ या ६४) बतलाई गई है 10 व्यवहार, शील, आचरण - वैदग्ध-सूक्तोपचार च —मनु० १।११६ 11 काम में आना, उपयोग 12 धर्मानुष्ठान, संस्कार -प्रयुक्त पाणिग्रहणोपचारो—कु० ७।८६, महावी० १।२४ 13 (क) आलंकारिक या लाक्षणिक प्रयोग, गौण प्रयोग (विप० 'मुख्य' या 'प्राथमिक भाव') -अचेतनेऽपि चेतनवदुपचारदर्शनात्—सारी०, न चास्य करणत्वं तत्त्वतोऽस्ति इति मुख्येऽपि उपचार एव शरण स्यात् काव्य० १० (ख) समता के आधार पर बना काल्पनिक अभिज्ञान—उभयरूपा चेयं शुद्धा उपचारेणामिश्रितत्वात्—काव्य० २ 14 रिश्वत 15 बहाना—शि० १०।२ 16 प्रार्थना, याचना 17 विसर्गों के स्थान में स् या ष् का होना

उपचितिः (स्त्री०) [उप+चि+क्तिन्] इकट्ठा करना संचय करना, बर्धन, वृद्धि ।

उपचूलनम् [उप+चूल्+ल्युट्] गरम करना, जलाना ।

उपच्छदः [उप+छद्+णिच्+घ] ढक्कन, चादर ।

उपच्छन्दनम् [उप+छन्द्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रलोभन देकर मनाना या फुसलाना, समझा बुझा कर किसी कार्य के लिए उकसाना—उपच्छन्दनैरेव स्व ते दापयितु प्रयतिष्यते —दश० ६५ 2 आमंत्रण देना ।

उपजनः [उप+जन्+अच्] 1 जोड़, वृद्धि 2 परिशिष्ट 3 उगना, उद्गमस्थान ।

उपजल्पनम्-ल्पित् [उप+जल्प+ल्युट्, क्त वा] बात, बातचीत ।

उपजापः [उप+जप्+घञ्] 1 चुपचाप कान में फुसफुसाना या समाचार देना- परकृत्य° मुद्रा० २ 2 शत्रु के मित्रों के साथ गुप्त बातचीत, फूट के बीज बोकर विद्रोह के लिए भड़काना—उपजापं कृतस्तेन तानाकोपवतस्त्वयि- शि० २।९९, उपजापमहान् विन्ध्यवयन् स विधाना नृपतीन्मदोद्धत -कि० २।४७, १६।४२ 3 अनैक्य, वियोग ।

उपजीवक,-विन् (वि०) [उप+जीव्+ण्वुल्, णिनि वा] किसी दूसरे के सहारे रहने वाला, से जीविका करने वाला (करण० के साथ या समास में)-जातिमात्रोपजीविनाम्- मनु० १२।११४, ८।२०, नानापण्योपजीविनाम् ९।२५७, द्यूतोपजीव्यस्मि—मृच्छ० २, -(पु०) पराश्रित, अनुचर—भीमकार्त्तनृपगुणं स बभूवोपजीविनाम्—रघु० १।१६ ।

उपजीवनम्,—जीविका [उप+जीव्+ल्युट्, ल्युन् वा] 1 जीविका 2 जीवन-निर्वाह का साधन, गुजारा या वृत्ति निन्दितार्थोपजीवनम्—याज्ञ० ३।२६६ 3 जीविका का साधन, संपत्ति आदि—किंचिदुपजीवनम् - मनु० ९।२०७ ।

उपजीव्य (वि०) [उप+जीव्+ण्यत्] 1 जीविका प्रदान करने वाला- याज्ञ० २।२०७ 2 संरक्षक, संरक्षण देने वाला 3 (आल०) लिखने के लिए सामग्री देने वाला, जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे -सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति- महा०, -व्यः 1 संरक्षक 2 स्रोत या प्रामाणिक ग्रंथ (जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे)- इत्यलमुपजीव्यानां मान्यानां व्याख्यानेषु कटाक्षनिक्षेपेण—सा० द० २ ।

उपजोषं,-षम् [उप+जुष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 स्नेह 2 सुखोपभोग 3 बार-बार करना ।

उपज्ञा [उप+ज्ञा+अङ्] 1 अन्तःकरण में अपने आप उपजा हुआ ज्ञान, आविष्कार (प्रायः समास में जहाँ तृ० समझा जाता है) पाणिनेरुपज्ञा पाणिन्युपज्ञं ग्रन्थ - सिद्धा०, प्राचेतसोपज्ञं रामायणम् रघु० १५।६३ 2 व्यवसाय जो पहले कभी न किया गया हो- लोकेऽस्मिन् भूयदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः —रघुवंश पर मल्लि० ।

उपज्ञौकनम् [उप+ज्ञौक्+ल्युट्] सम्मानपूर्वक भेंट या उपहार, नजराना ।

उपतापः [उप+तप्+घञ्] 1 गर्मी, आँच 2 कष्ट, दुःख, पीड़ा, शोक-सर्वथा न कञ्चन न स्पृशन्त्युपतापाः -का० १३५ 3 संकट, मुसीबत 4 बीमारी 5 शीघ्रता, हड़बड़ी ।

उपतापनम् [उप+तप्+णिच्+ल्युट्] 1 गरम करना 2 कष्ट देना, सताना ।

उपतापिन् (वि०) [उप+तप्+णिनि] 1 तपाने वाला, जलाने वाला 2 गर्मी या पीड़ा को सहन करने वाला, बीमार रहने वाला ।

उपतिष्यम् [अव्या० स०] 1 आश्लेषा नक्षत्रपुंज 2 पुनर्वसु नक्षत्र ।

उपत्यका [उप+त्यकन्- पर्वतस्यासन्न स्थलमुपत्यका -सिद्धा०] पर्वत की तलहटी, निम्नभूभाग—मलयादेरुपत्यका —रघु० ४।४६, एते खलु हिमवतोगिरेरुपत्यकारण्यवासिनः सम्प्राप्ताः —वेणी० ५ ।

उपदंशः [उप+दंश्+घञ्] 1 भूख या प्यास बढ़ाने वाली वस्तु, चाट, चटनी अचार आदि—द्विजानुपदंशानुपपादय—दश० १३३, अन्नमासोपदंशं पिब नवधोजिनः सवम्—वेणी० ३ 2 काटना, डंक मारना 3 आतंकक रोग ।

उपदर्शकः [उप+दृश्+णिच्+ण्वुल्] 1 मार्गदर्शक, निर्देशक 2 द्वारपाल, साक्षी, गवाह ।

उपसन्न (वि०) [ब० व०—ब० स०] लगभग दस।

उपहार [उप+हृ+घञ्] 1 उपहार, किसी राजा या महापुरुष को दी गई भेंट, नजराना,—उपदर विविक्षु, शबलप्रोत्सेका कोसलेश्वरम् रघु० ४।७०, ५।४१, ७।३० 2 रिश्वत, घूस।

उपहारम्,-कम् [उप+हृ+घञ्, कन् च] 1 आहुति, उपहार 2. सत्कार या अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दी गई भेंट, जैसे कि रिश्वत।

उपहिक् (स्त्री०), उपहिका [प्रा० स०] मध्यवर्ती दिशा, जैसे कि ऐशानी, आग्नेयी, नैर्ऋती और वायवी।

उपहेव,-हेवता [प्रा० स०] छोटा देवता, घटिया देवता।

उपदेशः [उप+दिश्+घञ्] 1 शिक्षण, अध्ययन, नसीहत, निर्देशन—सुशिक्षितोऽपि सर्वं उपदेशेन निपुणो भवति—माल० १, स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्या —कु० १।३०, मालवि० २।१०, श० २।३ मनु० ८।२७२, अमर० २६, रघु० १२।५७ परोपदेशे पाण्डित्यम्-हि० १।१०३ 2 विशिष्ट निर्देश, उल्लेख 3 व्यपदेश, बहाना 4 दीक्षा, दीक्षा-मन्त्र देना—बन्दमूर्पग्रहे तीर्थे सिद्धक्षेत्रे शिवालये, मन्त्रमात्र-प्रकथनमुपदेश स उच्यते।

उपदेशक (वि०) [उप+दिश्+ण्वुल्] शिक्षण प्रदान करने वाला, अध्यापन करने वाला,—कः शिक्षक, निर्देशक, गुरु या उपदेष्टा।

उपदेशनम् [उप+दिश्+ल्युट्] नसीहत करना, शिक्षण देना।

उपदेशिन् (वि०) [उप+दिश्+णिनि] नसीहत करने वाला, शिक्षण देने वाला।

उपदेष्टृ (वि०) [उप+दिश्+तृच्] नसीहत या शिक्षण देने वाला, (पु०—ष्टा) अध्यापक, गुरु, विशेषकर अध्यात्म गुरु,—चत्वारो वयमृत्विज स भगवान्कर्मोपदेष्टा हरि—वेणी० १।२३।

उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] 1 मस्सूम 2 चादर, दुपट्टा।

उपदोहः [उप+दुह्+घञ्] 1 गाय के स्तनों का अग्रभाग 2 दूध दुहने का पात्र।

उपद्रव [उप+द्रु+अप्] 1 दुःखद दुर्घटना, मुसीबत, संकट 2 चोट, कष्ट, हानि —पुंसामसमर्थानामुपद्रवा-यान्मनो भवेत्कोप —पञ्च० १।३२४, निरुपद्रव स्थानम् —पञ्च० १ 3 बलात्कार, उत्पीडन 4 राष्ट्र-संकट (राजा, दुर्भिक्ष या ऋतु के प्रकोप से) 5 राष्ट्रीय अशान्ति, विद्रोह 6 लक्षण, अकस्मात् या टपकने वाला रोग।

उपधर्मः [उप+धृ+मन्] उपविधि, एक अप्रधान या तुच्छ धर्म-नियम (विप० 'पर')—मनु० २।२३७, ४।१४७।

उपधा [उप+धा+अङ्] 1. छल, जालसाजी, धोखा-देही, कपट—मनु० ८।१९३ 2 ईमानदारी की जाँच या परीक्षण (—धर्मोपधाभिर्विदितश्च सर्वैर्मन्त्रि सचिवान् पुन.—कालिका पु० 3. उपाय, तरकीब—अयशोभिरु रालोके कोपधा मरणादृते— शि० १९।५८ 4 (व्या० में) अन्त्याक्षर से पहला,। सम०—शुद्धः ईमान सेवक,—शुद्धि (वि०) परीक्षित, निष्ठावान्।

उपधातुः [प्रा० स०] 1. घटिया धातु, अर्धधातु—यह गिनती में सात हैं .—सप्तोपधातव. स्वर्णमाक्षिक तारमाक्षिक कम्, तुत्थ कांस्य च रातिश्च सिन्दूर च शिलाजतु। सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, कासा, मुर्दासंग, सिंदूर और शिलाजीत। 2 शरीर के अप्रधान धातु जो गिनती में छ हैं—रसस्य रक्तो वसा स्वेदो दन्ता केशास्तथैव च, ओजस्य सप्तधातूना क्रमात्सप्तोपधातव —(दूध, रज, चर्बी, पसीना, दांत, बाल और ओज)।

उपधानम् [उप+धा+ल्युट्] 1 ऊपर रखना या आराम करना 2 तकिया, गद्देदार आसन—विपुलमुपधान भुजलता--भर्तृ० ३।७९ 3 विशेषता, व्यक्तित्व 4 स्नेह, कृपा 5 धार्मिक अनुष्ठान 6 श्रेष्ठता, श्रेष्ठ गुण—सोपधाना क्रिय धीरा स्वैरवृत्ती सदृक्षयन्ति ये—शि० २।७७, (यहाँ 'उपधान' का अर्थ तकिया भी है)।

उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] तकिया।

उपधारणम् [उप+धृ+णिच्+ल्युट्] 1 सचिन्तन, विचार-विमर्श 2. सोचना, (अकुड़ी द्वारा) खिंचाव।

उपधि [उप+धा+कि] 1. धोखादेही, बेईमानी,—अरिषु हि विजयार्थिन क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिबुद्ध-जानि कि० १।४५, दे० 'अनुपधि' भी 2 (क्रिया में) सचाई को दबाना, झूठा सुझाव - मनु० ८।१६५, 3 काम, धमकी, बाध्यता, मिथ्या फुसलाहट—बलो-पधिविनिर्वृत्तान् व्यवहारान्निबर्तयेत्—याज्ञ० २।३१, ८९ 4 पहिये का वह भाग जो नाभि और पुट्ठी के बीच का स्थान है, पहिया।

उपधिकः [उपधि+ठन्] धोखेबाज, प्रवञ्चक—(दे० औपधिक' अधिक शुद्ध रूप)।

उपधूपित (वि०) [उप+धूप्+क्त] धूनी दिया गया 2 मरणासन्न, अत्यन्त पीड़ा-ग्रस्त,—तः मृत्यु।

उपधृतिः (स्त्री०) [उप+धृ+क्तिन्] प्रकाश की किरण।

उपध्मानः [उप+ध्मा+ल्युट्] ओष्ठ,—नम् फूंक मारना, साँस लेना।

उपध्मानीयः [उप+ध्मा+अनीयर्] प् और फ् से पूर्व रहने वाला महाप्राण विसर्ग—उपूपध्मानीयानामोष्ठौ —सिद्धा०

उपनक्षत्रम् [प्रा० स०] गौण नक्षत्र पुंज, अप्रधान तारा (ऐसे तारे जिनकी संख्या में ७२९ बतलायी जाती है)।

उपनगरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपनत (भू० क० कृ०) [उप+नम्+क्त] आया हुआ, पहुँचा हुआ, प्राप्त, आ टपका हुआ आदि।

उपनतिः (स्त्री०) [उप+नम+क्तिन्] 1 पास जाना 2. झुकना, नति, नमस्कार।

उपनयः [उप+नी+अच्] 1 निकट लाना, ले जाना 2. उपलब्धि, अवाप्ति, खोज लेना 3 काम पर लगाना 4 उपनयन संस्कार—जनेऊ पहनाना, वेदाध्ययन की दीक्षा देना —गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः, बालो वेदाय तद्ज्ञानात् बालस्योपनयं विदुः। 5 तर्कशास्त्र में भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पाँच अंगों में से चौथा—प्रस्तुत विशिष्ट तर्क का प्रयोग—व्याप्तिविशिष्टस्य हेतोः पक्षधर्मता प्रतिपादकं वचनमुपनयः —तर्क०।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] 1 निकट ले जाना 2. उपहार, भेंट 3 जनेऊ-संस्कार आसमावर्तनात्कुर्यात्क्रियालोपनयनो द्विजः—मनु० २।१०८, १७३।

उपनागरिका [प्रा० स०] वृत्त्यनुप्रास का एक भेद, यह माधुर्य-व्यंजक वर्णों के योग से बनता है, उदा० तु० काव्य० ९ में दिये गये उदाहरण की—अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः, अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।

उपनाथः,—**नाथनम्**=दे० उपनय।

उपनायकः [उप+नी+ण्वुल्] 1 नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो, उदा० रामायण में लक्ष्मण, मालतीमाधव में मकरन्द आदि 2 उपपति, प्रेमी।

उपनायिका [प्रा० स०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायिका की प्रधान सखी या सहेली हो जैसे मालतीमाधव में मदयन्तिका।

उपनाहः [उप+नह्+घञ्] 1 पगड़ी 2 किसी घाव पर लगाई जाने वाली मलहम 3 वीणा की खूटी जिसको मरोड़ने से सितार के तार कसे जाते हैं।

उपनाहनम् [उप+नह्+णिच्+ल्युट्] 1 उबटन आदि का लेप 2 मालिश करना, लेप करना।

उपनिक्षेपः [उप+नि+क्षिप्+घञ्] 1 धरोहर या न्यास के रूप में रखना 2 खुली धरोहर, कोई वस्तु जिसका रूप, परिमाण आदि बता कर उसे दूसरे को सम्भाल दिया जाता है—याज्ञ० २।२५, (इस पर मिता० कहती है—उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शनेन रक्षणार्थं परस्य हस्ते निहितं द्रव्यम्)।

उपनिधानम् [उप+नि+धा+ल्युट्] 1 निकट रखना 2. जमा करना, किसी की देख-रेख में रखना 3. धरोहर।

उपनिधिः [उप+नि+धा+कि] 1 धरोहर, अमानत 2 (विधि में) सुरक्षित अमानत—याज्ञ० २।२५, मनु० ८।१९५, १९९, तु० मेधातिथि—यत्प्रदर्शितरूपं संचिह्नवस्त्रादिना पिहितं निक्षिप्यते—तु० याज्ञ० २।६५, और मिता० में उल्लिखित नारद।

उपनिपातः [उप+नि+पत्+घञ्] 1 निकट पहुँचना, निकट आना 2 आकस्मिक तथा अप्रत्याशित आक्रमण या घटना।

उपनिपातिन् (वि०) [उप+नि+पत्+णिनि] अचानक आ टपकने वाला, उन्मोचनिपातिनीऽनर्था —श० ६।

उपनिबन्धनम् [उप+नि+बन्ध्+ल्युट्] 1 किसी कार्य को सम्पादित करने का उपाय 2 बंधन, जिल्द।

उपनिमन्त्रणम् [उप+नि+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] आमन्त्रण, बुलाना, प्रतिष्ठापन, उद्घाटन।

उपनिवेशित (वि०) [उप+नि+विश्+णिच्+क्त] रक्खा गया, स्थापित किया गया, बसाया गया कु० ६।३७ रघु० १५।२९।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] 1 ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ संलग्न कुछ रहस्यवादी रचना जिसका मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ अर्थ का निश्चय करना है —भामि० २।४०, मा० १।७ (निम्नांकित व्युत्पत्तियाँ उसके नाम की व्याख्या करने के लिए दी गई हैं (क) उपनीय तमात्मानं ब्रह्मोपास्तेऽनया यतः, निहन्त्यविद्यां तज्ज्ञं च तस्मादुपनिषद्भवेत्। या (ख) निहन्त्यानर्थमूलं स्वाविद्या प्रत्यक्तया परम्, तमर्थयन्तसंभेदमतो वोपनिषद्भवेत्। या (ग) प्रवृत्तिहेतूंश्चिरोपास्तान्मूलोच्छेदकत्वतः, यतोऽवसादयद्विद्या तस्मादुपनिषद्भवेत्। मुक्तिकोपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख है, परन्तु इस संख्या में कुछ और वृद्धि हुई है 2 (क) एक गूढ या रहस्यमय सिद्धान्त (ख) रहस्यवादी ज्ञान या शिक्षा—महावी० ३।२ 3 परमात्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान 4 पवित्र एवं धार्मिक ज्ञान 5 गोपनीयता, एकान्तता 6 समीपस्थ भवन।

उपनिष्करः [उप+निस्+कृ+ड] गली, मुख्यमार्ग, राजमार्ग।

उपनिष्क्रमणम् [उप+निस्+क्रम्+ल्युट्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार जिसमें बच्चे को सर्वप्रथम बाहर खुली हवा में निकाला जाता है (यह संस्कार प्रायः चार मास की आयु होने पर मनाया जाता है) तु० मनु० २।३४ 3 मुख्य या राजमार्ग।

उपनृत्यम् [ष० स०] नाचने का स्थान, नृत्यशाला।

उपनेतृ (वि०) [उप+नी+तृच्] जो नेतृत्व करता है, या निकट लाता है, ले आने वाला—कु० १।६०,

मालत्यधिज्ञानस्योपनेत्री—मा० ९, (पु०—त्र) उपनयन संस्कार को कराने वाला गुरु।

उपन्यासः [उप+नि+अस्+घञ्] 1. निकट रखना, अच्छी प्रकार रखना 2 धरोहर, अमानत 3. (क) वक्तव्य, सुझाव, प्रस्ताव—पावक जलु एव वचनोपन्यास.—श० ५ (ख) भूमिका, प्रस्तावना—निर्यातशनकैरलीकवचनोपन्यासमालीजन—अमरु २३ (ग) संकेत, उल्लेख—आत्मन उपन्यासपूर्वम्—श० ३ 4 शिक्षा, विधि।

उपपतिः [प्रा० स०] प्रेमी, यार—उपपतिरिव गीर्वे पदिवमान्तेन चन्द्रः—शि० ११।६५ १५।६३, मनु० ३।१५५, ४।२१६, २१७।

उपपत्ति (स्त्री०) [उप+पद्+क्तिन्] 1 होना, घटित होना, आविर्भाव, उत्पत्ति, जन्म—शि० १।६९, भग० १३।९ 2 कारण, हेतु, आधार—कि० ३।५२ 3 तर्क, युक्ति उपपत्तिमद्युक्तिं वच—कि० २।१, युक्तियुक्त 4 योग्यता, औचित्य 5 निश्चयन, प्रदर्शन, प्रदर्शित उपसहार—उपपत्तिसदाहृता बलात्—कि० २।२८ 6 (अंकगणित या ज्यामिति में) प्रमाण, प्रदर्शन 7 उपाय नरकीव 8 करना, अमल में लाना, प्राप्त करना, सम्पन्न करना—स्वार्थोपपत्ति प्रति दुर्बलाश रघु० ५।१२, तात्पर्यानुपपत्तिं—माधा० दे० अनुपपत्ति 9 अवाप्ति, प्राप्ति—असशय प्राक् तन्मनोपपत्ते—रघु० १४।७८ कि० ३।१।

उपपदम् [प्रा० स०] 1 वह शब्द जो किसी से पूर्व लगाया गया हो या जोड़ा गया हो—धनुरुपपद वेदम् कि० १८।४४, (धनुर्वेद)—तस्या स राजोपपद निधानम्—रघु० १६।४० 2 पदवी, उपाधि, सम्मानसूचक विशेषण यथा आर्य, श्रीमत्—कथ निरुपपदमेव चाणक्यमिति न आर्य चाणक्यमिति—मुद्रा० ३ 3 वाक्य का गौणशब्द, किसी क्रिया या क्रिया से बने संज्ञा (कृदन्त) शब्दों से पूर्व लगाया गया उपसर्ग, निपात आदि शब्द।

उपपन्न (भू० क० कृ०) [उप+पद्+क्त] 1 प्राप्त, सेवित, सहित, युक्त 2. ठीक, योग्य, उचित, उपयुक्त (सब० या अधि० के साथ)—उपपन्नमिद विशेषण यदार्यो—विक्रम० २, उपपन्नमेतदस्मिन् राजनि—श० २।

उपपरीक्षा,-क्षणम् [उप+परि+ईक्ष्+अङ्, ल्युट् वा] अनुसंधान, ऑच पड़ताल।

उपपातः [उप+पत्+घञ्] 1. अप्रत्याशित घटना 2 संकट, मुसीबत, दुर्घटना।

उपपातकम् [प्रा० स०] तुच्छ पाप, जघन्य—महापातकतुल्यानि पापान्युक्तानि यानि तु, तानि पातकसज्ञानि तान्यूनमुपपातकम्। याज्ञ० २।२१०।

उपपादनम् [उप+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. कार्यान्वित करना, अमल में लाना, संपन्न करना 2 देना, सौंपना, प्रस्तुत करना 3 प्रमाणित करना, प्रदर्शन, तर्क द्वारा स्थापना 4 परीक्षा, निश्चयन।

उपपादम्=उपपातकम्।

उपपार्श्वः-र्श्वम् [अव्या० स०] 1 कक्षा 2 पार्श्वभाग, पार्श्व 3 विरोधी पक्ष।

उपपीडनम् [उप+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1 खेलना, निचोड़ना, बर्बाद करना, उजाड़ना 2. प्रपीड़ित करना, चोट पहुँचाना—व्याधिभिस्त्वोपपीडनम्—मनु० ६।६२, १२।८० 3 पीड़ा, वेदना।

उपपुरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपपुराणम् [प्रा० स०] गौण या छोटा पुराण (इनके नामों को जानने के लिए दे० 'अष्टादशन्')

उपपुलिका [अव्या० स०—सज्ञायां कन्, टाप्, इत्वम्] जम्हाई लेना, हाँफना।

उपप्रदर्शनम् [प्रा० स०] निर्देश करना, संकेत करना।

उपप्रदानम् [प्रा० स०] 1. दे देना, सौंप देना 2 रिश्वत, उपायन—उपप्रदानैर्मन्त्रिणो हितकृत्स्वाय्यंते जनै—पच० १।९५ 3 उपहार।

उपप्रलोभनम् [प्रा० स०] 1 बहकाना, फुसलाना 2 रिश्वत, फुसलाहट, ललचाव—उच्चावचान्युपप्रलोभनानि दश० ४८।

उपप्रेक्षणम् [प्रा० स०] उपेक्षा करना, अवहेलना करना।

उपप्रेषः [प्रा० स०] आमन्त्रण, बुलावा।

उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] 1 विपत्ति, दुष्कृत्य, संकट, दुःख, आपदा—अथ मदनवधूरुपप्लवान्त परिपालयया—बभूव—कु० ४।४६ जीवन्पुत्र शरदुपप्लवेभ्य. प्रजा पासि—रघु० २।४८ 2 (क) दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना, आघात, कष्ट सर्वस्मिन् बाध्यादिरूपप्लवो व—रघु० ५।६ मेघ० १७ (ख) बाधा, रुकावट 3 उत्पीडन, सताना, कष्ट देना—उपप्लवाय लोकाना धूमकेतुरिवोत्थित कु० २।३२ 4 डर, भय, दे० नी० 'उपप्लविन्' 5 अपशकुन, अनिष्टकर दैवी उपद्रव 6 विशेषकर सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण 7 राहु 8 अराजकता।

उपप्लविन् (वि०) [उपप्लव+इनि] 1 दुःखी, कष्टग्रस्त 2 अत्याचार से पीड़ित—नृपा इवोपप्लविन परेभ्य—रघु० १३।७।

उपबन्धः [उप+बन्ध्+घञ्] 1 सबध 2 उपसर्ग 3 रतिक्रिया का आसन विशेष।

उपबर्हः-र्हणम् [बर्ह्+घञ्, ल्युट् वा] तकिया।

उपबहु (वि०) [प्रा० स०] कुछ, थोड़े बहुत।

उपबाहुः [अव्या० स०] कोहनी से नीचे का हाथ का भाग।

उपभङ्गः [उप+भञ्ज्+घञ्] 1 भाग जाना, पलायन 2 (कविता का) एक भाग।

उपभाषा [प्रा० स०] बोलचाल की गौण भाषा।

उपभृत् (स्त्री०) [उप+भृ+क्विप्, तुकागम] यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला गोल प्याला।

उपभोगः [उप+भुज् ; घञ्] 1 (क) रसास्वादन, खाना, चखना—न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति—मनु० २।९४, याज्ञ० २।१७१, काम°—भग० १६।११ (ख) उपयोग, प्रयोग—श० ६।४ 2 रति-सुख, स्त्रीसहवास रघु० १४।२४ 3 फलोपभोग 4 आनन्द, संतृप्ति।

उपमन्त्रणम् [उप+मन्त्र्+ल्युट्] 1 संबोधित करना, आमंत्रण, बुलावा 2 उकसाना, उपच्छंदन।

उपमाथनी [उप+मन्थ्+ल्युट्+ङीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी।

उपमर्दः [उप+मृद्+घञ्] घर्षण, रगड़, दबाव, बोझ के नीचे कुचल जाना,—अभ्यासु तावदुपमर्दपहासु भृङ्ग लोल विनोदय मन सुमनोलतासु- गा० द० (यहाँ 'उपमर्द' का अर्थ है - उद्दण्ड व्यवहार या संभोगजन्य रतिसुख) 2 नाश, आघात, वध करना 3 झिड़कना, दुर्वचन कहना, अपमानित करना 4 भूसी अलग करना 5 आरोप का निराकरण।

उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] 1 समरूपता, समता साम्य स्फुटोपम भूमिमित्रेन जन्मना - शि० १।४, १७।६९, 2 (अलं० शा०) एक दूसरे से भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुल्यता, तुलना- साधर्म्यमुपमा भेदे—काव्य० १०, सादृश्य सुदर वाक्यार्थोपम्कारक-मुपमालकृति -रस०, या—उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मी-रुल्लसति द्वयो, हसीव कुण्ठा ते कीर्ति स्वर्गङ्गामवगाहते। चन्द्रा०, ५।३, उपमा कालिदासस्य—सुभा० 3 तुलना का मापदण्ड—उपमान, यथा यातो निधानस्था नैगते सोपमा स्मृता —भग० ६।१९ दे० 'द्रव्य' नी०, बहुधा समासान्त में 'की भाँति' 'मिलते-जुलते' - बुद्धे न बुद्धोपम -रघु० १।४७, इसी प्रकार अमरोपम, अनुपम आदि 4 समानता (चित्र, मूर्ति आदि की)। सम० -द्रव्यम् तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ—सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन—कु० १।४९।

उपमातृ (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 दूसरी माता, दूध पिलाने वाली धाय 2 निकट संबंधिनी स्त्री—मातृष्वसा मातृ-लानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा, श्वश्रू पूर्वजपत्नी च मातृतुल्या प्रकीर्तिता—शब्द०।

उपमानम् [उप+मा+ल्युट्] 1 तुलना, समरूपता—जाता-स्तदूर्वोरुपमानवाहा—कु० १।३६ 2 तुलना का माप-दण्ड जिससे किसी की तुलना की जाय (विप० उपमेय) उपमा के चार अपेक्षित गुणों में से एक— उपमानम-भूद्विलासिलाम्—कु० ४।५, उपमानस्यापि सख्ये प्रस्तुप-मान वपुस्तस्या—विक्रम० २।३, शि० २०।४९ 3 (न्या० दर्शन में) सादृश्य, समानता को मान्यता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक होता है—इसकी परिभाषा —प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनम्, या, उपमितिकर-णमुपमान तच्च सादृश्यज्ञानात्मकम्—तर्क०।

उपमितिः (स्त्री०) [उप+मा+क्तिन्] 1 समरूपता, तुलना, समानता—पल्लवोपमितिमाप्यसपक्षम्- सा० द०, तदाननस्योपमितौ दरिद्रता—नै० १।८९ 2 (न्या० द० में) सादृश्य, नियमन, सादृश्य से प्राप्त वस्तुज्ञान, उपमान के द्वारा निगमित उपसंहार—प्रत्य-क्षमप्यनुमितिस्तथोपमितिशब्दजे—भाषा० ५२ 3 एक अलंकार=उपमा।

उपमेय (स० कृ०) [उप—मा+यत्] समानता या तुलना करने के योग्य, तुल्य (करण० के साथ या समास में) भूयिष्ठमासीदुपमेयकान्ति गुहेन—रघु० ६।४, १८।२४, ३३, कु० ७।२, यम् तुलना करने का विषय, तुलनीय (विप० उपमान) उपमानोपमेयत्व यदकस्मेव वस्तुन —चन्द्रा० ५।७, ९। सम० -उपमा एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान की तुलना इस दृष्टि से की जाती है कि उनके समान कोई और वस्तु है ही नहीं,—विषयेषु उपमेयोपमानयो —काव्य० १०।

उपयन्तृ (पु०) [उप+यम्+तृच्] पति अर्थात्पयन्तार-मेव समाधिना कु० ५।४५, रघु० ७।१, शि० १०।४५।

उपयन्त्रम् [प्रा० स०] चोरफाड का एक छोटा उपकरण।

उपयम [उप+यम् ; अप्] 1 विवाह, विवाह करना कन्या प्रजानामुपमा मनस्विनां सा० द० 2 प्रतिबंध।

उपयमनम् [उप+यम्+ल्युट्] 1 विवाह करना 2 प्रतिबंध लगाना 3 अग्नि को स्थापित करना।

उपयज्यु (पु०) [उप+यज्+तृच्] यज्ञ के सात होताओं में से 'उपयज्' का पाठ करने वाला प्रति-प्रस्थाता नामक ऋत्विक्।

उपयाचक (वि०) [उप+याच्+ण्वुल्] माँगने वाला, प्रार्थी, विवाहार्थी, भिक्षुक।

उपयाचनम् [उप+याच्+ल्युट्] निवेदन करना, माँगना, प्रार्थना करने के लिए किसी के निकट जाना।

उपयाचित (भू० क० कृ०) [उप+याच्+क्त] जिससे माँगा गया हो, या प्रार्थना की गई हो,—तम् 1 निवेदन या प्रार्थना 2 मनौती, अपनी अभीष्टसिद्धि हो जाने पर देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रतिज्ञात भेंट (चाहे वह कोई पशु हो या मनुष्य) निर्लोपी क्रियते तुभ्य प्रदास्याम्युपयाचितम् पंच० १।१४ अद्य मया भवतस्या कराग्राया प्रायुपयाचित स्त्रीरत्नमुपहर्तव्यम्

—आ० ५ 3 अपनी इष्टसिद्धि के लिए देवता के प्रति प्रार्थना या निवेदन।

उपयाचितकम्=ऊपर दे०, उपयाचित-सिद्धायतनानि कृतविविधदेवतोपयाचितकानि—का० ६४।

उपयाज [उप+यज्+घञ्] यज्ञ के अतिरिक्त यजुर्वेदीय मन्त्र।

उपयानम् [उप+या+ल्युट्] पहुँचना, निकट आना, —हरोपयाने त्वरिता बभूव—कु० ७।२२।

उपयुक्त (भू० क० कृ०) [उप+युज्+क्त] 1 सलग्न 2 योग्य, सही, उचित 3 सेवा के योग्य, काम का।

उपयोग [उप+युज्+घञ्] 1. काम, लाभ, प्रयोग, सेवन —व्रजन्ति ··· 'अनङ्गलेखक्रिययोपयोगम्—कु० १।७ 2 औषधि तैयार करना या देना 3 योग्यता, उपयुक्तता, औचित्य 4 सपर्क, आसक्तता।

उपयोगिन् (वि०) [उप+युज्+घिनुण्] 1 काम में आने वाला, लाभदायक 2 सेवा के योग्य, काम का 3 योग्य, उचित।

उपरक्त (भू० क० कृ०) [उप+रञ्ज्+क्त] 1 कष्टग्रस्त, सकटग्रस्त, दुखी 2 ग्रहण-ग्रस्त 3 रजित, रगीन —शि० २।१८,—क्त ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

उपरक्षः [उप+रक्ष्+अच्] अग रक्षक।

उपरक्षणम् [उप+रक्ष्+ल्युट्] पहरेदारी, गारद, चौकी।

उपरत (भू० क० कृ०) [उप+रम्+क्त] 1 निवृत्त, विरक्त -रजस्युपरते—मनु० ५।६६ 2 मृत —अष्टदशमो भागस्तानस्योपरतस्य—मुद्रा० ४। सम०—कर्मन् (वि०) सासारिक कार्यों पर भरोसा न करने वाला, -स्पृह (वि०) इच्छा से शून्य, सासारिक आसक्ति और सम्पत्तियों के प्रति उदासीन।

उपरतिः (स्त्री०) [उप+रम्+क्तिन्] 1 विरक्ति, निवृत्ति 2 मृत्यु 3 विषय-भोग से विरक्ति 4 उदासीनता 5. यज्ञादि विहित कर्मों से विरक्ति, प्रथापालन के हेतु किये जाने वाले कर्मकाड में अविश्वास।

उपरत्नम् [प्रा० स०] अप्रधान या घटिया रत्न,—उपरत्नानि काचवज्र कर्परोपमा तथैव च, मुक्ता शुक्तिस्तथा शख इत्यादीनि बहून्यपि। गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा, किन्तु किंचिदाभा हीना विशेषोऽयमुदाहृत।

उपरम (रा) प [उप+रम+घञ्] 1 विरक्ति, निवृत्ति 2. परिवर्जन, त्याग 3 मृत्यु।

उपरमणम् [उप+रम्+ल्युट्] 1. रति सुख से विरक्ति 2 प्रथानुरूप कर्मकाण्ड से विरति 3 विरक्ति, निवृत्ति।

उपरसः [प्रा० स०] 1 अप्रधान खनिज धातु 2. गौण भाव या आवेग 3 अप्रधान रस।

उपरागः [उप+रञ्ज्+घञ्] 1. सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण —उपरागान्ते शशिन सदृशमता रोहिणी योगम् —श० ७।२२, शि० २०।४५ 2. राहु या शिरोबिंदु की ओर चलने वाला 3 लाली, लाल रग, रंग 4. सकट, कष्ट, आघात,—मृणालिनी हैममिवोपरागम्—रघु० १६।७ 5 झिड़की, निन्दा, दुर्वचन।

उपराजः [प्रा० स०] वाइसराय, राजप्रतिनिधि, उपशासक।

उपरि (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिल , उप आदेशः] पृथक्रूप से प्रयुक्त होने वाला संबधबोधक अव्यय (बहुधा सब० के साथ, कर्म० तथा अधि० के साथ विरल प्रयोग), निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) ऊपर, अधिक, पर, पै, की ओर (विप० अधः) (सब० के साथ—गतमुपरि वयसाम्—श० ७।७, अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टि पपात—रघु० २।६०, अर्कस्योपरि —श० २।८, बहुधा समास के अत में, रथ°, तरुवर° (ख) समाप्ति पर,—सिर पर, सर्वानन्यानाधुपरि वर्तमाना—का० १५८ (ग) परे, अतिरिक्त,—आत्म० २।२५३ (घ) के सबध में, के विषय में, की ओर, पर —परस्परस्योपरिपर्यवीयत—रघु० ३।२४—आ० ३।२३, तवोपरि प्रायोपवेशन करिष्यामि—तुम्हारे कारण (ङ) के बाद,—मुहूर्तादुपरि उपाध्यायस्वेदानच्छेत् —या० ३। ३। ९ मिद्धा०। सम०—उपरि (उपर्युपरि) 1 (कर्म० और सब० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जरा ऊपर, —लोकानपर्युपर्यास्ते माधव—कोप० (ख) उच्च से उच्चतर, कहीं ऊँचा, ऊपर, ऊँचाई पर—उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा—मा० 2 (क्रियाविशेषण के रूप में) अर्थ है (क), अत्यत ऊँचाई पर, पर, ऊपर की ओर (विप० अध)—उपर्युपरि पश्यन्त सर्व एव दरिद्रति —हि० २।२, बहुधा समास में—स्वमुद्योपरिचिह्नितम् —याज्ञ० १।३१९ (ख) इसके सिवाय, इसके अतिरिक्त, अधिक, और—शतान्युपरि चैवाष्टौ तथा सूयस्य सप्तति —महा० (ग) बाद में—यदा पूर्वं नाशीदुपरि च तथा नैव भविता—शा० २।७, सर्पि पीत्वोपरि पय पिबेत्—सुश्रुत,—चर (वि०) ऊपर विचरने वाला (पक्षी आदि)—तल,—स्थ (वि०) अधिक ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा,—भागः ऊपर का अश या पार्श्व, -भागः ऊपर या अपेक्षाकृत ऊँचाई पर होना —भूमिः (स्त्री०) ऊपर वाली धरती।

उपरिष्टात् (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिष्टातिल्, उप आदेशः] 1. क्रियाविशेषण के रूप में इसका अर्थ है—(क) अधिक, ऊपर, ऊँचे—मनु० ३।१३१, याज्ञ० १।१०६ (ख) इसके आगे, बाद में, इसके पश्चात्—कल्याणावर्तता हि कल्याणमुपरिष्टाद्भवति—आ० ६, इदमुपरिष्टात् व्याख्यातम्, अन्त में (ग) के पीछे (विप० पुरस्तात्)

2 संबंधबोधक अव्यय के रूप में इसका अर्थ है —(क) अधिक, पर (पंच० के साथ, कर्म० के साथ विरल प्रयोग,) शि० ११।३ (ख) सिर से पैर तक (ग) के पीछे (सप्त० के साथ)।

उपरीतकः [उपरि+इ+क्त+कन्] रतिक्रिया का आसन विशेष ('विपरीतक' भी कहलाता है)—ऊरावेकपदं कृत्वा द्वितीय स्कन्धसंस्थितं, नारी कामयते कामी बन्ध स्यादुपरीतक । शब्द०।

उपरूपकम् [उपगतं रूपकं वृषभकाव्य सादृश्येन—प्रा० स०] घटिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद गिनाये गए हैं —नाटिका त्रोटक गोष्ठी सट्टक नाट्यरासकम्, प्रस्थानोल्लाप्य काव्यानि प्रेंखण रासक तथा, संलापक श्रीगदित शिल्पक च विलासिका, दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च। सा० द० २७६।

उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] 1 अवबाधा, रुकावट, रोक —रघु० ६।४४ शि० २०।७४ 2 बाधा, कष्ट—तपोवननिवासिनामुपरोधो मा भूत् —श० १, अनुग्रह संदेश मोपरोध —विक्रम० ३ 3 आच्छादित करना, घेरा डालना, अवरुद्ध करना 4 सरक्षा, अनुग्रह।

उपरोधक (वि०) [उप+रुध्+ण्वुल्] 1 अवबाधक 2 बाध करने वाला, घेरा डालने वाला, —कम्, भीतर का कमरा, निजी कमरा।

उपरोधनम् [उप+रुध्+ल्युट्] अवबाधा, रुकावट आदि दे० उपरोध।

उपलः [उप+ला+क] 1 पत्थर, पाषाण—उपलशकलमेतदङ्कुरं गोमयानाम्—मृच्छ० ३।१५—कान्तं कथं घटितवानुपलेन वेत —शृङ्गार० ३, मेघ० १९, श० १।१४ 2 मूल्यवान् पत्थर, रत्न, मणि।

उपलकः [उपल+कन्] पत्थर,—का 1 रेत, बालुका 2 परिष्कृत शर्करा।

उपलक्षणम् [उप+लक्ष्+ल्युट्] 1 देखना, दृष्टि डालना, अंकित करना—वेलोपलक्षणार्थम्—श० ४ 2 चिह्न, विशिष्ट या भेदक रूप—विक्रम० ४।३३ 3 पद, पदवी 4 किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुतः कही न गई हो, किसी अतिरिक्त वस्तु की ओर या अन्य किसी समरूप पदार्थ की ओर संकेत जबकि केवल एक का ही उल्लेख किया गया हो, समस्त वस्तु के लिए उसके किसी एक भाग का कथन, पूरी जाति को प्रकट करने के लिए व्यक्ति की ओर संकेत आदि (स्वप्रतिपादकत्वे सति स्वेतरप्रतिपादकत्वम्)—मन्त्रग्रहण ब्राह्मणस्याप्युपलक्षणम् पा० ११।४।८० सिद्धा०।

उपलब्धिः (स्त्री०) [उप+लभ्+क्तिन्] 1 प्राप्ति, अवाप्ति, अभिग्रहण—वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धि —रघु० ५।५६, ८।१७ 2 पर्यवेक्षण, प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान —नानार्थ उपलब्धे —तु० न्या० सू० २।२८ 3 समझ, मति 4 अटकल, अनुमान 5 सत्कथता, आविर्भाव (मीमांसकों ने 'उपलब्धि' को प्रमाण का एक भेद माना है) दे० 'अनुपलब्धि'।

उपलभ्भः [उप+लभ्+घञ्, नुम्] 1 अभिग्रहण—अस्मादङ्गुलीयोपलम्भात्स्मृतिरुपलब्धा—श० ७ 2. प्रत्यक्षज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से भिन्न संबोध (अर्थात् अनुभव) —प्राक्तनोपलभ मा० ५ ज्ञातौ सुतस्पर्शसुखोपलम्भात् —रघु० १४।२ 3 निश्चय करना, जानना—अविज्ञक्रियोपलम्भाय—श० १।

उपलालनम् [उप+लल्+णिच्+ल्युट्] लाड प्यार करना।

उपलालिका [उप+लल्+ण्वुल्, इत्वम्] प्यास।

उपलिङ्गम् [प्रा० स०] अपशकुन, दैवी घटना जो अनिष्ट सूचक हो।

उपलिप्सा [उप+लभ्+सन्+अ+टाप्] प्राप्त करने की इच्छा।

उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] 1 लेप, मालिश 2 सफाई करना, सफेदी पोतना 3 अवबाधा, जड होना, (ज्ञानेन्द्रियों का) सुन्न होना।

उपलेपनम् [उप+लिप्+ल्युट्] 1 मालिश, लेप, पोतना 2 मलहम, उबटन।

उपवनम् [प्रा० स०] बाग, बगीचा, लगाया हुआ जंगल —पाण्डुच्छायोपवनवृतय केतकै सूचिभिन्नै —मेघ० २३, रघु० ८।७३, १३।७९, लता -उद्यान की बेल।

उपवर्ण [उप+वर्ण्+घञ्] सूक्ष्म या ब्योरेवार वर्णन।

उपवर्णनम् [उप+वर्ण्+ल्युट्] सूक्ष्म वर्णन, ब्योरे वार चित्रण—अतिशयोपवर्णन व्याख्यानम्—सुश्रुत, याज्ञ० १।३२०।

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] 1 व्यायामशाला 2 जिला या परगना 3 राज्य, 4 कीचड, दलदल।

उपवस्तथ [उप+वस्+अथ] गाँव।

उपवस्तम् [उप+वस (प्लाम्) +क्त] उपवास व्रत।

उपवासः [उपवस्+घञ्] 1 व्रत— सोपवासमभ्यङ्क्ष्व संवेत् —याज्ञ० १।१७५, ३।१९०, मनु० ११।१९६ 2 यज्ञाग्नि का प्रदीप्त करना।

उपवाहनम् [उप+वह्+णिच्+ल्युट्] ले जाना, निकट लाना।

उपवाह्या, -ह्या [उप+वह्+ण्यत्, स्त्रियां टाप्] 1 राजा की सवारी का हाथी या हथिनी, चन्द्रगुप्तोपवाह्या गजसेना- मुद्रा २ 2 राजकीय सवारी।

उपविद्या [प्रा० स०] सांसारिक ज्ञान, घटिया ज्ञान।

उपविष—षम् [प्रा० स०] 1 कृत्रिम जहर 2. निद्राजनक, मूर्छाकारी नशीली औषध -अर्कक्षीर स्नुहीक्षीर नर्यश्च कनिहारिका, धत्तूर करवीरश्च पंच क्षीरविषा स्मृता।

उपवीणयति (ना० धा० पर०) (किसी देवता के आगे) वीणा या सारंगी बजाना—उपवीणयितुं यदौ रवेरदयाद्वृत्तिपर्वेन नारद —रघु० ८।३३, मै० ६।६५, कि० १०।३८।

उपवीतम् [उप+वे+क्त] 1 जनेऊ संस्कार, उपनयन संस्कार 2. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसको हिन्दू जाति के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं—पित्र्यमशमुपवीतलक्षणं मातृकं च मनुरर्जितं दधत् —रघु० ११।६४, कु० ६।६, शि० १।७, मनु० २।४४, ६४, ४।३६।

उपवृंहणम् [उप+बृंह्+ल्युट्] वृद्धि, सञ्चय।

उपवेदः [प्रा० स०] घटिया ज्ञान, वेदों से निचले दर्जे का ग्रन्थसमूह। उपवेद गिनती में चार हैं, और प्रत्येक वेद के साथ एक एक उपवेद संलग्न है—उदा०, ऋग्वेद के साथ आयुर्वेद (सुश्रुत आदि विद्वानों के मतानुसार आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है) यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ गान्धर्ववेद या संगीत और अथर्ववेद के साथ स्थापत्य-शस्त्रवेद या यान्त्रिकी।

उपवेशः-शनम् [उप+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 बैठना, आसन जमाना जैसा कि प्रायोपवेशन में 2 संलग्न होना 3 मलोत्सर्ग।

उपवेलम् [उप+वेल्+अच्] दिन के तीन काल —अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल —त्रिसन्ध्या।

उपव्याख्यानम् [प्रा० स०] बाद में जोड़ी हुई व्याख्या या टीका।

उपव्याघ्रः [प्रा० स०] एक छोटा शिकारी चीता।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] 1 शान्त होना, उपशान्ति, सान्त्वना- कुतोऽन्या उपशम —वेणी० ३, अभ्यूर्ध सह एव वान्युपशम नो सान्त्ववादैं स्फुटम्—अमरु ६, निवृत्ति, रोक, परिसमाप्ति 2 विश्राम, छुट्टी, विराम 3 शान्ति, स्वैर्य, धैर्य 4 ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण।

उपशमनम् [उप+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 शान्त करना, शान्ति रखना, चुप करना 2 लघूकरण, 3 बुझाना, विराम।

उपशयः [उप+शी+अच्] 1 पास लेटना 2 मौंद, रात का स्थान—शि० २।८०।

उपशल्यम् [अव्या० स०] ग्राम या नगर के बाहर का खुला स्थान, नगराचल, उपनगर—अर्धोपशल्ये रिपुमन्तशल्य —रघु० १६।३७, १५।५०, शि० ५।८।

उपशाखा [प्रा० स०] गौण शाखा, अप्रधान शाखा।

उपशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 विराम, शमन, प्रशमन—रघु० ८।३१., अमरु ६५ 2 आश्वासन, अभिशमन।

उपशायः [उप+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, दूसरे पहरेदारों के साथ रात को सोने की बारी।

उपशालम् [अव्या० स०] घर के निकट का स्थान, घर के आगे का सहन,—लम् (अव्य०) घर के निकट।

उपशास्त्रम् [प्रा० स०] क्षुद्र विज्ञान या शास्त्र।

उपशिक्षा-क्षणम् [उप+शिक्ष्+अ, ल्युट् वा] अधिगम, सीखना, प्रशिक्षण।

उपशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य—शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानमनेहि तन्मञ्जुलमिश्रवाम—उद्भट।

उपशोभनम्-शोभा [उप+शुभ्+ल्युट्, अ वा] सजाना, अलंकृत करना।

उपश्लोकनम् [उप+श्लोक्+णिच्+ल्युट्] सूचना, बुझाना।

उपश्रुतिः (स्त्री०) [उप+श्रु+क्तिन्] 1. सुनना, कान देना 2 अवज्ञा-परास 3 रात की सुनाई देने वाली मूर्तिमती निशादेवी की भविष्यसूचक देववाणी—अथ निर्ऋत्य प्रतिकृतिचिह्नमाधुमकर वध, श्रुतौ तद्विदुषीरा देवप्रश्नमुपश्रुतिम्। हारा०, परिजनोऽपि चाख्याः सततमुपश्रुत्यै निर्णयाम- का० ६५ 4 प्रतिज्ञा, स्वीकृति।

उपश्लेषः-षणम् [उप+श्लिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 पास पास रखना, सम्पर्क 2 आलिंगन।

उपश्लोकयति (ना० धा० पर०) कविता में स्तुति करना, प्रशंसा करना।

उपसंयमः [उप+सम्+यम्+अप्] 1. दमन करना, रोकना, बांधना 2 सृष्टि का अंत, प्रलय।

उपसंयोगः [उप+सम्+युज्+घञ्] गौण संबंध, सुधार।

उपसंरोहः [उप+सम्+रुह्+घञ्] एक साथ उगना, ऊपर उगना, अंकुर आना (क्षत भरना)।

उपसंवादः [उप+सम्+वद्+घञ्] करार, संविदा।

उपसंव्यानम् [उप+सम्+व्ये+ल्युट्] अन्त पट,—अन्तर बहिर्वीतोपसंव्यानवो.—पा० १। १।३६।

उपसंहरणम् [उप+सम्+हृ+ल्युट्] 1. हटा लेना, वापिस लेना 2 रोक रखना 3 बाहर निकालना 4 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारः [उप+सम्+हृ+घञ्] 1. एक स्थान पर कर देना, सिकोड़ देना 2 वापिस लेना, रोक रखना 3. संचय, संघात 4 बटोरना, समेटना, समाप्ति 5 (किसी आयुध की) इति श्री 6. सारसंग्रह, संक्षिप्त विवरण 7 संक्षेप, संहृति 8 पूर्णता 9. विनाश, मृत्यु 10 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारिन् (वि०) [उप+सम्+हृ+णिनुच्] 1. समाविष्ट करने वाला 2. एकांतिक, अपवर्गी।

उपसंक्षेपः [उप+सम्+क्षिप्+घञ्] सार, सारांश, संक्षिप्त विवरण।

उपसंख्यानम् [उप+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. जोड़ना

2. बाद में जोड़ा हुआ, वृद्धि, अतिरिक्त निर्देशन (यह शब्द प्रायः व्याख्याकार के वार्तिकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका आशय पाणिनि के सूत्रों में रही छूट व भूलों को सुधारना है, अतः ये परिशिष्ट का काम देते हैं) उदा०—जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् सु० वृद्धि 3. (व्या० में) रूप और अर्थ की दृष्टि से प्रस्तावेश।

उपसंग्रहः-हणम् [उप+सम्+ग्रह्+अप्,ल्युट् वा] 1. प्रसन्न रखना, सहारा देना, निर्वाह करना 2. सादर अभिवादन (चरण स्पर्श करते हुए) स्फुरति रमसास्पाणिः पादोपसंग्रहणाय च—महावी० २।२० 3 स्वीकरण, इकट्ठा लेना 4 विनम्र संबोधन, अभिवादन 5 एकत्रीकरण, मिलाना 6 ग्रहण करना, (पत्नी के अंगीकार करना रूप में)—दारोपसंग्रह—याज्ञ० १।५६ 7. (बाहरी) परिशिष्ट, कोई ऐसी वस्तु जो या तो उपयोगी हो, अथवा सजावट के काम आवे, उपकरण।

उपसंत्तिः (स्त्री०) [उप+सद्+क्तिन्] 1 संयोग, मेल 2. सेवा, पूजा, परिचर्या 3 भेंट, दान।

उपसदः [उप+सद्+क] 1 निकट जाना 2 भेंट, दान।

उपसदनम् [उप+सद्+ल्युट्] 1 निकट जाना, समीप पहुँचना 2 गुरु के चरणों में बैठना, शिष्य बनना—तत्रोपसदन चके द्रोणस्येज्यास्त्रकर्मणि—महा० 3 पास-पड़ौस 4 सेवा।

उपसंतानः [उप+सम्+तन्+घञ्] 1 अव्यवहित संयोग 2. संतति।

उपसंधानम् [उप+सम्+धा+ल्युट्] जोड़ना, मिलाना।

उपसंन्यासः [उप+सम्+नि+अस्+घञ्] डाल देना, छोड़ देना, त्याग देना।

उपसमाधानम् [उप+सम्+आ+धा+ल्युट्] एकत्र करना, ढेर लगाना—उपसमाधानं राशीकरणम्—सिद्धा०।

उपसंपत्ति (स्त्री०) [उप+सम्+पद्+क्तिन्] 1 समीप जाना, पहुँचना 2 किसी अवस्था में प्रविष्ट होना।

उपसंपन्न (भू० क० कृ०) [उप+सम्+पद्+क्त] 1 उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ, 3 उपस्कृत, अन्वित 4 यज्ञ में बलि दिया गया (पशु), बलि दिया गया—मनु० ५।८१,—जम् मसाला।

उपसमाधिः,-धा [उप+सम्+आध्+घञ्, अ वा] 1. बातचीत—कि० ३।३ 2. मैत्रीपूर्ण अनुरोध—उपसमाधा उपसांत्वनम्-भा० १।३।४७ सिद्धा०।

उपसरः [उप+सृ+अप्] 1 (सांड का गाय की ओर) अभिगमन 2. गाय का प्रथम गर्भ-गवामुपसर—सिद्धा०।

उपसरणम् [उप+सृ+ल्युट्] 1 (किसी की ओर) जाना 2 जिसकी शरण ग्रहण की जाय।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] 1 बीमारी, रोग, रोग से उत्पन्न कृशता आदि विकार—क्षीण हन्युपसर्गा प्रभुता—सुश्रुत 2. मुसीबत, कष्ट, संकट, आघात, हानि—रत्न० १।१० 3 अपशकुन, अनिष्टकर प्राकृतिक घटना 4 ग्रहण 5 मृत्यु का लक्षण या चिह्न 6 धातु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—निपाताश्चादयो ज्ञेया प्रादयस्तूपसर्गका, द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकावगता इमे। गिनती में उपसर्ग २० हैं—तथाहि प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् या निर्, दुस् या दुर्, वि, आ (ऊ) नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप, या २२ यदि निस्-निर् और दुस्-दुर् को अलग २ शब्द समझा जाय। इन उपसर्गों की विशेषता के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त हैं। एक सिद्धान्त के अनुसार तो धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकार्था हि धातव), जब उपसर्ग उन धातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं तो वह केवल धातुओं में पहले से विद्यमान परन्तु गुप्त पड़े हुए—अर्थ को प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ को अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वह हैं ही अर्थहीन। दूसरे सिद्धान्त के अनुसार उपसर्ग अपना स्वतन्त्र अर्थ प्रकट करते हैं, वह धातुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई उनके अर्थों को बिल्कुल बदल देते हैं—तु० सिद्धा०—उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते, प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्। और तु० धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चिन्नमनुवर्तते, तमेव विशिनष्टयन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा।

उपसर्जनम् [उप+सृज्+ल्युट्] 1 उड़ेलना 2 मुसीबत, संकट (ग्रहण आदि), अपशकुन 3 छोड़ना 4 ग्रहण लगना 5 अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु, प्रतिनिधि 6 (व्या० में) वह शब्द जिसका अपना मूल स्वतन्त्र स्वरूप व्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण नष्ट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे (विप० प्रधान)।

उपसर्पः [उप+सृप्+घञ्] समीप जाना, पहुँच।

उपसर्पणम् [उप+सृप्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना, अग्रसर होना।

उपसर्या [उप+सृ+यत्+टाप्] गर्भायी हुई या ऋतुमती गाय जो सांड के उपयुक्त हो।

उपसुंदः [प्रा० स०] एक राक्षस, निकुंभ का पुत्र तथा सुंद का भाई।

उपसूर्यकम् [उपसूर्य+कन्] सूर्यमण्डल या परिवेश।

उपसृष्ट (भू० क० कृ०) [उप+सृज्+क्त] 1 मिलाया हुआ, संयुक्त, संलग्न 2 भूत-प्रेताविष्ट, या भूत-प्रेतग्रस्त—उपसृष्टा इव काश्चिद्विचिन्तमवला—का० १०७ 3. कष्टग्रस्त, अभिभूत, अतिग्रस्त—रोगोपसृष्टतनुर्दुर्बलः

तति यमुनम् —रघु० ८।९४ 4 ग्रहण-ग्रस्त 5 उपसर्ग-युक्त (धातु) —कुग्रहोपसृष्टयो: कर्म—पा० १।४। १८,—ग्रहः ग्रहण से ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा,—ग्रहम् मैथुन, समोग।

उपसेकः-उपसेचनम् [उप+सिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. उंडेलना, छिड़कना सींचना 2. भीगना, रस,—नी कड़छी या कटोरी जिससे उंडेला जाय।

उपसेवनम्, -सेवा [उप+सेव्+ल्युट्, स+टाप् वा] 1 पूजा करना, सम्मान करना, आराधना 2. उपासना —राज्ञ°—मनु० ३।६४ 3. लिप्त होना—विषय° 4 काम लेना, (स्त्री का) उपभोग करना—परदार°—मनु० ४।१३४।

उपस्करः [उप+कृ+अप्, सुट्] 1 जो किसी दूसरी वस्तु को पूरा करने के काम आवे, सघटक, अवयव 2. (अन्न) (तरकारी, मिर्च आदि) मसाला जो भोजन को स्वादिष्ट बनाये 3 सामान, उपबन्ध, उपाय, उपकरण —शि० १८।७२ 4 घर-गृहस्थी के काम की वस्तु (जैसे झाड़ू) याज्ञ० १।८३, २।१९३, मनु० ३।६८, १२।६६, ५।१५० 5. आभूषण 6 निन्दा, बदनामी।

उपस्करणम् [उप+कृ+ल्युट्, सुट्] 1 बध करना, क्षत-विक्षत करना 2 संचय 3 परिवर्तन, सुधार 4 अभ्याहार, 5 बदनामी निन्दा।

उपस्कारः [उप+कृ+घञ्, सुट्] 1 अतिरिक्तक, परि-शिष्ट, 2. अभ्याहार—(न्यून पद की पूर्ति)—साका-ङ्क्षमनुपस्कारं विच्छन्नगतिनिराकुलम्—कि० ११।३८ 3 सुन्दर बनाना, सजाना, शोभायुक्त करना—उक्तार्थ-मार्षं सोपस्कारमाह—रघु० ११।४७ पर मल्लि० 4 आभूषण 5 प्रहार 6 संचय।

उपस्कृत (भू० क० कृ०) [उप+कृ++क्त, सुट्] 1 तैयार किया हुआ 2 संचित 3 सजाया गया, अलंकृत किया गया 4 अभ्याहृत 5 सुधारा गया।

उपस्कृति (स्त्री०) [उप+कृ+क्तिन्, सुट्] परिशिष्ट।

उपस्तम्भः-भनम् [उप+स्तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1 टेक, सहारा 2. प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता 3 आधार, नींव, प्रबोजन।

उपस्तरणम् [उप+स्तृ+ल्युट्] 1 फैलाना, बिछाना, बखेरना 2 चादर, 3 बिस्तरा 4 कोई बिछाई हुई (चादर आदि)—अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

उपस्त्री (स्त्री०) [प्रा० स०] रखैल।

उपस्थः [उप+स्था+क] 1. गोद 2 (शरीर का) मध्य भाग, पेडू,—स्थः—स्थम् 1. (स्त्री या पुरुष की) जननेन्द्रिय, विशेषतः योनि—स्नान मौनोपवासेज्या स्वा-ध्यायोपस्थनिग्रहः—याज्ञ० ३।३१४ (पुरुष का लिंग) स्त्रीपुंसोपस्थसंयोगे—मनु० १।२० (स्त्री की योनि), इत्यौ पायूपस्थसंयमः—याज्ञ० ३।९२ (यहाँ यह शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त है) 2. गुदा 3 कूल्हा। सम०—निग्रहः इन्द्रियदमन, संयम—याज्ञ० ३।३१४,—वृक्षः, पीपल का वृक्ष (क्योंकि इसके पत्ते स्त्री-योनि के आकार के समकक्ष होते हैं)।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] 1 उपस्थिति, सामीप्य 2. पहुँचना, आना, प्रकट होना, दर्शन देना 3 (क) पूजा करना, प्रार्थना, आराधना, उपासना—सूर्योपस्था-नात्प्रतिनिवृत्तं पुष्करस्रज मामुपेत्य—विक्र० १, सूर्यस्यो-पस्थानं कुर्व—विक्रम० ४, याज्ञ० १।२२, (ख) अभिवा-दन, नमस्कार 4 आवास 5 देवालय, पुण्यस्थल, मन्दिर 6 स्मरण, प्रत्यास्मरण, स्मृति—याज्ञ० ३। १६०।

उपस्थापनम् [उप+स्था+णिच्+ल्युट्] 1. निकट रखना, तैयार होना 2. स्मृति को जगाना 3 परिचर्या, सेवा।

उपस्थायकः [उप+स्था+ण्वुल्] सेवक।

उपस्थितिः (स्त्री०) [उप+स्था+क्तिन्] 1 पास आना 2. सामीप्य, विद्यमानता 3 अवाप्ति, प्राप्ति 4. सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना 5 स्मरण, प्रत्यास्मरण 6. सेवा, परिचर्या।

उपस्नेहः [उप+स्निह्+घञ्] गीला होना।

उपस्पर्शः-र्शनम् [उप+स्पृश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्पर्श करना, सम्पर्क 2. स्नान करना, संक्षालन, धोना 3 कुल्ला करना, आचमन करना, मार्जन करना, (आँखों पर जल के छींटे देना—एक धार्मिक कृत्य)।

उपस्मृतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] लघु धर्मशास्त्र या विधि ग्रन्थ (यह संख्या में १८ हैं)।

उपस्यन्दनम् [उप+स्यन्द्+ल्युट्] 1. रस का मासिक स्राव होना 2 लहराव।

उपस्यन्दम् [प्रा० स०] राजस्व, लाभ (जो भूमि अथवा पूँजी से प्राप्त हो)।

उपस्वेदः [उप+स्विद्+घञ्] गीलापन, पसीना।

उपहत (भू० क० कृ०) [उप+हन्+क्त] 1. क्षत-विक्षत, जिस पर आघात किया गया हो, क्षीण, पीड़ित, चोट लगा हुआ - कु० ५।७६ 2 अभिभूत, आवद्ध, आहत, पराभूत—दारिद्र्य°, लोभ°, दर्प°, काम°, शोक° आदि 3 सदोष विनष्ट—कथमद्यापि दैवेनो-पहता वयम्—मुद्रा० २, दैवेनोपहतस्य दुद्धिरपि सूते विपर्यस्यति-मुद्रा० ६।८ 4 निंदित, अवहेलना किया गया, उपेक्षित 5 दूषित, कलुषित, अपवित्रीकृत—खरोष्ट्रै-र्मलैः सुरामिश्रमैर्यां यदुपहृतं तदन्नमुपहृतम्—विष्णु। सम०—आत्मन् क्षुब्धमना, उद्विग्नमना,—मूल (वि०) चौपियाया हुआ, अंधा किया गया—हि० १२।१८, —श्री (वि०) भूत।

उपहृतक (वि०) [उपहृत+कन्] हृतसार्व, लजाया।

उपहृतिः (स्त्री०) [उप+हृ+क्तिन्] 1. प्रहार 2. वध, हत्या।

उपह्वरा [प्रा० स०] आँखों का चौंधियाना।

उपह्वरत्वम् [उप+ह्वृ+ल्युट्] 1 निकट लाना, आकर लाना 2 ग्रहण करना, पकड़ना 3 देवता आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4 बलिपशु देना 5 भोजन परोसना या बाँटना।

उपहसित (भू० क० कृ०) [उप+हस्+क्त] मजाक उड़ाया गया, भर्त्सना किया गया,—तम् व्यंग्यपूर्ण अट्टहास, हँसी उड़ाना।

उपहसितका [उपहस्त+कन्+टाप्, इत्वम्] पान-दान, —उपहसितकायास्ताम्बूल कर्पूरसहितमुद्वृत्य—दश० ११६।

उपहारः [उप+हृ+घञ्] 1 आहुति 2 भेंट, उपहार —रघु० ४।८४ 3. बलि-पशु, यज्ञ, देवता का नजराना —रघु० १६।३९ 4 सम्मान-सूचक भेंट, अपने बड़ों को उपहार देना 5 सम्मान 6 क्षति के मूल्य स्वरूप क्षति पूरक उपहार—हि० ४।११० 7 अभ्यागतों में परोसा गया भोजन।

उपहारिन् (वि०) [उपहार+णिनि] देने वाला, उपहार प्रस्तुत करने वाला, लाने वाला।

उपहारकः [?] कुन्तल देश का नाम।

उपहासः [उप+हस्+घञ्] 1 मजाक उड़ाना, हँसी-दिल्लगी—रघु० १२।३७ व्यंग्यपूर्ण अट्टहास 3 हँसी मजाक, खेलकूद। सम०—आस्पदम् पात्रम् उपहास की सामग्री, भाँड, उपहास्य।

उपहासक (वि०) [उप+हस्+ण्वुल्] हँसी-मजाक उड़ाने वाला,—कः विदूषक, दिल्लगी बाज।

उपहास्य (वि०, स० कृ०) [उप+हस्+ण्यत्] मजाकिया —°तां गम् या या—हँसी मजाक की वस्तु बनना, ठिठोलिया—गमिष्यामयुपहास्यताम् रघु० १।३।

उपहित (वि०) [उप+धा+क्त] रक्खा गया, दे० उप-पूर्वक 'धा'।

उपहूतिः (स्त्री०) [उप+ह्वे+क्तिन्] बुलावा, आह्वान, निमन्त्रण,—शि० १४।३०।

उपह्वरः [उप+ह्वृ+अ] एकान्त या अकेला स्थान, निजी जगह—उपह्वरे पुनरित्यधिकाय धनमिवम् —दश० ५४ 2 सामीप्य।

उपह्वानम् [उप+ह्वे+ल्युट्] 1 बुलाना, निमंत्रित करना 2 प्रार्थना मंत्रों के साथ आवाहन करना।

उपांशु (अव्य०) [उपगता अंशवो यत्र] 1 मन्द स्वर से, फुसफुसी 2 चुपके से, गुप्तरूप से—परिचेतुमुपांशु-धारणाम्—रघु० ८।१८—शुः मन्द स्वर में की गई प्रार्थना, मंत्रों का जप करना तु०, मनु० २।८५।

उपाकरणम् [उप+आ+कृ+ल्युट्] 1 आरंभ करने के लिए निमंत्रण, निकट लाना 2 तैयारी, आरम्भ, उप-क्रम 3 प्रारंभिक अनुष्ठान करने के पश्चात् वेद-पाठ का उपक्रम -तु० उपाकर्मन्,—वेदोपाकरणाख्यं कर्म करिष्ये—आश्व० श्रौ०।

उपाकर्मन् (नपु०) [उप+आ+कृ+मनिन्] 1. तैयारी, आरंभ, उपक्रम 2 वर्षारंभ के पश्चात् वेदपाठ के उपक्रम से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान (तु० श्रावणी) याज्ञ० १।१४२, मनु० ४।११९।

उपाकृत (भू० क० कृ०) [उप+आ+कृ+क्त] 1 निकट लाया हुआ 2 यज्ञ में बलि दिया गया 3 आरब्ध, उपक्रांत।

उपाक्षम् (अव्य०) [अव्य० स०] आँखों के सामने, अपने समक्ष।

उपाख्यानम्-नकम् [उप+आ+ख्या+ल्युट् पक्षे कन् च] छोटी कथा, गल्प या आख्यायिका - उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः - महा०।

उपागमः [उप+आ+गम्+अप्] 1 निकट आना, पहुँचना 2 घटित होना 3 प्रतिज्ञा, करार 4 स्वीकृति।

उपाग्रम् [प्रा० स०] 1 चोटी या किनारे के निकट का भाग 2 गौण भाग।

उपाग्निहोत्रम् [उप—आ+अग्नि+होत्र+ल्युट्] दीक्षित होकर वेदाध्ययन करना।

उपाङ्गम् [प्रा० स०] 1 उपभाग, उपसोपंक 2 कोई छोटा अंग या अवयव 3 परिशिष्ट का पूरक 4 घटिया प्रकार का अतिरिक्त कार्य 5 विज्ञान का गौण भाग —वेदांगों के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया ग्रन्थ समूह (ये चार हैं पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राणि)।

उपचारः [उप+आ+चर+घञ्] 1 (वाक्य में शब्द का) स्थान 2 कार्यविधि।

उपाचे (अव्य०) (केवल 'कृ' धातु के साथ प्रयोग) —सहारा देना—उपाचेकृत्य या कृत्वा -सहारा देकर —पा० १।४।७३ सिद्धा०।

उपाञ्जनम् [उप+अञ्ज्—ल्युट्]- मलना, लीपना (गोबर आदि से) पोतना (मर्फती, चूना आदि)—मनु० ५।११०५, १२२।१२४, मठादं (सुधागोमयादिना समार्जनानु-लेपनम्—मेधातिथि)।

उपाध्यय [उप+अति+इ+अच्] उल्लंघन करना, (प्रचलित प्रथा से) विचलन।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] 1 लेना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अवाप्त करना विश्रब्धं ब्राह्मण भूद्रात् द्रव्योपादानमाचरेत्—मनु० ८।४१७, विद्या°—का० ७५ 2 उल्लेख, वर्णन 3 समावेश, मिलाना 4 सांख्यिक पदार्थों में अपनी ज्ञानेन्द्रियों व मन को हटाना 5 कारण, प्रयोजन, प्राकृतिक या तात्कालिक कारण—पाटवोपादानो ह्यर्थ —उत्तर० ३, अमे० पा० 6 सामग्री जिससे कोई वस्तु बने, भौतिक कारण—निमित्तमेव ब्रह्म स्यादुपादानं च

वेद्यभात्—अधिकरणमाला 7. अभिव्यक्ता की एक रीति जिसमें अपने वास्तविक अर्थ को प्रकट करने के अतिरिक्त न्यूनपद की पूर्ति भी अध्याहार द्वारा कर ली जाती है—स्वसिद्धये पराक्षेप उपादानम्—काव्य० २। सम०—कारणम् भौतिक कारण—प्रकृति-रुपोपादानकारण च ब्रह्माप्युपनन्तव्यम्—शारी०,—लक्षणा =अजहत्स्वार्था, दे० काव्य० २, सा० द० (४ भी)।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1. आलसाजी, धोखा, दाँव 2 प्रवचना, (वेदान्त में) छद्मवेष धारण करना 3. विवेचक या विभेदक गुण, विशेषण, विशेषता —तदुपाधावेव सङ्केत —काव्य० २, यह चार प्रकार का है —जाति, गुण क्रिया, तथा संज्ञा 4. पद, उपनाम (भट्टाचार्य, महामहोपाध्याय, पंडित आदि) 5 सीमा, (देश काल आदि की) अवस्था (वेदान्तदर्शन में) 6 प्रयोजन, संयोग, अभिप्राय 7 (तर्क में) किसी सामान्य बात का विशेष कारण 8 जो व्यक्ति अपने परिवार का भरण-पोषण करने में सावधान है।

उपाधिक (वि०) [अस्या० स०] अधिक, अधिसंख्य, अतिरिक्त।

उपाध्याय [उपेत्याधीयते अस्मात् —उप+अधि+इ+घञ्] 1 अध्यापक, गुरु 2 विशेषत अध्यात्मगुरु, धर्मशिक्षक (उपाध्यायक - जो वेद के किसी भाग को केवल पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए पढ़ाता है—आचार्य से निम्न पदवी का) तु० —मनु० २।१४१, एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः, योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्याय स उच्यते। दे० 'अध्यापक' और 'आचार्य' के नीचे भी,- वा स्त्री-अध्यापिका,- नी 1 अध्यापिका 2 गुरुपत्नी।

उपाध्यायानी [उपाध्याय+ङीप्, आनुक्] गुरुपत्नी।

उपानह् (स्त्री०) [उप+नह+क्विप् उपसर्गदीर्घः] चप्पल, जूता- -उपानद्गूढपादस्य सर्वा चर्मावृतेव भू -हि० १।१२२ मनु० २।२४६, क्या यदि क्षिपते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्—हि० ३।५८।

उपान्त [प्रा० स०] 1 किनारी, छोर, कोर, पल्ला, सिरा —उपान्तयोर्विकुर्वित विहङ्गैः —रघु० ७।५०, कु० ३।६१, ७।३२, अमरु २३, उत्तर० १।२६ वासक° —का० १०६ 2. आँख की कोर—रघु० ३।२६ 3 अव्यवहित सान्निध्य, पड़ोस—तयोरुपान्तस्थित सिद्ध-सैनिकम्—रघु० ३।५७, ७।२४, १६।२१, मेघ० २४ 4 पार्श्वभाग, नितम्ब—मेघ० १८।

उपान्तिक (वि०) [प्रा० स०] निकटस्थ, समीपी, पड़ोसी, —कम् पड़ोस, सामीप्य।

उपान्त्य (वि०) [उपान्त+यत्] अन्तिम से पूर्व का —उपान्त्यवर्णमुपान्त्यस्योपलक्षणार्थम्—सिद्धा०,—त्यः अंत की कोर,—त्यम् पड़ोस।

उपायः [उप+इ+घञ्] 1. (क) साधन, तरकीब, युक्ति—उपाय चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापाये च चिन्तयेत् —पञ्च० १।४०६, अमरु २१, मनु० ७।१७७ ८।४८, (ख) पद्धति, रीति, कूटचाल 2. आरम्भ, उपक्रम 3 प्रयत्न, चेष्टा—भग० ६।३६ मनु० ९।२४८।१०।३ 4 शत्रु पर विजय पाने का साधन (यह चार है —साधन, समझौता-वार्ता, दण्ड-विभेद,भेद :-फूट डालना और दण्ड:-सजा देना (लोगों द्वारा बोलना), कुछ लोग तीन और जोड़ देते हैं—माया—धोखा, उपेक्षा—दाँव-पेच, अवहेलना, इन्द्रजाल—जादू-टोना करना, इस प्रकार कुल संख्या सात हुई),—चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया—शि० २।५४, सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिता—मनु० ७।१०९ 5 सम्मिलित होना (गायन आदि में) 6 पहुँचना। सम०—चतुष्टय, शत्रु के विरुद्ध की जाने वाली चार तरकीबें—दे० ऊपर (वि०) तरकीब निकालने में चतुर, तुरीयः चौथी तरकीब अर्थात् दंड,—योगः साधन या युक्ति का प्रयोग—मनु० ९।१०।

उपायनम् [उप+अय्+ल्युट्] 1 निकट जाना पहुँचना 2 शिष्य बनना 3 किसी धार्मिक संस्कार में व्यस्त रहना 4 उपहार, भेंट—मालविकोपायन प्रेषिता—मालवि० १, सम्पीपायनयोग्यानि वस्तूनि सरिता पतिं —कु० २।३७, रघु० ४।७९।

उपारम्भः [उप+आ+रभ्+घञ्, नुम्] आरंभ, उपक्रम, शुरू।

उपालंभनम्—ना [उप+लभ्+ल्युट्, युच् वा] कलंक लगाना, दोष उठाना।

उपार्घ (वि०) [ब० स०] थोड़े मूल्य का।

उपालम्भः - भनम् [उप+आ+लभ्+घञ्, नुम्, ल्युट् वा] 1 दुर्वचन, उलाहना, निन्दा—अस्था महत्युपालम्भने गतोऽस्मि- -अ० ५, तवोपालम्भे पतितोऽस्मि—मालवि० १, तुम्हारा उलाहना सिर-आँखों पर 2 विलंब करना, स्थगित करना।

उपावर्तनम् [उप+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापिस आना या मुड़ना, लौटना—स्वदुपावर्तनसाक्षि मे नभ (करोति) —रघु० ८।५३ 2. घूमना, चक्कर काटना 3 पहुँचना।

उपाश्रयः [उप+आ+श्रि+अच्] 1 आश्रय, सहारा—भर्तृ० २।४८ 2. पास, पासे वाला 3. भरोसा, निर्भर रहना।

उपासकः [उप+आस्+ण्वुल्] 1. सेवा में उपस्थित, पूजा करने वाला 2 सेवक, अनुचर 3. बुद्ध, जिन-आदि का अर्चित।

उपासनम्—ना [उप+आस्+ल्युट्, युच् वा] 1. सेवा, हाजरी, सेवा में उपस्थित रहना 2. वीर्य उत्सेचन-

मात् (विनश्यति) पंच० १।१६९, उपासनादमेत्य पितुरस्य सृज्यते—नै० १।३४, मनु० ३।१०७, भग० १३।७, याज्ञ० ३।१५६ 2 व्यस्त, तुला हुआ, जुटा हुआ —संगीत° मृच्छ० ६, मनु० २।६९ 3 पूजा, आदर, आराधना, शरीराभ्यास 5 धार्मिक मनन 6 यज्ञाग्नि।

उपासना [उप+आस्+अ+टाप्] 1 सेवा, हाजरी 2 पूजा, आराधना 3 धार्मिक मनन।

उपास्तमनम् [प्रा० स०] सूर्य छिपना।

उपास्तिः (स्त्री०) [उप+आस्+क्तिन्] 1 सेवा, सेवा में उपस्थित रहना (विशेषतः देवता की) 2 पूजा, आराधना।

उपाहारः [प्रा० स०] गौण या छोटा हथियार।

उपाहारः [प्रा० स०] हल्का जलपान (फल, मिष्टान्न आदि)।

उपाहित (भू० क० कृ०) [उप+आ+धा+क्त] 1 रक्खा गया, जमा किया गया, पहना गया आदि 2. संबद्ध, सम्मिलित,—त. आग से भय, या आग से होने वाला विनाश।

उपेक्षणम्=उपेक्षा।

उपेक्षा [उप+ईक्ष्+अ+टाप्] 1 नजर-अंदाज करना, लापरवाही बरतना, अवहेलना करना 2 उदासीनता, घृणा, नफ़रत—कुर्यामुपेक्षा हतजीवितेऽस्मिन्—रघु० १४।६५ 3 छोड़ना, छुटकारा देना 4 अवहेलना, दाव पेंच, मक्कारी (युद्ध में विहित ७ उपायों में से एक)।

उपेत (भू० क० कृ०) [उप—इ+क्त] 1 समीप आया हुआ, पहुँचा हुआ 2 उपस्थित 3 युक्त, सहित (करण० के साथ या समास में)—पुत्रमेव गुणोपेत चक्रवर्तिनमाप्नुहि—श० १।१२।

उपेन्द्रः [उपगत इन्द्रम्—अनुजत्वात्] विष्णु या कृष्ण, (इन्द्र के छोटे भाई के रूप में अपने पाँचवें अवतार (वामन) के अवसर पर) दे० इन्द्र, उपेन्द्र- वज्रादपि दारुणोऽसि—गीत० ५, यदुपेन्द्रस्त्वमतीन्द्र एव स—शि० ११।७०।

उपेय (स० कृ०) [उप+इ+यत्] 1 पहुँचने के योग्य 2 प्राप्त कर लेने के योग्य 3 किसी भी साधन से प्रभावित होने के योग्य।

उपोढ (भू० क० कृ०) [उप+वह्+क्त] 1 संचित, एकत्र किया हुआ, जमा किया हुआ 2 निकट लाया हुआ, निकटस्थ 3 युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध 4 आरब्ध 5 विवाहित।

उपोत्तम (वि०) [अत्या० स०] अन्तिम से पूर्व का, —मम् (अक्षरम्) अन्तिम अक्षर से पूर्व का अक्षर।

उपोद्घातः [उप+उद्+हन्+घञ्] 1 आरम्भ 2 प्रस्तावना, भूमिका, 3 उदाहरण, समुपयुक्त तर्क या दृष्टान्त 4 सुयोग, साध्यम, साधन—तत्प्रतिच्छन्दकमुपोद्घातेन साधयितुमिच्छामः—मा० १ 5 विश्लेषण, किसी वस्तु के तत्त्वों का निश्चय करना।

उपोद्बलकः (वि०) [उप+उद्+बल्+ण्वुल्] पुष्ट करने वाला।

उपोद्बलनम् [उप+उद्+बल्+ल्युट्] पुष्ट करना, समर्थन करना।

उपोषणम्—**उपोषितम्** [उप+वस्+ल्युट्, क्त वा] उपवास रखना, व्रत।

उप्तिः (स्त्री०) [वप्+क्तिन्] बीज बोना।

उब्ज् (तुदा० पर०) (उज्जति, उज्जित) 1 झीकना, दबाना 2 सीधा करना।

उभ्, उम्भ् (तुदा० रुधा० पर०) (उभति या उम्भति, उम्भाति, उम्भित) 1 समीमित करना 2 संक्षिप्त करना 3 भरना - जलकुम्भमुम्भितस्य सपदि सरस्या समानयन्त्यास्ते—भामि० २।१४४ 4 आच्छादित करना, ऊपर बिछाना —सर्वमर्मसु काकुत्स्थमौग्भत्तीक्ष्णैः शिलीमुखैः —भट्टि० १७।८८।

उभ (सर्व० वि०) (केवल द्विवचन में प्रयुक्त) [उ+भक्] दोनों, उभौ तौ न विजानीतः भग० २।१९, कु० ४।४३ मनु० २।१४ शि० ३।८।

उभय (सर्व०, वि०) (स्त्री० -यी) [उभ्+अयट्] (यद्यपि अर्थ की दृष्टि से यह शब्द द्विवचनांत है, परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में भी होता है, कुछ वैयाकरणों के मतानुसार द्विवचन में भी) दोनों (पुरुष या वस्तुएं) उभयमप्यगन्तुमेव समर्थये —श० ७, उभयमानशिरे वसुधाधिपाः —रघु० ९।९, उभयीं सिद्धिमुभयत्रापतुः —८।२३ १७।३८, अमरु ६०, कु० ७।७८, मनु० २।५५ ४।२२४, ९।३४। सम०- चर (वि) जल, स्थल या आकाश में विचरण करने वाला, जल स्थल चारी, -विद्या दो प्रकार की विद्याएँ, परा और अपरा, अर्थात् अध्यात्म विद्या और लौकिक ज्ञान, विध (वि०) दोनों प्रकार का, —वेतन (वि०) दोनों स्थानों से वेतन ग्रहण करने वाला, दो स्वामियों का सेवक, विपदासंघातौ, -व्यंजन (वि०) (स्त्री और पुरुष) दोनों के चिह्न रखने वाला, —समयः उभयपक्षि, दुविधा।

उभयतः (अव्य०) [उभय+तसिल्] 1 दोनों ओर से, दोनों ओर, (कर्म० के साथ)—उभयतः कृष्णं शोभा —सिद्धा० याज्ञ० १।५८, मनु० ८।३१५ 2 दोनों बगलों में 3 दोनों रीतियों से—मनु० १।४७, । सम०—बल,—दन्त (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर) दाँतों की पंक्ति वाला, -मनु० १।४३, —मुख (वि०) 1 दोनों ओर देखने वाला 2 दुमुहा (मकान आदि) (—खी) ब्याही हुई गाय—याज्ञ० १।२०६-७।

उभयत्र (अव्य०) [उभय+त्रल्] 1. दोनों स्थानों पर, 2 दोनों ओर 3. दोनों अवस्थाओं में—मनु० ३।१२५, १६७।

उभयथा (अव्य०) [उभय+थाच्] 1. दोनों रीतियों से —उभयथापि घटते—विक्रम० ३ 2 दोनों दशाओं में।

उभय (वे) द्यु (अव्य०) [उभय+द्युस्, एद्युस् वा] 1 दोनों दिन 2 आगामी दोनों दिन।

उम् (अव्य०) [उम्+डुम्] (क) क्रोध (ख) प्रश्नवाचकता (ग) प्रतिज्ञा या स्वीकृति और (घ) सौभाग्य या सान्त्वना को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उमा [ओ शिवस्य मा लक्ष्मीरिव, उ शिवं माति मन्यते पतित्वेन मा+क या तारा०] 1. हिमवान् और मेना की पुत्री, शिव की पत्नी, कालिदास नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार करता है—उ मेति (मोह, मत अब तपस्या न करें) मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्या सुमुखी जगाम—कु० १।२६, उमावधाङ्कौ—रघु० ३।२३ 2 प्रकाश, आभा 3 यश, ख्याति 4 शान्ति, प्रशान्तता 5 रात 6. हल्दी, 7 सन। सम०- -मुखः—अलकः हिमालय पर्वत (उमा का पिता होने के नाते), —पतिः शिव—मुहुरनुस्मरयत्नमनुजप त्रिपुरबाहुमुमापतिलेखिन —कि० ५।१४, इसी प्रकार °ईश, °वल्लभ, °सहाय, आदि,—सुतः कार्तिकेय या गणेश।

उम्भ (भृ) रः [उम्भ्+भृ+अच् पृषो०] तरना, द्वार की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी।

उरः [उर्+क] भेड़।

उरगः (स्त्री०—गी) [उरसा गच्छति, उरस्+गम्+ड, मलोपश्च] 1 सर्प, साँप अगुलीवोरगक्षता—रघु० १।२८, १२।५, ९१ 2 नाग या पुराणों में वर्णित मानव मुख वाला अर्धदिव्य साँप—देवगन्धर्वमानुषोरगराक्षसान्—भग० १।२८, मनु० ३।१९६ 3 सीसा,—वा एक नगर का नाम—रघु० ६।५९। सम०—अरिः —अशनः,—अशुः 1 गरुड़ (साँपों का शत्रु) 2. मोर, —इन्द्रः, राजः वासुकि या शेषनाग,—अधिवास (वि०) विवाह—मुद्रिका के स्थान में साँप रखने वाला,—भूषणः शिव (साँपों से सुभूषित),—सारङ्गजनकः,—स्थ एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—स्थानम् नागों का आवासस्थान अर्थात् पाताल।

उरङ्गः—मः [उरस्+गम्+डः, सलोपः, मुमागमश्च] साँप।

उरणः (स्त्री०—णी) [ऋ+क्यु, उरण, रपरत्वम्] 1. भेड़ा, मेढ़—बृकीवोरणमालाद्य मृत्युराद्य मक्षति—महा० 2. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार दिया था,—णी भेड़ी।

उरणकः [उरण+कन्] 1. भेड़ा, मेष 2. बादल।

उरसः [उरु उत्कटं गच्छति इति- उरु+अस्+ड पृषो० उत्वोपः] मेघ, मेष।

उररी (अव्य०) [उर्+अरीच् वा०] 1. सहमति या स्वीकृति बोधक अव्यय (इस अर्थ में यह शब्द कृ, भू और अस् धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है—तथा गतिलक्षक या उपसर्ग समझा जाता है, इसी लिए 'उररीकृत्य' न बनकर 'उररीकृत्य' बनता है, इस शब्द के रूपान्तर हैं—उरी, उररी, ऊरी और ऊररी) 2. विस्तार (उररीकृ [तना० उभ०] सहमति देना, अनुमति देना, स्वीकार करना—चिरं न कां काकुररीचकार —माघ० २।१३, शि० १०।१४)

उरस् (नपुं०—रः) [ऋ+असुन्, उत्व रपरत्व] छाती, वक्षःस्थल—व्यूढोरस्को वृषस्कन्ध—रघु० १।१३, कु० ६।५१, उरसि कृ छाती से लगाना। सम०—अन्तम् छाती की चोट,—अहः—आतः छाती का रोग, फेफड़े की झिल्ली की सूजन, प्लूरिसी,—आवः चोली, अँगिया, —आवरणम् कवच, सीनाकन्द—शि० १५।८०,—आः, —जूः, उरसिजः, उरसिजाः स्त्री की छाती, स्तन, —रेजाते रुचिरवृत्तावुरोजकुम्भौ—शि० ८।५३, २५, ५९, —भूषणम् छाती का आभूषण,—मुक्तिका मोतियों का हार जो छाती के ऊपर लटक रहा हो,—स्थलम् छाती, वक्षःस्थल।

उरसिल (वि०) [उरस्+इलच्] विशाल वक्षःस्थल वाला।

उरस्य (वि०) [उरस्+यत्] 1 औरस सन्तान 2 एक ही वर्ण के विवाहित दम्पती का पुत्र या पुत्री 3 उत्तम, —स्यः पुत्र।

उरस्वत् (वि०) [उरस्+मतुप्, मस्य वः] विशाल वक्षःस्थल वाला, चौड़ी छाती वाला।

उररी स्वीकृतिबोधक अव्यय—दे० उररी (उररीकृ अनुमति देना, अनुज्ञा देना, स्वीकृति देना—दत्तोररीकृत त्वया —मृच्छ० ८।११, रघु० १५।७० 2 अनुसरण करना, आश्रय लेना अयि रोषमुररीकरोषि नोचेत्—माघ० ११४४।

उरु (वि०) (स्त्री०—रु,—वी) तु० (वरीयस्, उ० व० वरिष्ठ) 1. विस्तृत, प्रशस्त 2 महान्, बड़ा—रघु० ६।७४ 3 अतिशय, अधिक, प्रचुर 4. श्रेष्ठ, मूल्यवान् कीमती। सम०,—कीर्ति (वि०) प्रख्यात, सुविख्यात —रघु० १४।७४,—क्रमः वामनावतार के रूप में विष्णु भगवान्,—क्रम (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा जिसका स्तुतिगान किया गया हो—अस्व० ६१,- मार्गः लम्बी सड़क,- विक्रम (वि०) पराक्रमी, बलशाली, —स्वन (वि०) ऊँची आवाज वाला, अत्युच्च शब्दकारी,—हारः मूल्यवान् हार।

उररी=उररी

उलूकः=उलूक ।

उर्णनाभः [उर्णेव सूत्रं नाभौ यस्येत्यस्य—ब० स०] मकड़ी, दे० ऊर्णनाभ ।

उर्णा [ऊर्ण्+अ ह्रस्व] 1 ऊन, नमदा या ऊनी कपड़ा 2 भौंहों के बीच केशवृत्त—दे० ऊर्णा ।

उर्वटः [उरु+अट्+अच्] 1 रक्षदा 2 वर्ष ।

उर्वरा [उरु शस्याविकमृच्छति—ऋ+अच्] 1 उपजाऊ भूमि—शि० १५।६६ 2 भूमि ।

उर्वशी [उरून् महतोऽपि अश्नुते वशीकरोति—उरु+अश्+क गौरा० ङीष्—द्वारा०] इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध अप्सरा जो पुरूरवा की पत्नी बनी, (उर्वशी का ऋग्वेद में बहुत उल्लेख मिलता है, उसकी ओर दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का वीर्य स्खलित हो गया—जिससे अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ [दे० अगस्त्य] मित्र और वरुण द्वारा शाप दिये जाने पर वह इस लोक में आई और पुरूरवा की पत्नी बनी, जिसको कि उसने स्वर्ग से उतरते हुए देखा था तथा जिसका उसके मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह कुछ समय तक पुरूरवा के साथ रही, परन्तु शाप की समाप्ति पर फिर स्वर्गलोक चली गई। पुरूरवा को उसके वियोग से अत्यन्त दुःख हुआ, परन्तु वह एक बार फिर उसे प्राप्त करने में सफल हो गया। उर्वशी से 'आयुस्' नाम का पुत्र पैदा हुआ—और फिर वह सदा के लिए पुरूरवा को छोड़ कर चली गई। *विक्रमोर्वशीय में दिया गया वृत्त कई बातों में भिन्न है, पुराणों में उसको नारायण मुनि की जंघा से उत्पन्न बताया गया है*) । सम०—रमण—वल्लभः—सहायः, पुरूरवा ।

उर्वारुः [उरु+ऋ+उप्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'इर्वारु' ।

उर्वी [ऊर्ण्+कु, नलोपः, ह्रस्वः, ङीष्] 1 'विस्तृत प्रदेश' भूमि—स्तोकमुर्व्यां प्रयाति—का० १।७, जुगोप गोरूपधराभिवोर्वीम् रघु० २।३, १।१४, ३०, ७५, २।६६ 2 पृथ्वी, धरती 3 खुली जगह, मैदान । सम०—ईशः,—ईश्वरः,—धवः, —पतिः राजा,—धरः 1 पहाड़ 2 शेषनाग,—भृत् (पुं०) 1 राजा 2 पहाड़, —रुहः वृक्ष—शि० ४।७ ।

उलपः [वल्+कपच्, संप्रसारणम्] 1 लता, बेल 2 कोमल तृण—गोगर्भिणीप्रियतमोलपमालजालरिसव्योपकण्ठविपिनालयो भवन्ति—मा० ९।२, शि० ४।८ ।

उलूप=दे० उलप ।

उलूक [वल्+ऊक सम्प्रसारणम्] 1 उल्लू—नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्—भर्तृ० २।९३, रमयति मुदमुलूक प्रीतिमाश्चक्रवाक —शि० ११।६४ 2 इन्द्र ।

उलूखलम् [ऊर्ध्वं खम् उलूखम्, पृषो० का+क] ओखली (जिसमें धान कूटे जाते हैं)—अवहननायोलूखलम् —महा०, मनु० ३।८८, ५।११७ ।

उलूखलकम् [उलूखल+कन्] खरल ।

उलूखलिक (वि०) [उलूखल+ठन्] खरल में पीसा हुआ ।

उलूपः [उल्+ऊपच्] अजगर, शिकार को सरोष कर मारने वाला विषहीन सर्प ।

उलूपी [?] नाग कन्या (यह कौरव्य नाग की पुत्री थी, एक दिन जब वह गंगा में स्नान कर रही थी, उसकी दृष्टि अर्जुन पर पड़ी। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गई, फलतः उसने अर्जुन को अपने घर पाताल लोक में लिवा लाने का प्रबन्ध किया। वहाँ पहुँचने पर उसने अर्जुन से अपने आपको पत्नीरूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे अर्जुन ने बड़े सकोच के साथ स्वीकार किया। 'इरावान्' नाम का एक पुत्र उलूपी से पैदा हुआ। जब बभ्रुवाहन के तीर से अर्जुन का सिर कट गया था तो उस समय उलूपी की सहायता से ही उसे पुनर्जीवन मिला) ।

उल्का [उद्+कक्+टाप्, वस्य लः] 1. आकाश में रहने वाला दाहक तत्त्व, लूक शि० १५।२१, मनु० १।३८ भाग० १।१४५ 2 जलती हुई लकड़ी, मशाल 3 अग्नि, ज्वाला—ऋग्वेद० ५३ । सम०—जातिन् (वि०) मशालधारी —पातः उल्कापिंड का टूट कर गिरना,—मुखः एक राक्षस या प्रेत (*अगिया बैताल*)—मनु० १२।७१, मा० ५।१३ ।

उल्मुकी [उल+कुक्+क+ङीष्] 1 केतु, उल्का 2 मशाल ।

उल्वम्,—क्वम् [उच+ब (व) न्, वस्य ल वम्] 1 भ्रूण 2 योनि 3 गर्भाशय ।

उल्व (व) ज (वि०) [उल्+ब (व) ज्+अच् पृषो०] 1 गाढ़ा, जमा हुआ पर्याप्त, प्रचुर (दधिर आदि) 2 अधिक, अतिशय, तीव्र - शि० १०।५४, कु० ७।८४ 3 दृढ़, बलशाली, बड़ा - शि० २०।४१ 4 स्पष्ट, साफ़—तस्यासीदुल्बणो मार्गः—रघु० ४।३६ ।

उल्मुकः [उद्+मुक्, वस्य मः] जलती लकड़ी, मशाल ।

उल्लङ्घनम् [उद्+लङ्घ्+ल्युट्] 1 छलांग लगाना, लांघना 2 अतिक्रमण, तोड़ना ।

उल्लल (वि०) [उद्+लल्+अच्] 1 डांवाडोल, कंपनशील 2 घने बालों वाला लोमश ।

उल्लसथुः [उद्+लस्+ल्युट्] 1 आनन्द, हर्ष 2 रोमांच ।

उल्लसित (भू० क० कृ०) [उद्+लस्+क्त] 1 चमकीला, उज्ज्वल, आभायुक्त 2 आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लाघ (वि०) [उद्+लाघ्+क्त] 1 रोग से मुक्त,

स्वास्थ्योन्मुख 2. दक्ष, चतुर, कुशल 3. सहित 4. आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लाप: [उद्+लप्+घञ्] 1 भाषण, शब्द,—मृता मयार्यपुत्रस्योल्लापा—उत्तर० ३ 2 अपमानजनक-शब्द, सोपालम्भ भाषण, उपालम्भ—खलोल्लापा. क्रोडा —भर्तृ० ३।६ 3. ऊँची आवाज से पुकारना 4 संवेग या रोग आदि के कारण आवाज में परिवर्तन 6 संकेत, सुझाव ।

उल्लाप्यम् [उद्+लप्+णिच्+यत्] एक प्रकार का नाटक—दे० सा० द० ५४५ ।

उल्लास: [उद्+लस्+घञ्] 1. हर्ष, खुशी—सोल्लास-मम् —उत्तर० ६, सकौतुकोल्लासम्—उत्तर० २, उल्लास कुल्लयकुड्मलप्रपटलप्रस्तारपुष्पन्धयानाम् —सा० द० 2 प्रकाश, आभा 3 (अल० शा० में) एक अल-कार—परिभाषा - अन्यद्वीयगुणदोषप्रयुक्तसम्पस्य गुण दोषयोराधानमुल्लास.—रस०, उदाहरणों के लिए दे०, रस०, या चन्द्रा० ४।१३१, १३३ 4 पुस्तक के प्रभाग-अध्याय, अनुभाग, पर्व, काण्ड आदि, जैसे कि काव्य के दस उल्लास ।

उल्लासनम् [उद्+लस्+णिच्+ल्युट्] आभा ।

उल्लिखित (वि०) [उद्+लिख्+क्त] प्रसिद्ध, विख्यात ।

उल्लीढ (वि०) [उद्+लिह्+क्त] रगड़ा हुआ, जिला किया गया—मणि शाणोल्लीढ —भर्तृ० २।४४ ।

उल्लुञ्चनम् [उद्+लुञ्च्+ल्युट्] 1 तोड़ना, काटना —पादकेशाम्बुकरोल्लुञ्चनपु पलाम् दश (दम) —याज्ञ० २।२१७ 2 बालों को नोचना, उखाड़ना ।

उल्लुण्ठनम् - उल्लुण्ठा [उद्+लुण्ठ्+ल्युट्, अ वा] व्याख्यात्मक - धीरा-धीरा तु सोल्लुण्ठभाषणै खेदयेद-मुम् —सा० द० १०५—सोल्लुण्ठनम्-- व्यङ्ग्यपूर्वक, नाटकों में प्राय मञ्चनिर्देश के रूप में प्रयुक्त ।

उल्लेख. [उद्+लिख्+घञ्] 1 संकेत, जिक्र 2 वर्णन उक्ति 3 खुराच करना, खुदाई 4 (अल० शा० में) एक अलकार -बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते, स्त्रीभि कामोऽभिभि ' स्वर्गे काल शत्रुभिरेति स —चन्द्रा० ५।१९, सु०, सा० द० ६८२ 5 रगड़ना, खुरचना, फाड़ना, - खुरमुल्लेखल-का० १९१, कुट्टिम० २३२ ।

उल्लेखनम् [उद्+लिख्+ल्युट्] 1 रगड़ना, खुरचना, छीलना आदि 2 खोदना--याज्ञ० १।१८८, मनु० ५।१२४ 3 वमन करना 4 जिक्र, संकेत 5 लेख, चित्रण ।

उल्लोच: [उद्+लोच्+घञ्] बितान या शामियाना चदोवा,तिरपाल ।

उल्लोल (वि०) [उद्+लोड्+घञ्, डस्य लत्वम्] उठता चंचल, आवेश कंपनशील—मा० ५।३,—पुं० एक बड़ी लहर या तरंग ।

उल्व, उल्वय—दे० उल्व, उल्वय ।

उशनस् (पुं०) [वश्+कनसि—डित्०] (कर्तृ०, ए० व०—उशना, संबो० ए० व० उशनन्, उशन, उशनः) शुक्र-ग्रह का अधिष्ठातृ देवता, भृगु का पुत्र, राक्षसों का गुरु, वेद में इनका नाम 'काव्य' समझा इनकी बुद्धिमत्ता की ख्याति के कारण मिलता है—पु० कवी-नामुशना कविः; ऋग्० १०।३७, ये गृह्य व धर्मशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं—याज्ञ० १।४, नागरिक राज्य व्यवस्था पर भी यह प्रमाणस्वरूप समझे जाते हैं—शास्त्रमुशनसा प्रणीतम्—पञ्च० ५, अध्यापितस्योशन-सापि नीतिम्—कु० ३।६ ।

उशी [वश्+ई, सम्प्र०] कामना, इच्छा ।

उशीर (ती) र:,—रम्, उशी (शी) रकम् [वश्+ईरन्, कित्, सम्प्र०, उश्+कीरच् वा, स्वार्थे कन् च] वीरण-मूल, खस—स्तनन्यस्तोशीरम्—श० ३।९ ।

उष् (ष्यति-पर०) (ओषति, ओषित-उषित-उष्ट) 1 जलाना, उपकोल करना, जलाना,—ओषांचकार कामाग्निसंज्ञ-वडवमहर्निशम्—भट्टि० ६।१, १४।६२, मनु० ४।१८९ 2 दग्ध देना, पीटना—दण्डेनैव तमप्योषेत्—मनु० ९।२७३ 3 मार डालना, चोट पहुँचाना ।

उष: [उष्+क] 1 प्रभात काल, पौ फटना 2. सम्पट 3 रिहाली धरती ।

उषकम् [उष्+क्युट्] 1 काली मिर्च 2. अदरक ।

उषस: [उष्+कपन्] 1 अग्नि 2. सूर्य ।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] 1. पौ फटना, प्रभात—प्रती-पार्चिरिवोषसि—रघु० १२।१, उषसि उषसि—प्रभात काल में उठकर 2. प्रात कालीन प्रकाश 3 सायंकाल-लीन (प्रात और साय) अधिष्ठातृदेवी (द्वि० व० में प्रयोग) । सौ दिन का अवसान, सायंकालीन सन्ध्या । सम०- बन्धु: अग्नि—उत्तर० ६ ।

उषा [ओषत्यन्धकारम्—उष्+क] 1. प्रभात काल, पौ फटना 2 प्रात कालीन प्रकाश 3. सन्ध्या 4. रिहाली धरती 5 हरदी, बटलोही 6. बाण राक्षस की पुत्री तथा अनिरुद्ध की पत्नी [उषा ने अनिरुद्ध को स्वप्न में देखा, और उस पर मोहित हो गई । उसने अपनी सखी चित्रलेखा की सहायता माँगी—चित्रलेखा ने उसे परामर्श दिया कि वह आस पास रहने वाले सभी राजकुमारों के चित्र अपने साथ ले ले । अब ऐसा किया गया, तो उसने अनिरुद्ध को पहचान लिया और उसे अपने नगर में लिवा ले गई, जहाँ कि उसका अनिरुद्ध से विवाह हो गया—दे० 'अनिरुद्ध' भी) । सम०- ईश: उषा का स्वामी अनिरुद्ध,—काल: मुर्गा, —पति:,—रमण: अनिरुद्ध, उषा का पति ।

उषित (वि०) [वस् (उष्)+क्त] 1. बसा हुआ 2 जला हुआ।
उषीर=दे० उशीर।
उष्ट्र: [उष्+ट्रन्, कित्] 1 ऊँट,—अयोष्ट्रवाजीशतवाहिताध्वम्—रघु० ५।३२, मनु० ३।१६२, ४।१२०, ११। २०२ 2. बैंगन 3. कफुआत् साँड,—स्त्री ऊँटनी।
उष्ट्रिका [उष्ट्र+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 ऊँटनी 2 ऊँट की शक्ल की मिट्टी की बनी मदिरा रखने की सुराही —शि० १२।२६।
उष्ण (वि०) [उष्+नक्] 1 तप्त, गर्म—°अम्बु, °कर आदि 2 तीक्ष्ण, स्फुर, फुर्तीला—आददे नातितीक्ष्णोष्णो नभस्वानिव दक्षिण —रघु० ४।८, (यहाँ 'उष्ण' का अर्थ 'गर्म' भी है) 3 रिक्त, तीक्ष्ण, चरपरा 4 चतुर, प्रवीण 5 क्रोधी,—ष्णः, -ष्णम् 1 ताप, गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु 3 धूप। सम०—अंशुः,—करः,—द्युतिः, —रश्मिः,—रुचिः गर्म किरणों वाला, सूर्य—रघु० ५।४ ८।३०, कु० ३।२५—अधिगमः,—आगमः,—उपगमः गर्मी का निकट आना, ग्रीष्म ऋतु,—उदकम् गर्म या तप्त पानी,—आलः,—ः गर्म ऋतु—आलुः। 1 आँसू 2 गर्म भाप,—वारणः—णम् छाता छतरी,—यदर्थमम्भोजमिवोष्णवारणम्,—कु० ५।५२।
उष्णक (वि०) [उष्ण+कन्] 1 तेज, फुर्तीला, सक्रिय 2 ज्वरग्रस्त, पीड़ित 3. गर्मी पहुँचाने वाला, गर्म करने वाला,—कः 1 ज्वर 2 निदाघ, ग्रीष्म ऋतु।
उष्णालु (वि०) [उष्ण+आलुच्] गर्मी न सह सकने योग्य, दग्ध, सन्तप्त,—उष्णालु शिशिरे निषीदति तरोर्मूलालबाले शिखी—विक्रम० २।२३।
उष्णिका [अल्प+कन्, नि० उष्ण आदेश, टाप्+इत्वम्] साँड।
उष्णिमन् (पु०) [उष्ण+इमनिच्] गर्मी।
उष्णीष,—**षम्** [उष्णीयते हिनस्ति—इष्+क नारा०] 1 जो सिर के चारों ओर बाँधी जाय 2 पगड़ी, साफा, शिरोवेष्टन, मुकुट—बलाकापाण्डुरोष्णीषम् —मृच्छ० ५।१९ 3 प्रमेदक चिह्न।
उष्णीषिन् (वि०) [उष्णीष+इनि] शिरोवेष्टन पहने हुए या राजमुकुट धारण किए हुए—का० २२९—(पु०) शिव।
उष्म,—**ष्मन्**: [उष्+मक्, कन् च] 1 गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु 3. क्रोध 4 सरगरमी, उत्सुकता, उत्कण्ठा। सम०—सन्तप्त (वि०) क्रुद्ध, —सह (पु०) सूर्य, —स्नेह. वफारा, भाप से स्नान।
उष्मन् (पु०) [उष्+मनिन्] 1 ताप, गर्मी—अर्कोष्मन् —भर्तृ० २।४०, मनु० ९।२३१, २।२३, कु० ५।४६, ७।१४ 2 वाष्प, भाप—कु० ५।२३ 3 ग्रीष्म ऋतु 4 सरगरमी, उत्सुकता 5 (व्या० में), श् ष् स् और ह् अक्षर दे० 'ऊष्मन्'।
उष्र [वस्—रक्, सम०] 1 (प्रकाश की) किरण, रश्मि —सर्वेरस्रं समर्थैस्त्वमिव नृपगुणैर्व्याप्यते सप्तसप्ति —मालवि० २।१३, रघु० ४।६६ कि० ५।३१ 2 साँड 3 देवता,—स्रा 1 प्रभात काल, पौ फटना 2 प्रकाश 3 गाय।
उह् (स्वा० पर०) (ऊहति, ऊहित) 1 चोट मारना, पीड़ित करना 2 मार डालना, नष्ट करना—अप या आप के साथ—दे० 'ऊह्'।
उह, उहह (अव्यय०) बुलाने या पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।
उहुः [वह्+रक् सम०] साँड।

ऊ

ऊ [अवतीति—अव्+क्विप् ऊठ्] 1 शिव, 2 चन्द्रमा —(अव्यय०) 1 आरम्भ-सूचक अव्यय 2 (क) बुलावा (ख) करुणा (ग) तथा सरक्षा को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।
ऊढ (वि०) [वह्+क्त सम०] 1. ढोया गया, ले जाया गया (बोझा आदि) 2 लिया गया 3 विवाहित,—ढः विवाहित पुरुष,—ढा विवाहिता लड़की। सम०—कवच (वि) कवचधारी,—भार्य (वि०) जिसने विवाह कर लिया है,—वयस् नवयुवक।
ऊढिः (स्त्री०) [वह्+क्तिन्] विवाह।
ऊतिः (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] 1 बुनना, सीना 2. सरक्षा 3 उपयोग 4 जोड़ा, जोड़।
ऊधस् (नपु०) [उन्द्+असुन्, ऊध आदेश] ऐन, औडी (बहुव्रीहि समास में बदल कर 'ऊधस्' हो जाता है)।
ऊधस्य, ऊधस्यम् [ऊधस् (न्)+यत्] दूध (औडी से उत्पन्न) ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुम्—रघु० २।६९।
ऊन (वि०) [ऊन्+अच्] 1 अभावग्रस्त, अधूरा, कम —किंचिदूनमनूनार्घं. शरदामयुतं यतौ—रघु० १०।१ अपूर्ण अपर्याप्त 2 (संख्या, आकार या अंश में) अपेक्षाकृत कम—ऊनद्विवर्षं लिखनेत्—याज्ञ० ३।१, दो वर्ष से कम आयु का 3 अपेक्षाकृत दुर्बल, घटिया—ऊन न सत्वेष्वधिको बभासे—रघु० २।१४ 4. घटा कर (संख्याओं के साथ इसी अर्थ में) **ऊनविंशः**=एक घटा कर,—°**विंशतिः** एक घटाकर बीस=१९।

ऊम् (अव्य०) [ऊय्+मुक्] (क) प्रसन्नतासूचकता (ख) क्रोध (ग) भर्त्सना, दुर्वचन (घ) धृष्टता और (ङ) ईर्ष्या को प्रकट करने वाला विस्मयादिबोधक अव्यय।

ऊय् (स्वा० आ०) (ऊयते, ऊत) बुनना, सीना।

ऊररी=दे० उररी।

ऊरुजः (स्त्री० - जा) [ऊरु+जन्] वैश्य, तृतीय वर्ण का पुरुष (ब्रह्मा या पुरुष की जंघाओं से पैदा होने के कारण) तु०, मनु० १।३१, ८७।

ऊरुः (पु०) [ऊर्णु+कु, नुलोप] 1. जंघा—ऊरू तदस्य यद्वैश्यः—ऋक् १०।९०।१२। सम०—अस्थीलम् जंघा और घुटना,—उद्भव (वि०) जंघा से उत्पन्न-विक्रम० १।३,—ज, —जातम्, —संभव (वि०) जंघा से उत्पन्न—(पु०) वैश्य,—दघ्न,—द्वयम्,—मात्र (वि०) जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक,—मर्मन् (पु०) (नपु०) घुटना,—शालकम् जांघ की हड्डी, कूल्हे की हड्डी।

ऊरी=दे० उररी।

ऊर्क् (स्त्री०) [ऊर्ज्+क्विप्] 1 सामर्थ्य, बल 2 सत्त्व, भोजन।

ऊर्ज् [ऊर्ज्+णिच्+अच्] 1. कार्तिक का महीना- शि० ६।५० 2 स्फूर्ति 3 शक्ति, सामर्थ्य 4 प्रजननात्मक शक्ति 5. जीवन, प्राण,—र्जा 1 भोजन, 2 स्फूर्ति 3 सामर्थ्य, सत्त्व 4 वृद्धि।

ऊर्जस् (नपु०) [ऊर्ज्+असुन्] 1 बल, स्फूर्ति 2 भोजन।

ऊर्जस्वत् (वि०) [ऊर्जस्+मतुप्] 1 भोज्य-समृद्ध, रसीला 2 शक्तिशाली।

ऊर्जस्वल (वि०) [ऊर्जस्+वलच्] बड़ा, शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर—रघु० २।९०, भट्टि० ३।५५।

ऊर्जस्विन् (वि०) [ऊर्जस्+विन्] ताकतवर, दृढ़, बड़ा।

ऊर्जित (वि०) [ऊर्ज्+क्त] 1. शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर--मातृकं च धनुर्ज्यिनं दधत् - रघु० ११।६४, बलशाली, दृढ़ (आघी)-शि० १६।३८ 2 पूज्य, बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर—°श्री -- शि० १६।८५, अकरोज्जित केतनम् रघु० ९।३९ 3 उच्च, मध्य, तेजस्वी—°आशयं वच —कि० २।१ जोशीला या शानदार,—तम् 1 सामर्थ्य, ताकत 2 स्फूर्ति।

ऊर्णम् [ऊर्ण्+ड] 1 ऊन 2 ऊनी वस्त्र। सम०—नाभः, —नाभिः,— पटः मकड़ी—प्रभ, —वस्त्र—(वि०) ऊन की भांति नरम।

ऊर्णा [ऊर्ण+टाप्] 1. ऊन—रघु० १६।८७ 2 भौंहों का मध्यवर्ती केशपुंज। सम०—पिंडः ऊन का गोला।

ऊर्णायु (वि०) [ऊर्णा+यु] ऊनी,—युः 1 मेंढा 2 मकड़ी —भाव० १।९० 3 ऊनी कंबल।

ऊर्ण्ु (अदा० उभ०) (ऊर्णोति(र्णौति), ऊर्णुते ऊर्णित) ढकना, भरना, छिपाना—भट्टि० १४।१०३, वि० २०।१४ (प्रेर०) अवर्णयति, (इच्छा०) ऊर्णुनूर्षति, उर्णुन—नु —विवर्ति; न—ढकना, छिपाना आदि।

ऊर्ध्व (वि०) [ऋध्+हा+क पृषो० ऊर् आदेशः] 1 सीधा, खड़ा, ऊपर का, °केश आदि, ऊपर की ओर उठता हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, सीधा खड़ा —°हस्त, °पाद आदि 3. ऊँचा, बढ़िया, अपेक्षाकृत ऊँचा या ऊपर का 4. खड़ा हुआ (विप० आसीन) 5 फटा हुआ, टूटा हुआ (बाल आदि),—र्ध्वम् उन्नतता, ऊँचाई,—र्ध्वम् (अव्य०) 1 ऊपर की ओर, ऊँचाई पर, ऊपर 2 बाद में (=उपरिष्टात्) 3. ऊँचे स्वर से, ज़ोर से 4. बाद में, पश्चात् (अपा० के साथ) —ते त्र्यहादूर्ध्वमाख्याय—कु० ६।९३, रघु० १४।६६। सम०—केश, —केश (वि०) 1. खड़े बालों वाला 2. जिसके बाल टूट गये हों (—शः) केतु,—कर्मन् (नपु०) —क्रिया 1 ऊपर की गति 2. ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा (-पु०) विष्णु,—काय:,—कायम् शरीर का ऊपरी भाग, - गः,—गामिन् (वि०) ऊपर जाने वाला, चढ़ा हुआ, उठता हुआ,—गति (वि०) ऊपर की ओर जाने वाला (स्त्री० --तिः) —गमः,—गमनम् 1 चढ़ाव, उन्नतता 2 स्वर्ग में जाना,— चरण,—बाहु (वि०) ऊपर को पैर किये हुए (—हुः) चरक नाम का एक काल्पनिक जन्तु,—जानु,—ज्ञ,—जु (वि०) 1 घुटने उठाये हुए, पुट्ठों के बल बैठा हुआ—शि० ११।११ 2. उकड़ू बैठा हुआ,— दृष्टि,—नेत्र (वि०) 1 ऊपर को देखता हुआ 2. (आल०) उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी (स्त्री०—ष्टिः) भौंहों के बीच में अपनी दृष्टि को संकेन्द्रित करना (यो० द०),—देहः अन्त्येष्टि संस्कार,—पातनम् ऊपर चढ़ाना, परिष्करण (जैसे पारे का),—पाशम् यज्ञीय पाश-याज्ञ० १।१८२, —मुख (वि०) ऊपर को मुंह किये हुए, उन्मुख - कु० १।१६, रघु० ३।५७,—मौहूर्तिक (वि०) थोड़ी देर के पश्चात् होने वाला,— रेतस् (वि०) अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्त्री-संभोग से सदैव विरत रहने वाला,-(पु०) 1. शिव 2. भीष्म, लोकः ऊपर की दुनिया, स्वर्ग,—वस्त्रम् (पु०) पर्यावरण,—वातः, - वायुः शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु,—शायिन् (वि०) ऊपर को मुंह (मुर्दे की भांति) करके चित सोया हुआ—(पु०) शिव,—श्वासनम् वमन करना,—श्वासः सांस छोड़ना, प्राण त्यागना,—स्थितिः (स्त्री०) 1 अटल पालन 2 घोड़े की पीठ 3 उच्चतता, श्रेष्ठता।

ऊर्मिः (पु०, स्त्री०) [ऋ+मि, ऊर्तेरुच्च] 1. लहर, झाल— पयोवेगवत्यावर्तोर्मिभिः—शेष० २४ 2. धारा प्रवाह 3. प्रकाश 4. गति, वेग 5. वस्त्र की सिलवट या चुन्नट 6. पंक्ति, रेखा 7. कष्ट, वेदनी, चिन्ता।

सम०—आलिन् (वि०) ऊसर मालाओं से विभूषित —(पुं०) समुद्र ।

ऊर्मिका [ऊर्मि+कन्+टाप्] 1 लहर 2 अंगूठी (लहर की भांति चमकीली) 3. सेंद, खोई वस्तु के लिए शोक 4 अक्षी का झिल्लीमाला 5 वस्त्र में पड़ी शिकन या चुन्नट ।

ऊर्ध्व (वि०) [ऊर्ध्व+अ] विस्तृत, बड़ा,—ध्वं बड़वानल ।

ऊषरज [ऊषे सस्यादिकमुप्यते—ऊष+अच्+टाप्] उपजाऊ भूमि ।

ऊलूखिन् [दे० उलूखिन्] शिंशुक, सूंस ।

ऊलूक=दे० उलूक ।

ऊष् (स्वा० पर०) (ऊषति) रुग्ण होना, अस्वस्थ होना, बीमार होना ।

ऊषः [ऊष्+क] 1 रिहाली धरती 2 अम्ल 3 दरार, सरेड़ 4 कर्णविवर 5 मलय पर्वत 6 प्रभात, पौ फटना, कुछ लोगों के मतानुसार (—अस्) भी ।

ऊषकाल [ऊष+कन्] प्रभात, पौ फटना ।

ऊषखनम्—खा [ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 काली मिर्च, 2 अदरक ।

ऊषर (वि०) [ऊष्—रा+क] नमक या रेहकणों से युक्त,—रः, —रम् बंजर भूमि जो रिहाल हो—शि० १४।४६ ।

ऊषवत्=दे० (वि०) ऊषर ।

ऊष्मन् [ऊष्+मक्] 1 ताप 2 ग्रीष्म ऋतु ।

ऊष्मज, —ज्य (वि०) [ऊष्मन्+न] [ऊष्मन्—यत्] गर्म, भाप निकालने वाला ।

ऊष्मन् (पुं०) [ऊष्+मनिन्] 1 ताप, गर्मी 2 ग्रीष्म-ऋतु, निदाघ 3 भाप, वाष्प, उच्छ्वास 4 सरगरमी जोश, प्रचण्डता 5 (व्या० में) श्, ष्, स् और ह् की ध्वनियाँ । सम०—आगमः ग्रीष्म ऋतु का आगमन, —पः 1 अग्नि 2. पितरों की (ब० व० में) एक श्रेणी ।

ऊह् (स्वा० उभ०) (ऊहति—ते, ऊहित) 1 टोकना, अंकित करना, अवेक्षण करना 2 अटकल लगाना, अंदाज करना, अनुमान लगाना—अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः—पञ्च० १।४३ 3 समझना, सोचना, पहचानना, आशा करना—ऊहाञ्चक्रे जयं न च—भट्टि० १४।७२ 4 तर्क करना, विचार करना—(प्रेर०) तर्क या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना —कि० १६।१९, अप—, 1 हटाना, दूर करना—स हि विज्ञानपोहति—शि० ३।१ 2 तुरन्त अनुकरण करना, अपवि—, रोकना, हटाना, अभि—, अटकल लगाना अंदाज लगाना 2 ढकना, उप—, निकट लाना, निर्वि—, सम्पन्न करना, प्रकाशित करना (दे० निर्व्यूढ) परिऊह्—, इधर-उधर छिड़कना, प्रति—, 1 विरोध करना, बाधा डालना, हकावट डालना 2 मुकरना (दे० प्रत्यूह) प्रतिवि—, शत्रु के विरुद्ध सैनिक मोर्चा लगाना, वि—, युद्ध के अवसर पर सेना की व्यवस्था करना—सूच्या वज्रेण वैदेतान् व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् —मनु० ७।१९१, सम्—, एकत्र करना, इकट्ठे होना ।

ऊहः [ऊह्—घञ्] 1 अटकल, अंदाज 2 परीक्षण, निर्धारण 3 समझ-बूझ 4 तर्कना, युक्ति देना 5 अभ्याहार (न्यूनपद की पूर्ति) करना । सम०—अपोहः पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियों पर पूरा सोच-विचार, —भामि० २।७४ दे० 'अपोह' ।

ऊहनम् [ऊह्+ल्युट्] अनुमान लगाना, अटकलबाजी ।

ऊहनी [ऊहन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी ।

ऊहिन् (वि०) [ऊह्+इनि] तर्क करने वाला, अनुमान लगाने वाला,—नी 1 सघात, समूह 2 क्रम, क्रमबद्ध समुदाय (तु० 'अक्षौहिणी')

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) बुलाना (ख) परिहास और (ग) निन्दा या अपशब्दव्यंजक विस्मयादिबोधक अव्यय ।

ऋ I (स्वा० पर०) (ऋच्छति ऋत—प्रेर० अर्पयति, इच्छा० अरिरिषति) 1 जाना हिलना-डुलना—अवस्थायामच्छामृच्छति—शि० ४।४४ 2 उठाना, उन्मुख होना ।

II (जु० पर०) (इर्यति, ऋत) (बहुधा वेद में प्रयुक्त) 1 जाना 2. हिलना-डुलना, डगमग होना 3 प्राप्त करना, अवाप्त करना, अधिगत करना, भेंट होना, 4 चलायमान करना, उत्तेजित करना ।

III (स्वा० पर०) (ऋणोति, ऋण) 1 चोट पहुँचाना, घायल करना 2 आक्रमण करना—प्रेर०—(अर्पयति, अर्पित) 1 फेंकना, डालना, स्थिर करना या जमाना —रघु० ८।८७ 2 रखना, स्थापित करना, स्थिर करना, निर्देश देना या (आँख आदि का) फेरना 3 रखना, सम्मिलित करना, देना, बैठा देना, जमा

देना 4. सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, हवाले कर देना—इति सूत्रस्थाधरणाय्यर्पयति मा० १।४, १९।

ऋक्ष (वि०) [अश्च+क्त पृषो० अलोप.] घायल, क्षत-विक्षत, आहत।

ऋक्थम् [ऋच्+थक्] 1 धन-दौलत 2 विशेषकर सम्पत्ति, हस्तगत सामग्री या सामान (मृत्यु हो जाने पर छोड़ा हुआ), दे० 'रिक्थ' 3. सोना। सम०—ग्रहणम् प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (सम्पत्ति) पाना,—ग्राहः उत्तराधिकारी या सम्पत्ति का प्राप्तकर्ता, —भाजः 1 सम्पत्ति का बँटवारा, विभाजन 2. भाग, दाय, —भाजिन्,—हर,—हारिन् (पु०) 1 उत्तराधिकारी 2 सह उत्तराधिकारी।

ऋक्षः [ऋच्+स किच्च] 1 रीछ—मनु० १२।६७ 2 पर्वत का नाम,—क्षः, —क्षम् 1 तारा, तारकपुंज, नक्षत्र—मनु० २।१०१ 2 राशिमाला का चिह्न, राशि,—क्षाः (पु०-ब० व०) कृत्तिका-मण्डल के सात तारे, जो बाद में सप्तर्षि कहलाये—रघु० १२।२५, —क्षा उत्तर दिशा,—क्षी रीछनी, मादा भालू। सम०—चक्रम् तारामंडल,—नाथ,—ईशः 'तारों का स्वामी' चन्द्रमा,—मेजिः विष्णु,—राज्,—राजः 1 चन्द्रमा 2 रीछों का स्वामी, जांबवान्,—हरीश्वरः रीछों और लंगूरों का स्वामी रघु० १३।७२।

ऋक्षरः [ऋच्+क्सरन्] 1 ऋत्विज् 2 काँटा।

ऋक्षवत् [ऋक्ष+मतुप्-मस्य व] नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड़,—वप्रक्रियापरिचयसटेषु—रघु० ५।४४, ऋक्षवन्तं गिरिश्रेष्ठमभ्यासे नर्मदां पिबन्—रामा०।

ऋच् (तुदा० पर०) (ऋचति) 1 प्रशंसा करना, स्तुति गान करना 2 ढकना, पर्दा डालना 3. चमकना।

ऋच् (स्त्री०) [ऋच्+क्विप्] 1 सूक्त 2 ऋग्वेद का मंत्र, ऋचा (विप० यजुस् और सामन्) 3 ऋक्संहिता (ब० व०) 4 दीप्ति ('रुच्' के लिए) 5 प्रशंसा 6 पूजा। सम०—विधानम् ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करके कुछ संस्कारों का अनुष्ठान,—वेदः चारों वेदों में सबसे पुराना वेद, हिन्दुओं का आप्त पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ,—संहिता ऋग्वेद के सूक्तों का क्रमबद्ध संग्रह।

ऋचीषः [ऋच्+ईषन्] मछली,—षम् कड़ाही।

ऋच्छ् (तुदा० पर०) (ऋच्छति) 1 कड़ा, या सख्त होना 2 जाना 3 क्षमता का न रहना।

ऋच्छना [ऋच्छ+कन्+टाप्] कामना, इच्छा।

ऋज् । (स्वा० आ०) (अर्जते, ऋजिन) 1 जाना 2 प्राप्त करना, हासिल करना 3 खड़े होना या स्थिर होना 4 स्वास्थ्य या हृष्ट-पुष्ट होना।

ii) (भ्वा० पर०) अर्जन करना, उपार्जन करना, तु० 'अर्ज्'।

ऋजीष—दे० 'ऋजीष'।

ऋजु, ऋजुक (वि०) [अर्जयति गुणान्, अर्ज्+उ] (स्त्री० —जु-जी) (म० अ०—ऋजीयस्, उ० अ० ऋजिष्ठ) 1. सीधा (आल० भी)—उभौ स पश्यन् ऋजुनैव चक्षुषा —कु० ५।३२ 2 खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—यच० १।४१५ 3 अनुकूल, अच्छा। सम०—कः 1 व्यवहार में ईमानदार 2 तीर,—रोहितम् इन्द्र का सीधा बाल धनुष।

ऋजुनी [ऋजु+ङीष्] 1. सीधीसादी सरल स्त्री 2. तारों की विशेष गति।

ऋणम् [ऋ+क्त] 1 कर्जा (तीनों प्रकार का ऋण, दे० अनृण), त्रीणि ऋणं (पितृणम्) पितरों को दिया जाने वाला अन्तिम ऋण—अर्थात्—पुत्रोत्पादन 2 कर्तव्यता, दायित्व 3 (बीजग० में) नकारात्मक चिह्न या परिमाण, घटा-चिह्न (विप०-धन) 4. किला, दुर्ग 5 पानी 6 भूमि। सम०—अन्तकः मंगल ग्रह,—अपनयनम्,—अपनोदनम्,—अपाकरणम्,—हानम्, —मुक्तिः, —मोक्षः,—मोचनम् ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,—आदानम् कर्जा वसूल करना, उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना,—ऋणम् (ऋणार्थम्) एक कर्ज के लिए दूसरा कर्ज, एक ऋण चुकाने के लिए दूसरा ऋण ले लेना,—ग्रह 1 रुपया उधार लेना 2 उधार लेने वाला,—दातृ,—दायिन् (वि०) जो ऋण दे देता है,—दासः वह क्रीत दास जिसका ऋण परिशोध करके उसे लिया गया है—ऋणशोधनेन दास्यत्वमभ्युपगत ऋणदास—सिता०,—मुक्त, —मार्गणः प्रतिभूति, जमानत—मुक्त (वि०) ऋण से मुक्त,—मुक्तिः आदि दे० 'ऋणापनयनम्',—लेखनम् 'ऋण-बन्धपत्र' तमस्सुक जिसमें ऋण की स्वीकृति दर्ज हो (विधि में)।

ऋणिकः [ऋण+ठन्] कर्जदार याज्ञ० २।५६, ९३।

ऋणिन् (वि०) [ऋण+इनि] कर्जदार, ऋणग्रस्त, अनुगृहीत (किसी भी बात से)।

ऋत (वि०) [ऋ+क्त] 1 उचित सही 2 ईमानदार, सच्चा—भग० १०।१४ 3 पूजित, प्रतिष्ठा प्राप्त —तम् (अव्य०) सही ढंग से, उचित रीति से,—तम् (लौकिक साहित्य में इसका प्रयोग प्रायः नहीं मिलता) 1. स्थिर और निश्चित नियम, विधि (धार्मिक) 2. पावन प्रथा 3 दिव्य नियम, दिव्य सचाई 4 जल 5. सचाई, अधिकार 6 खेतों में उञ्छवृत्ति द्वारा जीविका (विप० कृषि), ऋतमुञ्छशिलं वृत्तम्—मनु० ४।४। सम०—भाज् (वि०) सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला,—(पु०) विष्णु।

ऋतीया [ऋत+ईयङ्+टाप्] निन्दा, भर्त्सना।

ऋतु [ऋ+तु, किच्च] 1. मौसम, वर्ष का एक भाग, ऋतुएँ

गिनती में छः हैं—शिशिरश्च वसन्तश्च ग्रीष्मो वर्षा शरद्धिमः—कभी कभी ऋतुएँ पाँच समझी जाती हैं (शिशिर और हिम या हेमन्त एक गिने जाने पर) 2 प्रारम्भ, निश्चित काल 3 आर्तव, ऋतुस्राव, माहवारी 4. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल—वरं नृतवु नैवाधिशयनम्—पञ्च० १, मनु० ३।४६, याज्ञ० १।११ 5. उपयुक्त मौसम या ठीक समय 6 प्रकाश, आभा 7 छ की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—काल,—समयः,—वेला 1 गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें, दे० उ० ऋतु 2 मौसम की अवधि,—कर ऋतुओं का समुदाय,—गामिन् (गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय पर अर्थात् मासिकधर्म के पश्चात्) स्त्री से संभोग करने वाला,—पर्ण अयोध्या के एक राजा का नाम, अयुतायु का पुत्र, इक्ष्वाकु की संतान, (अपना राज्य छिन जाने पर निषध देश का राजा नल जब आपद्ग्रस्त हुआ तो वह राजा ऋतुपर्ण की सेवा में आया। द्यूतक्रीडा में बड़ा कुशल था। अतः उस राजा ने नल से द्यूतक्रीड़ा सीखी तथा बदले में उसे अश्वसंचालन का काम सिखाया। फलतः इसी की बदौलत राजा ऋतुपर्ण, इसके पूर्व कि दमयन्ती अपना दूसरा पति चुनने के विचार को कार्य में परिणत करे, नल को कुण्डिनपुर पहुँचाने में सफल हुआ),—पर्ययः,—वृत्ति ऋतुओं का आना-जाना, —मुखम् ऋतु का आरम्भ या पहला दिन —राजः वसन्त ऋतु,—लिङ्गम् 1 रजःस्राव का लक्षण या चिह्न (जैसे की वसन्त ऋतु में आम के बौर आना) 2 मासिक स्राव का चिह्न, —संधिः दो ऋतुओं का मिलन,—स्नाता रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके निवृत्त हुई, और इसीलिए संभोग के लिए उपयुक्त स्त्री—धर्मलोपभयाद्राज्ञोऽनृतुस्नातामिमां स्मरन्—रघु० १।७६, —स्नानम् रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना।

ऋतुमती [ऋतु+मतुप्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

ऋते (अव्य०) सिवाय, बिना (अपा० के साथ)—ऋते कौर्यात्तमायात —भट्टि० ८।१०५ अवेहि मां प्रीतमृते तुरङ्गमात्—रघु० ३।६३ पापादते—श० ६।२२, कु० १।५१, २।५७, (कभी-कभी कर्म० के साथ) ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे—भग० ११।३२ (करण० के साथ विरल प्रयोग)।

ऋत्विज् (पु०) [ऋतु+यज्+क्विन्] यज्ञ के पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज—होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा हैं, बड़े २ संस्कारों में ऋत्विजों की संख्या १६ तक होती है।

ऋद्ध (भू० क० कृ०) [ऋध्+क्त] 1 सम्पन्न, फलता-फूलता, धनवान्—रघु० १४।३०, २।५०, ५।४० 2 वृद्धि-प्राप्त, वर्धमान 3 जमा किया हुआ (अन्नादिक), —द्धः विष्णु—द्धम् 1 वृद्धि, विकास 2 प्रचुरता, उपहार, स्पष्ट परिणाम।

ऋद्धि (स्त्री०) [ऋध्+क्तिन्] 1 विकास, वृद्धि 2 सफलता, सम्पन्नता, बहुतायत 3 विस्तार, विस्तृति, विभूति 4 अतिप्राकृतिक शक्ति, सर्वोपरिता 5 समृद्धता।

ऋध् (दिवा० स्वा० पर०) (ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध) 1 सफल होना, समृद्ध होना, फलना-फूलना, सफल होना 2 विकसित होना, बढ़ना (आल० भी) 3 संतुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, मनाना—मा० ५। २९, सम्—फलना-फूलना।

ऋभुः [अरि स्वर्गं अदितौ वा भवति इति -ऋ+भू+डु] देवता, दिव्यता, देव।

ऋभुक्षः [ऋभवो देवा क्षियन्ति वसन्ति अत्रेति—ऋभु+क्षि+ड] 1 इन्द्र 2 (इन्द्र का) स्वर्ग।

ऋभुक्षिन् (पु०) (कर्तृ०- ऋभुक्षा, कर्म० ब० व०—ऋभुक्षः) [ऋभुक्षः वज्रं स्वर्गो वास्यास्ति—इनि] इन्द्र।

ऋष्टीकः [?] एक प्रकार के वाद्ययन्त्र को बजाने वाला।

ऋष्य [ऋष्+कयप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंगा हरिण, —ष्यम् हरण। सम०- केतु, -केतन 1 अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र 2 कामदेव।

ऋष् I. (तुदा० पर०—ऋषति, ऋष्ट) 1 जाना, पहुँचना 2 वार डालना चोट पहुँचाना।

II. (स्वा० पर०—अर्षति) 1 बहना 2 फिसलना।

ऋषभः [ऋष्+अभक्] 1 साँड़ 2 श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्तिम पद के रूप में) यथा पुरुषर्षभ, भरतर्षभ, आदि 3 संगीत के सात स्वरों में से दूसरा —ऋषभोऽत्र गीयत इति-आर्या० १।१ 4 सूअर की पूँछ 5 मगरमच्छ की पूँछ,—भी 1 पुरुष के आकार-प्रकार की स्त्री (जैसे कि दाढ़ी आदि का होना) 2 गाय 4 विष्णु। सम०—कूटः एक पहाड़ का नाम, —ध्वजः शिव।

ऋषिः [ऋष्+इन्, कित्] 1 एक अन्तःस्फूर्त कवि या मुनि, मंत्र द्रष्टा 2 पुण्यात्मा मुनि, संन्यासी, विरक्त योगी 3 प्रकाश की किरण। सम०—कुल्या पवित्र नदी,—तर्पणम् ऋषियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया तर्पण—(अर्घादिक),—पंचमी भाद्रपदकृष्णा पंचमी को होने वाला (स्त्रियों का) एक पर्व,—लोकः ऋषियों का संसार,—स्तोमः 1 ऋषियों का स्तुति-गान, 2 एक दिन में समाप्त होने वाला एक विशेष यज्ञ।

ऋष्टिः (पु०—स्त्री०) [ऋष्+क्तिन] 1. दुधारी तलवार 2 (सामान्यतः) तलवार, कृपाण 3. शस्त्र (बर्छी, भाला आदि)।

ऋष्यः [ऋष्+क्यप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंगा

हरिण। ऋष्य०—अंक:,—केतन:,—केतु: अभिज्ञ,—मूक:रण्या सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहां कुछ दिनों तक राम वानरराज सुग्रीव के साथ रहे थे—ऋष्यमूकस्तु पम्पाया पुरस्तात्पुष्पितद्रुम:,—मूकः एक मुनि का नाम (यह विभाण्डक का पुत्र था, इसके पिता ने जन्म से ही इसका पालन-पोषण किया, जब तक यह वयस्क न हुआ तब तक इसने किसी दूसरे मनुष्य को नहीं देखा। जब अनावृष्टि के कारण अंगदेश बर्बाद सा हो गया तो उसके राजा लोमपाद ने, ब्राह्मणों के परामर्शानुसार ऋष्यशृंग को कुछ कन्याओं द्वारा बुलाया, और अपनी पुत्री शान्ता (यह दशरथ पुत्री थी, इसके वास्तविक पिता राजा दशरथ थे) का विवाह इससे कर दिया। ऋष्यशृंग ने इस बात से प्रसन्न होकर उसके राज्य में वर्षा कराई। यही वह ऋषि था जिसने राजा दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया—जिसके फलस्वरूप राम और उसके तीन भाइयों का जन्म हुआ)।

ऋष्यक: [ऋष्य+कन्] चितीदार सफेद पैरों वाला बारहसिंगा हरिण।

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) त्रास (ख) दुरदुराना (ग) भर्त्सना, निन्दा (घ) करुणा तथा (ङ) स्मृति का व्यंजक विस्मयादिबोधक अव्यय (पु०—ऋ:) 1 भैरव 2. एक राक्षस।

ऋ (क्रया० पर०—ऋणाति, ईर्ते) जाना, हिलना-डुलना।

ए

ए: (पु०) [इ+विच्] विष्णु, (अव्य०) (क) स्मरण (ख) ईर्ष्या (ग) करुणा (घ) आमन्त्रण और (ङ) घृणा तथा निन्दा व्यंजक (विस्मयादि बोधक) अव्यय।

एक (सर्व० वि०) [इ+कन्] 1 एक, अकेला, एकाकी, केवल मात्र 2 जिसके साथ कोई और न हो 3 वही, बिल्कुल वही, समरूप—मनस्येक वचस्येकं कर्मण्येक महात्मनाम्—हि० १।१०।१ 4 स्थिर अपरिवर्तित 5 अपनी प्रकार का अकेला, अद्वितीय, एक वचन 6 मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख, अनन्य—एको रागिषु राजते—भर्तृ० ३।१२१ 7 अनुपम, बेजोड़ 8 दो या बहुत में से एक—मेघ० ३०।७८ 9 बहुधा अपेक्षों के अनिश्चयवाचक निपात (वा या अपि) की भांति प्रयुक्त—ज्योतिरेक—गी० ५।३०, एक, दूसरा, 'कुछ' अर्थ को प्रकट करने के लिए बहुवचनांत प्रयोग, अन्ये, अपरे इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं। सम०—अक्ष (वि०) 1 एक आंख वाला 2 एक आंख वाला (—क्ष:) 1 कौवा 2 शिव,—अक्षर (वि०) एक अक्षर वाला (—रम्) 1 एक अक्षर वाला 2 पावन अक्षर 'ओम्'—अग्र (वि०) 1 केवल एक पदार्थ या बिन्दु पर स्थिर 2. एक ही ओर ध्यान में मग्न, एकाग्रचित्त, तुला हुआ,—रघु० १५।६६, मनुमेकाग्रमासीनम्—मनु० २९ ११ 3. अव्यय, अचल,—अग्र्य=°अग्र (—ग्र्यम्) एकाग्रता,—अंश: 1. शरीर रक्षक 2 अभिभावक या मुख्य रक्षक,—अग्निदाह्य अन्त्येष्टि संस्कार जो केवल एक ही पूर्वज (संभवतः मृत) को उद्देश्य करके किया गया हो,—अंत (वि०) 1. अकेला 2 एक ओर, पार्श्व में 3. जो केवल एक ही पदार्थ या बिन्दु को ओर निर्दिष्ट हो 4 अत्यधिक, बहुत—कु० १।३६ 5 निरपेक्ष, अचल, सतत—स्थायितमेकान्तमुभयम्—भर्तृ० ३।७, मेघ० १०९, (—न्त:) एकमात्र आश्रय, निश्चित नियम—तेज. क्षमा वा मैकान्त कालज्ञस्य महीपते—शि० २।८३, (—न्तम्,—न्तेन,—न्तत:,—न्तै) (अव्य०) 1. केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत 2. अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा—प्रयत्नप्येकान्ततो निःस्पृहा—भर्तृ० ३।२४, दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९,—अन्तर (वि०) अगला, जिसमें केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के बाद एक को जोड़ कर—गी० ७।२७,—अन्तिक (वि०) अन्तिम निर्णायक,—अवयव (वि०) 1 बहुतों से केवल एक ही जो सके, (जैसे कि पखड़ी या बटिया) 2. नितान्त ध्यानमग्न, तुला हुआ दे० एकाग्र (—वम्) 1 एकान्त स्थल या विश्राम स्थली 2. छिपने का स्थान, संकेत-स्थल 3. अद्वैतवाद 4. केवलभाव

उद्देश्य—सा स्नेहस्य एकायनीभूता—मालवि० २।१५, —अर्थः 1 वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय 2 वही भाव,—अहन् (न) 1 एक दिन का समय 2 एक दिन तक चलने वाला यज्ञ,—आतपत्र (वि०) एकच्छत्र से विशिष्टीकृत (विश्वभर की प्रभुता को दर्शाने वाला)—एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम् -रघु० २।४७, शि० १२।३३ विक्रम० ३।१९,—आदेशः दो या दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापन्न (या तो एक स्वर का लोप करके या दोनों को मिला कर प्राप्त किया गया) जैसे कि 'एकायन' में आ,—आवलि, —ली (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, -एकावली कण्ठविभूषणं व —विक्रमांक० १।३०, लतावितपे एकावली लग्ना—विक्रम० १।२, (अल० शा० में) ऐसी उक्तियों की पंक्ति जिसमें कर्ता का विधेय और विधेय का कर्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय—स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्वं परम्परम्, विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा —काव्य० १०,—उदक (सबंधी) जो एक ही मृत पूर्वज से जल के तर्पण द्वारा संबद्ध हो। —उदर, —रा सगा (भाई या बहन), -उद्दिष्टम् श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मृत व्यक्ति को (दूसरे पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करके किया गया हो,—ऊन (वि०) एक कम, एक घटाकर, एक (वि०) एक एक करके, व्यष्टिरूप से, एक अकेला—रघु० १७।४३, (कम्) —एकैकशः (अव्य०) एक एक करके, व्यक्तिशः, पृथक्-पृथक्, —ओघ एक सतत धारा,—कर (वि०) (स्त्री० - री) 1 एक ही कार्य करने वाला 2 (—रः) एक ही हाथ वाली 3 एक किरण वाली, —कार्य (वि०) मिलकर काम करने वाला, सहयोगी, सहकारी (—र्यम्) एक मात्र कार्य, वही कार्य,—काल 1 एक समय 2 उसी समय, -कालिक,—कालीन (वि०) 1 केवल एक बार होने वाला 2 समवयस्क, समसामयिक,—कुक्षक कुबेर, बलभद्र, शेषनाग,—गुरु, —गुरुक (वि०) एक ही गुरु वाला (—रुः, -रुकः) गुरुभाई,—चक्र (वि०) 1 एक ही पहिये वाला 2 एक ही राजा द्वारा शासित, (- क्रः) सूर्य का रथ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) इकतालीस,—चर (वि०) 1 अकेला घूमने या रहने वाला -कि १३।३, 2 एक ही अनुचर रखने वाला 3 असहाय रहने वाला —चारिन् (वि०) अकेला, (—णी) पतिव्रता स्त्री, —चित्त (वि०) केवल एक ही बात को सोचने वाला (—त्तम्) 1 एक ही वस्तु पर चित्त की स्थिरता 2 ऐकमत्य—एकचित्तीभूय हि० १—एक मत से, —चेतस्, —मनस् (वि०) एक मत, दे० °चित्त, —जन्मन् (पु०) 1. राजा 2. शूद्र, दे० नी०, °जाति — जात एक ही माता-पिता से उत्पन्न,—जातिः शूद्र (विप० द्विजन्मन्) ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः, चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः —मनु० १०।४, ८।२७०,—जातीय (वि०) एक ही प्रकार का या एक ही परिवार का,—ज्योतिस् (पु०) शिव,—तान (वि०) केवल एक पदार्थ पर स्थिर या केन्द्रित, नितान्त ध्यानमग्न—ब्रह्मैकतानमनसो हि वशिष्ठमिश्राः —महावी० ३।११,—तालः ताल्लति, गीतों का यथार्थ संभजन, नृत्य, वाद्य यंत्र (तु० तौर्यत्रिकम्) —तीर्थिन् (वि०) 1 उसी पावन जल में स्नान करने वाला 2 एक ही धर्मसंघ से संबद्ध रखने वाला—याज्ञ० २।१३७,— (पु०) सहपाठी, गुरुभाई, - त्रिंशत् (स्त्री०) इकतीस,—दंष्ट्रः,—दन्तः 'एक दांत वाला', गणेश का विशेषण,—दण्डिन् (पु०) संन्यासियों या भिक्षुओं का एक समुदाय, (जो 'हंस' कहलाते हैं) इनके चार मठ हैं—कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयकः, चतुर्थ परमहंसश्च यो य पश्चात्स उत्तमः। हारीत°,—दृश्, —दृष्टि (वि०) एक आँख वाला, —(पु०) 1 कौवा 2 शिव 3 दार्शनिक,—देशः परग्रहः, देशः 1 एक स्थान या स्थल 2 (समग्र का) एक भाग या अंश,—एक पार्श्व—तस्यैकदेशे - उत्तर ०४, विभावितैकदेशेन देय यदभियुज्यते— विक्रम० ४।१७, जिस ऋण का दावा किया जाता है, वह उसी व्यक्ति के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उसके एक अंश का प्राप्तकर्ता प्रमाणित हो जाय (इसी बात को कभी-कभी 'एकदेशविभाविनन्याय' कहते हैं)—धर्मन्, -र्मिन् 1 एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक ही प्रकार की संपत्ति को रखने वाला 2 एक ही धर्म को मानने वाला, —धुर, -धुराधह,—धुरीण (वि०) 1 जो एक ही प्रकार का कर सके 2 जो एक ही प्रकार से जुत सके (जैसे कि विशेष बोझ के लिए कोई पशु) —पा० ४।४।७९, -नेतृ नाटक में प्रधान पात्र, सूत्रधार जो नान्दीपाठ करता है, -नवतिः (स्त्री०) इक्यानवे,—पक्ष एक पक्ष या दल °आश्रय विगलत्त्वात्—रघु० १४।३४,—पत्नी 1 पतिव्रता स्त्री (पूर्णेन्दुं सती साध्वी) 2 सपत्नी, सौत —सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत् - मनु० ९।१८३,—पदी एकाएकी, पदे (अव्य०) अकस्मात्, एकदम, अचानक—निहन्त्यरीनेकपदे य उद्यत स्वराजिव—शि० २।९५, रघु० ८।४८, -पाद: 1. एक या अकेला पैर 2 एक या वही चरण 3 विष्णु, शिव, -पिंगः, पिंगल कुबेर,—पिंड (वि०) अन्त्येष्टि पिंड-दान के द्वारा संयुक्त,- भार्या एक पतिव्रता और सती स्त्री, (—र्या) केवल एक पत्नी रखने वाला,

—आत्म (वि०) सच्चा आत्म, ईमानदार,—अक्षिः, अक्षिका मोतियों की एक लड़ी,—ओजस् (वि०) 1. सहोदर 2. एक ही कुल या जाति के—मनु० ९।१४८, —रथः 1 उद्देश्य या भावना की एकता 2 केवल साथ रहने का आनन्द,—राज्,—राजः (पुं०) निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा,—रात्रः एक पूरी रात तक रहने वाला पर्व—,रिक्थिन् (पुं०) सह-उत्तराधिकारी,— रूप (वि०) 1. एक सा, समान 2. समरूप,—लिङ्गः 1 एक ही लिंग रखने वाला शब्द 2 कुबेर —वचनम् एक संख्या को प्रकट करने वाला शब्द,—वर्ण एक जाति, —वर्णिका एक वर्ण की बढ़िया —वाक्यता अर्थ की संगति, ऐकमत्य, विभिन्न उक्तियों का सामञ्जस्य, —वारम्,—वारे (अव्य०) 1. केवल एक बार 2. तुरन्त, अकस्मात् 3. एक ही समय,—विंशतिः (स्त्री०) इक्कीस,—विलोचन (वि०) एक आँख वाला दे० 'एकदृष्टि,—विषाणिन् (पुं०) मृगछौना,—वीरः प्रमुख योद्धा या शूरवीर— महावी० ५।४८,—वेणिः, —णी (स्त्री०) बालों की एक मात्र चोटी (जिसे स्त्री पति-वियोग के चिह्न स्वरूप धारण करती है)—अथाप्रोद्यन्नाल्कठिनविषमामेकवेणीं करेण—मेघ० ९२, श० ७।२१,—शफ (वि०) अखण्ड खुर वाला (—फः) ऐसा पशु जिसके खुर या सुम फटे हुए न हों जैसे घोड़ा गधा आदि,—शरीर (वि०) रक्तसम्बन्ध एक खून का, °अन्वयः एक ही गोत्र की सन्तान °अन्वयः एक रक्त के बन्धु-बान्धव,—शाख एक ही शाखा या विचार का ब्राह्मण,—शृङ्ग (वि०) केवल एक सींग वाली (—गः) 1. अरण्यगदह, गैंडा 2 विष्णु,—शेषः 'एकशेष' द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें केवल एक ही पद अवशिष्ट रहता है—उदा० 'पितरौ' माता और पिता (=मातापितरौ) इसी प्रकार 'श्वशुरौ' 'भ्रातरः' आदि,—श्रुत (वि०) एक ही बार सुना हुआ °श्रुत (वि०) एक बार सुनी हुई बात को ध्यान में रखने वाला,—श्रुतिः (स्त्री०) एकस्वरता,—संज्ञतिः (स्त्री०) इकहत्तर,—सत्र (वि०) नितांत ध्यानमग्न, —साक्षिक (वि०) एक व्यक्ति द्वारा देखा हुआ, —हायन (वि०) एक वर्ष की आयु का—मा० ४।८, उत्तर० ३।२८, (—नी) एक वर्ष की बछिया।

एकक (वि०) [एक+कन्] 1 इकहरा, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहायक के—उत्तर० ५।५ 2 वही, समरूप।

एकतम (वि०) (मनु०—तमात्, स्त्री०—तमा) [एक+ डतमच्] 1 बहुतों में से एक 2. एक (अनिश्चयवाचक रूप में प्रयुक्त)।

एकतर (मनु०—तरम्) [एक+डतरच्] 1 दो में से एक, कोई सा 2. दूसरा, भिन्न 3. बहुतों में से एक।

एकतः (अव्य०) [एक+तसिल्] 1. एक ओर से, एक ओर 2 एक एक करके, एक एक, एकतः-अन्यतः एक ओर, दूसरी ओर—मनु० ६।८५, शि० ५।२।

एकत्र (अव्य०) [एक+त्रल्] 1. एक स्थान पर 2. इकट्ठे, सब इकट्ठे मिल कर।

एकदा (अव्य०) [एक+दा] 1. एक बार, एक समय, 2 उसी समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ—शि० ४।९३।

एकधा (अव्य०) [एक+धा] 1. एक प्रकार से 2. अकेले 3. तुरन्त, उसी समय 4. बिखरकर, साथ साथ।

एकल (वि०) [एक+ला+क] अकेला, एकाकी— उत्तर० ४।

एकशः (अव्य०) [एक+शस्] एक एक करके, अकेले।

एकाकिन् (वि०) [एक+आकिनच्] अकेला, केवल एक।

एकादशन् (ब० वि०) [एकेन अधिका दश इति] ग्यारह।

एकादश (वि०) (स्त्री—शी) ग्यारहवाँ,—शी चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, विष्णु देवता की पुण्यतिथि। सम०—इन्द्रः शरीर के ग्यारह छिद्र दे० 'रुद्र',—रुद्राः (ब० व०) ११ रुद्र—दे० रुद्र।

एकीभावः [एक+च्वि+भू+घञ्] 1. संहति, सहचर्य 2 सामान्य स्वभाव या गुण।

एकीय (वि०) [एक+छ] एक का या एक से—यः तरफदार, सहकारी।

एज् (भ्वा० आ० (म० का० में उभ०)—एजते, एजित) 1 काँपना 2 हिलना-डुलना, 3. चमकना (पर०), अप—, दूर हटा देना, उद्—, उठना, ऊपर को होना।

एजक (वि०) [एज्+ण्वुल्] काँपता हुआ, हिलता हुआ।

एजथुः [एज्+क्थुट्] काँपना, हिलना।

एठ् (भ्वा० आ०—एठते, एठित) छेदना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [इण्+अच्, इडयोरभेदः] बहरा,—डः एक प्रकार की भेड़, । सम०—मूक (वि०) 1. बहरा और गूंगा—नु० अलेडमूक 2. दुष्ट, धूर्तिल।

एडकः [एड+कन्] 1. भेड़ा, 2 जंगली बकरा,—का, भेड़ी ।

एण, एणकः [एति द्रुतं गच्छति इति—इ+ण, एण+कन् च] एक प्रकार का काला धारीदार हरिण, निम्नांकित श्लोक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है: —अनूचो मानवो ज्ञेय एणः कृष्णमृगः स्मृतः, सवर्णीरः मुखः प्रोक्त सावर सोम उच्यते। सम०—अजिनम् मृगचर्म,—जिह्वकः,—भुज् चन्द्रमा, इसी प्रकार °केतः, °लाञ्छन आदि,—दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला,-(पुं०) मकर राशि।

एणी [एण+ङीष्] काली हरिणी।

एत (वि०) (स्त्री०—एता, एती) रंगबिरंगा, चमकीला —न. हरिण या घोड़ासिंघा।

एतद् (सर्व० वि०) (पु०—एषः, स्त्री०—एषा, नपु०—एतत्) [इ+अदि, तुक्] 1. यह, यहाँ, सामने (वक्ता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—असौ-पदरवर्ति चैतद्यो रूपम्), इस अर्थ में 'एतद्' शब्द कई बार पुरुषवाचक सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है,—एषोऽहं कार्यवशादायोध्यिकस्तवान्तिकमुप-संप्राप्तः—उत्तर० १ 2. यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, विशेषकर जबकि यह 'इदम्' या किसी और सर्वनाम के साथ संयुक्त किया जाय —एष वै प्रथमः कल्पः—मनु० ३।१४७, इति यदुक्तं तदेतत्त्रिभिरन्वयम् 3 यह संबंधबोधक वाक्यखंड में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में—संबंधबोधक बाद में आता है—मनु० ९।२५७, (अव्य०) इस रीति से, इस प्रकार, अतः, ध्यान दो,—'एतद्' शब्द उन समासों में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है—जो प्रायः निगमनात्मक या स्वतः स्पष्ट हो—उदा०—°अनन्तरम् इसके तुरन्त बाद, °अंत—इस प्रकार समाप्त करते हुए। सम०—द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे,—प्रथम (वि०) जो किसी को पहली बार करे।

एतदीय (वि०) [एतद्+छ] इसका, के, की।

एतनः [आ+इ+तन] श्वास, साँस छोड़ना।

एतर्हि (अव्य०) [इदम्+हिल्, एत आदेश] अब, इस समय, वर्तमान समय में।

एतादृश्,—दृक्ष,—दृक्, (वि०) [स्त्री०—शी,—क्षी] 1. ऐसा, इस प्रकार का—सदृशं नैतादृशा—भर्तृ० २। ५१ 2 इस प्रकार का।

एतावत् (वि०) [एतद्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर, इस गुण का या ऐसे प्रकार का—एतावत्सुकृता विरते मृगे-न्द्रे—रघु० २।५१, कु० ६।८९ एतावत्यम्बे विरमतो भवतः सेवितुम्—मालवि० २, (अव्य०) इतनी दूर, इतना अधिक, इतने अंश में, इस प्रकार।

एध् (म्वा० आ०—एधते, एधित) 1. उगना, बढ़ना—पंच० २।१६४ 2. फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना द्यावैती सुखमेधेते—पंच० १।३१८, प्रेर० उगाना, बढ़ाना, अभिवर्धन करना, सम्मान करना—कु० ६।९०।

एधः [इध्+घञ्, कि०] इंधन,—स्फुलिङ्गावस्थया वह्नि-रेधापेक्ष इव स्थितः—शं० ७।१५, शि० २।९९।

एधस्युः [एध्+क्यु] 1. मनुष्य 2. अग्नि।

एधस् (नपु०) [इध्+असुन्] ईंधन—यज्ञैधांसि समिद्धोऽ ग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन —भग० ४।३७ अनलायासुद-वन्नमेधसे —रघु० ८।७१।

एधा [एध्+अ+टाप्] फलना-फूलना, वृद्धि।

एधित (भू० क० कृ०) [एध्+क्त] 1 विकसित, बढ़ा हुआ 2. पाला पोसा—मृगयार्थं समभ्येधितो जनः—शं० २।१८।

एनस् (नपु०) [इ+असुन्, गुणागम.] 1. पाप, अपराध, दोष शि० १४।२५ 2 कुकृत्य, जुर्म 3. विपत्ति 4. निन्दा, कलंक।

एनस्वान्, एनस्विन् (वि०) [एनस्+मतुप्, व आदेश., विनि का] दुष्ट, पापी।

एरण्डः [आ+ईर्+अण्डच्] अरंडी का पौधा (बहुत कोरे पत्तों वाला एक छोटा वृक्ष)—अत एव लो०—निरस्त-पादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते।

एलकः [इल्+अच्+कन्] मेढ़ा, दे० 'एडक'।

एलवालु (नपु०), एलवालुकम् [एला+वल्+उण् ह्रस्व, कन् च] 1 कैथ वृक्ष की सुगंधयुक्त छाल 2 एक रवेदार या दानेदार द्रव्य (जो औषधि या सुगंध के रूप में प्रयुक्त होता है)।

एलविलः [इलविला+अण्] कुबेर, दे० 'ऐलविल'।

एला [इल्+अच्+टाप्] 1. इलायची का पौधा—एलानां फलरेणवः, रघु० ४।४३, ६।६४ 2 इलायची (इला-यची के बीज)। सम०—पर्णी लाजवन्ती जाति का एक पौधा।

एलीका [आ+ईल्+ईकन्+टाप्] छोटी इलायची।

एव (अव्य०) [इ+वन्] किसी शब्द द्वारा कहे गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है 1 ठीक, बिल्कुल, सही तौर पर —एवमेव—बिल्कुल ऐसा ही, ठीक इसी प्रकार का 2. वही, सही, समरूप—अर्थोपमाना विरहित पुरुष स एव—भर्तृ० २।४० 3 केवल, अकेला, मात्र (बहि-करण की भावना रखते हुए)—सा सख्यमेवाभिहिता भवेन—कु० ३।६३, केवलमात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं 4 पहले ही 5. कठिनाई से, उसी क्षण, ज्यूंही (मुख्यतया-कृदन्तों के साथ)—उप-स्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्—रघु० १। ८७ 6 की भाँति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए) —अस्त एव मेऽस्तु—गण० (=तद्व इव) और 7. सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए—भवित-व्यमेव तेन—उत्तर० ४, यह बात निश्चित रूप से होगी, निम्नांकित अर्थ भी इस शब्द द्वारा प्रकट होते हैं 8 अपयश 9 न्यूनता 10. आज्ञा 11. निश्चय तथा 12 केवल पूर्ति के लिए।

एवम् (अव्य०) [इ+वम् (वा०)] 1. अतः, इसलिए, इस रीति से—अस्त्येवम्—पंच० १, यह इस प्रकार है,—एवमादिनि देवर्षेः—कु० ६।८४; यूयं एवम्—वेणी० १०१ (जो कुछ बाद में आता है)—एवंवादिनि—ऐसा

हो हो,—स्थिति, अवैधम्—यदि ऐसा है 2. बिल्कुल ऐसा ही (स्वीकृति रखते हुए)—एवं यदात्थ भगवान् —कु० २।३१। सम०—अवस्थ (वि०) इस प्रकार स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में पड़ता हुआ,—आदि, —आद्य (वि०) ऐसा और इस प्रकार का,—कारम् (अव्य०) इस रीति से,—गुण (वि०) ऐसे गुणों वाला —श० १।१२,—प्रकार,—प्राय (वि०) इस प्रकार का—उत्तर० ५।२९ रा० ७।२४,—भूत (वि०) इस प्रकार के गुणों का, ऐसा, इस ढंग का,—रूप (वि०) (वि०) इस प्रकार का, ऐसे रूप का,—विध (वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

एष् (भ्वा० उभ०—एषति—ते, एषित) 1. जाना, पहुँचना 2. शीघ्रता से जाना, दौड़ कर जाना, परि-, ढूंढना।

एषणः [एष्+ल्युट्] लोहे का तीर,—अन् 1. ढूंढना 2. कामना करना,—ना कामना, इच्छा।

एषणिका [एष्+ल्युट्+कन्, टाप्, इत्वम्] सुनार का काटा तोलने की तराजू।

एषा [इष्+अ+टाप्] इच्छा, कामना।

एषिन् (वि०) [इष्+णिनि] इच्छा करते हुए, कामना करते हुए (समास के अन्त में), —यौवन विषयैषिणम् रघु० ९।८।

ऐ

ऐः (पु०) [आ+इ+क्विप्] शिव, (अव्य०) (क) बुलाने (ख) स्मरण करने, या (ग) आश्चर्य को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ऐकदम्य (अव्य०) तुरन्त।

ऐकध्यम् [एकधा+ष्यञ् (चास्यानें)] समय या घटना की ऐकान्तिकता।

ऐकपत्यम् [एकपति+ष्यञ्] परम प्रभुता, सर्वोपरि-शक्ति।

ऐकपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकपद+ठञ्] एक पद से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐकपद्यम् [एक पद+ष्यञ्] 1. शब्दों की एकता 2 एक शब्द बनना।

ऐकमत्यम् [एकमत+ष्यञ्] एकमतता, सहमति—रघु० १८।३६।

ऐकागारिकः [एकागार+ठक्] चोर,—केनचित् हस्तवर्ती-कागारिकेण—दश० ६७, मि० १९।१११ 2 एक घर का मालिक।

ऐकाग्र्यम् [एकाग्र+ष्यञ्] एक ही पदार्थ पर जुट जाना, एकाग्रता।

ऐकाङ्गः [एकाङ्ग+अण्] शरीर रक्षक दल का एक सिपाही—राज० ५।२४९।

ऐकात्म्यम् [एकात्मन्+ष्यञ्] 1 एकता, आत्मा की एकता 2. समरूपता, समता 3 परमात्मा के साथ एकता या तादात्म्य।

ऐकाधिकरण्यम् [एकाधिकरण+ष्यञ्] 1. संबंध की एकता 2. एकही विषय में व्याप्ति, (तर्क० में)—यह विस्तृति, साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते —भाषा० ६९।

ऐकान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. पूर्ण, समग्र, पूरा 2. निश्चित, निश्चित 3. अनन्य।

ऐकाश्यिकः [एकाश्य+ठक्] वह शिष्य जो वेद का सस्वर पाठ करने में एक अशुद्धि करे।

ऐकार्थ्यम् [एकार्थ+ष्यञ्] 1. उद्देश्य या प्रयोजन की समानता 2. अर्थों की संगति।

ऐकाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकाह+ठक्] 1. आह्निक 2 एक दिन का, उसी दिन का, दैनिक।

ऐक्यम् [एक+ष्यञ्] 1. एकपना, एकता 2. एकजातता, 3. समरूपता, समता 4. विशेष कर मानव आत्मा की समरूपता, या विश्व की परमात्मा से एकरूपता।

ऐक्षव (स्त्री०—वी) [इक्षु+अण्] गन्ने से बना या उत्पन्न, —अम् 1. चीनी 2. मादक शराब।

ऐक्षवक (वि०) [इक्षु+अण्] गन्ने से बना पदार्थ।

ऐक्षुक (वि०) [इक्षु+ठक्] 1. गन्ने के लिए उपयुक्त 2. गन्ने वाला,—कः गन्ने से जाने वाला।

ऐक्षुकारिक (वि०) [इक्षुकार+ठक्] गन्ने का शौक़ीन होने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) [इक्ष्वाकु+अण्] इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला,—कः, कुः 1. इक्ष्वाकु की संतान,—तत्रभवानैक्ष्वाकः कल्पति—उत्तर० ५. २. इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश।

ऐङ्गुद (वि०) [स्त्री०—दी] [इङ्गुदी+अण्] इंगुदी वृक्ष से उत्पन्न,—दम् इंगुदी वृक्ष का फल।

ऐच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर, इच्छापरक 2. मनमाना।

ऐडक (वि०) (स्त्री०—की) भेड़ का,—कः भेड़ की एक जाति।

ऐड (अ) विडः (कः) [इडविडा+अण् पक्षे अलोपः] कुबेर।

ऐण (वि०) (स्त्री०—णी) कालापन लिए हरिण की (त्वचा, आदि) बना० १।२५९।

ऐणेय (वि०) (स्त्री०—यी) [एणी+ढक्] काली हरिणी या तत्संबंधी किसी पदार्थ से उत्पन्न,—यः काला हरिण, —यम् रतिबंध, रतिक्रिया का एक प्रकार।

ऐतदात्म्यम् [एतदात्मन्+ष्यञ्] इस प्रकार के गुण या विशिष्टता को रखने की अवस्था।

ऐतरेयिन् [ऐतरेय+इनि] ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता।

ऐतिहासिक (वि०) (स्त्री०—की) [इतिहास+ठक्] 1 परम्परा प्राप्त 2 इतिहास संबंधी,—कः 1 इतिहासकार 2 वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानों को जानता है या उनका अध्ययन करता है।

ऐतिह्यम् [इतिह+ष्यञ्] परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन,—ऐतिह्यमनुमानं च प्रत्यक्षमपि आगमम्—रामा०, किलेत्यैतिह्यं (पौराणिक 'ऐतिह्य' को प्रत्यक्ष, अनुमान आदि के साथ प्रमाण का एक भेद मानते हैं—दे० 'अनुभव')।

ऐदम्पर्यम् [इदम्पर+ष्य] आशय, क्षेत्र, संबंध (या० इसपर होने की अवस्था अर्थात् अर्थ, अभिप्राय या क्षेत्र रखना)—इह खलूदम्पर्यम्—मा० २।७।

ऐनसम् [एनस्+अण्] पाप।

ऐन्दव (वि०) (स्त्री०—वी) [इन्दु+अण्] चन्द्रमा संबंधी,—वः चान्द्रमास।

ऐन्द्र (वि०) (स्त्री०—ऐन्द्री) [इन्द्र+अण्] इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र,—रघु० २।५०,—द्रः अर्जुन और बाली,—न्द्री 1 ऋग्वेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है—इत्यादिका काचिदैन्द्री समाम्नाता—दे० या० 2 पूर्व दिशा (इस दिशा का अधिष्ठातृदेवता इन्द्र है) कि० ९।१८ 3 मुसीबत, संकट 4 दुर्गा की उपाधि 5 छोटी इलायची।

ऐन्द्रजालिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रजाल+ठक्] 1. धोखे में डालने वाला, 2 जादू-टोना विषयक 3 मायावी, भ्रान्ति जनक 2 जादू-टोने का जानकार, —कः बाजीगर—शि० १५।२५।

ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रलुप्त+ठक्] गंजरोग से पीड़ित, गंजा।

ऐन्द्रशिरः [इन्द्रशिर+अण्] हाथियों की एक जाति।

ऐन्द्रिः [इन्द्रस्यापत्यम्—इन्द्र+इञ्] जयन्त, अर्जुन, वानरराज बालि 2 कौवा—ऐन्द्रिं किल नखैस्त्वया विदारं स्तनौ द्विज—रघु० १२।२२।

ऐन्द्रिय,—यक (वि०) [इन्द्रिय+अण्, वुञ् वा] 1 इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, विषयी 2 विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर,—यम् ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

ऐन्धन (वि०) (स्त्री०—नी) [इन्धन+अण्] जिसमें इन्धन विद्यमान हो,—नः सूर्य।

ऐयत्तम् [इयत्+ष्यञ्] परिमाण, संख्या।

ऐरावणः [इरा वारुणी तां शब्दायते—इरा+वण्+अण् इरावण—तत अण्] इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः [इरा वारुणी तद्वान् इरावान् समुद्र, तस्मादुत्पन्न अण्] 1. इन्द्र का हाथी 2 श्रेष्ठ हाथी 3. पाताल निवासी नागजाति का एक मुखिया 4 पूर्व दिशा का दिग्गज 5. एक प्रकार का इन्द्रधनुष,—ती 1 इन्द्र की पत्नी 2. बिजली 3 पंजाब में बहने वाली नदी, रावी (इरावती)।

ऐरेयम् [इरायाम् अन्ने भवम्—इरा+ढक्] मदिरा (जो भोज्य पदार्थ से तैयार की जाय)।

ऐलः [इलाया अपत्यम्—अण्] 1 पुरूरवा (इला और बुध का पुत्र) 2 मंगलग्रह।

ऐलवालुकम् [एलवालुक+अण्] एक सुगंध-द्रव्य।

ऐलविलः [इलविला+अण्] 1 कुबेर—शि० १३।१८ 2. मंगलग्रह।

ऐलेयः [इला+ढक्] 1 एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य 2 मंगल ग्रह।

ऐश (वि०) (स्त्री०—शी) [ईश+अण्] 1 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० २।७५ 2. सर्वोपरि, राजकीय।

ऐशान (वि०) [ईशान+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला,—नी 1 उत्तरपूर्वी दिशा 2 दुर्गादेवी।

ऐश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [ईश्वर+अण्] 1 शानदार 2 शक्तिशाली, ताकतवर 3 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० ११।७६ 4 सर्वोपरि, राजकीय 5 दिव्य,—री दुर्गादेवी।

ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] 1 सर्वोपरिता, प्रभुता—एश्वर्यस्थितोऽपि—मालवि० १।१ 2 ताकत, शक्ति, आधिपत्य 3 उपनिवेश 4 विभव, धन, वैभवपन 5 सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ।

ऐषमस् (अव्य०) [अस्मिन् वत्सरे इति वि० साधु] इस वर्ष में, चालू वर्ष में।

ऐषमस्तन,—नस्य (वि०) [ऐषमस्+तनप्, स्यप् वा] चालू वर्ष से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [इष्टि+ठक्] यज्ञसम्बन्धी, संस्कार विषयक। सम०—पूर्तिक (वि०) इष्टापूर्त (यज्ञ अथवा अन्य धार्मिक कृत्य) से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐहलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [इहलोक+ठञ्] इस संसार से सम्बन्ध रखने वाला, या इस लोक में घटित होने वाला, ऐहिक, दुनियावी (विप० पारलौकिक)।

ऐहिक (वि०) (स्त्री०—की) 1 इस लोक या स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक 2 स्थानीय,—कम् व्यवसाय (इस संसार का)।

ओ (पुं०—ओ) [उ+क्विप्] ब्रह्मा (अव्य०) 1. सम्बोधनात्मक (ओ) अव्यय 2. (क) बुलाना (ख) स्मरण करना और (ग) करुणा बोधक विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ओकः [उच्+क नि० सम्प्र क] 1 घर 2. शरण, आश्रय 3 पक्षी 4 शूद्र।

ओकस्यः (त्रि) [ओ+कण्+अच्, इत् वा] घटमल, इसी प्रकार 'ओकोदनी'।

ओकस् (नपुं०) [उच्+असुन्] 1 घर, आवास—जैसा कि दिवौकस् या स्वर्गौकस् (देवता) में 2 आश्रय, शरण।

ओक् (म्वा० पर०—ओकति, ओकित) 1 सूख जाना 2 योग्य होना, पर्याप्त होना 3 सजाना, सुशोभित करना 4 अस्वीकृत करना, 5 रोक लगाना।

ओघ [उच्+घञ्, पृषो०] 1 जलप्लावन, नदी, धारा —पुनरोघेन हि वुह्यते नदी—कु० ४।४४ 2 जल की बाढ़ 3 राशि, परिमाण, समुदाय 4 समूह 5 सातत्य 6 परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश 7. एक प्रकार का नृत्य।

ओंकारः [ओम्+कार] दे० 'ओम्' के नीचे।

ओज् (भ्वा० चुरा० उभ०—ओजति, ओजयति—ते, ओजित) सक्षम या योग्य होना।

ओज (वि०) [ओज्+अच्] विषम, असम, —अम्=ओजस्।

ओजस् (नपुं०) [उच्+असुन् डलोप, गुणश्च] 1 शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2 वीर्य, जननात्मक शक्ति 3 आभा, प्रकाश (आल० शा० में) 4 शैली का विस्तृत रूप, समास की बहुलता (दण्डी के अनुसार यही गद्य की आत्मा है)—ओज समासभूयस्त्वमेतद्-गद्यस्य जीवितम्—काव्या० १।८०, रसगंगाधर में इसके पाँच भेद बतलाये गये हैं 5 धातु 6 धातु की चमक।

ओजस्तीव, ओजस्य (वि०) [ओजस्+त्व, यत् वा] सशक्त, शक्तिशाली।

ओजस्वत्, ओजस्विन् [ओजस्+मतुप्, विनि वा] सशक्त, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली।

ओड्रः (ब० व०) एक देश का तथा उसके निवासियों का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०।४४, —द्रम् जवाकुसुम।

ओत (वि०) [आ+वे+क्त] बुना हुआ, धागे से एक सिरे से दूसरे तक सिला हुआ। सम० प्रोत (वि०) 1 लम्बाई और चौड़ाई के बल आर-पार सिला हुआ 2 सब दिशाओं में फैला हुआ।

ओदुः [अद्+तुन्, ऊठ्, गुण] बिलाव (स्त्री० ओदी) बिल्ली—जैसा कि 'स्थूलो (लौ) दु' में।

ओदनः—नम् [उन्द्+युच्] 1 भोजन, भात,—उदा० दध्योदन और घृत° 2. दलिया बना कर दूध में पकाया हुआ अन्न।

ओम् (अव्य०) [अव्+मन्, ऊठ्, गुण] 1. पावन अक्षर 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मन्त्र के आरम्भ में बोला जाने वाला 2 अव्यय के रूप में यह (क) औपचारिक पुष्टीकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति (एवमस्तु, तथास्तु) (ख) स्वीकृति, अंगीकरण (हाँ, बहुत अच्छा)—ओमित्युच्यतामभात्य—मा० ६, ओमित्युक्त-वतोपसार्जिणं इति जि० १।७५, द्वितीयश्चेदोमिति शुश्रुम—मा० ४० १ (ग) आदेश (घ) मांगलिकता (ङ) दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अव्यय 3. ब्रह्मा। सम०—कारः 1 पवित्र ध्वनि 'ओम्' 2 पवित्र उद्गार 'ओम्'।

ओरस्कः [?] गहरी खरोंच—मा० ७।

ओल (वि०) [आ+उन्द्+क पृषो०] आर्द्र, गीला।

ओलड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—ओलडति, ओलडयति, ओलण्डित) ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना।

ओलक (वि०) [ओल—पृषो०] आर्द्र, गीला,—कः प्रतिभू, °आगत प्रतिभू या जामिन के रूप में आया हुआ (यह शब्द एक दो बार विद्धशालभञ्जिका में आया है)।

ओलः [उप्+घञ्] जलन, सदाह।

ओलक्यः [उच्+ण्यट्] तिक्तता तीक्ष्णता, तीखा रस।

ओषधिः,—धी (स्त्री०) [ओष+धा+कि, स्त्रियां ङीष्] 1 जड़ीबूटी, वनस्पति 2 औषधि का पौधा, ओषधि 3 फसली पौधा या जड़ी बूटी जोकि पक कर सूख जाती है। सम०—ईशः चन्द्रमा, —नाथः चन्द्रमा (वनस्पतियों का अधिदेवता तथा पोषक)—ज (वि०) वनस्पति से उत्पन्न,—धरः,—पतिः 1 ओषधि-विक्रेता 2 वैद्य 3 चन्द्रमा,—प्रस्थ हिमालय की राजधानी —तत्प्रयातौषधिप्रस्थ स्थितये हिमवत्पुरम्—कु० ६। ३३, ३६।

ओष्ठः [उष्+थन्] होठ (ऊपर का या नीचे का)। सम० —अधरी-रम्, ऊपर और नीचे का होठ,—ज (वि०) ओष्ठस्थानीय,—आह्, होठकी जड़,—कलयः,—वत् किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ—पुटम होठों को खोलने पर बना हुआ गड्ढा।

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] 1. होठों पर रहने वाला 2 ओष्ठ-स्थानीय (ध्वनि आदि)।

ओष्ण (वि०) [ईषद् उष्ण—ग० स०] थोड़ा गरम, गुनगुना।

ओ

ओ [आ+अव्+क्विप्, ऊठ] (क) आमन्त्रण (ख) संबोधन (ग) विरोध तथा (घ) शपथोक्ति अथवा संकल्पद्योतक अव्यय ।

ओंकिंवयम् [उक्थ+ठक्+ष्यञ्] उक्थ का पाठ, सामवेद ।

ओक्थम् [उक्थ+अण्] पाठ करने की विशेष (उक्थ अंग से संबंध रखने वाली) रीति ।

ओक्षकम्,—ओक्षम् [उक्षणां समूह इत्यर्थे उक्षन्+अण्, टिलोप वुञ् वा] बैलों का झुण्ड —शि० ५।६२ ।

ओग्र्यम् [उग्र+ष्यञ्] दृढ़ता, भीषणता भयंकरता, क्रूरता आदि ।

ओघः [ओघ+अण्] बाढ़, जलप्लावन ।

औचित्यम्, औचिती [उचित+ष्यञ्, स्त्रियां ङीप्, यलोपश्च] 1 उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना 2 संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक —सामर्थ्यमौचितीं देशं कालो व्यक्तिं स्वरादयः —सा० द० २ ।

औच्चैःश्रवसः [उच्चैस् श्रवस्+अण्] इन्द्र का घोड़ा ।

औजसिक (वि०) (स्त्री०—की) [ओजस्+ठक्] ऊर्जस्वी बलवान् । —कः नायक शूरवीर ।

औजस्य (वि०) [ओजस्+ष्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचारक,—स्यम् सामर्थ्य, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति ।

औज्ज्वल्यम् [उज्ज्वल+ष्यञ्] उज्ज्वलता, कान्ति ।

औडुपिक (वि०) (स्त्री०—की) [उडुप+ठक्] किश्ती में बैठ कर पार करने वाला,—कः किश्ती या लट्ठे का यात्री ।

औडुम्बर [उडुम्बर+अञ्] = दे० औदुम्बर ।

औड्र [ओड्र+अण्] आड्र (वर्तमान उड़ीसा) देश का निवासी या राजा ।

औत्कण्ठ्यम् [उत्कण्ठा+ष्यञ्] 1 इच्छा लालसा 2 चिन्ता ।

औत्कर्ष्यम् [उत्कर्ष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, उत्कृष्टता ।

औत्तमिः [उत्तम+इञ्] १४ मनुओं में से तीसरा ।

औत्तर (वि०) (स्त्री०—री,—रा) उत्तरी । सम० —पथिक उत्तर दिशा की ओर जाने वाला ।

औत्तरेयः (उत्तरा+ढक्) अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र परीक्षित् ।

औत्तानपादः,—पादिः [उत्तानपाद+अण्, इञ् वा] 1 ध्रुव 2 उत्तर दिशा में वर्तमान तारा ।

औत्पत्तिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्पत्ति+ठक्] 1 अन्तर्जात, सहज 2 एक ही समय पर उत्पन्न ।

औत्पातः (वि०) [उत्पात+अण्] अपशकुनों का विश्लेषक ।

औत्पातिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पात+ठक्] अमंगलकारी, अलौकिक, संकटमय—रघु० ४४, ५३, —कम् अपशकुन या अमंगल ।

औत्सङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्सङ्ग+ठक्] कूल्हे पर रक्खा हुआ, या कूल्हे पर धारण किया हुआ ।

औत्सर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्सर्ग+ठक्] 1. सामान्य विधि (जैसे कि व्याकरण का नियम) जो अपवाद रूप में ही स्थगने के योग्य हो 2 सामान्य (विप० विशेष), प्रतिबन्धरहित, सहज 3 व्युत्पन्न, यौगिक ।

औत्सुक्यम् [उत्सुक+ष्यञ्] 1 चिन्ता, बेचैनी 2. प्रबल इच्छा, उत्सुकता, उत्साह—औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा ५।६, औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्याकुलीयमाना क्रियाः —रत्न० १।२ ।

औदकः (वि०) (स्त्री०—की) [उदक+अण्] जलीय, पनीला, जल से संबंध रखने वाला ।

औदञ्चनः (वि०) (स्त्री०—नी) [उदञ्चन+अण्] डोल या घड़े में रक्खा हुआ ।

औदनिकः (दक्ष) [ओदन+ठञ्] रसोइया ।

औदरिकः (वि०) (स्त्री०—की) [उदर+ठक्] बहुभोजी, पेटू, खाऊ सर्वत्रौदरिकेभ्यास्यवहार्यमेव विषय —विक्रम० ३, मालवि० ४ ।

औदर्यः (वि०) [उदरे भवः यत्] 1 गर्भस्थित, 2. गर्भान्तः प्रविष्ट ।

औदश्वित्यम् [उदश्वित्+अण्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा ।

औदार्यम् [उदार+ष्यञ्] 1 उदारता, कुलीनता, महत्ता 2 बड़प्पन, श्रेष्ठता 3 अर्थगाम्भीर्य (अर्थसंपत्ति)—स मोष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे—कि० १।३, दे० कि० ११।४० पर मल्लि० और 'उदार' के नी० उदारता ।

औदासीन्यम्, औदास्यम् [उदासीन+ष्यञ्, उदास+ष्यञ्] 1 उपेक्षा, निःस्पृहता—पर्याप्तोऽसि प्रभो, पातुमौदासीन्येन वनितुम्—रघु० १०।२५, इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि —गंगा० ४ 2 तटस्थता, अकेलापन 3 पूर्ण विराग (सांसारिक विषयों से), वैराग्य ।

औदुम्बर (वि०) (स्त्री०—री) [उदुम्बर+अञ्] गूलर के वृक्ष से बना या उससे प्राप्त,—रः ऐसा प्रदेश जहां गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों, -री गूलर की शाखा, —रम् 1 गूलर की लकड़ी 2. गूलर का फल 3 तांबा ।

औद्गात्रम् [उद्गातृ+अञ्] उद्गाता ऋत्विज का पद या कार्य।

औद्दालकम् [उद्दालक+अण्, संज्ञायां कन्] मधु जैसा एक पदार्थ जो तीखा और कड़वा होता है।

औद्देशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्देश+ठक्] प्रकट करने वाला, निर्देशक, संकेतक।

औद्धत्यम् [उद्धत+ष्यञ्] 1 हेकड़ी, ढीठपना 2 साहसिकता, जीवटवाले कार्यों में हिम्मत—औद्धत्यमायोजितकामसूत्रम्—मा० १।४।

औद्धारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्धार+ठक्] पैतृक सम्पत्ति में से घटाया हुआ, विभक्त करने योग्य, दाययोग्य,—कम् (पैतृक सम्पत्ति में से घटाया गया) एक अंश या दायभाग।

औद्भिदम् [उद्भिद्+अण्] 1 झरने का पानी 2 सेंधा नमक।

औद्वाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्वाह+ठक्] 1 विवाह से संबंध रखने वाला 2 विवाह में प्राप्त —याज्ञ० २।११८, मनु० ९।२०६,—कम् विवाह के अवसर पर वधू को दिये गये उपहार, स्त्रीधन।

औधस्यम् [ऊधस्+ष्यञ्] दूध (औंडी से प्राप्त) रघु० २।६६ अने० पा०।

औन्नत्यम् [उन्नत+ष्यञ्] ऊँचाई, ऊँचा उठना (नैतिक रूप से भी)।

औपकर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपकर्ण+ठक्] कान के निकट रहने वाला।

औपकार्यम्,—र्या [उपकार्य+अण्, स्त्रियां टाप् च] आवास, गृह।

औपग्रहिकः, —ग्रहिकः [उपग्रस्त+ठक्, उपग्रह+ठक्] 1 ग्रहण 2 ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

औपचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपचार+ठक्] लाक्षणिक, आलंकारिक, गौण (विप० मुख्य),—कम् आलंकारिक प्रयोग।

औपजानुक (वि०) (स्त्री०—की) [उपजानु+ठक्] घुटनों के पास होने वाला।

औपदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपदेश+ठक्] 1. अध्यापन या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला 2. शिक्षण द्वारा प्राप्त (जैसे कि ज्ञान)।

औपधर्म्यम् [उपधर्म+ष्यञ्] 1 मिथ्या सिद्धान्त, कुसिद्धान्त 2 घटिया गुण या गुण का अपकृष्ट नियम।

औपधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठक्] धूर्त, ढोलबाज।

औपधेयम् [उपाधि+ठक्] रथ का पहियों वाला खांचा।

औपनायनिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनयन+ठक्] उपनयन सम्बन्धी, या उपनयन (जनेऊ के साथ दीक्षा देने का संस्कार) के काम का—मनु० २।६८।

औपनिधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनिधि+ठक्] धरोहर से सम्बन्ध रखने वाला,—कम् धरोहर या अमानत जो वस्तु धरोहर या अमानत के रूप में रक्खी जाय याज्ञ०—२।६५।

औपनिषद (वि०) (स्त्री०—दी) [उपनिषद्+अण्] 1. उपनिषदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेद विहित, आध्यात्मिक 2. उपनिषदों पर आधारित, स्थापित या उपनिषदों से गृहीत—औपनिषद दर्शनम् (वेदा० द० का दूसरा नाम)—दः 1. परमात्मा, ब्रह्म 2 उपनिषदों के सिद्धान्तों का अनुयायी।

औपनीविक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनीवि+ठक्] —स्त्री या पुरुषों की धोती की गांठ या नाड़े के निकट रक्खा हुआ,—औपनीविकमरुन्द किल स्त्री (करम्)—शि० १०।६०, भट्टि० ४।२६।

औपपत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपपत्ति+ठक्] 1. तैयार, निकट 2 योग्य, समुचित 3 प्राक्कालपनिक।

औपम्यिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपमा+ठक्] 1 तुलना या उपमान का काम देने वाला 2 उपमा द्वारा प्रदर्शित।

औपम्यम् [उपमा+ष्यञ्] तुलना, समरूपता, सादृश्य —आत्मौपम्येन भूतेषु दया कुर्वन्ति साधवः—हि० १।१२।

औपयिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाय+ठक्] 1. समुचित, योग्य, समर्थ 2 प्रयत्नों द्वारा प्राप्त,—कः,—कम् उपाय, तरकीब, युक्ति—शिवमौपयिकं वरीयसीम्—कि० २।३५।

औपरिष्ट (वि०) (स्त्री० ष्टी) [उपरिष्ट+अण्] ऊपर होने वाला, ऊपर का।

औपरोध(रौ)धिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपरोध+ठक्] 1 अनुग्रह सम्बन्धी, कृपा सम्बन्धी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप 2. विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला —कः पीलु वृक्ष की लकड़ी का डंडा।

औपल (वि०) (स्त्री०—ली) [उपल+अण्] प्रस्तरमय, पत्थर का।

औपवस्तम् [उपवस्त+अण्] उपवास रखना, उपवास।

औपवस्त्रम् [उपवस्त्र+अण्] 1 उपवास के उपयुक्त भोजन, फलाहार 2. उपवास करना।

औपवासम् [उपवास+ष्यञ्] उपवास रखना।

औपवाह्य (वि०) [उपवाह्य+अण्] 1 सवारी के काम आने वाला,—ह्यः 1 राजा का हाथी 2. कोई राजकीय सवारी।

औपवेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवेश+ठक्] पूरी लगन के साथ काम कर के अपनी आजीविका कमाने वाला।

औपशब्दार्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपशब्दार्थ+

ठक्] 1. जिसका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो 2 परिशिष्ट।

औत्पातिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पात+ठञ्] 1. विपत्ति का सामना करने योग्य 2 अमङ्गल सूचक।

औपधिक (वि०) [उपस्थ+ठक्] व्यभिचार द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।

औपस्थ्यम् [उपस्थ+ष्यञ्] सहवास स्त्रीसंभोग।

औपहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठक्] उपहार या आहुति के काम आने वाला,—कम् उपहार या आहुति।

औपाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] 1. विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2 उपाधि या विशेष गुणों से सम्बन्ध रखने वाला, फलित कार्य।

औपाध्यायक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+वुञ्] अध्यापक से प्राप्त या आने वाला।

औपासन (वि०) (स्त्री०—नी) [उपासन+अण्] गृह्याग्नि से सम्बन्ध रखने वाला,—नः गार्हस्थ्य पूजा के लिए प्रयुक्त अग्नि, गृह्याग्नि।

ओम् (अव्य०) शूद्रों के लिए पावनध्वनि (क्योंकि 'ओम्' का उच्चारण शूद्रों के लिए वर्जित है)।

और्भ्र (वि०) (स्त्री०—भ्री) [उरभ्र+अण्] भेड़ से सम्बन्ध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न,—भ्रम् 1. भेड़ या बकरे का मांस 2. ऊनी वस्त्र, मोटा ऊनी कम्बल (°भ्र भी)।

और्भ्रकम् [उरभ्राणां समूह—वुञ्] भेड़ों का झुण्ड।

और्भ्रिकः [उरभ्र+ठञ्] गड़रिया।

और्रस (वि०) (स्त्री०—सी) [उरसा निर्मित—अण्] कोख से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध—रघु० १६। ८८,—सः,—सौ वैध पुत्र या पुत्री—याज्ञ० २।१२८।

और्रस्य=और्रस।

और्ण, और्णक, और्णिक (वि०) (स्त्री०—र्णी,—र्णिकी) [ऊर्णा+अञ्, वुञ् वा] ऊनी ऊन से बना हुआ।

और्ध्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वकाल+ठञ्] पिछले समय से सबद्ध या बाद का।

और्ध्वदेहिक [ऊर्ध्वदेह+अण्] अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्ध्वदैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वदेहाय साधु—ठञ्] मृत व्यक्ति से सबद्ध, अन्त्येष्टि, °क्रिया प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार,—कम् अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [ऊर्व+अण्] 1 बरनी से सम्बन्ध रखने वाला 2 जंघा से उत्पन्न,—र्वः एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह भृगुवंश में उत्पन्न हुआ था। महाभारत में वर्णन मिलता है कि भृगु के वंशजों का नाश करने की इच्छा से कार्तवीर्य के पुत्रों ने गर्भस्थित बालकों को भी मौत के घाट उतार दिया। उस वंश की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी जंघा में छिपा लिया—इसीलिए जंघा से जन्म होने के कारण वह और्व कहलाया। उसको देख कर कार्तवीर्य के पुत्र अंधे हो गये, उसके क्रोध से उठी ज्वाला ने समस्त संसार को भस्म कर देना चाहा। परन्तु अपने पितरों—भार्गवों—की इच्छा से उसने अपनी क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया जहाँ वह घोड़े के रूप में गुप्त पड़ा रहा—तु० बड़वाग्नि। बाद में और्व अयोध्या के राजा सगर का गुरु हुआ) 2 बड़वाग्नि,—र्वधि ज्वलत्यौर्व इवाम्भसाधौ श० ३।३, इसी प्रकार °अनल।

औलूकम [उलूकाना समूह—अण्] उल्लुओं का झुंड।

औलूक्यः [उलूकस्यापत्य—यञ्] वैशेषिक दर्शन के निर्माता कणाद मुनि (दे० सर्व० में औलूक्यदर्शन)।

औल्वण्यम् [उल्वण+ष्यञ्] आधिक्य, बहुतायत, प्राबल्य।

औशन, औशनस (वि०) (स्त्री०—नी,—सी) उशना अर्थात् शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना से पढ़ा हुआ,—सम् उशना का धर्मशास्त्र (नागरिक शास्त्र व्यवस्था पर लिखा गया ग्रन्थ)।

औशीनरः [उशीनरस्यापत्यम्—अण्] उशीनर का पुत्र,—री राजा पुरूरवा की पत्नी।

औशीरम् [उशीर+अण्] 1 पंखे या चँवर की डंडी 2 बिस्तरा—औशीरे कामचार कृतोऽभूत्—दश० ७२ 3 आसन (कुर्सी, स्टूल आदि) 4 खस का लेप 5 खस की जड़ 6 पंखा।

औषणम् [उषण—अण्] 1 तीक्ष्णता तीक्ष्णपन 2 काली मिर्च।

औषधम् [औषधि+अण्] 1 जड़ी-बूटी, जड़ी बूटियों का समूह 2 दवादारू, साधारण औषधि 3 खनिज।

औषधि, धी (स्त्री०) [ओ० स०] 1 जड़ी-बूटी, वनस्पति—दे० ओषधि 2 रोगनाशक जड़ी-बूटी—अधिरुरोह हि मणिमन्त्रौषधीना प्रभाव—रत्न० २ 3 आग उगलने वाली जड़ी—विरमन्ति न ज्वलितुमौषधय—कि० ५। २४, (तृणज्योतीषि—मल्लि०) तु० कु० १।१० 4 वर्षभर रहने वाला या सालाना पनपने वाला पौधा, °पतिः सोम, औषधियों का स्वामी।

औषधीय (वि०) [औषध+छ] औषधि संबन्धी रोगनाशक, जड़ी-बूटियों से युक्त।

औषरम्, °रकम् [उषरे भवम्—अण्, तत. कन्] सेंधा नमक, पहाड़ी नमक।

औषस (वि०) (स्त्री०—सी) [उषस्+अण्] उषा या प्रभात से सम्बन्ध रखने वाला,—सी दौ घटना, प्रभात काल।

औषसिक, औषिक (वि०) (स्त्री०—की) [उषस्+ठञ्, उषा+ठञ् वा] जिसने प्रभातकाल में जन्म लिया है, उस काल में उत्पन्न।

औष्ट्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [उष्ट्र+अण्] 1. ऊँट से सम्बन्ध या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला 2 जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो,—त्रम् ऊँटनी का दूध।

औष्ट्रकम् [उष्ट्र+कन्] ऊँटों का झुंड—शि० ५।६५।

औष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] होठ से सम्बद्ध, ओष्ठ स्थानीय। सम०—वर्णः ओष्ठस्थानीय अक्षर—अर्थात् उ ऊ, प् फ् ब् भ् म् और व्,—स्वरः (द्वारा) होठों द्वारा उच्चरित,—स्वरः ओष्ठस्थानीय स्वर।

औष्ण्यम् [उष्ण+अण्] गर्मी, ताप।

औष्ण्यम्, औष्ण्यम् [उष्ण+ष्यञ्, उष्ण+ष्यञ्] गर्मी —रघु० १७।३३।

क

कः [कम्+ड] 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3. कामदेव 4 अग्नि 5 वायु 6 यम 7 सूर्य 8 आत्मा 9 राजा या राज कुमार 10 माठ या जौंक 11 मोर 12 पक्षियों का राजा 13 पक्षी 14 मन 15 शरीर 16 समय 17 बादल 18 शब्द, ध्वनि 19 बाल,—कम् 1 प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द (जैसा कि स्वर्ग में) 2 पानी - सत्येन माभिरक्ष त्वं वरुणेत्यभिशाप्य कम् —याज्ञ० २।१०८ केशव पतित दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भरा - सुभा० (यहाँ 'केशव' में श्लेष है) 3 सिर - जैसा कि 'कपरा' (=क शिरो धारयतीति) में।

कंस, -सम् [कम्+अस्] 1 जल पीने का पात्र, प्याला, कटोरा 2 कांसा, सफेद तांबा 3 'आढक' नाम की एक विशेष माप, —सः मथुरा का राजा, उग्रसेन का पुत्र, कृष्ण का शत्रु (कंस की कालनेमि नामक राक्षस से समता की जाती है, कृष्ण के प्रति शत्रुता का व्यवहार करते करते यह कृष्ण का घोर शत्रु बना। जिन परिस्थितियों में इसने ऐसा किया वह निम्नांकित है, "देवकी का वसुदेव के साथ विवाह हो जाने के बाद जब कि कंस अपना सुखसम्पन्न दाम्पत्यजीवन बिता रहा था, उसे आकाशवाणी सुनाई दी जिसने उसे सचेत किया कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसका मारनेवाला होगा। फलतः उसने दोनों को कारागार में डाल दिया, मजबूत हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़ दिया, और उनके ऊपर सख्त पहरा लगा दिया। ज्योंही देवकी ने बच्चे को जन्म दिया त्योंही कंस ने उसे छीन कर भौत के घाट उतार दिया, इस प्रकार उसने छः बच्चों का काम तमाम कर दिया। परन्तु सातवाँ और आठवाँ (बलराम और कृष्ण) बच्चा इतनी सावधानी रखते हुए भी सकुशल नन्द के घर पहुँचा दिया गया। भविष्यवाणी के अनुसार कंसहन्ता कृष्ण नन्द के यहाँ पलता रहा। जब कंस ने सुना तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ, उसने कई राक्षस कृष्ण को मारने के लिए भेजे, परन्तु कृष्ण ने उन सबको आसानी से मार गिराया। अन्त में उसने उन बालकों को मथुरा लिवा लाने के लिए अक्रूर को भेजा। फिर कंस और कृष्ण में घोर मल्लयुद्ध हुआ जिसमें कृष्ण के हाथों कंस मारा गया) सम०—अरिः,—अरातिः,—जित्,—घ्न्,—द्विष्,—हन् (पुं०) कंस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण—स्वयं सधिकारिणा कंसारिणा दूतेन—वेणी० १, निवेदिवान् कंसकुलं स विष्टरे—शि० १।१६,—अरिः (नपुं०) कांसा,—कारः (स्त्री०—री) 1 एक वर्णसंकर जाति, कसेरा—कंसकारशालाकारी ब्राह्मणात्सवभूवतुः—शब्द० 2 जस्ता या सफेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, कांसे की ढलाई का काम करने वाला।

कंसकम् [कंस+कन्] कांसा, कमीस या फूल।

कक् (म्वा० आ०—ककते, ककित) 1. कामना करना 2 अभिमान करना 3 अस्थिर हो जाना, दे० कक्।

ककुआकः [क जलं कूजयति याचते -क+कूज्+अलच् पृषो० नुम् ह्रस्वश्च] चातक, पपीहा।

ककुद् (स्त्री०) [क सुखं कौति सूचयति—क+कु+क्विप्, सुकागम, तस्य द] 1 चोटी, शिखर 2 मुख्य, प्रधान—दे० नी० 'ककुद' 3 भारतीय बैल या सांड के कंधे के ऊपर का कूबड़ या उभार 4. सींग 5 राजचिह्न (छत्र, चामर आदि) (पाणिनि सूत्र ५।४।१४६-७ के अनुसार 'ककुद' के स्थान में बहुव्रीहि समास में 'ककुद्' आदेश होता है—उदा० विककुद्)। सम०—स्थः इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजा शशाद का पुत्र पुरंजय,—इक्ष्वाकुवंश्य ककुद नृपाणा ककुत्स्थ इत्याहृतलक्षणोऽभूत्—रघु० ६।७१ (पौराणिक कथा के अनुसार राक्षसों के साथ देवों के युद्ध में जब देवों को मुँहकी खानी पड़ी तो वह इन्द्र के नेतृत्व में पुरंजय के पास गये और उससे युद्ध में साथ देने के लिये प्रार्थना की। पुरंजय ने इस शर्त पर स्वीकार किया कि इन्द्र उसे अपने कंधे पर उठा कर चले। फलतः इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और पुरंजय उसके कंधे पर बैठा—इस प्रकार पुरंजय ने

राक्षसों का सफाया कर दिया। इसीलिए पुरंजय 'ककुत्स्थ'—'कूबड़ पर बैठा हुआ' कहलाता है)।

ककुद्—न [कस्य देहस्य सुखस्य वा कु भूमिं ददाति —दा+क] 1 पहाड़ का शिखर या चोटी 2 कूबड़ या डिल्ला (भारतीय बैल के कंधे का उभार) 3. मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख—ककुदं वेदविदां तपोधनानाम् — मृच्छ० १।५, इक्ष्वाकुवंश्यं ककुदं नृपाणाम् —रघु० ६।७१ 4. राजचिह्न—नृपतिककुदं रघु० ३।७०, १७।२७।

ककुदावत् (वि०) [ककुद्+मतुप्] 1 कूबड़ या डिल्ले से युक्त—(पु०) पहाड़ (जिसके शृंग हों) 2 भैंसा —महोदया ककुदवन्त – रघु० ४।२२, कूबड़ वाला बैल १३।२७, कु० १।५६ -नी कूल्हा और नितंब।

ककुद्मिन् (वि०) [ककुद्+मिनि] शिखरधारी, कूबड़ युक्त (पु०) 1 कूबड़धारी बैल 2 पहाड़ 3 राजा रैवतक का नाम,—°कन्या—सुता बलराम की पत्नी रेवती— शि० २।२०।

ककुद्मत् (पु०) [ककुद्+मनुप्—बलच्] कूबड़धारी भैंसा।

ककुदस्थल [कस्य शरीरस्य कुम् अवयवं दृणाति ककु+दृ +खच्, मुम्] नितंबों का गड्ढा, जघनकूप - याज्ञ० ३।९६।

ककुभ् (स्त्री०) [क+स्कुभ्+क्विप्] 1 दिशा, भूपरिधि का चतुर्थ भाग - वियुक्ता कान्तेन स्त्रिय इव न राजति ककुभ मृच्छ० ५।२६, शि० ९।२५ 2 आभा, सौन्दर्य 3 चम्पक पुष्पों की माला 4 शास्त्र 5 शिखर, चोटी।

ककुभ [कस्य वायोः कुं स्थानं भाति अस्मात्—ककु+भा+क पृषो० वा क वात स्कुम्नाति विस्तारयति-क+स्कुभ्+क] 1 द्रोण के सिरे पर मुड़ी हुई लकड़ी 2 अर्जुनवृक्ष – ककुभसुरभि शैलं – उत्तर० १।३३,—भम् कुटज वृक्ष का फूल– मेघ० २२।

ककुभः [कक्+उलच्] बकुल वृक्ष।

कक्कोल,—ली [कक्+क्विप्, कुल्+ण—कक् च कोलश्चेति कर्म० स० स्त्रियां ङीप्] फलदार वृक्ष —कक्कोली फलजग्धि—मा० ६।१९ अने० पा०,—लम्, —लकम् 1 कक्कोल का फल 2 इसके फलों से तैयार किया गया गन्धद्रव्य।

कक्कट (वि०) [कक्ष्+अटन्] 1 कठोर, ठोस 2 हंसने वाला।

कक्कटी [कक्कट+ङीप्] खटिया

कक्षः [कक्ष्+स] 1 छिपने का स्थान 2 नीचे पहने जाने वाले वस्त्र का सिरा, कच्छे का सिरा 3 बेल, लता 4. घास, सूखी घास—यतस्तु कक्षस्तत एव वह्नि —रघु० ७।५५, ११।७५, मनु० ७।११० 5 सूखे वृक्षों का जंगल, सूखी लकड़ी 6. काख—प्रक्षिप्योर्वक्षिपं कक्षे क्षेरते तेऽभिमारतम्—शि० २।४२ 7. राजा का अन्तःपुर 8 जंगल का भीतरी भाग—वायु निर्गत्य कक्षात्—ऋतु० १।२७ कक्षान्तरगतो वायुः—रामा० 9. (किसी वस्तु का) पार्श्व 10. भैंसा 11 द्वार 12 दलदली भूमि,—क्षा 1. ककराली या काल का फोड़ा जिसमें पीड़ा होती है 2. हाथी को बाँधने की रस्सी, हाथी का तंग 3 स्त्री की तगड़ी, कटिबन्ध, करधनी, कटिसूत्र—शि० १७।२४ 4 चहारदीवारी की दीवार 5 कमर, मध्यभाग 6 आँगन, सहन 7 बाड़ा 8 भीतर का कमरा, निजी कमरा, सामान्य कमरा—कु० ७।७०, मनु० ७।२२४, गृहकलहमकाननुसरन् कक्षांतरप्रेषाक्षित—का० ६३, १८२ 9 रनिवास 10. समानता 11 उत्तरीय वस्त्र 12 आपत्ति, सतर्क उत्तर (तर्क० में) 13 प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्द्विता 14 लाग 15 लाग बाँधना 16 कलाई,—क्षम् 1 तारा 2 पाप। सम०—अग्निः जंगली आग, दावाग्नि–रघु० ११।९२,—अन्तरम् भीतर का या निजी कमरा, –अध्यक्षक 1 अन्तःपुर का अधीक्षक 2 राजोद्यानपाल 3 द्वारपाल 4. कवि 5. लम्पट 6 खिलाड़ी, चित्रकार 7 अभिनेता 8 प्रेमी 9 रस या भावना को शक्ति,—अवस् कन्धों का जोड़,—वः कक्षुवा,—(क्षा) पट लंगोट,—वृद्धः कौंच,—श्वाः, - श्वः कुत्ता।

कक्ष्या [कक्ष+यत्+टाप्] 1 घोड़े या हाथी का तंग 2 स्त्री की तगड़ी या करधनी - शि० १०।६२ 3 उत्तरीय वस्त्र 4 वस्त्र की किनारी 5 महल का भीतरी कमरा 6 दीवार, घेरा या बाड़ा 7 समानता।

कक्ष्या [कक्ष्+यत्+टाप्] घेरा या बाड़ा, विशाल भवन का प्रभाग या खण्ड।

कक्षकः [कक्षक्+अच्] 1 बगला 2. आम का एक प्रकार 3 यज्ञ 4 क्षत्रिय 5 बनावटी ब्राह्मण 6 विराट के महल में युधिष्ठिर द्वारा रक्खा गया अपना नाम। सम०—पत्र बगले के परों से सुसज्जित (—त्रः) बगले के परों से युक्त बाण—रघु० २।३१, उत्तर० ४।२० महावी० १।१८, –पक्षिन् (पु०) =ककपत्र,—मुखः चिमटा—वेणी० ५।१, - श्वन्, कुत्ता (बगले की भाँति सोता हुआ)।

कक्षकटः, कक्षकटकः [ककक्ष्+अटन्, कन् वापि] 1. कवच, रक्षात्मक जिरह बख्तर, सैनिक साज-सामान— वेणी० २।२६, ५।१, रघु० ७।५९ 2 अंकुश।

कक्षकक्षः,—क्षम् [कक्ष इति कथति, कक्ष+कक्+अच्] 1. कड़ा–दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन विभाति भर्तु० २।७१, इव सुवर्णकङ्कण गृहीतम् - हि० १ 2. विवाह-सूत्र, कंगना (कलाई के चारों ओर बँधा हुआ) —उत्तर० १।१८, मा० ९।९, देख्य. कङ्कणमोक्षाय

मिलिता राजन् घर प्रेष्यताम्—महावी० २।५० 3 सामान्य आभूषण 4 कलगी, —कः पानी की फुहार —मितभे हाराली नयन युगले कङ्कणसरम्—उद्भट,—की, कङ्कणिका 1. चूघर 2 चूघर-बद्धा आभूषण।

कङ्कतः,—तम्, कङ्कतकी,—तिका [कङ्क+अतच्] कंघी, बाल बाहने की कंघी शि० १५।३३।

कङ्कुरम् [कं सुखं किरति क्षिपति—कृ+अच्] मट्ठा (पानी मिला हुआ)।

कङ्कालः—लम् [क शिरः कालयति क्षिपति—कम्+कल्+णिच्+अच्] अस्थिपञ्जर - मा० ५।१४, । सम०—मालिन् (पुं०) शिव,- क्षेत्र (वि०) कमजोर होकर जो हड्डियों का ढाँचा रह गया हो—उत्तर० ३।४३।

कङ्कालयः [कंकाल+या+क] शरीर।

कङ्कोलकः,—लिः [कङ्क्+एलक, एलिल वा] अशोक वृक्ष।

कङ्कोली [कंक्+ओलच्+ङीष्]=दे० ककोली।

कङ्कणुलः [कगु+ला+क] हरड़।

कच् 1 (भ्वा० पर०—कचति, कचित) चिल्लाना, रोना।

II (भ्वा० उभ०) 1 बाँधना, जकड़ना (आ-पूर्वक), स्वस्त्र बाधकत्वे वरम्—भट्टि० १४।९४ 2 चमकना।

कच [कच्+अच्] 1, बाल (विशेषकर सिरके)—कचेषु च निगूहितान्—महा०, दे० मो० °ग्रह;—अलिनी-जिग्ण कचानां चय भर्तृ० १।५ 2 सूखा या मरा हुआ पौधा, लतचिह्न या किण 3 वमन, पट्टी 4 कपड़े की गोट 5 बादल 6 बृहस्पति का एक पुत्र (राक्षसों के साथ लंबे युद्ध में देवता बहुधा हारा करते थे और असहाय हो जाते थे, परन्तु जो राक्षस युद्ध में मारे जाते थे, उनको फिर उनका गुरु शुक्राचार्य अपने गुप्तमंत्र (यह मंत्र केवल शुक्राचार्य के पास ही था) द्वारा पुनर्जीवित कर देता था। देवों ने इस मन्त्र को, यथा शक्ति, प्राप्त करने का संकल्प किया और कच को शुक्राचार्य के पास उसका शिष्य बन कर मंत्र सीखने के लिए फुसलाया। फलतः कच शुक्राचार्य के पास गया, परन्तु राक्षसों ने उसकी दो बार इसलिए हत्या की कि कहीं वह इस ज्ञान में पारंगत न हो जाय परन्तु दोनों ही बार, शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी के (जिसका कि कच से प्रेम हो गया था) बीच में पड़ने से उसे फिर जिला दिया। इस प्रकार परास्त हो राक्षसों ने उसकी तीसरी बार हत्या करके, उसके शव को जला दिया और उसकी राख शुक्राचार्य की सुरा में मिला दी। परन्तु देवयानी ने उस युवक को पुनर्जीवित करने की अपने पिता से फिर प्रार्थना की। उसके पिता ने उसे फिर जिला दिया। तब से लेकर देवयानी उसको और भी अधिक प्रेम करने लगी, परन्तु कच ने उसके प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि तुम मेरी छोटी बहन हो। इस बात पर देवयानी ने युवक को शाप दे दिया कि यह मन्त्र जो उसने सीखा है शक्तिहीन हो जायगा। बदले में कच ने भी उसे शाप दिया कि उससे कोई ब्राह्मण विवाह नहीं करेगा, और उसे क्षत्रिय की पत्नी बनना पड़ेगा), —चा हरिणी। सम०—अग्रम् घूँघट, अलकें,—आवृत बिखरे बालों वाला - कि० १।३६, —ग्रहः बाल पकड़ना, बालों से पकड़ने वाला—रघु० १०।४७, १९।३१, ——ग्रहः,—ग्राहः,—हस्तः विधिपूर्वक या अलंकृत बाल (अमर कोश के अनुसार कच शब्द 'समूह' को व्यक्त करते हैं —पाश- पञ्चम्य हस्तस्य कलापार्वा कचान्तरे), —भारः घूआँ।

कचग्रहणम् [कचस्य अनरवस्य ग्रहणम्—ष० त०, सक० परस्मै०] वह मदी जहाँ सामान पर किसी प्रकार का कोई शुल्क न देना पड़े।

कचग्राहः [कच्यते दृश्यते वेलया—कच्+अङ्गलच्] समुद्र।

कचाकचि (अव्य०) [कचेषु कचेषु गृहीत्वेदं युद्धं प्रवृत्तम् ष० स० इच्, पूर्वपददीर्घः] बाल के बदले एक दूसरे के बाल पकड़ कर (खींच कर, नोच कर) युद्ध करना।

कचाकुरः [कचवत् केश इव शून्ये अटति—कच+अट्+उरच्] अलकुकुट।

कचरः (वि०) [कुत्सितं चरति कु+चर+अच्] 1 बुरा, मलिन 2 दुष्ट, नीच, अधम।

कचिदादि (अव्य०) [कम्+चित्, चि+क्विप् पृषो० मस्य दत्वम्—कश्च चिच्च द्वयो समाहारः - इ० स०] (क) प्रश्नवाचकता ('मुझे आशा है' प्रायः ऐसा अनुवाद)—कच्चित् बहुमिव विस्मृतवानसि त्वं—श० ६, कच्चिन्मृगीणामनघा प्रसूति—रघु० ५।७, ५, ६, ८।९ भी (ख) हर्ष तथा (ग) माङ्गलिकता-सूचक अव्यय।

कच्छः—च्छम् [केन जलेन क्षणाति दीप्यते क्षायते वा—क+क्षो+क] 1 तट, किनारा, गोट, सीमावर्ती प्रदेश (चाहे पानी के निकट हो या दूर)—यमुनाकच्छमवतीर्णे—पञ्च० १, गन्धमादन कच्छोऽध्यासित—विक्रम० ५, शि० ३।८० 2 दलदल, कीचड़, पंकभूमि 3 अधोवस्त्र की गोट या झालर जो लाँग का काम दे—दे० कक्षा 4 किश्ती का एक भाग 5 कछुवे का अंग विशेष (जैसा कि 'कच्छप' में),—च्छा नीवार। सम० अंतः द्वीप या नदी का किनारा —कः (स्त्री०—की) 1 कछुवा, कछुवी,—केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे—गीत० १, मनु० १।४४, १२।४२ 2. बलयुद्ध में एक स्थिति 3. कुबेर की नौ निधियों में से एक (—की) 1 कछुवी 2 एक प्रकार की वीणा सरस्वती की वीणा,—भूः (स्त्री०) दलदली भूमि, पङ्कभूमि।

कच्छ (च्छा) टिका, कच्छाटी (कच्छ+कट्+अच्+कन्, इत्वम्, टाप् च० परक्षपम्, परक्षपाभ्यां 'कच्छाटिका' ङीषि हृते 'कच्छाटी'] धोती का छोर जो शरीर पर चारों ओर लपेटने के बाद इकट्ठा करके लाँग की भाँति पीछे टाँग लिया जाता है।

कच्छु:, कच्छू (स्त्री०) [कच्+ऊ, छ आदेशः, विकल्पेन ह्रस्वश्च] खुजली, खाज।

कच्छुर (वि०) [कच्छू+र ह्रस्वश्च] 1 खाज वाला, खुजली की बीमारी वाला 2 कामुक, लम्पट।

कज्जलम् [कुत्सितं जलमस्मात्प्रभवति—को कदादेशः] दीपक की कालिमा जो औषध के रूप में आँखों में आँजी जाती है, काजल—यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति—का० १०५, अञ्जयति सा विधुतकज्जल-लोलनेत्रम्—चौर० १५, °कालिमा—अमरु ८८ 2 सुर्मा (जो अंजन की भाँति प्रयुक्त किया जाता है) 3. स्याही, मसी। सम० ध्वज दीपक, लैम्प, —दीपकः,—कम् दीवट, (लकड़ी का बना दीपक का स्टैण्ड)।

कज्ज् (म्वा० आ०) 1 जाना 2 चमकना।

कज्जारः [कम्+चर्+णिच्+अच्] 1 सूर्य 2 मदार का पौधा।

कञ्चुकः [कञ्च्+उकन्] 1 बख्तर, कवच 2 साँप की त्वचा, केंचुली—पंच० १।६६ 3 पोशाक, वस्त्र, कपड़ा—धर्म° प्रवेशित —रा० ५ 4 अगरखा, चोगा —अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामन —रत्न० २।३, पंच० २,९४ 5 चोली, अंगिया —क्वचिदिवेन्द्रगजाजिनकञ्चुका—शि० ६।५१, १२।२० अमरु ८१, (उक्ति—निन्दति कञ्चुकारं प्राय शुष्कस्तनी नारी—तु० 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा')।

कञ्चुकालुः [कञ्चुक+आलुच्] साँप।

कञ्चुकित (वि०) [कञ्चुक+इतच्] 1 बख्तर से सुसज्जित, कवच धारण किये हुए 2 पोशाक पहने हुए —कथा° भर्तृ० ३।१३०।

कञ्चुकिन् (वि०) [कञ्चुक+इनि] कवच या जिरहबख्तर से सुसज्जित,—(पुं०) 1 अन्त पुर का सेवक, जनानी ड्योढ़ी का द्वारपाल (नाटकों में आवश्यक पात्र —अन्त पुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वित, सर्वकार्यार्थकुशल कञ्चुकीत्यभिधीयते) 2 लम्पट, व्यभिचारी 3 साँप 4 द्वारपाल 5 जौ।

कञ्चुलिका, कञ्चुली कञ्च्+उलच्+ङीष्+कन्, ह्रस्व] चोली—त्व मुग्धाक्षि विनैव कञ्चुलिकया धत्से मनो-हारिणीं लक्ष्मीम्—अमरु २७।

कञ्जः [कम्+अन्+ड] 1 बाल 2 ब्रह्मा,—अम् 1 कमल 2. अमृत, सुधा। सम०—ज: ब्रह्मा,—जाक्षः विष्णु।

कञ्जकः, —की [कञ्ज केश इव कायति—कञ्ज+कै+क] एक प्रकार का पक्षी।

कञ्जनः [कम्+जन्+अच्] 1 कामदेव 2 एक प्रकार का पक्षी (कोयल)।

कञ्जरः, कञ्जारः [कम्+ज+अक्, अच् वा] 1. सूर्य 2 हाथी 3 पेट 4 ब्रह्मा की उपाधि।

कञ्जलः [कञ्ज्+कलच्] एक प्रकार का पक्षी।

कट् (भ्वा० पर० —कटति, कटित) 1 जाना 2 ढकना। अ — 1. प्रकट होना 2 चमकना (प्रेर०—कटयति) प्रकट करना, प्रदर्शित करना, दिखलाना, स्पष्ट करना —औज्ज्वल्य परमामृत प्रकटयत्यालोकभीम तम —मा० ५।११, मुद्रुदिव प्रकटय्य सुखप्रदां प्रथममेक-रसामनुकूलताम् उत्तर० ४।१५, रत्न० ४।१६,

कटः [कट्+अच्] 1 चटाई —मनु० २।२०४ 2 कूल्हा 3. कूल्हा और कटिदेश, कूल्हे के ऊपर का गर्त 4 हाथी का गण्डस्थल कण्डूयमानेन कट कदाचित् —रघु० २।३७, ३।३७, ४।४७ 5. एक प्रकार का घास 6 शव 7 शववाहन, अरथी 8 पासे का विशेष प्रकार से फेंकना—निन्दितदक्षितमार्ग कटेन विनि-पातितो यामि मृच्छ० २।८ 9 आधिक्य (जैसा कि 'उत्कट' में) 10 बाण 11. प्रथा 12 श्मशानभूमि, कब्रिस्तान। सम०—अक्षः नजर, तिरछी निगाह, विक्षेप—आह निखात इव मे हृदये कटाक्ष—मा० १।२९, २५, २८, मेघ० ३५,—उदकम् 1 (मृत पितरों को) तर्पण के लिए जल 2 मद, (हाथी के मस्तक से बहने वाला तरल पदार्थ),—कारः 1 संकर जाति (निम्न सामाजिक अवस्था की) (शूद्रायां वैश्य-तश्चौर्यात् कटकार इति स्मृत—उशना) 2 चटाई बुनने वाला, कोल: पीकदान, —खादकः गीदड़ 2 कौवा 3 शीशे का बर्तन, घोषः गोपालपुरी,—पूतनः, —ना एक प्रकार के प्रेतात्मा—अमेध्यकुणपाशी च क्षत्रिय कटपूतन मनु० १२।७१, उत्साला कटपूतना-प्रभृतय सारावित्र कुर्वते—मा० ५।१२, (°पूतन—अनं० पा०) २३ भी,—भूः 1. शिव 2 भूत या, पिशाच 3 क्रीडा,—भोज्य, —यज्ञ नितंब, कूल्हा 1 हाथी से दान एकत्र करना (शिलोञ्छन) 2 राज-संकट, खाल्लिनी शराब।

कटक—कम् [कट्+वुन्] 1 कड़ा—आबद्धहेमकटका रहसि स्मरामि—चौर० १५ 2 मेखला, करधनी 3. रस्सी 4 शृंखला की एक कड़ी 5 चटाई 6 जांघ 7 पर्वत पार्श्व प्रफुल्लवृक्षी कटकैरिव स्थै कु० ७।५२, रघु० १६।३१ 8 अधित्यका—शि० ४।६५ 9 सेना, शिविर—मुद्रा० ५।१० 10 राजधानी

11 घर का आंगन 12. घृत, पहिया।

कटकिन् (पु०) [कटक+इनि] पहाड़।

कटभूः [कट+कट्+अप् वा०, मुम्] 1. आग 2 सोना 3. मंगल—काव्य० १।२८५।

कटमम् [कट्+क्मुट्] घर की छत या छप्पर।

कटाहः [कट+आ+हन्+ड] 1 कड़ाई 2 कछुवे की कड़ी खाल 3. कूआँ 4. पहाड़ी मिट्टी का टीला 5. टूटे बर्तन का खंड—शि० ५।३७, नै० २२।३२।

कटिः,—टी (स्त्री०) [कट+इन्, कटि+ङीप् वा ; 1 कमर 2 नितंब (साहित्य शास्त्री इस बात को 'ग्राम्य' समझते हैं, इसका उदाहरण सा० द० ५७४ पृष्ठ पर —कटिस्ते हरते मन) 3 हाथी का गंडस्थल। सम०—तटम् कूल्हा—कटीतटनिवेशितम्— भृष्ठ० १।२७, —त्रम् 1. धोती 2 मेखला, करधनी, श्रोणिः नितंब, —मालिका स्त्री की लंगोटी या करधनी, - रोहकः महावत, पीलवान,— शोभकः कूल्हा,—शृंखला घुंघरू वाली करधनी,— सूत्रम् करधनी या मेखला।

कटिका [कटि+कन्+टाप्] कूल्हा, कमर।

कटोरः,—रम् [कट्+ईरन्] 1 गुफा, खोखर 2 कूल्हों का गर्त,—रम् कूल्हा।

कटीरकम् [कटीर+कन्] नितम्ब, चूतड़।

कटु (वि०) (स्त्री०—टु या टुवी) [कट्+उ] 1 तिक्त, कड़वा, चरपरा (रस का एक भेद माना जाता है, रस छ हैं —कटु, अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय और लवण) —मनु० १।७९ 2. गंधयुक्त, तीक्ष्ण गंध वाला —रघु० ५।४३ 3 दुर्गन्धयुत, बदबूदार 4 (क) कटु, व्यंग्यात्मक (शब्द), याज्ञ० ३।१४२ (ख) अरुचिकर, अप्रिय —श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवक्षु रघु० ६।८५ 5 ईर्ष्यालु 6 गरम, प्रचण्ड,—टुः तीक्ष्णपन, तिक्तता, कड़ुवापन, (६ रसों में से एक), -टु (नपु०) 1 अनुचित कार्य 2 लोकापवाद, दुर्वचन, निन्दा। सम०—कीटः—कीटकः डांस, मच्छर, —कन्द, टिटिहिरी, —त्वच् (नपु०) सोंठ, इसी प्रकार °भंग, °भद्रम् सोंठ या अदरक,—तिक्तकः अनाज जो जल की बाढ़ में न आया हो, —तैलम् एक सुगन्धित द्रव्य, रक्त मेंढक।

कटुक (वि०) [कटु+कन्] 1 तीक्ष्ण, चरपरा 2 प्रचंड, गरम 3 अप्रिय, अरुचिकर,—कः तीक्ष्णपन, खटास (६ रसों में से एक) दे० ऊ० 'कटु'।

कटुकता [कटुक+ता] अक्षिप्त व्यवहार, अक्खड़पना।

कटुरम् [कट+उरच्] पानी मिला हुआ मट्ठा।

कटोरम् [कट्+ओलच् रलयोरभेद] मिट्टी का कसोरा।

कटोलः [कट्+ओलच्] 1 चरपरा स्वाद 2 नीच जाति का पुरुष, वैसा कि चाण्डाल।

कठ् (भ्वा० पर०) कठिनाई से रहना—दे० 'कष्ठ्'।

कठः [कठ्+अच्] एक मुनि का नाम, वैशम्पायन का शिष्य यजुर्वेद की कठ शाखा का प्रवर्तक,—ठाः कठ मुनि के अनुयायी। सम०—चूर्तः यजुर्वेद की कठ शाखा में निष्णात ब्राह्मण,—प्रोक्तिः यजुर्वेद की कठ शाखा में पारंगत ब्राह्मण।

कठकर्दः [कठ+मृद्+अण्] शिव।

कठर (वि०) [कठ्+अरच्] कड़ा, सख्त।

कठिका [कठ्+इन् वा०] खड़िया।

कठिन (वि०) [कठ्+इनच्] 1 कड़ा, सख्त कठिन विषमामेकवेणीं सारयन्तीम् —मेघ० ९२, अमर० ७२ इसी प्रकार °स्तनी 2 कठोर-हृदय, क्रूर, निर्दय —न विदीर्येत कठिना खलु स्त्रियः —कु० ४।५ पद्य० १।६४ अमर० ६, इसी प्रकार °हृदय 3 कठोर, अनम्य 4 तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र (पीड़ा आदि)—नितान्तकठिना दक्ष मम न वेद सा माननीम्— विक्रम० २।११ 5 पीड़ा देने वाला,—नः झुरमुट,—नम् 1 साफ की हुई शक्कर से बनी मिठाई 2 खाना बनाने के लिए मिट्टी की हांडी (—इस अर्थ में नपु० भी)।

कठिनिका, कठिनी [कठिन+ङीष् कन्+टाप्, ह्रस्वम्] 1 खड़िया 2 कड़ी अंगुली।

कठोर (वि०) [कठ्+ओरच्] 1 कड़ा, ठोस - कठोरास्थिप्रथि—मा० ५।३४ 2 क्रूर, कठोर-हृदय, निर्दय— अयि कठोर यश किल ते प्रियम्—उत्तर० ३।२७, इसी प्रकार °हृदय, °चित्त 3. तीक्ष्ण, चुभने वाला, °अंकुश — शा० १।२२ 4 पूर्ण विकसित पूर्ण, पूरा उगा हुआ,—कठोरगर्भा जानकीं विमुच्य -उत्तर० १।१ ४९, इसी प्रकार – कठोरतारारुचिपलाञ्छनच्छवि - शि० १।२० 5 (आल०) परिपक्व परिष्कृत—कलाकलापालोचनकठोर्मतिभिः —का० ७।

कठ् = दे० कठ।

कठ (वि०) [कठ्+अच्] 1 गूंगा 2 कर्कश 3 अनजान, मूर्ख।

कडङ्गर (क)र [कड+कृ(गृ वा)+खच्, मुम्] तिनका।

कडङ्गर (क)रीय (वि०) [कडङ्ग(क)र+छ] जिसको तिनका खिलाया जाय,—यः घास खाने वाला पशु (गाय, भैंस आदि) रघु० ५।९।

कडञ्जम् [गडयते सिच्यते अलादिकम् अत्र - गद्+अञ्जन्, गकारस्य ककार] एक प्रकार का बर्तन।

कडल्लिका [कलहिका] विज्ञान, शास्त्र।

कड (ल)म्ब. कड्+अम्बच्, डस्य ल] डंठल, (साग भाजी का)।

कडार (वि०) [गद्+आरन् कडादेश] 1 भूरे रंग का 2, घमंडी, अभिमानी, ढीठ,—रः 1. भूरा रंग 2. सेवक।

कडिञ्चुकः [कट्यां तोलनं ग्रहणं यस्य, पृषो० टस्य ड] तलवार, खड्ग।

कण् i (भ्वा० पर० –कणति, कणित) 1 शब्द करना, चिल्लाना, (दुख में) कराहना 2 छोटा होना 3. जाना।
ii (चुरा० पर० या प्रेर०) आँख झपकना, पलक बन्द करना।

कणः [कण्+अच्] 1 अनाज का दाना—तण्डुलकणान्—हि० १, मनु० १२।९२ 2. अणु या (किसी—वस्तु का) लव 3. बहुत ही थोड़ा परिमाण द्रविण° शा० १।१९, ३।५ 4. धूल का जर्रा रघु० १।८५, पराग —विक्रम० २।७ 5. (पानी की) बूँद या फुहार —कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम्—शा० ३।५, अङ्कु°, अम्बु°,—मेघ० २६, ४५, ६९, अमरु ५४ 6. अनाज की बाल 7. (आग की) चिंगारी। सम०—अदः,—अशनः, —भुज् (पु) वैशेषिक दर्शन के निर्माता का नाम (जिसे अणुवाद का सिद्धान्त कह सकते हैं)—औरभ्रम् सफेद जीरा,—आशनः एक प्रकार का पक्षी,—खादः भंवर, जलावर्त।

कणयः [कण्+या+क] लोहे का भाला या छड़,—लोहदण्डस्तु कणय वैज० यावपरुषकणयकर्षणम्—आदि० दश०।

कणशः (अव्य०) [कण+शस्] छोटे २ अंशों में, दाना-दाना, थोड़ा-थोड़ा, बूंद-बूंद तदिदं कणशो विकीर्यते (मस्म) कु०—४।२७।

कणिकः [कण्+कन्, इत्वम्] 1 अनाज का दाना 2. एक छोटा कण 3 अनाज की बाल 4. भुने हुए गेहूँ का भोजन।

कणिका [कण+ठन्+टाप्] 1. अणु, एक छोटा अथवा सूक्ष्म जर्रा 2 (पानी की) बूंद—मेघ० ९८ 3. एक प्रकार का अन्न या चावल।

कणिशः -शम् [कणिन्+शी+क] अनाज की बाल।

कणीयस् (वि०) [कण्+ईयसुन्] छोटा, नन्हा।

कणे (अव्य०) [कण्+ए] इच्छा-संतृप्ति का अभिप्रायक अव्यय (श्रद्धाप्रतीघात),—कणेहत्य पय पिबति—सिद्धा० 'वह मन भर कर दूध पीता है।'

कणेरा—का (स्त्री०) [कणेर+टाप्, कण्+एरच्] 1. हथिनी 2 वेश्या, रंडी।

कण्टकः, —कम् [कण्ट्+अच्, उलच्] 1 काँटा,—पादलग्न करस्थेन कण्टकेनेव कण्टकम् (उद्धरेत्)—चाण० २२ 2. फांस, डंक—याज्ञ० ३।५३ 3. (आल०) ऐसा दुःखदायी व्यक्ति जो राज्य के लिए काँटा तथा अच्छे प्रशासन एवं शान्ति का शत्रु हो—उत्खातलीकृतयकण्टकेऽपि —रघु० १४।७३, त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम्—शा० ७। ३, मनु० ९।२६० 4 (अत) सताने या क्लेश पहुँचाने का मूल-कारण, उत्पात—मनु० ९।२५३ 5 रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना 6 अंगुली का बाहून 7 कष्ट पहुँचाने वाला मानव, —क. 1 बाँस 2 कारखाना, निर्माघरी। सम० अग्रम्,—अग्रकः -भुज् (पु०) ऊँट,—उद्धरः 1 (शा०) काँटा निकालना, सफाई करना 2 (आल) जनसाधारण को सताने वाले तथा चोर आदि उत्पातकारियों को दूर करना,—कण्टकोद्धरणे नित्यमतिष्टेदलमुल्बणम् मनु० ९।२५२ —द्रुमः 1 काँटा, झाड़ी—भवन्ति नितरां स्फीता सुखेन्ने कण्टकद्रुमा —मृच्छ० ९।७ 2 सेमल का वृक्ष,—फलः कटहल, गोखरू, रेंड या धतूरे का पेड़,—मर्दनम् उपद्रव शान्त करना, —विशोधनम् सब प्रकार बखेड़ों के स्रोतों का उन्मूलन करना,—राज्यकण्टकविशोधनोद्यत —विक्रमांक० ५।१।

कण्टकित (वि०) [कण्टक+इतच्] 1 काँटेदार 2 खड़े हुए रोंगटों वाला, पुलकित, रोमांचित—प्रीतिकण्टकितत्वच—कु० ६।१५, रघु० ७।२२।

कण्टकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कण्टक+इनि] 1 काँटेदार, कटीला,—कण्टकिनो वनान्ता—विक्रमांक० १।११६ 2. सताने वाला, कष्टदायक। सम०—फलः कटहल।

कण्टकिलः [कण्टक+इलच्] काँटेदार बाँस।

कण्ठ् (भ्वा०, चुरा० उभ०—कण्ठति-ते, कण्ठयति-ते, कण्ठित) 1 विलाप करना, शोक करना 2 चूकना, आतुर होना, लालायित होना, खेद के साथ स्मरण करना (इस अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु के पूर्व 'उद्' उपसर्ग लगा कर सर्व०, अभि० या सम्प्र० की संज्ञा के साथ इस क्रिया का प्रयोग करते हैं)—परिष्वङ्क्ष्य वात्सल्यावयमुत्कण्ठते जन —उत्तर० ६।२१, यथा स्वर्गाय लोकाय उत्कण्ठते—विक्रम० ३, सुरतव्यापारलोलाविभौ चेत समुत्कण्ठते—काव्य० १।

कण्ठः, —ठम् कण्ठ्+अच्] 1. गला,— कण्ठे निपीडयन् मारयति—मृच्छ०८, कण्ठ स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुष —श० ४।५ कण्ठेषु स्खलित गतेपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां शतम् ९।३ 2 गर्दन—कण्ठाश्लेष प्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे —मेघ० ३।९७ ११२, अमरु १९।५७, कु० ५।५७ 3 स्वर आदाय - सा मुक्तकण्ठ चक्रन्द—रघु० १४।६५, किन्नरकण्ठि ८।६३, आर्यपुत्रोपि प्रमुक्तकण्ठ रादिति—उत्तर० ३ 4 वर्तन की गर्दन या किनारा 5 पड़ोस, अविच्छिन्न सामीप्य (जैसा कि 'उपकण्ठ' में)। सम० - आभरणम् गले का आभूषण - परीक्षितं कांचनमुत्तमं-मेतल्लोकस्य कण्ठाभरणत्वमेतु—विक्रमांक० १।२४ तु० सरस्वती कण्ठाभरण जैसे नाम,—कूणिका भारतीय बीजा, -ग्रह (वि०) गले में रहने वाला, गले में आने वाला अर्थात् विषयुक्त होने वाला, न वदेद्यावनी भाषां प्राणै कण्ठगतैरपि—सुभा०, तट,—ठम्,—ढी गले का पार्श्व या भाग, —त्वक् (वि०) गर्दन तक पहुँचने वाला,

—नीडकः चील,—नीलकः बड़ा सीप या मशाल,—पाशः 1 हाथी की ग्रीवा के चारो ओर बंधी हुई रस्सी 2 रोकने वाला,—मुक्ता छोटा हार—विद्युत्पां कण्ठभूषात्वमेतु-विक्रमांक० १८।१०२, -मणिः 1 गले में पहनने का मणि 2 प्रिय वस्तु,—लग्न 1. पट्टा 2 घोड़े को रोकने वाला, -वर्तिन् (वि०) गले में होने वाला अर्थात् विदा होने वाला—प्राणै —रघु० १२।५४, —शोष (शा०) 1 गले का सूख जाना, खुश्क हो जाना 2 (आल०) निष्फल प्रतिवाद,- अवलम्बनम् गर्दन के सहारे लटकना,—सूत्रम् एक प्रकार का आलिंगन —यत्कुर्वते वक्षसि बल्लभस्य स्तनाभिघातं निविडोपगूहान्, परिश्रमार्थं मनसैंविदग्धास्तत्कण्ठसूत्रं प्रवदंति सन्त, कण्ठसूत्रमपदिश्य योषित - रघु० १९।२२ ('स्तनालिंगन' भी कहलाता है) - स्थ (वि०) 1 गले में होने वाला 2 कण्ठस्थानीय ।

कण्ठतस् (अव्य०) [कण्ठ+तसिल्] 1 गले से 2 स्पष्ट रूप से स्पष्टरूप से ।

कण्ठाल [कण्ठ्+आलच्] 1 किसी 2 फावड़ा, कुदाली 3 युद्ध 4 ऊँट. ला बर्तन जिसमें दूध बिलोया जाय ।

कण्ठिका [कण्ठ+ठन्+टाप्, इत्वम्] एक लड़का हार या माला ।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ+ङीष्] 1 गर्दन, गला 2 हार, पट्टी 3 घोड़े की गर्दन के चारो ओर बंधी रस्सी । सम० रव 1 सिंह 2 मदमाता हाथी—कंठीरवो महाग्रहेण न्यपतत्- दश० ७ 3 कबूतर 4 स्पष्ट घोषणा या उल्लेख (इति कण्ठीरवोल्लेखम्) ।

कण्ठीरव कण्ठ+ईलच् ऊँट ।

कण्ठेकाल [कण्ठे कालो विषपानजो नीलिमा यस्य अलु० स०] शिव ।

कण्ठ्य (वि०) [कण्ठ+यत्] 1 गले से सबन्ध रखने वाला गले के उपयुक्त या गले में होने वाला 2 कण्ठस्थानीय । सम० वर्ण, कण्ठस्थानीय अक्षर नामतः अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् और ह, स्वरः कण्ठस्थानीय स्वर (अ और आ) ।

कण्ड् (स्वा० उभ०) 1 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2 खुजली होना 3 कूटकर भूसी अलग करना, (चुरा० उभ० कण्डयति-ते, कण्डित) 1 (अनाज), गाहना दाने अलग करना 2 रक्षा करना, बचाना ।

कण्डनम् [कण्ड्+ल्युट्] 1 फटकना, दानों से भूसी अलग करना अज्ञानतार्थं तस्यार्थं (अध्ययनम्) नुदाजा कण्डन यथा 2 भूसी,—नी 1 ओखली 2 मूसल ।

कण्डरा [कण्ड्+अरन्] नस ।

कण्डिका [कण्ड्+क्वुल्+टाप्] छोटा अनुभाग, छोटे से छोटा अनुच्छेद (जैसा कि शुक्ल यजुर्वेद में) ।

कण्डु (पु० स्त्री०), कण्डू (स्त्री०) [कण्ड्+कु, कण्ड्+ऊ] 1 खुरचना 2 खुजाना —कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुम्—कु० १।९, शि० ४।१७।

कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्ड्+यक्+क्तिन्] 1. खुरचना 2 खुजाना ।

कण्डूयति -ते (ना० धा०, उभ०) (भू० क० कृ०—कण्डूयित) 1 खुरचना, शनै. २ मसलना —कण्डूयमानेन कटं कदाचित् —रघु० २।३७, मृगीमकण्डूयत् कृष्णसार —कु० ३।३६, मृगे कृष्णसृगस्य वामनयनं कण्डूयमाना मृगीम्—श० ६।१६, मनु० ४।४२ ।

कण्डूयनम् [कण्डूय+यक्+ल्युट्] खुरचना, मसलना—कण्डूयनैर्दशनिवारणैश्च—रघु० २।५,—नी मसलने के लिए बुश ।

कण्डूयनकः [कण्डूयन+कन्] खुजली पैदा करने वाला, गुदगुदी करने वाला—पच० १।७१ ।

कण्डूया [कण्डू+यक्+अ+टाप्] 1 खुरचना 2. खुजलाना।

कण्डूल (वि०) [कण्डू+लच्] जिसे खुजली का विकार हो, जो खुजली अनुभव करता हो, या खुजलाहट पैदा करने वाला कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकण्डूनकंदेन सपादिभि उत्तर० २।९ ।

कण्डोल [कण्ड्+ओलच्] 1. (बेंत या बांस की बनी) टोकरी जिसमें अनाज रखा जाय 2 डोली, भण्डार-गृह 3 ऊँट,- की चाबाल की बीना ।

कण्डोल [कण्ड्+ओलन्] झाझा, एक तरह का फूलगा ।

कण्व [कण्+क्वन्] एक ऋषि का नाम, शकुन्तला का धर्मपिता, काण्व ब्राह्मणवंश का प्रवर्तक । सम० —दुहितृ,—सुता शकुन्तला, कण्व की पुत्री ।

कत, कतक [क जलं शुद्धं तनोति—तन्+ड—तारा०] निर्मली का पौधा (इसका फल गदले पानी को स्वच्छ कर देने वाला बतलाया जाता है) रीठा - फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादनम्, न नाम ग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति । मनु० ६।६७, तक्-तकम् इस वृक्ष का फल, रीठा, दे० 'अम्बुप्रसादन' भी ।

कतम (सर्व० वि०) (नपु०—°मत्) [किम्+डतमच्] कौन सा कौन सा—अपि आयते कतमेन विभागेन गत स आत्म इति- विक्रम० १, अथ कतम पुनर्भूतमधिकृत्य गास्यामि मा० १, कतमे ते गुणास्तस्य भानुदाहरन्यायमिमा —मा० १, (कभी कभी 'किम्' के स्थान में बलप्राप्त प्रत्यादेश के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

कतर (सर्व० वि०) (नपु०—°रत्) [किम्+डतरच्] कौन, दो में से कौन सा, - नैतद्विद्म कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः —भग० २।६ ।

कतमाल: [कस्य जलस्य तापाय शोषणाय अलति पर्याप्नोति अल्+अच्] अग्नि, नु० कतमाल ।

कति (सर्व० वि०) [किम् डति] (सदैव ब० व० में प्रयुक्त—कति, कतिभि.) 1 कितने—कत्वम्बय., कति

सूचक—महा० १०।८८।१८ 2. कुछ (जब 'कति' के साथ चित्, चन या अपि जोड़ दिया जाता है, तो शब्द की प्रश्नवाचकता नष्ट हो जाती है, और वह अनिश्चयार्थक बन जाता है—अर्थ होता है- कुछ, कई, थोड़े से—अस्ति विद्या कतिचिन्मे पदानि गत्वा—मा० २।१२, कत्यपि मासरात्रि—अभि० २५, तदिच्छन्ती कतिचिदवलोकान्तरसुखम् स कामी नीत्वा मासान्—मेघ० २)।

कतिधाकृत्वः (अव्य०) [कति+धाकृत्वसुच्] कितनी बार।

कतिधा (अव्य०) [कति+धा] 1 कई बार 2 कितने स्थानों पर, या कितने भागों में।

कतिपय (वि०) [कति+अयच्, पुक् च] कुछ, कई, कई एक—कतिपयक्षणमेतन्मम कथय,—उत्तर० ३।२०, मेघ० २३,—कतिपयदिवसावसाने - कुछ दिनों के बीत जाने पर—वर्षे कतिपयैरेव क्षितिरक्षस्य स्वरैरिव—शि० २।७२।

कतिविध (वि०) [क० स०] कितने प्रकार का।

कतिशः (अव्य०) [कति+शस्] एक बार में कितना।

कत्थ् (स्वा० आ०—कत्थते, कत्थित) 1 शेखी बघारना, डींग मारना या बढ़ाना—कत्थते कत्थिष्यते न क—भट्टि० १६।४, कुर्वतस्तत्कर्मणा अर्थं कत्थेयम्—महा० 2 प्रशंसा करना, प्रसिद्ध करना 3 गाली देना, दुर्वचन कहना। वि—, 1 शेखी मारना, डींग बघारना, आ अस्मत्तेन प्रार्थ्यमाना विकत्थते—विक्रम० २ 2 दाम घटाना, तुच्छ करना, उपेक्षित करना—अद्य प्रभृति फाल्गुनस्य सुदैरस्मान् विकत्थते—महा०।

कत्थनम्,—ना [कत्थ्+ल्युट् युच् वा] डींग मारना, शेखी बघारना।

कत्थवरम् [कत्थ+व+अप्] कथा।

कथ् (चुरा० उभ०—कथयति, कथित) 1 कहना, समाचार देना, (प्रायः सम्प्र० के साथ)—रामभिषेचनदर्शनोत्सुक मैथिलाय कथयाबभूव स रघु० ११।३७ 2 घोषणा करना, उल्लेख करना—भग० २।३४, रघु० ११।१५ 3 बातालाप करना, बातें करना, बातचीत करना—कथयित्वा सुमन्त्रेण सह—रामा० 4 संकेत करना, निर्देश करना, दिखलाना—विक्रम० १।७, आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति—श० ७ 5 वर्णन करना, बयान करना,—किं कथ्यते श्रीरूपमवस्य तस्य कु० ७। ७८ कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते हि० १।१, 6 सूचना देना, सूचित करना, शिकायत करना—मृच्छ० ६।

कथक (वि०) [कथ्+ण्वुल्] कहानी कहने वाला, वर्णन करने वाला,—कः 1 मुख्य अभिनेता 2 नटराज् 3 कहानी सुनाने वाला।

कथनम् [कथ्+ल्युट्] कहानी कहना, वर्णन करना, बयान करना।

कथम् (अव्य०) [किम्-प्रकारार्थे थम् कादेशश्च] 1 कैसे किस प्रकार, किस रीति से, कहाँ से—कथ मारात्मके स्वामि विश्वासः हि० १, सानुबन्धा कथ न स्यु सतां मे विरागदः —रघु० १।६४, ३।४४, कथमात्मानं निर्वेदयामि कथ वात्मापहारं करोमि—श० १ (यहाँ बोलने वाले को अपने कथन के औचित्य में सन्देह है) 2 यह बहुधा आश्चर्य प्रकट करता है—(अहो,) कथ मामेवोद्दिशति—श० ६ 3 यह प्रायः 'इव, नाम, नु, वा, स्विद् के साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इसका अर्थ होता है—'क्या, सचमुच,' 'क्या सम्भावना है' 'मुझे बतलाइए तो' (यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है) कर्म वा सम्बन्धे उत्तर० ३, कथ नामैतत्—उत्तर० ६ 4 अब यह 'चित्, चन या अपि' के साथ जोड़ दिया जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है 'हर प्रकार से' 'किसी तरह से हो' 'किसी न किसी प्रकार' 'बड़ी कठिनाई से' या 'बड़े प्रयत्नों से' —तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः—मेघ० ३, कथमप्युन्नमित न चुम्बित तु—श० ३।२५, न लोकवृत्त वर्तेन वृत्तिहेतो कथञ्चन—मनु० ४।११, ५।१४३, कथञ्चिदीप्सा मनसो अभूत्—३।३४, कथ कथञ्चित उत्थित —पञ्च० १, विसृज्य कथञ्चिदुमाम् कु० ६।३, मेघ० २२, अमर १२, ३१, ५०, ७३। सम० कथिक' जिज्ञासु, पूछ-ताछ करने वाला,—करम् (अव्य०) किस रीति से, कैसे कथकारमथालम्ब्य कीर्तिर्वामिरिवोहति शि० २।५२, कथंकार भुजङ्गमे-सिद्धा०, नै० १७।१०६ —प्रकार (वि०) किस भाव तौल का,—भूत (वि०) किस स्वभाव का, किस प्रकार का (प्रायः टीकाकारों द्वारा प्रयुक्त),—रूप (वि०) किस शक्ल सूरत का।

कथन्ता [कथम्+तल्] क्या प्रकार, क्या रीति।

कथा [कथ्+अङ्+टाप्] 1 कथा, कहानी 2 कल्पित या मनगढ़त कहानी कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते—हि० १।१ 3 वृत्तान्त, संदर्भ, उल्लेख —कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः शि० २।४० 4 बातचीत, बातालाप, वक्तृता 5 गद्यमयी रचना का एक भेद जो आख्यायिका से भिन्न है—(प्रबन्धकल्पना स्तोकमन्या प्राज्ञा कथा विदुः, परपरागेया वा स्यात् सा सदाकर्णायिका बुधैः) 'आख्यायिका' के नीचे भी देखें। का कथा, या प्रति पूर्वक कथा (क्या कहना) 'क्या कहने की आवश्यकता है' 'कहना नहीं' 'कुछ नहीं कहना' 'और कितना अधिक' 'और कितना कम' आदि अर्थों को प्रकट करने में का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः, हुंकारेणैव धनुष स हि विज्ञान-पोहति—श० ३।१, अग्निप्लवगमोपि मार्गदेवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, आप्तवाक्यानुमानाभ्यां साध्य त्वां प्रति का कथा—१०।२८, वेणी० २।२५,।

सम०—अनुरत्तः बातचीत करने में आनन्द प्राप्त करना,—अन्तरम् 1. बातचीत के मध्य में—स्मर्तव्योस्मि कथान्तरेषु भवता—मृच्छ० ७।७ 2. दूसरी कहानी,—आरम्भः कहानी का आरम्भ,—उद्घातः कहानी की शुरुआत,—उद्घातः 1 प्रस्तावना के पाँच भेदों में से दूसरा प्रकार अर्थात् चुपके से सुनने के बाद प्रथम बार सूत्रधार के शब्दों या भाव को दोहराता हुआ रंगमंच पर आता है—दे० सा० द० २६०, उदा० रत्न०, वेणी० या मुद्रा० 2 किसी कहानी का आरम्भ—आकुमारकथोद्घात आलिखोच्चो जगुर्यशः—रघु० ४।२०, —उपन्यासः वर्णन करना, बखान करना,—छलम् 1 कथा के बहाने 2 मिथ्या वृत्तांत बनाते हुए,—नायकः, —मुख (कहानी का) नायक, —पीठम् कथा या कहानी का परिचयात्मक भाग,—प्रबन्धः कहानी, बनावटी कहानी, कपोलकल्पित कहानी,—प्रसङ्गः 1 बातालाप, बातचीत या बातचीत के दौरान में—नाना कथा प्रसंगाक्षिप्त—हि० १,—मिश्र. कथाप्रसङ्गेन विवाद किल चक्रतु—कथा० २२, १८१, नै० १।३५, 2 विषयचिकित्सक—कथाप्रसङ्गेन अनैकधाहृतात्—कि० १।२४ (यहाँ शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है),—शेषः अभिनेता,- शुद्धम् कहानी का परिचयात्मक भाग,—शेषः बातचीत के मध्य,—विपर्ययः कहानी का भाग बदलना,—शेष,—अवशेष (वि०) जिसका केवल 'वृत्तांत' ही बाकी रह गया है अर्थात् 'मृत' (कथाशेषता गत —मृत, मृतक) (—षः) कहानी का बचा हुआ भाग।

कथानकम् [कथ्+आनक वा०] छोटी कहानी—उदा० वेतालपञ्चविंशति।

कथित (भू० क० कृ०) [कथ्+क्त] 1 कहा हुआ, वर्णित, बयान किया हुआ 2 अभिहित, वाच्य। सम०—पदम् पुनरुक्ति, दोहराना, ('पुनरुक्ति'—वाक्य में एक प्रकार का रचना विषयक दोष है अर्थात् कि एक शब्द का बिना किसी विशिष्ट अभिप्राय के दोबारा प्रयोग किया जाता है) काव्य० ७, सा० द० ५७५, एत०।

कथ् 1 (दिवा० आ०—कथ्यते) हतबुद्धि हो जाना, चकरा जाना, मन में दुःखी होना, 11 (भ्वा० आ० - कथते, भ्वा० पर० भी) 1 चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना 2 शोक करना 3 बुलाना 4 मारना, प्रहार करना —दे० कद्।

कद् (अव्य०) [कद्+किम्] (समास में 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होने वाला अव्यय) बुराई, अल्पता, ह्रास, निरर्थकता, तथा दोष आदि को प्रकट करने वाला अव्य०। सम०—अक्षरम् 1 बुरा अक्षर 2 बुरी लिखाई, अग्निः धीमी आग,—अन्नम् बुरा भोजन,—अवस्था बुरी आदत, बुरी प्रथा,—अर्थ (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, - अर्थकम्, —आ कष्ट देना, दुःखी करना, सताना, —अर्थयति (ना० धा०, पर०) 1. घृणा करना, तिरस्कार करना 2 कष्ट देना, सताना—अर्थ० ३।१००, नै० ८।७५,—अर्थित (वि०) 1. घृणित, उपेक्षित, तिरस्कृत—कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्तेर्न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम्—अर्थ० २।१०६ 2. सताया गया, पीड़ित किया गया—आः कदर्थितोऽहमेतेनिर्धारं वारं वीरसवादविघ्नकारिणि —उत्तर० ५ 3 तुच्छ, नीच 4 बुरा, दुष्ट, - अर्थः कदन्न—मनु० ४।२१०, २२४, याज्ञ० १।१६१, °आशः लोलुपता, लुभपन,—आशः बुरा घोड़ा —आचार (वि०) विकृतरूप, कुरूप, - आचार (वि०) दुराचारी, दुष्ट, दुश्चरित्र (—रः) दुराचरण,— उष्ट्रः बुरा ऊंट,—उष्ण (वि०) गुनगुना, थोड़ा गरम (—ष्णम्) गुनगुनापन, —रथः बुरा रथ या गाड़ी—कुपि कदशकदूमि वभव व्यवसायिनम्—भट्टि० ५।१०१, —वद (वि०) 1. दुर्वचन कहने वाला, अयथार्थ या अस्पष्ट वक्ता—मेन आत प्रियापाये कदह हंसकोकिलम् भट्टि० ६।७५, वारिवाहा वरमकादो मृग,—हि० १४।१ 2 दुष्ट, घृणायोग्य।

कदलम् [कद मेघ इव कायति प्रकाशते —कद+कै+क] शालिधान्य, कठोमा।

कदनम् [कद्+ल्युट्] 1 विनाश, हत्या, तबाही 2 युद्ध 3. पाप।

कदम्बः, - कदम्बकः [कद्+अम्बच्] 1 एक प्रकार का वृक्ष (आदलो की गरम के साथ इसकी कलियों का खिलना प्रसिद्ध है)—कतिपयकुसुमोद्गम कदम्ब —उत्तर० ३।२०, मा० २।७, उत्तर० ३।४१ मेघ० २५, रघु० १२।९९ 2 एक प्रकार का घास 3. हल्दी, —कम् 1 समूह—कायावद्धकदम्बक मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।६ 2. कदंब वृक्ष का फूल—पथकदम्बकदम्बकराजितम्—कि० ५।९। सम०—अनिलः (कदंब पुष्पों की सुगन्ध से युक्त) सुगन्धित वायु, ते चोन्मीलितमालतीसुरभय प्रौढ़ा कदम्बानिला—काव्य० १ 2 वसंत,—कोरकन्यायः न्याय के नौ० दे०,—वायुः सुगंधित पवन=°अनिलः।

कदरः [क जलं दारयति राजयति—क+दृ+अच्] 1. आरा 2 अंकुश,—रम् जमा हुआ घृत।

कदलः,—कदलकः [कद्+कलच्, लस्य च] केले का पेड़, —ऊरुद्वयं मृगदृशः कदलस्य काण्डौ—अमरु ९५,—ली 1 केले का वृक्ष—किं यासि बालकदलीव विकम्पमाना—मृच्छ० १।२०, यास्यत्यूरू सरसकदलीस्तम्भगौरश्रियम्—मेघ० ९६, ७७, कु० १।३६, रघु० १२।९६, याज्ञ० ३।८ 2 एक प्रकार का मृग 3. हाथी के हार बहल की जा रही लम्बी 4 लम्बा या ढीला।

कदा (अव्य०) [किम्+दा] कब, किस समय—कदा गमिष्यसि—एष एच्छामि, कदा कथयिष्यसि आदि, अवि जोड़ने पर यह शब्द 'कभी-कभी' 'किसी समय' 'समय निकाल कर' अर्थ प्रकट करता है; न कदापि कभी नहीं, यदि 'चित्' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है 'किसी समय' 'एक दिन' 'एक बार' 'एक दफ़ा'—आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् बिभेति कदाचन—मनु० २।५४, १४४, ३।२५, १०१; यदि 'चित्' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है—'एक बार' 'एक दफ़ा' 'किसी समय' आदि कदाचित्=एक बार—रघु० २।३७, १२।२१, मालवी क्रीडेत्कदाचित्—मनु० ४।७४, ६५, १६९—कदाचित्-कदाचित् 'अब-अब' कभी-कभी कदाचित् कानन जगाहे कदाचित् कमलनेत्रेषु रेमे—का० ५८, अमरु०।

कदु (वि०) (स्त्री० दू या द्रू) [कद्+रु] भूरे रंग का, —दूः,—दू (स्त्री०) कश्यप की पत्नी तथा नागों की माता। सम०—सुतः, —सुतः साँप।

कनकम् [कन्+क्त] सोना—कनकवलय भ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः प्रतिसार्यते—श० ३।१३, मेघ० २, ३७, ६७,—क. 1 धतूरे का वृक्ष 2 धतूरे का फल 3 पहाड़ी आबनूस। सम०—अंगदम् सोने का कड़ा,—अचलः, —अद्रिः, —गिरिः,—शैल सुमेरु पहाड़ के विशेषण,—अभूमि कृष्णे हे स्पर्धसे किल कनकाचलेन सार्धम्—भा० २।९ —आलुका सोने का कड़ा या फूलदान,—आसवम् धतूरे का पौधा,—इक्षुः सोने की कुल्हाड़ी—दण्डम्,—दण्डकम् (सोने के डंडे वाला) राजच्छत्र,—पद्मम् सोने का बना कमल का आभूषण—जीवेति मंगलवचः परिहृत्य कोपात् कर्णे कृतं कनकपद्ममनालपत्त्या—कौर० १०,—परागः पुनहरी रज,—पत्रः 1 हड़ताल 2 पिघला हुआ सोना, —पुङ्खम् सोने का हार,—काक्षया कनकसूत्रेण कृष्णसर्पो विनाशितः—पंच० १।२०७,—स्थली स्वर्णभूमि, सोने की खान।

कनकमय (वि०) [कनक+मयट्] सोने का बना हुआ, सुनहरी।

कनखलम् [?] एक तीर्थस्थान (हरद्वार) का नाम तथा उसके पास लगी पहाड़ियाँ, (तीर्थं कनखलं नाम गङ्गाद्वारेऽस्ति पावनम्)—तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां जह्नोः कन्याम्—मेघ० ५०।

कनत (वि०) [कन्+क्त] एक आँख का तु० 'काण'।

कनयति (ना० धा० पर०) काम करना, बढ़ाना, छोटा करना, स्थूल करना—कीर्तिं न कनयन्ति के—भट्टि० १८।२५।

कनिष्ठ (वि०) [अतिशयेन युवा अल्पो वा—कनादेशः —कन्+इष्ठन्] 1 सबसे छोटा, कम से कम 2 आयु में सबसे छोटा।

कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा—सुभा०।

कनीनिका, कनीनी [कनीन+कन्+टाप्, इत्वम्—कन्+ईन्+ङीष्] 1 छोटी अंगुली—कनो 2 आँख की पुतली।

कनीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [अवयवनयोरतिशयेन युवा अल्पो वा कनादेशः, कन्+ईयसुन्, स्त्रियां ङीप्] 1 दो में से छोटा, अपेक्षाकृत कम 2 आयु में छोटा—कनीयान् भ्राता, कनीयसी भगिनी आदि।

कनेरा [कन्+एरन्+टाप्] 1 केतकी 2 हथिनी (तु० करेणु)।

कन्दुः [कन्+दु] 1 कामदेव, 2 हृदय (विचार और भावना का स्थान) 3 अनाज की खत्ती।

कन्था [कन्+थन्+टाप्] पैबंदों लगा वस्त्र, गुदड़ी, झोली (जिसे संन्यासी धारण करते हैं)—जीर्णा कन्था तत किम्—भर्तृ० ३।७४, १९।८६, शा० ४।५, १९, । सम०—धारणम् पैबंदों लगे कपड़े पहनना जैसा कि कुछ योगी करते हैं,—धारिन् (पुं०) धर्म-भिक्षु, योगी।

कन्द,—क [कन्द्+अच्] 1 गाँठदार जड़ 2 गाँठ—भर्तृ० ३।६९ (आल० भी)—आनकन्द 3 लहसुन 4 ग्रन्थि, —न 1 बादल 2 कपूर। सम० मूलम् मूली, —वारम् नन्दन-कानन, इन्द्र का उद्यान।

कन्दटम् [कन्द्+अटन्] श्वेत कमल—तु० कन्दोट।

कन्दर,—रम् [कम्+दृ+अच्] गुफा, घाटी—कि कन्दरा कन्दरेभ्य प्रलयमुपगता—भर्तृ० ३।९९ कर्पूरधवलरुन्द-राभिसर्पी—विक्रम० १।१६, मेघ० ५६,—र. अकुरा रा, —री गुफा घाटी, खोखला स्थान। सम०—आकारः पहाड़।

कन्दर्पः [क कुत्सितो दर्पो यस्मात्—ब० स०] 1 कामदेव —प्रजनदर्पास्मि कदर्प—भग० १०।२८, कन्दर्प इव रूपेण—महा० 2 प्रेम। सम०—कूपः योनि,—ज्वरः काम ज्वर, आवेश, प्रबल इच्छा,—दहनः शिव,—मूलम् —मूलम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग,—मूलम् 1 मेहन 2 रतिक्रिया का विशेष प्रकार, रतिबंध।

कन्दलः,—लम् [कन्द्+अलच्] 1 नया अंकुर या अँखुआ उत्तर० ३।४० 2 सिंहकी, सिन्दा 3 ताल, ताल और कनपटी 4 अपक्वकुम्भ 5 मधुर स्वर 6 केले का पेड़ —कन्दलदलीलतासा पयोधिन्दव—अमरु ४८,—लः 1 सोना 2 युद्ध, लड़ाई 3 (अल०) वाग्युद्ध, वादविवाद, —लम् कन्दल का फूल—विदलकन्दलकम्पलतालिते —शि० ६।३०, रघु० १३।२९।

कन्दली [कन्दल+ङीष्] 1 केले का पेड़ आरक्तरश्मिभि-रिव कुसुमैर्नवकन्दली सलिलगर्भं, कोपादन्तर्दधिरे स्मरशलि सा लोचने तस्या।—विक्रम० ४।५, मेघ० २१, ऋतु० २।५ 2 एक प्रकार का मृग 3 लता 4 कमल-पत्र या कमल का बीज। सम०—कुसुमम् कुङ्कुमपुष्प।

कन्धु: (पुं० स्त्री०) [स्कन्द्+उ, सलोपश्च] पतीली, तसूर।

कन्दुक:,—कम् [कन्द्+घा+डु+कन्] खेलने के लिए गेंद, —पातितोऽपि करास्फालैरुत्पतत्येव कन्दुक:—भर्तृ० २।८५, कु० १।२९, ५।११, १९, रघु० १६।९३। सम०—क्रीडा गेंद का खेल।

कन्दोट (ट्ट:) [कन्द+ओटन्] 1 श्वेत कमल, 2 नील कमल, (नीलोत्पल का प्रान्तीय रूप)—मोहमुकुलाय-मानेनेकन्दोटपुलक — मा० ७।

कन्धर: [क शिरो जलं धारयति—कम्+धृ+अच्] 1 गर्दन 2 'जलधर' बादल,—रा—गर्दन—कन्धरा समपहाय क्व वरां प्राप्य सर्पति जहास कन्यचित्—मालू० २। २२०, अमरु १६, दे० 'उत्कन्धर' भी।

कन्धि: [क शिरो जलं दीयतेऽत्र—कम्+धा+कि] समुद्र, (स्त्री०) गर्दन।

कन्धम् [कन्द्+क्त] 1 पाप 2 मूर्छा, बेहोशी का दौरा।

कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वश्च] 1. लड़की—तद्वद्वयैज्ञानस कन्यकानि—रघु० १४।२८, ११।५३ 2 अविवाहित लड़की कुमारी, कुँआरी या (अपरिणीता) तरुणी —गृहे गृहे पुरुषा कुलकन्यका समुद्वहन्ति - मा० ७, याज्ञ० १।१०५ 3 दशवर्षीय कन्या (अष्टवर्षा भवेद्-गौरी नववर्षा च रोहिणी, दशमे कन्यका प्रोक्ता अत ऊर्ध्वं रजस्वला -शब्द०) 4 (अल० शा० में) अनेक प्रकार की नायिकाओं में से एक, कुमारी कन्या (जो किसी काव्यकृति में मुख्य पात्र समझी जाती है) दे० 'अन्य स्त्री' के नी० 5 कन्या राशि। सम०—छल, फुसलाना—पैशाच कन्यकाच्छलात्—याज्ञ० १।६१,—अन्त कुमारियाँ, —विशुद्धमुग्ध कुलकन्यकाजन मा० ७।१,—जात: कुमारी कन्या का पुत्र—याज्ञ० २।१२९ (=कानीन)।

कन्यस: [कन्य+सो+क] सबसे छोटा भाई—हा कानी उँगली, - सी सब से छोटी बहन।

कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1 अविवाहित लड़की या पुत्री रघु० १।५१, २।१०, ३।३३, मनु० १०।८ 2 दश-वर्षीय कन्या 3 अक्षतयोनि, कुमारी मनु० ८।३६७, ३।३३ 4 (सामान्य) स्त्री 5 छठी राशि अर्थात् कन्या राशि 6 दुर्गा 7 बड़ी इलायची। सम० —अन्त पुरम् रनवास,—सुरक्षितेऽपि कन्यान्त पुरे कश्चित्प्रविशति—पञ्च० १, महावी० २।५०,— आद (वि०) युवती लड़कियों का पीछा करने वाला (—द:) 1 घर का भीतरी कमरा 2 जो तरुणी कन्याओं के पीछे फिरता रहता है, कुब्ज: एक देश का नाम (—ब्जम्) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो कि गंगा की सहायक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान कन्नौज,—गतम् कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र, —ग्रहणम् विवाह में कन्या को स्वीकार करना,—दानम् कन्या का विवाह करना, —दूषणम् कौमार्य भंग करना, दोष: कन्या में दोष का होना, अवस्थानी (जैसे कि किसी रोग के कारण),—धनम् दहेज,—पति: पुत्री का पति, दामाद, जामाता,—पुत्र: कुँआरी कन्या का पुत्र ('कानीन' कहलाता है),—पुरम् जनाना-खाना,—भर्तृ (पुं०) 1. जामाता 2 कार्तिकेय,—रत्नम् अत्यन्त सुंदरी कन्या—कन्यारत्नमयोनिजन्म अवतामासते —महावी० १।६०,—राशि: कन्याराशि,—वैद्दिन् (पुं०) दामाद (जामाता)—याज्ञ० १।२६२,—शुल्कम् कन्या के मूल्य के रूप में कन्या के पिता को दिया गया धन, कन्या का क्रयमूल्य,—स्वयंवर: किसी कुमारी कन्या के द्वारा अपना पति चुनना,—हरणम् कौमार्य-भंग के विचार से किसी तरुणी कन्या को फुसलाना — मनु० ३।३३।

कन्यापका, कन्यिका [कन्या+कन्+टाप्, इत्वं वा] 1 तरुणी लड़की 2 कुमारी (अपरिणीता लड़की)।

कन्यालय (वि०) [कन्या+मयट्] कन्याओं वाला, कन्या-स्वरूप रघु० ६।११, १६।८६,—यम् जनाना पुर (जिसमें अधिकांश लड़कियाँ ही हों)।

कपट:,—टम् [के मूर्ध्नि पटं इव आच्छादक:] जालसाजी, धोखाधड़ी, चालाकी, प्रवञ्चना—कपटहतमय लोकम-प्रत्ययानाम्—पञ्च० १।१९१, कपटानुसारकुशला —मृच्छ० ९।५। सम०—तापस पाखण्डी संन्यासी, बनावटी साधु,—पटु (वि०) धोखा देने में चतुर, छलपूर्ण—छलयन् प्रजास्तत्समनुतेन कपटपटुरिन्द्रजालिक: —हि० १५।३५, प्रबन्ध: छल से भरी हुई चाल —हि० १,—लेखनम् जाली दस्तावेज, - वचनम् धोखे की बात,—वेश (वि०) बनावटी भेस वाला नकाब-पोश (—श:) कपटवेशधारी।

कपर्दिक: [कपट+ठन्] बदमाश, छलिया।

कपर्द:,—र्दक: [पर्द्+क्विप्, हलोप पर्, कस्य संज्ञा-जालस्य परा पूरणेन वापयति क्षुभ्नति -क+पर्+घञ् क, कपर्द+कन् वा] 1 कौड़ी 2 जटा (विशेषत: शिव का जटाजूट)—वया० २२।

कपर्दिका [कपर्दक+टाप्, इत्वम्] कौड़ी (जो सिक्के के रूप में प्रयुक्त होती है)—सिनाप्यसिवता वासि यस्य न स्यु कपर्दि (र्दं) का —पंच० २।९८।

कपर्दिन् (पुं०) [कपर्द+इनि] शिव की उपाधि।

कपाट:,—टम् [कं जलं पाटयति तद्गति रुणद्धि—तारा०, क+पट्+घिञ्+अण्] 1 किवाड़ का फलक या किवाड़ —कपाटपृष्ठा परिणद्धकन्धर—रघु० ३।३४, स्वर्ग-द्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि लोपाजित —भर्तृ० ३।११ 2 दरवाजा—शि० ११।६०। सम०—उद्घाटनम् दरवाजा खोलना, —घ्न: सेंध लगाने वाला, चोर, —सन्धि: किवाड़ों के जिलों का जोड़।

कपाल:—लम् [कं शिरो जलं वा पालयति—क+पाल्

+अन्] 1. खोपड़ी, खोपड़ी की हड्डी—कृताघीड कपालसङ्कटकृत्कलम्बन्धाकिनीकारय -मा० १।२, हड्डी बेल कपालपाणिपुटके भिक्षाटन कारित.-भर्तृ० २।९५ 2. टूटे बर्तन का खोल, ठीकरा, कपालेन भिक्षार्थी —मनु० ८।९३ 3. समुदाय, संचय 4. भिक्षुक का कटोरा—मनु० ६।४४ 5 प्याला, हर्षन—पञ्चकपाल 6. ढक्कन । सम०—धारिन्, भृत्,—मालिन्, —शिरस् (पु०) शिव की उपाधि,—मालिनी दुर्गादेवी ।

कपालिका [कपाल+कन्+टाप्, इत्वम्] ठीकरा—मनु० ४।७८, ८।२९० ।

कपालिन् (वि०) [कपाल+इनि] 1 खोपड़ी रखने वाला, -- याज्ञ० ३।२४३ 2 खोपड़ी पहने हुए --कपालि वा स्यादथवेन्दुशेखरम् (वपु) -कु० ५।७८, (पु०) 1. शिव का विशेषण,— कर कर्म कुर्वन्नपि किल कपालि-प्रभृतयः— गंगा० २८ 2 नीच जाति का पुरुष (ब्राह्मण माता तथा नाई पिता की सन्तान) ।

कपि: [कम्प्+इ, नलोप] 1 लंगूर, बन्दर—कपेरन्नासि-पुनर्दात्—भट्टि० ९।११ 2 हाथी । सम० - आख्यः धूप, लोबान आदि,—ईश्वरः 1 राम का विशेषण, 2 सुग्रीव का विशेषण, - इन्द्रः (बन्दरों का मुखिया) 1 हनुमान का विशेषण- तप्यति हृदयं वृत्तानि कपीन्द्र —भट्टि० १०।१२ 2 सुग्रीव का विशेषण— अयं यत्र कपीन्द्रस्तत्रमि मे—उत्तर० ३।४५ 3 जाम्बवान् का विशेषण,—केतनः (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, केवांच,—केलनः,— ध्वजः अर्जुन का नाम, भग० १। २०,—नः—तैलम्,- यामम् (नपु०) शिलाजीत, गुग्गुल,- प्रभुः राम का विशेषण, लोहम् पीतल ।

कपिञ्जलः [क+पिञ्ज्+कलच्] 1 पपीहा 2 टिटिहिरी ।

कपित्थः [कपि+स्था+क] कैथ का वृक्ष,—त्थम् कैथ का फल । सम०—आख्यः एक प्रकार का बन्दर ।

कपिल (वि०) [कम्प्+इलच्, पादेश] 1 भूरे रंग का, आरक्त—बालाय कपिला विद्युत्—महा० 2 भूरे बालों का— मनु० ३।८ (कुल्लू०=कपिलकेशा),—लः 1 एक ऋषि का नाम (सगर के साठ हजार पुत्र थे, अपने पिता के यज्ञीय घोड़े को ढूंढते हुए ये कपिलमुनि से लड़ पड़े और उन पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाया इससे क्रुद्ध हो कपिल ने इन सब को भस्म कर दिया—दे० उत्तर० १।२३) यह साङ्ख्य दर्शन का प्रवर्तक समझा जाता है 2 कुत्ता 3 लोबान 4 धूप 5 अग्नि का एक रूप 6 भूरा रंग,—ला 1 भूरी गाय 2 एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य 3 एक प्रकार का गुबरैला 4. चोक । सम०—आख्यः इन्द्र की उपाधि, —ऋषिः सूर्य,—धारा गंगा की उपाधि,—स्मृतिः (स्त्री०) कपिल मुनि का सांख्य-सूत्र ।

कपिश (वि०) [कपि+श] 1 भूरे रंग का, सुनहरी 2. आरक्त—(छाया) सन्ध्यापयोदकपिशः पिशिताशनानाम् —शि० ३।२७, तीव्रे काञ्चनपद्मरेणुकपिशे— ७।१२, विक्रम० २।७, मेघ० २१, रघु० १२।२८,—शः 1 भूरा रंग 2 शिलाजीत या लोबान,—शा 1 माधवी लता 2 एक नदी का नाम ।

कपिशित (वि०) [कपिश+इतच्] भूरे रंग का—शि० ६।५ ।

कपुच्छलम्, कपुच्छिका [कस्य शिरस पुच्छमिव जाति—क +पुच्छ+ला+क—कस्य शिरस पुष्टयै पोषणाय कायति—क+पुष्टि+कै+क+टाप्] 1 मुण्डन-संस्कार 2 सिर के दोनों ओर रक्खे हुए केशसमूह ।

कपूय (वि०) [कुत्सित पूयते—कु+पूय्+अच्, पृषो० उकारलोप] अधम, निकम्मा, कमीना, नीच ।

कपोतः [को यात पोत इव यस्य—ब० स०] 1 पारावत, कबूतर 2 पक्षी । सम० - अङ्घ्रि एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, - अञ्जनम् सुर्मा,- अरि बाज, शिकरा, - अश्व एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य,—वालिका, —वाली (स्त्री०) चिड़ियाघर, कबूतरों का दड़बा, कबूतरों की छतरी,—राजः कबूतरों का राजा,— सारम् सुर्मा,- हृत्तः, हर या अनुनय-विनय के अवसर पर हाथ जोड़ने का ढंग ।

कपोतक [कपोत+कन्] छोटा कबूतर,—कम् सुर्मा ।

कपोलः [कपि+ओलच्] गाल—लामलामकपोलमालनम् —शि० ३।१०, ६।४, रघु० ४।६८ । सम० काच जिससे गाल मसले जायें - कि० ५।२६,- कण्डूः खोड़े गाल, - भित्ति (स्त्री०) कनपटी और गाल, चौड़ा गण्डस्थल, - तु० गण्डभित्ति,—राग गालों की लाली ।

कफ [केन जलेन फलति—फल्+ड तारा०] 1 शरीर के कफ या श्लेष्मा (शरीर के तीन रसों में से एक—दोष दो हैं- वात और पित्त) कफापचयादारोग्यमेकमूलधा-यायानिदीपि —दश० १६०, प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्ते कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते—उद्भट 2 रसीला झाग, फेन । सम०—अरि सोंठ,—कूर्चिका लार, थूक,—क्षय फेफड़े का क्षय रोग,—घ्न, —नाशन, —हर (वि०) कफ को दूर करने वाला, कफ नाशक, - स्वरः कलगम अधिक हो जाने से उत्पन्न बुखार ।

कफोणिः, कफोलिः (स्त्री० - णी) [केन मुखेन फलति स्फु-रति—क+फल्+इन्, क+फल् (स्फुर्)+इन् पृषो० कफोणि+ङीष्] कोहनी ।

कफल (वि०) [कफ+लच्] जिसे कफरोग अधिक होता हो, कफप्रकृति ।

कफिन् (वि०) (स्त्री०- नी) [कफ+इनि] कफ की अधिकता से पीड़ित, कफग्रस्त ।

कबन्धः,—न्धम् [क मुखं बध्नाति—क+बन्ध्+अच्] सिर-

सहित घर (विशेषतः जब कि उसमें प्राण बाकी हों) (स्व) वृत्यर्थकलत्रं तदरे: परेषां --रघु० ७।५१, १२। ४९,--ह: 1. पेट 2 बादल 3 धूमकेतु 4 राहु 5 जल (इस अर्थ में यह शब्द नपु० भी होता है) --नि० १६।७ 6 रामायण में वर्णित कबन्ध राक्षस (जब राम और लक्ष्मण दण्डक वन में रहते थे तो एक बार कबन्ध राक्षस ने इन पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में मारा गया कहते हैं कि इन्द्र द्वारा शाप दिये जाने से उसे राक्षस का रूप धारण करना पड़ा और जब तक कि राम और लक्ष्मण ने नहीं मारा वह राक्षस बना रहा)।

कबर,—री (प्रायः कबर, --री लिखे जाते हैं)।

कपित्थः [कपित्थ पृषो० साधु] कैथ का वृक्ष।

कम् (चुरा० आ०—कामयते, कामित, कान्त) 1 प्रेम करना, अनुरक्त होना, प्रेम करने लगना – कन्ये कामयमान मा न त्वं कामयसे कथम् काव्या०, २।६३, (कामयना का एक उदाहरण)—कलहंसको मन्थारिकां कामयते - मा० १ 2 प्रबल लालसा करना, कामना करना, इच्छा करना—न वीरसू शब्दमकामयेताम् -रघु० १४।४, त्रिकण्टुमर्थं चकमे कुबेरात् ५।२६, ४।२८, १०।५३, भट्टि० १४।८२, अभि—1 प्रेम करना 2 चाहना, वि—,इ—अधिक चाहना, प्रबल इच्छा करना।

कमठ [कम्+अठन्] 1 कछुवा -सम्प्राप्त कमठ इ वापि निर्यत नगरस्तम्बादेशात - पञ्च० २।१८४ 2 बाँध 3 जल का घड़ा,—ठी कछुवी या छोटा कछुवा। सम० – पतिः कछुवों का स्वामी।

कमण्डलु—लु [कस्य जलस्य मण्डं लाति क+मण्ड+ला +कु] (लकड़ी या मिट्टी का) जलपात्र जो सन्यासी रखते हैं,-कमण्डलूरमोऽत्यन्तमुत्यागो बहुग्रह --हि० २।९१, कमण्डलुनोदकं पिबेत्वा—मनु० २।६४, याज्ञ० १।१३३। सम० तरुः वह वृक्ष जिसके कमण्डलु बनते हैं,—धरः शिव का विशेषण।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] 1 विषयी, लम्पट 2 मनोहर सुन्दर, नः 1 कामदेव 2 अशोक वृक्ष 3 ब्रह्मा।

कमनीय (वि०) [कम्+अनीयर्] 1 जो चाहा जाय, चाहने के योग्य,—अनन्यनारीकमनीयमङ्गम्—कु० १।३७ 2 मनोहर, सुहावना, सुन्दर—शान्तोदग्रतया कमनीयपरिच्छदाम्—कि० ७।४०, तदपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३।९ अमरु० पा०।

कमर (वि०) [कम्+अरच्] विषयी, इच्छुक।

कमलम् [क जलमलति भूषयति कम्+अल्+अच्] 1. कमल –कमलमलम्भसि कमले च कुवलये तानि कनकललितायाम् – काव्य० १०, इसी प्रकार हस्त°, नेत्र° चरण° आदि 2. धन 3. सोना 4. हथियार, औजार 5 सारस पक्षी 6 भूकदम्ब,—लः 1. सारस पक्षी 2 एक प्रकार का मृग। सम०—अक्षी (स्त्री) कमल जैसी आँखों वाली स्त्री,—आकरः 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा सरोवर, —आसना लक्ष्मी की उपाधि —मुद्रा० २,—आसनः कमल पर स्थित, ब्रह्मा --कालाग्नि पूर्व कमलासनेन—कु० ७।७०, -ईक्षणा कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री,—उद्भवम् कुसुम का फूल, – कंदलम् कमलों का समूह,—जः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2 रोहिणी नाम का नक्षत्र, —जन्मन् (पुं०)—जः, —योनिः,—संभवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा की उपाधि।

कमलकम् [कमल+कन्] छोटा कमल।

कमला [कमल+अच्+टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 श्रेष्ठ स्त्री। सम०—धरः,– सखः विष्णु की उपाधि।

कमलिनी [कमल+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा; —साऽभूदसूनीव स्वकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् —नैष० ९०, रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः —श०-४।१०, रघु० ९।३०, १९।११ 2 कमलों का समूह 3. कमल-स्थली (जहाँ कमल बहुतायत से हो)।

कमा [कम्+णिच्+अ+टाप्] सौंदर्य, मनोहरता।

कमिन् (वि०) (स्त्री०– नी) [कम्+णिच्] विषयी, लम्पट।

कम्प् (भ्वा० आ०—कम्पते, कम्पित) हिलना-डुलना, काँपना, इधर-उधर जाना-आना (आल० भी)-चकम्पे तीर्थलीहित्वे तस्मिन् प्राङ्मौलिवेश्मनः --रघु० ४।८१ मृच्छ० ४।८, भट्टि० १४।३१, १५।७०,अनु—तरस आना, करुणा करना--नोपयाता भविष्यत्व कम्पते मानुकम्पते मृच्छ० ४।८, कि वराकी मानुकम्पसे मा० १०, (प्रेर०), तरस खाना—कु० ४।३९, आ—हिलना-डुलना, काँपना, (प्रेर०) हिलाना-डुलाना, काँपना —अशोकहाकम्पितपुष्पगन्धी—रघु० २।१३, ऋतु० ६। २२, प्र हिलना, काँपना -प्रकम्पत भुज सव्य —राजा०, प्रकम्पत महाशैलः—महा०, (प्रेर०) हिलाना, चलाना—भट्टि० १५।२३, वि—हिलना, काँपना,—किं वासि बालकदलीव विकम्पमाना—मृच्छ० १।२०, स्फुरति नयन दोषो बाहुर्मुहुश्च विकम्पते—२।३० भग० २।३१, (प्रेर०)हिलाना-डुलाना-रघु० ११।१९, ऋतु० २।१७, सम् तरस खाना, करुणा करना —रघु० ९।१४।

कम्पः [कम्प+घञ्] 1 हिल-जुल, थरथराहट—कम्पेन किंचित्प्रतिपन्नमूर्ध्वः—रघु० १३।४४ डरा सा सिर हिला कर या मोड़ कर, १३।२८, कु० ७।४६ जयकम्पः, विद्युत्कम्प आदि 2 स्वरित स्वर का व्यञ्जन, – पा हिलाना, चलायमान करना, थरथराहट। सम०—अन्वित (वि०) कम्पायमान, शुष्क,—लक्षणम् (पुं०) वायु।

कम्पान (वि०) [कम्प्+युच्] कम्पायमान, हिलने वाला, —नः शिशिर ऋतु (नवम्बर, दिसम्बर)—नम् 1. हिलना, कपकपी 2 लड़खड़ाता उच्चारण।

कम्पाल. [कम्पया चलनेन कायति—कम्पा+कै+क] वायु।

कम्पिल्ल=कांपिल्ल।

कम्प्र (वि०) [कम्प्+र] हिलने वाला, कम्पायमान, चलायमान, हलचल पैदा करने वाला—विधाय कम्प्राणि मुखानि क प्रति - नै० १।१४२ कम्प्रा शाखा —सिद्धा०।

कम्ब् (म्वा० पर०—कम्बति, कम्बित) जाना, चलना—फिरना।

कम्बर (वि०) [कम्ब्+अरन्] रंगबिरंगा,—र. चित्र-विचित्र रंग।

कम्बल: [कम्+कन्, बुकागम] 1 (ऊनी) कंबल—कम्बल-वन्त न बाधते शीतम् सुभा०, कम्बलावृतेन तेन - हि० ३ 2 खरना, गाय बैल के गले में नीचे लटकने वाली खाल 3 एक प्रकार का मृग 4 ऊपर से पहनने का ऊनी वस्त्र 5 दीवार, -म् जल। सम०- बाह्यकम् बहली (चारों ओर मोटे कपड़े से ढकी हुई गाड़ी जिसमें बैल जुते हों)।

कम्बलिका [कम्बल+ई+कन्+ह्रस्व, टाप्] 1 एक छोटा कंबल 2 एक प्रकार की मृगी।

कम्बलिन् (वि०) [कंबल+इनि] कम्बल से ढका हुआ, —(पु०) बैल, बलीवर्द। सम०—बाह्यकम् बहली (मोटे कंबल से ढकी गाड़ी जिसमें बैल जुते हों), बैलगाड़ी।

कम्बी (बी) (स्त्री०) [कम्+विन् वा० ङीप्] कड़छी, चम्मच।

कम्बु (वि०) (स्त्री० बु या बू) चितकबरा, रंगबिरंगा, —बु:,—बु (पु०, नपु०) शंख, सीपी स्मरस्य कम्बु किमप चकास्ति दिवि त्रिलोकी जयवादनीय नै० २२।२२,—बू. 1 हाथी 2 गर्दन 3 चित्रविचित्र रंग 4 शिरा, शरीर की नस 5 कड़ा 6 नक्शीनुमा हड्डी। सम०— कंठी शंख जैसी गर्दन वाली स्त्री, —ग्रीवा 1 शंखनुमा गर्दन (अर्थात् शंख की भांति तीन रेखाओं में युक्त—यह चिह्न सौभाग्यसूचक समझा जाता है) 2 स्त्री जिसकी गर्दन शंख जैसी हो।

कम्बोज: [कम्ब्+ओज] 1 शंख 2 एक प्रकार का हाथी 3 (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्बोजा समरे सोढु तस्य वीर्यमनीश्वरा —रघु० ४।६९ अने० पा०।

कम्र (वि०) [कम्+र] मनोहर, सुन्दर।

कर (वि०) (स्त्री०—रा, री) [प्रायः समास के अन्त में] [करोति, क्रीयते अनेन इति, कृ (कृ)+अप] जो करता है या कराता है, दुःख°, सुख°, भय°,—र: 1 हाथ कर व्याधुन्वन्या पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् —श० १।२४ 2 प्रकाश-किरण, रश्मिमाला—यमुद्यतं पूषा व्यवसित इवालम्बितकर —विक्रम० ४।३४, प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता, अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यत करसहस्र-मपि - शि० ९।६ (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3 हाथी की सूंड,—सेक सीकरिणा करेण विहिन - उत्तर० ३।१६ भर्तृ० ३।२० 4 लगान, शुल्क, भेंट—पुरा कराक्रान्तमहीभुदुच्चकैः-सशय सप्तति तेजसा रवि शि० १।७० (यहाँ 'कर' का अर्थ 'किरण' भी है) (दयौ) अपरान्तमहीपाल-व्याजेन रघवे करम् रघु० ४।५८ मनु ७।१२८ 5 ओला 6 २४ अंगूठे की माप 7 हस्त नाम नक्षत्र। सम० अग्रम् 1 हाथ का अगला भाग 2 हाथी के सूंड की नोक आघात: हाथ से की गई चोट,—आरोट अंगूठी,—आलम्ब हाथ से सहारा देना, सहायक बनना - आस्फोट 1 छाती 2 थप्पड़,—कटक, कम् नाखून, —कमल,- पङ्कजम्, पद्मम् कमल जैसा हाथ, सुन्दर हाथ—करकमलावलोनैरम्बुनीवारशाली —उत्तर० ३।२५, - कलश, - शम् हाथ की अंजलि (पानी लेने के लिए), - किसलय,—यम् 1 कोपल जैसा हाथ, कोमल हाथ -करकिसलयतालैर्मंद्यमा नर्त्यमानम् —उत्तर० ३।१९, ऋतु० ६।३० 2 अंगुलि, कोष: हथेली का गर्त दृष्टाञ्जलि पेयमद्य—घट० २२, ग्रह, -ग्रहणम् 1 लगान या शुल्क लेना 2. विवाह में हाथ पकड़ना 3 विवाह, ग्राह 1 पति 2 शुल्क लेने वाला, - ज नाखून - तीक्ष्णकरजभुजान्—वेणी० ४।१, इसी प्रकार अग्र ८५ (अम्) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, जालम् प्रकाश की धारा, - तल, हथेली - वनदेवताकरतले श० ४।४, करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति—पंच० २।१२४, आमलकम् (शा०) हथेली पर रक्खा हुआ आँवला—(आम०) प्रत्यक्षीकरण की सुगमता तथा स्पष्टता जैसा कि हथेली पर रक्खे फल के विषय में स्वाभाविक है—तु० करतलामलकफलवदखिलं जगदालोकयताम्—का० ४३, °स्थ (वि०) हथेली पर रक्खा हुआ, - ताल:,—ताल-कम् 1 तालियाँ बजाना स जहास दृप्तकरताल-मुच्चकै शि० १५।३९ 2 एक प्रकार का वाद्य-यंत्र, संभवतः झांझ,- तालिका, ताली 1 तालियाँ बजाना —उच्चाटनीय करतालिकाना दासादिदानी भवतीभिरेव —नै० ३।७ 2 तालियाँ बजा कर समय बिताना, - तोया एक नदी का नाम, द (वि०) 1 लगान या शुल्क देनेवाला 2 सहायक करदीकृताखिलनृपा मेदिनीम्—वेणी० ६।१८,—पत्रम् आरा,—पत्रिका समान

या जल-क्रीडा करते समय जल उछालना,—पल्लवः 1 कोमल हाथ 2 अंगुलि—तु० °किसलय,—वालः, —वालिका, 1 तलवार 2 कुदाली,—पीडनम् विवाह तु० पाणिपीडन,—पुटः दोनों हाथ मिला कर (दोनों की भांति) बनाई हुई अंजलि,—पृष्ठम् हथेली की पीठ, - भाजः,—भारः 1. तलवार - अघोरघट करवालपाणिर्व्यापादित —मा० ९, म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्—गीत० १ 2. नाखून, —भारः लगान या शुल्क की भारी राशि, भूः नाखून,—भूषणम् कड़ा या ककण आदि कलाई में पहनने का गहना, - शाल. सूखा, भृष्टम् भुना हथियार—दे० आयुध,— रुहः 1 नाखून अनाघ्रात पुष्प किसलयमलूनं कररुहैः - श० २।२०, मेघ० ९६ 2 तलवार,—वीरः,—वीरक 1 तलवार या खड्ग 2 कश्मिस्तान 3 पंजाब देश का एक नगर 4 कनेर, - शाखा अंगुलि, - शीकरः हाथी की सूंड द्वारा फेंका हुआ पानी, सूकः नाखून, सादः - किरणों का मंद पड़ जाना,—सूत्रम् लगना या विवाह-सूत्र जो कलाई में बांधा जाता है,—स्थाणिन् (पुं०) शिव, - स्फोटः तालियां बजाना।

करकः, कम् [किरति करोति वा जलमत्र कृ (कृ) + वुन्] (संन्यासी का) जलपात्र—का० ४१,—क अनार का वृक्ष,- क., कम्,- का ओला,- तान्कुर्वीधान्यमुलकन्काद्यष्टिपानावकीर्णानि-मेघ० ५४, भाग० १।३५, । समः अम्भस् (पुं०) नारियल का पेड़, - आसार ओलों की बौछार,—अम्भ पानी,—वारिका संन्यासियों का जलपात्र।

करकक [कस्य रङ्कु इव व० त०] 1 अस्थिपंजर 2 खोपड़ी —प्रेत-रङ्कु करङ्कादङ्कुस्थादस्थिसस्थ स्थपुटगतमपि कल्यमव्ययमति—मा० ५।१६, ५।१९ 3. (नारियल का बना) छोटा पात्र,छोटा बक्स या डिब्बा - जैसा कि 'ताम्बूलकरङ्क वाहिनी' (कादम्बरी में प्रयुक्त)।

करञ्जः [क शिराजलं वा रञ्जयति—तारा०] एक वृक्ष का नाम (इससे औषधियां तैयार की जाती हैं)।

करट [किरति मदम्—कृ + अटन्] 1 हाथी का गंडस्थल 2 कुसुम्भ का फूल 3 कौवा शा० ४।१९ 4 नास्तिक, ईश्वर और वेद में विश्वास न रखने वाला 5 पतित ब्राह्मण।

करटकः [करट + कन्] 1 कौवा मृच्छ० ७ 2 चौर्य कला व विज्ञान का प्रवर्तक कलिंगराज 3 हि० और पंच० में गीदड़ का नाम।

करटिन् (पुं०) [करट + इनि] हाथी डिण्डिमो भूयन्ते मदमलिनगण्डा करटिन भामि० १।२।

करट (रे) टुः [कृ + अटु, के जले वार्यौ वा रेटति क + रेट + कु] एक प्रकार का पक्षी, सारस।

करण्डम् [कृ + स्फुट्] 1 करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, °कृत°, सम्पा°, क्रिय° आदि 2 कृत्य, कार्य 3. धार्मिक कृत्य 4 व्यवसाय, धंधा 5 इन्द्रिय - वपुश्च करणोज्झितेन सा विपतन्ती पतिमभ्युपातयत्-रघु० ८।३८, ४२, पटुकरणैः प्राणिभि—मेघ० ५, रघु० १४।५० 6 शरीर—उपमानमभूद्विलासिना करण यस्य कान्तिमत्तया—कु० ४।५ 7 कार्य का साधन या उपाय - उपमितिकरणमुपमानम् - तर्क सं० 8 (तर्क० में) साधनविषयक हेतु जिसकी परिभाषा है व्यापारवदसाधारण कारणं करणम् 9 कारण या प्रयोजन 10 (व्या० में) करण कारक द्वारा अभिव्यक्त अर्थ —साधकतमं करणम्—पा १।४।४२ या क्रियायां परिनिष्पत्तिर्यमर्थमाश्रित्य विवक्ष्यते यदा यत्र करणं तदा तदा स्मृतम् 11 (विधि में) दस्तावेज, तमस्सुक, लिखित प्रमाण—मनु० ८।५१,५२, १५४ 12 लयात्मक विरामविशेष, समय काटने के लिए ताली बजाना—कु० ६।४० 13 (ज्योतिष में) दिन का एक भाग (यह करण गिनती में ११ है)। समः—अधिपः आत्मा, —ग्रामः इन्द्रियों का समूह —ग्राहम् सिर।

करण्डः [कृ + अण्डन्] (बांस की बनी) छोटी डलिया या टोकरी करण्डपीडिततनोर्भोगिन भर्तुः २।८४, सर्वभाजाकरण्डम् १।७७ 2 मछुआ जिसका धंधा मछली पकड़ना है 3 तलवार 4 एक प्रकार की बतख, कारण्डव।

करण्डिका, करण्डी (स्त्री०) [करण्ड + कीप्, टाप्, ङी] बांस का बना छोटा सन्दूक, बांस की पिटारी।

करण्यय (वि०) [कर + मे + क्यङ्, मुम्] हाथ चूमने वाला।

करभः [कृ + अभच्] 1 हाथ की पीठ (कलाई से लेकर नाखूनों तक) -मलङ्कर्म्म, जैसा कि 'करभोपमोरु - रघु० ६।८३ में, दे० नी० करभोरु 2 हाथी की सूंड 3 हाथी का बच्चा 4 ऊंट का बच्चा 5 ऊंट 6 एक सुगन्धित द्रव्य। समः - ऊरु (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जंघाएं हाथ के अग्रभाग की पीठ से मिलती जुलती हैं —अरूणि निधाय करभोरु यथासुखं ते - श० ३।२१, शि० १०।६९- अमर ६९, (दूसरी व्याख्या के अनुसार) जिसकी जंघाएं हाथी के सूंड से मिलती जुलती हैं।

करभकः [करभ + कन्] ऊंट।

करभिन् (पुं०) [करभ + इनि] हाथी।

करम्ब, करम्बित (वि०)[कृ + अम्बच्, करम्ब + इतच् च] 1 मिश्रित, मिला-जुला, चित्रविचित्र, रंगबिरंगा,—प्रकामशिथिलबाह्य कण्ठकैः करम्बिता मोदभर विवृण्वती—नै० १।११५, स्फुटनवफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् गीत० ११ 2. बैठाया हुआ जड़ा हुआ।

करम्भः (कः) [क + रम्भ् + घञ्] 1 दही मिला आटा या अन्य भोज्यपदार्थ 2. कीचड़—करम्भबालुकाता-

पान्—मनु० १२।७६, (यहाँ इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कीचड़' ही मानते हैं)।

करहाटः [कर+हट्+णिच्+अच्] 1 एक देश का नाम (सम्भवतः सतारा जिले का वर्तमान कहाड़), -करहाटपते पुत्री त्रिजगल्लेखकार्मणम् विक्रमांक० ८।२ 2 कमल का डण्ठल या रेशेदार जड़।

करालः (वि०) [कर+आ+ला+क] 1 भयानक, भीषण, डरावना, भयंकर—उत्तर० ५।५, ६।१, मा० ३, मृग० ११।२३, २५, २७, रघु० १२।९८, महावी० ३।४८ 2 जभाई लेता हुआ, पूर्णतया खोलता हुआ —उत्तर० ५।६ 3 बड़ा, विस्तृत, ऊँचा, उत्तुंग 4 असभ्य, जिसमें झटका या हचकोला लगे, नोकदार —वेणी० १।६, मा० १।३८,—ला दुर्गा का प्रचण्ड रूप, °आयतनम्, न करालोपहारान्त्र फलमन्यद्विधास्यते—मा० ४।३३,। सम०—दंष्ट्र डरावने दाँतों वाला,—वदना दुर्गा की उपाधि।

करालिकः [कराणा करसदृशशाखानाम् आलि श्रेणी यत्र —ब० स० कप्] 1 वृक्ष 2 तलवार।

करिका [कर+अच्+ङीष्+कन्, टाप् ह्रस्व] खरोंच, नखाघात से हुआ घाव।

करिणी (स्त्री०) [कर+इनि+ङीप्] हथिनी - कथमेत्य मतिर्विपर्यय करिणी पद्मिनीवाबभीदति—कि० २।६, भामि० १।२।

करिन् (पु०) [कर+इनि] 1 हाथी 2 (गण०) आठ की संख्या। सम०—इन्द्रः,—ईश्वरः,—वरः बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी—सदादान परिक्षीण गण्ड एव करीश्वरः - पञ्च० २।७०, दूरीकृता करिवरेण मदान्धबुद्ध्या नीति० २,—कुंभ हाथी के मस्तक का अग्रभाग भामि० २।१७७, गर्जितम् हाथी की चिंघाड़, (बृंहित करिगर्जितम्—अमर०), दंतः हाथी दाँत —पः महावत,—पोतः,—शावः,—शावकः हाथी का बच्चा,—अंकुशः स्तम्भ जिससे हाथी बाधा जाय —मारणः सिंह,—मुखः गणेश का विशेषण,—वरः = °इन्द्र,—वैजयन्ती (पु०) झंडा जो हाथी के द्वारा ले जाया जा रहा हो,—व्रजः हाथियों का समूह।

करीरः [कृ+ईरन्] 1 बांस का अंकुर 2 अंकुर—आनिन्यिरे वनकरीरनीलैं - शि० ४।१४ 3 काँटेदार वृक्ष जो मरुस्थल में पैदा होता है तथा जिसे ऊंट खाते हैं, —यत्र नैव यवा करीरविषटे दोषो वसन्तस्य किम् —भर्तृ० २।९३, तु०—किं पुष्पैः किं फलैस्तस्य करीरस्य दुरात्मन, येन वृद्धि समायाति न छाया पथिसंग्रह। —सुभा०, 4 पानी का घड़ा।

करीषः,—षम् [कृ+ईषन्] सूखा गोबर। सम०—अग्निः सूखे गोबर या कंडों की आग।

करीषवृष्टा [करीष+कृष्+क्त, मुम्] प्रबल वायु या आँधी।

करीषिणी [करीष+इनि+ङीप्] सपत्नि की अधिष्ठात्री देवी।

करुण (वि०) [करोति मनः आर्द्रीकृत्याय, कृ+उनन् —तारा०] कोमल, मार्मिक, दयनीय, करुणाजनक, शोचनीय—करुणध्वनि—उत्तर० १, शि० ६।६७, विपक्षकक्षैरार्यचरितं—उत्तर० १।२८,—णः 1 दया, अनुकम्पा, दयालुता 2 करुण रस, शोक, रज (आठ या नौ रसों में से एक)—पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रस —उत्तर० ३।१, १३, विलपन्'' ..... करुणार्थग्रथित प्रियां प्रति—रघु० ८।७०,। सम०—वल्ली मल्लिका का पौधा,—विप्रलम्भ (अल० शा० में) वियुक्तावस्था में प्रेम-भावना।

करुणा [करुण+टाप्] अनुकंपा, दया, दयालुता—प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा मेघ० ९३, इसी प्रकार 'सकरुण = सदय' तथा ''अकरुण = निर्दय'। सम०—आर्द्र (वि०) कोमल-हृदय, दया से पसीजा हुआ, संवेदनशील,—निधिः दया का भण्डार, -पर, —मय (वि०) अत्यन्त कृपालु,—विमुख (वि०) निर्दय, क्रूर—करुणाविमुखेन मृत्युना—रघु० ८।६७।

करेटः [करे+अट्+अच्, अलुक् स०] अंगुली का नाखून।

करेणुः [कृ+एणु—अथवा के मस्तके रेणुरस्य नारा०] 1 हाथी,—करेणुरारोहयते निषादिनम् शि० १२।५, ५।४८ 2 कर्णिकार वृक्ष,- णुः (स्त्री०) 1 हथिनी —ददौ रसात्पद्मवनेषु गन्धवद्गजाय गण्डूषजलं करेणुः कु० ३।३७, रघु० १६।१६ 2. पालकाप्य की माता। सम०—मुनिः हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक पालकाप्य।

करोटम्, करोटिः (स्त्री०) [कृ+रुट्+अच्, इत्व वा] 1 खोपड़ी—महावी० ५।१९ 2 कटोरा या पात्र।

कर्कः [कृ+क] 1 केंकड़ा 2 कर्क राशि, चतुर्थराशि 3 आग 4 जलकुंभ 5 दर्पण 6 सफेद घोड़ा।

कर्कटः,—कः [कर्क+अटच्, स्वार्थे कन् च] 1 केंकड़ा 2 कर्करराशि, चतुर्थराशि, 3 वृक्ष, बेरा।

कर्कटिः,—टी (स्त्री०) [कर्+कट+इन्, ङीष् वा० पररूपम्, ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

कर्कन्धुः,—न्धूः [कर्कं कण्टकं दधाति —धा+कु] 1 उनाब का पेड़—कर्कन्धूफलपाकलिप्सयपनतामोद परिस्तीर्यते —उत्तर० ४।१, कर्कन्धूनामुपरि सुहिन रक्तयत्वसंख्या —बृ० ४, मनु० पा० 2 इस वृक्ष का फल—याज्ञ० १।२५०।

कर्कर (वि०) [कर्क+र+क] 1 कठोर, ठोस 2. दृढ़,—रः 1 हथौड़ा 2. तबला 3 हड्डी, (खोपड़ी का) अस्थि टुकड़ा, खंड,—रा० ५।१९ 4 पीतल या चमड़े की

पेटी । सम०—अक्षः हिलती पूछ वाला (जानवर) पक्षी,—अंधः अजन पक्षी, -अंधुकः अंधा कुआँ, तु०, अवटकूप ।

कर्कराटुः [कर्कं हास्यं रटति प्रकाशयति, कर्क+रट्+कुक्] तिरछी दृष्टि, कनखी, कटाक्ष ।

कर्करालः [कर्कर+आल्+अच्] घुँघराले बाल, चूर्णकुन्तल ।

कर्करी [कर्कर+ङीष्] ऐसा अलपात्र जिसकी तली में चलनी की भाँति छिद्र हों ।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1 कठोर, कड़ा (विप० कोमल या मृदु) सुरद्विपास्फालनकर्कशाङ्गुली —रघु० ३।५५, ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन पस्पर्श तदङ्गमिन्द्र —कु० ३।२२, १।३६, शि० १५।१० 2. निष्ठुर, क्रूर, निर्दय (शब्द, आचरण आदि) 3. प्रचण्ड, प्रबल अत्यधिक—तस्य कर्कशविहारसंभवम्—रघु० ९।६८ 4 निराश 5 दुराचारी, दुश्चरित्र, स्वामिभक्ति से हीन (जैसा कि कोई स्त्री) 6 समझ में न आने योग्य, दुर्बोध —तर्क वा मृगकर्कशे मम सखे लीलायते भारती —प्रस० ४,—शः तलवार ।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्कश+कन्+टाप्, इत्वम्, ङीष् वा] जङ्गली बेर, झड़बेर ।

कर्किः [कर्क्+इन्] कर्क राशि, चतुर्थ राशि ।

कर्कोटः,—टकः [कर्क्+ओट, स्वार्थे कन्] आठ प्रधान साँपों में से एक (जब राजा नल को कलि के दुष्प्रभाव से नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करनी पड़ीं तो उस समय कर्कोट ने, जिसे नल ने एक बार आग से बचाया था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे कोई पहचान न सके) ।

कर्पूरः [कर्प्+ऊर, पृषो० प आदेश] एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष, —रम् 1 सोना 2 हरताल ।

कर्ष् (भ्वा० उभ०—कर्षति-ते, कर्षित) 1. खेत करना जुताई करना 2. सुनना (प्रायः 'आ' उपसर्ग के साथ) आ—, सुनना, ध्यान से सुनना - सर्वे संविस्मयमाकर्णयन्ति - श० १, आकर्णयन्नुत्सुकहंसनादान् —भट्टि० ११।७ ।

कर्णः [कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन—कर्ण्+अप्] 1 कान —अहो खलभुजङ्गस्य विपरीतक्रमः, कर्णं लगति चान्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते । पञ्च० १।३००, ३०५, कर्ण का ध्यान से सुनना, कर्णमूलम् कान तक आना, ज्ञात होना—रघु० १।९, कर्णे कृ कान में डालना, - चौर० १०, कर्णे जपति कान में कहता है, दे० षट्कर्ण, चतुष्कर्ण 2 मशाल का कड़ा 3 नाव की पतवार 4. त्रिभुज के समकोण के सामने की रेखा 5. महाभारत में वर्णित कौरव पक्ष का एक महारथी (जब कुन्ती अपने पिता के घर रहती थी, उस समय दुर्वासा ऋषि के प्रबोध से कुन्ती की अविवाहितावस्था में कर्ण का जन्म हुआ । (दे० कुन्ती) बालक उत्पन्न होने पर कुन्ती ने अपने बन्धु-बान्धवों की निन्दा तथा लोकलज्जा के कारण उसे नदी में फेंक दिया । धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ ने उसे नदी से निकाल कर अपनी पत्नी राधा को दे दिया । उसने उसे पालपोस कर बड़ा किया, इसी लिए कर्ण को सूतपुत्र या राधेय कहते हैं । बड़ा होने पर दुर्योधन ने कर्ण को अङ्ग देश का राजा बना दिया । अपनी दानशीलता के कारण वह दानवीर कर्ण कहलाया । एक बार इन्द्र (जो अपने पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था) ने ब्राह्मण का वेश धारण किया और कर्ण को झांसा देकर उसके दिव्य कवच व कुण्डल हथिया लिये, बदले में उसे एक शक्ति या बरछी दे दी । युद्ध की कला में अपने आप को दक्ष बनाने की इच्छा से कर्ण ब्राह्मण बन कर परशुराम के पास गया, वहाँ उसने परशुराम से अस्त्र-शस्त्रालन की शिक्षा प्राप्त की । परन्तु यह भेद बहुत दिन तक छिपा न रहा । एक बार जब परशुराम अपना सिर कर्ण की जंघा पर रख कर सो रहे थे, तो एक कीड़ा (कई लोगों के मतानुसार इन्द्र ने कर्ण को विफल करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया था) कर्ण की जंघा को खाने लगा, उसने जंघा में गहरा घाव कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्ण टस से मस न हुआ । इस अनुपम सहन शक्ति से परशुराम को कर्ण की असलियत का पता लग गया, फलतः उसने कर्ण को शाप दे दिया कि आवश्यकता के समय—उसकी विद्या—काम नहीं आवेगी । एक दूसरे अवसर पर उसे एक ब्राह्मण ने (जिसकी गौएँ अनजाने में पीछा करते हुए कर्ण द्वारा मारी गई थीं) शाप दे दिया कि संकट आ पड़ने पर उसके रथ का पहिया पृथ्वी खा लेगी । इस प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी कर्ण ने भीष्म और द्रोण के पतन के पश्चात् कौरव सेना के सेनापति के रूप में कौरव-पाण्डवों के युद्ध में अपना युद्ध कौशल खूब दिखाया । तीन दिन तक वह पाण्डवों के सामने रणक्षेत्र में डटा रहा । परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा गया । कर्ण, दुर्योधन का अत्यन्त घनिष्ठ मित्र था, पाण्डवों का नाश करने के लिए शकुनि से मिल कर जो योजनाएँ या षड्यन्त्र दुर्योधन ने किये, उन सब में कर्ण उसके साथ था) । सम०—अंजलिः बाहरी कान का अवयव-भाग,—अन्तकः युधिष्ठिर,—अन्तिक (वि०) कान के निकट—स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः—श० १।२४,—अन्धुः—धू (स्त्री०) कान का छेदबन्धन, कान की बाली,—अवसथ्, कान देना, ध्यान से सुनना; —आवरणम् हाथी के कानों की झालरदार झूल,—उत्पल

कान का आभूषण या (कइयो के मतानुसार) केवल आभूषण, (मम्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान मे स्थिति' है—तु० उसका एत० टिप्पण—कर्णावतंसादिपदे कर्णादिध्वनिनिमित. सन्निधानार्थबोधार्थ स्थितेष्वेवंतत्समर्थनम् । काव्य० ७), —उपकर्णिका अफवाह (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक'), —कंडः (आयु० में) कान में लगातार गूज होना, —गोचर (वि०) जो कानो को सुनाई पडे, —ग्राह कर्णधार, —जप (वि०) (कर्णेजप भी) रहस्य की बात बतलाने वाला, पिशुन, मुखबिर, —जप, जापः झूठी निन्दा करना, चुगली करना, कलक लगाना, जाह कान की जड—अपि कर्णजाहविनिवेशितानन —मा० ५।८, —जित् (पु०) कर्णविजेता, अर्जुन, तृतीय पाडव, —ताल. हाथी के कानो की फडफडाहट, या उससे उत्पन्न आवाज -विस्तारित कुजरकर्णतालै —रघु० ७।३९, ९।७१, शि० १३।३७, —धार मल्लाह, चालक —अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव हि० ३।२, अविनयनदीकर्णधारकर्ण—वेणी० ४,—धारिणी हथिनी —पथ श्रवणपराम,—परम्परा एक कान से दूसरे कान, प्रनु-वृत्ति—इति कर्णपरम्परया श्रुतम्—रत्न० १, —पालि (स्त्री०) कान की लौ,—पाशः सुन्दर कान, —पूर 1 (फूलो का बना) कान का आभूषण, कान की बाली—इद च करतल किमिति कर्णपूरतामारोपितम् - का० ६० 2 अशोकवृक्ष, —पूरक 1 कान की बाली 2 कदम्ब वृक्ष 3 अशोक वृक्ष 4 नील कमल, —प्रान्त. कान की पाली,—भूषणम्, भूषा कान का गहना, —मूलम् कान की जड—रघु० १२।२, —योनी दुर्गा का एक रूप, —वेधः बाँसो से बना ऊँचा मचान, —वर्जित (वि०) बिना कानो का, (—तः) साँप, —विवरम् कान का श्रवण-मार्ग,—विष्ठ (स्त्री०) घूप, कान का मैल,—वेधः (बालियाँ पहनने के लिए) कानो का बींधना,—वेष्टः,—वेष्टनम् कान की बाली, —शष्कुली (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (श्रवण मार्ग पर ले जाने वाला) नै० २।८,—शूलः,—शूल कानो में पीडा,—शूल (वि०) जो सुनाई दे, ऊँचा (स्वर) —कर्णशूलेऽनिले —मनु० ४।१०२,—स्रावः,—स्रवः कानो का बहना, कान से मवाद निकलना,—सू (स्त्री०) कर्ण की माता, कुन्ती,—हीन (वि०) कर्णरहित (—नः) साँप।

कर्णाकर्णि (वि०) [कर्णे कर्णे गृहीत्वा प्रवृत्त कथनम् —व्यतिहारे इच्, पूर्वस्य दीर्घश्च] कानो कान, एक कान से दूसरे कान।

कर्णाटः [कर्ण+अट्+अच्] भारत प्रायोद्वीप के दक्षिण में एक प्रदेश—(काव्य) कर्णाटेन्दोर्वगति विदुषा कण्ठभूषास्वमेतु—विक्रमाक० १८।१०२,—टी (स्त्री०) उपर्युक्त देश-की स्त्री—कर्णाटी चिकुराणां ताम्बूलकर —विद्ध० १।२९।

कर्णिक (वि०) [कर्ण+इकन्] 1 कानो वाला 2 पतवार धारी,—कः केवट,—का 1 कानो की बाली 2 गाँठ, गोल गिल्टी 3 कमल का फल, कमलगट्टा 4 एक छोटी कूची या कलम 5 मध्यमा अगुली 6. फल का डठल 7 हाथी के सूड की नोक 8 खटिया।

कर्णिकार [कर्णि+कृ+अण्] 1 कनियार का वृक्ष—निर्भिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्यालीयते षट्पद —विक्रम० २।२३, ऋतु० ६।६, २० 2 कमल का फल, कमलगट्टा —रम् कनियार का फूल, अमलतास का फूल (यद्यपि यह फूल बडे सुन्दर रग का होता है, परन्तु सुगन्ध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नही करता—तु० कु० ३।२८,—वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकार दुनोति निर्गन्धतया स्म चेत, प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणाना पराङ्मुखी विश्वसृज प्रवृत्ति ।

कर्णिन् (वि०) [कर्ण+इनि] 1 कानो वाला 2 लम्बे कानो वाला 3 फल लगा हुआ (जैसे तीर) - (पु०) 1 गधा 2 मल्लाह 3 गाँठों से सम्पन्न बाण ।

कर्णी (स्त्री०) [कर्ण+ङीष्] 1 पुखदार या विशेष आकार का बाण 2 चौर्य कला व विज्ञान के पिता मूलदेव की माता। सम०—रथः बन्द डोली, स्त्रियो की सवारी, पालकी—कर्णीरथस्था रघुवीरपत्नीम्—रघु० १४। १३, —सुतः चौर्यकला व विज्ञान के जन्मदाता मूलदेव —कर्णीसुतकर्षेव सनिहितविपुलाचला—का० १९, कर्णीसुतप्रहिते च पथि मलिमकरवम् —दश०।

कर्तनम् [कृत्+ल्युट्] 1 काटना, कतरना—याज्ञ० २। २२९, २८६ 2 रूई कातना (तकुं कर्तनसाधनम्)।

कर्तनी (स्त्री०) [कर्तन+ङीप्] कैंची।

कर्तरिका, कर्तरी (स्त्री०) 1 कैंची 2 चाकू 3. अङ्कुश, छोटी तलवार।

कर्तव्य (स० कृ०) [कृ+तव्यत्] 1 जो कुछ उचित हो या होना चाहिए,—हीनसेवा न कर्तव्या कर्तव्यो महदाश्रय —हि० ३।११, मया प्रातनि सस्थ वन कर्तव्यम् —पच० १ 2 जो काटना या कतरना चाहिए, नष्ट करने योग्य —पुत्र सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरु, रिपुस्थानेषु वर्तन्त कर्तव्या भूतिमिच्छता —महा०,—व्यम्, कर्तव्यता, जो होना चाहिए, धर्म, आभार—कर्तव्य वो न पश्यामि—कु० ६।२१, २।६२, याज्ञ० १।३३०।

कर्तृ (वि०) [कृ+तृच्] 1 करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक—व्याकरणस्य कर्ता=रचयिता, ऋणस्य कर्ता =कर्ज करने वाला, हितकर्ता=भला करने वाला, सुवर्णकर्ता=सुनार 2 (व्या० में) अभिकर्ता (करण

कारक का अर्थ) 3. परब्रह्म 4. ब्रह्मा का विशेषण विष्णु का शिव

कर्त्री (स्त्री०) [कर्तृ+ङीप्] 1 चाकू 2 कैंची।

कर्दः, कर्दमः [कर्द्+अच्, कर्द+अट्+अच्, परः-पम्] कीचड़।

कर्दमः [कर्द्+अम] 1 कीचड़, दलदल, पंक—पादौ नूपुर लानकर्दमधरौ प्रक्षालयन्ती स्थिता - मृच्छ० ५।२५, पथश्चाश्रयानकर्दमान्—रघु० ४।२४ 2 कूड़ा, मल 3. (आलं०) पाप, वस् मांस। सम०—आहक, मलपात्र, मलभाण्ड आदि।

कर्पटः,—टम् [कृ+विच्=कर् स च पटश्च कर्म० स०] 1 पुराना, जीर्ण-शीर्ण या मैला लगा कपड़ा 2 कपड़े का टुकड़ा, धज्जी 3 मटियाला या लाल रंग का कपड़ा।

कर्पटिक,—कः (वि०) [कर्पट+ठन्, इलि वा] जीर्ण शीर्ण कपड़ों (चिथड़ों) से ढका हुआ।

कर्पणः [कृप्+ल्युट्] एक प्रकार का हथियार—चापचक्रकणपकर्पणप्रासपट्टिश आदि—दश० ३५।

कर्परः [कृप्+अरन् वा०] 1 कड़ाह, कड़ाही 2 बर्तन 3 ठीकरा, टूटे बर्तन का टुकड़ा—जैसा कि घट कर्पर में —जीयेत येन केनापि यमके परेण तस्मै देहेयमुदक घटकर्परेण—घट० २२ 4 खोपड़ी 5 एक प्रकार का हथियार।

कर्पासः,—सम्,—सी [कृ+पास, स्त्रियां ङीष्] कपास का वृक्ष।

कर्पूरः,—रम् [कृप्+ऊर] कपूर। सम०—खण्ड 1 कपूर का खेत 2 कपूर का टुकड़ा, तैलम् कपूर का तेल।

कर्मरः [कृ+विच्=कर्, फल्+अच्, रस्य लः, कीर्यमाण फल प्रतिबिम्बो यत्र ब० स०] दर्पण।

कर्बुः (वि०) [कर्व्(बॅ)+उन्] रंगबिरंगा, चितकबरा।

कर्बुर (वि०) [कर्व्(बॅ)+उरच्] 1 रंगबिरंगा, चितकबरा—क्वचिल्लसद्घननिकुरम्बकर्बुर—शि० १७।५६ 2 कबूतर के रंग का, सफेद सा, भूरा—पवनैर्भस्मकपोतकर्बुरम् कु० ४।२७, र. चित्रविचित्र रंग 2 पाप 3 भूत, पिशाच 4 बतूरे का पौधा,—रम् 1 सोना, 2 जल।

कर्बुरित (वि०) [कर्बुर+इतच्] रंगबिरंगा—उत्तर० ६।४।

कर्मठ (वि०) [कर्मन्+अठच्] 1 कार्यप्रवीण, चतुर 2 परिश्रमी 3 केवल धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न, —ठः यज्ञ निर्देशक।

कर्मण्य (वि०) [कर्मन्+यत्] कुशल, चतुर,—र्यम् मजदूरी, —र्यम् सक्रियता।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन्] 1 कृत्य, कार्य, कर्म 2 कार्यान्वयन, सम्पादन 3 व्यवसाय, पद, कर्तव्य—सम्प्रति विषयैकानां कर्म— मालवि० ४ 4 धार्मिक कृत्य (यह चाहे, नित्य हो, नैमित्तिक हो या काम्य हो) 5 विशिष्ट कृत्य, नैतिक कर्तव्य 6 धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान (कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या कल्पना प्रसूत धर्म का विरोधी है (विप० ज्ञान)—रघु० ८।२० 7 फल, परिणाम 8. सैनिक या सक्रिय सम्पत्ति (धरती के आश्रय के रूप में) 9 भाग्य, पूर्वजन्म के किये हुए कर्मों का फल—भर्तृ० २।४९, 10 (व्या०) कर्म का उद्देश्य - कर्तुरीप्सिततमं कर्म—पा० १।४।४९, 11 (वैशे० द० में) गति या कर्म जो सात द्रव्यों में एक माना जाता है, (परिभाषा इस प्रकार है - एकद्रव्यमसमवायिकारणमनपेक्षकारणं कर्म - वैशे० सू०, कर्म पाँच प्रकार का है—उत्क्षेपणं तथाऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा, प्रसारणं च गमनं कर्माण्येतानि पञ्चैव च—भाषा० ६। सम०—अक्षम (वि०) कार्य करने में असमर्थ, —अङ्गम् कार्य का अंग, यज्ञीय कृत्य का भाग (जैसा कि दर्श यज्ञ का प्रयाज),—अधिकार धर्मकृत्यों को सम्पन्न करने का अधिकार,—अनुरूप (वि०) 1 किसी विशेष कार्य या पद के अनुसार 2 पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार, —अन्तः 1 किसी कार्य या व्यवसाय की समाप्ति 2 कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन 3 कोष्ठागार, धान्यागार—मनु० ७।६२, (कर्मान्ता इक्षुधान्यादिसंग्रहस्थानम्—कुल्लू०) 4 जुती हुई भूमि, —अन्तरम् 1 कार्य में भिन्नता या विरोध 2 तपस्या, प्रायश्चित्त 3 किसी धार्मिक कृत्य का स्थगन,—अन्तिक (वि०) अन्तिम (—कः) सेवक, कामिक. आजीवः किसी पेशे से (जैसे शिल्पकार का) अपनी जीविका चलाने वाला,—आत्मन् (वि०) कार्य के नियमों से युक्त, सक्रिय—मनु० १।२२,२३, (पुं०) आत्मा,—इन्द्रियम् काम करने वाली इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न हैं (वे यह हैं—वाक्पाणिपादपायूपस्थानि—मनु० ११।९१, 'इन्द्रिय' शब्द के नी० भी दे०,—उत्तरम् साहसिक या उदार कार्य, उच्चाशयता, शक्ति,—उद्युक्त (वि०) व्यस्त, संलग्न, सक्रिय, सोत्साह,—करः 1 भाड़े का मजदूर (वह सेवक जो दास न हो)—कर्मकरा स्वपत्यादय—पञ्च १, शि० १४।१६ 2. यम,—कर्तृ (पुं०) (व्या० में) कर्ता जो साथ ही साथ कर्म भी है—उदा० पच्यते ओदनः, इसकी परिभाषा यह है - क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति, तत्कर्तृ स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मतामेति तद्विदुः। —काण्डः,—ण्डम् वेद का वह विभाग जो यज्ञीय कृत्यों, संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है,—कारः 1 जो किसी व्यवसाय को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भाड़े पर काम करने वाला न हो) 2. कोई भी मजदूर (चाहे भाड़े

का हो या बिना भाड़े का) 3 लुहार,—हरिष्यामि कटाक्षेण आत्मानमबलोकय, न हि मामृते विज्ञानाति कर्मकार स्वकारणम् । उद्भट 4 साँड़,—कारिन् (पु०) मजदूर कारीगर,—कार्मुकः—कम् एक मजबूत धनुष, —कौलिकः चोरी,—कार्य (वि०) कोई कार्य या कर्तव्य सम्पादन करने के योग्य,—आत्मकर्मफलं देहं आत्मा धर्म इवाश्रित —रघु० १।१३,—क्षेत्रम् धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—गृहीत (वि०) कार्य करते समय पकड़ा हुआ (जैसे कि चोर),—घातः कार्य को छोड़ बैठना या स्थगित कर देना,—घ्न (वा) घातकः 1 काम करने में नीच, नीच या निकृष्ट कर्म करने वाला व्यक्ति, वसिष्ठ उनके प्रकारों का उल्लेख करता है—अनृतक पिशुनश्च कृतघ्नो दीर्घरोषक., चत्वार कर्मचाण्डाला जन्मतश्चापि पञ्चम । 2. जो अत्याचार पूर्ण कार्य करता है—उत्तर० १।४६ 3 राहु,—चोदना 1 यज्ञानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रयोजन 2 धार्मिक कृत्य की विधि,—ज्ञः धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—त्यागः सांसारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान को छोड़ देना,—दुष्ट (वि०) कार्य करने में भ्रष्ट, दुष्ट, दुराचारी अनाचरणीय,—दोषः 1 पाप, दुर्व्यसन —मनु० ६।६१, ९५ 2 त्रुटि, दोष, (कार्य करने में) भारी भूल—मनु० १।१०४ 3 मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4 निंद्य आचरण,—धारय समास, तत्पुरुष का एक भेद (इसमें प्राय विशेषण व विशेष्य का समास होता है), - तत्पुरुष कर्मधारय बेनाह स्या बहुव्रीहि —उद्भट, ध्वंसः 1 धर्मानुष्ठानों से उत्पन्न फल का नाश 2 निराशा,—नाशन (ब्या० में) कृदन्तक संज्ञा, —नाशा काशी और बिहार के मध्य बहने वाली एक नदी,- निष्ठ (वि०) धर्मानुष्ठान के सम्पादन में संलग्न,—पथः 1 कार्य की दिशा या क्षेत्र 2 धर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—पाक कार्यों की परिपक्वावस्था, पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का फल,—प्रवचनीय कुछ उपसर्ग तथा अव्यय जो क्रियाओं के साथ सबद्ध न होकर केवल संज्ञाओं का शासन करते हैं उदा० 'आ मुक्तेः संसार' में 'आ' कर्मप्रवचनीय है, इसी प्रकार 'अपमनु प्रावर्षत्' में 'अनु', तु० उपसर्ग, गति या निपात,—प्रधानः धर्मानुष्ठानों के फलों का परित्याग, फलम् पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल या पारितोषिक (दुःख, सुख),- बन्धः, बन्धनम् जन्म-मरण का बन्धन, धर्मानुष्ठानों के फल चाहे शुभ हों या अशुभ (इनके कारण जीव सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त रहता है),—भूः, —भूमिः (स्त्री०) 1. धर्मानुष्ठान की भूमि—अर्थात् भारतवर्ष 2. जुती हुई भूमि,—मीमांसा संस्कारादिक अनुष्ठानों का विचारविमर्श या मीमांसा,—युगम् कुश नामक पवित्र घास,—युगम् चौथा (वर्तमान) युग, अर्थात् कलियुग,—योग 1 सांसारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2. सक्रिय चेष्टा, उद्योग,—राजः भाग्य जो पूर्व जन्म में किये गये कार्यों का अनिवार्य परिणाम है,—विपाकः=कर्मपाक,—शाला कारखाना, —शील,- शूर (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी, —संग सांसारिक कर्तव्य तथा उनके फलों में आसक्ति । —सचिव मंत्री,—संन्यासिकः,—संन्यासिन् (पु०) 1 धर्मात्मा पुरुष जिसने प्रत्येक सांसारिक, कार्य से विरक्ति पा ली है 2 वह संन्यासी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है, —साक्षिन् (पु०) 1 आँखों देखा गवाह, प्रत्यक्षदर्शी साक्षी—कु० ७।८३ 2 जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के नौ देवता हैं जो मनुष्य के समस्त कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं —तथाहि—सूर्य सोमो यम कालो महाभूतानि पञ्च च, एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिण ।—सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता—कु० ३।५७,—स्थानम् सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान ।

कर्मन्विन् [कर्मन्द+इनि] संन्यासी, धार्मिक भिक्षु ।

कर्मारः [कर्मन्+कृ+अण्] लुहार याज्ञ० १।१६३, मनु० ४।२१५ ।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन्+इनि] 1 कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2 किसी कार्य या व्यवसाय में व्यापृत 3 जो फल की इच्छा से धर्मानुष्ठान करता है —कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन —भग० ६।४६, (पु०) कारीगर, शिल्पकार —याज्ञ० २।२६५ ।

कर्मिष्ठ (वि०) [कर्मिन्+इष्ठन्, इनो लुक्] व्यापार-कुशल, चतुर, परिश्रमी ।

कर्वट [कर्व्+अटन्] बाजार, मंडी या किसी जिले (जिसमें २०० से ४०० तक गांव हों) का मुख्य नगर ।

कर्ष [कृष्+अच् घञ् वा] 1 रेखा खींचना, घसीटना, खींचना—याज्ञ० २।२१७ 2 आकर्षण 3 हल जोतना 4 हल-रेखा, खाई 5 अवरोध,- र्षं,—र्षम्—चाँदी या सोने का १६ माशे का वजन । सम०—आपण=कार्षापण ।

कर्षक (वि०) [कृष्+ण्वुल्] खींचने वाला,—कः किसान, खेतिहर -याज्ञ० २।२६५ ।

कर्षणम् [कृष्+ल्युट्] 1 रेखा खींचना, घसीटना, खींचना, झुकाना, (धनुष का)—मध्यमानमसिमात्र-कर्षणात्—रघु० ११।४६ ७।६२ 2 आकर्षण 3 हल जोतना, खेती करना 4. क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, पीड़ित करना—मनु० ७।११२ ।

कलिन्दी [कल्+इनि+ङीप्] कलम्ब का दरख्त।

कलिः (स्त्री०) [कल्+ऊ] 1 हल-रेखा, खूड 2 नदी 3 नहर (पु०) 1 सूखे कंडों की आग 2. कवि, मंत्री 3 जीविका।

कदाचित् (अव्य०) [किम्+चित्, कादेश,+चित्] किसी समय, (प्राय 'न' के साथ प्रयोग) मनु० २।४, ४०, ९३; ४।३७, ६।५०।

कल्१ (म्वा० आ०—कलते, कलित) 1 गिनना, 2 शब्द करना।

II(चुरा० उभ०—कलयति-ते, कलित)1. धारण करना, रखना, ले जाना, सम्भालना, पहनना, कराक्करकन्दली-कलितशस्त्रजालैर्बलै उत्तर० ५।५, म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् गीत० १, कलितकलिन-वनमाल, हल कलयते त०, कलयबलवलयौघी पाणौ पदे कुरु नूपुरौ-- १२, शा० ४।१८ 2 गिनना, हिसाब लगाना—काल कलयतामहम्—भग० १०।३० 3 धारण करना, लेना, रखना, अधिकार में करना -कलयति हि हिमालौविकल्कस्तुच्य लक्ष्मीम्—मा० १।२२, शि० ४।३६, ९।५९ 4 जानना समझना, पर्यवेक्षण, ध्यान देना, सोचना—कलयन्नपि सत्यथो-ऽवतस्थे -शि० ९।८३, कोपितं विरहखेदितचित्ता कान्ता-मेव कलयन्ननुनिन्ये १०।२९, नै० २।६५, ३।१२ मा० २।९ 5 सोचना, आदर करना, खयाल करना -कलयेदमानमनसं मयि मान् शि० ९।५८, ६।५४, शा० ४।१५, व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम् —गीत० ४।७ 6 सहन करना, प्रमाणित होना – मदलीलाकलितकामपाल -मा० ८, धन्य कोऽपि न विकिया कलयति प्राप्ते नवे यौवने—भर्तृ० १।७२ 7 करना, सम्पादन करना 8 जाना 9 आसक्त होना, लेटजाना, सुसज्जित होना, । आ— 1 पकड़ना, ग्रहण करना शि० ७।२१,—कुतूहलाकलित-हृदया—का० ४९ 2 खयाल करना, आदर करना, जानना, ध्यान देना —स्पर्शेऽपि पावनमाकलयन्ति —का० १०८, खिन्नमनूयया हृदय तवाकलयामि —गीत० ३ 3 बांधना, जकड़ना, बंधन युक्त होना, रोकना या इकट्ठे पकड़ना शि० १।६, ९।४५, का० ८४, ९९ 4 प्रसार करना, फैंकना -शि० ३।७३ 5 हिलाना, परि—, 1. जानना, समझना, खयाल करना, आदर करना 2 आभार होना, याद करना वि—, अपाकरना, विकलांग करना विकृत करना, सम्—, 1 जोड़ना, एकत्र करना तु० संकलन 2 खयाल करना, आदर करना।

iii (चुरा० उभ०—कालयति--ते, कलित) प्रोत्सा-हित करना, हाँकना, प्रेरणा देना।

कल (वि०) [कल् (कच्)+घञ्, अवृद्धि, कलयोर-भेद] 1 मधुर, और अस्पष्ट (अस्पष्टमधुर)—कर्णे कलं किमपि रौमि—हि० १।८१, सारसै कलनिह्रादैः—रघु० १।४१, ८।५९, मालवि० ५।१, 2 मन्द मधुर (स्वर) 3 कोलाहल करने वाला, झनझनाता हुआ, टनटन करता हुआ—मास्वत्कलनूपुरा—रघु० १६।१२, कलकिंकिणी-स्वम्—शि० ९।७४, ८२, कलमेखलाकलकल ६।१४, ४।५७ 4 दुर्बल 5 अनपका, कच्चा, -लः मन्द या मृदु और अस्पष्ट स्वर, -लम् वीर्य। सम०—अङ्कुरः सारस पक्षी, अनुनादिन् (पु०) 1 चिड़िया 2. मधु-मक्खी 3 चातक पक्षी,—अव्यक्त: चिड़ा,—आलाप 1 मधुर गुंजार 2 मधुर और कर्णिकर प्रवचन—स्फुर स्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौमुका विकम् - का० २ 3 मधुरस्वरी,—उत्ताल (वि०) ऊँचा, तीक्ष्ण,—कण्ठ (वि०) मधुर कंठ वाला (—ण्ठः) (स्त्री०—ण्ठी) 1. कोयल, 2 हंस, राजहंस 3 कबूतर,—कलः 1 भोंड की घर्घरध्वनि या मनभनाहट 2 अस्पष्ट या संयुक्त ध्वनि--चलितया विदधे कलमेख-लाकलकलोलकलोलदृशान्वया - शि० ६।१४, नेपथ्ये कलकल (नाटकों में), भर्तृ० १।२७ ३७, अमरु २८ 3 शिव,—कूजितकः -कूजिता छिनाल स्त्री, कोयल, -तूलिका लम्पट या छिनाल स्त्री,—कौतम् 1 चाँदी—शि० १३।५१ ४।४१ 2 सोना—विमलकल-धौतस्मरणा सङ्गमेन वेणी० ३ °क्रिया (स्त्री०) 1 बुनकरी या बहुलिपि की अव्यक्तमधुर 2 स्वर्णाक्षर —मरकतशकलान्वितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् —गीत० ८, ध्वनि 1. मन्दमधुर ध्वनि 2. कबूतर 3 मोर 4 कोयल,—भाषः मन्द मधुर स्वर, -भाषिन् तुतलाना, -मालकलरव=अचपन की बहक, -रवः 1 मन्द मधुर ध्वनि 2 कबूतरी 3 कोयल,—हंसः 1 हंस, राजहंस—वधूदुकूल कलहंसलक्षणम् —कु० ५।६७ 2 बसन्त, पुंस्कोकिल, भट्टि० २।१८, रघु० ८।५९, 3 परमात्मा।

कलङ्कः [कल्+क्विप्,कल् भाषी अङ्कयति कर्म० स०] 1 धब्बा, चिह्न, काला धब्बा (शा०) रघु० १३।१५, 2 (आल०) दाग, बट्टा, गर्हा, बदनामी -अपनयतु कलङ्कं स्वस्वभावेन सैव मम्म० १०।१४, रघु० १४।३७, इसी प्रकार—कुल 3 अपराध, दोष – भर्तृ० ३।४८ 4 लोहे का जंग, मोर्चा।

कलङ्कारिः (स्त्री०—री) [करेण कथति हिनस्ति—कल+कथ्+घञ्, मुम्] सिंह, शेर।

कलङ्कित (वि०) [कलङ्क+इतच्] 1 धब्बेदार, लांछित, बदनाम।

कलङ्कुरः [क जलं लङ्कयति आमयति, क+लङ्क+क्विप् +उरच्] जलाशय, सरोवर।

कलञ्जः [क जलं जयति—क+लञ्ज्+अच्] 1. पक्षी

2 विषैले शस्त्र से आहत मृग आदि जन्तु,—अम् ऐसे जन्तु का मांस।

कलत्रम् [गद्+अत्रन्, गकारस्य ककार, दलयोरभेद] 1 पत्नी,—वसुभूत्या हि नृपाः कलत्रिणः—रघु० ८।८३, १।३२, १२।३४, यद्भूर्तुश्च हितमिच्छति तत्कलत्रम् भर्तृ० २।६८ 2 कूल्हा या नितम्ब—इन्दुमूर्तिमिवोद्वाहमन्मथ विलासगृहीतगुरुकलत्राम्—का० १८९ (यहाँ 'कलत्रम्' के दोनों अर्थ हैं) कि० ८।९, १७ 3 राजकीय दुर्ग।

कलना [कल्+ल्युट्] 1 घण्टा, चिह्न 2 विकार, अपराध, दोष 3 ग्रहण करना, पकड़ना, थामना—कलनान्यर्थभूतानां स काले परिकीर्तितः 4 जानना, समझना, बोध पाना 5 ध्वनि करना,—ना 1 लेना, पकड़ना, थामना—काल कलना—आन० २९ 2 करना, क्रियान्वयन 3 वशता 4 समझ, समवबोध 5 पहनना, वसन-धारण करना।

कलन्धिका [कल+दा+क+कन्+टाप्, इत्वम्, पृषो० मुम्] बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा।

कलभ (स्त्री० भी) [कल्+अभच्, करेण शुण्डया भाति भा+क ग्रस्य लत्वम्—ताग०] 1 हाथी का बच्चा, वन पशु-शावक—ननु कलभेन यथपतेः स्पर्धकुलम्—मालवि० ५, द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव—रघु० ३।३२, ११।३९, १८।३७ 2 तीस वर्ष का हाथी 3 ऊँट का बच्चा जन्तु शावक।

कलम [कल्+अम्] 1 मई-जून में बोया हुआ चावल जो दिसम्बर-जनवरी में पक जाता है—सुतेन पाण्डोः कलमस्य गोपिकाम्—कि० ४।९, ३८, कु० ५।४७, रघु० ४।३७ 2 लेखनी, कलम 3 चोर 4 दुष्ट, बदमाश।

कलम्ब [कल्+अम्बच्] 1 तीर 2 कदम्ब वृक्ष।

कलम्बुदत् [क+लम्ब्+उदत्] (नाज्ञा) मक्खन नवनीत।

कलल [कल्+कलच्] भ्रूण, गर्भाशय।

कलविङ्कः,—**ङ्कः** [कल्+वङ्क+अच्, पृषो० इत्वम्] 1 चिड़िया, मनु० ५।९२, याज्ञ० १।१७४ 2 धब्बा, दाग या लाछन।

कलशः,—**शम्** [कल जलेन लश(स)ति-तारा०] (—शम्, —शम्) घड़ा जलपात्र, करवा, तम्बरी मनौ मांसग्रन्थौ कनककलशाविवोपमितौ—भर्तृ० ३।२०, १।९७ स्तनकलश—अमर ५४ °जन्मन्, °उद्भव अगस्त्य मुनि।

कलशी (ली) (स्त्री०) [कलश(स)+ङीष्] घड़ा, करवा। सम०—सुतः अगस्त्य।

कलहः,—**हम्** [कल काम हन्ति—हन्+ड तारा०] 1 झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई—ईर्ष्याकलहः—भर्तृ० १।२, लीला° शृंगार० ८, इसी प्रकार शुष्ककलहः, प्रणयकलहः आदि 2 संग्राम, युद्ध, 3 रोष, धोखा, मिथ्यापन 4 हिंसा, ठोकर मारना, पीटना आदि—मनु० ४।१२१ (यहाँ मेधातिथि और कुल्लूक, कलह शब्द की व्याख्या क्रमशः 'दण्डादिनेतरेतरताडनम्' और 'दण्डादण्डादि' करते हैं)। सम०—अन्तरिता अपने प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण उससे वियुक्त (जो क्रुद्ध भी है साथ ही अपने किये पर खिन्नमाना भी), सा० द० इस प्रकार परिभाषा करता है—चाटुकारमपि प्राणनाथं रोषादपास्य या, पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्तरिता तु सा। ११७,—अपहृत (वि०) बलपूर्वक अपहरण किया गया, —प्रिय (वि०) जो लड़ाई-झगड़ा कराने में प्रसन्न होता है—ननु कलहप्रियोऽसि—मालवि० १, (—यः) नारद की उपाधि।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1 किसी वस्तु का छोटा खण्ड, टुकड़ा, लवमात्र,—कलामप्यकृतपरिलम्भं—का० ३०४ सर्वे ते मित्रगात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—पञ्च० २।५९, मनु० २।८६, ८।३६ 2 चन्द्रमा की एक रेखा (यह १६ अंश है) जयन्ति जयिनस्ते ते भावा सर्वेन्दुकलादयः—मा० १।३६, कु० ५।७२, मेघ० ८९ 3 मूलधन पर ब्याज (लिये हुए धन के उपयोग के विचार से)—धनवीथिवीथियमवतीर्णवतो निधिरम्भसामुपचयाय कला—शि० ९।३२, (यहाँ कला का अर्थ रेखा भी है) 4 विविध प्रकार से आकलित समय का प्रभाग (एक मिनट, ४८ सैकण्ड या ८ सैकण्ड) 5 राशि के तीसवें भाग का साठवाँ अंश, किसी कोटि का एक अंश 6 प्रयोगात्मक कला (शिल्पकला, ललित कला) इस प्रकार की ६४ कलाएँ हैं, जैसे कि संगीत, नृत्य आदि 7 कुशलता, मेधाविता 8 आलसाजी, धोखादेही 9 (छन्द शास्त्र में) मात्रा छन्द 10 किस्ती 11 रजत—लाव। सम०—अन्तरम् 1 दूसरी रेखा 2 ब्याज, लाभ—मासे शतस्य यदि पञ्चकलान्तरं स्यात्—लीला०, —अवन. कलाजाज, नट, तलवार की तीक्ष्ण धार पर नाचने वाला,—आकुलम् भयंकर छिद्र, —कोविद (वि०) छबीला, विलासी (—दः) काम का विशेषण,—क्षयः (चन्द्रमा का) क्षीण होना—रघु० ५।१६,—धरः,—निधिः —पूर्णः चन्द्रमा,—अहो महत्त्वं महतामपूर्वं विपत्तिकालेऽपि परोपकारः, यथान्यमध्ये पतितोऽपि राहो कलानिधिः पुण्यचयं दधाति। उद्भट,—भृत् (पु०) चन्द्रमा, इसी प्रकार कलाभृत् (पु०)—कु० ५।७२।

कलाजः,—**जकः** [कला+आ+दा+क] सुनार।

कलापः [कला+आप्+अच्, घञ्] 1 करधनी, गठरी—मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४३, मोतियों का हार—रशनाकलापः—घुंघरूदार मेखला 2 वस्तुओं का समूह या संचय—अलिकलकलापालोचनं—का० ७ 3 मोर की पूँछ—स मे बालकलापं प्रेक्ष्य मणिकण्ठक

शिञ्जिनम्– विक्रम० ५।१३, पञ्च० २।८० ऋतु० १।१६, २।१८ 4 स्त्री की मेखला या करधनी (प्रायः 'काञ्ची' और 'रशना' आदि के साथ) मनु० १।५७, ६७, ऋतु० ३।२०, मृच्छ० १।२७ 5 आभूषण 6 हाथी के गले का रस्सा 7 तरकस 8. बाण 9 चन्द्रमा 10 चलता-पुरजा, बुद्धिमान् 11 एक ही छन्द में लिखी गई कविता,—पी घास का गट्ठर।

कलापकम् [कलाप+कन्] एक ही विषय पर लिखे गये चार श्लोकों का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य हो) (चतुर्भिस्तु कलापकम्) उदाहरण के लिए दे०, कि० २।४१, ४२, ४३ ४४ 2 वह क्षण जिसका परिशोध उस समय किया जाय जब मोर अपनी पूँछ फैलावे, -क 1 एक जगह या गट्ठर 2 मोतियों की लड़ी 3 हाथी की गर्दन के चारों ओर लिपटने वाला रस्सा 4 मेखला या करधनी (कलाप) शि० ९।४५ 5 (संप्रदायद्योतक) मस्तक पर तिलकविशेष।

कलापिन् (पु०) [कलाप+इनि] 1 मोर -कलाविलापि कलापिकदम्बकम् शि० ६।३१, पञ्च० २।८०, रघु० ६।९ 2 कामदेव 3 अजीर का वृक्ष (प्लक्ष)।

कलापिनी [कलापिन्+ङीप्] 1 रात 2 चाँद।

कलाय. [कला+अय+अण्] मटर, शि० १३।२१।

कलार्धिकः [कलम् आर्धिकायति विशेषेण रौति—कल+आ+वि+कै+क] मुर्गा।

कलाहक [कलम् आहन्ति -कल+आ+हन्+ड+कन्] एक प्रकार का बाजा।

कलि [कल्+इनि] 1 झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई, असहमति, मतभेद शि० ७।५५, कलिकामजित् रघु० ९।३३, अमर० १९ 2 संग्राम, युद्ध 3 सृष्टि का चौथा युग, कलियुग (इस युग की आयु ४३२००० मानव वर्ष है तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी को इसका आरंभ हुआ था) मनु० १।८६, ९।३०१,—कलिवर्जयेति इमानि आदि० 4 मूर्तरूप कलियुग (इसने नल को यातना दी थी) 5 किसी वर्ग का निकृष्टतम व्यक्ति 6 विभीतक या बहेड़े का वृक्ष 7 पासे का पहलू जिस पर एक का अंक अंकित है 8 नायक 9 बाण —(स्त्री०) बिना खिला फूल। सम० कारः, -कारकः.—प्रियः नारद का विशेषण, -द्रुमः, —वृक्षः विभीतक या बहेड़े का वृक्ष,—युगम् कलिकाल, लौहयुग—मनु० १।८५।

कलिका, कलि (स्त्री०) [कलि+कन्+टाप्] 1 अधखिला फूल कली,—चूतानां चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति नो स्वं रज – श० ६।९, किमाम्रकलिकाभङ्गमारभसे—श० ६, ऋतु० ६।१७, रघु० ९।३३ 2 अंक, रेखा।

कलिङ्गः (ब० व०) [कलि+नम्+ड] एक देश और उसके निवासियों का नाम; —उत्कलादक्षिणापथे कलिङ्गास्त्रिमुखो यवी—रघु० ४।३८, (इनके बारे में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—आगङ्गाबालसारभ्य कृष्णातीरावलग. प्रिये, कलिङ्गदेश सम्प्रोक्तो वाममार्गपरायण)।

कलिञ्जः [क+लञ्ज्+अण् नि० साधु०] चटाई, परदा।

कलित (वि०) [कल्+क्त] थामा हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ, दे० कल्।

कलिन्दः [कलि+दा+क, मुम्] 1 वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है 2. सूर्य। सम०—कन्या, —जा,—तनया,—नन्दिनी यमुना नदी की उपाधियाँ —कलिन्दकन्या मथुरा वसन्ति—रघु० ६।४८, कलिन्दजातीर—मालवि० २।१२०, गीत० ३,—गिरिः कलिन्द नाम का पर्वत, °जा, °तनया, °नन्दिनी यमुना नदी की उपाधियाँ—मालवि० ४।३, ४।

कलिल (वि०) [कल्+इलच्] 1 ढका हुआ, भरा हुआ 2 मिला, घुला-मिला —तत एवाभ्रकलिल कलकल.—महावी० १ 3 प्रभावित, वशगत कि,—अकलङ्ककलिल शि० १९।९८ 4 अभेद्य, अछेद्य, —लम् 1 बड़ा ढेर, अव्यवस्थित राशि—विगलित हृदय कलेवकलिल—भर्तृ० ३।३४ 2. गड़बड़, अव्यवस्था—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति— भग० २।५२।

कलुष (वि०) [कल्+उषच्] मलिन, गन्दा, कीचड़ से भरा हुआ, मैला—गगा रोध पुलनकलुषा यमुनातीव प्रसादम् –विक्रम० १।८, कि० ८।३२, घट० १३ 2 दोषाच्छादित, ढँकुरा, भर्राया हुआ—कण्ठ स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुष —श० ४।६ 3. धुंधला, भरा हुआ ६।४ 4 क्रूद्ध, अप्रसन्न, उत्तेजित—बाष्पायद्भोकलुषा दयितेव रात्री रघु० ५।६४ (मल्लि० 'कालुष्य' का अर्थ 'अदोष्य' और 'क्षम' मानता है) 5 दुष्ट, पापी, बुरा 6 क्रूर, निन्दनीय रघु० १४।७३ 7 अन्धकार युक्त, अन्धकारमय 8 निठल्ला, आलसी, —षः भैंसा, —षम् 1. गन्दगी, मैल, कीचड़—विगतकलुषमन्म —ऋतु० ३।२२ 2 पाप 3. क्रोध। सम०—भेदिन् हरामी, वर्णंकर —मनु० १०।५७, ५८।

कलेवरः,—रम् [कले शुष्के वरं श्रेष्ठम्—अलुक् स०] शरीर, —शवस्त्वस्थिमितं कलेवरगृहम्—भर्तृ० ३।८८, हि० १।४७, मच० ८।५, मालवि० १।१०३, २।४३।

कलकः,—कम् [कल्+क] 1 चिपचिपी गाद जो तेल आदि के नीचे जम जाती है, कीट 2. एक प्रकार की लेई या पेस्ट —याज्ञ० १।२७७ 3. (अत) मदनी, मैल 4. लौंग, विष्ठा 5 नीचता, कपट, वन वि० १९।९८ 6 पाप 7. बुरा पिसा चूर्ण—तां सौम्यकल्केन हुताशवर्तिकाम्—कु० ७।९। सम०— क्षारः अनार का पौधा।

कल्कनम् [कल्क्+णिच्+ल्युट्] धोखा देना, प्रतारणा, मिथ्यापना ।

कल्किः, कल्किन् (पु०) [कल्क+णिच्+इन्, कल्क+इनि] विष्णु का अन्तिम और दसवाँ अवतार (संसार का उसके शत्रुओं से उद्धार करने वाला तथा दुष्टों का हनन करने वाला) [विष्णु के अवतारों का उल्लेख करते हुए जयदेव कल्कि नामक अन्तिम अवतार का इस प्रकार निर्देश करता है—म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्, धूमकेतुमिव किमपि करालम्, केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे —गीत० १।१० ।]

कल्प (वि०) [कृप्+अच्, चक्र् वा] 1 व्यवहार में लाने योग्य, समर्थ समर्थ 2 उचित, योग्य, सही 3 समर्थ, सक्षम (सब०, अविभुमुन्नन्त के साथ अथवा समास के अन्त में)—धर्मस्य, यज्ञस कल्प — भाग० अपना कर्तव्य आदि करने में समर्थ,—स्वक्रियायामकल्पत०, अपना कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ, इसी प्रकार —स्वभरणाकल्प आदि,— ल्पः 1 धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान, नियम, अध्यादेश 2 विहित नियम, विहित विकल्प, ऐच्छिक नियम— प्रभु प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३० अर्थात् उस विहित विधि का अनुसरण करने में समर्थ जिसको दूसरे सब नियमों की अपेक्षा अधिमान्यता दी जाती है, प्रथम कल्प —मालवि० १, अर्थात् बहुत अच्छा विकल्प,—एष वै प्रथम कल्प प्रदाने हव्यकव्ययो - मनु० ३।१४७ 3. (अत) प्रस्ताव, सुझाव, निश्चय, संकल्प —उदार कल्प —श०७ 4 कार्य करने की रीति, कार्य विधि, रूप, तरीका, पद्धति (धर्मानुष्ठानों में)—शास्त्रेण कल्पेनोपनीय—उत्तर० २, कल्पविकल्पयाभास सन्यामेवास्य संविधाम्—रघु० १।९४, मनु० ७।१८५ 5 सृष्टि का अन्त, प्रलय 6 ब्रह्मा का एक दिन या १००० युग, मनुष्यों का ४३२०००००० वर्ष का समय, तथा सृष्टि की अवधि का माप, श्वेतवाराह कल्पे (वह कल्प जिसमें अब हम रहते हैं)—कल्पस्थित तनुभृता तनुभिस्त्वत किम्—शा० ४।२ 7 रोगी की चिकित्सा 8 छः वेदांगों में से एक—नामन —जिसमें यज्ञ का विधि-विधान निहित है तथा जिसमें यज्ञानुष्ठान एवं धार्मिक संस्कारों के नियम बनलाये गये हैं, दे० 'वेदांग' के नी० 9 संज्ञा और विशेषणों के अन्त में जुड़ कर निम्नांकित अर्थ बतलाने वाला शब्द —"अपेक्षाकृत कुछ कम" 'प्रायः ऐसा हो' 'लगभग बराबर' (हीनता की अवस्था के साथ २ समानता को प्रकट करना) —कुमारकल्प युवुवे कुमारम्—रघु० ५।३६, उपपन्नमेतदस्मिन्नविकल्पे राजनि श० २, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी—रघु० ३।२, इसी प्रकार मृतकल्प, प्रतिपन्नकल्प आदि । सम०—अन्तः सृष्टि की समाप्ति, प्रलय—भर्तृ० २।१६, °स्थायिन् (वि०) कल्प के अन्त तक ठहरने वाला,- आदिः सृष्टि में सभी वस्तुओं का पुनर्नवीकरण,—कारः कल्पसूत्र का रचयिता,- क्षय सृष्टि का नाश, प्रलय—उदा०—पुरा कल्पक्षये वृत्ते जातं जलमयं जगत्—कथा० २।१०, —तरुः,—द्रुमः,—पादपः,- वृक्षः 1 स्वर्गीय वृक्षों में से एक या इन्द्र का स्वर्ग, रघु० १।७५, १७।२६, कु० २।३९, ६।४१ 2 इच्छानुरूप फल देने वाला काल्पनिक वृक्ष कामना पूरी करने वाला वृक्ष— तावद्भ कल्पद्रुमता विहाय जातं तमात्मन्यभिपत्रवृक्षम् रघु० १४।४८, नै० १।१५ 3 (आल०) अत्यन्त उदार पुरुष—सकलार्थिसार्थकल्पद्रुम —पंच० १,—पालः शराब बेचने वाला, लता,- लतिका 1 इन्द्र की नन्दन-कानन की लता —भर्तृ० १।९०, 2 सब प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली लता - नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः —भर्तृ० २।४६, तु० ऊ० 'कल्पतरु' में, सूत्रम् सूत्रों के रूप में यज्ञ-पद्धति ।

कल्पक [कल्प्—ण्वुल्] 1 मल्लाह 2 नाई ।

कल्पनम् [कल्प्—ल्युट्] 1 रूप देना, बनाना, क्रमबद्ध करना 2 सम्पादन करना, कराना, कार्यान्वित करना 3 छटाई करना, काटना 4 स्थिर करना 5 सजावट के लिए एक दूसरी पर रक्खी हुई वस्तु, जैसा 1 जमाना, स्थिर करना—अनेकशिल्पज्ञाणा तु पितृणां भागकल्पना- याज्ञ० २।१२०, २४३, मनु० ९।१६ 2 बनाना, अनुष्ठान करना, करना 3 रूप देना व्यवस्थित करना मृच्छ० ३।१४ 4 सजाना, विभूषित करना 5 मरम्मत 6 आविष्कार 7 कल्पना, —विचार कल्पनापोढ - सिद्धा०=कल्पनाया अपोढ 8 विचार, उत्प्रेक्षा, प्रतिभा (मन में कल्पना की हुई) शा० २।७ 9 बनावट, मिथ्या रचना 10 आडम्बर साजी 11 कपट-योजना, कूटयुक्ति 12 (मी०मा० द० में) = अर्थापत्ति ।

कल्पनी [कल्पन+ङीष्] कैंची ।

कल्पित (वि०) [कृप्+णिच्+क्त] व्यवस्थित, निर्मित, सजित, बना हुआ, दे० कल्प् (प्रेर०) ।

कल्मष (वि०) [कर्म शुभकर्म स्यति नाशयति—पृषो० साधु] 1 पापी, दुष्ट 2 मलिन, मैला, - षः, - षम् 1 लाछन, गन्दगी, उच्छिष्ट 2. पाप, स हि गगनविहारी कल्मषध्वंसकारी—शि० १।२१, भग० ४।३०, ५।१७, मनु० ४।२६०, १२।१८, ७० ।

कल्माष (वि०) (स्त्री०—षी) [कल्मयति, कल्+क्विप् त माषयति अभिभवति, माष् । णिच् + अच्, कल् चासौ माषश्च कर्म० स०] 1 रंगबिरंगा, चितकबरा, काला और सफेद,—षः 1. चितकबरा रंग

2 काले और सफेद का मिश्रण 3. पिशाच, भूत,—ली यमुना नदी। सम०—कण्ठः शिव की उपाधि।

कल्य (वि०) [कल्+यत्] 1. स्वस्थ, नीरोग, कुशलक्षेम —सर्वः कल्ये वयसि वर्तते लब्धुमर्थान्धुदुम्बी—विक्रम० ३, याज्ञ० १।२८, यावदेव भवेत्कल्य. तावच्छ्रेय समाचरेत्—महा० 2 तत्पर, सुसज्जित—कथयस्व कथामेतां कल्याः स्म श्रवणे तव महा० 3. चतुर 4. रुचिकर, मनोज्ञतामय (जैसा कि प्रबन्ध) 5. सवेरा और गुणा 6 शिक्षाप्रद,—ल्यम् 1 प्रभात, पौ फटना 2 आने वाला कल 3 मादक शराब 4 बधाई, मंगल कामना 5. शुभ समाचार। सम०—आशः—आशिः (स्त्री०) सवेरे का भोजन, कलेवा,—पालः,—पालकः कलवार, शराब बेचने वाला—भक्तं सवेरे का भोजन, कलेवा (सैन्य) (अत.) कोई भी हल्की चीज, तुच्छ या महत्त्वहीन, मामूली—तनु कल्यवर्तमेतत्—मृच्छ० २, क्षुद्र वस्तु—स्त्रीकाम्यवर्तस्य कारणेन ४, स इदानीमर्थकल्यवर्तस्य कारणादिदमकार्यं करोति ९।

कल्या [कलयति मादयति कल्+णिच्+यक्+टाप्] 1 मादक शराब 2. बधाई। सम०—पालः,—पालकः शराब बेचने वाला, कलवार।

कल्याण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [कल्ये प्रातः अह्यते शब्द्यते—अच्—कल्य] 1 आनन्ददायक, सुखकर, सौभाग्यशाली, भाग्यवान्—स्वमेव कल्याणि तयोस्तुतीया—रघु० ६।२९, मेघ० १०९ 2 सुन्दर, रुचिकर, मनोहर 3 श्रेष्ठ, गौरवयुक्त 4 शुभ, श्रेयस्कर, मंगलप्रद, भद्र—कल्याणानां त्वमसि महतां भाजनं विश्वमूर्ते —मा० १।३,—णम् 1 अच्छा भाग्य, आनन्द, भलाई समृद्धि—कल्याण कुरुतां जनस्य भगवांश्चन्द्रार्धचूडामणि—हि० १।१८५, तद्रक्ष कल्याणपरम्पराणां भोक्तारमूर्जस्वलमात्मदेहम्—रघु० २।५०, १७।१, मनु० ३।६० इसी प्रकार °अभिनिवेशी—का० १०४ 2 गुण 3 उत्सव 4 सोना 5 स्वर्ग। सम०—कृत् (वि०) 1 सुखकर, लाभदायक, हितकर—भग० ६। ४० 2 मंगलप्रद, भाग्यशाली 3 गुणी,—कर्मन् (वि०) गुणसम्पन्न,—कथनम् मित्रवत् भाषण, शुभ कामना।

कल्याणक (वि०) (स्त्री०—किका) [कल्याण+कन्] शुभ, समृद्धिशाली, आनन्ददायक।

कल्याणिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कल्याण+इनि] 1 प्रसन्न, समृद्धिशाली 2 सौभाग्यशाली, भाग्यवान्, आनन्ददायक 3 मंगलप्रद, शुभ।

कल्याणी [कल्याण+ङीप्] गाय—रघु० १।८३।

कल्य (वि०) [कल्+अच्] बहरा।

कल्लोलः [कल्+ओलच्] 1 बड़ी लहर, ऊर्मि, आयु कल्लोललोलम् भर्तृ० ३।८२, कल्लोलमालाकुलम् —भामि० १।५९ 2 शत्रु 3 हर्ष, प्रसन्नता।

कल्लोलिनी [कल्लोल+इनि+ङीप्] नदी—स्वर्लोककल्लोलिनि त्व एषां शिरसामुना मम भवत्यालावलीदानतः —गया० ५७, इसी प्रकार—त्रिपुरकुलिनाः कल्लोलिन्यः।

कल् (म्वा० आ०—कलते, कलित) 1. स्तुति करना 2. वर्णन करना, (कविता) रचना करना 3. चित्रण करना, चित्र बनाना।

कवचः [कव्+अच्+कन्] मुट्ठीभर,—कन् कुङ्कुमस्य —विद्युज्जालि कवकानि च—याज्ञ० १।१७१, मनु० ५। ५, ६।१४।

कवचः,—चम् [कु+अच] 1. सन्नाह, शिरस्त्राण, वर्म, रक्षाकवच, ताबीज, रहस्यपूर्ण अक्षर (हुं, हूं) जो कि रक्षाकवच की भाँति प्रयुक्त समझे जाते हैं 3. छाल, छाता। सम०—वृक्षः सौवर्चल का पेड़, पाकर का वृक्ष,—धर (वि०) 1 कवचधारी 2. कवच धारण करने योग्य आयु का—कवचधरः कुमारः—का० १।२। १० पर सिद्धा०, तु० वर्मधर—रघु० ८।२४।

कवची [कु+अटच्+ङीप्] घरबाजे का छिद्रा या पल्ला।

कवच (च) र (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [कु+अरच्] 1. मिश्रित, अन्तर्मिश्रित—शि० ५।१९ 2 जटित, खचित, जड़ा हुआ 3 चित्रविचित्र रंगबिरंगा,—रः,—रम् 1 नमक 2 खटास, अम्लता,—रः चोटी, जूड़ा।

कवच (च) री [कबर+ङीप्] चोटी, जूड़ा—दधती विलोलकबरीकमालनम्—उत्तर० ३।४, शि० ९।२८ अमर ५।९। सम०—भारः—भारः गूंथी हुई चोटी—बद्धप्रथमे कालीमिव लक्ष्मीं कबरीभरम्—गीत० १२।

कवलः,—लम् [केन जलेन वलते चलति—कम्+अच् तारा०] 1 मुट्ठीभर—आस्वादयन्ति कवलीकृतभालम् —रघु० २।५, ९।५९, कवलच्छेदेषु कल्पिताः—उत्तर० ३।१६।

कवलित (वि०) [कवल+इतच्] 1 खाया हुआ, निगला हुआ (मुट्ठीभर) 2 चबाया हुआ 3 (अत.) लिया हुआ, पकड़ा हुआ—जैसा कि 'मृत्युना कवलितः'।

कवाट [कं जलम् वाति, कु+आप, वद्+अच्] दे० 'कपाट'।

कवि (वि०) [कु+इ] 1 सर्वज्ञ—भग० ८।९, मनु० ४।२४ 2 प्रतिभाशाली, चतुर, बुद्धिमान् 3 विचारवान्, विचारशील 4 प्रशंसनीय,—विः 1 बुद्धिमान् पुरुष, विचारक ऋषि—कवीनामुशना कविः—भग० १०। ३७, मनु० ७।४९, २।१५१ 2. काव्यकार—तद् बुद्धि राजचरितं आद्य कविरसि—उत्तर० २, मन्दः कवियशः—प्रार्थी—रघु० १।३, इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे—उत्तर० १।१ शि० २।८६ 3. असुरों के आचार्य शुक्र की उपाधि 4 वाल्मीकि, आदिकवि 5. ब्रह्मा 6. सूर्य—(स्त्री०) अनाज का डंठल—दे० कवि-

-का। सम०—**-ख्येक** आदिकवि वाल्मीकि की उपाधि, —**-गुरुः** शुक्राचार्य की उपाधि,—**-राजः** 1 महाकवि —(श्रीहर्ष कविराजराजिमुकुटालंकारहीरःसुतम्—यह श्लोक नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में पाया जाता है) 2. कवि का नाम, 'राघवपाण्डवीय' नामक काव्य का रचयिता,—**-राघवः** वाल्मीकि की उपाधि।

कविकः,—का +कन्, स्त्रियां टाप् च] लगाम का दहाना।

कविता [कवि+तल्+टाप्] काव्य,—सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् भर्तृ० २।२१।

कवि (वी) यम् [कवि+छ] लगाम का दहाना।

कवोष्ण (वि०) [कुत्सितम् ईषत् उष्णम् कर्म० स०, को कवादेश] कुछ थोड़ा गर्म, गुनगुना—रघु० १।६७, ८४।

कव्यम् [कूयते हूयते पितृभ्य यत् अन्नादिकम् - कु+यत्] (विप० हव्यम्) मृत पितरों के लिए अन्न की आहुति —एष वै प्रथमः कल्प प्रदाने हव्यकव्ययो—मनु० ३।१४७, ९७, १२८,—व्यः पितरों का समूह। सम०—**-वाह** (पु०),—**-वाहः**,—**-वाहन** अग्नि।

कशः [कश्+अच्] कोड़ा (प्रायः बहुवचनान्त),—शा चाबुक —इदानीं सुकुमारेऽस्मिन् निःशंकं कर्कशाः, कशाः, तव गात्रे पतिष्यन्ति सहास्माकं मनोरथैः। मृच्छ० ९।३५ (यहाँ कशा शब्द स्त्रीलिंग और पुंल्लिंग दोनों में हो सकता है) 2 कोड़े लगाना 3 डोरी, रस्सी।

कशिपु (पु० या नपु०) [कशति दुःखं कश्यते वा, मृगय्वादित्वात् निपातनात् साधुः] 1 चटाई 2 तकिया 3 बिस्तरा,—पुः 1 भोजन 2 वस्त्र 3 भोजन-वस्त्र (विश्वकोश के अनुसार)।

कशेरु (रु) रुः (पु०, नपु०) [के देहे शीर्यते, कः जलं वा शुष्यति, क+शृ+उ, एरुकादेशः, कस्+एरुन् वा] 1 रीढ़ की हड्डी 2 एक प्रकार का घास।

कश्मल (वि०) [कश्+अल, मुट्] मैला, गन्दा, अकीर्तिकर, कलंकी—मलस्मवन्धातकपल्लवाः किमद्यतनी स्यात्त्वेदमित्यन्तरस्त्र खिन्न मानसमन्यम्—उत्तर० १।४२,—लम् मन की खिन्नता, उदासी, अवसाद - कश्मलं महदाविशत् —महा०, कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् —भग० २।२ 2 पाप 3 मूर्छा।

कश्मीर (ब० व) [कश्+ईरन्, मुट्] एक देश का नाम, वर्तमान कश्मीर (तन्त्र ग्रन्थों में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—शारदामठमारभ्य कुङ्कुमाक्षितटान्तकः, तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पञ्चाशद्योजनात्मकः) सम०—**-जः**,—**-जम्**,—**-जन्म** (पुं० नपु०) केसर, **-पुरम्**—कश्मीरवस्त्र कटुतापि हितावहस्त्वम्—भामि० १।७१।

कश्य (वि०) [कशामर्हति—कशा+य] कोड़े या चाबुक लगाये जाने के योग्य—श्यम् मादक शराब।

कश्यप [कश्य+पा+क] 1 कछुआ 2 एक ऋषि, अदिति और दिति के पति, असुर देवता और राक्षस दोनों के पिता। (ब्रह्मा का पुत्र मरीचि था, मरीचि का पुत्र कश्यप हुआ, सृष्टि के कार्य में कश्यप ने बड़ा योग दिया। महाभारत तथा दूसरे ग्रन्थों के अनुसार उसका विवाह अदिति तथा दक्ष की अन्य १३ पुत्रियों के साथ हुआ। अदिति से उसके द्वारा १२ आदित्यों का जन्म हुआ—अपनी दूसरी १२ पत्नियों से उसके अनन्त और विविध प्रकार की सन्तान हुई— साँप, रेंगने वाले जन्तु, पक्षी, राक्षस, चन्द्रलोक का नक्षत्रपुञ्ज तथा परियाँ। इस प्रकार वह देव, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी और सरीसृप आदिकों का वस्तुतः सभी जीवधारी प्राणिमात्र का पिता था। इसी लिए उसे महर्षि प्रजापति कहा जाता है)।

कष् (भ्वा० उभ०—कषति- ते, कषित) 1 मसलना, खुरचना, कसना समूलकाषं कषति—सिद्धा०, भट्टि० ३।४९ 2 परीक्षा करना, जाँच करना, कसौटी पर कसना (सोना आदि)- छदहेम कषश्चिवालसत्कष-पाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९ 3 चोट मारना, नष्ट करना 4 खुजाना।

कष (वि०) [कष्+अच्] 1 रगड़ने वाला, कसने वाला, —षः रगड़ कसना 2 कसौटी—छदहेम कषश्चिवाल-सत्कषपाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९, मृच्छ० ३।१७।

कषणम् [कष+ल्युट्] रगड़ना, चिह्नित करना, खुरचना - कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकषणोत्कम्पेन सपातिभि —उत्तर० २।९, कषणकम्पनिरस्तमहाहिभि - कि० ५।४७ 2 कसौटी पर कस कर सोने को परखना।

कषा=कशा।

कषाय (वि०) [कषति कण्ठम्—कष्+आय] 1 कसैला —श० २ 2 सुगन्धित—स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषाय, —मेघ० ३१, उत्तर० २।२१ महावी० ५।४१ 3 लाल, गहरा लाल— चूताङ्कुरस्वादकषायकण्ठ -कु० ३।३२ 4 (अत) मधुर-स्वर वाला—मा० ७ 5 भूरा, 6 अनुपयुक्त, मैला—यः,—यम् 1. कसैला स्वाद या रस (६ रसों में से एक) दे० कटु 2 लाल रंग 3 एक भाग औषधि, चार आठ या १६ भाग पानी में मिलाकर बनाया हुआ (सब को मिलाकर उबालना जब तक कि चौथाई न रह जाय), काढ़ा —मनु ११।१५४ 4. लेप करना, पोतना—कु० ७। १७, चुपड़ना 5 उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करना—ऋतु० १।४ 6 गोंद, राल, वृक्ष का निर्यास 7 मैल, अस्वच्छता 8. मन्दता, बढ़िया 9. सांसारिक

विषयों में आसक्ति,—क्षः 1 आवेश, संवेग 2 कलियुग।

कषायित (वि०) कषाय+इतच्] 1 हलके रंग वाला, लाल रंग का, रंगीन—अमुनैव कषायितस्तनी—कु० ४।३४, शि० ७।११ 2. ग्रस्त।

कषि (वि०) [कषति हिनस्ति कष्+इ] हानिकारक, अनिष्टकर, पीड़ाकर।

कषे (से) क्का [कष् (स)+एरक्, उत्वम्, कस्+टाप्] रीढ़ की हड्डी मेरुदण्ड।

कष्ट (वि०) [कष्+क्त] 1 बुरा, अनिष्टकर, रोगी, गलत—रामहस्तमनुप्राप्य कष्टात् कष्टतरं गता—रघु० १५।४३, अर्थात् अधिक बुरी अवस्था हो गई (दुर्दशाग्रस्त हो गई) 2 पीड़ामय, संतापकारी—मोहादमूत्कष्टतर प्रलोभ—रघु० १४।५६, कष्टोऽयं खलु भृत्यभाव—रत्न० १, चिल्लाओ से भरा हुआ—मनु० ७।५०, याज्ञ० ३।२९, कष्टा वृत्ति: पराधीना कष्टो वासो निराश्रय, निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा दरिद्रता। काव्य० ५९ 3 कठिन—स्त्रीषु कष्टोऽधिकार:—विक्रम० ३।१ 4. दुर्धर्ष (शत्रु की भाँति) मनु० ७।१८५, २१० 5 अनिष्टकर, पीड़ाकर, हानिकर 6 गर्हित, —ष्टम् 1 दुष्कर्म, कठिनाई, संकट, व्यथा, यन्त्रणा, पीड़ा—कष्ट खल्वनपत्यता—श० ६, विगर्हा कष्टसंश्रया —पंच० १।१६६ 2 पाप, दुष्टता 3 कठिनाई, प्रयास, कष्टेन किसी न किसी प्रकार,—ष्टम् (अव्य०) हाय!—हा धिक् कष्ट, हा कष्ट अरण्याभिभूतपूर्व पुनरेवमायते—पंच० ४।३८, सम०—आगत (वि०) कठिनाई से आया हुआ, पहुँचा हुआ,—कर (वि०) पीड़ा कर, दुःखदायी—तपस् (वि०) और तपस्या करने वाला—श्र० ७,—साध्य कठिनाई से पूरा किये जाने के योग्य—स्थानम् बुरा स्थान, अरुचिकर या कठिन जगह।

कष्टि (स्त्री०) [कष्+क्तिन्] 1 परशु, आँच 2 पीड़ा, कष्ट।

कस् 1 (भ्वा० पर०—कसति, कसित) हिलना-डुलना, जाना, पहुँचना, निस्—, (प्रेर०) 1 निकालना, बाहर खींचना 2 मोड़ना, बाहर हाँक देना, निर्वासित करना, निष्कासन करना—निरकासयद्विषयेषतथ्यं वियद्वालपादपरिदग्धणिका—शि० ९।१० येनाहं जीवलोकान्निष्कासयिष्ये—मुद्रा० ६, प्र—, खोलना, प्रसार करवाना—अनमुक्तावुलप्रकाशितैः (कुसुमैः)—घट० १९, वि—, खुलना, प्रसृत होना (आत्म० भी) विकसति हि पतंगस्योदये पुण्डरीकम्—मा० १।२८, शि० ९।४७, ८२ कु ७।५५, निजहृदि विकसन्त —मर्तृ० २।७८ (प्रेर०) खोलना, प्रसार करवाना—अन्तो विकासयति कैरवचक्रवालम्—मर्तृ० २।७३, शि० १५। १२, अमरु ८४।

ii (अदा० आ०—कस्ते, कंस्ते) 1 जाना 2. नष्ट करना।

कस्तु (स्तू) स्त्रिका, कस्तूरी [कसति गन्धोऽस्या—कस्+ऊर+ङीष्, तुट्, कस्+टाप् ह्रस्वः] मृगमद, कस्तूरी—कस्तूरिकातिलकमालि विभाव्य सायम्—माधि० २।४, १।१२१, वीर० ७। सम०—मृगः कस्तूरीमृग—(वह हरिण जिसकी नाभि से कस्तूरी नामक सुगन्धित द्रव्य निकलता है)।

कह्लारम् [के जले ह्लादते—क+ह्लाद्+अच् पृषो० दस्य र] श्वेत कमल—कह्लारपद्मकुसुमानि मुहुर्विधुन्वन्—ऋतु० ३।१५।

कह्लारः [के जले ह्लादति शब्दायते स्पर्धते वा—क+ह्लै+क] एक प्रकार का सारस।

कांसीयम् [कसाय पानपात्राय हितम्—कंस+छ+अण्] जस्ता।

कांस्यः (वि०) [कसाय पानपात्राय हितं कंसीय तस्य विकार —यञ् ञलोप] कांसे या जस्ते का बना हुआ मनु० ४।६५,—स्यम् 1. कांसा, या जस्ता—मनु० ५।११४, याज्ञ० १।१९० 2 कांसे का बना बर्तन—स्यम्,—स्यम् जल पीने का बर्तन (पीतल का) प्याला—शि० १५।८१। सम०—कार (स्त्री०—री) कसेरा, ठठेरा,—ताल झाँझ, करताल,—पात्रम् पीतल का बर्तन,—लोहम् ताम्रमल, ताँबे का जंग।

काकः [कै+कन्] 1 कौवा—काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते—पंच० १।२४ 2 (आलं०) धूर्त, अक्षित, नीच और ढीठ पुरुष 3 लम्पट आदमी 4. केवल सिर को भिगोकर स्नान करना (जैसा कि कौवे करते हैं),—की कौवी, —कम् कौवों का समूह। सम०—अक्षिगोलकन्याय दे० 'न्याय' के नीचे,—अरिः उल्लू,—उदरः साँप,—काकोदरो येन विनीतवर्ण —कविराज,—उलूकिका,—उलूकीय न्, कौवे और उल्लू की नैसर्गिक शत्रुता (काकोलूकीय—पंचतन्त्र के तीसरे तन्त्र का नाम है),—जिघा मूंजा या मूंजघी का पौधा (रत्ती), छदः,—छदिः संजनपक्षी 2. अगस्त्य —दे० नी० 'काकपक्ष',—जातः कौवा,—तालीय (वि०) जो बात अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से हो बैठना—ब्रह्मो नु खलु भोः तदेतत् काकतालीयं नाम —मा० ५, काकतालीयवत्प्राप्तं दृष्ट्वापि निधिमग्रतः —हि० प्र० ३५, कभी कभी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'संयोग से' अर्थ को प्रकट करता है —फलन्ति काकतालीयमेतस्य प्राज्ञा न विद्मति—वेणी० २।१४,—न्यायः दे० 'न्याय' के नीचे,—तालुकिन् (वि०) धूर्त, निंद्य,—दन्तः (स्त्री०) कौवे का दाँत, (आलं०) असंभव बात जिसका अस्तित्व न हो, °परीक्षणम् असंभव बातों की खोज करना (व्यर्थ और

अलंकार काया के संबंध में कहा जाता है),—ध्वजः वायुदानल,—जिह्वा छल्ली सींग या अपनी जो आसानी से टूट जाय,—पक्षः,—पक्षकः (विशेष कर क्षत्रियों के) बालकों और तरुणों की कनपटियों के लंबे बाल या अलकें—काकपक्षधरमेत्य याचित—रघु० ११।१, ११, ४२, ३।२८, उत्तर० ३,—पक्षम् हस्तलिखित पुस्तक या लेखों में चिह्न (^) जो यह प्रकट करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—पदः सभोग की एक विशेष रीति,—पुच्छः,—पुष्टः कोयल,—पेय (वि०) छिछला—काकपेया नदी—सिद्धा०,—भीरुः उल्लू,—मद्गुः जलकुक्कुट,—यवः अन्न का वह पौधा जिसकी बाल में दाने न हों—यथा काकयवा प्रोक्ता यथारण्यभवास्तिला, नामयाचा न 'सद्भो हि धनहीनास्तथा नराः' । पंच० २।८६,—तथैव पाडवा सर्वे यथा काकयवा इव—महा०(काकयवा =निष्फलतृणधान्यम्), —रुतम् कौवे की कर्कश ध्वनि (कांव कांव) जिससे परिस्थिति के अनुसार भावी शुभाशुभ का ज्ञान होता है—शि० ६।७६,—वन्ध्या ऐसी स्त्री जिसके एक पुत्र होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हो,—स्वरः कर्कश ध्वनि (जैसे कि कौवे की कांव कांव) ।

काकच (क) क (वि०) 1 डरपोक, कायर 2 नंगा 3 दरिद्र, —कः 1 औरत का गुलाम, पत्नीभक्त 2 (स्त्री० —की) 2 उल्लू 3 जालसाजी, धोखा, दाँवपेंच ।

काक (का) कः [का इत्येवं कलो यस्य ब० स०] पहाड़ी कौवा,—कम् कठमूंगा ।

काकलिः,-ली (स्त्री०) [कल्+इन=कलि, कु ईषत् कलि, की आदेश, स्त्रियां ङीष् च] 1 मन्द मधुर स्वर —अनुद्धतसुभगकाकलीसहितम्—उत्तर० ३, ऋतु० १।८ 2 एक प्रकार का मन्द स्वर का बाजा जिसके द्वारा चोर यह पता लगाते हैं कि लोग सोये हैं या नहीं—कणिम्नकाकलीसनाथ ' प्रभृत्यनेकोपकरणयुक्त.—दश० ४९ 3 कौंची 4 घुघची का पौधा । सम०—रवः कोयल ।

काकिणी, काकिणिका [कक्+णिनि+ङीष्=काकिणी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1 सिक्के के रूप में प्रयुक्त होने वाली कौड़ी 2. एक सिक्का जो २० कौड़ी या चौड़ाई पण के बराबर होता है 3 चौथाई माशे के बराबर वजन 4. माप का एक अंश 5 तराजू की डंडी 6 हस्त, (एक प्राचीन माप जिसकी लम्बाई एक हाथ के बराबर होती है) ।

काकिनी (स्त्री०) [कक्+णिनि+ङीष्] 1 पण का चौथाई 2. माप का चौथाई 3 कौड़ी—हि० ३।१२३ ।

काकुः (स्त्री०) [कक्+उण्] 1. भय शोक, क्रोध आदि संवेगों के कारण स्वर में परिवर्तन —भिन्नकण्ठध्वनिर्वीरः काकुरित्यभिधीयते—सा० द०, अलीककाकुकरणकुशलता—का० २२२ (अत) 2 निषेधात्मक शब्द जो इस ढंग से प्रयुक्त किया जाय कि विरुद्ध (स्वीकारात्मक) अर्थ को प्रकट करे (इस प्रकार के अवसरों पर स्वर की विकृति से ही अभीष्ट अर्थ प्रकट किया जाता है) 3 बुड़बुड़ाना, गुनगुनाना 4 जिह्वा ।

काकुत्स्थः [ककुत्स्थ+अण्] ककुत्स्थवंशी, सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि,—काकुत्स्थमालोकयता नृपाणाम्—रघु० ६।२, १२।३०, ४६, दे० 'ककुत्स्थ' ।

काकुदम् [काकु ध्वनिभेदं ददाति—काकु+दा+क] तालु ।

काकोलः [कक्+णिच्+अोल] 1 पहाड़ी कौवा याज्ञ० १।१७४ 2 साँप 3 सूअर 4 कुम्हार 5 नरक का एक भाग -याज्ञ० ३।२२३ ।

काक्षः [कुत्सितम् अक्ष यत्र—को कादेशः] तिरछी चितवन, कनखियों से देखना,—क्षम् खीरी चढ़ना, अप्रसन्नता की दृष्टि, द्वेषपूर्ण निगाह—काक्षेणानादरेक्षित —भट्टि० ५।२८ ।

काकः (पुं०) कौवा, तु० 'काक' ।

काङ्क्ष् (भ्वा० पर० (महाकाव्यों में आ० भी) —काङ्क्षति, काङ्क्षित) 1 कामना करना, चाहना, लालायित होना—यत्काङ्क्षति तपोभिरन्यमुनयस्तस्मिंस्तपस्यन्त्यमी —मा० ७।१२, न शोचति न काङ्क्षति भग० १२।७, न काङ्क्षे विजयं कृष्ण —१।३२, रघु० १२।५८, मनु० २।२४२ 2 प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, अभिलालायित होना, कामना करना, आ—,1 चाहना, लालसा करना, कामना करना,—प्रत्याश्वसत रिपुराकाङ्क्ष —रघु० ७।४७, ५।३८, मनु० २।१६२, मेघ० ९१, याज्ञ० १।१५३ 2 अपेक्षा करना आवश्यकता होना,—प्रति—,पास में रहना, सेवा में उपस्थित रहना वि—कामना करना, चाहना लालसा करना, सम्—कामना करना, चाहना ।

काङ्क्षा [काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1 कामना, इच्छा 2 इच्छा, अभिलाषा जैसा कि 'भक्तकाङ्क्षा' में ।

काङ्क्षिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [काङ्क्ष्+णिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, दर्शन°, ज्ञान° आदि—भग० ११।५२ ।

काच [कच्+घञ्] 1 शीशा, स्फटिक—आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४, काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया—मा० १।१२ 2 फंदा, लटकता हुआ (अलमारी का) तख्ता, जुए से बंधी हुई रस्सी जो बोझ को सहारा दे 3 आंख का एक रोग, आंख की नाड़ी का रोग जिससे दृष्टि धुंधली हो जाय । सम०—अरि शीशे की झारी या जग,—भाजनम् शीशे का पात्र,—मणिः स्फटिक, बिल्लौर,—शकलम्,—शकलम्,—संभवम् काला नमक या सोडा ।

काञ्चनम्, काञ्चनकम् [कच्+णिच्+ल्युट्, कन् च] डोरी या फीता जिससे कागजों का बण्डल या हस्तलिखित पत्र बाँधे जाते हैं –तु० कलेल ।

काञ्चनिकः (पु०) [काञ्चनक+इनि] हस्तलिखित ग्रन्थ, लेख ।

काञ्चुकः [कच्+ऊकञ् वा०] 1 मूर्ख 2 चकवा ।

काञ्जलम् [ईषत् कुत्सितं जलम् – को कादेश] 1 थोड़ा पानी 2 स्वादहीन पानी ।

काञ्चन (वि०) (स्त्री० नी) [काञ्च् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टि – मेघ० ७९, काञ्चन वलयम् – श० ६।५, मनु० ५।११२, नव् 1 सोना – (मात्रम्) अमेध्यादपि काञ्चनम् मनु० २।२३९ 2 प्रभा, दीप्ति 3 सम्पत्ति, धन-दौलत 4 कमल तन्तु, न 1 धतूरे का पौधा 2 चम्पक का पौधा । सम० –अद्री सुनहरी रंगरूप की स्त्री –भामि० २।७२, – कन्दर सोने की कान, गिरि मेरु नामक पहाड़, –भू (स्त्री०) 1 सुनहरी (पीली) भूमि 2 स्वर्ण-रज सन्धि समता के आधार पर दो दलों में हुई सुलह । तु० हि० ४।११३ ।

काञ्चनारः (ल) [काञ्चन + ऋ (अण्) + अण्] कचनार का पेड़ ।

काञ्चिः, –ञ्ची (स्त्री०) [काञ्च् + इन्–काचि + ङीप्] स्त्री की (छोटे २ घुंघरुओं सहित) मेखला या करधनी सुनाविना नवनवमयप्यसौ काञ्चीगुणस्थानमनिन्दिनायां कु० १।३३, ३।५५, मेघ० २८ शि० ९।३२, रघु० ६।४२ 2 दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जो हिन्दुओं का एक पावन नगर समझा जाता है (सात नगरों के नामों के लिए दे० 'अवन्ति') । सम० पुरी, नगरी 1 कांची (नगर) 2 –दाम कूल्हा, नितम्ब ।

काञ्जिकम्, काञ्जिकी [कुत्सिका अञ्जिका प्रकाशो यस्य–कु + अञ्ज् + ण्वुल् + टाप् इत्वम् को कादेश] खटास से युक्त एक प्रकार का पेय, कांजी ।

काटुकम् [कटुकस्य भावः –अण्] खटास, अम्लता ।

काठ [कठ् + घञ्] चट्टान, पत्थर ।

काठिन्यम्, न्यत्व [कठिन + अण्, ष्यञ् वा] 1 कठोरता, कड़ापन –काठिन्यमुक्तस्तनम् –श० ३।११ 2 निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता ।

काण (वि०) [कण् + घञ्] 1 एक आँख वाला –अकाणा काणं –सिद्धा०, काणेन चक्षुषा किं वा–हि० प्र० १२, मनु० ३।१५५ 2 छिद्रवाला, फटा हुआ (जैसे कि कौड़ी) – प्राप्ता काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम्–भर्तृ० ३।४, फूटी कौड़ी ।

काणेयः, –यी [काणा+ढक्, ढकि वा] काणी स्त्री का पुत्र ।

काणेली [काण + इल्+अच्+ङीष्] 1 असती या व्यभिचारिणी स्त्री 1 अविवाहिता स्त्री । सम०–सुतः (पु०) अविवाहिता माता का पुत्र, हरामी (तिरस्कार सूचक शब्द जो केवल सम्बोधन में प्रयुक्त होता है) –काणेलीसुत अस्ति किंचिच्चिह्नं यदुपलक्षयसि –मृच्छ० १ ।

काण्ड, –ण्डम् [कण्+ड, दीर्घः] 1 अनुभाग, अंश, खण्ड 2 पौधे का एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक का भाग, पोरी 3 डण्ठल, तना, शाखा –लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलव्यक्षेपेषु – उत्तर० ३।१६, अमर० ९५, मनु० १।४६, ४८ 4 ग्रन्थ का भाग, जैसे कि किसी पुस्तक का अध्याय, जैसे रामायण के सात काण्ड 5 एक पृथक् विभाग या विषय– उदा० ज्ञान°, कर्म° आदि 6 झुण्ड, गट्ठर, समुदाय 7 बाण 8 लम्बी हड्डी, भुजाओं या पैरों की हड्डी 9 बेंत, सरकण्डा 10 लकड़ी, लाठी 11 पानी 12 अवसर, मौका 13 निजी जगह 14 अनिष्ट कर, बुरा, पापमय (केवल समास के अन्त में) सम०–कारः बाणों का निर्माता,–गोचरः लोहे का बाण,–वत्,–पटकः कनात, परदा शि० ५।२२,–पातः तीर की मार, बाण का परास,–पृष्ठः 1 शस्त्रजीवी, सैनिक 2 वैश्य स्त्री का पति 3 दत्तक पुत्र, औरस से भिन्न कोई अन्य पुत्र 4 (तिरस्कार सूचक शब्द) अधम कुल, जाति-धर्म या अपने व्यवसाय को कलंक लगाने वाला, कमीना, नमकहराम, महाधी० ३ में सातानन्द ने जामदग्न्य को 'काण्डपृष्ठ' नाम से सम्बोधित किया है (स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं व्रजेत्, तेन दुश्चरितेनासौ काण्डपृष्ठ इति स्मृतः), –भंगः किसी अंग या हड्डी का टूटना–भीरुः बाण्डाल की भीरु, –सन्धिः ग्रन्थि, जोड़ (जैसे कि पौधे को कलम लगाना),–स्पृष्टः शस्त्रजीवी, योद्धा, सैनिक ।

काण्डवत् (पु०) [ब–+मतुप् मस्य वः] धनुर्धारी ।

काण्डीरः [काण्ड+ईरन्] धनुर्धारी (कई अवसरों पर यह शब्द 'काण्डपृष्ठ' शब्द की तरह तिरस्कार सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है तु० महावी० ३)

काण्डोल [काण्डोल्+अण्] नरकुल की बनी टोकरी, दे० 'कण्डोल' ।

काम् (अव्य०) [कुत्सितम् अतति अनेन कु+अत्+क्विप् को कादेश] तिरस्कार सूचक उद्गार, प्रायः कु के साथ, कामपि अपमानित करना, तिरस्कार करना –मन्यमैश्वर्यमत्तेन नृप सर्वत्र कामुक्त –भाग० ।

कातर (वि०) [ईषत् तरति स्वकार्यसिद्धिं गच्छति –तृ+अच् को कादेश –तारा०] 1 कायर, डरपोक, हतोत्साह– दर्शयन्ति च कातरान् –पंच० ४।४२, अमर० ७, ३०, ७५, रघु० ११।७८ मेघ० ७७ 2 दुःखी, शोकान्वित, अधीर –किमेवं कातरासि श० ४

3. विरुद्ध, विरिमन, उद्विग्न—ऋतु० १।६० 4. मद के कारण काँपने वाला (जैसे आँख का फरकना) रघु० २।५२, अमरु ७९।

कातरत्वम् [कातर+ष्यञ्] कायरता,—कातरं केवला नीतिः क्षीरं हवापदेष्टितम्—रघु० १७।४७।

कात्यायन [कतस्य गोत्रापत्यम्, कत+यञ्+फक्] 1 एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिसने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक वार्तिक लिखे हैं 2 एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्य सूत्र की रचना की है—याज्ञ० १।४।

कात्यायनी [कात्यायन+ङीष्] 1. एक बूढ़ा या अधेड़ विधवा (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए हों) 2. पार्वती। सम०—पुत्र,—सुत कार्तिकेय।

कादाचित्कः (वि०) (स्त्री—की) [कथंचित्+ठक्] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न।

कादंबिक [कथा+ठक्] कहानी सुनाने वाला, कहानी-लेखक, कहानीकार।

कादम्ब [कदम्ब+अण्] 1 कलहंस,—रघु० १३।५५, ऋतु० ४।९ 2 बाण—शि० १८।२९ 3. ईख, गन्ना 4 कदम्ब वृक्ष,—म्बम् कदम्ब वृक्ष का फूल—रघु० १३।२७।

कादम्बरम् [कादम्ब+ला+क, लस्य र] कदम्ब के फूलों से भीनी हुई शराब—नियंत्र्य मधु माधवा सरसमत्र कादम्बरम्—शि० ४।६६,—री 1 कदम्ब वृक्ष के फूलों से भीनी हुई शराब 2 शराब—कादम्बरीमादिक प्रथम सौहृदमिष्यते—का० ६ या कादम्बरीमदविघूर्णितलोचनस्य युक्तं हि लाङ्गलभृत पतन पृथिव्याम्—उद्भट 3 मदमाते हाथी की कनपटियों से बहने वाला मद 4 सरस्वती की उपाधि, विद्यादेवी 5 मादा कोयल।

कादम्बिनी (स्त्री०) [कादम्ब+इनि+ङीष्] बादलों की पंक्ति—मदीयमनिचुम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी—रत्न०, भामि० ४।९।

कादाचित्क (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कदाचित्+ठक्] सांयोगिक, आकस्मिक।

कादूवेय [कद्रो अपत्यम्—कद्रु+ढक्] एक प्रकार का साँप।

कानन [कन्+णिच्+ल्युट्] 1 जङ्गल, वाग—रघु० १२।२७, १४।१८ मेघ० १८, ४२, काननान्तरे—जङ्गल की भूमि 2 घर, मकान। सम०—अग्नि जंगली आग, दावानल,—ओकस् (पु०) 1 जंगलवासी 2 बन्दर।

कानिष्ठिकम् [कनिष्ठिका+अण्] हाथ की सबसे छोटी (कन्नी) अंगुली।

कानिष्ठिनेय,—यी [कनिष्ठा+अपत्यार्थे ठक्, इनङ् च] सबसे छोटी लड़की की सन्तान।

कानीन [कन्यायां जातः—कन्या+अण्, कानीन् आदेशः] अविवाहिता स्त्री का पुत्र—कानीन कन्यकाजातो मातामहसुतो मतः—याज्ञ० २।१२९, मनु० ९।१७२ में दी गई परिभाषा भी देखिए 2 व्यास 3 कर्ण।

कान्त (वि०) [कम् (भ्वा०)+क्त] 1 इष्ट, प्रिय, अभीष्ट,—अभिमतकान्तं कतु वाञ्छसि—मालवि० १, ४ 2 शुक्लकर, रुचिकर—भीमकान्तैर्नृपगुणैः—रघु० १।१६ 3 मनोहर, सुन्दर—सर्वं कान्तमात्मीयं पश्यति—श० २,—न्तः 1 प्रेमी 2 पति—कान्तोदन्तसुहृदुपगतं संजल्पाख्यं विधुरं—मेघ० १००, शि० १०।३, २९ 3 प्रेमपात्र 4 चन्द्रमा 5 वसन्त ऋतु 6 एक प्रकार का लोहा 7 रत्न (समास में सूर्य, चन्द्र और अयस् के साथ) 8 कार्तिकेय की उपाधि,—न्तम् केसर, जाफरान, सम०—आयसम्, चुम्बक, अयस्कान्त।

कान्ता [कम्+क्त+टाप्] 1 प्रेमिका या लावण्यमयी स्त्री 2 गृह स्वामिनी, पत्नी कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते उत्तर० ३।२१, मेघ० १९, शि० १०, ७३ 3 प्रियङ्गु लता 4 बड़ी इलायची 5 पृथ्वी। सम०—अङ्घ्रिपोहद अशोक वृक्ष दे० अशोक।

कान्तार,—रम् [कान्त+ऋ+अण्] 1 विशाल विस्तीर्ण जङ्गल, —गुरु तु मूर्तिमोहेन कान्तारादतिरिच्यते—पञ्च० ४।८१, भर्तृ० १।८६ याज्ञ० २।६८ 2 खराब सड़क 3 सूराख, छिद्र,—रः 1 लाल रंग की जाति का सफेद 2 पहाड़ी आदमी।

कान्ति (स्त्री०) [कम्+क्तिन्] 1 मनोहरता, सौन्दर्य —मेघ० १५, अक्लिष्टकान्तिः—श० ५, १९ 2 चमक प्रभा, दीप्ति मेघ० ८४ 3 व्यक्तिगत सजावट या शृङ्गार 4 कामना, इच्छा ५ (अलं० शा० में) प्रेमोद्दीप्त सौन्दर्य (मा० द० शामा और दीप्ति से कान्ति को इस प्रकार भिन्न बताता है रूपयौवनलालित्य भोगाद्यैरङ्गभूषणम्, जाता प्राकृता सैव कान्तिर्मन्मथाप्यायिता शुचि, कान्तिरेवातिविस्तीर्णा दीप्तिरित्यभिधीयते—१३०, १३१) 6 मनोहर या कमनीय स्त्री 7 दुर्गा की उपाधि। सम० कर (वि०) सौन्दर्य बढ़ाने वाला, शोभा बढ़ाने वाला, द (वि०) सौन्दर्य देने वाला, अलंकृत करने वाला (द्रव्य) 1 घी 2 घी, द,—दायक, -दायिन् (वि०) अलंकृत करने वाला, भृत् (पु०) चन्द्रमा।

कान्तिमत् (वि०) [कान्ति+मतुप्] मनोहर, सुन्दर, भव्य कु० ४।५, ५।७१, मेघ० ३० (पु०) चन्द्रमा।

कान्तिलम् [कन्तु+अण्] लोहे को कढ़ाई या चूल्हे में घुनी हुई कोई वस्तु।

कान्दविक (वि०) [कान्दव+ठक्] हलवाई, हलवाई।

कान्दिशीक (वि०) [कां दिशां यातीत्येव वादिनोऽर्थे ठक्, पृषो० साधु] 1 उड़ने वाला, भागने वाला, भगोड़ा —मृगजन कान्दिशीक सकृत पद्य० १।२, (अत.) त्रस्त, भयभीत—भामि० २।१७८।

कान्यकुब्ज [कन्या कुब्जा यत्र—कन्याकुब्ज+अण् पृषो० साधु] एक देश का नाम दे० 'कन्याकुब्ज'।

कापटिक (वि०) (स्त्री०—की) [कपट+ठक्] 1 जालसाज, बेईमान 2 धूर्त, कुटिल,—क चापलूस, चाटुकार, पिछलग्गू।

कापट्यम् [कपट+ष्यञ्] धूर्तता, जालसाजी, धोखादेही।

कापथ [कुत्सित पन्था] खराब सड़क (शा० और आल०)

कापाल, कापालिक [कपाल+अण्, ठक् वा] शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत विशिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी (कापालचारी) जो मनुष्य की खोपड़ियों की माला धारण करते हैं और उन्हीं में खाते पीते हैं, पञ्च० १।२१२।

कापालिन् (पु०) [कपाल+अण्+इनि] शिव।

कापिक (वि०) (स्त्री०—की) [कपि+ठक्] बन्दर जैसी शक्ल सूरत का या बन्दरों की भाँति व्यवहार करने वाला।

कापिल (वि०) (स्त्री०—ली) [कपिल+अण्] 1 कपिल से सम्बन्ध रखने वाला या कपिल का 2 कपिल द्वारा लिखित या कपिल से व्युत्पन्न, —ल कपिल मुनि द्वारा प्रस्तुत सांख्यदर्शन का अनुयायी 2 भूरा रंग।

कापुरुष [कुत्सित पुरुष—को कदादेश] नीच घृणित व्यक्ति, कायर, नराधम, पाजी—सुमन्तुरुट कापुरुष. स्वल्पकेनापि तुष्यति पञ्च० १।२५, ३६१।

कापेयम् [कपि+ठक्] 1 बन्दर की जाति का 2 बन्दर जैसा व्यवहार बन्दर जैसे दाव पेंच।

कापोत (वि०) (स्त्री०—ती) [कपोत+अण्] भूरे रंग का, धूमर रंग का, —तम् 1 कबूतरों का समूह 2 सुर्मा, —तः भूरा रंग। सम०—अञ्जनम् आँखों में आँजने का सुर्मा।

काम् (अव्य०) आवाज देकर बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय।

कामः [कम्+घञ्]। कामना, इच्छा—सन्तानकामाय—रघु० २।६५, ३।६७, (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ प्रयुक्त) गन्तुकाम—आने का इच्छुक भग० २।६२, मनु० २।९४ 2 अभीष्ट पदार्थ सर्वान् कामान् समश्नुते—मनु० २।५ 3 स्नेह, अनुराग 4 प्रेम या विषय भोग की इच्छा जो जीवन के चार उद्देश्यों (पुरुषार्थ) में से एक है—तु० अर्थ और अर्थ काम 5 विषयों से तृप्ति की इच्छा, कामुकता मनु० २।२१४ 6 कामदेव 7 प्रद्युम्न 8 बलराम 9 एक प्रकार का आप अम् 1 विषय, इच्छित पदार्थ 2 वीर्य, धातु (हिन्दू पौराणिकता के अनुसार काम ही कामदेव है—वही कृष्ण व रुक्मिणी का पुत्र है। उसकी पत्नी रति है, जिस समय देवताओं को तारक के विरुद्ध युद्ध करने के निमित्त अपनी सेनाओं के लिए सेनापति की आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से सहायता माँगी जिससे कि शिव का ध्यान पार्वती की ओर आकृष्ट हो, यही एक बात थी जो राक्षसों का काम तमाम कर सकती थी। कामदेव ने इस बात का बीड़ा उठा लिया परन्तु शिव ने अपनी तपस्या के विघ्न से क्रुद्ध हो अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से काम को भस्म कर दिया। उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर शिव ने कामदेव को प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने की अनुमति दे दी। उसका घनिष्ठ मित्र वसन्त ऋतु और पुत्र अनिरुद्ध है, वह धनुर्बाण से सुसज्जित है—भ्रमरपंक्ति ही उसके धनुष की डोरी है—और पाँच विविध पौधों के फूल ही उसके बाण हैं)। सम०—अग्नि 1 प्रेम की आग, प्रचंड प्रेम 2 उत्कट इच्छा, कामोन्माद, —उद्दीपनम् 1 कामाग्नि को प्रज्वलित करना 2 कोई कामोद्दीपक पदार्थ,—अङ्गुलः 1 अंगुली का नाखून 2 पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग—अङ्गः आम का वृक्ष, —अधिकार प्रेम या इच्छा का प्रभाव,—अभिभूत (वि०) प्रेम के वशीभूत,—अरुस देखो 'कामारि', —अस्त्र (वि०) प्रेम या कामोन्माद के कारण अन्धा, (—स्त्रम्) 'कोयल', अथवा कस्तूरी,—अशिन् (वि०) जब इच्छा हो तभी भोजन पाने वाला,—अभिराम (वि०) कामुक, कामासक्त,—अरण्यम् प्रमोद वन या सुहावना उद्यान,—अरि शिव की उपाधि, अर्थिन् (वि०) शृंगार प्रिय, विषयी, कामासक्त,—अवतार प्रद्युम्न,—अवसायः प्रणयोन्माद या काम का दमन, वैराग्य,—अशनम् 1 जब चाहे तब भोजन करना, इच्छानुकूल खाना 2 अनियन्त्रित सुखोपभोग,—आतुर (वि०) प्रेम का रोगी, काम वेग के कारण क्लान्त —कामातुराणां न भयं न लज्जा—सुभा०,—आत्मजः प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का विशेषण—आत्मन् (वि०) विषयी, कामुक, आसक्त—मनु० ७।२७,—आयुधम् 1 कामदेव का बाण 2 जननेन्द्रिय (धः) आम का वृक्ष,—आयुः (पु०) 1 शिव 2 परशु,—आर्त (वि०) प्रेम का रोगी, कामाभिभूत—कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५,—आसक्त (वि०) प्रेम या इच्छा के वशीभूत, कामोन्मत्त, कामासक्त, —ईप्सु (वि०) अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करने के लिए सचेष्ट,—ईश्वरः 1 कुबेर का विशेषण 2 परमात्मा, —उदकम् 1. जल का ऐच्छिक तर्पण 2. विधि द्वारा विहित अधिकारियों को छोड़ कर दिवंगत मित्रों का जल से ऐच्छिक तर्पण—याज्ञ० ३।४,—उपहृत (वि०) कामोन्माद के वशीभूत, या प्रथम रोगी,—कला काम की पत्नी रति,—काम—कामिन् (वि०) प्रेम या

कामोन्माद के अधिदेशों का अनुयायी,—चार (वि०) इच्छानुकूल काम करने वाला, अपनी कामनाओं में लिप्त रहने वाला (—र:) 1 ऐच्छिक कार्य, स्वत स्फूर्त कर्म—मनु० ११।४१, ४५ 2. इच्छा, इच्छा का प्रभाव—मृच्छ० ५।११,—जल: 1 वेश्या का प्रेमी 2. वेश्यावृत्ति,—जुष् (वि०) 1. इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुकूल कार्य करने वाला 2. इच्छा को पूरी करने वाला, (पु०) परमात्मा, —जेलि वि०) कामासक्त (लि:) 1 प्रेमी 2 सभोग —क्रीडा 1 प्रेम की रगरेली, शृगारी खेल 2. सभोग, —ग (वि०) इच्छानुकूल जाने वाला, इच्छानुसार आने जाने या कार्य करने के योग्य (—गा) अभीष्ट तथा कामुक स्त्री- याज्ञ० ३।६,—गति (वि०) अभीष्ट स्थान पर जाने के योग्य—रघु० १३।७६,—गुण. 1 प्रणयोन्माद का गुण, स्नेह 2 सतुष्टि, भरपूर सुखोपभोग 3 विषय, इन्द्रियों को आकृष्ट करने वाले पदार्थ,—चर—चार (वि०) बिना किसी प्रतिबध के स्वतत्र रूप से घूमने वाला, इच्छानुकूल भ्रमण करने वाला—कु० १।५०, —चार (वि०) अनियन्त्रित, प्रतिबधरहित (—र) 1 अनियन्त्रित गति 2 स्वतत्र या स्वेच्छापूर्वक कार्य, स्वेच्छाचारिता—न कामचारो मयि शङ्कनीय—रघु० १४।६२ 3 अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतत्र इच्छा, कामचारानुज्ञा सिद्धा०, मनु०, २।२२० 4 विषयासक्ति 5 स्वार्थ,—चारिन् (वि०) 1 बिना किसी प्रतिबध के घूमने वाला —मेघ० ६३ 2 कामासक्त, विषयी 3 स्वेच्छाचारी (पु०) 1 गरुड़ 2 चिड़िया, —ज (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न—मनु० ७।४६, ४७, ५०. —जित् (वि०) कामोन्माद या प्रेम को जीतने वाला —रघु० ९।३३, (पु०) 1 स्कद की उपाधि 2 शिव, —ताल कोयल,—द (वि०) इच्छा पूरी करने वाला, प्रार्थना स्वीकार करने वाला,—दा =कामधेनु,—दर्शन (वि०) मनोहर दिखाई देने वाला, दुघ (वि०) अपनी इच्छाओं को दोहने वाला, अभीष्ट पदार्थों को देने वाला प्रीता कामदुघा हि सा —रघु० १।८०, २।६३, मा० ३।११, —दुघा धेनु (स्त्री० सब इच्छाओं को पूरा करने वाली काल्पनिक गाय भग० १०।२८, —दूती मादा कोयल, देव प्रेम का देवता, —धेनु (स्त्री०) समृद्धि की गौ, सब इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय,—ध्वजिन् (पु०) शिव की उपाधि,—पति,—पत्नी (स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति,—पाल बलराम, प्रवेदनम् अपनी इच्छा, कामना या आशा को अभिव्यक्त करना —कञ्चित् कामप्रवेदने अमर०,—प्रसव अनियन्त्रित या मुक्त प्रसन्न—फल आम के वृक्ष की एक जाति,—भोग (ब.व.) विषयोपभोग में तृप्ति,—मह वैशाखपूर्णिमा को मनाया जाने वाला कामदेव का पर्व,—मूढ़—मोहित (वि०) प्रेमप्रभावित या प्रेमाकृष्ट—उत्तर० २।५, —रत. वीर्यपात,—रसिक (वि०) कामासक्त, कामार्त —क्षणमपि युवा कामरसिक भर्तृ० ३।११२,—रूप (वि०) 1. इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला, —जानामि त्वा प्रकृतिपुरुष कामरूप मघोन मेघ० ६ 2 सुन्दर, सुहावना (—पम्) (ब० व०) बगाल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) —रघु० ४।८०, ८४,—रेखा,—लेखा वेश्या, रडी, —लता पुरुष की जननेंद्रिय, लिंग, लोल (वि०) कामोन्मत्त, प्रेम का रोगी,—वर इच्छानुकूल चुना हुआ उपहार, वल्लभ 1 वसन्त ऋतु 2 आम का वृक्ष (—भा) ज्योत्स्ना चाँदनी,—वश (वि०) प्रेम-मुग्ध, (—श) प्रेम के वशीभूत होना, वश्य (वि०) प्रेमासक्त, वाद (वि०) इच्छानुसार कुछ भी कहना, मनमाना कहना,—विहत (वि०) इच्छाओं का हनन करने वाला, वृत्त (वि०) विषय वासना में लिप्त, स्वेच्छाचारी, व्यसनासक्त मनु० ५।१५४, वृत्ति (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाचारी, स्वतत्र न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२ (स्त्री० ति) 1 मुक्त अनियन्त्रित कार्य 2 मन की स्वतत्रता, वृद्धि (स्त्री०) कामेच्छा में वृद्धि, वृक्षम् शृगावली का फल, शर 1 प्रेम का बाण 2 आम का वृक्ष,—शास्त्रम् प्रेमविज्ञान रतिशास्त्र, सयोग अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति, सख वसन्त ऋतु,—सू (वि०) इच्छा को पूरा करने वाला रघु० ५।३३, सूत्रम् वात्स्यायनमुनिकृत रतिशास्त्र, हैतुक (वि०) बिना वास्तविक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न भग० १६।८

कामत (अव्य०) [काम+तसिल्] 1 स्वेच्छा से इच्छापूर्वक 2 अपनी इच्छा से, ज्ञानपूर्वक, इरादतन, जानबूझ कर मनु० ८।१२०,—प्रवाच्यता च कामत —याज्ञ० १।१६८ 3 प्रेमावेश में, भावनावश, कामुकतावश- मनु० ३।१७३ 4 इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के।

कामन (वि०) [कम्+णिच्+युच्] कामासक्त, कामातुर, अव चाहे, कामना,—ना कामना, इच्छा।

कामनीयक [कमनीयस्य भाव -अण्] सौन्दर्य, आकर्षकता।

कामन्दकिन् (पु०) [काम यथेष्ट यमति - काम+यम्+णिनि, यमादेश मुम् च नि०] परिव्राजक, ठठेरा।

कामम् (अव्य०) [कम्+णिच्+अम] 1 कामना या रुचि के अनुसार, इच्छानुसार, कामचारी 2 सहमतिपूर्वक चाहना—मुद्रा० १।२५ 3 मन भर कर— उत्तर०

२।१६ 4 इच्छापूर्वक, प्रसन्नता के साथ—शा० ४।४ 5 अच्छा, बहुत अच्छा (स्वीकृतिबोधक अव्यय), ऐसा हो सकता है कि—मदागमनमभ्यावृत्त्या वा काम क्षाम्यतु य अमी--शि० २।४३ 6 मान लिया (कि) यह सच है कि, निस्सन्देह (प्राय इसके पश्चात् 'तु' 'तथापि' का प्रयोग होता है) काम न तिष्ठति मदाननसमुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्या श० १।३१, २।१, रघु० ४।१३, ६।२२, १३।७५, मा० ९।३४ 7 बशक, सचमुच, वास्तव में,—रघु० २।४३ (वसुधा अनिच्छा या विरोध निहित रहता है) 8 अधिक अच्छा, चाहे (प्राय 'न' के साथ)—कामम्मरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि, न चैवैना प्रयच्छेत् गुणहीनाय कर्हिचित्—मनु० ७।८९।

कामयमान, कामयान, कामयितृ (वि०) [कम्+णिच्+शानच्, पक्षे मुक्, तृच् वा] कामासक्त, कामुक--रघु० १९।५० श० ३।

कामल (वि०) [कम्+णिच्+कलच्] कामासक्त, कामुक --ल 1 वसन्त ऋतु 2 मरुस्थल।

कामलिका [कमल+कन्+टाप्, इत्वम्] मादक शराब।

कामवत् (वि०) [काम+मतुप्, मस्य वत्वम्] 1 इच्छुक, चाहने वाला 2 कामासक्त।

कामिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कम्+णिनि] 1 कामासक्त 2 इच्छुक 3 प्रेमी, प्रिय, (पु०) 1 प्रेम करने वाला कामुक (स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान देने वाला) —त्वया चन्द्रमसा चातिमन्यंयते कामिजनसार्थ --श० २, न्या कामिनो मदनदूतिमुदाहरन्ति विक्रम० ४।११, अमरु २, मालवि० ३।१४ 2 जौहरी का गुलाम, 3 चकवा 4 चिड़िया 5 शिव की उपाधि 6 चन्द्रमा 7 कबूतर, नी 1 प्रेम करने वाली, स्नेहमयी, प्रिय स्त्री --मनु० ८।११२ 2 मनोहर और सुन्दर स्त्री उदयति हि शशाङ्क कामिनीगण्डपाण्डु - मृच्छ० १।५७ केया दैया कथय कविताकामिनी कौतुकाय -- प्रस० १। २२ 3 सामान्य स्त्री मृगया अहार चतुरेव कामिनी -रघु० ९।६९, मेघ० ६३, ६७, ऋतु० १।२८ 4 भीरु स्त्री 5 मादक शराब।

कामुक (वि०) (स्त्री० -का, की) [कम्+उकञ्] 1 कामना करता हुआ, इच्छुक 2 कामासक्त, कामातुर, क 1 प्रेमी, कामातुर --कामुकं कुम्भीलकमिव परिहर्तव्या चन्द्रिका मालवि० ४, रघु० १९।३३, ऋतु० ६।९ 2 चिड़िया 3 अशोकवृक्ष - का) मन की इच्छुक स्त्री (-की) कामातुर या कामासक्त स्त्री।

काम्पिल्ल, काम्पील [कम्पिला नदी विशेष तस्या अदूरे भव.—कम्पिला+अण्=काम्पिल+अरम् त्रि० साधु कम्पिला+अण् त्रि० दीर्घः] एक वृक्ष का नाम--मा० ९।३१।

काम्बल [कम्बलेन आवृतः—कम्बल+अण्] ऊनी कपड़े या कंबल से ढकी हुई गाड़ी।

काम्बलिक [कम्बु+ठक्] शंख या सीपी के बने आभूषणों का विक्रेता, शंख या सीपी का व्यापारी।

काम्बोज [कम्बोज+अण्] 1 कंबोज देश का निवासी --मनु० १०।४४ 2 कंबोज का राजा 3 पुन्नाग वृक्ष 4. कंबोज देश के घोड़ों की एक जाति।

काम्य (वि०) [कम्+णिच्+यत्] वाञ्छनीय, इच्छा के उपयुक्त--सुधा मिष्ठा च काम्यार्थानम्—मा० २।८ 2 ऐच्छिक, किसी विशेष उद्देश्य से किया गया (विप० नित्य) --अन्ते काम्यस्य कर्मण —रघु० १०।५०, मनु० २।२, १२।८९, भग० १८।२ 3 सुन्दर, मनोहर, लावण्यमय, खूबसूरत --नासौ न काम्य --रघु० ६। ३०, उत्तर० ५।१२, -म्या कामना, इच्छा, इरादा, -प्रार्थना ब्राह्मणकाम्या--मृच्छ० ३, रघु० १।३५, भग० १०।१। सम० अभिप्राय स्वार्थनिहित प्रयोजन, कर्मन् (नपु०) किसी विशेष उद्देश्य तथा भावी फल की दृष्टि से किया गया धर्मानुष्ठान, -गिर् (स्त्री०) रुचि के अनुकूल भाषण,—दानम् 1 स्वीकार करने योग्य उपहार 2 स्वतंत्र इच्छा से दिया गया उपहार, ऐच्छिक भेंट,—मरणम् स्वेच्छापूर्वक मरना, आत्महत्या, -व्रतम् ऐच्छिक व्रत।

काम्पल (वि०) [कु ईषत् अम्ल —को कादेशः] कुछ खट्टा, ईषदम्ल।

काय,-यम् [चीयतेऽस्मिन् अस्थ्यादिकमिति काय, चि+घञ्, आदे ककारः] 1 शरीर विभर्ति काय कापराधा परोपकारैर्न तु चन्दनेन - मर्तृ० २।७१, कायेन मनसा बुद्धया—भग० ५।११ इसी प्रकार कायेन, वाचा, मनसा आदि 2 वृक्ष का तना 3 वीणा का शरीर (तारों को छोड़कर वीणा का ढाँचा) 4 समुदाय, जमघट, संचय 5 मूलधन, पूंजी 6 घर, आवास, वसति 7. कुंदा, चिह्न 8 नैसर्गिक स्वभाव - यम् ('तीर्थ' के साथ या 'तीर्थ' के बिना) अंगुलियों से नीचे का हाथ का भाग, विशेषकर कनिष्ठा अंगुली (यह अंगुली प्रजापति के लिए पावन मानी जाती है - और 'प्रजापति तीर्थ' कहलाती है—तु० मनु० २।५८,५९),—ब्राह्म आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसे 'प्राजापत्य' कहते हैं—याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३८। सम०—अग्निः पाचनशक्ति, -क्लेशः शरीर का कष्ट या पीड़ा, चिकित्सा आयुर्वेद के आठ विभागों में से तीसरा, समस्त शरीर में व्याप्त रोगों की चिकित्सा,—मात्रम् शरीर की माप,—रक्षणम् कवच,—स्थ. 1 लेखक जाति (क्षत्रियपिता और शूद्र माता की संतान) 2 इस जाति का पुरुष—कायस्थ इति लक्ष्मी माया—मुद्रा० १, याज्ञ० १।३३६ मृच्छ० ९,

(स्त्री०—स्था) 1 कायस्थ जाति की स्त्री 2 आंवले का वृक्ष (स्त्री०—स्थी) कायस्थ की पत्नी, —स्थित (वि०) शरीरगत, शारीरिक।

कायक (स्त्री०—यिका), कायिक (स्त्री०—की) (वि०) [काय+वुञ्, स्त्रियां टाप्, इत्वम्—काय+ठक् स्त्रियां ङीप्] शरीर संबंधी, शारीरिक, शरीर विषयक—कायिकतप —मनु० १२।८,—का ब्याज (धन के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय)। सम०—वृद्धि (स्त्री०) धरोहर रक्खे हुए किसी पशु या वाणिज्य-सामग्री के उपयोग के बदले भुगता दिया गया ब्याज 2 ऐसा ब्याज जिसकी अदायगी से मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े, धरोहर रक्खे हुए पशु को उपयोग में लाना।

कार (वि०) (स्त्री०—री) [कृ+अण्, घञ्, वा] (समास के अन्त में) बनाने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, कार्य करने वाला, निर्माता, कर्ता, रचयिता —ग्रन्थकार=रचयिता, कुम्भकार, स्वर्णकार आदि, —र: 1 कृत्य, कार्य जैसा कि 'पुरुषकार' में 2 किसी ऐसी ध्वनि या शब्द को प्रकट करने वाला पद जो विभक्ति चिह्न से युक्त न हो जैसा कि अकार,—मनु० २।७६, १२६, ककार, फूत्कार आदि 3 प्रयास, चेष्टा —शि० १९।२७ 4 धार्मिक तप 5 पति, स्वामी, मालिक 6 संकल्प 7 शक्ति, सामर्थ्य 8 कर या चुंगी 9 हिम का ढेर 10 हिमालय पर्वत। सम०—अग्नि एक मिश्रित या नीचजाति का पुरुष जो निषाद पिता व वैदेही माता से उत्पन्न हुआ—तु० मनु० १०।३६, —कर (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता,—भू चुंगीघर।

कारक (वि०)(स्त्री०—रिका) [कृ+ण्वुल्] (प्रायः समास के अन्त में) 1 बनाने वाला, अभिनय करने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, रचने वाला, कर्ता आदि —स्वप्नस्य कारक —याज्ञ० ३।१५०, २।१५६, वर्णसंकरकारकै —भग० १।४२, मनु० ७।२०४ पद्य० ५।३६ 2 अभिकर्ता—कम्। (व्या० में) संज्ञा और क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या संज्ञा और उससे संबद्ध अन्य शब्द) इस प्रकार के कारक गिनती में छ हैं जो 'संबंधकारक' को छोड़कर शेष विभक्तियों से संबद्ध हैं 1 कर्ता 2 कर्म 3. करण 4 सम्प्रदान 5 अपादान और 6 अधिकरण 2 व्याकरण का वह भाग जो इनके व्यवहार को बतलाता है —अर्थात् वाक्य रचना या कारक-प्रकरण। सम०—दीपकम् (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें एक ही कारक उत्तरोत्तर अनेक क्रियाओं से संयुक्त हो—उदा०—खिद्यति कूणति वेल्लति विचलति निमिषति विलोकयति तिर्यक्, अन्तर्नंदति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधू: शयने—काव्य० १०, —हेतु क्रियात्मक या क्रियापरक कारण (विप० ज्ञापक हेतु)।

कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] 1 हेतु, तर्क —कारणकोपाकुटुम्बिन्य—मालवि० १।२८, रघु० १।७४, भग० १३।२१ 2 आधार, प्रयोजन, उद्देश्य—किं पुन कारणम्—महा०, याज्ञ० २।२०३, मनु० ८।३४७, कारणमानुषीं तनुम्—रघु० १६।२२ 3 उपकरण, साधन—याज्ञ० ३।२० ६५ 4 (न्या० द० में) वह कारक जो निश्चित रूप से किसी फल का पूर्ववर्ती कारण हो, या 'मिल' के मतानुसार—'पूर्ववर्ती कारण या उनका समूह जिस पर कार्य निश्चित रूप से, बिना किसी लागलपेट के निर्भर करता है, नैयायिकों के मतानुसार इसके तीन भेद हैं—(क) समवायि (घनिष्ठ और अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े का कारण तन्तु,—धागे (ख) असमवायि (जो न तो घनिष्ठ हो न अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े के लिए तन्तुओं का संयोग (ग) निमित्त (उपकरणात्मक) जैसा कि कपड़े के लिए जुलाहे की खड्डी 5 जननात्मक कारण—सृष्टिकर्ता, पिता,—कु० ५।८१ 6 तत्त्व, तत्त्व-सामग्री—याज्ञ० ३।१४८, भग० १८।१३ 7 किसी नाटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि 8 इन्द्रिय 9 शरीर 10 चिह्न, दस्तावेज, प्रमाण या अधिकार-पत्र—मनु० ११।८४ 11 जिसके ऊपर कोई मत या व्यवस्था निर्भर करती है। सम०—उत्तरम् विशेष तर्क, अभियोग के कारण को मुकरना (स्वीकार न करना), आरोप को सामान्यतः मान लेना परन्तु वास्तविक (बंध) तथ्य को अस्वीकृत कर देना,—कारणम् प्रारंभिक या प्राथमिक कारण, अणु,—गुण कारण का गुण,—मूल (वि०) 1 जो कारण बना हो 2 कारण बनने वाला,—माला एक अलंकार 'कारणों की शृंखला'—यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता, तदा कारणमाला स्यात्—काव्य० १०—उदा० भग० २।६२, ६३, सा० द० ७२८,—वादिन् (पु०) अभियोक्ता, वादी,—वारि (नपु०) सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न मूल जल,—विहीन (वि०) बिना कारण के,—शरीरम् (वेदान्त द०) शरीर का आन्तरिक बीजारोपण, मूलसूत्र, या कारणों की रूपरेखा।

कारणा [कृ+णिच्+युच्+टाप्] 1 पीड़ा, वेदना 2 नरक में डालना।

कारणिक (वि०) [कारण+ठक्] 1. परीक्षक, निर्णायक 2 कारण परक, नैमित्तिक।

कारण्डव [रम्+ड=रण्ड, ईषत् रण्ड=कारण्ड, तं वाति—वा+क] एक प्रकार की बत्तख—तप्तं वारि विहाय तीरलिलिनीं कारण्डव सेवते—विक्रम० २।२३।

कारण्डविन् (पु०) [कर एव कार., तं धमति, कार+ध्मा

+इनि पृषो०] 1 कौवा 2 अग्निज विद्या को जानने वाला।

कारव [का इति रवो यस्य ब० स०] कौवा।

कारस्कर [कार करोति—कार+कृ+ट, सुट्] किपाक वृक्ष।

कारा [कीर्यते क्षिप्यते दण्डार्हो यस्याम्—कृ+अङ, गुण, दीर्घ नि०] 1. कारावास, बन्दीकरण 2 जेलखाना, बन्दीगृह 3 वीणा का गर्दन के नीचे का भाग, तूंबी 4. पीड़ा, कष्ट 5 धूती 6 सोने का काम करने वाली स्त्री। सम०—अगारम्,—गृहम्—वेश्मन् बन्दीघर, जेलखाना—कारागृहे निर्जितवासवेन लङ्केश्वरेणोषित-मात्रसादात्—रघु० ६।४०, शा० ४।१०, भर्तृ० ३।२१, —गुप्त बन्दी, कैदी,—पाल बन्दीगृह का रखवाला, कारागार का अधीक्षक।

कारि: (स्त्री०) [कृ+इञ्] कार्य, कर्म, (पु०—स्त्री०) कलाकार शिल्पकार।

कारिका [कृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 वर्तकी 2. व्यवसाय, वृत्ति 3 व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से संबद्ध काव्य, या पद्य संग्रह—उदा०, (व्या० पर) भर्तृहरि की कारिका, सांख्यकारिका 4 यन्त्रणा, यातना 5 ब्याज।

कारीषम् [करीष+अण्] सूखे गोबर की करसियों का ढेर।

कारु (वि०) (स्त्री०—रू) [कृ+उण्] 1 निर्माता, कर्ता, अभिकर्ता, नौकर 2 कारीगर, शिल्पकार, कलाकार - कारुमि कारित तेन कृत्रिम स्वप्नहेतवे —शिशु० १।१३, इति स्म सा कारुतरेण लेखित नलस्य च स्वस्य च सत्यमीक्षते—नै० १।३८, याज्ञ० २।२४९, १।१८७, मनु० ५।१२८, १०।१२, (के ये है—तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा, पञ्चम-धर्मकारश्च कारू शिल्पिनो मता।)—रू:—देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा 2 कला, विज्ञान। सम०—वीर: सेंध मारने वाला, डाकू—रू: 1 शिल्प से बनी कोई वस्तु, शिल्पकर्म द्वारा निर्मित वस्तु 2 बूढ़ा हाथी या हाथी का बच्चा 3 पहाड़ी, बर्मी 4 फल, आम।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [करुणा+ठक्] दयालु, कृपालु, सदय—आशा० १।१।

कारुण्यम् [करुणा+ष्यञ्] दया, कृपा, रहम—कारुण्य-मातन्यते—गीत० १, करिष्य कारुण्यास्यदम्—भामि० १।१।

कार्कश्यम् [कर्कश+ष्यञ्] 1. कठोरता, कड़ापन 2. दृढ़ता 3 ठोसपन कड़ापन, शि० २।१७ पंच० १।१९० 4 कठोरहृदयता, सख्ती, क्रूरता—कार्कश्य यन्निदेशेऽपि चेतसि—अमर २४।

कार्तवीर्य: [कृतवीर्य+अण्] कृतवीर्य का पुत्र, हैहय देश का राजा, जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी (पूजा के फलस्वरूप उसने दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किये जैसे कि हजार भुजायें, स्वर्णमय रथ जो इच्छानुसार जहाँ चाहे जा सकता था, न्याय द्वारा अनिष्ट निवारण की शक्ति, दिग्विजय, शत्रुओं द्वारा अपराजेयता आदि (तु० रघु० ६।३९)। वायुपुराण के अनुसार धर्म तथा न्याय पूर्वक उसने ८५००० वर्ष तक राज्य किया तथा १००००० यज्ञ किए। वह रावण का समकालीन था, उसने रावण को अपनी नगरी के एक कोने में पशु की भाँति बन्दीखाने में डाल दिया —तु० रघु० ६।४०, कार्तवीर्य को परशुराम ने मार डाला, क्योंकि वह परशुराम के पूज्य पिता जमदग्नि की कामधेनु को उठा कर ले गया था। कार्तवीर्य को सहस्रार्जुन भी कहते हैं)।

कार्तस्वरम् [कृतस्वर+अण्] सोना, -न तप्तकार्तस्वर-भासुराम्बर —शि० १।२०, °वंशेन—का० ८२।

कार्तान्तिक [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी, भाग्यवक्ता—कार्ता-न्तिको नाथ भूत्वा भुव बभ्राम—दश० १३०।

कार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [कृत्तिका+अण्] कार्तिक मास से संबंध रखने वाला—रघु० १९।३९,—क: 1 वह महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के निकट रहता है (अक्तूबर-नवम्बर महीना) 2 स्कन्द का विशेषण, (—की) कार्तिक मास की पूर्णिमा।

कार्तिकेय [कृत्तिकानामपत्यं ढक्] स्कन्द (क्योंकि उसका पालन-पोषण छ कृत्तिकाओं द्वारा हुआ था) भारतीय पौराणिकता के अनुसार कार्तिकेय युद्ध का देवता है, शिव जी का पुत्र है, (परन्तु उसके जन्म में किसी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म के विषय में बहुत सी परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है। शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका (जो कि कबूतरी के रूप में शिव के पास गई जब कि वह पार्वती के साथ सहवास का सुखोपभोग कर रहे थे) जिसने इसे सहन न करने के कारण गंगा में फेंक दिया (इसीलिए स्कन्द को अग्निभू या गंगापुत्र भी कहते हैं)। उसके पश्चात् यह छ कृत्तिकाओं (जब वह गंगा में स्नान करने गई) में संक्रांत कर दिया गया। फलस्वरूप वह सब गर्भवती हुईं और प्रत्येक ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु बाद में इन छः पुत्रों को बड़े रहस्यमय ढंग से जोड़ कर एक कर दिया गया, इस प्रकार वह छः सिर, बारह हाथ तथा बारह आँखों वाला असाधारण रूप का व्यक्ति बना (इसीलिए उसे कार्तिकेय, षडानन या षण्मुख कहते हैं)। दूसरी कहानी के अनुसार गंगा ने शिव के वीर्य को सरकंडों में फेंक दिया, इसी कारण उसे शर

बलभद्र या सरजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने क्रौंच पहाड़ को विदीर्ण कर दिया इसीलिए वह क्रौंच-दारण कहलाता है। एक शक्तिशाली राक्षस तारक के विरुद्ध युद्ध में वह देवताओं की सेना का सेनापति था—जिसमें उसने राक्षसों को परास्त करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनानी और तारकजित् है, उसका चित्रण मयूरारोही के रूप में किया जाता है)। सम०—प्रसू (स्त्री०) पार्वती, कार्तिकेय की माता।

कार्त्स्न्यम् [कृत्स्न+ष्यञ्] पूर्णता, समग्रता, समूचापन —तामिषोषत कार्त्स्न्येन द्विजाध्यान् पङ्क्तिपावनान् —मनु० ३।१८३।

कार्दम (वि०) (स्त्री०—मी) [कर्दम+अण्] कीचड़ से भरा हुआ, मिट्टी से सना हुआ या गारे से लथपथ।

कार्पट [कर्पट+अण्] 1 आवेदक, अभियोक्ता, अभ्यर्थी 2 चिथड़ा 3 लाक्षा।

कार्पटिक [कर्पट+ठक्] 1 तीर्थयात्री 2 तीर्थों के जलों को ढोकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3 तीर्थयात्रियों का दल 4 अनुभवी पुरुष 5 पिछलग्गू।

कार्पण्यम् [कृपण+ष्यञ्] 1 गरीबी, दरिद्रता, गरीबी-व्यक्तकार्पण्या 2 दया, रहम 3 कंजूसी, बुद्धिदौर्बल्य —भग० २।७ 4 लघुता, हल्कापन।

कार्पास (वि०) (स्त्री०—सी) [कर्पास+अण्] रूई का बना हुआ,—सः, —सम् रूई की बनी हुई कोई वस्तु —मनु० ३८।३२६, १२।६४ 2 कागज, —सी रूई का पौधा, बाडी। सम० —अस्थि (नपु०) कपास का बीज बिनौला,—नासिका नकुआ, —सौत्रिक (वि०) रूई के सूत से बना हुआ —याज्ञ० २।१७९।

कार्पासिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्पास+ठक्] कपास का या रूई से बना हुआ।

कार्पासिका, कार्पासी [कार्पासी+कन्+टाप् ह्रस्व, कार्पास+ङीष्] रूई या कपास का पौधा, बाडी।

कार्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [कर्मन्+अण्] 1 काम को पूरा करने वाला 2 कार्य को पूर्ण रूप से भलीभांति करने वाला,—णम् जादू, अभिचार निखिलनयना-कर्षणे कार्मणज्ञा—मालवि० २।७९, विक्रमांक० २।१४, ८।२।

कार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+ठक्] हस्तनिर्मित, हाथ से बना हुआ 2 बेलबूटों से युक्त, रंगीन धागों से अन्तर्मिश्रित 3 रंगबिरंगा या बेलबूटेदार वस्त्र।

कार्मुक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+उकञ्] काम करने योग्य, भलीभांति और पूर्णतः काम करने वाला,—कम्। धनुष—त्वयि चापिज्यकार्मुके —श० १।६ 2 बाँस।

कार्य (स० कृ०) [कृ+ण्यत्] जो किया जाना चाहिए, बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यान्वित किया जाना चाहिए आदि,—कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी—श० ६।१६, साक्षिणः कार्याः —मनु० ८।१६, इसी प्रकार दण्ड, विचार आदि,—र्यम् 1 काम, मामला, बात—कार्यं त्वया न प्रतिपन्नकल्पम् —कु० ३।१४, मनु० ५।१५० 2 कर्तव्य शि० २।१ 3 पेशा, जोखिम का काम, आकस्मिक कार्य 4 धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5 प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय —शि० २।३६, हि० ४।६१ 6 कमी, आवश्यकता, प्रयोजन, मतलब (करण० के साथ) किं कार्यं भवतो हतेन दयिताम्नेहस्त्वहस्तेन मे विक्रम० २।२०, तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्—पञ्च० १।७१, अमर ७१ 7 संचालन, विभाग 8 कानूनी अभियोग, व्यावहारिक मामला, झगड़ा आदि बहिर्निष्कम्य ज्ञायतां क्व कार्यार्थीति —मृच्छ० ९, मनु० ८।४३ 9 फल, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण) 10 (व्या० में) क्रियाविधि, विभक्तिकार्य—रूपनिर्माण 11 नाटक का उपसंहार—कार्योपक्षेपमादौ ननुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।२ 12 स्वास्थ्य (आयु०) 13 मूल। सम०—अक्षम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अक्षम,—अकार्यविचार किसी वस्तु के औचित्य से संबंध रखने वाली चर्चा, किसी कार्यप्रणाली के अनुकूल या प्रतिकूल विचारविमर्श,—अधिप 1 किसी कार्य या विषय का अधीक्षक 2 वह ग्रह या नक्षत्र जो ज्योतिष में किसी प्रश्न का निर्णायक होता है,—अर्थ किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2 सेवानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र 3 उद्देश्य या प्रयोजन, अर्थिन् (वि०) 1 प्रार्थना करने वाला 2 अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3 सेवा नियुक्ति की खोज करने वाला 4 न्यायालय में अपने पक्ष का समर्थन करना, न्यायालय में जाने वाला—मृच्छ० ९- आसनम् किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए बैठने का स्थान, गद्दी, ईक्षणम् सरकारी कार्यों की देखभाल मनु० ७।१४१,—उद्धार कर्तव्य को पूरा करना, —कर (वि०) अचूक, गुणकारी,—कारणे (द्वि० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन,० भाव कारण और कार्य का संबंध,—काल काम करने का समय, मौसम, उपयुक्त समय या अवसर,—गौरवम् किसी कार्य की महत्ता, चिन्तक (वि०) 1 दूरदर्शी, सावधान, सतर्क, (—कः) किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता, कार्यकारी अधिकारी याज्ञ० २।१९१, च्युत (वि०) कार्यरहित, बेकार, किसी पद से बर्खास्त,—दर्शनम् 1 किसी कार्य का निरीक्षण करना 2 सार्वजनिक मामले की पूछताछ —निर्णयः किसी बात का फैसला,—पुटः 1 निरर्थक

काम करने वाला आदमी 2 पागल, सनकी विक्षिप्त 3 आलसी अरक्षित, —द्वेषः काम करने में अरुचि, आलस्य, सुस्ती, —प्रेष्य अभिकर्ता, दूत, —वस्तु (न०) लक्ष्य और उद्देश्य, —विपत्तिः (स्त्री०) असफलता, प्रतिकूलता, दुर्भाग्य, —शेषः 1 बचा हुआ कार्य—मनु० ७।१५३ 2 कार्य की पूर्ति 3. किसी कार्य का अंश, —सिद्धि (स्त्री०) सफलता, —स्थानम् काम करने की जगह, कार्यालय, —हन्तृ 1. दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, —हि० १।७७ 2 दूसरे के हितों का विरोधी।

-कार्यतः (अव्य०) [कार्य + तसिल्] 1 किसी उद्देश्य या प्रयोजन के कारण 2 फलतः, अनिवार्यतः।

कार्श्यम् [कृश्+ष्यञ्] 1 पतलापन, दुर्बलता, दुबलापन —मेघ० २९ 2 छोटापना, अल्पता, कमी—रघु० ५।२१।

कार्ष [कृषि+ण] किसान, खेतीहर।

कार्षापण, कम् (या षणक.) [कर्ष्+अण्=कार्ष, आ+पण्+घञ्=आपण, कार्षस्य आपण ब० स०] भिन्न भिन्न मूल्य का सिक्का या बट्टा—मनु० ८।१३६, ९।२८७, (=कर्ष), कम् धन।

कार्षापणिक (वि०) (स्त्री०—की) [कार्षापण+ठिठन्] एक कार्षापण के मूल्य का।

कार्षिक = कार्षापण।

कार्ष्ण्य (वि०) (स्त्री० र्ण्यी) [कृष्ण+अण्] 1 कृष्ण या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला। रघु० १५।२४ 2 व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3 काले हरिण से सम्बन्ध रखने वाला —मनु० २।४१ 4 काला।

कार्ष्णायस (वि०) (स्त्री० —सी) [कृष्णायस्+अण्] काले लोहे से बना हुआ, —सम् लोहा।

कार्ष्णि [कृष्णस्य अपत्यम् कृष्ण+इञ्] कामदेव की उपाधि शि० १९।१०।

काल (वि०) (स्त्री० ली) [कु ईषत् कृष्णत्व लाति ला+क, को कादेश] 1 काला, काले या काले-नीले रंग का 2 समय —विलविनष्टौ काल निनाय स मनोरथौ रघु० १।३६, तस्मिन् काले—उस समय, काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् हि० १।१, बुद्धिमान् अपना समय बिताते हैं 3 उपयुक्त या समुचित समय (किसी कार्य को करने के लिए) उचित समय या अवसर (सब०, अधि०, सप्त० तथा तुमुन्नन्त के साथ) रघु० ३।१२, ४।६, १२।६९, पर्जन्य कालवर्षी —मृच्छ० १०, ६० 4 काल का अंश या अवधि (दिन के घण्टे या पहर) घण्टे वाले दिवसस्य —विक्रम० २। मनु० ५।१५३ 5 ऋतु 6 वैशेषिकों के द्वारा नौ द्रव्यों में से 'काल' नामक एक द्रव्य 7 परमात्मा जो कि विश्व का संहारक है, क्योंकि वह संहारक नियम का मूर्तरूप है काल कालस्य भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः —भर्तृ० ३।३९ 8 मृत्यु का देवता यम,—क-कालस्य न गोचरान्तरगतः —पंच० १।१४६ 9. भाग्य, नियति 10. आँख की पुतली का काला भाग 11 कोयल 12. शनिग्रह 13. शिव 14. काल की माप (संगीत और छन्द शास्त्र में) 15 कलाल, शराब खींचने तथा बेचने वाला 16 अनुभाग, खण्ड, —लम्, लोहा 2 एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। सम०—अक्षरिक साक्षर, पढ़ा लिखा, —अगुरु एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अगर—भामि० १।७०, रघु० ४।८१ (नपु०) उस वृक्ष की लकड़ी, ऋतु० ४।५, ५।५, —अग्नि, —अनल सृष्टि के अन्त में प्रलयाग्नि, —अंग (वि०) काले नीले शरीर वाला, (जैसे कि काली नीली धारवाली तलवार), —अजिनम् काले हरिण की खाल, —अञ्जनम् एक प्रकार का अञ्जन या—सुर्मा कु० ७।२०, ८२, —अण्डज कोयल, —अतिरेक समय की हानि, विलंब, —अत्यय 1 विलंब 2 समय का बीतना 3 काल के बीत जाने के कारण हानि, —अध्यक्षः 1 'समय का प्रधायक' सूर्य की उपाधि 2 परमात्मा, —अनुसारिन् (पु०) 1 मधुमक्खी 2 चिड़िया 3 चातक पक्षी, —अन्तकः समय जो मृत्यु का देवता माना जाता है, सर्वसंहारक, —अन्तरम् 1 अन्तराल 2 समय की अवधि 3 दूसरा समय या अवसर, °आवृत (वि०) काल के गर्भ में छिपा हुआ, °क्षम (वि०) विलम्ब को सहन करने के योग्य —अकालक्षमा देव्या शरीरावस्था—का० २६२, श० ४, °क्षिप्तः चूहे की भाँति केवल क्रोधित किये जाने पर ही जहरीला जन्तु, —अभ्र काला जल से भरा हुआ बादल, —अयसम् लोहा, —अवधिः नियत किया हुआ समय, —अशुद्धिः (स्त्री०) शोक मनाना, सूतक, पातक या जन्म-मरण से पैदा होने वाला अशौच, दे० अशौच, —आयसम् लोहा, —उप्त (वि०) ऋतु आने पर बोया हुआ, —कञ्जम् नीलकमल, —कटम्, —कूट शिव की उपाधि, —कण्ठः 1 मोर 2 चिड़िया 3 शिव की उपाधि —उत्तर० ६, —करणम्, समय का नियत करना —कलिका, —कर्णी दुर्भाग्य, मुसीबत, —कर्मन् (न०) मृत्यु, —कोलः कोलाहल, —कूटः, —टम् (क) हलाहल विष (ख) समुद्र मन्थन से प्राप्त तथा शिव द्वारा पिया गया—अद्यापि नीलयति हर किल कालकूटम्—चौर० ५०, —कृत (पु०) 1 सूर्य 2 मोर 3 परमात्मा, —क्रम समय का बीतना, समय का अनुक्रम—कालक्रमेण—समय पाकर, समय के अनुक्रम या प्रक्रिया में, कु० १।१९, —क्षिप्त 1 समय नियत करना 2 मृत्यु —क्षेप 1 विलंब, समय की हानि —मेघ० २२, मत करो कालक्षेप मा कुरु—पंच० १ 2 समय बिताना, —खण्डनम्, —खण्डम् यकृत्, जिगर,

—संगा यमुना नदी,—अग्नि: एक अर्घ,—अक्षम् 1 समय का चक्र (समय सदैव घूमते हुए पहिए के रूप में वर्णित किया जाता है) 2 चक्र 3. (अत) (आल०) संपत्ति का चक्र, जीवन की परिस्थितियां,—चिह्नम् मृत्यु के निकट आने का समय,—चोदित (वि०) यमदूतों के द्वारा बुलाया हुआ—ज्ञ (वि०) (किसी कार्य के) उचित समय या अवसर को जानने वाला—आत्माऽऽढ्यो हि नारीणामकालज्ञो मनोभव —रघु० १२।३३, शि० २।८३—ज्ञ 1 ज्योतिषी 2 मुनि, -ज्ञत्रय् तीन काल, भूत, भविष्य और वर्तमान—ज्ञत्रयी—का० ४६, —दण्ड मृत्यु,—धर्म,—धर्मन् (पु०) 1 किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आचरण रेखा 2 निर्दिष्ट काल, मृत्यु—न पुनर्जीवित कश्चित्कालधर्ममुपागत —महा०, परीता कालधर्मणा—आदि,—धारणा समयवृद्धि,—नियोग भाग्य या नियति का समादेश, भाग्यनिर्णय —कि० ९।१३,—निरूपणम् समय का निर्धारण करना, कालविज्ञान,—नेमि 1 समय चक्र का घेरा 2 एक राक्षस जो रावण का चाचा था और जिसे हनुमान् को मारने का काम सौंपा गया था 3 सौ हाथों वाला राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था,—पक्व (वि०) अपने समय पर पका हुआ—अर्थात् स्वत स्फूर्त —मनु० ६।१७, २१, याज्ञ० ३।४९,—परिहास थोड़े समय तक पड़े रहने वाला जिससे कि बासी जाय,—पाश यम या मृत्यु का जाल, -पाशिक जल्लाद,—पृष्ठम् 1 काले हरिण की जाति 2 बंगला (—कम्) 1 कर्ण का धनुष—वेणी० ४ 2 सामान्य धनुष,—प्रभातम् शरत्काल (बरसात के पश्चात् आने वाले दो मास का समय सर्वोत्तम समझा जाता है), —भक्ष. शिव की उपाधि,—भावम् समय का मापना, —मुख लंगूरों की एक जाति,—मेषी मक्खिष्टा पौधा, —यवन यवनों का राजा कृष्ण का शत्रु, यादवों के कुल के लिए अपराजेय शत्रु, युद्ध क्षेत्र में उसका मारना असम्भव समझ कर कृष्ण ने उसको कपट से मुचकुन्द की गुफा में धकेल दिया जिसने उसको भस्म करके उसका काम तमाम कर दिया। —याप,—यापनम् टालमटोल करना, देर लगाना, स्थगित करना, —योग भाग्य, नियति,—रात्रि,—रात्री (स्त्री०) 1 अन्धेरी रात 2 विश्व की समाप्तिसूचक महाप्रलय की रात (दुर्गा के साथ समरूपता दिखाई गई है),—लोहम्—स्टील, इस्पात,—विपर्यय काल की वृद्धि,—वृद्धि (स्त्री०) सामयिक ब्याज (मासिक त्रैमासिक या वैसे समय पर देय)—मनु० ८।१५३,—वेला शनिकाल, अर्थात् दिन का विशिष्ट समय (प्रतिदिन आधा पहर) जब कि किसी भी प्रकार के धर्मकृत्य का करना उचित समझा जाता है,—संरोध 1. बहुत देर तक काम में हाथ न डालना -मनु० ८।१४३ 2 किसी लम्बे समय का लग० होना,—सदृश (वि०) चयन, सामयिक,—सर्व काले और अत्यन्त विशेष मांप की जाति, -सार काला हरिण,—सूत्रम्, सूत्रकम् 1 समय या मृत्यु की डोरी 2 एक विशेष नरक का नाम - याज्ञ० ३।२२२ मनु० ४।८८—स्कन्ध तमाम् का पेड़, स्वरूप (वि०) मृत्यु जैसा भयङ्कर, —हर शिव की उपाधि,—हरणम् समय की हानि, विलम्ब -श० ३, उत्तर० ५,—हानि (स्त्री०) विलम्ब—रघु० १३।१६।

कालकम् [काल+कन्] यकृत्, जिगर, -क: 1 भस्म, राख 2. पनीला सांप 3 आंख की पुतली काला भाग।

कालंजर: [काल अर्यति-काल + ऋ+णिच्+अच्] 1 एक पहाड़ तथा उसका समीपवर्ती प्रदेश (वर्तमान कलिंजर 2 बौद्धिक भिक्षुओं या साधुओं की सभा 3 शिव की उपाधि।

कालशेयम् [कलशि+ढक्] छाछ, मट्ठा (मन्थन के द्वारा जो कलशी में उत्पन्न होता है)।

काला [काल+अच्+टाप्] दुर्गा की उपाधि।

कालाप: [कालो मृत्यु आप्यते यस्मात्-काल + आप्+घञ्] 1 सिर के बाल 2 साप का फण 3 राक्षस, पिशाच, भूत 4 'कलाप' व्याकरण का विद्यार्थी 5 'कलाप' व्याकरण का वेत्ता।

कालापक: [कालाप+वुन्] 1 'कलाप' के विद्यार्थियों का समूह 2 कलाप की शिक्षा या उसके सिद्धान्त।

कालिक (वि०) (स्त्री०-की) [काल+ठक्] 1 काल संबंधी 2 कालाश्रित विशेष कालिकोऽवस्था अमर० 3 मौसम के अनुकूल, सामयिक,—क: 1 सारस 2 बगला, —का 1 कालागरु, काला रंग 2 मसी, स्याही, काली मसी 3 कई किस्तों में दिया जाने वाला मूल्य 4. निर्दिष्ट समय पर दिया जाने वाला सामयिक ब्याज 5 बादलों का समूह, घनघोर घटा जिसके बरसने का डर हो—कालिकेव निविडा बलाकिनी —रघु० ११।१५ 6 सोने में मिलाया जाने वाला खोट 7 यकृत्, जिगर 8 कौवा 9 बिच्छू 10 मदिरा 11 दुर्गा,—म् काले चन्दन की लकड़ी।

कालिङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [कलिङ्ग+अण्] कलिंग देश में उत्पन्न या उस देश का,—ग: कलिंग देश का राजा —प्रतिजग्राह कालिङ्गस्तमस्त्रैर्गजसाधन —रघु० ४।४० 2 कलिंग देश का सांप 3 हाथी 4 एक प्रकार की ककड़ी, —गा (ब० व०) कलिंग देश—दे० कलिंग, —गम् तरबूज।

कालिन्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [कलिन्द+अण्+कलिन्द पहाड़ या यमुना नदी से प्राप्त या संबद्ध—कालिन्द्या: पुलिनेषु केलिकुपितम्—वेणी० १।२, रघु० १५।२८

दा० ४।१३। सम०—कर्षकः,—ज्येष्ठः बलराम का विशेषण,—भूः (स्त्री०) भूमि की पत्नी संज्ञा,—सोदरः मृत्यु का देवता यम।

कालिमन् (पु०) [काल+इमनिच्] कालापन—अमर ८८ शि० ४, ५७।

कालिय [के जले आलीयते—क+आ+ली+क] अत्यन्त विशालकाय सर्प जो कि यमुना नदी की तली में रहता था। यह स्थान सौभरि ऋषि के शाप के कारण साँपों के शत्रु गरुड के लिए निषिद्ध था। कृष्ण ने जब कि अभी वह बालक ही था उस साँप को कुचल दिया रघु० ६।४९। सम० दमन—मर्दन कृष्ण के विशेषण।

काली [काल+ङीष्] 1 कालिमा 2 मसी, काली मसी 3 पार्वती की उपाधि, शिव की पत्नी 4 काले बादलों की पंक्ति 5. काले रंग की स्त्री 6 व्यास की माता सत्यवती 7 रात,—लक्षण भैंसा।

कालोक [के जले अलति पर्याप्नोति - क+अल्+इकन् पृषो० दीर्घ] एक प्रकार का बगला, कौञ्च पक्षी।

कालीन (वि०) [काल+ख] 1 किसी विशिष्ट समय से सम्बन्ध रखने वाला 2 ऋतु के अनुकूल।

कालीयम्, कम् [काल—छ, कन् वा] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

कालुष्यम् [कलुष+ष्यञ्] 1 मलिनता, गन्दगी, गन्दलापन, पंकिलता (आल० में भी)—कालुष्यमुपयाति बुद्धि—का० १०३, गन्दली या मलिन हो जाती है 2 मनोमालिन्य 3 असहमति।

कालेय (वि०) [कलि+ढक्] कलि-युग से सम्बन्ध रखने वाला, यम् 1 सिंगर 2 काली चन्दन की लकड़ी—कु० ७।९ 3 केसर, जाफरान

कालेयक (पु०) 1 कुंकुम 2 चन्दन नि०।

काल्पनिक (वि०) (स्त्री०—की) [कल्पना+ठक्] 1 केवल विचारों की, कल्पनाओं की, अवास्तविक—काल्पनिकी व्यवस्थिति—2 झूठा, अवास्तविक (किसी कला से)।

काल्य (वि०) [काल+यत्] 1 समय पर, ऋतु के अनुकूल, रुचिकर, सुहावना, शुभ, स्यः पौ फटना, प्रभातकाल होना।

काल्याणकम् [कल्याण+कन्] मांगल्य, शुभ।

कावचिक (वि०) (स्त्री० की) [कवच+ठक्] जिरह बख्तर सम्बन्धी कवचधारी,—कम् कवचधारी व्यक्तियों का समूह।

कावृक [कुत्सितो वृक इव, या ईषत् वृक इव, को कादेश] 1 मुर्गा 2 चक्रवाक पक्षी।

काश्मेरम् [कस्य सूर्यस्य इव, या ईषत् केरम् अङ्गं यस्य ज्योतिर्मयत्वात्] केसर, जाफरान।

काश्मेरी [क जलमेव केर शरीरमस्या—क+केर+अण्+ङीष्] दक्षिणभारत में बहने वाली एक नदी—काश्मेरी सरितां पत्युः शङ्खनीवामिवाकरोत्—रघु० ४।४५ 2. [कुत्सितं केरं शरीरमस्याः] वेश्या, रंडी।

काव्य (वि०) [कवि+यत्] 1 ऋषि या कवि के गुणों से युक्त 2 मन्त्रद्रष्टाविषयक या पैगम्बरी, प्रेरणा-प्राप्त, छन्दोबद्ध,—व्यः राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य,—व्या 1 प्रज्ञा 2 सती,—व्यम् 1. कविता, महाकाव्य,—मेघदूतं नाम काव्यम् 2 काव्य, कविता, कवितामयी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य की भिन्न भिन्न परिभाषाएँ दी हैं—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि—काव्य० १, वाक्यं रसात्मकं काव्यम्—सा० द० १, रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्—रस०, शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली—काव्या० १।१०, दे० चन्द्रा० १।७ भी 3 प्रसन्नता, कल्याण 4. बुद्धिमत्ता, अन्तः प्रेरणा। सम०—अर्थः कवितासम्बन्धी चिन्तन या विचार, °और दूसरे कवि के विचारों का चोर, काव्य चोर,—यदस्य दैत्या इव लुण्ठनाय काव्यार्थचौरा प्रगुणीभवन्ति—विक्रम० १।११,—चौर दूसरे व्यक्तियों की कविताओं को चुराने वाला,—चौरिक साहित्यशास्त्री, विवेचक,—रसिक (वि०) जो काव्य के सौन्दर्य को सराह सके या काव्यरस रखता हो,—लिङ्गम् एक अलंकार, इसकी परिभाषा—काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता—काव्य० १०, उदा०—जितोऽसि मन्द कन्दर्प यच्चिरं तेऽस्मि चिलोचने—चन्द्रा० ५।११९।

काश् (म्वा०, दिवा० आ०—काशते—शित—ते, कासित) 1 चमकना, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देना—रघु० १०।८६, ७।२४, कु० १।२८, भट्टि० २।२५, शि० ६।७४ 2 प्रकट होना दिखाई देना, नैवभूमिर्न च दिशः प्रदिशो वा चकासिरे महा० 3 प्रकट होना, की भाँति दिखाई देना, निस्—, (प्रेर०) 1 निकाल देना, निर्वासित करना, ठेल देना, अलगावलंन करना—दे० निस् पूर्वक कस्—खोलना 2 प्रकाशित करना 3. दृष्टि के सामने प्रस्तुत करना, प्र—, चमकना, उज्ज्वल दिखाई देना 2. दिखाई देना, प्रकट होना एषु सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते—कठ० 3 की भाँति दिखाई देना या प्रकट होना (प्रेर०) 1 दिखाना, प्रदर्शित करना, आविष्कार करना, उद्घाटित करना, व्यक्त करना—अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्—का० १, सा० का० ५९ 2 प्रकाश में लाना, प्रकाशित करना, उद्घोषणा करना—कदाचित्कुपितः सिंह सर्वदोषं प्रकाशयेत्—पञ्च० २० 3. मुद्रित करवाना, प्रकाशित करना (पुस्तक आदि)—प्रणीतः न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४ 4 रोशनी करना, (दीपक) जलाना—यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोक-

विभं रवेः—भग० ११।३३, ५।१६, वलि—, 1 की तरह प्रकट होना 2 विरोध या विषमतास्वरूप चमकना, वि—, 1. खिलना, खुलना (फूल की भांति) 2. चमकना,—सम्—, की भांति दिखाई देना।

काश,—शम् [काश्+अच्] छत में या चटाइयों के बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का घास —ऋतु० ३।१ २,—शम् 'कशा नामक घास का फूल—कु० ७।११, रघु० ४।१७, ऋतु० ३।२८,—श =कास।

काशि (पु० ब० व०) [काश्+इक्] एक देश का नाम।

काशि,—शी (स्त्री०) [काश्+इन्, काश्+अच्+ङीष्] गंगा के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध नगरी, वर्तमान वाराणसी, सात पावन नदियों में से एक—दे० काशी। सम०—प शिव की उपाधि,- राज एक राजा का नाम, अंबा, अंबिका और अंबालिका के पिता।

काशिन् (वि०) (स्त्री० -नी) (प्रायः समास के अन्त में) [काश्+इन्, स्त्रियां ङीप्] दीप्यमान, किसी का रूप धारण किये हुए दिखाई देने वाला या प्रकट होने वाला, उदा० जितकाशिन्— जो काशि के विजेता की भांति व्यवहार करता है—दे०।

काशी—दे० काशि। सम०—नाथ शिव की उपाधि, —यात्रा वाराणसी की तीर्थयात्रा।

काश्मरी [काश्+मनिप्, र, ङीप्, पृषो० मलोपम्] एक पौधा जिसे लोग बहुधा माधारी के नाम से पुकारते हैं,—काश्मर्या कृतमालमुद्गतदलं को यष्टिकण्टीकते —मा० ९।७।

काश्मीर (वि०) (स्त्री—री) [कश्मीर+अण्] काश्मीर में उत्पन्न, काश्मीर का या काश्मीर से आने वाला, —रा (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम—दे० कश्मीर भी, —रम् 1 केसर, जाफरान —काश्मीरगन्धपृषतानभिकृताङ्गरागाम् घौर० ८, भर्तृ० १, ४८, काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणाम् —गीत० ११, १ भी 2 वृक्ष की जड़। सम०—जम्, —जन्मन् (नपुं०) केसर, जाफरान—भामि० १।७१, शि० ११।५३।

काश्यम् [कुत्सितम् अश्यं यस्मात् ब० स०] मदिरा। सम०—पम् मांस।

काश्यपः [कश्यप+अण्] 1 एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2 कंगारू। सम०—नन्दन 1 गरुड की उपाधि 2 अरुण का नाम।

काश्यपिः [कश्यप्+इञ्] गरुड और अरुण का विशेषण।

काश्यपी [काश्यप+ङीष्] पृथ्वी, तानपि दर्शयामि सात काश्यपि यातस्तवापि च विवेक —भामि० १।९८।

काष [कष्+घञ्] 1 रगड़ना, खुरचना—पंथिषु विटपिनां स्कन्धकाषैः स धूम —रघु० २।१८ 2 जिससे कोई वस्तु रगड़ी जाय (जैसे कि वृक्ष का तना) —लीलालि मुरकरिका कपोलकाष —कि० ५।२६, दे० 'कपोलकाष'।

काषाय (वि०) (स्त्री०—यी) [कषाय+अण्] लाल, गेरुए रंग में रंगा हुआ—काषायवसनाबद्धा—अमर०, —यम् लाल कपड़ा या वस्त्र—इमे काषायमे गृहीते मालवि० ५, रघु० १५।७७।

काष्ठम् [काश्+क्थन्] 1 लकड़ी का टुकड़ा, विशेषकर ईंधन की लकड़ी मनु० ४।४९, २४१, ५।६० 2 लकड़ी, शहतीर लकड़ी का लट्ठा या टुकड़ा—यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयाता महोदधौ— हि० ४।६९ मनु० ४।४० 3 लकड़ी याज्ञ० २।२१८ 4 लम्बाई मापने का उपकरण। सम०—अगार- अगारम् लकड़ी का घर या घेरा,—अम्बुवाहिनी—लकड़ी का डोल, —कहली अंगूली केला,—कीट घुण, एक छोटा कीड़ा जो सूखी लकड़ी में पाया जाता है,- कूट, कूट खुटबढ़ई, कटफोड़वा—पद्म० १।३३२, (जंगल में पाया जाने वाला जन्तु),— कुद्दाल लकड़ी की बनी एक कुदाल जो किस्ती में से पानी उलीचने या उसकी तली को खुरचने और साफ करने के काम आती है,- तक्षक बढ़ई, - तन्तु शहतीर में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा,—दारु शिंशपा या देवदारु का वृक्ष,—द्रु पलाश (ढाक) का वृक्ष, —पुत्तलिका कठपुतली, काठ की बनी प्रतिमा, —भारिक लकड़हारा,—यष्टी (स्त्री०) चिता, मल्ल अर्थी, लकड़ी का चौपटा जिस पर मुर्दे को रख कर ले जाते हैं, लेखक लकड़ी में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा, काष्ठकूट,—लोहित् (पु०) लोहा जड़ा हुआ सोटा, —वाट,- वम् लकड़ी की बनी दीवार।

काष्ठकम् [काष्ठ+कन्] अगर की लकड़ी।

काष्ठा [काश+क्थन्+टाप्] 1 संसार का कोई भाग या प्रदेश दिशा, प्रदेश—कि० ३।५५ 2 सीमा, हद स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसः—कु० ५।२८ 3 अन्तिम सीमा, चरम सीमा, आधिक्य --काष्ठागतस्नेहरसानुविद्धम्- कु० ३।३५ 4 युद्धक्षेत्र का मैदान, मैदान 5 चिह्न, निर्दिष्ट चिह्न 6 अन्तरिक्ष में बादल और वायु का मार्ग 7 काल की माप= $\frac{1}{30}$ कला।

काष्ठिकः [काष्ठ+ठन्] लकड़हारा।

काष्ठिका [काष्ठिक+टाप्] लकड़ी का छोटा टुकड़ा।

काष्ठीला (स्त्री०) [कुत्सितः ईषत् वा अष्ठीलेव, को कादेशः] केले का पेड़।

कास् (भ्वा० आ०—कासते, कासित) 1 चमकना, दे० काश् 2 खांसना, किसी रोग को प्रकट करने वाली आवाज करना।

कास,-सा [कास्+घञ्,] 1 खांसी, जुकाम 2 छींक आना, समः -कुच्छ (वि०) खांसी से पीड़ित,-घ्न, हृत् (वि०) खांसी दूर करने वाला, कफ निकालने वाला।

कासर (स्त्री०—री) [के जले आसरति—क+आ+सृ +अच्] भैंसा।

कासार,-रक [कास्+आरन्, कस्य जलस्य आसारो यत्र ब० स०] जोहड़, तालाब, सरोवर - भामि० १।४३, भर्तृ० १।३२, गीत० २।

कासू (ऊ) (स्त्री०) [कास्+ऊ] 1 एक प्रकार का भाला 2 अस्पष्ट भाषण 3 प्रकाश, प्रभा 4 रोग 5 भक्ति।

कास्ति. (स्त्री०) [कुत्सिता सर्गणि को कादेश] पगडंडी, गुप्त मार्ग।

काहल (वि०) [कुत्सितं हलं वाद्यं यत्र ब० स०] 1 शुष्क, मुर्झाया हुआ 2 खरखरी 3. अत्यधिक, प्रशस्त विशाल,- लः 1 बिल्ला 2 मुर्गा 3 कौवा 4 सामान्य ध्वनि,-लम् अस्पष्ट भाषण,-ला बड़ा ढोल (सैनिक), -ली (स्त्री०) तरुण स्त्री

किंवत् (वि०) [किम्+मतुप्, मस्य व] निर्धन, तुच्छ, नगण्य।

किंशारु. [किम्] शृ+आरुण्] 1 अनाज की बाल का अग्रभाग, बाल का सूत, सस्यशूक 2 बगला, 3 तीर।

किंशुक [किंचित् शुकं शुकावयवविशेष इव—] ढाक का पेड़ जिसके फूल बड़े सुन्दर परन्तु निर्गन्ध होते हैं (विद्यालोना न शोभन्ते निर्गंधा इव किंशुका —बाण० ७, ऋतु० ६।२०, रघु० ९।३१,—कम् ढाक का फूल, टेसू,-किं किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न दृश्यम्- ऋतु० ६।२१।

किंशुलक [किंशुक नि० साधु] ढाक का वृक्ष, दे० किंशुक।

किंकिरु [कंक् +इन् पृषो० इत्वम्] 1 तारियल का पेड़ 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 चातक, पपीहा (इस पक्षी का किंकिन्, किंकिदिवि, और किंकीदिवि भी कहते हैं)।

किंकिणी, किंकिणिका, किंकिणी, किंकणीका [किंचित् कणति कण्+इन्+ङीप्, पृषो० साधु —किंकिणी+ कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] घुंघरुदार आभूषण, करधनी —रवणत्कनककिंकिणी शतसनाथितमन्दलै उत्तर० ५।५, ६।१, शि० ९।७४, कु० ७।४९।

किंकिर [किम्+कृ+क] 1 घोड़ा 2 कोयल 3. मधुमक्खी, 4. कामदेव 5. लाल रंग,—रम् गजकुंभ, -रा रुधिर।

किंकिरात [किंकिर+अत्+अण्] 1 तोता 2 कोयल, 3 कामदेव 4 अशोक वृक्ष।

किंकिल्क, —किंकिल्लक [किंचित् जलं यत्र ब० स०, किंचित् जलम् अपवारयति—किम्+जल+क] कमल का फूल या फूल या कोई दूसरा पौधा—आकर्षद्भिः पयःकिंजल्कशीतान्—उत्तर० ३।२, रघु० १५।५२।

किंटि [किट्+इन्+किच्च] सूअर।

किंटिभ [किंटि+भा+क] 1. जू, लीख 2 खटमल।

किंडुल्, किंडुलक [किंड्+बल, स्वार्थे कन् च] जोंक या कीट, विष्ठा, गोबर, मैल—अम्म°।

किंदाल [किंड्+आल्+अच्] 1 ताबे का पात्र 2. लोहे का जग या मूर्चा।

किण [कण्+अच् पृषो० इत्वम्] 1 अनाज, गट्ठा, चकत्ता, घाव का चिह्न,-आस्यति कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति—वेणी० १।१३, मृच्छ० २।११, रघु० १६। ८४, १८।४७, गीत० १ 2 चर्मकील, तिल या मस्सा 3 व्रण।

किण्व [कण्+क्वन्, इत्वम्] पाप —वः,—वम् मदिरा के निर्माण में खमीर उठाने वाला बीज, या औषधि -मनु० ८।३२६।

कित् (भ्वा० पर०—केतति) 1 चाहना 2. रक्षना 3 (चिकित्सति) स्वस्थ करना, चिकित्सा करना।

कितव (स्त्री० वी) [कि+क्त=किंत+वा+क] 1 धूर्त, ठग, कपटी—अहंहि किल कितव उपदृष्टम् —मालवि० ४, अमरु १७, ४१, मेघ० १११ 2. धतूरे का पौधा 3 एक प्रकार का मत्स्यद्रव्य।

किन्विन् (पु०) [किं कुत्सितो वीर्यवृद्धिरस्य—किंवी +इनि] बोका।

किमर=दे० 'किम्' के नीचे।

किम् (अव्य०) [कु+डिमु वा०] 'बुराई', 'ह्रास' 'दोष' 'कलंक' और निन्दा के भाव को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के आदि में केवल 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है- उदा०—किसखा बुरा मित्र, किंसर —बुरा या विकृत पुरुष आदि, नीचे के समस्त पदों को देखो। सम०—दास बुरा गुलाम या नौकर, —नर बुरा या विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का—अथो दाहरण बाह्वोर्यमास किंनरान्—रघु० ४।७८—कु० १।८, °ईश ईश्वर कुबेर का विशेषण (स्त्री०—री) 1 किंनरी—मेघ० ५६ 2 एक प्रकार की वीणा, —पुरुष घृणा के योग्य नीच पुरुष, किंनर—कु० १। १४, °ईश्वर कुबेर का विशेषण,—प्रभु बुरा स्वामी या राजा—हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः,—कि० १।५, —राज् (वि०) बुरे राजा वाला, (पु०) बुरा राजा, —वृत्ति (पु०) (ष० त०,—किंसखा) बुरा

किम्,—स किमजा साधु न शास्ति योऽधिपम्—कि० १।५।

किम् [सर्व० वि०] (कर्तृ० ए० व०, पु०—कः) [स्त्री० —का] [नपु०—किम्] 1 कौन, क्या, कौनसा (प्रश्नवाचक के रूप में)—प्रजासु कः केन पथा प्रयातीत्यभवेतां वेदितुमस्ति शक्ति—शि० ६।२६, करुणाविलुलेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम्—रघु० ८।६७, का खल्वनेन प्राप्यमालात्मना विकत्थते—विक्रम० २, क कौञ्च भो', सर्वनाम के रूप में यह शब्द कभी कभी 'कार्य करने की शक्ति या अधिकार' को बताने के लिए प्रयुक्त होता है—उदा० के आधो परित्रातु बुध्यन्तामाकन्द—शि० १, 'हम कौन है ?' अर्थात् 'हममें क्या शक्ति है ?' आदि 2 नपु० (किम्) संज्ञा शब्दों के करण० के साथ प्रयुक्त होकर बहुधा अर्थ होता है, क्या लाभ है ?—किं स्वामिश्रेष्टानकथनेन—हि० १, 'लोभश्चेदगुणेन किम्' आदि भर्तृ० २।५५, 'किं तया दृष्टया' शि० ३, किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७, प्रायः 'अनिश्चय' अर्थ को प्रकट करने के लिए, 'किम्' के साथ 'अपि' 'चित्' 'चन' 'चिदपि' या 'श्चित्' जोड़ दिया जाता है—विदेश कश्चिज्जटिलस्तपोधनम्—कु० ५।३० कोई तपस्वी', कापि तत्र एवागतवती—मा० १, कोई स्त्री, कस्यापि कोऽपीति निवेदिते च—१।३३, किमपि किमपि जल्पतोरक्रमेण—उ १।२७, कस्मिंश्चिदपि महाभागधेयजन्मनि मन्मथविकारमुपलक्षितवानस्मि—मा० १, किमपि, किंचित् 'थोड़ा सा' 'कुछ'—याज्ञ० २।११६, उत्तर० ६।३५, 'किमपि' का अर्थ 'अवर्णनीय' भी है, दे० अपि, 'सम्भावना' के अर्थ को बतलाने के लिए कभी कभी 'किम्' के साथ 'इव' भी जोड़ दिया जाता है (अधिकतर काल के साथ बल और सौंदर्य को जोड़ने वाला) —किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—शा० १।२०, 'इव' को भी दे०, (अव्य०) 1 प्रश्नवाचक निपात,—जातिमात्रेण किं कश्चिदत्यन्ते पूज्यते क्वचित्—हि० १।५८, 'मारा जाता है या पूजा जाता है' आदि, तत किम्—तो फिर क्या 2 'क्यों' 'किसलिए' अर्थ को प्रकट करने वाला अव्यय—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते—कु० ४।७ 3 क्या, प्रश्नवाचक या ('या' की भावना को प्रकट करने वाले' सहसम्बंधी शब्द—किम्, उत, उताहो, आहोस्वित्, वा, किंवा, अथवा, इन शब्दों को देखो)। सम०—अपि (अव्य०) 1 कुछ अंश तक, कुछ, बहुत अंशों तक 2. वर्णनातीत रूप से, अवर्णनीय रूप से (गुण, परिमाण व प्रकृति आदि) 3. अत्यधिक, कहीं अधिक,—किमपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३, किमपि प्रीयमाण किमपि करालम्—आदि,—अर्थ (वि०) किस उद्देश्य या प्रयोजन वाला - किमर्थोऽयं यत्न,—अर्थम् (अव्य०) क्यों, किसलिए,—आख्य (वि०) किस नाम वाला —किमाख्यस्य राज्ञः सा पत्नी, —श० ७,—इति (अव्य०) क्यों निस्सन्देह, किस लिए निश्चयार्थ, किस प्रयोजन के लिए (प्रश्न पर बल देने वाला), तत्किमित्यवासते भरता—मा० १, किमित्यगस्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।७४, —उ, —उत 1 क्या, या (सन्देह या अनिश्चय को प्रकट करने वाला), —किमु विषविसर्पं किमु मदं —उत्तर० १।३५, अमरु ९ 2 क्यों (निस्सदेह), प्रियसुहृत्सार्थं किमु त्यज्यते 3 और कितना अधिक, कितना कम,—यौवनं धनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकिता, एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्। हि० प्र० ११, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः—का० १०३, रघु० १४।६५, कु० ७।६५ —कर नौकर, सेवक, दास - अयेहि मां किङ्करमष्टमूर्ते—रघु० २।३५, (री) सेविका, नौकरानी (ती) सेवक की स्त्री,—कर्तव्यता —कर्तव्यता वह अवस्था जब कि मनुष्य अपने मन में सोचता है कि अब क्या करना चाहिए, -किंकर्तव्यतामूढ (यह समझने में असमर्थ या घबराया हुआ कि अब क्या करना चाहिए), —कारम (वि०) क्या कारण या क्या तर्क रखने वाला, किल (अव्य०) कैसी दयनीय अवस्था (असन्तोष या दुःख को अभिव्यक्त करने वाला—पा० ३।३।१५१), न सम्भावयामि न मर्षयामि तत्रभवान् किं किल बलात् यात्रयिष्यति—सिद्धा०,—ज्ञ (वि०) जो कहता है कि 'एक मिनट का है ही क्या', एक आलसी पुरुष जो क्षणों की परवाह नहीं करता है —हि० २।९१,—गोत्र (वि०) किस परिवार से सम्बन्ध रखने वाला,—च (अव्य०) इसके अतिरिक्त और फिर, आगे,—चन (अव्य०) कुछ दर्जे तक, थोड़ा सा,—चित् (अव्य०) कुछ दर्जे तक, कुछ, थोड़ा सा —किंचिदुत्कान्तशोचौ—रघु० १५।३३, २।४९, १२।२१, °ज्ञ (वि०) थोड़ा सा जानने वाला, पल्लवग्राही, °कर (वि०) कुछ करने वाला, उपयोगी, —°काल · कुछ समय, थोड़ा सा समय °प्राणः थोड़ा सा जीवन रखने वाला, °वाच (वि०) —थोड़ा सा, —°श्रुत् (वि०) किस वेद से अभिज्ञ,—तर्हि (अव्य०) तो फिर क्या, परन्तु, तथापि, —तु (अव्य०) परन्तु, तो भी, तथापि, इतना होते हुए भी—अर्थमि चैनामनर्थेति किन्तु लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, १।६५,—दैवत (वि०) किस देवता से सम्बद्ध,—नामधेय,—नामन् (वि०) किस नाम वाला,

—विधिज्ञ (वि०) किस कारण या हेतु को रखने वाला, किस प्रयोजन वाला,—विधित्सम् (अव्य०) क्यों, किस लिए,—नु (अव्य०) 1 क्या—किंनु मे मरणं श्रेयो परित्यागो जनस्य वा —रत्न० १०।१० 2 और भी अधिक, और भी कम—अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतो किन्नु महीकृते—भग० १।३५ 3 क्या, निस्सन्देह—किन्नु मे राज्येनार्थं,—नु खलु (अव्य०) 1 किस प्रकार से, सम्भवतः, कैसे है कि, क्या निस्सन्देह, क्यों, सचमुच—किन्नु खलु गोतार्थमाकर्ण्य इष्टजनविरहादुतेऽपि बलवदुत्कण्ठितोऽस्मि—श० ५ 2. ऐसा न हो कि—किन्नु खलु यथा वयमस्यामेवंविधमप्यस्मान् प्रति स्यात्—श० १,—पण,—वाक्य (वि०) कंजूस, कृपण,—वराकक (वि०) किस शक्ति या स्फूर्ति से युक्त,—सुमर् (अव्य०) कितना और अधिक या कितना और कम—स्वयं रोपितेषु तरुषूत्पन्नेऽपि स्नेहः किं पुनरङ्गसंभवेष्वपत्येषु—का० २९१, मेघ० ३, १७, विक्रम ३,—प्रकारम् (अव्य०) किस प्रकार से, —प्रभाव (वि०) किस शक्ति से सम्पन्न, —भूत (वि०) किस प्रकार का या किस स्वभाव का, —रूप (वि०) किस शक्ल का, किस रूप का, —वदन्ति, —ती (स्त्री०) अफवाह—मत्सम्बन्धात् कथमसा किंवदन्ती—उत्तर० १।४२, उत्तर० १।४, —वराटक अभिलक्षयसी, खर्चीला, —वा (अव्य०) 1 प्रश्नवाचक अव्यय—किं वा शकुन्तलेयस्य मानुरास्था श० ७ 2 या (किम्—(क्या) का सहसम्बन्धी) —राजपुत्रि सुप्ता किं वा जागर्षि—पञ्च० १, तत्किं मारयामि किं वा विष प्रयच्छामि किं वा पञ्चधर्मेण व्यायादयामि—त०, भृङ्गार० ७,—विद (वि०) क्या जानने वाला,—व्यापार (वि०) किस कार्य को करने वाला,—शील (वि०) किस आदत का,—स्वित् (अव्य०) क्या, किस तरह—अद्रे भृङ्ग हरति पवन किंस्विदित्युन्मुखीभि—मेघ० १४।

किंयत् (वि०) [किं परिमाणमस्य किम्+वतुप्, यत्, किम् के आदेश] (कर्तृ०, ए० व०, पु०—कियान्, स्त्री०—कियती, नपुं० कियत्) 1 कितना बड़ा, कितनी दूर, कितना, कितने, कितने विस्तार का, किन गुणों का (प्रश्नवाचकता का बल रखने वाला)—किंयाकालस्तवेवस्थितस्य सखात—पञ्च० ५, मेघ० १।१३०, मय भूताधारो विभुरिह कियत्यीति न दशाम्—गा० १।२५, आस्यति कियद्भुजो मे रक्षति—गा० १।१३, कियदवशिष्ट रजन्या—श० ४ 2, किस गिनती का अर्थात् किसी अर्थ का नहीं, निकम्मा—राजेति कियती माया—पञ्च० १।४०, मात्र कियन्तोऽरय, वेणी० ५।९ 3 कुछ, थोड़ा सा, थोड़ी संख्या, कम (अनिश्चित बल रखने वाला)—निजधृति विकसन्त सन्ति सन्तः कियन्तः—भर्तृ० २।७८, स्वदविग्धरजनसेन बलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती—गीत० ६। सम०—दृष्टिका प्रयास, शक्तिशालीन धैर्ययुक्त चेष्टा,—काल (अव्य०) 1 कितनी देर 2. कुछ थोड़ा समय,—चिरम् (अव्य०) कितनी देर तक—किंचिच्चिर आम्यति गौरि—कु० ५।५०,—दूरम् (अव्य०) 1. कितनी दूर, कितनी दूरी पर, कितने फासले पर —किंयद्दूरे स जलाशय—पञ्च० १, मै० १।१३७ 2 थोड़ी देर के लिए जरा सी दूर।

किर [कृ+क] सूअर।

किरक: [कृ+क्वुन्] 1. लिपिक 2 [किर+कन्] सूअर

किरण [कृ+ल्युट्] 1 प्रकाश की किरण, सूर्य, चन्द्रमा या किसी दीप्यमान ज्योति की) किरण—रविकिरणसहिष्णु—श० २।४, एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः —कु० १।३, भा० ४।६, रघु० ५।७४, शि० ४।५८, मय 1. चमकदार, उज्ज्वल 2 रजकण। सम०,—मालिन् (पु) सूर्य।

किरातः [किर पर्यन्तभूमिम् अतति गच्छतीति किरात] एक पतित पहाड़ी जाति जो शिकार करके अपनी जीविका चलाती है, पहाड़ी,—वैयाकणकिरातावपश्यन्मृगया कव यान्तु सफलाः, यदि नटगणकचिकित्सकवैतालिकबन्दकन्दरा न स्युः 1 सुभा०, कु० १।६, १५, रत्न० २।३ 2 बहेलिया, जंगली 3 बौना 4. साईस, अश्वपाल 5 किरातवेशधारी शिव,—ता (ब० व०) एक देश का नाम,—सम०—अधिप (पु०) गरुड़ की उपाधि।

किराती [किरात+ङीष्] 1 किरात जाति की स्त्री, 2 चवर डुलाने वाली स्त्री—रघु० १६।५७ 3 कुट्टिनी, दूती 4 किरात के वेश में पार्वती 5 स्वर्गंगा।

किरि [कृ+इ] 1 सूअर, वराह 2 बादल।

किरीट,-टक [कृ+कीटन्] मुकुट, ताज, चूड़ा, शिरोवेष्टन—किरीटवद्धाञ्जलय—कु० ७।९२ 2 व्यापारी। सम०—धारिन् (पु०) राजा। —धारिन् (पु०) अर्जुन का विशेषण।

किरीटिन् (वि०) [किरीट+इनि] ताज या मुकुट पहनने वाला,—भग० ११।१७, ४६, पञ्च० ३,—(पु०) अर्जुन—भग० ११।३५, (यहां० में इस नामकरण की व्याख्या इस प्रकार है—पुरा शक्रेण मे बद्ध युध्यतो दानवर्षभैः, किरीटं मूर्ध्नि सूर्याभं तेनाहुर्मां किरीटिनम्।

किर्मीर (वि०) [कृ+ईरन्, मुट्] चितकबरा, चितोदार,—र 1. एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था—वेणी० ६ 2 हलका या बादामी रंग। सम०—जित्,—निषूदन,—सूदन भीम के विशेषण।

किलकः [किल्+क] क्रीडा, तुच्छ, खेलखेल में हो जाने वाला। सम०—किञ्चितम्, प्रेमी-मिलन के अवसर पर शृंगारी उत्तेजन, रुदन, हास, रोष आदि भाव।

किल (अव्य०) [किल्+क] निश्चय ही, बेशक, निस्सन्देह, अवश्य—अर्हति किल कितव उपप्लवम् —मालवि० ४, इद किलाव्याजमनोहर वपु: श० १।१८ 2 जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (विवरण या परम्परा दर्शाने वाला) —बभूव योगी किल कार्तवीर्य —रघु० ६।३८, अथान कस किल वासुदेव —महा० 3 झूठमूठ का कार्य, प्रसन्न सिंह किल तो चकर्ष रघु० २।२७, कि० ११।२ 4 आशा, प्रत्याशा, सम्भावना पार्थ. किल विजेष्यते कुरून् —गण० 5 असन्तोष, अरुचि,—एव किल केचिद्वदन्ति —गण० 6 घृणा—स्व किल यं न्यसे—गण० 7 कारण, हेतु—(अत्यन्त विरल)—स किलैतदमुक्तवान् —गण० 'क्योंकि उसने ऐसा कहा'।

किलकिल, ला [किल्+क, प्रकारे द्वीप्सायां वा द्वित्वम्, पक्षे टाप्] किलकारी, हर्ष और प्रसन्नतासूचक चीख।

किलकिलायते (ना० धा० आ०) किलकारी मारना, कोलाहल करना—भट्टि० ७।१०२।

किलिञ्जम् [किलि+जन्+ड] 1 चटाई 2 हरी लकड़ी का पतला तख्ता, फलक।

किलिम् (पु०) [किल्+क्विप्, किल्+क्विन्] घोड़ा।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, डुक्] 1 पाप, मनु० ४।२४३, १०।११८, भग० ३।१३, ९।४५ 2 त्रुटि, अपराध, क्षति, दोष—मनु० ८।२३५ 3 रोग, बीमारी।

किसलयः, -लयम् [किंचिद् शलति—किम्+शल्+कयन् वा०, पृषो० साधु] पल्लव, कोपल, अकुर, अखुआ —दे० 'किसलय'।

किशोरः [किम्+शु+ओरन्] 1 बछेरा, वन्य पशु-शावक, किसी जानवर का बच्चा—केसरिकिशोर —आ० 2 तरुण, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) 3 सूर्य—री एक नवयुवती, तरुणी।

किष्किन्धः, -न्धम् [कि कि दधाति—कि+कि+धा+क, पूर्वस्य किमो मलोप, सुट् च दीर्घम्,—किष्किन्ध+यत्] एक देश का नाम 2 उस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम—,वा,—न्धा एक नगरी, किष्किन्धा की राजधानी।

किसु (वि०) [कै+कु नि० साधु] दुष्ट, निन्द्य, बुरा, —सुः (पु० स्त्री०) 1 कोहनी से नीचे भुजा 2 एक हस्त परिमाण, हाथ भर की लम्बाई, एक बालिश्त।

किञ्चन, —कम्, } [किञ्चित् करोति—किम्+शब्+क
किञ्चनक, —कम्, } (कप्) वा०, पृषो० साधु] पल्लव, कोमल अकुर या कोंपल—अधर किसलयराग, श० १।२१, किसलयमलून कररुहै —२।१०, किसलये सलयैरिव पादपै: —रघु० ९।३५।

कीकट (वि०) (स्त्री०—टी) [की शब्दं द्रुत वा कटति गच्छति—की+कट्+अच्] 1 गरीब, दरिद्र 2 कञ्जूस,—ट: घोड़ा,—टा (ब० व०) एक देश का (बिहार) नाम।

कीकस (वि०) [की दुःखित यथा स्यात्तथा कसति—की +कस्+अच्] कठोर, दृढ़, सम् हड्डी।

कीचक [चीकयति शब्दायते—चीक्+वुन्, आदन्तोपधलोप] 1 खोखला बांस 2 हवा में खड़खड़ाते या साँय साँय करते हुए बांस—शब्दायन्ते मधुरमनिलै: कीचका पूर्यमाणा —मेघ० ५६, रघु० २।२२, ४।७३, कु० १।८ 3 एक जाति का नाम 4 विराट राजा का सेनापति (जब द्रौपदी, सैरिन्ध्री के वेश में, भेस बदले हुए अपने पाँचों पतियों के साथ राजा विराट के दरबार में रह रही थी, उस समय एक बार कीचक ने उसे देखा, द्रौपदी के सौन्दर्य से उसके हृदय में कामाग्नि प्रज्वलित हुई, तब से लेकर उसकी पाप दृष्टि द्रौपदी पर लगी रही और उसने अपनी बहन (राजा विराट की पत्नी) की सहायता से उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की। द्रौपदी ने अपने प्रति उसके अशिष्ट व्यवहार की शिकायत राजा से की, परन्तु जब राजा ने हस्तक्षेप करने में आनाकानी की तो उसने भीम से सहायता मांगी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीचक के प्रस्ताव के प्रति अनुकूलता दर्शाई। तब यह निश्चय किया गया कि वे दोनों आधी रात के समय महल के नाच घर में मिलें, फलत कीचक वहाँ गया और उसने द्रौपदी का आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया, परन्तु अन्धेरा होने के कारण वह दुष्ट द्रौपदी के बजाय भीम के भुजपाश में फंस गया और उसके बलवान् हाथों से वह बड़ी कुचला जाकर मौत का शिकार हुआ)। सम०—जित् (पु०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण।

कीटः [कीट्+अच्] 1 कीड़ा, कृमि—कीटोऽपि सुमन —सङ्गादारोहति सता शिर हि० प्र० ४५ 2 तिरस्कार व घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द (बहुधा समास के अन्त में) द्विपकीट —अधम हाथी, इसी प्रकार पक्षिकीट आदि। सम०—ज: —मणि:, —मणक, —जम् रेशम,—जा लाख,—भक्षि: जुगनू।

कीटक: [कीट+कन्] 1 कीड़ा 2 मगध जाति का जाट।

कीदृश (स्त्री० शी) } [किम्+दृश्+क्विन्,
कीदृश, कीदृक्ष (स्त्री—क्षी) } कञ् वा, किम् की आदेश] किस प्रकार का, किस स्वभाव का,—तद्भो कीदृशी विवेकविप्लव. कीदृक् प्रबोधोदय —प्रबो० १, मै० १।१३७।

कीनाश (वि०) [किलम् कन्, ईं उपधाया इत्वम्, लम्ब लोपः नामागमश्च] 1 भूमिधर 2 गरीब, दरिद्र 3 कृपण 4 लघु, तुच्छ,—शः मृत्यु के देवता यम की उपाधि 2 एक प्रकार का बन्दर।

कीर [की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति-की+ईर+अच्] 1 तोता—एवं कीरवरे मनोरथमयं पोतमारुह्य दर्शति—मालवि० १।५८, —रा (ब० व०) काश्मीर देश तथा उसके निवासी,—रम् धान। सम०—द्रुमः आम का वृक्ष (इसे तोते बहुत पसन्द करते हैं)। —वर्धकम् सुगन्धी का शिरोमणि।

कीर्ण (वि०) [कृ+क्त] 1 छितराया हुआ, फैलाया हुआ, फेंका हुआ, बखेरा हुआ 2 ढका हुआ, भरा हुआ 3 रक्खा हुआ, धरा हुआ 4 क्षत, चोट पहुंचाया गया—दे० कृ।

कीर्णि (स्त्री०) [कृ+क्विन्] 1 बखेरना 2 ढकना, छिपाना, गुप्त कर देना 3 घायल करना।

कीर्तनम् [कृत्+ल्युट्] 1 कथन, वर्णन 2 मन्दिर,—ना 1 कीर्तिवर्णन 2 सस्वर पाठ 3 यश, कीर्ति।

कीर्तय्—कृत्।

कीर्ति (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1 यश, प्रसिद्धि, कीर्ति इह कीर्तिमवाप्नोति—मनु० २।९, यशस्य कर्तारमनन्तकीर्तिम् —रघु० २।६४, मेघ० ४५ 2 अनुग्रह, अनुमोदन 3 मेल, कीचड़ 4 विस्तृति, विस्तार 5 प्रकाश, प्रभा 6 ध्वनि। सम०—मत् (वि०) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध (पुं०) द्रोण का विशेषण जो कि कौरवों और पाण्डवों का सैन्य-शिक्षाचार्य था, शेष केवल यश के रूप में जीवित रहना, यश के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ना अर्थात् मृत्यु—तु० नामशेष, आलेख्यशेष।

कीर्त्(स्वा० पर०) 1 बांधना 2 नत्थी करना 3 कील गाड़ना।

कीलः [कील्+घञ्] 1 कन्नी, खूंटी—कीलोत्पाटीव वानरः—पञ्च० १।२१ 2 भाला 3 बल्ली, सभा 4 हथियार, 5 कोहनी 6 कोहनी का प्रहार 7 ज्वाला 8 परमाणु 9 शिव का नाम।

कीलक [कील+कन्] 1 कन्नी या खूंटी 2 खंभा, स्तम्भ —दे० कील।

कीलालः [कील+अल्+अच्] 1 अमृतोपम स्वर्गीय पेय, देवताओं का पेय 2 मधु 3 ईख,—लम् 1 रुधिर 2 जल। सम०—धिः समुद्र,—पः पिशाच, भूत।

कीलिका [कील+कन्+टाप्, इत्वम्] खूंटे की कील।

कीलित (वि०) [कील्+क्त 1 बंधा हुआ, जड़ 2 स्थिर कील से गड़ा हुआ, कील ठोक कर जड़ा हुआ—तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम् —गीत० ७, या नट्यदेतस्मिं कीलितेव—मा० ५।१०।

कीश (वि०) [क+ईश्+क] नंगा,—शः 1. लंगूर, बन्दर 2. सूअर 3 पक्षी।

कु (स्त्री०) [कु+डु] 1 पृथ्वी 2 त्रिभुज या चतुर्भुज की आकृति की आधार-रेखा, सम०—पुत्रः मंगलग्रह।

कु (अव्य०) 'खराबी', ह्रास, अवमूल्यन, पाप, भर्त्सना, ओछापन, अभाव, त्रुटि आदि भावों को संकेत करने वाला उपसर्ग, इसके स्थानापन्न अनेक हैं, उदा० कद् (कदन्न), कव (कवोष्ण), का (कोष्ण), कि (किम्प्रभु)—पञ्च० ५।१७। सम०—कर्मन् (नपु०) बुरा कार्य, नीच कर्म,—ग्रहः अमंगल-ग्रह,—ग्रामः छोटा गांव या पुरवा (जहां राजा का अधिकारी, अग्निहोत्री, डाक्टर या नदी न हो),—वेश (वि०) फटे पुराने वस्त्र पहने हुए,—चर्या दुष्टता, अशिष्टाचरण, अनौचित्य,—जन्मन् (वि०) नीच कुल में उत्पन्न,—तनु (वि०) विकृतकाय, कुरूप (नुः) कुबेर का विशेषण—तन्त्री खराब वीणा,—तर्कः 1 कूटतर्कात्मक, हेत्वाभासरूप 2 धर्मविरुद्ध सिद्धान्त स्वतन्त्र चिन्तन—कुतर्कैरन्यासु ततपरपैशुन्यजननम् —गंगा० ३१, पदः तर्क करने की झूठी रीति —तीर्थम् खराब अध्यापक—दृष्टिः (स्त्री०) 1 कामुक नजर 2 पापदृष्टि, कुटिल आंख (आल०) 3 वेदविरुद्ध सिद्धान्त, धर्मविरुद्ध सिद्धान्त—मनु० १२।९५,—देशः 1 बुरा देश या बुरी जगह 2 वह देश जहां जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो, या जो अत्याचार से पीड़ित हो,—देह (वि०) कुरूप, विकृतकाय (हः) कुबेर का विशेषण,—धी (वि०) 1 मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ 2 दुष्ट,—नदः बुरा पात्र, —नदिका छोटी नदी, क्षुद्र नदी, लघु स्रोत—सुपूरा स्यात्कुनदिका—पञ्च० १।२५,—नाथः बुरा स्वामी, —नामन् (पुं०) कबूस, पथः 1 कुमार्ग, बुरा रास्ता (आल० भी) 2 धर्मविरुद्ध सिद्धान्त,—पुत्रः बुरा या दुष्ट पुत्र,—पुरुषः नीच या दुष्ट पुरुष,—पूय (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय,—प्रिय (वि०) अरुचिकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम,—पक्वः बुरी किस्मती—कुप्लवै सन्तरन् जलम्—मनु० ९।१६१, —ब्रह्मः—ब्राह्मण् पतित ब्राह्मण,—भंगः 1 बुरा उपदेश 2 बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मन्त्र,—योगः अशुभ संयोग (ग्रहों का),—रस (वि०) बुरे रस या स्वाद वाला, (सः) एक प्रकार की मदिरा,—रूप (वि०) कुरूप, विकृत रूप, पञ्च० ५।१९,—लक्षण् टीन, जस्ता,—लोहः सीसा,—वचस् (वि०) गाली देने वाला, अपशब्द बोली, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला (नपु०) दुर्वचन, दुर्भाषा,—वर्षः आकस्मिक प्रचंड बौछार,—विवाहः विवाह का भ्रष्ट या अनुचित रूप—मनु० ३।६४,—वृत्तिः

(स्त्री) बुरा व्यवहार,—बैद्यः खोटा वैद्य, कठबैद्य, सीम हकीम,—शील (वि०) बदचलन, दुष्ट, अशिष्ट, दुष्ट स्वभाव, —स्थलम् बुरी जगह,—सरित् (स्त्री०) क्षुद्र नदी, छोटा नाला—उच्छिद्यन्ते क्रिया सर्वाः ग्रीष्मे कुसरितो यथा—पञ्च० २।८५ मूर्ति (स्त्री०) 1. दुराचरण, दुष्टता 2 जादू दिखाना 3 धूर्तता,—स्त्री खोटी स्त्री।

कुङ् i (भ्वा० आ० - कवते) ध्वनि करना।
ii (तुदा० आ० -कुवते) 1 बड़बड़ाना, कराहना 2 चिल्लाना, क्रंदन करना।
iii (अदा० पर०—कौति) भिनभिनाना, कूजना, गुंजन करना (मधुमक्खी की भांति)।

कुङ्कुमम् [कुङ्केन आदानेन पानेन भाति - कुङ्क+भा+क] एक प्रकार की तीक्ष्ण मदिरा।

कुङ्गीलः [कौ पृथिव्यां कीलः इव] पहाड़।

कुङ्कु (कू) a [कुङ्कु वा कं हत्यव्ययम्—अलंकृता कन्या तां सत्कृत्य पात्राय ददाति कुङ्कु (कू)+दा+क] उपयुक्त शृंगारों से सुभूषित (अलंकृत) कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला।

कुङ्कुन्द (कु) र [कस्यते कामिना अत्र, नि० साधु] जघन-कूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते हैं, दे० 'कुन्दर'।

कुङ्कुराः (ब० व०) [कु+कुर्+क] एक देश का नाम, इसे 'दशार्हाः' भी कहते हैं।

कुङ्कूल,—लम् [कु+ऊल्च्, कुगागमः] 1 चाकर, भूसी —कुङ्कूलाना राशौ तदनु हृदय पच्यत इव—उत्तर० ६। ४० 2 भूसी में लगी आग,—लम् [को कूलम् प० त०] 1 छिद्र, खाई (खटे स्थूणादिकों में भरी हुई) 2 कवच, बख्तर।

कुक्कुटः [कुक्+विवप्, तेन कुटति, कुक्+कुट्+क] 1 मुर्गा, जंगली मुर्गा 2 जले हुए भूसे का फिसफिसाना, जलती हुई लकड़ी 3 आग की चिंगारी।

कुक्कुटि,—टी (स्त्री०) [कुक्कुट+ङीष्, पक्षे ङीप्] दम्भ, पाखण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थसिद्धि।

कुक्कुभः [कुक्कु शब्दं भाषते कुक्कु+भाष्+ड बा०] 1 जंगली मुर्गा 2 मुर्गा 3 बनिया।

कुक्कुरः (स्त्री०—री) [कौकत्ते आदत्ते—कुक्+क्विप्, कुक् किंचिदपि गृह्णन्न जन दृष्ट्वा कुरुते शब्दायते—कुक्+कुर्+क] कुत्ता—अन्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्भक्ष्यातुरैर्भक्ष्यते—मृच्छ० २।१२। सम० बाधु (पु०) हरिणों की एक जाति।

कुक्ष [कुष्+क] पेट।

कुक्षिः [कुष्+क्सि] 1 पेट—जिह्मिताध्मातकुक्षि (मृजग-पति)—मृच्छ० ९।१२ 2 गर्भाशय, पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता है—कुक्षीनस्याश्च कुक्षिज—रघु० १५।१५, शि० १३।४० 3 किसी चीज का भीतरी भाग—रघु० १०।६५ (यहां अव्यय द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. गर्त 5 गुफा, कन्दरा रघु० २। ३८, ६७ 6 तलवार का म्यान 7 खाड़ी। सम०—शूल पेट दर्द, उदरशूल।

कुक्षिम्भरि (वि०)[कुक्षि+भृ-इन्, मुम्] अपना पेट भरने की चिन्ता करने वाला, स्वार्थी, पेटू, बहुभोजी।

कुङ्कुमम् [कुक्+उमक्, नि० मुम्] केसर जाफरान—लग्न-कुङ्कुमकेसरान् (स्तनान्)—रघु० ४।६७, ऋतु० ४।२, ५।९, भर्तृ० १।१०, २५, १ सम०—अद्रिः एक पहाड़ का नाम।

कुङ्च् I (तुदा० पर० कुञ्चति, कुञ्चित) 1 (पक्षी की भांति) कर्कश ध्वनि करना 2 जाना 3 घमण्डी होना 4 सिकोड़ना झुकाना 5 सिकुड़ना 6 बाधा उपस्थित करना 7 लिखना, अंकित करना, सम्-, 1 टेढ़ा होना, 2 सकुचित करना, 3 सकुचित होना—यथा—यात्र सङ्कुचित, मृगाधिपेऽपि कातरात् साङ्कुचन्त्युत्पतिष्णु - पञ्च० ३।४३ 3 बन्द करना मुद्रित करना—कमलवनानि सम-कुचन्—दश०, (प्रेर०) बन्द करना, सिकोड़ना, घटाना।
II (भ्वा० पर० (कुञ्च् भी)—कोचति, कुञ्चति, कुञ्चित) 1 कुटिल बनाना, झुकाना या टेढ़ा करना 2 टेढ़ी तरह से चलना 3 छोटा करना, घटाना 4 सिकुड़ना, सङ्कुचित होना 5 का ओर जाना, आ-, सिकोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना (प्रेर० भी) कु० ३।७० रघु० ६।१५, भर्तृ० १।३ -वि-, सिकोड़ना टेढ़ा करना।

कुच [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूची—अपि बनान्तरमल्य-कुचस्तवा-विक्रम० ४।२६। सम अग्रम्,—मुखम्, चूचक,—तटम्,-तटी 1 (स्त्रियों के) स्तन का उतार, —फलः अनार का वृक्ष।

कुचर (वि०)[स्त्री०-रा,—री] 1 अन्न खाने जाने वाला, रेंग कर जाने वाला 2 दुष्ट, नीच, दुश्चरित्र 3. अप-मानित करने वाला, छिद्रान्वेषी, र स्थिर तारा।

कुच्छम् [कु+छा+क] कमल की एक जाति, कुमुद।

कुज [कु+जन्+ड] 1 वृक्ष 2 मंगल ग्रह 3 एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मार गिराया था ('नरक' भी इसी का नाम है), आ सीता।

कुजम्भल कुजम्भिल [कौ पृथिव्यां जम्भलतिव अव०ब०स०, का पृथिव्यां कौ पृथिव्यां वा जम्भल - ष० त० वा स० त०] सेंध लगाकर घर में चोरी करने वाला चोर।

कुञ्जटि, कुञ्जटिका, कुञ्जटी [कुञ्ज+विच्, झट्+ङीष्, कुञ्ज वामौ जटिलत्वं कर्म० स०, कुञ्जटि+कन्+टाप्, कुञ्जटि+ङीष्] कुहरा, धुन्ध।

कुञ्च् दे० कुच्।

कुञ्चनम् [कुञ्च्+ल्युट्] टेढ़ा करना, झुकाना, सिकोड़ना।

कुञ्चिः [कुच्+इन्] आठ मुट्ठियों या अंजलियों की मात्रा का माप अष्टमुष्टिर्भवेत्कुञ्चिः।

कुञ्चिका [कुच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कुंजी, चाबी —भर्तृ० १।६३ 2 बाँस का अंकुर।

कुञ्चित (वि०) [कुच्+क्त] सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ झुकाया हुआ।

कुञ्ज –ञ्जम्] [कु+जन्+ड, पृषो०साधु] 1 लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पणशाला, —चल सखि कुञ्ज सदनमिरपुंज शीलय नीलनिचोलम् —गीत० ५, कञ्जलसाकुञ्जे –१०, मेघ० १९, रघु० ९।६४ 2 हाथी का दाँत। सम० कुटीर- लतामण्डप, लताओं तथा पौधों से परिवेष्टित स्थान–गुञ्जत्कुञ्ज-कुटीरकोटिकपटा उत्तर० २।२९, मा० ५।१९, कोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे –गीत० १।

कुञ्जर [कुञ्जा हन्तिहन्, मोऽन्तादेशः–कुञ्ज+र] 1 हाथी 2 (समास के अन्त में) कोई सर्वोत्तम या श्रेष्ठ वस्तु अमरकोश इस प्रकार के निम्नांकित प्रयोग बतलाता है नृपकुञ्जरपदं व्याघ्र पुंगवर्षभकुञ्जरम्, सिंह शार्दूलनागाद्या पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः। 3 पीपल का वृक्ष (अश्वत्थ) 4 हस्त नामक नक्षत्र। सम० अनीकम् सेना का एक प्रभाग जिसमें हाथी हों, हस्ति-सेना, –अशन अश्वत्थ वृक्ष, –अरातिः 1 शेर 2 शरभ (आठ पैर का एक काल्पनिक जन्तु), –यूह हाथी पकड़ने वाला।

कुट् । (म्वा० पर० कुटति, कुटित) 1 कुटिल या वक्र होना 2 टेढ़ा करना या झुकाना 3 बेईमानी करना, छल करना, धोखा देना।

॥ (दिवा० पर० –कुट्यति) तोड़ कर टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ देना, विभक्त करना, विघटित करना।

कुट[1], –टम् [कुट्+क] जलपात्र, करवा, कलश,—टः 1 किला, दुर्ग 2 हथौड़ा 3 वृक्ष 4 घर 5 पहाड़। सम० –जः 1 एक वृक्ष का नाम –मेघ० ४, रघु० १९।३७, ऋतु० ३।२३, भर्तृ० १।४२ 2 अगस्त्य 3 द्राक्ष हारिका सेविका, नौकरानी।

कुटकम् [कुट+कन्] बिना हलका का हल।

कुटकुट [कु+टकुट+घञ्] छल, छप्पर।

कुटङ्कक [कुटस्य अङ्कः –ष०त०] 1 वृक्ष के ऊपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप 2 छोटा घर, झोपड़ी कुटिया।

कुटप [कुट+पा+क] 1 अनाज की माप (=कुडव) 2 घर के निकट वाटिका 3 ऋषि, संन्यासी, –पम् तमाल।

कुटरः [कुट्+करन् वा०] वह खूंटी जिसमें मथते समय रई की रस्सी लिपटी रहती है।

कुटलम् [कुट्+कलच्] छत, छप्पर।

कुटिः [कुट्+इन्] 1 शरीर 2 वृक्ष (स्त्री०) 1. कुटिया, झोपड़ी 2 मांद, झुकाव। सम०—चरः सूस, शिशुक।

कुटिरम् [कुट्+इरन्] कुटिया, झोपड़ी।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] 1 टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, घुमावदार —भेदान् भ्रुवो कुटिलयोः—शं० ५।२३, रघु० ६।८२, १९।१७ 2 घुमावदार, बलखाती हुई कोश कुटिला नदी–सिद्धा० 3. (आल०) कपटी, जालसाज, बेईमान। सम०—आशय (वि०) दुरात्मा, दुर्जन,–पक्ष्मन् (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला, –स्वभाव (वि०) कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्जन।

कुटिलिका [कुटिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. दबे पाँव आना (जिस प्रकार कि शिकारी अपने शिकार पर आते हैं) दुबक कर चलना, 2 लुहार की भट्टी।

कुटी [कुटि+ङीप्] 1 मोड़ 2, कुटिया, झोपड़ी–ग्रामादीयति कुटयाम्—सिद्धा०—मनु० ११।७२, पर्ण°, अश्व° आदि 3 कुट्टिनी, दूती। सम०—चक्र किसी सर्वविशेष का संन्यासी—चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचक-बहूदकौ, हंस परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः। —महा०, –धरः एक संन्यासी जो अपने परिवार को अपने पुत्र की देख रेख में छोड़कर अपना आपको पूर्णतया धर्मनिष्ठा एवं तपश्चर्या में लगा देता है।

कुटीरः, रम्] [कुटी+र, कुटीर+कन्] झोपड़ी, कुटिया, **कुटीरकः**] –उत्तर० २।२९, अमर ४८।

कुट्टनी [कुट्+उन्+ङीष्] कुट्टिनी, दूती—दे० कुट्टनी।

कुटुम्बम्, कुटुम्बकम् [कुटुम्ब+अच्, कुटुम्ब+कन्] 1 गृहस्थी, परिवार–उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् हि० १।७०, याज्ञ० १।४५ मनु० ११।१२, २२, ८।१६६ 2 परिवार के कर्तव्य और चिंताएँ–तदुपहित-कुटुम्ब रघु० ७।७१, –बः,–बम् 1 वधू, वधू या विवाह के फलस्वरूप संबंध 2. बालबच्चे, संतान 3 नाम 4 यश। सम० –जागरः,–रम् घरेलू झगड़े —भरः परिवार का भार –भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धम् —श० ४।१९, –व्यापृत (वि०) (वह पिता) जो पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है।

कुटुम्बिकः, कुटुम्बिन् (पु०) [कुटुम्ब+ठन्, इनि वा] गृहस्थ, कुल पिता, जिसे परिवार का भरण पोषण करना पड़ता है, या जो देखभाल करता है—आयेष गृहिणीनेत्रा कन्यार्थेषु कुटुम्बिन—कु० ६।८५, विक्रम० ३।१, मनु० ३।८०, याज्ञ० २।४५ 2 परिवार का एक सदस्य, नी 1 गृहपत्नी, गृहिणी (गृह स्वामिनी), भवतु कुटुम्बिनीमाहूय पृच्छामि—मुद्रा० १, प्रभवन्त्यो-ऽपि हि भर्तृषु कारणकोपा कुटुम्बिन्य —मालवि० १। १७, रघु० ८।८६, अमर ४८ 3 स्त्री।

कुट्ट (चुरा० उभ०—कुट्टयति, कुट्टित) 1. काटना, बाटना 2 पीसना, चूर्ण करना 3 दोष देना, निन्दा करना 4 गुणा करना।

कुट्टकः [कुट्ट्+ण्वुल्] कूटने वाला, पीसने वाला।

कुट्टनम् [कुट्ट्—ल्युट्] 1 काटना 2 कूटना 3 दुर्वचन कहना, निन्दा करना।

कुट्टनी (नि) स्त्री [कुट्टयति नाशयति स्त्रीणा कुलम्—कुट्ट्+णिच्+ल्युट्+ङीप्, कुट्ट+इनि वा] कुटनी, दूती, दल्ली।

कुट्टमितम् [कुट्ट्+घञ्, तेन निर्वृत्त इत्यर्थे कुट्ट्+इमप्+इतच्] प्रियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार (मुठमुठ ठुकराना) (नायिका के २८ हावभाव तथा अनुभव, में से एक) सा० द० परिभाषा देता है—केशस्तनाधरादीनां ग्रहे हर्षेऽपि सम्भ्रमात्, प्राहुः कुट्टमितं नाम शिरःकम्पविधूननम्, १४२।

कुट्टाकः (वि०) (स्त्री०—की) [कुट्ट्+घाकन्] जो विभक्त करता है या काटता है—सारङ्गमङ्गुरविधाविभिन्नकुम्भकूटकुट्टाकपाणिकुलिशस्य हरे प्रमाद—मा० ५।३२।

कुट्टारः [कुट्ट+आरन्] पहाड़,—रम् 1 मैथुन 2 ऊनी कंबल 3 एकान्त।

कुट्टिमः,—मम् [कुट्ट्+इमप्] 1 खड़ंजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श, पक्का फर्श —कातेन्दुकान्तोपलकुट्टिमेषु—शि० ३।४०, रघु० ११।९ 2 भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि 3 रत्नों की खान 4 अनार 5 झोपड़ी, कुटिया, छोटा घर।

कुट्टिहारिका—[कुट्टिं मत्स्यमांसादिकं हरति इति—कुट्टि+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी।

कुड्मल=कुड्मल।

कुठः [कुठयते छिद्यते—कुठ्+क] वृक्ष।

कुठर=दे० 'कुटर'।

कुठारः (स्त्री०—री) [कुठ्+आरन्] कुल्हाड़ा (परशु), कुल्हाड़ी—मातु केवलमेव यौवनवनच्छेदे कुठारा वयम्—भर्तृ० ३।११।

कुठारिकः [कुठार+ठन्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला।

कुठारिका [कुठार+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] छोटा कुल्हाड़ा, फरसा।

कुठारुः [कुठ्+आरु] 1 वृक्ष 2 लंगूर, बन्दर।

कुठिः [कुठ्+इन्+कित्] 1 वृक्ष 2 पहाड़।

कुडङ्गः (पु०) कुंज, लतागृह।

कुडवः (पः) [कुड्+कवन्, कपन् वा] एक चौथाई प्रस्थ के बराबर या बारह मुट्ठी (अञ्जलि) अनाज की तोल।

कुड्मलः (वि०) [कुड्+कल, मुट्] खुलता हुआ, पूरा खिला हुआ, लहराता हुआ (जैसे खिला हुआ फूल) —रघु० १८।३७,—लः खुलना, कली—विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु—रघु० १९।३७, उत्तर० ६।१७, शि० २।७,—लम् एक प्रकार का नरक—मनु० ४।८९, याज्ञ० ३।२२२।

कुड्मलित (वि०) [कुड्मल+इतच्] 1 कलीदार, खिला हुआ 2 प्रसन्न, हसमुख।

कुड्यम् [कुड्+यक्, डुगागम] 1 दीवार—भेदे कुड्यावपातने—याज्ञ० २।२२३, शि० ३।४५ 2 (दीवार पर) पलस्तर करना, लीपना, पोतना 3 उत्सुकता, जिज्ञासा। सम०—छेदिन् (पु०) घर में सेंध लगाने वाला, चोर,—छेदः खोदने वाला, (क्षम्) खाई, गड्ढा, (दीवार में) दरार।

कुण् (तुदा० पर०—कुणति, कुणित) 1 सहारा देना, सहायता देना 2 शब्द करना।

कुणकः [कुण्+क+कन्] किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा।

कुणप (वि०) (स्त्री०—पी) [कुण्+कपन्] 1 मुर्दे जैसी दुर्गंध देने वाला, बदबूदार—पः, —पम् मुर्दा, शव—शासनीय कुणपभोजन—विक्रम० ५ (गिद्ध),—अभक्ष्य कुणपाशी च—मनु० १२। ७१, जीवित जन्तुओं के प्रति घृणा व तिरस्कार का द्योतक शब्द,—पः 1 बर्छी 2 दुर्गंध, बदबू।

कुणिः [कुण्—इन्] लूला, जिसकी एक बाँह सूख गई हो।

कुण्टकः (वि०) (स्त्री०—की) [कुण्ट+ण्वुल्] मोटा, स्थूल।

कुण्ठ् (भ्वा० पर०—कुण्ठति, कुण्ठित) 1 कुण्ठित, ठूंठा या मन्द हो जाना 2 लंगड़ा, और विकलांग होना 3 मतबुद्धि या मूर्ख होना, सुस्त होना 4 ढीला करना (प्रेर० या चुरा० पर०) छिपाना।

कुण्ठ (वि०) [कुण्ठ्+अच्] 1 ठूंठा, सुस्त, वज्र तपोदीर्घमहत्सु कुण्ठम्—कु० ३।१२, प्रभावरहित हो गया, कुण्ठीभवन्त्युपलादिषु क्षुरा—शारी० 2 मन्द, मूर्ख, जड़ 3 बासी, सुस्त 4. दुर्बल।

कुण्ठकः [कुण्ठ्+ण्वुल्] मूर्ख।

कुण्ठित (भू० क० कृ०) [कुण्ठ्+क्त] 1 ठूंठा, मन्दीकृत (आल० भी)—विभ्रतोऽस्त्रमचलेष्वकुण्ठितम्—रघु० ११।७४, भामि० २।७८, कु० २।२०, शास्त्रेष्वकुण्ठितबुद्धि—रघु० १।१९, निर्बाध रही 2 जड़ 3 विकलांग।

कुण्डः,—डम् [कुण्+ड] 1 प्याले की शक्ल का बर्तन, खलमंची, कटोरा 2 हौज 3 कूड़, कुंड—अग्निकुण्डम् 4. पोखर या पल्वल—विशेषतः जो किसी देवता के नाम पर धर्मार्थ समर्पित कर दिया गया हो 5 कमण्डलु या

मिश्रापाव, -ङः (स्त्री०—ङी) पति के जीवित रहते व्यभिचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान—यस्यौ जीवति कुड स्यात्—मनु० ३।१७४, याज्ञ० १।२२२। सम०—आशिन् (पु०) भड़ुवा, विट, अपनी जीविका के लिए जो कुण्ड पर निर्भर करता है अर्थात् वर्णसंकर, आरज,—मनु० ३।१५८ याज्ञ० १।२२४,—ऊधस् (कुण्डोध्नी) 1 वह गाय जिसका ऐन या औंडी भरी हुई हो 2 भरे पूरे स्तनों वाली स्त्री,—कीटः 1 रखैली स्त्रियाँ रखने वाला 2 चार्वाकमतावलम्बी, नास्तिक, आरज ब्राह्मण,—कीनाशः नीच या दुश्चरित्र व्यक्ति,—गोलम्—गोलकम् 1 कांजी 2 कुण्ड और गोलक का समुदाय।

कुण्डलः,-लम् [कुण्ड+मत्वर्थे ल] 1 कान की बाली, कान का आभूषण—श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन—भर्तृ० २।७१, कौर० ११, ऋतु० २।२०, ३।१९, रघु० ११।१५ 2 कड़ा 3 रस्सी का गोला।

कुण्डलना [कुण्डल्+णिच्+युच्+टाप्] घेरा डालना (शब्द को गोल घेरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इस पर विचार नहीं करना है,—तदोजसस्तद्बलम स्थितावियौ बुधेति चित्ते कुरुते यदा यदा, तनोति मानो परिवेषकैतवात्तदा विधि कुण्डलनां विधोरपि। नै० १।१८, शु० २।९५ से भी।

कुण्डलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुण्डल+इनि] 1 कुण्डलों से विभूषित 2 गोलाकार, सर्पिल 3 घुमावदार, कुण्डली मारे हुए (साँप की भाँति)—पु० 1 साँप 2 मोर 3 वरुण की उपाधि।

कुण्डिका [कुड+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 घड़ा 2 कमण्डलु।

कुण्डिन् (पु०) [कुण्ड्+इनि] शिव की उपाधि।

कुण्डिनम् [कुण्ड्+इनच्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी।

कुण्डि (डी) र (वि०) [कुण्ड्+इ (ई) रच्] बलवान्,—रः मनुष्य।

कुत (अव्य०) [किम्+तसिल्] 1 कहाँ से, किधर से—कस्य त्वं वा कुत आयातः—मोह० ३ 2 कहाँ, और कहाँ, और किस स्थान पर आदि—ईदृग्विनोद कुत—श० २।५ 3 क्यों, किस लिए किस कारण से, किस प्रयोजन से—कुत इदमुच्यते—श० ५ 4 कैसे, किस प्रकार—स्फुरति च बाहु कुत फलमिहास्य—श० १।१५ 5 और अधिक, और कम—न त्वत्समोस्त्यभ्यधिक कुतोऽन्य—भग० ११।४३, ४।३१, न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न सुरापी स्वैरिणी कुत—छा० 6. क्योंकि, कभी कभी कुत' केवल 'किम्' शब्द के अपादान के रूप में ही प्रयुक्त होता है—कुतः कालात्-मुत्थाय्—वि० पु० (=कस्मात् कालात्), अब 'कुत' के आगे 'चित्' 'चन' या 'अपि' जोड़ दिया जाता है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता है।

कुतपः [कु+तप्+अच्] 1 ब्राह्मण 2 द्विज 3 सूर्य 4 अग्नि 5 अतिथि 6 बैल, साँड 7 दौहित्र 8 भानजा 9 अनाज 10 दिन का आठवाँ मुहूर्त—अह्नो मुहूर्ता विख्याता दश पञ्च च सर्वदा, तत्राष्टमो मुहूर्तो यः स काल कुतप स्मृत।—मनु० 1 कुश घास 2 एक प्रकार का कम्बल।

कुतस्थ (वि०) [कुतस्+त्यप्] 1 कहाँ से आया हुआ 2 कैसे हुआ।

कुतुकम् [कुत्+उकञ्] 1. इच्छा, रुचि 2 जिज्ञासा (कौतुक) 3 उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता—केलिकला-कुतुकेन च काचिदम् यमुनाजलकूले, मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगत. विचकर्ष करेण दुकूले—गीत० १।

कुतुप, कुतुपः (स्त्री०) [कुत्+डुप पृषो०, कु+तन्+कू टिलोप वा०] कुप्पी (तेल डालने के लिए चमड़े की बनी)।

कुतूहल (वि०) [कुतू+हल्+अच्] 1 आश्चर्यजनक 2 श्रेष्ठ सर्वोत्तम 3 प्रशंसाप्राप्त, प्रसिद्ध,—लम् 1 इच्छा, जिज्ञासा—उज्झितशब्देन जनित न कुतूहलम्—श० १, यदि विलासकलासु कुतूहलम्—गीत० १, (पर्दा) कुतू-हलेनेव मनुष्यघोषितम्—रघु० ३।५४, १३।२१, १५।६५ 2 उत्सुकता 3 जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, सुहावना, मनोरञ्जक, कौतुक या जिज्ञासा।

कुत्र (अव्य०) [किम्+त्रल्] 1 कहाँ, किस बात में,—कुत्र मे शिशु—पञ्च० १, प्रवृत्ति कुत्र कर्तव्या—हि० १ 2 किस विषय में—तेजसा सह जातानां वय कुत्रोप-युज्यते—पञ्च० १।३२८ (कभी कभी 'कुत्र' का प्रयोग 'किम्' शब्द अधि० एक० व० के लिए किया जाता है), अब 'कुत्र' के साथ चित्, चन, या अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ की दृष्टि से अनिश्चया-त्मक बन जाता है, कुत्रापि, कुत्रचित् किसी जगह, कहीं, न कुत्रापि—कहीं नहीं, कुत्रचित्—कुत्रचित्—एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर, यहाँ-यहाँ—मनु० २।३४।

कुत्रस्थ (वि०) [कुत्र+त्यप्] कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला।

कुत्स् (चुरा० आ०—कुत्सयते, कुत्सित) गाली देना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना, मनु० २।५४, याज्ञ० १।३१, मा० २।२८।

कुत्सनम्, कुत्सा [कुत्स्+ल्युट्, कुत्स्+अ+टाप्] दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना—देवताना च कुत्सनम्—मनु० ४।१६१।

कुत्सित (वि०) [कुत्स्+क्त] 1 घृणित, तिरस्करणीय 2 नीच, अधम, दुश्चरित्र।

कुथः [कु+अच्] कुशा नामक घास।

कुच:,-चम्,-चा 1 छीट की बनी हाथी की झूल 2 दरी।

कुद्दार:,-रः,-रकः [कु+दृ+णिच्+अण्, पृषो०, कु+दल्+णिच्+अण् पृषो०, कुद्दाल+कन्] 1. कुदाली, खुर्पा 2 काचन वृक्ष।

कुद्मलम्=कुड्मलम्।

कुटकुः-ग [कुट्+कै+क नि० साधु; कु+उट्+रक्+घञ्] 1 चौकी 2 मचान पर बना मकान।

कुणक [?] कौवा।

कुन्त: [कु+उन्द्+क्त, बा० शाक० परूपम्] 1 भाला, पखदार बाण, बर्छी—कुन्ता प्रविशन्ति—काव्य० २ (अर्थात्—कुन्तधारिण. पुरुषा), विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरिताशे—गीत० १ 2 छोटा जन्तु, कीड़ा।

कुन्तल [कुन्त+ला+क] 1. सिर के बाल, बालों का गुच्छा, —प्रतनुविरलैं प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैं —उत्तर० १।२०, चौर० ४, ६, गीत० २ 2 कटोरा 3 हल,—ला (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम।

कुन्तयः ('कुत' का ब० व०, पु०) एक देश और उसके निवासियों का नाम।

कुन्तिः [कम्+क्विच्] एक राजा का नाम, क्रथ का पुत्र। सम०—भोजः एक यादव राजकुमार, कुन्तिदेश का राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुन्ती को गोद ले लिया था।

कुन्ती [कुन्ति+ङीप्] 'शूर' नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुन्तिभोज ने गोद लिया। (यह पाडु की पहली पत्नी थी, किसी शाप के कारण पाडु से सतान न हुई, उसने इसी लिए कुती को अनुमति दे दी कि वह दुर्वासा ऋषि से प्राप्त अपने मत्र का प्रयोग करे जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके उससे पुत्र प्राप्त कर सकती है। फलत उसने धर्म, वायु और इन्द्र का आवाहन किया और उनसे क्रमश युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया। वह कर्ण की भी माता थी उसने अपनी कौमार्य-अवस्था मे मत्र का परीक्षण करने के लिए सूर्य का आवाहन किया और उसके सयोग से उसने कर्ण को प्राप्त किया)

कुन्द् (स्वा०-क्रया० पर०—कुन्दति, कुन्दाति, कुन्दित) 1 कष्ट सहन करना 2 चिपकना 3 आलिगन करना 4 चोट पहुँचाना।

कुन्द,-दम् [कु+दै (दो)+क, नि० मुम्, या कु+दद्, नुम्] चमेली का एक भेद, मोतिया (सफेद और कोमल) कुन्दावदाता कलहसमाला —भट्टि० २।१८, प्रात कुन्दप्रसवशिथिल जीवित धारयेथा —मेघ० ११३, —दम् इस पौधे का फूल—अलके बालकुन्दानुविद्धम् —मेघ० ६५, ४७,—दः 1 विष्णु की उपाधि 2 सौराद। सम०—दरः सौराष्ट्र।

कुन्दनः [कुन्द+मा+क] बिल्ली।

कुन्दिनी [कुन्द्+इनि+ङीप्] कमलो का समूह।

कुन्दुरु: [कु+दृ+डु बा० नुम्] चूहा, मूसा।

कुप् (दिवा० पर०—कुप्यति, कुपित) 1. क्रुद्ध होना (प्राय उस व्यक्ति के लिए सम्प्र० जिस पर क्रोध किया जाय, परन्तु कभी कभी कर्म० या सब० भी प्रयुक्त होते है) कुप्यन्ति हितवादिने—का० १०८, मालवि० ३। २१, उत्तर० ७, चुकोप तस्मै स भृशम्—रघु० २।५६ 2 उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना प्रचड होना, जैसा कि—दोषा प्रकुप्यन्ति—सुश्रु० अति—, क्रुद्ध होना, भट्टि० १५।५५, परि—, क्रुद्ध होना, प्र—, 1 क्रुद्ध होना,—निमित्तमुद्दिश्य हि य प्रकुप्यति ध्रुव स तस्यापगमे प्रसीदति- पच० १।२८३, 2 उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढना (प्रेर०) उभारना, चिढाना खिझाना।

कुपिच=दे० कुविद।

कुपिनिम् (पु०) [कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य—कुपिनी+इन्] मछुवा।

कुपिनी [कुप्+इनि+ङीप्] छोटी-छोटी मछलियाँ पकडने का एक प्रकार का जाल।

कुप्य (वि०) [कु+पूय्+अच्] घृणित, नीच, अधम, तिरस्करणीय।

कुप्यम् [गुप्+क्यप्, कुत्वम्] 1 अपधातु 2 चाँदी और सोने को छोड कर और कोई धातु —कि० १।३५, मनु० ७।९६, १०।११३।

कुबे (वे) र [कुत्सित बे (वे) र शरीर यस्य स] धन दौलत और कोष का स्वामी, उत्तरदिशा का स्वामी —कुबेरगुप्ता दिशमुत्तरस्यो गन्तु प्रवृत्ते समय विलम्ब्य —कु० ३।२५ (इस पर मल्लि० की टीका के अनुसार) [कुबेर इडविडा में उत्पन्न विश्रवा का पुत्र है, और इसीलिए यह रावण का आधा भाई है। धन और उत्तर दिशा का स्वामी होने के अतिरिक्त यह यक्ष और किन्नरो का राजा तथा रुद्र का मित्र है, इसका वर्णन विकृत शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके तीन टाँगे और आठ दाँत थे, और एक आँख के स्थान में एक पीला चिह्न था], अचल',—अद्रि कैलास पर्वत की उपाधि,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा।

कुब्ज (वि०) [कु ईषत् उब्जमाजंव यत्र प्रादि० तारा०] कुबडा, कुटिल, -ब्जः 1 मुडी हुई तलवार 2 पीठ पर निकला हुआ कूब, -ब्जा कस की एक सेविका, कहते है कि उसका शरीर तीन स्थानो पर विकृत था (कृष्ण और बलराम ने, जब वह मथुरा आ रहे थे राजमार्ग पर कुब्जा को देखा, वह कस के लिए उबटन ले जा रही थी। उन्होंने उसमें से कुछ उबटन माँगा, कुब्जा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया। कृष्ण

उसके इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने उसका कूबड़ मिटाकर उसे पूरी तरह सीधा कर दिया, तब से वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री लगने लगी)।

कुब्जकः [कुब्ज+कन्] एक वृक्ष का नाम+मनु० ८। २४७, ५।२।

कुब्जिका [कुब्जक+टाप्, इत्वम्] आठवर्ष की अविवाहिता लड़की।

कुभृत् (पु०) [कु+भृ+क्विप्, तुकागम] पहाड़।

कुमारः [कम्+आरन्, उपधायाः उत्वम्] 1 पुत्र, बालक, युवा—रघु० ३।४८ 2 पाँच वर्ष से कम आयु का बालक 3 राजकुमार, युवराज (विशेषतः नाटकों में)—विप्रो-षितकुमार तद्राज्यमस्तमितेश्वरम् रघु० १२।११, कुमारस्यायुषो दाणं विक्रम० ५, उपपेष्टुमर्हति कुमार मुद्रा० ४ (मलयकेतु ने राक्षस को कहा) 4 युद्ध के देवता कार्तिकेय,-कुमारकल्प सुषुवे कुमारम् रघु० ५।३६, कुमारोऽपि कुमारविक्रम —३।५५ 5 अग्नि 6 तोता 7. सिन्धु नदी। सम०—पालक 1 बच्चों की देखरेख रखने वाला 2 राजा शालिवाहन, भृत्या 1. छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख 2 गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या—रघु० ३।१२ —वाहिन्. -वाहन मोर, -सू (स्त्री०) 1 पार्वती का विशेषण 2 गंगा का वि०।

कुमारक [कुमार+कन्] 1 बच्चा, युवा 2 आँख का तारा।

कुमारयति (ना० धा० पर०) खेलना, क्रीड़ा करना (बच्चे की तरह)।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० की) } [कुमारी+ठन्,
कुमारिन् (वि०) (स्त्री० णी) } कुमारी+इनि] जिसके लड़कियाँ हों, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो।

कुमारिका, कुमारी [कुमारी+ठन्+टाप्, कुमार+ङीष्] 1 दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की 2 अविवाहिता तरुणी, कन्या—वीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती मनु० ९।९०, ११।५८, व्यावर्त-तान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६९ 3 लड़की, पुत्री 4 दुर्गा 5 कुछ पौधों के नाम। सम०—पुत्रः अविवाहिता स्त्री का पुत्र,—श्वशुरः विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का श्वसुर।

कुमृदु (वि०) [कु०+मृद्+क्विप्] 1 कृपाशून्य, अमित्र 2 लोभी (त्रि०) 1. सफेद कुमुदिनी 2 लाल कमल।

कुमुदः, -दम् [को मोदते इति कुमुदम्] 1 सफेद कुमुदिनी, जो कहते हैं कि चन्द्रोदय के समय खिलती है—नोच्छ्वसिति तपनकिरणैरुपचन्द्रस्येवाशुभि कुमुदम्—विक्रम० ३।१६, इसी प्रकार शि० ५।२८, ऋतु० ३।२, २१, २३, मेघ० ४० 2 लाल कमल,—दम् चाँदी,—दः 1. विष्णु का विशेषण 2. दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम 3. कपूर 4. बन्दरों की एक जाति 5 एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुमुद्वती को राम के पुत्र कुश को प्रदान किया—दे० रघु० १६।७५-८६। सम० —आकरः, वादी,—आकरः, आवासः कमलों से भरा हुआ सरोवर, —ईशः चन्द्रमा,—उत्थम् कमलों का समूह,—बान्धवः, पतिः, बन्धुः,—बान्धवः,—सुहृद् (पु०) चन्द्रमा।

कुमुदवती [कुमुद+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] कमल का पौधा

कुमुदिनी [कुमुद+इनि] 1 सफेद फूलों की कुमुदिनी यथेन्दावानन्दं जनयति समुद्गेऽपि कुमुदिनी—उत्तर० ५ २६, शि० ९।३४ 2. कमलों का समूह 3 कमलस्थली। सम० -नायकः, -पतिः चन्द्रमा।

कुमुद्वत् (वि०) [कुमुद+मतुप्, वत्वम्] जहाँ कमलों की बहुतायत हो - कुमुद्वत्सु च वारिषु—रघु० ४।१९,—ती 1 सफेद फूलों की कुमुदिनी (जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है)—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति सम्वरणीयशोभा—श० ४।२, कुमुद्वती भानुमतीव भाव (न ददाह)—रघु० ६।३६ 2 कमलों का समूह 3 कमलस्थली,—तीशः चन्द्रमा।

कुमोदकः [कु+मुद्+णिच्+ण्वुल्] विष्णु का विशेषण।

कुम्बा [कुम्ब्+अङ्+टाप्] यज्ञभूमि का अहाता।

कुम्भः [कु भूमि कुम्भति पूरयति - उम्भ्+अच् शक० तारा०] 1. घड़ा, जलपात्र, करवा -इभ सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा जग०, कर्षयेत्सादृश मित्र विषकुम्भ पयोमुखम्—हि० १।७७, रघु० २।३४ इसी प्रकार कुच०, स्तन० 2 हाथी के मस्तक का ललाट स्थल -इभकुम्भ—मा० ५।३२, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा-भर्तृ१।५९ 3 राशिचक्र में ग्यारहवीं राशि कुम्भ 4 २० द्रोण के बराबर अनाज की तौल-- मनु० ८। ३२० 5 (योग दर्शन में) श्वास को स्थगित करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना 6 वेश्या का प्रेमी। सम०—कर्णः 'घड़े के सदृश कान वाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था (कहते हैं कि इस राक्षस ने हजारों प्राणी, ऋषि तथा स्वर्गीय अप्सराओं को अपने मुँह का ग्रास बना लिया, देवता उन्मुक्ततापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब कि इस शक्तिशाली राक्षस से मुक्ति मिले। इन्द्र और उसके हाथी ऐरावत के दैन्यभाव के कारण ब्रह्मा ने इसे शाप दिया। तब से कुम्भकर्ण अत्यन्त घोर तपस्या करने लगा। ब्रह्मा प्रसन्न हुआ, और उसे वरदान देने ही वाला था कि देवों ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर उसे बदल दे। तदनुसार जब वह ब्रह्मा के पास गया तो 'इन्द्रासन' माँगने के बजाय उसके मुँह से 'निद्रासन' निकला,- जो उसी समय

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह छ महीने सोता था और फिर केवल एक दिन के लिए जागता था। जब लंका को राम की वानरसेना ने घेर लिया तो रावण ने बड़ी कठिनाई के साथ कुम्भकर्ण को जगाया जिससे कि वह उसकी प्रबल शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कलश सुरा पीने के पश्चात् कुम्भकर्ण ने हजारों बन्दरों को अपना मुखग्रास बनाने के अतिरिक्त सुग्रीव को बन्दी बना लिया। अन्त में कुम्भकर्ण राम के हाथों मारा गया),—कारः 1. कुम्हार—याज्ञ० ३।१४६ 2 वर्ण संकर जाति (वैश्यायां विधिवत्शौर्यात्कुम्भकारो व्यजायत पराशर), —क्षोणः एक नगर का नाम,—जः,-जन्मन् (पु.),—योनिः,—सम्भवः 1 अगस्त्य मुनि के विशेषण—प्रसस्मादोदमादम्भ कुम्भयोनेर्महौजस —रघु० ४।२२, १५।५५ 2 कौरव और पाण्डवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण 3 वशिष्ठ का विशेषण,—वासी कुट्टिनी, दूती (कभी कभी यह शब्द गाली के रूप में प्रयुक्त होता है)—लग्नम् दिन का वह समय जब कि राशि चक्र क्षितिज के ऊपर उदय होता है,—मंडूकः 1 (ला०) घड़े का मेंढक 2 (आल०) अनुभवशून्य मनुष्य—तु० कूपमंडूक, —संधि हाथी के सिर पर ललाटस्थलियों के बीच का गर्त।

कुम्भकः [कुम्भ+कन्+कै+क वा] 1 स्तंभ का आधार 2 (योगदर्शन में) प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नथुने और मुख बंद करके सांस रोका जाता है।

कुम्भा [कुत्सितम् उम्भति पूरयति इति—उम्भ्+अच् +टाप् शक॰ पररूपम्] वेश्या, वारांगना।

कुम्भिका [कुम्भ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 छोटा बर्तन 2 वेश्या।

कुम्भिन् [कुम्भ+इनि] 1 हाथी भामि० १।५२ 2 मगरमच्छ। सम०—नरकः एक विशेष प्रकार का नरक,—मदः हाथी के मस्तक से बहने वाला मद।

कुम्भिल [कुम्भ+इलच्] 1 सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर 2 काव्य चोर, लेख चोर 3 साला, पत्नी का भाई 4 गर्भ पूरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ+ङीष्] पानी का छोटा पात्र, घड़िया। सम०,—नसः एक प्रकार का विषैला सांप -उत्तर० २।२९ - पाकः (ए० व० या ब० व०) एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भांति पकाये जाते हैं—याज्ञ० ३। ५, मनु० १२।७६।

कुम्भीकः [कुम्भी+कै+क] पुन्नागवृक्ष। सम०—मक्षिका एक प्रकार की मक्खी।

कुम्भीर [कुम्भिन्+ईर्+अण्] घड़ियाल।

कुम्भीरकः, कुम्भीलः, कुम्भीलकः [कुम्भीर+कन्, रस्य लः, ततः कन् च] चोर—लोप्त्रेण गृहीतस्य कुम्भीरकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्—विक्रम० २, कुम्भीलकैः कामुकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४।

कुर् (तुदा० पर०—कुरति) शब्द करना, ध्वनि करना

कुरकर, कुरकुर [कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति—कुरम् +कृ+ट, कुरम्+कुर्+शब्+च] सारस पक्षी।

कुरंग (स्त्री०—गी) [कु+अङ्गच्] 1 हरिण—तन्मे ब्रूहि कुरंग कुंजभवनं किं नाम तप्तं तपः—भा० १।१४, ४।६ लवंगी कुरंगी दृगंगीकरोतु—जग० 2 हरिण की एक जाति (कुरंग ईषन्नाम्र स्याद्धरिणाकृतिको महान्)। सम०—अक्षी,—नयना,—नेत्रा हरिण जैसी आंखों वाली स्त्री,- नाभि कस्तूरी।

कुरंगम [कुर+गम्+खच्, मुम्] दे० 'कुरंग'।

कुरचिल्ल [कुर+चिल्+अच्] केंकड़ा

कुरट [कुर्+अटन्+किन्] जूता बनाने वाला, मोची।

कुरट, कुरटक, कुरटिका [कुर्+अण्टक, कुरण्ट+कन्, स्त्रियां टाप् ह्रस्वम्] पीला सदाबहार, कटसरैया।

कुरड [कुर्+अण्डक्] अण्डकोश की वृद्धि, एक रोग जिसमें पोते बढ़ जाते हैं।

कुररः (ल) [कु+क्रुरच्, रलयोरभेदः] क्रौंच पक्षी समुद्री उकाब।

कुररी [कुरर+ङीष्] 1 मादा क्रौंच, चकवी विना कुररीव भूय —रघु० १४।६८ 2 भेड़। सम०- व्रज क्रौंच पक्षियों का झुंड।

कुरव (अ), कुरव (अ) कम् [ईषत् रवो यत्र इति, कुरव +कन्] सदाबहार या कटसरैया की झाड़ी, - कुरबकाः रक्तकारणता ययुः रघु० ९।२९, मेघ० ७८, ऋतु० ६।१८ - व (अ), - व (अ) कम् सदाबहार का फूल —चूडापाशे नवकुरबकम् - मेघ० ६।५, प्रत्याख्यात विशेषकम् कुरबक श्यामाविदातारुणम् - मालवि० ३।५।

कुरीरम् [कु+ईरन्, उकारादेशः] स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा।

कुरु (ब०व०) [कृ+कु उकारादेशः] 1 वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश —श्रिय कुरूणामधिपस्य पालनीम् —कि० १।१, चिराय तस्मिन् कुरुवर्धनः कासते--१।१७ 2 इस देश के राजा--क 1 पुरोहित 2 भांड। सम०- क्षेत्रम् दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहां कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था—धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः —भग० १।१, मनु० २।१९,—जाङ्गलम्—कुरुक्षेत्र- राज (पु०)—राजः दुर्योधन का विशेषण,— विस्त. ७०० ट्रॉय ग्रेन के बराबर (४ तोले) सोने का तोल। - वृद्धः भीष्म का विशेषण।

कुलंकः (पु०) लालरंग का सदाबहार,—डी काठ की गुड़िया पुत्तलिका ।

कुलक (पु०) बालों का गुच्छा, विशेषकर माथे पर बिखरी हुई लटें ।

कुलकक=कुरबक ।

कुलकिंजल्कः,-कम् [कुल+किञ्ज्+अ, मुम्] लालमणि—कम् 1 काला नमक 2 दर्पण ।

कुलकुट, [कुल+कुट्+क] 1 मुर्गा 2 कूड़ा-करकट ।

कुलकुर [कुल्+कुर्+क] कुला,+उपकर्तुमपि प्राप्त निजस्व मन्यति कुलकुरम् —पञ्च० २।९०, अने० पा० ।

कुलिका=कुलिका ।

कुलु,कुलुब=दे० कुर्द कूदना ।

कु (कू) पंर. [कुर्+क्विप्, कुर्+प्+अच् पक्षे दीर्घः नि०] 1 घुटना 2 कोहनी ।

कु (कू) पांस. कु (कू) पासक. [कुर्पर+अस्+अच्, पृषो०, कुर्पास (कूर्पास)+कन्] स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अँगिया या चोली 1 मनोज्ञकूपासकपीडितस्तना —ऋतु० ५।८, ४।१६ अने० पा० ।

कुर्वत् (शत्रन्त) [कृ+शतृ] करता हुआ—(पु०) 1 नौकर 2 जूते बनाने वाला ।

कुलम् [कुल्+क] 1 वंश, परिवार निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य मन्वन —रघु० ३।१ 2 पारिवारिक आवास, आसन, घर, गृह—वसन्नृषिकुलेषु स —रघु० १२।२५ 3 उत्तमकुल, उच्च वंश, भला घराना- कुले जन्म—पञ्च० ५।२, कुलशीलसमन्वित - मनु० ७।५४, ६२, इसी प्रकार कुलजा, कुलकन्यका आदि 4 रेवड़, दल, झुंड, समूह, समूह - मृगकुल रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।५ आलकुलसङ्कुल गीत० १, शि० ९।७१, इसी प्रकार गो, कृमि महिषी आदि 5 चट्टा, टोली, दल (बुरे अर्थ में) 6 शरीर 7 सामने का या अगला भाग,—ल० किसी निगम या संघ का अध्यक्ष । सम०—अकुल (वि०) 1 मिश्र चरित्रबल का 2 मध्यम श्रेणी का, °तिथिः (पु०—स्त्री०) चान्द्रमास के पक्ष की द्वितीया, षष्ठी और दशमी, °वार बुधवार,—अङ्गना आदरणीय तथा उच्च वंश की स्त्री,—अङ्गारः जो अपने कुल को नष्ट करता है, - अचलः, - अद्रिः, पर्वतः,—श्रेष्ठः मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं उन सात पहाड़ों में से एक, उनके नाम ये हैं -महेन्द्रो मलय सह्य शुक्तिमान् ऋक्षपर्वत, विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वता । —अभिजात (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न,—अभिमानः कुल का गौरव,—आचारः किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज, - आचार्यः 1 कुलपुरोहित या कुलगुरु 2 वंशावलीप्रणेता,—आलम्बिन् (वि०) परिवार का पालन पोषण करने वाला,—ईश्वरः 1. परिवार का मुखिया 2 शिव का नाम,—उत्कट (वि०) उच्चकुलोद्भव (ट) अच्छी नसल का घोड़ा०—उत्पन्न, —उद्गत, —उद्भूत (वि०) भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव,—उद्वहः कुटुंब का मुखिया या उसे अमर बनाने वाला—दे० उद्वह,—उपदेशः खानदानी नाम,—कण्टकः कुलकलंक,—कन्यका: जो अपने कुटुंब के लिए काटे की भाँति कष्टदायक हो, —कन्यका,—कन्या उच्चकुल में उत्पन्न लड़की—विशुद्धमुग्ध कुलकन्याकाजन —मा० ७।१, गृहे-गृहे पुरुषा कुलकन्यका समुद्वहन्ति—मा० ७, कर: कुलप्रवर्तक, कुल का आदिपुरुष,—कर्मन् (नप०) अपने कुल की विशेष रीति,—कलङ्क जो अपने कुल के लिए अपमान का कारण हो,—क्षयः 1 कुटुंब का नाश 2 कुल की परिसमाप्ति,—गिरिः,—भूभृत् (पु०)—पर्वत: दे० 'कुलाचल' ऊपर,—घ्न (वि०) कुल को बर्बाद करने वाला --दोषैरेतैः कुलघ्नानाम् —भग० १।४२,—ज, —जात (वि०) 1 अच्छे कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव 2 कुलक्रमागत, आनुवंशिक —कि० १।३१ (दोनों अर्थों में प्रयुक्त),—ज्ञ. उच्चकुलोद्भव या समाननीय पुरुष,—तन्तुः जो अपने कुल को बनाये रखता है,—तिथिः (पु० स्त्री०) महत्त्वपूर्ण तिथि, नामतः चान्द्र पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी,—तिलकः कुटुंब की कीर्ति, जो अपने कुल को सम्मानित करता है, दीपः—दीपकः जिससे कुल का नाम उजागर हो,—दुहितृ (स्त्री०) दे० कुलकन्या,—देवता अभिभावक देवता, कुल का संरक्षक देवता —कु० ७।२७ -धर्मः कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति—उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन—भग० १।४३ मनु० १।११८ ८।१४,—धारक पुत्र, धूर्य परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ (पुत्र), वयस्क पुत्र—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय—रघु० ७।७१,—नाशन (वि०) अपने कुल को प्रसन्न तथा सम्मानित करने वाला, —नायिका वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिकपूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय, —नारी उच्चकुलोद्भव सती साध्वी स्त्री,—नाशः 1 कुल का नाश या बरबादी 2 विधर्मी, आचारहीन, बहिष्कृत 3 ऊँट,—पञ्चपरा वस्त्र को बनाने वाली पीढ़ियों की श्रेणी,—पतिः 1 कुटुंब का मुखिया 2 वह ऋषि जो दस सहस्र विद्यार्थियों का पालनपोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है—परिभाषा—मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्, अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः ।—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णसंभवसभवा स्यात् श० १, रघु० १।९५, उत्तर० ३।४८, -पांसुला कुलटा स्त्री जो अपने कुल को कलंक लगावे, व्यभिचारिणी स्त्री, —पांसिः—पांसिका,

—बाला (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री, —पुत्र अच्छे कुल में उत्पन्न बेटा —इह सर्वस्वफलिन कुलपुत्रमहादुमा —मृच्छ० ४।१०,—पुरुष 1 सम्मान के योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुरुष—कश्चुम्बति कुलपुरुषो देवयाश्चरणपल्लव मनोज्ञमपि—भर्तृ० १।९२ 2 पूर्वज,—पूर्वक, पूर्व पुरुष,—भार्या सती साध्वी पत्नी, —भृत्या गर्भवती स्त्री की परिचर्या, - मर्यादा कुल का सम्मान या प्रतिष्ठा,—मार्ग: कुल की रीति, सदाचारिता या ईमानदारी का व्यवहार, योषित्, —वधू (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री, —वार: मुख्य दिन (अर्थात् मंगलवार और शुक्रवार) —विद्या कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान, —विप्र: कुलपुरोहित,—वृद्ध: परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी पुरुष, व्रत:,-सत् कुल का व्रत या प्रतिज्ञा —मलिनयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् —रघु० ३।७०, विश्वस्मिन्नधुनाऽन्य कुलव्रत पालयिष्यति क —भामि० १।१३,—शैलिन् (पु०) किसी कुटुंब या श्रमिकसंघ का मुखिया 2 उच्चकुल में उत्पन्न शिल्पकार,—संख्या 1 कुल की प्रतिष्ठा 2 सम्मानित परिवारों में गणना—मनु० ३।६६,—सन्तति (स्त्री०) संतान, वंशज, वंशपरंपरा —मनु ५।१५९, —सभव (वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न,—सेवक, श्रेष्ठ नौकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुललक्ष्मी,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रिय भग० १।४१, —स्थिति (स्त्री०) कुटुम्ब की प्राचीनता या समृद्धि।

कुलक (वि०) [कुल+कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल में जन्मा हुआ,- क. 1 शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया 2 उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार 3 बाँबी, - कम् 1 संग्रह, समूह 2 व्याकरण की दृष्टि से सम्बद्ध श्लोकों का समूह, (पाँच से पन्द्रह तक के श्लोकों का समूह जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० दे० शि० १।१–१०, रघु० १।५—९, इसी प्रकार कु० १।११—६।

कुलटा [कुल+अट्+अच्+टाप् शक० पररूपम्] व्यभिचारिणी स्त्री—मुद्रा० ६।५, याज्ञ० १।२१५। सम० —पति भ्रष्टा या व्यभिचारिणी स्त्री का स्वामी।

कुलतः (अव्य०) कुल+तसिल्] जन्म से।

कुलत्थ [कुल+स्था+क पृषो० साधु] कुलथी, एक प्रकार की दाल।

कुलन्धर (वि०) [कुल+धृ+खच्, मुम्] अपने कुल का सिलसिला चलाने वाला।

कुलन्धरः,-क: [कुल+धृ+खच्, मुम्] चोर।

कुलवत् [कुल+मतुप्, मस्य वत्वम्] कुलीन, अच्छे घराने में उत्पन्न।

कुलव्रजः,-व्रज् [कुल पक्षिसमूह व्रजतेऽत्र—कुल+व्रज् +घञ्] पक्षियों का घोंसला,—कूजत्कलान्तकपोतकुक्कुटकुला कूले कुलाव्रजा उत्तर० २।९, मै० १।१४१ 2 शरीर 3 स्थान, जगह 4 बुना हुआ वस्त्र, जाला 5 वस्त्र या पात्र। सम०—निलाय घोंसले में बैठना, अंडे सेना, अंडों में से बच्चे निकालने के लिए अंडों के ऊपर बैठना। —स्थ: पक्षी।

कुलायिका [कुलाय+ठन्+टाप्] पक्षियों का पिंजड़ा, चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़बा।

कुलाल [कुल्+कालन्] 1 कुम्हार, ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे–भर्तृ० २।९५ 2 जंगली मुर्गा।

कुलि [कुल्+इन्, किन्] हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल+ठन्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल में उत्पन्न, क: 1 स्वजन—याज्ञ० २।२२३ 2 शिल्पिसंघ का मुखिया 3 उच्चकुलोद्भव कलाकार। सम० —वेला दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग+अच्] 1 पक्षी 2 चिड़िया।

कुलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुल इनि] कुलीन, उच्चकुलोद्भव, (पु०) पहाड़।

कुलिन्द (ब० व०) [कुल+इन्द] एक देश तथा उसके शासकों का नाम।

कुलिर,—रम् [कुल+इरच्, किच्च] 1 केकड़ा 2 राशिचक्र में चौथी राशि, ककर्राशि।

कुलिश (नो) श,-शम् [कुलि+शी+ड, पृषो० दीर्घ] इन्द्र का वज्र - वृत्रस्य हन्तु कुलिश कुण्ठिता श्रीव लक्ष्यते - कु० २।२०, अवेक्षतास कुलिशक्षतानाम् - १।२०, रघु० ३।६८, ४।८८, अमरु ६६ 2 वस्तु का सिरा या किनारा मेघ० ६१। सम० -धर, -धारिन् इन्द्र का विशेषण, -यायक: मैथुन की विशेष रीति, रतिबंध।

कुली [कुलि+ङीष्] पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साली।

कुलीन (वि०) [कुल+ख] ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिग्यशोवितमिवाकुलीनाम्—का० ११,—न: अच्छी नसल का घोड़ा।

कुलीनसम् [कुलीन भूमिरत्र इव्य स्यति - कुलीन+सो +क] पानी।

कुलीर,-रक [कुल्+ईरन् किच्च, कुलीर+कन्] 1 केकड़ा 2 राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।

कुलुकगुम्फा [की पृथिव्या लुक्का, लुक्कायिता गुम्फ इव] लुकाठी, जलती हुई लकड़ी।

कुलूत (ब० व०) एक देश और उसके शासकों का नाम।

कुल्माषम् [कुल्+विषप्, कुल माषोऽस्मिन् ब० स०] काँजी, ष: एक प्रकार का अनाज। सम०—अभिषुतम् काँजी।

कुलज (वि०) [कुल+जन्] 1 कुटुंब, वंश या निगम से संबंध रखने वाला 2 सत्कुलोद्भव,—जः प्रतिष्ठित मनुष्य,—जम् 1 कौटुंबिक विषयों में पिता की भांति पूछताछ (समवेदना, बधाई आदि) 2. हड्डी—शब्दार्थ० २।१६ 3 मांस 4. छाज,—जा 1. ज्येष्ठी स्त्री 2 छोटी नदी, नहर, सरिता—कुल्यास्त्वाभिः पवमानपात्रैः शालिनो मौंजमूला—शि० १।१५, कुल्यैर्वाप्यामपादपान्—रघु० १२।३ ७।४९, 3 परिखा, खाई 4 आठ द्रोण के बराबर अनाज की नाप।

कुलम् [कु+वा+क] 1 फूल 2 कमल।

कुवर=दे० तुवर।

कुवलम् [कु+वल्+अच्] 1 कुमुद 2 मोती 3 पानी।

कुवलयम् [को पृथिव्या वलयमिव—उप० स०] 1 नीला कुमुद कुवलयदलस्निग्धैर्वृन्दैर्दृशां नयनोत्सवम्—उत्तर० ३।२२ 2 कुमुद 3 पृथ्वी (पृ० भी)।

कुवलयिनी [कुवलय+इनि+ङीप्] 1 नीली कुमुदिनी का पौधा 2 कमलों का समूह 3 कमलस्थली 4 कमल का पौधा।

कुवाद (वि०) [कु+वद्+अच्] 1. मान घटाने वाला, मान कम करने वाला, निन्दक 2 नीच, दुरात्मा, अधम।

कुविकः (ब० व०) एक देश का नाम।

कुवि (वि) अव्य [कु+विद्+क, मुम्, कुप्+किन्दच्] 1 कुत्सित कुत्सिन्दस्त्व तावत्पटयामि गुणग्रामममभित —काव्य० ७ 2 कुलाहा जाति का नाम।

कुवेणी [कु+वेण्+इन्+ङीप्] 1 मछलियां रखने की टोकरी [कुत्सिता वेणी] 2 बुरी तरह बंधी हुई सिर की चोटी।

कुवेलम् [कुवेषु जलजपुष्पेषु ई शोभा लाति—कुव+ई+ला+क] कमल।

कुशः [कु+शी+ड] 1 एक प्रकार का घास (दर्भ) जो पवित्र माना जाता है और बहुत से धर्मानुष्ठानों में जिसका होना आवश्यक समझा जाता है,—पवित्रार्थं इमे कुशाः—श्राद्धकल्प—कुशपूत प्रवयास्तु विष्टरम्—रघु० ८।१८, १।४९, ९५ 2 राम के बड़े पुत्र का नाम (यह राम के जुड़वां पुत्रों में से एक था, जब रामने सीता को निष्ठुरतापूर्वक जंगल में छोड़ दिया था, उसके बाद शीघ्र ही जुड़वां पुत्रों का जन्म हुआ जिनमें कुश बड़ा था क्योंकि उसने संसार को पहले देखा, कुश और लव दोनों भाइयों का पालन पोषण वाल्मीकि ने किया, उन्हें आदिकवि के महाकाव्य रामायण का पाठ करना सिखाया गया। राम ने कुश को कुशावती का राजा बना दिया और वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक वहाँ रहा। परन्तु अयोध्या की पुरानी राजधानी की अधिष्ठात्री-देवी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि उसे इस प्रकार देवी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, तब कुश अयोध्या को लौट आया—दे० रघु १६।३-४२),—शम् पानी जैसा कि 'कुशेशय' में। सम०—अग्रम् कुशघास के पत्ते का तेज किनारा, इसीलिए समास में यह शब्द प्रायः 'तीक्ष्ण' 'तेज' और 'तीव्र' अर्थ प्रकट करता है जैसाकि 'बुद्धि (वि०) तीव्रबुद्धि, तेजबुद्धि वाला, तीक्ष्णबुद्धि, —(अपि) कुशाग्रबुद्धे कुशली भवस्ते—रघु० ५।४, —अङ्गीय (वि०) तीव्र, तेज,—अङ्गुरीयक कुशघास की बनी अंगूठी जो धर्मानुष्ठान के अवसर पर पहनी जाती है,—आसनम् कुशा का बना हुआ आसन या चटाई, —स्थलम् उत्तर भारत में एक स्थान का नाम —वेणी० १।

कुशल (वि०) [कुशात् लातीति—कुश+ला+क] 1 सही, उचित, मंगल शुभ—भि० १६।४१, भग० १८।१० 2. प्रसन्न, समृद्ध 3 योग्य, दक्ष, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ (अधि० के साथ या समास में)—दण्डनीत्यां च कुशलम् याज्ञ० १।३१३, २।१८१, मनु० ७।१९० रघु० ३।१२,—लम् 1 कल्याण, प्रसन्न तथा समृद्ध अवस्था, प्रसन्नता,—पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिं मुनिः —रघु० १।५८, अप्यापन्नं कुशलमबले पृच्छति त्वाम् —मेघ० १०१ अपि कुशलं भवतः 'आप अच्छी तरह से हैं ?' 2 शुभ 3 चतुराई, योग्यता। सम०—काम (वि०) प्रसन्नता का इच्छुक,—प्रश्न किसी से कुशलमंगल पूछना (मित्रों की भांति),—बुद्धि (वि०) बुद्धिमान्, समझदार, तीव्रबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि।

कुशलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुशल+इनि] प्रसन्न, राजी खुशी, समृद्ध—अथ भगवल्लोकानुग्रहाय कुशली काश्यपः—श० ५, रघु० ५।४, मेघ० ११२।

कुशा [कुश+टाप्] 1. रस्सी 2. लगाम।

कुशावती [कुश+मतुप्, मस्य वः, ङीप्] इस नाम की एक नगरी, राम के पुत्र कुश की राजधानी, दे० 'कुश'।

कुशिक (वि०) [कुश+ठन्] भैंगी आंख वाला,—कः 1 विश्वामित्र के दादा का नाम, (कुछ दूसरे वर्णनों के अनुसार—विश्वामित्र के पिता का नाम) 2. काली (हल की) 3. तेज की गाय।

कुशी [कुश+ङीष्] हल की फाली।

कुशीलवः [कुत्सितं शीलमस्य—कुशील+अ] 1. भाट, गवैया—मनु० ८।६५, १०२ 2 (नाटक का) पात्र, नर्तक—तत्सर्वं कुशीलवाः सङ्गीतप्रयोगेण यत्नवतीह्यिद्यापनाय प्रवर्तताम्—मा० १, तत्किमिति भारम्भयति कुशीलवैः सह सङ्गीतकम्—वेणी० १ 3. समाचार सुनाने वाला 4. वाल्मीकि का विशेषण।

कुशुम्भः [कु+शुम्भ्+अच्] सन्दाली का छलावा, कसम्भल।

कुसूलः [कुस्+ऊलच्, पृषो० तस्य सत्वम्] 1. अन्नागार (खत्ती), कोठी, भंडार--को धन्यो बहुभिः पुत्रैः कुसूलापूपचाटकैः —हि० प्र० २० 2. भूसी से बनाई हुई आग।

कुसेशयम् [कुसे+शी+अच्, अलुक् स०] कुमुद, कमल —भुजान्तकुसेशयरजोमृदुरेणुरस्याः(पन्थाः)—रघु० ४।१०, रघु० ६।१८,—यः सारस पक्षी।

कुस् (कथा० पर०—कुस्नाति, कुस्नित) 1. फाड़ना, निचोड़ना, खींचना, निकालना—जिघ्रा. कुस्नन्ति मासानि —भट्टि० १८।१२, १७।१०, ७।९५ 2. जाँचना, परीक्षा लेना 3 चमकना, स्निह्—निचोड़ना, फाड़ना, निकालना—उपान्तयोर्निष्कुषित विहर्जुं – रघु० ७।५०, भट्टि० ९।३०, ५।४२, इसी प्रकार—कार्कैर्निष्कुषित स्वभि कवलित गोधायुभिर्लुण्ठितम् —गंगाष्टक।

कुषाकुः [कुष्+काकु] 1 सूर्य 2 अग्नि 3 लंगूर, बंदर।

कुष्ठः,-ष्ठम् [कुष्+क्थन] कोढ़ (कोढ १८ प्रकार का होता है)—गलत्कुष्ठाग्निभूताय च—भर्तृ० १।९०। सम०—अरिः 1 गंधक 2 कुछ पौधों के नाम।

कुष्ठित (वि०) [कुष्ठ+इतच्] कोढ़ से पीड़ित, कोढ़-ग्रस्त।

कुष्ठिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुष्ठ+इनि] कोढ़ी।

कुष्माण्डः [कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य—ब० स० शाक० परुरूपम्] एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी, कुम्हड़ा।

कुस् (दिवा० पर०— कुष्यति, कुसित) 1 आलिंगन करना 2 घेरना।

कुसितः [कुस्+क्त] 1 आवाद देश 2 जो सूद से जीविका चलाता है, दे० 'कुसीद' नी०।

कुसी (सि)द [कुस्+ईदच्] (इसे 'कुसीद' या 'कुसीद' भी लिखते हैं। साहूकार, सूदखोर – न्, 1 वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटायी जाय 2. उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय —कुसीदाद् दारिद्र्य परकरगतद्रव्यिणमनात् – पंच० १।११, मनु० १।९०, ८।४१०, याज्ञ० १।११९। सम०—पथः सूदखोरी, सूदखोर (पठान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज—वृद्धिः (स्त्री०) धन पर मिलने वाला ब्याज,—कुसीदवृद्धिर्द्वैगुण्य नात्येति सकृदाहृता—मनु० ८।१५१।

कुसीदा [कुसीद+टाप्] सूदखोर स्त्री।

कुसीदायी [कुसीद+ङीष्, ऐ आदेश] सूदखोर की पत्नी।

कुसीदिकः—कुसीदिन् (पु०) [कुसीद+ठन्, इनि वा] सूदखोर।

कुसुमम् [कुस्+उमन्] 1 फूल,—उदेति पूर्वं कुसुम ततः फलम्,—ब० ७।३० 2 ऋतु-स्राव 3 फल। सम०—अञ्जनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भाँति प्रयुक्त होती है,—अञ्जलिः मुट्ठी भर फूल,—अधिपः, —अधिराज् (पु०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगंधयुक्त होते हैं),—अवचायः फूलों का चुनना —अन्यत्र यूयं कुसुमावचाय कुरुध्वमस्मिन् करोमि सख्य —काव्य० ३,—आसवकम् फूलों का गजरा, —आकरः,—आयुधः,—इषुः,—बाणः,—शरः 1 पुष्प-मय बाण 2 कामदेव,—अभिनव कुसुमेषुव्यापार – मा० १ यहाँ कुसुमेषु व्यापार' भी पढ़ा जा सकता है) - तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय—भर्तृ० १।१, ऋतु० ६।३३, चौर० २०, २३, रघु० ७।६१, शि० ८।७०, ३।२ कुसुमशरबाणभावेन–गीत० १०,—आकरः 1 उद्यान 2 फूलों का गुच्छा 3 बसंत ऋतु ऋतूना कुसुमाकर –मृग० १०।३५, इसी प्रकार भामि० १।४८, — आत्मकम् केसर, जाफरान,— आसवम् 1 शहद 2 एक प्रकार की मादक मदिरा (फूलों से तैयार की गई),—उज्ज्वल (वि०) फूलों से चमकीला, **कामुकः**, **-चापः**,—**धन्वन्** (पु०) कामदेव के विशेषण कुसुम-चापमतेजयदशुभि – रघु० ९।३९, ऋतु० ६।३७, — चित (वि०) पुष्पों का अम्बार हो गया है जहाँ — पुरम् पाटलीपुत्र (पटना) का नाम – कुसुमपुरगमि-योग प्रत्यनुदासीनो राजस मुद्रा० ३,—लता खिली हुई लता, - शयनम् फूलों की शय्या - विक्रम० ३।१०, —स्तबक फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता कुसुमस्तवक-स्थेव द्वे मती स्त्रो मनस्विनाम्—भर्तृ० २।३३।

कुसुमवती [कुसुम+मतुप्+ङीप् मस्य व] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

कुसुमित (वि०) [कुसुम+इतच्] फूलों से युक्त, पुष्पों से सुसज्जित।

कुसुमाल. [कुसुमवत् लोभनीयानि द्रव्याणि आलाति इति कुसुम+आ+ला+क] चोर।

कुसुम्भ,-भम् [कुस्+उम्भच्] 1 कुसुम्भ,—कुसुम्भारुण चारु चेल बभाना—जग०, रघु० ६।६ 2 केसर 3 संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु,—भम् सोना,—भः वाह्य स्नेह (कुसुम्भी रंग से तुलना की गई है)।

कुसूल [कुस्+ऊलच्] 1 अन्नागार (खत्ती), भण्डार, गृह (अनाज आदि के लिए)।

कुसृति (स्त्री०) [कुत्सिता सृतिः] जालसाजी, ठगी, धोखा-देही।

कुस्तुम. [कु+स्तुभ्+क] 1 विष्णु 2 समुद्र।

कुहः [कुह्+णिच्+अच्] कुबेर, वनस्पति।

कुहकः [कुह्+ण्वुल्] छली, ठग, चालाक (ऐन्द्रजालिक), — कम्,—का चालाकी, धोखा। सम०—कार (वि०) कपटी, छलिया,—चकित (वि०) दाँवपेंच से डरा हुआ, शक करने वाला, सावधान, सजग—हि० ४।१०२,—स्वनः,—स्वरः मुर्गा।

कुहकः [कुह्+घञ्+अच्] 1. मूर्ख 2 साँप—नम् 1 छोटा मिट्टी का बर्तन 2. सीसे का बर्तन।

कुहना, कुहनिका [कुह्+यु, कुहन+क+टाप्, इत्वम्] स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कड़ी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ।

कुहरम् [कुह्+क—कुह राति, रा+क] 1. गुफा, गड्ढा —जैसा कि 'नाभिकुहर' या आस्य° में 2 काम 3 गला 4. सामीप्य 5 मैथुन।

कुहरितम् [कुहर+इतच्] 1 ध्वनि 2 कोयल की कुहू 3 मैथुन के समय सी, सी का शब्द।

कुहूः, कुहूः (स्त्री०) [कुह्+कू, कुहु+ऊङ्] 1 मास का अन्तिम दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन—(अमावस्या) जब कि चन्द्रमा अदृश्य होता है—करगतैव गता पथिक कुहूः —नै० ४।५७ 2 इस दिन की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ३।८६ 3 कोयल की कूक—पिकेन रोचारुणचक्षुषा मुहुः कुहूरुत्साहयत चन्द्रवैरिणी—नै० १।१००, उन्मीलति कुहूः कुहूरिति कलोलालापा पिकानां गिरः—गीत० १। सम०—शब्दः,—ध्वनिः,—रवः,——स्वरः, कोयल।

कू (भ्वा०—तुदा० आ०—कवते, कुवते) (क्रमा० उभ०—कु—कूनाति, कु—कूनीते) 1 ध्वनि करना, कलरव करना 2 कष्टावस्था में क्रन्दन करना—खगाश्चुकुविरेऽशुभम्—भट्टि० १४।२०, १।२०, १४।५, १५।२६, १६।२९।

कूः (स्त्री०) [कू+क्विप्] पिशाचिनी, चुड़ैल।

कूचः [कू+चट्] स्त्री का स्तन (विशेष कर अबाध या अविवाहिता स्त्री का) दे० 'कुच'।

कूचिका, कूची [कूच+कन्+टाप्, इत्वम्, कूच+ङीष्] 1 बालों का बना छोटा ब्रुश, कूची 2 ताली।

कूज् (भ्वा० पर०—कूजति, कूजित) अस्पष्ट ध्वनि करना, गूंजना, कूजना, कूकना—कूजन्त राम रामेति मधुर मधुराक्षरम्—रामा०, पुस्कोकिलो यन्मधुर चुकूज—कु० ३।३२, ऋतु० ६। २२, रघु० २।१२, नै० १।१२७ नि —, परि—, वि , कूजना, कूकू की अस्पष्ट ध्वनि करना।

कूजः, कूजनम्, कूजितम् [कूज्+अच्, कूज्+ल्युट्, कूज+क्त] 1 कूजना, कूकू की ध्वनि करना 2 पक्षियों की चहचहाहट।

कूट (वि०) [कूट+अच्] 1 मिथ्या, जैसा कि—'कूटा स्यु पूर्वसाक्षिण' में याज्ञ० १।८० 2 अचल, स्थिर, दृढ़,—टम् 1 जालसाजी, भ्रम, धोखा 2 दाँव, जालसाजी से भरी हुई योजना 3 जटिल प्रश्न, पेचीदा या उलझनदार स्थल जैसा कि कूटश्लोक और कूटान्योक्ति 4 मिथ्यात्व, असत्यता (प्रायः समास में विशेषण के बल के साथ प्रयोग) °कपटम्, झूठे या धोखे में डालने वाले शब्द, °पूगः, °शालम् आदि 5 पहाड़ का शिखर या चोटी—वर्षयन्निव तत्कूटानुदहैर्घातुरेणूनि—रघु० ४।७१, मेघ० ११३ 6. उभार या उत्तुंगता 7. अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा 8 सींग 9 सिरा, किनारा—याज्ञ० ३।९६ 10. प्रधान, मुख्य 11 राशि, ढेर, समूह; अभ्रकूटम्—बादलों का समूह, इसी प्रकार अम्बुकूटम्—जलराशि का ढेर 12. हथौड़ा, घन 13 हल की फाली, कुशी 14 हरिणों को फंसाने का जाल 15. मुट्ठी, जैसे ऊनी धागे में बर्छी, या हाथ की यष्टिका में कृपाण 16 अलंकरण,—टः 1. घर, आवास 2 अगस्त्य की उपाधि। सम०—अक्ष झूठा या कपट से भरा पासा (सीसा या पारा भरा हुआ जिससे फेंकने पर वह खास बल पर ही गिर हो)—कूटाक्षोपविदेविन—याज्ञ० २।२०२,—अगारम् छत पर बनी कोठरी, —अर्थः अर्थों की सन्दिग्धता °आख्यिका कहानी, उपन्यास, —उपायः जालसाजी से भरी योजना, कूटचाल, कूटनीति —कारः धोखेबाज, झूठा गवाह,—कृत् (वि०) उलझानेवाला, धोखा देने वाला 2 जाली दस्तावेज बनानेवाला —याज्ञ० २।७० 3 घूस देने वाला (पु०) 1 कायस्थ 2 शिव का विशेषण,—कार्षापणः झूठा कार्षापण,—जङ्घः गुप्तचर,—तुलम् (पु०) ठग,—तुला पासा वाली तराजू, —दर्भ (वि०) जहाँ झूठ (मिथ्यात्व) कर्तव्य कर्म समझा जाय (ऐसा स्थान, घर, और देश आदि), —पाशकः पित्तदोषयुक्त ज्वर जिससे हाथी ग्रस्त होता है, हस्तिमातङ्ग्वर—अधिरोह वैकृतविधर्तवादकः कलम कठोर इव कूटपाकल (अभिहन्ति)—मा० १।३९, (कभी कभी इसी शब्द को 'कूटपाकल' भी लिख देते हैं)—पाकलः कुम्हार, कुम्हार का आवा,—पाशः, —बन्धः जाल, फंदा,—रघु० १३।३९,—मानम् झूठी नाप या तोल,—मोहनः स्कन्द का विशेषण,—यन्त्रम् हरिण एवं पक्षियों को फंसाने का जाल या फंदा,—युद्धम् छल और धोखे की लड़ाई, अधर्मयुद्ध रघु० १७।६९, —शाल्मलिः (पु० स्त्री०) 1. सेमल वृक्ष की एक जाति, 2 तेज काटो से युक्त वृक्ष (एक उपकरण—गदा—जिससे यमराज पापियों को दण्ड देता है)—दे० रघु० १२। ९५ और इस पर मल्लि० की टीका,—शासनम् जाली आज्ञापत्र या फरमान,—साक्षिन् (पु०) झूठा गवाह, —स्थ (वि०) शिखर पर खड़ा हुआ, सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित (दक्षावलीद्योतक तालिका में प्रधान पद पर अवस्थित),—स्थः परमात्मा (अचल, अपरिवर्तनीय, तथा शाश्वत) भग० ६।८, १२।३,—स्थम् छोटा सोना।

कूटकम् [कूट—कन्] 1 जालसाजी, धोखाधड़ी, चालाकी 2. उत्सव, उत्सुकता 3. कुशी, हल की फाली। सम० —अक्षवाक्यम् गढ़ी हुई कहानी।

कूजात (अव्य०) [कूट+तस्] ढेरों या समूहों में।
कूजत्व=कुब्ज।
कूज् (चुरा० उभ०—कूजयति—ते, कूजित) 1 बोलना, बातचीत करना 2 सिकोड़ना, बंद करना (इस अर्थ में आ० माना जाता है)।
कूजिका [कूज्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] 1. किसी पशु का सींग 2. वीणा की खूंटी।
कूजित (वि०) [कूज्+क्त] बन्द, मुड़ा हुआ।
कूटकः [कुट+वुन्+अच्, पृषो०] पहाड़ी आबनूस।
कूपः [कुत्सितं सन्तृप्तं अस्मिन्—कु+पक् दीर्घश्च] 1. कूआँ—कूपे पयसि पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्—भर्तृ० २।४९, इसी प्रकार—नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप मा कदापि कृथाः, अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ 2. छिद्र, रन्ध्र, गड्ढा, गर्त जैसा कि 'जघनकूप' में 3. चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी 4 मस्तूल —ओणीनौकूपदण्डः—दश० १। सम०—अङ्कः,—अङ्गः रोमांच,—कच्छपः, —मण्डूकः—की (आ०) कुएँ का कछुवा या मेंढक, (आल०) अनुभवशून्य मनुष्य, जो सांसारिक अनुभव नहीं रखता, सीमित जानकारी रखने वाला मनुष्य जो केवल पास पड़ोस को ही जानता है, (प्रायः 'तिरस्कारद्योतक' शब्द),—यन्त्रम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र—°यन्त्रघटिका, °यन्त्रवाटी रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ। °यन्त्रघटिका न्याय=दे० 'न्याय' के नीचे।
कूपकः [कूप+कन्] 1 कुआँ (अस्थायी या कच्चा) 2 छिद्र, रन्ध्र, गर्त 3 कूल्हों के नीचे का गड्ढा 4. खूंटा जिसके सहारे किस्ती का लंगर बाँध दिया जाता है 5 मस्तूल 6 चिता 7 चिता के नीचे का छिद्र 8. चमड़े की बनी तेल-कुप्पी 9 नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष।
कूपार (वा) रः [कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन्—ब० स०] समुद्र, सागर।
कूपी [कूप+ङीप्] 1 छोटा कुआँ, कुइयाँ 2 पलिघ, बोतल 3 नाभि।
कूप्य (ब) र (वि०) (स्त्री०—री) [कु+क्य (ब) रच्] 1. सुन्दर, रुचिकर 2 कुबड़ा,—रः,—रम् गाड़ी की बल्ली या स्थूण-भुजा जिसमें जूआ बाँधा जाता है, —री 1 कम्बल या किसी दूसरे कपड़े के परदे से ढकी हुई गाड़ी 2 गाड़ी की बल्ली जिससे जूआ बाँधा जाय—वेणी० ४।
कूर,-रक् [वे+क्विप्=ऊः, को भूमौ उप्तं वपनं लाति—ला+कः, ककारोरभेदः] भोजन, भात—इतश्च कूरभुततौकमिश्रं पिण्डं हस्ती प्रतिग्राह्यते मानपुरुषं —मृच्छ० ४।
कूर्चः,-र्चम् [कुर्=चर्द् नि० दीर्घः] 1. पुच्छा, गठरी 2 मुट्ठीभर कुश घास 3 मोरपंख 4. दाढ़ी—आयतमलक्ष्यकारणं सविशेषमूलमग्रं जीर्णकूर्चानाम्—उत्तर० ४, या पूरयतिअमनेन चित्रफलक लेखकूर्चानां तापसाना कदम्बैं —का० ६ 5 घुटकी 6 नाक का ऊपरी भाग, दोनों भौंवों के बीच का भाग 7 कूँची, ब्रुश 8. चोखा, आलसाजी 9 सेंकी बघारना, डींग मारना 10. हन्स, —र्चं 1 सिर 2 भण्डार। सम०—शीर्षः—शेखरः नारियल का पेड़।
कूर्चिका [कूर्चक+टाप्+इत्वम्] 1 चित्रकारी करने की कूँची, ब्रुश या पेंसिल 2. दाढ़ी 3 कली, फूल 4 जमाया हुआ दूध 5 सुई।
कूर्द् (म्वा० उभ०—कूर्दति-ते, कूर्दित) 1 छलांग लगाना, कूदना 2 खेलना, बालकेलि करना—वज्रक्षुराजुर्जुरुश्च स्यमुरुक्कूर्दिरे तथा—भट्टि० १४।७७, ७९, १५।४५, उद्—, कूदना, उछलना।
कूर्दनम् [कूर्द्+ल्युट्] 1 उछलना 2 खेलना, क्रीडा करना, °नी 1 चैत्र की पूर्णिमा को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व 2 चैत्रमास की पूर्णिमा।
कूर्परः [कुर्+पा+क, दीर्घः] दोनों भौंवों के बीच का भाग।
कूर्परः [कुर्+क्विप्, कुर्-पृ+अच्, दीर्घः नि०] 1 कोहनी—शि० २०।१९ 2 घुटना।
कूर्मः [कौ जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो० तारा०] 1 कछुवा —गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः—मनु० ७। १०५, भग० २।५८ 2 विष्णु का दूसरा (कूर्मावतार) अवतार। सम०—अवतारः विष्णु का कूर्मावतार —दु० गीत० १ -क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्टे, केशव धृतकच्छपरूप, जय जगदीश हरे। --पृष्ठम्,—पृष्ठकम् 1 कछुवे की कमर या पीठ 2 तलवार का ढकना,—राजः द्वितीय अवतार के समय कछुवे के रूप में विष्णु।
कूलम् [कूल+अच्] 1 किनारा, तट —राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलय —गीत० १, नदीवोभयकूलभाक्- रघु० १२।३५, ६८ 2 ढलान, उतार 3 ओर, कोर, किनारी, सन्निकटता कुलायकूलेषु विलुठ्य तेषु ते—नै० १।१४१ 4 तालाब 5 सेना का पिछला भाग 6 ढेर, टीला। सम०-चर (वि०) नदी के किनारे चरने वाला, या विचरने (घूमने) वाला, —भूः (स्त्री०) तटस्थित भूखण्ड,—भृङ्गकः,—भृङ्गटः भँवर।
कूलङ्कष (वि०) [कूल+कष्+अच्, मुम्] तट को काटने वाला, या अन्दर ही अन्दर जड़ खोखली करने वाला—कूलङ्कषेव प्रसभमभस्तटतरुं च—रघु० ५।२१, —षः नदी की धारा, या प्रवाह,—षा नदी।

कूलम्बष (वि०) [कूल+ब+अच्, मुम्] डूबता हुआ अर्थात् नदी के तट को सीमा बनाने वाला।

कूलम्भुज (वि०) [कूल+उद्+भुज्+अच्, मुम्] किनारों को तोड़ने वाला (जैसे नदियाँ, हाथी)—रघु० ४।३२।

कूलम्भुह् (वि०) [कूल+उद्+भह्+क्विप्, मुम्] किनारे को फाड़ डालने तथा बहा कर ले जाने वाला—मा० ५।१९।

कूष्माण्डः [कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य] पेठा, कुम्हड़ा, तुमड़ी।

कूहा [कु ईषत् उह्यतेऽत्र, कु+वह्+क] कुहरा, धुंध।

कृ १ (स्वादि० उभ०—कृणोति, कृणुते) प्रहार करना, घायल करना, मार डालना २ (तना० उभ०—करोति, कुरुते, कृत) 1 करना—तात किं करवाण्यहम् 2 बनाना—गणिकामवरीयमकरोत्—दश०, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।४५, युवराज कृत आदि 3 निर्माण करना, गढ़ना, तैयार करना—कुम्भकारो घटं करोति, कटं करोति आदि 4 बनाना, रचना करना—गुहं कुरु, सभां कुरु मदर्थे भो 5 पैदा करना, निमित्तभूत होना, उत्पन्न करना—रतिमुभयप्रार्थना कुरुते—शा० २।१ 6. बनाना, कमबद्ध करना,—अञ्जलिं करोति कपोतहस्तक कृत्वा 7 लिखना, रचना करना—चकार सुमनोहरं साहसम् पञ्च० १ 8 सम्पन्न करना, व्यस्त होना—पूजां करोति 9 कहना, वर्णन करना,—इति बहुविधा कथा कुर्वन् आदि 10 पालन करना, कार्यान्वित करना, आज्ञा मानना,—एव क्रियते युष्मदादेश—मा० १, या करिष्यामि वचस्तव या शासनं मे कुरुध्वं आदि 11 प्रकाशित करना, पूरा करना, कार्य में परिणत करना—सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्—भर्तृ० २।२३ 12 फेंकना, निकालना, उत्सर्ग करना, छोड़ना मूत्रं कृ=मूत्रोत्सर्ग करना, पेशाब करना, इसी प्रकार पुरीषं कृ टट्टी फिरना 13. धारण करना, पहनना, ग्रहण करना—स्त्रीरूपं कृत्वा, नानारूपाणि कुर्वाण—याज्ञ० १।१६२ 14. मुंह से निकलना, उच्चारण करना—मानुषीं गिरं कृत्वा, कलहं कृत्वा आदि 15 रखना, पहनना (अधि० के साथ)—कण्ठे हारमकरोत्—का० २।२, पाणिमुरसि कृत्वा आदि 16. सौंपना (कोई कर्तव्य), नियत करना—अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्र तत्र विपश्चितः—मनु० ७।८१ 17 पकाना (भोजन) जैसा कि 'कृतान्न' में 18 सोचना, आदर करना, ख्याल करना—वृष्टिस्तृणीकृतजयध्वजसत्त्वसारा—उत्तर० ६।१९ 19. ग्रहण करना (हाथ में)—कुरु करे मृदमेकमयोघनम्—नै० ४।५९ 20 धारण करना—यथा जातरूपं, फूलरूप मुञ्चते, इसी प्रकार यद्यद् कृ, स्वाहा कृ आदि 21 बुलाना (सबध) बिताना—वर्षाणि दश चक्रु:=बिताये, अर्थ कृ—बरा ठहरिए 22. की ओर मुड़ना, ध्यान मोड़ना, दृढ़ निश्चय करना (अधि० या सम्प्र० के साथ)—मानवें कुरुते मनः—मनु० १२।११८, नरकमनाथ धियं न करोति—शि० २ 23. दूसरे के लिए कोई काम करना (चाहे काम के लिए हो या हानि पहुँचाने के लिए); —यवनेन कृत मयि, जसी कि मे करिष्यति आदि 24. उपभोग करना, काम में लगाना, उपयोग में लाना—किं तया क्रियते धेन्वा—पञ्च० १ 25. विभक्त करना, टुकड़े टुकड़े करना ('आ' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषणों के साथ) द्विधा कृ=दो टुकड़े करना, शतधा कृ, सहस्रधा कृ आदि 26. अधीन बनाना, ('आत्' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषणों के साथ) पूर्ण रूप से किसी विशेष अवस्था को प्राप्त कराना—आत्मसात्कृ, अधीन करना अपने में लीन करना—रघु० ८।२, भस्मसात्कृ राख बना देना, यह धातु बहुधा संज्ञा, विशेषण और अव्ययों के साथ उनको क्रिया बनाने के लिए कुछ कुछ अंग्रेजी के प्रत्यय 'en' या 'fy' की भांति प्रयुक्त होता है और अर्थ होता है "किसी व्यक्ति या वस्तु को वह बना देना जो वह पहले नहीं है" उदा० कृष्णीकृ उस वस्तु को जो पहले से काली नहीं है काली करना अर्थात् Blacken, इसी प्रकार श्वेतीकृ—सफेद करना (whiten), घनीकृत ठोस बना देना (Solidify), विरलीकृ दूर दूर कहीं कहीं करना (Rarefy), आदि। कभी कभी इस प्रकार की रूप रचना दूसरे अर्थों में भी होती है—उदा० कोडीकृ—छाती से लगाना, आलिङ्गन करना, भस्मीकृ—राख करदेना, प्रवणीकृ—रुचि पैदा करना, झुकना, तृणीकृ—तिनके की भांति तुच्छ एवं हीन समझना, मदीकृ—शिथिल करना, चाल धीमी करना, इसी प्रकार शूलाकृ—लोकदार लोहे की सलाखों के सिरे पर रख कर भूनना, सुखाकृ—प्रसन्न करना, समयाकृ—समय बिताना आदि। विशे०—यह धातु उभयपदी है, परन्तु निम्नलिखित अर्थों में आत्मनेपदी ही रहती है:—(क) क्षति पहुँचाना (ख) निन्दा करना, कलंकित करना (ग) काम देना और (घ) बलात्कार करना, हिंसात्मक कार्य करना (ङ) तैयारी करना, दवा बदलना, मोड़ना (च) सस्वर पाठ करना (छ) काम में लगाना, प्रयोग में लाना—नै० पा० १। ३। १२, विशे० कृ धातु का संस्कृत साहित्य में बहुत प्रयोग मिलता है, इसके अर्थ भी नाना प्रकार से अवसरों बदलते रहते हैं या सम्बद्ध संज्ञा के अनुसार प्रायः अलग अर्थ हो जाते हैं—उदा० पदं कृ,—कदम रखना—आगमे पदं करिष्यसि—मा० ४।१९, प्रणामं कृत

मम वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १४१, मनसाकृ—सोचना, अभ्यस्त करना, मनसि कृ-सोचना -दृष्ट्वा मनस्येवमकरोत्—का० १३६, दृढ़ निश्चय करना संकल्प करना,—सख्य, मैत्री कृ मित्रता करना, अस्त्राणि कृ—अस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास करना, दंड कृ—दंड देना, हृदये कृ-ध्यान देना, कालं कृ—मरना, मतिं, बुद्धिं कृ—सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना —वपुषं कृ—पितरों को जल का तर्पण करना, चिरं कृ-देर करना, वीणां कृ—वीणा बजाना, नखानि कृ—नाखून साफ करना, कन्यां कृ—सतीत्वभ्रष्ट करना, कौमार्य भंग करना, विलां कृ—अलग करना, छोड़ा जाना जैसा कि 'अवनेय विलाकृति रति' कु० ४।२१ में, मध्य कृ—बीच में रखना, संकेत करना—मध्येकृत्य स्थित कथंकैश्चिताम्—मालवि० ५।२, वशे कृ —जीतना, वश में करना, दमन करना, चमत्कृ -आश्चर्य पैदा करना, प्रदर्शन करना, सत्कृ—सम्मान करना, सत्कार करना, तिर्यक् कृ-एक ओर रख देना,—प्रेर० (कारयति—ते) करवाना, सम्पन्न करवाना, बनवाना, कार्यान्वित करवाना —आज्ञां कारय रक्षोभि —भट्टि० ८।८४, भृत्य जनेन वा कटं कारयति—सिद्धा०—, इच्छा० (चिकीर्षति—ते) करने की इच्छा करना, अङ्गी —1 स्वीकार करना, अपनाना—अङ्गी कुरुष्व दृगङ्गीकरोतु—जग०, दक्षिणामाशामङ्गीकृत्य—का० १२१ 2 मान लेना, स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3 करने की प्रतिज्ञा करना, जिम्मेवारी लेना—किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्ति कृपणव्यक्तलाभ्यो जनो लज्जते—मुद्रा० २।१८ 4 दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना—अमरु ५२, अति—बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अधि०, 1 अधिकारी होना, हकदार बनना, अधिकृत बनना, किसी कर्तव्य के लिए यात्रीकरण,—नैवाध्यकारिण्यहि देवकुले—भट्टि० २।३४, कि० ४।२५ 2 लक्ष्य बनाना, उल्लेख करना, ('विषय पर' 'के विषय में' 'के लिए' 'संकेत करके' 'उल्लेख करते हुए' अर्थों के लिए 'अधिकृत्य' शब्द का प्रयोग होता है—भीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—मा० १, शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि—मा० २, रघु० ११।६२) 3 आरंभ करना—अधिचक्रे नय हरि —भट्टि० ८।२० 4 अभिभूत करना, दबा लेना, श्रेष्ठ बनना 5 रोकना, रुकना, हाथ खींचना। अनु—, सूरत शक्ल में मिलना, अनुसमन करना, विशेषत नकल करना (कर्म व सब० के साथ)—शीलाविपर्यासनुचकार लक्ष्मीम्—भट्टि० २।८, मनु० २।१९९, श्यामतया हरेरिवानुकुर्वतीम्—का० १०, अनुकरोति भगवतो नारायणस्य—१, अप— 1 खींचकर दूर करना, हटाना, दूर खींचकर अनादर करना, योऽयमकाण्डे अपाकरीष्णुः—भट्टि० ८।२० 2 प्रहार करना, क्षति पहुंचाना, बुरा करना, हानि पहुंचाना, हानि या क्षति पहुंचाना (सब० के साथ)—न किंचिन्नयो तस्यापकर्तुं शक्यम्—पंच० १, अपा— 1. दूर करना, स्थान देना, हटाना, मिटाना—तथैवं तिमिरमपाकरोति चन्द्र —शा० ६।२९, न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति —कु० ५।१४ 2 फेंक देना, अस्वीकार करना, एक ओर रख देना, छोड़ देना—शिवा भुजङ्गदमपाचकार —रघु० ७।५०, अभ्यन्तरी— 1 दीक्षित करना 2 मित्र बनाना (अभ्यन्तर के नी० दे०) अलम्—, विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना—उभावलञ्चक्रतुरञ्चिताभ्यां तपोवनावृत्तिपथं गताभ्याम्—रघु० ११। १८, कतमो वशोऽलङ्कुरुते जनम्—शा० १, आ—, (प्रेर०) 1 पुकारना, बुलाना, निमंत्रित करना, —आकारयैनमत्र 2 निकट लाना, आविस्—प्रकट करना, दर्शनीय बनना, जाहिर करना, प्रदर्शन करना ('आविस्' के नी० दे०) उप—, (वर्त०—उपकरोति) 1 (क) मित्र बनाना, सेवा करना, सहायता करना, अनुग्रह करना, उपकृत करना (प्राय सब०, कभी-कभी अधि० के साथ)—सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम् —भट्टि० ८।१८, आत्मनश्चोपकर्तुम्—मेघ० १०१, शि० २०।७४, मनु० ८।३९४ (ख) 1 हाजरी में खड़े रहना, सेवा करना 2 (वर्त०—उपकरोति) (क) विभूषित करना, शोभा बढ़ाना, सजाना (ख) प्रयत्न करना (सब० के साथ)—भट्टि० ८।१९ ११९ (ग) तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, पूरा करना, निर्मल करना,—उषा - 1 सौंपना, देना 2. प्रारंभिक संस्कार सम्पन्न करना -मनु० ४।९५—दे० उपाकर्मन् 3 उठा लाना, लाना 4 आरंभ करना, ऊरी—, उररी—, उररी-, ऊरी-, या ऊररी-स्वीकार करना, दे० अंगीकृ० ऊपर,—रघु० १५।७०—दे० ऊरी भी, तिरस्—1 अपशब्द कहना, बुरा भला कहना, अनादर करना, घृणा करना 2 पीछे छोड़ना, आगे बढ़ना, जीतना, दे० 'तिरम्' के नीचे०, स्वम्—नू, कोई (तिरस्कार सूचक) दक्षिणी—, या प्रदक्षिणी—, किसी वस्तु के चारों ओर घूमना (अपना दक्षिण पार्श्व उसकी ओर करके), प्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुतानग्नीन्—शा० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशमनन्तरमर्तुरकन्यती च, रघु० २।७१, दुस्—, बुरे ढंग से करना, धिक्—, धिक्कारना, बुरा भला कहना, अनादर करना—दे० धिक् के नी०, नमस्—, नमस्कार करना, पूजा करना—मुनिवृद नमस्कृत्य—सिद्धा०- दे० नमस् के नी०, निस्—, क्षति पहुंचाना, बुरा करना, निस्—1 हटाना, हाँक कर दूर कर देना—मनु० ११।५३ 2 तोड़ देना, निष्कर्मा कर देना - भट्टि० १५।५४, निरा— 1. निकाल देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना—भट्टि०

६।१००, रघु० १४।५७ 2 निराकरण करना (मत आदि का) 3 छोड़ना, त्यागना 4 पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ध्वंस करना 5 बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना, व्यङ्ग—, अपमान करना, अनादर करना, धरा—, (पर०) अस्वीकार करना, अवहेलना करना, निरादर करना, खयाल नहीं करना —ना हनूमान् पराकुर्वन्नयमत् पुष्पकम् प्रति भट्टि० ८।५०, परि (परिकरोति) 1 घेरना 2 (परिष्करोति) विभूषित करना, सजाना रथो हेमपरिष्कृत —महा०, (आल०) निर्मल करना, चमकाना, शुद्ध करना (शब्दों का), पुरस्—, सम्मुख रखना राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्य —श० ४, हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्—वेणी० २।१८—दे० पुरस् के नीचे, प्र— 1 करना, सम्पन्न करना आरम्भ करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसमें 'कृ')—जानन्नपि नरो दैवात्प्रकरोति विगर्हितम्— पञ्च० ४।३५, भट्टि० २।३६, ऋतु० १।६ मनु० ८।५४, ६०, ८।२३९, अमरु १३ 2 बलात्कार करना, अत्याचार करना, अपमान करना, —भट्टि० ८।१९ 3 सन्मान करना, पूजा करना, प्रति— 1 बदला देना, वापिस देना, लौटाना—पूर्वं कृतार्थो मित्राणां नार्थं प्रतिकरोति यः —रामा० 2. उपचार करना,—व्याधिमिच्छामि ते ज्ञातुं प्रतिकुर्यां हि तत्र वै—महा०, 3 वापिस देना, ज्यों का त्यों कर देना, पुनः स्थापित करना—मनु० ९।२८५ 4 प्रतिशोध करना रघु० १२।९४, प्रमाणी— 1 भरोसा करना, विश्वास करना 2 प्रमाण पुरुष मानना, आज्ञा मानना —शासनं तत्कृतिरपि प्रमाणीकृतम् श० ६ 3 आँख गड़ाना, वितरण करना, वर्ताव करना या व्यवहार करना —दैवेन प्रभुणा स्वयं जगति यद्यस्य प्रमाणीकृतम् —भर्तृ० २।१२१, प्रादुस्—, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, जाहिर करना—दे० प्रादुस् के नी०, प्रत्युप— 1 प्रतिफल देना, (आभार) प्रत्यर्पण करना, वि—, बदलना, परिवर्तन करना, प्रभावित करना—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः— कु० १।५९, रघु० १३।४२ 2 आकृति बिगाड़ना, विरूप करना —विकृताकृति —मनु० ९।५२ 3 उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना —मनु० १।७५, नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा —महा० 4 विघ्न डालना, हानि पहुँचाना, क्षति पहुँचाना (आ०) —हीनान्यनुपकर्तुं वि प्रयुञ्जानि विकुर्वते —रघु० १७। ५८ 5 उच्चारण करना—विकुर्वाणः स्वरानन्य —भट्टि० ८।२० 6 (पत्नी की भाँति) विश्वासघातक होना, विभि—, प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, हिंस— 1. सताना, कष्ट देना, तंग करना, हानि पहुँचाना —किं नस्त्वानि विप्रकरोषि—श० ७, कु० २।१ 2. बुरा करना, दुर्व्यवहार करना —श० ४, १७ 3. प्रभावित करना, परिवर्तन लाना,—कमपरमवशं न विप्रकुर्युः— कु० ६।९५, आ— 1 प्रकट करना, साफ करना— नामरूपे व्याकरवाणि—छा० 2 प्रतिपादन करना, व्याख्या करना 3 कहना, वर्णन करना —तस्मे सर्वं भगवान् व्याकरोतु —महा०, कृ—, (संकुरुते) (क) करना (पाप, अपराध)—ये पञ्चापञ्चाशदोषसंहिता पापानि संकुर्वते—मृच्छ० ९।४ (ख) निर्माण करना, तैयार करना (ग) करना सम्पन्न करना 2. (संस्कुरुते) (क) अलङ्कृत करना, शोभा बढ़ाना—कङ्कुम समस्कुरुत माधवश्रीम्—शि० ९।२५ (ख) निर्मल करना, चमकना—वाग्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९, शि० १४।५० (ग) वेदमन्त्रों के उच्चारण से अभिमन्त्रित करना—मनु० ५।३६, (घ) वेदविहित संस्कारों से (किसी पुरुष को) पवित्र करना, शुद्ध करने वाले शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान करना,—संस्कारोऽभिप्रेत्या मैथिलेयौ यथाविधि रघु० १५।३१, याज्ञ० २।१२८, साक्षी—, एक ओर मुड़ना, परोक्ष रूप से मुड़ना—साक्षीकृता चारुतरेण तस्थौ—कु० ३।६८, रघु० ६।१४।

कृकः [कृ+कक्] गला।

कृकणः (र) [कृ+कन्+अच्, कृ+कृ+ट] एक प्रकार का तीतर।

कृक (कृ) **लास** [कृक+लस्+अच्] छिपकली, गिरगिट।

कृकवाकुः [कृक+वच्+ञ्नु, क् आदेश] 1 मुर्गा 2 मोर 3 छिपकली सम०—ध्वज कार्तिकेय का विशेषण।

कृकाटिका [कृक+अट्+अच्=कृकाट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 ग्रीवा का पीछा उठा हुआ भाग 2 गर्दन का पिछला भाग।

कृच्छ्र (वि०) [कृती+रक्, छ आदेश] 1 कष्ट देने वाला, पीड़ाकर—मनु० ६।७८ 2 बुरा, विपद्ग्रस्त, अनिष्टकर 3. दुष्ट, पापी 4 संकटग्रस्त, पीड़ित, —च्छ्रः, —च्छ्रम्, 1 कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, अघ—कृच्छ्र महतीर्णं —रघु० १४।६, १३।७७ 2 शारीरिक तप, तपस्या, प्रायश्चित्त मनु० ४।२२२, ५।२१, ११।१०५—आस्थ, कृच्छ्रेण, कृच्छ्रात् बड़ी कठिनाई के साथ, दुःख पूर्वक, बड़े कष्ट के साथ—सम्यं कृच्छ्रेण रक्षते—हि० १।१८५, । सम०—आप्त (वि०) 1. जिनका जीवन खतरे में है 2. कष्टपूर्वक सांस लेने वाला 3 कठिनाई से जीवन-यापन करने वाला,—साध्य (वि०) 1. कठिनाई से ठीक हो सके, (रोगी या रोग) 2. कष्टसाध्य।

कृत् (तुदा० पर०—कृन्तति, कृत्त) 1. काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ना, धज्जियाँ उड़ाना, टुकड़े २ करना, नष्ट करना —ब्रह्मरक्षो विक्षिप्तमंगच्छेदो न कृन्तति जीवितम्—उत्तर० ३।३१, ३५ भट्टि० ९।४२ १५।९७ १६।१५, मनु० ८।१२, अव—,काट फेंकना, विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, उद्—, 1. काटना या काट फेंकना, फाड़ना—रघु० १२।४९, मनु० ११।१०५ 2. खण्ड खण्ड करना, टुकड़े काटना —उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिः—मा० ५।१६ वि— 1 काटना, फाड़ना, टुकड़े २ करना—विश्वासाद्भुजयुग्मं मूलान्यपि निकृन्तति—पंच० २।३९, निकृन्तन्निव मानसम् —भट्टि० ७।११ मल्लनिकृत्तकण्ठे —रघु० ७।५८।

ii (क्या० पर०—कृणत्ति, कृत्त) 1. काटना, 2. घेरना।

कृत् (वि०) [कृ+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता, उत्पादक, रचयिता आदि पापकृत्, पुण्यकृत्, प्रतिमाकृत् आदि, (पुं०) 1 प्रत्ययों का समूह जिनको धातु के साथ जोड़ने से (संज्ञा, विशेषण आदि) बनते हैं 2 इस प्रकार बना हुआ शब्द।

कृत (वि०) [कृ+क्त] किया हुआ, अनुष्ठित, निर्मित, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि (भू० क० कृ० —कृ—तना० उभ०)—तम् 1 कार्य, कृत्य, कर्म—मनु० ७।१९७ 2 सेवा, लाभ 3. फल, परिणाम 4 लक्ष्य, उद्देश्य 5 पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं 6 संसार के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७२८००० वर्षों के बराबर है—दे० मनु० १।७९, और इस पर कुल्लूक की टीका, परन्तु महाभारत के अनुसार यह युग मनुष्यों के ४८०० वर्षों से अधिक वर्षों का है, चार की संख्या। सम० —अकृत (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया, पूरा नहीं किया गया,—अङ्क (वि०) 1 चिह्नित, दागा —मनु० ८।२८१, 2 संख्यांकित, (क्रः) पासे का वह भाग जिस पर चार बिन्दु अंकित हों,—अञ्जलि (वि०) विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए—भग० ११।१४, मनु० ४।१५४, अनुकार (वि०) किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी, —अनुसारः प्रथा परिपाटी,—अन्त (वि०) समाप्त करने वाला, अवसायी, (तः) 1 मृत्यु का देवता यम—द्वितीय कृतान्तनिघाटन्त व्याधमपश्यत्—हि० १ 2 भाग्य, प्रारब्ध —क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः मेघ० १०५ 3 प्रदर्शित उपसंहार, कवि, प्रमाणित सिद्धान्त 4. पापकर्म, अशुभ कर्म 5 शनि ग्रह का विशेषण 6 शनिवार,—अन्तक सूर्य,—अन्नम् 1 पकाया हुआ भोजन,—कृतान्नमुदकं स्त्रियः —मनु० ४।२१९ ११।३ 2. पका हुआ भोजन 3 मल,—अपराध (वि०) अपराधी दोषी, मुजरिम,—अभय (वि०) भय या खतरे से सुरक्षित,—अभिषेक (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ,—अभ्यास (वि०) अभ्यस्त,—अर्थ (वि०) 1. जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल 2. सन्तुष्ट, प्रसन्न, परितृप्त,—कृत कृतार्थोऽस्मि निर्वर्तितोऽहम्—शि० १।२९, रघु० ८।३, कि० ४।९ 3. चतुर, (कृतार्थीकृ) 1 सफल बनाना 2 भरपाई होना—कान्त प्रत्युपचारलक्षचतुरया कोपः कृतार्थीकृत —अमरु १५, —अवधान (वि०) होशियार, सावधान,—अवधि (वि०) 1 निश्चित, नियत 2 हदबन्दी किया हुआ सीमित,—अवस्थ (वि०) 1 बुलाया हुआ, प्रस्तुत कराया हुआ 2 निश्चित, निर्धारित, —अस्त्र (वि०) 1 हथियारबन्द 2 शस्त्र या अस्त्र विज्ञान में प्रकाशित—रघु० १७।६२,—आत्मन् (वि०) प्रगत, प्रवीण (पुं०) परमात्मा,—आगस् (वि०) दोषी, अपराधी, मुजरिम, पापी,—आत्मन् (वि०) 1 संयमी, स्वस्थचित्त, स्थिरात्मा 2 पवित्र मन वाला,— आधार (वि०) परिश्रम करने वाला, सहन करने वाला, —आह्वान (वि०) ललकारा हुआ, उत्साह (वि०) परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्यमी,—उद्वाह (वि०) 1 विवाहित 2 हाथ ऊपर उठा कर नमस्या करने वाला, —उपकार (वि०) 1 अनुगृहीत, मित्रवत् आचरित,, सहायता प्राप्त— कु० ३।७३ 2 मित्रसदृश,—उपभोग (वि०) बरता हुआ, उपभुक्त,—कर्मन् (वि०) 1 जिसने अपना काम कर लिया है—रघु० ९।३ 2 दक्ष चतुर (पुं०) 1 परमात्मा 2 सन्यासी,— काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं, काल (वि०) 1 समय की दृष्टि से जो स्थिर है, निश्चित 2 जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है (लः) नियत समय याज्ञ० २।१८,—कृत्य (वि) कृतार्थ,—भग० १५।२० 2 सन्तुष्ट परितृप्त—मा० ३।१९ 3 जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है,— क्रयः खरीदार,— क्षण (वि०) 1 निश्चित समय की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला,—यत्न सर्वे सौम्यका कृतश्रमास्तिष्ठाम —पञ्च० १ 2 जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है,—ज्ञ (वि०) 1 अनुभवी, मनु० ४।२१८, ८।१९ 2 जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं मानता है, —चूड 1 जिस बालक का मुण्डनसंस्कार हो गया है —मनु० ५।५८, ६७,—ज्ञ (वि०) 1 उपकार मानने वाला, आभारी—मनु० ७।२०९, २१०, याज्ञ० १।३०८ 2 श्रद्धालु (ज्ञः) कुत्ता,—तीर्थ (वि०) 1 जिसने तीर्थों के दर्शन किए हैं 2 जो (अध्यापनकला के) अध्यापक से अध्ययन करता हो 3. जिसे नरकीय खूब सूझती हो 4 पथ प्रदर्शक,— दास. किसी निश्चित समय के लिए रक्खा हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

सेवक,—धी (वि०) 1. दूरदर्शी, लिहाज रखने वाला (दूरदर्शी) 2. विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्—मुद्रा० ५।२०,—निर्देशः पश्चात्तापी,—निश्चय (वि०) कृतसंकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ,—पुंज (वि०) धनुर्विद्या में निपुण, —पूर्व (वि०) पहले किया हुआ,—प्रतिकृतम्, आक्रमण और प्रत्याक्रमण, मायाबोलना और प्रतिरोध करना—रघु० १२।९४,—प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने किसी से कोई करार किया हुआ है 2 जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है,—बुद्धि (वि०) विद्वान्, शिक्षित, बुद्धिमान्—मनु० १।९७, ७।३०,—मुख (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्,—लक्षण (वि०) 1. मुद्राङ्कित, चिह्नित 2 दागी—मनु० ९।२३९ 3 श्रेष्ठ, सुशील परिभाषित, विवेचित,—वर्मन् (पु०) कौरवपक्ष का एक योद्धा जो कृप और अश्वत्थामा के साथ महाभारत के युद्ध में जीवित रहा, बाद में वह सात्यकि के हाथों मारा गया,—विद्य (वि०) विद्वान्, शिक्षित—शूरोऽसि कृतविद्योऽसि—पञ्च० ४।४३, सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति नरास्त्रयो जना, शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्- पञ्च० १।४०, —वेतन (वि०) वैतनिक, तनख्वादार (नौकर आदि) —याज्ञ० २।१६४,—वेधिन् (वि०) आभारी दे० कृतघ्न,—वेश (वि०) सुवेशित, विभूषित—मनसति सुतनुदेशे केशवे कुञ्जशय्याम्—गीत० ११,—शोभ (वि०) 1 शानदार 2 सुन्दर 3 पटु, दक्ष,—शौच (वि०) पवित्र किया हुआ,—श्रमः,—परिश्रमः अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है—कृतपरिश्रमोऽस्मि ज्योतिःशास्त्रे—मुद्रा० १, (मैंने अपना समय ज्योतिःशास्त्र के अध्ययन में लगाया है),—सङ्केत (वि०) कृतनिश्चय, दृढ़संकल्प,—संकेत (वि०) (समय आदि का) नियत करने वाला—नामसंग्रेण कृतसंकेत वादयते मृदु वेणुम् —गीत० ५,—संज्ञ (वि०) 1 पुनः चेतना प्राप्त, होश में आया हुआ 2 उद्बोधित,—संनह (वि०) कवचधारी, —सापत्निका वह स्त्री जिस के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो,—हस्त,—हस्तक (वि०) 1 दक्ष, चतुर, कुशल, पटु 2 धनुर्विद्या में कुशल,—हस्तता 1 कौशल, दक्षता 2 धनुर्विद्या या शस्त्रविद्या में कुशल—कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सारिवौ—वेणी० ६।१२, महावी० ६।४१।

कृतक (वि०) [कृत+कन्] 1 किया हुआ, निर्मित, सज्जित (विप० नैसर्गिक)—यत्नकृतं तत्तवनिस्वम्-न्यायसूत्र 2 कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ, —अकृतकविधिसर्वक्षीणमाकल्पजातं—रघु० १८।५२ 3 झूठा, आदिष्ट या बहाना किया हुआ, मिथ्या, विडावटी, कल्पित—कृतकफलहृ कृत्वा—मुद्रा० ३, कि० ८।४६ 4. दत्तक (पुत्र) (बहुधा समास के अन्त में भी)—यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे (बाल मन्दारवृक्षः)—मेघ० ७५, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (जहाति)—श० ४।१३।

कृतम् (अव्य०) [कृत्+कम् बा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो (करण० के साथ) अथवा कृत सन्देहेन—श० १, अथवा—गिरा कृतम् —रघु० ११।४१, कृतमत्रेण—उत्तर० ४।

कृति (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1 कर्म, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान 2 कार्य, कृत्य, कर्म 3 रचना, काम, सरचना—(तौ) स्वकृति गापयामास कविप्रथमपद्धतिम् —रघु० १५।३३, ६४,६९, कै० २२।१५५ 4 जादू, इन्द्रजाल 5 क्षति पहुँचाना, मार डालना 6 बीस की संख्या। सम०—कर. रावण का विशेषण।

कृतिन् (वि०) [कृत-इनि] कृतकार्य, कृतार्थ, संतुष्ट, परितृप्त, प्रसन्न, सफल—यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च मुखमानि च—उत्तर० १।३२, न खल्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान्—रघु० ३।५१, १२।६४ 2. (अत) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मतवाला, भाग्यवान्—श० १।२४, श० ७।१९ 3. चतुर, सक्षम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्,—त शूरप्रशकलीकृत कृती —रघु० ११।२९, कु० २।१०, कि० २।९ 4 अच्छा, गुणी, पवित्र, पावन—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः—भर्तृ० १।५६ 5. अनुवर्ती, आज्ञाकारी, आदेशानुसार करने वाला।

कृते, कृतेन (अव्य०) [सब० के साथ या समास में] के लिए, के निमित्त, के कारण—अमीषां प्राणानां''' कृते भर्तृ० ३।३६, काव्यं यशसेऽर्थकृते—काव्य० १ भग० १।३५, याज्ञ० १।२१६, श० ६।

कृत्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1 चमड़ा, खाल 2 (विशेषतः) मृगचर्म जिसपर (धर्मशिक्षा का) विद्यार्थी बैठता है 3 (लिखने के लिए) भोजपत्र 4 भोजवृक्ष 5 कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मंडल। सम०—वासः —वासस् (पुं०) शिव का विशेषण—स कृत्तिवासास्तपसे यतात्मा—कु० १।५४, मालवि० १।१।

कृत्तिका (ब० व०) [कृत्+तिकन्, कित्] 1 २७ नक्षत्रों में से तीसरा कृत्तिका नक्षत्र (६ तारों का पुंज) 2 छः तारे जो युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिचारिका के कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं। सम० —तनयः,—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय का विशेषण,—भवः चाँद।

कृत्नु (वि०) [कृ+क्नु] 1 भली भाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली 2 चतुर, कुशल,—त्नुः कारीगर, कलाकार।

कृत्य (वि०) [कृ+क्यप्, तुक्] 1 जो किया जाना चाहिए

सही, उचित, उपयुक्त 2. युक्तियुक्त, व्यवहार्य 3. जो राजशक्ति से पदभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती —राजत० ५।२४७,—त्यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य—मनु० २।२३७ ७।६७ 2 कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार—बन्धुकृत्यम् मेघ० ११४, अन्योन्यकृत्यं —श० ७।३४ 3. प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य —कूजद्भिरापादितबंशकृत्यम्—रघु० २।१२, कु० ४। १५ 4 यश, कारण,—त्यः कर्मवाच्य के कृदन्त के सम्भावनार्थक प्रत्ययों का समूह--नामत —तव्य, अनीय य और एलिम,—त्या 1 कार्य, करनी 2 जादू 3 एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जादू टोनों के कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो।

कृत्रिम (वि०) [कृत्या निर्मितम् —कृ+क्त+मप्] 1 बनावटी, काल्पनिक, जो स्वतः स्फूर्त या मनमाना न हो, अजित °मित्रम्, °शत्रु आदि, रघु० १३।७५, १४।३७ 2. गोद लिया हुआ (बच्चा)—दे० नी०, —म., °पुत्र नकली या गोद लिया हुआ पुत्र, हिन्दूधर्म में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, गोद लिया हुआ ऐसा वयस्क पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति गोद लेते समय न ली गई हो, तु० कृत्रिम स्यात्स्वय दत्त —याज्ञ० २।१३१, तु० मनु० ९।१६९ से भी,—म् 1 एक प्रकार का नमक 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—धूप,—धूपक, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप,—पुत्र दे० कृत्रिम, —पुत्रक, गुड्डा, पुत्तलिका—कु० १।२९,—भूमि (स्त्री) बनाया हुआ फर्श,—वनम् वाटिका, उद्यान।

कृत्वस् (अव्य०) एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के साथ 'तह' और 'गुणा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है —उदा० अष्टकृत्व आठगुणा, आठ तह का, इसी प्रकार दश°, पञ्च° आदि।

कृत्सम् [कृत्+स, कित्] 1 जल 2 समूह,—त्स पाप।

कृत्स्न (वि०) [कृत्+क्स्न] सारे, सम्पूर्ण, समस्त एक कृत्स्ना नगरपरिखाप्रांशुबाहुर्मुनक्ति—श० २।१५ भग० ३।२९, मनु० १।१०५, ५।४२।

कृन्तत्रम् [कृत्+क्तत्र, नुमागम] हल।

कृन्तनम् [कृत्+ल्युट्] काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना।

कृप. [कृप्+अच्] अश्वत्थामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहन शरद्वत् ऋषि की सन्तान थे, इनकी माता जानपदी नाम की अप्सरा थी। कृप का पालन पोषण शन्तनु ने किया था। कृप धनुर्विद्या में बड़ा निपुण था, महाभारत के युद्ध में वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया। पाण्डवों ने उसे शरण दी। वह सात चिरजीवियों में से एक है)

कृपण (वि०) [कृप्—क्युन् न स्वणत्वम्] 1. गरीब, दयनीय, असहाय, असहाय—राजकृपण्यं रामस्ते पाल्यांश्च कृपणा प्रजा—उत्तर० ४।२५ 2. विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के अयोग्य अथवा अनिच्छुक, —कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५, इसी प्रकार —जराजीर्णैश्वर्यप्रसभगृहनाक्षेपकृपण भर्तृ० ३।१७ 3 नीच, अधम, दुष्ट—भग० २।४९ मुद्रा० २। १८, भर्तृ० २।४९ 4 सूम, कंजूस,—णम् दुर्दशा,—णः सूम, —कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते, अनल्पस्यैव वित्तानि यः परेभ्य प्रयच्छति—व्यास। सम०—धी,—बुद्धि छोटे दिल का, नीच मन का,—वत्सल (वि०) दीनदयालु।

कृपा [कृप्+भिदा० अङ्+टाप्, सप्त०,] रहम, दयालुता, करुणा—चक्रवाकयोः पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती —कु० ५।२६, शा० ४।१९, तृतीया कृपा करके।

कृपाणः [कृपा तुदति—तुद्+ड सप्तम्या अलुक्—तारा०] 1 तलवार, —स पातु व कसरिपोः कृपाण —विक्रम० १।१, कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेद —मुद्रा० 2 चाकू।

कृपाणिका [कृपाण+कन्+टाप्, इत्वम्] बर्छी, छुरी।

कृपाणी [कृपाण+ङीष्] 1 कैंची 2 बर्छी।

कृपालु (वि०) [कृपा लाति —कृपा+ला आदाने मि० डु] दयालु, करुणापूर्ण, सदय।

कृपी [कृप+ङीष्] कृप की बहन तथा द्रोण की पत्नी, । सम०—सुत द्रोण का विशेषण, —सुत अश्वत्थामा का विशेषण।

कृपीटम् [कृप्+कीटन्] 1 तलछाड़ियाँ, जंगल की लकड़ी 2 वन, जंगल की लकड़ी 3 पानी 4 पेट। सम०—योनिः 1 पनडुब्बर 2 समुद्र 3 वायु, हवा। सम०—योनि अग्नि।

कृमि (वि०) [कम्+इन्, अत इत्वम् सप०] 1. कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त—कृमिकुलचितम्—भर्तृ २।९ 2 कीड़ा (रोग) 3 गधा 4 मकड़ी 5 लाख (रंग)। सम०—कोशः,—कोषः, रेशम का कोया, °आख्यम् रेशमी कपड़ा, —जम्, —जन्यम् अगर की लकड़ी,—जा लाख कीड़ों द्वारा उत्पादित लाल रंग,—जासवः,—दारिद्रः घोंघा, सीपी में रहने वाला कीड़ा,—दंशः,—नाशः बांबी,—शत्रुः गूलर का पेड़,—सङ्घः शरीर के भीतर रहने वाली मछली,—हृतिः (स्त्री०) 1 दोहरी पीठ वाला घोंघा 2 सीपी में रहने वाला कीड़ा 3 घोंघा।

कृमिल, कृमिल (वि०) [कृमि+न, ल वा, मत्वम्] कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त।

कृमिला [कृमि+ला+क+टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री।

कृश् (दिवा० पर०—कृश्यति, कृशित) 1 दुर्बल या क्षीण होना 2 (चन्द्रमा की भांति) उत्तरोत्तर ह्रास होना (प्रेर०) दुर्बल करना।

कृश (वि०) (मध्य० कृशीयस्, उत्त० कृशिष्ठ) [कृश्+क्त, नि०] 1 दुबला पतला, दुर्बल, शक्तिहीन, क्षीण —कृशतनु कृशोदरी आदि 2. छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म (आकार या परिमाण में)—सुकृशपि न याच्य कृशधन. —भर्तृ० २।२८ 3 दरिद्र, नगण्य—मनु० ७।२०८। सम०—अङ्ग (वि०) दुबला, पतला, (-ङ्गी) 1 तन्वंगी 2 प्रियंगु लता,—उदर (वि०) पतली कमर वाला—विक्रम० ५।१६।

कृशला [कृश+ला+क+टाप्] (सिर के) बाल।

कृशानुः [कृश्+आनुक्] आग—गुरोः कृशानुप्रतिमा-द्विजेषि—रघु० २।४९, ७।२४, १०।७४, कु० १।५१ भर्तृ० २।१०७। सम०—रेतस् (पु०) शिव की उपाधि।

कृशाश्विन् (पु०) [कृशाश्व+इनि] नाटक का पात्र।

कृष् i (तुदा० उभ०—कृषति—ते, कृष्ट) हल चलाना, खेत बनाना।

ii (भ्वा० पर०—कर्षति, कृष्ट) 1 खींचना, घसीटना, चीरना, खींच लेना, फाड़ना—प्रसह्य सिंह किल तां बकर्ष—रघु० २।२७, विक्रम० १।१९ 2 किसी की ओर खींचना, आकृष्ट करना—भट्टि० १५।४७, भग० १५।७ 3 (सेना आदि का) नेतृत्व या संचालन करना —स सेनां महतीं कर्षन्—रघु० १४।३२ 4 झुकाना (धनुष आदि का)—नास्यामतकृष्टशार्ङ्गं—रघु० ५।५० 5 स्वामी होना, दमन करना, परास्त करना, अभिभूत करना—बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, सक्त स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पञ्च० ३।४६ 6 हल चलाना, खेती करना—अनु-लोमकृष्ट क्षेत्र प्रतिलोम कर्षति—सिद्धा० 7 प्राप्त करना, हासिल करना—कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः —महा० 8 किसी से ले लेना, किसी को वंचित करना (द्विकर्म०) अप—,पीछे खींचना, खींच ले जाना, घसीट कर दूर करना, लंबा करना, निचोड़ना—दन्ताग्रभिन्नमपकृष्य निरीक्षते च—ऋतु० ४।१४, रघु० १६।५५ 2 हटाना—उत्तर० १।८ 3 कम करना, घटाना, अव—,खींचना, खींच लेना, आ—,खींचना, समीप पहुँचना, बकेलना, खींच लेना, निचोड़ना (आल०)—केशेष्वाकृष्य चुम्बति—हि० १।१०९, शि० १।३३ दूरमनुसृतो सारङ्गेण वयमाकृष्टा —श० १, अमरु २।७२, कु० २।५९, रघु० १।२३ 2. (धनुष आदि का) झुकाना—शि० ३।५, शि० ९।४० 3 निचोड़ना, उतार लेना—हि० प्र० ९।४, 4 खींचना, बलपूर्वक ग्रहण करना—भट्टि० १६।२० 5 किसी दूसरे नियम या शास्त्र से शब्द ला देना, उद्—, 1 ऊपर खींचना, उठाना—अङ्गुष्ठकोटिलग्नं प्रारब्धमुत्कृष्य—रघु० ९।१४, शि० १३।६० 2. बढ़ाना, वृद्धि करना वि—,बढ़ाना, कम करना, घटाना निस्—, 1 बाहर खींचना 2 खींचतान कर निकालना, बलपूर्वक निकालना, छीनना या जबरदस्ती लेना —निष्कृष्टुमर्थं चकमे कुबेरात्—रघु० ५।२६, परि—,खींचना, निकालना, घसीटना, प्र—, 1 खींच लेना, खींचना, आकृष्ट करना 2. (सेना का) नेतृत्व करना 3 (धनुष का) झुकाना 4 बढ़ाना, वि—, 1 खींचना 2 (धनुष का) झुकाना—शरासनं तेषु विकृष्यतामिदम् श० ९।२८, विप्र—,हटाना, सम्—,निकट लाना।

कृषकः [कृष्+ण्वुल्] 1. हलवाहा, हाली, किसान 2. फाली 3 बैल।

कृषाकः, कृषिकः [कृष्+आलच्, किकन् वा] हलवाहा, किसान।

कृषि (स्त्री०) [कृष्+इक्] 1. हल चलाना 2 खेती, कास्तकारी—जीवते बालिशस्यापि सस्नेहपतिता कृषि—मुद्रा० ३, कृषि बिलष्टामवृष्ट्या—मच० १।११, मनु० १।९०, ३।६४, १०।७९, भग० १८।४४। सम० —कर्मन् (नपु०) खेती का काम,—जीविन् (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान,—फलम् खेती से होने वाली उपज, या लाभ—मेघ० १६,—सेवा खेती करना, किसानी।

कृषीवलः [कृषि+वलच्, दीर्घ] जो खेती से अपनी जीविकार्जन करे, किसान,—कृषि चापि कृषीवल—याज्ञ० १।३७६, मनु० ९।३८।

कृष्णः [कृष+कृ=टक् पृषो०] शिव की उपाधि।

कृष्ट (वि०) [कृष्+क्त] 1 खींचा हुआ, उखाड़ा हुआ, घसीटा हुआ, आकृष्ट 2. हल चलाया हुआ।

कृष्टिः [कृष्+क्तिन्] विद्वान् पुरुष—(स्त्री) 1 खींचना, आकर्षण 2 हल चलाना, भूमि जोतना।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1 काला, श्याम, गहरा नीला 2. दुष्ट, अनिष्टकर,—ष्णः 1. काला रंग 2. काला हरिण 3 कौआ 4 कोयल 5 चान्द्रमास का कृष्णपक्ष, 6 कलियुग 7 आठवाँ अवतारधारी विष्णु (भारतीय पुराणशास्त्र के अनुसार कृष्ण अत्यंत प्रसिद्ध नायक है, देवताओं में सर्वप्रिय है! वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के कारण कृष्ण कंस का भान्जा है, पर व्यवहा-रतः वह नन्द और यशोदा का पुत्र है, उन्होंने ही इसका पालन-पोषण किया और वहीं कृष्ण ने अपना बचपन बिताया। जब उसने कंस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना और बक आदि क्रूर राक्षसों को मार गिराया तथा शूर-वीरता के अनेक आश्चर्यजनक कर्तव्य किये तो कमशः उसका दिव्य स्वरूप प्रकट होने लगा। युवावस्था के उसके प्रमुख साथी थे गोकुल के ग्वालों की बधुएँ तथा गोपियाँ जिनमें राधा उसको विशेष

प्रिय थी (तु० जयदेव के गी० की)। कृष्ण ने कंस, नरक, केशि, अरिष्ट तथा अन्य अनेक राक्षसों को मार गिराया। यह अर्जुन का घनिष्ट मित्र था, महाभारत के युद्ध में उसने अर्जुन का रथ हाँका, पाडवो के हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता ही कौरवो के नाश का मुख्य कारण थी। सकट के कई अवसर आये, परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पनाप्रवण मति ने पाडवो को कोई आँच न आने दी। यादवो का प्रभासक्षेत्र में सर्वनाश हो जाने के पश्चात् वह अरस नामक शिकारी के बाण का, मृग के धोखे में, शिकार हो गये। कहते हैं कृष्ण के १६००० स्त्रियाँ थी, परन्तु रुक्मिणी, सत्यभामा (राधा भी) उनकी विशेष प्रिय थी। कहते हैं उसका रग साँवला या बादल की भाँति काला था—तु० बर्हिरिव मलिननर तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम्—गीत० ८, उसका पुत्र प्रद्युम्न था)। 8 महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास 9 अर्जुन 10 अगर की लकड़ी,—क्षणम् 1 कालिमा, कालापन 2 लोहा 3 अजन 4 काली पुतली 5 काली मिर्च 6 सीसा। सम०—अगुरु (नपु०) एक प्रकार के चदन की लकड़ी,—अचलः रैवतक पर्वत का विशेषण,—अजिनम् काले हरिण का चर्म,—अयस् (नपु०)—अयस्कम्,—आयसम् लोहा, कच्चा या काला लोहा,—अभ्रम्,—अयिस् (पु०) आग,—अष्टमी भाद्रपद कृष्णपक्ष का आठवाँ दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे गोकुलाष्टमी भी कहते हैं, —आवास. अश्वत्थ वृक्ष,—उरगः एक प्रकार का साँप,—कन्दम् लाल कमल,—कर्मन्(वि०)काली करतूत वाला, मुजरिम, दुष्ट, दुश्चरित्र, दोषी,—काकः पहाड़ी कौआ,—काचः भैसा,—काष्ठम् एक प्रकार की चदन की लकड़ी, काला अगर,—कोहलः जुआरी,—गतिः आग, —आयोधने कृष्णगतिं सहायम्—रघु० ६।४२,—ग्रीवः शिव का नाम,—तारः काले हरिणो की एक जाति,—द्रेहः मधुमक्खी,—धनम् बुरे तरीको से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई,—द्वैपायनः व्यास का नाम,—तमहमरागम-कृष्ण कृष्णद्वैपायन वन्दे—वेणी० १।३,—पक्षः चान्द्रमास का अँधेरा पक्ष,—मृगः काला हरिण—मृजे कृष्णमृगस्य वामनयन कण्डूयमाना मृगीम्—श० ६।१६,—मृत्तः,—वर्त्मन्,—वर्णः काले मुह का बन्दर,—यजुर्वेदः तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद,—लोहः चुम्बक पत्थर,—वर्त्मः 1 कालाराग 2 राहु 3 शूद्र,—वर्त्मन् (पु०) 1 आग,—रघु० ११। ४२, मनु० २।९४ 2 राहु का नाम 3 नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा,—वेणा नदी का नाम,—शकुनिः कौवा, शारः,—सारः चितकबरा कालामृग—कृष्णसारे ददच्चक्षु स्त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६,—सुरभिः भैसा,—सखः, —सारथिः अर्जुन का विशेषण।

कृष्णकम् [कृष्ण+कन] काले मृग का चमड़ा।

कृष्णकः [कृष्ण+का+क] धूँधची का पौधा, गुंजा-पौधा, —कम् धूँधची, घघुटली।

कृष्णा [कृष्ण+टाप्] 1. द्रौपदी का नाम, पाडवों की पत्नी—कि० १।२६ 2 दक्षिण भारत की एक नदी जो मसुलीपट्टम् में समुद्र में गिरती है।

कृष्णिका [कृष्ण+ठन्+टाप्] काली सरसों।

कृष्णिमन् (पु०) [कृष्ण+इमनिच्] कालिमा, कालापन।

कृष्णी [कृष्ण+ङीष्] अँधेरी रात।

कॄ 1 (तुदा० पर०—किरति, कीर्ण) 1. बखेरना, इधर-उधर फेंकना, उडेलना, डालना, तितर-बितर करना —समरशिरसि चञ्चत्पञ्चषूद्दण्डभूनामुपरि शरतुषार कोऽप्यय वीरयोस, किरति—उत्तर० ५।२, ६।१, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम्—गीत० ४, श० १।७, अमरु ११ 2 छितराना, ढकना, भरना—भट्टि० ३।५, १७।४२। अप—, 1 बखेरना, इधर-उधर डालना, —अपकिरति कुसुमम्—सिद्धा० 2 पैरो से खुरचना (भोजन या आवास आदि के लिए), पूरा हर्ष, (चौपायो और पक्षियो में) (इस अर्थ में क्रिया का रूप अपस्किरते बनता है)—अपस्किरते वृको हृष्ट., कुक्कुटो भक्षार्थी इवा आश्रयार्थी च—सिद्धा०, अपा—, उतार फेंकना, अस्वीकार करना, निराकरण करना, अव—, बखेरना, फेंकना —अवाकिरन्बाललता प्रसूनै —रघु० २।१०, आ—, 1 चारों ओर फैलाना 2 खोदना, उद्—, 1 ऊपर को बखेरना, ऊपर को फेंकना—रघु० १।४२ 2 खोदना, खोदकर खोखला करना 3 उत्कीर्ण करना, खुदाई करना, मूर्ति बनाना —उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निश्चलिताललसा वहिण —विक्रम० ३।२, रघु० ४।५९, उप—, (उपस्किरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, परि—, 1 घेरना—परिकीर्णा परिवादिनी पुने.—रघु० ८। ३५ 2 सोपना, देना, बाँटना—मही महेन्द्र परिकीर्य सूनौ—रघु० १८।३३, प्र— 1 बखेरना, फेंकना उडेलना—प्रकीर्ण पुष्पाणा हरिचरणयोरञ्जलिरयम् —वेणी० १।२ 2 (बीज आदि) बोना,—प्रति—, (प्रतिस्किरति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, फाड़ना —उरोविदार प्रतिचस्करे नखै:—शि० १।४७, वि—, बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छितराना, फैलाना —कु० ३।६१, कि० २।५९, भट्टि० १३।१४, २५, विकि—, फेकना, छोड़ना, उतार फेंकना—कु० ४।६, सम्—, मिलाना, सम्मिश्रण करना, एक स्थान पर गड्डमड्ड करना, संयुद्—छेदना, सुराख करना, बींधना—रघु० १।४।

II (क्रया० उभ०—कृणाति, कृणीते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

कॄत् (चुरा० उभ०—कीर्तयति-ते, कीर्तित) 1. उल्लेख

करना, बोहराना, उच्चारण करना—नामि कीर्तित एव—रघु० १।८७, मनु० ७।१६७, २।१२४ 2. कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना —मनु० ३।३६, ९।४२ 3 नाम लेना, पुकार करना 4 स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना—अपञ्चवत् पुत्रान् भ्रातुरधिकीर्तिञ्च लिप्सव —भट्टि० १५।७२, पंच० १।४।

कल्पृ (भ्वा० आ०—कल्पते, कल्पित) 1 योग्य होना, पर्याप्त होना, फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, झुलकना (सप्र० के साथ)—कल्पसे रक्षणाय—या० ५।५, पश्चात्पुरं रघूद्वहभर' कल्पते विश्रमाय—विक्रम० ३।१, विभावरी यद्यरुणाय कल्पते कु० ५।४४, ६।२९, ५।७९, मेघ० ५५, रघु० ५।१३, ८।४०, शि० ६।२३, भट्टि० २२।२१ 2 सुसंबद्ध तथा विनियमित होना, सफल होना 3. होना, घटित होना, घटना—कल्पिष्यते हरे प्रीति—भट्टि० १६।१२, ९।४४, ४५ 4. तैयार होना, सज्जित होना— चक्रुपे चाप्यकुञ्जरम्—भट्टि० १४।८९ 5 अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना 6 भाग लेना, (प्रेर०) 1 तैयार करना, क्रम से रखना, सवारना 2 निश्चित करना, स्थिर करना 3 बाँटना 4. सामान जुटाना, उपस्कृत करना 5. विचार करना, अव्—, फलना, झुकना, सम्पन्न करना (सप्र० के साथ) आ—,(प्रेर०) अलंकृत करना, सजाना, उप—, 1 फलना, परिणाम निकालना, (सप्र० के साथ) मनु० ३।२०२ 2 तैयार होना, तत्पर होना—मनु० ३।२०८, ८।३३३, परि—, (प्रेर०) 1 फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना 2 तैयार करना, तैयार होना 3 गुणयुक्त करना—या० २।९ प्र—, होना, घटित होना 2 सफल होना (प्रेर०) 1 आविष्कार करना, उपाय निकालना, (योजनाएँ) बनाना 2 तैयार होना, तैयार करना, वि—, संदेह करना, संदिग्ध होना (प्रेर०) संदेह करना, सम्—, (प्रेर०) 1 दृढ़ निश्चय करना, दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना 2 इरादा करना, प्रस्ताव रखना, अनुष—, तैयार होना।

कल्पित (भू० क० कृ०) [कल्प्+क्त] 1 तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—कल्पितविवाहवेषा —रघु० ६।१० विवाहवेष में सुभूषित 2 काटा हुआ, छीला हुआ— कल्पितकेशनखश्मश्रु—मनु० ४।३५ 3 उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ 4 स्थिर किया हुआ, निश्चित 5. सोचा हुआ, आविष्कृत। सम०—कौशा अधिकार पत्र, दस्तावेज,—मुखः लोधान।

कल्पिः (स्त्री०) [कल्प्+क्तिन्] 1. निष्पत्ति, सफलता 2. आविष्कार, बनावट 3 क्रमबद्ध करना।

कल्पितक (वि०) [कल्पित+कन्] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ।

केकयः (ब० व०) एक देश और उसके निवासी - मगध-कोसलकेकयसासिना दुहितर —रघु० ९।१७।

केकर (वि०) (स्त्री०—री) [के मूर्धनि लेखतारा कर्तृ शील-मस्य —कु+अच् अलुक् - तारा०] भेंगी आंख वाला, —रघु० भेंगी आंख, तु० आंकेकर। सम० -अक्ष (वि०) वक्रदृष्टि, भेंगी आंख वाला।

केका [के+कै+क+टाप्, अलुक् स०] मोर की बोली —केकाभिर्नीलकण्ठस्तिरयति वचन तापवादुच्छिखण्ड —मा० ९।३०, यद्जसवादिनी केका —रघु० १।३९, ७।६९, १३।२७, १६।६४, मेघ० २२, भर्तृ० १।३५।

केकावत्, **केकिन्**, **केकिन्** (पु०) [केका+वलच्, केका +ठन्, केका+इनि] मोर —इत केकिकोडाकलकल-रवः पक्ष्मलदृशां—भर्तृ० १।३७।

केकिका [के मूर्धनि कुत्सित अलक+टाप्] तम्बू।

केतः [कित्+घञ्] 1 घर, आवास 2 रहना, बस्ती 3 झंडा 4 इच्छा शक्ति, इरादा, चाह।

केतकः [कित्+ण्वुल्] एक पौधा —प्रतिभान्त्यत्र वनानि केतकानाम्—घट० १५ 2 झण्डा,— कम् केवड़े का फूल —केतकैः सूचिभिर्भिन्ने - मेघ० २४, २३, रघु० ६।१७, १३।१६,—की एक पौधा—केवड़ा (=केतक)—हसित-मिव विधत्ते सूचिभि केतकीनाम्— ऋतु० २।२३ 2 केतकी का फूल— ऋतु० २, २०, २४।

केतनम् [कित्+ल्युट्] 1 घर, आवास —अकलितमहिमान केतन मङ्गलाना— मा० २।९, मम मरणमेव वरमति वितथकेतना - गीत० ७ 2 निमन्त्रण, बुलावा 3 स्थान, जगह 4 पताका, झंडा—भग्न भीमेन मरुता भवतो रथकेतनम्—वेणी० २।२३, शि० १४।२८, रघु० ९।३९ 5. चिह्न, प्रतीक जैसाकि मकरकेतन 6 अनिवार्य कर्म (धार्मिक भी)—निवापाञ्जलिदानेन केतनं श्राद्धकर्मणः, तस्योपकारे शक्तस्य कि जीवन् किमुतान्यथा—वेणी० ३।१६।

केतित (वि०) [केत+इतच्] 1 बुलाया गया, आमन्त्रित 2 आबाद, बसा हुआ।

केतुः [चाय्+तु, की आदेश] 1 पताका, झंडा - चीनां-शुकमिव केतोः प्रतिवात नीयमानस्य —शा० १।३४ 2. मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति (बहुधा समास के अन्त में)—मनुष्यराजा मनुवंशकेतुम्—रघु० २।३३, कुलस्य केतु स्फीतस्य (राजन)—रामा० 3 पुच्छतारा, धूमकेतु—मनु० १।३८ 4 चिह्न, अंक 5. उज्ज्वलता, स्वच्छता 6 प्रकाश की किरण 7. सौर-मंडल का नवाँ ग्रह जो पुराणों के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबंध है तथा जिसका सिर राहु है—कूर-ग्रह सकेतुचन्द्रसूर्यमध्यगतमिदानीम्—बृहत्० १।६।

सम०—ग्रहः अवरोही शिरोबिन्दु (जहाँ ग्रहमार्ग व रविमार्ग एक दूसरे को काटते हैं),—अः बादल,—ध्वजः (स्त्री०) ध्वज का दंड—रघु० १२।१०३,—रत्नम् नीलम, वैदूर्य, —वसनम् ध्वजा, पताका।

केदारः [के शिरसि दारोऽस्य—ब० स०] 1 पानी भरा हुआ खेत, चरागाह 2 बांवला, आलबाल 3 पहाड़ 4 केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है 5 शिव का नाम। सम०—खण्डम् मिट्टी का बना एक छोटा सा बांध जो पानी को रोके,—नाथः शिव का विशेष रूप।

केनारः [के मूर्धनि नारं—अलु० स०] 1. सिर 2 खोपड़ी 3 गाल 4 जोड़।

केपिपातः [के जले निपात्यतेऽसौ—के+नि+पत्+घिच्+अच्] पनबार, डाड, चप्पू।

केशग्रहः (नपु०) 1 वृत्त का मध्य बिंदु 2 वृत्त का प्रमाण 3 जन्मकुंडली में लग्न से पहला, चौथा, सातवां और दसवां स्थान।

केयूरः,—रम् [के बाहौ शिरसि वा यांति, या+ऊर किच्च, अलु० स०, तारा०] टाड, बिजायठ, बाजूबंध- केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः—भर्तृ० २।१९, रघु० ६।६८, कु० ७।६९,—रः एक रतिबंध।

केरलः (ब० व०) दक्षिण भारत का एक देश (वर्तमान मलाबार) और उसके निवासी—मा० ६।१९, रघु० ४।५४,—ली (स्त्री०) 1 केरल देश की स्त्री 2 ज्योतिर्विज्ञान।

केल् (स्वा० पर०—केलति, केलित) 1 हिलाना 2 खेलना, खिलाड़ी होना, क्रीडा परायण या केलिप्रिय होना।

केलकः [केल्+ण्वुल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट।

केलासः [केला विलास: सोऽस्त्यस्मिन्—केला+सद्+अ] स्फटिक।

केलिः (पु०—स्त्री०) [केल्+इन्] 1 खेल, क्रीडा 2. आमोद-प्रमोद, मनोविनोद—केलिचलन्मणिकुण्डल आदि—गीत० १, हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे—त०, राधामाधवयोर्जयति यमुनाकूले रहः केलय—त०, अमरु ७, मनु० ८।३५७, ऋतु० ४।१७ 3 परिहास, मखौल, हसीदिल्लगी,—लिः (स्त्री०) पृथ्वी 1 सम०—कला क्रीडा प्रिय कला विलासिता, शृंगारप्रिय संबोधन 2 सरस्वती की वीणा, किलः नाटक में नायक का विदूषक सहचर (एक प्रकार का विदूषक),—किलावती रति, कामदेव की पत्नी,—कीर्णः ऊँट,—कुंचिका पत्नी की छोटी बहन,—कुंचित (वि०) खेल में दक्ष—वेणी० १।२—कोषः नाटक का पात्र, नर्तक, नचैया, —गृहम्,—निकेतनम्—मन्दिरम्—सदनम् आमोदभवन, निजी कमरा, अमरु ८, —लालसः कामासक्त,—वर (वि०) क्रीडापर, विलासी, आमोद प्रिय,—शुकः परिहास, क्रीडा, मनोरंजन,—शुकः कदंब-वृक्ष की जाति,—शयनम् विलासशय्या, सुखशय्या, कोच —कौलिशयनमनुयातम् गीत० ११,—शुचिः (स्त्री०) पृथ्वी,—सचिवः आमोदप्रिय सखा, विश्वस्त मित्र।

केलिकः [केलि+कन्] अशोक वृक्ष।

केली [केलि+ङीष्] 1 खेल, क्रीडा 2 आमोद-क्रीडा। सम०—पिकः मनोविनोदार्थ रक्खी हुई कोयल,—वनी प्रमोद-वाटिका, केलिकानन, क्रीडोद्यान,—शुकः मनोरंजनार्थ पाला हुआ तोता।

केवल (वि०) [केव् सेवने वृषा°कल] 1 विशिष्ट, एकान्तिक, असाधारण 2 अकेला, मात्र, एकल, एकमात्र, इकला-दुकला—महितस्य न केवलं श्रिय प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि—रघु० ८।५, न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम् २।६३, १५।१, कु० २।३४ 3 पूर्ण, समस्त, परम, पूरा 4 नग्न, अनावृत (भूमि० आदि) कु० ५।१२ 5 खालिस, सरल, अमिश्रित, विमल—कातर्यं केवला नीति —रघु० १७।४७, —वम् (अव्य०) केवल, सिर्फ, एकमात्र, पूर्ण रूप से, नितान्त, सर्वथा—केवलमिदमेव पृच्छामि-का० १५५, न केवलम्—अपि न सिर्फ—बल्कि, वसु तस्य विभोर्न केवलं गुणवत्तापि परप्रयोजना—रघु० ८।३१, तु० ३।१९, २०।३१। सम०—आत्मन् (वि०) परम एकता ही जिसका सार है कु० २।४,—नैयायिकः सिर्फ तार्किक (जो ज्ञान की किसी और शाखा में प्रवीण न हो), इसी प्रकार °वैयाकरण।

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] केवल, निरा, सर्वथा, निपट, सिर्फ।

केवलिन् (वि०) (स्त्री० नी) [केवल—इनि] 1 अकेला एकमात्र 2 आत्मा की एकता के परम सिद्धान्त का पक्षपाती।

केश [क्लिश्यते क्लिश्नाति वा—क्लिश्+अन्, लोलोपश्च] 1 बाल—विकीर्णकेशासु परेतभूमिषु—कु० ५।६८ 2 सिर के बाल—केशेषु गृहीत्वा—या—केशाकेशि युध्यन्ते—सिद्धा०, मुक्तकेशा—मनु० ७।९१, केशव्यपरोपणादिव—रघु० ३।५६, २।८ 3 घोड़े या शेर की अयाल 4 प्रकाश की किरण 5 वरुण का विशेषण 6 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—अग्रः 1 बाल का सिरा 2 नीचे लटकते हुए लम्बे बाल, बालों का गुच्छा 3 मुण्डन संस्कार—मनु० २।६५,—आढ्यः अधिक या सुन्दर बाल,—कर्मन् (नपु०) (सिर के) बालों की सभालना,—कलापः बालों का ढेर,—कीटः जूं,—वर्तः बालों की भींची,—गृहीत (वि०) बालों से पकड़ा हुआ,—ग्रहः—ग्रहणम् बालों को पकड़ना, बालों से पकड़ना केशाग्रह खल तदा हृषवात्मजाया—वेणी० ३।११,२९, मेघ० ५०, इसी प्रकार—अब रक्षेषु केशग्रहः—का० ८

—अम्बु दूषित गंधायन,—बिन्दु (पुं०) नाई, हज्जाम, —भारः बालों की जड़,—भरः,—भारः,—हस्तः बहुत अधिक अथवा सवारे हुए बाल—तं केशपाश प्रसभमिव कुर्वद्भिरियत्व शिथिलं यमर्थे— कु० १।४८,७।५७, तु० कचपक्ष कचहस्त आदि—मज्जा जूड़ा,—मूः—मूर्धिः सिर या शरीर का अग्र भाग जहाँ बाल उगते हैं —प्रसाधनी,—मार्जनम्,—मार्जनम् कंघी, —रचना बालों को सवारना,—वेशः कबरी-बन्धन ।

केशवः [केश+अट्+अच्, शक° परूपम्] 1. बकरा 2. विष्णु का नाम 3 लटमल 4. भाई ।

केशव (वि०) [केशाः प्रशस्ता सन्त्यस्य, केश+व] बहुत या सुन्दर बालों वाला,—वः विष्णु का विशेषण—केशव जय जगदीश हरे गीत० १, केशव पतित वृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भरा —सुभा० । सम०—आम्रकः आम का वृक्ष (—म्) विष्णु का स्तव,—आह्वयः,—आह्वायः अश्वत्थ वृक्ष ।

केशाकेशि (अव्य०) [केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्त युद्धम् —पूर्वपदस्य आकार इत्वम् च] एक दूसरे के बाल खींच कर, नोच कर की जाने वाली लड़ाई—छोटा-छोटी —केशाकेशयमयुद्ध रक्षसां बालरैः सह—महा०, याज्ञ० २।२८३ ।

केशिकः (वि०) (स्त्री०—की) [केश+ठन्] सुन्दर या अलकुल बालों वाला ।

केशिन् (पु०) [केश+इनि] 1 सिंह 2 एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मार गिराया था 3 एक और राक्षस जो देव सेना को उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा मारा गया था 4 कृष्ण का विशेषण 5 सुन्दर बालों वाला । सम०—निषूदनः,—हन्तृ: कृष्ण के विशेषण —भग० १८।१ ।

केशिनी [केशिन्+ङीप्] सुन्दर जूड़े वाली स्त्री 2. विश्रवा की पत्नी, रावण और कुम्भकर्ण की माता ।

केस (स) र,—रम् [के+सृ (सृ)+अच्, अलुक् स०] 1 (सिंह आदि की) अयाल—न हस्त्यश्वरथेऽपि गजान्मृगेश्वरो विलोलजिह्वश्चलितासृक्केसर —ऋतु० १।१४, शि० ७।१४ 2 फूल का रेशा या तन्तु—पीत दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै —मेघ० २१, शि० ६।१७, मालवि० २।११, रघु० ४।६७ शि० ९।४७ 3 बकुल का पेड़ 4 (आम आदि का) रेशा या सूत,—रघु बकुल वृक्ष का फूल—रघु० ९।३६ । सम०—अचलः मेरु पहाड़ का विशेषण,—सरम् केसर, जाफ़रान ।

केसर (स) रिन् (पु०) [केसर+इनि] 1 सिंह—अनुद्धुरस्ते चलन्यनि न हि गोमायुकुलानि केसरी - शि० १६। २५ धनुर्धरं केसरिण ददर्श—रघु० २।२९, शि० ७।३ 2 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने वर्ग का प्रमुख (समास के अन्त में—तु० कुंजर, सिंह आदि) 3 घोड़ा 4 नींबू या गलगल का पेड़ 5. धुतूरा वृक्ष 6. हनुमान् के पिता का नाम । सम०—सुतः हनुमान् का विशेषण ।

कै (भ्वा० पर०—कायति) शब्द करना, ध्वनि करना ।

कैकुकम् [किंशुक+अण्] किंशुक वृक्ष का फूल ।

कैकयः [केकय+अच्] केकय देश का राजा, दे० 'केकय' ।

कैकसः [कीकस+अण्] राक्षस, पिशाच ।

कैकेयः [केकयानां राजा—अण्] केकय देश का राजा या राजकुमार,—यी केकय देश के राजा की बेटी, राजा दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब राम को राजगद्दी मिलने वाली थी, तो कैकेयी को कौशल्या से कम प्रसन्नता न थी, परन्तु उसकी दासी मन्थरा बड़ी दुष्ट थी, उसे राम से पुराना द्वेष था; इस समय बदला लेने का अच्छा अवसर समझकर मन्थरा ने कैकेयी का मन इतना अधिक पलट दिया कि वह मन्थरा के सुझाव के अनुसार राजा दशरथ से दो वरदान माँगने के लिए उद्यत हो गई जो उन्होंने पहले कभी देने की प्रतिज्ञा की थी। एक वर से उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे वर से राम के लिए १४ वर्ष का निर्वासन माँगा। रोयमान दशरथ ने कैकेयी को उसके दूषित प्रस्तावों के लिए बहुत बुरा भला कहा परन्तु अन्तत उन्हें उसकी हठ के आगे झुकना पड़ा। इस दुष्कृत्य के कारण कैकेयी का नाम बदनाम हो गया)।

कैटभः [कीट+भा+ड+अण्] राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मार गिराया (वह बड़ा बलवान् राक्षस था, कहा जाता है कि वह और मधु दोनों राक्षस विष्णु के कान से निकले जब कि वे सोये हुए थे, परन्तु जब राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए दौड़ा तो विष्णु ने उसको मार गिराया)। सम०—अरिः, जित् (पु०)—रिपुः—हन् विष्णु के विशेषण ।

कैतकम् [केतकी+अण्] केवड़े का फूल ।

कैतवम् [कितव+अण्] 1 जूए में लगाया गया दाँव 2 जूआ खेलना 3 झूठ, धोखा, आलसाजी, चालबाजी, चालाकी—हृदये वससीति मत्प्रिय यदवोचस्तदवैमि कैतवम्—कु० ४।९, -व 1 छली, चालबाज 2 जुआरी 3. धतूरे का पौधा । सम०—प्रयोगः चालाकी, दाँव, —वाद झूठ, चालबाजी ।

केदारः [केदार+अण्] चावल, अनाज,—रम् खेतों का समूह, 'केदार्य' भी इसी अर्थ में ।

कैमुतिकः [किमुत+ठक्] (न्याय) 'और कितना अधिक' न्याय, एक प्रकार का तर्क (किमुत 'और कितना अधिक' से व्युत्पन्न) ।

कैरवः [के जले रौति—केरव. हस तस्य प्रियं—केरव+अण्] 1 जुआरी, धोखा देने वाला, चालबाज 2. शनु, —वम् श्वेत कुमुद जो चन्द्रोदय के समय खिलता है

—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—मृच्छ० २।३३। सम०—बन्धुः चन्द्रमा का विशेषण।

कैरविन् (पु०) [कैरव+इनि] चन्द्रमा।

कैरविणी [कैरविन्+ङीप्] 1 श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा 2 वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों 3 श्वेत कमलों का समूह।

कैरवी [कैरव+ङीष्] चाँदनी, ज्योत्स्ना।

कैलासः [के जले लासो दीप्तिरस्य-केलास+अण्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—मेघ० ११, ५८ रघु० २।३५। सम०—नाथः 1 शिव का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण—कैलासनाथमुपसस्य निवर्तमाना—विक्रम० १।२।

कैवर्तः [के जले वर्तते—वृत्+अच्, कैवर्त नत्र स्वार्थे अण् तारा०] मछवा मनोभू कैवर्त क्षिपति परितस्त्वा प्रति मुहु (तनुजाली जालम्) शा० ३।१६, मनु० ८।२६०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४)।

कैवल्यम् [केवल+ष्यञ्] 1 पूर्ण पृथक्ता, अकेलापन, एकान्तिकता 2 व्यक्तित्व 3 प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता 4 मुक्ति, मोक्ष।

कैशिक (वि०) (स्त्री० की) [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भाँति सुन्दर,-कः शृंगार रस, विलासिता,-कम् बालों का गुच्छा,—की नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक शुद्ध 'कौशिकी' शब्द है)।

कैशोरम् [किशोर+अञ्] किशोरावस्था, बाल्यकाल, कौमार आयु (पन्द्रह वर्ष से नीचे की)—कैशोरमापचवशात्।

कैशिकम् [केश+ष्यञ्] सारे बाल, बालों का गुच्छा।

कोक [कुक् आदाने अच् तारा०] 1 भेड़िया वनयूथपरिभ्रष्टा मृगी कोकैरिवादिता- रामा० 2 गुलाबी रंग का हंस (चक्रवाक),—कोकानां करुणस्वरेण सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना—गीत ५ 3 कोयल 4 मेंढक 5 विष्णु का नाम। सम०—इष्ट 1 कबूतर, 2 सूर्य का विशेषण।

कोकनदम् [कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद्+अच्] लाल कमल—किंचित्कोकनदच्छदस्य सदृशे नेत्रे स्वयं रञ्जयत—उत्तर० ५।३६, नीलनलिनामपि तनोति तव लोचन वारयति कोकनदरूपम्—गीत० १०, शि० ४।४६।

कोकयुः [कोक+या+डु+ड] सफेद घोड़ा।

कोकिलः [कुक्+इलच्] 1 कोयल-पुंस्कोकिलो यन्मधुर चुकूज-कु० ३।३२, ४।१६, रघु० १२।३९ 2 जलती हुई लकड़ी। सम०—आवासः,—आवासकः आम का वृक्ष।

कोङ्कण, कोङ्कण (ब०व०) एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखंड।

कोङ्कणा [कोङ्कण+टाप्] रेणुका, जमदग्नि की पत्नी। सम०—सुत परशुराम का विशेषण।

कोजागरः [का आगति इति लक्षया उक्तिरत्र काले पृषो० साधु०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला आमोदपूर्ण उत्सव।

कोट [कुट्+घञ्] 1 किला 2 झोंपड़ा, छप्पर 3 कुटिलता 4 दाढ़ी।

कोटर-रम् [कोट कौटिल्ये राति रा+क ता०] वृक्ष की खोखर नीवारा शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामध -श० १।१८, कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरावातया गमिते—मालवि० ४।२ रघु० १।२६।

कोटरी, कोटवी [कोट+ङी(वी)+विध्] 1 नगी स्त्री 2 दुर्गादेवी का विशेषण (नग्न रूप में वर्णन)।

कोटि,-टी (स्त्री) [कुट+इञ्, कोटि+ङीष्] 1 धनुष का मुड़ा हुआ सिरा-भूमिनिहितैककोटिकार्मुकम्—रघु० ११।८१ उत्तर० ४।२९ 2 चरमसीमा का किनारा, नोक या धार—महचरी दन्तस्य कोट्या लिखन्—मा० १।३२, अङ्गदकोटिलग्नम् रघु० ६।१८, ७।४६ ८।३६ 3 शस्त्र की धार या नोक 4 उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा,-परमोत्कर्ष-परा कोटिमानन्दस्याध्यगच्छन्—उत्तर० ३६९, इसी प्रकार कोपकोटिमापन्ना—पञ्च० ४, अत्यन्त कुपित 5 चन्द्रमा की कलाएँ—कु० २।२६ 6 एक करोड़ की संख्या—रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ६।६३ 7 (गणित) ९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा 8 समकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9 श्रेणी, विभाग, राज्य-मनुष्य०, प्राणि० आदि 10 विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प। सम०—ईश्वर करोड़पति,—जित् (पु०) कालिदास का विशेषण,—ज्या (गणित) समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या,—द्वयम् दो विकल्प,—पाशक, पतवार,—पाल. दुर्ग रक्षक,—वेधिन् (वि०) (शा०) नियत बिन्दु पर प्रहार करने वाला, (आल०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्चतम सिरा।

कोटिरः [कोटि राति रा+क ता०] सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रूप की बालों की चोटी 2 नेवला 3 इन्द्र का विशेषण।

कोटि (टी) क [कोटि(टी)+ठो+क] मैदा, पटेला।

कोटिशः (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीरः [कोटिमीर्यति ईर्+अण्] 1 मुकुट, ताज 2 शिखा 3 सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बाँधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा

–कोटीरकम्बलमसुलभयोगपट्टव्यापारपरायणम् अज भूतभर्तृ–मै० ११।१८।

कोट्टः [कुट्ट्+घञ्] नि० गुण०] दुर्ग, किला।

कोट्टवी [कोट्ट वर्तते का+क, गौरा० ङीष् ह्रस्वः] 1 नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2 दुर्गादेवी 3 बाल को माता का नाम।

कोट्टद्वार् [कुट्ट्+आवक् पृषो०] 1 किलेबन्दी वाला नगर, दुर्ग 2 तालाबकी सीढ़िया 3 कुआँ, तालाब 4 लम्पट, दुराचारी।

कोण [कुण् करणे घञ्, कर्णरि अच् वा ह्रस्वः] 1. किनारा, कोना।–अथेम कोणे स्वयमन स्थितस्य–विक्रमांक० १।९९, (युवतमेतन्न तु पुनः कोण नयनपक्ष्मणो –शाकि० २। १७३ 2 वृत्त का अन्तर्वर्ती बिन्दु 3 वीणा की कमानी, सारंगी बजाने का गज 4 तलवार या शस्त्र की तेज धार 5 लकड़ी, लाठी, गदा 6 ढोल बजाने की लकड़ी 7 मंगल ग्रह 8 शनिग्रह। सम०–आघातः ढोल, दुपहँ बजाना (विविध वाद्ययन्त्रों की मिश्रित ध्वनि)–कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघटघटान्योन्यमघट्टयन्तः –वेणी० १।२२, (भरत द्वारा दी गई परिभाषा–द्वेकाशत-सहस्राणि भेरीणां शतशतानि च, एकदा यत्र हन्यन्ते कोणाघात स उच्यते),–कृत् लटभस।

कोणपः दे० कौणप।

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे, आड़े।

कोदण्डः,–ण्डम् [कु+दण्ड्=का० शब्दायमानो दण्डो यस्य ब०स०] धनुष, –रे कन्दर्प कर्तं कदर्थयसि किं कोदण्ड-टङ्कारवै –भर्तृ० ३।१००, कोदण्डपाणिनिदधत्प्रतिरोध-कानाम्–मालवि० ५।१०,—डः भौं।

कोद्रवः [कु+दु+अक्=ह्रस्व, कर्म० स०] कोदा का अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं–छित्वा कर्पूरखण्डान् वृत्तिमिह कुरुते कोद्रवाणां समन्तात्–भर्तृ० २।१००।

कोपः [कुप्+घञ्] 1 क्रोध, गुस्सा, रोष–कोप न रक्षति नितान्तबलोऽपि राज –पञ्च० १।१२३, न खलु कोप कार्यं –क्रोध मत करो 2 (आयुर्वेद) शारी-रिक विदोष विकार–अर्थात् पित्तकोप, वात० प, कफ-कोप। सम०– आकुल–आविष्ट (वि०) क्रुद्ध, प्रकुपित, –क्षमः 1. क्रोधी या रुष्ट पुरुष 2 क्रोध का मार्ग,–पदम् 1 क्रोध का कारण 2 बनावटी क्रोध, –वश्य क्रोध की वश्यता, –वेश क्रोध की प्रचण्डता, तीव्रता।

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] 1 रोषशील, चिड़चिड़ा, क्रोधी 2 क्रोध पैदा करने वाला 3. प्रकोपी, शरीर के विदोषों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला, या रोगशील या क्रोधी स्त्री—कथासि कामिन् सुरतापरा-

धात् पाद्मावत. कोपनयावधूतः—कु० ३।८, शकुन्त० ६५।1

कोपिन् (वि०) [कोप+इनि] 1. क्रोधी, चिड़चिड़ा —अप्यमेदासि यदि सुदसि यदि कोपिनी –गीत० १० 2. कोप उत्पन्न करने वाला 3 चिड़चिड़ा, शरीर में विदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) [कु+कलच्, मुट् च नि० गुणः] 1. सुकुमार, मृदु, नाजुक (आलं० से भी)—अम्बुरुकोम-लाङ्गुलि (करम्)–श० ६।१२, कोमलविटपानुकारिणौ बाहू—१।२१, संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —भर्तृ० २।६६ 2 (क) मृदु, मन्द—कोमल गीतम् (ख) रुचिकर, सुहावना, मधुर—रे रे कोकिल कोमलै-कलरवैं किं त्वं वृथा जल्पसि—भर्तृ० ३।१० 3 मनोहर, सुन्दर।

कोमलकन् [कोमल+कन्] 1 कमलडण्डी के रेशे।

कोलघिः, कोलघिकः [क जस घष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकार—कोलघि+कन्] टिटहिरी, कुररी—काश्मर्या फलमालमुद्गतदलं कोलघिकण्ठी-कृते—मा० ९।७, मनु० ५।१३, याज्ञ० १।१७३।

कोरकः-कम् [कुर+घुन्] 1 कली, अनखिला फूल, –सनद्ध यदपि स्थितं कुरवकं तत्कोरकाभ्यधिकं–श० ६।३ 2 (आल०) कली के समान कोई वस्तु–अर्थात् अनखिला फूल, अविकसित फूल,—राधाया स्तनकोर-कोपरि चलन्नेत्रो हरिः पातु वः–गीत० १२ 3. कमल-डण्डी के रेशे 4 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

कोरङ्गः=कोरङ्ग।

कोरित (वि०) [कोर+इतच्] 1 कलीयुक्त, अङ्कुरित 2 पिसा हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

कोलः [कुल्+अच्] 1. सूअर, वराह—शि० १४।४३ 2 लट्ठों का बना बेड़ा, नाव 3. स्त्री की छाती 4 नितंब प्रदेश, कल्हा, पोद 5 आलिङ्गन 6 शनिग्रह 7. बहिष्कृत, पतित जाति का व्यक्ति 8 अगली —लम् 1 एक तोले का भार 2 काली मिर्च 3 एक प्रकार का बेर। सम०— अध्वः कलिंग देश का नाम —पुष्पः बगला।

कोलम्बकः [कुल्+अम्बच्+कन्] कौआ का ढाचा।

कोला,–लिः,–ली (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्, कुल्+इन्, कुल्+अच्+ङीष् वा] दे० बदरी।

कोलाहलः,–लम् [कोल+आ+हल्+अच्] एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा।

कोविद (वि०) [कु+विद्, तं वेत्ति—विद्+क] अनुभवी, विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान्, प्रवीण (सप्त० या अधि० के साथ, परन्तु बहुधा समास में)—गुणदोषकोवि-दः—शि० १४।५३, ६९ प्राच्यावन्तीनुदवसकथा-कोविदग्रामवृद्धान्–मेघ० ३०, मनु० ७।२६।

कोविदार:,-रम् [कु+वि+दृ+अण्] एक वृक्ष का नाम, कचनार-चित्त विदारयति कस्य न कोविदार —ऋतु० ३।६।

कोश (च)-कम् [कुश् (ए)+घञ्, अच् वा] 1 तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी 2 ढोल कटोरा 3 पात्र 4 संदूक, डोली, दराज, दूक 5 म्यान, आवरण 6 पेटी, ढकना, ढक्कन 7 भाण्डार, ढेर—मनु० ११९९ 8 भाण्डारगृह 9 खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान —मनु० ८।४१९ 10 निधि, रुपया, दौलत निःशेषनिर्आर्जितकोशजातम् रघु० ५।१ (आल०) कोशस्तम्भ —का० ४५ 11 थैली बटुवा 12 शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली 13 अनखिला फूल, कली —सृजतानयो एकजकोशयो श्रियम् रघु० ३।८, १३।२९, इस विश्लेषणके कोशसे त्रिरेफ का हूल हन्त नलिनीं गज उज्जहार—सुभा० 14 किसी फल की गिरी 15 फली 16 जायफल, कठोरत्वचा 17 रेशम का कीड़ा या० ३।१४७ 18 झिल्ली, झभिल्ली 19 अण्डा 20 अण्डकोष, फोते 21 शिश्न 22 पैर, सोता 23 (वेदान्त० में) पांच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं जिनमें आत्मा निवास करता है, अन्नमय प्राणमय आदि 24 (विधि में) एक प्रकार की अपराधियों की अग्नि परीक्षा नु० याज्ञ० २।११४। सम०—अधिपति,-अध्यक्ष 1 खजानची, वेतनाध्यक्ष (नु० आधुनिक वित्तमंत्री) 2 कुबेर, आगार खजाना, भाण्डारगृह, कार 1 म्यान बनाने वाला 2 शब्दकोष का निर्माता 3 कीड़े के रूप में रेशम का कीड़ा 4 कोशाध्यायी, कारक रेशम का कीड़ा, कृत् (पु०) एक प्रकार का रंग,-गृहम् खजाना, भाण्डागार रघु० ५।२१, चक्षुस् मांस, नायक पास खजानची, कोशाध्यक्ष,-पेटक,-कम् धन रखने का संदूक, तिजोरी, वासिन् (पु०) सीपी में रहने वाला कीड़ा, कोशायी, वृद्धि 1 धन की वृद्धि 2 फोते का बढ़ जाना,- शायिका म्यान में रखा हुआ चाकू, बन्द किया हुआ चाकू,-स्थ (वि०) पेटी में बन्द, म्यान में बन्द (स्थ) कोशकीट, कोशयायी, हीन (वि०) धनहीन, निर्धन।

कौशलिकम् [कुशल+ठन्] निपुणता, चतुरता (अधिक शुद्ध रूप =कौशलिक)।

कौशातकिन् (पु०) [कौश+अत्-स्वुन्=कौशातक+इनि] 1 वाणिज्य, व्यापार 2 व्यापारी, सौदागर 3 रंडवाल।

कोशि (वि) त् (पु०) [कोश(व)+इनि] आम का वृक्ष।

कोष्ठ [कुष्+थन्] 1 हृदय, फेफड़ा आदि शरीर के भीतरी अंग या आशय 2 पेट, उदर 3 आभ्यन्तर कक्ष 4 अन्नभाण्डार, अन्न का कोठा—ष्ठम् 1. कहारदीवारी 2 किसी फल का कड़ा छिलका। सम० अगारम् भाण्डार, भाण्डागार पर्याप्तभक्तिकाष्ठागार मासशोणिमेन गृह भक्षयति वर्णो० ३, मनु० ९।२८०, आत्मन् पाकने शक्ति आमाशय का रस, पाल 1 कोषाध्यक्ष, भण्डारी 2 चौकीदार, पहरेदार 3 सिपाही (आधुनिक नगरपालिकाधिकारी से मिलता-जुलता), —शुद्धि मलोत्सर्ग।

कोष्ठक [कोष्ठ+कन्] 1 अन्नभाण्डार 2 चहारदीवारी, कम् ईंट चूने से बनाया गया पशुओं के पानी पीने का स्थान (बोलचाल की भाषा में 'चहेल' कहते हैं)।

कोष्ण (वि०) [ईषदुष्ण को कादेश] 1 थोड़ा गरम, कुलजम् रघु० १।८४, ष्णम् गरमी।

कोस (श) स (द्व० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम-पितुरनन्तरमुत्तरकोसलान्—रघु० ९।०, ३।५, ६।७१, यशसकोसलकेतुयशांसिना दुहितरं ९।१७।

कोस (श) स अयोध्या नगर।

कोहल [कौ हलति सर्वते अच् पृषो० तारा०] 1 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 2 एक प्रकार की मदिरा।

कौक्कटिक [कुक्कुट+ठक्] 1 मुर्गे पालने वाला, या मुर्गों का व्यवसाय करने वाला 2 वह मनुष्य जो चलते समय अपना पैर नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि काटे कीड़े आदि पैरों के नीचे न दब जायं 3 (अत) दंभी।

कौक्षि (वि०) (स्त्री० क्षी) [कुक्षि+अण्] 1 कोख में बँधा हुआ या कोख पर होने वाला 2 पेट से सम्बन्ध रखने वाला।

कौक्षेय (वि०) (स्त्री० यी) [कुक्षि+ढक्] 1 पेट में होने वाला 2 म्यान में स्थित असि कौक्षेयमुद्यम्य चकारापनयं भुवम् भट्टि० ४।३१।

कौक्षेयक [कुक्षौ बद्धत्वात्-ठक्] तलवार, खड्ग वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेन का० ८, विक्रमाङ्क० १।९०।

कौङ्कण, कौङ्कणक (द्व० व०) [कुङ्कु+अण्, कौङ्कण+अण्] एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम (दे० कोंकण)।

कौट (वि०) (स्त्री० टी) [कूट+अण्] 1 अपने निजी घर में रहने वाला, (अत) स्वतन्त्र, मुक्त 2 पालतू, घरेलू, घर में पला हुआ 3 आलसाऊ, बेईमान 4 जाल में फँसा हुआ, ट 1 आलसाऊ, बेईमानी 2 झूठी गवाही देने वाला। सम०—ज कुटज वृक्ष—,तक (वि० द्वारपाल) स्वतन्त्र बढ़ई जो अपनी इच्छानुसार अपना कार्य करता है, गाँव का कार्य नहीं,—साक्षिन् (पु०) झूठा गवाह, साक्ष्य झूठी गवाही।

कौटिक, कौटिक [कूट+कन्, कूटक+ठक्, कूट+ठक] 1 बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पिंजरे

में बन्द कर बेचना है 2 पक्षियों के मांस का विक्रेता, कसाई, शिकारबोर ।

कौटलिक [कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा—कुटिलिका+अण्] 1 शिकारी 2. लुहार ।

कौटिल्यम् [कुटिल+ष्यञ्] 1 कुटिलपना (शा० तथा आल०) 2 दुष्टता 3. बेईमानी, आलसाजी,—स्यः 'चाणक्य नीति' नामक नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाणक्य, चन्द्रगुप्त का मित्र और मन्त्रकार, मुद्राराक्षस नाटक का एक महत्वपूर्ण पात्र—कौटिल्य कुटिलमतिः स एव येन कोषाग्नौ प्रसभमदाहि नन्दवंशः—मुद्रा० १।७ स्पृशति मा भृत्यभावेन कौटिल्यशिष्य—मुद्रा० ७ ।

कौटुम्ब (वि०) (स्त्री०—बी) [कुटुम्ब तदूरण भोजनमस्य कुटुम्ब+अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक, -म्बम् पारिवारिक सम्बन्ध ।

कौटुम्बिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुटुम्बे तदूरणे प्रसृत—कुटुम्ब+ठक्] परिवार को बनाने वाला,—कः किसी परिवार का पिता या स्वामी ।

कौणप [कुणप+अण्] पिशाच, राक्षस । सम०—अस्त्रः भीष्म का विशेषण ।

कौतुकम् [कुतुक+अण्] 1 इच्छा, कुतूहल, कामना 2 उत्सुकता, आवेग, आतुरता 3 आश्चर्यजनक वस्तु 4 वैवाहिक कंगना—रघु० ८।१ 5 विवाह से पूर्व वैवाहिक कंगना बाँधने की प्रथा 6 पर्व, उत्सव 7 विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव—कु० ७।२५ 8 खुशी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता—भर्तृ० ३।१४० 9 खेल, मनोविनोद 10 गीत, नृत्य, तमाशा 11 हँसी, मजाक 12 बधाई, अभिवादन । सम० आगार, -गृहम् आमोद-भवन—कौतुकागारमागात्—कु० ७।९४, छिपा—मङ्गलम् 1 महान् उत्सव 2 विशेषत विवाह-संस्कार—रघु० ११।५३,—तोरण—अम् उत्सव के अवसरों पर बनाये गये मंगलसूचक विजय द्वार ।

कौतूहलम् (त्यम्) [कुतूहल+अण्, ष्यञ् वा] 1 इच्छा, जिज्ञासा, रुचि—विषयेष्वावृत्तकौतूहल—विक्रम० १।९, मा० १ 2 उत्सुकता, उत्कण्ठा 3 कुतूहलवर्धक, आश्चर्यजनक ।

कौन्तिक [कुन्त प्रहरणमस्य-ठक्] भाला चलाने वाला, नेजाबरदार ।

कौन्तेय [कुन्त्या अपत्य ढक्] कुन्ती का पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण ।

कौप (वि०) (स्त्री० -पी) [कूप+अण्] कुएँ से सम्बन्ध रखने वाला या कुएँ से आता हुआ (जल आदि) ।

कौपीनम् [कूप+खञ्] 1 योनि, उपस्थ 2 गुप्ताङ्ग, गुह्येन्द्रिय 3 लंगोटी—कौपीन शतखण्डजर्जरतर कन्था पुनस्त्वादृशी—भर्तृ० ३।१०१ 4 चिथड़ा 5 पाप, अनुचित कर्म ।

कौब्जम् [कुब्ज+ष्यञ्] 1 टेढ़ापन, कुटिलता 2 कुबड़ापन ।

कौमार (वि०) (स्त्री०—री) [कुमार+अण्] 1 तरुण, युवा, कन्या, कुँवारी (स्त्री और पुरुष दोनों) कौमार पति, कौमारी भार्या 2 मृदु, कोमल,—रम् 1 बचपन (पाँच वर्ष तक की अवस्था) कुँआरीपना (१६ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने—मनु० ९।३, देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमार यौवन जरा—भग० २।१३ । सम०—भृत्यम् बच्चों का पालनपोषण व चिकित्सा,—हर (वि०) विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला, य कौमारहर स एव हि वर—काव्य १ ।

कौमारकम् [कौमार+कन्] बचपन, तारुण्य, किशोरावस्था—कौमारकेऽपि गिरिवद्गुरुता दधान—उत्तर० ६।१९ ।

कौमारिकः [कुमारी+ठक्] वह पिता जिसकी सन्तान लड़कियाँ ही हों ।

कौमारिकेय [कुमारिका+ढक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र ।

कौमुद [कुमुद+अण्] कार्तिक का महीना ।

कौमुदी [कौमुद+ङीप्] 1 चाँदनी—शशिना सह याति कौमुदी—कु० ४।३३, शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्—रघु० ६।८५, (शब्द की व्युत्पत्ति—कौ मोदन्ते जना यस्या तेनासौ कौमुदी मता) 2 चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रसन्नता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी कु० ५।७१, या कौमुदी नयनयोर्भवतः सुजन्मा—मा० १।३४, तु०—चन्द्रिका 3 कार्तिक मास की पूर्णिमा 4 अनाश्विन मास की पूर्णिमा 5 उत्सव 6 विशेषत वह उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7 (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली—उदा० तर्ककौमुदी, साख्यतत्त्वकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी आदि । सम०—पतिः चन्द्रमा—वृक्षः दीवट ।

कौमोदकी, कौमोदी [को पृथिव्या मोदक=कुमोदक+अण्+ङीप् कु पृथिवीं मोदयति=कुमोद+अण्+ङीप्] विष्णु की गदा ।

कौरव (वि०) (स्त्री० वी) [कुरु+अण्] कुरुओं से सम्बन्ध रखने वाला, क्षेत्र क्षत्रप्रधनपिशुन कौरव तद्भविष्यति—वेणी० ४८,—वः 1. कुरु की सन्तान—मध्यामि कौरवशतं समरे न कोपात्—वेणी० १।१५ 2 कुरुओं का राजा ।

कौरव्यः [कुरु+ष्य] 1 कुरु की सन्तान—कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते—वेणी० १।१९, २५, कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सीरिणि—६।१२ 2 कुरुओं का शासक ।

कौर्पासः [ग्रीक भाषा का शब्द] वृश्चिक राशि ।

कौल (वि०) (स्त्री०—ली) [कुल+अण्] 1 परिवार से संबंध रखने वाला, पैतृक, आनुवंशिक 2 अच्छे घराने का, सुजात,—लः कामसार्गी सिद्धान्तों के अनुसार 'शक्ति' की पूजा करने वाला,—लम् वामसार्गी शाक्तों के सिद्धान्त और व्यवहार।

कौलटेयः [कुल+टक्, कुक्] व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, दुराचारी, वर्णसंकर।

कौलटिनेयः [कुलटा+ढक्, इनङादेशः] 1 सती भिखारिणी का पुत्र 2 वर्णसंकर।

कौलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+ठक्] 1 किसी वंश से संबंध रखने वाला 2 कुल में प्रचलित, पैतृक, वंशपरंपरागत,—कः 1 जुलाहा—कौलिकीं विष्णुरूपेण राधाकन्यां निषेवते पद्म० १।२०२ 2 विधर्मी 3. वामसार्गी, शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी।

कौलीन (वि०) [कुल+खञ्] खदानी, कुलीन,—नः 1 भिखारिणी स्त्री का पुत्र 2 वामसार्गी शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी,—नम् लोकापवाद, कुत्सा मालविकायते किमपि कौलीन श्रुयते—मालवि० ३, तदेव कौलीनमिव प्रतिभाति—विक्रम० २, मेघ० ११२, कौलीनभारमाश्रयमाचक्षते—रघु० १४।३६, ८४ 2 अनुचित कर्म, दुराचरण—श्रुयते तस्मिन् वितमसि कुले जन्म कौलीनभेतत्—वेणी० २।१० 3 पशुओं की लड़ाई 4 मुर्गों की लड़ाई 5 संग्राम, युद्ध 6 उच्च कुल में जन्म 7 गुप्तांग, योनि।

कौलीन्यम् [कुलीन+ष्यञ्] 1 कुलीनता 2 वंश की कुत्सा।

कौलूत [कुलूत+अण्] कुलूतों का राजा- कौलूतश्चित्रवर्मा—मुद्रा० १।२०।

कौलेयकः [कुल+ढकञ्] कुत्ता, शिकारी कुत्ता।

कौल्य (वि०) [कुल+ष्यञ्] उच्च कुल में उत्पन्न, खान्दानी।

कौबेर (वे) र (वि०) (स्त्री०-री) [कुबेर (वे) र+अण्] कुबेर से संबंध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला-यान सस्मार कौबेरम् रघु० १५।४५, रीं उत्तरदिशा,—तत प्रतस्थे कौबेरीं भास्वदानेव रघुर्दिशम् —रघु० ४।६६।

कौश (वि०) (स्त्री०—शी) [कुश+अण्] 1 रेशमी 2 कुश घास का बना हुआ।

कौशलम् (स्यम्) [कुशल+अण् स्वार्थे वा] 1 कुशलक्षेम, प्रसन्नता, समृद्धि 2 कुशलता, दक्षता, चतुराई —किमकौशलादुपायोजनापेक्षितया—मुद्रा० ३, हावहारि हसितं वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषाः शि० १०।१३।

कौशलिकम् [कुशल+ठक्] घूस, रिश्वत।

कौशलिका, कौशली [कौशलिक+टाप्, कुशल+अण्+ङीप्] 1 उपहार, चढ़ावा 2 कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन।

कौशल्येय [कौशल्या+ढक्, वलोप] राम का विशेषण, कौशल्या का पुत्र।

कौशल्या [कोशलदेशे भवा—छप] दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता।

कौशल्यासुत [कौशल्या+सिञ्] कौशल्या का पुत्र राम, भट्टि० ७।९०।

कौशाम्बी [कुशाम्ब+अण्+ङीप्] गंगा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुश के पुत्र कुशाम्ब ने बसाया था—यह नगर ही वत्स देश की राजधानी थी)।

कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुशिक+अण्] 1 डब्बे में बन्द, म्यान में रक्खा हुआ 2 रेशमी,—कः 1 विश्वामित्र का विशेषण 2 उल्लू—उत्तर० २।२१, 3 कोशकार 4 गूदा 5 गुग्गुल 6 नेवला 7 सपेरा 8 शृंगार रस 9 जो गुप्तधन को जानता है 10 इन्द्र का विशेषण —का प्याला, पानपात्र,—की 1 बिहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2 दुर्गादेवी का नाम 3 चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक-सुकुमारार्थसंदर्भा कौशिकी तामु कथ्यते दे० सा० द०, ४११, तथा आगे पीछे। सम० अरातिः,—अरिः कोबा,—फलः नारियल का वृक्ष, प्रियः राम का विशेषण।

कौशेय (वे) यम् [कोशस्य विकारः-ढञ्] 1 रेशम पञ्च० १।१०४ 2 रेशमी कपड़ा मनु० ५।१२० 3 रेशम का बना स्त्री का पटी कोट निर्मिमे कौशेयमुपात्तबाणमभ्यर्च्य नेपथ्यमलञ्चकार कु० ७।९, विद्युद्गुणः कौशेय मृच्छ० ५।३, ऋतु० ५।९।

कौसीद्यम् [कुसीद+ष्यञ्] 1 ब्याज लेने का व्यवसाय 2 आलस्य, अकर्मण्यता।

कौसृतिक [कुसृति+ठक्] 1 ठग, बदमाश 2 बाजीगर।

कौस्तुभ [कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः-अण्] एक विख्यात रत्न जो समुद्रमन्थन के फलस्वरूप 13 अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ तथा जिसको विष्णु ने अपने वक्षस्थल पर धारण किया हुआ है सकौस्तुभं क्लेशयतीव कृष्णम् रघु० ६।८९, १०।१०। सम० लक्षण —वक्षस् (पुं०)-हृदय विष्णु के विशेषण।

क्वण् [भ्वा० आ० क्वणते] 1 चूं चूं शब्द करना 2 डूबना 3 गीला होना।

क्वथ [क्वथ इति शब्दायते क्वथ+कच्+अच्] आग। सम० पञ्च केतक वृक्ष एक सायोन वृक्ष, —पाद (पुं०)- पाद छिपकली।

क्वथर [क्वथ इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य-क्वथ+कृ+अच्] 1 एक प्रकार का तीतर 2 आग 3 निर्धन व्यक्ति 4 रोग।

क्रतु [कृ-कनु] 1 यज्ञ क्रतोरपीयेष फलेन युज्यताम् —रघु० ३।६५ यत क्रतूनामपविघ्नमाप स —३।३८,

मालवि० १।४, मनु० ७।७९ 2 विष्णु का विशेषण 3 दस प्रजापतियों में एक—मालवि० १।३५ 4 प्रज्ञा, बुद्धि 5. शक्ति, योग्यता। सम०——क्रतम' राजसूय यज्ञ,—घ्न, —द्विष् (पुं०) राक्षस, पिशाच, —ध्वंसिन् (पु०) शिव का विशेषण (शिव ने ही दक्ष के यज्ञ को नष्ट किया था), —पतिः यज्ञ का अनुष्ठाता,—वाजः यज्ञीय घोड़ा,—विष्णुः विष्णु का विशेषण, —सुज् (पु०) देवता, देव,—राज् (पु०) 1 यज्ञों का स्वामी—यथाश्वमेध क्रतुराट्—मनु० ९।२६० 2 राजसूय यज्ञ।

क्रद् (भ्वा० पर०—क्रन्दति, क्रदित) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

क्रमकंशिक (ब० व०) एक देश का नाम—अयोध्यरेश क्रमकंशिकानाम्—रघु० ५।३९ मनु० ५।२।

क्रमघातः [क्रम+घञ्] यज्ञ हत्या।

क्रमणकः [क्रमण+कन्] ऊँट।

क्रन्द् (भ्वा० पर०—क्रन्दति, क्रन्दित) 1 चिल्लाना, रोना, आंसू बहाना—किं क्रन्दसि वृथाक्रन्द स्वपक्षक्षयकारक —पंच० ४।२९, क्रन्दयता करुणमप्सरसा गणोऽयम् —विक्रम० १।२, चक्रन्द विग्ना कुररीव भूय—रघु० १४।६८, १५।४२, भट्टि० ३।२८, ५।५ 2 पुकारना, दया की पुकार करना (कर्म० के साथ) क्रन्दत्यविरत सोऽयं भ्रातृमातृसुतानथ—यार्क० (चुरा० पर० या प्रेर०) 1 लगातार चिल्लाना 2 रुलाना। आ—, चिल्लाना, चीखना, चरमराना, चीत्कार करना—तृणाशलग्नैस्तुहिनै पतद्भिराक्रन्दतीवोषसि शीतकाल—ऋतु० ४।७, भट्टि० १५।५० 2 पुकार करना (प्रेर०)—एह्येहीति शिवाभिना पटुतरै केकाभिराक्रन्दित—मृच्छ० ५।२३।

क्रन्दनम्, क्रन्दितम् [क्रन्द्+ल्युट्,क्त वा] 1 आर्तनाद, रोना, विलाप करना—हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्ण —रघु० ९।७५ 2 पारस्परिक ललकार, चुनौती।

क्रम् (भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—क्रामति—क्रमते, क्राम्यति, क्रान्त) 1 चलना, पदार्पण करना, जाना—क्रामत्यनुदिते सूर्ये वाली व्यपगतक्रम—रामा०, गम्यमान न तेनासीद्गत क्रमता पुर—भट्टि० ८।२,२५ 2 चले जाना, पहुँचना (कर्म० के साथ)—देवा इमान् लोकानक्रमन्त—शत० 3 जाना, पार करना, पार जाना—सुख योजनपञ्चाशत्क्रमेयम्—रामा० 4 कूदना, छलांग मारना—क्रम बबन्ध क्रमितु सकोप (हरि)—भट्टि० २।९, ५।५१, 5 ऊपर जाना, चढ़ना 6. अधिकार में रखना, वश में करना, अधिकार में लेना, भरना—क्रान्ता यथा चेतसि विस्मयेन—रघु० १४।१७ 7 आगे बढ़ना, आगे निकल जाना—स्थित सर्वोन्नतेनोर्वी क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना —रघु० १।१४ 8 उत्तरदायित्व लेना, सप्रयास करना, योग्य या सक्षम होना, शक्ति दिखलाना (सम० या तुमुन्नन्त के साथ)—व्याकरणाध्ययनाय क्रमते—सिद्धा०, धर्माय क्रमते साधु—कोप० व्युत्पत्तिरावर्जितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम्—विक्रमांक० १।१६, हृत्वा रक्षांसि क्षपितुमक्रमीन्मारुति पुन, अशोकवनिकामेव —भट्टि० ९।२८ 9 बढ़ना या विकसित होना, पूरा क्षेत्र मिलना, स्वस्थ होना (अधि० के साथ)—कृत्स्नेषु क्रमते—दश० १७०, क्रमन्तेऽस्मिन्ह्यास्त्राणि—या—ऋद्धौ क्रमते बुद्धि—सिद्धा०, क्रममाणोऽरिलक्षेषि—भट्टि० ८।२२ 10 पूरा करना, निष्पन्न करना 11 मैथुन करना, (पा० १।३।३८ क्रम्—आ० में 'सातत्य' 'विघ्नों का अभाव' 'शक्ति या प्रयोग' 'विकास, वृद्धि' तथा 'जीतना, पार पहुँचना' आदि अर्थ को प्रकट करती है) अति—, 1 पार करना, पार जाना—स तत्कक्षान्तरात्यतिक्रम्य—का० ९२ 2 परे जाना, लांघना—मेघ० ५७, ४० 3 बढ़ जाना, आगे निकल जाना—मनु० ८।१५१ 4 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम रखना—अतिक्रम्य सदाचारम्—का० १६० 5 अवहेलना करना, पृथक् करना, उपेक्षा करना—अधितमवासां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, कि वा परिजनमतिक्रम्य भवान्सन्दिष्ट—मालवि० ४, या कथ ज्येष्ठानतिक्रम्य यवीयान् राज्यमर्हति—महा० 6 गुजरना, (समय का) बीतना—अतिक्रान्ते दशाहे—मनु० ५।७६, यथा यथा यौवनमतिचक्राम—का० ५९, अधि—, चढ़ना, आरूढ़ होना—, अधिकार करना, भरना, ग्रहण करना—अध्याक्रान्ता यमतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये—श० २।१४ अनु—, 1 अनुगमन करना 2 आरम्भ करना 3 अन्तर्वस्तु देना, अप आ—, एक के पश्चात् दूसरे के दर्शन करना, अप—, छोड़ जाना, चले जाना, अभि—, 1 जाना, पहुँचना प्रविष्ट होना—अभिचक्राम काकुत्स्थ शरभङ्गाश्रमं प्रति-रामा० 2 घूमना, भ्रमण करना 3 आक्रमण करना अव—, वापिस हटना आ—, 1 पहुँचना, की ओर जाना 2 आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त करना—पक्षिशावकनाक्रम्य—हि० १, पौरस्त्यानेवमाक्रामन्—रघु० ४।३४, भर्तृ० १।७० 3 भरना, प्रविष्ट होना, अधिकार में करना—स केशवोऽपर इवाक्रमितु प्रवृत्त—मृच्छ० ५।२१।१२ 4 आरम्भ करना, शुरू करना 5 उन्नत होना, उदय होना (आ०) यावत्प्रतापनिधिराक्रमते न भानु—रघु० ५।७१ 6 चढ़ना, सवारी करना, अधिकार में करना, उद्—, 1 ऊपर होना, परे जाना, उपर जाना—ऊर्ध्वं प्राणान्ह्युत्क्रामन्ति —मनु० २।१२० 2 अवहेलना करना, उपेक्षा करना —आर्षं प्रमाणमुत्क्रम्य धर्मं न प्रतिपालयन्—महा०, धर्ममुत्क्रम्य 3 परे कदम रखना—रघु० १५।३३, उप—, 1 की ओर जाना, पहुँचना 2 धावा बोलना, आक्रमण करना 3 बर्ताव करना, उपचार करना, (वैद्य

की भाँति) चिकित्सा करना, स्वस्थ करना, 4 प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना—सर्वैरुपायैरुपक्रम्य सीताम् —रामा० 5 अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना 6 (आ) आरम्भ करना, शुरू करना - प्रसभं वक्तुमुपक्रमेत स —कि० २।२८, रघु० १७।३३, विप्र्–, 1 चले जाना, चल देना, विदा होना 2 निकलना, प्रकाशित होना —भट्टि० ७।७१, परा–, (आ०) 1 साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना—वक्तव्यिन्नयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत् —मनु० ७।१०६, भट्टि ८।२२,९३ 2 वापिस मुड़ना 3 चढ़ाई करना, आक्रमण करना, परि–, 1 इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना—परिक्रम्यावलोक्य च (नाटकों में) 2 पकड़ लेना, प्र–(आ०) 1 आरम्भ करना, शुरू करना—प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम्—रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2 कूदना, ऊपर पैर रख कर चलना—भट्टि० १५।२३ 3 जाना, प्रस्थान करना, प्रति—, वापिस आना वि–(आ०) 1 मे से चलना, विष्णुरुच्चैया विचक्रमे—तीन पग रक्खे—भट्टि० ८।२४ 2 छापा मारना, पराजित करना, जीतना 3 फाड़ना, खोलना (पर०), व्यति–, 1 उल्लंघन करना 2 समय बिताना, व्यूह्–दे० व्यूह–, सम्–, 1 आना या एकत्र होना 2 पार जाना, पार करना, में से जाना 3 पहुँचना, जाना 4 पार चले जाना, स्थानान्तरित होना 5 दाखिल होना, प्रविष्ट होना - कालो ह्यय यत्कर्मभृतु द्वितीय सर्वोपकारक्षममाश्रम ते - रघु० ५।१०, समा–, 1 अधिकार करना, कब्जे में लेना, भरना समभेव समाक्रान्त द्वय द्विरदगामिना, तेन सिंहासन पित्र्य-मखिल चारिमण्डलम् रघु० ४।४ 2 छापा मारना, जीतना, दमन करना

क्रम [क्रम्+घञ्] 1 कदम, पग - त्रिविक्रम, सागर —प्लवगेंद्रेण क्रमेणैकेन लङ्घित —महा० 2 पैर 3 गति, प्रगमन, मार्ग, **क्रमात्** क्रमेण दौरान में, क्रमशः, काल-क्रमेण उत्तरोत्तर, समय पाकर, **भाग्यक्रम**, भाग्य का उलट जाना - रघु० ३।७, ३०, ३२ 4 प्रदर्शन, आरम्भ —इत्थमत्र विततक्रमे क्रतौ - शि० १४।५३ 5 नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिता, निमित्तनैमित्तिकयोरय क्रम —श० ७।३० मनु० ७।२४, ९।८५ २।१७३, ३।६९ 6 प्रणाली, रीति —नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम्- रघु० ७।३९ 7 प्रसन्ना, पकड़ —क्रमगता पशो कन्यका मा० ३।१६ 8 (दूसरे जन्तु पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9 तैयारी, तत्परता - भट्टि० २।९ 10 व्यवसाय, साहसिक कार्य 11 कर्म या कार्य, कार्यविधि—कोऽप्येष कान्त क्रम —अमरु ४३।३३ 12 वेदमन्त्रों को सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति—क्रमपाठ 13 शक्ति, सामर्थ्य, सम् गारा। सम० **अनुसार**, **अन्वय**, नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था,- **आगत**, **आयात** (वि०) वंशपरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक, **कथा** ग्रह की लंबरेखा, क्षय,— भग अनियमितता।

क्रमक (वि०) [क्रम्+वुन्] क्रमबद्ध, प्रणाली के अनुसार, —क वह विद्यार्थी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है।

क्रमण [क्रम+ल्युट्] 1 पैर 2 घोड़ा **णम्** 1 कदम 2 पग रखना 3 आगे बढ़ना 4 उल्लंघन

क्रमत (अव्य०) [क्रम्+तसिल्] क्रमशः, उत्तरोत्तर।

क्रमश (अव्य०) [क्रम+शस्] 1 ठीक क्रम से, नियमित रूप से उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2 क्रम से, मात्रा के अनुसार रघु० १२।५७, मनु० १।६८, ३।१२।

क्रमिक (वि०) [क्रम+ठन्] 1 उत्तरोत्तर, सिलसिले वार 2 वंशपरम्परागत, पैतृक, आनुवंशिक।

क्रमु, क्रमुक [क्रम्+उ, कन् च] सुपारी का पेड़—आस्वादितार्द्रक्रमुक समुद्गात्- शि० ३।८१, विक्रमाङ्क० १८।९८।

क्रमेलक, क्रमेलसक [क्रम्+एलच्+अच्, कन् च] ऊँट - निरीक्षते केलिवन प्रविश्य क्रमेलक कण्टक-जालमेव विक्रमाङ्क० १।२९, शि० १२।१८, नै० ६।१०४।

क्रय [क्री+अच्] खरीदना, मोल लेना। सम०—**आरोह** मंडी, मेला,—**कीत** (वि०) मोल लिया हुआ,—**लेख्यम्** बैनामा, विक्रयनामा, दानपत्र (गृह क्षेत्रादिक क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम्, पत्र कारयते यत्तु क्रय-लेख्य तदुच्यते- बृहस्पति), **विक्रयौ** (द्वि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरोख्त मनु० ८।५ ७।१२७,—**विक्रयिक** व्यापारी सौदागर।

क्रयणम् [क्री+ल्युट्] खरीदना, माल लेना।

क्रयिक [क्रय+ठन्] 1 व्यापारी, सौदागर 2 क्रेता, मोल लेने वाला।

क्रव्य (वि०) [क्री+यत्, नि०] मंडी में विक्रय के लिए रक्खी हुई वस्तु, बिकाऊ (विप० 'क्रय,' जिसका अर्थ है 'मोल लिये जाने के उपयुक्त')।

क्रव्यम् [क्लब्+यत्, रस्य ल] कच्चा मांस, मुरदार (शव या लाश) -- स्यपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति—मा० ५।१६। सम०—**अद्–अश्**, **भुज्** (वि०) कच्चा मांस खाने वाला, मनु० ५।१३१, (पुं०) 1 शेर, चीता आदि मांसभक्षी जन्तु,- उत्तर० १।४९ 2 राक्षस, पिशाच—रघु० १५।१६।

क्रशिमन् (पुं०) [कृश+इमनिच्] पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन।

क्राकचिकः [क्रकच+ठक्] आराकश।

क्रान्त (वि०)[क्रम+क्त] गया हुआ, आरपार गया हुआ

(भू० क० कृ०), -तः 1 घोड़ा 2 पैर, पग। सम० दक्षिण् (वि०) सव्यंज।

क्रान्ति (स्त्री०) [क्रम्+क्तिन्] 1 गति, प्रगमन 2 कदम, पग 3 आगे बढ़ने वाला 4 आक्रमण करने वाला, अभिभूत करने वाला 5 नक्षत्र की कोणीय दूरी 6 क्रान्तिवलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग। सम० कक्ष, मण्डलम्, वृत्तम्, सूर्य का भ्रमण मार्ग, पातः वह बिंदु जहाँ क्रान्तिवलय विषुवत रेखा से मिलता है, वलय 1 सूर्य का भ्रमण मार्ग 2 उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध।

क्राय (वि) क. [क्री+घञ् क्रा+ठक्] 1 क्रेता, खरीददार 2 व्यापारी, सौदागर।

क्रिमि [कृम्+इन्, इत्वम्] 1 कीड़ा 2 कीट-दे० कृमि। सम० -अरि अगर की लकड़ी, शैल मोम।

क्रिया [कृ+श, रिङ् आदेश, इयङ्] 1 करना, कार्यान्विति, कार्य-सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार", धर्म —प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव मेघ० ११४ 2 कर्म, कृत्य, व्यवसाय, जिम्मेदारी प्रणयिक्रिया-विक्रम० ४।१५, मनु० २।४ 3 चेष्टा, शारीरिक चेष्टा, श्रम 4 अध्यापन, शिक्षण क्रिया हि वस्तूपदिष्टा प्रसीदति रघु० ३।२९ 5 (नृत्य गायन आदि), किसी कला पर आधिपत्य, ज्ञान शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था मालवि० १।१६ 6 आचरण (विप० शास्त्र-सिद्धान्त) 7 साहित्यिक रचना शृणुत मनोभिरवहितैः क्रियामिमां कालिदास-स्य विक्रम० १।२ कालिदासस्य क्रियायां कथ पण्डितो बहुमान मालवि० १ 8 शुद्धि-संस्कार, धार्मिक संस्कार 9 प्रायश्चित्तस्वरूप संस्कार, प्रायश्चित्त 10 (क) श्राद्ध (ख) और्ध्वदेहिक संस्कार 11 पूजन 12 औषधोपचार, चिकित्सा-प्रयोग, इलाज शीतक्रिया मालवि० ४, शीतल उपचार 13 (व्या० मे) क्रिया के द्वारा अभिहित कर्म 14 चेष्टा या कर्म 15 विशेषतः वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित सात द्रव्यों में से एक दे० कर्मन् 16 (विधि में) साक्ष्यादिक मानवसाधनों से तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा अभियोग की छानबीन करना 17 प्रमाण-भार। सम० अन्वित (वि०) शास्त्रोक्त संस्कारों को करने वाला, अवधारणा 1 किसी कार्य की संपूर्ति या इतिश्री, कार्यसम्पादन—क्रियापदमैच्छदनुजीविसात् कृता कि० १।४४ 2 कर्मकाण्ड से मुक्ति, छुटकारा, अभ्युपगम विशेष प्रकार का करार या प्रतिज्ञा-पत्र, -क्रियाभ्युपगमादेतत् बीजार्थं यत्प्रदीयते -मनु० ९।५३, अवसन्न (वि०) मुकदमा हार जाने के बयान के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति,- इन्द्रियम् दे० 'कर्मेन्द्रिय', -कलापः 1 हिन्दु-धर्मशास्त्र द्वारा विहित समस्त कार्य 2 किसी व्यवसाय के समस्त विवरण,—कारः 1 अभिकर्ता, कार्यकर्ता 2 शिक्षारम्भ करने वाला, नौसिखिया, नवच्छात्र 3 इकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र, -द्वेषिन् (पु०) (पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक) वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो, -निर्देश गवाही, साक्ष्य, -पटु (वि०) कार्यदक्ष, -पदम् क्रियावाचक शब्द, -पर (वि०) अपने कर्तव्य-पालन में परिश्रम शील, -पादः अभियोक्ता या वादी के द्वारा अपने दावे की पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ आदि जो कानूनी अभियोग का तीसरा अंग है, -योगः 1 क्रिया के साथ संबंध 2 तरकीब और साधनों का प्रयोग, लोप आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग, क्रियालोपात् दुवलत्व गताः -मनु० १०।४३, -वत्ता आवश्यकता, क्रियाओं का अवश्यभावी प्रभाव, -वाचक, -वाचिन् (वि०) कर्म को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना सजा शब्द,—वादिन् (पु०) वादी, अभियोक्ता, -विधि कार्य करने का नियम, किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु० ९।२२०, -विशेषणम् 1 क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द 2 विधेय विशेषण, -संक्रान्ति (स्त्री०) दूसरों को ज्ञान देना, अध्यापन-- मालवि० १।१९ -संन्यासः, किसी कार्य की आपूर्ति।

क्रियावत् (वि०) [क्रिया+मतुप्] कर्म में व्यस्त, किसी कार्य के व्यवहार को जानने वाला -- यस्तु क्रियावान् पुरुष स विद्वान् हि० १।६७।

क्री (क्रया० उभ० क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत) 1 खरीदना मोल लेना,--महता पुण्यपण्येन क्रीतेय कायनीस्त्वया शा० ३।१, क्रीणीष्व मज्जीवितमेव पण्यमप्यप्रय वेदस्ति तदस्तु पुण्यम् -- दे० ३।८७ ८८, पंच० १।१३ मनु० ९।१७४ 2 विनिमय, अदल-बदलो—कश्चित्सहस्रैर्मणिभिः क्रीणासि पण्डितम् महा०, आ—, खरीदना, निस् , कुछ देकर पिंड छुड़ाना, दाम देकर फिर से खरीद लेना, निस्तार करना, परि -, (आ०) 1 मोल लेना—सभोगाय परिक्रीत कर्तास्मि तव नाम्नियम् भट्टि० ८।७२ 2 किराये पर लेना, कुछ समय के लिए मोल लेना (निर्धारित मूल्य में करण० तथा सम्प्र० के साथ)—शतेन शताय वा परिक्रेतं सिद्धा० 3 वापिस करना, बदला देना, चुकाना—कृतेनोपकृत यायो परिक्रीणानमुत्सितम्--भट्टि० ८।८, वि -, 1 बेचना (इस अर्थ में आ०) गवां शतसहस्रेण विक्रीणीषे सुत यदि—रामा०, विक्रीणीत तिलान् शूद्रान् —मनु० १०।९०, ८।१९७, २२२, शा० १।१२ 2 विनिमय, अदला-बदली—तावत्समाच्छादिखलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्—पंच० २।६५।

क्रीड् (स्वा० पर० क्रीडति, क्रीडित) 1 खेलना, मनोरंजन करना—बालरा क्रीडितुमारब्धा - पंच० १, एवं क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधि—मृच्छ० १०।५९ 2 जूआ खेलना, पासों से खेलना—बहुविध द्यूत क्रीडत—मृच्छ० २, नाहं क्रीडेकदाचिद्धि—मनु० ४।७४, याज्ञ० १।१३८ 3 हँसी दिल्लगी करना, मजाक करना, खिल्ली उड़ाना—सदवृत्तस्तनमण्डलस्तबकयोः प्रारब्धमेभिः क्रीडसि—गीत० ३, क्रीडिष्यामि तावदेनया—विक्रम० ३, एवमाशाग्रहग्रस्तैः क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः—हि० २।२३, पंच० १।१८७, मृच्छ० ३, अनु—(आ०) खेलना, किलोल करना, जी बहलाना—साध्वनुक्रोडमालानि पश्य वृन्दानि पक्षिणाम्—भट्टि० ८।१०, आ—, परि—, सम् , (आ०) खेलना, कौतुक करना—सक्रीडन्ते मणिभिरमेय कन्या मेघ० ७०, परन्तु सम् पूर्वक क्रीड् (पर०) 'कोलाहल करने' के अर्थ को प्रकट करता है—सक्रीडन्ति शकटानि—महा० 'गाड़ियाँ चूँ-चूँ करती हैं'।

क्रीड [क्रीड्+घञ्] 1 किलोल, मनबहलाव, खेल, आमोद 2 हँसी दिल्लगी, मजाक।

क्रीडनम् [क्रीड्+ल्युट्] 1 खेलना, किलोल करना 2 खेलने की चीज, खिलौना।

क्रीडनक-,कम्, क्रीडनीयक,-यकम् [क्रीडन+कन्, क्रीड+अनीयर्, क्रीडनीय+कन्] खेलने की चीज, खिलौना।

क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1 किलोल, जी बहलाना, खेलना, आमोद—दोषक्रीडाभिरतयुवतिस्वाननिर्वर्मयन्ति—मेघ० ३३।६१ 2 हँसी, दिल्लगी। सम० गृहम् आमोद भवन, खेल आमोद निवास का काम देने वाला एक बनावटी पहाड़, आमोदगिरि,—क्रीडाशैल कनककदलीवेष्टनप्रक्षणीय—मेघ० ७७, सारी वेश्या,—क्षोभ लड़कपन का क्षोभ—अमरु १२,—शुक मनोरंजन के लिए पाला गया सोर—रघु० १६।१४, —रतम् कामकेलि, मैथुन।

क्रीत (वि०) [क्री+क्त] मोल लिया हुआ—दे० क्री०, ल हिन्दुधर्मशास्त्र ने प्रतिशादित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपने नैसर्गिक माता पिता से मोल लिया हुआ पुत्र—क्रीतश्च ताम्या विक्रीत याज्ञ० २।१३१, मनु० ९।१६४। सम० अनुशय किसी वस्तु को मोल लेकर पछताना, किये का तिरस्कार करना, खरीदी हुई वस्तु को वापिस करना (कुछ बातों में धर्मशास्त्रों से अनुमोदित)।

क्रुञ्च (पु०) क्रुञ्च [क्रुञ्च्+क्विप् अच् वा] जलकुक्कुटी, बगला।

क्रुध् (दिवा० पर० क्रुध्यति, क्रुद्ध) गुस्से होना (क्रोध के पात्र में सम्प्र०) हरये क्रुध्यति, कभी कभी 'उपरि' 'प्रति' आदि शब्दों के भी साथ—ममोपरि स क्रुद्ध, न मां प्रति क्रुद्धो गुरु, प्रति , बदले में कुपित होना क्रुध्यन्त न प्रतिक्रुध्येत् मनु० ६।४८, सम् , कुपित होना—सक्रुध्यसि मृषा किं त्वं दिदृक्षु मां मृगेक्षणे—भट्टि० ८।७६।

क्रुध् (स्त्री०) [क्रुध्+क्विप्] क्रोध, कोप।

क्रुश् (स्वा० पर० क्रोशति, क्रुष्ट) 1 चिल्लाना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना क्रोशन्त्यस्या कपिस्त्रिय भट्टि० ६।१२४ 2 बोलना, किलकिलाना कूका देना चीत्कार करना, पुकारना—अनेक चुक्रोश जीवनाश मनाश च—भट्टि० १४।३१, अनु , दया करना, करुणा करना, अभि , विलाप करना, आ—, 1 चिल्लाना, जोर से पुकारना—अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शम्भो त्रिनयन प्रसीदत्याक्रोशन् भर्तृ० ३।१२३ 2 खरीखोटी सुनाना, गालियाँ देना शत ब्राह्मणमाक्रुश्य अधियो दण्डमर्हति मनु० ८।२६७, भट्टि० ५।३९, परि , विलाप करना, प्रत्या गाली के उत्तर में गाली देना, वि , 1 चीखना चिल्लाना - आक्रोश विक्रोश लघाधिचण्डम् मृच्छ० १।४१, भट्टि० १४।४२, १६।३२ 2 उच्चारण करना (कर्म० के साथ) 3 पुकारना (कर्म० के साथ) 4 गाना, व्या —विलाप करना, शोक मनाना।

क्रुष्ट (वि०) [क्रुश्+क्त] 1 चिल्लाया हुआ 2 पुकारा हुआ ष्टम् चिल्लाना, चीखना आदि।

क्रूर (वि०) [कृत्+रक् धातो कृ] 1 निर्दय, निष्ठुर, कठोरहृदय, निष्करुण—तन्नाभिरक्रमभार कल्पित क्रूरनिश्चया रघु० १२।४, मेघ० १०५, मनु० १०।९ 2 कठोर, कड़ा 3 दारुण, भयंकर, भीषण 4 नाशकारी, अनिष्टकर 5 घायल, चोट लगा हुआ 6 खूनी 7 कच्चा 8 मजबूत 9 गरम, तप्त, अतिशय—मनु० ७।२३,—रः बाज, बगला, रम् 1 घाव 2 हत्या, खून 3 भीषण कृत्य। सम० आकृति (वि०) डरावनी सूरत वाला (तिः) रावण का विशेषण, —आचार (वि०) क्रूर और बर्बर आचरण करने वाला, आशय (वि०) 1 भयानक जीवजन्तुओं से भरा हुआ (जैसे कि कोई नदी) 2 क्रूर स्वभाव का, कर्मन् (नपु०) 1 रक्तरंजित करतूत 2 कठोर श्रम,—कृत् (वि०) भीषण, क्रूर, निर्मम, कोष्ठ (वि०) कड़े काठे वाला जिस पर मृदु विरेचन का असर न हो, गन्ध गन्धक, दृश् (वि०) 1 बुरी दृष्टि वाला, कुदृष्टि डालने वाला 2 खल, दुष्ट, दर्शिन् (पु०) पहाड़ी कौवा,—लोचनः शनिग्रह का विशेषण।

क्रेतृ (पु) [क्री+तृच्] क्रेता, खरीददार, - याज्ञ० २।१६८।

क्रौञ्च [क्रुञ्च्+अच्, वा० गुण] एक पहाड़ का नाम, दे० 'क्रौञ्च'।

क्रोड: [कुड्+घञ्] 1 सूअर 2 वक्ष की खोखर, गड्ढा –हा हा हन्त तथापि जन्मविटपिक्रोडे मनो धावति–उद्भट 3 सीना, वक्ष स्थल, छाती, **क्रोडीकृ** छाती से लगाना भर्तृ० २।३५ 4 किसी वस्तु का मध्यभाग विक्रमांक० ११।७५–दे० 'क्रोड' (नपु०) 5 शनिग्रह का विशेषण, **द्रुम**–डा 1 छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग 2 किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गड्ढा, कोटर। सम०–**अङ्क**,–**अङ्गि**,–**पाद** कछुवा,–**पक्ष्म** 1 प्रान्तवर्ती लेख 2 पत्र का पश्चलेख 3 सम्पूरक 4 वसीयतनामे का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र।

क्रोडीकरणम् [क्रोड+च्वि+कृ+ल्युट्] आलिंगन करना, छाती से लगाना।

क्रोडीमुख [क्रोडस्य मुखमिव मुखमस्य ब० स०] गेंडा।

क्रोध [क्रुध्+घञ्] 1 कोप, यस्मा कामात्क्रोधोऽभिजायते भग० २।६२, इसी प्रकार क्रोधान्ध, क्रोधानल 2 (सा० शा० में) क्रोध एक प्रकार की भावना है जिससे रौद्ररस का उदय होता है। सम० **उज्झित** (वि०) क्रोध से मुक्त, शान्त, स्वस्थ, **मूर्छित** (वि०) क्रोध से अभिभूत या क्रोधोन्मत्त।

क्रोधन (वि०) [क्रुध्+ल्युट्] गुस्से से भरा हुआ क्रोधाविष्ट, क्रुद्ध, चिड़चिड़ा यद्यामेण कृतं तदेव कुरुते द्रोणायनि क्रोधन वेणी० ३।३१, नस् क्रुद्ध होना, कोप।

क्रोधालु (वि०) [क्रुध्+आलुच्] क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा, गुस्सैल।

क्रोश [क्रुश्+घञ्] 1 चिल्लाना, चीख, चीत्कार, कूका देना, कोलाहल 2 चौथाई योजन, एक कोस–क्रोशार्ध प्रकृतिपुरुषान्तरज्ञानं तत्त्वा रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी क्रोशौ या–क्रोशयो। सम०–**ताल**, **दलि** एक बड़ा ढोल।

क्रोशन (वि०) [क्रुश्+ल्युट्] चिल्लाने वाला, नम् चीख चिल्लाहट।

क्रोष्टु (पु०) (स्त्री० ष्टी) [क्रुश्+तुन्] गीदड़ (इस शब्द की रूप रचना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में अनिवार्यतः क्रोष्टु बन जाता है, तथा अन्यत्र क्रोष्टु, एवं 'स्वसादि' में द्वि० तथा षष्ठी ब० व० को छोड़कर सर्वत्र विकल्प से)।

क्रौञ्च [क्रुञ्च्+अण्] जलकुक्कुटी, कुररी, बगला–मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि सीमान्तरागध्युत्सुकयन्ति केतं ऋतु० ६।८, मनु० १०।६४ 2 एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह पहाड़ हिमालय का पोता है, तथा कार्तिकेय एवं परशुराम ने इसे बींध दिया है) –हमद्वार भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम् मेघ० ५७। सम० **अदनम्** कमलगट्टे के रेशे, **अरातिः**,–**अरिः**,–**रिपुः** 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 परशुराम का विशेषण

४०

–दारणः, **सूदनः** 1 कार्तिकेय और 2 परशुराम के विशेषण।

क्रौर्यम् [क्रूर+ष्यञ्] क्रूरता, कठोरहृदयता।

क्लन्द् (भ्वा० पर०- क्लन्दति, क्लन्दित) 1 पुकारना, चिल्लाना 2 रोना, विलाप करना, (भ्वा० आ०- क्लन्दते या क्लदते) घबड़ा जाना।

क्लम् (भ्वा०–दिवा०, पर०–क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त) थक जाना, थक कर चूर होना, अवसन्न होना– न क्लमाय न विव्यथे भट्टि० ५।१०२, १४।१०१, वि–, थक जाना।

क्लम, क्लमथ [क्लम+घञ्, अथच् वा] थकावट, क्लान्ति अवमाद विनोदितदिनक्लमा कृतरुचश्च जाम्बूनदै –शि० ४।६६, मनु० ७।१५१, शि० ३।२१।

क्लान्त (वि०) [क्लम्+क्त] 1 थका हुआ, थक कर चूर हुआ,– तमानयक्लान्तम्–रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विक्रम० २।२७ 2 मुर्झाया हुआ, म्लान- क्लान्तो मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नखैरर्पित –श० ३।३६, रघु० १०।४८ 3 दुबला-पतला।

क्लान्ति (स्त्री०) [क्लम्+क्तिन्] थकावट। सम०–**छिद्** (वि०) थकावट दूर करने वाला, बलदायक।

क्लिद् (दिवा० पर०–क्लिद्यति, क्लिन्न) गीला होना, आर्द्र होना, तर होना–प्रेर० तर करना, गीला करना न चैनं क्लेदयन्त्यापः – भग० २।२३, भट्टि० १८।११।

क्लिन्न (वि०) [क्लिद्+क्त] गीला, तर। सम०–**अक्ष** (वि०) चौंधियाई आँखों वाला।

क्लिश् १ (दिवा० आ० (कुछ के मत में) पर०, क्लिश्यते क्लिष्ट, क्लिशित) 1 दुखी होना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना–अन्युपदेशग्रहणं नात्तिक्लिश्यते व शिक्ष्या मालवि० १ त्रय परार्थं क्लिश्यन्ति साक्षिण प्रतिभ कुलम् मनु० ८।१६२ 2 दुख देना, सताना, २ (क्रया० पर०–क्लिश्नाति, क्लिष्ट, क्लिशित) दुख देना, पीड़ित करना, सताना, कष्ट देना,– क्लिश्नाति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव श० ५।६, एवमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्– कु० २।४०, रघु० ११।५८।

क्लिशित, क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] 1 दुखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त 2 कष्टग्रस्त, सताया हुआ 3 मुर्झाया हुआ 4 असंगत, विरोधी उदा० माता मे वन्ध्या 5 परिष्कृत, कृत्रिम (रचना आदि) 6 लज्जित।

क्लिष्टिः (स्त्री०) [क्लिश्+क्तिन्] 1 कष्ट वेदना, दुख, पीड़ा 2 सेवा।

क्लीब (व) (वि०) [क्लीब् (व्)+क] 1. हिजड़ा नपुंसक, बधिया किया हुआ–मनु० ३।१५०, ४।२०५, याज्ञ० १।२२३ 2 पुरुषार्थहीन, नीच, दुर्बल, दुर्बलमना

- रघु० ८।८४, क्लीबान् पालयिता मृच्छ० ९।५ 3 कायर 4 नीच अधम 5 मुस्त 6 नपुंसक लिंग का, —ता, -त्वम् (—त्व, -त्वम्) 1 नामर्द, हिजड़ा, न मूत्रं फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति, मेढ्रे चान्मादशुक्राभ्यां हीनं क्लीबं स उच्यते -दायभाग में उद्धृत कात्यायन 2 नपुंसक लिंग।

क्लेद. [क्लिद्+घञ्] गीलापन, आर्द्रता, तरी, नमी —शा० १।२९, रघु० ७।२१ 2 बहने वाला, घाव से निकलने वाला मवाद 3 दुःख, कष्ट रघु० १५।३२, (=उपद्रव, मल्लि०)।

क्लेश [क्लिश्+घञ्] पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुःख तकलीफ—किमात्मा क्लेशस्य पदमुपनीत —श० १, क्लेश फलेन हि पुनर्नवता विधत्ते कु० ५।८६, भग० १२।५ 2 गुस्सा, क्रोध 3 सांसारिक कामकाज। सम० क्षम (वि०) कष्ट सहने में समर्थ।

क्लैब्य (व्यम्) [क्लीब (व)+ष्यञ्] 1 नामर्दी (शा०) —वरं क्लैब्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम् पञ्च० १ 2 पुरुषार्थहीनता, भीरुता, कायरता—क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ - भग० २।३ 3 अनुपयुक्तता, नामर्दी, शक्तिहीनता रघु० १२।८६।

क्लोमन् [क्लु+मनिन्] फेफड़े।

क्व (अव्य०) [किम्+अत्, कु आदेश] 1 किधर, कहाँ -क्व तेऽक्ष्योरुत्पलानां क्व च नु गहनता कौनुकस्मात् —उत्तर० ६।३२, क्व क्व (जब किसी समास वाक्य आदि में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है 'भारी अन्तर' 'असंगति' क्व कुशा हृदयप्रमाथिनो दर्भा च ते विश्वमनीयमायुधम्—मालवि० ३।२, क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः रघु० १।२, कि० १।६, श० २।१८ 2 कभी कभी 'क्व' का प्रयोग किम् शब्द के अर्थ में होता है क्व प्रदेशे अर्थात् कस्मिन् प्रदेशे (क)—अपि 1 कहीं, किसी जगह 2 कभी कभी (ख)—चित् 1 कुछ स्थानों पर प्रस्तिग्धा क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः श० १।१४, ऋतु० १।२, रघु० १।४१ 2 कुछ बातों में क्वचिद् गोचरः क्वचिन्न गोचरोऽर्थः, क्वचित् क्वचित् (क) एक जगह—दूसरी जगह, यहाँ-वहाँ -क्वचिद्वीणावाद्यं क्वचिदपि च हा हेति रुदितम् - भर्तृ० ३।१०५ १।४, (ख) कभी-कभी (समय सूचक) क्वचित्पथा सञ्चरते पुराणम्, क्वचित् घनानां पतला क्वचिच्च रघु० १३।१९।

क्वणन् (स्वा० पर० क्वणति, क्वणित) 1 अस्पष्ट शब्द करना, झनझन शब्द, टनटन शब्द इति घोषयतीव डिण्डिमं करिणो हस्तिपकाहृत क्वणन्—हि० २।८६, क्वणन्मणिनूपुरौ अमरु २८, ऋतु० ३।३६, मेघ० ३६ 2 भिनभिनाना, (भौंरों का) गुंजन, अस्पष्ट गायन —कु० १।५४, उत्तर० ३।२४, भट्टि० ६।८४।

क्वण., क्वणनम्, क्वणित, क्वाण [क्वण्+अप्, ल्युट् क्त, घञ् वा] 1 माधुर्य शब्द 2 किसी भी आघातयन्त्र की ध्वनि।

क्वत्य (वि०) [क्व+त्यप्] किस स्थान से संबंध रखने वाला, कहाँ पर होने वाला।

क्वथ (स्वा० पर० क्वथति, क्वथित) 1 उबालना, काढ़ा बनाना 2 पचाना।

क्वथ [क्वाथ्+अच्, घञ् वा] काढ़ा, लगातार मंदी आँच में तैयार किया गया घोल।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री० त्की] अकस्मात् घटित, विरल, असाधारण, इति क्वाचित्क पाठः।

क्ष [क्षि+ड] 1 नाश 2 अन्तर्धान, हानि 3 बिजली 4 खेत 5 किसान 6 विष्णु का नरसिंहावतार 7 राक्षस।

क्षण् (न्) (तना० उभ० क्षणोति, क्षणुते, क्षुत्त) 1 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना इमा हृदि व्यायतरात्तमक्षणान्—कु० ५।५४ 2 तोड़ना, टुकड़े २ करना—(घनु) त्व किलानमिन पूर्वं भक्षणो -रघु० ११।३२, उप—, परि—वि उसी अर्थ में प्रयोग जो क्षण का मूल अर्थ है।

क्षण, णम् [क्षण्+अच्] 1 लमहा, निमेष, एक सैकंड में ४।५ भाग के बराबर समय की माप क्षणमात्रं मुखिस्तस्यौ मुक्तमौन इव ह्रदः रघु० १।७३, २।६०, मेघ० ३६, क्षणमवनिष्ठस्व कुछ देर ठहरो 2 अवकाश—अहमपि लब्धक्षण स्वयमेव गच्छामि मालवि० १, गृहीत क्षण श० २, मेरा अवकाश आपके सुपुर्द है अर्थात् आपका कार्य कर देने का मैं आपको वचन देता हूँ 3 उपयुक्त क्षण या अवसर यद्दोः नास्ति क्षणो नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः —पञ्च० १।१२८ मेघ० ६२, अधिगतक्षण —दश० १४७ 4 उत्सव, हर्ष, खुशी 5 आश्रय, दामन 6 केन्द्र, मध्यभाग। सम० अन्तरे (अव्य०) दूसरे क्षण, कुछ देर के पश्चात्, क्षेप. क्षणिक विलंब, द ज्योतिषी (-दम्) पानी (-दा) 1 रात—क्षणादयैष क्षणदापतिप्रभः नै० १।६७, रघु० ८।७४, १६।४५, शि० ३।५३ 2 हल्दी °कर पति चाँद, शि० ९।७०, °चर रात में घूमने वाला, राक्षस, सानुप्लव प्रभुरपि क्षणदाचराणाम्—रघु० १३।७५, °आख्यम् रात्रि में अंधापन, रतौंधी, -द्युति (स्त्री०) प्रकाश,—प्रभा बिजली,—निशाख निशाकर,—भङ्गुर (वि०) क्षणस्थायी, चंचल, नश्वर हि० ४।१३० - मात्रम् (अव्य०) क्षणभर के लिए, रामिन् (पु०) कबूतर विध्वंसिन् (वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला (पु०) नास्तिक दार्शनिकों का सम्प्रदाय जो यह मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होकर नया बनता रहता है।

क्षणक [क्षण्+अकु] घाव, फोड़ा।

क्षणनम्] क्षण् + ल्युट्] क्षति पहुँचाना, मार डालना, घायल करना।

क्षणिक (वि०) [क्षण + ठन्] क्षणस्थायी, अचिरस्थायी —स्वप्नेषु क्षणिकसमागमोत्सवेषु च—रघु० ८।९२, एकस्य क्षणिका प्रीतिः —हि० १।६६,—का बिजली।

क्षणिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [क्षण + इनि] 1. अवकाश रखने वाला 2 क्षणस्थायी,— नी बिजली।

क्षत (वि०) [क्षद्+क्त] घायल, चोट खाया हुआ, क्षतिग्रस्त, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ, — दे० क्षद्— रक्तप्रसाधितभुव क्षतविग्रहाश्च—वेणी० १।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३,—तम् 1 क्षरोध 2 घाव, चोट, क्षति —क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षार क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८ 3 भय, विनाश, क्षतरा—क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्र —रघु० २।५३। सम०—अरि (वि०) विजयी, उदरम् पेचिश, —कास. आघात से उत्पन्न खांसी, -अस् 1 रुधिर —स छिन्नमूल क्षतजेन रेणु —रघु० ७।४३, वेणी० २।२७ 2 पीप, मवाद,—योनि (स्त्री०) भ्रष्ट स्त्री, वह स्त्री जिसका कौमार्य भग हो चुका हो,— विक्षत (वि०) विक्षतांग, जिसका शरीर बहुत जगह से कट गया हो, तथा घावों से भरा हो, —वृत्तिः (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका के साधनों से वंचित,—व्रतः वह विद्यार्थी जिसने अपनी धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भग कर दिया हो।

क्षति (स्त्री०) [क्षद्+क्तिन्] 1 चोट, घाव 2 नाश, काट, फाड़—विसृष्ट क्रियता वराहततिभि भूस्ताक्षति पल्वले—श० २।६ 3 (आल०) बर्बादी, हानि, नुकसान -सुख सजायते तेभ्य सर्वेभ्योऽपीति का क्षति सा० द० १७ 4 ह्रास, क्षय, न्यूनता—प्रतापक्षतिशीतला कु० २।२४, हि० १।११४।

क्षत्तृ (पु०) [क्षद्+तृच्] 1 जो काटने और रूपरेखा खोदने का काम करता है—(मृत्तिकार या समतराश) 2 परिचारक, द्वारपाल 3 कोचवान, सारथि 4 शूद्रपिता तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न सतान—तु० मनु० १०।९ 5 दासी का पुत्र (उदा० विदुर) 6 ब्रह्मा, 7 मछली।

क्षत्र, त्रम् [क्षण्+क्विप्=क्षत्, तत त्रायते त्रै+क] 1 अधिराज्य, शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष—क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ —रघु० २।५३, ११।६९, ७१—अपशय क्षत्रपरिग्रहक्षमा श० १।२१, मनु० ९।३२२। सम० —अन्तकः परशुराम का विशेषण, —धर्मः 1 बहादुरी, सैनिक शूरवीरता 2 क्षत्रिय के कर्तव्य, — पः राज्यपाल, उपशासक,—बन्धुः 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष—मनु० २।३८ 2 क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, वृणित या निकम्मा क्षत्रिय, तु० ब्रह्मबंधु।

क्षत्रियः [क्षत्रे राष्ट्रे साधु तस्यापत्य जातौ वा च तारा०] दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुरुष - ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातय - मनु० १०।४। सम० —हन्: परशुराम का विशेषण।

क्षत्रियका, क्षत्रिया, क्षत्रियिका [क्षत्रिया+कन्+टाप्, ह्रस्व —क्षत्रिय+टाप्—क्षत्रिया+कन्+टाप् इत्वम् वा] क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियाणी [क्षत्रिय+ङीष्, आनुक्] 1 क्षत्रिय जाति की स्त्री 2 क्षत्रिय की पत्नी।

क्षत्रिणी [क्षत्रिय+ङीष्] क्षत्रिय की पत्नी।

क्षान्तृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [क्षम्+तृच्] प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र।

क्षप् (भ्वा०—क्षपति—ते, क्षपित) उपवास करना, सयमी होना—मनु० ५।६९, (प्रेर० या चुरा० उभ०—क्षपयति ते, क्षपित) 1 फेंकना, भेजना, डालना 2 चूक जाना।

क्षपण [क्षप्+ल्युट्] बौद्धभिक्षु,—णम् 1 अपवित्रता, अशौच 2 नाश करना, दबाना, निकाल देना।

क्षपणक [क्षपण+कन्] बौद्ध या जैनसाधु—नग्नक्षपणके देशे रजक किं करिष्यति—चाण० ११०, कथ प्रथममेव क्षपणक—मुद्रा० ४।

क्षपणी [क्षप्+ल्युट्+ङीप्] 1 चप्पू 2 जाल।

क्षपण्यु [क्षप्+अन्यु, गत्वम्] अपराध।

क्षपा [क्षप्+अच्+टाप्] 1 रात—विगलमत्यु क्षिप्र एव क्षपा—श० ६।४, रघु० २।२०, मेघ० ११० 2 हल्दी। सम०—अटः 1 रात में घूमने वाला 2 राक्षस, पिशाच - तत क्षपाटं पृथुपिंगलाक्षी - भट्टि० २।३० - कर,—नाथः 1. चन्द्रमा 2 कपूर - घनः काला बादल,— चरः राक्षस, पिशाच।

क्षम् (भ्वा०, आ०—क्षमते, क्षाम्यति, क्षान्त या क्षमित) 1 अनुमति देना, इजाजत देना, चलने देना—अतो नृपाश्चक्षमिरे समेता स्त्रीरत्नलाभ न तदात्मजस्य —रघु० ७।३४, १२।४६ 2 क्षमा करना, माफ कर देना (अपराध आदि)—क्षान्त न क्षमया भर्तृ० ३।१३, क्षमस्व परमेश्वर, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्य देवि क्षमस्वेति बभूव नम्र — रघु० १४।५८ 3 धैर्यवान् होना, चुप होना, प्रतीक्षा करना—रघु० १५।४५, 4 सहन करना, गम खा जाना, भुगतना— अपि क्षमन्तेऽस्मदुपक्रमं प्रकृतय —मुद्रा० २, नाशाभङ्करान् राजा क्षमेत स्वसुतानपि—हि० २।१०७ 5 विरोध करना, रोकना 6 सक्षम या योग्य होना—क्षुद्रे स्वे क्षालयितुं क्षमेत क थ पातमस्काण्डमलीमस मम —हि० १।३८, ९।६५।

क्षम (वि०) [क्षम्+अच्] 1 धैर्यवान् 2. सहनशील, विनम्र 3. पर्याप्त सक्षम, योग्य (समास में या संब०,

अधि० अथवा तुमुन्नत के साथ)—मलिनो हि यथादर्शो न शक्यो नात्मदर्शने —याज्ञ० ३।४१, सा हि रक्षणविधौ नयो क्षमा —रघु० ११।५, हृदय न त्वबलम्बितुं क्षमा —रघु० ८।५९—शमनक्षम, निर्मूलनक्षम आदि 4 समर्थ, योग्य, उचित, उपयुक्त —तस्मै यदुक्तमशिव न हि तत्क्षम ते—उत्तर० १।१४, आत्मकर्म क्षम देह क्षात्रो धर्म इवाश्रित —रघु० १।१३, श० ५।२६ 5 योग्य, समर्थ, अनुरूप —उपभोगक्षमे देशे —विक्रम० २, तप क्षम साधयितुं य इच्छति —श० १।१८ 6 सहने योग्य, सह्य 7 अनुकूल, मित्रवत् ।

क्षमा [क्षम्+अङ्+टाप्] 1 धैर्य, सहिष्णुता, माफी क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—हि० २, रघु० १।२२, १८।९, तेज क्षमा वा नैकान्तं कालशस्य महीपते—शि० २।८३ 2 पृथ्वी 3 दुर्गा का विशेषण । सम०—ज मंगलग्रह,—भुज्—भुज् राजा ।

क्षमित् (वि०) (स्त्री०—त्री), क्षमिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [क्षम्+तृच्, क्षम्+घिनुण्, स्त्रियां ङीप् च,] धैर्यवान्, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला—कामं क्षाम्यतु य क्षमी—शि० २।४३, याज्ञ० २।२००, १।१३३ ।

क्षय [क्षि+अच्] 1 घर, निवास, आवास—यातनाश्च यमक्षये—मनु० ६।६१, निर्जगाम पुनस्तस्मात्क्षयान्नारायणस्य ह—महा०, 2 हानि, ह्रास, क्षीजन, घटाव, पतन, न्यूनता—आयु क्षय—रघु० ३।६९, वनक्षये वर्धति जाठराग्नि पञ्च० २।१७८ इसी प्रकार चन्द्रक्षय, क्षयपक्ष आदि 3 विनाश, अंत, समाप्ति —निशाक्षये यातिं स्त्रियेव पाण्डुताम्—ऋतु० १।९, अमर० ६० 4 आर्थिक क्षति —मनु० ८।४०१ 5 (मूल्य आदि का) गिरना 6 हटाना 7 प्रलय 8 तपेदिक 9 रोग 10 निर्गुणता, (बीजगणित में) ऋण । सम०—कर (क्षयकर भी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला, बर्बादी करने वाला,—काल 1 प्रलयकाल 2 अवनति का समय,—कास तपेदिक की खांसी,—पक्ष कृष्णपक्ष, अंधेरापक्ष, युक्ति (स्त्री०),—योग नाश करने का अवसर,—रोग तपेदिक, राजयक्ष्मा,—वायु प्रलयकाल की हवा,—सद् (स्त्री०) सर्वनाश, बर्बादी ।

क्षयथु [क्षि+अथुच्] तपेदिक के रोगी की खांसी, तपेदिक ।

क्षयिन् (वि०) (स्त्री० -णी) [क्षय+इनि] 1 ह्रासमान, मुझाने वाला—आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण —भर्तृ० २।६०, ह्रासोन्मुख, क्षीयमाण—न चामूनक्षयिणो क्षयो—रघु० १७।७१, मनु० ९।३१४ 2 क्षयरोगग्रस्त 3 नश्वर, भंगुर—(पु०) चन्द्रमा ।

क्षयिष्णु (वि०) [क्षि+इष्णुच्] 1 बरबाद करने वाला, नाश कारी 2 नश्वर, भंगुर ।

क्षर् (भ्वा० पर०—क्षरति, क्षरित) (इसका प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार से होता है) 1 बहना, सरकना 2 भेज देना, नदी की भांति बहना, उंडेलना, निकालना—रघु० १३।७४, भट्टि० २।८ 3 बूंद-बूंद करके गिरना, टपकना, रिसना 4 नष्ट होना, घटना, मिटना 5 व्यर्थ होना, प्रभाव न होना—यशोऽनुतेन क्षरति तप क्षरति विस्मयात् —मनु० ४।२३७ 6 खिसकना, वञ्चित होना (अपा० के साथ) (प्रेर०—क्षारयति) आरोप लगाना, बदनाम करना (प्राय 'आ' उपसर्ग के साथ), वि—, पिघलना, घुल जाना ।

क्षर (वि०) [क्षर्+अच्] 1 पिघलने वाला 2 जंगम 3 नश्वर —क्षर सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते —भग० १५।१६,—र बादल,—रम् 1 पानी 2 शरीर ।

क्षरणम् [क्षर्+ल्युट्] 1 बहने, टपकने, बूंद-बूंद गिरने और रिसने की क्रिया 2 पसीना आ जाना—अक्ष्णोर्निक्षरणसन्नवर्तिक —रघु० १९।१८ ।

क्षरित् (पु०) [क्षर+इनि] बरसात का मौसम ।

क्षल् (चुरा० उभ०—क्षालयति—ते, क्षालित) 1 धोना, धो देना, पवित्र करना, साफ करना—क्षुते रवे क्षालयितुं क्षमेत क अपातमस्काण्डमलीमस नभ —शि० १।३८, हि० ४।६० 2 मिटा देना—(अयश) तेषामनुग्रहेणाहं राजन् प्रक्षालयाम्यहम् —महा०, वि—, धोकर साफ करना—रघु०—५।४४ ।

क्षव क्षवथु [क्षु+अप्, अथुच् वा] 1 छींक 2 खांसी ।

क्षात्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [क्षत्र+अण्] सैनिक जाति से संबंध रखने वाला—क्षात्रो धर्म श्रित इव तनुं ब्रह्मणोऽस्य गुप्त्यै —उत्तर० ६।९, रघु० १।१३, —त्रम् 1 क्षत्रिय जाति 2 क्षत्रिय के गुण—गीता इस प्रकार बतलाती है 'शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्, दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्—भग० १८।४३ ।

क्षान्त (भू० क० कृ०) [क्षम्+क्त] 1 धैर्यवान्, सहनशील, सहिष्णु 2 क्षमा किया गया,—ता पृथ्वी ।

क्षान्ति (स्त्री०) [क्षम्+क्तिन्] 1 धैर्य, सहनशीलता, क्षमा—अतिरुचेर्वचनेन किम्—भर्तृ० २।२१, भग० १८।४२ ।

क्षान्तु (वि०) [क्षम्+तुन्, वृद्धि] धैर्यवान्, सहनशील, —तु पिता ।

क्षाम (वि०) [क्षै+क्त] 1 दग्ध, झुलसा हुआ 2 क्षीण, पतला, परिक्षीण, कृश, दुबला-पतला क्षामक्षाम कपोलमाननम्—श० ३।१०, मध्ये क्षामा—मेघ० ८२, क्षामच्छाय भवनमधुना मद्वियोगेन नूनम् —८०, ८९ 3 क्षुद्र, तुच्छ, अल्प 4 दुर्बल, निःशक्त ।

क्षार (वि०) [क्षर्+ण वा०] क्षारकशील, क्षारक या

दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी,—रः 1 रस, अर्क 2 शोरा, राब 3 कोई खारीय या क्षारीय पदार्थ—क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८, (क्षार क्षते क्षिप् —एक लोकोक्ति बन गया है—इसका अर्थ है 'पीड़ा को जो पहले से ही असह्य है और बढ़ा देना' 'बुरे को और अधिक बुरा कर देना' 'जले पर नमक छिड़कना' 4 ईर्षा 5 बदमाश, ठग, - रस् 1 काला नमक 2 पानी। सम०—अम्बुधिः समुद्री नमक, —अम्बुधिजम् सज्जी का क्षेत्र,—अम्बु खारी रस या खारा पानी,—आढ्यः,—उदकः,—उदधिः,- समुद्रः खारा समुद्र,—अर्थं,—कितवम्, सज्जी, शोरा, सुहागा,—नदी नरक में खारे पानी की नदी, -भूमिः (स्त्री०), —भूमिका रिहाली भूमि—किमाश्चर्यं क्षारभूमौ प्राणदा यमदूतिका—उद्भट,—मेलकः खारा पदार्थ,—रसः खारा रस।

क्षारकः [क्षार+कन्] 1 खार, रेह 2 रस, अर्क 3 पिंजरा, पक्षियों के रहने की टोकरी या जाल 4 चोबी 5 मछरी, कलिका।

क्षारणम्,-णा [क्षार्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] दोषारोपण, विशेषकर व्यभिचार का।

क्षारिका [क्षर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] भूख।

क्षारित (वि०) 1 खारे पानी में से टपकाया हुआ 2 जिस पर (व्यभिचार) का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

क्षालनम् [क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना, (पानी से धोकर) साफ करना 2 छिड़कना।

क्षालित (वि०) [क्षल+णिच्+क्त] 1 धोया हुआ, साफ किया हुआ, पवित्र किया हुआ 2 पोंछा हुआ, प्रतिदत्त (बदला चुकाया हुआ)—उत्तर० १।२८।

क्षि I (स्वा० पर०—क्षयति, क्षित या क्षीण) 1 मुर्झाना, क्षीजना 2 राज्य करना, शासन करना, स्वामी होना।

II (भ्वा०, स्वा०, क्र्या०—पर०—क्षयति, क्षिणोति, क्षिणाति) 1 नष्ट करना ग्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना - न लक्षणं शस्त्रभृता क्षिणोति रघु० २।४० 2 न्यून करना, बर्बाद करना —रघु० १९।४८ 3 मार डालना, क्षति पहुँचाना —(कर्मवाच्य—क्षीयते) 1 बर्बाद होना, घटना, नष्ट होना, न्यून होना (आल० भी)—प्रतिक्षणमयं काय क्षीयमाणो न लक्ष्यते -हि० ४।६६, प्रत्यासन्न—विपत्तिमूढमनसा प्रायो मतिः क्षीयते—पंच० २।४, अमरु ९३, भर्तृ० २।१९, (प्रेर०—क्षययति या क्षपयति) 1 नष्ट करना, दूर हटा देना, समाप्त कर देना —ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगत-शक्तिरात्मभूः —श० ७।३५, रघु० ८।४७, मेघ० ५३ 2 समय बिताना, अव—, घटना, क्षीण होना, न्यून होना, परि—, प्र—, सम्—, 1 कम होना, क्षीण होना 2 कृश होना, दुबला-पतला होना।

क्षितिः (स्त्री०) [क्षि+क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 निवास, आवास, घर 3 हानि, विनाश 4 प्रलय। सम०—ईशः, —ईश्वरः राजा—रघु० १।५, ३।३, ११।१, कक्षः धूल,—कम्पः भूचाल,—क्षित् (पु०) राजा, राजकुमार, —जः 1 वृक्ष 2 गंडोआ, केंचुआ 3 मंगल ग्रह 4 विष्णु के द्वारा मारा गया नरक नाम का राक्षस (—जम्) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं, (- जा) सीता का विशेषण,—तलम् पृथ्वी की सतह,- देवः ब्राह्मण,— धर पहाड़ कु० ७।९४ —नाथः,—प,—पतिः, पाल,—भुज् (पु०) —रक्षित् (पु०) राजा, प्रभु—रघु० २।५१, ५।७६, ६।८६, ७।३, ९।७५,—सुत मंगल ग्रह,—स्थित (वि०) पृथ्वी पर रहने वाला, -भृत् (पु०) 1 पहाड़—सर्व-क्षितिभृतां नाथ विक्रम० ४।२७ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'राजा' भी है) कि० ५।२०, ऋतु० ६।२६ 2 राजा,—मण्डलम् भूमंडल,—रन्ध्रम् खाई, खोदर, रुह् (पु०) वृक्ष,- वर्धन (पु०) शव०, मुर्दा शरीर, —वृत्ति (स्त्री०) पृथ्वी की गति, धैर्ययुक्तव्यवहार, —शुद्धम् गुफा, बिल।

क्षित्र [क्षिद्+रक्] 1 रोग 2 सूर्य 3 सींग।

क्षिप् (तुदा० उभ०—अभि, प्रति या अति पूर्व होने पर पर०—, दिवा० पर० क्षिप्यति - ते, क्षिप्यति, क्षिप्त) 1 फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विसर्जन, जाने देना (अधि० या कभी कभी सप्त० के साथ) —मरुद्भ्य इति तु द्वारि क्षिपेदप्स्वद्भ्य इत्यपि - मनु० ३।८८, शिला वा क्षेप्स्यते मयि- महा०, का० १२, ९५, प्रतिपूर्वक भी भर्तृ० ३।६७ 2 रखना, पहनना, लगाना यद्यपि शिरस्यन्ध क्षिप्ता धूनोत्यहिंशङ्कया —श० ७।२४, याज्ञ० १।२३०, भग० १६।१० 3 आरोपित करना, लगाना (कलंक आदि)—मय्ये दोषान् क्षिपति—हि० २ 4 फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना—किं कर्मस्य भरव्यथा न वपुषि क्षमा न क्षिपत्येष यत् मुद्रा० २।१८ 5 दूर करना, नष्ट करना—मा० १।१७ 6 अस्वीकार करना, घृणा करना 7 अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना—मनु० ८।३१२, २७०, शा० ३।१०, अभि-, 1 निन्दा करना, कलंक लगाना 2 नाराज करना, अपवाद करना 3 आगे बढ़ जाना, अव—, 1 उतार फेंकना, छोड़ना, त्यागना 2 तिरस्कार करना, भर्त्सना करना, आ-, 1 फेंकना, डाल देना, प्रहार करना 2 सिकोड़ना 3 वापिस लेना, छीनना, खींचना, ले लेना - अपराधमाक्षिप्य - रघु० ७।७,

भर्तृ० १।४३, मेघ० ६८ 4 संकेत करना, इशारा करना 5 परिस्थितियों से अनुमान लगाना -अन्या व्यक्तिरक्षिप्यते 6 (तर्क के रूप में) आक्षेप करना 7 अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8 तिरस्कार करना, द्वह्—, उछालना ऋतु० १।२२, उप—, 1 डालना, फेंकना वपुषि वधाय नक्र नव शस्त्रमुपक्षिपत —मा० ५।३१ 2 संकेत करना, इशारा करना निष्कर्ष निकालना लक्ष कार्यमुपक्षिपन्ति—मृच्छ० ९।३ 3 आरम्भ करना, शुरू करना 4 अपमान करना, डाँटना-फटकारना, नि —, 1 नीचे रखना, स्थापित करना, धर देना याज्ञ० १।१०३, अमर ८० 2 सौंपना, देख रेख में सुपुर्द करना, मनु० ६।३, ३।१७९, १८० 3 शिविर में रखना 4 फेंक देना अस्वीकार करना 5 प्रदान करना, परि -, 1 घेरना, शरक्षारोत परिक्षिप्तम् कु० ६।३८ 2 आलिंगन करना, पर्या —, बाँधना, (बालों को) एकत्र करना (केशान्त) पर्याक्षिपत् काञ्चिदुदारबन्धम्—कु० ७।१४, प्र—, 1 रखना, डालना नामेध्ये प्रक्षिपेदस्थी —मनु० ४।५३, क्षार क्षते प्रक्षिपन् —मृच्छ० ५।१८ 2 बीच में डालना, अन्तर्हित करना—इति सूत्रे कैश्चित्प्रक्षिप्त—कैयट, वि —, 1 फेंकना, डालना 2 मन मोड़ना 3 ध्यान हटाना, सम् —, 1 संचय करना, ढेर लगाना आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु निषादिभि —रघु० १।५२, भट्टि० ५।८६ 2 पीछे हटना, नष्ट करना 3 छोटा करना, कमी करना, संक्षिप्त करना संक्षिप्यत क्षण इव कथ दीर्घयामा त्रियामा -मेघ० १०८, मनु० ७।३४।

क्षेपणम् [क्षिप्+ल्युट् ना०] 1 भेजना, फेंकना डालना 2 झिड़कना, दुर्वचन कहना।

क्षेपणि, णी (स्त्री०) [क्षिप्+अनि, क्षिपणि+ङीष्] 1 चप्पू 2 जाल 3 हथियार, वि प्रहार।

क्षेपण्यु [क्षिप्+कण्युच्] 1 शरीर 2 वसंत ऋतु।

क्षेपा [क्षिप्+अङ्+टाप्] 1 भेजना, फेंकना, डालना 2 रात्रि।

क्षिप्त (भू० क० कृ०) [क्षिप्+क्त] 1 फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, डाला हुआ 2 त्यागा हुआ 3 अवज्ञात, उपेक्षित, अनादृत 4 स्थापित 5 ध्यान हटाया हुआ, पागल (दे० क्षिप्)।—क्तम् गोली लगने से बना घाव। सम०—कुक्कुर पागल कुत्ता,—चित्त (वि०) उचाट मन, विमना,—देह (वि०) प्रसृतशरीर, लेटा हुआ।

क्षिप्ति, (स्त्री०) [क्षिप्+क्तिन्] 1 फेंकना, भेज देना 2 (पहेलियाँ आदि के) गूढ़ अर्थ को प्रकट करना।

क्षिप्र (वि०) [क्षिप्+रक्] (म० अ०-क्षेपीयस्, उ० अ० क्षेपिष्ठ) सजीव, आशुगामी,—प्रम् (अव्य०) जल्दी, फुर्ती से, तुरन्त—विनाश व्रजति क्षिप्रमाजपात्रमिवाम्भसि -मनु० ३।१७९, शा० ३।६, भट्टि० २।४४। सम०—कारिन् (वि०) आशुकारी, अविलम्बी।

क्षिया [क्षि+अङ्+टाप्] 1 हानि, विनाश, बर्बादी, ह्रास 2 अनौचित्य, सर्वसम्मत आचार का उल्लंघन—उदा० स्वयमहरहर्याति उपाध्याय पदाति गमयति -सिद्धा०।

क्षोजनम् [क्षोज्+ल्युट्] पीले नरकुलों में से निकली हुई मरमराहट की ध्वनि।

क्षीण (वि०) [क्षि+क्त, दीर्घ] 1. पतला, कृश, क्षय-प्राप्त, निर्बल, घटा हुआ, थका हुआ या समाप्त, खर्च कर डाला हुआ—भार्या क्षीणेषु वित्तेषु (जानीयात्)—हि० १।७२, इसी प्रकार क्षीण शक्ति, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति 2 सुकुमार, नाजुक 3 थोड़ा अल्प 4 निर्धन, संकटग्रस्त 5 शक्तिहीन, दुर्बल। सम०—चन्द्र घटता हुआ अर्थात् कृष्णपक्ष का चन्द्रमा —जन (वि०) जिसके पास पैसा न रहा हो निर्धन पाप (वि०) जो अपने पाप कर्मों का फल भुगत कर निष्पाप हो गया हो, पुण्य (वि०) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो, तथा अगले जन्म के लिए जिसे और पुण्य कार्य करने चाहिएं,—मध्य (वि०) जिसकी कमर पतली हो,—वासिन् (वि०) खण्डहर में रहने वाला,—विक्रम (वि०) साहसहीन, पौरुषहीन—वृत्ति (वि०) जीविका के साधनों से वञ्चित, बेरोजगार।

क्षीव्, क्षीव दे० क्षीव्, क्षीव।

क्षीर रम् [क्षर्यते अद्यते क्षर्+ईरन्, उपधालोप, क्षस्य ककार षत्व च] 1 दूध,—हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यप -श० ६।२७ 2 वृक्षों का दूधिया रस—ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ता —मेघ० १०७, कु० १।९ 3 जल। सम०—अब्धि शिशु, दुग्ध-पोता बच्चा,—ब्धि दुग्धसागर °ज 1 चन्द्रमा 2 मोती, °जम् समुद्री नमक, °जा तनया लक्ष्मी का विशेषण,—द्रुम सनोवर का वृक्ष,—द्रुव दुग्धसागर —क्षीरोदवेलेव सफेनपुञ्जा —कु० ७।२६, °सनय चन्द्रमा, °तनया, °सुता लक्ष्मी का विशेषण,—सदधि क्षीरोद, ऊर्मि दुग्धसागर की लहर—रघु० ४।२७, —ओदन दूध में उबाले हुए चावल,—कण्ठ दुग्धपोता बच्चा (कण्ठ में दूध रखने वाला) त्वया तत्क्षीर-कण्ठेन प्राप्तभाराध्यक व्रतम् -महावी० ४।५२, ५।११, —जम जमा हुआ दूध,—द्रुम: अश्वत्थवृक्ष, -वाही दूध पिलाने वाली नौकरानी, धात्री,—धि:, —निधि दुग्धसागर—इन्दु क्षीरनिधाविव—रघु० १।१२,—धेनु: (स्त्री०) दूध देने वाली गाय,—नीरम् 1 पानी और दूध 2 दूध जैसा पानी 3 गाढ़ालिंगन,—प: बच्चा

--आब्धि, -आरिधिः, दुग्ध सागर, -विकृतिः जमा हुआ दूध, -वृक्ष 1 बड, गूलर, पीपल और मधूक नाम के वृक्ष 2 अजीर, -सार मलाई, दूध की मलाई, --समुद्र दुग्धसागर, -सार मक्खन, हिंडोर दूध के झाग या फेन।

क्षीरिका [क्षीर+ठन्+टाप्] दूध से बना भोज्य पदार्थ।

क्षीरिन् (वि०) [क्षीर+इनि] दूधिया दुधार दूध देने वाला।

क्षीव् (भ्वा० दिवा०, पर०--क्षीवति, क्षीव्यति) 1 मतवाला होना, मदोन्मत होना, नशे में होना 2 थूकना, मुह से निकालना।

क्षीव (वि०) [क्षीव्+क्त वि०] उत्तेजित, मतवाला, मदोन्मत्त ध्रुवं जये यस्य जगन्मतेन क्षीव क्षमाभर्तुरभूत्कृपाण विक्रमाक० १।२६, क्षीवो दुःशासनासृजा --वेणी० ५।२७।

क्षु (अदा० पर० क्षौति, क्षुत) 1 छीकना अवयाति मरोषया निरस्ते कृतक कामिनि चुक्षुदे मृगाक्ष्या शि० ९।८३, चौर० १०, भट्टि० १४।७५ 2 खांसना।

क्षुण्ण (भू० क० कृ०) [क्षुद्+क्त] 1 कूटा हुआ कुचला हुआ --रघु० १।१७ 2 (आल०) अभ्यस्त, अनुगत --क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्ग. --का० १४६ 3 पीसा हुआ -दे० क्षुद्र। सम०--मनस् (वि०) पहचानापी, पछताने वाला।

क्षुत् (स्त्री०), क्षुतम्, ता [क्षु+क्विप्, तुगागम, क्षु+क्त, क्षुत+टाप्] छींकने वाली, छींक।

क्षुद् (रुधा०, उभ० क्षुणद्धि, क्षुत्ते, क्षुण्ण) 1 कुचलना, घिसना, (पैरों से) कुचल डालना, रगडना, पीस देना क्षुण्णधि सपान् पाताल भट्टि० ६।३६, ते त व्यायिषनाक्षौत्सु पादैर्दन्तैस्तथाच्छिदन्--१५।४३, १६।६६ 2 उत्तेजित करना, क्षुब्ध होना (आ०), प्र , कुचलना खरोचना, पीसना मित्रघ्नस्य प्रचुक्षोद गदयोग विभीषण --भट्टि० १४।३३।

क्षुद्र (वि) [क्षुद्+रक] (म० अ० क्षोदीयस्, उ० अ० --क्षादिष्ट) 1 सूक्ष्म, अल्प, छोटा सा, तुच्छ, हलका 2 कमीना, नीच, दुष्ट, अधम -क्षुद्रेऽपि नूनं शरण प्रपन्ने--कु० १।१२ 3 दुष्ट 4 क्रूर 5 गरीब, दरिद्र 6 कृपण, कंजूस मेघ० १७, -द्रा 1 मधुमक्खी 2 झगडालू स्त्री 3 अपाहज या विकलांग स्त्री 4 वेश्या --उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवना --का० १०७। सम०--अञ्जनम् कुछ रोगों में आखों में लगाया जाने वाला अंजन या लेप,--अन्त्र हृदय के भीतर का छोटा सा रन्ध्र, --कम्बु छोटा शंख, कुण्डम् एक प्रकार का हलका कोढ,--घण्टिका 1 घुंघरू 2 घुंघरू वाली करधनी,--चन्दनम् लाल चंदन की लकडी, जन्तु कोई भी छोटा जीव, दक्षिका दास, या मक्खी, बुद्धि (वि०) ओछे मन का, कमीना,--रक्त शहद,--रोग मामूली बीमारी (सुश्रुत में ४४ रोगों का उल्लेख है),--शङ्ख छोटा शंख या घोंघा (सीपी),--सुवर्णम् हलका या खोटा सोना अर्थात् पीतल।

क्षुद्रल (वि०) [क्षुद्र+लच्] सूक्ष्म, हलका (विशेष कर रोगों व जंतुओं के लिए प्रयुक्त)।

क्षुध् (दिवा० पर०- क्षुध्यति, क्षुधित) भूखा होना, भूख लगना=भट्टि० ५।६६, ६।४४, ९।३९।

क्षुध् (स्त्री०) क्षुधा [क्षुध्+क्विप्, क्षुध्+टाप्] भूख, -सोदति क्षुधा--मनु० ७।१३४, ४।१८७। सम०- आर्त, आविष्ट क्षुधापीडित,--क्षाम (वि०) भूखा होने से दुर्बल--भट्टि० २।२९,-पिपासित (वि०) भूखा प्यासा, निवृत्ति (स्त्री०) भूख शान्त होना।

क्षुधालु (वि०) [क्षुध्+आलुच्] भूखा

क्षुधित (वि०) [क्षुध्+क्त] भूखा

क्षुप [क्षुप्+क] छोटा जड़ी के वृक्ष, झाड, झाडी।

क्षुभ् (भ्वा० आ०, दिवा०, क्या० पर०--क्षोभते, क्षुभ्यति, क्षुभ्नाति, क्षुभित, क्षुब्ध) 1 हिलाना, कंपित करना, क्षुब्ध करना, आंदोलित करना, --महाह्रद इव क्षुभ्यन् भट्टि० ९।११८, रघु० ४।२१, शि० ८।२४ 2 अस्थिर होना 3 लड़खड़ाना (आल० भी), प्र--वि,- सम् कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना।

क्षुभित (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1 हिलाया हुआ, आंदोलित आदि० महाप्रलयमारुतक्षुभितपुष्करावर्तक--वेणी० ३।२ 2 डरा हुआ 3 क्रुद्ध।

क्षुभ्य (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1 आन्दोलित, चंचल, अस्थिर 2 डांवाडोल 3 डरा हुआ, -भ्यः मन्थन करने का डण्डा- शोभेव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधिदर्शना- शि० २।१०७ 2 रति क्रिया का विशेष आसन, रतिबन्ध।

क्षुभा [क्षुभ्+क्विप्] अलसी,एक प्रकार का मन।

क्षुर् (तुदा० पर० क्षुरति, क्षुरित) 1 काटना, खुरचना 2 रेखाएँ खींचना, हल से खेत में खूड बनाना।

क्षुर [क्षुर्+क] 1 उस्तरा रघु० ७।४६, मनु० ९।२६२ 2 उस्तरे जैसी नोक जो तीर में लगाई जाय 3 गाय या घोड़े का सुम 4 बाण। सम०--कर्मन् (नपु०)- किया हजामत बनाना,--क्रियाद्वयम् हजामत करने की आवश्यक चार चीजें,--धानम्,--भाण्डम् उस्तरे का खोल,--धार (वि०) उस्तरे जैसा तेज, --प्र बाण जिसकी नोक घोड़े की नाल जैसी हो--त क्षुरप्रशकलीकृत कृती रघु० ११।२९, ९।६२ 2 खुर्पी, घास खोदने का खुर्पा,--मणि, मुण्डिन् (पु०) नाई।

क्षुरिका, क्षुरी [क्षुर+ङीष्, +कन्+टाप् ह्रस्व, क्षुर+ङीष्] 1 चाकू, छुरी 2 छोटा उस्तरा।

क्षुरिणी [क्षुर+इनि+ङीप्] नाई की पत्नी।

क्षुरिन् (पु०) [क्षुर + इनि] नाई।

क्षुल्ल (वि०) [क्षुद् क्लिन्ति गच्छन्ति क्षुद् + क] छोटा, स्वल्प। सम० तात पिता का छोटा भाई —नृ० स्थल।

क्षुल्लक (वि०) [क्षुल्ल + कन] 1 स्वल्प, सूक्ष्म 2 नीच, दुष्ट 3 नगण्य 4 निर्धन 5 दुष्ट द्वेषयुक्त 6 बच्चा।

क्षेत्रम् [क्षि + ष्ट्रन्] 1 खेत, मैदान, भूमि खनेत्र शक्तिशस्यादि सम्पन्नेक्षुक्षेत्रादिना कृषि—मुद्रा० ३।३ 2 भूमिपति भूमि 3 स्थान, आवास, भूखण्ड, गोदाम—कपटजनमय क्षेत्रमप्रत्ययानाम् —पंच० १।२०१, भनु० १।३७, मघ० १६ 4 पुण्यस्थान, तीर्थस्थान—क्षेत्र क्षत्रप्रयत्नपिशुन कार्य कङ्कजेया मेघ० ८६, भग० ३।१, ६ बाड़ा 6 उर्वरा भूमि 7 जन्मस्थान 8 पत्नी अपि नाम कुलनरियमसवर्णक्षेत्रजभवा स्मृता—मनु० ९।१, मनु० ३।१८५ 9 कार्यक्षेत्र शरीर (आत्मा का कर्म क्षेत्र) यावानो य विधिश्चैव क्षेत्रा+यत्प्रभावं च तत्समासेन मे कृष्ण, भग० १३।१, २ 10 मन 11 घर, नगर 12 मराट आकृति वर्ग कि त्रिभुज 13 रेखाचित्र। सम० अधिदेवता किसी पुण्य भूस्थल की अधिष्ठात्री देवता, —आजीव, कर, कृषक खेतिहर, - गणितम् ज्यामिति, रेखागणित, जात (वि०) ज्यामितीय उत्पत्ति (स्त्री०) ज्यामितीय प्रमाण, - ज्ञ (वि०) 1 खेत में उत्पन्न 2 शरीर से उत्पन्न (ज्ञ) हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपने पति के निमित्त सन्तानोत्पत्ति करने के लिए नियुक्त किए गए किसी सम्बन्धी द्वारा उसकी पत्नी में उत्पादित सन्तान—मनु० ९।१६७, १८० याज्ञ० २।१६८, ६९, ३।१२८, जात (वि०) दूसरे पुरुष की पत्नी में उत्पादित सन्तान, ज्ञ (वि०) 1 स्थानीयता को जानने वाला 2 चतुर, दक्ष (ज्ञ) 1 आत्मा नृ० भग० १३।१-३, मनु० १२।१२ 2 परमात्मा 3 व्यभिचारी 4 किसान,—पति भूस्वामी भूमिधर, पद्धति देवता के लिए पवित्र स्थान, पाल 1 खेत का रखवाला 2 क्षेत्र की रक्षा करने वाला देवता 3 शिव का विशेषण, - फलम् (गणित में) आकृति की लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल, भक्ति (स्त्री०) खेत का बँटवारा,—भूमि (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाय,—राशि ज्यामितीय आकृतियों द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, विद् (वि०) —क्षेत्रज्ञ (पु०) 1 किसान 2 कृषि, जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो कु० ३।५० 3 आत्मा,— स्थ (वि०) पुण्य भूमि में रहने वाला।

क्षेत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [क्षेत्र + ठन्] खेत से सम्बन्ध रखने वाला, क 1 एक किसान—मनु० ८।२४१, ९।५३ 2 पति मनु० ९।१४५।

क्षेत्रिन् (पु०) [क्षेत्र + इनि] कृषक, काश्तकार, खनिहर याज्ञ० २।१६१ 2 नामधारी का पति श्लो० ५ 3 आत्मा 4 परमात्मा भग० १३।३३।

क्षेत्रिय (वि०) [क्षेत्र + घ] 1 खेत में सदैव रखने वाला 2 असाध्य रोग, जिसका उपचार देशान्तर प्राप्ति पर ही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो सके दण्डाद्य क्षेत्रिया येन मध्यगातोनि साक्षवोन्मद्दि० ८।३२, पद्म 1 आंशिक रोग 2 चरागाह, गोचरभूमि, य व्यभिचारी, परदारगत।

क्षेप [क्षिप + घञ्] 1 फेंकना, उछालना, डालना, इधर उधर हिलाना (अंगों को) गति कन्दक्षेपानुगम मेघ० ८७, क्षेपाक्षेपणभीतप्रवेपितम् कु० ३।६० 2 फेंकना, डालना 3 भेजना, प्रक्षिप्त करना 4 आघात 5 उल्लंघन 6 समय बिताना, कालक्षेप 7 विलम्ब, देरी 8 अपमान, दुर्वचन क्षेप करोति चेद्दुष्ट —याज्ञ० २।२०४, निक्षेप 9 अनादर, घृणा 10 घमण्ड, अहंकार 11 फलों का गच्छा, कुसुमस्तवक।

क्षेपक (वि०) [क्षिप् + ण्वुल्] 1 फेंकने वाला, भेजने वाला 2 मिलाया हुआ, बीच में घुमाया हुआ 3 गाथाओं में युक्त अनादरपूर्ण,—क वनावटी या बाद में मिलाया हुआ।

क्षेपणम् [क्षिप् ल्युट्] 1 फेंकना, डालना, भेजना, निर्देश आदि देना 2 (समय) बिताना 3 भूलना 4 गाली देना 5 गाफन जि, - नी (स्त्री०) 1 छप् 2 मछली फंसाने का जाल 3 गाफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर ककड़ फेंके जाय।

क्षेम (वि०) [क्षि + मन्] 1 प्रसन्नता सुख और आराम देने वाला, शुभ, उदार, राजोचितो भावगरिष्ठा रणे हृत्यन्तस्थे क्षेमकरः भवेत् भग० १।४५ 2 समृद्ध, आराम में, सुखी 3 सुरक्षित, प्रसन्न, म, मम् 1 शान्ति, प्रसन्नता, आराम कल्याण, कुशलता क्षितिरिति क्षेमपदेवमातृकाटिचराय तस्मिन् कुरुवंशकाशते—कि० १।२७, द्वैत्य क्षेम समायास्य (पृच्छेत्) मनु० २।१२७, अपना सर्वजनचराणा क्षेम भविष्यति—पंच० १।२ 2 सुरक्षा, बचाव —क्षेमेण व्रज गन्धवान—मृच्छ० ७।७, संकुचाल—पंच० १।१४६ 3 संरक्षण करने वाला, प्रहरी करने वाला रघु० १५।६ 4 अवाप्त की सुरक्षित रखना - तु० योगक्षेम 5 मुक्ति शाश्वत आनन्द,—म एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम० कर (क्षेमंकरी भी) (वि०) भग० प्रद शान्ति और सुरक्षा करने वाला।

क्षेमिन् (वि०) (स्त्री०) [क्षेम + इनि] सुरक्षित, आक्रमण से रक्षित प्रसन्न।

क्षै (भ्वा० पर० क्षायति क्षात) क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, सूखना।

क्षौम्यम् [क्षौम+ष्यञ्] 1 बिनाज 2 दुबलापन, सुकुमारता।
क्षेत्रम् [क्षेत्र+अण्] 1 खेतों का समूह 2 खेत।
क्षैरेय (वि०) (स्त्री०—यी) [क्षीर+ढक्] दूधिया, दूध जैसा।
क्षोड [क्षोड्+घञ्] हाथी बांधने का खंभा।
क्षोणि, क्षोणी (स्त्री) [क्षी+डोनि, क्षोणि+ङीष्] 1 पृथ्वी 2 एक (गणित में)।
क्षोद् (पु०) [क्षुद्+तृच्] मूसली, बट्टा।
क्षोद [क्षुद्+घञ्] 1 चूरा करना, पीसना 2. सिल (जिस पर रखकर कोई चीज पीसी जाती है) 2 धूल, कण कोई छोटा या सूक्ष्मकण—उत्तर० ३।२। सम०—(वि०) जो जांच पड़ताल या अनुसन्धान में ठहर सके।
क्षोदिमन् (पु०) [क्षोद+इमनिच्] सूक्ष्मता।
क्षोभ [क्षुभ्+घञ्] 1 डोलना, हिलना, खौलपोट होना मेघ० २८, ९५, इसी प्रकार काननक्षोभ 2 हचकोले खाना—रघु० १।५८, विक्रम० ३।११ 3 (क) आन्दोलन, हाँवाडोल होना, उत्तेजना, संवेग -स्वयंवर क्षोभकृतामभाव रघु० ७।३, अर्धेन्द्रियक्षोभमयुग्मनेत्र पुनर्वेशित्वाद्बलवन्निगृह्य - कु० ३।६९, (ख) उकसाहट, चित्त प्राय स्वमहिमान क्षोभात्प्रतिपद्यते जन्तु शं० ६।३१
क्षोभणम् [क्षुभ्+णिच्+ल्युट्] क्षुब्ध करना, व्याकुल करना—च कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
क्षोम, क्ष्मम् [क्षु+मन्] घर की छत पर बड़ा कमरा, चौबारा।
क्षौणि, क्षौ (स्त्री०) दे० क्षोणि। सम०—आधार समुद्र, भुज् (पु०) राजा,—भृत् (पु०) पहाड़।
क्षौद्र [क्षुद्र+अण्] चम्पक वृक्ष,—द्रम 1 हल्कापन 2 कमीनापन, ओछापन 3 शहद—सक्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३ 4 जल 5 धूलकण। सम०—जम् मोम।
क्षौद्रेयम् [क्षौद्र+ढक्] मोम।
क्षौम, क्ष्मम् [क्षु+मन्+अण्] 1 रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा—क्षौम केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् —श० ४।५—क्षौमान्तरितमेखले (अद्रौ) रघु० १०।८ 2 चौबारा 3 मकान का पिछला भाग, मम् 1. अलसी 2 अलसी,—मी सन।
क्षौरम् [क्षुर+अण्] हजामत।
क्षौरिक [क्षौर+ठन्] नाई।
क्ष्णु (अदा० पर०—क्ष्णौति, क्ष्णुत) पैना करना, तेज करना। क्ष्णु—(आ०) तेज करना (आल० भी) भट्टि० ८।४०।
क्ष्मा [क्षम+अच् उपधालोप] 1 पृथ्वी, (पुंस्) क्ष्मा लम्भयित्वा क्षमयोपपन्नम्- रघु० १८।९, किं शेषस्य मरव्यया न वपुषि क्ष्मा न क्षिपत्येष यत् मुद्रा० २।१८ 2. (गणित में) एक की संख्या। सम०—ज मंगलग्रह, —प, —पति, -भृत् (पु०) राजा,- कविक्ष्मापति —गीत० १, देशानामुपरि क्ष्मापा — पञ्च० १।१५५, —भृत् (पु०) राजा या पहाड़।
क्ष्माय् (भ्वा० आ०- क्ष्मायते, क्ष्मायित) हिलाना, कांपना —चक्ष्माये च मही—भट्टि० १४।२१, १७।२३।
क्ष्वेड् (भ्वा० उभ०—क्ष्वेडति -ते, क्ष्वेट्ट या क्ष्वेडित) भिनभिनाना, दहाड़ना, चहचहाना, गुर्राना, बुदबुदाना, अस्पष्ट ध्वनि करना—मनु० ४।६४।
क्ष्विद् (भ्वा० आ०) क्ष्विद् (दिवा० पर०—क्ष्विद्यति, क्ष्वेदित, क्ष्विण्ण), 1 गीला होना, चिपचिपा होना 2 (वृक्ष का दूध या) रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना, प्र—, बुदबुदाना भिनभिनाना —भट्टि० ७।१०३।
क्ष्वेड [क्ष्विद्+घञ्, अच् वा] 1 शब्द, शोर, कोलाहल 2 विष, जहर—गुणदोषौ बुधो गृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वर, सिरसा श्लाघते पूर्व पर कण्ठे नियच्छति—सुभा० 3 आदर या तर करना 4 त्याग,—डा 1 शेर की दहाड़ 2 युद्ध के लिए ललकार, रणगुहार 3 बांस।
क्ष्वेडितम् [क्ष्विड+क्त] सिंह गर्जना।
क्ष्वेल्ल [क्ष्वेल्+अ+टाप्] खेल, हंसी, मजाक।

ख

ख [खन्+ड] सूर्य, —खम् 1 आकाश—ख केचिदोघरं इवाक्रमितुं प्रवृत्ता -मृच्छ० ५। २, यावद्गिरि खे मघवा वर्षति कु० ३।७२, मेघ० ९ 2 स्वर्ग, 3 ज्ञानेन्द्रिय 4 एक नगर 5 खेत 6 शून्य 7 एक बिन्दु, अनुस्वार 8. गह्वर, द्वारक, बिवर, रन्ध्र- मनु० २।४३ 9 शरीर के द्वारक (जो गिनती में ९ हैं अर्थात् मुंह, दो कान, दो आँखें, दो नासूनें, गुदा तथा जननेन्द्रिय)—खानि वै पञ्च स्थूलेदृष्टि —मनु० २।६०, ५३, ४।१४४, याज्ञ० १।२० तु० कु० ३।५० 10 भाव 11 प्रसन्नता, आनन्द 12. अभ्रक 13. कर्म 14 ज्ञान 15 ब्रह्मा। सम०

-ग्रह (श्रेष्ठ) 1 बृहस्पति, 2 राहु, आरोही शिरोबिन्दु -जन्मा गंगा का विशेषण,-जन्मन् 1 धूमकेतु 2 बृहस्पति, -जन्मुक मंगल ग्रह,-जामिनी दुर्गा,-जूट जिसके सिर पर जटाएँ हों, -ज्ञ 1 पक्षी-अधुनीत खग स नैकथा तनुम् -नै० २।२, मनु० १२।६३ 2 वायु, हवा तमासीद यथा सूर्यो वृत्राबन्धिर्वनान्खग --महा० 3 सूर्य 4 ग्रह -तारा० आपोक्लिमे यदि खगा स किलेन्दुवार -तारा० 5 टिड्डी, 6 देवता 7 बाण, °अधिप गरुड का विशेषण °अन्तक बाज श्येन, °अभिराज शिव का विशेषण, °आसन 1 उदयाचल 2 विष्णु का विशेषण, °इन्द्र, °ईश्वर °पति गरुड के विशेषण, °वती (स्त्री०) पृथ्वी, °स्थानम् 1 वृक्ष की खोडर 2 पक्षी का घोंसला, -गंगा आक श-गंगा,-गति (स्त्री०) हवा में उड़ान, -ग्राम पक्षी,-(ङी) गमन एक प्रकार का जलकुक्कुट, -गोल आकाशमंडल, °विद्या ज्योतिष विद्या,-चक्षस् चाँद,--चर (श्वेचर भी) 1 पक्षी 2 बादल 3 सूर्य 4 हवा 5 राक्षस (री अर्थात् खेचरी) 1 उड़ने वाली अप्सरा 2 दुर्गा की उपाधि,- जलम 'आकाशीय जल' ओस, वर्षा, कोहरा आदि, ज्योतिस् (पु०) जुगनू, तमास 1 बादल 2 धूआँ,- स्रोत 1 जुगनू खद्योतालो विलसति निभा विद्युदुन्मेषदृष्टिम् मेघ० ८१ 2 सूर्य,-क्षोभण सूर्य, खूप अग्निबाण भुशुण्डि अधूपात् भट्टि० ३।५, खरास अंधकार,- पुष्पम् आकाश का फूल, असम्भवता को प्रकट करने की बात० अभिव्यक्ति इस प्रकार की ४ असंभावनाएं इस श्लोक में बतलाई गई हैं मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्धृतः, एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः -सुभा०, --मणि ग्रह, भानित श्येन,-मणि 'आकाश की मणि' सूर्य,- यौवनम् निद्रालुता, चकावट, यति शिव का विशेषण --वारि (नपु०) वर्षा का पानी ओस आदि, --वाच् वर्फ, पाला, - शय (शेषय भी) (वि०) आकाश में विश्राम करने वाला या रहने वाला, -शरीर आकाशीय शरीर, -श्वसस हवा, वायु, सद्भूत्व, --सम्भव (वि०) आकाश में उत्पन्न / सिन्धु चाँद, --स्थली पृथ्वी, स्फटिकम् सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त मणि हर (वि०) जिस (राशि) का हर शून्य हो।

खखट (वि०) [खखम् अटन्] कठोर, ठोस, ट खड़िया।

खकूर [ख+कु+खच्, मुम्] अलक, बालों की लट।

खच् (भ्वा०+क्या० पर०- खचति-खच्नाति, खचित) 1 आगे आना, प्रकट होना 2 पुनर्जन्म होना 3 पवित्र करना, (चुरा० उभ०- खचयति, खचित) जकड़ना, बाँधना, जड़ना,-खच्—,मिलाना, गड्डमड्ड करना, जड़ना --रघु० ८।५३, १३।५४, मुद्रा० ४।१२।

खचित (वि०) [खच्+क्त] 1 अकड़ा हुआ, संयुक्त, भरा हुआ, अन्तर्मिश्रित,- शकुननीवखचित विभज्यपटा-मण्डलम्-शि० ७।११ 2 निश्चित, सम्मिश्रित 3 जड़ा हुआ, जटित, भरा हुआ (समासगत) °मणि, °रत्न।

खच् [भ्वा० पर०--खचति, खजित] मथन करना, बिलोना, बादोलित करना।

खज,-जक [खच्+अच्, कन् च] मथानी, रई का डंडा।

खजकम् [खच्+कपन्] भौं।

खजाक [खच्+आक] पक्षी।

खजाजिका [खज्+अ+टाप्=खजा, अज्+घञ्, खजायै आजो यस्या ब० स०, खजाज+कीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] कमसिन औरत।

खञ् (भ्वा० पर०—खञ्जति) लँगड़ाना, ठहर-ठहर कर चलना --खञ्जन् प्रमञ्जनजन पथिक पिपासु --नै० ११।१०७।

खञ्ज (वि०) [खञ्ज्+अच्] लँगड़ा, विकलांग, पगु —पादेन खञ्ज --सिद्धा०, मनु० ८।२४२, भर्तृ० १।६४। सम०—खेट, -खेल खंजनपक्षी।

खञ्जनः [खञ्ज्+ल्युट्] खंजन पक्षी- स्फुटकमलोदर खेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् गीत० ११, नेत्रे खञ्जनगञ्जने—सा० द०, एको हि खञ्जनवरो नलिनीदलस्थ —शृंगार० ४,७ नभ् लगड़ा कर जाने वाला, सम०- रतम् सन्यासियों का गुप्त मैथुन।

खञ्जना, खञ्जनिका [खञ्जन+टाप्, खञ्जनं+ठन्+टाप्] खंजन पक्षियों की जाति।

खञ्जरीटः,—टक, खञ्जलेखः [खञ्ज+ऋ। कीटन् कन् च, खञ्ज+लिख्+घञ्] खंजन पक्षी—भामि० २।७८, चौर० ८, मनु० ५।१४, याज्ञ० १।१७४ अमरु, ११।

खट [खट्+अच्] 1 कफ 2 अन्धा कुआँ 3 कूल्हाड़ी 4 हल 5 घास सम० -कटाहक धोकेदान, -खटक 1 गीदड़ 2 कौवा 3 जानवर 4 शीशे का बर्तन।

खटक [खट्+वुन्] 1 सगाई-विवाह तय करने का व्यवसाय करने वाला—तु० घटक 2 अधखुला हाथ।

खटकामुखम् बाल चलाते समय हाथ की विशेष अवस्थिति।

खटिका [खट्+अच्+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 खड़िया 2 कान का बाहरी विवर।

खट (ड) किका—पालकीवाहक, खिड़की।

खटिनी, खटी [खट+इनि+ङीप्, खट्+अक्+ङीष्] खड़िया।

खट्टर (वि०) [खट्ट+स्युट्] ठिगना,--म ठिगना आदमी।

खट्टा [खट्ट्+अच्+टाप्] 1 खाट 2 एक प्रकार का घास।

खट्टिः (पु०, स्त्री०) [खट्ट+इन्] अर्थी।

खट्टिक [खट्ट+अच्+ठन्] 1 कसाई 2 शिकारी, बहेलिया।

खट्टेरक (वि०) [खट्ट+एरक] ठिगना।

खट्वा [खट्+क्वन्+टाप्] 1 खाट, मोका, खटोला 2 झूला, पालना। सम०—अङ्ग सोटा या लकडी जिसके सिरे पर खोपडी जडी हो (यह शिव की दृष्यिार समझा जाता है तथा सन्यासी और योगी इसे धारण करते है)—मा० ५।४, २३ 2 दिलीप, °धर, °भृत् (पु०) शिव की उपाधियाँ, अङ्गिन् (पु०) शिव का विशेषण, -आरूढ—आरूढ (वि०) 1 नीच, दुष्ट 2 परित्यक्त, बदमाश 3 मूर्ख, बेवकूफ।

खट्वाका, खट्विका [खट्वा+कन् -टाप्, ह्रस्वः वा] खटोला, छोटी खाट।

खड दे० खड।

खड [खड्+अच्] तोडना, टुकडे टुकडे करना।

खडिका, खडी [खड+अच्+ङीष्, कन्, ह्रस्व, खड+ङीष्] खडिया।

खड्ग: [खड्+गन्] 1 तलवार—न हि खड्गो विजानाति कर्मकार स्वकारणम् उद्भूट, खड्ग पराम्मुख आदि 2 गैंडे के सींग 3 गैंडा—रघु० ९।६२, मनु० ३।२७२, ५।१८, -लूम् लोहा। सम०—आघात: तलवार का घाव, आधार म्यान, कोश—आमिषम् भैंस का मास, आहु गैंडा,—कोश: म्यान,—धर खड्गधारी योद्धा, —धेनु, —धेनुका 1 छोटी तलवार 2 गैंडे की मादा, पञ्जम् तलवार की धार, पाणि (वि०) हाथ में तलवार लिये हुए, -पात्रम् भैंस के सींगो का बना पात्र, -विद्याधरम् विद्याधरकम् म्यान,—पुत्रिका चाकू, छोटी तलवार, -प्रहार तलवार का आघात,—फलम् तलवार का फलक (मूठ को छोड कर शेष तलवार)।

खड्गवत् (वि०) [खड्ग+मतुप्] तलवार से सुसज्जित।

खड्गिक [खड्ग+ठन्] 1 खड्गधारी योद्धा 2 कसाई।

खड्गिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [खड्ग+इनि] तलवार से सुसज्जित (पु०) गैंडा।

खड्गीकृत [खड्ग+ईक्+कृ०] दराती।

खण्ड् (चुरा० पर०-खण्डयति, खण्डित) 1 तोडना, काटना टुकडे २ करना, कुचलना—भट्टि० १५।५४ 2 पूरी तरह हराना, नष्ट करना, मिटाना—रजनीचरनाथेन खण्डिते तिमिरे निशि—हि० ३।१११ 3 निराश करना मनोरथ करना, (प्रणय में) हताश करना-स्त्रीभि: कस्य न खण्डित भुवि मन -पच० १।१४६ 4 विघ्न डालना 5 धोखा देना।

खण्ड, -कम् [खण्ड्+घञ्] 1 दरार, खाई, विच्छेद, कटाव, अस्थिभग 2 टुकडा, भाग, खड, अश—दिव कान्तिमत्खण्डमेक—मेघ० ३० काष्ठ°, मास° आदि 3 छन्द का अनुभाग, अध्याय 4. समुच्चय, सघात, समूह—तरुखण्डस्य - का० २३,—ड 1 चीनी, खाँड 2. रत्न का एक दोष,—ण्ड् 1 एक प्रकार का नमक 2 एक प्रकार का हिल, गन्ना। सम०—अभ्रम् 1 बिखरे हुए बादल 2 कामकेलि में दाँतों का चिह्न,—आखि (स्त्री०) 1 तेल की एक नाप 2 सरोवर या झील 3 वह स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो,—कथा छोटी कहानी,—काव्यम् मेघदूत जैसा छोटा काव्य—परिभाषा—खण्डकाव्य भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च—सा० द० ५६४,—ज एक प्रकार की खाँड,—परशु शिव का विशेषण—महेश्वर्यं लीलाखण्डितजगत खण्डपरशो—गगा० १, येनाखण्ड जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हर ख्याप्यते—महावी० २।२३ 2. जमदग्नि का पुत्र, परशुराम का विशेषण,—पर्शु 1 शिव 2 परशुराम 3. राहु 4 टूटे दाँत वाला हाथी, —पाल हलवाई,—प्रलय विश्व का आशिक प्रलय जिसमें स्वर्ग से नीचे के सब लोको का नाश हो जाता है,—लवणम् बूरा का नमक,—शर्करा खाँड के लड्डू, —लवणम् एक प्रकार का नमक,—शिखरः चीनी, —सर्करा मिसरी,—स्फोटा बसती, व्यभिचारिणी स्त्री।

खण्डक,—कम् [खण्ड+कन्] टुकडा, भाग, अश,—क 1 चीनी, खाँड 2 जिसके नाखून न हो।

खण्डन (वि०) [खण्ड्+ल्युट्] 1 तोडने वाला, काटने वाला, टुकडे २ करने वाला 2 नष्ट करने वाला, मारने वाला—स्मरगरलखण्डन मम शिरसि मण्डनम्—गीत० १०, मकरध्वजखण्डनम्—१२,—नम् 1 तोडना काटना 2 काट लेना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना —अधरोष्ठखण्डनम्—पच० १, वदन मृगखण्डन जनय रदखण्डन—गीत० १०, चौर० १३ 3 हताश करना, (प्रणय में) निराश करना 4 विघ्न डालना रसखण्डनवर्जितम्—रघु० ९।३६ 5 ठगना, धोखा देना 6 (तर्क का) निराकरण करना—मी० ६।१३० 7 विद्रोह, विरोध 8 बकमिस्सी।

खण्डल,—लम् [खण्ड+लच् नि०] टुकडा।

खण्डशस् (अव्य०) [खण्ड+शस्] 1 अशो में, टुकडो में, °के काट कर टुकडे २ करना 2 थोडा २ करके, टुकडा २ कर के, टुकडे २ कर के।

खण्डित (भू० क० कृ०) [खण्ड्+क्त] 1. काटा हुआ, तोड कर टुकडे २ किया हुआ 2 नष्ट किया हुआ, ध्वस किया हुआ 3 (तर्क का) निराकरण किया हुआ 4 विद्रोह किया हुआ 5. निराश किया हुआ, धोखा दिया हुआ, परित्यक्त—खण्डितयुवतिविलापम्—गीत० ८, —ता वह स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति अविश्वास का अपराधी रहा हो, और इसलिए उसकी पत्नी उससे क्रुद्ध हो, सस्कृत साहित्य में वर्णित १० प्रकार की नायिकाओं में से एक—रघु० ५।६७, मेघ० ३९, परिभाषा इस प्रकार की है:—गाढमेकेति जिनो

यस्या अन्धसभोगविच्छिन्न, सा खण्डितेति कथिता धीरैर्-रीर्ष्याकषायिता- सा० द० ११४। समः--विग्रह (वि०) अंगहीन, विकलांग --वृत्त (वि०) आचार-हीन, दुराचारिन्।

खण्डिनी (अन्ध्र+इनि+ङीप्) पृथ्वी।

खण्डिका (ब० व०) खील, लाजा, तला हुआ या भुना हुआ अनाज।

खदिर [खद्+किरच्] 1 खैर का पेड़,--पाञ्च० १।३०२ 2 इस का विशेषण 3 चाँद।

खन् (भ्वा० उभ०--खनति-ते, खात, कर्म० खन्यते-खायते) खोदना, खनना, खोखला करना --खनन्नाखुबिल सिंह --पञ्च० ३।१७, मनु० २।२१८ भट्टि० १।१७, अधि --, खोदना, उद्--, खुदाई करना, जड़ निकालना उन्मूलन करना, उखाड़ना (आल० भी)--वृक्षानुत्खाय तरसा --रघु० ४।३६, ३३, १।७३, मेघ० ५२, भट्टि० १२।५, १५।५५, मा० ९।३४ नि--, 1 खनना, खोदना 2 दफनाना, गाड़ना क्षतक्षितिधर्थं निखनेत् --याज्ञ० ३।१, वसुधाया निखन्यतां --रघु० १२।३०, भट्टि० ४।३, १६।२२ 3 (स्तंभ के रूप में) उठाना --निखान जयस्तम्भान्--रघु० ४।३६ 4 जमाना, स्थिर करना, घुसेड़ना--निखनति शरं भुजे--रघु० ३।५५, १२।९०, भट्टि० ३।८, हि० ४।७२, परि --, (सीवन आदि) खोलना।

खनक [खन्+ण्वुल्] 1 खनिक 2 सेंध लगाने वाला 3 चूहा 4 कान।

खनत्र [खन्+ष्ट्रन्] 1 खोदना, खोखला करना, पोला करना 2 गाड़ना।

खनि, --नी (स्त्री०) [खन्+इ, स्त्रियां ङीष] 1 खान --रघु० १७।६६, १८।२२, मुद्रा० ७।३१ 2 गुफा।

खनित्र [खन्+इत्र] कुदाल, खुर्पा, गैंती।

खपुर [ख पिपर्ति उच्चतया -ख+पृ+क] सुपारी का पेड़।

खर (वि०) [ख मुखविलसनेनास्ति अस्य--ख+र अथवा खमिन्द्रियं राति -ख+रा+क] (विप० मृदु, श्लक्ष्ण, इत्र) 1 कठोर, खुरदरा, ठोस 2 अमृदु, तेज, सख्त--रघु० ८।१९, स्मर खर खल कांत--काव्य० १।५९ 3 तीखा चरपरा 4 घना, सघन 5 पीड़ाकर, हानिकर, कर्कश 6 तेज धार वाला देहि खानयनशरघातम्--गीत० 7 गरम खराशु --आदि 8 क्रूर, निष्ठुर, ई 1 गधा--मनु० २।२०१, ४।११५, १२०, ८।३७०, याज्ञ० २।१६० 2 ऊँचर 3 बगला 4 कौवा 5 एक राक्षस का नाम जो रावण का सौतेला भाई था और जो राम के द्वारा मारा गया था--रघु० १२।४२। समः--अंशु, --कर, रश्मि सूर्य,--त्वचा 1 गधे का अस्तबल 2 नाई की दूकान, कोण, वर्षाभू चकोर, तीतर, क्षोभल ज्येष्ठ मास, पृष्ठम्--शेफस् गधे का अस्तबल, नास--नस (वि०) नुकीली नाक वाला, --पद्मम् कमल, ध्वंसिन् (पु०) खरदूषण राम का विशेषण, --नाद गधे का रेंकना,--नख कमल,--पात्रम् लोहे का बर्तन--पाल लकड़ी का बर्तन,--प्रिय कबूतर,--यानम् गधों से खींची जाने वाली गाड़ी, रुक्ष 1 गधे का रेंकना 2 मामूली काम, शाला गधों का अस्तबल,--स्वरा जंगली धमेली।

खरिका [खर+कन्+टाप् इत्वम्] पिसी हुई कस्तूरी।

खरिन्धम, --य (वि०) [खरी+धा (घमादेश) पक्षे मे +खश्, मुम्] गधी का दूध पीने वाला।

खरी [खर+ङीष्] गधी। समः--भद्र शिव का विशेषण,--वृष गधा।

खर (वि०) [खन्+कु, रुडागमादेश] 1 खोदने 2 मूल उखाड़ने 3 क्रूर 4 लिखित वस्तुओं का इकट्ठा करने वाला 5 शिव, रः 1 घोड़ा 2 दांत 3 पसीना 4 कामदेव 5 शिव, रा (स्त्री०) लड़की जो अपना पति स्वयं चुने।

खर्ज् (भ्वा० पर०--खर्जति, खर्जित) 1 पीड़ा देना, कष्ट देना करना 2 कड़कड़ शब्द करना।

खर्जनम् [खर्ज--ल्युट्] खरोंचना।

खर्जिका [खर्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 उपदंश रोग 2 गजक।

खर्जु (स्त्री०) [खर्ज्+उन्] 1 खरोंच 2 खजूर का वृक्ष 3 धतूरे का पेड़।

खर्जूरिन् [खर्जू+इनच्] चाँदी।

खर्जू (स्त्री०) [खर्ज+ऊ] खाज खुजली।

खर्जूर [खर्ज+ऊर] 1 खजूर का पेड़ 2 बिच्छू, रघु चाहे 2 हरताल,--री खजूर का पेड़ रघु० ४।५७।

खर्पर [खर्प+अच्] 1 चोर 2 बदमाश, ठग 3 भिखारी का कटोरा 4 खोपड़ी 5 मिट्टी का फूटा हुआ बर्तन ठीकरा 6 छाता।

खर्परिका, खर्परी [खर्पर+अच्+ङीष्, ह्रस्व, खर्पर+ङीष्] एक प्रकार का सुर्मा।

खर्व् (चु) (भ्वा० पर०- खर्वति खर्वित) 1 जाना, फिरना चलना 2 घमंड करना।

खर्व--(वं) (वि०) [खर्व् (वं)+अच्] 1 विकलांग, अपाहज, अपूर्ण (अंगहीन) 2 ठिगना, ओछा, कद में छोटा, र्वः 'वर्व' दस अरब की संख्या। समः--शाखिन् (वि०) ठिगना, ओछा, छोटा।

खर्वट,--टम् [खर्व्+अटन्] 1 नगर जिसमें पेठ भरती हो, मंडी 2 पहाड़ की तराई का गांव।

खल् (भ्वा० पर०- खल्लति, खलित) 1 चलना-फिरना, हिलना-जुलना 2 एकत्र करना, संग्रह करना।

खल--लम् [खल्+अच्] 1 खलिहान--मनु० ११।१७, ११४

याज्ञ० २।२८२ 2 पृथ्वी, भूमि 3 स्थान, जगह 4 धूल का ढेर 5 तलछट, गाद, तेल आदि के नीचे जमा हुआ मैल,—ल दुष्ट या शरारती आदमी—सर्प क्रूर खल क्रूर सर्पात् क्रूरतर खल, मन्त्रौषधिवश सर्प, खल केन निवार्यते—चाण० २६, विषधरस्तोऽप्यतिविषम खल इति न मया वर्दान्त विद्वांस, मदय नकुलस्तेषां नकुलस्तेषां पुन पिशुन - वासव० [खलीकृ 1 कुचलना 2 घायल करना या क्षति पहुँचाना 3 दुर्व्यवहार करना, घृणा करना—परोक्षे खलीकृतोऽप्य धृतकार - -मृच्छ० ७] सम० - उक्ति (स्त्री०) दुर्वचन दुर्भाषण,—काण्डम् खलिहान,—पू (पु० स्त्री०) साफ देने वाला, साफ करने वाला,—भूमि पारा,—सर्ग दुष्टों की सगति।

खलक [खल+ला+क+कन्] घडा।

खलति (वि०) [स्खलन्तिकेशा अस्मात्—स्खल्+अतच् नि० साधु] गजे सिर वाला, गजा -सुखलति।

खलतिक [खलति+कै !-क] पहाड।

खलि, —ली (स्त्री०) [खल्+इन] तेल की तलछट, खली स्थाल्या वैदूर्यमय्या पचति तिलखलीमित्यनैश्चन्द्रनार्घे भर्तृ० २।१००।

खलि (ली) न, नम् [ख अवयमलच्छिद्रे लीनम्—पृषो० वा ह्रस्व] लगाम का दहाना, लगाम की रास।

खलिनी [खल+इनि - ङीप्] खलिहानों का समूह।

खलीकार, कृति (स्त्री०) [खल+च्वि+कृ+घञ्, क्तिन् वा] 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुर्व्यवहार शा० १।२५ 3 अनिष्ट उत्पात।

खलु (अव्य०) [स्खद्, पृषो० वा०] यह अव्यय निम्नांकित अर्थों को प्रकट करता है 1 निस्सन्देह, निश्चय ही, अवश्य सत्यमुच मार्गे पतानि खलु ते विषमीभवन्ति श० ४।१४, अनुस्वार खलु विक्रमालङ्कार—विक्रम० १, न खल्वनिर्जित्य रघु इनी भवान् रघु० ३।५१ 2 अनुरोध, अनुनय-विनय प्रार्थना - न खलु न खलु बाण सन्निपात्योऽयमस्मिन् श० १।१०, न खलु न खलु मुग्धे साहस कार्यमेतत् - नागा० ३ 3 पुछताछ -न खलु तामभिकुद्धो गुरु - विक्रम० ३, (=किमभिकुद्धो गुरु) न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन भट्टा० २, न खल्वम्बा विनाकिना गमित सोऽपि सुहृद्गणा गतिम् कु० ४।२४ 4 प्रतिषेध (क्रियात्मक सज्ञाओं के साथ) निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलक्रिया खलु वाचिकम - शि० २।७० 5 तर्क - न विदर्भे कठिना खलु स्थिय - कु० ४।५, (गण० कार इसे विषाद के निदर्शन के रूप में उद्धृत करता है) विधिना जल एव वज्रिवनस्त्वदसोन खलु देहिना सुखम् - ४।१० 6 कभी कभी 'खलु' पूरक की भाँति भर्ती कर दिया जाता है 7 कभी कभी वाक्यालकार की तरह प्रयुक्त होता है।

खलुच् (पु०) [खम् इन्द्रिय लुम्पति हन्ति इति—ख+लुप्+क्विप्] अन्धकार।

खलूरिका परेड का मैदान जहाँ सैनिक लोग कवायद करें।

खल्या [खल+यत्—टाप्] खलिहानों का समूह।

खल्ल [खल्+क्विप्, त लाति—खल्+ला+क] 1 खरल - जिसमें डाल कर औषधियाँ पीसी जायँ, चक्की 2 गड्ढा 3 चमडा 4 चातक पक्षी 5 मशक।

खल्लिका [खल्ल+कन्+टाप्, इत्वम्] कढाई।

खल्लि (ल्ली) ट (वि०) [खल्ल+इन्+टल्+ड, खल्लि+ङीष्+टल्+ड] गजे सिर वाला।

खल्वाट (वि०) [खल्+वाट उप० स०] गजा, गजे सिर वाला—खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणै सन्तापितो मस्तके—भर्तृ० २।९०, विक्रमांक० १८।९९।

खश (ब० व०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाडी प्रदेश तथा उसके अधिवासी - मनु० १०।४४।

खशार (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम।

खश्य [खश्+य नि० नस्य ष] 1 क्रोध 2 हिंसा, निष्ठुरता।

खस [खानि इन्द्रियाणि स्यति निश्चलीकरोति—ख+सो+क] 1 खाज, खुजली 2 एक देश का नाम दे० 'खश'।

खसूचि (पु०, स्त्री०) [ख+सूच्+इ] 1 अपमानसूचक अभिव्यक्ति (समास के अन्त में)—वैयाकरण खसूचि जो व्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या भूल गया हो।

खस्खस [खम प्रकारे द्वित्वम्, पृषो० अकारलोप] पोस्त। सम० रस अफीम।

खाजिक [खाज+ठन्] तला हुआ या भूना हुआ अनाज।

खाट् (न्) (अव्य०) गला साफ करते समय होने वाली ध्वनि, खाखू खखारना।

खाट, -टा, -टिका, -टी (स्त्री०) [ख+अट्+घञ्, स्त्रियां टाप्—खाट+कन्+टाप्, इत्वम्, खाट+ङीष्] अर्थी, टिकटी जिस पर मुर्दे को रख कर चिता तक ले जाते हैं।

खाण्डव [खण्ड+अण्+वा+क] खाड, मिश्री,—वम् कुरुक्षेत्र प्रदेश में विद्यमान इन्द्र का प्रिय वन जिसे अर्जुन और कृष्ण की सहायता से अग्नि ने जला दिया था। सम०—प्रस्थ एक नगर का नाम।

खाण्डविक, खाण्डिक [खाण्डव+ठन्, खण्ड+ठन्] हलवाई।

खात (वि०) [खन्+क्त] 1 खुदा हुआ, खोखला किया हुआ 2 फाड़ा हुआ, चीरा हुआ,—तम् 1 खुदाई 2 सुराख 3 खाई, परिखा 4 आयताकार तालाब। सम०—भू (स्त्री०) खाई, परिखा।

खातक [खात+कन्] 1 खोदने वाला 2 कर्जदार,—कम् खाई, परिखा।

खाता [खात+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

खातिः (स्त्री०) [खन्+क्तिन्] खुदाई, खोदना करना।

खातम् [खन्+घञ्, कित्] 1 कुदाली 2 आयताकार तालाब 3 खाई 4 वन जंगल 5 विस्मयोत्पादक भय।

खाद् (भ्वा० पर० खादति, खादित) खाना निगल लेना खिलाना, शिकार करना, काट लेना—प्राक्पादयो पतति खादति पृष्ठमांसम्- हि० १।८१, खादन्मांस न दुष्यति - मनु० ५।३२, ५३, भट्टि० ६।६, ९।७८, १४।८७, १०१, १५।३५।

खादक (वि०) (स्त्री०—विका) [खाद+ण्वुल्] खाने वाला उपभोग करने वाला,—क कर्जदार।

खादन [खाद्+ल्युट्] दांत,—नम् 1 खाना, चबाना 2 भोजन।

खादिर (वि०) (स्त्री०—री) [खादिर+अञ्] खैर वृक्ष का, या खैर वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ - खादिर यूप कुर्वीत मनु० २।४५।

खादुक (वि०) (स्त्री०—की) [खाद्+उन्+कन्] उत्पाती, हानिकर द्वेषपूर्ण।

खाद्यम् [खाद्+ण्यत्] भोजन, भोज्य पदार्थ।

खानम् [खन्+ल्युट्] 1 खुदाई 2 खान। सम०—उडक नारियल का पेड़।

खानक (वि०) (स्त्री०—निका) [खन्+ण्वुल्] खोदने वाला, खनिक।

खानि (स्त्री०) [खनिरेव पृषो० इद्धि] खान।

खानिक—कम् [खान+ठञ्] दीवार में किया हुआ छेद, दरार, तरेड़।

खानिक [खान+इकच् का०] घर में सेंध लगाने वाला।

खार, -री, (स्त्री० री) [खम् आकाशम् आधिक्येन क्षणोति-ख+क्ष+अण्, ख+आ+र+क+ङीष् वा ह्रस्व] १६ द्रोण के बराबर अनाज का माप।

खारिक (वि०) [खारिम्+वह्+खञ्] एक खारी भर अनाज पकाने वाला।

खार्वा (स्त्री०) त्रेतायुग, दूसरा युग।

खिङ्गरः (स्त्री०—री) [खिम् इति शब्दं किरति खिम्+कृ+क पृषो०] 1 लोमड़ी 2 खाट या चारपाई का पाया।

खिद् I (भ्वा०, तुदा० पर०—खिन्दति, खिन्न) प्रहार करना, खींचना, कष्ट देना II (दिवा० रुधा०, आ०—खिद्यते, खिन्ते, खिन्न) 1 पीड़ित होना, कष्ट सहना कष्टग्रस्त होना, क्लान्त होना, थकान अनुभव करना, अवसाद या श्रान्ति अनुभव करना—शा० ५।७, किं नाम मयि खिद्यते गुरु—वेणी० १, स पुरुषो य खिद्यते नेन्द्रियै - हि० २।१४१, पराभूत—शा० ३।७, भट्टि० १४।१०८, २७।१० 2 डरना, त्रस्त करना, (प्रेर०)। परि—पीड़ित होना, कष्ट सहना, दुखी या क्लांत होना।

खिदिर [खिद्—किरच्] 1 संन्यासी, 2 दरिद्र 3 चन्द्रमा।

खिन्न (भू० क० कृ०) [खिद्+क्त] 1 अवसाद प्राप्त, कष्ट ग्रस्त, उदास, दुखी, पीड़ित—गुरु खेद खिन्ने मयि भजनि नाद्यापि कुरुषु—वेणी० १।११, अनङ्गबाण-व्रणखिन्नमानसं गीत० ३ 2 क्लान्त, थका हुआ, श्रान्त खिन्न खिन्न शिखरिषु पद न्यस्य गन्तासि यत्र - मेघ० १३, ३८, तयोपचारक्रमखिन्नहस्तया —रघु० ३।११, चौर० ३।२०, शि० ९।११।

खिल - लम् [खिल्+क] 1 ऊसर भूमि या परती जमीन का टुकड़ा, मरुभूमि, वृक्षहीन भूमि 2 अतिरिक्त सूक्त जो किसी संकलन में जोड़ा गया हो—मनु० ३।२३२ 3 सम्पूरक 4 संग्रहग्रंथ या संकलित ग्रंथ 5 खोखलापन, शून्यता [खिल का प्रयोग भू या कृ के साथ भी होता है] खिलीभू अगम्य होना, बन्द होना, अनभ्यस्त रहना -खिलीभूते विमानानां तदुत्पातभयात्पथि - कु० २।४५, खिलीकृ (क) रोकना, बाधा डालना, अगम्य बनाना रोकना—रघु० ११।१४, ८७ (ख) परती छोड़ना उजाड़ना, पूर्णतः नष्ट कर देना—विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा- शि० २।३४।

खुङ्गाह [खुम् इत्यव्यक्तशब्दं कृत्वा गाहते खुम्+गाह+अच्] काला टट्टू या घोड़ा।

खुर [खुर+क] 1 सुम —रघु० १।८५, २।२, मनु० ४।६७ 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3 उस्तरा 4 खाट का पाया। सम०—आघात,—क्षेप लात मारना,—नस,—नास (वि०) चिपटी नाक वाला, —पवनी घोड़े के पदचिह्न,—प्र अर्धगोलाकार नोक का बाण - दे० खुरप्र।

खुरली [खुरं सह लाति पौनःपुन्येन यत्र—खुर+ला+क+ङीष्] (शस्त्र तथा धनुष आदि का) सैनिक अभ्यास - अस्त्रप्रयोगखुरलीकलहे गजानाम्—महावी० २।३४, दूरोत्पतनखुरलीकलितानितान्—५।५।

खुरालक [खुर इव अलति पर्याप्नोति -खुर+अल्+ण्वुल्] लोहे का बाण।

खुरालिक [खुराणाम् आलिभिः कायति प्रकाशते—खुरालि+कै+क] 1 उस्तरा रखने का घर 2 लोहे का तीर 3 नाविक।

खुल्ल (वि०) [=क्षुल्ल, पृषो०] छोटा, ओछा, अधम, नीच—दे० क्षुद्र। सम० तात चाचा।

खेचर दे० 'खचर'।

खेट [खे अटति खट्+अच्, खिच्+अच् वा] 1 गढ़ी, छोटा नगर, पुरवा 2 कफ 3 बलराम की गदा 4 घोड़ा (वि० समासान्त 'खेट' नगण्यता तथा ह्रास

को प्रकट करता है जो 'अभागा' या 'कंजूस' आदि शब्दों से पुकारा जा सकता है, लक्ष्मीक्षेत्रम् अभागा नगर) 'क्षेत्र' के लिए देखें क्ष के नीचे।

क्षेत्रिकाण, -कः [क्षिद्+इन्=क्षेटि, क्षेटि तालोज्य, तालोज्यस्य वा] वैतालिक, स्तुतिपाठक जो गृहस्वामी को गा बजा कर जगाता है।

क्षेत्रिन् (पु०) [क्षिद्+णिनि] धुराचारी, दुश्चरित्र।

क्षेद [क्षिद्+घञ्] 1 अवसाद, आलस्य, उदासी 2 थकान, श्रान्ति—अलसलुलितमुग्धान्यध्वजश्रमक्षेदात् —उत्तर० १।२४, अध्वक्षेद नयेथा —मेघ० ३२, रघु० १८।४५ 3 पीडा, यन्त्रणा —अमर ३ 4. दुःख, शोक —गुरु क्षेद खिन्न मपि भजति नाथापि कुरुषु —वेणी० १।११, अमरु ५३।

क्षेदम् [क्षद्+कथप्, इकारादेश] खाई, परिखा, —क पुल।

क्षेल् (स्वा० पर०—क्षेलति, क्षेलित) 1 हिलाना, इधर-उधर आना जाना 2 काँपना 3 खेलना।

क्षेल (वि०) [क्षेल्+अच्] खिलाडी, रसिया, क्रीडापूर्ण —रघु० ४।२२, विक्रम० ४।१६, ४३।

क्षेलनम् [क्षेल्+ल्युट्] 1 हिलाना 2. खेल, मनोरञ्जन 3 तमाशा।

क्षेला [क्षेल्+अ+टाप्] क्रीडा, खेल।

क्षेलि (स्त्री०) [ये आकाशे क्षलति पर्याप्नोति क्षे+क्ल्+इन्] 1 क्रीडा, खेल 2 तीर।

क्षोटि (स्त्री०) [क्षोट्+इन्] चालाक और चतुर स्त्री।

क्षोड (वि०) [क्षोड+अच्] विकलाग, लगडा, पगु।

क्षोर (ल) (वि०) [क्षोर् (ल्)+अच्] पंगु, लगडा।

क्षोलक [क्षोल+कन्] 1 पुरवा 2 बाटी 3 सुपारी का छिलका 4 डेगची।

क्षोलि [क्षोल्+इन्] तरकस।

ख्या (अदा० पर०— (आर्धधातुक लकारो में आ० भी) —ख्याति, ख्यात) कहना, घोषणा करना, समाचार देना (सम्० के साथ)—कर्म०—ख्यायते 1 कहलाना —भट्टि० ६।९७ 2 प्रसिद्ध या परिचित होना, —प्रेर०—ख्यापयति—ते 1 ज्ञात कराना, प्रकथन करना —मनु० ७।२०१ 2 कहना, घोषणा करना, वर्णन करना—भर्तृ० २।५९, मनु० ११।९९ 3 स्तुति करना, बखान करना, प्रशंसा करना। अभि—,(कर्म०) ज्ञात होना, प्रेर० घोषणा करना, प्रकथन करना, आ—1 कहना, घोषणा करना, समाचार देना (प्रायः सम्प्र० के साथ),—ते रामाय वधोपायमाचख्युर्विदुषश्च —रघु० १५।५, ४१, ७१, ९३; १२।४२, ९१, भग० ११।३१, १८।६३,(कभी कभी सम्प्र० के साथ—आख्याहि मह्यं प्रियदर्शनस्य) पञ्च० ४।१५ 2 घोषणा करना, व्यक्त करना 3 पुकारना, नाम लेना—रघु० १०।५१, मनु० ४।६ परि—,सुपरिचित होना, परिख्या—,गिनती करना, प्र—,सुपरिचित होना, प्रख्या—, 1 मुकर जाना 2 इकार करना, मना करना, अस्वीकार करना 3 मना करना, प्रतिषेध करना 4 वर्जित करना 5 पीछे छोड देना, आगे बढ जाना—मालवि० ३।५, वि— सुपरिचित या प्रसिद्ध होना, व्या—, 1 कहना, समाचार देना, घोषणा करना—भट्टि० १४।११३ 2 व्याख्या करना, वर्णन करना—रावणस्यापि ते जन्म व्याख्यास्यामि —महा० 3 नाम लेना, पुकारना —विद्वद्भिर्दर्शितामार्गो व्याख्याता सा विद्युन्माला भुत० १५, सम्—,गिनना, गणना करना, हिसाब लगाना, जोडना —तावन्त्येव च तत्त्वानि साङ्ख्यैः सङ्ख्यायन्ते—शारी०।

ख्यात (भू० क० कृ०) [ख्या+क्त] 1 ज्ञात रघु० १८।६ 2 नाम लिया गया, पुकारा गया 3 कहा गया 4 विश्रुत, प्रसिद्ध, बदनाम। सम०—लक्षण (वि०) कुख्यात, दुष्ट, बदनाम।

ख्याति [ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा—मनु० १२।३६, पञ्च० १।३७१ 2 नाम, शीर्षक, अभिधान 3 वर्णन 4 प्रशंसा 5 (दर्शन० में) ज्ञान, उपयुक्त पद द्वारा वस्तुओं का विवेचन करने की शक्ति—शि० ४।५५।

ख्यापनम् [ख्या+णिच्+ल्युट्] 1 घोषणा करना, (रहस्य का) उद्घाटन करना 2 अपराध स्वीकार करना, मान लेना, सार्वजनिक घोषणा करना—मनु० ११।२२७ 3. विख्यात करना, प्रसिद्ध करना।

ग

ग (वि०) [गै+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) जो जाता है, आने वाला, गतिमान् होने वाला, रहने वाला, शेष रहने वाला, सैवुन करने वाला, —कः 1. गन्धर्व 2 गणेश का विशेषण 3 दीर्घ वाला ('गुरु' शब्द का संक्षिप्त रूप, छन्द शास्त्र में),—कम् नाखून।

गकारम्—अव्य० [गकारस्तत्रास्मिन्—गम्+ल्युट्, ग आदेश] (कुछ लोग 'गकार' को अव्यय समझते हैं जैसा कि एक

लेखक का कथन है--फाल्गुने गगने फेने अल्पमिच्छन्ति बबंरा) 1 आकाश, अन्तरिक्ष--अवोचदेन गगनस्पृशा रघु स्वरेण--रघु० ३।४३, गगनमिव नष्टतारम् --पञ्च० ५।६, सोऽयं चन्द्र पतति गगणात् - मा० ४, अने० पा०, शि० ९।२७ 2 (गण० में) शून्य 3 स्वर्ग। सम० अप्सस् उच्चतम आकाश, - अङ्गना स्वर्गीय परी, अप्सरा, अध्वग 1 सूर्य 2 ग्रह 3 स्वर्गीय प्राणी,--अम्बु (नपु०) वर्षा का पानी,--उल्मुक मंगलग्रह,--कुसुमम्, पुष्पम् आकाश का फूल अर्थात् अवास्तविक वस्तु, असभावना, दे० 'खपुष्प',- गति 1 देवता 2 स्वर्गीय प्राणी - मेघ० ४६ 3 ग्रह, चर ('गगनेचर' भी) (वि०) आकाश में घूमने वाला (र.) 1 पक्षी 2 ग्रह 3 स्वर्गीय आत्मा, - ध्वज 1 सूर्य 2 बादल, सद् (वि०) अन्तरिक्ष में रहने वाला (पु०) स्वर्गीय जीव शि० ४।५३, सिन्धु (स्त्री०) गगा की उपाधि, स्थ,- स्थित (वि०) आकाश में विद्यमान, स्पर्शन 1 वायु, हवा 2 आठ मरुतों में से एक।

गङ्गा | गम्+गन्+टाप् | 1 गगा नदी, भारत की पवित्रतम नदी, अधोऽधो गङ्गेव पदमुपगता स्तोकमथवा भर्तृ० २।१०, रघु० २।२६, १३।५७, (इसका उल्लेख ऋग्वेद० १०।७५।५ में दूसरी नदियों के साथ २ मिलता है) (इसके अतिरिक्त और दूसरी नदियों के लिए भी जो भारत में पावन समझी जाती है, यह शब्द कभी २ प्रयुक्त किया जाता है) 2 गगा देवी के रूप में मूर्त गगा (हिमवान् पर्वत की ज्येष्ठ पुत्री गगा है, कहते हैं ब्रह्मा के किसी शाप के कारण गगा को इस धरती पर आना पड़ा जहाँ वह शतनु राजा की पत्नी बनी, गगा के आठ पुत्र हुए, जिनमें भीष्म सब से छोटा था, भीष्म अपने आजीवन ब्रह्मचर्य तथा शौर्य के कारण विख्यात हो गया था। दूसरे मतानुसार वह भगीरथ की आराधना पर इस पृथ्वी पर आई, दे० 'भगीरथ' और 'जह्नु' और तु० भर्तृ० ३।१०) सम० --अम्बु,-अम्भस् (नपु०) 1 गगाजल 2 वर्षा का विशुद्ध जल (जैसा कि आश्विन मास में बरसता है),-अवतार 1 गगा का इस पृथ्वी पर पदार्पण--भगीरथ इव दृष्टगङ्गावतार --का० ३२, (यहाँ इस शब्द का अर्थ --स्नान के लिए गगा में उतरना भी है) 2 पुण्य स्थान का नाम,- उद्भेद गगा का उद्गम स्थान, --ओघस् गगा तथा उसके दोनों किनारों का दो २ कोस तक का प्रदेश, --चिल्ली एक जलपक्षी, ज 1 भीष्म 2 कार्तिकेय,-दत्त भीष्म का विशेषण,--द्वारम् समतल भूमि का वह स्थान जहाँ गगा प्रविष्ट होती है ('हरिद्वार' भी उसी स्थान को कहते हैं), - धर 1 शिव का विशेषण 2 समुद्र, °पुरम् एक नगर का नाम,--पुत्र 1 भीष्म 2 कार्तिकेय 3 एक सकर जाति जिसका व्यवसाय मुर्दे ढोना है 4 गगा के घाट पर बैठने वाला पडा जो तीर्थयात्रियों का पथप्रदर्शन करता है, भूत् (पु०) 1 शिव 2 समुद्र,--मध्यम् गगा का तल भाग,--यात्रा 1 गगा नदी पर जाना 2 रोगी को गगातट पर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो, सागर वह स्थान जहाँ गगा समुद्र से मिलती है, सुत 1 भीष्म का विशेषण 2 कार्तिकेय का विशेषण, -ह्रद एक तीर्थ स्थान का नाम।

गङ्गाका, गङ्गिका, गङ्गिका | गङ्गा+कन्+टाप् ह्रस्वो वा, पक्षे इत्वम् अपि | गगा।

गङ्गोल एक रत्न जिसे गोमेद भी कहते हैं।

गच्छ | गम+श | 1 वृक्ष 2 (गण० में) प्रथम का समय (अर्थात् राशियों की सख्या)।

गज (स्वा० पर० गर्जति गर्जित) 1 चिघाड़ना दहाड़ना जगर्ज गर्जा--भट्टि० १४।५ 2 मदिरा पीकर मस्त होना व्याकुल होना मदोन्मत्त होना।

गज | गज्+अच् | 1 हाथी- कचाचिती विध्वगिवागजौघा गजा कि० २।२५ 2 आठ की सख्या 3 लम्बाई की माप, गज (परिभाषा-साधारणनरांगुल्या चतुर्विंशदगुलका गज) 4 एक राक्षस जिसे शिव ने मारा था। सम० अपगो (पु०) 1 सर्वश्रेष्ठ हाथी 2 इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण अधिपति हाथियों का स्वामी, उत्तम हाथी, अध्यक्ष हाथियों का अधीक्षक, अपसद दुष्ट या बदमाश हाथी सामान्य या नीच नसल का हाथी अशन अश्वत्थ वृक्ष (मम्) कमल की जड, और 1 शिव 2 शिव जिसने गज नामक राक्षस को मारा था, आजीव हाथियों से जो अपनी जीविकोपार्जन करता है, महावत, आनन --आस्य गणेश का विशेषण आयुर्वेद हाथियों की चिकित्सा का विज्ञान, आरोह महावत, आह्वय - आह्वयम् हस्तिनापुर, इन्द्र 1 उत्तम हाथी, गज राज कि रघुवंशि गजेन्द्रमन्दगमने- शृङ्गार० ७ 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत, °कर्ण शिव का विशेषण कन्द खाने के योग्य एक बड़ी जड,--कर्णशिन् (पु०) गरुड, गति (स्त्री०) 1 हाथी जैसी मद चाल, हाथी की सी चाल वाली स्त्री, गामिनी हाथी की सी मन्द तथा सौरभभरी चालवाली स्त्री, ग्रहण, --ग्रस्त (वि०) हाथी जैसा ऊँचा, - दन्त 1 हाथी का दाँत 2 गणेश का विशेषण 3 हाथीदाँत 4 खूँटी या बैकेट जो दीवार में लगा हो, °मय (वि०) हाथीदाँत से बना हुआ, दानम् 1 हाथी के गण्डस्थल से बहने वाला मद 2 हाथी का दान, - नास हाथी का गण्डस्थल,--पति 1 हाथियों का स्वामी 2 विशालकाय हाथी--शि० ६।५५ 3 सर्वश्रेष्ठ हाथी,-पुङ्गव

एक विशालकाय श्रेष्ठ हाथी—गजपुङ्गवस्तु, धीर विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते - भर्तृ० २।३१,—पुरम् हस्तिनापुर, - बन्धनी,-बन्धिनी, हाथियों का अस्तबल, —भक्षक अश्वत्थ वृक्ष,—भूषणम् हाथी को सजाने का आभूषण, विशेषकर हाथी के मस्तक की रंगीन रेखाएँ,- मण्डलिका,-- मण्डली हाथियों की मण्डली, -मालक सिंह,- मुक्ता,- मौक्तिकम् मोती जो हाथी के मस्तक से निकला हुआ माना जाता है, मुख,--वक्त्र,—वदन गणेश का विशेषण, —मोटन सिंह, - यूथम् हाथियों का झुंड रघु० ९। ३१, योधिन् (वि०) हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाला,- राज उत्तम या श्रेष्ठ हाथी, वश हाथियों का दल, -विद्या हस्तिविज्ञान, साह्वयम् हस्तिनापुर, स्नानम् (भा०) हाथी का स्नान करना, (आल०) हाथी के स्नान के समान और निष्फल प्रयत्न (हाथी स्नान करके अपने ऊपर धूल डाल लेता है) तु० -अवलेन्द्रियचिन्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० १।१८।

गजता [गज+तल्] हाथियों का समूह।

गजवत् (वि०) [गज+मतुप्] हाथियों को रखने वाला रघु० ६।९।

गर्ज्ज् (भ्वा० पर० गर्ज्जति) विशेष ढंग से ध्वनि करना, शब्द करना।

गर्ज्जा [गर्ज्+घञ्] 1 स्थान 2 सजावट 3 गोशाला 4 मंडी, अनाज की मण्डी 5 अनादर, तिरस्कार,—जा 1 झोंपड़ी पर्णशाला 2 मधुशाला 3 मदिरापात्र।

गर्ज्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] शुद्ध समझना, लज्जित करना आग बबूला हो जाना, सर्वश्रेष्ठ होना स्थलकमल-गञ्जन मम हृदयरञ्जन (चरणद्वयम्) गीत० १०, अलिकुलगञ्जनमञ्जनकम् १०—नेत्रे खञ्जनगञ्जने सा० द० 2 पराजित करना, जीतना कालिय-विषधरगञ्जन—गीत० १।

गर्ज्जिका [गर्ज्जा+कन्+टाप्, इत्वम्] मधुशाला, मदिरालय।

गर्द् (भ्वा० पर० गर्दति, गर्दित) 1 सींचना, निकालना 2 (तरल पदार्थ की भाँति) बहना।

गर्द [गर्द्+अच्] 1 पर्दा 2 बाड़ 3 खाई, परिखा 4 रुकावट 5 एक प्रकार की सुनहरी मछली। सम०--उदकम्,- देशजम्,—समवम् पहाड़ी नमक, विशेषतः वह जो गर्द प्रदेश में पाया जाता है।

गर्दभन्त, गर्दयित्नु [गर्द्+णिच्+झच्, इत्नुच् वा] बादल।

गर्दि [गर्द्+इन्] 1 बछड़ा 2 मट्ठा बैल --गुणानामेव दौरात्म्याद्दूरि धूर्यो नियुज्यते, असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गर्दि -- काव्य० १०।

४२

गर्दु (वि०) [गर्द्+उन्] बेडौल, कुबड़ा,- दुः 1 पीठ पर कूबड़ 2 मेढ़ा 3 जलपात्र 4 केंचुआ 5 गलनख निरर्थक वस्तु—दे० अन्तर्गर्दु।

गर्दूक [गर्दु+कै+क] 1 जलपात्र 2 अँगूठी।

गर्दूर,—ल (वि०) [गर्दु+र या० र] कुबड़ा, बेडौल, मुड़ा हुआ।

गर्दैर [गर्द्+एरक्] बादल।

गर्दोल [गर्द्+ओलच्] 1 मुँहमर 2 कच्ची सांड।

गर्दूर,—ल [गर्द्+ऊरच्, इलच् वा] मेंढ़।

गर्दूरिका [गर्दूर मेषमनुधावति+ठन्] 1 मेढ़ों की पंक्ति 2 आवच्छिन्न पंक्ति, नदी, धारा, °प्रवाह 'भेड़िया-बहान' इसका तात्पर्य है, भेड़ों के रेवड़ की भाँति अंधानुकरण करना -तु० इति गर्दूरिकाप्रवाहेणैव मेढ़ —काव्य० ८।

गर्द्दूक [गर्द्दूक पृषो०] सोने का बर्तन।

गण् (चुरा० उभ० गणयति- ते, -णेत) 1 गिनना, गिनती करना, गणना करना -लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती—कु० ६।८४, नामाक्षरं गणय गच्छसि यावदन्तम्—शा० ६।११ 2 हिसाब लगाना, सगणना या संख्या करना 3 जोड़ना, संपूर्ण जोड़ लगाना 4 अन्दाज लगाना, मूल्य निर्धारण करना (करण० के साथ)—न स तृणेनापि गणयामि 5 श्रेणी में रखना, कोटि में गिनना—अगण्यतामरेषु—दश० १५४ 6 हिसाब में लगाना, विचारना—वार्ता काम-भुजीमजीगणत् मल्लि० 7 ध्यान देना, विचार करना, सोचना -त्वया विना सुखमेतावदजस्य गण्यताम्—रघु० ८।६९, ५। २०, ११।७५, जातस्तु गण्यते लोके य स्फुरत्यन्धयाधिकम्—पंच० १।२७, किसलयतल्पं गणयति विहितबहुतालवृन्तविकल्पम्—गीत० ४ 8 लगाना, आरोपण करना, मत्वे मन्ये (अधि० के साथ) जाड्यं ह्रीर्मयि गण्यते—भर्तृ० २।५४ 9 ध्यान देना, खयाल करना, मन लगाना -प्रजयमगणयित्वा यन्मया पद्मतस्य -विक्रम० ४।१३ 10. (निषेधात्मक अव्यय के साथ) उपेक्षा करना, ध्यान न देना—न महान्तमपि क्लेशम-गीगणत्—का० ६४, मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्—भर्तृ० २।८१, ९, शा० १।१०, भट्टि० २।५३, १५।५ ४५, हि० २।१४२, अधि—, 1 प्रशंसा करना 2 गणना करना, गिनना, अव—, अवहेलना करना, परि—, 1 गणना करना, गिनना 2 विचार करना, ध्यान देना, सोचना—अपरिगणयन् --मेघ० ५, प्र—, हिसाब लगाना, वि—, 1 गणना करना, याज्ञ० ३।१०४ 2 खयाल करना, विचार करना--मेघ० १०९, रघु० १।८७ 3. अवहेलना करना—ध्यान न देना 4 विचार विमर्श करना, चिंतन करना--पंच० ३।४३।

गण [गण्+अच्] 1 रेवड़, झुंड, समूह, दल, सङ्घ —मुनिगणभक्षणारम्भे, भक्षण —आदि 2 माला, श्रेणी 3 अनुयायी या अनुचर वर्ग 4 विशेषतः अर्धदेवों का गण जो शिव के सेवक माने जाते हैं और गणेश के अधीक्षण में रहते हैं, इस गण का कोई अर्धदेव—गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनाम् - आदि गणा त्वमेवप्रसवावतत्वा —कु० १।५५, ७।४०, ७१, मेघ० ३३, ५५, कि० ५।१३ 5 समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बना मनुष्यों का समाज या सभा 6 सम्प्रदाय (दर्शन या धर्म में) 7 २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पदाति सैनिकों की छोटी टोली ('अक्षौहिणी' का उपप्रभाग) 8 (गण०) अङ्क 9 पाद, चरण (छन्द शास्त्र में) 10 (व्या० में) धातुओं या शब्दों का समूह जो एक ही नियम के अधीन हो तथा उस श्रेणी के पहले शब्द पर जिसका नाम रखा गया हो उदा० स्वादिगण अर्थात् 'सु' से आरम्भ होने वाली धातुओं की श्रेणी 11 गणेश का विशेषण। सम० —अग्रणी (पु०) गणेश,—अचल कैलास पहाड़ जिस पर शिव के गण रहते हैं,—अधिप —अधिपति 1 शिव—शि० ९।२७ 2 गणेश 3 सैन्य दल का मुखिया सेनापति, शिष्यों के समूह का मुखिया, गुरु, मनुष्यों या जानवरों की टोली का मुखिया, यूथपति, -अन्न् सहभोजशाला, भोज्यपदार्थ जो बहुत से समान व्यक्तियों के लिए बनाया जाय—मनु० ४।२०९, २१९, —अध्यक्ष (वि०) दल या टोली का एक व्यक्ति (१) किसी धार्मिक संस्था का सदस्य या नेता मनु० ३।१५४,—ईश शिव का पुत्र गणपति (दे० नी० गणपति), °आत्मजा पार्वती का विशेषण, °आभ सिन्दूर, —ईक्षण, —ईश्वर 1 गणेश का विशेषण 2 शिव का विशेषण, उत्साह गेंदा, -कार 1 वर्गीकरण करने वाला 2 भीमसेन का विशेषण,—कृत्वस् (अव्य०) सब कालों में, कई बार,—गति एक विशेष ऊँची संख्या, —भक्षणम् यूथीगण का सहभोज, ज्योनार,— छन्दस् (नपु०) पादों द्वारा मापा गया तथा विनियमित छन्द, —जित (वि०) दल या टोली बनाने वाला,— दीक्षा 1 बहुतों की एक साथ दीक्षा, सामूहिक दीक्षा 2 बहुत से व्यक्तियों का एक साथ दीक्षा-संस्कार,—देवता (ब० व०) उन देवताओं का समूह जो प्राय टोली या श्रेणियों में प्रकट होते हैं—अमर० परिभाषा देता है—आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिला, महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवता।—द्रव्यम् सार्वजनिक संपत्ति, पंचायती माल,—धर 1 किसी वर्ग या समूह का मुखिया 2 विद्यालय का अध्यापक,—नाथ, —नायक 1 शिव की उपाधि 2 गणेश का विशेषण, —नायिका दुर्गा की उपाधि,—प,—पति 1 शिव 2 गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र है, एक आख्यायिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र है क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के मैल से हुआ। यह बुद्धिमत्ता का देवता और बाधाओं को हटाने वाला है और इसीलिए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने पर उसकी पूजा होती है तथा आवाहन किया जाता है उसका चित्रण प्राय बैठी हुई अवस्था में किया जाता है, उसकी नाद निकली हुई है, चार हाथ हैं, चूहे पर सवार है तथा सिर हाथी का है, इसके सिर में दांत केवल एक है, दूसरा दांत --शिव जी के अन्तःपुर में प्रविष्ट होते हुए परशुराम को रोकने के लिए युद्ध करते समय टूट गया (इसी लिए गणेश को एकदन्त या एकदशन भी कहते हैं, उसका हाथी का सिर है'-- इस बात पर प्रकाश डालने वाली अनेक कहानियाँ हैं। कहते हैं कि गणेश ने व्यास से सुनकर महाभारत लिखा व्यास ने ब्रह्मा से लिपिकार के रूप में गणेश की सेवाएँ प्राप्त कर ली थीं),—पर्वत दे० गणाचल,—पीठकम् छाती, वक्षस्थल पुगव किसी वर्ग या जाति का मुखिया (ब० व०), पूरक किसी जाति या वर्ग का नेता, भर्तृ (पु०) 1 शिव का विशेषण गणभर्तुरुक्षा कि० ५।४० 2 गणेश का विशेषण 3 किसी वर्ग का नेता, भोजनम् सहभोज मिलकर भोजन करना यज्ञ सामूहिक संस्कार, -राज्यम् दक्षिण का एक साम्राज्य, राजस् रातों का समूह,- वृत्तम् दे० गणछन्दस्, हास,- हासक सुगन्ध द्रव्य की एक जाति।

गणक (वि०) (स्त्री० गणिका) [गण्+ण्वुल्] बहुत धन देकर खरीदा हुआ, क 1 अङ्कगणित का ज्ञाता 2 ज्योतिषी रे पान्थ पुस्तकधर क्षणमत्र तिष्ठ वैद्योऽसि किं गणकशास्त्रविशारदोऽसि, केनौषधेन मम पश्यति भर्तुरम्बा किं दर्शमिष्यति पतिं सुचिरप्रवासी -सुभा०, की ज्योतिषी की पत्नी।

गणनम् [गण्+णिच्+ल्युट्] 1 गिनना, हिसाब लगाना 2 जोड़ना, गणना करना 3 विचार करना, खयाल करना, ध्यान रखना 4 विश्वास करना, चिन्तन करना।

गणना [गण्+णिच्+युच्] हिसाब लगाना, विचार करना खयाल करना, गिनती करना - का वा गणना सचेतनेषु अपगतचेतनान्यपि सम्पदुत्पिपासुमम् (मदन)—का० २५७, (हमें क्या आवश्यकता है तु० कथा) मेघ० १०, ८७, रघु० ११।६४, शि० १६।५९, अमरु ६४। सम०—पति (स्त्री०) = गणपति,—पति अङ्कगणित को जानने वाला,—व्यतिरेक विलक्षणी।

गणशस् (अव्य०) [गण+शस्] दलों में, श्रेणी में, श्रेणी के क्रम से।

गणि (स्त्री०) [गण्+इन्] गिनना।

गणिका [गण+ठञ्+टाप्] 1. रण्डी, वेश्या —गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तसेना —मृच्छ० १।६, गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निरुक्ष्यते —मृच्छ० ५, निरवकाशयद्विमपतेवसु वियदालयादपरदिग्गणिका—शि० ९।१० 2 हथिनी 3 एक प्रकार का फूल।

गणित (वि०) [गण्+क्त] 1 गिना हुआ, सख्यात, हिसाब लगाया हुआ 2 खयाल किया हुआ, देखभाल किया हुआ—दे० गण्, —न् 1 गिनना, हिसाब लगाना 2 गणना विज्ञान, गणित (इसमें अंकगणित [पाटीगणित या व्यक्तगणित] बीजगणित और रेखागणित सम्मिलित है)—गणितमथ कला वैशिकी हस्तिशिक्षा ज्ञात्वा - मृच्छ० १।४ 3 श्रेणी का जोड 4 जोड।

गणितिन् (पु०) [गणित+इनि] 1 जिसने हिसाब लगाया है 2 गणितज्ञ।

गणिन (वि०) (स्त्री० नी) [गण+इनि] (किन्हीं वस्तुओं की) टोली या झुंड को रखने वाला, यूथपति, कुत्तों के झुंड को रखने वाला,—रघु० ९।५३, (पु०) अध्यापक (शिष्यों की श्रेणी को रखने वाला)।

गणेय (वि०) [गण+एय] गिनती किये जाने के योग्य, जो गिना जा सके।

गणेय [गण्+एरु] कर्णिकार वृक्ष (स्त्री०) 1 रण्डी 2 हथिनी।

गणेरुका [गणेरु+कै+क] 1 कुटनी, दूती 2 सेविका।

गण्ड [गण्ड्+अच्] 1 गाल, कनपटी समेत मुख का समस्त पार्श्व—गण्डाभोगे पुलकपटल—मा० २।५, तदीयमार्द्रीकृतगण्डलेखम्- कु० ७।८२, मेघ० २६, ९२, अमरु ८१, ऋतु० ४।६, ६।१०, श० ६।१७, शि० १२।५४ 2 हाथी की कनपटी—मा० १।१ 3 बुलबुला 4 फोडा, रसौली, सूजन, फुंसी—अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोट—मुद्रा० ५, तदा गण्डस्योपरि पिटिका सवृत्ता—श० २ 5 गडमाला या गर्दन के अन्य फोडा फुंसी 6 जोड, गाठ 7 चिह्न, धब्बा 8 गैंडा 9 मूत्राशय 10 नायक, योद्धा 11 घोडे के साज का एक भाग, आभूषण के रूप में घोडे के जीन पर लगा हुआ बटन। सम०—अङ्क गैंडा, उपधानम् तकिया —मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च—सुभा०, —कुसुमम् हाथी की कनपटी से झरने वाला मद,—कूट पहाड की चोटी पर बना कुआं,—घात बडा घाव, चैत्र —प्रवेश गाल,—तलकम् चौडा गाल—घृतमधुगण्डफलकैर्जिघर्भविकसद्भिरास्यकमलै प्रमदा—शि० ९।४७,—भित्ति (स्त्री०) 1 हाथी के गडस्थल का छिद्र जिससे मद झरता है 2 भित्ति की भांति गाल अर्थात् चौडे, श्रेष्ठ और प्रशस्त गाल—भिन्नैः सदाना-मलगण्डभित्तिभिः (गजैः) रघु० ५।४३, (यहां मल्लिनाथ कहता है—प्रशस्तौ गण्डौ गण्डभित्ती) १२।१०२, —माला —माला कण्ठमाला रोग (जिसमें गर्दन की गिल्टियों में सूजन हो जाती है),—मूर्ख (वि०) अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल मूढ,—शिला बडी चट्टान, —शैल 1 भूचाल या आंधी से नीचे गिराई गई विशाल चट्टान—कि० ७।३७ 2. मस्तक,—शोणा नदी का नाम, (इसे 'गडकी' भी कहते हैं),—स्थल्, —स्थली 1 गाल—गण्डस्थलेषु मदवारिषु- पञ्च० १।१२३ शृङ्गार० ७, गण्डस्थली प्रोन्नितपत्रलेखा —रघु० ६।७२ अमरु ७७ 2 हाथी की कनपटियां।

गण्डक [गण्ड+कन्] 1 गैंडा 2 रुकावट, बाधा 3 जोड, गाठ 4 चिह्न, धब्बा 5 फोडा, रसौली, फुंसी 6 वियोजन, वियोग 7 चार कौडी के मूल्य का सिक्का। सम०—यष्टी दे० गडकी।

गण्डका [गण्डक+टाप्] लौंदा, पिण्ड या डली।

गण्डकी [गण्डक+ङीष्] 1 एक नदी का नाम जो गंगा में मिल जाती है 2 मादा गैंडा। सम०—पुत्र, —शिला शालिग्राम (पत्थर का)।

गण्डकिन् (पु०) [गण्डक+इनि] शिव।

गण्डि [गण्ड+इनि] वृक्ष का तना, जड से लेकर उस स्थान तक जहां से शाखाएँ आरम्भ होती हैं।

गण्डिका [गण्डक+टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का कपडा 2 एक प्रकार का पेय।

गण्डीर [गण्ड्+ईरन्] नायक, शूरवीर।

गण्डू (पु०, स्त्री०) [गण्ड्+ड- ऊङ्] 1 तकिया 2 जोड, गाठ।

गण्डू (स्त्री०) 1 जोड, गाठ 2 हड्डी 3 तकिया 4 तेल। सम०—पद एक प्रकार का कीडा, केंचुआ, °अण्ड् सीसा,—पदी छोटा केंचुआ।

गण्डूष —ष [गण्ड्+ऊषन्] (पानी का) मुहभर, मुट्ठी भर - गजाय गण्डूषजल करेणु (ददौ)—कु० ३।३७, उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४, गण्डूषजलमात्रेण शफरी-फर्फरायते उद्भट 2 हाथी के सूंड की नोक।

गण्डोल [गण्ड्+ओलच्] 1 कच्ची खांड 2. मुंहभर।

गत (भू० क० कृ) [गम्+क्त] 1 गया हुआ, व्यतीत, सदा के लिए गया हुआ—मुद्रा० १।२५ 2 भूतकाल का हुआ, बीता हुआ, पिछला—गतायां रात्रौ 3. मृत, मृर्दा, दिवंगत—कु० ४।३० 4 गया हुआ, पहुंचा हुआ, पहुंचने वाला 5 अन्तर्गत, अन्तःस्थित, बैठा हुआ विचार करता हुआ, सम्मिलित (बहुधा समासों में—आत्मप्रान्तगत —पञ्च० १, बैठा हुआ; सदोगत —रघु० ३।६६, सभा में बैठा हुआ; इसी प्रकार आत्म° हृदय° मन सर्वस्व विद्यमान 6 लेटा हुआ, घटाया गया आपद्गत 7 संकेत करते हुए, कवच रखते हुए, के

विषय में, की बाबत, विषयक, सबद्ध (बहुधा समास में)—राजा शकुन्तलागतमेव चिन्तयति - श० ५, भर्तृगतया चिन्तया—श० ४, वयमपि भवन्यौ सखीगत किमपि पृच्छाम श० १, इसी प्रकार 'पुत्रगत स्नेह आदि,—सम्। गति, जाना- -गतमुपरि घनानां वारिगर्भावगम्भम् —श० ७।७, शि० १।२ 2 चाल, चलने की रीति—कु० १।३४, विक्रम० ४।१६ 3 घटना 4 यदि समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मुक्त' 'विरहित' 'वर्जित' और 'बिना' शब्दों में अनुवाद करते हैं। सम०- अक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा, --अध्वन् (वि०) 1 जिसने अपनी यात्रा समाप्त कर ली है 2 अभिज्ञ, परिचित, (स्त्री०) चतुर्दशी से युक्त अमावस्या, - अनुगतम् पूर्वोदाहरण या प्रथा का अनुसरण करना,—अनुगतिक (वि०) दूसरों की नकल करने वाला, अन्धानुयायी —गतानुगतिको लोको न लोक पारमार्थिक —पञ्च० १।३४२, लोग भेड़ा चाल चलने वाले या केवल अंधानुकरण करने वाले होते है - मुद्रा० ६।५, - अन्न (वि०) जिसका अन्न समय आ गया है, अर्थ (वि०) 1 निर्धन 2 अर्थ हीन (क्योंकि अर्थ का विधान पहले ही किया जा चुका है), - असु,—जीवित,- प्राण (वि०) समाप्त, मृत -भग० २।११, --आगतम् 1 जाना आना, बार २ मिलना भर्तृ० ३।७, भग० ९।२१, मुद्रा० ४।१ 2 (ज्योतिष में) तारों का अनियमित मार्ग, आधि (वि०) चिन्ताओं से मुक्त, प्रसन्न, आयुस् (वि०) जीर्ण, निर्बल अतिवृद्ध, --आसंज्ञा जो बहुमती होने की आयु को पार कर चुकी हो, बुढिया - उत्साह वि० उत्साहहीन, उदास, ओजस् (वि०) शक्ति या सामर्थ्य से विरहित, - कल्मष (वि०) पाप या जुर्म से मुक्त, पवित्रीकृत, -कल्प (वि०) पुत्र उत्पन्नकर्ता,-चेतन (वि०) बेहोश मूर्छित, चेतनाहीन, दिनम् (अव्य०) बीता हुआ कल, प्रत्यागत (वि०) जाकर वापिस आया हुआ मनु० ७।१४६, - प्रभ (वि०) दीप्तिरहित, धुंधला, मलिन, सद्यस् या म्लान, प्राण (वि०) जीवनरहित मृत, - प्राय (वि०) लगभग गया हुआ, लगभग बीता हुआ - गतप्राया रजनी, भर्तृका 1 विधवा स्त्री 2 (विरल प्रयोग) वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो (—प्रोषितभर्तृका),—लज्जीक (वि०) 1 कान्तिहीन, दीप्ति से रहित, म्लान 2 धन से वञ्चित निर्धनीकृत, घाटे को यन्त्रणा से पीड़ित, वयस्क (वि०) बहुत आयु का, वृद्ध, बूढ़ा, वर्ष, वेम बीता हुआ वर्ष, -वैर(वि०) मेल मिलाप न रहने वाला, पुनर्मिलित,—व्यथ (वि०) पीड़ा से मुक्त, —शैशव (वि०) जिसका बचपन बीत गया है —सत्त्व (वि०) 1 मृत, ध्वस्त, जीवनरहित 2 ओछा, —सन्धक हाथी जिसका मद न झरता हो,—स्पृह (वि०) सांसारिक विषयवासनाओं से उदासीन।

गति (स्त्री०) [गम्+क्तिन्] 1 गति, गमन जाना, चाल गतिविगलिता पञ्च० ४।७८, अभिन्नगतय -श० १।१४, (न) भिदन्ति मन्दा गतिमद्यमुख्य कु० १।११, नकली धीमी चाल को मत सुधारो, इसी प्रकार गगनगति पञ्च० १, लघुगति मेघ० १६, १०, ४६, उत्तर० ६।३ 2 पहुँच, प्रवेश—मनो वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गति रघु० १।८ 3 कार्यक्षेत्र, गुंजायश—अस्त्यगति कु० ३।१९, मनोरथानामगतिर्न विद्यते- कु० ५।६४, नास्त्यगतिर्मनोरथानाम् विक्रम० २ 4 मार्ग, चर्या दैवगतिर्हि चित्रा 5 जाना, पहुँचना, प्राप्त करना वैकुण्ठीयो गति पञ्च० १, स्वर्ग प्राप्ति 6 भाग्य, फल भर्तृगतिगतेव्या दश० १०३ 7 अवस्था, दशा दान भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य—भर्तृ० २।४३, पञ्च० १।१०६ 8 पदस्थापना, मस्थान, स्थिति, अवस्थिति —परागतमपि पितु रघु० ८।२७ कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तः सर्वलोकस्य भर्तृ० २।१०४ पञ्च० १।६१, ६२० 9 साधन, तरकीब, प्रणाली दूसरा उपाय अनुपेक्षणे द्वयो गति मुद्रा० २, का गति क्या हो सकता है ? कुछ नहीं हो सकता (प्राय नाटकों में प्रयुक्त होता है) पञ्च० १।३१९, अन्या गतिर्नास्ति कार० १।८ 10 आश्रय रक्षास्थल, शरण अन्या गार अवलब विधुराणा गतिर्यथाम् पञ्च० १।३२०, ३२२, आसयत मल्लिके पृथ्वी ६ स भ श्रीहर्षगति सिद्धा० 11 ज्ञान उदयम प्राप्तिस्थान भग० २।६, मनु० १।१० 12 मार्ग पथ 13 प्रमाण, प्रयोक्ता (जनम) 14 घटना फल, परिणाम 15 घटनाक्रम, भाग्य, किस्मत 16 नक्षत्र पथ 17 ग्रह को अपने ही कक्ष में दैनिक गति 18 रिसने वाला घाव, नासूर 19 ज्ञान, बुद्धिमत्ता 20 पुनर्जन्म आवागमन मनु० ६।७३ 21 जीवन की अवस्थाएँ (शैशव, यौवन, वार्धक्य आदि) 22 (व्या० में) उपसर्ग तथा क्रियाविशेषणात्मक अव्यय (अलं, तिरस् आदि) जब कि वह किसी क्रिया या कृदन्तक से पूर्व लगाये जाय। सम० —अनुसार दूसरे के मार्ग का अनुगमन करने वाला, भङ्ग ठहरना, हीन (वि०) अशरण निस्सहाय, परित्यक्त।

गत्वर (वि०) (स्त्री० री) [गम्+क्वरप्, अनुनासिक लोप, नुक्] 1 गतिशील, चर, जगम 2 अस्थायी, विनश्वर गत्वरैरसुभि किं० २।१९, गत्वरी यौवनश्रिय -११।१२।

गद् (स्वा० पर० गदति, गदित) 1 स्पष्ट कहना, कथन

करना, बोलना, वर्णन करना—अगादाये गदाग्रजम् -शि० २।६०, बहु जगाद पुरस्तालस्य सखा किलाहम् -११।२९, सुहृदन्तरश्चा जगदे कुमारी—रघु० ६।४५ 2 गणना करना, गि—, घोषणा करना, बोलना, कहना—रघु० २।३३ ।

गदः [गद्+अच्] 1 बोलना, भाषण 2 वाक्य 3 रोग, बीमारी—असाध्य कुरुते कोप प्राप्ते काले गदो यथा —शि० २।८४, जनपदे न गद पदमाददौ—रघु० ९।४, १७।८१ 4 गर्जन, गड़गड़ाहट, वज्र एक प्रकार का विष । सम० अश्वनी (द्वि० व०) दो अश्विनी कुमार, देवताओं के वैद्य,—अशनी सब रोगों का राजा अर्थात् तपेदिक,—अम्बरः बादल, अरातिः औषधि, दवा ।

गदयिष्णु (वि०) [गद्+णिच्+इष्णुच्] 1 मुखर, वाचाल, बातूनी 2 कामुक, विषयी, स्नुः कामदेव ।

गदा [गद्+अच्+टाप्] 1 क्रीड़ायष्टि या गदा, मुद्गर —सचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू - वेणी० १।१५ । सम० - अग्रजः कृष्ण -शि० २।८८, अग्रपाणि(वि०) दाहिने हाथ में गदा लिए हुए,—धर विष्णु की उपाधि, —भृत् (वि०) गदाधारी, गदा से युद्ध करने वाला (पु०) विष्णु की उपाधि, युद्धम् गदा से लड़ा जाने वाला युद्ध,—हस्त (वि०) गदा से सुसज्जित ।

गदिन् (वि०) (स्त्री० नी) [गदा+इनि] 1 गदाधारी भग० ११।१७ 2 रोगग्रस्त, रुग्ण (पु०) विष्णु की उपाधि ।

गद्गद (वि०) [गद् इत्यव्यक्तं वदति -गद्+गद्+अच्] हकलाने वाला, हकला कर बोलने वाला—तत्किं गदादपि गद्गदेन वचसा अमरु ५३, गद्गदगलस्खलद्वृत्तिलीलाक्षर का देहीति वदेत् भर्तृ० ३।८ सानन्दगद्गदपद हरिरित्युदाच—गीत० १०,—दम् (अव्य०) अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर विलाप से वाष्पगद्गदम् - रघु० ८।४३, द, दम हकलाना, अस्पष्ट या उलट-पुलट भाषण । सम० ध्वनि हर्ष या शोक सूचक मन्द अस्पष्ट ध्वनि —वाच् (स्त्री०) सुबकी आदि से अन्तर्हित, अस्पष्ट या उलट-पुलट वाणी,—स्वर (वि०) हकलाने वाले स्वर से उच्चारण करने वाला (र) 1 अस्पष्ट तथा हकलाने का उच्चारण 2 भैंसा ।

गद्य (स० कृ०) [गद्+यत्] बोले जाने या उच्चारण किए जाने के योग्य—गद्यमेतत्त्वया मम—भट्टि० ६।८७ —म् नसर, गद्य रचना, छन्दविरहितरचना, तीन प्रकार (गद्य, पद्य, चम्पू) की रचनाओं में से एक —दे० काव्या० १।११ ।

गद्याण (न,—क) क ४१ घुंघचियों के समान भार, ४१ रत्तियों का वजन ।

गन्तु (वि०) (स्त्री०—त्री) [गम्+तृच्] 1 जो जाता है, घूमता है 2. किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।

गन्त्री [गम्+तृच्+ङीप्] बैलगाड़ी । सम०—रथः बैलगाड़ी ।

गन्ध् (चुरा० आ०—गन्धयते) 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 पूछना, मांगना 3 चलना-फिरना, जाना ।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1 बू, वास्य—गन्धभाघ्राय चोर्व्या —मेघ० २१, अपघ्नन्तो दुरित हृद्यगन्धैः आ० ४।७, रघु० १२।२७, (ब० स० के उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होने पर यह शब्द बदलकर 'गन्धि' हो जाता है यदि इससे पूर्व उद्, पूति, सु या सुरभि में से कुछ जोड़ दिया गया है, या समास तुलनार्थक है अथवा 'गन्ध' का अर्थ 'जरा सा', 'थोड़ा सा' है- उदा० —सुगन्धि, सुरभिगन्धि, कमलगन्धि मुखम् 2 वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण, जहाँ यह पृथ्वी का गुणात्मक लक्षण है, पृथ्वी को 'गन्धवती' कहा गया है तर्क० स० 3 वस्तु की केवल गन्धमात्र, जरा सा, बहुत ही थोड़े परिणाम में घृतगन्धि भोजनम्- सिद्धा० 4 सुगन्ध, कोई सुगन्धित सामग्री—एषा मया सेविता गन्धयुक्ति - मृच्छ० ८, याज्ञ० १।२३१ 5 गन्धक 6 पिसा हुआ चन्दन चूरा 7 संयोग, सम्बन्ध, पड़ोस 8 घमण्ड, अहङ्कार—जैसा कि 'आत्मगन्ध' में,—अम् 1 गन्ध, बू 2 काली अगरु लकड़ी । सम०—अधिकम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—अपकर्षणम् गन्ध दूर करना, - अम्बु (नपु०) सुवासित जल,—अम्लः जंगली नीबू का वृक्ष, अश्मन् (पु०) गन्धक,—अष्टकम् आठ सुगन्ध द्रव्यों का मिश्रण जो देवताओं पर चढ़ाया जाय, देवताओं की प्रकृति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, —आढ्यः छछुन्दर, - आलीवः सुगन्धों का विक्रेता, आढ्य (वि०) गन्धसमृद्ध, बहुत सुगन्धित—अजस्रोल्लसगन्धाढ्या - -महा०, (इक्षु) सारंगी का पेड़ (इभम्) चन्दन की लकड़ी—इन्द्रियम् नाक, घ्राणेन्द्रिय, —इभ, —गजः, -द्विप, - हस्तिन् (पुं०) 'सुवास—हाथी' सर्वोत्तम हाथी— शमयति गजानन्यान्गन्धद्विप करभोऽपि मद्—विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १७।७०, कि० १७।१७,—उत्तमा मदिरा, शराब,—उदम् सुगन्धित जल,—उपजीविन् (पु०) गन्धद्रव्यों से आजीविका कमाने वाला, गन्धी,—ओतु (गन्धोतु या गधोतु गन्धबिलाव,—कारिका 1 सुगन्ध द्रव्य बनाने वाली सेविका, शिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके नियन्त्रण में रहती है,—कालिका—काली (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती,—काष्ठम् अगर की लकड़ी —कुटी एक प्रकार का गंधद्रव्य, केलिका,—केलिका कस्तूरी,—गुण (वि०) गंधगुण वाला, गंधयुक्त,—ग्राहक्

गंध का सूचना,—जलम् सुवासित, सुगंधित जल,—ज्ञा नासिका, - तूर्यम् बिगुल तथा दुंदुभि आदि रणवाद्य —तैलम् खुशबूदार तेल, सुगन्धित द्रव्यों से तैयार किया गया तेल, - दारु (नपु०) अगर की लकड़ी, द्रव्यम् सुगन्धित द्रव्य, - पूलिः (स्त्री०) कस्तूरी, पलाश छछून्दर, —नासिका, - नाली नासिका,—निलया एक प्रकार की चमेली,—पः एक पितृगण, - पलाशिका हल्दी, —पलाशी आमा हल्दी की जाति,—पाषाणः गन्धक, —पिशाचिका धूने का धूआं, (अपनी गंध से पिशाचों को आकृष्ट करने के कारण तथा कालेरंग का होने के कारण सम्भवतः इसका यह नाम पड़ा है), पुष्प 1 बेल का पौधा 2 केवड़े का पौधा, (ष्पम्) खुशबूदार फूल पुष्पा नील का पौधा, - पूतना भूतनी, प्रेतनी, - फली 1 प्रियंगुलता 2 चम्पककलो, —बधुः आम का वृक्ष, बास (स्त्री०) पृथ्वी,—भाजन 1 भौंरा 2 गन्धक (न, - नम्) मेरु पहाड़ के पूर्व में स्थित एक पहाड़ जिसमें चंदन के अनेक जंगल हैं, - भादनी मदिरा, शराब,—भाडिनी लाल, - मार्जारः गन्धबिलाव - मुखा, मूषिका, - मूषी (स्त्री०) छछून्दर,—मृग 1 गन्धबिलाव 2 कस्तूरीमृग,—यूथम् साँड, - रोहिष गन्धक,—रोहिणी चम्पक का कली,—युक्ति (स्त्री०) सुगन्धद्रव्यों के तैयार करने की कला,—राज एक प्रकार की चमेली (जम्) 1 एक प्रकार का गंधद्रव्य 2 चंदन की लकड़ी,—लता प्रियंगुलता,— लोलुपा मधु मक्खी, - वह वायु—रात्रिन्दिव गन्धवह प्रयाति—श० ५।४, दिग्दक्षिणा गन्धवह मुखेन - कु० २।२५,—वहा नासिका,—वाहक 1 वायु 2 कस्तूरीमृग, - वाही नासिका, विद्रुक गेहूँ,—वृक्ष साल का पेड़, व्याकुलम् ककोल का पेड़, - शुण्डिनी छछून्दर, - शेखर कस्तूरी,—सार चन्दन, सोमम् सफेद कुमुदिनी, - हारिका गंधकारिका, स्त्रीजनों के पीछे-पीछे सुगंध लेकर चलने वाली सेविका।

गन्धकः [गन्ध+कन्] गंधक।

गन्धनम् [गन्ध्+ल्युट्] 1 अध्यवसाय, अविराम प्रयत्न 2 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 3 प्रकाशन 4 सूचना, संसूचन, संकेत।

गन्धमादनः [गन्ध+मतुप्+ढक्, मस्य धत्वम्] 1 पृथ्वी, 2 शंकर 3 व्यास की माता सत्यवती 4 चमेली का एक भेद।

गन्धर्वः [गन्ध+ऋ+अच्] स्वर्गीय गायक, अर्ध देवों का वर्ग जो देवताओं के गवैये तथा संगीतज्ञ माने जाते हैं, कहते हैं कि वह कन्याओं के स्वर को मधुर बना देते हैं—सोम सौम्य इहासीदा गन्धर्वश्च सुभा गिरम् ऋग्० १।७१ 2 गर्दभा 3 घोड़ा 4 कस्तूरीमृग 5 मृत्यु के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व की आत्मा 6 कोयल। सम०—नगरम्,—पुरम् गन्धर्वों का नगर, आकाश में एक काल्पनिक नगर, संभवतः मरीचिका आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिणाम, —राज. चित्ररथ, गन्धर्वों का स्वामी,- विद्या संगीत कला, विवाह मनु० ३।२७ में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह युवक और युवती की पारस्परिक रुचि और पूर्णतः प्रेम का परिणाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की आवश्यकता है और न किसी संगे संबंधियों की अनुमति की, कालिदास के कथनानुसार यह है कथमप्यबान्धवकृता स्नेहप्रवृत्ति - श० ४।१६, वेद चार उपवेदों में से एक, जिसमें संगीत कला का विवेचन है,—हस्त.,—हस्तक एरंड का पौधा।

गन्धारः (ब० व०) [गन्ध+ऋ—अण] एक देश और उसके शासकों का नाम।

गन्धाली (स्त्री०) 1 भिंडी 2 सनई सुगंध। सम० वर्मन् छोटी इलायची।

गन्धालु (वि०) [गन्ध+आलुच्] सुगंधित, सुवासित, खुशबूदार।

गन्धिक (वि०) [गन्ध+ठन्] (केवल समास के अन्त में प्रयोग) 1 गंधवाला जैसा कि 'उत्पलगन्धिक' 2 नाम मात्र रखने वाला—आनुगन्धिक (नाममात्र का भाई), क 1 सुगंधों का विक्रेता 2 गंधक।

गभस्ति (पु०, स्त्री०) [गम्यते ज्ञायते गम्+डस्ति=गं विषयं न बिभर्त्ति, भस्+क्तिच्] प्रकाश की किरण, सूर्यकिरण या चन्द्रकिरण,—स्ति.(पु०) सूर्य (स्त्री०) अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण। सम०—करः पाणि, हस्त सूर्य।

गभस्तिमत् (पु०) [गभस्ति+मतुप्] सूर्य—घनव्यपायेन गभस्तिमानिव रघु० ३।३७, (नपु०) पाताल के सात प्रभागों में से एक।

गभीर (वि०) [गच्छति जलमत्र, गम्+ईरन्, नि० भुगागम]=[गम्भीर] 1 गहरा उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुष्पा सरित्सङ्क्रमाः—उत्तर० २।३०, भामि० २।१०५ 2 गहरी आवाज वाला (ढोल की भाँति) 3 घना, सटा हुआ, (जंगल की भाँति) दुर्गम 4 अगाध, मेधावी 5 संगीन, संजीदा, महत्त्वपूर्ण, उत्तम 6 गुप्त, रहस्यपूर्ण 7 गहन, दुर्बोध, दुर्गाह्य। सम०—आत्मन् परमात्मा,- वेध (वि०) अत्यन्त भेदक या अन्त प्रवेशी।

गभीरिका [गभीर+कन्+टाप्, इत्वम्] गहरी आवाज वाला बड़ा ढोल।

गम्भोलिकः [?] छोटा गावदुम तकिया।

गम् (भ्वा० पर० - गच्छति, गत—प्रेर० गमयति, संज्ञान्त —जिगमिषति, जिगांसते—भा०) जाना, चलना-

फिरना—गच्छतु आर्यो पुनर्दर्शनाय—विक्रम० ५, —गच्छति पुरः शरीरं भावति पश्चादसंस्तुत चेतः—श० १।३४, क्वायुना गम्यते—अब आप कहाँ जा रहे हैं? 2 विदा होना, चले जाना, दूर जाना, खाना होना, प्रस्थान करना—उत्क्षिप्येना ज्योतिरेक अगाम—श० ५।३० 3 जाना, पहुँचना, सहारा लेना, आ जाना, समीप आना—यदगम्योऽपि गम्यते—पंच० १।७, एसो गच्छति कर्तारम् —मनु० ८।१९, पाप पापी पर मढ़ जाता है ४।१९, इसी प्रकार—धरणिं मूर्ध्ना गम् —आदि 4 गुजरना, बीतना, (समय का) व्यतीत होना काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् हि० १।१ गच्छता कालेन—अनन्तर 5 अवस्था या दशा को प्राप्त होना, होना, अनुभव करना, भुगतना, भोगना (प्राय तान्त और क्त्वान्त संज्ञाओं के साथ अथवा कर्म० की संज्ञा के साथ जुड़ता है) —गमिष्याम्युपहास्यताम्—रघु० १।३, पश्चाद्गुरुभार्याणां सुमुखो जगाम—कु० १।२६, उषा नामवाली हुई, इसी प्रकार तृप्तिं गच्छति-तृप्त हो जाता है, विषाद गत—उदास हो गया, कोपं न गच्छति—क्रुद्ध नहीं होता है, आनृण्य गत—ऋण से मुक्त हो गया 6 सहवास करना, मैथुन करना—गुरो सुतां को गच्छति पुमान्—पंच० २।१०३, याज्ञ० १।८०, प्रेर०—1 भिजवाना, पहुँचाना, (दशा को) प्राप्त होना 2 उपयोग करना, (समय को भाँति) बिताना 3 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, विवरण देना 4 अर्थ बतलाना, संकेत करना, विचार व्यक्त करना—द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयत:—'दो नकार एक सकारात्मक अर्थ को प्रकट करते हैं' अति—, दूर जाना, बीत जाना, अधि—, 1 अभिग्रहण करना, अवाप्त करना, ले लेना—अधिगच्छति महिमान चन्द्रोऽपि निशापरिगृहीत—मालवि० १।१३, धनन्चार्यमधिगच्छति—मनु० २।२१८, ७।३३ भग० २।६४, रघु० २।६६, ५।३४ 2 निष्पन्न करना, सुरक्षित करना, पूरा करना—अर्थं सप्रतिबधं प्रभुरधिगन्तु सहायकानेव—मालवि० १।९ 3 समीप जाना, की ओर जाना, पहुँचना, पैठ रखना—गुणाढ्योऽभ्यसम्बन्धी नृपतिर्नाधिगम्यते—पंच० १।३८४ 4 जानना, सीखना, अध्ययन करना, समझना,—वेदमेवाधिगन्तु निष्णातान्त विद्याम् उत्तर० २।३, हि० २।४१, मनु० ७।३९, याज्ञ० १।९९ 5. विवाह करना, (पति के रूप में) ग्रहण करना—मनु० ९।९१, अभ्या—, प्राप्त करना, होना, घटित होना, अनु—, 1 मिलना-जुलना, पीछे चलना, साथ चलना—बोधकान्तात् स्थित्वा जनोऽनुगन्तव्य—श० ४, मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्—रघु० २।२, १, हि० ५।२, मनु० १२।११५, पंच० १।७३ 2. नकल करना, समरूप होना, उत्तर देना—आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैर्मृदङ्गघोरध्वनिमन्वगच्छत्—रघु० १६।१३, हि० ४।३६, अन्तर—, बीच में आना, सम्मिलित होना, अन्तर्हित होना, दे० अन्तर्गत, अप—, 1 दूर चले जाना, जुदा हो जाना, (समय आदि की भाँति) बीत जाना—पंच० ३।८ 2 ओझल होना, अन्तर्धान होना, से चले जाना, अभि—, निकट आना, समीप होना, दर्शन करना—एनमभिवन्यमुनिर्ययौ—रघु० १५।५९, हि० १०।२१, —मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षय—मनु० १।१ 2 मिलना, (अकस्मात् या संयोग से) घटित होना 3 सहवास करना, मैथुन करना—याज्ञ० २।२०५, अभ्या—, 1 समीप आना, पहुँचना, निकट आना—सर्वशास्त्रागतो गुरु—हि० १।१०८ 2 प्राप्त करना, हासिल करना, अभ्युद्—, 1 उठना, ऊपर आना 2 की ओर आना, मिलने के लिए आगे बढ़ना, अभ्युप—, सहमत होना, स्वीकार करना, जिम्मेदारी लेना, मानना, मंजूर करना, अपनाना, अव—, 1 जानना, सोचना, विचारना, समझना, विश्वास करना—परस्तादवगम्यत एव—श० १, कथ ज्ञान्तमित्यभिहिते ज्ञान्त इत्यवगच्छति मूर्खः—मृच्छ० १, मनु० १०।४१, रघु० ८।८८, भट्टि० ५।८१ 2. विचार करना, मानना, समझना (प्रेर०) बहुत करना, प्रकट करना, संकेत करना, जाहिर करना, कहना—भट्टि० १०।६२, आ—, 1 जाना, पहुँचना 2 आ जाना, प्राप्त करना, (विशेष दशा को) पहुँच जाना (प्रेर०) 1 ले आना, लाना, बहन करना—आगमितापि विदूरम्—मोत० १२ 2 सोचना, अध्ययन करना—रघु० १०।७१, 3 प्रतीक्षा करना (आ०), उद्—, उठना, ऊपर जाना—असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला—रघु० १।१० अने० पा० 2 अंकुर फूटना, दिखाई देना विक्रम० ४।२३ 3 उदय होना, निकलना, पैदा होना, जन्म लेना इक्ष्वाकुतां पौरवभूमुखेभ्य शुश्रूषन् कथा—रघु० ७।१६, अमर ९१ 4 प्रसिद्ध या विख्यात होना—रघु० १८।२०, उप—, 1 जाना, निकट जाना, प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० ६।८५ 2. पैठना, अन्दर घुसना हि० २।३९ 3 अनुभव करना, भुगतना —तपो घोरमुपागमत्—रामा० 4 अवस्था को प्राप्त होना, प्राप्त करना, अधिग्रहण करना—प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ—हि० ९।६, तामग्रदानीत्यभिधोपगन्तुम्—कु० १।८ 5. दान लेना, स्वीकृति देना, सहमत होना 6. सयोग के लिए स्त्री के निकट जाना—सुप्तां पत्नीं प्रमत्तां वा रहो यश्चोपगच्छति—मनु० ३।३४, ४।४०, उपा—, 1. आ जाना, पहुँचना (स्थान पर या व्यक्ति के पास) 2. पहुँच जाना, अवस्था को चले जाना, प्राप्त करना—तृप्तिमुपागताः, पञ्चत्वमुपागत आदि 3. लेना, प्राप्त करना—याज्ञ० ३।१४३, वि—, 1 पहुँच

जाना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, हासिल करना —यच्च दुःखान्तं च विमुच्यते—भग० १८।३६, ९।३१ 2 ज्ञान प्राप्त करना, सीखना, निस् (निर्) —, 1 बाहर जाना, जुदा होना—प्रकाश निर्यत —श० ४, हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षात्—ऋतु० १।२७, मनु० ९।८३, श० ६।३, अमरु ६१ 2 हटाना, जैसा कि —'निर्गतविषादः' में 3 (किसी रोग से चिकित्सा द्वारा) मुक्त होना परा—, 1 वापिस आना, तदयं परागत एवास्मि —उत्तर० ५ 2 घेरना, लपेटना, व्याप्त करना—स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२, परि—, 1 जाना, चक्कर लगाना,—त हय तत्र परिगम्य— रामा०, यथा हि मेरुं सूर्येण नित्यशः परिगम्यते—महा० 2 घेरना, शि० ९।२६, भट्टि० १०।१, सेनापरिगत—आदि 3 सर्वत्र फैलना, सब दिशाओं में व्याप्त होना 4 प्राप्त करना —वृषलताम् आदि 5 जानना, समझना, सीखना रघु० ७।७१ 6 मरना, (इस संसार से) चले जाना —अथ येऽप्यमी जातादिचरपरिगता एव खलु ते—भर्तृ० ३।३८ 7 प्रभावित करना, ग्रस्त करना, जैसा कि —क्षुधया परिगत —में, वर्षा—, 1 निकट जाना, की ओर जाना 2 पूरा करना, समाप्त करना 3 जीतना, अभिभूत करना, प्रति—, 1 वापिस जाना 2 बढ़ना, की ओर जाना अभ्या—, वापिस आना, लौट आना अभ्युद्—, (सत्कार करने के लिए) आगे जाना, बढ़ना या मिलना प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेयः—रघु० ५।२, प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रिय —गीत० ११, भामि० ३।३, वि —, (समय आदि का) 1 बीत जाना,—सन्ध्ययापि सपदि व्यगमि—शि० ९।१७ 2 ओझल होना, अन्तर्धान होना - सलज्जाया लज्जापि व्यपगमदिव दूरं मृगदृशः - गीत० ११, भग० ११।१, मनु० ३।२, ५९, (प्रेर०) व्यतीत करना, बिताना - विगमयत्यनिशं एव सपदि —श० ६।५, विनिस्—, 1 बाहर जाना 2 अन्तर्धान होना, ओझल होना विप्र अलग होना सम्—,(आ० में प्रयुक्त) 1 मिल जाना, इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना - अक्षधूर्तं समगंसि—दश०, एते भगवत्यौ कलिन्दकन्याजह्नुकन्ये समेते—अनर्घ० ७ 2 सहवास करना, सम्भोग करना - भार्यां च परसंगता—पञ्च० १।२०८, मनु० ८।३७८, (प्रेर०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना —रघु० ७।१७, समधि—, 1 निकट पहुंचना 2 अध्ययन करना 3 प्राप्त करना, अभिग्रहण करना यत्ते समधिगच्छन्ति यत्स्थैर्ये तत्स्य तद्बलम्—मनु० ८।४१६, समव - , पूरी तरह से जान लेना, समुपा—, 1 पास पहुंचना 2 आ पड़ना।

गम (वि०) [गम्+अप्] (समास के अन्त में) जाने वाला, हिलने-जुलने वाला, पास जाने वाला, पहुंचाने वाला, प्राप्त करने वाला, हासिल करने वाला आदि खगम, तुरगम, हृदयगम आदि,- म 1 जाना, हिलना-जुलना 2 प्रयाण करना -अश्वस्यैकाहगम 3 आक्रमणकारी का कूच करना 4 सड़क 5 अविचारिता विचारशून्यता 6 ऊपरीपन, अटकलपच्चू निरीक्षण 7 स्त्री-सम्भोग, सहवास -गुर्वङ्गनागम - मनु० ११।५५, याज्ञ० २।२९३ 8 पासे आदि का खेल। सम०—आपस आना-जाना।

गमक (वि०) (स्त्री० मिका) [गम्+ण्वुल्] 1 संकेतक, सुझाव देने वाला, प्रणाम, अनुक्रमणी—तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः - मा० १।७ 2 विश्वासोत्पादक।

गमन [गम्+ल्युट्] 1 जाना, गति, चाल -श्रोणीभारादलसगमना मेघ० ८२, इसी प्रकार -गजेन्द्रगमने—भृङ्गार० ७ 2 जाना, गति (वैशेषिक इसे पाँच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं) 3 निकट पहुँचना, पहुँचना 4 अभियान 5 अनुभव करना, भुगतना 6 प्राप्त करना, पहुँचना 7 सहवास।

गमिन् (वि०) [गम+इनि] जाने के विचार वाला —जैसा कि ग्रामगमी (पु०) यात्री।

गम्य, गम्य (स० कृ०) [गम्+अनीयर् यत् वा] 1 सुगम, उपागम्य विकाग्म्य गमनोपायम्मि मवेना—रा० १ 2 सुबोध, आसानी से समझ में आने योग्य 3 अभिप्रेत, निहित, अर्थयुक्त 4 उपयुक्त, वाञ्छित, योग्य—याज्ञ० १।६४ 5 सहवास के योग्य, दुर्जनगम्या स्त्रियः—पञ्च० १।२७८, अभिकामा स्त्रियं यश्च गम्यां रहसि याचति नीपैति महा० 6 (औषधि आदि से) उपचार योग्य—न गम्या मन्त्राणाम्—भर्तृ० १।८९।

गम्भारिका, गम्भारी [गम्+विच+गम्, त गम—निम्नगति बिभर्ति - गम्+भृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, गम्+भृ+अण् ङीष्] एक वृक्ष का नाम।

गम्भीर (वि०) [=गभीर]—रघु० १।३९ मेघ० ६४, ६६,—र 1 कमल 2 जवीर नींबू। सम०—चेतस् (वि०) (हाथी की भांति) दुर्दान्त, अडियल।

गम्भीरा, गम्भीरिका [गम्भीर+टाप्, गम्भीर+कन्+टाप्, इत्वम्] एक नदी का नाम गम्भीरायां पयसि —मेघ० ४०।

गय 1 गया प्रदेश तथा उसके आस पास रहने वाले लोग 2 एक राक्षस का नाम,—आ बिहार में एक नगर जो एक तीर्थ स्थान है।

गर (वि०) (स्त्री० -री) [गीर्यते -गृ+अच्] निगलने वाला,- र 1 पेय, शरबत 2 बीमारी, रोग 3 निगलना ('गरण' का भी यही अर्थ है),- र,---रम् 1 जहर 2 विषनाशक औषधि,—रम् छिड़कना, तर

करना। सम०—अधिका 1 लाक्षा नामक कीड़ा 2 इस कीड़े से प्राप्त लाल रंग,—अरी एक प्रकार की मछली,—द (वि०) विष देने वाला, जहर देने वाला (—दम्) विष,—हरः मोर।

गरणम् [गृ+ल्युट्] 1 निगलने की क्रिया 2 छिड़कना 3 विष।

गरभ [गृ+अभच्] भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, दे० गर्भ।

गरलः,—लम् [गिरति जीवनम्—गृ+अलच् तारा०] विष, जहर, -कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युति —गीत० ३, गरलमिव कलयति मलयजमीरम्—४, स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम्—१० 2 साँप का विष, -लम् घास का गट्ठड़। सम०-अरिः पन्ना, मरकतमणि।

गरित (वि०) [गर+इतच्] विषयुक्त, जिसे जहर दिया गया हो।

गरिमन् (पु०) [गुरु+इमनिच्, गरादेश] 1 बोझ, भारीपन,—शि० ९।४९ 2 महत्त्व, बड़प्पन, महिमा—पंच० १।३० 3 उत्तमता, श्रेष्ठता 4 आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार भारी या हल्का कर सकता है—दे० 'सिद्धि'।

गरिष्ठ (वि०) [गुरु+इष्ठन् गरादेश] 1 सबसे भारी 2 अत्यन्त महत्त्वपूर्ण (गुरु शब्द की उत्तमावस्था)

गरीयस् (वि०) [गुरु+ईयसुन्, गरादेश] अधिक भारी, अपेक्षाकृत वजनदार, अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण (गुरु की मध्यमावस्था)—मतिरेव बलाद्गरीयसी—हि० २।८६, वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी—हि० १। ११०, शि० २।२४, ३७।

गरुड़ [गरद्भ्यां डयते—डी+ड पृषो० तलोप. -गृ+उडच्] 1 पक्षियों का राजा (यह 'विनता' नाम की पत्नी में उत्पन्न कश्यप का पुत्र है, यह पक्षियों का राजा, साँपों का नैसर्गिक शत्रु और अरुण का बड़ा भाई है, एक बार इसकी माता और उसकी सौत कद्रु में 'उच्चैःश्रवा' के रंग के विषय में झगड़ा हुआ, विनता हार गई और शर्त के अनुसार उसे कद्रु की दासी बनना पड़ा। गरुड़, माता की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पास गया, वहाँ से साँपों के लिए अमृत का घड़ा लाने में गरुड़ को उसके साथ जूझना पड़ा, अन्त में वह अमृत प्राप्त करने में सफल हुआ, फलतः विनता को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। परन्तु इन्द्र अमृत का घड़ा साँपों के पास से ले गया। गरुड़ को विष्णु की सवारी चित्रित किया गया है। इसका चेहरा श्येन, नाक तोते जैसी पर लाल और शरीर सुनहरी है) 2 गरुड़ की शक्ल का बना भवन 3 विशेष सैनिक व्यूह रचना। सम०-अग्रज सूर्य के सारथि अरुण का विशेषण,—अद्रि विष्णु का विशेषण,—अधिरूढ—आरूढ (पु०) —उत्तीर्णम् पन्ना,—ध्वज विष्णु की उपाधि,—व्यूह एक प्रकार की विशेष सैनिक व्यवस्था दे० (3) ऊपर।

गरुत् (पु०) [गृ (गृ)+उति] 1 पक्षी के पर, बाजू 2. खाना, निगलना। सम०—बीधिः (पु०) बटेर।

गरुत्मत् (वि०) [गरुत्+मतुप्] पक्षी—गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः—रघु० ३।५७, (पु०) 1 गरुड़ 2 पक्षी।

गरुत्मान् [=गरुड, डस्य लः] गरुड़, पक्षियों का राजा।

गर्ग [गृ+गन्] 1 एक प्राचीन ऋषि, ब्रह्मा का एक पुत्र 2. साँड़ 3 केंचुवा (ब० व०) गर्ग की सन्तान। सम०—स्रोतस् (नपु०) एक तीर्थ।

गर्गर [गर्ग इति शब्दं राति—गर्ग+रा+क] 1 भँवर, जलावर्त 2 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 3 एक प्रकार की मछली 4 मथानी, दही बिलोने का मटका,—री मथानी, पानी की गागर।

गर्गराट [गर्ग इति शब्देन अटति—गर्ग+अट्+अच्] एक प्रकार की मछली।

गर्ज् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—गर्जति, गर्जयति—ते, गर्जित) 1 दहाड़ना, गुर्राना—गर्जन् हरि सान्द्रसि शैलकुञ्जे—भट्टि० २।९, १५।२१, रण्ये न गर्जन्ति वृथा हि शूरा—रामा०, हृष्टो गर्जति चातिदर्पितबलो दुर्योधनो वा शिखी—मृच्छ० ५।६ 2 एक गहरी और गड़गड़ाती हुई गर्जना करना—यदि गर्जति वारिधरो गर्जतु तत्राम्र निष्ठुरा पुरुषा—मृच्छ० ५।३२, (और इस अंक के दूसरे कई श्लोकों में) गर्जति शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघ उद्भट, अनु—, बदले में गड़गड़ाना, गूंजना—कु० ६।४०, अभि—, 1 चिंघाड़ना, दहाड़ना (आलं०) 2 मुकाबला करना विरोध करना—अयोहृदय प्रतिगर्जतम्—रघु० ९।९।

गर्ज [गर्ज+घञ्] 1. हाथियों की चिंघाड़ 2 बादलों की गरज या गड़गड़ाहट।

गर्जनम् [गर्ज्+ल्युट्] 1 दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, गड़गड़ाना 2 (अत) आवाज, कोलाहल 3 आवेश, क्रोध 4 संग्राम, युद्ध 5 झिड़की।

गर्जा, र्जिः [गर्ज—टाप्, गर्ज्+इन] बादलों की गड़गड़ाहट, गरज।

गर्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] गर्जा हुआ, चिंघाड़ा हुआ, -तम् बादलों की गरज, या गड़गड़ाहट,—न चिंघाड़ता हुआ, जिसके प्रस्रवण से मद झरता है।

गर्त,—र्तम् [गृ+तन्] कोटर, छिद्र, गुफा—ससरुर्बेधु गर्तेषु- मनु० ४।४७, २०३, (इस अर्थ में 'गर्ता' भी), -र्तः 1. कटिस्नायु 2 एक प्रकार का रोग 3 एक देश का नाम, त्रिगर्त का एक भाग। सम०—आशय चूहे की भाँति बिल में रहने वाला जानवर।

गर्दिका [गर्त अस्त्यस्या —गर्त+ठन्] जुलाहे का कारखाना, खड्डी, (क्योंकि जुलाहा अपनी खड्डी पर बैठते समय पैर भूमि के नीचे गढ़े में रखता है)।

गर्द् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—गर्दति, गर्दयति,—ते) शब्द करना, दहाड़ना।

गर्दभ (स्त्री०—भी) [गर्द्+अभच्] 1 गधा—न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, प्राप्ते तु षोडशे वर्षे गर्दभी ह्यप्सरायते—सुभा०, गधे की तीन बड़ी विशेषताएँ हैं—अविश्रान्त वहेद्भारं शीतोष्णं च न विन्दति, सदातोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेन गर्दभात्—चाण० ७० 2 गधा, बू—भम् सफेद कुमुदिनी। सम०—मर्दक,—हक 1 एक वृक्षविशेष 2 वृक्ष,—आह्वयम् सफेद कमल,—रुज चर्मरोगविशेष।

गर्ध [गृध्+घञ्, अच् वा] 1 इच्छा, उत्कंठा 2 लालच।

गर्धन, गर्धित (वि०) [गृध्+ल्युट्, क्त वा] लोभी, लालची।

गर्धिन् (वि०) (स्त्री० नी) [गर्ध+इनि] 1 इच्छुक, लालची, लोभी—नवाप्तामिषगर्धिन —मनु० ४।२८ 2 उत्सुकतापूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाला।

गर्भ [गृ+भन्] 1 गर्भाशय, पेट—गर्भेषु वसति पच० १, पुनर्गर्भे च संभवम् —मनु० ६।६३ 2 भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, गर्भाधान—नरपतिकुलभूय गर्भमाधत्त राज्ञी—रघु० २।७५, गर्भोऽभवद्राजलक्ष्म्या कु० १।१९ 3 गर्भाधान काल-गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्—मनु० २।३६ 4 (गर्भस्थ) बच्चा श० ६ 5 बच्चा, अण्डशावक 6 किसी वस्तु का अभ्यन्तर, मध्य या भीतरी भाग (इस अर्थ में समस्त पद)—हिमगर्भैर्मयूखैः —श० ३।३, अग्निगर्भा शमीमिव ४।१, रघु० ३।९, ५।१७, ९।५५, शि० ९।६०, मा० ३।१२, मुद्रा० १।१८ 7 आकाश-प्रसूति अर्थात् सूर्य किरणों द्वारा आठ मासतक शोषित और आकाश में संचित वाष्परूपी जो बरसात में फिर इस धरती पर बरसती है, तु० मनु० ९।३०५ 8 भीतरी कमरा, प्रसूतिकागृह, जच्चा खाना 9 अभ्यन्तरीय प्रकोष्ठ 10 छिद्र 11 अग्नि 12 आहार 13 कटहल का कोला छिलका 14 नदी का पाट, विशेषतः भाद्रपद कृष्णैकादशी को गंगा का जब कि वर्षाऋतु अपने यौवन पर होती है तथा दरिया उमड़ कर चलते हैं। सम०—अङ्क (गर्भाङ्क भी) अंक के बीच में विष्कंभक जैसा कि उत्तर रामचरित के सातवें अंक में कुश और लव के जन्म का दृश्य, या बालरामायण में सीतास्वयंवर, सा० द० परिभाषा देता है—अङ्कोदर प्रविष्टो या अङ्कद्वारामुखादिमान् अङ्कोपक्षेपः स गर्भाङ्क सबीज फलवानपि। २७९—अवक्रान्ति (स्त्री०) आत्मा का गर्भ में प्रविष्ट होना, आगारम् 1 बच्चेदानी 2 भीतरी कमरा, निजी कमरा, अन्तःपुर 3 प्रसूतिकागृह 4 मन्दिर का पूजाकक्ष जहाँ देवता की मूर्ति स्थापित रहती है, —आधानम् 1 गर्भ रहना गर्भधारण गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमाला (बलाका)। -ग्रहः० २ एक संस्कार, ऋतु-स्नान के पश्चात् एक शुद्धि संस्कार (यह संस्कार ही धार्मिक पक्ष में विवाह की पूर्णता का वैध ठहराता है) याज्ञ० १।११, आशय योनि, बच्चेदानी, आस्राव गर्भ का कच्चा गिरना, गर्भपात, ईश्वर जन्म से ही धनी, जन्मजात धनी, पैदाइशी राजा या रईस, उत्पत्ति भ्रूण की रचना, उपघात कच्चे गर्भ का गिर जाना, उपघातिनी वह गाय या स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का स्राव हो जाय,—कर (वि०) गर्भ धारण करने वाला, काल ऋतु काल, गर्भधारण का समय, कोश,—य गर्भाशय, बच्चेदानी - क्लेश गर्भधारण करने का कष्ट प्रसव की पीड़ा, क्षय गर्भ की कच्ची अवस्था में गिर जाना —गृहम्, —भवनम्, वेश्मन् (नपु०) 1 घर के भीतर का कमरा, घर का मध्यभाग 2 प्रसूतिकागृह 3 मन्दिर का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो -निर्गत्य गर्भभवनात् मा० १, ग्रहणम् गर्भधारण, गर्भ होना, घातिन् (वि०) गर्भपात करने वाला, चलनम्, गर्भस्पन्दन, गर्भाशय में बच्चे का हिलना-डोलना,—च्युति (स्त्री०) 1 जन्म, प्रसूति 2 गर्भस्राव, दास, सी जन्म से ही गुलाम (तिरस्कार सूचक शब्द), द्रुह् (वि०) (कर्तृ० ए० व० ध्रुक्) गर्भपात करने वाला, - धरा गर्भवती, धारण धारणा गर्भस्थिति, गर्भ में सन्तान को रखना, - ध्वंस गर्भपात, पाकिन् (पु०) साठ दिन में पकने वाला धान, साठी चावल, —पात चौथे महिने के बाद गर्भ का गिर जाना, पोषणम्, भर्तृ (नपु०) गर्भस्थ बालक का पालन-पोषण—अनुष्ठिते भिषग्भिरार्षैरथ गर्भभर्तरि रघु० ३।४२ -मन्दिर शयनागार, प्रसूतिकागृह, - मास वह महीना जिस में गर्भ रहे,—मोचनम् प्रसव, बच्चे का जन्म,—योषा गर्भवती स्त्री (आल०) चढ़ी हुई गंगा जब कि उसका पानी किनारों से बाहर बहता हो, -रक्षणम् गर्भस्थ बालक की रक्षा करना,—रूप, —रूपक बच्चा, शिशु, तरुण, लक्षणम् गर्भ हो जाने का चिह्न —संरक्षणम् गर्भ की रक्षा और उसके विकास के लिए किया जाने वाला एक संस्कार, -वसति (स्त्री०)—वास 1 गर्भाशय—मनु० १२।७८ 2 गर्भाशय में रहना, - विच्युति (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भस्राव हो जाना, वेदना प्रसवपीड़ा, - व्याकरणम् गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि,—शङ्कु एक प्रकार का औजार जिससे मरे हुए बच्चे को पेट से निकाला जाता है,—शय्या गर्भाशय,—संभव —संभूति

(स्त्री०) गर्भवती होना,—स्थ (वि०) 1 गर्भाशय में विद्यमान 2 अभ्यन्तर, आन्तरिक, स्राव गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्ची अवस्था में बह जाना—हर गर्भस्राव पच० १, याज्ञ० ३।२०, मनु० ५।६६।

गर्भक [गर्भ+कन्] बालों के बीच धारण की हुई पुष्पमाला,—कम् दो रातों और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भक्षय [गर्भस्य अक्ष इव य० त०] नाभि का बढ़ जाना।

गर्भवती [गर्भ+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] गर्भिणी स्त्री।

गर्भिणी [गर्भ+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री (चाहे मनुष्य की हो या पशु की)—गोर्भिर्भीप्रियवयोलयमालभारिसेवंधोपकण्ठविपिनावलयो भवन्ति—मा० ९।२, याज्ञ० १।१०५, मनु० ३।११४; सम०—अवेक्षणम् दाईपना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परिचर्या,—दोहदम् गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छाएँ या रुचि, —व्याकरणम्,—व्याकृति (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग] गर्भ के विकास का विज्ञान।

गर्भित (वि०) [गर्भ+इतच्] गर्भयुक्त, भरा हुआ।

गर्भेतृप्त (वि०) [अलुक् स० त०] 1 बालक की भाँति गर्भ में ही सन्तुष्ट 2 आहार और सन्तान के विषय में सन्तुष्ट 3 आलसी।

गर्मुत् (स्त्री०) [गर्म उति, मुट्] 1 एक प्रकार का घास 2 एक प्रकार का तरकुल 3 सोना।

गर्व (भ्वा० पर०- गर्वति, गर्वित) घमंडी या अहंकारी होना, (केवल भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त, जो कि विशेषण हो समझा जाता है और गर्व से बना है) कोऽन्यस्त्राप्य न गर्वित - पञ्च० १।१४६।

गर्व [गर्व+घञ्] 1 घमंड, अहंकार—मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्काल सर्वम् मोह० ४, मुधेदानीं यौवनगर्वं वहसि; मालवि० ४ 2 अलं० शास्त्र में ३३ व्यभिचारिभावों में से एक—रूपधनविद्यादिप्रयुक्तात्मोत्कर्षज्ञानादयोऽनादरकारणं गर्व —रस०, या सा० द० के अनुसार—गर्वो मद प्रभावश्रीविद्यासत्कुलजादिज, अवज्ञासविलासाभ्यां दर्शनादिविनाशकृत्।

गर्वाट [गर्व+अट्+अच्] चौकीदार, द्वारपाल।

गर्ह (भ्वा०, चुरा० आ० (कभी कभी पर० भी) —गर्हते, गर्हयते, गर्हित 1 कलंक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना विषमा हि दशा प्राप्य दैवं गर्हयते नरः - हि० ४।३, मनु० ४।१९९ 2 दोषी ठहराना, आरोप लगाना 3 खेद प्रकट करना, वि—, कलंकित करना निन्दा करना, झिड़की देना—त विगर्हन्ति साधव —मनु० ९।६८, ३।४९, ११।५२।

गर्हणम्, —णा [गर्ह+ल्युट्, गर्ह+युच्+टाप्] निन्दा, कलंक, झिड़की, दुर्वचन।

गर्हा [गर्ह+अ+टाप्] दुर्वचन, निन्दा।

गर्ह्य (वि०) [गर्ह+ण्यत्] निन्दनीय, निन्दा के योग्य, कलंक दिये जाने के योग्य—गर्ह्यं कुर्वाद्भये कुले—मनु० ५।१४९। सम०—वादिन् (वि०) अपशब्द कहने वाला, दुर्वचन बोलने वाला।

गल् (भ्वा० पर०—गलति, गलित) 1. टपकाना, चुआना, पसीजना,—चूना—जलमिव गलत्युपविष्टम्—का० १०३, अच्छकपोलमूलगलितं (अश्रु) —अमरु० २६।९१, भामि० २।२१, रघु० १९।२२ 2 टपकना, या गिरना —शरदमच्छगलद्घुसनोपमा—शि० ६।४२, ९।७५, प्रतोदा अगल् —भट्टि० १४।९९, १७।८७, गलद्धम्मिल्ल - गीत० २, रघु० ७।१०, मेघ० ४४ 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना, गुजर जाना, हट जाना—शैशवेन सह गलति गुरुजनस्नेह - का० २८९, विद्या प्रमादगलितामिव चिन्तयामि—वेणी०, भर्तृ० २।४४, भट्टि० ५।४३, रघु० ३।७० 4 खाना, निगलना (गु से सबद्ध) —प्रेर० या चुरा० उभ० (भू० क० कृ० —गलित)—1 उंडेलना 2 निचोड़ना, निचोड़ना 3 बहना (आ०), निस्—, टपकना, रिसना, चूना—रघु० ५।१७ पर्या—, टपकाना, भट्टि० २।४, वि—, 1 टपकाना विक्रम० ४।१० 2 टपकना, चूना 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना।

गल [गल्+अच्] 1 कंठ, गर्दन - न गरल गले कस्तूरोयं नु० अजागलस्तन —भर्तृ० १।६४, अमरु ८८ 2 साल वृक्ष की लाख 3 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र। सम०—अङ्कुर गले का एक विशेष रोग (सूजन), —उडुप घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल,—ओषः गले की रसौली,—कम्बल गाय बैल की गर्दन का नीचे लटकने वाला चमड़ा, आलर,—गण्डः गण्डमाला, गले का एक रोग जिसमें गाठ सी निकल आती है,—ग्रहः, —ग्रहणम् 1 गला पकड़ना, गला घोटना, श्वासावरोध करना 2 एक प्रकार का रोग 3 मास में कृष्णपक्ष के कुछ दिन अर्थात् चौथ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी और तीन इससे आगे के,—चर्मन् (नपुं०) अन्ननाली, गला, ग्रैवेयम् मुंह,—मेखला हार,—वार्त (वि०) 1 गले की क्रिया में निपुण, खूब खाने और हजम करने वाला, तन्दुरुस्त, स्वस्थ—दृश्यन्ते चैव तीक्ष्णेन्द्रु गलवार्तास्तपस्विन —पञ्च० ३, अने० पा० 2. पिछलग्गू, चाटुकार,—शुण्डः मोर,—शुण्डिका उपजिह्वा, —शुण्डी गर्दन की ग्रन्थियों की सूजन,—सनी ('गलेसनी' भी) टकरी,—हस्त 1 गले से पकड़ना गला घोटना, अर्धचन्द्र या गरदनिया 2 अर्धचन्द्राकार बाण, तु० अर्धचन्द्र,—हस्तित (वि०) गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देकर निकाला हुआ, गला घोटा हुआ।

गलक [गल्+बुन्] 1 कण्ठ, गर्दन 2 एक प्रकार की मछली।

गलनम् [गल्+ल्युट्] 1 रिसना, चूना, टपकना 2 चूना, पिघल जाना।

गलन्तिका, गलन्ती [गल्—शतृ+ङीष्, नुम्, +कन्+टाप् ह्रस्वः,- गल्+शतृ+ङीष्, नुम्] 1 छोटा घड़ा 2 छोटा घड़ा जिसकी पेंदी में छेद करके देव मूर्ति पर टांग देते हैं, जिससे कि उस छेद से बराबर जल टपकता रहता है।

गलि [सं०, डस्य ल० गल्+इन् वा] हृष्ट पुष्ट परन्तु भद्दा बैल। दे० गडि।

गलित (भू० क० कृ०) [गल्+क्त] 1 टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ 2 पिघला हुआ 3 रिसा हुआ, बहता हुआ 4 नष्ट, ओझल, वञ्चित 5 बंधन-रहित, ढीला 6 खाली हुआ, चू चू कर जो खाली हो गया हो 7 छाना हुआ 8 क्षीण, निर्बल किया हुआ। सम०—**कुष्ठम्** बढ़ा हुआ या असाध्य कोढ़ जब कि हाथ पैर की अंगुलियां भी गल कर गिर जाती हैं, **दन्त** (वि०) दन्तहीन, **नयन** जिसकी आंखों में देखने की शक्ति न रहे, अंधा।

गलितकः [गलित इव कायति कै+क] एक प्रकार का नृत्य।

गलेगण्डः [अलुक् स० त०] एक पक्षी जिसके गले में मांस की थैली सी लटकती रहती है।

गल्भ् (भ्वा० आ० -गल्भते, गल्भित) साहसी या विश्वस्त होना, प्र—, साहसी या आत्म विश्वासी होना—यो न कथयेत् सखीवचनेन प्रागपि प्रियतमं प्रजगल्भे—शि० १०।१८, न मौक्तिकच्छिद्रकरी शलाका प्रगल्भते कर्मणि टङ्कधारा—विक्रमांक १।१६, टांकी का काम करने में सक्षम या साहसी नहीं हो सकता।

गल्भ (वि०) [गल्भ्+अच्] साहसी आत्मविश्वासी, ढीठ का।

गल्भा [गलानां कण्ठानां समूहः—गल्+यत्+टाप्] कण्ठों का समूह।

गल्ल [गल्+ल] गाल, विशेषकर मुख के दोनों किनारों का पार्श्ववर्ती गाल (अल० शास्त्री इस शब्द को 'ग्राम्य' अर्थात् गंवारू मानते हैं तु० काव्य० ७ में दिए गए उदाहरण का ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भाति जल्पति मानुषः, परन्तु तु० भवभूति के प्रयोग की—पातालप्रतिमल्लगल्लविवरप्रक्षिप्तमल्लाणवम्—मा० ५।२२। सम०- **चातुरी** गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल तकिया।

गल्लक [गल्—क्विप्,—गल् तं लाति ला+क, ततः स्वार्थे कन्] 1 शराब का गिलास 2 पुखराज नीलमणि, दे० नी० 'गल्वर्क'।

गल्लर्क मदिरा पीने का प्याला।

गल्वर्क [गल्वमणिभेदः तस्य अर्कः दीप्तिरिव—ब० स०] 1 स्फटिक 2 वैदूर्यमणि 3 कटोरा, शराब पीने का गिलास।

गल्ह् (भ्वा० आ० -गल्हते, गल्हित) कलंक लगाना, निन्दा करना।

गव [कुछ समासों, विशेष कर स्वरों से आरम्भ होने वाले शब्दों के आरम्भ में 'गो' शब्द का स्थानापन्न पर्याय] सम०—**अक्ष** राजनंदिनः अरालाः विलोलनेत्रभ्रमरैर्गवाक्षाः सहस्रशोभाभरणा बभूवुः—रघु० ७।११, कुवलयितगवाक्षा लोचनैरङ्गनानां ७।१३, कु० ७।५८, मेघ० ९८, °जालम् झालीं, झिलमिलीं, **अजित** (वि०) खिड़कियों वाला,- **अध्वन्** गौओं का झुंड (गोऽध्वन्, गोअध्वन् या गवाध्वन् लिखा जाता है), —**अवनम्** चरागाह, गोचरभूमि, **अवली** 1 चरागाह 2 खोर, नांद जिसमें पशुओं के खाने के लिए घास रक्खा जाता है,- **अधिका** लाभ,- **आई** (वि०) गाय के मूल्य का,- **अविकम्** गाय और भेड़ें, **अशन** 1 मोची 2 जाति से बहिष्कृत,—**अश्वम्** बैल और घोड़े, —**आकृति** (वि०) गाय की शक्ल वाला, **आह्निकम्** प्रतिदिन गाय को चारा देने का नाप,—**इन्द्र** 1 गौओं का स्वामी 2 बढ़िया बैल, **ईश**, **ईश्वर** गौओं का स्वामी **उडु** सर्वोत्तम गाय या बैल।

गवय [गो+अय्+अच्] बैल की जाति गामदुग्धो गवयः—मनु०—दृष्ट्वा कथञ्चिद्गवयं विदित्वा—कु० १।५६, ऋतु० १।२३।

गवयक [गवाय शब्दाय अलति गव+अल्+ऊकञ्] = गवय।

गविनी [गो+इनि+ङीप्] गौओं का झुंड या लश्कर।

गवेडु, —धु, धुका [?] पशुओं का बिखरने का चारा, घास।

गवेरुकम् गेरू।

गवेष् (भ्वा० आ०—चुरा० पर०- गवेषते, गवेषयति, गवेषित) 1 ढूंढना, खोजना, तलाश करना, पूछ ताछ करना- तस्यामेव यतं प्राप्तस्तवैवान्यो गवेष्यतां—कथा० २५, १७६ 2 प्रयत्न करना, उत्कट इच्छा करना, प्रबल उद्योग करना गवेषयाम्यहं महिषीकुलं जलम्—ऋतु० १।२४।

गवेष (वि०) [गवेष्+अच] खोजने वाला, ढूंढने वाला, खोज, पूछताछ।

गवेषणम्, णा [गवेष्+ल्युट्, युच्+टाप् वा] किसी वस्तु की खोज, या तलाश।

गवेषित (वि०) [गवेष्+क्त] खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] 1 गौ आदि पशुओं से युक्त 2 गौओं से प्राप्त दूध, दही आदि 3 पशुओं के लिए उपयुक्त- **व्यम्** 1 गौओं का झुंड, मवेशी 2 गोचर-

भूमि 3 गाय का दूध 4 धनुष की डोरी 5 रंगीन बनाने की सामग्री, पीला रंग, ब्या 1 गौओं की हेड़ 2 दो कोस के बराबर दूरी 3 धनुष की डोरी 4 रंग देने की सामग्री, पीला रंग।

गव्यूतम्,-ति (स्त्री०) [गो यूति पृषो०] 1 एक कोस या दो मील की दूरी की माप 2 दो कोस के बराबर दूरी का माप।

गह् (चुरा० उभ०--गहयति-ते) 1. (जंगल की भांति) सघन या साद्र होना 2 गहराई तक पहुँचना।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1 गहरा, सुघन, साद्र 2. अभेद्य, अप्रवेश्य, अलंघ्य, दुर्गम 3. दुर्बोध, अव्याख्येय, रहस्यपूर्ण—सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य -- पंच० १।२८५, भर्तृ० २।५८, गहना कर्मणो गतिः—भग० ४।१७, शा० १।८ 4. कठोर, कठिन पीड़ाकर, कष्टकर—गहन संसार--शा० ३।१५ 5 गहरा किया हुआ, तीव्र किया हुआ—मा० १।३०, —नम् 1 गह्वर, गहराई 2 जंगल, झाड़ी या झुरमुट, घोर या अप्रवेश्य जंगल--यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम्—गीत० ७, भामि० १।२५ 3 छिपने का स्थान 4 गुफा 5 पीड़ा, दुःख।

गह्वर (वि०) (स्त्री०--री,-रा) [गह्+वरच्] गहरा, दुस्तर,—रम् 1 रसातल, अथाह खाई 2 झाड़ी या झुरमुट, जंगल 3 गुफा, कन्दरा गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश--रघु० २।२६, ४६, ऋतु० १।२१ 4 दुर्गम स्थान 5 छिपने की जगह 6 पहेली 7 पाखंड 8 रोना, चिल्लाना,—र लतामण्डप, निकुंज,—री 1 गुफा, कंदरा, खोह।

गा [गै+डा] गाना, श्लोक।

गाङ्ग (वि०) (स्त्री०—ङी) [गङ्गा+अण्] गंगा में या गंगा पर होने वाला 2 गंगा से प्राप्त या गंगा से आया हुआ—गाङ्गमम्बु सितमम्बु यामुनं कज्जलाभमुभयत्र मज्जत —काव्य० १०, कु० ५।३७,—ङ 1 भीष्म का विशेषण 2 कार्तिकेय की उपाधि,—ङम् 1 विशेष प्रकार का वर्षा का जल (जो स्वर्गीय गंगा से आने वाला माना जाता है) 2 सोना।

गाङ्गेय,-ङेयः [गाङ्ग+ढक्--अच्,शक० परुरूप, पृषो०] झींगा मछली, या जलवृश्चिक।

गाङ्गायनि [गङ्गा+फिञ्] भीष्म या कार्तिकेय का नाम।

गाङ्गेय (वि०) (स्त्री०—यी) [गङ्गा+ढक्] गंगा पर या गंगा में होने वाला,—ङः भीष्म या कार्तिकेय का नाम,—ङम् सोना।

गाङ्गेरुक [गाङ्ग मदं राति, गाङ्ग+रा+क] गागर।

गाण्डिवकाष्ठ —धनुस्।

गाढ (भू० क० कृ०) [गाह्+क्त] 1 डुबकी लगाया हुआ, गोता लगाया हुआ, स्नान किया हुआ, गहरा घुसा हुआ 2 बार २ डुबकी लगाया हुआ, आश्रित, सघन या घना बसा हुआ—तपस्विगाढा तमसा प्राप नदीं तुरंगमेण--रघु० ९।७२ 3 अत्यंत दबाया हुआ, कस कर खींचा हुआ, पक्का, मुद्रा हुआ, कसा हुआ -गाढाङ्गदैर्बाहुभिः —रघु० १६।६०,--गाढालिङ्गन —अमरु ३६, घुट कर छाती से लगाना—चौर० ६ 4 सघन, साद्र 5 गहरा, दुस्तर 6 बलवान्, प्रचण्ड, अत्यधिक, तीव्र—गाढोत्कण्ठाललितलुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति—मा० १।१५, मेघ० ८३, प्राप्तगाढप्रकम्पाम् —शृंगार० १२, अमरु ७२, गाढतप्तेन तप्तम्--मेघ० १०२,—ढम् (अव्य०) ध्यानपूर्वक, जोर से, अत्यधिकता के साथ, भरपूर, प्रचण्डता से, बलपूर्वक। सम०—मुष्टि (वि०) बन्द मुट्ठी वाला, लोलुप, कंजूस, (ष्टिः) तलवार।

गाणपत (वि०) (स्त्री०--ती) [गणपति+अण्] 1 किसी दल के नेता से संबंध रखने वाला 2 गणेश से संबंध रखने वाला।

गाणपत्य [गणपति+यक्] गणेश की पूजा करने वाला —त्यम् 1 गणेश की पूजा 2 किसी दल का नेतृत्व, चौधरात, नेतृत्व।

गाणिक्यम् [गणिकाना समूहः—यञ्] रंडियों का समूह।

गाणेश [गणेश+अण्] गणेश की पूजा करने वाला।

गाण्डिव (डी) वः,—वम् [गाण्डिरस्त्यस्य सञ्ज्ञायां—व पूर्वपददीर्घो विकल्पेन] अर्जुन का बाण (यह बाण सोम ने वरुण को दिया, वरुण ने अग्नि को और अग्नि ने अर्जुन को, जबकि खाण्डव वन को जलाने में उसने अग्नि की सहायता की) गाण्डिवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९ 2 धनुष। सम०—धन्वन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण—वेणी० ४८।

गाण्डीविन् (पुं०) [गाण्डीव+इनि] अर्जुन का विशेषण, तृतीय पांडव राजकुमार—वेणी० ४।

गतागतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतागत+ठक्] जाने आने के कारण उत्पन्न।

गतानुगतिक (वि०) (स्त्री०--की) [गतानुगत+ठक्] अंधानुकरण से अथवा पुरानी लकीर का फकीर बनने से उत्पन्न।

गातु [गै+तुन्] 1 गीत 2 गाने वाला 3. गंधर्व 4 कोयल 5 भौंरा।

गातृ (पुं०) (स्त्री०—त्री) 1 गवैया 2 गंधर्व।

गात्र [गै+ष्ट्रन्, गातुरिव वा, अत्र] 1 शरीर,—अपचितमपि गात्रं व्यायतत्वादलक्ष्यं--श० २।४, तवति तनुगात्रि मदनः—३।१७ 2 शरीर का अंग या अवयव—गुरुपरितापादिव ते गात्राण्युपचारमर्हन्ति शा० ३।१८, मनु० ३।२०९, ५।१०९ 3 हाथी के अगले पैर का ऊपरी भाग। सम०--अनुलेपनी

उबटन,—आहरणम् बाल,—उत्सादनम् सुगंधित पदार्थों से शरीर को साफ करना,—कर्षण (वि०) शरीर को कृश या दुर्बल बनाने वाला—कार्ष्णी नौलिया,—यष्टि दुबला पतला शरीर—रघु० ६।८१,—रहस् रागटे, बाल,—लता दुबला-पतला और सुकुमार शरीर, इकहरा बदन,—लोध्रिन् (पु०) झाऊ बहा, साही (उबटते या छलाग लगाते समय यह अपने शरीर को सिकोड़ लेता है—इसीलिए यह नाम पड़ा),—सपक्ष छोटा पक्षी, गोताखोर।

गात्र [गै+ष्ट्रन्] गीत, भजन।

गात्रक,—त्रिक [गै+ष्वकन्, गात्र+ठन्] 1 संगीतवेत्ता, गवैया 2 पुराणों अथवा धार्मिक काव्यों का लय के साथ गायन करने वाला।

गात्रा [गात्र+टाप्] 1 छन्द 2 धार्मिक श्लोक या छन्द जो वेदों से संबद्ध न रखता हो 3 श्लोक, गीत 4 एक प्राकृत बोली। सम० कार प्राकृत काव्यकार।

गात्रिका [गात्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] गीत, श्लोक —दश० १।४५।

गाध् (स्वा० आ०—गाधते, गाधित) 1 खड़ा होना ठहरना, रहना 2 कूच करना, गोता लगाना, डुबकी लगाना—गाधितासि नभो मम भट्टि० २२।८।१ 3 खोजना, तलाश करना, छान-बीन करना 4 संकलित करना, गूथना या बांधे में पिराना।

गाध (वि०) [गाध्+घञ्] तरणीय, जो बहुत ठहरा न हो, उथला—अस्ति कश्चिद्वाग्विषे गाधा पथ्यवदानकैर्मान्—रघु० १।२४, तु० अगाध, अम् 1 उथली या छिछली जगह, घाट 2 स्थान, जगह 3 लालसा, अतितृष्णा 4 पेंदी।

गाधि,—गाधिन् (पु०) [गाध्+इन्, गाध+इनि] विश्वामित्र के पिता का नाम (यह इन्द्र का अवतार तथा राजा कौशाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता है)। —ज,—नन्दन—पुत्र विश्वामित्र का विशेषण, —नगरम्—पुरम् कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज) का विशेषण।

गाधेय [गाधि+ढक्] विश्वामित्र की उपाधि।

गाधम् [गै+घञ्] गाना, भजन, गीत।

गान्धी [गन्धी+अण्+ङीष्] बैलगाड़ी।

गान्धिनी [गो+दा+णिनि, पृषो०] 1 गया का विशेषण 2 काशी की एक राजकुमारी, स्वफल्क की पत्नी तथा अक्रूर की माता। सम०—सुत 1 भीष्म 2 कार्तिकेय तथा 3 अक्रूर का विशेषण।

गान्धर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [गन्धर्वस्येदम् अण्] गंधर्वों से संबंध रखनेवाला,—र्वः 1 गायक, दिव्य गवैया 2 आठ प्रकार के विवाहों में से एक—गान्धर्व समयान्निधम्—याज्ञ० १।६१, [व्याख्या के लिए दे० 'गंधर्वविवाह'] 3 सामवेद का उपवेद जो संगीत से संबंध रखता है 4 घोड़ा—र्वम् गंधर्वों की कला अर्थात् गाना-बजाना,—कापि वेला चारुदत्तस्य गान्धर्वं श्रोतुमुत्सुकस्य—मृच्छ० ३। सम०—चित्त (वि०) जिसके मन पर गंधर्व ने अधिकार कर लिया है,—शाला संगीतभवन, गायनालय।

गान्धर्व (वि०) क [गांधर्व+कन्, गन्धर्व+ठक्] गर्वीला।

गान्धार [गन्ध+अण्=गान्ध+अण्] भारतीय संगीत के सात प्रधान स्वरों में तीसरा (संगीत के संकेतों में बहुधा इस से प्रकट किया जाता है) 2 सिंधुर 3 भारत और फारिश्ता के बीच का देश, वर्तमान कंधार 4 उस देश का नागरिक या शासक।

गान्धारि [गान्ध+ऋ+इन्] शकुनि का विशेषण, दुर्योधन का मामा।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यम्—इञ्] गांधार के राजा सुबल की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी (गांधारी के १०० पुत्र—एक दुर्योधन तथा ९९ उसके भाई—दुष्पु। उसके पति धृतराष्ट्र अंधे थे इसलिए वह स्वेच्छा अपनी आँखों पर पट्टी बांधे रखती थी (समवेत अपने आप को अपने पति की स्थिति में लाने के लिए), जब कौरव सबके सब मर गये तो गांधारी और धृतराष्ट्र अपने भतीजे युधिष्ठिर के साथ रहे)।

गान्धारेय [गान्धार्या अपत्यम्—ढक्] दुर्योधन का विशेषण।

गान्धिक [गन्ध+ठक्] 1 सुगंधित द्रव्य (इत्र तेल फुलेल आदि) का विक्रेता, गंधी 2 लिपिकार, करणिक, —कम् सुगंधित द्रव्य (इत्र तेल फुलेल आदि) —पण्यानां गान्धिकं पण्यं किमस्यै काञ्चनादिकं —पञ्च० १।२३।

गामिन् (वि०) [गम्+णिनि] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 जाने वाला, घूमने वाला, सैर करने वाला —वैदिशगामी—मालवि० ५, मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३०, शेर की चाल चलने वाला—कुञ्ज°—पञ्च० २।५, अलस° अमरु ५१ 2 सवारी करने वाला —द्विरद—रघु० ४।४ 3 जाने वाला, पहुँचने वाला, लागू करने वाला, संबंध रखने वाला—मनु सर्वगामी दाय—या० ४, द्वितीयगामी न हि शब्द एष म —रघु० ३।४० 4 नेतृत्व करने वाला, पहुँचने वाला, घटने वाला—चित्रकूटगामी मार्ग, कर्तृगामि क्रियाफलम् 5 संयुक्त सदृशमतंगामिनी—मालवि० ५ 6 देनेवाला, सौंपने वाला—या० १, याज्ञ० २।१४५।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1 गहराई, थाह (जल या ध्वनि आदि की) 2 गहराई, अगाधता (अर्थ या चरित्र आदि की)—समुद्र इव गाम्भीर्ये—रामा०, शि० १।५५, रघु० ३।३२।

गाय [गै+घञ्] गाना, भजन, गीत—याज्ञ० ३।११२।

गायक [गै+ण्वुल्] गवैया, संगीतवेत्ता—न नटा न विटा न गायका—भर्तृ० ३।२७।

गायत्र,-त्रम् [गायत्री+अण्] गीत, सूक्त।

गायत्री [गायन्तं त्रायते–गायत्+त्रा+क+ङीप्] 1 २४ मात्राओं का एक वैदिक छंद—गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५ 2 संध्या (प्रातः और सायम्) के समय प्रत्येक ब्राह्मण के द्वारा बोला जाने वाला गुरु-मंत्र, इसके जप से बहुत से पापों का प्रायश्चित होता है, वह मंत्र यह है—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्—ऋक्० ३।६२।१०, ब्रह्म गायत्री छंद में रचित तथा सस्वर उच्चरित सूक्त।

गायत्रिन् (वि०) (स्त्री०–त्री) [गायत्र+इनि] वेद सूक्तों का गायक, विशेष कर सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला।

गायन (स्त्री०–नी) [गै+ल्युट्] गवैया—तथैव तत्पौरुष-गायनीकृता नै० १।१०३, भर्तृ० ३।२७, अने० पा०, —नम् 1 गाना, गीत 2 गायन विद्या से अपनी आजीविका चलाने वाला।

गारुड (वि०) (स्त्री०–डी) [गरुडस्येदम्–अण्] 1 गरुड की शक्ल का बना हुआ 2 गरुड से प्राप्त या गरुड से संबंध रखने वाला—डः,–डम् 1 पन्ना रघु० १३, ५२ 2 सांपों के विष को उतारने का मंत्र संगृहीत-गारुडेन का० ५१ 3 गरुड द्वारा अधिष्ठित अस्त्र 4 सोना।

गारुडिक [गारुड+ठक्] जादू मंत्र करने वाला, ऐन्द्र-जालिक, जहरमोरा या विषनाशक ओषधियों का विक्रेता।

गारुत्मत (वि०) (स्त्री०–ती) [गरुत्मान् अस्यास्य–अण्] 1 गरुड की आकृति का बना हुआ 2 (अस्त्र की भांति)–गरुडाधिष्ठित रघु० १६।७७,–तम् पन्ना।

गार्दभ (वि०) (स्त्री०–भी) [गर्दभस्येदम् अण्] गधे से प्राप्त या गधे से संबद्ध, गर्दभसंबंधी।

गार्द्धम् [गर्द्ध+ष्यञ्] लालच,—शि० ३।७३।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०–ध्री) [गृध्रस्यायम्–अण्] गिद्ध से उत्पन्न, –ध्रं 1 लालच (प्रायः 'गार्ध्य' का अर्थ) 2 बाण। सम०–पक्ष,–वासस् (पु०) गिद्ध के परों से युक्त बाण।

गार्भ (वि०) (स्त्री०–र्भी) **गार्भिक** (स्त्री०–की) (वि०) [गर्भे साधु—अण् ठक् वा] 1 गर्भाशयसंबंधी, भ्रूणविषयक 2 गर्भावस्थासंबंधी–मनु० २।२७।

गार्भिणम्–ण्यम् [गर्भिणीनां समूह भिक्षा० अण्] गर्भवती स्त्रियों का समूह।

गार्हपतम् [गृहपतेरिदम् अण्] गृहपति का पद व प्रतिष्ठा।

गार्हपत्य [गृहपतिना नित्यं संयुक्तः, संज्ञायां ण्य] 1 गृहपति के द्वारा स्थायी रूप से रक्खी जाने वाली तीन यज्ञाग्नियों में से एक, यह अग्नि पिता से प्राप्त की जाती है तथा सन्तान को सौंप दी जाती है, इसी से यज्ञ में अभ्याधान किया जाता है, तु० मनु० २।२३१ 2 वह स्थान जहाँ यह अग्नि रक्खी जाती है,–त्यम् एक परिवार का प्रशासन, गृहपति का पद और प्रतिष्ठा।

गार्हपत्य (वि०) (स्त्री०–त्री) [गृहपतेरयमिदम्–अण्] गृहपति के लिए योग्य या समुचित,—ये पाँच यज्ञ जिनका अनुष्ठान गृहपति को नित्य करना होता है।

गार्हस्थ्यम् [गृहस्थ+ष्यञ्] 1 गृहस्थ पुरुष के जीवन की अवस्था या क्रम, घरेलू काम काज, गृहस्थी 2 गृहपति के द्वारा नित्य अनुष्ठेय पंचयज्ञ।

गालनम् [गल्+णिच्+ल्युट्] 1 (तरल पदार्थ का) छन कर रिसना 2 प्रचंड ताप से गल जाना, गलना, पिघलना।

गालव [गल्+घञ्, त बाति- वा+क] 1 लोध्र वृक्ष 2 एक प्रकार का आबनूस 3 एक ऋषि, विश्वामित्र का शिष्य (हरिवंश पुराण में उसे विश्वामित्र का पुत्र बतलाया गया है)।

गालि [गल+इन्] अपशब्द, दुर्वचन, गाली--ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो वयमपि तदभावाद्गालिदानेऽसमर्थाः –भर्तृ० ३।१३३।

गालित (वि०) [गल्+णिच+क्त] 1 छाना हुआ 2 (अर्क की भांति) खींचा हुआ 3 पिघलाया हुआ, ताप से गलाया हुआ।

गालोड्यम् [गलोड्य+अण्] कमल का बीज।

गावल्गणि [गवल्गण+इञ्] संजय का विशेषण, गवल्गण का पुत्र।

गाह् (भ्वा० आ० गाहते, गाढ या गाहित) डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना, (पानी जैसे पदार्थ में) डुबोना–गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्–श० २।६, गाहितात्सैन्यं पुण्यस्य गङ्गामूर्तिमिव द्रुताम्–भट्टि० २२।११, १४।६७ (आलं० भी), ममस्तु मे सशयमेव गाहते–कु० ५।४६, सशयो मे डूबा हुआ या सशयालु 2 गहराई में घुसना, बैठना, घूमना-फिरना—कदाचित्कानन जगाहे–का० ५८, ऊन न सस्येष्वधिको बबाधे तस्मिन्वन गोप्तरि गाहमाने रघु० २।१४, मेघ० ४८, हि० १।१७१, कि० १३।२४ 3 आलोडित करना, क्षुब्ध करना, हिचकोले देना, बिलोना 4 लीन होना (अधि० के साथ) 5 अपने आपको छिपाना 6 नष्ट करना, अव–, ('अ' को प्रायः लुप्त करके) 1 डुबकी लगाना, स्नान करना, गोता लगाना–तमोपहन्त्री तमसा वगाहेय–रघु० १४।७६, स्वप्नेऽवगाहतेऽत्यर्थं जलम्–मालवि० १।२७२ 2 घुसना, पैठना, पूरी तरह व्याप्त होना–पूर्वापरौ

सोवनिधी अगाह्य स्थित पृथिव्या इव मानदंड —कु० १।१, ७।४०, ह्रद—, घुसना, प्रविष्ट होना, वि —, 1 गोता लगाना, डुबकी लगाना, स्नान करना—(दीर्घिका) स अगाहत विगाढमन्मथ —रघु० १९।९ 2 प्रविष्ट होना, पैठना, व्याप्त होना (आलं० भी) —विषमोऽपि विगाह्यते नय कृततीर्थः पयसामिवाशय —कि० २।३, रघु० १३।१ 3 आन्दोलित करना, विक्षुब्ध करना—विगाह्यमाना सरयू च नौभि —रघु० १४।३०, ह्रद्—, घुसना, अन्दर जाना, पैठना—समाहिष्ट साम्बरम्—भट्टि० १५।६९।

अवगाह [गाह्+घञ्] 1 डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना 2 गहराई, आभ्यन्तर प्रदेश।

अवगाहनम् [गाह्+ल्युट] डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना—आदि।

गाहित (वि०) [गाह्+क्त] 1 स्नान किया हुआ, गोता लगाया 2 पैठा हुआ, घुसा हुआ—दे० गाह्।

गिलुक [=गेलुक पृषो०] 1 गेंद 2 एक वृक्ष का नाम दे 'गेंदुक'।

गिर् (स्त्री०) [गृ+क्विप्] (कर्तृ०, ए० व०—गीः, करण० द्वि० व०—गीर्भ्याम् आदि) 1 भाषण, शब्द, भाषा—वचस्यवसिते तस्मिन् सदस्यै गिरमात्मभूः—कु० २।५३, भवतीना सूनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्—शा० १, प्रवृत्तिसारा खलु मादृशां गिर —कि० १।२५, शि० २।१५ यात्र० १।७१ 2 सरस्वती का आवाहन, स्तुति, गीत 3 विद्या और वाणी की देवी सरस्वती। सम० देवी (गीर्देवी) वाणी की देवी सरस्वती, —पति (गी पति, गीष्पति, गीर्पति) 1 देवताओं के गुरु बृहस्पति 2 विद्वान् पुरुष, —रथ (गीरथ) बृहस्पति,—वा (वा) ण (गीर्वाण) देव, देवता—परिमलो गीर्वाणवेतोहर —भामि० १।६३, ८४।

गिरा [गिर्+क्विप्+टाप्] वाणी, बोलना, भाषा, आवाज।

गिरि (वि०) [गृ+इ किच्च] श्रद्धेय, आदरणीय, पूजनीय, -रि 1 पहाड, पर्वत, उत्थापन—पक्षच्छेद खलनेव मूढ गिरयो न पतन्ति किम्—सुभाषि०—१९, ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरय —श० ६ 2 विशाल चट्टान 3 आँख का रोग 4 सन्यासियों की सम्मानसूचक उपाधि—उदा० आनन्दगिरि 5 (गण० में) आठ की संख्या 6 गेंद (जिससे बच्चे खेलते हैं), —रि (स्त्री०) 1 निगलना 2 चूहा, मूसा (इस अर्थ में 'गिरी' भी लिखा जाता है)। सम०—इन्द्र 1 ऊँचा पहाड 2 शिव का विशेषण 3 हिमालय पहाड, —ईश 1 हिमालय पर्वत का विशेषण 2 शिव का विशेषण—सुता गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्—कु० ५।३,—कच्छप पहाड़ी कछुवा,—कन्दक इन्द्र का वज्र,—कदम्ब,—क्क कदंब वृक्ष की जाति—कन्दर गुफा कन्दरा,—कणिका पृथ्वी,—काच एक आँख से अन्धा या एक आँख वाला व्यक्ति,—कालम् पहाड़ी निकुंज,—कूटम् पहाड की चोटी, - गंगा एक नदी का नाम, —गुड गेंद,—गुहा पहाड की गुफा,—चर (वि०) पहाड पर घूमने वाला - गिरिचर वृष नाग प्रागसार विभर्ति—शि० ३।४ (- र) चोर,—ज (वि०) पहाड पर उत्पन्न (जम्) 1 अबरक 2 गेरू 3 गुग्गुल 4 शिलाजीत 5 लोहा (—जा) 1 (हिमालय की पुत्री) पार्वती 2 पहाड़ी केला 3 मल्लिका लता 4 गंगा का विशेषण,—°तनय,—नन्दन —सुत 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, °पति शिव का विशेषण, °मल्लम् अबरक, —मालम् पर्वतमाला, —स्वर इन्द्र का वज्र,—दुर्गम् पहाड़ी किला, पहाड पर विद्यमान दुर्ग—नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्—मनु० ७।७०, ७१, —द्वारम् पहाड़ी मार्ग, —धातु गेरू—धरम् इन्द्र का वज्र,—नगरम् दक्षिणापथ में विद्यमान एक जिला,—नदी (नदी) पहाड़ी नदी, छोटा चश्मा या नदी,—नद्ध (नद्ध) (वि०) पहाड़ों से घिरा हुआ,—नन्दिनी 1 पार्वती 2 गंगानदी 3 दरिया (पहाड से निकलकर बहने वाला)—कलिन्दगिरिनन्दिनीतटभुवद्रुमालम्बिनी—भामि० ४।३,—नितम्ब (नितम्ब) पहाड का ढलान,—नीलु एक फलदार वृक्ष, फालसा,—पुष्पकम् शिलाजीत, —पृष्ठ पहाड की चोटी, प्रपात पहाड का ढलान, —प्रस्थ पहाड की समतल भूमि,—प्रिया सुरा, गाय, —भिद् (पु०) इन्द्र का विशेषण—भू (वि०) पहाड पर उत्पन्न (भू -स्त्री) 1 गंगा का विशेषण 2 पार्वती का विशेषण,—मल्लिका कुटज वृक्ष,—माल हाथी एक विशालकाय हाथी, —मृद्,—मृद्भवम् गेरू —राज (पु०) 1 ऊँचा पहाड 2 हिमालय का विशेषण,—राज हिमालय पहाड़,—व्रजम् मगध में विद्यमान् (राजगृह) एक नगर का नाम,— शालः एक प्रकार का पक्षी,—शृङ्गः मयूर का विशेषण,—(शृङ्गम्) पहाड की चोटी,—शय् (शी) (पु०) शिव का विशेषण,—सानु (नपु०) पठार, अधित्यका,—सार 1 लोहा 2 टीन 3 मलय पहाड का विशेषण—सुत मैनाक पहाड,—सुता पार्वती का विशेषण,—स्रवा पहाड़ी नदी।

गिरिक, गिरिण, गिरियाक [गिरि+कै+क, गिरि+या+क+कन्, गिरि+या+क्विप्+कन्] गेंद।

गिरिका [गिरि+कन्+टाप्] छोटा चूहा।

गिरिश [गिरौ कैलासपर्वते शेते—गिरि+शी+ड वा] शिव का विशेषण—प्रत्याहतास्त्रो गिरिशप्रभावात् —रघु० २।४१, गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी —कु० १।६०, ३७।

गिल् (तुदा० पर—गिलति, गिलित) निगलना (वस्तुतः यह कोई स्वतन्त्र धातु नहीं, बल्कि 'गृ' से सम्बद्ध है)।

गिल (वि०) [गिल्+क] जो निगलता है, उदरस्थ कर लेता है—उदा० तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघव —दे० तिमिङ्गिल,—क एक प्रकार का वृक्ष। सम०—गिल —ग्राह मगरमच्छ, घड़ियाल।

गिलनम्, गिलि (स्त्री०) [गिल्+ल्युट्, गिल+इन्] निगलना, खा लेना।

गिलायु, गले के भीतर एक कड़ी गाँठ या रसौली।

गिलित (भू० क० कृ०) त (वि०) [गिल्+क्त] खाया हुआ, निगला हुआ।

गि (गे) ग्वु. [गै+इष्णुच् आदेगुण.] 1. गर्वया 2 विशेषकर वह ब्राह्मण जो सामवेद के मन्त्रों का गायन करने में चतुर हो, सामगायक।

गीत (भू० क० कृ०) [गै+क्त] 1. गाया हुआ, अलापा हुआ (शा०)—आर्य साधु गीतम्—श० १, चारुमदङ्ग-गीत शब्द—श० २।१४ 2 घोषणा किया हुआ, बतलाया हुआ, कहा हुआ—गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा—मा० २, ('गै' के नीचे भी दे०),—सम् गाना, भजन, —तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृत—श० १।५, गीतमुत्सादकारि मृगाणाम् -का० ३२। सम०—अवनम् गाने का साधन या उपकरण अर्थात् वीणा बंसरी आदि,—कर्म गीत का गानकर्म,—ज्ञ (वि०) गानकला में प्रवीण,—प्रिय (वि०) गाने बजाने का शौकीन (य) शिव का विशेषण,—योनि (पु०) किन्नर,—शास्त्रम् संगीत विद्या।

गीतकम् [गीत+कन्] स्तोत्र, भजन।

गीता [गै+क्त+टाप्] (बहुधा गुरु-शिष्य संवाद के रूप में) संस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिकग्रन्थ जो विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं—उदा० शिवगीता, रामगीता, भगवद्-गीता आदि, परन्तु यह नाम केवल अन्तिम ग्रन्थ (भगवद्-गीता) तक ही सीमित प्रतीत होता है—गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः, या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता—श्रीधर स्वामी द्वारा उद्धृत।

गीति (स्त्री०) [गै+क्तिन्] 1. गीत, गाना—ब्रह्मो राग-परिवाहिणी गीतिः श० ५, श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हर प्रसक्तध्यानपरो बभूव—कु० ३।४० 2 एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

गीतिका [गीति+कन्+टाप्] 1. छोटा गीत 2 गाना।

गीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गीत+इनि] जो गाकर सस्वर पाठ करता है—गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः—शिक्षा ३१।

गीर्ण (वि०) [गृ+क्त] 1 निगला हुआ, खाया हुआ 2 वर्णन किया गया, स्तुति किया गया (दे० गृ)।

गीर्ति: (स्त्री०) [गृ+क्तिन्] 1 प्रशंसा 2 यश 3. खा लेना, निगल जाना।

गु (तुदा० पर०—गुवति, गूत) विष्ठा उत्सर्ग करना, मलोत्सर्ग करना, पाखाना करना।

गुग्गुल,—लु [गुज्+क्विप्=गुक् रोग ततो गुकति रक्षति—गुक्+गुड्+क (कु) ह्रस्य लकार] एक प्रकार का सुगन्धित गोंद, राल, गुग्गल।

गुच्छ [गु+क्विप्=गुच् त इयर्ति- गुच्+छो+क] 1. बबूल, कुच्छा 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, (वृक्षों का) गुच्छ—अक्ष्णोर्निक्षिपदञ्जनं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छा-वलिम्—गीत० ११, मनु० १।४८ शि० ६।५० 3 मयूरपंख 4 मोतियों का हार 5 बत्तीस लड़ियों का मुक्ता हार (कुछ के मतानुसार ७० लड़ियों) सम०—अर्ध चौबीस लड़ियों का मोतियों का हार (र्धं, र्धम्) आधा गुच्छा;—कपिल एक प्रकार का अनाज,—वृक्ष ताड़ का पेड़,—फल 1 अंगूर की बेल 2 केले का वृक्ष।

गुच्छक [गुच्छ+कन्] दे० 'गुच्छ'।

गुज् (म्वा० पर०—गोजति, बहुधा भ्वा० पर० गुञ्ज् —गुञ्जति, गुञ्जित या गुजित) गु गु शब्द करना, गुंजार करना, गूँजना, भनभनाना,—न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज य कलम्—भट्टि० २।१९, ६।१४३, १४।२, उत्तर० २।२९—अयि दलदरविन्द स्यन्दमान मरन्द तव किमपि लिहन्तो मन्द गुञ्जन्तु भृङ्गा—भामि० १।५।

गुञ्ज [गुज्+क] 1 भिनभिनाना, गूँजना 2 कुसुमस्तबक, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता—सु० गुच्छ। सम०—कूज् भौंरा।

गुञ्जनम् [गुञ्ज्+ल्युट्] मन्द-मन्द शब्द करना, भिन-भिनाना, गूँजना।

गुञ्जा [गुञ्ज्+अच्—टाप्] गुंजा नाम की एक छोटी झाड़ी जिसके लाल बेर जैसे फल लगते हैं, घुंघची—अन्तर्विष-मया होता बहिर्दर्शव मनोरमा, गुञ्जाफलसमाकारा योषित केन निर्मिता—पञ्च० १।१६९, किं जातु गुञ्जा-फलमृष्यमाना सुवर्णकारेण वनेचराणाम्—विक्रमांक० १।२५ 2 इस झाड़ी का फल, गुंजा जो १$\frac{1}{8}$ ग्रेन के बराबर वजन की होती है, या कृत्रिम रूप से जिसका तोल २$\frac{1}{2}$ ग्रेन की माप का समझा जाता है 3 गुंजार मद-मद गुंजन का शब्द 4 झपड़ा, ताड़ा,- भट्टि० १४।२ 5 मधुशाला 6 चिंतन, मनन।

गुञ्जिका [गुञ्जा+कन्+टाप्, इत्वम्] घुंघची।

गुञ्जितम् [गुञ्ज्+क्त] भनभनाना, गुनगुनाना—स्वच्छन्द दलदरविन्द ते मरन्द विदन्तो विदधतु गुञ्जित मिलिन्दा - भामि० १।१५, न गुञ्जित तप्त जहार यन्मन —भट्टि० २।१९।

गुटिका [गु+टिक्=गुटि+कन्+टाप्] 1 गोली 2. गोल

कंकड़, कोई छोटा गोला या पिंड—लोष्टगुटिका क्षिपति—मृच्छ० ५ 3 रेशम के कीड़े का कोया 4 गोली -निर्यैति हारगुटिकाविशद हिमाम्भ रघु० ५।७०। सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का सुर्मा।

गुटी [गुटि+ङीष्] दे० 'गुटिका'।

गुड [गुड्+क] 1 शीरा, राब, ईख के रस से तैयार किया हुआ गुड -गुडचाना—सिद्धा०, गुडोदन - मालवि० १।३, गुडद्वितीया हरीतकी भक्षयेत्- सुश्रु० 2 भेली, पिण्ड 3 खेलने की गेंद 4 मुहासा, व्रण 5 हाथी का जिरहबख्तर, कवच। सम०—उडक्क गुड का शरबत,—उन्मिश्रा शक्कर, ओदनम् गुड डाल कर उबाले हुए मीठे चावल,—तृणम्,—दारु,—ध्व (वप्०) गन्ना ईख, धेनु (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, जो प्रतीक रूप से गुड को बना कर ब्राह्मणों को उपहार में दी जाय,—पिष्टम् गुड के लड्डू,—फल पीलू का पेड़,—शर्करा खाड,—सूक्ष्मम् - गुड-दावणी कलश,--हरीतकी गुड में रक्खी हुई हरें, मुरब्बे की हरें।

गुडक [गुड+कन्] 1 पिण्ड, भेली 2 ग्रास 3 गुड से तैयार की हुई औषधि।

गुडजम् [गुड+जन्+क] गुड से तैयार की हुई शराब।

गुडा [गुड+टाप्] 1 कपास का पौधा 2 बटी, गोली।

गुडाका [गुडयति सकोचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुड तमाकति प्रकाशयति गुड+आ+कै+क+टाप्] 1 तन्द्रा 2 निद्रा। सम०—ईश 1 अर्जुन का विशेषण, —मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमर्हसि—भग० ११।७, (गीता में और कई स्थानों पर) 2 शिव का विशेषण।

गुडगुडावनम् [गुडगुड इत्येवमनन यस्य—ब० स०] खासी आदि के कारण कण्ठ से गुडगुड की आवाज निकलना।

गुडेर [गुड+एरक्] 1 पिण्ड, भेली 2 कौर, टुकड़ा।

गुण् (चुरा० उभ०—गुणयति-ते, गुणित) 1 गुणा करना 2 उपदेश देना 3 निश्चित करना।

गुण [गुण्+अच्] 1 धर्म, स्वभाव (बुरा या अच्छा) दुर्गुण, सुगुण 2 (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता उत्कर्ष, श्रेष्ठता -कस्मै ते गुणा —मा० १, रघु० १।९, २२, साधुत्वे तस्य को गुण —पञ्च० ४।१०८, (ख) गौरव 3 उपयोग, लाभ, भलाई (करण० के साथ) मुद्रा० १।१५ 4 प्रभाव, परिणाम फल, शुभ परिणाम 5 धागा, डोरी, रस्सी, डोर -मेखलागुणै —कु०४।८, ५।१०, यत परेषा गुणग्रहीतानि—भामि० १।९ (यहाँ 'गुण' का अर्थ विशिष्टता भी है) 6 धनुष की डोरी—गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता—कु० ४।१५, २९, कनकपिङ्गतडिद्गुणसयुतम्—रघु० ९।५४ 7 वाद्ययन्त्र के तार शि० ४।५७ 8 स्नायु 9 खूबी, विशेषण धर्म मनु० ९।२२ 10 विशेषता, सब पदार्थों का धर्म या लक्षण, वैशेषिक के सात पदार्थों में से एक (गुणों की संख्या २४ है) 11 प्रकृति का अवयव या उपादान, समस्त रचित वस्तुओं से सबद्ध तीन गुणों में से कोई एक (यह है—सत्त्व, रजस् और तमस्) —गुणत्रयविभागाय—कु० २।४, भग० १४।५, रघु० ३।२७ 12 बत्ती, सूत का धागा 13 इन्द्रियजन्य विषय (यह पाँच है रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द) 14 आवृत्ति, गुणा (संख्याओं के बाद समास के अन्त में लगकर प्राय 'तह' या 'गुणा या बार' को प्रकट करता है)—आहारो द्विगुण स्त्रीणा बुद्धिस्तासा चतुर्गुणा, षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुण स्मृत —चाण० ७८, इसी प्रकार त्रिगुण,- शतगुणी भवति -सौगुना हो जाता है 15 गौण तत्त्व, आश्रित अश (विप० मुख्य) 16 आधिक्य, बहुतायत, बहुलता 17 विशेषण, वाक्य में अन्याश्रित शब्द 18 इ, उ, ऋ तथा ऌ के स्थान में ए, ओ, अर् और अल्, अथवा अ, ए, ओ, अर् और अल् स्वर का आदेश 19 (अल० शा० में) रस का अन्तर्निहितगुण, मम्मट के अनुसार— ये रसस्यागिनो धर्मा शौर्यादय इवात्मन, उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणा - काव्य० ८, (अल० शा० के प्रणेता वामन, पडित जगन्नाथ, दण्डी तथा अन्य विद्वान् गुणों को शब्द और अर्थ दोनों का धर्म समझते हैं तथा प्रत्येक के दस दस प्रकार बतलाते हैं। परन्तु मम्मट केवल तीन गुण मानता है और दूसरों के विचारों की समालोचना करने के पश्चात् कहता है —माधुर्योज प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश —काव्य० ८) 20 (व्या० और मी० में) शब्द समूह का अर्थ, धर्म या गुण माना जाता है, उदा० वैयाकरण शब्दार्थ के चार प्रकार मानते हैं —जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य, इन अर्थों को समझाने के लिए क्रमश प्रत्येक का गौ, शुक्ल, चल और डित्थ -उदाहरण देते हैं 21 (राजनीतिशास्त्र में) कार्य करने का समुचित प्रक्रम, सही रीति (विदेशराजनीति विषयक छ रीतियाँ राजाओं के द्वारा व्यवहार्य बतलाई गई हैं—1 सधि, शान्ति, सुलह 2 विग्रह, युद्ध 3 यान, चढ़ाई करना 4 स्थान या आसन अर्थात् पड़ाव 5 सश्रय अर्थात् शरणस्थल ढूंढना 6 द्वैध या द्वैधीभाव सधिना विग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रय अमर०, दे० याज्ञ० १।३४६ मनु० ७।१६०, शि० २।२६, रघु० ८।२१ 22 तीन गुणों से व्युत्पन्न तीन की संख्या 23 (ज्या० में) सम्पर्क जोड़ा 24 ज्ञानेन्द्रिय 25 निचले दर्जे का विशिष्ट भोजन—मनु० ३।२२४, २३३ 26 रसोइया 27 भीम का विशेषण 28 परित्याग, उत्सर्ग। सम०

अतीत (वि०) सब प्रकार के गुणों से मुक्त, गुणों

से परे,—अतिक्रमणम् मज्जस्थक का वह प्रदेश जहाँ पेटी बाँधी जाती है,—अनुवादः दूसरों के सद्गुणों की सराहना करना—कि० १।११,—अनुवृत्तिः अच्छे गुणों की अनुकूलता या उपयुक्तता,—अन्वित (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, श्रेष्ठ, मूल्यवान्, अच्छा, सर्वोत्तम,—अपवाद गुणों का तिरस्कार, गुणों का अपकर्षण, गुण-निन्दा,—आकर 'गुणों की खान' सर्वगुणसम्पन्न,—आढ्य (वि०) गुणों से समृद्ध,—आत्मन् (वि०) गुणी—आधार गुणों का पात्र, सद्गुणी, गुणवान् व्यक्ति,—आश्रय (वि०) गुणी श्रेष्ठ,—उत्कर्ष गुण की श्रेष्ठता, उत्तम गुणों का स्वामित्व,—उत्कीर्तनम् गुणों का कीर्तन, स्तुति, प्रशस्ति,—उत्तर (वि०) गुणों में श्रेष्ठ,—कर्मन् (नपु०) 1 अनावश्यक या गौण कार्य 2. (व्या० में) गौण या कार्य का व्यवधानसहित (अर्थात् अप्रत्यक्ष) कर्म, उदा०—नेताऽश्वस्य मुख्य मुख्यस्य वा, में मुख्य गुणकर्म है,—कार (वि०) अच्छे गुणों का उत्पादक, कल्याणकारक, हितकर (र) 1 वह रसोइया जो अतिरिक्त विशिष्ट भोजन तैयार करता है 2 भीम का विशेषण,—कीर्तनम् गुणों का गान करना, स्तुति, प्रशंसा,—ग्रहण (वि०) 1 अच्छे गुणों का ग्राहक 2 अच्छे गुणों वाला,—ग्राह्य (वि०) गुणों की सराहना करने वाला, गुणों से सम्पन्न, गुणों का प्रशंसक—मनु वक्तुर्विज्ञानमिच्छन् स्तुत्या गुणमुदीरयेत् अपने विषयचित —कि० २।५, ग्रहीतृ,—ग्राहक,—ग्राहिन् (वि०) दूसरों के) गुणों का प्रशंसक—रत्न० १।६, भामि० १।९,—ग्राम गुणों का समूह—गुणरत्नग्रामाम्भोजस्फुटोज्ज्वलचन्द्रिका —भर्तृ० ३।११६, गणयति गुणग्रामम्—गीत० २, भामि० १।१०१,—ज्ञ (वि०) गुणों की सराहना जानने वाला, प्रशंसक,—तमवति कमलालये मृगमगुणज्ञासि —गुप्ता० २, गुणापगमेषु गुणा भवन्ति—हि० प्र० ४७,—त्रय,—त्रितय प्रकृति के तीन घटक धर्म अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्,—दर्श कुछ गुणों पर आधिपत्य करने में आनुषंगिक गुण या धर्म,—निधि गुणों का भण्डार,—प्रकर्ष गुणों की श्रेष्ठता, बड़ा गुण, —लक्षण आन्तरिक गुण का सांकेतिक चिह्न,—वर्धन शिक्षक,—वचनी स्त्री,—वचन,—वाचक विशेषण, गुण बतलाने वाला शब्द, संज्ञा शब्द जो विशेषण की भाँति प्रयुक्त हो जैसे 'श्वेतोऽश्व' में 'श्वेत' शब्द, विवेचना दूसरों के गुणों की सराहना करने में विवेकबुद्धि, —वृक्ष,—वृक्षक एक मस्तूल या स्तंभ जिससे नौका या जहाज बाँधा जाय,—वृत्ति गौण या अप्रधान संबंध (विप० मुख्यवृत्ति), वैशेष्यम् गुण की प्रमुखता, —शब्द विशेषण,—संघात तीन अनिवार्य गुणों की संगतता, सांख्यदर्शन (योगदर्शन सहित),—संग 1 गुणों का साहचर्य 2 सांसारिक विषयवासनाओं में आसक्ति,—संपद् (स्त्री०) गुणों की श्रेष्ठता या बहुलता, बड़ा गुण, पूर्णता,—सागर 1 गुणों का समुद्र, एक बहुत गुणी पुरुष 2 ब्रह्मा का विशेषण।

गुणक [गुण्+ण्वुल्] 1 हिसाब करने वाला, या हिसाब लगाने वाला 2 (गणित में) वह अंक जिससे गुणा किया जाय।

गुणनम् [गुण्+ल्युट्] 1 गुणा करना 2 सराहना 3 गुणों का वर्णन करना, गुणों को बतलाना या मिलना—इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके—गीत० ७, —की पुस्तकों की परीक्षा करना, अध्ययन करना, विभिन्न पाठों के मूल्य को निर्धारित करने के लिए पाण्डुलिपियों का मिलान करना।

गुणनिका [गुण्+णुच्+कन्, इत्वम्] 1. अध्ययन, बार-बार पढ़ना, आवृत्ति—विशेषविदुष आस्य वसवोदग्राङ्गणे पर, हेतु परिचयस्यैवं वस्तुगुणनिकैव सा —शि० २।७५, (आग्रेडितम्- मल्लि०) 2 नाच, नाचने का व्यवसाय या नृत्यकला 3 नाटक की प्रस्तावना 4 माला, हार—दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका,—आनं० ३ 5 शून्य, अंकगणित में विशेष चिह्न जो शून्यता को प्रकट करता है।

गुणनीय (वि०) [गुण्+अनीयर्] 1. वह राशि जिसे गुणा किया जाय 2 जिसका गिना जाय 3. जिसे उपदेश दिया जाय,—न. अध्ययन, अभ्यास।

गुणवत् (वि०) [गुण्+मतुप्] गुणों से युक्त, गुणी, श्रेष्ठ।

गुणिका [गुण्+इन्+कन्+टाप्] रस्सी, पिस्टी, सूत्रधार।

गुणित (भू० क० कृ०) [गुण्+क्त] 1 गुणा किया हुआ 2 एक स्थान पर ढेर लगाया हुआ, संगृहीत 3 गिना हुआ।

गुणिन् (वि०) [गुण+इनि] 1 गुणों से युक्त, गुणवाला, गुणी—गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणं—मनु० ८।७३, याज्ञ० २।७८ 2 भला, शुभ—गुणिन्यहनि—दश० ६१ 3 किसी के गुणों से परिचित 4 गुणों को धारण करने वाला (कर्म) 5 (अप्रधान) अंशों वाला, मुख्य (विप० गुण)—मुख्यगुणिनोरेव समवेत' ।

गुणीभूत (वि०) [अगुणौ गुणीभूत—गुण+च्वि+भू+क्त] 1 मूल महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित 2. गौण या अप्रधान बनाया हुआ 3. विशेषणों से आवेष्टित। सम०—व्यङ्ग्यम् (अल० शा० में) काव्य के तीन भेदों में से दूसरा—मध्यम जिसमें अभिधेय अर्थ की अपेक्षा व्यंजना द्वारा अभिव्यक्त अर्थ अधिक आकर्षक नहीं होता है, सा० द० परिभाषा देता है,—अपर तु गुणीभूतव्यङ्ग्य वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये, २६५, काव्य का यह भेद इसके आगे आठ भागों में विभक्त किया गया है—दे० सा० द० २६६, काव्य० ५।

गुण्ठ् (चुरा० उभ०—गुण्ठयति-ते, गुण्ठित) 1 परिवृत्त करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना 2 छिपाना, ढक लेना, अव—, ढकना, परदा डालना छिपाना, अवगुण्ठित करना।

गुण्ठनम् [गुण्ठ्+ल्युट्] 1 छिपाना, ढकना, गोपन 2 मलना —यथा भस्मगुण्ठनम्।

गुण्ठित (वि०) [गुण्ठ्+क्त] 1 घिरा हुआ, ढका हुआ 2 चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ, चूरा किया हुआ।

गुण्ड् (चुरा० उभ०—गुण्डयति, गुण्डित) 1 ढकना, छिपना पीसना, चूरा करना।

गुण्डक [गुण्ड्+अच्+कन्] 1 धूल, चूर्ण 2 तेल का बर्तन 3 मन्द मधुर स्वर।

गुण्डिक [गुण्ड+ठन्] आटा, भोजन, चूर्ण।

गुण्डित (वि०) [गुण्ड्+क्त] 1 चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ 2 धूल से ढका हुआ।

गुण्य (वि०) [गुण्+यत्] 1 गुणों से युक्त 2 गिने जाने के योग्य 3 वर्णन किये जाने के योग्य, प्रशस्य 4 गुणा करने के योग्य, वह राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुत्स = गुच्छ।

गुत्सक [गुत्स्+अ+कन्] 1 गट्ठर, गुच्छ 2 गुलदस्ता 3 चँवर 4 पुस्तक का अनुभाग या अध्याय।

गुद् (स्वा० आ०—गोदते, गुदित) क्रीडा करना, खेलना।

गुदम् [गुद्+क] गुदा—याज्ञ० ९३।९ मनु० ५।१३६, ८।२८२। सम०—अङ्कुर बवासीर,—आवर्त कोष्ठ बद्धता,—उद्भेद बवासीर, ओष्ठ गुदा का मुख, —कील, —कीलक बवासीर, गुह्य कब्ज, मलावरोध —पाक गुदा को सूजन, (मलद्वार का पक जाना), —भ्रंश काच निकलना, —वर्त्मन् (नपु०) गुदा, मलद्वार,—स्तम्भ कब्ज।

गुध् I (दिवा० पर०—गुध्यति, गुधित) लपेटना, ढकना, आवेष्टित करना, ढांपना, II (क्रया० पर० गृध्नाति) क्रुद्ध होना, III (स्वा० आ०—गोधते) क्रीडा करना, खेलना।

गुन्द्रल [गुन् इति शब्देन दलयतेऽसौ—गुन्+दल्+णिच्+अच्] एक छोटे आयताकार ढोल का शब्द।

गुन्द्रा (द्र्रा) स्त्री० [पृ०] चातक पक्षी।

गुप् I (स्वा० पर० गोपायति, गोपायित या गुप्त) 1 रक्षा करना, बचाना, आत्मरक्षा करना रखवाली करना—गोपायन्ति कुलस्त्रियः आत्मानम् महा०, जुगोपात्मानमत्रस्तः रघु० १।२१, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्—२।३ भट्टि० १७।८० 2 छिपाना, ढकना —किं वक्रश्चरणानतिव्यतिकरव्याजेन गोपायते—अमरु २२, दे 'गुप्त' II (स्वा० आ०—जुगुप्सते—गुप् का सन्नन्त रूप) 1 तुच्छ समझना, कतराना, घिन करना, अरुचि करना, निन्दा करना (अपा० के साथ, कभी कभी कर्म० के साथ भी) पापाज्जुगुप्से—सिद्धा०, किं त्वं मामजुगुप्सिष्ठा भट्टि० १५।१९, याज्ञ० ३।२९६ 2 छिपाना, ढकना (इस अर्थ में—सोपसर्ग) III (दिवा० पर० गुप्यति) घबराना, बिह्वल हो जाना IV (चुरा० उभ० गोपायति—ते) 1. चमकना 2 बोलना 3 छिपाना (कविरहस्य से उद्धृत निम्नांकित श्लोक धातु के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है—गोपायति क्षितिमिमां चतुरब्धिसीमां, पापाज्जुगुप्सत उदारमतिः सदैव, घिन न गोपयति यस्तु वणीयकेभ्यो धीरो न गुप्यति महत्यपि कार्यजाते।

गुपिल [गुप्+इलच्] 1 राजा 2 रक्षक।

गुप्त (भू० क० कृ०) [गुप्+क्त] 1 प्ररक्षित, संपृत, रक्षित—रघु० १०।६० 2 छिपाया हुआ, ढका हुआ, रहस्यमय—मनु० २।१६०, ७।७६ ८।३७४ 3 अदृश्य, आँख से ओझल 4 संयुक्त, वह वैश्यों के नाम के साथ जुड़ने वाली वर्ण सूचक उपाधि—चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त आदि (ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रायः 'देव' या 'शर्मन्' क्षत्रियों के नामों के साथ 'वर्मन्' या 'त्रात्', वैश्यों के नामों के साथ 'गुप्त', 'भूति' अथवा 'दत्त' और शूद्रों के नामों के साथ 'दास' जोड़ा जाता है तु०, शर्मा देवश्च विप्रस्य, वर्मा त्राता च भूभुजः, भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दास शूद्रस्य कारयेत्),—वम् (अव्य०) गुप्त रूप से, निजी तौर पर, अपने ढंग पर

पत्नी काव्यग्रंथों में वर्णित मुख्य स्त्रीपात्रों में से एक, परकीया नायिका, सुरति छिपाने वाली नायिका—गुप्तसुरतगोपना वर्तिष्यमाणसुरतगोपना और वर्तमानसुरतगोपना दे० रसम०—२४। सम०—कथा गुप्त या गोपनीय समाचार, रहस्य,—गति गुप्तचर, जासूस, चर जासूस, छिप कर घूमने वाला (र) 1. बलराम का विशेषण 2 गुप्तचर, जासूस,—दानम् छिपा कर दिया जाने वाला दान, गुप्त उपहार, —वेशः बदला हुआ भेस।

गुप्तक [गुप्त+कन्] संधारक, प्ररक्षक।

गुप्ति (स्त्री०) [गुप्+क्तिन्] 1 संधारण, प्ररक्षा, —सर्वेषामेव तु सर्गाणां गुप्त्यर्थम्—मनु० १।८७, ९४, ९९, याज्ञ० १।१९८ 2 छिपाना, लुकाना 3 ढकना, स्थान में रखना—असिवारामु कोषगुप्ति —का० ११ 4 बिल, कन्दरा, कुण्ड, मृगर्भगृह 5 भूमि में बिल खोदना 6 प्ररक्षा का उपाय, दुर्ग, दुर्गप्राचीर 7. कारागार, जेल— सरभस इव गुप्तिस्फोटमर्कं करोमि—शि० ११।६० 8 नाम का निचला तल 9 रोक, थाम।

गुफ्, गुम्फ् (तुदा० पर० गुफति, गुम्फति, गुम्फित) गूंथना, गूंथन करना, बांधना, लपेटना—भट्टि० ७।१०५ 2 (आत्म०) लिखना, रचना करना।

गु (गुं) क्रिया (भू० क० कृ०) [गु (गुर्) क्त] इकट्ठा गुंथा हुआ, बांधा हुआ, बुना हुआ।

गुम्फ [गुम्फ्+घञ्] 1 बांधना, गूंथना,—गुम्फो दामानाम्—दशकु० १।१ 2 एक स्थान पर रखना, रचना, करना, क्रम पूर्वक रखना 3 ककण 4 गल-मुच्छ, मूंछ।

गुम्फना [गुम्फ्+युच्+टाप्] 1 एक जगह गूंथना, नत्थी करना 2 क्रम पूर्वक रखना, रचना करना 3 सुसा-मञ्जस्य (शब्द और अर्थ का), अच्छी रचना—वाक्ये शब्दार्थयो सम्यग्रचना गुम्फना मता।

गुर् १ (तुदा० आ०—गुरते, गूर्ण, गूर्ण) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, २ (दिवा० आ० -भू० क० कृ०—गूर्ण) 1 चोट पहुंचाना, मार डालना, क्षति पहुंचाना 2. जाना।

गुरुत्वम् [गुरु+त्वल्] प्रयत्न, धैर्य।

गुरु (वि० ४, र्वी) [गृ+कु, उत्वम्] (म० अ० -गरीयस्, उ० अ० गरिष्ठ) 1 भारी, बोझल (विप० लघु०) (आल० से भी)—तेन भूजंगतो गुर्वीं सचिवेषु निक्षिप्ते—रघु० १।३४, ३।३५, १२।१०२, ऋतु० १।७ 2 प्रशस्त, बड़ा, लम्बा, विस्तृत 3 लंबा (काल मात्रा या लम्बाई में) आरम्भगुर्वी—भर्तृ० २।६०, गुरुषु दिवसेष्वेव गच्छत्सु—मेघ० ८३ 4 महत्व-पूर्ण, आवश्यक, बड़ा—विग्रहगुरुभि कृत्यै—श० ४।१८, स्वार्थान्सता गुरुतरा प्रत्यधिक्रियैव विक्रम० ४।१५ 5 दुःसाध्य, अगम्य - कान्तावियोगगुरुणा शापेन—मेघ० १ 6 बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड, तीव्र—गुरु प्रहर्षं प्रबभूव नात्मनि—रघु० ३।१७, गुर्वपि विरहदुःखम् शं० ४।१५, भग० ६।२२ 7 श्रद्धेय, आदरणीय 8 भारी, दुष्पाच्य 9 अभीष्ट, प्रिय 10 अहंकारी, घमंडी, दर्पोक्ति 11 (छन्द शास्त्र में) दीर्घमात्रा, (या तो स्वयं दीर्घ, अथवा संयुक्त व्यञ्जन से पूर्व होने के कारण दीर्घ) उदा० 'ईड' में ई, तथा 'तस्कर' में त, (यह छ० में प्रायः 'ग' लिखा जाता है—मात्रौ गौ चेच्छालिनौ वेदलोकैः -आदि),—द्व पिता—न केवलं तद्गु-रुरेकपार्थिव क्षितावभूदेकधनुर्धरोऽपि सः—रघु० ३।३१, ४८, ४।१, ८।२९ 2 कोई भी श्रद्धेय या आदरणीय पुरुष, वृद्ध पुरुष या संबंधी, बुजुर्ग (ब० व०) शुश्रू-षस्व गुरून्—श० ४।१४, मनु० २।५, याज्ञ० २।७, १८, १९, ४९, आज्ञा गुरूणा ह्यविचारणीया—रघु० १४।४६ 3 अध्यापक, शिक्षक—गुरुशिष्यौ 4 विशेष-तया धार्मिकगुरु, आध्यात्मिक गुरु—तौ गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः—रघु० १।५७, (पारिभाषिक रूप से गुरु वह है जो गायत्री मन्त्र का उपदेश करे और शिष्य को वेदाध्यापन करे—स गुरुर्यः क्रिया कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति—याज्ञ० १।३४) 5 स्वामी, प्रधान, संरक्षक, शासक—वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी —रघु० ५।१९, वर्ण और आश्रमों का प्रधान—गुरु-नृपाणां गुरवे निवेद्य - २।६८ 6 बृहस्पति, देवगुरु —गुरु नेत्रसहस्रेण चोदयामास वासवं—कु० २।२९ 7 बृहस्पति नक्षत्र—गुरुकाव्यानुगां विभ्रच्चान्द्रीमभि-नभ श्रियम्—शि० २।२ 8 नये सिद्धान्त का व्याख्याता 9 पुष्य नक्षत्र 10 कौरव और पाण्डवों के गुरु 11 मीमांसकों के एक सम्प्रदाय का नेता प्रभाकर (उसके नाम पर 'प्राभाकर' या 'प्रभाकरीय' कहलाता है), - अर्थं - शिष्य को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में गुरुदक्षिणा—गुर्वर्थमाहर्तुमहं यतिष्ये - रघु० ५।७, - उत्तम (वि०) अत्यंत सम्माननीय (—मः) परमात्मा,—कार पूजा, उपासना, - क्रम उपदेश, परम्पराप्राप्त शिक्षा,—जन श्रद्धेय पुरुष, वृद्धसंबंधी बुजुर्ग—नापेक्षितो गुरुजन —का० १५८, मालवि० २।७, तल्प 1 अध्यापक की शय्या (भार्या) 2 अध्यापक की शय्या का उल्लंघन अर्थात् गुरुपत्नी के साथ अनुचित संबंध, तल्पग, —तल्पिन् गुरु-पत्नी के अनुचित संबंध रखने वाला (हिन्दूधर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा व्यक्ति महापातकियों में गिना जाता है—अति-पातकी, तु०, मनु० ११।१०३) 2 जो अपनी सौतेली माता के साथ व्यभिचार करता है,—दक्षिणा आध्यात्मिक गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा - रघु० ५।१, —दैवत पुष्य नक्षत्र, -पाक (वि०) पचने में कठिन, —वार 1 पुष्यनक्षत्र 2 धनुष, —मर्दल एक प्रकार की ढोलक या मृदंग, रत्नम् पुखराज, लाघवम् सापेक्षिक महत्त्व या मूल्य, —वासिन्, —वासिन् (पु०) गुरु के घर रह कर पढ़ने वाला ब्रह्मचारी,—वासर बृहस्पति वार, वृत्ति (स्त्री०) ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति आचरण।

गुरुक (वि०) (स्त्री० —की) [गुरु+कन्] 1 अरा भारी 2 (छन्द० में) दीर्घ।

गु (गू) अव्य. [गुरु+उ+णिच्+अच्—पृषो०] 1 गुजरात का प्रदेश या जिला—तेषां मार्गं परिचयवशाद्दर्शितं गुर्जराणां य सस्राप त्रिभिरलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य —विक्रमांक० १८।९७।

गुर्विणी, गुर्वी [गुरु+इनि+ङीप्, गुरु+ङीष्] गर्भवती स्त्री—उदा० गुर्विणी नानुगच्छन्ति न स्पृशन्ति रज-स्वलाम्।

गुल [=गुड, ह्रस्य ल] गुड तु० गुड।

गुलुञ्छः, —गुलुञ्छ [=गुञ्छ पृषो० गुड्+क्विप्, ह्रस्य ल, गुल्+उञ्छ्+अण्] गुच्छ, गुड दे० गुच्छ।

गुल्फ [गल्+फक् अकारस्य उकारः] टखना—आगुल्फ-कीर्णपणभारपुष्प कु० ७।५५, गुल्फावलंबिना —का० १०।

गुल्फः,-ल्फम् [गुह्+अक्, ह्रस्य ल - तारा०] 1 वृक्षा का झुंड, झुरमुट, वन, झाड़ी—मनु० १।४८, ७।१९२, १२।५८, याज्ञ० २।२२९ 2 सिपाहियों का दल, सैन्य दल जिसमें ४५ पदाति, २७ अश्वारोही, ९ रथारोही और ९ गजारोही होते हैं 3 दुर्ग 4 तिल्ली 5 तिल्ली का बढ़ जाना 6 नौका की पुलिस चौकी 7 घाट।

गुल्मिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गुल्म+इनि] झुरमुट या झाड़वृन्द में उगनेवाला, बढ़ी हुई तिल्ली वाला, तिल्ली के रोग से ग्रस्त।

गुल्मी [गुल्म+अच्+ङीष्] तंबू।

गुवाकः [गु+वाक] सुपारी का पेड़।

गुह् (भ्वा० उभ०—गूहति-ते) ढकना, छिपाना, परदा डालना, गुप्त रखना—गुह्य च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति - भर्तृ० २।७२, गूहेत्कूर्मं इवाङ्गानि - मनु० ७।१०५, रघु० १४।४९, भट्टि० १६।४९, उप , आलिंगन करना, तरङ्गहस्तैरुपगूहतीव—रघु० १३।६२, १८।४७, भट्टि० १४।५२, शि० ९।३८, वि , छिपाना, गुप्त रखना।

गुह [गुह्+क] 1 कार्तिकेय का विशेषण - गुह इवाप्रतिहतशक्तिः का० ८, कु० ५।१४ 2 घोड़ा 3 निषाद या चांडाल का नाम जो शृंगवेर का राजा तथा भगवान् राम का मित्र था।

गुहा [गुह्+टाप्] 1 गुफा, कंदरा, छिपने का स्थान, - गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम्—रघु० २।२८, २।१, धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्—महा० 2 छिपाना ढकना 3 गढ़ा, बिल 4 हृदय। सम० आहित (वि०) हृदय में रक्खा हुआ चरम् वह्नि मुख (वि०) गुफा जैसे मुंह का, चाहे मुंह का चूल्हे मुंह का, अग्नि 1 चूहा 2 शेर 3 परमात्मा।

गुहिलम् [गुह्+इलच्] वन, जंगल।

गुहेर [गुह्+अरक] 1 अभिभावक, प्रत्यक्ष 2 लुटेरा

गुह्य (स० कृ०) [गुह्+क्यप्] 1 छिपाने के योग्य, गोपनीय, गुप्त रखने के योग्य, निजी—गुह्य च गूहति - भर्तृ० २।७२ 2 गुप्त, एकान्तवासी, विरक्त (सेवानिवृत्त) 3 रहस्यपूर्ण भग० १८।६३ ह्य 1 पाखंड 2 कठुवा, ह्यम् 1 भेद, रहस्य गोप्तव्यमिति गुह्यानाम् भग० १०।३८, ९।२, मनु० १२।११७ 2 गुप्त इन्द्रिय, पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय। सम० गुरु शिव का विशेषण, दीपक जुगनू, —निष्यन्द मूत्र, —भाषितम् 1 गुप्तबातों 2 भेद, रहस्य की बात, —राज कार्तिकेय का विशेषण।

गुह्यक [गुह्य गोपनीय क सुख येषाम् ब० स०] यक्ष जैसी एक अर्धदेवों की श्रेणी जो कुबेर के सेवक तथा उसके कोष के संरक्षक हैं—गुह्यकस्तं ययाचे त्वं मेघ० ५, मनु० १२।४७।

गू (स्त्री०) [गम्+कू लिलोप] 1 कूड़ा करकट 2 मल, विष्ठा।

गूढ (भू० क० कृ०) [गुह्+क्त] 1 छिपा हुआ, गुप्त, गुप्त रक्खा हुआ 2 ढका हुआ। सम०—अङ्ग कछुवा, —अर्चिस् नाग—आत्मन् (समास होकर 'गूढोत्मन्' बनता है, सिद्धा० ने इस प्रकार समाधान किया है—मवेद् वर्णागमाद् हुस सिद्धो वर्णविपर्ययात्, गूढोत्मा वर्णविकृतेर्वर्णलोपात्-पृषोदर), परमात्मा,—उत्पन्न—वह हिन्दूधर्म शास्त्रों में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, यह उस स्त्री का गुप्त पुत्र है जिसका पति परदेश गया हुआ है, तथा वास्तविक पिता अज्ञात है—गूढे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुत स्मृत. - याज्ञ० २।१२९, १७०, - गृह खजनपक्षी, पद्य. 1 गुप्तमार्ग 2 पगडंडी 3 मन, बुद्धि, पाद,—पाद सांप,—पुरुष जासूस, गुप्तचर, मेदिया,- पुष्पक बकुलवृक्ष, मार्गः अपर्व मार्ग,—मैथुन कौवा, —वर्चस् (पु०) मेंढक,— साक्षिन् (पु०) गुप्त गवाह, ऐसा साक्षी जिसने प्रतिवादी की बातों का चुपचाप सुना हो।

गूथ,-थम् [गू+थक्] मल, विष्ठा।

गूथ (वि०) [गू+क्त] उत्सृष्ट मल।

गूरणम् दे० गूरण'।

गूलना ? मोर के पंख में बनी हुई आंख की आकृति।

गू (भ्वा० पर० गरति) छिड़कना, तर करना गीला करना।

गूज्, गूर्ज् (भ्वा० पर० गर्जति, गूर्जति) शब्द करना, दहाड़ना, गरजना आदि।

गूर्जन [गूर्ज्+ल्युट्] 1 गाजर 2 शलजम 3 गाजा (भांग की पत्तियों का चबाना जिससे कि मादकता पैदा हो), नम् विषैले तीर से मारे हुए पशु का मांस।

गृञ्जि (स्त्री) च [?] गोदड़ों की एक जाति।

गृध् (दिवा० पर० गृध्यति, गृद्ध) ललचाना इच्छा करना, लोभवश प्रयत्नशील होना, लालायित होना, अभिलाषी होना।

गृधु (वि०) [गृध्+कु] कामातुर, लम्पट,—धुः कामदेव।

गृध्नु (वि०) [गृध्+क्नु] 1 लोभी, लालची—अयुध्नुराददे नाप्यम् रघु० १।२१ 2 उत्सुक, इच्छुक।

गृध्यम्,-ध्या [गृध्+क्यप्] इच्छा, लोभ।

गृध्र (वि०) [गृध्+क] 1 लोभी लालची ध्रः,—ध्रम् गिद्ध, राजगृध्रस्य हि दोषेण हतो गृद्धो जरद्गव हि० १।५९, रघु० १२।५०, ५९। सम०-कूटः राजगृह के निकट विद्यमान एक पहाड़, पक्षिन्,-राज गिद्धों का राजा जटायु—अभ्येत्यासीन्महति शिलाये गृध्रराजस्य शान्त -उत्तर० २।२५, वाह,-वासित (वि०) गिद्ध के परों से युक्त (बाण आदि)।

गृष्टिः (स्त्री०) [गृह्णाति सकृत् गर्भम् -ग्रह्+क्तिच्

पृषो० तारा०] 1 एक बार ब्याई हुई गौ, पहलौठी गाय (सकृत्प्रसूता गौ)—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नादवृष्टि --रघु० २।१८, स्त्री तावत्सम्कृत षष्ठ्यां दत्तनवत्स्या इव गृष्टि सूत्रकृद्भ्य करोति मृच्छ० ३ 2 (दूसरे पशुओं के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पशु का (मादा, बच्चा, बांझ) : हस्तिनी का (मादा, बच्चा)।

गृहम् [ग्रह्+क] 1 घर, निवास, आवास भवन—न गृह गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते—पञ्च० ४।८१, पश्य वानर मर्कटेन सुगृहो निर्गृहीकृतः० पञ्च० १।३९० 2 पत्नी (उपर्युक्त उद्धरण कई बार निदर्शन के रूप में प्रयुक्त होता है) 3 गृहस्थ-जीवन 4 मेषादि राशि 5 नाम या अभिधान ह्रस्व (पु०, ब० व०) 1 घर निवास - इमे नो गृहा,—मुद्रा० १, स्फटिकपलविधहा गृहा, गणभृद्भिस्तानिरङ्कुभिलय नै० २।७६, तत्रागार धनपतिगृहानत्तरेणास्मदीयम् मेघ० ७५ 2 पत्नी 3 घर के निवासी, कुटुम्ब। सम०- अक्षः झरोखा, मोखा, गोल या आयताकार खिड़की,—अधिपः—ईशः, —ईश्वर 1 गृहस्थ 2 किसी राशि का स्वामी, अर्थिक गृहस्थ, अर्थ घरेलू मामला, घरेलू बातें —गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया—मनु० २।६७,—अश्मन् एक प्रकार की काजी,—अवग्रहणी देहली,—अश्मन् (पु०) सिल, (एक आयताकार पत्थर जिस पर मसाले पीसे जाते हैं), आराम गृहवाटिका, —आश्रम गृहस्थों का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की दूसरी अवस्था दे० आश्रम, उत्पात कोई घरेलू बाधा,—उपकरणम् घरेलू बरतन, गृहस्थ के उपयोग की सामग्री, —कच्छप=गृहाश्मन् दे०, —कपोत,—क पालतू कबूतर, - कार्यम् 1 घरेलू मामला 2 घर की इमारत—कर्मन् (न०) गृहस्थ के लिए विहित कर्म, °दास चाकर, घरेलू नौकर शम्भुस्वयम्भूहरयो हरिणेक्षणाना येनाक्रियन्त सतत गृहकर्मदासा—भर्तृ० १।१,- कलह, घरेलू झगड़ा भाई भाई की लड़ाई,—कारक घर बनाने वाला, राज, याज्ञ० ३।१४६,—कुक्कुट पालतू मुर्गा,- कार्यम् घर का कामकाज— मनु० ५।१५०,— कूलकी साथ लगे हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो, - क्षितम् 1 घर की गुप्त बातें या कमजोरियाँ 2 कौटुम्बिक अनबन, —ज,—जात घर में ही पैदा हुआ नौकर, - जालिका धोखा, कपटवेष, जालिन् ('गृहेजालिन्' भी) 'घर में ही तीसमारखां', अनुभवशून्य, जड़, मूर्ख, तट्टी घर के सामने बना चबूतरा,—दास घरेलू सेवक, —देवता घर की अधिष्ठात्री देवता, (ब० व०) कुल देवताओं का समूह,—देहली घर की दहलीज—यातां बलि सपदि मद्गृहदेहलीनाम् मृच्छ० १।९, मद्गृहं हुआ,- -नाशनः अगली कबूतर,—नीड. चिड़िया, गौरैया,—पति 1 गृहस्थ, ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् विवाहित जीवन बिताने वाला घर का मालिक 2 यजमान 3. गृहस्थ के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य आदि,—पाल 1 घर का संरक्षक 2 घर का कुत्ता, —पोतक घर की जमह, वह भूभाग जिस पर घर की इमारत बनी हुई है और जो घर को घेरती है, —प्रवेश नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना,— बलि पालतू नेवला,—बलि वैश्वदेव यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, अवशिष्ट अन्न सब जीवजन्तुओं को वितरण करना, मनु० ३।२६५, °भुज् (पु०) 1. कौवा 2 चिड़िया - नीहारधूमैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्या —मेघ०२३, °देवता घर का देवता जिसे आहुति दी जाती है, - भङ्ग 1 घर से निर्वासित व्यक्ति, प्रवासी 2 घर का नाश करना 3 घर में सेंध लगाना 4 असफलता किसी दुकान या घर की बर्बादी या नाश,—भूमि (स्त्री०) वास्तु स्थान, वह जमीन जिस पर कोई मकान बना हो,—मेधिन् (वि०) 1 घर के कामों में ताक झाक करने वाला 2 घर में कलह कराने वाला, मणि दीपक, वर्तिका चमगादड़,—मृग कुत्ता,- मेध 1 गृहस्थ 2 पञ्चयज्ञ,—मेधिन् (पु०) गृहस्थ—गृहैर्दारैर्मेधन्ते सगच्छन्ते—मल्लि०) प्रजायें गृह-मेधिनाम्—रघु० १।७, दे० 'गृहपति',- यज्ञ उत्सव आदि के अवसर पर झंडा फहराने का डंडा या कोई और उपकरण—गृहयज्ञपताकाश्रीरयोरादरनिर्मिता-कु० ६।४१, —वाटिका— बाड़ी घर से मिली हुई बगीची, —विल घर का स्वामी,—शुक पालतू तोता, आमोद के लिए पाला हुआ तोता—अमर १३,- शैलक व्यावसायिक भवननिर्माता, स्थपति,—स्थ गृही, दूसरे आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला संकटा ह्याहिता-ग्नीनां प्रत्यवार्यगृहस्थता—उत्तर० १।९, दे० 'गृहपति' और मनु० ३।३८, ६।९०, °आश्रम गृहस्थ का जीवन दे० गृहाश्रम, °धर्म गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहयाय्य [गृह+णिच्+आय्य] 1 गृहस्थ, घरबार वाला (तारा० के अनुसार 'शब्दकल्पद्रुम' में दिया गया 'गृहयाय्य' रूप शुद्ध नहीं है)।

गृहयालु (वि०) [गृह+णिच्+आलु] पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला।

गृहिणी [गृह+इनि+ङीप्] गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहपत्नी, (घर का कार्यभार संभालने वाली स्त्री) —न गृह गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते, गृह तु गृहिणीहीन कान्तारादतिरिच्यते—पञ्च० ४।८१। सम०—पदम् गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा—यात्येव गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधय—श० ४।१७, स्थिता गृहिणीपदे १८।

गृहिन् (वि०) [गृह+इनि] घर का स्वामी, गृहस्थ, घरबारी - पोडधन्ने गृहिण कथ नु तनयाविश्लेषदु खै-र्नवै श० ४।५, उत्तर० २।२२, शा० २।२४।

गृहीत (भू० क० कृ०) [ग्रह्+क्त] 1 लिया हुआ, पकड़ा हुआ केशेषु गृहीत 2 स्वीकृत 3 प्राप्त, अवाप्त 4 परिहित, पहना हुआ 5 लूटा हुआ 6 अधिगत, ज्ञात -दे० 'ग्रह्'। सम० गर्भा गर्भवती स्त्री, —शिख (वि०) 1 मागा हुआ, भगोड़ा, लितरबितर हुआ 2 तिरोभूत, लापता।

गृहीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गृहीत+इनि] जिसने कोई बात समझ ली है (अधि० के साथ)—गृहीती वट्स्वङ्गेषु दश० १२०।

गृह्य (वि०) [ग्रह्+क्यप्] 1 आकृष्ट या प्रसन्न होने के योग्य जैसा कि 'गुणगृह्य' 2 घरेलू 3 जो अपना स्वामी न हो, परतन्त्र 4 पालतू घर में सधाया हुआ 5 बाहर स्थित ग्रामगृह्या सेना (गाँव के बाहर स्थित सेना),—ह्य 1 घर में रहने वाला 2 पालतू जानवर,—ह्यम् गुदा। सम०—अग्नि· अग्निहोत्र को आग जिसको स्थापित रखना प्रत्येक ब्राह्मण का विहित कर्म है।

गृह्या [गृह्य+टाप्] नगर के निकट बसा हुआ गाँव।

गॄ 1 (क्रया० पर०—गृणाति, गूर्ण) 1 शब्द करना, पुकारना, आवाहन करना 2 घोषणा करना, बोलना, उच्चारण करना, प्रकथन करना—रघु० १०।१३ 3 बयान करना, प्रचारित करना 4 प्रशंसा करना, स्तुति करना -केचिद्भूताना प्राज्जलयो गृणन्ति - भग० ११।२१, भट्टि० ८।७७, अनु -प्रोत्साहित करना, भट्टि० ८।७७, II (तुदा० पर० -गिरति या गिलति) 1 निगलना, हड़प करना, खा जाना 2 निकालना, उड़ेलना, थूक देना, मुह से फेंकना, अव -, (आ०) खाना, निगलना -तथावगिरमाणश्च पिशाचैर्मांस-शोणितम् भट्टि० ८।३०, उद्—1 फेंकना, थूक देना वमन करना -उद्गिरन्ती यद् गरल फणिन पुष्पासि परिमलोद्गारै - भामि० १।११, शि० १४।१ 2 उत्सर्जन करना, निकाल बाहर करना, उगल देना - कु० १।३३, रघु० १४।५३ वेणी० ५।१४, पञ्च० ५।६७, नि -, निगलना, खा जाना - भामि० १।३८, सम् — 1 निगलना 2 प्रतिज्ञा करना, व्रत करना, (आ०), समुद् -, 1 बाहर फेंक देना, निकाल देना 2 ओर से चिल्लाना, III (चुरा० आ० -गारयते) 1 बतलाना, वर्णन करना 2 अध्यापन करना।

गॄ (तु) क [गच्छतीति ग इन्दुरिव, गॄ+कन्, गॄहक पृषो०] मेलने के लिए गेंद, ('गेंडुक' भी)।

गेय (वि०) [गै+यत्] 1 गायक गाने वाला - गेयो मात्रक साम्नाम् -पा० ३।४।६८, सिद्धा० 2 गाये जाने के योग्य, —यम् 1 गीत, गायन गाने की कला—गेये केन विनोतो वाम्—रघु० १५।६९, मेघ० ८६, अनन्ता वाङ्मयम्याहो गेयस्येव विचित्रता शि० २।७२।

गेष् (म्वा० आ० गेषते, गेषण) ढूंढना, खोजना, तलाश करना—तु० 'गवेष'।

गेहम् [गो गणेशो गधर्वो वा ईहं ईप्सितो यत्र तारा०] घर, आवास सा नारी विधवा जाता गेहे रोदिति तत्पति - (सुभा०, वि० इस शब्द का अधि० का रूप अलुक् त० स० बनाने के लिए कई शब्दों के साथ प्रयोग होता है, उदा० **गेहेक्वेडिन्** (वि०) 'घर पर तोसमारखा' अर्थात् कायर, भीरु, **गेहेदाहिन्** (वि०) 'घर पर ही तेज' अर्थात् कायर, **गेहेनर्दिन्** (वि०) 'घर पर ही ललकारने वाला' अर्थात् कायर' घूरे का मुर्गा या डरपोक', **गेहेमेहिन्** (वि०) 'घर में ही मूतने वाला' अर्थात् आलसी, **गेहेव्याड.** डीग मारनेवाला, आत्मश्लाघी, शेखीखोर, **गेहेशूर** 'अपने मोहल्ले में कुत्ता भी शेर होता है' चहारदीवारी के सूरमा, कालीन के शेर, डीग मारनेवाला कायर।

गेहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गेह+इनि]=गृहिन्।

गेहिनी [गेहिन्+ङीप्] पत्नी, घर की स्वामिनी—धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी—भा० ४।९, मद्गेहिन्या प्रिय इति सखे चेतसा कातरेण—मेघ० ७७।

गै (भ्वा० पर०—गायति, गीत) 1 गाना, गीत गाना —अहो साधु रेभिलेन गीतम्—मृच्छ० ३, ग्रीष्मसमय-मधिकृत्य गीयताम्—श० १, मनु० ४।६४, ९।४२ 2 गाने के स्वर में बोलना या पाठ करना 3 वर्णन करना, घोषणा करना, कहना -(छन्दोमयी भाषा में) गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा—मा० २ 4 गाने के स्वर में वर्णन करना, बयान करना या प्रख्यात करना—चारण-दन्द्वगीत - श० २।१४, प्रभवस्तस्य गीयते—कु० २।५, अनु—, गाने में अनुकरण करना—अनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम्—गीत० १, कि० ३।६०, अव—, निन्दा करना, कलंकित करना **उद्**—, ऊँचे स्वर में गाना, उच्च स्वर में गायन—उद्गास्यता-मिच्छति किन्नराणाम्—कु० ६।८, गेयमुद्गातुकामा —मेघ० ८६, उद्गीयमान वनदेवताभि—रघु० २।१२, **उप**—, गाना, निकट गाना —शिष्यप्रशिष्यैरुपगीयमा-नमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम—उद्भट, कि० १८।४७, **परि**—, गाना, बयान करना, वर्णन करना, **वि** —, 1 बदनाम करना, झिड़कना, कलंकित करना—विगी-यसे मन्मथदेहदाहिना नै० १।७९ 2 विषम स्वर (बेमेल स्वर) में गाना।

गैर (वि०) (स्त्री०—री) [गिरि+अण्] पहाड़ से आया हुआ, पहाड़ी, पहाड़ पर उत्पन्न।

गैरिक (वि०) (स्त्री०—की) [गिरि+ठक्] पहाड़ पर उत्पन्न,—कः—कम् गेरु,—कम् सोना।

गैरेयम् [गिरि+ढक्] शिलाजीत।

गो (पु०, स्त्री०) कर्तृ० गौ [गच्छत्यनेन, गम् करणे डो तारा०] 1 मवेशी, गाय (ब० व०) 2 गौ से उपलब्ध वस्तु—दूध, मांस चमड़ा आदि 3. तारे 4 आकाश 5 इन्द्र का वज्र 6 प्रकाश की किरण 7 हीरा 8 स्वर्ग 9 बाण, (स्त्री०) 1 गाय -जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम् - रघु० २।३, औरिव्य सन्तु गाव —मृच्छ० १०।६० 2 पृथ्वी दुदोह गां स यज्ञाय रघु० १।२६, गामानसारा रघुरप्यवेक्ष्य ५।२६, ११।३६, मेघ० १५।१३, मेघ० ३० 3 वाणी, शब्द—रघोरुदारामपि गां निशम्य -रघु० ५।१२, २।५९, कि० ४।२० 4 वाणी की देवता —भरस्वती 5 माता 6 दिशा 7 जल (ब० व०) 8 आँख (पु०) 1 सांड, बैल —अमर-ज्ञानक्रियास्कन्ध मुख स्वर्पति गौर्गोपि —काव्य० १०, मनु० ८।७०, नृ० अरदृगव 2 शरीर के बाल, रोगटे 3 इन्द्रिय 4 वृषराशि 5 सूर्य 6 (गणित में) नौ की संख्या 7 चन्द्रमा 8 घोड़ा। सम० -कच्छक, -कम् देवों द्वारा खोदा हुआ फलत जाने के अयोग्य स्थान या सड़क 2 गाय के खुर 3 गाय के खुर की नाप -कर्ण 1 गाय का कान 2 खच्चर 3 साप 4 वालिश्त (अंगूठे के सिरे से कनिष्ठा की अंगुली तक का दूरी) 5 दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान का नाम, शिव का प्रियस्थान शिवगोकर्णनिकेतमीश्वरम्—रघु० ८।३८ 6 एक प्रकार का बाण, -किराता,-किराटिका मैना पक्षी, -किल —कील 1 हल 2 मसल,—कुलम् 1 गौओं का झुंड़ा वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्धनम्—गीत० ४, गोकुलस्य तृणार्तस्य—महा० 2 गोशाला 3 गोकुल एक गांव (जहाँ कृष्ण का पालन पोषण हुआ), -कुलिक (वि०) 1 दलदल में फंसी गाय का उद्धार करने में सहायता न देने वाला 2 भेंगा, वक्रदृष्टि, -कृतम् गाय का गोबर, -क्षीरम् गाय का दूध, -घा नाशन, -घ्नी: सकृत्प्रसूता गाय, पहलौठी, -गोयुगम् बैलों की जोड़ी,—गोष्ठम् गोशाला, पशुशाला, -चर्मन् 1 कपड़े, सूखा गोबर 2 गोशाला, -ग्रह- पशुओं को पकड़ना -घ्नम् प्रायश्चित के रूप में गाय को घास का कौर देना या भोजन का वह भाग जो गाय को देने के लिए अलग कर दिया जाय, -घृतम् 1 बारिश का पानी 2 गाय का घी -चन्दनम् एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, -चर (वि०) 1 जंगलगाह 2 बार-बार आने वाला, आश्रय लेने वाला बारबार भटकाने वाला -चित्तमचगोचर कु० ५।७७ 3 क्षेत्र, शक्ति या परास के अन्तर्गत अवाङ्मनसगोचरम् रघु० १०।१५, इसी प्रकार बुद्धि°, दृष्टि°, श्रवण° आदि 4 पृथ्वी पर घूमने वाला (रः) 1. पशुओं का क्षेत्र चरागाह उपचारतः पश्चिमरात्रिगोचरात्—कि० ४।१० 2 मंडल, विभाग, प्रांत, क्षेत्र 3 इन्द्रियों का परास, इन्द्रियों का विषय—श्रवणगोचरे तिष्ठ (जहाँ तक कानों से सुना जा सके - वहीं ठहरो) नयन गोचर या दिखाई देना 4 क्षेत्र, परास, पहुँच- हर्षगतिं न गोचरम्—भर्तृ० २।१६ 5 (आल०) पकड़, दबाव शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण- के कालस्य न गोचरान्तर-गत —पञ्च० १।१४६, अपि नाम मनागवनीन्द्रेऽपि रतिरमणबाणगोचरम्—मा० १ 6 क्षितिज,- चर्मन् (नपु०) 1 गोचर्म 2 विशेष नाप (भूमि नापने का) —वशिष्ठ के अनुसार परिभाषा— दशहस्तेन बंशेन दशवंशानि समतत, पञ्च चाभ्यधिकानि तद्गोदेयद्गोचर्म घोषणे। °अक्षः शिव का विशेषण, -चारकः ग्वाला, चरवाहा,— चरः बूढ़ा बैल या सांड, -जलम् गोमूत्र, -जागरिकम् मांगलिकता, आनन्द, -तल्लजः श्रेष्ठ बैल या सांड,—तीर्थम् गौशाला -त्रम् 1 गौशाला 2 पशुशाला 3 परिवार, वंश, कुल परम्परा मासेन साठरोऽस्मि--सिद्धा०, इसी प्रकार कौशिकगोत्रा वसिष्ठगोत्रा -आदि—मनु० ३।१०९, ९।१४१ 4 नाम, अभिधान—जगाद गोत्रस्खलिते च का न तव --नै० १।३०, देखो स्खलित नी०, सद्गोत्रादु विरचितपद गेयमद्गातुकामा— मेघ० ८६ 5 समुच्चय 6 वृद्धि 7 बल 8 क्षेत्र 9 मंडल 10 संपत्ति, दौलत 11 छतरी, छाता 12. भविष्य न। ज्ञान 13 जाति, श्रेणी, वर्ग, (त्रः) पहाड़, °जेता पृथ्वी °ज (वि) समान कुल में उत्पन्न, एक ही जाति का, सबंधी याज्ञ० २।१३५, -दः वंश विवरण, वंशतालिका, वंशवृक्ष, वंशावली, °द्विष् (पु) इन्द्र का विशेषण—हृदि क्षतो गोत्रभिदश्मवर्षेण रघु० ३।५३, ६।३३, कु० २।५२, °स्खलनम् स्खलितम् नाम लेकर पुकारना, गलत नाम से पुकारना -- स्मरसि स्मर मेखलागुणैरुत गोवस्खलितेषु बन्धनम्—कु० ४।८ (—त्रा) 1 गौओं का समूह 2 पृथ्वी,—हरनाल -हा गोदावरी नामक नदी,--हालम् 1. बाल काटने की दक्षिणा -तथास्य गोदानविधेरनन्तरम् रघु० ३।३३ 2 केशान्त संस्कार (दे० मल्लि० की व्याख्या) कुलगोदानमंगला —उत्तर० १ (रामा० में भिन्न प्रकार की व्याख्या है), -हारणम् 1 हल 2 फावड़ा, खुर्पा, -हावरी दक्षिण देश की एक नदी का नाम,—हुह् (पु) -हुह् ग्वाला, - दोहः 1 गौ का दूध निकालना 2 गाय का दूध 3 गौओं को दोहने का समय -दोहनम् 1 गौओं को दोहने का समय 2 गौओं को दोहना, -दोहनी वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाय, -द्वः

गोमूत्र,—अलम् गौओं का समूह, अवेशी,—करः पहाड़ —धूमः,- धूमः 1 गेहूँ 2 सतरा,—धूलिः पृथ्वी की धूल, सन्ध्या का समय (सन्ध्या समय ही गौएँ जंगलों से घर लौटती हैं, उनके चलने से धूल के बादल एकत्र हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'गोधूलि' पड़ा),—धेनुः दूध देने वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो,—ध्र. पहाड़,—नन्दी मादा सारस (पक्षी), —नई 1 सारस पक्षी 2 एक देश का नाम,—नर्दीय महाभाष्य के कर्ता पतञ्जलि मुनि,—नस, नास 1 एक प्रकार का साप 2 एक प्रकार का रत्न, नाथ 1 सांड 2 भूमिधर 3 ग्वाला 4 गौओं का स्वामी, —नाथः ग्वाला, - निष्यन्द गोमूत्र, प ग्वाला (एक वर्णसंकर जाति) —पतिवंशस्थ विष्णो —मेघ० १५ 2 गौशाला का प्रधान 3 गाँव का अधीक्षक 4 राजा 5 प्ररक्षक, अभिभावक, (पी) 1 ग्वाले की पत्नी —गोपीपीनपयोधरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली—गीत० ५, अध्यक्ष, इन्द्र. °इन्द्रा ग्वालों का मुखिया, कृष्ण का विशेषण, °द्रुम सुपारी का पेड़ °वधू (स्त्री०) ग्वाले की पत्नी °वधूटी गोपी, ग्वाले की तरुण पत्नी - गोपवधूटीदुकूलचौराय—भाषा० १, - पति 1 गौओं का स्वामी 2 सांड 3 नेता, मुखिया 4 सूर्य 5 इन्द्र 6 कृष्ण का नाम 7 शिव का नाम 8 वरुण का नाम 9 राजा,—पशु यज्ञीय गाय,—पालसी छप्पर को सभालने के लिए उसके नीचे लगी टेढ़ी डण्डी, बलभी, पाल. 1 ग्वाला 2 राजा 3 कृष्ण का विशेषण शाला गौशाला, गोघर, —पालक 1 ग्वाला 2 शिव का विशेषण,—पालिका—पाली ग्वाले की पत्नी, गोपी, पीत खञ्जन पक्षी का एक प्रकार, पुच्छम् गाय की पूंछ (छः) 1 एक प्रकार का बन्दर 2 दो, चार या चौलोम लड़ी का एक हार,—पुटिकम् शिव के बैल (नादिया) का सिर,—पुत्र जवान बछड़ा, पुरम् 1 नगरद्वार 2 मुख्य दरवाजा—कि० ५।५ 3 मन्दिर का सजा हुआ तोरणद्वार,—पुरीषम् गाय का गोबर —प्रकाण्डम् बढ़िया गाय का सांड, प्रचार गोचरभूमि, पशुओं का चरागाह— याज्ञ० ३।१६८ प्रवेश गौओं का जंगल से लौटने का समय, सायंकाल या सन्ध्या समय, भूत (पु०) पहाड़, मक्षिक (वि०) क्रूर, कुतामार्गी, मण्डलम् 1 भूगोल 2 गौओं का समूह, मतम्—दे० गव्यूति, - मतल्लिका सोथी गाय, श्रेष्ठ गौ,—मध ग्वाला, मासम् गौ का मांस,—मायु 1 एक प्रकार का मृग 2 नीलगाय—अनङ्कुशैर्गवयैर्वनान्तरे न हि सामायकलानि केसरी शि० १६।२५ 3 गाय का पितृदेवता 4 एक गन्धर्व का नाम मुख —मुखम् एक प्रकार का वाद्ययन्त्र भग० १।१३ (ख) 1 मगरमच्छ घड़ियाल 2 एक तरह की (चोर के द्वारा लगाई गई) सेंध (खम्) टेढ़ामेढ़ा बना हुआ मकान, (खम्, —खी) जपमाला रखने की छायाशंकु के आकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला के दानों को गिनते रहते हैं, गूढ (वि०) बैल की भांति बुद्धू, गूथम् गाय का मूत्र, -गृध नीलगाय, गवय, एक प्रकार का बैल, गेय 'गोमेद' नाम का एक रत्न (यह रत्न हिमालय पहाड़ और सिन्धु नदी से प्राप्य है तथा श्वेत, पीला, लाल और गहरे नीले रंग का होता है), घातम् बैलगाड़ी, घ्न 1 ग्वाला 2 गोपाल 3 मलेरा, घ्नकुः 1 मुर्गाबी 2 बन्दी 3 नग्नपुरुष, दिगम्बर साधु, घ्नः 1 गाय का दूध 2 दही 3 छाछ, 'जम् मट्ठा—,राज बढ़िया सांड,—हस्तम् दो कास के बराबर दूरी का माप, - राटिका, राटी मैना पक्षी रोचना एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र, गोपित्त से मानी जाती है अथवा जो गाय के सिर में उपलब्ध होता है, लवणम् नमक की मात्रा जो गाय को दी जाती है—लाङ्गु (गू) ल. लङ्गूर, एक तरह का बन्दर—मा० ९।३०, - लोभी वेश्या, वत्स बछड़ा, वाहिन् (पु०) भेड़िया, वर्धन. मथुरा के निकट वृन्दावन प्रदेश में स्थित एक विख्यात पहाड़, वारिन् (पु०) कृष्ण का विशेषण वज्रा बांझ गाय, वाटम्, वास गौशाला, विद् 1 गोपालक, गौशाला का अध्यक्ष 2 कृष्ण 3 बृहस्पति —विष् (स्त्री०) विष्ठा गोबर, विसर्ग भोर, तड़के (जब गौएँ जंगल में चरने के लिए खोली जाती हैं) वीर्यम् दूध का मूल्य, - वृन्दम् गौओं का लहंडा, वृन्दारक बढ़िया सांड या गाय, -वृष बढ़िया सांड, ध्वज शिव का विशेषण व्रज 1 गोशाला 2 गौओं का समूह, गोचर भूमि, शकृत् (नपुं०) गोबर, शालम्, - ला गौओं को रखने का स्थान, शतकम् गौओं की तीन जोड़ी, ६० गौओं का स्थान, गोठ शब्द ग्वाला -सदृश. नीलगाय, गवय की एक जाति, सर्ग भोर, तड़के (वह समय जब गौएँ प्रातःकाल चरने के लिए खोल दी जाती हैं), सूत्रिका गाय बांधने की रस्सी, स्तन. 1 गाय का थन औंडी 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि 3 चार लड़ की मोतियों की माला, स्तना, नी अंगूरों का गुच्छा, स्थानम् गोशाला, स्वामिन् (पुं०) गौओं का स्वामी 2 धार्मिक साधु 3 संज्ञाओं के साथ लगाने वाली सम्मानसूचक पदवी (उदा० बोपदेव गोस्वामिन्),—हत्या गोवध,—हृतम् (हन्तम्) गोबर हित (वि०) गौओं की रक्षा करने वाला।

गोडुम्ब [?] तरबूज।

गोणी [गुण्+घञ्+ङीष्] 1 गूण, बोरा 2 'द्रोण' के बराबर माप 3 चीथड़े, फटेपुराने कपड़े।

गोण्ड: [गो अण्ड इव] 1 मासल नाभि 2 निम्न जाति का पुरुष, पहाड़ी नर्मदा तथा कृष्णा नदी के मध्यवर्ती विन्ध्य प्रदेश के पूर्वी भाग का निवासी।

गोतम: [गोभि: ध्वस्त तमो यस्य ब० स० पृषो०] अङ्गिराकुल से सबन्ध रखने वाला एक ऋषि, शतानन्द का पिता तथा अहल्या का पति।

गोतमी [गोतम+ङीष्] गोतम की पत्नी अहल्या। सम०—पुत्र शतानन्द का विशेषण।

गोधा [गुध्यते, वेष्ट्यते बाहुरनया—गुध+घञ्+टाप्] 1 धनुष के चिल्ले की चोट से बचने के लिए बाएँ हाथ में बाधी जाने वाली चमड़े की पट्टी 2 घड़ियाल, मगरमच्छ 3 स्नायु, ताँत।

गोधि: (पु०) [गौरत्र धीयतेऽस्मिन् आधारे इन्] 1 मस्तक 2 गला में रहने वाला घड़ियाल।

गोधिका [गुध्नाति—गुध्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की छिपकिली, गोह।

गोप: (स्त्री०—पी) [गुप्+अच्, घञ् वा] 1 रक्षक, रक्षा करने वाला—शालिगोप्यो जगुर्यशः रघु० ४।२० 2 छिपाना, गुप्त रखना 3 दुर्वचन, गाली 4 हड़बड़ी, क्षोभ 5 प्रकाश, प्रभा, दीप्ति।

गोपायनम् [गुप्+आय्+ल्युट्] प्ररक्षण, सरक्षण, बचाव।

गोपायित (वि०) [गुप+आय्+क्त] प्ररक्षित, बचाया हुआ।

गोप्तृ (स्त्री० - स्त्री०) [गुप्+तृच्] 1 प्ररक्षक, सरक्षक, अभिभावक—तस्मिन्वन गोप्तरि गाहमाने—रघु० २।१४, १।५५, मालवि० ५।२० भग० ११।११ 2 छिपाने वाला, गुप्त रखने वाला—(पु०) विष्णु का विशेषण।

गोमत् (वि०) [गो+मतुप्] 1 गौओं से सपन्न,—ती एक नदी का नाम।

गोमय—यम् [गो+मयट्] गोबर, छाणम् - प्रियम् कुकुरमुत्ता, सर्प की छतरी खुभी।

गोमिन् (पु०) [गो+मिनि] 1 मवेशियों का स्वामी 2 गोदड़ 3 पूजा करने वाला 4 बुद्धदेव का सेवक।

गोरभम् [गुर्+स्पुट्] स्फूर्ति, अध्यवसाय, धैर्य।

गोरसम् [गुर्+दृदन्, नि०] ('गोद' भी) मस्तिष्क, दिमाग।

गोल: [गुड्+अच् डस्य ल] 1 पिण्ड, भूगोल 2 दिव्य लोक, अन्तरिक्ष, 3 आकाश मडल 4 विश्वदा का जारज पुत्र, तु० कुड 5 एक राशि पर कई ग्रहों का समागम,—ला 1 काठ की गेंद (इससे लड़के खेलते हैं) 2 गाल, पानी भरने का बड़ा बड़ा 3 लाल सखिया, मैनसिल 4 मसी, स्याही 5 सखी, सहेली 6 दुर्गा देवी 7 गोदावरी नदी।

गोलक: [गुड्+अच् स्वार्थे ल] 1 पिण्ड, भूगोल 2. बच्चों के खेलने के लिए काठ की गेंद 3 पानी का मटका 4 विश्वदा का जारज पुत्र 5. पाँच या पाँच से अधिक ग्रहों का सम्मिलन 6 गुड की पिंडियाँ 7 बुलबुदार गोंद।

गोल्ह् (भ्वा० आ०—गोल्हते) एकत्र होना, इकट्ठे होना, ढेर लगना।

गोष्ठ:, ष्ठम् [गोष्ठ+अच्] (प्राय 'गोष्ठम्') 1 व्रज, गोशाला, गो-घर 2 ग्वालों का स्थान,—ष्ठः सभा या समाज °श्वः व्रज का कुत्ता जो हरेक को भौंकता है, (आल०) वह आलसी पुरुष जो अपने पड़ौसियों की निंदा करता है, **गोष्ठेक्षिप्तः** 'व्रज में निपुण' खेती-बारी, मिथ्या डींग हाँकने वाला।

गोष्ठि, ष्ठी (स्त्री०) [गोष्ठ्+इन्, गोष्ठ+ङीष्] 1 सभा, सम्मेलन 2 जनसमुदाय, समाज 3 सलाप, बातचीत, प्रवचन—गोष्ठी सत्कविभि: सभम्—मनु० १।२८ -मा० १०।२५, तेनैव सह सर्वदा गोष्ठीमनुभवति—पच० २ 4 समुदाय, जमाव 5 पारिवारिक सबध, रिश्तेदार, (विशेषत वह जिससे सबध बनाये रखने की आवश्यकता है) 6 एक प्रकार का एकांकी नाटक, 'पति: सभा का प्रधान, सभापति।

गोष्पदम् [गो पदम्, ष० त०—गो+पद+अच्, नि० सुट् पत्व ष] 1 गाय का पैर 2 धरती पर बना गाय के पैर का चिह्न 3 पैर के चिह्न में समा जाने वाले जल की मात्रा, अर्थात् बहुत ही छोटा गड्ढा 4 गाय के खुर-चिह्न में समाने के योग्य मात्रा 5. वह स्थान जहाँ गौओं का आना-जाना बहुतायत से हो।

गोह्य (वि०) [गुह्+ण्यत्] गोपनीय, छिपाने के योग्य।

गौड्मिक: [गुञ्जा+ठक्] सुनार।

गौड: (पु) एक देश का नाम—स्कंदपुराण इसकी स्थिति इस प्रकार बतलाता है—वङ्गदेश समारभ्य भुवनेशान्तगे शिवे, गौडदेश समाख्यात सर्वविद्याविशारद। 2 ब्राह्मणों का एक भेद,—डा: (ब० व०) गौड देश के निवासी,—डी 1 गुड से बनाई हुई शराब - गौडी पेष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा—मनु० ११।९५ 2 एक रागिनी 3 (अल० शा० में) रीति, वृत्ति या काव्य रचना की एक शैली—सा० द० कार चार रीतियों का वर्णन करता है, काव्य० में केवल तीन का ही उल्लेख है, वहाँ 'परुषा' का ही दूसरा नाम 'गौडी' है—ओज प्रकाशकैस्तैं (वर्णै) तु परुषा (अर्थात् गौडी) काव्य० ७, ओज प्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बर पुन, समासबहुला गौडी—सा० द० ६२७।

गौडिक [गुड+ठक्] ईख, गन्ना।

गौण (वि०) (स्त्री०—णी) [गुण+अण्] 1 मातहत, द्वितीय कोटि का, अनावश्यक 2. (व्या० में) अप्रत्यक्ष

या व्यवधान-सहित (विप० मुख्य या प्रधान)—गौणे कार्येऽपि दुह्यादे प्रधाने नीहृत्वाद्वहाम् सिद्धा० 3 आलंकारिक, रूपक, अप्रधान अर्थ में प्रयुक्त (शब्द या अर्थ आदि) 4 प्रधान और अप्रधान अर्थ की समानता पर स्थापित जैसा कि 'गौणी लक्षणा' में 5 गुणों की गणना में सबद्ध 6 विशेषण।

गौण्यम् [गुण+ष्यञ्] मामूलीपन, निकम्मापन या घटिया अवस्थिति।

गौतम[1] [गोतम+अण्] 1 भारद्वाज ऋषि का नाम 2 गोतम का पुत्र, शतानन्द 3 द्रोण का साला, कृपाचार्य 4 बुद्ध 5. न्यायसूत्रों का प्रणेता। सम०—सभवा गोदावरी नदी।

गौतमी [गौतम+ङीष्] 1 द्रोण की पत्नी, कृपी 2 गोदावरी का विशेषण 3 बुद्ध की शिक्षा 4 गौतम द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र 5 हल्दी 6 गोरोचन।

गौधूमीनम् [गोधूम+खञ्] गेहूं का खेत।

गौनर्द[1] [गोनर्द+अण्] महाभाष्य के प्रणेता पतञ्जलि मुनि का विशेषण।

गौपिक [गोपिका+अण्] गोपी या ग्वाले की स्त्री का पुत्र।

गौप्तेय [गुप्ता+ढक्] वैश्य स्त्री का पुत्र।

गौर (वि०) (स्त्री० रा,-री) [गु+र, वि०] श्वेत—कैलासगौर वृषभारूढ़ा या स्मर० ७३५, द्विरदरदनकल्पद्रुमाग्रस्थ नख्य गंग० ५९ 2 पीला सा, पीत रक्तगौरसुवर्णपिनिलाम्बुजाक्ष—कु० ७।२० रघु० ६।६५, गौरांगि यत्र न कदापि दुर्भगा—रघु० 3 लालरंग का 4 चमकता हुआ, उज्ज्वल 5 विशद, स्वच्छ, सुन्दर, पु० 1 सफेद रंग 2 पीला रंग 3 लाल रंग 4 सफेद सरसों 5 चन्द्रमा 6 एक प्रकार का मेवा 7 एक प्रकार का हरिण रम 1 पचकेसर 2 जायफल 3 सोना। सम० आम्र एक प्रकार का बड़ा बढ़िया आम जिसका गूदा सफेद हो, -सर्षप सफेद सरसों।

गौरक्षणम् [गोरक्षा+ल्युट्] ग्वाले का कार्य या व्यवसाय।

गौरवम् [गुरु+अण्] 1 बड़प्पन, महत्ता (भा०) गुरुत्वमार्थिपर्भगौरवान् रघु० ३।११ 2 महत्त्व, ऊंचा मूल्य या मूल्यांकन स्वविक्रमे गौरवमाददानम्—रघु० ४।१४, १८।५, कार्यगौरवेण मुद्रा० 3 गुरुता या महत्त्व 3 सम्मान, आदर, विचार तथापि तत्र स्थिति ते गुरुनिष्ठमस्ति गौरवम—शि० २।३१, प्रयोजनापेक्षया प्रभुता प्रायश्चल गौरवमाश्रितेषु कु० ३।१, अमर १९ 4 सम्मान, मर्यादा, श्रद्धा कोऽर्थी वा गौरवम् रघु० १।१४६, मनु० २।१४५ 5 दुष्करता 6 (छन्द में) दीर्घता (जैसा कि अक्षर की) 7 (अर्थालंकार की) गहराई—वचनरचना गौरवम भा० १।७।

सम० -आसनम् सम्मान का पद,—ईरित (वि०) प्रसन्न, यशस्वी, विख्यात।

गौरवित (वि०) [गौरव+इतच्] अत्यन्त सम्मानित, गौरव युक्त।

गौरिका [गौरी+कन्+टाप् इत्वम्] कुमारी कन्या, अविवाहिता लड़की।

गौरिल [गौर+इलच्] 1 सफेद सरसों 2 इस्पात या लोहे का घन।

गौरी [गौर+ङीष्] 1 पार्वती जैसा कि 'गौरीनाथ' में 2 आठवर्ष की आयु की कन्या—अष्टवर्षा भवेद्गौरी 3 वह लड़की जो अभी रजस्वला नहीं हुई कुमारी कन्या 4 गोरे या पीले रंग की स्त्री 5 पृथ्वी 6 हल्दी 7 गोरोचन 8 वरुण की पत्नी 9 मल्लिका लता 10 तुलसी का पौधा 11 मजीठ का पौधा। सम० -कान्त, -नाथ शिव का विशेषण,—गुरु हिमालय पहाड़—गौरीगुरावल्लरमाविवेश—रघु० २।७६ कि० ५।२१, -ज कार्तिकेय (जन्म) अमरक, षट् योनिरूपी अर्घा जिसमें शिवलिंग (की मूर्ति) स्थापित किया जाता है, -पुत्र कार्तिकेय,—ललितम हरताल—सुत 1 कार्तिकेय 2 गणेश 3 ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ था।

गौल्मिक [गुल्मन्+ठक्] गुण्डों का साथ व्यभिचार करने वाला।

गौलक्षणिक [गोलक्षण+ठक्] जो गाय के शुभ या अशुभ चिह्नों को पहचानता है।

गौल्मिक [गुल्म+ठक्] किसी सेना की टोली का एक सिपाही।

गौशालिक (वि०) (स्त्री० की) [गोशाला+ठञ्] गौशाला का स्वामी।

ग्मा [गम्+क्विप्, डित्वात् अमा आदेश] पृथ्वी।

ग्रप्, ग्रन्थ् (स्वा० आ० ग्रथते ग्रन्थते) 1 ढीला होना 2 दुष्ट होना 3 झगड़ना।

ग्रथनम् [ग्रन्थ्+ल्युट् नलोप] 1 जमाना, गाढ़ा करना, जम हो जाना 2 एक साथ गूंथना, कसना 3 रचना करना, लिखना (इस अर्थ में 'ग्रन्थना' शब्द भी है)।

ग्रन्थ [ग्रन्थ्+घञ्] ग्रन्थि, गठान, गच्छा, लच्छा।

ग्रथित [भू० क० कृ०] [ग्रन्थ्+क्त, नलोप] 1 एक जगह गूंथा किया हुआ या बांधा हुआ 2 रचित वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितास्य स्वरैरिव शि० २।७२ 3 क्रमबद्ध, श्रेणीबद्ध 4 गाढ़ा किया हुआ 5 गाठदार।

ग्रन्थ (स्वा०, क्रया० पर०, चुरा० उभ०, स्वा० आ०—ग्रन्थति, ग्रन्थते, ग्रथयति ते, ग्रथित, ग्रथयते) 1 गूंथना, बांधना, गांठ लगाना भट्टि० ३।१०५ लाजा ग्रथयत 2 क्रम में रखना, श्रेणीबद्ध करना, निगमिन्द्र निगमिन्द्र में जोड़ना 3 रचना, वर्ण चढ़ाना

ना लिखना, रचना करना - ग्रथ्नाधि काव्यमाधित विन-नार्धशिशम् काव्य० १० 5 बनाना, निर्माण करना, पैदा करना ग्रथ्नन्ति वाप्पबिन्दुनिकर पक्ष्म-पङ्कजस्य का० ६०, भट्टि० १७।६९, उद्- , बाधना, बन्धी करना, मुद्रा० १।४, जलाजंलित करना - लता-प्रतानोद्ग्रथितै स केशै - रघु० २।८ 2 खोलना, ढीला करना।

ग्रन्थ [ग्रन्थ्-+घञ्] 1 बाधना, गूथना (ज्यो० से भी) 2 कृति, प्रबन्ध, रचना, साहित्यिक कृति, पुस्तक ग्रन्थारम्भे, ग्रन्थकृत्, ग्रन्थसमाप्ति आदि 3 दौलत, सम्पत्ति 4 ३२ मात्राओं का श्लोक, अनुष्टुप् छंद। सम० कार, कृत् (पु०) लेखक, रचयिता ग्रन्था-रम्भे समुचितेष्टदेवता ग्रन्थकृत्परामृशति - काव्य० १, --कुटी, कुटी 1 पुस्तकालय 2 कलामन्दिर, विस्तर, - विस्तारः ग्रन्थ का कई भागों में विभा-जन, विस्तारमयी शैली, - सन्धि किसी पुस्तक का अनुभाग या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाग' आदि के पर्याय 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत देखें)।

ग्रन्थनम्-ना [ग्रन्थ्+ल्युट्] दे० 'ग्रथन'।

ग्रन्थि [ग्रन्थ्-+इन्] 1 गाँठ, गुच्छा, उभार स्तनौ मांस-ग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ- भर्तृ० ३।२०, इसी प्रकार 'मेदोग्रन्थि' 2 स्त्री का बंधन या गाँठ, वस्त्र की गाँठ - इदमुपहितमूढग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, मच्छ० १।१, मनु० २।४३, भर्तृ० १।५७ 3 रुपया-पैसा रखने के लिए कपड़े के अंचल में गाँठ, अतएव कहावत, धन, सम्पत्ति कुसीदादाप्तिरद्य परकरगतग्रन्थि-शमनात पञ्च० १।११ 4 नकुल की गाँठ, गन्ने आदि का पोर। की गाँठ या जोड़ 5 शरीर के अवयवों का जोड़ 6 देहायन, लोहना-मराठना, मिथ्यात्व, सचाई में उलट फेर 7 शरीर की वाहिकाओं में सूजन कठोरता। सम०--छेदक, --भेद, - मोचकः गिरहकट जेबकतरा अङ्गुलीग्रन्थिभेदस्य छेदयेत् प्रथमे ग्रहे --मनु० ९।२८७, याज्ञ० २।२७४,- पर्ण, पर्णम् 1 एक सुगन्धयुक्त वृक्ष--विक्रमांक० १।१७ 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, --बन्धनम् 1 विवाह के अवसर पर दूल्हे और दुल्हिन का गठजोड़ा करना 2 बन्धन, हर मन्त्री।

ग्रन्थिक [ग्रन्थि+कै+क] 1 ज्योतिषी, दैवज्ञ 2 राजा विराट के यहाँ अज्ञातवास के अवसर पर नकुल का नाम।

ग्रन्थित - दे० ग्रथित।

ग्रन्थिन् (पु०) [ग्रन्थ+इनि] 1 जो बहुत सी पुस्तकें पढ़ता हो, किताबों - ग्रन्थिभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वरा -मनु० १२।१०३ 2 विद्वान्, पण्डित।

ग्रन्थिल (वि०) [ग्रन्थिर्विद्यतेऽस्य - लच्] गाँठदार, जटिल।

ग्रस् । (भ्वा० आ० -ग्रसते, ग्रस्त) 1 निगलना, ग्रसकना, खा जाना, समाप्त कर देना स इमां पृथिवीं कृत्स्नां संक्षिप्य ग्रसते पुनः--महा०, भग० ११।३० 2 पकड़ना 3 ग्रहण लगना ह्रासेव ग्रसते दिनेश्वरनिभा-प्राणेश्वरी भास्वरी भर्तृ० २।३४, हिमांशुमाशु ग्रसते तन्नन्दिन्न स्फुट फलम् - शि० २।४९ 4. शब्दों का मिला-जुला कर अस्पष्ट लिखना 5 नष्ट करना, क्षय-- नष्ट करना भट्टि० १२।४, 11 (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०--ग्रसति, ग्रासयति-ते) खाना निगलना।

ग्रसनम् [ग्रस्+ल्युट्] 1 निगलना, खा लेना 2 पकड़ना सूर्य या चन्द्रमा का खण्डग्रास।

ग्रस्त (भू० क० कृ०) [ग्रस्+क्त] 1 खाया हुआ, निगला हुआ 2 पकड़ा हुआ पीड़ित, ग्रस्त, अधिकृत,--ग्रह , विषद्° आदि 3 ग्रहण-ग्रस्त,--स्तम् अर्थोच्चारित शब्द या वाक्य। सम०--अस्तम् ग्रहणग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना,---उदयः ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का उगना।

ग्रह् (क्रया० उभ० (वेद में 'ग्रभ्')---गृह्णाति, गृहीत, प्रे० ग्राहयति, सन्नन्त--जिघृक्षति)1 पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, पकड़ लेना, थामना, लपक लेना, कस कर पकड़ना-- तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च माधवी --रघु० १।५७ - आलाने गृह्यते हस्ती बाजी बल्गासु गृह्यते - मृच्छ० १।५०, न कण्ठे अग्राह्य --का० ३६३ पाणिं गृहीत्वा, करं गृहीत्वा 2' प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, बलपूर्वक वसूल करना-- प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् --रघु० १।१८, मनु० ७।१२४, ९।१६२ 3 हिरासत में लेना गिरफ्तार करना बन्दी बनाना- बन्दिग्राह गृहीत्वा विक्रम० १, यात्स्वम् बारान् गृह्णीयात्- मनु० ८।३४ 4 गिर-फ्तार करना, रोकना, पकड़ना --भग० १।३५ 5 मोह लेना, आकृष्ट करना---महाराजगृहीतहृदयया मया --विक्रम० ४, हृदये गृह्यते नारी--मृच्छ० १।५०, माघर्यमोघे हरिणान् ग्रहीतुम्--रघु० १८।१३ 6 जीत लेना उकसाना, अपनी ओर करने के लिए फुस-लाना लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् चाण० ३३ 7 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, अनुकूल करना ---ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया महामहानुभावा हि सिता-त्तमर्षिन --शि० १।१७, ३३ 8 ग्रस्त करना, पकड़ना, चिपटना (भूत प्रेतादिक का) जैसे कि 'पिशाचगृहीत' या 'वेतालगृहीत' में 9 धारण करना, लेना--बुद्धिम-गृहीत् ग्रहणम् --शि० १।२३, भट्टि० १९।२९ 10 सीखना, जानना, पहचानना, समझना-- कि० १०।८ 11 ध्यान देना, विचार करना, विश्वास करना, मान लेना - अयमपि पितृपैतामहीमा तथैव गृही तम् --श० ६, परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न

गृह्यता वच —शा० २।१८ एव उनो गृह्णाति —मालवि० १, मुद्रा० ३ 12 (इन्द्रियों द्वारा) समझ लेना, या प्रत्यक्ष करना —व्यानिनाद्यम्‌ गृह्णतो नयो —रघु० ११।१५ 13 पारंगत होना, मस्तिष्क में पकड़ना, समझ लेना,—रघु० १८।४६ 14 अनुमान लगाना, अटकल लगाना, अन्दाज करना —नेत्रवक्त्र-विकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मन —मनु० ८।२६ 15 उच्चारण करना, उल्लेख करना, (नाम आदि का) यदि ह्यस्याप्यसं नामापि न गृह्णीयात् का० ३०५, न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु मनु० ५।१५७ 16 मोल लेना, खरीदना क्रियता मूल्येनैतत्पुस्तकं गृह्यताम्—पञ्च० २, याज्ञ० २।१६९, मनु० ८।२०१ 17 किसी को वंचित करना, छीन लेना, लूट लेना, बलपूर्वक ले लेना, भट्टि० ९।९, १५।६३ 18 पहनना, धारण करना (कृत्रादिक) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि —भग० २।२२ 19 गर्भ धारण करना 20 (उपवास) रखना 21 ग्रहण लगना 22 उत्तरदायित्व लेना [इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार से परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे इसे जोड़ा जाय] प्रेर० 1 ग्रहण करवाना, पकड़वाना, स्वीकार करवाना 2 विवाह में उपहार देना 3 सिखाना परिचित करवाना, अनु—, अनुग्रह करना, आभार मानना, कृपा प्रदर्शित करना —अनुगृहीतोऽहमनया मघवतः सभावनया —शा० ७, अनुगृहीता स्म 'अनेक धन्यवाद' 'हम बड़े आभारी हैं', अनुनम् विनम्र नमस्कार करना, अप —, दूर करना, फाड़ना, अभि बलपूर्वक पकड़ना, अव —, 1 विरोध करना, मुकाबला करना 2 दण्ड देना 3 हस्तगत करना, पराभूत करना, आ —, आग्रह करना, उद्—, 1 उठाना, ऊपर करना, सीधा खड़ा करना —उद्गृहीतालकान्ता मेघ० ८, भट्टि० १५।५२ 2 जमा करना, निकालना, उप —, 1 जुटाना 2 पकड़ लेना, अधिकार में ले लेना मनु० ७।१८४ 3 स्वीकार करना मदद देना 4 सहायता करना, अनुग्रह करना, नि —, 1 थाम लेना, जांच-पड़ताल करना 2 दमन करना, रोकना, दबाना, नियंत्रण करना —भग० २।६८ 3 ठहराना, बांधा डालना निगृहीतो बलाद् द्वारि महा० 4 दण्ड देना, सजा देना मनु० ८।३१०, ९।३०८ 5 पकड़ना, लेना, हाथ डालना तमार्यगुप्तं निगृह्यानयेनं रघु० २।३३ 6 (ओष्ठ आदि) बंद करना, मुद्रा—माधुरोक्षिणी निगृह्य —मृच्छ० २, परि —, 1 कौली भरना, आलिंगन करना 2 घेरना 3 हस्तगत करना, पकड़ना 4 लेना, धारण करना 5 स्वीकार करना 6 सहायता करना, संरक्षण देना, प्र —, 1 लेना, पकड़ना 2 दमन करना, रोकना 3 फैलाना, विस्तार करना, प्रति —, 1 थामना, पकड़ना, सहायता देना वयंवरप्रतिगृहीतमेनम् मालवि० ४, मनु० २।४८ 2 लेना, स्वीकार करना, प्राप्त करना ददाति प्रतिगृह्णाति —पञ्च० २, अमोघा प्रतिगृह्णन्त्यास्त्रमस्त्रविदः —रघु० १।४४, २।२२ 3 उपहार स्वरूप लेना या स्वीकार करना 4 शत्रुवत् व्यवहार करना, विरोध करना, मुकाबला करना, रोकना—प्रतिजग्राह काकुत्स्थस्तन्मन्युमंजसाधनः रघु० ४।४०, १२।४७ 5 पाणि-ग्रहण करना मनु० ९।९२ 6 आज्ञा मानना, अनुकूल होना, ध्यान से सुनना 7 आश्रय लेना, अवलंबित होना, वि—, 1 थामना या पकड़ना 2 कलह करना, लड़ना, विवाद करना, विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बलं य इन्द्रियस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवं वि० १।५१, भट्टि० ६।८६ १७।२३, सम् —, 1 संग्रह करना, एकत्र करना संचय करना, जोड़ना समृद्धं धनम्, पाशान् 2 मानुग्रह प्राप्त करना 3 दमन करना, रोकना, (घोड़ा का) लगाम देना 4 (धनुष आदि की) डोरी खोलना, ॥ (स्वा० पर०-क्र्या० उभ० गृह्णति, गृह्णीते) लेना, प्राप्त करना आदि।

ग्रह [ग्रह्+अच्] 1 पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार जमाना, अभिग्रहण रुरुधुः कवचग्रहे रघु० १९।३१ 2 पकड़, ग्रहण, प्रभाव कर्कटकग्रहात् —पञ्च० १।२६० 3 लेना, प्राप्त करना, स्वीकार करना, प्राप्ति 4 चुराना, लूटना—अङ्गुलीसन्धिभेदस्य छेदयेत्प्रथमे ग्रहे —मनु० ९।२७७ इसी प्रकार 'गोग्रह' 5 लूट का माल, लूटमारी 6 ग्रहण लगना द० ग्रहण 7 ग्रह (यह गिनती में नौ है—सूर्यश्चन्द्रो मंगलश्च बुधश्चापि बृहस्पति, शुक्र शनैश्चरौ राहु केतुरेते ग्रहाः स्मृताः) —नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलापि (रात्रि) रघु० ६।२२, ३।१३, १२।२८, गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता शनैश्चरास्था पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा —भट्ट० ११।७ 8 उल्लेख उच्चारण, दुहराना (नाम आदि का) नामजातिग्रहं त्वेषामभिद्रोहेण कुर्वतः —मनु० ८।२७१ अमर ८३ 9 मगरमच्छ, घड़ियाल 10 पिशाचविशेष, भूतना 11 अनिष्टकर राक्षसों का एक विशेष वर्ग जो बच्चों से चिपट कर उन्हें रोते हुए या कुम्हलाते हुए छोड़ देता है 12 (विचार व धारणाओं का) ग्रहण, प्रत्यक्षीकरण 13 समझने का अंग या उपकरण 14 दृढ़ग्राहिता, ध्येय, अध्यवसाय 15 प्रयोजन, आकलन 16 अनुग्रह, संरक्षण। सम०

अधीन (वि०) ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर, **अवमर्दन**, राहु का विशेषण, (नम्) ग्रहों की टक्कर, **अधीश**, सूर्य, **आधार**, आश्रय ध्रुव नक्षत्र (नक्षत्रों का स्थिर केन्द्र), **आश्रय** 1 मिर्गी 2 भूता-

वेश, -आलुञ्चनम् अपने शिकार पर झपटना, और उसे फाड डालना दयेनो ग्रहालुञ्चने—मृच्छ० ३।२०, -ईश: सूर्य, -कण्ठोल: राहु का विशेषण,—गति: ग्रहों की चाल चिन्तक: ज्योतिषी, -दशा जन्मराशि की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, वह समय जब कि उनका शुभाशुभ फल होता है,-देवता ग्रह विशेष का अधिष्ठातृ देवता,-नायक 1 सूर्य 2 शनि का विशेषण, -नेमि: चन्द्रमा,—पति 1 सूर्य 2 चन्द्रमा,

पीडनम् -पीडा 1 ग्रहजनित पीडा, बाधा 2 ग्रहण लगना – शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्- भर्तृ० २।९१, – मण्डलम्, ली ग्रहों का वृत्त,- युति: (स्त्री०) एक ही राशि पर ग्रहों का संयोग,--युद्धम् ग्रहों का परस्पर विरोध या संघर्ष, -राज: 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 बृहस्पति, – वर्ष ग्रहों की चाल के अनुसार माना जाने वाला वर्ष, - विद् ज्योतिषी, शान्ति (स्त्री०) मन्त्र, जप, पूजनादि के द्वारा ग्रहदोष की निवृत्ति का उपाय किया जाना, ग्रहों को प्रसन्न करना, समागम: कई ग्रहों का इकट्ठा हो जाना।

ग्रहणम् [ग्रह+ल्युट्] 1 पकडना, फांसना, अभिग्रहण - इवा मृगग्रहणेऽशुचि –मनु० ५।१३० 2 प्राप्त करना, स्वीकार करना, ले लेना आचार्यकुलमग्रहणात्—रघु० ७।१७ 3 उल्लेख करना, उच्चारण करना नामग्रहणम् 4 पहनना, धारण करना--सोत्तरच्छदमध्यास्त नेपथ्यग्रहणाय स –रघु० १७।२१ 5 ग्रहण लगना—याज्ञ० १।२१८ 6 अवबोधन, समझ, ज्ञान न परेषां ग्रहणम्य गोचरम् –मै० २।९५ 7 अधिगम, अवाप्ति, मन से समझ लेना, पारगत होना लिपेर्यथावद्ग्रहणेन वाङ्मय नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८ 8 शब्द पकडना, प्रतिध्वनि –आदिग्रहणगुर्वभिर्गजितैर्नर्तयेथा —मेघ० ४४ 9 हाथ 10 इन्द्रिय।

ग्रहणि,–णी (स्त्री०) [ग्रह् + अनि, ग्रहणि+ङीष्] अतिसार, पेचिश।

ग्रहिल (वि०) [ग्रह+इलच्] 1 लेनेवाला, स्वीकार करने वाला 2 न दबने वाला, अटल, कठोर -न निशाखिलयापि वापिका प्रसमाद ग्रहिलेव मानिनी नै० २।७७।

ग्रहीतृ (वि०) (स्त्री० –त्री) [ग्रह्+तृच्, इटो दीर्घ] 1 प्राप्तकर्ता, जैसा कि 'गुणग्रहीतृ' में 2 प्रत्यक्षज्ञाता, निरीक्षक 3 कर्मचारी।

ग्राम [ग्रस्+मन्, आदन्तादेश] 1 गांव, पुरवा---पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्नपरीक्षा मालवि० १, त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुल त्यजेत्, ग्राम जनपदस्यार्थे स्वात्मार्थे पृथिवी त्यजेत् हि० १।१४९, रघु० १।४४, मेघ० ३० 2 यश, जाति 3 समूहचय, संग्रह (किसी वस्तुओं का) उदा० गुणग्राम, इन्द्रियग्राम भग० ८।१९, ९।८ 4 सरगम, (संगीत में) स्वरग्राम या सुरक्रम। सम० -अधिकृत:,--अध्यक्ष --ईक्ष:,—ईश्वर: ग्राम का अधीक्षक, मुखिया या प्रधान,-अन्त: गांव की सीमा, गांव की समीपवर्ती जगह–मनु० ४।११६, ११।७९,—अन्तरम् दूसरा गांव, --अभिकम् गांव का पडौस,—आचार: गांव के रस्मरिवाज,—आजनम् शिकार,--उपाध्याय: गांव का पुरोहित,– कण्टक: 1 'गांव के लिए कांटा' जो गांव को कष्ट देने वाला हो 2 चुगलखोर, कुक्कुट: पालतू मुर्गा, कुमार: 1 ग्राम का सुन्दर बालक 2 देहाती लडका, –कूट: 1 गांव का श्रेष्ठ पुरुष 2 शूद्र,—कृह्य (वि०) गांव के बाहर होने वाला,--गोदुह् गांव का ग्वाला,--घात: गांव को लूटना,-- घोषिन् (पु०) इन्द्र का विशेषण, चर्या स्त्री संभोग,—चैत्य: गांव का पवित्र 'गूलर' का वृक्ष मेघ० २३,--जालम् गांवों का समूह, ग्राममण्डल, जी: 1 गांव या जाति का नेता या मुखिया 2 सेना, प्रधान 3 नाई 4 विषयासक्त पुरुष (स्त्री०) 1 वारांगना, वेश्या 2 नील का पौधा,- तक्र गांव का बढई,—देवता गांव का अभिरक्षक देवता, धर्म स्त्री-संभोग, –प्रेष्य किसी गांव या जाति का दूत या सेवक,--बहुरिका झगडा, फ़साद, हंगामा, हल्लागुल्ला, -मुख: बाजार, मंडी, —रक्षः कुत्ता, -याजक:,-- याजिन् (पु०) 1 ग्रामपुरोहित, वह पुरोहित जो सभी जातियों के धार्मिक संस्कार कराता है, फलत पतित ब्राह्मण समझा जाता है 2 पुजारी,—लुण्ठनम् गांव को लूटना - वास: (ग्रामे वास: भी) गांव में रहना -वल्क: नपुंसक क्लीव, –संघ: ग्राम-निगम.–सिंह: कुत्ता,–स्थ (वि०) 1 गांव में रहने वाला, ग्रामीण 2 गांव का सहवासी, एक ही गांव का रहनेवाला साथी,–हारक बहनोई, जीजा।

ग्रामटिका [?] गांवडी, अभागा गांव, दरिद्र गांव—कतिचिदहानि ग्रामटिकायां वर्तनदुर्विदग्ध--प्रश० १।

ग्रामिक (वि०) (स्त्री०–की) [ग्राम+ठक्] 1 देहाती, गंवार 2 अक्खड, —क: गांव का चौधरी या मुखिया मनु० ७।११६, ११८।

ग्रामीण: [ग्राम+खञ्] 1 ग्रामवासी, गांव का रहने वाला —ग्रामीणवध्वस्तमलक्षिता अनैश्चिर वृत्तीनामुपरि वपलोकयन् –शि० १२।३७ अमर० ११ 2 कुत्ता 3 कौवा 4 सूअर।

ग्रामेय (वि०) (स्त्री०–यी) [ग्राम+ढक्] गांव में उत्पन्न, गंवार, -यी रंडी, वेश्या।

ग्राम्य (वि०) [ग्राम+यत्] 1 गांव से संबंध रखने वाला गांव में रहने का अभ्यस्त –मनु० ६।३ ७।१२० 2 गांव में रहने वाला देहाती गंवार अल्पव्ययेन सुन्दरि, ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति - छ० १।३ 3 घरेलू,

पालवू (पशु आदि), 4 आदर्षित (क्रिप० 'कन्') 5 नीच अशिष्ट (ग्रामर की तरह) केवल ओछे व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त -अन्नम् देहि मे मायें कामधाण्डालनुत्तमे —रस० या कटिसूत्रे हाले मन —सा० द० १७४, यह ग्राम्य उक्तियों के उदाहरण हैं 6 अभद्र, अश्लील, -ग्रामः पालवू शूकर —न्यम् 1 गवार भाषण 2 देहात में तैयार किया हुआ भोजन 3 मैथुन। सम० अश्व, गधा, कर्मन् ग्रामीण का व्यवसाय,—कुक्कुटम्, कुसुम, अर्भः 1 ग्रामीण का कर्तव्य 2 स्त्रीसंभोग, मैथुन, -पशुः पालवू जानवर, -बुद्धि (वि०) उजड्ड, मूर्खा-किया, अनाड़ी, -वल्लभा वेश्या, रंडी, -सुखम् स्त्री-संभोग, मैथुन।

ग्रावन (पु०) [गृ+ल्युट्] 1 पत्थर, चट्टान -किं हि नामैतदम्बुनि मज्जन्त्यग्रावणि ग्रावाणः सप्लवन्त इति —महावी० १, अपि ग्रावा रोदिति अपि दलति वज्रस्य हृदयम्—उत्तर० १।२८ शि० ६।२३ 2 पहाड़ 3 बादल।

ग्रास (पुं० घञ्) [ग्रस्+घञ्] 1 कौर, कौर के बराबर कोई वस्तु मनु० ३।२३३, ६।२८ याज्ञ० ३।५५ 2 भोजन, खाद्य 3 सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहणग्रस्त भाग। सम० आच्छादनम् भोजन वस्त्र अर्थात् अनिवार्य जीवन साधन -ग्रहणम् गले में अटकने वाला (मछली का काँटा) आदि कोई पदार्थ।

ग्राह वि० [स्त्री० ही] [ग्रह्+घञ्] पकड़ने वाला मुट्ठी में जकड़ने वाला लेने वाला, थामने वाला प्राप्त करने वाला ह 1 पकड़ना, जकड़ना 2 पकड़-पाल मनोग्रहच्छ—रामग्रहावली—भर्तृ० ३।४५ 3 बन्दी 4 स्वीकरण 5 समझना, ज्ञान 6 हठ, दुराग्रह -, निश्चय, दृढ़ निश्चय—भग० १७।१९ 8 रोग।

ग्राहक (वि०) (स्त्री० इका) [ग्रह्+ण्वुल्] प्राप्त करने वाला, लेने वाला, -कः 1 दास, क्रयी 2 विक्रेता 3 क्रेता, खरीदार 4 पुलिस अधिकारी।

ग्रीवा [गिरति-गिरा-गा+वनिप्, नि०] गर्दन, गर्दन का पिछला भाग -ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः श० १।७। सम० -घण्टा घोड़े के गले में लटकता हुआ घंटा।

ग्रीवायिका द० ग्रीवा।

ग्रीवेयक (पु०) [ग्रीवा+ढक्] ऊँट।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रसते ग्रस्यते वा-ग्रस्+मनिन्] गरम उष्ण, -ष्मः 1 गर्मी का मौसम, गरम ऋतु (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने) -ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम् श० १ रघु० १६।५४ भामि० १।३५ 2 गर्मी, उष्णता। सम० कालीन (वि०) गर्मी के मौसम से संबंध रखने वाला, उद्भवा, -का, -भवा सन मल्लिका लता, नेवारी।

ग्रैव (स्त्री०-वी), ग्रैवेय (स्त्री०-यी) (वि०) [ग्रीवा+अण्, ढक्] गर्दन पर होने वाला या गर्दनसंबंधी, -वम्, -यम् 1 गले का पट्टा, या हार 2 हाथी की गर्दन में पहनी जाने वाली जंजीर -नाजमत् करिणां गैव त्रिपदीछेदिनामपि रघु० ४।४८, ७५।

ग्रैवेयकम् [ग्रीवा+ढक्+कन्] 1 गले का आभूषण उदा० अस्माकं मलि वासवी न चिरं ग्रैवेयकं रोज्झतकम्—सा० द० ३ 2 हाथी के गले में पहने जानेवाली जंजीर।

ग्रैष्मक (वि०) (स्त्री० स्त्रिका) [ग्रीष्म+अण्] 1 गरमी के मौसम में बोया हुआ 2 गरमी के ऋतु में दिया जाने वाला (ऋण आदि)।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट् पुक् ह्रस्व] 1 मुर्झाना सूख जाना 2 थकावट।

ग्लह् (स्वा० आ० ग्लहते, ग्लहत) खाना, निगलना।

ग्लह (स्वा० उभ० चुरा० आ०-ग्लहति-ते, ग्लाहयति-ते) 1 जूआ खेलना, जूए में जीतना 2 दाव पर रखना।

ग्लह [ग्लह्+अप्] 1 पासे से खेलने वाला 2 दाव, बाजी लगाना शर्त लगाना 3 गाय 4 जूआ खेलना, 5 विमान।

ग्लान [भू० क० कृ०] [ग्लै+क्त] 1 कमजोर, श्रान्त, थका हुआ, मंद, अवसन्न 2 रोगी बीमार।

ग्लानि (स्त्री०) [ग्लै+क्तिन्] 1 अवसाद, कमजोरी, थकावट मनश्च ग्लानिमृच्छति—मनु० ४।५, श्रङ्गग्लानि सुरतजनितां - मेघ० ७०, ३१, शि० ६।६ 2 क्लान्ति श्रम -आत्मोदयं परग्लानिदृश्यं नीतिरतीयसी शि० २।२०, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत भग० ४।७ 3 दुर्बलता, निर्बलता 4 बीमारी।

ग्लानु (वि०) [ग्लै+क्नु] कमजोर, श्रान्त।

ग्लुच् (स्वा० पर०—ग्लोचति ग्लुक्त) 1 जाना, चक्कर-फिरना 2 चुराना, लूटना 3 छीन लेना, वञ्चित करना—बहुनामपलुचने धनानां अलमाचोल्वरणे यश —भट्टि० १५।३०।

ग्लै (स्वा० पर० -ग्लायति, ग्लान) 1 विरक्ति या अरुचि अनुभव करना, काम करने को जी न करना, (तुमुन्नन्त के साथ) 2 कमजोर या श्रान्त होना, थका हुआ या अवसन्न अनुभव करना 3 साहस छोड़ना, हतोत्साह होना उदास होना भट्टि० १९।१७, ६।१२ 4 क्षीण होना, मलिन होना —प्रेर० ग्लपि ग्लापयति 1 सुखा देना, शुष्क कर देना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 थका देना।

ग्लौ (पु०) [ग्लै+औ] 1 चन्द्रमा 2 कपूर।

घ (वि०) [हन्+टक्, टित्वात्, धत्व च] (यह केवल समास में उत्तर पद के रूप में प्रयुक्त होता है) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला—जैसा कि पाणिघ और राजघ आदि में।—कः 1. घण्टी 2 खड्गधारण, शस्त्रास्त्रों, टिन्टिनाना।

घट् । (भ्वा० आ० घटते, घटित) व्यस्त होना, प्रवृत्त करना, प्रयास करना, जानबूझ कर किसी काम में लगना (तुमुन्नत, अधि० या सप्त० के साथ)—दयिता बाहुबल्ल घटस्व भट्टि० १०।४०, अगदेन मम घोढुमघटिष्ट १५।१७, १७।२६, १६।२३, २०।२४, २२।३१ 2 होना घटित होना, सम्भव होना—प्रार्थस्तपोभिरधवाऽभिमत मदार्थं कृच्छ्र घटेत सुहृदो यदि तत्कृते स्यात् मा० १।९, क्या यह सम्भव है, कस्यापरस्योदुमयं प्रसूते यादृग्विसृष्टिर्घटते भटस्य नै० २२।२५ 3 आना, पहुंचना। प्रेर०—घटयति 1 एकत्र करना, मिलाना, एक जगह करना इत्थ नारायटयिनुमल कामिभि.—शि० ५।८७, अनेन भैमी घटयिष्यतेत्यया—नै० १।४६, कथा सखि भीमो विघटयति द्वय चेतसा वेणी० १।१०, भट्टि० ११।११ 2 निकट लाना या रखना सम्पर्क में लाना, धारण करना घटयति घन कण्ठाञ्जेषे रसाल पयोधरी—रत्न० ३।९ घटय जघने काञ्चीम् - गीत० १२ 3 निष्पन्न करना, प्र, शित करना, कार्यान्वित करना तटस्थ स्वानर्थान् घटयति च सौम्य च भजते —पा० १।१४, (अभिमतम्) आनीय झटिति घटयति—रत्न० १।९ 4 रूप देना, गढ़ना, आकार देना, निर्माण करना, बनाना —एवमभिधाय वैनतेयम जघटयत् पक्ष १, कान्ते कथ घटितवानुपलभ्य चेत मुमार० ३, घटय भुजबन्धनम् गीत० १० 5 प्रयोजित करना, उकसाना स्नेहौषो घटयति मा सखायि वक्तुम् —भट्टि० १०।७३ 6 मलना, स्पर्श करना, आ-, 1 व्यस्त होना, काम में लगना - भट्टि० २१।१७ 2 आरम्भ करना, शुरू करना—भट्टि० १४।७७ वि—1 वियुक्त होना, अलग होना 2 बिगड़ना, मर्यादा होना, रुक जाना, ठहर जाना बन्द कर देना -प्रेर० अलग २ करना, तोड़ना, खोलना, तोड़ कर खोलना कपाटमुद्घाटयति मृच्छ० ३, निरर्गलमुद्घाटयन्ती -भर्तृ० १।६३।

घट [घट्+अच्] 1 मिट्टी का मटका, घड़ा, मर्तबान, पानी देने का पात्र कृते पटय पयोनिधावपि घटो गच्छति तुल्य जलम भर्तृ० २।४८ 2 कुम्भ राशि 3 हाथी का मस्तक 4 कुम्भक प्राणायाम 5. २० तोले के बराबर तोल 6. स्तम्भ का एक अङ्ग। सम० आच्छोद रथ या कुर्सी आदि को पूरा ढकने का कपड़ा,—उद्भव,, —ज, -योनिः- सम्भव अगस्त्य मुनि के विशेषण —दुघस (स्त्री०) गाय जिसकी औड़ी दूध से भरी हो—गा कोटिश स्पर्शयता घटोघ्नी —रघु० २।४९, —कर्परः 1 कवि का नाम 2 ठीकरा, बर्तन का टुकड़ा —योग्येय येन कविना यमकै परेण तस्मै वदेय-मुदक घटकर्परेण —घट० २२,—कार,- कृत् (पु०) कुम्हार,- -गृह: पानी भरने वाला, दासी कुटनी नृ० कुम्भदासी,—दर्शनम् पतित व्यक्ति का अन्त्येष्टि संस्कार करना (जो अपने इस जीवन में अपनी जाति में फिर सम्मिलित होना न चाहता हो), —भेदनकम् बर्तन बनाने का एक उपकरण, —राज, पक्की मिट्टी का जलपात्र, —स्थलम् दुर्गा के रूप में जल-कलश की स्थापना।

घटक (वि०) [घट्+णिच्+ण्वुल्] 1 प्रयास करने वाला प्रयत्नशील -एते सत्पुरुषाः परार्थघटका स्वार्थं परित्यज्य ये -भर्तृ० २।७४ 2 प्रकाशित करने वाला, निष्पन्न करने वाला 3 सारभूत अंश बनाने वाला, अवयव, उपादान, -कः 1 वह वृक्ष जिसके फूल दिखाई न देकर फल ही लगे 2 सगाई, विवाह तै कराने वाला, एक अभिकर्ता जो वंशावली मिला कर विवाह-सम्बन्ध तै कराये 3 वंशावली का जानने वाला।

घटना [घट्+ल्युट्] 1 प्रयास, प्रयत्न 2 होना घटित होना 3 निष्पन्नता, प्रकाशन, कार्यान्वयन जैसा कि 'अघटितघटना' में 4 मिलाना, एकता, एक स्थान पर मिलाना, जोड़—तप्तेन तप्तमयसा घटनाय योग्यम् विक्रम० २।१६, दैवद्वयार्घघटनारचितम्—का० २३९ 5 बनाना, रूप देना, आकार देना।

घटा [घट+अच्+टाप्] 1 चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास 2 सङ्ख्या, टोली, समाज -प्रलयघनघटा—का० १११, कौशिक-घटा—उत्तर० २।२९, ५।६, मातङ्गघटा - शि० १।६४ 3 सैनिक कार्य के लिए एकत्र हुई हाथियों की टोली 4 सभा।

घटिक: [घट+ठन्] घड़नई के सहारे नदी पार करने वाला कम् नितम्ब, चूतड़।

घटिका [घटी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 एक छोटा घड़ा, करवा, छोटा मिट्टी का बर्तन —नार्यं श्मशानघटिका इव वर्जनीया पञ्च० १।१९२ एष क्षीयति कपयन्त्र घटिकान्यायप्रसक्तो विधि मृच्छ० १०।५९ 2 २४ मिनट का समय, एक घड़ी 3 एक जल घट जिससे दिन की घड़ियाँ गिनी जाती थी 4 टखने के ऊपर का तथा पिण्डली से नीचे का पतला भाग।

घटिन् (पु०) [घट+इनि] कुम्भ राशि।

घटिन्धय (वि०) [घटी+ध्मा+क, मुम्, धमादेश] घड़ों में फूंक मारने वाला, जैसे कुम्हार।

घटिन्धय (वि०) [घटी+धेट्+क, मुम्, ह्रस्व] जो घड़ा भर (पानी) पीता है।

घटी [घट+ङीष्] 1 छोटा घड़ा 2 २४ मिनट के बराबर समय की माप 3 छोटा जल-घड़ा जिससे दिन की घड़ियां गिनने का कार्य लिया जाय। समः—कार कुम्हार, गृह,—गृह (वि०) दे० 'घटगृह', यन्त्रम् 1 पानी ऊपर उठाने वाली रहट की घड़िया, कुएं पर पड़ा हुआ रस्सी-डोल दे० अरघट्ट 2 दिन का समय जानने का एक साधन।

घटोत्कच [?] हिडिंबा नाम की राक्षसी से उत्पन्न भीम का एक पुत्र (यह बहुत बलवान् पुरुष था, कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह बहुत वीरतापूर्वक पाण्डवों की ओर से लड़ा परन्तु इन्द्र से प्राप्त शक्ति द्वारा कर्ण के हाथों मारा गया—तु० मुद्रा० २।१५)।

घट्ट (म्वा० आ०—घट्टते- बहुधा चुरा० उभ० घट्टयति है, घट्टित) 1 हिलाना, हरकत देना जैसे 'वायुघट्टिता लता' में 2 स्पर्श करना, मलना, हाथों से मलना विटजनलक्षघट्टितेव वीणा मृच्छ० १।२४, भट्टि० १४।२ 3 चिकनाना, सहलाना 4 ईर्ष्या-द्वेष की भावना से डोलना 5 बाधा पहुंचाना, क्षुब्ध करना, खोलना, वारि - प्रहार करना शि० ९।६४, वि, 1 हड़काना कर देना, तितर-बितर करना, बखेरना, उड़ा देना शि० १।६४, भर्तृ० ३।५४ 2 मलना, घिसना, रगड़ना काण्डवानलविघट्टितोर्वीधमाना ऋतु० ३।८, ४।९, कु० १।९, कि० ८।४५, शि० ८।२४, १३।४१, सम् 1 घनघनाना 2 इकट्ठा करना, मिलाना 3 एकत्र करना, संचय करना 4 रगड़ना, घिसना, दबाना रघु० ६।७३।

घट्ट [घट्ट+घञ्] 1 घाट नदी के तट से पानी तक बनी सीढ़ियां 2 हिलना-डुलना, आन्दोलन 3 चुंगी घर। समः कुटी चुंगी घर, 'घिसलत्याय' न्याय के नी० दे०, जीविन् (पु०) घाट से प्राप्त महसूल से अपना निर्वाह करने वाला 2 वर्णसंकर (वैश्यायां रथकाज्जातः)।

घट्टना [घट्ट+युच्+टाप्] 1 हिलाना, डुलाना, हरकत देना, आन्दोलन करना 2 रगड़ना 3 जीविका वृत्ति, अभ्यास, व्यवसाय, पेशा।

घट्ट [घट्ट+अच्] एक प्रकार का व्यंजन, बटली।

घण्टा [घण्ट्+अट्+टाप्] 1 घंटी, 2 लोहे का या कांसे का गोल पट्ट जिसे समय की सूचना के लिए मुंगरी से पीट कर बजाते हैं। समः अगारम् घण्टा घर, —ताडकः, कम् घण्टियों से युक्त प्लेट, ताडः घंटा बजाने वाला, नादः घण्टे की आवाज, पथः नाँद की मुख्य सड़क, राजमार्ग, मुख्य मार्ग (दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथ स्मृत कोटि०),—शब्दः 1 काला 2 घंटे की आवाज।

घण्टिका [घण्टा+ङीष्+कन्, ह्रस्व] छोटी घंटियां, घुंघरू।

घण्टु [घण्ट्+उण्] 1 हाथी की छाती पर बंधी एक पट्टी जिसमें घुंघरू लगे होते हैं 2 नाप, प्रकाश।

घत्व [घत् इति शब्दं कुर्वन् इंयते घत्+ङो+क] मच्छरदानी।

घन (वि०) [हन् मनो अप् धनादेशश्च तारा०] 1 सघन, ठोस, कठोर, ठोस—सजातश्च घनश्चैव मा० ९।३९, आत्मा घनास्थिका—याज्ञ० ३।२९, रघु० ११।१८ 2 सघन, घनिष्ठ, जिसका घनविरलभाव उत्तर० २।२७, रघु० ८।८१, अमरु ५३ 3 घटा हुआ, पूर्ण, पूर्णविकसित (जैसे कि कुच) घटयति सुघने कुच-युगमगने वृषमदकरिकरिपोः गीत० ७, अगुरुचतुष्कं भवति गुरु हृदो घनकुचयुगमे शशिवदनाऽसौ श्रुत० ८, भर्तृ० १।८, अमरु २८ 4 (शब्द की भांति) गम्भीर - मा० २।१२ 5 निरन्तर स्थायी 6 अभेद्य 7 बड़ा, अत्यधिक, अधिक 8 पूर्ण 9 शुभ, भाग्यशाली, न. बादल—घनोदय प्राक् तदनन्तर पद्य शा० ७।३०, घनरुचिरकलापो नि सपत्नाऽस्य जात -विक्रम० ४।१० 2 लोहे का मुद्गर, गदा 3 शरीर 4 (गणित में) घनफलोत्पादक घन (किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से उत्पन्न गुणनफल) 5 विस्तार, प्रसार 6 समूह, समुच्चय, परिमाण, राशि, जमाव या समवाय 7 अमरक,—नम् 1 आम, घण्टी, घण्टा 2 लोहा 3 टीन 4 चमड़ी स्वच्छ, बल्कल। समः -अक्षरः, -अन्तः बादलों का लोप वर्षाऋतु के पश्चात् आने वाली ऋतु, शरद्,—अम्बु (नपुं०) वर्षा,—आकरः वर्षा ऋतु, आगमः बादलों का आगमन, वर्षाऋतु—घनागम कान्निजनप्रिय प्रिये— ऋतु० २।१, आत्ययः छुहारे का वृक्ष, आधयः पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—आलयः ओले,—ओघः बादलों का एकत्र होना, काल: ओले, काल वर्षाऋतु, गर्जितम् 1 मेघ-ध्वनि, बादलों की गड़गड़ाहट या गर्जन, बिजली की कड़क 2 कर्कश और ऊँची दहाड़ या गर्जन, गोलकः पारा सोने को मिलाकर - जम्बालः गीली दलदल, तालः एक प्रकार का पक्षी, चातक, सारसः, तोलः चातक पक्षी,—नादिन् पुं० (यह बादलों का मुख्य अवयव समझा जाता है मेघ० ५), नीहारः, गाढ़ा कोहरा, सदम तुषार, पदवी बादलों का पार्श्व अन्तरिक्ष, आकाश क्वापि द्रुघनपदवीमेहि तस्मै - कि० ५।३४, पाषाणः मोर फलम (ज्या० में) किसी वस्तु को लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल

अथवा ठोसफल, मूलम् (गणित में) घन-राशि का मूल अंक, रसः 1 गाढा रस 2 अर्क गाढा 3 कपूर 4 जल, वर्षः घन का वर्ष, (गणित में) छठा घात, -वर्त्मन् (नपु०) आकाश घनवर्त्म महत्सर्वत्र कुर्वन् कि० ५।१७, -वल्लिका,—वल्ली बिजली, वास एक प्रकार का कद्दू, कुम्हड़ा, वाहनः 1 शिव 2 इन्द्र,—श्याम (वि०) 'बादल की भांति काला' गहरा काला, पक्का रंग, (—मः) 1 राम और कृष्ण का विशेषण, समयः वर्षा ऋतु,—सार 1 कपूर—घनसारनीहारहार दश० १, (श्वेत पदार्थों में उल्लेख) 2 पारा 3 जल,—स्थान सेंधनमक,—हस्तसंख्या (गणित में) लम्बाई को विस्तृति आदि नापने की माप (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एक हाथ ऊँचा ढेर)।

घनाघनः [हन् + अच्, हन्तेर्घत्वम् द्वित्वमभ्यासस्य आक् च] 1 इन्द्र 2 चिड़चिड़ा, या मदमस्त हाथी 3 पानी से भरा हुआ या बरसाने वाला बादल।

घरट्ट [घर सेकम् अट्टति अतिक्रामति घर + अट्ट् + अण्, अलु० पररूपम्] खरल, घराट, चक्की।

घर्घर (वि०) [घर्घ + र + क] 1 अस्पष्ट, घर्घराहट करने वाला, गरगर शब्द करने वाला -घर्घरस्वरा पारस्यजात सरित मा० ५।१९ 2 कलकल ध्वनि करने वाला, (बादल की भांति) गड़गड़ शब्द करने वाला, रः 1 अस्पष्ट कलकल ध्वनि, मन्द बड़बड़ या गरगर की ध्वनि 2 कोलाहल, शोर 3 दरवाजा, द्वार 4 हंसी, अट्टहास 5 उल्लू 6 तूफान।

घर्घरा,-री [घर्घर + टाप्, ङीष् वा] 1 घुंघरू जो आभूषण की भांति काम आवें 2 घुंघरुओं की गंभीर ध्वनि 3 गगा 4 एक प्रकार की वीणा।

घर्घरिका [घर्घर + ठन् + टाप्] 1 आभूषण की भांति प्रयुक्त होने वाले घुंघरू 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

घर्घरितम् [घर्घर + इतच्] सूअर के घुरघुराने का शब्द।

घर्म [घरति अङ्गात्-घृ + मक् नि० गुण] 1 ताप, गर्मी -हि० १।९७ 2 गर्मी की ऋतु, निदाघ नि:श्वासहार्योशुकमाजगाम घर्मं प्रियावेशमिवोपदेष्टुम् रघु० १६।४३ 3 स्वेद, पसीना—शि० १।५८ 4 कड़ाह, उबालने का पात्र। समः अंशु सूर्य शं० ५।१४, अन्त वर्षाऋतु अम्बु, -अम्भस् (नपु०) स्वेद, पसीना, शं० १।३०, मा० १।३७, -अधिका घाम, धूप, घमौरी, (दबे हुए पसीने और गर्मी से शरीर पर पैदा होने वाले छोटे-छोटे दाने), दीधितिः सूर्य रघु० ११।६४, द्युतिः सूर्य—कि० ५।४१,—वस् (नपु०) स्वेद, पसीना शि० ९।३५।

घर्ष, घर्षणम् [घृष् + घञ्, ल्युट् वा] 1 रगड़, घिसर 2 पीसना, चूरा करना।

घस् (भ्वा० अदा०—पर०—घसति, घस्ति, घस्त) खाना, निगलना, (यह अकेला धातु है 'अद्' धातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बनते हैं)।

घस्मर (वि०) [घस् + क्मरच्] 1 खाऊ, पेटू, दावानलो घस्मर -भामि० १।३४ 2 निगल जाने वाला, हड़प करने वाला -हुतदमुनजमुघस्मरो दीधितिस्ते वेणी० ५।३६।

घस्र (वि०) [घस् + रक्] पीड़ाकर, क्षतिकर, स्रः 1 दिन -घस्रो गमिष्यति भविष्यति सुप्रदोषम्- सुभा० 2 सूर्य महावी० ५।८, -असृज् केसर, जाफरान।

घाट, टा [घट् + अच्, स्त्रियां टाप्] पर्वत का पिछला भाग।

घाण्टिक [घण्टा + ठक्] 1 घंटी बजाने वाला 2. भाट या चारण 3 धतूरे का पौधा।

घात [हन् + णिच् + घञ्] 1 प्रहार, आघात, खरौंच, चोट आघात—शं० ३।१३, नखनखरघात गीत० १०, इसी प्रकार पाणिघात, शिरोघात आदि 2 मार डालना, चोट पहुँचाना, संहार करना, वध करना -वियोगो मुग्धाक्ष्या स खलु रिपुघातावधिरभूत्—उत्तर० ३।४४, पशुघात -गीत० १, याज्ञ० २।१५९, ३।२५२ 3 बाण 4 गुणनफल। समः—अंशः अशुभ राशि पर स्थित चन्द्रमा, -तिथि अशुभ चान्द्र दिन, नक्षत्रम् अशुभ नक्षत्र, -वारः अशुभ दिन,—स्थानम् वधस्थान, वधस्थान।

घातक (वि०) [हन् + ण्वुल्] मारनेवाला, संहार करने वाला, हत्यारा, संहारक, कातिल, वध करने वाला।

घातन (वि०) [हन् + णिच् + ल्युट्] हत्यारा, कातिल, नम् 1 प्रहार करना, मार डालना, हत्या करना, वध करना, (यज्ञ में) पशु बलि देना।

घातिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हन् + णिच् + णिनि] 1 प्रहार करने वाला, मारने वाला 2 (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला 3 विनाशकारी। समः -पक्षिन्,—विहगः बाज, श्येन।

घातुक (वि०) (स्त्री०—की) [हन् + णिच् + उकञ्] 1 मारने वाला, संहारकारी, अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला 2 क्रूर, नृशंस, हिंस्र।

घात्य (वि०) [हन् + णिच् + ण्यत्] मारे जाने के योग्य, वह व्यक्ति जिसे मार देना चाहिए।

घार [घृ + घञ्] छिड़कना, तर करना।

घारिकः [घृतेन निर्वृत्त ठञ्] घी में तले हुए पूड़े (विशेषतः जिनमें छिद्र होते हैं) (इन्हीं को देखकर पंचतंत्र में मूर्ख पंडितों ने कहा था—छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति)।

घास [घस् + घञ्] 1 आहार 2 गोचरभूमि या चरागाह का घास -घासाभावात् पंच० ५, घासमुष्टिं परगवे

दधाम् सवत्सरं तु य मद्रा० । सम० कुम्भम्, -स्थलम् चरागाह ।

घु (स्वा० आ० घवते, घुत) शब्द करना, हल्ला मचाना ।

घुः [घु + किप्] कबूतर की गुटर गूं ।

घुट् । (तुदा० पर० घुटति, घुटित) 1 फिर प्रहार करना, बदला लेने के लिए प्रहार करना, मुकाबला करना 2 विराम करना, ॥ (स्वा० आ० घाटते) 1 वापिस आना लौटना 2 वस्तु विनिमय करना, अदला-बदली करना ।

घुट, **घुटि**, **टी**, (स्त्री०) **घुटिका**, -का [घुट्+अच्, इत्व वा, घुटि+ङीष्, कन् स्त्रियां टाप् वा] टखना ।

घुण । (स्वा० आ०, तुदा० पर०- घोणते, घुणति, घुणित) लुढ़कना, चक्कर खाना, लड़खड़ाना, अटेरना, ॥ (स्वा० आ०) लेना, प्राप्त करना ।

घुण [घुण+क] लकड़ी में पाया जाने वाला विशेष प्रकार का कीड़ा । सम० अक्षरम्,- लिपि (स्त्री०) लकड़ी या पुस्तक के पत्रों में कीड़ों के द्वारा बनाई हुई रेखाएँ जो कुछ कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती हैं । न्याय दे० न्याय के अन्तर्गत ।

घुण्ट., **घुण्टक**, **घुण्टिका** [घुण्ट् + क, घुण्ट + कन्, घुण्टक + टाप् इत्वम्] टखना ।

घुण्ड [घुण् + ड नि०] ओरा ।

घुर् (तुदा० पर० घुरति, घुरित) 1 शब्द करना, कोलाहल करना, खुर्राटे भरना, फुफकारना, (सूअर कुल आदि का) घुरघुराना क क कुरु न घुघुरायित-घुरोघारो घुरेरुक्त्वा -का० उ 2 डरावना बनना, भयंकर होना 3 दुख में चिल्लाना ।

घुरी [घुर् + कि+ङीष्] नाधना, (विशेषकर सूअर की पूंछन) घुघुरायितघुरोघोरो घुरेरुक्त्वा काल्य० उ ।

घुर्घरी. [घुर् इत्यव्यक्तं घुरति घुर्+घुर् + क] 1 चोकर, चिल्लड़ (एक प्रकार का कीड़ा) 2 खुर्राटे भरना, घुरघुराना, सूअर आदि जानवर के गले से निकलने वाली आवाज ।

घुर्घुर [घुर्घुर + अच् + ङीष्] सूअर की आवाज ।

घुलघुलायते [घुलघुल इत्यव्यक्तमारौति घुलघुल + आ + क + अच्] एक प्रकार का कबूतर ।

घुष् । (स्वा० पर०, चुरा० उभ० घोषति घोषयति ते, घुषित, घुष्ट, घोषित) 1 शब्द करना कोलाहल करना 2 ऊँचे स्वर से चिल्लाना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना म म पापादृते तात, दुःखात् इति अब्रुवम् श० ६।२२, घोषयतु मन्मथनिदेशम्— गीत० 7, इति घोषयतीव दिङ्मुख करिणाञ्च घटाकृतं रघु० ९।२८६ रघु० ९।१०, आ— ऊँचे स्वर से चिल्लाना सार्वजनिक रूप से घोषणा करना मनु० ३।२०। उद् ,ऊँचे स्वर से घोषणा करना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना ॥ (अ०- आ०-प्र०) मुखर या उच्चरव होना ।

घुसृणम् [घुष् + सृक् पृषो०] केसर जाफरान आदि सुगन्धघुसृणालेपनाना सुखधा विषम० ४८।३९ ।

घृक [घृ + कृक्] केसर जाफरान आदि ।

घृण (स्वा० आ० तुदा० पर० घृणते, घृणति) इधर उधर लुढ़कना, इधर-उधर घूमना, चक्कर खाना मड़ना, हिलाना, लिपटना उत्प्रेक्षाना -यादिवनामतिमदेन जघर्णविभ्रमातिशयपाणि वधूना -शि० १०।८८, भयात्केचिद्घृणिषु भट्टि० १५।८८, १२४ शि० ११।१४, अद्यापि न सुरतजागर घूर्णमाना चौर० ५, प्रेर० - घूर्णयति—न हिलाना अटेरना या लपटना -नयनान्यरुणानि घूर्णयन् कु० ४।१० शि० २।१६, भट्ट० १।८० (आ तेसा वि उपसर्ग के लग जाने पर भी धातु का वही अर्थ रहता है) ।

घूर्ण (वि०) [घृण + अच्] हिलाने वाला, इधर-उधर चलने-फिरने वाला । सम० वायु बवण्डर ।

घूर्णनम्, **ना** [घृण + ल्युट्] हिलाना डुलाना घुमाना, चक्कर खाना, मुड़ना, घूमना गौरिघूर्णनचलत्-गात्र० ९, घूर्णनाभ्रमणपतनश्रमभावदर्शनादिकृत् मा० ३० ।

घृ । (स्वा० पर० घरति, घृत) छिड़कना ।

॥ (चुरा० उभ० घारयति-ते, घारित) छिड़कना करना सींचा करना, तर करना, अभि छिड़कना आ छिड़काव करना ।

घृण (क्रया० पर० घृणोति, घृण्य) चमकना, जलना ।

घृणा [घृ + नक् + टाप्] दया, नरमी, सुकुमारता ता विलोक्य वनितावधे घृणा पथिषा सह मम्लतु रघुव रघु० ११।४७, ९।८१, कि० १५।१२ 2 ऊष्मा अर्चि घिन तत्याज तोष परपुष्टघुष्टे घृणा न वाणावलिणित वितेने नै० ३।६०, १।२०, रघु० ११।६५ 3 झिड़की, निन्दा ।

घृणालु (वि०) [घृणा + आलुच्] सकरुण दयापूर्ण मृदुहृदय ।

घृणि [घृ + नि, नि०] 1 गर्मी, धूप 2 प्रकाश की किरण 3 सूर्य 4 लहर (नरु०) जल । सम० निधि सूर्य ।

घृतम् [घृ + क्त] 1 घी, तपाया हुआ मक्खन — (सर्पिर्विलीनमाज्यं स्यात् घनीभूतं घृतं भवेत् मा०) 2 मक्खन 3 जल । सम०—अक्त —सिक्त (पु०) दहकती हुई आग, आहुति (स्त्री०) घी की आहुति, आहु

मरुण नामक वृक्षविशेष. - उदः 'घी का समुद्र' सात समुद्रों में से एक, ओदन घी से युक्त उबले हुए चावल, कुल्या घी की नदी, दीधिति अग्नि,-धारा घी की अविच्छिन्न धार, पूरः,-वरः एक प्रकार की मिठाई, लेखनी घी का चम्मच।

घृताची [घृत+अञ्च्+क्विप्+ङीप्] 1 रात 2 सम्बन्धी 3 एक अप्सरा (इन्द्र के स्वर्ग की मुख्य अप्सराएं निम्नांकित हैं घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च विश्रुता, सुकेशी मञ्जुघोषाद्या कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः)। समः गर्भसंभवा बड़ी इलायची।

घृष् [भ्वा० पर० धर्षति, घृष्ट] 1 रगड़ना, घिसना अज्ञापि नरकनकुण्डलघृष्टगण्डम् चौर० ११, पंच० १।१४४ 2 कूंचा करना, परिष्कृत करना (माजना), चमकाना 3 कुचलना, पीसना, चूरा करना द्रौपद्या तनु मन्यराजभवने घृष्ट न कि चन्दनम् पंच० ३।१७५ 4 झाड़ करना, प्रतिद्वन्द्वी होना (जैसा कि संघृष् में) उद्, तुरचना, तुड़ाई गिरिभिरुद्घृष्टपाषाणपीठम् मही-शितुः रघु० १७।२८, सम् प्रतिद्वन्द्विता करना, होड़ाहोड़ी करना, प्रतिस्पर्धा करना स प्रयोगनिपुणैः समधर्मा सह मित्रसनिधौ रघु० १९।३६ 2 रगड़ना, खुरचना।

घृष्टि [घृष्+क्तिच्] सूअर, (स्त्री०) 1 पीसना, चूरा करना, खुरचना 2 होड़ाहोड़ी, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता।

घोट घोटक] घुट्+अच्, घुट्+ण्वुल् वा] घोड़ा। समः अरि, भेषजम्।

घोटी घोटिका] घोट+ङीष्, घुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] घोड़ी, सामान्य अश्व आटाकेऽङ्क करिवोटि पदातिनि धाटिमति क्षितिभुजाम् अश्व० ५।

घोण (न) स] घोणस, पृषो०] एक प्रकार रेंगने वाला जन्तु।

घोणा] घुण्+अच्+टाप्] 1 नाक घोणोन्नत मुखम् मनु० ४।१६ 2 घोड़े की नथुना, (सूअर की) घुरण्ड रुरोधाग्रघोणेन हा० ७८।

घोणिन् (पु०)] घोणा+इनि] सूअर।

घोण्टा] घुण्+ट+टाप्] उन्नाव का वृक्ष।

घोर (वि०)] घर्+अच्] 1 भयंकर, डरावना, भीषण, भयानक - निर्व्याधारम्भना पश्चाद्बबन्धुः घिक्कृतेति लोकाः रघु० १२।३९, तांत्रिक कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव महा०, घोर नाके विनतमवशं —उत्तर० ३।२, मनु० ११।९० १२।५४ 2 हिंस्र, प्रचण्ड,-रः शिव, रा रात, रम् 1 संकट, भीषणता 2 शिव समः आकृति, दर्शन (वि०) देखने में डरावना, भयंकर दिखाई देने वाला, धुस्तूरकम् कांटा,-रात्रम्, रात्रिः,-त्रम्, रात्रिन् (पु०) गीदड़, रूपः शिव का विशेषण।

घोल, लम्] घुर्+घञ्, रस्य लः] मट्ठा, घुला हुआ दही किसी पात्र में न हो (नक्तं स्नेहमजस्रं मथित घोल-मकृते मनु०)

घोषः] घुष्+घञ्] 1 कोलाहल, हल्ला, हंगामा- स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् भग० १।१९, इसी प्रकार रथ, तूर्य, शस्त्र आदि 2 बादलों की गरज स्निग्धगम्भीरघोषम् मेघ० ६४ 3 आवाज 4. अफवाह, जनश्रुति 5 ग्वालों का बस्ती-सङ्कीर्णा घोष काव्य० २, घोषादानीय मृच्छ० ७ 7 (व्या० में) वाद्ययन्त्रों के उच्चारण में प्रयुक्त घोषध्वनि 8 कायस्थ, सम् कांसा।

घोषणम् आ] घुष्+ल्युट्] प्रख्यापन, प्रकथन, उच्च स्वर से बोलना, सार्वजनिक एलान -व्याधानां जय-घोषणादिषु बलादस्मद्वधस्यानघ कृत्ये मुद्रा० ३।२६, रघु० १३।७२।

घोषयित्नु [घुष्+णिच्+इत्नुच्] 1 विदूषक, भाट, नटकार 2 ब्राह्मण 3 कायस्थ।

घ्न (वि०) (स्त्री० घ्नी)] [केवल समास के अन्त में प्रयोज्य] [हन्+क, स्त्रियां ङीप्] वध करने वाला, विनाशक, दूर करने वाला, विकित्सक ब्राह्मणघ्न, बालघ्न, मातृघ्न, पितृघ्न, वञ्चित करने वाला, दूर करने वाला, पुण्यघ्न, धर्मघ्न आदि।

घ्रा (भ्वा० पर० जिघ्रति, घ्रात -घ्राण) 1 सूंघना, घ्राणा लगाना सूंघ का प्रत्यक्ष ज्ञान करना स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गम —हि० ३।१४, भामि० १।९९, चूमना करना प्रेर०— (घ्रापयति) सुंघवाना—भट्टि० १५।१०९, (अव, आ, उप, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर भी इस धातु के अर्थों में विशेष अन्तर नहीं आता गन्धमाघ्राय चार्ष्यो मेघ० २१, आमोदमुप-जिघ्रन्ती रघु० १।४३, दे० भट्टि० २।१० १४।१२, रघु० ३।३, १३।७०, मनु० ४।२०९ भी)।

घ्रात (भू० क० कृ०) [घ्रा+क्त] सूंघा - जग्ध्वा सूपघ्नं क्रिया मनु० ३।२४१ 2 सूंघ, न 3 नाक बुद्धीन्द्रियाणि चक्षुश्रोत्रघ्राणरसनत्वङ्नामानि सां० का० २६, ऋतु० ६।२७, मनु० ५। १३५। समः-इन्द्रियम् सूंघने की इन्द्रिय, नाक नासा-यामिव घ्राणम् —तर्क सं०, चक्षुस् (वि०) 'जो आंखों का काम नाक से लेता है अर्थात् अंधा (जो सूंघ कर अपने मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है), तर्पण (वि०) नाक को सुहावना, या सूंघकर खुशबूदार, सुगन्धयुक्त (-णम्) खुशबू, सुगन्ध।

घ्राणिः (स्त्री०)] [घ्रा+क्विन्] सूंघने की क्रिया घ्राणि-रघ्रेयसदृशी —मनु० ११।९८ 2 नाक।

च

च [चम् (चि)+ड] 1 चन्द्रमा 2 कछुआ 3 चार (अव्य०) निम्नांकित अर्थों का बतलाने वाला अव्यय - 1 समाहार (और, भी, तथा, इसके अतिरिक्त) —शब्द या उक्तियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, (इस अर्थ में यह उस प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जिसे मिलाता है या इस प्रकार मिले हुए अन्तिम शब्द या उक्ति के पश्चात् रक्खा जाता है, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है) मनो निष्ठानन्य श्रमति च किमप्यालिखति च भा० १।३१, तौ गुरुमुपनन्दतो च -रघु० १।५७, मनु० १।६८, ३।५ कुलेन कान्त्या वयसा नवेन गुणैश्च नैर्विनयप्रधानैं —रघु० ६।७९, मनु० १।१०५, ३।११६ 2 विकल्पन (परन्तु तथापि, तो भी)—शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहु —श० १।१६ 3 निश्चय, निर्धारण (निस्सन्देह, निश्चय ही, ठीक, बिलकुल, सर्वथा) अनीत पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो: गण०, ते गुरु यावत प्रणामां तावावच दृष्टे मयै रघु० १२।४५ 4 जब (यदि =चेत्) जीवितु चेच्छसे (इच्छसि चेत्) मूढ हनू मे गदत शीघ्रं- महा०, लाभश्चास्ति (अस्ति चेत्) गणेन किम् भर्तृ० २।८५, अने० पा० 5 यह प्राय पादपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है भीम पार्थस्तथैव च -गण० (कोशकार उपर्युक्त अर्थों के साथ 'च' के निम्नांकित अर्थ और बतलाते हैं जो कि संयोजन या समुच्चय के सामान्य अर्थों के अन्तर्गत है—1 अन्वाचय —अर्थात् मुख्य तथ्य को किसी गौण तथ्य से मिलाना —भो भिक्षामट गां चानय, वै० अन्वाचय 2 समाहार अर्थात् समुच्चयार्थक संबंध यथा पाणी ग पादौ च पाणिपादम् 3 इतरेतरयोग अर्थात् पारस्परिक संयोग - यथा लक्षणश्च व्यञ्जनश्च लक्षणव्यञ्जनौ 4 समुच्चय - अर्थात् सब मिलाकर यथा पचति च पठति च), दो उक्तियों के साथ च की बार२ आवृत्ति होती है 1 'एक ओर दूसरी ओर' 'यद्यपि—तथापि' अर्थ विरोध को प्रकट करने के लिए न मुञ्चसि सकले-दुमुखो च सा किमपि चेदमराङ्ग विचेष्टितम् विक्रम० २।१, ४।३, रघु० १६।७ या 2 दो बातों का एक साथ होना या अव्यवहित पदों को प्रकट करने के लिए (ज्योंही त्योंही) ते च प्रापुरुदन्वन्तं उभौ चादिपूरुष - रघु० १०।६, ३।६०, कु० ३।५८, ६६, शि० ६।३, मा० १।३९।

चक् (भ्वा० उभ० चकति ते, चकित) 1 तृप्त होना, सन्तुष्ट होना 2 प्रतिरोध करना, मुकाबला करना।

चकास् (अदा० पर० (विरलत आ०) चकास्ति स्ते, चकासित) 1 चमकना, उज्ज्वल होना शरदिन्दुनिर्मलतलिनश्रीमाचन लोचनम्- गीत० १०, चकासत चारुचयूरचमणा शि० १।८, भट्टि० ३।१७ 2 (आत्म०) प्रसन्न होना, समृद्ध होना विनश्यति क्षेममदः प्रमादिनः कुतश्चिराय तस्मिन् कुरुषे चकासते कि० २।१३ प्रेर० चकासना, प्रकाशित करना शि० ३।६, वि० चमकना, उज्ज्वल होना।

चकित (वि०) [चक् क्त, इत के कारण] 1 घबराया हुआ, काना हुआ, भय', साध्वस —पंच० २।७ 2 डराया हुआ, प्रकम्पित, सौचकता व्यायानुसारचकिता हरिणीव यामि मृच्छ० २।१७ अमरु ४६ मुद्रा० १३ 3 सावधान और, सशङ्क - चकितविलोकितसकल दिशा० गीत० २, पौलस्त्यचकितदयरा (दिशः) रघु० १०।७२, तम् (अव्य०) भय से, सौचकता होकर, सशङ्क होकर, विस्मय के साथ चकितमुपैति तथापि पार्थसख्य मालवि० १।११, सभयचकितम् गीत० ५, मा० ४।६।

चकोर [चक् + घञ्] पक्षीविशेष, तीतर की जाति का पक्षी (कहते हैं कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार हैं)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मन्दाक्षचकोरगणा विद्धशा०, १।११, उल्लसचकोराक्षि विलोकयन्ति रघु० ६।५९, ७।२५, स्फुरदधरसोधवे नव वदनचन्द्रमा रचयति लोचनचकोरम् गीत० १०।

चक्र 'क्रियते अनेन, कृ घञ्' क वि० द्विरुक्त तारा०, गाड़ी का पहिया चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च हि०१।१७३ 2 कुम्हार का चाक 3 एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र चक्र (विष्णु का) 4 तेल पेरने का कोल्हू 5 वृत्त, मण्डल कलापिचक्रेषु निवेशितानने रघु० ३।१४ 6 दल समुच्चय, समूह शि० २०।१६ 7 राज्य, साम्राज्य 8 प्रान्त, जिला, ग्राम-समूह 9 कुम्हार सैनिक व्यूह 10 देह के भीतर के षट्चक्र, मूलाधार आदि 11 कालचक्र, वर्ष समूह 12 शिलिम 13 सेना, समूह 14 ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग 15 भँवर 16 नदी का मोड़, क: 1 हंस चकवा 2 समूह, दल, वर्ग। सम०—अङ्ग. 1 टेढ़ी गर्दन वाला हंस 2 गाड़ी 3 चकवा, अद 1 बाजीगर, मदारी 2 दुष्ट, धूर्त, ठग 3 रसोइया बावर्ची, आकार,- आकृति (वि०) वेलबूटेदार बना, आयुध विष्णु का विशेषण, आवर्त भँवर चाली या चक्करदार गति, आह्वः, आह्वय चकवा—चक्राह्व ग्रामकुक्कुटम्—मनु० ५।१९, ईश्वर 1 'चक्रवर्ती' विष्णु का नाम 2 जिले का सर्वोच्च अधिकारी, उपजीविन् (पु०) तेली, कारकम् 1 मालवन, 2 एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य, गन्धु गावदुम मक्खी, गति: (स्त्री०) चक्रा-

कार गति, गोलाई में घूमना,—कुम्भः सजीव कुंभ, -ग्रहणम्, —भृत् (स्त्री०) सूर्यकांतमणि, दर्पणकांता, आई,- धर (वि०) वृत्त में घूमने वाला, - चूडामणिः मुकुट में लगी गोलमणि,- जीवकः, - जीविन् (पु०) कुम्हार,—तीर्थम् - एक पुण्य स्थान का नाम,—दन्तः सूअर,—धर 1 विष्णु का विशेषण चक्रधरश्चक्रभाक् —रघु० १६।५५ 2 प्रभु, प्रान्त का राज्य पाल या शासक 3 गाँव का कलाकार या कारीगर,- धारा पहिए का घेरा—नाभि पहिए की नाभ- नामन् (पु०) 1 चकवा 2 लोहे की मालिक धातु,- पाणि 1 दल का नेता 2. एक प्रकार का सुगंध-द्रव्य,- पाणि पहिए की परिधि या घेरा तोयैर्नवोत्थपुरुषैरिव दत्तपाणि चक्रनेमिक्रमेण मेघ० १०९,- पाणि विष्णु का विशेषण,—पात्र,- पायक 1 गाड़ी 2 हाथी,—पाल 1 राज्यपाल 2 सेना के एक प्रभाग का अधिकारी 3 क्षितिज, -बन्धुः, बान्धव सूर्य, - बालः -ळः, -वालः- ळम्,- भ्रम् 1 वृत्त, मंडल 2 समूह, वर्ग, समुच्चय, राशि—कैरवचक्रवालम् - भर्तृ० २।७४ 3 क्षितिज, (ळ) 1 पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृंखला जो भूमंडल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश व अंधकार को सीमा समझी जाती है 2 चकवा, - भृत् (पु०) 1 चक्रधारी 2 विष्णु का नाम, - भेदिनी रात, भ्रम,-भ्रमि (स्त्री०) लगातार सात आरोप्य चक्रभ्रमिमुष्णतेवाम्बरवर्त्म यत्नोल्लिखितो विभाति रघु० ६।३२, मकरालिन् (पु०) साँप की एक जाति, -मुख सूअर, यानम् पहियों से चलने वाला वाहन, रथः सूअर, -वर्तिन् (पु०) 1 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, संसार का प्रभु, समुद्र तक फैले राज्य का स्वामी (आसमुद्रक्षितीशानामित्यमर०) पुत्रमेव गुणापेक्षं चक्रवर्तिनमाप्नुहि - श० १।१२, तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ, आसमुद्रक्षितीशोऽपि भवान् यत्र करप्रदः - उद्भट, (जहाँ 'चक्रवर्तिन्' शब्द में श्लेष है, वहाँ दूसरा अर्थ है 'आकार प्रकार में चकवे से मिलता जुलता' 'गोल'), - वाक (स्त्री० -की) चकवा - दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्—मेघ० ८३,—वाटः 1 सीमा, हद 2 दौड़ 3 कार्य में प्रवृत्त होना, वात. बवंडर, तूफान-आँधी, वृद्धिः ब्याज पर ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज मनु० ८।१५३, १५६,- व्यूहःसैन्यदल का मंडलाकार स्थापना, —सङ्गम् राग, (म) चकवा,—साह्वयः चकवा,—हस्तः विष्णु का विशेषण।

चक्रक (वि०) [चक्रमिव कायति- कै+क] पहिये के आकार का, मंडलाकार, कः (तर्क०) मंडल में तर्क करना।

चक्रवत् (वि०) [चक्र+मतुप्, मस्य व] 1. पहियों वाला 2 मंडलाकार, (पु०) 1 तेली 2. प्रभु, सम्राट् 3. विष्णु का नाम।

चक्राकी, चक्राकी [ब० स०] हंसिनी।

चक्रिका [चक्र+ठन्- टाप् 1 ढेर, झुंड 2 दुरभिसंधि 3. कूटना।

चक्रिन् (पुं०) [चक्र+इनि] 1 विष्णु का विशेषण— शि० १३।२२ 2 कुम्हार 3 तेली 4 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, निरंकुश शासक 5 राज्यपाल 6 बया 7 चकवा 8 सारथि, 9 सांप 10 कौवा 11 एक प्रकार का कलाकार या कारीगर।

चक्रिय (वि०) [चक्र+घ] गाड़ी में बैठ कर जाने वाला, यात्रा करने वाला।

चक्रीवत् (पु०) [चक्र+मतुप्, मस्य व, नि० चक्रस्य चक्रीभाव] बया- शि० ५।८।

चक्ष् (अदा० आ०—चष्टे) [आर्धधातुक लकारों में अनियमित] 1 देखना, पर्यवेक्षण करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 बोलना, कहना, बतलाना (संप्र० के साथ), आ- , बोलना, घोषणा करना, वर्णन करना, बखान करना, बतलाना, पढ़ाना, समाचार देना (संप्र० के साथ) - रघु० ५।१९, १२।५५, मनु० ४।५९, ८०, इत्याख्यानविदं आचक्षते मा० २।२, कहना, संबोधित करना भामि० १।६३ 3 नाम लेना, पुकारना, परि , 1 घोषणा करना, वर्णन करना 2 गिनना 3 उल्लेख करना 4 नाम लेना, पुकारना - वेदप्रदानाद्दाचार्यं पितरं परिचक्षते मनु० २।१७१, भग० १७।१३, १७, प्र , 1 कहना, बोलना, नियम बनाना —स्वजनाधु विलातिसतत बहुति प्रतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६ 2 नाम लेना, पुकारना योऽस्यात्मन कारयिता त क्षेत्रज्ञ प्रचक्षते मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१४, प्रत्या- त्याग देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या , व्याख्या करना, टीका टिप्पण करना।

चक्षस् (पु०) [चक्ष्+असि] 1 अध्यापक, धर्म-विज्ञान का शिक्षक, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु 2 बृहस्पति का विशेषण।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षुषे हितं स्यात् चक्षुस्+यत्] 1 मनोहर, प्रियदर्शन, सुहावना, सुन्दर 2 आँखों के लिए हितकर, स्त्री प्रियदर्शना या सुन्दरी स्त्री।

चक्षुस् (नपु०) [चक्ष्+उसि] 1 आँख, दृश्य तमसि न पश्यति दीपेन विना सचक्षुरपि—मालवि० १।९, कृष्णसारे ददच्चक्षु श० १।६, तु० प्राणचक्षुस्, ज्ञानचक्षुस्, मनश्चक्षुस्, चारचक्षुस् आदि शब्दों को 2 दृष्टि, दर्शन, नजर, देखने की शक्ति—चक्षुरायुष्यमेव ग्रहीतव्ये मनु० ४।४१, ४२। सम०—गोचर (वि०) दृश्य, दृष्टिगोचर, दृष्टि-परास के अन्तर्गत होने वाला,

—आलम्ब् प्राण प्रतिष्ठा के समय मूर्ति की आँखों में रंग भरना,—वधः दृष्टि-परास, क्षितिज, अवस् आँखों की दौड़, बल, —राग, (अक्षूरागः) 1 आँखों में लाली 2 'आँख का प्रेम' आँख लड़ाने से उत्पन्न प्रेम या अनुराग -पुरश्चक्षूरागस्खलदनु मनसोऽकस्मात्परता—मा० ६।१५, अक्षूरागः कोकिलेषु च परकलत्रेषु - का० ४१ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'आँख लड़ जाना' भी है), -रोध (अक्षूरोध) आँख की बीमारी, विषय), दृष्टि-परास, निगाह, उपस्थिति, दृश्यता—चक्षुर्विषयातिक्रान्तेषु कपोतेषु - हि० १ अनु० २।१९,८ 2 दृष्टि का विषय, कोई भी दृश्य पदार्थ 3 क्षितिज, अवस् (पु०) सांप, कि० १६।४२, नै० १।२८।

चक्षुष्मत् (वि०) [चक्षुस् + मतुप्] 1 देखने वाला, आँखों वाला, देखने की शक्ति वाला, तदा चक्षुष्मता प्रोक्तिरासीत्यमस्मा इयो रघु० ४।१८ नी ४।१३, 2 अच्छी दृष्टि रखने वाला।

चक्षुस्कुम, द [चक्षुष्+उनस्, उरच् वा] 1 वृक्ष 2 गाड़ी 3 वाहन (नपु० भी)।

चङ्क्रमणम् [क्रम+यङ्+ल्युट्, यङो लुक् तारा०] 1 इधर उधर घूमना, आना-जाना, सैर करना विष चङ्क्रमण रात्रौ वाण०९७, चक्रे स चङ्क्रमितमङ्गकानन-मङ्गनैव —नै० १।१४४, 2 शनै २ या टेढ़ा-मेढ़ा जाना।

चङ्क्रम् (स्वा०पर०चङ्क्रमति, चङ्क्रमित) 1 चलायमान करना, लहराना, हिलाना—समरशिरसि चङ्क्रमत्यङ्गनृद्यचमूना —उत्तर०५।१२, मा०५।२३, चङ्क्रमच्चङ्क्रम् नागा०४, चलत्तरम गीत० १ 2 विलपति हसति विषीदति रोदिति चङ्क्रमति मुञ्चति तापम् गीत० ४।

चङ्क्रम [चङ्क्रम् + अच्] 1 टोकरी 2 पाँच अंगुलियों से मापा जाने वाला मापदण्ड, पंचांगुल मान।

चङ्क्रवरिन् (पु०) [चङ्क्र+यङ्, णिनि, यङो लुक्] भौंरा, करो वराभरोति चेद् दिश मरोसरोति कामू, स्थिर। वराकरोति चेन्न चङ्क्रवरोतिचङ्क्रवरी उद्भट।

चङ्क्रवरीक [चङ्क्र+ईकन्, नि० द्वित्वम्] भौंरा, धुलुकयति मदीया चेतना चङ्क्रवरीक रस०, कुन्द लतायाविधमकर-मकरन्द रसाया अपि चङ्क्रवरीक, प्रणयप्रकटप्रेमभर-भङ्गवतकारभारभ्रान्त विद्धशा० १।४, विकटाक० १।८ भामि० १।४८।

चङ्क्रम (वि०) [चङ्क्र+अलच्, चङ्क्रम गति लाति ला+क ो मारा०] 1 चलायमान, हिलता हुआ, कम्पमान -स्थगयति हुआ मुखैव भीतहरिणीशिमुचङ्क्रमाक्षी -चौ० २७, चङ्क्रमकुण्डल - गीत० ७, अमरु ७९ 2 (आल०) चलनिल, चपल, अस्थिर जागा मेघ-स्तनानामधिलम्बमौक्तिकनीचङ्क्रमा मर्तृ० ३५४, वि० ७।१०, मनश्चङ्क्रम उन्मिषन्मम- भग०६।२६, ल 1 वायु 2 प्रेमी 3 स्वच्छाचारी ला 1 बिजली, 2 धनकी अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी।

चङ्क्रमा [चङ्क्र् + अच् + टाप्] 1 बेंत से बनी कोई वस्तु 2 पुआल का बना पुतला गड्डा गोदाम।

चङ्क्रम् [चङ्क्र् + उन्] 1 प्रसिद्ध, विख्यात विद्वान् 2 चतुर (जैसे कि अक्षर चङ्क्र) दे०चङ्क्र्, चु क्रीणा चु, -चू (स्वा०) चाल चूँच मारना पुट टूक् पक्षी की मार चोंच चङ्क्रपुट चञ्चूपुटेन वक्षोजपाला रस० भामि० ३।७२, अमरि मञ्जरीपुटमधुव्रत विहायसा तन विहस्य भृ नै० २।९० व्यलिखन् चञ्चूपुटेन पक्षत'—शि० ४, अमरु १३ —प्रहार चोंच से टूक मारना,—भुज् मन (पु०) पक्षी सूचि वत्सा, सौत्रिक पक्षी।

चङ्क्रुर (वि०) [चङ्क्र्]-उरच्] चतुर विख्यात।

चट् । (स्वा० पर० चटति, चटित) फटना, गिरना अलग होना, ॥ (चुरा० उभ० चाटयति ते) 1 मार डालना क्षति पहुँचाना 2 बींधना, तोड़ना उद् 1 भयभीत करना, त्रासना, डराना 2 उखेड़ना, हटाना, नाश करना नै० ३।७ 3 मार डालना, क्षति पहुँचाना।

चटक [चट् + वुन्] चिड़िया गौरैया।

चटका, चटिका, [चटक + टाप् इत्वादेशश्च] चिड़िया।

चट, ट (नपु०) [चट् + कु] कूल्हा नया चापलूसी से पूर्ण शब्द, दे० चाटु दे० पेट।

चटुल (वि०) [चट् + लच्] 1 कम्पमान, थरथराता हुआ, अस्थिर, धुमक्कड़, दोलायमान आयत्तमैक्षत जनश्च दुलायमानम्- शि० ५।६ आसीनिमात्रचटुले स्मरन मुनौ - रघु० ९।५८, चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि मेघ० ४० 2 चंचल, चपल (जैसा कि प्रेम)- त्रिलय चटुल त्वयेह नयना सौभाग्यमता दशाम् अमरु १४, चटुलप्रेम्णा दयितेन ७१, 3 बढ़िया सुन्दर, कविकर इति चटुलचाटुपट चाक्षुभ्रवैरिणी राधिका-मधि वचनजातम गीत० १०, ला बिजली।

चटुलोल, चटुलोल (वि०) [कर्म० स०, नि० साधु] 1 कम्पनशील 2 प्रिय, सुन्दर 3 मधुरभाषी।

चण (वि०) [चण् + अच्] (समास के अन्त में) विख्यात, प्रसिद्ध, कुशल, कीर्तिकर अक्षरचण, अ चना।

चणक [चण् + वुन्] चना - उत्पत्तिरेषापि हि चणक शक्त कि भाटक भक्षयितुम् पद्य० १।१३२।

चण्ड (वि०) [चड् + अच्] 1 (क) हिंस्र, प्रचण्ड, उग्र, आवेशयुक्त क्रोधी रुष्ट अर्थकर्षणोरपराधचण्डात् सुरो कृशानुप्रतिपाद विभेषि—रघु० २।४९, मालवि० ३।२०, दे०नी०चण्डी 2 उग्र, गरम जैसा कि 'चण्डांशु' में 3 सक्रिय, फुर्तीला 4 तीखा, तीक्ष्ण,—डम् 1 उत्तेजना गर्मी 2 आवेश क्रोध। सम० अंशु, दीधिति

—भानु, सूर्य—ईश्वर: शिव का एकरूप,—मुंडा दुर्गा का ही एक रूप (=चामुंडा),—मुख: अग्नि का विशेषण—विक्रम (वि०) तीक्ष्ण शक्ति का, अपनी शक्ति में भीषण।

चण्डा,—डी (स्त्री०) 1 दुर्गा का विशेषण 2 आवेशयुक्त, या क्रोधी स्त्री—चण्डी चण्ड हनुमन्मुखता मास्—मालवि० ३।२१, चण्डी मामवधूय पार्श्वपतितं भ्रातानुधावेद्यदा—विक्रम० ४।२८, रघु० १२।५, मेघ० १०५। सम०—ईश्वर:,—पति. शिव का विशेषण—पुष्य यामास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३।

चण्डात [चण्ड+अत्+अच्] सुगंधयुक्त करवीर।

चण्डातक,—कम् [चण्ड+अत्+ण्वुल्] लहंगा, साया।

चण्डाल (वि०) [चण्ड्+आलच्] दुष्कर्मा, क्रूर कर्मा, तु० कर्मचाण्डाल,—ल 1. अत्यंत नीच और घृणित वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता व ब्राह्मण माता से हुई मानी जाती है 2 इस जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत—चण्डाल किमयं द्विजातिरुताहो—भर्तृ० ३।५६, मनु० ५।१३१, १०।१२, १६, ११।१७५। सम०—अष्टमी चण्डाल की वीणा, एक सामान्य या देहाती वीणा।

चण्डालिका [चण्डाल+ठन्+टाप्] चण्डाल की वीणा।

चण्डिका [चण्डी+कन्+टाप्, ह्रस्व] दुर्गा देवी।

चण्डिमन् (पु०) [चण्ड+इमनिच्] 1 आवेश, उग्रता, तीक्ष्णता, क्रोध, 2 गर्मी, ताप।

चण्डिल [चड्+इलच्] नाई।

चतुर (स० वि०) [चत्+उरन्] (नित्य बहुवचनांत, पु० चत्वार, स्त्री० चतस्र, नपु० चत्वारि) चार—चत्वारो वयमुत्सिक्त—वेणी० १।२२, चतस्रोऽवस्था बाल्य कौमार यौवन वार्धक वेति, चत्वारि मुक्ता अयोऽस्य पादा आदि—शैलान् भासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, समास में चतुर् का र् विसर्ग बन जाता है और विसर्ग कई स्थानों पर स् या ष् में परिणत हो जाता है अथवा अपरिवर्तित रहता है। सम०—अंश चतुर्थ भाग, अङ्ग (वि०) चार सदस्यीय, चार दल युक्त,(—ङ्ग) 1 हाथी, रथ, घोड़े और पदाति इन चार अंगों से सुसज्जित सेना—एको हि खञ्जनवरो नलिनीदलस्थो दृष्ट करोति चतुरङ्गबलाधिपत्यम् शृंगार० ४, चतुरङ्गबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अह पञ्चचतुरङ्गबलवानाकाश वशमानये—सुभा० 2 एक प्रकार की शतरंज, -अन्त (वि०) चारों ओर सीमायुक्त भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नो—रघु० ४।१९,-अन्ता पृथ्वी, - अशीत (वि०) चौरासिवाँ, —अशीति (वि० स्त्री०) चौरासी, - अश्र, - अस्र (वि०) (अश्रि,—स्रि के स्थान पर) 1 चार किनारों वाला, चतुष्कोण -रघु० ६।१० 2 समभित, नियमित या सुन्दर, सुडौल—बभूव तस्याश्चतुरश्रशोभि वपु. —कु० १।३२, (श्र,—स्र:) वर्गाकार,—अह्न् चार दिन का समय—आत्मा ब्रह्मा का विशेषण—इतरसाधनतानि यथेप्सया वितर तानि सहे चतुरानन—उद्भट, —आश्रम ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ, —उत्तर (वि०) चार बढ़ा कर, —कर्ण (चतुष्कर्ण) (वि०) केवल दो व्यक्तियों द्वारा ही सुना गया,—कोण (चतुष्कोण) (वि०) वर्ग, चार कोनों वाला, (ण:) वर्ग, चतुर्भुज, चार पार्श्व वाली आकृति —गति 1. परमात्मा 2. कछुवा,—गुण (वि०) चारगुना, चौहरा, चौलड़ा,—चत्वारिंशत् (चतुश्चत्वारिंशत्) (वि०) चवालीस, °शत् चवालिसवाँ,—चत्वार (चतुश्चत्वार) (वि०) चौरानवेवाँ या चौरानवे जोड़ कर—चतुश्चत्वारं शतम्—एक सौ चौरानवे,—दंत इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—दश (वि०) चौदहवाँ —दशन् (वि०) चौदह, °रत्नानि (ब० व०) समुद्र मथन के परिणामस्वरूप समुद्र से प्राप्त १४ रत्न (इनके नाम निम्नांकित मंगलाष्टक में गिनाये गये हैं —लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा शाङ्ग दानवदुर्लभो विष हरिधनु शङ्खोऽमृत चाम्बुधे रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिन कुर्यु सदा मङ्गलम्, °विद्या: (ब० व०) चौदह विद्याएँ (वे यह हैं —षडङ्गमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्र पुराणकम्, मीमासा तर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश),—दशी चांद्रपक्ष का चौदहवाँ दिन,—दिक्, सामूहिक रूप से चारों दिशाएँ,—दिक्षु (अव्य०) चारों दिशाओं में, सब दिशाओं में, —दोल,—ल् राजकीय पालकी, - द्वारम् 1 चारों दिशाओं में चार द्वारों वाला मकान 2 सामूहिक रूप से चारों द्वार, - नवति (वि०-स्त्री०) चौरानवे,—पञ्च (वि०) (चतु पञ्च या चतुष्पञ्च) चार या पाँच, - पञ्चाशत् (स्त्री०) (चतु पञ्चाशत्, चतुष्पञ्चाशत्) अट्ठावन, —पथ (चतु पथ, चतुष्पथ) (अन् - थी) वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें, चौराहा, - मनु० ४।३९, ९।२६४, (थ) ब्राह्मण,—पद (वि०) (चतुष्पद) 1 चार पैरों वाला 2 चार अंगों वाला (द:) चौपाया (दी) चार चरण का श्लोक - पद्य चतुष्पदी तरुण वृत्त जातिरिति द्विधा - छ० १,—पाठी (चतुष्पाठी) ब्राह्मणों का विद्यालय जिसमें चारों वेदों का पठन-पाठन होता हो। —पाणि. (चतुष्पाणि) विष्णु का विशेषण, —पाद् - द (चतुष्पाद्-द) (वि०) 1, चौपाया 2 पाँच सदस्यीय या पाँच भागों वाला, (पु०) 1 चौपाया 2 (विधि में) न्यायांग की एक कार्यविधि (अभियोगों की जाँच पड़ताल) जिसमें चार प्रकार की प्रक्रियाएँ हों अर्थात् तर्क, पक्षसमर्थन

चतुर्भुज, निर्णय,—बहु विष्णु की उपाधि (हु-नपु०) वर्ग,—आश्रम चारो पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष) की समष्टि,—मास चौमासा चौथाई,—युज् (वि०) 1. चतुष्कोण 2. चार भुजाओं वाला—मनु० ११।४६, (पु०) विष्णु की उपाधि - रघु० १६।३, (नपु०) वर्ष,—मास्य चातुर्मास्य, चौमासा (आषाढ सुदी एकादशी से कार्तिक सुदी दशमी तक),—मुख (वि०) चार मुँह वाला (ब्र) ब्रह्मा का विशेषण स्वत: सर्वं चतुर्मुखात्—रघु० १०।२२, (खम्) 1 चार मुँह—कु० २।१७ 2 चार द्वार वाला मकान, —युग्म चार युगो की समष्टि,—रात्रम् (चतुरात्रम्) चार रात्रियो का समूह, वक्त्र ब्रह्मा का विशेषण, —वर्ग मानव जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) का समूह—रघु० १०।२२,—वर्ण हिन्दुओं की चार श्रेणियाँ या जातियाँ अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—चतुर्वर्णमयो लोकः रघु० १०।२२,—वत्सिका चार वर्ष की आयु की गाय, विंश (वि०) 1 चौबीस 2 चौबीस जोड़कर जैसे कि चतुर्विंशशतम् —१२४),—विंशति (वि० या स्त्री०) चौबीस,—विंशतिक (वि०) २४ से युक्त,—विद्य (वि०) जिसने चारो वेदो का अध्ययन किया है —विध (वि०) चार प्रकार का, चौलड़ी, वेद (वि०) चारो वेदो से परिचित (द) परमात्मा, —व्यूह विष्णु का नाम (हम्) आयुर्वेदविज्ञान —शालम् (चतु शालम्, चतुरशालम्, चतु शाल्रो, चतुरशालो) चार मकानो का वर्ग, चारो ओर चार भवनो से घिरा हुआ चतुष्कोण,—षष्टि (वि० या स्त्री०) चौंसठ कला (ब० व०) चौंसठ कलाएँ, —सप्तति (वि० या स्त्री०) चौहत्तर, हायन, न (वि०) चार वर्ष की आयु का (इस शब्द का स्त्री-लिङ्गरूप आकारान्त है यदि निर्जीव पदार्थों का ही उल्लेख है; और यदि सजीव जन्तुओं से अभिप्राय है तो यह सब 'ईकारान्त' बन जाता है), होत्रकम् चारो ऋत्विजो (पुरोहितो) का समूह।

चतुर (वि०) [चत्+उरच्] 1 होशियार, कुशल, मेधावी, तीक्ष्णबुद्धि—सर्वान्मना इतिकर्याचतुरेव दूती —मुद्रा० ३।९ अमर १५।४४, मृगया: जहार चतुरेव कामिनी रघु० ९।६९, १८।१५ 2 फुर्तीला, द्रुतगामी या तेज 3 मनोज्ञ, सुन्दर, प्रिय, दक्षिकर न पुनरेति गत चतुर वय रघु० ९।४७, कु० १।८७, ३।५, ५।८०, रघु 1 होशियारी, मेधाविता 2 हस्तिशाला।

चतुर्थ (वि०) (स्त्री०—र्थी) [चतुर्णां पूरण डट् थुक् च] चौथा,—कं चौथाई, चौथा भाग। सम०—आश्रम ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चौथी अवस्था संन्यास, भाज् (वि०) अपनी प्रजा से आय का चतुर्थांश ग्रहण करने वाला, राजा, (अर्थ संकट के अवसर पर ही चतुर्थांश लेना विहित है अन्यथा प्रचलित केवल छठा भाग है)।

चतुर्थक (वि०) [चतुर्थ+कन्] चौथा, क. चौथैया ज्वर (जो हर चार दिन के बाद आता है) चौथिया।

चतुर्थी [चतुर्थ+ङीप्] 1 चान्द्र पक्ष का चौथा दिन 2. (व्या० मे) सम्प्रदान कारक। सम० कर्मन् (नपु०) विवाह के चौथे दिन किया जाने वाला संस्कार।

चतुर्धा (अव्य०) [चतुर्+धा] चार प्रकार से, चारगुणा।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयव चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1 चार से युक्त 2, चार बढा कर द्विक त्रिक चतुष्क च पञ्चक च शत समम् मनु०८।१४२ (अर्थात् १०२, १०३, १०४, या १०५ या दो से पाँच प्रतिशत का ब्याज),—कम् 1 चार का समूह 2 चौराहा 3 चौकोर आंगन 4 चार स्तभो पर अवस्थित भवन, कमरा या तम्बू—कु०५।६९, ७।९, स्त्री 1 एक चौकोर बडा तालाब 2 मच्छरदानी, मसहरी।

चतुष्टय (वि०) (स्त्री० यी) [चत्वारोऽवयवा विधा-अस्य तयप्] चारगुणा, चार से युक्त पुराणस्य कवेस्तस्य चतुर्मुखमुखोद्गता प्रवृत्तिरासीच्छन्दोना चरितार्था चतुष्टयी। कु० २।१७, मम् चार का समूह - एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् हि०प्र०११, कु० ७।६२, मासचतुष्टयस्य भोजनम्-हि० १ 2 वर्ग।

चत्वरम् [चत्+क्वरच्] 1 चौकोर जगह या आंगन 2 चौराहा (जहाँ कई सडके मिले) स खलु श्रेष्ठिचत्वरे निवसति मच्छ० २ 3 यज्ञ के लिए तैयार की गई समतल भूमि।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) [चत्वारो दशत परिमाणमस्य ब० स०, त्रि०] चालीस।

चत्वाल [चत्+वालञ्] 1 यज्ञाग्नि रखने के लिए या आहुति देने के लिए भूमि खोद कर बनाया गया हवनकुण्ड 2 कुशस्थान 3 गर्भाशय।

चद् (भ्वा० उभ० चदति ते) कहना, प्रार्थना करना।

चन्दिर [चद्+किरच्, नि०] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हाथी 4 साँप।

चन (अव्य०) नही, न केवल, भी नही (अकेला कभी प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि सर्वनाम 'किम्' तथा इससे व्युत्पन्न शब्दो (कद्, कथम्, कच, कदा, कुत्र आदि) के साथ प्रयुक्त होकर अनिश्चयात्मक अर्थ को व्यक्त करता है- दे० 'किम्' के नी०) [कई विद्वान् 'चन' को पृथक् शब्द न मान कर केवल (च) और (न) का संयोग मानते है]।

चन्द (भ्वा० पर०—चन्दति, चन्दित) 1. चमकना, प्रसन्न होना, खुश होना।

चन्द्र [चन्द्+णिच्+अच्] 1. चन्द्रमा, कपूर।

चन्दन, —नम् [चन्द्+णिच्+ल्युट्] चंदन (चंदन का वृक्ष, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई सिलाच पदार्थ—सुगंध और शीतलता की दृष्टि से सर्वोत्तम समझा जाता है)। अनलायापुरुचन्दनेभसे —रघु० ८।७१ सर्वप्रकारा सरस च चन्दन सुखी प्रियं यानि जनस्य सेव्यताम् —ऋतु० १।२, एव च मापते लोकश्चन्दनं किल शीतलम्, पुत्रगात्रस्य सस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते—पंच० ५।२०, बिना मलयमम्भव चदन न प्ररोहति—१।४१। सम०—अचल—अद्रि,—गिरि, मलय पर्वत, —उदकम् चन्दन का पानी, —द्रुमम् लौंग, —सार अत्यत श्रेष्ठ चदन की लकड़ी।

चन्दिर [चन्द्+किरच्] 1 हाथी 2 चन्द्रमा —अपि च मानसमम्बुनिधेर्यशो विमलशारदचन्दिरचन्द्रिका —भामि० १।११६, मुकुन्दमुखचन्दिरे चिरमिद चको-रायताम् —४।१।

चन्द्र [चन्द्+णिच्+रक्] 1 चन्द्रमा, यथा प्रह्लाद-नाश्चन्द्र —रघु० ४।१२, हुतवन्द्रा तमसेव कौमुदी —८।३७, न हि सहरते ज्योत्स्ना चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनि —हि० १।६१, मुख,° वदन' आदि; पर्याप्तचन्द्रेव शरत्प्रियामा—कु० ७।२६ (पौराणिकवृत्त के लिए दे० सोम) 2 चन्द्र ग्रह 3 कपूर—विलेपनस्यार्थिकचन्द्र-भागतार्थिमावनाच्चपलताय पाण्डुताम्—नै० १।५१ 4 मयूर पखो मे 'आँख' का चिह्न 5 जल 6 सोना (जब 'चन्द्र' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है -श्रेष्ठ, प्रमुख, श्रीमान् यथा पुरुषचन्द्र, "मनुष्यों में चन्द्रमा" अर्थात् एक श्रेष्ठ या महानुभाव व्यक्ति), —क्र 1 इलायची 2 खुला कमरा (जिस पर केवल छत ही हो)। सम०—अंशु: चन्द्रमा की किरण, अर्ध आधा चन्द्रमा, °चूडामणि, °मौलि: °शेखर शिव के विशेषण,—आतप: 1 चाँदनी 2 चन्द्रोदय 3 प्रशस्त कक्ष (जिसको केवल छत ही हो),—आत्मज:, —औरस:—ज:—जात,—तनय —नन्दन,—बुध बुध-ग्रह,—आनन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला (न:) कार्तिकेय का विशेषण,—आभीश शिव का विशेषण, —आभास 'झूठा चन्द्रमा' वास्तविक चन्द्रमा से मिलती जुलती आकाश में दिखाई देने वाली आकृति,—आह्वय कपूर,—इष्टा कमल का पौधा, कमलों का समूह, रात को कुमुदिनी का खिलना, —उदय: चन्द्रमा का उगना, —उपल: चन्द्रकांतमणि—कान्त चन्द्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव से कहते हैं इस मणि से रस झरता है) —द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्त —उत्तर० ६।१२, शि० ४।५८, अमरु ५७, भर्तृ० १।२१, मा० १।२४ (त:,—तम्) रात को खिलने वाला श्वेत कुमुद (तम्) चन्दन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रेखा —राहोश्चन्द्रकलामिवानतनयौ दैवात्समासादय ने—मा० ५।२८,—कान्ता 1. रात 2. चाँदनी,—कान्ति: चाँदनी (नपु०) चाँदी,—क्षय: चाँदमास का अंतिम दिन (अमावस्या) या नूतनचन्द्रदिवस जब कि चन्द्रमा दिखाई नहीं देता,—गृहम् कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशि,—गोल: चन्द्रलोक, चन्द्रमंडल,—चन्द्रिका चाँदनी, —ग्रहणम् चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—चूडा छोटी मछली,—चूड —चूडामणि —मौलि:,—शेखर: शिव के विशेषण—रहस्युपालभ्यत चन्द्रशेखर:—कु० ५।५८, ८६, रघु० ६।३४,—तारा. (पु०, द० व०) 'चन्द्रमा की पत्नियाँ' २७ नक्षत्र (पुराणों की दृष्टि से यह दक्ष की पुत्रियाँ थी और चन्द्रमा को ब्याही गई थीं), —द्युति चन्दन की लकड़ी (स्त्री०) चाँदनी,—नामन् (पु०) कपूर,—पाद. चन्द्रकिरण—मेघ० ७०, मा० ३।१२,—प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश, —फाला 1. बड़ी इलायची 2 चाँदनी,—बिंदु अनुस्वार (०) का चिह्न —भस्मन् (नपु०) कपूर,—भागा दक्षिणभारत की एक नदी,—भास तलवार दे० चद्रहास,—मणि(नपु०) चाँदी,—मणि चन्द्रकांत मणि,—रेखा,—लेखा चन्द्रमा की कला,—रेवु साहित्यचोर,—लोक चद्रसंसार —लोहकम्,—लौहम्,—लौहकम् चाँदी,—वंश राजाओं का चन्द्रवंश, भारत के राजवंशों में दूसरी बड़ी पंक्ति, —वदन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला,—व्रतम् एक प्रकार की प्रतिज्ञा या तपस्या=चान्द्रायण,—शाला 1 चौबारा (घर में सबसे ऊपर की मंजिल का कमरा) —रघु० १३।४० 2 चाँदनी,—शालिका चौबारा, —शिला चद्रकांतमणि—भट्टि० ११।१५,—सार कपूर,—संभव वृक्ष (ना) छोटी इलायची,—सालो-कत्व चाद्र स्वर्ग की प्राप्ति,—हन् (नपु०) राहु का विशेषण,—हास 1 चमकीली तलवार 2. रावण की तलवार—हे पाणय. किमिति बाल्लभ चन्द्रहासम् —बालरा० १।५६, ६१ 3 केरल का एक राजा, सुधार्मिक का पुत्र (यह मूलनक्षत्र में पैदा हुआ था, और इसके बायें पैर में छ अंगुलियाँ थी, इसी कारण इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और दरिद्र हो गया। बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया। जिस समय अश्वमेध के घोड़े के साथ घूमते हुए कृष्ण और अर्जुन दक्षिण में आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली)।

चन्द्रक [चन्द्र+कन्] 1. चाँद 2. मोर के पखों में आँख का चिह्न 3. नाखून 4 चन्द्रमा के आकार का बुलबुला (पानी में तेल की बूँद गिरने से बन जाता है)।

चन्द्रकिन् (पु०) [चन्द्रक+इनि] मोर,—शि० ३।४९।

चन्द्रमस् (पुं०) [चन्द्र+मि+असुन्, मादेशः] चाँद,—नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२।

चन्द्रिका [चन्द्र+ठन्+टाप्] 1 चाँदनी, ज्योत्स्ना—इत इदुतिः का ऊकु चन्द्रिकाया यदब्धिमप्युत्तरलीकरोति—कै० ३।११६, रघु० १९।३९, कामुकैः कुम्भीलकैश्च परिरक्षणीया चन्द्रिका—मालवि० ४ 2 (समास के अन्त में) विशदीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालना। अलंकारचन्द्रिका, काव्यचन्द्रिका—तु०—कौमुदी 3. जलमग्राहट 4. बड़ी इलायची 5 चन्द्रभागा नामक नदी 6 बल्लिका लता। सम०—अम्बुजम् चन्द्रोदय होने पर खिलने वाला कुमुद,—इष्टः चन्द्रकान्तमणि,—चारिन् (पुं०) चकोर पक्षी।

चन्द्रिन्: [चन्द्र+इनच्] 1 शिव का विशेषण।

चप i (भ्वा० पर०—चपति) सांत्वना देना, ढाढस देना। ii (चुरा० उभ०—चपयति—ते) पीसना, चूरा करना, मांडना।

चपट=चपेट

चपल (वि०) [चप्+कल, उपधोकारस्याकारः] 1 हिलने-डुलने वाला, कंपमान, घबराने वाला—कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शासिनो यौतमूला—श० १।१५, चपलायताक्षी—चौर० ८ 2 अस्थिर, चंचल, चलचित्त, दोलायमान—भा० २।११, चपलमति आदि 3 भंगुर, अनित्य, क्षणिक—नलिनीदलगतजलमतितरल तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्—मोह० ५ 4 फुर्तीला, चंचल, चुस्त—(तम्) शीघ्रताव्यापकमप्यशोभते—का० ११।८ 5 विचारशून्य, अविवेकी—तु० चापल, —लः 1 मछली 2. पारा 3 चातक पक्षी 4 क्षय 5 सुगंध द्रव्य।

चपला [चपल+टाप्] 1 बिजली—कुरबककुसुम चपला-सुरभम रतिपतिमृगकानने—गीत० ७ 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 मदिरा 4 धन की देवी लक्ष्मी 5 जिह्वा। सम०—अक्षः चंचल तथा अस्थिरमना स्त्री। शि० ९।१६।

चपेटः [चप्+इट्+अच्] 1 थप्पड़ 2 चाटा।

चपेटा, चपेटिका [चपेट्+टाप्, चपेट+कन्+टाप्, इत्वम्] चाँटा—अध्यक्षोपाध्याय शिष्याय चपेटिका ददाति—महा०।

चम् (भ्वा० पर०—चमति, चान्त) 1 पीना, आचमन करना, चढ़ा जाना,—चचाम मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2 खाना, आ—(आ—चामति) 1 आचमन करना, एक सांस में पी जाना, चाटना नाचमे हिममपि वारि वारणेन—कि० ७।३४, भामि० ४।३८, उत्तर० ४।१ 2 चाट लेना, पी जाना, सोख लेना—आचामति स्वेदलवान्मुखे ते—रघु० १३।२०, ९।६८।

चमत्करणम्, चमत्कारः, चमत्कृतिः (स्त्री०) 1. विस्मय, आश्चर्य 2. खेल, तमाशा 3. काव्य सौन्दर्य (जिससे काव्यरस की अनुभूति होती है)—चेतश्चमत्कृतिपदं कथितेव रम्या—मालवि० ३।१, तदपेक्षया वाक्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १।

चमरः [चम्+अरच्] एक प्रकार का हरिण,—रः,—रम् चौरी (प्राय. चमर मृग की पूंछ से बनी),—री, चमर की मादा—यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशास्त्र कुर्वन्ति बाल-व्यजनैश्चमर्यः कु० १।१, ४८, शि० ४।६०, मेघ० ५३। सम०—पुच्छम् चमर की पूंछ जो पंखे का काम देती है, (—च्छः) गिलहरी।

चमरिकः [चमर+ठन्] कोविदार वृक्ष, कचनार का पेड़।

चमस,—सम् [चमत्यस्मिन् चम+असच् तारा०] सोमपान करने का लकड़ी का चमचे के आकार का यज्ञ पात्र, —याज्ञ० १।१८३, ('चमसी भी')।

चमू (स्त्री०) [चम्+ऊ] सेना—पश्यैता पाण्डुपुत्राणामा-चार्य महतीं चमूम्—भग० १।३, वासवीनां चमूनाम्—मेघ० ४३, गजवती जवतीग्रहया चमू—रघु० ९।१० 2 सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार तथा ३६४५ पदाति हों। सम०—नरः सैनिक, योद्धा,—नाथः, पः,—पतिः सेनापति, कमाण्डर, सेना नायक—रघु० १३।७४, —हरः शिव की उपाधि।

चमूरु [चम्+ऊरु, उत्वम्] एक प्रकार का हरिण—चकासत चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८।

चम्प् (चुरा० उभ०—चम्पयति—ते) जाना, चलना-फिरना।

चम्पकः [चम्प+ण्वुल्] 1 चम्पा नामक पौधा जिसके पीले, सुगंधयुक्त फूल लगते हैं 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, —कम् इस वृक्ष का फूल—अद्यापि तां कनकचम्पक-दामगौरीम्—चौर० १।1 सम०—माला चम्पाकली, स्त्रियों का एक आभूषण जो गले में पहना जाता है 2 चम्पा के फूलों की माला 3 एक प्रकार का छंद, दे० परिशिष्ट,—रम्भा केले की एक जाति।

चम्पकालुः [चम्पकेन पलाशावयवविशेषेण अलति, चम्पक+अल्+उण्] कटहल का पेड़।

चम्पकावती, चपा, चपावती [चम्पक+मतुप्+ङीप्, वत्व दीर्घश्च, चम्प्+अच्+टाप्, चम्पा+मतुप्+ङीप् वत्व] गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अंगदेश की राजधानी, वर्तमान भागलपुर।

चम्पालुः=चम्पकालु।

चम्पू (स्त्री०) [चम्प्+ऊ] एक प्रकार का काव्य जो गद्य और पद्य दोनों रचनाओं से युक्त होता है तथा जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—गद्यपद्यमय

कार्यं चम्पूरित्यभिधीयते—सा० द० ५६९, उदा० गोवर्धचपू, मलयचपू और भारतचंपू आदि।

चप् (म्वा० आ०—चपते) किसी जगह जाना, हिलना-डुलना।

चय [चि+अच्] 1 संचात, संग्रह, समुच्चय, ढेर, राशि —चयश्चितश्चामित्यवचारितं पुरा—शि० १।३, मृत्तिका चय —उत्तर० २।९, मिट्टी का ढेर, कपालां चय —मृच्छ० १।५, बालों का गोंछा (गुच्छा), इसी प्रकार चमरीचय—शि० ४।६० कुसुमचय तुषारचय आदि 2 किसी भवन की नींव की मिट्टी का टीला 3. किले की आई की मिट्टी का टीला 4 दुर्गप्राचीर 5. किले का द्वार 6 सिपाई, चौकी 7 मकानों का समूह, विशाल भवन 8 सकड़ियों का चट्टा।

चयनम् [चि+ल्युट्] 1. चुनना, बीनना (फूल आदि का) 2. ढेर लगाना, चट्टा लगाना।

चर् (भ्वा० पर०—चरति, चरित) 1 चलना, घूमना, इधर-उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना—मष्टा-शङ्कया हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१५, (यहाँ 'चर्' का अर्थ 'घास चरना' भी है)—इन्द्रियाणां हि चरताम्—भग० २।६७, कपटवेषधरास्तस्य रामस्येव मनोरथा—रघु० १२।५९, मनु० २।२३, ६।६८, ८।२३६, ९।३०६, १०।५५ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना, पर्यवेक्षण करना—चरत बिल दुश्चरं तप—रघु० ८।७९, याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३०, 3 करना, व्यवहार करना, आचरण करना (प्राय 'अभि०' के साथ) —चरन्तीवा च कामत—मनु० ५।९० ९।२८७, आत्मवत्सर्वभूतेषु यश्चरेत्—महा०, तस्मां त्व साधु नाचर—रघु० १।७६, (यहाँ पर धातु 'आचर' भी हो सकती है) 4 घास चरना—सुचिरं हि चरन् शस्य—हि० ३।९ 5 खाना, उपभोग करना 6 काम में लगना, व्यस्त होना 7 जीना, चलते रहना, किसी न किसी अवस्था में विद्यमान रहना। प्रेर०—चारयति 1 चलाना, हिलाना-डुलाना 2 भेजना, निर्देश देना, हिलाना 3. दूर करना 4. अनुष्ठान करना, अभ्यास कराना 5 उपभोग कराना,—अति 1. अतिक्रमण करना उल्लंघन करना, अवज्ञा करना 2 अत्याचार करना, अनु—, अनुकरण करना, आज्ञा —नकल करना, पीछे चलना, अव—, 1 अतिक्रमण करना, अत्याचार करना 2. अवज्ञा करना, अभि—, 1 अपराध करना, उल्लंघन करना 2 (पति के रूप में) विश्वास खो देना, धोखा देना—मनु० ५।१६२, ९।१०२ 3. जादू करना, मंत्र फूंकना —तथैवाभिचरन्नपि—याज्ञ० १।२९५, ३।२८९, आ—, 1 कर्म करना, अभ्यास करना, करना, अनुष्ठान करना —तपस्विकन्यास्वविनयमाचरति—श० १।२५, त्वं च तस्येष्टमाचरे.—विक्रम० ५।२०, रघु० १।८९, मनु० ५।१५६, न चाप्याचरित. पूर्वैरयं धर्म:—महा० 2. वर्ताव करना, व्यवहार करना, आचरण करना—युक्तिमाचरेत् शिष्यम्—सिद्धा०, पुत्रं मित्र-वदाचरेत् - चाण० ११ 3. घूमना, इधर-उधर फिरना 4. आसव लेना, अनुसरण करना—रघु० ४।४४, उद्—, 1 ऊपर जाना, उठना, निकलना, आगे बढ़ना - शि० १७।५२, 2 उठना, प्रकट होना, (शब्द) निकलना —उच्चार निनदोऽभवति तस्या:—रघु० ९।७३, १५। ४६, १६।८७, कोलाहलध्वनिरुदचरत् —का० २७ 3. बोलना, उच्चारण करना—शब्द उच्चरित एव नावसात्—रघु० ११।७३ 4. मनोरंजन करना, पुरोवोरतनं करना—तिरस्कृरवोच्चरेत्काष्ठकोष्ठपत्र-तृणादिना—मनु० ४।४९ 5 (आ० में प्रयोग) (क) उत्क्रमण करना, विचलित होना—मद्दि० ८।३३, (ख) उठना, चढ़ना—नै० ५।४८, प्रेर० चढ़वाना, उच्चारण करवाना, उप—, 1 सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में प्रस्तुत रहना—गिरिसमुपचचार सपत्नी सा सुकेशी—कु० १।६०, समुपचर भद्रे सुप्रिय पतिमिव च—मृच्छ० १।३१, रघु० ५।६२, मनु० ३।१९३ 2 (रोगी की) सेवा करना, चिकित्सा करना, परि-चर्या करना 3. व्यवहार करना 4. निकट जाना, प्र—, ठगना, धोखा देना, परि,—1 जाना, इधर उधर घूमना 2 सेवा-शुश्रूषा करना, सेवा करना या सेवा में उपस्थित रहना —मनु० २।२४३, भर्तृ० ३।४० 3. देख भाल करना, परिचर्या करना, सेवा करना, प्र,—1 इधर उधर चलना, ऐंठ कर चलना 2. फैलना, प्रचलित होना, वर्तमान होना 3. (प्रथा का) प्रचलन होना 4 कार्य आरंभ करना, मार्ग अपनाना, कार्य करने लगना—मनु० ९।२८४, (प्रेर०) इधर उधर फिराना, वि,—1 इधर उधर घूमना, भ्रमण करना,—रघु० २।८, मेघ० ११५ 2. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 3. कर्म करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, (प्रेर०) 1 सोचना, विचारना, मनन करना 2. चर्चा करना, वादविवाद करना —रघु० १४।४६ 3. हिसाब लगाना, अनुमान लगाना, हिसाब में गिनना, विचार करना—परेषामात्मनश्चैव यो विद्वांसं बलाबलम्—पंच० ३, सुविचार्यं यत्कृतम्—हि० १।२२, समि,—1 पथ-भ्रष्ट होना, विचलित होना 2. उल्लंघन करना, विश्वास घात करना 3. कपटपूर्ण व्यवहार करना, सम्—(आ० अब कि करण० के साथ प्रयोग हो) 1. चलना, घूमना, जाना, यूद्धरना, इधर उधर फिरना —यानैं समचरत्सान्वे—भट्टि० ८।३२, क्वचित्पथा सचरते सुराणाम्—रघु० १३।१९, नै० ६।५७, संच-रता-चलाना—कु० १।६ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3 दे देना, हस्तांतरित होना। (प्रेर०) 1. इधर

उधर भेजना, नेतृत्व करना, संचालन करना,-रा०५।५ 2. फैलाना, इधर उधर घुमाना 3 पहुँचाना, समाचार देना, दे देना, सौंप देना 4 चरने के लिए भेजना।

चर (वि०) (स्त्री०—री) [चर्+अच्] 1 हिलने-डुलने वाला, आने वाला, चलने वाला (समास के अन्त में) 2 काँपता हुआ, हिलता हुआ 3 जंगम दे० 'चराचर' —मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4 सजीव—मनु० ५।२९, ७।१५ 5 (प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) पूर्वकालीन, भूतपूर्व आढ्यचर—जो पहले धनवान् था, इसी प्रकार देवदत्तचर, अध्यापकचर (भूतपूर्व अध्यापक),—रः 1 द्यूत 2 खंजन पक्षी 3 जूआ खेलना 4 कौड़ी 5. मंगलग्रह 6 मंगलवार। सम०—अचर (वि०) जंगम और स्थावर—चराचराणां भूतानां कुक्षिराचारतां गत —कु० ६।६७, २।५ भग० ११।४३, (रम्) 1 सृष्टि की समस्त रचना, संसार- मनु० १।५७, ६३, ३।७५, भग० ११।७, ९।१० 2 आकाश, अन्तरिक्ष, —द्रव्यम् जंगम वस्तु,—मूर्ति वह मूर्ति जिसका जलूस या सवारी निकाली जाय।

चरक [चर+कन्] 1 द्यूत 2 रमता साधु, अवधूत।

चरट [चर् + अटच्] खंजन पक्षी।

चरण, -णम् [चर्+ल्युट्] 1 पैर -शिरसि चरण एव न्यस्यते वार्यतनम्—वेणी० ३।३८, जाया कामयध्वे-ऽसि चरण त्विदमुद्धृतम्— ३९ 2 सहारा, स्तंभ, थूणी 3 वृक्ष की जड़ 4 श्लोक की एक पंक्ति या पाद 5 चौथाई 6 वेद की शाखा या सम्प्रदाय 7 वंश, —णम् 1 हिलना-डुलना, भ्रमण करना, घूमना 2 अनुष्ठान, अभ्यास मनु० ६।७५ 3 जीवनचर्या, चालचलन, (नैतिक) व्यवहार 4 निष्पन्नता 5 खाना, उपभोग करना। सम०—अमृतम्,—उदकम् वह पानी जिसमें किसी श्रद्धेय ब्राह्मण या आध्यात्मिक उपदेष्टा के पैर धोये जा चुके हैं,—अरविन्दम्, —कमलम्, —रजस् कमल जैसे पैर,—मायुमः मुर्गा, —आस्फालनम् पैरों के नीचे रौंदना, कुचलना, पद दलित करना —ग्रन्थि (पुं०) —बन्धः (नपुं०) टखना, —त्राणम् पग, कवच, —द्रुः वृक्ष,—पतनम् (दूसरे के चरणों में) गिरना, साष्टांग प्रणाम करना—अमरु १७,—पतित (वि०) चरणों में दण्डवत् प्रणाम करना- मेघ० १०५, —शुश्रूषा, सेवा 1 दण्डप्रणाम 2 सेवा, भक्ति।

चरम (वि०) [चर्+अमच्] 1 अन्तिम, अन्त्य, आखरी —चरमा क्रिया 'अन्त्येष्टिक्रिया या अन्त्येष्टि संस्कार' 2 पश्चवर्ती, बाद का—पुष्प तु चरमं फलं —अमर० 3 (आयु की दृष्टि से) बूढ़ा 4 बिल्कुल बाहर का 5. पश्चिमी, पश्चिमी 6 सबसे नीच, सबसे कम,—मम् (अव्य०) आखिरकार, अन्त में। सम०—अचलः —अद्रिः,—अम्बुधिः (पुं०) पश्चिमी पर्वत (सूर्य और चन्द्रमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने जाते हैं),—अवस्था अन्तिम दशा (बुढ़ापा),—कालः मृत्यु की घड़ी।

चरि [चर्+इन्] जीव, जन्तु।

चरित (भू० क० कृ०) [चर्+क्त] 1 घूमा हुआ या फिरा हुआ, गया हुआ 2 अनुष्ठित, अभ्यस्त 3 आप्त 4 ज्ञात 5 प्रस्तुत,—तम् 1 जाना, हिलना-डुलना, मार्ग, कर्म करना, करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म -उदारचरितानां -हि० १।७०, सर्वं खलस्य चरितं मशक करोति -१।८१ 3. जीवनी, आत्मजीवनी, साहसकथाएँ, इतिहास, कहानी -उत्तर रामचरित तत्प्रणीत प्रयुज्यते—उत्तर० १।२, इसी प्रकार 'कुमारचरितम्' आदि। सम०—अर्थ (वि०) 1 जिसने अपना अभीष्ट ध्येय पूरा कर लिया है, सफल रामरावणयोर्युद्ध चरितार्थमिवाभवत्—रघु० १२।८७, १०।३६, २।१७, कि० १३।६२ 2 संतुष्ट, तृप्त 3 कार्यान्वित, संपन्न।

चरित्रम् [चर्+इत्र] 1 व्यवहार, आदत, चालचलन, अभ्यास, कृत्य, कर्म 2 अनुष्ठान, पर्यवेक्षण 3 इतिहास, जीवनचरित, आत्मकथा, वृत्तांत, साहसकथा 4 प्रकृति, स्वभाव 5 कर्तव्य, अनुमोदित नियमों का पालन - मनु० २।१२०, ९।७।

चरिष्णु (वि०) [चर+इष्णुच्] जंगम, सक्रिय, इधर उधर घूमने वाला।

चरु [चर्+उन्] उबले चावल, आदि से, देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई आहुति—रघु० १०।५२, ५४, ५६। सम० —स्थाली देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए चावलों को उबालने का बर्तन।

चर्च् I (चुरा० उभ०—चर्चयति ते, चर्चित) पढ़ना, ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अध्ययन करना। II (तुदा० पर०—चर्चति, चर्चित) 1 गाली देना, धिक्कारना, निन्दा करना, बुराभला कहना, चर्चा करना, विचार करना।

चर्चनम् [चर्च+ल्युट्] 1 अध्ययन, आवृत्ति, बार२ पढ़ना 2 शरीर में उबटन लगाना।

चर्चरिका, चर्चरी [चर्चरी+कन्+टाप्, ह्रस्व, चर्च्+अरन्+ङीष्] 1 एक प्रकार का गान 2 (संगी० में) तालियाँ बजाना 3 विद्वानों का सस्वर पाठ 4 आमोद प्रमोद, हर्षध्वनि 5 उत्सव 6 खुशामद 7 घुंघराले बाल।

चर्चा, चर्चिका [चर्च्+अङ+टाप्, चर्चा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 आवृत्ति, स्वर पाठ, अध्ययन, बार२ पढ़ना 2 बहस, पूछ-ताछ, अनुसंधान 3 विचार विमर्श

4 शरीर में उबटन का लेप करना —अङ्गचर्चनिरत्ययम् —का० १५७, श्रीखण्डचर्चाविधम् —गीत० ९ ।

चर्चिक्यम् [चर्चिका+यत्] 1 शरीर में लेप (मालिश) करना 2 उबटन ।

चर्चित (भू० क० कृ०) [चर्च+क्त] 1. मालिश किया हुआ, लेप किया हुआ, सुगन्धित, सुवासित आदि -- चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली - गीत० १, ऋतु० २।२१ 2 चर्चा किया गया, विचार किया गया, खोज किया गया ।

चर्चट: [चृप्+अटन्] चपेड, थप्पड़ तु० 'चपेट' ।

चर्चटी [चर्चट+ङीष्] चपाती, बिस्कुट ।

चर्चर: [चर्+क्विप्, भट्+अच्, तत कर्म० स०] एक प्रकार की ककड़ी ।

चर्चरी [चर्चर+ङीष्] 1 हर्ष का कोलाहल 2 ककड़ी ।

चर्मन् [चर्मन्+अच्, टिलोप] ढाल ।

चर्मण्वती [चर्मन्+मतुप्+ङीष्, मस्य व] मथा में आकर मिलने वाली एक नदी, वर्तमान चम्बल नदी ।

चर्मन् (नपु०) [चर्+मनिन्] 1 (शरीर की) त्वचा 2 चमड़ा, खाल --मनु० २।४१, १७४ 3 त्वगिन्द्रिय 4 ढाल --शि० १८।२१ । सम० —अम्बरः (नपु०) लम्बीका, --अवकर्तनम् चमड़े का काम करना, - अवकर्तिन्,—अवकर्तृ (पु) मोची, —कारः, - कारिन् (पु०) मोची, चमड़ा कमाने या रंगने वाला,—कीकः, —कोलम् मस्सा, अर्शमास,—चित्रकम् सफ़ेद कोढ़, —जम् 1 बाल 2 रुधिर, -तरङ्गः झुर्री,--दण्डः, —नालिका हण्टर, - द्रुमः, वृक्षः भूर्ज नाम का पेड़, —पट्टिका चमड़े का चौरस टुकड़ा जिस पर पासे डाल कर खेला जाय, —पत्रा चमगादड़, छोटा घरों में पाया जाने वाला चमगादड़,—पादुका चमड़े का जूता, —प्रसेविका मोची की रापी, - प्रसेवकः, —प्रसेविका बौंकनी, —वस्त्र चमड़े का फोता, - मुण्डा दुर्गा का विशेषण, —यष्टिः (स्त्री०) हण्टर, —वसनः 'चर्मावृत' शिव, —वाद्यम् ढोल, तबला, -- संभवा बड़ी इलायची,—सारः लसिका, रक्तोदक ।

चर्मन्वत (वि०) [चर्मन्+मयट्] चमड़े का, चमड़े का बना हुआ ।

चर्मन्, —चर्मारुः [चर्मन्+रा+कु, चर्मन्+रु+अच्] मोची, चमार, चमड़ा रंगने वाला ।

चर्मिक (वि०) [चर्मन्+ठन्] ढाल से सुसज्जित ।

चर्मिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [चर्मन्+इनि, टिलोप] 1. ढाल से सुसज्जित 2. चमड़े का, (पु०) 1. ढालधारी सैनिक 2 केला 3. भूर्ज वृक्ष ।

चर्या [चर्+यत्+टाप्] 1. इधर-उधर जाना, हिलना-डुलना, इधर-उधर सैर करना 2 मार्ग, चाल (जैसा कि 'राहुचर्या' में) 3 व्यवहार, चालचलन, आचरण-विधि 4. अभ्यास, अनुष्ठान, पालन—मनु० १।१११, व्रतचर्या, तपश्चर्या 5 सब प्रकार के रीति-रिवाज व संस्कारों का नियमित अनुष्ठान 6. खाना 7. प्रथा, रिवाज—मनु० ६।३२ ।

चर्व् (स्वा० पर०—चुरा० उभ०—चर्वति, चर्वयति—ते, चर्वित) 1 चबाना, कुतरना, खाना, कोंपल चरना, काटना—लाङ्गूल गाढतर चर्विसुमारब्धवान्—पञ्च ४, यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्जक्षद्यान्तर चर्व्यते—मृच्छ० २।११ 2 चूस लेना 3 स्वाद लेना, चखना ।

चर्वणम्,—णा [चर्व्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1 चबाना, खाना 2 आचमन करना 3 (आल०) चखना, स्वाद लेना, आनन्द लेना --प्रमाण चर्वणैवास्य स्वामिन्ने विदुषा मतम् - सा० द० ५७, (टी० चर्वणा आस्वादनं तच्च स्वाद काव्यार्थसंभेदादानन्दसमुद्भव इत्युक्तप्रकारम्), इसी प्रकार 'निष्पत्या चर्वणस्यास्य निष्पत्तिरुपचारत' ५८ ।

चर्वा [चर्व्+अङ्] तमाचा, थप्पड़ का प्रहार (चर्वन् (पुं०) भी) ।

चर्वित (भू० क० कृ०) [चर्व्+क्त] 1 चबाया गया, काटा हुआ, खाया हुआ 2 चखा गया । सम० - चर्वणम् (ना०) चबाये हुए को चबाना, (आल०) पुनरुक्ति, निरर्थक आवृत्ति, —पात्रम् पीकदान ।

चल् 1 (स्वा० पर०—चलति, (विरल प्रयोग—चलते) चलित) 1 हिलाना, काँपना, थरथराना, स्पंदित होना,—छिन्नाश्चेलु अव भुजा—भट्टि० १४।४०, सपक्षोद्रिरिवाचालीत् --१५।२४, ६।८४ 2 (क) जाना, चलते रहना, सैर करना, स्पंदित होना, हिलना-डुलना (एक स्थान से) —पदात्पदमपि चलितुं न शक्नोति —पञ्च० ४, चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् —चाण० ३२, चंचल बाला स्तनाभिघ्नदृक्कला —कु० ५।८४, मृच्छ० १।५६ । (ख) (अपने मार्ग पर) आगे बढ़ना, विदा होना, कूच करना, चल देना —चेलुश्चोरपरिग्रहा —कु० ६।९३ 3 ग्रस्त होना, संत्रस्त होना, घबड़ाया हुआ या अव्यवस्थितचित्त होना, क्षुब्ध होना, व्याकुल होना - मुनेरपि यतस्तस्य चलते मन —पञ्च० १।४०, लोभेन बुद्धिश्चलति—हि० १।१४० 4 विचलित होना या भटकना (अपा० के साथ) —चलति नयान्न जितेन्द्रियता हि चेत —कि० १०।२९, अलग होना, छोड़ देना—मनु० ७।१५, याज्ञ० १।३६०, (प्रेर०)—च (चा) लयति, च (चा) लित 1 हिलाना-डुलाना झुलाना, हरकत देना 2. दूर करना हटाना, निकाल देना 3. दूर ले जाना 4 आनन्द लेना बहलाना-सोसना (केवल—चालयति), उद्—1. चल देना, प्रस्थान करना,—स्थित स्थितामुच्चलितः प्रवासात्—रघु० २।६, उच्चचाल बलाभितस्तको बली

—११।५१, नगरायोदचलम्—दश० 2 चले जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना -स्थानादनुच्चलन्नपि —श० १।२९, पुण्याच्चलितव्रतम् —रघु० १२।२७, ग -, 1 हिलाना, जाना, काँपना —भर्तृ० २।४ 2 जाना, सैर करना, चलते जाना, प्रस्थान करना, कूच करना 3 ग्रस्त होना, बाधायुक्त या क्षुब्ध होना 4 भटकना, विचलित होना, वि - 1 हिलना-डुलना, चलना पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम्- गीत० ५ 2 जाना, आगे बढ़ना, चल देना 3 क्षुब्ध होना, बाधायुक्त होना, (समुद्र की भाँति) रुका होना—व्यचालोदम्भसां पतिः —भट्टि० १५।७० 4 विचलित होना, भटकना —याज्ञ० १।३५८, ॥ (तुदा० पर०—चलति चलित) खेलना, क्रीडा करना, केलि करना।

चल (वि०) [चल्+अच्] 1 (क) हिलने-जुलने वाला काँपने वाला, डोलने वाला, थरथराने वाला, (आँख आदि को) घुमाने वाला चलापाङ्गा दृष्टि स्पृशसि —श० १।२४, चलकाकपक्षकैरमात्यपुत्रैः - रघु० ३।२८, लहराने वाले- भर्तृ० १।६, (ख) अगम (विप० स्थिर)—चञ्चलचले लक्ष्ये—श० २।५ 2 अस्थिर, चपल, परिवर्तनशील, शिथिल, डाँवाडोल—दयितास्वनवस्थिता नृणां न खलु प्रेम चल सुहृज्जने -कु० ४।२८, प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु—३।१ 3 अस्थायी, अस्थिर, नश्वर—चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवितयौवने 4 अव्यवस्थित, - ल. 1 कपकपी, वेपथु, क्षोभ 2 वायु 3 पारा- ला 1 धन की देवी लक्ष्मी 2 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य। सम०- अलि चलायमान (- अलिचल), चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः - भर्तृ० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलाचलाम् कि० ११।३० (चलाचला - चञ्चला - मल्लि०) नै० १।६०, (ल) कौवा,—आत्मन् (वि०) चलचित्त, चञ्चलमना, इन्द्रिय (वि०) 1 नायक 2 विषयी,— इषु वह धनुर्धर जिसका तीर लक्ष्यच्युत हो इधर उधर गिर जाता है, अयोग्य धनुर्धर,— कर्ण पृथ्वी से ग्रह तक की वास्तविक दूरी,—चञ्चु चकोर पक्षी, - दल, - पत्र अश्वत्थ वृक्ष।

चलन (वि०) [चल्+ल्युट्] गतिशील, थरथराने वाला, कंपमान, डाँवाडोल, - नः 1 पैर 2 हरिण, नम् 1 काँपना हिलना, डाँवाडोल होना चलनात्मक कर्म —नर्क स०, हस्त°, जानु° आदि—तरल दृगञ्चल-चलनमनोहरवदनजनितस्मितविलासम् - गीत० ११ 2 घूमना, भरमना,-नी 1 सामान्य स्त्रियों के पहनने के लिए लहँगा, पेटीकोट 2 हाथी को बाँधने की रस्सी।

चलनकम् [चलन+कन्] एक छोटा लहँगा या पेटीकोट जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पहनती हैं।

चलि [चल्+इन्] आवरण, चादर।

चलित (भू० क० कृ०) [चल्+क्त] 1 हिला हुआ, चला हुआ, आन्दोलित, क्षुब्ध 2 गया हुआ, विसर्जित - एवमुक्ता स चलित 3 अवाप्त 4 ज्ञात, अधिगत (दे० चल्), - तम् 1 हिलाना, स्पंदित करना 2 जाना, चलना 3 एक प्रकार का नृत्य—चलित नाम नाट्यमल्लरेण - मालवि० १।

चलु [चल्+उन्] (पानी का) एक घूँट, चुल्लूभर।

चलुक [चलु+कन्] 1 चुल्लूभर (पानी) 2 अञ्जलिभर या एक घूँट (पानी) तु० 'चुलुक'।

चव 1 (भ्वा० उभ० - चवति—ते) खाना, ॥ (भ्वा० पर० - चवति) मार डालना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना।

चषक, -कम् [चष+क्वन्] सुरापात्र, प्याला, मदिरा पीने का गिलास अयुं शिरस्त्रैश्चषकोत्तरैव —रघु० ७।४९, मुख लालाविलग्न पिबति चषक मासवस्मिवलो० १।२९, कि० ९।५६, ५७,—कम् 1 एक प्रकार की मदिरा 2 मधु, शहद।

चषति [चष्+अति] 1 खाना 2 मार डालना 3 ह्रास, निर्बलता, क्षय।

चषाल [चष्] आलच्] 1 यज्ञ के खंभे में लगी लकड़ी की फिरकी 2 छत्ता।

चह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० -चहति, चहयति—ते) 1 दुष्ट होना 2 ठगना, धोखा देना 3 अहंकार करना, घमंडी बनाना।

चाकचक्यम् [चक्+अच, द्वित्वम्, चकचक—तस्य भाव ष्यञ्] जगमगाना, प्रभा, चमक-दमक।

चाक्र (वि०) (स्त्री०—की) [चक्र+अण्] 1 चक्र से किया जाने वाला (युद्ध) 2 पहेलीकार 3 चक्र या पहिए से संबंध रखने वाला।

चाक्रिक (वि०) (स्त्री० -की) [चक्र+ठक्] दे० ऊ० चाक्र, -क 1 कुम्हार 2 तेली -याज्ञ० १।१६५, (तैलिक - मिता०, दूसरों के मत में शाकटिक=गाड़ीवान) 3 कोचवान, चालक।

चाक्रिण [चक्रिन् +अण्] कुम्हार या तेली का पुत्र।

चाक्षुष (वि० स्त्री०—षी) [चक्षुस् +अण्] 1 दृष्टि पर निर्भर, दृष्टि से उत्पन्न 2 आँख से संबंध रखने वाला, आँख का विषय, दार्शनिक 3 दृश्य, जो दिखाई दे, -षम् दृष्टि पर निर्भर ज्ञान। सम० -ज्ञानम् आँखों देखी गवाही, या प्रमाण।

चाङ्गेरी [चि+इङ्गेरच् ङीष् अङ्गेरम् यस्य ब० स०] 1 अम्ललोणिका शाक 2 दाँतों की सफेदी या सौंदर्य।

चाञ्चल्यम् [चञ्चल+ष्यञ्] 1 अस्थिरता, द्रुतगति,

विलोलता, (आंख आदि का) कम्पन, फरकना—भामि० २।६० 2 चचलता 3 तेजस्विता।

चाटः [चट्+अच्] बदमाश, ठग (जो पहले उसमें पूरा विश्वास जमा लेता है जिसे वह ठगना चाहता है) —याज्ञ० १।३३६—(चाटा = प्रतारका विश्वास्य ये परधनमपहरन्ति -यित०)।

चाटु-टु (नपु०) [चट्+उण्] 1 मधुर तथा प्रिय वचन, मीठी बात, चापलूसी, ठकुरसुहाती (विशेषकर किसी प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति) —प्रिय प्रियाया प्रकरोति चाटुम्—ऋतु० ६।२४, विरचितचाटुवचनरचन चरणरचितप्रणिपातम्—गीत० ११, अमरु ८३, पंच० १, शा० ८।१८, चौर० २० (गीतगोविंद के दसवें सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चाटुकारिता से भरा हुआ है) 2 स्पष्ट भाषण। सम०—उक्ति (स्त्री०) खुशामद और झूठी प्रशंसा के वचन, —उल्लोल, —कार (वि०) प्रिय तथा मधुर बोलने वाला, चापलूस -शिक्षावान प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकार —मेघ० ३१, —कृत् (वि०) झूठी प्रशंसा करने में कुशल, पूरा चापलूस,—कृत् ममक्खण, भाड,—लोल (वि०) सुदरतापूर्वक हिलने वाला,—शतम् सैकडों अनुरोध, बार-बार की जाने वाली खुशामद —पटुचाटुशतैरनुकूलम्—गीत० २, गजपुङ्गवस्तु धीर विलोकयति चाटुशतैश्च मुह्यते —भर्तृ० २।३१।

चाणक्य [चणक+यञ्] नागर राजनीति के प्रख्यात प्रणेता विष्णुगुप्त, 'कौटिल्य' भी इन्हीं का नाम है दे० कौटिल्य।

चाणूर (पु०) कंस का सेवक जो प्रसिद्ध मल्लयोद्धा था, जिस समय अक्रूर कृष्ण को मथुरा ले गया तो इस दुर्दान्त योद्धा को कृष्ण से लड़ने के लिए भेजा गया। मल्लयुद्ध में कृष्ण ने इसे पछाड़ दिया और पृथ्वी पर रौंद डाला तथा इसके सिर को चूर्ण कर दिया।

चण्डाल (स्त्री०—ली) [चण्ड+अण्] पतित, अधम —दे० चडाल,—चाण्डाल किमयं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६ मनु० ३।२३९, ४।२९, याज्ञ० १।९३।

चाण्डालिका=चडालिका।

चातक (स्त्री०—की) [चत्+ण्वुल्] चातक, पपीहा, (कवि समय के अनुसार यह केवल वर्षाऋतु में ही रहता है) —सूक्ष्मा एव पतन्ति चातकमुखे द्विग्ना पयोबिन्दव —भर्तृ० २।१२१, दे० २।५१ और रघु० ५।७। सम० आननम् 1 वर्षाऋतु 2 बादल।

चातनम् [चत्+णिच्+ल्युट्] 1 हटाना 2 क्षति पहुंचाना।

चातुर (वि०) (स्त्री०—री) 1 चार की संख्या से संबद्ध 2 होशियार, योग्य, बुद्धिमान् 3 मधुरभाषी, चापलूस 4 दृष्टिविषयक, प्रत्यक्षज्ञानात्मक—रम् चार पहियों की गाडी,—री कुशलता, दक्षता, योग्यता तद्भटचातुरीतुरी—नै० १।१२।

चातुरक्षम् [चतुरक्ष+अण्] चौपड या चार पासों के खेल में चार का दांव,—क्षः छोटा गोल तकिया।

चातुरधिकः [चतुर्षु अर्थेषु विहित.—ठक्] (व्या० में) एक ऐसा प्रत्यय जो चार भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द में जोड़ा जाता है।

चातुराश्रमिक (वि०) (स्त्री०—की), **चातुराश्रमिन्** (वि०) (स्त्री०—णी) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार कालों में से किसी एक में रहने वाला। दे० 'आश्रम'।

चातुराश्रम्यम् [चतुराश्रम+ष्यञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार काल। दे० 'आश्रम'।

चातुरिक, चातुर्थक, चातुर्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [चातुर+ठक्, चतुर्थ+अण्, ठक् वा] 1 चौथे या हर चौथे दिन होने वाला,—कः चौथैया बुखार, जूड़ीताप।

चातुरार्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्थार्ह+ठक्] चौथे दिन होने वाला।

चातुर्दशम् [चतुर्दश्या दृश्यते इति] राक्षस-सिद्धा०।

चातुर्दशिक [चतुर्दशी+ठक्] जो चांद्रपक्ष की चतुर्दशी के दिन भी पढता है (यह 'अनध्याय' का दिन है)।

चातुर्मासिक (वि०) (स्त्री०—सिकी) [चतुर्षु मासेषु भव —अण्+कन्, चतुर्मास+ठक्+टाप्, ह्रस्वश्च] जो चातुर्मास्य यज्ञ का अनुष्ठान करता है।

चातुर्मास्यम् [चतुर्मास्+ष्यञ्] हर चार महीने के पश्चात् अनुष्ठेय यज्ञ अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरंभ में।

चातुर्यम् [चतुर+ष्यञ्] 1 कुशलता, होशियारी, दक्षता, बुद्धिमत्ता 2 लावण्य, रमणीयता, सौन्दर्य भ्रूचातुर्यम्—भर्तृ० १।३।

चातुर्वर्ण्यम् [चतुर्वर्ण+ष्यञ्] 1 हिन्दुजाति के मूल चार वर्णों की समष्टि—एव सामासिक धर्म चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनु—मनु० १०।६३, ऋक् ६।१३ 2 इन चार वर्णों का धर्म या कर्तव्य।

चातुर्विध्यम् [चतुर्विध+ष्यञ्] चार प्रकार (सामूहिक रूप से), चार प्रकार का प्रभाग।

चात्वालः [चत्+वालच=चत्वाल+अण्] 1 भूमि में खोद कर बनाया हुआ हवनकुण्ड 2 कुशा, दर्भ।

चान्दनिक (वि०) (स्त्री०—की) [चन्दन+ठक्] 1 चन्दन से बनाया हुआ, या उत्पन्न 2 चन्दनरस से सुगन्धित।

चान्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [चन्द्र+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चन्द्रसंबंधी -गुरुकाव्यानुगो विभ्रच्चान्द्रीमभिनवं श्रियम्—शि० २।२,—: ▲ चांद्रमास

2 शुक्लपक्ष 3 चन्द्रकान्तमणि,—म् 1 चान्द्रायण नामक व्रत 2 ताजा अदरक 3 मृगशीर्ष नक्षत्र,—ो चाँदनी। सम० भागा चन्द्रभागा नाम नदी,—मास चन्द्रमा की तिथियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना, व्रतिक चान्द्रायण व्रत रखने वाला।

चन्द्रकम् [चान्द्र—कै+क] सूखा अदरक, सोंठ।

चान्द्रमस (वि०) (स्त्री० सी) [चन्द्रमस्+अण्] चन्द्रमा से सबंध रखने वाला, चाँद-संबंधी—लब्धोदया चन्द्रमसीव लेखा—कु० १।२५, चन्द्र गता पद्मगुणान् भुङ्क्ते पद्माश्रिता चन्द्रमसीमभिख्याम्—१।४३, रघु० २।३९, भग० ८।२५. सम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज।

चन्द्रमसायन,—नि [चन्द्रमसोऽपत्यम् फिञ्] बुधग्रह।

चान्द्रायणम् [चन्द्रस्यायनमिवायनमत्र, पूर्वपदात् संज्ञायां णत्व, संज्ञायां दीर्घ, स्वार्थे अण् वा - तारा०] एक धार्मिक व्रत या प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या जो चन्द्रमा की वृद्धि व क्षय से विनियमित है। इस व्रत में दैनिक आहार (जो १५ ग्रास या कौर का होता है) पूर्णिमा से प्रतिदिन एक ग्रास घटता रहता है यहाँ तक कि अमावस्या के दिन बिलकुल निराहार व्रत रक्खा जाता है, उसके पश्चात् फिर शुक्लपक्ष में एक कौर से आरम्भ करके पूर्णिमा तक बढ़ाकर फिर १५ ग्रास तक लाया जाता है) तु० याज्ञ० ३।३२४, मनु० ११।२१७।

चान्द्रायणिक (वि०) (स्त्री० -की) [चान्द्रायण+ठक्] चान्द्रायण व्रत का पालन करने वाला।

चापम् (चप+अण्) 1 धनुष,—तावे चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्थावकाश वेणी० ३।५, इसी प्रकार 'चापपाणि' 2 हाथ में धनुष लिये हुए 3 इन्द्र धनुष 4 (ज्यामिति) वृत्त की तोरणाकार रेखा 5 धनु राशि।

चापलम्,—ल्यम् [चपल+अण्, ष्यञ् वा] 1 द्रुतगति, स्फूर्ति 2 चञ्चलता, अस्थिरता, संक्रमणशीलता कि० २।४१ 3 विचारशून्य या आवेशपूर्ण आचरण, उतावलापन, उद्दण्ड कृत्य धिक् चापलम्—उत्तर ४, तदगुणै कणमात्रमप्य चापलाय प्रवादित, रघु० ११९, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया—कु० १०१ 4 (घोड़े आदि का) अड़ियलपन—पुन पुन सूतनिषिद्ध-चापलम्—रघु० ३।४२।

चामर,—रम् [चमर्या विकार तत्पुच्छनिर्मितत्वात् चमरी+अण्] (कभी०—रा,—री) चौरी, चवर या चमरी की पूँछ, (यह मोरछल या पखे की भाँति प्रयुक्त की जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है—कभी-कभी यह केतुपट की भाँति घोड़े के सिर पर फहराया जाता है)—व्याधूयन्ते निचुलतरुभि मञ्जरीचामराणि—विक्र० ४।४, अदेयमासीत् त्रयमेव भूपते शशिप्रभ छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, कु० ७।४२, शि० २।२१, मेघ० ३५, चित्रन्यस्तमिवाचल हयशिरस्यायामवच्चामरम्—विक्रम० १।४, श० १।८। सम० ग्राह,—ग्राहिन् (पु०) चवर डुलाने वाला, चवरदार—ग्राहिणी चवर डुलाने वाली राजा की सेविका पृष्ठे लोलावलयरणित चामरग्राहिणीना भर्तृ० ३।६१, पुष्प, पुष्पक 1 सुपारी का पेड़ 2 केतकी का पौधा 3 आम का वृक्ष।

चामरिन् (पु०) [चामर+इनि] घोड़ा।

चामीकरम् [चमीकर+अण्] 1 सोना—तप्तचामीकराभ क्रूद —विक्रम० १।१४, रघु० ७।५, शि० ४।२४, कु० ७।२४ 2 धतूरे का पौधा। सम०—प्रख्य (वि०) सोने की तरह का।

चामुण्डा [चम्+ला+क पृषो० साधु] दुर्गा का रौद्ररूप मा० ५।२५।

चाम्पिला [चम्प्+अड+टाप्—चम्पा+अण्+इलच्] चपा नाम की नदी (सभवत वर्तमान 'चबल' नदी)।

चाम्पेय [चम्पा+ढक्] 1 चम्पक वृक्ष 2 नागकेसर का पेड़, यम् 1 तन्तु, विशेषकर कमल फूल का 2 सोना 3 धतूरे का पौधा (अन्तिम दो अर्थों में पु० भी)।

चाय् (भ्वा० उभ० चायति ते) 1 निरीक्षण करना, अच्छा बुरा पहचानना, देख लेना—शि० १२।५१ 2 पूजा करना।

चार [चर+घञ्] 1 जाना, घूमना, चाल, भ्रमण मयदलचारशोभ विक्रम० ५।०, क्रीडाशैले यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी मेघ० ६०, पैदल चलना 2 गति, मार्ग, प्रगति ग्रहचार, शनिचार आदि 3 भेदिया, चर गुप्तचर, दूत मनु० ७।१८४, ९।२६१, दे० चारचक्षुस् नी० 4 अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 5 बदी 6 बधन, रस्सी,—रम् कृत्रिम विष। सम०—अन्तरित भेदिया ईक्षण - चक्षुस् (पु) 'गुप्तचरों को आँख के स्थान में प्रयुक्त करने वाला' राजा (या राजनीतिज्ञ) जो गुप्तचर या भेदिया रखता है और उन्हीं के माध्यम से देखता है, चारचक्षुर्महीपति—मनु० ९।२५६, नु० कामन्दक - चार पश्यन्ति गन्धेन, वेदै पश्यन्ति च द्विजा, चारै पश्यन्ति राजान चक्षुर्भ्यामितरे जना। रामा० भी—यस्मात्ता-म्यन्ति दूरस्था सर्वानर्थान्निरूपिणा, चारेण तस्मादुच्यन्ते राजानश्चारचक्षुष। चक्ष,—चक्षुस् (वि०) ललित चाल वाला, सजीला। - पक्ष. चौराहा,—भट. वीर योद्धा, वायु. ग्रीष्मकालीन मृदु मन्द पवन, वसन्त वायु।

चारक [चर्+णिच्+ण्वुल्] 1 भेदिया 2 ग्वाला 3. नेता चालक 4 साथी 5 अश्वारोही, सवार 6 कारागार निगडितचरणा चारके निरोद्धव्या—दश० ३२।

चारण [चर्+णिच्+ल्युट्] 1 भ्रमणशील, तीर्थयात्री

2 घूमने-फिरने वाला नट या गवैया, नर्तक, भाँड, भाट—मनु० १२।१४ 3. स्वर्गीय गवैया, गन्धर्व—अ० २।१४ 4 वेद या अन्य धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करने वाला 5 भेदिया।

चारिका [चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी।

चारितार्थ्यम् [चरितार्थ+ष्यञ्] उद्देश्यसिद्धि, सफलता।

चारित्रम्,—त्र्यम् [चरित्र+अण्, ष्यञ् वा] 1 शील, व्यवहार, काम करने की रीति 2 नेकनामी, सच्चरित्रता, ख्याति, सचाई, ईमानदारी, अच्छा चालचलन —अनृतं नाभिधास्यामि चरित्रभ्रंशकारणम्—मृच्छ० ३।२५, २६, चारित्र्यविहीन—आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति —१।४३ 3. सतीत्व, (स्त्रियों का) सदाचरण 4 स्वभाव, तबीयत 5 विशिष्ट आचार या अभ्यास 6 कुलक्रमागत आचार। सम०—कवच (वि०) सतीत्व रूपी कवच से सुरक्षित।

चारु (वि०) (स्त्री० रु,—रुः) [चरति विसे—चर्+उण्] 1 रुचिकर, सत्कृत, प्रिय, प्रतिष्ठित, अभीष्ट (सम्प्र० या अधि० के साथ)—वरुणाय या वरुणे चारु 2 सुखद, रमणीय, सुन्दर, कान्त, मनोहर - प्रिये चारुशीले मुञ्च मयि मानमनिदानम् - गीत० १०, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, चकासत चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८, ४।४९, रु बृहस्पति का विशेषण,—रु (नपुं०) केसर, जाफरान। सम०—अङ्गी सुन्दर अंगों वाली स्त्री० -दर्शन (वि०) सुन्दर नाक वाला पुरुष, -दर्शन (वि०) प्रियदर्शन, लावण्यमय, -धारा शची, इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी, -नेत्र,-लोचन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (त्रः, त्रम्) हरिण,-फला, अंगूरों की बेल, अंगूर, -लोचना सुन्दर आँखों वाली,—वक्त्र (वि०) सुन्दर मुख वाला,- वर्णना स्त्री,- वती एक मास तक उपवास करने वाली स्त्री,—शिला 1 जवाहर, रत्न 2 पत्थर की सुन्दर शिला,—शील (वि०) कान्त-स्वभाव या चरित्र, -हासिन् (वि०) मधुर मुस्कान वाला।

चारुचर्चिक्यम् [चर्चिका+ष्यञ्] 1 शरीर को सुगंधित करना, चन्दन आदि लगाना 2 उबटन।

चार्म (वि०) (स्त्री० -र्मी) [चर्मन्+अण्, टिलोप] 1. चमड़े का बना हुआ 2 (गाड़ी आदि) चमड़े से ढका हुआ 3 ढाल धारी, ढाल से युक्त।

चार्मण (वि०) (स्त्री० -णी) [चर्मन्+अण्, स्त्रियां ङीष् च] चमड़े या खाल से ढका हुआ,—णम् खालों या ढालों का ढेर।

चार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [चर्मन्+ठक्] चमड़े का बना हुआ—मनु० ८।२८९।

चार्मिणम् [चर्मिन्+अण्] ढालधारी मनुष्यों का समूह।

चार्वाकः [चारु लोकसमतौ वाको वाक्यं यस्य—ब० स०] कुतर्की दार्शनिक जो बृहस्पति का शिष्य बताया जाता है और जिसने भौतिकवाद एवं नास्तिकता के स्थूल रूप का प्रवर्तन किया (चार्वाकमत के सिद्धान्तों के सारांश के लिए दे० सर्व० १) 2. महाभारत में वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पाण्डवों का शत्रु था [जब युधिष्ठिर अपनी विजयपताका के साथ हस्तिनापुर में प्रविष्ट हुआ तो उस राक्षस ने एक ब्राह्मण रूप धारण कर लिया तथा उसने युधिष्ठिर, एवं एकत्रित ब्राह्मणों को बुरा-भला कहा। परन्तु शीघ्र ही उसका पता लग गया, और क्रोध में भर कर वहाँ ब्राह्मणों ने उसका वहीं काम तमाम कर दिया। उस राक्षस ने महाभारत युद्ध की समाप्ति पर भी युधिष्ठिर को यह कहकर ठगने का प्रयत्न किया था कि भीम को तो दुर्योधन ने मार डाला—दे० वेणी० ६]।

चार्वी [चारु+ङीप्] 1 सुन्दर स्त्री 2 चाँदनी 3 बुद्धि, प्रज्ञा 4 प्रभा, कान्ति, दीप्ति 5 कुबेर की पत्नी।

चाल [चल्+ण] 1 घर का छप्पर या छत, 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 हिलना-डुलना, चलना-फिरना 4 लगाम होना।

चालक [चल्+ण्वुल्] दुर्दान्त हाथी।

चालनम् [चल्+णिच्+ल्युट्] 1. चलाना-फिराना, हिलाना डुलाना, (पूंछ की भाँति) हिलाना 2 छनवाना, छानना, छलनी,- नी छलनी, झरना।

चाष, स [चष्+णिच्+अच्, पृषो० सत्वम्] नीलकण्ठ पक्षी—मा० ६।५ याज्ञ० १।१७५।

चि (स्वा० उभ०—चिनोति, चिनुते, चित, प्रेर०—चाययति, चापयति, चययति, चपयति भी, सन्नन्त—चिचीषति, चिकीर्षति) 1 चुनना, बीनना, इकट्ठा करना (द्विकर्मक धातु होने के कारण दो कर्मों के साथ अन्वय परन्तु लौकिकसाहित्य में इसका प्रयोग विरल) —वृक्षं पुष्पाणि चिन्वती 2 ढेर लगाना, टाल लगा देना, अबार लगा देना—पर्वतानिव ते भूमावचैषुर्वानरोत्तमान्—भट्टि० १५।७६ 3 जड़ना, खचित करना, मढ़ना, भरना - दे० चित - कर्म वा०, फल उत्पन्न होना, उगना, बढ़ना, फलना-फूलना, समृद्ध होना —सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा—पञ्च० १।२२, फल लगता है,- चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिताकृषि मुद्रा० १।३, राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १०, अप—कम होना, विहीन होना, वञ्चित होना, (मुख्यतः कर्मवा० में —1 घटना, क्षीण होना, कम होना—राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १० 2 शरीर में घटना, क्षीण होना, आ—, 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2 भरना, ढकना, मढ़ना—भट्टि० १७।६९, १४।४६, ४७, उद्—, एकत्र करना, बीनना—भट्टि० ३।३७, उप—, जोड़ना, बढ़ाना—उपचिन्वन्प्रभां तन्वीं

प्रत्याह परमेश्वरः—कु० ६।२५ (कर्मवा०) उगना, बढ़ना—अधोऽध पश्यत कस्य महिमा नोपचीयते —हि० २।२ भट्टि० ६।३३ शि० ४।१०, चि—, ढकना भरना, फैलाना, बिखेरना (मुख्यतः कर्तरि प्रयोग) —निचित क्षमुपेत्य नीरदैं —घट० १, शकुन्तलीढनिचित विभ्रज्जटामण्डलम्—का० ७।११, भट्टि० १०।४२, निश्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना वरि—, 1 अभ्यास करना 2. प्राप्त करना, लेना (कर्मवा०) बढ़ना— रघु० ३।२४ प्र—, 1 इकट्ठा करना, चुनना 2 जोड़ना 3 बढ़ाना, विकसित करना —प्राचीयमानाक्षयधा रराज सा—रघु० ३।७, वि—, 1 एकत्र करना, चुनना 2 खोजना, ढूंढना— विचितश्चैव समन्तात् श्मशानघाट - मा० ५, विनिस्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना—विनिश्चेतु शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा - उत्तर० १।३५, सम्—, 1 एकत्र करना, संग्रह करना, संचय करना— रक्षायोगादपरमपि तप प्रत्यहं संचिनोति श० २।१४, रघु० १९।२, मनु० ६।१५ 2 क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना भट्टि० ३।३५, समुद्—, संग्रह करना, जोड़ना।

चिकित्सकः [कित्+सन्+ण्वुल्] वैद्य, हकीम, डाक्टर —उचितवेलातिक्रमे चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, भर्तृ० १।८७, याज्ञ० १।१६२।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ+टाप्] औषध सेवन करना, औषधोपचार, इलाज करना, स्वस्थ करना।

चिकिस [चि+इसच्, कुक्] कीचड़, महापंक, कर्दम, दलदल।

चिकीर्षा [कृ+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा।

चिकीर्षित (वि०) [कृ+सन+क्त, द्वित्वम्] अभिलषित, इच्छित, साभिप्राय, —म् अभिकल्प, आशय, अभिप्राय।

चिकीर्षु (वि०) [कृ+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] कुछ करने की इच्छा वाला, इच्छुक,—भग० १।२३, २।२५।

चिकुर (वि०) [चि इत्यव्यक्त शब्दं करोति - चि+कुर +क] 1 हिलने-जुलने वाला, कम्पमान, चंचल, अस्थिर 2 अविचार पूर्ण, आवेशयुक्त - ,र. 1 सिर के बाल - मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद " कुसुमानि —गीत० १२, इसी प्रकार—घनचररुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने - ७ 2 पहाड़ 3 रेंगने वाला, साँप सम०—उच्चयः,—कलाप',—निकर, —पक्ष, —पाशः,—भारः—हस्तः बालों का गुच्छा या ढेर— यस्याश्चोरश्चिकुरनिकर कर्णपूरो मयूर —प्रस० १।२२।

चिकुरः [चिकुर नि० दीर्घ] बाल।

चिक्कः [चिक् इति अव्यक्त शब्देन कायति शब्दायते—चिक् +कै+क] छछूंदर।

चिक्कण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [चिक्क्, क्विप् चिक् त कर्णति—कर्ण शब्दे+अच् तारा०] 1. चिकना, चमकदार 2 चिकनाई 3 स्निग्ध 4 मसृण, चर्बीला—लघु परित्रायतामेना भवान् मा कस्यापि तपस्विन इङ्गुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य हस्ते पतिष्यति - श० २,—णः सुपारी का पेड़,—णम् चिक्कणबदर का फल, सुपारी।

चिक्कणा,—णी 1 सुपारी का पेड़ 2 सुपारी।

चिक्कस [चिक्क्+असच्] औ का आटा।

चिक्का=चिक्कणा।

चिक्किरः [चिक्क्+इरच्, ह्रा०] चूहा, मूसा।

चिक्लिदम् [क्लिद्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्व यङो लुक् च] तरी, तरवट, ताजगी।

चिक्षिप्स [?] एक प्रकार का कद्दू।

चिञ्चिलिका [पृ० ब० व०] एक देश तथा उसके निवासी।

चिञ्चा [चिम्+चि+ड+टाप्] 1 इमली का पेड़, या उसका फल 2 घुंघची का पौधा।

चिट् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ० चेटति, चेटयति—ते) भेजना, बाहर भेजना (जैसे कि किसी सेवक को भेजा जाता है)।

चित् (भ्वा० पर०, चुरा० आ० चेतति, चेतयते, चेतित) 1 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, दृष्टिगोचर करना—नेयुनचेतमस्यन्तम्—भट्टि० १७।१६, चिचेत रामस्तत्कृच्छ्रम् - १४।६२ १५।३८, २।२९ 2 जानना, समझना, चौकस होना, सतर्क होना - परैरध्यारुह्यमाणमात्मान न चेतयते—दश० १५४ चैतन्य प्राप्त करना 4 प्रकट होना, चमकना।

चित् (स्त्री०) [चित्+क्विप्] 1 विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान 2 प्रज्ञा, बुद्धि, समझ— भर्तृ० २।१, ३।१ 3 हृदय, मन 4. आत्मा, जीव, जीवन में सजीवता-सिद्धांत 5 ब्रह्म। सम०—आत्मन् (पु०) 1 चितनसिद्धांत या शक्ति 2 केवल प्रज्ञा, परमात्मा,—आत्मकम् चैतन्य,—आभास जीव (जो सांसारिक वासनाओं में लिप्त है),—उल्लास जीवों के हृदय का हर्ष,— ब्रह्मः परमात्मा या ब्रह्म,—प्रकृतिः (स्त्री०) विचारविमर्श, चिंतन, -शक्ति (स्त्री०) मानसिक शक्ति, बौद्धिक धारिता,— स्वरूपम् परमात्मा, (अव्य०) 1 'किम्' और 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे कि—कद्, कथम्, क्व, कदा, कुत्र, कुत आदि) जिससे कि अर्थों में अनिश्चयात्मकता आती है—तु० तुलनीय चित्=कहीं, केचित्=कोई 2 'चित्' ध्वनि।

चित (भू० क० कृ०) [चि+क्त] 1 संग्रह किया हुआ,

ढेर लगाया हुआ, बौछार लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 जमा किया हुआ, संचित 3 प्राप्त, गृहीत 4 ढका हुआ—कुसिकुचितम्—मनु० २।११ 5 जमाया हुआ, बढ़ा हुआ,—चयः संचय।

चिता [चित+टाप्] मुर्दे को जलाने के लिए चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर, चितिका—कुरु सप्रति तात-दाहु में प्रणिपातास्त्वलिधाचितचित्रताम्—कु० ४।३५, चितामारुक्षन्—कु० ५।६९। सम०—अग्निः शव को जलाने वाली आग,—भूमिका चिता।

चितिः (स्त्री०) [चि+क्तिन्] 1. संग्रह करना, इकट्ठा करना 2. ढेर, समूहन, पुंज 3 अम्बार, टाल, चट्टा 4 चिता 5. चौकोर आयताकार स्थान 6 संज्ञा।

चितिका [चिता+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 टाल, चट्टा 2. चिता 3 करधनी।

चित्त (वि०) [चित्+क्त] 1 देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2 सोचा हुआ, विचारविमर्श किया हुआ, मनन किया हुआ 3 संकल्प किया हुआ 4 अभिप्रेत, अभिलषित, इच्छित,—त्तम् 1. देखना, ध्यान देना 2 विचार, चिन्तन, अवधान, इच्छा, अभिप्राय, उद्देश्य—मच्चित्ता सततं भव—भग० १८।५७, अनेकचित्तविभ्रान्त १६।१६ 3 मन—मदासौ दुर्वार प्रसरति मदश्चित्तकरिण —भा० १।२२, इसी प्रकार 'चलचित्त' आदि समस्त शब्द 4 हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5 तर्क, बुद्धि, तर्कनाशक्ति। सम०—अनुवर्तिन् (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला, अनुरंजन-कारी,—अपहारक,—अपहारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक,—आभोग भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अनन्य अनुराग, आसङ्ग, आसक्ति अनुराग, उद्रेक, घमंड, गर्व, —ऐक्यम् सहमति, मतैक्य,—उन्मति,—समुन्मति (स्त्री०) 1 महानुभावता 2 घमंड, दर्प, कारिन् (वि०) दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला, ज —जन्मन् (पु०),—भूः—योनि. 1 प्रेम, आवेश 2 प्रेम का देवता काम देव —चित्तयोनिरभवत्पुनर्न य रघु० १९। ४६, सोऽयं प्रसिद्धविभव खलु चित्तजन्मा —मा० १।२०, —ज्ञ (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला,—दाहः बेहोशी,—निर्वृतिः (स्त्री०) संतोष, प्रसन्नता, प्रशम (वि०) स्वस्थ, शान्त, (—म्) मन की शान्ति, प्रसन्नता हर्ष, खुशी,—भेदः 1 विचारभेद 2 असंगति, असिथरता, —मोहः मनोमुग्धता,—विप्लवः मन का उचाटपन—विप्लव. —विभ्रमः चित्तभ्रंश, बुद्धिभ्रंश, उन्मत्तता पागलपन,—विश्लेषः मंत्री-भंग,—वृत्तिः (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रुचि, भावना—एवमात्मभि-भावसंधाविशेषेष्टजनचित्तवृत्तिं प्रार्थयिता विडम्बयते—श० २ 2 आन्तरिक अभिप्राय, संवेग 3 (योग—द० में) मन की आन्तरिक क्रिया, मानसिक वृत्ति—योग-श्चित्तवृत्तिनिरोधः—योग०—खेदना कष्ट, चिन्ता —वैक्लव्यम् मन की अस्थिरता, परेशानी—हारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक शक्तिकर।

चित्तवत् (वि०) [चित्त+मतुप्, मस्य व] 1. तर्कसंगत, तर्कयुक्त 2 सकरुण, सदय।

चित्यम् [चि+क्यप्] शव-दाह करने का स्थान,—त्या 1 चिता 2 काष्ठचयन, (वेदी का) निर्माण।

चित्र (वि०) [चित्+अच्, चि+ष्ट्रन् वा] 1 उज्ज्वल, स्पष्ट 2 चितकबरा, धब्बेदार, शबलीकृत 3 विलक्षण, शक्तिकर आ०—१।४ 4. विविध, विभिन्न प्रकार का, भांति २ का—पञ्च० १।१३६, मनु० ९।२४८, याज्ञ० १।२८८ 5 आश्चर्यजनक, अद्भुत, अजीब,—त्रः 1 रंग-बिरंगा वर्ण रंग 2 अशोक वृक्ष,—त्रम् 1. तसवीर, चित्रकारी, आलेखन—चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्व-योगा—श० २।९, पुनरपि चित्रीकृता कांता—श० ६।२०, १३,२१ आदि 2 चमकीला आभूषण 3. असा-धारण छवि, आश्चर्य 4 सांप्रदायिक तिलक 5 आकाश, गगन 6 धब्बा 7 सफेद कोढ़, फुलबहरी 8 (सा० शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह 'शब्दचित्र' और 'अर्थवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्यसौन्दर्य मुख्यरूप से अलंकारों के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर आश्रित है, मम्मट परिभाषा देता है—शब्दचित्र वाच्यचित्रम-व्यङ्ग्य त्ववर स्मृतम्—काव्य० १) 'शब्दचित्र' का उदाहरण रसगंगाधर से उद्धृत किया जाता है—भिन्ना-त्रिपुननेत्राय त्रयीशास्त्रवशत्रवे, गोत्रारिगोत्रजेत्राय गोत्राय ते नमो नम। -त्रम् (अव्य०) अहा! कैसा विस्मय है! क्या अद्भुत बात है—चित्र बधिरो नाम व्याकरणमध्येधीते—सिद्धा०। °मः अग्नि,—मेखा, —लोचना एक पक्षिविशेष, मैना,—वस्त्र (वि०) धारी दार, चितौदार, शरीरधारी (वस्त्र) सिंदूर,—वर्णम् रंगदार मसालों से प्रसाधित चावल—याज्ञ० १।३०४, —वर्षः एक प्रकार का पूढ़ा,—वर्षित (वि०) तस्वीर में उतारा हुआ, चित्रित, °आरब्ध (वि०) चित्रित रघु० २।३१, कु० ३।४२—आकृति (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलोकचित्र,—आयसम् इस्पात —आरब्ध चित्रित दृश्य, चित्र की रूपरेखा—विक्रम० १।४,—उक्तिः (स्त्री०) 1 शक्तिकर या वाक्चातुर्य से पूर्ण प्रवचन—जयन्ति ते पञ्चमनादभिन्नचित्रोक्ति-सदर्भविभ्रमणेषु—विक्रम० १।१० 2 आकाशवाणी 3 अद्भुतकहानी,—ओदनः हल्दी से रंगा पीला भात —कण्टः कबूतर,—कथालापः रोचक तथा मनोरंजक कहानियाँ सुनाना,—कम्बलः 1 छींट की बनी हाथी की झूल 2 रंग बिरंगा कालीन,—करः 1 चित्रकार

2 नाटक का पात्र या अभिनेता,—कर्मन् (नपु०) 1 असाधारण कार्य 2 विभूषित करना, सजाना 3 तस्वीर 4 जादू, (पु०) 1 आश्चर्यजनक करतब करने वाला जादूगर 2 चित्रकार, °विद् (पु०) 1 चित्रकार 2 जादूगर,—काय साधारण शेर 2 चीता,—कार. 1 चित्रकारी करने वाला 2 एक वर्णसंकर जाति (स्थपतेरपि गान्धिक्या चित्रकारो व्यजायत—पराशर०), —कूट: एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक जिले का नाम रघु० १२।१५, १३।४७ उत्तर० १, कृत् (पु०) चित्रकार, —क्रिया चित्रकारी,—ग, —गत (वि०) चित्रित किया हुआ, - गन्धम् हरताल, - गुप्त: यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के गुण तथा अवगुणों को लिखने वाला—मुद्रा० १।२०,- गृहम् चित्रित घर, - जल्प अटकलपच्चू और असबद्ध बात, विभिन्न विषयों पर बातचीत,-द्रुम् (पु०) भूर्ज वृक्ष, -द्रुमक. कपास का पौधा, -न्यस्त (वि०) चित्रित, तस्वीर में उतारा हुआ कु० २।२४, पक्ष. चकोर-सदृश नेत्र,—पट., -टी 1. आलेख, तस्वीर 2 रंगीन या चारखानेदार कपड़ा,-पद,(वि०) 1 भिन्न २ भागों में विभक्त 2 ललित पदावली से युक्त, पाटा सेना, सारिका, —पिच्छक. मोर,—पुङ्ख एक प्रकार का बाण, पृष्ठ चिड़िया, फलकम् चित्र-पटल, चित्र रखने का तख्ता, बर्ह मोर,-भानु 1 आग 2 सूर्य (चित्र भानुर्विभातीति दिने रवौ रात्रौ वह्नौ—काव्य० २, अजन विधि का निदर्शन दिया गया है) 3 भैरव 4 मदार का पौधा,—मण्डल एक प्रकार का साँप, —मृग चित्तीदार हरिण,- मेखल मोर,- योधिन् (पु०) अर्जुन का विशेषण,—रथ: 1 सूर्य 2 गंधर्वों के एक राजा का नाम, मुनि नामक पत्नी से कश्यप के १६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है—अत्र मुनेस्तनयश्चित्रसेनादीना षण्णवदशाना भ्रातृणामधिका गुणैः षोडशश्चित्ररथो नाम समुत्पन्न —काव्य० १३६, विक्रम० १, लेख (वि०) सुन्दर रूपरेखा वाला, अत्यन्त मडलाकार—रचितस्तव कलावती रविरचित्रलेखे भ्रुवौ- गीत० १०, (खा) बाणासुर की पुत्री, उषा की एक सहेली (जब उषा ने अपना स्वप्न अपनी सहेली चित्रलेखा को सुनाया, तो उसने यह सुझाव दिया कि इस चित्र को आस-पास के राज्यों में घुमाया जाय, इस प्रकार जब उषा ने अनिरुद्ध को पहचान लिया तो चित्रलेखा ने अपने जादू के द्वारा अनिरुद्ध को उषा के महल में बुलवा दिया),— लेखक चित्रकार —लेखनिका चित्रकार की तूलिका, कूची, विचित्र (वि०) 1 रंगबिरंगा, चित्तकबरा 2 बेलबूटेदार,— विद्या चित्रकला—शाला चित्रकार का कार्यालय,—शिखण्डिन् (पु०) सात ऋषियों (मरीचि, अंगिरस्, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, और वसिष्ठ) का विशेषण, °ज: बृहस्पति का विशेषण —संस्थ (वि०) चित्रित,—हस्त युद्ध के अवसर पर हाथों की विशेष अवस्थिति।

चित्रक [चित्र+कन्] 1 चित्रकार 2 सामान्य शेर 3 छोटा शिकारी चीता 4 एक वृक्ष का नाम,—कम् मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक।

चित्रल (वि०) [चित्र्+कल] चितकबरा, चित्तीदार, ल रंगबिरंगा रंग।

चित्रा [चित्र्+अच्+टाप्] चान्द्र मास का चौदहवाँ नक्षत्र, हिमनिर्मुक्ततयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव—रघु० १।४६। सम० - अटवी, ईश: चाँद।

चित्रिक [चैत्र+क पृषो० साधु] चैत्र का महीना।

चित्रिणी [चित्र्+णिनि, चित्र अस्त्यर्थे इनि वा] जाति २ के वृद्धिवैभव और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री, रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार (पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्खिनी और हस्तिनी या करिणी) की स्त्रियों में एक। रतिमञ्जरी में 'चित्रिणी' की परिभाषा इस प्रकार दी गई है —भवति रतिरसज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा तिलकुसुमसुनासा स्निग्धनीलोत्पलाक्षी—यत कठिन-कुचाढ्या सुदरी वृद्धशीला, सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ 5 ॥

चित्रित (वि०) [चित्र्+क्त] 1 रंगबिरंगा, चित्तीदार 2 चित्रकारी से युक्त।

चित्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [चित्र+इनि] 1 आश्चर्यकारी 2 रंगबिरंगा।

चित्रीयते (ना० धा० आ०—1 आश्चर्य पैदा करना, आश्चर्यजनक होना—एवमुत्तरोत्तरभावश्चित्रीयते लोकलोक—महावी० ५, भट्टि० १७।६४, १८।२३ 2 आश्चर्य करना।

चिन्त् (चुरा० उभ० चिन्तयति-ते, चिन्तित) 1 सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना—तच्छ्रुत्वा पिङ्गलकश्चिन्तयामास—पञ्च० 1 चिन्तय तावत्केनापदेशेन पुनराश्रमपदं गच्छाम —श० 2 सोचना, विचार करना, मन में लाना - तस्मादेतत् (बिल) न चिन्तयेत् - हि० १, तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चिन्तयेत् मनु० ८।३८१, ४।२५८, पञ्च० १।१३५, चौर० १ 3 ध्यान करना, देखभाल करना, देखरेख रखना —रघु० १।६४ 4 प्रत्यास्मरण करना, याद करना, 5 मालूम करना, उपाय करना, खोज करना, सोच कर उपाय निकालना कोऽप्युपायश्चिन्त्यताम् - हि० १ 6 खयाल रखना, सम्मान करना 7 तोलना, विशेषता बताना 8 चर्चा करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना, अनु- , बार बार चिन्तन करना, पिछला याद करना, मन में तोलना - श० २।९, भग० ८।८, परि- , 1 सोचना, विचारना, कूतना- स्वमेव

तावत्परिचिन्तय स्वयं कस्मादिदेते यदि योगमर्हति —कु० ५।६७, भग० १०।१७ 2. चिन्तन करना, याद करना, ध्यान में लाना 3 तरकीब निकालना, मालूम करना, वि- , 1 सोचना, विचारना 2 चिन्तन करना, आकलन करना, ध्यानमग्न होना शि० ४।१ 3 विचारकोटि में रखना, ध्यान रखना, खयाल करना — अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः —श० ४।१६ 4 इरादा करना, स्थिर करना, निश्चय करना—5 उपाय ढूंढना, मालूम करना, खोज निकालना, सम् - , 1 सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तनरत होना - याज्ञ० १।३५९, शौर० ३२ 2 (मन में) तोलना, विशेषता बताना।

चिन्तनम्,—ना [चिन्त्+ल्युट्] 1 सोचना, विचारना, चिन्तनरत होना—मनसाऽनिष्टचिन्तनम् मनु० १२।५ 2 आतुर चिन्तन।

चिन्ता [चिन्त्+णिच्+अङ्+टाप्] 1 चिन्तन, विचार 2 दुःख या शोकपूर्ण विचार, परवाह, फिक्र चिन्ताजड दर्शनम्—श० ४।५, इसी प्रकार 'दीन-चिन्त' १० 3 विचार-विमर्श, विचारणा 4 (अल० शा० में) चिन्ता—८ संचारी भावों में से एक ध्यान चिन्ता हिताप्राप्ते शून्यता श्वासतापकृत् सा० द० २०१। सम० आकुल (वि०) चिन्तामग्न व्याकुल, धातु —कर्मन् (नपुं०) चिन्ता करना —पर (वि०) चिन्तनशील, चिन्तातुर, —मणिः काल्पनिक रत्न (वह जिसके पास होता है, कहते हैं, उसकी सब कामनाएं पूर्ण कर देता है) दार्शनिकों को मणि रत्नसङ्घेन चिकीर्षा हन्त चिन्तामणिर्मया —सा० १।१२, सदस्यत्वे ह्यदं मन्ये लब्धु चिन्ता न चिन्तामणिमवलभ्यम् नै० ३।८१, १।१४५,—वेश्मन्, (नपुं०) पारस्पर भवन, मन्त्रणागृह।

चिन्तिडी [*तिन्तिडी, पृषो० साधु चन्द्रम्] इमली का पेड़।

चिन्तित (वि०) [चिन्त्+क्त] 1 सोचा हुआ, विमृष्ट 2 ज्ञात, विचार किया हुआ।

चिन्तिति (स्त्री०) **चिन्तिया** [चिन्त्+क्तिन्, ष दा] सोच, विमर्श, विचार।

चिन्त्य (स० कृ०) [चिन्त्+यत्] 1 सोचने-विचारने के योग्य 2 सोचने के योग्य, मालूम किये जाने या उपाय ढूंढ लिये जाने के योग्य 3 विचारसापेक्ष, संदिग्ध, प्रष्टव्य यच्च क्वचिदस्फुटालङ्कारत्वे उदाहृतम् (यथा कौमारहर ।एतच्चिन्त्यम् - सा० द० १।

चिन्मय (वि०) [चित्+मयट्] विशुद्ध बौद्धिकता से युक्त, आत्मिक (जैसे कि परमात्मा), यम् 1 विशुद्ध ज्ञानमय 2. परमात्मा।

चिपट (वि०) [नि नता नासिका विद्यतेऽस्य नि+पटच्, वि आदेश] चपटी नाक वाला,—टः चिउड़ा, चपटा किया हुआ चावल या अनाज, चोले।

चिपिट [नि [पिटच् वि आदेश] दे० चिपट। सम० —नास (वि०) छोटी दर्शन वाला, —नासिक (वि०) चपटी नाक वाला।

चिपिटकः, चिपुटः [चिपिट+कन्,=चिपिट पृषो० साधु] चिउड़ा, चोले।

चिबु (बु) कम् [चिब् (ब)+उ+कन्, पृषो० ह्रस्व] ठोड़ी, चिबुक मुदृश स्पृशामि यावत् -भामि० २।३४ याज्ञ० ३।९८।

चिभिः [चि+मिक् बा०] तोता।

चिर (वि०) [चि+रक्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला, दीर्घकाल से चला आया, पुराना—चिरविरहः, चिरकालं, चिरमिदम्—आदि, रम् दीर्घकाल (विशे० 'चिर' शब्द का अप्रधान कारकों में एक वचन क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त होता है और निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है —'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक' 'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल में' 'आखिर कार' 'अन्त में' आदि —न चिरं पर्वते वसेत् मनु० ४।६०, तत प्रजानां चिरमात्मनश्च घृतम्—रघु० ३।३५, ६२, अमरु ७९, कियच्चिरेणार्यपुत्र प्रतिपत्तिं दास्यति श० ६, रघु० ५।६४, प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव -रघु० १४।५९, कु० ५।८७, अमरु ३, चिरात्सुत-स्पर्शरसज्ञतां ययौ—रघु० ३।२६, ११।६३, १२।६७, चिरस्य वाच्यं न गतं प्रजापतिं श० ५।१५, चिरे कुर्यात् - मनु०। सम० -आयुस् (वि०) दीर्घ आयु वाला (पुं०) देवता, आरोह. विलम्बित धीरा, नायिका-भेदी, - उरग (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला, कार, कारिक, कारिन् क्रिय (वि०) मन्थर, विलम्बी, ढीला, दीर्घसूत्री, काल दीर्घकाल,—कालिक, - कालीन (वि०) दीर्घकाल से चला आता हुआ, पुराना, दीर्घकाल से चालू, (रोग के विषय में) जीर्ण या दीर्घकालानुबन्धी, जात (वि०) बहुत समय पहले उत्पन्न, पुराना,—जीविन् (वि०) दीर्घजीवी (पुं०) उन सात चिरजीविनों का विशेषण जो 'अमर' समझे जाते हैं (अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाञ्च विभीषणः, कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः)—वासिन् (वि०) देर से पकने वाला, —पुष्प बकुल वृक्ष,—मित्रम् पुराना मित्र, —मेहिन् (पुं०) गधा, —रात्रम् बहुत रातें, दीर्घ-काल, °उषित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो, —विप्रोषित (वि०) दीर्घकाल से निर्वासित, प्रवासी, —सूता,—सूतिका वह गाय जो कई बच्चे दे चुकी हो सेवक पुराना नौकर, —स्थ, स्थायिन्,- स्थित (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला, चालू रहने वाला, पायेदार।

चिरञ्जीव (वि०) [चिरम् + जीव् + अच्] दीर्घायु या अमरी उम्र वाला,—म् काम का विशेषण।

चिरञ्जीवी, चिरञ्जीविन् [चिरे अटति चिरम् + अट् + अच्, पृषो० तारा०] 1 विवाहित या अविवाहित लड़की जो सयानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2 कुमारी, अक्षत स्त्री।

चिरतन (वि०) (स्त्री०—नी) [चिरे भवः चिर + तन] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन।

चिरन्तन (वि०) (स्त्री० - नी) [चिरम् + टयुल्, तुट्, च] चिरागत, पुराना, प्राचीन,—स्वहस्तदत्ते मुनिभासनं मुनिश्चिरन्तनस्तावदभिन्यवीविशत् - शि० १।१५, चिरन्तनः सुहृद् - आदि।

चिरयति (ना० धा० पर० (चिरायते भी)) विलम्ब करना, ढील देना - कथं चिरयति पाञ्चाली—वेणी० १, किं चिरायित भवता, सकेतके चिरयति प्रवरो विनोद --मृच्छ० ३।३।

चिरि. [चिनोति मनुष्यवत् वाक्यानि - चि + रिक्] तोता।

चिरिट [चि + इक] कन्धे का जोड़।

चिरिण्टी [चिर + अट् + अच् + ङीष्, पृषो०] एक प्रकार की ककड़ी।

चिल् (तुदा० पर० - चिलति) कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना।

चिलली (लि) लिका [चिल् + ली (लि) ल् + ध्वुल् + टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का हार 2. जुगनू 3 बिजली।

चिल्ल (भ्वा० पर०—चिल्लति, चिल्लित) 1 ढीला होना, शिथिल होना पिलपिला होना 2 आराम से काम करना, क्रीडामकत होना।

चिल्ल, -ल्ला [चिल्ल् + अच्, स्त्रियां टाप्] चील। सम०—आभः गठकतरा, जेबकतरा।

चिल्लिका, चिल्ली [चिल्ल् + इन् + कन् + टाप्, चिल्लि + ङीष्] झींगुर तु० भिल्लिका।

चिल्लि [चील् + इन् पृषो०] ठोढ़ी।

चिह्नम् [चिह्न + अच्] 1 निशान, धब्बा, छाप, प्रतीक, कुलचिह्न, बिल्ला, लक्षण—ग्रामेषु यूपचिह्नेषु रघु० १।४४, ३।५५, सन्निपातस्य चिह्नानि —पच० १।१७७ 2 संकेत, इंगित—प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि रघु० ७।२२, प्रहर्षचिह्न २।६८ 3 राशिचिह्न 4 लक्ष्य दिशा। सम० कारिन् (वि) 1 चिह्न लगाने वाला, दाग लगाने वाला 2 प्रहार करने वाला, घायल करने वाला, हत्या करने वाला 3 डरावना, विकराल।

चिह्नित (भू०) [चिह्न + क्त] 1 निशान लगा हुआ, संकेतित, मुद्राकित, किसी पद का बिल्ला लगाये हुए—याज्ञ० २।८६, १।३१८, दिवा चरेयु कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः —मनु० १०।५५, २।१७० 2. दागी 3 ज्ञात, अभिहित।

चीत्कारः [चीत् + कृ + घञ्] अनुकरणमूलक शब्द, क्रुद्ध जानवरों की क्रन्दन विशेषकर गधे की रेंक या हाथी की चिंघाड़,—स विषीदति चीत्कारादृगदंभस्ताडितो यथा —हि० २।३१, वैनायकयश्चिर वो वदनविधुतय पाल्लु चीत्कारवत्य मा० १।१।

चीन [चि + नक्, दीर्घ] 1 एक देश का नाम, वर्तमान चीनदेश 2 हरिण का एक प्रकार 3 एक प्रकार का कपड़ा ना (पु० ब० व०) चीन देश के निवासी या शासक,—नम् 1 झंडा 2 आँखों के किनारों पर बाँधने के लिए पट्टी 3 सीमा। सम०—अंशुकम्,—वासस् (नपु०) चीन का कपड़ा, रेशम, रेशमी कपड़ा - चीनाशुकमिव केतोः प्रतिवात नीयमानस्य—का० १।३४, कु० ७।३, अमर ७५,- कर्पूरः एक प्रकार का कपूर, जल हरताल, पिट्टम् 1 सिन्दूर 2 सीसा, - बङ्गम् सीसा।

चीनाक [चीन + अक् + अण्] एक प्रकार का कपूर।

चीरम् [चि + कन् दीर्घश्च] 1 चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा, धज्जी, मनु० ६।६ 2 वल्कल 3 वस्त्र या पोशाक 4 चार लड़ियों का मोतियों का हार 5. चौड़ी धारी, रेखा, लकीर 6 रेखाएँ बनाकर लिखना 7 सीसा। सम० परिग्रह,—वासस् (वि०) 1 वल्कलधारी कु० ६।९२ मनु० ११।१०१ 2 चिथड़े या फटे पुराने कपड़े पहने हुए।

चीरि (स्त्री०) [चि + कि, दीर्घ०] 1 आँखों को ढकने का पर्दा 2 झींगुर 3 नीचे पहनने वाले कपड़े की झालर या गोट।

चीरि(रि)का [चीरि + कै + क + टाप्] [= चीरिका पृषो० साध्व] झींगुर।

चीर्ण (वि) [चर् + क्त, पृषो० अत इत्वम्] 1 किया हुआ, अनुष्ठित, पालित 2 अधीत, दोहराया हुआ 3 विदीर्ण किया हुआ, विभाजित, 1 सम० पर्णः खजूर का पेड़।

चीलिका [ची + ला + क + टाप् इत्वम्] झिंगुर।

चीव (भ्वा० उभ०—चीवति-ते) 1 पहनना, ओढ़ना 2 लेना ग्रहण करना 3 पकड़ना।

चीवरम् [चि + वरच् नि० दीर्घ, चीव् + अरच् वा] 1 पोशाक, फटा-पुराना, चिथड़ा प्रेतचीवरवसा स्वनोग्रया रघु० ११।१६ 2 भिक्षुक का परिधान, विशेषकर बौद्ध भिक्षु के वस्त्र, चीवरादि परिवृते—सिद्धा०, चीरचीवरपरिच्छदा - मा० १, प्रक्षालित मेतन्मया चीवरमण्डम् - मृच्छ० ८।

चीवरिन् (पु०) [चीवर + इनि] 1 बौद्ध या जैन भिक्षुक 2 भिक्षुक।

चुक्कारः [चुक्क् + अच् = चुक्क + आ + रा + क] सिंह की गर्जन या दहाड़।

चुक्र [चक्+रक्, अत उत्व च] 1 एक प्रकार की अम्लश्रेष्ठ या अम्ललोणिका 2 खटास, —कम् खटास, अम्लता। सम० फलम् इमली का फल, —वास्तूकम् खटमिट्ठा चौका, अम्ललोणिका।

चुक्रा [चुक्र+टाप्] इमली का पेड़।

चुक्रिमन् (पु०) [चुक्र+इमनिच्] खटास, खट्टापन।

चुक्रुक, —कम्, चुक्रुकम् [चुक्रु इति अव्यक्तशब्दं करोति —कृ+क, पृषो० दीर्घ] चूची का बिटकना या चुसी।

चुक्लृप्त (वि०) [कुछ समासों के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत, कुशल —अक्षर°, चार° आदि।

चुक्षा, —त्रा [चुद् (इ)+अच्+टाप्] छोटा कुआँ या जलाशय।

चुत् (भ्वा० पर०—चोतति] चूना, टपकना, दे० च्युत्।

चुत [चुत्+क] गुवा।

चुद् (चुरा० उभ० चोदयति—ते, चोदित) 1 भेजना, निर्देश देना, आगे फेंकना, प्रेरित करना, हाँकना, धकेलना चोदयाश्वान् —भ० १ 2 प्रणोदित करना स्फूर्ति देना, ठेलना, सजीव बनाना, उकसाना—रघु० ४।२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुसलाना—रघु० १०।६७ 3 शीघ्रता करना, त्वरित करना 4 प्रश्न करना, पूछना 5 साग्रह निवेदन करना 6. प्रस्तुत करना, तर्क या आक्षेप के रूप में सामने लाना, परि—1 धकेलना, निर्देश देना, भेजना 2 उकसाना, प्रोत्साहित करना, प्र—, 1 ठेलना, प्रणोदित करना, स्फूर्ति देना उकसाना—आपलाय प्रचोदितः —रघु० १।९ 2 हाँकना, हाँकना, स्फूर्ति देना, धकेलना 3 निर्देश देना सम्—1 निर्देश देना, उकसाना, ठेलना 2 फेंकना, आगे बढ़ाना।

चुन्दी (चुन्द्+अच् नि० ङीष्) दूती, कुटनी।

चुप् (भ्वा० पर० चोपति) शनैः शनैः चलना, दबे पाँव चलना, चुपचाप खिसकना।

चुबुक [=चिबुक, पृषो०] ठोढ़ी।

चुम्ब् (भ्वा०—चुरा० उभ० —चुम्बति—ते, चुम्बयति—ते, चुम्बित) 1 चूमना करना, (आलं० से भी) विलम्बयति चुम्बति जलधरकल्प हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम्—गीत० ६, प्रियामुख किंपुरुषश्चुचुम्बे—कु० ३।३८ अमरु १६, शि० ४।१३२ 2 सुकुमारता पूर्वक स्पर्श करना, छूते हुए चलना—उत्तर० ४।१५, परि—,चूमना—ऋतु० ६।१७, अमरु ७७।

चुम्बः, —बा [चुम्ब्+अच्, घञ् वा, स्त्रियां टाप्] चूमना, चूमना।

चुम्बकः [चुम्ब्+ण्वुल्] 1 चूमने वाला 2 कामी, कामासक्त, कामुक 3 बदमाश, ठग 4 जिसने चूम लिया, जिसने अनेक विषयों को छू लिया, पल्लवग्राही विद्वान् 5 चुम्बक पत्थर (चकमक)।

चुम्बनम् [चुम्ब्+ल्युट्] चूमना, चुंबन—चुम्बन देहि मे वक्त्रं कामचाण्डालतृप्तये—रस०।

चुर् (चुरा० उभ०—चोरयति—ते, चोरित) 1. लूटना, चुराना—मनु० ८।३३३ विक्रम० ३।१७ 2 (आलं०) वहन करना, रखना, अधिकार में करना, लेना, धारण करना—अचूचुरच्चलनजसोऽभिरामताम्—शि० १।१६।

चुरा [चुर्+अ+टाप्] चोरी।

चुरिः—री (स्त्री०) [चुर्+कि, चुरि+ङीष्] छोटा कुआँ।

चुलुकः [चुल्+उकञ्] 1 सहरा कीचड़ 2 एक घूँट या हथेली भर पानी, चुल्लू,—भवौ स भद्र चुलुके समुद्र —भै० ८।४५, ज्ञात्वा त्रिधातुरचलुकात् प्रसृतिम्—विक्रमांक० १।३७ 3 छोटा बर्तन।

चुलुकिन् (पु०) [चुलुक+इनि] सूँस, उलूपी।

चुलुम्प् (भ्वा० पर०—चुलुम्पयति) 1 झूलना, डोलना, इधर उधर हिलना दोलायमान होना, उद्—1. झोंटे लेना 2 आन्दोलित होना—अम्बोधेर्लोलिकेलीरसमिव चुलुम्पन्त्यपो ये—महावी० ५।८।

चुलुम्पः [चुलुम्प्+घञ्] बच्चों को लाड प्यार करना।

चुलुम्पा [चुलुम्प+टाप्] बकरी।

चुल्ल् (भ्वा० पर०—चुल्लति) खेलना, क्रीडा करना, प्रेमोन्माद में प्रीतिसूचक संकेत करना।

चुल्लि [चुल्ल्+इन्] चूल्हा।

चुल्ली [चुल्लि+ङीष्] 1. चूल्हा 2. चिता।

चूचुकम्, चूचूकम् [चूष्+उकञ्, एकारस्य चकार, चूचुक पृषो०] चूची का बिटकना या घुण्डी शि० ७।१९।

चूडकः [चूडा+कन्, ह्रस्व] कुआँ।

चूडा [चूल्+अङ्, लस्य ड, दीर्घ० नि०] 1 बालों की चोटी चुटिया (मुण्डन संस्कार के अवसर पर रखी हुई शिखा) रघु० १८।५१ 2 मुण्डन संस्कार 3 मुर्गे की या मोर की कलगी 4 ताज, मुकुट, उष्णीष 5 सिर 6 शिखर, चोटी 7 चौबारा, अटारी 8 कुआँ 9 (कलाई में पहना जाने वाला) आभूषण। सम० —करणम्,—कर्मन् (नपु०) मुण्डन संस्कार—मनु० २।३५, —पाशः बालों का गुच्छा, केश समूह—चूडापाशे नवकुरवकम्—मेघ० ६५—मणिः,—रत्नम् 1 सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण, चूडामणि, शीर्षफूल (आलं० से भी) 2 बढ़िया श्रेष्ठ (प्रायः समास के अन्त में)।

चूडारः,—क (वि०) [चूडा+ऋ+अण्, चूडा+लच्] 1 सिर पर चुटिया रखने वाला, शिखायुक्त 2 कलगीदार।

चूतः [चूष्+क्त पृषो०] 2 आम का पेड़, —ईषद्धरज कषायकपिशा चूते नवा मञ्जरी—विक्रम० २।७, चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः—कु० ३।३२ 2. कामदेव

के पाँच बाणों में से एक, दे० पंचबाण,—तम् गुदा, मलद्वार।

चूर्ण (चुरा० उभ० चूर्णयति-ते, चूर्णित) चूरा२ करना, कुचलना, पीस देना 2 चकनाचूर करना, कुचल देना, —तम्,—रगड़ देना, कुचल देना - सचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू वेणी० १।१५।

चूर्ण,- र्णम् [चूर्ण+अच्] 1 चूरा 2 आटा 3 धूल 4 सुगन्धित चूरा, पिसा हुआ चन्दन, कपूर आदि —भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टि मेघ० ६८ र्ण 1 खड़िया 2 चूना। समः- कार चूना फूंकने वाला,- कुन्तलः घुघर, घुघराले बाल, अलकें—यस्य कैरलकान्तानां धूर्णकुन्तलवल्लिभि — विक्रमाङ्क० ८।२, —खण्डम् कङ्कड, बजरी, -पारद सिंगरफ, सिन्दूर, -योग गन्ध द्रव्यों का चूर्ण।

चूर्णकः [चूर्ण+कन्] भून कर पीसा हुआ अनाज, सत्तू —कम् 1 सुगन्धित चूरा 2 गद्य रचना की एक शैली जो कर्णकटु शब्दों से रहित तथा अल्प समास वाली हो- अकठोराक्षर स्वल्पसमास चूर्णक विदु —ल० ६।

चूर्णनम् [चूर्ण+ल्युट्] कुचलना, पीसना।

चूर्णि,- र्णी (स्त्री०) [चूर्ण+इन्, चूर्णि+ङीष्] 1 पीसा हुआ, चूरा 2 सौ कौड़ियों का समूह।

चूर्णिका [चूर्ण+ठन्+टाप्] 1 भुना हुआ और पिसा हुआ अनाज, सत्तू 2 सरल गद्यरचना की एक शैली।

चूर्णित (वि०) [चूर्ण्+क्त] 1 पीसा हुआ, चूरा किया हुआ 2 कुचला हुआ, रगड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़े २ किया हुआ —कु० ५।२४।

चूल. [चूल्+क पृषो० दीर्घ] बाल, केश,—ला 1 ऊपर का कक्ष 2 सिन्दूर 3 धूमकेतु की शिखा।

चूलिका [चूल्+ण्वुल् पृषो० दीर्घ] 1 मुर्गे की कलगी 2 हाथी की कनपटी 3 (नाटकों में) नेपथ्य में पात्रों द्वारा किसी घटना का संकेत—अन्तर्जवनिकासम्बे सूचनार्थस्य चूलिका सा० द० ३१०, उदा० महावीरचरित के चौथे अंक के आरंभ में।

चूष् (स्वा० पर०—चूषति, चूषित) पीना, चूसना, रस लेना।

चूषा [चूष्+क+टाप्] 1 (हाथी का) चमड़े का वस्त्र 2 चूसना 3 मेखला।

चूष्यम् [चूष्+ण्यत्] चूसे जाने वाले भोज्य पदार्थ।

चृत् 1 (तुदा० पर०—चृतति) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 बाँधना, एक जगह जोड़ना, ॥ (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—चर्तति, चर्तयति—ते) जलाना, प्रज्वलित करना।

चेकितानः [कित्+यङ्+शानच्, यङो लुक्, आतोऽटित्त्वम्] 1 शिव का विशेषण 2 यदुवंशीराजा जो पाण्डवों की ओर से महाभारत के युद्ध में लड़ा।

चेट,—ट [चिट्+अच्, वा टस्य ड] 1 नौकर 2 विट उपपति।

चेटि (टी) का, चेटिका (टी) (डी) [चिट्+ण्वुल् टाप्, इत्व, पक्षे ऊठ्वम्, ङीप्, ऊठ्वम् वा] लौंडी, दासी।

चेतन (वि०) (स्त्रि०-नी) [चित्+ल्युट्] 1 सजीव, जीवित, जीवधारी सचेत, संवेदनशील चेतनाचेतनेषु मेघ० ५, सजीव और निर्जीव 2 दृश्यमान,- न 1 सचेत प्राणी, मनुष्य 2 आत्मा, मन 3 परमात्मा, —ना 1 ज्ञान, संज्ञा, प्रतिबोध -चकार चेतनामेषां चेतना चक्रपाणिक - रम०, रघु० १२।१८, चेतना प्रतिपद्यते संज्ञा फिर प्राप्त कर लेता है 2 समझ, प्रज्ञा --परिणामादाभिनीयामात्मप्रसादमिव चेतना---रघु० १७।१ 3 जीवन, प्राण, सजीवता भग० १३।६ 4 बुद्धिमत्ता, विचारविमर्श।

चेतस् (नपुं०) [चित्+असुन्] 1 चेतना, ज्ञान 2 चिन्तनशील आत्मा, तर्कना शक्ति 3 मन, हृदय, आत्मा - चेत प्रसादयति भर्तृ० २।२१, सञ्चरति पुर शरीरं शरदि पयश्चादमम्बुन चेत ज० १।२४। समः- जन्मन्, भवः,—भू (पुं०) 1 प्रेम, आवेश 2 कामदेव, - विकार मन की विकृति, नशा, क्षोभ।

चेतोमत् (वि०) [चेतस्+मतुप्] जिन्दा जीवित।

चेद् (अव्य०) यदि, अर्थात् कि, यद्यपि (वाक्य के आरंभ में कभी भी प्रयुक्त नहीं होता) अपि राजगुरौकरणीय नोचेत्किमिति तत्र प्रस्तावितिये वचसि - भामि० १।४८, कु० ४।९ प्रतिषेद् न, यदि ऐसा कहा गया (हम उत्तर देते हैं) तो ऐसा नहीं (विवादास्पद विषयों में बहुधा प्रयुक्त होता है) सन्ति-यानमात्रेण राजप्रभृतीना दण्ड कृत्वर्गमिति चेन्न का०, अथ चेद्-पन्तु यदि।

चेदि (पुं० ब० व०) एक देश का नाम चेदीजिनगर चेदीना भवान्समवसन्न मा शि० २।९५ ६३। समः —पति, भूभृत् (पुं०) राज् (पुं०)—राज शिशुपाल, दमघोष का पुत्र, चेदिदेश का राजा—शि० २।१, दे० 'शिशुपाल'।

चेय (वि०) [चि+यत्] 1 ढेर लगाने के योग्य 2 एकत्र करने योग्य, संग्रह किये जाने के योग्य।

चेल् (स्वा० पर० चेलति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 हिलना, क्षुब्ध होना, काँपना।

चेलम् [चिल+घञ्] 1 वस्त्र, पोशाक—कुसुम्भरागेण चारु चेल वसाना जम० 2 (समास के अन्त में) बुरा, दुष्ट, कमीना भार्याचेलम् - बुरी पत्नी। समः -प्रक्षालकः धोबी।

चेलिका [चेल+कन्+टाप्, इत्वम्] चोली, अंगिया।

चेष्ट् (स्वा० आ० चेष्टते, चेष्टित) 1 हिलना-जुलना,

हिलना-डुलना, सक्रिय होना, जीवन के चिह्न दिखलाना -यदा स देवो जागर्ति तदेद चेष्टते जगत् -मनु० १।५२ 2 प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, सघर्ष करना 3 अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना 4 व्यवहार करना – वि –, 1 हिलना-डुलना, चलना-फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना 2 कार्य करना, व्यवहार करना ।

चेष्टक [चेष्ट्+ण्वुल्] सभोग का आसन विशेष, रतिबध ।

चेष्टनम् [चेष्ट्+ल्युट्] 1 गति 2 प्रयत्न, प्रयास ।

चेष्टा [चेष्ट्+अङ्+टाप्] 1 चाल, गति—किमस्माक स्वामिचेष्टानिरूपणेन - हि० ३ 2 सकेत, कर्म—चेष्टया भाषणेन च नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गत मत –मनु० ८।२६ 3 प्रयत्न, प्रयास 4 व्यवहार । सम०—नाश सृष्टि का नाश, प्रलय, - निरूपणम् किसी व्यक्ति की गतिविधि पर आँख रखना ।

चेष्टित (भू० क० कृ०) [चेष्ट्+क्त] हिला, चला, हिला-डुला, - तम् 1 चाल, अगभगिमा, कर्म 2 क्रिया, कर्म, व्यवहार –कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम् —रघु० ४।६८, तत्कामस्य चेष्टितम्—मनु० २।४, काम करना ।

चैतन्यम् [चेतन+ष्यञ्] 1 जीव, जीवन, प्रज्ञा, प्राण, सवेदन 2 (वेदान्त द० में) परमात्मा जो सभी प्रकार की सवेदनाओं का स्रोत और सब प्राणियों का मूल-तत्त्व समझा जाता है ।

चैत्तिक (वि०) [चित्त+ठक्] मानसिक, बौद्धिक ।

चैत्य,—त्यम् [चित्य+अण्] 1 सीमा चिह्न बनानेवाला पत्थरों का ढेर 2 स्मारक, समाधि-प्रस्तर 3 यज्ञ मण्डप 4 धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी, वह स्थान जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है 5 देवालय 6 बौद्ध और जैन मन्दिर 7 गूलर का वृक्ष, या सडक के किनारे उगने वाला गूलर का पेड़—मेघ० २३ (रघ्या-वृक्ष - मल्लि०)। सम०—तरु,—द्रुम,—वृक्ष किसी पवित्र स्थान पर उगा हुआ उदुम्बर अर्थात् गूलर का पेड़, - पाल: देवालय का सरक्षक —मुख: साधु-सन्यासी का जलपात्र या कमण्डलु ।

चैत्र [चित्रा+अण्] एक चान्द्र मास का नाम जिसमे कि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र –पूर्ण में स्थित रहता है, (यह महीना मार्च और अप्रैल के अग्रेजी महीनो में आता है) 2 बौद्ध भिक्षु, –त्रम् मन्दिर, मृतक की समाधि । सम० –आवलि (स्त्री०) चैत्र की पूर्णिमा, त्रध्वज: कामदेव का विशेषण ।

चैत्ररथम्,—थ्यम् [चित्ररथ+अण्, ष्यञ् वा] कुबेर के उद्यान का नाम—एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-रम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६०,५० ।

चैत्रिक:, चैत्रिक:, चैत्रिन् (पु०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन्—चैत्री +इञ्, चित्रा+ठक्, इनि वा] चैत्रमास, चैत्र का महीना ।

चैत्री [चित्रा+अण्+ङीप्] चैत्र मास की पूर्णिमा ।

चैद्य: [चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल,—अभिचैद्य प्रतिष्ठासु शि० २।१ ।

चैलम् [चेल्+अण्] कपडे का टुकडा, वस्त्र । सम० —धाव: धोबी ।

चोक्ष (वि०) [चक्ष्+घञ्, पृषो० साधु] 1. पवित्र, स्वच्छ 2 ईमानदार 3 होशियार, दक्ष, कुशल 4 सुखकर, रुचिकर, प्रसन्नता देने वाला ।

चोचम् [कोचति आवृणोति—कुच्+ऊच् पृषो०] 1 वल्कल, छाल 2 चमडा, खाल 3 नारियल ।

चोटी [चुट्+अण्+ङीप्] छोटा लहगा, सारा पेटी-कोट ।

चोड. [चोडति सवृणोति शरीरम्—चुड्+अच्+ङीप्] चोली अगिया ।

चोदना [चुद्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 भेजना, निर्देश देना, फेंकना 2 स्फूर्ति देना, आगे हाँकना 3 प्रोत्सा-हन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान करना 4 उपदेश, पुनीत आदेश, वेदविहित विधि । सम० —गुड. खेलने के लिए गेंद ।

चोदित (भू० क० कृ०) [चुद्+णिच्+क्त] 1 भेजा, निर्दिष्ट 2 स्फूर्ति दिया गया, हाका गया 3 उकसाया गया, प्रोत्साहित किया गया, उत्तेजित किया गया 4 तर्क के रूप म सामने प्रस्तुत किया गया ।

चोद्यम् [चुद्+ण्यत्] 1 आक्षेप करना, प्रश्न पूछना 2 आक्षेप 3 आश्चर्य ।

चो(चौ)र [चुर्+णिच्+अच्, चुरा+ण] चोर, लुटेरा —सकल चोर गत त्वया गृहीतम् - विक्रम० ४।१६, इन्दीवरदलप्रभाचोर चक्षु —भर्तृ० ३।६७ ।

चो (चौ) रिका [चोर+कन्+टाप्] चोरी, लूट ।

चोरित (वि०) [चुर्+णिच्+क्त] चुराया गया, लूटा गया ।

चोरितकम् [चोरित+कन्] 1 चोरी, चौर्य, स्तेय 2 चुराई हुई वस्तु ।

चोल (पु०, ब० व०) [चुल्+घञ्] दक्षिण भारत मे एक देश का नाम, वर्तमान तजौर, —क:,—ली, अगिया चोली ।

चोलक: [चोल+कै+क] 1 वक्षस्त्राण 2. छाल या वल्कल 3 चोली ।

चोलकिन् (पु०) [चोलक+इनि] 1 वक्षस्त्राण से सुस-ज्जित सैनिक 2 सतरे का पेड 3 कलाई ।

चोल(ला)पट्ट: [चोलस्य व (उ) पट्ट इव, ष० त०, शक० पर०] साफा, पगडी, किरीट, मुकुट ।

चोष: [चुष्+घञ्] 1. चूसना, (आयु० में) सूजन ।

चौष्यम्=चूष्यम् ।

चौर(क) (वि०) (स्त्री—री (की)) [चूडा+अण् —डलयोरभेद] 1 शिखायुक्त, कलगीदार 2 मुण्डन सम्बन्धी—र्म्, —कर्म मुण्डन संस्कार ।

चौर्यम् [चोर+ष्यञ्] 1 चोरी, लूट 2 रहस्य, छिपाव सम०—रतम् छिपे छिपे स्त्री सम्भोग,—वृत्ति (स्त्री०) लूटने की आदत ।

च्यवनम् [च्यु+ल्युट्] 1 चलना-फिरना, गति 2 वञ्चित होना, हानि, वञ्चना 3 मरना, नष्ट होना 4 बहना टपकना ।

च्यु (भ्वा० आ०—च्यवते, च्युत) 1 गिरना, नीचे गिर पड़ना, फिसलना, डूबना (आलं० भी)—शा० २।८ 2. बाहर निकलना, बहना, बूंद २ करके टपकना, बाहर निकालना—स्वनदच्युत वह्निमिवाद्रिकुम्भद—रघु० ३।५८, भट्टि० ९।७४ 3 विचलित होना, भटकना, अलग हो जाना, (कर्तव्य आदि) छोड़ देना (अपा० के साथ), अस्मादस्मिन्न च्यवेत्—मनु० ७।९८, १२। ७१,७२ 4 खो देना, वञ्चित होना—अच्याष्ट सत्त्वान्न्युपति—भट्टि० ३।२०, ७।९२ 5 अदृश्य होना, ओझल होना, नष्ट होना, गायब होना—रघु०८।६५ मनु० १२।९६ 6 घटना, कम होना, परि—, 1 चले जाना, उड़ जाना, अब जाना 2 प्रगमन करना 3 भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4 खोना, वञ्चित होना 5 गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र,—अलग हो जाना, नीचे गिर पड़ना आदि (लगभग यह सब अर्थ जो परि पूर्वक 'च्यु' के होते हैं) ।

च्युत् (भ्वा० पर०—च्योतति 1 बूंद २ गिर कर बहना, रिसना, चूना, झरना—इव शोणितमस्यन्न सम्प्रहारेऽच्युनत्तयो—भट्टि० ६।२८ 2 गिरपड़ना, नीचे गिरना, फिसलना—इव कवचमच्योतीत्—भट्टि० ६।२९ 3 गिराना, बहाना ।

च्युत (भू० क० कृ०) [च्यु+क्त, च्युत्+क वा] 1 नीचे गिरा हुआ खिसका हुआ, गिरा हुआ 2 दूर किया गया, बाहर निकाला गया 3 विचलित, भूला हुआ 4 खोया गया । सम० अधिकार (वि०) पदच्युत किया गया,—आत्मन् (वि०) दूषित आत्मा वाला, दुष्टात्मा कु० ५।८१ ।

च्युति (स्त्री०) [च्यु+क्तिन्] 1 अध पतन, अवपतन 2 विचलन 3 बूंद २ गिरना, रिसना 4 खोना, वञ्चित होना—धैर्यच्युति कुर्याम्—३।१० 5 अदृश्य होना, नष्ट होना 6 योनिच्छद, 7 गुदा ।

च्युत [=च्युत पृषो० उकारस्य दीर्घ] आम का वृक्ष ।

छः [छो+ड, क वा], अश्व, खड़ ।

छगः (स्त्री०—गी) [छ यज्ञादौ छेदन गच्छति—छ+गम्+ड] बकरा ।

छगलः (स्त्री० ली) [छो+कल, गुक, ह्रस्व] बकरा, सम्—नीला कपड़ा ।

छगलक [छगल+कन्] बकरा ।

छटा [छो+अटन्+टाप्] 1 ढेर, पुञ्ज, राशि, सघान —सटाच्छटा भिन्नघनेन—शि० १।४७ 2 प्रकाश किरण-समूह, कान्ति, दीप्ति, प्रकाश—शि० ८।३८ 3. अविच्छिन्न रेखा, लकीर—छातेतराम्बुच्छटा—काव्य० । सम०—आभा बिजली,—फलः सुपारी का वृक्ष ।

छत्र [छादयति अनेन इति—छद्+णिच्+त्रन्, ह्रस्व] कुकुरमुत्ता, खुम्भी,—म् छाता, छतरी—अदेयमासीत् अदमेव भूपते. शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६ मनु० ७।९६। सम०—धर,—धार छत्र पकड़ कर चलने वाला,—धारणम् 1 छाता लेकर चलना या छाता रखना—मनु० २।१७८ 2 राजकीय अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,—पतिः 1 राजा जिसके ऊपर राज्य की मर्यादा के चिह्नस्वरूप छत्र किया जाय, प्रभुसत्तासम्पन्न सम्राट् 2 जम्बूद्वीप के प्राचीन राजा का नाम,—भङ्गः 1 राजकीय छत्र का विनाश, राज्य का नाश, राजगद्दी से उतारा जाना, सिंहासनच्युति 2 पराधीनता 3 राजामन्दी 4 परित्यक्त अवस्था, वैधव्य ।

छत्रक [छत्र+कै+क] शिव की पूजा के लिए मन्दिर, —कम् कुकुरमुत्ता, खुम्भी ।

छत्रा, छत्राक [छद्+ष्ट्रन्+टाप्, छत्रा+कन्] कुकुरमुत्ता, खुम्भी- मनु० ५।१९—याज्ञ० १।१७६ ।

छत्रिक [छत्र+ठन्] छाता लेकर चलने वाला ।

छत्रिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [छत्र+इनि] छाता रखने वाला या लेकर चलने वाला—(पु०) नाई ।

छदिः [छद्+क्विप्] 1 घर 2 कुञ्ज, पर्णशाला ।

छद् (भ्वा०—चुरा० उभ०—छदति—ते, छादयति-ते, छन्न, छादित) 1 ढकना, ऊपर से ढांप देना, पर्दा करना

—हेमैरच्छन्ना—मेघ० ७६, पश्य लेदात्सलिलगुरुभि पक्ष्मभिश्छादयन्तीम्—मेघ० ९०, छन्नोपान्त ··· काननाग्रै —१८ 2 (चादर की भांति) बिछाना, डापना 3 छिपाना, ढक लेना, ग्रहण लगना (आल०), गुप्त रखना—ज्ञानपूर्वं कृत कर्म छादयन्ते ह्यसाधव —महा०, छन्न दोषमुदाहरन्ती—मृच्छ० ९।४,—अव, छिपाना, ढकना, डापना, आ—, 1 डापना—नाच्छादयति कौपीनम्—पंच० ३।९७ 2. छिपाना, ढकना—भानोराच्छादयत्प्रभाम्—महा० 3 वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना—मनु० ३।२७, वस्त्रमाच्छादयति, उद्—उघाड़ना, कपड़े उतारना, उप—, 1 आच्छादित करना 2 छिपाना, ढकना, परि—1 डापना, पहनना—दर्भैस्तं परिच्छाद्य—पंच० २, द्वीपिचर्मपरिच्छन्न (गर्दभ) हि० ३।९ 2 छिपाना, डापना, प्र—, 1 डापना, लपेटना, पर्दा डालना, अवगुठित करना—(वन) प्राच्छादयदमेयात्मा नीहारेणेव चन्द्रमा —महा० 2 छिपाना, ढकना, भेस बदलना—प्रच्छादय स्वान् गुणान्—भर्तृ० २।७७ प्रदान प्रच्छन्नम् २।६४, मनु० ४।१९८, १०।४०, चौर० ४ 3 कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 4 रुकावट डालना, रोडा अटकाना, प्रति—, 1 छिपाना, ढकना 2 डापना, लपेटना सम्—,1 छिपाना 2 अवगुठित करना, लपेटना।

छदः, छदनम् [छद्+अच्, ल्युट् वा] 1 आवरण, चादर, अल्पच्छद, उत्तरच्छद आदि 2 स्कन्ध, पक्ष—छदहेम कर्षन्निवालसत्—नै० २।६९ 3 पत्र, पर्ण 4 म्यान, खोल, गिलाफ, पेटी, बक्स।

छदि (स्त्री०) छर्दिस् (नपु०) [छद्+क्विप्, इस् वा] 1 गाड़ी की छत 2 घर की छत या छप्पर।

छद्मन् (नपु०) [छद्+मनिन्] 1 धोखा देने वाले वस्त्र, कपटवेश 2 दलील, बहाना, व्याज—ब्रह्मछद्मा सामर्थ्यसार —महावी० २।२५ पलितछद्मना जरा—रघु० १२।२, शि० २।२१ 3 आलसाजी, बेईमानी, चालाकी—छद्मना परिदधामि मृत्यवे—उत्तर० १।४५, मनु० ४।१९९, ९।७२। सम०—तापसः बना हुआ तपस्वी, पाखंडी,—कृपेण (अव्य०) अज्ञात रूप से, भेस बदल कर,—वेशिन् (पु०) खिलाड़ी, ठग, भेस बदले हुए।

छद्मिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [छद्मन्+इनि] 1 आलसाज, धोखेबाज 2 भेस बदलते हुए (समास के अन्त में) उदा०—ब्राह्मण छद्मिन्=ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए।

छन्द् (चुरा० उभ०—छन्दयति ते, छन्दित) 1 प्रसन्न करना, तुष्ट करना 2 फुसलाना, बहकाना 3 डापना 4 प्रसन्न होना, उप—1 चापलूसी करना, फुसलाना, आमन्त्रित करना—स्वयोपछन्दित उदकेन—का० ५, पानी पीने के लिए फुसलाया गया 2 प्रार्थना करना, निवेदन करना 3 अनुनय करना 4 कुछ देना।

छन्दः [छन्द्+घञ्] 1 कामना, इच्छा, कल्पना, चाह, अभिलाषा,—विज्ञायता देवि यस्ते छन्द इति—विक्रम० ३, जैसा आप चाहें 2 स्वतन्त्र इच्छा, अपनी छूट, मन की मौज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुकूल आचरण—वष्ठे काले स्वमपि वियसस्यात्मनश्छन्दवर्ती —विक्रम० २।१, गीत० १, याज्ञ० २।१९५, स्वच्छन्दम् अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से 3 (अत) वश्यता, नियन्त्रण 4 मतलब, इरादा आशय 5 जहर।

छन्दस् (नपु०) [छन्द्+असुन्] 1 कामना, चाह, कल्पना, इच्छा, मरजी—(गृह्णीयात्) मूलं छन्दोऽनुवृत्तेन या यातव्येन पण्डितम्—पंच० ३३ 2 स्वतन्त्र इच्छा, स्वेच्छाचरण 3 मतलब, इरादा 4 आलसाजी, चालाकी, धोखा 5 वेद, वैदिक सूक्तों का पावन पाठ —स च कुलपतिराश्रमछन्दसा य प्रयोक्ता—उत्तर० ३।४८, बहुल छन्दसि—पाणिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त, प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११, याज्ञ० १।१४३, मनु० ४।९५ 6 वृत्त, छन्द—ऋक् छन्दसा आशास्ते—शं० ४, गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५, १३।१४ 7 छन्दों का ज्ञान, छन्द शास्त्र (छः वेदाङ्गों में से छन्द शास्त्र भी एक वेदाङ्ग माना जाता है—अन्य वेदाङ्ग हैं—शिक्षा, व्याकरण, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष)। सम०—कृतम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई दूसरी पावन रचना—यथोदितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत्—मनु० ४।१००,—गः (छन्दोग) 1 श्लोकों का सस्वर पाठ करने वाला 2 सामगायक या सामगान का विद्यार्थी—मनु० ३।१४५, (छन्दोग सामवेदाध्यायी)—भङ्गः छन्द शास्त्र के नियमों का उल्लंघन,—विचितिः (स्त्री०) 'छन्द परीक्षा' छन्द शास्त्र का एक ग्रन्थ —कभी कभी इसे दण्डिरचित माना जाता है—छन्दोविचित्या सकलस्तत्रप्रबन्धो निर्दर्शितः—काव्या० १।१२।

छन्न (वि०) [छद्+क्त] 1 ढका हुआ 2 छिपा हुआ, गुप्त, रहस्य आदि, दे० 'छद्'।

छन्नक [छन्न+अण्डन्] अनाथ, मातृपितृहीन, जिसका कोई सम्बन्धी न हो।

छर्द् (चुरा० उभ०—छर्दयति, छर्दित) वमन करना, कै करना।

छर्दः, छर्दम छर्दिः (स्त्री०), छर्दिका छर्दिस् (स्त्री०) [छर्द्+घञ्, ल्युट्, इन्, छर्दि+कन्+टाप्, छर्द्+इनि वा] वमन, कै करना, अस्वस्थता।

छलः,—लम् [छल्+अच्] 1 आलसाजी, चालाकी, धोखा, दगाबाजी—विमृशेह शठप्रलापमच्छलानि—रघु० १९।३१, छलमत्र न गृह्यते—मृच्छ० ९।१८, याज्ञ० १।९१,

मनु० ८।४९, १८७, अमर १६, शि० १३।११२ बहानाबाजी, धूर्तता 3 दलील, बहाना, व्याज, बाह्यरूप, (इस अर्थ में बहुधा 'उत्प्रेक्षा' बतलाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है), परिक्षावलयच्छलेन या न परेखा ग्रहणस्य गोचरम्—नै० २।९५, प्रत्यर्प्य पूजामुपदाच्छलेन—रघु० ७।३०, ५४, १६।२८, भट्टि० १।१, अमर १५, मा० ९।१ 4 झगड़ा 5 दुष्टता 6 हेत्वाभास 7 योजना, उपाय, तरकीब।

छलयति, —ते [छल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] धोखा देना, ठगना, बुद्धि में दूसरे को पराजित करना।

छलयति (ना० धा० पर०) अपनी चतुराई से बुद्धि में दूसरे को पराजित करना, धोखा देना, ठगना—बलिं छलयते गीत० १, बालालालापछलयन्ति लोकान्—रघु० १६।६१, भग० १०।३६, अमरु ४१।

छलिकम् [छल+ठन्] एक प्रकार का नाटक या नृत्य—छलिक दुष्प्रयाज्यमुदाहरन्ति—मालवि० २।

छलिन् (पु०) [छल+इनि] ठग, उचक्का, शठ।

छलि, —ली (स्त्री) [छद्+क्विप्, ता लाति ला+क गौरा० ङीप्] 1 वल्कल, छाल 2 फैलने वाली लता 3 सन्तान, प्रजा, सन्तति, औलाद।

छविः (स्त्री०) [छवति असार छिनत्ति तमो वा छो+कि किच्च वा ङीप्] 1 आभा, चेहरे की सुन्दरी, चेहरे का रंगरूप—हिमकरोदयपाण्डुमुखच्छवि. -रघु० ९।३८, छवि पाण्डुरा—श० ३।१०, मेघ० ३३ 2 सामान्य रंगरूप 3 सौन्दर्य, आभा, कान्ति—छविकर मुखचूर्णमनुश्रिय—रघु० ९।४५ 4 प्रकाश, दीप्ति 5 त्वचा, खाल।

छागः (वि०) (स्त्री०—गी) [छो+गन्] बकरे या बकरी से सम्बन्ध रखने वाला—याज्ञ० १।२५८,—ग. (स्त्री० गी) 1 बकरा बकरी, ब्राह्मणच्छागलो यथा (वचित)—हि० ४।५३, मनु० ३।२६९ 2 मेष राशि,—गम् बकरी का दूध। सम०—भोजन (पु०) भेड़िया,—मुख. कार्तिकेय का विशेषण, -रथः- वाहन आग की देवता अग्नि की उपाधि।

छागण. [छगण+अण्] सूखे कण्डों की आग।

छागल (वि०) (स्त्री०—ली) [छगल+अण्] बकरों से प्राप्त होने वाला या उससे सम्बद्ध,—ल बकरा।

छात (वि०) [छा+क्त] 1 काटा गया, विभक्त 2 निर्बल दुर्बलापतला, कृश।

छात्रः [छत्र गुरोर्वैगुण्यावरण शीलमस्य सिद्धा० छत्र+ण] विद्यार्थी, शिष्य,—त्रम् एक प्रकार का मधु। सम०—गण्ड. काव्य का अन्यमनस्क विद्यार्थी जिसे श्लोकों का केवल आरम्भिक पद याद हो, दर्शनम् एक दिन रक्खे हुए दूध से निकाला हुआ मक्खन,—व्यसक मन्दबुद्धि या धूर्त विद्यार्थी।

छादम् [छद्+णिच्+घञ्] छप्पर, छत।

छादनम् [छद्+णिच्+ल्युट्] 1 आवरण, पर्दा (आल० भी) विनिर्मित छादनमज्ञताया—भर्तृ० २।७ 2 छिपाना 3 पत्र 4 परिधान।

छादित (वि०) ढका हुआ।

छाद्मिक [छद्मन्+ठक्] धूर्त, कपटी मनु० ४।१९५।

छान्दस (वि०) (स्त्री०—सी) [छन्दस्+अण्] 1 वैदिक, वेदा के लिए विशेष शब्द जैसा कि "छान्दस प्रयोग" 2 वेदाध्यायी, वेदज्ञ 3 पक्षपाती, छन्दोबद्ध,—स. वेदज्ञाता ब्राह्मण।

छाया [छो+य+टाप्] 1 छाँह, छाव (त० समास के अन्त में 'छाय' हो जाता है जब कि छाँह की सघनता का बोध अपेक्षित हो उदा० इक्षुच्छायनिषादिन्य रघु० ४।३०, इसी प्रकार ७।४, ५०, मुद्रा० ४।२१,) छायामय मानुगता निषेव्य कु० १।५, ६।४६, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्—श० ५।७, रघु० १।७५, २।६, ३।३०, मेघ० ६७ 2 प्रतिबिम्बित मूर्ति, अक्स—छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२ 3 समरूपता, समानता 4 असत्य कल्पना, दृष्टिभ्रम 5 रंग का समामिश्रण 6 दीप्ति, प्रकाश छायामण्डललक्ष्येण रघु० ४।५, रत्नच्छायाव्यतिकर—मेघ० १५।३६ 7 रंग—या० ६।५ 8 चेहरे की रंगत, स्वाभाविक रंगरूप, केवल लावण्यमयी छाया त्वयि न मुञ्चति—श० ३ मेघैरम्बरमिव प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—सा० द० 9 सौन्दर्य—क्षामच्छाय भवनम्—मेघ० ८०।१०४ 10 रक्षा 11 पंक्ति, रेखा 12 अन्धकार 13 रिश्वन 14 दुर्गा 15 सूर्य की पत्नी (यह सूर्य की पत्नी संज्ञा की प्रकृति—या छाया ही थी, फलतः जिस समय संज्ञा अपने पति को बिना बताये अपने पिता के घर चलीगई तो छाया से सूर्य के तीन सन्तान हुई दो पुत्र—सावर्णि और शनि, एक कन्या तपती) । सम०—अर्क चन्द्रमा,—कर छाता लेकर चलने वाला, -गृह शीशा, दर्पण,—तनय,—सुत सूर्यपुत्र शनि,—तरु वह वृक्ष जिसकी छाया घनी हो, छायादार पेड़ मेघ० १ द्वितीय (वि०) वह जिसका साथ एक मात्र छाया हो, अकेला, -पथ पर्यावरण—रघु० १३।२, -भृत् (पु०) चन्द्रमा,-मान चन्द्रमा, -नम् छाया का मापना,—मित्रम् छतरी, -मृगधर चन्द्रमा, यन्त्रम् छाया द्वारा काल का ज्ञान कराने वाला यन्त्र, धूपघड़ी।

छायामय (वि०) [छाया+मयट्] प्रतिबिम्बित, छायादार।

छि (स्त्री) [छो+कि बा०] गाली, अपशब्द।

छिक्का [छिक्+क+क+टाप्] छींकना, छींक।

छित (वि०) दे 'छात'।

छित्ति (स्त्री०) [छिद्+क्तिन्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

छित्वर (वि०) (स्त्री० री) [छिद्+क्वरप् पुपो० दीर्घ च] 1 काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना, फाड़ना छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, खण्ड-खण्ड करना, विभक्त करना —नेत्र छिन्दन्ति शस्त्राणि-भग० २।२३, रघु० १२।८०, मनु० ८।६१, ७० याज्ञ० २।३०२ 2 बाधा डालना, विघ्न डालना 3 हटाना, दूर करना, नष्ट करना, शान्त करना, मारना—तृष्णा छिन्धि- भर्तृ० २।७७, एतस्मे संशय छिन्धि मतिर्मे सम्प्रमुह्यति—महा०, राघवो रभसप्राप्ता तामाशां च सुरद्विषाम्, अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीमुखम्-रघु० १२।९६, कु० ७।१६, अव, काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना 2 भेद बताना, विवेचन करना 3 सुधारना, परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग न्याय में बहुधा से होता है), दे० अवच्छिन्न आ,— 1 काट डालना, फाड़ना, टुकड़े २ करना 2 छीनना, खसोटना, ले लेना कु० २।४६, मा० ५।२८ 3 काट डालना, अलग कर देना—मनु० ८।२१९ 4 हटाना, खींचकर दूर करना 5 खोचना, खींचकर दूर करना, उद्धृत करना, निकालना 6 अवहेलना करना, ध्यान न देना, उद्—,1 काट डालना, नष्ट करना, उन्मूलन करना, उखाड़ देना नोच्छिद्यादात्मनो मूलं परेषां वाञ्छितृष्णया महा०, कि वा रिपुस्तव गुरु स्वयमुच्छिनत्ति - रघु० ५।७१, २।२३, पञ्च० १।४७ 2 हस्तक्षेप करना, विघ्न डालना, रोकना अर्थेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधस, उच्छिद्यन्ते क्रिया सर्वा ग्रीष्मे कुसरिनो यथा—पञ्च० २।८४, मनु० ३।१०१ परि 1 फाड़ना, काट डालना, टुकड़े-टुकड़े करना 2 घायल करना, अंग-भंग करना 3 अलग करना, विभक्त करना, जुदा करना—शरीरेण परिच्छिन्न—सिद्धा० 4 सही-सही निश्चित करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बताना विवेचन करना, —मध्यस्था भगवती नौ गुणदोषौ परिच्छेत्तुमर्हति —मालवि० १, (न) यश परिच्छेत्तुमियत्तयालम्-रघु० ६।७७, १७।५९, कु० २।५८ प्र —, 1 काट डालना, टुकड़े २ करना 2 ले जाना, वापिस लेना वि —, 1 काट डालना, तोड़ना, फोड़ना, विभक्त करना—यदयं विच्छिन्न भवति कृतसन्धानमिव तत् -श० १।९, रघु० १६।२०, भर्तृ० १।९६ 2 बाधा डालना, तोड़ देना, समाप्त करना खतम करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) बुझा देना-विच्छिद्यमानेऽपि कुले परस्य-भट्टि० ३।५२, अमर ७४, सम्,— 1 काटना, काट डालना, विभक्त करना 2 दूर करना, साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (संदेह आदि)।

छिद् (वि०) [छिद्+क्विप्] (समास के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला हटाने वाला, खण्ड-खण्ड करने वाला—श्रमच्छिदामाश्रमपादपानाम्- रघु० ५।६ पङ्कच्छिद फलस्य—मालवि० २।८।

छिदकम् [छिद्+क्वुन्] 1 इन्द्र का वज्र, 2 हीरा।

छिदा [छिद्+अङ्+टाप्] काटना विभाजन।

छिदिः (स्त्री०) [छिद्+इन्] 1 कुल्हाड़ा 2 इन्द्र का वज्र।

छिदिरः [छिद्+किरच्] 1 कुल्हाड़ा 2 शब्द 3 अग्नि 4 रस्सा डोरी।

छिदुर (वि०) [छिद्+कुरच्] 1 काटने वाला, विभक्त करने वाला 2 आसानी से टूटने वाला 3 टूटा हुआ, अव्यवस्थित अन्तर्व्यस्त—सलक्ष्यते न च्छिदुरोऽपि हार.—रघु० १६।६२ 4 अशुभ 5 धूर्त, बदमाश, शठ।

छिद्र (वि०) [छिद्+रक्, छिद्र+अच् वा] छिदा हुआ, छिद्रों से युक्त,—द्रम् 1 छिद्र, दरार, फाँट, कटाव, रन्ध्र, गर्त, विवर, दरज—नवच्छिद्राणि तान्येव प्राण-स्यायतनानि तु—याज्ञ० ३।९९, मनु० ८।२३९ अय पटश्छिद्रशतैर्ममाकुल —मृच्छ० २।९, इसी प्रकार काष्° धूमि० 2 दोष, त्रुटि, दूषण—न हि सर्षपमात्राणि पर-च्छिद्राणि पश्यसि, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यसि—महा० 3 भेद या क्षीण अंश, दुर्बल पक्ष, दोष, न्यूनता— नास्य छिद्र परो विद्याद्विद्याच्छिद्र परस्य तु, गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मन —मनु० ७।१०५, १०२, छिद्र निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्क —हि० १।८१ (यहाँ छिद्र' का अर्थ 'सूराख' भी है), पञ्च० ३।३९, सम०- अनुजीविन्,- अनुसञ्चारिन्, - अनुसारिन्,— अन्वेषिन् (वि०) 1 दोष या त्रुटियाँ ढूंढने वाला 2 दूसरों की दूषित बातों को खोजने वाला, दूसरों में दोष निकालने वाला, छिद्रान्वेषी —सर्षपा दुर्जनाना च परच्छिद्रानुजीविना —पञ्च० १,—अन्तरः बेन, नर-कुल, सरकण्डा, आत्मन् (वि०) जो अपनी त्रुटियाँ दूसरों पर प्रकट कर देता है, कर्ण (वि०) जिसने कान बिंधवा लिये हैं, दर्शन (वि०) 1 दोषों का प्रदर्शन करने वाला 2 दोषदर्शी।

छिद्रित (वि०) [छिद्र+इतच्] 1 छिद्रों से युक्त 2 बिंधा हुआ, छिदा हुआ।

छिन्न (भू० क० कृ०) [छिद्+क्त] 1. कटा हुआ, विभक्त किया हुआ, विदीर्ण, कटा हुआ, खण्डित, फाड़ा हुआ, टूटा टूटा 2 नष्ट हुआ, दूर किया हुआ- दे० छिद्र, —धारा वाराङ्गना, वेल्ला। सम०—केश (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, जिसका शीर या मुण्डन हो

चुका है,—मुक्त: स्वाधीनता प्राप्त,—छिन्न (वि०) जिसका सन्देह मिट गया है,—नासिक (वि०) जिसकी नाक कट गई है,—भिन्न (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका अंग अंग हो गया है, क्षतविक्षत, काटा हुआ,—मस्त,—मस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला, —मूल (वि०) जिसे जड़ से काट दिया गया है— रघु० ७।४३,—स्वस्तः एक प्रकार का दमा,—संशय (वि०) जिसके सन्देह दूर हो गये हैं, सन्देहमुक्त, पुष्ट।

छुछुन्दर (स्त्री०—री) [छुछुम् इत्यव्यक्तशब्दो दीयते निर्गच्छति अस्मात् छुछुम्+दृ+अप्] छुछुन्दर नाम का जन्तु, गन्धाखु—याज्ञ० ३।२१३, मनु० १२।६५।

छुप् (तुदा० पर०—छुपति) स्पर्श करना, छूना।

छुप [छुप्+क] 1 स्पर्श 2 झाड़ी, झंखाड़ 3 संघर्ष, युद्ध।

छुर् I (स्वा० पर०—छोरति, छुरित) 1 काटना, विभक्त करना 2 उत्कीर्ण करना, II (तुदा० पर० —छुरति, छुरित) 1 ढांपना, मानना, लीपना, जड़ना, पोतना, अवगुंठित करना 2 मिलाना,—वि —,सानना, लीपना, ढकना, पोतना—मन शिलाविच्छुरिता निषेदु कु० १।५५, वीर० ११, विक्रम० ४।४५।

छुरणम् [छुर्+ल्युट्] सानना, लीपना—ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला रात्रिकापालिकीयम् —काव्य० १०।

छुरा [छुर्+क+टाप्] चना।

छुरिका [छुर्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] चाकू, छुरी।

छुरित (भू० क० कृ०) [छुर्+क्त] 1 खचित, जड़ित 2 ऊपर फैलाया हुआ, पोता हुआ, आच्छादित किया हुआ— अनेकधालुच्छुरितामराज्ञे—शि० ३।४, ७ इन्दुकिरणच्छुरितमुखीम्- काव्य० १० 3 समाविष्ट, अन्तर्भिश्रित—परस्परेण स्फुरितामलच्छवी—शि० १।२२।

छुरी, छुरिका, छूरी [छुर+ङीष्, छुरी+कन्+टाप्, ह्रस्व, छुरी पृषो० दीर्घ] चाकू, छुरी।

छुर् I (स्वा० पर०, चुरा० उभ० छर्दति, छर्दयति ते) जलाना II (रुधा० उभ० छृणाति, छृन्न) 1 खेलना 2 चमकना 3 वमन करना।

छेक (वि०) [छो+डेकन् बा० तारा०] 1 पालतू, घरेलू (जैसे कि हिंस्रजन्तु) 2 नागरिक, शहरी 3 बुद्धिमान्, नागर। सम०—अनुप्रास अनुप्रास के पाँच भेदों में से एक, 'एक बार वर्णावृत्ति' जो कि व्यञ्जन समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही बार घटने वाली समानता है—उदा०—आदाय वकुलगन्धनन्धीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्, अयमेति मन्दमन्द काश्मरीवाग्विभावन पवन—सा०द० ६३४,—अपह्नुति (स्त्री०) अपह्नुति अलंकार का एक भेद चन्द्रालोक सोदाहरण विवेचन करता है—छेकापह्नुतिरन्यस्य शङ्कानस्यन्य निह्नवे, प्रजल्पन्मत्पदे लग्न कान्त किं न हि नूपुर—५।२७,- उक्ति (स्त्री०) वक्रोक्ति, व्याख्यात्मक वक्रोक्ति, द्व्यर्थक मुहाविरा।

छेद [छिद्+घञ्] 1 काटना, गिराना, ताड़ डालना, खण्ड-खण्ड करना—अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमा —कु० २।४१, छेदो दशम्या दाहो वा—मालवि० ४।४, रघु० १४।१, मनु० ८।२७०, ३७०, याज्ञ० २।२२३ २४० 2 निराकरण करना, हटाना, छिन्न-भिन्न करना, साफ करना, जैसा कि 'संशयच्छेद' में 3 नाश, बाधा—निद्राच्छेदाभिताम्रा —मुद्रा० ३।२१ 4 विराम, अवसान, समाप्ति, लोप होना जैसा कि 'धर्मच्छेद' में 5 टुकड़ा, ग्रास, कटौती, खण्ड, अनुभाग —विभक्तिवलयच्छेदपाथेयवन्त मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिदन्तच्छेदपाण्डु कपाल- मा० १।२२, कु० २।४ शि० ३।७, रघु० १२।१००, 6 (गणित में) भाजक, हर (भिन्नराशि का)।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] 1 काटना, फाड़ना, काट डालना, टुकड़े २ करना, खण्ड-खण्ड विभक्त करना—मनु० ८।२८०, २९२, ३२२ 2 अनुभाग, अंश, टुकड़ा, भाग 3 नाश, हटाना।

छेदि [छिद्+इन्] बढ़ई।

छेलक [छल्+अण्डन्, एत्वम्] मातृपितृहीन, अनाथ।

छेलक [छो+डेलक] बकरा।

छेत्रिक [छेत्र+ठक्] बेंत।

छो (दिवा० पर०—छ्यति, छ्यान या छित—प्रेर० छापयति) काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लवनी करना, –भट्टि० १४।१०१, १५।४०।

छोटिका [छुट्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] चुटकी।

छोरणम् [छुर्+ल्युट] त्याग करना, छोड़ देना।

ज

ज (वि०) [जि–जन्–ज्+ड] (समास के अन्त में) से या में उत्पन्न, पैदा हुआ, वंशज, अवतीर्ण, उद्भूत, आदि—अत्रिनेत्रज, कुलज, जलज, क्षत्रियज, कण्डज, उद्भिज्ज आदि,— ज: 1 पिता 2 उत्पत्ति, जन्म 3 विष 4 भूतना, प्रेत या पिशाच 5 बिजेता 6 कान्ति, प्रभा 7 विष्णु।

जङ्गम (पु०) 1 मलय पर्वत 2. कुत्ता।

जक्ष् (अदा० पर०—अक्षिति, अक्षित या जग्ध) खाना, खा लेना, नष्ट करना, उपभोग करना—मनु० ४।३९, १३।२८, १५।४६, १८।१९।

जक्षणम्, जक्षिः [जक्ष्+ल्युट, इन् वा] खाना, उपभोग करना।

जगत् (वि०) (स्त्री०—ती) [गम्+क्विप् नि० द्वित्वं तुगागम] हिलने-डुलने वाला, जङ्गम—सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च-ऋक् १।११५। १, इदं विश्व जगत्सर्वं-मजगच्चापि यद्भुवेत्—महा०,(पु०), वायु, हवा(नपु०) ससार—जगत पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१। सम० —अम्बा, —अम्बिका दुर्गा,—आत्मन् (पु०) परमात्मा,—आधिजः शिव का विशेषण,—आधार 1 समय 2 वायु, हवा,—आयुः,—आयुस् (पु०) हवा, —ईशः,—पति विश्व का स्वामी, परमदेव,—उद्धारः ससार की मुक्ति,—धातृ, धातु (पु०) सृष्टि का बनाने वाला, —चक्षुस् (पु०) सूर्य,—नाथः विश्व का स्वामी,—निवास. 1 परमात्मा 2 विष्णु का विशेषण—जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि—शि० १।१ 3 सासारिक अस्तित्व · प्राण, · वायु हवा, · योनिः 1 परमपुरुष 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव की उपाधि 4 ब्रह्मा का विशेषण (नि—स्त्री०) पृथ्वी,—धात्री पृथ्वी, —साक्षिन् (पु०) 1 परमात्मा 2 सूर्य।

जगती [गम्+अति नि० साधु] पृथ्वी, (समीहते) नयेनजेतु जगतो सुबोधन —कि० १।७, समतीत्य भाति जगतीं जगती ५।२० 2 लोग, मनुष्य 3 गाय 4 छन्दों भेद (दे० परिशिष्ट)। सम०—अधीश्वरः, ईश्वरः राजा —नै० २।१, · रुह् (पु०) वृक्ष।

जगन् (अ) =1 अग्नि 2 क्रीडा 3 जन्तु।

जगरः [जागर्ति युद्धेऽनेन—जागृ+अच् पृषो० तारा०] कवच।

जगल (वि०) [जग्+इ—ज जात सन् गलति गल्+अच्] बदमाश, बालाक, धूर्त,—लम् 1 गोबर 2 कवच 3 एक प्रकार की मदिरा (पु०) (अन्तिम दो अर्थों में भी)।

जग्ध (वि०) [अद्+क्त जग्धादेश] खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन् जग्धादेश] 1 खाना 2 भोजन।

जग्मिः [गम्+कि, द्वित्वम्] हवा।

जघनम् [हन्+अच्, द्वित्वम्] 1 पुट्ठा, कूल्हा, चूतड़,—घटय जघनं काञ्चीमञ्च त्यजा कबरीभरम्—गीत० १२ 2 स्त्रियों का पेडू 3 सेना का पिछला भाग, सेना का सुरक्षित भाग। सम० · कूपकौ (द्वि० व०) किसी सुन्दरी के कूल्हे के ऊपर के गड्ढे, · चपला व्यभिचारिणी स्त्री, कामुका—परपुरन्ध्रिसंगमने परमसुख जघनचपलाया —पञ्च० १।१७३।

जघन्य (वि०) [अवर्णं भवं यत्] 1 सबसे पिछला, अन्तिम—भग० १४।१८ मनु० ८।२७० 2 सबसे बुरा अत्यन्त दुष्ट, कमीना, अधम, निंद्य 3. नीच कुल में उत्पन्न,—न्यः शूद्र। सम०—जः 1. छोटा भाई 2 शूद्र।

जङ्घिः [हन्+किन्, द्वित्वम्] (आक्रमणकारी) शस्त्र, हथियार।

जघ्नु (वि०) [हन्+कु, द्वित्वम्] प्रहार करने वाला, वध करने वाला।

जङ्गम (वि०) [गम्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्व यङो लुक् च] हिलने-डुलने वाला, जीवित, चर—चितान्निरिव जङ्गम—रघु० १५।१६, पोकान्निरिव जङ्गम—महावी० ५।२०, मनु० १।४९,— मम् चर या हिलने-डुलने वाला पदार्थ—रघु० २।४४। सम०—इतर (वि०) अचर, स्थावर,—कुटी छाता, छतरी।

जङ्गलम् [गल्+यङ्+अच् पृषो०] 1. मरुस्थल, सुनसान जगह, ऊसर भूमि 2 शुरमुट, वन 3 एकान्त निर्जन स्थान।

जङ्गालः [=जङ्गल, पृषो० साधु] मेढ, बाँध, सीमा चिह्न।

जङ्गुलम् [गम्+यङ्+डुल, धातोर्द्वित्व यङो लुक् च] विष, जहर।

जङ्घा [जङ्घन्यते कुटिल गच्छति—हन्+यङ्+अच्, यङो लुक् पृषो०] जाघ, टखने से लेकर घुटने तक का भाग, पिण्डली। सम०—आरः,—कारिक धावक, हरकारा, दूत, सन्देशहर,—त्राणम् टागों के लिए कवच।

जङ्घाल (वि०) [जङ्घा+लच्] शीघ्रधावक, फुर्तीला, —ल 1 हरकारा 2 हरिण, बारहसिंघा।

जङ्घिक (वि०) [जङ्घा+इकच्] धावक, फुर्तीला, फुर्तीला।

जञ्ज्, जञ्ज्य (भ्वा० पर०—जञ्जति, जञ्ज्यति) लड़ना, युद्ध करना।

जट् (भ्वा० पर०—जटति) जुड़ जाना, (बालों का) बल खाकर जटाजूट होना।

जटा [जट्+अच्+टाप्] 1 बटे हुए बाल, आपस में बल खाकर चिपके हुए बाल—असंयमापि शकुन्तनीड-निचित विभ्रज्जटामण्डलम्—मा० ७।११, जटाश्च बिभृयाच्छिरस्यम्—मनु० ६।६, मा० १।२ 2 तन्तुमय जड 3. सामान्य जड 4 शाखा 5 शतावरी का पौधा। सम०—धर, —धृक्, —धारिन्, —धरः शिव के विशेषण, —जूट. 1 जटाओं के रूप में बटे हुए बालों का समूह 2 शिव की जटाएँ जटाजूटतन्यो मदसि विनिबद्धा पुरभिदा—गंगा० १४,—त्वक्: दीप, लैप,—धर (वि०) जटाधारी।

जटायुः [जट सहृतमायु यस्य ब० स०] एक गीध और अरुण

का पुत्र, अर्थ दिव्य पक्षी [यह दशरथ का घनिष्ठ मित्र था, जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने सीता का रुदन और करुण-क्रन्दन सुना फलतः वह बेखटके हो रावण से भिड़ गया, घमासान युद्ध हुआ, परन्तु वह सीता को रावण के पञ्जे से न छुड़ा सका और स्वयं घायल हो प्राणान्तक पीड़ा से तड़पता रहा। अन्त में सीता की खोज करते हुए राम उसके पास से निकले तो उस दयालु जटायु ने राम को यह बतला कर कि सीता को रावण उठा कर ले गया है, अन्तिम श्वास लिया। राम और लक्ष्मण ने उसका विधिपूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार किया]।

जटाल (वि०) [जटा+लच्] 1 जटाजूटधारी 2 (बिखरे हुए बालों की भाँति) एक स्थान पर इकट्ठे किये हुए —भामि० १।३६,—स. गुलर का पेड़।

जटि. (टी) (स्त्री०) [जट्+इन् जटि+ङीष्] 1 गूलर का पेड़ 2 उलझ पुलझ कर बिखरे हुए 3 सघन, समूहचय।

जटिल (वि०) (स्त्री०—ला) [जटा+इलच्] जटाधारी, (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 पाकड़ का पेड़।

जटिल (वि०) [जटा+इलच्] 1 (सन्यासियों की भाँति) जटाधारी,—विशेष कपिलजटिलस्तपोधनम्—कु० ५।३०, (यहाँ 'जटिल' शब्द 'सजा भी है और इसका अर्थ है 'सन्यासी') 2 पथरीला, अपरिष्कृत, अनगढ़ 3 घना, गड्मड्ड किया हुआ—विज्ञानव्याप्तेन वयमिह विषज्जाम्यजटिलान्, न मुञ्चाम कामानहह गहनो मोहमहिमा भर्तृ० ३।२१ 3 सघन, अभेद्य,—ल 1 सिर 2 बरगद।

जठर (वि०)। जायते जन्तुर्गर्भो वाग्मिन् जन्+अरन् डस्य ठश्च तारा०] कठोर मजबूत दृढ़, र,—रम् पेट, उदर—जठरं को न बिभर्ति केवलम् पञ्च० १।२२ 2 गर्भाशय 3 किसी वस्तु का भीतरी भाग। समः —अग्नि पेट में स्थित अग्नि जो आहार को पचाने का काम करती है, आमाशय की झिल्लियों से निकलने वाला रस, —आमय जलोदर रोग,—ज्वाला, —व्यथा उदर-ज्वाला, भूख का कष्ट शूल —व्यथा, —यातना गर्भवास का कष्ट।

जड (वि०) [जलमिव घनीभवति जल्+अच्, लस्य ड] 1 शीतल, जमा हुआ या ठंडा, शीत या ठिठुरा देने वाला 2 मन्द सुस्त-रुखा, गतिहीन, जड़ीकृत —चिन्ताजड दर्शनम् श० ४।५, परामृशन् हर्षजडेन पाणिना रघु० ३।६८ २।४२ 3 निश्चेतन, चेतनारहित विवेकशून्य, मन्दबुद्धि—जडानस्थान् पड़गून् मानुम्—गंगा० १५, इसी प्रकार जडधी, जडमति —याज्ञ० २।२५, मनु० ७।११० 4 मन्दीकृत, उदासीन या चेतनाशून्य किया हुआ, गुणविवेचनशून्य अरसिक वदाभ्यासजड कथं नु विषयव्यावृत्तकौतुहल —विक्रम० १।१० 5 हतबुद्धि देने वाला, जड बना देने वाला, संज्ञाशून्य करने वाला 6 गूंगा 7 वेद (दायभाग) पढ़ने के अयोग्य, डम् 1 पानी 2 मीसा। समः क्रिय (वि०) मन्थर, दीर्घसूत्री।

जडता,-त्वम् [जड+तल्+टाप्, जड-त्व वा] 1 मन्दता, कार्य में अरुचि, आलस्य 2 अज्ञान, बुद्धूपन 3 (अल० शा० में) ३३ संचारी भावों में एक—मन्दता, मा० द० १७५।

जडिमन् (पु०) [जड+इमनिच्] 1 ठण्डक 2 जड़ता 3 मन्दता, उदासीनता 4 मूर्खा, संज्ञाहीनता।

जतु (नपु०) [जायते वक्षादिभ्य जन्+उ त आदेश] लाख। समः अश्मकम् शिलाजीत, पुत्रक शतरंज का मोहरा, रस लाख महावर।

जतुकम् [जतु+कन्] लाख, महावर।

जतुका [जतुक+टाप्] 1 लाख 2 चमगादड़।

जतुकी, जतूका [जतुक+ङीष्, जतुका वि० दीर्घ] चमगादड़।

जत्रु (नपु०) [जन्+रु नोऽन्तादेश] ग्रीवास्थि, हंसुली।

जन् (दिवा० आ० जायते जात रू० वा० जन्यते या जायते) पैदा होना, उत्पन्न होना (अपा० के साथ), अर्जुन ते वै पुत्र ऐरा० ब्रा० १।१, ३।३१, ४१, प्राणाद्वायुरजायत—ऋग्० १०।९०।१३, मनु० १०।८, ३।७६, १।७५ 2 उठना फटना (फोड़े की भाँति) उगना 3 होना, बन जाना, आ पड़ना, घटित होना, घटना अनिष्टादिष्टलाभोऽपि न गतिर्जायते शुभा हि० १।६, रक्षतेवाजातानि क्षणात् भट्टि० ६।३२, याज्ञ० ३।२२६ मनु० ४।२१, प्रेर० जनयति जन्म देना, पैदा करना, उत्पन्न करना—अनु-1 बाद में पैदा होना—पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रोऽनुजायते—मनु० ९।१३४ 2 समरूप पैदा होना—असौ कुमारस्तमजोऽनुजात—रघु० ६।७८ 'तस्माज्जात—मल्लि०), अभि- 1 पैदा होना, उत्पन्न होना, उदय होना फूटना—कामात्क्रोधोऽभिजायते भग० २।६२० हि० १।२०५ 2 होना, घटित होना 3 परिणत होना 4 उच्चकुल में जन्म होना 5 उत्पन्न होना—भग० १६।७, उप-, 1 पैदा होना, उत्पन्न होना, निकलना, उगना—उत्तमर्णश्चोपजायते मनु० ९।८५ सङ्कल्पेप्युपजायते—भग० २।६२ १४।१९ 2 फिर जन्म लेना, याज्ञ० ३।२५६, भग० १४।२, 3 होना, घटित होना। प्र-, वि-, सम्-, 1 उगना, निकलना, फूटना 2 पैदा होना, उत्पन्न होना।

जन. [जन्+अच्] 1 जीवजन्तु जीवित प्राणी, मनुष्य

2 व्यक्ति, पुरुष (चाहे मनुष्य हो या स्त्री)—कश्चन वयं खलु परीक्षकमन्यथा मृगयामहे सममेधितो जन—श० २।१८, ततस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जन—उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'सखीजन' सहेली, 'दासजन' सेवक, 'अबलाजन' आदि (इस अर्थ में 'जन' या 'अयजन' का प्रयोग बहुधा वक्ता के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उत्तम पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) -अयं जन प्रष्टुमनास्त्वयाधुने—कु० ५।४० (मनुष्य), भगवन्परदानयं जन प्रतिकूलाचरितं क्षमस्व मे—रघु० ८।८१ (स्त्री) पश्यानङ्ग शरातुरं जनमिमं त्रातापि नात्मानं रक्षसि—नागा० १।१ (स्त्री, द० व०) 2 सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग, संसार (ए० व० या ब० व० में)—एष जनो गृह्णाति—मालवि० १, सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते—श० ५।१७ 3 देश, राष्ट्र, कर्णाला 4 'महः' लोक से परे का संसार देवत्व को प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम० अतिग (वि०) असाधारण, असामान्य, अतिमानव,—अधिप, —अधिनाथ राजा,—अन्त 1 वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहते, वह स्थान जो बसा हुआ नहीं है 2 प्रदेश 3 यम का विशेषण, —अन्तिकम् गुप्त संवाद, कान में कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर को (नाटकों में)—सा० द० रंगमंच के निर्देश की परिभाषा इस प्रकार बतलाता है —त्रिपताकाकरेणान्यापवार्यानर्गकथाम्, अन्योन्यामन्त्रणं यत् स्याज्जनान्ते नाज्जनान्तिकम्, ४२५, अर्हन विष्णु या कृष्ण का विशेषण,—आकीर्ण (वि०) लोगों से ठसाठस भरा हुआ, जनसंकुल, आचार लोकाचार, लोकरीति,—आश्रम धर्मशाला, सराय, पथिकाश्रम, —आश्रयः मण्डप, शामियाना,—इन्द्र, —ईश, —ईश्वर राजा,—इष्ट (वि०) लोकप्रिय (ष्टः) एक प्रकार की चमेली,—उद्ग्रहणम् यथा, कीर्ति,—ओघ जनसंमर्द, भीड़, जमघट,—कारिन् (पु०) अलंकार, चक्षुस् (नपु०) 'लोकलोचन' सूर्य,—जा छाया, छतरी, —देव राजा,—पद 1 जनसमुदाय, वंश, राष्ट्र याज्ञ० १।३१० 2 राजधानी, साम्राज्य, बसा हुआ देश —जनपदे न गदः पदमादधौ—रघु० ९।४, दाक्षिणात्ये जनपदे—पञ्च० १, मेघ० ४८ 3 देश (विप० पुर, नगर) -जनपदवधूलोचनैः पीयमानः - मेघ० १९ 4 जनसाधारण, प्रजा (विप० प्रभु) 5 मनुष्यजाति, —पदिन् (पु०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा, —प्रवादः 1 अफवाह, किंवदन्ती, जनश्रुति 2 लोकापवाद, बदनामी,—प्रिय (वि०) 1 लोक हितेच्छु 2 सर्वप्रिय,—मर्यादा सर्वसम्मत प्रथा,—रञ्जनम् लोगों को सुख देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना, —वाद 1 किंवदन्ती 2 बदनामी, लोकापवाद,- लोक ऊपर के सात लोकों में से पाँचवाँ, महर्लोक के ऊपर स्थित लोक,—वाद ('जनेवाद' भी) 1 समाचार, जनश्रुति 2 लोकापवाद, - व्यवहार लोकप्रिय चलन, —श्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध,—श्रुतिः (स्त्री०) किंवदन्ती, जनरव,- संकीर्ण वि० घना बसा हुआ, —स्थानम् दण्डक वन के एक भाग का नाम—रघु० १२।४२, १३।२२, उत्तर० १।२८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री०- निका) [जन्+णिच्+ण्वुल्] जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला, क्लेशजनक, दुःखजनक आदि, —कः 1 पिता, जन्म देने वाला 2 विदेह या मिथिला के प्रसिद्ध राजा, सीता का धर्मपिता। वह अपने प्रभूत ज्ञान, अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परित्याग किये जाने पर उन्होंने वैराग्य ले लिया, सुख और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और अपना समय दार्शनिक चर्चा में बिताया। याज्ञवल्क्य मुनि जनक के पुरोहित और परामर्श दाता थे। सम०—आत्मजा, तनया, —नन्दिनी, - सुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण।

जनङ्गम [जनेभ्यो गच्छति वहिः, जन+गम्+खच्, मुमागम] चाण्डाल।

जनता [जनानां समूहः तल्] 1 जन्म 2 लोगों का समूह, मनुष्य जाति, समुदाय—पश्यति स्म जनता दिनात्यये पार्वणेन शशिनं दिवाकरम्—रघु० ११।८२, १५।६७, शि० ९।१८।

जनन (वि०) [जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला आदि, नम् 1 जन्म, पैदा होना,—यावज्जननम् तावन्मरणम् - मोह० १३ 2 पैदा करना, उत्पादन करना, सृजन करना -शोभाजननात्—कु० १।४२ 3 साक्षात्कार, प्रत्यक्षीकरण, उदय 4 जीवन, अस्तित्व—यदैव पूर्वं जनने शरीरं सा दक्षरोषात्मुदनो समर्ज—कु० १।५३, श० ५।२, मात्र, कुल, वंशपरंपरा।

जननि (स्त्री०) [जन्+अनि] 1 माता 2 जन्म।

जननी [जन्+णिच्+अनि+ङीप्] 1 माता 2 दया, दयालुता, करुणा 3 चमेली 4 लाख।

जनमेजय [जनान् एजयति इति जन्+एज्+णिच्+खश्, मुमागम] हस्तिनापुर का एक प्रसिद्ध राजा, परीक्षित का पुत्र और अर्जुन का पोता (जनमेजय का पिता साँप के काटे जाने से मरा, इसलिए जनमेजय ने उस क्षति का प्रतिशोध करने के लिए संसार से सर्पजाति का समूल विनाश करने के लिए दृढ़ संकल्प किया। तदनुसार एक सर्पयज्ञ का आरंभ किया गया जिसमें तक्षक को छोड़ कर और सब सर्प जला दिये गये।

आस्तिक ऋषि के बीच में पड़ने से तक्षक के प्राण बचे और सर्पयज्ञ बन्द कर दिया गया। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानपूर्वक सुना)।

जनयितृ (वि०) (स्त्री—त्री) [जन्+णिच्+तृच्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(पु०) पिता।

जनयित्री [जनयितृ+ङीप्] माता।

जनस् (नपु०) [जन्+णिच्+असुन्] दे० जन ३।

जनि, जनिका, जनी (स्त्री०) [जन्+इन्, जनि+कन्+टाप्, जनि+ङीष्] 1 जन्म, सृजन, उत्पादन 2 स्त्री 3 माता 4 पत्नी 5 स्नुषा, पुत्रवधू।

जनित (वि०) [जन्+णिच्+क्त] 1 जिसे जन्म दिया गया है 2 पैदा किया हुआ, सृजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जनितृ (पु०) [जन्+णिच्+तृच्] पिता।

जनित्री [जनितृ+ङीप्] माता।

जनु (नृ) (स्त्री०) [जन्+उ, जनु+ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जनुस् (नपु०) [जन्+उसि] 1 जन्म धिग्जनिं धिगिमां 1।१६ 2 सृष्टि, उत्पादन 3 जीवन, अस्तित्व- जनु सर्वशुभाढ्य जयति ललितोत्तम भवन —भामि० २।५५। सम०—**जनुषान्ध** जन्म से अन्धा, जन्मान्ध।

जन्तु [जन्+तुन्] 1 जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य —श० ५।२, मनु० ३।७१ 2 आत्मा, व्यक्ति 3 निम्न जाति का जानवर। सम०—**कम्बु** 1 घोंघे की सीपी 2 घोंघा, —**फल** गूलर का वृक्ष।

जन्तुका [जन्तु+कै+क+टाप्] लाख।

जन्तुमती [जन्तु+मत्+ङीप्] पृथ्वी।

जन्मन् [जन्+मनिन्] उत्पत्ति।

जन्मन् [जन्+मनिन्] 1 जन्म—ना जन्मने शलवधू प्रपेदे —कु० १।२१ 2 मूल, उद्गम, उत्पत्ति, सृष्टि —आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः —हि० प्र० ४४, कु० ५।६० (समास के अन्त में) से उत्पन्न या उदय —सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा दवाग्नि —मेघ० ५२ 3 जीवन, अस्तित्व—पूर्वेष्वपि हि जन्मसु —मनु० ९।१००, ५।३८, भग० ४।५ 4 जन्म-स्थान 5 उत्पत्ति। सम०—**अधिप** 1 शिव का विशेषण 2 (ज्योतिष में) जन्म लग्न का स्वामी,—**अन्तरम्** दूसरा जन्म,—**अन्तरीय** (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—**अन्ध** (वि०) जन्म से ही अन्धा, —**अष्टमी** भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण का जन्म दिन,—**कील** विष्णु का विशेषण, —**कुण्डली** जन्म-पत्रिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति दर्शायी गई हो, —**कृत्** (पु०) पिता,—**क्षेत्रम्** जन्म स्थान,—**तिथिः** (पु०, स्त्री०) —**दिनम्**—**दिवस** जन्मदिन,—**द** (वि०) पिता,—**नक्षत्रम्**—**भम्** जन्म के समय का नक्षत्र, —**नामन्** (नपु०) जन्म से बारहवें दिन रक्खा गया नाम,—**पत्रम्, -पत्रिका** वह पत्र या पत्रिका जिसमें जन्म लेने वाले बालक के जन्म काल के नक्षत्र या ग्रह आदि बतलाये गये हों, **प्रतिष्ठा** 1 जन्म स्थान 2 माता—दा० ६,—**भाज्** (पु०) जानवर, जीवित प्राणी —मादृग्जन्मभाज मनसि—मृच्छ० १०।६०, —**भाषा** मातृभाषा यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्म-भाषावदेव प्रत्यवभासं बिलसति वच संस्कृतं प्राकृतं च विक्रम० १८।९, **भूमि** (स्त्री०) जन्म स्थान, स्वदेश, **योग** जन्मपत्र, **रोगिन्** (वि०) जन्म का रोगी, जिसे जन्म से ही रोग लगा हो, **लग्नम्** वह लग्न जो जन्म के समय हो,—**वर्मन्** (नपु०) योनि,—**शोधनम्** जन्म में प्राप्त कर्तव्यों का परिपालन,—**साफल्यम्** जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि,—**स्थानम्** 1 जन्मभूमि, स्वदेश, वह घर जहां जन्म लिया है 2 गर्भाशय।

जन्मिन् (पु०) [जन्मन्+इनि] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्य (वि०) [जन्+ण्यत्, जन्+णिच्+यत् वा] 1 जन्म लेने वाला, पैदा होने वाला 2 जात, उत्पन्न, 3 (समास के अन्त में) से उत्पन्न, जनित 4 किसी वंश या कुल से सम्बद्ध 5 गंवारू, सामान्य 6 राष्ट्रीय, —**न्य.** 1 पिता 2 मित्र, दूल्हे का सम्बन्धी या सेवक 3 साधारण जन 4 जनश्रुति, किंवदन्ती,—**न्यम्** 1 जन्म, उत्पत्ति, सृष्टि 2 जात, सृष्ट, उत्पादित वस्तु, (विप० जनक)—**न्यानां** जनक काल—भाषा० ४५, जनकस्य स्वभावो हि जन्ये तिष्ठति निश्चितम्—शब्द०, 3 शरीर 4 जन्म के समय होने वाला अपशकुन 5 बाजार, मण्डी, मेला 6 संग्राम, युद्ध—तत्र जन्य रघो-र्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत् रघु० ४।७७ 7 निन्दा, अपशब्द,—**न्या** 1 माता की सहेली 2 वधू का सम्बन्धी वधू की सेविका—याहीति जन्यामवदत्कुमारी —रघु० ६।३० 3 सुख, आनन्द 4 स्नेह।

जन्यु [जन्+युच् बा० न अनादेश] 1 जन्म 2 जानवर जीवधारी, प्राणी 3 आग 4 सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

जप् (भ्वा० पर०—जपति, जपित या जप्त) 1 मन्द स्वर में उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुन-गुनाना जपन्नपि तदैवालापमन्त्रावलिम्—गीत० ५, हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्—४, नै० ११।२६ 2 मन्त्रों का गुनगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना —मनु० ११।१९४, २५१, २५९, **उप**—, कान में कहना कानाफूसी करके अपने अनुकूल कर लेना, विद्रोह के लिए भड़काना या उकसाना—उपजप्यानुपजपेत्—मनु० ७।१९७।

जपः [जप्+अच्] 1 मन ही मन प्रार्थना करना, धीमे स्वर से किसी मन्त्र को बार २ दुहराना 2 वेदपाठ करना, देवताओं के नाम बार २ दुहराना—मनु० ३।७४, याज्ञ० १।२२ 3 मन्द स्वर से उच्चरित प्रार्थना। सम०—**परायणः** (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को धीमे स्वर में उच्चारण करने में व्यस्त,—**माला** जप करने की माला।

जप्यः, —प्यम् [जप्+यत्] 1 मन्द स्वर से या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2 जपने योग्य प्रार्थना 3 जपी हुई प्रार्थना।

जभ्, जम्भ् : (स्वा० पर०—जभति, जम्भति) सम्भोग करना, तु० यभ्॥ (स्वा० आ०—जभते, जभते) जम्हाई लेना, उबासी लेना।

जम् (स्वा० पर० जमति) खाना।

जमदग्नि (पु०) भृगुवंश में उत्पन्न एक ब्राह्मण, परशुराम का पिता, (जमदग्नि, सत्यवती और ऋचीक का पुत्र था, वह बड़ा ही पुण्यात्मा ऋषि था, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुका थी जिससे पाँच पुत्र हुए। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गंधर्व-दम्पती (कुछ के मतानुसार वह चित्ररथ और उसकी पत्नी थे) को जल में क्रीडा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कलुषित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अवतार जमदग्नि ने उसे सतीत्व की कान्ति से हीन देखकर बड़ा धमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने की आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में आनाकानी की। परशुराम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने तुरंत पिता की आज्ञा का पालन किया फलतः एक कुल्हाड़े से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया और उसने परशुराम से वरदान माँगने के लिए कहा। दयालु परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की जो तुरंत ही स्वीकार की गई)।

जमनम् जेमनम्।

जम्पती (पु० द्वि० व०) [जाया च पतिश्च] पति और पत्नी—सु० दम्पती और जायापती।

जम्बालः [जम्ब्+घञ्, नि० भस्य ब=जम्ब+आ+ल+क] 1 गारा कीचड़ 2 काई, सेवार 3 केवड़े का पौधा।

जम्बालिनी [जम्बाल+इनि+ङीप्] एक नदी।

जम्बीरः [जम्ब्+ईरन्, ब आदेश] चकोतरे का (नीबू की जाति का) पेड़,—रम् चकोतरा।

जम्बु, —बू (स्त्री०) [जम्+कु पृषो० बुकागम, जम्बु+ऊङ्] जामुन का पेड़, जामुन (सम०—**अण्डः,**—**द्वीपः** मेरु पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात द्वीपों में से एक।

जम्बु (बू) क. (स्त्री०—**की**) [जम्बु (बू)+कं+क] 1 गीदड़ 2 नीच मनुष्य।

जम्बूलः [जम्बु (बू) तन्नाम फलं लाति ला+क] एक प्रकार का वृक्ष, केवड़ा,—**लम्** दूल्हे के मित्रों एवं दुल्हन की सखियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासात्मक अभिनन्दन।

जम्भ [जम्भ्+घञ्] 1 जबाड़ा (प्रायः ब० व०) 2 दांत 3 खाना 4 कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5 खण्ड, अंश 6 नरकस 7 ठोड़ी 8 जम्हाई, उबासी 9 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10 चकोतरे का पेड़। सम०—**अरातिः**,—**द्विष्, -भेदिन्—रिपु** इन्द्र का विशेषण,—**अरिः** 1 आग 2 इन्द्र का वज्र 3 इन्द्र।

जम्भका, जम्भा, जम्भिका [जम्भ+कन्+टाप्, जम्भ्+णिच्+अ+टाप्, जम्भा+कन्+टाप्, इत्वम्] जमुहाई, उबासी।

जम्भ (भी) रः [जम्भ भक्षणार्थाच्च रातिं ददाति-जम्भ+रा+क, जम्भ्+ईरन्] नीबू या चकोतरे का पेड़।

जय. [जि+अच्] 1 जीत, विजयोत्सव, विजय, सफलता, जीतना (युद्ध में खेल में या मुकदमे में) 2 संयम दमन, जीतना—जैसा कि 'इन्द्रियजय' में 3 सूर्य का नाम 4 इन्द्र का पुत्र जयन्त 5 पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6 विष्णु का सेवक 7 अर्जुन का विशेषण,—**या** 1 दुर्गा 2 दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का झण्डा। सम०—**आवहः** (वि०) विजय दिलाने वाला,—**उद्यमः** (वि०) विजयोल्लास मनाने वाला,—**कोलाहलः** 1. जयघोष 2 पासों से खेलना,—**घोषः,**—**घोषणम्,**—**या** विजय का ढिंढोरा, —**डमरुकः** जीत का डंका, एक प्रकार का ढोल जिसे विजय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है,—**पत्रम्** विजय का अभिलेख, —**पालः** 1 राजा 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण, —**पुष्पकः** एक प्रकार का पासा, —**मङ्गलः** 1 राजकीय हाथी 2 ज्वरनाशक उपचार,—**वाहिनी** शची (इन्द्राणी) का विशेषण,—**शब्दः** 1 जयध्वनि 2 चारणों द्वारा उच्चरित जयजयकार,—**स्तम्भः** विजय मनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयसूचक स्तम्भ—निखनन्ति जयस्तम्भान् गङ्गास्रोतोऽन्तरेषु ते —रघु० ४।३६, ६९,

जयद्रथः [जयतु रथो यस्य-ब० स०] सिन्धु प्रदेश का राजा, दुर्योधन का बहनोई, (क्योंकि धृतराष्ट्र की पुत्री दुश्शला जयद्रथ को ब्याही थी) [एक बार जयद्रथ शिकार के लिए गया—वहाँ जङ्गल में उसे द्रौपदी दिखाई दी। उसने द्रौपदी से अपने लिए और अपने

साथियों के लिए भोजन माँगा। अपनी जादू की थाली से द्रौपदी ने उनको पर्याप्त मात्रा में प्रातराश परोस दिया। उसके इस कार्य से तथा उसके सौन्दर्य से वह इतना अधिक मुग्ध हुआ कि उसने द्रौपदी को अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। उसने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर ले जाने में सफल हो गया —क्योंकि द्रौपदी के पति उस समय बाहर शिकार के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहर्ता का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्रौपदी को मुक्त कराया —तथा बहुत तिरस्कृत हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। उसने अभिमन्यु का मारने के उपाय ढूँढने में बड़ा भाग लिया। अन्त में वह अर्जुन के द्वारा महाभारत की लड़ाई में मारा गया]।

जयत्रम् [जि+ष्ट्रन्] 1 जीतना, दमन करना 2 हाथी और घोड़ा आदि का कवच। सम० -युज् (वि०) 1 जीतपोश से सुसज्जित 2 विजयी।

जयन्त [जि+अच्, अन्तादेश] 1 इन्द्र के पुत्र का नाम, —पौलोमीमम्बवेनैव जयन्तेन पुरन्दर —विक्रम० ५।१४, श० ७।२, रघु० ३।२३ ६। ८ 2 शिव का नाम 3 कदम्ब, धौ 1 झण्डा या पताका 2 इन्द्र की पुत्री 3 दुर्गा। सम० पत्रम् (विधि में) न्यायाधीश द्वारा दी गई लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2 अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़े हुए घोड़े के मस्तक पर लगा नामपट्ट।

जयिन् (वि०) [जेतु शीलमस्य -जि+इनि] 1 विजेता, पराजेता —विरूपाक्षस्य जयिनोऽस्ता स्तुवे वामलोचना —विद्धशा० 2 सफल (मुकदमा) जीतने वाला —याज्ञ० २।७९ 3 मनोहर, आकर्षक हृदय को दमन करने वाला —जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादव —मा० १।३६, (पु०) विजेता जयशील —पौरस्त्या-नेवमाक्रामन्त्यास्ताञ्जनपदाञ्जयी रघु० ४।३४।

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने के योग्य, प्रहार्य, जो जीता जा सके (विप० जेय)।

जरठ (वि०) [जृ+अठच्] 1 कठोर, ठोस 2 पुराना, अधिक आयु का —अयमनिजरठा प्रकामगुर्वी परिणत-दिक्करिकास्तटीरिमणि शि० ४।२९ (यहाँ 'जरठ' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3 क्षीण, जीर्ण, निर्बल 4 पूर्णविकसित, पक्का, परिपक्व, जरठकमल —शि० ११।१८ 5 कठोर हृदय, क्रूर, ठ पाण्डु, पाँचों पाण्डवों के पिता।

जरण (वि०) [जृ+ल्युट्] बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरत् (वि०) [जृ+शतृ] 1 बूढ़ा अधिक आयु का 2 निर्बल जीर्ण। सम० -काव एक ऋषि जिसने वासुकि सर्प की बहन से विवाह किया था [एक दिन वह अपना सिर अपनी पत्नी की गोद में रक्खे सो रहे थे, सूर्य डूबने को था। पत्नी ने यह देख कर कि सन्ध्याकालीन प्रार्थना का समय बीता जा रहा है, आहिस्ता से जगा दिया। परन्तु नींद में बाधा पहुँचने के कारण जरत्कारु को क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर सदा के लिए वहाँ से चल दिया। जाते समय वह अपनी पत्नी को बता गया कि तुम गर्भवती हो और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हें सम्भालने वाला होगा — साथ ही साथ वह सर्प वंश के क्षय को बचावेगा। यह पुत्र ही 'आस्तीक' था]—गव बूढ़ा बैल—दारिद्र्यस्य परां मूर्तिं यन्मानद्रविणात्मना, जरद्गवधनं शर्वस्तथापि परमेश्वर पञ्च० २।१५९।

जरती [जृ+शतृ—ङीप्] एक बूढ़ी नारी।

जरत् [जृ+झच्, अन्तादेश] 1 बूढ़ा आदमी 2 भैंसा।

जरा [जृ+अङ्—टाप्] ('जरस' शब्द के स्थान पर कर्म० द्वि० व० के आगे अजादि विभक्ति परे होने पर विकल्प से 'जरस्' आदेश हो जाता है) 1 बुढ़ापा —कैकेयी-शङ्कयेवाह पलितच्छद्मना जरा —रघु० १२।२, तस्य समरतोषमोद वर्द्धन्त जरया (जरसा) विना— १।२३ 2 क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के कारण दुर्बलता 3 पाचनशक्ति 4 एक राक्षसी का नाम—दे० 'जरासंध' नी०। सम०—अवस्था क्षीणता,—जीर्ण (वि) वयोवृद्ध, निर्बलीकृत, दुर्बल—भर्तृ० ३।१७,—सन्ध एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बृहद्रथ का पुत्र (एक पौराणिक कथा के अनुसार यह अलग-अलग दो टुकड़ों के रूप में पैदा हुआ, 'जरा' नामक राक्षसी ने इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया —इसीलिए यह 'जरासन्ध' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और चेदि देश का राजा बना। जब इसने सुना कि कृष्ण ने मेरे जामाता कंस को मार डाला तो इसने बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मथुरा को घेरा —परन्तु हर बार मुँहकी खानी पड़ी। जब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम ब्राह्मण का रूप धारण करके केवल अपने शत्रु को मार कर बन्दी राजाओं को कैद से छुड़ाने के लिए जरासन्ध की राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजाओं को छोड़ने से इंकार किया, तब भीम ने उसे द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध बाहर निकल कर आया —दोनों में घोर युद्ध हुआ—पर अन्त में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया]।

जरायजि. [जराया अपत्यम्-फिञ्] जरासन्ध का नाम।

जरायु (नपु०) [जरामेति—इ+असुन्] 1 साँप की केंचुली 2 भ्रूण की ऊपरी झिल्ली 3 योनि, गर्भाशय।

सम० - ज (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डज--मनु० १।४३, कु० ३।४२ पर मल्लि० ।

जरित (वि०) [जरा+इतच्] 1 बूढ़ा, वयोवृद्ध 2 क्षीण, निर्बल ।

जरिन् (वि०) (स्त्री०---णी) [जरा + इनि] बूढ़ा, वयोवृद्ध ।

जलधम् [जु +ऊथन्] मांस ।

जर्जर (वि०) [जर्ज +अर] 1 बूढ़ा, निर्बल, क्षीण 2 जीर्ण, फटा पुराना, टूटा-फूटा, तोड़कर टुकड़े २ किया हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ, छोटे २ टुकड़ों में विभक्त जराजर्जरितविषाणकाटयो मृगा - का० २१, गात्र जराजर्जरित विहाय महावी० ७।१८, विसर्पन् धारा-भिर्जर्जरति धरणी जर्जरकण --उत्तर० १।२९, शि० ४।२३ 3 घायल, क्षतविक्षत 4 झोलरा, लोखला (जैसे कि टूटे घड़े की आवाज), --रम् इन्द्र का झण्डा ।

जर्जरित (वि०) [जर्जर + णिच् +क्त] 1 बूढ़ा, क्षीण, निर्बल 2 घिसा-पिसा, झीर-झीर, फटा-पुराना, चिथड़े चिथड़े हुआ 3 पूरी तरह पराभूत, अयोग्य स्मर-शरजर्जरितापि सा प्रभाते - गीत० ८ ।

जर्जरीक (वि०) [जर्जर् +ईक नि० साधु] 1 बूढ़ा, क्षीण 2 जीर्ण-शीर्ण- छेदों से भरा हुआ, सछिद्र ।

जर्नु [जन् + नु, र आदेश] 1, योनि, 2 हाथी ।

जल (वि०) [जल् +अक्] स्फूर्तिहीन, ठण्डा शीतल, जड ।

जम् पानी --नालम्ब कपाटयोर्मिनि वृथाणा क्षार जल कापुरुषा पिबन्ति पञ्च० १।३२२ 2 एक सुगन्धित औषधि का पौधा, खस 3 शीतलता 4 पूर्वाषाढा नक्षत्र । सम० --अञ्जलम् 1 झरना 2 निर्झर 3 काई,--**अञ्जलि** 1 चुल्लू भर पानी 2 मृतक के पितरों को जल तर्पण कुरुक्षमासाद्य कुरो जलाञ्जलि चाण० १५, मानस्यापि जलाञ्जलि मा भगवान् लाए न दत्ता यथा अमर १७ (यहाँ जला-ञ्जलि दो का अर्थ है छोड़ देना, त्यागना), **अटन** साम्भ, --**अटनी** झाड़, --**अण्डक** घड़ियाल मगरमच्छ, अत्यय शरद्, पतझड़, **अधिदैवत** तम् वरुण का विशेषण, (तम्) पूर्वाषाढा नक्षत्र पुञ्ज, --**अधिप** वरुण का विशेषण, --**अम्बिका** कूआँ, --**अर्क** जल में पड़ने वाला सूर्य का प्रतिबिम्ब,--**अर्णव** 1 वर्षा ऋतु 2 मीठे पानी का समुद्र,--**अर्थिन्** (वि०) प्यासा,--**अवतार** नदी के किनारे नाव पर उतरने का घाट,--**अष्ठीला** बड़ा चौकोर तालाब,--**असृका** जोंक, --**आकर** झरना, फव्वारा, कूआँ, **आकाङ्क्ष**:,--**काङ्क्ष**,--**काङ्क्षिन्** (पु०) हाथी,--**आढ्य** ऊदबिलाव,--**आत्मिका** जोंक, --**आधार** तालाब, झील या सरोवर जलाशय,--**आयुका** जोंक,--**आर्द्र** (वि०) गीला (द्रव्य) गीले कपड़े (द्रौ) पानी से तर पक्षी,--**आलोका** जोंक,--**आवर्त**: भँवर, जल-गुल्म --**आशय** 1 तालाब, सरोवर, जलाशय 2 मछली 3 समुद्र, --**आश्रय**: 1 तालाब, जलाशय,--**आह्व-यम्** कमल, --**इन्द्र** 1 वरुण का विशेषण 2 समुद्र, --**इन्धन**: वाडवाग्नि,--**इभ**: जलहस्ती, **ईश**:,--**ईश्वर** 1 वरुण का विशेषण 2 समुद्र, **उच्छ्वास**: नाली, परीवाह 2 छलक कर बहना,--**उदरम्** जलोदर नाम का रोग जिसमें पेट की त्वचा के नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है, **उद्भव** (वि०) जलचर, उरगा, --**ओकस्** (पु०)--**ओकस** जोंक,--**कण्टक** मगरमच्छ,--**कपि** सूँस,--**कपोत** जलकबूतर,--**कर्कट** 1 एक खाल 2 नारियल 3 बादल 4 तरबूज़, कमल, --**कल्क** कीचड़, --**काक** जलकौआ,--**काम** हंस,--**कान्तार** वरुण का विशेषण,--**किराट** मगरमच्छ, घड़ियाल,--**कुक्कुट** जलमुर्ग, मुर्गाबी,--**कुम्भल**,--**कोश** काई, सेवाल,--**कूपी** 1 झरना, कूआ 2 तालाब, 3 भवर, --**कृमि** सूँस, --**केलि** (पु०)--**क्रीडा** (स्त्री०) जल में विहार करना, एक दूसरे पर पानी उछालना,--**क्रिया** मृतकों का पितरों को जल-तर्पण देना,--**गुल्म** 1 कछुवा 2 चौकोर तालाब 3 भवर,--**चर** (वि०) (जलेचर भी) जल में रहने वाले जीव-जन्तु °**आजीव** °**जीव** मछवा, --**चारिन्** 1 जलजन्तु 2 मछली --**ज** वि० जल में उत्पन्न या पैदा, (**ज**) 1 जलजन्तु 2 मछली 3 काई 4 चन्द्रमा (**ज**,---**जम्**) 1 खाल 2 शङ्ख --अधरोष्ठे निवेश्य दधमौ जलज कुमार --रघु० ७।६३, ११।६०, (**जम्**) कमल, °**आजीव**, मछवा, °**आसन**: ब्रह्मा का विशेषण - वाचस्पतिरुवाचेदं प्राञ्जलिर्जल-जासनम्--कु० २।३०,--**जन्तु** 1 मछली 2 कोई जल का जन्तु,--**जन्तुका** जोंक **जन्मन्** कमल,--**जिह्व** मगर-मच्छ,--**जीविन्** (पु०) मछवाहा ।--**तरङ्ग** 1 लहर 2 एक वाद्य विशेष -जिसमें जल से भरा हुआ कटोरा (छड़ी के आघात से) मधुर स्वर पैदा करता है । --**ताडनम्** (शा०) पानी पीटना (आल०) व्यर्थ काम,--**त्रा** छाता,--**त्रास** जलातङ्क रोग, पागल कुत्ते के काटने से हड़कायापन,--**द** 1 बादल---जायन्ते विरलालोके जलदा इव सज्जना --पञ्च १।२९ 2 कपूर, °**अह्वय** साल का वृक्ष, °**आगम** वर्षाऋतु, °**काल**: वर्षाऋतु, °**क्षय** शरद्, पतझड़, --**दुर्दुर** एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, --**देवता** जलदेवी, जलपरी,--**द्रोणी** डोलची, --**धर** 1 बादल 2 समुद्र, --**धारा** पानी की धार, --**धि** 1 समुद्र 2 दसनील 3 चार की संख्या, °**धा** नदी, °**ज** चाँद, °**जा** लक्ष्मी, धन की देवी °**दशना** पृथ्वी,--**नकुल** ऊदबिलाव,---**नर** जलपुरुष (इसके शरीर का निचला आधा भाग मछली के आकार का होता है),--**निधि** 1 समुद्र 2 चार की संख्या,--**निर्गम**: 1 नाली, पानी का निकास 2 जलप्रपात, झरने के

पानी का नदी में गिरना,—**मौक्तिकः** काई, सेवार,—**पटलम्** बादल,—**पतिः** 1 समुद्र 2. वरुण का विशेषण, —**पथः** जलयात्रा—रघु० १७।८१, **पारावतः** जलकपोत,—**पित्तम्** आग,—**पुष्पम्** पानी में होने वाला फूल, कमल आदि,—**पूरः** 1 जल की बाढ़ 2 पानी की नदी,—**पृष्ठजा** काई, सेवार,—**प्रदानम्** मृतक पितरों को जल तर्पण,—**प्रलयः** जल के द्वारा विनाश,—**प्रायः** नदी का किनारा,—**प्रायम्** जलबहुलप्रदेश —**जलप्रायमनूपं स्यात्** - अमर०,—**प्रियः** 1 चातक पक्षी 2 मछली, —**बर्हः** ऊर्ध्वविलाव,—**प्लावनम्** जलप्रलय, बाढ़,—**बब्रु** मछली,—**बालकः**,—**बालकं** हिम्य पहाड़ - **बालिका** बिजली,—**बिडालः** ऊर्ध्वविलाव,—**बिम्बः**, —**बिम्बम्** बुलबुला,—**बिल्वः** 1 एक (चौकोर) तालाब, सरोवर 2 कछुवा 3 केंकड़ी,—**भू** (वि०) जल में उत्पन्न,—**भू** (पु०) 1 बादल 2 पानी जमा करके रखने का स्थान 3 एक प्रकार का कपूर,—**मक्षिका** पानी में रहने वाला एक कीड़ा,—**मञ्जूकम्**—एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, जल दर्दुर,—**मार्गः** नाली, जलप्रणाली,—**मुच्** (पु०) बादल—मेघ० ६९ 2 एक प्रकार का कपूर, —**मूर्तिः** शिव का विशेषण, -**मृत्तिका** ओला,—**यन्त्रम्** 1 पानी निकालने का यन्त्र—रहट 2 फव्वारा °**गृहम्**, °**निकेतनम्**, °**मन्दिरम्** जल के मध्य बना भवन (ग्रीष्म भवन) या मकान जिसके आस पास फुहारे हों—**क्वचिद्विचित्र जलयन्त्रमन्दिरम्** —ऋतु० १।२,—**यात्रा** जल मार्ग से नाव आदि के द्वारा यात्रा, -**यानम्** पानी की सवारी—जहाज, -**रङ्कुः** जलकुक्कुट, -**रुहः**, -**रुहम्** 1 भंवर 2 पानी की बूंद, बुदबुदा, जलकण 3 साँप, —**रसः** समुद्री या साभर नमक, -**राशिः** समुद्र, -**रुहः**, —**रुहम्** कमल, —**रूपः** मगरमच्छ, -**लताः** लहर, झाल -**वायसः** कौरिल्ला पक्षी, —**वासः** जल में बसना - **वाहः** बादल, -**वाहनी** पानी की मोरी, —**विद्युत्** शारदीय विद्युत् (२२ या २३ सितम्बर) —**वृश्चिकः** सींगा मछली,—**व्यालः** पनियल साँप,—**शयः**, -**शयनः**, —**शायिन्** (पु०) विष्णु का विशेषण,—**शूकम्** काई, सेवार, —**शूकरः** मगरमच्छ,—**शोषः** सोखा, अनावृष्टि — **सर्पिणी** जोंक,—**सूचिः** (स्त्री०) 1 गगाई सूंस 2 एक प्रकार की मछली 3 कौवा 4 जोंक,—**स्थानम्**, —**स्थायः** तालाब, सरोवर, जलाशय,—**हर्म्यम्** छोटा जलमन्दिर (ग्रीष्म भवन) जो पानी के मध्य बना हो या जिसमें फौव्वारे लगे हों। —**हस्तिन्** (पु०) जलहाथी, —**हारिणी** नाली,—**हयः** 1 शंख 2 समुद्रफेन (मसीरोपी नामक जलचर का भीतरी कवच)।

जलङ्गम [जल + गम् + खच्, मुमागम] चाण्डाल।

जलजालिः [जलेन मस्यति परिणमति—जल + मस् + इन्] 1 बादल 2 एक प्रकार का कपूर।

जलाका, जलालुका, जलिका, जलूका, अलूका [जले आकामति प्रकाशते—जल + आ + कै + क + टाप्, जले अलति गच्छति—जल + अल् + उक + टाप्, जल + इन् टाप्, जलम् ओको यस्य पृषो०] जोंक।

जलेजन्, जलेजातम् [जले + जन् + ड, सप्तम्या अलुक्] कमल।

जलेशयः [जले + शी + अच्, सप्तम्या अलुक्] 1 मछली 2 विष्णु का नाम।

जल्प् (स्वा० पर० जल्पति, जल्पित) बोलना, बातें करना, संलाप करना—**अविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण**—उत्तर० १।२१, **एकेन जलान्यनक्षरम्** - पंच० १।११६, भर्तृ० १।८२ 2 गुनगुनाना अस्पष्ट उच्चारण करना 3 प्रलाप करना, बिड़-बिड़ करना बालकलरव करना, कलकलध्वनि करना, अभि -, बोलना, बातें करना, प्र -, 1 बोलना कहना, बातें करना—कु० १।४५, 2 पुकारना सम् -, बोलना, संलाप करना।

जल्पः [जल्प् + घञ्] 1 वक्तृता, भाषण 2 प्रवचन, वार्तालाप 3 बालकलरव, प्रलाप, गप-शप 4 वादविवाद, वाग्युद्ध।

जल्पक (वा) क (वि०) (स्त्री—ल्पिका) [जल्प् + ण्वुल्, पाकन् वा,] बातूनी, गप्पी।

जव (वि०) [जु + अप्] फुर्तीला, चुस्त, —**वः** (क) वेग, फुर्ती, तेजी, द्रुतता—**जवो हि सप्त तस्य विभूषणम्** —भर्तृ० ३।१२१, श० १।८, (ख) त्वरा, शीघ्रता —**जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युत** शि० १।१२ 2 वेग। सम०—**अधिक** वेगवान् घोड़ा, द्रुतगामी घोड़ा,—**अनिल** तेज हवा, आंधी।

जवन (वि०) (स्त्री० नी) [जु + ल्युट्] तेज, फुर्तीला, वेगवान् रघु० ९।५६,—**नः** द्रुतगामी घोड़ा, तेज घोड़ा, —**नम्** चाल, द्रुतगति, वेग।

जवनिका, जवनी [जवने आच्छादने अलम्—जु + ल्युट् + ङीप्, -जवनी + कन् + टाप्, ह्रस्व = जवनिका] 1 कनात 2 चिक, पर्दा —**नेर मसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम्**—भर्तृ० ३।११२।

जवसः [जु + असच्] पशुओं के चरने योग्य घास।

जवा [जव + टाप्] अड़हुल, जपा।

जष् (स्वा० उभ० जषति—ते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मारना।

जस् I. (दिवा० पर०—जस्यति) स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, II. (स्वा० जुहो० पर० - जसति, जासयति) 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना 2 अवज्ञा करना, अपमान करना **उद्**—, मारना—**निर्जोजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहम्** -शि० १।३७, भट्टि० ८। १२०।

जहक [हा + कन्, द्वित्वम्] 1 समय 2 बालक 3 साँप की केंचुली।

जहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [हा+शतृ] छोड़ने वाला, त्यागने वाला। सम०—**लक्षणा**, —**स्वार्था लक्षणा** का एक प्रकार (इसे 'लक्षणलक्षणा' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ देता है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है जो किसी न किसी प्रकार उस मुख्यार्थ से सम्बद्ध है, उदा० 'गंगायां घोषः' (गंगा में घर) में 'गंगा' शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ कर 'गंगातट' को प्रकट करता है—तु० 'अजहत्स्वार्था' की भी।

जहाजक [हा+शानच्+कन्] महाप्रलय।

जहु [हा+उण्, द्वित्वम्] पशु का बच्चा।

जह्नु [हा+नु, द्वित्वमाकारस्लोपश्च] सुहोत्र का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिसने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। [जब गंगानदी भगीरथ की तपस्या के द्वारा स्वर्ग से इस धरा पर लाई गई तो मैदान में आकर उसने राजा जह्नु की यज्ञभूमि को पानी में डुबा दिया। जह्नु ने क्रुद्ध हो कर गंगा को पी डाला। देवता, ऋषि और विशेष कर भगीरथ ने उनके क्रोध को शान्त किया। जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने कानों के द्वारा बाहर निकालने की स्वीकृति दी। इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुतनया, जह्नुनन्दिनी या जह्नु-सुता आदि नामों से पुकारा गया—तु० रघु० ६।८५, ८।९५]।

जागर [जागृ+घञ्, गुण] जागरण, जागना, जागते रहना, रात्रिजागरपरो दिवाशय—रघु० ९।३४ 2 जाग्रत अवस्था की मन सृष्टि 3 कबच, विरह-बेदना।

जागरणम् [जागृ+ल्युट्] 1 जागना, प्रबुद्ध रहना 2. खबरदारी, सतर्कता।

जागरा [जागृ+अ+टाप्] दे० जागरण।

जागरित (वि०) [जागृ+क्त] जागा हुआ,—तम् जागना।

जागरिन् (वि) (स्त्री०—णी) **जागरूक** (वि०) [जागृ+नुच्, स्त्रियां ङीप् च, जागृ+ऊक्] 1 जागरणशील, जागता हुआ, निद्राशून्य स्वप्नो जागरूकस्य यायाद्यं वेद कस्तव—रघु० १०।३४ 2 खबरदार, सतर्क—वर्णाश्रमाक्षणजागरूक—रघु० १४।१५, शि० २०।३६।

जागरि, जागर्या, जागर्या [जागृ+क्तिन्, जागृ+श+यक्+टाप्, गुण, जागृ+श्, रिङादेश] जागरण, जागते रहना।

जागुडम् [जगुड+अण्] केसर, जाफरान।

जागृ (अदा० पर०—जागर्ति, जागरित) जागते रहना, खबरदार या सावधान रहना (आत्म० भी)—सोऽप्यसर्पदजागार यथाकालं स्वपन्नपि—रघु० १७।५१, गुरौ षाड्गुण्यचिन्तायामार्ये चार्ये च जाग्रति—मुद्रा० ७।१३, रात को बैठ रहना—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2 निद्रा से जगाया जाना, जागते रहना, आगे का देखना, दूरदर्शी होना।

जाघनी [जघन+अण्+ङीप्] 1 पूंछ 2 अधा।

जाङ्गल (वि०) (स्त्री०—ली) [जङ्गल+अण्] 1 देहाती, चित्रोपम 2 जङ्गली 3. बर्बर असभ्य 4 बंजर, ऊसर—लः चकोर, तीतर,—लम् 1 मांस 2 हरिण का मांस।

जाङ्गुलम् [जङ्गुल+अण्] जहर विष।

जाङ्गुलिः, जाङ्गुलिक [जङ्गुल+इञ्, ठक् वा] सांप के काटे का चिकित्सक, विषवैद्य।

जाङ्गलकः [जङ्गल+ठञ्] 1 हरकारा, दूत 2 ऊँट।

जाजिम् (पुं०) [जज्+णिनि] योद्धा, लड़ने वाला—जजौ-जोजाजिजिज्जाजी—शि० १९।३।

जाठर (वि०) (स्त्री०—री) [जठर+अण्] पेट से संबंध रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती, औदर,—रः पाचनशक्ति, जाठर रस।

जाड्यम् [जड+ष्यञ्] 1 ठंडक, शीतलता 2 अनाभक्ति, आलस्य, निष्क्रियता 3 बुद्धि की मन्दता, बेवकूफी, बुद्धता—नृजाड्यं वसुधाधिपस्य—भर्तृ० २।१५, जाड्यं ह्रियो हरति—२।२३, जाड्यं ह्रीमति गण्यते—५।४ 4 जिह्वा की नीरसता।

जात (भू० क० कृ०) [जन्+क्त] 1 अस्तित्व में लाया गया, जन्म दिया गया, पैदा किया गया 2 उगा हुआ, निकला हुआ 3 उद्भूत, उत्पन्न 4 अनुभूत, ग्रस्त (प्रायः समास में) दे० 'जन्',—तः पुत्र, बेटा (नाटकों में प्रायः 'स्नेह या प्रेम द्योतक' के अर्थ में प्रयुक्त—अयि जात कथयितव्यं कथय—उत्तर० ४, 'प्यारे बच्चे' 'मेरे लाल, दुलारे'),—तम् 1 जन्तु, जीवधारी, प्राणी 2 उत्पादन, उद्गम 3 भेद, प्रकार, श्रेणी, जाति 4 श्रेणी बनाने वाली वस्तुओं का समूह—निःशेषविश्राणितकोशजातम्—रघु० ५।१, संपत्ति का समूह अर्थात् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजातम् (सब कर्मों का समूह)—मुक्त' वह सब कुछ जो मुक्त में सम्मिलित है 5 बालक, बच्चा। सम०—**अपत्या** माता, **अमर्ष** (वि०) नाराज, क्रुद्ध,—**अश्रु** (वि०) आँसू बहाने वाला—**इष्टि** (स्त्री०) जातकर्मसंस्कार,—**उक्ष**, बछड़ी आयु का बैल, **कर्मन्** बच्चे के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार रघु० ३।१८। **कलाप** (वि०) (मोर की भांति) पूंछ वाला,—**काम** (वि०) आसक्त,- **पक्ष** (वि०) जिसके डैने या पंख निकल आये हों, अजातपक्ष, अनुद्गतपक्ष,—**प्राज्ञ** (वि०)

जन्मन युक्त, बेड़ी पड़ा हुआ,- **प्रत्यय** (वि०) जिसके मन में विश्वास उत्पन्न हो गया हो,—**सम्बन्ध** (वि०) प्रेम में आसक्त,—**मात्र** (वि०) तुरन्त का उत्पन्न, सद्योजात,—**रूप** (वि०) सुन्दर, उज्ज्वल, (रूप्) सोना -- अभ्याकरसमुत्पन्ना मणिर्जात्यैरसंस्कृता, जातरूपेण कल्याणि न हि संयोगमर्हति—मालवि० ५।१८, नै० १।१२९,—**वेद** (पु०) अग्नि का विशेषण—कु० २।४६, शि० २।५१, रघु० १२।१०४, १५।७२।

जातक (वि०) [जात+कन्] जन्मा हुआ, उत्पन्न, --क 1 नवजात शिशु 2 भिक्षु, - **कर्म** 1 जातकर्म संस्कार 2 जन्म विषयक फलित ज्योतिष की गणना 3 एक जैसी वस्तुओं का संग्रह ।

जाति. (स्त्री०) [जन्+क्तिन्] 1 जन्म, उत्पत्ति--मनु० ७।१४८ 2 जन्म के अनुसार अस्तित्व का रूप 3 गोत्र, परिवार, वंश 4 जाति, कबीला या वर्ग (जनसमुदाय)—अरे मूढ जात्या चेऽवध्योऽहम्, एषा मां जाति परित्यक्ता—वेणी० ३, (हिन्दुओं की प्राथमिक जातियाँ केवल चार—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—हैं) 5 श्रेणी, वर्ग, प्रकार, नस्ल--पशुजाति, पुष्पजाति आदि 6 किसी एक वर्ग के विशेष गुण जो उसे और दूसरे वर्गों से पृथक् करें, किसी एक नस्ल के लक्षण जो मूल तत्त्वों को बतलाएँ, जैसे कि गाय और घोड़ों का 'गोत्व' 'अश्वत्व'--दे० गुण क्रिया और द्रव्य—शि० २।४७, तु० काव्य २ 7 अंगीठी 8 जायफल 9 चमेली का फूल या पौधा पुष्पाणां प्रकर स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभि —अमरु १०, (इन दो अर्थों में 'जाती' ऐसा भी लिखा जाता है) 10 (न्या० में) व्याप्य उत्तर 11 (संगीत में) भारतीय स्वरग्राम के सात स्वर 12 छन्दों की एक श्रेणी दे० परिशिष्ट। सम०—**अन्ध** (वि०) जन्मान्ध —भर्तृ० १।९०, **कोश**, **फ**,- **फल**, जायफल, —**कोशी**,—**त्री** जावित्री, - **धर्म** 1 किसी जाति के कर्तव्य, आचार 2 किसी जाति की सामान्य सम्पत्ति, —**भ्रंश** जाति या उसके विशेषाधिकारों की हानि, —**पत्री** जावित्री, जायफल का ऊपरी छिलका,—**ब्राह्मण** केवल जन्म से ब्राह्मण, गुण कर्म, तप और स्वाध्याय से हीन, अज्ञानी ब्राह्मण (तप श्रुत च योनिश्च त्रय ब्राह्मण्यकारणम्, तप श्रुताभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव स - शब्दार्थचिन्तामणि, —**भ्रष्ट** जातिच्युति —मनु० ९।६७, - **भ्रष्ट** (वि०) जातिच्युत, जाति-बहिष्कृत, --**मात्रम्** 1 'केवल जन्म' केवल जन्म के कारण जीवन में प्राप्त पद 2 केवल जाति (जन्मसम्बन्धी कर्तव्यों के पालन का अभाव)—मनु० ८।२०, १२।११४, **लक्षणम्** जातिसूचक भेद, जाति-सूचक विशेषताएँ, **वाचक** (वि०) नस्ल को बतलाने वाला (शब्द)—गौरश्च पुरुषो हस्ती, **वैरम्** जातिगत द्वेष, स्वाभाविक शत्रुता, **वैरिन्** (पु०) स्वाभाविक शत्रु, --**शब्द** नस्ल या जाति बतलाने वाला नाम, जातिबोधक शब्द, जातिवाचक संज्ञा गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती आदि, -**संकर** दो जातियों का मिश्रण, दोगलापन, - **सम्पन्न** (वि०) अच्छे घराने का, कुलीन, **सारम्** जायफल, - **स्मर** (वि०) जिसे अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त याद हो जातिस्मरो मुनिरस्मि जात्या का० ३५५, - **स्वभाव** जातिगत स्वभाव या लक्षण, **हीन** (वि०) नीच जाति का, जाति-बहिष्कृत ।

जातिमत् (वि०) [जाति+मतुप्] उत्तम कुल में उत्पन्न, ऊँचे घराने में जन्मा ।

जातु (अव्य०) [जन्+क्तुन् पृषो० साधु] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय 1 कभी, सर्वथा, किसी समय, संभवतः—कि तेन जातु जातेन मातुर्यौवनहारिणा पंच० १।२६, न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति मनु० २।९४, कु० ५।५५ 2 कदाचित्, कभी --रघु० १९।७ 3 एकबार, एक समय, किसी, दिन 4 विधिलिङ् में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ हो जाता है "अनुमति न देना, सहन न कर सकना"—जातु तव भवानुपरि राजयेन्नावकल्पयामि (न संपयामि) सिद्धा० 5 लट् लकार में प्रयुक्त होकर यह 'निन्दा (गर्हा)' प्रकट करता है - जातु तत्र भवान् वृषल याजयति तदेव ।

जातुधान [जातु सहित धानं सन्निधानं यस्य ब० स०] राक्षस, पिशाच ।

जातुष (वि०) (स्त्री०—षी) [जतु+अण्, षुक्] 1 लाख से बना हुआ, या लाख में ढका हुआ 2 चिपचिपा, चिपकने वाला ।

जात्य (वि०) [जाति+यत्] 1 एक ही परिवार का, सम्बन्धी 2 उत्तम, उत्तमकुलोद्भव सत्कुलान्वय्य, - जात्यस्तेनाभिजातेन शूर शौर्यवता कुश रघु० १७।४ 3 मनोहर, सुन्दर सुखद ।

जानकी [जनक+अण्+ङीप्] जनक की पुत्री सीता, राम की भार्या ।

जानपद [जनपद+अण्] 1 देहाती, गंवार, ग्रामीण, किसान (विप० पौर) 2 देश 3 विषय, इन्द्रियार्थ ।

जानि (षष्ठीतत्पु० समास में 'जाया शब्द' के स्थान में आदेश)

जानु (नपुं०) [जन्+डानुक्] घुटना - जानुन्यामवनि गत्वा, पृथ्वीपर घुटनों के बल चल कर या घुटने टेक कर । सम०- -**दघ्न** (वि०) घुटनों तक ऊँचा, घुटनों तक गहरा,—**फलकम्**, **मण्डलम्** घुटने की प्याली, --**सन्धि** घुटने का जोड़ ।

जाप्यः [जप्+घञ्] 1 प्रार्थना जपना, कान में कहना, गुनगुनाना 2 जप की हुई प्रार्थना या मन्त्र ।

जाबालः [जबाल+अण्] भेड़, बकरों का समूह ।

जामदग्न्यः [जमदग्नि+यञ्] परशुराम, जमदग्नि का पुत्र ।

जामाता [जन्+अण् बा० स्त्रीत्वम्] 1 पुत्री 2 स्नुषा, पुत्रवधू ।

जामातृ (पु०) [जायां माति विनष्टेति मिमीते वा नि०] 1 दामाद—जामातृयज्ञेन वयं निरुद्धा —उत्तर० १।११, जामाता दशमो ग्रह —सुभा० 2 स्वामी, मालिक 3 सुरजमुखी फूल ।

जामि (स्त्री०) [जम्+इन् नि० वृद्धि.] 1 बहन, पुत्री 3 पुत्रवधू 4 नजदीकी संबंधिनी (सन्निहित-सपिंड स्त्री—कुल्लूक) मनु० ३।५७, ५८ 5 गुणवती सती साध्वी स्त्री ।

जामित्रम् [=जायामित्रम्] जन्मकुंडली में लग्न से सातवां घर,—तिथौ च जामित्रगुणान्विितायाम्—कु० ७।१, (जामित्र लग्नात्सप्तम स्थानम —मल्लि०) वि०—कुछ लोग इस शब्द को 'जाया' से व्युत्पन्न मानते हैं क्योंकि फलित ज्योतिष में 'जामित्र' का चिह्न पत्नी के भावी सौभाग्य का सूचक [जायामित्रम्] है परन्तु इस शब्द का स्पष्ट सम्बन्ध ग्रीक शब्द (Diametron) से है ।

जामेय [जाम्या भगिन्या अपत्यम्—ढक्] भानजा, बहन का पुत्र ।

जाम्बवम् [जम्बवा फलम् अण् तस्य बा० न लुप्—तारा०] 1 सोना 2 जम्बुवृक्ष का फल, जामन ।

जाम्बवत् (पु०) [जाम्ब+मतुप्] रीछों का राजा जिसने लंका पर आक्रमण के समय राम को सहायता की । यह अपनी चिकित्सासम्बन्धी कुशलता के लिए भी प्रसिद्ध था (यह जाम्बवान् सम्भवतः कृष्ण के समय तक जीवित रहा क्योंकि उस समय स्यमन्तक मणि के लिए कृष्ण और जाम्बवान् में युद्ध हुआ । इस स्यमन्तक मणि को जाम्बवान् ने सत्राजित् के भाई प्रसेन से प्राप्त किया था । युद्ध में कृष्ण ने जाम्बवान् को पछाड़ दिया । परास्त होकर जाम्बवान् ने स्यमन्तक मणि के साथ अपनी पुत्री जाम्बवती को भी कृष्ण के अर्पण कर दिया)

जाम्बीरम् (क्लम्) [जम्बीर+अण्, पक्षे रलयोरभेद] चकोतरा ।

जाम्बूनदम् [जम्बूनद+अण्] 1 सोना—रघु० १८।४४ 2 एक सोने का आभूषण—कृतवद्भिश्च जाम्बूनदं —शि० ४।६६ 3 धतूरे का पौधा ।

जाया [जन्+यक्+टाप्, आदेश] पत्नी, (शब्द की व्युत्पत्ति मनु० ९।८ के अनुसार—पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते, जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः—दे० रघु० २।१ पर मल्लि०) बहुव्रीहि के उत्तर पद में 'जाया' का बदलकर 'जानि' हो जाता है यथा 'सीताजानि' सीता जिसकी पत्नी है, इसी प्रकार युवजानि, दामार्जजानि । सम०—अनुजीविन् (पु०)—आजीवः 1 अभिनेता, नट 2 वेश्या का पति 3 मोहताज, दरिद्र,—पती (द्वि० व०) पति और पत्नी (इसके दूसरे रूप हैं—दंपती, जंपती)

जायिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जि+णिनि] जीतने वाला, दमन करने वाला (पु०) (संगीत में) ध्रुपद जाति की एक ताल ।

जायुः [जि+उण्] 1 औषधि 2 वैद्य ।

जारः [जीर्यति अनेन स्त्रिया सतीत्वम् जृ+घञ् यद्वा-तीति जार—निरु०] उपपति, प्रेमी, जारिक—रथकार स्वका भार्यां सञ्जारां शिरसाबहत्—पञ्च० ४।५४ । सम०—ज, —जन्मन्,—जात दोगला, हरामी,—जरा व्यभिचारिणी स्त्री ।

जारिणी [जार+इनि+ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री ।

जालम् [जल्+ण] 1. फंदा, पाश 2 जाला, मकड़ी का जाला 3 कवच, लोहे की जालियों का बना शिरस्त्राण 4 अधिकारभ्र, गवाक्ष, झिलमिली, खिड़की—जालान्तरप्रेषितदृष्टिरन्या—रघु० ७।९, धूपैर्जालविनिःसृतैर्यदि भवेत्सन्दिग्धपारावता —विक्रम० ३।२, कु० ७।६० 5 समूह, संघात, राशि, ढेर—चिताजालान्तर्ति-तन्तुजालनिबिडस्यूतेव—मा० ५।१०, कु० ७।८९, शि० ४।४६, अमरु ५८ 6 आदू 7 भ्रम, धोखा 8 अनखिला फूल । सम०—अक्षः झरोखा, खिड़की, —कर्मन् (नपुं०) मछली पकड़ने का धंधा, मछली पकड़ना,—कारक 1 जाल निर्माता 2 मकड़ी,—गोधिका एक प्रकार की मछली,—पाद—पाद कलहंस,—प्रायः कवच, शिरस्त्राण ।

जालकम् [जालमिव कायति+कै+क] 1 फन्दा 2 समुच्चय, समूह —बद्ध कर्णशिरीषरोचि वदने घर्माम्भसां जालकम्—श० १।३०, रघु० ९।६८ 3 गवाक्ष, खिड़की 4 कली, अनखिला फूल—अभिनवजलिकैर्मालतीनाम्—मेघ० ९८, इसी प्रकार—यूथिकाजालकानि —२६ 5 (बालों में पहना जाने वाला) एक प्रकार का आभूषण · तिलकजालकजालकमौक्तिकैः —रघु० ९।४४ (आभरणविशेष) 6 धोखा 7 भ्रम, धोखा । सम०—मालिन् (वि०) अवगुण्ठित ।

जालकिन् (पु०) [जालक+इनि] बादल ।

जालकिनी [जालकिन्+ङीप्] भेंड ।

जालिक [जाल+ठन्] 1 मछुवाहा 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 मकड़ी 4 प्रान्त का राज्यपाल या मुख्य-शासक 5 बदमाश, ठग, —का 1. जाली 2 अब्रीरों का बना

कवच 3 मकड़ी 4 जोंक 5 बिधवा 6 लोहा 7 घूघट, मुख पर डालने का ऊनी कपड़ा।

जालिनी [जाल+इनि+ङीप्] खिड़की से सुशोभित कमरा।

जालम (वि०) (स्त्री०—ली) [जल्+णिच् डा० म] 1 क्रूर, निष्ठुर, कठोर 2 उतावला, अविवेकी,—लम: (स्त्री—ली) 1 बदमाश, धूर्त, लुच्चा, पाजी, कुकर्मी —अपि जायते कलमेन दिग्भावेन गत स जालम इति —विक्रम० १ 2 निर्धन आदमी, नीच, अधम।

जालमक (वि०) (स्त्री०—लिका) [जालम+कन्] घृणित, नीच, कमीना, तिरस्करणीय।

जावम्यम् [जवन+ष्यञ्] 1 चाल, तेजी 2 शीघ्रता, त्वरा।

जाहम् एक प्रत्यय जो शरीर के अङ्गों के अभिधायक संज्ञा शब्दों के अन्त में 'मूल' को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है—कर्णजाहम्—कान की जड़, इसी प्रकार अक्षि° ओष्ठ° आदि।

जाह्नवी [जह्नु+अण्+ङीप्] गङ्गा नदी का विशेषण।

जि (भ्वा० पर० (परा और वि पूर्व आने पर—आ०) जयति, जित) 1 जीतना, हराना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलद-पटलानि—पञ्च० १।३३० भट्टि० १५।७६, १६।२ 2 मात कर देना, आगे बढ़ जाना—गजितानन्तरा वृष्टि सौभाग्येन जिगाय सा—कु० २।५३, रघु० ३।३४ घट० २२, शि० १।१९ 3, जीतना (दिग्विजय करना या जूए में जीतना), दिग्विजय करके हस्तगत करना —पराजीयत भुवा ततो मही— रघु० ११।६५, (यहाँ 'जि' का अर्थ विजय प्राप्त करना भी है)—मनु० ७।९६ 4 दमन करना, दबाना, नियन्त्रण रखना (कामावेग आदि पर) विजय प्राप्त करना 5 विजयी होना, प्रमुख या सर्वोत्तम बनना (प्राय नान्दी श्लोकों या अभिवादन आदि में प्रयुक्त)—जयतु जयतु महाराज (नाटकों में), स जयति परिणद्ध शक्तिभि शक्तिनाथ —मा० ५।१, जितमुडुपतिना नम सुरेभ्य —रत्न० १।४, भर्तृ० २।२ गीत० १।१, प्रेर० जापयति, जितवाना, विजय दिलाना, सम्पन्न—जिगीषति जीतने की, हस्तगत करने की, आगे बढ़ जाने की, रोस करने की, होड़ लगाने की इच्छा करना, अधि—,जीतना, हराना, पछाड़ना—सर्तृ० १९।२, जिस्—1 जीतना, हराना —रघु० ३।५१, भट्टि० २।५२, ७।९४ याज्ञ० ३।२९२ 2 जीत लेना, विग्विजय द्वारा हस्तगत करना—मनु० ८।१५४, परा—(आ०) 1 हराना, जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—य पराजयते मृधा—याज्ञ० २।७५, भट्टि० ८।९ 2 लौटना, वञ्चित होना 3 जीत लिया जाना या वशीभूत किया जाना, (कुछ) असह्य लगना—अध्ययनात्पराजयते—सिद्धा०, अध्ययन करना कठिन या असह्य लगता है—भट्टि० ८।७१, वि—(आ०) 1 जीतना 2 हराना, वशीभूत करना, दमन करना —अजेष्ट षड्वर्गम्—भट्टि० १।२, प्रायस्तन्मूलसंक्षया विजयते विश्व स पुण्यायुध —गीत० १०, भट्टि० २।३९ १५।३९ 3 मात कर देना, आगे बढ़ जाना—चक्षुर्भैवकमम्बुजं विजयते—शिशु० १।३३ 4 जीत लेना, दिग्विजय करके हस्तगत करना— भुजविजितकिमान-रघु० १२।१०४, १।५९, शा० २।१३ 5 विजयी होना, श्रेष्ठ या सर्वोत्तम होना —विजयन्ता देव — श० ५,

जि [जि+डि] पिशाच।

जिगत्नु [गम्+त्नु सन्वद्भावात् द्वित्वम्] प्राण, जीवन।

जिगीषा [जि+सन्+अ+टाप्] 1 जीतने की, दमन करने की, या वशीभूत करने की इच्छा —यान सस्मार कौबेर वैवस्वतजिगीषया—रघु० १५।४५ 2 स्पर्धा प्रतिद्वन्द्विता 3 प्रमुखता 4 चेष्टा, व्यवसाय, जीवनचर्या।

जिगीषु (वि०) [जि+सन्+उ] जीतने का इच्छुक।

जिघत्सा [अद्+सन्+अ, घसादेश 1 खाने की इच्छा बुभुक्षा 2 हाथपाँव मारना 3 प्रबल उद्योग करना।

जिघत्सु (वि०) [अद्+सन्+उ घसादेश [बुभुक्षु, भूखा।

जिघांसा [हन्+सन्+अ+टाप्] मार डालने की इच्छा —रघु० १५।१९।

जिघांसु [हन्+सन्+उ] मार डालने का इच्छुक, घातक, —सु शत्रु, वैरी।

जिघृक्षा [ग्रह्+सन्+अ+टाप्] ग्रहण करने की या लेने की इच्छा।

जिघ्र (वि०) [घ्रा+श जिघ्रादेश] 1 सूघने वाला 2 अटकलबाज, अनुमान लगाने वाला, निरीक्षण करने वाला—उदा० मनोजिघ्र सपत्नीजन —सा० द०।

जिज्ञासा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा, कुतूहल, कौतुक या ज्ञानेप्सा।

जिज्ञासु (वि०) [ज्ञा+सन्+उ] 1 जानने का इच्छुक, ज्ञानेप्सु, प्रश्नशील —मनु० ६।४४ 2 मुमुक्षु।

जित् (वि०) [जि+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जीतने वाला, परास्त करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला —शत्रुजित्, कर्मजित्, सहस्रजित् आदि।

जित (भू० क० कृ०) [जि+क्त] जीता हुआ, अभिभूत, दमन किया हुआ, (शत्रु या आवेग आदि) संयत, 2. हस्तगत, हासिल, (दिग्विजय द्वारा) प्राप्त 3 मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4 वशीभूत, दासीकृत या प्रभावित—कामजित श्रीजित आदि। सम—अक्षर (वि०) भलीभाँति या तुरन्त पढ़ने वाला,—अरि (वि०) जिसने अपने शत्रुओं को जीत लिया है, जेता विजयी,—आरि (वि०) जिसने अपने शत्रुओं पर विजय

प्राप्त कर ली है (दिः) बुद्ध का विशेषण,—आत्मन् (वि०) जितेन्द्रिय, आवेगशून्य,—आहव (वि०) विजयी,—इन्द्रिय (वि०) जिसने अपनी वासना पर विजय प्राप्त कर ली है या जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियों—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—को वश में कर लिया है—श्रुत्वा स्पृष्ट्वाऽथ दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः, न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः —मनु० २।९८,—काशिन् (वि०) विजयी दिखाई देने वाला, विजय का अहंकार करने वाला, अपनी विजय की शान दिखाने वाला—वाक्यमेतदपि जितकाशिनया मुद्रा० २, जितकाशी राजसेवक—तपस् —क्रोध,—क्रोध (वि०) स्थिरता, शान्तचित्तता, अनुत्तेजनीयता,—यष्टि पीपल के वृक्ष की लाठी,—श्रम —परिश्रम करने का अभ्यस्त, कठोर,—स्वर्गः जिसने स्वर्ग प्राप्त कर लिया है।

जितिः (स्त्री०) [जि+क्तिन्] विजय, दिग्विजय।

जितुमः, जित्नुः [जित्+नमप्, जित्नुम=जितुम पृषो० साधु] मिथुन राशि, राशिचक्र में तीसरी राशि ('ग्रीक' शब्द)।

जित्वर (वि०) (स्त्री०—री) [जि+क्वरप्] विजयी, जीतने वाला, विजेता शास्त्राण्युपायसत जित्वरारि —भट्टि० १।१६, कदलीकृतभूपालो भ्रातृभिर्जित्वरैर्दिनम्—शि० २।९।

जिन (वि०) [जि+नक्] 1 विजयी, विजेतर 2 अतिबुद्ध, —न 1 किसी वर्ग का प्रमुख, बौद्ध या जैनसाधु, जैनी अर्हत् या तीर्थंकर 3 विष्णु का विशेषण। सम०—इन्द्र,—ईश्वर 1 प्रमुख बौद्ध सन्त 2 जैन तीर्थंकर, —सद्मन् (नपु०) जैनमन्दिर या विहार।

जिनाजिवः [=जीवञ्जीव, पृषो० साधु] चकोर पक्षी।

जिष्णु (वि०) [जि+स्नुस्नु] 1 विजयी, विजेता,—रघु० ४।८५, १०।१८ 2 विजय लाभ करने वाला, लाभ उठाने वाला 3 (समास के अन्त में) जीतने वाला, आगे बढ़ जाने वाला—अलिनीजिष्णु कचानां चय —भट्टि० १।६, शि० १३।२१,—ष्णुः 1 सूर्य 2 इन्द्र 3 विष्णु 4 अर्जुन।

जिह्म (वि०) [जहाति सरलमार्गं, हा+मन् सन्वत् आलोपश्च] 1 छलवा, कुटिल, तिरछा 2 टेढ़ा, बांका, वक्रदृष्टि ऋतु० १।१२ 3 घुमावदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा 4 नैतिकता की दृष्टि से कुटिल, धोखेबाज, बेईमान, दुष्ट, अनीतिपूर्ण- धृतहेतिरप्यधृतजिह्मगतिः —कि० ६।२४ मुहुरर्थमीहितमजिह्मधियाम्- शि० ९।६२ 5 धुंधला, निष्प्रभ, फीका—विधिसमयनियोगादीप्तिलेहारजिह्मम्—कि० १।४६ 6 मन्थर, आलसी —ह्मम्—बेईमानी, झूठा व्यवहार। सम०—अक्ष (वि०) भेंगा, ऐंचाताना,—गः साँप,—गति (वि०) टेढ़ामेढ़ा चलने वाला, तिर्यग्गति से चलने वाला ऋतु० १।१३,—मेहनः मेंढक,—रोचिस् (वि०) अधर्मी योद्धा,—शल्यः खैर का वृक्ष।

जिह्मः [हा+ड हिरादि] जीभ।

जिह्मल (वि०) [जिह्म+ला+क] जिमला, चटोरा।

जिह्वा [लिहन्ति अनया—लिह्+वन् नि०] 1. जीभ 2 आग की जीभ अर्थात् लौ। सम०—आस्वादः चाटना, लपलपाना,—उल्लेखनी,—उल्लेखनिका, —निर्लेखनम् जीभ खुरचने वाला,—यः 1. कुत्ता 2 बिल्ली 3 व्याघ्र 4 चीता 5 रीछ,—मूलम् जिह्वा की जड़,—मूलीय (वि०) क् और ख् से पूर्व विसर्ग की ध्वनि, तथा कण्ठ्य व्यञ्जनों की ध्वनि का द्योतक शब्द (व्या० में),—रसः पक्षी,—लिह् (पु०) कुत्ता, —लौल्यम् लालच,—शल्यः खैर का पेड़।

जीन (वि०) [ज्या+क्त] बूढ़ा, वयोवृद्ध, क्षीण, —नः चमड़े का थैला—जीनकामुकबस्तादीन् पृथग्दशाहिषड्वये —मनु० ११।१३९।

जीमूत [जयति तम, जीयते अनिलेन जीवनस्योदकस्य मूत बन्धो यत्र, जीवन जल मूत बद्धम् अनेन, जीवन मुञ्चतीति वा पृषो० तारा०] 1 बादल—जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिं—मेघ० ४ 2 इन्द्र का विशेषण। सम०—कूट एक पहाड़,—वाहनः 1 इन्द्र 2 नागानन्द नाटक में नायक, विद्याधरों का राजा (कथा सरित्सागर में भी उल्लेख) [जीमूतवाहन, जीमूतकेतु का पुत्र था, अपनी दानशीलता तथा धर्मपरायणवृत्ति के कारण प्रख्यात था। जब उसके बन्धुबान्धवों ने ही उसके पिता की राजधानी पर आक्रमण किया तो उसने अपने पिता जी को कहा कि इस राज्य को अपने आक्रमणकारी बन्धुबान्धवों के लिए छोड़ दो तथा स्वयं मलयपर्वत पर रह कर अपना पवित्र जीवन बिताओ। एक दिन कहा जाता है कि जीमूतवाहन ने उस साँप का स्थान ग्रहण किया जो कि अपने समझौते के अनुसार गरुड़ को उसके दैनिक भोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। अन्त में अपने उदार तथा हृदयस्पर्शी व्यवहार के द्वारा जीमूत वाहन ने गरुड़ को इस बात के लिए अभिप्रेरित किया कि वह साँपों को खाने की आदत छोड़ दे। नाटकों में इस कहानी को बड़े ही काव्यपूर्ण ढंग से कहा गया है।]—वाहिन् (पु०) बृहस्पति।

जीरः [ज्या+रक्, सम्प्रसारणं दीर्घश्च] 1 तलवार 2 जीरा।

जीरकः, जीरणः [जीर+कन्, पृषो० कस्य नः] जीरा।

जीर्ण (वि०) [जृ+क्त] 1 पुराना, प्राचीन 2. घिसा-पिसा, सीर्ण, बरबाद, अस्त, कटा-पुराना (वस्त्रादिक) —वासांसि जीर्णानि यथा विहाय—भग० २।२२,

3 पका हुआ,—सुजीर्णमन्न सुविचक्षण सुतं—हि० १।२२,—र्णः 1. बूढ़ा आदमी 2. वृक्ष,—र्णम् 1. गुग्गुल 2. बुढ़ापा, क्षीणता। सम०—उद्धारः पुराने को नया बनाना, मरम्मत, विशेषकर किसी मन्दिर धर्मार्थ संस्था या धार्मिक स्थान की,—उद्यानम् उजड़ा हुआ तथा उपेक्षित बाग,—ज्वरः पुराना बुखार, अधिक दिनों से रहने वाला मन्द ज्वर,—पर्णः कदम्ब वृक्ष,—वाटिका उजड़ी हुई बगीची,—वल्कम् पैकास्तमणि।

जीर्णकः (वि०) [जीर्ण+कन्] करीब-करीब सूखा या मुरझाया हुआ।

जीर्णिः (स्त्री०) [ज+क्तिन्] 1 बुढ़ापा, क्षीणता, कृशता, दुर्बलता 2 पाचन-शक्ति।

जीव् (भ्वा० पर०—जीवति, जीवित) 1 जीना, जीवित रहना —यस्मिञ्जीवति. जीवति बहव सोऽत्र जीवति—पञ्च० १।२३, मा जीवन् य परावज्ञा; स्वदग्धोऽपि जीवति —हि० २।४५, मनु० २।२३५ 2 पुनर्जीवित करना, जीवित होना 3 (किसी वृत्ति के सहारे) रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना (करण० के साथ)—सत्यानृत तु वाणिज्य तेन चैवापि जीव्यते—मनु० ४।६, विशेष ब जीवन् ३।१५२, १६२, ११।२ , कभी कभी सजातीय कर्म के साथ इसी अर्थ में प्रयुक्त -अजिह्मा-मशठा शुद्धा जीवेद् ब्राह्मणजीविकाम्—मनु० ४।११ 4 (आत्म०) आश्रित रहना, जीवित रहने के लिए किसी पर निर्भर करना (अधि० के साथ)—चोरः प्रमत्ते जीवन्ति व्याधितेषु चिकित्सका, प्रमदा कामयानेषु यजमानेषु याचका, राजा विवदमानेषु नित्य मूर्खेषु पण्डिता महा०, प्रेर०—1 फिर जान डालना, 2 पालन पोषण करना, (भोजन द्वारा) पालना, शिक्षित करना, सिखाना पढ़ाना, अति—, 1 जीवित रह जाना 2 जीवन प्रणाली में दूसरों से आगे बढ़ जाना (अधिक ज्ञान से रहना)—अत्यजीवदमरालकेसरी—रघु० १९।१५, अनु -1 लटकना, सहारे निर्भर रहना, जीवित रहना, सेवा करना,—म नु तस्या पाणिग्राहकमनुजीविष्यति—शक० १२२ 2 बिना ईर्ष्या के देखना—या ता श्रियमसूयाम पुरा दृष्ट्वा युधिष्ठिरे, अद्य तामनुजीवाम महा० 3 किसी के लिए जीवित रहना 4 जीवनचर्या में दूसरों के पीछे चलना —रघु० १९।१५, अनु० पा० (अन्वजीवत् या अन्वजीवत्) 5 जीवित रहना, बचा रहना, उद्—, पुनर्जीवित करना, फिर जीवित होना—उदजीवत् सुमित्राम्—भट्टि० १७।९५, उप—, 1 किसी आधार पर जीवित रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना —का वृत्तिमुपजीवत्यार्य., सदाहकवृत्तिमुपजीवामि—मृच्छ० २, श्रेयांस्तमुपजीवेयुर्यंथैव पितर तथा—मनु० ९।१०५, याज्ञ० २।१०१ 2 सेवा करना, आश्रित रहना—शि० ९।३२।

जीव (वि०) [जीव्+क] जीवित, विद्यमान,—व 1 जीवन का सिद्धांत, श्वास, प्राण, आत्मा—गतजीव, जीवत्याग, जीवाशा आदि 2 वैयक्तिक या व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में रहने वाला आत्मा जो कि इस शरीर को जीवन, गति तथा संवेदना देता है ('जीवात्मन्' कहलाता है, विप० 'परमात्मन्' शब्द है) याज्ञ० ३।१३१, मनु० १२।२२, २३ 3 जीवन, अस्तित्व 4 जानवर, जीवधारी प्राणी 5 आजीविका, व्यवसाय 6 कर्ण का नाम, 7. एक मरुत् का नाम 8 'पुष्य' नक्षत्रपुंज। सम०—अन्तक 1 चिड़ीमार, बहेलिया 2 कातिल, हत्यारा,—आत्मन् (पु०) मानव शरीर में रहने वाला आत्मा (विप० परमात्मन्) —आदानम् स्वस्थ रुधिर निकालना, (आयु० में) रुधिर निकलना, —आधानम् जीवन का प्रक्षण - आधार हृदय—इन्धनम् दहकती हुई लकड़ी, जलता हुआ काठ, - उत्सर्ग प्राणोत्सर्ग करना, ऐच्छिक मृत्यु, आत्महत्या,—कर्ण जीवित पशु की ऊन गृहम् मन्दिरम् आत्मा का वासगृह, शरीर,—ग्राह जीवित पकड़ा हुआ कैदी —जीव (जीवञ्जीव भी) चकोर पक्षी,—घ 1 वंश 2 शत्रु, —दशा नश्वर अस्तित्व, -धनम् 'जीवित दौलत' जीवधारी प्राणियों के रूप में सम्पत्ति, पशुधन,—धात्री पृथ्वी, —पति (स्त्री०)—पत्नी वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—पुत्रा,—वत्सा वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित है,—मातृका सात माताएं या देवियाँ जो प्राणियों का पालन पोषण करने वाली मानी जाती हैं (कुमार० धन दानन्दा विमला मगला बला पथा धेनि च विश्रुता। सप्तैता जीवमातृका)- रक्तम् स्त्री का रज आर्तव, —लोक जीवधारी प्राणियों का संसार मर्त्यलोक, प्राणिजगत्—स्वत्प्रयाणं शान्तालोकं सर्वतो जीवलोक - मा० १।३७, जीवलोकतिलक प्रलीयते - २१, इसी प्रकार - स्वप्नेन्द्रजालसदृशं खलु जीवलोक --शा० २।२, भग० ११।७ उत्तर० ४।१७, 2 जीवधारी प्राणी, मनुष्य—दिवस इवाभ्रघनामस्तपात्यये जीवलोकस्य—शि० ३।१२, आलोकमर्कादिव जीवलोक - रघु० ५।५५, —वृत्ति (स्त्री०) पशुपालन, गोरक्षण आदि पालन का रोजगार, शेष (वि०) जिसका केवल जान बची हो, जो सब कुछ छोड़ कर केवल जान लेकर भाग आया हो,—संक्रमणम् जीव का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में जाना,—साधनम् धान्य, अनाज,—साफल्यम् जीवनधारण करने के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति,—सू जीवधारी प्राणियों की माता, वह स्त्री जिसके बच्चे जीवित हों,—स्थानम् 1 जोड़, अस्थिसंधि 2 मर्म, हृदय।

जीवक [जीव्+णिच्+ण्वुल्] 1 जीवधारी प्राणी

2 सेवक 3 बौद्धभिक्षु, भिक्षा के सहारे ही जीवित रहने वाला भिखारी 4 सूदखोर 5 सपेरा 6 बैल।

जीवत् (वि०) (स्त्री०—ती) [जीव्+शतृ] जीवित सजीव। सम० लोका वह स्त्री जिसके बच्चे जिन्दा हों,—पति (स्त्री०)—पत्नी (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—मुक्त (वि०) जीवन्मुक्त, जिसने परमात्मा के सत्यज्ञान से पवित्र होकर भावी जीवन से मुक्ति पा ली है, सांसारिक बन्धनों से मुक्त,—मुक्ति (स्त्री०) इसी जीवन में परममोक्ष की प्राप्ति,—मृत (वि०) जीता हुआ ही मृतक, जो जीता हुआ ही मुर्दे के समान बेकार है, (पागल आदमी या भ्रष्टचरित्र व्यक्ति)।

जीवथ [जीव्+अथ] 1 जीवन, अस्तित्व 2. कछुवा 3 मोर 4 बादल।

जीवन (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव्+ल्युट्] जीवनप्रद, जीवनदाता, प्राणप्रद,—न 1 जीवित आधारी 2 वायु 3 पुत्र,—नम् जिन्दा रहना, अस्तित्व (आल०) त्वमसि मम भूषण त्वमसि मम जीवनम्—गीत० १० 2 जीवन का सिद्धान्त, सजीवनीशक्ति—भग० ७।९ 3 जल—बीजानां प्रभव नमोऽस्तु जीवनाय—कि० १८।३९, या जीवन-जीवन हन्ति प्राणान् हन्ति समीरण—उद्भट 4 आजीविका, वृत्ति, अस्तित्व के साधन (आल० से भी) मनु० ११।७६, हि० ३।३३ 5 पिछले दिन के रक्खे दूध में बनाया गया मक्खन 6 मजा। सम० अन्त मृत्यु, आधानम् विष,—आधार 1 जल में रहना, वरुण का विशेषण, जल की अधिष्ठात्री देवता 2 शरीर,—उपाय आजीविका,—औषधम् 1 अमृत 2 सजीवनी औषध।

जीवनकम् [जीवन+कन्] आहार, भोजन।

जीवनीयम् [जीव्+अनीयर्] 1 जल, 2 ताजा दूध।

जीवन्त [जीव्+झच्] 1 जीवन, अस्तित्व 2 दवाई, औषधि।

जीवन्तिक [=जीवान्तक, पृषो०] बहेलिया, चिड़ीमार।

जीवा [जीव्+अच्+टाप्] 1 जल 2 पृथ्वी 3 धनुष की डोरी—मुहुर्जीवाघोषैर्बधिरयति—महावी० ६।३० 4 धनुष के दो सिरों को मिलाने वाली रेखा 5 जीवन के साधन 6 धातु से बने आभूषणों की झंकार 7 एक पौधा, बच।

जीवातु (पु०, न०) [जीवयत्यनेन—जीव्+आतु] 1 भोजन, आहार 2 प्राण, अस्तित्व 3 पुनर्जीवन, फिर जीवित करना—ते हस्तं दक्षिणं मृतस्य शिशोर्द्विजस्य जीवातवे विष्णुः शुद्धमनाः कृपाणम्—उत्तर० २।१०, पुनर्जीवन दाता औषधि।

जीविका [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जीने का साधन, रोजगार।

जीवित (वि०) [जीव्+क्त] 1. जीता हुआ, विद्यमान, सजीव—रघु० १२।७५ 2 पुनः जीवनप्राप्त 3 जीवन युक्त, अनुप्राणित 4 (काल) जिसमें रहा जा चुका है,—तम् 1. जीवन, अस्तित्व—त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्—उत्तर० ३।२६, कन्येव कुलजीवितम् कु० ६।६३, मेघ० ८३, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—मनु० ६।४५, ७।१११ 2 जीवन की अवधि 3 आजीविका 4 जीवधारी प्राणी। सम०—अन्तक शिव का विशेषण,—आशा जीने की उम्मीद, जीवन से प्रेम,—ईश 1 प्रेमी, पति 2 यम का विशेषण—जीवितेशवशमेति जगन्न सा—रघु० ११।२० (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3 सूर्य 4 चन्द्रमा,—काल जीवन की अवधि,—क्षय प्राणों का त्याग,—संशयः जीवन की जोखिम, प्राणसंकट, जीवन को खतरा—स आतुरो जीवितसंशये वर्तते—वह बुरी तरह से रुग्ण है, उसके प्राण संकट में हैं—मालवि० २।२०।

जीविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव्+इनि] (सामान्यतः समास के अन्त में) 1 जिन्दा, सजीव, विद्यमान—रघु० १।६३ 2 किसी के सहारे जिन्दा रहने वाला—शस्त्र जीविन्, आयुधजीविन्—(पु०) जीवधारी प्राणी।

जीव्या [जीव्+यत्+टाप्] आजीविका के साधन।

जुगुप्सनम्, जुगुप्सा [गुप्+सन्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1 निन्दा, झिड़की 2 नापसन्दगी, अभिरुचि, घृणा, बीभत्सा 3 (अल० शा०) बीभत्स रस का स्थायीभाव परिभाषा इस प्रकार है—दोषेक्षणादिभिर्गर्ह्या जुगुप्सा विषयोद्भवा—सा० द० २०७।

जुष् I (तुदा० आ०—जुषते, जुष्ट) 1 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2 अनुकूल होना, मङ्गलप्रद होना 3 पसन्द करना, अत्यन्त चाहना, प्रसन्नता या खुशी मनाना, सुखोपभोग करना—सत्त्व जुषाणस्य भवाय देहिनाम्—माघ० 4 भक्त होना, अनुरक्त होना, अभ्यास करना, भुगतना, भोगना—पौलस्त्योऽजुषत शुभं विपन्नबन्धुः—भट्टि० १७।११२ 5 प्राप्त जाना दर्शन करना, बसना—जुषन्ते पर्वतश्रेष्ठमाश्रय पर्वसन्धिषु महा० 6 प्रविष्ट होना, बिठाना, आश्रय लेना—रथं च जुजुषे शुभम्—भट्टि० १४।९५ 7 चुनना।

II (स्वा० पर०—चुरा० उभ०—जोषति, जोषयति—ते) 1 तर्क करना, चिन्तन करना 2 जाँचपड़ताल करना, परीक्षा करना 3 चोट पहुँचाना 4 सन्तुष्ट होना।

जुष् (वि०) [जुष्+क्विप्] (समास के अन्त में) पसन्द करने वाला, उपभोग करने वाला, आनन्द लेने वाला—भर्तृ० ३।१०३ 2 दर्शन करने वाला, निकट जाने वाला, पहुँचने वाला, लेने वाला धारण करने वाला

आश्रय लेने वाला आदि –परलोकजुषाम् –रघु० ८।८५, रजोजुषे जन्मनि का० १।

जुष्ट (भू० क० कृ०) [जुष् + क्त] 1 प्रसन्न, संतुष्ट 2 अभ्यस्त, आश्रित, देखा हुआ, सुना हुआ –भग० २।२ 3 सज्जित, सम्पन्न, युक्त।

जुहू (स्त्री०) [हु + क्विप् नि० हित्व दीर्घत्व तारा०] अग्नि में घी की आहुति देने के लिए काठ का बना अर्धचन्द्राकार चम्मच, स्रुवा।

जुहोति [जु + क्तिच्] 'जुहोति' क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञानुष्ठानों का पारिभाषिक नाम, इसमें भिन्न अनुष्ठानों के लिए दूसरा नाम 'यजति' है –आरभ्य सर्वा वैदिक्यो जुहोतियजतिक्रिया –मनु० २।८४ (दे० मेधातिथि तथा दूसरे भाष्यकार, सर्वत्र नारायण जुहोति यज्ञानुष्ठानों को 'उपविष्ट होम' तथा यजति यज्ञानुष्ठानों को 'प्रिष्टहोम' का नाम देते हैं—दे० आश्वलायन —१।२।५ भी)।

जू: (स्त्री०) [जू + क्विप्] 1 चाल 2 पर्यावरण 3 राक्षसी 4 सरस्वती का विशेषण।

जूक [शौक शब्द] तुला राशि।

जूट [जुट् + अच्, नि० ऊठ्वम्] चिपटे हुए तथा मोटी बनाये हुए बालों का समूह—भूतेशस्य भुजङ्गवल्लि-वलयस्पर्शजटा जटा मा० १।२।

जूटकम् [जूट + कन्] बट कर मोटी बनाये हुए बाल, जटा।

जूति स्त्री० [जू + क्तिन्] चाल, वेग।

जूर् (दिवा० आ०—जूर्यते, जूर्ण) 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुंचाना, मारना 2 क्रुद्ध होना (सप्त० के साथ)—भर्तर्यनेकशतके गिर जूर्यते– भट्टि० ११।८ 3 पुराना होना।

जूर्ति (स्त्री०) [ज्वर + क्तिन्, ऊठ्] बुखार, जूडी।

जू (स्वा० पर० जरति) 1 नम्र बनाना, नीचा दिखाना 2 आगे ब० जाना।

जृम्भ, जृम्भ (स्वा० आ०—जृम्भते, जृम्भते, जृम्भित, जृम्भ) 1 उबासी लेना, जमुहाई लेना—मनु० ४।४३ 2 खोलना, विस्तार करना, खिलना (फूल आदि का) –परपुष्टभृतस्वाभ पङ्कज जृम्भतेऽद्य– ऋतु० ३।२२ 3 बढ़ाना, फैलाना, सर्वत्र प्रसार करना –जृम्भता जृम्भनामप्रतिहतप्रसर क्रोधज्योति – वेणी० १, तृष्णे जृम्भसि (पर० अनियमित)—भर्तृ० ३।५ भोग कांक्षि स एव एव परमो विस्फोटिता जृम्भते—३।८० 4 प्रकट होना, उदय होना, अपनी शान दिखाना, दर्शनीय होना व्यक्त होना –सकलयोनेरभिमानभूतमात्मानमाकाय समजृम्भे– कु० ३।२४ 5 आराम में होना 6. (धनुष की भांति) पीछे मुड़ना, पन्टा खाना प्रेर० जमुहाई दिलाना, प्रसार करवाना, उद् , प्रकट होना, उदय होना, फूटना – नै० २।१०५, वि- , जमुहाई लेना, उबासी लेना, मुंह खोलना–व्यजृम्भिषत चापरे–भट्टि० १५।१०८ विजृम्भितमिवान्तरिक्षेण —मृच्छ० ५ 2 खुलना खिलना (फूल आदि का) 3 सर्वत्र फैल जाना, व्याप्त करना, भर देना मुखश्चका मगलतूर्यनि स्वना न केवल मयनि मागधीपते पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि – रघु० ३।१९, १२।७२, रजोन्धकारस्य विजृम्भितस्य ७।४२ 4 उदय होना प्रकट होना, समद् , प्रयत्न करना, हाथपांव मारना, कोशिश करना—व्याल बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धु समुज्जृम्भते —भर्तृ० २।६।

जृम्भ, -भम्, जृम्भनम्, जृम्भा, जृम्भिका [जृम्भ + घञ् ल्युट् वा, जृम्भ + अ-, टाप्, जृम्भा + कन्, इत्वम्] 1 जमुहाई लेना, उबासी लेना 2 खुलना खिलना, विस्तृत होना वनिकाश्चर्यो जृम्भा प्रभवति – का० २५७, जृम्भारम्भप्रविकसदलापाण्डुजालप्रविष्टै —वेणी० २।७, मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी भर्तृ० १।२५ 3 अगड़ाई लेना (अगानि) मुहुर्मुहुर्जृम्भणतन्यराणि —ऋतु० ६।१०।

जॄ (स्वा० दिवा० क्रया० पर० चुरा० उभ० जरति, जीर्यति, जरणति, जारयति –ते, जीर्ण जारित) 1 बूढ़ा होना, जर्जर होना सूखना, मरझाना—जीर्यन्त जीयत देशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यत, जीर्यत्यक्षणी पीत्वे वर्णोका तरुण्यते पद्य० ५।८३, भट्टि० २।४१ 2 नष्ट होना, खो-सी जाना (आल०) यजारोदिव च प्रज्ञा बल शौर्यं-तथाऽजरत् भट्टि० ६।३० जेरतुश्चा दशास्यस्य - १४।११२ 3 पच जाना पक्व जाना - जीर्णमन्न प्रशस्यीयात्– चाण० ७९ उदरे चाजरन्नाये –भट्टि० १५।५०।

जेतृ (पु०) [जि + तृच्] 1 जीतने वाला, विजेता 2 विष्णु का विशेषण।

जेन्ताक (पु०) गरम कमरा जिसमें बैठने पर शरीर में पसीना बहे, शुष्क उष्ण स्नान।

ज्यमनम् [जिम् + ल्युट्] 1 खाना 2 भोजन।

जैत्र (वि०) (स्त्री०) [जेतृ + अण्, स्त्रियां ङीप् च] 1 विजयी, सफल, विजय प्राप्त करने वाला—इदमिद मदनस्य जैत्रमस्त्र विफलमुणातिशय भविष्यतीति—मा० २।५ अनुजैत्र रघुर्दधौ —रघु० ४।५६, १६।७२ 2 बढ़िया, त्र 1 विजयी, विजेता 2 पारा, त्रम् 1 विजय, जीत 2 बढ़ियापन।

जैन [जिन + अण्] जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मत को मानने वाला।

जैमिनि (पु०) प्रख्यात ऋषि और दार्शनिक जिन्होंने दर्शन सम्प्रदाय में 'पूर्वमीमांसा' का प्रणयन किया - मीमांसा-मुनमुख्यमाथ सदमा हसो मुनि जैमिनिम्—पद्य० २।३३।

जैवातृक (वि०) (स्त्री० की) [जीव्+णिच्+आतृ-कन्] 1 दीर्घजीवी, जिसके लिए दीर्घायु की इच्छा की जाय—जैवातृक मनु श्रूयते पतिरस्या—दश० २, दुबला-पतला, कृशकाय क० 1 चन्द्रमा -राजान जनयाम्बभूव सहसा जैवातृक त्वा नु य—भामि० २।७८ 2 कपूर 3 पुत्र 4 दवाई, औषधि 5 किसान।

जैवेय [जीवस्य गुरो अपत्यम् जीव+ढक्] बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि।

जैह्म्यम् [जिह्म+ष्यञ्] टेढ़ापन, धोखा, झूठा व्यवहार।

जोङ्कट [जुङ्कृति अरोचकत्व परित्यजति अनेन—जुङ्क+अटन् नि० गुण] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि, दोहद।

जोटिङ्ग [जुट्+इन्, जोटि+गम्+ड, रिक्तत्वात् मुम्] शिव की उपाधि।

जोष [जुष्+घञ्] 1 सन्तोष, सुखोपभोग, प्रसन्नता, आनन्द 2 चुप्पी,—षम् (अव्य०) 1 इच्छानुसार, आराम से 2 चुपचाप किमिति जोषमास्यते—श० ५, भामि० २।१७।

जोषा, जोषित् (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते—जुष्+घञ्, —टाप् जुष्+इति] स्त्री, नारी—तु० योषा, योषित्।

जोषिका [जुष्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 नई कलियों का समूह 2 स्त्री, नारी।

ज्ञ (वि०) [ज्ञा+क] (समास के अन्त में) 1 जानने वाला, परिचित कार्यज्ञ, निमित्तज्ञ, शास्त्रज्ञ, सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान्—जैसा कि 'अमन्य' में (अपने आपको बुद्धिमान् समझता हुआ), —ज्ञ. 1 बुद्धिमान् और विद्वान पुरुष 2 चैतन्य विशिष्ट आत्मा 3 बुध नक्षत्र 4 मंगल नक्षत्र 5 ब्रह्मा का विशेषण।

ज्ञपित, ज्ञप्त (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] जताया गया, समुचित, स्पष्ट किया गया, सिखाया गया।

ज्ञप्ति (स्त्री०) [ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1 समझ, 2 बुद्धि 3 धारणा।

ज्ञा (क्रया० उभ० जानाति, जानीते, ज्ञात) 1 जानना (सब अर्थों में) सीखना, परिचित होना -मा ज्ञासीस्त्व मुखी रामो यदकार्षीत् स रक्षसाम्—भट्टि० १५।९, 2 जानना, जानकार होना, परिचित या विज्ञ होना ज्ञाने तपसा दोषम्—श० २।१, जानन्नपि हि मेधावी अहवल्लोक आचरेत्—मनु० २।११०, १२३, ७।१४८ 3 मालूम करना, निश्चय करना, खोज करना—कार्यता क क कार्यार्थीति -मृच्छ० ९ 4 समझना, जानना, अवबोध करना महसूस करना, अनुभव करना—जैसा कि दुःखज्ञ, सुखज्ञ आदि में 5 पराक्षण करना, जाच करना, वास्तविक चरित्र जानना -आपत्सु मित्र जानीयात्—हि० १।७२, चाण० २१ 6 पहचानना -त्व दृष्ट्वा न पुनर्लक्ष्ये ज्ञास्यसे कामचारिन्—मेघ० ६३ 7 लिहाज करना, खयाल करना, मान करना —जानामि त्वा प्रकृतिपुरुष कामरूप मघोन—मेघ० ६ 8 काम करना, व्यस्त करना (सप्त० के साथ) सर्पिषो जानीते—सिद्धा०—वह घी से अपने आपको यज्ञ में व्यस्त करता है (सर्पिषा-सर्पिष)—प्रेर०—(ज्ञापयति, ज्ञपयति) 1. घोषणा करना, सूचित करना, जतलाना, ज्ञात करना, अभिसूचित करना 2 निवेदन करना, कहना (आ०)—सन्नन्त—जिज्ञासते, जानने की इच्छा करना, खोजना, निश्चय करना—रघु० २।२६, भट्टि० ८।३३, ४।९१, अनु—, अनुमति देना, इजाजत देना, स्वीकृति देना, 'हाँ' करना सहमत होना, स्वीकार कर लेना—अनुजानीहि मा गमनाय—उत्तर० ३ 2 सगाई करना, विवाह में वचनबद्ध होना, वचन देना (विवाह में)—मा जातमात्रा धनमित्रनाम्नेऽन्य-जानाद्भार्या मे पिता—दश० ५० 3 क्षमा करना, माफ करना 4 प्रार्थना करना 5 अपनाना अप—, छिपाना, गुप्त रखना, इनकार करना, मुकरना (आ०) आत्मानमपजानीते—सिद्धा०, आत्मानमपजानान शशमात्रोऽन्यदिनम्—भट्टि० ८।२६, अभि० 1 पहचानना—नाम्यजानान्नल नृपम्—महा० 2 जानना, समझना, परिचित होना, जानकार होना—भग० ४।१४, ७।१३, १८, ५५ 3 ध्यान रखना, खयाल रखना, मानना 4 मान लेना, स्वीकार कर लेना, अव—, तुच्छ समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना, अपेक्षा करना -अवजानासि मा यस्मात्—रघु० १।१७, भट्टि० ३।८, भग० ९।११, आ—, जानना, समझना, खोजना, निश्चय करना (प्रेर०) आज्ञा देना, आदेश देना, निर्देश देना 2 विश्वास दिलाना 3 विसर्जित करना, जाने के लिए छुट्टी देना, परि—, जानकार होना, जानना, परिचित होना—वृषभोऽयमिति परिज्ञाय -पञ्च० १, मनु० ८।१२६ 2 खोजना निश्चय करना—सम्यक् परिज्ञाय—पञ्च० १ 3 पहिचानना—तपस्विभि कैश्चित् परिज्ञातोऽस्मि—श० २, प्रति—(आ०) 1 प्रतिज्ञा करना—हरचापारोपणेन कन्यादान प्रतिजानीते—प्रसन्न० ४, भट्टि० ८।२६, ६४, मनु० ९।९९ 2 पुष्ट करना, 3 बताना, अभिपुष्टि करना, दावा करना, वि—, 1 जानना, जानकार होना भर्तृ० ३।२१ 2 सीखना, समझना, जान लेना 3 निश्चय करना मालूम करना 4 लिहाज करना, मान लेना, खयाल करना (प्रेर०) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप० —आज्ञापयति) —आर्यपुत्र अस्ति मे विज्ञाप्यम्—(राम) ननु आज्ञापय—उत्तर० १, रघु० ५।२० 2 समाचार देना, सूचना देना 3 कहना, बतलाना, सम्—, (आ०) जानना, समझना, जानकार होना 2 पहचानना 3 मेलजोल से रहना, परस्पर सहमत

होना (कर्म० या करण० के साथ)—पित्रा पितरं वा सजानीते—सिद्धा० 4 रखवाली करना, खबरदार रहना - भट्टि० ८।२७ 5 राजी होना, सहमत होना 6 (पर०) याद करना, सोचना—मातु मातरं वा सजानामि - सिद्धा० (प्रेर०) सूचना देना।

ज्ञात (वि०) [ज्ञा+क्त] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ, समवधारित दे० 'ज्ञा' ऊपर। सम० - **सिद्धान्त** पूर्णरूप से शास्त्रों में निष्णात।

ज्ञाति [ज्ञा+क्तिन्] 1 पैतृक सबंध, पिता, भाई आदि, एक ही गोत्र के व्यक्ति (समष्टि रूप में) 2 बन्धु, बान्धव 3 पिता। सम० - **भाव** सबंध, रिश्तेदारी, —**भेद**, सदस्यों में फूट, **विद्** (वि०) जो निकटस्थ व्यक्तियों में संबंध जोड़ता है।

ज्ञातेयम् [ज्ञाति | ढक्] संबंध, रिश्तेदारी।

ज्ञातृ (पु०) [ज्ञा+तृच्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 परिचित व्यक्ति 3 उपमान, प्रतिमा।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] 1 जानना, समझना, परिचित होना, प्रवीणता—साङ्ख्यस्य योगस्य च ज्ञानम्—मा० १।७ 2 विद्या, शिक्षण—बुद्धिज्ञानेन शुध्यति—मनु० ५।१०९, ज्ञाने मौनं क्षमा शस्त्रे—रघु० १।२२ 3 चेतना, संज्ञान, जानकारी - ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि मनु० ८।२८८, जाने अनजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4 परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सचाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानने तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिखलाता है (विप० कर्म) तु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३।३ 5 बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा की इन्द्रिय। सम० - **अनुत्पाद** अज्ञान, मूर्खता, **आत्मन्** (वि०) सर्वविद्, बुद्धिमान्,—**इन्द्रियम्** प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय (यह पाँच हैं त्वचा, रसना, चक्षु, कर्ण, और घ्राण, 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द को देखो 'इन्द्रिय' के नीचे),—**काण्डम्** वेद का आलंकारिक या रहस्यवाद विषयक भाग जिसमें वास्तविक आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान का उल्लेख है इसके विपरीत संस्कारों का ज्ञान (कर्मकाण्ड) भी वेद में निहित है,—**कृत** (वि०) जानबूझ कर या इरादतन किया हुआ,—**गम्य** (वि०) समझ के द्वारा जानने योग्य,—**चक्षुस्** (नपु०) बुद्धि की आँख, मन की आँख, बौद्धिक स्वप्न (विप० चर्म चक्षुस्)—सर्वं तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा—मनु० २।८, ४।२४, (पु०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष,—**तत्त्वम्** वास्तविक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, - **तपस्** (नपु०) सत्यज्ञान की प्राप्ति रूप तपस्या, ह गुरु, वा सरस्वती का विशेषण, —**दुर्बल** (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है, - **निश्चय**, निश्चिति, निश्चयीकरण, **निष्ठ**(वि०)सच्चे आत्मज्ञान को प्राप्त करने पर तुला हुआ,—**योग** आत्मज्ञानी, दार्शनिक—**मोक्ष** सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त करने या परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन, - **चिन्तन**, विचारणा,—**शास्त्रम्** भविष्य कथन का शास्त्र,—**साधनम्** 1 सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2 प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय।

ज्ञानत (अव्य०) [ज्ञान+तसिल्] ज्ञान पूर्वक, जानबूझकर, इरादतन।

ज्ञानमय (वि०) [ज्ञान+मयट्] 1 ज्ञानयुक्त, चिन्मय —इतरो दहने स्वकर्मणा बबृते ज्ञानमयेन वह्निना —रघु० ८।२० 2 ज्ञान से भरा हुआ,—**य** 1 परमात्मा 2 शिव की उपाधि।

ज्ञानिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [ज्ञान+इनि] 1 प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् (पु०) 1 ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 2 ऋषि, आत्मज्ञानी।

ज्ञापक (वि०) [ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] जतलाने वाला, सिखाने वाला, सूचना देने वाला, संकेतक, **क** 1 अध्यापक 2 संमादेशक, स्वामी, **कम्** (दर्शन० में) सार्थक उक्ति, व्यंजनात्मक नियम, (यहाँ उन शब्दों से अभिप्राय है जो अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा भी नियमों के संबंध में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं)।

ज्ञापनम् [ज्ञा+णिच्+ल्युट्] जतलाना, सूचना देना, सिखलाना, घोषणा करना, संकेत देना।

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] जतलाया गया, सूचित किया गया, घोषित किया गया, प्रकाशित।

ज्ञीप्सा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा।

ज्या [ज्या+अङ्+टाप्] 1 धनुष की डोरी—विश्राम लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनु—श० २।६, रघु० ३।५९, ११।१५, १२।१०४ 2 चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा 3 पृथ्वी 4 माता।

ज्यानि (स्त्री०) [ज्या+नि] 1 बुढ़ापा, क्षय 2 छोड़ना, त्यागना 3 दरिया, नदी।

ज्यायस् (स्त्री०—सी) [अयमनयोरतिशयेन प्रशस्य वृद्धो वा+ईयसुन्, ज्यादेश] 1 आयु में बड़ा, अधिकतर वयस्क—प्रसवक्रमेण स किल ज्यायान्—उत्तर० ६ 2 दो में बढ़िया श्रेष्ठतर, योग्यतर—मनु० ४।८, ३।१३७, भग० ३।१, ८ 3 महत्तर, बृहत्तर 4 (विधि में) जो अवयस्क न हो अर्थात् वयस्क या अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी।

ज्येष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वृद्ध प्रशस्यो वा+इष्ठन्, ज्यादेश] 1 आयु में सब से बड़ा, जेठा 2 श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम 3 प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम,—**ष्ठ** 1 बड़ा भाई, रघु० १२।१९, ३५ 2 चान्द्रमास (ज्येष्ठ का महीना), - **ष्ठा** 1 सबसे बड़ी बहन 2 १८

वां नक्षत्र पुंज (तीन तारों वाला) 3 बिचली अंगुली 4 छोटी छिपकली 5 गंगा नदी का विशेषण। सम०—अंशः 1 सबसे बड़े भाई का भाग 2 सबसे बड़े भाई का पैतृक संपत्ति में वह भाग जो सबसे बड़ा होने के कारण उसे मिले 3 सर्वोत्तमभाग,—अम्बु (नपु०) 1 अनाज का धोवन 2 माड़ (चावलों का),—आश्रमः 1 ब्राह्मण अथवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम या सर्वोत्तम आश्रम 2 गृहस्थ,—तातः पिता का बड़ा भाई, ताऊ,—वर्णः सर्वोच्च जाति, ब्राह्मण जाति,—वृत्तिः बड़ों का कर्तव्य,—स्वसृः (स्त्री०) बड़ी बहन।

ज्येष्ठ. [ज्येष्ठा+अण्] वह चांद्रमास जिसमें पूर्ण चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्रपुंज में स्थित होता है, जेठ का महीना (मई-जून),—ष्ठी 1 ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा 2 छिपकली।

ज्यो (भ्वा० आ०—ज्यवते) 1 परामर्श देना, नसीहत देना 2 (व्रत आदि) धार्मिक कर्तव्य का पालन करना।

ज्योतिर्मय (वि०) [ज्योतिस्+मयट्] तारों से युक्त, ज्योति से भरा हुआ, द्युतिमय—रघु० १५।५९, कु० ६।३।

ज्यौतिष (वि०) (स्त्री० -षी) [ज्योतिस्+अच्] 1 गणित या फलित ज्योतिष,—षः 1 गणक, दैवज्ञ 2 छः वेदाङ्गों में से एक (गणित ज्योतिष पर एक ग्रन्थ)। सम०—विद्या गणित अथवा फलित ज्योतिर्विज्ञान।

ज्योतिषी, ज्योतिष्कः [ज्योतिस्+ङीष्, ज्योति इव कायति—कै+क] ग्रह, तारा नक्षत्र।

ज्योतिष्मत् (वि०) [ज्योतिस्+मतुप्] 1 आलोकमय, तेजस्वी देदीप्यमान, ज्योतिर्मय—नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रि—रघु० ६।२२ 2 स्वर्गीय—(पुं०) सूर्य,—ती 1 रात्रि (तारों से प्रकाशमान) 2 (दर्शन० में) मन की सात्त्विक अवस्था अर्थात् शान्त अवस्था।

ज्योतिस् (नपु०) [द्योतते द्युत्यते वा—द्युत्+इसुन् दस्य जादेश] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति ज्योतिरेकं जगाम—शि० ५।३०, रघु० २।७५, मनु० ५ 2 ब्रह्म-ज्योति, वह ज्योति जो ब्रह्म का रूप है—भग० ५।२४, १३।१७ 3 बिजली 4 स्वर्गीय पिण्ड, ज्योति (ग्रह, नक्षत्र आदि)—ज्योतिर्भरद्वाजश्चित्र त्रियामा—कु० ७।२१, भग० १०।२१, हि० १।२१ 5 देखने की शक्ति 6 आकाशीय संसार—(पुं०) 1 सूर्य 2 अग्नि। सम०—इङ्गण, —इङ्गिण जुगनू,—कणः अग्नि की चिनगारी, गण समष्टिरूप से खगोलीय पिण्ड,—चक्रम् राशिचक्र, —ज्ञ गणक, दैवज्ञ,—मण्डलम् तारकीय मण्डल, रथ (ज्योतीरथ) ध्रुव तारा,—विद् (पुं०) गणक या दैवज्ञ,—विद्या,—शास्त्रम् (ज्योतिश्शास्त्रम्) गणित ज्योतिष या नक्षत्रविद्या, फलितज्योतिष।

ज्योत्स्ना [ज्योतिरस्ति अस्याम्—ज्योतिस्+न, उपधालोप] 1 चन्द्रमा का प्रकाश—स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलिततले क्वापि पुलिने—भर्तृ० ३।४२, ज्योत्स्नावता निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४ 2 प्रकाश। सम०—ईशः चांद, —प्रियः चकोर पक्षी,—हृत् दीर्घ दीपाधार।

ज्योत्स्नी [ज्योत्स्ना अस्ति अस्य—ज्योत्स्ना+अण्+ङीप्] चांदनी रात।

ज्यौ. [ग्रीक शब्द] बृहस्पति नक्षत्र।

ज्यौतिषिक [ज्योतिष+ठक्] खगोलवेत्ता, गणक, दैवज्ञ या ज्योतिषी।

ज्यौत्स्न [ज्योत्स्ना+अण्] शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (भ्वा० प० ज्वरति, ज्वर्ण) बुखार या आवेश से गर्म होना, ज्वरग्रस्त होना 2 रुग्ण होना।

ज्वर [ज्वर्+घञ्] 1 बुखार, ताप, (आयु० में) बुखार की गर्मी—स्वेदमानज्वर प्राज्ञ कोऽभ्यसूया परिपिञ्जति शि० २।५४ (आल० भी) दर्पज्वर, मदनज्वर, मदज्वर आदि 2 आत्मा का बुखार, मानसिक पीड़ा, कष्ट, दुःख, रज, शोक—व्येतु ते मनसो ज्वरः—रामा०, मनसस्तदुपस्थिते ज्वरे—रघु० ८।८४, भग० ३।३७। सम०—अग्निः बुखार का वेग या तेजी,—अङ्कुशः ज्वरप्रशामक, बुखार कम करने वाला,—प्रतीकारः, बुखार का इलाज, ज्वर प्रशामक औषधि।

ज्वरित, ज्वरिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [ज्वर+इतच्, इनि वा] ज्वराक्रान्त ज्वरग्रस्त।

ज्वल् (भ्वा० पर० ज्वलति, ज्वलित) 1 तेजी से जलना, दहकना, दीप्त होना, चमकना,—ज्वलति चलितेन्धनोऽग्नि रुः ६।३७, कु० ५।३७ 2 जल जाना, जल कर भस्म हो जाना, (आग से) कष्टग्रस्त होना अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ज्वलति न मा मलयजपवनेन—गीत० ७ 3 उत्सुक होना, उत्तेजित होना, जज्वाल लोकस्थितये स राजा—भट्टि० १।४, प्रेर० ज्वलयति-ते, ज्वालयति-ते 1 आग लगाना, आग जलाना 2 देदीप्यमान करना, रोशनी करना, प्रकाश करना—ककुभां मुखानि सहसोज्ज्वलयन्—शि० ९।४२, त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने—गीत० ६, प्र—, तेजी से जलना, जाज्वल्यमान होना—रणाङ्गणे प्रज्वलन्तु—भट्टि० १४।९८, (प्रेर०)—1 जलाना, आग सुलगाना 2 चमकाना, रोशनी करना।

ज्वलन (वि०) [ज्वल्+ल्युट्] 1 दहकता हुआ, चमकता हुआ 2 ज्वलनशील,—नः 1 आग—तदनु ज्वलनमर्पित त्वरयेदक्षिणवातवीजनैः—कु० ४।३६, ३२, भग० ११।२९ 2 तीन की संख्या,—नम् जलना, दहकना, चमकना। सम०—अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वलित (वि०) [ज्वल्+क्त] 1 दग्ध, जला हुआ, प्रकाशित 2 प्रदीप्त, प्रज्वलित।
ज्वाल: [ज्वल्+घञ्] 1 प्रकाश, दीप्ति 2 मशाल।
ज्वाला [ज्वाल+टाप्] 1 अग्निशिखा, लौ, लपट—रघु० १५।२६ भर्तृ० १।९५। सम०—जिह्व:,—मुख: आग—मुखी लावा निकलने का स्थान,—ध्वज: शिव का विशेषण।
ज्वालिन् (पु०) ज्वल्+णिनि] शिव का विशेषण।

झ

झ [झट्+ड] 1 समय का बिताना 2 झन झन, खनखन या इसी प्रकार की कोई और ध्वनि 3 झञ्झावात 4 बृहस्पति।
झगझगायति (ना० धा० पर०) चमक उठना, दमकना, जगमगाना, चमचमाना।
झट (टि) ति (अव्य०) [=झटिति] जल्दी से, तुरन्त—झाड्यप्सरा झगित्यासीत्तद्रूपाकृष्टलोचना—महा०।
झङ्कार:, झङ्कृतम् [झमिति अव्यक्तशब्दस्य कार—कृ+घञ्, कृ+क्त वा] झनझनाहट, भिनभिनाना—(अय) दिगन्तानातेने मधुपकुलझङ्कारभरितान्—भामि० १।२३, ४।२९, भर्तृ० १।९, अमरु ४८, पञ्च० ५।५३।
झङ्कारिणी [झङ्कार+इनि+ङीप्] गङ्गा नदी।
झङ्कृति [झम्+कृ+क्तिन्] खनखनाहट या झनझनाहट, (धातु के बने आभूषणों की ध्वनि जैसी ध्वनि)।
झञ्झनम् [झञ्झ+ल्युट्] 1 आभूषणों की झनझन या खनखन 2 खड़बड़ाहट या टनटन की ध्वनि।
झञ्झा [झमिति अव्यक्तशब्दं कृत्वा झटिति वेगेन वहति—झम्+झट्+ड+टाप्] 1 हवा के चलने या वर्षा के होने का शब्द 2 हवा और पानी, तूफान, आँधी 3 खनखन की ध्वनि, झनझन। सम०—अनिल, —मरुत्, —वात वर्षा के साथ आँधी, तूफान, प्रभञ्जक, अन्यद—झञ्झावात मवृष्टिकं—अमर० हिमम्लझञ्झानिलविह्वलस्य (पद्मस्य)—भामि० २।६९, अमरु ४८ मा० ९।१७।
झटिति (अव्य०) [झट्+क्विप्, इ+क्तिन्] जल्दी से तुरन्त—मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति अश्यद्दृशोदृश्यताम् भर्तृ० १।९६, ७०।
झणझणम्, -णा [झणत्+टाप्, द्वित्व, पूर्वपदटिलोप] झनझनाहट।
झणझणायित (वि०) [झणझण+क्यङ्+क्त] टनटन, झनझन, टनटन करना—उत्तर० ५।५।
झण(ण)त्कार [झण(ण)त्+कृ+घञ्] झनझन, टनटन, (धातु से बने आभूषण आदि का) झुनझुनाना, खनखनाना,—झणत्कारक्रूरक्वणितगुणज्यूढजदृगुरुधनुर्घृतप्रेमा बाहु उत्तर० ५।२६, उद्वेजयति दरिद्र परमुद्रागणनझणत्कार—उद्भट।
झम्प, झम्पा [झम्+पत्+ड, स्त्रियां टाप् च] उछल, कूद छलांग—महावी० ५।६२।
झम्पाक, झम्पाड, झम्पिन् (पु०) [झम्पेन अकतिगच्छति—झम्प+अक्+अण्, झम्प+आ+रा+डु, झम्पा+इनि वा] बन्दर, लङ्गूर।
झर; झरा, झरी [झृ+अच्, स्त्रियां टाप्, ङीष् च] प्रपातिका, झरना, निर्झर, नदी—प्रत्यग्रक्षतजझरीनिवृतपाद—महावी० ६।१८, भामि० ४।३७।
झर्झर: [झर्झ+अरच्] 1 एक प्रकार का ढोल 2 कलियुग 3 बेंत की छड़ी 4 झाझ, मजीरा,—रम् वेश्या वारांगना।
झर्झरिन् (पु०) [झर्झर+इनि] शिव का विशेषण।
झलज्झला [झलज्झल इत्यव्यक्त शब्दं अस्त्यत्र—अच्+टाप्] बूंदों के गिरने का शब्द, झड़ी, हाथी के कान की फड़फड़ाहट।
झला [=झरा पृषो०] 1 खिड़की, खुली 2 धूप, चिलचिलाती धूप, चमक।
झल्ल [झर्झ+क्विप्, त लाति-ला+क] 1 मल्लयोद्धा 2 एक नीच जाति—मनु० १०।२२, १२।४५,—ल्ली ढोलकी।
झल्लकम्,—की [झल्ल+कन्, स्त्रियां ङीष् च] झाझ, मजीरा।
झल्लकपठ: [ब० स०] कबूतर।
झल्लरी [झर्झ+अरच्+ङीष् पृषो०] झाँझ, मजीरा।
झल्लिका [झल्ली+कै+क, पृषो०] 1 उबटन आदि के लगाने से शरीर से छूटा हुआ मैल 2 प्रकाश, चमक, दमक।
झष [झष्+अच्] 1 मछली झषाणां मकरश्चास्मि—भग० १०।३१, तु० नी० दिये गये 'झषकेतन' आदि शब्दों से 2 बड़ी मछली, मगरमच्छ 3 मीन राशि 4 गर्मी, ताप,—षम् मरुस्थल, सुनसान जङ्गल। सम०—अङ्क, -केतन,—केतु,—ध्वज: कामदेव—स्त्रीमुद्रा झषकेतनस्य—पञ्च० ४।३४,—भक्षक: सूंस,—उदरी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।
झाङ्कृतम् [झङ्कृत+अण्] 1 झनझन, पायजेब 2 (जल के गिरने की) आवाज, छपछप का शब्द—स्थाने स्थाने मुखरकलुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम्—उत्तर० २।१४।

झाटः [झट्+घञ्] 1 पर्णशाला, लतामण्डप 2 कान्तार, वृक्षों का झुरमुट।
झिंटिः—टी (स्त्री०) [झिम्+रट्+अच्+ङीष् पृषो०] एक प्रकार की झाड़ी।
झिंटिका [झिंटि+कै+क+टाप्] झींगुर।
झिल्लिः (स्त्री०) [झिरिति अव्यक्तं शब्दं लगति —झिर्+लिस्+डि] 1 झींगुर 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र।
झिल्लिका [झिल्लि+कन्+टाप्] 1 झींगुर 2 धूप का प्रकाश, चमक, दीप्ति।
झिल्ली (स्त्री०) [झिल्लि+ङीष्] 1 झींगुर 2 बंशी की बत्ती 3 प्रकाश, चमक। सम०—कण्ठ पालतू कबूतर।
झींटका (स्त्री०) झींगुर।
झुण्ड [लुण्ट्+अच्, पृषो०] 1 वृक्ष, बिना तने का पेड़ 2 झाड़ी, झाड़-झंखाड़।
झोट (पु०) सुपारी का पेड़।

ट

टङ्क् (चुरा० उभ०—टङ्कयति-ते, टङ्कित) 1 बांधना, कसना, जकड़ना 2 टेकना, उद्—1 खोलना, खुरचना 2 छिद्र करना, सूराख करना।
टङ्क,—कम् [टङ्क्+घञ्, अच् वा] 1 कुल्हाड़ी, कुठार, टांकी (पत्थर काटने या गढ़ने के छेनी) —टङ्कोत्कीर्णशिलागृहेव विदर्भराजाना—मृच्छ० १।२०, रघु० १२।८० 2 तलवार 3 भाला 4 कुल्हाड़ी की धार के आकार की चोटी, पहाड़ी की ढाल या ढलाव—भट्टि० १।८ 5 क्रोध 6 घमंड 7 पैर, —का पैर, लात।
टङ्कक [टङ्क+कन्] चांदी का सिक्का। सम०—पति टकसाल का अध्यक्ष, —शाला टकसाल।
टङ्कणम् (नपुं०) [टङ्क+ल्युट्] सोहागा,—ण (पुं०) 1 घोड़े की एक जाति 2 एक देश विशेष के निवासी। सम०—क्षारः सोहागा।
टङ्कारः [टम्+ङ+घञ्] 1 धनुष की डोर खींचने से होने वाली ध्वनि 2 गुर्राना, चिल्लाना, चीत्कार, चीख।
टङ्कारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [टङ्कार+इनि] टंकार करने वाला, फूत्कार या सीत्कार करने वाला; झंकार करने वाला—टङ्कारिचापमनु रुद्धशरप्रतत्यधनुरुद्धितशरम्—अस्व० १।
टङ्किका [टङ्क+कन्+टाप्, इत्वम्] टांकी, कुल्हाड़ी विक्रमांक० १।१५।
टङ्गः,—गम् [=टङ्क पृषो०] कुदाल, खुर्पा, कुल्हाड़ी।
टङ्गुकः,—कम् [=टङ्कुक पृषो०] सोहागा।
टङ्गा [टङ्ग+टाप्] टांग, लात, पैर।
टहरी [टहेति शब्दं राति-रा+क+ङीष्] 1 एक प्रकार का वाद्ययंत्र 2 परिहास, ठट्ठा।
टाङ्कार [टङ्कार+अण्] झंकार, टंकार।
टिक् (भ्वा०—आ० टेकते) जाना, चलना-फिरना।
टिटि(ट्टि)भः (स्त्री०—भी) [टिटि(ट्टि)इत्यव्यक्तशब्दं भणति-टिटि(ट्टि)+भण्+ड] टिटिहिरी पक्षी, —उत्क्षिप्य टिट्टिभः पादावास्ते भङ्गभयादिव पंच० १।३१४, मनु० ५।११, याज्ञ० १।१७२, (टिट्टिभक' भी)।
टिप्पनी(नी) [टिप्+क्विप्, टिप्पा पन्यते स्तूयते टिप्+पन्+अच्+ङीष् पृषो० पत्व वा] भाष्य, टीका। (कभी कभी 'भाष्य' पर लिखी गई 'व्याख्या' के लिए भी—उदा० महाभाष्य पर कैयट की व्याख्या या टीका या कैयट के भाष्य पर नागोजी भट्ट की टीका या भाष्य)।
टीक् (भ्वा० आ०—टीकते) चलना-फिरना, जाना, सहारा, देना—कथमार्या कृतमालमुद्गतदलं कोपष्टिकण्टीकते मा० ९।७, —आ—, जाना, चलना-फिरना, इधर-उधर घूमना—आटीकसेऽङ्ग करिघोटीपदातिजुषि वाटीभुवि क्षितिभुजाम्—अस्व० ५।
टीका [टीक्यते गम्यते, ग्रन्थार्थोऽनया—टीक्+क+टाप्] व्याख्या, भाष्य—काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथाप्येष तथैव दुर्गम।
टुण्टक (वि०) [टुण्टु इति अव्यक्तशब्दं कायति-टुण्टु+कै+क] 1 छोटा, ओछा 2 दुष्ट, क्रूर, नृशंस 3 कठोर।

ठ

ठ (पु०) (धातु के बने बर्तन के सीढ़ियों में से गिरते हुए ध्वनि जैसी) अनुकरणात्मक ध्वनि—रामाभियेके मदविह्वलाया कक्षाच्युतो हेमघटस्तरुण्या, सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठठं ठठं ठठं ठठं ठठं—सुभा०।
ठक्कुरः (पु०) 1 मूर्ति, देवमूर्ति 2 पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि—उदा० गोविन्द ठक्कुर (काव्य प्रदीप के रचयिता)।
ठाक्किनी (स्त्री०) तलवार, करधनी।

डक्कः [ड+क्क+क] एक घृणित और मिश्रित जाति, डोम।

डमरः [डम्+अच्=मरम्, डेन त्रासेन मर पलायनम्, त० त०] 1 झगड़ा, फसाद, दंगा 2 भावभंगिमा और ललकारों से शत्रु को भयभीत करना,—रम् डर के कारण भाग जाना, भगदड़।

डमरुः [डमित्यव्यक्तशब्दम् रुणद्धि डम्+रु+कु] एक प्रकार का बाजा, डुगडुगी (इस वाद्ययन्त्र को प्रायः कापालिक साधु बजाया करते हैं) [कभी कभी नपुं० भी माना जाता है]।

डम्ब् (चुरा० उभ०- डम्बयति-ते) 1 फेंकना, भेजना 2 आदेश देना 3 देखना, वि—, अनुकरण करना, नकल करना, तुलना करना। (त) ऋतुर्विडम्बयामास न पुनः प्राप तत्क्रियम् —रघु० ४।१७। वपुः प्रकर्षेण विडम्बितेश्वर—३।१२, १३।२९, १६।११, कि० ५।४६ १२।३८, शि० १।६, १२।५ 2 हँसी उड़ाना, अवहास करना, खिल्ली उड़ाना—सम्मोहयन्ति, मदयन्ति विडम्बयन्ति निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति—भर्तृ० ३।२२, यथा न विडम्ब्यसे जनैः —का० १०९ 3 ठगना, धोखा देना—एवमात्माभिप्रायमात्रविहितेष्टजनचित्तवृत्ति प्रार्थयिता विडम्ब्यते—श० २ 4 कष्ट देना, पीड़ा देना।

डम्बर (वि०) [डम्ब्+अरन्] प्रसिद्ध, विख्यात, र० 1 समवाय, संग्रह, ढेर—मा० ९।१६ 2 दिखावा, टिम टाम 3 सादृश्य, समानता, आभास 4 घमण्ड, अहंकार।

डम्भ् (चुरा० उभ०- डम्भयति-ते) इकट्ठा करना।

डयनम् [डी+ल्युट्] 1 उड़ान 2 डोली, पालकी।

डवित्थः (पु०) काठ का बारहसिंहा।

डाकिनी [डाय भयदानाम अकति व्रजति र; अक्+इनि+ङीप्] पिशाचिनी, भूतनी।

डाङ्कृतिः (स्त्री०) [डाम् -कृ+क्विन्] पणव के बजने की ध्वनि, डिङ्कृ-डाङ्कृ आदि।

डामर (वि०) [डमर+अण्] 1 डरावना, भयावह, भयानक पर्याप्त मधि रणेऽडामरस्य सबले गगनतलप्रमाणवेग मा० ५।३ 2 दंगा करने वाला, हुड़दङ्गी 3 सूरत शक्ल में मिलता-जुलता, अनुरूप (अर्थात्, मनोहर, सुन्दर)—त्रिगलिते लुलिते कुसुमानि शिखण्डकडामरे (चिकुरे)—गीत० १२,—रः, 1 हाहल्ला, हुल्लड़, दंगा, फसाद 2 उत्सव के अवसर पर चहल-पहल, लड़ाई झगड़े के अवसर पर खलबली, हलचल।

डालिमः [=दाडिम, पृषो०] अनार।

डाहलः (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासी कीर्तिः समाहिलष्यति डाहलावनीम् विक्रमाङ्क० १।१०३।

डिङ्गरः (पु०) 1 सेवक 2 बदमाश, ठग, धूर्त 3 पतित या नीच आदमी।

डिण्डिमः [डिडीति शब्दं माति—डिण्डि+मा+क] एक प्रकार का छोटा ढोल (आल० भी) इति घोषयतीव डिण्डिमः —हि० २।८६ मुखरयन्त्र इवो नवडिण्डिमम् —नै० ४।५३, अमरु २८, चण्डि रविरसनारब्धडिण्डिम-मभिसर सरसमलज्ज गीत० ११, आर्यबालचरित-प्रस्तावनाडिण्डिम — महावी० १।५४।

डिण्डी (डि) र० [डिण्डि+र पक्षे ङीष्] 1 असीरोपी का भीतरी कवच, जो समुद्रफेन की भाँति काम में लाया जाता है 2 झाग — उद्दण्डतेन डिण्डीरे पिण्डपाण्डुरितरदयन विक्रमाङ्क - ४।६४, २।४।

डिम [डिम्+क] दस प्रकार के नाटकों में से एक—मायेन्द्रजालसङ्ग्रामक्रोधाद् भ्रान्त्यादिवेष्टित, उपरागग्रह भूयिष्ठो डिम ख्यातोऽतिवृत्तक सा० द० ५१७।

डिम्ब [डिम्+घञ्] 1 दंगा, फसाद 2 कोलाहल, भय के कारण चीत्कार 3 छोटा बच्चा या छोटा जानवर 4 अंडा 5 गोला, गेंद, पिण्ड। सम—आहव, —युद्धम् मामूली लड़ाई, (बिना शस्त्र प्रयोग के) झड़प, खटपट, मुठभेड़, झूठमूठ की लड़ाई—मनु० ५।९५।

डिम्बिका [डिम्ब्+ण्वुल्—टाप्, इत्वम्] 1 कामुकी स्त्री, 2 बुलबुला।

डिम्भ [डिम्ब्+अच्] 1 छोटा बच्चा 2 कोई छोटा जानवर जैसे शेर का बच्चा, —जृम्भस्व रे डिम्भ दन्तास्ते गणयिष्यामि —श० ७ 3 मूर्ख बुद्धू।

डिम्भक (स्त्री०—भिका) [डिम्भ्+ण्वुल् स्त्रियां टाप् इत्वं च] 1 एक छोटा बच्चा 2 जानवर का छोटा बच्चा।

डी (भ्वा० दिवा० आ०- डयते, डीयते, डीन) 1 उड़ना, हवा में से गुजरना 2 जाना, उड़—, हवा में उड़ना, ऊपर उड़ना—सर्वेऽडडीयताम्—हि० १ (हंसे) उड्डीयत वंकुलालकस्थदाडिमस्य विकस्वरम्स्वरं — नै० ७।५, प्र—, ऊपर उड़ना हर्म्ये प्रडीनेरिव — मृच्छ० ५।५, प्रोद्—, ऊपर उड़ जाना प्रोड्डीयेव बलाकया सरभस सोत्कण्ठमालिङ्गित —२१।

डीन (भू० क० कृ०) [डी+क्त] उड़ा हुआ,— वह पक्षी की उड़ान, पक्षियों की उड़ान १०१ प्रकार की बताई गई है किसी भी विशेष उड़ान को प्रकट करने के लिए डीन से पूर्व उपयुक्त उपसर्ग लगा दिया जाता है उदा० अवडीनम्, उड्डीनम्, प्रडीनम्, अभिडीनम्, विडीनम्, परिडीनम्, पराडीनम् आदि।

डुण्डुभ [डुण्डु+भा+क] साँपों का एक प्रकार जिनमें जहर नहीं होता (निर्विषा डुण्डुभा स्मृता)।

डुलिः (स्त्री०) [=दुलि पृषो०] एक छोटी कश्ती।

डोम (पु०) अत्यन्त नीच जाति का पुरुष।

ड

डक्का [डक् इति शब्देन कायति —डक् + कै + क + टाप्] बड़ा ढोल - न ते दुडुक्केन न सोपि डक्कया न मर्दले मापि न तेऽपि डक्कया - नै० १५।१७ ।
डामरा (स्त्री०) हमनी ।
डालम् [नपुं०] म्यान ।
डालिन् (पु०) [डाल + इनि] ढालधारी योद्धा ।
डुण्डि [डुण्ड् + इन्] गणेश का विशेषण ।
डोल (पु०) बड़ा ढोल, मृदङ्ग, डफली ।
डौक् (स्वा० आ०—डौकते, डौकित) जाना, पहुँचाना —यान्त वने रात्रिचरी डुढौके—भट्टि० २।२३, १४। ७१, १५।७९ - प्रेर० डौकयति—ते 1 निकट लाना, पहुँचाना -तन्मान्स चैव गोमायोस्ते क्षणादाशु डौकितम् - महा०, भट्टि० १७।१०३ 2 उपस्थित करना, प्रस्तुत करना ।
डौकनम् [डौक् + ल्युट्] 1 भेंट 2 उपहार, रिश्वत ।

ण

[संस्कृत में 'ण' से आरम्भ होने वाला कोई शब्द नहीं, 'ण' से आरम्भ होने वाले बहुत से धातु हैं वस्तुतः वे सब 'न' से आरम्भ होते हैं, धातुकोश में उन्हें 'ण' से केवल इसलिए आरम्भ किया गया है जिससे कि यह प्रकट हो जाय कि यहाँ 'न' प्र, परि तथा अन्तर् आदि उपसर्ग पूर्व होने पर 'ण' में परिवर्तित हो जाय] ।

त

तक्किल (वि०) [तक् + इलच्] जालसाज, चालाक धूर्त ।
तक्रम् [तक् + रक्] छाछ, मट्ठा । सम०—अट्ट रई का डडा,—सारम् ताजा मक्खन ।
तक्ष् (स्वा० स्वा० पर० तक्षति, तक्षणोति, तष्ट) चीरना, काटना छीलना, छेनी से काटना टुकड़े-टुकड़े करना, खण्डश करना आत्मान तक्षति क्षेप वन परशुना यथा -महा०, निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठ स उद्धन अमर० 2 गढ़ना, बनाना, निर्माण करना (लकड़ी से) 3 बनाना, रचना करना 4 घायल करना, चोट पहुँचाना 5 आविष्कार करना, मन में बनाना,—निस्, टुकड़े-टुकड़े करना, सम्, - छीलना, छेनी से काटना, चीरना 2 घायल करना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना -निर्मिन्नशाखा मुनीक्ष्णाभ्यामन्योन्य सततक्षतु —महा०, बराह० ४०।२९ ।
तक्षक [तक्ष् + ण्वुल्] 1 बढ़ई, लकड़ी का काम करने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का धंधा करने के कारण) 2 सूत्रधार 3 देवताओं का वास्तुकार, विश्वकर्मा 4 पाताल के मुख्य नागों अर्थात् सर्पों में से एक, कश्यप और कद्रु का पुत्र (आस्तीक ऋषि के बीच में पड़ने से जनमेजय के सर्पयज्ञ में जलजाने से बचा हुआ, इसी सर्पयज्ञ में अनेक सर्प जल कर भस्म हो गये थे)
तक्षणम् [तक्ष् + ल्युट्] छीलना, काटना दारवाणा च तक्षणम्—मनु० ५।११५, याज्ञ० १।१८५ ।
तक्षन् (पु०) [तक्ष् + कनिन्] 1 बढ़ई, लकड़ी काटने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का काम करने के कारण) अतक्षा तक्षा—काव्य०, जो जाति से तक्षा नहीं है, वह तक्षा कहलाता है जब कि वह तक्षा की भाँति तक्षा के काम को करने लगता है, बढ़ई—शि० १२।२५ 2 देवताओं का शिल्पी - विश्वकर्मा ।
तगरः [तम्य क्रोडस्य गर, ष० त] एक प्रकार का पौधा ।
तङ्क् (स्वा० पर०—तङ्कति, तङ्कित) 1 सहन करना, बर्दाश्त करना 2 हँसना 3 कष्टग्रस्त रहना ।
तङ्कु [तङ्क् + घञ् अच् वा] 1 कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जीवन 2 किसी प्रिय वस्तु के वियोग से उत्पन्न शोक 3 भय, डर 4 सगतराश की छेनी ।
तङ्कुलम् [तङ्कु + ल्युट्] कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जिंदगी ।
तङ्ग् (स्वा० पर०—तङ्गति, तङ्गित) 1 जाना, चलना-फिरना 2 हिलाना-डुलाना, कष्ट देना 3 लड़खड़ाना ।
तञ्च् (स्वा० पर०—तनक्ति, तञ्चित) सिकोड़ना, सिकुड़ना —तनञ्चिम व्योम विस्तृतम्— भट्टि० ६।३८ ।
तट [तट् + अच्] 1 ढाला, उतार, कगार 2 आकाश या क्षितिज,—टः,—टा,—टी,— टम् 1 किनारा, कूल,

उतार, ढाल -शोल श्रोणितटात्यतनु भर्तृ०--२।३९, प्रोत्तुंगचित्रातटो ३ ७५, बिम्बोस्तटादोव इव प्रवृद्ध —कु० ३।६, उच्च-रजतपर्वतस्यास्तटीस्तम् शि० ४।१८ 2 शरीर के अवयव (जिनमें स्वभावतः कुछ ढाल है) --पक्वपयोधरतटोपरिरम्भलब्ध -गीत० १, तो लुप्त सन्धि चन्दन स्तनतटे—भृङ्गार० ७ इसी प्रकार जघनतट, कटितट, श्रोणीतट, कुचतट, कण्ठतट, ललाटतट आदि,—दम् क्षेत्र । सम०--आघात सींगों की टक्कर से मिट्टी उखाड़ना, तट या ढलान पर सिर से टक्कर मारना--अभ्यस्यन्ति तटाघात निर्जितैराहृता मया —कु० २।५०,—स्थ (वि०) (श्रा०) किनारे पर विद्यमान, कूलस्थित 2 (आल०) अलग खड़ा हुआ, अलग-अलग, उदासीन, परायां, निष्क्रिय -तटस्थ स्थानवांस् घटयति मौन च भजते —मा० १।१४, तटस्थ नैराश्यात्--उत्तर० ३।१३, मया तटस्थत्वमुपगतोसि - वे० ३।५५, (यहाँ 'तटस्थ' का अर्थ 'कूलस्थित' भी है) ।

तटाक:, —कम् [तट्+आकन्] तालाब (जो कमल तथा अन्य जलीय पौधों के लिए पर्याप्त गहरा हो) दे० 'तड़ाग' ।

तटिनी [तटमस्त्यस्या इनि ङीप्] नदी--कदा वाराणस्यामम रतटिनीरोधसि वसन्--भर्तृ० ३।१२३, भामि० १।२३ ।

तड् (चुरा० उभ०--ताडयति—ते, ताडित) 1 पीटना, मारना, ठोकरना गाढ़न्ता महिषा निपानसलिल भृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्—शा० २।५, (नौ) ताडिता मारुतेर्यथा--रामा०, रघु० ३।६१, कु० ५।२४, भर्तृ० १। ५० 2 पीटना, मारना, वज्रस्वरूप पीटना, आघात पहुँचाना -लालयेत्पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् --चाण० ११।१२, न ताडयेत्तृणेनापि--मनु० ४। १६९, पादेन यस्ताड्यते—अमरु ५२ 3 प्रहार करना, (ढोल आदि का) पीटना ताड्यमानासु भेरीषु महा०, अताडयन् मृदङ्गांश्च—भट्टि० १७।७ हरि० १।२२ 4 बजाना, (वीणा के तारों का) आहनन करना — श्रोतुवितन्त्रीरिव ताड्यमाना —कु० १।४५ 5 चमकना 6 बोलना ।

तड़ाग: दे० तडाग ।

तडाग: [तड्+आग] तालाब, गहरा जोहड़, जलाशय —स्फुटकमलोदरखेलत्खञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् —गीत० ११, मनु० ४।२०३, याज्ञ० २।२३७ ।

तडाघात: दे० 'तटाघात' (उच्चै करिकराकारै तडाघात विदुर्बुधा शैवैः) ।

तडित् (स्त्री०) [ताड्यति अभ्रम्—तड्+इति] बिजली, घन बनाते तडिता गर्भैरिव--शि० १।७, मेघ० ७६, रघु० ६।६५ । सम०--गर्भ: बादल,—लता बिजली की कौंध जिसमें लहरें हों, -रेखा बिजली की रेखा ।

तडित्वत् (वि०) [तडित्+मतुप्, वत्वम्] बिजली वाला -अवरोहति शैलाग्र तडित्वानिव तोयद विक्रम० १।१४ कि० ५।४, (पु०) उडुप शि० १।१५ ।

तडिन्मय (वि०) [तडित्+मयट्] बिजली से युक्त कु० ५।२५ ।

तण्ड् (भ्वा० आ० ताण्डते, तण्डित) प्रहार करना ।

तण्डक: [तण्ड्+ण्वुल्] रूपजीव रक्षी ।

तण्डुल: [तण्ड्+उलच्] छूटने, उड़ने और पिछाड़ने के पश्चात् प्राप्त अन्न (विशेषतः चावल) ; अन्न, धान्य, तण्डुल और अन्न यह चार प्रकार एक दूसरे से भिन्न है —अन्न क्षेत्रगत प्राहुः धान्यमुप्तेषु, निस्तुष तण्डुल प्रोक्त स्विन्नशुष्कमुताहृतम्' ।

तत (भू० क० कृ०) [तन्+क्त] फैलाया हुआ, विस्तारित घेरा हुआ--(दे० तन्)--न तमी तमोभिरभिभूय नवाम् —शि० ९।२३, ६।५०, कि० ५।११, -तम् तारों वाला बाना ।

ततस् (तत) [अव्य०--तद्+तसिल्] 1 (उस स्थान या व्यक्ति) से, वहाँ से,- न च निम्नादिव ह्रदय निवर्तते मे ततो हृदयम् श० ४।१, मा० २।१०, मनु० ६।७, १२।८५ 2 वहाँ, उधर 3 तब, तो, उसके बाद -तत कतिपयदिवसापगमे का० ११०, अमरु ६६, कि० १।२७, मनु० २।९३, ७।५९ 4 इसलिए, फलत इसी कारण 5 तब, उस अवस्था में, तो (यदि' का सह सम्बन्धी) यदि गृहीतमिव तत किम् का० १२०, अमोघमस्त्र यदि मन्यसे प्रभो तत समाज्ञे रघु० ३।६५ 6 उससे परे उससे आगे, और आगे, इसके अतिरिक्त तत परतो निर्मानुषमरण्यम् --का० १२१ 7 उससे, उसकी अपेक्षा, उसके अतिरिक्त—य लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं तत --भग० ६।२२, २। ३६ 8 कई बार 'तत' शब्द के सम्बन्ध के रूप को भाँति प्रयुक्त होता है--यथा तस्मात्, तस्या, तस्याञ्च यापि दृश्यते -सिद्धा० । यत तत (क) जहाँ-वहाँ --यत कृष्णस्तत सर्वे यत कृष्णस्ततो जय —महा०, मनु० ७।१८८ (ख) क्योंकि—इत्यतिश यतो यत' —ततस्तत जहाँ कहीं-वहीं यतो यत षट्चरणोऽभिवर्तते ततस्तत प्रेरितवामलोचना—श० १।२३, ततः किम् तो फिर क्या, इससे क्या लाभ, क्या काम-प्राप्ता श्रिय सकलकामदुघास्तत किम्--भर्तृ० ३।७३, ७४, शा० ४।२, ततस्तत (क) यहाँ-वहाँ, इधर-उधर—ततो दिव्यानि माल्यानि प्रादुरासन्ततस्तत —महा० (ख) 'फिर क्या' 'इसके आगे' 'अच्छा तो फिर' (नाटकों में प्रयुक्त) इत प्रभृति तब से लेकर ('यत प्रभृति' का सह सम्बन्धी) --तृष्णा तत प्रभृति मे त्रिगुणव्यवस्थिति -अमरु ६८, मनु० ९।६८ ।

ततस्त्य (वि०) [ततस्+त्यप्] वहाँ से आने वाला, वहाँ से चलने वाला—कि० १।२७ ।

तति (सर्व० वि०) (नित्य बहुवचनान्त, कर्तृ० कर्म० तति) [तन्+क्तिन्] इतने अधिक, उतना० —तति पुरुषा यन्ति आदि,—त्रि (स्त्री०—न्ती) [तन्+क्तिन्] 1 श्रेणी, पंक्ति, रेखा - त्रिभङ्ग्य किंचना बलाहकनितम्बिनीमुस्ताताति पल्वल श्र० २।५, बलाहकनती शि० ४।५४, १।५ 2 गण, दल, समूह 3 यज्ञकृत्य।

तत्त्वम् [तत्+त्वप्, तुक्, पृषो० तत् त्व] (कभी कभी 'तत्तम' भी लिखा जाता है) 1 वास्तविक स्थिति या दशा 2 तथ्य,—वय तत्त्वान्तरेणान्यमुकुर हस्तास्त्व खलु कुतो —श० १।२४ 3 यथार्थ या मूल प्रकृति - मन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्—भग० १८।१, ३।२८, मनु० १।३, ३।१९, ५।४२ 4 मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति या विश्वव्यापी परमात्मा के समतुल्य विराट् सृष्टि या भौतिक संसार 5 प्रधान या यथार्थ सिद्धान्त 6 मूलतत्त्व या प्रकृति 7 मन 8 सूर्य 9 वाद का भेद विशेष, विलक्षित 10 एक प्रकार का नृत्य। सम०—अभियोग' असलियत दोषारोपण या घोषणा, -अर्थः सचाई, वास्तविकता, यथार्थता, वास्तविक प्रकृति -ज्ञ,—विद् (वि०) दार्शनिक ब्रह्मज्ञान का वेत्ता, न्यास विष्णु की तपाकल पूजा में विहित एक अंगन्यास (इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर गुप्त अक्षर या अन्य चिन्ह बनाने के साथ कुछ प्रार्थनाएँ बोली जाती हैं)

तत्त्वतः (अव्य०) [तत्त्व+तस्] वस्तुतः, सचमुच, ठीक ठीक तत्त्वतः एनामुपलप्स्ये—श० १, मनु० ७।१०।

तत्र (अव्य०) [तद्+त्रल्] 1 उस स्थान पर, वहाँ, सामने, उस ओर 2 उस अवसर पर उस परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3 उसके लिए, इसमें -निर्णय यन्मदीया प्रजास्तत्र हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम् रघु० १।६२ 4 प्रायः 'तद्' के अधि० के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २।११२, ३।६०, ४।१८६, याज्ञ० १।२६३, तत्रापि 'तब भी' 'तो भी' (यद्यपि का सह संबंधी) तत्र तत्र 'बहुत से स्थानों पर या विभिन्न विषयों में' 'यहाँ-वहाँ' 'प्रत्येक स्थान पर' अध्यक्षान्विधान्कुर्यात् तत्र तत्र विपश्चित - मनु० ७।८१। सम०—भवत् (वि०) (स्त्री०—ती) श्रीमान्, महोदय, पूज्य, आदरणीय, महानुभाव, (सम्मानपूर्ण उपाधि जो नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती है जो वक्ता के समीप उपस्थित न हों) —पूज्ये तत्रभवानभवाच्च भगवानपि, आदिष्टोऽस्मि तत्रभवता काश्यपेन - श० ४, तत्रभवान् काश्यप श० १, आदि, —स्थ (वि०) उस स्थान पर खड़ा हुआ या वर्तमान, उस स्थान से संबद्ध।

तत्रत्य (वि०) [तत्र+त्यप्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबद्ध।

तथा (अव्य०) [तद् प्रकारे थाल् विभक्तित्वात्] 1 वैसे, इस प्रकार, उस रीति से -तथा मां बुध्यस्विन्द्रा—श० ५, सूतस्तथा करोति—विक्रम० १ 2 और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागत विधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा -पञ्च० १।३१५, रघु० ३।२१ 3 सच, ठीक इसी प्रकार, सचमुच वैसा ही—यदात्थ राजन्यकुमार तत्तथा -रघु० ३।४८, मनु० १।४२ 4 (अनुरोध के रूप में) ऐसा निश्चित जैसा कि ('यथा' को पहले रख कर) दे० यथा ('यथा' के सहसंबंधी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के नी० दे०) तथापि (प्रायः 'यद्यपि' का सहसंबंधी) 'तो भी' 'तब भी' 'फिर भी' 'तिस पर भी'- प्रथित दुष्यन्तस्य चरित तथापीदं न लक्षये -श० ५, वर महत्याग्नियते पिपासया तथापि नात्मस्थ करोत्युपासनात्- शात० २।६, वपु-प्रकर्षादयदद्गुरु रघुस्तथापि दीर्घैर्दिवसादद्दृश्यत—रघु० ३।३४, ६२, तथेति 'सहमति', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करता है,—तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञामाधाय मूर्ध्ना मदनः प्रतस्थे—कु० ३।२२, रघु० १।९२, ३।६७, तथेति निष्क्रान्त (नाटकों में) तथैव 'उसी प्रकार' 'ठीक उसी भाँति' तथैव च 'उसी ढंग में' तथाच 'और इसी प्रकार', 'इसी ढंग से', 'इसी प्रकार कहा गया है कि' तथाहि 'इसी लिए' 'उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि) -त वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना, तथाहि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः -रघु० १।२९, श० १।३१। सम०—कृत (वि०) इस प्रकार किया गया, गत (वि०) 1 ऐसी स्थिति या दशा में होने वाला - तथागतायाः परिहासपूर्वम्— रघु० ६।८२ 2 इस गुण का, (तः) 1 बुद्ध —काले क्षिप्तं क्षयमुदकंपक्ष्य तथागतस्येव जनं सुचेता —शि० २०।८१ 2 जिन, -गुण (वि०) 1 ऐसे गुणों से युक्त या सम्पन्न 2 ऐसी अवस्था को प्राप्त, ऐसी अवस्था में—तथागता दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयाम् —वेणी० १।११,—राज- बुद्ध का विशेषण, -रूप, —रूपिन् (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला,—विध (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वभाव का—तथाविधस्तावदशेषमस्तु स —कु० ५।८२, रघु० ३।४,—विधम् (अव्य०) 1 इस प्रकार, इस रीति से 2 इसी भाँति, समान रूप से।

तथात्वम् [तथा+त्व] 1 ऐसी अवस्था, ऐसा होना 2 वस्तु स्थिति या मूल बात, सचाई।

तथ्य (वि०) [तथा+यत्] यथार्थ, वास्तविक, असली —प्रियमपि तथ्यमाह भवदा—श० १ —थ्यम् सचाई, वास्तविकता,—सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन—कु० ३।६३, मनु० ८।२७४।

तद् (सर्व० वि०) [कर्तृ० ए० व०—स (पु०), सा (स्त्री०), तत् (नपु०)] 1 वह, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तदिति परोक्षं विजानीयात्) 2 वह (प्राय 'यद्' का सहसम्बन्धी)—यस्य बुद्धिर्बलं तस्य—पंच० १ 3 वह अर्थात् प्रख्यात—सा रम्या नगरी महांस्स नृपति सामन्तचक्रं च तत् - भर्तृ० ३।३७, कु० ५।७१ 4 वह (किसी देखे हुए या अनुभूतार्थ का उल्लेख) उत्कम्पिनी भयपरिस्खलिताशुकान्ता तं लोचने प्रतिदिशं विधुरे क्षिपन्ती -काव्य० ७, भामि० २।५ 5 वही, समरूप, वह, बिल्कुल वही, (प्राय 'एव' के साथ) —तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव नाम - भर्तृ० ३।४०, कभी कभी 'तद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होते हैं, साथ ही बल देने के लिए निर्देशक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्राय 'इसलिए' 'तो' करते हैं)—सोऽहमित्याविशद्वात्मा—रघु० १।६८, (मैं वही व्यक्ति, अतः मैं, मैं अमुक व्यक्ति), स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जाम् २।४०, 'अतः तुम्हें वापिस चला जाना चाहिए', जब 'तद्' की आवृत्ति की जाय तो इसका अर्थ होता है "कई" 'भिन्न २"—तेषु तेषु स्थानेषु काव्य० ३६९, भग० ७।२०, मा० १।३६ —तेन—तद् का करण० रूप, क्रिया विशेषण केवल के साथ प्रयुक्त 'इस कारण' 'इस विषय में' 'इसी कारण' अर्थ को प्रकट करता है, -तेन हि यदि ऐसा है तो फिर (अव्य०) 1 वहाँ, उधर 2 तब, उस अवस्था में, उस समय 3 इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तेन्द्रि विमर्दक्षमा भूमिभवतराव —उत्तर० ५, मेघ० ३।११०, रघु० ३।४६ 4 तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) तथापि —यदि महत्कुतूहलं तत्कथयामि का० १३६, भग० १।४५। सम० —अनन्तरम् (अव्य०) उसके पश्चात् तुरन्त, तो फिर, --अनु (अव्य०) उसके पश्चात्, बाद में - सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम् मेघ० १३, रघु० १६।८७, मा० ९।२६, - अन्त (वि०) उसी में नष्ट होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्थ,—अर्थीय (वि०) 1 उसके निमित्त अभिप्रेत 2 उस अर्थ से युक्त, -अर्ह (वि०) उस योग्यता से युक्त,- अवधि (अव्य०) 1 वहाँ तक, उस समय तक, तब तक -तदवधि कुशली पुराणशास्त्रस्मृति शतचारुविचारजो विवेक -भामि० २।१४ 2 उस समय से लेकर, तब से—स्वामी दीर्घस्तदवधि मुखं पाण्डिमा—भामि० २।६९,—एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला, —काल विद्यमान क्षण, वर्तमान समय, -धी (वि०) समाहित, प्रत्युत्पन्नमति, —क्षणम् (अव्य०) अविलम्ब, तुरन्त, क्षण 1 इस क्षण, फिलहाल 2 विद्यमान या वर्तमान समय रघु० १।५१, --क्षणात् (अव्य०) तुरन्त, प्रत्यक्षतः, फौरन - रघु० ३।१४, शि० ९।५, याज्ञ० २।१४, अमरु ८३, -क्रिया (वि०) बिना मजदूरी के काम करने वाला, -गत (वि०) उस पार गया हुआ या निदर्शित, तुला हुआ, उसका भक्त, तत्सम्बन्धी, --गुण एक अलंकार (अल०) स्वमुत्सृज्य गुणं यागादन्यदुज्ज्वल-गुणस्य यत्. वस्तु तद्गुणतामेति भण्यते स तु तद्गुण —काव्य० १०, दे० चन्द्रा० ५।१४१, - ज्ञ (वि०) व्यवधानशून्य तात्कालिक, - ज्ञ. जानने वाला, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान्, दार्शनिक, -तीय (वि०) उसी काय का तीसरी बार करने वाला,—त्व (वि०) कंजूस, दरिद्र, -पर (वि०) 1 उसका अनुसरण करने वाला, पश्चवर्ती, घटिया 2 उसी को सर्वोत्तम पदार्थ मानने वाला, बिल्कुल तुला हुआ, नितान्त मलग्न, उन्मुक्तापूर्वक व्यस्त (प्राय समास में प्रयोग) --सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत् रघु० २।५, १।६६, मेघ० १०, याज्ञ० १।८३, मनु० ३।२६२, -परायण (वि०) पूर्णत मलग्न या आसक्त,--पुरुष 1 मूल पुरुष, परमात्मा 2 एक समास का नाम जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है, या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना भी स्थिर रहती है यथा, तत्पुरुष, तत्पुरुष कर्मधारय येनाह स्या बहुव्रीहि —उद्भट,—पूर्व (वि०) पहली बार घटने वाला, या होने वाला, --अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया कु० ५।१०, ७।३०, रघु० २।४२, १०।३८ 2 पूर्व का, पहला, --प्रथम (वि०) पहली बार ही उस कार्य को करने वाला, -बल एक प्रकार का बाण, -भाव उसके अनुरूप, -मात्रम् 1 केवल वह, सिर्फ मामूली, अत्यन्त तुच्छ मात्रा युक्त 2 (दर्शन०) सूक्ष्म तथा मूलतत्त्व (उदा० शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध), -वादक (वि०) उसी को सकेतित या प्रकट करने वाला, -विद् (वि०) 1 उसका जानने वाला 2 सचाई को जानने वाला, -विध (वि०) उस प्रकार का, रघु० २।२२, कु० ५।७३, मनु० २।११२, - हित (वि०) उसके लिए अच्छा, (न) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक शब्दों के आगे व्युत्पन्न शब्द बनाने के लिए लगाया जाता है।

तदा (अव्य०) [तस्मिन् काले तद्+दा] 1 तब, उस समय 2 फिर, उस मामले में ('यदा' का सहसम्बन्धी) भग० २।५२, ५३, मेघ० १।५२, ५४-५६, **यदा यदा तदा तदा** 'जब कभी तब' **तदा प्रभृति** तब से, उस समय से लेकर -कु० १।५३। सम० -मुख (वि०) आरब्ध, उपक्रान्त या शुरू किया हुआ, (खम्) आरम्भ।

तदारभ् [तदा + रभ्] मौजूदा समय, वर्तमान काल।

तदानीम् (अव्य०) [तद्+दानीम्] तब, उस समय।

तदानींतन (वि०) [तदानीम् + ट्युल्, तुट्] उस समय से सबन्ध रखने वाला, उस समय का समकालीन, -एषोऽस्मि कार्यवशादायोध्यिकस्तदानींतनश्च संवृत्त —उत्तर० १ ।

तदीय (वि०) [तद् + छ] उससे सबध रखने वाला, उसका, उसकी, उसके, उनकी—रघु० १।८१, २।२८, ३।८, २५ ।

तद्वत् (वि०) [तद् + मतुप्] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि 'तद्वानयोह' में—काव्य० २ (अव्य०) 1 उसके समान, उस रीति से 2 समान रूप से, समान रीति से, इसलिए साथ ही ।

तन् १ (तना० उभ०—तनोति, तनुते, तत—क० वा० -तन्यते, तायते, सन्तत—तितंसति, तितांसति, तितनिषति) 1 फैलाना, विस्तार करना, लंबा करना, तानना —बाहुं सकरयोस्तनयो—अमर० 2 फैलाना, बिछाना, पसारना—भट्टि० २।३०, १०।३२, १५।९१ 3 ढकना, भरना—मनसी नयोभिरभिगम्य तनुम् —शि० ९।२३, कि० ५।११ 4 उत्पन्न करना, पैदा करना, रूप देना, देना, भेंट देना, प्रदान करना, त्वयि विमुखे मयि सर्वदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् —गीत० ४, पितुर्मुदं तेन ततान गोऽर्भक—रघु० ३।२५, ७।७, यो दुर्जन वशयितुं तनुते मनीषा—भामि० १।९५, १० 5 अनुष्ठान करना, पूरा करना, सपन्न करना—(यज्ञादिक)—इति क्षितीशो नवमिं नवाधिकां महाक्रतूना महनीयशासन, समारुरुक्षुर्दिवमायुष क्षये ततान सोपान परम्परामिव—रघु० ३।६९, मनु० ४।२०५ 6 रचना, करना, (ग्रन्थादिक) लिखना, यथा—नाम्ना माला तनोम्यहं, या—तनुते टीकाम् 7 फैलाना, झुकाना (धनुष आदि का) 8 कातना, बुनना 9 प्रचार करना, प्रचारित होना 10 चालू रहना, टिका रहना। सम० -अव ,1 ढकना, फैलाना 2 उतरना आ—,विस्तृत करना, बिछाना, ढकना, ऊपर फैलाना कि० १६।१५ 2 फैलाना, पसारना 3 उत्पन्न करना पैदा करना, सृजन करना, बनाना कि० ६।१८ 4 (धनुष या धनुष की डोरी) तानना मौर्वी धनुषि चातता रघु० १।९९, ११।४५, उद् ,फैलाना प्र ,1 फैलाना पसारना ख्यातस्त्व विभर्तेयशासि कदयो दिक्षु प्रतन्वन्ति ते भर्तृ० ३।२४ 2 ढकना 3 उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना दिखावा करना, प्रदर्शन करना, प्रस्तुत करना तदूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्य प्रतायते —शि० २।२० 5 अनुष्ठान करना (यज्ञादिक का), वि—,1 फैलाना, बिछाना -स्फुरितवितताजिह्व -मृच्छ० ९।१२ 2 ढकना, भरना —प्रस्वेदबिन्दुवितत वदन प्रियाया चौर० ९, यो वितत्य स्थित खम्—मेघ० ५८ 3 रूप देना, बनाना श्रेणीबन्धाद्वितन्वद्भिरुत्स्तम्भा तोरणस्रजम्—रघु० १।४१ 4. (धनुष का) तानना—धनुर्वितत्य किरती शरान् —उत्तर० ६।१, भट्टि० ३।४७ 5 उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, देना, प्रदान करना 6 (ग्रंथ का) रचना या लिखना—विरात्रपर्वप्रबोधो भावदीपो वितन्यते 7 करना, अनुष्ठान करना (यज्ञादिक या किसी सस्कार का) कु० २।४६ 8 दिखावा करना, प्रस्तुत करना, सम् —,चालू करना, 11 (स्वा० पर० —चुरा० उभ०—तनति, तानयति ते) 1 भरोसा करना, विश्वास करना, विश्वास रखना 2 सहायता करना, हाथ बँटाना, मदद करना 3 पीडित करना, रोगग्रस्त करना 4 हानिशून्य होना ।

तनयः [तनोति विस्तारयति कुलम् —तन् + कयन्] 1 पुत्र 2 सन्तान लड़का या पुत्री, गिरि°, कलिंग° आदि ।

तनिमन् (पु०) [तनु + इमनिच्] पतलापन, सुकुमारता, सूक्ष्मता ।

तनु (वि०) (स्त्री० नु, न्वी) [तन् + उ] 1 पतला, दुबला, कृश 2 सुकुमार, नाजुक, मृदु (अङ्गादिक, सौन्दर्य के चिह्नस्वरूप—रघु० ६।३२, तु० तन्वङ्गी 3 बढ़िया, कोमल (वस्त्रादिक) ऋतु० १।७ 4 छोटा, थोड़ा, नन्हा, कम, कुछ, सीमित—तनुवाग्विभवोऽपि सन् —रघु० १।९, ३।२, तनुत्यागो बहुग्रह -हि० २।९१, थोड़ा देने वाला 5 तुच्छ, महत्त्वहीन, छोटा —अमर० २७ 6 (नदी की भांति) उथला हुआ, (स्त्री०) 1 शरीर, व्यक्ति 2 (बाहरी) रूप प्रकटीकरण—प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश -श० १।१, मालवि० १।१, मेघ० १९ 3 प्रकृति, किसी वस्तु का रूप और चरित्र 4 बाल। सम० -अङ्ग (वि०) सुकुमार अङ्ग वाला, कोमलांगी (-गी) कोमलाङ्गिनी स्त्री,—कूप रोमकूप,—छद कवच, रघु० ९।५१, १२।८६,—ज. पुत्र,—जा पुत्री,—त्यज (वि०) 1 अपने जीवन को जोखिम में डालने वाला 2 अपने व्यक्तित्व को छोड़ने वाला, मरने वाला, —त्याग (वि०) थोड़ा व्यय करने वाला, कंजूस देने वाला, दरिद्र, त्रम्, -त्राणम् कवच,—भव. पुत्र (वा) पुत्री -भस्मन्—नाक भृत् (पु०) शरीरधारी जीव, जीवधारी जन्तु, विशेष कर मनुष्य—कल्प स्थित तनुभृता तनुभिस्तव किम् भर्तृ० ३।७३,—मध्य (वि०) पतली कमर, कमर वाला,—रुह पसीना,—रुह्,—रुहम् शरीर का बाल,—वारम् कवच,—व्रण. फुन्सी,—सञ्चारिणी छोटी स्त्री, या दस वर्ष का लड़का,—सर., पसीना,—हृद गुदा, मलद्वार ।

तनुल (वि०) [तन् + डलच्] फैलाया हुआ, विस्तारित ।

तनुस् (नपु०) [तन् + उसि] शरीर ।

तनू (स्त्री०) [तन् + ऊ] शरीर । सम०— उद्भव ,—ज. पुत्र, उद्भवा जा पुत्री,—त्यज् वी,—त्याग् (पु०)

आम—तनूनपाद्भवितानमाधिजे —शि० १।६२, अथ-कृतस्यापि तनूनपातो नाथ शिखा याति कदाचिदेव —हि० २।६७, —सहृद् 1 शर पर उगे हुए बाल (पु० भी) 2 पक्षी के पंख, बाहु (ह्) पुत्र।

तन्तिः (स्त्री०) [तन्+क्तिच्] 1 रस्सी, डोर, सूत्र 2 पंक्ति, श्रेणी। समः—पाल 1 गोरक्षक 2 विराट के घर रहते समय का सहदेव का नाम।

तन्तुः [तन्+तुन्] 1 धागा, रस्सी, तार, डोर, सूत्र—चिन्ता सन्ततितन्तु—मा० ५।१०, मेघ० ७० 2 मकड़ी का जाला—रघु० १६।२० 3 रेशा विभजन्तुगुणस्य कारितम्—कु० ४।२९ 4 सन्तान, बच्चा, सन्तति 5 मगरमच्छ 6 परमात्मा। समः—काष्ठम् जुलाहों का एक औजार जिससे ताना साफ किया जाता है —कीटः रेशम का कीड़ा, नाभः बड़ा मगरमच्छ, —निर्यासः ताड़ का वृक्ष, नाभः मकड़ा,—भ. 1 सरसों 2. बछड़ा, —वायम् ऐसा खाजा जिसमें तार कसे हुए हों,—वानम् बुनना,—वाय 1 जुलाहा 2 करघा 3 बुनाई,—विहारः केले का वृक्ष, —शाला जुलाहे का कारखाना, सन्तत (वि०) बुना हुआ, मिला हुआ, —सारः सुपारी का पेड़।

तन्तुकः [तन्तु+कन्] मरसों के दाने।

तन्तुभ,—ण [तन्+नुभन्, पक्षे नि० णत्वम्] घड़ियाल।

तन्तुरम्,—लम् [तन्तु+र, लच् वा] मृणाल, कमल की नाल।

तन्त्र् (चुरा० उभ० तन्त्रयति—ते, तन्त्रित) 1 हुकूमत करना, नियन्त्रण रखना, प्रशासन करना प्रजाः प्रजा स्वा इव तन्त्रयित्वा—शि० ५।५ 2 (अ०) पालन-पोषण करना, निर्वाह करना।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1 करघा 2 धागा 3 ताना 4 बखान 5 अविच्छिन्न वंश परम्परा 6 कर्मकाण्ड पद्धति, रूप-रेखा, संस्कार—कर्मणा युगपद्भावस्तन्त्रम्—काव्यि० 7 मुख्य विषय 8 मुख्य सिद्धान्त, नियम, वाद, शास्त्र —जिनमतनिजतन्त्रविचारम्—गीत० २ 9 परार्थीकृता, परार्थता—जैसा कि 'स्वतन्त्र' 'परतन्त्र', दैवतन्त्र दुःखम् —दश० ५ 10 वैज्ञानिक कृति 11 अध्याय, अनुभाग (किसी ग्रन्थादिक के) —तन्त्रे पञ्चभिरेतच्च-कार शास्त्रम् पंच० १ 12 तन्त्र-संहिता (जिसमें देवताओं की पूजा के लिए अथवा अतिमानव शक्ति प्राप्त करने के लिए जादू-टोना या मन्त्रतन्त्र का वर्णन है) 13 एक से अधिक कार्यों का कारण 14 जादू-टोना 15 मुख्योपचार, गण्डा, ताबीज 16 दवाई, औषधि 17 कर्म, शास्त्र 18 वेशभूषा, 19 कार्य करने की सही रीति 20 शासकीय परिजन, अनुचर-वर्ग, भृत्यवर्ग 21 राज्य, देश, प्रभुता 22 सरकार, हुकूमत, प्रशासन—लोकतन्त्राधिकार—शि० ५ 23 सेना 24 ढेर, जमाव 25 घर 26 मजावट 27 दौलत 28 प्रसन्नता। समः काष्ठम् =तन्त्रकाष्ठ वापः, वापम् 1 बुनाई 2 करघा,—वाय 1 मकड़ी 2 जुलाहा।

तन्त्रक [तन्त्र+कन्] नई वेशभूषा (कोरा कपड़ा)।

तन्त्रणम् [तन्त्र्+ल्युट्] शान्ति बनाये रखना, अनुशासन, व्यवस्था, प्रशासन रखना।

तन्त्रि, त्री (स्त्री०) [तन्त्र+इ, तन्त्रि+ङीष्] 1 डोरी, रस्सी—मनु० ४।३८ 2 धनुष की डोरी 3 वीणा का तार तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथाचित् मेघ० ८६ 4 स्नायु तान 5 पुंछ।

तन्द्रा [तन्द्+घञ्+टाप्] 1 आलस्य, थकावट, थकान, क्लान्ति 2 ऊर्ध्व शैथिल्य तन्द्रालस्यविवर्जनम्—पाश्च० ३।१५८, महावी० ७।४२, हि० १।२४।

तन्द्रालु (वि०) [तन्द्रा+आलुच्] 1 थका हुआ, परिश्रान्त 2 निद्रालु आलसी।

तन्द्रि, —त्री (स्त्री०) [तन्द्—किन्, तन्द्रि+ङीष्] निद्रालुता, ऊंघ।

तन्मय (वि०) (स्त्री० यी) [तत्+मयट्] 1 उसका बना हुआ 2 तल्लीन मा० १।६१, श० ६।२१ 3 उद्भूत, तदवरूप।

तन्वी [तनु+ङीष्] सुकुमार या कोमलांगी स्त्री इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० १।२०, तव तन्वि कुचावेतौ निरन्तरचक्रवर्तिनौ उद्भट।

तप् (भ्वा० पर० (आ० विरल) तपति, तप्त) (अक० प्रयोग) (क) चमकना, (आग या सूर्य की भांति) प्रज्वलित होना—तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति—श० ५।१४ रघु० ५।१३, उत्तर० ६।१४, भग० ९।१९ (ख) गर्म होना, उष्ण होना, गर्मी फैलना (ग) पीड़ा सहन करना तपति य इह किमलघुसाय-लेन गीत० ७ (घ) शरीर को कृश करना, तपस्या करना—अगणितगुणमप्यनाद्दतः परिकुरुते क्रतुविद्यया तपः उत्तर० १।३३ 2 (सक० प्रयोग) (क) गर्म करना, उष्ण करना, तपाना भट्टि० ९।२ भग० ११।१९ (ख) जलाना, दग्ध करना, जला कर समाप्त कर देना —तपति तनुगात्रि मदनस्त्वामनिशं मा पुनर्दहत्येव श० ३।१७, अङ्गैरनङ्गतप्तैः ३।७, (ग) चोट पहुंचाना, नुकसान पहुंचाना, खराब करना यास्यन्त्युत्तप्तपत्तयति मां समन्युः भट्टि० १।२३, मनु० ७।६ (घ) पीड़ा देना, दुःख देना—कर्मणा०—तप्यते, (कुछ लोग इसे दिवा० की धातु मानते हैं) 1 गर्म किया जाना, पीड़ा सहन करना 2 घोर तपस्या करना, (प्रायः 'तपस्' के साथ) प्रेर०—तापयति ते, तापित, 1 गर्म करना, तपाना, गगन तापितपाथितासिलक्ष्मी—शि० २०।७५, न हि तापयितुं शक्य मागस्तम्भस्तृणोल्कया—हि० १।८६,

2 यन्त्रणा देना, पीडित करना, सताना—मृग तापित कन्दर्पण—गीत० ११, भट्टि० ८।१३, अनु, 1 पश्चात्ताप करना, अफसोस करना, खिन्न होना 2 पछताना उद्,—1 तपना, गर्म करना, झुलसाना, (सोना आदि) पिघलाना (जिस समय अक० के रूप में 'चमकना' अर्थ प्रकट करने के लिए यह धातु प्रयुक्त की जाती है, या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का ही कोई अंग होता है, तो उस समय 'आत्मनेपद' में प्रयुक्त होती है) - उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकार -महा०, परन्तु उत्तप्यमान आतप—भट्टि० ८।१, शि० २०।४०, उत्तापतेपाणी - महा० 2 खा पी जाना, यन्त्रणा देना, पीडित करना, तपाना शि० ९।६७, उप—,1 गर्म करना, तपाना 2 पीडित करना, दुःख देना -शि० ९।६५, निस्, -1 गर्म करना 2 पवित्र करना 3 परिष्कार करना, परि ,1 गर्म करना, जलाना, नष्ट करना 2 प्रज्वलित करना, आस लगाना पश्चात्, पछताना, खेद प्रकट करना, वि—,1 चमकना ('उद्पूर्वक' की भांति आत्म०) रविविनपतेर्ज्यर्थं—भर्तृ० ८।१४ 2 तपाना, गर्म करना, सम् ,1 गर्म करना, तपाना —सन्तप्तचामीकर -भट्टि० ३।३, सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते भर्तृ० २।६७ 2 दुःखी होना, पीडा सहन करना, खिन्न होना -सतप्तानां त्वमसि शरणम्—मेघ० ७, 'दुःखियों का'—दिवापि मयि निष्कान्ते सतप्येते गुरू भृशम्—महा०, भर्तृ० २। ८७ 3 पछताना।

तप (वि०) [तप्+अच्] 1 जलाने वाला, तपाने वाला तपा कर समाप्त करने वाला 2 पीडाकर, कष्टकर, दुःखद -प 1 गर्मी, आग, आँच 2 सूर्य 3 ग्रीष्म ऋतु शि० १।६६ 4 तपस्या, धार्मिक कठोर साधना। सम०—अत्यय, अन्त ग्रीष्म ऋतु का अन्त और वर्षा ऋतु का आरम्भ—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि पूर्यते नदी कु० ४।४४, ५।२३।

तपती [तप्+शतृ+ङीप्] ताप्ती नदी।

तपन [तप्+ल्युट्] 1 सूर्य -प्रतापात्तपनो यथा—रघु० ४।१२, ललाटन्तरस्तपनि तपन —उत्तर० ६, मा० १ 2 ग्रीष्मऋतु 3 सूर्यकान्तमणि 4 एक नरक का नाम 5 शिव का विशेषण 6 मदार का पौधा। सम०—आत्मज,—तनय यम, कर्ण और सुग्रीव का विशेषण,—आत्मजा, -तनया, यमुना और गोदावरी का विशेषण,—दृष्टम् तांबा, उपल.—मणि, सूर्यकान्त मणि,—वक्त्र, सूर्यमुखी फूल।

तपनी [तपन+ङीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी।

तपनीयम् [तप्+अनीयर्] सोना, विशेषतः वह जो आग में तपाया जा चुका है—तपनीयाशोक -मालवि० ३, तपनीयोपानद्युगलमार्यं प्रसादीकरोतु—महावी० ४, असम्पृक्तौ तपनीयपीठम्—रघु० १८।४१।

तपस् (नपु०) [तप्+असुन्] 1 ताप, गर्मी, आग 2 पीडा कष्ट 3 तपश्चर्या, धार्मिक, कठोर साधना, आत्मनियन्त्रण—तप किलेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४ 4 आत्मदमन, और आत्मोत्सर्ग के अभ्यास से सम्बद्ध ध्यान 5 नैतिक गुण, खूबी 6 किसी विशेष वर्ण का विशेष कर्तव्यपालन 7 सात लोकों में से एक लोक अर्थात् 'जन-लोक' के ऊपर का लोक (-पु०) माघ का महीना—तपसि मन्दगभस्तिरभीषुमान्—शि० ६।६३, (पु०, नपु०) 1 शिशिर ऋतु 2 हेमन्त 3 ग्रीष्म ऋतु। सम०—अनुभाव धार्मिक तपश्चर्या का प्रभाव, अवट. ब्रह्मावर्त देश,—क्लेश. धार्मिक कठोर साधना का कष्ट,—चरणम्,—चर्या कठोर साधना,—तरुः इन्द्र का विशेषण,—धन साधना का धनी' तपस्वी, भक्त —रम्यास्तपोधनानां क्रिया श० १।१३, शमप्रधानेषु तपोधनेषु - २।६, ४।१, शि० १।२३, रघु० १४।१९ मनु० ११।२४२,—निधि धर्मप्राण व्यक्ति, सन्यासी—रघु० १।५६,—प्रभाव,—बलम् कठोर साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति, तप द्वारा प्राप्त सामर्थ्य या अभीप्सना, -राशि सन्यासी, लोक जनलोक के ऊपर का लोक,—वनम् तपोभूमि पवित्र वन जहाँ सन्यासी कठोर साधना में लिप्त हों कृत त्वयोपवनं तपोवनमिति प्रेक्षे - श० १, रघु० १।९०, २।१८ ३।८, —वृद्ध (वि०) जो बहुत तप कर चुका हो,—विशेष भक्ति की श्रेष्ठता, धर्म सम्बन्धी अत्यन्त कठोर साधना, -स्थली 1. धार्मिक कठोर साधना की भूमि 2 वनारण्य।

तपस. [तप्+असच्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 पक्षी।

तपस्य [तपस्+यत्] 1 फाल्गुन का महीना 2 अर्जुन का विशेषण,—स्या धार्मिक कठोर साधना, तपश्चरण।

तपस्यति (ना० धा० पर०) तपस्या करना - सुरासुरगुरुं सोऽत्र सपत्नीकस्तपस्यति—श० ७।९, १२, रघु० १३।४१, १५।४९, भट्टि० १८।२१।

तपस्विन् (वि०) [तपस्+विनि] 1 तपस्वी, भक्तिनिष्ठ 2 गरीब, दयनीय, असहाय, दीन - सा तपस्विनी निर्वृता भवतु -श० ४, मा० ३, वे० १।१३५, (पु०) सन्यासी—तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७। सम०—पत्रम् सूर्यमुखी फूल।

तप्त (भू० क० कृ०) [तप्+क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2 रक्तोष्ण, गरम 3 पिघला हुआ, गला हुआ 4 दुःखी, पीडित, कष्टग्रस्त 5 (तप का) किया गया अनुष्ठान। सम०—काञ्चनम् आग में तपाया हुआ सोना,—कृच्छ्रम् एक प्रकार की कठोरसाधना, —रूपकम् साफ की हुई चाँदी।

तम् (दिवा० पर०—ताम्यति, तान्त) 1 दम घुटना, रुद्धश्वास होना 2 परिम्लान होना, थक जाना—ललित-शिरीषपुष्पहननैरपि ताम्यति मत्—मा० ५।२१ 3 (मन या शरीर से) दुखी होना, बेचैन या पीडित होना, पीडा होना, बरबाद करना—प्रविशति मुहु कुञ्ज गुञ्जन्मुहुर्मुहु ताम्यति—गीत० ५, माद्दोत्कण्ठा ललित-लुलितैरङ्गैरस्माभ्यतीति—मा० १।१५, ९।३३, अमरु ७, उद्—, उत्कण्ठा होना—हृदय किमेवमुत्ताम्यसि श० १।

तमस् [तम्+घ] 1 अन्धकार 2 पैर की नाक,—स 1 राहु का विशेषण 2 तमाल वृक्ष।

तमस् (नपु०) [तम्+असुन्] अन्धकार—किं वाऽभविष्यदकृपास्तमसा विभेत्ता त वेल्लल्लकिरणा धृरि नाकरिष्यत्—श० ७।४, विक्रम० १।७, मेघ० ३७ 2 नरक का अन्धकार—मनु० ४।२४२ 3 मानसिक अन्धेरा, भ्रम, भ्रान्ति—मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः—श० ६।६ 4 (सां० द० में) अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के संघटक ३ गुणों में से एक (दूसरे दो हैं—सत्त्व, रजस्) कु० ६।६१, मनु० १२।२४ 5 रज, शोक 6 पाप (पु० नपु०) राहु का विशेषण। समः अपह (वि०) अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला, ज्ञान देने वाला, प्रकाशित करने वाला कि० ५।२०, (हः) 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 आग—काण्ड, तम घोर अन्धकार—गुण दे० 'तमस्' ऊपर (८),—छन्न 1 सूर्य 2 चाद 3 आग 4 विष्णु 5 शिव 6 ज्ञान 7 बुद्धदेव—ज्योतिस् (पु०) जुगनू तति व्यापक अन्धकार, —नुद् (पु०) 1 उज्ज्वल शरीर 2 सूर्य 3 चाँद 4 आग 5 दीपक प्रकाश, नुद 1 सूर्य 2 चन्द्रमा—निह्,—मणि जुगनू,—विकार राग, वीमारी हन्, —हर (वि०) अन्धकार को दूर करने वाला (पु०) 1 सूर्य 2 चन्द्रमा।

तमस [तम्+असच्] 1 अंधकार 2 कुआँ।

तमस्विनी, तमा [तमस्+विनि+ङीप्, तम+टाप्] रात।

तमाल [तम—कालन्] 1 एक वृक्ष का नाम (इसका छाल काला होता है)—तरुणतमालनीलव्रतलोल्लसमदमधुपा—मा० ९।१२, रघु० १३।५५, ६९, गीत० ११ 2 मस्तक पर चन्दन का साम्प्रदायिक तिलक (चिह्न) 3 तलवार, खड्ग। समः पत्रम् 1 मस्तक पर साम्प्रदायिक चिह्न 2 तमाल का पत्ता।

तमि, मी (स्त्री०) [तम्+इन्, तमि+ङीप्] 1 रात विशेषकर, काला अंधियारी रात—मे तमसो तमामि-भिनत्म्यमुं तमाम् शि० ९।७३ 2 मूली, बेहाशी 3 हल्दी।

तमिल (वि०) [तमिस्रा+अच्] काला,—लम् 1 अंधकार, एतस्मालदकृनीलतमं तमिस्रम्—गीत० ११, करचरणारसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम्—२, कि० ५।२ 2 मानसिक अंधकार (अज्ञान) भ्रम 3 क्रोध, कोप। समः—पक्ष कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का) रघु० ६।३४।

तमिस्रा [तमिस्र+टाप्] 1 (अधियारी) रात सूर्यं तप-त्यावरणाय दृष्टे करेण लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, शि० ६।४३ 2 व्यापक अंधकार।

तमोमय [तमस्+मयट्] राहु।

तम्बा, तम्बिका [तम्बति गच्छति तम्ब्+अच्+टाप्, तम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गाय, गौ।

तय् (भ्वा० आ०—तयते) 1 जाना, हिलना-जुलना—अन्यु-वाम रय तेये पुरात्—भट्टि० १४।७५, १०८ 2 रक्षा-वाली करना, रक्षा करना।

तर [तॄ+अप्] 1 पार जाना, पार करना, मार्ग—भट्टि० ७।५५ 2 भाड़ा—दीर्घाध्वनि यथादेशं यथाकालं तरः भवेत्—मनु० ८।४०६ 3 सेंडक 4 घाटवाली नाव। समः—पण्यम् नाव का भाड़ा,—स्थानम् घाट, वह स्थान जहां नाव आकर ठहरती है।

तरक्ष, तरक्षु [तर चल मार्गं वा क्षिणोति—तर+क्षि+डु, पक्षे पृषो० उलोपः] बिज्जू, लकड़बग्घा।

तरङ्ग [तॄ+अङ्गच्] 1 लहर उत्तर० ३।४७, भर्तृ० १।८१, रघु० १३।६३, श० ३।७ 2 किसी ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग (जैसे कथासरित्सागर का) 3 कूद, छलांग सरपट चौकड़ी, (घोड़े आदि की) छलांग लगाने का क्रिया 4 कपड़ा, वस्त्र।

तरङ्गिणी [तरङ्ग+इनि+ङीप्] नदी।

तरङ्गित (वि०) [तरङ्ग+इतच्] 1 लहराता हुआ, लहरों के साथ उछलने वाला 2 छलकता हुआ 3 थरथराता हुआ,—तम् कम्पायमान—अपाङ्गनर्तङ्गितानि बाणाः—गीत० ३।

तरण [तॄ+ल्युट्] 1 नाव, बेड़ा 2 स्वर्ग,—णम् 1 पार करना 2 जीतना, पराजित करना 3 चप्पू, डाड़।

तरणि [तॄ+अनि] 1 सूर्य 2 प्रकाश-किरण, णिः, —णी (स्त्री०) बेड़ा, घड़नई, नाव। समः—रत्नम् लाल।

तरण्ड, -डम [तॄ+अण्डच्] 1 सामान्य नाव 2 घड़नई (जो उलटे हुए कद्दू या घड़ों को बांसों से बांध कर बनाई जाती है) 3 चप्पू या डांड़। समः—पाशा एक प्रकार की नाव।

तरण्डी, तरड्, तरन्ती (स्त्री०) [तरण्ड+ङीप्, तॄ+अदि, तरन्त+ङीप्] नाव, बड़ा, घड़नई।

तरन्त [तॄ+झच्] 1 समुद्र 2 प्रचंड बौछार 3 मेंढक 4 राक्षस।

तरल (वि०) [तॄ+अलच्] 1 कंपमान, लहराता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ—तारापतिस्तरलविद्यु-

दिवाभ्रवृन्दम् - रघु० १३।७६ घन इव तरलबलाके —गीत० ५, शि० १०।४०, शृं० १।२६ 2 चंचल, अस्थिर, चपल वैराग्यतारस्तरला स्वयं मत्सरिणि पर —शि० २।११५, अमरु २७ 3 शानदार, चमकदार, चटकीला 4 द्रवरूप 5 कामुक, स्वेच्छाचारी, -ल 1 हार की मध्यवर्ती मणि—मुक्तामयोऽप्यनरत्नमध्य —काव्य० ३५, हारस्तारान्तरलगुटिकान् (मल्लिनाथ के अनुसार यह मेघदूत का पक्षपक है) 2 हार 3 समतल सतह 4 तलवा, गहराई 5 हीरा 6 लोहा — ला मादा ।

तरलयति (ना० धा० पर०) कंपन उत्पन्न करना, लहराना, इधर-उधर हिलना-डुलना · अमरु ८७ ।

तरलायते (ना० धा० आ०) काँपना, हिलना, इधर-उधर चलना-फिरना ।

तरलायित | तरल + क्यच् + क्त | बड़ी लहर, कल्लोल ।

तरलित (वि०) | तरल + इतच् | हिलता हुआ, थरथराता हुआ, आंदोलित होता हुआ - तुङ्गतरङ्ग - गीत० ११, हार० ७ ।

तरवारि | तर समागत विपक्षबलं वारयति -तर + वृ + णिच् + इन् | तलवार ।

तरस् (नपुं०) | तृ + असुन् | 1 बल, वेग 2 वीर्य, शक्ति ऊर्जा —कैलासनाथ तरसा जिगीषु —रघु० ५।२८, ११।७७, शि० ९।७२ 3 तट, पार करने का स्थान 4 चढ़ाई, बेड़ा ।

तरसम् | तृ + असच् | आमिष, मांस ।

तरसान | तृ + आनच्, सुट् | नाव ।

तरस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) 1 तेज, फुर्तीला 2 प्रबल, शक्तिशाली, साहसी, ताकतवर —रघु० ५।२३, ११।८९, १६।७७, (पुं०) हलकारा, आशुगामी दूत 2 शरवीर 3 हवा, वायु 4 गरुड का विशेषण ।

तराकु, तरालु | तराय तरणाय अलति प्राप्नोति तर + अल + उण् | एक बड़ी चपटी तली की नाव ।

तरि, —री (स्त्री०) | तरति अनया | तृ + इ, तरि + ङीष् | 1 नाव जीर्णा तरि सरिदंशीवगभीरनीरा उद्भट, शि० ३।७६ 2 कपड़े रखने का सन्दूक 3 कपड़े का छोर या मगड़ी (किनारा) 1 सम०—रथः चप्पू डाड ।

तरिक, तरिकिन् (पुं०) [तर + ठन्, तरिक + इनि] मल्लाह ।

तरिका, तरिणी, तरित्रम्, तरित्री, [तरिक + टाप्, तर + इनि + ङीप्, तृ + इत्रन् तरित्र + ङीप्] नाव किश्ती ।

तरीय [तृ + ईयण्] 1 बेड़ा, नाव 2 समुद्र 3 संक्रम व्यक्ति 4 स्वर्ग 5 कार्य, धन्धा, व्यवसाय, पेशा ।

तरु. [तृ + उन्] वृक्ष—तवमरोहणविधिलम्बरम्बि मुकर समुद्धर्तुम्—मालवि० १।८ । सम० **खण्ड**,—**डम्**, —**षण्डः**,—**डम्** वृक्षों का झुण्ड या समूह,—**जीवनम्** वृक्ष की जड़,—**तलम्** वृक्ष के तने के पास का स्थान, वृक्ष की जड़,—**नखः** कीड़ा,—**मृग** बन्दर,—**राग.** 1 कली या फूल 2 कोमल अंकुर अंखुवा,—**राजः** ताल का पेड़, —**रुहा** पेड़ पर ही उत्पन्न होने वाला पौधा - **वल्लिसिनी** नव मल्लिका लता, - **शायिन्** (पुं०) पक्षी ।

तरुण (वि०) [तृ + उनन्] 1 चढ़ती जवानी वाला, जवान पुरुष युवक 2 (क) बच्चा, नवजात, सुकुमार, कोमल भर्तृ० ३।४९ (ख) नवोदित, (सूर्य की भांति) जो आकाश में ऊँचा न हो, कु० ३।५४ 3 नूतन, ताजा—तरुण दधि— चाण० ६४, तरुण सर्षपशाक नवौदन पिच्छिलानि च दधीनि, अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति । छं० १ 4 जिन्दादिल विशद,—**ण** युवा पुरुष, जवान—पञ्च० १।११, भामि० २।६२,—**णी** युवती या जवान स्त्री - वृद्धस्य तरुणी विषम् — चाण० ९८ । सम०—**ज्वर** एक सप्ताह रहने वाला बुखार,—**दधि** (नपुं०) पाँच दिन का जमाया हुआ दूध —**पोतिका** मैनसिल ।

तरुश (वि०) | तरु + श | वृक्षों से भरा हुआ ।

तर्क (चुरा० उभ० - तर्कयति—ते, तर्कित) 1 कल्पना करना, अटकल करना, शंका करना विश्वास करना, अन्दाज लगाना, अनुमान करना—त्व तावत्कतमा तर्कयसि—श० ६, मेघ० ९६ 2 तर्क करना, विचारना, विमर्श करना 3 खयाल करना, मान लेना (द्विकर्मक) 4 सोचना, इरादा करना, अभिप्राय रखना, विचार में रहना —(पानु) त्व वेदच्छस्फलिक-विशद तर्कयेस्त्रियगम्भ —मेघ० ५३ 5 निश्चय करना, 6 चमकना 7 बोलना, **इ** - ,1 तर्क करना, विचार-विमर्श करना 2 सोचना, विश्वास करना, खयाल करना,कल्पना करना भट्टि० २।९, वि०—,1 अटकल करना, अन्दाज करना 2 सोचना, कल्पना, विश्वास करना 3 विचार विमर्श करना, तर्क करना ।

तर्क [तर्क + अच्] 1 कल्पना, अन्दाज, अटकल—प्रमाणस्ते तर्क, विक्रम० २ 2 तर्कना, अटकलबाजी, चर्चा, दुरूह तर्कना -कुत पुनरस्मिन्नवधारिते आगमार्थे तर्क निमित्तस्याक्षेपस्यावकाश, इदानी तर्कनिमित्त आक्षेप परिहियते —शारी०, तर्कोऽप्रतिष्ठ समूनयो विभिक्षा —भग०, मनु० १२।१०६ 3 संदेह 4. न्याय, तर्कशास्त्र —यत्काव्य मधुवर्षि धर्षितपरास्तर्केषु यस्योत्तम —नै० २२।१५५, तर्कशास्त्रम्, तर्क दीपिका 5 (न्याय० में) उपहासास्पद होना वह परिणाम जो पूर्व कथित तथ्यों

(पक्ष) के विपरीत हो 6 कामना, इच्छा 7 कारण, प्रयोजन। सम०—विद्या न्यायशास्त्र।

तर्कयः [तर्क् + ण्युल्] 1 वादी, पूछताछ करने वाला, प्रार्थी 2 तर्कशास्त्री।

तर्कुः (पुं० स्त्री०) [कृत् + उ किच्च] तकवा लोहे की तकली जिस पर सूत लिपटता जाता है तर्कु कतन-साधनम्। सम०—पिण्ड. —पीठी: बीचली (तकुवे के किनारे पर लिपटा हुआ सूत का गोला।

तर्कुः [=तरक्षु पृषो०] लकड़बग्घा, बिज्जू।

तर्क्यः [तृक्ष् + ण्यत्] यवक्षार, जवाखार, शोरा।

तर्ज् (स्वा० पर०, चुरा० आ० प्राय पर० भी)—तर्जति, तर्जयति—ते, तर्जित) 1 धमकाना, घुड़कना, डराना —सखीमङ्गुल्या तर्जयसि शृ० १, मह्यिानलिसोद्वर्नै-स्तर्जयञ्जिव केतुभि —रघु० ४।२८, ११।७८, १२।४१, भट्टि० १४।८० 2 झिड़कना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना—भट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3 खिल्ली उड़ाना, उपहास करना।

तर्जनम्,—ना [तर्ज् + ल्युट्] 1 धमकाना, डराना 2 निन्दा करना —रघु० १९।१७, कु० ६।४५।

तर्जनी [तर्जन + ङीप्] अंगूठे के पास वाली अंगुली।

तर्ण, तर्णक [तृ + अच्, तर्ण + कन्] बछड़ा —शि० १२।४१।

तर्णि [तृ + नि] 1 बेड़ा 2 सूर्य।

तर्द् (स्वा० पर० तर्दति) 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 मार डालना, काट डालना—भट्टि० १४।१०८, 'तृद्' भी दे०।

तर्पणम् [तृप् + ल्युट्] 1 प्रसन्न करना, तृप्त करना 2 तृप्ति, प्रसन्नता 3 (प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले) पाँच यज्ञों में से एक, पितृयज्ञ (दिवंगत पूर्वजों के पितरों के निमित्त जल तर्पण) 4 समिधा (यज्ञीय अग्नि के लिए इंधन)। सम०—इक्षु भीष्म का विशेषण।

तर्पन (नपुं०) [तृ + ल्युट्] यज्ञीय स्तंभ का शिखर।

तर्ष [तृष् + घञ्] 1 प्यास 2 कामना, इच्छा 3 समुद्र 4 नाव 5 सूर्य।

तर्षणम् [तृष् + ल्युट्] प्यास, पिपासा।

तर्षित, तर्षुल (वि०) [तर्ष + इतच्, तृष् + उत्च्] 1 प्यासा 2 अभिलाषी, इच्छुक।

तर्हि (अव्य०) [तद् + हिल्] 1 उस समय, तब 2 उस विषय में, यदा—तर्हि 'जब—तब' यदि—तर्हि 'अगर—तो' कथ—तर्हि 'तो फिर किस प्रकार'।

तल',—लम् [तल् + अच्] 1 सतह —भवस्तलमिव व्योम कुर्वन् व्योमेव भूतलम्—रघु० ४।७०, (कभी कभी अर्थों में बहुत परिवर्तन न कर, समास के अन्त में प्रयोग) —महीतलम् भूमि की सतह अर्थात् पृथ्वी —शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—शृ० ७।३२ तलमस्तलम् 2 हाथ की हथेली रघु० ६।१८ 3 पैर का तलवा 4 बाहु 5 खण्ड 6 नीचपन, पद की घटियापन 7 निम्न भाग, नीचे का भाग, आधार, पैर, पेंदी—रेखारोधसि वेतसीतरुतले चेत समुत्कण्ठते —काव्य० १ 8 (अंत) वृक्ष या किसी दूसरी वस्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु में प्राप्त शरण —फणी मयूरस्य तले निषीदति—कुमा० १।१३ 9 छिद्र गड्ढा,—ल 1 तलवार की मूठ 2 तालवृक्ष, —लम् 1 तालाब 2 जमीन का कर 3 कारण मूल, प्रयोजन 4 छायी छत पर पहना जाने वाला जनेऊ का फीता (इसी अर्थ में तला भी)। सम०—अङ्गुलि (स्त्री०) पैर की उंगली. —अतलम् सात अधोलोकों में चौथा —ईक्षण सूअर उड़ा नदी. —घात थप्पड़,—ताल एक प्रकार का वाद्ययन्त्र त्रम्,—त्राणम्,—त्राणम् धनुर्धर का चमड़े का दस्ताना,—प्रहार थप्पड़,—वारकम् अधोवस्त्र, लङ्ग।

तलकम् [तल + कन्] बड़ा तालाब।

तलत (अव्य०) [तल + तसिल्] पैंदे से।

तलाघी [तल् + अङ् + किच्च् + ङीप्] चटाई।

तलिका [तल् + इन] नग, अधोवस्त्र।

तलिनम् [तल् + क्त] तला हुआ मांस।

तलिन (वि०) [तल + इनच्] 1 पतला, दुर्बल, कृश 2 थोड़ा कम 3 स्पष्ट स्वच्छ 4 निम्न भाग में या निचली जगह पर स्थित 5 पृथक् **नम्** बिस्तरा, गद्दीदार लम्बी चौकी।

तलिमम् [तल + इमनच्] 1 फल लदी हुई भूमि खड़ंजा 2 बिस्तरा, खटिया पाया 3 चंदोवा 4 बड़ी तलवार या चाकू।

तलुनः [तल् + उनन्] हत्या।

तल्कम् [तल् + कन्] जड़मूल।

तल्प, ल्पम [तल् + घञ्] 1 गद्देदार लम्बी चौकी, बिस्तरा सोफा सहित बिलासनिद्रम्तल्पमुज्झाचकार —रघु० ८।७५, 'बिस्तरा छोड़ा' उठा 2 (आल०) पलंग (जैसा कि गुरुतल्पग में) 3 गाड़ी में बैठने का स्थान 4 ऊपर की मंजिल, बुर्ज, कंगूरा, अटारी।

तल्पक [तल्प + कन्] (नौकर आदि) जिसका कार्य बिस्तरे बिछाना या तैयार करने का है।

तल्पज [तल्प + जन् + ड] 1 श्रेष्ठता सर्वोत्तमता, प्रसन्नता 2 (समास के अन्त में) श्रेष्ठ (इस अर्थ में यह शब्द सदैव पू० आता है। समास के पूर्व पद का चाहे कोई लिंग हो)। —सोमतल्पज श्रेष्ठ सोम इसी प्रकार 'कुमारी तल्पज' श्रेष्ठ कन्या।

तल्लिका [तल्लिन् लीयते + क + टाप् + इत्वम्] ताली, कुंजी।

तरुणी [तरु लसति –तरु+लस्+ड+ङीप्] तरुणी, जवान स्त्री ।

तर्क (वि०) [तर्क्+क्त] 1 चीरा हुआ, काटा हुआ, तराशा हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ 2 गढ़ा हुआ, दे० 'तक्ष्' ।

तर्क (पु०) [तक्ष्+तृच्] 1 बढ़ई 2 विश्वकर्मा ।

तस्करः [तद्-+कु+अच्, सुट्, दलोप] 1 चोर, लुटेरा —मा सञ्चर मत्पान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः—भर्तृ० १।८६, मनु० ४।१३५, ८।६७ 2 (समास के अन्त में), अवन्य, घृणित, री कामुक स्त्री ।

तस्थु (वि०) [स्था] कु, द्वित्वम्] स्थावर, अचर, स्थिर ।

तक्षण्य, तक्षक [तक्षन्+ण्य, तक्षन्+अण्] बढ़ई का पुत्र ।

तात्कालिकः [तत्काल+ठञ्] विशेष प्रवृत्ति, आदत या रुचि को प्रकट करने वाला प्रत्यय ।

तार्क्ष्य [तार्क्ष्यते, पृषो०दस्य ट, ताट् अङ्क ब० स०] कान का आभूषण, बड़ी बाली ।

तार्क्ष्यम् [तटस्थ+ष्यञ्] 1 सामीप्य 2 उदासीनता, अनवधानता, पक्षपातशून्यता - दे० 'तटस्थ' ।

ताड [तड्+घञ्] 1 प्रहार, ठोकर, घूसा या थप्पड़ 2 कोलाहल 3 पूला, गट्ठर 4 पहाड़ ।

ताडका [तड्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] एक राक्षसी, सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी और मारीच की माता [अगस्त्य की समाधि भंग करने के कारण वह राक्षसी बना दी गई। जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डाला तो राम के द्वारा वह मारी गई। राम पहले तो स्त्री के लिए धनुष तानने के विरुद्ध थे, परन्तु ऋषि ने उनकी शंकाओं को दूर कर दिया था] दे० रघु० ११।१४-२० ।

ताडकेय [ताडका+ढक्] ताडका के पुत्र मारीच राक्षस का विशेषण ।

ताडङ्क, ताडपत्रम् [ताडम् अङ्कयते लक्ष्यते–अङ्क्+घञ्, कर्म० ह्रस्वम्, शक० पररूपम् - ताडस्य पत्रमिव ष० त० ह्रस्य ङ] दे० 'ताटङ्क' ।

ताडनम् [तड्+णिच्+ल्युट्] मारना-पीटना, हण्टर लगाना, बेंत लगाना,–लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणा चाण० १२, अवनसोन्यलताडनानि वा - कु० ८।८, शृङ्गार० ९,—नी हण्टर ।

ताडि, - डी (स्त्री०) [तड्+णिच्+इन्, ताडि+ङीष्] 1 एक प्रकार का ताड़, 2 एक प्रकार का आभूषण ।

ताड्यमान (वि०) [तड्+णिच्+शानच्] पीटा जाता हुआ, प्रहार किया जाता हुआ, न (ढोल आदि) वाद्ययन्त्र (जो किसी यष्टिका से बजाया जाय) ।

ताण्डव ,—वम् [तण्डु+अण्] 1 नाच, नृत्य– मदनाण्डवोत्सवान्ते –उत्तर० ३।१८ 2 विशेष कर शिव का उन्माद-नृत्य या प्रचण्ड नाच—श्यम्बकानन्दि वस्तावण्डव देवि भूयादमीष्टयै च हृष्ट्यै च न –मा० ५।१३, १।१ 3 नृत्यकला 4. एक प्रकार का घास । सम०—प्रिय शिव जी ।

तात [तनोति विस्तारयति गोत्रादिकम्– तन्+क्त, दीर्घ] 1 पिता,–मृष्यन्तु लवस्य बालिशता तातपादा –उत्तर० ६, हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्ण - - रघु० ९।७५ 2 स्नेह दया या प्रेम को प्रकट करने वाला शब्द (प्रायः अपने से आयु में छोटों के प्रति, विद्यार्थियों के प्रति या बच्चों के प्रति प्रयुक्त), –तात जन्हापीड–का० रक्षसा भक्षितस्तात तव तातो वनान्तरे—महा० 3 सम्मान सूचक शब्द (जो अपने से बड़े और श्रद्धेय व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है) —हैपिता हि बहवो नरेश्वरास्तेन तात धनुषा धनुर्भृत —रघु० ११।८० तस्मान्मुच्य यथा तात सविधात् तथार्हसि—१।७२। सम०—गु (वि०) पिता के अनुकूल,—(गुः) ताऊ ।

तातम [तात+नृत्+ड] खंजन पक्षी ।

तातल [ताप+ला+क पृषो० पस्य त] 1 एक रोग 2 लोहे का डण्डा, या सलाख 3 पकाना, परिपक्व करना 4 गर्मी ।

तातिः [तायँ+क्तिच्] सन्तान,- ति (स्त्री०) सातत्य उत्तराधिकार - जैसा कि 'अरिष्टतति या शिवतति' में ।

तात्कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [तत्काल+ठञ्] 1 उसी समय में होने वाला 2 अव्यवहित ।

तात्पर्यम् [तत्पर+ष्यञ्] 1 आशय, अर्थ, अभिप्राय —अवेद तात्पर्यम्—आदि 2 प्रस्तुत योजना का आशय– काव्य० २ 3 उद्देश्य, अभिप्रेत पदार्थ, किसी पदार्थ का उल्लेख प्रयोजन हरादा (अधि० के साथ) —इह यथार्थकथने तात्पर्यम्– पा० २।३।४३, भाष्य 4 वक्ता का आशय (वाक्य में विशेष शब्दों के प्रयोगार्थ)— वक्तुरिच्छा तु तात्पर्य परिकीर्तितम्—भाषा० ८४, तात्पर्यानुपपत्ति —८२ ।

तात्त्विक (वि०) [तत्त्व+ठक्] यथार्थ, वास्तविक, परमावश्यक—किं वासीदमृतस्य भेदविगम मार्चिष्मते तात्त्विक भामि० २।८१, तात्त्विक सबध - आदि ।

तादात्म्यम् [तदात्मन्+ष्यञ्] प्रकृति की अभिन्नता, समरूपता, एकता—नयनयोस्तादात्म्यमभ्रीरुहाम्- भामि० २।८१, भगवत्यात्मनस्तादात्म्यम्– आदि ।

तादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) **तादृश, तादृक्ष** (वि०) (स्त्री०—क्षी) वैसा, उस जैसा, उसकी भांति– तादृगुणा –मनु० ९।२२, ३२, अमरु० ४६, यादृक्षस्तादृक्ष –कोई, जो कोई, सामान्य मनुष्य–उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने पञ्च० १।३९० ।

तानः [तन्+घञ्] 1 धागा, रेशा 2. (संगीत० में)

विलम्बित स्वर प्रधान टेक—यथा तान बिना राग —भामि० १।११९, तानप्रदायित्वमिवोपगन्तु—कु० १।८,—नम् 1 विस्तार, प्रसार 2 ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

तानवम् [तनु + अण्] पतलापन, छोटापन - ह्रास्यप्रभा तानवमासस्राद —विक्रमांक० १।१०६।

तानूरः [तन् + ऊरण्] भँवर, जलावर्त।

तान्त (वि०) [तम् + क्त] 1 थका हुआ, निढाल, क्लान्त 2 परेशान, कष्टग्रस्त 3 म्लान, मुर्झाया हुआ दे० 'तम्'।

तान्तवम् [तन्तु + अण्] 1 कातना, बुनना 2 जाला 3 बुना हुआ कपड़ा।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० की) [तन्त्र + ठक्] किसी शास्त्र या सिद्धान्त में सुविज्ञ 2 तन्त्रों से सम्बद्ध 3 तन्त्रों से प्राप्त शिक्षा, -क तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी।

ताप [तप् + घञ्] 1 गर्मी, चमक-दमक—अर्कमयूखताप —ऋ० ४।१०, मा० २।१३, मनु० १२।७६, कु० ७। ८४ 2 सताना, पीड़ित करना, कष्ट, सन्ताप, वेदना - इतरतापशतानि तवेच्छया वितरितानि सहे चतुरानन उद्भट, समस्ताप काम मनसिजनिदाघप्रसरयो —ऋ० ३।८, भर्तृ० १।१६ 3 खेद, दुःख। सम० -त्रय तीन प्रकार के सन्ताप जो मनुष्य को इस संसार में सहन करने पड़ते हैं—अर्थात आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, -हर (वि०) शीतलता देने वाला, गर्मी दूर करने वाला।

तापन [तप् + णिच् + ल्युट्] 1 सूर्य 2 ग्रीष्म ऋतु 3 सूर्यकान्तमणि, कामदेव के बाणों में से एक, नम् 1 जलाना 2 कष्ट देना 3 ठोकना-पीटना।

तापस (वि०) (स्त्री०-सी) 1 सन्यासी से सम्बद्ध कड़ी साधना से सम्बन्ध रखने वाला 2 भक्त, स (स्त्री०-सी) वानप्रस्थ, भक्त, सन्यासी। सम० -इष्टा अंगूर, -तरु, द्रुम, हिंगोट का वृक्ष, इंगुदी।

तापस्यम् [तापस + ष्यञ्] तपस्या।

तापिञ्छ [तापिन छादयति—तापिन् + छद् + ड पृषो०] तमाल का वृक्ष या फूल (नपु०) प्रफुल्लतापिञ्छनिभैरभीक्ष्णम् -शि० १।२२, व्योमस्तापिञ्छगुच्छावलिभिरिव तमोवल्लरीभिर्वियत्ये मा० ५।९, (इसी अर्थ में 'तापिंज' शब्द भी प्रयुक्त होता है)।

तापी [तप् + णिच् + अच् + ङीप्] 1 ताप्ती नदी जो सूरत के निकट समुद्र में गिर जाती है 2 यमुना नदी।

ताम [तम् + घञ्] 1 भय का विषय 2 दास, कामी, 3 चिन्ता, दुःख 4 इच्छा।

ताम्बरम् [ताम + र + क] 1 पानी 2 घी।

ताम्बरसम् [तामरे जले सीदति—सद् + ड] 1 लाल कमल —पद्म० १।९४, रघु० ६।३७, ९।१२, ३७, अमर ७०,८८ 2 सोना, ताँबा, सौ कमलों वाला सरोवर।

तामस (वि०) (स्त्री० सी) [तमोऽस्त्यस्य अण्] 1 काला, अन्धकारग्रस्त, अन्धकार सम्बन्धी, अन्धेरा 2 प्रकृति के तीन गुणों में से एक) - भग० ७।१२, १७।२, मालवि० १।१, मनु० १२।३३-४ 3 अज्ञानी 4 दुर्व्यसनी, -स 1 दुष्ट, दानव, दुर्जन 2 साँप 3 उल्लू, सम् अन्धेरा सी 1 रात, कालीरात 2 नींद 3 दुर्गा का विशेषण।

तामसिक (वि०) (स्त्री० की) [तमस् - ठञ्] 1 काला, अन्धकारयुक्त 2 तम से सम्बन्ध रखने वाला, तम से उत्पन्न या तमोमय।

तामिस्र [तामिस्रा + अण] नरक का एक प्रभाग।

ताम्बूलम् [तम् + उलच्, बुक्, दीर्घ] 1 सुपारी 2 पान (जिसमें कत्था चूना लगाकर सुपारी के साथ लोग भोजन के पश्चात् चबाते हैं) ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्ल जन्मनि मानुष काव्य० ७, रागो न सालिनस्ताम्बूलसवर्धित —भूषार० ७, । सम० -करङ्क, - पेटिका पानदान, -कर ,धर वाहक पान-दान लेकर अमीरों के पीछे चलने वाला नौकर, -वल्ली पान की बेल रघु० ६।६४।

ताम्बूलिक [ताम्बूल + ठन्] तमोली, पान बेचने वाला।

ताम्बूली [ताम्बू + ङीप्] पान की बेल ताम्बूलीना दलैस्तत्र रचिता पानभूमय रघु० ४।६२।

ताम्र (वि०) [तम + रक्, दीर्घ] ताँबे के रङ्ग का, लाल - उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च, - -म् ताँबा, । सम० अक्ष 1 कौवा 2 कोयल, अर्क' कांसा, अश्मन् (पु०) पद्मरागमणि, उपजीविन् (पु०) कसेरा, ताँबे की चीज बनाकर जीवन-निर्वाह करने वाला ओष्ठ (ताम्रोष्ठ या ताम्रौष्ठ) लाल होठ कु० १।४४, कार कसेरा, ताँबे का कार्य करने वाला, कृमि इन्द्रवधूटी, एक प्रकार का लाल कीड़ा, - चूड मुर्गा, - पयुजम् पीतल, -द्रु लाल चन्दन की लकड़ी, पट्ट, -पत्रम् ताम्रपट्टिका जिस पर प्राय भूदान के दाता तथा ग्रहीता के नाम खुदे रहते थे —याज्ञ० १।३१९, - पर्णी मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी मोतियों के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ४।५२, - पल्लव अशोकवृक्ष लिप्त एक देश का नाम (प्राय —ब० व०) इस देश की प्रजा या शासक, वृक्ष चन्दन के वृक्षों का एक भेद।

ताम्रिक (वि०) (स्त्री० -की) [ताम्र + ठक्] ताँबे का बना हुआ ताम्रमय, -क कसेरा, ताँबे का कार्य करने वाला।

ताय् (भ्वा० आ०—तायते, तायितम्) 1 किसी समान

रेखा में प्रसारित करना, फैलाना, विस्तार करना 2 रक्षा करना, शरण में रखना,—वि फैलाना, रचना करना —भट्टि० १५।१०५।

तार (वि०) [तॄ+णिच्+अच्] 1 (स्वरादिक) ऊँचा 2 (शब्दादिक) उत्तान, कर्कश —मा० ५।२० 3 चमकीला, उज्ज्वल, स्पष्ट —हारस्तारास्तारतरलगुटिकाम् (मल्लि० इसको मेघदूत का प्रक्षेपक मानते हैं), उरसि निहितस्तारो हार —अमरु २८ 4 अच्छा, श्रेष्ठ, मुख्य, —र 1 नदी का किनारा 2 मोती की चमक 3. सुन्दर और बड़ा मोती —हारममलतरतारमुरसिदधतम्—गीत० ११ 4 उच्चस्वर,—र —रम् 1 तारा या ग्रह 2 कपूर,—रम् । चाँदी 2 आँख की पुतली (पु० भी माना जाता है) । सम०—अभ्र कपूर, —अरिः लोहभस्म,—पतनम् तारे का गिरना या उल्कापतन, —पुष्प कुन्द या चमेली की बेल,—भासु. सार्थ सार्थ करती हुई या सनसनाती हुई हवा,—शुद्धिकरम्—सोना, —स्वर (वि०) ऊँचे स्वर का या उत्तान ध्वनि का, —हार 1 सुन्दर मोतियों की माला 2 एक चमकीला हार ।

तारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [तॄ+णिच्+ण्वुल्] 1 आगे ले जाने वाला 2 रक्षा करने वाला बचाकर रखने वाला, बचाने वाला, —क 1 चालक, खिवैया, कर्णधार 2 छुड़ाने वाला, बचाने वाला 3 एक राक्षस जिसे कार्तिकेय ने मार गिराया था (यह वज्रांग और वरांगी का पुत्र था, पारियात्र पहाड़ पर तपस्या करके इसने ब्रह्मदेव का प्रसन्न किया और वरदान माँगा कि मुझे संसार में, ७ दिन के बच्चे को छोड़ कर, और कोई न मार सके। इस वरदान की बदौलत यह देवताओं को सताने लगा। दुखी होकर देवता ब्रह्मा के पास गये और इस राक्षस को मारने के लिए उनकी सहायता माँगी (दे० कु० २) ब्रह्मा ने उन देवताओं को उत्तर दिया कि केवल शिव का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है, उसके पश्चात् कार्तिकेय का जन्म हुआ, और उसने अपने जन्म से सातवें दिन उस राक्षस का काम तमाम कर दिया)।—कः, —कम् घड़नई, बेड़ा,—कम् 1 आँख की पुतली 2 आँख । सम०—अरि —जित् (पु०) कार्तिकेय का विशेषण ।

तारका [तारक+टाप्] 1 तारा 2 उल्का, धूमकेतु 3 आँख की पुतली —अर्धं दृशमुदयतारकाम्—रघु० ११। ६९, चौर० ५, भर्तृ० १।११ ।

तारकिणी [तारक+इनि+ङीप्] तारों भरी रात, वह रात जिसमें तारे खिले हुए हों ।

तारकित (वि०) [तारक+इतच्] तारों वाला, सितारों भरा, ताराजटित ।

तारण [तॄ+णिच्+ल्युट्] नाव, घड़नई, —णम् 1 पार उतारना 2 बचाना, छुड़ाना, मुक्त करना ।

तारणि, —णी (स्त्री०) [तॄ+णिच्+अनि, तारणि+ङीष्] घड़नई, बेड़ा ।

तारतम्यम् [तरतम+ष्यञ्] 1 क्रमांकन, अनुपात, सापेक्ष महत्त्व, तुलनात्मक मूल्य 2 अन्तर, भेद—निर्धने निर्धनमेतयोर्द्वयोस्तारतम्यविधिमुक्तवेतसा, बोधनाय विधिना विनिर्मिता रेफ एव जयदैजयन्तिका—उद्भट ।

तारल [तरल+अण्] कामुक, लम्पट, विषयी ।

तारा [तार+टाप्] 1 तारा या ग्रह—हंसश्रेणीषु तारासु —रघु० ४।१९, भर्तृ० १।१५ 2 स्थिर तारा —रघु० ६।२२ 3 आँख की पुतली, आँख का ढेला—कान्तामन्तं प्रमोदादभिसरति सदाभ्रान्ततारश्चकोरं —मा० ९।३०, विस्मयस्मेरतारैः —१।२८, कु० ३।४७ 4 मोती 5 (क) वानरराज वाली की पत्नी, अंगद की माता, इसने अपने पति को राम और सुग्रीव के साथ युद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम द्वारा वाली के मारे जाने पर इसने सुग्रीव से विवाह कर लिया (ख) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी, एक बार चन्द्रमा इसको उठा कर ले गया और याचना करने पर भी वापिस नहीं किया। घोर युद्ध हुआ, अन्त में ब्रह्मा ने सोम को इस बात के लिए विवश कर दिया कि तारा बृहस्पति को वापिस दे दी जाय। तारा से बुध नामक एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बुध ही चन्द्रवंशी राजाओं का पूर्वज कहलाया (ग) राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तथा रोहिताश्व की माता —इसीको तारामती भी कहते हैं) । सम०—अधिप, —आपीड, —पति चाँद—रघु० १३।७६, कु० ७।४८, भर्तृ० १।३१, —पथ, पर्यावरण वातावरण, —प्रमाणम्—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल, —भूषा रात,—मण्डलम् 1 तारालोक, राशिचक्र 2 आँख की पुतली,—मृग, मृगशिरा नाम का नक्षत्र ।

तारिकम् [तार+ठन्] किराया, भाड़ा ।

तारुण्यम् [तरुण+ष्यञ्] 1 युवावस्था, जवानी 2 नाजुकी (आल०) ।

तारेय [तारा+ढक्] 1 बुधग्रह 2 वालि के पुत्र अंगद का विशेषण ।

तार्किक [तर्क+ठक्] 1 नैयायिक, तार्किक 2 दार्शनिक ।

तार्क्ष्यः [तृक्ष+अण् तार्क्षं+ष्यञ्] 1 गरुड का विशेषण —तस्तेन तार्क्ष्यात् किल कालियेन— रघु० ६।४९ 2 गरुड का बड़ा भाई अरुण 3 गाड़ी 4 घोड़ा 5 साँप 6 पक्षी। सम०—ध्वज विष्णु का विशेषण,—वाहनः गरुड का विशेषण ।

तार्तीय (वि०) [तृतीय+अण्] तीसरा ।

तार्तीयीक (वि०) [तृतीय+ठक्] 1 तीसरा—तार्तीयी-

कतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे- नै० ३।१२६, तार्क्षीयोक पुरारेरनतनु मदनप्लोषण लोचन व —भा० १, अने० पा० ।

ताल¹ [तल+अण्] 1 ताड का वृक्ष भर्तृ० २।९०, रघु० १५।२३ 2 ताड का बना हुआ झण्डा 3 तालियाँ बजाना 4 फटफटाना 5 हाथी के कान का फड़फड़ाना 6 (संगी० में) टेक देना, नियत मात्राओं पर ताली बजाना —तारकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम् —उत्तर० २।१९, मेघ० ७९ 7 काँसे का बना एक वाद्ययन्त्र —रघु० ९।७१ 8 हथेली 9 ताला कुण्डी 10 गलदार की मूठ, -**लम्** 1 ताड वृक्ष का फल 2 हरताल । **सम०—अङ्क** 1 बलराम 2 ताड का पत्ता जो लिखने के काम आता है 3 पुस्तक 4 आग, -**अवचर** नाचने वाला, नट,—**केतु** भीष्म का विशेषण, **क्षीरकम्**, —**गर्भ** ताड का निर्यास, **ध्वज**—**भृत्** (पु०) बलराम का विशेषण,—**पत्रम्** 1 ताड का पत्ता जिस पर लिखा जाता है 2 कान का आभूषण विशेष, **बद्ध**—**गुद** (वि०) ताल के द्वारा मापा गया लयात्मक, संगीत में मात्रा काल से विनियमित, **मद्दल** एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, झाल करताल, -**यन्त्रम्** जर्राह का एक उपकरण, —**रेचनक** नायक, अभिनेता,—**लक्षण** बलराम का विशेषण,—**वनम्** वृक्षों का समूह,—**वृन्तम्** पंखा—पं० ३।२१, कु० २।३५ ।

तालकम् [ताल+कन्] 1 हरताल 2 कुण्डी, चटखनी । **सम०** - **आभ** (वि०) हरा, (-**भ**) हरा रंग ।

तालङ्कू [=ताडङ्क] कान का आभूषण विशेष ।

तालव्य (वि०) [तालु+यत्] तालु से सम्बन्ध रखनेवाला, तालु स्थानीय । **सम०** - **वर्ण** तालु स्थानीय अक्षर, अर्थात् इ, ई, च् छ् ज् झ् ञ् और य् तथा श्, **स्वर** तालु स्थानीय स्वर अर्थात् इ ई ।

तालिक [तल+ठक्] 1 खुली हथेली 2 ताली बजाना —यथैकेन न हस्तेन तालिका सम्प्रपद्यते—पंच० २।१२८, उच्चाटनीय करतालिकाना दानादिदानी भवतीभिरेव —नै० ३।७ ।

तालितम् [तड्+णिच्+क्त, इस्य+लत्वम्] 1 रंगदार कपड़ा 2 रस्सी, डोरी ।

ताली [तल्+णिच्+अच्+ङीष्] 1 पहाड़ी ताड का पेड़, ताड का वृक्ष 2 ताड़ी 3 सुगंध युक्त मिट्टी 4 एक प्रकार की कुंजी । **सम०** - **वनम्** ताड के वृक्षों का समूह रघु० ४।३४, ६।५७ ।

तालु (नपुं०) [तरन्तालेन वर्णा -तृ+उण्, रस्य ल] ऊपर के दाँतों और कौवे के बीच का गड्ढा, -तृषा महत्या परिशुष्कतालव - ऋतु० १।११ । **सम०** —**जिह्व** मगरमच्छ,—**स्थान** (वि०) तालु स्थानीय —(**नम्**) तालु ।

तालुर [तल+णिच्+ऊर] जलावर्त, भंवर ।

तालूषकम् [तल+णिच्+ऊषक] तालू ।

तावक (वि०) (स्त्री० **की**) तावकीन (वि०) [युष्मद्+अण्, तवक आदेश तवक+स्वार्थे] तेरा तेरी - त्वय्येव यद्वत्सकृदेव तावक वपु - कु० ५।४४ कि० ३।१२, भामि० १।८६, ९६ ।

तावत् (वि०) (यावत् का सह सबंधी) [तद्+डावतु] 1 इतना, उतना, इतने तेनु तावन्त एवाजौ तावांश्च नर्शने मनै --रघु० १२।४५, हि० ४।७२ कु० २।३३ 2 पूरा विस्तार इतना बड़ा, जाना विस्तार—यावती मम वैदेह्या वृत्तिस्तावती क्लृपतामिति—मनु० ८।१५५, ९।२४९, भग० २।४६ 3 उतना समस्त, सारा, यावद्दत्ता तावद्भुक्तम् - गण०, (अव्य०) 1 पहले (बिना और कुछ काम किये) - आर्ये इदंतावदगम्यतम् —मा० १, आह्लादयंस्त्वं तावच्चन्द्रकरश्चन्द्रकान्तमिव —विक्रम० ५।११, मेघ० १३ 2 किसी की ओर से इसी बीच में जबतक स्थिरप्रतिबन्धो भव, अह तावत स्वामिनमिन्द्रवृत्तिमनुवर्तिष्ये दश० २, रघु० ७।२३ 3 अभी शब्दस्तावत् न विद्यते (किसी उक्ति पर बल देने के लिए)—त्वमेव तावत्प्रथमं सखेति—महा० १, पुरा नाम, त्वमेव तावत्कथितं त्वयेदम् - कु० ५।२७ 5 सचमुच अवश्य (निश्चितसूचक)—दृढस्तावद्भव्य दि० २ 6 के विषय में, के सम्बन्ध में—विग्रहस्तावदुपस्थित दि० २ एवं कृते तव तावत्क्लेश विना प्राणयात्रा प्रसिध्यति पंच० १ 7 पूर्णरूप से—तावत्प्रकीर्णालंकारमाकारम् रघु० ७।४, (तावत्प्रकीर्ण = सावयवेन प्रमाणेन-मल्लि० 8 आश्चर्य (ओह ! कितना आश्चर्य है !) (शब्दों के सहसंबंधी के रूप में 'तावत्' के अर्थ देखो— यावत् के नीचे) **सम०**—**कृत्व** (अव्य०) इतनी बार **मात्रम** केवल इतना,—**वर्ष** (वि०) इतने वर्ष पुराना ।

तावत्तिक (वि०) **तावत्क** (वि०) [तावत्+क, इट्] इतने में मोल लिया हुआ, इतने मूल्य का, इतनी कीमत का ।

तावुरि [पुं० यौक शब्द] वृष राशि ।

तिक्त (वि०) [तिज्+क्त] 1 कड़वा, तीखा (छः रसों में से एक) मेघ० २० 2 सुगंधित—मेघ० ३२, - **क्त** 1 कड़वा स्वाद, (कटु के नीचे दे०) 2 कुटज वृक्ष 3 नीलकंठ 4 सुगंध । **सम०**—**कल्का सरसों**, - **धातु** पित्त,—**फल**, —**मरिच** कनक का पौधा,— **सार** खैर का वृक्ष ।

तिग्म (वि०) [तिज्+मक् जस्य ग] 1 पैना, नुकीला (शस्त्रों की भाँति) 2 प्रचंड 3 गरम, दाहक 4 तीखा चरपरा 5 उत्तेजक जोशीला, - **ग्मम्** 1 गर्मी 2 तीखापन । **सम०**—**अंशु** 1 सूर्य --तिग्मांशुरस्तगत --गीत० ६ 2, आग 3 शिव,—**कर**,—**दीधिति**,—**रश्मि** सूर्य ।

तिज् १ (भ्वा० आ० (तिज् का निजन्त--इच्छार्थक) तितिक्षते, तितिक्षित) 1 सहन करना, सहन करना, साथ निर्वाह करना, साहस के साथ भुगतना—तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम् -मालवि० १।१७, तास्तितिक्षस्व भारत —भग० २।१४, महावी० २।१२, कि० १३।६८, मनु० ६।४७, । (चुरा० उभ० या प्रेर०—तेजयति - ते, तेजित) 1 पैना करना, पनाना—कुसुमचापमतेजयदंशुभि रघु० ९।३९, 2 उकसाना, उत्तेजित करना, भड़काना ।

तितउ | तन् + डउ, द्वित्वम्, ह्रस्वम् | चलनी (वपुं०) छाना ।

तितिक्षा [तिज् + सन् + अ + टाप्, द्वित्वम्] सहनशक्ति, सहिष्णुता, त्याग, क्षमा ।

तितिक्षु (वि०) | तिज + सन् + उ द्वित्वम्] सहिष्णु, सहन करने वाला, सहनशील ।

तित्तिभ | तित्तीतिशब्देन भाति तिति + भण् + ड] 1 नुगद् 2 एक प्रकार का कीड़ा, इन्द्रबधूटी, वीरबहूटी ।

तित्तिर, तित्तिरि [तिति इति शब्दं राति ददाति रा + क] तीतर ।

तित्तिरि [तित्तीति शब्दं राति क बा० ह्रि तारा०] 1 तीतर 2 एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद का प्रथम अध्यापक था ।

तिथ | तिज् + थक्, जलोप] 1 अग्नि 2 प्रेम 3 समय 4 वर्षा ऋतु या शरद ।

तिथि (पु० या स्त्री०) | अत् + इथिन्, पृषो० का डीप्] 1 चान्द्र दिवस,—तिथिरेव तावत्सम्पद्यते —पञ्चा० ५, कु० ६।२३, ७।१ 2 १५ की संख्या । सम०—क्षय° अमावस्या 2 वह तिथि जो आरम्भ होकर सूर्योदय से पूर्व ही या दो सूर्योदय के बीच में ही समाप्त हो जाती है **पत्री** पञ्चाङ्ग,—**प्रणी** चाँद, —**वृद्धि** वह दिन जिसमें तिथि दो सूर्योदय के अन्दर पूरी होती है ।

तिन्दिश (पु०) एक वृक्ष विशेष - दात्यूहैस्तिन्दिशस्य कोटरवर्ति स्कन्धे निलीय स्थितम् - मा० ९।७ ।

तिन्दिश, -डी, तिन्तिडिका, तिन्तिडिक [= तिन्तिडी पृषो०, तिन्तिडी + कन् ! टाप्, ह्रस्व, तिम् + ईकन् नि०] इमली का वृक्ष ।

तिन्दु, तिन्दुक-तिन्दुल [तिम् + कु० नि०, तिन्दु + कन्, पक्षे कस्य ल] तेन्दू का पेड़ ।

तिम् (भ्वा० पर० तेमति तिमित) आर्द्र करना, गीला करना, तर करना ।

तिमि | तिम् + इन्] 1 समुद्र 2 एक बड़ी विशालकाय मछली, ह्वेल मछली - रघु० १३।१० । सम०—**कोश** समुद्र,—**ध्वज** एक राक्षस जिसे इन्द्र ने दशरथ की सहायता से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयी ने मूर्छित दशरथ के प्राणों की रक्षा की, और उनसे दो वर प्राप्त किये, इन्हीं वरों से कैकेयी ने बाद में राम को १४ वर्ष का वनवास दिलाया ।

तिमिङ्गिल [तिमि + गिल् + अच्, मुम्] एक प्रकार की मछली जो 'तिमि' मछली को निगल जाती है—भामि० १।५५, °अशन, °गिल एक ऐसी बड़ी मछली जो तिमिङ्गिल को भी निगल जाती है—तिमिङ्गिलगिलाऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघव ।

तिमित (वि०)[तिम् + क्त] 1 गतिहीन, स्थित, निश्चल 2 आर्द्र, गीला, तर ।

तिमिर (वि०) [तिम + किरच्] अन्धकारमय, विन्ध्यस्यन्ती दृशौर्वि तिमिरे पथि - मेघ० ५, बभूवुस्तिमिरा दिश - महा०,—र — रम् अन्धकार तत्रैव तिमिरमपाकरोति चन्द्र —श० ६।१९, कु० ८।११, शि० ४।५७ 2 अन्धापन 3 जल, मूर्छा । सम०- अरि, —नुद् (पु०) - रिपु सूर्य ।

तिरश्ची [तिर्यक् जाति स्त्रियां ङीप्] जानवर, पशु या पक्षी (स्त्री०) ।

तिरश्चीन (वि०) [तिर्यक् + ख] 1 टेढ़ा, पार्श्वस्थ, तिरछा गत तिरश्चीनमनूरुमात्रे शि० १।२, - यथा तिरश्चीनमलातशल्यम्- उत्तर० ३।३५ 2 अनियमित ।

तिरस् (अव्य०) [तरति दृष्टिपथं - तॄ + असुन्] बाकीपन में, टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, - स निर्यद् वस्तिरोऽवात —अमर० 2 के बिना, के अतिरिक्त 3 चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से, बिना दिखाई दिये (वेद्य साहित्य में 'तिरस्' शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं मिलता—यह मुख्यतः प्रयुक्त होता है (क) 'कृ' के साथ—ढकना, पूरा करना, आगे बढ़ जाना - (रघु० ३।८,१६।२०, मनु० ४।४९, अमर ८१, भट्टि० ९।६२, हि० ३।८) (ख) 'धा' के साथ—ढकना, छिपाना, अभिभूत करना, अन्तर्धान होना (रघु० १०।४८, ११।९१) और (ग) 'भू' के साथ—अन्तर्धान होना (रघु० १६।२०, भट्टि० ६।७१, १४।४४) । सम०—**करिणी—कारिणी** 1 परदा, घूंघट—तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति कु० १।१४, मालवि० २।१ 2 कनात, कपड़े का पर्दा, -**कार** —**क्रिया** 1 छिपाना, अन्तर्धान करना, घृणा, —**कृत** (वि०) 1 जिसकी अवहेलना की गई हो, अपमानित, तिरादृत 2 गर्हित 3 गुप्त, ढका हुआ, —**धानम्** 1 अन्तर्धान होना, दूर हटाना अथ खलु तिरोधानमधिकृत्य—शकु० १८ 2 आच्छादन, अवगुण्ठन, म्यान, - **भाव** ओझल होना,- **हित** (वि०) 1 ओझल हुआ, अन्तर्हित 2 ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त ।

तिरयति (ना० धा० पर०) 1 छिपाना, गुप्त रखना

2 बाधा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से ओझल करना - तिरयति करणानां ग्राहकत्वं प्रमाह —मा० १।८० बारम्बार तिरयति दृशोरुद्गम बाष्प-पूर —२५ 3 जीतना।

तिर्यक् (अव्य०) | तिरस्+अञ्च् + क्विप्, तिरस तिरि आदेश, अञ्चेर्नलोप | टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिरछा या टेढ़ी दिशा में विलोक्यति तिर्यक्—काव्य० १०, मेघ० ५१, कु० ५।७४।

तिर्यंच् (वि०) (स्त्री० -तिरश्ची, तिरश्ची—तिर्यंची) | तिरस्+अञ्च् + क्विप्, तिरस तिरि आदेश, अञ्चेर्नलोप | 1 टेढ़ा, भाड़ा, अनुप्रस्थ, तिरछा 2 मुड़ा हुआ, वक्र (पु० नपु०) जानवर (जो मनुष्य की भाँति सीधा न चल कर, टेढ़ा चलता है) निम्न जाति का या बुद्धिहीन जानवर - बन्धाय दिव्यं न तिरश्चि कदाचन गोत्रादिगमादितपौरुष स्यात् नै० ३।२०, कु० १।४८। सम० अन्तरम् आरपार मापा हुआ मध्यवर्ती स्थान, चौड़ाई, अयनम् सूर्य द्वारा वार्षिक पारक्रमण,—ईक्ष (वि०) तिरछा देखने वाला, जाति (स्त्री०) पशु-पक्षी की जाति (विप० मनुष्य जाति), -प्रमाणम् चौड़ाई,—प्रेक्षणम् तिरछी आँख करके देखना, योनि (स्त्री०) पशु-पक्षी की सृष्टि या वश नियन्यानी च जगते—मनु० ८।२००,—स्रोतस् (पु०) जानवरों की दुनिया, पशु सृष्टि।

तिल |तिल्+क| 1 तिल का पौधा - नामाम्येति तिल-प्रसूनपदवीम् मृच्छ० १० 2 तिल के पौधे का बीज --नाकस्माच्छाण्डिल्यायना दिक्कोणाति तिलैस्तिलान्, लुचिनानिनरैर्यन कार्यसत्र भविष्यति। पञ्च० २।५५ 3 मस्सा, खाल 4 छोटा कण, इतना बड़ा जितना कि तिल—। सम० अम्बु, उदकम् तिल और जल (दानों को मिला कर मृतकों का तर्पण किया जाता है) श० ३, मनु० ३।२२६,—उत्तमा एक अप्सरा का नाम,—ओदन,—नम् तिल और दूध मिश्रित भात, —कल्क तिल को पीस कर बनाई गई पीठी, 'अ तिलों की खली,—कालक मस्सा, तिल के बराबर शरीर पर होने वाला काला दाग—किट्टम्, - खलि (स्त्री०) --खली,-चूर्णम् तल के निकालने के पश्चात् बची हुई तिलों की खल—तण्डुलकम् आलिङ्गन (जिस प्रकार तिल चावल मिलते हैं, इसी प्रकार आलिङ्गन में दो शरीर मिलते हैं), - तैलम् तिलों का तेल,---पर्णी तारपीन,(-र्णम्) चन्दन की लकड़ी,- पर्णी 1 चन्दन का पेड़ 2 धूप देना 3 तारपीन,— रस तिलों का तेल, - स्नेह तिलों का तेल, --होम वह होम जिसमें तिलों की आहुति दी जाय।

तिलक |तिल+कन्|1 सुन्दर फूलों का एक वृक्ष, —आकान्ता तिलकक्रियापि तिलकैर्लीनद्विरेफाञ्जनैं —मालवि० ३।५, न खलु शोभयति स्म वनस्थली न तिलकस्तिलक प्रमदामिव -रघु० ९।४१ 2 शरीर पर पड़ी चिती या खाल पर हुआ कोई नैसर्गिक चिह्न, -क,—कम् 1 चन्दन की लकड़ी या उबटन आदि से किया गया चिह्न मुखे मधुश्रीस्तिलक प्रकाश्य--कु० ३।३० कस्तूरिकातिलकमालि विधाय मायं भामि० २।४, १।१२१ 2 किसी वस्तु का अलङ्कार ('पूज्य' 'प्रमुख' 'श्रेष्ठ अर्थ में समास के अन्त में प्रयुक्त), --का एक प्रकार का हार —कम् 1 मूत्राशय 2 फोड़े 3 एक प्रकार का नमक। सम० आश्रय मस्तक।

तिलन्तुद |तिल + तुद + खश्, मुम्| तेली।

तिलश (अव्य०) | तिल+शस् | तिल तिल करके, कण कण करके, अत्यन्त अल्प परिमाण में।

तिलिप्स (पु०) एक बड़ा साँप।

तिल्व |तिल् + वन्| लोध का पेड़।

तिष्ठद्गु (अव्य०) |तिष्ठन्त्यस्यां गावो यस्मिन् काले, तिष्ठन् +गा नि०| गौओं के दोहने का समय (अर्थात् सायंकाल का समय डेढ़ घण्टा बाकी रहने पर) -अतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१४, (तिष्ठद्गु : रात्रे प्रथमनाडिका)।

तिष्य |तुष्+कर्मणि नि०| 1 २७ नक्षत्रों में आठवाँ नक्षत्र, इसे 'पुष्य' भी कहते हैं 2 पौष मास (चान्द्र), -ष्यम् कलियुग।

तीक् (म्वा० आ०- तीकते) जाना, हिलना-जुलना, तु० 'टीक'।

तीक्ष्ण (वि०) |तिज् + क्त्न, दीर्घ| 1 पैना (सभी अर्थों में), तीखा, शि० २।१०९ 2 गरम, उष्ण (किरणों की भाँति) ऋतु० १।१८ 3 उत्तेजक, जोशीला 4 कठोर, प्रबल, मजबूत (उपाय आदि), 5 रूखा, चिड़चिड़ा 6 कठोर, कटु कड़ा, मर्मान्तक, मनु० ७।१४० 7 अनिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8 उत्सुक 9 बुद्धिमान, चतुर 10 उत्साही, उत्कट, ऊर्जस्वी 11 भक्षक, आत्मसात् करने वाला, क्षण 1 जवाखार 2 लम्बी मिर्च 3 काली मिर्च 4 काली सरसों या राई, - क्षणम् 1 लोहा 2 इस्पात 3 गर्मी, तीक्ष्णता 4 युद्ध, लड़ाई 5 विष 6 मृत्यु 7 शस्त्र 8 समुद्री नमक 9 बिजली। सम० --अंशु 1 सूर्य 2 आग, आयसम् इस्पात, - उपाय प्रबल साधन, मजबूत तरकीब,—कन्द प्याज, कर्मन् (वि०) उद्यमी, उत्साही ऊर्जस्वी, दंष्ट्र व्याघ्र,—धार तलवार, पुष्पम् लौंग,-पुष्पा 1 लौंग का पौधा 2 केवड़े का पौधा, - बुद्धि (वि०) तीव्रबुद्धि, तेज, चतुर, धाघ, कुशाग्रबुद्धि, रश्मि सूर्य, रस 1 जवाखार 2 जहर का पानी, जहर शत्रुप्रयुक्तानां तीक्ष्णरसदायिनाम् मुद्रा० १।२, लोहम् इस्पात, - शूक जौ।

तीम् (दिवा० पर० तीम्यति) गीला होना, तर होना।

तीरम् [तीर्+अच्] 1 तट, किनारा —नदीतीर, सागर-तीर आदि 2 उपान्त, कगर, कार या बार, —र: 1 एक प्रकार का बाज 2 सीमा 3. टीन।

तीरित (वि०) [तीर+क्त] सुलझाया हुआ, समझित, साक्ष्य के अनुसार निर्णीत,—तम् किसी बात का सोच विचार।

तीर्ण (वि०) [तृ+क्त] 1 पार किया हुआ, पार पहुँचा हुआ 2 फैलाया हुआ, प्रसारित 3 पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

तीर्थम् [तृ+थक्] 1 मार्ग, सड़क, रास्ता, घाट 2 नदी में उतरने का स्थान, घाट (नदी के किनारे बनी हुई सोपानपंक्ति) —विषमोऽपि विगाह्यते नय कृतज्ञैस्तीर्थ पयसा-मिवाशय —कि० २।३, (यहाँ 'तीर्थ' का अर्थ 'उपचार या साधन' भी है) —तीर्थं सर्वविद्यावतारणानाम् —का० ४४ 3 जलस्थान 4 पवित्रस्थान तीर्थयात्रा का उप-युक्त स्थान, मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए अर्पित कर दिया गया हो (विशेष कर वह जो किसी पावननदी के किनारे स्थित हो) —शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् —भर्तृ० २।५५ रघु० १।८५ 5 मार्ग, माध्यम, साधन —तदनेन तीर्थेन घटेत—आदि —मा० १ 6 उपचार, तरकीब 7 पुण्यात्मा, योग्यव्यक्ति, श्रद्धा का पात्र, उपयुक्त आदाता —क्व पुनस्तादृशस्य तीर्थस्य साधो समर्प उत्तर० १, मनु० ३।१०३ 8 धर्मोपदेष्टा, अध्यापक -मया तीर्थादिभनविद्या शिक्षिता —मालवि० १ 9 स्रोत, मूल 10 यज्ञ 11 मन्त्र 12 उपदेश, शिक्षा 13 उपयुक्त स्थान या क्षण 14 उपयुक्त या यथापूर्व रीति 15 हाथ के कुछ भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होते हैं 16 दर्शनशास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त वादी 17 स्त्रियो-चित लज्जा 18 स्त्रीरज 19 ब्राह्मण 20 अग्नि,—यह सम्मान सूचक प्रत्यय जो मन्त्रों और मन्त्रदात्रियों के नामों के साथ जोड़ा जाय -उदा० आनन्दतीर्थ आदि। सम० —उदकम् पवित्र जल —तीर्थोदक च बहिश्चन्द्र नान्यत् क्षुद्रिमर्हत उत्तर० १।१३,—कर 1 जैन अर्हत्, धर्मशास्त्रोपदेष्टा, जैन सन्त (इस अर्थ में 'तीर्थंकर' भी) 2 सन्यासी 3 अभिनव दार्शनिक सिद्धान्त या धर्मशास्त्र का प्रवर्तक 4 विष्णु,—काक, —ध्वाक्ष, —वायस तीर्थ का कौवा अर्थात् लोलुप तीर्थोपजीवी -भूत (वि०) पावन, पवित्र, यात्रा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जाना, पावनस्थानों की यात्रा, राज प्रयाग, इलाहाबाद, राजिः श्री (स्त्री०) बनारस का विशेषण, -वाक, सिर के बाल,—विधि (क्षौर आदि) संस्कार जो किसी तीर्थ स्थान पर किये जायें, -सेविन् (वि०) तीर्थ में वास करने वाला (पु०) सारस।

तीर्थिकः [तीर्थ+ठन्] तीर्थ यात्री, वह सन्यासी ब्राह्मण जो तीर्थों के दर्शनार्थ निकला हो, पण्डा।

तीवर [तृ+क्वरप्] 1 समुद्र 2 शिकारी 3 राजपुत्री की किसी क्षत्रिय (वर्णसंकर) के संयोग से उत्पन्न वर्ण-संकर सन्तान।

तीव्र (वि०) [तीव+रक्] 1 कठोर, गहन, पैना, तेज, प्रचण्ड, कड़वा, तीखा, उग्र—विलङ्घिताघोरणतीव्रयत्ना —रघु० ५।४८, घोर या प्रचण्ड प्रयत्न—उत्तर० ३। ३५ 2 गरम, उष्ण 3 चमकीला 4 व्यापक 5 अनन्त, असीम 6 भयानक डरावना,—व्रम् 1 गरमी, तीक्ष्णता 2 किनारा 3 लोहा, इस्पात 4 टीन, रांगा,—व्रम् (अव्य०) प्रचण्ड रूप से, तेजी से, अत्यन्त। सम० —आनन्द शिव का विशेषण,—गति (वि०) शीघ्र-गामी, फुर्तीला —पौरुषम् 1 साहसपूर्ण शौर्य 2 शूर-वीरता,—वेग (वि०) 1 दृढ-आवेगयुक्त, दृढ़निश्चयी 2 अत्यन्त, अत्यन्त तेज।

तु (अव्य०) [तुद्+डु] (वाक्य के आरम्भ में विशेषतः प्रयोगाभाव, प्रायः प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग) 1 विराम सूचक अव्यय अर्थ —'परन्तु' 'इसके विप-रीत' 'दूसरी ओर' 'तो भी'—स सर्वथा दुरात्मानमन्त यथौ, एक तु सुनसुलदर्शनसुख न लेभे का० ५०, विषयेषु तु पितुरस्या मनोरथनयनमर्दाग्धनमेव —श० ५, (इस अर्थ में 'तु' बहुधा 'कि' और 'पर' के साथ जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के विपरीत वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2 और अब, तो, और -एकदा तु प्रतिहारो समुपसृत्यावदीत् —का० ८, राजा तु तामार्यां श्रुत्वाऽब्रवीत् —१२ 3 के सम्बन्ध में, के विषय में, की बाबत —प्रवर्तयेता ब्राह्मणानुद्दिश्य याक, चन्द्रापरागं प्रति तु केनापि विघ्न-लब्धासि —मुद्रा० १ 4 कभी कभी इससे 'भेद' या 'श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है—मृष्ट पयो मृष्टतर तु दुग्धम् —गण० 5 कभी कभी यह 'बलात्मक' अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—भीमस्तु पाण्डवाना रौद्र, गण० 6 कभी कभी केवल यह पद पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है—निरर्थक तुहीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम् —चन्द्रा० २।६।

तुक्कार, तुक्कार, तुक्कार (पु०) विन्ध्याचल पर रहने वाली एक जाति के लोग—तु० विक्रमांक० १८।९३।

तुङ्ग (वि०) [तुङ्ग्+घञ्, कुत्वम्] 1 ऊँचा, उन्नत, लम्बा, उत्तुग, प्रमुख—जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतर-लिततुङ्गतरङ्गम् —गीत० ११, तुङ्ग नगोत्सगमिवारु-रोह —रघु० ६।३ ४।७०, शि० २।४८, मेघ० १२।६४ 2 दीर्घ 3 गुम्बजदार 4 मुख्य, प्रधान 5 उग्र, जोशीला,—ङ्ग 1 ऊँचाई, उन्नतता 2 पहाड़ 3 चोटी, शिखर 4 दुधमुहा 5 मैदा 6 नारियल का पेड़। सम०

—**द्वीप** पारा, —**द्विष** दुर्दान्त हाथी, मदमत्त हाथी, —**भद्रा** एक नदी जो कृष्णा नदी में गिरती है, - **वेणा** एक नदी का नाम, —**शेखर** पहाड़।

तुङ्गी [तुङ्ग+ङीष्] 1 रात 2 हल्दी। सम०—**ईश** 1 चन्द्रमा 2 सूर्य 3 शिव की उपाधि 4 कृष्ण की एक उपाधि, - **पति** चन्द्रमा।

तुच्छ (वि०) [तुद् + क्विप् = तुद् + छो + क] 1 खाली, शून्य, असार, मन्द 2 अल्प, क्षुद्र, नगण्य 3 परित्यक्त, सम्पर्कित 4 नीच, कमीना, नगण्य, तिरस्करणीय, निकम्मा 5 गरीब, दीन दुखी, - **च्छम्** तुष भूसी। सम० —**द्रु** एरण्ड का वृक्ष, —**धान्य**, —**धान्यक** भूसी, बूर।

तुञ्ज [तुञ्ज् + अच्] इन्द्र का वज्र।

तुदुब [तुद् + उब] मूसा, चूहा।

तुद (तुदा० पर०—तुदति) 1 टेढ़ा करना, मोड़ना, झुकाना 2 चालबाजी करना, ठगना, धोखा देना।

तुण्डम् [तुण्ड + अच्] 1 मुंह, चेहरा, चोंच (सूअर की) —श्रयनतुण्डैरनाकुटिलैः (शुका)—काव्या० २।९ 2 हाथी की सूंड 3 उपकरण की नोक।

तुण्डि. [तुण्ड् + इन्] 1 चेहरा, मुंह 2 चोंच —डि (स्त्री०) नाभि, मुण्डी।

तुण्डिन् (पु०) [तुण्ड + इनि] शिव के बैल का नाम।

तुण्डिल (वि०) [तुण्ड् + भ] दे० 'तुन्दिल'।

तुन्दिल (वि०) [तुण्ड् + भ सिच्चा० लच्] 1 बातूनी, वाचाल 2 उभरी हुई नाभि वाला 3 मोटा —दे० 'तुन्दिल'।

तुत्थ [तुद् + थक्] 1 आग 2 पत्थर, स्त्रीय एक प्रकार का नीला थोथा या तूतिया जो सुर्मे की भांति आंख में डाला जाय,—स्था 1 छोटी इलायची 2 नील का पौधा। सम०—**अञ्जनम्** तूतिया या कासीस, जो आंखों में स्याही की भांति लगाया जाय।

तुद् (तुदा० पर०—तुदति, तुन्न) 1 प्रहार करना, घायल करना, आघात करना तुनंद गदया चारिन् - भट्टि० १४।२१, २५।३७, शि० २०।७७ 2 चुभोना, अंकुश चुभोना 3 खरोंचना, चोट पहुंचाना 4 पीड़ा देना, तंग करना, सताना, कष्ट देना —सुतीक्ष्णधारासदनोद्यतायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्—ऋतु० २।४, ६।२४, आ—, प्रहार करना, ताड़ना देना, मनु० ४। ६८, प्र—, मारना, चोट पहुंचाना, घायल करना (प्रे०) प्रेरित करना, आगे ढकेलना (आत्म०), जोर डालना, बार २ आग्रह करना (किसी काम को करने के लिए) प्रवितथं तुदसीति प्रलोभयन्ती न जहाति भामकुलं रघूणामदरं० पञ्च० १।५६।

तुन्दम् [तुन्द् + इन् पृषो०] पेट, तोंद। सम०—**कूपिका**, **कूपी** नाभि का गर्त —**परिमार्जं**, **परिमृज्** मूर्ख (वि०) सुस्त, आलसी।

तुन्दवत् (वि०) [तुन्द + मतुप् अस्य मत्वम्] तोंदवाला मोटा।

तुन्दिक, **तुन्दिन्**, **तुन्दिभ**, **तुन्दिल** (वि०) [तुन्द + ठन्, तुन्द + इनि, तुन्दि + भ, तुन्द + इलच्] 1 मोटे पेट वाला 2 जिनकी तोंद बढ़ गई है 3 भरा हुआ, लदा हुआ —मकरन्दतुन्दिलानामरविन्दानामयं महामान्य —भामि० १।६।

तुन्न (वि०) [तुद् + क्त] 1 प्रहृत, चोट किया हुआ, घायल 2 सताया हुआ। सम०—**वाय** दर्जी।

तुप् (दिवा० क्रया० पर०—तुप्यति, तुम्नाति) चोट मारना क्षति पहुंचाना, प्रहार करना—भट्टि० १७। ७९, १०।

तुमुल (वि०) [तु + मलच्] 1 जहां पर शोरगुल मच रहा हो, कोलाहलमय भग० १।१३, १९ 2 भीषण, क्रोधी रघु० ३।५७ 3 उत्तेजित 4 उद्विग्न, घबड़ाया हुआ व्याकुल, अव्यवस्थित —रघु० ५।६९, (पु० नपु०) 1 हाहल्ला, हंगामा 2 अव्यवस्थित द्वन्द्व युद्ध, रणसंकुल।

तुम्ब [तुम्ब् + अच्] एक प्रकार की लौकी।

तुम्बर [तुम्ब + र + क] एक गन्धर्व का नाम, दे० तुम्बरु एक प्रकार का बाजा यन्त्र तान पूरा।

तुम्बा [तुम्ब + टाप्] 1 एक प्रकार की लम्बी लौकी दुबार साग।

तुम्बि, **बी** (स्त्री०) [तुम्ब् + इन्, तुम्बि + ङीष्] एक प्रकार की लौकी कड़वी तूम्बी,—न हि तुम्बीफलविक्रेतुर्वीणादण्डः प्रयाति महिमानम्—भामि० १।८०।

तुम्बु (बु) **रु** [तुम्ब् + उरु] एक गन्धर्व का नाम।

तुरङ्ग [तुरति वेगेन गच्छति—तुर + गम् + ड] 1 घोड़ा —तुरगखुरदलनक्षता द्रि रेणु —शि० १।३१, रघु० १।४२, ३।५१ 2 मन, विचार —गी घोड़ी। सम०—**आरोह** घुड़सवार, **उपचारक** साईस,—**ब्रह्मचर्यम्**, **यम्**, **यौ** - **ब्रह्मचर्यम्** बलात् कृत या अनिवार्य ब्रह्मचर्य, स्त्रीसंग के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य-जीवन बिताना।

तुरगिन् (पु०) [तुरग + इनि] घुड़सवार।

तुरङ्ग [तुर + गम् + कच् मुम् वा डित्च] घोड़ा —भानु सकृद्युक्ततुरङ्ग एव शि० ५।५, रघु० ३।३८, १३।३, —**गम्** मन विचार, गी घोड़ी। सम०—**अरि** भैंसा, —**द्विषो** भैंस, —**प्रिय**, **यम्** जौ, - **मेध** अश्वमेध यज्ञ -रघु० १३।६१,— **यायिन्**, **वाहिन्** (पु०) सवार, — **वदन** किन्नर,— **शाला**, - **स्थानम्** अस्तबल, अश्वशाला,—**स्कन्ध** घोड़ों का दल।

तुरङ्गम [तुर + गम + खच्, मुम्] घोड़ा, रघु० ३।६३, ५।७२।

तुरायण [तुर + फक] 1 अनासक्ति 2 एक प्रकार का यज्ञ।

तुरासाह (पु०) [तुर + सह + णिच् + क्विप्] (कर्तृ० ए० व०–तुरासाट्-ड्) इन्द्र, कु० २।१, रघु० १५।४०।

तुरी [तुर्+इन्+ङीष्] 1 एक रेशेदार उपकरण जिससे जुलाहे बाने के धागों को साफ करके अलग अलग करते हैं 2 नली, जुलाहे की नाल -तद्भटचातुरीतुरी —नै० १।१२ 3 चित्रकार की कूची।

तुरीय (वि०) [चतुर्+छ, अ.लोप] चौथा,- यम् चौथाई, चौथा भाग, चौथा (वेदा० द० में) 2 आत्मा की चतुर्थ अवस्था जिसमें वह ब्रह्म अर्थात् परमात्मा - मय तदाकार हो जाती है। सम०—वर्ण, चौथे वर्ण का मनुष्य, शूद्र।

तुरुष्क [ब० व०] तुर्क लोग।

तुर्य (वि०) [चतुर्+यत्, आ.लोप] चौथा, नै० ४।१२३, - यंस् 1 एक चौथाई, चौथा भाग 2 (वेदा० द० में) आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्म के साथ तदाकार हो जाती है।

तुल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ—तोलति, तोलयति - ते, (तुलयति-ते भी जिसे कुछ लोग 'तुला' की नामधातु मानते हैं) 1 तोलना, मापना 2 मन में तोलना, विचार करना, सोचना 3 उठाना, ऊपर करना —कैलासं तुलिते —महावी० ५।३७, पौलस्त्यतुलितस्याद्रेरादधान इव ह्रियम्—रघु० ४।८०, १२।८९, शि० १५।३० 4 सम्भालना, पकड़ना सहारा देना -पृथिवीतले तुलितभूभृदुरुमे—शि० १५।३०, ६१ 5 तुलना करना, उपमा देना (करण० के साथ)—मुखं इलेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम् - भर्तृ० ३।२०, शि० ८।१२ 6 तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ) प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः —मेघ०६४ 7 हल्का करना, गर्हण करना, तिरस्कार करना - अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वाम् मेघ० २०, (यहाँ 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा ले जाना') शि० १५।३० 8 सन्देह करना, अविश्वास पूर्वक परीक्षण करना—क श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति—मृच्छ० ३।२३, ५।४३ (यहाँ कुछ संस्करणों में 'तूलयिष्यति' भी पाठ है) 9 जाच करना, परीक्षण करना, दुर्दशा करना - हा अवस्थे ! तुलयसि—मृच्छ० १, (तुलयसि), —उद्, —सम्भालना, सहारा देना, थामे रहना।

तुलनम् [तुल्+ल्युट्] 1 तोलना 2 उठाना 3 तुलना करना उपमा देना आदि,—ना 1 तुलना 2 तोलना 3 उठाना उन्नयन 4 निर्धारण करना, आकना, प्राक्कलन करना 5 परीक्षा करना।

तुलसी [तुला सादृश्यं स्यति नाशयति –तुला+सो ! क +ङीष्] एक पवित्र पौधा जिसको हिन्दू लोग विष्णु के उपासक पूजा करते हैं। सम०—पत्रम् (ना०) तुलसी का पत्ता, (आल०) बहुत तुच्छ उपहार,—विवाह. कार्तिक शुक्ला द्वादशी को, बालकृष्ण की प्रतिमा के साथ तुलसी का विवाह।

तुला [तोल्यतेऽनया—तुल् + अङ्+टाप्] तराजू, तराजू की डंडी।

तुलया धृ 1 तराजू में रखना, तोलना 2 माप तोल 3. तोलना 4 मिलाना—मुलना, समानता, समकक्षता, समता (सब०, करण० या समास में प्रयोग) —किं धूर्जटेरिव तुलामुपयाति सङ्ख्ये—वेणी० ३।८, तुला यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।५४, रघु० ८।१५, मत्त परस्पर—तुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, १९।८, ५० 5 तुला राशि सातवीं राशि—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि—पंच० १।३३० 6 घर की छत पर लगा ढालू शहतीर 7 सोना चाँदी तोलने का १०० पल बट्टा। सम०—कूट कम तोलना,—कोटिः,— ही नूपुर (पैरों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण)—शीला अलक्तकवर्णाक्तपोत्पला दलतुलाकोटिनिनादकोमल —शि० १२।८४,—कोश ध तोल द्वारा कठिन परीक्षा,—दानम् शरीर के बराबर तोल कर सोने या चाँदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान,—धट तराजू का पलड़ा,- धर.1 व्यापारी व्यवसायी, सौदागर2 राशिचक्र में तुलाराशि,—धार व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर —परीक्षा तुला द्वारा तोलने की कठिन परीक्षा, - पुरुष सोना, जवाहरात तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुएँ जो एक मनुष्य के भार के बराबर हो (तथा दान में किसी ब्राह्मण के लिए दी जाएँ) तु० तुलादान,—ग्रहः, - ग्रहः तराजू की डंडी या डोरी,—मानम्,—यष्टिः तराजू की डंडी,—रोमन् धूपची, मूजा,—सूत्रम् तराजू की डोरी।

तुलित (भू० क० कृ०) [तुल्+क्त] 1 तोला हुआ, प्रतितुलित 2 तुलना किया हुआ, उपमित, बराबर किया हुआ भर्तृ० ३।३६, दे० 'तुल्'।

तुल्य (वि०) [तुलया समित यत्] 1 समान प्रकार या श्रेणी का, सतुलित, समान, सदृश, अनुरूप (सब० या करण० के साथ अथवा समास में) मनु० ४।८६, याज्ञ० २।७७, रघु० २।३५, १२।८०, १८।३८ 2 योग्य 3 समरूप, वही 4 समदर्शी। सम०- दर्शन समदर्शी, सबको समदृष्टि से देखने वाला,- पालम् मिलकर मतदान करना, सहपान, - योगिता (अल० शा० में) एक अलंकार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पदार्थों का एकत्र संयोग, पदार्थ चाहे प्रसंगानुकूल हो अथवा असंबद्ध- नियतानां सकृद्धर्मं सा पुनस्तुल्ययोगिता —काव्य० १०, तु० चन्द्रा० ५।४१, ल्य (वि०) अनुरूप, समरूप, समान, सदृश।

तुवर (वि०) [तु+वरच्] 1 कषाय, कसैला 2. बिना दाढ़ी का (तुवर भी)।

तुष् (दिवा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, परितृप्त होना, खुश होना (प्रायः करण० के साथ)—रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा—भर्तृ० २।८०, मनु० ३।२०७, भग० २।५५, मट्टि० २।१३, १५।८, रघु० ३।६२, प्रेर०—तोषयति ते, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, सन्तुष्ट करना, इच्छा—,परितृप्त होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च मनु० ३।६०, भर्तृ० ३।५, भग० ३।१७।

तुषः [तुष्+क] अनाज की भूसी, अजानतात्त्वं (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा मनु० ४।७८। सम० अग्नि—अनलः अनाज की भूसी या बुर की आग,—अम्बु (नपुं०),—उदकम् चावल या जौ की कांजी,—यह, सारः आग।

तुषार (वि०)[तुष+आरक्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त—शि० ९।७, अथा हि तृप्तायन्न वारिधारा स्वादु सुगन्धि स्यदते तुषारात् नै० ३।९३, पुं० 1 कोहरा, पाला 2 बर्फ, हिम—कु० १।६, ऋतु० ४।१ 3 ओस—रघु० १४।८४ शि० ५।१९ 4 धुन्ध, क्षीणवर्षा, फुहार, ठण्डे पानी की बौछार,—पक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम् रघु० २।१३, ९।६८ 5 एक प्रकार का कपूर। सम०—अद्रि, —गिरिः,—पर्वत हिमालय पहाड़—तुषारसंपातः —मेघ० १०७, कणः ओस के कण, हिमकण, कुहरा पाला,—काल सरदी का मौसम,—किरणः, रश्मिः चन्द्रमा,—अमर० ४९, लिं० ९।२७,—गौर (वि०) 1 हिम की भाँति श्वेत 2 हिम के कारण श्वेत,—द कपूर।

तुषिताः (ब० व०)[तुष्+क्त+टाप्] उपदेवताओं का समूह जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं।

तुष्ट (भू० क० कृ०) [तुष्+क्त] 1 प्रसन्न, तुष्ट, खुश, परितृप्त, परितुष्ट 2 जो कुछ अपने पास है उसी से सन्तुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन।

तुष्टिः (स्त्री०) [तुष्+क्तिन्] 1 सन्तोष, परितृप्ति, प्रसन्नता, परितोष 2 (सा० द० में) मौन स्वीकृति, प्राप्त वस्तु से अधिक की लालसा न होना।

तुष्टुः [तुष्+तुक्] कर्णभूषण कानों में पहनने की मणि तुल=तुष।

तुहिन (वि०) [तुह्+इनन्, ह्रस्वश्च] ठण्डा, शीतल, —नम् 1 हिम, बर्फ 2 ओस, कुहरा तुषारपतनं-स्तुहिनं पतन्ति—ऋतु० ४।७, ३।१५ 3 चाँदनी 4 कपूर। सम०—अंशुः,—करः,—किरणः,—द्युतिः, —रश्मि 1 चन्द्रमा,=शि० ९।३० 2 कपूर, अचलः —अद्रिः,—शैलः हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—कणः ओस की बूंद—अमर० ५४,—शर्करा बर्फ।

तू । (क्रया० उभ०—तूणोति-ते) सिकोड़ना, ॥ (चुरा० आ० तूणयते) भरना, भर देना।

तूण [तूण्+घञ्] तरकस—मिलितशिलीमुखपाटलि-पटलकृत्तस्मरतूणविलासे—गीत० १, रघु० ७।५७। सम०—धार धनुर्धर।

तूणी, तूणीर [तूण+ङीष्, तूण+ईरन्] तरकस—रघु० ९।५६।

तूदर [तु+किवप्, तु+द् पृषो०] 1 बिना दाढ़ी का मनुष्य 2 बिना सींग का बैल 3 कषाय, कसैला 4 हिजड़ा।

तूर् (दिवा० आ०—तूर्यते, तूर्ण) 1 जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2 चोट पहुँचाना, मारना।

तूरम् [तूर्+घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

तूर्ण (वि०) [त्वर्+क्त, ऊठ्, तस्य नत्वम्] फुर्तीला, तेज, शीघ्रकारी 2 द्रुतगामी, वेगा,—र्णम् फुर्ती, शीघ्रता, —र्णम् (अव्य०) फुर्ती से जल्दी से चूर्णमालीयना तूर्णं पूर्णेन्दुनिभानने—सुभाष०।

तूर्य,—र्यम् [तूर्यते ताड्यते तूर्+यत्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुरही—मनु० ७।२२५, कु० ३।१०। सम० —ओघः उपकरणों का समूह।

तूल,—लम् [तूल्+क] रूई,—लम् 1 पर्यावरण, आकाश, वायु 2 घास का गुच्छा 3 शहतूत का पेड़,—ला 1 कपास का पेड़ 2 लैम्प की बत्ती, स्त्री 1 रूई 2 दीवे की बत्ती 3 जुलाहे का बुरा या कूची 4 चित्रकार की कूची या तूलिका 5 नील का पौधा। सम०—कार्मुकम् धनुष धुनकी, अर्थात् रूई पीनने की धनुही,—पिचुः रूई,—शर्करा बिनौला रूई के पौधे का बीज।

तूलकम् [तूल+कन्] रूई।

तूलि (स्त्री०) [तूल्+इन्] चितेरे की कूची।

तूलिका [तूलि+कन्+टाप्] चित्रकार की कूची, लेखनी, —उन्मीलित तूलिकयेव चित्रम्—कु० १।३१ 2 रूई की बत्ती (दीपक के लिए अथवा उबटन आदि लगाने के लिए) 3 रूई भरा गद्दा 4 बर्मा, छेद करने की सलाख।

तूष्णीक (वि०) [तूष्णीम्+क, मलोप] चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी।

तूष्णीम् (अव्य०)[तूष्+नीम् वा०] नीरवता से चुपचाप, चुपके से, बिना बोले या बिना किसी शोरगुल के—किं भवास्तूष्णीमास्ते—विक्रम० २, न योत्स्य इति गोविन्द मुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह—भग० २।९। सम०—भाव नीरवता, निस्तब्धता—शील खामोश, स्वल्पभाषी या मौनी।

तृणम् [तृस्+तन्, दीर्घ] 1 जटा 2 धूल 3 पाप 4 कण, सूक्ष्म जर्रा ।

तृह् (तुदा० पर०—तृहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे० तृह् ।

तृणम् [तृह्+क्त, हलोपश्च] 1 घास—किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसर केसरी -भर्तृ० २।२९ 2 घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3 तिनकों की बनी कोई चीज (जैसे बैठने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त—तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्समुपाढि–भर्तृ० २।१७, दे० 'तृणीकृ' भी । सम०—अग्नि 1 घास या तिनकों की आग—मनु० ३।१६८ 2 जल्दी बुझ जाने वाली आग,- अञ्जनः गिरगिट,—अटवी ऐसा जङ्गल जिसमें घास की बहुतायत हो,—आवर्त हवा का बवण्डर, भभूला, उपधृक् (नपु०),—कुङ्कुमम्, - गौरम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—द्रुमः ताड का वृक्ष,—उल्का तिनकों की मशाल, फूंस की आग की लौ,—ओकस् (नपु०) फूंस की झोंपडी,- काण्ड,- इक्षु घास का ढेर, कुटी —कुटीरकम् घास फूंस की कुटिया —केतुः ताड का वृक्ष,- गोधा एक प्रकार की गिरगिट, गोह, गोहिन् (पु०) नीलम, नीलकान्त मणि, - चर. गोमेद, एक प्रकार का रत्न,- जलायुका, —जलूका तिलली का लार्वा, - द्रुम. 1 ताड का वृक्ष, खजूर 2 नारियल का पेड 3 सुपारी का पेड 4 केतकी का पौधा 5 छुहारे का वृक्ष,- धान्यम् जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे, —ध्वज. 1 ताड का वृक्ष 2 घास, पीडम् दस्त-ब-दस्त लड़ाई, पूली चटाई, सरकण्डों का बना मूढा— प्राय (वि०) तिनके के मूल्य का, निकम्मा, नगण्य, बिन्दु. एक ऋषि का नाम—रघु० ८।७९,—मणि. एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल), —मत्कुण. जमालत या जामिन प्रतिभू (सम्भवत 'ऋणमत्कुण' का अशुद्ध पाठ), राज. 1 नारियल का पेड 2 घास 3 ईख, गन्ना 4 ताड का पेड –वृक्षः 1 ताड का पेड, खजूर का वृक्ष 2 छुहारे का वृक्ष 3 नारियल का पेड 4 सुपारी का पेड, - शीतम् एक प्रकार का सुगन्धित घास,- सारा केले का पेड, —सिंह कुल्हाडा,—हर्म्य घास फूंस का बना घर ।

तृण्या [तृण+य+टाप्] घास का ढेर ।

तृतीय (वि०) [त्रि+तीय, सप्र०] तीसरा,—यम् तीसरा भाग । सम० —प्रकृतिः (पु०, स्त्री०) हीजडा ।

तृतीयक (वि०) [तृतीय+कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुखार) तेया ।

तृतीया [तृतीय+टाप्] 1 चान्द्र पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2 (व्या० में) करण कारक या उसके विभक्ति-चिह्न । सम०—कृत (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता गया,—तत्पुरुषः करणकारक का समास,—प्रकृतिः (पु० स्त्री०) हीजडा ।

तृतीयिन् (वि०) [तृतीय+इनि] तीसरे अंश का अधिकारी (दाय का) ।

तृद् (भ्वा० पर०, रुधा० उभ० तर्दति, तृणत्ति, तृन्ते, तृन्न) 1 फाडना, खण्डशः करना, चीरना 2 मार डालना, नष्ट करना, संहार करना—भट्टि० ६।३८, १४।३३, १०८, १५।३६ ४४ 3 मुक्त करना 4 अवज्ञा करना ।

तृप् I (दिवा०, स्वा०, तुदा० पर० तृप्यति, तृम्पोति, तृपति, तृप्त) 1 सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना —अद्य तप्स्यन्ति मांसादा —भट्टि० १६।२९, प्रार्थिन्न चातृपत् क्रूर—१५।२९, (प्राय. करण० के साथ, परन्तु कभी-कभी सम्प्र०या अधि० के साथ भी) —को न तृप्यति वित्तेन –हि० २।१७४, तृप्तस्तत्पितृशिक्षितेन–भर्तृ० २।३४, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः, नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचना –पञ्च० १।१३७, तस्मिन्हि ततृपुर्देवास्तते यज्ञे - महा० 2 प्रसन्न करना, परितृप्त करना,—प्रेर० परितृप्त करना, प्रसन्न करना —इच्छा० तितृप्सति, तितर्पिषति, ॥ (भ्वा० पर० चुरा० उभ०—तर्पति, तर्पयति —ते) 1 जलाना, प्रज्वलित करना 2 (आ०) सन्तुष्ट होना ।

तृप्त (वि०) [तृप्+क्त] सन्तृप्त, सन्तुष्ट, परितुष्ट ।

तृप्ति (स्त्री०) [तृप्+क्तिन्] सन्तोष, परितोष, रघु० २।३९, ७३, ३।३ मनु० ३।२७१, भग० १०।१८ 2 अतितृप्ति, ऊब 3 प्रसन्नता, परितुष्टि ।

तृष् (दिवा० पर० तृष्यति, तृषित) 1 प्यासा होना,–भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५१ 2 कामना करना, लालायित होना, उत्सुक या उत्कंठित होना ।

तृष् (स्त्री०) [तृष्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तृट्–ड्) 1 प्यास—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि—भर्तृ० ३।९२, ऋतु० १।११ 2 लालसा उत्सुकता ।

तृषा – दे० तृष् । सम०—आर्त (वि०) प्यास से आकुल प्यासा,—हृत् पानी ।

तृषित (भू० क० कृ०) [तृष्+क्त] 1 प्यासा—घटः ९, ऋतु० १।१८ 2 लालची, प्यासा, लाभ के इच्छुक ।

तृष्णज् (वि०) [तृष्+नजिङ्] लोभी, लालची, प्यासा

तृष्णा [तृष्+न+टाप् किच्च] 1 प्यास (शा० औ आल०)—तृष्णा खिन्नस्यात्मनः हि० १।१७१, ऋतु १।१५ 2 इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, लिप्सा —तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७, ३।५, रघु० ८।२ सम०—अर्तः इच्छा का नाश, मन की शान्ति, सन्तोष

तृष्णालु (वि०) [तृष्णा+आलु] बहुत प्यासा ।

तृह [दिवा० पर०, चुरा० उभ०—तृणेढि, तर्हयति—ते, तृढ, इच्छा० तितृक्षति, तितृर्हिषति] क्षति पहुँचाना, आघात पहुँचाना, मार डालना, अहार करना—तृ तृणेढीति लोकोऽयं विले वा निष्पराक्रमम्—भट्टि० ६।३९ (तानि) तृणेदु राम सह लक्ष्मणेन १।१९।

तॄ [भ्वा० पर०—तरति, तीर्ण] 1 पार पहुँच जाना, पार करना—केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३, स तीर्त्वा कपिशाम्—रघु० ४।३८, मनु० ४।७७ 2 पार पहुँचाना, (मार्ग) तय करना, कु० ७।४८ मेघ० १८ 3 बहना, तैरना—शिला तरिष्यत्युदके न पर्णम्—भट्टि० १२।७७ 4. पूर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना धीरा—हि तरन्त्यापदम्—का० १७५, कृच्छ्रम् महतीर्णं—रघु० १४।६, भग० १८।५८, मनु० ११।३४ 5 किनारे तक जाना, पारगत होना—रघु० ३।३० 6 पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिज्ञा का) पालन करना—दैवासीर्णप्रतिज्ञ—मुद्रा० ४।१२ 7 बचाया जाना, बच निकलना,—मावो वर्षभयात्तीर्णा वयं तीर्णा महाभयात्—हरि०, कर्मवा०—तीर्यते, पार किया जाना, (प्रेर० तारयति—ते 1 ले जाना, आगे बढाना 2 पहुँचाना 3 बचाना, उद्धार करना, मुक्त करना, इच्छा०—तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति) पार करने की इच्छा करना—दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीं मुगाङ्कम्—काव्य० १०, अति—1 पार पहुँचना, जीत लेना, विजयी होना—भग० १३।२५, हि० ४, अव—1 उतरना, अवतरित होना—रघावततार च—रघु० १।५४, १३।६८, मेघ० ५० 2 बहना, में गिरना—यावर वर्जयित्वा कुरु वा महान्धवनति—श० ३ 3 प्रविष्ट होना, घुसना, जाना—मालवि० १।२२, शि० ९।३२ 4 पूर्ण करना, दमन करना, पार करना 5 (किसी देवता का) मनुष्य के रूप में इस धरती पर अवतार लेना—तु० अवतार, प्रेर०—लाना, जाकर लाना, लगाना—रघु० १।३८, उद्—1 (पानी में से) बाहर निकलना, (जहाज से) उतरना, निकलना—रघु० २।१७, शि० ८।६३ 2 पार जाना, पार पहुँचना उदतारिषुरम्भोधिम्—भट्टि० १५।३३, १०, रघु० १२।७१, १६।३३, मेघ० ४७ 3 दमन करना, जीतना, पार करना—व्यसनमहार्णवादुदीर्णम्—मृच्छ० १०।४९ इसी प्रकार—रोगार्तीर्ण, निस्—, 1 पार पहुँचना—भर्तृ० ३।४ 2 पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3 पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4 पूरा करना, अन्त तक जाना—रघु० १४।२१, प्र—पार पहुँचना, प्रेर० ठगना, धोखा देना—प्रतार्य तथा प्रतार्य—श० ५, किंचैव कविभि प्रतार्यिनगना-स्तत्त्व विजानन्त्यपि भर्तृ० १।७८, वि—1 पार जाना, पार करना, परे जाना—रघु० ६।७७ 2 देना, स्वीकृत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, अर्पित करना, कृपा करना, अनुग्रह करना—भगवान्नारोचस्ते दर्शनं वितरति श० ७, वितरति गुरु प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे—उत्तर० २।४, निवासहेतोरटज वितेरु—रघु० १४।८१, मा० १।३ 3 पैदा करना, उत्पादन करना—ज्योत्स्नाशकुन्मिह वितरति हसश्रेणी—कि० ५।३१, गीत० १ 4 ले जाना, क्षति—, पार करना, पूरा करना, जीत लेना, सम्—1 पार करना 2 तैरना, बहना 3 पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना।

तेजनम् [तिज्+ल्युट्] 1 बाँस 2 पैना करना, तेज करना 3 जलाना 4 प्रदीप्त करना 5 चमकाना 6 सरकडा, नरकुल 7 बाज की नोक, शस्त्र की धार।

तेजल [तिज्+णिच्+कलच्] एक प्रकार का तीतर।

तेजस् (नपु०) [तिज्+असुन्] 1 तेजी 2 (चाकू की) पैनी धार 3 अग्नि शिखा की चोटी, आग की लपट की नोक 4 गर्मी, चमक, दीप्ति 5 प्रभा, प्रकाश, ज्योति, कान्ति—रघु० ४।१, भग० ७।९, १०।३० 6 गर्मी या प्रकाश, सृष्टि के पांच मूलतत्वों में से एक—अग्नि (अन्य चार ये हैं पृथिवी, अप्, वायु और आकाश) 7 शरीर की कान्ति, सौंदर्य—रघु० ३।१५ 8 तेजस्विता—श० २।१४, उत्तर० ६।१४ 9 साहस, शक्ति, सामर्थ्य, साहस, बल, शौर्य तेज—तेजस्तेजसि शाम्यतु—उत्तर० ५ 10 तेजस्वी तेजसा हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१ 11 आत्मबल, ओज या ऊर्जा 12 चरित्रबल, ओजस्विता 13 तेजायुक्त कान्ति, महिमा प्रतिष्ठा, प्रभुता, गौरव—तेजोविशेषानुमिता (राजलक्ष्मी) दधाना—रघु० २।७ 14 वीर्य, बीज, शुक्र स्याद्रक्षणीय यदि मे न तेज—रघु० १४।६५, रघु० २।७५, दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधाना भूतये भुव—श० ४।१ 15 वस्तु की मूल-प्रकृति 16 अर्क, सत 17 आत्मिकशक्ति, नैतिक शक्ति, जादू की शक्ति 18 आग 19 मज्जा 20 पित्त 21 घोडे का वेग 22 ताजा मक्खन 23 सोना। भस०—कर (वि०) 1 कान्तिवर्धक 2 वीर्यवर्धक, शक्तिप्रद—भङ्ग 1 अपमान प्रतिष्ठा का नाश 2 अवमान, हतोत्साहना,—मण्डलम् प्रकाश का परिवेश,—मूर्ति सूर्य,—रूप परमात्मा ब्रह्म।

तेजस्वत्, तेजोवत् (व०) [तेजस्+मतुप्, मस्य व.] 1 उज्ज्वल, चमकीला, शानदार 2 तेज, तीखा 3 वीर, शौर्यशाली 4 ऊर्जस्वी।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस्+विनि] 1 चमकदार, उज्ज्वल 2 शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न, बलवान्—कि० १६।१६ 3 गौरवशाली, महानुभाव 4 प्रसिद्ध, विख्यात 5 प्रचड 6 अभिमानी 7 विधिसम्मत।

तेजित (वि०) [तिज्+णिच्+क्त] 1 पनाया हुआ, तेज किया हुआ 2 उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रणोदित।

तेजोमय (व०) [तेजस्+मयट्] 1 यशस्वी 2 उज्ज्वल, चमकदार प्रकाशमान—भग० ११।४७।

तेमः [तिम्+घञ्] गीला या तर होना, आर्द्रता।

तेमनम् [तिम्+ल्युट्] 1 गीला करना, तर करना 2 आर्द्रता 3 चटनी, मिर्च मसाला (जो भोजन को रुचिकर बनाये)।

तेमनम् [तेद्+ल्युट्] 1 खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2 विहारभूमि, क्रीडास्थल।

तैजस (वि०) (स्त्री० सी) [तेजस्+अण्] 1 उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2 प्रकाशयुक्त—तैजसस्य धनुष प्रवृत्तये—रघु० ११।४३ 3 धातुमय 4 जोशीला 5 ओजस्वी, ऊर्जस्वी 6 शक्तिशाली, प्रबल, -सम् घी। मम०—**आवर्तनी** कुठाली।

तैतिल (व्या०) (स्त्री०-ली) [तितिक्षा+ण] सहनशील, सहिष्णु।

तैतिर [तैत्तिर पृषो०] तीतर।

तैतिल (पु०) 1 गैंडा 2 देवता।

तैत्तिर [तित्तिर+अण्] 1 तीतर 2 गैंडा, -रम् तीतरों का समूह।

तैत्तिरीय (पु० ब० व०) [तित्तिरिणा प्रोक्तम् अधीयते—तित्तिरि+छ] यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी, -य यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद)।

तैमिर [तिमिर+अण्] आँखों का एक रोग धुधलापन।

तैर्थिक (वि०) [तीर्थ+ठक्] पवित्र, पावन,—क 1 एक सन्यासी 2 किसी नवीन धार्मिक या दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला,—कम् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यतीर्थ से लाया हुआ हो)।

तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकार अण्] 1 तेल—लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन् भर्तृ० २।५, याज्ञ० १।२८३, रघु० ८।३८ 2 घृत। सम०—**अष्टी भिर्र बरैया**,—**अभ्यङ्ग** शरीर में तेल की मालिश करना—**कल्कज** खली, **पत्रिका, पर्णी** 1 चन्दन 2 धूप 3 तारपीन, **पिञ्ज** सफेद तिल, **पिण्डीतिका** छोटी लाल रंग की चिरौंटा **फल**, हिंगोट का वृक्ष,—**भाविनी** चमेली, **माली** दीवे की बत्ती, **यन्त्रम्** तेली का कोल्हू,—**स्फटिक** एक प्रकार की मणि।

तैलङ्ग एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश, **गाः** (ब० व०) इस देश के लोग।

तैलिक, तैलिन् (पु०) [तैल+ठन्, तैल+इनि] तेली, तेल पेरने वाला।

तैलिनी [तैलिन्+ङीप्] दीवे की बत्ती।

तैलीनम् [तिलाना भवन क्षेत्रम्—खञ्] तिलों का खेत।

तैषः [तिष्येण नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी—तिष्य+अण्+ङीष्—तैषी, सा अस्मिन् अस्मिन् मासे—तैषी+अण्] पौष का महीना।

तौकम् [तु+क] सन्तान, बच्चा।

तौकक [तोक+कन्] चातक पक्षी।

तौडनम् [तुड्+ल्युट्] 1 टुकड़े २ करना, खण्डश करना 2 फाड़ना 3 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

तौत्त्रम् [तुद्+ष्ट्रन्] पशुओं को या हाथी को हाँकने का अंकुश।

तौद [तुद्+घञ्] पीडा, वेदना, सताप।

तौदनम् [तुद्+ल्युट्] 1 पीडा, वेदना 2 अंकुश 3 चेहरा, मुँह।

तौमर, -रम् [तुम्यति हिनस्ति तुम्प्+अर्, नि०] 1 लोहे का डण्डा 2 भाला, नेजा। सम०—**धरः** अग्निदेव।

तौयम् [तु+विच्, तवे पूर्त्यै याति—या+क नि० साधु] पानी—श० ७।१२। सम०—**अग्निवासिनी** पाटला वृक्ष,—**आधार, आशय** सरोवर, कूआँ, जलाशय नीवाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किता—श० १।१४,—**आलय** समुद्र, सागर,—**ईश** वरुण का विशेषण (—शम्) पूर्वाषाढ नक्षत्रयुक्त,—**उत्सर्ग** जलोन्मोचन, वर्षा मेघ० ३७, **कर्मन्** (नपु०) 1 अङ्गमार्जन 2 दिवगत पितरों को जलतर्पण,—**कृच्छ्र, व्रत**, एक प्रकार की तपश्चर्या जिसमें कुछ निश्चित समय तक जल पीकर ही रहना पड़ता है,—**क्रीडा** जलविहार —मेघ० ३३,—**गर्भ** नारियल, **चर** एक जलजन्तु, —**जिह्व**,—**भः** ओला, -**द** बादल—रघु० ६।६५, विक्रम० १।१४, °**अत्ययः** शरद् ऋतु, **धर** बादल —**धि**,—**निधि** समुद्र,—**नीवी** पृथ्वी,—**प्रसादनम्** कतकफल, निर्मली,—**मलम्** समुद्रफेन,—**मुच्** (पु०) बादल,—**यन्त्रम्** 1 जल-घडी 2 फौवारा,—**राशि**,—**राशिः** समुद्र,—**वेला** जल का किनारा, समुद्रतट, **व्यतिकरः** (नदियों का) सगम—रघु० ८।९५,—**शुक्तिका** सीपी, —**सर्पिका**,—**सूचकः** मेढक।

तोरण नम् [तुर्+युच् आधारे ल्युट् वा तारा०] 1 महराबदार बनाया हुआ द्वार, सिंह द्वार 2 बहिर्द्वार, प्रवेश द्वार गणेनृपाणामयं तोरणाद् बहि—शि० १२।, दूरात्लक्ष्य सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५ 3. अस्थायी रूप से बनाया हुआ शोभाद्वार -कु० ७।३, रघु० ११।१, ७।४, ११।५ 4 स्नानागार के निकट का चबूतरा, -**णम्** गर्दन, कण्ठ।

तोल -**लम्** [तुल्+घञ्] 1 तोल या भार जो तराजू में तोल लिया गया हो 2 सोने चाँदी का एक तोला या १२ माशे का भार।

तोषः [तुष्+घञ्] सन्तोष, परितोष, प्रसन्नता, खुशी।

तोषणम् [तुष+ल्युट्] 1 सन्तोष, परितोष 2 सन्तोषप्रद परितृप्ति।

तौलनम् [तोल+ल्यु+ट] मूसल, सोटा।
तौलिकः (द्रोक शब्द) तुला राशि।
तौलिकः (पु०) वह सीपी जिसमें से मोती निकलती है, —कम् मोती।
तौर्यत्रिकम् [तूर्य+अण्] तुरही का शब्द। सम०—त्रिकम् नृत्य, गान और वाद्य की समेकता, तेहरी स्वरसगति —तौर्यत्रिक वृथाट्या च कामजो दशको गण —मनु० ७।४७, उत्तर० ४।
तौल्यम् [तुला+अच्] तराजू।
तौल्यिकः, तौलिकिकः [तुलि+ठक्, तुलिका+ठक्] चित्रकार।
त्यक्त (भू० क० कृ०) [त्यज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त, उन्मुक्त 2 उत्सृष्ट, जिसने आत्मसमर्पण कर दिया है 3 फतराया हुआ, टाला हुआ -दे० त्यज्। सम०—अग्निः वह ब्राह्मण जिसने अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है,—जीवित,—प्राण (वि०) प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोखिम उठाने को तैयार—यदर्थं त्यक्तजीविता -भग० १।९, लज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म।
त्यज् (भ्वा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1 छोड़ना (सब अर्थों में) त्यागना उत्सर्ग करना, चले जाना---वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९, मनु० ६।७७, ९।१७७, श० ५।२६ 2 जाने देना, बरखास्त करना, सेवामुक्त करना,--भट्टि० ६।१२२ 3 छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना—भर्तृ० ३।१६, मनु० २।९५, ६।३३, भग० ६।२४, १६।२१ 4 कतराना, टालना 5 छुटकारा पाना, मुक्त करना--भग० १।३ 6 अवहेलना करना, उपेक्षा करना त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च-- भग० १।३३ 7 उद्धृत करना 8 वितरण करना, प्रदान कर देना, कृत (संचय) आत्मवृत्ते त्यजेत् -याज्ञ० ३।४७, मनु० ६।१५, प्रेर०—छुड़वाना, इच्छा०—तित्यक्षति छोड़ने की इच्छा करना, परि- 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्याग करना 2 पद त्याग करना, छोड़ देना, रद्द कर देना, तिलाञ्जलि देना -प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति -मुद्रा० २।१७ 3 उद्धृत करना--तृणमप्यपरित्यज्य मनृणम्, सम् 1 त्यागना, जायामदोषामपि सन्त्यजन्ति रघु० १४।३४ 2 टालना, कतराना —भर्तृ० १।८१ 3 छोड़ देना तिलाजलि देना मनु० ४।१८१ 4 उद्धृत करना--उदा०—सत्यज्य विक्रमादित्य धैर्यमन्यत्र दुर्लभम्- राजत० ३।३४३।
त्यागः [त्यज्+घञ्] 1 छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना, छोड़ कर चले जाना, वियोग न माता न पिता न स्त्री न पुत्रस्त्यागमर्हति--मनु० ८।३१९, ९।७८ 2 छोड़ देना, पदत्याग कर देना, तिलाजलि देना —मनु० १।११२, भग० १२।४१ 3 उपहार, दान, धर्मार्थ दान,--करे श्लाघ्यस्त्यागः --भर्तृ० २।६५, हि० १।१५४, त्यागाय सम्भृतार्थानाम्—रघु० १।१७ 4 मुक्तहस्तता, उदारता--रघु० १।२२ 5 स्राव, मलोत्सर्ग। सम०—धृत,—शील (वि०) मुक्त हस्त, उदार, दानशील।
त्यागिन् (वि०) [त्यज्+घिनुण्] 1 छोड़ने वाला, परित्याग करने वाला, छोड़ देने वाला 2 प्रदाता, दाता 3 शौर्यशाली, शूरवीर 4 वह जो धार्मिक अनुष्ठानों के फलस्वरूप किसी पारितोषिक या पुरस्कार की अपेक्षा नहीं करता है— यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते --भग० १७।११।
त्रप् (भ्वा० आ०--त्रपते, त्रपित) शर्माना, लजाना, संकट में फँस जाना—त्रपन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ गङ्गा० २८, अप-,मुरझना, शर्म के कारण कार्यनिवृत्त होना--तस्माद्बलैरपत्रपे--भट्टि० १४।८४, येनापत्रपते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति— महा०।
त्रपा [त्रप्+अङ+टाप्] 1 शर्म, लाज —मन्दत्रपाभर - गीत० १२ 2 हया, शर्म (अच्छे और बुरे अर्थ में) 3 कामुक या व्यभिचारिणी स्त्री 4 प्रसिद्धि, ख्याति। सम० निरस्त,—हीन (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म,—रण्डा वेश्या।
त्रपिष्ठ (वि०) [अयम् एषाम् अतिशयेन तृप्र - तृप्र+इष्ठन्, तृप्रशब्दस्य त्रपादेश] अत्यन्त सन्तुष्ट।
त्रपीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [तृप्र+ईयसुन्, तृप्र शब्दस्य त्रपादेश] अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट।
त्रपु (नपुं०) [अग्निं दृष्ट्वा त्रपते लज्जते इव- त्रप्+उन् तारा०] टीन, राँगा—यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते—पञ्च० १।७५।
त्रपुलम्,-लः, त्रपुस् (नपुं०),-सम् [त्रप्+उल, त्रप्+उप, त्रप्+उस्, क्रप्+उस] टीन, राँगा।
त्रप्यम् (नपुं०) मट्ठा, घोला हुआ दही।
त्रय (वि०) (स्त्री-यी) [त्रि+अयच्] तेहरा, तिगुना, तीन भागों में विभक्त, तीन प्रकार का- त्रयी वै विद्या कृत्वो मनुषि सामानि—शत०, मनु० १।२३,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह- अदेयमासीत् त्रयमेव भूपते शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, लोकत्रयम्—भग० ११।२०, ४३, मनु० २।७६।
त्रयस् ('त्रि' शब्द पु०, कर्तृ० द० व०, समास में प्रयोग, अथवा संख्यावाचक शब्दों के साथ) तीन। सम० —चत्वारिंश (वि०) तेंतालीसवाँ,—चत्वारिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतालीस,—त्रिंश (वि०) तेंतीसवाँ—त्रिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतीस,--दश (वि०) 1 तेरहवाँ 2 तेरह जोड़ कर—'त्रयोदश शतम्' एक सौ तेरह, —दशन (वि०, ब० व०) तेरह,—दशन (वि०)

तेरहवाँ, -दशी चान्द्र पक्ष की तेरहवीं तिथि,—नवति (स्त्री०) तिरानवे,-पञ्चाशत् (स्त्री०) तरेपन,-विंश (वि०) 1 तेईसवाँ 2 तेईस से युक्त,-विंशतिः (स्त्री०) तेईस, षष्टिः (स्त्री०) तरेसठ,—सप्ततिः (स्त्री०) तिहत्तर।

त्रयी [त्रय+ङीप्] 1 तीनों वेदों की समष्टि (ऋग्यजु-सामानि)—त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः - का० १, तौ त्रयीवर्जमितरा विद्या परिपाठ्यौ उत्तर० २, मनु० ४।१२५ 2 तिगड्डा, त्रिक, त्रिसमूह व्यक्तोत्तिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखिविभ्रयी - शि० २।३ 3 गृहिणी या विवाहिता नारी जिसका पति तथा बालबच्चे जीवित हों 4 बुद्धि, समझ। सम०—तनु 1 सूर्य का विशेषण, इसी प्रकार 'त्रयीमय' 2 शिव का एक विशेषण,—धर्मः तीनों वेदों में वर्णित धर्म - भग० ९। २१,—मुख ब्राह्मण।

त्रस् १ (म्वा०, दिवा० पर० - त्रसति, त्रस्यति, त्रस्त) 1 थर्राना, काँपना, हिलना, भय के कारण विचलित होना 2 डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कभी-कभी सम्ब० या करण० के साथ)—प्रमदवनात् त्रस्यति - का० २५५, कपेरत्रासिवुर्नादात् - भट्टि० ९।११, ५।७५, १४।४८, १५।५८, शि० ८। २४, कि० ८।७, प्रेर०—डराना, भयभीत करना,-वि०—, भयभीत या त्रस्त होना त्रिस्तमृगधहरिणीसदृशं कटाक्षैः - भर्तृ० १।९, सम्—,डरना, भयभीत होना, त्रस्त होना—भट्टि० १४।३९।

२ (चुरा० उभ० त्रासयति - ते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 थामना 3 लेना, पकड़ना 4 विरोध करना, रोकना।

त्रस (वि०) [त्रस् + क] चर, जंगम, - स. हृदय,—सम् 1 वन जंगल 2 जानवर। सम० रेणु, अनु, अणु का कण या अणु जो सूर्यकिरण में हिलता हुआ दिखाई देता है -तु० जालान्तरगते भानौ सूक्ष्म यद्दृश्यते रजः, प्रथम तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६१।

त्रसर [त्रस् + अरन् डा०] डरकी (जुलाहों का एक उपकरण जिसमें धागों की नली रख कर बुनते हैं)।

त्रसुर, त्रस्नु (वि०) [त्रस्+उरच्, त्रस्+क्नु] भीरु, काँपने वाला, डरपोक - अत्रस्नुभिर्युक्तधुरं तुरङ्गैः रघु० १४।४७, सीता सौमित्रिणा त्यक्ता सद्यो जस्नुमेकिकाम् भट्टि० ६।७।

त्रस्त (भू० क० कृ०) [त्रस्+क्त] 1 भयभीत, डरा हुआ, आतंकित-त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टि—मा० ४।८ 2 डरपोक, भीरु 3 फुर्तीला, चंचल।

त्राण (भू० क० कृ) [त्रै+क्त तस्य नत्वम्] रक्षा किया गया, अभिरक्षित, प्ररक्षित, बचाया गया,—णम् 1. रक्षा प्रतिरक्षा, प्ररक्षा —आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि —श० १।११ रघु० १५।३ 2. शरण, सहारा, आश्रय—भट्टि० ३।७०।

त्रात (भू० क० कृ) [त्रै+क्त] 1 प्ररक्षित, बचाया गया, रक्षा किया गया।

त्रापुष (वि०) (स्त्री०—षी) [त्रपुष+अण्] राँगे का बना हुआ।

त्रास (वि०) [त्रस्+घञ्] 1 चर, चलनशील 2 डराने वाला,—सः डर, भय, आतंक- अस्त्र कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः रत्ना० २।३, रघु० २।३८, ९।५८ 2 चौकसी करने वाला, भयभीत करने वाला 3 मणिगत दोष।

त्रासन (वि०) [त्रस्+णिच्+ल्युट्] खौफनाक, डरावना, भयङ्कर,—नम् डराने की क्रिया, डराना।

त्रासित (वि०) [त्रस्+णिच्+क्त] डराया हुआ, आतंकित भयभीत।

त्रि (स० वि० केवल ब० व०, कर्तृ० पु० त्रयः, स्त्री० तिस्रः, नपु० त्रीणि) तीन—त एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः - मनु० २।२९९, प्रियतमाभिरसौ तिसृभिर्वृतो रघु० ९।१८, त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती मनु० ९।९०। सम० अक्षः 1 तिहाई भाग 2 तीसरा अंश, - अक्ष.—अक्षक शिव का एक विशेषण,—अक्षर 1 ईश्वर द्योतक अक्षर 'ओम्' जो तीन अक्षरों से मिल कर बना है—दे० 'अ' में 2 जोड़ी मिलाने वाला, घटक (यह शब्द तीन वर्णों से मिल कर बना है),—अङ्गुलम्,—अङ्गुलिः 1 वह तीन रस्सियाँ जिनके सहारे बहँगी के दोनों पलड़े दोनों किनारों पर लटकते रहते हैं 2 एक प्रकार का अंजन, सुर्मा, —अञ्जलम्—लिम् तीन अंजलि (मिला कर),—अधिष्ठानम् आत्मा,—अम्बगा,—मार्गगा,—वर्त्मगा गंगा नदी (तीनों लोकों में बहने वाली) के विशेषण, —अम्बकः ('त्रियम्बक' भी, यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) तीन आँखों वाला, शिव त्रियम्बक सर्वमिव ददर्श- कु० ३।४४, जडीकृतस्त्र्यम्बकवीक्षणेन रघु० २।४२, ३।४९, 'शङ्करः कुबेर का विशेषण, -अम्बका पार्वती का विशेषण,—अब्द (वि०) तीन वर्ष पुराना (-ब्दम्) तीन वर्ष, -अशीत (वि०) तिरासिवा,—अशीति-(स्त्री०) तिरासी,—अष्टन् (वि०) चौबीस, अस्र -अस्र त्रिकोण, त्रिभुजाकार (—स्रम्) तिकोन, त्रिभुज, अह्न तीन दिन का काल, - अहित (वि०) 1 तीन दिन में उत्पादित या अनुष्ठित 2 हर तीसरे दिन घटने वाला - (यथा बुखार) तैया,—ऋचम् (तृचम् भी) तीन ऋचाओं की समष्टि - मनु० ८।१०६,- ककुद् (पु०) 1 त्रिकूट पहाड़ 2 विष्णु या कृष्ण,—कर्मन् (नपु०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्तव्य

अर्थात् यज्ञ करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (—पु०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण, —काय बुद्ध का नाम,—कालम् तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय प्रात, मध्याह्न तथा सायम् 2 क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) °ज्ञ, °दर्शिन् (वि०) सर्वज्ञ, —कूट सीलोन का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लंका स्थित थी शि० २।५, —कूर्चकम् तीन फलों का चाकू, —कोण (वि०) त्रिभुजाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—ण) 1 तीन कोण वाली आकृति 2 योनि,— खट्वम्, खट्वी तीन खाटों का समूह, गण सांसारिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम न साधनेऽस्य त्रिगणं परस्परम् कि० १।११, दे० नी० 'त्रिवर्ग',—गत (वि०) 1 तिगुना 2 तीन दिन में सम्पन्न,— गर्ताः (ब० व०) 1 भारत के उत्तरपश्चिम में एक देश, इसका नाम जलधर भी है 2 इस देश के निवासी या शासक,—गर्ता कामासक्त स्त्री, स्वैरिणी —गुण (वि०) 1 तीन डोरों से युक्त तगड़ी बनाम मौंजी त्रिगुणा बभार या - कु० ५।१० 2 तीन बार आवृत्ति किया हुआ, तीन बार त्रिविध, तेहरा, तिगुना —सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य (दिनानि) रघु० २।२५ 3 सत्त्व, रजस् तथा तमस् नाम के तीन गुणों से युक्त, (—गम्) (सा० द० में) प्रधान (या) (वेदा० द० में) 1 माया 2 दुर्गा का विशेषण —चक्षुस् (पु०) शिव का एक विशेषण, —चतुर (वि०) (ब० व०) तीन या चार गुना जवान् त्रिचतुराणि पदानि सीता बालरा० ६।३४, चत्वारिंश (वि०) तेंतालीसवाँ, चत्वारिंशत् (स्त्री०) तेंतालीस, जगत् (नपु०) जगती तीन लोक 1 स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक या (ब०) स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक,— जट शिव का एक विशेषण, —जटा एक राक्षसी, जिसको रावण ने अशोकवाटिका में सीता की देखरेख के लिए नियत किया था जब सीता वहाँ बन्दी के रूप में रक्खी गई। उस समय त्रिजटा ने स्वयं सीता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दूसरी सहचरियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करें, —जीवा, ज्या तीन चिह्नों की त्रिज्या, या ९० कोटि, अर्धव्यास - तन्तु, धनुष, ज्व, णवम् (वि० ब० व०) ३×९, नौ का तिगुना अर्थात् सत्ताइस, तयम्, —तयी तीन वेदों का समूह,—दण्डम् 1 (संसार से विरक्त) संन्यासी के तीन डंडों को बाँधकर एक किया हुआ 2 तिगुना संयम —अर्थात् मन, वाणी और कर्म का, (—ड) एक धर्मनिष्ठ संन्यासी की अवस्था—दण्डिन् (पु०) धर्मनिष्ठ साधु या संन्यासी जिसने सांसारिक विषय वासनाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दहिने हाथ में तीन-दंड (एक जगह मिला कर बंधे हुए) रखता है 2 जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को वश में कर लिया है—तु० वाग्दण्डोऽथ मनोदण्ड कायदण्डस्तथैव च,यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते—मनु० १२।१०,—दशा (ब० व०) 1 तीस 2 तैंतीस देवता, (—श) देवता, अमर—कु० ३।१, °अंकुशः °आयुधम् इन्द्र का वज्र -रघु० ९।५४, °अधिपः, °ईश्वर °पति इन्द्र के विशेषण, °अध्यक्षः विष्णु का एक विशेषण, °अरिः राक्षस, °आचार्य बृहस्पति का विशेषण, °आलय, °आवास 1 स्वर्ग 2 मेरु पर्वत, °आहार देवताओं का भोजन, °गुरु बृहस्पति का विशेषण, °गोप एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहूटी (इन्द्रगोप) श्रद्दधे त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि रघु० ११।४२, °मञ्जरी तुलसी का पौधा. °वधू, °वनिता अप्सरा या स्वर्ग की देवी - कैलासस्थ त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्या मेघ० ५८, वर्त्मन् आकाश, दिनम् तीन दिनों की समष्टि, दिवम् 1 स्वर्ग, त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्ग — कु० १।२८, शा० ७।२ 2 आकाश पर्यावरण 3 प्रसन्नता, °अधीश °ईश 1 इन्द्र का विशेषण 2 देवता, °उद्भवा गंगा, °ओकस् (पु०) देवता- दृश (पु०) शिव का एक विशेषण दोषम् शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ,—धारा गंगा, - नयन (नयन)—नेत्र लोचन शिव के विशेषण रघु० ३।६६, कु० ३।६६, ५।७२, - नवत (वि०) तिरानवेवाँ, नवति (स्त्री०) तिरानवे, पञ्च (वि०) तीन-गुना पाँच अर्थात् पन्द्रह, पञ्चाश (वि०) तरेपनवाँ, पञ्चाशत् (स्त्री०) तरेपन पट्ट कांच, पताक 1 हाथ जिसकी तीन अंगुलियाँ फैला हुई हों 2 त्रिपुंड्र तिलक लगा हुआ मस्तक,- पत्रकम् ढाक, —पथम् तिराहा, अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष तथा भूलोक, या आकाश, भूलोक तथा पाताल 2 वह स्थान जहाँ तीन सड़कें मिलती हों, 'पा गंगा का विशेषण धूतसत्यत्रिपथगामभिनत्ति तमाकरोद्ध पुरुहूतमुत — वि० ६।१, अमर ९०, पदम्, पदिका तीन पैर वाला,—पदी 1 हाथों का तंग नासत्करिणा ग्रैव त्रिपदीच्छेदिनामपि- रघु० ४।४८ 2 गायत्री छन्द 3 तिपाई 4 गोचागधो नाम का पौधा, पर्ण ढाक का पेड़ —पाद (वि०) 1 तीन पैरों वाला 2 तीन खण्डों से युक्त, तीन चौथाई,—रघु० २५।९६ 3 त्रिनाम (पु०) वामनावतार भगवान् विष्णु का विशेषण,—पुट (वि०) त्रिभुजाकार (—टः) 1 गुण 2 हथेली 3 एक हाथ परिमाण 4 तट या किनारा,—पुटक. त्रिकोण, त्रिभुज,

-पुटा पुरा की विशेषण,—पुष्पम्, —पुष्पकम् चन्दन, राख या गोबर से बनाई हुई तीन रेखाएँ,—पुरं 1 तीन नगरों का समूह 2 द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक में मय राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के ३ नगर (देवताओं की प्रार्थना पर यह तीनों नगर — उनमें रहने वाले राक्षसों समेत शिव जी द्वारा जला दिये गये) —कु० ७।४८, अमरु २, मेघ० ५६ भर्तृ० २।१२३, (र) इन नगरों का अधिपति राक्षस °अन्तकः °अरिः, °घ्न, °दहन °द्विष्, (पु०) °हरः शिव के विशेषण -भर्तृ० २।१२३, रघु० १७।९४, °दाह तीन नगरों का जलाया जाना—कि० ५।१४, (—री) जबलपुर के निकट एक नगर जो पहले चेदिदेश के राजाओं की राजधानी था 2 एक देश का नाम,—पौरुष (वि०) तीन पीढ़ियों से सम्बन्ध रखने वाला, या तीन पीढ़ियों तक जाने वाला, —प्रसृत. वह हाथी जिससे मद का स्राव हो रहा हो,—फला तीन फलों (हरड़, बहेड़ा और आंवला) का संघात,—बलि,—वली, —वलि, —वली स्त्री को नाभि के ऊपर पड़ने वाले तीन बल (जो सौन्दर्य का चिह्न समझे जाते हैं) —आसादयो तिलकयन्ति वलीलतानाम्—भर्तृ० १।९३, ८१, तु० कु० १।३१, —भद्रम् स्त्रीसहवास, मैथुन, स्त्रीसम्भोग,—भुजम् त्रिकोण, —भुवनम् तीन लोक —पुण्य या वन्दि वसुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य - मेघ० ३३, भर्तृ० १।९९ - —भूम त्रिमंजिला महल,— मार्गा गंगा - कु० १।२८ —मुकुट त्रिकूट पहाड़,—मुख बुद्ध का एक विशेषण मूर्ति हिन्दुओं के त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का समुच्चय रूप कु० २।४,—यष्टि तीन लड़ों का हार —यामा रात्रि (तीन पहर वाली आरम्भ और अन्त का खाली आधा पहर इससे पृथक् है)—सीमान्तेन क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा —मेघ० १०८ कु० ७।२१, २६, रघु० ९।७०, विक्रम० ३।२२,—योनि तीन कारणों (क्रोध, लोभ, और मोह) से होने वाला अभियोग,—रात्रम् तीन रातों (तथा दिनों) का समूह,—रेखः शङ्ख,—लिंग (वि०) तीनों लिंगों में प्रयुक्त अर्थात् विशेष (ग.) एक देश जिसे तैलंग कहते हैं (गी) तीनों लिंगों का समष्टि,—लोकम् तीनों संसार, ईश सूर्य °नाथ तीनों लोकों का स्वामी, इन्द्र का विशेषण रघु० ३।४५ 2 शिव का विशेषण कु० ५।७७ (—की) तीनों लोकों की समष्टि, वैभव -सन्यासेव त्रिलोकी सरणिरुरुकुम्भिनी विच्छटायाम् - भर्तृ० ३।९५, शा० ४।२२,—वर्ग 1 सामाजिक जीवन के तीन पदार्थ— अर्थात् धर्म, अर्थ और काम कु० ५।३८ 2 तीन स्थितियाँ हानि, स्थिरता और वृद्धि क्षय स्थान च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्—अमर०,—वर्णकम् पहले तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का समाहार,—वारम् (अव्य०) तीन बार, तीन मर्तबा,—विक्रमः वामनावतार विष्णु, —विद्यः तीनों वेदों में व्युत्पन्न ब्राह्मण —विध (वि०) तीन प्रकार का, तेहरा,—विष्टपम्, —विष्टपम् इन्द्रलोक, स्वर्ग, —त्रिविष्टपस्येव पतिं जयन्त —रघु० ६।७८, °ईश (पु०) देवता—वेणिः, —णी (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिवेणी संगम जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती मिलती हैं,—वेदः तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण,—शङ्कुः अयोध्या का विख्यात सूर्य वंशी राजा, हरिश्चन्द्र का पिता (त्रिशंकु बुद्धिमान् धर्मात्मा और न्याय-परायण राजा था, परन्तु उसमें यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करना चाहा, फलतः उसने अपने कुलगुरु वशिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना को स्वीकार न किया तो उसने उनके १०० पुत्रों से प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने भी इसके प्रस्ताव को बेहूदा बता कर ठुकरा दिया। त्रिशंकु ने उन सबको कायर और नपुंसक कहा, और इसके बदले उन्होंने उसे 'चाण्डाल बनने' का शाप दे दिया। जब त्रिशंकु की ऐसी दुर्दशा हुई तो विश्वामित्र ने जिसका परिवार एक दुर्भिक्ष के समय त्रिशंकु का आभारग्रस्त हो गया था—उसका यज्ञ सम्पन्न कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया जब देवता यज्ञ में न आये तो विश्वामित्र ने क्रुद्ध हो अपनी शक्ति से त्रिशंकु को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। त्रिशंकु ऊपर ही ऊपर उड़ता चला गया और आकाशमण्डल से जा टकराया। वहाँ इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे सिर के बल धकेल दिया। तो भी तेजस्वी विश्वामित्र ने नीचे आते हुए त्रिशंकु को बीच ही में 'त्रिशंकु वहीं ठहरो' कह कर रोक दिया। फलतः भाग्यहीन राजा सिर के बल वहीं दक्षिणगोलार्ध में नक्षत्रपुंज के रूप में अटक गया। इसीलिए यह लोकोक्ति ('त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ' श० २ प्रसिद्ध हो गई) 2 चातक पक्षी 3 बिल्ली 4 टिड्डा 5 जुगनू, °अ. हरिश्चन्द्र का विशेषण, °यामिन् (पु०) विश्वामित्र का विशेषण, —शत (वि०) तीन सौ (सम्) 1 एक सौ तीन 2 तीन सौ, शिखम् 1 त्रिशूल 2 (त्रिशाख) किरीट या मुकुट, शिरस् (पु०) एक राक्षस जिसको राम ने मारा था,—शूलम् तिरशूल, °अंकः °धारिन् (पु०) शिव का विशेषण, —शूलिन् (पु०) शिव का विशेषण, —शृङ्गः त्रिकूट नाम का पहाड़, —सन्धिः (स्त्री०) तरेसठ,—सन्ध्यम्, —सन्ध्यी दिन के तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायम्,—सन्ध्यम् (अव्य०) तीनों

संख्याओं के समूह,—दशक वि०) तिहत्तरवाँ,—दशतितम तिहत्तर,—शत्-अष्ट (वि० ब० व०) तीन बार सात अर्थात् २१—शत्यत् तीनों (गुणों) का ज्ञान,—स्थली तीन पवित्र स्थान—अर्थात् काशी, प्रयाग और गया, —स्रोतस् (स्त्री०) गंगा का विशेषण—त्रिस्रोतस अहति यो गंगाप्रतिष्ठाम्—रघु० ७।९, रघु० १०।६३, कु० ७।१६ —सौत्य,—हायण (वि०) तीन वर्ष का ।

त्रिंश (वि०) (स्त्री०—शी) [त्रिंशत्+डट्] 1 तीसवाँ 2 तीस से जुड़ा हुआ, उदा० त्रिंश शत—'एक सौ तीस' 3 तीस से युक्त ।

त्रिंशक (वि०) [त्रिंश+कन्] 1. तीस से युक्त 2. तीस के मूल्य का या तीस में खरीदा हुआ ।

त्रिंशत् (स्त्री०) [त्रयोदशत परिमाणमस्य नि०] तीस, —पत्रम् सूर्योदय के समय खिलने वाला कमल ।

त्रिंशत्कम् [त्रिंशत्+कन्] तीस की समष्टि, तीस का समाहार ।

त्रिक (वि०) [त्रयाणां समूह —कन्] 1 तिगुना, तेहरा 2 तिगड्डा बनाने वाला 3 तीन प्रतिशत,—कम् 1 तिगड्डा 2 तिराहा 3 रीढ़ की हड्डी का निचला भाग, कूल्हे के पास का भाग—त्रिके स्थूलता—सुश्रु० १।१९०, कश्चिद्विवृतत्रिकशिखहार रघु० ६।१६ 4, कन्धे की हड्डियों के बीच का भाग 5 तीन मसाले (त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद),—का रस्सी के आने जाने के लिए कुएँ पर लगाई हुई लकड़ी की गिर्री ।

त्रितय (वि०) (स्त्री०—यी) [त्रयोऽवयवा अस्य -त्रि+तयप्] तीन भागों वाला, तिगुना, तीन तह का,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह —श्रद्धा बित विधिश्चेति त्रितय तत्समागतम्—रघु० ७।२९, रघु० ८।७८, याज्ञ० ३।२६६ ।

त्रिधा (अव्य०) [त्रि+धाच्] तीन प्रकार से-या तीन भागों में, कु० ७।४४, भग० १८।१९ ।

त्रिस् (अव्य०) [त्रि+सुच्] तीसरी बार, तीन बार ।

त्रुट् (दिवा० तुदा० पर० त्रुटयति, त्रुटति, त्रुटित) फाड़ना, तोड़ना, टुकड़े २ करना, तड़कना, खिसल जाना (आलंभी०) —गद्गदगलत्त्रुट्यद्वलीनाक्षरम् - भर्तृ० ३।८, १।९६, अय ते बाष्पविस्त्रुटित इव मुक्तामणि-सर —उत्तर० १।२९ ।

त्रुटि,—टी (स्त्री०) [त्रुट्+इन् कित्, त्रुटि+ङीष्] 1 फाड़ना, तोड़ना, फाड़ना 2 छोटा हिस्सा, अणु 3 समय का अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर, १/४ क्षण या ३ लव 4 सन्देह, अनिश्चितता 5 हानि, नाश 6 छोटी इलायची (पौधा) ।

त्रेता [त्रीन् भवान् एति प्राप्नोति—यृषो० साध] 1 तिकड़ी त्रिक 2 तीन यज्ञाग्नियों का समाहार—मनु० २।२३१, रघु० १३।७७ 3 पासे को विशेष ढंग से फेंकना, तीन का दाँव फेंकना—त्रेताहृतसर्वस्व मृच्छ० २।८ 4 हिन्दुओं के चार युगों में दूसरा—दे० 'युग' ।

त्रेधा (अव्य०) [त्रि+एधाच्] तिगुनेपन से, तीन प्रकार से, तीन भागों में—तदेक सत्त्रेधाकमायते - भाग०, (नभ) तुभ्य त्रेधा स्थितात्मने—रघु० १०।१६ ।

त्रै (स्वा० आ० त्रायते, त्रात या त्राण) रक्षा करना, प्रतिरक्षित रखना, बचाना, प्रतिरक्षा करना (प्राय अपा० के साथ) क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ —रघु० २।५३, भग० २।४०, मनु० ९। १३८, भट्टि० ५।५४, १५।१२०, परि—, बचाना, परित्रायस्व परित्रायस्व (नाटकों में) ।

त्रैकालिक (वि०) (स्त्री० की) [त्रिकाल+ठञ्] तीन कालों से (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) सम्बद्ध ।

त्रैकाल्यम् [त्रिकाल+ष्यञ्] तीन काल अर्थात्—भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् ।

त्रैगुणिक (वि०) [त्रिगुण+ठक्] तिगुना, तेहरा ।

त्रैगुण्यम् [त्रिगुण+ष्यञ्] 1 तिगुनापन, तीन धागों या गुणों का एकत्र होने का भाव 2 तीन गुणों का समाहार 3 तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस्) की समष्टि —त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरित नानारस दृश्यते—मालवि० १।४ ।

त्रैपुर [त्रिपुर+अण्] 1 त्रिपुर नाम का देश 2 उस देश का निवासी या शासक ।

त्रैमातुर [त्रिमातृ+अण्, उत्वम्] लक्ष्मण का विशेषण ।

त्रैमासिक (वि०) (स्त्री० की) [त्रिमास+ठञ्] 1 तीन मास पुराना 2 तीन महीने तक ठहरने वाला, या हर तीन महीने में आने वाला 3 तिमाही ।

त्रैराशिकम् [त्रिराशि+ठञ्] (गणित) तीन ज्ञात राशियों के द्वारा चौथी अज्ञात राशि निकालने की रीति ।

त्रैलोक्यम् [त्रिलोकी+ष्यञ्] तीन लोकों का समाहार रघु० १०।५३ ।

त्रैवर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिवर्ण+ठञ्] पहले तीन वर्णों से सबध रखने वाला ।

त्रैविक्रम (वि०) [त्रिविक्रम+अण्] त्रिविक्रम या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला । —रघु० ७।३५ ।

त्रैविद्यम् [त्रिविद्या+अण्] 1 तीनों वेद 2 तीनों वेदों का अध्ययन 3 तीन शास्त्र—श्च. तीनों वेदों में विख्यात ब्राह्मण—भग० ९।२० ।

त्रैविष्टप, त्रैविष्टपेय [त्रिविष्टप+अण्, ढक् वा] देवता ।

त्रैशङ्कव [त्रिशङ्कु+अण्] त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चन्द्र का विशेषण ।

त्रोटकम् [त्रुट्+णिच्+ण्वुल्] नाटक का एक भेद—सप्ताष्ट नवपञ्चाङ्कं दिव्यमानुषसंश्रयम्, त्रोटक नाम तन्नाम

प्रत्येक सन्धिवृषकम्—सा० द० ५४०, उदा० कालिदास का विक्रमोर्वशी ।

त्रोटिः (स्त्री०) [त्रुट्+इ] चोच, चञ्चु । सम०—हस्तः पक्षी ।

त्रोत्रम् [त्रै+उत्र] पशुओं को हाँकने की छड़ी ।

त्वक्ष् (भ्वा० पर० त्वक्षति, त्वष्ट) कतरना, बकला उतारना, छीलना ।

त्वक्षुरः [त्वक्ष्+कु+अच्] निरादर सूचक 'थू' शब्द से सम्बोधन करना ।

त्वङ्ग् (भ्वा० पर० त्वङ्गति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 कूदना, सरपट दौड़ना 3 काँपना ।

त्वच् (स्त्री०) [त्वच्+क्विप्] 1 खाल (मनुष्य, साँप आदि की) 2 (गौ, हरिण आदि का) चमड़ा—रघु० ३।३१ 3 छाल, वल्कल—कु० १।७, रघु० २।३७, १७।१२ 4 ढकना, आवरण 5 स्पर्शज्ञान । सम०—अङ्कुरः रोमाञ्च होना,—इन्द्रियम् स्पर्शेन्द्रिय,—कण्डूरः फोड़ा, —गन्ध सन्तरा,—छेदः चमड़ी में घाव, खरोंच, रगड़, —जम् 1. रुधिर 2. बाल (शरीर पर के),—तरङ्गक. मुर्री,—त्रम् कवच, त्वक्त्र वाचकत्वे वरम्—भट्टि० १४।९४,—दोष. चर्मरोग, कोढ़,—पाठ्यम् चमड़ी का रूखापन,—पुष्प रोमाञ्च,—सार (त्वचि सार) बांस, त्वक्सारस्तम्भपरिपूरणलक्ष्यगीति —शि० ४।६१,—सुगन्ध सतरा ।

त्वचा [त्वच्+टाप्] दे० त्वच् ।

त्वदीय (वि०) [युष्मद्+छ, त्वत् आदेश] तेरा, तुम्हारा —रघु० ३।५० ।

त्वद् [युष्मद् त्वद् आदेश समासे] (मध्यम पुरुष का रूप जो कि बहुधा समास में प्रथम पद के रूप में पाया जाता है—उदा० त्वदधीन, त्वत्सादृश्यम् —आदि ।

त्वद्विध (वि०) [तव इव विधा प्रकारो यस्य] तेरी तरह, तुम्हारी भाँति ।

त्वर् (भ्वा० आ० त्वरते, त्वरित) शीघ्रता करना, जल्दी करना, वेग से चलना, फुर्ती से कार्य करना—मदान्मुह्यदर्थे त्वरताम्—मालवि० २, नानानेतुमबला स तत्वरे —रघु० १९।३८,—प्रेर० त्वरयति—जल्दी कराना, शीघ्रता कराना, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना ।

त्वरा, त्वरिः (स्त्री०) [त्वर्+अङ्+टाप्, त्वर्+इन्] शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग—औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना क्रियां—रत्ना० १।२ ।

त्वरित (वि०) [त्वर्+क्त] शीघ्रगामी, फुर्तीला, वेगवान्, —तम् शीघ्रता करना, जल्दी करना (अव्य०) जल्दी से, तेजी से, वेग से, शीघ्रता से ।

त्वष्टृ (पु०) [त्वक्ष्+तृच्] 1 बढ़ई, निर्माता, कारीगर 2 देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा [पौराणिक कथा के अनुसार त्वष्टृ अग्निदेवता माना जाता है, उसके त्रिशिरा नाम का पुत्र तथा संज्ञा नाम की पुत्री थी । संज्ञा का विवाह सूर्य के साथ हो गया—परन्तु संज्ञा अपने पति के दारुण तेज को सहन न कर सकी, फलतः त्वष्टा ने सूर्य को सैंदाद पर रख कर उसके प्रभा-मंडल को सावधानी से काट-छाँट कर परिष्कृत कर दिया (तु० रघु० ६।३२—आरोप्य चक्रभ्रमिमुण्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति—उस बची हुई कतरन से विष्णु का चक्र तथा शिव जी का त्रिशूल एवं देवताओं के अन्य शस्त्र बनाये गये) ।

त्वादृश्, त्वादृक्ष (स्त्री०—क्षी) [त्वमिव दृश्यते—युष्मद्+दृश्+क्विन्, कञ् वा, स्त्रियां ङीप्] तुम सरीखा, तेरी तरह का—मेघ० ६९ ।

त्विष् (भ्वा० उभ० त्वेषति—ते) चमकना, जगमगाना, दमकना, दहकना ।

त्विष् (स्त्री०) [त्विष्+क्विप्] 1 प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, चमक-दमक यावत्त्विषामित्यवधारित पुरा —शि० १।३, ९।१३, रघु० ४।७५ रत्ना० १।१८ 2 सौन्दर्य 3 अधिकार, भार 4 अभिलाष, इच्छा 5 प्रथा, प्रचलन 6 हिंसा 7 वक्तृता । सम०—ईशः (त्विषां पति) सूर्य ।

त्विषिः [त्विष्+इन्] प्रकाश की किरण ।

त्सरु [त्सर्+उ] 1 रेंगने वाला जानवर 2 तलवार या किसी अन्य हथियार की मूठ —सुप्रग्रहविमलकलधौत-त्सरुणा खड्गेन—वेणी० ३, त्सरुप्रदेशावपवर्जिताङ्ग —कि० १७।५८, रघु० १८।४८ ।

थ

थः [थुड्+ड] पहाड़,—थम् 1 रक्षा, प्ररक्षा 2 त्रास, भय 3 मांगलिकता ।

थुड् (तुदा० पर०—थुडति) 1 ढकना, पर्दा डालना 2 छिपाना गुप्त रखना ।

थुड्डनम् [थुड्+ल्युट्] ढकना, लपेटना ।

थूत्कारः [थूत्+कृ+घञ्] 'थूत्' ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है ।

थूर्व् (भ्वा० पर० थूर्वति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना ।

थूत्कारः, थूत्कृतम् [थूत्+कृ+घञ्, क्त वा] 'थूत्' की ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है ।

थैयं (अव्य०) किसी संगीत-वाद्य-यन्त्र की अनुकरणात्मक ध्वनि ।

द

द (वि०) [दै—दो या दा+क] (प्रायः समासान्त प्रयोग) देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला, पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने वाला, दूर करने वाला—यथा अनद, अम्बद, मरद, नोयद, अम्बुद आदि, -द. 1 उपहार, दान 2 पहाड़, -दम् पत्नी,—दा 1 गर्मी 2 पश्चात्ताप।

दंश् (भ्वा० पर० —दशति, दष्ट- इच्छा० दिदंक्षति) काटना, डंक मारना—भट्टि० १५।४, १६।१९, मणालिका अदशत् पा० ३२, खा लिया, कुतर लिया, उप—, चटनी, अचार आदि खाना मूलकनोपदश्य भुङ्क्ते—सिद्धा०, सम्—, 1 काटना, डंक मारना सदष्टाधरपल्लवा अमरु ३० 2 चिपटना, सलग्न रहना, या चिपके रहना उरसा सदष्टगर्भत्वचा शा० ७।११, ३।१८, सदष्टवस्त्रोज्ज्वलानितम्बेषु रघु० १६।६५, ४८।

दंश[1] [दंश्+घञ्] 1 काटना, डंक मारना मुग्धे विधेहि यदि निर्दयदन्तदंशम् मालवि० ४।८ 4 काटना, फाड़ना 5 हास, एक प्रकार की बड़ी मक्खी रघु० २।५, मनु० १।४०, याज्ञ० ३।२१५ 6 त्रुटि, दोष, कमी (मणि आदि की) 7 दाँत 8 लोहापन 9 कवच 10 जोड़, अंग। सम० -भीरु. भैंसा।

दंशक [दंश्+ण्वुल्] 1 कुत्ता 2 बड़ी मक्खी 3 मक्खी।

दंशनम् [दंश्+ल्युट्] 1 काटने या डंक मारने की क्रिया -उदा० दष्टाश्च दशनैः कान्ता दासीकुर्वन्ति योषित -सा० द० 2 कवच, जिरहबख्तर- शि० १७।२१।

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] 1 काटा हुआ 2 धृतकवच, कवच से सुसज्जित।

दंशिन् (पु०) [दंश्+णिनि] दे० 'दंशक'।

दंशी [दंश+ङीष्] छोटा डांस या वनमक्खी।

दंष्ट्रा [दंश्+ष्ट्रन्+टाप्] बड़ा दाँत, हाथी का दाँत, बिधैला दाँत, प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रादुष्कुरात् -भर्तृ० २।४, रघु० २।४६. दंष्ट्राभग्न मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा, नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशा सार्वभौमा—मुद्रा० ३।२२। सम० -अस्त्र, -आयुध. जंगली सूअर, -कराल (वि०) भयंकर दाँतों वाला,- विष एक प्रकार का साँप।

दंष्ट्रिल (वि०) [दंष्ट्रा+ल] बड़े बड़े दाँतों वाला।

दंष्ट्रिन् (पु०) [दंष्ट्रा+इनि] 1 जंगली सूअर 2 साँप 3 लकड़बग्घा।

दक्ष (वि०) [दक्ष्+अच्] योग्य, सक्षम, विशेषज्ञ, चतुर, कुशल,—नाट्ये च दक्षा वयम्—रत्ना० १।६, मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे -कु० १।२, रघु० १२।११ 2 उचित उपयुक्त 3 तैयार, खबरदार सावधान, उद्यत—याज्ञ० १।७६ 4 सच्चा ईमानदार,—क्षः 1 विख्यात प्रजापति का नाम [दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक था जो उसके दाहिने अंगूठे से पैदा हुआ था। मानव समाज के पितृपरक कुलों का वह प्रधान था, कहते हैं उसके बहुत सी कन्याएँ थीं, जिनमें से २७ तो नक्षत्रों के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थीं और १३ कश्यप की पत्नियाँ थीं। एक बार दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, परन्तु उसमें उसने न अपनी पुत्री सती को आमन्त्रण दिया और न अपने जामाता शिव को बुलाया। फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अपमानित होने के कारण वह जलती आग में कूद कर भस्म हो गई। जब शिव ने यह सुना तो वह बड़े उत्तेजित होकर उसके यज्ञ में गये, और यज्ञ का पूर्णतः विनाश कर दिया। कहते हैं, कि फिर भी शिव ने दक्ष (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का पीछा किया और उसका सिर काट डाला। बाद में शिव ने उसे पुनः जिला दिया। तब से लेकर दक्ष देवताओं की प्रभुता स्वीकार करने लगा। दूसरे मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे जमीन पर पटक दिया, वहाँ से तुरन्त एक राक्षस निकला और शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। उसे दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके यज्ञ को नष्ट करने को कहा गया तब वह बलवान् राक्षस कुछ गणों को (उपदेवों को) साथ लेकर यज्ञ में गया और वहाँ उपस्थित देवों तथा पुरोहितों का काम तमाम कर दिया। एक और मतानुसार दक्ष का सिर स्वयं शिव ने काटा था] 2 मुर्गा 3 आग 4 शिव का बैल 5 बहुत सी प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6 शिव का विशेषण 7 मानसिक शक्ति, योग्यता, धारिता। सम० -अध्वरध्वंसक -ध्वंसिन् (पु०) शिव के विशेषण,- कन्या, -जा,—तनया 1 दुर्गा का विशेषण 2 अश्विनी आदि नक्षत्र,- सुत. देवता।

दक्षाध्य [दक्ष्+आध्य] 1 सिद्ध 2 गरुड़ का विशेषण।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] 1 योग्य, कुशल, निपुण, सक्षम, चतुर 2 दायाँ, दाहिना (विप० बायाँ) 3 दक्षिण पार्श्व में स्थित 4 दक्षिण, दक्षिणी जैसा कि दक्षिणवायु दक्षिणदिक् में 5 दक्षिण में स्थित 6 निष्कपट, सच्चा, ईमानदार, निष्पक्ष 7 सुहावना सुखकर, रुचिकर 8 शिष्ट, नागर 9 आज्ञानुवर्ती, वशवर्ती 10 पराश्रित,—णः 1 दायाँ हाथ या बाजू 2 शिष्ट व्यक्ति, ऐसा प्रेमी (नायक) जिसका मन अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

वह केवल एक ही प्रेयसी में अनुरक्त है 3 शिव या विष्णु का विशेषण। सम०-- अग्नि: दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि, इसको 'अन्वाहार्यपचन' भी कहते हैं,--अञ्च (वि०) दक्षिण की ओर संकेत करता हुआ, --अचल दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयपर्वत,--अभिमुख (वि०) दक्षिण की ओर मुंह किये हुए, दक्षिणोन्मुख, --अयनम् भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर सूर्य की प्रगति, वह आधावर्ष जब कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है, शरद् की दक्षिणी अयन सीमा, --अर्ध 1 दायां हाथ 2 दाहिना या दक्षिणी पार्श्व,--आचार (वि०) 1 ईमानदार, आचरणशील 2 पावन अनुष्ठान के अनुसार शक्ति का उपासक, -आशा दक्षिण दिशा, °इति, यन का विशेषण, इतर (वि०) 1 बायां (हाथ या पैर) कु० ४।१९ 2 उत्तरी (-रा) उत्तर दिशा,--उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तर की ओर मुड़ा हुआ, °वृत्तम् मध्याह्न रेखा, -पश्चात् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम की ओर, -पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी, (-मा) दक्षिण पश्चिम दिशा,--पूर्व, -प्राच् (वि०) दक्षिण पूर्वी,--पूर्वा, --आशा दक्षिण पूर्व दिशा, --समुद्रः दक्षिणी सागर,--स्थ सारथि।

दक्षिणतस् (अव्य०) [दक्षिण+तसिल्] 1 दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से 2 दाईं ओर को 3 दक्षिण दिशा की ओर (सम्ब० के साथ)।

दक्षिणा (अव्य०) [दक्षिण+आच्] 1 दाईं ओर, दक्षिण की ओर 2 दक्षिण दिशा में (अपा० के साथ) [दक्षिण +टाप्]---णा 1 (यज्ञादिक धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर) ब्राह्मणों को उपहार 2 दक्षिणा (जो प्रजापति की पुत्री तथा मूर्तरूप यज्ञ की पत्नी समझी जाती है-पत्नी सुदक्षिणेत्यासीद्यज्ञस्यैव दक्षिणा-रघु० १। ३१ 3 भेंट, उपहार, दान, शुल्क, पारिश्रमिक -प्राणदक्षिणा, गुरुदक्षिणा आदि 4 अच्छी दुधार गाय, बहु प्रसवी गाय 5 दक्षिण दिशा 6 दक्षिण देश अर्थात् दक्षिणभारत। सम० -अर्ह (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी, -आवर्त (वि०) 1 दाईं ओर मुड़ा हुआ 2 दक्षिण की ओर मुड़ा हुआ,--काल दक्षिणा प्राप्त करने का समय,--पथ. भारत का दक्षिणी प्रदेश अस्ति दक्षिणापथे विदर्भेषु पद्मपुर नाम नगरम्--मा० १, --प्रवण (वि०) दक्षिणोन्मुख।

दक्षिणाहि (अव्य०) [दक्षिण+आहि] 1 दूर दाईं ओर 2 दूर दक्षिण में, के दाक्षण की ओर (अपा० के साथ) दक्षिणाहि ग्रामात् --सिद्ध०।

दक्षिणीय, दक्षिण्य (वि०) [दक्षिणामर्हति---दक्षिणा--छ, यत् वा] यज्ञीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण।

दक्षिणेन (अव्य०) [दक्षिण+एनप्] को दाईं ओर (कर्म० या सम्ब० के साथ)---दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते--श० १, दक्षिणेन ग्रामस्य।

दग्ध (भू० क० कृ०) [दह्+क्त] 1 जला हुआ, आग में भस्म हुआ 2 (आल०) शोकसंतप्त, सताया हुआ, दुखी 3 दुर्भिक्षग्रस्त 4 अशुभ 5 शुष्क, नीरस, स्वादहीन 6 दुर्वृत्त, अभिशप्त, दुष्ट ('दुर्वचस' सूचक शब्द, समास का प्रथम पद) नाद्यापि मे दग्धदेह पतति ---उत्तर० ४, अस्य दग्धोदरस्यार्थे क कुर्यात्पातकं महत्--हि० १।६८, इसी प्रकार 'दग्धजठरस्यार्थे' भर्तृ० ३।८।

दग्धिका [दग्ध+कन्+टाप्, इत्वम्] भुर्रे, भुने हुए चावल।

दघ्न (वि०) (स्त्री०--घ्नी) ऊँचाई, गहराई या पहुँच की भावना को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय---उरुदघ्नेन पयसोत्तीर्य--का० ३१०, कीलालव्यतिकरगुल्फदघ्नपङ्कं (मार्गं)---मा० ३।१७, ५।१४, याज्ञ० २।१०८।

दण्ड् (चुरा० उभ० दण्डयति---ते, दण्डित) सजा देना, जुर्माना करना, मरम्मत करना, (१६ द्विकर्मक धातुओं में से एक धातु)---तान् सहस्रं च दण्डयेत्--मनु० ९।२३४, ८।१२३, याज्ञ० २।२६९, स्त्रियं दण्डयतो दण्डधान्--रघु० १।२५।

दण्ड---डय् [दण्ड्+अच्] 1 यष्टिका, डंडा, छड़ी, गदा, मुद्गर, सोटा---पतत्तु शिरस्यकाण्ड यमदण्ड इवोद्यत भुज ---मा० ५।३१, काष्ठदण्ड 2 राजचिह्न, राजसत्ता का प्रतीकरूप दण्ड- आत्तदण्ड--श० ५।८ 3 उपनयन संस्कार के समय द्विज को दिया गया डण्डा--मनु० २।४५-४७ 4 संन्यासी का डण्डा 5 हाथी की सूंड 6 (कमल आदि का) डंठल या वृन्त (छतरी आदि की) मूठ--ब्रह्मदण्डच्छत्रदण्ड --दश०१ (आरंभिक श्लोक), राज्य स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्--श० ५।६, कु० ७।८९, इसी प्रकार 'कमल दंड, आदि 7 पतवार, डांड 8 रई का डंडा 9 जुर्माना मनु० ८।३४१, ९।२२९, याज्ञ० २।२३७ 10 ताड़न, शारीरिक दण्ड, सामान्य दण्ड---यथापराधदण्डानाम्---रघु० १।६, एव राजापथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा---मुद्रा० १, दण्ड दण्डयेषु पातयेत्--मनु० ८।१२६, कृतदण्ड स्वय राज्ञा लेभे शूद्र समा गतिम्--रघु० १५।५३ 11 कैद 12. आक्रमण, हमला, हिंसा, दण्ड---वर्णित चार उपायों में से अन्तिम---दे० 'उपाय' मनु० ७।१०९, शि० २।५४ 13 सेना---तस्य दण्डवती दण्ड स्वदेहान्न व्यशिष्यत---रघु० १७।६२, मनु० ७।६५, ९।२९४, कि० २।१२ 14 सैन्यव्यवस्था का एक रूप, व्यूह 15 वशीकरण, नियन्त्रण, प्रतिबन्ध---वाग्दण्डोऽथ मनोदण्ड कायदण्डस्तथैव च, यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स

उच्यते—मनु० १२।१० 16 चार हाथ के परिमाण का नाप 17 लिंग 18 धमड 19 शरीर 20 यम का विशेषण 21 विष्णु का नाम 22 शिव का नाम 23 सूर्य का सेवक 24 घोड़ा (अन्तिम पाँच अर्थों में 'पुल्लिंग' है) । सम०—अजिनम् 1 (भक्ति के बाह्य-सूचक) डण्डा और मृगछाला 2 (आल०) पाखण्ड, छल, -अधिप मुख्य दण्डाधिकरण, -अनीकम् सेना की एक टुकड़ी, -नक हतवतो दण्डानोकैर्विदर्भपते श्रियम् मालवि० ५।२, -अपूपन्याय 'न्याय' के अन्तर्गत दे०, -अर्ह (वि०) दण्ड दिये जाने के योग्य, दण्ड का भागी, -अलसिका हैजा, -आज्ञा दण्डित करने के लिए न्यायाधीश का वाक्य, -आहतम् मट्ठा, छाछ, -कर्मन् (नपु०) दण्ड देना, ताड़ना करना, -काक. लहाड़ी कौवा, -काष्ठ लकड़ी का डण्डा या सोटा, -ग्रहणम् सन्यासी का दण्ड ग्रहण करना, तीर्थयात्री का डण्डा लेना, साधु हो जाना, -छदनम् बरसात रखने का कमरा, -डक्का एक प्रकार का ढोल, -दास ऋण-परिशोध न करने के कारण बना हुआ सेवक, -देव-कुलम् न्यायालय, -धर, -धार (वि०) 1 डण्डा रखने वाला, दण्डधारी 2 दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला—उत्तर० ४।१०, (-र) 1 राजा श्रमनुद मनदण्डयगनरयम् रघु० ९।३ 2 यम 3 न्यायाधीश, सर्वोच्च दण्डाधिकरण,—नायक 1 न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2 सेना का मुखिया, सेनापति, नीति (स्त्री०) 1 न्याय प्रशासन, न्याय-करण 2 नागरिक तथा सैनिक प्रशासन -पद्धति. राज्यशासनविधि, राज्यतन्त्र रघु० १८।४६ -पाणि (पु०) राजा,—प राजा पाशुल दरबान, द्वारपाल, —पाणि यम का विशेषण, -पात 1 डण्डे का गिरना 2 दण्ड देना, पातनम् दण्ड देना, ताड़ना करना —पारुष्यम् 1 सप्रहार, प्रघात 2 कठोर तथा दारुण दण्ड देना—पाल,—पालक 1 मुख्य दण्डाधिकरण 2 द्वारपाल, उपोद्घात,—पोष मुठदार चलनी, —प्रणाम 1 शरीर , बिना झुकाये नमस्कार करना (डण्डे की भाँति सीधे खड़े रह कर) 2 भूमि पर लेट कर प्रणाम करना,—बालधि. हाथी,—भङ्ग दण्डाज्ञा पर अमल न करना, -भृत् (पु०) 1 कुम्हार 2 यम का विशेषण, भाण (न) व 1 दण्डधारी 2 दण्डधारी सन्यासी, -मार्ग राजमार्ग, मुख्यमार्ग,—यात्रा 1 बरात का जलूस 2 युद्ध के लिए कूच, दिग्विजय के लिए प्रस्थान,—याम 1 यम का विशेषण 2 अगस्त्य मुनि की उपाधि 3 दिन,—यामिन्,—यामिन् द्वारपाल सन्तरी, पहरेदार,—यामिन् (पु०) पुलिस अधिकारी, —विधि 1 दण्ड देने का नियम 2 दण्डविधान, —विष्कम्भः मथानी की रस्सी बाँधने का खम्भा,—व्यूह. एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक पास २ कतारों में खड़े किये जाते हैं,—शास्त्रम् दण्ड निर्णय का शास्त्र, दण्डविधान, -हस्त. 1 द्वारपाल, पहरेदार, सन्तरी 2 यम का विशेषण ।

दण्डकः [दण्ड+कन्] 1 छड़ी, डण्डा आदि 2 पङ्क्ति, कतार 3 एक छंद—दे० परिशिष्ट, -क,—का, —कम् दक्षिण में एक विख्यात प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है, कहते हैं राम के समय यहाँ जङ्गल था)—प्राप्तानि दण्डकान्यपि दण्डकेष्वपि रघु० १४।२५, किं नाम दण्डकेषम्—उत्तर० २, कवायोध्याया पुनरुपगमो दण्डकाया वने व उत्तर० २।१३-१५ ।

-दण्डनम् [दण्ड्+ल्युट्] दण्ड देना, ताड़ना करना, जुर्माना करना ।

दण्डादण्डि (अव्य०) [दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्—इच्, द्विरुक्त, पूर्वपददीर्घः] लाठियों की लड़ाई, वह मारपीट जिसमें दोनों ओर से लाठी चलती हो, डण्डों की सोटों की लड़ाई ।

दण्डार [दण्ड+ऋ+अण्] 1 गाड़ी 2 कुम्हार का चाक 3 बेड़ा, नाव 4 मदमस्त हाथी ।

दण्डिक [दण्ड+ठन] दण्डधारी, छड़ीबरदार ।

दण्डिका [दण्डिक+टाप्] 1 लकड़ी 2 पङ्क्ति, कतार, श्रेणी 3 मोतियों की लड़ी, हार 4 रस्सी ।

दण्डिन् (पु०) [दण्ड+इनि] 1 चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, सन्यासी 2 द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 3 डाँड चलाने वाला 4 जैन सन्यासी 5 यम का विशेषण 6 राजा 7 दशकुमार चरित और काव्यादर्श का रच-यिता, दण्डी कवि—जाते जगति वाल्मीकेः कविरित्य-भिधाऽभवत्, कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्विति दण्डिनि—उद्भट ।

दत् (पु०) [सर्वनाम स्थान को छोड़ कर सर्वत्र 'दन्त' के स्थान में 'दत्' आदेश विकल्प से] दाँत । सम० —छदः (दच्छद) होट, ओष्ठ ।

दत्त (भू० क० कृ०) [दा+क्त] 1 दिया हुआ, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हुआ 2 सौंपा हुआ, वितरित, समर्पित 3 रक्खा हुआ, फैलाया हुआ—दे० 'दा', -क 1 हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्तिम' भी कहते हैं)—माता पिता वा ज्ञाता यमर्द्धि पुत्रमापदि, सदृश प्रीतिसंयुक्त स ज्ञेयो दत्तिम सुत 1 मनु० ९।१६८ 2 वैश्यों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि तु० 'गुप्त' के अन्तर्गत उद्धरण से 3 अत्रि और अनसूया का पुत्र—दे० 'दत्तात्रेय' भी०, —कम् उपहार, दान । सम०—अनपकर्मन्—अदत्ता-दानम् दी हुई वस्तु को न देना, या दान की हुई वस्तु को वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १८ स्थानि-

कारों में से एक,—अवधान (वि०) सावधान,—आत्रेयः एक ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र, को ब्रह्मा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,—आदर (वि०) 1 आदर प्रदर्शित करने वाला, सम्मानपूर्ण 2 सम्मान प्राप्त,—मुलका दुलहिन जिसको बहेज दिया गया है 1,—हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढाया है, हाथ का सहारा पाये हुए —सम्भुना दत्तहस्ता —मेघ० ६०, सम्भु की भुजा पर टेक लगाये हुए—स कामरूपेश्वरदत्तहस्ता—रघु० ७।१७, (आल०) साहाय्यवान्, समर्थित, साहाय्यित, सहायता-प्राप्त—दैवेनेत्थ दत्तहस्तावलम्बे —रत्ना० १।८, वात्या सेव कृशाङ्गया सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति —वेणी० २।२१ ।

दत्तकः [दत्त+कन्] गोद लिया हुआ पुत्र—याज्ञ० २। १३०, दे० 'दत्त' ऊपर ।

दद् (भ्वा० आ० ददते) देना, प्रदान करना ।

दद (वि०) [दा०+श] देने वाला, प्रदान करने वाला ।

ददनम् [दद्+ल्युट] उपहार, दान ।

दध् (स्वा० आ० दधते) 1 पकडना 2 धारण करना, पास रखना 3 उपहार देना ।

दधि (नपु०) [दध् +इन्] 1 जमा हुआ दूध, दही,—क्षीर दधिभावेन परिणमते—शारी० दध्योदन आदि 2 तारपीन 3 वस्त्र । सम०—अम्लम्,—क्षोभणम् दही मिला हुआ भात, 'उत्तरम्,—उत्तरकम्,—मण्ड दही की मलाई, तोड,—उद, उदक, जमे हुए दूध का सागर, —कूर्चिका जमे हुए और उबले हुए दूध का मिश्रण, —क्षार रई, जमे ताजा मक्खन,—फलः कैथ,—मण्डः, वारि (नपु०) दही का तोड,—मन्थनम् दही का मथना,—शोण बन्दर,—सक्तु (पु० ब० व०) दही मिला हुआ सत्तू,—सारः, स्नेहः ताजा मक्खन,—स्वेद अधरिडका दही ।

दधित्थ [दधि+स्था+क पृषो०] कैथ, कपित्थ ।

दधीचः (पु०) एक विख्यात ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दे दी थी और स्वयं मरने के लिए उद्यत हो गया था । इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक वज्र बनाया और इन्द्र ने इसी वज्र के द्वारा वृत्र तथा अन्यान्य राक्षसों को परास्त किया । सम०—अस्थि (नपु०) 1 इन्द्र का वज्र 2 हीरा ।

दनुः (स्त्री०) दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही गई थी । यही दानवों की माता थी । सम०—जः, —पुत्रः, —सभव,—सूनु, एक राक्षस, °अरि,—°द्विष् (पु०) देवता ।

दन्त [दम्+तन्] 1 दांत हाथी का दांत, विषदन्त (साँप या अन्य विषैले जन्तुओं का), —वद्यसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम् —गीत० १०, कर्कंधु, वराह आदि 2 हाथी का दांत, बबरत 'पाण्डुलिका—मा० १०।५ 3 बाण की नोक 4. पर्वत की चोटी 5. लतागृह, पर्णशाला । सम० —अग्रम् दाँत की नोक,—अन्तरं दांतों के बीच का स्थान, —उद्भेद दांतों का निकलना,—उपजीविन् —जीविन् (पु०) जो अपने दांतों को उद्यम की भाँति प्रयुक्त करते हैं, (खाने वाले पदार्थ को अपने दांतों के बीच में रखकर पीसने वाले), एक प्रकार के साधु सन्यासी, तु० मनु० ६।१७,—कर्णक नीबू का वृक्ष,—कार हाथीदांत का काम करने वाला कलाकार,—काष्ठम् दतौन—कूट लकडी, —घातिन् (वि०) दांतों को क्षति पहुँचाने वाला, दांतों को खराब करने वाला,—घर्षः दांतों का किच-किचाना, दांत पीसना, आम दांतों का ढीलापन, —छद होठ,—वारवारमुदारलीलकृतकृतो दन्तच्छदान् पीडयन् —भर्तृ० १।४३, ऋतु० ४।१२,—जात (वि०) (बच्चा) जिसके दांत निकल आये हो, दांत निकलने का समय, —जाह्मम् दांत की जड —धावनम् 1. दांतों को धोना, साफ करना 2 दतौन (—नः) बेर का वृक्ष, मौलसिरी का पेड, पत्रम् एक प्रकार का कर्णाभूषण—रघु० ६।१७, कु० ७।२३, (प्राय कादम्बरी में प्रयुक्त), पत्रजम् 1 कान का आभूषण 2. कुन्द फूल, —पत्रिका 1 कान का आभूषण —शि० १।६० 2 कुन्द,—प्रक्षालनम् 1 दतौन 2 दाँतों का धोना साफ करना,—पातः दाँतों का गिरना,—पाली 1 दाँत की नोक 2 मसूडा, —पुष्पम् 1. कुन्द फूल 2 कतक फल, निर्मली,—प्रक्षालनम् दाँतों का धोना,—भाग हाथी के सिर का अगला भाग (जहाँ दांत बाहर निकले होते हैं),—मलम् दाँतों का मैल,—मांस,—मूलम् —वेष्टम् मसूडा, मूलीया (ब० व०) दन्त्य वर्ण अर्थात् ल् त् थ् द् ध् न् ल् और स्, —रोग दांत की पीडा, —वस्त्रम्—वासस् (नपु०) होठ सुला यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।३४, शि० १०।८६, —शोध, —शोध,—शोधक अनार का पेड,—शौण्डा 1 एक प्रकार का बाजा, सारंगी 2 दांत कटकटाना —दन्तशौण्डां वादयन्—पच० १, —संभेदः बाह्यशक्ति के द्वारा दाँतों का टूटना,—स्खलनम् दांत का टूटना —सात (वि०) खट्टा, चरपरा (—ठ) नीबू का पेड, —हर्षकः दाँतों के ऊपर मैल की पपडी, शाक दाँतों पर लगाने का दन्तमञ्जन, दन्तशोधन मिस्सी,—शूल,—सम् दाँत की पीडा,—शोधनि (स्त्री०) दाँत कुरेदनी, —शोफः मसूडों की सूजन, सहसं दाँतों का रगडना, —हर्षः दाँतों में (ठण्डा पानी) लगना,—हर्षक नीबू का पेड ।

दन्तक [दन्त+कन्] 1. चोटी, शिखर 2 खूँटी, पक्षहण्डी ।

दन्तयुद्धिक (अव्य०) [दन्तैश्च दन्तैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्

समासान्तः इन्, पूर्वपदधीर्घः] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को दाँतों से काटा जाय।

दन्तावल, दन्तिन् (पु०) [अतिशायिनौ दन्तौ यस्य—दन्त+वलच्, दीर्घः, दन्त+इनि] हाथी,—भामि० १।६० तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः—हि० १।३५, रघु० १।७१, कु० १६।२।

दन्तुर (वि०) [दन्त+उरच्] बड़े २ या आगे निकले हुए दाँतों वाला—शुकरैः निर्दलैर्वैव दन्तुरा आवलं नरः—तारा०, शि० ६।५४ 2 दाँतेदार, दन्तुरित दन्तदार, बदानेदार, उन्नतावनत विषम (आल०) वक्रदन्तसर्वस्वसितदन्तुरेण—विक्रमाङ्क० १।५० 3 उभरा 4 उठना (बालों का) खड़ा होना। सम०—वृक्ष नीबू का पेड़।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर+इतच्] बड़े या आगे निकले हुए दाँतों वाला 2 दाँतेदार, उन्नतावनत, खड़े रोयेंदार वाला—केतकिदन्तुरितासु—गीत० १, पुलकभर ११, का० २८६।

दन्त्य (वि०) [दन्त+यत्] दाँतों से सम्बद्ध, स्व (अर्थात् वर्ण) दन्तस्थानीय वर्ण, दे० 'दन्तमूलीय' ऊपर।

दन्दश (पु०) दाँत।

दन्दशूक (वि०) [दंश्+यङ्+ऊक] 1 काटने वाला, विषैला 2 उत्पाती, —क 1 साँप, सर्प 2 रेंगने वाला जन्तु 3 राक्षस—इत्युक्ति रघुसिंहे दन्दशूकाभिधासौ भट्टि० १।२६।

दभ्, दम्भ् [भ्वा० स्वा० पर० दभति, दभ्नोति दब्ध—इच्छा० दिप्सति, दीप्सति, दिदम्भिषति) 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 धोखा देना, ठगना 3 जानना, II (चुरा० उभ० दम्भयति ते) ठेलना, उकसाना, ढकेलना।

दभ्र (वि०) [दम्भ्+रक] थोड़ा, स्वल्प, अदभ्रदर्भमधिशय्य स स्थलीम् कि० १।३८, दे० अदभ्र,—भ्र समुद्र, —भ्रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा, किसी अंश तक।

दम् (दिवा० पर० दाम्यति, दमित, दान्त · प्रेर० दमयति) 1 पाला जाना 2 शान्त होना · मनु० ४।३५, ६।८, ७।४१ 3 पालना, वश में करना, जीतना, रोकना · यमो दाम्यति राक्षसान्—भट्टि० १८।२०, दमित्वाप्यरिसंघातान्—९।४२, १९, १५।३७ 4 शान्त करना।

दम [दम्+घञ्] 1 पालना, दमन करना (वश में करना) 2 आत्मनियन्त्रण, अपनी उग्र भावनाओं को वश में करना, आत्मसंयम—मनु० १०।४,—(निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते) 3 बुराई की ओर से मन को हटाना, बुरी वृत्तियों का दमन करना (कुत्सितात्कर्मणो विप्र यच्च चित्तनिवारणम्, स कीर्तितो दम) 4 मन की दृढ़ता 5 दण्ड, जुर्माना मनु० ९।२८४, २९०, याज्ञ० २।४ 6 दलदल, कीचड़।

दमथ, थु [दम्+अथच्, अथुच् वा] 1 अपनी उग्र वृत्तियों का रोकना, या वश में करना आत्मनियन्त्रण 2 दण्ड।

दमन (वि०) (स्त्री०—नी) [दम्+ल्युट्] 1 पालने वाला, दबाने वाला, वश में करने वाला जीतने वाला हराने वाला—जामदग्न्यस्य दमने नैव निवर्तनुमर्हसि—उत्तर० ५।३२, भर्तृ० ३।८० दमो प्रकार सर्वदमन' 'अरिदमन' 2 शान्त, निगृहीत, नम् 1 पालना, वश में करना, दबाना, नियन्त्रित करना 2 दण्ड देना, ताड़ना करना दुर्दान्तानां दमनविषय क्षत्रियेष्वायत्तं—महावी० १।३४ 3 आत्मसंयम।

दमयन्ती [दमयति नाशयति अमङ्गलादिकम् दम+णिच्+अतृ ङीष्] विदर्भ के राजा भीम की पुत्री (इसका नाम 'दमयन्ती' इस लिए पड़ा था कि इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से सभी सुन्दर महिलाओं का दर्प चूर चूर कर दिया था नै० २।१८ भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतादमम् उदियाय यतस्तनाश्रया दम यन्तीति तयाऽभिधा दधौ। एक स्वर्णहंस ने पहले दमयन्ती के सामने नल के गुण और सौन्दर्य की प्रशंसा की फिर उसी के द्वारा दमयन्ती ने अपने प्रेम का समाचार उसको भिजवाया। उसके पश्चात् स्वयम्वर में दमयन्ती ने नल को उन बहुत से प्रतियोगियों में से, जिनमें कि इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण यह चारों देव भी स्वयं उपस्थित थे पति के रूप में चुन लिया और फिर दोनों प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्यजीवन बिताने लगे। परन्तु उनका यह सुखमय जीवन अधिक देर तक नहीं रहना था। नल के सौभाग्य से ईर्ष्या करने वाला कलि नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया और उसने नल को अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेलने के लिए उकसाया। खेल की धुन में ही मूढ़ राजा ने अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया और स्वयं तथा पत्नी को छोड़ सब कुछ हार गया। फलतः नल और दमयन्ती को केवल एक वस्त्र पहने राजधानी से निकाल दिया गया। दमयन्ती को बहुत से कष्ट उठाने पड़े। परन्तु उसकी पति-भक्ति में कोई अन्तर न आया। एक दिन जब दमयन्ती पड़ी सो रही थी, हताश होकर नल उसे छोड़ कर चल दिया। तब दमयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् वह फिर अपने पति से मिली और फिर शेष जीवन उन्होंने निर्विघ्नसुख में बिताया दे० 'नल' और 'ऋतुपर्ण')।

दमयितृ [वि०] [दम्+णिच्+तृच्] 1 पालने वाला, दमन करने वाला 2 दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला 3 विष्णु का विशेषण।

दमित (वि०) [दम्+क्त] 1 पाला हुआ, शान्त, शान्त

किया हुआ 2 विजित, दमन किया हुआ, वशीभूत, पराजित।

दम्पु (भू) **क्स्** (पु०) [दम् + उनस्, पक्षे दीर्घ] आग।

दम्पती [जाया च पतिश्च द्व० स० जायाशब्दस्य दमादेश द्विवचन] पति और पत्नी, रघु० १।३५, २।७०, मनु० ३।११६।

दम्भ [दम्भ् + घञ्] 1 धोखा, जालसाजी, दाव-पेच 2 धार्मिक, पाखण्ड—भग० १६।४ 3 अहङ्कार, घमण्ड, आत्मश्लाघा 4 पाप, दुष्टता 5 इन्द्र का वज्र।

दम्भनम् [दम्भ्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना, छल।

दम्भिन् (पु०) [दम्भ् + णिनि] पाखण्डी, धूर्त याज्ञ० १।१३०, भग० १३।७।

दम्भोलि [दम्भ् + अमुन् = दम्भम्, तस्मिन् प्रेरणे अलति पर्याप्नोति—अल + इन्] इन्द्र का वज्र।

दम्य (वि०) [दम् + यत्] 1 पालने के योग्य, सधाये जाने के लायक 2 दण्ड दिये जाने योग्य, —म्य 1 नया बछड़ा (जिसे प्रशिक्षण तथा अनुभव की अपेक्षा है) —नार्हति नाथ पुङ्गवधारिताया धुरि दम्य नियोजयितुम् विक्रम० ५, सूनौ धुरं यो भुवनस्य पित्रा धुर्येण दम्य इवाधिरूढाम् रघु० ६।७८, मृद्रा० ३।३ 2 वह बछड़ा जिसे अभी सधाना है।

दय् (स्वा० आ० -दयते, दयित) दया आना, करुणा का भाव होना, तरस खाना, सहानुभूति प्रदर्शित करना (सब० के साथ) -रामस्य दयमानाजानाति तत्कर्मणः -भट्टि० ८।११९, तेषां दयसे न कस्मात् —१।२३, १५।६२ 2 प्यार करना, अच्छा लगना, रुचिकर होना दयमाना प्रमदा -शि० १।३ भट्टि० १०।९ 3 रक्षा करना नगजा न गजा दयिता दयिता भट्टि० १०।९ 4 जाना, हिलना-जुलना 5 स्वीकार करना, देना, वितरण करना, नियत करना 6 चोट पहुँचाना।

दया [दय् + अङ् + टाप्] तरस, सुकुमारता, करुणा, अनुकम्पा, सहानुभूति—निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दया कुर्वति साधवः -हि० १।६०, रघु० २।११, इसी प्रकार 'भूतदया'। सम०—**कूट, कूर्च** बुद्ध के विशेषण, **वीर** (अलं० शा०) वीरतापूर्ण करुणा की भावना, करुणा के फलस्वरूप उदय होने वाला वीररस—उदा० जीमूतवाहन (नागानन्द में) गरुड से कहता है—शिरामुक्तं स्यन्दत एव रक्तमद्यापि देहे मम मांसमस्ति, तृप्तिं न यास्यसि तदापि तावत् किं भक्षणात्तव विरतो गरुत्मन्, तु० 'दयावीर' के अन्तर्गत रस० में।

दयालु (वि०) [दय् + आलुच्] कृपालु, सुकुमार, सदय, करुणापूर्ण—यश शरीरे भव मे दयालु —रघु० २।५७, ३।५२।

दयित (भू० क० कृ०) [दय् + क्त] प्रिय, चाहा हुआ, इष्ट—भट्टि० १०।९, —तः पति, प्रेमी, प्रिय व्यक्ति विक्रम० ३।५, भामि० २।१८२, —ता पत्नी, प्रेयसी —दयिताजीवितालम्बनार्थी—मेघ० ४, रघु० २।३, भामि० २।१८२, कि० ६।१३, **दयितालिङ्गित** जोक का गुलाम, पत्नीभक्त पति।

दर (वि०) [दृ + अप्] फाड़ने वाला, चीरने वाला (प्रायः समासान्त में),—रः,—रम् 1 गुफा, कन्दरा, छिद्र 2 घाटी, र 1 भय, त्रास, डर,—सा दर पूतना निर्यं हीयमाना रसादरम्—शि० १९।२३, न जातदारेण न विद्विषादरः कि० १।३३,—रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा (समास में) -दरमीलन्नयना निरीक्षिते -भामि० २।१८२, ७, दरविगलितमल्लीवल्लिचञ्चत्परागम् —आदि० गीत० १, इसी प्रकार—दरदलित —विकसित—उत्तर० ४, मा० ३। सम०—**तिमिरम्** भय का अन्धकार, हरति दरतिमिरमतिविषादम्—गीत० १०।

दरणम् [दृ + ल्युट्] तोड़ना, टुकड़े २ करना।

दरणि (पु० स्त्री०) **दरणी** [दृ + अनि, दरणि + ङीष्] 1 भंवर 2 धारा 3 हिलोर।

दरद (स्त्री०) [दृ + अदि] 1 हृदय 2 त्रास, भय 3 पहाड़ 4 चट्टान, किनारा, टीला।

दरदः (पु० ब० व०) [दर + दृ + क] कश्मीर की सीमा को छूता हुआ एक देश,—द भय, त्रास, -दम् सिंगरफ।

दरि री (स्त्री०) [दृ + इन्, दरि + ङीष्] गुफा, कन्दरा, घाटी, दरीगृह कु० १।१०, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा अमे० ३।१२०।

दरिद्रा (अदा० पर० दरिद्राति, दरिद्रित - प्रेर० दरिद्रयति इच्छा दिदरिद्रासति, दिदरिद्रियति) 1 निर्धन होना गरीब होना,—अयोऽयं पश्यत कस्य महिमा लोपचीयते उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति -हि० ३।२ भट्टि० १८।३१ 2 कष्टग्रस्त होना,—युक्तं ममैव किं वक्त्रं दरिद्राति यया हरिः —भट्टि० ५।८६ 3 दुबला पतला होना, -दरिद्रति विपद्द्रुमे कुसुमकान्तिसम्भारका -विक्रमाङ्क० ११।७४।

दरिद्र (वि०) [दरिद्रा + क] निर्धन, गरीब, अभावग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त स तु भवेत् दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः —मर्तृ० २।५०, -ता गरीबी -शकुनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता - मृच्छ० ३।२४।

दरोदर [दरो भयं तज्जनकमुदरं यस्य] 1 जुआरी 2 जूए पर लगा दाँव, -रम् 1 जूआ खेलना 2 पासा, अक्ष, दे० 'दुरोदर'।

दर्दरः [दृ + यद् + अच्] 1 पहाड़ 2 कुछ टूटा हुआ मर्तबान।

दर्दरीक [दृ+यङ्+ईकन्] 1 मेढक 2 बादल 3 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र -कम् एक वाद्ययन्त्र।

दर्दुर [दृ+यङ्+उरच्] 1 मेढक—पङ्कुकिलमुखा शिखन्ति सलिलं धाराहता दर्दुरा —मृच्छ० ५।१४ 2 बादल 3 बन्सरी जैसा एक वाद्ययन्त्र 4 पहाड़ 5 दक्षिण में स्थित एक पहाड़ का नाम ('मलय' सम्मिलित) स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१।

दर्दुः (द्रुः) (स्त्री०) [दरिद्रा+उ नि० साधु] दाद, एक प्रकार का चर्मरोग।

दर्प [दृप्+घञ्, अच् वा] 1 घमण्ड, अहङ्कार, धृष्टता, अभिमान—मनु० ८।२१३, मृच्छ० १६।४ 2 उत्तेजकपन 3 गर्व, दम्भ 4 रोष, विक्षोभ 5 गर्मी 6 कस्तूरी। सम०—**आख्यात** (वि०) अभिमान से फूला हुआ, —**छिद्,-हर** (वि०) घमण्ड तोड़ने वाला, नीचा दिखाने वाला।

दर्पक [दृप्+णिच्+ण्वुल्] प्रेम के देवता, कामदेव।

दर्पण [दृप्+णिच्+ल्युट्] मुँह देखने का शीशा, आयना —तत्रचनाम्या विद्वीनस्य दर्पण किं करिष्यति ७० १०९, कु० ७।२६, रघु० १०।१०, १६।३७, ऋम् 1 आँख 2 जलना, प्रज्वलित करना।

दर्पित, दर्पिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [दृप्+क्त, दृप्+णिनि] घमण्डी, अहंकारी, अभिमानी।

दर्भ [दृ+भ] एक प्रकार का पवित्र (कुशा) घास जो यज्ञानुष्ठानों के अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है —श० १।७, रघु० १९।३१, मनु० २।४२, ३।२०८, ४।३६। सम०—**अङ्कुर** कुश घास का नुकीला पत्ता —श० २।१२, **अनूप** दर्भ घास से परिपूर्ण स्थानीय भूमि,- **आह्वय** मूज घास।

दर्भेटम् [दृभ्+अटन्] निजी कमरा, आराम करने का एकान्त कमरा।

दर्भे [दृ+व] 1 एक उत्पातकारी अनिष्टकर जन्तु 2 राक्षस, पिशाच 3 चमचा।

दर्भट [दर्भे+अट्+अच् शक० पररूपम्] 1 गाँव का पहरेदार, पुलिस अधिकारी 2 द्वारपाल।

दर्भरीक [दृ+ईकन्, नि० साधु] 1 इन्द्र का विशेषण 2 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र 3 हवा, वायु।

दर्विका [दर्वि+कन्+टाप्] कड़छी, चमचा।

दर्वी (वि०) (स्त्री०) [दृ+विन्, वा ङीप्] 1 कड़छी, चमचा 2 साँप का फैलाया हुआ फण-शि० २०।४२। सम—**कर** साप, सर्प।

दर्श [दृश्+घञ्] 1 दृष्टि, दृश्य, दर्शन (प्रायः समास में) दुर्दर्श, प्रियदर्श 2 अमावस्या 3 पाक्षिक यज्ञ, अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञीय कृत्य। सम०—**चन्द्र** देवता, —**यामिनी** अमावस्या की रात्रि, **विपद्** (पु०) चाँद।

दर्शक (वि०) [दृश्+ण्वुल्] 1 देखने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2 दिखलाने वाला, बतलाने वाला कु० ६।५२, क 1 प्रदर्शन करने वाला 2 द्वारपाल, पहरेदार 3 कुशल व्यक्ति, किसी कला में प्रवीण व्यक्ति।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निरीक्षण करना रघु० ३।४, 2 जानना, समझना, प्रत्यक्ष जानना, परिदर्शन करना रघु० ८।७२ 3 दृष्टि, दर्शन —चिलाजड दर्शनम्—श० ४।५ 4 आँख 5 निरीक्षण, परीक्षा 6 दिखलाना, प्रदर्शन करना, प्रदर्शनी 7 दिखलाई देना 8 भेंट करना, दर्शन करना, दर्शन देना-दर्शनम् 9 (अव्य) किसी के सम्मुख जाना, आना मारीचस्ते दर्शन विधास्यति श० ३ गर्भदर्शन से कार्य- आदि 10 रूप, पहलू, दर्शन—भग० ११।१०, रघु० ३।५७ 11 दर्शन देना (न्यायालय में) उपस्थित होना -मनु० ८।१५८, १६० 12 स्वप्न, स्वप्न 13 विवेक समझ, बुद्धि 14 निर्णय, अवधारण 15 धार्मिक ज्ञान 16 शास्त्र या व्याख्यान कोई विषय या सिद्धान्त 17 दर्शनशास्त्र- जैसा कि सर्वदर्शनसंग्रह में 18 दर्पण 19 गुण व्यवहार की सभी 20 यज्ञ। सम० **ईप्सु** (वि०) दर्शन करने का अभिलाषी,—**पथ** दृष्टि या दर्शन का परास, दृश्यता,- **प्रतिभू** उपस्थित होने के लिए जमानत या जमानी

दर्शनीय (वि०) [दृश्+अनीयर्] 1 देखने के योग्य, निरीक्षण के योग्य प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करने के योग्य 2 देखने के लिये उचित सुहावना, मनोहर, सुन्दर 3 न्यायालय में उपस्थित होने के योग्य।

दर्शयितृ (पु०) [दृश् णिच्+तृच्] 1 दीक्षादाता, प्रवर्तक, द्वारपाल 2 मार्ग प्रदर्शक।

दर्शित (वि०) [दृश्+णिच्+क्त] 1 दिखाया गया, प्रदर्शित, प्रदर्शनी किया, प्रदर्शित की गई 2 देखा गया, समझ लिया गया 3 व्याख्यात, सिद्ध 4 प्रतीयमान।

दल (स्वा० पर०—दलति, दलित) 1 फट पड़ना, टुकड़े होना, फट जाना, तड़ेड़ आजाना—दलति हृदय गाढोद्वेग द्विधा, न तु भिद्यते- उत्तर० ३।३१, अपि दलति रोदिति अपि शपति वञ्जस्य हृदयम्—१।२८, मा० १।२, २०, दलति न गा हृदि विरहभरेण गीत० ७, अमरु ३८ 2 प्रसार करना, विकसित होना, (पुष्प की भाँति) खिलना—दलन्नव [illegible]—उत्तर० १, स्वच्छन्द दलदरविन्दः ते मन्द [illegible] विदधातु गुञ्जित मिलिन्दा —भामि० १।१५, शि० ६।२३, कि० १०।३९,—प्रेर० व (दा) लवति 1 फोड़ना, फाड़ना 2 काटना, बाँटना टुकड़े २ करना, —उद्,—(प्रेर०) फाड़ डालना, (वि) 1 नाश करना, खण्ड-खण्ड करना, तड़ेड़ आ जाना [illegible] पूर्विमपरमिथ्यवस्थावपि नैः ४।८८ 2 सींचना।

दल,—**लम्** [दल्+अच्] 1 टुकड़ा, अंश, भाग, खण्ड

—शि० ४।४४ 2 उपाधि 3 दो आखों में से एक जैसे दाऊ, आधा भाग 4 स्थान, कोष 5 छोटा अकुर या कोपल, फूल की पखडी, पत्ता—रघु० ४।४२, शि० ३।२१, २२ 6 शस्त्र का फलक 7 पुज, राशि, ढेर 8 सेना की टुकडी, सैनिको की टोली। सम०—अक्षक्ष 1 आग 2 मर्मभेदी मत्स्य का भीतरी कवच 3 खाई, परिखा 4 बवडर, आधी 5 मेरु, —कोष कुन्दलता, —निर्मोक भोजपत्र का वृक्ष, -पुष्पा केवडे का पौधा, -सूचि, -ची (स्त्री०) काटा, सूखा पत्ते का रेशा या नस।

दलनम् [दल्+ल्युट्] फट पडना, तोडना, काटना, काटना, कुचलना, पीसना, टुकडे २ करना मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा —भर्तृ० १।५९।

दलनी (स्त्री०) दलि. (पु०) [दलन+ङीप्, दल्+इन्] मिट्टी का ढेला, मिट्टी का लौंदा।

दलप [दल्+कपन्] 1 शस्त्र 2 सोना 3 शास्त्र।

दलशः (अव्य०) [दल्+शस्] टुकडे-टुकडे करके, खण्ड खण्ड करके।

दलित (भू० क० कृ०) [दल्+क्त] 1 टूटा हुआ, चीरा हुआ, फाडा हुआ, फटा हुआ, टुकडे २ हुआ 2 खुला हुआ, फैलाया हुआ।

दलभ [दल्+भ] 1 पहिया 2 जालसाजी, बेईमानी 3 पाप।

दव [दु+अच्] 1 वन, जगल 2 जगल की आग, दावाग्नि—इतर वारिद वारि दवातुरे— सुभा० 3 ताप, गर्मी 4 बुखार, पीडा। सम०—अग्नि,—दहन जगल की आग, दावाग्नि —यस्य न सचिवे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सचिवे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९ भामि० १।३६, मेघ० ५३, शशाम वृष्टयापि विना दवाग्नि —रघु० २।१४।

दवथु [दु+अथुच्] 1 आग, गर्मी 2 पीडा, चिन्ता, दुख 3 आँख को सूजन।

दविष्ठ (वि०) [दूर+इष्ठन्, दवादेश] 1 अत्यत दूर का, के, की।

दवीयस् (वि०) [दूर+ईयसुन्, दवादेश] 1 अपेक्षाकृत दूर का 2 कही परे कही दूर,—विधायता सकलमेव गिरा दवीय —भामि० १।६९।

दशक (वि०) [दशन्+कन्] दस से युक्त, दशगुना, -कामजो दशको गण - मनु० ७।४७, —कम् दश का समाहार।

दशत्, दशति (स्त्री०) [दशन्+अति] दस का समाहार, दशक।

दशन् (स० वि० ब० व०) [दस्+कनिन्] यस,—स भूमि विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्—ऋग् १०।९०, १। सम०—अङ्गुल (वि०) दस अङ्गुल लम्बा,—अर्ण (वि०) पाँच (वर्ण) वृद्ध का विशेषण,—अवतारा (पु०, ब० व०) विष्णु के दस अवतार, दे० 'अवतार' के अन्तर्गत,—अस्त्र चन्द्रमा,—आनन, —आस्य रावण के विशेषण—रघु० १०।७५,—आयस रुद्र का विशेषण,—ईश दस ग्रामो का अधीक्षक, एकादशिक (वि०) जो दस रुपये देकर ग्यारह लेता है, अर्थात् जो १० प्रतिशत पर उधार देता है, - कण्ठ,—कन्धर रावण के विशेषण—सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विष —उत्तर० ४।२७, °अरि, °जित् (पु०) °रिपु राम के विशेषण —रघु० ८।२९,—गुण (वि०) दस गुना, दस गुणा बडा,—ग्रामिन् (पु०)—पति दस ग्रामो का अधीक्षक, -ग्रीव =दशकण्ठ,-चारसिद्धान्धर 'दस सिद्धियो का स्वामी' बुद्ध का विशेषण,—पुर एक प्राचीन नगर का नाम, राजा रन्तिदेव की राजधानी —मेघ० ४७,—बल,—भूमिप बुद्ध के विशेषण,-मालिका (ब० व०) 1 एक देश का नाम 2 इस देश के निवासी या शासक,—मास्य (वि०) 1 दस महीने का 2 गर्भ में दस मास (जन्म से पूर्व का बच्चा), —मुख रावण का विशेषण, °रिपु राम का विशेषण —रघु० १४।८७, - रथ अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा, अज का पुत्र, राम और उनके तीन भाइयो का पिता, (दशरथ के तीन पत्नियाँ थी, कौशल्या, सुमित्रा, और कैकेयी, परन्तु कई वर्षों तक उनके कोई सन्तान न हुई। वशिष्ठ ने दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए कहा, ऋष्यशृङ्ग की सहायता से वह यज्ञ सपन्न हुआ। इस यज्ञके पूरा होने पर कौशल्या से राम का, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का तथा कैकेयी से भरत का जन्म हुआ। दशरथ को अपने सभी पुत्र बडे प्यारे थे परन्तु राम तो उनका 'प्राण' था। इसके पश्चात् जब कैकेयी ने मन्थरा के द्वारा उकसाये जाने पर अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वर मागे तो दशरथ ने उसके गर्हित प्रस्तावो से उसका मन हटाने के लिए कैकेयी को धमकाया, जब वह न मानी तो खुशामद, अनुनय विनय के द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु कैकेयी बराबर निर्दय बनी रही। फलत लाचार राजा को अपने पुत्र राम को निर्वासित करने के लिए बाध्य होना पडा। और उसके पश्चात् उन्होंने इसी दुख मे अपने प्राण त्याग दिये),—रश्मि ज्ञात सूर्य - रघु० ८।२९,—रात्रम् दस रातो (बीच के दिनो समेत) का समय (व्र) दस दिन तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ,—रूपभृत् (पु०) विष्णु का विशेषण,—वदन,—वदन दे० 'दशमुख, वार्षिक् (पु०) चन्द्रमा,—वार्षिक (वि०) हर दस वर्ष के पश्चात् होने वाला या दस वर्ष तक टिकने वाला।

विध (वि०) दस प्रकार का,—शतम् 1 एक हजार

2. एक सौ दस, °रश्मि सूर्य,—शती एक हजार,—साहस्र दस हजार,—हरा 1 गङ्गा का विशेषण 2 गङ्गा के सम्मान के उपलक्ष्य में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला पर्व 3 दुर्गा के सम्मान में आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया दशमी)।

दशतय (वि०) (स्त्री०-यी) [दशन्+तयप्] दस भागों से युक्त, दस गुना।

दशधा (अव्य०) [दशन्+धा] 1 दस प्रकार से 2 दस भागों में।

दशन, - नम् [दंश्+ल्युट् नि० नलोप] 1 दाँत, मुहुर्मुहुर्दशनविखण्डितोष्ठया - शि० १७।२, शिखरिदशना —मेघ० ९०, भग० १०।२७ 2 काटना, - न पहाड़ की चोटी, - नम् कवच। सम०-अंशु दांतों की चमक —कु० ६।२५, - अङ्क दांत से काटने का चिह्न काटना, --उच्छिष्ट 1 होंठ 2 चुम्बन 3 आह,-छद, - -वासस् (नपु०) 1 होंठ 2 चुम्बन, -पदम् बच्चे का भरना, दांत का चिह्न- दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम्--गीत० ८,- बीज अनार का पेड़।

दशम (वि०) (स्त्री०-मी) [दशन्+डट् मट्] दसवाँ।

दशमिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [दशमी+इनि] बहुत पुराना।

दशमी (स्त्री०) 1 चान्द्र मास के पक्ष का दसवाँ दिन 2 मानव जीवन की दसवीं दशाओं में 3 शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष। सम० -स्थ, (दशमीं गत) (वि०) ९० वर्ष से अधिक आयु।

दष्ट (वि०) [दंश+क्त] काटा गया, डसा मारा गया आदि।

दशा [दंश्+अङ् नि० टाप्] वस्त्र के छोर पर रहने वाले धागे, कपड़े पर लगी गोट, झालर, झगजी, - स्खलद्भुक्तं वेतनलोलदशं वहन्ती --मृच्छ० १।२०, छिन्ना इवाम्बरपटस्य दशा पतन्ति--५।४ 2 दीये की बत्ती --भर्तृ० ३।१२९, कु० ४।३० 3 आयु, या जीवन की अवस्था- दे० नी० 'दशान' 4 जीवन की एक अवस्था या काल-जैसा कि बाल्य, यौवन आदि-रघु० ५।४० 5 काल 6 स्थिति, अवस्था, परिस्थिति--नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण --मेघ० १०० विषमा हि दशा, प्राप्य दैव गर्हयन्ति नरं --हि० ४।३ 7 मन की स्थिति या अवस्था 8 कर्मों का फल भाग्य 9 ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय) 10 मन समझ। सम० -अन्त 1 बत्ती का छोर 2 जीवन का अन्त-- निर्विण्णविषयस्नेह स दशान्तमुपेयिवान् रघु० १२।१ (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है), -इन्धन लैंप, दीपक, -कर्ष 1 वस्त्र का किनारा 2 लैंप, दीपक,—पाक - -विपाक 1 भाग्य की परिपक्वावस्था भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2 जीवन की परिवर्तित दशा।

दशार्ण (ब० व०) [दश० ऋणाति दुर्गभूमयो वा यत्र ब० स०] 1 एक देश का नाम अपतस्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः —मेघ० २३ 2 इस देश के निवासी।

दशिन् (वि०) (स्त्री० नी) [दशन्+इनि] दश रखने वाला (पु०) दश ग्रामों का अधीक्षक।

दशेर (वि०) [दंश् + एरक्] काटनेवाला, उपद्रवी, अनिष्ट कर, पीड़ाकर २ शरारती या विषैला जंतु।

दशो (से) रक [दशेर+कन्] ऊँट का बच्चा।

दस्यु [दस्+युच्] 1 दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह, जो कि देवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के शत्रु थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्रायः वैदिक) 2 जातिबहिष्कृत, अपने कर्तव्यकर्मों से च्युत हो जाने के कारण जाति से बहिष्कृत --तु० मनु० ५।१३१, १०।४५ 3 चोर लुटेरा, उचक्का - पात्रीकृतो दस्युभिरासि येन श० ५।२०, रघु० ९।५३, मनु० ७।१४३ 4 दुष्ट, उत्पातशील - मा० ५।२८ 5 आततायी, उद्धत अत्याचारी।

दस्र (वि०) [दस्यति पापान् दस् + रक] भयंकर, भीषण, विनाशकारी स्रौ (पु० द्वि० व०) दोनों अश्विनीकुमार, देवों के वैद्य, - स्र 1 एवं 2 अश्विनी नक्षत्र। सम० सू (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनीकुमारों की माता संज्ञा।

दह् (भ्वा० पर० दहति, दग्ध--इच्छा० दिधक्षति) जलाना, झुलसाना (आत्म० में भी) --दग्धुं विश्वं दहनकिरणैर्वोदितो द्वादशार्कः, वेणी० ३।९, ५।२०, सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानम् गीत० १०, श० ३।१७ 2 उड़ा देना, पूर्ण रूप से नष्ट कर देना 3 पीड़ा देना सताना कष्ट देना, दुखी करना इत्थमात्मकृतमप्रतिहतं चापलं दहति श० ५, तन्मविषयमिव सत्यं दहति माम् ६।८ एतन्न मां दहति यद्गृहमग्निदीप्तं क्षीणार्थमित्रमतिथयः परिवर्जयन्ति मृच्छ० ५।१२, रघु० ८।८१ 4 (आयु० में) गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना, निस्,--1 झुलसाना जलाकर समाप्त कर देना 2 सताना, दुख देना, पीड़ित करना, परि ,जलाना, झुलसाना दिशि दिशि परिदग्धा भूमय पावकेन—ऋतु० १।२४ भग० १।३०, प्र 1 जलाना 2 पूरी तरह से जला देना 3 पीड़ा देना, सताना 4 कष्ट देना, चिढ़ाना, सम्--,जलाना—अभिजन मदाग्नेना वह्निना- भर्तृ० ३।३९।

दहन (वि०) (स्त्री० -नी) [दह्+ल्युट्] 1 जलाना,

आग में जलाकर समाप्त कर देना –भर्तृ० १।७१ 2 विनाशकारी, क्षतिकर, -ग्नि 1 आग 2 कबूतर 3 'तीन' की संख्या 4 बुरा आदमी 5 'भल्लातक' का पौधा,—मथ् 1 जलाना, आग में जलाकर समाप्त कर देना (आल० से भी)—रघु० ८।२० 2 गर्म लोहे या कास्टिक सोडा से जला देना। सम०—अरणि पानी,—उपल सूर्यकांतमणि,—उल्का, जलती हुई लकड़ी, —केतन धूआं, प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा, सारथि हवा।

दहर (वि०) [दह्+अर] 1 स्वल्पमात्र, सूक्ष्म, बारीक, लघु 2 छोटा, -र 1 बच्चा, शिशु 2 जानकर का बच्चा 3 छोटा भाई 4 हृदयरन्ध्र, हृदय 5 चूहा, मूसा।

दह्र [दह्+रक्] 1 आग 2 दावाग्नि, जंगल की आग।

दा। (स्वा० पर०—यच्छति, दत्त) देना, स्वीकार करना, प्रति –,विनिमय करना–तिलेभ्य प्रतियच्छति माषान् —सिद्धा०, ॥ (अदा० पर० दाति) काटना,–ददाति द्रविण भूरि दाति दारिद्र्यमर्थिनाम् कवि०, ॥। (जुहो० उभ० -ददाति, दत्ते दत्त–परन्तु 'आ' पूर्व होने पर 'आत्त', उप पूर्व होने पर उपात्त, नि पूर्व होने पर निदत्त या नीत्त तथा प्र पूर्व होने पर प्रदत्त या प्रत्त) 1 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना, सौंपना, समर्पित करना, भेंट देना (प्राय कर्म० के साथ वस्तु के पक्ष में, व्यक्ति के पक्ष में सप्र०, कभी मष० अथवा अधि० भी) अवकाश किलादन्वान् रामायाम्यर्थितो दधौ—रघु० ४।५८, सेचनघटै बालपादपस्य पयो दातुमित एवाभवतते —श० १ मनु० ३।३१, ९।२७१, कथमस्य स्तन दास्ये –हरि० 2 (ऋण, जुर्माना आदि) देना 3 सौंपना, दे देना 4 लौटाना, वापिस करना 5 छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना,—प्राणान् या प्राण दे देना, इसी प्रकार आत्मानं या प्राण त्याग देना 6 रखना रख देना लगाना, जमा करना–कर्णे कर ददाति –आदि 7 विवाह में देना - धर्मं दक्षाय पिता न्वेनाम् —मनु० ५।१५१, याज्ञ० २।१४६, ३।२४ 8 अनुमति देना, अनुज्ञा देना (प्राय 'तुमुन्नन्त' के साथ)–बाष्पमुन्न ददात्येना द्रष्टु चित्रगतामपि श० ६।२१, (इस धातु के अर्थ उस सज्ञा के अनुसार जिससे जोड़ी जाय नाना प्रकार से अदलबदल किये जा सकते है या फैलाये जा सकते है, उदा०, अग्नि (पावक) या आग लगाना, अंगीठ या कुंडी लगाना, चटखनी लगाना, अवकाश या स्थान देना, जगह देना दे० 'अवकाश', आज्ञा (निदेश) या आज्ञा देना, आदेश देना, आत्मने या धूप में रहना, आत्मान क्लेशाय या, अपने आपको कष्ट में फसाना, आशिष या आशीर्वाद देना, कर्णौ या कान देना, ध्यान से सुनना, चक्षु (दृष्टि) या नजर डालना, देखना, ताल या तालियाँ बजाना, दर्शन या अपने आपको दिखलाना, दूसरो की बात सुनना, निगड या हथकड़ी डालना, शृंखला में बाँधना, प्रतिवचन (उत्तर) -या -प्रत्युत्तर या उत्तर देना, मनो या किसी बात में मन लगाना, मार्ग या रास्ता देना, आने की अनुमति देना, रास्ते से अलग हो जाना, वर या वर देना, शाप या भाषण देना, वृत्ति या घेरना, बाड़ लगाना, शब्दं या शोर मचाना, शापं या शाप देना, शोक या, रज पैदा करना, श्राद्ध या श्राद्ध का अनुष्ठान करना, संकेत या नियुक्ति करना, सग्राम या लड़ना, आदि। प्रेर०–दापयति–ते दिलवाना, स्वीकार करवाना आदि—इच्छा० दित्सति–ते, देने की इच्छा करना, आ –(आ०) लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, सहारा लेना व्यवहारासनमाददे युवा—रघु० ८।१८, १०।४०, ३।४६ प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे –३।४१, १।४५ 2 शब्दोच्चारण करना –कि० १।३, शि० २।१३ 3 पकड़ना, थामना –कु० ७।९४ 4 उगाहना वसूल करना (कर आदि)–अगृध्नुराददे सोऽर्थान् –रघु० १।२१, मनु० ८।३४१ 5 ले जाना, लेना, वहन करना –नायमादाय गच्छे मेघ० २०, ४६, कुशलमादाय –श० ३ 6 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना –घ्राणेन रूपमादत्स्व श्रवणादत्स्व चक्षुषा आदि–महा० 7 बन्दी बनाना, कैद करना–उद्या (आ) 1 ग्रहण करना, स्वीकार करना 2 अवाप्त करना, प्राप्त करना –उपानद्विद्यो गुरुदक्षिणार्थी–रघु० ५।१, भूर्या पितामहोपात्ता–याज्ञ० २।१२१ 3 लेना, धारण करना, ले जाना 4 अनुभव करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 5 पकड़ना, आक्रमण करना, परि–,सौंपना, समर्पण करना, दे देना–छलेन परिदत्तासि मृत्यवे –उत्तर० १।४५, मनु० ९।३२७ प्र–,स्वीकार करना, देना, प्रस्तुत करना स्व प्रागद्य प्रादिषि नामराय कि नाम तस्मै मनसा नयाय –ऋ० ६।९५ मनु० ३।९९, १०८, २७३, याज्ञ० २।९० 2 शिक्षा देना, सिखाना, भर्तृ० १।१५, प्रति –,अदलाबदली करना, विनिमय करना 2 लौटाना, वापिस देना–चौर० ५३ 3 बदला देना, क्षतिपूर्ति करना, व्या–,(पर० आ०) खोलना, तोड़ कर खोलना –न व्यादत्तव्यानलमस्यन्यु - कि० १९।१९, नदी कूल व्यादत्ते, या- व्याददते पिपीलिका पतङ्गस्य मुखम्–महा० सम्– 1 देना, स्वीकार करना प्रदान करना,–न तेऽहं सम्प्रदास्यामि 2 परम्परा से प्राप्त होना—दे० सम्प्रदाय 3 दानपत्र लिखना, उत्तराधिकार में सौंपना।

दाक्षायणी [दक्ष+फिञ्+ङीप्] 1 २७ नक्षत्रों में (जो

कि पुराणानुसार दक्ष की पुत्रियाँ मानी जाती हैं) से कोई सा एक नक्ष 2 दिति, कश्यप की पत्नी, देवताओं की माता 3 पार्वती 4 रेवती नक्षत्र 5 कद्रू, या विनता 6 दन्ती का पौधा। सम०—पति 1 शिव का एक विशेषण 2 चन्द्रमा,—पुत्र देवता।

दाक्षायण्य [दक्ष+अण्य+अण्] सिद्ध।

दाक्षिण (वि०) (स्त्री—णी) [दक्षिणा+अण्] 1 यज्ञीय दक्षिणा से सम्बद्ध अथवा उपहार से सम्बद्ध 2 दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला,—अम् यज्ञीय दक्षिणाओं का समूह या संचय।

दाक्षिणात्य (वि०) [दक्षिणा+त्यक्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी- अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्य नाम नगरम्—पञ्च० १,—त्य 1 दक्षिण देश का निवासी,- आरम्भशूरा खलु दाक्षिणात्याः 2 नारियल।

दाक्षिणिक (वि०) (स्त्री० —की) [दक्षि+ठक्] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी।

दाक्षिण्यम् [दक्षिण+ष्यञ्] 1 (क) नम्रता, शिष्टता, सुजनता—तस्य दाक्षिण्यरुद्धेन नाम्नार मगधवंशजा—रघु० १।३१ (ख) कृपालुता—विक्रम० १।२, मनु० २।२३ मा० १।८ 2 किसी प्रेमी का (अपनी प्रेमिका के प्रति) बनावटी तथा अतिशालीन शिष्टाचार - शा० ६।५ 3 दक्षिण में आने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे—विक्रम० २।४, (यहाँ इस शब्द के दोनों ही अर्थ हैं - प्रथम तथा द्वितीय) 4 तालमेल, सामञ्जस्य, सहमति 5 नैपुण्य, चतुराई।

दाक्षी [दक्ष+इञ्+ङीप्] 1 दक्ष की पुत्री 2 पाणिनि की माता। सम० -पुत्र पाणिनि।

दाक्षेय [दाक्षी+ढक्] पाणिनि का मातृपक्षीय नाम।

दाक्ष्यम् [दक्ष+ष्यञ्] 1 चतुराई, कुशलता, उपयुक्तता दक्षता, योग्यता भग० १८।४३ 2 सचाई, अखण्डता, ईमानदारी।

दाघ [दह्+घञ्, कुत्वम्] जलाना, जलन।

दाडक [दल्+णिच्+ण्वुल्, लस्य ड] दाँत, हाथी का दाँत।

दाडि (लि) म, -मा [दल्+घञ्+इमन्, डलयोरभेद] अनार का पेड़ -पाकारुणस्फुटदाडिमकान्ति वक्त्रम्—मा० १।३१, अमर १३ 2 छोटी इलायची, मम अनार का फल। सम० प्रिय, भक्षण तोता।

दाडिम्ब [दा+डिम्बच् मा०] अनार का पेड़।

दाढा [दा+विच् =दा+ढौक्+ङ+टाप्] 1 बड़ा दाँत, दाढ़ 2 समुच्चय 3 कामना, इच्छा।

दाढिका [दाढ+कन्+टाप्, इत्वम्] दाढ़ी, मनु० ८।२८३, (कुल्लू० श्मश्रु)।

दाण्डाजिनिक (वि०) (स्त्री०—की) [दण्डाजिन+ठक्] (धर्म भक्ति के बाह्य चिह्न) डण्डा और मृगछाला। लिए हुए,- क ठग, पाखण्डी, धूर्त।

दाण्डिक [दण्ड+ठक्] लाठी देने वाला, दण्ड देने वाला।

दात (वि०) [दा+क्त] 1 बाँटा हुआ, काटा हुआ 2 धोया हुआ, पवित्रीकृत 3 काटी हुई (फसल)।

दाति (स्त्री०) [दा+क्तिन्] 1 देना 2 काटना, नष्ट करना 3 वितरण।

दातृ (वि०) (स्त्री० -त्री) [दा+तृच्] 1 देने वाला स्वीकार करने वाला, 2 उदार (पु०—ता) 1 दाता - कु० ६।१ 2 दानी भामि० १।६६ 3 महाजन, उधार देने वाला 4 अध्यापक।

दात्यूह [दाति+ऊह्+अण्] जलकुक्कुट दात्यूहश्चित्रशिखण्ड काटरवति स्कन्धे निलीय स्थितम्—मा० १।७ 2 चातक पक्षी 3 बादल 4 जल-कौवा 'दात्यौह' भी लिखा जाता है)।

दात्र [दा+ष्ट्रन्] काटने का एक उपकरण, एक प्रकार की दाती या चाकू।

दाद [दद्+घञ्] उपहार, दान। सम० ह दानी।

दान् (म्वा० उभ०—दानति-ते) काटना, बाटना इच्छा० दीदांसति ले सीधा करना (यहाँ सन्नन्त केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि से नहीं)।

दानम् [दा+ल्युट्] 1 देना स्वीकार करना, अध्यापन 2 सौंपना, समर्पण करना 3 उपहार, दान, पुरस्कार —मनु० २।१५८, भग० १७।२०, याज्ञ० ३।२७४ 4 उदारता, धर्मार्थ, धर्मार्थ पुरस्कार, दानशीलता रघु० १।६१, मनु० १०।६३ 5. मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस, मद, गदानलायेव शिखण्डिनं वनम् शि० ८।६३, कि० ५।१० विक्रम० २।२५, पञ्च० २।७५ (यहाँ शब्द का चतुर्थ अर्थ भी घटता है) रघु० २।७ ४।७० ५।४३ 6 निश्चित धर्म अपने शत्रु के ऊपर विजय प्राप्त करने के चार उपायों में से एक, दे० 'उपाय' 7 काटना, छाँटना 8 परिष्कारीकरण, स्वच्छ करना 9 रक्षा 10 अर्पण, अङ्गीकृति। सम०—कुल्या हाथी की पुटपुटी से बहने वाले मद जल का प्रवाह —कर्म दान देने का धर्म दानरूपी धर्म,- पति 1 अत्यन्त उदार पुरुष 2 अक्रूर, कृष्ण का एक मित्र, पत्रम् दान-लेख पात्रम् दान लेने के योग्य व्यक्ति, ब्राह्मण,-प्रतिभाव्यम् ऋण परिशोध करने की अमानत, -भिन्न (वि०) छिन्न-भिन्न करके फाड़ा हुआ,- वीर 1 बहुत दानी व्यक्ति 2 दान शीलता के फलस्वरूप वीरत्व, वास्तविक दान शीलता का गुण, उदा० परशुराम जिसने सात द्वीपों वाली इस पृथ्वी का दान कर दिया—नै० ५वें० में दी गई ('दानवीर' के अन्तर्गत) उक्ति—किमदिदमधिकं मे यद् द्विजायार्थयित्रे कवचम-

रमणीय कुण्डल चारयामि, अकरुणमवकृत्य द्राक्कृपाणेन निर्यद् बहलरुधिरधार मौलिमालेदयामि, -शील, -शर,—शौण्ड (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील।

दानकम् [दान+कन्] कुष्ठ दान।

दानवः [दनो अपत्यम् - दनु+अण्] राक्षस, पिशाच —त्रिविक्रमदृढनदानवकण्टकम् मा० ७।३ । सम० अरि 1 देवता 2 विष्णु का विशेषण, गुरु शुक्र का विशेषण।

दानवेयः [दनु+ऊङ्+ढक्]=दानव ।

दान्त (भू० क० कृ०) [दम्+क्त] 1 पालतू, वश में किया हुआ, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, लगाम द्वारा रोका हुआ, दे० दम् 2 पालतू, मृदु 3 त्यक्त 4 उदार, —न्त. 1 पालतू बैल 2 दांत 3 दमन का वृक्ष।

दान्ति (स्त्री०) [दम्+क्तिन्] आत्म संयम, वश में करना, आत्मनियन्त्रण।

दान्तिक (वि०) [दन्त+ठक्] हाथी दांत का बना हुआ।

दापित (वि०) [दा+णिच्+क्त] 1 दिलाया गया 2 जो देने के लिए बाध्य किया गया हो, जिस पर अर्थ दण्ड लगाया गया हो 3 जिसका निर्णय किया गया हो 4 अभिस्वस्त, प्रदत्त।

दामन् (नपु०) [दा+मनिन्] 1 डोरी, धागा, फीता, रस्सी, 2 फूलों का गजरा, हार आदि बद्धा विच्छेदिवसे या शिखा दाम हित्वा मेघ० ९२, कनकचम्पकदामगौरी—कौर० १, शि० ४।५० 3 लकीर, धारी (जैसे बिजली की) विद्युद्दाम्ना हेमगौरेव विन्ध्यम् -मालवि० ३।२०, मेघ० २७ 4 बड़ी पट्टी। सम० अञ्जलम्, अञ्जलम् घोड़े की पिछाड़ी बांधने की रस्सी शि० ५।६१,—उदर कृष्ण का विशेषण।

दामनी [दामन्+अण्+ङीप्] वह रस्सी जिसके सहारे पशुओं के पैर बांध दिये जाते हैं।

दामिनी [दामन्+इनि+ङीप्] बिजली।

दाम्पत्यम् [दम्पती+यक्] विवाह, स्त्री पुरुष का पति-पत्नी सम्बन्ध।

दाम्भिक (वि०) (स्त्री० -की) [दम्भ+ठक] 1 धोखेबाज, पाखण्डी 2 घमण्डी, अभिमानी 3 आडम्बर प्रिय, ढोंगी।

दाय [दा+घञ्] 1 उपहार, पुरस्कार, दान रहसि रमते प्रीत्या दाय दत्वात्यनुवर्तते—मा० ३।२, प्रीतिदाय मा० ४, मालवि० ८।१९९ 2 वैवाहिक उपहार (जो वर या वधू को दिया जाय 3 भाग, अंश, उत्तराधिकार, पैतृक सम्पत्ति,—अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् -मनु० ९।२१७ ७७, २०३, १६४ 4 भाग, हिस्सा 5 सौंपना, समर्पण करना 6 बांटना, निवारण करना 7 हानि, विनाश 8 दैवदुर्विपाक 9 स्थान, जगह। सम० अपवर्तनम् उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति का क्रय करना मनु० ९।२७०,-अर्ह (वि०) पैतृकसम्पत्ति का पाने का हकदार आद: 1 जो पैतृक सम्पत्ति के एक भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी -पुमान् दायादोऽदायादा स्त्री-निरु०, याज्ञ० २।११८, मनु० ८।१६० 2 पुत्र 3 बन्धु, बान्धव, निकट या दूर का सम्बन्धी 4 हकदार या दावेदार होने का बहाना करने वाला गवा सोपु वा दायाद – सिद्धा०—आद्य, -आदी 1 उत्तराधिकारिणी 2. पुत्री,- आद्यम् 1 उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति 2 उत्तराधिकारी बनने की स्थिति,—काल पैतृक सम्पत्ति को बांटने का समय, बन्धु 1 पैतृक सम्पत्ति का भागीदार 2 भाई, -भाग उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति की बांट (सम्पत्ति का विभाजन)।

दायक (वि०) (स्त्री० यिका) [दा+ण्वुल्, वुक्] देने वाला, स्वीकार करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्तर०, पिण्ड० आदि।

दार [दृ+घञ्] 1 दरार, विदीर्ण, फटन, छिद्र 2 जुता हुआ खेत,—रा (ब० व०) पत्नी,—एते वयमपी दारा कन्यया कुलजातिया—कु० ६।६३, दक्षरुदादानविष्ठाय वाशिष्ठ प्राप्त -उत्तर० ८, पंच० १।१००, मनु० ३।११२, २।२१३, या० ८।१६, ५।२९। सम०—अधीन (वि०) भार्या पर आश्रित, उपसंग्रह, -ग्रह, परिग्रह, उद्वहन विवाह,—लब्धे दारपरिग्रहे उत्तर० १।१९,—कर्मन् (नपु०) विधा विवाह रघु० ५।४०।

दारक (वि०) (स्त्री०-रिका) [दृ+णिच्+ण्वुल्] तोड़ने वाला फाड़ने वाला टुकड़े २ करने वाला -दारिका हृदयदारिका पितु. क 1 लड़का, पुत्र 2 बच्चा, शिशु 3 जानवर का बच्चा 4 गोंद।

दारणम् [दृ+णिच्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, फाड़ना, चीरना, खोलना, दो कर देना।

दारव. [दरद्+अण्] 1 पारा 2 समुद्र, क, -वम् सिन्दूर।

दारिका [दारक+टाप्, इत्वम्] 1 पुत्री 2 वेश्या।

दारित (वि०) [दृ+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ खण्ड २ किया हुआ, चीरा हुआ।

दारिद्र्यम् [दरिद्र+ष्यञ्] गरीबी, निर्धनता -दारिद्र्यदोषो गणराशिनाशी सुभा०।

दारी [दृ+णिच्+इन्+ङीष्] 1 दरार 2 एक प्रकार का रोग।

दारु (वि०) [दीर्यते दृ+उण्] फाड़ने वाला, चीरने वाला, -रु 1 उदार या दानशील व्यक्ति 2 कलाकार,—रु (नपु०) (पु० भी) 1 लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, शहतीर 2 गुटका 3 उत्तोलन दण्ड 4 बढ़ईगिरी

5 देवदारु वृक्ष 6 कच्चा लोहा 7 पीतल। सम०—अस्त्र मोर, -आघाट चुटकी -गर्भा काठ की पुतली, —ज एक प्रकार का हाल पाक्षम् कठल, काठ का पर्यंक, पुत्रिका, -पुत्री लकड़ी की गुड़िया -वृक्षशाल्मया,-वृक्षशाल्मा छिपकिली,—यन्त्रम् 1 कठपुतली 2 लकड़ी का यन्त्र, रजनी लकड़ी की गुड़िया, सारः चन्दन,—हस्तक लकड़ी का चमचा।

दारुक [दारु+कन्] 1 देवदारु का पेड़ 2 कृष्ण के सारथि का नाम—उत्कन्धर दारुक हन्यूहाद—शि० ४।१८,—का 1 कठपुतली 2 लकड़ी की मूर्ति।

दारुण (वि०) [दृ+णिच्+उनन्] 1 कड़ा, सख्त—उत्तर० ३।३४ 2 कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर,—मय्येव विस्मरणदारुणेन्वृत्ती—श० ५।२३, पशुमारण-कर्मदारुण ६।१, मनु० ८।३७० 3 भीषण, भयानक, भयंकर ऋ० ६।२९, 4 घोर, प्रचण्ड, उग्र तीव्र, अत्यन्त पीड़ाकर (शीत, पीड़ा आदि), -हृदयकुसुम-शोषी दारुणो दारुणोऽकः—उत्तर० ५ 5 बहुत तेज कर्कश (शब्द आदि) 6 नृशंस, रोमाञ्चकारी, ण भयानक रस,—णम् उग्रता, निर्दयता, बीभत्सता आदि।

दारुधर्मन् [दारु+ष्यञ्] 1 कठोरता, सख्ती, दृढ़ता 2 युक्ति समर्थन।

दारुर,—रम् [दर्द+रु] 1 दक्षिणावर्ती (दाईं ओर घूमने वाला) शंख 2 जल।

दार्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [दारु+अण्] कुश घास का बना हुआ—राम मुञ्चन्युटजपटलं वीतनिद्रा मयूर—श० ४, (अने० पा०)।

दार्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [दारु+अण्] काठ का बना हुआ।

दार्वट्य [पतिवाल शकट दारु+अट्+क] मन्त्रणागृह, न्यायालय।

दार्शनिक [दर्शन+ठक्] दर्शन शास्त्रों में परिचित।

दार्षद (वि०) (स्त्री०—दी) [दृषद्+अण्] 1 पत्थर का बना हुआ, खनिज 2 सिल पर पिसा हुआ (मसाला आदि)।

दार्ष्टान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [दृष्टान्त+अण्] दृष्टान्त देकर समझाया गया या व्याख्या किया गया, साधर्म्य वर्णन का विषय अर्थात् उपमेय न्यायस्य दार्ष्टान्ति-कत्वेन विवक्षित शंकर।

दार्ष्टिन [दालयति असुरान् दल्+णिच्+णि] इन्द्र।

दाव [दुनाति दु+ण]=दव। सम०—अग्नि,—अनल —दहन, जङ्गल की आग दावाग्नि आनन्दमा-दावाग्नि शीतलाग्निसन्दिदीपे आनन्दीपमहावायुरथ खल्व नमागम—भाग० १।१९०, ३४।

दाश [दाशति हिनस्ति मत्स्यान्—दाश+ट, नस्य आत्वम्] मछुवा, मनु० ८।४०८, ४०९ १०।३४। सम०—ग्राम मछुओं का गाँव, -जन्मिनी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

दाशरथ,—दाशरथि [दशरथ+अण् इञ् वा]—दशरथ का पुत्र, रघु० १०।४४ 2 राम और उसके तीनों भाई, विशेषकर राम—रघु० १२।४५।

दाशार्हा (ब० व०) [दशार्ह+अण्] दशार्ह के वंशज, यादव शि० २।६४।

दाशेर [दाशी+ढक्] 1 मछुवे का बेटा 2 मछुवा 3 ऊँट।

दाशेरक [दाशेर+कन्] मालव देश,—का (ब० व०) मालव देश के निवासी या शासक, दे० 'दाशेर' भी।

दास [दास्+अच्] 1 गुलाम, सेवक—गृहकर्मदासा भनु० १।१, गृहे कर्मन्, आदि 2 मछुवा 3 शूद्र, चौथे वर्ण का पुरुष, तु० 'शूद्र'। सम०—अनुदास गुलाम का सेवक (अत्यन्त विनम्र सेवक) (कभी कभी वक्ता के द्वारा यह शब्द 'विनम्रता' का सूचक समझा जाता है)—जन सेवक या गुलाम—कमलरागपरि-मृदि पद्मिनि मानिनि दासजने यत—विक्रम० ४।२९ (भीड़भाड़ या सामान्य जनसमूह के लिए दास्यकुलम् समस्तशब्द प्रयुक्त किया जाता है)

दासी [दास+ङीष्] 1 सेविका नौकरानी 2 मछुवे की पत्नी 3 शूद्र या पत्नी 4 वेश्या। सम०—पुत्र, —सुत सेविका या गुलाम स्त्री का पुत्र,—सभम् दासियों की सभा, (जिस समय 'सह०' ए० व० दास्या शब्द समास में प्रयुक्त होता है तो उसका शाब्दिक अर्थ नष्ट हो जाता है, उदा० दास्या पुत्र, -सुत छिनाल का बेटा (रासभ का बच्चा —एक प्रकार का अपशब्द) दास्या पुत्रं प्रकुर्विकुर्वके—श० २, परन्तु 'दास्या सदृशी सेविका के समान।

दासेर,—रक [दासी+ढक्, दासेर+कन्] 1 दासी या सेविका का पुत्र 2 शूद्र 3 मछुवा 4 ऊँट—शि० १२।३३, ५।६६, (इस अर्थ में 'दासेय' शब्द भी है)।

दास्यम् [दास+ष्यञ्] दासता गुलामी, सेवा, अधीनता परिकुरु तव दास्यमपि क्षमम् श० ५।२७, मनु० ८।४१०।

दाह [दह+घञ्] 1 जलन ज्वालाएँ, दाहशक्तिभिव कृशानोर्निहि रघु० १।४२, छेदो दशस्य दाहो वा मालवि० ४।४ कि० ५।१२ 2 (आकाश की भाँति) दहकती हुई लाली 3 जलन की उत्तेजना 4 ताप, पसीना। सम०—अगुरु (नपु०) -काष्ठम् एक प्रकार का सुगन्धित अगर -आत्मक (वि०) जल उठने वाला, ज्वर जलन वाला बुखार, -सर, सरस (नपु०), स्थलम् मुर्दों के जलाने का स्थान, श्मशानभूमि, -हर (वि०) गर्मी को दूर हटाने वाला (—रम्) उशीर पौधा, खस।

दाहक (वि०) (स्त्री० हिका) [दह्+ण्वुल्] 1 जलाने वाला, भुलसाने वाला 2 आग लगाने वाला, दहनशील 3 दागने वाला, क. आग।

दाहनम् [दह्+ल्युट्] 1 जलाना, भस्म करना 2 दागना।

दाह्यम् [दह्+ण्यत्] 1 जलाने के योग्य 2 जल उठने के योग्य।

दिक्क [दिक्+कै+क] बीस वर्ष का जवान हाथी, कलभ।

दिग्ध (वि०) [दिह्+क्त] 1 सना हुआ, लिपा हुआ, पोता हुआ - हस्तादमृद्दिग्धौ—मनु० ३।१३२, रघु० १६।१५, दिग्धाऽमृतेन च विषेण च पक्ष्मलाक्ष्या गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः मा० १।२९ 2 मिट्टी में सना हुआ, कलुषित 3 विषाक्त कु० ४।२५, स्त्री० 1 तेल, मलहम 2 चिकना पदार्थ, उबटन आदि 3 आग 4 जहर में बुझा तीर 5 कहानी (वास्तविक हो या काल्पनिक)

दिण्डि, दिण्डिर [निण्डि,=हिडिर पृषो० साधु] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

दित (वि०) [दो+क्त, इत्वम्] कटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ विभक्त।

दिति (स्त्री०) [दा+क्तिन्] 1 काटना, टुकड़े २ करना विभक्त करना 2 उदारता 3 दक्ष की एक कन्या कश्यप की पत्नी, राक्षसों और दैत्यों की माता। सम० ज a दैत्य पिशाच, राक्षस।

दित्य [दिति+यत्] राक्षस।

दित्सा [दातुमिच्छा—दा+सन्+अ+टाप्] देने की इच्छा भामि० १।१२५।

दिदृक्षा [द्रष्टुमिच्छा दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा एकस्थमीदृग्यदिदृक्षयेव कु० १।४९।

दिधिषु [दिध् धैर्ये धारणे—सन्+कु- दिधिषुभर्तृमत्यः स्त्रियः दिधारयिषुः कथम्] विधवा [पुनर्विवाहित स्त्री का दूसरा पति - स्था०], अक्षतयोनि विधवा जिसका दूसरा विवाह न हुआ हो।

दिधि (धी) पू (स्त्री०) [दिधि+ङीष् यद्वा दधि+ऊ पृषो० साधु] 1 दूसरी बार ब्याही हुई स्त्री 2 अविवाहित बड़ी बहन जिसकी छोटी बहन का विवाह हो गया हो—ज्येष्ठायां यवीयसीपरिणयः कन्यायामुद्वहतेऽनुजा, सा चाग्रे दिधिरित्यसौ च दिधिषूः स्मृता। सम० - पति वह पुरुष जिसने अपने भाई की विधवा से मैथुन किया हो (केवल वंशवृद्धि के लिए न कि धार्मिक कर्तव्य की दृष्टि से। भ्रातुर्मृतस्य भार्यायां पाणिग्रह्येप्सितं वंशं, धर्मेणापि नियुक्तायां स ज्ञेयो दिधिषूपतिः मनु० ३।१७३।

दिधीर्षा [धा+सन्+अ+टाप्] जीवित रखने की इच्छा, बचाये रखने की इच्छा दिक्कुञ्जरा कुरुत तत् विनय दिधीर्षाम् शि० १।४८।

दिन [द्युति नक्, दो (दी)+नक्, ह्रस्व] 1 दिन (विप० रात्रि)--दिनान्ते निहितं तेज सवित्रेव हुताशन रघु० ४।१, वासिताभिर्दिनानि च सुखद्रुमवतीकृते मनसि—काव्य० १०, दिनान्ते निलयाय गन्तुम्—२।१५ 2 दिन (रात्रि समेत, २४ घण्टे का समय) -दिने दिने सा परिवर्धमाना—कु० १।२५, सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु २।२५। सम०—अन्धम्—अन्धकार,—अवसानम् सायंकाल, सूर्यास्त का समय - रघु० २।१५, ४५,—अधीशः—सूर्य—अर्धः मध्याह्न, दोपहर,—आगमः,—आदिः,—आरम्भः, प्रभात, प्रातःकाल, - ईशः, —ईश्वरः—सूर्य—आत्मज 1 शनि का विशेषण 2 कर्ण का विशेषण 3 सुग्रीव का विशेषण, करः—कर्तृ,—कृत् (पु०) सूरज—तुल्योऽयमस्तव दिनक्षयदुःखितायाः पक्षी न—विक्रम० २।१, दिनकरकुलचन्द्र चन्द्रकेतो—उत्तर० ६।८, रघु० ९।२३, —केसरः,—क्षयः सायंकाल, चर्या दैनिक व्यस्तता, प्रतिदिन का कार्यकलाप,—ज्योतिस् (नपु०) धूप,—दुःखितः चक्रवाक पक्षी, - धः,—पतिः, बन्धुः, —मणिः,—मयूखः,—रत्नम् सूर्य,—मुखम् प्रातःकाल—रघु० ९।२५, मूर्धन् (पु०) प्राची दिशा का पर्वत (उदयाचल) जिसके पीछे से सूर्य उदित होता हुआ माना जाता है,—यौवनम् मध्याह्न, दोपहर (दिन की जवानी)।

दिनिका [दिन+ठन्+टाप्] दिन की मजदूरी।

दिरिफक (पु०) खेलने की गेंद।

दिलीप (पु०) एक सूर्यवंशी राजा, अंशुमान् का पुत्र, भगीरथ का पिता ; परन्तु कालिदास के अनुसार रघु का पिता), [कालिदास ने दिलीप को एक आदर्श राजा बताया है, उसकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था, जो सब प्रकार से अपने पति के अनुरूप थी। उनके कोई सन्तान न थी। फलतः वे अपने कुलगुरु वसिष्ठ के पास गये, गुरु ने उनको नन्दिनी नाम की कामधेनु की सेवा करने के लिए कहा--उन्होंने २१ दिन तक गाय की सेवा की और २२वें दिन गौ ने उनपर कृपा की। फलतः उनके यहाँ एक यशस्वी बालक का जन्म हुआ जिसने बड़े होकर समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की और फिर वही रघुवंश का प्रवर्तक बना]।

दिव् I (दिवा० पर०—दीव्यति, द्यूत या द्यून—इच्छा-द्युद्यूषति, दिदेविषति) 1 चमकना, उज्ज्वल होना 2 फेंकना, (अस्त्र की भाँति) क्षपण करना—भट्टि० १७।८७, ५।८१ 3 जूआ खेलना, पासे से खेलना ('पासे' में कर्म० या करण०)—अक्षैरक्षान्वा दीव्यति सिद्धा०, वेणी० १।१३ 4 खेलना, क्रीड़ा करना 5 हँसी दिल्लगी करना, चुटकियों में उड़ा देना, खेल करना, मजाक करना (कर्म० के साथ) 6 दाँव पर

रखना, शर्त लगाना 7. देखना, व्यापार करना (सम्बन्ध० के साथ)—अदेवीद्देवबन्धोर्नानाम्—भट्टि० ८।१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० या सम्बन्ध० के साथ,—शत शतान्त वा परिदीव्यति—सिद्धा०) 8 उठाना, अपव्यय करना 9 प्रसन्न करना 10 प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11 पागल होना, पीकर मस्त होना 12 नींद आना 13 कामना करना, ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० देवति, देवयति-ते) विलाप कराना, पीडा दिलाना, प्रकुपित कराना, सताना, iii (चुरा० आ०—देवयते) पीडा सहन करना, विलाप करना, आर्तनाद करना, धरि,—विलाप करना, क्रन्दन करना, पीडा सहन करना। भट्टि० ४।३४।

दिव् (स्त्री०) [दीव्यन्त्यत्र दिव्+वा आधारे क्विप्—तारा०] (कर्तृ० ए० व०—द्यौ) 1 स्वर्ग, ३।४, १२, मेघ० ३० 2 आकाश 3 दिन 4 प्रकाश, उजाला—विशे० वह समस्त शब्द जिनका पूर्वपद दिव् है, अधिकांश अनियमित हैं—उदा० **दिवस्पति**, इन्द्र का विशेषण,—अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराज्ञा—श० ६, **-दिवस्पृथिव्यौ** स्वर्ग और पृथिवी,—**दिविज**,—**दिविष्ठ**,—**दिविस्थ**,—**दिविस्(स)द्** (पु०) **दिवौकस्** (पु०) **दिवौकस्**,—स. स्वर्ग का रहने वाला, देवता—श० ७, रघु० ३।१९, ४७, दिविषद्वृन्दैः—गीत० ७।

दिवम् (नपु०) [दिव्+क] 1 स्वर्ग 2 आकाश 3 दिन 4 वन, जङ्गल, अरण्य।

दिवस,—सम् [दीव्यतेऽत्र दिव्+असच् किच्च] दिन—दिवस इवाभ्रश्यामस्तपाये जीवलोकस्य—श० ३।१२। सम०—**ईश्वरः**, **करः** सूर्य, ऋतु० ३।२२,—**मुखम्** प्रातःकाल, प्रभात,—**विरामः** सायंकाल, सूर्यास्त—मेघ० ९५।

दिवा (अव्य०) [दिव्+का] दिन में, दिन के समय, **दिवाभू** दिन निकलना। सम०—**अटनः** कौवा,—**अन्ध** उल्लू, **अन्धकः**,—**अन्धिका** छछून्दर,—**करः** 1 सूर्य कु० १।१२, ४।४८ 2 कौवा 3 सूरजमुखी फूल, **कीर्तिः** 1 चाण्डाल, नीच जाति का पुरुष 2 नाई 3 उल्लू, **-निशम्** (अव्य०) दिन रात, **प्रदीपः** दिन का दीपक या लैम्प, अप्रसिद्ध पुरुष,—**भीतः**, **भीतिः** 1 उल्लू—दिवाकरादक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्—कु० १।१२ 2 चोर, सेंध लगानेवाला,—**मध्यम्** मध्याह्न,—**रात्रम्** (अव्य०) दिनरात,—**वसुः** सूर्य,—**शय** (वि०) दिन में सोने वाला—रघु० १९।३६, **स्वप्नः**,—**स्वापः** दिन के समय सोना।

दिवातन (वि०) (स्त्री०—नी) [दिवाभव ट्यु, तुट् च] दिन का या दिन से सम्बन्ध रखने वाला—कु० ४।४६, भट्टि० ५।६५।

दिविः [दिव्+इन्] चाष पक्षी, नीलकण्ठ ('दिव' भी)।

दिव्य (वि०) [दिव्+यत्] 1 दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय 2 अतिप्राकृतिक, अलौकिक—परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः—शि० १६।२९, भग० ११।८ 3 उज्ज्वल, शानदार 4 मनोहर, सुन्दर,—व्यः 1 अलौकिक या स्वर्गीय प्राणी—दिव्यानामपि कृतविस्मया पुरस्तात्—शि० ८।६४ 2 जौ 3. यम का विशेषण 4 दार्शनिक,—**व्यम्** 1 दैवी प्रकृति, दिव्यता 2 आकाश 3 दैवी परीक्षा (यह दस प्रकार की गिनाई गई है), तु० याज्ञ० २।२२, ९५ 4 शपथ, सत्यापित 5 लौंग 6 एक प्रकार का चन्दन। सम०—**अङ्गना**—**नारी**, **स्त्री** स्वर्गीय अप्सरा, दिव्य कन्या, अप्सरा,—**अदिव्य** (वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि अर्जुन),—**उदकम्** वर्षा का जल,—**कारिन्** (वि०) 1 शपथ उठाने वाला 2 अग्नि परीक्षा देने वाला,—**गायनः** गन्धर्व, **चक्षुस्** (वि०) 1 अलौकिक दृष्टि रखने वाला, दिव्य आँखों से युक्त रघु० ३।४५, 2 अन्धा (पु०) बन्दर (नपु०) ऋषीय आँख, अलौकिक दृष्टि, मानव आँखों द्वारा अदृष्ट पदार्थों को देखने की शक्ति, **ज्ञानम्** अलौकिक ज्ञानकारी,—**दृश्** (पु०) ज्योतिषी, **प्रश्नः** दिव्यलोकान्तर्गत सत्ता की पूछताछ, भावी घटना क्रम की पूछ ताछ, शकुन विचार, **-मानुषः** उपदेवता, **रत्नम्** काल्पनिक रत्न जो स्वामी की सब इच्छाओं को पूरा करने वाला कहा जाता है, दार्शनिकों की मणि—तु० चिन्तामणि, **रथः** स्वर्गीय रथ जो आकाश में चलता है **-रसः** पारा, **वस्त्र** (वि०) दिव्य वस्त्रों का धारण करने वाला (**स्त्रः**) 1 धूप 2 सूरजमुखी का फूल, **स्त्रीः** (स्त्री०) आकाशगङ्गा, **सारः** साल का वृक्ष।

दिश् (तुदा० उभ०—दिशति-ते, दिष्ट प्रेर० देशयति—ते, इच्छा० दिदिक्षति—ते) 1 संकेत करना, दिखलाना प्रदर्शन करना, (साक्षी के रूप में) प्रस्तुत करना—साक्षिणः सन्ति मेत्यूक्त्वा दिशन्ति यं—मनु० ८।५७, ५३ 2 आदेश देना, नियत करना इष्टां गतिं तस्य सुरा दिशन्ति—महा० 3 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, अर्पण करना, सौंपना—बाणमत्र भवते निज दिशतः कि० १३।६८, रघु० ५।३०, ११।२, १६।७२ 4 (कर के रूप में) देना 5 स्वीकृति देना रघु० ११।४९ 6 निर्देश देना, आदेश देना, हुक्म देना 7 अनुज्ञा देना इजाजत देना—स्मर्तुं दिशन्ति न दिव गुरुसुन्दरीभ्यः—कि० ५।२८, **अति**—, 1 अधिन्यस्त करना, सौंपना 2 प्रयोग का विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर घटाना—इति ये प्रत्यया उक्तास्तेऽत्रातिदिश्यन्ते—सिद्धा०, या प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेनातिदिशति—शाबि०, **अप**—, 1 संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना 2 प्रकथन करना,

वस्तुत करना, कहना, घोषणा करना, बतलाना, चेतावनी देना -मनु० ८।५४ 3 ढोंग रचना, बहाना करना--मित्रकृत्यमपदिश्य—रघु० १९।३१, ३२, ५४, शिर शूलस्पर्शनमपदिशन्—दश० ५०, सिरदर्द के बहाने को युक्ति देते हुए 4 उल्लेख करना, निर्देश करना—रहसि भर्त्रा मद्गोत्रापदिष्टा —दश० १०२, आ—, 1 करना, दिखलाना 2 आदेश देना, आज्ञा देना, निर्देश देना--पुनरप्यादिश तावदुत्थित --कु० ४।१६, आदिक्षदस्याभिगम वनाय -भट्टि० ३।९, ७।२८, रघु० १।५४, २।६५, मनु० ११।१९३ 3 उद्दिष्ट करना, अलग करना, अधिन्यस्त करना —भट्टि० ३।३ 4 अध्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अङ्कित करना, निश्चित करना - रघु० १२।६८ 5 विशिष्ट करना, 6 आगे होने वाली बात बताना, उद्—, 1 सकेत करना ज्ञापन करना, द्योतित करना, उल्लेख करना—प्रथमोद्दिष्टमासनम् -कु० ६।३५, यथोद्दिष्टव्यापारा---श० ३, अनेडमूक उद्दिष्ट शठे --मेदि० 2 उल्लेख करना, निर्देश करना, सकेत करना --स्मरमुद्दिश्य—कु० ४।३८ 3 अभिप्राय रखना, उद्देश्य रखना, निर्देश करना, अधिन्यस्त करना, अर्पित करना-फलमुद्दिश्य-भग० १७।२१, उद्दिष्टामुपनिहिता भवत्स्व पूजाम्-मा० ५।२५, वध्यशिलामुद्दिश्य प्रस्थित --पञ्च० १ 4 सिखाना, उपदेश देना -सता केनोद्दिष्ट विषममसिधाराव्रतमिदम्---भर्तृ० २।२८, उप—, 1 अध्यापन करना, उपदेश देना, सिखाना —सुखमुपदिश्यते परस्य---का० १५६, मालवि० १।५, रघु० १६।४३, भग० ४।३४ 2 सकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना-गुणशषामुपदिश्य-रघु० ८।७३ 3 कथन करना, बतलाना, घोषणा करना—किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्-मृच्छ० ९।७ 4 निर्दिष्ट करना, अङ्कित करना, स्वीकृति देना, निश्चित करना—न द्वितीयश्च साध्वीना स्वचिद्भर्तोपदिश्यते-मनु० ५।१६२, २।१९० 5 नाम लेना, पुकारना, निस्—, 1 सकेत करना, इशारा करना, दिखलाना एकैक निर्दिशन् -श० ७, अङ्गुल्या निर्दिशति-आदि 2 अधिन्यस्त करना, दे देना निर्दिष्टा कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य --रघु० १।९५ 3 सुझाना, निर्देश करना, सकेत करना 4 भविष्यवाणी करना 5 उपदेश देना 6 बतलाना, समाचार देना, प्र—, 1 सकेत करना, इशारा करना, दिखाना, निर्देश करना—तस्याधिकारपुरुषं प्रणतं प्रदिष्टाम् रघु० ५।६३, २।३९ 2 बतलाना, कथन करना--भग० ८।२८, भट्टि० ४।५ 3 देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—विधयो पञ्च मुनिप्रदिष्टयो. —रघु० ११।९, ७।३५, नि शब्दोऽपि प्रदिशसि जल याचितश्चातकेभ्य —मेघ० ११४, मनु० ८।२६५, प्रत्या—, (क) अस्वीकार करना, दूर फेंकना, कतराना—प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधि —श० ६।५, (ख) पीछे ढकेलना,—रघु० ६।२५ 2 पछाड देना; प्रत्याख्यान करना (व्यक्ति का)—काम प्रत्यादिष्टा स्मरामि न परिग्रह मुनेस्तनयाम् —श० ५।३१ 3 दुरुह बनाना, निस्तेज करना, परास्त करना, पृष्ठभूमि में फेंक देना-- रघु० १।६१, १०।६८ 4 विपरीत आज्ञा देना, वापिस बुलाना, व्याप—, 1 नाम लेना, पुकारना,—व्यपदिश्यते जनति विक्रमोत्यत --शि० १५।२८ 2 मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना —मित्र च मा व्यपदिशस्यपर च यासि —मृच्छ० ४।९ 3 बोलना, गर्व से कहना—जन्मेन्दोर्विमले कुले व्यपदिशसि—वेणी० ६।७ 4 बहाना करना, ढोंग रचना—महावी० २।११, सम्—, 1 देना, स्वीकृति देना, अधिन्यस्त करना, सौंपना—भट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २।२३२ 2 आज्ञा देना, निर्देश देना, शिक्षा देना, उपदेश देना, सन्देश भेजना —किन्तु खलु दुष्यन्तस्य मकनरूपमस्माभि सन्देष्टव्यम्—श० ४, शि० ९।५६, ६१ 3 सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सौंपना—अथ विश्वात्मने गौरी सन्दिदेश मिथ सखीम्—कु० ६।१ ।

दिश् (स्त्री०) [दिशति ददात्यवकाशम् दिश्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—दिक्,—ग्) 1 दिशा, दिग्बिन्दु, चार दिशाएँ, परिधि का बिन्दु, आकाश का चौथाई दिशं प्रसेदुर्मरुतो ववु सुखा रघु० ३।१४ दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् —गीत० ४ 2 (क) वस्तु का केवल निर्देश, इगित, (सामान्य रूप रेखा का) सकेत, इतिदिक् (भाष्यकारो द्वारा बहुल प्रयोग, (ख) (अत) रीति, रूप, प्रणाली -मनु पाठोक्तदिशा --सा० द०, दिगिय सूत्रकृता प्रदर्शिता, दासीसभ नृपसभ रक्ष सभमिमा दिश —अमर० 3 प्रदेश, अन्तराल, स्थान 4 विदेश या दूरस्थ प्रदेश 5 दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति 6 उपदेश, आदेश 7 'दस' की सख्या 8 पक्ष, दल 9 काटने का चिह्न (विशे० समास में स्वरादि, सघोष तथा ऊष्म व्यजनादि शब्दो से पूर्व 'दिश्' तथा अघोष व्यजनादि शब्दो से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिगम्बर, दिग्गज दिक्पथ, दिक्करिन् आदि)। सम० -अन्त दिशाओं का किनारा या क्षितिज, दूर का अतर, दूरस्थ स्थान --भामि० १।२, रघु० ३।४, ५।६७, १६।८७ नानादिगन्तागता राजान आदि,—अन्तरम् 1 दूसरी दिशा 2 मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तराल 3 दूरवर्ती दिशा, अन्य प्रदेश, विदेश,— अम्बर (वि०) दिशाएँ ही जिसका वस्त्र हो, बिल्कुल नग्न, विवस्त्र --दिगम्बरत्वेन निवेदित वसु —कु० ५।७२, (—र:) 1. नग्न भिक्षु (जैन या बौद्ध सम्प्रदाय का) 2 साधु, सन्यासी

3 शिव का विशेषण 4 अंधेरा,—ईश,—ईश्वर दिशा का अधिष्ठात्री देवता कु० ५।५३, दे० 'अष्टदिक्-पाल,—कर 1 युवा, जवान आदमी 2 शिव का विशेषण,—कारिका—करी, जवान लड़की या स्त्री, —करिन्,—गज,—हस्तिन्—दारण (पु०) वह हाथी जो पृथ्वी को सभालने के लिए किसी दिशा में स्थित कहा जाता है (यह आठों दिशाओं में स्थित होने के कारण अष्ट दिग्गज कहलाते हैं) दिग्दन्तिशेषा ककुभश्चकार—विक्रम० ७।१,—ग्रहणम् पृथ्वी की दिशाओं का अवलोकन,—चक्रम् 1 क्षितिज 2 समस्त विश्व —जय, विजय दिग्विजय, सब दिशाओं में स्थित २ देशों को जीतना, विश्व का विजय करना स दिग्विजयमध्याजवीर स्मर हवाकरोत्—विक्रमांक० ४।१, —दर्शनम् केवल दिशाएँ दिखाना, केवल सामान्य रूप रेखा की ओर संकेत करना,—नाग 1 पृथ्वी की दिशा का हाथी, दे० दिग्गज 2 कालिदास का समसामयिक एक कवि (यह बात मल्लि० ने मेघदूत की व्याख्या पर जो बड़ी महिम है, आषाढ़स्य ०।), मण्डलम् =दिक्चक्रम्, —मात्रम् केवल दिशा या संकेत,—मुखम् आकाश की कोई सी दिशा या भाग हरति मे दिग्वाहनाद्विमुखम्—विक्रम० ३।६, अमर ५,—मोह मार्ग या दिशा भूल जाना, वस्त्र (वि०) बिल्कुल नंगा, विकत्थ, (त्थ) 1 दिगम्बर सम्प्रदाय का जैन या बौद्ध भिक्षु 2 शिव का विशेषण, विभावित (वि०) विश्रुत, विख्यात या सब दिशाओं में प्रसिद्ध।

दिशा [दिश्+अङ्+टाप्] पृथ्वी का चौथाई, ओर, तरफ, प्रदेश। सम०—गज, पाल, दे० दिग्गज, दिक्पाल।

दिश्य (वि०) [दिशि भव—दिश्+यत्] पृथ्वी की किसी दिशा से सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1 दिखलाया हुआ, संकेतित निर्देश किया हुआ, इशारे से बताया हुआ 2 गणित, उल्लिखित 3 स्थिर, निश्चित 4 निर्देशित, आदेश दिया हुआ,—ष्टम् 1 अभिन्यास, नियतीकरण 2 भाग्य नियति, सौभाग्य या दुर्भाग्य भी दिष्टम् श० २ 3 आदेश, निर्देश 4 उद्देश्य, ध्येय। सम०—अन्त. नियत किये हुए समय की समाप्ति, मृत्यु दिष्टान्तमाप्नोति भवानपि पुत्रशोकात् —रघु० ९।७९।

दिष्टि. (स्त्री०) [दिश्+क्तिन्] 1 अभिन्यास नियतीकरण 2 निर्देश, आज्ञा, शिक्षा, नियम उपदेश 3 भाग्य, किस्मत, नियति 4 अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, शुभ कार्य (जैसा कि पुत्रजन्म)—दिष्टिवृद्धिमिव शुभाव —का० ५५, दिष्टिवृद्धिसमक्षमो महानभूत्—का० ७३।

दिष्टया (अव्य०) [दिष्टि का करण० ए० व०] भाग्य से, सौभाग्य से, ईश्वर का धन्यवाद, मैं कितना प्रसन्न हूँ, कितना सौभाग्यशाली, शाबाश (हर्ष या बधाई का उद्गार)—दिष्टया प्रतिहत दुर्जनेन—मा० ४, दिष्टया सोयं महाबाहुरञ्जनानन्दवर्धन—उत्तर० १।३७, वेणी० २।१२, दिष्टया वर्ध बधाई देना,—दिष्टया धर्मपत्नी समागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान्वर्धते—श० ७।

दिह् (अदा० उभ० दिग्धे, देग्धे, दिग्ध—इच्छा० दिधिक्षति) 1 लीपना सानना, पोतना, बिछाना —मनु० ३।२४७, ७।५४ 2 मैला करना, भ्रष्ट करना, अपवित्र करना रघु० १६।१५, सम् , 1 सन्देह करना, अनिश्चित रहना याज्ञ० २।१६, संदिग्धो विजया यदि पण० ३।१२ 2 भूल करना, हतबुद्धि होना (कर्मवा०)—पान्तु स्वामकठोरचेतकशिखासंदिग्धमग्नेन्दव (जटा०)—मा० ९।२, या- धूर्पर्जालविनिमर्दनैबलभय संदिग्धसारावना—विक्रम० ३।२, कु० ६।८० 3 आक्षेप आरम्भ करना।

दी (दिवा० आ० दीयते, दीन) नष्ट होना मरना।

दीक्ष् (भ्वा० आ० दीक्षते दीक्षित) 1 किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए अपने आपको तैयार करना दे० नी० 'दीक्षित' 2 अपने आपको समर्पित करना 3 शिष्य बनाना 4 उपनयन संस्कार करना 5 यज्ञ करना 6 अल्प संयम करना।

दीक्षक [दीक्ष्+ण्वुल्] आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक।

दीक्षणम् [दीक्ष+ल्युट्] दीक्षा देना, धर्मार्पण।

दीक्षा [दीक्ष+अ+टाप्] 1 किसी धर्म-संस्कार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण रघु० ३।४४, ६५ 2 यज्ञ से पूर्व किया जाने वाला प्रारम्भिक संस्कार 3 धर्मसंस्कार —विग्रह दीक्षा रघु० ३।३३, कु० ७।१, ८।२४ 4 यज्ञोपवीत संस्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपका समर्पण करना। सम०—अन्त पूर्वकृत यज्ञादि कर्म की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाने वाला पृथक्-यज्ञ।

दीक्षित (भू० क० कृ०) [दीक्ष्+क्त] संस्कारित, (किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त एते विवाहदीक्षिता वयं—उत्तर० १, आपदाभयसत्रेषु दीक्षिता खलु पौरवा—श० २।१६ रघु० ८।७५ ११।२८, वेणी० १।१५ 2 यज्ञ के लिए तैयार 3 व्रत लेकर (किसी पुण्य कार्य के लिए) तैयार—रघु० ११।६७ 4 अभिषिक्त रघु० ४।५, —क्षु 1 दीक्षा-कार्य में व्यस्त पुरोहित 2 शिष्य 3 वह पुरुष जिसने या जिसके पूर्व-पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो।

दीदिवि [दिव्+क्विन्, द्वित्व, दीर्घत्व] 1 उबले हुए चावल 2 स्वर्ग।

दीधिति (स्त्री०) [दीधी+क्तिन्, इट्, ईकारलोपश्च] 1 प्रकाश की किरण - रघु० ३।२३, १७।४८, नै० २।६९ 2 आभा, उजाला 3 शारीरिक कान्ति, स्फूर्ति -भर्तृ० २।२९।

दीधितिमत् (वि०) [दीधिति+मतुप्] उज्ज्वल (पु०) सूर्य—कु० २।२, ७।७०।

दीधी (अदा० आ० दीधीते) 1 चमकना 2 दिखाई देना, प्रतीत होना।

दीन (वि०) [दी+क्त, तस्य न] 1 गरीब, दरिद्र 2 दुःखी नष्ट-भ्रष्ट, कष्टग्रस्त, दयनीय, अभागा 3 खिन्न, उदास, विषण्ण, शोकग्रस्त —सा विरहे तव दीना —गीत० ४ 4 भीरु, डरा हुआ 5 क्षुद्र, याचनीय —भर्तृ० २।५१, —न० गरीब आदमी, दुःखी या विपद्-ग्रस्त —दीनानां कल्पवृक्ष —मृच्छ० १।४८, विनीति दीनाद्धरणोचितस्य रघु० २।२५। सम० **वत्सल** - **वत्सल** (वि०) दीन-दुखियों के प्रति कृपालु **बन्धु** दीन-दुखियों का मित्र।

दीनार [दी - आरक्, नुट्] 1 एक सोने का विशेष सिक्का, —जितश्चासौ मया पञ्चशतसहस्राणि दीनाराणाम्—दश० 2 सिक्का के सोने का आभूषण।

दीप् (दिवा० आ० दीप्यते दीप्त —वारम्०- देदीप्यते) 1 चमकना, जगमगाना (आलं० भी)—सर्वैरङ्गैः समग्रैस्त्वमिव नवगुणैर्दीप्यसे मध्यमणि - मालवि० २।१३, तरुणोऽयमरुणो दीप्यते मणिहारावलि रामणीयकम् - नै० २।४४ भट्टि० २।२, रघु० १४।६४, हि० प्र० ४६ 2 जलना, प्रकाशित होना—यथा यथा चय चपला दीप्यते -का० १०५ 3 दहकना, प्रज्वलित होना, बढ़ना —(आलं० भी) रघु० ५।४७, भट्टि० १४।८८ शि० २०।७१ 4 काम से आगबबूला होना —कि० ३।५५ 5 प्रख्यात होना -देर० दीपयति—ते, आग सुलगाना प्रज्वलित करना, रोशनी करना, प्रकाश करना वनान्तरेष्वदीपयदशुशुक्षणे (इन्धे)—गीत० ७ उद्—, प्रेर० 1 आग सुलगाना, 2 उद्बोधित करना उत्तेजित करना, उद्दीपित करना, प्र—, सम्—, चमकना जगमगाना।

दीप [दीप् + णिच् + अच्], लैंप, दीवा, प्रकाश -नपदीपा घनस्नेहं प्रजाभ्य सहस्रशः, अन्तरर्थगणे शुभ्रैर्लक्ष्यसे नैव कचित्—पञ्च० १।२२१, न हि दीपो परस्पर-व्यापकृत्त —शारी०, इसी प्रकार 'ज्ञानदीप'। सम० **-अन्विता** 1 अमावस्या 2 -दीपावली, **आराधनम्** दीप थाल में रख कर देवमूर्ति की आरती उतारना, - **आलि**, -**ली**, -**आवली** —**उत्सव** 1 दीपकित, रात के समय रोशनी करना 2 विशेषरूप से दिवाली का उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या में मनाया जाता है,—**कलिका** दीपक की लौ,—**किट्टम्** दीपक का फूल, दीये का गुल—**कूपी**,—**छरी** दीये की बत्ती—**ध्वज** काजल,—**पादप**, **वृक्ष** दीपाधार, दीवट, **पुष्प** चम्पा का वृक्ष —**भाजनम्** दीपक, रघु० १९।५१, —**माला** प्रकाश करना, रोशनी करना,— **शत्रु**, पतंग, —**शिखा** दीपक की लौ,—**शृङ्खला** दीवों की पंक्ति, रोशनी।

दीपक (वि०) (स्त्री०-पिका) [दीप् +णिच् +ण्वुल्] 1 आग सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला 2 रोशनी करने वाला, उज्ज्वल बनाने वाला 3 सचित्र बनाने वाला, सुन्दर बनाने वाला, विस्थान करने वाला 4 उत्तेजक, प्रखर करने वाला - शि० २।५५ 5 पौष्टिक, पाचन शक्ति को उद्दीप्त करने वाला, पाचनशील,—क 1 प्रदीप—ज्ञानदेव कृतिनामपि स्फुरन्त्येष निर्मल विवेकदीपक —भर्तृ० १।५६ 2 राग 3 कामदेव का विशेषण ('दीप्यक' भी),— **कम्** 1 जाफरान, केसर 2 (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें समान विशेषण रखने वाले दो या दो से अधिक पदार्थ (प्रकृत और अप्रकृत) एक जगह मिला दिये जायं, या जिसमें कुछ विशेषण (प्रकृत और अप्रकृत) एक ही कर्म के विधेय बना दिये जायं, - सकृद्विनियुक्तेषु धर्मस्य प्रकृता-प्रकृतात्मसु, सैव क्रियासु बह्वीषु कारकस्यैतदीपकम्, - काव्य० १०, नृ० चन्द्रा० —वर्णिते वर्णावर्णानां धर्मैक्ये दीपकं बुधाः, मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः ५।४५।

दीपन (वि०) [दीप् +णिच् , ल्युट्] 1 आग सुलगाने वाला, प्रकाश करने वाला 2 पुष्टिकारक पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला 3 उत्तेजक, उद्दीपक 4 केसर, जाफरान।

दीपिका [दीप् + णिच् +ण्वुल्+टाप् इत्वम्] 1 प्रकाश मशाल - रघु० ६।४५, १।७० 2 (समास के अन्त में) सचित्र वर्णन करने वाला स्पष्टकर्ता, तर्क-दीपिका।

दीपित (वि०) [दीप् +णिच् +क्त] 1 जिसका आग लगा दी गई हो 2 प्रज्वलित 3 रोशनीवाला, प्रकाशमय 4 प्रव्यक्त, प्रकाशित।

दीप्त (भू० क० कृ०) [दीप् +क्त] 1 जलाया हुआ, प्रज्वलित, सुलगाया हुआ 2 दहकता हुआ, गरम, प्रकाश उगलने वाला, चकाचौंध करने वाला 3 प्रकाश-मय 4 उत्तेजित, उद्दीपित, —**प्तः** 1 सिंह 2 नीम का पेड़, —**म्** सोना। सम० **अंशु** सूर्य, - **अग्नि** बिल्ली, **अग्नि** (वि०) (आग की भाँति) सुलगाया हुआ। (—**ग्निः**) 1 धधकती हुई आग 2 अगस्त्य का नाम, —**अङ्गः** मोर,—**आत्मन्** (वि०) जोशीले स्वभाव का, —**उपल** सूर्यकान्तमणि, **किरण**, सूर्य, - **कीर्ति** कार्तिकेय का विशेषण,—**जिह्वा** लोमड़ी (अलंकारिक

रूप से झगड़ालू और दुष्टस्वभाव वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है),—तपस् (वि०) उज्ज्वल धर्म-निष्ठा से युक्त, उत्कट भक्ति वाला, पिङ्गकः सिंह, -पक्षः कंचुआ, —लोचन. बिल्ली,—लोहम् पीतल, कांसा ।

दीप्ति (स्त्री०) [दीप्+क्तिन्] 1 उजाला, चमक, प्रभा, आभा 2 सौंदर्य की उज्ज्वलता, अत्यन्त मनोरमता (दीप्ति और कान्ति के अन्तर के लिए दे० कान्ति) 3 लाख 4 पीतल ।

दीप्र (वि०) [दीप्+र] चमकीला, जगमगाता हुआ चमकदार,—प्रः आग ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्] (म० अ० —द्राघीयस्, उ० अ० —द्राघिष्ठ) 1 (समय और स्थान की दृष्टि से) लम्बा, दूर तक पहुँचने वाला, दीर्घाक्षि शरदिन्दु-कान्तिवदनम्—मालवि० २।३, दीर्घानि कटाक्षान् —मेघ० ३५, दीर्घोद्योग आदि 2 लम्बी अवधि का टिकाऊ, उदार देने वाला दीर्घयामा त्रियामा—मेघ० १०८, विक्रम० ३।४, श० ३।१५ 3 (आह की भाँति) गहरा—अमरु ११, दीर्घमाणं च निःश्वस्य 4 (स्वर की भाँति) लम्बा, जैसा कि 'काम' में 'आ' 5 उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत, -र्घम् (अव्य०) 1 चिर चिरकाल तक 2 अत्यन्त 3 अधिक, -र्घः 1 ऊंट, 2 दीर्घस्वर । सम० अध्वग दूर दूरका यात्री, -अह्न् (पु०) ग्रीष्म,—आकार (वि०) बड़े आकार का, -आयु- आयुस् (वि०) दीर्घजीवी, लम्बी आयु वाला, -आयुध 1 भाला 2 कोई लम्बा हथियार 3 सूअर, आस्य हाथी कण्ठ, कण्ठक,—कन्धर सारस, काय (वि०) (कद में) लम्बा केश सीसा, गति-, -ग्रीव, -घाटिक,—जङ्घ, ऊँट, जिह्व साँप, सर्प, —तपस् (पु०) अहल्या के पति गौतम का विशेषण रघु० ११।३४,—तरु -द्रुम, द्रु ताड वृक्ष,—तुण्डी छछुन्दर,—दर्शिन् (वि०) विवेकी, समझदार, दूरदर्शी, दूर तक की बात सोचने वाला—पञ्च० ३।१६८ 2 मेधावी, बुद्धिमान्, (पुं०) 1 शीशम 2 उल्लू —नाद (वि०) लगातार देर तक शोर मचाने वाला, (-द) 1 कुत्ता 2 भृंगी 3 शंख,—निद्रा 1 लम्बी नींद 2 चिरशयन, मृत्यु—रघु० १२।११, -पत्र ताड का वृक्ष,—पाद बगुला, -पादप 1 नारियल का पेड़ 2 सुपाड़ी का पेड़ 3 ताड का वृक्ष, पृष्ठ साँप, —बाला एक प्रकार का हरिण चमरी, (इसकी पूंछ से चौरी बनती है),—भारत हाथी,—रत कुत्ता, -रव सूअर,—रसन साँप,—रोमन् (पु०) भालू,—वक्त्र हाथी,—सत्त्र (वि०) लम्बी जंघाओं वाला,—सत्रम् चिरकाल तक चलने वाला सोमयज्ञ (त्र) सोमयाजी —रघु० १।८०, —सूत्र,—सूत्रिन् (वि०) शनैः २ कार्य करने वाला, मन्थर, प्रत्येक कार्य को देर में करने वाला, टालने वाला, देर लगाने वाला —दीर्घसूत्री विनश्यति—पञ्च० ४ ।

दीर्घिका [दीर्घ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 एक लम्बा सरोवर, जलाशय—मालवि० २।१३, रघु० १६।१३ 2 कूआँ या बावड़ी ।

दीर्ण (वि०) [दृ+क्त] 1 चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2 डरा हुआ, भयभीत ।

दु (स्वा० पर०—दुनोति, दून, या दूत) 1 जलाना, आग में भस्म करना - भट्टि० १४।८५ 2 सताना, कष्ट देना, दुःख देना उद्धूमोनि जलेजानि दुन्वन्त्यदयित जनम् -भट्टि० ६।७४ ५।२८, १७।९९, (मुख) तव विश्रान्तकथं दुनोति माम् रघु० ८।५५ 3 पीड़ा देना, शोक पैदा करना वणप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स मे मनः - कु० ३।२८ 4 (अक०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना—देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोषि -गीत० ३, -कर्मवा० (या दिवा० आ०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना —नायातं सखि निर्दयो यदि शठस्तत्र दूनि किं दूयसे—गीत० ७, कु० ५।१२, ४८, रघु० १।७०, १०।२१ ।

दुःख (वि०) [दुष्टानि खानि यस्मिन्, दुष्ट खनति -खन्+ड, दुस्+अच वा नञ्०] पीड़ाकर, अरुचिकर, दुःखमय —सिंहानां सिनदां दुःखा शांतु दुःखमतो वनम् —रामा० 2 कठिन, बेचैन - खम् 1 खेद, रंज, विषाद दुःख, पीड़ा, वेदना—सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते -मृच्छ० २।१० यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् विक्रम० ३।२१, इसी प्रकार 'दुःखसुख 'सम्पद्दुःखसुख' 2 बड़ी कठिनाई भुक्तावली० १२ ('बड़ी कठिनाई से' 'मुश्किल से' 'कष्ट से' अर्थ का प्रकट करने के लिए 'दुःखम' तथा 'दुःखेन' शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं—श० ७।१३, भग० १२।५, रघु० १९।४९, हि० १।१५८) । सम० - अतीत (वि०) दुःखों से मुक्त,—अन्त मोक्ष, -कर (वि०) पीड़ाकर कष्टदायक, -ग्राम 'दुःखों का दृश्य' सामाजिक अस्तित्व संसार, - छिन्न (वि०) 1 सख्त, कठोर 2 पीड़ित दुःखी, - आर्त,—बहुल (वि०) कष्ट और दुःखों से पूर्ण,—भाज् (वि०) दुःखी, अप्रसन्न, —लोक सामाजिक जीवन, सतत यातना का दृश्य, संसार, - शील (वि०) जो दूसरों को प्रसन्न न कर सके, बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा रघु० ३।६ ।

दुःखित, -दुःखिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [दुःख+इतच्, इनि वा] दुःखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित 2. बेचारा, विपण्ण, दयनीय ।

दुकूलम् [दु+ऊलच्, कुक्] बुना हुआ रेशम, रेशमीवस्त्र, अत्यन्त महीन वस्त्र—श्यामलमृदुलकलेवरमण्डनमधि-

गलगोदुकूलम्—गीत० ११, कु० ५।६७, ७८, भट्टि० ३।३४, १०।१, रघु० १७।२५।

दुग्ध (वि०) [दुह्+क्त] 1. दुहा हुआ 2. जिसका दूध दुह लिया गया है, चूस लिया गया है या निकाल लिया गया है दे० 'दुह्'—**फेन** 1. दूध, 2. पौधों का दूधिया रस। सम०—**अन्नम्**—**तण्डुलम्** दूध का फेन, मलाई,—**पाचनम्** वह बर्तन जिसमें दूध डाल कर औटाया जाय, **पोष्य** (वि०) अपनी माँ के दूध पर रहने वाला बच्चा, दूध पीता (बच्चा) स्तनपायी,—**समुद्र** दूध का सागर, सात समुद्रों में से एक।

दुघ (वि०) [दुह्+क] (प्रायः समास के अन्त में) 1 दूध देने वाला 2 मालिक, देने वाला, जैसा कि 'कामदुघा' में।

दुघा [दुघ+टाप्] दूध देने वाली गाय, दुधार गौ।

दुघ्दृक (वि०) [दुर्दृश इव कादेशः दुर्दृश+कै+क, पृषो० भलोपः] भयंकर दृष्टि हृदय वाला, क्रूरदृष्टि।

दुन्दुभ = दुन्दुभ।

दुन्दुभ [दुर दुरो दुःखम् भाति पृषो० रलोपः] हरा प्याज।

दुन्दुभ (पु०) [दुर्+उपपदे भण्+उभच्, नुमागमः] = दुन्दुभि+मण्+ड] एक प्रकार का ढोल, दे० दुन्दुभि।

दुन्दु (पु०) 1 एक प्रकार का ढोल 2 कृष्ण के पिता वसुदेव का नाम।

दुन्दुभ [दुन्दु+भण्+र] 1 एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा 2 एक प्रकार का भयंकर साँप।

दुन्दुभि (पु०, स्त्री०) [दुन्दु इत्यव्यक्तशब्देन भाति भा+कि] एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा—**विजय-दुन्दुभिता यस्य गीयते**—रघु० १।११, (पुं०) 1 विष्णु की उपाधि 2 कृष्ण का विशेषण 3 एक प्रकार का जिन 4 एक राक्षस जिसे वालि ने मारा था, (जब सुग्रीव ने इस राक्षस का अस्थिपंजर भगवान् राम को यह दिखाने के लिए कि वालि कितना बलवान् था दिखलाया तो राम ने इसे मामूली सी ठोकर मारी और वह अस्थिपंजर मीलों दूर जाकर पड़ा)।

दुर् (अव्य०) [दृ+क्विप्] ('दुस्' के स्थान में प्रयुक्त किया जाने वाला, उपसर्ग जो 'बुराई' 'कठिनाई' का अर्थ प्रकट करने के लिए स्वरादि तथा घोषवर्णादि से आरम्भ होने वाले शब्दों से पूर्व लगाया जाता है, दुस्-पूर्वक समासों के लिए दे० 'दुस्')। सम०—**अक्ष** (वि०) 1 दुर्बल आँख वाला 2 खोटी दृष्टि वाला (—क्षः) पासे का पाशा,—**अतिक्रम** (वि०) 1 दुर्लंघ्य, दुस्तर, अजेय—**स्वजातिदुरतिक्रमा**—पंच० १ 2 दुर्लभ्य 3 अनिवार्य, **अत्यय** (वि०) 1 जो कठिनाई से जीता जा सके, रघु० ११।८८ 2 दुर्लंघ्य, अगाध—**अदृष्टम्** दुर्भाग्य, विपत्ति—**अधिप,—अधिगम** (वि०) 1 दुष्प्राप्य, जिसे प्राप्त करना कठिन हो, पंच० १।३३० 2. दुस्तर 3 दुर्बोध, जिसे अध्ययन करना बहुत कठिन हो—कि० ५।१८,—**अनुष्ठित** (वि०) बुरी तरह से सम्पन्न, प्रवृद्ध या क्रियान्वित किया गया—**अन्वय** (वि०) 1. दुर्लभ 2 दुर्बोध,—**अभ्यवसाय**, दुर्भ्यवसाय, व्यवसाय,—**अम्भः** कुमार्ग, —**अन्त** (वि०) 1 जिसके किनारे पर पहुँचना कठिन हो, अनन्त, **अन्तद्रोह**—**अकर्णधाव सूक्ष्माय दुरन्तायान्तकाय च**—भाग० 2. परिणाम में दुःखदायी, विषण्ण—**अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता**—कि० १।२३, **नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते** (वसन्ते)—गीत० १,—**अन्वय** (वि०) 1. दुर्लभ 2. जिसका पालन करना, या अनुसरण करना कठिन हो 3 दुष्प्राप्य, दुर्बोध (क) अशुद्ध निष्कर्ष, दिये हुए तथ्यों का गलत अनुमान,—**अभिमानिन्** (वि०) मिथ्या अहंकार करने वाला, झूठा घमंडी,—**अयश** (वि०) दुर्बोध,—**अवग्रह** (वि०) जिसे रोकना या काबू में रखना कठिन हो, जिसका नियन्त्रण कष्ट-साध्य हो, **अवस्थ** (वि०) दुर्दशाग्रस्त, बुरी दशा में पड़ा हुआ,—**अवस्था** दुर्दशा, दयनीय स्थिति,—**आकृति** (वि०) कुरूप, बदसूरत, **आक्रम** (वि०) 1. अजेय, जो जीता न जा सके 2 दुर्गम,—**आक्रमम्** 1 अनुचित हमला 2 कठिन पहुँच, **आग्रहः** अनुपयुक्त या अवैध अधिग्रहण, **आग्रह** मूर्खतापूर्ण हठ, जिद, अनुचित आग्रह, **आचर** (वि०) कष्टसाध्य,—**आचार** (वि०) 1 बुरे चालचलन का, कदाचारी 2. कुत्सित आचरण वाला, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र—भग० ९।३०, (र) दूषित आचरण, कदाचार, दुश्चरित्रता,—**आत्मन्** (पु०) दुर्जन, लुच्चा, लफंगा,—**आरोह** (वि०) 1 जिस पर आक्रमण करना कठिन है 2. जिसका लेशमात्र भी पराभव न हो सके 3 उद्धत,—**आलम्ब** (वि०) जिसे झुकाना बहुत कठिन हो, रघु० ११।३८,—**आप** (वि०) दुर्लभ श्रियं दुरापां कथमीप्सितां भवेत्—शि० ३।१४, रघु० १।७२ ६।६२,—**आराध्य** (वि०) जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो, जिसको जीत लेना कष्टसाध्य हो,—**आरोह** (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो, (हः) 1 नारियल का पेड़ 2. ताड़ का पेड़ 3. छुहारे का पेड़ **आलापः** 1. दुर्वचन, गाली 2. बुरी बातचीत, अशालीनयुक्त भाषा **आलोक** (वि०) 1. जो कठिनाई से देखा जा सके 2. जिसकी ओर देखने में आँखें झप जायँ, चकाचौंध करने वाला प्रकाश—**दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्**—काव्य० १०, (—कः) चकाचौंध पैदा करने वाली चमक, **आसार** (वि०) 1. जिसे रोकना कठिन हो 2. जिसे रोकना, बन्द करना, या ठहराना कठिन हो, **आसय** (वि०) दुर्मनस्क, कुत्सित विचारों वाला व्यक्ति, जिसकी नीयत खराब हो, नीच हृदय का,

—आशा 1. बुरी इच्छा 2. ऐसी आशा करना जो पूरी न हो सके,—आसद (वि०) 1. जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम, दुर्धर्ष, दुर्जय रघु० ३।६६, ८।४, महावी० २।५, ४।१५ 2. दुर्लभ, दुष्प्राप्य 3. अद्वितीय, अनुपम, - इत (वि०) 1. कठिन 2. पापी (तम्) 1. कुमार्ग, बुराई, पाप-दरिद्राणा बैन्ध दुरितमघ दुर्गासलहुदा दुत दूरीकुर्वन्—अमा० २, रघु० ८।२, अमरु २, महावी० ३।४३ 2. कठिनाई, भय 3. संकट, दुष्टम् दुर्वचन, गाली 2. दूसरे व्यक्ति को क्षति पहुँचाने के लिए किया जाने वाला बाहूटोना या यज्ञानुष्ठान,—ईश बुरा स्वामी, किंपचु,—ईक्षण - दृक्षण अभिशाप, दुर्वचन,—उक्तम्, - उक्ति दुर्वचन, झिड़की, गाली, बुरा-भला कहना, उत्तर (वि०) जिसका उत्तर न दिया जा सके,—उदाहर (वि०) जिसका उच्चारण किया जाना कठिन हो- अनुज्झितार्थसम्बन्ध प्रबन्धो दुरुदाहर - शि० २।७३, - उद्वह (वि०) बोझिल, असह्य, —ऊह (वि०) बहुत मारा पच्ची करने पर भी जल्द समझ में न आने वाला, कठिन, - ग (वि०) 1 जहाँ पहुँचना कठिन हो, अगम्य, दुर्गम 2. अप्राप्य 3. दुर्बोध (- ग, गम्) कठिन या वन रास्ता, (जंगल में से, नदी या पहाड़ों में से) संकीर्ण घाटी, भीड़ा दर्रा 2 गढ़, किला, कोट 3. ऊबड़-खाबड़ जमीन 4 कठिनाई, विपत्ति, संकट, दुःख, भय—निस्तारयति दुर्गाच्च - मनु० ३।९८, ११।४३, मृग० १८।५८, °अध्यक्ष पति °पाल किले का समादेष्टा या प्रशासक °कर्मन् (नपु०) किलाबन्दी, °मार्ग घाटी का मार्ग, सकरी घाटी °लङ्घनम् कठिनाइयों को पार करना (न) ऊँट, °सञ्चर 1 (घाटी के ऊपर से, पुल पर से, या किले का) कठिन मार्ग,—गा शि० की पत्नी पार्वती की उपाधि गत (वि०) 1 दुर्भाग्यग्रस्त दुर्दशाग्रस्त -भट्टि० १८।१० 2 दरिद्र, गरीब 3 दुखी कष्टग्रस्त,—गति (स्त्री०) 1 दुर्भाग्य, गरीबी, कमी, कष्ट दरिद्रता भग० ६।४० 2. कठिन स्थिति या मार्ग 3 नरक,—गन्ध (वि०) बुरी गन्ध वाला (—ध) 1 बुरी गन्ध, सड़ांद 2. दुर्गंधयुक्त पदार्थ 3 प्याज 4 आम का वृक्ष, गन्धि, °गन्धिन् (वि०) जिसमें से बुरी गन्ध आवे गम (वि०) 1 जिसमें से जाया न जा सके, जहाँ पहुँचना कठिन हो, अप्रवेश्य कामिनीकायकान्तारे कुचपर्वतदुर्गमे भर्तृ० १।८६, शि० १२।४९ 2 अप्राप्य, दुष्प्राप्य 3. दुर्बोध,—गाढ़, गाध, —गाह्य जिसका अवगाहन करना या अनुसंधान करना कठिन हो, अनवगाह्य, ग्रह (वि०) 1 कष्टसाध्य 2. जिसको जीतना या वश में करना कठिन हो—रघु० १७।५२ 3 दुर्बोध (ह) मरोड़, ऐंठन घट (वि०) 1 कठिन 2 असम्भव,—घोष 1 कर्कशध्वनि 2 रीछ, जन (वि०) 1 दुष्ट, बुरा, खल 2 बदनाम, द्वेषपूर्ण दुष्टबुद्धि, (- न) बुरा या दुष्ट आदमी, द्वेष रखने वाला या उपद्रव करने वाला व्यक्ति, दुर्वृत्त दुर्जन प्रियवादी न नैतद्विश्वासकारणम् - चाण० ३४ २५, शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जन,- कु० २।४०, जय (वि०) अजेय, जिसको जीता न जा सके, जर (वि०) 1 विनयुवा 2. (भोजनादि) जो कठिनाई से पचे, अपाचनशील 3 जिसका उपभोग करना कठिन हो, जात (वि०) 1 दुखी, अभागा 2 बुरे स्वभाव का बुरा, दुष्ट 3 मिथ्या, अवास्तविक, (तम्) दुर्भाग्य, संकट, कठिनाई, रघु० १३।७२ - जाति (वि०) 1 बुरे स्वभाव का, दुष्ट, दुष्ट अमरु ९२ 2 जाति से बहिष्कृत (स्त्री०-ति) 1 दुर्भाग्य, दुर्दशा, —ज्ञान —ज्ञेय (वि०) जो कठिनाई से जाना जा सके दुर्बोध -जय, - नय 1 दुराचरण 2 अनौचित्य 3 अन्याय -नामन् -नामन् (वि०) बदनाम - दम,- दमन, --दम्य (वि०) जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, जो सीधा न किया जा सके, प्रचण्ड, दर्श (वि०) 1 जो कठिनाई से दिखाई दे 2 चकाचौंध करने वाला—भग० ११।५० —दान्त (वि०) 1 जिसका वश में करना कठिन हो जो पालतू न हो सके जो सीधा न किया जा सके दि० ४।१२० 2 उच्छृंखल धर्षणी,—धर्ष, दुर्धर्षायते नामधातु क्षत्रियेष्वायतते महावी० ३।३८ (त) 1 बवण्डर 2. झंझावात कलह—दिनम् 1 बरा दिन 2 मेघाच्छन्न दिन आँधी, तूफान का मौसम वृष्टिकाल उत्पन्नप्रत्यक्षदुर्दिनम् मृच्छ० ५—कु० ५।४३, महावी० ४।५७ 3 बौछार -रघु० ४।४१ ४८ ५।४७ शिशु० ५।५ 4 घोर अन्धकार, दृष्ट (वि०) जिस पर सफल तरीके से विचार किया गया हो, जिसका भेद न ढका न हुआ हो दैवम् बुरी किस्मत दुर्भाग्य -द्यूतम् बेईमानी का खेल, द्रुम प्याज, धर (वि०) 1 जिसका मुकाबला न किया जा सके, जो रोका न जा सके 2 दुस्सह दुर्धरेण मदनेन साधयत घट० १९ मनु० ७।२८, (—र) पारा धर्ष (वि०) 1 अनतिक्रमणीय, अनतिक्रम्य 2 अक्षम्य—वि० प्र० ३ असहिष्णु उत्तेजना 4 उद्धत, धी (वि०) मूर्ख बेवकूफ, धारण, व्यवसाय, - निग्रह (वि०) जिसका व्यवहार न किया जा सके, जिस पर शासन न किया जा सके जिसका प्रतिरोध न किया जा सके उच्छृंखल भला दुर्निग्रह चलम् भग० ६।३५, निर्मित (वि०) असावधानी से अधीन पर रक्खा हुआ पद दुर्निर्मित गलतियाँ -रघु० ७।१०, निर्मितम् 1 अपराधकर्म रघु० १४।५० 2 बुरा बहाना,- निवार,—निवार्य (वि०) जिसको

हटाना या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अजेय,—नीतम् कदाचरण, दुर्नीति, दुर्व्यवहार,—मति (स्त्री०) बुरा प्रशासन—भामि० ४।३६,—बल (वि०) 1. कमजोर, बलहीन 2. क्षीणकाय, शक्तिहीन—उत्तर० १।२८ 3. स्वस्थ, मोटा, कम—रघु० ५।१२,—बाल (वि०) गंजे सिर वाला, —बुद्धि (वि०) 1. बेवकूफ, मूर्ख, बुद्धू 2. कुमार्गी, दुष्ट मन का, दुष्ट-भग० १।२३,—बोध (वि०) जो शीघ्र समझ में न आये, जिसकी तह तक न पहुँचा जाय, दुर्ग्राह्य निमग्नदुर्बोधमबोधविप्लवा क्व भूपतीना चरित क्व जन्तव—किं० १।६,—भग (वि०) भाग्यहीन अभागा,—भगा 1 वह पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो 2. बुरे स्वभाव की स्त्री, कलहप्रिय स्त्री,—भर (वि०) जिसे निभाना कठिन हो, बोझा, भार, भाग्य (वि०) भाग्यहीन, अभागा (—त्यम्) बुरी किस्मत,—भक्षम् 1 खाद्य सामग्री की कमी, अभाव, अकाल—याज्ञ० २।१४७, मनु० ८।२२, हि० १।७३ 2 कमी भृत्य बुरा सेवक,—भ्रातृ (पु०) बुरा भाई,—मति (वि०) 1. मूर्ख, दुर्बुद्धि, बेवकूफ, अज्ञानी, 2 दुष्ट, खोटे हृदय का-मनु० ११।३०, —मद (वि०) शराबखोर, खूनी या हिंस्र, मदोन्मत्त, दीवाना,—मनस् (वि०) खिन्नमनस्क, हतोत्साह, दुःखी उदास,—मनुष्य दुर्जन, दुष्ट पुरुष,—मन्त्र, मन्त्रितम् बुरी नसीहत, बुरा परामर्श, मरणम् बुरी मौत, अप्राकृतिक मृत्यु,—मर्यादि (वि०) निर्लज्ज, अशिष्ट, —मल्लिका,—मल्ली एक प्रकार का उपरूपक, मुखान्त प्रहसन—सा० द० ५५३, मित्र 1 बुरा दोस्त 2 शत्रु, मुख (वि०) बुरे चेहरे वाला, विकराल, बदसूरत भर्तृ० १।९० 2 कटुभाषी, अपशब्दभाषी बदजबान—भर्तृ० २।६९,—मूल्य (वि०) बहुत अधिक मूल्य का महँगा,—मेधस् (वि०) मूर्ख, बेवकूफ, मन्दबुद्धि, बुद्धू (पु०) मूढमति, मन्दबुद्धि मनुष्य, बुद्धू —अन्धानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम्—शि० २।२६,—योध—योधन (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, (—न) धृतराष्ट्र और गान्धारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने बड़े भाई, पाण्डवों से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विनाश करने के लिए उसने यथाशक्ति प्रयत्न किये। जब उसके पिता धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि धृतराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राजी कर लिया कि पाण्डवों का निर्वासन कर दिया जाय। वारणावत उनका भावी निवासस्थल चुना गया—और उनके रहने के लिए एक विशाल महल बनवाने के बहाने दुर्योधन ने लाख, बेर्जा आदि दहनशील सामग्री से एक भवन इस आशा से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायेंगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस चाल का पता लग गया था, अतः वह सुरक्षित उस भवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे—यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन की ईर्ष्या और कोपाग्नि को और भी अधिक भड़का दिया—क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों को वारणावत में जला कर मारने का षड्यन्त्र पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने पिता को उकसाया कि पाण्डवों को हस्तिनापुर में आकर जुआ खेलने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि युधिष्ठिर विशेष रूप से जूए का शौकीन था। इस जूए के खेल में दुर्योधन को अपने मामा शकुनि की सहायता प्राप्त थी। युधिष्ठिर ने जो कुछ भी दाँव पर लगाया—वही हार गया, यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाइयों को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया। और इस प्रकार जूए में सब कुछ हार जाने पर, शर्त के अनुसार युधिष्ठिर को १२ वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास बिताने के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित जंगल की ओर जाना पड़ा। परन्तु यह दीर्घकाल भी समाप्त हो गया। वनवास से आकर पाण्डव और कौरवों ने 'भारती' नाम के महायुद्ध की तैयारी की। यह युद्ध १८ दिन रहा और सारे कौरव अपने अधिकांश बन्धुबान्धवों सहित इसी युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन भीम का दुर्योधन से द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन की जंघा तोड़ कर उसे मौत के घाट पहुँचाया),—योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न, अधम कुल का,—लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई से देखा जा सके, जो दिखाई न दे,—लभ (वि०) 1 जिसका प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, दुस्साध्य—रघु० १।६७, १७।७०, कु० ४।४०, ५।४६,६१ 2 जिसका ढूंढना कठिन हो, जिसका मिलना दुष्कर हो, विरल शुद्धान्तदुर्लभम्—श० १।१६ 3 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख 4 प्रिय, प्यारा 5 मूल्यवान्—ललित (वि०) लाड प्यार से बिगड़ा हुआ, अत्यधिक लाड प्यार में पला हुआ, जिसे प्रसन्न करना कठिन है,—हा मदङ्कदुर्ललित—वेणी०—४, विक्रम० २।८, मा० ९ 2 (अत) स्वेच्छाचारी, बदमाश, अशिष्ट, उच्छृङ्खल —स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्ते—मा० ७, (—त्व) स्वेच्छाचारिता, अक्खड़पन,—वेक्षणम् जाली दस्तावेज, —सह (वि०) 1 जिसका सहन करना कठिन हो,

अवर्जनीय 2 वह बात जिसका बतलाना उचित न हो 3 अनुचित बोलने वाला, गाली देने वाला, (—वचस्) गाली, कटकार, दुर्वचन, —वचस्(नपुं०) गाली, झिड़क, —वर्ण (वि०) बुरे रंग का, (—वर्ण) चांदी,—वसतिः (स्त्री०) पीड़ाजनक निवासस्थान—रघु० ८।९४,—वह (वि०) भारी, जिसे ढोना कठिन हो—उत्तर० २।१०, कु० १।१०,—वाक्य (वि०) 1 जिसका कहना या उच्चारण करना कठिन हो 2 कुभाषी, बदजबान 3 कठोर, क्रूर, (क्यम्) 1 झिड़की, दुर्वचन 2 बदनामी, लोकापवाद,—वाद अपवाद, अपयश, कुख्याति, —वार,—वारण (वि०) जिसका मुकाबला न किया जा सके, असह्य—रघु० १४।८७, कु०२।२१,—वासना 1 ओछी कामना, बुरी इच्छा—भामि० १।८६ 2 कपोलकल्पना, —वासस् (वि०) 1 बुरा वस्त्र धारण किये हुए 2 नंगा (पुं०) 3 एक बड़ा क्रोधी ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र इसे प्रसन्न करना अत्यन्त कठिन था, बहुत से स्त्री पुरुषों को उसने अपमान तथा मर्मोद्घाटन सहन करने के लिए शाप दिया। अग्निशर्मा के क्रोध की भांति, इसका क्रोध भी प्रायः एक लोकोक्ति बन गया, विगाह विगाह्य (वि०) जिसमें प्रवेश करना कठिन हो, जिसका अवगाहन मुश्किल हो, अगाध, विचिन्त्य (वि०) अचिन्तनीय, अनवद्य,—विदग्ध अकुशल, नौसिखुआ, बेवकूफ, मन्दबुद्धि, मूर्ख 2 बिना कुशल अनाड़ी 3 थोड़े से ज्ञान से ही फूला हुआ, गर्वित, अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करने वाला—वृथाशास्त्रग्रहणदुर्विदग्ध—वेणी० ३, ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति - भर्तृ० २।३,—विध (वि०) 1 कमीना, अधम, नीच 2 दुष्ट, दुश्चरित्र 3 गरीब, दरिद्र —विदग्धाने हविगन्धदुर्विध —नै० २।३३ 4 मन्दबुद्धि, मूर्ख, बेवकूफ, —विनय औद्धत्य, उद्दण्डता, विनीत (वि०) 1 (क) बुरी तरह से शिक्षित, अशिष्ट, अनम्य दुष्ट -शासिनरि दुर्विनीतानाम् श० १।२५, (ख) अक्खड़, नटखट, उपद्रवी 2 हठीला, दुराग्रही —विपाक 1 दुष्परिणाम, बुरा नतीजा उत्तर० १।४०, महावी० ६।७ 2 पूर्व जन्म के या इस जन्म के किये हुए कर्मों का बुरा परिणाम, विलसितम् स्वेच्छाचार, अक्खड़पन, नटखटपना, वृत्त (वि०) 1 दुश्चरित्र, दुष्ट, अनम्य 2 बदमाश, (त्तम्) दुराचरण, अशिष्ट व्यवहार, —वृष्टिः (स्त्री०) खोटी वर्षा, अनावृष्टि,—व्यवहार गलत निर्णय (विधि में) —व्रत (वि०) नियमों का पालन न करने वाला, जो आज्ञाकारी न हो, हुतम् वह यज्ञ जो बुरी रीति से किया गया है,—हृद् (वि०) दुष्ट हृदय का, तुच्छ विचारों वाला, शत्रु (पुं०) वैरी,—हृदय (वि०) दुरात्मा, दिल का छोटा, दुष्ट।

दुरोदर [दुष्टमासमन्तात् उदरं यस्य ब० स०] 1 जुआरी, द्यूतकार 2 पासा, जूआ 3 बाजी, दांव,—रम् जूआ खेलना, पासे से खेलना—दुरोदरच्छद्मजिता समीहते नयेन जेतुं जगती सुयोधनं —कि० १।७, रघु० ९।७।

दुल् (चुरा० उभ०—दोलयति—ते, दोलित) झूलना इधर-उधर हिलना-जुलना, इधर उधर घुमाना, झुलाना —कटिं चेद्दोलयेदासु—रति०, दोलयन् द्वाविवाक्षौ—भर्तृ० ३।३९ 2 हिलाकर ऊपर को करना, ऊपर फेंकना —दोलयति धूलिं वायुः शब्द०।

दुलि (स्त्री०) [दुल्+कि] छोटा कछुवा, या कछुवी।

दुष् (दिवा० पर०—दुष्यति, दुष्ट) 1 बुरा या भ्रष्ट हो जाना, दूषित होना, आटा उठाना 2 मलिन होना, असती होना (स्त्री का), कलंकित होना, अपवित्र होना, बिगड़ना, पच० १।६६, मनु० ७।२४, ९।३१८, १०। १०२ 3 पाप करना, गलती करना, गलती होना 4 असती होना, अभक्त या श्रद्धाहीन होना —प्रेर० —दूषयति (परन्तु—दूषयति दोषयति यदि अर्थ है 'दूषित करना, भ्रष्ट करना') 1 भ्रष्ट करना, बिगाड़ना, नष्ट करना, क्षतिग्रस्त करना, विनष्ट करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, कलंकित करना, विषाक्त करना, अपवित्र करना—(या० तथा आल० से)—न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः —मच्छ० १०। २७, पुरं दूषयति स्थलीम् - रघु० १२।३०, ८।६८, १०।४७, १२।४, मनु० ५।१, १०४, ७।१९५, याज्ञ० १।१८९, अमर० ७० -न स्वेन दूषयिष्यामि शस्त्रग्रहं— महावीर० ३।२८,—दूषित नहीं करूंगा उल्लंघन नहीं करूंगा, तोड़ूंगा नहीं आदि 2 चरित्र भ्रष्ट करना, उत्साह भंग करना 3 उल्लंघन करना, अवज्ञा करना—मनु० ८।३६४, ३६८ 4 तिरस्कृत करना, हटा देना, रद्द कर देना 5 दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना, किसी के विषय में बुरा कहना दोषारोपण करना—दूषित सर्वलोकेषु विषादन्न गमिष्यति—रामा०, याज्ञ० १।६६ 6 मिलावट करना 7 मिथ्या या बनावटी करना 8 तिरस्कृत करना, खण्डन करना, अ० 1 भ्रष्ट होना, बिगड़ना, विषाक्त होना याज्ञ० ३।१९ 2 पाप करना, गलती करना, श्रद्धाहीन या असती (अभक्त) होना—भग० १।४०, मनु० ९।७४ (प्रेर०)1 बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, गंदला करना, धब्बे लगाना 2 दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना सम् दूषित या कलंकित होना —(प्रेर०) 1 दूषित करना भ्रष्ट करना, गंदला करना, धब्बे लगाना 2 उल्लंघन करना 3 दोषारोपण करना, निन्दा करना, दोष निकालना।

दुष्ट (भू० क० कृ०) [दुष्+क्त] 1 बिगड़ा हुआ, खराब हुआ, क्षतिग्रस्त, बर्बाद 2 दूषित, धब्बे लगा हुआ,

उल्लंघन किया हुआ, कलुषित 3. मलिन, भ्रष्ट 4. पापासक्त, बदमाश—दुष्टवृत्त 5 दोषी, अपराधी 6 नीच, अधम 7 दोषयुक्त, सदोष—जैसा कि तर्क० में हेतु 8. पीड़ाकर, निकम्मा। सम०—आत्मन्, —आशय (वि०) खोटे मन वाला, दुष्ट हृदय वाला, —गज. बदमाश हाथी,—जेतस्, —धी,—बुद्धि (वि०) खोटे मन का, दुर्भावनापूर्ण, दुःशील,—वृषः मजबूत परन्तु अड़ियल बैल, (जो गाड़ी न खींचे) बदमाश बैल।

दुष्टि. (स्त्री०) [दुष्+क्तिन्] भ्रष्टाचार, खोट।

दुष्ठु (अव्य०) [दुर्+स्था+कु] 1 खराब, बुरा 2. अनुचित रूप से, अशुद्ध रूप से, गलती से।

दुष्मन्तः (पु०) चन्द्रवंश में उत्पन्न एक राजा, पुरु की सन्तान, शकुन्तला का पति, भरत का पिता (जंगल में शिकार खेलता हुआ, एक बार दुष्मन्त, हरिण का पीछा करता हुआ कण्व के आश्रम की ओर निकल गया। वहाँ कण्व की गोद ली हुई पुत्री शकुन्तला ने उसका स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के अलौकिक सौन्दर्य से राजा दुष्यन्त उस पर मोहित हो गया—उसने उसका अपनी रानी बनाने के लिए राजी कर लिया और फलतः गान्धर्व विवाह कर लिया। कुछ समय शकुन्तला के साथ बिता कर राजा अपनी राजधानी को लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया। कण्व ने यह उचित समझा कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेज दिया जाय। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास गई और उसके सामने खड़ी हुई तो दुष्यन्त ने—लोकनिन्दा के डर से—कहा कि विवाह करने की बात तो दूर रही मैंने तो तुम्हें कभी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय वाणी ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वैध पत्नी है। फलतः उसने शकुन्तला को पुत्र समेत स्वीकार कर उसे अपनी पटरानी बनाया। यह राजा रानी वृद्धावस्था तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत को राज्य देकर जंगल को ओर चल दिये। दुष्यन्त और शकुन्तला का उपर्युक्त वर्णन महाभारत में दिया हुआ है, कालिदास द्वारा वर्णित कहानी कई महत्त्वपूर्ण बातों में इससे भिन्न है—दे० 'शकुन्तला')।

दुस् [दुर्]-सुक्] 'बुरा, खराब, दुष्ट, घटिया, कठिन या मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया जाने वाला उपसर्ग। (विशे० स्वर और व्यञ्जनों से पूर्व दुस् का स् बदल कर र् हो जाता है, ऊष्म वर्णों के पूर्व विसर्ग, च् और छ् से पूर्व ष् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है)। सम०—कर (वि०) 1. दुष्ट, बुरी तरह से करने वाला 2. करने में कठिन, कठोर या मुश्किल—कर्तुं सुकरं कर्तुं दुष्करम्—करने की अपेक्षा कहना आसान है,—अमरु ४१, मृच्छ० ३।१, मनु० ७।५५, (—रम्) 1. कठिन या जोड़ाकर कार्य, कठिनाई 2 पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—कर्मन् (पु०) कोई भी बुरा काम, पाप, जुर्म,—काल: 1. बुरा समय —मुद्रा० ७।५ 2. प्रलयकाल 3. शिव का विशेषण, —कुलम् बुरा या नीच घराना—(आदर्यते) स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि—मनु० २।२३८,—कुलीन (वि०) नीच जाति में उत्पन्न,—कृत (पु०) दुष्टपुरुष,—कृतम्,—कृति: (स्त्री०) पाप, दुष्कृत्य—उभे सुकृतदुष्कृते—याज्ञ० २।५०,—क्षम (वि०) क्षमहीन, असहनशील, अत्यधिक्षिप्त, —ग्रह (वि०) 1 जिसका पूरा करना कठिन हो, मुश्किल —रघु० ८।७९, कु० ७।६५ 2 अगम्य, दुर्गम 3 बुरा करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला, (—ह:) 1. राहु 2 त्रिकोणीय शंख या सीपी, °चारिन् (वि०) कठोर तपस्या करने वाला,—चरित (वि०) दुष्ट, दुराचरण करने वाला, परित्यक्त (तम्) दुराचरण, बुरा चाल-चलन,—चिकित्स्य (वि०) जिसका इलाज करना कठिन हो, असाध्य,—जयन: इन्द्र का विशेषण, जयन शिव का विशेषण,—तर (वि०) (दुष्टर या दुस्तर) 1 जिसका पार करना कठिन हो—रघु० १।२, मनु० ४।२४२, पंच० १।१११ 2 जिसका दमन करना कठिन हो, अपराजेय, अजेय,—तर्क मिथ्या तर्कना०—पच (दुष्पच) (वि०) जिसका हजम होना कठिन हो,—पतनम् 1 बुरी तरह से गिरना 2 दुर्वचन, अपशब्द,—परिग्रह (वि०) जिसका पकड़ना, ग्रहण करना या लेना कठिन हो, (—ह:) बुरी पत्नी,—पूर (वि०) जिसका पूरा करना, या जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो, —प्रकाश (वि०) अप्रसिद्ध, अन्धकारमय धूमिल, —प्रकृति (वि०) बुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का, —प्रजस् (वि०) बुरी सन्तान वाला,—प्रज्ञ (दुष्प्रज्ञ) (वि०) कमजोर मन का, दुर्बुद्धि,—प्रधर्ष, —प्रधृष्य (वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्धर्ष' —रघु० २।२७,—प्रवाद: बदनामी, कलंक, अपकीर्ति, —प्रवृत्ति (स्त्री०) बुरा समाचार, कुख्याति—रघु० १२।५१,—प्रसह (दुष्प्रसह) (वि०) 1. जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, भयानक 2 अक्षम्य—मालवि० ५।१०,—प्राप,—प्रापण (वि०) अप्राप्य, दुष्प्राप्य —रघु० १।४८, भग० ६।३६,—शकुनम् बुरा शगुन, अपशकुन,—शासन धृतराष्ट्र की इकलौती पुत्री जो जयद्रथ को ब्याही गई थी,—शासन (वि०) जिसका प्रबन्ध करना या शासन करना कठिन हो, अविनेय, (स:) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर योद्धा था, परन्तु दुष्ट और दुर्दान्त। जब युधिष्ठिर द्रौपदी को बाजी पर लगा कर हार गया तो दुःशासन

उसकी चोटी पकड़ कर उसे भरी सभा में खींच लाया, जहाँ उसने उसे विवस्त्र करना चाहा, परन्तु दीन दुःखियों के सहायक श्रीकृष्ण ने उसका चीर बढ़ा कर उसकी लज्जा की रक्षा की। दुःशासन के इस जघन्य कृत्य से भीम इतना उत्तेजित हो गया कि उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा की 'कि मैं तब तक सुख की नींद न सोऊँगा जब तक इस दुष्ट दुःशासन का खून न पी लूँ। महाभारत युद्ध के १६ वें दिन भीम का दुःशासन से सामना हुआ। भीम ने एक ही पछाड़ में दुःशासन का काम तमाम कर दिया—और उसका खून पीकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की),—शील (दुश्शील) (वि०) नीच, दुराचारी, बदमाश,—सम (दुःसम या दुस्सम) (वि०) 1. असम, असमान, असदृश 2 प्रतिकूल, दुर्भाग्यपूर्ण 3. अनिष्टकर, अनुचित, बुरा,—सम्म (अव्य०) बुरी तरह से, दुष्टतापूर्वक,—सत्त्व दुष्ट प्राणी,—सन्धान,—सन्धेय (वि०) जिसका मिलना या जिसमें मेल कराना कठिन हो, -सह (दुस्सह) (वि०) असह्य, अप्रतिरोध्य, असमर्थनीय, -सालिन् (पुं०) झूठा गवाह,—साक्ष्य,—स्थ (वि०) 1. जिसका पूरा होना कठिन हो 2. जिसका इलाज करना कठिन हो 3. जिसपर विजय न प्राप्त की जा सके,—स्थ,—स्थित (वि०) ['दुस्थ' या 'दुस्थित' भी लिखा जाता है] 1. दुर्दशाग्रस्त, शोचनीय, दयनीय 2 पीड़ित, विषण्ण, दुःखी 3. अस्वस्थ, रुग्ण 4 अस्थिर, अशान्त 5 मूर्ख, बुद्धिहीन, अज्ञानी, (अव्य०—स्थम्) बुरी तरह से, अधूरे ढंग से, अपूर्ण रूप से,-स्थितिः (स्त्री०) 1 दुर्दशा, विपन्नता, दयनीयता 2. अस्थिरता,—स्पृश्यम् (दुस्पृश्यम्) 1. ईषत्स्पर्श या सम्पर्क 2. जिह्वा का ईषत् स्पर्श या प्रयत्न जिससे य्, र्, ल् तथा व् की ध्वनि निकलती है,-स्वर (वि०) जिसका याद रखना कठिन या पीड़ा कर हो-उत्तर० १।३४,-स्वप्नः बुरा स्वप्न।

दुह (अदा० उभ०—दोग्धि, दुग्धे, दुग्ध) दोहना, निचोड़ना, उद्धृत करना (द्विक० के साथ)—भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्वसूनि—कु० १।२, य पयो दोग्धि पाषाण स रामाद्भूतिमाप्नुयात्—भट्टि० ८।८२, पयो घटोन्नीरपि गां दुदुक्षु—१२।७३, रघु० ५।३३ 2. किसी वस्तु में से कोई दूसरी चीज़ निकालना,—(द्विक० के साथ)—प्राणान्मुहुश्चिन्तयतो मनोऽस्य क्षीरं घृतस्यातपवद्दुदोह—भट्टि० ८।९ 3. छान कर निकाल लेना, काम उठाना—दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२९ 4. (अपेक्षित पदार्थ) प्रदान करना—कामान्दुदुहे विप्रकर्षत्यलकनीम्—उत्तर० ५।३३ 5. उपभोग करना—प्रेर० दोहयति—दुहाना, इच्छा०—दुदुक्षति, दुहने की इच्छा करना—राजन्। दुदुक्षति यदि क्षितिवनुमेनाम्—भट्टि० २।५६।

दुहितृ (स्त्री०) [दुह+तृच्] बेटी, पुत्री। सम०—पति, 'दुहितृ जनि' भी) जामाता, दामाद।

दू (दिवा० आ० दूयते, दून) 1 कष्ट में होना, पीड़ित होना, खिन्न होना—न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मां ब्रह्मपराध्यति—शि० २।११, कथमथ बचसे जनमनुगतमसमशरव्यरवून—गीत० ८, कष्टग्रस्त, दुःखी—दे० 'दु' (कर्मवा०) 2 पीड़ा देना।

दूत, दूतक. [दु+क्त, दीर्घश्च, दूत+कन्] सन्देशहर, सदेशवाहक, राजदूत—चाण० १०६। सम०—मुख (वि०) राजदूत के द्वारा बात करने वाला।

दूतिका, दूती [दू+ति+कन्+टाप्, दूति+ङीष्] 1 सदेशवाहिका रहस्य की (गुप्त) बातें जानने वाली 2 प्रेमी और प्रेमिका से बातचीत कराने वाली, कुटनी (विशे० दूती का 'ती' कभी कभी ह्रस्व हो जाता है दे० रघु० १८।५३, १९।१८, कु० ४।१६, और इसके ऊपर मल्लि०)।

दूत्यम् [दूतस्य भाव—दूत (ती)+यत्] 1 किसी दूत का नियुक्त करना 2. दूतालय 3 सदेश।

दून (वि०) [दू+क्त, सत्वम्] पीड़ित, कष्टग्रस्त,-आदि, दे० 'दु' और 'दू' के नीचे।

दूर (वि०) [दुःखेन ईयते—दुर्+इण्+रक्, वातो लोप] (म० अ० दवीयस्, उ० अ० दविष्ठ) दूरस्थ, दूरवर्ती, फासले पर, दूरस्थित, विप्रकृष्ट—किं दूरं व्यवसायिनाम्—चाण० ७३, न योजनशतं दूरं वाह्यमानस्य तृष्णया—हि० १।१४६, ४९,—रम् दूरी, फासला ('दूर' शब्द के अप्रधान कारक के कुछ रूप निम्नलिखित रूप से क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं—(क) दूरम् 1 फ़ासले पर, विप्रकृष्ट, दूरी पर (अपा० या सब० के साथ)—ग्रामात् वा ग्रामस्य दूरं —सिद्धा० 2 ऊपर ऊँचाई पर 3 नीचे गहराई में 4 अत्यत, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—नेत्रे दूरमनञ्जने —सा० द० 5 पूर्णरूप से, पूरीतरह से,—निमग्ना दूरमम्भसि—कथा० १०।२९, दूरमुद्भूततापा—मेघ० ५५, (ख) दूरेण 1 दूर, दूरवर्ती स्थान से, दूर से,—छल कापटपबोधेन दूरेणैव विसृज्यते—भामि० १।७८ 2 कहीं अधिक, अत्यधिक ऊँचाई पर—दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, रघु० १०।३० अने० पा० (ग) दूरात् 1 फासले से, दूरी से,—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्, दूरादागत—दूर से आया हुआ (यह समस्त पद समझा जाता है)—नदीयमिति दूरात्परित्यज्यताम्—भर्तृ० १।८१, रघु० १।६१ 2. सूक्ष्म दृष्टि से 3. सुदूर पूर्व काल से (घ) दूरे, दूर, फासले पर, दूरवर्ती स्थान पर—न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वं रघुपतेः—रा० १।९, भो श्रेष्ठिन् शिरसि भयमिति दूरे तत्प्रतीकारः—मुद्रा०

१, भर्तृ० ३।८८, दूरीकृ—1. फासले पर हटा देना, हटाना' दूर करना,—आत्मने दूरीकृतश्रमे—दश० ५, मालवि० १।१२२ 2 वंचित करना अलग करना —मृच्छ० ९।४ 3. रोकना, परे करना 4 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ आना, दूर रखना—दी० १।१७, इसी प्रकार दूरीभू—दूर रहना, परे रहना, अलग रहना, फासले पर रहना—दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम् । सम०—अन्तरित (वि०) लम्बी दूरी होने से वियुक्त —आघातः दूर से निशाना लगाना —आक्रान्त (वि०) दूर तक कूदने वाला, लम्बी छलांग लगाने वाला,—आरूढ (वि०) 1 ऊँचाई पर चढ़ा हुआ, दूर तक आगे बढ़ा हुआ 2 गहरा, उत्कट —दूरारूढः खलु प्रणयोऽसहन —विक्रम०४,—ईक्षितेक्षण (वि०) भेंगी दृष्टि वाला,—गत (वि०) दूर हटा हुआ, दूरस्थ, दूर गया हुआ, आगे तक बढ़ा हुआ, गहराई तक गया हुआ—दूरगतमन्मथाऽऽसेव कालहरणस्य—दश० ३,—ग्रहणम् दूरस्थित पदार्थों को भी देखने की दिव्य शक्ति,—दर्शन 1 गिद्ध 2. विद्वान् पुरुष, पण्डित,—दर्शिन् (वि०) दूर की देखने वाला, अग्रदृष्टि, बुद्धिमान् (—पुं०) 1. गिद्ध 2 विद्वान् पुरुष 3 द्रष्टा, पैगम्बर ऋषि,—दृष्टि दूर तक देखने की शक्ति 2 बुद्धिमत्ता, अग्रदृष्टि,—पातः 1 दूर तक गिरना 2 दूर की उड़ान 3 बहुत ऊँचाई से गिरना, —पात्र (वि०) विस्तृत पाट वाला (नद आदि) —पार (वि०) 1. बहुत चौड़ा (दरिया) 2. जो कठिनाई से पार किया जा सके,—बन्धु (वि०) पत्नी तथा अन्य भाई बन्धुओं से निर्वासित—मेघ० ६, —भाव (वि०) दूरवर्ती, फासले पर विद्यमान,—वर्तिन् (वि०) दूरी पर विद्यमान, दूर हटाया हुआ, दूरस्थ, फासले पर,—वलम्बक (वि०) लंबा, —विलम्बिन् (वि०) नीचे दूर तक लटकने वाला,—वेधिन् (वि०) दूर से ही बींधने वाला,—संस्थ (वि०) दूरी पर विद्यमान फासले पर, दूरवर्ती—कण्ठावलेयप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे—मेघ० ३ ।

दूरतः (अव्य०) [दूर+तस्] 1 दूर से, फासले से—तद्राज्यं दूरतस्त्यजेत्—पञ्च० ५।१९, बहुति च परीतापं दीप विमुञ्चति दूरत'—गीत० २ 2 दूर, फासले पर —पञ्च० १।९ ।

दूरस्थ (वि०) [दूरे भव —दूर+स्थ] दूरी पर मौजूद, दूर से आया हुआ ।

दूरार्थम् [दूरे उत्सार्यम्—दूर+यत्] बिष्ठा, मैला ।

दूर्वा [दुर्व्+अ+टाप्, दीर्घः] भूमि पर फैलने वाली एक घास, दूब (यह घास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है) । सम०—अङ्कुर दूब के कोमल पत्ते —विक्रम ३।१२ ।

दूलिका, दूली [दूल+कन्+टाप्, ह्रस्वः, दूर+अच्+ङीष्, रस्य लः] नौका का पीछा ।

दूष (वि०) [दूष्+णिच्+अच्] (समासान्त में प्रयुक्त) दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उदा० 'पंक्तिदूष' ।

दूषक (वि०)(स्त्री०—विका) [दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1. भ्रष्टाचार करने वाला, अपवित्र करने वाला, विश्वासघात करने वाला, दूषित करने वाला, बिगाड़ने वाला 2. उल्लंघन करने वाला, अवज्ञा करने वाला, गुमराह करने वाला 3. अपराध करने वाला, अतिक्रमण करने वाला, अपराधी 4. आकृति बिगाड़ने वाला 5. पापी, दुष्कृत, —कः कुपथ पर चलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला, अपराध या दुष्ट पुरुष ।

दूषणम् [दूष्+ल्युट्] 1. बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, विश्वासघात करना, बदनाम करना, अपवित्र करना आदि 2. उल्लंघन करना, तोड़ना (समझौता आदि) 3. पथभ्रष्ट करना, बलात्कार करना, सतीत्व नष्ट करना 4. गाली देना, निन्दा करना, कलंकित करना—रघु० १२।४६ 5 अपमानी, अप्रतिष्ठा 6 विपरीत आलोचना, आक्षेप 7 निराकरण 8. दोष, अपराध, त्रुटि, पाप, जुर्म —नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् —भर्तृ० २।९३, हा हा धिक् परगृहवासदूषणम्—उत्तर० १।४०, मनु० २।२१३, हि० १९८, ११५, २।१८०, —कः एक राक्षस, रावण की सेना का एक नायक जिसे भगवान् राम ने मार गिराया था । सम०—अरिः राम का विशेषण,—आवह (वि०) कलंक में किसी को फँसाने वाला ।

दूषिः,—षी (स्त्री०) [दूष्+णिच्+इन्, दूषि+ङीष्] डाँस, आँख का कीचड़ ।

दूषिका [दूषि+कन्+टाप्] 1. लेखनी, चित्रकार की कूँची 2. एक प्रकार का चावल 3. डाँस, आँखों का कीचड़ ।

दूषित (वि०) [दूष्+णिच्—क्त] 1. भ्रष्ट, दूषित, बिगड़ा 2 चोटिल, अतिग्रस्त 3 अपहृत, हृतोत्साहित 4 कलंकित, बदनाम 5. मिथ्यादोषारोपित, बदनाम, निन्दित।

दूष्य (वि०) [दूष्+णिच्+यत्] 1. भ्रष्ट होने के योग्य 2. गर्हणीय, दण्डनीय, दूषणीय —व्यम् 1 मकान, राज 2. विष 3. कपास 4. पोशाक, वस्त्र 5. तम्बू —शि० १२।६५,—या हाथी का चमड़े का तंग ।

दृ (तुदा० आ०—दृियते, दृित,—इच्छा० दिदरिषते) (इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है—प्रायः आ उपसर्ग लग कर प्रयुक्त होता है) आदर करना, सम्मान करना, पूजा करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्रियते सदा —हि० प्र० ७, मुद्रा० ७।३, भट्टि० ६।५५ 2. रक्षा-वाली करना, मन लगाना (प्रायः —'न' के साथ) 3. अपने आप को अच्छी तरह लगाना, संलग्न करना,

ध्यान रखना—भूरि श्रुतं शास्त्रमाद्रियन्ते—मा० १। ५ 4 इच्छा करना।

दृंह् 1 (भ्वा० पर०—दृंहति, दृंहित) 1 पुष्ट करना, 2. समर्थन करना।

ii (भ्वा० आ०) 1. दृढ़ होना 2 विकसित होना या बढ़ना।

दृंहित (भू० क० कृ०) [दृंह्+क्त] 1 पुष्ट किया गया, समर्थित, 2 विकसित, वर्धित।

दृक्कण् [दृ+कक्] छिद्र, सूराख।

दृढ (वि०) [दृंह्+क्त] 1 स्थिर, दृढ़, मजबूत, अचल, अथक—भग० १५।३, हि० ३।६५, रघु० १३।७८ 2 ठोस, पिण्डाकार 3 सपुष्ट, स्थापित 4 स्थिर, धैर्यशाली—भग० ७।२८ 5 दृढ़ता पूर्वक बाँधा हुआ, कस कर बन्द किया हुआ 6 सुसंहत 7 कसा हुआ, घनिष्ठ, सघन 8 मजबूत, गहन, बड़ा, अत्यधिक, ताकतवर, कठोर, शक्तिशाली—तस्मा करिष्यामि दृढ़मनुतापम् कु० ३।८, रघु० ११।४६ 9 कड़ा 10 (धनुष की भाँति) झुकाने या तानने में कठिन 11 टिकाऊ 12 विश्वासपात्र 13 निश्चित, अचूक, —दम् 1 लोहा 2 गढ़, किला 3 अधिकता, बहुतायत, ऊँचा दर्जा,—दम् (अव्य०) 1 दृढ़तापूर्वक, कस कर 2 अत्यधिक, अत्यन्त, तेजी से 3 पूरी तरह से। सम०—अङ्ग (वि०) मजबूत अंगों वाला, हृष्टपुष्ट (गम्) हीरा—इषुधि (वि०) मजबूत तरकस रखने वाला, —काण्ड —ग्रन्थि. बांस, —ग्राहिन् (वि०) मजबूती से पकड़ने वाला अर्थात् हाथ धोकर काम के पीछे पड़ने वाला,—द्वारक. मगरमच्छ, —द्वार (वि०) बिलकुल सुरक्षित दरवाजों वाला,—धन्वन्, —धन्विन् (पु०) अच्छा धनुर्धारी,—निश्चय (वि०) 1 दृढ़ संकल्प वाला, अडिग, अटल 2 पुष्ट, —पोत, —फल. नारियल का पेड़, —प्रतिज्ञ (वि०) प्रण का पक्का, ज्ञान का धनी, सहमति पर निश्चल, —प्ररोह. गूलर का पेड़,—प्रहारिन् (वि०) 1 कड़ा प्रहार करने वाला 2 कस कर मारने वाला, अचूक लक्ष्यवेध करने वाला,—भक्ति (वि०) निष्ठावान्, श्रद्धालु,—मति (वि०) दृढ़संकल्प, स्थिरबुद्धि, अडिग, —मुष्टि (वि०) बन्दमुट्ठी वाला, कृपण, कंजूस, (ष्टिः) तलवार,—मूल नारियल का पेड़,—रोमन् (पु०) जंगली सूअर, —वैरिन् (पु०) निर्दय शत्रु, निष्करुण दुश्मन,—व्रत (वि०) 1 धर्म साधना में अटल 2 अडिग भक्त 3 धैर्यवान्, आग्रही,—सन्धि (वि०) 1 कस कर जुड़ा हुआ, सघनता पूर्वक मिला हुआ 2 सघन, सहत 3 सटा हुआ,—सौहृद (वि०) अटल मित्रता वाला।

दृतिः (पु० स्त्री०) [दृ+क्ति, ह्रस्व] मशक,—मनु० २। ९९, याज्ञ० ३।२६८ 2. मछली 3. खाल, चमड़ा 4 धौंकनी। सम०—हरिः कुत्ता।

दृप्तः (स्त्री०) [दृप्+क्त] साँप, सर्प।

दृप्तभुः [दृप्+क्त नि०] 1 इन्द्र का वज्र 2 सूर्य 3. राजा यम, मृत्यु का देवता, अन्तक।

दृप् 1 (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—दर्पति, दर्पयति—ते) प्रकाशित करना, प्रज्वलित करना, सुलगाना।

ii (दिवा० पर०—दृप्यति, दृप्त) 1 घमण्ड करना, अहंकार करना, ढींग होना,—स किल नाममना दृप्यति —उत्तर०, दृप्यद्दानवदूषमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदाम् —गीत० १ 2 अत्यन्त प्रसन्न होना, 3 असभ्य या दुर्दान्त होना।

दृप्त (वि०) [दृप्+क्त] 1 घमण्डी, अहंकारी 2 मदोन्मत्त असभ्य, पागल।

दृप्र (वि०) [दृप्+रक्] घमण्डी, अहंकारी, बलवान् शक्तिशाली।

दृश् (भ्वा० पर०—पश्यति, दृष्ट) 1 देखना, नजर डालना अवलोकन करना, समीक्षा करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना—दृश्यसि भ्रातृजायाम् —वेणी० १।१०, १९, रघु० ३।४२ 2 निरीक्षण करना, सम्मान करना, विचार करना—आत्मवत्सर्वभूतेषु य पश्यति स पण्डित —चाण० ५ 3 दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, दर्शनार्थ जाना—प्रत्युद्ययौ मुनिं द्रष्टुं ब्रह्माणमिव वासव —रामा० 4 मन से दृष्टिगोचर करना, सीखना, जानना, समझना—मनु० १।११०, १२।२३ 5 निरीक्षण करना, खोज करना 6 ढूंढना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, निश्चय करना—याज्ञ० १।३२७, २। ३०५ 7 अन्तर्ज्ञान की दिव्य दृष्टि से देखना—ऋषिर्दर्शनात्स्तोमान् ददर्श—भि० 8 विवश होकर देखते रहना—कर्मवा० दृश्यते 1 दिखलाई देना, दृष्टिगोचर होना, दर्शनीय होना, प्रकट होना—तव तच्चारु वपुर्न दृश्यते—कु० ४।११ ३, रघु० ३।४०, भट्टि० ३।१९, वेणी० ११२ 2 प्रतीत होना, दृश्यमान होना, दिखाई देना, मालूम होना—रघु० ३।३४ 3 मिलना, दिखाई देना, घटित होना (पुस्तक आदि में)—द्वितीयाक्षेत्रितान्तेषु तनोऽन्यत्रापि दृश्यते—सिद्धा०—इति प्रयोगो भाष्ये दृश्यते 4 खयाल किया जाना, माना जाना,—सामान्यप्रतिषेधेऽपि दारेषु दृश्या स्त्रिया—श० ४।१६, प्रेर०—दर्शयति—ते 1 किसी को (कर्म०, सम्प्र० या सम्ब०) कोई चीज (कर्म०) देखने के लिए प्रेरित करना, दिखलाना, संकेत करना—दर्शय त चौरसिंहम् —पंच० १, दर्शयति भक्तान् हरिम्—सिद्धा० प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्सती—रघु० १२।६४, १। ४७, १३।२४, मनु० ४।५७ 2 सिद्ध करना, करके दिखलाना,—भट्टि० १५।१२ 3. दिखलाना, प्रदर्शन

करना, दर्शनीय बनना—सदेव मे दर्शय देव रूपम् —भग० ११।४५ 4 (न्यायालय आदि में) प्रस्तुत करना—मनु० ८।१५८ 5 (साक्षी के रूप में) उपस्थित करना—अथ श्रुति दर्शयति 6 (आ०) अपने आप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु दिखलाना भवो भवान् दर्शयते - सिद्धा० (अर्थात् स्वयमेव), त्वा गृहेऽपि वनिता कथमास्य ह्रीनिमीलि खलु दर्शयिताहे—नै० ५।७१, स सन्तत दर्शयते गतस्मय कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् - कि० १।१०, इच्छा०—दिदृक्षते देखने की इच्छा करना, अनु—भावदृश्य के रूप मे देखना—प्रेर० 1 दिखलाना, प्रदर्शन करना 2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, आ—, प्रेर० दिखलाना, सकेत करना—उत्कलादर्शितपथ कलिगाभिमुखो ययौ—रघु० ४।३८,उद्—, प्रत्याशा करना, मुँह ताकना, आगे का देखना, मनोगत भाव देखना—उत्पश्यत सिंहनिपातमुग्रम - रघु० २।६०, उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासो कालक्षेप ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते—मेघ० २२, उप—, देखना, अवलोकन करना—प्रेर० सामने रखना, समाचार देना, परिचित करना—राज पुरो मामुपदर्श्य—शि० ३, जयविद्भिर्नवे राज्ञि सदस्यन्वोपदर्शितम् - रघु० ४।१०, नि—, प्रेर० 1 दिखलाना, सकेत करना—रघु० ६।२१ 2 सिद्ध करना, करके दिखलाना 3 विचार करना, बातचीत करना, चर्चा करना (जैसे पुस्तकादिक में) 4 अध्यापन करना 5 उदाहरण देकर समझाना दे० निदर्शना, प्र—, प्रेर० 1 दिखलाना, सकेत करना खोज लेना, प्रदर्शित करना 2 सिद्ध करना, करके दिखलाना, सम्—, 1 देखना, अवलोकन करना—भट्टि० १६।९ 2 भलीभाँति देखना, समीक्षा करना—प्रेर० दिखलाना, प्रदर्शित करना, खोज निकालना—आत्मान मृतवत्सदर्श्य - शि० १, भट्टि० ४।३३, मालवि० ४।९।

दृश् (वि०) [दृश्+क्विप्] (समासान्त मे) 1 देखने वाला, अधीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा करने वाला 2 विवेचन करने वाला, जानने वाला 3 (के समान) दिखलाई देने वाला, प्रतीत होने वाला (स्त्री०) 1. देखना, समीक्षा, दृष्टिगोचर करना, 2 आँख, दृष्टि—सदर्घ वृषासुदयतारकाम् रघु० ११।६९ 3 ज्ञान 4 'दो' की सख्या 5 ग्रहदशा। सम० —अभ्यक्षः सूर्य,—कर्षः साँप,—क्षयः दृष्टि की क्षीणता या हानि, धुधला दिखाई देना,—गोचर दृष्टि-परास, —जलम् आँसू,—क्षेपः उछा पराकोटि की दूरी की लम्बरेखा,—पथ दृष्टिपरास,—पात दृष्टि, झलक, —प्रिया सौन्दर्य, प्रभा,—भक्तिः (स्त्री०) प्रेमदृष्टि, अनुरागभरी चितवन,—लम्बनम् ऊर्ध्वाधर दिग्भेद, —विषः साँप,—सृतिः सर्प, साँप।

दृषद् (स्त्री०) [दृषत्, पृषो०] पत्थर, दे० दृषत्।

दृशा [दृश्+टाप्] आँख। सम०—आकाशवत्—कमल, —उपलम् श्वेत कमल।

दृश्यतः [दृश्+आनच्] 1 आध्यात्मिक गुरु 2. ब्राह्मण 3 लोकपाल, —अभ्र प्रकाश, उजाला।

दृशिः,—शी (स्त्री०) [दृश्+इन्, दृशि+ङीप्] 1 आँख 2 ज्ञान।

दृश्य (स० कृ०) 1 देखे जाने योग्य, दर्शनीय 2 देखने के 3 सुन्दर, दृष्टिसुखद, प्रिय—रघु० ६।३१, कु० ७।६४, —अम् दिखाई देने वाला पदार्थ—मालवि० १।९।

दृश्वन् (वि०) [दृश्+क्वनिप्] (समासान्त में) 1 देखने वाला, दृष्टिगोचर करने वाला 2 (आल०) परिचित, जानकार जैसा कि 'श्रुतिपारदृश्वा— रघु० ५।२४ तथा विज्ञाना पारदृश्वन—१।२३ में।

दृषद् (स्त्री०) [दृ+अदि, षुक्, ह्रस्वश्च] 1 चट्टान, बड़ा पत्थर—मेघ० ५५, रघु० ४।७४, भर्तृ० १।३८ 2 चक्की का पत्थर, शिला (जिस पर मसाला आदि पीसा जाय)।—उपलः मसाला आदि पीसने के लिए सिल—(दृषद्विलावकः चक्किकर्ता से लिया जाने वाला कर)।

दृषद्वत् (वि०) [दृषद्+वत्] पथरीला, चट्टान से बना हुआ,—ती एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है। तु० मनु० २।१७।

दृष्ट (भू० क० कृ०) [दृश्+क्त] 1 देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित निहारा हुआ 2. दर्शनीय, पर्यवेक्षणीय 3 माना गया, खयाल किया गया 4 घटित होने वाला, मिला हुआ 5 प्रकट होने वाला व्यक्त 6 जाना हुआ, मालूम किया हुआ 7 निर्धारित, निर्णीत, निश्चित 8 वध 9 नियत किया गया—दे० दृश्,—टम् डाकुओं से डर। सम०—अन्त,—तत्व 1 उदाहरण, निदर्शन, दृष्टांत-कथा—पूर्णचन्द्रोदयाकाक्षी दृष्टान्तोऽत्र महार्णव —शि० २।३१ 2 (अल० शा० में) एक अलंकार जिसमें कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय (उपमा और प्रतिवस्तूपमा से भिन्न - दे० काव्य० १०, और रस०) 3 शास्त्र या विज्ञान 4 मन्यु (तु० दृष्टोत),—अर्थ (वि०) 1 जिसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट तथा व्यक्त हो 2 व्यावहारिक,—कष्ट,—दुःख जिसने मुसीबत झेली हो, कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो गया हो,—कूटम् पहेली, गूढ प्रश्न,—दोष (वि०) 1 जिसमें दोष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा गया हो 2 दुर्व्यसनी 3 जिसका भंडाफोड़ हो गया हो, जिसका पता लगा लिया गया हो,—प्रत्यय (वि०) 1. विश्वास रखने वाला 2. विश्वस्त,—रजस् (स्त्री०)

वह कन्या जो रजस्वला हो गई हो,—अतिकर (वि०) 1 जिसने कष्ट और मुसीबतें झेली हों 2 जो आने वाले अनिष्ट को पहले ही से भांप लेता है।

दृष्टि (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1 देखना, समीक्षण 2 मन की आँख से देखना 3 जानना, ज्ञान 4 आँख, देखने की शक्ति, नजर -केनेदानी दृष्ट विलोभयामि —विक्रम० २, बल-पाक्षा दृष्टि स्पृशसि—श० १।१४, —दृष्टिस्तूर्णीकृतजगत्त्रयमत्तस्मार —उत्तर० ६।१९ रघु० २।८ श० ४।२, देव दृष्टिप्रसाद कुरु—हि० १ 5 नजर, विवेचन 6 विचार, भाव क्षुद्रदृष्टिरेषा —का० १७३, एता दृष्टिमवष्टभ्य—भग० १६।९, 7 विचार, आदर 8 बुद्धि, बुद्धिमत्ता, ज्ञान। सम०—कृत,—कृतम् स्थलपद्म, कुमुद,—क्षेप निगाह डालना, अवलोकन करना,—गुप्त, तीर का निशाना, बौंदमारी, लक्ष्य,—गोचर (वि०) दृष्टि-परास के अन्तर्गत जो दिखाई दे, दृश्य,—पथ दृष्टि-परास, पास 1 निहारना, निगाह डालना—मार्गे मृगस्त्रेक्षिणि दृष्टिपातं कुरुष्व —रघु० १३।१८, भर्तृ० ३।११, ९४, ३।६६, 2 देखने की क्रिया, आँख का कार्य—रज कणैर्विक्षिप्तदृष्टिपाता —कु० ३।३१, (मल्लि० 'पात' का अर्थ 'प्रभा' बताते हैं जो हमारी समझ में अनावश्यक है), पूत (वि०) दृष्टिमात्र से पवित्र किया हुआ अर्थात् देख लिया कि किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं है,—दृष्टिपूत न्यसेत्पादम् —मनु० ६।४६, —बन्धु, जुगनू,—विक्षेप, कनखियों से देखना, कटाक्ष, तिरछी नजर, —विद्या नेत्र-विज्ञान, —विभ्रम अनुराग भरी दृष्टि, हाव-भाव से युक्त नजर, —विष साँप।

दृह, दृंह् (स्वा० पर०—दर्हति, दृहति) 1 स्थिर या दृढ़ होना 2 विकसित होना, बढ़ाना 3 समृद्ध होना 4 कसना।

दृ (दिवा० क्रया० पर०—दीर्यति, दृणाति, दीर्णं) 1 फट जाना, टूट जाना, टुकड़े २ होना 2 फाड़ना, चीरना, विभक्त करना, विदीर्ण करना, खण्ड २ करना, टुकड़े २ करना। कर्मवा०—दीर्यते 1 फटना, टूटना, खण्ड २ होना,—कथमेव प्रलपता व सहस्रधा न दीर्णमभूत्तया हृदा—रघु० ३ 2 अलग करना, प्रेर०—दा—दारयति—ते 1 टुकड़े २ करना, चीर डालना, तोड़कर विभक्त करना 2 तितर-बितर करना, बखेरना, वि, टुकड़े २ करना, फाड़ डालना, विभक्त करना, काट कर टुकड़े २ करना—नेन्द्रि किल नर्म-स्तस्या विदार स्तनौ द्विज —रघु० १२।२२, न विदीर्ये कठिना खलु स्त्रिय —कु० ४।५, रघु० १४।३३ 2 फाड़ना (आल०)—चित्त विदारयति कस्य न कोविदार —मृच्छ० ३।६, भग० १।१९, (अव, आ तथा प्र आदि उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ नहीं बदलता है)।

दे (स्वा० आ० दयते, दात —इच्छा० दित्सते) रक्षा करना, पालना, पोसना।

देदीप्यमान (वि०) [दीप्+यङ+शानच्] अत्यत चमक ने वाला, ज्योतिष्मान्, जगमगाता हुआ।

देय (वि०) [दा+यत्] 1 दिये जाने के लिए, उपहृत किये जाने के लिए -रघु० २।१६ 2 दिये जाने के योग्य, भेंट के लिए उपयुक्त 3 वस्तु जो वापिस करने के लिए है, विभाविनैकदशेत देय मद्यदभियुज्यते—विक्रमांक० ४।१७, मनु० ८।१३०, १४५।

देव् (स्वा० आ०—देवते) 1 क्रीड़ा करना, खेलना, जुआ खेलना 2 विलाप करना 3 चमकना, परि—, विलाप करना, शोक मनाना।

देव (वि०) (स्त्री० —वी) [दिव्+अच्] दिव्य, स्वर्गीय —भग० ९।११, मनु० १२।११७,—व 1 देव, देवता —एको देव केशवो वा शिवो वा भर्तृ० ३।१२० 2 वर्षा का देवता, इन्द्र का विशेषण यथा 'त्रादश वर्षाणि देवो न ववर्ष' में 3 दिव्य पुरुष, ब्राह्मण 4. राजा शासक, जैसाकि 'मनुष्यदेव' में 5 ब्राह्मणों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि—जैसा कि 'गोविन्द देव, पुरुषोत्तमदेव' में 6 (नाटकों में) राजा को सबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि —ततश्च देव—वेणी० ४, यथाज्ञापयति देव आदि 7 (समासान्त में) अपने देवता के रूप में—यथा मातृ°, पितृ°। सम०—अंश भगवान् का अशावतार —अगार,—गृह मन्दिर,—अगना स्वर्गीय देवी, अप्सरा, —अतिदेव, —अधिदेव 1 उच्चतम देवता 2 शिव का विशेषण,—अधिप इन्द्र का विशेषण,—अन्नम् (नपु०) —अन्नम् 1. देवताओं का आहार, दिव्य भोजन, अमृत 2 वह भोजन जो पहले भगवान् की मूर्ति के आगे प्रस्तुत किया गया है -दे० मनु० ५।७ तथा इस पर कुल्लू० भाष्य,—अभीष्ट (वि०) 1 देवताओं का प्रिय 2 देवता पर चढ़ाया हुआ, (—ष्टा) तावूली, पान-सुपारी,—अरण्यम् बाग —रघु० १०।८०, अरि राक्षस, —अर्चनम्, —ना देवपूजा,—अवसथ मन्दिर, —अश्व, उच्चैश्रवा का विशेषण, इन्द्र का घोड़ा, —आकीर्ण, देवोद्यान, नन्दन वन,—आजीव, —आजीविन् (पु०) 1. भगवान् की मूर्ति का सेवक 2 एक नीचकोटि का ब्राह्मण जो मूर्ति की सेवा द्वारा, तथा मूर्ति पर आये हुए चढ़ावे से अपना जीवन-निर्वाह करता है,—आयतन् (पु०) सलर का वृक्ष—,आयतनम् मन्दिर—मनु० ४।४६, आयुधम् 1 दिव्य हथियार 2 इन्द्रधनुष,—आलय 1 स्वर्ग 2 मन्दिर,—आवास 1 स्वर्ग 2 अश्वत्थवृक्ष 3. मन्दिर 4 सुमेरु पहाड़, —आहार अमृत, पीयूष, —इज्य (वि०) (कर्तृ० ष० व० देवेट् ३) देवताओं की पूजा करने वाला इज्य

देवगुरु बृहस्पति का विशेषण,—ईशः,—ईशः 1. इन्द्र का विशेषण 2 शिव का विशेषण,—उद्यानम् 1. दिव्य बाग 2 नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग, —ऋषि (देवर्षि) 1. सन्त जिसने देवत्व प्राप्त कर लिया है, दिव्य ऋषि, यथा, अत्रि, भृगु, पुलस्त्य, अंगिरस आदि—एवं वादिनि देवर्षौ —कु० ६।८४ (अर्थात् अंगिरस्) 2 नारद का विशेषण—भग० १०।१३, २६, —ओकस् (नपु०) सुमेरु पर्वत,—कन्या स्वर्गीय देवी, अप्सरा,—कर्मन् (नपु०) -कार्यम् 1. धार्मिक कृत्य या संस्कार 2 देवों की पूजा,—काष्ठम् देवदारु का वृक्ष,- कुण्डम् प्राकृतिक झरना,—कुलम् 1. मन्दिर 2. देवों का समूह, -कुल्या स्वर्गीय गंगा,—कुसुमम् लौंग, —खातम्,—खातकम् 1 पर्वतों में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2 एक प्राकृतिक तालाब या जलाशय —मनु० ४।२०३ 3 मन्दिर का निकटवर्ती तालाब, °खिलम् एक गुफा, कन्दरा, -गण. देवों की एक श्रेणी,—गणिका अप्सरा, गर्जनम् बादल की गड़गड़ाहट,—गायन. स्वर्गीय गायक गन्धर्व,—गिरिः एक पहाड़ का नाम—मेघ० ४२ गुरु 1 (देवों के पिता) कश्यप का विशेषण 2 (देवों के गुरु) बृहस्पति का विशेषण,—गृही सरस्वती या उसके किनारे पर स्थित स्थान का विशेषण, -गृहम् 1 मन्दिर 2 राज-प्रासाद, —चर्या देवों की पूजा या सेवा, -चिकित्सकौ (द्वि० व०) देवों के वैद्य अश्विनीकुमार, —छन्दः १०० लड़ की मोतियों की माला,—तरु 1 गूलर का वृक्ष 2 स्वर्गीय वृक्षों (मंदार, पारिजात, संतान कल्प और हरिचंदन) में से एक, -ताड 1 आग 2 राहु का विशेषण,—दत्त 1 अर्जुन के शंख का नाम —भग० १।१५ 2 कोई व्यक्ति (अनिश्चित रूप से किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्त पचति, पीनो देवदत्तो दिवा न भुंक्ते— आदि, दारु (पु०, नपु०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५४, रघु० २।३६, —दास. मन्दिर का सेवक (-सी) 1. मन्दिर या देवों की सेविका 2. वेश्या (जिसे मन्दिर में नाचने के लिए लगाया गया हो),—दीप आंख, दूत. दिव्य संदेशवाहक, देवदूत,—द्रुद्रुमः 1. दिव्य वृक्ष 2 लाल फूलों वाला तुलसी का पौधा,—देवः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2 शिव—कु० १।५२ 3 विष्णु, -द्रोणी देवसभा का जलूस,—धर्म धार्मिक कर्तव्य या फर्ज, -नदी 1 गंगा 2 कोई भी पावन नदी—मनु० २।१७, नन्दिन् (पु०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम, —नागरी एक लिपि का नाम जिसमें प्रायः संस्कृत भाषा लिखी जाती है, -निकाय. देवावास, स्वर्ग, -निन्दक देवताओं की निन्दा करने वाला, नास्तिक, निर्मित (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक, —पति. इन्द्र का विशेषण,—पथः 1. स्वर्गीय मार्ग आकाश, अन्तरिक्ष 2 छायापथ,—पशुः देवता के नाम पर स्वच्छंद छोड़ा हुआ पशु,—पुर,—पुरी (स्त्री०) अमरावती का विशेषण, इन्द्र की नगरी,—पूज्यः बृहस्पति का विशेषण,—प्रतिकृतिः (स्त्री०) - प्रतिमा देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा,—प्लवः प्रहादिसबधी जिज्ञासा, भविष्य सम्बन्धी प्रश्न, भविष्य की बातें बतलाना, —प्रियः देवों को प्रिय, शिव का विशेषण (देवानांप्रियः) एक अनियमित समास, इसका अर्थ है 1 बकरा 2 मूर्ख (पशु की भांति जड़—जैसाकि 'सेज्यतान्पर्यज्ञा देवानां प्रिया' काव्य०),—बलिः देवताओं को दी जाने वाली आहुति,—ब्रह्मन् (पु०) नारद का विशेषण,—ब्राह्मण 1 वह ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मन्दिर से प्राप्त आय से कर लेता है, 2 आदरणीय ब्राह्मण,—भवनम् 1 स्वर्ग 2 मन्दिर 3 गूलर का वृक्ष,—भूमिः (स्त्री०) स्वर्ग,—भूति (स्त्री०) गंगा का विशेषण,—भूयम् देवत्व, दिव्यप्रकृति,—भृत् (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण, —मणिः 1. विष्णु की मणि, कौस्तुभ 2 सूर्य,—मातृक (वि०) वृष्टि के देवता तथा बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माता हो, जिसे केवल वर्षा का जल ही लभ्य हो, जो सिंचाई को छोड़कर केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देश) जो और प्रकार की जलव्यवस्था से वंचित हो—देवौ नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालित, स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्—अमर०, तु० —चिरन्नति क्षेममदेवमातृका (अर्थात् नदीमातृका) चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते —कि० १।१७,—मालक विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं,—मुनिः दिव्य ऋषि,—यजनम् यज्ञभूमि, यज्ञस्थली—देवयजनसंभवे सीते—उत्तर० ४,—याजिः (वि०) देवताओं के आहुति देने वाला,—यज्ञः वह हवन जिसमें वरिष्ठ देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती है, (गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञों में से एक—मनु० ३।८१, ८५—दे० पंचयज्ञ),—यात्रा किसी देवप्रतिमा का जलूस, या सवारी निकालने का उत्सव,—यानम्, —रथः दिव्यरथ—,युगम् चार युगों में से एक, कृतयुग, सतयुग,—योनिः अतिमानव प्राणी, उपदेव 2 दिव्य उत्पत्ति वाला,—योषा अप्सरा -रहस्यम् देवी रज या रहस्य—राज,—राज इन्द्र का विशेषण,-लता नवमल्लिका लता, नेवारी—लिङ्गम् देवता की मूर्ति या प्रतिमा, —लोकः स्वर्गलोक, दिव्य-लोक मनु० ४।१८२, —वल्लभम् आग का विशेषण,—वर्त्मन् (नपु०) आकाश, —वर्धकिः, शिल्पिन् (पु०) विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्पी —वाणी दिव्य वाणी, आकाशवाणी, - वाहन अग्नि का विशेषण,—व्रतम् धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक व्रत (त) 1 भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—शत्रुः राक्षस,—शुनी देवों की कुतिया सरमा

का विशेषण,—शेषम् देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बचा हुआ अंश,—श्रुतः 1 विष्णु का विशेषण 2. नारद का विशेषण 3. गायन शास्त्र 4. देव, —सभा 1 देवताओं की सभा, सुधर्मा 2. जूए का घर, —सम्य. 1. जुआरी 2. जूएघरों में प्रायः जाने वाला 3 देव-सेवक,—सायुज्यम् किसी देवता से मिलकर एक हो जाना, देवसयोजन, देवत्वप्राप्ति, -सेना 1 देवों की सेना 2 स्कन्द की पत्नी,—स्कन्देन साकादिव देवसेनाम्—रघु० ७।१ (मल्लि०—देवसेना=स्कन्दपत्नी—सभवत यहाँ देवो की सेना का ही मूर्त रूप में वर्णन है) °पति कार्तिकेय का विशेषण, —स्वम् देवो की सपत्ति, (धर्म-कार्यों के निमित्त) देवार्पित सपत्ति —यद्धन यज्ञशीलाना देवस्वत द्विदुर्बुधा -मनु० ११।२०, २६,—हविस् (नपु०) बलिपशु ।

देवकी [देवक+ङीष्] देवककी एक पुत्री, वसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता। सम० —नन्दन —पुत्र · -सुत श्रीकृष्ण के विशेषण ।

देवट [दिव्+अटन्] कारीगर, दस्तकार ।

देवता [देव+तल्+टाप्] 1 दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति, देवत्व 2 देव, सुर—कु० १।१ 3 देव की प्रतिमा 4 मूर्ति 5 ज्ञान इन्द्रिय। सम०- अगार, रम्, -आगार', —रम्, - गृहम् मन्दिर, अधिप इन्द्र का विशेषण,—अभ्यर्चनम् देव पूजन,—आयतनम्,—आलय, —केतनम् (नपु०) मन्दिर देवालय, —प्रतिमा देवमूर्ति प्रतिमा स्नानम् देवमूर्ति का स्नान ।

देवताध्यक्ष (वि०) [देवम् अर्चति पूजयति—देव+अर्च्+क्विन् अद्रि आदेश] देवोपासक ।

देवर (पु०) [दिव+अनि] पति का छोटा भाई, देवर ।

देवन [दिव्+ल्युट्] पासा,—नम् 1 सौन्दर्य, दीप्ति, कान्ति 2 जूआ खेलना, पासे का खेल 3 खेल, क्रीडा, विनोद 4 प्रमोद-स्थल, प्रमोद-वाटिका 5 कमल 6 स्पर्धा, आगे बढ जाने की इच्छा 7 मामला, व्यव-साय 8 प्रशसा, ना जूआ खेलना, पासे का खेल ।

देवयानी (स्त्री०) असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री [एक बार देवयानी अपने पिता के शिष्य कच पर मोहित हो गई परन्तु कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया। देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि वह एक क्षत्रिय की पत्नी बनेगी। दे० 'कच'। एक बार देवयानी दैत्यो के राजा वृषपर्वा की पुत्री अपनी सखी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया। हवा से उनके वस्त्र बदल गये, जब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहने तो दोनो आपस में झगडने लगी, यहाँ तक कि क्रोध मे आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के मुँह पर तमाचा मारा और उसे एक कूएं में फेंक दिया। सौभाग्य से ययाति ने उसे कुएं से निकाल कर उसके प्राणो की रक्षा की। उसके पश्चात् देवयानी के पिता की स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया, और शर्मिष्ठा को देवयानी के प्रति अपने दुर्व्यव-हार के कारण उसकी दासी बनना पडा। देवयानी ने ययाति के साथ कई वर्ष सुखपूर्वक बिताये, यदु और तुर्वसु नामक उसके दो पुत्र हुए। उसके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया। इस बात से दुःखी होकर देवयानी ने अपने पति को छोड दिया तथा अपने पिता के घर चली आई। शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के कहने पर ययाति को बुढ़ापे की अशक्तता का शाप दिया। दे० 'ययाति']।

देवर:, देवृ (पु०) [देव्+अर, दिव्+ऋ] पति का भाई (चाहे छोटा हो या बडा) -मनु० ३।५५, ९।५९, याज्ञ० १।६८ ।

देवल: [देव+ला+क] देवमूर्ति का सेवक, एक नीच कोटि का ब्राह्मण जिसका अपना निर्वाह देव-प्रतिमा पर प्राप्त चढावे के ऊपर निर्भर है ।

देवलात् (अव्य०) [देव+लाति] देवताओं की प्रकृति के समान, °भु बदल कर देवता बनना ।

देविक (वि०) (स्त्री० की), देविल (वि०) [देव+ठन्, दिव्+इलच्] 1 दिव्य, देवगुणो से युक्त 2 देव से प्राप्त ।

देवी [दिव्+अच्+ङीष्] 1 देवता, देवी 2 दुर्गा 3 सर-स्वती 4 रानी—विशेषत राज्याभिषिक्त रानी, (अग्र-महिषी—जिसने राज्याभिषेक के अवसर पर पति के साथ सब राज-सस्कारों में पत्नी के नाते भाग लिया हो) —प्रेष्यभावेन नामेय देवी शब्दमात्रा मनौ, स्नानी-यवस्त्रक्रियया परोक्षं व्यापार्यते—मालवि० ५।१० देवीभावे गमिता परिवारपदं कथ भजन्येषा—काव्य० १० 5 सम्मानसूचक उपाधि जो सर्वश्रेष्ठ महिलाओं के साथ प्रयुक्त होती है ।

देश [दिश्+अच] 1 स्थान, जगह—देश कोनु जलावसेक-शिथिल—मृच्छ० ३।१२ इसी प्रकार 'स्कन्धदेशे' —श० १।१९, द्वारदेश, कण्ठदेश आदि 2 प्रदेश, मुल्क, प्रान्त —य देश श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापा-र्जितम्—हि० १।१७१ 3 विभाग, भाग, पक्ष, अश (किसी 'पूर्ण' के) जैसा कि एक देश, एकदेशीय 4 सस्था, अभ्यादेश। सम०—अतिथि (पु०) विदेशी, अन्तरम् दूसरा देश, विदेशी भाग मनु० ५।३८, —अन्तरिन् (पु०) विदेशी,—आचार, - धर्म स्थानीय कानून या प्रथा, किसी देश के रीति-रिवाज· मनु० १।१८८, कालज्ञ (वि०) उपयुक्त स्थान और समय को जानने वाला—ज, जात (वि०) 1 स्वदेशीय, स्वदेशोत्पन्न 2 ठीक देश में उत्पन्न 3 असली, खरा,

निर्मलवर्णोद्भव,—भाषा किसी देश की बोली,—रूपम् औचित्य, उपयुक्तता व्यवहार स्थानीय, प्रचलन, देशविदेश की प्रथा।

देशक [दिश्+ण्वुल्] 1 शासक, राज्यपाल 2 शिक्षक, गुरु 3 पथ-प्रदर्शक।

देशना [दिश्+णिच्+युच्+टाप्] निर्देशन, अनुदेश।

देशिक (वि०) [देश+ठन्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, देशी—क 1, आध्यात्मिक गुरु 2 यात्री 3 पथ-दर्शक 4 स्थानों से परिचित।

देशिनी [दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली।

देशी [देश+ङीष्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का एक भेद—दे० काव्या० १।३३।

देशीय (वि०) [देश+छ] 1 किसी प्रान्त से सम्बन्ध रखने वाला, प्रान्तीय 2 स्वदेशीय, स्थानीय 3 किसी देश का निवासी (समासान्त में) जैसा कि मगधदेशीय, नदेशीय, वंगदेशीय आदि में 4 अदूर, लगभग, सीमान्तवर्ती (शब्दों के अन्त में प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) —अष्टादशवर्षदेशीया कन्या दृश्यते—का० १३१, लगभग १८ वर्ष की लड़की (जिसकी आयु सीमा १८ हो) रघु० १८।३९, इसी प्रकार 'पञ्चदेशीय' आदि।

देश्य (वि०) [दिश्+ष्यत्] 1 जिसकी ओर संकेत करना हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2 स्थानीय, प्रान्तीय 3 देशी, स्वदेशी 4 असली, खरा, निर्मल वंशोद्भव 5 अदूर, लगभग—दे० ऊपर 'देशीय',—श्य 1 चक्षुर्दीद गवाह, अभियोक्ता दिशेद्देश्यम् मनु० ८।५२, ५३, किसी देशविशेष का निवासी,—श्यम् प्रश्नोक्ति, तर्कोक्ति, पूर्वपक्ष।

देह—हम् [दिह्+घञ्] शरीर, देह दहन्ति दहना इव मन्यवादा—भामि० १।१०४, दे० नी० समस्त शब्द। सम०—अन्तरम् अन्य (दूसरे का) शरीर, °प्राप्ति (स्त्री०) दूसरा जन्म लेना, -आत्मवाद. भौतिकता, चार्वाकों के सिद्धान्त,—आवरणम् कवच, पोशाक,—ईश्वर आत्मा, जीव, उद्भव,—उद्भूत (वि०) शरीरज, सहज, जन्मजात कर्तृ (पु०) 1 सूर्य 2 परमात्मा 3 पिता, कोष 1 शरीर का आवरण 2 घर, बाड़ 3 त्वचा, चमड़ा क्षय 1 शरीर का ह्रास 2 रोग, बीमारी, -गत (वि०) शरीर में प्राप्त, मूर्तरूप,—ज पुत्र,—जा पुत्री,—त्याग 1 मृत्यु 2 इच्छामृत्यु, शरीर को छोड़ना,—तीर्थं तीरव्यतिकरभव जह्नुकन्यासरय्वो-र्देहन्यासात्—रघु० ८।९५, -द पारा,—दोष आँख, -धर्म शरीर के अंगों की क्रिया,—धारणम् हड्डी, —धारणम्, जीना, जीवन,—धिः बाहु, कंधा,—धृक् (पु०) वायु, हवा,—बद्ध (वि०) मूर्त, सशरीर—रघु० ११।३५,—भाज् (पु०) शरीरधारी, जीवधारी, विशेषतः मनुष्य,—भृत् (पु०) 1 जीव, आत्मा 2 सूर्य, -भृत् (पु०) जीवधारी, मनुष्य—धिग्मां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१, भग० ८।४, १४।१४ 2 शिव का विशेषण 3 जीवन, जीवनशक्ति,—मात्रा 1 मरण, मृत्यु 2 पोषक पदार्थ, आहार,—लक्षणम् मस्सा, त्वचा के ऊपर काला तिल, -वायुः पाँच जीवनवायु में से एक, प्राणवायु,—सार मज्जा,—स्वभावः शरीर का स्वभाव या गुण।

देहभर (वि०) [देह+भृ+खच्, मुम्] पेटू, उदरंभरि।

देहवत् [दह+मतुप्] शरीरधारी, (पु०) 1 मनुष्य 2 जीव।

देहला [देह+ला+क] मदिरा, शराब।

देहलि, -ली (स्त्री०) [देह+ला+कि, देहलि+ङीष्] दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाँघ कर घर में घुसते निकलते हैं,—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः—मेघ० ८७, मृच्छ० १।९। सम०—दीपः देहलीपर रक्खा हुआ दीपक, °न्याय, दे० न्याय के अन्तर्गत।

देहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [देह+इनि] शरीरधारी, शरीरी (पु०) 1. जीवधारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य —त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—कु० ४।१०, शि० २।४६ भग० २।१३, १७।२, मनु० १।३० ५।४१ 2 आत्मा, जीव (शरीर में प्रतिष्ठापित)—नवा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही —भग० २।२२, १३, ५।१४,—नी पृथ्वी।

दे (स्वा०—पर० दायति, दात) 1 पवित्र करना, शुद्ध करना 2 पवित्र होना, 3 रक्षा करना, अव—, 1 धवल करना, उज्ज्वल करना 2 पवित्र करना।

दैतेय [दिति+ढक्] दिति का पुत्र, राक्षस, दैत्य। सम०—इज्य, -गुरु,—पुरोधस् (पु०)—पूज्य. असुरों के गुरु शुक्राचार्य के विशेषण,—निषूदन विष्णु का विशेषण,—मातृ (स्त्री०) दिति दैत्यों की माता,—मेदजा पृथ्वी।

दैत्य [दिति+ण्य] दे० 'दैतेय'। सम०—अरि. 1 देवता 2 विष्णु का विशेषण, ईश 1 विष्णु का विशेषण 2 वायु,—पति हिरण्यकशिपु का विशेषण।

दैत्या [दैत्य+टाप्] 1 औषधि 2 मदिरा।

दैन (स्त्री—नी), **दैनंदिन** (स्त्री०—नी), **दैनिक** (स्त्री० -की) (वि०) [दिन+अण्, दिन दिन भव दिनदिन+अण्, दिन+ठञ्] आह्निक, प्रति दिन का, —भामि० १।१०३।

दैन्यम् -न्यम् [दीन+अण्, ष्यञ् वा] 1 गरीबी, दरिद्रावस्था, दयनीय अवस्था, दुर्दशा—दरिद्राणां दैन्यम् —गंगा० २, इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति —मेघ० ७४ 2 कष्ट, खेद, विषाद, शोक, उत्साहहीनता 3 दुर्बलता 4 कमीनापन।

दैनिकी [दैनिक+ङीप्] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की उजरत, ब्याड़ी।

दैर्घ्यम्,—र्घ्यत्व [दीर्घ+अण्, ष्यञ् वा] लम्बाई, लम्बापन।

दैव (वि०) (स्त्री—वी) [देव+अण्] देवों से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, स्वर्गीय - संस्कृत नाम दैवी वाग्व्याख्याता महर्षिभि —काव्या० १।३३, रघु० १।६०, याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, ९।१३, १६।३, मनु० ३।७५ 2 राजकीय,—व (अर्थात् विवाह) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, (इसमें कन्या यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् को ही दे दी जाती है)—यज्ञस्थ ऋत्विजे दैव —याज्ञ० १।५९, (विवाह के आठ प्रकारों के लिए दे० 'उद्वाह' या मनु० ३।२१), वम् 1 भाग्य, नियति, भवितव्यता, किस्मत दैवमविद्वाम प्रमाणयति --मुद्रा० ३, विना पुरुषकारेण दैवमत्र न सिध्यति --'भगवान् उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं,--दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, दैवात् 1 संयोग से, भाग्यवश, अकस्मात् 2 देव, देवता 3 धार्मिक संस्कार, देवों को आहुति। सम०—अत्यय दैवी उत्पात, आकस्मिक अनर्थ,—अधीन,—आयत्त (वि०) भाग्य पर निर्भर, —दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्,—वेणी० ३।३३, —अहोरात्र देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष,—उपहत (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा —मुद्रा० ६।८,—कर्मन् (नपु०) देवताओं को आहुति देना,—कोविद, चिन्तक,—ज्ञ ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, याज्ञ० १।३१३, काम० ९।२५,—गति, (स्त्री०) भाग्य का फेर --मुक्ताजाल चिरपरिचित त्याजितो दैवगत्या—मेघ० ९६,—तन्त्र (वि०) भाग्य पर आश्रित,—दोष अशुभ,—दुर्विपाक भाग्य की निष्ठुरता भाग्य का बुरा फेर या प्रतिकूलता— उत्तर० १।४०, --दोषः भाग्य की कठोरता,—पर (वि०) 1 भाग्य पर भरोसा करने वाला, भाग्यवादी 2 भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध—प्रश्नः भविष्यकथन, ज्योतिष, --युगम् देवों का एक युग' (१२००० देववर्षों का एक युग माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर कुल्लू०),—योग संयोग, दुर्निवार भाग्य, मौका —दैवयोगेन दैवयोगात् भाग्य से, अकस्मात्,—लेखकः भविष्यवक्ता, ज्योतिषी,—वज्ञ,—शम् नियति का बल, भाग्य की अधीनता,—वाणी 1 आकाशवाणी 2 संस्कृत भाषा—तु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत, —हीन (वि०) भाग्यहीन, किस्मत का मारा, अभागा।

दैवक [दैव+कन्] देवता।

दैवत (वि०) (स्त्री०—ती) [देवता+अण्] दिव्य,—तम् देव, देवता, दिव्यता—मृद गा दैवत विप्र घृत मधु चतुष्पद, प्रदक्षिणानि कुर्वीत—मनु० ४।३९, १।५३ अमर० 3 2 देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह 3 देवमूर्ति (यह शब्द पु० भी बतलाया जाता है परन्तु विरल प्रयोग है, मम्मट इस बात को शब्द का 'अप्रयुक्तत्व' दोष बतलाते हैं - दे० 'अप्रयुक्त')।

दैवतस् (अव्य०) [दैव+तस्] संयोगवश, किस्मत से, भाग्य से।

दैवत्य (वि०) [देवता+ष्यञ्] किसी देवता को सर्वोचित, या मान्य—याज्ञ० १।९९, मनु० २।१८९, ४।१२४।

दैवल, -लक [देव+ला+क, देवल+अण् देवल+कन्] प्रेतपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतादिक) का उपासक।

दैवारिप [देवारीन् असुरान् पाति आश्रयदानेन दैवारिप समुद्र, तत्र भव देवारिप अण्] शंख।

दैवासुरम् [देवासुरस्य वैरम्—अण्] देवताओं और राक्षसों के मध्य रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता।

दैविक (वि०) (स्त्री० की) [देव+ठक्] देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, मनु० १।६५ ८।१०९, —कम् अवश्यभावी घटना।

दैविन् (पु०) [दैव+इनि] ज्योतिषी।

दैव्य (वि०) (स्त्री० - व्या, --व्यी) [देव+यञ्] दिव्य, - व्यम् किस्मत, भाग्य 2. दिव्य शक्ति।

दैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [देश+ठञ्] 1. स्थानीय, प्रांतीय 2 राष्ट्रीय समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला 3 स्थान सम्बन्धी 4 किसी स्थान से परिचित 5 अध्यापन करने वाला संकेतक, निदेशक दिखलाने वाला, क 1 अध्यापक, गुरु 2 पथ दर्शक।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [दिष्ट+ठक्] भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध,--क भाग्यवादी।

दैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [देह+ठक्] शारीरिक, देहसम्बन्धी।

दैह्य (वि०) [देहे भव —ष्यञ्] शारीरिक,—ह्य आत्मा (शरीरगत)।

दो (दिवा० पर०—द्यति, दित—प्रेर० दाययति, इच्छा० दित्सति) 1 काटना, छांटना 2. फसल काटना, अनाज काटना, अव —,काट डालना -यदन्यास्मन्यज्ञे क्षुच्यवद्यति—शत०।

दोग्धृ (पु०) दुह्+तृच्] 1. ग्वाल, दूध दोहने वाला, दूधिया मेरी स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे—कु० १।२ 2 बछड़ा 3. चारण या भाट (वह भाड़े का कवि जो पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता है) 4 जो स्वार्थवश कोई कार्य करता है (अपने आप को लाभ पहुंचाने के लिए)।

दोग्ध्री [दोग्धृ+ङीप्] 1 दुधार गाय 2 दूध पिलाने वाली गाय।

दोष [दुह् + घञ्, नि०] बछड़ा।

दोर [= डोर, नि० डस्य द] रस्सी, रज्जु।

दोल [दुल् + घञ्] 1 झूलना, डोलना, (घड़ी के लंगर की भाँति इधर-उधर) हिलना 2 हिंडोला, डोली 3. फाल्गुनपूर्णिमा के दिन होने वाला उत्सव जब कि बालकृष्ण की मूर्तियों को हिंडोले में झुलाया जाता है।

दोला, दोलिका [दोल + टाप्, दोल + कन् + टाप्, इत्वम्] 1. डोली, पालकी 2 हिंडोला, पालना (आल० भी) —आसीत्स दोलाचलचित्तवृत्ति रघु० १४।३४, ९।४६, १९।४४, सदेहदोलामारोप्यते का० २०७, २८६ 3 झूलना, घट-बढ़ होना 4 संदेह अनिश्चितता। सम०— **अधिरूढ,—आरूढ** (वि०) (शा०) झूले पर सवार (आल०) अनिश्चित, अस्थिर, चंचल—**युद्धम्** सफलता की अनिश्चितता वह युद्ध जिसमें हार-जीत का कुछ निश्चय न हो।

दोलायते (ना० धा० आ०) 1. झूलना, इधर-उधर डोलना, इधर-उधर हिलना, घटबढ़ होना, आगे-पीछे होना (आल० भी) 2. चंचल या बेचैन होना।

दोष [दुष् + घञ्] (क) त्रुटि, ऐब, निन्दा, कमी लांछन, लचर दलील—पत्र नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३, नाव कुलपतिर्दोषं ग्रहीष्यति—श० ३, कुलपति इस बात को दोष नहीं मानेंगे —सा पुनरुक्तदोषा—रघु० १४।९ (ख) भूल (अशुद्धि, गलती 2. जुर्म, पाप, कसूर अपराध —जायामदोषामपि सत्यजामि—रघु० १४।३४, मनु० ८।२४५, याज्ञ० ३।७९ 3. अनिष्टकारी गुण, बुराई क्षतिकारक प्रकृति या गुण —जैसा कि 'आहार दोष' में 4 हानि, आनष्ट, भय, क्षति —बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८, को दोष —(इसमें क्या हानि है) 5 बुरा फल, अनिष्टकारी फल, बाधक प्रभाव, —तत्किमयमालपदोष स्यात् —श० ३, अदाता वशदोषेण कर्मदोषाद् दरिद्रता —चाण० ४८, मनु० १०।१४ 6 विकृत व्याधि, रोग 7 शरीर के तीनों दोषों का कुपित होना, त्रिदोषकोप 8 (न्या० में) परिभाषा का दोष (अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव) 9. (अल० में) रचना का एक दोष (पददोष, पदांशदोष, वाक्यदोष, रसदोष, और अर्थदोष जिनका वर्णन काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में किया गया है) 10. बछड़ा 11 निराकरण। सम० —**आरोप** दोष लगाना, इलजाम लगाना,—**एकदृश्** (वि०) दोष ढूंढने वाला, दोषदर्शी छिद्रान्वेषी,—**कर,—कृत्** (वि०) बुराई करने वाला, अनिष्टकर,—**ग्रस्त** (वि०) 1. सिद्धदोष, अपराधी 2. दोषपूर्ण, त्रुटिपूर्ण, —**ज्ञाहिन्** (वि०) 1. विद्वेषी, दुर्भावनापूर्ण 2. छिद्रान्वेषी,—**ज्ञ** (वि०) दोषों का ज्ञाता (ज्ञ) 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष—रघु० १।९३ 2. वैद्य,—**त्रय** शरीर के तीन दोष (अर्थात् वात, पित्त और कफ),—**दृष्टि** (वि०) दोषदर्शी, —**प्रसङ्गः** कलंक लगाना, बदनामी, निन्दा, —**भाज्** (वि०) दोषी, अपराधी, सदोष।

दोषयम् [दुष् + णिच् + ल्युट्] इलजाम लगाना, दोष मढ़ना।

दोषद् (पु०, नपु०) (इस शब्द के सर्वनामस्थान (पहले पांच वचन, में रूप नहीं होते) भुजा, बाजू।

दोषल (वि०) [दोष + लच] दोषी, सदोष, भ्रष्ट।

दोषस् (स्त्री०) [दुष् + असुन्] रात (नपु०) अंधेरा।

दोषा (अव्य०) [दुष्यते अन्धकारेण—दुष् + घञ् + टाप्] रात को, —दोषाऽपि नूनमहिमांशुरसौ किलेति—शि० ४।४६ ६२, (स्त्री०) 1 भुजा 2 रात्रि का अंधेरा, रात —धर्मकालदिवस इव क्षपितदोष का० २७ (यहाँ शब्द का अर्थ 'दोष या पाप' भी है)। सम० —**आख्यः,—तिलक.** दीपक, लैम्प, **करः** चांद।

दोषचर (वि०) (स्त्री०—री) [दोषा + टघु, तुट्] रात को होने वाला, रात्रि विषयक—रघु० १३।७६।

दोषिक (वि०) (स्त्री० —की) [दोष + ठन्] दोषी, बुरा, सदोष.—**कः** रुग्णता, रोग।

दोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [दुष् + णिनि] 1 अपवित्र, दूषित, कलुषित 2 अपराधी, सदोष, मुजरिम, दुष्ट, बुरा।

दोस् (पु०, नपु०) [दम्यते अनेन दम् + डोसि] (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् इस शब्द को विकल्प से 'दोषन्' आदेश हो जाता है) 1 अंधभुजा, भुजा—तमुपाद्रवदुद्धम्य दक्षिण दोर्निशाचरः —रघु० १५।२३, हेमपात्रगत दोर्भ्यामादधान पयश्चरु —१०।५१, कु० ३।७६ 2 चाप का वह भाग जो डिज्या का निर्माण करता है। सम० —**गह** (वि०) (दोर्गंड) टेढ़ी भुजाओं वाला, —**ग्रह**(दोर्ग्रह) (वि०) सबल, शक्तिशाली, (हः) भुजा में रहने वाली पीड़ा,—**ज्या** (दोर्ज्या) आधार की लकीरेखा, —**दण्ड** (दोर्दण्डः) डंडे जैसी भुजा, मजबूत भुजा—महावी० ७।८, भामि० १।१२८, —**मूलम्** (दोर्मूलम्) काख, बगल,—**युद्धम्** (दोर्युद्धम्) द्वन्द्वयुद्ध, कुश्ती —महावी० ५।३७,—**शालिन्** (वि०) (दो शालिन्) प्रबल भुजाओं वाला, रणोत्सुक, वीर,—**वेणी०** ३।३२,—**शिखरम्** (दो शिखरम्) कंधा,—**सहस्रभृत्** (दो सहस्रभृत्) (पु०) 1 बाणासुर का विशेषण 2 सहस्रार्जुन का विशेषण,—**स्थः** (दोस्थ) 1 सेवक 2 सेवा 3 खिलाड़ी 4 खेल, क्रीड़ा।

दोह [दुह् + घञ्] 1 दोहना—आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन—सिद्धा०, कु० १।२, रघु० २।२२, १७।१९ 2 दूध 3 दूध की बाल्टी। सम०—**अवसर,—काल** दूध

दोहदः, --दम् [दोहमाकर्षं ददाति—दा+क] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि प्रजाकतो दोहदशमिनो ते---रघु० १४।४५, उपैत्य का दोहदधु खशोलता यदेव वह्ने तदपश्यदाद्भुतम्—३।६, ७ 2 गर्भावस्था 3 कली आने के समय पौधों की इच्छा (उदाहरणतः अशोक चाहता है कि तरुणियाँ उसे ठोकर मारें, बकुल चाहता है कि उसके ऊपर मदिरा के कुल्ले किये जायें) –महीरुहा दोहदसेकशक्तेराकालिक कोरकमुद्गिरन्ति–नै० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८ दे० प्रियंगु 4 उत्कट अभिलाष–प्रवर्तितमहासमरदोहदा नरपतय –वेणी० ४ 5 सामान्यतः कामना, इच्छा। सम० —लक्षणम् 1 भ्रूण, गर्भ (दोहदलक्षण) 2 जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।

दोहदवती [दोहद+मतुप+ङीप्, वत्वम्] गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।

दोहन (वि०) [दुह्+ल्युट्] 1 दोहन करने वाला 2 अभीष्ट पदार्थों को देनेवाला, –नम् 1 दोहना2 दूध की बाल्टी, –नी दूध की बाल्टी।

दोहलः [दोह्+ला+क] दे० दोहद, वृथा वहसि दोहलम् (अने० पा०) ललितकामिसाधारणम्—मालवि० ३।१६।

दोहली [दोहल+ङीष्] अशोकवृक्ष।

दोह्य (वि०) [दुह्+ण्यत्] दुहने योग्य, दुहे जाने योग्य,—ह्यम् दूध।

दौः शील्यम् [दुःशील+ष्यञ्] बुरा स्वभाव, दुष्टता, दुर्भावना।

दौ स्साधिकः [दुःसाध+ठक्] 1 द्वारपाल, दरोगेदीवान 2 गाँव का अधीक्षक।

दौकूल (लः) लम् [दुकूल+अण्] रेशमी आवरण से ढका हुआ रथ, —लम् बढ़िया रेशमी वस्त्र।

दौत्यम् [दूत+ष्यञ्] संदेश, दूत का कार्य।

दौरात्म्यम् [दुरात्मन्+ष्यञ्] 1 दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ 2 दुर्जनता - गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते काव्य० १०।

दौर्गत्यम् [दुर्गत+ष्यञ्] 1 गरीबी, कमी, अभाव---पञ्च० २।९२ 2 दरिद्रता, दुःख।

दौर्गन्ध्यम् [दुर्गन्ध+ष्यञ्] बुरी या अरुचिकर गंध।

दौर्जन्यम् [दुर्जन+ष्यञ्] दुष्टता, दुर्भाव

दौर्जीवित्यम् [दुर्जीवित+ष्यञ्] कष्टमय जीवन, विपद्ग्रस्त जीवन।

दौर्बल्यम् [दुर्बल+ष्यञ्] नपुंसकता, दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता—मनु० ८।१७१, भग० २।३।

दौर्भागिनेयः [दुर्भगा+ढक्, इनङ्] अभागी स्त्री (जिसे उसका पति न चाहे) का पुत्र।

दौर्भाग्यम् [दुर्भग+ष्यञ् उभयपदवृद्धि] दुर्भाग्य, बदकिस्मती,- याज्ञ० १।२८३।

दौर्भ्रात्रम् [दुर्भ्रातृ+अण्] भाइयों का आपसी कलह।

दौर्मनस्यम् [दुर्मनस्+ष्यञ्] 1 बुरा स्वभाव, 2 मानसिक पीड़ा, कष्ट, खेद, विषाद 3 निराशा।

दौर्मन्त्र्यम् [दुर्मन्त्र+ष्यञ्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी सलाह—दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति--मनु० २।४२।

दौर्वचस्यम् [दुर्वचस्+ष्यञ्] दुर्वचन, अपभाषण।

दौर्हृद्यम्, दौर्हृदम् [दुर्हृद्+अण्] 1 मन की दुरवस्था, अशुभता (इस अर्थ में 'दौर्हृद' भी) 2 गर्भावस्था –सुदक्षिणा दौर्हृदलक्षणं दधौ - रघु० ३।१ 3 गर्भवती की प्रबल लालसा 4 इच्छा।

दौर्हृदम् [दुर्हृद+अण्] मन की दुरवस्था, अशुभता।

दौलि [दुःख+इञ्] इन्द्र का विशेषण।

दौवारिक (स्त्री० की) [द्वार+ठक्, औ आगम] द्वारपाल, पहरेदार—रघु० ६।५९।

दौश्चर्यम् [दुश्चर+ष्यञ्] 1 दुराचरण, दुष्टता, दुष्कृत्य।

दौष्कुल (वि०) (स्त्री०- ली), **दौष्कुलेय** (वि०) (स्त्री० - यी) [दुष्कुल अस्य वः सः, स्वार्थे अण्, दुष्ट कुलम् प्रा० स०– दुष्कुल+ढक्] नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।

दौष्ठवम् [दुष्ठ+स्था+कु--दुष्ठ तस्य भावः--अण्] बुराई, दुष्टता।

दौष्य (ष्यः) न्ति [दुष्य (ष्यः) स्न+इच्] दुष्यंत का पुत्र - दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य --श० ४।२०।

दौहित्र [दुहितृ+अञ्] दौहित्र, पुत्री का पुत्र--मनु० ३।१४८ ९।१३१, त्रम् नील।

दौहित्रायणः [दौहित्र+फक्] दौहित्र का पुत्र।

दौहित्री [दौहित्र+ङीप्] दौहित्री, पुत्री की पुत्री।

दौहृदिनी [दौहृद+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री।

द्यु (अदा० पर०—द्यौति) अग्रसर होना, मुकाबला करना हमला करना, आक्रमण करना भट्टि० ६।११८, १४।१०४।

द्यु (नपुं०) [दिव्+उन्, कित्] 1 दिन 2 आकाश 3 उजाला 4 स्वर्ग (– पुं०) आग (पद अथवा व्यञ्जनादि विभक्तियों के आने पर 'दिव्' (स्त्री०) के स्थान में 'द्यु' आदेश होता है, या समासों में द्यु का प्रयोग होता है)। सम० ग पक्षी, —चर 1 ग्रह, 2 पक्षी,—जय स्वर्ग प्राप्त करना, —नदी स्वर्गंगा, —निवास देवता, - सुर शोकाग्निनाऽज्ञात् द्युनिवासमयूयम्—भट्टि० २।२१, —पति 1 सूर्य 2 इन्द्र का विशेषण, —मणि सूर्य, —लोक स्वर्ग, —वद्, - सद् (पुं०) 1 सुर, देवता, --शि० १।४३ 2 ग्रह, -सरित् (स्त्री०) गंगा।

द्युक [द्यु+कन्] उल्लू। सम०—**अरि** कौवा।

द्युत् (भ्वा० आ०—द्योतते, द्युतित या द्योतित—इच्छा० दिद्युतिषते, दिद्योतिषते) चमकना, उजला होना, जगमगाना—दिद्युते च यथा रवि —भट्टि० १४।१०४, ६।२६, ७।१०७, ८।८९, प्रेर० द्योतयति 1 प्रकाश करना, देदीप्यमान करना—भट्टि० ८।४६ कु० ६।४ 2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना 3 अभिव्यक्त करना, अर्थ प्रकट करना, **अभि**—, प्रेर०—प्रकाश करना—रघु० ६।३४, **उद्**—, प्रकाश करना, दीपक जलाना, सजाना, सुभूषित करना—रघु० १०। ८०, **वि**—,चमकना, उज्ज्वल होना—व्यद्योतिष्ट सभावेद्यासनौ नरसिंहित्रयी—शि० २।३, १।२०।

द्युति (स्त्री०) [द्युत्+क्तिन्] 1 दीप्ति, उजाला, कान्ति, सौन्दर्य—काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकती द्युतिम्—हि० प्र० ४१, मा० २।१०, रघु० ३।६४ 2 प्रकाश, प्रकाश की किरण—भर्तृ० १।६१ 3 महिमा, गौरव मनु० १।८७।

द्युतित (वि०) [द्युत्+क्त] प्रकाशित, चमकदार, उजाला।

द्युम्नम् [द्यु+म्ना+क] 1 आभा, यश, कान्ति 2 बल, सामर्थ्य, शक्ति 3 वैभव, सम्पत्ति 4 प्रोत्साहन।

द्युमत् (पु०) [द्यु+मतिन्] सूर्य।

द्यूत, -तम् [दिव्+क्त, ऊठ्] 1 खेलना, जुआ खेलना, पासे से खेलना द्यूत हि नाम पुरुषस्यासिंहासन राज्यम् -मृच्छ० २, द्रव्य लब्ध द्यूतेनैव, दारा मित्र द्यूतेनैव, दत्त भुक्त द्यूतेनैव, मन्त्र नष्ट द्यूतेनैव—२।७, अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते—मनु० ९। २२७ 2 जीता हुआ पुरस्कार। सम०—**अधिकारिन्** (पु०) द्यूतगृह का स्वामी, जुआ खिलाने वाला, **कर**—कृत् जुआ खेलने वाला, जुआरी -अय द्यूतकर सभिक्षेन खलीकियते मृच्छ० २,—**कार**,—**कारक** 1 जुआघर का रखने वाला 2 जुआरी, -**क्रीडा** पासों से खेलना, जुआ खेलना,—**पूर्णिमा**, **पौर्णिमा** आश्विन मास की पूर्णिमा, (इस समय जन साधारण लक्ष्मी देवी के सम्मान में खेला का उत्सव मनाते हैं),—**वीवध** कौड़ी (खेलने के काम आने वाली), **वृत्ति**: 1 पेशेवर जुआरी 2 जूआघर का रखवाला,—**सभा**,—**समाज** 1 जूआखाना 2 जूआरियों का समूह।

द्यु (भ्वा० पर० द्यायति) 1 घृणा करना, तिरस्कार युक्त व्यवहार करना 2 विरुद्ध करना।

द्यो (स्त्री०) [कर्तृ० ए० व० द्यौ] [द्युत्+डो] स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश - द्यौर्भूमिरापो हृदय यमश्च —पंच० १।१८२, शि० २।१४, (इन्द्र समास में 'द्यो' को बदल कर 'द्यावा' हो जाता है—उदा० द्यावापृथिव्यौ द्यावा भूमी(मुलाक और भूलोक)। सम० **भूमि** पत्नी, -**सद्** (द्योषद्) देवता।

द्योत [द्युत्+घञ्] 1 प्रकाश, ज्योति, उजाला जैसा कि 'खद्योत' में 2 धूप 3 गर्मी।

द्योतक (वि०) [द्युत्+ण्वुल्] 1 चमकने वाला 2, प्रकाशमय 3 व्याख्या करने वाला, व्यक्त करने वाला, बतलाने वाला।

द्योतिस् (नपु०) [द्युत्+इसुन्] 1 प्रकाश, उजाला, चमक 2 तारा। सम०—**इङ्गण** (द्योतिरिङ्गण) जुगनू।

द्रक्षणम् [द्राक्षन्ति अनेन—द्राक्ष्—ल्युट् पृषो० ह्रस्व] भार का माप या बट्टा, एक तोला।

द्रढयति (ना० धा० पर०) 1 वृद्ध करना, अकड़ना, कसना (शा०) यथा—जटाजूट ग्रन्थि द्रढयति 2. समर्थन करना, पुष्ट करना, अनुमोदन करना—निवेश शैलानां तदिदमिति बुद्धि द्रढयति—उत्तर० २।२७, विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्ति द्रढयति—४।११।

द्रढिमन् (पु०) [दृढ+इमनिच्] 1 कसाव दृढ़ता—बधान द्राघीय द्रढिमरमणीय परिकरम्—गंगा० ४७ 2 पुष्टि, समर्थन—उक्तस्यार्थस्य द्रढिम्ने—शंकर 3 प्रकथन, पुष्टीकरण 4 गुरुता।

द्रप्सम् ('द्रप्सम्') [दृप्यन्ति अनेन दृप्+स, र् आदेश] जमे हुए दूध का घोल, पतला दही।

द्रम् (भ्वा० पर० द्रमति) इधर-उधर जाना, दौड़ना, इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७०।

द्रम्मम् [ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न] 'द्रम' नाम एक प्रकार का सिक्का।

द्रव (वि०) [द्रु+अप्] 1 (घोड़े की भांति) दौड़ने वाला 2 चूने वाला, रिसने वाला, गीला, टपकने वाला —आक्षिप्य काचिद् द्रवरागमेव (पादम्)—रघु० ७।७ 3 बहने वाला, पनीला 4 तरल (विप० कठिन) कु० २।११ 5 पिघला हुआ, तरल बनाया हुआ, —**म** 1 जाना, इधर-उधर घूमना, गमन 2 गिरना, टपकना, रिसना, निःस्रवण 3 भगदड़, प्रत्यावर्तन 4 खेल, विनोद, क्रीडा 5 तरलता, द्रवीकरण 6 तरल पदार्थ, प्रवाही 7 रस, सत 8 काढ़ा 9 चाल, वेग (**द्रवीकृ**—पिघलाना, तरल करना, **द्रवीभू**—पिघलना, पसीजना जैसे दया से—द्रवीभवति मे मन, महावी० ७।३४, द्रवीभूत प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव—उत्तर० ३।१३, द्रवीभूत मन्ये पतति जलरूपेण गगनम्—मृच्छ० ५।२५,)। सम०—**आधार** 1 छोटा बर्तन या पात्र 2 चुल्लू, -**ज** राल, **द्रव्यम्** तरल पदार्थ,—**रसा** 1 लाख 2 गोंद।

द्रवन्ती [द्रु+शतृ+ङीप्] नदी, दरिया।

द्रविड (पु०) 1 दक्षिण के घाट पर स्थित एक देश—अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी—दश० १३० 2 उस देश का निवासी -जगद्द्रविडधार्मिकरयेच्छया निसृष्टः - का० २२९ 3 एक नीच जाति - तु० मनु० १०।२२।

द्रविणम् [द्रु+इनन्] 1 दौलतमन्दी, धन, सम्पत्ति, द्रव्य —वेणी० ३।२०, भामि० ४।२९ 2 सोना रघु० ४।७० 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 वीरता, विक्रम 5 बात सामग्री सामान। सम०-**अधिपति**, —**ईश्वर** कुबेर का विशेषण।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] 1 वस्तु, सामग्री, पदार्थ, सामान 2 अवयव, उपादान 3 सामग्री 4 उपयुक्त पात्र (शिक्षादि ग्रहण करने के लिए) मुद्रा० ७।१४, दे० 'अद्रव्य' भी 5 मूल तत्त्व, गुणों का आधार, वैशेषिकों के सात प्रवर्गों में से एक (द्रव्य नौ है —पृथिव्यप्तेजोवायवाकाशकालदिगात्ममनांसि) 6 स्थायीकृत कोई पदार्थ, दौलत, सामग्री सम्पत्ति, धन तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जन उत्तर० २।१९ 7 औषधि, दवाई 8 लज्जा, शालीनता 9 कामा 10 मदिरा 11 शर्त, दाँव। सम०-**अर्जनम्**,-**वृद्धि**, —**सिद्धि** (स्त्री०) धन की अवाप्ति, **ओघ** सम्पन्नता, धन की बहुतायत,—**परिग्रह** सम्पत्ति या धन का सञ्चय,—**प्रकृति** (स्त्री०) माया का स्वभाव,—**संस्कार** यज्ञ के पदार्थों का शुद्धीकरण,—**वाचकम्** संज्ञा, संज्ञासूचक।

द्रव्यवत् (वि०) [द्रव्य+मतुप्] 1 धनी दौलतमन्द 2. सामग्री में अन्तर्निहित।

द्रष्टव्य (सं० कृ०, वि०) 1 देखे जाने के योग्य, जो दिखलाई दे सके 2 प्रत्यक्षज्ञानयोग्य 3 देखने, अनुसन्धान करने या परीक्षा करने के योग्य 4 प्रिय, दर्शनीय, सुन्दर त्वया द्रष्टव्यतां पर दृष्टम् -श० २, भर्तृ० १।८।

द्रष्टृ (पु०) [दृश्+तृच्] 1 दर्शक, मानसिक रूप से देखने वाला, जैसाकि 'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः' में 2 न्यायाधीश।

द्रह [-ह्रद पृषो० साध] गहरी झील।

द्रा (अदा० द्विक० -द्राति, द्रातुं) 1 सोना 2 दौड़ना, शीघ्रता करना 3 उड़ना, भाग जाना, नि—,नींद आना, सोना, सो जाना -अद्यावलक्ष्य क्षणमेकपार्श्विका तदा निदाबुपपल्वलं खग —नै० १।२१, नाथ ते समयो रहस्यमयुना निद्राति नाथ —भर्तृ० ३।९७, भामि० १।४१, भट्टि० १०।७४, या० ४।१९, वि०—,प्रत्यावर्तन करना, भाग जाना, उड़ना।

द्राक् (अव्य०) [द्रा+कु] जल्दी से, तुरन्त, उसी समय तत्काल। सम०—**भृष्टकम्** कुएँ से अभी २ निकाला हुआ जल।

द्राक्षा [द्राक्ष्+अ+टाप्, नि० नलोप] अंगूर, दाख (अंगूर की बेल या फल) द्राक्षे द्रक्ष्यति के त्वाम् -गीत० १२, रघु० ४।६५, भामि० १।१४, ४।३९। सम०—**रस** अंगूर का रस, मदिरा।

द्राघयति (ना० धा० पर०) 1 लम्बा करना, फैलाना, विस्तार करना 2 बढ़ाना, गाढ़ा करना —द्राघयति हि मे शोकं स्मर्यमाणा गतागतैः —भट्टि० १८।३३ 3 ठहरना, देर करना।

द्राघिमन् (पु०) [दीर्घ+इमनिच्, द्राघ् आदेश] 1 लम्बाई 2 अक्षांश रेखा का दर्जा।

द्राघिष्ठ (वि०) [अतिशयेन दीर्घ दीर्घ+इष्ठन्, द्राघ आदेश] 1 सबसे अधिक लम्बा 2 अत्यन्त लम्बा, ('दीर्घ' की उ० अ०)।

द्राघीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [दीर्घ+ईयसुन्, द्राघ् आदेश] अपेक्षाकृत लम्बा, बहुत लम्बा ('दीर्घ' का म० अ०)।

द्राघ (वि०) [द्रा+क्त, त्व, तवत्] 1 उड़ा हुआ, भागा हुआ, 2 सोया हुआ निद्रालु,—**घम्** 1 दौड़ जाना, भगदड़, प्रत्यावर्तन 2 निद्रा।

द्राप [द्रा+णिच्+अच्, पुक्] 1 कीचड़, दलदल 2 स्वर्ग, आकाश 3 मूर्ख, जड़ 4 शिव का विशेषण, छोटा शब्द।

द्रामिल [द्रमिड+अण्] चाणक्य।

द्राव [द्रु+घञ्] 1 भगदड़, प्रत्यावर्तन 2 चाल, 3 दौड़ना, बहाव 4 गर्मी 5 तरलीकरण, पिघलना।

द्रावक [द्रु+ण्वुल्] 1 पिघलाने वाला पदार्थ 2 अयस्कान्त मणि चुम्बक 3 चन्द्रकान्त मणि 4 चोर 5 बुद्धिमान् पुरुष, परिहास चतुर, ठिठोलिया, विदूषक 6 लम्पट, व्यभिचारी,—**कम्** मोम।

द्रावणम् [द्रु+णिच्+ल्युट्] 1 भाग जाना 2 पिघलना, गलना 3 अर्क निकालना 4 रोठा।

द्राविड [द्रविड+अण्] 1 द्रविड देश निवासी, द्रविड का 2 पंच द्रविड (द्राविड, कर्णाट, गुर्जर, महाराष्ट्र, और तैलंग) ब्राह्मणों में एक, -**डा** (ब० व०) द्रविड देश तथा उसके निवासी,—**डी** इलायची।

द्राविडक [द्राविड+कन्] आमाहल्दी, -**कम्** काला नमक।

द्रु I (भ्वा० पर० द्रवति, द्रुत, इच्छा० दुद्रूषति) 1 दौड़ना, बहना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन करना (प्रायः कर्म० के साथ)—यथा नदीना बहवोऽम्बुवेगा समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति —भग० ११।२८, रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति ३६, द्रुत द्रवत कौरवा —महा० 2 धावा बोलना, हमला करना, सत्वर आक्रमण करना —भट्टि० ९।५९ 3 तरल होना, घुलना, पिघलना, रिसना (आलं० भी) —द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्त —मा० १।२८, द्रवति हृदयमेतत् —वेणी० ५।२१, शि० ९।९, भट्टि० २।१२ 4 जाना, हिलना-डुलना। प्रेर० द्रावयति —ते 1 भगा देना, उलटे पाँव भगा देना 2 पिघलना, गलाना,—**द्रु**—,

1 पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना--रघु० ३।३८, १२।६७, १६।२५, शि० १।५२ 2 पीछा करना, पैरवी करना, अभि--, 1 हमला करना, धावा बोलना, (शत्रु के सामने) जाना—राजा इवान्योन्यमभिद्रवन्त --मृच्छ० ५।२१ 2 आ पड़ना 3 ऊपर से चले जाना, उप , 1 हमला करना, आक्रमण करना - रघु० १५।२३ 2 की ओर भागना, प्र--, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, दौड़ जाना (कर्म० या अप० के साथ)--रणात्प्रद्रवन्ति बलानि --वेणी० ४, भट्टि० १५।७९, प्रति--, भागना, उड़ना, चले जाना--भट्टि० ६।१७, वि --, भागना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, प्रेर०—भगा देना, विदका देना, तितर बितर कर देना- भामि० १।५२ मा० ३ ।

II (स्वा० पर० द्रुणोति) 1 क्षति पहुँचाना, अनिष्ट करना—त द्रुह्यावादिणा कपि —भट्टि० १४।८१, ८५ 2 जाना 3 पछताना ।

द्रु (पु० नपु०) [द्रु+डु] 1 लकड़ी 2 लकड़ी का बना उपकरण (पु०) 1 वृक्ष मनु० ७।१३१ 2 शाखा । सम०—किलिम देवदारु वृक्ष, - खण 1 मोगरी, गदा या थापी 2 बढ़ई की हथौड़ी जैसा लोहे का उपकरण 3 कुठार, कुल्हाड़ी 4 ब्रह्मा का विशेषण, छवी कुल्हाड़ी, --नख काटा, --नस (णस) (वि०) बड़ी नाक वाला, --ब(ण)ह्नः म्यान, -सल्लक एक वृक्ष—पियाल ।

द्रुक [द्रुण् +क] 1 बिच्छू 2 मधुमक्खी 3 बदमाश - कम् 1 धनुष 2 तलवार । सम० —ह्नः असिकोष, म्यान ।

द्रुका [द्रुण +टाप्] धनुष की डोरी ।

द्रुणि ,, - णी (स्त्री०) [द्रुण्+इन्, द्रुणि+ङीष्] 1 एक छोटा कछुवा या कछुवी 2 डोल 3 कानखजूरा ।

द्रुत (भू० क० कृ०) [द्रु+क्त] 1 आशुगामी, फुर्तीला, द्रुतगामी 2 बहा हुआ, भागा हुआ, पलायित 3 पिघला हुआ, तरल, घुला हुआ, दे० 'द्रु', त· 1 बिच्छू 2 वृक्ष 3 बिल्ली , - तम् (अव्य०) जल्दी से, फुर्ती से, वेग से, तुरन्त । सम० --पद (वि०) आशुगामी,--विलम्बितम् एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट ।

द्रुति· (स्त्री०) [द्रु+क्तिन्] 1 पिघलना, घुलना, 2 चले जाना, भाग जाना ।

द्रुपदः (पु०) पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम (द्रुपद के पिता का नाम पृषत था, द्रुपद और द्रोण दोनों ने द्रोण के पिता भरद्वाज से धनुर्विद्या सीखी । जब द्रुपद को राजगद्दी मिल गई तो एक बार आर्थिक कठिनाइयों में ग्रस्त होने के कारण द्रोण अपनी छात्रावस्था की मित्रता के आधार पर द्रुपद के पास गया, परन्तु उसने घमंड के कारण द्रोण का अपमान किया । इस कारण द्रोण ने उसे अपने शिष्यों (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्दी बनाया--फिर उसका आधा राज्य उसे वापस कर दिया । परन्तु यह हार द्रुपद के मन में सदैव खटकती रही, और एक ऐसा पुत्र पाने की इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया । उस यज्ञाग्नि से धृष्टद्युम्न नामक पुत्र तथा द्रौपदी नाम की पुत्री ने जन्म लिया । बाद में इसी पुत्र ने धोखे से द्रोण का सिर काट लिया, दे० 'द्रोण' भी) ।

द्रुमः [द्रुः शाखाऽस्त्यस्य - म] 1 वृक्ष,—यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे--उत्तर० ३।८ 2 पारिजात वृक्ष । सम०—अरि हाथी, - आलय लाख, गोंद, --आश्रय छिपकली, ईश्वर 1 ताड का वृक्ष 2 चन्द्रमा 3 पारिजात वृक्ष, -उत्पल. कर्णिकार वृक्ष, —नखः,—मरः काँटा,—व्याधि लाख, गोंद,-- श्रेष्ठ. ताड का वृक्ष,- षण्डम् वृक्षोद्यान, पेड़ों का समूह ।

द्रुमिणी [द्रुम+इनि+ङीप्] वृक्षों का समूह ।

द्रुवयः [द्रु+बय] माप, मान ।

द्रुह् (दिवा० पर०--द्रुह्यति, द्रुग्ध) 1 ईर्ष्या द्वेष करना, क्षति या द्वेष पहुँचाने की चेष्टा करना, द्वेषपूर्वक बदला लेने की इच्छा से षड्यन्त्र रचना (सम्प्र०)—यान्वेति मां द्रुह्यति मह्यमेव सात्रेयुपालम्भि तमालिवर्णं —नै० ३।७, भट्टि० ४।३९, अभि --, क्षति पहुँचाना, हमला करने का प्रयत्न करना, षड्यन्त्र रचना (कर्म० के साथ)—मच्छरीरमभिद्रोग्धुं यतते--मुद्रा० १ ।

द्रुह्, (वि०) [द्रुह्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयोग) (कर्तृ० ए० व० -ध्रुक् ग्, ध्रुट्,--ड्) क्षति पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला, षड्यन्त्र कारी, शत्रुवत् व्यवहार करने वाली - शि० २।३५, मनु० ४।९०, (स्त्री०)—क्षति, हानि ।

द्रुह [द्रुह्+क] 1 पुत्र 2 सरोवर, झील ।

द्रुहण, द्रुहिणः [द्रु समारगति हन्ति--द्रु+हन्+अच्, द्रुह्यति दुष्टेभ्य, द्रुह्+इनन्, णत्वम्] ब्रह्मा या शिव का नाम ।

द्रू [द्रु+क्विप् दीर्घ] सोना ।

द्रूषण. [=दूषण, पृषो० साधु] हथौड़ा, लोहे का हथौड़ा, दे० 'दूषण' ।

द्रूण [=दूण, पृषो० साधु०] बिच्छू ।

द्रोण [द्रुण+अच्, या द्रु+न] 1 चार सौ बीस लम्बी झील, या सरोवर 2 बादल (विशेष प्रकार का बादल) जल से भरा बादल (जिसमें से वर्षा इस प्रकार निकले जैसे डोल में से पानी)- कोऽयमेवंविधे काले कालपाशस्थिते यथि, अनावृष्टिहतं शस्यं द्रोणमेघ इवोत्थित ,

वृक्ष० १०।२६ 3 पहाड़ी कौवा, मुरदारखोर कौवा 4, बिच्छू० 5 वृक्ष 6 सफेद फूलों वाला वृक्ष 7 कौरव पाण्डवों का गुरु (द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था, इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि घृताची नामक अप्सरा को देखते ही जब उनका वीर्यपात हुआ तो उन्होंने उसको एक द्रोण में सुरक्षित रक्खा। जन्म से ब्राह्मण होने पर भी द्रोण ने परशुराम से शस्त्रास्त्र विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। बाद में धनुर्विद्या और शस्त्र चालन द्रोण ने कौरव पाण्डवों को सिखलाया। जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म घायल होकर 'शरशय्या पर' लेट गये तो कौरवसेना की बागडोर द्रोण ने सभाली तथा चार दिन तक युद्ध करके पाण्डव पक्ष के हजारों योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी संग्राम होता रहा और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के सुझाव पर भीम ने द्रोण को सुना कर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया (तथ्य यह था कि अश्वत्थामा नाम का हाथी युद्ध में काम आया था) इस पर विश्वास न कर इस तथ्य की यथार्थता जानने के लिए उसने सत्यवादी युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के परामर्शानुसार, बात को छलपूर्वक टाल दिया। उन्होंने 'अश्व-थामा' शब्द को ऊँचे स्वर से उच्चारण किया तथा 'गज' शब्द को धीमे स्वर से—दे० वेणी० ३।९, अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु का समाचार सच समझ कर अत्यन्त शोकसन्तप्त हो बूढ़ा पिता मूर्छित हो गया। उसी समय धृष्टद्युम्न ने (जिसने द्रोण को मारने की प्रतिज्ञा की थी) इस अवसर से लाभ उठाकर द्रोण का सिर काट डाला। -ण,—णम् एक विशेष तोल का बट्टा, या तो एक आढक या चार आढक, अथवा खारी का १/१६ भाग, या ३२ अथवा ६४ सेर,—जम् 1. काष्ठ पात्र, प्याला, कठौता 2 लकड़ी की कूण्ड या खोर। सम०—आचार्य दे० ऊ० द्रोण,—काक पहाड़ी कौवा,—क्षीरा, -धा,—दुग्धा, दुहा एक द्रोण दूध देने वाली गाय,—मुखम् ४०० गाँव की राजधानी, मुख्य नगर।

द्रोणि:,—णी (स्त्री०) [द्रु+नि, द्रोण+ङीष्] 1 लकड़ी का बना एक अण्डाकार पात्र जिसमें पानी रखते हैं, अथवा पानी जिससे बाहर निकालते हैं, डोल, चिलमची कुप्पी 2 जलाधार 3 काठ की खोर 4 दो शूर्प या १२६ सेर के बराबर खारिका की माप 5 दो पहाड़ों के बीच की घाटी, बृह-द्रोणीशैलकान्तारप्रदेशमधितिष्ठतो मातरिश्वनिलके प्रयामि—मा० ९, हिमवद्द्रोणी। सम०—द्रुम केतक का पौधा।

द्रोह [द्रुह्+घञ्] किसी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना, आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव, ईर्ष्या—अद्रोहकृत्पथ कृत्वा—पञ्च० २।३५, भग० १।३७, मनु० २।१६१ ७।४८, ९।१७ 2. धोखा, विश्वासघात 3 अन्याय, दोष 4 विद्रोह। सम०—अट 1 पाखंडी, धूर्त, छद्मवेषी 2 शिकारी 3 झूठा मनुष्य,—चिन्तनम् ईर्ष्यायुक्त विचार, अपकार चिन्ता, हानि पहुँचाने का इरादा,—बुद्धि (वि०) उपद्रव करने पर उतारू या दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री०-द्धि) दुष्ट प्रयोजन, दुराशय।

द्रौणायन, नि, द्रौणि: [द्रोण+फक्, फिञ् वा, द्रोण+इञ्] अश्वत्थामा का विशेषण—यद्द्रौणेर्न कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनि क्रोधनः—वेणी० ३।३१।

द्रौपदी [द्रुपद+अण्+ङीप्] पाञ्चालराज द्रुपद की पुत्री का नाम (स्वयम्वर में अर्जुन ने इसे प्राप्त किया। जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है। तब माता ने कहा कि सब आपस में बाँट लो। क्योंकि कुन्ती के मुख से निकली बात कभी झूठी नहीं हो सकती अतः वह पाँचों भाइयों की पत्नी बनी। जब युधिष्ठिर जूए में अपने राज्य को हार गया, द्रौपदी को हार गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हार गया तो दुःशासन ने और दुर्योधन की पत्नी ने उसका बड़ा अपमान किया। परन्तु इस प्रकार के अपमान को द्रौपदी ने असाधारण सहिष्णुता के साथ सहन किया। और जब कभी, कई अवसरों पर उसकी तथा उसके पतियों की परीक्षा ली गई तो उसने उनके मान की रक्षा की (जैसा कि उस समय जब दुर्वासा ऋषि ने अपने साठ हजार शिष्यों के लिए रात को भोजन माँगा)। अन्त में एक दिन उसकी सहिष्णुता समाप्त हो गई और उसने अपने पतियों को बड़े ताने के साथ उसी लहजे में कहा जिसमें कि वह अपने शत्रुओं से प्राप्त क्षति और अपमान का कड़वा घूँट पी रहे थे दे० कि० १।२९-४६, इसी के फलस्वरूप पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया। यह उन पाँच सती स्त्रियों में से है जो प्रातः स्मरणीय समझी जाती हैं दे० अहल्या)।

द्रौपदेय [द्रौपदी+ढक्] द्रौपदी का पुत्र—भग० १।६।१८।

द्वन्द्व [द्वौ द्वौ समाहियेताम्—द्वि शब्दस्य द्वित्वम्, पूर्वपदस्य अम्भावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वम्, नि०] घड़ियाल जिस पर प्रहार करके घंटों की सूचना दी जाती है, -न्द्वम् 1 जोड़ा, जन्तु युगल, (मनुष्ययुगल भी) 2 स्त्री-पुरुष, नर-मादा द्वन्द्वानि भाव क्रियया विवधु -कु० ३।३५, मेघ० ४६, न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत् -कु० ७।६६, रघु० १।४०, श० २।१४, ७।२७ 3 दो वस्तुओं का जोड़ा, दो विरोधी अवस्थाओं या गुणों का

जोड़ा, (जैसे कि सुख-दुःख, शीत और उष्ण)—द्वन्द्वैर-योज्यपत्नेमा सुखदुःखादिभि प्रजा—मनु० १।२६, ६।८१, सर्वतूनिवृतिकरे निवसन्तपति न द्वन्द्वदुःखमिह किंचिदकिंचनोऽपि—शि० ४।६४ 4 झगड़ा, लड़ाई, कलह, टण्टा, युद्ध 5 कुश्ती 6 संदेह, अनिश्चिति 7 किला, गढ़ 8 रहस्य,—द्व. (व्या० में) समास के चार मुख्य भेदों में से एक जिसमें दो या दो से अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं, जो कि असमस्त होने की अवस्था में एक ही विभक्ति के 'रूप और' (समुच्चय बोधक अव्य०) अव्यय से जोड़े जाते—चार्थे द्वन्द्वम्—पा० २।२।२९, द्वन्द्व सामासिकस्य च—भग० १०।३३। सम० -चर,—चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में रहने वाले (पु०) चकवा—दयिता द्वन्द्वचर पतत्रिणम् रघु० ८।५५, १६।६३,—भावः वैपरीत्य, अनबन,—भिन्नम् स्त्री और पुरुष (नर या मादा) का वियोग, -भूत (वि०) 1 एक जोड़ा बनाते हुए 2 संदिग्ध, अनिश्चित,—युद्धम् मल्लयुद्ध, अकेलों (दो) की लड़ाई।

द्वन्द्वशः (अव्य०) [द्वन्द्व+शस्] दो दो करके जोड़े में।

द्वय (वि०) (स्त्री० -यी) [द्वि+अयट्] दोहरा, दुगुना, दो प्रकार का, दो तरह का—अनुपेक्षणे द्वयी गतिः मुद्रा० ३, मनु० २।१०४, अने० पा०, कभी कभी व० व० में भी प्रयुक्त, दे० शि० ३।५७,—यम् 1 जोड़ा, युगल, युग्म (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) —द्वितयेन द्वयमेव संगतं—रघु० ८।६, १।१९, ३।४, ४।४ 2 दो प्रकार की प्रकृति, द्वैधता 3 मिथ्यात्व,—यी जोड़ी, युगल। सम०—अतीत (वि०) जिसका मन रजस् और तमस् इन दो गुणों के प्रभाव से मुक्त हो गया है, सन्त, महात्मा,—आत्मक द्वैधप्रकृति से युक्त, —चारिन्, द्विजिह्व, कपटी।

द्वयस (वि०) (स्त्री० सी) 'जहाँ तक हो सके' 'इतना ऊँचा जितना कि' 'इतना गहरा जितना कि' 'पहुँचने वाला' अर्थ को बतलाने वाला प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के साथ लग-गुल्फद्वयसे मदपयसि—का० ११४, नाभीनितंबद्वयस वभूव (अभ) रघु० १६।४६, शि० ६।५५।

द्वयरः, -रम् [द्वाभ्यां संख्याभ्यां त्रेतायुगाभ्यां वा परः पृषो०-तारा०] 1 विश्व का तृतीय युग—मनु० ९।३०१ 2 पासे का वह पार्श्व जिस पर 'दो' की संख्या अंकित है 3 संदेह, शंशोपज, अनिश्चितता।

द्वायुष्यायण (वि०) [अदस्+फक्=आमुष्यायण ष० त०] दे० 'द्वयामुष्यायण'।

द्वार् (स्त्री०) [द्वृ+णिच्+विच्] 1 दरवाजा, फाटक —याज्ञ० ३।१२, मनु० ३।३८ 2 उपाय, तरकीब, द्वारा 'के उपाय से' की मार्फत। सम० -स्थः,-स्थितः (द्वारस्थ, द्वारस्थ, द्वारस्थित, द्वारस्थित.) द्वार देखभाल करने वाला, द्वारपाल, दरबान, -स्थानम् दरवाजा, फाटक, -स्थायिन् (वि०) दरवाजे पर खड़ा होने वाला, (पु०) द्वारपाल, दरबान।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1 दरवाजा, तोरण, प्रवेशद्वार, फाटक 2 मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुंह,—अपवृत्तकवाटद्वारे वसोरस्मिन्—रघु० १।४, ११।१८ 3 शरीर के द्वार या छिद्र (ये गिनती में नौ हैं दे० नव) कु० ३।५०, भग० ८।१२, मनु० ६।४८ 4 मार्ग, माध्यम, साधन या उपाय द्वारेण 'में से' 'के साधन से'। सम०—अधिप, -अध्यक्ष, -अधिपति, -अधिकृत, -अधिकारिन् दरवाजे का रक्षक, दरबान, -कपाटं, -कवाटं दरवाजे की कुंडी, -कपाट,—कक्ष दरवाजे का पक्षा या खिड़की, —गोप—पालकः,-पः,—पाल., पालकः, द्वारपाल, दरबान, पहरेदार,—घातः सागवान की लकड़ी, -पट्ट. 1 दरवाजे का खिड़की 2 दरवाजे का पर्दा, -पिंडी दरवाजे की देहली, -विघाटनः दरवाजे की कुंडी —बलिभुज् (पु०) 1 कौआ 2 चिड़िया, -बाहुः दरवाजे की बाजू, द्वार का पाखा,—यन्त्रम् ताला, कुंडी -स्थ द्वारपाल।

द्वार (रि) का [द्वार+कै+क] गुजरात के पश्चिमी किनारे पर स्थित कृष्ण की राजधानी ('द्वारका' के के वर्णन के लिए दे० शि० ३।३३-६०)। सम०—ईशः कृष्ण का विशेषण।

द्वारवती, द्वारावती=द्वारका।

द्वारिक द्वारिन् (पु०) द्वारपाल, दरबान।

द्वि (संख्या० वि०) (कर्तृ० द्वि० व०—पु० द्वौ, स्त्री०, नपु०—द्वे) दो, दोनों—सद्य परस्परतुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, (विशे० दशन् विंशति और विंशत् से पूर्व द्वि को 'द्वा' हो जाता है, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नवति से पूर्व द्वि को द्वा होता है परन्तु विकल्प से, और अशीति से द्वि में कोई परिवर्तन नहीं होता)। सम०—अक्ष (वि०) दो आँखों वाला, —अक्षर (वि०) द्व्यक्षरी, दो अक्षरों से संबद्ध, —अङ्गुल (वि०) दो अंगुल लम्बा, (-लम्) दो अंगुल की लम्बाई, —अङ्गुलम् दो अंगुलों का समाहार, —अर्ध (वि०) 1 दो अर्थ रखने वाला 2 संदिग्ध, अस्पष्ट या द्व्यर्थक 3 दो बातों का ध्यान रखने वाला, —अशीत (वि०) बयासीवाँ, —अशीतिः (स्त्री०) बयासी, —अष्टम् तावा, -अहः दो दिन का समय,—आत्मक (वि०) 1 दो प्रकार के स्वभाव वाला 2 दो होने वाला, -आमुष्यायणकः दो पिताओं का पुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, जो अपने मूल पिता की सम्पत्ति का भी साथ ही साथ उत्तराधिकारी हो। —आहवम् (द्व्याहवम्, द्व्यहवम्) चुनौतियों का संग्रह, —ककः, —ककारः 1 कौवा (क्योंकि 'काक' शब्द में दो 'क' होते हैं) 2 चकवा (क्योंकि कोक शब्द में भी दो 'क' हैं), —कक्षम् (पु०) ऊँट,

—गु (वि०) दो गौओं से विनिमय किया हुआ, (गुः) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक होता है —इन्द्रो द्विगुरपि चाहम्—उद्भट, —गुण (वि०) दुगुना, दोहरा, (द्विगुणीकृ—दो बार हल चलाना, दुगुना करना, बढ़ाना), —गुणित (वि०) 1 दुगुना किया हुआ, —कि० ५।४६ 2 दो तह किया हुआ 3 लपेटा हुआ 4. दुगुना बढ़ाया हुआ, —चरण (वि०) दो टाँगों वाला, दो पैरों वाला —द्विचरणपशूना द्विनिभुजाम्—शा० ४।१५, —चत्वारिंश (वि०) [द्वि—चत्वारिंशद्] बयालीसवाँ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) (द्वि-द्वाचत्वारिंशत्) बयालीस, ज दुज्जन्मा, 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे० याज्ञ० १।३९ 2 ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या संस्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है)—जन्मना जायते शूद्र संस्कारैर्द्विज उच्यते 3 °गठज ऋतु जैसे कि पक्षी, साँप, मछली आदि—स तमानदमविक्षत द्विज —नै० २।१, श० ५।२१, रघु० १२।२२, मुद्रा० १।११, मनु० २।१७ 4. दाँत - कीर्ण द्विजाना गणे —भर्तृ० १।१३ (यहाँ 'द्विज' शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) °अधम ब्राह्मण, °अग्र्य यज्ञोपवीत जिसे हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं, °आलय द्विज का घर °इन्द्रः,, °ईश 1 चन्द्रमा शि० १२।३ 2 गरुड का विशेषण 3 कपूर, °दास शूद्र, °पतिः, °राज 1 चन्द्रमा का विशेषण—रघु० ५।२३ 2 गरुड, 3 कपूर, °प्रवा 1 आलबाल, थावला 2 चुबच्चा (जहाँ पशु पक्षी पानी पीयें, °बन्धु, °बुव 1 जो ब्राह्मण बनने का बहाना करता है 2 जो जन्म से ब्राह्मण हो, कर्म से न हो, तु० ब्रह्मबन्धु, °लिङ्गिन् (पु०) 1 क्षत्रिय 2 झूठा ब्राह्मण, ब्राह्मण वेशधारी, °वाहन विष्णु की उपाधि (गरुडारोही), °सेवक शूद्र, —जन्मन्, - जाति (पु०) 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनु० २।२४ 2 ब्राह्मण—कि० १।३९, कु० ५।८० 3 पक्षी पक्षी 4 दाँत, —जातीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का, - जिह्व 1 साँप—शि० १।६३, रघु० ११।६४, १४।४१, भामि० १।२० 2 अनृतक, मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर 3 कपटी पुरुष, —त्व (वि०) (ब० व०) दो तीन - रघु० ५।२५, भर्तृ० २।१२१, - त्रिंश (द्वात्रिंश) 1. बत्तीसवाँ 2 बत्तीस से युक्त, —त्रिंशत् (द्वात्रिंशत्) बत्तीस, °लक्षण ३२ शुभलक्षणों से युक्त, —दण्डि (अव्य०) । डंडे से डंडा,— दत् (वि०) दो दाँत रखने वाला, - दश (वि०) (ब० व०) बीस, —दश (वि०) (द्वादश) 1. बीसवाँ, मनु० २।३६ 2 बारह से युक्त, —दशन् (द्वादशन्) (वि०, ब० व०) बारह, °अक्षः 1 बृहस्पति ग्रह तथा 2. देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण, °अक्षः °करः °लोचनः कार्तिकेय का विशेषण, °अंगुलः १२ अंगुल का माप, °अह 1 बारह दिन का समय—मनु० ५।८३, ११।६८ 2 १२ दिन तक चलने वाला या १२ दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ, °आत्मन् (पु०) सूर्य, °आदित्याः (ब० व०) बारह सूर्य दे० आदित्य, °आयुस् (पु०) कुत्ता, °सहस्र (वि०) १२००० से युक्त, - दशी (द्वादशी) चांद्र मास के पक्ष की १२वीं तिथि - दैवतम् विशाखानाम नक्षत्र, —दैहः गणेश का विशेषण, - धातु गणेश का विशेषण, —नवक वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हो चुकी हो,—नवत (द्वि-द्वानवत) बानवे, —नवतिः (द्वि-द्वानवतिः) बानवे, —द हाथी, °आस्य गणेश का विशेषण, —पक्षः 1 पक्षी 2 महीना,—पञ्चाश (द्वि-द्वापञ्चाश) (वि०) बावनवाँ, —पञ्चाशत् (द्वि-द्वापञ्चाशत्) (स्त्री०) बावन, —पथम् दो मार्ग, —पद, दुपाया, मनुष्य, - पक्षिका, —पदी 1 दुपाया मनुष्य 2 पक्षी, देवता, —पाद, - पाद्यम् दुहरा जुर्माना, - पाशिन् (पु०) हाथी,- बिंदु विसर्ग (:), —भुज, कोण, —भूम (वि०) (महल की भाँति) दो मंजिला, - मातृ, —मातृज 1 गणेश तथा 2 जरासंध का विशेषण, —मात्र दीर्घ स्वर (दो मात्राओं वाला), —मार्गा पगडंडी, —मुख जोक, —र 1 मौन—तु० द्विरेफ 2 भँवर, - रद हाथी—रघु० ४।४, मेघ० ५९, °अन्तक, °अरातिः °अशन सिंह, —रसनः साँप, —रात्रम् दो रातें, - रूप (वि०) 1 दो रूपों का, 2 दो रंग का, द्विरूपीय, - रेतस् (पु०) खच्चर, - रेफ भौंरा ('भ्रमर' इसमें दो 'र' हैं) कु० १।२७, ३।२७, ३६, —वचनम् (व्या० में) द्विवचन, —वज्रक १६ कोणों का खोखा या पार्श्वों का घर, —वाहिका बहंगी, —विंश (द्वाविंश) (वि०) बाइसवाँ, —विंशति (द्वाविंशति) (स्त्री०) बाईस, —विध (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का, मनु० ७।१६२, - वेशरा खच्चर, खच्चरों से खींची जाने वाली हल्की गाड़ी, - शतम् 1 दो सौ 2 एक सौ दो, —शत्य (वि०) दो सौ में खरीदा हुआ या दो सौ के मूल्य का, —शफ (वि०) दो फटे खुर वाला (फ) कोई भी फटे दो खुर वाला जानवर, —शीर्षः अग्नि का विशेषण, - षष्ठ (वि०) (ब० व०) दो बार छः, बारह, - षष्टि (द्विषष्ठि, द्वाषष्टि) बासठ, षष्टिः (स्त्री०) (द्विषष्टि, द्वाषष्टि) बासठ, —सप्तत (द्वि-द्वासप्तत) (वि०) बहत्तरवाँ,—सप्ततिः (स्त्री०) (द्वि+द्वासप्ततिः) बहत्तर, —सप्ताहः

पक्ष, पखवाड़ा, —सहस्र, साहस्र (वि०) २००० से युक्त (—सम्) दो हजार, —सीत्य, —हल्य (वि०) दोनो ओर से हल चला हुआ अर्थात् पहले लम्बाई की ओर से और फिर चौडाई की ओर से, —सुवर्ण (वि०) दो सोने की मोहरो से खरीदा हुआ या दो स्वर्ण मुद्राओ के मूल्य का, —हस्त (पु०) हाथी, —हायन्, —वर्ष (वि०) दो वर्ष की आयु का, —हीन (वि०) नपुंसक लिंग, —हृदया गर्भवती स्त्री —होतृ (पु०) अग्नि का विशेषण ।

द्विक (वि०) [द्वाभ्या कायति —द्वि + कै+क] 1 दोहरा, जोडी बनाने वाला, दो से युक्त 2 दूसरा 3 दोबारा होने वाला 4 दो अधिक बढ़ा हुआ, दो प्रतिशत —द्विक शत वृद्धि —मनु० ८।१४१-२ ।

द्वितय (वि०) (स्त्री० यी) [द्वौ अवयवौ यस्य —द्वि + तयप्] दो से युक्त, दो में विभक्त, दुगुना, दोहरा (कई बार ब० व० में प्रयुक्त) दुरन्वयानुमता किमन्तर यदि कार्यो द्वितयेऽपि ते चला रघु० ८।९०, —यम् जोडी, युगल रघु० ८।६,

द्वितीय (वि०) [इयौ पूरणम् - द्वि+तीय] दूसरा -त्व जौवित त्वमसि मे हृदय द्वितीयम् - उत्तर० २।२६, मेघ० ८३, रघु० ३।४९, -य 1 परिवार में दूसरा, पुत्र 2 साथी, साझीदार, मित्र, (प्राय समास के अन्त मे) प्रयतपरिग्रहद्वितीय —रघु० १।९५, इसी प्रकार छाया', दुख', या चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, पत्नी, साथी, साझीदार । सम०—आश्रम ब्राह्मण या गृहस्थ के जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् गार्हस्थ्य ।

द्वितीयक (वि०) [द्वितीय+कन्] दूसरा ।

द्वितीयाकृष्ट (वि०) [द्वितीय+डाच्+कृ+क्त] (खेत आदि) जिसमें दो बार हल चलाया जा चुका हो ।

द्वितीयिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [द्वितीय+इनि] दूसरे स्थान पर अधिकार किये हुए ।

द्विध (वि०) [द्विधा+क] दो भागो में विभक्त, दो टुकडो में कटा हुआ ।

द्विधा (अव्य०) [द्वि+धाच्] । दो भागो में—द्विधाभिन्ना शिखन्डिभि -रघु० १।३९, मनु० १।१२,३२, द्विधेव हृदय तस्य दुःखितस्याभवन्नदा—महा० 2. दो प्रकार से । सम० —करणम् दो भागों में विभाजन, टुकडे-टुकडे करना,—गति 1 उभयचर जन्तु, जल-स्थल-चर 2 केंकडा 3 मगरमच्छ ।

द्विशस् (अव्य०) [द्वि+शस्] दो दो करके दो के हिसाब से, जोडे में ।

द्विष् (अदा० उभ०—द्वेष्टि, द्विष्टे, द्विष्ट) घृणा करना, पसंद न करना, विरोधी होना—न द्वेष्टि यज्जनमत-स्तन्मनोरातशत्रु —वेणी० ३।१५, भग० २।५७, १८।१०, भट्टि० १७।६१, १८।९, रम्य द्वेष्टि—शा० ६।५, (प्र, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता) ।

द्विष् (वि०) [द्विष्+क्विप्] विरोधी, घृणा करने वाला, शत्रुवत्—(पु०) शत्रु,—रन्ध्रान्वेषणदक्षाणा द्विषामा-मिषता ययौ—रघु० १२।११, ३।४५, पंच० १।७० ।

द्विष [द्विष्+क] शत्रु (द्विषन्तप) वि० शत्रु को सन्तप्त करने वाला, परिशोष लेने वाला) ।

द्विषत् (पु०) [द्विष्+शतृ] शत्रु (कर्म० या सब० के साथ)—तत. पर दुष्प्रसह द्विषाद्भि —रघु० ६।३१, शि० २।१, भट्टि० ५।९७ ।

द्विष्ट (वि०) [द्विष्+क्त] । विरोधी 2 घृणित, अप्रिय,—ष्टम् तावा ।

द्विस् (अव्य०) [द्वि+सुच्] दो बार—द्विरुक्त प्रतिशब्देन व्याजहार हिमालय —कु० ६।६४, मनु० २।६० । सम०—आगमनम् (द्विरागमनम्) गौना, मुकलावा, दुल्हन का अपने पति के घर दूसरी बार आना, —आप (द्विराप) हाथी, उक्त (द्विरुक्त) (वि०) 1. आवृत्ति, पुनरुक्ति 2 अतिरेक, अनुपयोग,—उढा (द्विरूढा) पुनर्विवाहित स्त्री,—भाव,—वचनम् द्विरावृत्ति ।

द्वीप—पम् [द्विर्गता द्वयोर्दिशोर्वा गता आपो यत्र द्वि+अप्, अप ईप] 1 टापू 2 शरणस्थान, आश्रयगृह उत्पादन स्थान 3 भूलोक का एक भाग (भिन्न २ मतानुसार इन भागों की संख्या भी भिन्न २ है, चार, सात, नौ या तेरह, कमल की पखडियो की भाति सब के सब मेरु के चारों ओर स्थित है, इनमें से प्रत्येक को समुद्र एक दूसरे से वियुक्त करता है । नै० १।५ में अठारह द्वीपों का वर्णन है, परन्तु भाव की संख्या सामान्य प्रतीत होती है—तु० रघु० १।६५, और श० ७।३३, केन्द्रीय स्थान जम्बूद्वीप का है जिसमें भारतवर्ष विद्यमान है) । सम०—अर्णव चीन से प्राप्त कपूर ।

द्वीपवत् (वि०) [द्वीप+मतुप्] टापुओ से भरा हुआ, —(पु०) समुद्र,—ती पृथ्वी ।

द्वीपिन् (पु०) [द्वीप+इनि] 1 शेर—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति—सिद्धा० 2 चीता, व्याघ्र । सम०—चर्मन्,-चर्मन् 1 शेर की पूँछ 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

द्वेधा (अव्य०) [द्वि+धा], दो भागो में, दो तरह से, दो बार ।

द्वेष [द्विष्+घञ्] 1 घृणा, अरुचि, बीभत्सा, अनिच्छा, जुगुप्सा—श० ५।१८, भग० ३।३४, ७।२७, इसी प्रकार अन्नद्वेष, भक्तद्वेष 2 शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या —मनु० ८।२२५ ।

द्वेषण (वि०) [द्विष्+ल्युट्] घृणा करने वाला, नापसन्द

करने वाला,—अ शत्रु,—अम् घृणा, जुगुप्सा, शत्रुता, अरुचि।

द्वेषिन्, द्वेष्टृ (वि) [द्वेष+इनि, द्विष्+तृच्] घृणा करने वाला, (पु०) शत्रु।

द्वेष्य (स० कृ०) [द्विष्+ण्यत्] 1 घृणा के योग्य, 2 घिनौना, घृणित, अरुचिकर—रघु० १।२८,—अ शत्रु भग० ६।९, ९।२९, मनु० ९।३०७।

द्वैगुणिक [द्विगुण+ठक्] सूदखोर जो शत-प्रतिशत ब्याज लेता है।

द्वैगुण्यम् [द्विगुण+ष्यञ्] 1 दुगुनी राशि मूल्य या माप 2 द्वित्व, द्वैतावस्था 3 तीन गुणों (अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्) में से दो पर अधिकार रखना।

द्वैतम् [द्विधा इतम् द्वितम्, तस्य भाव स्वार्थे अण्] 1 द्वित्व 2 द्वैतवाद (दर्श०) दो विशद नियमों का प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति, ब्रह्म और विश्व, आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं—तु० 'अद्वैत'—किं शास्त्र श्रवणेन यस्य गलति द्वैतान्धकारोत्करः—भामि० १।८६ 3 एक जंगल का नाम। सम०—**वनम्** एक जंगल का नाम कि० १।१, —**वादिन्** (पु०) वह दार्शनिक जो द्वैतसिद्धान्त को मानता है।

द्वैतिन् (पु०) [द्वैत+इनि] द्वैतवादी दार्शनिक।

द्वैतीयीक (वि०) (स्त्री०—की) [द्वितीय+ईकक्] दूसरा—द्वैतीयीकतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वल—नै० २।११०, तु० तार्तीयीक।

द्वैध (वि०) (स्त्री०—धी) [द्वि+धमुञ्] दोहरा, दुगुना (**द्वैधीभू**—दो भागों में विभक्त होना, खण्ड २ होना, द्विविधा में पड़ना, मन में अनिश्चित होना), —**धम्** 1 द्वैतावस्था, दोहरी प्रकृति या अवस्था 2 दो भागों में विभक्ति 3 दुगुने साधन, गौण आरक्षण 4 विविधता, भिन्नता, संघर्ष, विवाद, विभेद —श्रुतिर्द्वैधं तु यत्र स्यात् तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ—मनु० २।१४, ९।३२, याज्ञ० २।७८ 5 संदेह, अनिश्चितता —भग० ५।२५, वेणी० ६।४४ 6 दो प्रकार का व्यवहार, दुरंगीनीति, विदेशनीति के छ प्रकारों में से एक, दे० नी० **द्वैधीभाव** और गुण।

द्वैधीभाव [द्वैध+च्वि+भू+घञ्] 1 द्वैतता, दो प्रकार की अवस्था या प्रकृति 2 दो खण्ड, विभिन्नता, द्विधाभाव 3 संदेह, अनिश्चितता, डांवाडोल होना निलम्बन,—धृतद्वैधीभावकातर मे मन—श० १ 4 दुविधा 5 विदेश नीति के छ गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार इसका अर्थ है—दो तरह का व्यवहार, दुरंगापन, बाहर से शत्रु के साथ मित्र जैसे संबंध रखना—बलिनोद्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन्, द्वैधीभावेन तिष्ठेत्स, काकाक्षिवदलक्षित, दूसरों के मतानुसार शत्रु की सेना में फूट डालना और अपने से बलवान् शत्रु का छोटी२ टुकड़ियों में मुकाबला करना तथा आक्रमण द्वारा उसे दुःखी करना—द्वैधीभाव स्वबलस्य द्विधा करणम् याज्ञ० १।३४७ पर मिता०, तु० मनु० ७।१७३, ब १६० से।

द्वैध्यम् [द्विधा+ष्यञ्] 1. दुरंगी चाल 2 विविधता, विभिन्नता।

द्वैप (वि०) (स्त्री०—पी) [द्वीप+अण्] 1 टापू से संबंध या टापू पर रहने वाला 2 शेर से संबंध रखने वाला, शेर की खाल का बना हुआ या व्याघ्र की खाल से ढका हुआ,—थ शेर की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

द्वैपदम् [द्विपद्+अण्] दो दल, दो टोलियाँ।

द्वैपायन [द्वीपायन+अण्] टापू में उत्पन्न, वेदव्यास।

द्वैप्य (वि०) (स्त्री०—प्या,—प्यी) [द्वीप+यञ्] टापू निवासी या टापू से संबन्ध—शि० ३।७६।

द्वैमातुर (वि०) [द्विमातृ+अण्] दो माताओं वाला, अर्थात् जन्मदात्री माता तथा सौतेली माता,—र. 1 गणेश का नाम 2 जरासंध का नाम—हते हिडिंबरिपुणा राज्ञि द्वैमातुरे युधि—शि० २।६०।

द्वैमातृक (वि०) (स्त्री०—की) [द्विमातृक+अण्] (वह देश) जहाँ वर्षा तथा नदी दोनों का जल खेती के काम आता हो (तु० 'देवमातृक')।

द्वैरथम् [द्विरथ+अण्] 1 दो रथारोहियों का एकाकी युद्ध 2 एकल युद्ध,—थ शत्रु।

द्वैराज्यम् [द्विराज्य+ष्यञ्] दो राजाओं में बँटा हुआ उपनिवेश।

द्वैवार्षिक (वि०) [द्विवर्ष+ठक्] प्रति दूसरे वर्ष होने वाला।

द्वैविध्यम् [द्विविध+ष्यञ्] 1 द्वैतता, दुरंगी प्रकृति, 2 विभिन्नता, विविधता, भिन्नता।

ध (वि०) [धा+ड] (समास के अन्त में), रखने वाला, सभालने वाला, -ध 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 कुबेर 3 भलाई, नेकी, आचार, गुण, **धन्** धन दौलत, सपत्ति।

धक् क्रोधोद्गार--उत्तर० ४।२४।

धक्क् (चुरा० उभ० धक्कयति-ते) ध्वस्त करना, नष्ट करना।

धट: [ध+अट्+अच्, शक० परुषम्] 1 तराजू, तराजू के पलड़े 2 तराजू द्वारा कठोर परीक्षा 3 तुला राशि।

धटक [घट+कै+क] ४२ गुजा या रत्तियों के समान एक प्रकार का तौल विशेष।

धटिका, घटी [घटी+कन्+टाप्, ह्रस्व, वन्+अच्+ङीष्, नि० नस्य ट] 1 पुराना कपड़ा या चिथड़ा 2 लगोटी

धटिन् (पु०) [घट+इनि] 1 शिव का विशेषण 2 तुला राशि,—**नी**=घटी।

धण् (म्वा० पर०-धणति) शब्द करना।

धत्तूर, धत्तूरक-**का** [धयति धातून् पे+उरच् पृषो०, धतूर+कन्, स्त्रियां टाप् च] धतूरे का पौधा।

धन् (भ्वा० पर०-धनति) शब्द करना।

धनम् [धन्+अच्] 1 सपत्ति, दौलत, धन, निधि, रुपया (सोना, आदि चल सपत्ति)—धनं तावदमुलभम्—हि० १, (आल० भी) जैसा कि तपोधन, विद्याधन आदि में 2 (क) मूल्यवान् सपत्ति, कोई प्रियतम या स्निग्धतम पदार्थ, प्रियतम निधि—कण्ट जन कुलधनैरनुरञ्जनीय—उत्तर० १।१४, गुरोरप्योद धनमाहितायने—रघु० २।४४, मानधनम्, अभिमान० आदि (ख) मूल्यवान् वस्तु मनु० ८।२०१, २०२ 3 पूंजी (विप० वृद्धि या ब्याज) 4 लूट का माल अपहृत वस्तु, ऊपरी आय 5 मल्लयुद्ध में विजेता को प्राप्त होने वाला पुरस्कार खेल में जीता हुआ पारितोषिक 6 पुरस्कार प्राप्त करने के लिए योग्यता, प्रतिद्वन्द्विता 7 धनिष्ठा नक्षत्र 8 फालतू अवशिष्ट 9 (गणि० में) जोड़ की राशि (विप० ऋण)। सम०—**अधिकार**, सपत्ति में अधिकार, उत्तराधिकार में सपत्ति पाने का हक,—**अधिकारिन्**, —**अधिकृत** 1 कोषाध्यक्ष 2 उत्तराधिकारी—**अधिगोप्तृ**,-**अधिप**—**अधिपति**, **अध्यक्ष** 1 कुबेर का विशेषण—कि० ०५।१६ 2 कोषाध्यक्ष, -**अपहार** 1 अर्थदंड 2 लूट खसोट का माल,—**अर्चित** (वि०) धन के उपहारों से सम्मानित, मूल्यवान् उपहारों से सतुष्ट किया गया,—मानधना धनार्चिता—कि० १।१९ 2 मालदार, धनाढ्य,—**अर्थिन्** (वि०) धनचक्षुक, लालची, कजूस, **आढ्य** (वि०) मालदार, धनी, दौलत मद,—**आधार** खजाना,—**ईश, ईश्वर** 1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण,—**उष्मन्** (पु०) धन की गर्मी—तु० अर्थोष्मन्,-**एषिन्** (पु०) साहूकार जो अपना रुपया मांगे,—**केलि**: कुबेर का विशेषण, **क्षय**: धन की हानि धनक्षये दहति जाठराग्नि—पच० २।१७८,-**गर्व**,—**गर्वित** (वि०) रुपये का घमंडी, **जातम्** सब प्रकार की मूल्यवान् सपत्ति समस्त द्रव्य,—**द** 1 उदार या दानशील व्यक्ति 2 कुबेर का विशेषण—रघु० ९।२५, १७।८० 3 अग्नि का नाम, "अनुज रावण का विशेषण—रघु० १२।५२, ८८,—**द** अर्थदंड, जुर्माना,—**दायिन्** (पु०) आग,—**पति** कुबेर का विशेषण—तवागार धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्—मेघ० ७५,७—**पाल**, कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण—**पिशाचिका, पिशाची** धन का राक्षस, धन की तृष्णा, लालच, लोलुपता, प्रयोग मूढ खोरी,—**मद** (वि) धन का घमंडी, **मूलम्** मूलधन, पूंजी, -**लोभ** तृष्णा, लिप्सा, **व्यय** 1 खर्च 2 अपव्यय,—**स्थानम्** खजाना, हर 1 उत्तराधिकारी 2 चोर 3 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य।

धनक, धनाया [धनस्य कामः धन+कन्] तृष्णा, लालच, लालसा।

धनञ्जय [धन+जि+खच्, मुम्] 1 अर्जुन का नाम (नाम की व्युत्पत्ति—सर्वाञ्जनपदान् जित्वा विशामादाय केवलम् मध्ये धनस्य निष्क्रामि तेनाहमपि धनञ्जयम्—महा० 2 अग्नि का विशेषण।

धनवत् (वि०) [धन+मतुप्] धनी, दौलतमंद।

धनिक [धनमादेयत्वेनास्ति अस्य ठन्] 1 धनवान् या दौलतमंद पुरुष 2 महाजन, साहूकार -दापयेद्धनिकस्यार्थम्—मनु० ८।५१ याज्ञ० २।५५, 3 पति 4 ईमानदार व्यापारी 5 'प्रियंगु' वृक्ष।

धनिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [धन+इनि] धनी, मालदार, दौलतमंद (पु०) 1 दौलतमंद 2 साहूकार--याज्ञ० २।१८,४१, मनु० ८।६१।

धनिष्ठ (वि०) [धन+इष्ठन्, धनिन् की उ० अ०] अत्यंत धनी,—**ष्ठा** तेईसवां नक्षत्र, (इसमें चार नक्षत्रों का पुंज है)।

धनी धानीका [धनमस्ति अस्य—धन्+अच्+ङीष] तरुणी, जवान स्त्री।

धनु [धन्—उ] धनुष, (समवन 'धनुस्' का ही रूप)

धनुष् (वि०) [धन्+उसि] 1. धनुष से सुसज्जित (नपु०)।

धनुष्,—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् कु० ३।६६, इसी प्रकार इन्द्रधनुः आदि (बहुव्रीहि समास के अन्त में 'धनुस्' के स्थान में 'धन्वन्' आदेश हो जाता है - रघु० २।८) 2 चार हाथ के बराबर लंबाई की माप —याज्ञ० २।१६७, मनु० ८।२३७ 3 वृत्त की चाप 4 धन राशि 5 मरुस्थल तु० धन्वन्। समः - कर (वि०—धनुष्कर) धनुष से सुसज्जित (र) धनुष बनाने वाला,—काण्डम् (धनुः काण्डम्) धनुष और बाण - खण्डम् (धनुः खण्डम्) धनुष का भाग—मनु० १५, —गुणः (धनुर्गुणः) धनुष की डोरी,—ग्रह (धनुर्ग्रह) धनुर्धारी,—ज्या (धनुर्ज्या) धनुष की डोरी —अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्—श० २।४,—द्रुम (धनुर्द्रुम) बाँस —धर,—भृत् (पु०) (धनुर्धर आदि) धनुर्धारी—रघु० २।११,२९, ३।३१,३८,३९, ९।११,१२।९३,१६।७७,—पाणि (वि०) (धनुष्पाणि) धनुष से सुसज्जित, हाथ में धनुष लिये हुए,—मार्ग (धनुर्मार्ग) धनुष की भाँति टेढ़ी रेखा, वक्र,—विद्या (धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान,—वृक्ष, (धनुर्वृक्षः) 1 बाँस, 2 अश्वत्थ का वृक्ष,—वेद (धनुर्वेद) चार उपवेदों में से एक - धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान।

धनू (स्त्री०) [धन्+ऊ] धनुष, कमान।

धन्य (वि०) [धन्+यत्] 1 धन प्रदान करने वाला, —मनु० ३।१०६, ४।१२ 2 दौलतमंद, धनी, मालदार 3 सौभाग्यशाली, भाग्यवान् महाभाग, ऐश्वर्यशाली—धन्य जीवनमस्य मार्गसरम -भामि० १।१६, धन्या केयं स्थिता ते शिरसि—मुद्रा० १।१ 4 श्रेष्ठ, उत्तम, गुणवान्,—न्य भाग्यवान् या सौभाग्यशाली, किस्मत वाला व्यक्ति—धन्यास्तद्वक्त्रजमा मलिनी भवन्ति—श० ७।१७, भर्तृ० १।८१, धन्य कोऽपि न विक्रिया कलयते प्राप्ते नवे यौवने-१।७२ 2 काफिर, नास्तिक 3 जादू,—न्या 1 धात्री 2 धनिया, -न्यम् दौलत, धन। समः—वाद 1 साधुवाद देने के लिए बोला जाने वाला शब्द, साधुवाद 2 प्रशंसा, स्तुति, वाहवाह।

धन्यमन्य (वि०) [धन्य+मन्+क्विप्, मुम्] अपने आपको भाग्यशाली मानने वाला।

धन्याकम् [धन्य+आकन्, नि०] 1 धनिये का पौधा 2 धनिया।

धन्वन् [धन्+वन] धनुष (श्रेष्ठ साहित्य में विरल प्रयोग)। समः—यि धनुष रखने की पेटी।

धन्वन् (पु०, नपु०) [धन्व+कनिन्] 1 सूखी जमीन, मरुभूमि, पानी की भूमि - एव धन्वनि चपकस्य सकले महारुहेष्वापि-भामि० २।३१ 2 समुद्रतट, ऊसर भूमि। समः दुर्ग गढ़ (जो चारों ओर फैली मरुभूमि के कारण अगम्य हो) -मनु० ७।७०।

धन्वन्तरम् (नपु०) चार हाथ के बराबर दूरी की माप, तु० दंड।

धन्वन्तरि [धन्व चिकित्साशास्त्रं तन्त्यालम्बतेऽनि-धन्व+अन्त+ऋ+इ] देवताओं के वैद्य का नाम, (कहते हैं कि धन्वन्तरि, समुद्रमंथन के फलस्वरूप, अमृत हाथ में लिए हुए समुद्र से निकले थे तु० चतुर्दंशरत्न।

धन्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन्व चापोऽस्त्यस्य इनि] धनुष से सुसज्जित, (पु०) 1 धनुर्धारी के सम धन्विनाऽऽर्ये - कु० ३।१०, उत्कर्षं स च धन्विना यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २।४ 2 अर्जुन 3 शिव और 4 विष्णु का विशेषण 5 धनु राशि।

धन्विन [धन्व्+इनन्] सूअर।

धम (वि०) (स्त्री० मा, मी) [धम्+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) 1 धौंकने वाला—अग्निन्धम, नाडिन्धम 2 पिघलाने वाला, गलाने वाला,—मः 1 चन्द्रमा 2 कृष्ण की उपाधि 3 मृत्यु के देवता यम, और 4. ब्रह्मा का विशेषण।

धमक [धम्+ण्वुल्] लुहार।

धमधमा (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो धौंकनी या बिगुल की ध्वनि का व्यक्त करता है।

धमन (वि०) [धम्+ल्युट्] 1 धौंकने वाला 2 क्रूर, न० एक प्रकार का नरकुल।

धमनि, नी [धम्+अनि, धमनि+ङीष्] 1 नरकुल, नै 2 शरीर की नाड़ी, शिरा 3 गला, गर्दन।

धमि [धम्+इ] फूंक मारना।

धम्मल्ल, धम्मिल्ल, धम्मिल्ल [धम्+क्विप्, मिल्+क, प०] स्त्री के सिर का मीठीदार अलंकृत जूड़ा जिसमें मोती और फूल लगे हों -आकुलाकुलगलद्धम्मिल्ल-गीत० उरसि • निपतितानां अस्तधम्मिल्लकानाम् (वधूनाम्) भर्तृ० १।४९, शृंगार० १।

धय (वि०) [धे+श] (प्रायः समास के अन्त में) पीने वाला चूसने वाला जैसा कि 'स्तनंधय' में।

धर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [धृ+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) पकड़ने वाला, ले जाने वाला, संभालने वाला, पहनने वाला, रखने वाला, करने में करने वाला, संपन्न, प्रस्तुत करने वाला, निरीक्षण करने वाला जैसा कि अक्षधर, अक्षुधर, गदाधर, गणाधर, महीधर, अम्बुधर, दिव्याम्बरधर आदि,—रः 1 पहाड़ उत्कन्धरं दृष्टुमवेक्ष्य शौरिम्- स्कन्धर दारुक इत्युवाच -शि० ४।१८ 2 कुंई का ढेर 3 आला, छिछोरा 4 कच्छपराज अर्थात् कूर्म- वतार भगवान् विष्णु 5 एक वस्तु का नाम।

धरण (वि०) (स्त्री० णी) [धृ+ल्युट्] थामने वाला, धारण करने वाला, संभालने वाला आदि, णः 1 टीला (जो पुल का काम दे रहा हो), पर्वतपार्श्व

2 संसार 3 सूर्य 4 स्त्री की छाती 5 चावल, अनाज हिमालय (पहाड़ों का राजा), भृ 1 सहारा देना, निर्वाह कराना, संभालना -सारधरिष्णो धरणक्षम ब --कु० १।१७, धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे —गीत० १ 2 कब्जे में करना, लाना, उपलब्ध करना 3 थूनी, टेक, सहारा 4 सुरक्षा 5 दस पल के बजन का बट्टा।

धरणि, —णी (स्त्री) [धृ+अनि, धरणि+ङीष्] पृथ्वी—लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम --गीत० ५ 2 भूमि, मिट्टी 3 छत का शहतीर 4 नाड़ी, शिरा। सम०—ईश्वर 1 राजा 2 विष्णु का या 3 शिव का विशेषण, --कीलक, पहाड़, —ज, —पुत्र, सुत 1 मंगल के विशेषण 2 'नरक' राक्षस के विशेषण, --जा, - पुत्री—सुता जनक की पुत्री सीता (पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण) का विशेषण धरः 1 शेष या 2 विष्णु का विशेषण 3 पहाड़ 4 कछुवा 5 राजा 6 हाथी (जो, कहते हैं, कि पृथ्वी को संभाले हुए हैं), —धृत् (पु०) 1 पहाड़ 2 विष्णु या 3 शेष का विशेषण।

धरा [धृ+अच्+टाप्] 1 पृथ्वी- धरा धारापातैर्मणिमयशरीरैर्भिदत इव --मृच्छ० ५।२२ 2 शिरा 3 गूदा 4 गर्भाशय या योनि। सम०—अधिपः - राजा,--अमरः,—देव -सुर ब्राह्मण,—आत्मज, —पुत्र - सुत् 1 मंगल ग्रह के विशेषण 2 नरक राक्षस के विशेषण, आत्मजा सीता का विशेषण, —उद्धार पृथ्वी का छुटकारा,—धर 1 पहाड़ 2 विष्णु या कृष्ण का विशेषण 3 शेष का विशेषण, -पति 1 राजा 2 विष्णु का विशेषण,—भृत् (पु०) राजा, --भृत् (पु०) पहाड़।

धरित्री [धृ+इत्र+ङीष्] 1 पृथ्वी, श० २।१४, रघु० १४।५४ कु० १।२, १७ 2 भूमि, मिट्टी।

धरित्र (पु०) [धृ+इत्रच्] तराजू, तराजू के पलड़े।

धत्तूर [-धुस्तुर पृषो० साधु] धतूरे का पौधा।

धत्रम् [धृ+त्र] 1 घर 2 थूनी, टेक 3 यज्ञ, 4 सद्गुण, भलाई, नैतिक गुण।

धर्म [धियते लोकोऽनेन, धरति लोक वा धृ+मन्] 1 कर्तव्य, जाति, सम्प्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन 2 कानून, प्रचलन, दस्तूर, प्रथा, अध्यादेश, अनुविधि 3 धार्मिक या नैतिक गुण, भलाई, नेकी, अच्छे काम (मानव अस्तित्व के चार पुरुषार्थों में से एक) कु० ५।३८, दे० 'त्रिवर्ग' भी, एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः --हि० १।६५ 4 कर्तव्य शास्त्र विहित आचरण क्रम,—एष्ठाशवृत्तेपि धर्म एष श० ५।४, मनु० १।११४ 5 अधिकार, न्याय, औचित्य या न्यायसाम्य, निष्पक्षता, 6 पवित्रता, औचित्य, शालीनता 7 नैतिकता, नीतिशास्त्र, 8 प्रकृति, स्वभाव, चरित्र—या० १।६, प्राणि°, जीव° 9 भूल गुण, विशेषता, लाक्षणिक गुण (विशिष्ट) विशेषता -वदन्ति वर्ण्यावर्ण्यानां धर्मैक्य दीपक बुधा —चन्द्रा० ५।४५ 10 रीति, समरूपता, समानता 11 यज्ञ 12 सत्संग, भद्रपुरुषों की संगति 13 भक्ति, धार्मिक भावमग्नता 14 रीति प्रणाली 15 उपनिषद् 16 ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर 17 मृत्यु का देवता यम। सम०—अङ्ग-, --गा सारस, अधर्मौ (पुं० द्वि० व०) सत्य और असत्य, कर्तव्य और अकर्तव्य, °विद् (पु०) मीमांसक जो कर्म के सही या गलत मार्ग को जानता है, - अधिकरणम् 1 विधि का प्रशासन 2 न्यायालय, —अधिकरणिन् (पु०) न्यायाधीश, दण्डनायक, --अधिकार 1 धार्मिक कृत्यों का अवीक्षण --श० १ 2 न्याय-प्रशासन 3 न्यायाधीश का पद, --अधिष्ठानम् न्यायालय, - अध्यक्ष 1 न्यायाधीश 2 विष्णु का विशेषण, —अनुष्ठानम् धर्म के अनुसार आचरण, अच्छा आचरण, नैतिक चालचलन, - अपेत (वि०) जो धर्म विरुद्ध हो, दुराचारी, अनीतिकर, अधार्मिक (तम्) दुर्व्यसन, अनैतिकता, अन्याय, —अरण्यम् तपोवन, वन जिसमें संन्यासी रहते हों--धर्मारण्य प्रविशति मज —श० १।३३. —अशील (वि०) झूठे चरित्र वाला —आकरः धर्मशास्त्र, विधि-ग्रन्थ, --आचार्य 1 धर्मशिक्षक 2 धर्मशास्त्र या कानून का अध्यापक, —आत्मज युधिष्ठिर का विशेषण, आत्मन् (वि०) न्यायशील, भला, पुण्यात्मा, सद्गुणी, -- आसनम् न्याय का सिंहासन, न्याय की गद्दी, न्यायाधिकरण — न सभामितमद्य धर्मासनमध्यासितुम्—श० ६, धर्मासनाद्विशति वासगृह नरेन्द्र —उत्तर० १।७, --इत्त युधिष्ठिर का विशेषण, - इष्ठ धर्म का विशेषण —उत्तर (वि०) अतिधार्मिक, जो न्याय धर्म का प्रधान पक्षपाती हो, निष्पक्ष और न्यायपरायण— धर्मोत्तर मध्यममाश्रयन्ते—रघु० १३।७, — उपदेश 1 धर्म या कर्तव्य की शिक्षा, धार्मिक या नैतिक शिक्षण 2 धर्मशास्त्र,— कर्मन् (नपु०) - कार्यम्, क्रिया, कर्तव्य कर्म, नीति का आचरण, धर्मपालन, धार्मिककृत्य या संस्कार 2 सदाचरण,—कषायहृदय कलियुग, —काय बुद्ध का विशेषण, - क्षीर अनुदान, राजकीय लेख या शासन, —क्षेत्रः बुद्ध का विशेषण,—कोश - व धर्मसंहिता, धर्मशास्त्र—धर्मकोशस्य गुप्तये— मनु० १।९९ —क्षेत्रम् 1 भारतवर्ष (धर्म की भूमि) 2 दिल्ली के निकट का मैदान, कुरुक्षेत्र (यहां ही कौरव पांडवों का महायुद्ध हुआ था)—धर्मक्षेत्रे कुरु-

धेनु समर्पेना युयुत्सव --भग० १।१, --वद वैशाख के महीने में ब्राह्मण को प्रतिदिन दिये जाने वाले सुगन्धित जल का घड़ा, --चक्षुस् (पु०) बौद्ध का नेत्र, --चरणम्, --चर्या कानून का पालन, धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन--कु० ७।८३, --चारिन् (वि०) सद्व्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक --रघु० ३।४५, (पु०) सन्यासी

चारिणी 1 पत्नी 2 पतिव्रता सती साध्वी पत्नी, --चिन्तनम्, --चिन्ता भलाई या सद्गुणों का अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विमर्श, --ज 1 धर्म से उत्पन्न, वैध, पुत्र, असली बेटा --तु० मनु० ९।१०७ 2 युधिष्ठिर का नाम, --जन्मन् (पु०) युधिष्ठिर का नाम, --जिज्ञासा धर्म सम्बन्धी पूछताछ, सदाचरण विषयक पच्छा--अथातोधर्मजिज्ञासा --जै०,--जीवन (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करता है, (न) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मानुष्ठान में साहाय्य प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, --ज्ञ (वि०) सही बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक कानूनों का जानकार--मनु० ७।१४१, ८।१७९, १०।१२७ 2 न्यायशील, नेक, पुण्यात्मा, --त्याग अपने धर्म का त्याग करने वाला, धर्मच्युत,--दारा (पु०, ब० व०) वैध पत्नी - स्त्रीणा भर्ता धर्मदाराश्च पुमा---मा० ६।१८, द्रोहिन् (पु०) राक्षस, --धातु बुद्ध का विशेषण, --ध्वज, ध्वजिन् (पु०) धर्म के नाम पर पाखंड रचने वाला, छद्मवेशी, धर्मन युधिष्ठिर का विशेषण --नाथ कानूनी अभिभावक, वैध स्वामी, नाभ विष्णु का विशेषण,---निष्ठा: धार्मिक भक्ति, -निष्पत्ति: (स्त्री०) कर्तव्य का पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान,--पत्नी वैधपत्नी, धर्मपत्नी---रघु० २।२,२०,७२,८।७, याज्ञ० २।१२८, --पथ भलाई का मार्ग, चाल चलन का सन्मार्ग, --पर (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला, --पाठक नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्यापक, --पाल. कानून का रक्षक (आल० से इसे 'दंड' कहते हैं), दण्ड, सजा, तलवार,--पीडा कानून का उल्लंघन करना, कानून के प्रति अपराध,--पुत्र 1 धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से उत्पन्न किया या माना गया हो केवल कामवासना का परिणाम न हो) 2 युधिष्ठिर का विशेषण, --प्रवक्तृ (पु०) 1 धर्म का व्याख्याता, कानूनी सलाहकार, 2 धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, --प्रवचनम् 1 कर्तव्य-विज्ञान- उत्तर० ५।२३ 2 धर्म की व्याख्या करना, (न) बुद्ध का विशेषण,---ज्ञा (वा) चिन्तिक 1 जो अपने सद्गुणों से व्यापारी की भांति लाभ उठाने का प्रयत्न करता है 2 लाभदायक व्यवसाय को करने वाले व्यापारी की भांति जो पुरस्कार पाने की इच्छा से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है,--भगिनी 1. वैधभगिनी 2 धर्मगुरु की पुत्री 3 धर्मबहन, अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए जिसको बहन मान लिया जाता है, भार्या साध्वी पत्नी, --भाणक: व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत आदि ग्रन्थों की व्याख्या सार्वजनिक रूप से अपने श्रोताओं के सामने रखता है, भ्रातृ (पु०) 1 धर्म-शिक्षा का सहपाठी, धर्म का भाई 2 वह व्यक्ति जिसको अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए, भाई मान लिया जाता है, महामात्र: धर्ममंत्री, धार्मिक मामलों का मंत्री,- मूलम् नागरिक या धार्मिक कानूनों की नींव, वेद,- युगम् सतयुग, कृतयुग,- यूप विष्णु का विशेषण,-- रति (वि०) भलाई और न्याय में प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, न्याय-शील रघु० १।२१, राज् (पु०) यम का विशेषण, -- राज 1 यम 2 जिन 3 युधिष्ठिर, और 4 राजा का विशेषण, रोधिन् (वि०) 1 कानून के विरुद्ध, अवैध, अन्यायी 2 अनैतिक, - लक्षणम् 1 धर्म का मूल चिह्न 2 वेद, (मा) मीमांसा दर्शन,--लोप 1 धर्माभाव, अनैतिकता, कर्तव्य का उल्लंघन--रघु० १।७६, वत्सल (वि०) कर्तव्यशील, धर्मात्मा,--वर्तिन् (वि०) न्याय परायण, नेक, --वासर: पूर्णिमा का दिन,- वाहन 1 शिव का विशेषण 2 भैंसा (यम की सवारी), --विद् (वि०) (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञाता, --विधि: वैध उपदेश, या आदेश, विप्लव कर्तव्य का उल्लंघन, अनैतिकता, वीर (अल० शा० में) भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न वीर रस, शौर्यसहित पवित्रता का रस, रस० में निम्नांकित उदाहरण दिया गया है --सपदि विलयमेतु राज-लक्ष्मीरुपरि पतन्त्वथवा कृपाणधारा, अपहरतुतरां शिर कृतान्तो मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्।

--वृद्ध (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ (बूढा)--कु० ५।१६, वैतंसिक: वह जो अपने आपको उदार प्रकट करने की आशा में, अवैधरूप से कमाये हुए धन को दान कर देता है, --शाला 1 न्यायालय, न्यायाधिकरण 2 धर्मार्थ-संस्था, शासनम्,-- शास्त्रम् धर्मसंहिता न्यायशास्त्र हि० १।१७, याज्ञ० १।५,--शील (वि०) न्यायशील, पुण्यात्मा, सदाचारी या सद्गुणी,- संहिता धर्मशास्त्र (विशेष रूप से मनु, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा प्रणीत स्मृतियाँ),--सङ्ग: 1 सद्गुण या न्याय में अनुराग या आसक्ति 2 पाखंड,--सभा न्यायालय,

—सहाय: धार्मिक कर्तव्यों के पालन करने में सहायक, साथी या साझीदार।

धर्मतः (अव्य०) [धर्म+तसिल्] 1 धर्म के अनुसार, नियमानुकूल, अच्छे तरीके से, धर्म पूर्वक, न्याय के अनुकूल 2 भलाई से, नेकी के साथ 3 भलाई या नेकी के उद्देश्य से।

धर्मयु (वि०) [धर्म+यु] 1. सद्गुणसम्पन्न, न्यायशील, पुण्यात्मा, नेक।

धर्मिन् (वि०) [धर्म+इनि] 1 सद्गुणों से युक्त, न्यायशील, पुण्यात्मा 2 अपने कर्तव्य को जानने वाला 3 कानून का पालन करने वाला 4 (समास के अंत में) किसी वस्तु के गुणों से युक्त, प्रकृति का, विशिष्ट गुणों से युक्त,—षट्मुखा द्विजधर्मिण - मनु० १०। १४, कल्पवृक्षफलधर्मिण: कांक्षितम्— रघु० ११।५०, (पु०) विष्णु का विशेषण।

धर्मोपुत्र (पु०) अभिनेता, नाटक का पात्र, खिलाड़ी।

धर्म्य (वि०) [धर्म+यत्] 1 धर्मसम्मत, कर्तव्यसंगत कानूनी रूप से सही, वैध - मनु० ३।२२, २५, २६ 2 धर्मयुक्त (कार्य)—कु० ६।१३ 3 न्यायोचित, भला, उपयुक्त धर्म्यादिदमुद्वाह्यो योऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते —भग० २।३१, ९।२, याज्ञ० ३।४४ 4 वैध, यथारीति 5 विशेष गुणों से युक्त यथा 'तद्धर्म्यम्'।

धर्ष [धृष+घञ्] 1 गुस्ताखी, अविनय अहंकार, ढिठाई 2 घमंड, अभिमान 3 अधीरता 4 संयम 5 बलात्कार, (स्त्री का) सतीत्व हरण 6 क्षति, बुराई, अवज्ञा 7 हीजड़ा। मध्य०—कारिणी बलात्कार द्वारा जिसका सतीत्वहरण हो चुका हो।

धर्षक (वि०) [धृष्+ण्वुल्] 1 हमला करने वाला, आक्रमणकारी, प्रहार करने वाला 2 बलात्कार करने वाला, सतीत्वहरण करनेवाला 3 अधीर,—क 1 सतीत्वहर्ता, व्यभिचारी, बलात्कारी 2 अभिनेता, नर्तक।

धर्षणम्,-णा [धृष्+ल्युट्] 1 धृष्टता, अविनय 2 अवज्ञा, मानहानि 3 आक्रमण, अत्याचार, सतीत्वहरण, बलात्कार नारी° 4 स्त्रीसंभोग 5 तिरस्कार, निरादर 6 दुर्वचन।

धर्षणि:,-णी [धृष्+अनि, धर्षणि+ङीष्] असती, स्वैरिणी, कुलटा स्त्री।

धर्षित (वि०) [धृष्+क्त] 1 जिसका चरित्र भ्रष्ट किया गया है, अत्याचार पीड़ित, जिसके साथ बलात्कार हो चुका है 2 विजित, पराभूत, परास्त—नै० २२।१५५ 3 जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, जिसे गाली दी गई है, तिरस्कृत,—क्त 1 औद्धत्य, घमंड 2 सहवास, मैथुन,—ता कुलटा, असती स्त्री।

धर्षिन् (वि०) [धृष्+णिनि] 1 घमंडी, उद्धत, उद्दंड 2 आक्रमण करने वाला, सतीत्वहरण करने वाला, बलात्कार करने वाला 3 तिरस्कार करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला 4 बेधड़क, दिलेर 5 स्त्री सहवास करने वाला,—णी कुलटा, या असती नारी।

धव [धू+अप्] 1 हिल-डुल, कम्पन 2 मनुष्य 3 पति-यथा 'त्रिधवा' में 4 मालिक, स्वामी 5 बदमाश, ठग 6 एक प्रकार का वृक्ष 'धौ'।

धवल: [धव कम्प लाति—ला+क तारा०] 1 श्वेत, —धवलातपत्रम् धवल गृहम् 2 सुन्दर 3 स्वच्छ, विशुद्ध,—क 1 श्वेत रंग 2 अत्युत्तम बैल 3 चीनी कपूर 4 'धव' नाम का वृक्ष,—लम् सफेद कागज —ला सफेद गाय, धौली गाय। सम०—अम्बुजम् श्वेत कुमुद (चन्द्रोदय होने पर इस का खिलना प्रसिद्ध है)—गिरि हिमालय पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी, -गृहम् चूने से पुता घर, महल, -पक्ष: 1 हंस 2 चान्द्रमास का शुक्लपक्ष, मृत्तिका खाक-मिट्टी।

धवलित (वि०) [धवल+इतच्] सफेद किया हुआ, श्वेत बना हुआ।

धवलिमन् (पु०) [धवल+इमनिच्] 1 सफेदी, सफेद रंग 2 पाण्डुता पीलापन - इव भूतिर्नाङ्गे प्रियविरह-जन्मा धवलिमा -सुभा०।

धविष्ठम् [धू+इष्ठ] मृगचर्म से बना पत्ता।

धा (जुहो० उभ० दधाति, धत्ते, हित, कर्मवा० धीयते, प्रेर० धापयति-ते, इच्छा० दित्सति—ते) 1 रखना, धरना, जड़ना, लिटा देना, भर्ती करना, तह जमाना - विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम्— महा०, नि शंक धीयते (अने० पा० 'दीयते' के स्थान पर) लोकै पश्य भस्मन्यये पदम्—हि० २।१७३ 2 जमाना, (मन और विचारों को) लगाना, (सप्र० या अधि० के साथ) —धत्ते चक्षुर्मुकुलिनि रतक्लोकिले बालचूते—मा० ३।१२, दधु कुमारानुगमे मनांसि—भट्टि० ३।११, २।७ मनु० १२।२३ 3 प्रदान करना, अनुदान देना, देना, अर्पित करना, उपहार देना, (सप्र० सब० या अधि० के साथ) धुरां लक्ष्मीमव मयि मृषा धेहि देव प्रसीद - मा० १।३, यस्यास्य सोऽदधात्सर्गे तस्यास्य स्वयमाविशत्—मनु० १।२९ 4 पकड़ना, रखना—तानसि दधासि भास्वत—भामि० १।६८, श० ४।१ 5. पकड़ना, हस्तगत करना—भट्टि० १।२६, ४।२६, कि० १३।५४ 6 पहनना, धारण करना, वहन करना - गुरूणि वासांसि विहाय सूर्ये तनूनि''' धत्ते जन काममदालसाङ्गी—ऋतु० ६।१३, १६, धत्ते भरं कुसुमपत्र फलावलीनाम्—भामि० १।९४, दधतो मङ्गलश्रीमे—रघु० १२।८, ९।४०, भट्टि० १८।५४ 7 धारण करना, लेना, रखना, दिखलाना, प्रदर्शन करना, कब्जे में करना (प्राय आ०)—काच काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्—हि० प्र० ४१, शिरसि मसीपटल

दधाति दीपः—भामि० १।७४, रघु० २।७, अमरु २३।६७, कैच० ३६, भर्तृ० ३।४६, रघु० ३।१, भट्टि० २।१,४।१६–१८, शि० ९।३,१०।८६, कि० ५।५ 8. सभालना, निबाहना, थामे रखना,—गामवास्थत्कथ नाभो मृणालमृदुभि कथं —कु० ६।६८ 9. सहारा देना, स्थापित रखना —तपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वय – रघु० १।२६ 10 पैदा करना, रचना करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना, बनाना—सुधा कुड्मलितानने दधती वायु स्थिता तस्य सा—अमरु ७० 11 सहना, भोगना, ग्रस्त होना–शि० ९।२, ३२,६६ 12. सम्पन्न करना, ['दा' की भांति इस धातु के अर्थ भी दूसरे शब्दों के साथ जुड़ने से विविध प्रकार के हो जाते हैं, उदा० मनःधा, मतिधा, चित्तं धा, मन को लगाना, विचारों को लगाना दृढ़ संकल्प करना, पक्षं धा पक्ष रखना, प्रविष्ट होना, कर्णे करं धा, कान पर हाथ रखना] अतिसृज्—ठगना, धोखा देना भगवन् कुसुमायुध त्वया चन्द्रमसा च विश्वसनीयाभ्यामतिसंधीयते कामिजनस्यार्थे –श० ३, विक्रम० २, अन्तर्–, 1 मन में रखना, मानना, ग्रहण रखना—तया विश्वम्भरे देवि मामवधातुमर्हसि – रघु० १५।८१, 2 अपने आपको छिपाना, गुप्त रखना, ओझल होना (मप्र० के साथ) –भट्टि० ५।३२, ८।७१, 3 ढकना, छिपाना, दृष्टि से ओझल करना, लपेटना, ढांकना (आल० भी) पितुरन्तर्दधे कोटिं शीलवृत्तसमाधिभि —महा० अनुसृज्—, 1 ढूंढना, पूछताछ करना, अन्वेषण करना, आचरतलाश करना 2 सचेत होना, अपने आपको शान्त करना 3 उल्लेख करना, संकेत करना, लक्ष्य बनाना 4 योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, क्रम में रखना, अपि—(कभी कभी 'अपि' का 'अ' लुप्त हो जाता है)। (क) बन्द करना, मेंदना ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति–गीत० ५, इसी प्रकार–कर्णौ नयने-पिदधाति (ख) ढकना, छिपाना, गुप्त रखना, —प्रायो मूर्खं परिभवविधौ नाभिमान पिधत्ते –शृंगार० १७, प्रभावपिहिता विक्रम० ४।२, शि० ९।७६, भट्टि० ७।६९ 2. रोकना, बाधा डालना, प्रतिबंध लगाना भुजङ्गपिहितद्वार पातालमधितिष्ठति—रघु० १।८० अभि –, (क) कहना, बोलना, बताना—कु० ३।६३, मनु० १।४२, भट्टि० ७।७८, भग० १८।६८, (ख) 1. संकेत करना, व्यक्त करना, मुख्यतः बतलाना प्रस्तुत करना—साक्षात्संकेतित योऽर्थेनाभिधत्ते स वाचक काव्य० 2 तात्पर्य येनाभिदधाति सत्त्वम् 2 अभिघात होना, पुकारना, अभिसृज्–, 1 किसी पर फेंकना, निशाना लगाना, (तीर आदि का) लक्ष्य बनाना 2 ध्यान में रखना, (मन में) निशाना बनाना, सोचना—कृष्यमूलकमभिसंधाय —महावी० ५, अभिसंधाय तु फलम्—भग० १७।१२, २५, विक्रम० ४।२८ 3. धोखा देना, ठगना – जन विद्वानेक सकलमभिसंधाय - मा० १।१४ 4 अपने पक्ष में कर लेना, मित्र बना लेना, दूसरों का मित्र बन जाना नात्मवन्तमभिसंदध्यात् सामादिभिरुपक्रमैं मनु० ७।१५९ (वशीकुर्यात्) 5 प्रतिज्ञा करना, प्रकथन करना 6 जोड़ना, अभ्या नीचे रखना, नीचे फेंकना, अव– सावधान होना, ध्यान देना, कान देना इतोऽवधत्ता देवराज – महावी० ६, आ, (प्राय 'आ०' में) 1 रखना, धरना, ठहरना—जनपदे न गद पदमादधौ—रघु० ९।४, भट्टि० ५।४० शि० ४।३ 2 प्रयोग करना, जमाना, किसी की ओर संकेत करना प्रतिपाद्यमाधीयता यत्न —श० १, मय्येव मन आधत्स्व – भग० १२।८, आधीयता धैर्ये धर्मे च धी —का० ६३, 3 लेना, अधिकार में करना, ग्रहण रखना- गर्भमाधत्त राज्ञी रघु० २।७५, (गर्भ ग्रहण किया) आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मी- - कि० ५।३९, (लेती है या धारण करती है) कु० ७।२६, 4 बोझा उठाना, थामना, सहारा देना शेष सदेवाहितभूमिभार –श० ५।४ 5 पैदा करना, उत्पादन करना, सर्जन करना, उत्तेजित करना (भय या आश्चर्य) छायाश्चरन्ति बहुधा भयमादधाना –श० ३।२७, कि० ८।१२ 6 देना, समर्पित करना रघु० १।८५ 7 नियुक्त करना स्थिर करना तमेव चाधाय विवाहसाक्ष्ये—रघु० ७।२० 8 संस्कृत करना—कु० १।४७ 9 अनुष्ठान करना, (व्रत आदिका) पालन करना, आविस्, भेंट खोलना, प्रकट करना (श्रेष्यसाहित्य में बहुत प्रयोग नहीं) उप , 1 रखना, उठाना, नीचे रखना, अन्दर रखना अधिज्ञातु बाहुमुपधाय शि० ९।५४, हृदि येनामुपधातुमर्हसि —रघु० ८।७७, (हृदयस्थित करने के लिए) उपहित शिरोरुपधानश्रिया मुकुलजालयशोभन किशुके–रघु० ९।३१, कु० १।४४ 2 निकट रखना, – (घोड़े आदि को) जोतना, महावी० ४।५६ 3 पैदा करना, निर्माण करना, उत्पादन करना मृच्छ० १।५३ 4. ऊपर डालना, सौंपना, संभालना, देख रेख में करना —तदुपहितकुटुम्ब –रघु० ७।७१, 5 तकिये के स्थान में प्रयुक्त करना—वामभुजमुपधाय—दश० १११ 6 काम में लगाना, अभ्यर्थना करना, प्रदान करना —क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति - रघु० ३।२९ 7. ढकना, छिपाना 8 देना, बताना, समाचार देना, उपरि– 1. निकट रखना, ऊपर रखना 2 पहनना 3 पैदा करना, सर्जन करना, उत्पादन करना —भर्तृ० ३।८५, तिरस्–, 1 छिपाना, गुप्त रखना,

2 (आ०) लुप्त होना, ओझल होना—अभिमुख्य-मवस्थस्य कृष्णसर्पस्तिरोदधे--रघु० १०।४८, ११।९१, तिरस्—के नी० भी देखिये नि०, 1 रखना, धरना, जमा देना—शिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम् —भर्तृ० ३।१२१, रघु० ३।५०, ६२, १२।५२ वि० १।१३ 2 भरोसा करना, सौंपना, देख-रेख में रखना—निदधे विजयाशंसां चापे सीता च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४, १४।३६ 3 देना,समर्पित करना, जमा कर देना—दिनान्ते निहितं तेज सवित्रेव हुताशन —रघु० ४।१ 4 दबा देना, शान्त करना, रोक देना—सलिलै निहित रज शितौ--घट० १ 5 दफन करना, (भूमि के अन्दर) गाड देना, छिपाना—मनु० ५।६८, परि—, 1 (वस्त्रादिक) पहनना, धारण करना—त्वच स मेध्यां परिधाय रौरवी--रघु० ३।३१ 2 अहाता बना लेना, घेरा डाल लेना 3. किसी की ओर सकेत करना, पुरस् - सिर पर रखना या धारण करना तुरासाह पुरोधाय बाम स्वायभुव मयु —कु० २।१, रघु० १२।४३ 2 कुलपुरोहित बनाना, प्रणि, —रखना, नीचे करना या लिटा देना, साष्टाग प्रणत होना--प्रणिहितशिरस वा कान्तभाद्रोपराधम् --मालवि० ३।१२, तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम् भग० ११।४४ 2 जडना, अन्दर रखना, अन्दर लिटाना, पेटी में बन्द करना—यदि मणिस्तैपुणि प्रणिधीयते--पच० १।७५, अने० पा० 3 प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर सकेत करना -भर्तुं प्रणिहितेक्षणाम्—रघु० १५।८४, भट्टि० ६।१४२ 4 फैलाना, विस्तार करना--मामाकाश-प्रणिहितभुज निर्दयाश्लेपहेतो मेघ० १०६, नीवी प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण सख्य शपामि यदि किंचिदपि स्मरामि—काव्य० ४ 5 (चर के रूप मे) बाहर भेजना, प्रतिधि , 1 प्रतीकार करना, सशोधन करना, मरम्मत करना, बदला लेना, उपाय करना, विरुद्ध पग उठाना अर्थवाद एव , दोष तु मे कचि-त्कथय येन स प्रतिविधीयेत --उत्तर० १, क्षिप्रमेव कस्मान्नप्रतिविहितमार्येण मुद्रा० ३ 2 व्यवस्था करना, क्रम से रखना, सजाना 3 प्रेषित करना, भेजना, प्रधि --, 1 बाँटना 2 क्रूरना, बनाना, वि --, 1 करना, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना, सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना यथाक्रम पुत्रवत्सादिका क्रिया धृतेश्च घोर सदृशीर्व्यधत्त स.—रघु० ३।१०--तस्मै-देया विधेयासु:—भट्टि० १९।२, विधेयासुर्देवा परमरमणीया परिणतिम्—मा० ६।७, प्राय शुभ च विदधात्यशुभ च जन्तो सर्वंकृपा भगवती भवित-व्यतैव १।२३, ये दे काल विधत्त - श० १।१, पैदा करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना —तस्य तस्यावधां यद्धां तामेव विदधाम्यहम् - भग० ७।२१, रघु० २।३८, ३।६६, (यह अर्थ 'विधा' के साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और भी अधिक अदल-बदल किए जा सकते हैं, तु० 'कृ') 2 निर्धा-रित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत करना, स्थिर करना, आदेश देना, आज्ञा देना—प्राङ्-नाभिवर्धनात्पुसो जातकर्म विधीयते - मनु० २।२९, ३।१९, याज्ञ० १।७२, शूद्रस्य तु सवर्णैव नान्या भार्या विधीयते - ९।१५७, ३।११८ 3 रूप बनाना, शक्ल देना, सर्जन करना, निर्माण करना—स वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, अङ्गानि चम्पक-दलै स विधाय नूनं कान्तै कथं घटितवानुपलेन वेधा —शृङ्गार० ३ 4 नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना (मन्त्री आदि को) 5 पहनना, धारण करना - पच० १।२९ 6 स्थिर करना, (मन आदि को) लगाना —भग० २।४४, भर्तृ० ३।५४ 7 क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना 8 तैयार करना, तत्पर करना, अव—, 1 बीच में रखना, बीच में डालना, हस्तक्षेप करना प्रेक्ष्य स्थिता सहचरी व्यवधाय देहम् --रघु० ९।५७ 2 छिपाना, ढकना, पर्दा डालना— शापव्यव-हितस्मृत —श० ५,—अव्—, भरोसा करना, विश्वास रखना (कर्म० के साथ)—क श्रद्धास्यति भूतार्थम्—मृच्छ० ३।२४, अद्धा त्रिदशलोपमात्रके दारुण-मितमति कृष्णवर्त्मनि—रघु० ११।४२, सम्—, 1 मिलाना, एकत्र लाना, सयुक्त करना, मिला देना,—यानि उदकेन समीयते तानि भक्षणीयानि - कुल्लूक० 2 बर्ताव करना, मित्रता करना, सधि करना—अगुणा न हि सदभ्यात्सुश्लिष्टेनापि सधिना - हि० १।८८, चाण० १९, काम० ९।४१ 3 स्थिर करना, सकेत करना --सदधे दृढमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९ 4 (किसी अस्त्र या तीर आदि को) धनुष पर ठीक-ठीक बैठाना, या ठीक से जमाना—धनुष्यमोघ समधत्त बाणम्—कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७ 5 उत्पादन करना, पैदा करना—पर्याप्त मधि रमणीयकमरत्व सधत्ते गगनतलप्रयाणवेष --मा० ५।३, सधत्ते मृगा-मरति हि सहिवोष —कि० ५।५१ 6 मुकाबला करना, मुकाबले में सामने आना, सतमेकोऽहि सधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धर —मच० १।२२९ 7 सुधारना, मरम्मत करना, स्वस्थ करना 8 कष्ट देना 9. ग्रहण करना, सहारा देना, बाजूओं संभालना 10 अनुदान देना, सम्—, 1.रखना, एकत्र रखना,—मनु०२।१८६ 2 निकट रखना—श० ३।१९, 3 स्थिर करना, निर्दिष्ट करना—रघु० १३।१४४ 4 निकट जाना पहुँचना--शृङ्ग० निकट लाना, एकत्र सग्रह करना, समा—, 1. एकत्र रखना या धरना, मिलाना, सयुक्त

करना 2. रखना, धरना, स्थापित करना, लागू करना —एवं मूर्ध्नि समाधत्ते केसरी मत्तदन्तिन पंच० १। ३२७ 3 जमाना, अभिषेक करना, राजगद्दी पर बिठाना—रघु० १७।८ 4 समाप्तवस्त होना, (मन को) शान्त करना—मन समाधाय निवृत्तशोक —रामा०, न शक्नोक समाधातु मनो मदनवेपितम् —भाग० 5 संकेन्द्रित करना, (आँख या मन आदि को) एकाग्र करना,—मन० १२।९, भर्तृ० ३।४८ 6 संतुष्ट करना, (शंका का) समाधान करना, आक्षेप का उत्तर देना—इति समाधत्ते (टीकाओं में) 7. मरम्मत करना, सुधारना, ठीक करना, हटा देना —न ते शक्या समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्नामपद यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्- ४।७ 8 विचार करना—भट्टि० १२।६ 9 सौंपना, अर्पण करना, हस्तान्तरित करना 10 पैदा करना, कार्यान्वित करना, सम्पन्न करना (निम्नांकित श्लोक में सोपसर्ग धा धातु के प्रयोगों का चित्रण किया गया है अधिन कापि मुखे सलिल सखी व्यधित कापि सरोजदलै स्तनौ, व्यधित कापि हृदि व्यजनानिल न्यधित कापि सुतनो स्तनौ नै० ४।१११, इससे भी अच्छा निम्नांकित जगन्नाथ का श्लोक - निधान धर्माणं किमपि च विधान नवमुदा प्रधान सौधानामसलपरिधान त्रिजगत. समाधान बुद्धेरथ खलु निरोधानमधिया श्रियामाधान न परिहरतु ताप तव वपु -गगा० १८)।

धाक: [धा+क उणा०—तस्य नेत्वम्] 1 वेल 2 आधार, आश्रय 3 आहार, भात 4 स्थंभा, खंभा, स्तंभ।

धाटी [घट्+घञ्+ङीष्] धावा, आक्रमण।

धाणक: [धा+आणक] एक सोने का सिक्का (दीनार का अंश)

धातु: [धा+तुन्] संघटक या मूल भाग, अवयव 2 मूल तत्त्व, मूल या तत्त्व मूलक सामग्री —अर्थात् पृथिवी, आप्, तेजस्, वायु और आकाश, 3 रस, मुख्य द्रव्य या रस, शरीर का अनिवार्य उपादान (यह गिनती में सात माने जाते हैं —रसासृङ्मासमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातव कई बार केश, त्वच् और स्नायु को मिला कर दस मान लिये जाते हैं) 4 शरीर के स्थितिविधायक तत्त्व (अर्थात् वात, पित्त, कफ - त्रिदोष) 5 खनिज पदार्थ, धातु, कच्ची धातु —स्वस्तारा धातुरसेन यत्र,—कु० १।७, स्वामालिख्य प्रणयकुपिता धातुरागै शिलाया —मेघ० १०५,—रघु० ४।७१, कु० ६।५१ 6 क्रिया का मूल, भूवादयो धातव —पा० १।३।१, पचाद्यच्प्रत्ययनार्थस्य धातोरधिरिवाभवत्—रघु० १५।९ 7 आत्मा, 8 परमात्मा 9 ज्ञानेन्द्रिय 10 पांच महाभूतों का गुण — अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द 11 हड्डी। सम० उपल: लोहिया, चाक्—काक्षीक,क्—कासीसम्—कसीस, कुशल—(वि०) धातु के कार्यों में दक्ष—क्रिया धातुकार्मिकी, धातुकर्म, खनित्री, धातुविज्ञान—क्षय शरीर के तत्त्वों का नाश, क्षयरोग,—जम् शिलाजीत, सैलज तेल,—द्रावक सुहागा,—पः स्वार्थ, पौष्टिक रस, शरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान —पाठ: पाणिनि की व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी धातुओं की सूची (पाणिनि के सूत्रों के परिशिष्ट के रूप में धातु पाठ, पाणिनि निर्मित एक आवश्यक सूची है), भृत् (पु०) पहाड़,—मलम् 1 शरीरस्थ धातुओं के मल के अपवित्र रूपान्तर 2 सीसा,—मातृकम् 1 एक उपधातु सोनामक्खी 2 खनिज पदार्थ, मारिन् (पु०) गधक, राजक. वीर्य,—वल्लभम् सुहागा,—वाद खनिज विज्ञान, धातुविज्ञान,—वादिन् (पु०) खनिज विज्ञाता—वैरिन् (पु०) गधक,—शोधनम् कासीस, गधक का तेजाब,—क्षोभणम्,—सभवम् सीसा,—साम्यम् अच्छा स्वास्थ्य (त्रिदोष-समता)।

धातुमत् (वि०) [धातु+मतुप्] धातुओं से भरा हुआ, धातु संपन्न। सम०—त्व धातुओं का बाहुल्य,—कु० १।४।

धातृ (पु०) [धा+तृच्] 1 निर्माता, रचयिता, उत्पादक, प्रणेता 2 धारण करने वाला, संधारक, सहारा देने वाला 3 सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण मन्ये दुर्जनचित्तवृत्तिहरणे धातापि भग्नोद्यम—हि० २।१६५, रघु० १३।६, शि० १।१३, कु० ७।४४ कि० १२।३३ 4 विष्णु का विशेषण 5. आत्मा 6 ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि होने के कारण सप्तर्षियों के नाम, तु० कु० ६।९ 7 विवाहित स्त्री का प्रेमी व्यभिचारी।

धात्रम् [धा+ष्ट्रन्] बर्तन, पात्र।

धात्री [धात्र+ङीष्] 1 दाई, धाय, उपभाता उवाच धात्र्या प्रथमांदितं वच -रघु० ३।२५ कु० ७।२५ 2 माता—यात्र० ३।८२, 3 पृथ्वी 4 आँवले का वृक्ष। सम० पुत्र धाय का पुत्र, धर्म भाई 2 अभिनेता, —फलम् आँवला।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्व, धात्री ढक् ङीप्] धात्रीपुत्री—धात्रेयिकायाश्चतुर वचश्च -मा० १।३२, कथितमेव नो मालतीधात्रेय्या लवङ्गिकया—मा०१ 2 धाय, दूध पिलाने वाली धाय।

धामन्,—नी [धा स्यट्, धात+ङीप्] आधार, पात्र, गद्दी, स्थान, जैसा कि मसीधानी, राजधानी, यमधानी।

धाना: (स्त्री० ब० व०) [धान+टाप्] भुने हुए जौ या चावल, खील 2 सत्तू 3 अनाज, अन्न 4 कली, अंकुर।

धानुर्दण्डिकः, धानुष्कः [धनुर्दण्ड+ठक्, धनुष्+टक्+क] तीरन्दाज, (धनुष के द्वारा अपनी जीविका कमाने) वाला धनुर्धर—निमितादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव चक्षिति-तम् - शि० २।२७।

धानुष्य [धनुष्+ष्यञ्] बाँस।

धांधा (स्त्री०) इलायची।

धान्यम् [धान+यत्] 1 अनाज, अन्न, चावल 2 धनिया (सस्य और धान्य, तथा तण्डुल और अन्न की भिन्नता के लिए दे० तण्डुल)। सम०—अम्लम् मांड से तैयार की हुई काँजी, अर्घ चावल या अनाज के रूप में धन, अस्थि (नपु०) तूस या भूसी, दूर या चोकर,—उत्तम बढ़िया अन्न अर्थात् चावल,—कणः 1 छिलका (अन्न का), धान्यत्वचा 2 भूसी, चोकर, पुआल, —कोशः,—कोष्ठकम् अनाज की खत्ती, —क्षेत्रम् अनाज का खेत, खलः चौला, चिउड़ा,—त्वच् (स्त्री०) अनाज का छिलका, —वाहः अनाज का व्यापारी,—राज जौ, —वर्धनम् ब्याज के लिए अनाज उधार देना, अनाज की सूदखोरी, —बीजम् (बीजम्) धनिया,—वीर उड़द (माष) की दाल, —शोषकम् अनाज को डाल,—सूकम् अनाज का सिट्टा, ठूंठ, सार, कूट पीट कर निकाला हुआ अन्न।

धान्या, धान्यकम् [धान्य+टाप्, स्वार्थे कन् च] धनिया।

धान्वन् (वि०) (स्त्री० -नी) [अध्वन्+अण्] मरु-भूमि का, मरुस्थल में विद्यमान।

धामकः [=धानक पृषो०] एक माशे की तोल।

धामन् (नपु०) [धा+मनिन्] 1 आवास—स्थान, गृह, निवासस्थान, घर—नृसाह पुरोधाय धाम स्वाय-भुव ययु कु० २।१, पुण्य यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३, भग० ८।२१, भर्तृ० १।३३ 2 जगह, स्थान, आश्रय—श्रियोधाम 3 घर के निवासी, परिवार के सदस्य 4 प्रकाश किरण, सहस्र-धामन्—मुद्रा० ३।१७, हिमधामन्—शि० ९।५३ 5 प्रकाश, कान्ति, दीप्ति—मुद्रा० ३।१७, कि० २।२०, ५४, ५९, १०।६, अमरु ८६, रघु० ६।६, १८। २२, 6 राजयोग्य कांति, यश, प्रतिष्ठा—रघु० ११। ८५ 7 शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २।४७ 8 जन्म 9 शरीर 10 टोली, दल 11 अवस्था, दशा। सम०—केशिन्,—निधिः सूर्य।

धामनिका, धामनी [धामनी+कन्+टाप् ह्रस्व, धमनी +अण्+ङीप्] दे० धमनी।

धार (वि०) [धृ+णिच्+अच्] 1 सभालने वाला, थामने वाला, सहारा देने वाला, 2. नदी की भांति प्रवाहित होने वाला, टपकने वाला, बहने वाला,—रः 1 विष्णु का विशेषण 2 वर्षा की आकस्मिक तथा तीव्र बौछार, तेजी से उड़ा ले जाने वाली झड़ी 3 हिम, ओला 4 गहरी जमाह 5 व्रण 6. ह्रद, सीमा।

धारकः [धृ=ण्वुल्] 1 किसी प्रकार का बर्तन (बकस टूक आदि), जलपात्र 2 कर्जदार।

धारण (वि०) (स्त्री० -णी) [धृ=णिच्+ल्युट्] सभालने वाला, थामने वाला, ले जाने वाला सधा-रण करने वाला, निबाहने वाला, रक्षा करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला,—णम् 1 सभालने, थामने, सहारा देने, सधारण करना या सुरक्षित रखने की क्रिया 2 कब्जे में करना, सपत्ति 3 पालन करना, दृढ़ता पूर्वक पकड़ना, 4 याद रखना—ग्रहणधारण पट्टबालक 5 (किसी का) कर्जदार होना,—णी 1 पंक्ति या रेखा 2 शिरा, नलाकार वाहिका।

धारणकः [धारण+कन्] कर्जदार।

धारणा [धारण+टाप्] 1 सभालने, थामने, सहारा देने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2. मन में धारण करने की शक्ति, अच्छी धारणात्मकस्मरण शक्ति —धीर्धारणावती मेधा। अमर 3 स्मरण शक्ति 4 मन को शांत रखना, श्वास को थामे रखना, मन की दृढ़ भावमग्नता—परिचेतुमुपाञ्जु धारणा—रघु० ८।१८, मनु० ६।७२, याज्ञ० ३।२०१, (धारणेत्युच्यते चेयं धार्यते यन्मनस्तया) 5 धैर्य, दृढ़ता, स्थिरता 6 निश्चित विधि या नियेध, निश्चित नियम, उप-सहार, इति धर्मस्य धारणा -मनु० ८।१८४, ४।३८, ९।१२४ 7 समझ, बुद्धि 8 न्यायता, औचित्य, शालीनता 9 आस्था, विश्वास। सम०—योग गहरी भक्ति, मनोयोग,—शक्ति (स्त्री०) धारणात्मक स्मरण शक्ति।

धारणिकी [धृ+णिच्+तृच+ङीप्] पृथ्वी।

धारा [धार+टाप्] 1 पानी की सरिता या धार, गिरते हुए जल की रेखा, सरिता, धार भर्तृ० २।९३, मेघ० ५५, रघु० १६।६६, आबद्धधारमम्बु प्रावर्तत —दश० ७४ 2 बौछार, वर्षा की तेज झड़ी 3 अन-वरत रेखा—भामि० २।२० 4 घड़े का छिद्र 5 घोड़े का कदम—धारा प्रसाधयितुमव्यतिकीर्णरूपा —शि० ५।६० 6 हाशिया, किनारा, किसी वस्तु की किनारी या शोभा—ध्रुव स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलता छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—रघु० ३।९८ 7 तलवार, कुल्हाड़ा या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या धार—तर्जित परशुधारया मम—रघु० ११।७८, ६।४२, १०।८६, ४१, भर्तृ० २।२८ 8. किसी पहाड़ या चट्टान का किनारा 9 पहिया या पहिये का परिधाह या परिधि रघु० १३।१५ 10. उद्यान की दीवार, बाड़, छाड़बंदी 11 सेना की अग्रिम पंक्ति 12 उच्चतम बिन्दु, सर्वोपरिता 13 समुच्चय

14 यश, 15 रात 16 हल्दी 17 समानता, 18 कान का अग्रभाग। सम०--अस्त्रम् बाण का चौड़ा फलका, --अङ्कुरः 1 वर्षा की बूंद 2. ओला 3 (शत्रु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे २ बढ़ते जाना,—अंगः तलवार,—अदः 1. चातक पक्षी 2 घोड़ा 3 बादल 4 मदमाता हाथी,—अभिरुद् (वि०) उच्चतम स्वर तक उठाया हुआ -अवनिः (स्त्री०) हवा, -अम्बु (नपु०) अश्रु प्रवाह—अमर १० -आसारः भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव -हि० ३, विक्रम० ४।१, —उक्ष्ण (वि०) (गौ के स्तन से निकला हुआ) गरम (दूध), -गृहम् स्नानागार जिसमें फौवारा लगा हो, घर जिसमें फौवारे से सुसज्जित स्नानागार हो—रघु० १६।४९, रत्न० १।१३, -धरः 1 बादल 2 तलवार, -निपात, -पात 1 बारिश का होना, बौछार का टपटप गिरना मेघ० ४८ 2 जल की धारा सरिता, -यन्त्रम् फौवारा, झरना (पानी का) अमर ५९, रत्न० १।१२,—वर्षं,-वर्षम्-संपातः लगातार घोर मूसलाधार वृष्टि रघु० ४।८२, --वाहिन् (वि०) अनवरत, लगातार -उत्तर० ४।२, -विषः टेढ़ी तलवार।

धारित्री [धृ+णिनि+ङीप्] पृथ्वी।

धारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [धृ+णिनि] 1. ले जाने वाला, वहन करने वाला, निबाहने वाला, सुरक्षित रखने वाला, रखने वाला, सभालने वाला, सहारा देने वाला पादाम्भोरुहधारि —गीत० १२, कर आदि 2 स्मृति में रखने वाला, धारणात्मक स्मरण शक्ति रखने वाला, अजेभ्यो ग्रन्थिन श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वरा मनु० १२।१०३।

धार्तराष्ट्र [धृतराष्ट्र+अण्] 1 धृतराष्ट्र का पुत्र 2 एक प्रकार का हंस जिसके पैर और चोंच काली होती है निष्पतन्ति धार्तराष्ट्रा कालवशान्मेदिनीपृष्ठे -वेणी० १।६, (यहाँ शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त है)।

धार्मिक (वि०) (स्त्री०-की) [धर्म+ठक्] 1 नेक, पुण्यात्मा, न्यायशील, सद्गुणसंपन्न 2 सत्याश्रित, न्याय्य, न्यायोचित 3 धर्म से युक्त।

धार्मिकम् [धर्मिन्+अण्] सद्गुणियों का समाज।

धार्ष्ट्यम् [धृष्ट+ष्यञ्] अहंकार, अविनय, औद्धत्य, ढिठाई, अक्खड़पन।

धाव् (स्वा०पर०--धावति, धावित) 1 दौड़ना, आगे बढ़ना अद्यापि धावति मन -वेणी० ३६, धावन्त्यधी मृगजवाक्षमयेव रथ्या -रघु० १८, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः १।३४, 2. किसी की ओर दौड़ना, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ना, आक्रमण करना, मुकाबला करना भट्टि० १६।६७ 3 बहना, नदी की भांति प्रवाहित होना- धावत्यसि तैलवत् - सुश्रु० 4 दौड़ना, उड़ जाना॥ (स्वा० उभ०--धावति-ते, धौत, धावित) 1 धोना, साफ करना, माजना, निर्मल करना, रगड़ना दधावाद्भिस्तत्तच्चक्षुः सुग्रीवस्य विभीषणः, विद्राधकार धौताक्षः स रिपुं स ननंद च भट्टि० १४।५०, शि० ६।२५, शि० १७।८ 2 उज्ज्वल करना, चमकाना 3 किसी व्यक्ति से टकराना (आ०) निस्, धो डालना--निर्धौतं सति हरिचन्दने जलौघैः -शि० ३।५१, निर्धौतदानामलगंडभित्तिं रघु० ५।४३, ७०।

धावकः [धाव्+ण्वुल्] 1 धोबी, 2 एक कवि (कहा जाता है कि इसने श्रीहर्ष राजा के लिए रत्नावली की रचना की थी --श्रीहर्षदेवधावकादीनामिव यशः -काव्य० १, अमे० पा० प्रथितयशसां भासकसौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धाननिक्रम्य -मालवि० १, अने० पा०।

धावनम् [धाव्+ल्युट्] 1 दौड़ना, सरपट भागना 2 बहना, 3 आक्रमण करना 4 माजना, पवित्र करना रगड़ना, बहा देना 5 किसी चीज से रगड़ना।

धावल्यम् [धवल+ष्यञ्] 1 सफेदी 2 पाण्डुरता।

धि। (तुदा० पर० धियति) संभालना, रखना, अधिकार में करना, सम्—, सुलह करना तु० सधा०॥ (या धिन्व् स्वा० पर० धिनोति) प्रसन्न करना, खुश करना, संतुष्ट करना पश्यन्ती चात्मरूपं तदपि विलुलितस्वधरेयं धिनोति गीत० १२, धिनोति तास्माञ्जलजेन पूजा त्वयान्वहं नन्वि वितन्यमाना—नै० ८।९७, उत्तर० ५।२७, कि० १।२२।

धि. (समास के अन्त में प्रयुक्त) आधार, भंडार, आशय आदि उदधिः, दृषधि, वारिधि, जलधि आदि।

धिक् (अव्य) [धा+डिकन्] निन्दा, बुराई, विषाद की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय--(धिक्कार, फटे मुंह, शर्म, दुःख, तरस — कर्म० ,,य) --धिक् ता च त च मदनं च इमां च मां—च, भर्तृ० २।२, धिगिमां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५० धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्गः, धिक् सानुजं कुरुपतिं धिगमात्यं—शत्रु वेणी० ३।११, कभी-कभी कर्तृ० सर्वो० और सम्० के साथ -धिगधिगां कष्टमसह्यया पत्या० १, धिङ्मूर्खं, धिगस्तु हृदयस्यास्य (धिक्कृ तिरस्कार करना) अवज्ञा करना, रद्द करना, बुरा भला कहना)। सम०--कारः--क्रिया धिक्कार करना, फटकारना, तिरस्कार करना अवज्ञा करना, -शब्दः डांटफटकार बताना, निंदा—मनु० ८।१२९,—वाक्यम् अपशब्द, डांट फटकार, भर्त्सना।

धिप्सु (वि०) [दम्भ्+सन्+उ] धोखा देने का इच्छुक, धोखा देने वाला—भट्टि० ९।३३।

धिन्व दे० धि०।।

धिषणः [धृष्+क्यु, धिष् आदेश] देवों के गुरु बृहस्पति का नाम,—णम् निवासस्थान, आवास, घर, —णा 1 भाषण, 2 स्तुति, सूक्त 3 बुद्धि, समझ महावी० ६।७ 4 पृथ्वी 5 प्याला, कटोरा।

धिष्ण्य [धृष्+ण्य नि० ऋकारस्य टकार] 1 यज्ञाग्नि के लिए स्थान, हवनकुण्ड, अग्नीधेदि परित कृतधिष्ण्या—श० ४।७ 2 असुरों के गुरु शुक्राचार्य का नाम 3 शुक्र ग्रह 4 शक्ति, सामर्थ्य,—ण्यम् 1 आसन, आवास, स्थान, जगह, घर—न भौमान्येव धिष्ण्यानि हित्वा ज्योतिर्मयान्यपि—रघु० १५।२९, 2 केतु, उल्का 3 अग्नि 4 तारा, नक्षत्र।

धी (स्त्री०) [ध्यै+क्विप्, सम्प्रसारण] 1 (क) बुद्धि, समझ—धिय समर्थं स गुणैरुदारधीं—रघु० २।३० —कृ० कुधी, सुधी आदि (ख) मन, **दुष्टधी** दुष्ट बुद्धि वाला—भग० २।५४, रघु० ३।३० 2 विचार कल्पना, उत्प्रेक्षा, प्रत्यय—न धिया पथि वर्तसे—कु० ६।२२ 3 विचार, आशय, प्रयोजन, नैसर्गिक प्रवृत्ति, कि० १।३७ 4 भक्ति, प्रार्थना 5 यज्ञ। सम०—**इन्द्रियम्** प्रत्यक्षज्ञान का अंग (ज्ञानेन्द्रिय), मन कर्णस्तथा नेत्र रसना च त्वचा सह, नासिका चेति षट्-तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते, —**गुणा** (ब० व०) बौद्धिक गुण, (शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणा तथा, ऊहापोहार्थविज्ञान तत्त्वज्ञान च धीगुणा—कामन्दक), —**पति** (धिया पति) देवों के गुरु बृहस्पति —**मन्त्रिन्** (पु०),—**सचिव** 1 सलाहकार मन्त्री (विप० कर्मसचिव—कार्यान्वयीमन्त्री) 2 बुद्धिमान् और दूरदर्शी सलाहकार, —**शक्ति** (स्त्री०) बौद्धिक शक्ति,—**सखः** सलाहकार, परामर्शदाता, मन्त्री।

धीत (वि०) [धे+क्त] 1. चूसा गया, पीया गया, दे० 'धे'।

धीति (स्त्री०) [धे+क्तिन्] 1 पीना, चूसना, 2 प्यास।

धीमत् (वि०) [धी+मतुप्] बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, विद्वान् (पु०) बृहस्पति का विशेषण।

धीर (वि०) [धी+रा+क] 1 बहादुर, उद्धत साहसी —धीरोद्धता गति—उत्तर० ६।१९ 2 स्थिर, सुदृढ़, अटल, टिकाऊ, चलाऊ, न्यायी—रघु० २।६ 3 दृढ़-मनस्क, धैर्यवान्, स्वस्थचित्त, अडिग, दृढ़ निश्चय वाला,—धीरा न तरन्त्यापद—का० १७५, विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा—कु० १।५२ 4 स्वस्थचित्त, शान्त, मायावान् 5 सौम्य, स्थिरबुद्धि, प्रशान्त, गम्भीर—रघु० १८।४ 6 मजबूत, बलवान् 7 बुद्धिमान्, दूरदर्शी, प्रतिभाशाली, समझदार, विद्वान् चतुर—धृतैश्च धीरैः सदृशीर्व्यधत्त स—रघु० ३।१०, ५।३८, १६।७४, उत्तर० ५।३१ 8 गहरा, गम्भीर, ऊँचा स्वर, खोखलास्वर स्वरेण धीरेण निवर्तयन्निव—रघु० ३।४३, ५२, उत्तर० ६।१७ 9 आचरणशील, आचारवान् 10 (वायु आदि) मन्द, मृदु, सुहावना, सुखकर—धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत० ५ 11 सुस्त, आलसी 12 साहसी 13 हेकड़,—रः 1 समुद्र 2 राजा बलि का विशेषण,—रम् केसर, जाफरान,—रम् (अव्य०) साहसपूर्वक, दृढ़ता के साथ, अडिग होकर धीरज के साथ—भर्तृ० २।३१, अमरु ११। सम०—**उदात्तः** अच्छे विचारों का शूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में) नायक,—अविकत्थन क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्व, स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रत कथित—सा० द० ६६,—**उद्धतः** शूरवीर परन्तु अभिमानी (काव्य-नाटक में) नायक—मायोपेत प्रचण्डप्रचपलोद्धतकार-दर्पभूयिष्ठ, आत्मश्लाघानिरतो धीरैर्धीरोद्धत कथित —सा० द० ६७,—**केलस्** (वि०) दृढ़, अडिग, दृढ़ मन वाला, साहसी,—**प्रशान्तः** (काव्य नाटक में) नायक जो शूरवीर और शान्त व्यक्ति हो—सामान्य-गुणभूयान् द्विजातिको धीरप्रशान्त स्यात्—सा० द० ६९, **ललित** (काव्य नाटक में) नायक जो दृढ़ और शूरवीर होने के साथ-साथ क्रीडाप्रिय और असावधान हो निश्चिंतो मृदुरनिश कलापरो धीर-ललित स्यात् सा० द० ६८, —**सत्त्व** भैंसा।

धीरता [धीर+तल्+टाप्]। धैर्य, साहस, मनोबल —विपत्तौ च महाँल्लोके धीरतामनुगच्छति—हि० ३।४४ 2 ईर्ष्या का दमन 3 गम्भीरता, शान्तचित्तता —प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरता कल्पयामि—मेघ० १०४, (दूसरे अर्थों के लिए दे० 'धैर्य')।

धीरा [धीर+टाप्] काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी, उसकी उपस्थिति में अपनी बाह्य भावमुद्रा से अपना रोष प्रकट नहीं होने देती—रसमञ्जरी की उक्ति - व्यङ्ग्य-कोप प्रकाशिका धीरा - दे० सा० द० १०२–५, भी। सम०—**अधीरा** काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने रोष को अभिव्यक्त भी कर देती है, और अपनी ईर्ष्या को छिपा भी लेती है—व्यङ्ग्याव्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा-धीरा—रसमञ्जरी।

धीलटिः, -टी (स्त्री०) [धी+लट्+इन्, धीलटि+ङीष्] पुत्री, बेटी।

धीवरः [दधाति मत्स्यान्—धा+क्वरच्] मछुवा—मृग-मीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनां, लुब्धक-धीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति—भर्तृ० २।६१,

१।८५,—इष्, लोहा,—री 1. मछुवे की स्त्री 2 मछलियां रखने की टोकरी ।

धू (स्वा० उभ०—धुनोति, धुनुते, धुत) दे० 'धू' ।

धृष् (स्वा० आ० धृष्णुते, धृष्णित) 1 सुलगना 2 जीना 3 कष्ट भोगना—प्रेर० धृषयति—सुलगाना, प्रज्वलित करना, इच्—सुलगाना, उत्तेजित होना (आल० भी) सदुधृक्षे तयो कोप —भट्टि० १४।१०९, प्रेर० सुलगाना, प्रज्वलित करना, उत्तेजित करना —निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं सधुक्षयन्तीव वपुर्गुणेन —कु० ३।५२ ।

धृत (वि०) [धृ+क्त] 1. हिला हुआ,—रघु० ११।१६ 2 छोड़ा हुआ, परित्यक्त ।

धृनि, -नी (स्त्री०) [धृ+नि, धूनि+ङीष्] नदी, दरिया—पुराणा सहतु सुरधृनि कपर्दोऽधिरुरुहे—गंगा० २२ । सम०—नाथः समुद्र ।

धुर् [धुर्व्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—ड्) 1 (शा०) जूआ, न गदभा वाजिधुर वहन्ति—मृच्छ० ४।१७ अन्यस्तुभिर्युक्तधुर्यं तुरङ्गैः —रघु० १४।४७, 2 जूए का वह भाग जो कंधों पर रक्खा रहता है, 3 पहिए की नाभि को धुरी के साथ स्थिर करने के लिए धुरी के दोनों किनारों पर लगी कील 4 गाड़ी का बम 5 बोझा, भार (आल० भी) उत्तरदायित्व, कर्तव्य, कार्य—तेन धुर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे—रघु० १।३४, २।७४, ३।३५, ६६, कु० ६।३० आप्तैरयत्नवाप्तपौरुषफलं कार्यस्यधुरुज्झिता—मुद्रा० ६।५, ४।६, कि० ३।५०, १४।६ 6 प्रमुखतम या उच्चतम स्थान, हरावल, अग्रभाग, शिखर, सिर अपामुलाना धुरि कीर्तनीया—रघु० २।२, धुरि स्थिता त्व पतिदेवतानाम्, १४।७४, अविघ्नमस्तु ते स्थेया पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६, ५।१६, (धुरि कृ सिरे पर रखना या आगे रखना - शा० ७।४) । सम०— गत (धुर्गत) (वि०) 1 रथ के बम पर खड़ा हुआ 2 सिर पर खड़ा हुआ मुख्य, प्रधान, प्रमुख, -अर्हः शिव का विशेषण, --धर (धुर्धर, 'धुरंधर' भी) (वि०) 1 जूआ संभालने वाला 2. जोते जाने के योग्य 3 अच्छे गुणों से युक्त या महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों से लदा हुआ 4 मुख्य, प्रधान, अग्रगण्य प्रमुख,—कुलधुरंधरो भव—विक्रम० ५, (रः), 1 बोझा ढोने वाला जानवर 2 जिसके ऊपर किसी कार्य का भार हो 3 मुख्य, प्रधान, अग्रणी, --वह (धुर्वह) (वि०) भार वहन करने वाला 2 काम का प्रबंधक, (हः) बोझा ढोने वाला पशु, इसी प्रकार 'धुर्वाह्' ।

धुरा (स्त्री०) योजा, भार--रणधुरा वेणी० ३।५ ।

धुरीण, धुरीय (वि०) [धुर महति, अर्हति वा, धुर+ख, छ वा] 1 बोझा ढोने या संभालने के योग्य 2 जोते जाने के योग्य 3 महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (णः, —यः) 1 बोझा ढोने वाला पशु 2 आवश्यक कार्यों में नियुक्त 3 मुख्य, प्रधान, अग्रणी ।

धुर्य (वि०) [धुर्+यत्] 1 बोझा संभालने के योग्य 2 महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे जाने के योग्य 3 चोटी पर स्थित, मुख्य, प्रमुख,—र्यः 1 बोझा ढोने का पशु 2 घोड़ा या बैल जो गाड़ी में जुता हुआ हो—नाविनीतैर्नियंत्रेतं धुर्यैः मनु० ४।६७, येनेदं धियते विश्वं धुर्येणेवासिवाऽनसि—कु० ६।७६, धुर्यान् विश्रामयेति —रघु० १।५४, ६।७८, १७।१२, 3 (उत्तरदायित्व के) भार को संभालने वाला रघु० ५।६६, 4 मुख्य अग्रणी, प्रधान—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय —रघु० ७।७१ 5. मंत्री, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर नियुक्त व्यक्ति ।

धुस्तु (स्तू) रः [धू+उरु, स्तुट्] धतूरे का पौधा ।

धू (तुदा० पर०, स्वा०, स्वा०, क्रया०, चुरा०+उभ० धुवति, धवति- ते, धूनोति, धूनुते, धुनाति, धुनीते धवयति--ते) 1 हिलाना, क्षुब्ध करना, कंपाना धून्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाका —ऋतु० ३।१२, धून्वन् कल्पद्रुमकिसलयानि—मेघ० ६२, कु० ७।४९, रघु० ४।६७, भट्टि० ५।१०१ ९।७, १०।२२ 2 उतार देना हटाना, फेंक देना—सज्जमपि शिरस्यन्य क्षिप्ता धुनोत्यहिशङ्कया --श० ७।२४ 3 फूंक मार कर उड़ा देना नष्ट करना 4 सुलगाना, उत्तेजित करना (आग को) पंखा करना वायुना धूयमानो हि वन दहति पावक --महा०, पवनधूत अग्नि ऋतु० १।२६ 5 अशिष्ट व्यवहार करना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना—मा नधावीरसि रणे- भट्टि० ९।५०, १५।६१ 6 अपने ऊपर से उतार फेंकना, अपने आपको मुक्त करना--(सेवकाः) आरोहन्ति शनैः पश्चाद्धून्वन्तमपि पार्थिवम्—पञ्च० १।३६, (कवि रहस्य के निम्नलिखित श्लोक में इस धातु के विभिन्न गणों के रूप में दिए गये हैं—धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चूतं धुनाति धवति स्फुटितानिमुक्तम्, वायुर्विधूनयति कम्पकपुष्परेणून् यत्कानने धवति चन्दनमञ्जरीश्च)। अव— हिलाना, इधर-उधर करना, कंपाना, लहराना, —रेणुं पवनावधूत रघु० ७।४३, लीलावधूतैश्चामरैः --मेघ० ३५, कि० ६।३, शि० १२।३६ 2 उतार फेंकना, हटाना, पराभूत करना, --राजसत्त्वमवधूय मातृकम् -रघु० ११।९०, सुरवधूरवधूतभया शरैः ९।१९, ३।६१, कि० १।४२ 3 अवहेलना करना, अस्वीकृति करना, उपेक्षा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना चण्डी मामवधूय पादपतित --विक्रम० ४।३८, पादानत कोपनयाऽवधूत —कु०

३।८, विक्रम० ३।५, उद्—हिला डालना, उठाना, ऊपर को उछालना, लहराना—कैनोद्धूतानि चामराणि —कु० ११७, रघु० १।८५, ९।५०, उद्धूतीयात सत्केतून्- भट्टि० १९।८, कि० ५।३९, मारुतभरोद्धूतोऽपिधूलिव्रज घन० 2. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, नष्ट करना (आल० भी) - उद्धूतपापा —मेघ० ५५, शि० १८।८ 3 बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, भड़काना, निस्—, 1 उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, निकाल देना, नष्ट करना-निर्धूतोऽधरक्षोणिमा गीत० १२, आननिर्धूतकल्मषा —भग० ५।१६, रघु० १२।५७ 2 उपेक्षा करना, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करना, अवज्ञा करना 3 त्याग देना, छोड़ देना, फेंक देना, वि —, 1 हिलाना, इधर-उधर करना, कपाना, मृदुपवनविधूनान्—ऋतु० ६।२९, ३।१० दीर्घा वेणी विधुन्वाना- महा० 2 उतार देना, नष्ट करना, निकाल देना, दूर भगा देना कर्णेविधुन्वितु श्रुतिम्—भट्टि० ९।२८, रघु० ९।७२, अन० पा० उपेक्षा करना, घृणा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० ११।४० 4 छोड़ना, छोड़ देना, त्याग देना नै० १।३५।

धू, (स्त्री०) [धू+क्विप्] हिलना, काँपना, क्षुब्ध होना।

धूत (भू० क० कृ०) [धू+क्त] 1 हिला हुआ 2 उतार फेंका हुआ, हटाया हुआ 3 भड़काया हुआ 4 परित्यक्त, उजड़ा हुआ 5 फटकारा हुआ 6 परीक्षित 7 अवज्ञात, तिरस्कारपूर्वक व्यवहार किया गया 8 अनुमानित। सम०—कल्मष,- पाप (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त।

धूति (स्त्री०) [धू+क्तिन्] 1 हिलाना, इधर उधर करना 2 भड़काना।

धून (भू० क० कृ०) [धू+क्त, नस्य न] हिला हुआ, क्षुब्ध।

धूनि (स्त्री०) हिलाना, क्षुब्ध करना।

धूप् । (स्वा० पर० धूपायति, धूपायित) गरम करना, गरम होना, ॥ (चुरा० उभ० धूपयति-ते) 1 धूनी देना, सुवासित करना, धुपाना, सुगन्धित करना 2 चमकना 3 डोलना।

धूप [धूप्+अच्] 1 धूप, लोबान, गन्धद्रव्य, कोई सुगन्धयुक्त पदार्थ 2 (गाढ़ विरोजा आदि सुगन्धित पदार्थों से उठने वाला) वाष्प, सुगन्धित भाप या धुआँ—धूपाघ्राणा त्याजितभाद्रभावम् - कु० ७।१४, मेघ० ३३, विक्रम० ३।२, रघु० १६।५० 3 सुगन्धित चूर्ण। सम०—अगुरु (नपु०) एक प्रकार की गुग्गुल जो धुपाने के काम आती है,—अङ्ग 1 तारपीन 2 सरल वृक्ष, - अर्हम् गुग्गुल, —पात्रम् धूपदान अगर-दान, धूप जलाने का पात्र, —वास. गन्धद्रव्य के धुएँ से बासना, धुपाना, —वृक्ष एक पेड़ जिससे गुग्गुल निकलता है, सरल वृक्ष।

धूम्र [धू+मक्] 1 धुआँ, वाष्प—धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः—मेघ० ५ 2 धूम्र, कोहरा 3 उलटा, केतु 4 बादल 5. (नस्य, छींक लाने वाला) धुआँ 6 डकार, उद्गार। सम०—आभ (वि०) धुएँ जैसा प्रतीत होने वाला, धुमैले रंगका, —आवलि. धुएँ का बादल या धूममाला,—उत्थम् नौसादर,— उद्गार 1 धुआँ या वाष्प उठना.—ऊर्णा यम की पत्नी का नाम, 'धूमोर्णा' यम का विशेषण, —केतन, —केतु 1 आग —कोपस्य सदकुलकालनधूम-केतो - मुद्रा० १।१०, रघु० ११।८१ 2 उल्का, पुच्छल तारा, गिरता हुआ तारा— धूमकेतुमिव किमपि करालम् —गीत० १, धूमकेतुरिवोत्थित —कु० २।३२ 3 केतु. —ज: बादल,—ध्वजः अग्नि,—पानम् धुआँ या वाष्प पीना,—महिषी कोहरा, धूम,— योनिः बादल तु० मेघ० ५।

धूमल (वि०) [धूम+ला+क] धुमला, भूरा-लाल, मटमैला।

धूमायति-ते (ना० धा० पर०) धुएँ से भर देना, वाष्प से ढक देना अँधेरा करना -धूमायिता दश दिशो दलितारविन्दा —भामि० १।१०४, मृच्छ० ५।५७।

धूमिका [धूम+ठन्+टा] वाष्प, कोहरा धुंध।

धूमित (वि०) [धूम+इतच्] धुएँ से ढका हुआ, अधकार-युक्त—कु० ४।३०।

धूम्या [धूम+यत्+टाप्] धुएँ का बादल, प्रगाढ़ धुआँ।

धूम्र (वि०) [धूम+रा+क] 1 धुमैला, धुएँ वाला, भूरा भर्तृ० ३।५५ रघु० १५।१६ 2 गहरा लाल 3 काला, अधकारावृत 4 मटमैला,—म्र 1 काले और लाल रंग का मिश्रण 2 लोबान,—अम् पाप, दुर्व्यसन, दुष्टता। सम०—अक्षः एक प्रकार की शिकारी चिड़िया.—वर्ण (वि०) मटमैले रंग का, —लोचन कबूतर,—लोहित (वि०) गहरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (म्र०) शिव का विशेषण, —शूक: ऊँट।

धूम्रक [धूम्र+कै+क] ऊँट।

धूर्त (वि०) [धूर्व(धूर्)+क्त] 1 चालाक, शठ, बदमाश, मक्कार, जालसाज, 2 उपद्रवी, अति पहुँचाने वाला, —र्तः 1 ठग, बदमाश, उचक्का, 2 जुआरी 3. प्रेमी, रसिया, विनोदप्रिय धूर्त— तत्रे धूर्त हृदि स्थिता प्रियतमा काचिन्ममेवापरा—पञ्च० ४।६, धूर्तोऽपरां चुम्बति - अमरु १६, इसी प्रकार—धूर्तानामभिसारसत्वर-हृदाम्—गीत० ११ 4 धतूरा। सम०—घ्न (वि०) मक्कार बेईमान, (पु०) धतूरे का पौधा,— जनुः मनुष्य,—रचना धूर्त विद्या, बदमाशी।

धूर्तक: [धूर्त+कन्] 1 गीदड़ 2 बदमाश।

धूर्षा [धुर+अङ्+टिवप्, अच् इत्यस्य वी आदेश] गाड़ी का धन, या अगला भाग।

धूलनम् [धू+ल्युट+वा०] विष, जहर।

धूलिः,-ली (पुं०, स्त्री०) [धू+लि वा०, धूलि+ङीष्] 1. धूल, अतीत्वापकृतां धूलिमुद्यम वाबतिष्ठते—शि० २।३४ 2 चूर्ण। सम०—कुट्टिमम्,—केदारः 1. टीला, प्राचीर 2 जोता हुआ खेत, —क्रीडः वायु, —गृहम् धूल का ढेर,—पुष्पिका,—पुष्पी केतकी का पौधा।

धूलिका [धूलि+कन्+टाप्] कोहरा, धुंध।

धूसर (वि०) [धू+सर, किच्च न पत्वम्] धूल के रंग का, भूरा सा, धुंधला—सफेद रंग का, मटमैला—शशी दिवसधूसर—भर्तृ० २।५६, कु० ४।४, ४६, रघु० ५।४२, १६।१७, शि० १७।४१,—रः 1. भूरारंग 2 गधा 3 ऊँट 4. कबूतर 5. तेली।

धृ 1 (तुदा० आ०—कहीं के मतानुसार धृ का कर्मवा० रूप—ध्रियते, धृत) 1 होना, विद्यमान होना, रहना रहते रहना, जीवित रहना—आर्यपुत्र ध्रिये एषा ध्रिये—उत्तर० ३, ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुत सुखम्—शि० २।३५, १५।८९ 2 स्थापित या सुरक्षित रहना, रहना, चलते रहना—सुरतश्रमसंभृतो मुखे ध्रियते स्वेदलवोऽगमोऽपितें—रघु० ८।५१, कु० ४।१८ 3 संकल्प करना, (भ्वा० चुरा० उभ० धरति-ते, धारयति-ते, धृत, धारित) 1 थामना, संभालना, ले जाना—भुजङ्गमपि कोपित शिरसि पुष्पवद्धारयेत्—भर्तृ० २।४, वैणवी धारयेद्यष्टिम् सोदकं च कमण्डलुम्—मनु० ४।३६, मृच्छ० १७।५४, विक्रम० ४।३६ 2. थामना, संभालना, स्थापित रखना, सहारा देना, जीवित रखना धृतमदरं—गीत० १, यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११, पंच० १।११६, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिल जीवितं धारयेया—मेघ० ११३, चिरमात्मना धृतम् —रघु० ३।३५ 3. अपने अधिकार में थामे रखना, अधिकार में करना, पास रखना, रखना—या सस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९ 4 धारण करना, (रूप, उपदेश), लेना—केयूरक धृतशुकरूप—गीत० १, धारयति शोकनवरूपम्—१०, 5 पहनना, धारण करना, (वस्त्रालंकारादिक) उपभोग में लाना, स्तिन-कमलाकुचमण्डल धृत कुण्डल ए—गीत० १ 6 रोकना, दमन करना, नियंत्रण करना, ठहराना, स्थगित करना 7 जमाना, संकेत करना (संप्र० या अधि० के साथ)—ब्राह्मण्ये धृतमानस., मनो दध्रे राजसूयाय आदि 8. भुगतना, भोगना 9 किसी व्यक्ति के लिए कोई वस्तु निर्धारित करना, नियत करना, निर्दिष्ट करना 10. किसी का ऋणी होना (संप्र०, सब० विरल०),—वृक्षसेचने द्वे धारयाः मे, धा० १, तस्मै तस्य वा धनं धारयति आदि 11 थामना, रखना 12 पालन करना, अभ्यास करना 13 हवाला देना, उद्धृत करना (इस धातु के अर्थ उन संज्ञा शब्दों के अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के हो जाते हैं—उदा० मनसा धृ मन में धारण करना, याद रखना, शिरसा धृ, मूर्ध्नि धृ सिर पर रखना, अत्यंत आदर करना, अंतरे धृ धरोहर रखना, जमानत के रूप में जमा करना, समये धृ सहमत करना, दण्ड धृ दंड देना, सजा देना, बल का उपयोग करना, जीवितं, प्राणान् शरीरं, गात्र देहम् धृ जीवित रहना, आत्मा को स्थापित रखना, प्राणों का सुरक्षित रखना, व्रतं धृ व्रत का पालन करना, तुलया धृ तराजू में रखना, तोलना, मनः, मतिम्, चित्तम्, बुद्धिम् धृ किसी वस्तु में मन लगाना, मन जमाना, सोचना, दृढ़ संकल्प करना गर्भं धृ, गर्भवती होना, धारणां धृ (एकाग्रता संयम का) पालन करना, 1 अच,—1 स्थिर करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, शि० १।३ 2 जानना, निश्चय करना, समझना, सही सही जानना, न विश्वमूर्तेरवयार्यते वपु—कु० ५।७८, रघु० १३।५, उद्,—1 ऊपर उठाना, उन्नत करना 2 बचाना, परित्राण करना 3 बाहर निकालना, उद्धृत करना 4 उन्मूलन करना, उखाड़ना, (उद् पूर्वक धृ के वही हैं रूप जो उद् पूर्वक हृ के हैं) निस्—, निर्धारण करना, निश्चित करना, नियत करना, —निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्ता खलु वाचिकम्—शि० २।७०, ९।२०, नि—,1 पकड़ना, पकड़ लेना, ग्रहण करना, धारण कर लेना—अशुक पल्लवेन विधृत, अमरु ७९, ५५ 2. पहनना, धारण करना, उपयोग में लाना—रघु० १२।४० 3 स्थापित रखना, वहन करना, सहारा देना, थामलेना, पंच० १।८२, भर्तृ० ३।२३ 4 टकटकी लगाना, निर्देश देना, सम्—, 1 थामना, संभालना, ले जाना 2 थाम लेना, सहारा देना—अरैः संधार्यते नाभि—पंच० १।८१ 3 दबाना, नियंत्रण में रखना, रोकना 4 मन में रखना, याद रखना, समुद्—,1 जड़ से उखाड़ लेना, उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक 'हृ' 2 बचाना, परित्राण करना, संप्र,—1 जानना, निर्धारण करना, निश्चय करना शि० ९।६० 2 विचार विमर्श करना, चिन्तन करना, सोचना, विचार करना—मनु० १०।७३, एव संप्रधार्य पंच० १।

धृत (भू० क० कृ०) [धृ+क्त] 1 थामा गया, ले जाया गया, वहन किया गया, सहारा दिया गया 2 अधिकृत किया गया 3 रक्खा गया, संभाला, धारण किया गया 4 पकड़ा गया, आत्मसात् किया गया,

सभाला गया, पहना गया, उपयोग में लाया गया 6. रख दिया गया, जमा किया गया 7 अभ्यास किया गया, पालन किया गया 8 तोला गया 9 (कर्तृवा०) धारण किया हुआ, सभाला हुआ 10 तुला हुआ दे० ऊपर 'धृ'। सम०—आत्मन् (वि०) पक्के मन वाला, स्थिर, शान्त,स्वस्थचित्त—दंड (वि०) 1 दण्ड देने वाला 2 वह जिसको दण्ड दिया जाता है—पट (वि०) कपड़े से ढका हुआ—राजन् (वि०) (देश आदि) अच्छे राजा द्वारा शासित,—राष्ट्रः विचित्र वीर्य की विधवा पत्नी से उत्पन्न व्यास का ज्येष्ठपुत्र (ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण धृतराष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु जन्मान्ध होने के कारण उसने प्रभुसत्ता पाण्डु को सौंप दी। जिस समय पाण्डु वानप्रस्थ लेकर जंगल की ओर गया, तो राज्य की बागडोर फिर धृतराष्ट्र ने स्वयं सभाल ली, और अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को युवराज बनाया। जब युद्ध में भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया तो धृतराष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलतः उसने युधिष्ठिर और भीम को आलिंगन करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को तुरन्त ताड़ गये, उन्हें विश्वास हो गया कि धृतराष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लोहे की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय धृतराष्ट्र भीम का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा तो श्रीकृष्ण ने भीम की लौहमूर्ति आगे करवा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक धृतराष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लौह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न हो धृतराष्ट्र अपनी पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहां कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वर्ग सिधार गया), —वर्मन् (वि०) कवच पहने हुए, कवचित।

धृतिः (स्त्री०) [धृ+क्तिन्] 1 लेना, पकड़ना, हस्तगत करना 2 रखना, अधिकृत करना 3 स्थापित रखना, सहारा देना 4 दृढ़ता, स्थिरता, स्थैर्य 5 धैर्य, स्फूर्ति, दृढ़संकल्प, साहस, आत्म-संयम—भज धृतिं त्यज भीतिमसेतुकाम्—नै० ४।१०४, कि० ६।११, रघु० ८।६६ 6 सन्तोष, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष धृतेश्च—और सदृशीर्ध्यधत्त सः—रघु० ३।१०, १६। ८२, चतुर्दध्नाति न धृतिम्—विक्रम० २।८, कि० ७।१० १४ 7 साहित्यशास्त्र में वर्णित ३३ व्यभिचारीभावों में 'सन्तोष' की गिनती की गई है—ज्ञानाभीष्टागमाद्यैस्तु सपूर्णस्पृहताधृतिः, सौहित्यमवचनोल्लास सहास प्रतिभादिकृत्—सा० द० ११८, १६८ 8 यज्ञ।

धृतिमत् (वि०) [धृति+मतुप्] 1. पक्का, स्थिर, दृढ़, अडिग 2. संतुष्ट, प्रसन्न, प्रहृष्ट, तृप्त—रघु० १३।७७।

धृत्वन् (पु०) [धृ+क्वनिप्] 1. विष्णु का विशेषण, 2. ब्रह्मा की उपाधि 3. सद्गुण, नैतिकता 4. आकाश 5 समुद्र 6 चतुर व्यक्ति।

धृष् 1 (भ्वा० पर० धर्षति, धर्षित) 1. एकत्र होना, सहत होना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना, ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० धर्षति, धर्षयति-ते)। नाराज करना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना 2 अपमानित करना, मर्यादा से हीन व्यवहार करना 3 डांटा बोलना, जीतना, पराभूत करना, विजय प्राप्त करना, नष्ट करना 4 आक्रमण करने का साहस करना, ललकारना, चुनौती देना 5. (किसी स्त्री के साथ) बलात्कार करना, सतीत्व हरण करना, iii (स्वा० पर० धृष्णोति, धृष्ट) 1. दिलेर या साहसी होना 2 विश्वस्त होना 3 घमंडी होना, उद्धत होना, 4 ढीठ होना, उतावला होना 5 साहस करना, निडर होना (तुमुन्नत के साथ) 6. ललकारना, चुनौती देना—भट्टि० १४।१०२ 7 (चुरा० आ०—धर्षयते) हमला करना, आक्रमण करना, बलात्कार करना।

धृष्ट (वि०) [धृष्+क्त] 1 दिलेर, साहसी, विश्वस्त, 2 ढीठ, अक्खड़, निर्लज्ज, उच्छृंखल, अविनीत —धृष्ट पार्श्वे वसति—हि० २।२६ 3 प्रगल्भ, दुःसाहसी 4 दुश्चरित्र, लुच्चा,—ब्द विश्वासघातक पति या प्रेमी—कृतागा अपि निःशङ्कस्तर्जितोऽपि न लज्जितः, धृष्टद्योतोऽपि मिथ्यावाक् कथितो धृष्टनामकः। सा० द० ७२। सम०—द्युम्नः द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई (धृष्टद्युम्न और उसका पिता द्रुपद दोनों महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़े। धृष्टद्युम्न ने कई दिन तक पांडवों की सेना के मुख्य सेनापतित्व का पद सभाला। जब द्रोण ने घोर संघर्ष के पश्चात् द्रुपद को मार डाला, तो धृष्टद्युम्न ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आखिर युद्ध के सोलहवें दिन प्रातः काल धृष्टद्युम्न को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का सुअवसर मिला जब कि उसने अन्यायपूर्वक द्रोण का सिर काट डाला, दे० द्रोण। उसके पश्चात् एक दिन यह पाञ्चालशिविर में सो रहा था कि अचानक अश्वत्थामा ने आ दबाया और मौत के घाट उतार दिया गया)।

धृष्णुः (वि०) [धृष्+नक्षिच्] 1 साहसी, विश्वस्त 2 ढीठ, निर्लज्ज।

धृष्णिः [धृष्+नि] प्रकाश की किरण।

धृष्णु (वि०) [धृष्+क्नु] 1 दिलेर, विश्वस्त, साहसी, बहादुर, बलशाली (अच्छे अर्थ में) 2 निर्लज्ज, ढीठ।

धे (भ्वा० पर० धयति, धीत—प्रेर० धापयति, इच्छा० धित्सति) 1 चूसना, पीना, घूट भरना, निगल जाना (आत्म० भी) अयातुसाम्यधासाच्च रुधिरं वनवासिनाम् भट्टि० १५।२९, ६।१८, मनु० ४।५९, याज्ञ० १।१४० 2 चूमना—धन्यो धयत्यानतम्—गीत० १२ 3 चूस लेना, सोख लेना, ले लेना।

धेनः [धे+क्त] 1 समुद्र 2 नद,

धेनुः (स्त्री०) [धयति सुनान्, धीयते वत्सैर्वा—धे+नु इच्च तारा०] गाय, दुधार गाय—धेनु धीरा सूनृता वाचमाहु - उत्तर० ५।३१ 2 किसी जाति की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुरुषवाचक नाम के आगे लग कर उसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा खड्गधेनु, वडवधेनु आदि 3, पृथ्वी (प्रायः बहुधा समास के अन्त में लग कर इससे अल्पार्थवाचक शब्द बनता है, जैसे अग्निधेनु, खड्गधेनु)।

धेनुक [धेनु+कन्] एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार गिराया था। सम०—हन् बलराम का विशेषण।

धेनुका [धेनुक+टाप्] 1 हथिनी 2 दूध देने वाली गाय।

धेनुष्या [धेनु+यत्, सुक्] वह गाय जिसका दूध अधिक रूप में सुरक्षित हो।

धेनुकम् [धेनु+ठक्] 1 गौओं का समूह 2 गर्भाधान।

धैर्यम् [धीर+ष्यञ्] दृढ़ता, टिकाऊपन, मानसिक संयमन, स्थिरता, स्थायिता, धीरज, साहस—धैर्यमवष्टभ्य—पञ्च० १, विपदि धैर्यम्—भर्तृ० २।६३, इसी प्रकार 'धैर्यवृत्ति' शि० १।५९ 2 शान्ति, स्वस्थता 3 गुरुत्वाकर्षण शक्ति, सहिष्णुता 4 अनम्यता 5 हिम्मत, दिलेरी मेघ० ४०।

धैवतः [धीमत्+अण् पृषो० मस्य वत्वम्] भारतीय संगीत स्वरग्राम के सात स्वरों में छठा स्वर।

धैवत्यम् [धीवत्+ष्यञ्] चतुराई।

धोड = द्रुघण।

धोर् (भ्वा० पर० धोरति) 1 जल्दी जाना, अच्छे कदम रखना, हौंकना, दुलकी चलना 2 कुशल होना।

धोरणम् [धोर्+ल्युट्] 1 (घोड़ा, हाथी आदि) वाहन, सवारी 2. जल्दी जाना 3 घोड़े की दुलकी चाल।

धोरणिः,-णी (स्त्री०) [धोर्+अनि, धोरणि+ङीप्] 1, अनवच्छिन्न श्रेणी या तैरन्तर्य यैर्मकिन्दवने मनोज्ञपवने सह स्खलन्माधुरीधाराधोरणिधौतधामनि धराधीशत्वमालम्ब्यते, तेषां नित्यविनोदिना सुकृतिना माध्वीकपानां पुनः कालः किं न करोति केतकि मनस्त्व यापि केलिस्खलो—उद्भट, परम्परा।

धोरितम् [धोर्+क्त] 1. गति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, 2 गमन, गति 3 घोड़े की दुलकी चाल।

धौत (भू० क० कृ०) [धाव्+क्त] 1 धोया हुआ, बहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रक्षालन किया गया - कुरुष्वाम्भोभि एवनचपलैः शान्तिनां धौतमूला—श० १।२५, शिक्षा० ५८, कु० १।६,६।५७, रघु० १६।४९,१९।१० 2 चमकाया हुआ, उजला किया हुआ 3 उजला, सफेद, चमकदार, चमकीला, चमचमाता हुआ,—हर्गशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ० ७।४४, विकसदुन्नाशुधौताधरम्—गीत० १२,—तम् सादी, सम० कट मोटे कपड़े का थैला,—कोद्रवम्, -कौशेयम् धुली हुई रेशम, —शिलम् स्फटिक।

धौम् [धूञ्+अण्] 1 भूरापन 2 (विशेष रूप से तैयार किया गया) मकान बनाने के लिए स्थान।

धौरितकम् [धोरित+अण्+कन्] घोड़े की दुलकी चाल।

धौरेय (वि०) (स्त्री०-यी) [धुर वहति ढक्] बोझा ले जाने के योग्य,—य 1 बोझा ढोने का पशु 2 घोड़ा।

धौर्तकम्, धौर्तिकम्, धौर्त्यम् [धूर्त+कुञ्, ठञ्, ष्यञ् वा] जालसाजी, बेईमानी, बदमाशी।

ध्मा (भ्वा० पर० धमति, ध्मात, प्रेर० ध्मापयति) 1 फूंक मारना, श्वास बाहर निकालना, निःश्वसन 2 (हवा के उपकरण की भांति) धौंकना, फूंक मार कर बजाना—शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् भग० १।१२,१८, रघु० ७।६२, भट्टि० २।३४ १७।७ 3 आग को फूंकना, फूंक मारकर आग को उद्दीप्त करना, चिंगारियां उठाना - कोऽयमेवंछात्र च पावकम् महा० 4 फूंक द्वारा निर्माण करना 5 फेंकना, फूंक से उड़ाना, फेंक देना, आ—, 1 हवा भरना, फुलाना 2 फूंक मारना या हवा से भरना, (शङ्ख आदि को), उप—, फूंक मारकर तेज करना, पक्का करना - नाग्नि मुखेनोपधमेत् मनु० ४।५३ नि—, फूंक मारकर बाहर निकालना, प्र—, (शङ्ख आदि) बजाना - शङ्खौ प्रदध्मतुः भग० १।१४, वि—, बखेरना तितर बितर करना, नष्ट करना।

ध्माकारः [ध्मा+कृ+अण्] लुहार, लोहकार।

ध्मांक्षः अने० पा० = ध्वाक्ष।

ध्मात (भू० क० कृ०) [ध्मा+क्त] 1 (वायुवाद्ययंत्र की भांति) बजाया हुआ, पंखा किया हुआ, भड़काया हुआ 2 हवा भरा हुआ, फूला हुआ, फुलाया हुआ।

ध्मात (वि०) [ध्यै+क्त] सोचा हुआ, विचार किया हुआ दे० 'ध्यै'।

ध्यानम् [ध्यै+ल्युट्] 1 मनन, विमर्श, विचार, चिन्तन ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते भग० १२।१२, मनु० १।१२, ६।७२ 2 विशेष रूप से सूक्ष्मचिंतन, धार्मिक मनन—तदेव ध्यानादवगतोऽस्मि—श० ७, रघु० १।

७३ 3. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विवेक 4 किसी देवता की व्यक्तिगत उपाधियों का मानसिक चिन्तन—इति ध्यानम्। सम०—गम्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्य,—तत्पर,—निष्ठ पर (वि०) विचारों में खोया हुआ, मनन में लीन, चिन्तनशील,—स्थ (वि०) मनन में लीन, विचारों में खोया हुआ।

ध्यानिक (वि०) [ध्यान+ठक्] सूक्ष्म मनन और पवित्र चिंतन के द्वारा अनुसहित या प्राप्त।

ध्याम्य (वि०) [ध्यै+मक्] अस्वच्छ, मैला, काला, मलिन—भट्टि० ८।७१,—मम् एक प्रकार का घास।

ध्यायन् (पु०) [ध्यै+मनिन्] माप, प्रकाश (नपु०) मनन ('ध्यामन्' कम शुद्ध)।

ध्यै (भ्वा० पर० ध्यायति, ध्यात, इच्छा० दिध्यासति, कर्मवा० ध्यायते) सोचना, मनन करना, विचार करना, चिंतन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना—ध्यायतो विषयान् पुंस संगस्तेषूपजायते—भग० २।६३, न ध्यात पदमीश्वरस्य—भर्तृ० ३।११, पितॄन् ध्यायन् मनु० ३।२२४, ध्यायन्ति चान्य धिया—पञ्च० १।१३६, मेघ० ३, मनु० ५।४७, ९।२१, अनु—, 1 सोचना, ध्यान लगाना 2 याद करना 3 मंगलकामना करना, आशीर्वाद देना, अनुग्रह करना, रघु० १४।६०, १७।२६, अप—, बुरा सोचना, मन से शाप देना, अभि—, 1 कामना करना, इच्छा करना, लालच करना—याज्ञ० ३।१३४ 2 सोचना अव—, अवहेलना करना, निस् सोचना, मनन करना, वि—, 1 सोचना, मनन करना, याद करना—भट्टि० १४।६५ 2 गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देखना—अंगुलीयक निध्यायन्ती—मालवि० १, शि० ८।६९, १२।४, कि० १०।४६।

ध्राडि [ध्राड्+इन्] फूल चुनना।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] (क) स्थिर, दृढ, अचल, स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय—इति ध्रुवेच्छामनुशासती सुताम्—कु० ५।५, (ख) शाश्वत, सदैव रहने वाला, नित्य—ध्रुवेण मर्त्या—कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ 2 स्थिर (ज्योतिष में) 3 निश्चित, अचूक, अनिवार्य—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च—भग० २।२७ यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते—चाण० ६३ 4 मेधावी, धारणशील—जैसा कि 'ध्रुवा स्मृति' में 5 मजबूत, स्थिर, (दिन की भांति) निश्चित,—व 1 ध्रुव तारा, रघु० १७।३५, १८।२४, कु० ७।८५ 2 किसी बड़े वृत्त के दोनों सिरे 3 नक्षत्र राशिचक्र के आरंभ से ग्रह की दूरी, ध्रुवीय देशांतर रेखा 4 बटवृक्ष 5 स्थाणु, खूंटा 6 (कटे हुए वृक्ष का) तना 7 गीत का आरंभिक पद, टेक (समवेत गान की भांति दोहराया गया दे० गीत०) 8 समय, काल, युग 9. ब्रह्मा का विशेषण, 10 विष्णु और 11 शिव की उपाधि 12 उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित एक तारा है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है। सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्त करने का वर्णन इस प्रकार है—उत्तानपाद के सुरुचि और सुनीति नाम की दो पत्नियां थीं, सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था, तथा ध्रुव का जन्म सुनीति से हुआ था। एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तम की भांति पिता की गोद में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और सुरुचि दोनों ने दुत्कार दिया। 1 ध्रुव सुबकता हुआ अपनी माता सुनीति के पास गया, उसने बच्चे को सान्त्वना दी और समझाया, कि संपत्ति और सम्मान कठोर परिश्रम के बिना नहीं मिलते। इन वचनों को सुन कर ध्रुव ने अपने पिता के घर को छोड़ कर जंगल की राह ली। यद्यपि वह अभी बच्चा ही था, तो भी उसने घोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया),—वम् 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 स्वर्ग,—वा 1 (लकड़ी का बना) यज्ञ का श्रुवा 2 साध्वी स्त्री,—वम् (अव्य०) अवश्य, निश्चित रूप से, यकीनन—रघु० ८।४९, श० १।१८। सम०—अक्षर विष्णु की उपाधि,—आवर्तः सिर पर रक्खे मुकुट का वह स्थान जहां से बाल चमकते हैं,—तारकम्,—तारा ध्रुव तारा।

ध्रुवक [ध्रुव+कन्] 1 गीत का आरम्भिक पद (जो समवेत गान की भांति दोहराया जाय, टेक 2 तना, भूत 3 स्थूणा।

ध्रौव्यम् [ध्रुव+ष्यञ्] 1 स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता 2 अवधि 3 निश्चय।

ध्वंस् (भ्वा० आ० ध्वंसते, ध्वस्त) 1 नीचे गिरना, गिर कर टुकड़े २ होना, चूर २ हो जाना—भट्टि० १५।९३, १४।५५ 2 गिरना, डूबना, हताश होना आ० ९।४४ 3 नष्ट होना, बर्बाद होना 4 ध्वस्त होना—मुद्रा० ३।८, प्रेर०—नष्ट करना, प्र—, नष्ट होना, मिट जाना, वि—, 1 गिरकर टुकड़े २ होना 2 तितर-बितर हो जाना, बिखर जाना 3 नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना।

ध्वंस, ध्वंसनम् [ध्वंस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 नीचे गिर जाना, डूबना, गिर कर टुकड़े २ हो जाना 2. हानि, नाश, बर्बादी,—सी सूर्य की किरण में धूलिकण।

ध्वंसिः [ध्वंस्+इन्] मुहूर्त का शतांश।

ध्वज [ध्वञ्+अच्] 1 ध्वज, झण्डा, पताका, वैजयन्ती, रघु० ७।४०, १७।३२, पञ्च० १।२६ 2. पूजा या

प्रमुख व्यक्ति, झंडा या भूषण (समास के अन्त में) जैसा कि 'कुलध्वज' (कुल का भूषण या पूज्य व्यक्ति) में 3 वह बांस जिसमें झण्डा लहराता है, 4 चिह्न, निशान, लक्षण, प्रतीक—वृषभ,° मकर° आदि 5 देवता की उपाधि 6 परिव्राजक का चिह्न 7 व्यवसाय का चिह्न—व्यवसाय लक्षण 8 जननेन्द्रिय (किसी जानवर की, चाहे नर हो या मादा) 9 कलाल 10 किसी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित छत 11 घमंड 12 पाखंड, (**ध्वजीकृ** झंडा लहराना, आलं० बहाने के रूप में प्रयुक्त करना)। सम० —**अंशुकम्**—पट,—**पटम्** झंडा—रघु० १२।८५, —**आहृत** (वि०) युद्धभूमि में पकड़े हुए,—**गृहम्** वह कमरा जहां झंडे रखे जाते हैं,—**द्रुम** ताड़ का वृक्ष, —**प्रहरण** वायु, हवा,—**यन्त्रम्** झंडा खड़ा करने की कूटयुक्ति,—**यष्टि** (स्त्री०) झंडे का डंडा या बांस मनु० ९।२८५।

ध्वजवत् (वि०) [ध्वज+मतुप्+मस्य व] 1 झंडों से सजा हुआ 2 चिह्न से युक्त 3 अपराधी के लक्षण से युक्त, दागी, (पु०) 1 झंडा-वाहक 2 मद्य विक्रेता, कलाल।

ध्वजिन् (वि०) (स्त्री० **नी**) [ध्वज+इनि] 1 झण्डाबरदार, झंडा ले जाने वाला 2 चिह्नधारी 3 सुरापात्र के चिह्न वाला—मनु० ११।९३, (पु०) 1 पताका वाहक 2 कलाल, मद्य विक्रेता—याज्ञ० १।१४१ 3 गाड़ी, शकट, रथ 4 पहाड़ 5 सांप 6 मोर 7 घोड़ा 8 ब्राह्मण,—**नी** सेना—रघु० ७।४०, शि० १२।६६, कि० १३।९।

ध्वजीकरणम् [ध्वज+च्वि+कृ+ल्युट्] 1 झंडोत्तोलन, झंडे को फहराना 2 दावा स्थापित करना, किसी बात को हेतु बनाने वाला।

ध्वन् (स्वा० पर० ध्वनति, ध्वनित) शब्द करना, ध्वनि पैदा करना, गुनगुनाना, भिनभिनाना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना, गरजना, दहाड़ना—विभिद्यमाना इव इध्वनुर्दिशः—कि० १४।४६, अथ घोरं घोरं ध्वनति नवनीलो जलधरः—भामि० १।६०, कपिर्दध्वान मेघवत्—भट्टि० ९।५, १४।३, ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमयिदयति—गीत० ५, प्रेर०—ध्वनयति, शब्द करवाना, (घंटी की भांति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अस्पष्ट उच्चारण करवाना।

ध्वन [ध्वन्+अप्] 1 शब्द, स्वर 2 भिनभिनाना, गुनगुनाना।

ध्वननम् [ध्वन्+ल्युट्] 1 ध्वनि निकालना 2 संकेत करना, सुझाव देना, या (अर्थ) लगाना 3 (सा० शा० में) व्यंजना शक्ति, शब्द या वाक्य की वह शक्ति जिसके कारण यह मुख्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ को प्रकट करे, सुझाव-शक्ति—तु० 'अंजन' भी।

ध्वनि [ध्वन्+इ] 1 शब्द, प्रतिध्वनि, कोलाहल या शोर—मृदङ्गघोर ध्वनिमन्वगच्छन्—रघु० १६।१३, २।७२, उत्तर० ६।१७ 2 जय, नाद, स्वर शि० ६।४८ 3 वाद्ययंत्र की ध्वनि—रघु० ९।७१] 4 बादल गरज या गड़गड़ाहट 5 केवल निनादध्वनि 6 शब्द 7. (सा० शा० में) काव्य के तीन मुख्य भेदों में से सर्वोत्तम काव्य जिसमें कि सदर्भ का ध्वन्यर्थ, अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक हो, या जहां मुख्यार्थ, ध्वन्यर्थ के अधीन हो इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः काव्य० १, (रसगंगाधर में ध्वनि के पांच भेद बताये गये हैं, दे० 'ध्वनि' के नीचे)। सम० —**ग्रह** 1. कान 2. श्रवण, या श्रुति 3 श्रवणेन्द्रिय—**ग्राह्य** 1 एक प्रकार का बिगुल 2 वायुरी 3 मुरली वंशी,—**विकारः** भय या शोक के कारण वाणी का विकार दे० काकु।

ध्वनित (भू० क० कृ०) [ध्वन्+क्त] 1 निनादित 2 निहित, ध्वनित, संकेतित,—**तम्** 1 शब्द 2 बादल की गरज या गड़गड़ाहट—कि० ५।१२।

ध्वनिः (स्त्री०) [ध्वन्+क्विप्] नाम, बदनामी।

ध्वांक्ष [ध्वक्ष्+अच्] (1 कौआ (कभी-कभी 'तिरस्कार' प्रकट करने के लिए समास के अन्त में प्रयुक्त किया जाता है उदा० दीर्घध्वांक्ष) 2 भिक्षुक 3 ढीठ व्यक्ति 4 मूर्खों, मूर्ख। सम०—**अरातिः** उल्लू, —**पुष्टः** कायल।

ध्वान [ध्वन्+घञ्] 1 शब्द 2 गुनगुनाना, भिनभिनाना, बुड़बुड़ाना।

ध्वान्तम् [ध्वन्+क्त] अंधकार—ध्वान्त नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति—गीत० ११, नै० १९।४२, शि० ४।६२। सम०—**उन्मेषः**, —**विषः** जुगनू,—**शत्रुः** 1 सूर्य 2 चांद 3 आग 4 श्वेतवर्ण।

ध्वृ (स्वा० पर०—ध्वरति) 1 छुपाना 2 हत्या करना।

न (वि०) [नह् (नश्)+ड] 1 पतला, फालतू 2. खाली, रिक्त 3 नही, समरूप 4 अविनश्वर,—न 1 मोती, 2. गणेश का नाम, 3 दौलत, सम्पन्नता 4 मण्डल, 5. युद्ध—(अव्य०) (क) निषेधात्मक अव्यय, 'नही' 'न तो' 'न' का समानार्थक, लोट् लकार में प्रतिषेधात्मक न होकर, आज्ञा, प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, (ख) विधिलिङ् की क्रिया के साथ प्रयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है —'ऐसा न हो कि' इस डर से कि कहीं ऐसा न हो' —क्षत्रियैर्यायिने शस्त्र नार्तशब्दो भवेदिति—रामा० (ग) तर्कपूर्ण लेखों में 'न' शब्द 'इतिचेत्' के पश्चात् रक्खा जाता है और इसका अर्थ होता है 'ऐसा नही' (घ) जब भिन्न-भिन्न वाक्यों में या एक ही वाक्य के क्रमबद्ध वाक्यखण्डों में निषेधक की पुनरावृत्ति करनी होती है तो केवल 'न' की आवृत्ति की जा सकती है, अथवा उत, च, अपि, चापि और वा आदि अव्ययों के साथ 'न' को रक्खा जा सकता है —नाग्नीमोताश्व-माख्यौ न वृक्ष न च हस्तिनम्, न नाव न खर नोष्ट्र नेरिणस्थो न यानग । मनु० ४।१२०, प्रविशन्ति न मा कश्चिदपथ्यमाप्यवारयत्—महा०, मनु० २।१९५, ३।८, ९, ४।१५, श० ६।१७, कई बार 'न' द्वितीय तथा अन्य वाक्यखण्डों में न रक्खा जाकर केवल च, वा, अपिवा से स्थानापन्न करता है —सर्पादि खल्य न हर्षो विषादि विषादो रणे च धीरत्वम् —हि० १।३३, (ङ) किसी उक्ति पर बल देने के लिए बहुधा 'न' का एक और 'न' के साथ अथवा किसी अन्य निषेधात्मक अव्यय के साथ जोड दिया जाता है —प्रत्युवाच तमृषिर्न नस्त्वत्तस्त्वा न वेद्मि पुरुष पुरातनम्—रघु० ११।८५, न च न परिचिनो न चाप्यगम्य —मालवि० १।११, न पुनरुत्कारश्रिय न पुष्यति—श० १, नाडवधा नाम राजास्मि —मनु० ८।३३५, मेघ० ६३, १०६, नामौ, न काम्यो न च वेद सम्यग् द्रष्टु न सा रघु० ६।७०, शि० १।५५, विक्रम० २।१०, (च) कुछ शब्दों में नञ् तत्पुरुष के आरम्भ में 'न' को ऐसा का ऐसा ही रख लिया जाता है यथा नाक, नामन्य, नकुल, आदि पा० ६।३।७५, (छ) 'न' को बहुधा दूसरे अव्ययों के साथ भी जोड दिया जाता है—नच, नवा, नैव, ननु, नचेत्, नक्तम् आदि। सम०—असत्यौ (पु० द्वि० व०) अश्विनी कुमार, देवों के वैद्ययुगल, —एक (वि०) 'एक नही' अर्थात् एक से अधिक, कुछ, कई, °आत्मन् (वि०) विविध भांति का विभिन्न प्रकृति का, °घर (वि०) 'न रहने वाला' यथेच्चारी, सघातवासी, समाज में रहने वाला, सामाजिक °भेद, °रूप (वि०) विविध प्रकार का, नाना प्रकार के रूपों का °शस् (अव्य०) बार २, बहुधा,—किञ्चन (वि०)=अत्यन्त गरीब, भिखारी के समान।

नक्तञ्चरः [कुत्+क, न सन्धेश समासः] नाक, नासिका।

नकुलः [नास्ति कुल यस्य, नञो न लोप प्रकृतिभावात्] नेवला, आखेटी नकुल—यदय नकुलद्वेषी नकुलद्वेषी पुन पितुन —भास० 2. चौथा पाण्डव राजकुमार —अह तस्य अतिभावितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शने-नोत्सुकोऽस्मि—वेणी० २, (यहाँ नकुल का प्रथम अर्थ है, परन्तु दुर्योधन ने दूसरा अर्थ ग्रहण किया)।

नक्तम् [नञ्+क्त] 1 रात 2 केवल रात्रि के समय खाना, एक प्रकार का धार्मिक व्रत या तपश्चर्या। सम० —अन्ध (वि०) रात्र्यन्ध, जिसे रात में दिखाई नही देता,—चर्या रात को घूमना,—चारिन् (पु०) 1. उल्लू 2 बिलाव 3 चोर 4 राक्षस, पिशाच, भूत प्रेत,—भोजनम् रात का भोजन, स्यालू,—माल: एक वृक्ष का नाम—रघु० ५।४२,—मुखा सन्ध्या, सायकाल,—व्रतम् 1 दिन भर व्रत रखना तथा रात को भोजन करना 2 कोई भी साधना या धार्मिक व्रत जो रात में किया जाय।

नक्तम् (अव्य०) रात के समय, रात को गच्छन्तीना रमणवसति योषिता तत्र नक्तम्—मेघ० ३७, मनु० ६।१९। सम०—चर: रात को घूमने वाला प्राणी 2 चोर,—चारिन् (पु०)=नक्तञ्चारिन्,—दिनम् रात दिन,—दिवम्—दिवम् (अव्य०) रात और दिन।

नक्तक: [नक्त+कै+क] गदा, मैला फटा पुराना कपडा

नक्र: [न क्रामतीति न+क्रम्+ड, नञो न लोप] घडियाल, मगरमच्छ, नक्र स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पञ्च० ३।४६ रघु० ७।३०, १६।५५, —कर्ण 1 दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकडी 2. नाक, —पर्ण 1 नाक, 2 मक्खियों या भिडों का छत्ता।

नक्षत्रम् [नक्ष्+अत्रन्] 1 तारा 2 तारक पुज, चन्द्रपथ में तारावली, नक्षत्र—नक्षत्रताराग्रहसकुलापि —रघु० ६।२२। सम०—ईश:,—ईश्वर,—नाथ, —प,—पति:—राज: चन्द्रमा,—रघु० ६।६६, चक्रम् 1 स्थिर तारा-मण्डल 2 नक्षत्रों का समूह,—दर्श ज्योतिर्विद्, ज्योतिषी,—नेमि: 1 चन्द्रमा 2 ध्रुवतारा 3 विष्णु की उपाधि (मि:—स्त्री०) अन्तिम नक्षत्र, रेवती,—पथ आकाश जिसमें तारे बिखरे हो,—पाठक ज्योतिषी,—माला 1 तारापुज 2 २७ मोतियों की माला 3 चन्द्रपथ में तारामण्डल 4 हाथियों के कण्ठ का आभूषण—अनङ्गवारण शिरोनक्षत्रमालाप्रमाणेन सेवलादाम्ना—का० ११,—योग: चन्द्रमा का नक्षत्रों से मिलन,—वर्त्मन् (पु०) आकाश,—विद्या गणित,

ज्योतिष -वृष्टि (स्त्री०) टूटने वाले तारे,- सूचक: अयोग्य ज्योतिषी--तिथ्यृत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैव साधनम्, परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचका । या--अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते, स पक्षि-दूषक पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचक, बराह० २।१७, १८ ।

नक्षत्रिन् (पु०) [नक्षत्र+इनि] 1 चन्द्रमा 2 विष्णु का विशेषण ।

नखः, नखम् [नह्+क, हकारस्यलोप] हाथ या पैर की अगुली का नाखून, पजा, नखर--नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन्मृगपतिं —भामि० १।२, ३१, १२। १२ 2 बीस की संख्या,—क्ष भाग, अंश । सम० —अङ्क खरोच, नखचिह्न-भामि० २।३२, -क्षत खरोच, नख द्वारा किया गया घाव - मा० ५।२३, —आयुध 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मुर्गा, आक्षिन् (पु०) उल्लू,—कुट्ट नाई,—आहम् नाखून की जड़ —दारण वाद्य, दृयन (णम्) नहरनी, नाखून काटने की कैंची निकृन्तनम्, -रजनी नाखून काटने की कैंची, नहरनी,—पदम्,—क्षण नखचिह्न, खरोच, नख-पदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दून्-मेघ० ३५,—भृत् वनुए —लेखा 1 नखचिह्न, 2 नाखून रगना,- विक्किर (अपने पजों से फाड़ने वाला) शिकारी पक्षी,—शस्त्र छोटा शस्त्र ।

नखक्षत (वि०) [नख+पच्+क्त, मुम्] नाखून झुलसाने वाला, शि० ९।८५ ।

नखर,-रक [नख+र+क] अगुली का नाखून, पजा, नख । सम० आयुध 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मुर्गा — आढ्य करवीर ।

नखायुधि (अव्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्, ब० स०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला युद्ध, नाखूनों की लड़ाई ।

नाखिन् (वि०) [नख+इनि] 1 बड़े 2 नाखूनों वाला, तेज पजों वाला 2 कटीला, कटिदार (पु०) व्याघ्र या शेर जैसा नखधारी जन्तु ।

नगः [न गच्छति--न+गम्+ड] 1 पहाड़—कु० १। १७, ७२ शि० ६।७९ 2 वृक्ष 3 पौधा 4 सूर्य 5 साँप 6 सात की संख्या । सम० - अदन नदर —अधिप,—अधिराज, इन्द्र 1 (पहाड़ों का स्वामी) हिमालय पर्वत 2 सुमेरु पर्वत,— अरि इन्द्र का विशेषण,—उच्छ्राय पहाड़ की ऊँचाई, ओकस् (पु०) 1 पक्षी 2 कौवा 3 सिंह 4 शरभ नाम का काल्पनिक पक्षी,—ज (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, पहाड़ी —भट्टि० १०।९, (जा) हाथी, जा,—नन्दिनी पार्वती का विशेषण,—पति 1 हिमालय पहाड़ 2 (वनस्पतियों का स्वामी) चन्द्रमा,--भिद् (पु०) 1 कुल्हाड़ा 2 इन्द्र का विशेषण, -मूर्धन् (पु०) पहाड़ की चोटी -रन्ध्रकर कार्तिकेय का विशेषण—रघु० ९।२ ।

नगरम् [नग इव प्रासादा सन्त्यत्र ब० र] कस्बा, शहर (विप० ग्राम) - नगरगमनाय मतिं न करोति—मा० २ । सम०—अधिकृत, - अधिप, —अध्यक्ष नगर का मुख्य दण्डनायक, मुख्य आरक्षाधिकारी 2 नगर पाल, नगर का अधीक्षक,— उपान्त उपनगर नगर के आसपास की आबादी,—ओकस् (पु०) नागरिक, —काक 'शहरुआ'कौवा' एक तिरस्कारयुक्त उक्ति —द्वार हाथी,- जन 1 नगर के लोग, नागर 2 नागरिक, प्रदक्षिण जलूस में मूर्ति को नगर के चारों ओर घुमाना,—प्रान्त उपनगर,—मार्ग प्रधान सड़क, राजपथ,- रक्षा नगर का अधीक्षण या शासन, -स्थ नगरवासी, नागरिक ।

नगरी [नगर+ङीप्]= नगर, । सम०- काक सारस, —वक कौवा ।

नग्न (वि०) [नज्+क्त, तस्य न] नगा, विवस्त्र, वस्त्र-हीन - न नग्न स्नानमाचरेत् - मनु० ४।४५, नग्न-क्षपणके देशे रजक किं करिष्यति—चाण० ११० 2 बिना जोता हुआ, बिना बसा, सुनसान—ग्नः 1 नगा भिक्षु 2 क्षपणक 3 पाखंडी 4 सेना के साथ रहने वाला भाट, घूमता हुआ भाट - ग्ना 1 नगी० निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजस्वला होने के पूर्व की आयु वाली लड़की, दस बारह वर्ष की आयु से कम की (अर्थात् जो इधर उधर नगी आ जा सके) । सम० अट, अटक 1 जो इधर उधर नगा घूम सके 2 विशेष रूप से (दिगंबर सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु ।

नग्नक (वि०) (स्त्री-निका) [नग्न+कन्] नगा, विवस्त्र, क 1 नगा भिक्षु 2 दिगंबर सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु 3 भाट ।

नग्नका, नग्निका [नग्नक+टाप्, पक्षे इत्वम्] 1 नगी, निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजोधर्म होने से पूर्व की अवस्था की लड़की ।

नग्नकरणम् [अनग्नं नग्नं क्रियते- नग्न+च्वि+कृ-+ल्युट्, मुम्] नगा करना ।

नग्न भविष्णु,-भावुक (वि०) [नग्न+भू=इष्णुच्, उकञ्] नगा होने वाला ।

नग [न नक्तं गच्छति न+गम्+ड] प्रेमी, जार ।

नचिकेतस् (पु०) अग्नि का विशेषण ।

नचिर (वि०) [न चिरम्, न शब्देन समास] दे० अचिर, भग० ५।६, १२।७ ।

नञ् (अव्य०) निषेधात्मक अव्यय 'न' के लिए पारिभाषिक शब्द ।

नट । (स्वा० पर० नटति 'चोट पहुचाने' के अर्थ में

'न्न' के पश्चात् 'न' को 'ण' हो जाता है) 1 नाचना, यदि मनसा नटनीयम् गीत० ४ 2 अभिनय करना 3 (धोखे से चालाकी से) क्षति पहुँचाना, प्रेर०—नाटयति-ते 1 अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटकों में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरसधान नाटयति -शि० १ 2 अनुकरण करना, नकल करना—स्फटिकस्फटकभूमिनाटियत्येष शैल अधिगतधवलिम्न शूलपाणेरभिख्याम् शि० ४।६५, (विशे० 'नचाना' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'नट्' धातु का 'नटयति' रूप बनता है—भर्तृ० ३।१२६), आ (चुरा० उभ० नाटयति-ते 1 गिर पड़ना, गिरना 2 चमकना 3 क्षति पहुँचाना।

नट [नट्+अच्] 1 नाचने वाला—न नटा न विटा न गायका—भर्तृ० ३।२७ 2 अभिनेता कुर्वन्नय प्रहसनस्य नट कृतोऽसि—भर्तृ० ३।१२६, ११२, 3 पतित क्षत्रिय का पुत्र 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार का नर कुल। सम०—अतिका लज्जा, ह्री, ईश्वरः शिव का विशेषण—कर्म नाटक के पात्र का अभिनय, भूषण,—मण्डनम् हरताल—रङ्ग नाट्य रंगमंच, वर 'प्रधान नट' सूत्रधार—सत्तकम् हरताल (क) अभिनेता, नट।

नटनम् [नट+ल्युट्] 1 नाचना, नाच 2 अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण।

नटी [नट+ङीष्] 1 अभिनेत्री 2 मुख्य नटी (सूत्रधार की पत्नी) 3 वेश्या, रण्डी। सम०—सुत नर्तकी का पुत्र।

नटया [नट्+य+टाप्] अभिनेताओं की मण्डली।

नड,-डम् [नल्+अच्, लस्य डत्वम्] नरकुल का एक भेद। सम०—आगारम्,-आगारम् नरकुलों का बना झोंपड़ा -प्राय (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होते हों वनम् नरकुलों का जंगल—सहलि (स्त्री०) नरकुलों का संग्रह।

नडज (वि०) (स्त्री०-जी) [नड+ज] सरकंडों से ढका हुआ।

नडिनी [नड+इनि+ङीष्] 1 सरकंडों का ढेर 1 सरकंडों का बना हुआ मूढ़ा या शय्या, वह नदी जहाँ सरकंडों के पौधे बहुतायत से हों।

नडिल, (वि०), **नड्वत्** (वि०) (स्त्री०-ती) [नड+इलच्, डवतुप् वा] सरकंडे जहाँ पर बहुतायत से हों, या जो सरकंडों से ढका हुआ हो, सरकंडों से युक्त स्थान।

नड्वा [नड्+य+टाप्] सरकंडों का ढेर।

नड्वल (वि०) [नड+ड्वलच्] सरकंडों से व्याप्त—सम् सरकंडों का ढेर या शय्या, यो नड्वलानीत गज परेषा बलान्यमृद्नान्नलिनाभवक्त्रा—रघु० १८।५।

नत (भू०क०कृ०) [नम्+क्त] झुका हुआ, प्रणत, झुकने वाला, ढलान वाला 2 डूबा हुआ, अवसन्न 3 कुटिल, टेढ़ा—तम् याम्योत्तर रेखा (मध्य दिन रेखा) से किसी ग्रह की दूरी। सम०—अङ्ग (वि०) 1 झुके हुए शरीर वाला 2 झुकने वाला 3 प्रणत (गी) 1 झुके हुए अंगों वाली स्त्री 2 स्त्री—नासिक (वि०) चपटी नाक वाला,—भ्रू टेढ़ी भौंहों वाली स्त्री।

नति (स्त्री०) [नम्+क्तिन्] 1 झुकाव, झुकना, प्रणमन 2 वक्रता, कुटिलता 3 अभिवादन करने के लिए शरीर का झुकाना, प्रणति, शालीनता 4. (ज्यो० में) भोगांश में स्थानभ्रंश।

नद् (भ्वा० पर० नदति, नदित) 1 शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बादल की भांति) गरजना—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगंध—मेघ० ९, नदत्याकाशगंगायां स्रोतस्युद्दामदिग्गजे—रघु० १।७८, शि० ५।६१, भट्टि० २।४ 2 बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्राय शब्द, स्वन नाद कर्म के साथ) ननाद बलवन्नादं, शब्दं घोरतरं नदन्ति—महा० 3 खरखराना प्रेर० नादयति—ते 1 कोलाहल से भर देना, कोलाहलमय करना 2 शब्द करवाना, उद्—दहाड़ना, ज़ोर से पुकारना, (बैल की भांति) गर्जना, कु० १।५६, वि—, शब्द करना, चिल्लाना—रघु० ५।७५, मालवि० ५।१०, भट्टि० ६।११७, प्र (प्रणदति) ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना—कस्मादहं प्राणदन् घोरा महा० शिवा प्रणदति आदि प्रति—, गूंजना, प्रतिध्वनि करना, प्रेर०—कोलाहल से भरना, गुंजायमान करना शि० २।२६, ऋतु० ३।१४, वि—, ध्वनि करना, गूंजना—भग० १।१२, प्रेर०—कहन करवाना या गीत गवाना—अवृद्धै शिक्षिगणो विनाशते—घट० १०।

नद [नद्+अच्] 1 दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिंधु) शि० ६६, (यहाँ मल्लि० की टिप्पण—प्राक्स्रोतसो नद्य प्रत्यक्स्रोतसो नदा नर्मदा विनेत्याहु) 2 नदी, प्रवहणी, नाला—कि० ५।२७ 3. समुद्र। सम०—राज समुद्र।

नदकु [नद्+अथुच्] 1 शोर, दहाड़ 2 बैल की दहाड़।

नदी [नद+ङीप्] दरिया, प्रवहणी, सरिता—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी—कु० ४।४४। सम०—ईश,-ईश, कान्त समुद्र,—कुलप्रियः एक प्रकार का नरकुल—ज (वि०) जलोत्पन्न (ज) भीष्म का विशेषण (जम्) कमल—तरस्थानम् उतरने का स्थान, घाट—दोह भाड़ा, उतराई, किराया,—धरः शिव का विशेषण, पतिः 1 समुद्र 2 वरुण का विशेषण,—पूरः उमड़ा हुआ दरिया,—मातृ

नदीलक्षण,—मातृक (वि०) (देश आदि) जहां नदी के पानी से सिंचाई होती हो, सिंचित, नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, नं० ३।३८, तु० देवमातृक,—रय नदी की धार, —वक नदी का मोड़,—ज्ञ (वि०) (स्त्री) 1 नदी में स्नान करने वाला 2 नदियों के भयानक स्थानों, उनकी गहराइयों और प्रवाहों को जानने वाला —तत समाज्ञापयदाशु सर्वानादायिनस्तद्विषये नदीज्ञान् रघु० १६।७५, अत 3 अनुभवी, चतुर,—सर्ज अर्जुन वृक्ष।

नद्ध (भू० क० कृ०) [नह् + क्त] 1 बंधा हुआ, बांधा हुआ, जकड़ा हुआ, चारों ओर से बद्ध, धारण किया हुआ 2 ढका हुआ, जड़ा हुआ, अन्तर्ग्रथित 3 संयुक्त, संयोजित दे० 'नह्'; —द्धम् गांठ, बंधन, बंध, गिरह।

नद्धत्री [नह् + ष्ट्रन् + ङीप्] चमड़े का फीता।

ननंदृ, ननांदृ (स्त्री०) [ननन्दति सेवयापि न तुष्यति न + नन्द् + ऋन्] पति की बहन, ननान्दु पत्या च देव्या सदिष्टमृष्यस्मृगेय—उत्तर० १। सम० ननांदृपति (ननादृपति) ननदोई, पति की बहन का पति।

ननु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का संयुक्त रूप, जिसे आज कल पृथक् शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1 पूछताछ प्रश्न, ननु समाप्तकृत्यो गौतम —मालवि० ४ 2 निश्चय ही, अवश्य, निस्सदेह, क्या यह असन्दिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बल के साथ) यदा-ऽयेषाविनो शिष्योपदेश मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १ 3 निस्सन्देह, बेशक, अवश्य —उपपन्न ननु शिव सप्तस्वगेषु —रघु० २।६०, त्रिलोकनाथेन सदा मखद्विषस्त्वया नियम्या ननु दिव्यचक्षुषा—३।४५ 4 सबोधन सूचक अव्यय ('आ' 'अहो') ननु मानव —दश०, ननु मूर्ध्ना पठितमेव युष्माभिस्तत्काडे —उत्तर० ४ 5 'कृपा करके' 'अनुग्रह करके' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रतिषेधात्मक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है —ननु मा प्रापय पत्युरन्तिकम् —कु० ४।३२ 6 कभी-कभी समाधानसूचक के रूप में प्रयुक्त होता है —ननु पदे परिवृत्य भण - मृच्छ० ५, ननु भवानग्रतो मे वर्तते —श० २, ननु विज्ञिनोतु भवान्—विक्रम० २ 7 तर्कानुबद्ध चर्चा के समय आक्षेप करने या विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसके पश्चात् प्राय 'उच्यते' आता है) नन्वचेतनान्येव वृश्चिकादिशरीराणि अचेतनानां च गोमयादीनां कार्याणीति उच्यते —शारी०।

नन्द् (भ्वा० पर० नन्दति, नन्दित) प्रसन्न होना, हर्षित होना, खुश होना सन्तुष्ट होना, (किसी बात पर) हर्ष प्रकट करना—ननदतुस्तत्सदृशेन तत्समौ—रघु० ३।२३, ११, २।२२, ४।३, भट्टि० १५।२८, प्रेर० —नन्दयति—ते—प्रसन्न करना, खुश करना, हर्षित करना, आनन्दित करना—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति सस्मरणीयशोभा—श० ४।२, भट्टि० २।१६, रघु० १।५२ अभि—1 हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—आत्मविडबनामभिनन्दति—का० १०८, नाभिनन्दति न द्वेष्टि—भग० २।५७ 2 बधाई देना, जय जयकार करना, स्वागत करना, नमस्कार करना—तापसीभिरभिनन्द्यमाना तिष्ठति—श०, ४, तमभ्यनन्दत्प्रथम प्रबोधित रघु० ३।६८, २।७४, ७।६९, ११।३०, १६।६४ 3 प्रशंसा करना, तारीफ करना, श्लाघा करना, अच्छा समझना—नाम यस्याभिनन्दति द्विपोऽपि स पुमान्—किं० ११।७३, श० ३।२४, रघु० १२।३५, न ते वचोऽभिनन्दामि—श० २ 4 कामना करना, चाहना, पसन्द करना, अपेक्षा करना (प्राय 'न' के साथ) नाभिनन्दति केलिकला —मा० ३, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—मनु० ६।४५, हि० ४।४, आ —,प्रसन्न होना, खुश होना- आनन्दितास्त्वा दृष्ट्वा भट्टि० २२।१४, प्रेर० प्रसन्न करना, खुश करना- उत्तर० ३।१४, याज्ञ० १।३५६, प्रति—, 1 आशीर्वाद देना—रघु० १।५७, मनु० ७।१४६, कु० ७।८७ 2 स्वागत करना, बधाई देना, जयजयकार करना, हर्ष पूर्वक सत्कार करना -प्रतिनन्द्य स ता पूजाम्—महा०, मनु० २।५४।

नन्द [नन्द् + अच्] 1 आनन्द, सुख, हर्ष 2 (११ इंच लम्बी) एक प्रकार की बांसुरी 3 मेंढक 4 विष्णु 5 एक ग्वाले का नाम जो यशोदा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी देख रेख में कृष्ण को रक्खा गया था जब कि कंस उसे मारना चाहता था) 6 नंद वंश का प्रतिष्ठाता (यह वही नंदवंश था जिसके नौ भाई पाटलिपुत्र में राज्य करते थे तथा जिन्हें चन्द्रगुप्त के मंत्री चाणक्य की नीति के द्वारा यमलोक भेज दिया गया था)—समुत्खाता नंदा नव हृदयरोगा इव भुव —मुद्रा० १।१३, अगृहीते राक्षसे किमुत्खात नन्दवंशस्य—मुद्रा० १।३, २७, २८। सम०—आत्मज, नंदन कृष्ण का विशेषण—पाल वरुण का विशेषण।

नन्दक (वि०) [नन्द् + णिच् + ण्वुल्] 1 हर्षित करने वाला, आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला 2 खुश होने वाला, हर्ष मनाने वाला 3 परिवार का प्रसन्न करने वाला - क. 1 मेंढक 2 कृष्ण की तलवार 3 तलवार 4 आनन्द।

नन्दकिन् (पु०) [नन्दक + इनि] विष्णु का विशेषण।

नन्दथु [नन्द् + अथुच्] आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

नन्दन (वि०) [नन्द् + णिच् + ल्युट्] 1 खुश करने वाला, सुहावना, प्रसन्न करने वाला—न: 1 पुत्र —याज्ञ० १।२७४, रघु० ३।४१ 2 मेंढक 3 विष्णु

का विशेषण 4 शिव—नम् इन्द्र का उद्यान, आनन्द-धाम—अभिज्ञाशब्देदपाताला क्रियते नन्दनद्रुमा कु० २।४१, रघु० ८।९५ 2 हर्ष मनाने वाला, प्रसन्न होने वाला, 3. हर्ष, सम०—अङ्ग पीले चन्दन की लकड़ी, हरिचन्दन।

नंदयत्, नदयन्त [नद्+अच्, अन्त आदेश, नन्द्+णिच् +झच् (अन्त)] पुत्र, बेटा।

नन्दा [नन्द+टाप्] 1 खुशी, हर्ष, आनन्द 2. सम्पन्नता, धनाढ्यता, समृद्धि 3 छोटा मिट्टी का जल-पात्र 4 ननद, पति की बहन 5 प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, चान्द्रमास की तीन तिथियाँ, (यह शुभ तिथियाँ समझी जाती हैं)।

नन्दि (पु०, स्त्री०) [नन्द+इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी —कौशल्यानन्दिवर्धन -दि (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 शिव 3 शिव का अनुचर 4 जूआ खेलना, क्रीडा (इस अर्थ में नपु० भी)। सम०—ईश, —ईश्वर 1 शिव का विशेषण 2 शिव का प्रधान अनुचर—ग्राम यह गाँव जहाँ राम के वनवासकाल में भरत रहा—रघु० १२।१८,—घोष अर्जुन का रथ—वर्धनः 1 शिव का विशेषण 2 मित्र 3 चान्द्र पक्ष का अन्त अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा।

नन्दिक [नन्दि+कन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2 छोटा जल-पात्र 3 शिव का अनुचर। सम०—ईश, ईश्वर 1 शिव का एक मुख्य अनुचर 2 शिव।

नन्दिन् (वि०) [नन्द्+णिनि, नन्द्+णिच्+णिनि वा] 1 आनन्दित, हृष्ट, प्रसन्न, खुश 2 आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला—(पु०) 1 पुत्र, 2 नाटक में नान्दीपाठ या आशीर्वचन कहने वाला व्यक्ति 3 शिव का मुख्य अनुचर, द्वारपाल, या वह बैल जिस पर शिव सवारी करता है—लतागृहद्वारगतोऽथ नदी —कु० ३।४३, मा० १।१, नी 1 पुत्री उत्तर० १।९ 2 ननद, पति की बहन 3 कल्पनि गाय, कामधेनु (जो सब इच्छाओं को पूरा करती है तथा जिस का स्वामी कुलगुरु वसिष्ठ है)—अनिद्धा नन्दिनी नाम धेनुरावर्तते वनात्—रघु० १।८२, २।६९ 4 गंगा का विशेषण 5 पवित्र काली तुलसी।

नप्तृ (पु०) [पाती इति—पा+तृच्, तस्य नञ्ञा समासे प्रकृतिभाव] (प्रायः वेद में प्रयुक्त) पोता, यथा तनूनपात्।

नपुंस् (पु०) नपुंस [नञ्ञा समासे प्रकृतिभाव] जो पुरुष न हो, हिजड़ा।

नपुंसक,—कम् [न पुमान् न स्त्री, नि० स्त्रीपुंसयो पुंसक आदेश] 1 उभयलिंगी (न स्त्री न पुरुष) 2 नामर्द, हिजड़ा 3 भीरु, डरपोक,—कम् 1 नपुंसक लिंग का शब्द 2 नपुंसक लिंग।

नप्तृ (पु०) [न पतन्ति पितरो येन—न+पत्+तृच् वि०] पोता नाती, (लड़के का पुत्र या लड़की का पुत्र)।

नभ. [नभ्+अच्] श्रावण मास,—भम् आकाश, अन्तरिक्ष।

नभस् (नपु०) [नह्यते मेघैः सह—नह्+असुन्, भत्वधान्तादेशः] 1 आकाश, अन्तरिक्ष—रघु० ५।२९, मेघ० १।१९, ऋतु० १।११ 2 बादल 3 कोहरा, वाष्प 4 पानी 5 जीवन की अवधि, आयु (पु०) 1 वर्षा ऋतु 2 नासिका, घ्राण 3 (जुलाई—अगस्त के अनुरूप, इस अर्थ में नपु० भी) श्रावण मास—प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी—मेघ० ४, रघु० १२।२९, १७।४१, १८।५ 4. पीकदान। सम० अक्षुप चातक पक्षी,—कांतिन् (पु०) सिंह—गजः बादल,—चक्षुस् (पु०) सूर्य, चमस. 1 चन्द्रमा 2 जादू—चर (वि०) गगन विहारी—कु० ५।२३, (—रः) 1 देवता, उपदेवता रघु० १८।६ 2 पक्षी —दुहः बादल, दृष्टि (वि०) 1 अन्धा 2 आकाश की ओर देखने वाला,—द्वीपः,—धूमः बादल,—नदी आकाश गंगा—प्राण. हवा,—मणि सूर्य,—मंडलम् आसमान, अन्तरिक्ष, नेदं नभोमंडलमब्बुराशि —सा० द० १०, द्वीपः चन्द्रमा,—रजस् (पु०) अंधकार, —रेणु (स्त्री०) कोहरा, धुंध,—लग्न धूआँ,—लिह् (वि०) आकाश को चाटने वाला, उन्नत, बहुत ऊँचा तु० अभ्रंलिह्,—सद् (पु०) देवता—शि० १।११, —सरित् (स्त्री०) 1 छायापथ 2 आकाशगंगा —स्थली आकाश,—स्पृश् (वि०) गगनचुंबी, उन्नत।

नभसः [नभ्+असच्] 1 आकाश 2 वर्षा ऋतु 3 समुद्र।

नभसंगम. [नभस्+गम्+खच्+मुम्] पक्षी।

नभस्य [नभस्+यत्] (अगस्त—सितंबर के अनुरूप) भाद्रपद का महीना—रघु० ९।५४, १२।२९, १७।४१।

नभस्वत् (वि०) [नभस्+मतुप्, मस्य वः] वायुयुक्त, धुंधवाला, मेघाच्छन्न,—(पु०) हवा, वायु नै० १।९७, रघु० ४।८, १०।७३, शि० १।१०।

नभाक [नभ्+आक] 1 अंधकार 2 राहु का विशेषण

नभ्राज् (पु०) [भ्राज्+क्विप्, नञ्ञा समासे प्रकृतिभाव] काला बादल, काली घटा।

नम् (भ्वा० पर०—कभी कभी अ०—नमति—ते, नत, प्रेर० नमयति—ते, परन्तु उपसर्ग पूर्व होने पर केवल 'नमयति', इच्छा० निनंसति) 1 झुकना, नमस्कार करना, अभिवादन करना (सम्मान सूचक लक्षण) (कर्म० या सम्प्र० के साथ) इयं नमति वः सर्वान् त्रिलोचनवधूरिति—कु० ६।८९, मेघ० ११।१७,

भट्टि० ९।५१, १०।३१, १२।३९, शि० ४।५७, अधीन होना, पराभव स्वीकार करना, झुक जाना —अशक्त सन्धिमान् नमेत्—काम० ८।९५ 3 झुकना, दबाना, नीचा होना—अनसीद्भूधरेणास्य —भट्टि० १५।२५ नेमु सर्वदिशा—का० ५५, उन्नमति नमति वर्षति मेघ—मृच्छ० ५।२६ 4 उठना, झुकाव होना 5 झुका हुआ होना, वक्र होना 6 ध्वनि निकालना। **अभ्युद्**—, उठाना, उन्नत होना **अव**—, 1 झुकना, नम्र होना, नीचे को ढलना —शि० ९।७४ 2 झुकाना, लटकाना —स्वव्यादातु जलमवनते—मेघ० ४५, **उद्**—, 1 (क) उदय होना, प्रकट होना, उगना —उन्नम्योन्नम्य लीयते दरिद्राणां मनोरथा —पञ्च० २।९१, (ख) 1 लटकना, समीप होना —उन्नमत्यकालदुर्दिनम्—मृच्छ० ५ 2 उदय होना, चढ़ना, ऊपर उठना (आलं० भी) उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघ —मृच्छ० ५।२६, नम्रत्वेनोन्नमन्त —भर्तृ० २।६९, ३।२४, शि० ९।७९ 3 उठाना, उन्नति करना—कि० १६।३५, प्रेर० ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना —उप—, आना आ जाना, पहुँचना 2 होना, भाग्य में होना, घटित होना, सामने आना (सप्र० के साथ या अकेला) कस्यात्यन्त सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९, सत्यभोगं कथमुपनयेत् स्वप्नजोऽपि—मेघ० ९१, यदैवोपनतं दुःखात्सुखं तद्विसर्जनम्—विक्रम० ३।२१, भर्तृ० २।२२१, मेघ० १० रघु० १०।३९ 3 उपस्थित करना, देना, प्रस्तुत करना—परलोकोपनतं जलाञ्जलिम्—रघु० ८।६८, **परि**—, 1 नीचे का ढलना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दांतों से प्रहार करने के लिए) दन्तप्रतीघातपरिणतमज्रप्रेक्षणीय पदर्श—मेघ० २, विश्के नाम पर्यणमत् स्व एव —शि० १८।२७ 2 झुकना, नमस्कार करना, झुकाव होना - लज्जापरिणते (वदनकमले) —भट्टि० १।४, 3 परिवर्तित होना, रूपान्तरित होना, रूप धारण करना (करण० के साथ) लताभावेन परिणतस्या रूपम्—विक्रम० ४।२८, क्षीर जलं वा स्वयमेव दधिहिमभावेन परिणमते —शारी०, मेघ० ४५ 4 विकसित या परिपक्व होना, पकना, परिणतप्रज्ञस्य वार्धके उत्तर० ७।२०, मेघ० १८, कि० ५।३७, मालवि० ३।८, ऋतु० १।२६ 5 (आयु में) बढ़ना, बड़ा होना, बूढ़ा होना क्षीण होना, परिणत शरच्चन्द्रिकासु क्षपासु—मेघ ११०, इसी प्रकार 'जरापरिणत' आदि 6 डूबना, (सूर्य आदि का) पश्चिम में छिपना अनेन समयेन परिणतो दिवस—का० ४७ 7 पच जाना, ग्रस्त परिणमेच्च यत्—महा०, **प्र** (प्रणमति) नमस्कार करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रणति करना (कर्म० या सप्र० के साथ) न प्रणमति देवताभ्य —का० १०८, ना प्रणताय - का० २१९, भग० ११।४४, रघु० २।२१, (साष्टाङ्ग प्रणम् आठ अंगों से झुक कर प्रणाम करना दे० 'साष्टांग', **दण्डवत् प्रणम्** डंडे की भांति पूर्ण रूप से भूमि पर लेट कर नमस्कार करना, सब अंगों से भूमि को स्पर्श करते हुए तु० दण्डप्रणाम), **वि**—, 1 अपने आपको झुकाना, नम्र करना, विनीत होना विनमति चास्य तरव प्रचये - कि० ६।३४ भर्तृ० १।६७, भट्टि० ७।५२, दे० 'विनत' **विपरि**—1 बदलना 2 बदल कर खराब होना **सम्** 1 झुकना नीचे को होना, झुकाव होना —सनतागी कु० १।३४, भट्टि० २।३१, पर्वसु सनता —विक्रम० ४।२६ 2 नम्र होना, विनीत होना सनमतामरीणाम्—रघु० १८।३४।

नमत (वि०) [नम्+अतच्] झुका हुआ, विनीत, कुटिल, वक्र—त· 1 अभिनेता 2 घुड़ी 3 स्वामी, प्रभु 4 बादल।

नमनम् [नम्+ल्युट्] 1 विनीत होना, झुकना, नम्र होना 2 दबना 3 विनति, नमस्कार, अभिवादन।

नमस् (अव्य०) [नम्+असुन्] प्रणति, अभिवादन, प्रणाम, पूजा (यह शब्द स्वयं सदैव सप्र० के साथ प्रयुक्त होता है, तस्मै बदान्यगुरवे तरवे नमोऽस्तु —भामि० १।९४, नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यम् कु० २।८, परन्तु 'कृ' के योग में कर्म० के साथ - मुनिवय नमस्कृत्य - सिद्धा०, परन्तु कभी-कभी सप्र० के साथ भी - नमस्कुर्मो नृसिंहाय —सिद्धा०, यह शब्द संज्ञा शब्द का अर्थ रखता परन्तु समझा जाता है अव्य०) : समा०—**कार**, —**क्रिया** (स्त्री०)—**कारणम्** प्रणति, सादर प्रणाम, सादर अभिवादन ('नमस्' शब्द के उच्चारण के साथ), —**कृत** (वि०) 1 जिसे प्रणति दी गई है, जिसको प्रणाम किया गया है 2 सम्मानित, अर्चित, पूजित,—**गुरु** आध्यात्मिक गुरु,—**क्रिया** (अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना, अर्थात् विनम्र अभिवादन करना - इद कविभ्य पूर्वेभ्यो नमोवाक प्रशास्महे —उत्तर० १।१।

नमस (वि०) [नम—असच्] अनुकूल, सानुपात व्यवस्थित।

नमसित, नमस्यित (वि०) [नमस्+क्यच्, नमस्य+क्त, विकल्पेन यलोप] जिसे नमस्कार किया गया हो, सम्मानित, जिसे प्रणाम किया गया है।

नमस्यति (ना० धा० पर०) नमस्कार करना, श्रद्धाजलि अर्पित करना, पूजा करना - भर्तृ० २।९४।

नमस्य (वि०) [नमस्+यत्] 1 अभिवादन प्राप्त करने का अधिकारी, सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय 2 आदरपूर्वक, विनीत,—**क्रिया** पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

नमुचिः [न+मुच्+इन्] 1 एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार गिराया था। नमुचे नमुचेरग्ये शिर—रघु० ९।२२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो नमुचि नामक एक असुर ने इन्द्र का डटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को बन्दी बना लिया। उस दैत्य ने इन्द्र से कहा कि यदि तुम यह प्रतिज्ञा करो कि 'न मैं तुम्हें दिन में मारूँगा न रात को, न पानी में न सूखे में' तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। इन्द्र ने प्रतिज्ञा की और फलतः उसे छोड़ दिया गया। फिर इन्द्र ने सन्ध्या समय पानी के झाग के साथ (जो न पानी था न सूखा पर) नमुचि का सिर काट डाला। दूसरे एक कथन के अनुसार नमुचि इन्द्र का मित्र था उसने एक बार इन्द्र की शक्ति को पी लिया और उसे निर्बल एवं अशक्त बना दिया, फिर अश्विनीकुमारों (सरस्वती ने भी) ने इन्द्र को वज्र दिया जिससे उसने नमुचि का सिर काट डाला) 2 कामदेव।

नमेरु [नम्+एरु] एक वृक्ष का नाम, रुद्राक्ष या सुरपुन्नाग गणा नमेरुप्रसवावतंसा—कु० १।५५, ३।४३, रघु० ४।७४।

नम्र (वि०) [नम+र]। विनीत, प्रणतिशील, झुका हुआ, विनत, नीचे लटकने वाला भवति नम्रास्तरव फलागमैः भ० ५।१२ श्लोकनम्रा सनाम्या—मेघ० ८२, पञ्च० १।१०६, रत्न० १।१९ 2 प्रणतिशील, सादर अभिवादनशील, अभवच्च नम्र प्रणिपात शिक्षया रघु० ३।२५ इत्युक्तवते तस्मिन्नमा स्म नम्रा—कु० ७।२८ 3 सुशील, विनयी, विनयशील, मृदुल —मेघ० ५५ 4 कुटिल, वक्र 5 पूजा करने वाला 6 भक्त, उपासक।

नय् (भ्वा० आ०—नयते) 1 जाना 2 रक्षा करना।

नय [नी+अच्] 1. निर्देशन मार्गदर्शन, प्रबन्धन 2 व्यवहार, नित्यचर्या, आचरण, दिनचर्या—जैसा कि दुर्नय में 3 दूरदर्शिता, अदृष्टि 4 नीति, शासन विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता सामरिक प्रशासन राज्य की नीति नयप्रचार व्यवहार दुष्टनाम्—मृच्छ० १।७, नयगुणोपचितानमिव भूपते सदुपकार फला श्रियमर्थिन - रघु० ९।२७ 5 नैतिकता, न्याय, न्यायपरता, न्याय्यता चलति नयान्न जिगीषतां हि चेत किं० १०।२९, २।३, ६।३८, १६।४२ 6 रूपरेखा, ढाचा, योजना—मुद्रा० ६।११,७।९ 7 सिद्धांत वाक्य, नियम 8 क्रम, प्रणाली, रीति 9 पद्धति, मत, सम्मति 10 दार्शनिक पद्धति —वैशेषिके नये—भाषा०, १०५। सम०—कोविद -ज्ञ (वि०) नीति कुशल, दूरदर्शी चक्षुस् (वि०) जो सर्वत्र अदृष्टि रखने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी—रघु० १।५५—वेत्तृ (पु०) राज नीतिशास्त्र पारगत—विद् (पु०) —विशारदः राजनयिक, राजनीतिज्ञ—शास्त्रम् 1 राजनीतिशास्त्र, 2 राजनीति का या राजनीतिक अर्थशास्त्र का कोई ग्रन्थ 3 नीतिशास्त्र—शालिन् (वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरायण किं० ५।२४।

नयनम् [नी+ल्युट्] 1 मार्ग दर्शन, निर्देशन, सञ्चालन, प्रबन्धन 2 लेना, निकट लाना, खींचना 3 हुकूमत करना, शासन करना 4 प्रापण 5 आँख। सम०—अभिराम (वि०) आँखों को प्रसन्न करने वाला, प्रियदर्शन (—म.) चाँद,- उत्सव 1 दीपक, लैंप 2 आँख को प्रसन्नता 3 कोई प्रिय वस्तु—उपान्त आँख का कोना—कु० ४।२३, गोचर (वि०) दृश्यमान, दृष्टि-परास के अन्तर्गत,—छद पलक,— पथ दृष्टि-परास—पुटम अक्षिगोलक,—विषयः 1 कोई दृश्यमान पदार्थ 2 क्षितिज,—सलिलम् आँसू मेघ० ३९।

नर [नृ+अच्] 1 मनुष्य, पुमान् पुरुष - सयोजयति विद्वेष नीचगापि नर सरित् समुद्रमिव दुर्धर्षं नृप-भाग्यमनु परम् - हि० प्र० ५, मनु० १।९६, २।२१३ 2 शतरंज का मोहरा 3 घुमक्कड़ी की कील, शकु 4 परमात्मा, नित्यपुरुष 5 दोनों हाथों को दोनों ओर सीधा फैलाकर, हाथ के एक सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक की लम्बाई 6 एक प्राचीन ऋषि का नाम 7 अर्जुन का नाम दे० नी० नरनारायण। सम०—अधिप, —अधिपतिः, ईश, - ईश्वरः देव,—पति पाल राजा भग० १०।२७, मनु० ७।१३, रघु० २।२५, ३।४२, ७।६२, मेघ० ३७, याज्ञ० १।३१०, -अतक मृत्यु,—अयण विष्णु का विशेषण,—अश राक्षस, पिशाच, -इन्द्र 1 राजा—रघु० २।१८, ३।३३, ६।८०, मनु० ९।२५३ 2 वैद्य, विषनाशक औषधियों का विक्रेता, विषनाशक - -नेतृ-कश्चिन्नरेन्द्राभिमानी सा निवर्त्य दश० ५१, मुनिग्रहा नरेन्द्रेण फणीडा इव शत्रव —शि० २।८८, (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है),—उत्तम विष्णु का विशेषण, ऋषभ 'मनुष्यों में श्रेष्ठ' राजकुमार, राजा,—कपाल मनुष्य की खोपड़ी, -कोलक आध्यात्मिक गुरु की हत्या करने वाला, -केसरिन् (पु०) विष्णु का चौथा अवतार, नृ० 'नृसिंह' की नो०, —द्विष् (पु०) राक्षस, पिशाच—भट्टि० १५।९४, —नारायण कृष्ण का नाम (द्वि० व०—नौ) मूलरूप से दोनों एक ही माने जाते थे, परन्तु पुराणों और महाकाव्यों में दो स्वतन्त्र माने जाने लगे—नर को अर्जुन का समरूप तथा कृष्ण का नारायण का रूप (कुछ स्थानों पर इन्हें 'देवौ' 'पूर्वदेवौ' 'ऋषी' या 'ऋषिसत्तमौ' कहते हैं, कहा जाता है कि यह दोनों हिमालय पर्वत कड़ी साधना और तपस्या किया

करते थे, इनकी इस तपस्या से इन्द्र भयभीत हुआ, फलतः उसने इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए कई देव कन्याओं को भेजा। परन्तु नारायण ने अपनी जंघा पर रक्खे एक फूल से सौंदर्य में इनसे बढ़ चढ़कर 'उर्वशी' नाम की एक अप्सरा को उत्पन्न करके इन स्वर्गदेवियों को लज्जित कर दिया, तु० स्थाने खलु नारायणस्यापि विलोभयत्यस्तत्पूर्वभवसखीमिमां दृष्ट्वा शोडिता सर्वा अप्सरसः इति-विक्रम० १), —वध्रु पशु जैसा मनुष्य, मानव रूप में पशु—पुंगव मनुष्यों में श्रेष्ठ, उत्तमपुरुष, -वनिता, —वनितः, —वनिनी मनुष्य जैसी स्त्री जिसके दाढ़ी हो, मर्दानी औरत, —मेध नरयज्ञ, -यंत्रम् घृणघड़ी,—यानम् —रथः -वाहनम् मनुष्य द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी—लोकः 1 मनुष्यों का संसार, पृथ्वी, पार्थिव संसार 2 मानवता, -वाहनः कुबेर का विशेषण—रघु० ९।११,—वीरः पराक्रमी मनुष्य शूरवीर,—व्याघ्रः —शार्दूलः प्रमुख पुरुष, -शृंगम् 'मनुष्य का सींग', असंभावना, शैर के मुंह, बकरे के धड़ और सांप की पूंछ वाला बकरा अर्थात् बन्ध्यापुत्र, सत्ताहीनता, —संसर्गः मानव-समाज, —सिंहः, —हरिः 'नरसिंह' विष्णु का चौथा अवतार, तु० तवकरकमलवरे नखमद्भुतशृंगं दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम्, केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे—गीत० १,—संघः मनुष्यों की टोली।

नरक,—कम् [नृणाति क्लेशं प्रापयति—नृ+बुन्] दोज़ख, घृणित प्रदेश, (प्लूटो के राज्य के अनुरूप स्थान, नरक विभिन्नियों में २१ माने जाते हैं जहाँ पापियों को विविध प्रकार की यातनायें दी जाती हैं), —क एक राक्षस का नाम, प्राग्ज्योतिष का राजा (एक वृत्त के अनुसार नरक एक बार अदिति के कर्णाभूषण उठाकर भाग गया, तब देवताओं की प्रार्थना सुनकर कृष्ण ने उसको एक ही पछाड़ में मार गिराया और वह आभूषण प्राप्त किया। एक दूसरे वृत्त के अनुसार नरक ने हाथी का रूप धारण किया और वह विश्वकर्मा की पुत्री को उठा कर ले गया तथा उसके साथ बलात्कार किया। उसने गन्धर्वों, देवों, और मनुष्यों की लड़कियां तथा अप्सराओं को उठाया और इस प्रकार सोलह हजार से अधिक युवतियों को अपने अन्तःपुर में रक्खा। कृष्ण ने जब नरक को मार दिया तो यह सब युवतियाँ कृष्ण के अन्तःपुर में हस्तान्तरित कर दी गईं। यह राक्षस भूमि से उत्पन्न होने के कारण भौम कहलाता है)। सम०—अंतक, —अरिः,—जित् (पुं०) कृष्ण के विशेषण, —आत्मज 1 मृत्यु के पश्चात् आत्मा 2 भूत, प्रेत —कुंडम् नरक का गड्ढा जहाँ दुष्टों को नाना प्रकार की यातनायें दी जाती हैं—इस प्रकार के ८६ स्थान गिनाये गये हैं), —स्था वैतरणी नदी।

नरकम्, नराग्र [नृ+अगद्, नर+अग्+अण्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग।

नरकिन् [नरक+इनि] नारकीय, नरक में पड़ा हुआ।

नरजन्मन् [नरः जीयन्तेऽस्मिन्—नर+घा+कि, पृषो० मुम्] सांसारिक जीवन या अस्तित्व।

नरी [नर+ङीष्] नारी, स्त्री—भाग० ३।१६।

नरकुटकम्] नरस्य कुटकमिव पृषो०] नाक, नासिका।

नर्त [नृत्+अच्] नाचना नाच।

नर्तक [नृत्+ण्वुल्] 1 नाचने वाला, नृत्यशिक्षक 2 अभिनेता, नट, मूकनाटक का पात्र 3. भाट, चारण 4 हाथी 5 राजा 6 मोर,—की 1 नाचने वाली स्त्री, नटी, अभिनेत्री रङ्गस्थ दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात् —मा० का० ५९, कि० १०।४१, रघु० १९।१४, १९ 2 छुरिनी 3 मोरनी।

नर्तन [नृत्+ल्युट्] नाचने वाला, -नम् हावभाव प्रदर्शित करना, नाचना, नाच। सम०—गृहम्,—शाला नाचघर,—प्रिय शिव का विशेषण।

नर्तित (वि०) [नृत्+णिच्+क्त] नाचा हुआ, नचाया हुआ।

नर्द् (म्वा० पर०—नर्दति, नर्दित) गरजना, दहाड़ना, शब्द करना -अनर्दिषुः कपिव्याघ्राः —भट्टि० १५।३५, १४।४०, १५।२८, १७।४० 2 जाना, गतिशील होना।

नर्द (वि०) [नर्द्+अच्] गरज, दहाड़।

नर्दनम् [नर्द्+ल्युट्] 1 गरजना, दहाड़ना 2 प्रशंसा का प्रचार करना, ऊँचे स्वर में कीर्तिगान करना।

नर्दित [नर्द+क्त] एक प्रकार का पासा, पासे का हाथ -नर्दितदक्षिणमार्ग कटन विनिपातितो पाणिः —मृच्छ० २।८, —तम् आवाज, दहाड़, गरज।

नर्मन् [नर्मन्+अटन्, पृषो०] 1 टीकरा, बर्तन का टुकड़ा 2 सूर्य।

नर्मठ [नर्मन्+अठन्] 1 भांड 2 लम्पट, दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी 3 क्रीडा, मनोरंजन, विनोद 4 मैथुन, संभोग 5 ठोढ़ी 6 चूचक।

नर्मन् (नपुं०) [नृ+मनिन्] 1 क्रीडा, विनोद, विलास आमोद, प्रमोद, कामकेलि, केलिविहार—जितरुमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं मुखे—गीत० १२ (कौतुकजनक), रघु० १९।२८ 2 परिहास, हँसी दिल्लगी, उड़ाना, रसिकोक्ति—नर्मप्रायाभिः कथाभिः का० ७०, परिहासपूर्ण, सरस। सम०—कीलः पतिः,—गर्भ (वि०) रसिक, ठिठोलिया, विनोदी (र्भः) गुप्तप्रेमी -ह (वि०) आह्लादकारी, आनन्ददायक (-हः) विदूषक (=नर्मसचिवः),—दा विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी जो नर्मदा की सहायक

में जाकर गिरती है, -मुखि (वि०) हर्षोत्फुल्ल, हृष्टमुख, प्रसन्नवदन (स्त्री० -ति.) परिहास का मजा लेना -सचिव, -सुहृद् (पु०) विदूषक, राजा या किसी रईस का मनोविनोद करने वाला साथी -इदं त्वैश्वर्यं यदुत नृपतेर्नर्ममचिव सुतादारानन्यिन्च भवतु -मा० २।७, न. यावते नरपतेर्नर्ममुद्वन्नन्दनो नृपमुखेन -१।१२, शि० ११५९।

नर्मरा [नर्मन् +रा+टाप्] 1 घाटी, कदरा 2 घोकनी 3 बूढी स्त्री जिसे अब रजोधर्म न होता हो 4 सरला नाम का पौधा।

नल [नल्+अच्] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 निषध-देश का एक विद्वान राजा, 'नैषध चरित' काव्य का नायक। (नल अत्यन्त उदार और सद्गुण सम्पन्न राजा था। देवताओं का विरोध सहकर भी दमयन्ती उसे अपना पति चुना था, फिर वे कुछ वर्षों तक सानन्द रहते रहे। परन्तु दमयन्ती को प्राप्त करने में विफल होकर कलि ने नल पर तुरन्त दाव कर नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया। इस प्रकार कलियुग से ग्रस्त होकर नल ने अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ खेला, उसमें सब कुछ हार जाने पर उसे सपत्नीक राजधानी से निर्वासित कर दिया गया। एक दिन जब कि वह जंगल में मारा २ फिर रहा था, हताश होकर अपनी स्त्री को अर्ध मूर्छावस्था में छोड़ कर चल दिया। उसके पश्चात् कर्कोटक सांप के काटने से उसका शरीर विकृत हो गया। इस प्रकार विकृत आकार हो वह अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गया और वहां रह वाहुक नाम से घोड़ों का हांकने वाला हो गया और उनके घोड़ों के साहस का काम करने लगा। इधर तत्पश्चात् राजा ऋतुपर्ण की सहायता से उसने अपनी पत्नी दमयन्ती को फिर से प्राप्त किया और वे आनन्द पूर्वक रहने लगे दे० 'ऋतुपर्ण और दमयन्ती') 3 एक प्रमुख वानर जो विश्वकर्मा का पुत्र था। जिसने नलसेतु नामक एक पत्थरों का पुल बनाया, जिसके ऊपर से होकर राम ने अपने सैन्यदल सहित लंका में प्रवेश किया, -म् कमल। सम० -कील घुटना -कूबर (क) र कुबेर के एक पुत्र का नाम -दम् एक सुगन्धित जड़, -पम, -उशीर कि० १२।५० मे० ८।११६ -पट्टिका नरकुलों की बनी हुई एक प्रकार की चटाई, -मीनः जल बृश्चिक, झींगा मछली।

नलकम् [नल+कै+क] 1 शराब की कोई भी लम्बी हड्डी महावी० १।२५ 2 कुहनी की हड्डी।

नलकिनी [नलक+इनि+ङीप्] 1 घुटने की कपाली 2 टांग।

नलिनः [नल्+इनच्] सारस -नम् 1 कमल, कुमुद 2 जल 3 नील का पौधा, नलिनेशयः विष्णु का विशेषण।

नलिनी [नल+इनि+ङीप्] 1 कमल का पौधा -न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति -मृच्छ० ४।१७, नलिनी-दलगतजलमतितरलम् -मोह० ५, कु० ४।६ 2 कमलों का समूह 3 कमलों से भरा हुआ सरोवर। सम० -जङ्घम्, -खण्डम् कमलपुंज, -बन्धु, -सहृद् ब्रह्मा का विशेषण (-हृद्) कमलगट्टा, कमल का रेशा।

नल्व [नल्+व] दूरी मापने का नाप जो ४०० हाथ लम्बा हो।

नव (वि०) [नु+अप्] 1 नया, ताजा, थोड़ी आयु का, नवीन त्रिलयोनिरभवत्पुनर्नव -रघु० १०।४६, फलेन हि पुनर्नवता विदुः -कु० ५।८६, पंचार० १।१९ रघु० ११८३, २।६७, ३।५०, ११, शि० ११८, ३।३१, कि० ९।४३ 2 आधुनिक, -वः कौवा -वम् (अव्य०) आजकल में, हाल में, अभी अभी, बहुत दिन हुआ। सम० -अन्नम् नये चावल या नया खाद्य, -अब्दु (नपुं०) ताजा पानी, -अह्न पक्ष का १५ दिन -इतर (वि०) पुराना -रघु० ७।२२, -उद्धृतम् ताजा मक्खन, -ऊढा, -परिणहणा, अभी की विवाहित स्त्री दुल्हिन -मा० १।२१०, भर्तृ० १।४, रघु० ८।७, -कारिका, -कालिका, -फलिका 1 नवविवाहित स्त्री 2 नूतन रजस्वला स्त्री, -छात्र नया विद्यार्थी, नौसिखिया, नवजिष्य -नी (स्त्री०) -नीतम् ताजा मक्खन -अहो नवनीतकोमलहृदय आर्य पुत्र -मालवि० ३, -नीतकम् 1 परिष्कृत मक्खन 2 ताजा मक्खन, -पाठक नया अध्यापक, -मल्लिका -मालिका चमेली का एक भेद -यज्ञ नये अन्न या नये फलों से आहुति देना, -यौवनम् नई जवानी, यौवन का नया विकास, -रजस् (स्त्री०) लड़की जिसे हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो, -वधू, -वधूका नवविवाहिता लड़की, -वल्लभम् एक प्रकार का चन्दन, -वस्त्रम् नया कपड़ा, -शशिभृत् (पु०) शिव का विशेषण -मेघ० ४३, -सूति (स्त्री०), -सूतिका 1 नई सूई हुई या दुधार गाय 2 जच्चा स्त्री।

नवकम् [नवन्+कन् नलोप] नौ वस्तुओं का समूह, नौ का गुच्छा।

नवत (वि०) (स्त्री-ती) [नवति+डट्] नब्बेवां -तः 1 छोटे को बनी हाथी की झूल 2 ऊनी कपड़ा, कंबल 3 चादर, आवरण।

नवतिः (स्त्री०) [नि०] 1 नब्बे नवनवतिशतादृब्य-कोटीश्वरास्ते -मुद्रा० ३।२१, रघु० ३।६९।

नवतिका [नवति+कन्+टाप्] 1 नब्बे 2 चित्रकार की कूची (कहा जाता है कि इस कूची में नब्बे बाल होते हैं)।

नवन् (स० वि०) [नु+कनिन् का० गुण] (निरुक्तकार०) नौ—नवति नवाधिका—रघु० ३।६१, दे० नीचे दिए गये समस्त शब्द (आरम्भ में प्रयुक्त होनेपर 'नवन्' के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—अशीति (स्त्री०) नवासी,—अक्षिन् (पु०), नेत्रिन् मयलग्रह,—कृत्वस् (अव्य०) नौ गुणा,—ग्रहा (पु०,ब०व०) नौ ग्रह, दे० 'ग्रह' के अन्तर्गत,—चत्वारिंश (वि०) उनचासवाँ,—चत्वारिंशत् (स्त्री०) उनचास,—छिद्रम्,—द्वारम् शरीर (नौ दरवाजो वाला, दे० 'छ'),—त्रिंश (वि०) उनतालीसवाँ,—त्रिंशत् (स्त्री०) उनतालीस—दश (वि०) उन्नीसवाँ,—दशन् (ब०व०) उन्नीस,—दुर्गा (स्त्री०) निम्नांकित नौ,—निधि (पु०, ब०व०) कुबेर के नौ खजाने—अर्थात्—महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ, मुकुन्दकुन्दनीलश्च खर्वश्च निधयो नव,—पंचाश (वि०) उनसठवाँ—पञ्चाशत् (स्त्री०) उनसठ,—रत्नम् 1 नौ अमूल्य रत्न—अर्थात् मुक्ता माणिक्यवैदूर्यगोमेदान् वज्रविद्रुमौ, पद्मराग मरकत नील चेति यथाक्रमम् 2 राजा विक्रमादित्य के दरबार के नौ कवि, कविरत्न—धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कु वेतालभट्ट घटकर्परकालिदासा ख्यातो वराहमिहिरो नृपते सभाया रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य, -रात्र (पु०, ब०व०) काल के नौ रात्र दे० 'अष्टरात्र' और 'रात्र',—रात्रम् 1 नौ दिन का समय 2 आश्विन मास के प्रथम नौ दिन जो दुर्गा पूजा के दिन माने जाते हैं, -विंश (वि०) उन्नीसवाँ,—विंशति (स्त्री०) उन्नीस,—विध (वि०) नौ प्रकार का, नौ प्रकार का,—शतम् 1 एक सौ नौ 2 नौ सौ,—षष्टि (स्त्री०) उनहत्तर,—सप्तति उनासी।

नवधा (अव्य०) [नव+धा] नौ प्रकार से, नौगुणा।

नवमी (वि०) (स्त्री०—मी) [नवन्+डट्, ट्स्थाने मट्] नवाँ—मी चान्द्रमास के पक्ष का नवाँ दिन।

नवशः (अव्य०) [नवन्+शस्] नौ नौ करके।

नवीन, नव्य (वि०) [नव+ख, यत् या] 1 नया, ताजा, हाल का 2 आधुनिक।

नश् (दिवा० पर०—नश्यति, नष्ट, प्रेर०—नाशयति—इच्छा० निनंक्षति, निनशिषति) 1 खोया जाना, अन्तर्धान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना—भ्रुवाणि तस्य नश्यन्ति—हि० १, तथा सीमा न नश्यति—मनु० ८।२४७, याज्ञ० २।५८, —क्षणनष्टदृष्टिनिमित्तम् मृच्छ० ५।४ 2 नष्ट होना, ध्वस्त होना, मरना, बर्बाद होना—जीवनाशं ननाश च—भट्टि० १४।३१, मनु० ८।१६ ७।४०, मुद्रा० ७।८ 3 भाग जाना, उड जाना, बच निकलना नश्यति वृन्दानि वदर्श कपीद्र—भट्टि० १०।१२, नशुश्चिक्षा निशाचरा—१४।११२, रघु० २।३ 4 भ्रष्ट होना, असफल होना—प्रेर० 1 अन्तर्धान करना 2 नष्ट करना, हटा देना, मिटा देना, भगा देना, उडा देना, प्र—, (प्रणश्यति) वि—, ध्वस्त होना, मरना—भट्टि० ३।१४, भग० ८।२०।

नश् (स्त्री०) नश्, नशनम् [नश्+क्विप्, क, ल्युट् वा] नाश, ध्वंस हानि, अन्तर्धान।

नश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [नश्+क्वरप्] 1 नष्ट होने वाला, क्षणस्थायी, क्षणभंगुर, अनित्य, अस्थायी—निखिल जगदेव नश्वरम्—रस० 2 विनाशकारी, उत्पातकारी।

नष्ट (भू० क० कृ०) [नश्+क्त] 1 खोया हुआ, अन्तर्हित, लुप्त, अदृश्य 2 मृत, ध्वस्त, उच्छिन्न 3 भ्रष्ट, क्षीण 4 भागा हुआ 5 वंचित, मुक्त (समास में)। सम०—अर्थ (वि०) निर्धनीकृत (जिसका धन नष्ट हो गया हो),—आशकम् (अव्य०) निश्चिन्तता के साथ, निर्भय होकर नष्टाशङ्क हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१३, अमरु० पा०—आत्मन् (वि०) ज्ञान से वंचित, बेहोश,—आश्विसूत्रम् लूट का माल, लूट-खसोट, आशङ्क (वि०) निडर, सुरक्षित, भयरहित,—इन्दुकला पूर्णिमा का दिन,—इन्द्रिय (वि०) इन्द्रियरहित, चेतन,—चेष्ट,—लज्ज (वि०) जिसकी चेतना जाती रही है, अचेतन, बेहोश, मूर्छित, —चेष्टता विश्वविनाश।

नस् (स्त्री०) [नस्+क्विप्] (दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् 'नासिका' के स्थान में होने वाला आदेश) नाक नासिका। सम०—क्षुद्र (वि०) छोटी नाक वाला।

नस्तस् (अव्य०) [नस्+तसिल्] नाक से याज्ञ० ३।१२७।

नसा [नस्+टाप्] नाक, नासिका।

नस्त [नस्+क्त] नाक,—स्तम् नस्य, सूँघनी तथा नाक के नथुने में किया गया छिद्र। सम०—ऊत नकेल द्वारा चलाया गया बैल।

नस्तित (वि०) [नस्त+इतच्] नाथा हुआ (नाक में रस्सी डालकर)।

नस्य (वि०) [नासिक+यत् नसादेश] अनुनासिक,—स्यम् 1 नाक का बाल 2 सुघनी,—स्या 1 नाक 2 पशु के नाक में से निकली हुई रस्सी, नकेल—शि० १२।१०।

नह् (दिवा० उभ०—नह्यति—ते, नद्ध, इच्छा० निनत्सति—ते) बाँधना, बन्धनयुक्त करना, ऊपर से चारों ओर से या एक जगह बाँधना, कमर कसना—शैलेयनद्धानि शिलातलानि—कु० १।५६, रघु० ४।५७, १६।४१ 2 पहनना, वस्त्र धारण करना, सुसज्जित करना (आ०), प्रेर०—पहनना, अप—खोलना अपि

—(कभी-कभी बदलकर केवल 'पि' रह जाता है) 1 बाधना, कमर कसना, बधन में डालना—अतिगिलद्धेन बल्कलेन—श० १, मदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२ 2 पहनना, कपड़े धारण करना—भट्टि० ३।४७ 3 ढकना, (लिफाफे में) बद करना—श० १।१९, बद् बाधना, जकड़ना, गूथना—रघु० १७।३०, १८।५०, परि—घेरना, अन्तर्जटित करना, परिवृत करना—सज्जगति परिणद्ध शक्तिभि शक्तिनाथ —मा० ५।१, रघु० ६।६४, मालवि० ५।१०, ऋतु० ६।२५, सम्—1 कसना, बाधना, जकड़ना 2. वस्त्र पहनना, धारण करना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना, सवारना, लिबास पहनना—समनात्सोत्तत सैन्यम् —भट्टि० १५।१११ —२, १४।७, १७।४ 4 (किसी कार्य के लिए) अपने आपको तैयार करना, (आ० इस अर्थ में) युद्धाय सन्नह्यते -महा०, छेत्तु वज्रमणीञ्च, शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते - भर्तृ० २।६, दे० 'सनद्ध' भी।

नहि (अव्य०) निश्चय ही नहीं, निश्चित रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं- -आशसा न हि न प्रेते जीवेम दशमूर्धनि—भट्टि० १९।५।

नहुष. [नह् + उषच्] एक चन्द्रवशी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पोता और आयुस् का पुत्र, यह बहुत बुद्धिमान्, और बलवान् राजा था। जब इन्द्र ने वृत्र का मार दिया, और उस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय नहुष राजा को इन्द्र के आसन पर बिठाया गया। वहाँ रहते हुए नहुष इन्द्राणी के प्रेम को जीतने के विचार से सप्तर्षियों को पालकी में जोत कर उसके भवन की ओर चला। मार्ग में उसने सप्तर्षियों को 'सर्प' 'सर्प' (तेज़ चलो, तेज़ चलो) कह कर फुर्ती से चलने के लिए कहा। उस समय अगस्त्य मुनि ने नहुष को साँप बन जाने का शाप दिया। वह आकाश से इस पृथ्वी पर गिरा और तब तक इसी दुरवस्था में पड़ा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उद्धार न किया हो)।

ना [नह् + डा] नहीं, न (=न)।

नाकः [न कम् अकम् दुःखम्, तत् नास्ति अत्र इति नि० प्रकृतिभाव] 1 स्वर्ग -आनाकरथवर्त्मनाम् रघु० १।५, १५।९६ 2 आकाश मण्डल, ऊर्ध्वतर गगन, अन्तरिक्ष। सम०—चर 1 देव 2 उपदेव—नाक, —नायकः इन्द्र का विशेषण,—नारी अप्सरा—सद् (पु०) देव,—भट्टि० १।४।

नाकिन् (पु०) [नाक+इनि] देवता, सुर—शि० १।४५।

नाकु [नम् +उ नाक् आदेश] 1 बल्मीक 2 पहाड़।

नाक्षत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [नक्षत्र+अण्] तारा-सम्बन्धी, नक्षत्रविषयक,—त्रम् २७ नक्षत्रों में से चन्द्रमा की गति के आधार पर गिना गया महीना, ६० घड़ी वाले तीस दिनों का एक मास—नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्र-महोरात्र प्रकीर्तितम्—सूर्य०।

नाक्षत्रिकः [नक्षत्र+ठक्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन—चन्द्रमा की नक्षत्रान्तर्गति पर आधारित है)।

नागः [नाग+अण्] 1. साँप, विशेष कर काला साँप 2 एक काल्पनिक नागदैत्य जिसका मुख मनुष्य जैसा और पूछ साँप जैसी होती है तथा जो पाताल में रहता है—भग० १०।२९, रघु० १५।८३ 3 हाथी - मेघ० ११, ३६, शि० ४।६३ विक्रम० ४।२५ 4 मगर-मच्छ 5 क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (समास के अन्त में), गण्यमान्य और पूज्य व्यक्ति—उदा० पुरुषनाग 7 बादल 8 खूटी (दीवार में गड़ी हुई) 9 नागकेसर, नागरमोथा 10. शरीरस्थ पाँच प्राणों में वह वायु जो डकार के द्वारा बाहर निकलती है 11 सात की संख्या—गम् 1 राँगा 2 सीसा। सम०—अगना 1 हथिनी 2. हाथी की सूंड —अंजना हथिनी, —अधिपः शेष का विशेषण, अरातिः, —अरिः 1 गरुड़ का विशेषण 2. मोर 3 सिंह, —अशन 1 मोर—पद० १।१५९ 2 गरुड़ का विशेषण,—आनन गणेश का विशेषण, —आह्वः हस्तिनापुर, इन्द्रः 1 भव्य या श्रेष्ठ हाथी—कु० १।३६ 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत 3 शेष का विशेषण,—ईशः 1 शेष की उपाधि 2 परिभाषेन्दुशेखर तथा कई अन्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतञ्जलि,—उदरम् 1. लोहे का तवा (जो सैनिक छाती के बाँधते हैं), वक्षस्त्राण 2 गर्भावस्था का एक रोग विशेष, गर्भोपद्रवभेद, —केसरः सुगन्धित फूलों का एक वृक्ष,—गर्भम् सिन्दूर,—चूडः शिव की उपाधि,—जम् 1 सिन्दूर 2 राँगा,—जिह्विका मैनसिल, —जीवनम् राँगा - दन्तः 1 हाथी दाँत 2 दीवार में लगी खूटी या दीवारगीरी,—दन्ती 1 एक प्रकार का सूरजमुखी फूल 2 बेण्या,—नक्षत्रम्,—नायकम् आश्लेषा नक्षत्र, (कः) साँपों का स्वामी,—नासा हाथी की सूंड,—निर्यूहः दीवार में लगी खूटी या दीवारगीरी,—पंचमी श्रावणशुक्ला पञ्चमी को मनाया जाने वाला उत्सव,—पाशः एक प्रकार का रतिबंध, —पाशः 1 युद्ध में शत्रुओं को फसाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का लोहे का जाल 2 वरुण का शस्त्र या जाल,—पुष्पः 1 चम्पक का पौधा 2 पुन्नाग वृक्ष, —बंधकः हाथी पकड़ने वाला,—बंधुः गूलर का पेड़, पीपल का पेड़,—बलः भीम की उपाधि—भूषणः शिव की उपाधि—मंडलिकः 1. सपेरा 2 साँप पकड़ने वाला,—मल्लकः ऐरावत का विशेषण,—यष्टिः (स्त्री०)

—यष्टिका 1. नये खुदे तालाब में पानी की गहराई नापने के लिए अंशांकित बांस विशेष 2 धरती में छेद करने का बर्मा,—रक्तम्, रेणु सिंदूर,—रंग सतरंग —राजः शेष की उपाधि,—लता,—वल्लरी, —वल्ली नागकेसर, पान की बेल,—लोकः सांपों की दुनिया, सांपों का कुल, भूलोक के नीचे अवस्थित पाताल लोक, —वारिकः 1 राजकीय हाथी 2. महावत 3 मोर 4. गरुड़ की उपाधि 5 हाथियों का यूथपति 6 किसी समाज का प्रधान व्यक्ति,—सभवम्, सभूलम् सिन्दूर —साह्वयम् हस्तिनापुर।

नागर (वि०) (स्त्री० - री) [नगर+अण्] 1 नगर में उत्पन्न, नगर में पला 2 नगर से सम्बन्ध रखने वाला, नगरीय 3 नगर में बोला जाने वाला 4 नम्र, शिष्ट 5 चतुर, चालाक 6 बुरा, दुष्ट, दुर्व्यसनी (जिसने नगर की बुराइयाँ ग्रहण करली हैं),—रः 1 नागरिक —मेघ० २५, शा० ४।१९ 2 देवर, पति का भाई 3 व्याकरण 4 नागरी 5 धूर्तबाट, कठिनाई, श्रम 6 मुकरना, जानकारी का खण्डन,- री 1 लिपि, वर्णमाला जिसमें प्रायः संस्कृत लिखी जाती है—तु० देवनागरी 2, चालाक और बुद्धिमती स्त्री—इत्थं भीरु स्मरन्तु मकथं मयूरी नागरीभि उ० ३० १६ 3 मनुष्य नाम का पौधा।

नागरक, नागरिक (वि०) नगरेभवः वुञ्, नगर+ठक्] 1 नगर में पला नगर में उत्पन्न 2 नम्र, शिष्ट, शालीन—नागरिकवृत्त्या सज्ञापर्यवसानम्—शा० ५, 3 चतुर, बुद्धिमान्, चालाक,—कः 1 नागरिक 2 नम्र या शिष्ट व्यक्ति, वीर बहादुर, वह प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अतिशय प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किसी अन्य से अपनी प्रणय प्रार्थना करता है 3 जो नगर के दुर्व्यसनों में फँस गया है 4 चोर 5 कलाकार 6 पुलिस का मुख्य अधिकारी - विक्रम० ५, शा० ६।

नागरीढः, नागवी [नागरी+इट्+क, नाग इव व्यवहरति नाग—वि+इट्+क] 1. लम्पट, दुश्चरित्र 2 धूर्त 3 सबसे भिड़ने वाला।

नागरुकः [नाग+रु+क] सतरा, नारंगी।

नागर्यम् [नागर+ष्यञ्] बुद्धिमत्ता, चतुराई।

नाचिकेतः [नाचिकेता+अण्] अग्नि।

नाटः [नट्+घञ्] 1 नाचना, अभिनय करना 2 कर्णाटक प्रदेश।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1 स्वांग, रूपक 2 रूपक के दस मुख्य भेदों में से पहला, परिभाषा आदि के लिए दे० सा० द० २७७,—क अभिनेता, नाचने वाला।

नाटकीय (वि०) [नाटक+छ] नाटकसम्बन्धी, नाटक-विषयक—पूर्वरंग प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुन - शि० २।८।

नाटार [नटस्य अपत्यम् आरक] अभिनेत्री का पुत्र।

नाटिका [नाट+कन्+टाप्, इत्वम्] एक छोटा या लघु प्रहसन, एक रूपक, उदा० रत्नावली, प्रियदर्शिका, या विद्धशालभंजिका, सा० द० परिभाषित करता है —नाटिका कल्पवल्ली स्यात् स्त्रीप्राया चतुरङ्किका, प्रख्यातो धीरललितस्तत्र स्याच्चायकी नृपः, स्यादन्तःपुरसंबंधा संगीतव्यापृताऽपरा, कन्यानुरागा कन्याऽत्र नायिका नृपवंशजा, मुखसंधिर्भवेत्तत्र नेतुरन्यो देव्यास्त्रासेन शङ्कितः, देवी पुनर्भवेज्ज्येष्ठा प्रगल्भा नृपवंशजा, पदे पदे मानवती तद्वद्द समसो द्वयोः वृत्तिः स्यात्कौशिकी स्वल्पविमर्शा सर्वत्र पुनः ५३९।

नाटितकम् [नट्+णिच्+क्त+कन्] अनुकृति, किसी की चेष्टादि का अनुकरण, संकेत, हावभाव प्रदर्शन —भीतिनाटितकेन—शा० ५।

नाटेय,-रः [नटी+ढक् ढ्+अ] किसी अभिनेत्री या नर्तकी का पुत्र।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1 नाचना 2 अनुकरणात्मक चित्रण, स्वांग, हावभाव प्रदर्शन, अभिनय करना नाट्ये च दक्षा वयम् —रत्न० १।६, नृत्ते नाट्ये भवति च चिरं नादर्शागर्भशीला—विक्रमांक० १८।२० 3 नृत्यकला अभिनय कला, नाटकला नाट्य भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् - मालवि० १।४, दृश्य अभिनेता। सम०—आचार्यः नृत्यकला का गुरु, - उक्ति (स्त्री०) नाटकीय वाक्यविन्यास, —धर्मिका धर्मी अभिनयसंबंधी नियमावली—प्रियः शिव की उपाधि शाला 1 नाट्यघर 2 नाटक खेलने का घर या स्थान, शास्त्रम् 1 नाट्य विज्ञान नृत्य गीत तथा अभिनय संबंधी विद्या 2 नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ।

नाडि-डी (स्त्री०) [नड+णिच्+इन्, नाडि+ङीप्] 1 किसी पौधे का पतला डंठल 2 कमल की खोखली डंडी, 3 (धमनी या शिरा की भाँति) दलियों के आकार का शरीर का अंग—षडधिकदशनाडीचक्रमध्यवस्थितात्मा—मा० ५।१२ 4 बाँसुरी, मुरली 5 नासूर वाला घाव, नासूर, नाडीव्रण 6 हाथ या पैर की नब्ज 7 चौबीस मिनट के समय के बराबर माप, घड़ी 8 आधे मुहूर्त का कालमान 9 ऐन्द्रजालिक जाल। सम०—चक्रम् एक पक्षी, चीरम् एक छोटा नरकुल, जङ्घ कौवा, —परीक्षा नब्ज देखना,—मंडलम् आकाशीय विद्युत्वन रेखा,—यन्त्रम् नली के आकार का एक उपकरण,—व्रण नासूर, पूयव्रण, रिसने वाला फोड़ा।

नाडिका [नाडि+कन्+टाप्] 1 नली के आकार का अंग 2 २४ मिनट का समय, घड़ी—नाडिका विच्छेद पटहं—मा० ७, का० १३,७०।

नाडि (डी) धम (वि०) [नाडी धमति—नाडी+धमा+ क्विप्, धमादेश, ह्रस्व, मुम् च, प्रत्ये ह्रस्वाभाव] (भय आदि) नलिकाकार अंगों को गति देने वाला, नाडिधमेन श्वासेन—का० ३५३,—ध सुनार।

नाणकम् [न आणकम्, इति] सिक्का, मोहर लगी हुई कोई वस्तु, एषा नाणकमौषिका मकलिका—मृच्छ० १।२३, याज्ञ० २।२४०।

नातिचिर (वि०) [न अतिचिर] जो बहुत लंबी अवधि का न हो, जो दीर्घकालीन न हो।

नातिदूर (वि०) [न अतिदूर] जो बहुत दूर न हो, अधिक दूरी पर न स्थित हो।

नातिवाद [न अतिवाद] दुर्वचन तथा अपशब्दों का परित्याग करना।

नाथ् (स्वा० पर० नाथति—कभी-कभी आ० भी) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना, किसी बात की याचना करना (सम्प्र० अथवा द्विकर्म० के साथ), मोक्षाय नाथते मुनिं—सुप०, नाथसे किमु नृपं न भूभृतं—कि० १३।५९, सतुष्टमिष्टानि तमिष्टदेवं नाथन्ति के नाम न लोकनाथम् नै० ३।८५ 2 अधिकार रखना, स्वामी होना, छा जाना 3 नष्ट करना कष्ट देना 4 आशीर्वाद देना, मंगल कामना करना, शुभाशीष देना (केवल इस अर्थ में आ०), नाथितश्चमै—महावी० १।११, (मम्मट निम्नांकित पंक्ति में बतलाता है कि यहाँ 'नाथते' स्थान पर 'नाथति' होना चाहिए, क्योंकि यहाँ अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना करना' है—दीन स्वामनुनाथते कुनयम् पत्रावृत मा कृथा), सर्पियो नाथते—सिद्धा०।

नाथ [नाथ्+अच्] 1 प्रभु, स्वामी, रक्षक, नेता- नाथे कुतस्त्वयाभूभ प्रजानाम्—रघु० ५।१३, ३।४५, त्रिलोक°, कैलास° आदि 2 पति 3 भारवाही बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा। समः हरि पशु।

नाथवत् (वि०) [नाथ+मतुप्, वत्वम्] 1 सनाथ, जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो—नाथवतस्तवया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।४३ 2 पराश्रयी, पराधीन।

नाद [नद्+घञ्] 1 ऊँची दहाड़, चिल्लाहट, घोष, गरजना, दहाड़ना—सिंहनाद, घन° आदि 2 ध्वनि—मा० ५।२० 3 (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि जिसे हम चन्द्रबिन्दु (ँ) के द्वारा प्रकट करते हैं।

नादिन् (वि०) [नद्+णिनि] ध्वनि या शब्द करने वाला, अनुनादी—अब्दवद्वनादी रथ—रघु० ३।५९, १९।५ 2 रंभाने वाला, गरजने वाला—खर°, सिंह° आदि।

नादेय (वि०) (स्त्री—यी) [नदी+ढक्] नदी में उत्पन्न, जलीय, समुद्रीय,—यम् सेंधानमक।

नाना (अव्य०) [न+नाञ्] 1 अनेक स्थानों पर, विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से 2 स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, 3 बिना (कर्म० करण० या अपा के साथ) नाना नारी निष्फला लोके यात्रा—सुप०, (विशेष) न नाना शोभना रामात् वर्षणाधोक्षजो वर—तदेव 4 (समास के आरंभ में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध प्रकार का, तरह तरह का, नाना प्रकार का, विभिन्न, विविध—नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः भर्तृ० २।४६, भग० १।९, मनु० ९।१४८। समः अत्यय (वि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपक्षी—अर्थ (वि०) 1 विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला 2 विविध अर्थों वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक—कारम् (अव्य०) विविध प्रकार से करके,—रस (वि०) विविध रुचि से युक्त—मालवि० १।४, -रूप (वि०) विभिन्न रूपों वाला, विविध प्रकार का, बहुरूपी, नाना प्रकार का,—वर्ण (वि०) भिन्न २ रंगों का, —विध (वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, बहुविध,—विधम् (अव्य०) विविध रीति से।

नानांद्रः [ननान्द्+अण] ननद का पुत्र।

नान्त (वि०) [म० ब०] अन्तरहित, अनन्त।

नान्तरीयक (वि०) [न अन्तरा विनाभाव—अन्तरा+छ, —कन्] जो अलग न किया जा सके, अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ।

नाम् [नम्+ड्मु] प्रशंसा, स्तुति।

नान्दिकरः, नान्दिन् (पु०) [नान्दी करोति—कृ+ट, ह्रस्व, नन्द्+णिनि] नान्दी पाठ करने वाला, (नाटक के आरम्भ में मांगलिक वचन बोलने वाला)।

नान्दी [नन्दन्ति देवा अत्र नन्द्+घञ्, पृषो० वृद्धि, ङीप्] 1 हर्ष, संतोष, खुशी- 2 समृद्धि 3. धर्मानुष्ठान के आरम्भ में देवस्तुति 4 विशेषकर, नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या श्लोकों का पाठ, स्वस्त्ययन—आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात्प्रयुज्यते, देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता या—देवद्विजनृपादीनामाशीर्वचनपूर्विका, संसदि देवता यस्मात् तस्मान्नान्दीति कीर्तिता। समः—खर दे० 'नान्दिन्'—निनाद हर्षनाद—महावी० २।४,—पद कुएँ का ढक्कन—मुख (वि०) (विशेषतः पूर्वज या पितर) जिनके लिए नान्दीमुख श्राद्ध किया जाय (—खम्) °श्राद्धम् पितरों की पुण्यस्मृति में किया जाने वाला श्राद्ध, विवाह आदि शुभ उत्सवों से पूर्व की जाने वाली आरंभिक स्तुति (क्रिया) कर्म का ढक्कन, —वादिन् (पु०) 1. नाटक में मंगलाचरण के रूप में नान्दी पाठ करने वाला 2. ढोल बजाने वाला, —श्राद्धम् दे० ऊपर 'नांदीमुखम्'।

नापितः [न आप्नोति सरलताम्—न+आप्+तन्, इट्] नाई, हजामत बनाने वाला—पंच० ५।१। सम०—शाला नाई की दुकान, क्षौरगृह, वह स्थान जहाँ हजामत होती हो।

नापित्यम् [नापित+ष्यञ्] नाई का व्यवसाय।

नाभि (पु०, स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेश] सूंडी—गंगावर्तसनाभिर्नाभि—दश० २, निम्ननाभि—मेघ० ८१, रघु० ६।५२, मेघ० २८ 2 नाभि के समान गर्त—(पु०) 1 पहिए की नाह पंच० १।८१ 2 केन्द्र, किरणबिन्दु, मुख्य बिंदु 3 मुख्य, अग्रणी, प्रधान—कृत्स्ननाभिर्नृपमण्डलस्य—रघु० १८।२० 4 निकट की रिश्तेदारी, बिरादरी, (जाति आदि) का समुदाय जैसा कि 'सनाभि' में 5 सर्वोपरि प्रभु—रघु० ९।१६ 6 निकटसंबंधी 7 क्षत्रिय 8 जन्मभूमि,—भि० (स्त्री०) कस्तूरी (अर्थात् मृगनाभि) (विशे० बहु० समास के अन्त में प्रयुक्त 'नाभि' शब्द बदल कर 'नाभ' बन जाता है) जैसा कि 'पद्मनाभ' में)। सम०—आवर्त नाभि का गर्त,—उद्भः—जन्मन् (पु०)—भू ब्रह्मा के विशेषण,—नाडी,—नाल्क 1 नाभिरज्जु, नाभिरज्जु नाल 2 नाभि का विदारण।

नाभिक (वि०) [नाभिरस्त्यस्य—ठन्] नाभि से संबद्ध, या नाभि से आने वाला।

नाभीलम् [नाभि+गोप्+ला+क] 1 नाभि का गर्त 2 पीड़ा, 3 विदीर्ण नाभि।

नाभ्य (वि०) [नाभि+यत्] नाभि से संबंध रखने वाला, नाभि से आने वाला, नाभि में रहने वाला, नाल से जुड़ा हुआ,—म्य शिव का विशेषण।

नाम (अव्य०) [नम्+णिच्+ड] निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होने वाला अव्यय—1 नामधारी, नामक, नाम से—हिमालयो नाम नगाधिराज—कु० १, तन्निन्दिनी सुवृत्ता नाम—दश० ७ 2 निस्सन्देह, निश्चय ही, सचमुच, वास्तव में, यथार्थ में, अवश्य, वस्तुतः—मया नाम जितम्—वेणी० २।१७, विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम—श० १, आश्वासितस्य मम नाम—विक्रम० ५।१६, अब कि मैं जरा आश्वस्त हुआ 3 संभवतः, कदाचित्—प्रायः 'मा' के साथ अर्थ पदशब्द द्वय मा नाम क्षीणः—मृच्छ० ३, कदाचित् (परन्तु मुझे आशा नहीं) रखवाली का—मा नाम अकार्यं कुर्यात्—मृच्छ० ४ 4 संभावना—तर्हि नामास्त्वगतिः कु० ३।१९, त्वया नाम मुनिः विमान्यः—श० ५।१९, क्या यह संभव है (निंदात्मक ढंग से), इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा निम्नांकित अर्थ में होता है—'मेरी इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो' 'क्या यह संभव है कि' आदि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत 5 झूठमूठ का कार्य, बहाना (अलीक), कार्तातिको नाम भूत्वा—वेणी० १३०, इसी प्रकार 'भीतो नामाधः प्लुत्य' १०४, मानो भयभीत होकर—परिश्रम नाम किंनीय च क्षणम्—कु० ५।३२ 6 (लोट् लकार के साथ) माना कि, यद्यपि, हो सकता है, अच्छा—तद्भवतु नाम शोकावेगाय—का० ३०८ करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः—हि० २।१४, यद्यपि वह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा० १०।७, श० ५।८ 7 आश्चर्य—अधो नाम पर्वतमारोहति—गण० 8 रोष या निंदा—ममापि नाम दशाननस्य परे परिभवः—गण०, (यह वाक्य निंदासूचक भी हो सकता है), किं नाम विस्फुरंति शस्त्राणि—उत्तर० ४, ममापि नाम सत्त्वैरभिभूयते गृहाः—श० ६, नाम शब्द प्रायः प्रश्न वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न 'कथम्' 'कदा' आदि अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है—'संभवतः' 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा'—अथि कथं नामैतत्—उत्तर० ६, को नाम राज्ञः प्रियः—पंच० १।१४६, का नाम पाकाभिमुखस्य जंतुर्द्वाराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे—उत्तर० ७।४।

नामन् (नपुं०) [म्नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन वा म्ना+मनिन् नि० साधु] 1 नाम, अभिधान, वैयक्तिक नाम (विप० गोत्रम्) किं नु नामैतदस्याः—मुद्रा० १, नाम ग्रह संबोधित करना या नाम लेकर बुलाना, नामग्राहमरोदीत्सा भट्टि० ५।५, नाम कृ या धा, नाम्ना या नामतः कृ नाम रखना, पुकारना, नाम लेकर बुलाना—चकार नाम्ना रघुमान्यसंभवम् रघु० ३।२१, ५।३६, तौ कुशलवौ चक्रे किल नामतः १५।२२ चंद्रापीड इति नाम चक्रे—का० ७४, मातरं नामतः पृच्छेयम् श० ७ 2 केवल नाम सनत्नायमि सम्बिनस्य पयसो नामापि न श्रूयते भर्तृ० २।६७, 'नाम भी नहीं' अर्थात् 'कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता है' आदि 3 (व्या० में) संज्ञा, नाम (विप० आख्यात) तन्नाम येनाभिदधति सत्त्व—या—सत्त्वप्रधानानि नामानि निरु० 4 शब्द, नाम, समानार्थक शब्द—इति वृक्ष नामानि 5 सामग्री (विप० गुण)। सम०—अंक (वि०) नाम से चिह्नित—रघु० १२।१०३,—अनुशासनम्, —अभिधानम् 1 किसी के नाम की घोषणा करना 2 शब्द संग्रह, शब्दकोष, —अपराध (किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का) नाम लेकर गाली देना, नाम लेकर बुलाना अर्थात् तिरस्कार करना,—आवली किसी देवता की) नाम-सूची,—करणम्,—कर्मन् (नपुं०) 1 नाम रखना, जन्म होने के पश्चात् बालक का नामकरण करना 2 नाम मात्र का अनुष्ठान,—ग्रह नामोल्लेख करना, नाम लेकर संबोधित

करना, नामोच्चारण, नाम याद करना—पुण्यानि नामसङ्कीर्त्या महामुनीनाम् —४३, मनु० ८।२७१, रघु० ७।४१, **-त्यज्** नाम छोड़ना, स्वनामत्याग करोमि पद्य० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा'।—**धातु** नाम क्रिया, नाम धातु (जैसे पायसीयति, वृषस्यति आदि), **धारक**,—**धारिन्** (वि०) नाम मात्र रखने वाला, नाम मात्र का, नाममात्र—पञ्च० २।८४,—**धेयम्** नाम, अभिधान,—जनस्यास्तेति कृतनामधेया शा० १, कि नामधेया सा—मालवि० ४, रघु० १।४५, १०।२७, ११।८, मनु० ३।२०,—**निर्देश** नाम से संकेत—**मात्र** (वि०) केवल नाममात्र का, नाममात्र का, नाम के लिए, पञ्च० १।७६, २।८६, **माला**, **संग्रह** नामों की सूची, (संज्ञाओं की) शब्दावली, —**मुद्रा** मातृ लग्न की अंगूठी, नामांकित अँगूठी—उभे नामसुद्राक्षरभूषणाढ्ये परस्परश्लेषवशेन यत्र रघु० १, **लिङ्गम्** संज्ञाओं का लिंग अनुशासनम् संज्ञा शब्दों के लिंगों की नियमावली,—**वर्जित** (वि०) 1 नाम रहित 2 मूर्ख, विवेकशून्य,—**वाचक** (वि०) नाम बताने वाला (कम्) व्यक्ति वाचक संज्ञा **शेष** (वि०) जिसका केवल नाम ही बाकी रह गया हो, जिसका नाम ही अवशिष्ट हो, स्वर्गीय उत्तर० २।६।

नामि [नम् इञ्] विष्णु की उपाधि।

नामित (वि०) [नम्+णिच्+क्त] झुका हुआ, विनम्र, विनीत।

नाम्य (वि०) [नम्+णिच्+क्त] लचकदार, लचीला, लचकीला।

नाय [नी+घञ्] 1 नेता, मार्ग दर्शक 2 मार्ग दिखलाने वाला, निर्देशक 3 नीति 4 उपाय, तरकीब।

नायक [नी+ण्वुल्] 1 मार्गदर्शक, अग्रणी, संवाहक 2 मुख्य, स्वामी, प्रधान, प्रभु 3 गण्यमान्य या प्रधान पुरुष, पूज्य व्यक्ति—सेनानायक आदि 4 सेनानायक, सेनापति 5 (अल० शा० में) नाटक या काव्य का नायक, (सा० द० के अनुसार नायक चार प्रकार के हैं धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित और धीरप्रशान्त, इन चारों के कुछ अवान्तरभेद होने के कारण नायक के भेद संख्या में ४० होते हैं, सा० द० ६४।३५, रसमञ्जरी केवल तीन भेदों का (पति, उपपति और वैशिक ९५।११० उल्लेख करती है) 6 हार के बीच का मुख्य मणि 7 निदर्शन या मुख्य उदाहरण—दर्शिते स्त्रीषु नायका। सम०—**अधिप** राजा, प्रभु।

नायिका [नायक+टाप्, इत्वम्] 1 स्वामिनी 2 पत्नी 3 किसी काव्य या नाटक की नायिका (सा० द० के अनुसार नायिका के तीन भेद हैं—स्वा या स्वीया, अन्या या परकीया तथा साधारण स्त्री आगे वर्गीकरण के लिए दे० सा० द० ९७–११२, और रसम० ३—९४, शु० 'अन्यस्त्री' भी)

नार [नर+अण्] जल (स्त्री० भी—तु० मनु० १।१०)—रम् मनुष्यों की भीड़ या समवाय। सम०—**अयनम्** सोना।

नारक (वि०) (स्त्री० की) [नरक+अण्] नारकीय, नरकसम्बन्धी, दोजखी, -कः 1 नारकीय प्रदेश, दोजख नरकवासी।

नारकिक, नारकिन्, नारकीय (वि०) [नरक+ठक्, इनि, छ या] 1 नरक का, दोजखी 2 नरक या दोजख में रहने वाला।

नारङ्ग [नृ+अगच्, वृद्धि] 1 सन्तरे का पेड़ 2 लुच्चा, लम्पट 3 जीवित प्राणी 4 गुप्तांग,—**गम्, गकम्** 1 सन्तरे, सद्यामुद्रित मसहणचिबुकपम्पाधिनारङ्गकम् 2 गाजर।

नारद [नरस्य धर्मो नारः, तत् ददाति दा+क] प्रसिद्ध देवर्षि का का नाम, दिव्य ऋषि, सन्त महात्मा जिसने देवत्व प्राप्त किया [देवर्षि नारद ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक है जो उसकी जंघा से उत्पन्न हुए, यह वेदों के संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया गया है जो मनुष्यों का देवों का संदेश देते तथा मनुष्यों का संदेश देवों तक पहुंचाते थे। यह देवताओं और मनुष्यों में कलह के बीज बोने के कारण 'कलिप्रिय' कहलाते थे, कहा जाता है कि 'वीणा' का आविष्कार इन्होंने ही किया था, यह एक आचारसंहिता के भी प्रणेता हैं जिसका नाम इन्हीं के नाम पर 'नारद-स्मृति' है]।

नारसिंह (वि०) [नरसिंह+अण्] नरसिंह से संबंध रखने वाला, हे विष्णु का विशेषण।

नाराच [नराय आचामति—आ+चम्+ड स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा नारा०] 1 लोहे का बाण, तत्र नाराचदुर्दिने—रघु० ४।४१ 2 बाण—कनकनाराचपरपरभिरिव का० ५७ 3 जल हाथी।

नाराचिका, नाराची नाराच+हन्+टाप्, नाराच+अच्+ङीप्] सुनार की तराजू, (कसौटी रूपी तराजू)।

नारायण [नरा अयनं यस्य ब० स०] 1 विष्णु की उपाधि (मनु० १।१० में इसकी व्युत्पत्ति यह दी है आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः, ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः 2 एक प्राचीन ऋषि का नाम जो 'नर' के साथी थे तथा जिन्होंने अपनी जंघा से उर्वशी को पैदा किया—तु० उरुद्भवा नरस्यासन् सुरस्त्री विक्रम० १।२, दे० 'नरनारायण' 'नर' के अन्तर्गत **श्री** 1 धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण।

नारीकेरः,—लः [किल्+घञ्=केल, नार्या केल - ष० त०, पृषो० ह्रस्व, अथवा नल् + इण् लस्य र=नारि, केन जलेन इलति इल्+क कर्म० स०] नारियल—नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि सुहृज्जना —हि० १।९४ (यह शब्द इस प्रकार (नारिकेलि - ली, नारिकेर—ल, नाडि (डी) केर, नालिकेर, नालिकेलि—ली) भी लिखा जाता है।

नारी [नृ—नर वा जातौ ङीष् नि०] 1 स्त्री, अर्धत पुरुषो नारी या नारी सार्धत पुमान् -मृच्छ० ३।२७। सम०— **तरंगकः** 1 जार, उपपति 2 लम्पट, —**दूषणम्** स्त्री का दुर्व्यसन (वे हैं—पान दुर्जनसंसर्ग पत्या च विरहोऽटनम्, स्वप्नोऽन्यगृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्—मनु० ९।१३,—**प्रसंग** कामासक्ति, लम्पटता, —**रत्नम्** स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री।

नारंगः [नारीणामङ्गमिव शोभनमग यस्य] संतरे का पेड़।

नाल (वि०) [नलस्येदम्—अण्] नरकुल का बना हुआ -लम् 1 पोला डंठल, विशेष कर कमल की डंडी, बिसचक्रमलं स्निग्धदंडूर्यनालं -मेघ० ७६, रघु० ६।१३, कु० ७।८९, (पु० भी इस अर्थ में) 2 शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 3 हरताल 4 मूंठ, दस्का 5 नहर, नाली।

नालकी (स्त्री०) शिव की वीणा।

नाला [नल् + ण + टाप्] पोला डंठल, विशेषकर कमल नाल।

नालि, ली (स्त्री०) [नल्+णिच्+इन्, नालि+ङीप्]। शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 2 पोला डंठल, विशेषकर कमलनाल, 3 २४ घंटे का समय, घड़ी 4 हाथी के कानों को बींधने का उपकरण 5 नहर, नाभी 6 कमलफूल।

नालिक [नलमेव नालमस्त्यस्य ठन्] भेंगा—का 1 कमल की डंडी 2 नली 3 हाथी का कान बींधने का उपकरण, -कम् 1 कमल का फूल 2 एक प्रकार का फूंक से बजने वाला वाद्ययंत्र, बांसुरी।

नालिकेर, नालिकेलि—ली दे० नारिकेर आदि।

नालीक [नाल्या कायति—कै+क तारा०] 1 बाण 2 भाला, नेजा 3 कमल 4 कमल की रेशेदार डंडी 5 कमल के फूलों का रेशेदार डंठल।

नालीकिनी [नालीक+इनि+ङीप्] 1 कमल फूलों का गुच्छा, समूह 2 कमलों का सरोवर।

नाविक [नावा तरति—ठन्] जहाज का कर्णधार चालक —अस्यातिरिति ते कृष्ण मग्ना नौर्नाविके त्वयि, नाविकपुत्रके न विश्वास—महा० 2 नौवाहक, मल्लाह 3 नौयात्री।

नाविन् (पु०) [नौ+इनि] केवट, मल्लाह।

नाव्य (वि०) [नावा तार्यं नौ + यत्] 1 जहाँ किश्ती या जहाज से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाज चलाया जा सके नाव्या सुप्रतरा नदी रघु० ८।३१, नाव्य पद्म केचिदारियुर्भुजै—शि० १२।७६ 2 प्रशंसा के योग्य **व्यम्** नवीनता, नूतनता।

नाश [नश् + घञ्] 1 ओझल होना गतो नाश तारा उपकूलमसाधारविद जने—मृच्छ० ५।२५ 2 भगोड़ा, ध्वंस, बर्बादी, हानि—भग० २।४० रघु० ८।८८, १२।६७, इसी प्रकार वित्त° बुद्धि° 3 मृत्यु 4 मनोघात, संकट 5 परिहार, परित्याग 6 नजरबंद, पलायन।

नाशक (वि०) [नश्+णिच्+ण्वुल्] विध्वंसक, नाश करने वाला।

नाशन (वि०) (स्त्री० -नी) [नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, नाश कराने वाला हटाने वाला (समास में)—**नम्** 1 विध्वंस, बर्बादी 2 दूर हटाना, दूर कर देना, बाहर निकाल देना 4 नष्ट होना, मृत्यु।

नाशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [नश्—णिनि] 1 विध्वंसक, नाश करने वाला, हटाने वाला 2 नष्ट करने वाला, नष्ट होने वाला भग० २।१८ मनु० ८।१८५।

नाष्टिक [नष्ट, ठक्] खोई हुई वस्तु का स्वामी।

नासा [नास् अ+टाप्] 1 नाक स्फुरदधरनासापुटतया उत्तर० १।२९, भग० ५।२७ 2 हाथी की सूंड 3 दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकड़ी। सम० **अग्रम्** नाक का अग्रभाग, मा० १।१, **छिद्रम्, रन्ध्रम्, विवरम्** नथुना,—**दारु** (नपु०) दरवाजे की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी,—**परिस्राव** नाक की बहना, सर्दी जुकाम,—**पुट,—पुटम्** नथुना, **बंश** नाक की हड्डी, **स्राव** सर्दी से नाक का बहना।

नासिकाग्र्य (वि०) [नासिका+ग्रे+यत्, मुम्, ह्रस्वश्च] नाक से ठीक सीध में।

नासिका [नास्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक दे० नासा। सम० **मल**, नाक से निकलने वाला श्लेष्मा।

नासिक्य (वि०) [नासिका+यत्] 1 अनुनासिक 2 नाक से होने वाला, **वर्ण अनुनासिक ध्वनि**—**स्वम्** नाक।

नासीरम् [नासाग्रे नैर्+क तारा०] सेना के सामने आगे बढ़ना या चलना—र 1 (सेना का) अग्रभाग —नासीरन्यस्तयोधेऽस्या महावी० ६, नै० १।६८ 2 सेना की पंक्ति के आगे चलने वाला योद्धा।

नास्ति (अव्य०) [न अस्ति] 'वह नहीं है' अनस्तित्व, जैसा कि नास्तिवादी' में। सम० **-वाद** 'सर्वोपरि शासक या परमात्मा का अनस्तित्व' सिद्धांत, नास्तिकता, अनास्था—बौद्धैश्च सर्वदा नास्तिवादमरेण —का० ४९।

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकः तत्साधनेश्वरो वा इति मतिरस्य—ठन्] या—कः अनीश्वरवादी, अविश्वासी, जो वेदों की प्रामाणिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विश्व के विधाता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है- शि० १६।७ मनु० ३।११, ११।२२।

नास्तिक्यम् [नास्तिक+ष्यञ्] नास्तिकता, अनास्था, पाखण्डधर्म।

नास्तिकः (पु०) आम का वृक्ष।

नास्यम् [नासा+यत्] नाक की रस्सी, बैल की नकेल।

नाह [नह्+घञ्] 1 बंधन, निग्रह 2 फंदा, जाल 3 मलावरोध, कोष्ठबद्धता।

नाहुष, —षि [नहुषस्यापत्यम् नहुष+अण्, इञ् वा] ययाति राजा की उपाधि।

नि (अव्य०) [नी+डि] (प्रायः संज्ञा या क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है, क्रिया विशेषण या संबंधबोधक अव्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ हैं—1 निचाई, नीचे की ओर गति—निपत् निषद् 2 समूह, या संग्रह, निकर, निकाय 3 तीव्रता—निकाम, निगदीन 4 हुक्म, आदेश, निदेश 5 सातत्य, स्थायित्व - निविशते 6 कुशलतानिपुण 7 नियन्त्रण, निग्रह, निबंध 8 सम्मिलन (में, अन्तर्गत) निपीतमुदकम् 9 सान्निध्य, सामीप्य -निकट 10 अपमान, बुराई, हानि -निकृति, निकार 11 दिखलावा, निदर्शन 12 विश्राम, निवृत्ति 13 आश्रय, शरण 14 सन्देह 15 निश्चय 16 पुष्टीकरण 17 (दुर्गादास के अनुसार) फेंकना, देना आदि।

नि क्षेप [निर्-क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, भेज देना 2 व्यय करना।

नि क्षयणी निःश्रेणि (=श्री०) [नि.निश्चितं श्रीयते आरोहणं क्रियते अनया निर्-श्रि+ल्युट्+ङीप् निश्चिता श्रेणि यायातपक्षिन् यत्र ब० स०] सीढ़ी, जीना- रघु० १५।१००।

नि श्वास, निःश्वासः [निर्+श्वस्+घञ्] 1 सांस बाहर निकालना, बहिःश्वसन 2 आह भरना, लम्बा सांस लेना श्वास लेना।

नि सरणम् [निर्+सृ+ल्युट्] 1 बाहर जाना बहिर्गमन 2 निकास, द्वार, दरवाजा 3 महाप्रयाण मृत्यु 4 उपाय, तरकीब, उपचार 5 मोक्ष।

नि सह (वि०) [निर्+सह्+खल्] सहन करने या रोकने के अयोग्य, अशक्य 2 निःशक्त, बलहीन, हतोत्साह, म्लान, श्रान्त, अयि विरम नि सहसि जातां- मा० २, इसी प्रकार मा० २, ७, उत्तर० ३ 3 असहनीय, जो सहा न जा सके, अतिवार्य।

नि सारणम् [निर्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1 निष्कासन, निकाल बाहर करना 2 घर से निकलने का मार्ग, द्वार, दरवाजा।

निःस्व [निर्+स्व+अप्] शेष, बचत, फालतू।

निःस्राव [निर्+स्रु] 1 व्यय, खर्च करना, अर्थव्यय 2 चावलों का मांड।

निकट (वि०) [नि समीपे कटति नि+कट्+अच्] नजदीकी, समीपस्थ, अदूरस्थ, आसन्न, ट,—टम् समीप्य ('नजदीक' 'पास' 'समीप' अर्थों को क्रिया विशेषण के रूप में प्रकट करने के लिए 'निकटे' प्रयुक्त होता है—वहति निकटे कालस्रोतः समस्तभया वहम्—शा० ३।२)

निकर [नि+कृ+अच्, अप् वा] 1. ढेर, चट्टा 2 समूह, समुच्चय, संग्रह—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षांशुनिकरः—गीत० ११, शि० ४।५८, ऋतु० ६।१८ 3 मोती 4 रस, सार, मत 5 उपयुक्त उपहार, दक्षिण 6 निधि, खजाना।

निकर्तनम् [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना।

निकर्षणम् [नि+कृष्+ल्युट्] विश्राम या बिहार के लिए खुला स्थान, नगर में या नगर के निकट खेल का मैदान 2 दालान 3 पड़ोस 4 जमीन का टुकड़ा जो अभी जोता न गया हो।

निकष [नि+कष्+घ, अच् वा] 1 कसौटी, निकष-प्रस्तर, निकषे हेमरेखेव—रघु० १७।४६, महावी० १।४ 2 (आल०) कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, परीक्षण—नन्वेष दर्पणनिकषस्तव चन्द्रकेतुः—उत्तर० ५।१०, आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः—मृच्छ० १।४८, दश० १, का० ४४ 3 कसौटी पर बनी सोने की रेखा - कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन स्वसिति न सा हरिजनहसनेन—गीत० ७, कनकनिकषस्निग्धा विद्युल्लेखेव मे मनोर्वशी—विक्रम० ४।१, ५।१९। सम० उपल०, पाषाणः (पु०), पाषाण कसौटी निकष-प्रस्तर -तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति—गीत० ११, तत्त्वनिकषपाषाणौ तु तेषां विपद्—हि० १।२१०, २।८०।

निकषा [नि+कष्+अच्+टाप्] 1 रावण आदि राक्षसों की माता, (अव्य०) 2 निकट, अदूर, समीप, पास (कर्म० के साथ निकषा सौधभित्तिम्—दश०, विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति—शि० १।६८। सम० —आत्मज राक्षस।

निकाम (वि०) [नि+कम्+घञ्] 1 पुष्कल, विपुल, बहुल—निकामजला स्रोतोवहा—श० ६।१६, 2 इच्छुक सं, समू कामना, चाह,—मम् (अव्य०) 1 यथेच्छ, इच्छा के अनुसार 2 आत्मसंतोषार्थ, मनभर कर, साधौ निकाम क्षपितत्वमपि नास्ति—श० २, 'मैं रात्रि को भी आराम से नहीं सो पाता' 3 अत्यंत, अत्यधिक—निकाम क्षामाणी—मा० २।३, (इसके

अन्तिम 'म्' का लोप करके, इसे समास के प्रथमखण्ड के रूप में भी बहुधा प्रयुक्त किया जाता है निकाम-निरकुश —गीत० ७, कु० ५।२३, शि० ४।५४।

निकाय: [नि+चि+घञ्, कुत्वम्] 1 ढेर, संघटन, श्रेणी, समुच्चय, झुण्ड, समूह, महावी० १।५० 2 सम्प्रदाय या विद्वत्सभा, विद्यालय धार्मिक परिषद् 3 घर, आवास, निवासस्थल-काशीनिकाय आदि 4 शरीर 5 उद्देश्य, चाहमारी, निशाना 6 परमात्मा।

निकाय्य: [नि+चि+ण्यत्, नि०] निवास, आवास, घर —न प्रणाय्यो जन कश्चिन्निकाय्ये वैधिनिष्ठति—भट्टि० ६।६६।

निकार: [नि+कृ+घञ्] 1 अनाज पटकना 2 ऊपर उठाना 3 वध, हत्या 4 अनादर, तायेदारी 5 अवज्ञा, क्षति, अनिष्ट, अपराध, तीणो निवरण्यर्व वेणी० ६।४३, ४४।६ 6 गाली देना भला कहना, अपमान 7 दुष्टता, द्वेष 8 विरोध, वचन विरोध।

निकारणम् [नि+कृ+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

निकाश,-स [नि+काश् (भ्वा०)+घञ्] 1 दर्शन, दृष्टि 2 क्षितिज 3 सामीप्य पड़ोस 4 समानता, समरूपता (समास के अन्त में) मा० ५।१३।

निकाष [नि+कष्+घञ्] खरचना, रगड़ना —कि० ७।६।

निकुञ्चन [नि+कुच्+ल्युट् [एक तोल जो १।४ कुडव के बराबर है (आठ तोले के बराबर तौल)।

निकुंज,-ञ्जम् [नि+कुञ्+जन्+ड, पृषो०] लतामण्डप, लतागृह, कुञ्ज पर्णशाला—यमुनातीरवानीरनिकुञ्जमदमाश्रितम्—गीत० ४।२, ११, ऋतु० १।२३।

निकुम्भ] नि+कुम्भ्+अच्] 1 शिव के एक अनुचर का नाम रघु० २।३५ 2 सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम।

निकुरं (र) म्बम् [नि+कुर्+अम्बच्, उम्बच् वा] झुड, समूह, पुञ्ज, समुच्चय लतानिकुरम्बम्—गीत० ११, किरणा० आन० २०, चिकुर० ४३।

निकुलीनिका [नि+कुलीन+कन्+टाप्, इत्वम्] अपने कुल की विशेष कला, खानदानी हुनर, जो जन्म से मनुष्य को उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी घराने की परम्परागत विशेष कला या दस्तकारी।

निकृत (भू० क० कृ०) [नि+कृ+क्त] 1 विजित, निरुत्साहित, दीन 2 तिरस्कृत, क्षुब्ध—उत्तर० ६।१८ 3 प्रवंचित, धोखा खाया हुआ 4 हटाया हुआ 5 कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त 6. दुष्ट, बेईमान 7 अधम, नीच, कमीना।

निकृति (वि०) [नि+कृ+क्तिन् अधम, बेईमान, दुष्ट (स्त्री०—ति) 1 अधमपना, दुष्टता 2 बेईमानी, जालसाजी, धोखा—अनिकृतिनिपुण के वैदग्धि मानशौण्ड वेणी० ५।२१, कि० १।४५ 3 तिरस्कार, अपराध, अपमान—मुद्रा० ४।११ 4 गाली, झिड़की 5 अस्वीकृति निराकरण 6 गरीबी, दरिद्रता। सम० **प्रज्ञ** (वि०) दुष्ट, दुर्मना।

निकृन्तन (वि०) नी) [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना, नष्ट करना विरहिनिकृन्तन कुसुमबाहृतिकर्तनदुरितलाभे (वसने)—गीत० ११— नम् काटना, काट डालना नष्ट करना 2 काटने का उपकरण यत्किल नखकृन्तनेन सह कार्णायस विज्ञान स्यात्—शारी०।

निकृष्ट (वि०) [नि+कृष्+क्त] 1 नीच अधम, कमीना 2 जो परिष्कृत घटित 3 सबसे देहाती।

निकेत [निकेतति निवसति अस्मिन्—नि+कित्+घञ्] घर, आवास भवन, आलय—श्रियोकेतनिकेतमीश्वरम्—रघु० ८।३२, १४।५८, भग० १२।१९, कु० ५।७५, मनु० ६।२६, शि० ५।२६।

निकेतन [नि कित्+ल्युट्] स्थान—नम् भवन घर आलय, सिजाना मञ्जुमञ्जीर प्रविवेश निकेतनम् गीत० ११, मनु० ६।२६, ११।१२८ कि० २।१५।

निकोचनम् [नि+कुच्+ल्युट्] सिकुड़न, सिमटन।

निक्वण, निक्वाण [नि क्वण्+अच् घञ् वा] 1 मधुरस्वर 2 ध्वनि स्वर।

निक्षा [निक्ष्] अ ; टाप्] ज की अदा, लोभ [निक्षा का अशुद्ध रूप]।

निक्षिप्त (भू० क० कृ०) [नि+क्षिप्+क्त] 1 फेंका हुआ डाला हुआ रक्खा हुआ 2 जमा किया हुआ न्यस्त, धरोहर के रूप में रक्खा हुआ 3 भेजा हुआ, पहुँचाया हुआ 4 अस्वीकृत परित्यक्त।

निक्षेप [नि+क्षिप्+घञ्] 1 फेंकना, डालना (कर्म० के साथ), अलं मान्यानां व्याख्यानेषु वटाक्षनिक्षेपेण—या० द० २ 2 धरोहर न्यास अमानत—पञ्च० १।१४, मनु० ८।४ 3 किसी के भरोसे पर या क्षतिपूर्ति के निमित्त, बिना मोहर लगाये रक्खी हुई जमा, खुली धरोहर ममक्ष तु निक्षेपण निक्षेप याज्ञ० २।६६ पर मिता० 4 भेजना 5 फेंक देना, परित्याग करना 6 मिटाना, भुलाना।

निक्षेपणम् [नि+क्षिप्+ल्युट्] 1 डालना, पैरों के नीचे रखना कु० १।२३ 2 किसी वस्तु को रखने का उपाय।

निक्षेपनम् [नि+खन्+ल्युट्] खोदना, गाड़ना जैसा कि स्थूणानिखननन्याय।

निक्षेपं (वि०) [नितरां खर्वं प्रा० स०] ठिगना—र्वम् दस हजार करोड़।

निखात (भू० क० कृ०) [नि+खन्+क्त] 1 खोदा हुआ, खोदकर निकाला हुआ 2 जमाया हुआ, [खूटे

की भांति) खोदकर गाड़ा हुआ, अन्दर गड़ाया हुआ—शल्य निखातमुद्धरायतामुरस्त - रघु० ९।७८ अष्टादशद्वीपनिखातयूप ६।३८, गाढ निखात इव मे हृदये कटाक्ष —मा० १।२९ 3 गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ।

निखिल (वि०) [निवृत्त खिल यस्मात् ब० स०] सपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्ष ते निखिलमविराद्ध ज्ञात रक्त मया यत् - मेघ० ९४।

निगड (वि०) [नि+गल्+अच् लस्य ड] बेड़ी से बधा हुआ, शृङ्खलित, वृद्धस्य निगडस्य च—मनु० ४।२१०, —ड, - डम् 1 हाथी के पैरों के लिए लोहे की जंजीर, बद्धागरागि परितो निगडान्यलावीत्—शि० ५।४८, भामि० ४।२० 2 हथकड़ी, बेड़ी।

निगडित (वि०) [निगड+इतच्] हथकड़ी से बधा हुआ, बेड़ी से जकड़ा हुआ, शृङ्खलित, बाधा हुआ।

निगर [निगरण, पृषो० साधु] यज्ञाग्नि का धूआं।

निगदः, निगाद नि+गद्+अप्, घञ् वा] 1 सस्वर पाठ, स्तुति पाठ 2 ऊँचे स्वर से बोली गई प्रार्थना 3 भाषण, प्रवचन 4 अर्थ सीखना यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते—निरु० 5 उल्लेख, उल्लेखीकरण - इति निगदेनैव व्याख्यातम्।

निगदितम् [नि+गद्+क्त] प्रवचन, भाषण।

निगम [नि+गम्+घञ्] वेद, वेद का मूल पाठ—सार्धं साढ्वा साढेति निगमे पा० ६।३।११३, ७।२।६४ वैदिक उद्धरण, वेद का वाक्य तथापि च निगमो भवति (निरुक्त में बहुधा प्रयुक्त) 3 सहायक ग्रंथ, उपवेद, वेद भाष्य, मनु० ४।१९ तथा उसका कुल्लू० भाष्य 4 वेद का विधि वाक्य, ऋषियों के वचन 5 (शब्द का मूल स्रोत) धातु 6 निश्चय, विश्वास 7 तर्क 8 व्यवसाय, व्यापार 9 मंडी, मेला 10 चलते फिरते सौदागरों की मण्डली 11 मार्ग, मण्डी का मार्ग 12 नगर।

निगमनम् [नि+गम्+ल्युट्] 1 वेद का उद्धरण, या उद्धृत शब्द 2 (तर्क० में) अनुमान-प्रक्रिया में उपसंहार, (पञ्चावयवी भारतीय अनुमान-प्रक्रिया में पांचवां अवयव), घटाना।

निगर, निगार [नि+गृ+अप्, घञ् वा] निगलना, डकारना।

निगरणम् [नि+गृ+ल्युट्] 1 निगलना, डकारना 2 (आल०) ग्रहण कर लेना, पूर्ण रूप से लय कर देना—अ 1 गला 2 यज्ञाग्नि का धूआं।

निगल (भ्वा) ल [=निगर, निगार, रलयोरभेद] 1 निगलना, डकारना 2 घोड़े का गला या गर्दन वाला (पु०) घोड़ा।

निगीर्ण (भू०क०कृ०) [नि+गृ+क्त] 1 निगला हुआ, डकारा हुआ 2 पूर्ण रूप से निगला हुआ, या लय किया हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, अतएव आपूरणीय - उपमानेनातिनिगीर्णस्योपमेयस्य यदध्यवसानं सैका—काव्य० १०।

निगूढ (वि०) [नि+गुह्+क्त] 1 छिपाया हुआ, गुप्त —शि० १३।४०, 1 रहस्य, निजी—ढम् (अव्य०) चुपचाप, निजी ढंग से।

निगूहनम् [नि+गुह्+ल्युट्] छुपाना, छिपाना।

निग्रथनम् [नि+ग्रथ्+ल्युट्] बंध, ग्रन्थ।

निग्रह [नि+ग्रह्+अप्] 1 रोक रखना, नियंत्रित करना, दमन करना, वश में करना—जैसा कि 'इन्द्रियनिग्रह' में—मनु० ६।९२, याज्ञ० १।२२२ भर्तृ० १।६६, भग० ६।३४ 2 दबाना, रोकना, कुचलना - मनु० ६।७१ 3 दौड़ कर पकड़ लेना, अधिकार में कर लेना, गिरफ्तार करना -त्वन्निग्रहे तु वरमाप्ति न मे प्रयत्न—मृच्छ० १।२२, शि० २।८८ 4 कैद करना, कारागार में डालना 5 पराजय, पछाड़ देना, परास्त करना 6 हटा देना, नष्ट करना, दूर करना- रघु० ९।२५, १५।६, कु० ५।५३ 7 रोगों की रोकथाम, चिकित्सा 8 दण्ड, सजा (विप० अनुग्रह) निग्रहानुग्रहस्य कर्ता—पञ्च० १, निग्रहोऽप्ययमनुग्रहीकृत —रघु० ११।९०, ५५, १२। ५२, ६३ 9 डांट, फटकार, गाली 10 अरुचि, नापसंदगी, जुगुप्सा 11 (न्या० में) तर्कगत दोष, त्रुटि, अनुमान-प्रक्रिया में भूल (जिसके कारण हेत्वाभासादि परास्त हो जाता है) तु० मुद्रा० ५।१० 12 मूठ 13 सीमा, हद।

निग्रहण (वि०) [नि+ग्रह्+ल्युट्] पीछे कर देने वाला, दबाने वाला—णम् 1 दमन करना, दबाना 2 पकड़ना, कैद करना 3 सजा, दण्ड 4 पराजय।

निग्राह [नि+ग्रह्+घञ्] 1 दण्ड 2 कोसना—जैसा कि 'निग्राह्यस्ते भूयात्' (भगवान्, तुम्हें शापग्रस्त करे) भट्टि० ७।४३ में।

निघ (वि०) [नि+हन्, नि०] जितना चौड़ा उतना ही लम्बा,—घः 1 गेंद 2 पाप।

निघण्टु [नि+घण्ट्+कु] 1 शब्दावली 2 विशेष रूप से वैदिक शब्दावली जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है।

निघर्षः निघर्षणम् [नि+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना घर्षण करना, कि० २।५१।

निघसः [नि+अद्+अप्, घसादेशः] 1. खाना, भोजन करना 2 भोजन।

निघातः [नि+हन्+घञ्] 1 अभिघात, प्रहार—रघु० ११।७८ 2 स्वर का दमन करना या अभाव।

निघाति (स्त्री०) [नि+हन्+इञ्, कुत्वम्] लोहे की गदा।

निघुष्टकम् [नि+घुष्+क्त] ध्वनि, शब्द।

निघ्न (वि०) [नि+हन्+क] 1 आश्रित, अनुसेवी, आज्ञाकारी (नौकर की भांति), तथापि निघ्न नृप तावकीने ग्रह बोकृतं मे हृदय गुणौघै --कि० ३।१३, निघ्नस्य में भर्तुनिदेशरौक्ष्य देवि क्षमस्वेति वभूव नम्र --रघु० १४।५८ 2 शिष्य, विधेय 3 पराश्रित (अर्थात् विशेष्य के लिंगादि का अनुसरण करने वाला--इति विशेष्यनिघ्नवर्ग 4 (संख्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित।

निचय [नि+चि+अच्] 1 संग्रह, ढेर, समुच्चय --कि० ४।३७ 2 अवयवों का संघातजिसने पूर्णता आजाय--जैसा 'शरीरनिचय' में 3 निश्चितता।

निचाय [नि+चि+घञ्] ढेर।

निचिकि दे० नेचिकी।

निचित (भू० क० कृ०) [नि+चि+क्त] 1 ढका हुआ, आच्छादित, फैला हुआ, निचित क्षमुपेत्य नीरदै - घट० १ शि० १७।१४ 2 भरा हुआ, पूरित 3 उठाया हुआ।

निचुल [नि+चुल्+क] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 एक कवि, कालिदास का मित्र - स्थानादस्मात् सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुख खम्--मेघ० १४, (यहाँ मल्लि०--निचुलो नाम महाकवि कालिदासस्य सहाध्याय, परन्तु यह व्याख्या बड़ी संदिग्ध है) 3 ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा, चादर, तु० निचोल।

निचुलकम् [निचुल+कन्] वक्षत्राण, चोली, अंगिया।

निचोल [नि+चुल्+घञ्] 1 अवगुण्ठन, घूघट, पर्दा ध्वांत नीलनीचोलचारु---गीत० ११, शीलय नील-निचोलम्--५ 2 बिस्तरे की चादर 3 डोली का आवरण।

निचोलक [निचोल+कै+क] 1 बनियान, चोली 2 सिपाही की जाकट जो उरस्त्राण का काम दे।

निञ्जलि [प्रा० ब०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं।

निञ्जिलवि (पु०) एक व्रात्य जाति, पतित जाति (व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान) दे० मनु० १०।२२।

निज् (जुहो० उभ०--नेनेक्ति, नेनिक्ते, प्रणेनेक्ति, निक्त) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना--सस्नु पय पपुरनेनिजुरङ्गराणि --शि० ५।२८ 2 अपने आपको धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3 पोषण करना, अव--, प्रक्षालन करना, पानी छिड़कना, निस्--, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना --रघु० १७।२२, याज्ञ० १।१९१, मनु० ५।१२७।

निज (वि०) [नि+जन्+ड] 1 अन्तर्जात, स्वदेशजात, सहज, अन्तर्भव, जन्मजात 2 अपना, स्वकीय, आत्मीय अपने दल का या अपने देश का--निज बधु पुनरनय-निजा रुचिम्-- शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3 विशिष्ट 4 निम्नतर रहने वाला, चिरस्थायी।

निज् (अदा० आ० निक्ते) धोना, अ--, धोना प्रणिक्ते।

निटलम् ('निटिल' भी लिखा जाता है) [नि+टल्+अच्] मस्तक, निटिलनटच्चुम्बित - दश० ४, १५। सम०--अक्ष शिव का नाम।

निडीनम् [नीचैर्डीन पतनमस्ति] पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना, या झपट्टा मारना, दे० 'डीन'।

नितम्ब [निभृत तम्यते कामुकै, तमु काङ्क्षायाम्] 1 चूतड़, (स्त्री का) पिछला उभरा हुआ भाग, श्रोणि प्रदेश, कूल्हा,--यान यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मद विलासादिव--श० २।१, रघु० ४।५२, ६।१७, मेघ० ४१, भर्तृ० १।५, मालवि० २।७ 2 (पर्वत का) ढलान, पर्वतश्रेणी, पार्श्व या पहलू--सनाकवनित नितम्बरुचिर (गिरम्) कि० ५।२७, सेव्या नितम्बा किमु भूधराणा कि वा स्मरस्मेरविलासिनीनाम् भर्तृ० १।१९, विक्रम० ४।२६, भट्टि० २।८, ७।५८ 3, खड़ी चट्टान 4 नदी का ढलवा किनारा 5 कमर। सम०---बिम्बम् गोलाकार कूल्हा, ऋतु० १।४।

नितम्बवत् (वि०) [नितम्ब+मतुप्] सुन्दर कूल्हों वाला --तौ स्त्री चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितम्-- गीत० १, विक्रम० ४।२६।

नितम्बिन् (वि०) [नितम्ब+इनि] सुन्दर कूल्हों वाला, सुडौल चूतड़ वाला (बहुधा 'जघन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।१६, रघु० १०।२६, 2 अच्छे पार्श्वभागों वाला (पहाड़ आदि)--नौ 1 बड़े और सुन्दर कूल्हों वाली स्त्री--कि० ८।३, शि० ७।९८, कु० ३।७ 2 स्त्री।

नितराम् (अव्य०) [नि+तरप्+अमु] 1 पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से प्राणास्त्वयाभि नितरा तदाप्तिहेतो --चौर० ४१, भर्तृ० १।९६ 2 अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत ज्यादह--तुदति चेतो नितरा प्रवासिना--ऋतु० २।४, अमरु १०, शोषितसरसि निदाघे नितरामेवोद्धत सिधु --पच० १।१०४, नितरा नीचोऽस्मीति--भामि० १।९ 3 निरंतर, सदा, लगातार 4 सर्वथा 5 निश्चय ही।

नितलम् [नितरा तलम् अधोभाग यस्मिन्] पाताल के सात प्रभागों में से एक, दे० पाताल।

नितान्त (वि०) [नि+तम्+क्त+,दीर्घ] असाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र--नितान्तकठिन खड्ग मम न वेद सा मानसम्--विक्रम० २।२,--तम् (अव्य०)

अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अत्यत, अतिशय ।

नित्य (वि०) [नियमेन नियत वा भव–नि+त्यप्] 1 निरतर रहने वाला, चिरस्थायी, लगातार, देर तक टिकने वाला, शाश्वत, निर्बाध - यदि नित्यमनित्येन लभ्येत -हि० १।४८, नित्यज्योत्स्ना प्रतिहततमोवृत्तिरम्या प्रदोषा - मेघ० (लल्लि० इसे प्रक्षिप्त मानता है) मनु० २।२०६ 2 अटल, नियमित, निश्चित, अनैच्छिक, नियमित रूप से नियत (विप० काम्य) 3 आवश्यक, अवश्यकरणीय, अपरिहार्य 4 सामान्य, प्रचलित (विप० नैमित्तिक) 5 (समास के अन्त में) निरतर निवास करने वाला, लगातार किसी काम में लगा हुआ या व्यस्त, जाह्नवीतीर°, अरण्य°, आश्रम°, ध्यान आदि,–त्य समुद्र, त्यम् (अव्य०) प्रतिदिन, लगातार, सदा, हमेशा, निरन्तर सदैव । सम० **अनध्याय**–ऐसा अवसर जब वेद पठन-पाठन सर्वथा त्याग दिया जाय, मनु० ४।१०३, **अनित्य** (वि०) शाश्वत तथा नश्वर, **ऋतु** (वि०) ऋतु के आने पर नियमित रूप से होने वाला,–**कर्मन्** (नपु०), **कृत्यम्**, **क्रिया** प्रतिदिन किया जाने वाला आवश्यक कार्य लगातार किया जाने वाला कर्तव्य, जैसे कि दैनिक पचयज्ञ, - **गति**, वायु, हवा — **दानम्** प्रतिदिन दान देने का कर्म,—**नियम** अटल सिद्धान,–**नैमित्तिकम्** किसी निमित्त विशेष से नियमित रूप से होने वाला या किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर किया जाने वाला अनुष्ठान (उदा० पर्वश्राद्ध) - **प्रलय** सुषुप्ति, **मुक्त** परमात्मा, - **योक्त्रा** (सदा यज्ञवेदी बनी रहने वाली) द्रौपदी का विशेषण, - **शक्ति** (वि०) सदैव चौकन्ना, सदैव सशक्त, - **समास** अनिवार्य समास ऐसा समास जिसके अर्थों को पृथक् २ पदों द्वारा अभिव्यक्त न किया जा सके उदा० अमदति, जयद्रथ आदि, इवेन नित्यसमास आदि ।

नित्यता, त्वम् [नित्य+तल्+टाप्,त्व वा] 1. स्थिरता, अनश्वरता, नैरन्तर्य, शाश्वतता, निरन्तरता 2 आवश्यकता ।

नित्यदा (अव्य०) [नित्य+दाच्] लगातार, हमेशा, प्रतिदिन सदैव ।

नित्यशस् (अव्य०) [नित्य+शस्] लगातार, हमेशा, सदैव भग० ८।१४, मनु० २।९६, ४।१५० ।

नित्वद् [निदात् विषात् द्राति पलायते - निद+द्रा+कु] मनुष्य ।

निदर्शक (वि०) [नि+दृश्+ण्वुल्] 1 देखने वाला 2 अन्दर देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला 3 सकेत करने वाला, प्रकथन करने वाला, इगित करने वाला ।

निदर्शनम् [नि+दृश्+ल्युट्] 1. दृश्य, अन्तर्दृष्टि, अन्तरीक्षण, नजर, दर्शनशक्ति 2 इशारा करना, बतलाना 3. प्रमाण, साक्ष्य—बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम्—पच०३ १२३ 4 दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल–ननु प्रभुरेव निदर्शनम्—शि० २, निदर्शनमसारणा लघुर्बहूनृणं नरः – शि० २।५०, रघु० ८।३५ 5 अवसूचक 6. चिह्न, शकुन 7. योजना, पद्धति 8 विधि, वेदविहित प्रमाण, निषेध,—ना अलकार शास्त्र में एक अलकार– निदर्शना, अभवन्वस्तुसबध उपमानप्रतिकल्पक काव्य० १०, उदा० रघु० १।२ ।

निदाघ [निदह्यते अत्र नि+दह्+घञ्] 1 ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु, गर्मी का मौसम (ज्येष्ठ और आषाढ के महीने) निदाघमिहिरज्वालाशतै - -भामि० १।१६, निदाघकाल समुपागत प्रिये—ऋतु० १।१, पच० १।१०५, कु० ७।८४ 3 स्वेद, पसीना । सम० **कर** सूर्य, काल गरमी की ऋतु ।

निदानम् [निश्चय दीयतेऽनेन नि+दा+ल्युट्] 1 पट्टी, तस्मा, रस्सी, डोरी 2 बछडे को बाधने का रस्सा 3 प्राथमिक कारण, प्रथम या आवश्यक कारण निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य सतने —रघु० ३।१ अथवा कल्पारभो निदान क्षयसदः – शि० २।९४ 4. सामान्य कारण - मुच मयि मानमनिदानम् - गीत० ५ 5 (आयु० मे) रोग का कारण जानना, रोगविज्ञान 6 किसी रोग का निरूपण 7 अन्त समाप्ति 8 पवित्रता, निर्मलता, शुद्धता ।

निदिग्ध (भू० क० कृ०) [नि+दिह्+क्त] 1 लेप किया हुआ, चुपडा हुआ 2 बढाया हुआ, सचित या छोटी इलायची ।

निदिध्यास, निदिध्यासनम् [नि+ध्यै+सन्+घञ्, ल्युट् वा] बारबार ध्यान में लाना, निरतर चिन्तन ।

निदेश [नि+दिश्+घञ्] 1 आज्ञा, हुक्म, शिक्षण, अनुदेश—वाक्येनेव स्थापिता स्वे निदेशे - मालवि० ३।१४, स्थित निदेशे वृषभादि देशे रघु० १४।१४ 2 भाषण, वर्णन, सभालाप 3 सामीप्य, पड़ोस 4 पात्र, बर्तन ।

निदेशिन् (वि०) [निदेश+इनि] सकेत करने वाला, - नी 1 दिशा, पृथ्वी का एक बिन्दु 2 प्रदेश ।

निद्रा [निन्द्+रक्+टाप्, नलोप] 1 सुप्तावस्था, नींद - -प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसा – श० १।३ 2 शिथिलता 3 आँखे मूदना, कली की अवस्था 1 सम० —**भग** जागरण, नींद टूट जाना, - **वृक्ष** अचकार —**संजननम्** श्लेष्मा, कफात्मक वृत्ति ।

निद्राण (वि०) [नि+द्रा+क्त, तस्य न, ततो णत्वम्] सोता हुआ, शयान, ।

निद्रालु (वि०) [नि+द्रा+आलुच्] शयान, निद्रित, —लु विष्णु की उपाधि ।

निद्रित (वि०) [निद्रा+इतच्] सोया हुआ, सुप्त ।

निधन (वि०) [निर्गतं धनं यस्मात्—ब० स०] गरीब, दरिद्र —अहो निधनता सर्वापदामास्पदम् मृच्छ० १।१४, —न —नम् 1 ध्वंस, सर्वनाश, मरण, हानि —स्वयमें निधन श्रेय —भग० ३।३५, म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालम्—गीत० १, कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधन विद्याम्यमतर्धनम् भर्तृ० २।१६ 2 उपसंहार, अन्त, परिसमाप्ति —नम् परिवार, वंश।

निधानम् [नि+धा+ल्युट्] 1 नीचे रखना, निर्धारित करना, जमा करना 2 सभाल कर रखना, सुरक्षित रखना 3 गोदाम, आधार, आशय—निधान धर्मणाम् —गंगा० १८ 4 खजाना—निधानगर्भामिव सागरा-म्बराम्—रघु० ३।९, भग० ९।१८, विश्वस्य परं निधानम् 5 कोष, भंडार, संपत्ति, दौलत।

निधि [नि+धा+कि] 1 घर, आधार, आशय जल°, तोय°, तपोनिधि आदि 2 भंडारगृह, कोषागार 3. खजाना, भंडार, संचय (कुबेर के नौ खजानों के के लिए दे० 'नवनिधि') 4 समुद्र 5 विष्णु का विशेषण 6 सद्गुणसंपन्न व्यक्ति। सम०—ईश, —नाथ कुबेर का विशेषण।

निधुवनम् [नितरां धुवन हिंसनादि चालनमत्र] 1 क्षोभ, कम्पन 2 संभोग, मैथुन—अतिशयमधुरिपुनिधुवन-शीलम् —गीत० 3 शि० ११।१८, चौर० ४, ९, २५ 3 आनन्द, उपभोग, केलि।

निध्यानम् [नि+ध्यै+ल्युट्] दर्शन, अवलोकन, दृष्टि।

निनादः [नि+ध्वन्+घञ्] ध्वनि, शब्द।

निनक्षु (वि०) [नष्टुमिच्छु —नश्+सन्+उ] 1 मरने की इच्छा वाला 2 भाग जाने या बच निकलने का इच्छुक —भट्टि० ४।३३।

नी (ना) द [नि+नद्+अप्, घञ्, वा] 1 ध्वनि, शोर-उच्चचार निनदोमसि तस्या —रघु० ९।७३, ११।१५, ऋतु० १, १५ 2 (मक्खियों का) भिन-भिनाना, गुंजन करना।

नयनम् [नि+नी+ल्युट्] 1 अनुष्ठान 2 किसी कार्य को पूर्ण करना, सम्पन्न करना ३ उद्देश्य।

नद् (भ्वा० पर० निंदति, निंदित, प्रणिंदति) दोष देना, निंदा करना, छिद्रान्वेषण करना, बुरा भला कहना, डाटना, फटकारना, धिक्कारना —निनिंद रूप हृदयेन पार्वती —कु० ५।१, सा निंदतो स्वानि भाग्यानि बाला —श० ५।३०, भग० २।३६, मनु० ३।४२।

नक (वि०) [निंद्+ण्वुल्] कलंक लगाने वाला, निंदा करने वाला, गाली देने वाला, बदनाम करने वाला।

नन्द्य, निंदा [निंद्+ल्युट्, निंद+अ+टाप् वा] 1 कलंक, दोषारोप, डाट, फटकार, गाली, बुरा-भला कहना, बदनामी-व्याजस्तुतिर्मुखे निंदा—काव्य० १०, पर°, वैध° 2 क्षति, दुष्टता। सम०—स्तुति (स्त्री०) 1 व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निन्दा 2 प्रच्छन्नस्तुति।

निंदित (भू० क० कृ०) [निंद+क्त] कलंकित, दोषा-रोपित, गाली दिया हुआ, बदनाम किया हुआ।

निंदु (स्त्री०) [निंदु+उ] मरा बच्चा पैदा करने वाली स्त्री, मृतवत्सा।

निंद्य (वि०) [निंद+ण्यत्] 1 कलंक के योग्य, दोषा-रोपण के लायक, निर्भर्त्स्य, गर्हित, अधन्य 2 वर्जित, प्रतिषिद्ध।

निप, पम् [नियत पिबति अनेन नि+पा+क] जल का घड़ा 2 कदम्ब का पेड़।

निष (पा) ठ [नि+षठ्+अप्, घञ्, वा] पढ़ना, सस्वर पाठ करना अध्ययन करना।

निपतनम् [नि+पत्+ल्युट्] 1 नीचे गिरना, नीचे उतरना, उतरना 2 नीचे की ओर उड़ना।

निपत्या [निपतंति अस्याम्—नि+पत्+क्यप्+टाप्] 1 फिसलन वाली भूमि 2 रणक्षेत्र।

निपाक [नि+पच्+घञ्] परिपक्व करना, पकाना।

निपात [नि+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना, नीचे आना, नीचे उतरना — पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिता —कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ 2 आक्रमण करना, टूट पड़ना, झपटना, कूदना—रघु० २।६० 3 फेंकना, फेंक कर मारना, दागना कु० ३।१५ 4 उतार, प्रपात, निशितनिपाता शरा —श० १।१० 5 मरण, मृत्यु—मनु० ६।३१ 6 आकस्मिक घटना 7 अनियमित रूप, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, ऐसे निपाता, निपातोऽयम् आदि 8 अव्यय, वह शब्द जिसके और रूप न बनें पा० १।४।५६।

निपातनम् [नि+पत्+णिच्+ल्युट्] 1 नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना—मनु० ११।२०८, 2 परास्त करना, बर्बाद करना, वध करना 3 मर्म स्पर्श करना 4 अनियमित या अपवाद मानना 5 शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद।

निपानम् [नि+पा+ल्युट्] 1 पीना 2 जलाशय, जोहड़, पोखर, गाहल्ला महिषा निपानसलिल भ्रुगै-र्मुहुस्ताडितम् —श० २।६, हि० १।१७२, रघु० ९। ५३ 3 चौबच्चा, कूएँ के समीप पानी का हौज जिसमें पशुओं के पीने का पानी भरा हो 4 कूआँ 5 दूध की बाल्टी।

निपीडनम् [नि+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1 निचोड़ना, दबाना, भींचना —शि० १।७४, १३।११ 2 चोट पहुँचाना, घायल करना, —ना अत्याचार करना, घायल करना, क्षति पहुँचाना।

निपुण (वि०) [नि+पुण्+क] 1 चतुर, चालाक, बुद्धिमान्, कुशल वयस्य निपुणा स्त्रिय —

मालवि० ३ 2. प्रवीण, कुशल, जानकार, परिचित (अधि० या करण० के साथ) वाचि निपुण, वाचा निपुण 3 अनुभवशील 4 कृपालु, सिफ़ारिशी 5. सूक्ष्म, बारीक, कोमल 6. सम्पूर्ण, पूरा, सही—अम्(अव्य०), निपुणेन, 1 कौशल से, चतुराई से 2. पूरी तरह से, पूर्णरूप से, सर्वथा 3 ठीक, सावधानी से, यथार्थतः, सूक्ष्मरूप से—निपुणमन्विष्यन्नुपलब्धवान्—दश० ५९ 4. मृदुता के साथ।

निबद्ध (भू० क० कृ०) [नि+बध्+क्त] 1 बाँधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ, बंद किया हुआ 2 जुड़ा हुआ, संबद्ध 3 निर्मित 4 रचित, बना हुआ 5 गवाह के रूप में बुलाया हुआ।

निबंध [नि+बध्+घञ्] 1 बाँधना, कसना, जकड़ना 2 आसक्ति संलग्नता भग० १६।५ 3 रचना करना, लिखना 4 साहित्यिक रचना या कृति,—प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबंधविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबंध चक्रे—बाण० 5 संग्रह-ग्रन्थ 6 नियन्त्रण, अवरोध, बंधन 7 मुआवज़ा 8 बंधक, हथकड़ी 9 संपत्ति का अनुदान, पशु, रुपया आदि सहायता के रूप में देना भूयो विनामहोपाना निबंधो द्रव्यमेव वा—याज्ञ० २।१२१, स्थिर संपत्ति 10 बुनियाद, मूल 11 हेतु कारण।

निबंधनम् [नि-बध ल्युट्] 1 एक जगह जकड़ना, मिलाकर बाँधना 2. मरम्मत करना, निर्माण करना 3 नियन्त्रण करना, रोकना, कैद करना 4 बंध, हथकड़ी 5 गाँठ, बंध, सहारा, टेक आशानिबंधनं जाता जीवलोकस्य उत्तर० ३, यस्त्वमिव मामकीनस्य मनसो द्वितीय निबंधनम्—मा० ३ 6 पराश्रयता, संबंध—पंच० १।७९, अन्योन्याश्रित 7 कारण, मूल, हेतु प्रयोजन, आधार, बुनियाद—वाक्यप्रतिष्ठानिबंधनानि दीप्तेना व्यवहारतत्त्वानि—मा० ४, आधारित आदि, प्रस्ताव ३ अनिबंधन निष्कारण, आकस्मिक—उत्तर० ५।७ 8 आगार, सही, आधार—मा० २।६ 9 रचना करना, क्रमबद्ध करना—कु० ७।९० 10 साहित्यिक रचना या कृति, पुस्तक 11 (भूमि का) अनुदान नियोजन या हस्तांतरण-प्रलेख—सद्दानि, सन्निबंधना—शि० २।११२, (यहाँ 'निबंधन का अर्थ 'पुस्तक' भी है) 12 वीणा की खूँटी 13 (व्या० में) कारक प्रकरण 14 भाष्य।

निबंधनी [निबंधन+ङीप्] बंध, हथकड़ी, डोरी या रस्सी।

निबर्ह (ब)र्हण (वि०) [नि+बर्ह (ब) ह्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, विनाशक, (समास में) शत्रु—कि० २।४३, महावी० ३।३७,—अम् वध, हत्या, विनाश, हत्या—नै० १।१३१।

निबिड (वि०) [नि+बिड्+क] सघन, निविड, दे० 'निबिड'।

निभ (व०) [न+भा+क] (केवल समास के अन्त में) सदृश, समान, अनुरूप उद्बुद्धमुग्धकनकाब्जनिभं वहन्ति मा० १।४० इसी प्रकार 'चन्द्रनिभानना' आदि,—भः,—भम् 1 दर्शन, प्रकाश, प्रकटीकरण 2 बहाना, छद्मवेश, व्याज 3 चाल, जालसाजी।

निभालनम् [नि+भल+णिच्+ल्युट्] देखना, दृष्टि, प्रत्यक्षीकरण।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1 अत्यन्त भीत 2 गया हुआ, बीता हुआ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1 रक्खा हुआ, जमा किया हुआ, नीचा किया हुआ 2 भरा हुआ, आपूरित—चित या निभृत-भाग० 3 छिपाया हुआ, गुप्त, दृष्टि से ओझल, अनीक्षित, अनवलोकित—निभृतो भूत्वा पंच० १, नभसा निभृतेंदुना—रघु० ८।१५, चन्द्रमा के अन्तर्हित होने पर, जब चाँद अस्त होने को था शि० ६।३० 4 गुप्त, प्रच्छन्न, शि० १३।४२ 5 (क) चुप शान्त—निभृतद्विरेफ (कानन) कु० ३।४२, ६।२, (ख) स्थिर, नियत, अचल, गतिहीन श० १।८ 6 मृदु, सौम्य—अनिभृता वायव—कि० १३।६६ जो कोमल न हो, प्रचंड, उग्र—मा० २।१२ 7 विनीत, नम्र अनिभृतकरेषु प्रियेषु—मेघ० ६८, प्रणामनिभृता कुलवधूरिय—मुद्रा० १ 8 दृढ़, अटल 9 एकाकी, अकेला—निभृतनिकुंजगृह गतया—गीत० २ 10 बंद, (दरवाजा) मुंदा हुआ,—तम् (अव्य०) 1, गुप्त रूप से, प्रच्छन्न रूप से, निजी तौर पर, बिना किसी के देखे श० ३, शि० ३।७४, मनु० ९।२६३ 2 चुपचाप, शान्ति से—कि० १३४।

निमग्न (भू० क० कृ०) [नि—मस्ज्+क्त] 1 डूबा हुआ, डुबोया हुआ, बोया हुआ, आप्लावित, जलमग्न हुआ (आल० भी) निमग्नस्य पयोराशौ, चिंतानिमग्न आदि 2 नीचे गया हुआ (सूर्य की भाँति) अस्त 3 अभिप्लुत, आच्छादित 4 अवमग्न, अप्रमुख।

निमज्जयु [नि+मस्ज्+अयुच्] 1 डुबकी लगाना, गोता लगाना 2 बिस्तर में घुसना, शयन करना, सो जाना—सल्पे कालांतरं सार्धं मन्येऽहं धिङ् निमज्जथुम्—भट्टि० ५।२०।

निमज्जनम् [नि+मस्ज्+ल्युट्] स्नान करना, डुबकी लगाना, गोता लगाना, डूबना (शा० और आल०) दृङ् निमज्जनमूर्पैति सुधायाम्—नै० ५।९४, एव संसार-गहने उन्मज्जननिमज्जने—महा०।

निमन्त्रणम् [नि+मन्त्र+ल्युट्] 1. न्योता 2 आमन्त्रण, बुलावा 3 आह्वान, तलबी।

निमय [नि+मि+अच्] वस्तु-विनिमय अदला-बदली।

निमातव्य [नि+मा+क्यप्] 1 माप 2 मूल्य (निमातव्य =मेयम्-सिद्धा०)।

निमि[1] (पु०) 1 आँख का झपकना, निमेष 2 इक्ष्वाकु की एक संतान, मिथिला में राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पूर्वज।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार हेतु -निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम -श० ७।३० 2 करणात्मक या कौशलदर्शी करण (विप० उपादान) 3 प्रतीयमान कारण, व्याज, निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्—भग० ११।३३, निमित्तमात्रेण पाण्डवक्रोधेन भवितव्यम् - वेणी० १ 4 चिह्न, संकेत, निशानी 5 ठूंठ, लक्ष्य, निशाना -निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्क-स्येव वल्गितम् शि० २।२७ 6 भविष्यसूचक (शुभाशुभ) शकुन,—निमित्तं सूचयित्वा, श० १, निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव--भग० १।३०, रघु० १।९६, मनु० ६।५०, याज्ञ० १।२०३, ३।१७१, ('निमित्त' शब्द समास के अन्त में 'कारण या उत्पत्ति' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है —किंनिमित्तोऽयमातंक—श० ३, **निमित्तम्, निमित्तेन, निमित्तात्** के कारण, क्योंकि, इस कारण कि। सम० -**अर्थ** (ब्या० में) अकर्तृक क्रिया की अवस्था, तुमुन्त प्रयोग,-**आवृत्ति** (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर आश्रय, **कारणम्**,-**हेतु** करणात्मक या कौशलदर्शी कारण,-**कृत्** (पु०) कौवा, -**धर्म** 1 प्रायश्चित्त 2 सामयिक संस्कार,-**विद्** (वि०) अच्छे और शकुनों का ज्ञाता --(पु०) ज्योतिषी।

निमिष [नि+मिष्+क] 1 आँख झपकना, आँख बन्द करना पलक झपकाना 2 पलभर समय, पलभर 3 फूलों का बन्द होना 4 आँख की पलक का शब्द होना 5 विष्णु। सम०—**अंतरम्** क्षण भर का अन्तराल।

निमीलनम् [नि+मील्+ल्युट्] 1 पलक बन्द करना, झपकना, नयननिमीलनविच्छिन्नया यया ते - गीत० ६, अमरु ३३ 2 मरणमय आँखें मुदना, मृत्यु 3 (ज्या० में) पूर्णांक।

निमिला, निमीलिका [नि+मील्+अ+टाप्, निमिल+णिच्+टाप्, इत्वम्] 1 आँखें बन्द करना 2 आँख झपकाना, पलक मारना, किसी की ओर आँख मिचकाना 3 जालसाजी, बहाना, चालाकी।

निमूलम् (अव्य०) [निष्कृतं मूलम्, प्रा० स०] नीचे जड़ तक -निमूलकाषं कर्षति।

निमेष [नि+मिष्+घञ्] आँख का झपकना, क्षण, दे० 'निमिष'—हरति निमेषात् काल सर्वम्--मोह० ४, अनिमेषेण चक्षुषा-टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से -रघु० २।१९, ३।४३, ६१। सम०—**कृत्** (स्त्री०) बिजली—**दृश्** (पु०) जुगनू।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] गहरा (शा० और आल०) चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभि—मेघ० ८२, ऋतु० ५।१२, शि० १०।५७ 2 नीचे, अवनत, -म्नम् 1 गहराई, नीची भूमि, निम्न देश (क) पश्यच निम्नाभिमुख प्रतीपयेत्—कु० ५।५, न च निम्नादिव सलिल निवर्तते मे मनो हृदयम् श० ३।६, याज्ञ० २।१५१, ऋतु० २।१३ 2 ढलान, ढाल 3 अधःपात, भग्नाश 4 अवसाद, निचला भाग—जलनिविष्टिनवस्त्रव्यक्त निम्ननाभि—मा० ६।१०। सम० - **उन्नत** (वि०) ऊँचा नीचा, अवनत उन्नत, ऊबड़खाबड़, **गतम्** निम्नस्थान,--**गा** नदी, पहाड़ी नदी -रघु० ८।८।

निम्ब [निम्ब् + अच्] नीम का पेड़, आम्र जिम्बा कुठारेण निम्ब परिचरेत्तु य, यत्तेन पयसा सिक्तेर्निम्बस्य मधुरा भवेत् रामा०।

निम्लोच [नि+म्लुच्+अच्] सूर्यास्त।

नियत (भू०क०कृ०) [नि+यम्+क्त] 1 दमन किया हुआ, नियन्त्रित 2 अभिभूत, विनयन में किया हुआ, स्वाधीन, स्वशासित 3 संयमी, मिताहारी 4 सावधान 5 जमा हुआ, स्थायी, अनवरत, स्थिर 6 अवश्यभावी, निश्चित अचूक 7 अनिवार्य 8 ध्रुव निश्चित 9 विचारणीय विषय (प्रसंगानुकूल दो चाहे असंबद्ध) दे० 'नियमयोगिता', **तम** (अव्य०) 1 हमेशा लगातार 2 निश्चयात्मक रूप से, अवश्य, अनिवार्यतः, निश्चय ही।

नियति (स्त्री०) [नि+यम्+क्तिन्] 1 नियन्त्रण, प्रतिबन्ध 2 भाग्य प्रारब्ध, भवितव्यता, किस्मत (बुरी हो या अच्छी हो) नियतिबलात्-दश०, नियतेर्नियमात् शि० ८।३४, कि० २।१२, ४।२१ 3 धार्मिक कर्तव्य 4 आत्म नियंत्रण, आत्म संयम।

नियन्तृ (पु०) [नि+यम्+तृच्] 1 सारथि, चालक शि० १२।२४ 2 राजपाल, शासक स्वामी, विनियन्ता -रघु० १।१३, २।५२ 3 दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

नियन्त्रणम्, णा [नि+यन्त्र+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 रोक, आरक्षण, प्रतिबन्ध -अनियन्त्रणानुयोगो दाम नयम्बिजन —श० १ 2 प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना (किसी विशेष अर्थ में) अनेकार्थस्य शब्दस्यैकार्थनियन्त्रण भा० दी० २ 3 निर्देशन, शासन 4 परिभाषा बनाना।

नियन्त्रित (भू०क०कृ०) [नि+यन्त्र्+क्त] 1 दमन किया हुआ, रोका हुआ 2 प्रतिबद्ध सीमित (किसी विशेष अर्थ में, शब्द के रूप में)।

नियम [नि+यम्+अप्] 1 नियन्त्रण, रोक 2 संयम, वशीभूत करना 3. सीमित करना, रोक लगाना

4 निग्रह, निरोध—मनु० ८।१२२ 5. सीमाबन्धन, हदबन्दी 6 नियम या विधि कानून, प्रचलन—नाम मकान्तरो नियम —आरो० 7 नियमितता -रत्न० १।२० 8 निश्चितता, निश्चय 9 संविदा, प्रतिज्ञा, व्रत, बाधा 10 आवश्यकता, अनिवार्यता, 11 कोई ऐच्छिक या स्वेच्छा से गृहीत धार्मिक अनुष्ठान (बाह्य अवस्थाओं पर निर्भर)—रघु० १।९४, (दे० मल्लि०, शि० १३।३३ तथा कि० ५।४२ पर) 12 कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा व्रत, विहित कर्तव्य जो यम की भांति अनिवार्य न हो—शौच-मिज्या तपो दान स्वाध्यायोपस्थनिग्रह व्रतमौनोपवास च स्नान च नियमा दश—अमि 13 तपस्या, भक्ति, धार्मिक साधना—नियम विघ्नकारिणी शा० १, रघु० १५।७४ 14 (सीमा० में) इस प्रकार का नियम या विधि जिसमें उस बात का विधान किया जाता है, जो, यदि यह नियम न होता तो ऐच्छिक होती—विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियम पाक्षिके सति 15 (योग० में) मन का निग्रह, योग में समाधि के आठ मुख्य अंगों में दूसरा 16 (अल० में) कविसमय, जैसा कि वसन्त ऋतु में कोयल का वर्णन, वर्षा ऋतु में मोरों का वर्णन, **नियमेन**- नियम पूर्वक, अनिवार्यतः। सम० निष्ठा विहित संस्कारों का दृढ़ता पूर्वक पालन, -पक्ष लिखित संविदा पत्र,—स्थिति (स्त्री०) धार्मिक कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन, साधना।

नियमनम् [नि+यम्+ल्युट्] 1 अवरोध करना, शासन में रखना, नियन्त्रण करना, दमन करना—नियमना-दमना च नराधिप —रघु० ९।६ 2 प्रतिबन्ध, सीमा-निबन्धन 3 दीनता, 4 विधि स्थिर नियम।

नियमवती [नियम+मतुप्—ङीप्] स्त्री जिसे मासिक धर्म नियमित रूप से होता हो।

नियमित (भू०क०कृ०) [नि+यम्+णिच्+क्त] 1 अवरुद्ध, दमन किया नियन्त्रित 2 शासित, निर्देशित 3 विनियमित, विहित, निर्धारित 4 स्थिर संवेदित प्रतिज्ञात।

नियाम [नि+यम्+घञ्] 1 नियन्त्रण 2 धार्मिक व्रत

नियामक (वि०) (स्त्री—यिका) [नि+यम्+णिच्+ण्वुल्] 1 नियन्त्रण करने वाला, अवरुद्ध करने वाला 2 दमन करने वाला, पछाड़ने वाला 3 सीमित करने वाला, प्रतिबन्ध लगाने वाला, ध्यानपूर्वक परि-भाषा बनाने वाला 4 निर्देश करने वाला, शासन करने वाला,—क 1 स्वामी, शासक 2 सारथि 3 केवट, मल्लाह 4 कर्णधार, विमानचालक।

नियुक्त (भू० क० कृ०) [नि+युज्+क्त] 1 निर्दे-शित, आज्ञप्त, अनुदिष्ट, आदिष्ट 2 अधिकृत, निर्धारित 3. विवादास्पद विषय को उठाने के लिए अनुज्ञात 4 संलग्न 5 उपबद्ध 6. निर्णीत।

नियुक्तिः (स्त्री०) [नि+युज्+क्तिन्] 1 निर्देशाज्ञा, आदेश, हुक्म 2 नियोजन, आयोग, पद, कार्यभार।

नियुतम् [नि+यु+क्त] 1 दस लाख 2 सौ हजार 3 दस हजार करोड़ या १०० अयुत।

नियुद्धम् [नि+युध्+क्त] पैदल युद्ध करना, घमासान युद्ध, व्यक्तिगत लड़ाई।

नियोग [नि+युज्+घञ्] 1 किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2. निर्देशाज्ञा, आदेश, हुक्म, निर्देश, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्तव्य, किसी की देख रेख में आयुक्त कार्य- य सावज्ञं माधव श्रीनियोगे —मालवि० ५।८, मनोनियोगक्रियदोत्सुक मे—रघु० ५।११ अथवा नियोग खल्वीदृशो मदभाग्यस्य —उत्तर० १, आज्ञापयतु को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति शा० १, त्वमपि स्वनियोगमनुरूप कुरु (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगा) (नौकरों को दूर हट जाने के लिए कहने की एक शिष्ट रीति जिसका प्राय नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3 किसी के साथ संलग्न करना 4 आवश्यकता, अनिवार्यता तस्मिन्नेवं नियोगे न स विकल्पपराङ्मुख —रघु० १९।४९ 5 प्रयत्न' चेष्टा 6, निश्चितता, निश्चयन 7 प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निस्स-न्तान विधवा को अपने देवर या और किसी निकट सम्बन्धी के द्वारा सन्तान पैदा कराने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज' कहलाता है, तु० मनु० ९।५९ देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियु-क्तया, प्रजेप्सिताधिगन्तव्या सन्तानस्य परिक्षये—दे० ६०, ६५ भी। (व्यास ने इसी रीति से विचित्रवीर्य की विधवाओं से पाण्डु और धृतराष्ट्र को पैदा किया)।

नियोगिन् (पु०) [नियोग+इनि] अधिकारी, आश्रित, मन्त्री, कार्यनिर्वाहक।

नियोग्यः [नि+युज्+ण्यत्] प्रभु, स्वामी।

नियोजनम् [नि+युज्+ल्युट्] 1 जकड़ना, संलग्न करना 2 आदेश देना, विधान करना 3 उकसाना, प्रेरित करना 4 नियत करना।

नियोज्यः [नि+युज्+यत्] किसी कर्तव्य का कार्यभार सभालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, सेवक, नौकर—सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्या —श० ७।४।

नियोद्धृ(पु०) [नि+युध्+तृच्] 1 योद्धा, पहलवान 2 मुर्गा।

निर् (अव्य०) [नृ+क्विप्, इत्वम्] ('से मुक्त' 'बिना' 'से रहित' 'से दूर' 'से बाहर' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए सघोष व्यञ्जनों और स्वरों से पूर्व 'निस्'

का स्थानापन्न, संज्ञा से पूर्व 'अ' या 'अन्' लगा कर भी इस अर्थ को प्रायः व्यक्त किया जा सकता है, दे० नी० दिए गये समस्त शब्द, दे० 'निस्' और तु० 'अ' से)। सम०—अंश (वि०) 1 पूर्ण, समस्त 2 पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अनधिकारी—अक्ष (ज्यो० में) भोगांश से मुक्त स्थान—अग्नि (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अङ्कुश (वि०) 'जिस पर किसी प्रकार का दबाव न हो,, कोई रोक टोक न हो, नियन्त्रण से मुक्त, उद्दंड, स्वतंत्र स्वेच्छाचारी, उच्छृंखल—निरङ्कुश इव द्विप—माघ०, कामो निष्कामनिरंकुश—गीत० ७, निरंकुशा कवय सिद्धा०, भर्तृ० ३।१०६, महावी० ३।३९,—अक्ष (वि०) 1 अंगहीन 2 साधनहीन, अंजिन (वि०) त्वचारहित, अंजन (वि०) 1 'बिना आंजक का' 2 निष्कलंक, निर्दोष 3 मिथ्यात्व से रहित 4 सीधा-सादा, जिसमें बनावट न हो (न) शिव का विशेषण (ना) पूर्णिमा,—अतिशय (वि०) जिससे बढ़चढ कर दूसरा न हो, अद्वितीय,—अत्यय (वि०) 1 निर्भय, निरापद, सुरक्षित—रघु०१७।५३ 2 निरपराध, निष्कलंक, निर्दोष, निःस्पृह—कि० १।१२, १३।६१, पूर्णतः सफल,—अध्व (वि०) जो रास्ता भूल गया हो, —अनुक्रोश (वि०) निर्मम, निर्दय कठोरहृदय, (शः) निर्दयता, निष्ठुरता—अनुग (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो,—अनुनासिक (वि०) अनुनासिक से भिन्न, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, —अनुरोध (वि०) 1 अननुकूल, अमैत्रीपूर्ण 2 निष्करुण, सद्भावशून्य—मा० १०—अंतर (वि०) 1 सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला, अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरंतराधिपटलैं—माभि० १।१६, निरंतराम्बुतरुचन्दनदृष्टिषु—कु० ५।२५ 2 व्यवधानरहित, निरंतराल; टा हुआ—मुहे निरंतरपयोधरया मयैव मृच्छ० ५।१५, हृदय निरंतरबहलकलिलस्तनमंडलावरणमप्यभिदन्—शि० ९।६६ 3 अवद्ध, सघन—शि० १६।७६ 4 मोटा, स्थूल 5 विश्वसनीय, (मित्र की भांति) ईमानदार, सच्चा 6 सदा आंखों के सामने रहने वाला 7 अभिन्न, समान, समरूप (अव्य०—रम्) 1 निर्बाध, लगातार, सतत, अनवरत 2 बिना किसी मध्यवर्ती अन्तराल के 3 पक्की तरह से, कसकर, दृढ़तापूर्वक—(परिष्वजस्व) कान्तेन्दि मम निरंतरमंगमंगं—वेणी० ३।२७, परिष्वजेते शयने निरंतरम्—ऋतु० २।११ 4 तुरन्त, °अभ्यास अनवरत अध्ययन, सपरिश्रम अभ्यास,—अंतराल (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, सटा हुआ 2 नग्न, भीड़ा, —अन्वय (वि०) 1 निम्नस्तरीय, मर्यादारहित 2 असंबद्ध, संबंधरहित (वाक्य में शब्द की भांति) 3, अप्रासंगिक 4 अमगन, संगतिरहित, अव्यवस्थित 5 अदृश्य, आंख ओझल—मनु० ८।३३२ 6 बिना नौकर-चाकरों के, अनुचरवर्ग जिसके साथ न हो—दे० 'अन्वय',—अपत्रप (वि०) 1 निर्लज्ज, ढीठ 2 साहसी, —अपराध (वि०) निर्दोष, निरीह, दोषरहित, कलंकरहित (-धः) भोलापन,—अपाय (वि०) 1 दुष्टता से रहित 2 क्षयरहित, अनश्वर 3 अमोघ, अचूक, अपेक्ष (वि०) 1 जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतंत्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अधि० के साथ) न्यायनिर्णीतसारत्वाच्चिरपेक्षमिवागमे—कि० ११।३९ 2 अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3 तृष्णा से मुक्त, निर्भय—हि० १।८३ 4 लापरवाह, असावधान, उदासीन 5 सांसारिक विषयवासनाओं से विरक्त—मनु० ६।४१ 6 निःस्पृह, दूसरे से किसी पुरस्कार की इच्छा न रखने वाला भामि० १।५ 7 निष्प्रयोजन, (क्षा) उदासीनता, अवहेलना,—अभिभव (वि०) जो दीनता या तिरस्कार का पात्र न हो,—अभिमान (वि०) 1 जो अहमन्यता से मुक्त हो, घमंड या अहंकार रहित 2 स्वाभिमानशून्य,—अभिलाष (वि०) जिसे किसी वस्तु की चाह न हो, उदासीन—स्वसुखनिरभिलाष लिखसे लोकहेतो—श० ५।५,—अभ्र (वि०) मेघरहित, अमर्ष (वि०) 1 क्रोधशून्य, धैर्यवान् 2 निरीह, अम्बु (वि०) 1 जल से परहेज करने वाला 2 निर्जल, जलरहित,—अर्गल (वि०) अर्गलारहित, प्रतिबंधरहित, निर्बाध, अनियन्त्रित, निर्विघ्न, पूर्णतः मुक्त—मालवी० ५ (अव्य०—त्रम्) मुक्त रूप से, अर्थ (वि१) 1 निर्धन, गरीब, दरिद्र 2 अर्थहीन, (शब्द या वाक्य) निरर्थक 3 अनर्थक 4 व्यर्थ बेकार निष्प्रयोजन—अर्थक (वि०) 1 बेकार व्यर्थ, अलाभकर 2 अर्थहीन, अनर्थक, जिसका कोई तर्कयुक्त अर्थ न हो (-कम्) पूरक—निरर्थकं तु हीत्यादि पूर्णैकप्रयोजनम्—चन्द्रा० २।६,—अर्थकाश (वि०) 1 मुक्त स्थान से रहित 2 जिसके पास फालतू का समय न हो,—अवग्रह (वि०) 1 नियन्त्रण से मुक्त, अनियन्त्रित, अनवरुद्ध, नियन्त्रणरहित, दुर्निवार 2 मुक्त, स्वतंत्र 3 स्वेच्छाचारी, दुराग्रही,—अवद्य (वि०) निष्कलंक, निर्दोष, अकलंकनीय, जिसमें कोई आपत्ति न हो सके—हृद्यनिरवद्यरूपो भूपा बभूव—दश० १, —अवधि (वि०) जिसका कोई अन्त न हो, असीम —उत्तर० ३।४४,—अवयव (वि०) 1 लङ्गरहित 2 अविभाज्य 3 अंगरहित,—अवलंब (वि०) 1 असहाय, निराश्रय—श० ६ 2 जो सहारा न दे —अवशेष (वि०) पूर्ण, पूरा, समस्त,—अशेषेण (अव्य०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, बिल्कुल

—अशन (वि०) भोजन से परहेज करने वाला (नञ्) उपवास,—अस्त्र (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निहत्था,—अस्थि (वि०) बिना हड्डी का,—अहंकार, —अहंकृति (वि०) घमंडरहित, अभिमानशून्य, विनीत नम्र,—अहम् (वि०) अहम्मन्यता से मुक्त, —आकांक्ष (वि०) 1 जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्त 2 (वाक्य या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो,—आकार (वि०) 1 आकृतिशून्य, आकाररहित, बिना रूप का 2. कुरूप, विरूप 3 छद्मवेषी 4 विनम्र, कुशील (पुं०) 1 परमात्मा, सर्वशक्तिमान् 2 शिव की उपाधि 3 विष्णु का विशेषण,—आकुल (वि०) 1 जो घबराया न हो, अनुद्विग्न, जो हतबुद्धि न हुआ हो 2 स्थिर, शान्त 3 स्वच्छ, निर्मल,—आकृति—(वि०) 1 आकाररहित, रूपरहित 2 विरूप (त्रि०) 1 वह ब्रह्मचारी जिसने विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2 विशेषकर वह ब्राह्मण जिसने अपने वर्ण के लिए निर्धारित वेदाध्ययन के कर्तव्य को पूरा न किया हो,—आक्रोश (वि०) जिस पर दोषारोपण न किया गया हो, जिसका तिरस्कार न हुआ हो,—आगस् (वि०) निर्दोष, निरीह, निष्पाप —रघु० ८।४८,—आचार (वि०) आचाररहित, धर्मभ्रष्ट,—आडम्बर (वि०) बिना ढोल का, ढोंगरहित, —आतंक (वि०) 1 भय से मुक्त—रघु० १।६३, 2 नीरोग, सुखद, स्वस्थ,—आतप (वि०) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, (पा) रात, आदर (वि०) अपमानजनक,—आधार (वि०) 1 आधाररहित 2 निराश्रय, आश्रयहीन (आल० भी) निराधारा हा रोदिमि कथय केषामिह पुर—गंगा० ६।३१ —आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त,—आपद् (वि०) आपत्तिरहित, संकटमुक्त, —आबाध (वि०) अमर्यादित, उत्पीडनरहित, बाधारहित, बाधामुक्त, 2 निर्बाध 3 जो बाधक न हो, जो पीडा न पहुँचाता हो 4 (विधि में) (मुकदमा या अभियोग का कारण आदि) मूर्खतापूर्वक प्रवाही—उदा० असदृग्गृहदीपप्रकाशनाय स्वगृहे व्यवहरति-मिता०, —आमय (वि०) 1 रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग, भला-चंगा 2 निष्कलंक, विशुद्ध 3 निष्कपट 4 दोषों से मुक्त, निर्दोष 5 भरा हुआ, संपूर्ण 6 अमोघ (य,-यम्) नीरोगता, स्वास्थ्य, कल्याण, मंगल, आनन्द (य) 1 जंगली बकरी 2 सूअर, —आमिष (वि०) 1 बिना मांस का, मांस न खाने वाला 2 वासनारहित, लालच से मुक्त 3 पारिश्रमिक आदि न पाने वाला,—आय (वि०) जिससे कोई आमदनी या राजस्व प्राप्त न हो, लाभरहित, —आयास (वि०) जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान, —आयुध (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था,—आलंब (वि०) जिसे कोई सहारा न हो, (आल० भी) महावी० ४।५३ 2 जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3 जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निरालंबो लंबोदरजननिं कं यामि शरणम्—जग०,—आलोक (वि०) 1 इधर उधर न देखने वाला 2 दृष्टिहीन 3 प्रकाशरहित, अंधकारयुक्त मा० ५।३०,—आश (वि०) आशाशून्य, निराश, नाउम्मीद—मनो मम्लौ दुःखमतीनिराशम्—रघु० ६।२,—आशंक (वि०) निर्भय, —आशिस् (वि०) 1 आशीर्वाद या वरदान से वञ्चित 2 निरिच्छ, इच्छारहित, निराग, उदासीन —जगच्छरण्यस्य निराशिष सतः—कु० ५।७६ —आश्रय (वि०) 1. आश्रयहीन, जिसे कोई सहारा न हो, आश्रयरहित 2 मित्रहीन, दरिद्र, अकेला, शरणरहित — निराश्रयामद्य वत्सलता—,—आस्वाद (वि०) स्वादरहित, फीका, बेमजा,—आहार (वि०) जिसे भोजन न मिले उपवास करने वाला, भोजन से परहेज करने वाला (—र) उपवास करना,—इच्छ (वि०) बिना इच्छा के, चाहरहित, उदासीन,—इन्द्रिय (वि०) 1 जिसका कोई अंग नष्ट हो गया हो या काम न दे 2 विकलांग, अपांग 3 दुर्बल, अशक्त, कमजोर 4 ज्ञान के साधन से हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—मनु० ९।१८,—इषुक (वि०) इषुरहित,—ईति ऋतुओं के संकट (अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि) से मुक्त—रघु० १।६३, दे० ईति,—ईश्वर (वि०) ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक,—ईषम् हल का फाल,—ईह (वि०) 1 तृष्णा से रहित, उदासीन,—रघु० १०।२१ 2 उद्यमहीन,—उच्छ्वास (वि०) 1 जो श्वास न लेता हो, श्वासरहित (—ञ) श्वास-क्रिया का अभाव,—उत्तर (वि०) 1 उत्तर रहित, बिना उत्तर के 2 जो कुछ उत्तर न दे सके, चुप 3 जिससे बढ़ा कोई और न हो, —उत्सव (वि०) बिना उत्सव का—विरत गेयमृतुनिशासव —रघु० ८।६६,—उत्साह (वि०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति शून्य (ह) उत्साह का अभाव, आलस्य—उत्सुक (वि०) 1 उदासीन 2 शान्त, चुपचाप,—उदक (वि०) जलरहित,—उद्यम,—उद्योग (वि०) निश्चेष्ट, निष्कर्मा, आलसी, सुस्त,—उद्वेग (वि०) उत्तेजना रहित, जिसमें घबराहट न हो, गम्भीर, शान्त, —उपक्रम (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो,—उपद्रव (वि०) 1 संकट या कष्ट से मुक्त, जिसमें या जहां कोई भय या उत्पात न हो, भाग्यशाली, सुखद, निर्बाध,

संत्रास-विपक्षियों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय दुःखों या अत्याचारों से मुक्त 3 जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाये 4. सुरक्षित, शांतिमय, —उपधि (वि०) निष्कपट, ईमानदार—उत्तर० २।२,—उपधिक (वि०) अनुपयुक्त,—उपधेय (वि०) 1. जिसकी कोई उपाधि या पद न हो—मुद्रा० ३ 2. गौण शब्द से असम्बद्ध,—उपप्लव (वि०) बाधा-रहित, जहाँ कोई रुकावट या संकट न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो—निरुपप्लानि न कर्माणि संचरन्ति—शा० ३, —उपम (वि०) अनुपम, बेजोड़, अतुलनीय,—उपसर्ग (वि०) जहाँ उत्पात न होते हों, उपद्रव से रहित,—उपाख्य (वि०) 1 अवास्तविक, मिथ्या, (वंध्यापुत्र की भाँति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2 अभौतिक 3 नीरूप,—उपाय (वि०) उपायरहित, असहाय,—उपेक्ष (वि०) 1. आलसाओ या चालाकी से मुक्त 2. जिसकी उपेक्षा न की गई हो,—उष्मन् (वि०) तापशून्य, शीतल,—गंध (वि०) गंधशून्य, गंधरहित, जिसमें गंध न हो, बिना गंध के —निर्गंधा इव किंशुका, °पुष्पिः (स्त्री०) सेमर का पेड़,—गर्व (वि०) अभिमान-रहित,—गवाक्ष (वि०) जहाँ कोई खिड़की न हो,—गुण (वि०) 1 (धनुष की भाँति) बिना डोरी का 2 संपत्तिशून्य 3 गुण-रहित, बुरा, निकम्मा—निर्गुण शोभते नैव विपुला-ऽक्षरोऽपि सः—भामि० १।११५ 4 जिसका कोई विशेषण न हो 5 जिसकी कोई उपाधि न हो (गः), परमात्मा,—गृह (वि०) जिसका कोई घर न हो, घररहित - सुगृही निर्गृही कृता—पंच० १।३९०, —गौरव (वि०) 1 जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठारहित,—ग्रंथ (वि०) 1 बंधनमुक्त, बाधा-रहित 2 गरीब, संपत्तिरहित, भिखारी 3. अकेला, असहाय (थः) 1 जड़, मूर्ख 2 जुआरी 3 सन्त महात्मा जो सब प्रकार की सांसारिक विषय वास-नाओं को त्याग कर नग्न होकर विचरता है, और दिगम्बर संन्यासी की भाँति रहता है,- ग्राहक (वि०) 1. निपुण, विशेषज्ञ 2 असहाय, अकेला 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4 निष्फल (कः) धार्मिक साधु, क्षपणक 2. दिगंबर साधु 3. जुआरी,—घंटिक नंगा रहने वाला साधु, दिगंबर संप्रदाय का जैन-साधु, क्षपणक,—घट्टम् 1. वह बाजार जहाँ दुकानदारों से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2 बड़ा बाजार जहाँ बहुत भीड़ भड़क्का हो,—घृण (वि०) 1 क्रूर, निष्ठुर, निर्दय 2 निर्लज्ज, बेहया,—चल (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आबाद न हो, जहाँ कोई आता-जाता न हो, एकान्त, सुनसान (लम्) मरुभूमि, एकांत सुनसान जगह, —जर (वि०) 1 जो कभी बूढ़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2 अनश्वर, जिसकी कभी मृत्यु न हो, (रः) देवता, सुर (कर्तृ० ब० व०—निर्जराः -निर्जरस) (रस्) अमृत, सुधा,—जल (वि०) 1 जलरहित, मरुभूमि, जलशून्य 2 जिसमें पानी न मिला हो (लः) ऊसर, बंजर, वीरान उजाड़,—जिह्व मेंढक,—जीव (वि०) 1 प्राणरहित 2 मृतक, —ज्वर (वि०) जिसे बुखार न हो, स्वस्थ,—डेडः शूद्र,—तृण (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्मम, बेरहम, करुणारहित 2 उग्र 3 अतिशय दृढ़, मजबूत, अत्यधिक, प्रचंड—मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंशम्—गीत० १०, निर्दयरतिश्रमालसा —रघु० १९।३२, निर्दयाश्लेषहेतो - मेघ० १०६, —दयम् (अव्य०) 1 निष्ठुरता के साथ, क्रूरतापूर्वक 2 प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक—रघु० ११।८४, —दश (वि०) दस से अधिक दिनों का,—दशन (वि०) बिना दांतों का, -दुःख (वि०) 1 पीड़ा से मुक्त, पीड़ारहित 2 जो पीड़ा न दे, दोष (वि०) 1 निरपराध, दोषरहित—न निर्दोषं न निर्गुणम् 2 अपराधशून्य, निरीह,—द्रव्य (वि०) संपत्तिरहित, गरीब,—द्रोह (वि०) जो शत्रु न हो, मित्रवत्, कृपापूर्ण, जो द्वेषपूर्ण न हो,—द्वन्द्व (वि०) जो सुख-दुःख के द्वंद्वों से रहित हो, हर्ष और विषाद से परे हो,—निर्द्वंद्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् —भग० १।४५ 2 जो औरों पर आश्रित न हो, स्वतन्त्र 3 ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो 4 जो दो से परे हो 5 जिसमें मुकाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का झगड़ा न हो 6 जो दो सिद्धान्तों को न मानता हो,—धन (वि०) संपत्तिहीन, गरीब, दरिद्र—शशिन-स्तुल्यकथोऽपि निर्धनः परिभूयते—काद० ८२, (नः) बूढ़ा बैल,—धर्म (वि०) धर्महीन, अधर्मी,—धूम (वि०) जहाँ धुआँ न हो—नर (वि०) मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, उजाड़,—नाथ (वि०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो,—निद्र (वि०) जिसे नींद न आई हो, जागरूक,—निमित्त (वि०) अकारण बिना कारण का,—निमेष (वि०) बिना पलक झप-काये टकटकी लगाने वाला,—बंधु (वि०) बंधुरहित, मित्रहीन,—बल (वि०) शक्तिरहित, कमजोर, बलहीन,—बाध (वि०) 1 बाधारहित 2 जहाँ प्रायः आना-जाना न हो, एकांत, निर्जन 3 निरुपद्रव,—बुद्धि (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ,—बुध,—बुस (वि०) जिसकी भूसी न निकाली गई हो, जिसमें से भूसा निकाल दिया गया है,— भय (वि०) 1 निडर, निश्शंक 2 भय से मुक्त, सुरक्षित निरापद्—मनु० ९।२५५,—भर (वि०) अत्यधिक, तीव्र, उग्र, बहुत मजबूत—बाणभर निर्भर स्मरशर—गीत० १२,

अमर ४२ 2. उत्सुक 3 दृढ़, प्रगाढ़ (आलिंगन आदि)—कुचकुंभनिर्भरपरीरम्भामृतं याचति—गीत० ५, परिरभ्य निर्भरम्—गीत० १ 4 गाढ़, गहरा (नींद आदि) 5, (समास के अन्त में) भरा हुआ, आक्रान्त०, गर्भ० आदि (रभ्) अधिकता (अव्य०—रभ्) 1 अत्याधिक, अत्यत, बहुत 2 खूब, चैन से—, भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यपूर्ण—भृति (वि०) बेगार में काम करने वाला,—मक्षिक (वि०) 'मक्खियों से मुक्त' निर्बाध, निर्जन, एकांत (अव्य० —म्) बिना मक्खियों के अर्थात् एकान्त, निर्जन—हत भवतेवाणीं निर्मक्षिकम्- श० २।६,—मत्सर (वि०) ईर्ष्यारहित, ईर्ष्या न करने वाला,—मत्स्य (वि०) जहाँ मछलियाँ न हों,—मद (वि०) 1 जो नशे में न हो, सजीदा, गंभीर, शान्त 2 अभिमान-रहित, विनीत 3 (हाथी की भाँति) मदजल से रहित,—मनुज,—मनुष्य (वि०) मनुष्यों से रहित, गैर-आबाद, मनुष्यों द्वारा परित्यक्त,—मन्यु (वि०) बाह्य संसार के सब प्रकार के संबंधों से मुक्त, जिसने सब सांसारिक बंधनों को तिलांजलि दे दी है, संसार मिव निर्ममः (ततार) रघु० १२।६०, भग० २।७१, ३।३०, 2 उदासीन (अधि० के साथ)—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मधुरां मधुराकृतिः—रघु०१५।२८, प्राप्तेष्वर्थेषु निर्ममा—महा०,—मर्याद (वि०) 1. सीमा-रहित, अपरिमित 2 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करने वाला, अनियन्त्रित, उद्दंड, पापमय, अपराधी—मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैं—वेणी० ३।२२,—मल (वि०) 1 मैल और गन्दगी से मुक्त 2 स्वच्छ शुद्ध, अकलुष, निष्कलंकित (आत्मा आदि) घोराभिर्मलतो जनिं - भामि० १।६३ 3 निष्पाप, सद्गुणसंपन्न, मनु० ८।३१८ (लम्) 1. कहानी 2 देवता के चढ़ावे का अवशेष, उच्छिष्ट स्फटिक, मल्लक (वि०) मच्छरों से मुक्त,—मांस (वि०) मांसरहित - मानुष (वि०) जो बसा हुआ न हो, निर्जन, मार्ग (वि०) मार्ग रहित, पथशून्य,—मुहः 1 सूर्य 2 बदमाश (द्यूत) वह बाजार या मेला जहाँ कर या चुंगी न लगे,—मूल 1 (वृक्ष आदि) बिना जड़ का 2. निराधार, आधारहीन (वक्तव्य या दोषारोप आदि) 3 उन्मूलित,—मेध (वि०)निरभ्र, बादलों से रहित, —मेध (वि०) जिसे समझ न हो, निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, मन्दबुद्धि,- मोह (वि०) माया या भ्रम से मुक्त,—यत्न (वि०) निश्चेष्ट, उद्यमहीन यंत्रण (वि०) 1 जहाँ कोई नियंत्रण न हो, निर्बाध, नियंत्रणरहित, प्रतिबन्धशून्य, 2. उद्दंड, स्वेच्छाचारी, स्वातन्त्र्य (भाव्) प्रतिबन्धशून्यता, स्वतन्त्रता,—यशस्क (वि०) जिसकी कीर्ति न हो, अकीर्तिकर, अज्ञात-जनक—यूथ (वि०) जो अपने दल से बिछुड़ गया हो, (हाथी की भाँति) यूथभ्रष्ट,—रक्त (नीरक्त) (वि०) बिना रंग का, फीका,—रज,—रजस्क (वि०) (नीरज, नीरजस्क) 1. धूल से मुक्त, 2. रागशून्य अन्धकार शून्य,—रजस् (वि०) (नीरजस्) दे० 'नीरज' (स्त्री०) रजस्वला न होने वाली स्त्री, तमस या रजस् या अन्धकार का अभाव,—रंध्र (वि०) (नीरंध्र) 1 जिसमें छिद्र न हों, अत्यन्त सटा हुआ, मजबूत, साथ कसा हुआ—उत्तर० २।३ 2 निविड, सघन 3 मोटा, स्थूल,—रव (वि०) (नीरव) शब्द-रहित, ध्वनिशून्य—रघु० ८।५८,—रस (वि०) (निरस) 1. स्वादरहित, बेमजा, रसहीन 2. (अल०) फीका, काव्य सौन्दर्य से विहीन—नीरसानां पद्यानाम् —सा० द० १ 3 सूखा, रूखा, शुष्क—शृंगार० ९ 4 व्यर्थ, बेकार, निष्फल, अलब्धफलनीरसान् मम विधाय तस्मिन् जने—विक्रम० २।११ 5 अधिकार, 6. क्रूर निष्ठुर (वः) अनार,—रसन (वि०) (नीरसन) बिना मेखला या कटिसूत्र के (रसना)—कि० ५।११,—रुच् (वि०) (नीरुच्) कान्तिहीन, म्लान, धूमिल,—रुज्,—रुज (वि०) (नीरुज्, नीरुज) रोग से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी—नीरुजस्य किमौषधैः—हि० १, —रूप (वि०) (नीरूप) रूपरहित, निराकार—रोग (वि०) (नीरोग) रोग या बीमारी से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी,—लक्षण (वि०) 1 अशुभ चिह्नों से मुक्त, अमंगलकारी (मनुष्य) शुभलक्षणवाला 2. जिसकी प्रसिद्धि न हो 3 अनावश्यक, निरर्थक 4 बेढंगा, —लज्ज (वि०) बेशर्म, बेहया, ढीठ,—लिंग (वि०) जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो,—लेख (वि०) 1. जो लिखा हुआ न हो, जिस पर मोहिरा न की गई हो—मनु० ५।११२ 2 निष्कलंक, निष्पाप, —लोभ (वि) लालच से मुक्त, लोभरहित, —लोमन् (वि०) जिसके बाल न हों, बालों से शून्य,—वंश (वि०) जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो, निःसंतान,—वक्त्र,—वक्त्र (वि०) 1 मुख से बाहर 2. मुख से रहित, गंगा, सूखा हुआ,—वस्तु (वि०) धनहीन, गरीब,—वात (वि०) वायु से सुरक्षित या मुक्त, शान्त, चुपचाप,—रघु० १५।६६, (तः) वायु के प्रकोप से मुक्त स्थान,—वासर (वि०) मच्छरों से मुक्त, —वाहन (वि०) सेनाओं से सुरक्षित,—विकल्प,—विकल्पक, (व०) 1. विकल्प से रहित 2. जिसमें दृढ़ संकल्प या निश्चय का अभाव है 3. पारस्परिक संबंध से विहीन 4 प्रतिबन्धयुक्त 5. कर्ता, कर्म या ज्ञाता तथा ज्ञेय के विवेक से रहित एक प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषय का केवल इसी रूप में ज्ञान होता है कि यह कुछ है; जिस प्रकार कि समाधि की

अवस्था में केवल एक ही अभिन्न तत्त्व (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और ज्ञाता, ज्ञेय, तथा ज्ञान के विभेद का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भास नहीं होता—निर्विकल्पक ज्ञातृज्ञानादिविकल्पभेदलयापेक्षं', नोचेत् चेत प्रविश महसा निर्विकल्पे समाधौ—भर्तृ० ३।६१, वेणी० १।२३, (अव्य०—त्यम्) बिना किसी संकोच या हिचक के, —विकार (वि०) 1 अपरिवर्तित, अपरिवर्त्य, निश्चल 2 विकार रहित—मालवि० ५।१४ 3 उदासीन स्वयंहीन—ऋतु० २।२८,—विकास (वि०) जो खिला न हो, अविकसित,—विघ्न (वि०) बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विघ्न-बाधाओं से मुक्त (अव्य्) विघ्नों का अभाव,—विचार (वि०) अविमर्शी, विचार शून्य, अविवेकी - रे रे स्वैरिणि निर्विचारकवित्ते मात्स्मप्रकाशीभव —चन्द्रा० १ 2, (अव्य—रम्) बिना विचारे, निस्संकोच,—विचिकित्स (वि०) सन्देह या शंका से रहित,—विचेष्ट (वि०) गतिहीन, संज्ञाहीन,- वितर्क (वि०) जिस पर तर्क या सोच विचार न किया जा सके, - विनोद (वि०) आमोद प्रमोद से रहित, मनोरंजनशून्य—मेघ० ८६ —विन्ध्या विन्ध्य पहाड़ियों में बहने वाली एक नदी—मेघ० २८,—विमर्श (वि०) विचारशून्य, अविवेकी, सोचविचार न करने वाला,--विवर (वि०) 1 बिना किसी विवर या मुंह के 2 जिसमें कोई छिद्र या अन्तराल न हो, सटा हुआ, शि० ९।४५,—विवाद (वि०) 1 विवाद रहित 2 जिसमें कोई झगड़ा न हो, कोई विरोध न हो, विदवसम्मत,—विवेक (वि०) ना समझ, विवेकशून्य, अदूरदर्शी, मूर्ख,-विशंक (वि०) निडर, निश्शंक, निश्चिन्त —मनु० ७।१७६, पंच० १।८५,—विशेष (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा वयं स्थिति —महा०, निर्विशेषो विशेष —भर्तृ० ३।५०, 'भेद-भावका अभाव ही अन्तर' 2 जहाँ भिन्नता का अभाव हो, समान, तुल्य (प्रायः समास में) अभिन्न - प्रज्ञातनीलोत्पलनिर्विशेषम्—कु० १।४६, स प्रतिपत्तिनिर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रघु० १४।२२ 3 अभेदकारी, गड्ड-मड्ड (क्रि०) अन्तर का अभाव (निर्विशेषम् और निर्विशेषेण शब्द 'बिना किसी भेद-भाव के', 'समान रूप से' 'बिना किसी अन्तर के' अर्थों को प्रकट करने के लिए क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगृहनिर्विशेषमत्र स्थीयताम् —हि० १, रघु० ५।६),—विशेषण (वि०) बिना किसी विशेषण के,—विश्व (वि०) (साथ आदि) जिसमें जहर न हो—निर्विषा दुर्लभा स्मृता —विषय (वि०) 1. अपनी जन्मभूमि या निवास स्थान से निर्वासित किया हुआ--मनो निर्विषयार्थकामया—कु० ५।३८, रघु० ९।२८ 2 जिसे कार्य-क्षेत्र का अभाव हो-- किंचि एव काव्य प्रविरलविषय निर्विषय वा स्यात् —सा० द० १ 3 (मन की भांति) विषय-वासनाओं में अनासक्त ज्ञान (वि०) बिना सींगों का—विहार (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—बीज (बीज) (वि०) 1 बिना बीज का 2 नपुंसक 3 निष्कारण,—वीर (वि०) वीर विहीन--निर्वीरमुर्वीतलम्—प्रस० १।३१ 2 कायर-- वीरा वह स्त्री जिसका पति या पुत्र मर गये हों—वीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, नपुंसक —निर्वीर्यं सुरशापभाषितवशात् किं मे तवेदायुधम्--वेणी० ३।३४, —वृक्ष (वि०) जहाँ पेड़ न हो,—वृष (वि०) जहाँ अच्छे बैल न हों, वेग (वि०) निश्चेष्ट, गतिहीन, शान्त, वेगरहित,—वेतन (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—वेष्टनम् जुलाहे की नरी, ढरकी, —वैर (वि०) वैरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (रम्) शत्रुता का अभाव, व्यजन (वि०) सीधा सादा, खरा 2 बिना मसाले का (अव्य०—नं) सीधा-सादे ढंग से, बेलाग, ईमानदारी से, व्यथ (वि०) 1 पीड़ा से मुक्त 2 शान्त, स्वस्थ,--व्यपेक्ष (वि०) उदासीन, निरपेक्ष रघु० १३।२५, १४।३९, - व्यलीक (वि०) जो किसी प्रकार की चोट न पहुंचाये 2 पीड़ारहित 3 प्रसन्न, मन से कार्य करने वाला 4 निष्कपट, सच्चा, पाखण्डहीन,- व्याज (वि०) जहाँ चोटों का उत्पात न हो,-व्याज (वि०) 1 स्पष्ट का, खरा, ईमानदार, सरल 2 पाखण्डरहित—भर्तृ० २।८२, (अव्य०—जम्) सरलता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप से, अमरु ७१,—व्यापार (वि०) जिसे कोई काम न हो, बेकार, रघु० १५।५६, व्रण (वि०) 1 जिसे चोट न लगी हो, व्रणरहित 2 जिसमें दरार न पड़ी हो,—व्रत (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,-हिंसम् आदे की समाप्ति, हिंसशून्य, —हेति (वि०) निरस्त्र, जिसके पास कोई हथियार न हो,—हेतु (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, या कारण के,—ह्रीक (वि०) 1. निर्लज्ज, बेहया, ढीठ 2 साहसी, निर्भीक।

निरत (वि०) [नि+रम्+क्त] 1 किसी कार्य में लगा हुआ या रुचि रखने वाला 2 भक्त अनुरक्त, सलान, आसक्त --वनवासनिरत का० १५७ 3. प्रसन्न, खुश 4 विश्रान्त, विरत।

निरति (स्त्री०) [नि+रम्+क्तिन्] दृढ़ आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति।

निरयः [निर्+इ+अच्] नरक— निरयमगरद्वारमुद्घाटयन्ती-- भर्तृ० १।६३, मनु० ६।६१।

निरवग्रहणि (लि) का [निर्+अव+ग्रह् (ह्)+ल्युल्+टाप्, इत्वम्] बाड़ा, चाहारदीवारी।

निरस (वि०) [निर्गतो रसो यस्मात् प्रा० ब०] स्वाद-रहित, फीका, सूखा—सः 1 रस की कमी, फीकापन, स्वादहीनता 2 रसहीनता, सूखापन 3 उत्कण्ठा का अभाव, भावना की कमी।

निरसन (वि०) (स्त्री०—नी०) [निर्+अस्+ल्युट्] निकालने वाला, हटाने वाला, दूर भगाने वाला, —शि० ६।४७ 2 उद्गमन या कै करने वाला—नम् 1 निकालना, प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2 मुकरना, वचन-विरोध, अस्वीकृति, इंकार 3 कै करना, थूक देना 4 रोकना, दबाना 5 विनाश, वध, उन्मूलन।

निरस्त (भू० क० कृ०) [निर्+अस्+क्त] 1 दूर डाला हुआ, दूर फेंका हुआ, प्रत्याख्यात, हाँका हुआ, निष्कासित, निर्वासित—कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता रघु० १४।८८ 2 दूर भगाया गया, नष्ट किया गया, अङ्गाय तावदग्नेन तमो निरस्तम्—रघु० ५।७१ 3 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4 दूर हटाया गया, रहित, शून्य—निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपिद्रुमायते हि० १।६९ 5 (बाण आदि) चलाया हुआ 6 निराकृत 7 उगला हुआ, थूका हुआ 8 शीघ्रतापूर्वक उच्चारित 9 फाड़ा हुआ, विनष्ट 10 दबाया हुआ, रोका हुआ 11 (कसम, प्रतिज्ञा आदि) तोड़ा हुआ, —स्तम् 1 अस्वीकृति, इंकार 2 छोड़ देना, हतोत्साहण। सम०—भेद (वि०) सब प्रकार के भेद-भाव हटाये हुए, वही, समरूप,—राग (वि०) जिसने समस्त सांसारिक अनुरागों का त्याग कर दिया है।

निराक [निर्+अक्+घञ्] 1 पकाना 2 स्वेद, पसीना 3 दुष्कर्मों का निस्तार (निपाक भी)।

निराकरणम् [निर्+आ+कृ+ल्युट्] 1 प्रत्याख्यान करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना निराकरणविकत्थना शि० ६, 2 निर्वासन 3 अवज्ञा, विरोध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4 खण्डन, उत्तर 5 तिरस्कार 6 यज्ञ के मुख्य कर्तव्यों की उपेक्षा 7 विस्मृति।

निराकरिष्णु (वि०) [निर्+आ+कृ+इष्णुच्] 1 प्रत्याख्यान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल बाहर करने वाला—रघु० १४।५७ 2 विघ्न डालने वाला, बाधक 3 ठुकराने वाला, तिरस्कार 4 किसी को किसी वस्तु से वंचित करने की चेष्टा करने वाला।

निराकुल (वि०) [निर्+आ+कुल्+क] 1 भरा हुआ, व्याप्त, ढका हुआ अलिकुलमकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे—गीत० १ 2 दुःखी—दे० 'निर्' के अन्तर्गत भी।

निराकृतिः (स्त्री०) निराकरण [निर्+आ+कृ+क्तिन्, निर्+आ+कृ+अ+टाप्] 1 प्रत्याख्यान, निष्कासन, अस्वीकरण 2 इंकार 3 अवज्ञा, विघ्न, रुकावट, हस्तक्षेप निरोध, प्रतिरोध।

निराग (वि०) [निर्गत रागो यस्मात् प्रा० ब०] उत्कण्ठा-रहित, जिसमें जोश न रहे।

निरादिष्ट (वि०) [निर्+आ+दिश्+क्त] जो ऋण वापिस कर दिया गया हो।

निरामालु [नि+रम्+आलु] कैथ का वृक्ष।

निरासः [निर्+अस्+घञ्] 1 प्रक्षेपण, निर्वासन बाहर फेंक देना, हटाना 2 उगलना 3 निराकरण 4 विरोध।

निरिणिणी,—णी [नि निभृत जनमिङ्गति प्राप्नोति—निर्+इङ्+इनि+ङीप्] परदा, घूघट।

निरीक्षणम्, निरीक्षा [निर्+ईक्ष्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1 दृष्टि 2 देखना, ध्यान देना, नजर डालना, अवलोकन करना 3 ढूंढना, खोजना 4 विचार, खयाल,—निरीक्षणा को वाजन, के विषय 5 आशा, प्रत्याशा 6 महदृशा।

निरीश, शम् [निर्+ईश्+(य्)+क] हल का फाल।

निरुक्त (वि०) [निर्+वच्+क्त] 1 अभिहित, उच्चरित, अभिव्यक्त, परिभाषित 2 उच्चस्वर से बोला हुआ, स्पष्ट,—क्तम् 1 व्याख्या, निर्वचन, व्युत्पत्ति-सहित व्याख्या 2 छ वेदांगों में एक जिसमें अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की गई है, विशेषकर वैदिक शब्दों की—नाम च धातुजमाह निरुक्ते—नि० 3 यास्क द्वारा निघण्टु पर किया गया भाष्य।

निरुक्ति (स्त्री०) [निर्+वच्+क्तिन्] 1 व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्तिसहित व्याख्या 2 (अल० शा० में) एक काव्यालंकार जिसमें शब्द की व्युत्पत्ति की मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इस प्रकार है—निरुक्तियोगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्पनम्, ईदृशैश्चारितैर्जाने सत्यं दोषाकरो भवान्—चन्द्रा० ५।१६८, (दोषाकर=दोषाणामाकर)।

निरुत्सुक (वि०) [निर्+उद्+सू+क्विप्+कन्, ह्रस्व] 1 अत्यंत आतुर, 2 उत्सुकतारहित, उदासीन।

निरुद्ध (भू० क० कृ०) [नि+रुध्+क्त] 1 अवधारित, प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, नियन्त्रित, दमन किया गया—उत्तर० १।२७ 2 संसीमित, बंदीकृत। सम०—कंठ (वि०) जिसका सांस रुक गया हो, दम घुट गया हो,—गुदः मलद्वार का अवरोध।

निरूढ (वि०) [नि+रुह्+क्त] परंपरागत, प्रचलित, रूढ़ (शब्द का अर्थ वि० यौगिक अर्थात् व्युत्पत्यर्थ) यौगं कांचिदवयवार्थमस्य निरूढा सैव सा चलति यत्र हि चित्तम्—नै० ५।५७ 2 अभिव्याहृत,—ढः

1. अन्तर्निधान, न्यास (जैसा कि "न्यास" में 'न्यासिमा')। सम०—लक्षणा शब्द का वह गौण प्रयोग जो वक्ता के विशेष आशय या विवक्षा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोकरूढ़ प्रचलन पर आधारित है।

निरूढिः (स्त्री०) [नि+रुह्+क्तिन्] 1 प्रसिद्धि, ख्याति 2. जानकारी, परिचय, प्रवीणता—नृपविद्यासु निरूढिमागता—कि० २।६ 2 समुष्टि।

निरूपणम्,—ना [नि+रूप्+णिच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. रूप, आकृति 2 दृष्टि, दर्शन 3 ढूंढना, खोजना 4. निश्चयन, अन्वेषण, निर्धारण 5 परिभाषा।

निरूपित (भू० क० कृ०) [नि+रूप्+णिच्+क्त] 1. देखा गया, खोजा गया, चिह्नित, अवलोकित 2 नियत, चुना हुआ, निर्वाचित 3 विवेचन किया गया, विचार किया गया 4 निश्चय किया गया, निर्धारित।

निरूहः [नि+रुह्+घञ्] 1 वस्तिकर्म का एक प्रकार 2. तर्क, युक्ति 3 निश्चितता, निश्चय 4 वाक्य जिसमें न्यूनपद न हो, सपूर्ण वाक्य।

निर्ऋतिः [निर्+ऋ+क्तिन्] 1 क्षय, नाश, विघटन 2 संकट, अनिष्ट, विपदा, विपत्ति—सा हि लोकस्य निर्ऋतिः—उत्तर० ५।३० 3 अभिशाप, आक्रोश 4. मृत्यु, मूर्तिमान् विनाश, मृत्यु या विनाश की देवी, दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ११।११९।

निरोधः, निरोधनम् [नि+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 कैद करना; रोकागार में रखना, हवालात में रखना—मनु० ८।२१०,३७५ 2. घेरना, ढक देना - अमर ८७ 3 प्रतिबन्ध, रोक, दमन, नियमन—योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः—योग०, कु० ३।४८ 4 रुकावट, अवरोधा, विरोध 5 चोट पहुँचाना, दण्ड देना, क्षति पहुँचाना 6 ध्वंस, विनाश 7 अरुचि, नापसदगी 8 निराशा, भग्नाशा।

निर्गः [निर्+गम्+ड] देश, प्रदेश, स्थान।

निर्गंधनम् [निर्+गन्ध+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्गमः [निर्+गम्+अप्] 1 बाहर जाना, चले जाना—रघु० ११।३ 2 विदायगी, ओझल होना—रघु० १९।४६ 3 द्वार, मार्ग, निकास—कथमप्यवाप्तनिर्गम प्रमदा—का० १५९ 4 निष्क्रमण, बाहर जाने का द्वार।

निर्गमनम् [निर्+गम्+ल्युट्] बाहर निकलना या चले जाना।

निर्गुंडः [निर्+गुड्+क] वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रंथनम् [निर+ग्रन्थ्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्घंटः, -टम् [निर्+घट्+घञ्] 1 शब्दावली, शब्द समूह 2 सूचीपत्र।

निर्घर्षणम् [निर्+घृष्+ल्युट्] रगड़, टक्कर।

निर्घातः [निर्+हन्+घञ्] 1 विनाश 2 बवंडर, हवा का प्रचंड झोंका, आँधी 3 हवा की सनसनाहट, आकाश में हवा के झोंकों के टकराने का शब्द निर्घातोर्वी कुजलीनाञ्च जिघासुर्ज्यानिर्घोषै क्षोभयामास सिंहान्—रघु० ९।६४, मनु० १।३८, ४।१०५, ७ याज्ञ० १।१४५, (वायुना निहतो वायुसंज्ञनाञ्च पतत्यध, प्रचंडघोरनिर्घोषो निर्घात इति कथ्यते) 4 भूकंप 5 वज्रपात—अहह दारुणो दैवनिर्घातः—उत्तर० २।

निर्घातनम् [निर्+हन्+णिच्+ल्युट्] बलपूर्वक बाहर निकालना, प्रकाशित करना।

निर्घोषः [निर्+घुष्+घञ्] 1 ध्वनि—वेणी० ४, रघु० १।३६ 2 निनाद, खड़खड़ाहट, ठनक—ज्यानिर्घोषै क्षोभयामास सिंहान्—रघु० ९।६४, भारतीनिर्घोष—उत्तर० ३।

निर्जय, निर्जिति (स्त्री०) [निर्+जि+अच्, क्तिन् वा] पूरी विजय, वशीकरण, परास्त करना।

निर्झरः,—रम् [निर्+झृ+अप्] झरना, जल प्रपात, घनघोरवृष्टि, वारिप्रवाह, पहाड़ी झरना - गीत निर्झरवारिपानम्—नागा० ४, रघु० २।१३, शा० २।१७, २१, ४।६,—र 1 भूसी जलाना 2 हाथी 3 सूर्य का घोड़ा।

निर्झरिन् (पु०) निर्झर+इनि] पहाड़।

निर्झरिणी, निर्झरी [निर्झरिन्+ङीष्, निर्झर+ङीष्] नदी, पहाड़ी झरना—स्खलन्मुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्य—उत्तर० २।२०।

निर्णय [निर्+नी+अच्] 1 दूरीकरण, हटाना 2 पूर्ण निश्चय, फैसला, प्रकथन, निर्धारण स्थिरीकरण संदेहनिर्णयो जात - श० १।२७, मनु० ८।३०१, ४०९, ९।२५०, याज्ञ० २।१० हृदय निर्णयमेव धावति—कि० २।२९ 3 घटना, अटकल, उपसंहार, (तर्क० में) प्रदर्शन 4 विचारविमर्श, गवेषणा, विचारण 5 किसी विचारपति द्वारा किसी विवाद के विषय में स्थिर किया गया मत, व्यवस्था, फैसला—सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णयाभ्युपगमो दोषाय—मालवि० १। सम०—आज्ञा: निर्णय की आज्ञप्ति, फरमान, व्यवस्था (विधि में)।

निर्णायकः (वि०) [निर्+नी+ण्वुल्] निर्णय देने वाला, अन्तिम फैसला करने वाला।

निर्णायनम् [निर्+नी+ल्युट्] 1. निश्चय करना 2 हाथी के कान का बाहरी कोण।

निर्णिक्त (भू० क० कृ०) [निर्+निज्+क्त] धुला हुआ, साफ किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ - रघु० १७।२२।

निर्णिक्तिः (स्त्री०) [निर्+निज्+क्तिन्] 1. धुलाई 2 प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ४।२५ ।

निर्णेकः [निर्+निज्+घञ्] 1. धुलाई, सफाई 2. संशालन 3 परिशोधन, प्रायश्चित्त ।

निर्णेजकः [निर्+निज्+ण्वुल्] धोबी ।

निर्णेजनम् [निर्+निज्+ल्युट्] 1 संशालन 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन (किसी अपराध के लिए) ।

निर्णोदः [निर्+निद्+घञ्] दूर करना, निर्वासन ।

निर्तृण,—ड (वि०) [=निर्गत तृणो० साधु] 1 निष्कृपण, नृशंस, निर्मम 2 दूसरों की त्रुटियों पर हर्ष मनाने वाला 3 ईर्ष्यालु 4 गालीगलौज करने वाला, पिशुन 5. व्यर्थ, अनावश्यक 6 प्रचंड 7 पागल, उन्मत्त ।

निर्दरः,—रिः [निर्+दृ+अप्, इन्+वा] कन्दरा गुफा ।

निर्दलनम् [निर्+दल्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, तोड़ना, नष्ट करना ।

निर्दहनम् [निर्+दह्+ल्यु] जलाना, दग्ध करना ।

निर्दातृ (पु०) [निर्+दा (दो)+तृच्] 1 निराने वाला 2 दाता 3 किसान, खेती काटने वाला ।

निर्दारित (वि०) [निर्+दृ+णिच्+क्त] 1 फाड़ा हुआ, विदीर्ण 2 खोला हुआ, काट कर खोला हुआ —शि० १८।२८ ।

निर्दिग्ध (भू० क० कृ०) [निर्+दिह्+क्त] 1 लेप किया हुआ, मालिश की हुई 2 सुपोषित, स्थूलकाय, हृष्ट पुष्ट ।

निर्दिष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+दिश्+क्त] 1 इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, संकेतित 2 विशिष्ट, विशिष्टीकृत 3 वर्णित 4 अधिन्यस्त, नियत 5 दृष्टांतपूर्वक कहा हुआ, प्रकथित 6 निश्चय किया हुआ निर्धारित 7 आदिष्ट ।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] 1 इशारा करना, दिखलाना, संकेत करना 2 आदेश, हुक्म, निदेश —रघु० १२।१७ 3 उपदेश, अनुदेश 4 बतलाना, कहना, घोषणा करना 5 विशेषता करना, विशिष्टीकरण, विशिष्टता, विशिष्टोल्लेख अयुक्तोय निर्देश —महा०, भग० १७।२३ 6 निश्चय 7 पड़ोस, सामीप्य ।

निर्धार, निर्धारणम् [निर्+धृ+णिच्+घञ् ल्युट् वा] 1 बहुतों में से एक को विशिष्ट करना, या पृथक् करना —यतश्च निर्धारणम् —पा० २।३।४१, विक्रम० ३।९२ 2 निश्चय करना, फैसला करना, निर्णय करना 3. निश्चितता, निश्चय ।

निर्धारित (भू० क० कृ०) [निर्+धृ+णिच्+क्त] निर्धारण किया गया, निश्चय किया गया, स्थिर किया गया, निश्चित किया गया, दे० 'निस्' पूर्वक धृ ।

निर्धूत (भू० क० कृ०) [निर्+धू+क्त] 1. हिलाया गया, हटाया गया रघु० १२।५७ 2 परित्यक्त, अस्वीकृत 3 वंचित, रहित 4 टाला गया 5 निराकृत 6 नष्ट किया गया, (दे० 'निस्' पूर्वक 'धू') ।

निर्धौत (भू० क० कृ०) [निर्+धाव्+क्त] 1 धो दिया गया, रघु० ५।४३ 2 चमकाया गया, उज्ज्वल ।

निर्बंधः [निर्+बध्+घञ्] 1 आग्रह, हठ, जिद, दुराग्रह निबंधसजातरुषा (गुरुणा)—रघु० ५।२१, कु० ५।६६ 2 दृढ़ाग्रह, भारी मांग, अत्यावश्यकता [निर्बंधपृष्ट स जगाद—रघु० १४।३२, अत एव खलु निबंध —श० ३ 3 ठिठाई 4 दोषारोपण 5 कलह, झगड़ा ।

निर्बर्हण—दे० निबर्हण ।

निर्भट (वि०) [निर्+भट्+अच्] कठोर, दृढ ।

निर्भर्त्सनम्,—ना [निर्+भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 धमकी, घुड़की,—शि० ६।६२ 2 गाली, झिड़की, बुरा-भला कहना, दोषारोपण 3 दुर्भावना 4 लाल रंग, लाख ।

निर्भेदः [निर्+भिद्+घञ्] 1 फट जाना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना 2 फटन, दरार 3 स्पष्ट उल्लेख या घोषणा—मालवि० ४ 4 नदी का तल 5 किसी बात का निर्धारण ।

निर्मंथ, निर्मंथन, निर्मंथ, निर्मंथन [निर्+मथ्+घञ्, ल्युट् वा, निर्+मथ्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना, मथना, हिलाना 2 दो अरणियों (लकड़ी के टुकड़ों) को आग पैदा करने के लिए आपस में रगड़ना, अरणि ।

निर्मंथ्य (वि०) [निर्+मथ्+ण्यत्] 1 हिलाये जाने या मथे जाने के योग्य 2 (आग की भांति) रगड़ से पैदा करने के योग्य—ध्यम् अरणि (वह लकड़ी जिसे रगड़ कर आग पैदा की जाती है) ।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] 1 मापना, नाप—यतश्चाध्वकालनिर्माणम् —पा० २।३।२८ वार्ति० 2 माप, फैलाव, विस्तार अयमप्राप्तनिर्माण (बाल) —रामा० 'पूर्ण विकास को अभी प्राप्त नहीं हुआ' 3 उत्पादन, रचना, निर्मिति, ईदृशो निर्माणभाग परिणत —उत्तर० ४ 4 सृष्टि, रचित वस्तु रूप—निर्माणमेवहि तदादरलालनीयम्—मा० २।४९, 5 रूप, बनावट, आकृति —शरीरनिर्माणसदृक्षा नन्वस्यानुभाव —महावी० १ 6 रचना, कृति) भवन —ता उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति ।

निर्माल्यम् [निर्+मल्+ष्यत्] 1 शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलंकता 2 किसी देवता के चढ़ावे का अवशेष, फूल आदि—निर्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरे का षट्पदाना रति —शृंगार० १० 3. देवता पर समर्पित

करने के पश्चात् मुर्झाये हुए फूल—निर्माल्यैरथ नृपतेरर्चनीयितानाम्—शि० ८।६० 4 अवशेष।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर्+मा+क्तिन्] उत्पादन, सृजन, निर्माण, कलात्मक वस्तु की रचना—नवरसरुचिरा निर्मितिर्भावयन्ती भारती कवेर्जयति।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [निर्+मुच्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ—रघु० १।४६ 2 सांसारिक अनुरागों से मुक्त 3 वियुक्त, अलग किया हुआ,—त्वक् साँप जिसने हाल ही में अपनी केंचुली छोड़ी हो।

निर्मूलनम् [निर्+मूल+णिच्+ल्युट्] उच्छेदन, जड़ से उखाड़ फेंकना, उन्मूलन (आल० भी) कर्मनिर्मूलनक्षम—भर्तृ० ३।७२।

निर्मृष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+मृज्+क्त] पोंछा गया, धोया गया, रगड़ा गया निर्मृष्टरागोऽधर—मा० द० १।

निर्मोक [निर्+मुच्+घञ्] 1 मुक्त करना, स्वतन्त्र करना 2 खाल, झिल्ली, विशेष रूप से केंचुली रघु० १६।१७, शि० २०।४७ 3 कवच जिरहबख्त 4 आकाश, अन्तरिक्ष।

निर्मोक्ष [निर्+मोक्ष+घञ्] मुक्ति, छुटकारा रघु० १०।२।

निर्मोचनम् [निर्+मुच्+ल्युट्] मुक्ति, छुटकारा।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] 1 निष्क्रमण, बाहर जाना, प्रस्थान करना, विदायगी 2 अन्तर्धान, ओझल 3 मरण, मृत्यु 4 चिन्तन मुक्ति, परमानन्द 5 हाथी की आँख का बाहरी किनारा—वारण निर्याणभागेऽभिघ्नन्—दश० ९७, निर्याणनिर्यदसृज चलित निषादी शि० ५।४१ 6 पशुओं के पैर बाँधने की रस्सी, पैंकड़ा—निर्याणहस्तस्य पुरो दुवक्षत—शि० १२।४१।

निर्यातनम् [निर्+यत्+णिच्+ल्युट्] 1 वापिस करना, लौटाना, अर्पण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण करना 2 ऋणपरिशोध 3 उपहार, दान 4 प्रतिहिंसा, बदला (जैसा कि 'वैर निर्यातन') 5 वध, हत्या।

निर्यातिः (स्त्री०) [निर्+या+क्तिन्] 1 निकलना, प्रस्थान 2 इस जीवन से विदा लेना, मरण, मृत्यु।

निर्यामः [निर्+यम्+णिच्+घञ्] मल्लाह, कर्णधार या चालक, नाविक, नाव खेने वाला।

निर्यासः,—सम् [निर्+यस्+घञ्] वृक्षों या पौधों का निःस्रवण, गोंद, रस, राल—शालनिर्यासगन्धिभि—रघु० १।३८, मनु० ५।६ 2 अर्क, सार, काढ़ा 3 कोई गाढ़ा तरल पदार्थ।

निर्यूह [निर्+उह+क, पृषो० साधु] 1 कंगूरा, मीनार, बुर्ज या कलश (जो स्तम्भ या दरवाजों पर बनाया जाता है) वितर्दिनिर्यूहविटंकनीड—शि० ३।५५, (यहाँ मल्लिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं—"मत्त वारणस्य उपरिष्टात्" और वैजयन्ती का उद्धरण देते हैं, सम्भवतः इसका नाम इसके हाथी के रूप की समानता के कारण पड़ा है) चारुतोरणनिर्यूहा—रामा० 2 शिरोभूषण, चूड़ामणि, मुकुट 3 दीवार में लगी खूटी 4 दरवाजा, फाटक 5 मन्च, काढ़ा।

निर्लुञ्चनम् [निर्+लुञ्च्+ल्युट्] उखाड़ना, फाड़ना, छीलना।

निर्लुण्ठनम् [निर्+लुण्ठ्+ल्युट्] 1 लूटना, लूटखसोट 2 फाड़ डालना।

निर्लेखनम् [निर्+लिख्+ल्युट्] 1 खुरचना, खरोंचना, नोंचना 2 खुरचनी, रांपी।

निर्लेयनी [निर्+ली+ल्युट् पृषो० साधु] साँप की केंचुली।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] 1 उक्ति, उच्चारण 2 लोकप्रसिद्ध उक्ति लोकोक्ति 3 व्युत्पत्तिसहित, व्युत्पत्ति 4 शब्दावली, शब्दसूची।

निर्वपणम् [निर्+वप्+ल्युट्] 1 उंडेल देना, भेंट करना 2 विशेष रूप से पितरों को पिण्डदान, तर्पण—मनु० ३।२८८, २६० 3 उपहार प्रदान करना 4 पुरस्कार, दान।

निर्वर्णनम् [निर्+वर्ण्+ल्युट्] 1 नजर डालना, देखना दृष्टि 2 चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक अवलोकन करना।

निर्वर्तक (वि०) (स्त्री०—त्रिका) [निर्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] पूरा करने वाला, निष्पन्न करने वाला, समाप्त करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, सम्पन्न करने वाला।

निर्वर्तनम् [निर्+वृत्+णिच्+ल्युट्] निष्पत्ति, पूर्ति, कार्यान्वित।

निर्वहणम् [निर्+वह+ल्युट्] 1 अन्त, पूर्ति शि० १४।६३ 2 निर्वाह करना, अन्त तक निबाहना, जीवित रखना मानस्य निर्वहणम्—अमरु 3 ध्वंस, सर्वनाश 4 (नाटकों में) उपसंहृति, वह अन्तिम अवस्था जब कि महान् परिवर्तन का अन्तिम क्षण हो, नाटक या उपन्यास आदि का उपसंहार—तस्मिं निमित्तं कुरु—विकृतनाटकस्येव अन्यन्मुखेऽन्यनिर्वहणे—मुद्रा० ६।

निर्वाण (भू० क० कृ०) [निर्+वा+क्त] 1 फूंक मार कर बुझाया हुआ, (आग या दीपक की भाँति) बुझाया गया—निर्वाण-वैरदहना, प्रशमादरोणाम्—वेणी० १।७, कु० २।२३ 2 खोया हुआ, लुप्त 3 मृत, मरा हुआ 4 जीवन से मुक्त 5 (सूर्य की भाँति) अस्त 6 शान्त, चुपचाप 7 डूबा हुआ,—अग्नि 1 बुझाना—१।१३१, शनैर्निर्वाणमाप्नोति निरिन्धन इवानलः—महा० 2 दृष्टि से ओझल होना, लोप

होना 3 विघटन, मृत्यु 4 माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, शाश्वत आनन्द—निर्वाणमपि मन्येऽहमन्तराय जयश्रिय –कि० ११।६९, रघु० १२।१ 5 (बौद्ध-विषयक) सांसारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बौद्धों की मोक्षप्राप्ति 6 पूर्ण और शाश्वत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८।३९ 7 पूर्ण संतोष या आनन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अये लब्धं नेत्रनिर्वाणम् —श० ३, मालवि० ३।१, शि० ४।२३, विक्रम० ३।२१ 8 विश्राम, विराम 9. शून्यता 10 सम्मिलन, साहचर्य, संगम 11 हस्तिस्नान—दे० 'अनिर्वाण' रघु० १।७१ में 12 विज्ञान में शिक्षण। सम०—भूयिष्ठ (वि०) प्रायः आलों से ओझल या लुप्त—निर्वाणभूयिष्ठमधास्य वीर्यं सधुक्षयतीव वपुर्गुणेन —कु० ३।५२,—मस्तक मुक्ति, मोक्ष।

निर्वादः [निर्+वद्+घञ्] 1 दोषारोपण, दुर्वचन 2 बदनामी, लोकापवाद, परिवाद—रघु० १४।३४ 3 शास्त्रार्थ का निर्णय 4 वाद का अभाव।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] दे० 'निर्वपणम्'।

निर्वापणम् [निर्+वप्+णिच्+ल्युट्] 1 चढ़ावा, आहुति, पिंडदान या श्राद्ध 2 भेंट, दान 3 बुझाना, गुल करना 4 उड़ेलना, बखेरना, (बीज का) बोना 5 पुरस्कार, प्रदान 6 निराकरण, उपशमन, शान्ति —कर्तव्यानि दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि—उत्तर० ३ 7 विनाश 8 वध, हत्या 9 ठण्डा करना, विश्रांति करना—शरीरनिर्वापणाय—श० ३ 10 प्रशीतल और ठंडा उपचार।

निर्वासः, निर्वासनम् [निर्+वस्+घञ्, निर्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 निकालना, निर्वासित करना, देशनिकाला देना 2 वध, हत्या।

निर्वाहः [निर्+वह्+घञ्] 1 निबाहना, निष्पन्न करना, संपन्न करना 2 संपूर्ति, अन्त 3 अन्ततक निबाहना, सहारा देना, दृढ़तापूर्वक डटे रहना, धैर्य—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८ 4 जीवित रहना 5 पर्याप्ति, यथेष्ट व्यवस्था, अक्षमता 6 वर्णन करना, बयान करना।

निर्वाहणम् [निर्+वह्+णिच्+ल्युट्] दे० 'निर्वहण'।

निर्विण्ण (भू० क० कृ०) [निर्+विद्+क्त] 1 निर्वेदयुक्त, खिन्न, मूच्छ० १।१४ 2 भय या शोक से अभिभूत 3 शोक से कृश 4 दुःखित, पतित 5 किसी वस्तु से घृणा—मत्स्याशनस्य निर्विण्ण —पञ्च० १ 6 क्षीण, मुर्झाया हुआ 7 विनम्र, विनीत।

निर्विष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+विश्+क्त] 1 उपभुक्त, अवाप्त, अनुभूत 2. पूर्णतः उपभुक्त—रघु० १२।१, 3 पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त—निर्विष्ट वैश्यशूद्रयोः—गौ० 4 विवाहित 5 व्यस्त।

निर्वृत (भू० क० कृ०) [निर्+वृ+क्त] 1 संतृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न, निर्वृती स्थ –श० २।४ 2 निश्चिंत, बेफिक्र, आराम में 3 विश्रान्त, समाप्त।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर्+वृ+क्तिन्] 1 संतृप्ति, प्रसन्नता, सुख, आनन्द, व्रजति निर्वृतिमेकपदे मन —विक्रम० २।९, रघु० ९।३८, १२।६५, श० ७।१९ शि० ४।६४, १०।२८, कि० ३।८ 2 शान्ति, विश्राम, विश्रान्ति 3 मुक्ति, निर्वाण—द्वार निर्वृतिसद्मनो विजयते कृष्णेतिवर्णद्वयम्—भामि० ४।१४ 4 संपूर्ति, निष्पत्ति 5 स्वतन्त्रता 6 अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्वृत्त (भू० क० कृ०) [निर्+वृत्+क्त] निष्पन्न, अवाप्त, सम्पन्न।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) [निर्+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मनु० १२।१।

निर्वेदः [निर्+विद्+घञ्] 1 घृणा, जुगुप्सा 2 अतितृप्ति, थक जाना 3 विषाद, निराशा, अवसाद—परिभवान्निर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४ 4 दीनता 5 शोक 6 विरक्ति—भग० २।५२, (एक प्रकार की भावना जिससे शान्तरस का उदय होता है—काव्य०—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः 7 स्वाभिमान, दीनता (तेंतीस संचारिभावों में से एक), नु० रस० में दी गई परिभाषा से, निम्नांकित दृष्टान्त दिया गया है - यदि लक्ष्मण सा मृगेक्षणा न मदीक्षणवर्त्मनि संपेष्यति, अमुना जडजीवितेन मे जगता वा विफलेन किं फलम्।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1 लाभ, प्राप्ति 2 मजदूरी, भाड़ा, नौकरी 3 भोजन, उपभोग, सेवन 4 भुगतान की अदायगी 5 प्रायश्चित्त, परिशोधन 6 विवाह 7 मूर्छित होना, बेहोश होना 8 छिद्र, रंध्र।

निर्व्यूढ (भू० क० कृ०) [निर्+वि+वह्+क्त] 1 पूरा किया गया, समाप्त किया गया 2 उद्गतया उदित, वर्धित, विकसित-मुहूर्तनिर्व्यूढविस्मय—मा० ७, निर्व्यूढसौहृदभरेति—६।१७, (उपचित—जगदर) 3 प्रतिसमर्थित, पूर्णतः प्रदर्शित, सत्यप्रमाणित, श्रद्धापूर्वक या अन्त तक पालन किया गया—हा तात जटायो निर्व्यूढस्तेऽपत्यस्नेह —उत्तर० 3 निर्व्यूढ समाधानभारो बुद्धरक्षितया—मा० ८, निर्व्यूढ तातस्य कापालिकव्रतम्—मा० ४।९, १०, महावी० ७।८ 4 परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्व्यूढिः (स्त्री०) [निर्+वि+वह्+क्तिन्] 1 अन्त, पूर्ति 2 शिखर, उच्चतम बिंदु।

निर्व्यूहः [निर्+वि+वह्+घञ्] दे० 'निर्यूह' 1. कमरा 2 शिरस्त्राण, कलगी 3 दरवाजा, फाटक 4 दीवार में लगी खूँटी या ब्रैकेट 5. काढ़ा।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] 1 शव का दाहसंस्कार के लिए ले जाना, शव को चिता पर रखना 2 ले जाना, बाहर निकालना, निचोड़ना, हटाना 3 जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना।

निर्हारः [निर्+हृद्+घञ्] मलोत्सर्ग, मलत्याग।

निर्हारः [निर्+हृ+घञ्] 1 ले जाना, दूर करना, हटाना 2. बाहर खींचना, उखाड़ना 3 जड़ से उखाड़ना, विनाश 4 मृतक शरीर को दाह संस्कार के लिए ले जाना 5 निजी धन संचय, निजी जमा —मनु० ९।१९९ 6 मलत्याग, (वि० आहार)।

निर्हारिन् (वि०) [निर्+हृ+णिनि] । पालन करने वाला 2 व्याप्त, (गणादिक) विस्तारशील 3 गंधयुक्त।

निर्हृतिः (स्त्री०) [निर्+हृ+क्तिन्] मार्ग से हटाना, दूर करना।

निर्ह्रादः [निर्+ह्लद्+घञ्] ध्वनि,—रघु० १।०१।

निलयः [नि+ली+अच्] 1 छिपने का स्थान, (जानवरों का) भट या माद, (पक्षियों का) घोसला—शि० ९।४ 2 आवास, निवास, घर, गृह (प्रायः समास के अन्त में) रहने वाला, वास करने वाला 3 अस्त होना, छिपना- दिनान्ते निलयाय गतुम्-रघु० २।१५, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है)।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] 1 किसी स्थान पर बसना, उतरना 2 शरणगृह, घर, गृह, आवास।

निलिंपः [नि+लिप्+श, नुम्] 1 देवता निलिंपैर्मुक्ता-नपि च निरयान्तानिपतितान्- गंगा० १५ 2 मरुतों का दल। सम०—निर्झरी स्वर्गीय गंगा।

निलिंपा, निलिंपिका [निलिम्प+टाप्, कन्+टाप्, इत्व च] गाय।

निलीन (भू० क० कृ०) [नि+ली+क्त] 1 पिघला हुआ या गला हुआ 2 बन्द या लिपटा हुआ, गुप्त 3 अन्तर्ग्रस्त, घिरा हुआ, परिवलयित 4 ध्वस्त, नष्ट 5 परिवर्तित, रूपान्तरित (दे० नि पूर्वक ली)।

निवचने (अव्य०) [प्रा० स०] न बोलना, बोलना बन्द करके, जिह्वा को रोक कर ('कृ' के साथ प्रयुक्त होने पर 'गति' के रूप में या उपसर्ग के रूप में अथवा स्वतन्त्र शब्द समझा जाता है—उदा० निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा—पा० १।४।७६)।

निवपनम् [नि+वप्+ल्युट्] 1 बिखेरना, उड़ेलना, नीचे फेंकना 2 बोना 3 पितरों के नाम पर चढ़ावा, मृतपूर्वजों को लक्ष्य करके दी गई आहुति—को न कुले निवपनानि नियच्छतीति -पंच० ६।२४।

निवरा [नि+वृ+अप्+टाप्] अक्षतयोनि, अविवाहित कन्या।

निवर्तक (वि०) [नि+वृत्+ण्वुल्] 1 वापिस देने वाला, आने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2 ठहरने वाला, पकड़ने वाला 3 उन्मूलक, निष्कासित करने वाला, मिटाने वाला 4 वापिस लाने वाला।

निवर्तन (वि०) [नि+वृत्+ल्युट्] 1 लौटाने वाला 2 पीछे मुड़ने वाला, ठहरने वाला—नम् वापिस होना, मुड़ना, या वापिस आना, लौटना—इह हि पतता नास्त्यालंबो न चापि निवर्तनम्—भा० ३।२ 2 न घटने वाला, बन्द होने वाला 3 रुकने वाला, परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4 काम से हाथ खींचना, निष्क्रियता (विप० प्रवर्तन)—काम० १।२८ 5 वापिस लाना—अमरु ८४ 6 पश्चात्ताप करना, सुधार करने की इच्छा 7 बीस बास लम्बी भूमि।

निवसतिः (स्त्री०) [नि+वस्+अतिच्] घर, आवास, आवासस्थान, वासगृह, निवासस्थान।

निवसथः [नि+वस्+अथच्] गाँव, ग्राम।

निवसनम् [नि+वस्+ल्युट्] 1 गृह, आवास, निवास-स्थान 2 परिधान, वस्त्र, अन्तर्वस्त्र- शि० १०।६०, रघु० १९।४१।

निवहः—भर्तृ० ३।३७, इसी प्रकार घन° हैय° कपोत° आदि 2 सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवात (वि०) [निवृत्त वातो यस्मिन् ब० स०] 1 से सुरक्षित, जहाँ वायु न हो, शान्त—रघु० १९।४२ 2 जिसे चोट न लगी हो, क्षति न पहुँची हो, बाधा रहित 3 सुरक्षित, अभय 4 सुसज्जित, दृढ़ कवच धारण किए हुए,—तः 1 शरणगृह, निवासस्थान, आश्रयागार 2 अकाट्य कवच,—तम् 1 वायु से सुरक्षित स्थान—निवातनिष्कंपमिव प्रदीपम्—कु० ३।४८, कि० १४।३७, रघु० १३।५२, ३।१७, भग० ६।१९ 2 वायु का अभाव, शान्त, निस्तब्धता—रघु० १२।३६ 3 निष्कटक स्थान 4 दृढ़ कवच।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1 बीज, अनाज, बीज के रूप में दाने 2 मृतक पूर्वजों के पितरों को या दूसरे बन्धुओं को भेंट, जलतर्पण (श्राद्ध के अवसर पर) एको निवापसलिल पितृसौख्य युक्तम्—भा० ९।४०, निवापदर्तिभि —रघु० ८।८६, निवापांजलय पितृणाम्—५।८, १५।९१, मुद्रा० ४।५ 3 भेंट या उपहार।

निवारः, निवारणम् [नि+वृ+णिच्+अच्, ल्युट् वा] 1 दूर रखना, रोकना, हटाना—देहनिवारणेऽपि —रघु० ०।५ 2 प्रतिषेध, बाधा।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1 रहना, बसना, निवास

करना 2 घर, आवास, वासगृह, विश्राम-स्थान —निवासश्चिंतायां —मृच्छ० १।१५, शि० ४।६३, ५।२१, भग० ९।१८, मृच्छ० ३।२३ 3 रात बिताना 4 पोशाक, वस्त्र।

निवासनम् [नि+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 निवासस्थान 2 पड़ाव, डेरा 3 समय बिताना।

निवासिन् (वि०) [नि+वस्+णिनि] 1. निवास करने वाला, रहने वाला 2 पहनने वाला, वस्त्रों से ढका हुआ —कु० ७।२६, (पु०) निवासी, आवासी।

निबि (वि) ड (वि०) [नि+विड्+क] 1 निरन्तराल, गहन, सटा हुआ 2 दृढ, कसा हुआ, पक्का, निविड़ो मुष्टि —रघु० ९।५८, १२।४४ 3 मोटा, अप्रवेद्य, घना, अभेद्य—रघु० ११।१६ 4 स्थूल, मोटा 5 महाकाय, विशाल 6 ठेढ़ी नाक वाला।

निविशेष (वि०) [निर्गतो विशेषो यस्मात् ब० स०] —अभिन्न, समान, - ब. अन्तर का अभाव।

निविष्ट (भू० क० कृ०) [नि+विश्+क्त] 1 स्थित, ऊपर बैठा हुआ 3 पड़ाव डाला हुआ—रघु० १०।६८ 3 स्थिर, तुला हुआ 4 सकेन्द्रित, दमन किया हुआ, नियन्त्रित—कु० ५।३१ 5 दीक्षित 6 व्यवस्थित।

निवीतम् [नि+व्ये+क्त, सम्प्रसारणम्] 1 यज्ञोपवीत पहनना (माला की भांति गले में धारण करना) निवीत मनुष्याणां प्राचीनावीत पितृणामुपवीत देवानाम् —जै० न्या० 2 धारण किया हुआ जनेऊ,—त, -तम् परदा, अवगुंठन, आवरण' दुपट्टा।

निवृत (भू० क० कृ०) [नि+वृ+क्त] घिरा हुआ, लपेटा हुआ, -त, -तम् - अवगुंठन, परदा, आवरण।

निवृति (स्त्री०) [नि+वृ+क्तिन्] आवरण, घेरा।

निवृत्त (भू० क० कृ०) [नि+वृत्+क्त] 1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2 गया हुआ, विदा हुआ 3 रुका हुआ, परहेजगार, ठहरा हुआ, विरत 4 सांसारिक कार्यों से परहेज करने वाला, इस संसार से विरक्त, शान्त 5 असदाचरण के लिए पश्चात्ताप 6 समाप्त पूरा, समस्त, दे० नि पूर्वक वृत्,—त्तम् लौटना। सम० —आत्मन् (पु०) 1 ऋषि २ विष्णु की उपाधि, - कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण या प्रयोजन के (—क:) धर्मात्मा मनुष्य, सांसारिक इच्छाओं से अप्रभावित, -मांस (वि०) जो मांस खाने से परहेज करता है, निवृत्तमांसस्तु जनक —उत्तर० ४,—राग (वि०) जितेन्द्रिय—वृत्ति (वि०) किसी व्यवसाय से उपरत होनेवाला, - हृदय (वि०) हृदय में पछताने वाला।

निवृत्ति: (स्त्री०) [नि+वृत्+क्तिन्] 1 लौटना, वापिस आना, लौट आना शि० १४।६४, रघु० ४।८७ 2 अन्तर्धान, विराम, उपरति स्थगन—शापनिवृत्तौ —शि० ७ रघु० ८।८२ 3 काम से दूर रहना, निष्क्रियता (विप० प्रवृत्ति) 4 परहेज करना, अरुचि —प्राणाघातान्निवृत्ति —भर्तृ० ३।३२ 5 छोड़ना, रुकना 6 वैराग्य, सांसारिक कार्यों से उपराम, शान्ति, संसार से वियुक्ति 7 विश्राम, आराम 8 आनन्द, कैवल्य 9 मुकरना, अस्वीकार करना 10 उन्मूलन, प्रतिरोध।

निवेदनम् [नि+विद्+ल्युट्] 1 बतलाना, कहना, प्रकथन करना समाचार, उद्घोषणा 2 अर्पण करना, सौंपना 3 समर्पण 4 प्रतिनिधान 5 चढ़ावा या आहुति।

निवेद्यम् [नि+विद्+ण्यत्] किसी देवमूर्ति को भोग लगाना - तु० 'नैवेद्य'।

निवेश: [नि+विश्+घञ्] 1 प्रवेश, दाखला 2 पड़ाव डालना, ठहरना 3 ठहरने का स्थान, शिविर, सेना सेनानिवेश तुमुल चकार - रघु० ५।४९,७।२, शि० १७।४०, कि० ७।२७ 4 घर, आवास, निवास—कि० ४।१९ 5 विस्तार, (छाती की) मुडौलपना—कि० ४।८ 6 जमा करना, अर्पण करना 7 विवाह करना, विवाह, जीवन में स्थिर होना 8 छाप, नकल 9 सैन्यव्यवस्था 10 आभूषण, सजावट।

निवेशनम् [नि+विश्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रवेश, दाखला 2 ठहरना, पड़ाव डालना 3 विवाह करना, विवाह 4 लेखबद्ध करना, शिला-लेखन 5 आवास, निवास, घर, आवास-स्थान 6 शिविर 7 कस्बा या नगर 8 घोंसला।

निवेष्ट [नि+वेष्ट+घञ्] आवरण, लिफाफा।

निवेष्टनम् [नि+वेष्ट+ल्युट्] ढकना, लिफाफे में बन्द करना।

निश् (स्त्री०) (यह शब्द, कारक की दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् सारी विभक्तियों में 'निशा' शब्द के स्थान में विकल्प में आदेश हो जाता है, पहले पांच वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता) 1 रात 2 हल्दी।

निशमनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 देखना, अवलोकन करना 2 दर्शन, दृष्टि 3 सुनना 4 जानकार होना।

निशा (शा) वधम् [नि+शृ+(णिच्)+ल्युट्] वध, हत्या।

निशा [नितरां श्यति तनूकरोति व्यापारान्—शो+क तारा०] 1 रात—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2 हल्दी। सम० —अट, —अटन: 1 उल्लू 2 राक्षस, भूत, पिशाच,—अति-

कालः,—कृत्यम्,—कृत्यः,—अवसानम्, 1 रात बिताना 2 पौ फटना—अंध—निशांध,—अंध (वि०) जिसे रतौंधा आता हो, रात का अंधा,—अधीशः,—ईशः,—नाथः,—पतिः,—भुजिः,—रत्नम् चन्द्रमा, नाथ—अर्धकालः रात का पूर्वा भाग,—आख्या,—आह्वा हल्दी, -आदि साध्यकालीन प्रकाश, —उत्सर्गः रात्रि का अवसान, पौ फटना—कर 1 चाँद—कु० ४।१३ 2 मुर्गा 3 कपूर, गृहम् शयनागार,—चर (वि०) (स्त्री० - री, -री) रात में घूमने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने वाला (रः) 1 राक्षस पिशाच, भूत, प्रेत—रघु० १२।६९ 2 शिव का विशेषण 3 गीदड़, 4 उल्लू 5 साँप 6 चक्रवाक 7 चोर °चरिः 1 शिव और 2 रावण का विशेषण (री) 1 राक्षसी 2 रात को निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी से मिलने के लिए जाने वाली स्त्री रामामन्मथशरेण ताडिता दुःसहेन हृदये निशाचरी—रघु० ११।२० (यहाँ पर यह शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3 वेश्या, —चर्मन् (पु०) अंधकार,—जलम् ओस, कोहरा, —दर्शिन् (पु०) उल्लू,—निशम् (अव्य०) पूरी रात, सदैव—पुष्पम्, सफेद कमलिनी (रात को खिलने वाली) 2 पाला, ओस,—मुखम् रात्रि का आरम्भ, —मृग गीदड़—यम क्षण,—विहार पिशाच, राक्षस —प्रचक्रुः रामनिशाविहारीः—भट्टि० २।३६,—वेधिन् (पु०) मुर्गा,—हास श्वेत कमल, कुमुद (रात को खिलने वाला)।

निशात (भू० क० कृ०) [नि+शो+क्त] 1 पहनाया हुआ, धार पर चढ़ा कर तेज किया हुआ, तेज किया हुआ 2 चमकाया हुआ, झलकाया हुआ उज्ज्वल।

निशातनम् [नि+शो+ल्युट्] पहनाना, धार पर चढ़ाकर तेज करना।

निशांत (भू० क० कृ०) [नि+शम्+क्त] शांतियुक्त, शांत, चुपचाप, सहनशील, -तम् घर, आवास, निवास —रघु० १६।४०।

निशाम [नि+शम्+घञ्] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना।

निशामनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1 दर्शन करना, अवलोकन करना 2 दृष्टि 3 सुनना 4 बार २ निरीक्षण करना 5 छाया, प्रतिबिंब।

निशित (वि०) [नि+शो+क्त] पैना किया हुआ, धार पर तेज किया हुआ—निशितनिपाता शरा—शं० १० 2 उद्दीपित,—तम् लोहा।

निशीथः [निशेरते जना अस्मिन्—निशी अधारे थक —तारा०] 1 आधीरात—निशीथदीपा सहसा हतत्विषः—रघु० ३।१५, मेघ० ८८ 2 सोने का समय, रात—शुचौ निशीथेऽनुभवंति कामिनः—ऋतु० १।३, अमरु० ११।

निशीथिनी, निशीथ्या [निशीथ+इनि+ङीप्, निशीथ+यत्+टाप्] रात।

निशुंभः [नि+शुम्भ्+घञ्] 1 वध, हत्या—मा० ५।२२ 2 तोड़ना, (धनुष आदि का) झुकाना —महावी० २।३३ 3 एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मार दिया था। सम०—अघनी,—मर्दनी दुर्गा का विशेषण।

निशुंभनम् [नि+शुम्भ्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना।

निश्चय [निस्+चि+अप्] 1 जाचपड़ताल, खोज, पूछताछ 2 स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा 3 निर्धारण, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता—एष मे स्थिरो निश्चयः—मुद्रा० १ 4 निश्चिति, स्पष्टता, असंदिग्धता, परिणाम 5 पक्का इरादा, योजना, प्रयोजन, उद्देश्य—कैकेयी क्रूरनिश्चया—रघु० १२।४, कु० ५।५।

निश्चल (वि०) [निस्+चल्+अच्] 1 अचर, स्थिर, अटल, अडिग 2 अपरिवर्त्य, अपरिवर्तनीय—भग० २।५३,—ला पृथ्वी। सम०—अंग (वि०) दृढ़ शरीरवाला, मजबूत (गः) 1 सारस की एक जाति 2 चट्टान, पहाड़।

निश्चायक (वि०) [निस्+चि+ण्वुल्] निर्धारक निर्णयात्मक, अन्तिम या निश्चयात्मक।

निश्चारकम् [निस्+चर्+ण्वुल्] 1 मलोत्सर्ग करना 2 हवा, वायु 3 हठ, स्वेच्छाचारिता।

निश्चित (भू० क० कृ०) [निस्+चि+क्त] निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ, फैसला किया, तय किया हुआ, समापन किया हुआ (कर्तव्य० में भी प्रयुक्त) अवगतपरमार्थो वा जगदेतिति निश्चित—रघु० १२।८२, —तम् निश्चय, निर्णय,—तम् (अव्य०) निःसन्देह निश्चित रूप से, अवश्यमेव।

निश्चिति (स्त्री०) [निस्+चि+क्तिन्] 1 निश्चय करना, निर्णय करना 2 निर्धारण, दृढ़ संकल्प।

निश्चम [नि+श्रम्+घञ्] किसी कार्य पर किया गया परिश्रम, अध्यवसाय, अनवरत परिश्रम।

निश्रयणी, निश्रेणि, निश्रेणी [नि+श्रि+ल्युट्+ङीष् नि+श्रि+नि, ङीष् वा] सीढ़ी, जीना, तु० 'निःश्रयणी'।

निश्वास [नि+श्वस्+घञ्] साँस लेना, साँस लेना, आह भरना—तु० 'निःश्वास'।

निषंग [नि+सञ्ज्+घञ्] 1 आसक्ति, संलग्नता 2 सम्मिलन साहचर्य 3 तरकस—शि० १०।३४, कि० १७।३६, रघु० २।३०, ३।३४।

निषंगथि [नि+सञ्ज्+क्थिन्] 1 आलिंगन 2 धनुर्धर 3 सारथि 4 रथ, गाड़ी।

निषंगिन् (अव्य०) [निषङ्ग+इनि] 1 आसक्त, संलग्न —शि० १२।२६ 2 तरकसधारी—पु० 1 धानुष्क, धनुर्धर 2 तरकस 3 खड्गधारी।

निषण्ण (भू० क० कृ०) [नि+सद्+क्त] 1 बैठा हुआ, आसीन, विश्रान्त, आश्रित,—रघु० ९।७६, १३।७५ 2 सहारा दिया हुआ 3 गया हुआ 4 खिन्न कष्टग्रस्त, नतमुख—तु० 'विषण्ण'।

निषण्णकम् [निषण्ण+कन्] आसन।

निषद्या [नि+सद्+क्यप्+टाप्] 1 झटोला, पीला 2 व्यापारी का कार्यालय, दुकान 3 मंडी, हाट —शि० १८।१५।

निषद्वर [नि+सद्+क्वरच्] 1 गारा, दलदल 2 कामदेव,—री रात।

निषध (ब० व०) [नि+सद्+अच्, पृषो०] नल द्वारा शासित एक देश तथा उसके निवासियों का नाम,—धः 1 निषध देश का शासक 2 पहाड़ का नाम।

निषाद [नि+सद्+घञ्] 1 भारत की एक जंगली आदिम जाति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि, पहाड़ी —मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः —रामा० रघु० १४।५२, उ० 2 पतित जाति का मनुष्य, चाण्डाल, एक वर्णसंकर जाति 3 विशेषकर शूद्रा स्त्री से ब्राह्मण का पुत्र—मनु० १०।८ 4 (संगीत में) हिन्दूसरगम का पहला (यदि उपयुक्तता के अधिक निकट हो तो—अन्तिम या सप्तम) स्वर—गीतकलाविन्यासमिव निषादानुगतम्—का० २१, (यहाँ यह प्रथम भी रखती है)।

निषादित [नि+सद्+णिच्+क्त] 1 बैठाया हुआ 2 कष्टग्रस्त दुखी।

निषादिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [निषाद+इनि] बैठने वाला या लेटने वाला, विश्राम करने वाला, आराम करने वाला—रघु० १।५२, ४।२, (पु०) महावत,—शि० ५।४१।

निषिद्ध (वि०) [नि+सिध्+क्त] 1 मना किया हुआ, प्रतिषिद्ध, दूर हटाया हुआ, रोका हुआ—दे० नि पूर्वक सिध्।

निषिक्त (भू० क० कृ०) [नि+सिच्+क्त] 1 छिड़का हुआ 2 भरा हुआ, टपकाया हुआ, उंडेला हुआ, व्याप्त किया हुआ।

निषिद्धि [नि+सिध्+क्तिन्] 1 प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना 2 प्रतिरक्षा।

निषूदनम् [नि+सूद्+णिच्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना—ज. वधिक जैसा कि 'बलदूतनिषूदन' में।

निषेक [नि+सिच्+घञ्] 1 छिड़कना, तर करना —मुखसलिलनिषेक—ऋतु० १।२८ 2 बूंद २ टपकना, रिसना, झरना, तैलनिषेकबिंदुना—रघु० ८।३८, टपकते हुए तेल की एक बूंद 3 स्नाव, प्रस्राव 4 वीर्यपात, वीर्यसिंचन, गर्भवती करना, बीज —कु० २।१६, रघु० १४।६० 5 सिंचाई, 6 प्रक्षालन के लिए जल 7 वीर्य की अपवित्रता 8 मैला पानी।

निषेध [नि+सिध्+घञ्] 1 प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2 प्रत्याख्यान, मुकरना 3 नकारात्मक अवयव —द्वौ निषेधौ प्रकृतार्थं गमयतः 4 प्रतिषेधक नियम (विप० विधि) 5 नियम से व्यतिक्रम करना, अपवाद।

निषेधक [नि+सेध्+ण्वुल्] 1 अभ्यास करने वाला, अनुगमन करने वाला, भक्त, अनुरक्त 2 बार २ आने वाला, बसने वाला, आश्रयग्रहण करने वाला 3 उपभोग करने वाला।

निषेवणम्, निषेवा [नि+सेव्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1 सेवा करना, नौकरी, हाजरी में खड़े रहना 2 पूजा, आराधना 3 अभ्यास, अनुष्ठान 4 आसक्ति, लगाव 5 रहना, बसना उपभोग करना, उपयोग में लाना 6 परिचय, उपयोग।

निष्क् (चुरा० आ०—निष्कयते) तोलना, मापना।

निष्क,—**कम्** [निष्क्+अच्] 1 स्वर्णमुद्रा (भिन्न-भिन्न मूल्य की, परन्तु सामान्यरूप १६ माशे या एक कर्ष के तोल के सोने के बराबर) 2 १०८ से १५० कर्ष के तोल का सोना 3 छाती या कण्ठ में पहनने का स्वर्णाभूषण 4 सोना,—क्क चांडाल।

निष्कर्षः [निस्+कृष्+घञ्] 1 बाहर निकालना, निचोड़ना 2 सत्, सारभूत अर्थ, तत्त्व—इति निष्कर्षः (भाष्यकारों द्वारा बहुधा प्रयुक्त)—मनु० ५।१२५, भाषा० १३८ 3 मापना 4 निश्चय, जाँचपड़ताल।

निष्कर्षणम् [निस्+कृष्+ल्युट्] 1 बाहर निकालना, निचोड़ना, खींचना—रघु० १२।९७, 2 घटाना।

निष्काशनम् [निस्+काश्+णिच्+ल्युट्] (गाय भैंसों को) हाँक कर दूर करना 2 वध, हत्या।

निष्कासः (स) [निस्+कास् (स्)+घञ्] 1 बाहर निकलना, निर्गम, निकास 2 प्रासाद आदि का द्वारमण्डप 3 प्रभात 4 अन्तर्धान।

निष्कासित (भू० क० कृ०) [निस्+कस्+णिच्+क्त] 1 निर्वासित, बाहर निकाला हुआ, हाँक कर बाहर किया हुआ 2 बाहर गया हुआ, बाहर निकाला हुआ, 3 रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 4 ठहराया हुआ, नियत किया हुआ, 5 खोला हुआ, खिला हुआ, फैलाया हुआ 6 बुहारा हुआ, झाड़ा हुआ, छिड़का हुआ।

निष्कासिनी [निस्+कस्+णिनि+ङीप्] वह दासी जो अपने स्वामी के नियंत्रण में न हो।

निष्कुटः [निस्+कुट्+क] 1 घर से लगा हुआ प्रमद-

वन, क्रीडोद्यान 2 खेत 3 स्त्रियों का रनवास, राजा का अन्तःपुर 4 दरवाजा 5 वृक्ष की कोटर।

निष्कुटिः,-टी (स्त्री०) [निस्+कुट्+इन्, स्त्रियां ङीप्] बड़ी इलायची।

निष्कुषित (भू० क० कृ०) [निस्+कुष्+क्त] 1 फाड़ा हुआ, बलात् बाहर खींचा हुआ, विदीर्ण—रघु० ७।५० 2 निकाला हुआ, निर्वासित—दे० निस् पूर्वक 'कुष्'।

निष्कुह [निस्+कुह्+अच्] वृक्ष की कोटर—तु० 'निष्कुट'।

निष्कृत (भू० क० कृ०) [निस्+कृ+क्त] 1 ले जाया गया, हटाया गया 2 जिसने प्रायश्चित कर लिया है, दोषमुक्त, क्षमा किया गया,—तम् प्रायश्चित्त या परिशोधन।

निष्कृति (स्त्री०) [निस्+कृ+क्तिन्] 1 प्रायश्चित्त, परिशोधन पंच० ३।१५७ 2 निस्तार, प्रतिदान, ऋणशोधन, कर्तव्यसम्पादनेन तस्य निष्कृति शक्या कर्तुं वर्ष शतैरपि—मनु० २।२२७, ३।१९, ८।१०५, ९। १९, ११।२७ 3 हटाना 4 आरोग्यलाभ, चिकित्सा, प्रतीकार 5 टालना, बचना 6 अपेक्षा करना 7 युग चालचलन, बदमाशी।

निष्कृष्ट (भू० क० कृ०) [निस्+कृष्+क्त] 1 उखाड़ा हुआ, खींच कर बाहर निकाला हुआ उद्धृत 2 संक्षिप्तावृत्ति।

निष्कोष, निष्कोषणम् [निस्+कुष्+क्त ल्युट् व.] 1 फाड़ना, खींचकर बाहर निकालना, उखाड़ना, उन्मूलन करना 2 भूसी निकालना, छिलका उतारना।

निष्कोषणकम् [निष्कोषण+कन्] दांत खुरचनी पंच० १।७१।

निष्क्रम [निस्+क्रम्+घञ्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 विदा होना निर्गमन करना 3 एक संस्कार (चौथे मास में शिशु को) पहली बार खुली हवा में निकालना चतुर्थे मासि निष्क्रम —याज्ञ० १।१२ तु० 'उपनिष्क्रमण' से भी 4 पतित होना, जाति भ्रष्टता जाति-हीनता 5 बौद्धिक शक्ति।

निष्क्रमणम् [निस्+क्रम्+ल्युट्] 1 आगे या बाहर जाना 2 एक संस्कार (इसमें नवजात बालक को चौथे मास में पहली बार खुली हवा में निकाला जाता है) चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात् —मनु० २।३४।

निष्क्रमणिका [निष्क्रमण+कन्+टाप् इत्वम्] दे० निष्क्रम (३)।

निष्क्रय [निस्+क्री+अच्] निस्तार छुटकारा बन्दी का उद्धार-मूल्य-इदं दत्त समुद्रेण पीतेनेदात्मनिष्क्रयम् —रघु० १५।९५, २।५५, ५।२२, मुद्रा० ६।२० 2 पुरस्कार 3 भाड़ा, मजदूरी 4 अदायगी, चुनौती —शि० १।५० 5 अदला-बदली, विनिमय।

निष्क्रयधनम् [निस्+क्री+ल्युट्] निस्तार छुटकारा बन्दी का उद्धार—मूल्य।

निष्क्राथः [निस्+क्वथ्+घञ्] 1 काढ़ा 2 रसा शोरवा।

निष्टप्तलम् [निस्+तप्+ल्युट्] आलय।

निष्टानकः [निस्+तानक] घन-ध्वनि, कलकल ध्वनि, मरमरध्वनि।

निष्ठ (वि०) [निसरा तिष्ठति नि+स्था+क] (प्रायः समास के अन्त में) 1 अन्दर रहने वाला, स्थित —तन्निष्ठे फले 2 निर्भर, आश्रित, संकेत करने वाला या संबंध रखने वाला -तन्निष्ठा मनु० १२।९५ 3 भक्त, अनुरक्त, अभ्यास करने वाला, इरादा —सत्यनिष्ठ 4 कुशल 5 आस्था रखने वाला—धर्म-निष्ठ, -ष्ठा 1 अवस्था, दशा 2 स्थैर्य, दृढ़ता, स्थिरता - नभो निष्ठा-शून्य भ्रमति च विश्वव्यालिलति च—मा० १।३१ 3 भक्ति, श्रद्धा घनिष्ठ अनुराग 4 विश्वास, दृढ़ भक्ति, आस्था-शास्त्रेषु निष्ठा मा० ३।११, भग० ३।३ 5 श्रेष्ठता, कुशलता, प्रवीणता, पूर्णता 6 उपसंहार, अन्त, अवसान अत्याहितिभवनि महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा - श० ४ 7 उत्क्रान्ति या नाटक का अन्त 8 निष्पत्ति, समाप्ति—मनु० ८।२२७ 9 चरम बिन्दु 10 मृत्यु, विनाश, प्रलय 11 स्थिर या निश्चित ज्ञान, निश्चिति 12 भिक्षा मांगना 13 भोगना, कष्ट उठाना, दुःख, चिन्ता 14 (व्या०) क्त, क्तवतु (त और तवत्) के लिए पारिभाषिक शब्द।

निष्ठानम् [नि+स्था+ल्युट्] चटनी, मसाला।

निष्ठी (ष्ठे) व,—वम्, निष्ठ्यो (ष्ठे) वनम् निष्ठीवितम् [नि+ष्ठिव्+घञ्, दीर्घ, दीर्घाभावे गुण, ल्युट् वा, दीर्घ पक्षे गुण; क्त, दीर्घश्च] थूक देना, थूकना —भर्तृ० १।९२।

निष्ठुर (वि०) [नि+स्था+उरच्] 1 कठोर, कर्कश, उजड्ड, रूखा 2 कड़ा, तेज, (हवा के झोंके की भांति) तीक्ष्ण -शि० ५।४९ 3 क्रूर, कठोर, पाषाणहृदय (पुरुषों के विषय में) व्यवसाय प्रतिपत्तिनिष्ठुर रघु० ८।९५, ३।६२ 4 उद्धत।

निष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [नि+ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] हुआ, थूका हुआ, फेंका हुआ—निष्ठ्यूतश्चरणोपघातसुलभो लाक्षारसः केनचित्—श० ४।५, रघु० २।७५, शि० ३।१०।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री०) [नि+ष्ठिव्+क्तिन्, ऊठ्] थूक, धिक्कार।

निष्ण,निष्णात (वि०) [नि+स्था+क, नत्व वा] चतुर, कुशल, विज्ञ, दक्ष, सुपरिचित, विशेषज्ञ —निष्णातोऽपि च वेदान्ते साधुत्वं नैति दुर्जनः —भामि० १।८७,

भट्टि० २।२६, शि० ८।६३, मनु० २।६६, ६।३० 2 प्रकाशित, स्पष्ट, निष्पन्न—मा० १०।२४ (निशक विहित ·-वत्तर 3 बढ़िया, पूर्ण।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] 1. कड़ा बनाया हुआ, जल में भिगोया हुआ 2 भली प्रकार पकाया हुआ।

निष्पतनम् [निस्+पत्+ल्युट्] 1 झपट कर निकलना, शीघ्रता से बाहर जाना।

निष्पत्तिः (स्त्री०) [निस्+पद्+क्तिन्] 1 जन्म, उत्पादन—शब्दनिष्पत्ति 2 परिपक्वावस्था, परिपाक—कु० २।३७ 3 पूर्णता, समापन 4 समृद्धि, सम्पन्नता, समाप्ति।

निष्पन्न (भू० क० कृ०) [निस्+पद्+क्त] 1 जन्मा हुआ, उदित, उद्गत, पैदा हुआ 2 कार्यान्वित हुआ, पूरा हुआ, सम्पन्न 3 तत्पर।

निष्पवनम् [निस्+पू+ल्युट्] फटकना।

निष्पादनम् [निस्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1 कार्यान्वयन, निष्पत्ति 2 उत्पादन 3 उत्पादन, पैदा करना।

निष्पाव [निस्+पू+घञ्] 1 फटकना, अनाज साफ करना 2 छाज में उत्पन्न होने वाली वायु 3 हवा।

निष्पीडित (भू० क० कृ०) [निस्+पीड्+क्त] कसा हुआ, भींचा हुआ, -निष्पीडितेक्षुकरकण्डकजालमेक —उत्तर० ३।११।

निष्पेष, निष्पेषणम् [निस्+पिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1 मिलाकर रगड़ना, पीसना, चूर-चूर करना, कुचलना—भुजान्तरनिष्पेष -वेणी० ३ 2 छांटना या कटना, आघात करना, रगड़ देना—रघु० ४।७७, मेघदू० १।२४, का० ५६।

निष्प्रवाणम्-णि (नपुं०) [निस्+प्र+वे+ल्युट्, निस्य प्रवाणी तन्तुवाय शलाका अस्मात् अच् वा नि०माप्] नया कोरा कपड़ा, °यूथनम्—दश०।

निस (अव्य०) [निस्+क्विप्] 1 उपसर्ग के रूप में यह धातुओं के पूर्व लग कर वियोग (से दूर के बाहर), निश्चिति, पूर्णता, उपभोग, पार करना अतिक्रमण आदि अर्थों का बतलाता है, उदाहरण के० पीछे 'निर्' के अन्तर्गत 2 संज्ञा शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होकर बहुधा संज्ञा और विशेषण बनाता है तथा निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) 'से' 'से बाहर' जैसा कि 'निर्वन्, निष्काश्य' में या (ख) अधिक प्रचलित नहीं 'के बिना' 'से शून्य' (अभावात्मकता पर बल देने वाला), निर्दोष- बिना दोष के, निष्फल, निर्जल आदि [विशे० समास में निस् का ग् स्वरों क, अथवा वर्ग के तीसरे, चौथे या पांचवें वर्ण या य र ल व ह में से कोई वर्ण, परे होने पर, बदल कर र हो जाता है, दे० निर्, ऊष्म वर्णों के परे होने पर विसर्ग क् ख् से पूर्व स् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है, दे० दुस्]। सम० **कण्टक** (निष्कण्टक) (वि०) 1 बिना कांटों का 2 कांटों से या शत्रुओं से मुक्त, भय तथा उत्पातों से मुक्त, —**कंद** (निष्कन्द) (वि०) भक्ष्य मूलों के बिना, **कपट** (निष्कपट) (वि०) निश्छल, शुद्ध हृदय,—**कंप** (निष्कम्प) (वि०) गतिहीन, स्थिर, अचर--निष्कम्पकामरूपिणा—शि० १।८, कु० ३।४८,—**करुण** (निष्करुण (वि०) निर्दय, निर्मम, क्रूर,--**कल** (निष्कल) (वि०) 1 अखंड, अविभक्त, समस्त 2 प्राप्तव्य, क्षीण, न्यून 3 पुत्रविहीन, ऊसर 4 विकलांग—(लः) 1 आत्मा 2 योनि, भग 3 ब्रह्मा (-ला,-ली) एक बूढ़ी स्त्री जिसके बच्चे होने बन्द हो गये हों, या जिसमें अब रजोधर्म न होता हो —**कलंक** (निष्कलंक) (वि०) निर्दोष, कलंक से रहित,--**कषाय** (निष्कषाय) (वि०) मैल तथा दुर्वासनाओं से मुक्त,—**काम** (निष्काम) (वि०) 1 कामना या अभिलाषरहित, निरिच्छ, निस्वार्थ, स्वार्थरहित 2 संसार की सब प्रकार की इच्छाओं से मुक्त (अव्य०—मम्) 1 बिना इच्छा के 2 अनिच्छा पूर्वक,--**कारण** (निष्कारण) (वि०) 1 बिना कारण के, अनावश्यक 2 निष्पक्ष व, निष्प्रयोजन --निष्कारणो बन्धु 3 निराधार, हेतुरहित (अव्य० -णम्) बिना किसी कारण या हेतु के कारण के अभाव में, अनावश्यक रूप से,--**कालक** (निष्कालक) पश्चात्ताप से रहित (अपराधी) जिसके बाल काट कर और मुंह काला करके घी लगाया गया हो,--**कालिक** (निष्कालिक) (वि०) 1 जिसकी जीवनचर्या समाप्त हो चुकी हो जिसके दिन पूरे गिने हों 2 जिसमें कोई जीवन न रहे अजर।--**किंचन** (निष्किंचन) (वि०) जिसके पास एक तिनका भी न हो धनहीन दरिद्र,--**कुल** (निष्कुल) (वि०) जिसका कोई बन्धुबान्धव न रहा हो, संसार में अकेला रह गया हो (**निष्कुल कृ** पूर्ण रूप से सर्वथा विच्छेद करना, निर्मूल कर देना, **निष्कुला कृ** 1 किसी के परिवार को तहस-नहस कर देना 2 जिलको उखाड़ना, जड़ से उखाड़ फेंकना—निष्कुलाहरति राहिमम सिद्ध०), **कुलीन** (निष्कुलीन) (वि०) नीच कुल का,--**कूट** (निष्कूट) (वि०) छलरहित, ईमानदार, निर्दोष,--**कृप** (निष्कृप) (वि०) निर्मम निर्दय, क्रूर,--**कैंकर्य** (निष्कैंकर्य) (वि०) 1 बेकार, निष्क्रिय, निरपेक्ष 2 मोक्ष से वञ्चित, मोक्षहीन,—**कौशांबि** (निष्कौशांबि) (वि०) जो कौशांबि से बाहर चला गया हो, **क्रिय** (निष्क्रिय) (वि०) 1 क्रियाहीन 2 जो धार्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करता हो, **क्षत्र** (निःक्षत्र),- **क्षत्रिय** (निःक्षत्रिय) (वि०) संन्यासाश्रम

से रहित,—क्षेपः (निःक्षेप)=निक्षेप,—चक्रम् (निश्चक्रम्) (अव्य०) पूर्ण रूप से,—चक्षुस् (निश्चक्षुस्) (वि०) अन्धा, बिना आँखों का,—चत्वारिंश (निश्चत्वारिंश) (वि०) जिसने चालीस पार लिये हों, —चिंत (निश्चित) (वि०) 1 चिन्ताओं से मुक्त, असबद्ध, सुरक्षित 2 विचारहीन, चिंतन शून्य, —चेतन (निश्चेतन) चेतनारहित,—चेतस् (नश्चेतस्) (वि०) जो अपने ठीक होश में न हो,—चेष्ट (निश्चेष्ट) (वि०) गतिहीन, निःशक्त,—चेष्टाकरण (निश्चेष्टाकरण) (वि०) किसी को गति से वञ्चित करना, गतिहीनता का उत्पादक (कामदेव के एक बाण का विशेषण),—छंदस् (निश्छन्दस्) (वि०) जो वेदों का अध्ययन न करता हो,—छिद्र (निश्छिद्र) (वि०) 1 जिसमें सूराख न हो 2 निर्दोष 3 निर्बाध, क्षतिरहित,—तनु (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, निस्सन्तान,—तन्द्र (वि०) जो आलसी न हो, फुर्तीला, स्वस्थ,—तमस्क,—तिमिर (वि०) अंधकार मुक्त, प्रकाशमान् 2 पाप और नैतिक मलिनताओं से मुक्त,—तर्क्य (वि०) कल्पनातीत, अचिन्तनीय,—तल (वि०) 1 गोल, वर्तुलाकार—मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४२ 2 हिलने वाला, काँपने वाला, डोलने वाला 3 तलीरहित, —तुष (वि०) 1 भूसी से वियुक्त 2 विशुद्ध, स्वच्छ सरलीकृत,° क्षीर° गेहूँ,° रत्नम् स्फटिक,—तेजस् (वि०) निरग्नि, ताप या शक्ति रहित, निःशक्त पुरुषत्वहीन 2 उत्साहहीन, मन्द 3 मूढ,—त्रप (वि०) ढीठ, निर्लज्ज,—त्रिंश (वि०) 1 तीस से अधिक —निस्त्रिंशानि वर्षाणि वैन्यस्य पा० ४।१।७३, सिद्धा० 2 निर्मम, निर्दय, क्रूर अमरु ५ (—शः) तलवार° भृत् (पु०) कृपाणधारी,—त्रैगुण्य (वि०) तीन गुणों सत्त्व, रजस् तथा तमस् से शून्य—पंक (निष्पंक) (वि०) कीचड़ से मुक्त, स्वच्छ शुद्ध —पताक (निष्पताक) (वि०) बिना किसी झंडे के,—पतिसुता (निष्पतिसुता) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति,—पत्र (निष्पत्र) (वि०) 1 जिसमें कोई पत्ता न हो 2 जिसके पंख न हों, बिना पंखों का (निष्पत्रः कृ बाण से इस प्रकार बींधना जिससे कि पंख विद्ध जन्तु के आर पार निकल जाय, अत्यन्त पीड़ा पहुँचाना (आल०) निष्पत्राकरोति (मृगं व्याधः) (मृगस्य शरस्य अपरपार्श्वे निर्गमनाभिमुखं करोति—सिद्धा०), एकश्च मृगं सपत्राकृतोऽन्यश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्—दश० १६५, इसी प्रकार—यातो गुरुर्नः साकं स्मयमाननानानवाद्या, तिर्यंग्ग्रीव यदद्याप्यसौ निष्पत्राकरोज्जगत्—भामि० २।१३२,—पद (निष्पद) (वि०) बिना पैरों का (पदम्) एक गाड़ी जो बिना पैरों या बिना पहियों के चले,—परिकर (निष्परिग्रह) (वि०) बिना तैयारी के,—परिग्रह (निष्परिग्रह) जिसके पास किसी प्रकार की सम्पत्ति न हो,—भुज् वि० 2 (हः) वह सन्यासी जिसने न तो विवाह किया हो, न जिसका कोई आश्रित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो, —परिच्छद (निष्परिच्छद) (वि०) जिसका कोई अनुचर या पिछलगुआ न हो,—परीक्ष (निष्परीक्ष) (वि०) जो यथार्थ या सही सही परख न करे, —परीहार (निष्परीहार) (वि०) जो सावधानी न रक्खे,—पर्यंत (निष्पर्यंत), —पार (निष्पार) (वि०) सीमा रहित, अमीमित०,—पाप (निष्पाप) (वि०) पापरहित, निर्दोष, पवित्र,—पुत्र (निष्पुत्र) (वि०) पुत्र रहित, निस्सन्तान,—पुरुष (निष्पुरुष) (वि०) 1 निर्जन, बिना किसी आदमी के, उजाड़ 2 पुंसत्वहीन 3 जो पुंलिंग न हो, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग ((ष) 1 हीजड़ा 2 कायर, पुलाक (निष्पुलाक) बिना पुआल का, बिना भूसी का,—पौरुष (निष्पौरुष) (वि०) पौरुषहीन,—प्रकंप (निष्प्रकंप) (वि०) स्थिर, अचल, गतिहीन,—प्रकारक (निष्प्रकारक) (वि०) जातिभेदरहित, वैशिष्ट्यरहित, पूर्ण निष्प्रकारक ज्ञान निर्विकल्पम्—तर्क०,—प्रकाश (निष्प्रकाश) (वि०) पारदर्शक, अभ्रष्ट, अंधकारमय —प्रचार (निष्प्रचार) (वि०) 1 न हिलने डुलने वाला 2 एक ही स्थान पर स्थिर रहने वाला 2 संकेन्द्रित जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ,—प्रति (तौ) कार (निष्प्रति) (तौ) कार),—प्रतिक्रिय (निष्प्रतिक्रिय) (वि०) 1 जिसकी चिकित्सा न हो सके, जिसका कोई प्रतिकार न हो सके—सर्वथा निष्प्रतिकार्येष्वादृप्यन्ति—का० १५१ 2 निर्बाध, बाधारहित (अव्य०रम्) बिना किसी विघ्न के,—प्रतिघ (निष्प्रघ) (वि०) विघ्नरहित, निर्बाध, बाधाशून्य—रघु० ८।७१, —प्रतिद्वन्द्व (निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) 1 शत्रुरहित, निर्विरोध 2 बेजोड़, अप्रतिम, अनुपम,—प्रतिभ (निष्प्रतिभ) (वि०) 1 कान्तिशून्य 2 प्रज्ञाहीन जो प्रत्युत्पन्नमति न हो, मन्द बुद्धि, जड़ 3 उदासीन, —प्रतिभान (निष्प्रतिभान) (वि०) कायर, भीरु, —प्रतीप (निष्प्रतीप) (वि०) 1 सीधा सामने देखने वाला, पीछे मुड़कर न देखने वाला 2 (दृष्टि) असबद्ध,—प्रत्यूह (निष्प्रत्यूह) (वि०) निर्विघ्न, अबाध,—प्रपंच (निष्प्रपंच) 1 विस्तारहीन 2 छल कपट से रहित, ईमानदार,—प्रभ (निःप्रभ या निष्प्रभ) (वि०) 1 कान्तिविहीन, विवर्ण दिखाई देने वाला—रघु० ११।८१ 2 शक्तिरहित 3 निस्तेज, द्युतिहीन, अन्धकारमय,—प्रमाणक (निष्प्रमाणक)

(वि०) बिना अधिकार का,—अयोजन (निष्प्रयोजन) (वि०) 1 निरुद्देश्य, जो किसी प्रयोजन से प्रभावित न हो 2 निष्कारण, निराधार 3 व्यर्थ 4 अनुपयोगी, अनावश्यक (अव्य०—नम्) बिना कारण या हेतु के, बिना किसी मतलब के—मुद्रा० ३,—प्राण (निष्प्राण) (वि०) प्राणहीन, निर्जीव, मृतक,—फल (निष्फल) (वि०) 1 जिसका कोई फल न निकले, फलहीन, (आल० भी) असफल—निष्फलारम्भयत्ना —मेघ० ५४ 2 अनुपयोगी, बिना लाभ का, निरर्थक—कु० ४।१३ 3 बाझ, ऊसर 4 (शब्द) निरर्थक 5 बिना बीज का, निर्वीर्य (—ताली) स्त्री जिसके सन्तान होना बन्द हो गया हो,—फेन (निष्फेन) (वि०) बिना झागों का,—शब्द (नि शब्द) (वि०) जो शब्दों में व्यक्त न किया गया हो, शब्दरहित—नि शब्द रोदितुमारेभे—का० १४३,—शलाक (नि शलाक) (वि०) अकेला, एकान्तसेवी, निवृत्त—(कम्) निर्जन स्थान, एकान्तस्थान—अरण्ये नि शलाके वा मन्त्रयेदविभावित —मनु० ७।१४७,—शेष (नि शेष) (वि०) बिना कुछ शेष रहे, पूर्ण, समस्त, पूरा,—नि शेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१,—शोष्य (नि शोष्य) (वि०) सूखा हुआ, स्वच्छ,—संशय (नि संशय) (वि०) 1 असन्दिग्ध, निश्चित 2 सन्देहरहित, आशंकारहित, संदेहशून्य—रघु० १५।७९ (अव्य० यम्) निस्सन्देह, असन्दिग्ध रूप से, निश्चित रूप से, अवश्य,- सङ्ग (नि सङ्ग) (वि०) 1 अनासक्त, भक्तिरहित, अनपेक्ष, उदासीन -यन्नि सङ्गस्य फलस्यानतेऽग्य —कि० १८।२४ 2 सांसारिक आसक्तियों से मुक्त 3 निर्लिप्त, वियुक्त अनुरागशून्य 4 अबाध (अव्य—ङ्गम्) निस्स्वार्थ भाव से—सङ्ग (नि सङ्ग) (वि०) बेहोश,—सत्त्व (नि सत्त्व) (वि०) 1 सत्त्वरहित, दुर्बल, पुरुषत्वहीन 2 नीच, नगण्य, अधम 3 सत्ताहीन, असार 4 जीवित प्राणियों से वर्जित (—त्वम्) 1 शक्ति या ऊर्जा का अभाव 2 सत्ताहीनता 3 नगण्यता, -सततति (निस्सन्ततति), सतान (निस्सन्तान) (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, सन्ततिरहित,—संदिग्ध (निस्सन्दिग्ध),—संदेह (निस्सन्देह) (वि०) दे० नि संशय,—सन्धि (निस्सन्धि, नि सन्धि) (वि०) जिसमें दिखाई देने वाली कोई गांठ न हो, सहत, सघन, सटा हुआ,—सपत्न (नि सपत्न) (वि०) 1 जिसका कोई शत्रु न हो—घनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽद्य जात —विक्रम० ४।१० 2 जिसका कोई और दावेदार न हो, जो सर्वथा एक ही का हो 3 अजातशत्रु,—सम्यम् (निस्सम्यम्) (अव्य०) 1 बिना ऋतु के, अनुचित समय पर 2 दुष्टता के साथ,—सपात (नि,सपात) (वि०) जहाँ मार्ग उपलब्ध न हो, जहाँ मार्ग अवरुद्ध हो (—तः) आधीरात का अँधेरा, गुप अँधेरा, घना अंधकार,—संबाध (नि सबाध) (वि०) जो संकीर्ण न हो, प्रशस्त, विस्तृत,—सस्सार (नि ससार) (वि०) 1 नीरस, सारहीन, बिना गूदे का 2. निकम्मा, असार,—सीम (नि सीम),—सीमन् (नि सीमन्) (वि०) अपरिमेय, सीमारहित—अहह महतां नि सीमानश्चरितविभूतय —भर्तृ० २।३५, नि सीमशर्मपदम्—३।९७,—स्नेह (नि स्नेह) (वि०) जो चिकना न हो, बिना चिकनाई का, शुष्क 2. स्नेहरहित, भावनाशून्य, कृपाहीन, उदासीन 3. जिससे कोई प्यार न करता हो, जिसकी कोई देखभाल न करता हो—पञ्च० १।८२,—स्पद (नि स्पद या निस्स्पद) (वि०) गतिहीन, स्थिर—रघु० ६।४०, —स्पृह (नि स्पृह) (वि०) 1 कामनाशून्य 2. लापरवाह, उदासीन—तनु वक्तृविशेषनि स्पृहा—कि० २।५, रघु० ८।१० 3 सन्तुष्ट, हाथ न फैलाने वाला 4 सांसारिक बन्धनों से मुक्त—स्व (नि स्व) (वि०) निर्धन, दरिद्र—नि स्वो वष्टि शतम्—शा० २।६, —स्वाद (नि स्वाद) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद का, बेमजा।

निसंपात दे० नि सपात।

निसर्गः [नि+सृज्+घञ्] 1 प्रदान करना, अनुदान देना, उपहार देना, पुरस्कार देना—मनु० ८।१४३ 2 अनुदान 3 मलोत्सर्ग, शून्यीकरण, मलत्याग 4 त्याग, तिलाञ्जलि देना 5. सृष्टि—निसर्गदुर्बोधम्—कि० १।६, १८।३१, रघु० ३।३५, कु० ४।१६,—निसर्गतः, निसर्गेण प्रकृति से, स्वभावतः 7 अदला-बदली, विनिमय। सम०—ज,—सिद्ध (वि०) सहज, अन्तर्जात, स्वाभाविक,—भिन्न (वि०) स्वभावतः और प्रकार का—निसर्ग भिन्नास्पदमेकसंस्थम्—रघु० ६।२९, —विनीत (वि०) 1 स्वभावतः विवेकी 2 स्वभावतः विनम्र।

निसारः [नि+सृ+घञ्] समुच्चय, समूह।

निसूदन (वि०) [नि+सूद्+ल्युट्] मारने वाला, नष्ट करने वाला,—नम् वध, हत्या।

निसृष्ट (भू० क० कृ०) [नि+सृज्+क्त] 1 सौंपा गया, दिया गया, अर्पित 2 छोड़ा गया, त्यक्त 3 विसर्जित 4 अनुज्ञात, अनुमत 5 केन्द्रवर्ती, मध्यस्थ। सम०—अर्थ (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रबन्ध सौंपा गया हो 2 दूत, अभिकर्ता—दे० सा० द० ८६, ८७. "दूती वह स्त्री जो नायक और नायिका के प्रेम को जान कर स्वयं उनको मिलाती है—तत्रिपुण निसृस्टार्थदूतीकल्प सूचयितव्य —मा० १ (यहाँ जगद्धर 'निसृष्टार्थदूती' शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है

—नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वमत्या कार्यं साधयति वा)।

निस्तरणम् [निस्+तॄ+ल्युट्] 1 बाहर आना, बाहर आना 2 पार करना 3 बचाना, मुक्ति, छुटकारा तरकीब, उपाय, योजना।

निस्तर्हणम् [निस्+तृह+ल्युट्] वध, हत्या।

निस्तार [निस्+तॄ+घञ्] 1 पार करना—संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी—भट्टि० १।६९ 2 छुटकारा पाना, छुट्टी, बचाव, उद्धार 3 मोक्ष 4 ऋणपरिशोधन, चुकौती, अदायगी—वेतनस्य निस्तार कृत - हि० ३ ५ उपाय, तरकीब।

निस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [निस्+तॄ+क्त] 1 उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2 पार किया हुआ (आल०) वेणी० ६।३६।

निस्तोद [निस्+तुद्+घञ्] चुभना, डंक मारना।

निस्पंद [नि+स्पन्द्+घञ्] कंपकंपी, धड़कन, गति।

निस्य (स्त्री) द [नि+स्यन्द्+घञ् वत्व विकल्पेन] 1 आगे या नीचे की ओर बहना, चूना, टपकना, बूंद २ करके गिरना, क्षरना, रिसना—दलकलशिका निस्यदरेखाङ्किता—शृं० १।१४ 2 क्षरण, स्राव, रसोत्पादाय, रस—उत्तर० २।२४, मा० ९।६ 3 प्रवाह, स्रोत, पानी की धार—हिमाद्रिनिस्यद इवावतीर्णं—रघु० १४।३,४१, १६।७०, मदनिस्यदरेखयो—१०।५८, मेघ० ४२।

निस्यदिन (वि०) [नि+स्यन्द्+णिनि] टपकने वाला, बहने वाला, रिसने वाला।

निस्राव, निस्रावं [नि+स्रु+अप्, घञ् वा] 1 सरिता, धारा 2 चावल का माड़।

निस्वन, निस्वान [नि+स्वन्+अप्, घञ् वा] शब्द, आवाज, रघु० ३।१६, ऋतु० १।८, कि० ५।६।

निहत (भू० क० कृ०) [नि+हन्+क्त] 1 पटखनी दिया हुआ, आघात किया हुआ, वध किया हुआ, मारा हुआ 2 प्रहार किया हुआ, चोट जमाया हुआ 3 अनुरक्त, भक्त।

निहननम् [नि+हन्+ल्युट्] वध, हत्या।

निह्व [नि+ह्वे+अप्, संप्रसारण] आवाहन, बुलावा।

निहार [नि+हृ+घञ्] दे० 'नीहार'।

निहिंसनम् [नि+हिंस्+ल्युट्] वध, हत्या।

निहित (भू० क० कृ०) [नि+धा+क्त] 1 रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ, स्थापित, जमा किया हुआ 2 सौंपा हुआ, समर्पित 3 प्रदत्त, प्रयुक्त 4 अन्तर्हित, अदृश्य रक्खा हुआ 5 कोषबद्ध किया हुआ 6 सभाला हुआ 7 (धूल आदि) पड़ी हुई 8 गंभीर स्वर से उच्चरित।

निहीन (वि०) [नितरां हीनः प्रा० स०] अधम, नीच, —न नीच आदमी, अधम कुल में उत्पन्न।

निह्नव [नि+ह्नु+अप्] 1 मुकर जाना, जानकारी का छिपाना—कार्यं स्वमतिनिह्नवं—मा० १।१२, चन्द्रा० ५।२७ 2 गोपनीयता, छिपाव—याज्ञ० २।११ २६७ 3 रहस्य 4 अविश्वास, सन्देह, शंका 5 दुष्टता 6 परिशोधन, प्रायश्चित्त 7 बहाना।

निह्नुति (स्त्री०) [नि+ह्नु+क्तिन्] 1 मुकरना, जानकारी का छिपाव, अमर० ८ 2 पाखंड, संवरण, मनोगुप्ति 3 गोपनीयता, छिपाना, गुप्त रखना।

नी (भ्वा० उभ० नयति-ते, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदाहरण नी० दे०] 1 ले जाना, नेतृत्व करना, लाना, पहुँचाना, लेना, संचालन करना—अजां ग्रामं नयति—सिद्धा०, नय मां नवनं वसतिं पयोमुचां—विक्रम० ४।४३ 2 निर्देश करना, निदेश देना, शासन करना—मालवि० १।२ 3 दूर ले जाना, बहा ले जाना—सीतां लङ्कां नीता सुरारिणा—भट्टि० ६।४९, रघु० १२।१०३, मनु० ६।८८ 4 उठा ले जाना—शा० ३।५ 5 किसी के लिए ले जाना (आ०) 6 व्यय करना, (समय) बिताना—येनामन्दमरन्दे दलदरविन्दे दिनान्यवायियत—भामि० १।१०, नीत्वा मासान् कतिचित्—मेघ० २, सविष्ट कृशतनुं निशा निनाय—रघु० ११९५ 7 किसी अवस्था तक कृश करना—तमपि तरलनामनयदनंग—का० १४३, नीतस्त्वया पंचतां रत्न० ३।२, रघु० ८।१९ (इस अर्थ में यह धातु नामों के साथ उसी प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कृ—उदा० 1 अस्तं नी छिपाना 2 दण्डं नी दण्ड देना, सजा देना 3 दासत्वं नी दास बनाना 4 दुःखं नी संकटग्रस्त करना 5 परितोषं नी तृप्त करना, प्रसन्न करना 6 पुनरुक्ततां नी फालतू करना 7 भस्मतां नी 8 भस्मसात् नी जलाकर राख करना 9 वशं नी अधीन करना, जीत लेना 10 विक्लवं नी 11 विनाशं नी नष्ट करना 12 शून्यतां नी खूब बनाना 13 साक्ष्यं नी गवाही मानना 8 निश्चय करना, गवेषणा करना, पूछताछ करना, निर्णय करना, फैसला करना—छल निरस्य भूतेन व्यवहारान्नयेन्नृप—याज्ञ० २।१९, एवं शास्त्रेषु भिन्नेषु बहुधा नीयते क्रिया—महा० ५ पता लगाना, लीक के सहारे पीछा करना, खोज निकालना—एतैर्लिंगैर्नयेत् सीमां—मनु० ८।२५२, २५६, यथा नयत्यसृक्पानैर्मृगस्य मृगयुः पदम् ८।४४, याज्ञ० २।१५१ 10 विवाह करना 11 बहिष्कृत करना 12 (आ०) शिक्षा देना, अनुदेश देना—शास्त्रे नयते—सिद्धा, प्रेर०—नाययति—तें, मार्गदर्शन करना, पहुँचवाना (करण० के साथ) तेन मां सरस्तीरमनाययत्—का० ३८, इच्छा० निनीषति

—ले, ले आने की कामना करना, अनु—मानना, अपने पक्ष का बना लेना, प्रवृत्त करना, फुसलाना, प्रार्थना करना, राजी करना, बहलाना, (क्रोधादिक) शान्त करना, प्रसन्न करना, लुभाना—स चानुनीत प्रभुतेन पश्चात्—रघु० ५।५४, विग्रहाच्च शयने परा-ङ्मुखीनानुनेतुमबला स तत्क्षरे—१९।३८, कि० १३। ६७, भट्टि० ५।४६, ६।१२७ 2 स्नेह करना भर्तृ० २।७७ 3 साधना, अनुशासन में रखना, अप—, 1 दूर ले जाना, दूर बहा ले जाना, निवृत्त करना—मनु० ३।२४२ 2 (क) हटाना, नष्ट करना, ले जाना —श० ६।२६, शत्रूनपनेष्यामि—भट्टि० १६।३०, (ख) छूटना, चुराना, लूटमार करना, छीनना, ले लेना - रघु० १३।२४ 2 उद्धृत, निकाल करना —शल्य हृदयादपनीतमिव—विक्रम० ५, दूर करना, (वस्त्रादिक) उतारना, खींचकर उतारना—कण्वाग्नि-गृहमपनय -मृच्छ० ६, अपनयतु भवत्यो मृगयावेषम् —श० २, रघु० ४।६४, अभि—, 1 निकट लाना, सचालन करना, नेतृत्व करना, ले जाना - कि० ८।३२ मुद्रा० १।६,१५ 2 अभिनय करना, नाटकीय रूप से प्रतिनिधान या प्रदर्शन करना, हाव-भाव (बहुधा रङ्ग-भूमि के निर्देशों में प्रयुक्त) प्रदर्शित करना—श्रुतिमभि-नीय—श० ३, कुसुमावचयनमभिनयन्त्यौ सख्यौ—श० ४, मुद्रा० १।२, ३।३१ 3 उद्धृत करना, घटाना, अभिवि ,अध्यापन करना, शिक्षा देना, सधाना, आ —, 1 लाना, जाकर लाना—भुवन मत्यार्द्रमानीयते —श० ७।८, मनु० ८।२१० 2 प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना - आनिनाय भुव कप रघु० १५,२४ 3 किसी अवस्था में पहुंचाना आनी-यता नक्षत्रताम्—रत्न० १।१ 4 निकट ले जाना, पहु-चाना उद् —,1 आगे बढ़ाना पालनपोषण करना 2 उठाना, उन्नत करना, सीधा खड़ा करना (आ) दक्ष-मुन्नयते सिद्धा० 3 एक ओर ले जाना, एकान्त-मुपोय—महा० 4 अनुमान लगाना, निश्चय करना, अटकल लगाना अन्दाज लगाना उत्तर० १।२९, ३।२२, उप —,1 निकट लाना, जाकर लाना विधि-नैवोपनीतरसदम्—मृच्छ० ७।६, मनु० ३।२२५, मालवि० २।५, कु० ७।७२ 2 उठाना, उन्नत करना, ले जाना शि० १।७२ 3 प्रस्तुत करना, उपस्थित करना - रघु० २।५९, कु० ३।६९ 4 प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना—उपनय-न्नर्थान् -पञ्च० ३।१८०, उपनयन्नरैरनगोत्सवम् —गीत० १ 5 किसी अवस्था में लाना, अवस्थावि-शेष तक पहुंचाना—पुरोपनीत नृप रामनीयकम् —कि० १।३९ 6 यज्ञोपवीत धारण कराना (आ०) मानवकमुपनयते—सिद्धा०, भट्टि० १।१५, रघु० ३। २९, मनु० २।४९ 7 भाड़े पर रखना, भाड़े के नौकर रखना—कर्मकरानुपनयते—सिद्धा०, उप —, अवस्था विशेष में लाना, घटाना, वि—, 1 निकट ले जाना, समीप पहुँचाना याज्ञ० ३।२९५ 2 झुकना, विनत होना, —वक्त्र विनीय—3 उड़ेलना 4 घटित करना, निष्पन्न करना, सिद्ध—, 1 ले उड़ना 2 निश्चय करना, तय करना, फैसला करना संकल्प करना, दृढ़ करना—कथमप्युपायमात्मनैव निर्णीय दश०, कि० ११।३९, परि—, 1 (अग्नि की) प्रद-क्षिणा करना—तौ दम्पती वि परिणीय वह्निं (पुरोधा) —कु० ७।८०—अग्निं पर्यणय च यत्—रामा० 2 विवाह करना, ब्याहना—परिणेष्यति पार्वती यदा तपसा तत्प्रवणीकृतो हर—कु० ४।४२ 2 निश्चय करना, साज करना—मनु० ७।१२२, प्र—, 1 (सेना आदि का) नेतृत्व करना—बालरेन्द्रेण प्रणीतेन (बलेन) रामा० 2 प्रस्तुत करना, देना, उपस्थित करना—अर्घ्यं प्रणीय जनकात्मजा—भट्टि० ५।७६ 3 चेताना, (आग) सुलगाना, पच० ३।१ 4 वेदमन्त्रों के पाठ में अभिमन्त्रित करना, पूजना, अर्चना करना—त्रिधा-प्रणीतो ज्वलन—हरि० 5 (दण्ड आदि) देना—मनु० ७।२०, ८।२३८ 6 निर्धारित करना शिक्षा-प्रदान करना, प्रस्थापन करना, प्रतिष्ठापित करना, विहित करना—स एव धर्मो मनुना प्रणीत -रघु० १४।६७, भवत्प्रणीतयाचारमामनन्ति हि साधव कु० ६।३१ 7 लिखना, रचना करना—प्रणीत न तु प्रकाशित -उत्तर० ४ उत्तर रामचरित तत्प्रणीत प्रयुज्यते उत्तर० १।३ 8 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना, प्रकाशित करना—नै० १।१५,१९, मनु० ३।८२ 9 (अवस्था विशेष तक) पहुंचाना, निम्न अवस्था में ले जाना, प्रति—,वापिस ले जाना, वि—, 1 हटाना, ले जाना, नष्ट करना (आ०, उस स्थान को छोड़कर जहाँ कर्म के स्थान में 'शरीर का कोई भाग' हो) षट्पदहृष्यनिभिर्विनीतनिद्र —रघु० ९।७१, ५।७५, १३।२५,४६, १५।४८, कु० १।९, विनयते स्म तत्रोषा मधुभिर्विजयश्रमम्—रघु० ४।६५,६७ 2 अध्यापन करना, शिक्षण देना, शिक्षा देना, प्रशिक्षित करना—विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम् —रघु० ३।२९,१५।६९,१८।५१, याज्ञ० १।३११ 3 पालना, वशीभूत करना, प्रशासित करना, नियन्त्रित करना—मन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्—रघु० २।८, १४।७५, कि० २।४१ 4 प्रसन्न करना, (क्रोध आदि) शान्त करना (आ०) 5 व्यतीत हो जाना, (समय का) बिताना—कथमपि यामिनीं विनीय—गीत० ८ 6. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना 7 व्यय करना, प्रयुक्त करना, उपयोग में (आ०) लाना,

खतं विनयते—सिद्धा० 8 देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (अञ्जलि) अर्पित करना (आ०), कर विनयते—सिद्धा० 9 नेतृत्व करना, संचालन करना —कु० ७।९, सम्—, 1 एकत्र करना 2 हुकूमत करना, प्रशासन करना, पथप्रदर्शन करना 3 वापिस प्राप्त, लौटाना 4 निकट लाना, सत्ता—, 1 मिलाना, एकता में आबद्ध करना, एकत्र करना --रघु० २।६४, शि० ५।१५ 2. जा कर लाना लाना – रघु० १२।७८।

नी (प०) [नी+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) नेता, पथप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।

नीका (स्त्री०) कुल्या, गूल, खेत की सिंचाई के लिए बनी नहर।

नीकार. दे० 'निकार'।

नीकाश (वि०) [नि+काश्+अच्, दीर्घ] दे० 'निकाश' -- शि० ५।३५।

नीच (वि०) [निकृष्टतमो शोभा विनोति--चि+ड, तारा०] 1 नीच, छोटा, स्वल्प, थोड़ा, बौना 2 निम्नस्थित, निकृष्ट --भग० ६।११, मनु० २।१९८, याज्ञ० १।१३१ 3 नीची, गहरी (आवाज) 4 नीच, कमीना, अधम, दुष्ट, अत्यंत खोटा—प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै --भर्तृ० २।२७, नीचस्य गोचरगतै सुखमास्यते कै –५९, भामि० १।४८ 5 निकम्मा, निरर्थक, --चा श्रेष्ठगाय। सम०—गा नदी, —भोज्यम् प्याज, – योनिन् (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजाति',—वक्त्र, —वक्त्रम्, वैकान्तमणि।

नीच (वि) का [नीच+कन् - टाप्, पक्षे इत्व वा] बढ़िया या श्रेष्ठ गाय, ('नौचिकी' भी)।

नीचकिन् (पु०) [नीचक+इनि] 1 किसी वस्तु का शिखर 2 बैल का सिर 3 अच्छी गाय का स्वामी।

नीचकै (अव्य०) [नीचैस् इत्यस्य ट प्रागकच्] (प्राय विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) 1 नीचा, नीचे, अधः के नीचे, तले, नीचे की ओर (विप० उपरि)--नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९ 2 नीचे झुककर, विनम्र हो कर, विनयपूर्वक—रघु० ५।६२ 3. आहिस्ता २, कोमलता से—नीचैर्वास्यति – मेघ० ४२ 4 मन्द स्वर में--धीमी आवाज से —नीचैर्यास हृदिस्थितो मनु स मे प्राणेश्वर श्रोष्यति—अमरु ६७, नीचैरनुदात्त --पा० १।२।३०, 5 छोटा, गुटका, बौना—तथापि नीचैर्विनयादवदश्यत—रघु० ३।२४, (पु०) पहाड़ का नाम—नीचैरास्य गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो—मेघ० २६। सम०—गतिः (स्त्री०) शिथिलगति,—मुख (वि०) नीचे को मुँह किये हुए।

नीचः,—वन् [नितरां मिलन्ति खगा अत्र—नि+इल् +क, लस्य च तारा०] 1 पक्षी का घोंसला—शि० ७।११ 2 बिस्तरा, गद्दा 3 मांद, भट 4 रथ का भीतरी भाग 5 स्थान, आवास, विश्रामस्थल। सम० —उद्भवः,--ज पक्षी।

नीडक. [नीड+कन्] 1 पक्षी 2 घोंसला।

नीत (भू० क० कृ०) [नी+क्त] 1 ले जाया गया, संचालित नेतृत्व किया गया 2 लब्ध, प्राप्त 3 निम्न अवस्था को पहुंचाया हुआ 4 व्यतीत, बिताया गया 5 भली भांति व्यवहृत, सही--दे० 'नी',—तम् 1 धन 2 धान्य, अनाज।

नीति. (स्त्री०) [नी+क्तिन्] 1 निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रबंध 2 आचरण, चालचलन, व्यवहार, कार्यक्रम 3 औचित्य, शालीनता 4 नीतिकौशल, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता – आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति – नै० ५।१०३, रघु० १२।६९, कु० १।२२ 5 योजना, उपाय, कूटयुक्ति – मा० ६।३ 6 राजनय, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता, राजनीतिक बुद्धिमत्ता – आत्मोदय परलोकनिर्वय नीतिरितीयती - शि० २।३०, भग० १०।३८ 7 आचारशास्त्र आचार, नीतिशास्त्र, आचारदर्शन 8 अवाप्ति, अधिग्रहण 9 देना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना 10 सबंध, सहारा। सम० —कुशल,—ज्ञ,—निपुण, विद् (वि०) 1 राजनीतिविशारद, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ 2 दूरदर्शी, बुद्धिमान्,—दोष –बृहस्पति की गाड़ी, - दोष आचार, नीतिविषयक भूल, - बीजम् षड्यंत्र का स्रोत, - निर्वापण कृतम् पंच० १, विषय नैतिकता या दूरदर्शी व्यवहार का क्षेत्र,—व्यतिक्रम 1 नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उल्लंघन 2 चालचलन की त्रुटि, नीतिविषयक भूल,—शास्त्रम् नीतिशास्त्र या राजनय, नैतिकता।

नीध्रम् (अव्य) [नितरां ध्रियते धृ भूतादि क दीर्घ —तारा०] 1 छत का किनारा 2 जमीन 3 पहिए की परिधि या घेरा 3 चन्द्रमा 5 रेवती नक्षत्र।

नीप. [नी+प बा० गुणाभाव] 1 पहाड़ की तलहटी 2 कदंब वृक्ष (बरसात में फूल देने वाला) नीप प्रदोषायते—मृच्छ० ५।१४, सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् --मेघ० ६५, ६ 3 अशोक जाति का वृक्ष 4 राजाओं का एक कुल—रघु० ६।४६,--यम् कदंब वृक्ष का फूल—मेघ० २१, रघु० १९।३७।

नीरम् [नी+रक्] 1 पानी—नीरानिमग्नो जनि भामि० १।६३ 2 रस, आसव। सम० —अम्बु 1 कमल 2 मोती, —दः बादल—धीरध्वनिभिरलं ते नीरद मे भासिको गर्भ —भामि० १।६१, शि० ४।५२, —धिः,—निधिः, समुद्र, —रुहम् कमल।

नीराजनम्,—ना [निर्+राज्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1

शास्त्रास्त्रों की चमकाना, एक प्रकार का सैनिक व धार्मिक पर्व जिसको राजा या सेनापति आश्विन मास में संग्राम क्षेत्र में जाने से पूर्व मनाते थे (अर्थात राजा के पुरोहित, मंत्री, तथा सेना के अधिकारी अपने विविध शस्त्रास्त्रों सहित वेद मंत्रों द्वारा) ४।४५, १७।१२, नै० ४।१४४ 2 अर्चना के रूप में देवमूर्ति के सामने प्रज्वलित दीपक घुमाना।

नील (वि०) (स्त्री०—ला (वस्त्रादिक)—नी (जीव जन्तु आदि) [नील्+अच्] 1 नीला, गहरा नीला—नीलाम्बिरश्च श्रयति शिखरं नूतनाम्भोदवाहं—उत्तर० १।३३ 2 नील से रंगा हुआ,—लः 1 गहरा नीला या काला रंग 2 नीलमणि 3 गूलर का पेड़, बड़ का पेड़ 4 राम की सेना के एक वानर मुख्य 5 नीलगिरि, पर्वत की एक मुख्य श्रेणी,—लम् 1 काला नमक 2 नीला थोथा या तूतिया 3 सुरमा 4 विष। सम०—अभ्र सांवला पक्षी।—अंजनम् सुरमा,—अंजना, —अञ्जना,—अञ्जसा बिजली,—अब्जम्—अम्बुजम्, अम्बुजन्मन् (नपुं०), उत्पलम् नील कमल,—अभ्र काला बादल, अम्बर (वि०) गहरे नीले वस्त्रों से सुसज्जित (—रः) 1 राक्षस, पिशाच 2 शनि ग्रह 3 बलराम का विशेषण,—अम्बरम् प्रभात-काल, पौ फटना अयनम् (पुं०) नीलमणि—कण्ठः 1 मोर, मा० २।८०, मेघ० ७९ 2 शिव का विशेषण 3 एक प्रकार का जलकुक्कुट 4 नीलकण्ठ पक्षी 5 खंजन पक्षी 6 चिड़िया 7 मधुमक्खी,—केशी नील का पौधा, घोष शिव का विशेषण,—छद 1 छुहारे का पेड़ 2 गरुड़ का विशेषण,—तरु नारियल का वृक्ष,—ताल तमाल का वृक्ष, पक्व,—तम् अंधेरा, —पटलम् 1 काला आवरण काली तह 2 अंधे आदमी की आँख का जाला—पंच० ५,—पिच्छ बाज पक्षी,—पुष्पिका 1 नील का पौधा 2 अलसी—भः 1 चाँद 2 बादल 3 मधुमक्खी,—मणिरत्नम् नीलम नीलकान्तमणि—नेपथ्योचितनीलरत्नम्—गीत० ५, भामि० २।४२,—मौलिक जुगनू,—यष्टिका 1 लौह-माक्षिक 2 काली मिट्टी,—रात्रिः (स्त्री०) अंधकार की रात्रि, घोर अंधेरा, घोर अंधकार—निशाशशाक-क्षतनीलराजय —ऋतु० १।२,—लोहितः शिव का विशेषण, श० ७।३७ कु० २।५७।

नीलकम् [नील+कन्] 1 काला नमक 2 नीला इस्पात 3 तूतिया,—क काले रंग का घोड़ा।

नीलः (ला) लू [नि+लङ्+कु, पूर्वदीर्घ] एक प्रकार का कीड़ा।

नीला दे० नीली।

नीलिका [नील+क+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा [नीलिनी भी।

नीलिमन् (पुं०) [नील+इमनिच्] नीलापन, कालापन, नीलापन।

नीली [नील+अच्+ङीष्] 1 नील का पौधा—तत्र नीलीरस परिपूर्णे महाभाण्डमासीत्—पंच० १ एको ह्रदस्तु नीलानां नीलीमद्यपयोर्यथा—पंच० १।२६० 2. नीलमक्खियों की एक जाति 3 एक प्रकार का रोग। सम०—राग (वि०) अनुराग में दृढ़ (गः) 1. नील के रंग की भांति अपरिवर्तनीय स्नेह, दृढ़ानुरक्ति 2 पक्का मित्र,—संधानम् नील का खमीर भाण्डम् नील का बर्तन।

नीवरः [नी+क्वरप्] 1 व्यवसाय, व्यापार 2 व्यापारिक 3 धर्मभिक्षु, संन्यासी 4 कीचड़,—रम् जल।

नीवार [नि+वच्+घञ्, कुत्व, दीर्घ] 1 कमी के समय अनाज की बढ़ी मांग 2 दुर्भिक्ष, अकाल।

नीवारः [नि+वृ+घञ्, दीर्घ] जंगली चावल जो बिना जोते बोये उत्पन्न हों—नीवार शुकगर्भकोटरमुख-भ्रष्टास्तरूणामध—श० १।१४, रघु० १।५०,५।९,१५।

नीविः,—वी (स्त्री०) [निध्यायति निधीयते वा नि+व्ये +इन्, नीवि+ङीष्] कमर में लपेटी हुई धोती, धोती के दोनों किनारों की गांठ जो सामने पेट पर बांधी जाय, धोती की गांठ, नाड़ा, कमरबन्द—प्रस्थान-भिन्ना न ववन्धनीविम्—रघु० ७।९, नीवीबन्धोच्छ्वस-नम्—मा० २।५, कु० १।३८, नीवि प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण—काव्य० ४, मेघ० ६८, शि० १०।६४ 2 पूंजी, मूलधन 3 दांव, बाजी, शर्त।

नीवृत् (पुं०) [नि+वृ+क्विप्, पूर्वदीर्घ] कोई भी आबाद देश, राज्य, राजधानी।

नीव्र दे० नीप्र।

नीशारः [नि+शृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] 1 गरम कपड़ा, कंबल 2 मसहरी, मच्छदानी 3 कनात।

नीहारः [नि+हृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] 1, कुहरा, धुंध—रघु० ७।६०, याज्ञ० १।१५०, मनु० ४।११३ 2 पाला, भारी ओस 3 मलमूत्र स्थान।

नु (अव्य०) [नुद्+डु] प्रश्नवाचकता का द्योतक तथा 'सन्देह' एवं 'अनिश्चयात्मकता' प्रकट करने वाला अव्य० -स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—इ०, अस्त-शैलगहन नु विवस्वानाविवेश जलधिं नु महीनु—कि० ९।७, ५।१, ८।५३, ९।१५, ५४, १३।४, कु० १।४७, शि० १०।१४, श० २।८ २ 'संभावना' और 'अवश्य' के अर्थों को बतलाने के लिए इसे प्रश्न-वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न शब्दों से सांथ जोड़ दिया जाता है—किं स्वेतस्यात्किमन्यदितोऽथवा मा० १।१७, कथं नु खुवधूविधेय करणम्—दश०, दे० किन्नु भी।

नु (अदा० पर० नौति, प्रणौति, नुत—प्रेर० नावयति, इच्छा० नुनूषति) । प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना—सरस्वती तन्मिथुन नुनाव—कु० ७।९०, भट्टि० १४।११२, दे० नु० ।

नुति (स्त्रीलिं०) [नु+क्तिन्] 1 प्रशंसा, सस्तुति, प्रशस्ति परमुणनुतिभि (अने० पा०) स्वान् गुणान् स्मयपयना भर्तृ० २।६९ 2 पूजा, समादर ।

नुद् (तुदा० उभय० नुदति—ते, नुत्त या नुन्न, प्रणुदति) 1 धकेलना, धक्का देना, हाँकना, ठेलना, प्रोत्साहित करना—मद मद नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् —मेघ० ९ 2 प्रोत्साहित करना, उकसाना, आगे बढ़ाना—शि० ११।२६ 3 हटाना, भगा देना, फेंक देना, मिटाना—अदस्त्वया नुन्नम नुत्तम तम —शि० १।२७, केयूरबन्धोच्छ्वसितैर्नुनोद —रघु० ६।६८, ८।४०, १६।८५, किरा० ३।२३, ५।२८ । फेंकना, डालना, भेजना—प्रेर० 1 हटाना, दूर करना 2 प्रोत्साहित करना, उकसाना, ढकेलना ठेलना, आगे बढ़ाना—अप् –भगाना, हटाना भट्टि० १०।१३, उप, –धकेलना, आगे चलाना—शि० ९।६१ निस् –1 अस्वीकार करना, इंकार करना यावा मन्त्यान्ययो मास शाक च न निर्णुदेत्—मनु० ४।२५० 2 हटाना, मिटाना प्र मिटाना दूर करना, हटाना –शि० २।७१ वि –,1 आघात करना धोखा देना 2 (वीणा आदि) बाजाना प्र० 1 हटाना, दूर करना, मिटाना, फेंक देना –प्रणुदति विनादय वृष्टिभि –गीत० १० शि० ४।२६ 2 आगे बढ़ना, (काल) बिताना 3 मोहना बहलाना मनोरंजन करना –लक्ष्मीं दृष्टि विनोदयन्ति –पंच० ६, रघु० १४।७७ 4 दिल बहलाना रघु० ५।२१ सम् –,1 एकत्र करना, संग्रह करना 2 प्राप्त करना मिलना ।

नूतन, नूत्न (वि०) [नव+ऊतनप् (त्वप्) आदेश ।] 1 नया—नूतनो राजा संवृत्तः—पंच० १, रघु० ८।१५ 2 ताजा, बच्चा 3 नेत्र उपहार 4 तात्कालिक 5 हाल का, आधुनिक 6 रत्नजटित पूर्ण अजीब ।

नूनम् (अव्य०) [नु+ऊन्+अम्] अनिश्चय रूप में विश्वस्त रूप में, निश्चय ही अवश्य, निस्सन्देह —अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि स्फुलिङ्गावशेषं दधाति—रघु० ३।३, मेघ० ९।१८ ४५ भर्तृ० १।१०, कु० १।१२, ५।७५, रघु० १।२९, 2 अनुमान की संभावना के साथ, पूरी संभावना है कि –उत्तर० ४।२७ ।

नूपुर—रम् [नू+क्विप् नू+पुर्+क] क, पाजेब, पैर का आभूषण—नहि नूपुरमणि पाद नूपुर घटयन्ति चारणा —हि० २।७१ ।

नृ (पु०) [नी+कनृ डित्] (कर्तृ० ए० व० –ना, सबध०, ब० व०, नृणां या नृणाम्) 1 मनुष्य, एक व्यक्ति स्त्री हो, चाहे पुरुष मनु० ७।८१, ४।६१, ७।६१, १०।२३ 2 मनुष्यजाति 3 शरीर का माहरा 4 मूरजघड़ी की कील 5 पल्लिंग शब्द —नृणिना विगहो यावत् अमर० । सम० अस्थि-मालिन् (पु०) शिव का विशेषण, कपालम् मनुष्य की खोपड़ी, केसरिन् (पु०) नरसिंह, नृसिंहावतार में विष्णु भगवान्—कु० ६।८४, जलम् मनुष्य का मल, देव एक राजा धनद (पु०) कुबेर का विशेषण, प मनुष्यों का राजा राजा प्रेम अधवर राजसूय यज्ञ जिसे सम्राट सम्पन्न करता है और जिसमें सभी पदों का कार्य महान् राजाओं द्वारा किया जाता है, –°आत्मज राजकुमार युवराज आभी-रम्,—मानम् राजभवन में रानी का महल नीति आसनः सर्पिक, क्षत्र –आसनम् राजगद्दी, सिंहासन राजा की कुर्सी—गृहम् राजमहल, नीति (स्त्री०) राजनय, राजा की नीति राजनीति यथाशास्त्रं तथानीतिरुच्यते—मनु० ७।४३—प्रिय. राम का एक लक्ष्मण (त्रा०), लिङ्गम् राजचिह्न राजत्व का लक्षण राजकीय अधिकार चिह्न, विशेष कर श्वेत छत्र,—शासनम् राजाज्ञप्ति सभम् सभा राजाओं की सभा, पति –पाल राजा पशु मनुष्य की शक्ल का जानवर, हिंसक पशु नृशंस मिथुनम् मिथुन राशि, मेध. नरमेध यज्ञ, –यज्ञ मनुष्यों के लिए किया जाने वाला यज्ञ, अतिथियों का सत्कार (दैनिक पंच यज्ञों में से एक यज्ञ दे० पंचयज्ञ), –लोक मरण-धर्मा लोगों का संसार, मर्त्यलोक वराह सूअर के अवतार में विष्णु भगवान्,—वाहन कुबेर का विशेषण वेष्टन शिव का नाम –शूरम् मनुष्य का सींग आभूषण अमिभाकरा,—सिंह 1 'सिंह जैसा मनुष्य', शेरदिल, प्रथम मनुष्य, पुरुष श्रेष्ठ 2 विष्णु भगवान् का चौथा अवतार नृसिंहावतार', तु०नरसिंह 3 एक प्रकार का गंधद्रव्य, –सेनम्, सेना मनुष्यों की फौज, –सोम वैष्णव–झाड़ी मनुष्य वैसा आदमी—रघु० ५।५० ।

नृप (पु०) वैवस्वत मनु का पुत्र, जो एक क्षत्रिय के पास्वरूप शिष्यकरो बना ।

नृत् (दिवा० पर० नृत्यति प्रणृत्यति, नृत्त) नाचना, इधर उधर हिलना नृत्यन्ति स्त्रियः कामविजयेन सम मनि गीत० ६ लास्यैः पर्याप्त महोत्सव नयनं –शि० ८।७३ भर्तृ० ३।८० 2 रंगमंच पर अभिनय करना 3 दांत आगे निकालना, नाटक करना, प्रेर० नर्त-यति-ते 1 नचवाना, स्वमार्गे यायाशे किमनरमना नर्तयसि माम् —भर्तृ० ३।६, ताले शिञ्जावलयसुभगे

नाचना करवाना मे—मेघ० ७९, उत्तर० ३।१९ 2 हिलजुल पैदा करना,—आ ०, (प्रेर०) 1 नाच कराना 2 नचवाना, फुर्ती के साथ हिलाना—मरुद्भिर्धूतनलिननवमालै—रघु० ५।४२, अमरु ३२, ऋतु० ३।२०, उप ०, 1 नाचना 2. किसी दूसरे के आगे नाचना—उपानृत्यत देवेशम्, अ—, नाचना, प्रति—, नाच की नकल करके हँसी उड़ाना।

नृत्ति (स्त्री०) [नृत्+इन्] नाचना, नाच।

नृत्तम्, नृत्यम् [नृत+क्त, ष्यञ् वा] नाचना, अभिनय करना नाच, मूक अभिनय, हावभाव—नृत्तादस्या स्खलमनिलना कान्तम् मालवि० २।७, नृत्य मयूरा विजहुः—रघु० १४।६९, मेघ० ३२,३६, रघु० ३।१९। सम० प्रिय. शिव का विशेषण,—शाला नाचघर, —स्थानम् रंगमञ्च, नाचने का कमरा।

नृप, नृपति, नृपाल, [नरान् पाति रक्षति—नृ+पा+क, नृणां पतिः ष० त०, नृ+पाल्+ड० 'नृ' के नीचे। णिच्+अण्]

नृशंस (वि०) [नृ+शंस्+अण्] दुष्ट, द्वेषपूर्ण, क्रूर, उपद्रवी, कपाती,—मृच्छ० ३।२५, मनु० ३।४१, याज्ञ० १।६४।

नेजक [निज्+ण्वुल्] धोबी।

नेजय [निज+णिच्] धोना साफ करना, माजना।

नेतृ (पुं०) [नी+तृच्] 1 जो नेतृत्व या पथप्रदर्शन करे, प्रबन्धक सचालक, प्रबन्धक, (हाथियों तथा और जानवरों का) पथप्रदर्शक रघु० ४।७५, १४।२२, १६। २० मेघ० ५०, नेतारमन्य अध्व खुरक्षता वा—शि० ९० मुद्रा० ३।१४ 2 निदेशक, गुरु—भर्तृ० २।८८ 3 स्वामी, प्रधान 4 (दण्ड आदि) देने वाला मनु० ७।२५ 5 पालिक 6 नाटक का नायक।

नेत्र [नयति रूपादे वा अनेन—नी+ष्ट्रन्] 1 नेतृत्व करना सचालन 2 आँख—प्रायेण गृहिणीनेत्रा कार्यार्थेषु गृहीजन कु० ६।८५, ७।२९, ३०, ७।१३ 3 रई में डंडे की रस्सी 4 बुनी हुई रेशम, महीन रेशमी वस्त्र—नेत्रकर्मणोपरोध सूर्यम्—रघु० ७।७१, (यहाँ कुछ भाष्यकार 'नेत्र' शब्द का सामान्य अर्थ 'आँख' ही मानते हैं) 5 वृक्ष की जड़ 6 बस्तिक्रिया की नली 7 गाड़ी, वाहन 8 दो की संख्या 9 नेता अश्वि० 10 नक्षत्र पुंज, तारा (इन दो अर्थों में पुं०भी)। सम० अजनम् आँखों के लिए सुरमा—शृंगार० ७, -अन्त आँख का बाहरी किनारा, —अम्बु, अम्बस् (नपुं०) आँसू, -आमयः आँख का रोग, नेत्र-प्रदाह, —उत्सव सुखद तथा सुन्दर पदार्थ, -उपमम् बादाम,—कनीनिका आँख की पुतली,—कोश 1 अक्षिगोलक 2 फूल की कली, गोचर (वि०) दृष्टि-परास के भीतर, प्रत्यक्षज्ञेय, दृश्य,—छद. पलक, —जम्, -जलम्, -वारि आँसू,—पर्यन्तः आँख का बाहरी किनारा,—पिंड: 1. अक्षिगोलक 2 बिल्ली, —प्रसव्य दीठ, आँख का मेल,—बोधिः 1 इन्द्र का विशेषण (जिसके शरीर पर, गौतम द्वारा दिये गये शाप के फलस्वरूप, स्त्री-योनि से मिलते जुलते हजार चिह्न हो) 2 चन्द्रमा,—रंजनम् अंजन, सुरमा,—रोधनम् (नपुं०) आँख की बरौनी,—वस्त्रम् आँख का पर्दा, पलक —स्तम्भ. आँखों का पथराना।

नेत्रिकम् [नेत्र+ठन्] 1 नली 2 चश्मा।

नेत्री [नेत्र+ङीष्] 1. नली 2 धमनी 3 स्त्री नेता 4 लक्ष्मी का विशेषण।

नेदिष्ठ (अयम् एषाम् अतिशयेन अन्तिक—+इष्ठन्, अन्तिकस्य नेदादेश] निकटतम, दूसरा, अत्यन्त निकट (अन्तिक की उत्तमावस्था)।

नेदीयस् (वि०) (स्त्री०-सी) [अनयो अतिशयेन अन्तिक+ईयसुन् अन्तिकस्य नेदादेश] निकटतर, अधिक पास (अन्तिक की मध्यमावस्था)—नेदीयसी मूर्या—मा० १, निकट आकर, पहुँचकर।

नेपः [नी+प, गुण] कुल-पुरोहित।

नेपथ्यम् [नी+क्विप्, ने नेता तस्य पथ्यम्] 1 सजावट, आभूषण 2 परिधान, पोशाक, वेश-भूषा, वस्त्र—उदार नेपथ्यभृत्—रघु० ६।६, राजेन्द्रनेपथ्यविधानशोभा—१४।९, उज्ज्वलनेपथ्यविरचना—मा० १, कु० ७।७, विक्रम० ५ 3 विशेषकर नाटक के पात्र की वेशभूषा विरलेनेपथ्यपो पात्रयो प्रवेशोऽस्तु—मालवि० १ 4 परिधान कक्ष (जहाँ नाटक के पात्र अपनी वेशभूषा धारण करते हैं, यह सदैव परदे के पीछे होता) रंगमंच पृष्ठ, नेपथ्ये परदे के पीछे। सम०—विधानम् परिधान-कक्ष की व्यवस्था —मा० १।

नेपाल (पुं०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम स्मः—(ब० व०) इस देश के निवासी,—त्वक् तारा, -त्वी जंगली छुहारे का वृक्ष या इसका फल। सम० -आ.—आह्वा मैनसिल।

नेपालिका [नेपाल+ङीष्+कन्=टाप्, ह्रस्व] मैनसिल।

नेम (वि०) (कर्तृ० ब० व०—नेमे—नेमा) [नी+मन्] आधा,—म् 1 भाग 2 समय, काल, ऋतु 3. हद, सीमा 4 घेरा, बाड़ा 5 दीवार की नींव 6 जालसाजी, धोखा 7 सायंकाल 8 विवर, खाई 9 अद्ध।

नेमि, -मी (स्त्री०) [नी+मि, नेमि+ङीष्] 1 परिधि, पहिये का घेरा, 'उपोढ़रथेन मा स्म रथानेमेय—मा० ७।१०, चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, रघु० १।१७, ३९ 2 किनारा, घेरा 3 हस्तबधेरी, मरारी 4. वृत्त, परिधि—उदधिनेमि—रघु० ९।१० 5 वज्र 6 पृथ्वी, मि निनिश का वृक्ष।

नेष्टृ (पुं०) [नेष्+तृच्] सोमयाग के प्रधान ऋत्विजों (जिनकी संख्या १६ होती है) में से एक।

नेष्टुः [निस्+तुन्] मिट्टी का लौंदा ।
नैः श्रेयस (वि०) (स्त्री०-सी), **नैश्रेयसिक** (वि०) (स्त्री०-की) [नि श्रेयस+अण्, ठक् वा] मोक्ष या आनन्द की ओर ले जाने वाला ।
नैःस्वम्, नैःस्व्यम् [नि स्व+अण्, ष्यञ् वा] धनहीनता, गरीबी, दरिद्रता ।
नैक (वि०) [न+एक] जो अकेला न हो (प्रायः समास में प्रयुक्त) °**आत्मन्** (पु०) °**कृपः** °**मुखः** परमपुरुष परमात्मा के विशेषण ।
नैकटिक (वि०) (स्त्री०-की) [निकट+ठक्] पार्श्ववर्ती, निकट का, सटा हुआ,—क समन्तासी या भिक्षु—भट्टि० १४।१२ ।
नैकट्यम् [निकट+ष्यञ्] सामीप्य, पड़ौस ।
नैकषेयः [निकषा+ढक्] राक्षस (निकषा की सन्तान) ।
नैकृतिक (वि०) (स्त्री०-की) [निकृत्या परापकारेण जीवति—निकृति+ठक्] 1 बेईमान, झूठा, क्रूर—मनु० ४।१९६ 2 नीच, दुष्ट, दुरात्मा 3 दुःशील, रूखे मिजाज का ।
नैगम (वि०) (स्त्री०-मी) [निगम+अण्] वेद से सबद्ध, वेद में पाया जाने वाला, दे० °**काण्डम्**,—क 1 वेद का व्याख्याता—इति नैगमा 2 उपनिषद् 3 उपाय, तरकीब 4 विवेकपूर्ण आचरण 5 नागरिक, 6 व्यापारी, सौदागर—धाराहारोपनयनपरा नैगमा अनुमत—सिद्धम० ४।४ ।
नैघण्टुकम् [निघण्टु+ठक्] वैदिक शब्दों का संग्रहग्रंथ (पाँच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्त में की है ।
नैचिकम् [नीचा+ठक्] बैल का सिर ।
नैचिकी [निचि+शेकर्णशिरोदेश, तत स्वार्थे कन्—निचिक+अण्+ङीप्] बढ़िया गाय ।
नैतलम् [नितल+अण्] पाताल, नरक । सम०—**सद्मन्** (पु०) यम,—महावी० ५।१८ ।
नैत्यम् [नित्य+अण्] नित्यता, शाश्वतता ।
नैत्यक (वि०) (स्त्री० की), **नैत्यिक** (वि०) (स्त्री०-की) [नित्य+कन्, नित्य+ठक्] 1 नियमित रूप से घटने वाला, बार २ दोहराया गया 2 नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) 3 अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकरणीय ।
नैदाघ [निदाघ+अण्] ग्रीष्म ऋतु ।
नैदान [निदान+अण्] शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र का वेत्ता ।
नैदानिकः [निदान+ठक्] निदानशास्त्र का ज्ञाता, व्याधिकोविद ।
नैदेशिकः [निदेश+ठक्] आदेशों और निर्देशों का पालन करने वाला, सेवक ।
नैपातिक (वि०) (स्त्री०-की) [निपात+ठक्] अकस्मात् या दैवयोग से होने वाला उल्लेख ।
नैपुण्यम् [निपुण+अण्, ष्यञ् वा] 1 दक्षता, कौशल, चतुराई, प्रवीणता नैपुणान्येयमस्ति उत्तर० ६।२६, शि० १६।३० 3 कोई कार्य जिसमें कौशल की आवश्यकता हो, सूक्ष्म बात 4 भव्यता, पूर्णता- मनु० १०।४५ ।
नैभृत्यम् [निभृत+ष्यञ्] 1 लज्जाशीलता, विनम्रता 2 गोपनीयता—नैभृत्यमवलम्बितम् मालवि० ५ ।
नैमन्त्रणकम् [निमन्त्रण+अण्+कन्] भोज, दावत ।
नैयमः [नियम+अण्] व्यापारी, सौदागर ।
नैमित्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [निमित्त+ठक्] 1 किसी विशेष कारण के फलस्वरूप उत्पन्न, सबद्ध या निर्भर 2 अभाधारण, कभी कभी होने वाला, सामयिक, किसी विशेष निमित्त से किया गया (विप०-नित्य), -क ज्योतिषी, भविष्यवक्ता,- **कम्** 1 कार्य (विप०-कारण) निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम —श० ७।३० 2 किसी विशेष अवसर पर होने वाला संस्कार, आवर्ती पर्व ।
नैमिष (वि०) (स्त्री०-षी) [निमिष+अण्] निमिषमात्र या क्षणभर रहने वाला, क्षणिक अस्थायी-**अम्** पवित्र वनस्थली जहाँ कुछ ऋषि मुनि रहते थे जिनको कि सौति ने महाभारत सुनाया था—रघु० १९।७ (नाम करण इस प्रकार हुआ—यतस्तु निमिषेणैव निहत दानव बलम, अरण्येऽस्मिन् ततस्तेन नैमिषारण्यसज्ञितम्) ।
नैमेय [नि+मि+यत्+अण्] विनिमय, अदलाबदली ।
नैयग्रोधम् [न्यग्रोध+अण्] बड़ या बरगद का फल, बरगद का पेड़ ।
नैयत्यम् [नियत+ष्यञ्] नियमन, आत्मसंयम ।
नैयमिक (वि०) (स्त्री०-की) [नियम+ठक्] नियम या विधि के अनुरूपी, नियमित,—**कम्** नियमितता ।
नैयायिक [न्याय+ठक्] तार्किक, न्यायदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी ।
नैरंतर्य [निरन्तर+ष्यञ्] 1 निर्बाधता, निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता 2 सान्निध्य, ससक्ति ।
नैरपेक्ष्यम् [निरपेक्ष+ष्यञ्] अवहेलना, निरपेक्षता, उदासीनता ।
नैरयिकः [निरय+ठक्] नरकवासी, नरक भोगने वाला ।
नैरर्थ्यम् [निरर्थ+ष्यञ्] निरर्थकता, बेहूदगी, बकवास ।
नैराश्यम् [निराश+ष्यञ्] 1 आशा का अभाव, नाउम्मीदी, निराशा—तटस्थ नैराश्यात्—उत्तर० ३।१३ 2 कामना या प्रत्याशा का अभाव—नैराश्या पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलंबितम्—हि० १, १४४, भामि० ४ ।

नैरुक्तः [निरुक्त+अण्] जो शब्दों की व्युत्पत्ति जानता है, शब्दव्युत्पत्तिशास्त्रविद् ।

नैरुज्यम् [निरुज+ष्यञ्] स्वास्थ्य, आरोग्य ।

नैर्ऋतः [निर्ऋति+अण्] एक राक्षस—मथमप्रलयोद्वेगादाचरन्मुनैर्ऋतोदये —रघु० १०।३६, ११।२१, १२। ४३, १४।४, १५।२० ।

नैर्ऋती [नैर्ऋत+ङीप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2. दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैर्गुण्यम् [निर्गुण+ष्यञ्] गुणों या धर्मों का अभाव, 2 श्रेष्ठता की कमी, अच्छे गुणों का अभाव—नैर्गुण्यमेव साधीयो विमर्तु गुणगौरवम्—भामि० १।८८ ।

नैर्घृण्यम् [निर्घृण+ष्यञ्] निर्दयता, क्रूरता—वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथा हि दर्शयति—ब्रह्म० २।१।३४ ।

नैर्मल्यम् [निर्मल+ष्यञ्] स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलङ्कता ।

नैर्लज्ज्यम् [निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता, बेहयाई, ढीठपना ।

नैल्यम् [नील+ष्यञ्] नीलापन, गहरा नीला रंग ।

नैविड (वि) ड्यम् [निविड (वि) ड+ष्यञ्] सशक्तता, सटा हुआ होने का भाव, घनापन, सघनता ।

नैवेद्यम् [निवेद+ष्यञ्] किसी देवता या देवमूर्ति को भेंट देने के लिए भोज्य पदार्थ ।

नैश (वि०) (स्त्री० -शी) नैशिक (वि०) (स्त्री०-की) [निशा+अण्, ठक् वा] रात से सबध रखने वाला, रात्रिविषयक, रात को होने वाला—तन्नैशं तिमिरमपाकरोति चन्द्र —शि० ६।२९, नैशस्याचिर्हुतभुज इवाच्छिन्नमूर्धिष्ठमूषा—विक्रम० १।८, कि० ५।२ 2 रात को मनाया जाने वाला ।

नैश्चल्यम् [निश्चल+ष्यञ्] स्थिरता, अचलता, दृढता ।

नैश्चित्यम् [निश्चित+ष्यञ्] 1 निर्धारण, निश्चिति 2. निश्चित समय पर होने वाला संस्कार ।

नैषधः [निषध+अण्] 1 निषध देश का राजा 2 विशेषत, राजा नल का विशेषण 3 निषध देश का वासी, या जो निषध देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] 1 अकर्मण्यता, क्रियाहीनता 2 कर्म और उनके फलों से मुक्ति—भग० ३।४, १८।४९ 3 वह मुक्ति जो कर्म न कर केवल भाव, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (विप० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैष्किक (वि०) (स्त्री—की) [निष्क+ठक्] निष्क देकर मोल लिया हुआ, या निष्क से बना हुआ—कः टकसाल का अध्यक्ष ।

नैष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [निष्ठा+ठक्] 1 अन्तिम, आखीर का, उपसंहारक—क्रियते विधिमस्य नैष्ठिकम्—रघु० ८।२५ 2. निर्णीत, निश्चायक, निर्णायक (उत्तर आदि) 3 स्थिर, दृढ, सक्षम 4. उच्चतम, पूरा 5 पूर्ण रूप से आत्मकार, या शिव 6 निरन्तर स्वात्मरत शुद्ध पवित्र जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करने वाला,—कः यह शास्त्रज्ञ जो आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, और जिसने आजन्म ब्रह्मचारी तथा जितेन्द्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर ली है—कु० ५।६२, मनु० याज्ञ० १।४९ ।

नैष्ठुर्यम् [निष्ठुर+ष्यञ्] क्रूरता, कर्कशता, कठोरता ।

नैष्ठ्यम् [निष्ठ+ष्यञ्] स्थायित्व, दृढता ।

नैसर्गिक (वि०) (स्त्री० की) [निसर्ग+ठक्] स्वाभाविक, अन्तर्जात, सहज, अन्तर्हित—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न मुसलैरवताडनानि —मा० ९।४९, रघु० ५।३७, १।४६ ।

नैस्त्रिंशिकः [निस्त्रिंश+ठक्] कृपाणधारी, तलवार रखने वाला ।

नो (अव्य०) [न+उ] नहीं, न, मत (प्राय 'न' की भाति प्रयुक्त) भग० १७।२८, पञ्च० ५।२४, अमरु ५,७,१०,६२ ।

नोचेत् (अव्य०) [नो+चेत्+तद्० स०] अन्यथा, वरना ।

नोदनम् [नुद्+ल्युट्] 1 ठेलना, हाकना, आगे बढ़ाना 2 हटाना, दूर करना, मिटाना ।

नौधा (अव्य०) [नौ+धा] नौ प्रकार, नौ गुना ।

नौः (स्त्री०) [नुद्यते अनया—नुद्+डौ] जहाज, नौका, पोत महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—सा० ३। १ 2 एक नक्षत्रपुंज का नाम । सम०—आरोहः (नावारोह) 1 जहाज का यात्री 2 मल्लाह—कर्णधारः, नाविक, पोतचालक,—कर्मन् (नपु०) मल्लाह की वृत्ति—मनु० १०।३४,—चरः,—जीविकः मल्लाह मांझी—रघु० १७।८१,—तार्य (वि०) जिसमें नाव चल सके, जो नाव से पार किया जा सके,—दंडः डाड, चप्पू,—धारम् पोत-कौशल, नौकायन,—धर्मिन् (वि०) नाव या जहाज से जाने वाला, नौयायी—मनु० ८। ४०९,—बाहः कर्णधार, कर्णी, पोतवाहक, केवट,—भङ्गः पोतभंग, नौका का टूट जाना—नौभ्यसने विपन्न —शि० ६,—साधनम् जहाजी बेड़ा, नौसमूह, पोतावली—ततानुत्साय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान् —रघु० ४।३६ ।

नौका [नौ+कन्+टाप्] एक छोटी नाव, डिंगी—अयमिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका —मोह०६ । सम०—दंडः चप्पू, पतवार ।

न्यक् (अव्य०) [नि+अञ्चु+क्विन्] क्रियाविशेषण, घृणा अपमान एवं हीनता को द्योतित करने के लिए 'कृ' और 'भू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । सम०—करणम्

—कारः 1. दीनता, अवमानना 2. अनादर, घृणा, अपमान—न्यक्कारो हृदि वज्रकील इव मे तीव्रः परिस्पन्दते —महावी० ५।२२, ३।४०, गंगा० ३२,- भावः 1 दीनता, अवमानना 2. घटिया करने वाला, मातहती, अधीनता,—भाषित (वि०) 1 दीन, अधः —पतित, अपमानित 2 आगे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को प्राप्त, अप्रधानीकृत- न्यग्भावितवाच्यव्यग्यव्यंजन क्षमस्य शब्दार्थयुगलस्य—काव्य० १।

न्यक्ष (वि०) [नियते निकृते वा अक्षिणी यस्य—ब० स०, पच् प्रत्यय] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना,—क्षः 1 भैंस 2 परशुराम का विशेषण,—क्षम् सुराग्र, छिद्र।

न्यग्रोधः [न्यक् एलढि - न्यक्+रुध्+अच्] 1 बरगद का पेड़ 2 पुरम, लंबाई का एक माप जिसकी लंबाई उतनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होवे। सम०—परिमंडला श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा यह है - स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितंबे च विशालता, मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोधपरिमंडला (शब्द०), दूर्वाकांडमिव श्यामा न्यग्रोधपरिमंडला —भट्टि० ४।१८।

न्यंकुः [नि+अञ्च्+डु] एक प्रकार का बारहसिंगा —रघु० १३।१५।

न्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—ञ्ची) [नि+अञ्च्+क्विन्] नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर जाता हुआ 2 मुह के बल लेटा हुआ 3 नीच, घृणा के योग्य, अधम, कमीना, दुष्ट - शि० १५।२१, (यह इसका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है) 4 मन्थर, आलसी 5 पूर्ण, समस्त।

न्यंचनम् [नि+अञ्च्+ल्युट्] 1 वक्र 2 छिपने का स्थान 3 कोटर।

न्यक्षः [नि+इ+अच्] 1 हानि, नाश 2 बरबादी ६४।

न्यासनम् [नि+अस्+ल्युट्] 1 जमा करना, धरोहर रखना 2 सौंपना, छोड़ना।

न्यस्त (भू० कृ० कृ०) [नि+अस्+क्त] 1 डाला हुआ, फेंका हुआ, लिटाया हुआ, जमा किया हुआ 2 अन्दर रक्खा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—न्यस्ताक्षरा - कु० १।७ 3 वर्णित, चित्रित - चित्रन्यस्त 4 सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ, स्थानान्तरित चित्रन्यस्त ५।१७ रत्न० १।१० 5 रहना, टिकना 6 छोड़ा हुआ, एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सम—देह (वि०) देह छोड़ने वाला, -देह (वि०) मरा हुआ, मृत, शस्त्र (वि०) 1 जिसने हथियार डाल दिये हों—आर्तायस्य विभुवनगुरोर्न्यस्तशस्त्रस्य शोकात् - वेणी० २।१८ 2, निरस्त्र, अरक्षित 3. जो हानि कारक न हो।

न्यस्तकम् [नि+अक्+क्यप्] तले हुए चावल, मुरमुरे।

न्यस्य [नि+अद्+क्त] खाना, खिलाना।

न्यायः [नियन्ति अनेन -नि+इ+घञ्] 1 प्रणाली, तरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना —अधार्मिक त्रिभिर्न्यायैर्निगृह्णीयात् प्रयत्नतः —मनु० ८।३१० 2. उपयुक्तता, औचित्य, मुरीति —कि० ११।३० 3. कानून, न्याय या इंसाफ, नैतिक विशालता, न्यायता, सचाई, ईमानदारी - शक्ति न्यायप्रवृत्तस्य निर्बलोऽपि महाबलाम् अनर्घ० १।४ 4 कानूनी मुकदमा, कानूनी कार्रवाई 5 कानून के अनुसार दण्ड, निर्णय 6 राजनीति, अच्छा शासन 7 समानता, सादृश्य 8. लोकरूढ नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टांत, निदर्शना जैसे कि 'दंडापूप न्याय' 'काकतालीय न्याय' 'घुणाक्षर न्याय' आदि दे० नी० 9 वैदिक स्वर—न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम् - कु० २।१२ (मल्लि० 'न्याय' शब्द का अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी सम्मति में यहां 'पद्धति' 'रीति' है जो कि तीन 'पद्धतियों' 'अर्चस्' ऋक्, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है) भर्तृ० ३।५५ 10 (मी० में) विश्वव्यापी नियम 11 गौतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र, न्यायदर्शन 13 अनुमान की पूरी प्रक्रिया (जिसमें पांचों अंग अर्थात् प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन सम्मिलित हैं)। सम०—पथ मीमांसा दर्शन, -वर्तिन् (वि०) आचरणशील, न्यायानुसार आचरण करने वाला, -वादिन् (वि०) न्याय और धर्मानुमोदित बात कहनेवाला, -शास्त्रम् तर्क विज्ञान, तर्कशास्त्र -सारिणी उचित तथा उपयुक्त व्यवहार, -सूत्रम् गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

विशे० कुछ सिद्धान्त-वाक्य या लोकरूढ नीतिवाक्यों को पाठकों के उपयोग के लिए संग्रह करके नीचे अकारादिक्रम से दिया गया है।

1 अक्षकटकन्याय [अन्धे के हाथ बटेर लगना] अंधे के हाथ बटेर लगना के समान।

2 अधमरपरान्याय [अधानुकरण - अर्थात् लोग बिना विचारे दूसरों का अन्धानुकरण करते हैं और यह नहीं कि इस प्रकार का अनुकरण उन्हें अन्धकार में फेंक देगा]।

3 अरुन्धती दर्शनन्याय [अरुन्धती तारादर्शन का सिद्धान्त, ज्ञात से अज्ञात को पता लगाना, शंकराचार्य की निम्नांकित व्याख्या में इसका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा

अरुन्धतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्था स्थूलां तारामनूद्य प्रथममपरुधनीति ग्राहयित्वा तां प्रत्याख्याय पश्चात्तदनुरोधेन सूक्ष्मां दर्शयति।

4 अवीचि परिक्षेप्यन्याय [बगीचे के उद्यान का न्याय] जैसे कोई माली अपने बगीचे को अपनी वाटिका में रखता है, परन्तु उसने अपने बगीचा को छोड़ कर इसी वाटिका में क्या रक्खा इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

जा सकता। सारांश यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सम्पन्न करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो यह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।

5 **अश्मलोष्टन्यायः** [पत्थर और मिट्टी के लौंदे का न्याय] मिट्टी का ढेला कई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वही कठोरता मदुता में बदल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर से करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निचले दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उसकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नगण्य बन जाता है। 'पाषाणेष्टकन्याय' भी इसी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।

6 **कदंबकोरक (गोलक) न्यायः** [कदंब वृक्ष का कलि का न्याय] कदंब वृक्ष की कलियां साथ ही खिल जाती हैं, अतः जहां उदय के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।

7 **काक तालीय न्यायः** [कौवे और ताड़ के फल का न्याय] एक कौवा एक वृक्ष की शाखा पर जाकर बैठा ही था कि अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कौवे के प्राण पखेरू उड़ गये—अतः जब कभी कोई घटना शुभ हो या अशुभ अप्रत्याशित रूप से अकस्मात् घटती है, तब इसका उपयोग होता है—तु० चन्द्रा०—पतत्रिणा मेलन तस्य लाभो मे यत्र मुद्भव, तदेतत्काक-तालीयमकितर्किकसभवम्। कुवलयानन्द में भी पतत् तालफल यथा काकेनोपभुक्तमेव ग्रहोद-नेनाभिनद्धहृदया तन्वी मया भुक्ता। दे० 'काकतालीय' भी।

8 **काकदंतगवेषणन्यायः** [कौवे के दांत ढूंढना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति व्यर्थ, अलाभकारी या असंभव कार्य करता है।

9 **काकाक्षिगोलकन्याय** [कौवे की आंख गोलक का न्याय] एकदृष्टि, एकाक्ष आदि शब्दों से यह कल्पना की जाती है कि कौवे की आंख तो एक ही होती है, परन्तु वह आवश्यकता के अनुसार उसे एक गोलक से दूसरे गोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब वाक्य में किसी शब्द या पदोच्चय का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, आवश्यकता होने पर दूसरे स्थान पर भी अध्याहार कर ले—अर्थात्—द्वीपान्तरितेऽपि इत्यत्र अस्ति-यास्तिस्यस्य काकाक्षिगोलकन्यायेन अत्रापि सम्बन्धेनान्वय-न्यायः।

10 **कूपयंत्रघटिका न्यायः** [रहटटिंडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है जैसे रहट के चलते समय कुछ टिंडर तो पानी से भरे हुए ऊपर को जाते हैं, कुछ खाली हो रहे हैं, और कुछ बिल्कुल खाली होकर नीचे को जा रहे हैं—काश्चिदुच्छ्वसति प्रपूरयति वा काश्चिदन्तर्यात्युल्लसति काश्चित्पातविधौ करोति च पुनः काश्चिन्नयत्याकुलान् अन्यान्यप्रति-पक्षमूर्तिमिमा लोकस्थितिं बोधयन्नेव क्रीडति कूप-यन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः। मृच्छ० १०।५९।

11 **घट्टकुटीप्रभातन्यायः** [चुंगी घर के निकट पौफटी का न्याय] कल्पना है एक गाड़ीवान चुंगी देना नहीं चाहता था, अतः वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते में रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर इधर-उधर घूमता रहा, जब पौफटी तो देखता क्या है कि वह ठीक चुंगीघर के पास ही आ गया है, विवश हो उसे चुंगी देनी पड़ी इसलिए जब कोई किसी कार्य को जानबूझ कर टालना चाहता है, परन्तु वह उसी को करने के लिए विवश होता पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है दे० श्रीधर—तदिदं घट्टकुटीप्रभातन्याय मनुवर्तते।

12 **घुणाक्षर न्यायः** [लकड़ी में घुणकीटों द्वारा निर्मित अक्षर का न्याय] किसी लकड़ी में घुन लग जाने से अथवा किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ अक्षरों की आकृति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कोई कार्य अनायास व अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

13. **दण्डापूपन्यायः** [डंडे और पूड़े का न्याय] जब डंडा और पूड़ा एक ही स्थान पर रक्खे गये—और एक व्यक्ति ने कहा कि डंडे को तो चूहे घसीट कर ले गये और खा लिया, तो दूसरा व्यक्ति स्वभावतः यह समझ लेता है कि पूड़ा तो खा ही लिया गया होगा—क्योंकि वह उसके पास ही रक्खा था। इसलिए जब कोई वस्तु दूसरी के साथ विशेष रूप से अत्यन्त सबद्ध होती है और एक वस्तु के संबंध में हम कुछ कहते हैं तो वही बात दूसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, तु० मूषिकेण दण्डो भक्षित इत्य-नेन तत्सहचरितस्यापूपस्यक्षणमर्यादायां भवतीति नियत-समानन्यायादर्थान्तरमापततीत्येष न्यायो दण्डापूपिका—सा० द० १०।

14 **देहलीदीपकन्यायः** [देहली पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहली पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहली के दोनों ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही वस्तु दो स्थानों पर काम आवे।

15. **नृपनापितपुत्रन्यायः** [राजा और नाई के पुत्र का न्याय] कहते हैं कि एक नाई किसी राजा के यहाँ नौकर था, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब से सुन्दर हो उसे लाओ। नाई बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में थककर और निराश होकर वह घर लौट आया – तब उसे अपना काला-कलूटा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कलूटे बालक को देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया परन्तु यह विचार कर कि मानव मात्र अपनी वस्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया –तु० सर्वं कांतमात्मीय पश्यति–हिन्दी–अपनी छाछ को कौन खट्टा बताता है।

16. **पंकप्रक्षालनन्यायः** [कीचड़ धोकर उतारने का न्याय] कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कीचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयग्रस्त स्थिति में फँस कर उससे निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा यह ज्यादह अच्छा है कि उस भयग्रस्त स्थिति में कदम ही न रक्खे—तु०–'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्'–'सौ दवा से एक परहेज अच्छा'।

17. **पिष्टपेषणन्यायः** [पिसे को पीसना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिसे को पीसना फालतू और व्यर्थ कार्य है—तु० कृतस्य करणं वृथा।

18. **बीजांकुरन्यायः** [बीज और अङ्कुर का न्याय] कार्य कारण जहाँ अन्योन्याश्रित होते हैं वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है (बीज से अङ्कुर निकला, और फिर समय पाकर अंकुर से ही बीज की उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना अङ्कुर हो सकता है और न अंकुर के बिना बीज।

19. **लोहचुम्बकन्यायः** [लोहे और चुंबक का आकर्षण न्याय] यह प्रकृति सिद्ध बात है कि लोहा चुंबक की ओर आकृष्ट होता है, इसी प्रकार प्राकृतिक घनिष्ट संबंध या निसर्गवृत्ति की बदौलत सभी वस्तुएँ एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।

20. **वह्निधूमन्यायः** [धूएँ से अग्नि का अनुमान] धूएँ और अग्नि की अवश्यभावी सहवर्तिता नैसर्गिक है, अतः (जहाँ धूआँ होगा वहाँ आग अवश्य होगी)। यह न्याय उसी समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तियों का अनिवार्य संबंध बताया जाय।

21. **वृद्धकुमारीवाक्य (वर)न्यायः** [बूढ़ी कुमारी को वरदान न्याय] इस प्रकार का वरदान माँगना जिसमें वह सभी बातें आ जाय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाष्य में कथा आती है कि एक बुढ़िया कुमारी को इन्द्र ने कहा कि एक ही वाक्य में जो वरदान चाहो माँगो, तब बुढ़िया बोली—पुत्रा मे बहुक्षीर-घृतमोदन काञ्चनपात्र्या भुञ्जीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की थाली में घी दूध युक्त भात खावें)। इस एक ही वरदान में बुढ़िया ने पति, पुत्र, धन-धान्य, पशु, सोना चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

22. **शाखाचंद्रन्यायः** [शाखा पर वर्तमान चन्द्रमा का न्याय] जब किसी को चन्द्रमा का दर्शन कराते हैं तो चन्द्रमा के दूर स्थित होने पर भी हम यही कहते हैं 'देखो सामने वृक्ष की शाखा के ऊपर चाँद दिखाई देता है'। अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर ही हो, निकटवर्ती किसी पदार्थ से संसक्त होती है।

23. **सिंहावलोकनन्यायः** [सिंह का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति आगे चलने के साथ २ अपने पूर्वकृतकार्य पर भी दृष्टि डालता रहता है—जिस प्रकार सिंह शिकार की तलाश में आगे भी बढ़ता जाता है परन्तु साथ ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।

24. **सूचीकटाहन्यायः** [सुई और कड़ाही का न्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है, जब दो बातें एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान करने को हो, तो उस समय आसान कार्य को पहले किया जाता है, जैसे कि जब किसी व्यक्ति को सुई और कड़ाही दो वस्तुएँ बनानी हैं तो वह सुई को पहले बनावेगा—क्योंकि कड़ाही की अपेक्षा सुई का बनाना आसान या अल्पश्रमसाध्य है।

25. **स्थूणोत्खननन्यायः** [गढ़ा खोदकर उसमें थूणी जमाना] जब किसी मनुष्य को कोई थूणी अपने घर में लगानी होती है तो मिट्टी ककड़ आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस थूणी को दृढ़ बनाता है, इसी प्रकार वादी भी अपने अभियोग की पुष्टि में नाना प्रकार के तर्क, और दृष्टान्त उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता है।

26. **स्वामिभृत्यन्यायः** [स्वामी और सेवक का न्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब पालक और पाल्य, पोषक और पोष्य के संबन्ध को बतलाना होता है या ऐसे ही किन्हीं दो पदार्थों का संबंध बतलाया जाता है।

न्याय्य (वि०) [न्याय+यत्] 1 ठीक, उचित, सही, न्यायसंगत, उपयुक्त, योग्य—न्याय्यात्पथः प्रविचलति

पद न धीरा —मनु० २।८३, भग० १८।१५, मनु० २।१५२, ९।२०२, रघु० २।५५, कि० १४।७, कु० ६।८७ 2 सामान्य, प्रचलित।

न्यास[1] [नि+अस्+घञ्] 1 रखना, स्थापित करना, आरोपण करना—तस्या अरुन्धतिपतिव्रतास्—रघु० २।२, कु० ६।५०, चरणन्यास, अंगन्यास आदि 2 अन्त कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, ठप्पा, अतिशस्त्र-नखन्यास —रघु० १२।७३, 'जहाँ नखचिह्न, शस्त्र-चिह्नों से भी बढ़ गये, दंतन्यास 3 जमा करना 4 धरोहर, अमानत प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा—श० ४।२१, रघु० १२।८, याज्ञ० २।६७ 5 सौंपना, वचन-बद्ध होना, सिपुर्द करना, हवाले करना 6 चित्रित करना, लिख रखना 7 छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्यागना, तिलांजलि देना—शस्त्र°, भग० १८।२ 8 सम्मत रखना, घटाना 9 खोद कर निकालना, (पत्र आदि में) पकड़ना 10 शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न मन्त्रों का ध्यान जो सामान्य रूप से पाठ के साथ २ तदनुरूप हावभाव सहित सम्पन्न किया जाता है। सम०—अपह्नव किसी धरोहर का प्रत्याख्यान करना,—धारिन् (पु०) धरोहर रखने वाला, रहन रखने वाला।

न्यासिन् (पुं०) [न्यास+इनि] जिसने अपने समस्त सांसारिक बन्धनों को काट डाला है, संन्यासी।

न्यु (न्यू) स्व (वि०) [नि+उङ्+घञ्] 1 मनोहर, सुन्दर, प्रिय 2 उचित, ठीक।

न्युब्ज (वि०) [नि+उब्ज+अच्] 1 नीचे की ओर झुका हुआ, या मुड़ा हुआ, मुँह के बल लेटा हुआ —ऊर्ध्वार्पित न्युब्जकटाहकल्पं (व्योम)—नै० २२।३२ 2 झुका हुआ, टेढ़ा 3 उन्नतोदर 4 कुबड़ा, —ब्जः बड़ या बरगद का पेड़। सम०—ब्रह्मः लाडा, बुद्धू सदृश।

न्यून (वि०) [नि+ऊन्+अच] 1 कम किया हुआ, घटाया हुआ, छोटा किया हुआ 2 सदोष, घटिया, हीन, अभावग्रस्त, रहित या विहीन—जगा कि अर्थ-न्यून में 3 कम (विप० अधिक) याज्ञ० २।११६ 4 अदोष (किसी अंग में) पाद° 5 नीच, दुष्ट, दुर्वृत्त, निंद्य,—नम् (अव्य०) कम, कम मात्रा में। सम०—अंग (वि०) अपांग, विकलांग,—अधिक (वि०) कम या ज्यादह, असमान,—धी निर्बुद्धि, अज्ञानी, मूर्ख।

न्यूनयति (ना० धा० पर०) घटना, कम करना।

प

प (वि०) [पा+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 पीने वाला, जैसा कि 'द्वि' 'अनेक' में 2 चौकसी करने वाली, रक्षा करने वाला, हकूमत करने वाला जैसा कि 'गो' 'नृप' और 'क्षितिप' में **पः** 1 वायु हवा 2 पक्षी 3 अंडा।

पक्कण [पचति शब्दादिनिकृष्टमांसमिति पच्+क्विप् +कक्+शवरः तस्य कर्ण कोलाहलशब्दो यत्र] 1 चाण्डाल का घर बर्बर या जंगली आदमी का घर।

पक्ति[1] (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] 1 पकाना 2 पचना, हाजमा या पाचन शक्ति 3 पक जाना, परिपक्व होना, परिपक्वावस्था विकास 4 प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा। सम० -शूलम् अजीर्ण के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीड़ा।

पक्तृ (वि०) [पच्+तृच्] 1 रसोइया पाचक 2 पकाने वाला 3 उद्दीपक, पचाने वाला —(पु०) जठराग्नि।

पक्त्रिम् [पच्+ष्ट्रन्] 1 यज्ञाग्नि को स्थापित रखने वाले गृहस्थ की दशा 2 इस प्रकार स्थापित यज्ञाग्नि।

पक्त्रिमम् (वि०) [पक्त्रि+मप्] 1 पक्का, पका हुआ 2 परिपक्व, 3 पकाया हुआ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1 पकाया हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ—जैसा कि 'पक्वान्न' में 2 पचा हुआ 3 सेका हुआ, गरम किया हुआ, तपाया हुआ (विप० आम) पक्वेष्टकानामाकर्षम्—मृच्छ० ३ 4 परिपक्व, पक्का, पक्वबिम्बाधरोष्ठी मेघ० ८२ 5 सुविकसित, सुपूरित, परिपक्व जैसा कि 'पक्वधी' में 6 अनुभवशील, बुद्धिमान् 7 (फोड़े की) भांति) पका हुआ जिसमें पीप पड़ने वाली हो 8 सफेद (बाल) 9 नष्ट, क्षीयमाण विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का। सम०—अतिसारः पुरानी पेचिश,—अन्नम् मसाला आदि डालकर बनाया गया भोजन,—आशय. पेट, उदर,—इष्टका पकी हुई ईंट,—इष्टकाचितम् पक्की ईंटों से निर्मित भवन,—कृत् (वि०) 1. पकाने वाला, 2 परिपक्व होने वाला,—रसः शराब, मदिरा—वारि (नपु०) काञ्जी का पानी।

पक्वजः (पु०) एक बर्बर जाति का नाम, चाण्डाल।

पक्ष्[1] (भ्वा० पर०, चुरा० उभ, पक्षति, पक्षयति-ते) 1 लेना, ग्रहण करना 2 स्वीकार करना 3 पक्ष लेना, तरफदारी करना।

पक्ष[1] [पक्ष्+अच्] बाजू, भुजा, अद्यापि पक्षावपि नोद्भि-

येते—का० ३४७, इसी प्रकार 'उद्भिन्नपक्षः' निकल आये हैं पंख जिसके, पक्षयुक्त, पक्षच्छेदोद्यत शकम् —रघु० ४।१०, ३।४० 2 बाजू के दोनों ओर लगे पंख 3 किसी मनुष्य या जन्तु का पार्श्व, कक्ष—स्तबेरमा उभयपक्षविनीतनिद्रा —रघु० ५।७२ 4 किसी भी वस्तु का पार्श्व, बगल 5 सेना का एक कक्ष या पार्श्व 6 किसी वस्तु का अर्धभाग 7 चान्द्र मास का अर्धभाग, पखवारा (१५ दिनों का) (इस प्रकार के दो पक्ष होते हैं—शुक्लपक्ष—जिन दिनों चन्द्रमा निकला रहता है, कृष्ण या तमिस्रपक्ष अधियारा पाख) तमिस्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४, मनु० १।६६, याज्ञ० ३।५०, सीमा वृद्धि समायाति शुक्लपक्ष इवोडुराट्—पंच० १।९२ 8 दल, गुट, पहलू, प्रमुदितवन्यपक्ष रघु० ६।८६, शि० २।११७, भग० १४।२५, रघु० ६।५३,१८ 9 किसी एक दल से संबद्ध, अनुयायी, साझीदार—शत्रुपक्षोभवान् -हि० १ 10 श्रेणी, समुदाय समूह, अनुयायियों की संख्या शत्रु, मित्र 11 किसी तर्क का एक पहलू, विकल्प, दो में से कोई सा एक पक्ष, -पक्षे दूसरा पहलू इसके विपरीत पूर्वं एवाभवत्पक्षस्तमिस्राभवदुत्तर -रघु० ४।१०, १४।३४, तु० पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष 12 एक सामान्य विचार जैसा कि 'पक्षातरे' में 13 चर्चा का विषय, प्रस्ताव 14 अनुमान-प्रक्रिया का विषय (वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति संदिग्ध हो) संदिग्धसाध्यवान् पक्ष —तर्क०, दयन शुद्धिभूता गृहीतपक्षा —शि० २०।११ (यहां इसका अर्थ 'पक्षयुक्त' भी है) 15 दो की संख्या को प्रतीकात्मक व्यक्ति 16 पक्षी 17 अवस्था, दशा 18 शरीर 19 शरीर का अंग 20 राजा का हाथी 21 सेना 22 दीवार 23 विराम 24 प्रतिवचन, उत्तर 25 गति,समुच्चय (समास में 'वाले' का अर्थ देने वाले शब्दों के साथ), केशपक्ष, तु० हस्त। सम० —अंत कोई से भी पक्ष का पन्द्रहवां दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा का दिन —अंतरम् 1. दूसरा पार्श्व 2 किसी तर्क का दूसरा पहलू 3 और विचार या कल्पना, —आघातः 1 शरीर के एक अंग का मारा जाना, अधलकवा -आभासः 1 भ्रामक तर्क 2 मिथ्या परिवाद या फरियाद, -आहार पखवारे में केवल एक बार भोजन करना, -ग्रहणम् किसी भी पक्ष का ले जाना,-चरः 1 यूथभ्रष्ट हाथी 2 चन्द्रमा, -छिद् (पु०) इन्द्र का विशेषण (पहाड़ के पंखों या भुजाओं को काटने वाला), कु० १।२०, —ज. चांद पूर्णम् 1 किसी विवाद के दोनों पहलू 2. दो पखवारे अर्थात् एक मास, द्वारम् चारदरवाजा, निजी द्वार,—धर (वि०) 1. पखवारी 2. एक का पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफदारी करने वाला (र) 1. पक्षी 2. चन्द्रमा 3 हिमायती 4. यूथभ्रष्ट हाथी, नाड़ी पक्षी का मोटा पर जिसे कलमदानी आदि प्रयुक्त करते हैं,—पातः 1. किसी एक की तरफदारी करना 2. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, चाह, रुचि भवति भव्येषु हि पक्षपाता कि० ३।१२, वेणी० ३।१०, उत्तर० ५।१७, स्त्रिपक्षे बद्धपक्षपाता मुद्रा० १।३ 3 किसी दल विशेष की ओर अनुराग, हिमायत, तरफदारी पक्षपातमश्च देवी मन्यते —मालवि० १ सत्य अना वर्जिता न पक्षपातात् —भर्तृ० १।४७ 4 पक्षों का गिरना, पक्षमोचन 5 हिमायती -पातिन् (वि०) 1 पक्षपात करने वाला, किसी एक दल का अनुयायी, (किसी एक विशिष्ट बात का) तरफदार - पक्षपातिनी देवी अपि पाहवानाम् वेणी० ३ 2. सहायता करने वाला वेणी० ३ 3 अनुयायी, हिमायती, मित्र—य सुरपक्षपातिना विक्रम० १, (नै० २।५२ में 'पक्षपातिनां' शब्द का अर्थ है 'पक्षों की गति' भी), -पालिः और दरवाजा —बिल कक पक्षी, -भाग 1. पार्श्व, बगल 2 विशेषतः हाथी का पार्श्व, -भूमिः उतरी दूरी जितनी सूर्य एक पखवारे में तय करता है, -मूलम् पंख की जड़, -वाद 1 एकतरफा बयान 2 एक पक्ष की उक्ति, सम्भिक्रिया, -वाहनः पक्षी, -हतः (वि०) जिसका एक पार्श्व लकवे से बेकाम हो गया हो, -हर पक्षी, -होम 1 पन्द्रह दिन एक होने वाला यज्ञ 2 पाक्षिक यज्ञ।

पक्षक [पक्ष+कन्] 1 चार दरवाजा 2. पक्ष, पार्श्व 3. साथी, हिमायती (समास के अन्त में प्रयुक्त)।

पक्षता [पक्ष+तल्+टाप्] 1. मित्रता, हिमायत 2 दल- विशेष का अनुगमन 3. किसी एक पक्ष का होना।

पक्षति (स्त्री०) [पक्षस्य मूलम्-पक्ष+क्ति] 1. पंख की जड़ अलिपक्षच्छदुपुटेन पक्षती—नै० २।२, यत्नं छिन्नं जटायुपक्षतिं —उत्तर० ३।४३, शि० ११।५६ 2 शुक्लपक्ष की प्रतिपदा।

पक्षतुः [पक्ष+आलुच्] पक्षी।

पक्षिणी [पक्ष+इनि+ङीप्] 1 मादा पक्षी 2 दो दिनों के बीच की रात (द्वावह्नावेक रात्रिश्च पक्षिणीत्यभिधीयते) 3 पूर्णिमा।

पक्षिन् (वि०) (स्त्री -णी) [पक्ष+इनि] 1. पंखयुक्त 2 बाजूवाला 3 तरफदार, दल विशेष का अनुयायी (पु०) 1 पक्षी 2 तीर 3. शिव का विशेषण। सम० -इन्द्र -प्रवर. -राज् (पु०) राजा, सिंह -स्वामिन् (पु०) गरुड़ का विशेषण,—कीटः छोटी चिड़िया,—शाला 1. घोंसला 2. चिड़ियाघर।

पक्ष्मन् (नपु०) [पक्ष्+मनिन्] 1. बरौनी—सस्मितमुन्नमि पक्ष्माणि—मेघ० ९०।४७, रघु० २।१९, ११।३६, 2 फूल की पत्ती 3. घास का सिरा, पताका घास 4. बाजू।

पक्ष्मल (वि०) [पक्ष्मन्+लच्] 1. दृढ़, लम्बी और सुन्दर बरौनी वाला—पक्ष्मलाक्ष्या —मा० ३।२५ 2. बालों वाला, लोमश, रोएदार मृदितपक्ष्मलरल्लकाग —शि० ४।६१।

पक्ष्य (वि०) [पक्ष+यत्] 1. पक्षधारे में होने वाला, पाक्षिक 2 तरफदार 3. पक्षपाती, —क्षः हिमावती, अनुयायी मित्र, सखा—नन्वक्षिण एव वीर्यमेतद्विज-यते द्विषतो यदस्य पक्ष्या —विक्रम० १।१६।

पङ्क,—कम् [पच् विस्तारे कर्मणि करणे वा घञ्, कुत्वम्] गारा, लसदार मिट्टी, दलदल अनीक्षा पङ्कतां भूमि-मृदक मात्रनिष्ठते शि० २।३४, कि० २।६, रघु० १६।३० 2 अन्न मोटी राशि, स्थूल ढेर कृष्णा-गुरुपङ्क—का० ३० 3. दलदल, कीचड़, धसन 4 पाप। सम० कीर-टिटहिरी,—कीटः सूअर,—ग्राह, मगरमच्छ, घड़ियाल,—छिद् (पु०) रीठे का वृक्ष (कतक, जिसके फल से गंदले पानी को स्वच्छ किया जाता है) मालवि० २।८,—जम् कमल, °जः, °जन्मन् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, °नाथः विष्णु का विशेषण रघु० १८।२०, °रुह् (नपु०) कमल (पु०) सारस पक्षी,—सङ्कुच, द्विकोष शब्द, —रुह् (नपु०),—रुहम् कमल,—वास' कँकड़ा।

पङ्कजिनी [पङ्कज+इनि] 1 कमल का पौधा—कि० १०।३३ 2 कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ स्थान 4. कुमुद इत्यादि।

पङ्कण [पृषो० मा०] चाण्डाल की झोपड़ी दे० 'पक्कण'।

पङ्कारः [पङ्क+ऋ+अण्] 1. सिवार 2 बांध, मेड़ 3 जोना, सीढ़ी, पौड़ियाँ।

पङ्किल (वि०) [पङ्क+इलच्] गारे से भरा हुआ, गंदला, मैला, मलिन शि० १७।८।

पङ्केज [पङ्के जायते -पङ्के+जन्+ड] कमल।

पङ्केरुह् (नपु०), रुहम् [पङ्के+रुह्+क्विप्, क वा] कमल, ह. सारस पक्षी।

पङ्केशय (वि०) [पङ्के+शी+अच्] दलदल में रहने वाला।

पङ्क्ति (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] 1. लाइन, कतार, श्रेणी, सिल-सिला—दृश्यंत वारुणदपङ्क्तिरलक्तकाक्ता—विक्रम० ४।६, पञ्चम पङ्क्ति—रघु० २।१९, अलिपङ्क्ति —कु० ४।१५, रघु० ६।५ 2 समूह संग्रह, रेवड़, दल 3. (एक ही जाति के) लोगों की लाइन जो खाने पर बैठी हों, एक ही जाति के सहभोजियों का समुदाय मनु० पङ्क्तिपावन 4. श्रेणीबद्ध सीढ़ी 5. पृथ्वी 6. यज्ञ, प्रसिद्ध 7. पाँच का समूह, पाँच की संख्या 8 दस की संख्या जैसा कि 'पङ्क्तिरथ' और 'पङ्क्तिशीर्ष' में है। सम०—क्षेपः रावण का विशेषण,—चरः समुद्री उकाब, कुरर पक्षी,—दूषः,—दूषकः, जिसके साथ बैठकर भोजन करने में दूषण लगे, ऐसा समाज को दूषित करने वाला व्यक्ति,—पावनः आदरणीय या सम्मानित व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जो विद्वान् होने के साथ २ अपनी उपस्थिति से भोज की पंक्ति को पवित्र कर देता है, -पङ्क्तिपावना पचाम्यहः—मा० १,—यहाँ जगद्धर कहता है—पंक्तिपावना पक्षी भोजनाविगोष्ठ्या पावना, अग्निहोत्रिन पवित्राका, यज्ञा, यजुषा पारगो वस्तु साम्ना यद्यपि पारग, अथर्वङ्गिरसोऽध्येता ब्राह्मण. पंक्ति पावन। या—अन्या सर्वेषु वेदेषु सर्व प्रवचनेषु च, पारगेते प्रपद्यन्ति पवित्रा तावत्पुनति च। ततो हि पावनात्पवित्रता उच्यते पंक्तिपावना। मनु इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—अपाक्तपोषहृता. पंक्ति. पाव्यते यैर्द्विजोत्तमैं, तान्निबोधत कात्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पंक्ति-पावनान्। मनु० ३।१८४—दे० ३।१८३, १८६ भी,—रथः दशरथ का नाम—रघु० ९।७४।

पङ्गु (वि०) (स्त्री०—ङ्गु—ङ्गी) [खञ्ज्+कु, खस्य पङ्गे अन्त्य गादेशः, नुम्] लंगड़ा, लङ्गड़ाता, विकलांग—ङुः 1. लंगड़ा, आदमी,—पङ्गुं करोति वाचाल पङ्गु लङ्घयते गिरिम् 2. शनि का विशेषण।—सम० ग्राह 1 मगरमच्छ 2. दसवीं राशि, मकरराशि।

पङ्गुल (वि०) [पङ्गु+लच्] लङ्गड़ा, विकलांग।

पच् 1 (स्वा० उभ० पचति-ते, पक्व) 1. पकाना, भूनना, भोजन बनाना (यह धातु द्विकर्मक बतलाई जाती है—उदा० तण्डुलानोदनं पचति परन्तु इस प्रकार का प्रयोग लौकिक संस्कृत में विरल है), य पक्वान्नात्-कारजात् मनु० ३।११८, यूपे मत्स्यानिवापक्वान् दुर्बलान् बलवत्तरा —०।२०, मनु० ११८५ 2. पकाना, (ईंट आदि) पकाना, दे० पक्व 3. (भोजन आदिक) पचाना—पचाम्यन्नं चतुर्विधम्—भग० १५।१४ 4 पकना, परिपक्व होना 5. पूर्णता को पहुंचाना, (समझ आदि का) विकास करना 6 (धातु आदि का) गलाना 7. (अपने लिए) पकाना (आ०)—कर्मवा०-पच्यते, 1. पकाया जाना 2. पक्का होना, परिपक्व या विकसित होना, पकना (आम०) फल देना, पूर्णता को प्राप्त करना—रघु० १।५०,—पाचयति-ते पकवाना, पक्का कराना, विकसित कराना पूर्णता को पहुँचाना—सन्नत विपचति—पकाने की इच्छा करना—वि-, पकना, परिपक्व होना, विकसित होना, सं- 1 परिपक्व होना, विकसित होना पकना, फल देना —रघु० १७।५३ 2 पचाना 3. भलीभांति पकाना।

ii (भ्वा० आ०-पचते) स्पष्ट करना, विशद करना।
पचतः [पच्+अत] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाम।
पचन (वि०) [पच्+ल्युट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना—नः अग्नि—नम् 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2 पकाने के उपकरण, बर्तन, इन्धन आदि।
पचपचः [प्रकारे पच इत्यस्य द्वित्वम्] शिव जी की उपाधी।
पचा [पच्+अङ्+टाप्] पकाने की क्रिया।
पचिः [पच्+इन्] अग्नि।
पचेलिम (वि०) [पच्+एलिमच्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3 स्वतः या नैसर्गिक रूप से पकने वाला ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्—नै० १।९४,—मः 1 अग्नि 2 सूर्य।
पचेलुकः [पच्+एलुक] रसोइया।
पचेषाटिका (स्त्री०) एक छोटी घंटी।

पंचक (वि०) [पंच+कन्] 1. पाँच से युक्त 2. पाँच से सम्बद्ध 3 पाँच से निर्मित 4 पाँच से खरीदा हुआ 5 पाँच प्रतिशत लेने वाला,—कः,—कम् पाँच वस्तुओं का संग्रह, 'अम्लपंचक'।
पंचत् (स्त्री०) पंच, पंचसमुदाय, पंचायत।
पंचता,—त्वम् [पंचन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1 पाँचगुना स्थिति 2 पाँच का संग्रह 3. पाँच तत्त्वों की समष्टि—अत पंच-ता-त्व-गम्-या उन पाँच तत्त्वों में घुलमिल जाना जिनसे शरीर बना है, मरना, नष्ट होना, **पंचतां-त्वं गो** मार डालना, नष्ट करना—पंचभिर्निर्मिते देहे पंचत्वं च पुनर्गते, स्वां स्वां योनिमनुप्राप्ते तत्र का परिदेवना। भग्न० ३।३।
पंचदु [पञ्चन्+अधुच्] 1. समय 2 कोयल।
पंचधा (अव्य०) [पंचन्+धा] 1 पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार से।
पंचन् (स० वि०) [पंच्+कनिन्] (सदैव बहुवचनान्त, कर्तृ० कर्म०-पंच) पाँच (समास में पूर्वपद होने के स्थिति में पंचन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम० अङ्ग. पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ अग्निः 1. पाँच यज्ञाग्नियों का समूह (अर्थात्-अन्वाहार्य पचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य) 2. पंचाग्नियों को स्थापित रखने वाला गृहस्थ-पंचाग्नयो घृतवता—मा० १, मनु० ३।१८५ अंग (वि०) पाँच सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पंचांग प्रणाम (अर्थात् बाहुभ्यां चैव जानुभ्यां शिरसा वचसा दृशा), कृतपंचांगविनिमयो नय-कि० २।१२, (दे० मल्लि० और कादम्बरी) (ण) 1 कछुवा 2. एक प्रकार का योद्धा जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न हों (णी) लगाम का रस्सा, मुखरी (णम्) 1 पाँच भागों का संग्रह या समष्टि 2. भक्ति के पाँच प्रकार 3. पंचांग, तिथिपत्र, जन्त्री—तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योग करणमेव च, चतुरंगबलो राजा जयतीह बलमानयेत्, अहं पंचांग बलबानाकाश बलमानये—सुभा० °गुप्त एक प्रकार का समुद्री कछुवा °सूद्धि (स्त्री०) तिथि, वार, नक्षत्र, योग, और करण (ज्योतिष्), इन पाँच आवश्यक अंगों की अनुकूल स्थिति, **अंगुल** (वि०) (स्त्री०-ला,—ली) पाँच अंगुल की माप, **अ** (अ) अम् डकारी से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थ, **-अक्षरम्** (नपुं०) मंडकर्णी ऋषि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला सरोवर-तु० १३।३८, **अमृतम्** देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का संग्रह (दुग्ध च शर्करा चैव घृत दधि तथा मधु), **-अयिन्** (पुं०) वृक्षसंग्रह, **-अवयव** (वि०) पाँच अंगों वाला (जैसे कि अनुमान प्रक्रिया इसके प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह पाँच अंग हैं), **अवस्थ** शव, (क्योंकि यह पाँचों तत्त्वों में घुल मिल जाता है) तु० 'पंचत्व' से, **-अधिकम्** भेंट में प्राप्त पाँच प्रकार के पदार्थ—**-अशीति** (स्त्री०) पचासी, **अह** पाँच दिन का समय, **आतप** (वि०) पंचाग्नियों (चारों ओर चार अग्नि, तथा ऊपर सूर्य) से तपस्या करने वाला तु० रघु० १३।४१, **-आनन,-आस्य, मुख-अक्ष्,** 1 शिव का विशेषण 2 सिंह (क्योंकि इस मुख प्रायः खूब खुला होता है, चार पंजे भी मुख जैसा काम करते हैं—पंचमं आनन यस्य) (अत्यधिक विद्वत्ता तथा प्रतिष्ठा को प्रकट के लिए प्रायः विद्वानों के नामों के अन्त में लगाया जाता है न्याय, तर्क० आदि उदा० जगन्नाथ तर्कपंचानन),—**इंद्रियम्** पाँच अंगों की समष्टि (ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेंद्रिय दे० इन्द्रियम्),-**इषु** काम शर कामदेव का विशेषण (क्योंकि इसके पाँच बाण हैं—अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका, नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायका),—**उल्बण** (पुं०, ब० व०) शरीर में रहने वाली पाँच अग्नियाँ,—**कर्मन्** (नपुं०—आयुं० में) पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अर्थात् 1 वमन-'उल्टी कराने वाली औषधियाँ देना' 2 रेचन—दोष लाने वाली औषधियों का सेवन 3 नस्य—छींक लाने वाली औषधियाँ-नसवार—देना 4 अनुवासन—तैलयुक्त बस्तिकर्म 5 निरूह—बिना तेल का बस्तिकर्म, **कृत्वस्** (अव्य०) पाँच बार, **-कोण** पाँच कोण की आकृति,—**कोल** पाँच मसालों (पीपल, पिप्पलीमूल, चई, चित्रकमूल और सोंठ) का चूर्ण, —**कोश** (पुं०, ब० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1 अन्नमय कोष या स्थूलशरीर 2 प्राणमय कोष 3 मनोमय कोष 4 विज्ञानमय कोष (२, ३, व ४ से

मिल कर, लिंग शरीर बनता है 5 आनन्दमय कोष —अर्थात् मोक्ष) जिनमें आत्मा लिप्त समझा जाता है,—कोशी पाँच कोस की दूरी,—कदम्बम्—कदम्बों पाँच खाटों का समूह,—गव्यम् पाँच गौओं का समूह, —गव्यम् गौ से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थों (अर्थात् दूध, दही, घी मूत्र और गोबर—क्षीरं दधि तथा चाज्यं मूत्रं गोमयमेव च) का समूह,—गु (वि०) पाँच गौओं के बदले खरीदा हुआ,—गुण (वि०) पाँच गुणा,—गुप्त 1 कछुवा 2 दर्शनशास्त्र में अखिल नैतिकवाद की पद्धति, चार्वाकों का सिद्धान्त, —चत्वारिंश (वि०) पैंतालीसवाँ,—चत्वारिंशत् पैंतालीस,—जन 1 मनुष्य, मनुष्य जाति 2 एक राक्षस जिसने राक्षसमुक्ति का रूप धारण कर लिया था तथा जिसको श्रीकृष्ण ने मार गिराया था 3 आत्मा 4 प्राणियों की पाँच श्रेणियाँ अर्थात् देवता, मनुष्य, गन्धर्व, नाग, और पितर 5. हिन्दुओं की चार मुख्य जातियाँ (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा पाँचवें निषाद या असभ्य लोग (इन दो अर्थों में ब० व०) [पूरे विवरण के लिए दे० ब्रह्म० १।४।११-१३ पर शारीरभाष्य]।—जनीन (वि०) पञ्चजनों का भक्त (नः) अभिनेता, बहुरूपिया, विदूषक,—ज्ञान 1 बुद्ध का विशेषण क्योंकि वह पाँच प्रकार के ज्ञान से युक्त है 2 पाशुपत सिद्धान्तों से परिचित मनुष्य, —तन्त्र,—तपी पाँच रथकारों का समूह . तन्मात्र 1 पाँच तत्त्वों की समष्टि अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश 2 (तन्त्रों में) तान्त्रिकों के पाँच तत्त्व जो पञ्चमकार —अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन—भी कहलाते हैं,—तपस् (पु०) एक सन्यासी जो ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की प्रखर किरणों के नीचे चारों ओर आग जला कर बैठा हुआ तपस्या करता है—तु०—हविर्भुजामेधवता चतुर्णां मध्ये ललाटन्तपसां प्रदीप्तम् —रघु० १३।४१, कु० ५।२३, मनु० ६।२३, और शि० २।५१ भी,—तय (वि०) पाँच गुणा (—यी) पञ्चायत,—त्रिंश (वि०) पैंतीसवाँ,—त्रिंशत्,—त्रिंशति (स्त्री०) पैंतीस,—दश (वि०) 1 पन्द्रहवाँ 2 जिसमें पन्द्रह बड़े हुए हैं —यथा पञ्चदशशतम्—एक सौ पन्द्रह—दशन् (वि०, ब० व० पन्द्रह, °अह पन्द्रह दिन की अवधि—दशिन् (वि०) पन्द्रह से युक्त या निर्मित,—दशी पूर्णिमा, —दोर्घन् शरीर के पाँच लंबे अंग—बाहु नेत्रद्वय कुक्षिश्चेतु नासे तथैव च, स्तनयोरन्तर चैव पञ्चदीर्घा प्रचक्षते,—नख 1 पाँच पंजों से युक्त कोई जानवर —पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या ये प्रोक्ता कृतजैद्विजै —मनु० ५।१३१, मनु० ५।१७, १८, याज्ञ० १।१७७ 2 हाथी 3 कछुवा 4 सिंह या व्याघ्र,—नद 'पाँच नदियों का देश, वर्तमान पञ्जाब' (पाँच नदियों के नाम—शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता या क्रमशः सतलज, व्यास, रावी, चेनाब, और झेलम) (—दा—ब० व०) इस देश के निवासी—पंजाबी,—नवतिः (स्त्री०) पिचानवें,—नीराजनम् देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों को हिलाना और फिर उसके सामने लंबा लेट जाना (पाँच पदार्थों के नाम — दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान का पत्ता),—पंचाल (वि०) पचपनवाँ,—पंचाशत् पचपन,—पदी पाँच कदम पंच० २।११५,—पात्रम् 1 पाँच पात्रों का समूह 2 एक श्राद्ध जिसमें पाँच पात्रों में रखकर भेंट दी जाती है,—प्राणाः (प्र० ब० व०) पाँच जीवन प्रदवायु—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान, —प्रासादः विशिष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार कगूरे और एक मीनार या शिखर हो),—बाणः —बाणः,—भरः कामदेव के विशेषण—दे० 'पञ्चेषु', —भुज (वि०) पाँच भुजाओं का (जः) पञ्चभुज या पञ्चकोला—तु० पञ्चकोण,—भूतम् पाँच मूलतत्त्व —पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—मकारम् वाममार्गी तन्त्राचार के पाँच मूलतत्त्व जिनके नाम का प्रथम अक्षर 'म' है (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) दे० 'पञ्चतत्त्व' (2),—महापातकम् पाँच बड़े पाप—दे० महापातक,—महायज्ञः (पु०, ब० व०) पाँच दैनिक यज्ञ जो एक ब्राह्मण के लिए अनुष्ठेय हैं —दे० महायज्ञ,—यामः दिन,—रत्नम् पाँच रत्नों का समूह, (वे कई प्रकार से गिने जाते हैं—(१) नीलक वज्रक चेति पद्मरागश्च मौक्तिकम्, प्रवाल चेति विज्ञेय पञ्चरत्न मनीषिभिः, (२) सुवर्ण रजत मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम्, रत्नपंचकमाख्यातम्, (३) कनक हीरक नील पद्मरागश्च मौक्तिकम्, पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभि पूर्वदर्शिभि,—रात्रम् पाँच रात्रियों का समय,—राशिकम् (गणि० में) गणित की एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं राशि निकाली जाती है,—लक्षणम् एक पुराण (क्यों कि इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है—सर्ग-श्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्, दे० 'पुराण' भी,—लवणम् नमक के पाँच प्रकार—अर्थात् काचक, सैन्धव, सामुद्र, बिड और सौवर्चल,—वटी 1 अहीर की जाति के पाँच वृक्ष—अर्थात् पीपल, बेल, बड़, हरड़ और अशोक 2. दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गोदावरी निकलती है और जहाँ राम ने सीता समेत बहुत दिन बिताये थे, यह स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है —उत्तर० २।२८, रघु० १३।३१,—वर्षदेशीय (वि०) लगभग पाँच वर्ष की आयु का,—वर्षीय (वि०) पाँच

वर्ष का,—वल्कलम् पाँच प्रकार के वृक्षों (अर्थात् वट, गूलर, पीपल, प्लक्ष और बेतस) की छाल,—विंश (वि०) पच्चीसवाँ,—विंशति (स्त्री०) पच्चीस, —विंशतिका पच्चीस का संग्रह जैसा कि 'वेतालपञ्चविंशतिका' में,—विध (वि०) पाँच गुणा या पाँच प्रकार का,—शत (वि०) 1 जिसका जोड़ पाँच सौ हो 2. पाँच सौ (—शम्) 1 एक सौ पाँच 2 पाँच सौ, —शाखः 1 हाथ 2 हाथी,—शिखः सिंह—स्व (वि०) (द्व० व०) पाँच छः, सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतय सभाविता पञ्चषा—भर्तृ० २।३४,—षष्ठ (वि०) पैंसठवाँ,—षष्टिः (स्त्री०) पैंसठ,—सप्तत पचहत्तरवाँ, —सप्ततिः (स्त्री०) पचहत्तर,—सूनाः (स्त्री०) घर में रहने वाली पाँच वस्तुएं जिनके द्वारा छोटे २ जीवों की हिंसा हो जाया करती है—वे ये हैं—पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः। कण्डनी चोदकुम्भश्च —मनु० ३।६८ (चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानी का घड़ा),—हायन (वि०) पाँच वर्ष की आयु का।

पञ्चमी [पञ्चन्+ल्युट्+ङीप्] शतरंज जैसे खेल को कपड़े की बनी हुई बिसात।

पञ्चम (वि०) (स्त्री०—मी) [पञ्चन्+मट्] 1 पाँचवाँ 2 पाँचवाँ भाग बनानेवाला 3 दक्ष, चतुर 4. सुन्दर, उज्ज्वल,—मः 1. भारतीय स्वरग्राम का पाँचवाँ (बाद के समय में सातवाँ) स्वर, कथित कोकिलरवः (कोकिला रौति पञ्चमम् —नारद) शरीर के पाँच अंगों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'पञ्चम' है—वायु समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु, विचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते 2 संगीत स्वर या राग का नाम —व्यथयति वृथा मौनं नन्वियं वयसि पञ्चमम्—गीत० १०, इसी प्रकार उदञ्चित पञ्चम रागम्—गीत० १, मम् 1 पाँचवाँ 2 मैथुन, तान्त्रिकों का पाँचवाँ मकार, —मी 1 चान्द्रमास के पक्ष की पाँचवीं तिथि 2 (ब्या० में) अपादान कारक, द्रौपदी का विशेषण 4 शतरंज की कपड़े की बिसात। सम०—आस्य कोयल।

पञ्चालाः (पु०, ब० व०) [पञ्च+कालन्] एक देश तथा उसके निवासियों का नाम,—ल पञ्चाली का राजा।

पञ्चालिका [पञ्चाय अपचाय अलति—अल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गुड़िया, पुतली—तु० 'पाञ्चालिका'।

पञ्चाली [पञ्चाल+ङीप्] 1 गुड़िया, पुतली 2 एक प्रकार का राग 3 शतरंज आदि खेल की कपड़े की बनी बिसात।

पञ्चाश (वि०) (स्त्री० शी) [पञ्चाशत्+डट्] पचासवाँ।

पञ्चाशत्, पञ्चाशति (स्त्री०) पचास।

पञ्चाशिका [पञ्चाशत्+क+टाप् इत्वम्] पचास श्लोकों का संग्रह—अर्थात् 'चौर पञ्चाशिका'।

पञ्जरम् [पञ्ज्+अरन्] पिंजरा, चिड़ियाघर—पञ्जरशुक, भुजपञ्जर—र, —रम् 1 पसलियाँ 2 कंकाल, ठठरी र: 1 शरीर 2 कलियुग। सम०—आखेटः मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी,—शुकः पिंजरे का तोता, पिंजड़े में बंद तोता। विक्रम० २।२३।

पञ्जिः, -जी (स्त्री०) [पञ्ज्+इन्, पञ्जि+ङीष्] 1 रूई का गट्ठा जिससे धागा काता जाय, पूनी 2. अभिलेख, पत्रिका, बही पञ्जिका 3 तिथि-पत्र, जन्त्री, पत्रा या पंचांग। सम०—कार, —कारक. लेखक, लिपिकार।

पट् I (भ्वा० पर०—पटति) जाना, हिलना-डुलना—प्रेर० या चुरा० उभ०—पाटयति—ते 1 टुकड़े करना, विदीर्ण करना, फाड़ना, फाड़ कर अलग २ करना, फाड़ कर खोलना, विभक्त करना 'कर्विन्मध्यात्पाटयामास, दती शि० १८।५१. दन्तैर्यं पाटयेल्लेखम् —याज्ञ० २।९४ मृच्छ० ९ 2 तोड़ना, तोड़ कर खोलना अन्यासु भित्तिषु मया निशि पाटितासु —मृच्छ० ३।१४ 3 छेदना, चुभोना, घुसेड़ना—दर्भपाटिततलेन पाणिना—रघु० ११।३१ 4 दूर करना, हटाना 5 तोड़ डालना उद्—, 1 फाड़ डालना, निकाल लेना—दर्तनोत्पाटयेदस्यान्—मनु० ४।६९, कोलमुत्पाटयितुमारभे पद्य० १ 2 जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना—कु० २।२३, रघु० १५।४९ 3. उद्धृत करना वि—, 1 फाड़ डालना (कैलकबहँ) विपाटयामास युवा नखाग्रै —रघु० ६।१७ 2. खींचना, बाहर निकालना, उद्धृत करना।

II (चुरा० उभ०—पटयति—ते) 1 गूथना, बुनना —कुविदस्तव तावत्पटयति गुणग्राममभित —काव्य० ७ 2. वस्त्र पहनाना, लपेटना 2 घेरना, घेरा बनाना।

पट, —टम् [पट् वेष्टने करणे घञर्थे कः] 1 वस्त्र, पहनावा, कपड़ा, चिथड़ा—अय पट सूत्रदरिद्रता गतो त्वया पटच्छिद्रशतैरलङ्कृत —मृच्छ० २।९, लेखा लक्षयति बलदेवपट प्रकाशा —५।४५ 2 महीन कपड़ा 3 घूघट, परदा 4. कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जायें—टम् छप्पर, छत। सम०—कुटजम् तंबू,—कार 1 जुलाहा 2 चित्रकार,—कुटी (स्त्री०), —मण्डपः,—वास, वेश्मन् (नपु०) तंबू—शि० १२।६३, —वासः 1 तंबू 2 पेटीकोट 3 सुगंधित चूर्ण —रत्न० १, वासक. सुगंधित चूर्ण।

पटकः [पट+कै+क] 1 शिविर, पड़ाव 2 कई का कपड़ा

पटच्चर, [पटत् इति अव्यक्तशब्दं चरति—पटत्+चर्+अच्] चोर, तु० पाटच्चर,—रम् चिथड़ा, फटे पुराने कपड़ा।

पटत्कः [पटत्+कै+क] चोर।

पटत्कृता (अव्य०) अनुकरण मूलक ध्वनि।

पटलम् [पट्+कलच्] 1. छत, छप्पर—विलसितपटलान्त

दृश्यते जीर्णकुड्यम् —मुद्रा० ३।१५ 2. ढकना, आवरण, अवगुण्ठन, लेपन—शिरसि मसीपटल दधानि दीप॰ -मालवि० १।७४ 3 ओढो का जाला 4 ढेर, समुच्चय, राशि, परिमाण रचागपाणे पटलेन रोचिषाम्—शि० १।२१, जलदपटलानि पश्य० १।३६१, सौधपटलै रघु० ४।६३, मुक्तापटलम्- १३।१७ तारकपटलम्—गीत० ७ 5 टोकरी 6 अनुचरवर्ग, नौकर चाकर, --क, -की 1 वृक्ष 2 डंठल, ल:, —लम् पुस्तक का अध्याय। सम०—प्रान्त- छत का किनारा।

पटह. [पटेन हन्यते —पट+हन्+ड] 1 धौंसा, नगाडा, ढोल, तबला, कुर्वन् सन्ध्याबलिपटहतां शूलिन श्लाघनीयाम् —मेघ० ३४, पटुपटहध्वनिर्भिविनोतनिद्र - रघु० ९।७१ 2 आरम्भ, उपक्रम 3. घावल करना, मारना। सम०—घोषक' ढिंढोरची (जो ढोल पीटता जाता है और घोषणा करता जाता है) ढोंडी पीटने वाला, —जमलम् लोगो को एकत्र करने के लिए ढोल पीटते हुए इधर उधर घूमना।

पटालुका [पट+अल्+उक+टाप्] जोक।

पटि',—टी (स्त्री) [पट्+इन्, पटि+ङीष्] 1 रगशाला का पर्दा 2 कपडा 3 मोटा कपडा, कैनवस 4 कनात। सम० -क्षेप (रगशाला) के पर्दे को एक ओर गिराना, यह एक प्रकार का रगमच का निर्देशन है जो किसी पात्र के शीघ्रता पूर्वक रगमच पर आने को प्रकट करता है, तु० 'अपटी क्षेप'।

पटिमन् (पु०) [पट्+इमनिच्] 1 दक्षता, चतुराई 2 निपुणता 3 तीक्ष्णता 4 नैपुण्य 5 प्रचडता तीव्रता आदि।

पटीर [पट्+ईरन्] 1 खेलने की गेद चदन की लकडी 3 कामदेव—रम् 1 कन्या 2 चलनी 3 खेत 4 खेल 5 बादल 6 ऊँचाई। सम० -अग्रजम् (पु०) चन्दन का पेड़ वहति विपवरान् पटीरजन्मा—मालवि० १।७४।

पटु (वि०) (स्त्री० —टु, टी स० अ०—पटीयस्, उ० अ० पटिष्ठ) [पट्+णिच्+उ, पटादेश] 1 चतुर, कुशल, दक्ष, प्रवीण (प्राय अधि० के साथ) वाचि पटु 2 तीक्ष्ण, तीखा, चरपरा 3 प्रखर, काश्यौ 4 प्रचड, मजबूत, तीव्र, गहन- -अयमपि पटुधोरासारो न बाणपरपरा- विक्रम० ४।१, उत्तर० ४।३ 5 कर्कश, सुश्राव्य, तेजध्वनियुक्त—किमिद पटुपटहक्वणमिश्रो नादीनाद —मुद्रा० ६, पटुपटहध्वनिर्भिविनोतनिद्र —रघु० ९।७१, ७३ 6 प्रवण, स्वस्थ—शि० १५।४३ 7 कठोर, क्रूर, पाषाणहृदय 8 मक्कार, धूर्त, चालाक, शठ 9 नीरोग, स्वस्थ 10 सक्रिय, व्यस्त 11 वाक्पटु, वाग्मी 12 खिला हुआ, फुलाया हुआ—टु:,-टु (नपु०) कुकुरमुत्ता, साप की छतरी—टु (नपु०) नमक। सम० —वक्त्र, —वेशौव (वि०) खासा चतुर, तीक्ष्णबुद्धि।

पटोल. [पट्+ओलच्] परमल, ककडी की जाति का, —लम् एक प्रकार का कपडा।

पटोलक: [पटोल+कै+क] शुक्ति, सीपी।

पट्ट—ट्टम् [पट्+क्त, इडभाव] 1. शिला, तख्ती (लिखने के लिए) पट्टिका- शिलापट्टमधिशयाना—शि० ३, इसी प्रकार भालपट्ट आदि 2 राजकीय अनुदान, राजाज्ञा—माल० १।३१७ 3 किरीट, मुकुट—रघु० १८।४४ 4 धज्जी- निर्मोकपट्टा फणिभिर्विमुक्ता —रघु० १६।१७ 5 रेशम—पट्टोपधानम् का० १७, भर्तृ० ३।७४, इसी प्रकार 'पट्टाशुक' 6 महीन या रंगीन कपडा, वस्त्र 7 ओढने का वस्त्र—भट्टि० १०।६० 8 शिरोवेष्टन, पगडी, रगीन रेशमी साफा —रत्न० १।४ 9 सिंहासन 10 कुर्सी, तिपाई 11 ढाल 12 चमडी का पाट 13 चौराहा 14 नगर, कस्बा 15 पट्टी, तनी या बधनी। सम०—अर्हा पटरानी—उदाध्याय: राजाज्ञा तथा अन्य प्रलेखों या दस्तावेजों के लिखने वाला,—अश्व एक प्रकार का कपडा—देवी, —महिषी, - राज्ञी पटरानी,—वस्त्र,—वासस् (वि०) रेशमी या रगीन वस्त्रो से सुसज्जित।

पट्टनम्,—नी [पट्+ल्युट्, पट्टन+ङीष्] नगर।

पट्टिका [पट्ट+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 तख्ती, फलक जैसा कि 'हृल्लाट्टिका' में 2 प्रलेख या दस्तावेज 3 धज्जी कपडे का टुकडा—वल्कलैकदेशाद्विपाट्य पट्टिकाम्—का० १४९ 4 रेशमी कपडे का टुकडा 5 बन्धनी या तनी, पट्टी। सम०—वायक: रेशम की बुनावट।

पट्टि (ट्टी) श (स) [पट्ट+टिश (स) च्, पक्षे पट्टी +शो (सो)+क] एक तेज धार की बर्छी, कल्पप्रासपट्टिश आदि दश० (पट्टिशो लौहदडो यस्तीक्ष्णधार क्षुरोपम —वैजयती)

पट्टोल्लिका [पट्ट+उल्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्वम्] एक प्रकार का बध या पट्टा (भूमिकरग्रहणव्यवस्थात्मक पञ्चभेद —तारा०)।

पठ् (भ्वा० पर०—पठति, पठित) 1 ओर से पढना या दोहराना, सस्वर पाठ करना, पूर्वाभ्यास करना—य पठेच्छृणुयादपि 2. पाठ करना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना इत्येतन्मानव शास्त्र मयुप्रोक्त पठन् द्विज मनु० १२।१२६, ४।९८३ 3 (देवता का) आवाहन करना 4. हवाला देना, उद्धृत करना, (किसी पुस्तक का) उल्लेख करना—एतदिच्छाम्यह श्रोतु पुराणे यदि पठ्यते—महा० 5. घोषणा करना, अभिव्यक्त करना—मार्या च परमो हार्यं पुरुषस्नेह पठ्यते महा० 6. (अपा० के साथ)... से पढना, प्रेर०—

पाठयति-ते 1. जोर से पढ़वाना 2 अध्यापन करना, शिक्षा देना—सन्नत—पिपठिषति—पाठ करने की इच्छा करना,—परि—,उल्लेख करना, घोषणा करना (प्रेर०) शिक्षा देना—सौ सर्वं विद्या परिपाठितौ—उत्तर० २, स्वम्—, पढ़ना, सीखना—मनु० ४।९८।

पठकः [पठ्+ण्वुल्] पढ़ने वाला।

पठनम् [पठ्+ल्युट्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2 उल्लेख करना 3 अध्ययन करना, अनुशीलन करना।

पठिः (स्त्री०) [पठ्+इन्] पढ़ना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना।

पण् i (भ्वा० आ०—पणते, पणित) 1 व्यापार करना, लेन-देन करना, खरीदना, मोल लेना - नै० २।९१ 2. सौदा करना, वाणिज्य करना 3 शर्त लगाना या दाँव पर लगाना (शर्त की वस्तु में प्रायः सब०, परन्तु कभी कर्म० भी)-प्राणानामपणिष्टासौ-भट्टि० ८।१२१, पणस्व कृष्णा पाञ्चालीम्- -महा० 4 जोखिम उठाना, II (भ्वा० आ०, चुरा० उभ०—पणते, पणायति-ते) 1 प्रशंसा करना 2. सम्मान करना, वि—, बेचना, अदल बदल करना -आभीरदेशे किल चन्द्रकान्तं स्त्रिभिर्वराटैर्विपणति गोपाः -सुभा०।

पणः [पण्+अप्] 1 पासे से या दाँव लगाकर खेलना 2 जूआ, जो दाँव या शर्त लगा कर खेला जाय -याज्ञ० २।१८, दमयत्या पण साधुवर्तताम्—महा० 3 दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त, संविदा, समझौता - संधि करोतु भवता नृपति पणेन—वेणी० १।१५, ठहराव, सुलह हि० ४।११८, ११२ 5 मजदूरी, भाड़ा 6. पारितोषिक 7 रकम जो या तो सिक्कों में हो या कौड़ियों में 8 ८० कौड़ी के मूल्य का सिक्का—अशीतिभिर्वराटकैः पण इत्यभिधीयते 8 मूल्य 10 धन दौलत, सम्पत्ति 11 विक्रयवस्तु 12 व्यापार, लेनदेन 13 दुकान 14 बिक्री, बेचने वाला 15 शराब बेचने वाला 16. मकान। सम०—अंगना—स्त्री वेश्या, रंडी,—अंडि मंडी, मेला या पैंठ,—अर्थः 1 संधि या सुलह करना—पणबन्धमुखान् गुणान्न पश्यन्ति सभीक्ष्य तत्फलम्—रघु० ८।२१, १०।८६ 2. समझौता, ठहराव (यदि भवानिदं कुर्यात्तर्ह्यहमपि भवते दास्यामीति समयकरणं पणबन्ध-मनोरमा)।

पणायित्वा [पण्+ल्यप्] 1 अदल-बदल करना, खरीदना 2. शर्त लगाना 3 बिक्री।

पणवः [पण स्तुतौ वाति-पण+वा+क] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र—भग० १।१३, शि० १३।५।

पणायः [पण्+आय+अप्+टाप्] 1 लेनदेन, व्यवसाय, व्यापार 2. मंडी 3 वाणिज्य से प्राप्त होने वाला लाभ 4 जूआ खेलना 5. प्रशंसा।

पणिः (स्त्री०) [पण्+इन्] बाजार (पु०) 1. कंजूस, लोभी 2 अपावन मनुष्य या पापी।

पणित (भू० क० कृ०) [पण्+क्त] 1 (व्यापार में) किया गया लेन-देन 2 शर्त पर रक्खा हुआ, दे० 'पण्'।

पंड् 1 (भ्वा० आ०—पण्डते, पण्डित) जाना, हिलना-जुलना, II (चुरा० उभ०—पण्डयति-ते) संग्रह करना, चट्टा लगाना, ढेर लगाना।

पण्ड [पण्ड्+अच्, ड वा] हिजड़ा, नपुंसक।

पण्डा [पण्ड+टाप्] 1 बुद्धिमत्ता, समझ 2 ज्ञान, विज्ञान।

पण्डावत् (पु०) [पण्डा+मतुप्] बुद्धिमान्, विद्वान्।

पण्डित (वि०) [पण्डा+इतच्] 1 विद्वान्, बुद्धिमान्—स्वस्थे को वा न पण्डित 2 सूक्ष्मबुद्धि, चतुर 3 दक्ष, प्रवीण, कुशल (प्रायः अधि० के साथ या समास में)—मधुरालापनिसर्गपण्डिताम् कु० ४।१६, इसी प्रकार 'लिपिपण्डित'-४।१८, 'नयपण्डित' आदि,—स 1 शास्त्रज्ञ, विद्वान् 2 गधद्रव्य। सम०—आशय (वि०) कुछ चतुर,—मानिक,- मानिल्, पण्डितमन्य (वि०) अपने आप को विद्वान् समझने वाला, घमंडी आदमी, अपने आपको शास्त्रज्ञ या पण्डित मानने वाला।

पण्डितिमन् (पु०) [पण्डित+इमनिच्] ज्ञान, विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1 बिकाऊ, विक्रयार्थ 2 लेन-देन के योग्य य 1 बर्तन, वस्तु, विक्रेयवस्तु पूराबभासे विपणिष्वपण्या- रघु० १६।४१, पण्यानां गणिका पण्यम्-पञ्च० १।१३, मनु० ५।१२९, याज्ञ० २।२४५, मालवि० १।९६ 2 वाणिज्य, व्यवसाय 3 मूल्य-महना पुण्य पण्येन क्रीतेयं कामनीस्त्वया शा० ३।१। सम०—अंगना, योषित् (स्त्री०), —विलासिनी,—स्त्री (स्त्री०) वेश्या, रंडी—पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्यते मूर्खः १।९०, मेघ० २५, अजिरम् मंडी,- आजीव व्यापारी, —आजीवकम् मंडी, पेठ या मेला- पतिः बड़ा व्यापारी- भूमिः (स्त्री०) मालगोदाम, वीथिका, —वीथी,—शाला 1 मंडी 2 बिक्रयणी, दुकान।

पत् (भ्वा० पर० पतति, पतित) 1 गिरना, गिर पड़ना, नीचे आना, उतरना-अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात विद्याधरहस्तमुक्ता—रघु० २।६०, वृष्टिर्भवने वास्य पेतुषी-१०।७७, (रेणुः) पतति परिणतारुण प्रकाशे सलभसमूह इवाश्रमद्रुमेषु—श० १।३१, मेघ० १०५, भट्टि० ७।९, २१।६ 2 उड़ना, वायु में आना जाना, उड़ान भरना हतु कलहकारोऽसौ शब्दकार पपात खम्—भट्टि० ५।१०० दे० नी० 'पतत्' 3 छिपाना, डूबना (क्षितिज के नीचे) सोऽस्य अन्त्र पतति भगवादस्मयोर्धर्मयूर्ख —श० ४, अने० पा०

पतत्पतंगयतिमस्तपोनिधि —शि० १।१२ 4 अपने आप को डालना, नीचे फेंकना—यमि ते पादपतिते किंकरत्वमुपागते—पंच० ४।७, इसी प्रकार 'चरणपतितम्' मेघ० १०५ 5 (नैतिक दृष्टि से) गिरना, जाति से पतित होना प्रतिष्ठा का नष्ट होना, भ्रष्ट होना—पत्यर्मौन जीवन् हि मद्य पतति जातितः मनु० १०।९७, ३।१६, ५।१९, ९।२००, याज्ञ० १।३८ 6 (स्वर्ग से) नीचे आना—पतंति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रियाः —भग० १।४१ 7 घटना, आपद्ग्रस्त या संकटापन्न होना—प्रायः कदुकपातेनोत्पतत्यार्यः पतन्नपि—भर्तृ० २।१२३ 8 नरक में जाना, नारकीय यातना सहन करना —मनु० ११।३७, भग० १६।१६ 9 पड़ना, घटित होना, हो जाना, संपन्न होना—लक्ष्मीर्यत्र पतति तत्र विवृतद्वारा इव व्यापदः—सुभा० 10 निर्दिष्ट होना, उतरना या पड़ना (अधि० के साथ)—प्रमादसौख्यानि मता सुहृज्जने पतंति चक्षूंषि न दारुणा अमी— शि० ६।२८ 11 भाग्य में होना 12 प्राप्त होना, फँसना— प्रेर०—(पातयति—ते—पतयति विरल प्रयोग) 1 नीचे गिराना, उतारना, झुकाना —निपतंती पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, ९।६१, ११।७६ 2 गिरने देना, नीचे को फेंकना, गिराना, (वृक्ष आदि का) गिराना 3 बर्बाद करना, परास्त करना 4 (आँसू) गिराना 5 फेंकना, (दृष्टि) डालना, सन्नम्र—पिपतिषति-पित्सति, गिरने की इच्छा करना—अनु—, 1 उड़ना 2 पीछे दौड़ना, अनुसरण करना, पीछे लगे रहना, पीछा करना —मुहुरनुपतति स्यंदने दत्तदृष्टिः—श० १।७, मा० ९।८, शि० ११।४०, अभि—, 1 निकट उड़ना, नजदीक जाना, पास पहुँचना, अद्रिरोधुमस्तगिरिमभ्यपतत्—शि० ९।१, कि० १२।३६ 2 आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना—रघु० ७।३७ 3 उड़ कर पकड़ लेना 4 वापिस आना, लौट पड़ना पीछे हटना, अभ्युद्—, टूट पड़ना, आक्रमण करना, आ—, 1 टूट पड़ना, आक्रमण करना, धावा बोलना —रघु० १२।४४, ५।५० 2 उड़ना, फिल पड़ना, झपटना 3 निकट जाना 4 होना, घटित होना, आ पड़ना—कथमिदमापतितम्—उत्तर० २, अहो न शोभनमापतितम्—पंच० २ 5 सूझना, (मन में) आना, इति हृदये नापतित—का० २८८, उद्—, उछलना कूदना—मधूदपाति परितः पटलैरलीनाम्—शि० ५।३७, (प्रायः कर्म० या सप्त० के साथ) उत्पतोडुकमुखं खम्—मेघ० १४, भट्टि० ५।३०, स्वर्गायोत्पतिता भवेत्—विक्रम० ४।२, कु० ६।३६ 2 सूझना, विचार में आना—रघु० १३।११ 3 (नींद को भांति) उड़ कर आना—भर्तृ० २।८५ 4 उदय होना, जन्म लेना, फूटना, उत्पन्न होना—निर्ध्वंसोत्पतितानल—रघु० ४।७७, रसातलस्माद्वरस्त्रिय उत्पेतुः रामा०, नि—, 1 नीचे गिरना या आना, अवरोहण करना, उतरना, डूबना—निपतंती पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, भट्टि० १५।२७ 2 फेंका जाना, निर्दिष्ट होना—रघु० ६।११ 3 (पैरों में) डालना, साष्टांग लेटना—देवास्तवते हरमूढभार्यं किरीटबद्धांजलयो निपत्य—कु० ७।९२, भर्तृ० २।३१ 4 गिरना, उतरना, मिल जाना—रघु० १०।२६ 5 टूट पड़ना, आक्रमण करना, धिक्कृत्य—सिंह शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलमित्तिषु गजेषु —भर्तृ० २।३८ 6 होना, घटित होना, आ पड़ना, भाग्य में होना—सकृदंशो निपतति मनु० ९।४७ 7 रक्खा जाना, स्थान पर अधिकार करना—अव्यहितं पूर्वं निपतति—प्रेर०—1 नीचे गिराना, फेंकना, पटक देना 2 मार डालना, नष्ट करना, बर्बाद करना वि—, निकलना, फूट पड़ना, फल निकलना, निकल पड़ना—

अरविंदरेणुरुक्षातकैर्निष्पतद्भिः —श० ७।७, एषा विदूरीभवत समुद्वास्तकानना निष्पतीव भूमिः —रघु० १३।१८, मनु० ८।५५, याज्ञ० २।१६, कु० ३।७१, मेघ० ६९, परा—, 1 पहुँचना, निकट आना, पास जाना 2 वापिस आना, परि , इधर उधर उड़ना, चक्कर काटना, छा जाना—विद्युत्क्षेपात् पिपासुः परिपतति शिखी भ्रांतिमद्वारियंत्रम्—मालवि० २।१३, अमरु ४८ 2 झपट्टा मारना, आक्रमण करना, टूट पड़ना (युद्ध में) 3 सब दिशाओं में दौड़ना—(हयाः) परिपेतुर्दिशो दश—महा० 4 चले जाना, गिर पड़ना—शि० ११।४१, प्र—, 1 नीचे आना, नीचे गिरना, उतरना 2 गिरकर अलग या दूर हो जाना 3. उड़ना, इधर उधर झपटना, प्रति—, प्रणाम करना, अभिवादन करना (कर्म० या सप्त० के साथ) प्रणिपत्य सुरास्तस्मै—रघु० १०।१५, वाणीश वाग्भिरर्थीमि प्रणिपत्योपतस्थिरे—कु० २।३, प्रोद—ऊपर उड़ना, उड़ान भरना, वि—, उड़ना, गिरना, उतरना —ऋतु० ४।१८ (प्रेर०) गिराना, बर्बाद करना, नष्ट करना—मृच्छ० २।८, सम्—, 1 मिल कर उड़ना, एकत्र होना 2. इधर उधर जाना या घूमना 3 आक्रमण करना, टूट पड़ना, धावा बोलना 4 होना, घटित होना, (प्रेर०)—1 निकट लाना 2 संग्रह करना, एकत्र करना मिलाना,— रघु० १४।३६, १५।७५।

पतः [पत्+अच्] 1 उड़ना, उड़ान 2. जाना, गिरना, उतरना, । समा०—गः पक्षी, मनु० ७।२३।

पतंगः [पतन् उत्प्लवन् गच्छति—गम्+ड, नि०] 1. पक्षी —नृप पतंग समवत पाणिना—नै० १।१२४, भामि० १।१७ 2. सूर्य विकसति हि पतंगस्योदये पुंडरीकम्—उत्तर० ६।१२, मा० १।१२ शि० १।१२, रघु० २।

१५ 3. शलभ, टिड्डी-दल, टिड्डा—पतगवद्वह्निमुखं विविक्षुः—कु० ३।६४,४।२०, पद्य ३।१२६ 4 मधुमक्खी,—वम् 1. पारा 2. एक प्रकार की चदन की लकड़ी।

पतंजकः [पत+मम्+अच्, मुम्] 1. पक्षी 2 शलभ।

पतंजिका [पतग+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 छोटी चिड़िया 2 एक छोटी मधुमक्खी।

पतंगिन् (पु०) [पतग+इनि] पक्षी।

पतंचिका [पत शत्रुं चिनकयति पीडयति- -पृषो०] धनुष की डोरी।

पतंजलिः (पु०) पाणिनि के सूत्रो पर लिखे गये—महाभाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, दार्शनिक, योगदर्शन के प्रवर्तक।

पतत् (वि०) (स्त्री०—ती) [पत्+शतृ] उड़ने वाला, अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे आने वाला (पु०) पक्षी—परम पुमानिव पति पतताम्—कि० ६।१, क्वचित्प्रया सचरते सुराणा क्वचिद्धनाना पतता क्वचिच्च—रघु० १३।१९, शि० ९।१५। सम०—ग्रह 1. प्रारक्षित सेना 2. थूकने का बर्तन, पीकदान—तमेकमाणिक्यमय महोन्नत पतद्ग्रह ग्राहितवान्नलेन स—नै० १६।२७,—ग्रीव बाज, श्येन।

पतत्रम् [पत्-करणे अत्रन्] 1 बाजू, डैना 2. पर, पख 3. सवारी।

पतत्रिः [पत्+अत्रिन्] पक्षी।

पतत्रिन् (पु०) [पतत्र+इनि] 1 पक्षी,—दयिताङ्गदङ्गरुचः पतत्रिण (पुरेति) रघु० ८।५६,९।२७,११।११, १२।४८, कु० ५।४ 2. बाण 3 घोड़ा। सम०—केतन. विष्णु का विशेषण।

पतनम् [पत्+ल्युट्] 1. उड़ने या नीचे आने की क्रिया, उतरना, अवरोहण करना, अपने आपको नीचे पटकना 2. (सूर्यादिका) अस्त होना 3 नरक में जाना 4 धर्मभ्रंश 5. मर्यादा या प्रतिष्ठा से गिरना 6 अवपात, ह्रास, नाश, विपत्ति (विप० उदय या उच्छ्राय)—महाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्राया पतनानि च—याज्ञ० १।३०७ 7 मृत्यु 8. नीचे लटकना, (छाती का) धसकना 9. गर्भस्राव होना।

पतनीय (वि०) [पत्+अनीयर्] गिराने वाला, जातिभ्रष्ट करने वाला,—यम् पतित करने वाला पाप या जुर्म—याज्ञ० ३।४०, २९८।

पतमः, पतसः [पत्+अम, असच् वा] 1. चाँद 2. पक्षी 3 टिड्डा।

पतयालु (वि०) [पत्+णिच्+आलुच्] पतनोन्मुख, पतनशील।

पताका [पर्यते ज्ञायते कस्यचिद्वीरोऽनया—पत्+आक+टाप्] झण्डा, ध्वज (आल० से भी) य काममजरी कामयते न हरतु सुभगपताकाम्—दश० ४७, (सर्वोपरि सौन्दर्य या सौभाग्य का आनंद लेने दो उसे) 2. ध्वजदण्ड 3 सकेत, लक्षण, चिह्न प्रतीक 4. उपाख्यान या नाटकों में आई हुई प्रासगिक कथा, दे० नी०—'पताकास्थानक' 5 मागलिकता, सौभाग्य। सम०—अंशुकम्—झडा—स्थानकम् (नाटय० में) प्रासगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप से, किसी परिस्थितिवश उसी लक्षण वाली कोई दूसरी आकस्मिक अविचारित वस्तु प्रदर्शित की जाती है (यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिन्तत्सिद्ध्योऽन्य प्रयुज्यते, आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानक तु तत्, सा० द० २९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए दे० ३००—३०४ तक)।

पताकिक (वि०) [पताका+ठन्] झडा उड़ाने वाला, ध्वजदण्डधारी।

पताकिन् (वि०) [पताका+इनि] झडा ले जाने वाला, पताकाओं से अलकृत (पु०) 1 झडाधारी, झडाबरदार 2 ध्वजा,—नी सेना (न प्रसेहे) रघवर्त्मरजोऽप्यस्य कुत एव पताकिनीम्—रघु० ४।८२, कि० १४।२७।

पतिः [पाति रक्षति-या+इति] 1 स्वामी, प्रभु जैसा कि 'गृहपति' में 2 मालिक, अधिपति, स्वामी—क्षेत्रपति 3 राज्यपाल, शासक, प्रधानता करने वाला, औषधीपति, वनस्पति कुलपति आदि 4 भर्ता प्रमदा पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्न हि विवेतनैरपि—कु० ४।३३। सम०—घातिनी, —घ्नी वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है, —देवता,—देवा वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है, पतिव्रता, सती स्त्री—क पतिदेवतामन्य परिमार्ष्टुमभ्यर्हेत—श० ६ तमलभत पति पतिदेवता शिखरिणीमिव मागरमापगा—रघु० ९।१७, ध्रुवं स्थिता त्व पतिदेवतानाम्—१४।७४,—धर्म अपने पति के प्रति (पत्नी का) कर्तव्य,—प्राणा सती स्त्री—लोक वह लोक जहाँ मृत्यु हो जाने के पश्चात् पति पहुचता है,—व्रता भक्त, श्रद्धालु, निष्ठावती स्त्री, सती स्त्री °त्वम् पति के प्रति निष्ठा, स्वामिभक्ति,—सेवा पति के प्रति भक्ति।

पतिवरा [पति+वृ+अच्, मुम्] अपना वर चुनने के लिए तत्पर स्त्री—रघु० ६।१०, ६७।

पतित (भू० क० कृ०) [पत्+क्त] 1 गिरा हुआ, अवरूढ, उतरा हुआ 2 नीचे गिरा हुआ 3 (नैतिक दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुश्चरित्र 4 स्वधर्मभ्रष्ट 5 अपमानित, जातिबहिष्कृत 6 युद्ध में हारा हुआ, पराजित, परास्त 7 ध्वस्त, फसा हुआ जैसा कि 'अवशपतित' में।

पतेर. [पत्+एरक्] 1 पक्षी 2 छिद्र या बिवर।

पत्तनम् [पतंति गच्छंति जना अस्मिन्, पत् + तनन्] कस्बा, नगर (विप० ग्राम)—पत्तने विद्यमानेऽपि ज्ञाने रत्न परीक्षा—मालवि० १।

पत्तिः [पद् + ति] 1 पैदल, पैदल सैनिक—रघु० ७।३७ 2 पैदल चलने वाला यात्री 3 वीर—(स्त्री०) 1 सेना का छोटे से छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सैनिक हों 2 जाने वाला, चलने वाला। सम०—आरूढः पैदल सेना,—नायकः सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करना है,—संहतिः (स्त्री०) पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना।

पत्तिन् (पु०) [पद्स्या तेलति, पाद + तिल् + डिन्, पदादेश] पैदल सिपाही।

पत्नी [पति + ङीप्, नुक्] सहधर्मिणी, भार्या। सम०—आप्तः निवास, अन्तपुर,—सन्नहनम् धर्मपत्नी का कटिसूत्र या करधनी।

पत्रम् [पत् + ष्ट्रन्] 1 (वृक्ष का) पत्ता—पत्रं भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम्—मालवि० १।१४ 2 फूल की पत्ती, कमल का पत्ता—नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१७ 3 पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कागज, लिखा हुआ पत्र—पत्रमारोप्य दीयताम्—श० ६ 'पत्र पर लिख कर' विक्रम० २।१४ 4 पत्र, दस्तावेज 5 किसी धातु का पतला पत्रा, स्वर्ण-पत्र 6 पक्षी का बाजू, पंख, पर 7 बाण का पंख—रघु० २।२१ 8 सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि)—दिशः पपात पत्रेण वेगनिष्कंपकेतुना—रघु० १५।४८ नै० ३।१६ 9 शरीर पर (विशेष कर मुख पर) चन्दन आदि सुगंधित द्रव्य का लेप करना—रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो—गीत० १२, रघु० १३।५५ 10 तलवार या चाकू का फल 11 चाकू, छुरी। सम०—अम्लम् 1 भूर्ज वृक्ष 2 लाल चंदन—अंगजः शरीर (गर्दन, मस्तक आदि) पर अंगुलियों से केसर मिश्रित चंदन या अन्य किसी सुगंधित पदार्थ से चित्रण करना,—अंजनम् मसी,—आवलिः (स्त्री०) 1 पेड़ 2 पत्तों का कतार 3 शरीर पर सजावट की दृष्टि से चंदनादि से रेखांकित करना,—आवली 1. पत्तों की पंक्ति 2=°आवली (3),—आहार° पत्ते खाकर निर्वाह करना,—ऊर्णम् बुनने वाली रेशम, रेशमी वस्त्र—स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं दोषमुद्वते—मालवि० ५।१२,—काहलम् परों को फटफटाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट,—कारकः आरा,—कालिका पत्ते के रेशे,—करङ्क रेशी,—कालः लंबी छुरी, बड़ा चाकू (ली) 1 बाण का पंखवाला भाग 2 कँघी,—काहा मस्तक का सोने का आभूषण, टीका,—कुटम् पत्तों से बना पात्र, दोना—रघु० २।६५,—गा (वा) नः धन्वु—अन०, —ग्रंथिः,—ची (स्त्री०) शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, मेंहदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना कस्तूरीरसपत्रभंगनिकरो मृष्टो न गंडस्थले शृंगार० ७ (कादंबरी में बहुलता से प्रयुक्त)—जीवनम् नया पत्ता या कोंपल,—तरुः पक्षी-व्यधीकृत पत्ररचेन तेन—नै० ३।६, 'इन्द्रः गरुड का नाम, 'इन्द्रकेतु विष्णु का नाम रघु० १८।३०,—रे (ले) वा, —वल्लरी,—वल्लिः,—वल्ली (वि०) दे० ऊ० 'पत्र भंग'—रघु० ६।७२, १६।६७, ऋतु० १।७, शि० ८। ५६, ५९—वाह (वि०) (बाण आदि) पंखों से युक्त, —वाहः 1 पक्षी शि० १८।७३ 2 बाण 3 डाकिया, चिट्ठीरसा, विशेषकः चित्रकारी की रेखाएँ—दे० 'पत्रभंग'—शु० ३।३३, रघु० ३।५५, ९।२९,—शेखरः एक प्रकार का कामों का आभूषण,—शाकः शाकभाजी जिसमें मुख्यरूप से पत्ते हों,—शेखरः बेल का पेड़, —सूचिः (स्त्री०) काटा,—हरितम् जाड़े की ऋतु जब पाला या बर्फ पड़े।

पत्रकम् [पत्र + कन्] 1 पत्ता 2 सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी।

पत्रलता [पत्र + लिच् + युच् + टाप्] 1 सौन्दर्यवृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी 2 बाण में पंख लगाना।

पत्रिका) पत्री + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 लिखने के लिए कागज 2. चिट्ठी, लेख, प्रलेख।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [पत्रम् अस्त्यर्थे इनि] 1 पंखों से युक्त, परों वाला—मयूर°—रघु० ३।५६ 2. जिसमें पत्ते या पृष्ठ हों (पुं०) 1 बाण—ता विलोक्य वनितार्थे वृता पत्रिणा सह मृगेण राघव—रघु० ११।१७, ३।५३, ९।६१ 2 पक्षी—रघु० १२।२९ 3 बाज 4 पहाड़ 5 रथ 6 वृक्ष। सम०—वाहः पक्षी।

पत्रिलः [पत् + किलच्, रस्य लः] रास्ता, मार्ग।

पथ्यः [पथ् + क (स्वार्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (समास के अन्त में) किनारा। सम०—कल्पना चाटु के खेल,—दर्शकः मार्ग बतलाने वाला।

पथिकः [पथिन् + ष्कन्] 1 यात्री, मुसाफिर, बटोही —पथिकवनिता मेघ० ८, अमरु ९३ 2. पथप्रदर्शक। सम०—संततिः,—संहतिः (स्त्री०),—सार्थः यात्रियों का समूह, काफला।

पथिन् (पुं०) [पथ् आधारे इनि] (कर्तृ० पंथाः, पथानौ, पथानः, कर्म० ब० व०—पथः, करण० ब० व०—पथिभिः आदि, समास के अन्त में यह शब्द बदल कर 'पथ' हो जाता है—तोयाधारपथाः, दृष्टिपथः, नष्टपथः, सत्पथः, प्रतिपथम् आदि) 1 मार्ग, रास्ता,

पथ अध्वनामेव पथा —भर्तृ० २।२६, वक्र पथा —भर्तृ० २७ 2 यात्रा, राहगीरी या पर्यटन—जैसा कि 'शिवास्ते सन्तु पन्थानः' में (मैं आपकी सुखद यात्रा की कामना करता हूँ, भगवान् आपकी यात्रा सफल करें) 3 परास, पहुँच जैसा कि—कर्णपथ, श्रुति°, और दर्शन° में 4 कार्यपद्धति, आचरण की रेखा, व्यवहारक्रम —पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसा-मावदते न पद्धतिम्—रघु० ३।४६ 5 सम्प्रदाय, सिद्धान्त 6 नरक का प्रभाग। सम०—देवम् सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर,—द्रुमः बेर का पेड़, —ज्ञ (वि०), मार्गों का जानकार—दायक (वि०) क्रूर (कः) 1 शिकारी, चिड़ीमार 2 बोझा ढोने वाला, कुली।

पथिकः [पथ्+इलच्] यात्री, राहगीर, बटोही।

पथ्य (वि०) [पथिन्+यत्+इलो लोप] 1 स्वास्थ्य प्रद, स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि आहार, सम्मति आदि) अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः —रामा०, यात्र० २।६५, पथ्यमग्नम् 2 योग्य उचित, उपयुक्त,—थ्यम् 1 स्वास्थ्यवर्धक या पौष्टिक आहार जैसा कि 'पथ्याशी स्वामी वर्तते' में 2 कल्याण, कुशलक्षेम—उत्सिक्तमानस्तु परो नोपेक्ष्य पथ्यमिच्छता—शि० २।१०। सम०—अशनम् उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वास्थ्यवर्धक या हानिकर समझे जाते हैं।

पद् I (चुरा० आ० पदयते) जाना, हिलना-डुलना।

II (दिवा० आ० पद्यते, पन्न—प्रेर०—पादयति-ते, इच्छा० पित्सते) 1. जाना, चलना-फिरना 2 पास जाना, पहुँचना (कर्म० के साथ) 3 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना—ज्योतिषामाधिपत्यं च प्रभावं चाप्यवाप्नुयात्—महा० 4 पालन करना, अनुसरण करना —स्वधर्मं पद्यमानास्ते—महा० अनु—, 1 पीछे चलना, अनुगमन करना, सेवा करना 2 स्नेहशील होना, अनुरक्त होना 3 प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4 अपनाना 5 मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना, अभि,—पास जाना, नजदीक होना, पहुँचना—रावणाभ्यर्णं तत्र राघव मदनातुरा, अभिपेदे निदाघार्ता व्यालीव मलयद्रुमम्—रघु० १२।३२, १९।११ 2 समिलित होना—शि० ३।२५ 4. अवलोकन करना, विचार करना, खयाल करना, समझना—क्षणमभ्यपद्यत जनैर्न मृषा गगनं गणाधिपति मूर्तिरिति—शि० ९।२७ 4. सहायता करना, मदद करना, मयाभिपन्नं त्रह्—महा० 5. पकड़ना, परास्त करना, आक्रमण करना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, ग्रस्त करना—सर्वतश्चाभिपन्नेषु आर्तराष्ट्रेषु महात्मसु, चक्रवातामिपन्नानामुदधीनामिव स्वनः—महा०, दे० 'अभिपन्न' 6. लेना, धारण करना—मनु० १।३ 7. स्वीकार करना, प्राप्त करना, अभ्युप—, 1. दया करना, सान्त्वना देना, आराम पहुँचाना, तरस खाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना—कु० ४।२५, ५।६१ 2. सहानुभूति मांगना, दीनता प्रकट करना 3 सहमत होना, स्वीकृति देना आ—, 1. निकट जाना, की ओर चलना, पहुँचना—भट्टि० १५।८९ 2. प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को) चले जाना या प्राप्त करना—निर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४, (ऊब जाता है) आपेदिरेऽध्वपरिश्रमं परितः पतंगा—भामि० १।१७, इसी प्रकार 'क्षीरं दधिभावमापद्यते—शारी० 3. कष्ट फैलना, दुर्भाग्यग्रस्त होना—अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते, एवमापद्य तेऽचिरात् राजा दशरथो यथा—रामा० 4. होना, घटित होना—भट्टि० ६।३१, प्रेर०—1. प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना—रघु० २।१२ 2. निकालना, जन्म देना, पैदा करना—लक्ष्मिमानमापादयति—का० १०५ 3. घटाना, कष्टग्रस्त करना, ले जाना—रघु० ५।५ 4 बदलना 5. नियन्त्रण में लाना, उद्—, 1. जन्म लेना, पैदा होना, उदय होना, उत्पन्न होना, उगना—उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा—मा० १।६, मनु० १।७७ 2 होना, घटित होना—प्रेर०—1 पैदा करना, सर्जन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, कार्यान्वित करना, प्रकाशित करना—वस्त्राण्युत्पादयति—पञ्च० २ 2. सामने लाना, उप—, 1 पहुँचना निकट जाना, पास जाना, पधारना—यमुनातटमुपपेदे पञ्च० १ 2 हासिल होना, प्राप्त होना, हिस्से में आना—भग० ६।३६, १३।१८ 3 होना, घटित होना, आ पड़ना, पैदा हो जाना—देवि एवमुपपद्यते—मालवि० १, उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी—श० ५।२६—रघु० १।६० 4. सम्भव होना, सम्भाव्य होना—नेश्वरो जगत कारणमुपपद्यते—शारी० कु० ६।६१, ३।१२ 5. उपयुक्त होना, योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुरूप समुचित—(अधि० के साथ) मा क्लैब्यं गच्छ कौन्तेय नैतत्त्वय्युपपद्यते—भग० २।३, १८।७ 6. आक्रमण करना, प्रेर०—1. किसी स्थिति में लाना, पहुँचाना, प्राप्त कराना विकत्थनमुपपादयति 2. नेतृत्व करना, ले जाना 3. तैयार होना—स्वमुपपादयति—वेणी० २ 4. किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना—रघु० १४।८, १५।१८, १६।३२, यात्र० १।३१५ 5. प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अनुष्ठान करना—यावत्तु मानुष्यके कार्यमुपपादयितुम्—का० ६२, देवकार्यमुपपादयिष्यतः—रघु० ११।९१, १७।५५ 6. न्याय्य ठहराना, तर्क देना, प्रदर्शित करना, प्रमा-

धित करना 7. संपन्न करना, युक्त करना, सिद्ध—, 1. निकलना, उगना 2. पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना,—निष्पद्यते च तत्स्थानि—मनु० ९।२४७, प्रेर०—पैदा करना, प्रकाशित करना, जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना—सर्वं नित्यमेकमेव पट निष्पादयति—पंच०, प्र—, 1 (क) की ओर जाना, पहुँचना, आश्रय लेना, चले जाना, पहुँच जाना—तां जन्मने शैलवधू प्रपेदे—कु० १।२१, (क्षितीश) कौरव प्रपेदे करतलनिष्ठ्य—रघु० ५।१, भट्टि० ४।१, कि० १।९, ११।६, रघु० ८।११ (ख) आश्रय ग्रहण करना—शरण्यमन्या कथ प्रपत्स्ये त्वयि दीप्यमाने—रघु० १४।६४ 2. किसी विशिष्ट अवस्था को जाना, पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना—रेणु प्रपेदे पथि पंकजानाम्—रघु० १६।३०, मुहूर्त कर्णोत्पलता प्रपेदे—कु० ७।८१, इदृशीमवस्था प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, ऋषिनिकरैरिति संशय प्रपेदे—भामि० ४।३३, अमरु २७ 3. प्राप्त करना, खोज लेना, हस्तगत करना, प्राप्त करना, हासिल करना, सहकार न प्रपेदे मधुपैत भवत्समं जगति—भामि० १।२१, रघु० ५।५१ 4. व्यवहार करना, बर्ताव करना,—किं प्रपन्नते वैदर्भ—मालवि० १, (वह करने के लिए क्या सुझाव प्रस्तुत करता है), पश्यामो मयि किं प्रपन्नते—अमरु २० 5. प्रविष्ट करना, अनुमति देना, सहमत होना, स्वीकार करना—याज्ञ० २।४०, 6. निकट खिसकना, आना, (समय आदि का) पहुँचना 7. चले चलना, प्रगति करना 8. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, प्रति—, 1. कदम रखना, आना, पहुँचना, सहारा लेना (किसी व्यक्ति का) आश्रय लेना—उभामुख तु प्रतिपद्य लोला द्विसत्रया प्रीतिमवाप लक्ष्मी—कु० १।४३ 2. ग्रहण करना, कदम रखना, लेना, अनुसरण करना, (मार्ग आदि) इत पन्थान प्रति पद्यस्व—श० ४, प्रतिपत्स्ये पदवीमह तव—कु० ४।१० 3 पधारना, पहुँचना, प्राप्त करना—शि० ६।१६ 4 हासिल करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, भाग लेना, हिस्सा लेना—स हि तस्य न केवलां प्रिय प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि—रघु० ८।५, १३, ४।१, ४४, ११।१४, १२।७, १९।५५, मनु० १४।१४, शि० १०।६३ 5 स्वीकार करना, मान लेना,—शि० १५।२२, १६।२४, 6. वसूल करना, फिर प्राप्त करना, पुन उपलब्ध करना, ग्रहण करना—श० ६।३१, कु० ४।१६, ७।९२ 7 मान लेना, स्वीकार करना—न मासे प्रतिपत्तासे मां वेत्सतीति मैथिलि—भट्टि० ८।७५, श० ५।२२, प्रमदा पतिवर्त्मेयं इति प्रतिपन्न हि चिरेतनैरपि—कु० ४।३३ 8. थामना, ग्रहण करना, पकड़ना—सुमत्रप्रतिपन्नरश्मिभि —रघु० १४।४७ 9. विचार करना, खयाल करना, सोचना, अवलोकन करना—तज्जनुर्जह्नवमेव राजन प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 10. अपने लिये लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना—निर्वाह. प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८, कार्यं त्वया न प्रतिपन्नकल्पम् —कु० ३।१४, रघु० १०।४० 11 हामी भरना, सहमत होना स्वीकृति देना—तथेति प्रतिपन्नाय—रघु० १५।९३ 12. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना, पालन करना —आचार प्रतिपद्यस्व —श० ४, विक्रम० २, "औपचारिक आचार (अभिवादन आदि) का पालन करो", शासनमर्हता प्रतिपद्यस्वम् मुद्रा० ४।१८, आज्ञा पालन करो 13 व्यवहार करना, बर्ताव करना, किसी का कोई कार्य करना (सब० या अधि के साथ), स कामवृत्तत्वमपि क्रियासु प्रत्यपद्यत—हरि०, स भवान् मातृपितृवदस्मासु प्रतिपद्यताम्— महा०, कथमहं प्रतिपत्स्ये—श० ५, न युक्त भवतास्मासु प्रतिपत्तुमन्यथम् — महा० 14 (उत्तर) देना, (प्रत्युत्तर) देना—कथ प्रतिवचनमपि न प्रपद्यसे—मुद्रा० ६ 15 प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना 16 जानना, समझना, परिचित होना, सीखना, मालूम करना 17. घूमना, भ्रमण करना 18 होना, घटित होना, (प्रेर०)—1 देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, अभिवादन करना, समर्पित करना—अधिगम्य प्रतिपाद्यमानमसिद्ध प्राप्नोति बुद्धि पराम्—भर्तृ० २।१८, मनु० ११।४ गुणवते कन्या प्रतिपादनीया—श० ४ 2 सिद्ध करना, प्रमाणित करना, प्रमाण देकर पक्का करना उक्तमेवार्थमुदाहरणेन प्रतिपादयति 3 व्याख्या करना, स्पष्ट करना 4 लाना या वापिस लौटना, (किसी स्थान पर) ले जाना 5. खयाल करना, विचार करना 6 उपस्थिति की घोषणा करना, पुन प्रस्तुत करना 7. उपार्जन करना 8. कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना, वि—, बुरी तरह विफल होना, असफल होना, (अवसान आदि), का विफल होना 2 दुर्भाग्यग्रस्त या दुर्दशाग्रस्त होना —स बधुर्दो विपक्षाणामापदुद्धरणक्षम—हि० १।३१ 3 विकलांग होना, अशक्त होना 4. मरना, नष्ट होना —नाथवतस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे—उत्तर० १।४४, मृच्छ० १।३८, आ—, 1 (पृथ्वी पर) उतरना, नीचे आना 2 मरना, नष्ट होना—वे० व्यापन्न—(प्रेर०)—मारना, कतल करना,—उद्—1. (तैयार माल) बाहर निकालना, सफलता प्राप्त करना, समृद्ध होना, सम्पन्न होना, पूरा होना, ——संपत्स्यते वः कामोऽय काल: कश्चिदतीयताम् —कु० २।५४, रघु० १४।७६, मनु० ३।२५४, ६।९२ 2. पूरा होना, (संख्या आदि) पूरा कर होना

व्यवहृता: पंच पञ्चदश संपद्यते 3 बन जाना, होना सपास्यते नगरीं भवतो राजहंसा सहाया'—मेघ० ११, २३, संपेदे श्रमसलिलोद्गमो विमुक्ताम्—कि० ७।५ 4 उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना 5 एक जगह पड़ना, एकत्र होना 6 सुसज्जित होना, सपन्न होना, स्वामी होना—अशोक यदि सख एव कुसुमैर्न सपत्स्यसे—मालवि० ३।१६, दे० 'सपन्न' 7 (किसी ओर) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना (सप्र० के साथ)—साधो शिक्षा गुणाय सपद्यते नासाधो —पञ्च० १, मुद्रा० ३।३२ 8 प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना 9 सलग्न होना, लीन होना (अधि० के साथ)—(प्रेर०)—1 करवाना, होना, पैदा करना, सम्पन्न करना, पूरा करना, कार्यान्वित करना—इति स्वसुर्भोजकुलप्रदीप सपाद्य पाणिग्रहण स राजा—रघु० ७।२९ 2 उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, तैयार करना अधिग्रहण करना, हासिल करना 4 सज्जित करना, सपन्न करना युक्त करना 5 बदलना, रूपान्तरित करना, 6. करार या वादा करना, सप्रति—,1 की ओर जाना, पहुँचना 2. विचार करना, खयाल करना—कु० ५।३९, सखा 1 घटित होना, होना घटना होना 2 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

पद् (पुं०) [पद्+क्विप्] (इस शब्द का पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व०, के पश्चात् विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है) 1 पैर 2 चरण, चौथाई भाग (किसी कविता या श्लोक का)। सम०—कालिन् (पुं०) पैदल चलने वाला,—हति: स्त्री (स्त्री०) (पद्धति, —ती) रास्ता, पथ, मार्ग, बटिया (आल० भी) इव हि रघु सिहाना वीरचारित्रपद्धति—उत्तर० ५।२२, रघु० ४।४६, ६।५५, ११।८७, कविप्रथम पद्धतिम्—१५।३३, 'कवियों को दिखाया गया पहला मार्ग' 2 रेखा, पक्ति, शृखला 3 उपनाम, वशनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्तिवाचक सज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो—उदा० गुप्त, दास, दत्त आदि 4 विवाहादि विधि को सूचित करने वाली पुस्तक,—हिमम् (पद्धिमम्) पैरों का ठण्डापन।

पदक [पद्+अच्] 1 पैर (इस अर्थ में पद० भी होता है) पदेन पैदल—शिखरिषु पद न्यस्य—मेघ० १३, अयथे पदमर्पयति हि—रघु० ९।७४, 'कुमार्ग पर कदम रखना' ३।५०, १२।५२, पद हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते—३।६२, 'गुणों के द्वारा सर्वत्र कदम रखा जाता है—अर्थात् गुणों की ही कद्र होती है, जनपदे न गद पदमादधौ —९।४ 'देश में किसी भी रोग ने कदम नहीं रक्खा' मदबधि न पद दधाति चिन्ते—भामि० २।१४, पदं कृ (क) कदम रखना (शा०)—शाठे करिष्यसि पद पुनराश्रमेऽस्मिन्—श० ४।२५, (ख) प्रवृत्त होना, अधिकार करना, कब्जा करना, (आल०) कृत वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १३७, कृत हि मे कुतूहलेन प्रसभावकाशया हृदि पदम्—१३३, इसी प्रकार कु० ५।२१, पच० २४०, कृत्वा पद नो गले—मुद्रा० ३।२६, 'हमारे विरुद्ध' (शा०—अपना कदम हमारी गर्दन पर रखकर), मूर्ध्नि पद कृ किसी के सिर पर चढ़ना, दीन बनाना—पञ्च० १।३२७, आकृति विशेषेष्वादर पद करोति—मालवि० १, सुन्दर रूप ध्यान आकृष्ट करता है (आदर प्राप्त करता है)—जने मत्सीपद कारिता—श० ४, (मित्रता या विश्वास का) बर्ताव कराया गया, कर्मेण सर्वे पार्वती प्रति पद कारिते—कु० ६।१४ 2 कदम, पग, डग—तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा श० २।१२, थोड़े थोड़े हर कदम पर—अलमात्मावमदस्वा पदात्पदमपि न गतव्यम्—या चलितव्यम् "एक कदम भी मत चलो" पितु पद मध्यममुत्पतत्ती —विक्रम० १।१९, 'विष्णु का त्रिचला कदम' अर्थात् अन्तरिक्ष (पौराणिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल यह तीनों लोक ही वामनावतार (पचम अवतार) विष्णु के तीन कदम माने जाते है) इसी प्रकार —अथात्मन शब्दगुण गुणज्ञ पद विमानेन विगाहमान —रघु० १३।१ 3 पदचिह्न, पद—छाप, पदाक—पदपक्ति —श० २।८, या पदावली—पगछाप, पवमनुविधेय च महता—भर्तृ० २।२८, 'महाजनो के पदचिह्नों पर ही चलना चाहिए' 4 चिह्न, अक, छाप, निशान —रतिवलयपदाके चापमामज्य कण्ठे—कु० २।६४, मेघ० ३५, ९६, मालवि० ३ 5 स्थान, अवस्था, स्थिति -अधोऽध पदम् भर्तृ० २।१०, आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीत—श० १, 'कष्ट की अवस्था तक पहुँचाया'—तदलब्धपद हृदिशोकवन्धे—रघु० ८।९१, 'हृदय में स्थान न पाया' (अर्थात् हृदय पर छाप न छोड़ी), —अपदे शकितोऽस्मि—मालवि० १, 'मेरे सन्देह स्थान से बाहर थे' अर्थात् निराधार—कृशकुटुबेषु लोभ पदमधत्त -दश० १६२, कु० ६।७२, ३।४, रघु० २।५०, ९।८२, कृतपद स्तनयुगलम्—उत्तर० ६।३५, 'स्तनयुगल विकासोन्मुख था' 6 मर्यादा, दर्जा, पद, स्थिति या अवस्था—भगवत्या प्राणिकपदमध्यासितव्यम्—मालवि० १, यान्येव महिषीपदं युवतय—श० ४।१८, 'पदवी को प्राप्त करती हैं' सचिव°, राज° आदि 7 कारण, विषय, अवसर, वस्तु, मामला या बात —व्यवहारपद हितत्—याज्ञ० २।५, झगड़े की बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्वामित्व अधिकार, अदालती कार्रवाई—सता हि सदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाण-

मन्त्रकरणप्रवृत्तेषु—श० १।२२, वांछितफलप्राप्ते पदम्—रत्न० १।६ 8 आधार, पदार्थ, आश्रय—पद दृश स्था. कथमीदृशं मादृशाम्—शि० १।३७, १४।२२, अमरीयान्न पद नृपश्रिय—कि० २।१४, अविवेक परमापदां पदम्—२।३०, के वा न स्यु. परिभवपद निष्कलारम्भयत्नाः—मेघ० ५४, हि० ४।६९ 9 श्लोक का एक चरण, एक लाइन—विरचितपद (गेयम्) मेघ० ८६, १३३—मालवि० ५।२, श० ३।१६ 10 विभक्तिचिह्न से युक्त पूरा शब्द—सुप्तिङन्त पदम् पा० १।४।१४, वर्णा पद प्रयोगार्हान्निर्वर्तकार्थबोधका —सा० द० ९, रघु० ८।७७ 11 कर्तृ०, ए० व० को छोड़ कर शेष सभी व्यञ्जनादि विभक्तिचिह्नों का सांकेतिक नाम 12 वैदिक शब्दों को सन्धिविच्छेद करके पृथक् २ रखना, वैदिक मन्त्रों का पद-पाठ निर्धारित करना 13 बहाना—शि० ७।१४ 14 वर्गमूल 15 (वाक्य का) प्रभाग या खंड 16 लम्बाई की माप 17 प्ररक्षा, संधारण या प्ररक्षण 18 सतरंज की बिसात पर बना वर्गाकार घर,—द प्रकाश की किरण। सम०—अर्कः,—चिह्नम् पदछाप,—अंगुष्ठः पैर का अँगूठा,—अनुगः अनुगामी, सहचर,—अनुशासनम् शब्द विज्ञान, व्याकरण,—अंत शब्द का अन्त,—अन्तरम् दूसरा पग, एक पग का अन्तराल—पदांतरे स्थित्वा—श० १,—अब्जम्—अंभोजम्,—अरविंद,—कमलम्, —पंकजम्,—पद्मम् चरणकमल, कमल जैसे पग, —अर्थ 1. शब्द का अर्थ 2. वस्तु या पदार्थ 3. शीर्षक या विषय (नैयायिक इसके आगे १६ उपशीर्षक गिनाते हैं) 4 अभिधेय, वह वस्तु जिसका कुछ नाम रक्खा जा सके, प्रवर्ग, वैशे० के अनुसार इन प्रवर्गों या पदार्थों की संख्या सात, सांख्यों के अनुसार २५ (या पतंजलि के अनुयायियों के अनुसार २७) और वेदान्तियों के अनुसार केवल दो ही है,—आघातः 'पैर का प्रहार' या ठोकर,—आलिः पैदलसिपाही, —आवली शब्दों का समूह, शब्दों या पंक्तियों का अविच्छिन्न क्रम (काव्यस्य शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली—काव्या० १।१०, मधुरकोमलकान्तपदावली शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्—गीत० १, आसनम् पादपीठ, पैर रखने की चौकी,—क्रमः चलना, कदम रखना,—गः पैदल सिपाही,—च्युतः (वि०) पद से हटाया गया, गद्दी से उतारा हुआ —छेदः,—विच्छेदः,—विभागः शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का शब्दों में पृथक्करण,—न्यासः 1. कदम रखना, डग भरना, पग रखना 2. पदचिह्न 3. पैरों की एक मुद्रा विशेष ४. गोखरू का पौधा,—पंक्तिः (स्त्री०) 1. पदचिह्नों की कतार—श० ३।९, विक्रम० ४।६ 2. शब्दों का क्रम—कि० १०।३० 3. ईंट, पवित्र इष्टका,—पाठः वैदिक मंत्रों का एक विशेषक्रम जिसमें मन्त्र का प्रत्येक शब्द उच्चारणविकारों से निरपेक्ष होकर अपने मूलरूप में ही लिखा जाता है और इसी मूलरूप में उच्चारण किया जाता है (विप० संहितापाठ),—पातः, —विक्षेपः कदम, (घोड़े का भी) कदम,—भंजनम् शब्दों का विग्रह, निरुक्ति,—मंजरी एक टीका जिसमें किसी ग्रंथ के शब्द, पृथक् २ किये जाते हैं तथा समासों का विग्रह कर दिया जाता है,—माला जादू का गुर,—यतिः (स्त्री०) दो शब्दों के बीच अंतर या विराम।

पदकम् [पद+कन्] कदम, स्थिति, पदवी—दे० 'पद' —कः कण्ठ का एक आभूषण 2. पद पाठ का ज्ञाता।

पदवि:,—वी (स्त्री०) [पद्+अवि वा ङीष्] 1. रास्ता, मार्ग, पथ, बाटिया (आलं०) पवन पदवीं—मेघ० ८, अनुवाहि साधुपदवीम्—भर्तृ० २।७७, 'भले आदमियों के पदचिह्नों पर चलो'—श० ४।१३, रघु० ३।५०,७।७,८,११, १५।९९, भर्तृ० ३।४६, वेणी० ६।२७, इसी प्रकार 'यौवनपदवीमारूढ'—पंच० १, 'वयस्कता प्राप्त की' (अर्थात् पूरा मनुष्य बन गया) 2. अवस्था, स्थिति, दर्जा, मर्यादा, पदवी, पद 3. जगह, स्थान।

पदातः, पदातिः [पद्+अत्+अच्, इन् वा] 1 पैदल सिपाही—रघु० ७।३७ 2. पैदल चारी (पैदल चलने वाला) उत्तर० ५।१२।

पदातिन् (वि०) [पदात+इनि] 1. (सेना) जिसमें पैदल सिपाही हों 2. पैदल चलने वाला (पुं०) पैदल सिपाही।

पदिक (वि०) [पादेन चरति—पाद+ठन्, पादस्य पादेशः] पैदल चलने वाला—(पुं०) पैदल आदमी।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल (इस अर्थ में पुं० भी) पद्मपत्रस्थित तोय यथा मुक्ताफलश्रियम्—2. कमल जैसा आभूषण, 3. कमल का रूप या आकृति 4. कमल की जड़ 5 हाथी सूंड और चेहरे पर रंगीन चिह्न 6. कमल के आकार खड़ी की हुई सेना 7. विशेषरूप से बड़ी संख्या, (१०००००००००००००००) 8 सीसा,—द्मः 1. एक प्रकार का मंदिर 2. हाथी 3 सांप की एक जाती 4. राम का विशेषण 5. कुबेर के नौ खजानों में से एक—दे० नवनिधि 6. एक प्रकार का रतिबंध, मैथुन,—द्मा लौकिक की देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी (तं) पद्मा पद्मातपत्रेण मेजे साम्राज्यदीक्षितम्—रघु० ५। सम०—अक्ष (वि०) कमल जैसी सुन्दर आँखों वाला (—क्षः) विष्णु या सूर्य का विशेषण, (—क्षम्) कमल बट्टा,—आकरः 1. एक विशाल सरोवर जिसमें कमल खिले हों

2. पौधा, पल्लव 3. कमलों का समूह —मनु० २।७३, —आसनः जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण, (—ना) लक्ष्मी का विशेषण,—आसनम् 1. कमल पीठ—कु० ७।८६, 2. एक प्रकार का योगासन—उरुमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं, बाह्वोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्, (नः) जगत्स्रष्टा ब्रह्माका विशेषण,—आह्वम् कमल,—उद्भवः ब्रह्मा का विशेषण—करः,—हस्त विष्णु का विशेषण (रा,—स्ता) लक्ष्मी का नाम,—कर्णिका पद्म का बीजकोश,—कलिका कमल का अनखिला फूल, कली, —केसरः—कम् कमलफूल का रेशा—कोश',—कोषः 1 कमल का सपुट 2 सपुटित कमल के आकार की उँगलियों को एक मुद्रा,—खंडम्,—खण्डम् कमलों का समूह,—गंध,—गंधि (वि०) कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला,—गर्भ 1 ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3 सूर्य का विशेषण, —गुहा—गृहा धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण, —ज,—जात,—भव,—भूः—योनिः,—संभव कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण,—तंतु कमल का रेशेदार डठल—नाभ,—भि विष्णु का विशेषण—नालम् कमल का डठल,—पाणि 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण,—पुष्प कर्णिकार का पौधा, —बंधु. एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिसमें शब्दों को कमल-फूल के रूप में व्यवस्थित किया हो—दे० काव्य० १०,—बंधुः 1 सूर्य 2 मधुमक्खी,—राग,—राज् लाल, माणिक्य, रघु० १३।५३, १७।२३, कु० ३।५३,—रेखा हथेली में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो अत्यन्त धनवान् होने का लक्षण है,—लांछन 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण 3 सूर्य और 4 राजा का विशेषण (मा) 1 धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2 या विद्या की देवी सरस्वती का विशेषण—वासा लक्ष्मी का विशेषण।

पद्मकम् [पद्म+कन्] 1 कमलफूल के आकार की व्यूह-रचना में स्थित सेना 2 हाथी की सूंड और चेहरे पर रंगीन स्थान 3 बैठने की विशेष मुद्रा।

पद्मकिन् (पु०) [पद्मक+इनि] 1 हाथी 2 भोजपत्र का वृक्ष।

पद्मावती [पद्म+मतुप्, वत्वम्, दीर्घश्च] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 एक नदी का नाम- मा० ९।१।

पद्मिन् (वि०) [पद्म+इनि] 1 कमल रखने वाला 2 खिलकमरा (पु०) हाथी—नी 1 कमल का पौधा —सुरगज इव बिभ्रत् पद्मिनी दंतलग्नाम्—कु० ३। ७६, रघु० १६।८८, मेघ० ३३, मालवि० २।१३ 2 कमलफूलों का समूह 3 सरोवर या झील जिसमें कमल लगे हुए हों 4 कमल का रेशेदार डंठल 5 हथिनी 6 रतिशास्त्र के लेखकों ने स्त्रियों के चार भेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इनका लक्षण रतिमंजरी में इस प्रकार दिया है—भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररंध्रा अविरलकुचयुग्मा बालकेशी कृशांगी मृदुवचनमुशीला गीतवाद्यानुरक्ता सकललनसुवेशा पद्मिनी पद्मगंधा।

पद्मेशय [पद्मे शेते—शी+अच्, अलु० स०] विष्णु का विशेषण।

पद्य (वि०) [पद्+यत्] 1 पद या पंक्तियों वाला 2 चरण या पद को मापने वाला,—द्यं 1 शूद्र 2 शब्द का एक भाग,—द्या पगडंडी, पथ, बटिया, —द्यम् (चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता —मदीयपद्यरत्नानां मंजूषैषा मया कृता—भामि० ४।४५, पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा —सा० २ 2 प्रशंसा, स्तुति।

पद्य [पद्यतेऽस्मिन् पद्+रक्] गाँव।

पद्य [पद्+वन्] 1 भूलोक, मर्त्य लोक 2 रथ 3 मार्ग।

पन् (भ्वा० उभ०—पनायति-ते, पनायित या पनित) प्रशंसा करना, स्तुति करना—तु० 'पण'।

पनस: [पनाय्यते स्तूयतेऽनेन देव —पन्+असच्] 1 कटहल का वृक्ष 2 काँटा,—सम् कटहल का फल।

पनाक (वि०) [पथि जात —पथिन्+कन्, पन्नादेश] मार्ग में उत्पन्न।

पन्न (भू० क० कृ०) [पद्+क्त] 1 गिरा हुआ, डूबा हुआ, नीचे गया हुआ, अवतरित 2 बीता हुआ—दे० पद्। सम०—गः साँप, सर्प—विषकृत पन्नग फणा कुरुते—शः ६।३० (—गम्) सीसा, °अरि', °अशन, °आशनः गरुड के विशेषण।

पनि [पातिलोकम्—पिबति वा, पा+कि, द्वित्वम्] चन्द्रमा।

पनी [पा+ई, द्वित्व किच्च] 1 चन्द्रमा 2 सूर्य।

पनु (वि०) [पा+कु, द्वित्वम्] पालन-पोषण करने वाला, रक्षा करने वाला,—नु (स्त्री०) धात्री माता, प्रतिपालिका।

पंपा [पाति रक्षति महर्ष्यादीन्—पा० द्वित्वम् मुडागमश्च, नि०] दंडकारण्य का एक सरोवर—इह च पंपामभिधान सर—उत्तर० १, रघु० १३।३०, भट्टि० ३।७३ 2 भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम।

पयस् (नपु०) [पद्+असुन्, पा+असुन्, इकारादेशश्च] 1 पानी 2 दूध पय पान भुजगानां केवलं विषवर्धनम् —हि० ३।४, रघु० २।३६, ६३, १४।७८, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3 वीर्य (हश् वर्णों से पूर्व पयस् को बदल कर 'पयो' हो जाता है)। सम०—अद,—द 1 बोला 2 टापू,—आशय बोला,—आशयः जलाशय या सरोवर,—आम्बुद (पु०) बादल—दः बादल —मेघ० ७, रघु० १४।३७,—मुच् (पु०) मोर

—धरः 1 बादल 2 स्त्री की छाती—पद्मपयोधरतटी —गीत० १, विपाण्डुभिर्लम्बितया पयोधरैः—कि० ४।२७, (यहाँ शब्द का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु० १४।२२ 3 ऐन औड़ी—रघु० २।३ 4 नारियल का पेड़ 5 रीढ़ की हड्डी,—धस् (पु०) 1 समुद्र 2 तालाब, सरोवर, जलाशय,—धि,—निधिः समुद्र, ऋतु० २।७, नै० ४।५०,—मुच् (पु०) बादल—रघु० ३।३, ६।५,—वाह बादल,—रघु० १।३६, ।

पयस्य (वि०) [पयसो विकार पयस इदं वा—पयस् +यत्] 1 दूध से युक्त, दूध से बना हुआ 2 पानी से युक्त,—स्या बिल्ली,—स्या दही ।

पयस्वत् (वि०) [पयस्+मतुप्] दूध से भरा हुआ, यथेष्ट दूध देने वाला,—त्, बकरी ।

पयस्विन् (वि०) [पयस्+विनि] दूधिया, जल से युक्त, —नी 1 दूध देने वाली गाय—रघु० २।२१,५४,६५ 2 नदी 3 बकरी 4 रात ।

पयोधिकम् [पयोधि+कै+क] समुद्रझाग ।

पयोष्णी (स्त्री०) विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी (कुछ विद्वान् इसे वर्तमान 'ताप्ती' मानते हैं, परन्तु 'ताप्ती' की एक सहायक नदी 'पूर्णा' है जिसकी 'पयोष्णी' के साथ अभिन्नता अधिक समर्थ प्रतीत होती है) ।

पर (वि०) [पृ०+अप्, कर्तरि अच् वा] (जब सापेक्ष स्थिति बतलाई जाती है इस शब्द के रूप विकल्प से कर्तृ० सर्वो० अपा०, और अधि० में सर्वनाम की भाँति होते हैं) 1 दूसरा, भिन्न, अन्य—दे० 'पर' पृ० भी 2 दूरस्थित, हटाया हुआ, दूर का 3 परे, आगे, के दूसरी ओर—म्लेच्छदेशस्तत पर —मनु० २।२३, ७।१५८ 4 बाद का, पीछे का, आगे का (प्राय अपा० के साथ) कार्यात्परासिक दशा मदनोऽभ्युदास—रघु० ५।६३, कु० १।३१ 5 उच्चतर, श्रेष्ठ, सिकतातत्वादपि परा प्रपेदे परमाणुताम्—रघु० १५।२२, इन्द्रियाणि पराण्याहु—रिन्द्रियेभ्य पर मन, मनसस्तु परा बुद्धियों बुद्धे परतस्तु सः - भग० २।४२, 6 उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रधान—न त्वया दृष्टभ्यानः पर दृष्टम्—श० २, कि० ५।२८ 7 (समास में) आगे का वर्ग या श्रेणि रखने वाला, पीछे का 8 विदेशी, अपरिचित, अजनबी 9 विरोधी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल 10 अधिक, अतिरिक्त, बचा हुआ जैसा कि पर शतम्—एक सौ से अधिक 11 अन्तिम, आखीर का 12 (समास के अन्त में) किसी वस्तु को उच्चतम पदार्थ समझने वाला, लीन, तुला हुआ, अनन्यभक्त, पूर्णत व्यस्त —परिचर्यापर—रघु० १।९१, इसी प्रकार 'ध्यानपर' शोकपर, यज्ञपर, चिंतापर आदि—रः 1 दूसरा, अपरिचित, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब० व०) अत परेषा गुणदोषहोतासि—मालवि० १।९, शि० २०।७४, दे० 'एक' 'अन्य' भी 2 शत्रु, दुश्मन, रिपु उत्सिष्टमानस्यु परो लोपेक्ष पथ्यमिच्छता—शि० २।१०, पञ्च० २।१५८, रघु० ३।२१,—रम् उच्चतम स्वर या बिन्दु, चरम बिन्दु 2 परमात्मा 3 मोक्ष विशे०—कर्म०, करण०, और अधि० के एक वचन के 'पर' शब्द के रूप क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त किये जाते हैं—अर्थात् (क) क्रमश 1 परे, अधिक, में से (अपा०), अस्मात् पर्वतात् परम् रघु० १।१७, 2 के पश्चात् (अपा०) अस्मात् पर—श० ४।१६, तत परम् 3 उस पर, उसके बाद 4 परन्तु, लेकिन 5 अन्यथा 6 ढंग से भाषा में, अधिकता के साथ, अत्यधिक, पूरी तरह से, सर्वथा—पर दुःखितोऽस्मि —आदि 7 अत्यत (ख) परेण 1 आगे, परे, अपेक्षाकृत अधिक किंवा मृत्यो परेण विधास्यति—मा० २।२ 2 इसके पश्चात्—मयि तु कृतनिश्चये कि विदध्या परेण—महावी० २।४९ 3 के बाद (अपा० के साथ) स्तम्भ त्यागात्परेण—उत्तर० २।७, (ग) परे 1 बाद में, उसके पश्चात्—अथ ते दशाहस्य परे —रघु० ८।७३ 2 भविष्य में । सम०—अंशुः शरीर का पिछला,—अक्षः शिव का विशेषण,—अक्ष अरब या पर्शिया के देशों में पाया जाने वाला घोड़ा, —अधीन (वि०) पराधीन, पराश्रित, परवश, मनु० १०।५४,५३,—अरिः (पु० ब० व०) एक राष्ट्र का नाम, —असकः शिव का विशेषण—अन्न (वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (अन्नम्) दूसरे का भोजन °वरिपुष्टता दूसरों के भोजन से पालन-पोषण याज्ञ० ३।२४१ °भोजिन् (वि०) दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला हि० १।१३९,—अवर (वि०) 1. दूर और निकट, दूर और समीप 2. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती 3. पहले और बाद में, पहले और पीछे 4. ऊपर और नीचे, सबसे उत्तम और सबसे खराब (—रम्) (तर्क० में) महत्तम और लघुतम सख्याओं के बीच की वस्तु, जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान हो),—आवृत्त दृष्टि,—आश्रय (आयन) (वि०) 1 अनुरक्त, भक्त, सलग्न 2. आश्रित, वशीभूत 3. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा लीन (समास के अन्त में)- -प्रभुचरणपरायण - मनु० २।५६, इसी प्रकार—शोक° कु० ४।१, अग्निहोत्र आदि (—श्रम्) प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या अन्तिम सहारा,—अर्थ (वि०) दूसरा ही उद्देश्य या अर्थ रखने वाला, 2. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य के लिए किया हुआ (—र्थः) 1. सर्वोच्च हित या

संस्कार, -वश -वश्य (वि०) दूसरे के अधीन, पराधीन, -वाक्यम् दोष या त्रुटि, —वाहि 1 न्यायकर्ता 2 वर्ष 3 कार्तिकेय के सेना का नाम,—वाद: 1 अफवाह, जनश्रुति 2 आपत्ति, विवाद —वादिन् (पु०) झगड़ालू विवादी, -व्रत. धृतराष्ट्र का विशेषण, -श्वस् (अव्य०) परसों (आगामी),—सक्त आत्मा —सरण (वि०) (व्या० में) अपवर्ती वर्ण का सन्नादेश,—सेवा दूसरे की सेवा,—स्त्री दूसरे की पत्नी, —स्वम् दूसरे का सम्पत्ति· रघु० १।२७, मनु० ७।१२३ हरणम् दूसरे की सम्पत्ति हर लेना, हृत् (वि०) शत्रुओं का मारने वाला —हितम् दूसरे का भला।

परकीय (वि०) [परस्य इदम्—पर+छ, कुक्] 1 दूसरे से सम्बन्ध रखने वाला—अर्थो हि कन्या परकीय एव —श० ४।२१, मनु० ८।२०१ —या दूसरे की पत्नी, या अपनी न हो। नायिकाओं के तीन मुख्य प्रकारों में से एक—द० 'अन्यस्त्री' और सा० द० १०८।

परज (पु०) 1 बेल बान्ड 2 तलवार का फल।

परजन, परजा [परस्य जनस्य समूहो वा टिलोपस्य] विशेजन स्वामी नि०, पर+जि+अन, मुम्] वरुण का विशेषण।

परत (अव्य०) [पर+तस्] 1 दूसरे से · भामि० १।१२० 2 अब से रघु० ८।८७ 3 आगे, अपेक्षाकृत अधिक, पर बाद, ऊपर (प्राय अप० के साथ) -बुद्धे परतस्तु स —भग० ३।४२ 4 अन्यथा 5 भिन्न प्रकार से।

परत्र (अव्य०) [पर+त्र] 1 दूसरे लोक में भावी जन्म में-परत्र च शर्मणे रघु० २।६९, कु० ६।३७, मनु० ३।२४१, ५।१६६ ८।१२३, उत्तर भाग में आगे या बाद में 2 आने वाले समय में, भविष्य में 3 सम० —भीरु परलोक के भय से विनम्र हो, परलोक पुरुष।

परतन्त्र (वि०) [परान् शत्रून् तनोति परि+तन्+ष्ट्रन्, ह्रस्व, मुम् च] दूसरों का सताने वाला, अपने शत्रुओं का दमन करने वाला भग० ६।२, रघु० १५।७, पर शूरवीर, विजेता।

परम (वि०) [पर परत्व मात्रिक ल्युट्०] 1 दूरतम, अन्तिम 2 उच्चतम सर्वोत्तम. अत्यन्त श्रेष्ठ, महत्तम —प्राप्नोति परमा गतिम् मनु० ४।१४, ७।१, २।१३ 3 मुख्य प्रधान, प्राथमिक. सर्वोपरि मनु० ८।३०२, ९।३१२ 4 अत्यधिक अन्तिम 5 यथेष्ट, पर्याप्त, -मम् सर्वोच्च या उच्चतम मुख्य या प्रमुख भाग (समास के अन्त में), प्रधानतया मुख्य, पूर्णत मलम · शास्त्रारम्भात्परमा एतावद्विधि निश्चितता भग० १६।११, मनु० ६।९६, —मम् (अव्य०) 1 स्वीकृतिबोधक, अंगीकार या सहमति बोधक, अव्यय (अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ, ऐसा हो)—तत परम मित्युक्ता प्रतस्थे मुनिमण्डलम्—कु० ६।३५ 2. अत्यधिक, अत्यन्त परमकृच्छ्र आदि०। सम०- अणवः श्रेष्ठश्री—अणु अत्यणु, अत्यल्पमात्रा का अणु—रघु० १५।२२, परमाणु परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम् - भर्तृ० २।७८, पृथ्वी नित्या परमाणुरूपा—तर्क० (परमाणु की परिभाषा - जालान्तरगते रश्मौ यत्सूक्ष्म दृश्यते रज. तस्य त्रिंशत्तमो भाग परमाणु स उच्यते।) —अद्वैतम् 1 परमात्मा 2 विशुद्ध एकेश्वरवाद, - -अन्नम् खीर, दूध में पके हुए चावल,—अर्थ 1 सर्वोच्च या नितान्त अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्मज्ञान, ब्रह्म या परमात्मासम्बन्धी ज्ञान—रघु० ८।२२, महावी० ७।२ 2 सचाई, वास्तविकता, आन्तरिकता -परिहासविजल्पित सख परमार्थेन न गृह्यतां वच —श० २।१८, (प्राय समास में प्रयुक्त होकर 'सत्य' 'वास्तविक' अर्थ प्रकट करता है) -मन्त्रया —रघु० ७।४०, महावी० ४।३० 3 कोई श्रेष्ठ या महत्त्वपूर्ण पदार्थ 4 सर्वोत्तम अर्थ, —अर्थत (अव्य०) सचमुच, वस्तुत, यथार्थत, सत्यत —विकार खलु परमार्थतोऽज्ञानाद्विनारम्भ प्रतीकारस्य —श० ४, उदाहु चैनं परमार्थतो हर न वेत्ति नूनं यत एवमात्थ माम्—कु० ५।७५, पञ्च० १।१३६,—अह श्रेष्ठ दिन,—आत्मन् (पु०) सर्वोपरि आत्मा या ब्रह्म,—आपद (स्त्री०) अत्यन्त भारी संकट या दुर्भाग्य ईश विष्णु का विशेषण, 2 इन्द्र की उपाधि 3 शिवका विशेषण 4 सर्वशक्तिमान् परमात्मा का विशेषण,—ऋषि उच्चकोटिका ऋषि, ऐश्वर्यम् सर्वशक्तिमत्ता, सर्वोपरिता,—गति (स्त्री०) मोक्ष, निर्वाण,—गव श्रेष्ठजाति का बैल या गाय, —पदम् 1 सर्वोत्तम स्थिति, उच्चतम दर्जा 2 मोक्ष, —पुरुष,—पुरुष परमात्मा, प्रख्य (वि०) प्रसिद्ध विख्यात, ब्रह्मन् (नपु०) परमात्मा,—हंस. उच्चतम कोटि का संन्यासी. वह जिसने भावात्मक समाधि के द्वारा अपनी इन्द्रियों का दमन करके उनको वश में कर लिया है—नु० कुटीचक।

परमेष्ठ [परम इष्ठन्] ब्रह्मा का विशेषण।

परमेष्ठिन् (पु०) [परमेष्ठ+इनि] 1 ब्रह्मा की 2 शिव की 3 विष्णु की 4 गरुड़ की 5. और अग्नि की उपाधि 6 कोई भी आध्यात्मिक गुरु।

परपर (वि०) [परमिति पृ+अच्, अलु० स०] 1 एक के बाद दूसरा 2 पूर्वानुपर, उत्तरोत्तर —र प्रपौत्र, —रा 1, अविच्छिन्न, शृंखला, नियमित सिलसिला आनुपूर्व्य, महतोय खल्वनर्थपरम्परा—का० १०३, कर्णपरम्परया 'एक कान से दूसरे कान में' सुन सुना कर, परम्परया आगतम् 'नियमित परम्परा के क्रम से

प्राप्त होना' 2 (नियमित वस्तुओं की) पंक्ति, कतार, संग्रह समूह—तोयालभोन्करालीव रेजे मुनि परंपरा—कु० ६।४९, रघु० ६।५, ३५,४०, १२।५० 3. प्रणाली, क्रम, सुव्यवस्था 4 वंश, कुटुंब, कुल 5 क्षति, चोट, मार डालना।

परंपरक (वि०) [परंपरया कायेन प्रकाशते · कै+क] यज्ञ में पशु का वध करना।

परंपरीण (वि०) [परंपर+ख] उत्तराधिकार में प्राप्त, आनुवंशिक लक्ष्मीं परंपरीणां स्व पुत्रपौत्रीणतां नय—भट्टि० ५।१५ 2 परंपरागप्राप्त।

परवत् (वि०) [पर+मतुप् मस्य व] 1 पराधीन, दूसरे के वश में, आज्ञापालन के लिए तत्पर—मा बालो परवतीति में विदितम्—श० ३।२, भगवत्परवानस्य जन—रघु० ८।८१, २।२६, (प्रायः करण० या अधि० के साथ) ज्ञात्वा यदित्थं परवानसि त्वं रघु० १४।५९ 2 शक्ति में वर्तित निःशक्त परवानिव शरीरोपतापेन—मा० ३ 3 पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन जो स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत—विस्मयेन परवानस्मि—उत्तर० ५, शासनेन परवानस्मि—उत्तर० ३, साध्वसेन—मा० ६।

परवत्ता [परवत्+तल्+टाप्] दूसरे की अधीनता, पराधीनता, विक्रम० ५।१७।

परश [स्पृशति इति पृषो०] पारसमणि जिसके स्पर्श से, कहा जाता है कि लोहा आदि दूसरी धातुएँ सोना बन जाती हैं, सम्भवतः यह दार्शनिकों का पारस-पत्थर है।

परशु [पर शृणाति—शृ+कु डिच्च] कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी, कुठार फरसा—तजिते परशुधारया मम—रघु० ११।७८ 2 शस्त्र, हथियार 3 वज्र। सम०—धर 1 परशुराम का विशेषण 2 गणेश की उपाधि 3. कुठारधारी सैनिक, राम 'कुठारधारी राम' एक विख्यात ब्राह्मणयोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छठा अवतार था (इसने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने पिता की आज्ञा से जब कि उसके भाइयों में से कोई भी तैयार न हुआ, अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला—दे० जमदग्नि। इसके पश्चात् एक बार राजा कार्तवीर्य, जमदग्नि के आश्रम में आये और उसकी गौ को छीनकर ले गये। परन्तु घर आने पर जिस समय परशुराम को पता लगा तो वह कार्तवीर्य से लड़ा और उसे यमलोक पहुँचा दिया। जब कार्तवीर्य के पुत्रों ने सुना तो वह बड़े क्रुद्ध हुए—फलतः वे आश्रम में आये और जमदग्नि को अकेला पाकर उसे मार डाला। जब परशुराम जो कि इस घटना के समय आश्रम में नहीं था, वापिस आया, तो अपने पिता के वध का समाचार सुन अत्यन्त क्षुब्ध हुआ उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की भीषण प्रतिज्ञा की। वह अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सफल हुआ, कहते हैं कि उसने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय जाति से रहित किया। वह क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाद में दशरथ के पुत्र राम के द्वारा जब कि वह केवल सोलह ही वर्ष के थे (दे० रघु० ११।६८,९१) परास्त किया गया। कहते हैं कि कार्तिकेय की शक्ति से ईर्ष्या होने के कारण उसने क्रौंच पर्वत को भी एक बार तीरों से बींध दिया—मे० मेघ० ५७, सात चिरंजीवियों में इनकी भी गिनती है, विश्वास किया जाता है कि परशुराम अब भी महेन्द्र-पर्वत पर बैठे तपस्या कर रहे हैं—गी० १, क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमित-भवतापम्, केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥ 4 परशुवृक्ष।

परशव (स्त्री) ध [पर+शि+ड परश्वध, तदर्थात् —धा+क, नि० शस्य सत्वम्] कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा—धारा शिता शमयतः परशोरयं मे भावस्थिरत्वमिव पश्यत सारमस्य—रघु० ६।४२।

परस् (अव्य०) [पर+असि] (श्रेष्ठ संस्कृत में इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है) 1 परे, आगे और भी 2 इसके दूसरी ओर 3 दूर, दूरी पर 4 अपवाद रूप में। सम०—कृष्ण (वि०) अत्यन्त काला,—पुरुष (वि०) मनुष्य से लंबा या ऊँचा—शत (वि०) सौ से अधिक—कि० १३।२६ शि० १२।५०,—श्वस् (अव्य०) आगामी परसों, सहस्र (वि०) एक हजार से अधिक—पर सहस्रा गरदन्तरांसि तत्का—उत्तर० २।१५, पर सहस्रं शिखाचैं—मालवि० ५।१३।

परस्तात् (अव्य०) [पर+अस्तात्] 1 परे, के दूसरी ओर, और आगे (प्रायः के साथ)—आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्—भग० ८।९ 2 इसके पश्चात्, बाद बाद में 3 अपेक्षाकृत ऊँचा।

परस्पर (वि०) [पर पर इति विग्रहे समासयद्भावे पूर्वपदस्य सु] आपस में- परस्परा विस्मयवर्धिनि त्वयि—मालविकायामग्निमित्रादरेण भट्टि० २।५, (सर्व० वि०) अन्योन्य, एक दूसरा (केवल ए० व०, में प्रयुक्त -प्रायः समास में) परस्परस्यापरि पर्यचीयत—रघु० ३।२४, ३।३५, विज्ञापयत्परस्परं अपसर्पं ४।५५, परस्पराश्लिष्टमहोदयम - २।४०, ३।२४, विशे० एक दूसरे के विरुद्ध 'आपस में' 'एक दूसरे से' 'एक दूसरे के द्वारा' 'इतरेतर के रूप में' 'आपस में' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए इस शब्द के सम० करण० और अधि० के पद बचन के रूप क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं दे० भग० ३।११, १०।१२ रघु० ८।७९, ६।८६, ७।१३, ५१, १२।१४।

परस्मैपदम्, परस्मैभाषा [परस्मै परार्थं पद भाषा वा] दूसरे के लिए प्रयुक्त वाक्य, क्रिया के दो रूपों में से (परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें कि संस्कृत की धातुओं के रूप चलते हैं।

परा (अव्य०) [पृ+अच्+टाप्] 'दूर' 'पीछे' 'उल्टे क्रम से' 'एक ओर' 'की ओर' अर्थों को प्रकट करने के लिए धातु या संज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग। सम० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं —1 मार डालना, आघात करना आदि (पराहत) 2 जाना (परागत) 3 देखना, सामना करना (पराबुद्ध) 4 पराक्रम (पराक्रान्त) 5 की ओर निर्देश, (पराकृत) 6 आधिक्य (पराजित) 7 पराधीनता (पराधीन) 8 उद्धार, मुक्ति (पराकृत) 9 प्रतीपक्रम पीछे की ओर (पराङ्मुख) 10 एक ओर रख देना, अवहेलना करना।

पराकरणम् [परा+कृ+ल्युट्] एक ओर रख देने की क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत करना।

पराक्रम [परा+क्रम+घञ्] 1 शूरवीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य पराक्रम परिभवे—शि० २।४४ 2 विरोधी अभियान करना, आक्रमण करना 3 प्रयत्न, कोशिश उद्योग 4 विष्णु का नाम।

पराग [परा+गम+ड] 1 पुष्परज,—स्फुटपरागपरागपङ्कजम् शि० ६।२ अमर ५४ 2 धूलि—रघु० ४।३० 3 स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला सुगन्धित चूर्ण 4 चन्दन 5 सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 6 यश, प्रसिद्धि 7 स्वाधीनता।

परागत [पराग प्रत्यग्भारोद यानि प्राप्नोति—या+क] समुद्र।

परा(रा)च् (वि०) (स्त्री० ची) [परा+अच्+क्विन्] 1 परे या दूसरी ओर स्थित, ये चामुष्मात्पराचो लोका छा० 2 मुंह मोड़ कर (पराङ्मुख) शि० १८।१८ 3 जो अनुकूल न हो प्रतिकूल—दैवे पराचि भामि० १।१०५ या—दैवे परावदनशालिनि हृत जाते—३।१ 4 दूरस्थ 5 बाहरकी ओर निर्देशित। सम०—मुख (वि०) (पराङ्मुखीनांस्तेनुमत्वला मनन्दरे—रघु० १९।३८, अमर ९० मनु० २।१९५, १०।११९ 2 (क) विमुख, उलटा—मानुनं केवल स्वस्मा श्रियोऽपासीत् पराङ्मुख —रघु० १७।१३, (ख) उदासीन, कतराने वाला, टाल जाने वाला —प्रवृत्तिपराङ्मुखो भव —विक्रम० ४।२०, श० ५।२८ 3 प्रतिकूल, अनुकूल—ननुर्दि न ते दोषोऽस्माकं विधिस्तु पराङ्मुख —अमरु २७ 4 उपेक्षा करने वाला—मत्यैवास्यापराङ्मुख —रघु० १०।४३।

पराचीन (वि०) [पराच्+ख] विरुद्ध दिशा में मुड़ा हुआ, विमुख 2 पराङ्मुख, अरुचि रखने वाला 3 परवाह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला 4 बाद में होने वाला, उत्तरकालभव 5 दूसरी ओर स्थित, परे होने वाला।

पराजयः [परा+जि+अच्] 1 परास्त करना, विजय, जीतना, अधीनीकरण, हार—रघु० ११।१९, मनु० ७।१९९ 2 परास्त होना, सहन करने के योग्य न होना (अपा० के साथ) अध्ययनात्पराजय 3 हारना, हार, असफलता (मुकदमे आदि में) अन्यथावादिनो (सात्क्षिण) यस्य ध्रुवस्तस्य पराजय —याज्ञ० २।७९ 4 पदच्युति, बर्खास्त 5 परित्याग।

पराजित (भू० क० कृ०) [परा+जि+क्त] जीता हुआ, वश में किया हुआ, हराया हुआ 2 कानून द्वारा दण्डित, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ।

पराण (ण) सा [परा+अन् (ण्)+अस+टाप्] औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज, वैद्य का व्यवसाय।

पराभव [परा+भू+अप्] 1 (क) हार, असफलता, पराजय—पराभवोज्झितसव एव मानिनाम्—कि० १।४१ (ख) मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग—कुबेरस्य मन शल्य असतीव पराभवम् —कु० २।२२, तव पदपल्लवैरिपराभवमिदमनु भवतु सुदेशम्—गीत० १२ 2 घृणा, अवहेलना, तिरस्कार 3 विनाश 4 लाभ, वियोग (कभी-कभी 'पराभाव' भी लिखा जाता है)।

पराभूति (स्त्री०) [परा+भू+क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परामर्श [परा+मृश्+घञ्] 1 पकड़ लेना, खींचना जैसा कि केशपरामर्श में 2 झुकाना या (धनुष) का तानना 3 हिंसा, आक्रमण, हमला—याज्ञसेन्या परामर्शं महा० 4 बाधा विघ्न तप परामर्शविवृद्धमन्यो कु० ३।३१ 5 ध्यान करना, प्रत्याह्मरण 6 विचार, विमर्श, चिन्तन 7 निर्णय 8 (तर्क० में घटाना, निश्चय करना कि अपना पक्ष या विषय सही तुल है—व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान परामर्श —तर्क० या—व्याप्तस्य पक्षधर्मतयोक्ती परामर्श उच्यते भाषा० ६६।

परामृष्ट (भू० क० कृ०) [परा+मृश्+क्त] 1 छूआ गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया 2 रूखा व्यवहार किया गया, दुर्व्यवहार किया गया 3 तोला गया, विचार किया गया, कूता गया 4 सहन किया गया 5 संबद्ध 6 (रोग से) ग्रस्त—दे० परा पूर्वक 'मृश्'।

परारि (अव्य०) [पूर्वतरे वत्सरे इत्यर्थे परभाव आदि च संवत्सरे] पूर्वतर वर्ष में, विगतवर्ष में, परिसार साल।

परायण दे० 'पर' (पर+अयन) के नीचे।

परावर्तः, परावृत्ति [परा+वृत्+घञ्, क्तिन् वा] 1 पीछे घूमना, वापसी, प्रत्यावर्तन 2 अदल-बदल, विनिमय 3 पुनः प्राप्ति 4 (कानून में) दण्ड या सजा की उलट-पलट ।

परावसु [परान् आवृणोति ' वृ+अच्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृतिकार थे ।

परावह् [परा+अस्+घञ्] रात्रा, टीन ।

परावसथम् [परा+अस्+ल्युट्] वध, हत्या ।

परासु (वि०) [परायता असवो यस्य प्रा० ब० स०] निर्जीव, मृतक, प्राक् परासुर्द्विजान्मज्ञ स्मृ० १५। ५६, ९।३८ ।

परास्त (भू० क० कृ०) [परा+अस्+क्त] 1 फेंका हुआ, डाला हुआ 2 निष्कासित, निकाला हुआ 3 अस्वीकृत 4 तिरस्कृत, त्यक्त 5 हराया हुआ ।

पराहत (भू० क० कृ०) [परा+हन्+क्त] 1 पटका हुआ, पछाड़ा हुआ 2 पीछे हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ, तम् प्रहार, आघात ।

परि (अव्य०) [पृ+इन्] (कभी-कभी बदलकर 'परी' भी हो जाता है, जैसे कि 'परिव्राज्' या 'परीवाह', परिहास या परीहास में) यह उपसर्ग के रूप में धातु या संज्ञाओं में पूर्व लगकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1 (क) चारों ओर, इधर उधर, इतस्ततः (ख) बहुत, अत्यन्त 2 पृथक्करणीय अव्यय (सर्व० वाच०) के रूप में निम्नांकित अर्थ है (क) की ओर की दिशा में, की तरफ, के सामने (कर्म० के साथ) वृक्ष परि विद्योतते विद्युत् (ख) क्रमशः, अलग २ करके (कर्म० के साथ) वृक्षं वृक्षं परि सिञ्चति, 'वह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष का सींचता है' (ग) हिस्से में, भाग्य में (कर्म० के साथ) यदत्र मा परि स्यात् 'जो मेरे भाग्य में बदा हो', लक्ष्मीर्हरिपरि—सिद्धा० (घ) से में से (ङ) सिवाय (अपा० के साथ) परि त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देव —पा० —पर्यनन्तात् जयन्तापा —वार्त० (च) बीत जाने के बाद (छ) फलस्वरूप 3 क्रिया विशेषण उपसर्ग के रूप में संज्ञाओं में पूर्व लग कर जब कि क्रिया से सीधा संबंध न हो, 'बहुत' अति' अत्यधिक' अत्यन्त' आदि अर्थ प्रकट करता है जैसा कि पर्यश्रु (आँसू डरकना) में इसी प्रकार परिचुम्बनं परिदीक्षेय 4 अव्ययीभाव समासों में पूर्व परि' का निम्नांकित अर्थ होता है (क) बिना सिवाय के बाहर, इसको छोड़ कर जैसा कि परिगिर्यं वृष्टो देव —पा० १।१।१२, ६।२।३६, पा० २।१।१० के अनुसार परि' अक्ष, शलाका या संख्या वाचक शब्द के पश्चात् अव्ययीभाव समास के अन्त में प्रयुक्त होता है यदि पासा उलट जाने के कारण या दुर्भाग्यवश हार या पराजय हो जाय (द्यूतव्यवहार पराजये एवाय समास)—उदा० अक्षपरि शलाकापरि एकपरि—तु० अक्षपरि (ख) इर्द गिर्द, चारों ओर, घिरा हुआ जैसा कि 'पर्यग्नि' में । ज्वालाओं के बीच में) 5 कर्मधारय समास के प्रथम में परि' का अर्थ है श्रान्त', क्लान्त' 'उबा हुआ' जैसा कि 'पर्यध्ययन=परिग्लानोऽध्ययनाय में ।

परिकथा [प्रा० स०] आख्यानप्रिय व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उसके साहसिक कार्यों का बतलाने वाली रचना, काल्पनिक कथा ।

परिकप [प्रा० स०] 1 भारी श्वास 2 प्रचंड कंपकंपी, या थरथराहट महावी० २।२७ ।

परिकर [प्रा० स०] 1 परिजन, अनुचर वर्ग, नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग 2 समुच्चय संग्रह, समूह—रत्न० ३।५ 3 आरंभ, उपक्रम भट्ट० १।६ 4 परिधि कटिबंध कटिवस्त्र—अहिपरिकरभाज —शि० ४।६५, **परिकर बध** (कु) कमर कसना, तैयार होना, किसी कार्य के लिए अपने आपको सज्जित करना—बध्नन्त्यमेव परिकर—का० १७० कृतपरिकरस्य भवादृशस्य त्रैलोक्यपति न क्षम पर्युपयोभवितुम्—वेणी० ३, गंगा० ४३, अमरु० ५२ 5 सौंफा 6 (सा० शा० में०) एक अलंकार जिसके साधक विशेषणों का उपयोग होता है—विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्ति परिकरस्तु स काव्य० १० उदा० मृणालसूत्रलिनानसन्ताप हर्तुं व शिव —चन्द्रा० ५।५९ 7 (नाट्य० में नाटक की वस्तु कथा में आने वाली घटनाओं का पराक्षसूचन, बीज' का मूलतन्तु दे० सा० द० ३४० 8 निर्णय ।

परिकर्तृ (पु०) [प्रा० स०] वह पुरोहित जो बड़े भाई के अविवाहित रहते हुए छोटे भाई का विवाह संस्कार करता है—परिकर्तो याजक —हारीत, तु० परिवेत्तृ ।

परिकर्मन् (पु०) [परि+कृ+मनिन्] सेवक—नपुं० —शरीर को चित्रित या सुगंधित करना, वैयक्तिक सजावट, अलंकृत करना, प्रसाधन—कृताचार परिकर्मणम्—शि० २ 2 पैरों में महावर लगाना—कु० ४।१ 3 सज्जा, तैयारी 4 पूजा, अर्चना 5 (योग० में) शुद्ध करना, पवित्रीकरण, मन को शुद्ध करने के साधन—शि० ४।५५, (इसके ऊपर दे० मल्लि०) 6 गणित की प्रक्रिया (इसके आठ भेद हैं) ।

परिकर्ष,—कर्षणम् [परि+कृष्+घञ्, ल्युट् वा] खींच कर बाहर निकालना, उखाड़ना ।

परिकल्कनम् [परि+कल्+क+ल्युट्] धोखा, ठगी, छल-कपट ।

परिकल्पनम्—ना [परि+कृप्+ल्युट्] 1 निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निर्धारण करना 2 उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप देना, क्रम-

बद्ध करना—मुद्रा० ७।१५ 3 जुटाना, सम्पन्न करना 4 वितरण करना।

परिकांक्षित. [परि+काङ्क्ष्+क्त] धर्म परायण साधु या सन्यासी, भक्त।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि△कृ+क्त] 1 फैलाया हुआ, प्रसृत, इधर उधर बखेरा हुआ 2 घिरा हुआ, भीड़भिड़क्का से युक्त भरा हुआ—शि० १६।१०, रघु० ८।४५।

परिकूटम् [प्रा० स०] अवरोध,आड़, नगर के फाटक के सामने की खाई।

परिकोप [परि-, कुप्+घञ्] अमर्ष क्रोध, भीषणता।

परिक्रम [परि+क्रम+घञ्] * इधर उधर भ्रमण करना, इतस्तत घूमना—कि० १०।२ 2 भ्रमण घूमना, टहलना 3 प्रदक्षिणा करना 4 इच्छानुसार टहलना 5 सिलसिला, क्रम 6 प्रथाक्रमा, उत्तरोत्तर 7 घूमना। सम०—सह बकरी।

परिक्रय,-क्रयण [परि+क्री+घञ्, ल्युट् वा] 1 * मजदूरी, भाड़ा 2 मजदूरी पर काम में लगाना 3 मोल लेना, खरीद डालना 4 विनिमय अदल-बदल 5 रुपया देकर की गई संधि तु० हि० ४।१२२।

परिक्रया [परि+क्रिया प्रा० स०] 1 बाड़ लगाना, चारों ओर खाई खोदना 2 घेरना 3 (नाट्य० में) परिकर (३)।

परिक्लान्त (भू० क० कृ०) [परि+क्लम्+क्त] थका हुआ परिश्रान्त, उकताया हुआ।

परिक्लेद [परि+क्लिद+घञ्] गीलापन, नमी, आर्द्रता।

परिक्लेश [परि+क्लिश्+घञ्] कठिनाई, थकावट कष्ट।

परिक्षय [परि+क्षि+अच्] 1 ह्रास, बर्बादी, विनाश, परिक्षयादि अधिकतर रमणीय मृच्छ० १, किरात० ६।४६ 2. अन्तर्धान होना, समाप्त होना 3 बर्बादी, नाश, असफलता कि० १६।५७, मनु० २।५९।

परिक्षाम [परि+क्षै+क्त, मकारश देश] कृश, क्षीण, दुर्बल।

परिक्षालनम् [परि+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना, माजना 2 धोने के लिए पानी।

परिक्षिप्त (भू०क०कृ०) [परि+क्षिप+क्त] 1 बखेरा हुआ, प्रसृत 2 परिवेष्टित, घेरा हुआ—वेतसपरिक्षिप्ते मठपे—शा० ३, कु० ६।८४ 3. खाई से घेरा हुआ 4 ऊपर से फैलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ 5 छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

परिक्षीण (भू०क०कृ०) [परि+क्षि+क्त] 1 अन्तर्हित, लुप्त, 2 बर्बाद हुआ, ह्रासित 3. कृश, घिसा हुआ, थका हुआ 4 दरिद्र किया हुआ, सर्वथा बर्बाद किया हुआ—ऋतु० २।४५ 5. खोया हुआ, नाश किया हुआ 6. कम किया हुआ, घटाया हुआ 7. (कानून में) दिवालिया।

परिक्षीव (वि०)[परि+क्षीव्+क्त, सस्य लोप] बिल्कुल नशे में चूर।

परिक्षेप. [परि+क्षिप्+घञ्] 1 इधर उधर घूमना, टहलना 2. बखेरना, फैलाना 3. घेरना, परिवेष्टन, चारों ओर बहना 4 घेरे की सीमा, हद जिससे कोई चीज घेरी जाय रघु० १२।६६।

परिखा [परित खन्यते—खन्+ड+टाप्] प्रतिकूप, खाई, नगर या किले के चारों ओर बनी नाली या खात—रघु० १।३०, १२।६६।

परिखातम् [परि+खन्+क्त] 1. प्रतिकूप, खाई 2. लोक, खूड 3 चारों ओर से खोदना।

परिखेद [परि+खेद प्रा० स०] थकावट, परिश्रान्ति, थकान—कु० १।६०, ऋतु० १।२७।

परिख्याति (स्त्री०) [परि+ख्या+क्तिन्] यश, प्रसिद्धि।

परिगणनम्,-ना [परि+गण्+ल्युट्] पूर्ण गिनती, सही वर्णन या हिसाब श्रेणीभूता परिगणनया विदिशतो बलाका—मेघ० (मल्लि० इसको क्षेपक समझते हैं)।

परिगत (भू०क०कृ०) [परि+गम्+क्त] 1. घेरा हुआ, आवेष्टित, अहाता बनाया हुआ 2. प्रसृत, चारों ओर फैलाया हुआ 3. ज्ञात समझा हुआ—रघु० ७।७१, परिगत परिगतव्य एव भवान्—वेणी० ३, महावी० ३।४७ 4 भरा हुआ, ढका हुआ, सम्पन्न (प्राय समास में) शि० ९।२६ 5 हासिल, प्राप्त—भर्तृ० ३।५२ 6. याद किया हुआ।

परिगलित (भू०क०कृ०) [परि+गल्+क्त] 1. टूटा हुआ 2 उथला हुआ 3. लुप्त 4 पिघला हुआ 5 बहता हुआ।

परिग्रहणम् [परि+ग्रह्+ल्युट्] भारी कलङ्क।

परिगूढ (भू०क०कृ०) [परि+गुह्+क्त] 1. बिल्कुल गुप्त 2. अबोध्य, जो समझने में अत्यंत कठिन हो।

परिगृहीत (भू०क०कृ०) [परि+ग्रह्+क्त] 1. अपनाया हुआ, पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. आलिंगन किया हुआ, घेरा हुआ 3. स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ 4 हामी भरा हुआ, स्वीकृत किया हुआ, माना हुआ 5. संरक्षण दिया हुआ, अनुग्रह किया हुआ 6 अनुसरण किया हुआ, आज्ञा माना हुआ 7. विरोध किया हुआ—दे० परिपूर्वक 'ग्रह्'।

परिगृह्या [परि+ग्रह्+क्यप्+टाप्] विवाहिता स्त्री।

परिग्रह. [परि+ग्रह्+घञ्] 1. पकड़ना, थामना, लेना, ग्रहण करना, आसनरज्जु परिग्रहे—रघु० ९।४६, शका परिग्रह—मुद्रा० १, शका करना 2 घेरना,

बन्ध करना, चारों ओर से घेरा डालना, बाड़ बनाना 3 पहनना, (वेषभूषा की भांति) लपेटना मौलि-

परिग्रह—रघु० १८।३८ 4. धारण करना, लेना—नागपरिग्रह—अमरु ९२, विवाहपद्धति उत्तर० ४ ५. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, अंगीकार करना—भौमो मुमे. स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३। ३६, अर्घ्यपरिग्रहार्ते—७०, १२।१६, कु० ६।५३, विद्यापरिग्रहाय मा० १, इसी प्रकार—आसनपरिग्रहं करोतु देव—उत्तर० ३. 'आसन-ग्रहण कीजिए महाराजाधिराज' 6. कैमव, संपत्ति, सामान—स्थावर-सर्वपरिग्रह—भग० ४।२१, रघु० १५।५५, विक्रम० ४।२६ 7 आवाह, विवाह—नः दारपरिग्रहे—उत्तर० १।१९,—मा० ५।२७, श० १।२२ 8 पत्नी, रानी—प्रथमपरिग्रहद्वितीय—रघु० १।९५, ९२, ९।१४, ११।६१, १६।८, श० ५।२७, ३०, परिग्रह बहुलेऽपि—श० ३।२१ 9 अपने रक्षण में लेना, अनुग्रह करना—उत्तर० ७।११, मालवि० १।१३ 10. अनुचर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिजन, सेवक समूह 11. गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य 12. राजा का अन्तःपुर, रनिवास 13. जड़ मूल 14. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 15 शपथ 16 सेना का पिछला भाग 17. विष्णु का नाम 18 संक्षेप, उपसंहार।

परिग्रहीतृ (पु०) [परि+ग्रह+तृच्] पति—श० ४।२२।

परिग्लान (भू० क० कृ०) [परि+ग्लै+क्त] 1 शिथिल, थका हुआ 2 विमुख, पराङ्मुख।

परिघ [परि+हन्+अप्, घादेश] 1 लोहे की छड़ या लकड़ी का मूसल जो द्वार को बन्द रखने के लिए प्रयुक्त की जाय, अर्गला—एक कुस्ती नगरपरिघ प्रांशुबाहुर्मुनिर्यथा—श० २।१५, रघु० १६।८४, शि० ३२, मालवि० ५।२ 2 (अत) रोक, अवरोध, विघ्न, बाधा—मार्गस्थस्य सुहृल्लोऽपि सोऽभवत्स्वर्गमार्ग-परिघो दुरत्यय—रघु० ११।८८ 3 लोहे की स्थाम लगी हुई लाठी, मुद्गर जिसमें लोहे की स्थाम जड़ दी गई हो रघु० १२।३३ 4 लोहे की गदा 5 जल-पात्र, घड़ा 6 सीसे की झारी 7 घर 8 मारना, नष्ट करना 9 प्रहार करना—आघात या थप्पड़।

परिघट्टनम् [परि+घट्ट+ल्युट्] घोटना, कड़ाही चलाना।

परिघातः, -घातनम् [परि+हन्+घञ्, घिच् घञ्, नस्य त, ल्युट्वा] 1 मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना 2 मुद्गर, मोटे सिरे की छड़ी।

परिघोष [परि+घुष्+घञ्] 1 कोलाहल 2 अनुचित भाषण 3 गर्जन।

परिचतुर्दशम् (वि०) [प्रा० स०] पूरे चौदह।

परिचय [परि+चि+अप्] 1 ढेर लगाना, एकत्र करना 2 ज्ञान पहचान, परिचिति, घनिष्ठता, सरकारी संरक्षण—पुरुषपरिचयेन—मृच्छ० १।५९, अतिपरि-चयादवज्ञा 'अतिपरिचय से होता है, अरुचि अनादर भाव' परिचय चलल्लक्ष्यनिपातेन रघु० ९।४९, सकलकलापरिचय—का० ७६ 3 जांच, अध्ययन, अभ्यास, मुहुर्मुहु- आवृत्ति, हेतुपरिचयस्पर्धी वस्तुगुण-निर्णय सा शि० २।७५, ११।५, वर्णपरिचय करोति—श० ५ 4 ज्ञान महावीर ५।१० 5 पहचान, —मेघ० ९।

परिचर [परि+चर्+अच्] 1 सेवक, अनुचर, टहलुआ 2 शरीर रक्षक 3 रक्षक, पहरेदार 4 श्रद्धाञ्जलि, सेवा।

परिचरण [परि+चर्+ल्युट्] सेवक, टहलुआ, सहायक, —णम् 1 सेवा, टहल 2 इधर उधर जाना।

परिचर्या [परि+चर्+क्यप्+टाप्] 1 सेवा, टहल —रघु० १।९१, भग० १८।४४ 2 अर्चना, पूजा —शि० १।१७।

परिचाय्य [परि+चि+ण्यत्] यज्ञाग्नि (कुण्ड में स्था-पित)।

परिचारः [परि+चर्+घञ्] 1 सेवा, टहल 2 सेवक 3 टहलने का स्थान।

परिचारक, परिचारिक [परि+चर्+ण्वुल्, परिचार +ठन्] सेवक, टहलुआ।

परिचित (भू० क० कृ०) [परि+चि+क्त] 1 ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 जानकार, घनिष्ठ, ज्ञान पहचान का 3 सीखा गया, अभ्यस्त।

परिचिति (स्त्री०) [परि+चि+क्तिन्] ज्ञान पहचान, परिचय, घनिष्टता।

परिच्छद् (स्त्री०) [परि+छद्+क्विप्] 1 परिजन, अनुचरवर्ग 2 साज-सामान।

परिच्छद [परि+छद्+णिच्+घ] 1 आवरण, चादर, पोशाक 2 वस्त्र, वेषभूषा—शास्त्रावसक्तकमनीय परिच्छदानाम् कि० ७।४० 3 नौकरचाकर, परिजन, टहलुए, आश्रितमण्डली—रघु० ९।७० 4 साज-सामान, (छत्र, चामर आदि) ऊपरी सामान—सेना परिच्छदस्तस्य—रघु० १।१७ 5 सामान, असबाब, व्यक्तिगत सामान, निजी चीजें व सामान (बर्तनभांडे, तथा अन्य उपकरण आदि) विवाह्यो वा यथेष्टाप्ति-स्वदृश्य सपरिच्छद—मनु० ९।२४१, ७।४०, ८।४०५, ९।७८, ११।७६ 6 यात्रा का आवश्यक सामान।

परिच्छद, (परि—छन्द्+क) नौकर-चाकर, परिजन।

परिच्छन्न (भू० क० कृ०) [परि+छद्+क्त] 1 वेष्टित, ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसने वस्त्र पहने हुए हों 2 ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ 3 घिरा हुआ (परिजनों से) 4 छिपा हुआ।

परिच्छित्तिः (स्त्री०) [परि+छिद्+क्तिन्] 1 यथार्थ परिभाषा, सीमित करना 2 विभाजन, अलग अलग करना।

परिच्छिन्न (भू० क० कृ०) [परि+छिद्+क्त] 1 काटा हुआ, विभक्त 2 यथार्थ परिभाषा में युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत, कु० २।५८ 3 सीमित, सीमाबद्ध, परिसीमित दे० परिपूर्वक छिद्'।

परिच्छेद [परि+छिद्+घञ्] 1 काटना, वियुक्त करना, विभक्त करना, (उचित और अनुचित में) विवेचन 2 यथार्थ परिभाषा, फैसला, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना परिच्छेदव्यक्तिभंवति न पुरस्थेऽपि विषये—मा० १।३१, परिच्छेदातीत सकलवचनानामविषय १।२०, सब प्रकार की परिभाषा और निर्धारण से परे होना इत्यारूढबहुघनकर्मपरिच्छेदाकुल म मन श० ५।९ 3 विवेक, निर्णय, सूक्ष्मदृष्टि परिच्छेदो हि पाण्डित्य यदापन्ना विपनय, अपरिच्छेदवर्णना विपद स्यु पदे पदे हि० १।१४८, कि पाण्डित्य परिच्छेद १।४३ 4 सीमा, हद, सीमा निश्चित करना, हदबन्दी—अलमल परिच्छेदेन मालवि० २ 5 अनुभाग या पुस्तक का काड ('अनुभाग के अन्य नामों के लिए दे० 'अध्याय' के अन्तर्गत)।

परिच्छेद्य (वि०) [परि+छिद्+ण्यत्] 1 यथार्थरूप से परिभाषा के योग्य, परिभाषणीय, मनु० ४।९, रघु० १०।२८ 2 तोलने या अनुमान लगाने के योग्य।

परिजन [प्रा० स०] 1 सदा साथ रहने वाले नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग, अनुचरवर्ग—परिजनो राजानमभित स्थित—मालवि० १ 2 अरदली लोग, सेवकसमूह, मेविकाओं का समूह, बांदियां, दासियां—रघु० १९।२३ 3 सेवक, दास।

परिजल्पितम् [परि+जल्प्+क्त] (नौकर या सेवक का) गुप्त संकेत जिसमें अपनी कुशलता श्रेष्ठता तथा स्वामी की क्रूरता एवं शठता तथा और दूसरे इसी प्रकार के दोष प्रकट हों, उज्ज्वलनीलमणि इस प्रकार परिभाषा बताते हैं—प्रभोर्निर्दयतादाक्षिण्यापराधादिदूषणात्, स्वविचक्षणताद्यर्थमन्या स्यात्परिजल्पितम्। (विल्सन के अनुसार अपने प्रिय से उपेक्षित किसी रमणी के द्वारा प्रयुक्त गुप्त शिकायतें ही 'परिजल्पित' हैं)।

परिजल्पित [परि+जल्प्+क्तिन्] 1 सलाप, संवाद 2 पहचान।

परिज्ञानम् [परि+ज्ञा+ल्युट्] पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी।

परिडोलनम् [परि+डी+क्त] पक्षियों का गोल बना कर उड़ना या पक्षियों के गोल की उड़ान—दे० डोल।

परिणत (भू० क० कृ०) [परि+नम्+क्त] 1 झुका हुआ, विनत, ढलता हुआ—मेघ० २ 2. (आयु में) वृद्ध, ढलता हुआ—परिणते वयसि—का० ३५,६२, ६३ 3. पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम् उत्तर० ७।२१, मेघ० २३—परिणतमकरदमामिकास्ते—भामि० १।८, शि० ११।४९ 4. पूर्णरूप से बढ़ा हुआ, प्रौढ़, पूर्णविकसित - परिणतशरच्चन्द्रकिरणं —मनु० ३।४९, मेघ० १०० 5 (भोजन आदि) पचा हुआ 6 रूपान्तरित या परिवर्तित (करण० के साथ) विक्रम० ४।२८ 7. समाप्त, पर्यवसित, अवसायी, अनेन समयेन परिणतो दिवस —का० ४७ 8 (सूर्य आदि) अस्त,—स अपने दांत से प्रहार करने के लिए झुका हुआ या पार्श्वाघात देने वाला हाथी (तिर्यग्वत-प्रहारत्वच गज परिणतो मत —हला०) शि० २।२९, कि० ६।७।

परिणतिः (स्त्री०) [परि+नम्+क्तिन्] 1 झुकना, ढलना, नत होना 2 पकवापन, परिपक्वता, विकास—महावी० २।१४ 3. परिवर्तन, रूपान्तरण, कायापलट 4 पूर्णता 5 नतीजा, परिणाम, फल—परिणतिरवधार्या यत्नत पडितेन—भर्तृ० २।९४, १।२०, ३।१७, महावी० ६।२८ 6 अन्त, उपसंहार समाप्ति, अवसान—परिणतिरमणीया प्रीतयस्त्वद्विधाना मा० ६।७,१६, शि० ११।१ 7 जीवन की अन्तिम झांकी, बुढ़ापा—सेवाकाले परिणतिरभूत्—विक्रम० ३।१, अभवद्गत परिणति शिथिल परिमदसूर्यनयनो दिवस —शि० ९।३, (यहां प० का अर्थ है 'अन्त या उपसंहार' भी) 8 (भोजन का) पचना।

परिणद्ध (भू० क० कृ०) [परि+नह्+क्त] 1 बंधा हुआ, लिपटा हुआ 2 विस्तृत, विशाल—परिणद्धकधर —रघु० ३।३४।

परिणय:,-यनम् [परि+नी+अप्, ल्युट् वा] विवाह—नवपरिणया वधू शयने—काव्य० १०।

परिणहनम् [परि+नह्+ल्युट्] कमर कसना, कमर पर कपड़ा लपेटना।

परि (री) णाम [परि+नम्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पाचन—अन्न न सम्यक् परिणाममेति—सुश्रुत, भुक्तस्य परिणामहेतुरौदर्यम्—तर्क० 3 नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव—अप्रियस्यापि पथ्यस्य परिणाम सुखावह—हि० २।१३५, मृच्छ० ३।१, परिणामसुखे गरीयसि वचसि औषधे—कि० २।४, भग० १८।३७, ३८ 4 पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास—उपैतिशस्य परिणामरम्यताम्—कि० ४।२२, फलभरपरिणामदवनम्र उत्तर० २।२०, मा० ९।२४ 5. अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, अन्त—क्रियाया परिणामे।

—श० १।३, अय परिणामपाण्डुरश्चिरस—का० १०, परिमाणमुपैति दिवस —का० २५४, 'दिन समाप्त होने वाला है' 6 बुढ़ापा—परिणामे हि दिलीप-वंशजा —रघु० ८।११ 7 (समय का) बीतना 8 (अल० शा० में) रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दी गई परिभाषा और उदाहरण—परिणाम क्रियार्थत्वेद्विषयी विषयात्मना, प्रसन्नेन मुखेनेन वीक्षते मदिरेक्षणा—५।१८, दे० रसगंगाधर में 'परिणाम' के नीचे)। सम० —बुद्धि (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, बुद्धि (वि०) बुद्धिमान् (द्धिः—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, —पक्व (वि०) जिसका फल स्वास्थ्यप्रद हो शूलम् पीड़ायुक्त अजीर्ण या मन्दाग्नि, उदरपीड़ा, पीड़ा के साथ उदरवायु, वायगोले का दर्द।

परि (री) गाय [पृ+नी+क्विप् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 शतरंज की गोट का चलाना 2 (शतरंज की) चाल।

परिणायकः [परि+नी+ण्वुल्] 1 नेता 2 पति —शि० ९।७३।

परि (री) **णाह** [परि+नह+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्थ —स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना वल्कलेन—श० १। १९, स्तनपरिणाह विलासवंजयती मा० ३।१५, विशाल वक्षःस्थल,—ककुदे वृषस्य कृतबाहुमकृश परिणाह शालिनी कि० १२।२०, मृच्छ० ३।९, रत्न० २।१३, महावी० ७।२४ 2 वृत्त की परिधि।

परिणाहवत् (वि०) [परिणाह+मतुप्, मस्य वत्वम्] विशाल, बड़ा, विस्तृत।

परिणाहिन् (वि०) [परिणाह+इनि] विशाल, बड़ा —कु० १।२६।

परिणिसक (वि०) परि+निस्+ण्वुल्] स्वाद चखने वाला, खाने वाला-पलाना परिणिसक —भट्टि० ९। १०६ 2 चुम्बन।

परिनिष्ठा [परि+निष्ठा प्रा० स०] पूरा कौशल।

परिनीत (भू० क० कृ०) [परि+नी+क्त] विवाहित —ता विवाहित स्त्री।

परिनेतृ (पु०) [परि+नी+तृच्] पति —श० ५।१७, रघु० १।२५, १४।२६, कु० ७।३१।

परितर्पणम् [परि+तृप्+ल्युट्] तृप्त करना, सन्तुष्ट करना।

परितस् (अव्य०) [परि+तस्] (संज्ञा के साथ प्रायः कर्म० में, कभी-कभी स्वतन्त्र रूप से प्रयोग) 1 इर्दगिर्द, सब ओर, घूमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षांसि वेदि परितो निरास्थत् भट्टि० १।१२, शि० ५।२६, ९।३६, कि० १।१४, गाङ्गिल-मम्बिल गहन परितो दृष्टाश्च विटपिन सर्वे भामि० १।२१, २९ 2 की ओर, को दिशा में आपेदिरेऽध्व-रथ परित पतगा भामि० १।१७, रघु० ९।६६।

परिताप [परि+तप्+घञ्] 1 अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी—(पादप) शमयति परिताप छायया सश्रितानाम्—श० ५।७ गुरुपरितापानि गात्राणि —३।१८, ऋतु० १।२२ 2 पीड़ा, वेदना, व्यथा शोक—प्रलयो निर्वाणे हृदयपरिताप वहसि किम् —मालवि० ३।१ 3 विलाप, मातम, शोक विर-चितविविधविलाप सा परिताप चकारोच्चै - गीत० ७ 4 कामना, भय।

परितुष्ट (भू० क० कृ०) [परि+तुष्+क्त] 1 पूर्ण रूप से सन्तुष्ट—जयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, इसी प्रकार—मनसि च परि-तुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र —भर्तृ० ३।५० 2 प्रसन्न, खुश।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि+तुष्+क्तिन्] 1 सतृप्ति, पूर्ण संतोष 2 खुशी, हर्ष।

परितोष [परि+तुष्+घञ्] 1 सन्तोष, इच्छा का अभाव (विप० लोभ) सर्व इह परितोषो निर्गुणो विशेष भर्तृ० ३।५० 2 पूर्ण संतोष, तृप्ति आप-रितोषाद्विदुषा न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् - श० १।२ 3 प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, पसन्दगी (अधि० के साथ) कु० ६।५९, रघु० ११।९२, गुणिनि परितोष।

परितोषण (वि०) [परि+तुष्+णिच्+ल्युट्] सतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, —क्रम् सतुष्ट करना।

परित्यक्त (भू० क० कृ०) [परि+त्यज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, उत्सृष्ट, सर्वथा त्यागा हुआ 2 वञ्चित, रहित (करण० के साथ) 3 (तीर आदि) छोड़ा हुआ 4 अभिशप्त।

परित्याग [परि+त्यज्+घञ्] 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद अपरित्यागमयावदात्मन - रघु० १२, कृतसीतापरित्याग - १५।१ 2 छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, गद्दी छोड़ देना, —स्वनाम परित्याग करोमि पद्य० १, "मैं अपना नाम छोड़ दूंगा' मनु० २।२५ 3 अवहेलना, भूल-चूक—माहात्म्य (कर्मण) परित्यागस्तामस परिकी-र्तित भग० १८।७ 4 वदान्यता, उदारता 5 हानि, कंगाली।

परित्राणम् [परि+त्रै+ल्युट्] सधारण, सरक्षण, बचाना प्रतिरक्षा, मुक्ति, छुटकारा—परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्—भग० ४।८, रामापरित्राण विहस्तयोध सेनानिवेश तुमुल चकार—रघु० ५।४९।

परित्राणः [परि+त्रै+ल्युट्] त्राण, भय, डर ।

परिदंशित (वि०) [परि+दंश्+क्त] कवच से ढका हुआ, आपादमस्तक अस्त्रों से सुसज्जित (पूर्णतया जिरहबख्तर से युक्त) ।

परिदानम् [परि+दा+ल्युट्] 1 विनिमय, अदला-बदली 2 भक्ति 3 धरोहर का वापिस मिलना ।

परिदायिन् (पु०) [परि+दा+णिनि] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है—तु० 'परिवेत्तृ' ।

परि (री) दाहः [परि+दह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 जलन 2 व्यथा, पीड़ा, दुःख, शोक ।

परिदेवः [परि+दिव्+घञ्] शोक मनाना, मातम, विलाप ।

परिदेवनम्,—ना, परिदेवितम् [परि+दिव्+ल्युट्, परि+दिव्+क्त] 1 विलाप, विलखना, रोना-धोना—अथ तैः परिदेवितानुरैः—कु० ४।२५, रघु० १४।८३, भग० २।२८, तत्र का परिदेवना—याज्ञ० ३।९, हि० ४।६१ 2 पश्चात्ताप, खेद ।

परिदेवन (वि०) [परि+दिव्+ल्युट्] शोकसंतप्त, खेदजनक, दुःखी ।

परिदृष्ट (पु०) [परि+दृश्+क्त] तमाशबीन, दर्शक ।

परिधर्षणम् [परि+धृष्+ल्युट्] 1 हमला, आक्रमण, बलात्कार 2. अपमान, निरादर, तिरस्कार 3 दुर्व्यवहार, बुरा व्यवहार ।

परि (री) धानम् [परि+धा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 2 पोशाक, अधोवस्त्र, कपड़े आलिचित्रपरिधानविभूषा कि० ९।१, शि० १।५१, ६१, ४।६१ ।

परिधानीयम् [परि+धा+अनीयर्] अधोवस्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा ।

परिधायः [परि+धा+घञ्] 1. नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग 2 आधार, आश्रय 3 नितंब, चूतड़ ।

परिधिः [परि+धा+कि] 1 दीवार, मेंड़, बाड़, घेरा 2 सूर्य या चन्द्रमा का परिवेश परिधेर्मुक्त इवोष्णदीधितिः रघु० ८।३०, शक्तिपरिधिरिवोच्चैर्भुजस्तेन तेने—कै० २।१०८ 3. प्रकाशमण्डल 4 क्षितिज 5. परिधि या वृत्त 6 वृत्त की परिधि 7 पहिये का घेरा 8 ('पलाश' आदि पवित्र वृक्ष की) समिधा या लकड़ी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रक्खी रहती हैं सप्तास्यासन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः—ऋक् १०।९०।१५ । सम० -पतिलेखरः शिव का विशेषण रघु 1. चौकीदार 2 किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी) ।

परिधूपित (वि०) [परि+धूप्—क्त] धूप द्वारा सुवासित या सुगंधित किया हुआ ।

परिधूसर (वि०) [परितः सर्वतो भावेन धूसर—अ० स०] बिल्कुल धूसर—वसने परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, रघु० ११।६० ।

परिधेयम् [परि+धा+यत्] अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस्+घञ्] 1. दुःख, विनाश, बरबादी, कष्ट 2 असफलता, विध्वंस, संहार 4. जातिच्युति ।

परिध्वंसिन् (वि०) [परि+ध्वंस्+णिनि] 1 गिर कर अलग होने वाला 2. बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला—हि० २।१३४ ।

परिनिर्वाण (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल बुझा हुआ, —णम् (व्यक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमुक्ति ।

परिनिर्वृत्ति (स्त्री०) [परि+निर्+वृत्+क्तिन्] आत्मा की शरीर से पूर्णमुक्ति, पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठा [प्रा० स०] 1 (किसी वस्तु का) पूरा ज्ञान या परिचय, 2 पूर्ण निष्पत्ति 3 चरम सीमा ।

परिनिष्ठित (भू० क० कृ०) [परि+नि+स्था+क्त] 1 पूर्ण कुशल 2 सुनिश्चित—अपरिनिष्ठितस्योपदेशस्यान्याय्य प्रकाशनम्—मालवि० १ ।

परिपक्व (भू० क० कृ०) [परि+पच्+क्त] 1. पूरी तरह पका हुआ, 2 भलीभाँति सेका हुआ, 3 बिल्कुल पक्का, प्रौढ़, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त (आल० भी) —प्रफुल्ललोध्र परिपक्वशालि—ऋतु० ४।१, इसी प्रकार परिपक्वबुद्धि 4 सुसंवर्धित, समझदार, काहयाँ 5 पूरी तरह पचा हुआ 6 मुरझाने वाला, मृत्यु के निकट ।

परिपण (नम्) [परि+पण्+घ प्रा०स०] पूँजी, मूलधन, बाजदाना ।

परिपणनम् [परि+पण्+ल्युट्] बाजी करना, प्रतिज्ञा करना ।

परिपणित (भू०क०कृ०) [परि+पण्+क्त] बाजी किया हुआ, वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई—शि० ७।९ ।

परिपन्थक परि+पन्थ्+ण्वुल्] शत्रु विरोधी, दुश्मन ।

परिपन्थिन् (वि०) [परि+पथ्+णिनि] रास्ता रोकने वाला, रोड़ा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला (पाणिनि के मतानुसार केवल वेद में मान्य, परन्तु नीचे दिए हुए उद्धरणों से)—अर्थपरिपन्थी महानरातिः—मुद्रा० ५, नाभविष्यन्महत्तत्र यदि नत्वत्परिपन्थिनी रा० ९।५०, इसी प्रकार भाग० १।६८ भग० ३।३४, मनु० ७।१०८, ११० (पु०) रिपु, शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी, दुश्मन 2 लुटेरा, चोर डाकू ।

परि (री) पाकः [परि+पच्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य

दीर्घः] 1. पूरी तरह से पकाया जाना या सवारा जाना 2. पचना, जैसा कि 'अन्नपरिपाक' में 3 पक जाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता शि० ४।४८, कु० ६।१० 4. फल, नतीजा, परिणाम प्रापन्नाना मूर्त सुकृतपरिपाको जनिमताम् महावी० ७।३१, भर्तृ० २।१३२, ३।१३५ 5. चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता।

परिपाटल (वि०) [प्रा०स०] पीला लाल रघु० १६। १०, शिशु १३।४२।

परिपाटिः,—टी (स्त्री०) [परि भागेन पाटि पाटन गति वस्था प्रा०ब०स०, परिपाटि+ङीष्] 1. प्रणाली, रीति, प्रक्रम पाटीर तव पटीयान्क परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् --मालवि० १।१२, कदवाना वाटी रसिक परिपाटी स्फुटयति हस० २४ 2. व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार।

परिपाठ [प्रा०स०] परिगणना, पूर्ण निर्देशन, पूरा विवरण।

परिपार्श्व (वि०) [अव्या०स०] निकट, पार्श्व में, पास, नजदीक ही।

परिपालनम् [परि+पल्+णिच्+ल्युट्] 1 भली-भांति पालना, रक्षा करना, संधारण करना, सभाले रखना, जीवित रखना—क्लिश्नात्तिलब्धपरिपालनवृत्तिरेव श० ५।६ 2 भरण पोषण, बढ़ावा—जातस्य परिपालनम् --मनु० ९।२७।

परिपिष्टकम् [परि+पिष्+क्त+कन्] सीमा।

परिपीडनम् [परि+पीड्+ल्युट्] 1 निचोड़ना, सींचना 3 क्षति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना।

परिपुटनम् [परि+पुट्+ल्युट्] 1 हटाकर अलग करना 2 बल्कल या छाल उतारना।

परिपूजनम्, परिपूजा [परि+पूज्+ल्युट्, प्रा०स०] सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना।

परिपूत (भू०क०कृ०) [परि+पू+क्त] 1 विशुद्ध किया गया, विशुद्ध उत्पत्तिपरिपूतायां किमस्यां पावनान्तरं उत्तर० १।१३, शि० २।१६ 2 पूरी तरह फटका हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूसी से पृथक् किया हुआ।

परिपूरणम् [परि+पूर्+ल्युट्] 1 भरना शि० ४।६१ 2. पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना।

परिपूर्ण (भू०क०कृ०) [परि+पूर्+क्त] 1 पूरी तरह भरा हुआ, -इदु पूरा चाँद, समस्त, सारा, भली भांति भरा हुआ 2 सम्पन्न, समृद्ध।

परिपूर्ति (स्त्री०) [परि+पूर्+क्तिन्] पूर्णता, पर्याप्तता।

परिपृच्छा [परि+प्रच्छ्--अङ+टाप्] पूछ-ताछ, प्रश्न।

परिपेलव (वि०) [प्रा०स०] अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मृदु।

परिपोटः,—पोटकः [परि+पुट्+घञ्, परिपाट+कन्] (आयु० में) एक प्रकार कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)।

परिपोषणम् [परि+पुष्+ल्युट्] 1 खिलाना-पिलाना, भरण-पोषण 2 आगे बढ़ाना, उन्नति करना।

परिप्रश्नः [प्रा०स०] पूछताछ, प्रश्नवाचकता, सवाल, कतरकतमौ जाति परिप्रश्ने-पा० २।१।६३, ३।३।११० तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया—भग० ४।३४।

परिप्राप्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] अधिग्रहण, उपलब्धि।

परिप्रेष्यः [प्रा०स०] सेवक।

परिप्लव (वि०) [परि+प्लु+अच्] 1 बहता हुआ 2 थरथराता हुआ, कांपता हुआ, डोलता हुआ, हिलोरें लेता हुआ, कम्पायमान 3 अस्थिर, चंचल-शि० १४।६८,—वः 1 जलप्लावन 2 जल में डुबाना, गीला करना 3 किश्ती, नाव 4 उत्पीडन, अत्याचार।

परिप्लुत (भू०क०कृ०) [परि+प्लु+क्त] 1 बाढ़ग्रस्त, जलप्लावित 2 घबड़ाया हुआ, व्याकुल जैसा कि शोक में 3 आर्द्रीकृत, विलग्न, स्नात, सम् उछल छलांग, --ता शराब।

परिप्लुष्ट (भू०क०कृ०) [परि+प्लुष्+क्त] जला हुआ झुलसा हुआ, भनभनाया हुआ।

परिबर्ह (व) हं [परि+बृ (बृ) हं+घञ्] अनुचर नौकर-चाकर, टहलुए इव प्रचुरपरिबर्हया भवेत्या सवर्यंताम् दश० १०८ 2 उपस्कर, घर के अन्दर का सामान—परिबर्हवंति वेदमानि--रघु० १४।५० "उपयुक्त सामान से सुसज्जित कमरे" 3 राज चिह्न 3 संपत्ति, धनदौलत।

परिबर्ह (ब) हणम् [परि+बृ (बृ) हं+ल्युट्] 1 अनुचर, नौकर-चाकर 2 बनाव-सिंगार, काट-छांट 3 वृद्धि 4 पूजा।

परिबाधा [प्रा० स०] 1 कष्ट, पीड़ा, संतापन 2. घेरा डाल, उग्र व्यथा।

परिबृंह् (बृ) हणम् [परि+बृंह् (बृ) हं+ल्युट्] 1 समृद्धि, कल्याण 2 परिशिष्ट, सम्पूरक।

परिबृढ (बृ) हित (भू० क० कृ०) 1 बढ़ा हुआ, आवर्धित 2 फला-फूला, समृद्ध हुआ 3 से युक्त, सम्पन्न,—तम् हाथी की चिंघाड़।

परिभग् [प्रा० स०] छिन्न-भिन्न होना टूट कर टुकड़े २ होना।

परिभर्त्सनम् [परि+भर्त्स्+ल्युट्] धमकाना, घुड़कना।

परिभवः (वी) भवः [परि+भू+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 अपमान क्षति पहुंचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि पराक्रम परिभवे वैयात्य भुवन-विदित (भूषणम्)—शि० २।४४, रघु० १२।३७, वेणी० १।२५, मालवी० १।४०, ३।१७ 2 हार, पराजय। सम०—आस्पदम्,—पदम् 1. घृणा का पात्र, हि० ३।५१ 2. अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति,—विधि

प्रतिष्ठार्थम्--प्रायो मूर्खं परिभवन्विधौ नाभिमानं तनोति—शृंगार १६।

परिभाविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि+भू+इनि 1. मानहर, तुच्छ, अनादर या घृणायुक्त व्यवहार करने वाला 2 अपमानग्रस्त, तिरस्कार, पीडित।

परिभावः [परि+भू+घञ्] दे० 'परिभव'।

परिभाविन् (वि०) (स्त्री०-नी [परि+भू+णिनि] 1. मानमर्दन करने वाला, घृणा करने वाला, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करने वाला- शि० ४ 2 लज्जित करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला 3 तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला वैद्यवत् परिभाविनि गदम् रघु० १९।५३, 'औषधोपचार की उपेक्षा करने वाला'।

परिभाषण [परि+भाष्+ल्युट्] 1 वार्तालाप, प्रवचन, बातचीत करना, गपशप लगाना, गप्पें हांकना 2 निन्दाभिव्यक्ति, धिक्कारना, झिड़की, अपशब्द 3 नियम, विधि।

परिभाषा [परि+भाष्+अ+टाप्] 1 व्याख्यान, प्रवचन 2 निन्दा, झिड़की, कलङ्क, गाली 3 पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक पदावली, (किसी ग्रंथ में प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली—इति परिभाषा प्रकरणम् सिद्धा०, इको गुणवृद्धीत्यादिका परिभाषा महा० 4 (अत) कोई सामान्य नियम, विधि या परिभाषा जो सर्वत्र घट सके (अनियमनिवारको न्याय विशेष), एतित प्रमितालरापि सर्वं विषय प्राप्यवती गता प्रतिष्ठाम्, न खलु प्रतिहन्यते कदाचित् परिभाषैव गरीयसी यदाज्ञा—शि० १६।८० 5 किसी भी पुस्तक में प्रयुक्त संकेत या संक्षेपकों की सूची 6 (व्या० में) पाणिनि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ व्याख्यानात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति बतलाता है।

परिभुक्त (भू० क० कृ०) [परि+भुज्+क्त] 1 खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2 उपभुक्त 3 अधिकृत।

परिभुग्न (वि०) [परि+भुज्+क्त] झिनत, वक्रीकृत, झुका हुआ।

परिभूति (स्त्री०) [परि+भू+क्तिन्] तिरस्कार, अपमान, अनादर, अवमानना—मुद्रा० ४।११।

परिभूयकः [परि+भूय्+ल्युट्] किसी भूमि का समस्त राजस्व छोड़ कर जो संधि की गई हो।

परिभोगः [परि+भुज्+घञ्] 1 उपभोग—रघु० ४।४५ 2 विशेष कर मैथुन,—रघु० ११।५२, १९। २१, २८।३० 3 दूसरे के सामान का अवैध प्रयोग।

परिभ्रंशः [परि+भ्रंश्+घञ्] 1 बच निकलना 2 गिरना।

परिभ्रमः [परि+भ्रम्+घञ्] 1 घूमना, इधर उधर टहलना 2 घूमा-फिरा कर बात कहना, बाग्जाल, वक्रोक्ति 3. भूल, भ्रम।

परिभ्रमणम् [परि+भ्रम्+ल्युट्] 1 घूमना, इधर उधर टहलना, पर्यटन 2 चारों ओर घूमना, चक्कर काटना, परिधि।

परिभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [परि+भ्रंश्+क्त] 1 गिरा हुआ, स्खलित 2 बच कर निकला हुआ 3 फेंका हुआ, अभःपतित 4 वञ्चित, शून्य (अपा० या करण० के साथ) 5 अवहेलना करने वाला।

परिमंडल (वि०) [प्रा० ब० स०] गोलाकार, गोल, वर्तुलाकार,—लम् पिंड, गोलक 2 मेंढ 3 वृत्त।

परिमत्वर (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त मंद, शि० ९।७८।

परिमद (वि०) [प्रा० स०] 1. अत्यंत मंद, धुंधला, बिल्कुल फीका परिमद सूर्यनयनो दिवस —शि० ९।३ 2 अत्यंत मंद 3 बहुत थका हुआ—शि० ९।३२ 4 बहुत थोड़ा—शि० ९।२७।

परिमरः [परि+मृ+अप्] विनाश—चिरात् अवस्थास्तु प्रलय इव घोर परिमर —महावी० ३।४१।

परिमर्द, **परिमर्दनम्** [परि+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 रगड़ना, पीसना 2 कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना 3 विनाश 4 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5 आलिंगन, परिरंभण।

परिमर्दः [परि+मृद्+घञ्] 1 ईर्ष्या, असहि 2. क्रोध।

परिमलः [परि+मल्+अच] 1 सुगंध, सुवास, सौरभ, महक—परिमलो गीर्वाणचेतो हर भामि० १।६३, ६६,७०,७१, मेघ० २५ 2 सुगंधयुक्त पदार्थों का पीसना 3 सुगंधद्रव्य 4 सहवास अथपरिमलआमकाप्यलक्ष्यसीम् कि० १०।१ 5. विद्युत्प्रभा 6. कलंक, धब्बा।

परिमलित (वि०) [परि+मल्+क्त] 1. सुगंधित 2 कलुषित, सौन्दर्य भ्रष्ट।

परि(री)माणम् [परि+मा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घ] 1 मापना, (शक्ति या ताकत की) माप—सद्य परारमपरिमाण विवेकमूढ · मुद्रा० १।१०, कु० २।८, मनु० ८।१३३ 2 तोल, संख्या, मूल्य—याज्ञ० २।६२, १।३१९।

परिमार्ग, **परिमार्गणम्** [परि+मार्ग्+घञ्, ल्युट् वा] 1. ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना 2. स्पर्श, सम्पर्क —शि० ७।७५ 3 साफ करना, पोंछना।

परिमार्जनम् [परि+मृज्+णिच्+ल्युट्] 1. मांजना, साफ करना, झाड़-पोंछ करना 2 घी और शहद से बनी मिठाई।

परिमित (भू० क० कृ०) [परि+मा+क्त] 1 मध्यम,

मितव्ययी 2. सीमित 3. मापा हुआ, नपातुला 4 विनिमयित, समजित । सम०—आभरण (वि०) थोड़े आभूषण धारण करने वाला, मध्यमरूप में अलंकृत, -आयुस् (वि०) अल्पायु, थोड़ी उम्र जीने वाला,—आहार, -भोजन (वि०) परहेजगार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला,—कथ (वि०) थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी, नपे तुले शब्द बोलने वाला —मेघ० ८३ ।

परिमितिः (स्त्री०) [परि+मा+क्तिन्] 1. माप, परिमाण 2. सीमाबंधन ।

परिमिश्रणम् [परि+मिश्र+ल्युट्] 1 स्पर्श, संपर्क, रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल ।

परिमुखम् (अव्य०) [अव्य० स०] मुँह के सामने, (किसी के) ठीक सिर्द, चारों ओर ।

परिमुग्ध (वि०) [परि+मुह्+क्त] 1 भोला भाला, प्रिय, सरल, मनोहर 2 आकर्षक परन्तु मूर्ख ।

परिमृदित (भ० क० कृ०) [परि+मृद्+क्त] 1 पैरों तले रौंदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुर्व्यवहारग्रस्त -परिमृदितमृणालोम्लानमग्रम्—मा० १।२२, उत्तर० १।२४ 2 आलिंगित, परिरंभण किया हुआ 3 मसला हुआ, पीसा हुआ ।

परिमृष्ट (भू० क० कृ०) [परि+मृज्+क्त] 1 धोया हुआ, मांजा हुआ, शुद्ध किया हुआ 2. मसला हुआ, स्पर्श किया हुआ, पथपपाया हुआ--वेणी० ३ 3 आलिंगन 4 फैला हुआ, व्याप्त, भरा हुआ--कि० ६।२३ ।

परिमेय (वि०) [परि+मा+यत्] 1 थोड़े, सीमित--परिमेयपुर —सरौ—रघु० १।३७ 2 जो मापा जा सके, गिना जा सके 3 मान्य, जिसकी सीमा हो, समाप्तिका ।

परिमोक्ष [परि+मोक्ष्+घञ्] 1 हटाना, मुक्त करना—प्रायो विषाणपरिमोक्षलघूत्तमाङ्गान् बभ्राम्य-कार नृपतिर्निशितैः क्षुरप्रैः —रघु० ९।६२, सींगों को हटाना - अर्थात् सींग तोड़ डालना 2 मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छुटकारा 3 खाली करना, मलत्याग 4 बच निकलना 5 मोक्ष, निर्वाण ।

परिमोक्षणम् [परि+मोक्ष्+ल्युट्] 1 मुक्ति, छुटकारा 2. खोल देना ।

परिमोष [परि+मुष्+घञ्] चुराना, लूटना, चोरी ।

परिमोषिन् (पु०) [परि+मुष्+णिनि] चोर, लुटेरा ।

परिमोहनम् [प्रा० स०] 1 बहकाना, प्रलोभन देना, फुसलाना, मंत्रमुग्ध करना 2 व्यामोहित करना, प्रेम में अन्धा करना ।

परिम्लान (भू० क० कृ०) [परि+म्ला+क्त] 1 मुर्झाया हुआ, मुकुलित, कुम्हलाया हुआ, कु० २।२ 2 श्रान्त, शिथिल 3 क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ 4 मलिन, कलंकित ।

परिरक्षक [परि+रक्ष्+ण्वुल्] रक्षा करनेवाला, अभिभावक ।

परिरक्षणम्, परिरक्षा [परि+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् च] 1 रक्षा, संधारण, देखभाल करना—मनु० ९। ५४, ७।२ 2 ध्यान रखना, बनाये रखना, पालन-पोषण- न समयपरिरक्षण क्षम ते—कि० १।४५, 3 छुटकारा, बचाव ।

परिरभ्या [प्रा० स०] गली, सड़क ।

परि(री)रभ, परिरम्भणम् [परि+रभ्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घः, परि+रभ्+ल्युट्] आलिंगन करना, अंक में भर लेना द्रुतपरिरम्भनिपीडनक्षमत्वम् शि० १।७८, १०।५२, उत्तर० १।२४,२७, किं पुरेव सस-म्भ्रम परिरम्भणं न ददासि—गीत० २ ।

परिराटिन् (वि०) [परि+रट्+घिनुण्] जोर से चिल्लाने वाला, चीखने वाला, रट लगाने वाला ।

परिलघु (वि०) [प्रा० स०] 1 बहुत हल्का (शा०), (कपड़ा आदि) 2 बहुत हल्का या जल्दी पचने वाला—क्षीण क्षीण परिलघु पय स्रोतसा चोपभुज्य —मेघ० १३ 3 बहुत छोटा —उत्तर० ४।२१ ।

परिलुप्त (भू० क० कृ०) [परि+लुप्+क्त] 1 अन्तर्बाधित, संबाध, घटाया हुआ 2 नष्ट, लुप्त ।

परिलेख [परि+लिख्+घञ्] 1 रूपरेखा, आलेखन चित्रण रहस्य 2 चित्र ।

परिलोप [परि+लुप्+घञ्] 1 क्षति 2 उपेक्षा भूलचूक ।

परिवत्सर [प्रा० स०] वर्ष, एक समूचा वर्ष, वर्ष का आवर्तन देख्या क्षुण्यस्य जगतो द्वादश परिवत्सर —उत्तर० ३।३३ ।

परिवर्जनम् [परि+वृज्+ल्युट्] 1 छोड़ना, त्यागना तजना 2 छोड़ देना, तिलांजलि देना 3 वध, हत्या ।

परि (री) वर्त [परि+वृत्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 परिक्रमण, (ग्रह आदि का) घूमना 2 कालचक्र, कालक्रम, कालगति –युगशतपरिवर्तान् —शं० ७।३४ 3 युग का अन्त शि० १७।१२ 4 आवृत्ति, पुनरावर्तन 5 परिवर्तन, अदल-बदल तदी-दृशो जीवलोकस्य परिवर्तः उत्तर० ३, 'जीवन की परिवर्तित अवस्था' 'परिस्थितियों में अदला-बदल', इसी प्रकार जीवलोकपरिवर्तमनुभवामि—मा० ७, स्वर परिवर्त मृच्छ० १ 6 प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण 7 वर्ष 8 पुनर्जन्म, आवागमन 9 विनिमय, अदला-बदली- शि० ५।३९ 10 पुनरागमन, वापसी 11 आवास 12 किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद 13 कूर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार ।

परिवर्तक (वि०) [परि+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1 घुमाने वाला, चक्कर देने वाला 2. हटना चुकाने वाला, वापिस करने वाला।

परिवर्तनम् [परि+वृत्+ल्युट्] 1 इधर उधर घूमना, इधर उधर मुड़ना (बिस्तर आदि पर) करवटें बदलना —कु० ५।१२, रघु० ९।१३, शि० ४।४७ 2 इधर उधर मुंह फिराना, चक्कर काटना, चकराना 3 कालिकाल, चक्र का अन्त 4 बदलना- वेषपरिवर्तन विधाय—पंच० ३ 5 अदला-बदली, विनिमय 6. पलटना, उलटना।

परिवर्तिका [परि+वृत्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] (आयु०) लिंग की अग्रत्वचा का सिकुड़ जाना।

परिवर्तिन् (वि०) [परि+वृत्+णिनि] 1 इधर उधर मुड़ने वाला, घूमने वाला 2 सदा-प्रत्यावर्ती, बार २ आने वाला, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते —पंच० १।२७ 3 बदलने वाला 4 निकट रहने वाला, इधर उधर घूमने वाला 5 प्रत्यावर्ती, पलायनशील 6 विनिमयशील 7 क्षतिपूर्ति करने वाला, बदला देने वाला।

परिवर्धनम् [परि+वृध्+ल्युट्] 1 बढ़ना, विस्तृत होना 2 संवर्धन, पालन-पोषण करना 3 बड़ा होना, वृद्धि।

परिवसथ [परितो वसन्ति अत्र—परि+वस् अधि] गांव।

परिवह [परि+वह्+अच्] वायु के सात मार्गों में एक —छठा मार्ग, इसी मार्ग से सप्तर्षि घूमते हैं तथा आकाश गंगा बहती है,—सप्तर्षिचक्रं स्वर्गंगा षष्ठः परिवहस्तथा वायु के दूसरे मार्गों के लिए दे० 'वायु' के नीचे, तु० कालिदास द्वारा दिये गये परिवह के वर्णन जिसका तिस्रोऽवस्थाः वहति यो गगनप्रतिष्ठा ज्योतींषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः, तस्य द्वितीय हरिविक्रमनिस्तमस्कं वायोरिवं परिवहस्य वदन्ति मार्गम्—शा० ७।६।

परिवाद (पुं०) [परि+वद्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] कलंक, निन्दा, बदनामी, गाली अयमेव मयि प्रथमः परिवादस्तव - मालवि० १, याज्ञ० १।१३३ 2 लोकापवाद, कलंक, दूषण, अपकीर्ति—श्रा भूत्परीवादनवावतारः —रघु० ५।२४, १४।८६, महावी० ५।२८ 3 दोषी ठहराना, दोषारोपण करना—मृच्छ ३।३० 4 सारंगी बजाने का उपकरण।

परिवादकः [परि+वद्+णिच्+ण्वुल्] 1 वादी, अभियोक्ता, दोषारोपक 2 सारंगी बजाने वाला।

परिवादिन् (वि०) [परि+वद्+णिनि] चुगलखोरी सुनाने वाला, निन्दा करने वाला, गाली देने वाला, बुरा-भला कहने वाला 2 दोषारोपण करने वाला 3 चीखने वाला, चिल्लाने वाला 4. निन्दित, कलंकित—(पुं) दोषारोपण करने वाला, वादी, अभियोक्ता,—नी सात तारों की वीणा, शि० ६।९, रघु० ८।३५।

परिवाप (पुं०) [परि+वप्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 मुंडन या हजामत करना, मुंडना या बाल काटना 2 बाना 3 जलाशय, पल्वल, पोखर, जोहड़ 4 मामान (घरका) 5. नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग।

परिवापित (वि०) [परि+वप्+णिच्+क्त] मुंडा हुआ जिसके बाल कटे हुए हों या जिसने हजामत करा ली हो।

परिवार (पुं०) [परिवियते अनेन परि+वृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. नौकर-चाकर, अनुचरवर्ग, टहलुए, अनुयायी (यान) अध्यास्य कन्या परिवार शोभि—रघु० ६।१०, १२।१६, ग्रहगणपरिवारो राजमार्गं प्रदीपः —मृच्छ० १।५७ 2. ढक्कन, चादर 3. म्यान, कोष।

परिवारणम् [परि+वृ+णिच्+ल्युट्] 1 ढक्कन, लिफाफा 2. नौकर चाकर, अनुचर 3. दूर हटाना।

परिवारित (भू० क०कृ०) [परि+वृ+णिच्+क्त] 1 परिवेष्टित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ 2 व्याप्त, फैलाया हुआ शि० ३।३४ कि० ५।४२, -तम् अञ्जलि का अनुष्ठान।

परिवास [परि+वस्+घञ्] आवास स्थान, ठहरना, टिकना, प्रवास, बसेरा।

परिवाह (पुं०) [परि+वह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] (तालाब का)।

परिवाहिन् (वि०) [परि+वह्+णिनि] छलकता हुआ, जैसा कि—आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा —श० ४।

परिविण्ण (भू०), **परिविद्**, **परिविन्नः** [परि+विद्+क्त पक्षे नत्वणत्वयोरभावः, परि+विद्+क्विप्] अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो दे० मनु० ३।१७१, 'परिवेत्तृ' भी।

परिविद्ध [परि+व्यध्+क्त] कुबेर का विशेषण।

परिविदक, **परिविदत्** (पुं०) [परि+विद्+ण्वुल्, शतृ वा] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परिविहारः [परितो विहारः प्रा०स०] इधर उधर सैर करना, घूमना, टहलना।

परिविह्वल (वि०) [प्रा०स०] अत्यन्त व्याकुल, क्षुब्ध या घबड़ाया हुआ।

परिवृढः [परि+वृह्+क्त] स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान, मुख्य (विशेषण की भांति भी प्रयुक्त) कि भुव परिवृढा न विवादु तत्तनयामुपनता विवदते—नै० ५।५२, कु० १२।५८, महावी० ६।२५, ३१,४८।

परिवृत (भू०क०कृ०) [परि+वृ+क्त] 1. घिरा हुआ, परिवेष्टित, सेवित 2. प्रच्छन्न, गुप्त 3. व्याप्त, फैला हुआ 4 ज्ञात।

परिवृत्त (भू०क०कृ०) [परि+वृत्+क्त] 1. घूमा हुआ, मोड़ा हुआ अर्धमुखी विक्रम० १।१७ 2. प्रत्यावर्तित पीछे मुड़ा हुआ 3. अदला-बदली किया हुआ, विनिमय किया हुआ 4. समाप्त किया हुआ, अन्त किया हुआ, स्वम् आलिंगन।

परिवृत्तिः (स्त्री०) [परि+वृत्+क्तिन्] 1. क्रांति—शि० १०।९१ 2. वापसी, लौटना 3. विनिमय, अदला-बदली 4. अन्त, समाप्ति 5. घेरा 6 किसी स्थान पर टिकना, बसना 7. (अल० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी समान, कम या बड़ी वस्तु से विनिमय हो -परिवृत्तिर्विनिमयो योऽर्थानां स्यात्समासमैः —काव्य० १०—उदा०—दत्त्वा कटाक्षमेणाक्षी जग्राह हृदयं मम, मया तु हृदयं दत्त्वा गृहीतो मदन ज्वरः। सा० द० ७३४ 8. अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना, जैसा कि शब्दपरिवृत्तिसहत्वम् काव्य० १० उदा० 'वृषध्वज' में 'ध्वज' के स्थान में लांछन या वाहन लगाया जा सकता है।

परिवृद्धिः (स्त्री०) [प्रा०स०] संवर्धन, बढ़ती, उन्नति।

परिवेत्तृ (पु०) **परिवेदक** [प्रा०स०] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो रघु० १२।१६, ज्येष्ठे अनिविष्टे कनीयान् निविशन् परिवेत्ता भवति, परिविण्णो ज्येष्ठः, परिवेदनीया कन्या, परिदायी दाता, परिकर्ता याजकः, सर्वे ते पतिता हारीत।

परिवेदनम् [परि+विद्+ल्युट्] 1 बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह 2. विवाह 3 पूरा या सही ज्ञान 4 उपलब्धि, अधिग्रहण 5 अन्याज्ञान,—११।६० 6 सर्वव्यापि, विश्वव्यापी या विश्वमत्ता, या 1. समझदारी, बुद्धिमानी 2 बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता।

परिवेदनीया, परिवेदिनी [परि+विद्+अनीयर्+टाप् परि+विद्+णिनि+ङीप्] उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परिवेष (पु०) [परि+विष्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना 2 वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल रघु० ५।७४, ६।१३, शि० ५।५२, १७।९ 3. (विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल, लक्ष्यते स्म ततस्तस्मिन् रविबिंबभेव परिवेषमंडलं रघु० ११।५९ 4. वृत्त की परिधि 5 सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब 6 कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है।

परिवेषकः [परि+विष्+ण्वुल्] भोजन परोसने वाला।

परिवेषणम् [परि+विष्+ल्युट्] 1 भोजन परोसना, (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना 2 लपेटना, घेरना 3 सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल 4 परिधि।

परिवेष्टनम् [परि+वेष्ट्+ल्युट्] 1 घेरना, लपेटना 2 परिधि 3 ढकना, आवरण।

परिवेष्टृ (पु०) [परि+वेष्ट्+तृच्] भोजन के समय सेवा करने वाला, भोजन परोसने वाला—मरुत परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे - ऐत०।

परिव्ययः [प्रा० स०] 1 लागत, मूल्य 2 मिश्रणमसाला।

परिव्याधः [परि+व्यध्+घञ्] नरकुल या भरभंडे की एक जाति।

परिव्रज्या [परि+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1 चहलकदमी करना, जगह जगह घूमते फिरना 2 संन्यासी होना, साधु महात्माओं का जीवन बिताना 3 सांसारिक मोहमाया का त्याग, वैराग्य में अनुराग, धार्मिक साधना।

परिव्राज् (पु०) **परिव्राजक** [परिव्रज्य सर्वान् विषयभोगान् व्रजति परि+व्रज्+क्विप्, घञ्, ण्वुल् वा] भ्रमणशील साधु, अवधूत, तपस्वी, संन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो।

परिशाश्वत (वि०) (स्त्री० ती) [प्रा० स०] सदा के लिए उसी रूप में बना रहने वाला।

परिशिष्ट (वि०) [परि+शिष्+क्त] छोड़ा हुआ, बचा हुआ, शेषः सम्पूरक, अतिरिक्त जैसा कि 'गृह्य परिशिष्ट'।

परिशीलनम् [परि+शील्+ल्युट्] 1 स्पर्श, सम्पर्क (शा०)—ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे गीत० १, इसी प्रकार वदनकमलपरिशीलनमिलितः ११ 2 अनवरत सम्पर्क, आमोदमेलजोल, नित्य व्यवहार 3 अध्ययन, (किसी वस्तु में) आसक्ति, स्थिर या निश्चित वृत्ति काव्यार्थ० सा० द०।

परिशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 पूर्ण शुद्धि, अग्नि° उत्तर० ४ 2 दोष-शुद्धि, रिहाई।

परिशुष्क (भू० क० कृ०) [परि+शुष्+क्त] 1 पूरी तरह सूखा हुआ, मुरझाया हुआ, तपाया हुआ, तृषा महत्या परिशुष्कतालव ऋतु० १।११ 2 मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, (गालों की भांति) चिपका हुआ, शुष्कम् एक प्रकार का तला हुआ मांस।

परिशून्य (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल खाली, रघु० ८।६६ 2 सर्वथा स्वतन्त्र, नितान्त शून्य १९।६।

परिशूत [परि+शू+क्त] तीक्ष्ण मछली।

परिशेष (पु०) [परि+शिष्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 बचा हुआ, बाकी 2 परिशिष्ट 3 समाप्ति उपसंहार, संपूर्ति।

परिशोधः, परिशोधनम् [परि+शुध्+घञ्, ल्युट्] 1 शुद्ध करना, मांजना 2 छुटकारा, भारावतरण, (ऋण आदि का) भुगतान।

परिशोषः [परि+शुष्+घञ्] बिल्कुल सूख जाना, पूरी तरह भुन जाना।

परिश्रमः [परि+श्रम्+घञ्] 1 थकान, थक कर चूर २ होना, कष्ट, पीड़ा- आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीत श० १, रघु० १।५८, ११।१२ 2 चेष्टा, उद्योग, गहन अध्ययन, लगातार व्यस्त रहना आर्ये कृतपरिश्रमोऽस्मि चतुष्पथगे ज्योति शास्त्रे—मुद्रा० १।

परिश्रयः [परि+श्रि+अच्] 1 सम्मिलन, सभा 2 शरण, आश्रय।

परिश्रान्तिः (स्त्री०) [परि+श्रम्+क्तिन्] 1 थकान, ऊब, कष्ट, थक कर चूर चूर होना 2 उद्योग, चेष्टा।

परिश्लेषः [परि+श्लिष्+घञ्] आलिंगन।

परिषद् (स्त्री०) [परित सीदन्ति अस्याम् परि+सद्+क्विप्] 1 सभा, सम्मिलन, मन्त्राणासभा, श्रोतृगण अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम् श० १ 2 धर्मसभा, मीमांसासभा।

परिषद्, परिषद्य [परित सीदति परि+सद्+अच्, यत्] किसी सभा का सदस्य या मेंबर।

परिषेकः, परिषेचनम् [परि+सिच्+घञ्, ल्युट्] पानी छिड़कना या उड़ेलना, गीला या तर करना।

परिष्कृत (स्व) (वि०) [परि+स्कन्द्+क्त, षत्व का] दूसरे से पालित, अन्य पोष्यपुत्र, जिसे किसी अपरिचित ने पाला पोसा हो।

परिष्कृत (स्कन्द्) ह (वि०) [परि+स्कन्द्+घञ्] दूसरे के द्वारा पाला गया, ह. 1 पोष्य पुत्र 2 भृत्य, सेवक।

परिष्कारः [परि+कृ+घञ्, सुट्, षत्वम्] सजावट, अलंकृत करना।

परिष्कारः [परि+कृ+घञ्, सुट् षत्वम्] 1 सजावट, आभूषण, अलंकरण 2 पाचनक्रिया, खाना पकाना 3 दीक्षा, आरंभिक संस्कारों द्वारा पवित्रीकरण 4 (घर का) सामान (परिस्कार' भी इस अर्थ में)।

परिष्कृत (भ० क० कृ०) [परि+कृ+क्त, सुट्, षत्वम्] 1 अलंकृत, सजाया हुआ कि० ७।४० 2 पकाया गया, प्रमार्जित किया गया 3 आरंभिक संस्कारों द्वारा अभिमन्त्रित (दे० परि पूर्वक 'कृ') ('परिस्कृत' भी इस अर्थ में)।

परिष्क्रिया [परि+कृ+श+टाप्, सुट्] अलंकरण, सजावट, शृंगार।

परिष्टोमः (स्तो) म. [परि+स्तु+मन्, षत्व का] 1. हाथी को रंगीन झूल 2 आच्छादन, आवरण।

परिष्व (स्व) ह. [परि+स्वद्+घञ्, षत्व का] 1 नौकर-चाकर, अनुचर 2 (फूलों से) केश शृंगार 3 शृंगार, सजावट 4 चटकन, धूमधड़ाहट, धमधमक, स्फुरण 5 खाद्यसामग्री, सदर्पन 6 कुचलना।

परिष्वक्त (भू० क० कृ०) [परि+स्वञ्+क्त] परिष्वङ्ग आलिंगित या आलिंगनबद्ध।

परिष्वङ्गः [परि+स्वञ्+घञ्] 1 आलिंगन कि० १८।१९, हि० ३।६७ 2 स्पर्श, सम्पर्क, मेल-मिलाप - भर्तृ० ३।१७।

परिसंवत्सर (वि०) [ऊर्ध्वं संवत्सरात्—अव्य० स०] पूरा एक वर्ष का,—रः पूरा वर्ष, **परिसंवत्सरात्** पूरे एक वर्ष से ऊपर, मनु० ३।११९।

परिसंख्या [परि+सम्+ख्या+अङ+टाप्] 1 गिनती, संगणना 2 योगफल, जोड़, पूर्ण संख्या— विस्तरस्य विद्यापरिसंख्यया मे— रघु० ५।२१ 3 (मीमांसा० में) अपाकरण, विशेष विवरण, स्पष्ट रूप से बताई गई ऐसी सीमा जिससे कि विहित वस्तुओं से भिन्न सभी वस्तुओं का निषेध हो जाय, परिसंख्या—विधि (जो पहली बार विधान किया जाय) तथा नियम (विविध विकल्पों में से किसी विशेष विकल्प का चुनाव) का विपरीतार्थक शब्द, विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियम पाक्षिके सति, तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते। उदा० 'पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या' मीमांसकों द्वारा बहुधा उद्धृत), मनु० ३।४५ पर कुल्लू०—अथ नियमविधिर्न तु परिसंख्या 4 (अल० में) विशेष उल्लेख या एकान्तिक विशेष विवरण, अर्थात् जहाँ जाँच करके या बिना किसी पूछताछ के किसी बात की पुष्टि की जाय जिससे कि किसी अन्य वैसे ही वस्तु का अभिहित या अध्याहृत खंडन हो (श्लेष पर आधारित होने की स्थिति में यह अलंकार विशेष प्रभावोत्पादक होता है) यस्मिंश्च मही शासति चित्रकर्मसु अर्थसंकराश्चापेषु गुणच्छेदः आदि या—यस्य नूपुरेषु मुखरता विवाहेषु करग्रहण तूरयेषु कलाभिघात का०, अन्य उदाहरणों के लिए देखो—सा० द० ७३५।

परिसंख्यात (भू० क० कृ०) 1 गिना हुआ, हिसाब लगाया हुआ 2. एकान्तिकरूप से विशिष्ट या निर्दिष्ट।

परिसंख्यानम् [परि+संख्या+ल्युट्] 1 गिनती, जोड़, पूर्णसंख्या 2 एकान्तिक विशेष निर्देश 3 सही अनुमान, ठीक अंदाजा।

परिसंचरः [परि+सम्+चर्+अच्] विश्वप्रलय का समय।

परिसमापन, परिसमाप्ति (स्त्री०) [परि+सम्+आप्+ल्युट्, क्तिन्] समाप्त करना, पूरा करना।

परिसमूहनम् [परि+सम्+ऊह्+ल्युट्] 1 एकत्र करना, ढेर लगाना 2 (अग्ने समन्तात् मार्जनम्) यज्ञाग्नि के चारों ओर (विशेष रीति से) जल छिड़कना।

परिसरः [परि+सृ+अ] 1 तट, किनारा, सामीप्य

आसपास, पड़ौस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का)—गोदावरीपरिसरस्थ गिरेस्तटानि —उत्तर० ३।८, परिसरविषयेषु लीढमुक्ता कि० ५।३८, 2 स्थिति, स्थान 3 चौड़ाई, अंश 4 मृत्यु 5 नियम, विधि।

परिसरणम् [परि+सृ+ल्युट्] इधर-उधर दौड़ना।

परिसर्प[1] [परि+सृप्+घञ्] 1 इधर-उधर घूमना, 2 खोज में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 घेरना, मण्डलाकार करना।

परिसर्पणम् [परि+सृप्+ल्युट्] 1 चलना, रेंगना 2 इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना—पन्नगपते परिसर्पणे च तुल्य —मृच्छ० ३।२१।

परि (री) क्रमा, परि (री) क्रारः [परि+क्रम्+अ+थक् +टाप् घञ्, वा पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] इधर उधर घूमना फिरना प्रदक्षिणा, फेरी।

परिस्तरणम् [परि+स्तृ+ल्युट्] 1 बिछाना, फैलाना, इधर उधर बखेरना 2 आवरण, ढक्कन।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० स०] 1. सर्वथा समतल, व्यक्त, स्पष्टशब्दोच्चार 2 पूर्णविकसित, फूला हुआ, बड़ा हुआ।

परिस्फुरणम् [परि+स्फुर्+ल्युट्] 1 कंपकंपी, थरथरी 2 काली का चिलना।

परिस्यंदः [परि+स्यन्द्+घञ्] 1 रसना, बूंद २ टपकना, चूना 2 बहाव, धारा 3 अनुचरवर्ग—दे० 'परिष्यंद'।

परिस्रवः [परि+स्रु+अप्] 1 बहना, बहाव 2 नीचे सरकना 3 नदी, निर्झर।

परिस्रावः [परि+स्रु+णिच्+अच्] निकास, निस्राव।

परिस्रुत् (स्त्री०) [परि+स्रु+क्विप्+तुक्] 1 एक प्रकार की नशीली शराब 2 रिसना, टपकना, बहना।

परिस्रुता [परिस्रुत्+टाप्] 1 एक प्रकार की मादक शराब 2 रिसना, टपकना, बहना।

परिहत (वि०) [परि+हन्+क्त] ढीला किया हुआ।

परिहरणम् [परि+हृ+ल्युट्] 1 छोड़ना, तजना, तिलाञ्जलि देना 2 टालना, कतराना 3 निराकरण करना 4 पकड़ना, ले जाना।

परि (री) हार [परि+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 छोड़ना, तजना, तिलाञ्जलि देना, त्याग देना 2. हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में 4 निराकरण करना, निवारण करना 5 उल्लेख न करना, भूल, चूक 6 आरक्षण, गुप्त रखना 7 गाँव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड —धनु क्षेत्र परीहारो ग्रामस्य स्यात्समन्तात्—मनु० ८।२३७ 8 विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुल्क से माफी या छुटकारा मनु० ७।२०१ 9 तिरस्कार, अनादर 10 आपत्ति।

परिहार्यिः (नि०) (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 घटी, कमी, नुकसान 2 मुर्झाना, क्षीण होना —रघु० १९।५०।

परिहार्य (वि०) [परि+हृ+घञ्] कतराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य, जिससे बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जा सके।

परि(री)हास[2] [परि+हस्+घञ्] 1 मखौल, मज़ाक, हँसी, ठट्ठा —स्वगाप्रस्तावाऽयं न खलु परिहासविषय —मा० ६।१४, परिहासपूर्वम् —मखौल में, हँसी दिल्लगी में —रघु० ६।८२ —परिहासविजल्पितम् —श० २।१८, मखौल में कहा हुआ—परीहासादिवाऽसत्यमभवन् येन भवत, वेणी० ३।१४, कु० ७।१९, रघु० ९।८, शि० १०।१२ 2 हँसी उड़ाना, उपहास करना। सम०—वेदिन् (पु०) विदूषक, हँसोकड़ा, रसिक व्यक्ति।

परिहृत (भू० क० कृ०) [परि+हृ+क्त] 1 कतराया हुआ टाला हुआ 2 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 3 निराकृत, अपास्त (आरोप या आपत्ति आदि) 4 लिया हुआ, पकड़ा हुआ दे० परिपूर्वक 'हृ'।

परीक्षक [परि+ईक्ष्+ण्वुल्] परीक्षा लेने वाला, जाँच करने वाला, न्याय करने वाला।

परीक्षणम् [परि+ईक्ष्+ल्युट्] जाँच पड़ताल करना, परखना, इम्तहान लेना—मनु० १।११७।

परीक्षा [परि+ईक्ष्+अ+टाप्] 1 इम्तहान, जाँच, परख—रत्नेन विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्नपरीक्षा—मालवि० १, मनु० ९।११९ 2 (विधि में) जाँच-पड़ताल के विविध प्रकार।

परीक्षित् (पु०) [परि+क्षि+क्विप्, तुक्, उपसर्गस्य दीर्घ] अर्जुन का पौत्र, अभिमन्यु का पुत्र, युधिष्ठिर के पश्चात् यही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा, साँप द्वारा काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई। कहते हैं, इसी के राज्य से कलियुग का आरंभ हुआ।

परीक्षित (भू० क० कृ०) [परि+ईक्ष्+क्त] परखा किया, जाँच पड़ताल की गई —परीक्षितं काव्यमुवर्ण-मेतत्—विक्रम० १।२४।

परीत (भू० क० कृ०) [परि+इ+क्त] 1 घिरा हुआ, पर्यावृत 2 समाप्त हुआ, बीता हुआ 3 विगत, व्यतीत 4 पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भग हुआ —कोषपरीतमानसम् —कि० २।२५, मुद्रा० ३।३०।

परीताप, परीपाक, परीवार, परीवाह, परीहास आदि —दे० 'परिताप' आदि।

परीप्सा [परि+आप्+सन्+अ+टाप्] 1 प्राप्त करने की इच्छा 2 जल्दी, शीघ्रता।

परीरम् [पृ+ईरन्] एक फल।

परीरम्भ [परि+ईर्+ल्युट्] 1 कछुवा 2. छड़ी 3. पोशाक, वेशभूषा।

परीप्सिः (स्त्री०) [परि+इप्+क्तिन्] 1 अनुसंधान, पूछताछ, गवेषणा 2 सेवा, परिचर्या 3 आदर, पूजा, श्रद्धांजलि।

पर्वः [पृ+उ] 1 जोड़, गाँठ 2 अवयव, अंग 3 समुद्र 4. स्वर्ग, वैकुण्ठ, 5 पहाड़।

परुत् (अव्य०) [पूर्वस्मिन् वत्सरे-इति पूर्वस्य परुभावः उत्च] गत वर्ष, पिछला साल।

परुष्टार [ब० स०] घोड़ा।

परुष (वि०) [पृ+उषन्] 1 कठोर, रूखा, सख्त, कड़ा (विप० मृदु या श्लक्ष्ण) परुष वर्ण, परुषा माला-आदि 2 (शब्द आदि) कटु, अपभाषित, निष्ठुर, निष्करुण, क्रूर, निर्मम, (वाक्) अपरुषा परुषाक्षर-सौम्या--रघु० ९।८, पंच० १।५०, (व्यक्ति भी) गीत० ९, शाक० १।३०९ 3 (शब्द) कर्णकटु, अरुचिकर--नेत्र वज्रपरुषस्वन धनु रघु० ११।४६, मेघ० 4 रूखा, स्थूल, खुरदरा, (बाल) मैला-कुचैला शुद्धस्नानात्परुषमलक -मेघ० १९ 5 तीक्ष्ण, प्रचण्ड, मजबूत, उन्मुक, (वायु आदि) वेधक --परुषपवनवेगाक्षिप्तपक्षाक्षपाणं --ऋतु० १।२२, २।२८ 6 ठोस, गाढ़ा 7 मैला, मैला, --अम् कठोर या दुर्वचनयुक्त भाषण अपभाषण। सम० --इतर (वि०) जो रूखा न हो, कोमल, मृदु--रघु० ५।६८, --उक्तिः--अपभाषण।

परुस् (नपु०) [पृ+उस्] 1 सन्धि, ग्रन्थि, जोड़, गाँठ 2 अवयव, शरीर का अंग।

परेत (भू० क० कृ०) [पर+इ+क्त] दिवंगत, मृत्युप्राप्त, मृत --त प्रेत, भूत। सम० --भर्तृ, --राज् (पु०) मृत्यु का देवता, यमराज शि० १।५७,--भूमिः (स्त्री०) --वास' कर्पिस्तान कु० ६८।

परेद्यवि, परेद्यु (अव्य०) [परस्मिन् अहनि. नि० साधु०] दूसरे दिन, और दिन।

परेद्युः (स्त्री०), **परेद्युका** [पर+इण्+पु, परेद्यु+कन्+टाप्] वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो।

परोक्ष (वि०) [अक्ष्णः परम -अ० स०] 1 दृष्टिपथ से परे, या बाहर, जो दिखाई न दे, अगोचर 2 अनुपस्थित--स्थाने वृता भूपतिभि परोक्षै --रघु० ७।३३ 3 गुप्त, अज्ञात, अपरिचित परोक्षमन्यथो अन --शं० २।१८, 'काम के प्रभाव से अपरिचित' --हि० प्र० १०,--क्षः सन्यासी --क्षम् 1 अनुपस्थिति अगोचरता 2 (व्या० में) भूतकाल (जो वक्ता ने न देखा हो) परोक्षे लिट्--सा० ३।२।११५, 'परोक्ष' के कर्म०. तथा अधि० के ए० व०--(अर्थात् परोक्षम्, परोक्षे) 'अनुपस्थिति में' 'दृष्टि से परे' 'पीठ पीछे' अर्थ को प्रकट करने के लिए क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं (सब० के बिना, या साथ)--परोक्षे न्यलीकर्तुं शक्यते न मनागपि --मालवि० २, परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्--पंच० १८, नादात्तरेदस्य नाम परोक्षमपि केवलम् --मनु० २।१२१। सम०--भोगः स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग,--वृत्ति (वि०) आँखों से दूर रहने वाला (त्तिः--स्त्री०) अदृष्ट और अज्ञात जीवन।

परोक्षिः, परोक्षी [पर+उक्ष्+क्तिन् परः शत्रु उक्षो यस्य' ब० स०] तेलचट्टा (झींगुर के आकार काले रंग का एक कीड़ा)।

परोक्षक [पृष्+अन्य, नि० एकारस्य अकार] 1 बरसने वाला मेघ, गरजने वाला बादल, बादल या मेघ--प्रवृद्ध इव पर्जन्य सारगैरभिनर्दित --रघु० १७।१५, यतु नद्यो वयतु पर्जन्या --तै० स०, मृच्छ० १०।६० 2 बारिश, अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभव' मनु० ३।१४ 3 वृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र।

पर्ण् (चुरा० उभ०--पर्णयति-ते) हरा भरा करना--वसंत पर्णयति चम्पकम्।

पर्णम् [पर्ण्+अच्] 1 पंख, बाजू जैसा कि 'सुपर्ण' में 2 बाण का पंख 3 पत्ता 4 पान का पत्ता,--र्णः ढाक का पेड़। सम०--अशनम् पत्ते खाकर जीना (क:) बादल, --असि. काली तुलसी, --आहार (वि०) पत्ते खाकर निर्वाह करने वाला, --उटजम् पत्तों की कुटिया, साधुओं की झोंपड़ी, आश्रम,--कार पनवाड़ी, तमोली, पान बेचने वाला,--कुटिका,--कुटी पत्तों की बनी कुटिया,--कृच्छ्र प्रायश्चित्त संबंधी साधना जिसमें प्रायश्चित्तकार को पाँच दिन तक पत्ते और कुशाओं का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है, दे० याज्ञ० ३।३१७, इसके ऊपर मिताक्षरा भी,--जः पत्तों के बिना वृक्ष (--जम्) पत्तों का ढेर, --वीरघटः शिव का विशेषण, --शेरक एक प्रकार का सुगंध द्रव्य,--नरः पत्तों से बनाया गया पुतला जो अप्राप्त शव की जगह रखकर जलाया जाता है,--वेदिनी प्रियंगुलता, --भोजनः बकरी,--मृग् (पु०) जाड़े का मौसम, शिशिर ऋतु,--मृग बड़ों की शाखाओं पर रहने वाला जंगली जानवर, वल्ल् (पु०) वसंत ऋतु,--लता पान की बेल--,वीटिका पान का बीड़ा,--शाला पत्तों की बनी कुटिया, साधुओं का--आश्रमनिर्दिष्टा कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य --रघु० १।९५, १२।४०।

पर्णल (वि०) [पर्ण+लच्] पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला--भट्टि० ६।१४३।

पर्णासः [पृ+असि, नुक्] 1 पानी के मध्य खड़ा भवन, ग्रीष्म भवन 2 कमल 3 शाक सब्जी 4 सजावट, प्रसाधन, शृंगार।

पर्णिन् (पु०) [पर्ण+इनि] वृक्ष।

पर्पिल (वि०) [पर्प+इलच्] दे० 'पर्पल'।

पर्व् (भ्वा० आ०-पर्वते) पाद मारना, अपानवायु छोड़ना।

पर्वः [पर्व+अच्] 1. केश समूह, घना बाल 2 पाद, अपान वायु।

पर्वः [पृ+प] 1 नया उगा घास 2 पशु-पीठ, पशुगाड़ी —येन पीठेन पगवश्चरति स पर्यं —पा० ४।४।१० पर सिद्धा० 3 घर।

पर्वरीकः [पृ+ईकन्] 1 सूर्य 2 आग 3 जलाशय, तालाब।

पर्वक् (अव्य०) [परि+अच्+क्विप्] चारों ओर, सब दिशाओं में।

पर्यंक. [परिगतं अङ्कम्-अत्या० स०] 1 खाट, पलंग, सोफा 2 अङ्कमाला 3 समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अवस्थिति —योगासन 4 वीरासन —वसिष्ठ द्वारा दी गई परिभाषा—एक पादमधैक-स्मिन् विन्यस्योरौ तु सस्थितम्, इतरस्मिंस्तथैवोरु वीरासनमुदाहृतम्। पर्यंकप्रतिबद्ध आदि—मृच्छ० १।१। सम०—बन्ध जांघ के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्यंक' कहते हैं, पर्यंकबन्धस्थिरपूर्वकायम् —कु० ३।४५,५९,—भोगिन् (पु०) एक प्रकार का साँप।

पर्यटनम्, पर्यटितम् [परि+अट्+ल्युट्, क्त वा] घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना।

पर्यनुयोग [परि+अनु+युज्+घञ्] किसी उक्ति का खंडन करने के उद्देश्य से पूछताछ (दूषणार्थ जिज्ञासा —हला०) एतेनास्यापि पर्यनुयोगस्यानवकाश' —दाय०।

पर्यंत (वि०) [प्रा० स०] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ —समुद्रपर्यंता पृथिवी—समुद्र की सीमा से आबद्ध पृथ्वी, —त. 1 आवर्त, परिधि 2 गोट, किनारा, झालर, चरमसीमा, हद —उटजपर्यंतचारिणी—श० ४, पर्यन्तदनम् —रघु० १३।३८ ऋतु० ३।३ 3 पार्श्व, कक्ष —रत्न० २।३, रघु० १८।४३ 4 अन्त, उपसंहार, समाप्ति—पंच० १।१२५। सम०-भू, —भूमिः मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश,—पर्वत सलग्न पहाड़।

पर्यंतिका [प्रा० स०] अच्छे गुणों की हानि, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन।

पर्ययः [परि+इ+अच्] क्रान्ति, पतन, निःश्वास—काल-पर्ययात्—याज्ञ० ३।२१७, मनु० १।३०, ११।२७ 2 (समय की) बर्बादी, या खोना 3 परिवर्तन, अदल-बदल 4 उलट पुलट, अव्यवस्था, अनियमितता 5, शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6 विरोध।

पर्ययणम् [परि+अय्+ल्युट्] 1 चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा 2. घोड़े की जीन।

पर्यवदात (वि०) [प्रा० स०] पूरी तरह शुद्ध और पवित्र।

पर्यवरोध [प्रा० स०] बाधा, विघ्न।

पर्यवसानम् [प्रा० स०] 1 अन्त, समाप्ति, उपसंहार 2 निर्धारण, निश्चयन।

पर्यवसित (भू० क० कृ०) [परि+अव+सो+क्त] 1 समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2 नष्ट, लुप्त 3 निर्धारित।

पर्यवस्था, पर्यवस्थानम् [परि+अव+स्था+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1 विरोध, मुकाबला, बाधा 2 विपरीत्य।

पर्यश्रु (वि०) [प्रा० ब० स०] आँसुओं से भरा हुआ, अश्रुपरिप्लावित, आँसू बहाने वाला, अश्रुयुक्त—पर्य-श्रुणी मगलभगभीरुनं लोचने मीलयितुं विषेहे—कि० ३।३६, पर्यश्रुरस्वजन मूर्धनि चोपजघ्रौ—रघु० १३।७०।

पर्यसनम् [परि+अस्+ल्युट्] 1 फेंकना, इधर उधर डालना 2 भेजना, धकेलना 3 भेज देना, 4 स्थगित करना।

पर्यस्त (भू० क० कृ०) [परि+अस्+क्त] 1 इधर उधर फेंका गया, डाला गया पर्यस्तो धनजयस्योपरि शिलीमुखासार वेणी० ४, शि० १०।११ 2 घेरा हुआ, मण्डलाकृत 3 उलटाया गया, उघला हुआ 4 पदच्युत, एक ओर रक्खा हुआ 5 प्रहार किया हुआ, चोट पहुचाया हुआ, मारा हुआ।

पर्यस्ति (स्त्री०) पर्यस्तिका [परि+अस्+क्तिन्, पर्यस्ति+कन्+टाप्] बीरासन, पलंग।

पर्याकुल (वि०) [प्रा० स०] 1. मैला, गदा (पानी आदि) 2 अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत—श० १ 3. कामहीन, अव्यवस्थित, उथल-पुथल—श० १।३० 4 उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ—पर्याकुलोऽस्मि श० ६, ऋतु० ६।२२ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेह°, कोध° आदि।

पर्याणम् [परि+या+ल्युट्, पृषो०] जीन, काठी—दत्त-पर्याणम्—का० १२६, जीन कसा हुआ।

पर्याप्त (भू० क० कृ०) [परि+आप्+क्त] 1 प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3 भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, समग्र· पर्याप्त चन्द्रेव शरत्त्रियामा —कु० ७।२६, रघु० ६।४४ 4 योग्य, सक्षम, यथेष्ट रघु० १०।५५ 5. काफी, यथोचित—रघु० १५।१८, १७।१७ मनु० ११।७,—तम (अव्य०) 1. स्वेच्छा-पूर्वक, तत्परता के साथ 2. समतोष, काफी, यथेष्ट रूप से पर्याप्तमाचामति उत्तर० ४।१, यथेच्छ पी लेता है 3 पूरी तरह से, योग्यतापूर्वक, सक्षमता के साथ।

पर्याप्तिः (स्त्री०) [परि+आप्+क्तिन्] 1. प्राप्त करना, अधिग्रहण 2. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 3. काफी, पूर्णता, पर्याप्तता 4. तृप्ति, संतोष 5 साधारण, प्रहार को रोकना 6 उपयुक्तता, सक्षमता।

पर्याय [परि+इ+घञ्] 1 चक्कर लगाना, घूमना 2 (समय की) समाप्ति, व्यतीत होना, बीतना 3. नियमित परावर्तन, या आवृत्ति 4 बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम -पर्याय सेवामुत्सृज्य -कु० २।३६, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रणाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रणाली 7 समानार्थक, पर्यायवाची- पर्यायो निधनस्थाय निधनत्व शरीरिणाम्—एच० २।९९, पर्वतस्य पर्यायादमे—आदि 8. सृष्टि, निर्माण, तैयारी, रचना 9 धर्म, गुण 10. (अल० में) एक अलंकार—दे० काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, १०९, सा० द० ७२३ (क्रिवि० पर्यायेण क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ बताता है 1 बारी बारी से, उत्तरोत्तर, नबरवार, नियमित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी —पर्यायेण हि दृश्यते स्वप्नाः काम शुभाशुभा —मेघो० २।१३। सम०—उक्तम् एक अलंकार, घुमाफिरा कर कहना, वक्रोक्ति या वाक्प्रपंच से कहने की रीति, जब बात को घुमा फिरा कर या बाग्जाल के साथ कहा जाय- उदा० दे० चन्द्रा० ५।९६, या सा० द० ७०३,—च्युत (वि०) गुप्त रूप से उड़ाया हुआ, जिसका स्वामी छलपूर्वक ले लिया गया है,—वचनम् शब्दः समानार्थक,—शयनम् बारी २ सोना और चौकसी रखना।

पर्यालं (अव्य०) [परि+आ+अल्+ई] हानि या क्षति को (हिंसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्रायः कृ, भू या अस् से पूर्व लगाया जाता है यथा पर्यालंकृत्य=हिंसित्वा।

पर्यालोचनम्—ना [परि+आ+लोच्+ल्युट्] 1 सावधानता, समीक्षा, विचार, परिपक्व विमर्श 2. जानना, पहचानना।

पर्यावर्तः, पर्यावर्तनम् [परि+आ+वृत्+घञ्, ल्युट् वा] वापिस आना, प्रत्यागमन।

पर्यासित (वि०) [प्रा० स०] बड़ा मटमैला, मैला, मिट्टी में भरा हुआ रघु० ७।४०।

पर्यासः [परि+अस्+घञ्] 1 अन्त, उपसंहार, समाप्ति 2 परावर्तन, क्रांति 3. उलटा क्रम या स्थिति।

पर्याहारः [परि+आ+हृ+घञ्] 1 बोझा ढोने के लिए कंधों पर रखना गया जूआ 2 ले जाना 3. बोझा, भार 4. बड़ा 5 अनाज को भंडार में रखना।

पर्युक्षणम् [परि+उक्ष्+ल्युट्] बिना किसी मन्त्रोच्चारण के चारों ओर चुपचाप जल के छींटे देना।

पर्युत्थानम् [परि+उद्+स्था+ल्युट्] बड़ा होना।

पर्युत्सुक (वि०) [प्रा०स०] 1 शोक पूर्ण, खेद युक्त, चिंत्र, दुःखद स्वप्न शोक, रघु० ५।६७ 2. अत्यन्त इच्छुक, आतुर, लोलुप, प्रबल इच्छा रखने वाला—स्मर पर्युत्सुक एव मादृश —कु० ४।२८, विक्रम० २।१६।

पर्युदञ्चनम् [परि+उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1. ऋण, उधार 2. उधार लेना, उठाना, उद्धार करना।

पर्युदस्त (भू० क० कृ०) [परि+उद्+अस्+क्त] 1. बहिष्कृत किया हुआ, निकाला हुआ 2 रोका गया (नियमित) आपत्ति उठाई गई।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] अपवाद, निषेध सूचक नियम या विधि।

पर्युपस्थानम् [परि+उप+स्था+ल्युट्] सेवा, टहल, उपस्थिति।

पर्युपासनम् [परि+उप+आस्+ल्युट्] 1 पूजा, सम्मान, सेवा 2 निकटता, घनिष्टता 3 पास पास बैठाना।

पर्युप्तिः (स्त्री०) [परि+वप्+क्तिन्] बोना, बीजना।

पर्युपणम् [परि+उप+ल्युट्] पूजा, अर्चा, सेवा।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी, जो ताजा न हो तु० 'अपर्युषित' 2 फीका 3. मूर्ख 4. नकली।

पर्येषणम्,—ना [परि+इष्+ल्युट्] 1 तर्क द्वारा गवेषणा 2 खोज, सामान्य पूछ-ताछ 3 अन्वेषण, पूजा।

पर्येषिः (स्त्री०) [परि+इष्+क्तिन्] खोज, पूछताछ।

पर्वकम् [पर्वणा सन्धिना कायति—पर्वन्+कै+क] घुटने का जोड़।

पर्वणी [पर्वन्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 1. पूर्णिमा, या अमावस्या 2 उत्सव 3 (आयु० में) आँख की सन्धि का विशेष रोग।

पर्वतः [पर्वन्+अतच्] 1 पहाड़, गिरि—परमुपकर्तुमात्मानमभिमुखीकृत्य निरयम्—भर्तृ० २।७८, न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति 2. चट्टान 3 कृत्रिम पहाड़ या ढेर 4. 'सात' की संख्या 5. बुध। सम०—अरिः इन्द्र का विशेषण,—आत्मजः मैनाक पर्वत का विशेषण, —आत्मजा पार्वती का विशेषण,—आधारा पृथ्वी, —आलयः बादल,—आवासः सरल नामक काल्पनिक जंतु,—कदरः पहाड़ी कोना,—जा नदी, —पतिः हिमालय पहाड़ का विशेषण,—रोहः पहाड़ी बकरा,—राज् (पुं०),—राजः 1. विशाल पहाड़, 2. पर्वतों का स्वामी हिमालय,—स्थ (वि०) पहाड़ी, पर्वत पर स्थित।

पर्वन् (नपुं०) [पृ+वनिप्] 1. गांठ, जोड़ (बहुधीहि समास के अन्त में कभी कभी प्रयुक्त होकर 'पर्व' हो जाता है जैसा कि 'कर्कशाभुजिपर्वणा—रघु० १२।४१' में 2. अवसर, अंश 3. अंश' भाग, खण्ड 4. पुस्तक,

अध्याय (जैसा कि महाभारत में 5. जीने की सीढ़ी -रघु० १६।४६ 6. अवधि, निश्चित समय 7. विशेषकर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या 8. चन्द्रमा के परिवर्तन काल के अवसर पर अनुष्ठित यज्ञ 9. पूर्णिमा या अमावस्या,—अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला विभावरी कथम कृष्ण भविष्यति - मालवि० ४।१५, रघु० ७।३३ मनु० ४।१५०, भर्तृ० २।३४ 10. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 11. उत्सव, त्योहार, हर्ष का अवसर 12. सामान्य अवसर। सम०—काल. 1. चन्द्रमा का आवर्तिक परिवर्तन 2. वह काल जब चन्द्रमा पर्वसन्धि में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय), -कारिन् (पु०) वह ब्राह्मण जो अमावस्या आदि के आवर्तिक अनुष्ठान या संस्कारों को अपने लाभ के कारण सामान्य दिनों में करता है, --गामिन् (पु०) पर्व आदि शास्त्र निषिद्ध अवसरों पर भी अपनी पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति,- वि चन्द्रमा,—योनिः बेत, नरकुल,--रुह् (पु०) अनार का वृक्ष,—संधिः पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य का समय, अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति पर प्रतिपदा आरम्भ।

पर्शुः [पर शत्रुं श्रृणाति—पर+शृ+कु स च डित् वा स्पृशति शत्रून्—स्पृश्+शुन्, पृ आदेश] 1. कुठार, कुल्हाड़ी—तु० 'परशु' 2. अस्त्र, हथियार। सम०—धारिः 1. गणेश का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण।

पर्शुका [पर्शु=कन्+टाप्+] पसली।

पर्श्वधः [=परश्व+धा+क, पृषो०] दे० 'परश्वध'।

पर्षद् (स्त्री०) [पृष्+अदि] 1 सभा, सम्मिलन, सम्मेलन 2 विशेषकर धर्मसभा—याज्ञ० १।९।

पलः [पल्+अच्] पुआल, भूसी,— लम् 1 मांस, आमिष 2 कर्ष का तोल 3 तरल पदार्थों को मापने का मान 4 समय मापने का मान। सम०—अशिन्, पिण्ड, —अंगः कछुवा,—अदः,—अशनः पिशाच, राक्षस, -आरः हरिण,--उंडः पलस्थर करने वाला, राज —प्रियः 1 राक्षस 2 पहाड़ी कौवा,--भा मध्याह्न की विषुवीय छाया—अर्थात् मध्याह्न के समय धूपघड़ी के ठीक की तत्कालीन छाया।

पलंकट (वि०) [पल मांसं कटति-पल्+कट्+अच्, मुम्] डरपोक, बुजदिल।

पलंकरः [पल मांसं करोति—पलम्+कृ+अच्, द्वितीया या अलुक्] पिस्सू।

पलंकषः [पलं कषति—पलम्+कष्+अच्, द्वितीयाया अलुक्] 1 राक्षस, पिशाच, दानव,— षम् 1. मांस 2. कीचड़, दलदल 3 पिसे हुए तिल व घीनी मिलाकर बनाई गई मिठाई, रेवड़ी। सम०—ज्वरः पित्त, —प्रियः 1 पहाड़ी कौवा 2. राक्षस।

पलकः [पल+वा+क] मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी।

पलांडु (पु०, नपु०) [पलस्य मांसस्य अण्डमिव—पल +अण्+कु] प्याज—मनु० ५।५, याज्ञ० १।१७६।

पलाकः [पलं मांसम् आप्यते बाहुल्येन अत्र—पल+आप् +घञ्] 1 हाथी की पुटपुटी 2 पगहा, रस्सी।

पलायनम् [परा+अय्+ल्युट् रस्य ल] भागना, लौटना उड़ान, बच निकलना भग० १८।४३, रघु० १५।३१

पलायित (भू० क० कृ०) [परा+अय्+क्त] भागा हुआ, लौटा हुआ, दौड़ा हुआ, बच निकला हुआ।

पलालः --लम् [पल+कालन्] पुआल, भूसी--नै० ८।२। सम०—दोहदः आम का वृक्ष।

पलालिः [पल+अल्+इन्] मांस का ढेर।

पलाशः [पल+अश्+अण्] एक वृक्ष, ढाक का पेड़— किंशुकनवपलाशपलाशवनम् पुर —शि० ६।२, -शम् 1 इस वृक्ष का फूल —बालदुवकाध्यधिकाशमाबाद्यवम् पलाशान्यतिलोहितानि - कु० ३।२९ 2 पत्ता, पखड़ी —फलत्पलाशांतरगोचरास्तरो —शि० १।२१, ६।२ 3 हरा रंग।

पलाशिन् (पु०) [पलाश+इन्] ढाक का पेड़।

पलितमती [पलित+मत्च्, तस्य वत्व, ङीप्] 1.बूढ़ी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों 2 पहली बार ही ब्याई हुई गौ, बालगभिणी।

पलिघः [परि+हन्+अप्, वादेशः, रस्य ल] 1. लोहे का बर्तन, घड़ा 2 फसील, परकोटा 3 लोहे की गदा --तु० परिघ 4. गोशाला, गोगृह।

पलित (वि०) [पल्+क्त] भूरा, धवल, सफेद बालों वाला, बूढ़ा, बुड्ढा, तातस्य मे पलितमौलिनिरस्तकाशे (शिरसि)- वेणी० ३।१९—तम् 1 सफेद बाल या बाल की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो—केकैयीशकयेवाह पलितच्छद्मना जरा रघु० १२।२, मनु० ६।२ 2 अधिक या अलंकृत केश।

पलितकरण (वि०) [अपलित पलित क्रियतेऽनेन पलित +कृ+ल्युट्, मुम्] सफेद करने वाला।

पलितभविष्णु (वि०) [अपलित पलितो भवति—पलित +भू+इष्णुच्, मुम्] सफेद होने वाला।

पल्यंक [परित अङ्क्यतेऽत्र, परि+अङ्क+घञ्, रस्य ल] पलंग, खाट— दे० पर्यंक।

पल्ययनम् [परि+अय्+ल्युट्, रस्य ल] 1. जीन, काठी 2 रास, लगाम।

पल्लः [पल्ल्+अच्] अनाज का बड़ा भंडार, खत्ती।

पल्लवः—वम् [पल्+क्विप्=पल्, लू+अप्=लव, पल्लासौ लवश्च कर्म० स०] 1 अंकुर, कोंपल, टहनी

—करपल्लवः, लतेव सनद्धमनोज्ञपल्लवा—रघु० १।७ 2. कली, मंजरी 3 विस्तार, फैलाव, अभिव्यक्ति 4. लालरंग, महावर, अलक्त 5 सामर्थ्य, शक्ति 6. घास की पत्ती 7 कलम, अंकुर 8 प्रेम, केलि 9 चञ्चलता, —वः स्वेच्छाचारी। सम०—अंकुरः, —आगारः शाला,—अस्त्रः कामदेव का विशेषण, —द्रुः अशोक वृक्ष।

पल्लवकः [पल्लव+कै+क] 1 स्वेच्छाचारी 2 लौंडा, भांड 3. रंडी का प्रेमी 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार की मछली 6 अंकुर।

पल्लविकः [पल्लव. शृंगारो रस अस्ति अस्य—पल्लव+ठन्] 1 स्वेच्छाचारी, रसिया 2 लौंडा, भांका, छैल।

पल्लवित (वि०) [पल्लव+इतच्] 1. अंकुरित होने वाला, नई २ कोंपलों से युक्त 2 फैला हुआ, विस्तृत —अल पल्लवितेन 'बस रहने दो और अधिक विस्तार' 3. लाल से लाल रंग हुआ—तः लाखका रंग।

पल्लविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पल्लव+इनि] 1 नई २ कोंपलों से युक्त, नये किसलयों वाला—कु० ३।५४, —(पुं०) वृक्ष।

पल्लिः,—ल्ली (स्त्री०) [पल्ल्+इन्, पल्लि+ङीष्] 1 छोटा गांव, 2 झोंपड़ी 3 घर, पड़ाव 4. एक नगर या कस्बा (नगरों के नामों के अन्त में प्रयुक्त जैसे कि त्रिचिरपल्लि) 5 छिपकली।

पल्लिका [पल्लि+कन्+टाप्] 1 छोटा गांव, पड़ाव 2. छिपकली।

पल्वलम् [पल्+वलच्] छोटा तालाब, छप्पड़, जोहड़, तड़ाग (अल्प सर.) स पल्वलजलेऽधुना कथं वर्तताम्—भामि० १।३, रघु० २।१७,३।३, । सम०—आप्लवः कछुवा—खः छप्पड़ का पारा, कीचड़।

पवः [पू+अप्] 1 वायु 2 पवित्रीकरण 3 अनाज फटकना—वम् गोबर।

पवनः [पू+ल्युट्] हवा, वायु सर्पा पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते—सुभा०, पवनपदवी, पवनसुत आदि—नम् 1 पवित्रीकरण 2 फटकना 3 चलनी, छलनी 4 पानी 5 कुम्हार का आवा (पुं० भी)—नी झाड़। सम०—अक्षः—भुज् (पु०) सांप,—आत्मजः 1 हनुमान का विशेषण 2 भीम का विशेषण 3 अग्नि,—आशः सांप, सर्प,—नाशः 1 गरुड़ का विशेषण 2 मोर, —तनयः,—सुतः 1 हनुमान् का 2 भीम का विशेषण, —व्याधिः 1 कृष्ण के सलाहकार और मित्र उद्धव का विशेषण 2 गठिया।

पवमानः [पू+शानच्, मुक्] 1 हवा, वायु—पवमानपृथिवीरुहानिव—रघु० ८।९ 2. एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं।

पवस्वकः [पू+आयु, सि० साधु] बवंडर, आंधी, झंझावात।

पवित्रः [पू+इत्र] इत्र का पत्ता।

पवित्रित (वि०) [पू+क्त] पवित्र किया हुआ, छाना हुआ—तम् काली मिर्च।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1 पुनीत, पावन, निष्पाप, पवित्रीकृत (व्यक्ति या वस्तुएं)—पवित्रे श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रैः कुतपस्तिला—मनु० ३।२३६, पवित्रो नरः, पवित्र स्थानम् आदि 2 शुद्ध, छना हुआ 3. यज्ञादि के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया 4 पवित्र करना, पाप धोना,—त्रम् 1. छानने या शुद्ध करने का उपकरण, छलनी, झरना 2. कुश की दो पत्तियां जो यज्ञ में घी को पवित्र करने तथा छींटे देने के काम आती हैं 3. कुशा की बनी अंगूठी जो कई धार्मिक अवसरों पर चौथी अंगुली में पहनी जाती है 4 जनेऊ जो द्विजातियों के प्रथम तीन वर्ण पहनते हैं 5 तांबा 6 दृष्टि 7. जल 8. रसोई, माजना 9 अर्घ्य देने का पात्र 10. घी 11. सहद, मधु। सम०—आरोहणम्, —आरोहणम् यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार,—पाणि (वि०) दर्भघास को हाथ में थामने वाला,—पाण्यम् जौ।

पवित्रकम् [पवित्र+कै+क] सन या सुतली का बना जाल या रस्सा।

पशव्य (वि०) [पशु+यत्] 1 मवेशियों (गाय भैंसों आदि) के लिए उचित या उपयुक्त—याज्ञ० १।३२१ 2 पशुओं से या रेवड़ या लड़ाई से संबंध रखने वाला 3 पशुओं का स्वामी 4. पशुतापूर्ण।

पशुः [सर्वमविशेषेण पश्यति—दृश्+कु, पशादेशः] 1 मवेशी, (एक या समष्टि) मनु० ३२७, ३३१ 2 जानवर 3. बलिपशु जैसे कि बकरा 4. नृशंस, जंगली, तिरस्कार प्रकट करने के लिए 'नर' वाचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—पुरुषपशोरेवमपशोश्च को विशेष—हि० १, तु० नृपशु, नरपशु 5 एक उपदेवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवदानम् पशुबलि—क्रिया 1 बलियज्ञ की प्रक्रिया 2. स्त्रीप्रसंग,—गायत्री वह मन्त्र जो कि बलिके पशु के कान में बोला जाता है, यह प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र हास्यमय अनुकृति है—पशुत्राणाय विद्महे शिरश्छेदाय (विघ्नकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीव प्रचोदयात्,—घातः यज्ञ के लिए पशुओं का वध,—चर्या सहवास, स्त्री प्रसंग,—तर्कः 1 पशुओं की प्रकृति या लक्षण 2. पशुओं की चिकित्सा 3 स्वच्छन्द मैथुन—मनु० ९।९६ ४. विधवाविवाह, —नाथः शिव का विशेषण,—पः ग्वाला—पतिः 1 शिव का विशेषण मेघ० ३६, ५६, कु० ६।९५ 2 ग्वाला, पशुओं का स्वामी 3 'पशुपत' नामक दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला दर्शन शास्त्र

—दे० सर्ग,—पालः—पालकः स्वामी, पशुओं का पालन करने वाला,—पालनम्,—रक्षणम् पशुओं की पालना, रक्षा,—भावकः एक प्रकार का रतिबन्ध या मैथुन प्रकार,—भेदनम् पशुओं को हांकना,—मारः (अव्य०) पशुवध की रीति के अनुसार—दृष्टिपशुद्वारं मारिताः ब० ६,—यज्ञः,—मार्गः,—यज्ञम् पशु यज्ञ,—रज्जुः (स्त्री०) पशुओं को सँभालने के लिए रस्सी,—राजः सिंह, केसरी।

पश्चात् (अव्य०) [अपर+अति, पश्चभाव] 1 पीछे से, पिछली ओर से पश्चाद्वयपुरुषमादाय—ब० ६, पश्चादुर्ध्वमेवति हरिम स्वांगमायच्छमान—ब० ४, (पाठान्तर) 2. पीछे, पीछे की ओर, पीछे की तरफ (क्रिय० पुर) वच्छति पुर शरीर यावति पश्चादवस्थुतं चेतः—ब० १।३३, ३।७ ? (समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अन्तर —लक्ष्मी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्—भर्तृ० २।६०, तस्य पश्चात्—उसके बाद—रघु० ४।३०, १२।७, १७।३९, १६।२९, मेघ० ३६, ४४ 4 आखिरकार, अन्त में, अन्तलोगत्वा 5 पश्चिम से 6 पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ। सम०—कृत (वि०) पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फेंका हुआ—पश्चात्कृता स्निग्धजनासिधौत्रपि—कु० ७।२८, रघु० १७।१८, तापः पछताना, ग्लानि, पछतावा °पं कृ पछताना।

पश्चार्धः [अपरस्यार्धं कर्म०, अपरस्य पश्चभाव.] (शरीर का) पिछला भाग, या पार्श्व—पश्चार्धेन प्रविष्ट शरपतनभयाभूयसा पूर्वकायम्—ब० १।० 2. (समय और देश की दृष्टि से) अन्तिम —शिक्षते यवति वर्षमात्रस्य का० २५ रघु० १९।१, ५६, —पश्चिमार्धात्रिशीयामात् प्रभादमिवचेतना—रघु १७।१, स्मरत पश्चिमामात्रां - १७।८, पत्त पश्चिमनो. शिवः पादयो'—मुद्रा० ७ 3. पश्चिमी, पश्चिमी देश का—मनु० २।२२, ५।९२ (क्रियाविशेषण के रूप में "पश्चिम में" "बाद में" "पीछे" अर्थों को प्रकट करने लिए, कर्म० या संबंध के साथ प्रयुक्त, इसी प्रकार - पश्चिम में। सम०—अर्धः 1 उत्तरार्ध 2 रात का पिछला पहर 3 रात्रि का पिछला भाग अधारता पश्चिमरात्रमोचरात्—कि० ४।१०, (पाठान्तर)।

पश्चिमा [पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा। सम० —आशा उत्तरपश्चिम।

पश्यक (वि०) (स्त्री०-की) [दृश्+शतृ, पश्चादेश] देखने वाला, अवलोकन करने वाला, ध्यान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि।

पश्यतोहरः [पश्यतः अनम् अनादृत्य हरति-हृ+अच्, ष० त० अलुक् समास] चोर, लुटेरा, डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरों की आंखों के सामने ही या स्वामी के देखते रहने पर भी चोरी कर लेता है, जैसे सुनार)।

पश्यन्ती [दृश्+शतृ, पश्यादेश, नुम्] 1 देखना, रखो 2 विशेष—प्रकार की ध्वनि।

पस्त्यम् [अपस्त्यायन्ति संगीभूय तिष्ठन्ति यत्र—अप+स्त्यै+क नि० अकारलोप] घर, निवास, आवास पस्त्य प्रयातुमय त प्रभुरापपृच्छे कीर्ति० ९।७४।

पस्पशः (पु०) पतञ्जलिप्रणीत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक - शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२, (यहाँ 'अपस्पश' का अर्थ है 'बिना गुप्त चरों के') 2 प्रस्तावना, उपोद्घात।

पह्लवः (ब०) यवन, पह्लिकः (पु० ब० व०) एक जाति का नाम, सम्भवतः पर्शिया देशवासी।

पा 1 (स्वा० पर० पिबति, पीत, कर्मवा० पीयते) 1 पीना, एक सांस में चढ़ा जाना पिब स्तन्य पोत —भामि० १।६०, दुःशासनस्य रुधिर न पिबाम्युरस्त —वेणी० १।१५, रघु० ३।५४, कु० ३।३६, भट्टि० १४।९२, १५।६ 2 चूमना पिबत्यमी पायधते च लिम्ब —रघु० १३।९, श० १।२४ 3 चिंतन करना (आंख और कान से पीना), उत्सव मनाना, ध्यान पूर्वक सुनना—निवातपद्मस्तिमितेन चक्षुषा नृपस्य कांत .पबत सुताननम् रघु० ३।१७, २।१९,७३, ११।३६, १३।३०, मेघ० १६, कु० ७।६४ 5 अवशोषण करना, पी जाना (बाण) आयुर्देहातिमं पीत रुधिर तु पतत्रिभि —रघु० १२।४८, प्रेर०—पायति —ते, 1 पिलाना, पीने के लिए देना,—रघु० १३।९ भट्टि० ८।४१, ६२ 2 सीचना,—इच्छा० पिपासति, पीने की इच्छा करना—हलाहल खलु पिपासति कौतुकेन—भामि० १।९५ अनु —, बाद में पीना, अनुसरण करना—अनुपास्यसि बाष्पदूषित परलोकनत जलांजलिम्—रघु० ८।६८, आ—, 1 पीना—रघु० १४। २२ 2 पी जाना, अवलोकन करना, चूस लेना —आपीतसूर्य नभ - मृच्छ० ५।२० उपेति सविता ह्यस्त रसमापीय पार्थिवम्—महा०, 3 (आँख, कान से) पीने का उत्सव मनाना,—ता राघव दृष्टिभिरापिबत्य रघु० ७।१२, नि—, 1 पीना, चूमना—अतएव निपीतोऽधर—पच० १।१८९, दत्तच्छद प्रियतमेन निपीतसारम्—मनु० ४।१३ 2 (आँख या कान से) पीना, सौन्दर्यावलोकन करना, धरि—,आत्मसात् करना—उपनिषद परिपीता - भामि० २।४०, प (अदा० पर०—पाति, पात) 1. रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, बचाना, सवारक्षण करना —(प्राय अपा० के साथ) पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुम्

—रघु० १०।२५, पालु त्वं""भूतेशस्य भुजंगभूषलिलकलशस्कन्ध—भट्टाजटा—मा० १।२, कौचम् धुर. क्षत्रबन्धुपल्लवेभ्य. प्रजा. प्रजानाय मितेव प्रासि—रघु० २।४८ 2. हुकूमत करना, शासन करना—पालु पृथ्वीम् भूपा —भट्ट० १०।६०, प्रेर०—पालयति —ते 1. रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, सधारण करना—कथ दुष्टः स्वय धर्मे प्रजास्व पालयिष्यसि—भट्टि० ६।१३२, मनु० ९।१०८ रघु० ९।२ 2 हुकूमत करना, शासन करना—तां पुरीं पालयामास—रामा० 3 पालन करना, स्थिर रखना, अनुपालन करना, पूरा करना (प्रतिज्ञा, व्रत आदि), पालितसमयाय—रघु० १३।६५ 4. पालन पोषण करना, सवर्धन करना, स्थापित रखना 5 प्रतीक्षा करना—अत्रोपविश्य मुहूर्तमार्य. पालयतु कुण्डाममनम् —वेणी० 1 अनु—1 बचाना, सधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना मनु० ८।२७, परि—, 1. बचाना, सधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना—याज्ञ० १।३३४ मनु० ९।२५१ 2 हुकूमत करना, शासन करना,—मा० १०।२५ 3. पालन-पोषण करना, सवर्धन करना, सहारा देना 4 स्थिर रखना, पालन करना, जमे रहना, धैर्य रखना—अगीकृत सुकृतान परिपालयति—कौर० ५० 5. प्रतीक्षा करना, इतजार करना—अथ मदनबधूपल्लवित व्यसनकृशा परिपालयाबभूव—कु० ४।४६, प्रति—, 1 बचाना, सधारण करना 2 प्रतीक्षा करना, इतजार करना, 3 अमल करना, आज्ञा मानना।

पा (वि०) (समास के अन्त में) [पा+विच्] 1 पीने वाला, चढा जाने वाला—जैसा कि सोमपा., अन्यथा में 2 बचाने वाला, देखभाल करने वाला, स्थिर रखने वाला—गोपा।

पाक (वा) न (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) [प्राय समास के अन्त में] [पक् (भ्वा०)+घञ्, पुको० दीर्घ] कलकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित करने वाला—पौलस्त्यकुलपांसन—महावी० ५ 2. विकृत करने वाला, भ्रष्ट करने वाला 3 दुष्ट, तिरस्करणीय 4 अधनाम, कुख्यात।

पांसुल (वा) न (वि०) [पांसु (धू)+अच्] धूल से भरा हुआ।

पांसुः (धुः) [पद् (धू)+कु, दीर्घ] 1 धूल, गर्द, चूरा (जीर्ण होकर गिरने वाला)—रघु० २।२, ऋतु० १।१३, याज्ञ० १।१५० 2. धूलकण 3 गोबर, खाद 4 एक प्रकार का नमक। सम०—कारीषम् करीष, —कुली प्रशस्त पथ, राजमार्ग,—कूलम् 1. धूल का ढेर 2. ऐसा कानूनी दस्तावेज जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम न हो, निक्षेपव्यवसायन,—कूल (वि०) धूल से भरा हुआ,—खारम्,—खम् एक प्रकार का नमक,—खचरम् ओला,—खेलः शिव का विशेषण, —गारः 1 धूल का ढेर 2 तम् 3 धूम से ढका नदीतट 4. प्रशस्त,—जालिकः विष्णु का विशेषण, —पटलम् धूल की परत या तह,—बर्हिः पेड़ की जड़ों के पास चारों ओर से खोद कर पानी सींचने का स्थान, आलबाल, थांवला।

पांसुल (धू) रः [पांसु (धू)+रा+क] 1 घास, गोमक्खी 2 विकलांग, लूला जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे।

पांसुल (धू) ल (वि०) [पांसु (धू)+लच्] 1. धूल से भरा हुआ धूलिधूसरित—मा० २।४ 2 अपवित्र, दूषित, कलुषित, कलकित—दारत्यागी प्रवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुल स० ५।२८ 3 दूषित करने वाला, कलकित करने वाला, अपमानित करने वाला —जैसा कि 'कुलपांसुल' में,—लः 1 दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी, लम्पट 2 शिव का विशेषण,—ला 1. रजस्वला स्त्री 2 असती या व्यभिचारिणी स्त्री, ला० सती स्त्री —रघु० २।२ 3 पृथ्वी।

पाकः [पच्+घञ्] 1 पकाना, प्रक्षालन, सेकना, उबालना 2. (ईंट आदि) आँच लगाना, सेकना—मनु० ५।१२२, याज्ञ० १।१८७ 3 (भोजन का) पचना 4. पका होना—ओषध्य फलपाकाता—मनु० १।४६ फलाभिमुखपाक राजजद्रुमस्य—विक्रम० ४।१३, मा० ९।३१ 5 परिपक्वता, पूर्ण विकास—धी०, मति० 6 सम्पूर्ति, निष्पन्नता, पूरा करना—युयोज्य पाकाभि मुखैर्मनोरथान् विज्ञापना फलै—रघु० १७।४० 7. नतीजा परिणाम, फल, परिकलन, (आल० भी) आशीर्भिरेवमाशासु पुर पाकाभिरविकाम्—कु० ६।९० पाकाभिमुखस्य दैवस्य—उत्तर० ७।४, १४ कृत कार्यों के फलों का विकास 9 अभाव, अन्न—पीवारपाकादि—रघु० ५।९ (पच्यते इति पाक. धान्यम्) 10 पकने की क्रिया, (फोडे आदि का) पकना, पीप पड़ना 11. बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद हो जाना 12 गार्हपत्याग्नि 13 उल्लू 14 बच्चा, शिशु 19. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०—आगारः, रस्—आगारः, —रस्—शाला,—स्थालम् रसोई,—अतीसारः पुरानी पेचिश,—अभिमुख (वि०) 1 पकने के लिए तैयार, विकासोन्मुख 2 कृपापरायण,—अम्ल 1 कांजी नमक 2. उदरवायु,—भाजनम् पकाने का बर्तन,—शाली कुम्हार का आवा,—शालः मृद्भाण्ड, (इसके भेदों के लिए दे० मनु० २।१४३ पर कुल्लू०) शुष्कका खड़िया—शासनः इन्द्र का विशेषण —कु० २।६३, —शासनिः 1. इन्द्र के पुत्र अर्जुन का विशेषण 2. वालि तथा 3 अर्जुन का विशेषण।

पाचकः [पाक+ला+क] 1. आग 2 हवा 3. हाथी का ज्वर —गु० कटयाकल ।

पाक्तिम (वि०) [पाकेन निर्वृत्तम्—पाक+इमप्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2 (प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ ।

पाकु, पाकुकः [पच्+उण्, क आदेश.] रसोइया ।

पाक्य (वि०) [पच्+ण्यत्, क आदेश] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लायक, परिपक्व होने के योग्य, —क्यः जवाखार शोरा ।

पाक्ष (वि०) (स्त्री०-क्षी) [पक्ष+अण्] 1 (कृष्ण या शुक्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पाक्षिक 2. किसी दल या पार्टी से संबद्ध ।

पाक्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [पक्ष+ठक्] 1. पक्ष से संबद्ध, अर्धमासिक 2. पक्षी से संबद्ध 3. किसी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला 4. तर्क विषयक 5 ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो—नियम पाक्षिके सति,—क बहेलिया, चिड़ीमार ।

पाखंड [पाखण्डीति—पा+क्विप्, पा अपीधर्म, त खण्ड-यति · पा +खण्ड्+अच्] विधर्मी, नास्तिक—पाखण्ड-वज्जालयो, पाषारभकदोर्मूलीव वृकयोर्भीरुगंता गोचरम् —मा० ५।२४, दुरात्मन् पाखंड चंडाल—मा० ५ ।

पाखल (वि०) [पाक्षलम्, तस्मात् गलति विच्युतो भवति -पा +गल्+अच्] विक्षिप्त, जिसका दिमाग खराब हो ।

पाक्तेय, पाक्त्य (वि०) [पंक्ति +ढक्, यत् वा] 1 भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य 2 साहचर्य के उपयुक्त ।

पाचक (वि०) [पच्+ण्वुल्] 1 पकाना, सेकना 2 पचाने वाला, पौष्टिक क: 1 रसोइया 2 आग, कम् घिन । सम० स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री ।

पाचन (वि०) (स्त्री०-नी) [पच्+णिच्+ल्युट्] 1 पकाने वाला 2 पकने वाला 3 पचाने वाला, हाजिम, न 1. आग 2. खटास, अम्लता, कम् 1 पकाने की क्रिया 2 पकने की क्रिया 3 घुलन-शील, भोजन पचाने वाली औषधि 4 घाव भरना 5 तपस्या, प्रायश्चित्त ।

पाचय [पच्+णिच्+कलच्] 1 रसोइया 2. आग 3 हवा, कम् पकाना, परिपक्व करना ।

पाचा [पच्+णिच्+अङ्+टाप्] पकाना ।

पाचकपाल (वि०) (स्त्री०-ली) [पचकपाल+अण्] पाँच कपालों में भर कर दी गई आहुति से संबंध रखने वाला ।

पाञ्चजन्य [पञ्चजन+ष्यञ्] कृष्ण के शंख का नाम—(इत्यादौ) निधानमथूयत पाञ्चजन्य शि ३।२१, भग० १।१५ । सम०—धर कृष्ण का विशेषण ।

पाञ्चदश (वि०) (स्त्री०-शी) [पञ्चदशी+अण्] मास की पन्द्रहवीं तिथि से संबंध रखने वाला ।

पाञ्चदश्यम् [पञ्चदशन्+ष्यञ्] पन्द्रह का समुच्चय ।

पाञ्चनद (वि०) [पञ्चनद+अण्] पञ्चनद या पंजाब में प्रचलित ।

पाञ्चभौतिक (वि०) (स्त्री-की) [पञ्चभूत+ठक्, द्विपद-वृद्धि] पाँच तत्त्वों के समूह से बना हुआ, या पाँच तत्त्वों वाला, पाँच भौतिकी सृष्टि - महावी० ६, भाग० ३।१७५ ।

पाञ्चवर्षिक (वि०) [पञ्चवर्ष+ठक्] पाँच वर्ष का ।

पाञ्चशब्दिकम् [पञ्चशब्द+ठक्] 1 पाँच प्रकार का संगीत 2 गायन संबंधी वाद्ययंत्र ।

पाञ्चाल (वि०) (स्त्री०-ली) [पञ्चाल+अण्] पञ्चाल से संबद्ध या पञ्चालों के शासक, लः 1 पञ्चालों का देश 2 पञ्चाल का राजकुमार, लाः (पु०ब०) पञ्चाल देश के लोग ।

पाञ्चालिका [पाञ्चाली+कप्+टाप्, ह्रस्व] गुड़िया, पुतली-स्तन्य त्यागात्प्रभृति सुतुली दत्त पाञ्चालिकेव क्रीडा-योग तदनु विनय प्रापिता वधिना च मा० १०।५ ।

पाञ्चाली [पाञ्चाल+अण्+ङीप्] 1 पञ्चाल देश की राज कुमारी या स्त्री 2. पाण्डवों की पत्नी, द्रौपदी 3. गुड़िया, पुतली 4 (अलं०) रचना की चार शैलियों में से एक सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—वर्ण भेदै (अर्थात् साधुकुपचकौज प्रकाशकाभ्या भिन्नै) पुनर्द्वयो, समस्त पंचपादी बध पाञ्चालिकी मत ६२८ ।

पाट् (अव्य०) [पट्+णिच्+विवप्] एक अव्यय जो बुलाने के लिए—अर्थात् संबोधन के रूप में प्रयुक्त हो जाता है ।

पाटक [पट्+णिच्+ण्वुल्] 1 विदारक, विभाजक 2 गाँव का एक भाग 3 गाँव का आधा हिस्सा 4 एक प्रकार का संगीत-उपकरण 5 तट, किनारा 6 घाट की चौड़ियाँ 7 मूलधन या पूंजी की हानि 8 बिना या कॉलिटन 9 पास फेंकना ।

पाटच्चर [पाटयन् छिन्दन् चरति चर+अच्, पृषो०] चोर, लुटेरा, पाड लगाने वाला, कुमुमरसपाटच्चर —शं० ६, पद्मिनीपरिमलालिपाटच्चरै —भामि० २।७५ ।

पाटनम् [पट्+णिच्+ल्युट्] विदीर्ण करना, तोड़ना, फाड़ना, नष्ट करना ।

पाटल (वि०) [पट्+णिच्+कलच्] पीतरक्त वर्ण, गुलाबी रंग, अंशे स्त्री लक्षपाटलम् कुरबकम्—विक्रम्०

२।७, पाटलपालिजा कितपुर —गीत० १२, ब: पीतरक्त, प्याजी या गुलाबी रंग —कषोलपाटलादेशि बभूव रघुवेष्टितम् रघु० ४।६८ 2 पाटल का फूल पाटल संसर्ग सुरभिवनवाता —ऋ० १।३, -कम् 1 पाटल वृक्ष का फूल रघु० १६।५२, १९।४६ 2 एक प्रकार का चावल जो बरसात में तैयार होता है 3 केसर, जाफरान । सम० —गन्धक लाल,- द्रुम: पाटल वृक्ष ।

पाटलक: [पाटल+अच्+टाप्] 1 लाल लोध्र 2. पाटल का वृक्ष तथा उसका फूल 3 दुर्गा का विशेषण ।

पाटलि: (स्त्री०) [पाटल+इन्] पाटल का फूल । सम० -पुत्रम् एक प्राचीन नगर, मगध की राजधानी, जो शोण और गंगा के संगम पर स्थित है, जिसे कुछ लोग वर्तमान 'पटना' मानते हैं, इसको 'पुष्पपुर' या 'कुसुमपुर' भी कहते हैं दे० मुद्रा० २।३, ४।१६, रघु० ६।२९ ।

पाटलिक [पाटलि+कन्] छात्र, विद्यार्थी ।

पाटलिमन् (पु०) [पाटल+इमनिच्] पीतरक्त वर्ण ।

पाटलिका [पाटल+यत्+टाप्] पाटल के फूलों का गुच्छा ।

पाटव्म् [पटु+अण्] 1 तीक्ष्णता, पैनापन 2 चतुराई, कौशल, दक्षता, प्रवीणता —पाटवं संस्कृतीक्तिषु हि० १, कि० ९।५९ 3 ऊर्जा 4 फुर्ती, उतावलापना ।

पाटविक (वि०) (स्त्री०—की) [पाटव+ठन्] 1 चतुर तीक्ष्ण, कुशल 2 धूर्त, चालबाज, मक्कार ।

पाटित (भू० क० कृ०) [पट्+णिच्+क्त] 1 फाड़ा हुआ चीरा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, तोड़ा हुआ 2 विद्ध, छिदित रघु० ११।३१ ।

पाटी [पट्+णिच्+इन्+ङीप्] अंकगणित । सम० गणितम् अंकगणित ।

पाटीर [पटीर+अण्] 1 चन्दन —पाटीर तव पटीयान् क परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् भामि० १।१२ 2 खेत 3 रोंगा 4 बादल 5 चलनी ।

पाठ: [पठ्+घञ्] 1 प्रपठन, सस्वर पाठ, आवृत्ति करना 2 पढ़ना, वाचन, अध्ययन 3 वेदाध्ययन, वेद-पाठ, ब्रह्मयज्ञ, ब्राह्मणों के द्वारा पाँच दैनिक यज्ञों में से एक 4 पुस्तक का मूलपाठ, स्वाध्याय, पाठभेद --अत्र गच्छवद्गच्छमावत इति आगतुक पाठ, प्राचीनपा-पाठस्तु मुनाधिर्गच्छमावत इति पुल्लिंगान्त मल्लि० कु० ६।७ पर । सम० -अन्तरम् दूसरा पाठ, पाठभेद, -छेद: विराम, यति,—दोष दूषित पाठ, पाठ की अशुद्धियाँ, निश्चय. किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करना, -शाला विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामंदिर।

पाठक [पठ्+णिच्+ण्वुल्] 1 अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु 2 पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक पाठ करने वाला 3 आध्यात्मिक गुरु 4 छात्र, विद्यार्थी, विद्वान् ।

पाठनम् [पठ्+णिच्+ल्युट्] अध्यापन, व्याख्यान देना ।

पाठित (भू० क० कृ०) [पठ्+णिच् + क्त] पढ़ाया हुआ, शिक्षा दिया हुआ ।

पाठिन् (वि०) [पठ्+णिनि, पाठ+इनि वा] 1. जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो 2 जान-कार, परिचित ।

पाठीन [पठ्+ईनन्] 1 पुराना या अन्य धार्मिक ग्रंथों की कथा करने वाला 2. एक प्रकार की मछली —विकृत पाठीन परिहृत पय. कि० ४।५ ।

पाण: [पण्+घञ्] 1. व्यापार, व्यवसाय 2 व्यापारी 3. खेल 4. खेल पर लगा या गया दाँव 5. करार, 6 प्रशंसा 7. हाथ ।

पाणि: [पण्+इन्] हाथ—दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन (विभाति)—भर्तृ० २।७१,—णि (स्त्री०) मही (पाणौ कृ हाथ में थामना, विवाह करना,—ग्राही-करणम् विवाह) । सम० -गृहीती, हाथ से ग्रहण की गई, ब्याही गई, पत्नी,—ग्रह:,—ग्रहणम् विवाह करना, शादी, रघु० ७।२९, ८।७, कु० ७।४,—ग्रहीतृ (पु०) —ग्राह: दूल्हा, पति—व्यावर्त्यनिष्ट यस्किंचित् पाणिग्राहस्य चेतसा —मनु० ९।२१, बाल्ये पितुर्वशे-तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने—५।१४८,—घ्न: 1 ढोल बजाने वाला 2. कारीगर, शिल्पकार,—घात: हाथ का प्रहार, घंसा, घ्न: नाखून—तस्मा पाटलपाणि-जाङ्कुनमर —गीत० १२,—तलम् हथेली,—धर्म: विवाह की विधि,—पीडनम् विवाह,—पाणिपीडनसह समयन्त्या कामयेऽहि महीमिहिकाशो—नै० ५।९९ पाणिपीडनविधेरनन्तरम् कु० ८।१, अग्रणिनी पत्नी बंध: 'हाथों का मिलना' विवाह,- भुज् (पु०) वृक्ष का वृक्ष, गूलर का वृक्ष,—मुक्तम् हाथ के फेंक कर मारा जाने वाला आयुध, अस्त्र, यह (पु०), यह: अंगुली का नाखून,—वाद: 1. ताली बजाना 2 ढोल बजाना, सूत्रं रस्सी ।

पाणिनि (पु०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम, यह अन्त्य स्फोट मुनि समझे जाते हैं, कहते हैं कि व्याकरण का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था। 'अष्टा-ध्यायी' नाम का व्याकरण इन्होंने ही रचा ।

पाणिनीय (वि०) [पाणिनि+छ] पाणिनि से संबंध रखने वाला, या उसके द्वारा बनाया गया --शि० १९।७५, ब: पाणिनि का अनुयायी -अकृतव्मूहा पाणिनीया, अर्थ पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण ।

पाणिपत्र-य (वि०) [पाणि+पत्र (पे)+क्त, मुम्] हाथ से चाँटने वाला, हाथ से चूसने वाला, हाथ से पीने वाला ।

पांडर (वि०) [पाण्डर+अच्] 1 धवल, पीतधवल, सफ़ेद 2. मेरु 3. चमेली का फूल।

पांडव [पाण्डो अपत्यम् पाण्डु+अण्] पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पाण्डु के पाँचों पुत्रों में से कोई सा एक युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—हुआ सप्रति-पांडवा इव वनादज्ञातचर्यां गता—मृच्छ० ५।६। सम०—आयोनिः कृष्ण का नाम,—ज्येष्ठः युधिष्ठिर का नाम।

पांडवीय (वि०) [पांडव+छ] पाण्डवों से सबंध रखने वाला।

पांडवेय=पांडव।

पांडित्यम् [पण्डित+ष्यञ्] 1 विद्वत्ता, गहन अधिगम—विद्या तदेव परमं पाण्डित्यंवैदग्ध्यंयशो —मा० १।७ 2 चतुराई कुशलता, दक्षता, नीतिज्ञता नजाना पाण्डित्य प्रकटयतु कस्मिन् मयपति भामि० १।२।

पांडु वि०) [पण्ड्+कु, नि० दीर्घ] पीत-धवल, सफ़ेद सा, पीला पीताभविकलकरण पाण्डुच्छाय शुचा परिदुर्बल —उत्तर० ३।२२,- पुं० 1 पीत-धवल, या पीताभ श्वेत रंग 2 पीलिया, यरकान 3 सफ़ेद हाथी 4 पाण्डवों के पिता का नाम [विचित्रवीर्य की विधवा अंबिका से व्यास के द्वारा पाण्डु का जन्म हुआ था। पांडु रंग का पैदा होने के कारण उसका नाम पाण्डु पड़ा, क्योंकि व्यास के साथ सहवास के अवसर पर उसकी माता पाण्डु रंग की हो गई थी—(यस्मात्पाण्डु-रयमापन्ना विरूप प्रेक्ष्य मामिह, तस्मादेष सुतस्ते वै पाण्डुरेव भविष्यति - महा०,)—किसी शाप के कारण पाण्डु को स्वयं सन्तानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था। इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्वासाऋषि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करके सन्तान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया। एक दिन पाण्डु अपने शाप को भूलकर जिसके कारण वह सावधान था, उसने माद्री का आलिंगन करने का दुस्साहस किया, परन्तु वह उसके भुजपाश में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया]। सम०—आलयः पीलिया यरकान, -कंबलः 1 सफ़ेद कंबल 2 गरम चादर 3 राजकीय हाथी की झूल—पुत्रः पाण्डु का पुत्र, पाँचों में से कोई एक,—मृत्तिका, सफ़ेद या पीली मिट्टी, —रागः सफ़ेदी, पीलापन,—लेखः खड़िया से बनाई रूपरेखा, भूमि या किसी फलक पर खड़िया से बनाई गई कोई रूपरेखा —पाण्डुलेखेन फलके भूमौ वा प्रथम लिखेत्, न्यूनाधिकं तु संशोध्य पश्चात्पत्रं निवेशयेत् - व्यास०,—सुतिका द्रौपदी का विशेषण —सोपाकः एक वर्ण संकर जाति—चांडालात्पाण्डु-सोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान्—मनु० १०।३७।

पांडुर (वि०) [पाण्डुवर्णोऽस्त्यस्मिन् पाण्डु+र] सफ़ेद सा, पीत-धवल, पीताभ-श्वेत, पीला—क्षौमं पाण्डुरा —अ० ३।१०, रघु० १४।२६, कु० ३।३३,- रम् श्वेत कुष्ठ। सम० इक्षुः एक प्रकार की ईख, पौण्ड्र।

पांडुरित्यम् (पुं०) [पाण्डुर+इमनिच्] पीलापन, सफ़ेदी या पीला रंग।

पांड्य (पुं०, ब० व०) [पाण्डु देश, अभिजनोऽस्य राजा वा—पाण्डु+ष्यञ्] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम—तस्यामेव रथो पाण्ड्या प्रतापं न विदेहिरे—रघु० ४।४९, —ब्य उस देश का राजा रघु० ६।६०।

पात (वि०) [पा+क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, मध्यग्नि—तः [पत्+घञ्] 1. उड़ना, उड़ान 2 उतरना, अवतरण करना, उतार 3 नीचे गिरना, पतन, पराजय (आल० भी) द्रुम०, गुरु०, चरणपात पैरों में गिरना—रघु० ११।९२, पातोत्पातौ उदय और अस्त 4 नाश, विघटन, बर्बादी—कु० ३।४४ 5 आघात प्रहार जैसा कि 'वज्रपात' में 6 बहना, छूटना, निकलना—अस्रकपाले मनु० ८।४४ 7 डालना फेंकना, निशाना बनाना—दृष्टि० रघु० १३।१८, 8 आक्रमण, हमला 9 घटना, होना, घटित होना 10 दोष, त्रुटि 11 राहु का विशेषण।

पातक, —कम् [पत्+णिच्+ण्वुल्] पाप, जुर्म (हिन्दु-धर्मशास्त्र में पाँच महापातक गिनाये गये हैं—ब्रह्महत्या सुरापान स्तेय गुर्वंगनागम, महान्ति पातकान्याहु समंतैश्चापि तैस्सह—मनु० ११।५४।

पातकिन् [पातक+इनि] 1 शनि 2 यम 3 कर्ण और सुग्रीव का विशेषण।

पातञ्जल (वि०) (स्त्री० ली) [पतञ्जलि+अण्] पतञ्जलि द्वारा रचित,—पातञ्जले महाभाष्ये कृतभूरि परिश्रम —परिभाषेन्दुशेखर,- लम् पतञ्जलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन, (ऐसा विश्वास किया जाता है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परंतु यह विचार संदेह से परे नहीं है)।

पातनम् [पत्+णिच्+ल्युट्] 1 गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना 2 फेंकना, डालना 3 हीन करना, नीचा दिखाना। (विशे०—उन संज्ञा शब्दों के अनुसार जिनके साथ 'पातन' शब्द प्रयुक्त होता है, 'पातन' के भिन्न२ अर्थ हैं—उदा० दंडस्य पातनम्—'डंडा गिराना' दण्ड देना, गर्भस्य पातनम्—गर्भ का गिराना, गर्भपात कराना)।

पातालम् [पतत्यस्मिन्नलंकर्मेण - पत्+आलञ्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से अन्तिम लोक—नागलोक,

यह सात लोक ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल 2. निम्नप्रदेश, या नीचे का लोक—रघु० १५।८४, १।८० 3. गड्ढा, छिद्र 4. बड़वानल। सम० —गंगा नीचे के लोक में बहने वाली गंगा,—ओकस् (पु०)—निलयः, —निवासः —वासिन् (पु०) 1 राक्षस 2 नाग या सर्पदैत्य।

पातालिकः [पाताल+ठन्] गंगा में रहने वाला सूँस, शिशु मार।

पातित (भू० क० कृ०) [पत्+णिच्+क्त] 1. डाल गया, फेंका गया नीचे गिराया गया, पटक दिया गया 2. परास्त किया गया, नीचा दिखाया गया 3 नीचा किया गया।

पातित्यम् [पतित+ष्यञ्] पद या जाति का पतन, पदच्युति, जातिभ्रंशता।

पातिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [पत्=णिनि] 1. जाने वाला, अवतरण करनेवाला, उतरने वाला 2 पतनशील, डूबनेवाला 3 पड़ने वाला 4. गिरने वाला, फेंकने वाला 5 उड़ेलने वाला, छोड़ने वाला, निकालने वाला।

पातिली [पाति संपाति पक्षियूथं लीयतेऽत्र—पानि+ली +ड+ङीष्] 1 जाल, फंदा 2 छोटा मिट्टी का बर्तन, हाँडी।

पातुक (वि०) (स्त्री० --की) [पत्+उकञ्] 1 पतनशील, 2. गिरने की आदत वाला,—कः पहाड़ का ढलान, चट्टान 2 शिशुमार, सूँस।

पात्रम् [पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा—पा+ष्ट्रन्] 1 पीने का बर्तन, प्याला, गिलास 2. कोई भी बर्तन —पात्रे निक्षाप्यंम् —रघु० ५।२, १२ 3. किसी वस्तु का आधार, प्राप्तकर्ता —पद्य० २।९७ 4 जलाशय 5 योग्य व्यक्ति, दान पाने के योग्य, दानपात्र —वित्तस्य पात्रे व्यय —भर्तृ० २।८२, भग० १७।२२, याज्ञ० १।२०१, रघु० ११।८६ 6 अभिनेता, नाटक का पात्र—तत्प्रतिपात्रमाधीयता यत्न —श० १, उच्यता पात्रवर्ग —विक्रम० १, नाटक का पात्र 7. राजा का मंत्री 8 नहर या नदी का पाट 9 योग्यता, औचित्य 10. आदेश, हुक्म। सम०—उपकरणम् घटिया प्रकार की सजावट—धावः 1. चप्पू, डाड 2 तराजू की डंडी—संस्कार 1 बर्तनों को माज धोकर साफ करना 2. नदी का प्रवाह।

पात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [पात्र+ठन्] 1. किसी बर्तन की नाप, आढक 2. योग्य, यथोचित, समुचित, —कम् बर्तन, प्याला, तश्तरी।

पात्रिय, पात्र्य (वि०) [पात्रमर्हति—पात्र+घ, यत् वा] भोजन में भाग लेने के योग्य।

पात्रीयम् [पात्र+छ] यज्ञीय पात्र --स्रुवा आदि।

पात्रीवट,-वत् [पात्रीं राति-पात्री+रा+क] आहुति के बाद बचा हुआ, पात्रेसमितः [पात्रे भोजनसमये एव बहुलः समतो वा न तु कार्ये—अलुक् समास] 1 केवल भोजन का साथी, परान्नभोजी 2 मोसेबाज, कपटी पालण्डी।

पाथः [पीयतेऽत्, पा+थ] 1. अग्नि 2. सूर्य—थस् जल।

पाथस् (नपु०) [पा+असुन्, थुक् च] 1 जल, गंगा० २६ 2. हवा, वायु 3 आहार। सम० —ज 1. कमल 2 अन्न, दः, धरः बादल, निः, -निधिः, --पतिः समुद्र, नै० १३।२०।

पाथेयम् [पथिन्+ढक्] भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिए साथ ले जाता है, मार्गव्यय अवाह पाथेयमिवेन्द्रसूनुः —कि० ३।३७, विसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः —मेघ० ११, विक्रम० ४।१५ 2 कन्याराशि।

पादः [पद्+घञ्] 1. पैर (चाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का) तयोर्जगृहतुः पादान् -रघु० १।५७, पादयोर्निपत्य, पादपतित (समास के अन्त में 'पाद' को बदल कर 'पाद्' हो जाता है, यदि इससे पूर्व 'मु' हो या संख्यावाचक शब्द, उदा० सुपाद्, द्विपाद् त्रिपाद् आदि, जिस समय पूर्वपद तुलना-मान के रूप में प्रयुक्त किया जाय, उस समय भी 'पाद्' हो जाता है यदि पूर्वपद 'हस्ति' से भिन्न हो --दे० पा० ५।४।१३८-४०, उदा० व्याघ्रपाद्, अतिशय आदर तथा सम्मान व्यक्त करने के लिए, कर्तृ० का बहुवचनान्त रूप व्यक्तियों की उपाधियों या नामों के साथ जोड़ दिया जाता है मृष्यतु लवस्य बालिशता तातपादा —उत्तर० ६, १।२९ देवपादानां नास्माभि प्रयोजनम् -पञ्च० १, इसी प्रकार -एवमाज्ञापयति -प्रबो० १, एव—कुमारिपादा —आदि 2 प्रकाश की किरण -बालस्यापि न पादा पतन्त्युपरि भूभृताम् पञ्च० १।३२८, शि० ९।३४, रघु० १६।५३, (यहां शब्द का अर्थ 'पैर' भी है) 3. पैर या पाया (जड़ पदार्थों का, खाट आदि का) 4 वृक्ष की जड़ या पैर जैसा कि 'पादप' में 5 गिरिपाद, तलहटी (पादा प्रत्यंतपर्वताः) मेघ० १९, श० ६।१६ 6. चौथाई, चौथाभाग, जैसा कि 'सपादो रूपकः' में (सवा रुपया) —मनु० ८।२४१, याज्ञ० २।१७४ 7 श्लोक का एक चरण, पंक्ति 8 किसी पुस्तक के अध्याय का चौथा भाग जैसा कि ब्रह्मसूत्र का या पाणिनि की अष्टाध्यायी का 9 भाग 10 स्तम्भ, खंभा। सम०—अग्रम् पैर का आगे का भाग—रत्न० १।१, -अंकः पदचिह्न,—अंगदम्, —दी पैर का आभूषण, नूपुर, पायल,—अंगुष्ठः पैर का अंगूठा,—अंतः पैरों का अन्तिम भाग,—अंतरम् एक पग के बीच का अन्तराल, एक पग की दूरी

(अव्य०–रे) 1. एक पद की दूरी के बाद 2. निकट, सटा हुआ,– अम्बु (नपु०) खाल जिसमें एक चौथाई पानी हो,–अंभस् (नपु०) जल जिसमें अद्देय व्यक्तियों के चरण धोये हों,–अरविन्दम्,– कमलम्,–पंकजम्, –पद्मम् कमल जैसा पैर, कमलचरण, अत्तिवो किश्ती, नाव,– अवसेचनम् 1 चरण धोना 2 पैर धोने के लिए पानी,– आघातः ठोकर,–आनत (वि०) मुकापी, पैरों में पड़ा हुआ–कु० ३।८,–आवर्त कुएँ से जल निकालने के लिए पैरों से चलाया जाने वाला चक्र, रहट,–आसनम् पैर रखने का पीढ़ा, –आस्फालनम् पैरों से रौंदना, कुचलना, रुक २ कर आगे बढ़ने की चेष्टा, आहत (वि०) ठोकर खाया हुआ, ठुकराया हुआ,– उदकम्– जलम् 1 पैर धोने के लिए पानी 2 वह पानी जिससे पुण्यात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तियों ने पैर धोये हैं और इसीलिए जो पवित्र समझा जाता है,– उरग सांप,–कटक, –कम्,–कोलिका नूपुर, पायल, क्षेपः कदम, पग –क्षिप्तिः टलना,–ग्रहणम् (आदरयुक्त अभिवादन के रूप में) पैर पकड़ना, कु० ७।२७,– चत्वर 1 मिथ्याभिनिवेश 2 बकरा 3 रेतीला तट 4 ओला, चारः पैदल चलना, टहलना–यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी–मेघ० ६०, 'यदि गौरी पैदल चले' रघु० ११।१० – चारिन् (वि०) पैदल चलने वाला, पैदल योद्धा, (पु०) 1 फेरी वाला 2 पैदल सैनिक,– जः शूद्र,– जाहम् पपोटा, टखने की हड्डी,–तलम् पैर का तलवा,– त्रः,– त्रा,– त्राणम् जूता, बूट,–प. वृक्ष– निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते -हि० १।६९, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्– श० ५।५, 'जड़', – त्रम् बाग, वृक्षों का झुरमुट,–पाशिका नूपुर, पाजेब,–पाशः फंदा, पशुओं के पैरों को बाँधने की रस्सी (स्त्री) 1 हथकड़ी 2 चटाई 3 लता–पीठ,–पम् पैर रखने का पीढ़ा, –रघु० १७।२८, कु० ३।११, पूरणम् 1 पंक्ति पूरी करना 2 पादपूरक -तु पादपूरणे भेदे समुच्चये-अवधारणे -विश्व०,– प्रक्षालनम् पैर धोना,–प्रतिष्ठानम् पैर रखने का पीढ़ा, –प्रहारः ठोकर,– बन्धनम् बेड़ी –मुद्रा पदचिह्न,–मूलम् 1 पपोटा 2 पैर का तलवा 3 एड़ी 4 पहाड़ की तलहटी 5. किसी से बात करने की विनम्र रीति - देवपादमूलमागताहम्–का० ८, –रजस् (नपु०) पैरों की धूल,– रज्जुः (स्त्री०) हाथी के पैर बाँधने की चमड़े की रस्सी,– रक्षी जूता, बूट,–रोहः,–रोहकः बड़ का पेड़,–वन्दनम् चरणवन्दना, चरणों में प्रणाम,– विरजस् (नपु०) जूता, बूटा (पु०) देवता,–शाखा पैर की अंगुली,–शैलः गिरिपाद, पहाड़ की तलहटी में विद्यमान पहाड़ी, –शोधः पैर की सूजन,– शौचम् पैर धोकर साफ करना, पैर धोना,–सेवनम्, -सेवा 1 पैर छूकर सम्मान प्रदर्शित करना 2 सेवा,– स्फोटः 'बवाई फटना' विपादिका, सर्दी से पैर फटना,–हत (वि०) ठुकराया हुआ।

पादविक [पदवी+ठक्] यात्री, पथिक।

पादातः (पु०) [पादाभ्यामतति-पाद+अत+क्विप्] पैदल सिपाही, प्यादा।

पादातम् [पदातीनां समूहः - पदाति+अण्] पैदल-सिपाही - शि० १८।४,– सम् पैदल-सेना।

पादातिः, पादातिकः [पाद+अत्+इन्, पादेन अत्यति गच्छति-पादाव+ठक्] पैदल सिपाही।

पादिक (वि०) (स्त्री०–की) [पाद+ठक्] चतुर्थांश, चौथा भाग—पादिक शतम्– २५ प्रतिशत।

पादिन् (वि०) [पाद+इनि] 1 सपाद, पैरों वाला 2 श्लोक की भाँति चार चरणों से युक्त 4 चौथे भाग को लेने वाला, या चतुर्थांश का अधिकारी।

पादिल (पु०) चौथा भाग, चतुर्थांश।

पादुक (वि०) (स्त्री०–का– की) [पद्+उकञ्] पैदल चलने वाला,–का खड़ाऊँ, जूता–वज्र भरत गृहीत्वा पादुके तव मदीये भट्टि० ३।५६,–रघु० १२।१७। सम०–कार मोची, जूता बनाने वाला।

पादुः (स्त्री०) [पद्+ऊ, णित] जूता,–कृत् (पु०) जूता बनाने वाला।

पाद्य (वि०) [पाद+यत्] पैरों से सम्बन्ध रखने वाला, –द्यम् पैर धोने के लिए जल–पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

पानम् [पा+ल्युट्] 1 पीना, चढ़ा जाना, (ओष्ठ का) चुम्बन, पय पान देहि मुखकमलमधुपानम्–गीत० १० 2 सुरापान करना–मनु० ७।५०, ९।१३, १२। ४५ 3 पान के योग्य, पेय पदार्थ–मनु० ३।२२७ 4. पान-पात्र 5 तेज करना, पैनाना 6 बजाना, रखा, –कः शराब खींचने वाला, कलवार। सम०– अगारः –आगारः,–गृहम् मदिरालय,– अत्ययः अत्यधिक पीना, – गोष्ठिका,– गोष्ठी 1 शराबियों की मण्डली 2 शराब की दुकान, मदिरालय,–प (वि०) सुरापान करने वाला,– पात्रम्– भाजनम्,– भाण्डम् पान-पात्र, प्याला,– भू,–भूमिः– भूमी (स्त्री०) शराब पीने का स्थान –रघु० ७।४९, १९।११,–मण्डलम् शराबियों की मण्डली, – रत (वि०) सुरापान की लतवाला, वणिज् (पु०) शराब-विक्रेता,–विभ्रमः नशा, –शौंड पियक्कड़, अत्यधिक पीने वाला।

पानकम् [पान+कन्] पानीय, पेय, घूट।

पानिक [पान+ठक्] शराब-विक्रेता, कलाल।

पानिलम् [पान+इलच्] पान-पात्र, प्याला।

पानीयम् [पा+अनीयर्] 1 जल 2 पेय, घूंट, पानीय-पीने के योग्य शर्बत आदि। सम०—मण्डूकः ऊब-बिलाव,—शर्करा रेत, बालू,—शाला,—शालिका प्याऊ, जहां यात्रियों को पानी पिलाया जाय तु० प्रपा।

पान्थः [पन्थान लिख गच्छति -पथिन्+अण्, पंथादेश] यात्री, बटोही रे पान्थ विह्वलमना न मनागपि स्या. —भामि० १।३७।

पाप (वि०) [पाति रक्षति आत्मानम् अस्मात् पा+प] 1 अनिष्टकर, पापमय, दुष्ट, दुर्वृत्त पाप कर्म च यत् परैरपि कृत तत्तस्य सम्भाव्यते मूच्छ० १।३६, मृग० ६।९ 2 उपद्रवकारी, विनाशक, अभिशप्त - पापेन मुस्थूना गृहीतोऽस्मि मालवि० ४ 3 नीच, अधम, पतित मनु० ३।५२, ४।१७१ 4 अशुभ, प्रहेषी, अनिष्ट सूचक (पाप ग्रह आदि)—कम् बुराई, बुरी अवस्था, दुर्भाग्य—पाप पापा कथय कथ शौर्यराशेः पितुर्मे वेणी० ३।५, शान्तम् पापम् —'पाप से बचाये भगवान्' (प्राय नाटकों में प्रयुक्त) 2 बुराई, जुर्म, दुर्व्यसन, दोष अपापाना कुले जाते मयि पाप न विद्यते -मूच्छ० ९।३७, मनु० ११।२३१, ४।१८१, रघु० १२।१९,—प पापी, पापी, दुष्ट, दुराचारी। सम०—अधम (वि०) अत्यन्त दुष्ट, अधम, अपनुत्ति (स्त्री०) प्रायश्चित्त,- अह्न् दुर्भाग्यपूर्ण दिवस,—आचार (वि०) पापमय आचरण वाला, पापपूर्ण जीवन बिताने वाला, दुर्व्यसनी, दुष्ट, —आत्मन् दुष्टमना, पापपूर्ण, दुष्ट—(पु) पापी, —आशय,—चेतस् (वि०) दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट-हृदय, कर,—कारिन्,—कृत् (वि०) पापपूर्ण, पापी, अधम,—क्षयः पाप का दूर करना, पाप का नाश, —ग्रहः दुष्ट ग्रह, प्रहेषी (जैसे मंगल, शनि, राहु या केतु), घ्न (वि०) पाप को दूर करने वाला, प्रायश्चित कारी,—चक्षुस् 1 पापी, 2 राक्षस, दृष्टि (वि०) बुरी निगाह वाला, खोटी आंख वाला, धी (वि०) दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि,- नाशित- चालाक या दुष्ट नाई,—नाशन (वि०) पापनाशक या प्रायश्चितकारी, —पतिः जार, उपपति, पुरुषः दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य,- फल (वि०) अनिष्टकर, अशुभ,—बुद्धि —भाव—मति (वि०) दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र, —भाज् (वि०) पापपूर्ण, पापी—कु० ५।८३,- मुक्त (वि०) पाप से छूटा हुआ, पवित्र,—मोचनम्, विनाशनम् पाप का नाश, योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न (स्त्री—निः) नीच कुल में जन्म, —रोगः 1 कोई बुरा रोग 2 शीतला, चेचक,- शील (वि०) दुष्ट कार्यों में प्रवृत्त होने वाला, दुष्टप्रकृति, दुष्टहृदय,- संकल्प (वि०) दुष्टहृदय, दुरात्मा (ल्पः) दुष्ट विचार।

पापर्द्धिः [पापानामृद्धिर्यत्र—ब० स०] शिकार, आखेट।

पापल (वि०) [पाप+ला+क] पाप कमाने वाला, पाप कर।

पापिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पाप+इनि] पापपूर्ण दुष्ट, बुरा - (पु०) पाप करने वाला।

पापिष्ठ (वि०) [अतिशयेन पापी—पाप+इष्ठन्] अत्यन्त पापपूर्ण, अधम, दुष्टतम ('पाप' की अतिशयावस्था)।

पापीयस् (वि०) (स्त्री०- सी) [पाप+ईयसुन्, अयमनयो रतिशयेन पापी, तुलना-अवस्था] अपेक्षाकृत पापी अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर।

पाप्मन् (पु०) [पा+मनिन्, पुगागम] पाप, जुर्म, दुष्टता अपराध—मया गृहीतनामान स्पृशसे इव पाप्मना उत्तर० १।४८-७।२०, मा० ५।२६, मनु० ६।८५।

पामन् (पु०) [पा+मनिन्] एक प्रकार का चर्मरोग खुजली। सम०—घ्नः गधक।

पामल (वि०) [पामन्+ल, तलोप] खुजली रोग से ग्रस्त

पामर (वि०) (स्त्री०- री,—री) [पामन्+र] 1 खुजली रोग से ग्रस्त, मकरुह, खुजली वाला अनिष्टकर, दुष्ट 3 नीच, गंवार, अधम व मूर्ख, जड़ 5. निर्धन, असहाय - उ० ६।५, ६ मूढ, जडबुद्धि --बलवानति चेत्पामरा --भामि० १।६२ 2 दुष्ट या नीच पुरुष 3 अत्यन्त नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति।

पामा [पामन्+ङीप्निषेध, तलोप, टाप्] दे० ऊपर 'पामन्'। सम०- अरिः गधक।

पायना [पा+णिच्+युच्+टाप्] 1 पिलाना 2 सींचना तर करना 3 तेज करना, पैनाना।

पायस (वि०) (स्त्री० सी) [पयस+अण्] दूध या पानी से बना हुआ स, - सम् 1 खीर, दूध में उबले हुए चावल मनु० ३।२७१, ५।७, याज्ञ० १।१७३ 2 तारपीन,—सम् दूध।

पायिकः (पु) पैदल सिपाही।

पायुः [पा+उण्, युक] गुदा, मलद्वार —पायूपस्थम् मनु० २।९०, ९१, याज्ञ० ३।९२।

पार्श्वम् [मा+ष्यत्, नि० पत्वम्, युगागमः] 1. जल 2 पेय पदार्थ 3 प्रस्रवण 4 परिमाण।

पारः-रम् [पर तीर परमेव अण्, पृ+घञ् वा] 1 या नदी का परला - सामने वाला दूसरा किनारा —पार दु खोदधेर्गन्तु तर यावन्त मिच्छति —शा० ३।१ विरहजलधे पारमासादयिष्ये पद्मा० १३, हि० १। २०४ 2. किसी भी वस्तु का विरोधी पक्ष —कु० २।५८ 3. किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम सीमा—वेणी० ३।३५ 4 किसी वस्तु का अधिकतम परिमाण, समष्टि—स पूर्वजन्मान्तरदुष्टपारा स्मरन्निव —रघु० १८।५०, (पारं अज्,- इ,--या 1 पार जाना, ऊपर चढ़ना 2 निष्पन्न करना, पूरा करना

जैसा कि 'प्रतिज्ञायाः पार गत', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना --सकलशास्त्र पारगत ,--र. पारा (बार 'दूसरी ओर' 'परे' कई बार समास में प्रयुक्त होता है --उदा० पारेगगम्, पारेसमुद्रम्--गगा के पार या समुद्र के पार) । सम०---अपारम्---अवारम् दोनों तट, पास का और दूर का (दः) समुद्र, सागर ---शौकपारावारमुनर्नुमशबनुवती---दश० ४, भामि० ४।११,---अयनम् 1 पार जाना 2 पूरा पढना, अनुशीलन, आद्योपान्त अध्ययन 3 समग्रता, सम्पूर्णता. या किसी वस्तु की समष्टि · जैसा कि 'ब्रह्मपारायण या मन्त्रपारायण' में, -अयनी 1 सरस्वती देवी 2. चिन्तन, मनन 3 क्रत्य, कर्म 4 प्रकाश,-- काम (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक,· ग (वि०) 1 पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला 2. जो पार पहुच चुका है, जिसने किसी ग्रथ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित, पूरा ज्ञाता (सब० के साथ, या समास में)--मनु० २।१४८, याज्ञ० १।१११ 3 प्रकाण्ड विद्वान्,-- गत, गामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पहुच गया है,--दर्शक (वि०) 1 सामने के तट को दिखलाने वाला 2 जिसके आर पार दिखाई दे, --दृश्वन् (वि०) 1 दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार 2 जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है, जिसने किसी बात को पूर्ण रूप से जान लिया है--श्रुतिपारदृश्वा रघु० ५।२४ ।

पारक (वि०) (स्त्री० -की) [पृ+ण्वुल्] 1 पार करने की योग्यता रखने वाला 2 आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सौंपने वाला 3 प्रसन्न करने वाला, सतुष्ट करने वाला ।

पारक्य (वि०) [परस्मै लोकाय हितम्--पर+ष्यञ्, लुक्] 1 पराया, दूसरे का 2 दूसरों के लिए उद्दिष्ट 3 विरोधी, शत्रुतापूर्ण,---क्यम् परलोक साधन, पवित्र आचरण ।

पारक्रामिक (वि०) (स्त्री०- की) [परक्राम+ठक्] पराया, विरोधी, शत्रुतापूर्ण ।

पारद (पु०) [पार् + णिच् + अच्] सोना, स्वर्ण ।

पारदारिक [परदारा+ठक्] व्यभिचारी, परदारगामी --याज्ञ० २।२९५ ।

पारदार्यम् [परदार+ष्यञ्] व्यभिचार, परदारगमन .. मनु० ११।५९, याज्ञ० ३।२३५ ।

पारदेशिक (वि०) (स्त्री० की) [परदेश+ठक्] विदेशी, बाहर के देश का, क 1 विदेश का रहने वाला 2 यात्री ।

पारदेश्य (वि०) (स्त्री० श्री) [परदेश+ष्यञ्] 1 विदेश से सबध रखने वाला, विदेशी, श्य 1 अन्य देश का रहने वाला 2 यात्री ।

पारभृतम् [इसका शुद्ध रूप सभवत 'प्राभृत' है] उपहार, भेंट ।

पारमहस्यम् [परमहस + ष्यञ्] सर्वोत्कृष्ट सन्यासवृत्ति, मनन । सम० परि (अव्य०) इस प्रकार के सन्यासी से सम्बन्ध रखने वाला ।

पारमार्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [परमार्थ+ठक्] 1 'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा अध्यात्म ज्ञान से सबन्ध रखने वाला 2 वास्तविक, आवश्यक, यथार्थ में विद्यमान सत्ता विविधा पारमार्थिकी, व्यावहारिकी प्रातीतिकी च वेदान्त 3 सत्य का ध्यान रखने वाला, सत्यप्रिय न लोक पारमार्थिक पश्य० १।३१२ 3 सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।

पारमिक (वि०) (स्त्री०-की) [परम+ठक्] सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान ।

पारमित (वि०) [पारमित प्राप्त-अलुक् स०] 1 दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ 2 पार पहुँचा हुआ, आर-पार गया गया हुआ 3 परमोत्कृष्ट ।

पारमेष्ठ्यम् [परमेष्ठिन्+ष्यञ्] 1 सर्वोपरिता, उच्चतम पद 2 राजचिह्न ।

पारपरीण (वि०) (स्त्री-णी) [परपरा+खञ्] परपरा प्राप्त, आनुवशिक, वशक्रमागत ।

पारपरीय (वि०) [परम्परा+छ] परम्पराप्राप्त, आनुवशिक ।

पारपर्यम् [परम्परा+ष्यञ्] 1 आनुवशिक क्रम, अविच्छिन्न क्रम 2 परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा 3 अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता । सम०--उपदेशः परपरा

पारतः [पार तनोति पार+तन्+ड] परा ।

पारतन्त्र्यम् [परतन्त्र+ष्यञ्] पराश्रयता, अधीनता, अनुसेवा ।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [परत्र+ठक्] 1 परलोक सबन्धी 2 भावी जीवन के लिए उपयोगी ।

पारत्र्यम् [परत्र+ष्यञ्] भावी जीवन में प्राप्य फल, परलोक फल मनु० २।२३६ ।

पारद [पार ददाति पार+दा+क] पारा---निदर्शन पारदोऽत्र रस भामि० १।८२ ।

आप्त शिक्षा, परम्परा (इस परम्परा को पौराणिक लोग 'प्रमाण' मानते हैं)।

पारयिष्णु (वि०) [पार्+णिच्+इष्णुच्] 1 सुहावना, तृप्तिकारक 2. किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ।

पारलौकिक (वि०) (स्त्री०-की) [परलोकाय हितम् परलोक+ठक् द्विपदवृद्धि] परलोक से सबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी,-धर्म एको मनुष्याणां सहाय पारलौकिक —महा०, मै ५।९२।

पारवतः [=पारापत (पार+आ+पत+अच्)] कबूतर।

पारवश्यम् [परवश+ष्यञ्] परावलंबन, पराश्रयता, अधीनता।

पारशव (वि०) (स्त्री०-वी) [परशु+अण्] 1 लोहे का बना हुआ 2 कुठार से संबंध रखने वाला,-वः 1 लोहा 2 शूद्र स्त्री में उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र य ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम्, स पारयन्नेव शवस्तस्मात्पारशवः स्मृत —मनु० ९।१७८ या परशवात् ब्राह्मणस्यैष पुत्र, शूद्रापुत्र पारशव तमाहु —महा० 3 दोगला, हरामी।

पारशवध, **पारशवधिक** [परशवध प्रहरणमस्य—अण्, परशवध+ठक्] फरसा धारण करने वाला, कुठार धारी।

पारस (वि०) (स्त्री०-सी) [पारस्यदेशे भव अण् बा० यलोप] पारसी फारस देश का रहने वाला।

पारसिक 1 फारस देश 2. फारस देश का, पारसीक।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा।

पारसीक [पृषो० साधु] 1. फारस देश 2. फारस देश का घोड़ा, -का (पु०, साधु०) फारस देश के रहने वाले—पारसीकास्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना—रघु० ४।६।

पारस्त्रैण्य [परस्त्री+ढक्, इनङ, उभय पदवृद्धि] दोगला, हरामी ('परस्त्री' में उत्पन्न)।

पारहंस्य (वि०) [परहंस+ष्यञ्] उस संन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है।

पारा [पार+अच्+टाप्] एक नदी का नाम—तदुत्तिष्ठ पाराशिषुसमेदमभगाह्य नगरीमेव प्रविशाव - भा० ४।९।१।

पारापत [पार+आ+पत्+अच्] कबूतर।

पारायणिक [पारायण+ठक्] 1 व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला 2 शिष्य, विद्यार्थी।

पाराशक [पार+श+उकञ्] पत्थर, चट्टान।

पाराशतः [=पारापत, पृषो० पस्य व] 1 कबूतर, फाख्ता, पेंडुकी-पारावत. खरसिलाकणमात्रभोजी कामी भवत्यनुदिनं वह्नेरुज्ज्वलहेतु —मर्तृ० ३।१५४, मेघ० ३८ 2 समुद्र 3 पहाड़। सम०—अङ्घ्रिः,—पिच्छः एक प्रकार का कबूतर।

पाराशरीय (वि०) [पाराशर+छ] 1 दोनों छोर तक जाने वाला 2 पूर्ण रूप से जानकार।

पाराशरः, पाराशर्यः [पराशर+अण्, यञ् वा] पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण।

पाराशरिः [पराशर+इञ्] 1. शुकदेव का विशेषण 2 व्यास का नाम।

पाराशरिन् (पु०) [पाराशर+इनि] 1 साधु, संन्यासी 2 विशेषकर वह जो व्यास के शारीर सूत्रों के अध्येता हो।

पारिकाङ्क्षिन् (पु०) [पारयति समाप्तात् पारि ब्रह्मज्ञानम् तत्काङ्क्षति—पारि+काङ्क्ष्+णिनि] ध्यानमग्न या चिन्तनशील सन्त, संन्यासी जो भावात्मक समाधि का भक्त हो।

पारिक्षित [परिक्षित्+अण्] जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र।

पारिखेय (वि०) (स्त्री०-यी) [परिखा+ढ] चारों ओर परिखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिजात, **पारिजातक** [पारस्य अस्ति इतिपारी समुद्र तस्माज्जात - पारिजात+कन्] 1 स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मंथन से 'पारिजात' की उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने नन्दन-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया)—कल्पद्रुमाणामिव पारिजात - रघु० ६।६, १०।११, १७।७, 2 मूंगे का पेड़ 3 सुगन्ध।

पारिणाह्य (वि०) (स्त्री०-ह्यी) [परिणय+ष्यञ्] 1 विवाह से संबन्ध रखने वाला 2. विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ, ह्यम् 1. विवाह के अवसर पर स्त्री को मिली हुई सम्पत्ति—मातृ परिणाह्य स्त्रियो विभजेरन्—वसिष्ठ 2. विवाह व्यवस्था।

पारितथ्य [परितथ्य+ष्यञ्] बालों को बांधने के लिए मोतियों की लड़ी।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०-की) [परितोष+ठक्] सुखकर, तृप्तिकर, सान्त्वनाप्रद,-कम् उपहार, पुरस्कार—गृह्यतां पारितोषिकमिदमङ्गुलीयकम्-मृच्छ० ५।

पारिप्लविकः [परित प्लवा—परिप्लवा+ठक्] झंडा बरदार, झंडा ले चलने वाला।

पारिभद्रः [=पारीन्द्र, पृषो० ह्रस्व] सिंह, केसरी।

पारिपन्थिकः [परिपन्थ+ठक्] लुटेरा, डाकू।

पारिपाट्यम् [परिपाटी+ष्यञ्] 1 क्रम, प्रणाली, रीति (परिपाटी) 2. नियमितता।

पारिपार्श्वकर्म् [पारिपार्श्व+अण्] अनुचरकर्म, सेवक अनुयायी।

पारिपार्श्वकः, पारिपार्श्विकः [पारिपार्श्व+कन्, परिपार्श्व+ठक्] 1 सेवक, टहलुआ 2. नाटक में सूत्रधार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर एक अन्तर्वर्ती अविनय पारिपार्श्वकः, तस्किमिति पारिपार्श्विकः नारभसि कुशीलवैः सह सगीतम्—वेणी० १।

पारिपार्श्विका [पारिपार्श्विका+टाप्] दासी, सेविका, निजी नौकरानी।

पारिप्लव (वि०) [परिप्लव+अण्] 1 इधर उधर घूमने वाला, डावाडोल, चचल, अस्थिर, कम्पायमान —ननद पारिप्लवनेत्रया नृप रघु० ३।११ 2 तैरता, बहता रघु० १३।३०, १६।६१ 3 क्षुब्ध, उद्विग्न, परेशान, घबराया हुआ—उत्तर० ४।२२,—व, नाव, बम् बेचैनी विकलता।

पारिप्लवः [परिप्लव+घञ्] हस व्यङ्ग 1 परेशानी, बेचैनी, क्षोभ 2. कपकपी, थरथराहट।

पारिबर्हः [परिबर्हं+अण्] वैवाहिक उपहार।

पारिभद्रः [परिभद्र+अण्] 1 मूगे का वृक्ष 2 देवदारु वृक्ष 3 सरल वृक्ष 4 नीम का पेड।

पारिभाव्यम् [परिभू+ण्यत्] जमानत, प्रतिभूति, जमानत के रूप में रक्खी गई वस्तु।

पारिभाषिक (वि०) (स्त्री०-की) [परिभाषा+ठक्] 1 चालू, सामान्य प्रचलित 2 (शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का सकेतक।

पारिमाडल्यम् [परिमडल+ष्यञ्] अणु, सूर्य की किरण में विद्यमान रजकण भाषा० १५।

पारिमुखिक (वि०) (स्त्री०-की) [परिमुख+ठक्] मुह के सामने का, निकटवर्ती, पास का।

पारिमुख्यम् [परिमुख+ष्यञ्] उपस्थिति, समीप होना।

पारियात्रः (पा) त्रः (पु०) सात मुख्य पर्वत श्रृखलाओं में से एक रघु० १८।१६, दे० 'कुलाचल'।

पारियात्र (पा) त्रिक [पारियात्र+ठक्] 1 पारियात्र पहाड का निवासी 2 पारियात्र पहाड।

पारियानिक [परियान+ठक्] यात्रा पर जाने के लिए गाडी।

पारिव्राज्यः [परिव्रजति आत्मानं परि+व्रज्+ष्वुल्+अण्] साधु, सन्यासी।

पारिविद्यम्, पारिवेद्यम् [परिविद+ष्यञ्, परिवेत्+ष्यञ्] छोटे भाई का विवाह हो जाने पर भी बडे भाई का अविवाहित रहना।

पारिव्राज्यम्, पारिव्राज्यम् [परिव्राजक+अण्, परिव्राज्+ष्यञ्] साधु सन्यासी का भ्रमणशील जीवन, सन्यास।

पारिशील [परिशील+अण्] रोटी, पूआ, मालपुआ (दे० अपूप)।

पारिशेष्यम् [परिशेष+ष्यञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी।

पारिषद (वि०) (स्त्री०-दी) [परिषद्+अण्] सभा या परिषद् से सबन्ध रखने वाला,—दः 1 सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का सदस्य, परामर्शक 2 राजा का सहचर,—दा (पु०, ब० व०) देव का अनुचरवर्ग।

पारिषद्य [परिषद्+ष्यञ्] सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक।

पारिहारिकी [पारिहर+ठक्+ङीप्] एक प्रकार की बुझौवल, पहेली।

पारिहार्य [परि+हृ+ण्यत्+अण्] कडा, कंगन, -र्यं लेना, ग्रहण करना।

पारिहास्यम् [परिहास+ष्यञ्] हसी-दिल्लगी, ठठोली, हसी-मजाक।

पारी [पृ+णिच्+घञ्+ङीष्] 1 हाथी के पैरों को बाधने का रस्सा 2 जल का परिमाण 3 पानपात्र, सुराही, प्याला 4 दूध की बाल्टी शि० १२।४०।

पारीक्षितः = पारिक्षित।

पारीण (वि०) [पार+ख] 1 दूसरी पार रहने या जाने वाला 2 (समास के अन्त में) मुविज्ञ, सुपरिचित—विवर्णपारीणमसौ भवन्तमध्यास्यन्तामनमेकमिन्द्र —भट्टि० २।४६।

पारीणाह्यम् [परिणाह+ष्यञ्, उपधालोप दीर्घ] घेरा का मापान, या बर्तन आदि।

पारीन्द्र [पारि पशु नरेन्द्र] 1 सिंह, 2 अजगर, बैडा साप।

पारीरथ [पारया जलपूरे रथ यस्य] 1 कछुवा 2 छडी, लाठी।

पारः [पिबति रसान्—पा+रु] 1. सूर्य 2 अग्नि।

पारुष्यम् [परुष+ष्यञ्] 1 खुरदरापन, ऊबडखाबडपन, कडापन 2 कठोरता, क्रूरता, (स्वभाव की) निर्दयता 3 अपभाषा, गाली देना, बुराभला कहना, अश्लील भाषा, अपमान—भग० १६।४ याज्ञ० ३।१२,७० 4 (वाणी या क्रिया में) हिंसा मनु० ८।६,७२, ७।४८,५१ 5 इन्द्र का स्थान 6 अक्षर, वर्ण बृहस्पति का विशेषण।

पारोवर्यम् [परावर+ष्यञ्] परम्परा।

पार्थक् [पृथे भवति इति अच्, पृथो० साधु] भूल, गलत।

पार्जन्य (वि०) [पर्जन्य+अण्] वृष्टि से सबध रखने वाला।

पार्ण (वि०) (स्त्री०-र्णी) [पर्ण+अण्] 1 पत्तों से सबध रखने वाला या पत्तों का बना हुआ 2 पत्तों से उठाया हुआ (जैसे कि कर)।

पार्थः [पृथा+अण्] 1 युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषरूप से —भग० १।२५, और दूसरे अनेक स्थल 2 राजा। सम० -सारथिः कृष्ण का विशेषण।

पार्थक्यम् [पृथक्+ष्यञ्] पृथक्ता, अलहदगी, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता।

पार्थवम् [पृथु+अण्] विशालता, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।

पार्थिव (वि०) (स्त्री०-वी) [पृथिवी+अण्] 1 मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी संबंधी, भूमिसंबंधी, धरती से संबंध रखने वाला—यतोरजः पार्थिवमुज्जिहीर्षते—रघु० १३।६४ 2 धरती पर शासन करने वाला 3 राजसी, राजकीय,- -वः 1. पृथ्वी पर रहने वाला 2 राजा, प्रभु—रघु० ८।१ 3 मिट्टी का बर्तन। सम० —बन्धकः—सुत राजकुमार, राजपुत्र,—कन्या—नन्दिनी, —सुता राजा की पुत्री, राजकुमारी।

पार्थिवी [पार्थिव+ङीप्] 1 सीता का विशेषण, धरती की पुत्री -पार्थिवीमुद्वहद्वधूद्वह—रघु० ११।४५ 2 लक्ष्मी का विशेषण।

पार्पट (पु०) 1 मुट्ठी भर चावल 2 क्षयरोग, तपेदिक।

पार्पटिक (वि०) (स्त्री०-की) [पर्पट+ठक्] अन्तिम, आखरी, निर्णायक।

पार्वण (वि०) (स्त्री०-णी) [पर्वन् +अण्] 1. पर्व-संबंधी, रघु० ११।८२ 2 वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना (जैसे कि चन्द्रमा का),—णम् पर्व के अवसर पर (अमावस्या के दिन) सभी पितरों के निमित्त आहुति देने का सामान्य संस्कार।

पार्वत (वि०) (स्त्री०-ती) [पर्वत+अण्] 1 पहाड़ पर होने या रहने वाला 2 पहाड़ पर उगने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला 3 पहाड़ी।

पार्वतिकम् [पर्वत+ठक्+] पहाड़ों का समुच्चय, पर्वत-शृंखला।

पार्वती [पार्वत+ङीप्] 1 दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न (अपने पहले जन्म में वह दक्ष की पुत्री थी—तु० कु० १।२१) ता पार्वतीत्यभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रिया बन्धुजनो जुहाव—कु० १।२६ 2 रजस्वला 3 द्रौपदी का विशेषण 4 पहाड़ी नदी 5 एक प्रकार की सुगन्धयुक्त मिट्टी। सम० -नन्दनः 1 कार्तिकेय की उपाधि 2 गणेश का विशेषण।

पार्वतीय (वि०) (स्त्री०-यी) [पर्वत+छ] पहाड़ में रहने वाला,—यः 1 पहाड़ी 2 एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम (ब० व०) -तत्र जग्मु रघोर्वीर पार्वतीयेगणैरभूत्—रघु० ४।७७।

पार्वतेय (वि०) (स्त्री०-यी) [पार्वती+ढक्] पहाड़ पर उत्पन्न,—यम् अञ्जन, सुरमा।

पार्श्व [पर्शु+अण्] कुठार से सुसज्जित योद्धा।

पार्श्व,-र्श्वम् [पसुना समूह] 1. कांख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहां पसलियां है—अथने सन्निष-ण्णैकपार्श्वाम्—मेघ० ८९ 2 पाँशु, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वाग पिठरं स्वयदतिमात्र निजपार्श्वनिव दहतितराम्—पञ्च० १।३२४ 3 आस-पास,—र्श्वे जिनका विशेषण,- र्श्वम् 1 पसलियों का समूह 2 जालसाजी से भरी हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय (पार्श्वम् क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका—अर्थ है—'के निकट' 'के पास में' 'की ओर'—श० ७।८, इसी प्रकार पार्श्वात् 'की ओर से' 'से दूर' पार्श्वे 'निकट' 'नजदीक' 'पास में' न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रघुजकात्—श० १।९, भर्तृ० २।३७)। सम० —अनुचरः टहलुआ, सेवक -रघु० २।९,—अस्थि (नपु०) पसली,—आपन्न (वि०) जो बहुत निकट आ गया है,- -आसन्न (वि०) पास ही विद्यमान, —उदरशिरः केकड़ा,—गः टहलुआ, सेवक—रघु० ११।४३, - गत (वि०) पार्श्ववर्ती, पास ही स्थित, सेवा करने वाला 2 शरणागत,—चरः सेवक, टहलुआ —रघु० ९।७२, १४।२२,—द टहलुआ, सेवक,—देशः (शरीर की) कोख, पाँशु,—परिवर्तनम् 1 बिस्तर पर करवट बदलना 2. भाद्रपदशुक्ल ११ को होने वाला पर्व (आज के दिन समझा जाता है कि विष्णु करवट बदलते है), भागः कोख, पाशु,—वर्तिन् (वि०) 1 पास होने वाला, उपस्थित, सेवा में खड़ा हुआ 2 साथ ही लगा हुआ,—शय (वि०) पास ही सोने वाला बगल में सोने वाला,—शूलः,—क्षम् कोख में मीठा दर्द, सूचकः एक प्रकार का आभूषण—स्थ (वि०) पार्श्ववर्ती, नजदीकी, निकटवर्ती, समीपस्थ (स्थः) 1 सहचर 2 सूत्रधार का सहायक—तु० पारिपार्श्वक।

पार्श्वकः (स्त्री०-की) [पार्श्व+कन्] ठग, प्रवंचक, चोर।

पार्श्वतः (अव्य०) [पार्श्व+तस्] निकट, नजदीक, समीप, पास रघु० १९।३१।

पार्श्विक (वि०) (स्त्री०-की) [पार्श्व+ठक्] पाँशु से संबंध रखने वाला,—कः 1. पक्ष लेने वाला आदमी, हाशीदार 2 साथी, सहचर 3. जादूगर।

पार्वत (वि०) (स्त्री०-ती) [पृषत+अण्] चितकबरे हरिण से संबंध रखने वाला—मनु० ३।२६९, याज्ञ० १।२५७,—तः राजा द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न का पितृकुलसूचक नाम।

पार्षती [पार्षत+ङीप्] 1 द्रौपदी का विशेषण 2. दुर्गा की उपाधि।

पार्षद (स्त्री०) [परिषद्+ष्फक्] सभा।

पार्षद: [पार्षद अर्हति अण्] 1 साथी, सहचर 2 टहलुआ अनुचरवर्ग 3 सभा में उपस्थित, दर्शक, सभासद् ।

पार्षद्य. [पर्षद्+यत्] सभासद्, सदस्य ।

पार्ष्णि (पु०, स्त्री०) [पृष्+नि, वि० वृद्धि] 1 एड़ी —उद्वेजयत्यसुकिं पार्ष्णिभागान्- कु० १।११, पार्ष्णि प्रहार—का० ११९ 2 सेना की पिछाड़ी 3 पिछाड़ी, पिछला भाग—शुद्धपार्ष्णिरयान्वित रघु० ४।२६, 'जिसकी पिछाड़ी सुरक्षित हो गई है' 4 ठोकर (स्त्री०) 1. व्यभिचारिणी स्त्री 2 कुन्ती का विशेषण । सम०—ग्रह अनुयायी,—ग्राहः पृष्ठवर्ती शत्रु 2 पृष्ठवर्ती सेना का सेनापति 3. मित्रराजा जो किसी राजा की सहायता करे—मनु० ७।२०७,—घातः ठोकर—कि० १७।५०,—त्राण पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित,—वाह दाहिनवर्ती घोड़ा ।

पाल: [पाल्+अच्] 1 प्ररक्षक, अभिभावक, संरक्षक —यथा गोपाल, वृष्णिपाल आदि 2 ग्वाला—विवादे स्वामिपालयो मनु० ८।५, २२९, २४० 3 राजा 4 पीकदान । सम०—अस्त्र कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी ।

पालक: [पाल्+ण्वुल्] 1 अभिभावक, प्ररक्षक 2 राजकुमार, राजा, शासक, प्रभु 3 साईस, घोड़े का रखवाला 4 घोड़ा 5 चिरक वृक्ष 6 पालक पिता ।

पालकाप्य. (पु०) 1 एक ऋषि करेणु का पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की शिक्षा दी) 2 हस्तिविज्ञान ।

पालङ्क: [पाल्+किप्=पाल्+अङ्क्+घञ्] 1 पालक का साग 2 बाजपक्षी,—की एक गंधद्रव्य ।

पालङ्क्या:,—क्या [पालक+अञ्, स्त्रियां टाप् च] एक सुगंध द्रव्य ।

पालक (वि०) [पाल्+ल्युट्] रक्षा करने वाला, संरक्षण देने वाला, कि० ११९,—नम् 1 प्ररक्षण, संरक्षण, पालना, पोसना, लालन-पालन करना—लक्ष्म° रघु० १९।३, इसी प्रकार प्रजा° क्षिति° आदि 2 बनाये रखना, अनुपालन करना, (व्रत, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना 3 ताजी ब्याई हुई गौ का दूध, खीस ।

पालयितृ (पु०) [पाल्+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, संरक्षक, परवरिश करने वाला—रघु० २।६९।

पालाश (वि०) (स्त्री०—शी) [पलाश+अण्] 1 ढाक का, ढाक से उत्पन्न 2 ढाक की लकड़ी का बना हुआ, मनु० २।४५ 3 हरा, या हरा रंग । सम०—खंड,—वत्स: मगध देश का विशेषण ।

पालि:,—ली (स्त्री०) [पाल्+इन्] कान का सिरा ।

पालि:,—ली [स्त्री०] [पाल्+इन्] 1 कान का सिरा —अवधपालि —गीत० ३ 2 किनारा, कोट, मगजी —भर्तृ० ३।५५ 3. तेज सिरा, धार या नोक —भामि० २।३ 4 हद, सीमा 5 श्रेणी, पंक्ति, —विपुल पुलकपाली—गीत० ६, वि० ३।५१ 6 पल्ला, चिह्न 7 बाध, पुल 8 गोद, अंक 9 आयताकार तालाब 10. अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण 11 जूं 12 प्रशंसा, स्तुति 13 वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूंछे हों ।

पालिका [पालि+कन्+टाप्] 1 कान का सिरा 2. तलवार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की तेज धार 3 पनीर या मक्खन आदि काटने की छुरी ।

पालित (भू० क० कृ०) [पाल्+क्त] 1 प्ररक्षित, संरक्षित, आरक्षित 2 पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पालित्यम् [पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी, धवलता ।

पाल्वल (वि०) (स्त्री—ली) [पल्वल+अण्] पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्राप्त ।

पावक [पू+ण्वुल्] 1 आग—पावकस्य महिमा स गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि य'—रघु० ११।७५, ३।९, १६।८७ 2 अग्नि देवता 3 बिजली की आग 4. चित्रक वृक्ष 5 तीन की संख्या । सम०—आत्मज कार्तिकेय का विशेषण 2 सुदर्शन नामक ऋषि ।

पावकि [पावक+इञ्] कार्तिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पू+णिच्+ल्युट्] 1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र बनाने वाला—पादास्तामभिनो निषण्णहरिणा गौरीगुरो पावना -- श० ६।१७, रघु० १५।१०१ १९।५३, भग० १८।५, मनु० २।२६, याज्ञ० ३।३०७ 2 पवित्र, पुनीत, विशुद्ध, परिष्कृत—कु० ५।१७,—न 1 आग 2 गंध द्रव्य 3 सिद्ध 4 श्याम कवि,—नम् पवित्री करण, विशुद्धीकरण —पदनखनीराजनिलजनपावन—गीत० १ 2 तप 3 जल 4 गोबर 5 सम्प्रदायसूचक तिलक । सम०—ध्वनि शंखनाद ।

पावनी [पावन+ङीप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गाय 3 गंगा नदी ।

पावमानी [पवमानम् अधिकृत्य प्रवृत्तम्-पवमान+अण् +ङीप्] विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विलेषण ।

पावर (पु) पासे का वह पहलू जिस पर 'दो' की संख्या अंकित हो, पासे को विशेष ढंग से फेंकना,— पावरपतनाच्च शोणित वारीव -मृच्छ० २।८ ।

पाश [पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्] 1. डोरी, शृंखला, बेड़ी फंदा—पादाकृष्टव्रततिवलया-उगसजाल-पाश - श० १।३२, बाहुपाशेन व्यापादिता मृच्छ० ९, रघु० ६।८४ 2 जाल, खटकेदार पिंजड़ा, या फंदा 3. बन्धन जो (वरुण के द्वारा) शस्त्र की भांति प्रयुक्त होता है—कु० २।२१ 4. पाँसा—रघु०

६।१८ पर मल्लि० 5. किसी बुनी हुई वस्तु की किनारी 6. (समास के अन्त में) 'पाश' का अर्थ होता है—(क) तिरस्कार, अवमान—यथा 'ज्ञानपाश' (निकम्मा विद्यार्थी) में, वैयाकरण०, त्रिवक्र० आदि (ख) सौन्दर्य, सराहना—यथा—सैवोष्ठमृदा स चकर्णपाश—उत्तर० ६।२७, (ग) बहुतायत, ढेर, राशि ('केश' अर्थ द्योतक शब्द के पश्चात्) केशपाश (केशकलाप)। सम०—अंशुः कपड़े का पृष्ठभाग, —क्रीडा जुआ खेलना, पासे के साथ खेलना,—धरः, —धारिः वरुण का विशेषण,—बद्ध (वि०) पिंजड़े में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंदे में पड़ा हुआ, —बंधः बंधन, जाल, फांसी की डोरी,—बंधकः अहेलिया, पक्षी पकड़ने वाला, बंधनम् जाल,—भृत् (पु०) वरुण का विशेषण—रघु० २।९,—रज्जुः (स्त्री०) डेढ़ी रस्सी,—हस्तः 'हाथ में जाल पकड़े हुए' वरुण का विशेषण।

पाशकः [पाश्यति पीडयति—पश्+घिच्+अच्] जुआ, पासा। सम०—क्रीडनम् जुआ खेलने की चौकी।

पाशनम् [पश्+घिच्+ल्युट्] 1 बंधन, फंदा, जाल, मूलेल या गोफिया 2 डोरी, चाबुक या छोटे में लगी चमड़े की डोरी या तस्मा 3 जाल में फंसाना, पिंजरे में बन्द करना।

पाशव (वि०) (स्त्री०—वी) [पशु+अण्] जानवरों से प्राप्त, या संबंध रखने वाला,—वम् रेवड़, लहुडा। सम०—पालनम् पशुचरण या चरागाह, गोचरभूमि

पाशित (वि०) [पश्+णिच्+क्त] बद्ध, जाल में फंसा, बेड़ियों से जकड़ा हुआ।

पाशिन् (पु०) [पाश+इनि] 1. वरुण का विशेषण 2 यम का विशेषण 3 हिरणों को पकड़ने वाला, बहेलिया, जाल में फंसाने वाला।

पाशुपत (वि०) (स्त्री०—ती) [पशुपति+अण्] 1. पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिए पावन, त. 1. शिव का अनुयायी और पूजक 2 पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला, तम् पाशुपत सिद्धान्त (दे० सर्व०)। सम०—अस्त्रम् पशुपति या शिव द्वारा अधिष्ठित एक अस्त्र का नाम (जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था)।

पाशुपाल्यम् [पशुपाल+ष्यञ्] पशुओं का पालना, ग्वाले की वृत्ति या धन्धा।

पाश्चात्य (वि०) [पश्चात्+ष्यञ्] 1. पिछला 2. पश्चिमी—रघु० ४।६२ 3. पश्चवर्ती, बाद का 4. बाद में होने वाला,—त्यम् पिछला भाग।

पाश्या [पाश+य+टाप्] 1. जाल 2. रस्सियों या पीड़ियों का समूह।

पाषंडः [या मनीषया तं पाषंडयति-या+षंड्+अच्]=पाखंड —मनु० ५।९०, ५।२८९।

पाषंडिक, पाषंडिन् (पु०) [पाषंड+ठक्, या+षंड्+णिनि] नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रखने वाला धूर्त व्यक्ति,—याज्ञ० १।१३०, २।६०।

पाषाणः [पिनष्टि पिंष् संचूर्णे ने आनच् पृषो० ताराο] पत्थर,—पुल बांधने का काम देने वाला छोटा पत्थर। सम०—दारकः, —दारणः टांकी,—भेदिः चट्टान के अन्दर दबा या दरार,—हृदय (वि०) पत्थर की भांति कठोरहृदय, क्रूर, निष्ठुर।

पि (तुदा० पर० पिपर्ति) जाना, हिलना-डुलना।

पिकः [अपि क्रामति शब्दायते—अपि+कै+क, अकारलोप] कोयल—कुसुमसमयसाधनसाधनवनिनि पिकनिकरे मम मानम्—गीत० ११ या—उन्मीलति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः—गीत० १। सम०—आनन्दः, —बांधवः वसन्तऋतु,—बंधुः,—रवः, —वासकः आम का पेड़।

पिचकः [पिच इत्यव्यक्तशब्देन कायति—पिच+कै+क] 1 २० वर्ष की आयु का हाथी 2. हाथी का बच्चा।

पिंग (वि०) [पिञ्ज् वर्णे अच् कुत्वम्] लालिमा लिये भूरा रंग, खाकी, पीला-लाल रंग,—सन्तप्तनिष्टापलक्षितारम् (विलोचनम्) कु० ७।३३,—गः 1. खाकी या भूरा रंग 2. चीता 3. चूहा,—गा 1 हल्दी 2. केसर 3 एक प्रकार का पीला रोगन 4. चंडिका की उपाधि। सम०—अक्ष (वि०) ललाई लिये भूरे रंग की आंखों वाला, लाल आंखों वाला (क्षः) 1. बन्दर 2. शिव का विशेषण,—ईक्षण शिव की उपाधि, —ईश अग्नि का विशेषण,—कपिला तेल चट्टा, —जटुः (पु०) केकड़ा,—नेत्र शिव का विशेषण, —हर हरताल,—हरिद्रक 'पीला हरिद्रोर', गोमेद रत्न।

पिंगल (वि०) [पिङ्ग०—पिंगा०+लच्, पिंगलाति या+क+ल+टाराο] ललाई लिये भूरे रंग का, पीताभ, भूरा, खाकी—रघु० १२।७१, मनु० ३।८—लः 1. खाकी रंग 2. अग्नि 3. बंदर 4. एक प्रकार का सेहला 5. छोटा उल्लू 6. एक प्रकार का सांप 7. सूर्य के एक अनुचर का नाम 8. कुबेर के एक कोष का नाम 9. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम, संगीत के छन्दःशास्त्र का प्रणेता, उसकी कृति का नाम—पिंगलच्छंदःशास्त्र है,—छन्दोज्ञानमिवेदं वदनं वकरोर्ध्वकेशमहटे पिंगलम्—पंच० २।११,—लम् 1. पीतल 2. पीले रंग की हरताल,—ला 1. एक प्रकार का उल्लू 2. बीजक का वृक्ष 3. एक प्रकार की वायु 4. शरीर की विशेष नाड़ियों 4. दक्षिण नेत्र की पुतली 5. एक

गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है (भागवत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस गणिका ने तथा अजामिल ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम०—अक्ष शिव का विशेषण।

पिंगलिका [पिंगल+ठन्+टाप्] 1 एक प्रकार का सारस 2 एक प्रकार का उल्लू।

पिंगाक्ष [पिंग+अक्ष्+अच्] 1 गाय का मुखिया या मालिक 2 एक प्रकार की मछली,—क्षम् प्राकृत स्वर्ण, —क्षी सोम का पौधा।

पिंगल,—क्ष्म्, **पिंगिल**:,—क्ष्म् [अपि+चक्ष्+खञ्, ककारलोप, पृषो०] पेट, उदर।

पिंगलक, [पिंगल+कन्] पेटू, औदरिक।

पिंगिडिका [पिंगिड+ठन्+टाप्] पिंडली, टांग की पिंडली।

पिंगिडिल (वि०) [पिंगिड+इलच्] मोटे पेट वाला, स्थूलकाय।

पिचु पच्+उ पृषो० तारा०] 1 रूई 2 एक प्रकार का जाट, (दो तोले के बराबर) कर्ष 3 एक प्रकार का कोढ़। सम०—तलम् रूई,—मंद,—मर्द नीम का पेड़—शि० ५।६६।

पिचुल: [पिचु+ला+क] 1 रूई 2 एक प्रकार का जल-काक या समुद्री कौवा।

पिच्चट (वि०) [पिच्च्+अटन्] दबाकर चपटा किया हुआ,—टः आंखों की सूजन, नेत्र-प्रदाह,—टम् 1 रांगा, अस्ता 2 सीसा।

पिच्चा [पिच्च्+अच्+टाप्] १६ मोतियों की एक लड़ जिसका वजन एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो।

पिच्छम् [पिच्छ्+अच्] 1 पूंछ का पर (जैसे मोर का) 2 मोर की पूंछ—शि० ४।५० 3 बाण के पर, 4 बाजू 5 कलगी, शिखा,—च्छ पूंछ,—च्छा 1 म्यान, गिलाफ, कोष 2 चावल का मांड 3 पंक्ति, श्रेणी 4 ढेर, समुच्चय 5 रेशमीकपास के पौधे का गोंद या रस 6. केला 7 कवच 8 टांग की पिंडली 9 सांप की विषमय लार 10 सुपारी। सम०—बाज, वाज, श्येन।

पिच्छल (वि०) [पिच्छ्+लच्] 1 चिपचिपा, चिकना, फिसलनवाला, लसलसा—तरुण सर्षपशाक नवोदनम् पिच्छिलानि च दधीनि—छन्द० १ 2 पूंछवाला—ल:, ला,—लम् 1 चावलों का मांड, भुक्तमंड 2 भावल की काजी से युक्त चटनी 3 मलाई समेत दही। सम०—त्वच् (पुं०) सतरे का पेड़ या छिलका।

पिच् 1 (अदा० आ०—पिक्ते) 1 हल्के रंग की, पुट देना, रंगना 2. स्पष्ट करना 3 सजाना II (चुरा० उभ० पिंजयति-ते) 1 देना 2 लेना 3 चमकना 4 शक्तिशाली होना 5 रहना, बसना 6 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना।

पिंजः [पिंज्+घञ्, अच् वा] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हत्या, वध 4 ढेर,—जम् सामर्थ्य, शक्ति,—जा 1 क्षति, चोट 2 हल्दी 3 कपास।

पिंजट [पिंज्+अटन्] दीद, आंख की कीच।

पिंजनम् [पिंज्+ल्युट्] धुनकी, रूई धुनने का धनुषाकार उपकरण।

पिंजर (वि०) [पिंज्+अरच्] ललाई लिये पीले रंग का खाकी, सुनहरी रंग का,—शिखा प्रदीप्तस्य सुवर्णपिंजरा —मृच्छ० ३।१७, रघु० १८।४०,—रः ललाई लिये पीला या खाकी भूरा रंग 2 पीला रंग—रम् 1 सोना 2 हरताल 3 अस्थिपंजर 4 पिंजड़ा।

पिंजरकम् [पिंजर+कन्] हरताल।

पिंजरित (वि०) [पिंजर+इतच्] पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का।

पिंजल (वि०) [पिंज्+कलच्] 1. शोकसंतप्त, भयभीत, व्याकुल, विस्मित 2 (सेना आदि) आतंकित,—लम् 1 हरताल 2 कुश की पत्ती।

पिंजालम् [पिंज्+आलच्] सोना, सुवर्ण।

पिंजिका [पिंज+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] पूनी, रूई का गोल गल्हा जिससे कातने पर सूत निकलता है।

पिंजूष: [पिंज्+ऊषन्] कान का मैल।

पिंजट [=पिंजट, पृषो०] आंखों की कीच, दीद।

पिंजोला [पिंज्+ओल+टाप्] पत्तों की खड़खड़ाहट, पत्तों का खड़-खड़ शब्द करना।

पिट [पिट्+क] सन्दूक, टोकरी—टम् 1 घर, कुटीर 2. छप्पर, छत।

पिटक,—कम् [पिट+कन्] 1 सन्दूक, टोकरी 2 खंती 3 फुंसी फफोला, छोटा फोड़ा, नासूर (इस अर्थ में 'पिटका' तथा 'पिटिका' भी)—तत गडस्योपरि पिटका सवृत्ता- -शि० ७ ९. इन्द्र के अंगरे पर एक प्रकार का आभूषण।

पिटकवत् [पिटक+व+टाप्] सन्दूकों का ढेर।

पिटारक [पिट्+काक वा०] पिटारी, सन्दूक।

पिट्टकम् [=किट्टक, पृषो० कस्य प.] दांतों का जमा हुआ मैल।

पिठर,—रम् [पिठ्+करन्] बर्तन, तसला, बटलोई ('पिठरी' भी इसी अर्थ में)—पिठर खवधटितमात्र निजयादवशिवं दहतितराम्—पद्य० १।३२४, जठर-पिठरी दुष्पूरेयं करोति विडंबनाम्—भर्तृ० ३।११६, —रम् रुई का लट्टा।

पिठरक,—कम् [पिठर+कन्] बर्तन, तसला। सम० —कपाल,—लम् ठीकरा, खपड़ी, खप्पर।

पिंडकः,—का [पीड्+घञ्, वि० साधु] छोटा फोड़ा, फुंसी, फफोला।

पिंड् (स्वा० आ०, चुरा० उभ०—पिण्डते, पिंडयति-ते, पिंडित) 1 इकट्ठा करके पिंडी या गोला बनाना 2. बोलना, मिलाना 3 ढेर लगाना, इकट्ठा करना।

पिंड (वि०) (स्त्री०—डी) [पिण्ड्+अच्] 1 ठोस, घन 2 मिला हुआ, सघन, सटा हुआ, —ड, —डम् 1 पिंडी, गोला, गोलक (अक्ष पिंड, नेत्र पिंड आदि) 2 लौंदा, ढेला (मिट्टी का) 3. कौर, ग्रास, मुहभर कवल —रघु० २।५९ 4 श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड रघु० १।६६, १।२६, मनु० ३।२१६, ९।१३२, १३६, १४०, याज्ञ० १।१५९ 5 भोजन सफलीकृतमर्तृपिंड. मालवि० ५, 'नमक-हलाल' 6 जीविका, वृत्ति, निर्वाह 7 दान - पिंडपालवेला आ० २ 8 मास, आमिष 9. गर्भ-धारण की आरंभिक अवस्था का गर्भ 10 शरीर, शारीरिक ढांचा—एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिंडेष्व-नास्था खलु भौतिकेषु—रघु २।५७ 11 ढेर, समूह, समुच्चय 12 टांग की पिंडली—आ० ५।१६ 13 हाथी का कुंभस्थल 14 मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा 15 धूप, या गंध द्रव्य 16. (अंक ग० में) जोड़, कुलयोग 17 (ज्या० में) घनत्व, —डम् 1 शक्ति, सामर्थ्य, ताकत 2 लोहा 3 ताजा मक्खन 4 सेना (पिंड हू गोले बनाना, निष्पीडित करना, ढेर लगाना, पिंडीभू गोले या लौंदे बनाना)। सम० अन्वाहार्यं पितरों को पिंड दान के पश्चात् खाने के योग्य -मनु० ३।१२३,—अन्वाहार्यकम् पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन,- अश्मन् ओला, -- अयस्कृत् इस्पात,—अलक्तकः महावर, लाल रंग, --अशनः,- आश,— आशकः,— आशिन् (पुं०) भिक्षुक,—उदकक्रिया मृतव्यक्तियों के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान, —श्राद्ध और तर्पण,— उद्धरणम् पिंडदान में भाग लेना, —गोल रसगुल्ला, लोबान की तरह का सुगंधित गोंद, —तैलम्, -तैलकः गंधद्रव्य विशेष, लोबान,—द (वि०) 1 जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला तथा पिंडदस्य कुले गजपुंगवस्तु धीर विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते भर्तृ० २।३१ 2 मृत पितरों को पिण्ड देने का अधिकारी याज्ञ० २।१३२ (द.) पिंडदान करने वाला निकटतम संबंधी पुरुष 2 स्वामी, अभिरक्षक, —दानम् 1. अन्त्येष्टि क्रिया के समय पिंड देना 2 अमावस्या की मध्या के समय पितरों को पिंडदान देना,—निर्वपणम् पितरों को पिंडदान देना,—पातः भिक्षा देना, मा० १,—पातिकः भिक्षा से जीविका चलाने वाला, —पाशः—पाशः हाथी,—पुष्पः 1. अशोक वृक्ष 2 चीनी गुलाब 3. बनार (क्लीं) 1. अशोक वृक्ष पर फूल आना, मंजरी 2 चीनी गुलाब का फूल 3. कमल फूल,—भाज् (वि०) पिंड प्राप्त करने का अधिकारी (पुं०, ब० व०) स्वर्गीय मृत पुरुष या पितर—श० ६।२५,—भृतिः (स्त्री०) जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, मूलम्, - मूलकम् गाजर, —यज्ञः श्राद्ध करके पितरों को पिंडदान देना—याज्ञ० ३।१६,—लेपः पिंड का वह अंश जो हाथ में चिपका रह जाता है (यह अंश प्रपितामह से ठीक पूर्ववर्ती तीन पितरों को दिया जाता है),—लोपः (संतान न होने के कारण) पिंडदान का अभाव, -संबंधः जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का संबंध जिससे कि पिंड-दाता की पिंडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय।

पिंडकः—कम् [पिण्ड+कै+क] 1 लौंदा, गोला, गोलक 2 गूमड़ा या सूजन 3. भोजन का ग्रास 4 टांग की पिंडली 5 गंधद्रव्य, लोबान 6 गाजर—कः बैताल, पिशाच।

पिंडकरणम् [पिंड+ल्युट्] गोले या पिण्ड बनाना।

पिंडकः [पिंड+कलच्] 1 पुल, बांध 2. टीला, ऊर्ध्वभूमि या शैलशिला।

पिंडजः [पिंड+सन्+ड] भिक्षुक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु।

पिंडदः [पिंड+अद्+अच्] लोबान, गंधद्रव्य।

पिंडारः [पिंड+ऋ+अण्] 1 साधु, भिक्षुक 2. ग्वाला 3 भैंसों को चराने वाला 4 विकसित वृक्ष 5 निन्दा की अभिव्यक्ति।

पिंडिः—डी (स्त्री०) [पिंड्+इन्, पिंडि+ङीष्] 1. पिंडी, गोला 2 पहिये की नाभि 3 टांग की पिंडली 5 लौकी, घीया 6 घर 7 ताड़ की जाति का वृक्ष। सम०—वृक्षः अशोक, वृक्ष,—लेपः एक प्रकार का लेप या उबटन, -शूरः 'गेहेशूर' रेंटू, डींग हांकने वाला, कायर, आत्मश्लाघी, भीरु, मेहरा—तु० गेहेनर्दिन् आदि।

पिंडिका [पिंड+स्वार्थे कन्+टाप्, इत्वम्] 1 धूम, गोलाकार सूजन 2 टांग की पिंडली—दे० ऊ० 'पिंडि'।

पिंडित (वि०) [पिंड्+क्त] 1 दबा २ कर बनाया गया गोला या पिण्डा 2 पिंडाकार बनाया हुआ, लौंदे जैसा 3. ढेर किया हुआ, बटोरा 4 मिश्रित 5 जोड़ा हुआ, गुणा किया हुआ 6 गिना हुआ, संख्यात।

पिंडिन् (वि०) [पिंड+इनि] 1 पिंड प्राप्त करने वाला (पितर) (पुं०) भिक्षारी 2 पितरों को पिण्डदान देने वाला।

पिंडिलः [पिंड+इलच्] 1 पुल, बांध 2. ज्योतिषी, गणक।

पितौर (वि०) [पित्त+ईर्+पिच्] फीका, रसहीन, नीरस, सूखा,—रः 1. अनार का वृक्ष 2. मछलीखोपी का चौड़ी कवच 3. समुद्रफेन—दे० 'पितौर'।

पितोपि: (स्त्री०) [पित्त्+ओपि] आते समय मुँह से गिरा कफ, वमन, उच्छिष्ट।

पिन्याकः कम् [पिष्+आक, नि० साधु.] 1 खल (तिल या सरसों की) 2. गन्ध द्रव्य, लोबान 3 केसर 4. ईख।

पितामहः (स्त्री०—ही) [पितृ+डामहच्] 1 दादा, बाबा 2. ब्रह्मा का विशेषण।

पितृ (पुं०) [पाति रक्षति—पा+तृच्] पिता,—तेनास लोक. पितृमान् विनेषा—रघु० १४।२३, १।२४, ११।६७,—रौ (द्वि०व०) पिता-माता, माता-पिता—अवतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१, याज्ञ० २।११७,—रः (ब०व०) 1 पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता,—शि० ६।२४ 2 पितृकुल के पितर, पितृवर्ग—मनु० २।१५१ 3 पितर—रघु० २।१६, ४।२०, मनु० १०।२९, मनु० ३।८१, १९२। सम०—अर्जित (वि०) पिता द्वारा कमाई हुई पैतृक (सपत्ति), —अयनं (न०), कानं,—कृत्यम्,—क्रिया मृत पूर्व पुरुषाओं को के निमित्त किया जाने वाला दान या श्राद्धकर्म,—कानम् कब्रिस्तान, —रघु० ११।१६,—कुल्या कल्प पर्वत से निकलने वाली नदी,—गणः 1 पूर्वपुरुषाओं के समस्त वर्ग 2. पितर, यज्ञ प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे—दे० मनु० ३-१९४-५,—गृहम् 1 पिता का घर 2. कब्रिस्तान, जहाँ दफन किये जायँ, —घातकः, —घातिन् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला,—तर्पणम् 1 पितरों को दी जाने वाली आहुति या जलदान 2 (मार्जन के अवसर पर) पितर तथा अन्य दिवगत पूर्वजों के निमित्त बायें हाथ से जल छोड़ना—मनु० २।१७६ 3 तिल,—तिथिः (स्त्री०) अमावस्या,—तीर्थम् वह तीर्थ जहाँ जाकर पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फल-दायक विहित है 2 अँगूठे और तर्जनी के मध्य का भाग (इसके द्वारा तर्पण आदि करना पवित्र माना जाता है),—दानम् पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान, दायः पिता से प्राप्त सपत्ति,—दिनम् अमावस्या,—देव (वि०) 1 पिता की पूजा करने वाला 2 पितरों की पूजा से सबद्ध (वा) अग्निष्वात्त आदि दिव्य पितर,—दैवत (वि०) पितरों द्वारा अधिष्ठित (त्रम्) दसवाँ (मघा) नक्षत्र,—द्रव्यम् पिता से प्राप्त सम्पत्ति, याज्ञ० २।११८,—पक्षः 1 पितृकुल, पैतृक सबध 2. पितृकुल के सबधी 3 पितृ पक्ष—आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है,—पतिः यम का विशेषण, —पथः पितरों का लोक,—पितृ (पुं०) दादा, बाबा, पितामह, —पुत्रौ (द्वि० व० - पितापुत्रौ) पिता और पुत्र, (पितृः पुत्रः प्रसिद्ध और लोक विश्रुत पिता का पुत्र, —पूजनम् पितरों की पूजा,—प्रेतसम्पद (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुरुषाओं से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब०व०—हा) पूर्व पुरुष, —प्रसू (स्त्री०) 1 दादी 2 साध्यकालीन श्रुटपुटा,—प्राप्त (वि०) 1 पिता से प्राप्त 2 पितृकुल क्रमागत से प्राप्त,—बंधु पितृकुल के नातेदार (सप०—बंधु) पिता के सबध से रिश्तेदारी,—भक्त (वि०) पिता का कर्तव्य परायण भक्त,—भक्ति (स्त्री०) पिता के प्रति कर्तव्य, —भोजनम् पितरों को दिया गया भोजन,—भ्रातृ (पुं०) पिता का भाई, चाचा या ताऊ, —मंदिरम् 1 पितृगृह 2 कब्रिस्तान,—मेध पितरों के निमित्त किया जाने वाला, यज्ञ, श्राद्ध, —यज्ञ 1 मृत पूर्व पुरुषाओं को प्रतिदिन तर्पण या जलदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पंच यज्ञों में से एक पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् मनु० ३।७०, १२२, २८३,—राज् (पुं०),—राज,—राजन् (पुं०) यम का विशेषण —रूप शिव का विशेषण, —लोक पितरों का लोक—वंश पिता का कुल, —वनम् श्मशान, कब्रिस्तान (पितृ-वनेश्वर 1 राक्षस, पिशाच, शिव का विशेषण),—वसति (स्त्री०),—सदनम् (नपुं०) श्मशान, कब्रिस्तान —कु० ५।७७, अत श्राद्ध, पितृकर्म, —श्राद्धम् पिता या मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध, स्वसृ (स्त्री०) (पितृष्वसृ) पितृ स्वसृ-भी) बुआ, फूफी—मनु० २।१३१, स्वसृीयः फुफेरा भाई,—सदृश (वि०) पितृतुल्य, पितृवत्,—सूः 1 पितामह, दादा, बाबा 2 साध्यकालीन श्रुटपुटा—स्थानः,—स्थानीयः अभिभावक (जो पिता के स्थान में है),—हत्या पिता का वध,—हन् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) [पितृ आगतम् —पितृ+कन्] 1 पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक 2 और्ध्वदैहिक।

पितृव्यः [पितृ+व्यत्] 1 पिता का भाई, चाचा 2. कोई भी वयोवृद्ध पुरुष-नातेदार—मनु० २।१३०।

पित्तम् [अपि+दो+क्त अपे अकारलोप] पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (शेष दो हैं वात और कफ) पित्त यदि शर्करया शाम्यति कोऽन्य पटोलेन—पच० १।३७८। सम०—अतिसारः पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग,—उपहतः (वि०) पित्त से ग्रस्त—पश्यति पित्तोपहत शशिशुभ्र शखमपि पीतम्—काव्य० १०,—कोषः पित्ताशय,—कोषः पित्त दोष की अधिकता, पित्तप्रकोप,—ज्वरः पित्त के प्रकोप से होने वाला ज्वर या बुखार,—प्रकृति (वि०)

जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो कोधी स्वभाव का हो,– प्रकोपः पित्त का आधिक्य या पित्त का कुपित हो जाना,– रक्तम् रक्तपित्त नामक रोग, –वातः पित्त के प्रकोप से पेट में वायु का पैदा होना, अफारा,–विहत (वि०) पित्त के प्रकोप से आक्रांत, –शमन, –हर (वि०) पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला।

पित्तल (वि०) [पित्त+ला+क] पित्त बहुल, जिसमें पित्त की अधिकता हो,– कम् 1. पीतल 2 सोनापन का वृक्ष विशेष।

पित्र्य (वि०) [पितृ इदम्—पितृ+यत्, रौढ़ आदेश.] 1 पैतृक, बपौती का, पुश्तैनी 2 (क) मृत पितरों से संबंध रखने वाला – मनु० २।५९ (ख) और्ध्वदैहिक-क्रियासंबंधी,—र्यः 1 ज्येष्ठ भाई 2. भाद्रमास,—र्या 1 मघा नक्षत्रपुंज 2 पूर्णिमा और अमावस्या का दिन, –र्यम् 1 मघा नाम का नक्षत्र 2 अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पितरों के लिए पूज्य)।

पित्सत् (पुं०) [पत्+सन्, इस् अभ्यासलोप, पित्स+शतृ] पक्षी।

पित्सल [पत्+सल्, इत्] मार्ग, पथ।

पिधानम् [अपि+धा+ल्युट् अपे अकारलोप] 1. ढकना, छिपाना 2 म्यान 3 चादर, चोगा 4 ढक्कन, चोटी।

पिधायक (वि०) [अपि+धा+ण्वुल्, अपेः अकारलोप] ढकने वाला, छिपाने वाला, प्रच्छन्न रखने वाला।

पिनद्ध (भू० क० कृ०) [अपि+नह्+क्त, अपे अकार-लोप] 1 जकड़ा हुआ, बंधा हुआ या धारण किया हुआ 2 सुसज्जित 3 छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 4. घुमाया हुआ, खिंचा हुआ 5 लपेटा हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित।

पिनाक–कम् [पा रक्षणे आकान् नुट् च तोरात इत्वम्] 1 शिव का धनुष 2. त्रिशूल 3. सामान्य धनुष 4 लाठी या छड़ी 5 धूल की बौछार। सम०–पाणि, –भृत्, –धृक्,—धृत्,—धामिः (पुं०) शिव की उपाधियाँ —कु० ३।१०।

पिनाकिन् (पुं०) [पिनाक+इनि] शिव का विशेषण —कु० ५।७७, शि० १।६।

पिपतिषत् (पुं०) [पत्+सन्+शतृ] पक्षी।

पिपतिषु (वि०) [पत्+सन्+उ] गिरने की इच्छा वाला, पतनशील,—षुः पक्षी।

पिपासा [पा+सन्+अ+टाप्] प्यास।

पिपासित, पिपासिल, पिपासु (वि०) [पा+सन्+क्त, पिपासा+इलच्, पा+सन्+उ] प्यासा।

पिपीलः, पिपीलकी [अपि+पील+अच्, अपे अकारलोप, पिपील+ङीष्] चींटा, चींटी।

पिपीलकः [पिपील+कन्] मकौड़ा।

पिपीलिकः [अपि+पील्+इकन्, अपे अकारलोपः] चींटा, —कम् एक प्रकार का सोना (चींटों द्वारा एकत्र किया हुआ माना जाता है)।

पिपीलिका [पिपीलक+टाप्, इत्वम्] चींटी। सम० —वरिसर्पणम् चींटियों का इधर उधर रेंगना।

पिप्पलः [पा+अलच्, पुवो०] 1. पीपल का पेड़—याज्ञ० १।३०२ 2. चूचुक 3 जाकेट या कोट की आस्तीन —लम् 1. बरबटा 2 पीपल का बरबटा 3. सम्भोग 4. जल।

पिप्पलिः,–ली (स्त्री०) [पृ+अलच्+ङीष् पुवो० पक्षे ह्रस्वश्चाभाव] पिपरामूल, पीपल नाम की ओषध।

पिप्पिका (स्त्री०) दाँतों पर जमी हुई मैल की पपड़ी।

पिप्पुः [अपि+प्लु+डु अपे अकारलोप.] तिलक, तिल, बरसा, चिलौं।

पिप्पलः [पीय्+कालन्, ह्रस्व] एक वृक्षविशेष (चिरौंजी) —कु० ३।३१,—लम् इस वृक्ष (चिरौंजी) का फल।

पिब् (चुरा० उभ०–पेबयति-ते) 1 फेंकना, डालना 2 भेजना, चलता करना 3 उत्तेजित करना, उकसाना।

पिबुः (पुं०) दे० 'पीलुः'।

पिलक (वि०) [पिलम्बे चक्षुषी यस्य, पिलम्ब+अच्, पिलादेशः] चौंधियाई आँखों वाला,—लकम् धुँधियाई आँख।

पिलक्षका [पिलक्ष+कै+क+टाप्] हथिनी।

पिश् (तुदा० उभ० पिंशति-ते) 1 रूप देना, बनाना, निर्माण करना 2 सघटित होना 3 प्रकाश करना, उजाला करना।

पिशंग (वि०) [पिश्+अलच् किच्च] ललाई लिये भूरे रंग का, लाल सा खाकी रंग का—अग्ये समूहं कबुभ पिशङ्गी —शि० ३।३३, १।६, कि० ४।३६, —गः खाकी रंग।

पिशंगकः [पिशंग+कन्] विष्णु अथवा उसके अनुचर का विशेषण।

पिशाचः [पिशितमाचमति–चा+क, चा० श पुवो०] भूत, बेताल, शैतान, प्रेत, दुष्ट प्राणी कल्पायित पिशाचोऽपि भीषणेन—विक्रम० २, मनु० १।३७, १२।४४। सम०—आलयः वह स्थान जहाँ फास्फो-रस के कारण अंधेरे में प्रकाश होता हो,—द्रुः एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर),—भाषा,—भाषाः पिशाच द्वारा आविष्ट होना,—भाषा 'शैतानों की भाषा' पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग नाटकों में मिलता है, संस्कृत का अपभ्रंश,—सदनम् 1 शैतानों की सभा 2 भूतों का घर, प्रेतावास।

पिशाचकिन् (पुं०) [पिशाच+इनि, कुक्] धन के स्वामी कुबेर का विशेषण।

पिशाचिका [पिशाच+कीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1. पिशाचिनी, भूतनी, स्त्री पिशाच 2 (समास के अन्त में) किसी पदार्थ के लिए झुठाती या पैशाचिकी आसक्ति—किमनया आयुर्घपिशाचिकया—महावी० ३, युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति, पिशाची भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है,—तस्य सत्क्रियय यावज्जीवमायुर्घपिशाची न हृदयादपक्रामति—बालरा० ४ या —किंदक्षिरमियमतिनाटयिष्यति भवतमायुर्घपिशाची—अनर्घ० ४।

पिशितम् [पिश्+क्त] मांस कुत्रापि नापि खलु हा पिशितस्य लेश—मामि० १।१०५, रघु० ७।५०। सम० **अशनः**,—**आशः**, —**आशिन्**,—**भुज्** (पु०) 1 मांसभक्षी, पिशाच, वैताल—(काया) सध्यापयोरकपिशा पिशिताशनाना चरति—शि० ३।२७ 2 मनुष्यभक्षी, नरभक्षी।

पिशुन (वि०) [पिश्+उनच्, किच्च] (क) सकेत करने वाला, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला, प्रदर्शन करने वाला, परिचायक—अनुमानमिव विज्ञान-पिशुन शि० १।७५, तुल्यानुरागापिशुनम् विक्रम० २।१४ रघु० १।५३, अमरु ९७ (ख) स्मरणीय, स्मारक, क्षेत्र क्षत्रप्रसनपिशुन कौरव तद्भजेथा मेघ० ४८ 2 मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर, चुगली खाने वाला —पिशुनजन खलु विभ्रति खिन्नीन्द्रा मामि० १।७४ 3 दुष्ट, क्रूर, प्रद्वेषी 4 अधम, कमीना, तिरस्करणीय 5 मूर्ख, मन्दबुद्धि,—न० 1 मिथ्या निन्दा करने वाला, चुगलखोर, छिद्रान्वेषक, अधम, भेदिया, द्रोही, कलंकित करने वाला हि० १।१३५, पच० १।३०४, मनु० ३।१६१ 2 सुई 3 नारद का विशेषण 4 कौवा। सम० **-वचनम्**,—**वाक्यम्** चुगली, गुप्तनिन्दा, बदनामी।

पिष् (रुधा० पर०-पिनष्टि, पिष्ट) 1 कूटना, पीसना, चूरा करना, कुचलना—अथवा भवत प्रवर्तना न कथ पिष्टमिद पिनष्टि न नै० २।६१, १३।१९, मालवे पेव पिपेव महावी० ६।४५, भट्टि० ६।३७, १२।४८ मामि० १।१२ 2 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, नष्ट करना, मार डालना (प्रायः के साथ) क्रमेण पेष्टु भुवनद्विषामसि शि० १।४०, उद् ,कुचलना, पीस डालना, निस्—,कूटना, चूर्ण करना, कण कण करना, (त) निष्पिपेष क्षितौ क्षिप्र पूषणकुभमिवाभसि -महा०, शिलानिष्पिष्टमुद्गर रघु० १२।७३ 2 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, खरोंच मारना भट्टि० ६।१२०।

पिष्ट (भू० क० कृ०) [पिष्+क्त] पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ मामि० १।१२,७३ 2. रगड़ा हुआ, मींजा हुआ, (हाथ) मिलाया हुआ, —**अन्नम्** किसी हुई कोई चीज, पिसा हुआ मसाला 2 आटा, बेसन —**पिष्टं पिनष्टि** 'पिसे हुए को पीसता है' अर्थात् व्यर्थ काम करता है, या बिना किसी लाभ के दोहराता है 3 सोना। सम० **उदकम्** आटे में मिला हुआ जल, **पचनम्** आटा भूनने के लिए कड़ाही, पतीली आदि, **पशु** आटे का बना या ढका हुआ किसी पशु का पुतला **पिण्ड** आटे की लोई या पेड़ी **पूरः** दे० 'घृतपूर', **पेय**, **पेयजम्** पिसे को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना 'न्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, **स्नेह** एक प्रकार का नकली घी, **हवि** एक प्रकार का लड्डू जो घी, दाल या चावल से बनाया जाता है,—**सौरभम्** (पिसा हुआ) चन्दन।

पिष्टक, **-कम्** [पिष्ट+कन्] 1 लोई जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो 2 सिकी हुई लोई, रोटी, पूरी,—**कम्** तिलकुट, तिल के लड्डू।

पिष्टप, **-पम्** [विशन्ति अत्र सुकृतिन —विश्+कप् नि०] विश्व का एक भाग—तु० 'विष्टप'।

पिष्टात [पिष्ट+अत्+अण्] सुगंधयुक्त या खुशबूदार चूर्ण।

पिष्टिक [पिष्ट+ठन्] चावलों के आटे की बनी टिकिया।

पिस् । (स्वा० पर० पेसति) जाना, चलना ॥ (चुरा० उभ०—पेसयति—ते) 1 जाना 2 मजबूत बनना 3 रहना 4 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 5 देना या लेना।

पिहित (भू० क० कृ०) [अपि+धा+क्त, अपे आकारलोप] 1 बन्द, अवरुद्ध, रुका हुआ, जकड़ा हुआ —दे० अपि पूर्वक धा 2 ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त —दे० अपिहित 3 भरा हुआ, ढका हुआ।

पी (दिवा० आ० पीयते) पीना—तव वदनभवामृत निपीय मृच्छ० १०।१३, नै० १।१।

पीचम् (नपु०) ठोढी।

पीठम् [पेठन्ति उपविशन्ति अत्र—पि+थक्, आ० दीर्घ पीयते अत्र पी+ठक्] 1 आसन (तिपाई, चौकी, कुर्सी पलंग आदि) जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युत —शि० १।१२, रघु० ४।८४, ६।१५ 2 ब्रह्मचारी के बैठने के लिए कृशासन 3 देवासन, वेदी 4 पादपीठ, आधार 5 बैठने का विशेष मुद्रा। सम० —**जीवि** विश्वासपात्र पुरुष परोपजीवी, —**गर्भ**, मूर्ति के आधार में वह गड्ढा जिसमें वह जमाई जाती है, **नायिका** वह चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती है,—**भू**: आधार, नींव, भूगृह, तहखाना, **-मर्द** 1 सहचर, परोपजीवी, जो नाटक में बड़े२ कार्यों में नायक की सहायता करता है जैसे कि नायिका की प्राप्ति में, इसी प्रकार 'पीठ-

अधिका' वह स्त्री है जो नायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसकी सहायता करती है 2. मूल्य शिक्षक जो वेश्याओं को मूल्यकला की शिक्षा देता है, —सर्व (वि०) जगत्, विकलांग।

पीठिका [पीठ+ङीष्+क+टाप्, ह्रस्व] 1. आसन (चौकी, तिपाई) 2 पीढ़ा, आधार 3 पुस्तक का अनुभाग या प्रभाग जैसा कि दशकुमार चरित की पूर्व पीठिका और उत्तरपीठिका।

पीड् (चुरा० उभ०—पीडयति-ते, पीडित) पीड़ित करना, सताना, नुकसान पहुँचाना, घायल करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना, छेड़ना, परेशान करना नील कपोपिडिघड्रं -भट्टि० १५।८२, मनु० ४।६७, २३८, ७।२९ 2. विरोध करना, सामना करना 3 (नगर आदि को) घेरना 4 दबाना, भींचना, निचोड़ना, चुटकी काटना कठे पीडयन् -मृच्छ० ८, लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन् भर्तृ० २।५, दशनपीडिताधरा रघु० ९।३५ 5 दबाना, नष्ट करना -मनु० १।५१ 6 अवहेलना करना 7 किसी अशुभ वस्तु से ढकना 8 ग्रहण-ग्रस्त होना, -अभि, -अव, दबाना, निचोड़ना, पीड़ित करना, आ -, दबाना, भार से झुका देना पयोधरभारेणापीडित गीत० १२, उद् -, मसलना, घिसना, रगड़ना अन्योन्यमुत्पीडयदुत्पलाक्ष्या स्तनद्वय पाडु तया प्रवृद्धम् -कु० १।४०, शि० ३।६६ 2 फेंकना, ऊपर को फेंकना, धकेलना, ठेलना -रघु० ५।४६, १६।६६, उप -, 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, दुखी करना, तंग करना, परेशान करना —स्तनोपपीड परिरब्धुकामा—कि० ३।५४, शि० १०।४७ 2 अत्याचार करना, बरबाद करना मनु० ८।६७, ७।१९५, नि -, 1 तंग करना, पीड़ित करना, परेशान करना, दंड देना, कष्ट देना मनु० ७।२३ 2 निचोड़ना, दबाना, कस कर पकड़ना, हथिया लेना, थामना—गुरोः सकाशस्य निपीडय पादौ -रघु० २।३५, ५।६५, वि -, निचोड़ना—दे० निष्पीडित, परि-, 1 पीड़ा देना, कष्ट देना, परेशान करना 2 दबाना, भींचना इ-, अत्यधिक पीड़ित करना, यातना देना, सताना 2 दबाना, भींचना, सम्-, भींचना, चुटकी काटना कठे जीर्णलताप्रतानवलयेनापर्यंसपीडित श० ३।११, चौर० ३।

पीडक [पीड्+ण्वुल्] अत्याचारी।

पीडनम् [पीड्+ल्युट्] 1 पीड़ित करना, कष्ट देना, अत्याचार करना, पीड़ा पहुंचाना —मनु० ९।२९९ 2 भींचना, दबाना -बोधैस्त्रिभिश्च-निविडस्तन पीडनानि -गीत० १०, दशौष्ठपीडन नखक्षतरक्तसिक्ताम् —चौर० ४८ 3 दबाने का उपकरण 4 लेना, थामना, पकड़ना जैसा कि 'करपीडन' और 'पाणिपीडन' में 5. बर्बाद करना, उजाड़ना 6. अनाज पीसना 7. ग्रहण —जैसा कि 'ग्रह पीडन' में 8 ध्वनि निरोध, स्वरोच्चारण का एक दोष।

पीडा [पीड्+अङ्+टाप्] 1 दर्द, कष्ट, क्लेश, सताना, परेशानी, वेदना—आधमपीडा—रघु० १।३७, बाधा, ७१, मदन°, दारिद्र्य° आदि 2 क्षति पहुँचाना, हानि पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना मनु० १७।१९, मनु० ७।१६९ 3 उजाड़ना, बर्बाद करना 4 उल्लंघन, अतिक्रमण 5. प्रतिबंध 6 दया, करुणा 7 ग्रहण 8 सुमिरनी, शिरोवस्त्र 9. सरलवृक्ष। सम० कर (वि०) कष्टकर, पीड़ामय।

पीडित (भू० क० कृ०) [पीड्+क्त] 1. पीड़ा से युक्त, तंग किया हुआ, सताया हुआ, अत्याचारग्रस्त, नोचा गया 2 निचोड़ा हुआ, दबाया हुआ 3 विवाहित, पाणिगृहीत 4. अतिक्रान्त, तोड़ा हुआ 5. उजाड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ 6 ग्रहणग्रस्त 7 बाँधा हुआ, बंधनग्रस्त, तम् 1 दर्द करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना 2 मैथुन का विशेष प्रकार, रतिबंध,—तम् (अव्य०) मजबूती से, सटा कर, दृढ़ता पूर्वक।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1 पीया हुआ, चढ़ाया हुआ 2. परिव्याप्त, सिक्त, भरा हुआ, संतृप्त 3 पीला —विद्युत्कुमारचित-पीतपटोत्तरीय —मृच्छ० ५।२, —क 1. पीला रंग 2. पुखराज 3 कुसुम्भ,—तम् 1 सोना 2 हरताल। सम०—अब्धिः अगस्त्य का विशेषण,—अम्बरः विष्णु का विशेषण—इति निगदित. प्रेत पीताम्बरोऽपि तवाकरोत्-गीत० १२ 2. अग्निदेवता 3. पीले वस्त्र पहने हुए साधु संन्यासी, -अक्ष (वि०) पीताभरक्त, पीलेपन से युक्त लाल,—अम्बरम् (पु०) पुखराज,— कदली केले का एक भेद, सुनहरी केला,—कंसम् गाजर, - काञ्चनम् 1 केसर 2. पीतल काञ्चनम् पीला चंदन,—गंधम् पीला चंदन, चंदनम् 1 एक प्रकार का चंदन 2 केसर 3. हल्दी, -चन्यकः दीपक,—तुंडः कारंडव पक्षी,—दारु (नपु०) एक प्रकार का चीड़ का पेड़, या सरल वृक्ष,—दुग्धा दुधारू गाय, —द्रुः सरल वृक्ष, -धावा एक प्रकार की पक्षी, मैना, —मणिः पुखराज,—माक्षिकम् एक प्रकार का खनिज द्रव्य, सोनामाखी,—मूलकम् गाजर, —रक्त (वि०) पीलेपन से युक्त लाल रंग का, सतरे के रंग का (क्तम्) एक प्रकार का पीले रंग का रत्न, पुखराज,—रजः 1 पीला रंग 2 गोंद 3 एक केसर, —वासुका हल्दी, वासस् (पुं०) कृष्ण का विशेषण, —सारः 1 पुखराज 2 चन्दन का वृक्ष (रम्) पीली चंदन की लकड़ी, —सारि (नपु) अंजन, सुर्मा -सूकर, —स्फटिकः पुखराज,—हरित (वि०) पीलापन लिये हुए हरा।

पीतद्रु [पीत+द्रु] 1. हरताल 2. पीतक 3. केसर 4. सहजन 5. अगर की लकड़ी 6 चंदन की लकड़ी।

पीतद्रुः [पीतं करोति इति—पीत+च्वि+स्फुट् या पीतं वमति इति पीत+मी+ड] सूकर की जाति का वृक्ष —द्रवम् 1. हरताल 2 केसर।

पीतल (वि०) [पीत+का+क] पीले रंग का,—कः पीला रंग,—लम् पीतल।

पीतिः [पा+क्तिच्] घोड़ा—(स्त्री०) 1. घूंट, पीना 2 मदिरालय 3. हाथी की सूंड।

पीतिका [पीत+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 केसर 2 हल्दी 3 पीली चमेली, या सोनजुही।

पीतुः [पा+क्तुच्] 1. सूर्य 2 अग्नि 3 हाथियों के झुंड का मुख्य हाथी, यूथपति।

पीथः [पा+थक्] 1. सूर्य 2 काल 3 अग्नि 4 पेय 5. जल।

पीथिः [=पीति, पृषो० तस्य थ] घोड़ा।

पीन (वि०) [प्याय+क्त, सम्प्रसारणं दीर्घं] 1 स्थूल, मांसल, हृष्टपुष्ट 2 भरापूरा, विशाल, मोटा—जैसा कि 'पीनस्तनी' में 3 पूर्ण, गोलमटोल 4 प्रभूत, अधिक। सम०—अक्षी स्त्री (पीनोक्षी) भरे पूरे नेत्र (आँखें) वाली नारी, —वक्षस् (वि०) विशाल-वक्षःस्थल वाला, भरी पूरी छाती वाला।

पीनसः [पीन स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति—पीन+सो+क] 1 नाक पर दुष्प्रभाव डालने वाला जुकाम 2 खांसी, जुकाम।

पीलु [पा+कु नि० वुक्, इत्वम्] 1 कौवा 2 सूर्य 3 अग्नि 4 उल्लू 5. काल 6 सोना।

पीयूषः,—षम् [पीय्+ऊषन्] 1 सुधा, अमृत—मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा—भर्तृ० २।६८, इमां पीयूषलहरीम् गंगा० ५३ 2 दूध 3 ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध। सम० —भानुः (पुं०), —रुचिः 1 चन्द्रमा 2. कपूर,—वर्षः 1 अमृतवर्षा 2. चन्द्रमा 3 कपूर।

पीलकः [पील्+ण्वुल्] मकौड़ा।

पीलुः [पील्+उ] 1 बाण 2 अणु 3 कीड़ा 4 हाथी 5 ताड़ का तना 6 फूल 7 ताड़ के वृक्षों का समूह 8. 'पीलु' नाम का एक वृक्ष।

पीलुकः [पीलु+कन्] चींटा।

पीव् (स्वा० पर०—पीवति) मोटा-ताजा या हृष्ट पुष्ट होना।

पीवन् (वि०) (स्त्री०—पीवरी) [पीव्+क्वनिप्, सम्प्र० दीर्घ] 1. भरा पूरा, स्थूल, मोटा 2 हृष्ट पुष्ट, बलवान्—(पुं०) पवन।

पीवर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [पीव्+क्वरच्, सम्प्र० दीर्घ] 1 स्थूल, विशाल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटा-ताजा—रघु० ३।८, ५।६५ १९।३२ 2. फूला हुआ मोटा,—रः कछुवा, —री 1. तरुणी 2 गाय।

पीवा [पीयते पी+व+टाप्] जल।

पुंस् (चुरा० उभ० पुंसयति-ते)। कुचलना, पीसना 2 पीड़ा देना, कष्ट देना, दण्ड देना।

पुंस् (पुं०) [पा+डुमसुन्] (कर्तृ०—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः, करण द्वि० व०—पुम्भ्याम्, सप्त० ए० व०—पुंसि) 1 पुरुष 2 नर—पुंसि विश्वसिति कुरु कुमारी—नै० ५।११० 2 इंसान, मानव—यस्यार्थाः स पुमाँल्लोके हि० १ 3 मनुष्य, मनुष्य जाति, कौम, राष्ट्र—वर्षे पुंसा रघुपतिपदैं—मेघ० १२ 4 टहलुआ, सेवक 5 पुल्लिंग शब्द 6 पुल्लिंग—पुंसि वा हरिचन्दनम् अमर० 7 आत्मा। सम०—अनुज (वि०) (पुंसानुज) [पुंसा अनुजः, समासे तृतीयायाः अलुक्] वह जिसका बड़ा भाई भी हो,—अनूजा (पुंसनूजा) लड़का होने के बाद जन्म लेने वाली लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की, अपत्यम् (पुंसपत्यम्) लड़का, अर्थः (प्रमर्थ) 1. पुरुष या मनुष्य का उद्देश्य 2. मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष, दे० पुरुषार्थ,—आख्या (प्रमाख्या) नर की संज्ञा, आचारः (पुमाचार) पुरुष का आचार, चालचलन, —कटिः (स्त्री०) पुरुष की कमर,—कामा (पुंस्काम) पति की कामना करने वाली स्त्री,—कोकिलः (पुंस्कोकिल) नर-कोयल—कु० ३।३२,—ग्रहः (पुंसंज्ञः) नर-ग्रह,—गवः (पुंगव) 1 बैल, साँड 2 (समास के अन्त में) मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पूज्य या किसी भी श्रेणी का प्रमुख व्यक्ति—बाल्मीकिर्मुनिपुंगव —रामा०, इसी प्रकार 'गजपुंगव' भर्तृ० २।३१, नर पुंगव —आदि,—केतुः शिव का विशेषण—कु० ७।७७, चली (पुंश्चलीय) रंडी का बेटा,—चिह्नम् (पुंश्चिह्नम्) शिश्न, पुरुष की जननेन्द्रिय,—जन्मन् (पुंजन्मन्) (नपुं) लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना, योगः वह नक्षत्रपुंज जिसमें कि लड़के या नरसन्तान का जन्म होता है, दासः (पुंदास) पुरुष-दास,—द्रुमः (पुंद्रुम) 1 प्राणिमात्र में किसी भी जाति का नर 2 चूहा,—नक्षत्रम् (पुंनक्षत्रम्) नर जाति का नक्षत्र, —नागः (पुंनाग) 1 पुरुषों में हाथी, पूज्य या आदरणीय पुरुष 2 सफेद हाथी 3 सफेद कमल 4 जायफल 5 नाग केशर नाम का वृक्ष रघु० ६।५७, नाट,—टः (पुंनाट—ट) इस नाम का वृक्ष, —नामधेय (पुंनामधेय) नर, पुरुषवाची,—नामन् (पुंनामन्) (वि०) पुल्लिंग नामधारी, (पुं) पुंनाग नामक वृक्ष, —पुत्रः नर-सन्तान, लड़का,—प्रजननम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्गम्, —भूयस् (पुंभूयस्) (पुं)

यह शब्द जो केवल पुंलिंग बहुवचनांत ही होता है —आरा पुंभूमि भवताम्—अमर०,—भोजः (पुंभोज) पुरुष के साथ सहवास का संबंध 2. किसी पुरुष या पति का संकेत—वधोपे वनिषौ,—रत्नम् (पुरुषरत्नम्) श्रेष्ठ व्यक्ति (पुरुषश्रेष्ठ नर-व्याघ्र,—वचनम् (पुंवचनम्) नर का रूप,—लिंग (पुंल्लिंग) (वि०) पुरुषवाचक (शब्द), पुरुष वाचक (शब्द) 1. पुरुष वाचक चिह्न 2 वीर्य, गोबर 3. पुरुष की जननेन्द्रिय,—वत्सः (पुंवत्स.) बछड़ा,—वृषः (पुंवृषः) बछेड़ा,—वेष (पुंवेष) (वि०) पुरुष की वेष भूषा में, मर्दानी पोशाक पहने हुए,—संवन (पुंसवन) (वि०) पुत्रोत्पत्ति करने वाला (कर्म) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है—रघु० ३।१० 2. भ्रूण, गर्भ 3 शुक्र।

पुंस्त्वम् [पुंस्+त्व]1. पुरुष का लक्षण, वीर्य, पुरुषत्व, मर्दानगी—यत्नात् पुंस्त्वे परीक्षित.—याज्ञ० १।५५, 2. शुक्र, वीर्य 3. पुंलिंग।

पुंवत् (अव्य०) [पुंस्+वति] 1. पुरुष की भांति—रघु० ६।२० 2. पुंलिंग में।

पुक्कस (वि०) (स्त्री—सी), पुक्कस (वि०) (स्त्री०—सी) [पुक् कुत्सितं कसति गच्छति—पुक्+कस्(क्)+अच्] अधम, नीच, —सः,—सः एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री में उत्पन्न निषाद की सन्तान—जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कस —मनु० १०।-१८,—सी,—सी 1. कसी नील का पौधा 3. पुक्कस जाति की स्त्री।

पुंख:,-खम् [पुमांसं खनति—पुम्+खन्+ड] 1. बाण का पंख वाला भाग—रघु० २।३१, ३।६४, ९।६१ 2 बाज, श्येन।

पुंखित: (वि०) [पुंख+इतच्] पंखों से युक्त (यथा—बाण)।

पुंज:,-जम् [=पुञ्ज, पृषो०] ढेर, समूह, समुच्चय।

पुंजल: [पुंस+ला+क] बादल।

पुच्छ,-च्छम् [पुच्छ्+अच्] 1. पूंछ—पश्चात्पुच्छे वहति विपुले—उत्तर० ४।२७ 2. बालों वाली पूंछ 3. मोर की पूंछ 4 पिछला भाग 5. किसी वस्तु का किनारा। सम०—अग्रम्,—मूलम् पूंछ का सिरा,—कंटक: विष्णु, —ग्रहण् पूंछ को पकड़।

पुच्छटि:,-टी (स्त्री०) [पुच्छ्+अट्+इन्, पुच्छटि+ङीष्] अंगुलियां चटकाना।

पुच्छिन् (पु०) [पुच्छ+इनि] मुर्गा।

पुञ्ज: [पुञ्ज्+नि+ड] ढेर, समुच्चय, मात्रा, राशि, संग्रह—क्षीरोदवेलेव सफेनपुञ्जा—कु० ७।२६, प्रत्युद्गच्छति मूर्छेति स्थिरतमः पुंसे निषुंजे प्रिय.—गीत० ११।

पुंजि (स्त्री०) [पिञ्ज्+इन्, पृषो०] ढेर, माला, राशि।

पुंजिक: [पुंजि+कन्] बौना।

पुंजित (वि०) [पुंज+इतच्] 1. ढेरी, संगृहीत, एक जगह लगाया हुआ ढेर 2. मिलाकर मींजा हुआ, दबाया हुआ।

पुट् i (तुदा० पर०—पुटति) 1. आलिंगन करना, चिपटना 2. अन्तर्गठित करना, बटना, बुनना ii (चुरा० उभ० पुटयति-ते) 1. मिलना 2. बांधना, जकड़ना 3. पीट-यति-ते (क) पीसना, चूर्ण करना (ख) बोलना (ग) चमकना iii (स्वा० पर० पोटति) 1 पीसना 2. मलना।

पुट:,—टम् [पुट्+क]1 तह 2. खोखली जगह, बिवर, खोखला पन—भिन्नपलाशपुटो वनानिलः—रघु० ९।४८, ११।२३, १७।१२, मालवि० ३।९, अंजलिपुट, कर्णपुट आदि 3. दोना, पत्तों की तहकरके बनाया गया, पुत्तड़ा—दुग्धा पथ. पत्रपुटे मदीयम्—रघु० २।६५, मनु० ६।२८ 4 कोई उथला पात्र 5. पली, छोली 6. म्यान, ढकना, आच्छादन 7. पलक (पुटौ भी इन्हीं अर्थों में) 8 घोड़े का खुर,—टः रत्नपेटी,—टम् चावलका। सम०—उदकम् सफेद कतीरा, —उदकः नारियल,—कीय: 1. बर्तन, कलसा, घड़ा 2. तांबे का पात्र,—पाकः औषधियां तैयार करने की विशेष पद्धति, (इसमें औषधियों को पत्तों में लपेट कर ऊपर से मृत्तिका पोत देते हैं और फिर आग में भूना जाता है)— अनिर्भिन्नो गभीरत्वादतर्भूढघनव्यथः, पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रस —उत्तर० ३।१,—भेदः 1. पुर, नगर 2. एक प्रकार का नाटकीय, आतोद्य 3 अक्षा-वर्त या मकर,—भेदनम् कस्बा या नगर—शि० १३।२६।

पुटकम् [पुट+कन्] 1. तह 2. उथला या कम गहरा प्याला 3 दोना या पुत्तड़ा 4. कमल 5 बायफल।

पुटकिनी [पुटक+इनि+ङीप्] 1. कमल 2. कमल समूह।

पुटिका [पुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] इलायची।

पुटित (वि०) [पुट्+क्त] 1. रगड़ा हुआ, पीसा हुआ 2 सिकुड़ा हुआ 3. टांका लगाया हुआ, सीया हुआ 4. अंकित।

पुटी [पुट+ङीष्] दे० पुट।

पुड् (तुदा० पर०) 1. छोड़ना, त्याग देना, तिलांजलि दे देना 2. पदच्युत करना 3. निकालना, बिदा करना, खोजना।

पुंड् (स्वा०पर०—पुंडति) पीसना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीस डालना।

पुंड: [पुण्ड्+घञ्] चिह्न, निशान।

पुंडरीक: [पुंड्+ईकन् वि०] 1. श्वेतकमल,—उत्तर० ६।२७, मा० ९।७४ 2. सफेद छाता,—कः 1. सफेद

रंग 2 दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठातृ-दिक्पाल – रघु० १८।८ 3 व्याघ्र 4 एक प्रकार का लौंग 5 एक प्रकार का चावल 6 एक प्रकार का कोढ़ 7 हाथी का बुखार 8. एक प्रकार का आम का वृक्ष 9. घड़ा, जलपात्र 10 आग 11 मस्तक पर सम्प्रदाय द्योतक तिलक। सम०—अक्षः विष्णु का विशेषण – रघु० १८।८,—प्लवः एक तरह का पक्षी, —मुखी एक तरह की जोक।

पुंड्रः [पुंड्र+रक्] 1 एक प्रकार का गन्ना (लाल रंग का) पौंडा 2 कमल 3 पवित्र कमल 4 (मस्तक पर) सम्प्रदायद्योतक तिलक (चन्दनादिक का) 5 कीड़ा —ड्राः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम। सम०– ऐरिक हाथी।

पुंड्रकः [पुंड्र+कन्] 1 एक प्रकार का ईख (लाल रंग का) पौंडा 2 सम्प्रदाय द्योतक तिलक।

पुण्य (वि०) [पू०+यत्, णुक्, ह्रस्व] 1 पवित्र, पुनीत, शुचि जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु आषमेषु –मेघ० १, पुण्य याम चढीश्वरस्य ३३, रघु० ३।४१, श० २।१४, मनु० २।६८ 2 अच्छा, भला, गुणी, सच्चा, न्याय 3 शुभ, कल्याणकारी, भाग्यशाली, अनुकूल (दिन आदि)—मनु० २।३०,२६ 4 रुचिकर, सुहावना, प्रिय, सुन्दर प्रकृत्या पुण्यलक्ष्मीको—महावी० १।१६,२४, उत्तर० ४।१०, इसी प्रकार 'पुण्यदर्शन' 5 मधुर, गन्धयुक्त (जैसे सुगन्ध, परिमल) 6 औपचारिक, उत्सव या संस्कार संबंधी —ण्यम् 1 सद्गुण, धार्मिक या नैतिक गुण अत्युत्कटं पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया शा० ३।१, रघु० १।६९, नै० ३।८७ 2 सद्गुणसंपन्न कृत्य, प्रशस्य कार्य 3 पवित्रता, पवित्रीकरण 4 पक्षुओं को पानी पिलाने के लिए कूँड, —ण्या पवित्र तुलसी। सम० —अहम् मंगलमय या शुभ दिवस पुण्याह भवतो ब्रुवतु, अस्तु पुण्याहम्–पुण्याह ब्रज मंगल सुदिवस प्राप्त प्रयातस्य ते – अमरु ६१, °वाचनम् बहुत से धार्मिक संस्कारों के आरंभ में तीन बार उच्चारण करना 'यह शुभदिवस है',—उदयः सौभाग्य का प्रभात,—उद्यान (वि०) सुन्दर उद्यान रखने वाला, कर्तृ (पु०) स्तुत्य या गुणवान् पुरुष,—कर्मन् (वि०) स्तुत्य कार्यों के करने वाला, खरा, ईमानदार (नपु०) स्तुत्य कार्य, —कालः शुभ समय, कीर्ति (वि०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी, विख्यात– भट्टि० १।५,—कृत् (वि०) सद्गुणसंपन्न, प्रशंसनीय, स्तुत्य,—कृत्या धर्मकार्य, ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो, —क्षेत्रम् 1 पवित्र-स्थान तीर्थस्थान 2 पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त, —गन्ध (वि०) मधुर गंध से युक्त,—गृहम् 1 वह स्थान जहाँ अन्न आदि खैरात बाँटी जाय, 2. देवालय, —जनः 1 सद्गुणी 2 राक्षस, पिशाच 3 यक्ष रघु० १३।६०, –ईश्वरः कुबेर का विशेषण –अनुययौ यमपुण्यजनेश्वरौ– रघु० ९।६,—जित (वि०) पुण्य-द्वारा प्राप्त किया हुआ, तीर्थम् तीर्थयात्रा का शुभ-स्थान, दर्शन (वि०) सुन्दर (नः) नीलकंठपक्षी (नम्) पवित्रस्थान, मन्दिर आदि का दर्शन,—पुरुष धर्मात्मा या पुण्यात्मा, प्रतापः अच्छे गुणों या नैतिक कार्यों का प्रभाव, फलम् सत्कर्मों का पुरस्कार, (ला) वह उद्यान जहाँ पुण्यरूपी फलों की प्राप्ति होती है, भाज् (वि०) सौभाग्यशाली, धर्मात्मा, अच्छे गुणों वाला पुण्यभाजं सत्त्वमी मुनयः का० ४३,—भू, भूमिः (स्त्री०) पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त, रात्रिः शुभरात्रि, लोक स्वर्ग, वैकुण्ठ.– शकुनम् शुभशकुन (नः) शुभशकुनसूचक पक्षी, –शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सत्कर्मों में रुचि रखने वाला, धर्म-परायण, ईमानदार,–श्लोक (वि०) सुविख्यात, जिसका नामोच्चारण ही शुभ समझा जाय, उत्तम यशवाला, पावनचरित्र वाला (कः) (निषध देश के राजा) नल का विशेषण, युधिष्ठिर और जनार्दन का विशेषण—पुण्यश्लोको नला राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः, पुण्यश्लोका च वैदेही, पुण्यश्लोको जनार्दनः। –(का) सीता और द्रौपदी का विशेषण,—स्थानम् पुण्यभूमि, पवित्रस्थान, तीर्थस्थान।

पुण्यवत् (वि०) [पुण्य+मतुप्, मस्य व] 1 सत्कर्म करने वाला, सद्गुणी 2 भाग्यशाली, मंगलमय, अच्छी किस्मत वाला 3 सुखी, भाग्यवान्।

पुत् (नपु०) [पृ+डुति– पृषो०] नरक का एक विशेष प्रभाग जहाँ पुत्रहीन व्यक्ति डाले जाते हैं, दे० 'पुत्र' नीचे। सम०—गामिन् (वि०) 'पुत्' नाम वाला।

पुत्तल,–ली [पुत्+तल्+ङीष्] 1 प्रतिमा, मूर्ति, बुत, पुतला 2 गुड़िया कठपुतली। सम०—दहनम्,–विधि विदेश में जिसका प्राणांत हुआ हो अथवा अप्राप्त शव के बदले उसका पुतला बना कर जलाना।

पुत्तलक, पुत्तलिका [पुत्तल+कन्, पुत्तली+कन्+टाप्, ह्रस्व] गुड़िया, मूर्ति आदि।

पुत्तिका [पुत्त+ठन्+टाप्] 1 एक प्रकार की मधुमक्खी, 2 दीमक।

पुत्र [पुत्+त्रै+क] बेटा (इस शब्द की व्युत्पत्ति–पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुतः, तस्मात्पुत्र इति प्रोक्त स्वयमेव स्वयंभुवा—मनु० ९।१३८, इस लिए इस शब्द का शुद्ध रूप 'पुत्र' है) 2 बच्चा, किसी जानवर का बच्चा 3 प्रिय वत्स (छोटे बच्चों को प्यार से संबोधित करने का शब्द) 4. (समास के

अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु—यथा असिपुत्र, शिलापुत्र आदि, जौ (द्वि० व०) पुत्र और पुत्री (पुत्रीकृ पुत्र के रूप में गोद लेना—रघु० २।३६)। सम०—अजीवः 1 जो पुत्र की कमाई पर निर्वाह करता है, या जिसके निर्वाह की व्यवस्था पुत्र द्वारा की जाय 2 एक विशेष प्रकार का साधु दे० कुटीचक, —अर्थिन् (वि०) पुत्र चाहने वाला,—इष्टिः, —इष्टिका (स्त्री०) पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष, काम (वि०) पुत्र की कामना करने वाला, कार्यम् पुत्र संबंधी संस्कारादि, कृतकः जो पुत्र की भाँति माना गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र—श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति मोज्य न पुत्र कृतक पदवीं मृगस्ते—श० ४।१३, जात (वि०) जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो, दारम् पुत्र और पत्नी, —धर्मः पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य —पौत्रम्,—त्रः बेटे और पोते,—पौत्रीण (वि०) पुत्र से पौत्र की प्राप्ति होने वाला, आनुवंशिक—भट्टि० ५।१५,—प्रतिनिधिः पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ, (उदा०—दत्तक पुत्र), —लाभः पुत्र की प्राप्ति,—वधूः (स्त्री०) पुत्र की पत्नी, स्नुषा,—वत्सल. बच्चों से प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी, हीन (वि०) जिसके पुत्र न हो, निस्सन्तान।

पुत्रक [पुत्र+कन्] 1 छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, लाल, वत्स (वात्सल्य को प्रकट करने वाला शब्द) 2 गुड़िया, कठपुतली कु० १।२९ 3 धूर्त, ठग 4 टिड्डी, टिड्डा 5 खरगोश या परवाना, पतंग, 6 बाल।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री [पुत्रक+टाप्, पुत्री+कन्+टाप्, ह्रस्व, पुत्र+ङीष्] 1 बेटी 2 गुड़िया, पुतली 3 (समास के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु —यथा असिपुत्रिका, खड्ग पुत्रिका आदि। सम० पुत्र.,—सुतः 1 बेटी का बेटा, दौहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ—मनु० ९।१२७ 2, बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है, तथा पिता के घर रहती है (पुत्रिकैव पुत्र अथवा पुत्रिकैव सुत पुत्रिका सुत मोऽयौरसस्तम एव—याज्ञ० २।१२८ पर मिता०) 3 पौत्र,—स्नुः वह माता जिसके कन्याएँ ही हों, पुत्र न हो,—भर्तृ (पु०) 'बेटी का पति' जामाता, दामाद। पुत्रिन् (वि०) (स्त्री० नी) [पुत्र+इनि] बेटे वाला, बेटों वाला—रघु० १।९१, विक्रम० ५।१४, (पुत्र) पुत्र का पिता।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) [पुत्र+घ, छ, यत् वा] पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक।

पुत्रीया [पुत्र+क्यच्+अ+टाप्] पुत्र प्राप्ति की इच्छा।

पुत्रल (वि०) [पुत् कुत्सितं त्रायते यस्मात् ब० स०] सुन्दर, प्रिय, मनोहर,—लः परमाणु—पुरुलः परमाणवः—श्रीधर 2 शरीर, भूतद्रव्य 3 आत्मा 4 शिव का विशेषण।

पुनर् (अव्य०) [पत्+अर्+उत्वम्] 1 फिर, एक बार फिर, नये सिरे से न पुनरेव प्रवर्तितव्यम्—श० ६, किमत्र चित्रं यदि पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तरावरः—कु० ५।८२, इसी प्रकार पुनर्भू फिर पत्नी बनना 2 वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ), —पुनर्दा वापिस देना, लौटाना, पुनर्या—इ—गम् आदि वापिस जाना, लौटना आदि 3 इसके विपरीत, उलटे, परन्तु, तो भी, तथापि इतना होते हुए भी (विरोध सूचक बल के साथ)—प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः, अङ्गान्यानन्दयति मां त्वं पुनः क्वासि नन्दिनि—उत्तर० ३।१४, मम पुनर्जन्मैव नास्ति—उत्तर० ३ पुनः पुनः 'फिर—फिर' 'बार बार' 'बहुधा'—पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलं—रघु० ३।४२, किं पुनः कितना अधिक, कितना कम—दे० किम् के नीचे, पुनरपि फिर, एक बार और, इसके विपरीत। सम०—अर्थिता बार बार की हुई प्रार्थना, —आगत (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ, —भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः—सर्व०, आधानम्, —आधेयम् अभिमन्त्रित अग्नि का पुनः स्थापन, आवर्तः 1 वापसी 2 बार २ जन्म होना, आवर्तिन् (वि०) फिर से संसार में जन्म लेने वाला, आवृत् (स्त्री०), आवृत्तिः (स्त्री०) 1 दोहराना 2 फिर से संसार में आना, बार बार जन्म लेना याज्ञ० ३।१९४ 3 दोहरवाना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण, उक्त (वि०) 1 फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया 2 फालतू, अनावश्यक शब्दस यदा पुनरुक्तमेव रघु० २।३८, शि० ९।६४, (क्तम्) पुनरुक्तता 1 दोहराना 2 बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरुक्ति—उत्तर० ५।१५, भर्तृ० ३।७८, जन्मन् (पु०) द्विजन्मा, ब्राह्मण, पुनरुक्तवदाभास प्रतीयमान पुनरुक्ति, पुनरुक्ति का आभास होना, एक अलंकार—उदा० भुजगकुडलीभूयस्तस्थुषे भृगुभर्तृशे शीतगुः, जगत्यपि सदा पायादव्याज्जटेश्वरो हरः शिवः। सा० द० ६२२, (यहाँ पुनरुक्ति की प्रतीति तुरन्त दूर हो जाती है जब कि सदर्भ का सही अर्थ समझ लिया जाता है, तु० काव्य० ९ में 'पुनरुक्तवदाभास' के नीचे), —उक्तिः (स्त्री०) 1 दोहराना 2 बाहुल्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति, उत्थानम् फिर उठना, पुनर्जीवित करना, —उत्पत्तिः (स्त्री०) 1 पुनरुत्पादन 2 फिर जन्म होना, देहान्तरागमन, उपगमः वापसी —क्वाद्योध्यायाः पुनरुपगमो दक्षकायाः क्व चेयं—उत्तर० २।१३,—कन्या, ऊढा दुबारा ब्याही हुई स्त्री,

—गमनम् वापसी, फिर जाना,—जन्मन् (नपु०) बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन, —जात (वि०) फिर उत्पन्न हुआ, —नवः, नवः 'बार २ उगना', नाखून, —दारक्रिया पुनर्विवाह करना (पुरुष का), दूसरी पत्नी लाना, प्रत्युपकार, किसी के उपकार का बदला चुकाना, बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन मक्षापि च क्षपयतु नीललोहित पुनर्भव परिगतशक्तिरात्मभू श० ७।३५, कु० ३।५ 2 नाखून, —भावः नया जन्म, पुनर्जन्म, पुनः 1 विधवा जिसका पुनर्विवाह हो गया हो 2 पुनर्जन्म, यात्रा 1 फिर जाना 2 बार २ प्रगति करना (जलूस निकलना), —वचनम् फिर कहना, वसुः (प्राय द्वि० व०) 1 सातवाँ नक्षत्र (दो या तीन तारों का पुंज) गा गतसंधिं दिव पुनर्वसू—रघु० ११।३६ 2 विष्णु और 3 शिव का विशेषण, विवाह फिर विवाह होना, —संस्कारः (पुन संस्कार) किसी संस्कार या शुद्धिकारक कृत्य का दोहराना, संगमः, संधानम् (पुन संधानम्) फिर से मिलना,—संभवः (पुन—संभव) (संसार में) फिर जन्म लेना, देहान्तरागमन।

पुप्फुसः [=पुप्फुस, पृषो० सस्य लत्वम्] उदरवायु, अफारा।

पुप्फुसः [पुप्फुस्+अच्] 1 फेफड़ा 2. कमल का बीज कोष।

पुर (स्त्री०) (कर्तृ०, ए० व०—पूः, करण०, द्वि० व० पूर्भ्याम्) [पृ+क्विप्] 1 नगर, शहर जिसके चारों ओर सुरक्षादीवार हो पूरप्यभिख्यत्तमुलप्रसादा —रघु० १६।२३ 2 दुर्ग, किला, गढ 3 दीवार 4 शरीर 5 बुद्धि। सम०—द्वार् (स्त्री०), —द्वारम् नगर का फाटक।

पुरम् [पृ+क] 1 नगर, शहर (बड़े २ विशाल भवनों से युक्त, चारों ओर परिखा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में जो एक कोस से कम न हो)—पुरे तावत-मेवास्य तनोति रविरातपम् कु० २।३, रघु० १।५९ 2 किला, दुर्ग, गढ 3 घर, निवास, आवास 4 शरीर 5 अन्तःपुर, रनिवास 6 पाटलिपुत्र 7 पुष्पकोश, पत्तों की बनी फूलकटोरी 8 चमड़ा 10 गुग्गुल। सम०—अट्टः नगरभित्ति पर बना कंगूरा या मीनार, —अधिपः, अध्यक्षः नगरपाल,—अरातिः,—अरिः, —असुहृद् (पुं०),—रिपुः शिव के विशेषण—पुरारातिभार्यया कुसुमशर किं मा प्रहरसि सुभ०, दे० त्रिपुर,—उत्सवः नगर में मनाया जाने वाला उत्सव, —उद्यानम् नगरोद्यान, उपवन,—औकस् (पुं०) नगर में रहने वाला,—कोष्ठम् नगररक्षक दुर्ग—ग (वि०) 1 नगर को जाने वाला 2 अनुकूल,—जित् द्विष्, —जिद् (पुं०) शिव के विशेषण,—ज्योतिस् (पुं०) 1 अग्नि का विशेषण 2 अग्निलोक,—तडी छोटी पैंठ, छोटा गाँव जहाँ पैंठ लगती हो,—तोरणम् नगर का बाहरी फाटक, द्वारम् नगर का फाटक,— निवेशः नगर की नींव डालना,—पालः नगररक्षक, दुर्ग का सेनापति,—भवनः शिव का विशेषण,—मार्गः नगर की गली, कु० ४।११, रघु० ११।३,—रक्षः,—रक्षकः, रक्षिन् (पुं०) कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी,—रोधः दुर्ग का घेरा,—वासिन् (पुं०) नागरिक, नगर का रहने वाला,—शासनः 1 विष्णु का विशेषण 2 शिव की उपाधि।

पुरटम् [पुर्+अटन्] सोना, स्वर्ण।

पुरण [पृ+क्यु, उत्वम्, रपर] समुद्र, महासागर।

पुरत (अव्य०) [पुर+तस्] सामने, आगे (विप० पश्चात्), पश्यामि तामित इत पुरतश्च पश्चात्—मा० १।४०, की उपस्थिति में—य य पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा बूहि दीनम् वचः—भर्तृ० २।५१ 2 बाद में—इय च तेऽन्या पुरतो विडम्बना—कु० ५।७०, अमरु ४३।

पुरदर. [पुर दारयति—इति दृ+णिच्+खच्, मुम्] 1 इन्द्र—रघु० २।७४ 2 शिव का विशेषण 3 अग्नि की उपाधि 4 चोर, सेंध लगाने वाला,—रा भगा का विशेषण।

पुरंध्रि., ध्री (स्त्री०) [पुर गेहस्वजन धारयति धृ+खच् +ङीप्, पृषो० वा ह्रस्वः—तारा०] 1 प्रौढ विवाहिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री—पुरंध्रीणा चित्त कुसुमसुकुमार हि भवति—उत्तर० ४।१२, मुद्रा० २। ७, कु० ६।३२, ७।२ 2 वह स्त्री जिसका पति व बच्चे जीवित हों।

पुरला [पुर+ला+क+टाप्] दुर्गा का विशेषण।

पुरस् (अव्य०) [पूर्व+असि, पुर् आदेश] 1 सामने, आगे, उपस्थिति में, आँखों के सामने (स्वतन्त्र रूप से या संबंध के साथ) अमु पुर पश्यसि देव दारुम्—रघु० २।३६, तस्य स्थित्वा कथमपि पुर—मेघ० ३, कु० ४।३, अमरु ४३, प्राय कृ, गम् धा और भू धातुओं के साथ प्रयोग (दे० धातु०) 2 पूर्व में, पूर्व से 3 पूर्व की ओर। सम०—करणम्,—कारः 1 सामने का आगे रखना 2 अभिमान 3 सत्सम्मान वर्ताव, आदर-प्रदर्शन, अनुरोध 4 पूजा 5 सहचारिता, हाजरी देना 6 तैयारी 7 व्यवस्थापन 8 पूर्ण करना 9 आक्रमण करना 10 दोषारोपण करना,—कृत (वि०) 1 सामने रक्खा हुआ—रघु० २।८० 2 सम्मानित, आदर से वर्ताव किया गया, पूजा 3 छांटा गया, माना गया, अनुगमन किया—पुरस्कृतमध्वयकर्म.—रघु० ८।९ 4 आराधित, पूजित 5 सेवा में प्रस्तुत, संलग्न, संयुक्त 6 तैयार, तत्पर 7 अभिमन्त्रित 8 दोषारोपित, कलंकित 9 पूरा

किया हुआ 10 प्रत्याशित,—क्रिया 1 आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित बर्ताव, 2 आरम्भिक या दीक्षासंबंधी कृत्य,—ग,- गम (पुरोग, - गम) (वि०) 1 मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्राय सज्ञा के बल सहित -- स किंवदन्ती वदना पुरोग रघु० १४।३, ६।५५, कु० ७।४० 2 समास में प्रयुक्त) अधिष्ठित- इन्द्र-पुरोगमा देवा 'इन्द्र के नेतृत्व मे देवता',—गति (स्त्री०) 1 पूर्ववर्तिता, (क्रि) कुत्ता, - गतु,—गामिन् (वि०) 1 पहले या आगे जाने वाला 2. मुख्य, नेतृत्व करने वाला, नेता (पु०) कुत्ता, - चारणम् 1, आरम्भिक या दीक्षा विषयक कृत्य 2 तैयारी, दीक्षा 3 किसी देवता के नाम का जप तथा हवन में आहुति,—चुद-चूचुक,-- जन्मन् (पुरोजन्मन्) (वि०) पहले पैदा हुआ, —डाश् (पु०),—डाश (पुरोडाश्,—डाश) चावलो को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति - मनु० ७।२१, —धस् (पुरोधस्) (पु०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का, धानम् (पुरोधानम्) 1 सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार,—धिका (पुरोधिका) (और अब अन्य स्त्रियो की अपेक्षा) मनचहेती पत्नी, पाक (वि०) पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला—कु० ६।९०, - प्रहर्तृ (पु०) पहली पंक्ति में जाकर लड़ने वाला सैनिक रघु० १३।७२, -- फल (वि०) जिसका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला रघु० २।२२,--भाग (पुरोभाग) (वि०) 1 बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी 2 छिद्रान्वेषण करने वाला 3 स्पृहाशील, ईर्ष्यालु प्राय समानविद्या परस्परयश पुरोभागा मालवि० १।२० (यहाँ 'पुरोभाग' शब्द का अर्थ 'ईर्ष्या' भी है) (ग) 1 आगे का भाग, अगला भाग, गाड़ी 2 बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश 3 डाह, स्पर्धा,—भागिन् (वि०) आगे रहने वाला, स्वेच्छाचारी, मटमट—श० ५ 2 बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी विक्रम० ३।३, छिद्रान्वेषी, भावत:, वात: (पुरोभावत, वात) आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा मालवि० ४।३, रघु० १८।३८, सर (वि०) अग्रेसर, (र:) आगे चलने वाला, अग्रदूत श० ४।२ 2 अनुचर, टहलुआ, सेवक—परिमेय पुरःसरी रघु० १।३७ 3 नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० ६।४९ 4 (समास के अन्त में) अनुचरो सहित, परिचरो सहित, के साथ - भाम-पुर सरम्, प्रमाणपुर सरम्, वृकपुर सरा -- आदि —स्थायिन् (वि०) सामने खड़े रहने वाला,—हित (वि०) 1 सामने रक्खा हुआ 2 नियुक्त, दूत, आयुक्त (—त:) 1. कार्यभार संभालने वाला, अभिकर्ता, दूत 2 कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्मकाण्ड या संस्कारो का संचालन करता है।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व+अस्ताति, पुर् आदेश] 1 आगे, सामने (प्राय तस० या अया० के साथ) —रघु० २।४४, कु० ७।३०, मेघ० १५, या स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त —अभ्युन्नता पुरस्तात्—श० ३।८ 2 सिर पर, सर्व प्रथम — मालवि० १।१ 3 पहले स्थान पर, आरम्भ में 4 पहले, पूर्वत 5 पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6 बाद में, आगे, अन्त में।

पुरा (अव्य०) [पुर्+का] 1 पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में पुरा शक्रमुपन्यधाय- रघु० १।७५, पुरा सरसि मानसे यस्य यात दय --भामि० १।३, मनु० १।११९, ५।३२ 2 पहले अब तक, इस समय तक 3 पहले पहले, सबसे पहले 4 थोड़े समय में, शीघ्र, अचिरात् थोड़ी देर में (इस अर्थ में प्राय वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि भविष्यत् काल का अर्थ प्रकट हो) - पुरा सप्तद्वीपा जयति वसुधाभप्रतिरथ —श० ७।३३, पुरा दूषयति स्थलीम्- रघु० १२।३०, आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा - मेघ ८५, नै० १।१८, शि० १५।५६, कि० १०।५०, ११।३६। सम० उपनीत (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले आधिपत्य में था, -कथा पुराना उपाख्यान, -कल्प 1 पूर्व सृष्टि 2 अतीत की कहानी 3 पहला युग यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्ट वैरकर महत् - मनु० २।२२७,—कृत (वि०) पहले किया हुआ,—योनि (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति),—वसु: भीष्म का विशेषण, —विद् (वि०) अतीत से परिचित, पूर्व काल की घटनाओ का ज्ञाता, पहले जमाने या पूर्व घटित बातो का जानकार वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविद - कु० ५।२८, ६।९, रघु० ११।१०,—वृत्त (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या उससे संबद्ध 2 पुराना, प्राचीन "कथा पुराना उपाख्यान (—त्तम्) 1 इतिहास 2 पुरानी या काल्पनिक कहानी--पुरावृत्तोद्धारैरपि च कथिता कार्य पदवी—मा० २।१३।

पुरा [पुर+टाप्] 1 गंगा का विशेषण 2 एक प्रकार का गंधद्रव्य 3 पूर्व दिशा 4 किला।

पुराण (स्त्री०--णा, णी) [पुरा भवम्-निरु०] 1 पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी - पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि० १।२, पुराणपत्रापगमादनन्तरम् —रघु० ३।७ 2 अधोवृद्ध, पुरातन —अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराण —भग० २।२० 3 क्षीण, घिसाघिसाया,—णम् 1 अतीत घटना, या वृत्तान्त 2. अतीत की कहानी, उपाख्यान, प्राचीन या पौराणिक इतिहास 3 कुछ विख्यात

धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं तथा व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती हैं, यह पुस्तकें ही हिन्दु-पुराण कथा शास्त्र का भण्डार हैं, पुराणों में पाँच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पञ्चलक्षण' भी कहते हैं—'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्'। पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशन् के नीचे,—नः ८० कौडियों के बराबर मूल्य का एक सिक्का। सम०—अर्थः मन का विशेषण,—उक्त (वि०) पुराणों में निर्दिष्ट या विहित,—गः 1 ब्राह्मण का विशेषण 2 पुराण पाठक, पुराण की कथा करने वाला,—पुरुष विष्णु का विशेषण।

पुरातन (वि०) (स्त्री०—नी) [पुरा+ट्यु, तुट्] 1 पुराना, प्राचीन, शि० १२।६०, भग० ८।३ 2 वयोवृद्ध, प्राक्कालीन, —रघु० ११।८५, कु० ६।९ 3 घिसाघिसाया, क्षीण,—नः विष्णु का विशेषण।

पुरि (स्त्री०) [पॄ+इ] 1 नगर, शहर 2 नदी।

पुरिशय (वि०) [पुरि+शी+अच्] शरीर में विश्राम करने वाला।

पुरी [पुरि+ङीष्] 1 शहर, नगर—शशासैकपुरीमेव—रघु० १।३० 2 गढ़ 3 शरीर। सम०—मोह धतूरे का पौधा।

पुरीतत् (पु०, नपु०) [पुरी देहं नयति—नी+क्विप्] 1 हृदय के पास की एक विशेष अंतड़ी 2 अंतड़ियां —('पुरितत्' भी, परन्तु यह रूप अशुद्ध प्रतीत होता है)।

पुरीषम् [पॄ+ईषन्, किच्च] मल, विष्ठा, गूथ (गोबर), मनु० ३।२५० ५।१२३, ६।७६, ४।५६ 2 कूड़ा-करकट, गंदगी। सम०—उत्सर्गः मलत्याग, —जिह्म-जम् कोष्ठबद्धता।

पुरीषण [पुरीष+इष्+ल्युट्] मल, विष्ठा,—जम् मलोत्सर्ग करना, मलत्याग करना।

पुरीषम्, [पुरीष मिमीते—पुरीष+मा+क] उडद, माष।

पुरु (वि०) (स्त्री०—रु,—रूः) [पॄ पालनपोषणयो —कु] अति, प्रचुर, अधिक, बहुत से (लौकिकसाहित्य में 'पुरु' शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है),—रु 1 'फूलों का पराग 2 स्वर्ग, देवलोक 3 एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवंशी राजाओं में छठा राजा (यह शर्मिष्ठा और ययाति का सब से छोटा पुत्र था। जब ययाति ने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा कि क्या कोई उनमें से ऐसा है जो मेरे बुढ़ापे और दुर्बलता के बदले मुझे अपना यौवन व सौंदर्य दे दे, तो वह केवल पुरु ही था जिसने विनिमय स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पश्चात् ययाति ने पुरु का यौवन और सौंदर्य उसे लौटा दिया तथा उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। कौरव और पाण्डवों का पूर्व पुरुष पुरु ही था)। सम०—जित् (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 राजा कुन्तीभोज या उसके भाई का नाम, —द्रवम् सोना, स्वर्ण, —दंशकः हंस, —लपट (वि०) बहुत विषयी, या कामातुर, —हू, —हूः बहुत, बहुत से,—हूत (वि०) बहुतों से आवाहन किया गया (नः) इन्द्र का विशेषण—रघु० ४।३, १६।५, कु० ७।४५, मनु० ११।२२, 'हूत' (पु०) इन्द्र जित् का विशेषण।

पुरुष [पुरि देहे शेते—शी+ड पृषो० तारा०, पुर्+कुषन्] 1 नर, मनुष्य, मर्द अर्थात् पुरुषों नारी या नारी मात्रेण पुमान्—मृच्छ० ३।२७ मनु० १।३२, ७।१७, ९।२, रघु० २।४१ 2 मनुष्य, मनुष्य जाति 3 किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या सदस्य 4 अधिकारी, कार्यकर्ता, अभिकर्ता, अनुचर, सेवक 5 मनुष्य की ऊँचाई या माप, दोनों हाथ फैला कर लम्बाई की माप)—दो पुरुषों प्रमाणमस्या, सा द्वि पुरुषा-पी परिखा—सिद्धा० 6 आत्मा—द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च—भग० १५।१६ आदि० 7 परमात्मा, ईश्वर (विश्व की आत्मा) शि० १।३३, रघु० १३।६ 8 पुरुष (व्या० में) प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष (सिद्धा० में यही क्रम है) 9 अश्व की पुतली 10 (सांख्य० में), आत्मा (विप० प्रकृति) सांख्यमतानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निष्क्रिय है, तथा प्रकृति का दर्शक है—तु० कु० २।१३, 'सांख्य' शब्द की भी,—वम् मेरु पर्वत का विशेषण। सम०—अंगम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग, अवः नरभक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला, पिशाच, अधम अत्यन्त नीच पुरुष, बहुत ही जघन्य और घृणित व्यक्ति, अभिकार 1 पुरुष का पद या कर्तव्य 2 मनुष्य का मूल्याकन या प्राक्कलन—कि० ३।५१, अन्तरम् दूसरा मनुष्य,—अर्थ 1 मानव-जीवन के चार महत्त्व पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक 2 मानवप्रयत्न या चेष्टा, पुरुषकार, द्वि० प्र० ३५, अस्थिमालिन् (पु०) शिव का विशेषण, आद्य विष्णु का विशेषण, आयुषम्, आयुस्, मानव-जीवन की अवधि अकृतप्रमति काम जीव्याजनं पुरुषायुषम्—विक्रम ६।४८, पुरुषायुषजीविन्यो निरातंका निरीतय रघु० १।६८, आशिन् (पु०) नरभक्षी, राक्षस, पिशाच, इन्द्र राजा उत्तमः 1 श्रेष्ठ पुरुष 2 परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण—यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तम, अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम—भग० १५।१८,—कारः 1 मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानगी,

पराक्रम (वि० देव)—एक पुरुषकारेण बिना दैव न सिध्यति हि० प्र० ३२, दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धि-र्व्यवस्थिता—याज्ञ० १।३४९, तु० 'भगवान उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं' पंच० ५।३०, कि० ५।५२ 2 पौरुष, वीर्य, -वचस्, -वत् मानवजाति का, -केसरिन् (पुं०) 'नर-सिंह' विष्णु का चौथा अवतार—पुरुषकेसरिप्रख्य पुरा नखै —शि० ७।३, -ज्ञान मानवजाति का ज्ञान -दन्त, —दन्तक (वि०) मनुष्य की ऊँचाई के बराबर लंबा द्विप (पुं०) विष्णु का शत्रु, -नाथः 1 चमूपति, सेनापति 2 राजा, -पशु नरपशु, क्रूर-व्यक्ति —तु० नरपशु, -पुंगवः, -पुंडरीकः श्रेष्ठपुरुष, प्रमुख व्यक्ति, —बहुमानः मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा —भर्तृ० ३।९, -मेध, नरमेध, पुरुषयज्ञ, —वरः विष्णु का विशेषण, —वाहः 1 गरुड का विशेषण 2, 2 कुबेर की उपाधि, —व्याघ्रः, शार्दूलः, सिंहः 1 'मनुष्यों में शेर' पूज्य या प्रमुख व्यक्ति 2 शूर-वीर, बहादुर आदमी, —संघातः मनुष्यों का समूह, -सूक्तम् ऋग्वेद के दसवें मण्डल का ९०वाँ सूक्त (यह बहुत ही पावन माना जाता है)।

पुरुषक, -कम् [पुरुष+कन्] मनुष्य की भांति दो पैरों पर खड़ा होने वाला, घोड़े का पालना -श्रीवृक्षकी पुरुषकोऽभिनयकाय —शि० ५।५६।

पुरुषता, -त्वम् [पुरुष+तल्+टाप्, त्व वा] 1 पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम 2 वीर्य।

पुरुषयित (वि०) [पुरुष+क्यङ+क्त] मनुष्य की भांति आचरण करने वाला, -तम् 1 मनुष्य का अभिनय करना, मनुष्यपात्र का अभिनय, संचालन 2 एक प्रकार का स्त्रीमैथुन जिसमें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है—आकृतिमवलोक्य कयापि वितर्कित पुरुषा-यित अभिलालेखनेन वेदग्ध्यादभिव्यक्तिमुपनीतम्—काव्य १०।

पुरूरवस् (पुं०) [पुरु प्रचुरं यथास्यात्तथा रौति—पुरु+रु+असि नि० साधु] बुध और इला का पुत्र, चन्द्र-वंशी राजकुल का प्रवर्तक, (मित्र और वरुण के शाप के कारण इस पृथ्वी पर उतरती हुई उर्वशी को पुरूरवा ने देखा और उस पर आसक्त हो गया। उर्वशी भी उस राजा को देख कर उस के लोकविश्रुत सौन्दर्य तथा सचाई, भक्ति, उदारता आदि गुणों के कारण उस पर मुग्ध हो गई, फलतः उसकी पत्नी बन गई। बहुत दिनों तक वह सुख पूर्वक रहे, एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् उर्वशी फिर स्वर्ग चली गई। राजा ने उसके वियोग के शोक में बड़ा विलाप किया। उर्वशी प्रसन्न हो दोबारा उसके पास आकर फिर रहने लगी और एक पुत्र को जन्म देकर फिर स्वर्ग चली गई। इस प्रकार उर्वशी ने कुल पाँच पुत्रों को जन्म दिया। परन्तु पुरूरवा उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाना चाहता था अतः उसने गन्धर्वों के निर्देशानुसार यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसके फल-स्वरूप उसका मनोरथ पूरा हुआ। विक्रमोर्वशीय में दी गई कहानी कई अंशों में भिन्न प्रकार से बताई गई है इसी प्रकार ऋग्वेद के आधार पर शतपथ ब्राह्मण में दिया गया वृत्तान्त भी भिन्न प्रकार का है, यहाँ कि यह बतलाया गया है कि उर्वशी ने दो शर्तों पर पुरूरवा के साथ रहना स्वीकार किया। पहली शर्त यह कि उसके दो मेंढे जिनको वह पुत्रवत् प्यार करती है, उसके पलंग के पास ही बधेंगे तथा उनसे कभी दूर नहीं ले जाये जायगे, और दूसरे यह कि वह उर्वशी को कभी भी नंगा दिखाई न दे। उसके पश्चात् एक बार गन्धर्व मेंढों को उठा कर ले गये, अतः उर्वशी भी अन्तर्धान हो गई)।

पुरोटिः [पुरस्+अट्+इन्] 1 नदी का प्रवाह 2 पत्तों की मरमराहट या मर्मरध्वनि, पत्र शब्द।

पुरोडाश, पुरोडाश् आदि— दे० 'पुरस्' के अन्तर्गत।

पुर्व् (स्वा० पर०—पुर्वति) 1 भरना 2 बसना, रहना 3 निमन्त्रित करना (अन्तिम दो अर्थों में चुरा० पर० मानी जाती है)।

पुल (वि०) [पुल्+क] महान्, विशाल, व्यापक विस्तृत, —ल रोमाञ्च होना।

पुलकः [पुल+कन्] 1. शरीर के बालों का सीधा खड़ा होना, (भय या हर्ष से) शिहरन, रोमांच—बाहु चुचुंब नितम्बवती दयित पुलकैरनुकूले—गीत० १, मृगमद तिलक लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे—७, अमरु ५७,७७ 2 एक प्रकार का पत्थर या रत्न 3 रत्न में दोष 4 एक प्रकार का खनिज पदार्थ 5 अफीम जिससे हाथी पगलते हैं 6 हरताल 7 शराब पीने का गिलास 8 एक प्रकार की सरसों, राई। सम०—अगः वरुण का जाल, —आलयः कुबेर का विशेषण, उद्गमः शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच होना।

पुलकित (वि०) [पुलक+इतच्] जिसके रोंगटे खड़े हो गये हैं, रोमांचित, गद्गद, आनन्दित, हर्षोत्फुल्ल।

पुलकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पुलक+इनि] रोमांचित, जिसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हैं,—पुं० कदम्ब वृक्ष का एक प्रकार।

पुलस्तिः, पुलस्त्यः [पुल्+क्विप्=पुल्+अस्+ति, पुल-स्ति+यत्] एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र—मनु० १।३५।

पुला [पुल+टाप्] मृदु तालु, गले का कौआ, तालु जिह्वा।

पुलाकः,-कम् [पुल्+आक् नि०] 1 भोजा या मुरझाया हुआ अन्न, कदन्न 2 मात का पिंड 3 संक्षेप, संग्रह 4. संक्षिप्तता, संग्रहति 5 चावलों का मांड 6 क्षिप्रता, शीघ्रता, त्वरा।

पुलाकिन् (पुं०) [पुलाक+इनि] वृक्ष।

पुलारितम् [=पल्वयित, पृषो०] घोड़े की सरपट चाल।

पुलिनः,-नम् [पुल्+इनन् किच्च] 1 रेतीला किनारा, रेतीला समुद्रतट—रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारि-रधुना—गीत० ७, रघु० १४।५२, कभी-कभी ब० व० में प्रयुक्त—कालिंदी पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रामे रसम्—वेणी० १।२ 2 नदी का प्रवाह हट जाने से तट पर बना छोटा टापू, लघुद्वीप 3 नदीतट।

पुलिनवती [पुलिन+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] नदी।

पुलिन्दकः [पुल्+किदच्, कन्] 1 (प्राय ब० व० में) एक असभ्य जाति का नाम 2 इस जाति का एक मनुष्य, बर्बर, अशिष्ट, जंगली, पहाड़ी—रघु० १६। १९,३२।

पुलिरिक (पु०) साँप।

पुलोमन् (पु०) एक राक्षस का नाम, इन्द्र का श्वसुर। सम०—अरिः,—जित्,—भिद्,—द्विष् (पु०) इन्द्र के विशेषण,—आ,—पुत्री शची, पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी।

पुष् (स्वा०, दिवा० क्रया०—पर०—पोषति, पुष्यति, पुष्णाति), 1 पोषण करना, (छाती से लगाकर) दूध पिलाना, पालना, पोसना, शिक्षित करना—तेनाद्य वत्सामिव लोकमम् पुषाण—भर्तृ० २।४६, भग० १५। १३, भट्टि० ३।१३, १७।३२ 2 सहारा देना, भरण पोषण करना, परवरिश करना 3 बढ़ने देना, खिलना, विकसित होना, राहत मिलना—पुपोष लावण्यमयान् विलेपान्—कु० १।२५, रघु० ३।३२, न तिरोधीयते स्थायी तैरभी पुष्यते परम् सा० द० ३ 4 बढ़ाना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना, वर्धन (मूल्यादि)—पचा-नामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणा—रघु० ४।११,९।५ 5 प्राप्त करना, अधिकार में करना, रखना उपभोग करना भर्तृ० ३।३४ 6 बतलाना, दिखलाना, धारण करना, प्रदर्शन करना—वपुरभिनवमस्या पुष्यति स्वा न शोभा—श० १।१९, कु० ७।१८,७८, रघु० ६।५८,१८।३२, न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति-लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६३, मेघ० ८० 7 बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फूलना, समृद्ध होना 8 प्रशंसा करना, स्तुति करना,—प्रेर० या चुरा० उभ० पोषयति—ते 1 पालन-पोषण करना, परवरिश करना, भरणपोषण करना आदि 2 बढ़ाना, उन्नति करना।

पुष्करम् [पुष्क पुष्टिं राति-रा+क] 1 नीला कमल 2 हाथी की जिह्वा की नोक—शि० ५।३० 3 ढोल का चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है—पुष्करेष्वाहतेषु—मेघ० ६६, रघु० १७।११ 4 तलवार का फल 5 तलवार का म्यान 6 बाण 7 वायु, आकाश, अन्तरिक्ष 8 पिंजड़ा 9 जल 10 मादकता 11 नृत्यकला 12 युद्ध, संग्राम 13 एकता 14 अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान,—रः 1 सरोवर, तालाब 2 एक प्रकार का ढोल, धौंसा, ताशा 4 सूर्य 5 अनावृष्टि या दुर्भिक्ष पैदा करने वाले बादलों का समूह—मेघ० ६, कु० २।५० 6 शिव का विशेषण, -रम्,—रम् शिव के सात विशाल प्रभागों में से एक। सम०—अक्ष, विष्णु का विशेषण,—आख्य,—आह्व सारस—तीर्थ स्नान करने का एक प्रसिद्ध स्थान दे० ऊ० पुष्कर,—पत्रम् कमल का पत्ता, प्रिय, सोम,—बीजम् कमलगट्टा, —व्याघ्र घड़ियाल,—शिखा कमल की जड़,—स्थपति शिव का विशेषण, —स्रज् (स्त्री०) कमलों की माला।

पुष्करिणी [पुष्करिन्+ङीप] 1 हथिनी 2 कमलसरोवर 3 सरोवर, जलाशय 4 कमल का पौधा।

पुष्करिन् (वि०) (स्त्री०)-णी) [पुष्कर-इनि] कमलों से भरी स्थली, (पु०) हाथी।

पुष्कल (वि०) [पुष्+कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० रुट् वा—तारा०] 1 बहुत, काफी, प्रचुर—भक्षितेनापि भवता नाहारो मम पुष्कल हि० १।८४, मनु० ३।२७७ 2 पूरा, समस्त भग० ११।२१ 3 समृद्ध, उज्ज्वल, शानदार 4 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख 5 निकट-वर्ती 6 तिर्यक्मय, गूंजने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला,—लः 1 एक प्रकार का ढोल 2 मेरु पर्वत का विशेषण,—लम् 1 ६४ मुट्ठियों के बराबर एक विशेष ताल या माप 2 चार ग्रास की भिक्षा।

पुष्कलकः [पुष्कल+कन्] 1 कस्तूरी-मृग सीम्नि पुष्क-लको हतः—सिद्धा० 2 कुंडी, चटखनी, कमी।

पुष्ट (भू० क० कृ०) [पुष्+क्त] 1 पाला-पोसा, खिलाया-पिलाया, परवरिश किया गया, शिक्षित किया गया 2 फलता-फूलता हुआ, बढ़ता हुआ, बलवान, हृष्टपुष्ट 3 दृढ़ किया गया, देखभाल किया हुआ 4 समृद्ध, पूरी तरह सम्पन्न 5 पूर्ण, पूरा 6 पूरीध्वनि वाला, ऊँचा आवाज़ वाला 7 प्रमुख।

पुष्टि (स्त्री०) [पुष्ट+क्तिन्] 1 पालन-पोषण करना, पालना परवरिश करना, 2 पालन पोषण, संवर्धन, वृद्धि, प्रगति यत्पिण्डतामपि गुणा पिष्टोऽपि तनोपि परिमलं पुष्टिम्—भामि० १।१२ 3 पराक्रम शालिता, स्थूलता अन्यस्य वृष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य मृच्छ० १।४९, 4 धन-दौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन,—रघु० १८।१२ 5 समृद्धि, सम्पन्नता 6.

विकल्प, पूर्णता। सम०—कर (वि०) पौष्टिक, पुष्टि कारक, —कर्मन् (नपु) सांसारिक संपन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान, —द (वि०) समर्धनकारी, समृद्धिकर,—वर्धन (वि०) कल्याणकारी, समृद्धि कारक (नः) मुर्गा।

पुष्य् (दिवा० पर० पुष्यति) खुलना, धाँकना या फूकना, विस्तार करना, खिलना पुष्यन्पुष्करवासितस्य पयस उत्तर० ३।१६।

पुष्पम् [पुष्प्+अच्]। फूल, कुसुम 2 रज स्राव, रजोधर्म यथा 'पुष्पवती' में 3 पुखराज 4 आखो का रोग विशेष, श्वेतक 5 कुबेर का रथ - दे० 'पुष्पक' 6 शौर्य, (प्रेमको भाषा में) नम्रता 7 विस्तार होना, खिलना, प्रफुल्ल होना (इस अर्थ में पु० भी)। सम० अंजनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भाति प्रयुक्त होती है,—अंजलिः फूलो की अंजलि,—अभिषेक =°स्नान,—अम्बुजम् पुष्प रस या मकरन्द, अवचयः फूलो का चुनना, फूल एकत्र करना, अस्त्रः कामदेव का विशेषण, -आकार (वि०) फूलो से समृद्ध, मासो नु पुष्पाकर —विक्रम० १।९, आगम बसन्त ऋतु, आजीव माली, मालाकार, आपीड फूलो का गजरा,—आयुधः,—इषुः कामदेव, आसवम् मधु, आसार फूलो की बौछार मनु० ४३, -उद्गम फूलो का निकलना,—उद्यानम् पुष्प वाटिका, उपजीविन् (पु०) माली, बागवान, मालाकार, कालः 1 फूलो का समय, बसन्त ऋतु 2 मासिक रजोधर्म का समय, कासीसम् एक प्रकार का कसीस, -कीट भौंरा, केतनः कामदेव (नपु) 1 पुष्परस, मकरद 2 पुष्पाजन,—गृहम् फूलो का घर, पुष्प सभागार, -घातकः बाँस, -चयः 1 फूल चुनना 2 फूलो का संग्रह, -चापः कामदेव, -चामरः एक प्रकार की बेंत, -जम् फूलो का रस,—द्रुमः वृक्ष, -दंतः 1 शिव के एक गण का नाम 2 महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम दायव्य कोण में अधिष्ठित दिग्गज, -दामन् (नपु०) फूलमाला, -द्रवः 1 फूलो का रस मकरद 2 फूलो का आसव,—द्रुमः पुष्पप्रधान वृक्ष,—धः व्रात्य ब्राह्मण की सन्तान—तु० मनु० १०।२१ —धनुस्,-धन्वन् (पु०) कामदेव—शि० ९।४१, कु० २।६४,—धारणः विष्णु का विशेषण,—ध्वजः कामदेव, -निक्षः भौंरा, -निर्यासः,—निर्यासिकः पुष्परस, मकरद, फूलो का रस,—नेत्रम् फूलनली, पत्रिन् (पु) कामदेव, -प्रयः योनिः —पुरम् पाटलिपुत्र—रघु० ६।२४, -प्रचयः,-प्रचायः फूल तोड़ना, फूल चुनना, —प्रचायिका फूलो का चुनना,—प्रस्तारः पुष्पशय्या, फूलो का बिछौना, —बलिः फूलो की भेंट या चढावा, —बाणः,—बाण कामदेव,—भवः पुष्परस, मकरद, —मंजरिका नीला कमल,—माला फूलमाला,— मासः 1. चैत्र का महीना 2 बसंत ऋतु,—रजस् (नपु) पराग, —रथः हवा खोरी के काम आनेवाला रथ (जो युद्ध के लिए न हो,—रसः फूलों का रस, मकरद,—आसुवम् मधु—राजः,—राजः पुखराज,—रेणुः पराग—वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून्—कवि०, रघु० १।३८, —रोधनः नागकेसर का वृक्ष,—लावः फूल चुनने वाला, (वी) फूल चुनने वाली, मालिन्—मेघ० २६,—लिप्सः, -लिह् (पु) भौंरा,—वटुकः रसिया, बाका, छैल-छबीला, —वर्षः,—वर्षणम् फूलो की बौछार —रघु० १२।१०२,—वाटिका,—वाटी फूलवाटी, —वृक्षः पुष्पप्रधान वृक्ष—रघु० १२।१४,—वेणी चोटी में लगाया हुआ फूलो का गजरा, फूलों की माला,—शंसी आकाशवाणी,—शय्या, फूलो की सेज, फूलो का बिछौना,—शरः,—शरासनः,—सायकः कामदेव,—समयः बसन्त,—सारः,—स्वेदः फूलों का रस, मकरद, हासा रजस्वला स्त्री,—होना गतार्तवा स्त्री, जिसकी बच्चे पैदा करने की आयु बीत चुकी हो।

पुष्पकम् [पुष्प+कन्] 1 फूल 2 पीतल की भस्म 3 लोहे का प्याला 4 कुबेर का रथ (जिसे कुबेर से रावण ने छीन लिया था, तथा जो फिर राम ने ले लिया था)—रघु० १२।४०, १६।४६ 5 ककण 6 एक प्रकार का पुष्पाजन 7 आखो का एक विशेष रोग।

पुष्पयः [पुष्प+यै+क, मुम्] भौंरा।

पुष्पलकः [पुष्प+लक्+अच्] स्थाणु, खूंटा, फली, कील।

पुष्पवत् (वि०) [पुष्प+मतुप्, वत्वम्] 1. प्रफुल्ल, फूलो से युक्त 2 फूलो से जडा हुआ (पु०—द्वि० व०) सूर्य और चन्द्रमा, स्त्री रजस्वला स्त्री—पुष्पवत्यपि पवित्रा—का० २०।

पुष्पा [पुष्प्+अच्+टाप्] चम्पा नाम की नगरी।

पुष्पिका [पुष्प्+ष्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 दाँतों पर जमी हुई मैल 2. लिंगच्छद में जमी मैल 3 अध्याय के अन्तिम शब्द जिनमें वर्णित विषय की सूचना दी जाती है—इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वनपर्वणि ·· अमुकोऽध्यायः।

पुष्पिणी [पुष्पिन्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

पुष्पित (वि०) [पुष्प् + क्त] 1 फूलों से युक्त, विकसित फूलो से भरा हुआ, खिला हुआ—चिरविरहेण विलोक्य पुष्पितामाम्—गीत० ४, यहां 'पुष्पितामा' एक छंद का भी नाम है 2 फूलो से अलंकृत, (आम्रवत्) मंजरीला 3 फूलो से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न —यथा—सुवर्णपुष्पिता पृथ्वी पंच० १।४५, 4 पूर्ण विकसित, पूरी तरह खिला हुआ, स्त्री रजस्वला स्त्री।

पुष्पिन् (वि०) [पुष्प+इनि] 1 फूल धारण करने वाला, प्रफुल्ल 2 फूलो से भरा हुआ, फूलो से समृद्ध।

पुष्यः [पुष्+क्यप्] 1 कलियुग 2 पौष का महीना 3. आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुंज), इसे 'तिष्य' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०—रथः—पुष्य रथ।

पुष्यकः [पुष्य+लक्+अच्] दे० 'पुष्यलक'।

पुस्तम् [पुस्त्+घञ्] 1 पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2 मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना 3 मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु 4 पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक। सम०—कर्मन् (नपुं०) लीपना-पोतना, चित्रकारी करना।

पुस्तक,-कम्, पुस्ती [पुस्त+कन्, ङीप् वा] पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक।

पू (भ्वा० दिवा०,—आ०, क्या० उभ०—पवते, पुनाति, पुनीते पूत, प्रेर०—पावयति—इच्छा० पुपूषति, पिपविषते) 1. पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना (शा० और आत्म०) अवश्यपाव्य पवम भट्टि० ६।६४, ३।१८, —पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मान पुनीमहे—श० १, मनु० १।१०५, २।६२, याज्ञ० १।५८, रघु० १।५३ मृग० १०।३१ 2 निथारना 3 भूसी साफ करना, फटकना 4 प्रायश्चित्त करना, परिमार्जन करना 5 पहचानना, विवेक करना 6 सोचना, उपाय ढूंढना, आविष्कार करना।

पुरः [पू+क्त, कित्] 1 संचय, ढेर, संग्रह, मात्रा —शि० ९।६४ 2 समाज, निगम, संघ—याज्ञ० २।३०, मनु० ३।१५१ 3 सुपारी, पूगी —रघु० ४।४४ ६।६३, १२।१७ 4 प्रकृति, गुण, स्वभाव,—गम् सुपारी। सम०—पात्रम् थूकने का बर्तन, पीकदान 2 पान-दान, पीठम्, पीठम् थूकने का बर्तन, —फलम् सुपारी —वैरम् अनेक लोगों से शत्रुता।

पूज् (चुरा० उभ०—पूजयति-ते, पूजित) 1 आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सादर स्वागत करना—यदपूपुजन्त्वमिह पार्थ मृगजितम-पूजित सताम् —शि० १५।१४, मनु० ४।३१, भट्टि० २।२६, याज्ञ० २।१४ 2 उपहार देना, भेंट चढाना, —मनु० ७।२०३, सम्—1 पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2 उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना।

पूजक (वि०) (स्त्री०—जिका) [पूज्+ण्वुल्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला—आदि।

पूजनम् [पूज्+ल्युट्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना—भग० १७।१४।

पूजा [पूज्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धाञ्जलि—रघु० १।७९। सम०—अर्ह (वि०) श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धास्पद।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज्+क्त] 1 सम्मानित, आदृत 2 आराधित, प्रतिष्ठित 3 स्वीकृत 4. संपन्न 5 अनुशासित, सिफारिश किया हुआ।

पूजिल (वि०) [पूज्+इलच्] श्रद्धेय, आदरणीय,—लः देव।

पूज्य (वि०) [पूज्+ण्यत्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, श्रद्धेय,—ज्यः 1. श्वसुर।

पूण् (चुरा० उभ० पूणयति ते) एक जगह ढेर लगाना, संचय करना, राशि लगाना।

पूत (अव्य०) फूंक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द।

पूत (भू० क० कृ०) [पू+क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ (आत्म० भी) दृष्टिपूत न्यसेत्पाद वस्त्रपूत जल पिबेत्, सत्यपूता वदेद्वाच मन पूत समाचरेत् —मनु० ६।४६ 2 पिछोड़ा हुआ, फटका हुआ 3 प्रायश्चित्त किया हुआ 4 योजनाकृत, आविष्कृत 5 सड़ने वाला, गला-सड़ा, दुर्गंधमय, बदबूदार,—तः 1 शर 2 सफेद कुश घास, तम् सचाई। सम० आत्मन् (वि०) पवित्र मन वाला (पु०) विष्णु का विशेषण, कर्तायी इन्द्र की पत्नी शची, क्रतु इन्द्र का विशेषण भट्टि० ८।२९, तृणम् सफेद कुश घास, द्रु पलाश वृक्ष, पाप्मन् तिल पाप, पाप्मन् निष्पाप, पाप से रहित,- फलः कटहल का वृक्ष।

पूतना [पू+क्विप्+पुच् +टाप्] एक राक्षसी जो कृष्ण को जब वह अबोध बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई, स्वयं उनके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई 2 राक्षसी मा पूतनातवमुषणा शिवनातिरेधि मा० ९।४९। सम० अरि, सूदनः, हन् (पु०) कृष्ण के विशेषण।

पूति (वि०) [पूय्+क्तिन्] बदबूदार, सड़ा हुआ, दुर्गंध-युक्त, दुर्गंध देनेवाला भग० १७।१०, तिः (स्त्री०) 1 पक्विीकरण 2 दुर्गंध सड़ाद 3 बदबू —नपु० 1 गंदा पानी 2 पीप, मवाद। सम० अंड कस्तूरी मृग,— काष्ठम् देव दारु वृक्ष,— काष्ठक सरल वृक्ष, —गंध (वि०) बदबूदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला, सड़ा हुआ (—धः) 1 सड़ाद, दुर्गंध, बदबू 2 गंधक (अम) 1 जस्ता, रागा 2. गंधक,— नासिक (वि०) दुर्गंधमय नाक वाला,—वक्त्र (वि०) जिसके मुँह से बदबू आती हो,— व्रणम् दूषित फोड़ा (जिसमें से पीप निकले)।

पूतिक (वि०) [पूति+कै+क] सड़ा हुआ, बदबूदार, सड़ागला,—कम् लोद, मल, विष्ठा।

पूतिका [पूतिक+टाप्] एक प्रकार की जड़ी। सम० —मुख. दो कोष वाला शंख।

पून (वि०) [पू+क्त तस्य न] नष्ट किया गया।

पूपः [पू+क्विप्, पा+क] पूआ, दे 'अपूप'।

पूपला, ली, पूपलिका, पूपाली, पूपिका [पूप+ला+क+टाप्, ङीप् वा, पूपाय अलति—पूप+अल्+अच्+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व, पूप+अल्+पच्, ङीष् पूप्+ल्न्+टाप्] एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ।

पूयः, -यम् [पूय्+अच्] पीप, फोड़ या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना—मनु० ३।१८०, ४।२२०, १२।७२। सम०—रक्त नाक का एक रोग विशेष (इसमें पीप से युक्त रक्त, या मवाद नाक से बहता है) (क्तम्) 1 कषलोहू, मवाद 2. नथनों से मवाद का बहना।

पूयनम् [पूय्+ल्युट्]=दे० 'पूय'।

पूर् १ (दिवा० आ–पूर्यते, पूर्ण) 1 भरना, पूर्ण करना 2 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ॥ (चुरा० उभ० - पूरयति ते, पूरित—पू० का प्रेर० रूप) 1. भरना—का न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितं—भर्तृ० २।११८, शि० ९।६४ 2 हवा से भर जाना, (शंख आदि में) फूंक मारना 3 ढकना, घेरना भट्टि० ७।३० 4 पूरा करना, सन्तुष्ट करना - पूरयतु कुतूहलं वत्स उत्तर० ४, इसी प्रकार आशा, मनोरथ आदि 5 तीव्र करना, (ध्वनि आदि) सबल करना 6 गुंजायमान करना 7 बोझ लादना, समृद्ध करना, आ- , 1 भरना, पूर्ण करना, पूरा करना, ऊपर तक भरना (आत्म० भी)- रघु० १६।६५, भग० ११।३०, भट्टि० ६।११८ 2 हवा से भरना, (शंख आदि) बजाना -कर्मवाच्य में प्रयुक्त 3 अन्तर्ग्रथित करना, पिरोना ऋतु० ३।१८, परि, भरना, पूरी तरह से भर लेना, प्र , 1 भरना, उपहारों से भरना, समृद्ध करना मृच्छ० ९।५९, (यहाँ यह दोनों अर्थ देता है), सम् , पूरा करना, भरना।

पूरः [पूर+क] 1 भरना, पूरा करना 2 सन्तोष देना, प्रसन्न करना, तृप्त करना 3 उंडेलना, पूर्ति करना अतर्कितपूरा सुरतप्रदोषा—कु० १।१० 4 नदी का चढ़ना, समुद्र में पानी का बढ़ना, बाढ़ रघु० ३।१७ 5 धारा या नदी का रूप होना, बाढ़ आना अबु° वाष्प° शोणित° आदि 6 जलखण्ड, सरोवर, तालाब 7. घाव का साफ़ होना या भरना 8 एक प्रकार की रोटी या पूरी,—रजः एक प्रकार का सुगन्धद्रव्य,—उत्पीडः बाढ़ या जलाधिक्य।

पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1 भरने वाला, पूरा करने वाला 2. सन्तुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, - कः 1. गेंदुआ का पौधा 2. श्राद्ध की समाप्ति पर पितरों को दिया जाने वाला पिंड 3 (अंकगणित में) गुणक।

पूरण (वि०) (स्त्री०—णी) [पूर्+ल्युट्] 1 भरना, पूरा करना 2 क्रम सूचक (अंकों के साथ प्रयुक्त) - जैसे द्वितीय, तृतीय आदि न पूरणी तं समुपैति संख्या—कि० ३।५१ 3 सन्तुष्ट करने वाला - णः 1 पुल, बांध, सेतु 2 समुद्र, - णम् 1 भरना 2 ऊपर तक भरना, पूरा करना रघु० ९।७३ 3. फूलना, सूजना 4 पूरा करना, सम्पन्न करना 5 एक प्रकार की पूरी या रोटी 6. मृतक कार्य में प्रयुक्त रोटी 7 वृष्टि, बरसना 8 ऐंठन, मरोड़ 9 (गणि० में) गुणा। सम०—प्रत्ययः क्रम सूचक संख्या बनाने वाला प्रत्यय।

पूरिका [पूर+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] पूरी, कचौरी।

पूरित (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त] 1. भरा हुआ, पूरा 2. बिछाया हुआ, आच्छादित 3 गुणा किया हुआ।

पूरुषः [पुर्+कुषन्, नि० दीर्घ]=दे० 'पुरुष'—भाषि० १।७५।

पूर्ण (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त, नि०] 1 भरा हुआ, आपूरित, पूरा किया हुआ, अबु° शोक° आदि 2 सम्पूर्ण, अखंड, समग्र, समूचा रघु० ३।३८ 3 पूरा किया हुआ, सम्पन्न 4 समाप्त, पूरा 5 अतीत, बीता हुआ 6 सन्तुष्ट, तृप्त 7 घोष पूर्ण, गुंजायमान, 8 बलवान्, शक्तिशाली 9 स्वार्थी, स्वलीन। सम०—अंक पूर्ण संख्या, -अभिलाष (वि०) सन्तुष्ट, तृप्त, -आत्मन् 1 दोस 2 ढोल की आवाज 3 बर्तन 4 चंद्रकिरण 5 दे० पूर्ण पात्र (कभी कभी 'पूर्णालक' भी पढ़ा जाता है, —इन्दु पूरा चाँद,—उपमा पूरी या समूची उपमा अर्थात् जिसमें उपमान 'उपमेय' 'साधारणधर्म' और 'उपमाप्रतिपादक शब्द' यह चारों अपेक्षित वाले अभिव्यक्त की गई हो (विप० लुप्तोपमा) —उदा० अमोरुहमिवाताम्र मुखं करतलं तव —दे० काव्य० १०, 'उपमा' के अन्तर्गत भी, -कुम्भ (वि०) पूरे कोहान से युक्त,—काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई है, सन्तुष्ट, तृप्त, - कुंभः 1 पूरा कलश 2 पानी से भरा घड़ा 3. युद्ध करने की विशेष रीति 4 (दीवार में) कलश के आकार का घर्त —तदश्च एकविंशटके पूर्णकुंभ एव शोभते—मृच्छ० ३, —कोशः 1 जल से भरी गागर 2 कलशपूर, गागर भर 3 २५६ मुट्ठी भर (अनाज का) तोल 4. (बहुमूल्यालंकार आदि) मूल्यवान् वस्तुओं से भरा हुआ (संदूक, टोकरी आदि) बर्तन जो बधुवाधवों द्वारा किसी उत्सवादि के अवसर पर उपहार के रूप में बांटा जाय, अतः इसका सामान्य अर्थ है वह उपहार जो किसी सुखद समाचार के लाने वाले व्यक्ति को दिया जाता है—कथं मे तनयजन्मनाहोत्सवानंदिनीरो हरिष्यति पूर्णपात्र परिजन.—का० ६२, ७०, ७३, १६५, सखीजनेनार्पितयावपूर्णपात्राम्—२९९,

सत्कार्यं प्रथमति पूर्णपात्रवृत्त्या स्वीकर्तुं मम हृदय च चीक्षित च – मा० ४।१, (पूर्णपात्र की परिभाषा —तूर्योत्सवकाले यदलंकारार्थुकादिकम्, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्र स्यात्पूर्वक च तत् । या—वर्धापक वदानदादलंकारादिक पुन, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्र पूर्वोक्तं च तत्—हारावली, – वी (वी) ः नीवू, —वाली पूर्णिमा, पूनो ।

पूर्णकः [पूर्ण+कन्] 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 रसोइया 3 नीलकंठ ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी [पृ+निङ=पूर्णि, मा+क+टाप्, पूर्णि+मास+ङीप्] वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है, पूनो —नै० २।७६ ।

पूर्त (वि०) [पूर्+क्त नि०] 1 पूर्ण, पूरा 2 छिपाया हुआ, ढका हुआ 3 पालन-पोषण किया गया, रक्षा किया गया, तम् 1 पूर्ति 2 पोषण, पालन 3 पुरस्कार, पात्रता 4 पावन, उदारता का कृत्य—परिभाषा—वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते – मनु० ४।२२६, (विप० इष्ट) – अग्नि द्वारा इसकी परिभाषा - अग्निहोत्र तप सत्य वेदानां चैव पालनम्, आतिथ्य वैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते) —तु० 'इष्टापूर्त' ।

पूर्तिः (स्त्री०) [पूर्+क्तिन्] 1 भरना 2 पूरा करना, पूर्णता, सम्पन्नता 3 तृप्ति, संतुष्टि ।

पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] (जब काल और दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं, परन्तु वह भी कर्तृ० ब० व०, तथा अपादान० व अधिकरण० एक, द्व० में विकल्प से) 1 सामने होने वाला, प्रथम, प्रमुख 2 पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में ग्रामात्पर्वत पूर्व 3 पहले का, से पहला 4 पुराना, प्राचीन —पूर्वसूरिभि – रघु० १।४ 5 पूर्वोक्त, विगत, पिछला, पहला, पूर्वगामी (विप० उत्तर), इस अर्थ में प्राय समास के अन्त में प्रयुक्त यथा 'श्रुतपूर्व' 6 उपर्युक्त, पूर्वोक्त 7 (समास के अन्त में) पूर्ववर्ती, से युक्त, अनुलेपित सलक्ष्मालक्षणपूर्वमाहु —रघु० २।५८, पुण्य शब्दो मुनिरिति मुहु केवल राजपूर्व - श० २।१४, तान् स्मितपूर्वमाह - कु० ७।४७ ५।३१, दक्षपूर्वश्च समाख्यया दक्षकठारिगुरु विदुर्बुधा – रघु० ८।२९ – इसी प्रकार 'मतिपूर्व' – मनु० ११।१४७ 'इरादतन' 'जानबूझकर'—१२।३२,—अबोधपूर्वम् अनजाने श० ५।३, – कः पूर्वज, पूर्व पुरखा, बाप दादा —पूर्वे किलाय परिवर्धितो न – रघु० १३।३, पद पूर्वं श्वसितश्वासैः कवोष्णमुपभुञ्जते १।६७, ५।१४, – कंम् अगला भाग, – कम् (अव्य०) 1 से पहले (अपा० के साथ) मासात्पूर्वम् 2 विगत काल में, पहले, प्रारंभ में, पूर्वतः, पहले ही तं पूर्वमभिवादयेत् – मनु० २।११७, ३।९४, ८।२०५, रघु० १२।३५, पूर्वेण—से पूर्व में (सम्ब० या कर्म० के साथ) अद्य पूर्वम् 'अब तक' 'इससे पहले' पूर्वं—ततः—पश्चात् —उपरि पहले तब, पहले बाद में, विगत काल में - पूर्वम्- अधुना या अद्य पहले आज । सम० —अचलः, – अद्रिः उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है), —अतः पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति, अपर (वि०) 1 पूर्वी और पश्चिमी - पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य —कु० १।१ 2 पहला और अन्तिम 3 पहले का और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती 4 किसी दूसरे से युक्त, (रम्) 1. जो पहले और बाद में हो 2 सबध 3 प्रमाण और प्रमेय - °विरोधः असगति, असबद्धता, - अभिमुख (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए, या मुड़े हुए,— अम्बुधिः पूर्वी समुद्र,—अर्जित (वि०) पूर्वकर्मों द्वारा प्राप्त (तम्) पैतृक सपत्ति अंः, अंम् 1 पहला आधा भाग - दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् - मर्तृ० २।६०, समाप्त पूर्वार्धम् आदि 2 (शरीर का) ऊपर का भाग - श० ३, रघु० १६।६, 3 श्लोकार्ध का प्रथम भाग, अह्नः मध्याह्न से पूर्व, दोपहर से पूर्व—मनु० ४।९६, ७।८७ (पूर्वाह्णिक, पूर्वाह्णिक (वि०) मध्याह्न से पूर्वकाल सबधी), —आवेदकः वादी, मुद्दई, - आषाढा बीसवां नक्षत्र, (दो नक्षत्रों का पुंज), - इतर (वि०) पश्चिमी, — उक्त, उदित (वि०) पहले कहा हुआ, उपर्युक्त, —उत्तर (वि०) उत्तरपूर्वी (द्वि० व० - रे) पूर्ववर्ती पहले का और बाद का, —कर्मन् (नपुं०) 1 पहला काम या कार्य 2 प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला कार्य 3 पूर्व जन्म में किया गया कार्य, —कल्पः विगत काल, कायः 2 जानवरों के शरीर का अगला भाग

पदाघातैर्न श्रविष्ट शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2 मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग —स्पृशन् करेणानतपूर्वकायम् - रघु० ५।३२, पर्यंकबधस्थिर पूर्वकायम् – कु० ३।४५, - कालः विगत काल, प्राचीन समय, - कालिक, - कालीन (वि०) प्राचीन, काष्ठा पूर्व, पूर्व दिशा, कृतम् पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य, - कोटिः (स्त्री०) वाक्प्रतियोगिता की आरंभिक उक्ति, विवादविषय, पूर्वपक्ष, – गंगा नर्मदा नदी, – चोदित (वि०) उपर्युक्त, ऊपर बताया हुआ 2 पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आक्षेप आदि) ज (वि०) 1 जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जन्मा हुआ 2 प्राचीन, पुराना 3. पूर्वी (जः) 1 बड़ा भाई शि० १६।४४, रघु० १५।३६

2 बड़ी पत्नी का लड़का 3 पूर्वपुरुष, बापदादा, —अह्नन् (नपु०) पहला जन्म, (पु०) बड़ा भाई —रघु० १४।४४, १५।९५,—आ बड़ी बहन, आतिः (स्त्री०) पूर्वजन्म,—आतन् पूर्वजन्म का ज्ञान, दक्षिण (वि०) दक्षिणपूर्वी (- णा) दक्षिण पूर्व दिशा, दिक्पतिः पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र,—दिवस् दिन का पूर्वभाग, दोपहर से पूर्व का समय,—दिश् (स्त्री०) पूर्व दिशा, दिष्टम् भाग्य में लिखा, देवः 1 प्राचीन देवता 2 राक्षस या असुर 3 प्रजनक, पिता,—देशः पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग, - निपातः समास में अन्त की अनियमित प्राथमिकता तु० परनिपात, पक्ष 1 अगला हिस्सा या पार्श्व 2 कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का प्रथमपक्ष) 3 विवाद का पूर्वपक्ष, प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण 3 किसी तर्क का प्रथम आक्षेप 4 वादी की प्रतिज्ञा 5 अभियोग, नालिश, पदम् किसी समास या वाक्य का प्रथम पद, पर्वतः उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है पांचालक (वि०) पूर्वी पंचालों से संबंध रखने वाला - पाणिनीयाः (पु०, ब० व०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, पितामहः बापदादा, पूर्वज,--पुरुषः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक 3 पूर्वपुरुष,—पूर्व (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती --फाल्गुनी ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं °भद्रः बृहस्पति ग्रह का विशेषण, भाद्रः अगला हिस्सा, —भाद्रपदा पच्चीसवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं,—भुक्ति (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार,

भूत (वि०) पूर्ववर्ती, पहले का, - मीमांसा प्रथम मीमांसा, वेद के अंतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा (विप० उत्तरमीमांसा या वेदान्त -- दे० मीमांसा,—रंगः नाटक का उपक्रम या आरंभ, आमुख या प्रस्तावना, —पूर्वरंग विधायैव सूत्रधारो निवर्तते - सा० द० २८३, पूर्वरंग प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः —मि० २।८ (दे० इस पर मल्लि०), रागः आरंभिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (अथवा दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम, - रात्रः 1 रात का पहला भाग,— वयस् 1. होने वाले परिवर्तन का संकेत 2 रोग होने का लक्षण 3 दो सहवर्ती स्वर या व्यंजनों में से पहला जो स्वर रहे, - वयस् (वि०) बच्चा —वर्तिन् (वि०) पहले से विद्यमान, पहले का, पहले होने वाला,—वादः वादी द्वारा प्रस्तुत अभियोग, मुद्दई द्वारा की गई नालिश, - वादिन् (पु०) अभियोक्ता या मुद्दई, - वृत्तम् 1 पहली घटना,—रघु० ११।१० 2 पहला आचरण, शरद् (वि०) शरद् ऋतु के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला,—शैलः दे० पूर्वपर्वत, —संध्या प्रभातकाल, पौ फटना,—सि० ११।४०, —सर (वि०) अग्रेसर, सागरः पूर्वी समुद्र - रघु० ४।३२, - साहसः पहला या सबसे भारी अपराधदण्ड, स्थितिः (स्त्री०) पहली या प्रथम अवस्था।

पूर्वक (वि०) [पूर्व+कन्] (समास के अन्त में) 1. पूर्ववर्ती, अनुशेषित—अनामयप्रश्नपूर्वकमाह—श० ५ 2 पूर्ववर्ती, पिछला, कः पूर्वज, बापदादा।

पूर्वगम (वि०) [पूर्व+गम्+खच्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती।

पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व+तस्] 1 पूर्व में, पूर्व की ओर, --रघु० ३।४२ 2 पहले, सामने।

पूर्वत्र (अव्य०) [पूर्व+त्रल्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह।

पूर्ववत् (अव्य०) [पूर्व+वति] पहले की भाँति।

पूर्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) पूर्वीय (वि०) [पूर्व+इनि, पूर्व+ख] 1 प्राचीन 2 पैतृक।

पूर्वेद्युः (अव्य०) [पूर्वस्मिन् अहनि--पूर्व+एद्युस् वि० साधु] 1 पहले दिन 2 बीत दिवस, बीते हुए कल —मनु० ३।१८७ 3. दिन के प्रथम भाग में, पौ फटने पर 4 भोर में, सवेरे।

पूल् (म्वा० पर०, चुरा० उभ०—पूलति, पूलयति-ते) ढेर लगाना, संचय करना, एकत्र करना।

पूलः, पूलकः [पूल्+अच्, ण्वुल् वा] गठरी, पुली।

पूलकः=पुलाक —दे०।

पूलिका [=पूरिका, रस्य ल] एक प्रकार की रोटी, पूरी।

पूषः, पूषक [पूष्+क, पूष्+कन्] गन्नेतृण का वृक्ष।

पूषन् (पु०) (कर्तृ०—पूषा,—षणौ, —षणः) [पूष्+कनिन्] सूर्य,—सदा पंच पूषा गगनपरिमाणं कलयति —भर्तृ० २।११४, इन्धनौघवगाध्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्—शि० २।३। सम०—अनुहृद् (पु०) शिव का विशेषण,—आत्मज 1 बादल 2 इन्द्र का विशेषण, —धाना इन्द्र का नगर (अमरावती)।

पृ i (तुदा० आ०—प्रियते, पूत) —व्यस्त होना, संक्षिप्त होना (बहुधा व्या' उपसर्ग के साथ) —कार्यं व्यापियते —दे० व्यापृत —प्रेर० (पारयति--ते) 1. काम करना, काम पर लगाना, सौंपना, नियत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारित मूलभूता विधाय शिरस्त्वमकागतसरस्वती —रघु० २।३८ 2 रखना, अर्पण देना, निश्चित करना, निर्देश देना, डालना—व्यापारयामास करं किरीटे—रघु० ६।१९ उमामुखे -- व्यापारयामास विलोचनानि —कु० ३।६७, व्यापारितं शिरसि अस्त्रमक्षस्त्रपाणे —वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५।

पृ ii (जुहो० पर०—पिपर्ति, पूर्ण) 1. आगे ले जाना 2

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4 रक्षा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5 उन्नति करना, प्रगति करना।

iii (क्रया० पर० पृणाति) रक्षा करना।

iv (चुरा० उभ०—पारयति-ते, कभी-कभी 'पार्' स्वतंत्र धातु मानी जाती है) 1 पार ले जाना, नाव से पार उतारना 2 किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (व्रत का) पूरा करना 3 योग्य या समर्थ होना —अधिक न हि पारयामि वक्तुम् भामि० २।५९, श० ४ 4 सौंपना, बचाना, उद्धार करना, निस्तार करना।

v (स्वा० पर० -पृणोति) 1 प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना 2 प्रसन्न होना, खुश होना।

पृक्त (भू० क० कृ०) [पृच्+क्त] 1 मिश्रित, संपृक्त —रघु० २।१२ 2 स्पृष्ट, संपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, संयुक्त,—क्तम् संपत्ति, दौलत।

पृक्तिः (स्त्री०) [पृच्+क्तिन्] स्पर्श, संपर्क, संयोग।

पृक्थम् [पृच्+थन्] संपत्ति, धन-दौलत, वैभव।

पृच् I (अदा० आ० पृक्ते, पृक्ण) संपर्क में आना।

II (रुधा० पर० पृणक्ति, पृक्त) संपर्क में लाना, सम्मिलित होना, मिल जाना—एव वदन् दाशरथिः पृणग्धनुषा शरम् —भट्टि० ६।३९ 2 मिश्रण करना, मिलाना 3 संपर्क में होना, स्पर्श करना 4 संतुष्ट करना, भरना, संतृप्त करना 5 बढ़ाना, वृद्धि करना, सम् ,मिश्रण करना, बोलना, मिलना, मिलाना-वागर्थाविव संपृक्तौ—रघु० १।१, भट्टि० १७।१०६, दे० संपृक्त II (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० पर्चति, पर्चयति-ते) 1 स्पर्श करना, संपर्क में आना 2. रोकना, विरोध करना।

पृच्छक [प्रच्छ्+ण्वुल्] पूछताछ करने वाला, गवेषणा करने वाला—पृच्छकेन सदा भाव्यं पुरुषेण विजानता —पंच० ५।९३, याज्ञ० २।२६८।

पृच्छनम् [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछना, पूछ-ताछ करना।

पृच्छा [प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1 प्रश्न करना, पूछना, पूछ-ताछ करना 2 भविष्य विषयक पूछ-ताछ।

पृञ्च् (अदा० आ०—पृक्ते) संपर्क में आना, स्पर्श करना।

पृत् (स्त्री०) [पृ+क्विप्, तुक्] सेना—(पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० द्वि०, द्वि० ब० के पश्चात् 'पृतना' के स्थान में विकल्प से 'पृत्' आदेश हो जाता है।

पृतना [पृ+तनन्+टाप्] 1 सेना 2 सेना का एक प्रमाण जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3 युद्ध, संग्राम, मुठभेड़। सम०—साहः इन्द्र का विशेषण।

पृथ् (चुरा० उभ०—पर्थयति-ते) 1 विस्तार करना 2. फैंकना, डालना 3 भेजना, निदेश देना।

पृथक् (अव्य०) [प्रथ्+अच्, कित्, सम्प्रसारण] 1 अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके -शलान्दधमु पृथक् पृथक्—भग० १।१८, मनु० ६।२६, ७।५७ 2 भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक -भट्टि० ५।४, १३।४, रचिता पृथगर्थता शिशुपा० कि० २।२७ 3 जुदा, एक ओर, एकाकी—विक्रम० ४।२० 4 छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) पृथग्भावेन, रामात्, राम वा—सिद्धा०, भट्टि० ९।१०९ (पृथक् कृ—अलग २ करना, बाँटना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना)। सम०—आत्मता 1 अलग-अलग होना, पृथक्ता 2 भेद, भिन्नता 3 विवेक, निर्णय,—आत्मन् (वि०) भिन्न, अलग—आत्मिका व्यक्तिगत सत्ता, वैयक्तिकता —करणम्,-क्रिया 1 अलग-अलग करना, भेद करना 2 विश्लेषण करना कुल (वि०) भिन्न कुल से संबंध रखने वाला, -क्षेत्र (पु० ब० व०) एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान,- चर (वि०) एकाकी जाने वाला, अलग जाने वाला,—जन नीच पुरुष, ज्ञान-रहित, गँवार आदमी, प्राकृत जन, नीच लोग—न पृथग्जनवच्छ्रुतो वशं वशिनामुत्तम मनुमर्हसि—रघु० ८।९०, कि० १४।२४ 2 मूर्ख, बुद्धू, अज्ञानी—शि० १६।३९ 3 दुष्ट आदमी, पापी,—भाव. पृथक्ता, वैयक्तिकता (इसी प्रकार 'पृथक्त्वम'),—रूप (वि०) भिन्न-भिन्न रूपों या प्रकारों का,—विध (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नाना प्रकार विविध,—शय्या अलग सोना,—स्थिति (स्त्री०) अलग सत्ता।

पृथ्वी [प्रथ्+क्वन्, सम्प्रसारण] दे० पृथिवी।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम। सम०—सुतः,-तनयः,-सुतः,-सूनुः पहले तीन पाण्डवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत—अश्वत्थामा हत इति पृथासूनुना स्पष्टमुक्ता —वेणी० ३।९, अभितस्तं पृथासूनुः स्नेहेन परिषस्वजे —कि० ११।८, —सुतौ पाँडु का विशेषण।

पृथिका [प्रथ्+क+क+टाप् सम्प्रसारणम्, इत्वम्] कनखजूरा।

पृथिवी [प्रथ्+क्विन्, सम्प्रसारणम्] पृथ्वी (कई 'पृथिवी' भी लिखा जाता है)। सम०—इन्द्रः,-ईशः,-जित् (पु०),—पालः,-पालकः,-भुज् (पु०)—भुजः,-सकः, राजा,—तलम् धरातल,—पतिः 1. राजा 2 मृत्यु का देवता यम,—मण्डलः,-लम् भूमंडल,—सहः वृक्ष—पर्वतान पृथिवीं सहानिव—रघु० ८।९,—लोकः मर्त्यलोक भूलोक।

पृथु (वि०) (स्त्री०—थु,—थ्वी) तुल० प्रथीयस्—इष्ठ० अ० प्रथिष्ठ) [प्रथ्+कु, सम्प्रसारणम्] 1. चौड़ा, विस्तृत, प्रशस्त, फैलावदार—पृथुनितम्ब—दे० नीचे, त्रिको. पृथुमपि तनुम्—मेघ० ४६ 2 यथेष्ट, बहुल, पर्याप्त—विक्रम० ४।२५ 3 विस्तीर्ण, बड़ा—वृक्ष पृथुतरीकृता—रत्न० २।१५, शि० १२।४८, रघु० ११।२५ 4 विवरणयुक्त, अतिविस्तृत 5 बहुसंख्यक 6 चुस्त, फुर्तीला, चतुर 7 महत्त्वपूर्ण,—थुः 1 अग्नि का नाम 2. एक राजा का नाम (पृथु अंग के पुत्र वेन का बेटा था। वही पहला राजा कहलाता है जिससे कि इस भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा। विष्णु पुराण में वर्णन मिलता है कि वेन स्वभाव से दुष्ट था, जब उसने यज्ञ व पूजा का निषेध किया तो पुण्यात्मा ऋषियों ने उसे पीट कर मार डाला, उसके पश्चात् राजा के न होने पर देश में लूट मार होने लगी, अराजकता फैल गई, फलतः मुनियों ने पुत्रोत्पत्ति की इच्छा से मृत राजा की दाईं भुजा को मसला, तब उससे अग्नि के समान तेजस्वी पृथु निकला। उसे तुरन्त राजा घोषित कर दिया गया। उसकी प्रजा दुर्भिक्षग्रस्त थी—अतः उसने राजा से भोज्य फलों को दिलाने की प्रार्थना की जो कि पृथ्वी ने देना बन्द कर दिया था। क्रुद्ध होकर पृथु ने अपना धनुष उठाया और पृथ्वी को अपनी प्रजा के लिए आवश्यक पदार्थ पैदा करने के लिए बाध्य किया। पृथ्वी ने गाय का रूप धारण कर लिया और राजा के आगे-आगे भागने लगी—राजा भी उसका पीछा करता रहा। अन्त में पृथ्वी ने आत्मसमर्पण कर दिया और राजा से अपने प्राण बचाने की प्रार्थना की, साथ ही यह प्रतिज्ञा की कि आवश्यक फल शाकादिक प्रजा को मिल सकेंगे यदि उसे एक बछड़ा दे दिया जाय जिसके द्वारा वह दूध देने के योग्य हो सके। तब पृथु ने स्वायंभुव मनु को बछड़ा बनाया, पृथ्वी को दुहा और दूध अपने हाथों में लिया जहाँ से सब प्रकार के अन्न, शाकभाजियाँ और फलफूल प्रजा के पालन-पोषण के लिए उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् पृथु के उदाहरण का बाद में नाना प्रकार से अनुकरण किया गया। देव, मनुष्य, ऋषि, पहाड़, नाग और असुर आदि ने अपने में से ही उपयुक्त दोग्धा तथा बछड़े को ढूंढा और इस पृथ्वी का अपनी इच्छानुसार दोहन किया—तु० कु० १।२),—थुः (स्त्री०) अफीम। सम०—उदर (वि०) मोटे पेट वाला, हृष्ट-पुष्ट (रः) मेंढा,—कटल,—तिलक (वि०) मोटे और विस्तार युक्त कूल्हों से युक्त—पृथुनितम्ब नितम्बवती तव—विक्रम० ४।२६,—पत्रः,-त्रम् लाल सहजन—बल,-बलज् (वि०) दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्यापक यशस्वी,—रोमन् (पु०) मछली, °कूकः बीच राशि, —श्रो (वि०) अत्यन्त समृद्ध,—श्रोणी (वि०) बड़े भारी कूल्हों वाला,—सत्त्व (वि०) धनवान्, दौलत मंद,—स्कंधः सूअर।

पृथुक, कम् [पृथु+कै+क] चौले, चिवड़े—कः बच्चा निम्नजनत्व पृथुकान् पथिस्थ—शि० ३।३१,—का लड़की।

पृथुल (वि०) [पृथ्+कलच्, ला+क वा] चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत—श्रोणिषु प्रियकर पृथुलासु स्पर्शमाप सकलेन तलेन शि० १०।६५।

पृथ्वी [पृथु+ङीष्] 1. पृथिवी, धरा 2 पाँच मूल तत्त्वों में से एक, पृथ्वी 3 बड़ी इलायची 4. एक छंद (दे० परिशिष्ट १)। सम०—ईशः, -पतिः, पालः,—भुज् (पु०) राजा, प्रभु,—जातम् पृथ्वी,—धरः पर्वत का विशेषण,—नूहम् पृथ्वी, कृत्रिम सोहाग,—रुहः 1. वृक्ष 2 मंगल ग्रह।

पृथ्वीका [पृथ्वी+कन्+टाप्] 1 बड़ी इलायची 2. छोटी इलायची।

पृदाकु. [पर्द्+काकु, सम्प्रसारणम्, प्रकारलोपः] 1. बिच्छू 2. व्याघ्र 3. साँप, छोटा विषैला साँप 4 वृक्ष 5 हाथी 6 चीता।

पृषित (पृषि) (स्पृष्+नि नि० पृषो० सलोपः] 1 छोटा, छोटे कद का बौना 2 सुकुमार, दुबला-पतला 3 विविध प्रकार का, चितीदार,—षितः 1. प्रकाश की किरण 2 पृथ्वी 3 तारा समूह से युक्त आकाश 4 कृष्ण की माता देवकी। सम०—धर्वः—धरः,—भद्रः कृष्ण के विशेषण,—भूषः 1 कृष्ण का विशेषण 2 गणेश का विशेषण।

पृषि (पृषि) का, षिणी (णी) [पृषतो जले कामति-शोभते—पृषि+कै+क+टाप्, पृषि+ङीष्] जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुमी।

पृषत् (नपुं०) [पृष्+अति] 1 जल या किसी और तरल पदार्थ की बूंद (कुछ लोगों के मतानुसार केवल ब०व० में प्रयुक्त)। सम०—अंशुः, आशुः 1 वायु, हवा 2 शिव का विशेषण,—आज्यम् दही में मिला हुआ घी,—पतिः (पृषतां पतिः) वायु—वाहः वायु का घोड़ा।

पृषतः [पृष्+अतच्] 1 चितीदार हरिण 2. पानी की बूंद—पृषतैरपि वारयन्ति च स्वम्—कि० ६।२७, रघु० ३।३, ४।२७, ६।५१ 3. ध्वजा, निशान—। सम०—अश्वः हवा, वायु।

पृषत्कः [पृषत्+कन्] बाण—तदुपोढेषु सप्तसु पृषत्कैः—कि० १३।२३, शि० २०।१८,—उद्धुरं १।१, धनुर्भृतां हस्तवता पृषत्का—रघु० ७।४५।

पृषतिः [पृष्+क्तिन्] पानी की बूंद—पयः पृषतिभिः

स्पृष्टा वाति वाता' घनै. घनैः—अमरकोष पर भरत।

पृथग्भावा=पृथग्भासा।

पृथाकरः [पृथ्+क्विप्, पृथे सेचनाय आकीर्यते—पृथ्+आ+कृ+अप्+टाप्] छोटा पत्थर (जो बाट की भांति प्रयुक्त किया जाय)।

पृथातक्कम् [पृथत्+आ+तक्+अच्] दही और घी का सम्मिश्रण।

पृथोदरः [पृथत् उदरं यस्य, पृथो० तत्पो०] (यह शब्द पृथत् और उदर से मिल कर बना है, पृथत् के त् का अनियमित कारक के रूप में लोप हो गया। इस प्रकार यह शब्द अनियमित समासों की एक पूरी श्रेणी है—पृथोदरादित्वात् साधु, दे० 'यकृत' पा० ४।३।१०९।

पृष्ट (भू०क०कृ०) [प्रच्छ्+क्त] 1 पूछा हुआ, पता लगाया हुआ, प्रश्न किया हुआ, सवाल किया हुआ, 2 छिदका हुआ। सम०—आख्यः 1. धान्य विशेष, अनाज 2 हाथी।

पृष्टिः (स्त्री०)[प्रच्छ्+क्तिन्] पूछ-ताछ, प्रश्न आवश्यकता।

पृष्ठम् [पृष् स्पृष् वा थक्, नि० साधुः] 1. पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी 2. जानवर की पीठ—अश्वपृष्ठमारुह्य—आदि 3 सतह या ऊपर का पार्श्व रघु० ४।३१.१२।६७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अवनिपृष्ठचारिणीम्—उत्तर० ३ 4 (किसी पत्र या दस्तावेज की) पीठ या दूसरी तरफ़ मालवि० २।९३ 5. घर की चपटी छत 6 पुस्तक का पृष्ठ। सम०—अस्थि (नपु०) रीढ़ की हड्डी, कवचः,—रक्षः जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे,—ग्रंथि (वि०) ककुद्मान्, कूबड़ युक्त,—वंशः (पु०) केकड़ा,—लम्बकम् हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियाँ, वृद्धिः 1 केकड़ा 2. रीछ, शल्यम् किसी आकृति का फालू भाग,—भागः पीठ, मांसम् 1 पीठ का मांस 2. पीठ पर की भूमड़ी °अव °अवल (वि०) चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला (-दम्, -दनम्) चुगली, पृष्ठमांसादन तवत् परोक्षे दोषकीर्तनम्—हेमचन्द्र पु० शाकपार्थिवोः पतति लादति पृष्ठमांसम्—हि० १।८१, यानम् सवारी, -रंध्रः रीढ़ की हड्डी—वास्तु (नपु०) मकान की ऊपर की मंजिल, -वाहः (पु०),—वाहकः ऊंट, ऊंटवाला, -शूल (वि०) पीठके बल सोने वाला, -शृंगः जंगली बकरी, —शृंगिन् (पु०) 1 मेंढा 2. भैंसा 3 हिजड़ा 4 भीम का विशेषण।

पृष्ठकम् [पृष्ठ+कन्] पीठ।

पृष्ठतस् (अव्य०) [पृष्ठ+तसिल्] 1. पीछे, पीठ पीछे, पीछे से—गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात्—मनु० ४।१५४, ८।३००, यम० ११।४० 2. पीठ की ओर, पीछे की ओर—गच्छ पृष्ठतः 3 पीठ पर 4 पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से (पृष्ठतः कृ) 1. पीठ पर रखना, पीछे छोड़ना 2 उपेक्षा करना, तिलाञ्जलि देना, छोड़ देना 3 विरक्त होना, हाथ खींचना, त्याग देना, तिलाञ्जलि देना, पृष्ठतो यत्—अनुसरण करना, पृष्ठतो भू—1 पीछे खड़े होना 2 उपेक्षित होना।

पृष्ठ्य (वि०) [पृष्ठ+यत्] पीठ से सबंध रखने वाला, पृष्ठ्य लट्टू घोड़ा।

पृष्णिः (स्त्री०) [=पृश्नि पृषो०] एड़ी।

पॄ (जुहो०, क्रया०—पर० पिपर्ति, पृणाति, पूर्ण—कर्म० पूर्यते, प्रेर० पूरयति—ते, इच्छा० पिपरि (री) षति, पुपूर्षति) 1 भरना, भर देना, पूरा करना 2 पूरा करना, (आशा आदि) पूरी करना, तृप्त करना 3 हवा भरना, (शंख, बंसरी आदि) बजाना 4 संतुष्ट करना, थकावट दूर करना, प्रसन्न करना—पितुरपारीत्—भट्टि० १।२ 5. पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना।

पेचकः [पच्+वुन्, इत्वम्] 1 उल्लू 2 हाथी की पूँछ की जड़ 3 पलंग, शय्या 4 बादल 5. जूँ।

पेचकिल (पु०) पेचिल [पेचक+इनि, पच्+इलच्, इत्वम्] हाथी।

पेंचुकः (पु०) कान का मैल, गूथ, दे० पिचुय।

पेट,-टम् [पिट्+अच्] 1 थैला, टोकरी 2 पेटी, संदूक, -ट खुला हाथ जिसकी अंगुलियाँ फैलाई हुई हों।

पेटकः,-कम् [पेट+कन्] 1 टोकरी, संदूक, थैला 2. समुच्चय, गठरी।

पेटाकः [=पेटक, पृषो०] थैला, टोकरी, संदूक।

पेटिका, पेटी [पिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, पेट+ङीष्] छोटा थैला, टोकरी।

पेटा [=पेट, पृषो०] बड़ा थैला।

पेय (वि०) [पा+ण्यत्] 1 पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक 2 स्वादिष्ट, -यम् पानीय, मद्य या शर्बत आदि,- या भात का माड़, चावलों की लपसी।

पेरुः (पु०) 1. समुद्र 2. अग्नि 3 सूर्य।

पेयूष,-षम् [पीय्+ऊषन्, डा० गुण] 1 अमृत 2. उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ—सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरं पेयूषमुच्यते—हारावली, मनु० ५।६ 3 ताजा घी।

पेरा (स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्रास्त्र—भट्टि० १७।७।

पेल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—पेलति, पेलयति—ते) 1 जाना, चलना—फिरना 2 हिलना, काँपना।

पेलम्, पेलकः]पेल्+अच्, पेल+कन्] अण्डकोष।

पेलव (वि०) [पेल+वा+क] 1 सुकुमार, सुकोमल, मृदु, मुलायम,—वत्व पेलवपुष्प पवित्रः—कु० ४।२९, ५।४,७।६५ 2. दुर्बल, पतला, क्षीण—स० ३।२२।

पेलिः, पेलिन् (पुं०) [पेल्+इन्, पेल+इनि] घोड़ा।
पेव (व, ल) क (वि०) [पिव् (प्, व्)+अलच्] 1. मृदु, सुकुमार, सुकुमार—रघु० ९।४०, ११।४५, शिव० ९३ 2. सुडौल-पतला, क्षीण (कमर आदि) —रघु० १३।१४ 3. मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त अच्छा—मालवि० २।२ 4 विशेषज्ञ, चतुर, कुशल —भर्तृ० ३।५६ 5. चालाक, छली।
पेशिः,-शी [पिश्+इन्, पेशि+ङीष्] 1 मांस का पिंड 2. मांस राशि 3. अंडा 4 पुट्ठा—याज्ञ० ३।१०० 5 गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ-पिण्ड 6. खिलने के लिए तैयार कली 7 इन्द्र का वज्र (पुल्लिंग भी) 8 एक प्रकार का मांसमय। सम०—कोष्ठः (क्षः) यकृत का अंडा।
पेशः [पिश्+घञ्] पीसना, चूरा करना, कुचलना—शि० ११।४५।
पेशनम् [पिश्+ल्युट्] 1. चूर्ण बनाना, पीसना 2 अवलेहान का वह स्थान जहाँ बनाव की बातों पर धार्य चलाई जाती है 3 सिल और लोढ़ी, पीसने का कोई भी उपकरण।
पेशनिः (स्त्री०) पेशनी, पेशाक. [पिश्+अनि, पेशनि+ङीष्, पिश्+या—ल्युट्] चक्की, सिल, खरल।
पेशस्कर (वि०) [पेशस्+कर्] 1. जाने वाला, घूमने वाला 2 नाचकारी।
पें (भ्वा० पर० पायति) सूखना, मुरझाना।
पेंगिः [पिंग+इञ्] बालक का पैतृकनाम।
पैंजूष [पिंजूष+अण्] काग।
पैठर (वि०) (स्त्री०—री) [पिठर+अण्] किसी पात्र में उबाला हुआ।
पैठीनसिः (पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र का प्रणेता है।
पैंडिक्यम्, पैंडित्यम् [पिंड+ठन्+ष्यञ्, पिण्ड+इन्+ष्यञ्] भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षा-वृत्ति।
पैतामह (वि०) (स्त्री०—ही) [पितामह+अण्] 1 दादा या पितामह से संबंध रखने वाला 2. उत्तराधिकार में पितामह से प्राप्त 3. ब्रह्मा से गृहीत, ब्रह्मा से अधिष्ठित, या ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला - रघु० १५।६०,—हः (ब० व०) पूर्वपुरुष, बाप दादा।
पैतामहिक (वि०) (स्त्री०—की) [पितामह+ठक्] पितामह से संबंध रखने वाला।
पैतृक (वि०) (स्त्री०—की) [पितृ+ठञ्] 1 पिता से सम्बन्ध रखने वाला 2. पिता से प्राप्त या आगत, पुरखाओं से संबंध, पिता की परंपरा से प्राप्त—रघु० ८।६,१८।४०, मनु० ९।१०४, याज्ञ० २।४७ 3. पितरों के लिए पुनीत,—कम् मृत पुरखाओं या पितरों के सम्मान में अनुष्ठित श्राद्ध।
पैतृकस्वः [पितृमती+स्व] 1. अविवाहिता स्त्री का पुत्र 2 किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र (पितृमतः पुत्रः)।
पैतृष्वसेयः, पैतृष्वसीयः [पितृष्वस्+ढक्, छण् वा] बुआ का बेटा।
पैत्त (वि०) (स्त्री०—त्ती), पैत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [पित्त+अण्, ठक् वा] पित्तीय, पित्तप्रकृति।
पैत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [पितृ+अण्] 1. पिता या पुरखाओं से संबंध रखने वाला, पैतृक, पुश्तैनी 2 पितरों के लिए पुनीत,—त्रम् तर्जनी और अंगूठे का मध्यवर्ती हाथ का भाग (इस अर्थ में 'पैत्र्यम्' भी)।
पैत्रक (वि०) (स्त्री०—की) [पीलु+अण्] पीलु वृक्ष की लकड़ी से बना हुआ—मनु० २।४५।
पैत्रकम् [पेतल+अण्] मृदुता, सुकोमलता, सुकुमारता।
पैत्राच (वि०) (स्त्री०—ची) [पिशाच+अण्] राक्षसी, नारकीय,—चः हिन्दु-कर्मशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह (इसमें किसी सोई हुई प्रमत्त या पागल कन्या का, उसकी स्वीकृति के बिना उसका कौमार्यहरण किया जाता है—सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः—मनु० ३।३४, याज्ञ० १।६१ 2. एक प्रकार का राक्षस या पिशाच,—ची किसी धार्मिक संस्कार के अवसर पर तैयार किया गया नैवेद्य 2. रात 3. एक प्रकार की अंडबंड भाषा जो रसातल पर पिशाचों द्वारा बोली जाय, प्राकृत भाषा का एक निम्नतम रूप।
पैशाचिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिशाच+ठक्] नारकीय, राक्षसी।
पैशुनम्, न्यम् [पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा] 1. चुगली, बदनामी, इधर की उधर लगाना, कलंक—मनु० ७।४८, ११।५५, मच० १६।२ 2. बदमाशी, ठगी 3. दुष्टता, दुर्भावना।
पैष्ट (वि०) (स्त्री०—ष्टी) [पिष्ट+अण्] आटे का या पीठी का बना हुआ।
पैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिष्ट+ठक्] आटे या पीठी का बना हुआ—कम् 1. कचौड़ियों का ढेर 2 अनाज से खींची हुई मदिरा।
पैष्टी [पैष्ट+ङीष्] अनाज को सड़ाकर उससे तैयार की हुई मदिरा—शु० पौष्टी।
पोगंड (वि०) [पोः शुद्धो गतः एकदेशो यस्य-ब्रा०] 1. बच्चा, अवयस्क, अपूर्ण विकसित 2. कम या विकृत अंग वाला 3. विकृत, विरूप,—डः बालक जिसकी आयु ५ से सोलह वर्ष के भीतर की हो, शु० 'अपोगंड'।

पोतः [पुट्+अच्] घर की नींव । सम०——वहः 1 एक प्रकार का नरकुल 2 कास 3 एक प्रकार की मछली ।

पोतक [पुट्+ण्वुल्] नौकर ।

पोटा [पुट्+अच्+टाप्] 1 मरदानी स्त्री, पुरुषों की भाँति दाढ़ी वाली स्त्री 2. हिजड़ा, उभयलिंगी 3 नौकरानी ।

पोटकी [पोट+ङीष्] स्थूलकाय भगरमच्छ ।

पोटलिका, पोटली [पोटली+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोट+ली+ङ ङीप्, पृषो०] पोटली, पुलिंदा, गठरी ।

पोतः [पू+तन्] 1 किसी भी जानवर का बच्चा, पशु-शावक, बछेड़ा, अश्वशावक आदि—पिब स्तन्यं पोत —भामि० १।६०, मृगपोत, करिपोत आदि, वीरपोत-मया योद्धा उत्तर० ५।३ 2 दस वरस का हाथी 3 जहाज, बेड़ा, किश्ती पोतो दुस्तरवारिराशितरणे —हि० २।१६५, मनु० ७।३२ 4 वस्त्र, कपड़ा 5 पौधे का अंकुर 6 घर बनाने की जगह । सम० —आच्छादनम् तरु, आघातनम् छोटी-छोटी मछलियों का झुण्ड, -धारिन् (पु०) जहाज का स्वामी, भंग जहाज का टूट जाना, —रक्षः किश्ती या नाव का चप्पू या डाड़ वणिज् (पु०) व्यापारी जो समुद्र से आ जाकर व्यापार करे, वाह, शिक्षया, नाविक ।

पोतकः [पोत+कन्] 1 पशुशावक 2 छोटा पौधा 3 घर बनाने के निमित्त भूखण्ड ।

पोतलः [पोत+अस्+अच्] एक प्रकार का कपूर ।

पोतृ (पु०) [पू+तृन्] यज्ञ में कार्य कराने वाले सोलह ऋत्विजों में से एक (ब्रह्मा नामक ऋत्विज का सहायक) ।

पोतवा [पोत+व+टाप्] नौकाओं का बेड़ा ।

पोत्रम् [पू+ष्ट्रन्] 1 सूअर की थूथन 2 नौका, जहाज 3 हल का फलका 4 वज्र 5 वस्त्र 6 पोतृ का पद । सम० - आयुधः सूअर, वराह ।

पोत्रिन् (पु०) [पोत्र+इनि] सूअर, वराह ।

पोथः [पुथ्+घञ्] 1 ढेर 2 राशि, विस्तार ।

पोथिका, पोथी [पोथी+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोथ+ङीप्] एक प्रकार की पूरी (गेहूँ की बनी हुई) ।

पोथिमः [पोतस्य अलिन्द इव - पृषो०] जहाज का मस्तूल ।

पोषः [पुष्+घञ्] 1 पोषण, संपालन, संधारण 2 पुष्टि, वृद्धि, संवर्धन, प्रगति 3 समृद्धि, प्राचुर्य, बाहुल्य ।

पोषणम् [पुष्+णिच्+ल्युट्] पोसना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, संधारण करना ।

पोषणिन्: [पुष्+णिच्+इत्नुच्] कोमल ।

पोषित् (वि०) [पुष्+णिच्+तृच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला —(पु०) परिचारिका करने वाला, दूध पिलाने वाला ।

पोषित्, पोष्ट् (वि०) [पुष्+णिनि, तुच् च] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला - (पु०) पालक, पोषक, रक्षक ।

पोष्य (वि०) [पुष्+ण्यत्] 1 खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण किये जाने योग्य, संपालनीय 2 सुपालित, फलता-फूलता, समृद्ध । सम०—पुत्रः,—सुतः गोद लिया हुआ पुत्र, -वर्गः ऐसे संबंधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के योग्य हो ।

पौंश्चलीय (वि०) (स्त्री० - यी) [पुंश्चली+छण्] वेश्याओं से संबंध रखने वाला ।

पौंश्चल्यम् [पुंश्चली+ष्यञ्] वेश्यापन, कुलटापन —मनु० ९।१५ ।

पौंसवनम् [पुंसवन+अण्] दे० 'पुंसवन' ।

पौंस्न (वि०) (स्त्री० - स्नी) [पुंस्+स्नञ्] 1. पुरुषोचित -भट्टि० ५।९१ 2 मर्दाना, पौरुषेय, —स्नम् मर्दानगी, पौरुष ।

पौगण्ड (वि०) (स्त्री० - ण्डी [पोडग+अण्] बालोचित, —ण्डम् बचपन, बाल्यावस्था (५ से १६ वर्ष तक की आयु) ।

पौंड्र [पुण्ड्र+अण्] 1 एक देश का नाम 2 उस देश का राजा, या निवासी 3 एक प्रकार का गन्ना 4 संप्रदायबोधक तिलक 5 भीम के शंख का नाम—पौंड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदर —भग० १।१५ ।

पौंड्रक: [पुण्ड्र+कन्] 1 गन्ना (ईख) का एक भेद 2. (रस पका कर गुड़ बनाने वालों की) वर्णसंकर जाति —तु० मनु० १०।४४ ।

पौंड्रिक: [पुण्ड्र+ठक्] एक प्रकार का गन्ना (ईख) पौंडा ।

पौंसवम् [=पौंस्न पृषो०] एक तोल ।

पौंस्निकम् [पूतिक अण्] (पीले रंग का) एक प्रकार का शहद ।

पौत्र (वि०) (स्त्री० त्री) [पुत्रस्यापत्यम् - अण्] पुत्र से प्राप्त या संबद्ध,- त्रः पोता, पुत्र का बेटा,—त्री पोती, पुत्र की बेटी ।

पौत्रिकेयः [पुत्रिका+ढक्] लड़की का पुत्र जो अपने नाना का वंश चलाये ।

पौनः पुनिक (वि०) (स्त्री०-की) [पुनः पुनः+ठञ्, टिलोप] बार २ दोहराया गया, बार २ होने वाला ।

पौनः पुन्यम् [पुनः पुनः+ष्यञ्] बार बार आवृत्ति, लगातार दोहराया जाना ।

पौनरुक्तम्, पौनरुक्त्यम् [पुनरुक्त+अण्, ष्यञ् च] —आवृत्ति,—अतिप्रियोऽप्तीति पौनरुक्तम्—का० २।७, रघु० १२।४० 2. अधिकता, अनावश्यकता, निरर्थकता—अभिव्यक्तायां पंक्तिकायां किं दीपिका-पौनरुक्त्येन—विक्रम० ३ ।

पौनर्भव (वि०) [पुनर्भू+अण्] 1. जिसने दूसरे पति

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबंध रखने वाला 2 दोहरायी हुआ,—द. 1 पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दु-धर्मशास्त्र में स्वीकृत बारह पुत्रों में से एक—याज्ञ० २।१३०, मनु० ३।१५५ 2 स्त्री का दूसरा पति · मनु० ९।१७६ ।

पौर (वि०) (स्त्री०—री) [पुर+अण्] किसी नगर या शहर से संबंध रखने वाला=रः शहरी, नागरिक (विप० जानपद) कु० ६।४१ मेघ० २७, रघु० २।१०,७४, १२।३, १६।९ । सम० - अंगना—योषित् (स्त्री०), · स्त्री नगर में रहने वाली स्त्री,—जानपद (वि०) शहर या नगर से संबंध रखने वाला (ब व · -दः) नागरिक और ग्रामीण, शहरी और देहाती —कथं दुर्जना पौर जानपदा —उत्तर० १,—वृद्धः प्रमुख नागरिक, उपनगरपाल ।

पौरकम् [पौर+कै+क] 1 घर के निकट बगीचा 2 नगर के निकट उद्यान ।

पौरंदर (वि०) (स्त्री०—री) [पुरंदर+अण्] इन्द्र से प्राप्त, इन्द्र संबंधी, इन्द्र के लिए पुनीत, रम् ज्येष्ठा नक्षत्र ।

पौरव (वि०) (स्त्री०—वी) [पुरु+अण्] पुरु के वंश में उत्पन्न,—वः पुरु की सन्तान, पुरुवंशी—शा० ५, 2 भारत के उत्तर में स्थित एक देश तथा उसके नागरिक 3 उस प्रदेश का निवासी या राजा ।

पौरवीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पौरव+छ] पौरवों का भक्त ।

पौरस्त्य (वि०) [पुरस्+त्यक्] 1 पूर्वी—पौरस्त्यो वा सुस्वयति मरुत् साधुसंवाहनाभि —मा० ९।२५, पौरस्त्यश्चाममस्त ९।१७, रघु० ४।३४ 2 प्रमुख 2 पहला, प्रथम, पूर्ववर्ती ।

पौराण (वि०) (स्त्री०—णी) [पुराण+अण्] 1 भूत काल का, प्राचीन, अतीत काल का 2 प्राक्कालीन 3 पुराणों से संबंध रखने वाला या उनसे प्राप्त ।

पौराणिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुराण+ठक्] 1 भूत काल का, प्राचीन 2 पुराणों से संबद्ध या उनसे प्राप्त 3 अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता, क पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण, पुराणों का पाठक (जनसाधारण में बैठ कर) 2 पुराणविद्, पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति ।

पौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [पुरुष+अण्] । पुरुष संबंधी, मानवी 2 मर्दाना, पुरुषोचित,—षः एक मनुष्य के द्वारा बोये जाने योग्य बीज, षी स्त्री षम् 1. मानवी कृत्य, मनुष्य का काम, चेष्टा, प्रयत्न —चिन्तिप्यका पौरुषम् भर्तृ० २।८८, दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या —पंच० १ 2 शौर्य, विक्रम, वीरता, मर्दानगी, साहस—पौरुषभूषणः—रघु० १५।२८, ८।२८ 3. पुरुषत्व—मनु० ७।८ 4. वीर्य, शुक्र 5 पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग 6. मनुष्य की पूरी ऊँचाई, खुली हुई अंगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जितनी ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे 7. मूषकदानी ।

पौरुषेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुरुष+ढक्] 1. मनुष्य से प्राप्त, मनुष्य कृत, मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित यथा—अपौरुषेया मे वेदा 2 मर्दाना, पुरुषोचित 3 आध्यात्मिक,—यः 1 मनुष्यवध 2 मनुष्यों की भीड़ 3. रोजनदारी पर काम करने वाला श्रमिक, कमेरा 4 मानवी काम, मनुष्य का कार्य ।

पौरुष्यम् [पुरुष+ष्यञ्] मर्दानगी, साहस, शौर्य ।

पौरोगवः [पुरोऽग्रेगौ नेत्रे यस्य पुरोगु+अण्] राज भवन का अधीक्षक, विशेषतः राजा की रसोई का ।

पौरोभाग्यम् [पुरोभागिन्+ष्यञ्, अन्य लोप, वृद्धि] 1. छिद्रान्वेषण, दोषदर्शन—प्रियोपभोग विश्लेषु पौरोभाग्यमिवाचरन्—रघु० १२।२२ 2 दुर्भावना, ईर्ष्या, डाह ।

पौरोहित्यम् [पुरोहित+ष्यञ्] कुलपुरोहित का पद, पुरोहिताई ।

पौर्णमास (वि०) (स्त्री०—सी) [पूर्णमासी+अण्] पूर्णिमा से संबंध रखने वाला,—सः अग्निहोत्री द्वारा पूर्णिमा के दिन अनुष्ठित संस्कार ।

पौर्णमासी, पौर्णमी [पौर्णमास+ङीप्, पूर्ण+मा+क +अण्+ङीप्] पूर्णिमा, पूर्णमासी ।

पौर्णमास्यम् [पौर्णमासी+यत् वा०] पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ ।

पौर्णिमा [पूर्णिमा+अण्+टाप्] पूर्णमासी का दिन ।

पौर्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्त+ठक्] पुण्यप्रद धर्मार्थ-कार्यों से संबंध रखने वाला—मनु० ३।१७८, ४।२२७।

पौर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [पूर्व+अण्] 1 भूतकाल संबंधी, 2 पूर्व दिशा से संबंध रखने वाला, पूर्वी ।

पौर्वदेहे (र्वदैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वदेह+ठक्] पूर्वजन्म संबंधी, पहले जन्म में किया हुआ, पूर्वजन्म-कृत—भग० ६।४३, याज्ञ० १।३४८ ।

पौर्वपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वपद+ठञ्] समास के प्रथम पद से संबंध रखने वाला ।

पौर्वापर्यम् [पूर्वापर+ष्यञ्] 1 पहले का और बाद का संबंध, पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती का संबंध 2. उचित क्रम, अनुक्रम, सातत्य ।

पौर्वाह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वाह्ण+ठञ्] दोपहर के पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, मध्याह्न पूर्व संबंधी ।

पौर्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्व+ठञ्] 1 पहला, पूर्वकालीन, पहले का 2 पैतृक 3. पुराना, प्राचीन ।

पौलस्त्यः [पुलस्ते अपत्यम्—पुलस्ति+यञ्] रावण का

विशेषण—पौलस्त्यः कबलव्यवहारहरणे दोषं न विज्ञातवान्—पंच० २।४, रघु० ४।८०, १०।५, १२।७२ 2. कुबेर का विशेषण 3. विभीषण का विशेषण 4 धनदाता।

पौलिः (पुं०, स्त्री०) पौली (स्त्री०) [पुल्+ण, पोलेन निर्वृत्तः—पोल+इञ्, पौलि+ङीष्] एक प्रकार की पूरी।

पौलोमी [पुलोमन्+अण्, अनो लोप, पौलोम+ङीष्] इन्द्राणी, पुलोमा की पुत्री, इन्द्र की पत्नी—आक्षीरन्या न ते युक्ता पौलोम्या सदृशी भव—श० ७।२८। सम०—ईशः इन्द्र का विशेषण।

पौषः [पौषी+अण्] एक चान्द्रमास का नाम जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर-जनवरी में आने वाला मास),—षी पौष मास में आने वाली पूर्णिमा, रघु० १८।३५।

पौष्कर,-रक, (स्त्री०—री,—की) पुष्कर+अण्, पौष्कर+कन्] नील कमल से सबंध रखने वाला।

पौष्करिणी [पुष्कराणां समूह—पौष्कर+इनि+ङीष्] कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर।

पौष्कलः [पुष्कल+अण्] अनाज का एक भेद।

पौष्कल्यम् [पुष्कल+ष्यञ्] 1. परिपक्वता, पूर्ण विकास, पूरी वृद्धि 2 बाहुल्य।

पौष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुष्टि+ठञ्] 1 वृद्धि करने वाला, कल्याण कारक 2 पोषक करने वाला, पोषक, पुष्टिकारक, बलवर्धक।

पौष्णम् [पूषादेवता अस्य—पूषन्+अण्, उपधालोप] रेवती नक्षत्र।

पौष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पी) [पुष्प+अण्] फूल सबंधी या फूलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित,—ष्पी 1 पाटलिपुत्र नगर, पटना 2. (फूलों से तैयार की गई एक प्रकार की) शराब।

प्याट् (अव्य०) [प्याय्+क्विप् (धा०)] हो, अहो आदि अव्यय जो बुलाने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते हैं।

प्याय् (भ्वा०आ०—प्यायते, प्यान या पीन) फूलना, मोटा होना, बढ़ना—दे० नीचे 'पी'।

प्यायनम् [प्याय्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

प्यायित (वि०) [प्याय्+क्त] 1 वर्धित, वृद्धि को प्राप्त 2 जो मोटा हो गया हो 3 विश्वास्त, सशक्त किया हुआ।

प्यै (भ्वा० आ०—प्यायते, पीन) 1 बढ़ना, वृद्धि को प्राप्त होना, मोटा होना—महि० ६।३३ 2 पुष्कल होना, समृद्ध —प्रेर० प्याययति-ते 1 बढ़ाना 2 बड़ा करना, मोटा बनाना खुशी करना—मनु० ९।३१४ 2 तृप्त करना, इच्छानुसार संतुष्ट करना।

प्र (अव्य०) [प्रच्+ड] 1. धातुओं के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका अर्थ है—'आगे' 'आगे को' 'सामने' 'आगे की ओर' 'पहले' 'दूर' यथा प्रगम्, प्रस्था, प्रचुर, प्रया आदि 2 विशेषणों के पूर्व लग कर इसका अर्थ है—'बहुत' 'बहुत अधिक' 'अत्यंत' आदि—प्रकृष्ट, प्रमत्त आदि, दे० आगे 3. संज्ञाओं (चाहे धातुओं से बने हों) के पूर्व लग कर मत्व० के अनुसार इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं—(क) आरंभ, उपक्रम यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्राङ्ग (ख) लम्बाई यथा प्रवालमूर्धिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता, आधिक्य यथा प्रवाद, प्रकर्ष, प्रच्छाय, प्रमुख (ङ) स्रोत या मूल यथा प्रभव, प्रपौत्र (च) पूर्ति, पूर्णता, तृप्ति यथा प्रभुक्तसक्तम् (छ) अभाव, विरोग, अनस्तित्व यथा प्रोषिता, प्रपर्ण वृक्ष (ज) अतिरिक्त यथा प्रभु (झ) श्रेष्ठता यथा प्राचार्य (ञ) पवित्रता यथा प्रसन्न जलम् (ट)अभिलाषा यथा प्रार्थना (ठ)विराम यथा प्रशम (ड) सम्मान आदर यथा प्राञ्जलि (जो सादर हाथ जोड़ता है) (ढ) प्रमुखता यथा प्रणस, प्रवाल।

प्रकट (वि०) [प्र+कट्+अच्] 1. स्पष्ट, साफ, जाहिर, प्रतीयमान, प्रत्यक्ष 2 बेपरदा, खुला हुआ 3 दृश्यमान, —टम् (अव्य०) साफ तौर से, प्रत्यक्षतः, सार्वजनिक रूप से, स्पष्ट रूप से (प्रकटी √कृ व्यक्त करना, खोलना, प्रदर्शन करना, प्रकटी √भू व्यक्त होना, जाहिर होना)। सम०—प्रीतिवर्धः शिव का विशेषण।

प्रकटनम् [प्र+कट्+ल्युट्] व्यक्त होने की क्रिया, खोलना, उघाड़ देना।

प्रकटित (भू० क० कृ०) [प्रकट्+क्त] 1 व्यक्त, प्रदर्शित, अनावृत 2 सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित 3 जाहिर।

प्रकंपः [प्र+कम्प्+घञ्] काँपना, हिलना, थरथराना, प्रचंड थरथरी या (भूकम्प के) धक्के वाला चाल मनसिजवशात् प्राप्तराङ्गप्रकंपा—सुभा०, सशिर-प्रकंपम्—शि० १३।४२।

प्रकम्पन (वि०) [प्र+कम्प्+ल्युट्] हिलाने वाला,—नः 1 हवा, प्रचंड वायु, आंधी का झोंका—प्रकम्पनेनानुचकम्पिरे सुरा—शि० १।६१, १४।४३ 2 नरक का नाम, —नम् अत्यधिक या प्रचंड कंपकंपी, जोरदार थरथरी।

प्रकरः [प्र+कृ (कॄ)+अप्] ढेर, समुच्चय, मात्रा, संग्रह —मुक्ताफलप्रकरभाजि गुहागृहाणि- शि० ५।१२, बाष्पप्रकर कलुषा दृष्टिम्—शा० ६।८, रघु० ९।५६, कु० ५।६८ 2 गुलदस्ता, पुष्पगुच्छ 3 मदद, सहायता, मित्रता 4 रिवाज, प्रचलन 5. आदर 6 सतीत्वहरण, अपहरण,—म् अगर की लकड़ी।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1 निरूपण करना, व्याख्या

करना, विचारविमर्श करना 2 विषय, प्रसंग, विभाग, (चिकित्सा का) विषय—कतमत्प्रकरणमाश्रित्य—मा० १ 3. अनुभाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रभाग 4 मौका, अवसर 5 मामला, बात 6 प्रस्तावना, आमुख 7 नाटक का एक भेद जिसकी कथावस्तु कृत्रिम हो -जैसा कि मृच्छकटिक, मालती-माधव, पुष्पभूषित आदि। सा० द० कार द्वारा दी गई परिभाषा—भवेत्प्रकरणं वृत्त लौकिक कवि-कल्पितम्, शृंगारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्, सापायधर्मकामार्थं परो धीरप्रशान्तक ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणी [प्रकरणी+कन्+टाप्, ह्रस्व, प्रकरण+ङीप्] एक नाटक जो प्रकरण के लक्षणों से ही युक्त हो। सा० द० कार उस परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकेव प्रकरणिका सार्थवाहा- दिनायिका, समानवंशजा नेतुर्भवेद्वेश्या च नायिका ५५४।

प्रकरिका [प्रकरी+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय।

प्रकरी [प्रकर+ङीष्] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2 नटों की पोशाक 3 रासलीला 4 चौराहा 5 एक प्रकार का गीत।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] 1 श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोपरिता —वसु प्रकर्षादजयद्गुरु रघु—रघु० ३।३४, वर्ण प्रकर्षे सति-कु० ३।२८ 2 तीव्रता, प्रबलता, आधिक्य—प्रकर्षगतेन शोकसंतानेन—उत्तर० ३ 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 निरीक्षणता 5 लम्बाई, विस्तार **प्रकर्षेण प्रकर्षात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यंत' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं)।

प्रकर्षणम् [प्र+कृष्+ल्युट्] 1 खींचने की क्रिया, आकर्षण 2 हल चलाना 3 अवधि, लंबाई, विस्तार 4 श्रेष्ठता, सर्वोपरिता 5 ध्यान हटाना।

प्रकला [प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म अंश।

प्रकल्पना [प्र+कल्प्+णिच्+युच्+टाप्] स्थिर करना, निश्चयन, नियत करना—मनु० ८।२११।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र+कल्प्+णिच्+क्त] 1 बनाया हुआ, कृत, निर्मित 2 निश्चत किया हुआ, नियत किया हुआ,—ता एक प्रकार की पहेली।

प्रकाण्ड, -ण्डम् [प्रकृष्ट काण्ड—प्रा० स०] 1 वृक्ष का तना जड़ से शाखाओं तक—शि० ९।४५ 2. शाखा, किसलय 3 (समास के अन्त में) कोई भी श्रेष्ठ या प्रमुख प्रकार का पदार्थ—ऊरूप्रकाण्डद्वितयेन तस्या—नै० ७।९ 3 क्षत्र प्रकाण्ड—महावी० ४।३५ ५।४८ 4 भुजा का ऊपरी भाग।

प्रकाण्डकः [प्रकाण्ड+कन्] दे० 'प्रकाण्ड'।

प्रकाण्डरः [प्रकाण्ड+रा+क] वृक्ष, पेड़।

प्रकाम (वि०) [प्रा० स०] 1 शृंगारप्रिय 2 अत्यन्त, अति, भरपूर, भरभर कर, सानन्द—प्रकाम विस्तर—रघु० २।११, प्रकामा लोकनीयतम् कु० २।२४,—मः इच्छा, आनन्द, संतोष—मम् (अव्य०) 1 अत्यधिक, अत्यंत —आत्मा ममाय विशदं प्रकामम् (अन्तरात्मा), श० ४।२१, रघु० ६।४४, मृच्छ० ५।५५ 2 पर्याप्तरूप से, मन भर कर, इच्छानुकूल 3 स्वेच्छापूर्वक, मन से। सम०—भुज् (वि०) भर कर खाने वाला, मन भर कर खाने वाला—रघु० १।६६।

प्रकारः [प्र+कृ+घञ्] 1. ढंग, रीति, तरीका, शैली —के प्रकारः किमेतत्—मा० ५।२० 2. किस्म, जिन्स, भेद, जाति (प्रायः समास में प्रयुक्त) बहुप्रकार विविध प्रकार का, त्रिप्रकार, नाना° आदि 3 समरूपता 4. विशेषता, विशिष्ट गुण।

प्रकाश (वि०) [प्र+काश्+अच्] 1 चमकीला, चमकने वाला, उज्ज्वल—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८, ५।२ 2 साफ, स्पष्ट, प्रत्यक्ष—शि० १२।५६, भग० ७।२५ 3 विशद, प्रांजल—कि० १४।४ 4 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, माना हुआ—रघु० ३।४८ 5 खुला, सार्वजनिक 6. वृक्षादि काट कर साफ किया हुआ स्थान, खुली जगह—रघु० ४।३१ 7 खिला हुआ, विस्तारित 8 (समास के अन्त में) (के) समान दिखाई देने वाला, सदृश, मिलता-जुलता,—शः 1. दीप्ति, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता 2. (आल०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (प्रायः पुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3 रूप 4 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण शि० ९।५ 5 कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, यश 6. विस्तार, प्रसार 7 खुली जगह, खुली हवा - प्रकाशं निर्गतोऽवलोकयामि—श० ४ 8 सुनहरी पीला 9. (पुस्तक का) अध्याय, परिच्छेद या अनुभाग —शम् (अव्य०) 1 खुले रूप से, सार्वजनिक रूप से —प्रतिमुक्तोपितो वसु प्रकाशं धनिनो धनम्—याज्ञ० २।५६, मनु० ८।१९३ ९।२२८ 2. ऊँचे स्वर से, प्रकट होकर, (रूपक के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त—विप० आत्मगतम्)। सम०—आत्मक (वि०) चमकीला, उजला,—आत्मन् (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (पु०) शिव का विशेषण 2. सूर्य—इतर (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य,—कामः खुल्लमखुल्ला करीदना,—कारी वाराङ्गना, रंडी, वेश्या—अलं वस्तु-लाभ सिद्ध प्रवेशः प्रकाशनारीभूत एव यस्मात्—मृच्छ० ३।७।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [प्र+काश्+णिच्

खुल] 1 प्रकट करने वाला, खोजने वाला, उघाड़ने वाला, सूचित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2 अभिव्यक्त करने वाला, संकेत करने वाला 3 व्याख्या करने वाला 4 उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5 माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात,—क 1 सूर्य 2 खोजी 3. प्रकाशित करने वाला। सम०—आलु (पु०) मुर्गा।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+ल्युट्] रोशनी करने वाला, विख्यात करने वाला,—नम् 1 जतलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उघाड़ना 2 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोशनी करना, चमकाना, उजला करना, —नः विष्णु।

प्रकाशित (भू०क०कृ०) [प्र+काश्+णिच्+क्त]1 प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत 2 छापा गया—प्रणीतो न तु प्रकाशित —उत्तर० ४ 3. रोशन किया गया, चमकाया गया, ज्योतिर्मान किया गया 4 जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, प्रकट।

प्रकाशिन् (वि०) [प्रकाश+इनि] साफ, उजला, चमकदार आदि।

प्रकिरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना।

प्रकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1 इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, बिखेरा हुआ, तितर बितर किया हुआ—प्रकीर्णः पुष्पाणा हरिचरणयोरञ्जलरियम् वेणी० १।१ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 3 लहराया हुआ—लहराता हुआ शि० १२।१७ 4 विपर्यस्त, छिपिल, अस्तव्यस्त 5 अव्यवस्थित, असबद्ध—बह्वपि स्वेच्छया काम प्रकीर्णमभिधीयते—शि० २।६३ 6 क्षुब्ध, उत्तेजित 7 विविध, मिश्रित जैसा कि भट्टिकाव्य का प्रकीर्णकाड,—र्णम् 1 नाना-संग्रह, फुटकर संग्रह 2 फुटकर नियमों के संग्रह का एक अध्याय।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+कन्] इधर उधर बिखरे हुए, छितरे हुए, कः, कम् खबर, मोरछल शि० १२।१७, कः घोड़ा,—कम् 1 नाना संग्रह, फुटकर वस्तुओं का संग्रह 2 विविध विषयों का अध्याय।

प्रकीर्तनम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1 उद्घोषण, घोषणा 2 प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना।

प्रकीर्ति (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. प्रसिद्धि, प्रशंसा 2 यश, ख्याति 3 घोषणा।

प्रकुचः [प्र+कुञ्च्+घञ्] चारिता का विशेष भाव।

प्रकुपित (भू० क० कृ०) [प्र+कुप्+क्त] 1 अतिक्रुद्ध, कोपाविष्ट, रुष्ट 2. उत्तेजित।

प्रकुल्य [प्र+कुल्+क] सुन्दर शरीर, सुडौल काया।

प्रकूष्माण्डी [प्रा० ब० ङीष्] दुर्गा का विशेषण।

प्रकृत (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1 निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2 आरब्ध किया हुआ, शुरू किया हुआ 3 नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य भार सौंपा जा चुका 4 असली, वास्तविक 5 चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अलंकारशास्त्र में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) संभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् काव्य० १० 6 महत्त्वपूर्ण, मनोरंजक,—तम् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, यातु किमनेन प्रकृतमेव अनुसरामः। सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—र्थः) मूल अर्थ।

प्रकृतिः (स्त्री०) [प्र+कृ+क्तिन्] 1. किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, माया, जड़जगत्, स्वाभाविक रूप (विप० विकृति जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या यदुक्तम्—श० १।९, उष्णत्वमग्न्यातपसप्रयोगात् शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य -रघु० ५।५४, शरण प्रकृति शरीरिणा विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधै —रघु० ८।८७, अपेहि रे अत्रभवान् प्रकृतिमापन्न —श० २, (उन्होंने फिर अपना सामान्य स्वभाव धारण कर लिया है) **प्रकृतिमापद्, प्रकृतिप्रतिपद्, प्रकृतौ स्था** होश में आना, अपना चैतन्य फिर प्राप्त करना 2 नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव, आदत, (मानसिक) रचना, वृत्ति—प्रकृतिकृपण, प्रकृतिसिद्धि—दे० नी० 3 बनावट, रूप, आकृति—महानुभावप्रकृति —मा० १ 4 वंशानुक्रम, वंशपरंपरा—मृच्छ० ७ 5 मूल, स्रोत, मौलिक या भौतिक कारण, उपादान-कारण प्रकृतिश्चोपादानकारणं च ब्रह्माभ्युपगन्तव्यम् शारी० (ब्रह्म० १।४।२३ पर की गई चर्चा का पूरा विवरण देखिये) यामाहु सर्वभूतप्रकृतिरिति—श० १।१ 6 (सांख्य० में) प्रकृति (पुरुष से विभिन्न) =भौतिक सृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (सत्त्व, रजस् और तमस्) प्रधान गुण सन्निविष्ट हैं 7 (व्या० में०) मूलधातु या शब्द (प्रातिपदिक) जिसमें सकार और कारकों के प्रत्यय लगाए जाते हैं 8 आदर्श, नमूना, मानक (विशेषतः कर्मकाण्ड की पुस्तकों में 9 स्त्री 10 सृष्टि रचना में परमात्मा की मूर्त इच्छा (इसी को 'माया' या मरीचिका कहते हैं) भग० ९। १० 11 स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय, योनि, लिङ्ग 12 माता, (ब० व०) 1 राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रालय—रघु० १२।१२, पंच० १।४८, ३०१ 2 (राजा की) प्रजा—प्रवर्तता प्रकृतिहिताय पार्थिव —श० ७।३५, नृपति प्रकृतीरवेक्षितुम् रघु० ८। १८, १० 3 राज्य के संविधायी सात तत्त्व या अंग अर्थात् १ राजा २ मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४ कोष ५ सेना, ६ प्रदेश ७ गढ़ आदि ८ नगरपालिका या नियम (यह भी कभी-कभी उपर्युक्त सातों के साथ

जोड़ दिया जाना है) —स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्र-दुर्गबलानि च —अमर 4 अनेक प्रभु जो युद्ध के समय विचारणीय होते है (पूरे विवरण के लिए दे० मनु० ७।१५५, और १५७ पर कुल्लू०) 5 आठ प्रधान तत्त्व जिनसे सांख्यशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है, दे० मा० का० ३ 6 सृष्टि के पाच प्रधान तत्त्व, पच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। सम० ईश, राजा या दण्डाधिकारी,—कृपण (वि०) स्वभाव से सुस्त, या विवेकहीन —मेघ० ५,—चरल (वि०) चचल स्वभाव का, असयत, बेपेंदा,—अमर २७,—युक्त. म-त्री, (राज्य का) कार्य निर्वाहक —मेघ० ६, मडलम् समस्त प्रदेश या राजधानी —रघु० ९।२, —लय प्रकृति में समा जाना, विश्व का विघटन, सिद्ध (वि०) अलजात, सहज, तैसर्गिक मनु० २।५२, सुभग (वि०) स्वभाव से प्रिय, रुचिकर, स्थ (वि०) 1 प्राकृतिक अवस्था मे होने वाला, स्वाभाविक अमली 2 अनाहित, सहज, प्रकृति के अनुरूप रघु० ८।२१ 3 स्वस्थ, तन्दुरुस्त 4 जिसने आरोग्य प्राप्त कर लिया हो 5 स्वस्थ, आत्मलीन 6 विवस्त्र, नगा।

प्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+कृष्+क्त] 1 खीचकर निकाला हुआ 2 सुदीर्घ, लबा, अतिविस्तृत 3 सर्वोत्तम, पूज्य, श्रेष्ठ प्रमुख, गौरवशाली 4 मुख्य, प्रधान 5 विक्षिप्त, अशात।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र+कृप्+क्त] तैयार किया हुआ, सज्जीकृत व्यवस्थित।

प्रकोथ [प्र+कुथ्+घञ्] सड़ाध, बदबू।

प्रकोष्ठ [प्र+कुष्+स्थन] 1 कलाई से नीचे की भुजा, गट्टे से ऊपर का हाथ—श्यामप्रकोष्ठापितहेमवेत्र —कु० २।४१ कनकवलयभ्रशरिक्तप्रकोष्ठ मेघ० २, रघु० ३।५०, श० ३।६ 2 फाटक के निकट का कमरा मृच्छ० १ 3 घर का आगन (चारो ओर मकानो से घिरा हुआ) चौकोर या वर्गाकार आगन इस प्रथम प्रकाष्ठ प्रविशन्त्वार्य —आदि—मच्छ० ४।

प्रकोष्ठक [प्रकोष्ठ+कन्] फाटक के पास का कमरा —वर्धानिवर्धितिपालसकुले तदङ्गनद्वारबहि प्रकोष्ठक —कु० १२।६।

प्रकवर) -प्रकवर पुं०। 1 हाथी या घोड़े की रक्षा के लिए कवच 2 कुता 3 खच्चर।

प्रक्रम [प्र+क्रम्+घञ्] 1 पग, कदम 2 दूरी नापने का गज, पग का अन्तर (लगभग ३० इच 3 आरभ, शुरू 4 प्रगमन, मार्ग मा० ५।२४ 5. प्रस्तुत बात 6 अवकाश, अवसर 7. नियमितता, क्रम, प्रणाली 8 मात्रा, अनुपात, माप। सम०— भग नियमितता और सममिति का अभाव, क्रम का टूट जाना, रचना का एक दोष (काव्य० ७ में वर्णित 'भग्न-प्रक्रमता' यही है, सममिति या समरूपता का अभाव चाहे वह अभिव्यक्ति में हो चाहे रचना में—नाथे निशाया नियतेर्नियोगादस्त गते हृत निशापि याता—यह अभिव्यक्ति की समरूपता के अभाव का उदाहरण है, यहा 'गता निशाऽपि' ने अभिव्यक्ति की अनियमितता को शान्त कर दिया है,—विश्रब्ध क्रियता वराहततिभिर्मुस्ताक्षति पल्वले—रचना की अनियमितता का उदाहरण है, यहाँ कविता की समरूपता को स्थिर रखने के लिए कर्मवाच्य के बजाय कर्तृवाच्य रचना की आवश्यकता है, इसी पक्ति को बदलकर 'विश्रब्धा रचयतु शूकरवरा मुस्ताक्षति पल्वले' पढ़ने से दोष का परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए दे० काव्य ७ 'भग्न प्रक्रमता' के नीचे।

प्रक्रान्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्रम्+क्त] 1 आरभ किया गया, शुरू किया गया 2. गत, प्रगत 3. प्रस्तुत, विवादग्रस्त 4 बहादुर।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श+टाप्] 1. रीति, प्रणाली, पद्धति 2. कर्मकाड, सस्कार 3 राजचिह्न का धारण करना 4 उच्च पद, समुन्नति 5 (किसी पुस्तक का) एक अध्याय या अनुभाग—यथा उणादिप्रक्रिया 6 (व्या० में) व्युत्पत्तिजन्य रूपनिर्माण 7 प्राधिकार।

प्रक्रीड [प्र+क्रीड्+अच्] क्रीडा, मनोरजन, खेल या आमोद-प्रमोद।

प्रक्लिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+क्लिद्+क्त] 1. तर, नमी वाला, गीला 2. तृप्त 3 दया से पसीजा हुआ।

प्रक्वाथ, प्रक्वाथ. [प्र+क्वथ्+अप्, घञ् च] दोला को क्षनकार।

प्रक्षय [प्र+क्षि+अप्] नाश, बरबादी।

प्रक्षर दे० प्रस्खर।

प्रक्षरण [प्र+क्षर्+ल्युट्] मन्द २ स्रवित होना रिसना।

प्रक्षालनम् [प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 धोना, धो डालना —रघु० ६।४८ 2 माजना, साफ करना, स्वच्छ करना 5 धोने के लिए पानी।

प्रक्षालित (भू० क० कृ०) [प्र+क्षल्+णिच्+क्त] 1 धोया गया, माजा गया 2 स्वच्छ किया गया 3 जिसने प्रायश्चित कर लिया है।

प्रक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्षिप्+क्त] 1 फेका गया, डाला गया, उछाला गया 2 डाला गया मा० ५।२२ 3. निकला हुआ 4 बीच में डाला गया, नकली या खोटा यथा 'प्रक्षिप्तोऽय श्लोक' में।

प्रक्षीण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षि+क्त] 1 सूखा हुआ, दुबला होने वाला 2 नष्ट किया हुआ 3 जिसने प्रायश्चित कर लिया है 4 लुप्त, ओझल।

प्रक्षुण्ण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षुद्+क्त] 1 कुचला हुआ 2. आरपार भेदा हुआ 3. उत्तेजित किया हुआ।

प्रक्षेपः [प्र+क्षिप्+घञ्] 1 आगे फेंकना, उभारना फेंकना, डालना 3 बखेरना 4. खोट घसाना, धातु में मिलाना 5. गाडी का बक्स 6 किसी व्यापारिक संघ के प्रत्येक सदस्य द्वारा जमा की गई धनराशि।

प्रक्षेपणम् [प्र+क्षिप्+णिच्+ल्युट्] फेंकना, डालना, उछालना।

प्रक्षोभणम् [प्र+क्षुभ्+ल्युट्] उत्तेजना, क्षोभ।

प्रक्ष्वेडनः [प्र+क्ष्विड्+ल्युट्] लोहे का तीर 2 हल्ला-गुल्ला, हुडदंगी।

प्रक्ष्वेडित (वि०) [प्र+क्ष्विड्+णिच्+क्त] मुखर, चीत्कार से पूर्ण, कोलाहलमय।

प्रखर (वि०) [प्रकृष्ट+खर-प्रा० स०] 1 अत्यन्त गरम - यथा प्रखरकिरण 2. तेज गंधयुक्त, तीक्ष्ण 3 अत्यंत कठोर, रूखा, -रः दे० 'प्रकखर'।

प्रख्य (वि०) [प्र+ख्या+क] 1 साफ, प्रत्यक्ष, स्पष्ट 2 (के समान) दिखाई देने वाला, मिलता-जुलता (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमृत°, शशांक° आदि।

प्रख्या [प्र+ख्या+अङ्+टाप्] 1 प्रत्यक्षज्ञेयता, दृश्यता 2 विश्रुति, यश, प्रसिद्धि—न्यवसत्परमप्ररूप सप्रत्येव पुरीमिमाम्—रामा० 3 उखाडना 4 समरूपता, समानता (समास में)—याज्ञ० ३।१०।

प्रख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+ख्या+क्त] 1 मशहूर, प्रसिद्ध, विश्रुत माना हुआ 2 पहले से मोल लिया हुआ, पूर्वक्रयाधिकार केवल पर अभ्यर्थित 3 खुश, प्रसन्न। सम० -वंशक (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला।

प्रख्याति: (स्त्री० [प्र+ख्या+क्तिन्] 1 कीर्ति, विश्रुति, प्रसिद्धि 2 प्रशंसा, स्तुति।

प्रगंडः [प्रकृष्ट गंडो यस्य प्रा० ब०] कोहनी से ऊपर कंधे तक की भुजा।

प्रगंडी [प्रगंड+ङीष्] (नगर का) परकोटा, बाहरी दीवाल।

प्रगत (भू० क० कृ०) [प्र+गम्+क्त] 1 आगे गया हुआ 2 पृथक्, अलग। सम०- -जानु,-जानुक (वि०) बहुत्पदी, घुटने पर मुडी हुई टांगों वाला।

प्रगमः [प्र+गम्+अप्] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रगति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति।

प्रगमनम् [प्र+गम्+ल्युट्] 1 आगे बढ़ना, प्रगति 2 प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'अगम'।

प्रगर्जनम् [प्र गर्ज्+ल्युट्] दहाडना, चिंघाडना, गरजना।

प्रगल्भ (वि०) [प्र+गल्भ्+अच्] 1 साहसी, भरोसा करने वाला 2 हिम्मती, बहादुर, निर्भीक, उत्साही, साहसी,—रघु० २।४१ 3 वाग्मी, वाक्पटु—रघु० ६।२० 4 हाजिर जवाब, मुस्तैद 5 दृढ संकल्पी, ऊर्जस्वी 6 (आयु की दृष्टि से) परिपक्व, कु० १।५१ 7 परिपक्व, विकसित, पूरा बढ़ा हुआ, बलवान् प्रगल्भवाक् - कु० ५।३०, (प्रौढवाक्) मा० ९।२९, उत्तर० ६।३५ 8 कुशल का० १० 9 बेधडक, उद्धत, घमंडी, उपकारशील 10 निर्लज्ज, ढीठ—रघु० १३।९ 11 गौरवशाली प्रमुख, -भा 1 साहसी स्त्री 2 कर्कशा, झगडालू स्त्री 3 उद्धत या प्रौढ स्त्री, काव्यनाटक की नायिकों में से एक (सब प्रकार के लाडप्यार व चूमा-चाटी में चतुर ऊँचे दर्जे के व्यवहार से युक्त, शालीनता-सम्पन्न, प्रौढ आयु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली—मा० द० १०१ तथा तत्संबंधी उदाहरण)।

प्रगाढ (भू० क० कृ०) [प्र+गाह्+क्त] 1 डुबोया हुआ, तर किया हुआ, भिगोया हुआ 2 अति, अत्यधिक, तीव्र 3 दृढ, मजबूत 4 कठोर, कठिन,- ढम् 1 कगाली 2 तपस्या, शारीरिक, कष्ट, ढम् (अव्य०) 1 अत्यधिक, अत्यंत 2 दृढतापूर्वक।

प्रगातृ (पु०) [प्र+गै+तृच्] उत्तम गाने वाला।

प्रगुण (वि०) [प्रकर्षेण गुणो यत्र प्रा० ब०] 1 सीधा, ईमानदार, खरा, (आल०, शा० से) बहि सर्वाकारगुणरमणीयं व्यवहरन् मा० १।१४ 2 सुदशासम्पन्न, उत्तम गुणों से युक्त श्रमजयात्प्रगुणा, न करोत्यसौ तनुमतोऽनुमतं सचिवैर्नयी रघु० ९।४९ 3 (क) योग्य, उपयुक्त, गुणी मा० १।१६ (ख) प्रवीण -९।४५ 4 कुशल, चतुर (प्रगुणी कृ 1 सीधा करना, क्रम में रखना, व्यवस्थित करना 2 चिकना करना 3 पालन-पोषण करना, परवरिश करना)।

प्रगुणित (वि०) [प्र+गुण्+क्त] 1 सीधा या समतल किया हुआ 2 चिकना किया हुआ।

प्रगृहीत (भू० क० कृ०) [प्र+ग्रह्+क्त] 1 थामा हुआ, सभाला हुआ 2 प्राप्त, स्वीकृत 3 संधि के नियमों की अधीनता का अभाव, दे० नीचे 'प्रगृह्य'।

प्रगृह्यम् [प्र+ग्रह्+क्यप्] संधि के नियमों से मुक्त स्वर जो स्वतंत्र रूप से बोला या लिखा जाय 'ईदूदेद्-द्विवचनं प्रगृह्यम्' पा० १।१।११।

प्रगे (अव्य०) [प्रकर्षेण गीयतेऽत्र —प्र+गै—के] भोर होते ही, पौ फटते ही इत्थं स्यात्स्वेऽभिनिवादिना प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणाद् बहिः -शि० १२।१, साथ स्नायात्प्रगे तथा -मनु० ६।९, ४।९२। सम० -तन (वि०) प्रातःकाल अनुष्ठेय कर्म,—निश,—श्व (वि०) जो दिन निकल जाने पर भी सोया पड़ा है।

प्रगोपनम् [प्र+गुप्+ल्युट्] रक्षण, संधारण।

प्रग्रथनम् [प्र+ग्रन्थ्+ल्युट्] नत्थी करना, गूथना, बुनना।

प्रग्रह [प्र+ग्रह्+अप्] 1 फैलाना, थामना 2 पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, हथियार लेना 3 ग्रहण का आरंभ 4 रास, लगाम —धृता प्रग्रहा अवलम्बायुष्मान् —श० १, शि० १२।२१ 5 रोक थाम, पाबन्दी 6. बंधन, कैद 7 कैदी, बन्दी 8 पालना, (कुत्ते आदि जानवर को) सधाना, 9 प्रकाश की किरण 10 तराजू की डोरी 11 संधि के नियमों से मुक्त स्वर, दे० 'प्रगृह्य'।

प्रग्रहणम् [प्र+ग्रह्+ल्युट्] 1 लेना, पकड़ना, धरना 2 ग्रहण का आरम्भ 3 रास, लगाम 4 रोक थाम, पाबन्दी।

प्रग्राह [प्र—ग्रह्+घञ्] 1 पकड़ना, लेना 2 ले जाना, ढोना 3 तराजू की डोरी 4 रास, लगाम।

प्रग्रीव, वम् [प्रकृष्टा ग्रीवा यस्य—प्रा० ब०] 1 रखी हुई बुर्जी 2 किसी मकान के चारों ओर लकड़ी की बरह 3 तबेला 4 वृक्ष की चोटी।

प्रघटक [प्र+घट्+णिच्+ण्वुल्] नियम, सिद्धान्त, विधि (आदेश)।

प्रघट्टा [प्रा० स०] किसी विज्ञान के आरंभिक सिद्धान्त या मूलतत्त्व। सम०—शिष् (पु०) ऊपर ऊपर का पाठ करने वाला पल्लवग्राही।

प्रघण (न) प्रघाण (न) [प्र+हन्+अप् पक्षेवृद्धि, णत्वाभावश्च] 1 भवन के द्वार के सामने बनी छोटी पौली, 2 ताबे का बर्तन 3 लोहे की गदा या घन (लौहदण्ड)।

प्रघस (वि०) [प्र+अद्+शप घसादेश] खाऊ, पेटू —स 1 राक्षस खाऊपना, पेटूपन।

प्रघातः [प्र+हन्+घञ्] 1 हत्या 2 संघर्ष, युद्ध।

प्रघुण [प्र+घुण्+क] अतिथि (पाठान्तर प्राघुण, या प्राघूर्ण)।

प्रघूर्ण [प्र+घूर्ण्+अच्] अतिथि—दे० 'प्राघूर्ण'।

प्रघोष [प्र+घुष्+घञ्] 1 शोर, शब्द, कोलाहल 2 हंगामा, होहल्ला।

प्रचक्रम् [प्रगतश्चक्रम—प्रा० स०] कूच करने वाली सेना, प्रयाणोन्मुख फौज।

प्रचक्षस् (पु०) [प्र०+चक्ष्+अस्] 1 बृहस्पति ग्रह 2 बृहस्पति का विशेषण।

प्रचंड (वि०) [प्रकर्षेण चण्ड—प्रा० श०] 1 उत्कट, अत्यन्त तीव्र, उग्र 2 मजबूत, शक्तिशाली, भीषण 3 अत्युष्ण, दम घोटने वाली (गर्मी) 4 क्षुद्र, कोपाविष्ट 5 साहसी, अरोमा करने वाला 6 भयंकर, भयावह 7 असहिष्णु, अमद्र। सम०—आतप भीषण गर्मी,—तोय (वि०) लंबी नाक वाला,—सूर्य (वि०) उष्ण या जलते हुए सूर्य वाला—ऋतु० १।१,१०।

प्रच (चा) य [प्र+चि+अच्, घञ् च] 1 संग्रह करना, (फूल आदि) चुनना 2 समुच्चय, माला, संचय, राशि—महावी० २।१५ 3. वृद्धि, वर्धन 4 साधारण मेलजोल।

प्रचयनम् [प्र+चि+ल्युट्] संग्रह करना, एकत्र करना।

प्रचरः [प्र+चर्+अप्] 1 मार्ग, पथ, रास्ता 2 प्रथा, रिवाज।

प्रचल (वि०) [प्र+चल्+अच्] 1. काँपता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ, —कु० ५।३५, मा० १।३८ 2 प्रचलित, प्रथानुकूल।

प्रचलाक [प्र+चल्+आकन्] 1 धनुर्विद्या 2 मोर की पूँछ 3 साँप।

प्रचलाकिन् (पु०) [प्रचलाक+इनि] मोर—उत्तर० २।२९।

प्रचलायिक (वि०) [प्रचल+क्यङ्+क्त] इधर उधर करवट बदलने वाला, लुढ़कने वाला,—तम् सिर हिलाना (बैठे २ ऊँघते या सोते समय)।

प्रचायिका [प्र+चि+णिच्+ण्वुल्+टाप्] (फूल आदि) बारी २ से चुनना 2 चुनने वाली स्त्री।

प्रचार [प्र+चर्+घञ्] 1 विचरण करना, भ्रमण करना 2 इधर उधर टहलना, घूमता—कु० ३।४२, 3 दर्शन, प्रकटीभवन,—उत्तर० १, मुद्रा० १ 4 प्रचलन, प्रसिद्धि, रिवाज, व्यवहार, प्रयोग—विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारम्—विक्रम० 5 आचरण, व्यवहार 6 प्रथा, रिवाज 8 गोचरभूमि, चरागाह—याज्ञ० २।१६६ 9 रास्ता, पथ—मनु० ९।२१९।

प्रचाल [प्रकृष्टश्चाल —प्रा० स०] वीणा की गरदन।

प्रचालनम् [प्र+चल्+णिच्+ल्युट्] विलोडन, हिलाना, हलचल।

प्रचित (भू० क० कृ०) [प्र+चि+क्त] 1 एकत्र किया हुआ, संचय किया हुआ, तोड़ा हुआ 2 ढेर किया गया, संचित 3 ढका गया, भरा गया।

प्रचुर (वि०) [प्र+चुर्+क] 1 अति, यथेष्ट, बहुल, पुष्कल—नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च—भर्तृ० २।४७, शि० १२।७२ 2 बड़ा, विशाल, विस्तृत —प्रचुर पुरंदरधनु—गीत० २ 3 (समास के अन्त में) बहुत अधिक, भरपूर, परिपूर्ण,—ः चोर। सम० —पुच्छ (वि०) जनसंकुल, घना आबाद (ः) चोर।

प्रचेतस् (पु०) [प्र+चित्+असुन्] 1 वरुण का विशेषण —कु० २।२१ 2 एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार था—मनु० १।३५।

प्रचेतृ (पु०) [प्र+चि+तृच्] रथवान्, सारथि।

प्रचेलम् [प्र+चेल्+अच्] चन्दन की पीली लकड़ी।

प्रचेलकः [प्र+चेल्+ण्वुल्] घोड़ा।

प्रचोदः [प्र+चुद्+घञ्] 1. आगे हाँकना, बलपूर्वक चलाना, आगे बढ़ने के लिए उकसाना 2 भड़काना, प्रेरित करना।

प्रचोदनम् [प्र+चुद्+ल्युट्] 1 हाँक कर आगे बढाना, बलपूर्वक चलाना, उकसाना 2. भडकाना, जमा देना 3 आदेश देना, निर्देश देना 4 नियम, विधि, समादेश।

प्रचोदित (भू० क० कृ०) [प्र+चुद्+क्त] 1 बलपूर्वक बढाया हुआ, उकसाया हुआ 2 भडकाया हुआ 3 निर्देशित, आदिष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१९१ 4 भेजा गया, प्रेषित 5 निर्णीत, निर्धारित।

प्रच्छ् (तुदा० पर०—पृच्छति, पृष्ट- प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पृच्छयते, इच्छा० पिपृच्छिषति, पूछना, सवाल करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना (द्विकर्मक) पप्रच्छ रामा रमणोभिलाषम् —रघु० १४।२७, मृच्छ० ६।८, रघु० ३।५, भग० २।७, ब्राह्मण कुशल पृच्छेत् —मनु० २।१२७ 2 ढूंढना, तलाश करना, अनु—, पूछताछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, । पूछना, प्रश्न करना 2 विदा करना 3 विदा होना (आ०) आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुंगमालिंग्य शैलम् —मेघ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, परि—, पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।

प्रच्छदः [प्र+च्छद्+णिच्+घ] आवरण, आच्छादन, लपेटन, चादर, बिछावन बिस्तरे की चादर—रघु० १९।२२। सम०—पटः बिछावन, चादर।

प्रच्छनम्,-ना [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछताछ, परिपृच्छा।

प्रच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्र+च्छद्+क्त] 1 ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए, लपेटा हुआ, लिफाफे में बन्द किया हुआ 2 निजी, गोपनीय —मृच्छ० २।६४ 3 छिपा हुआ, गुप्त (दे० प्रपूर्वक छद्), —न्नम् 1 निजी द्वार 2 झरोखा, जाली, खिडकी, -न्नम् (अव्य०) गुप्त रूप से चुपचाप। सम०—तस्करः गुप्तचर, जो चोरी करता हुआ दिखाई न दे, परन्तु चोरी करे अवश्य।

प्रच्छर्दनम् [प्र+छर्द्+ल्युट्] 1 वमन 2 बाहर निकालना, फेंकना 3 उलटी लाने वाली (दवा)।

प्रच्छर्दिका [प्र+छर्द्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] उलटी होना, कै आना।

प्रच्छादनम् [प्र+छद्+णिच्+ल्युट्] ढकना, छिपाना 2 उत्तरीय,ओढनी। सम०—पट. लपेटन, ढकना, चादर।

प्रच्छादित (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+णिच्+क्त] 1 ढका हुआ, लपेटा हुआ, वस्त्राच्छादित आदि 2. गुप्त, छिपा हुआ।

प्रच्छायम् [प्रकृष्टा छाया यत्र] सघन छाया, छायादार स्थान—प्रच्छायमुलभनिद्रा दिवसा परिणामरमणीया —श० १।३, मालवि० ३।

प्रच्छिन्न (वि०) [प्रच्छ्+इलच्] शुष्क, निर्जल।

प्रच्यवः [प्र+च्यु+अच्] 1 पात, बर्बादी 2 सुधार, प्रगति, विकास 3 वापसी।

प्रच्यवनम् [प्र+च्यु+ल्युट्] 1 विदा होना, मुडना, वापसी 2. हानि, बचना 3 रिसना, झरना।

प्रच्युत (भू० क० कृ०) [प्र+च्यु+क्त] 1 टूट कर गिरा हुआ, झडा हुआ 2 भटका हुआ, विचलित 3 स्थान भ्रष्ट, विस्थापित, पतित 4 खदेडा हुआ, भगाया हुआ।

प्रच्युति (स्त्री०) [प्र+च्यु+क्तिन्] 1 विदा होना, वापसी, 2 हानि, बर्बादी, अध पतन—नित्य प्रच्युति शंकया क्षणमपि स्वर्गे न मोदामहे—मृच्छ० ४।२० 3 पात, बर्बादी।

प्रजः [प्रविश्य जायाया जायते -जन्+ड] पति, स्वामी।

प्रजनः [प्र+जन्+घञ्]। गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पादन—मनु० ३।६१, ९।६१ 2 पशु (नर पशु का मादा पशु से संगम) में गर्भाधान करना 3 उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० ९।९६।

प्रजननम् [प्र+जन्+ल्युट्] 1 प्रसृजन, जनन, योनि में वीर्य-संसेचन 2 उत्पादन, जन्म, प्रसव 3 वीर्य 4 पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय (लिंग या भग) 5 सन्तान।

प्रजनिका [प्र+जन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] माता।

प्रजनुका [प्र+जन्+उक] शरीर, काया।

प्रजल्प [+जल्प्+घञ्] बालकलरव, गपशप, असावधान या ऊटपटांग शब्द (प्रेमी का अभिवादन करने में प्रयुक्त) असूयेर्ष्यामदभुजा योऽवधीरणमुद्यया, प्रियस्य कौशलोद्गार प्रजल्प स तु कथ्यते।

प्रजल्पनम् [प्र+जल्प्+ल्युट्] 1 बातचीत करना, बोलना 2 बालकलरव, गपशप।

प्रजविन् (वि०) स्त्री०—नी) [प्र+जु+इनि] आशु, द्रुतगामी, वेगयान्—दू० आशुगामी दूत, हरकारा।

प्रजा [प्र+जन्+ड+टाप्] (बहु० समास के अन्त में बदल कर 'प्रजस्' हो जाता है जब कि प्रथम पद अ, मु या दुस् हो, द० रघु० ८।३२, १८।२९) 1 प्रसृजन, प्रसूति, जनन, प्रजोत्पत्ति, जन्म, उत्पादन 2 सन्तान, प्रजा, सन्तति बच्चे, पक्षिशावक,—प्रजार्थमनकांक्षितराग रघु० २।७३, प्रजायै गृहमेधिनाम् —१।७, मनु० ३।४२, याज्ञ० १।२६९, इसी प्रकार एकस्य प्रजा, सर्वप्रजा आदि 3 लोग, मनुष्य- ननन्दु सप्रजा प्रजा —रघु० ४।३, प्रजा प्रजा स्वा इव तन्त्रयित्वा श० ५।५, (यहाँ प्रजा का 'सन्तान' अर्थ भी है) रघु० १।७, २।७३, मनु० १।८ 4. वीर्य। सम० -असक मृत्यु का देवता यम —रघु० ८।४५,—ईप्सु (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—ईश, -ईश्वर मनुष्यों का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८, ५।३२, १८।२९,—उत्पत्तिः,—उत्पादनम्

सन्तान का पैदा करना,—काम (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—तन्तुः वंश परम्परा, कुल,—दानम् चाँदी,—नाथः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 राजा, प्रभु, राजकुमार—रघु० 2।४८, १०।८३,—पः राजा, —निषेकः गर्भाधान, (गर्भाशय में स्थापित) बीज —रघु० १४।६०,—पतिः 1 सृष्टि की अधिष्ठात्री देवता—मनु० १२।१२१ 2 ब्रह्मा का विशेषण —अस्या सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रद —विक्रम० १।९ 3 ब्रह्मा के दस वंशप्रवर्तक पुत्र —दे० मनु० १।३४ 4 देवशिल्पी विश्वकर्मा का विशेषण 5 सूर्य 6. राजा 7 जामाता 8 विष्णु का विशेषण 9 पिता, जनक 10 लिंग,—पालः, —पालकः राजा, प्रभु,—पालिः—शिव का विशेषण,—वृद्धिः (स्त्री०) सन्तान की वृद्धि,—सूक्त ब्रह्मा का विशेषण —शि० १।२८,—हित (वि०) बच्चों के या लोगों के लिए हितकर (तन्त्र) पानी।

प्रजागर [प्र+जागृ+अप्] 1 रात को जागते रहना, निद्रा का अभाव—प्रजागरात् क्लिष्टमुखी तस्या स्वप्ने समागमः—शि० ६।२१ 2 चौकसी, सावधानी 3 अभिभावक, संरक्षक 4 कृष्ण का विशेषण।

प्रजात (भू० क० कृ०) [प्र+जन्+क्त] पैदा हुआ, उत्पन्न, —ता वह स्त्री जिसके बच्चा पैदा हुआ हो।

प्रजाति (स्त्री०) [प्र+जन्+क्तिन्] 1 प्रसूजन, प्रसूति, उत्पादन, जन्म देना 2 प्रसव 3 प्रजननात्मक शक्ति 4 प्रसववेदना, प्रसवपीड़ा।

प्रजावत् (वि०) [प्रजा+मतुप्] प्रजा या सन्तान वाला 2 गर्भवती,—ती भाई की पत्नी, भाभी—रघु० १४।४५, १५।१३ 2 विवाहिता नारी, मातृका, माता।

प्रजिन [प्र+जि+नक्] वायु।

प्रजीवनम् [प्र+जीव्+ल्युट्] जीविका, जीवन निर्वाह का साधन।

प्रजुष्ट (वि०) [प्र+जुष्+क्त] अनुरक्त, भक्त, जुटा हुआ।

प्रज्ञ (वि०) [प्र+ज्ञा+क] बुद्धिमान, मेधावी, विद्वान्।

प्रज्ञप्ति [प्र+ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1 सूचना देना, प्रतिज्ञा 2 शिक्षा, सूचना, समाचार देना 3 सिद्धान्त।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अ+टाप्] 1 मेधा, समझ, बुद्धि, बुद्धिमत्ता, आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः—रघु० १।१५, शास्त्र हिनस्ति पुरुषस्य शरीरमेक प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति सुभा० 2 विवेक, विवेचन, निर्णय 3 तरकीब, योजना 4 बुद्धिमती और विदुषी स्त्री। सम० -चक्षुस् (वि०) अंधा, (शा० बुद्धिरूपी एकमात्र आँख रखने वाला), (पुं०) धृतराष्ट्र का विशेषण, (नपुं०) मन की आँख, मानसिक चक्षु, मन—मालवि० १,—वृद्ध (वि०) समझदारी में बूढ़ा,—हीन (वि०) निर्बुद्धि मूर्ख, बेवकूफ।

प्रज्ञात (भू० क० कृ०) [प्र+ज्ञा+क्त] 1 जाना हुआ, समझा हुआ 2 अन्तरयुक्त, विविक्त 3 स्पष्ट, साफ 4 प्रसिद्ध, सुविख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञानम् [प्र+ज्ञा+ल्युट्] 1 बुद्धि, जानकारी, समझ 2 चिह्न, प्रतीक, निशान।

प्रज्ञावत् (वि०) [प्रज्ञा+मतुप्] समझदार, बुद्धिमान।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिल (स्त्री०—ली), प्रज्ञिल (वि०) [प्रज्ञा+ऋच्, इलच् च] समझदार, बुद्धिमान्, मनीषी।

प्रज्ञु (वि०) [प्रगते विरले जानुनी यस्य—ब० स०, ह्रस्व आदेश] घनुष्यदी, (जिसकी टाँगें धनुष की भाँति मुड़ी हों), घुटने पर मुड़ी हुई टाँगों वाला। ('प्रज्ञ' भी)।

प्रज्वलनम् [प्र+ज्वल्+ल्युट्] देदीप्यमान होना, लपटें उठना, जलना, दहकना।

प्रज्वलित (भू० क० कृ०) [प्र+ज्वल्+क्त] 1 लपटों में होना, जलना, लपटें उठना, देदीप्यमान होना 2 चमकीला, जगमगाता हुआ।

प्रडीनम् [प्र+डी+क्त] 1 हर दिशा में उड़ना 2. आगे दौड़ना, 'डीन' के अन्दर दे०, 3 भाग जाना।

प्रत्न (वि०) [पुरा भव—प्र+त्न] पुराना, प्राचीन।

प्रत्नखः [प्रकृष्ट नख—प्रा० स०] कील का सिरा।

प्रणत (भू० क० कृ०) [प्र+नम्+क्त] 1 झुका हुआ, रुझानवाला, प्रवण 2 प्रणाम करना, नमस्कार करना 3. विनम्र 4 कुशल, चतुर—दे० प्र पूर्वक 'नम्'।

प्रणति (स्त्री०) [प्र+नम्+क्तिन्] 1. प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन तव सर्वविधेयवर्तिन प्रणतिं बिभ्रति के न भूभृत—शि० १६।५, रघु० ४।८८ 2 विनयशीलता, नम्रता, शिष्टाचार स ददर्श वेतसकनाचरिता प्रणतिं बलीयसि समृद्धिकरीम् कि० ६।५, निर्जितेषु तरसा तरस्विना बान्धवेषु प्रणतिरेव कीर्तये रघु० ११।८९।

प्रणदनम् [प्र+नद्+ल्युट्] शब्द करना, आवाज करना, शब्द, ध्वनि।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1 विवाह करना, पाणि ग्रहण करना (यथा विवाह में)—मा० ६।१४ 2. (क) प्रेम स्नेह, चाव, अनुरक्ति—अभिरुचि,—प्रीतिसाधारणोऽयमुभयो प्रणय स्मरस्य—विक्रम० २।१६, साधारणोऽयं प्रणय श० ३, ६।७, ५।२३, मेघ० १०५, रघु० ६।१२ भर्तृ० २।४२ (ख) अभिलाषा, इच्छा, लालसा —कु० ५।८५, मा० ८।७, श० ७।१६ 3 मित्रता-पूर्ण परिचय, प्रीति, मैत्री, घनिष्ठता—मा० १।९ 4 परिचय, भरोसा, विश्वास—श० ६ 5 अनुग्रह, कृपा, सौजन्य—अलकृतोऽस्मि स्वयमाहृतप्रणयेन भवता—

मृच्छ० १, १।४५ 6 अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन—तद्भूतनाथानुग नार्हसि त्वं सबन्धिनो मे प्रणय विहन्तुम् —रघु० २।२८, विक्रम० ४।१३ 7 श्रद्धा, भक्ति 8 मोक्ष। सम०—अपराध. प्रेम या मित्रता के विरुद्ध अपचार,- उन्मुख (वि०) 1 प्रेमाविष्ट, अपना प्रेम प्रकट करने को उद्यत मालवि० ४।१३ 2 प्रेमावेश के कारण आतुर, —कलह' प्रेमी का झगड़ा, कृत्रिम या झूठमूठ का झगड़ा—नाप्यन्यस्मात्प्रणयकलहाद्विप्रयोगोपपत्ति –मेघ० (मल्लि०—नकली या कल्पित)—, कुपित (वि०) प्रेम के कारण क्रुद्ध—मेघ० १०५,—कोप' किसी नायिका का अपने नायक के प्रति झूठ मूठ का क्रोध, नखरों से भरा क्रोध, प्रकर्ष. अत्यधिक प्रेम, तीव्र अनुराग, भग 1 मित्रता का टूट जाना 2 विश्वासघात,—वचनम् प्रेमाभिव्यक्ति,— विमुख (वि०) 1 प्रेम से पराङ्मुख 2 मित्रता करने में अनिच्छुक मेघ० २७,- विहति, - विघात (प्रार्थना आदि की) अस्वीकृति, न मानना।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1 लाना, ले आना 2 सचालन करना, पहुँचाना 3 पालन करना, कार्यान्वयन करना, अनुष्ठान करना--कु० ६।९ 4 लिखना, अक्षरयोजन करना 5 निर्णयादेश देना, दण्डाज्ञा देना, परिनिर्णय या पचनिर्णय देना, यथा दण्डस्य प्रणयनम्।

प्रणयवत् (वि०) [प्रणय+मतुप्] 1 प्रेम करने वाला, प्रीतिकर, स्नेही —रघु० १०।५७ 2 स्पष्टवक्ता, खरा 3 अत्यन्त उत्कण्ठित, आतुर।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय+इनि] 1 प्रेम करने वाला, स्नेही, कृपालु, अनुरक्त—मा० ३।९ 2 प्रिय, अत्यन प्यारा 3 इच्छुक, लालायित, उत्कण्ठित - मा० ७।१७, मेघ० ३, रघु० ९।५५, ११।३ 4 सुपरिचित, घनिष्ठ पु० 1 मित्र साथी, कृपापात्र -कु० ५।११ 2 पति, प्रेमी 3 कृताजलि, विनम्र निवेदक, प्रार्थी – स्वार्थाति मना गुरुवरा प्रणयिष्विवैव विक्रम० ४।१५ १।२ 4 पथिक, भक्त - कु० ३।६६, -नी 1 गृहिणी, प्रियतमा, पत्नी 2 सखी, सहेली।

प्रणव [प्र+नू+अप्, णत्वम्] 1 पवित्र अक्षर 'ओम्'– आसीन्महीक्षितामाद्य प्रणवश्छदसामिव–रघु० १।१२, मनु० २।७४, कु० २,१२, भग० ७।८ 2 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र (ढोल या मृदग) 3 विष्णु या परमपुरुष परमात्मा का विशेषण।

प्रणस (वि०) [प्रगता नासिका यस्य, सादेश, अच्, णत्वम्] लम्बी नाक वाला, बड़ी नाक वाला।

प्रणाडी [=प्रणाली, लस्य ड] अन्तरायण, अन्त प्रवेशन, माध्यम।

प्रणाद [प्र+नद्+घञ्] 1 ऊँची आवाज, चीत्कार, क्रदन 2 दहाड़ना, दहाड़ 3 हिनहिनाना, रेंकना 4 हर्षातिरेक की कलकलध्वनि, वाहवा, क्या खूब 5 दुहाई देना 6 कान का विशेष रोग (इस रोग में कानों में 'भनभनाहट' की ध्वनि होती है)।

प्रणाम [प्र+नम्+घञ्] 1 झुकना, नमस्कार करना, नमन या नति 2 सादर नमस्कार, अभिवादन, दण्डवत् प्रणाम, प्रणति, यथा साष्टाग प्रणाम - कु० ६।९१।

प्रणायक [प्र+नी+ण्वुल्] 1 नेता, सेनापति 2. पथप्रदर्शक, प्रधान, मुख्य।

प्रणाय्य (वि०)[प्र+नी+ण्यत्] 1 प्रिय प्यारा 2. खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी 3 अप्रिय, अनभिमत—भट्टि० ६।६६ 4 आवेश शून्य, विरक्त।

प्रणाल,-ली, प्रणालिका] प्र+नल्+घञ्, प्रणाल+ङीष्, प्रणाली+कन्+टाप्, ह्रस्व] नहर जलमार्ग, नाली कुर्वन् पूर्णां नयनपयसा चक्रवालं प्रणाली — उ० म० २, शि० ३।४४ 2 परपरा, अविच्छिन्न सिलसिला।

प्रणाश [प्र+नश्+घञ्] 1 विराम, हानि, लोप — कि० १४।९ 2 मृत्यु, विनाश रघु० १४।१।

प्रणाशन (वि०) [प्र+नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, हटाने वाला, नम् समुच्छेदन, उन्मूलन रघु० ३।६०।

प्रणिसित (वि०) [प्र+निस्+क्त] जिसका चुम्बन किया हो।

प्रणिधानम् [प्र+नि+धा+ल्युट्] 1 प्रयोग करना, नियुक्त करना व्यवहार, उपयोग 2 महान् प्रयत्न, शक्ति 3 धार्मिक मनन, भावचिन्तन रघु० १।७४, ८।१९, विक्रम० २ 4 सम्मानपूर्ण व्यवहार (अधि० के साथ) 5 कर्मफलत्याग।

प्रणिधि [प्र+नि+धा+कि] 1 चौकन्ना रहने वाला, ताक-झाक करने वाला 2 गुप्तचर भेजना 3 जासूस, भेदिया कु० ३।६, रघु० १७।६८ मनु० ७।१५३ ८।१८२ 4 टहलुआ, अनुचर 5 देखभाल, ध्यान 6 निवेदन अनुरोध प्रार्थना।

प्रणिनाद [प्र+नि+नद्+घञ्] गहरी ध्वनि।

प्रणिपतनम्, प्रणिपात [प्र+नि+पत्+ल्युट्, घञ् च] 1 पैरों में गिरना, साष्टाग प्रणाम विनति--रघु० ४।६४ 2 अभिवादन, नमस्कार, सादर प्रणति - कु० ३।६१,८।३५, रघु० ३।७५। सम० रस शस्त्रास्त्रों पर उच्चारण किया जाने वाला जादू का मत्र।

प्रणिहित (भू० क० कृ०) [प्र+नि+धा+क्त] 1 रक्खा हुआ, व्यवहृत 2 जमा किया हुआ 3 फैलाया हुआ पसारा हुआ- मेघ० १०५ 4 न्यस्त, समर्पित, भक्त 5 एकाग्रचित्त, लवलीन, जुटा हुआ 6. निर्धारित,

निश्चिन्त 7 सावधान, चौकस 8 अवाप्त, उपलब्ध 9 भेद लिया हुआ (दे० प्रणि पूर्वक धा)।

प्रणीत (भू० क० कृ०) [प्र+नी+क्त] 1 सामने प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2 सौंपा गया, दिया गया, प्रस्तुत किया गया, उपस्थित किया गया 3 लाया गया, कम किया गया 4 कार्यान्वित कार्य में परिणत अनुष्ठित 5 सिखाया गया, नियत किया गया 6 फेंका हुआ, भेजा गया, देवामुक्त० (दे० प्र पूर्वक 'नी'),—त मन्त्र से अभिसंस्कृत की गई यज्ञाग्नि,—तम् पकाया हुआ या सवारा हुआ कोई पदार्थ यथा चटनी, अचार आदि।

प्रणुत (भू० क० कृ०) [प्र+नु+क्त] प्रशंसा किया गया, श्लाघा किया गया।

प्रणुत्त (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त] 1 हाँककर दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 2 भगाया हुआ।

प्रणुन्न (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त, नत्वम्] 1 हाँक कर दूर भगाया हुआ, 2 संक्षिप्त किया हुआ 3 भगाया हुआ 4 हिलता हुआ, काँपता हुआ।

प्रणेतृ (पु०) [प्र+नी+तृच्] 1 नेता 2. निर्माता, स्रष्टा 3 किसी सिद्धान्त का उद्घोषक, व्याख्याता, अध्यापक 4 पुस्तक का रचयिता।

प्रणेय (वि०) [प्र+नी+यत्] 1 पथप्रदर्शन किये जाने योग्य, नेतृत्व दिये जाने योग्य शिक्षणीय, विनम्र, विनीत, आज्ञाकारी 2 कार्यान्वित या निष्पन्न किये जाने योग्य 3 निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य।

प्रणोद [प्र+नुद्+घञ्] 1. हाँकना 2 निदेश देना।

प्रतत (भू० क० कृ०) [प्र+तन्+क्त] 1 बिछाया हुआ, ढका हुआ 2 फैलाया हुआ, पसारा हुआ।

प्रतति (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन्] 1 विस्तार, फैलाव, प्रसार 2 लता।

प्रतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+तन्+अच्] पुराना, प्राचीन।

प्रतनु (वि०) (स्त्री०—नु,—न्वी) [प्रकृष्ट तनु, प्रा० स०] 1 पतला, सूक्ष्म, सुकुमार मेघ० २९ 2 अत्यल्प, सीमित, मीडा—प्रतनुतपसाम्—का० ४३, उत्तर० १।२०, मेघ० ४१ 3 दुबला-पतला, कृश 4 नगण्य, मामूली।

प्रतपनम् [प्र+तप्+ल्युट्] गरमाना, गरम करना।

प्रतप्त (भू० क० कृ०) [प्र+तप्+क्त] 1 तपाया हुआ 2 गर्म, उष्ण 3 संतप्त, सताया हुआ, पीड़ित।

प्रतर [प्र+तृ+अप्] पार जाना, पार करना या जाना।

प्रतर्क, प्रतर्कणम् [प्र+तर्क्+अप्, ल्युट् च] 1 अटकल, कल्पना, अनुमान 2 विचारविमर्श।

प्रतलम् [प्रकृष्टं तलम् प्रा० स०] निम्नलोक के सात विभागों से एक—दे० पाताल, —ल खुले हाथ की हथेली।

प्रताड [प्र+तड्+घञ्] 1 अंकुर तन्तु—लतप्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैः—रघु० २।८, श० ७।११ 2 लता, नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3 शाखा-प्रशाखा, शाखा संविभाग 4 धनुर्वात रोग या मिरगी रोग।

प्रतानिन् (वि०) [प्रतान+इनि] 1 फैलाने वाला 2. अंकुर या तन्तु वाला,—नी फैलाने वाली लता।

प्रताप [प्र+तप्+घञ्] 1 ताप, गर्मी—पंच० १।१०७ 2 दीप्ति, दहकती हुई गर्मी कु० २।२४, 3 आभा, उज्ज्वलता 4 मर्यादा, शान, यश—महावी० २।४ 5 साहस, पराक्रम, शौर्य प्रेक्षापरस्तत्र भालोद्यत युग-पदुद्धानरोषे दिशः रघु० ४।१५, यहाँ 'प्रताप' का अर्थ गर्मी भी है) ४।३० 6 शक्ति, बल, ऊर्जा 7 उत्कण्ठा, उत्साह।

प्रतापन (वि०) [प्र+तप्+णिच्+ल्युट्] 1 गरमाने वाला 2 संताप देने वाला, —नम् 1 जलाना, तपाना, गर्माना 2 पीड़ित करना, सताना, दण्ड देना,—न एक नरक का नाम।

प्रतापवत् (वि०) [प्रताप+मतुप्, वत्वम्] 1 कीर्तिशाली, ओजस्वी 2 बलशाली, शक्तिसम्पन्न, ताकतवर—पु० शिव का विशेषण।

प्रतार [प्र+तृ+णिच्+घञ्] 1 पार ले जाने वाला, 2 धोखा, जालसाजी।

प्रतारक [प्र+तृ+णिच्—ण्वुल्] ठग, छद्मवेषी।

प्रतारणम् [प्र+तृ+णिच्+ल्युट्] 1 पार ले जाना 2 धोखा देना, ठगना, छल, कपट, या जालसाजी, धोखा, मक्कारी, धूर्तता, बदमाशी, दगाबाजी, पाखंड यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा, उपास्यतां कलौ कल्पलता देवी प्रतारणा, प्रतारणासमर्थस्य विद्यया किं प्रयोजनम् उद्भट।

प्रतारित (वि०) [प्र+तृ+णिच्+क्त] छला हुआ, ठगा हुआ।

प्रति (अव्य) [प्रथ्+अति] 1 धातु के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर निम्नांकित अर्थ है—(क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, लौट कर, फिर (ग) के विरुद्ध, के मुकाबले में, विपरीत (घ) ऊपर, घृणा (इस उपसर्ग से युक्त कुछ धातुओं को देखिए) 2 संज्ञाओं (कृदन्त से भिन्न) से पूर्व उपसर्ग के रूप में निम्नांकित अर्थ (क) समानता, समरूपता, सादृश्य (ख) प्रतिस्पर्धा—यथा प्रतिचन्द्र (प्रतिस्पर्धी चन्द्रमा), प्रतिपुरुष आदि 3 स्वतंत्र रूप से संबंधबोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त (कर्म० के साथ) निम्नांकित अर्थ —(क) की ओर, की दिशा में, की तरफ—तौ दम्पती स्वां प्रतिराजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठ —रघु० २।७०, १।७५, प्रस्थानं विधेः—उ० ३।

३१, वृक्ष प्रतिविद्योतते विद्युत्—सिद्धा०, (ख) के विरुद्ध, प्रतिकूल, की विपरीत दिशा में, सम्मुख —तदा यायादिषुं प्रति—मनु० ७।१७१, प्रदुद्रुवुस्त प्रति राक्षसेन्द्रम्—रामा०, यथावयः प्रत्यरिसैन्यमेव —रघु० ७।५५, (ग) की तुलना में, सममूल्य पर, के अनुपात में, जोड़ का -त्व सहस्राणि प्रति—ऋक्० २।१।८, (घ) निकट, के आसपास, पास की ओर, में, पर—समासेदुस्ततो गंगां शृंगवेरपुरं प्रति—रामा०, गंगां प्रति (ङ) के समय, लगभग, दौरान में—आदित्यस्योदयं प्रति—महा०, फाल्गुन वाथ चैत्र वा ग्रामौ प्रति—मनु० ७।१८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाग्य में—यदत्र स्यात् प्रतिस्थात् -सिद्धा०, हर प्रति हलाहल (अभवत्)—वोप०, (छ) प्रत्येक में, हरेक में, अलग-अलग (विभागसूचक), वर्षं प्रति, प्रतिवर्षम्, यज्ञं प्रति—याज्ञ० १।११०, वृक्षं वृक्षं प्रति सिंचति —सिद्धा०, (ज) के विषय में, के संबंध में के बारे में, विषयक, बाबत, विषय में—न हि मे संशीतिरस्या दिव्यता प्रति—का० १३२, चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि—मुद्रा० १, धर्मप्रति—श० ५, मदौत्सुक्यां ऽस्मिन् नगरगमनं प्रति- श० १, कु० ६।२७, ७।८३, याज्ञ० १।२१८, रघु० ६।१२, १०।२०, १२।५१, (झ) के अनुसार, के समनुरूप -मां प्रति (मेरी सम्मति में), (ञ) के सामने, की उपस्थिति में, (ट) क्योंकि, के कारण 4 स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय—प्रद्युम्न कृष्णात्प्रति—सिद्धा० संप्राप्ते यो नारायणं प्रति—भट्टि० ८।८९, अथवा (ख) की एवज में, के बदले—तिलेभ्य प्रति यच्छति माषान्—सिद्धा०, भक्ते प्रत्यमृतं शम्भो—वोप० 5 अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रायः इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर, यथा प्रतिमवत्सरम्—(प्रतिवर्षं), प्रतिक्षणं, प्रत्यहं आदि, (ख) की ओर, की दिशा में—प्रत्यग्नि शलभा इवान्ये 6 'प्रति' कभी कभी 'अल्पतार्थ' प्रकट करने के लिए अव्ययीभाव समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है सूरप्रति, शाकप्रति (विशे० निम्नांकित समासों में वह सब शब्द जिनका दूसरा पद क्रिया के साथ अव्यवहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं अन्य शब्द अपने२ स्थानों पर मिलेंगे। तम०—अक्षरम् (अव्य०) प्रत्येक अक्षर में प्रत्यक्षरं श्लेषमयप्रबंध वास०,—अग्नि (अव्य०) अग्नि की ओर,—अङ्गम् 1. (शरीर का) गौण या छोटा अंग —जैसे कि नाक 2 प्रभाग, अध्याय, अनुभाग 3 प्रत्येक अंग 4. अस्त्र (अव्य०—गम्) 1 शरीर के प्रत्येक अंग पर—यथा—प्रत्यंगमालिंगति -गीत० १ 2 प्रत्येक उपप्रभाग या उपांग के लिए,—अनन्तर (वि०) 1 सट कर पड़ोस में होने वाला 2 उत्तराधिकारी के रूप में) निकटतम विद्यमान 3 तुरन्त बाद का, बिल्कुल जुड़ा हुआ जीवेत् क्षत्रियधर्मेण स ह्यस्य (ब्राह्मणस्य) प्रत्यनंतरः मनु० १०।८२, ८।१८५,—अभिमुखम् (अव्य०) हवा की ओर, या हवा के विरुद्ध—अनीक (वि०) 1 विरोधी, विरुद्ध, विद्वेषी 2 मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला (कः) शत्रु (—कम्) 1 विरोध, शत्रुता, विपरीत दल या स्थिति न शक्ता प्रत्यनीकेषु स्थातुं मम सुरासुराः —राम० 2 शत्रु की सेना -यस्य शूरा महेष्वासा प्रत्यनीकगता रणे महा०, येऽवस्थिता. प्रत्यनीकेषु योधाः —भग० ११।३२, (यहां 'प्रति' का अर्थ 'शत्रुता' भी है) 3 (अल० शास्त्र) अलंकार इसमें एक व्यक्ति उस शत्रु को जो स्वयं घायल नहीं हो सकता, चोट पहुंचाने का प्रयत्न करता है—प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुं तिरस्क्रिया, या तदीयस्य तत्तुल्यं प्रत्यनीकं तदुच्यते —काव्य० १०, अनुकारम् प्रतिकूल उपसंहार—अत (वि०) संलग्न, सटा हुआ साथ लगा हुआ, सीमावर्ती (तः) 1 सीमा, हद, रघु० ४।८६, 2 सीमावर्ती देश, विशेषतः म्लेच्छों द्वारा अधिकृत प्रदेश, देश सीमावर्ती देश, °पर्वत साथ लगी हुई पहाड़ी—पादः प्रत्यंग पर्वतः —अमर०, -अपकार प्रतिशोध, बदले में क्षति पहुंचाना—शाम्येत्प्रत्यपकारेण नापकारेण दुर्जनः —कु० २।४०,—अब्दम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, अभियोग बदले में दोषारोपण, प्रत्यारोप, -अभिमुखम् (अव्य०) शत्रु की ओर, अर्कः झूठमूठ का सूरज, -अवयवम् (अव्य०) 1 प्रत्येक अंश में 2 प्रत्येक विशेषता के साथ, विवरण सहित, -अवर (वि०) 1 निम्न पद का, कम सम्मानित 2 अधम, पतित, अत्यंत निगण्य, -अहम् (पुं०) गैंडा, -अहम् (अव्य०) प्रतिदिन, हररोज, रोज —गिरिशमुपचचार प्रत्यहम् —कु० १।६०,—आकार, कोष, म्यान, -आघात 1 प्रत्याक्रमण 2 प्रतिक्रिया,—आचार उपयुक्त आचरण या व्यवहार, आत्मम् अकेला, अलग अलग, -आदित्य झूठमूठ का सूरज, -आरंभ 1 फिर शुरू करना, दूसरी बार आरंभ करना 2 प्रतिषेध, -आशा 1 उम्मीद, पूर्वधारणा—मा० ९।८ 2 विश्वास, भरोसा, उत्तरम् जवाब, उत्तर का उत्तर,—उलूक 1 कौवा 2. उल्लू से मिलता-जुलता पक्षी,—ऋचम् (अव्य०) प्रत्येक ऋचा में,-एक (वि०) प्रत्येक, हरेक हरकोई (अव्य० कम्) 1 एक एक करके, एक बार में एक, अलग, अलग, अकेला, हर एक में, हर एक को (बहुधा विशेषतात्मक बल के साथ)—विवेश दण्डकारण्यं प्रत्येकं च शतं समाः —रघु०

१२।९ (प्रत्येक सज्जन पुरुष के मन में प्रवेश किया) १२।३, ७।३४, कु० २।३१,—कक्षक शब्द,—कक्षम् (अव्य०) 1 अलग अलग, एक एक करके 2. गले के निकट,—कक्ष (वि०) उद्दण्ड, जो हण्टर से भी वश में न आवे, काम 1 पुतला, प्रतिमा, चित्र, समानता 2 शत्रु—की० १३।२८ 3 लक्ष्य, चांदमारी, निशान, —कितव जूए में प्रतिद्वन्द्वी,—कुंजर प्रतिरोधी हाथी, —कुल परिवार, भाई,—कूल (वि०) अननुकूल विरोधी, प्रतिपक्षी, विरुद्ध—प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता—शि० ९।६, कु० ३।२४ 2 कठोर, बेमेल, अप्रिय, अरुचिकर—अप्यन्नपुष्टा प्रतिकूलशब्दा—कु० १।४५ 3 अशुभ 4 विरोधी 5 उलटा, व्युत्क्रान्त 6 विपरीत, आड़ा, कर्कश, कठोर, °आचरितम् कुत्सित या आक्रमणात्मक कार्य अथवा आचरण—रघु० ८।८१, °उक्तम्, क्ति (स्त्री०) विरोध, °कारिन् (वि०) विरोध करने वाला, °दर्शन् (वि०) अशुभ अथवा अभद्र दर्शनों वाला, °प्रवर्तिन् —वर्तिन् (अव्य०) विपरीत कार्य करने वाला, उलटा मार्ग ग्रहण करने वाला, °भाषिन् (वि०) विरोध करने वाला, असंगत बोलने वाला, °वचनम् अरुचिकर या अप्रिय भाषण, कूलम् (अव्य०) 1 विरोधी ढंग से, विपरीततर के साथ 2 उलटी तरह से, विपर्यस्त क्रम से, क्षणम् (अव्य०) प्रत्येक क्षण, हर समय, —कु० ३।५६, गज आक्रमणकारी हाथी, —गात्रम् (अव्य०) प्रत्येक अंग में, -गिरि 1 सामने का पहाड़ 2 छोटा पहाड़, गृहम्, गेहम् (अव्य०) हर घर में,—ग्रामम् (अव्य०) हर गांव में, चन्द्र झूठमूठ का चाँद, चरणम् (अव्य०) 1 प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त या शाखा में 2 हर पग पर, —छाया 1 प्रतिबिम्ब, परछाईं, छाया 2 प्रतिमा, चित्र,—जघा टाँग का अगला भाग —जिह्वा, जिह्विका गले की भीतर की घंटी, मास-तालु, कोमल तालु, तन्त्रम् (अव्य०) प्रत्येक तंत्र या सम्मति के अनुसार, तंत्रसिद्धान्त. एक ऐसा सिद्धांत जिसको एक ही पक्ष ने माना हो (वादिप्रतिवाद्येकतरमात्राभ्युपगत), त्र्यहम् (अव्य०) लगातार तीन दिन तक, दिनम् (अव्य०) हर रोज, दिशम् (अव्य०) हर दिशा में, चारों ओर, सर्वत्र मेघ० ५८, देशम् (अव्य०) प्रत्येक देश में, देहम् (अव्य०) हरेक शरीर में,—देवतम् (अव्य०) प्रत्येक देवता के निमित्त,—द्वन्द्वः 1 प्रतिस्पर्धी, विरोधी, शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी 2 शत्रु० (—न्द्वम्) विरोध, शत्रुता,—द्वन्द्विन् (वि०) 1 विरोधी, शत्रुतापूर्ण 2 प्रतिकूल—कि० १६।२९ 3 लागडाट रखने वाला, प्रतिस्पर्धाशील —श० ४।४, (—पुं०) विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिस्पर्धी —रघु० ७।३७, १५।२५,—द्वारम् (अव्य०) प्रत्येक दरवाजे पर,—धुरः दूसरे घोड़े के साथ जुड़ा हुआ घोड़ा,—नप्तृ (पुं०) प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र,—नव (वि०) 1 नूतन, युवा, ताजा 2. हाल का खिला हुआ, या जिसमें अभी कलियाँ आई हों—मेघ० ३६, —नाडी प्रशिरा, उपनाड़ी, नायकः किसी काव्य का खलनायक जैसे रामायण में रावण, तथा माघकाव्य में शिशुपाल,—पक्षः 1. विरोधी पक्ष, दल या गुटवन्दी, शत्रुता 2 प्रतिकूल, शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्ष-कांक्षिणी प्रतिद्वन्द्वी पत्नी—भामि० २।६४, विक्रमांक० १।७०, ७३, प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुम् काव्य० १०, समास में प्रायः 'सम' या 'समान' अर्थ में प्रयुक्त 3 प्रतिवादी, मुद्दआलैह, पक्षिन् (वि०) 1 विरोध से युक्त, 2 विरोधात्मक प्रतिज्ञा से विफल किया हुआ, (जैसे न्याय में हेतु) (वह हेतु) जो सत्प्रतिपक्ष नामक दोष से युक्त हो), पक्षिन् (वि०) विरोधी, शत्रु, पथम् (अव्य०) मार्ग के साथ२, रास्ते की रास्ते की ओर,—प्रतिपथगतिरासीद्वेगदीर्घीकृताग्र—कु० ३।७६, पदम् (अव्य०) 1 प्रत्येक पग पर 2 प्रत्येक स्थान पर, सर्वत्र 3 प्रत्येक शब्द में, पादम् (अव्य०) प्रत्येक चरण में, पात्रम् (अव्य०) प्रत्येक भाग के विषय में, प्रत्येक पात्र के विषय में प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः श० १ (प्रत्येक पात्र की देख रेख की जानी चाहिए, पादपम् (अव्य०) प्रत्येक वृक्ष में, पाप (वि०) पाप के बदले पाप करने वाला, बुराई के बदले बुराई करने वाला, पुरुषः (पुं०) 1 समान या सदृश पुरुष 2. स्थानापन्न, प्रतिनिधि 3 साथी 4 पुतला आदमी का पुतला जिसे चोर किसी घर में स्वयं घुसने से पहले यह जानने के लिए फेंका करते थे कि कोई जाग तो नहीं रहा है 5 पुतला, पूर्वाह्णम् (अव्य०) प्रत्येक मध्याह्नपूर्व, हर दोपहर से पहले, प्रभातम् (अव्य०) प्रत्येक सुबह, प्राकारः बाहरी परकोटा या फसील, प्रियम् बदले में की गई कृपा या सेवा रघु० ५।५६, बन्धु जो पद व स्थिति में समान हो, बल (वि०) बल में समान, अपने जोड़े का, समान शक्तिशाली (—लम्) शत्रु की सेना —अस्त्रज्वालाकलापप्रतिबलजलधेरत्नरौर्वायमाणे—वेणी० ३।५, बाहु भुजा का अगला भाग, कोहनी से नीचे का भाग भि (भि) वः, बिम्बम् 1 परछाईं, प्रतिमूर्ति कु० ६।४२, शि० ९।१८ 2 प्रतिमा, चित्र, भट (वि०) प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वन्द्वी भटप्रतिभटस्तस्मिन् वे० १३।५, (टः) 1 प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी 2 शत्रुपक्ष का योद्धा समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रतिभटा काव्य० १०, भय (वि०) 1 भयावह भीषण, भयंकर, भयानक 2 खतरनाक पद०

२।१६६, (अम्) भय, खतरा,--मंडलम् केन्द्रभ्रष्ट परिवेश,—मासिरम् (अव्य०) प्रत्येक घर में, मल्ल प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी--नै० १।६३; पातालप्रतिमल्लगल्ल आदि मा० ५।२२, माया: जवाबी जादू, मासम् (अव्य०) प्रतिमास, मासिक, मित्रम् शत्रु, विरोधी, मुख (वि०) 1 मुंह के सामने खड़ा हुआ, सामने स्थित प्रतिमुखागत मनु० ८।२९१ 2. निकटवर्ती, उपस्थित (खम्) नाटक की एक घटना या गौणकथा-वस्तु जो नाटक के महान् परिवर्तन या उलट फेर को या तो जल्दी लादे या और भी अधिक देर कर दे —दे० सा० द० ३३४ और ३५१ ३६४, मुद्रा मुकाबले की मोहर,- मुहूर्तम् (अव्य०) प्रतिक्षण, - मूर्ति (स्त्री०) प्रतिमा, समानता, - यूथप आक्रमणकारी हाथियों के झुंड का अगुआ या नेता, -रथः प्रतिपक्षी योद्धा (शा० युद्ध रथ में बैठ कर लड़ने वाला) -दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य---श० ४।१९, राज विरोधी राजा, रात्रम् (अव्य०) हर रात, - रूप (वि०) 1. तदनुरूप, समान, मुकाबले का भाग रखने वाला,—चेष्टाप्रतिरूपिका मनोवृत्ति —श० १ 2 उपयुक्त, समुचित (रूपम्) चित्र, प्रतिमा, समानता, रूपकम् चित्र, प्रतिमा, लक्षणम् निशान, चिह्न, प्रतीक, -लिपि (स्त्री०) लेख की नकल, लिखी हुई प्रति, - लोम (वि०) 1 नैसर्गिक क्रम के विरुद्ध, व्युत्क्रान्त, उलटा 2 जाति विरुद्ध (अपने पति से उच्च वर्ण की स्त्री को सन्तान) 3 विरोधी 4 नीच, दुष्ट, अधम 5 वाम (अव्य० मम्) बालों के विपरीत, अनाज के विरुद्ध उलटा, विपर्यस्त रूप से, °ज (वि०) जाति के विपरीत क्रम में उत्पन्न अर्थात् अपने पति से उच्चवर्ण की स्त्री को सन्तान, लोमकम् उलटा क्रम, विपरीत क्रम, - वत्सरम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल, वनम् हर जंगल में, —वर्षम् (अव्य०) हरसाल, —वस्तु (नपु०) 1 समान, प्रतिमूर्ति, प्रतिरूप 2 प्रतिदान 3 समानता, तुल्यता °उपमा एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने यह दी है—प्रतिवस्तूपमा तु सा, सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थिति काव्य० १०, उदा० तापेन भाजते सूर्य शूरश्चापेन राजते --चन्द्रा० ५। ४८, --वात उलटी हवा (अव्य०--तम्) हवा के विरुद्ध चीनांशुकमिव केतो प्रतिवातं नीयमानस्य —श० १।३४,—वासरम् (अव्य०) प्रतिदिन —विषदम् (अव्य०) 1 प्रत्येक शाखा पर 2 एक एक शाखा पर, वेदम् (अव्य०) प्रत्येक वेद में या हरेक वेद के लिए,—विषम् विषप्रतीकारक औषधि, —विल्वक, मुचकुन्द वृक्ष, -वीर विपक्षी शत्रु -वृष आक्रमणकारी बैल,---वेलम् (अव्य०) हर समय, प्रत्येक अवसर पर,—वेश 1 पड़ोस का घर, आसपास 2. पड़ोसी,—वेशिन् (अ०) पड़ोसी,---वेश्मन् (नपु०) पड़ोसी का घर,—वेश्य पड़ोसी,---वैरम् वैर प्रतिशोध, बदला, प्रतिहिंसा,--शब्द 1 प्रतिध्वनि, गूंज,—वसुधाधरकन्दराभिसर्पी प्रतिशब्दोऽपि हरेर्भिनत्ति नागान् विक्रम० १।१६, कु० ६।६४, रघु० २।२८ 2 गरज, दहाड़,—शरिन् (पु०) सूठमूठ का चांद,—संवत्सरम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल,— सम (वि०) तुल्य, जोड़ का,—सख्य (वि०) विपर्यस्त क्रम में,— साधम् (अव्य०) प्रतिसंध्या, हर सांझ,—सूर्य,—सूर्यक 1 सूठमूठ का सूरज 2. छिपकली, गिरगिट--उत्तर० २।१६,---सेना, शत्रु की सेना,--स्थानम् (अव्य०) हर स्थान में, हर स्थान पर,-स्रोतस् (नपु०) धारा के विपरीत--हस्त,— हस्तक. प्रतिनिधि, अभिकर्ता, स्थानापन्न, प्रतिपुरुष आश्रिताना भृतौ स्वामिसेवायां धर्मसेवने, पुत्रस्योत्पादने चैव न सति प्रतिहस्तका, --हि० २।३३।

प्रतिक (वि०) [कार्षापण+ठिठन्, कार्षापणस्य प्रत्यादेश] कार्षापण के मूल्य का या कार्षापण से खरीदा हुआ।

प्रतिकर [प्रति+कृ+अप्] प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति।

प्रतिकर्तृ (वि०) (स्त्री०-र्त्री) [प्रति+कृ+तृच्] प्रतिशोध लेने वाला, क्षतिपूर्ति करने वाला—(पु०) विरोधी, विपक्षी।

प्रतिकर्मन् (नपु०) [प्रति+कृ+मनिन्] 1 प्रतिशोध, प्रतिहिंसा 2. हर्जाना, उपचार, प्रतिकार 3 शारीरिक शृंगार, रूपसज्जा प्रसाधन, शरीर-सज्जा (अबला) प्रतिकर्म कर्तुमुपचक्रमिरे समये हि सर्वमुपकारि कृतम् —शि० ९।४३, ५।२७, कु० ७।३ 4. विरोध, शत्रुता।

प्रतिकर्ष [प्रति+कृष्+घञ्] 1 एकत्रीकरण, संयोजन 2 (किसी आगे आने वाले शब्द का) पूर्व विचार।

प्रतिकल्प [प्रति+कल्प्+अच्] 1 नेता 2 सहायक 3 संदेशहर।

प्रतिकार (वी) [प्रति=कृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 प्रतिशोध, पुरस्कार, प्रतिदान 2 बदला, प्रतिहिंसा, प्रतिफल 3 प्रतिविधान, निवारण, रोकथाम, उपचार, इलाज या चिकित्सा —विकार खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य श० ३, प्रतीकारो व्याधे सुखमिति विपर्यस्यति जन – भर्तृ० ३। ९२ 4 विरोध। सम० – कर्मन् (नपु०) जीर्णोद्धार करना, सुधार करना, विधानम् इलाज करना, चिकित्सा करना—प्रतिकारविधानमायुष सति शेषे हि फलाय कल्पते रघु० ८।४०।

प्रतिकाश (वी) [प्रति+कश्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1. परछाईं 2. दृष्टि, दर्शन, सादृश्य--(प्राय

समास के अन्त में 'के समान' से मिलता-जुलता अर्थ प्रकट करना है) —पुटपाकप्रतीकाश —उत्तर० ३।१।

प्रतिकुंचित (वि०) [प्रति+कुञ्च्+क्त] झुका हुआ, मुड़ा हुआ।

प्रतिकृत (भू० क० कृ०) [प्रति+कृ+क्त] 1 वापिस किया हुआ, लौटाया हुआ, प्रतिशोधित, प्रतिहिंसित 2. प्रतिविहित, उपचार किया हुआ।

प्रतिकृति (स्त्री०) [प्रति+कृ+क्तिन्] 1 बदला, प्रतिहिंसा 2. वापसी, प्रतिशोध 3 परछाई, प्रतिबिंब 4 समानता, चित्र, मूर्ति, प्रतिमा—रघु० ८।९२, १४।८७, १८।५३ 5 स्थानापन्न।

प्रतिकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+कृष्+क्त] 1 दोबारा जोता हुआ 2 पीछे ढकेला हुआ, तिरस्कृत, अस्वीकृत 3. छिपाया हुआ, गुप्त 4 नीच, दुष्ट, अधम।

प्रतिकोप, प्रतिकोष [प्रति+कुप् (कुष्)+घञ्] क्रोध के प्रति होने वाला क्रोध।

प्रतिक्रम [प्रति-क्रम्+घञ्] उलटा क्रम।

प्रतिक्रिया [प्रति+कृ+श, इयङ्+टाप्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिशोध 2. प्रतिहिंसा, बदला, प्रतिफल 3 प्रतिविधान, प्रतीकार, दूरीकरण अहेतु पक्षपातो यस्तस्य नास्ति प्रतिक्रिया उत्तर०—५।१७, रघु० १५।४ 4 विरोध 5 शृंगारसज्जा, शृंगार, रूपसज्जा 6 रक्षा 7 सहायता, कुमक या साहाय्य।

प्रतिकृष्ट (वि०) [प्रति+कृश्+क्त] दयनीय, बेचारा, गरीब,

प्रतिक्षत्र. [प्रति+क्षि+अच्] संरक्षक, रखवाला।

प्रतिक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+क्षिप्+क्त] 1 रद्द किया हुआ, अस्वीकृत, हटाया हुआ 2 प्रतिकृत, प्रतिरुद्ध, पीछे ढकेला हुआ, अवरुद्ध किया हुआ 3 अपमानित, भर्त्सना किया हुआ, बदनाम किया हुआ 4 भेजा हुआ, प्रेषित।

प्रतिक्षुतम् [प्रति+क्षु+क्त] छींक।

प्रतिक्षेप [प्रति+क्षिप्+घञ्] 1 प्राप्ति स्वीकार न करना, अस्वीकृति 2 विरोध करना, खण्डन करना, प्रतिवाद करना 3 विवाद।

प्रतिख्याति. [प्रति+ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि।

प्रतिगत (भू० क० कृ०) [प्रति+गम्+क्त] आगे या पीछे उड़ान भरना, इधर उधर चक्कर काटना।

प्रतिगमनम् [प्रति+गम्+ल्युट्] लौटना, वापिस जाना, वापसी।

प्रतिगर्हित (भू० क० कृ०) [प्रति+गर्ह्+क्त] कलंकित, निन्दित।

प्रतिगर्जना [प्रति+गर्ज्+युच्+टाप्] गर्जन के जवाब में गर्जना करना, किसी की दहाड़ सुनकर दहाड़ना।

प्रतिगृहीत (भू० क० कृ०) [प्रति+ग्रह्+क्त] 1 लिया, ग्रहण किया, स्वीकार किया 2 मान लिया, हामी भरी 3 विवाह किया।

प्रतिग्रह [प्रति+ग्रह्+अप्] ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. दान ग्रहण करना या स्वीकार करना 3. दान ग्रहण करने का अधिकार 4 उपहार ग्रहण करने का अधिकार (जो कि ब्राह्मणों का ही विशेषाधिकार है) मनु० १८८, ४।८६, याज्ञ० १।११८ 4 भेंट, उपहार, दान—राज्ञः प्रतिग्रहोऽयम्—श० १. शि० १४।३५ 5 (भेंट का) ग्रहण करने वाला 6 सादर स्वागत 7 अनुग्रह, शान 8 पाणिग्रहण 9 ध्यान पूर्वक सुनना 10 सेना का पिछला भाग 11 पीक दान।

प्रतिग्रहणम् [प्रति+ग्रह्+ल्युट्] 1 उपहार ग्रहण 2 स्वागत 3 पाणिग्रहण।

प्रतिग्रहिन्, प्रतिगृहीतृ (पु०) [प्रतिग्रह+इनि] प्रति+ग्रह्+तृच्] ग्रहण करने वाला, ग्रहीता।

प्रतिग्राह [प्रति+ग्रह्+घञ्] 1 उपहार स्वीकार करना 2 पूर्वदान, पीक दान।

प्रतिघ [प्रति+हन्+क, कुत्वम्] 1 विरोध, मुकाबला 2 लड़ाई, संघर्ष, आपस की मारपीट 3 क्रोध, रोष 4 मूर्छा 5 शत्रु।

प्रति(ती)घात [प्रति+हन्+णिच्+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1. दूर हटाना, पीछे ढकेलना 2 विरोध, मुकाबला 3 आघात के बदले आघात, जवाबी आघात 4 प्रतिक्षेप, प्रतिकार 5 प्रतिषेध।

प्रतिघातनम् [प्रति+हन्+णिच्+ल्युट्] 1 पीछे ढकेलना, दूर हटाना 2 वध, हत्या।

प्रतिघ्नम् [प्रति+हन्+क] अरीर।

प्रतिचिकीर्षा [प्रति+कृ+सन्+टाप्] बदले की इच्छा, प्रतिहिंसा की इच्छा, बदला लेने की अभिलाषा।

प्रतिचिन्तनम् [प्रति+चिन्त्+ल्युट्] मनन करना, गहन-चिंतन करना।

प्रतिच्छदनम् [प्रति+छद्+ल्युट्] ढकना, चादर।

प्रतिच्छद., प्रतिच्छदकः [प्रति+छन्द्+घञ्, कन् च] 1. समानता, चित्र, मूर्ति प्रतिमा 2 स्थानापन्न शि० १२।२९।

प्रतिच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+छद्+क्त] 1 ढका हुआ, आच्छादित, लपेटा हुआ 2 छिपाया हुआ, गुप्त 3 जुटाया हुआ, पूर्वसंचित 4 गोट या मगजी लगाया हुआ, जड़ा हुआ।

प्रतिच्छेदः [प्रति+छिद्+घञ्] मुकाबला, विरोध।

प्रतिजल्पः [प्रति+जल्प्+घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिजल्पकः [प्रतिजल्प+कन्] सादर सहमति।

प्रतिजागरः [प्रति+जागृ+घञ्] निगरानी, देख-रेख सावधानी।

प्रतिजीवनम् [प्रति+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन, पुन सजीवता ।

प्रतिज्ञा [प्रति+ज्ञा+अङ्+टाप्] 1 मानना, अगीकार करना 2 व्रत, वचन, वादा, औपचारिक घोषणा —दैवान्नीर्णं प्रतिज्ञं मुद्रा० ४।१२, तीर्त्वा जवेनैव वितानदुस्तरा नदी प्रतिज्ञामिव ता वरीयसीम्—शि० १२।७४ 3 उक्ति वृद्धोक्ति, घोषणा, प्रकथन 4 (न्या० में) प्रस्थापना, सवाक्य पचागी अनुमान का प्रथम अग, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ('पर्वतो वह्निमान' सामान्य उदाहरण है) 5 अभियोग, आरोपपत्र । सम०— पत्रम् वचनपत्र, लिखित सविदापत्र, —भग प्रतिज्ञा का तोड देना,—विरोध. वचन के विरुद्ध आचरण करना **विवाहित** (वि०) जिसकी सगाई हो गई हो,—सन्यास 1 वचन भग करना, 2 (न्या० में) मूल प्रस्ताव का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञा-हानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+ज्ञा+क्त] 1 उद्घोषित, उक्त, दृढता पूर्वक कथित 2 वचनबद्ध, सहमत 3 माना हुआ, अगीकृत—त्व वचन, वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति+ज्ञा+ल्युट्] 1 दृढोक्ति, प्रकथन 2 करार, वादा 3 मानना, स्वीकार करना ।

प्रतितर [प्रति+तॄ+अप्] डाड खेने वाला, मल्लाह या नाविक ।

प्रतितालो [प्रतिगता तालम्—प्रा० स० ङीष्] (दरवाजे की) कुजी, चाबी ।

प्रतिदर्शनम् [प्रति+दृश्+ल्युट्] देखना, प्रत्यक्ष करना ।

प्रतिदानम् प्रति+दा+ल्युट्] 1 पलटाना, प्रत्यर्पण, वापिस देना, (धरोहर आदि की) पुनरापत्ति 2 विनिमय, वस्तुओ की अदलाबदली ।

प्रतिदारणम् [प्रति+दृ+णिच्+ल्युट्] 1 लडाई, युद्ध 2 फाडना ।

प्रतिदिवसम् (पु०)[प्रति+दिव्+कनिन्] 1 दिन 2 सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+दृश्+क्त] 1. देखा हुआ 2 दृष्टि गोचर, दृश्यमान ।

प्रतिधावनम् [प्रति+धाव्+ल्युट्] धावा बोलना, हमला करना आक्रमण करना ।

प्रतिध्वनि, प्रतिध्वान [प्रति+ध्वन्+इ, घञ् वा] गूंज, प्रतिध्वनन ।

प्रतिध्वस्त [भ० क० कृ०) [प्रति+ध्वस्+क्त] पछाड-कर नीचे गिराया हुआ, अधोमुख, खिन्न ।

प्रतिनन्दनम् [प्रति+नन्द्+ल्युट्] 1, बधाई देना, स्वागत करना 2 धन्यवाद देना ।

प्रतिनाद [प्रति+नद्+घञ्] गूंज, प्रतिध्वनि ।

प्रति (स्त्री) **नाह** [प्रति+नह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] झडा, पताका ।

प्रतिनिधि [प्रति+नि+धा+कि] 1.स्थानापन्न, एवजी, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले काम पर लगाया जाय —सोऽभवत्प्रतिनिधिर्न कर्मणा—रघु० ११।२३, १।८१, ४।५८, ५।६३, ९।४० 2 सहायक, प्रतिविधि 3 स्थानापत्ति 4 अग्नि 5 प्रतिमा, समानता, चित्र ।

प्रतिनियम [प्रा० स०] सामान्य नियम ।

प्रतिनिर्जित (भू० क० कृ०) [प्रति+नि+जि+क्त] 1 पराजित, परास्त 2 निराकृत, निरस्त ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) [प्रति+निर्+दिश्+ण्यत्] जो पहला कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्सबधी और कुछ भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्सबधी और कुछ भी कह दिया जाय तु० काव्य० ७ में दिये गये उदाहरण की—उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च—(यहाँ 'ताम्र' शब्द को पुनरुक्ति यह बतलाने के लिए की गई कि सूर्य 'लाल' ही निकलता है, 'लाल' ही छिपता है) ।

प्रतिनिर्यातनम् [प्रति+निर्+यत् णिच्+ल्युट्] प्रति-शोध, प्रतिहिंसा ।

प्रतिनिविष्ट (वि०) [प्रति+नि+विश्+क्त] दुराग्रही, हठी, पक्का, जिद्दी । सम० मूर्ख दुराग्रही बेवकूफ, पक्का बुद्धू -न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् - भर्तृ० २।५ ।

प्रतिनिवर्तनम् [प्रति+नि+वृत्+ल्युट्] 1 लौटाना, वापसी 2 मुडना ।

प्रतिनोद [प्रति+नुद्+घञ्] पीछे ढकेलना, पीछे हटाना ।

प्रतिपत्ति (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्तिन्] 1 हासिल करना, अवाप्ति, उपलब्धि चन्द्रलोकप्रतिपत्ति, स्वर्ग० आदि 2 प्रत्यक्षज्ञान, अवेक्षण, चेतना, (यथार्थ) ज्ञान - यागार्थप्रतिपत्तये—रघु० १।१, तयोर्भेद प्रतिपत्तिरस्ति मे—भर्तृ० ३।९९, गुणिनामपि निज रूपप्रतिपत्ति परत एव सभवति वास० 3 हामी भरना, आज्ञा पालन, स्वीकरण—प्रतिपत्तिपराङ्मुखी- भट्टि० ८।९५ (आज्ञानुपालन के विरुद्ध, यश में न आने वाला) 4 मान लेना, अभिस्वीकृति 5 दृढोक्ति, उक्ति 6 समारभ, शुरू, उपक्रम 7 कार्यवाही, प्रगमन, क्रिया विधि वयस्य का प्रतिपत्तिरत्र मालवि० ४, कु० ५।४२, विषादलुप्त प्रतिपत्ति सैन्यम्—रघु० ३।४०, सेना जो क्या कार्यविधि अपनाई जाय इस बात को विषाद के कारण न जान सकी) 8 अनुष्ठान, करना, प्रगमन करना प्रस्तुत प्रतिपत्तये- रघु० १५।७५ 9 दृढ सकल्प, निश्चित धारणा—व्यवसाय प्रतिपत्ति निष्ठुर —रघु० ८।५५ 10 समाचार, गुप्त वार्ता कार्यसिद्धा वाशु प्रतिपत्तिमानय—मुद्रा० ४, श० ६ 11 सम्मान, आदर, पूजनीयता का चिह्न, आदरयुक्त व्यवहार

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकमिय दारेषु दृश्या स्वया स० ४।१६, ७।१, रघु० १४।२५, १५।१२ 12 प्रणाली, उपाय 13 बुद्धि, प्रज्ञा 14 रिवाज, प्रयोग 15 उन्नति, तरक्की, उच्चपद प्राप्ति 16 यश प्रसिद्धि, ख्याति 17 साहस, भरोसा, विश्वास 18 सम्प्रत्यय, प्रमाण। सम०—ज्ञ (वि०) कार्य विधि का ज्ञाता,—पटह एक प्रकार का नगाड़ा,—भेद मतभेद, दृष्टिकोण में अन्तर, विशारद (वि०) कार्यविधि से परिचित, कुशल, चतुर।

प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्विप्] 1 पहुँच, प्रवेश, मार्ग 2 आरम्भ, शुरु 3 प्रज्ञा, बुद्धि 4 शुक्लपक्ष का पहला दिन 5 नगाड़ा। सम०—चन्द्र (प्रतिपदा का) नया चाँद, (विशेष रूप से पूज्य)—प्रतिपच्चन्द्र-निभोयमात्मज—रघु० ८।६५, तूर्यम् एक प्रकार का नगाड़ा।

प्रतिपदा,—दी [प्रतिपद्+टाप्, ङीप् वा] शुक्लपक्ष का पहला दिन।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+क्त] 1 उपलब्ध, प्राप्त 2 किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न 3 हाथ में लिया हुआ, आरब्ध 4 वचन दिया हुआ, लगा हुआ 5 सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ 6 ज्ञात समझा हुआ 7 जवाब दिया गया, उत्तर दिया गया 8 प्रमाणित, प्रदर्शित (प्रति पूर्वक 'पद्' देखो)।

प्रतिपादक (वि०) (स्त्री०-दिका) [प्रति+पद्+णिच्+ण्वुल्] 1 देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान करने वाला, समर्पित करने वाला 2 प्रदर्शित करने वाला, सहायता करने वाला, प्रमाणित करने वाला, स्थापित करने वाला 3 जांच-विचार करने वाला, व्याख्या करने वाला, सोदाहरण निरूपण करने वाला 4 उन्नत करने वाला, आगे बढ़ाने वाला, प्रगति करने वाला 5 प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला।

प्रतिपादनम् [प्रति+पद्+णिच्+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना 2 प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन 3 अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत, रूप से प्रस्तुत करना, सोदाहरण निरूपण 4 कार्यान्विति, निष्पन्नता, पूर्णता 5 जन्म देना, पैदा करना 6 आवृत्ति, अभ्यास 7 आरम्भ।

प्रतिपादित (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] 1 दिया हुआ, प्रदत्त, स्वीकृत, प्रस्तुत 2 स्थापित, प्रमाणित, प्रदर्शित 3 व्याख्यात, सविवरण प्रस्तुत 4. उद्घोषित, उक्त 3 जन्म दिया, पैदा किया।

प्रतिपालक [प्रति+पाल्+णिच्+ण्वुल्] बचाने वाला, संरक्षक अभिभावक।

प्रतिपालनम् [प्रति+पाल्+णिच्+ल्युट्] संरक्षण, बचाना रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना।

प्रतिपीडनम् [प्रति+पीड्+णिच्+ल्युट्] अत्याचार करना, सताना।

प्रतिपूजनम्,—पूजा [प्रति+पूज्+ल्युट्, प्रतिपूज्+अ+टाप्] 1 श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना, सम्मान प्रदर्शित करना 2. पारस्परिक अभिवादन, शिष्टाचार का विनिमय।

प्रतिपूरणम् [प्रति+पूर्+ल्युट्] 1 पूरा करना, भरना 2 (धुईसार पिचकारी द्वारा किसी तरल पदार्थ को) अन्त क्षिप्त करना।

प्रतिप्रणाम [प्रति+प्र+नम्+घञ्] बदले में किया गया अभिवादन।

प्रतिप्रदानम् [प्रति+प्र+दा+ल्युट्] 1 वापिस करना, लौटाना 2 विवाह में देना।

प्रतिप्रयाणम् [प्रति+प्र+या+ल्युट्] वापसी, प्रत्यावर्तन।

प्रति प्रश्न [प्रति+प्रच्छ्+नङ्] के बदले में पूछा गया प्रश्न 2 उत्तर।

प्रति प्रसव [प्रति+प्र+सू+अप्] 1 प्रत्यपवाद, अपवाद का अपवाद (जहाँ अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाय) तृजकाभ्या कर्तरि इत्यस्य प्रतिप्रसवोऽयम् (वाजकादिभिश्च) सिद्धा०।

प्रति प्रहार [प्रति+प्र+हृ+घञ्] बदले में प्रहार करना, थप्पड़ के बदले थप्पड़ लगाना।

प्रतिप्लवनम् [प्रति+प्लु+ल्युट्] पीछे की ओर कूदना।

प्रतिफल प्रतिफलनम् [प्रति+फल्+अच्, प्रतिफल+ल्युट्] 1 परछाईं, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, छाया 2 पारिश्रमिक, प्रतिदान 3 प्रतिहिंसा, प्रतिशोध।

प्रतिफुल्लक (वि०) [प्रति+फुल्ल्+ण्वुल्] खिलने वाला, पूरा खिला हुआ।

प्रतिबद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बन्ध्+क्त] 1 बाधा गया, बँधा हुआ, रुका हुआ 2 जोड़ा गया 3 अवरुद्ध, रुकावट डाली गई, बाधित 4 दृढ़ हुआ, जड़ा हुआ—शि० ९।८ 5 समायुक्त, अधिकार में करने वाला 6 फँसा हुआ, अन्तर्वस्त 7 दूर रक्खा हुआ 8 निराश 9 (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न रूप से संयुक्त (जैसे आग और धुआँ)।

प्रतिबन्धः [प्रति+बन्ध्+घञ्] 1 बन्धन, बाँधना 2 अवरोध, रुकावट, विघ्न—तत्र प्रतिबन्धमन्यना—रघु० ८।८०, महावी० ५।४ 3 विरोध, मुकाबला 4 आवरण, नाकेबंदी, घेरा 5 संबंध 2 (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न संयोग।

प्रतिबन्धक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्रति+बन्ध्+ण्वुल्] 1. बाँधने वाला, जकड़ने वाला, 2 रुकावट डालने वाला, अवरोध करने वाला, विघ्नकारक 3.

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, -क शास्त्र, अंकुर ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति+बन्ध्+ल्युट्] 1. बांधना, कसना 2 कैद, बन्धन 3. अवरोध, रुकावट ।

प्रतिबन्धि, -न्धी [प्रतिबन्ध्+इनि, प्रतिबन्ध+ङीष्] 1. आक्षेप 2. ऐसा तर्क जो विपक्ष पर समान रूप से प्रभाव डाले (इस अर्थ में 'प्रतिबन्दी' शब्द भी है) ।

प्रतिबाधक (वि०) [प्रति+बाध्+ण्वुल्] 1 हटाने वाला, दूर करने वाला 2. रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला ।

प्रतिबाधनम् [प्रति+बाध्+ल्युट्] हटाना, दूर करना, अस्वीकार करना ।

प्रतिबिम्बनम् [प्रतिबिम्ब+क्विप्+ल्युट्] 1. परछाई 2 तुलना -दृष्टान्त पुनरेतेया सर्वथा प्रतिबिम्बनम् —काव्य० १० ।

प्रतिबिम्बित (वि०) [प्रतिबिम्ब+क्विप्+क्त] जिसकी परछाईं पड़ी हो, दर्पण में प्रतिफलित ।

प्रतिबुद्ध (भ० क० कृ०) [प्रति+बुध्+क्त] 1 जागा हुआ, जगाया हुआ 2 पहचाना हुआ, देखा हुआ 3 प्रसिद्ध, विख्यात ।

प्रतिबुद्धि (स्त्री०) [प्रति+बुध्+क्तिन्] 1. जागरण 2 विरोधी अभिप्राय या इरादा ।

प्रतिबोध [प्रति+बुध्+घञ्] 1 जागना, जागरण, जगाया जाना -तदपोहितुमर्हसि प्रिये प्रतिबोधेन विषादमाशु मे -रघु० ८।५४, अप्रतिबोधशायिनी —५८, 'सदा के लिए सो जाने वाली' कि० ६।१२, १२।४८ 2 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 3 अनुदेश, शिक्षण 4 तर्क, तर्कना, मन शक्ति -किमुत या प्रतिबोधवत्य श० ५।२२ ।

प्रतिबोधनम् [प्रतिबुध्+णिच्+ल्युट्] 1 जगाना 2 शिक्षण, अनुदेश ।

प्रतिबोधित (वि०) [प्रति+बुध्+णिच्+क्त] 1 जगाया हुआ 2 अनुदिष्ट, शिक्षित ।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] 1 दर्शन, दृष्टि 2 प्रकाश, प्रभा 3 बुद्धि, समझ—कि० १६।२, विक्रम० १।१८, २३ 4 मेधा, प्रखर बुद्धि, विशद कल्पना, प्रज्ञा (प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता) 5. प्रतिबिंब, परछाईं 6 धृष्टता, ढिठाई । सम०—अन्वित (वि०) 1 मेधावी, प्रज्ञावान् 2 बोधक, साहसी, —मुख (वि०) साहसी, दिलेर,—हानि (स्त्री०) 1 अंधकार 2 प्रज्ञा या मेधा का अभाव ।

प्रतिभात (भू० क० कृ०) [प्रति+भा+क्त] 1 उज्ज्वल, प्रभायुक्त 2 ज्ञात, अभ्याहृत, अवगत ।

प्रतिभानम् [प्रति+भा+ल्युट्] 1 प्रकाश, दीप्ति 2 बुद्धि या समझ, ज्ञान की चमक —हि० ३।१९ 3 हाजिर जवाबी —प्रत्युत्पन्नप्रतिभत्व—कालविबोध प्रतिभानवत्त्वम् —मा० ३।११, दमघोषसुतेन कश्चन प्रतिशिष्ट प्रतिभानवानथ —शि० १६।१ ।

प्रतिभाव [प्रति+भू+घञ्] तदनुरूप वृत्ति ।

प्रतिभाषा [प्रति+भाष्+अ+टाप्] उत्तर, जवाब ।

प्रतिभास [प्रति+भास्+घञ्] 1 मन में स्फुरित होना, चमकना झलकना, (अकस्मात्) प्रतीति—काव्य-वैचित्र्य प्रतिभासादेव—काव्य० १० 2 दृष्टि, दर्शन 3 भ्रम, माया ।

प्रतिभासनम् [प्रति+भास्+ल्युट्] दृष्टि दर्शन, झलक ।

प्रतिभिन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+भिद्+क्त] 1 पारविद्ध 2 सटा हुआ, जुड़ा हुआ 3 विभक्त ।

प्रतिभू [प्रति+भू+क्विप्] 1 जमानत, प्रतिभूति, जमानत देने वाला, (उत्तरदायी होने का प्रमाणपत्र), विश्वास, सौभाग्यलाभप्रतिभू पदानाम् -विक्रम० १।९—याज्ञ० २।१०, ५०, नं० १४।४ ।

प्रतिभेदनम् [प्रति+भिद्+ल्युट्] 1 आर पार बींधना, घुसेड़ना 2 काटना, खण्डित करना, फाड़ना 3 (आँख) निकाल लेना 4 विभक्त करना ।

प्रतिभोग [प्रति+भुज्+घञ्] उपभोग ।

प्रतिमा [प्रति+मा+अङ्+टाप्] 1 प्रतिबिंब, समानता, प्रतिमा, आकृति, वपु -रघु० १६।३९ 2 समरूपता सादृश्य (प्रायः समास में यथा) कृशानुप्रतिमात् -रघु० २।४९ 3 परछाईं, प्रतिबिंब -मुखमिदु-रुज्ज्वलकपोलमत प्रतिमाच्छलेन, मुद्दशामविशत्-शि० ९।४८, ७३, रघु० ७।६४, १२।१०० 4 माप, विस्तार 5 दांतों दांतों के बीच का हाथी के सिर का भाग । सम० -गत (वि०) मूर्ति में वर्तमान,—चन्द्र प्रतिबिंबित चन्द्रमा, चन्द्रमा का प्रतिबिंब -रघु० १०।६५, इसी प्रकार —प्रतिमेदु, प्रतिमाशशाक,—परिचारक पुजारी, मूर्ति का सेवक ।

प्रतिमानम् [प्रति+मा+ल्युट्] 1 नमूना, प्रतिमूर्ति 2 प्रतिमा, मूर्ति 3 समानता, उपमा, समरूपता 4 बोझ 5 दांतों का मध्यवर्ती सिर का भाग-पृथुप्रतिमानभाग —, शि० ५।३६ 6 परछाईं ।

प्रतिमुक्त (वि०) [प्रति+मुच्+क्त] 1 धारण किया हुआ, पहना हुआ, प्रयुक्त किया हुआ 2 कसा हुआ, बांधा हुआ, जकड़ा हुआ 3 शस्त्र से सज्जित, हथियारबंद 4 मुक्त, छोड़ा हुआ 5 लौटाया हुआ, वापिस किया हुआ 6 फेंका हुआ उछाला हुआ (दे० प्रतिपूर्वक 'मुच्') ।

प्रतिमोक्ष, प्रतिमोक्षणम् [प्रति+मोक्ष्+घञ्, ल्युट् वा] मुक्ति, छुटकारा ।

प्रतिमोचनम् [प्रति+मुच्+ल्युट्] 1 शिथिल करना 2 प्रतिशोध, प्रतिहिंसा, प्रतिदान—वैरप्रतिमोचनाय —रघु० १४।४१ 3 मुक्ति, छुटकारा ।

प्रतियत्न [प्रति+यत्+नङ्] 1 प्रयास, उद्योग, चेष्टा 2 तैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन—शि० ३।५४ 3 पूर्ण या पूरा करना 4 नया गुण सिखाना—सतो गुणांतरापान प्रतियत्न—पा० २।३।५३ पर काशिका 5 अभिलाषा, इच्छा 6 विरोध, मुकाबला 7 प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, बदला 8 बदी बनाना, कैद करना 9 अनुग्रह।

प्रतियातनम् [प्रति+यत्+णिच्+ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा—जैसा कि 'वैरप्रतियातन' में।

प्रतियातना [प्रति+यत्+णिच्+युच्+टाप्] चित्र, प्रतिमा, मूर्ति—शि० ३।३४।

प्रतियानम् [प्रति+या+ल्युट्] लौटना, प्रत्यावर्तन, वापसी।

प्रतियोग. [प्रति+युज्+घञ्] 1 किसी वस्तु का प्रतिरूप होना या बनाना 2 विरोध, मुकाबला 3 अन्तर्विरोध, वचनविरोध 4 सहयोग 5 विषनिवारक औषधि, उपचार।

°तियोगिन् (वि०) [प्रति+युज्+घिनुण्] 1 विरोध करने वाला, प्रतीकारक बाधक 2 सबद्ध या तदनुरूप, किसी वस्तु का प्रतिरूप बनाने वाला, प्रायः न्यायविषयक रचनाओं में प्रयुक्त 3 सहयोग करने वाला—(पु०) 1 विरोधी, विपक्षी, शत्रु—दहत्यशेष प्रतियोगिगर्वं—विक्रम० १।१३ 2 प्रतिरूप, जोड़ का।

°तियोद्धृ (पु०) **प्रतियोधः** [प्रति+युध्+तृच्, घञ् वा] शत्रु, विपक्षी।

प्रतिरक्षणम्,—रक्षा [प्रति+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] बचाव, संधारण, रक्षा।

प्रतिरभ [प्रति+रभ्+घञ्] क्रोध, रोष।

प्रतिरव [प्रति+रु+अच्] 1 कलह, झगड़ा 2 गूंज, प्रतिध्वनि।

प्रतिरुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+रुध्+क्त] 1 अवरुद्ध, बाधित, विघ्नयुक्त 2 रुका हुआ, अन्तरित 3 अतियुक्त 4 विकलीकृत 5 वेष्टित, घेरा डाला हुआ।

प्रतिरोध [प्रति+रुध्+घञ्] 1 अटकाव, रुकावट, विघ्न 2 घेरा, नाकेबंदी 3 विपक्षी 4 छिपाना 5 चोरी, डकैती 6 निन्दा, घृणा।

प्रतिरोधक, प्रतिरोधिन् (पु०) [प्रति+रुध्+ण्वुल्, णिनि वा] 1 विपक्षी 2 लुटेरा, चोर—मालवि० ५।१० 3 रुकावट।

प्रतिरोधनम् [प्रति+रुध्+ल्युट्] विरोध करना, रुकावट डालना।

प्रतिलभ [प्रति+लभ्+घञ्] 1 हासिल करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना 2 निन्दा, गाली, खरी-खोटी (सुनाना)।

प्रतिलाभ [प्रति+लभ्+घञ्] वापिस लेना, ग्रहण करना, हासिल करना।

प्रतिवचनम्, प्रतिवचस् (नपु०) **प्रतिवाक्यम्** (स्त्री०) **प्रतिवाक्यम्** [प्रति+वच्+ल्युट्, वच्+णिच्+विवप्] उत्तर, जवाब—प्रतिवाक्यमदत्त्वैव शपमानास न चेदिभूभुजे शि० १६।२५, परभृतविरुत कल यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्—शि० ४।९।

प्रतिवर्तनम् [प्रति+वृत्+ल्युट्] लौटाना, वापिस करना।

प्रतिवसथ. [प्रति+वस्—अथच्] ग्राम, गाँव।

प्रतिवहनम् [प्रति+वह्+ल्युट्] वापिस ले जाना, वापिस ले जाने में नेतृत्व करना।

प्रतिवाद [प्रति—वद्+घञ्] 1 उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब 2 इकार करना, अस्वीकृति।

प्रतिवादिन् (पु०) [प्रति+वद्+णिनि] 1 विपक्षी 2 प्रतिपक्षी उत्तरवादी (कानून में)।

प्रतिवार, प्रतिवारणम् [प्रति+वृ+घञ्, प्रति+वृ+णिच्+ल्युट्] परे रखना, दूर रखना।

प्रतिवार्ता [प्रा० स०] वर्णन, सूचना, समाचार, संवाद।

प्रतिवासिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+वस्+णिनि] निकट रहने वाला, पड़ोस में रहने वाला—पु० पड़ोसी।

प्रतिविधात [प्रति+वि+हन्+घञ्] प्रहार के बदले प्रहार करना, बचाव।

प्रतिविधानम् [प्रति+वि+धा+ल्युट्] 1 प्रतिकार करना, विरोध में काम करना, विफल करना, विरुद्ध कार्य करना 2 व्यवस्था, क्रम 3 रोक थाम 4 स्थानापन्न संस्कार, सहकारी संस्कार।

प्रतिविधि [प्रति+वि+धा+कि] 1 प्रतिशोध 2 उपचार, प्रतिक्रिया के उपाय।

प्रतिविशिष्ट (वि०) [प्रति+वि+शास्+क्त] अत्यन्त श्रेष्ठ।

प्रतिवेश [प्रति+विश्+घञ्] 1 पड़ौसी 2 पड़ौसी का वासस्थान, पड़ौस। सम०—वासिन् (वि०) पड़ौस में रहने वाला (पु०) पड़ौसी।

प्रतिवेशिन् (वि०) (स्त्री० नी) [प्रतिवेश+इनि] पड़ौसी- दृष्टि हे प्रतिवेशिनि अणमिहाग्यस्मदगृहे दास्यसि मा० दा०, मृच्छ० ३।१४।

प्रतिवेश्य [प्रति+विश्+ण्यत्] पड़ौसी।

प्रतिवेष्टित (भू० क० कृ०) [प्रति+वेष्ट्+क्त] प्रत्यावृत्त विपर्यस्त, पीछे की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतिव्यूढ (भू० क० कृ०) [प्रति+वि+ऊह्+क्त] संग्राम व्यूह रचना में परास्त।

प्रतिव्यूह [प्रति+वि+ऊह्+घञ्] 1 शत्रु के विरुद्ध सेना की व्यूह रचना 2 संग्रह, संग्रह।

प्रतिशय [प्रति+शी+घञ्] विश्राम, विराम।

प्रतिशयनम् [प्रति+शी+ल्युट्] किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े रहना, धरना देना।

प्रतिशयित (वि०) [प्रति+शी+क्त] अपने किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना खाये पीये देवता के सामने धरना देने वाला—अनया च किलाहमें प्रतिशयिताय स्वप्ने समादिष्टम्—दश० १२१।

प्रतिशापः [प्रति+शप्+घञ्] शाप के बदले शाप, बदले में शाप।

प्रतिशासनम् [प्रति+शास्+ल्युट्] 1 आदेश देना, दूत के रूप में भेजना, आज्ञा देना 2 किसी दूत को बाहर से बुला भेजना 3 वापस बुलाना 4 विरोधी आदेश, अधिकृत कथन -अप्रतिशासन जगत्—रघु० ८।२७ (पूर्ण रूप से एक ही शासक के शासन में)।

प्रतिशिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+शास्+क्त] 1 आदिष्ट, प्रेषित शि० १६।१ 2 विसर्जित किया हुआ, अस्वीकृत 3 विख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिश्याय, प्रतिश्यायनम्, प्रतिश्यायः [प्रति+श्यै+क+टाप्, ल्युट्, घञ् वा] जुकाम, सर्दी।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] शरणगृह, आश्रम 2 घर, आवासस्थान, निवासस्थल—याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3 सभा 4 यज्ञ भवन 5 मदद, सहायता 6 प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रव [प्रति+श्रु+अप्] 1, स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2 गूंज।

प्रतिश्रवणम् [प्रति+श्रु+ल्युट्] 1 ध्यान पूर्वक सुनना मनु० २।१९५ 2 वचन देना, हामी भरना, सहमत होना 3 प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुत्, प्रतिश्रुति (स्त्री०) [प्रति+श्रु+क्विप्, क्तिन् वा] 1 प्रतिज्ञा 2 गूंज, प्रतिध्वनि रघु० १३।४०, १६।३१, शि० १७।४२।

प्रतिश्रुत (भू० क० कृ०) [प्रति+श्रु+क्त] वचन दिया हुआ, सहमत, हामी भरी हुई।

प्रतिषिद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+सिध्+क्त] 1 निषिद्ध, वर्जित, अननुमत, अस्वीकृत 2 खण्डित, प्रत्युक्त।

प्रतिषेध [प्रति+सिध्+घञ्] 1 दूर रखना, परे हटाना, हाक कर दूर कर देना, निकाल देना -विक्रम० १।८ 2 प्रतिषेध यथा 'शास्त्रप्रतिषेध' में 3 मुकरना, अस्वीकृति 4 निषेध करना, विरुद्ध कथन। सम० **अक्षरम्**, **उक्ति** (स्त्री०) मुकर जाने के शब्द, अस्वीकृति शि० ३।७५, उपमा दण्डि द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद, इसको परिभाषा न जातु शक्ति-रिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम्, कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा काव्या० २।३४।

प्रतिषेधक, प्रतिषेधृ (वि०) [प्रति+सिध्+ण्वुल्, तृच् वा] 1 हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2 मना करने वाला (पु०) विघ्नकारक, निवारक।

प्रतिषेधनम् [प्रति+सिध्+ल्युट्] 1 दूर रखना, परे हटाना, रोकना 2 निवारण करना 3 मुकरना, अस्वीकृति।

प्रतिष्कः, प्रतिष्कदः [प्रति+स्कन्द्+ड, प्रति+कस्+अच्, सुट्] जासूस, संदेशवाहक, दूत।

प्रतिष्कासः [प्रति+कस्+अच्, सुट्] 1 भेदिया, दूत 2 चाबुक, हंटर।

प्रतिष्कशः [प्रति+कष्+अच्, सुट्] चाबुक, चमड़े का कोड़ा।

प्रतिष्कंभः [प्रति+स्तभ्+घञ्, षत्व] अवरोध, रुकावट, मुकाबला, विरोध, विघ्न—बाहुप्रतिष्टभविवृद्धमन्यु—रघु० २।३२, ५९।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] 1. ठहरना, रहना, स्थिति, अवस्था—अपौरुषेयप्रतिष्ठम्—मा० ९, श० ७।६ 2 घर, निवासस्थान, जन्मभूमि, आवास—रघु० ६।२१, १४।५ 3 स्थैर्य, स्थिरता, दृढ़ता, स्थायिता, दृढ़ाधार—अप्रतिष्ठे रघुज्येष्ठे का प्रतिष्ठा कुलस्य न—उत्तर० ५।२५, अत्र खलु मे वंशप्रतिष्ठा—श० ७, वंश प्रतिष्ठा नीत का० २८०, शि० २।३४ 4 आधार, नींव, ठिकाना जैसा कि 'गृहप्रतिष्ठा' में 5. पाया, टेक, सहारा (अत) कीर्तिभाजन, विभूत अलंकार—त्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा- श० ६।२४, द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य न ३।२१, कु० ७।२७, महावी० ७।२१ 6 उच्चपद, प्रभुत्वता, उच्च अधिकार—मुद्रा० २।५ 7 ख्याति, यश, कीर्ति, प्रसिद्धि—मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः — रामा० (उत्तर० २।५) 8 संस्थापना, प्रतिष्ठापन मुद्रा० १।१४ 9 अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति, निष्पत्ति, (इच्छा की) पूर्ति औन्मुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा—श० ५।६ 10 शांति, विश्राम, विश्रान्ति 11 आधार 12 पृथिवी 13 किसी देवप्रतिमा की स्थापना 14 सोमर, हद।

प्रतिष्ठानम् [प्रति+स्था+ल्युट्] 1 आधार, नींव 2 ठिकाना, स्थिति, अवस्था 3 टाँग, पैर 4 गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर जो चन्द्रवंश के आदिकालीन राजाओं की राजधानी था—तु० विक्रम० २।५ 5 गोदावरी पर स्थित एक नगर का नाम।

प्रतिष्ठित (भू० क० कृ०) [प्रति+स्था+क्त] 1 जमाया हुआ खड़ा किया हुआ 2 स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3 रक्खा हुआ, अवस्थित 4 संस्थापित, प्रतिष्ठापित, अभिमन्त्रित 5 पूत, कार्यान्वित 6 कीमती, मूल्यवान् 7 विख्यात, प्रसिद्ध (दे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिसंविद् (स्त्री०) [प्रति+सम्+विद्+क्विप्] किसी वस्तु के विवरण का यथार्थ ज्ञान।

प्रतिसंहारः [प्रति+सम्+हृ+घञ्] 1 पीछे ले जाना,

वापिस हटाना 2 अल्पता, संपीडन 3 धारणा शक्ति, समावेश 4 परित्यक्त करना, छोड़ना।

प्रतिसंहृत (भू० क० कृ०) [प्रति+सम्+हृ+क्त] 1 वापिस लिया हुआ, पीछे को खींचा हुआ, एवं प्रतिसंहृत'-वा० १ 2 सम्मिलित करना, अन्तर्गत करना 3 संपीडित।

प्रतिसंक्रम [प्रति+सम्+क्रम्+घञ्] 1 पुनश्चूषण 2 प्रतिच्छाया, परछाईं।

प्रतिसंख्या [प्रति+सम्+ख्या+अङ्+टाप्] चेतना।

प्रतिसंचर प्रति+सम्+चर्+ट] 1 पीछे मुड़ना 2 पुनश्चूषण 3 विशेषतः विराट् जगत् का फिर प्रकृति के रूप में लीन हो जाना।

प्रतिसंदेशः [प्रति+सम्+दिश्+घञ्] संदेश का जवाब, संदेश के बदले संदेश।

प्रतिसंधानम् [प्रति+सम्+धा+ल्युट्] 1 एक स्थान पर मिलना, एकत्र होना 2 दो युगों के मध्यवर्ती संक्रमणकाल 3 उपाय, उपचार 4 आत्मनियन्त्रण, आत्मदमन 5 प्रतिज्ञा।

प्रतिसंधिः [प्रति+सम्+धा+कि] 1 पुनर्मिलन 2 गर्भाशय में प्रवेशकरण 3 दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमण काल 4 विराम, उपरम।

प्रतिसमाधानम् [प्रति-सम्+आ+धा+ल्युट्] चिकित्सा, उपचार।

प्रतिसमासनम् [प्रति+सम्+आ+अस्+ल्युट्] 1 सामना होना, जोड़ का होना 2 मुकाबला करना, विरोध करना, टक्कर लेना।

प्रतिसर ,—रम् [प्रति+सृ+अच्] कलाई या गरदन में पहनने का ताबीज,—रः 1 सेवक, अनुचर 2 कड़ा, विवाह-कङ्कण स्नानोद्गमनिमित्तेन करेण पाणि (अमृ-द्वा१)—कि० ५।३२ (=कौतुकसूत्र=मल्लि०) 3 पुष्पमाला या हार 4 प्रभात काल 5 सेना का पृष्ठभाग 6 एक प्रकार का जादू 7 घाव का पुरना, या घाव पर पट्टी बाधना।

प्रतिसर्ग [प्रति+सृज्+घञ्] 1 गौण रचना (जैसा कि ब्रह्मा के मानस पुत्रों द्वारा) 2 विघटन, प्रलय।

प्रतिसांवत्सरिक [प्रतिसंवत्सर+ठक्] भाट चारण, बंदी।

प्रतिसारणम् [प्रति+सृ+णिच्+ल्युट्] 1 घाव के किनारों की मलहमपट्टी करना 2 घाव में मरहम लगाने का उपकरण।

प्रतिसीरा [प्रति+सि+क+टाप्, दीर्घ] परदा, चिक, कनात।

प्रतिसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+सृज्+क्त] 1 भेजा गया, प्रेषित 2 प्रसिद्ध 3 पीछे ढकेला गया, अस्वीकृत 4 नशे में चूर (मल्लि के अनुसार 'प्रमत्त')।

प्रतिस्नात (भू० क० कृ०) [प्रति+स्ना+क्त] स्नान किया हुआ।

प्रतिस्नेहः [प्रा० स०] बदले में प्यार, प्रतिप्रेम या बदले में किया गया प्रेम।

प्रतिस्पंदनम् [प्रा० स०] हृदय की धड़कन।

प्रतिस्वनः, प्रतिस्वरः [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि—शि० १३।२१।

प्रतिहत (भू० क० कृ०) [प्रति+हन्+क्त] 1 उलटा मारा हुआ, पछाड़ा हुआ 2 भगाया हुआ, दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3 विरोध किया हुआ, अवरुद्ध 4 भेजा हुआ, प्रेषित 5 चूर्णित, नापसंद 6 हताश, भग्नाश। सम०—मति (वि०) घृणा करने वाला, नापसंद करने वाला।

प्रतिहति (स्त्री०) [प्रति+हन्+क्तिन्] 1 उलटकर प्रहार करना, पछाड़ना, ढकेलना 2 पलट पड़ना, परावर्तन—प्रतिहतिं ययुरर्जुनमुद्यतं—कि० १८।५, शि० ९।४९ 3 नाउम्मीदी, भग्नाशा 4 क्रोध।

प्रतिहनन [प्रति+हन्+ल्युट्] उलट कर प्रहार करना, पछाड़ देना, पलट कर मारना, आघात के बदले आघात करना।

प्रतिहर्तृ (पु०) [प्रति+हृ+तृच्] पछाड़ने वाला, हटाने वाला, पीछे ढकेलने वाला, दूर करने वाला।

प्रतिहार (वी) हारः [प्रति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 उलट कर प्रहार करना 2 दरवाजा, फाटक 3 दरबान, द्वारपाल 4 जादूगर 5 ऐन्द्रजालिक, जादूभरी चाल। सम०—भूमि (स्त्री०) (घर की) देहली कु० ३।५८,—रक्षी स्त्री द्वारपाल, प्रतिहारी रघु० ६।२०।

प्रतिहारक [प्रति+हृ+ण्वुल्] ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

प्रतिहास [प्रति+हस्+घञ्] हंसी के बदले हंसी।

प्रतिहिंसा [प्रति+हिंस्+अ+टाप्] प्रतिशोध, बदला।

प्रतिहित (भू० क० कृ०) [प्रति+धा+क्त] साथ जड़ा गया, साथ सटा दिया गया।

प्रतीक (वि०) [प्रति+कन्, नि० दीर्घ] 1 की ओर मुड़ा हुआ 2 विपर्यस्त, उलटा 3 विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत,—कः 1 अवयव, अंग—शि० १८।७९ 2 भाग, अंश,—कम् 1 प्रतिमा 2 मुँह, चेहरा 3 (किसी वस्तु का) अग्रभाग 4 (किसी श्लोक या वाक्य का) प्रथम शब्द।

प्रतीक्षणम्, प्रतीक्षा [प्रति+ईक्ष्+ल्युट्, प्रति+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1 इन्तजार करना 2 अपेक्षा, आशा 3 ख्याल, विचार, ध्यान।

प्रतीक्षित (भू० क० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+क्त] 1 जिसकी इंतजार की गई, अपेक्षा की गई 2 विचार किया गया।

प्रतीक्ष्य (सं० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+ण्यत्] 1 प्रतीक्षा किये जाने योग्य 2 कपाल या विचार के योग्य 3. श्रद्धेय, आदरणीय --रघु० ५।१४, शि० २।१०८ 4 अनुसरणीय, प्रतिपालनीय, परिपूरणीय—शि० २।१८०।

प्रतीची [प्रति+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च+खञ्, नलोपो दीर्घश्च] 1 पश्चिमी, पाश्चात्य 2 भावी, परवर्ती, अनुवर्ती।

प्रतीच्छक [प्रतिगता इच्छा यस्य प्रा० ब०, कप्] ग्रहण करने वाला।

प्रतीच्य (वि०) [प्रतीची+यत्] पश्चिम में रहने वाला पछाही, पाश्चात्यदेशवासी।

प्रतीत (भू० क० कृ०) [प्रति+इ+क्त] 1 प्रस्थित, प्रयात 2 गुजरा हुआ, बीता हुआ, गया हुआ 3 विश्वस्त, भरोसे का 4 प्रमाणित, संस्थापित 5 स्वीकृत, माना हुआ 6 पुकारा गया, ज्ञात, नामक —सोऽयं वट: श्याम इति प्रतीत: - रघु० १३।५३ 7 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 8 वृद्धसंकल्पयुक्त 9. विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला, विश्रब्ध 10 प्रसन्न, खुश—रघु० ३।१२, ५।२६, १४।४७, १६।२३ 11 प्रतिष्ठित 12 चतुर, विद्वान्, बुद्धिमान्।

प्रतीति (स्त्री०) [प्रति+इ+क्तिन्] 1 धारणा, निश्चित भरोसा--शा० ७।३१ 2 विश्वास 3 ज्ञान, निश्चय, स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान या समझ अपितु वाक्यवैचित्र्य प्रतिभासादेव चारुत्वप्रतीति काव्य० १० 4 यश, कीर्ति 5 आदर 6 खुशी।

प्रतीत्त (वि०) [प्रति+दा+क्त] वापिस दिया हुआ, लौटाया हुआ।

प्रतीत्यक (पु०) विदेह देश का नाम।

प्रतीप (वि०) [प्रतिगता आपो यत्र, प्रति+अप्+अच्, अपईप् च] 1 विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी —तत्प्रतीपपवनादि वैकृत--रघु० ११।६२ 2 उलटा, विपर्यस्त, बिगड़ा हुआ 3 पिछड़ा हुआ, प्रतिगामी 4 अवधिकर, अप्रिय 5 अड़ियल, आज्ञा का उल्लंघन करने वाला, हठी, दुराग्रही—पंच० १।४२४ 6 विघ्नकारी,-प: एक राजा का नाम, महाराज शान्तनु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम, —म् एक अलंकार का नाम जिसमें तुलना के सामान्य रूप को बदल कर उपमान की उपमेय से तुलना करते हैं--प्रतीपमुपमानस्याप्युपमेयत्वकल्पनम्, त्वल्लोचनसम रम्य तद्वत्कमलदृशो विधु:—चन्द्रा० ५।९ (और अधिक विवरण तथा परिभाषा की जानकारी के लिए काव्य० १० में वर्णित 'प्रतीप' के अन्तर्गत दे०,—म् (अव्य०) 1 इसके विपरीत 2 विपरीत क्रमानुसार 3 के विरुद्ध, के विरोध में—भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीप गम —श० ४।१८। सम० ग (वि०) 1 विरुद्ध चलने वाला 2 विपरीत, प्रतिकूल--रघु० ११।५८,—गमनम्,-गति (स्त्री०) उलटा चलना--कु० २।२५,—तरणम् धार के विरुद्ध जाना या नाव चलाना, वि० १।५,—दक्षिणा स्त्री, -वचनम् 1 लम्बन 2 दुराग्रहपूर्ण या टालमटोल करने वाला कहने का ढंग,—विधायिन् (वि०) विपरीत फलदायक (कर्ता पर ही उलटा फल रखने वाला) —मा० ५।२६।

प्रतीरम् [प्र+तीर्+क] तट, किनारा।

प्रतीवाप [प्रति+वप्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घ] 1 (वह औषधि जो काढ़े आदि में) जोड़ी जाय या मिलायी जाय 2 धातु को भस्म करना या पिघलाना 3. छूत की बीमारी, महामारी।

प्रतीवेश, प्रतीहार, प्रतीहास [प्रति+विश्—हृ—हस्+घञ्] दे० प्रतिवेश आदि।

प्रतीवेशिन् (वि०) [प्रतीवेश+इनि] दे० प्रतिवेशिन्।

प्रतीहारी [प्रतीहार+अच्+ङीष्] 1 स्त्री द्वारपाल 2 दण्डोढीवान।

प्रतुद [प्र+तुद्+क] 1 पक्षियों की एक जाति (बाज, तोता कौवा आदि) 2 चुभोने का उपकरण।

प्रतुष्टि (स्त्री०) [प्र+तुष्+क्तिन्] तृप्ति संतोष।

प्रतोद [प्र+तुद्+घञ्] 1 अङ्कुश 2 लम्बा चाबुक 3 चुभोने वाला उपकरण।

प्रतूर्ण (वि०) [प्र+त्वर्+क्त] त्वरित, क्षिप्रगामी, फुर्तीला, तेज।

प्रतोली [प्र+तुल्+घञ्+ङीष्] गली, मुख्य मार्ग, नगर की मुख्य सड़क--प्रायप्रतोलीमतुलप्रतापं —शि० ३।६४

प्रत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] 1 दिया हुआ, प्रदत्त, प्रदान किया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2 विवाह में दिया हुआ, विवाहित।

पत्न (वि०) [प्र+त्यप्] 1 पुराना, प्राचीन 2. पहला 3 परम्परा प्राप्त, प्रथागत।

प्रत्यक् (अव्य०) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1 विरुद्ध दिशा में, पीछे की ओर 2 के विरुद्ध 3 (अपा० के साथ) से पश्चिम में 4 भीतर की ओर, अन्दर की तरफ 5 पहले समय में।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्ण प्रति] 1 दृष्टिगोचर, दृश्य प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश —श० १।१ 2 उपस्थित, दृष्टिगत, आँख के सामने 3 इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियसंज्ञेय 4 स्पष्ट, विशद, साफ 5 सीधा, व्यवधानशून्य 6 सुस्पष्ट, सुव्यक्त 7 शारीरिक, भौतिक, क्षम् 1 प्रत्यक्षज्ञान, आँखों देखा साक्ष्य, इन्द्रियों द्वारा बोध, एक प्रकार का प्रमाण

इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञानम् प्रत्यक्षम्—तर्क० 2 सुव्यक्तता, सुस्पष्टता (प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षेण, प्रत्यक्षतः, या प्रत्यक्षात् रूप क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाकर निम्न अर्थ प्रकट करते हैं—1 सामने, की उपस्थिति में, की दृष्टि में 2 खुलकर, सार्वजनिक रूप से 3. सीधे, अव्यवहित रूप से 4 व्यक्तिगत रूप से 5 देखकर 6 स्पष्ट रूप से। सम०

ज्ञानम् आंखों देखी गवाही, सीधा इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान,—**दर्शिन्** (वि०) आंखों देखा गवाह, - **दृष्ट** (वि०) स्वयं देखा हुआ,—**प्रमा** सही ज्ञान या वह ज्ञानकारी जो सीधे ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त की जाय, -**प्रमाणम्** आंखों से देखा सबूत, स्वयं ज्ञानेन्द्रियों का साक्षी होना, -**फल** (वि०) स्पष्ट और दृश्य फलों के रखने वाला,—**वादिन्** (पु०) वह बौद्ध जो प्रत्यक्ष प्रमाण (आंखों देखी बात) के अतिरिक्त और किसी प्रमाण को न मानता हो,—**विहित** (वि०) सीधा और स्पष्ट विधान किया हुआ।

प्रत्यक्षिन् (पु०) [प्रत्यक्ष+इनि] आंखों देखा गवाह, प्रत्यक्ष द्रष्टा।

प्रत्यग्र (वि०) [प्रतिगतम् अग्रम् श्रेष्ठं यस्य - प्रा० ब०] 1 ताजा, नया, नूतन, अभिनव—प्रत्यग्रहणानां मांस—वेणी० ३, कुसुमशयनं नु प्रत्यग्रम्—विक्रम० ३।१० मेघ० ४, रघु० १०।५६, रत्न० १।२१ 2 दोहराया हुआ 3 विशुद्ध। सम० **वयस्** (वि०) अल्पवयस्क, जीवन की परिपक्वावस्था में, तरुण।

प्रत्यञ्च (वि०) (स्त्री० - प्रतीची, वोपदेव के मतानुसार —प्रत्यची) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1 को ओर मुड़ा हुआ 2 पश्चवर्ती 3 अनुवर्ती, भावी 4. परे किया हुआ, हटाया हुआ 4 पाश्चात्य, पश्चिम दिशा का। सम० - **अक्षम्** (प्रत्यगक्षम्) आन्तरिक अवयव, - **आत्मन्** (पु०) प्रत्यगात्मन्) वैयक्तिक जीव, आत्मा,—**आशापतिः** (प्रत्यगाशापतिः) पश्चिम दिशा का स्वामी, वरुण का विशेषण,—**उदच्** (स्त्री०) प्रत्यगुदच्) उत्तर पश्चिमी, **दक्षिणतः** (अव्य० प्रत्यग्दक्षिणतः) दक्षिणपश्चिम की ओर —**दृश्** (स्त्री०) (प्रत्यग्दृश्) आन्तरिक आंखों, अन्तर्दृष्टि,—**मुख** (वि०) (प्रत्यङ्मुख) 1. पश्चिमाभिमुखी 2 मुंह मोड़े हुए, **स्रोतस्** (वि०) (प्रत्यक्स्रोतस्) पश्चिम की ओर बहने वाला —शि० ४।६६ पर मल्लि०, (स्त्री०) नर्मदा नदी का विशेषण।

प्रत्यञ्चित (वि०) [प्रति+अञ्च्+क्त] सम्मानित, पूजित, अर्चित।

प्रत्यञ्जनम् [प्रति+अञ्ज्+ल्युट्] 1. मोजन करना 2. मोजन।

प्रत्यभिज्ञा [प्रति+अभि+ज्ञा+अङ्+टाप्] आनना, पहचानना—अप्रत्यभिज्ञामिव मामवलोक्य—मा० १।२५।

प्रत्यभिज्ञानम् [प्रति+अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1 पहचानना —प्रत्यभिज्ञानरत्न च रामायावर्षयत्कृती—रघु० १२।६।

प्रत्यभिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+ज्ञा+क्त] पहचाना हुआ।

प्रत्यभिभूत (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+भू+क्त] पराजित, जीता हुआ।

प्रत्यभियुक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+युज्+क्त] बदले में अभियोग लगाया हुआ।

प्रत्यभियोग [प्रति+अभि+युज्+घञ्] 1. अभियोक्ता के विरुद्ध दोषारोप, बदले में दोषारोपण करना —याज्ञ० २।१०।

प्रत्यभिवादः, प्रत्यभिवादनम् [प्रति+अभि+वद्+णिच् +घञ्, ल्युट् वा] नमस्कार के बदले नमस्कार, (प्रणाम के बदले आशीर्वाद)—मनु० २।१२६।

प्रत्यभिस्कन्दनम् [प्रति+अभि+स्कन्द्+ल्युट्] जवाबी नालिश, प्रत्यारोप।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] 1 धारणा, निश्चित विश्वास, - मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः - मालवि० १।२, सजातप्रत्यय —पञ्च० ४ 2. विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, विश्वास —कु० ६।२०, शि० १८।६३, भर्तृ० ३।६० 3. संबोध, विचार, भाव, सम्मति 4. यकीन, निश्चयता 5. जानकारी, अनुभव, सज्ञान—स्थानप्रत्ययात् आ० ७ 'स्थान की दृष्टि से अन्दाजा लगाते हुए' इसी प्रकार—आकृति प्रत्ययात्—मालवि० १, मेघ० ८ 6. कारण, आधार, क्रिया का साधन—कु० ३।१८ 7. प्रसिद्धि, यश, कीर्ति 8 सुप्, तिङ् आदि प्रत्यय जो शब्द व धातुओं के आगे लगते हैं, कृदन्त व तद्धित के प्रत्यय—सि० १४।६६ 9. शपथ 10. पराजयी 11. प्रचलन, अभ्यास, 12. छिद्र 13 बुद्धि, समझ। सम०—**कारक**,—**कारिन्** (वि०) विश्वास पैदा करने वाला, भरोसा देने वाला, (णी) मुहर, नामांकित मुद्रा या अंगूठी।

प्रत्ययित (वि०) [प्रत्यय+इतच्] 1. विश्वस्त, भरोसे का 2. विश्वासी, विश्वास पूर्वक कहा या लिखा हुआ।

प्रत्ययिन् (वि०) [प्रत्यय+इनि] 1 निर्भर करने वाला, विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वासपात्र, विश्वास या भरोसे के योग्य।

प्रत्यर्थ (वि०) [प्रति+अर्थ्+अच्] उपयोगी, युक्तिसंगत, —**र्थम्** 1 उत्तर, जवाब 2 सचूता, विरोध।

प्रत्यर्थक [प्रति+अर्थ+कन्] प्रतिपक्षी, विरोधी।

प्रत्यर्थिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+अर्थ्+णिनि] विपक्षी, विरोधी, सचूतापूर्ण,—सार्थिव मवत्योरीश्वरनियोगप्रत्यर्थी—विक्रम० ३, (पु०) 1. विपक्षी, विरोधी, शत्रु 2 प्रतिद्वन्द्वी, सत्र, जोड़ का, बराबरी

मुखस्य प्रत्यर्थी 3 (कानून में) प्रतिवादी -स धर्मस्थसक्ष शब्ददर्थिप्रत्यर्थिना स्वयम्—रघु० १७।३९, मनु० ८।७९, याज्ञ० २।६। सम०—भूत (वि०) मार्ग में रुकावट, बाधक बना हुआ—कु० १।५९।

प्रत्यर्पणम् [प्रति+ऋ+णिच्+ल्युट्, पुकागम] वापिस देना, लौटा देना -सीतामत्यर्पयेत्तस्मै—रघु० १५।८५।

प्रत्यर्पित (भू० क० कृ०) [प्रति+ऋ+णिच्+क्त, पुकागम] लौटाया हुआ, वापिस दिया हुआ।

प्रत्यवमर्श, **र्षः** [प्रति+अव+मृश्+घञ्] 1 गंभीर चिंतन, गहन मनन 2 परामर्श, तसौहत 3 प्रत्युपसंहार।

प्रत्यवरोधनम् [प्रति+अव+रुध्+ल्युट्] रुकावट, विघ्न।

प्रत्यवसानम् [प्रति+अव+सो+ल्युट्] खाना या पीना —पा० १।४।५२।

प्रत्यवसित (वि०) [प्रति+अव+सो+क्त] खाया हुआ, पीया हुआ।

प्रत्यवस्कन्द, **नम्** [प्रति+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] विलंब तक (जिसको कि प्रतिवादी उत्तर के रूप में प्रस्तुत करता है परन्तु वह आरोप के रूप में नहीं समझा जाता, प्रतिवादी का वह उत्तर जिसमें वह वादी के अभियोग का खंडन करता है।

प्रत्यवस्थानम् [प्रति+अव+स्था+ल्युट्] 1 अस्वीकरण 2 बाधा, विरोध 3 यथास्थिति, पूर्वस्थिति।

प्रत्यवहार [प्रति+अव+हृ+घञ्] 1 वापिस खींचना 2 विश्व का विनाश, (सृष्टि का) प्रलय -सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतु रघु० २।४४।

प्रत्यवाय [प्रति+अव+अय्+घञ्] 1 हानि, न्यूनता 2 अवरोध, रुकावट उत्तर० १।९ 3 विरुद्ध या विपरीत मार्ग, वैपरीत्य मनु० ४।२४५ 4 पाप, अधर्म 5, पापमयता—अनुत्पत्तिं तथा चान्ये प्रत्यवायस्य मन्वते —आपदेव०।

प्रत्यवेक्षणम्, प्रत्यवेक्षा [प्रति+अव+ईक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] ध्यान रखना, खयाल करना, देखरेख करना रघु० १७।५३।

प्रत्यस्तमय [प्रति+अस्तम्+अय्+अच्] 1 (सूर्य का) छिपना 2 अन्त, समाप्ति।

प्रत्याक्षेपक (वि०) (स्त्री० पिका) [प्रति+आ+क्षिप्+ण्वुल्] ताना मारने वाला, व्यंग्यपूर्ण, उपहासजनक चिढ़ाने वाला।

प्रत्याख्यात (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+ख्या+क्त] 1 मना किया हुआ 2 मुकरा हुआ 3 प्रतिषिद्ध निषिद्ध 4 एक ओर रक्खा हुआ, अस्वीकृत 5 पीछे ढकेला हुआ।

प्रत्याख्यानम् [प्रति+आ+ख्या+ल्युट्] 1 पीछे हटाना, अस्वीकार करना 2 मुकरना, मना करना, इनकार 3 अवहेलना 4 भर्त्सना 5 निराकरण।

प्रत्यागति (स्त्री०) [प्रति+आ+गम्+क्तिन्] वापिस आना, लौटना।

प्रत्यागम, **—प्रत्यागमनम्** [प्रति+आ+गम्+अप्, ल्युट् वा] लौटना, वापिस आना।

प्रत्यादानम् [प्रति+आ+दा+ल्युट्] वापिस लेना, पुनर्ग्रहण, पुन प्राप्ति।

प्रत्यादिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+दिश्+क्त] 1 नियत 2 सूचित 3 अस्वीकृत, पीछे ढकेला हुआ 4 हटाया हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 5 तिरोहित, अंधकार में डाला हुआ—रघु० १०।६८ 6 चेताया हुआ, सावधान किया हुआ।

प्रत्यादेश [प्रति+आ+दिश्+घञ्] 1 आदेश, हुक्म 2 मंजूरी, घोषणा 3 मना करना, मुकरना, अस्वीकृति, पीछे हटाना, निराकरण—प्रत्यादेशाय खलु भवतो धीरता कल्पयामि -मेघ० ११४, ९५, श० ६।९ 4 तिरोहित करना, ग्रस्त करना, तिरोधान 5 लज्जित करने वाला, अपकारादृत करने वाला या प्रत्यादेशो रूपयतिताया प्रिय -विक्रम० १, का० ५ 5 सावधानी, चेतावनी ० विलंब रूप से दिया सावधानता, अतिप्राकृतिक चेतावनी।

प्रत्यानयनम् [प्रति+आ+नी+ल्युट्] वापिस लाना, लौटा लाना।

प्रत्यापत्ति (स्त्री०) [प्रति+आ+पद्+क्तिन्] 1 वापसी 2 अरुचि सांसारिक विषयों के प्रति विराग, वैराग्य।

प्रत्याम्नाय [प्रति+आ+म्ना+घञ्] अनुमान प्रक्रिया का पांचवां अंग अर्थात् निगमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आवृत्ति)।

प्रत्यायं [प्रति+अय्+घञ्] चुनौती, कर।

प्रत्यायक (वि०) [प्रति+आ+इ+णिच्+ण्वुल्] 1 प्रमाणित करने वाला व्याख्या करने वाला 2 विश्वास दिलाने वाला, भरोसा उत्पन्न करने वाला।

प्रत्यायनम् [प्रति+आ+इ+णिच्+ल्युट्] 1 (दुलहन का) घर ले जाना, विवाह करना 2 (सूर्य का) छिपना।

प्रत्यालीढम् [प्रति+आ+लिह्+क्त] निशाना लगाने समय का विशेष आसन (विप० आलीढ)।

प्रत्यावर्तनम् [प्रति+आ+वृत्+ल्युट्] लौटना, वापिस आना।

प्रत्याश्वस्त (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+श्वस्+क्त] आश्वासन दिया हुआ, जिलाया हुआ, ताजा दम किया हुआ, ढाढस बंधाया हुआ।

प्रत्याश्वसनम् [प्रति+आ+श्वस्+घञ्] फिर से सांस लेना, (सांस का) फिर लौट आना, फिर चलने लगना।

प्रत्याश्वासनम् [प्रति+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] ढाढस बंधाना, सान्त्वना देना।

प्रत्यासत्ति (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] 1 (समय और स्थान की दृष्टि से) अत्यंत सामीप्य, संसक्ति 2 घनिष्ठ संपर्क 3 सादृश्य।

प्रत्यासन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+सद्+क्त] समीप, निकट, संसक्त, सटा हुआ।

प्रत्यास (सा) र [प्रति+आ+सृ+अप्, धञ् वा] 1 सेना का पृष्ठभाग 2 एक व्यूह के पीछे दूसरा व्यूह—ऐसी व्यूह रचना या मोर्चा बन्दी।

प्रत्याहरणम् [प्रति+आ+हृ+ल्युट्] 1 वापिस लेना, पुनः ग्रहण करना, वसूली 2 रोकना 3 इन्द्रियों का नियन्त्रण करना।

प्रत्याहार. [प्रति+आ+हृ+घञ्] 1 पीछे हटाना, वापिस बुलाना, प्रत्यावर्तन 2 पीछे रखना, रोकना 3 इन्द्रिय दमन करना 4 सृष्टि का विघटन या प्रलय 5 (व्या० में) एक ही ध्वनि के उच्चारण में कई अक्षरों का बोध, सूत्र के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम सार्वत्रिक वर्ण तक जोड़ना या कई सूत्रों के होने पर आद्यन्त सूत्र के अन्तिम वर्ण तक यथा 'अ इ उ ण्' सूत्र का प्रत्याहार 'अण्' तथा 'अ इ उ ण्, ऋलृक्, ए ओङ्, ऐ औच्' इन चार सूत्रों का प्रत्याहार 'अच्' (स्वर) है प्रत्याहार है. व्यंजनों का प्रत्याहार 'हल्' तथा सभी वर्णों का द्योतक 'अल्' प्रत्याहार है।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वच्+क्त] उत्तर दिया गया, बदले में कहा गया, जवाब दिया हुआ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति+वच्+क्तिन्] उत्तर, जवाब।

प्रत्युच्चार, प्रत्युच्चारणम् [प्रति+उद्+चर्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आवृत्ति, दोहराना।

प्रत्युज्जीवनम् [प्रति+उद्+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन होना, जीवन का फिर संचार होना, फिर से जी उठना (आल० भी)।

प्रत्युत (अव्य०) [प्रति+उत ह० य०] 1 इसके विपरीत—कृतमपि महोपकारं पश्य इव पीत्वा निरानन्दं, प्रत्युत हन्तुं यतते काकादरसोदरं खलो जगति—भामि० १।७६ 2 बल्कि, भी 3 दूसरी ओर।

प्रत्युत्क्रम, —क्रमणम्, —क्रान्ति. (स्त्री०) [प्रति+उद्+क्रम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1 (किसी कार्य को करने का) बीड़ा उठाना 2 युद्ध की तैयारी 3 शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4 गौण कार्य जो मुख्य कार्य में सहायक हो 5 किसी व्यवसाय का समारम्भ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति+उद्+स्था+ल्युट्] 1 किसी के विरुद्ध उठना 2 युद्ध की तयारी करना 3 किसी अभ्यागत का स्वागत करने के लिए (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) अपने आसन से उठना—मनु० २।२१०।

प्रत्युद्यत (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+यम्+क्त] (किसी मित्र या शत्रु आदि को) मिलने के लिए उठा हुआ।

प्रत्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+पद्+क्त] 1 पुनरुत्पादित, फिर से उत्पन्न 2 उद्यत, तत्पर, फुर्तीला 3 (गणित०) गुणा किया हुआ,—नम् गुणा। सम०——मति (वि०) समय पर जिसकी बुद्धि ठीक कार्य करे, हाजिर जवाब 2 साहसी, दिलेर 3 तीव्र, तीक्ष्ण।

प्रत्युदाहरणम् [प्रति+उद्+आ+हृ+ल्युट्] मुकाबले का उदाहरण, विपक्ष का उदाहरण।

प्रत्युद्गत (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+गम्+क्त] अतिथि का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन स्वरूप) अपने आसन से उठा हुआ 'प्रत्युद्गतो मां भरत ससैन्य' रघु० १३।६४, १३।६२ 2 किसी के विरुद्ध आगे बढ़ा हुआ।

प्रत्युद्गति (स्त्री०), **प्रत्युद्गमः, प्रत्युद्गमनम्** [प्रति+उद्+गम्+क्तिन्, अप्, ल्युट् वा] अतिथि का सत्कार करने के लिए अपने आसन से उठना या बाहर जाना।

प्रत्युद्गमनीयम् [प्रति+उद्+गम्+अनीयर्] स्वच्छ वस्त्र का जोड़ा—गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ प्रत्युद्गमनीय वस्त्रा' का पाठान्तर) दे० 'उद्गमनीय'।

प्रत्युद्धरणम् [प्रति+उद्+हृ+ल्युट्]। पुनः प्राप्त करना, दी हुई वस्तु को वापिस लेना 2 फिर उठाना।

प्रत्युद्यमः [प्रति+उद्+यम्+अप्] 1 प्रतिसंतुलन, समतोलन 2 रोक थाम, प्रतिक्रिया- भर्तृ० ८।८८, पाठान्तर।

प्रत्युद्यात (वि०) [प्रति+उद्+या+क्त] दे० 'प्रत्युद्गत'।

प्रत्युद्यमनम [प्रति+उद्+नम्+ल्युट्] पुनः उठना, फिर उछलना, पलटा खाकर आना।

प्रत्युपकार. [प्रति+उप+कृ+घञ्] किसी की कृपा या सेवा का बदला चुकाना, उपकार का प्रतिदान, बदले में सेवा।

प्रत्युपक्रिया [प्रति+उप+कृ+श, इयङ्, टाप्] सेवा का प्रतिफल।

प्रत्युपदेश. [प्रति+उप+दिश्+घञ्] बदले में परामर्श या उपदेश कु० १।३४।

प्रत्युपन्न (वि०) [प्रति+उप+पद्+क्त] दे० 'प्रत्युत्पन्न'।

प्रत्युपमानम् [प्रति+उप+मा+ल्युट्] 1 समरूपता का प्रतिरूप 2 नमूना, आदर्श 3 मुकाबले की तुलना —विक्रम० २।३।

प्रत्युपनामम् (भू० क० कृ०) [प्रति+उप+नम्+क्त] वापिस प्राप्त, फिर लिया हुआ।

प्रत्युपदेशः,—देशनम् [प्रति+उप+दिश+घञ्, ल्युट् वा] आज्ञा-पालन कराने के लिए किसी को भेजना।

प्रत्युपस्थानम् [प्रति+उप+स्था+ल्युट्] आसपास, पड़ौस।

प्रत्युप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वप्+क्त] 1 बदला हुआ, या जमाया हुआ, जटित, भरा हुआ 2 बोया हुआ 3 स्थिर किया हुआ, गाड़ा हुआ, दृढ़ता पूर्वक टिकाया हुआ, या जमाया हुआ—मा० ५।१०, उत्तर० ३।३५, ४६।

प्रत्यूषः, प्रत्यूषम् (नपु०) [प्रत्योषन्ति नाशयति अन्धकारम् —प्रति+उष्+क, प्रति+इष्+असि] प्रभात, भोर, तड़का।

प्रत्यूषः,—षम् [प्रति+ऊष्+क] भोर, प्रभात, तड़का —प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषाय —मेघ० ३१, —षः 1 सूर्य 2 आठ वसुओं में से एक वसु का नाम।

प्रत्यूषम् (नपु०) [प्रति+ऊष+असि] भोर, प्रभात, तड़का।

प्रत्यूह [प्रति+ऊह+घञ्] रुकावट, बाधा, विघ्न, —विस्मय. सर्वथा हेयं प्रत्यूह सर्वकर्मणाम्—हि० २।१५।

प्रथ् 1 (भ्वा० आ०—प्रथते, प्रथितम्) 1 (ऐश्वर्य का) बढ़ाना 2 (कीर्ति, अफवाह आदि का) फैलाना—तथा पशोऽस्य प्रथते मनु० ११।१५ 3 सुविख्यात होना, प्रसिद्ध होना—अतस्तदाख्यया तीर्थं पावनं भुवि पप्रथे —रघु० १५।१०१, अहोऽस्मि लोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम —भग० १५।१८, शि० ९।१६, १५।२३, कु० ५।७, मेघ० २४, रघु० ५।६५, ९।७६ 4. प्रकट होना, उदय होना, प्रकाश में आना—अमी नु तासा मदनो नु पप्रथे—कि० ८।५३ 11 (चुरा० उभ०—प्रथयति —ते, प्रथित) 1 फैलाना, उद्घोषणा करना—सज्जना एव साधूना प्रथयन्ति गुणोत्करम्—दृष्टान्त० १२, भट्टि० १७।१०७ 2 दिखलाना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, सूचित करना परम वपु प्रथयतीव जयम्—कि० ६।२५, ५।३, शि० १०।२५, रत्न० ४।१३, श० ३।१६ 3 बढ़ाना विस्तृत करना, ऊँचा करना, अधिक करना, बड़ा करना—भर्तृ० २।४५, 4 बोलना।

प्रथनम् [प्रथ्+ल्युट्] 1 फैलाना, विस्तार करना 2 बखेरना 3 फेंकना, आगे की ओर बढ़ाना 4 बतलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना 5 वह स्थान जहां कोई चीज फैलायी जाय।

प्रथम (वि०) (पु०, कर्तृ०, ब० व० प्रथमे या प्रथमा) [प्रथ्+अमच्] 1. पहला, सबसे आगे का—रघु० ३।४४, हि० २।३६, कि० २।४४ 2 प्रमुख, मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठतम, बेजोड़, अनुपम—शि० १५।४२, मनु० ३।१४७ 3 आदि कालीन, अत्यन्त प्राचीन, प्राक्कालीन प्राथमिक 4. पहले का, पूर्वकालीन, पहला, इससे पूर्व का—प्रथमसुकृतापेक्षया—मेघ० १७, रघु० १०।६७ 5 (व्या० में) प्रथम पुरुष (=अन्य पुरुष या पाश्चात्यपदविज्ञान के अनुसार तृतीय पुरुष), म 1 प्रथम (=अन्य) पुरुष 2 वर्ग का प्रथम व्यंजन, —मा कर्तृकारक,—मम् (अव्य०) 1 पहले, प्रथमतः, सर्वप्रथम, कु० ७।२४, रघु० ३।४ 2 पहले ही, पहले ही से, पूर्वकाल में—रघु० ३।६८ 3 तुरन्त, तत्काल 4 पहले यात्रायें चोदयामास ते शकैं प्रथम यान्—रघु० ४।२८, उत्तिष्ठेत्प्रथम चाम्भ चरम चैव संविशेत्—मनु० २।१९४ 5 अभी अभी, हाल में,—**प्रथमम्, अवन्तरम्, ततः, पश्चात्** पहले, इसके बाद। **सम०** **अर्ध**, **-अंश** पूर्वार्ध, —**आश्रम** चार आश्रमों में से पहला आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम,—**इतर** (वि०) 'प्रथम की अपेक्षा और' अर्थात् दूसरा,—**उक्षित** (वि०) पहले उच्चारण किया हुआ उवाच धात्रा प्रथमोदितं वच —रघु० ३।२५,—**कल्पः** चलने के लिए बढ़िया मार्ग, प्रथम नियम,—**कल्पित** (वि०) 1 पहले सोचा हुआ 2 पद या महत्त्व की दृष्टि से सर्वोच्च,—**ज** (वि०) सबसे पहले पैदा हुआ,—**दर्शनम्** पहला दर्शन,—**दिवसः** सबसे पहला दिन—मेघ० २,—**पुरुष** प्रथम पुरुष, अन्य पुरुष (अंग्रेजी पद्धति के अनुसार 'तृतीय पुरुष'), —**यौवनम्** युवावस्था का प्रारंभ, किशोरावस्था, —**वयस्** (नपु०) बचपन, शैशव,—**विरहः** पहली बार का वियोग,—**व्याकरण** 1 अत्यंत पूज्य वैयाकरण 2 व्याकरण में शिक्षित,—**साहस.** दण्ड की निम्नतम या प्रथम स्थिति,—**सुकृतम्** पूर्वकृत्य या सेवा।

प्रथा [प्रथ+अङ्+टाप्] ख्याति, प्रसिद्धि—शि० १५।२७।

प्रथित (भू० क० कृ०) [प्रथ्+क्त] 1 बढ़ाया हुआ, विस्तार किया हुआ 2 प्रकाशित, उद्घोषित, फैलाया हुआ, घोषणा की हुई,—प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमित्रादीनाम्—मालवि० १ 3 दिखाया गया प्रदर्शन किया गया, प्रकट किया गया, प्रकाशित किया गया 4 विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत (दे० 'प्रथ्' भी)।

प्रथिमन् (पु०) [पृथोर्भाव—पृथु+इमनिच्] चौड़ाई, विशालता, विस्तार, महत्ता—प्रथिमानं दधानेन अघनेन घनेन वा—भट्टि० ४।१७, (गुणा) प्रारम्भसूक्ष्मा प्रथिमानमापुः—रघु० १८।४८।

प्रथिवि (स्त्री०) [=पृथिवी, पृषो०] पृथ्वी, धरती।

प्रथिष्ठ (वि०) [पृथु+इष्ठन्, प्रथादेशः] सबसे बड़ा

सबसे चौड़ा, अत्यन्त विशाल ('पृथु' की अतिशयावस्था)।

प्रथीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पृथु+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा, विशाल 'पृथु' की तुलनावस्था)।

प्रथु (वि०) [प्रथ्+उ] व्यापक, दूर दूरतक फैला हुआ।

प्रथुक [प्रथ्+उक] चिउड़े, चौले, (तु० पृथुक)।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] 1 दाईं ओर रक्खा हुआ, या खड़ा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2 सम्मानपूर्ण, श्रद्धालु 3 शुभ, शुभलक्षणयुक्त,—ण,—णा, —णम् दाईं ओर से दाईं ओर को घूमना जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव उस व्यक्ति या वस्तु की ओर हो जिसकी परिक्रमा की जा रही है, श्रद्धापूर्ण अभिवादन जो इस प्रकार प्रदक्षिणा द्वारा किया जाय —कु० ७।७९, याज्ञ० १।२३२,—णम्(अव्य०)1 बाईं ओर से दाईं ओर को 2 दाईं ओर को, जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव प्रदक्षिणा की गई व्यक्ति या वस्तु की ओर रहे 3 दक्षिण दिशा में, दक्षिण दिशा की ओर —मनु० ४।८७, (**प्रदक्षिणी कृ**) बाईं ओर से दाईं ओर को जाना (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) —प्रदक्षिणीकृत्य सञ्जोहुतावग्नीन्—शि० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुत हुताशनम्- -रघु० २।७१)। सम०

अर्चिस् (वि०) जिसकी दाईं ओर को ज्वालाएँ उठती हों, दाईं ओर को ज्वालाएँ रखने वाला—प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे—रघु० ३।१४ (स्त्री०) दाईं ओर को मुड़ी हुई ज्वालाएँ—रघु० ४।२५,—क्रिया प्रदक्षिणा करना, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए सम्माननीय व्यक्ति को दाईं ओर रखना—रघु० १।७६ – **वेदिका** सहन, आंगन।

प्रदग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दह्+क्त] जलाया गया, भस्म किया गया।

प्रदत्त (भ० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] दे० 'प्रत'।

प्रदर [प्र+दृ+अप्] 1 तोड़ना, फाड़ना 2 अस्थिभंग होना, दरार पड़ना, फटाव, छिद्र, बिवर 3 सेना का तितर बितर होना 4 तीर 5 स्त्रियों को होने वाला एक रोग।

प्रदर्प [प्रा० स०] घमंड, अहंकार।

प्रदर्श [प्र+दृश्+घञ्] 1 दृष्टि, दर्शन 2 निर्देश, आज्ञा।

प्रदर्शक (वि०) [प्र+दृश्+ण्वुल्] दिखलाने वाला, प्रकट करने वाला।

प्रदर्शनम् [प्र+दृश्+ल्युट्] 1 दृष्टि, दर्शन जैसा कि 'धर्मप्रदर्शन' में 2 प्रकट होना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, प्रदर्शनी, नुमायश 3 अध्यापन व्याख्या करना 4 उदाहरण।

प्रदर्शित (भू०क०कृ०)[प्र+दृश्+णिच्+क्त] दिखलाया हुआ, सामने रक्खा हुआ, प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ, प्रदर्शन किया हुआ 2 बतलाया गया 3 सिखाया हुआ 4 व्याख्या किया गया, उद्घोषित किया गया।

प्रदलः [प्र+दल्+अच्] बाण, तीर।

प्रदवः [प्र+दु+अप्] जलना, ज्वालाएँ उठना।

प्रदातृ (पु०) [प्र+दा+तृच्] 1 देने वाला, दानी 2 उदार व्यक्ति 3 (विवाह में) कन्या दान करने वाला 4 इन्द्र का विशेषण।

प्रदानम् [प्र+दा+ल्युट्] 1. देना, प्रदान करना, अर्पण करना, प्रस्तुत करना वर°, अग्नि°, काष्ठ° आदि 2 (विवाह में) कन्या दान करना, कन्या° 3 समर्पित करना, अध्यापन करना, शिक्षा देना, विद्या° 4 भेंट, दान, उपहार 5. अंकुश। सम०—शूर अति दानशील पुरुष, दाता।

प्रदानकम् [प्रदान+कन्] पुरस्कार, भेंट, दान, उपहार।

प्रदायकम् [प्र+दा+ण्वुल्, युक्] उपहार, भेंट।

प्रदिः, प्रदेय [प्र+दा+कि, यत् वा] उपहार, भेंट।

प्रदिग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दिह्+क्त] चिकनाई लपेटी हुई, पोती हुई, मालिश किया हुआ,—ग्धम् विशेष प्रकार से तला हुआ मांस।

प्रदिश् (स्त्री०) [प्रगता दिरम्य—प्र+दिश्+क्विप्] 1 संकेत करना 2 आदेश, निदेश, आज्ञा 3 परिधि के अन्तर्वर्ती बिन्दु जैसे कि नैर्ऋती, आग्नेयी, ऐशानी और वायवी।

प्रदिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दिश्+क्त] 1 दिखाया हुआ, संकेतित 2 निर्दिष्ट, आदिष्ट 3. स्थिर किया हुआ, आदेश लागू किया हुआ, नियोजित किया हुआ —रघु० २।३९।

प्रदीपः [प्र+दीप्+णिच्+क] 1 दीपक, चिराग (आलं० से भी) अनेल पूरा सुरतप्रदीपा—कु० १।१०, रघु० २।२४, १६।४, कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीप —रघु० ६।७४, 'कुल का दीपक या अवतंस' – ७।२९ 2 जो जानकारी कराता है, या बात को खोलकर कहता है, व्याख्या, विशेषतः ग्रन्थों के नामों के अन्त में प्रयुक्त, यथा महाभाष्य प्रदीप, काव्यप्रदीप आदि।

प्रदीपन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1 जलाना 2 उद्दीपित करना, उत्तेजित करना,—नम् सुलगाने की क्रिया, जलाना, उद्दीप्त करना,—नः एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+दीप्+क्त] 1 सुलगाया हुआ, जलाया हुआ, प्रज्वलित, प्रकाशित 2 देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, प्रकाशमान 3 उठाया हुआ, विस्तारित—प्रदीप्तशिरसमाशीविषम्— दश० 4 उद्दीपित, उत्तेजित (क्षुधा आदि)।

प्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दुष्+क्त] 1 बिगड़ा

हुआ, भ्रष्ट 2 दूषित, मलिन, पापमय 3 लम्पट, स्वेच्छाचारी।

प्रदूषित (भू० क० कृ०) [प्र+दूष्+णिच्+क्त] 1 भ्रष्ट, विकृत, विकृत, पतित 2 अपवित्र, मलिन, भ्रष्ट।

प्रदेय (स० कृ०) [प्र+दा+यत्] दिए जाने के योग्य, (समाचार आदि) दिये जाने के लायक, सम्बोधन किये जाने के उपयुक्त -रघु० ५।१८, ३१।

प्रदेश[1] [प्र+दिश्+घञ्] 1 संकेत करना, इशारा करना 2 स्थान, क्षेत्र, जगह, देश, प्रदेश, मंडल -पितुः प्रदेशास्तव देवभूमय --कु० ५।४५, रघु० ५।६०, इसी प्रकार कठ° तालु° हृदय° आदि 3 बित्ता, बालिश्त 4 निश्चय, निर्धारण 5 दीवार 6 (व्या० में) उदाहरण।

प्रदेशनम् [प्र+दिश्+ल्युट्] 1 संकेत करना 2 उपदेश, अनुदेश 3 भेंट, उपहार, चढ़ावा विशेष कर देवताओं को या श्रेष्ठतर व्यक्तियों को।

प्रदेशा (शि)नी [प्रदेशन+ङीप्, प्र+दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी अंगुली, अभिसूचक अंगुली।

प्रदेह [प्र+दिह्+घञ्] 1 लेप करना, तेल या औषधि आदि की मालिश करना 2 लेप, पलस्तर।

प्रदोष (वि०) [प्रकृष्टः दोषो यस्य--प्रा० ब०] बुरा, भ्रष्ट,—ष 1 दोष, त्रुटि, पाप, अपराध 2 अव्यवस्थित स्थिति, विद्रोह, बगावत 3 सन्ध्याकाल, रात्रि का आरंभ -तम स्वभावास्तेऽप्यन्ये प्रदोषमनुयायिन -शि० २।७८ (यहाँ प्रदोष का अर्थ मुख्य रूप से 'भ्रष्ट' और 'पतित' है),-व्रजसुन्दरीजनमनस्तोषप्रदोष —गीत० ५, कु० ५।४४, रघु० १।९३, ऋतु० १।११। सम० —काल: सन्ध्या समय, रात्रि का आरंभ, --तिमिरम् सन्ध्याकालीन अंधेरा, शाम का झुटपुटा—काम प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वम---मृच्छ० १।३५।

प्रदोह [प्र+दुह्+घञ्] दुहना, दूध निकालना।

प्रद्युम्न [प्रकृष्टो द्युम्न बलं यस्य --प्रा० ब०] कामदेव का विशेषण, कामदेव [यह कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र था। जब यह छः वर्ष की आयु का था तो शंबर नामक दैत्य ने इसका अपहरण कर लिया क्योंकि उसे यह पहले ही ज्ञात हो गया था कि प्रद्युम्न के द्वारा उसकी मृत्यु होगी। शंबर ने उस बालक को घबराते हुए समुद्र में फेंक दिया जहाँ उसे एक मछली निगल गई। एक मछुवे ने इस मछली को पकड़ लिया और शंबर के सामने ला रक्खा। जब इस मछली को काटा गया तो इसके पेट से एक सुन्दर बालक मिला। नारद मुनि की इच्छानुसार शंबर की गृहिणी मायावती ने इस बालक का पालनपोषण किया। जब यह बालक जवान हो गया तो स्वयं मायावती का मन इसके सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया। परन्तु प्रद्युम्न ने मायावती का मातृत्व को दूषित करने वाली इस प्रकार की भावनाओं के कारण बुरा-भला कहा, क्योंकि वह तो उसे माता समझता था। परन्तु जब उसे बतलाया गया कि वह विष्णु का पुत्र है, उसे शंबर ने समुद्र में फेंक दिया था, तो उसने क्रोध से आगबबूला होकर शंबर को युद्ध के लिए ललकारा, तथा अपनी माया के द्वारा उस का वध कर दिया। उसके पश्चात् वह और मायावती कृष्ण के घर गए जहाँ नारद मुनि ने कृष्ण और रुक्मिणी को बतलाया कि यह तो उनका अपना पुत्र है तथा मायावती उनकी पत्नी है।

प्रद्योत [प्रकृष्टो द्योत - प्रा० स०] 1 जग मगाना, प्रकाश, रोशनी 2 आभा, प्रकाश, कान्ति 3 प्रकाश की किरण 4 उज्जयिनी के एक राजा का नाम जिसकी पुत्री से वत्स के राजा उदयन ने विवाह किया था--प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे--मेघ० ३२ (मल्लि० इसे 'प्रक्षिप्त' समझते हैं), रत्न० १।१०।

प्रद्योतनम् [प्र+द्युत्+ल्युट्] 1 जगमगाना, चमकना 2 प्रकाश ३ सूर्य।

प्रद्रव [प्र+द्रु+अप्] दौड़ना, पलायन।

प्रद्राण [प्र+द्रु+घञ्] भाग जाना, पलायन, प्रत्यावर्तन, जल निकलना 2 द्रुतगमन, तेजी से जाना।

प्रद्वार, प्रद्वारम् [प्रगतं द्वारम्--प्रा० स०] दरवाजे या फाटक के सामने का स्थान।

प्रद्वेष, प्रद्वेषणम् [प्र+द्विष्+घञ्, ल्युट् वा] नापसन्दगी, घृणा, अरुचि।

प्रधनम् [प्र-धा+क्यु] 1 युद्ध, लड़ाई, संग्राम, संघर्ष, -प्रहित प्रधनाय माधवानहमाकार्यिष्ये महीभृता--शि० १६।५२, क्षेत्र क्षत्रप्रधनशिक्षणं कौरवैर्न तदुजेथा -मेघ० ६८, रघु० ११।७७, महावी० ६।३३ 2 युद्ध में लूट का माल 3 विनाश 4 फाड़ना, तोड़ना चीरफाड़।

प्रधमनम् [प्र+धम्+ल्युट्] 1 लंबा सांस लेना 2 मुंघनी, नस्य।

प्रधर्ष [प्र+धृष्+घञ्] हमला, आक्रमण 2 बलात्कार।

प्रधर्षणम्, णा [प्र+धृष्+णिच्+ल्युट] 1 हमला आक्रमण 2 बलात्कार, दुर्व्यवहार, अपमान।

प्रधर्षित (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+णिच्+क्त] 1 हमला किया गया, आक्रान्त 2 क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 3 घमंडी, अहंकारी।

प्रधान (वि०) [प्र+धा+ल्युट्] 1 मुख्य, मूल, प्रमुख, बड़ा, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ जैसा कि प्रधानामात्य, प्रधानपुरुष आदि में—मनु० ७।२०३ 2 मुख्य रूप से अन्तर्हित, प्रचलित प्रबल,—नम् 1 मुख्य पदार्थ, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तु, अधिष्ठाता मुख्य न

परिचया मलिनात्मना प्रधानम् शि० ७।६१, गंगा० १८, प्रयोगप्रधान हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, शमप्रधानेषु तपोधनेषु श० २।७, रघु० ६।७९ 2 प्रथम विकासकर्ता, जन्मदाता, भौतिक सृष्टि का स्रोत, प्रथम जीवाणु जिसमें से यह समस्त भौतिक संसार विकसित हुआ है (सांख्य० के अनुसार)—न पुनरपि प्रधानवादी अशब्दत्व प्रधानस्यासिद्धमित्याह —शारी०,दे० 'प्रकृति' भी 3 परमात्मा 4 बुद्धि 5 किसी विश्लेषण का मुख्य अंग, क, -नम् 1 राजा का मुख्य सेवक या सहचर (उसका मन्त्री या अन्य विश्वस्त पुरुष) 2 महानुभाव, राजसभासद 3 महावत, —अङ्गम् 1 किसी वस्तु की मुख्य शाखा 2 शरीर का मुख्य अंग 3 राज्य का प्रधान या प्रमुख व्यक्ति। —अमात्य प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री,—आत्मन् (पु०) विष्णु का विशेषण, धातु शरीर का मुख्य तत्त्व अर्थात् वीर्य, शुक्र, पुरुष 1 प्रमुख व्यक्ति (राज्य का), 2 शिव का विशेषण,—मन्त्रिन् (पु०) राज्य का सबसे बड़ा मन्त्री, वासस् (नपुं०) मुख्य वस्त्र, वृष्टि (स्त्री०) वर्षा की भारी बौछार।

प्रधावन [प्र+धाव+ल्युट्] वायु, हवा नम् भाग देना, घी देना।

प्रधि [प्र+धा+कि] 1 पहिये की नाभि या परिधि —शि० १५।७९, १७।४७ 2 कुआँ।

प्रधी (वि०) [प्रकृष्टा धीर्यस्य - प्रा० ब०] कुशाग्रबुद्धि, (स्त्री०) बड़ी बुद्धि, प्रज्ञा।

प्रधूपित (भू० क० कृ०) [प्र+धूप्+क्त] 1 सुवासित, सुगन्धयुक्त 2 गर्माया हुआ, तपाया हुआ 3 प्रज्वलित 4 संतप्त, ता 1 कष्टग्रस्त स्त्री 2 वह दिशा जिस ओर सूर्य अब गया हो।

प्रधृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+क्त] 1 तिरस्कार पूर्वक बलात् किया गया 2 घमंडी, अहंकारी, दम्भी या अभिमानी।

प्रध्यानम् [प्र+ध्यै+ल्युट्] 1 गहन विचार या विमर्श 2 विचार या विमर्श।

प्रध्वंस [प्र+ध्वंस्+घञ्] सर्वथा विनाश, संहार। सम० —अभाव विनाशजनित अभाव, चार प्रकार के अभावों में से एक, जिसमें विनाश से अभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे कि किसी वस्तु की उत्पत्ति के पश्चात्।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र+ध्वंस्+क्त] संहार किया हुआ, पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ।

प्रनप्तृ (पु०) [प्रगतो नप्तारं जनकतया प्रा० स०] पौत्र का पुत्र, प्रपौत्र।

प्रनष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+नश्+क्त] 1 अन्तर्धान, लुप्त, अदृश्य 2. खोया हुआ 3 मिटा हुआ, मृत 4 बरबाद, समुच्छिन्न, उन्मूलित।

प्रनायक (वि०) [प्रगतो नायको यस्मात् प्रा० स० ब०] 1 जिसका नेता विद्यमान न हो 2 नायक या पथ-प्रदर्शक से रहित।

प्रनाल:,-ली (स्त्री०) [प्रा० स०] दे० प्रणाल और प्रणाली।

प्रनिधानम् [प्र+नि+हन्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रनृत्त (वि०) [प्र+नृत्+क्त] नाचने वाला, नम् नाच।

प्रपद [प्रा० स०] पैर का अग्रिम सिरा।

प्रपञ्च [प्रा० स०] 1 प्रदर्शन, प्रकटीकरण नागप्राय प्रपञ्च —का० १४१ 2 विकास, फैलाव, विस्तार शि० २०।४४ 3 विस्तारण, विशद व्याख्या, स्पष्टीकरण, विवरण 4 सुविस्तारता, प्रसार बाहुल्य —जल प्रपञ्चेन 5 बहुविधता, विविधता 6 ढेर, प्राचुर्य, मात्रा 7 दर्शन, दृश्यवस्तु 8 माया, जालसाजी 9 दृश्यमान जगत् जो केवल माया, और नानात्व का प्रदर्शन मात्र है। सम० —बुद्धि (वि०) धूर्त, कपटी, —वचनम् विस्तृत प्रवचन, प्रभारयुक्त बातचीत।

प्रपञ्चयति (नामधातु-पर०) 1 दिखलाना, प्रदर्शन करना प्रपञ्चय पञ्चमम् गीत० १० 2 विस्तार करना, प्रसार करना।

प्रपञ्चित (भू० क० कृ०) [प्र+पञ्च्+क्त] 1 प्रदर्शित 2 विस्तारित, प्रसारित 3 फैलाया गया, पूरी व्याख्या की गई, विशदीकृत 4 भूल जाने वाला, भटका हुआ 5 धोखे में आया हुआ, छला हुआ।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] 1 उड़ जाना 2 गिराना, अवपात 3 अवतरण 4 मृत्यु, विनाश 5 खड़ी चट्टान, ढलवाँ चट्टान।

प्रपदम् [प्रा० स०] पैर का अग्रभाग।

प्रपदीन (वि०) [प्रपद+अच्] पैर के अग्रभाग से संबद्ध, या अग्रभाग तक विस्तृत।

प्रपन्न (भू० क० कृ०) [प्र+पद्+क्त] 1 पधारने वाला, पहुँचने या जाने वाला 2 आश्रय ग्रहण करने वाला, अपनाने वाला—कु० ३।५, ५।५९ 3 शरण लेने वाला, संरक्षण ढूंढने वाला, प्रार्थी, दीन, याचक —शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग० २।७ 4 अनुसरण करने वाला 5 सुसज्जित, युक्त, आधिपत्य प्राप्त—श० १।१ 6 प्रतिज्ञात 7 हासिल, प्राप्त 8 बेचारा, कष्टग्रस्त।

प्रपन्नाट [प्रपन्न+अल्+अण्, डलयोरभेद] दे० 'प्रपुन्नाट'।

प्रपर्ण (वि०) [प्रपतितानि पर्णानि यस्य - प्रा० ब०] पत्तों से रहित (वृक्ष),—र्णम् गिरा हुआ पत्ता।

प्रपलायनम् [प्र+परा+अय्+ल्युट्, रस्य ल] भाग खड़ा होना, प्रत्यावर्तन।

प्रपा [प्र+पा+अङ+टाप्] 1 प्याऊ व्याख्यास्थानान्यमलसलिला यस्य कृपा प्रपाश्च—विक्रमांक० १८।७८ 2 कूआँ, कुण्ड मनु० ८।३१९ 3 पशुओं को पानी पिलाने का स्थान, खेल 4 पानी का भंडार। सम०—पालिका घटोहियों को जल पिलाने वाली स्त्री विक्रमांक० १।८९, १३।१०, वनम् शीतोद्यान।

प्रपाठक [प्रकृष्ट पाठोऽत्र प्रा० ब०] 1 पाठ, व्याख्यान 2 किसी का अध्याय या भाग।

प्रपाणि [प्रकृष्ट पाणि - प्रा० स०] 1. हाथ का अगला भाग 2 हाथ की खुली हथेली।

प्रपात [प्र+पत्+घञ्] 1 चले जाना, विदायगी 2 नीचे गिरना, अवपात—मनोरथानामतटप्रपात श० ६।९, कु० ६।५७ 3 आकस्मिक आक्रमण 4 वारिप्रवाह, झरना, झाल, वह स्थान जिसके ऊपर पानी गिरता रहता है रघु० २।२६, 5 नट, बेला, 6 खड़ी चट्टान, ढलवा चट्टान 7 गिरजाना, झड़ जाना —यथा 'केशप्रपात' 8 उत्सर्जन, प्रस्रवण, स्खलन —जैसा कि 'वीर्यप्रपात' में 9 किसी चट्टान से अपने आपको नीचे गिरा देना 10 उड़ान की एक विशेष रीति।

प्रपातनम् [प्र+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, (भूमि पर) गिराना।

प्रपादिक [प्रा० स०] मोर।

प्रपानम् [प्र+पा+ल्युट्] पीना, पेय पदार्थ।

प्रपानकम् [प्रपान+कन्] एक प्रकार का पेय।

प्रपितामह [प्रकर्षेण पितामह प्रा० स०] 1 पड़ बाबा पड़दादा 2 कृष्ण का विशेषण भग० ११।३९ 3 ब्रह्मा की उपाधि, ही पड़दादी।

प्रपितृव्य [प्रा० स०] ताऊ।

प्रपीडनम् [प्र+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1 भींचना, निचोड़ना 2 रक्तस्रावावरोधक औषधि।

प्रपीत (ता) (वि०) [प्र+पा (प्याय्)+क्त] सूजा हुआ, फूला हुआ।

प्रपुन्नाट (का) द, [प्रकर्षेण पुन्नाट्यति-प्र+पुम्+नट्+णिच्+अण्] चकमर्द नाम का वृक्ष, चकवड़।

प्रपूरणम् [प्र+पूर+ल्युट्] 1 पूरा करना, भरना, पूर्ति करना 2 संनिविष्ट करना, सुई लगाना 3 सन्तुष्ट करना, तृप्त करना 4 सबद्ध करना।

प्रपूरित (भू० क० कृ०) [प्र+पूर्+क्त] भरा हुआ।

प्रपृष्ठ (वि०) [प्रा० ब०] विशिष्ट पीठ वाला।

प्रपौत्र [प्रा० स०] पड़पोता मालवि० १।७८,—त्री पड़पोती।

प्रफुल्ल (भू०क०कृ०) [प्र+फुल्+क्त] 1 खिला हुआ, पूर्ण विकसित—लोध्रद्रुम सानुमत प्रफुल्लम् रघु० २।२९ 'प्रफुल्ल' का पाठान्तर)।

प्रफुल्लिका (स्त्री०) [प्र+फुल्+क्तिन्] खिलना, विस्तरण, पुष्पित होना।

प्रफुल्ल (भू० क० कृ०) [प्र+फल्+क्त, उत्वम् लत्व च] 1 पूरा खिला हुआ मजरित, मुकुलित—न हि प्रफुल्ल सहकारमेत्य वृक्षान्तर काङ्क्षति षट्पदाली—रघु० ६।७९, २।२९, कु० ३।४५ ७।११ 2 खिले हुए फूल की भाँति फैली हुई या विस्तारयुक्त (आँख आदि) 3 मुस्कराता हुआ 4 प्रमुदित, उल्लसित, प्रसन्न। सम०—नयन, नेत्र,—लोचन (वि०) हर्ष के कारण खिली हुई आँखों वाला,—वदन (वि०) हर्षोत्फुल्ल या हसमुख, हसमुख चेहरे वाला।

प्रबद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बध्+क्त] 1 बाँधा हुआ, बद्ध हुआ, कसा हुआ 2 रोका हुआ, अवरुद्ध, अटकाया हुआ।

प्रबद्धृ (पु०) [प्र+बध्+तृच्] प्रणेता, ग्रन्थकार।

प्रबन्ध [प्र+बन्ध्+घञ्] 1 बधन, जोड़ या गाँठ 2 अविच्छिन्नता, सातत्य, नैरन्तर्य, अविच्छिन्न श्रेणी या परम्परा विच्छेद माप भुवि यस्तु कथाप्रबन्ध—का० २३९, क्रियाप्रबन्धादयमध्वराणाम् रघु० ६।२३, ३।५८ मा० ६।३ 3 अविच्छिन्न या सुसगत वर्णन या प्रवचन अनुज्ञितार्थसबन्ध प्रबन्धो दुरुदाहर शि० २।७३ 4 साहित्यिक कृति या रचना, विशेषत काव्यरचना प्रथितयशसा भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीना प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध आदि वास० 5 व्यवस्था, योजना, कल्पना जैसा कि 'कपटप्रबध' में। सम० कल्पना झूठमूठ की कहानी, किसी तथ्य के उपस्तर पर आधारित कल्पनाकृति प्रबधकल्पना श्लोकसख्या प्राज्ञा कथा विदु।

प्रबन्धनम् [प्र—बन्ध्+ल्युट्] बधन, जोड़ या गाँठ।

प्रबर्ह (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

प्रबर (ला) हृ (वि०) [प्र+बृ (वृ) हृ+अच्] सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम।

प्रबल (वि०) [प्रकृष्ट बल यस्य प्रा० ब०] 1 बहुत मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, शूरवीर (पुरुष) रघु० ३।६० ऋतु० ३।२३ 2 प्रचड, मजबूत, तीव्र अत्यधिक, बहुत बड़ा प्रबलपुरोवातया वृष्ट्या —मालवि० ४।२, प्रबला वेदनाम् रघु० ८।५० 3 महत्त्वपूर्ण 4 भरपूर 5 भयानक, विनाशकारी।

प्रबह (ला) हिका [प्र+बृ (वृ) ह्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] दे० 'प्रहेलिका'

प्रबाधनम् [प्र+बाध्+ल्युट्] 1 अत्याचार, प्रपीडन 2 अस्वीकृति, मुकरना 3 दूर रखना।

प्रबाल (ला) क, लम्] [प्र+बृ (वृ)+ल्+णिच्+अच्] 1 कोपल, अकुर, किसलय—अपि प्रवालमासाम-

मुबन्धि दीयताम्—कु० ५।३४, १।४४, ३।८, रघु० ६।१२, १३।४९ 2. मूंगा 3 बीजा की गरदन,—स 1 शिव 2. अग्नि। सम०—अक्षतरुकः 1 लाल अक्षतरुक वृक्ष 2. मूंगे का वृक्ष,—कृष्ण् लाल कमल, —कृष्ण् लाल चन्दन की लकड़ी,—भस्मन् (नपु०) मूंगे की भस्म।

प्रवाहु [प्रकृष्टो बाहु—प्रा० स०] भुजा का अग्रभाग, पहुंचा।

प्रवाहुकम् (अव्य०) [प्रवाहु+कप्] 1 ऊँचाई पर 2 उसी समय।

प्रबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बुध+क्त] 1 जगाया हुआ, जागा हुआ 2 बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर 3 जाना, जानकार 4 पूरा खिला हुआ, फैला हुआ 5 कार्यारंभ करने वाला, या कार्यान्वित होने वाला (जाहु, मन आदि)।

प्रबोध [प्र+बुध्+घञ्] 1 जागना (आल० भी) जागरण, होश में आना, चेतना—अप्रबोधाय सुप्तस्य —रघु० १२।५० मोहादभूत्कथंतर प्रबोध - १४। ५६ 2 (फूलों का) खिलना, फैलना 3 जागरण, नींद का अभाव 4 सतर्कता, सावधानी 5. ज्ञान, समझ, बुद्धिमत्ता, भ्रम को दूर करना, यथार्थ ज्ञान —यथा 'प्रबोधचन्द्रोदय' में 6 सान्त्वना 7 किसी सुप्त द्रव्य में सुप्त का पुनर्जीवन।

प्रबोधन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+बुध्+णिच्+ ल्युट्] जागरण, जगाना,—नम् 1 जागते रहना 2 जाग, जगाना 3 सचेत होना 4. ज्ञान, बुद्धिमत्ता 5. शिक्षण, उपदेश देना 6. किसी सुप्त द्रव्य को सुप्त का पुनर्जीवन।

प्रबोधिनी (वि) नी [प्रबोधन+ङीप्, प्र+बुध्+णिच्+ णिनि+ङीप्] देव उठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् चार मास की नींद लेने के पश्चात् जागते हैं।

प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र+बुध्+णिच्+क्त] 1 जागा हुआ, जगाया हुआ 2 शिक्षण, प्राप्त, सूचना दिया हुआ।

प्रभञ्जनम् [प्र+भञ्ज्+ल्युट्] टुकड़े टुकड़े करना, नः हवा, विनाशकर आँधी, झंझावात- मे० १।६१, पञ्च० १।१२२।

प्रभद्र [प्रगत भद्र यस्मात्—प्रा० ब०] नीम का पेड़।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] स्रोत, मूल—अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३, अकिंचन जन् प्रभव स तपसाम् —पंच०, रघु० ९।७५ 2 जन्म, पैदायश 3 नदी का उद्गमस्थान—तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौर तुषारै —मेघ० ५२ 4. उत्पत्ति का कारण, (माता, पिता आदि) जन्मदाता—तमस्या. प्रभवमवगच्छ —रघु० १ 5 प्रणेता, रचयिता—कु० २।५ 6. जन्म स्थान 7. शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य, भव्य गरिमा (प्रभाव) 8. विष्णु की उपाधि 9 (समास के अन्त में) उत्पन्न होने वाला, व्युत्पन्न -सूर्यप्रभवो वश —रघु० १।२, कु० ३।१५।

प्रभविष्णु (पु०) [प्र+भू+इष्णुच्] शासक, महाप्रभु।

प्रभविष्णु (वि०) [प्र+भू+इष्णुच्] मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली,—ष्णु. 1 प्रभु, स्वामी —यत्प्रभाविष्णवे रोचते—स० २ 2 विष्णु की उपाधि।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] 1 प्रकाश दीप्ति, कान्ति, जगमगाहट, चमक-प्रभास्वि शशिसूर्यमा भग० ७।८, प्रभा पतङ्गस्य—रघु०२।१५,३१,६।१८, ऋतु० १।१९, मेघ० ४७ 2 प्रकाश की किरण 3 धूप घड़ी पर सूरज की छाया 4 दुर्गा की उपाधि 5 कुबेर की नगरी का नाम 6 एक अप्सरा का नाम। सम०—कर 1 सूर्य —रघु० १०।७४ 2 चन्द्रमा 3 अग्नि 4 समुद्र 5 शिव का विशेषण 6 एक विद्वान् लेखक का नाम, मीमांसा दर्शन की उस एक विचारधारा के प्रवर्तक, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है,—कीट जुगनू, -तरल (वि०) जगमगाता हुआ न प्रभातरल ज्योतिरुदेति वसुधातलात्—शि० १।२६,—मण्डलम् प्रकाश का एक वृत्त, परिवेश—कु० १।२४, ६।४ रघु० ३।६०, १४। १४,—वेष्टित (वि०) कान्तियुक्त, कान्ति का प्रसारक विक्रम० ४।३४।

प्रभाग [प्र+भज्+घञ्] 1 भाग, टुकड़ी 2 (गणित०) भिन्न का भिन्न।

प्रभात (भू० क० कृ०) [प्र+भा+क्त] जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो—नन् प्रभाता रजनी —शि० ४, —तम् दिन निकलना, पौ फटना।

प्रभातम् [प्र+भा+ल्युट्] प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, उद्योति, चमक।

प्रभावः [प्र+भू+घञ्] 1 कान्ति, दीप्ति, उजाला 2 गरिमा, यश, महिमा, तेज, भव्य कान्ति- प्रभावमानिव लक्ष्यते स० १ 3 सामर्थ्य, शौर्य, शक्ति, अजेयता- पंच० १।७ 4 राजोचित शक्ति (तीन शक्तियों में से एक) 5. अतिमानव शक्ति, अलौकिक-शक्ति रघु० २।४१,६२, ३।४०, विक्रम० १, २, ५, महानुभावता। सम०—ज (वि०) राजशक्ति से उत्पन्न प्रभाव से युक्त।

प्रभावनम् [प्र+भाव्+ल्युट्] व्याख्या, अर्थकरण।

प्रभास. [प्र+भास्+घञ्] दीप्ति, सौन्दर्य, कान्ति, —सः, - सम् द्वारका के निकट स्थित एक सुविख्यात तीर्थस्थान।

प्रभासनम् [प्र+भास्+ल्युट्] प्रकाशित होना, जगमग होना, चमकना।

प्रभास्वर (वि०) [प्र+भास्+वरच्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार।

प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+भिद्+क्त] 1 अलग किया हुआ, खंडित, फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ 2 टुकड़े २ किया हुआ 3 काटा हुआ, वियुक्त किया हुआ 4 मुकुलित, विकसित, खिला हुआ 5 बदला हुआ, परिवर्तित 6 विकंपित, विह्वल 7 शिथिलित, ढीला 8 नशे में चूर, मदमस्त—कु० ५।८० (दे० प्रपूर्वक भिद्),—द्र मतवाला हाथी। सम०—अञ्जनम् काजल।

प्रभु (वि०) (स्त्री०—भ्वी,ऊ—वी) [प्र+भू+डु] 1 बलवान्, मजबूत, शक्तिशाली—ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुं प्रहर्तुं किमुतान्यहिंसा रघु० २।६२ समाधिभेदप्रभवा भवन्ति कु० ३।४० 3 ओर का—प्रभुमल्ला मल्लाय—महा०, भू 1 अधिपति, स्वामी प्रभुर्भूपुंसवनस्य यः शि० १।४९ 2 राज्यपाल, शासक, सर्वोच्च अधिकारी 3 स्वामी, मालिक 4 पारा 5 विष्णु 6 शिव 7 ब्रह्मा 8 इन्द्र। सम०—भक्त (वि०) अपने स्वामी में अनुरक्त, राजभक्त (क्त) बढ़िया घोड़ा, भक्ति (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति, स्वामिभक्त।

प्रभुता,—त्वम् [प्रभु+तल्+टाप्, प्रभु+त्व] 1 आधिपत्य, सर्वोपरिता, स्वामित्व, शासन, अधिकार श० ५।२५, विक्रम० ४।१२ 2 मिल्कियत।

प्रभूत (भू० क० कृ०) [प्र+भू+क्त] 1 उद्भूत, उत्पन्न 2 प्रचुर, विपुल 3 असंख्य, अनेक 4 परिपक्व, पूर्ण 5 ऊँचा, उत्तुंग 6 लंबा 7 प्रधानत्व में। सम०—**यवसेन्धन** (वि०) जहाँ हरीघास और इंधन की बहुतायत हो, **वयस्** (वि०) वयोवृद्ध, बूढ़ा, उमरदराज़।

प्रभूति (स्त्री०) [प्र+भू+क्तिन्] 1 उद्गम, मूल 2 शक्ति, सामर्थ्य 3 पर्याप्तता।

प्रभूति [प्र+भू+क्तिन्] 1 आरंभ, शुरू (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि समास के अन्त में प्रयुक्त इन्द्रप्रभृतयो देवा आदि।—(अव्य०) 2 से, से लेकर शुरू करके (अपा० के साथ) शैशवात्प्रभृति पालिता पितृभ्याम् उत्तर० १।४५ रघु० २।३८,—**अद्यप्रभृति** आज (अद्य) से लेकर, अत प्रभृति, तत प्रभृति आदि।

प्रभेद [प्र+भिद्+घञ्] 1 फाड़ना, चीरना, खोलना 2 प्रभाग, विभाग 3 हाथी के गण्डस्थल से मद का बहना। रघु० २।३७ 4 अन्तर, भेद 5 प्रकार या किस्म।

प्रभ्रंश [प्र+भ्रंश्+घञ्] गिरना, गिरकर अलग हो जाना।

प्रभ्रंशु [प्र+भ्रंश्+अकुच्] नाक का एक रोग, पीनस।

प्रभ्रंशित (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+णिच्+क्त] 1 फेंका गया, डाल दिया गया 2 वञ्चित।

प्रभ्रंशिन् (वि०) [प्र+भ्रंश्+णिनि] टूटकर गिरना, झड़ना।

प्रभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+क्त] गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, भ्रष्ट सिर पर विराजमान मुकुट की शिखा पर धारण की गई फूल-माला, शिखाव-लम्बिनी फूलमाला।

प्रभ्रष्टकम् [प्रभ्रष्ट+कन्] दे० 'प्रभ्रष्ट'।

प्रमग्न (भू० क० कृ०) [प्र+मज्+क्त] डूबा हुआ, गोता दिया हुआ डुबोया हुआ।

प्रमत (भू० क० कृ०) [प्र+मन्+क्त] विचारा हुआ।

प्रमत्त (भू० क० कृ०) [प्र+मद्+क्त] 1 नशे में चूर, मदोन्मत्त श० ४।१ 2 उन्मत्त, पागल 3 लापरवाह, उपेक्षक, असावधान, असावधान, अनपेक्ष (प्राय अधि० के साथ) 4 उन्मार्गगामी, भूल करने वाला (अपा० के साथ) स्वाधिकारात्प्रमत्त—मेघ० १, 5 चौपट करने वाला 6 स्वेच्छाचारी, लम्पट। सम०—गीत (वि०) असावधानतापूर्वक गाया हुआ,—चित्त (वि०) लापरवाह असावधान, बेखबर।

प्रमथ [प्र+मथ्+अच्] 1 घोड़ा 2 शिव के गण (जो भूत प्रेत माने जाते हैं) जो उसकी सेवा में रत हैं कु० ७।९५। सम०—**अधिप, नाथ, पति** शिव की उपाधि।

प्रमथनम् [प्र+मथ्+ल्युट्] 1 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, सताना करना 2 वध, हत्या 3 मन्थन करना, बिलोना।

प्रमथित (भू० क० कृ०) [प्र+मथ्+क्त] 1 प्रपीड़ित कष्टग्रस्त 2 कुचला हुआ 3 कतल किया हुआ, वध किया हुआ, मा० ३।१८ 4 अच्छी भांति बिलोया हुआ, तक्र जल रहित छाछ, मट्ठा।

प्रमद (वि०) [प्रकृष्टो मदो यस्य—प्रा० ब०] 1 मतवाला नशे में चूर (आल० से भी) 2 आवेशपूर्ण 3 लापरवाह 4 स्वेच्छाचारी बदचलन,—द्रः 1. हर्ष, प्रसन्नता, खुशी शि० ३।५४ १३।२ 5 धतूरे का पौधा। सम०—**कानन्म्**, **वनम्** राजकीय अन्तःपुर से जुड़ा हुआ प्रमोद वन वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करता है।

प्रमदक (वि०) [प्रमद+कन्] लम्पट, कामुक।

प्रमदनम् [प्र+मद्+ल्युट्] कामेच्छा।

प्रमदा [प्रमद+अच्+टाप्] 1. सुन्दरी नवयुवती रघु० ९।२१, श० ५।१७ 2. पत्नी या स्त्री कु० ४।१२, रघु० ८।७२ 3 कन्याराशि। सम०—**कानन्म्**, **वनम्** राजकीय अन्तःपुर के साथ जुड़ा हुआ प्रमोद

उद्यान (जहाँ रानियाँ विहार करती हैं), अम' 1. नवयुवती, तरुणी 2. स्त्री।

प्रमत्तर (वि०) [प्र+मद्+क्वरच्] लापरवाह, अनवधान, असावधान।

प्रमनस् (वि०) [प्रकृष्टं मनो यस्य—प्रा० ब०] 1 खुश, हर्षयुत, प्रसन्न, आनन्दित।

प्रमन्यु (वि०) [प्रकृष्टो मन्यु यस्य—प्रा० ब०] 1 कोधाविष्ट, चिड़चिड़ा चिढ़ा हुआ (अधि० के साथ) रघु० ७।३४ 2 कष्टग्रस्त शोकान्वित, शोकसंतप्त।

प्रमय' [प्र+मी+अच्] 1. मृत्यु 2 बरबादी, नाश, निधन 3 वध, हत्या।

प्रमर्दनम् [प्र+मृद्+ल्युट्] मसल डालना, नष्ट करना, कुचल देना, नः विष्णु का विशेषण।

प्रमा [प्र+मा+अङ्+टाप्] 1 प्रतिबोध, प्रत्यक्षज्ञान 2. (तर्क० में) सही भाव, विशुद्ध ज्ञान, यथार्थ जानकारी, ठीक ठीक प्रत्यय (यथा रजते इद रजतमिति ज्ञानम् तर्क०)।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] 1 (लंबाई चौड़ाई) माप -रघु० १८।३८ 2 आकार, विस्तार, परिमाण (लंबाई चौड़ाई) 3 मान, मानक—पृथिव्या स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थित मुद्रा० २।२१ 4 सीमा, परिमाण 5 साक्ष्य, शहादत, प्रमाण 6 अधिकारी, सम्मोदन, निर्णेता, निर्णायक, वह जिसका शब्द प्रमाण माना जाय श्रुत्वा देव प्रमाणम् पंच० १. 'यह सुनकर श्रीमान् ही निश्चय करेंगे (कि क्या करना चाहिए)'—आर्यमिश्रा प्रमाणम्—मालवि० १. मुद्रा० १।१, श० १।२२, व्याकरणे पाणिनि प्रमाणम् 7 सत्य ज्ञान, यथार्थ प्रत्यय या भाव 8 प्रमाण की रीति, यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का उपाय (नैयायिक केवल चार प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक अनुपलब्धि और अर्थापत्ति दो और मानते हैं। सांख्य केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं)—० 'अनुमद' भी 9 मुख्य, मूल 10 एकता 11 वेद, शास्त्र, धर्मग्रन्थ 12 कारण, हेतु, (प्रमाणी कृ) 1 अधिकारी मानना या समझना 2 आज्ञा मानना, अनुसरण करना 3 साबित करना, सिद्ध करना 4 यथोचित भाग बाँटना। सम० अधिक (वि०) सामान्य से अधिक, अपरिमित, अत्यधिक- श० १।३०,—अन्तरम् प्रमाण की अन्य रीति, अभाव प्रमाणशून्यता, -ज्ञ(—वि०) (तार्किक की भाँति) प्रमाण पद्धति का जानकार, (ज्ञः) शिव का विशेषण,—दृष्ट (वि०) अधिकारी द्वारा स्वीकृत, पत्रम् लिखित अधिकारपत्र, पुरुषः विवाचक, निर्णायक, मध्यस्थ,—बचनम्, वाक्यम् अधिकृत वक्तव्य, -शास्त्रम् 1 वेद, धर्मशास्त्र 2 तर्क विज्ञान, —सूत्रम् नापने की डोरी।

प्रमाणयति (ना० धा० पर०) अधिकृत समझना, प्रमाणस्वरूप मानना हि० १।१०।

प्रमाणिक (वि०) [प्रमाण+ठन्] 1 'नाप' का आकार ग्रहण करने वाला 2 प्रमाण या अधिकार का रूप धारण करने वाला।

प्रमातामह. [प्रकृष्टो मातामह—प्रा० स०] 1 परनाना ही परनानी।

प्रमाथः [प्र+मथ्+घञ्] 1 प्रपीडन, संताप देना, सताना 2 क्षुब्ध करना, विलोना 3 वध, हत्या, विनाश सैनिकानां प्रमाथेन सत्यमोजायितं त्वया —उत्तर० ५।३१, ४ 4. हिंसा, अत्याचार 5 बलात्कार, बलपूर्वक अपहरण।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र+मथ्+णिनि] 1 यन्त्रणा देने वाला, तंग करने वाला, संपीड़ित करने वाला, कष्ट देने वाला, दुःख पहुँचाने वाला क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम्—मालवि० ३।२, मा० २।१, कि० ३।१४ 2 वध करने वाला, विनाशकारी 3 क्षुब्ध करने वाला, गतिमान् करने वाला —भग० २।६०, ६।३४ 4 फाड़ने वाला, गिराने वाला, पछाड़ने वाला रघु० ११।५८ 5 काट कर गिराने वाला कि० १७।३१।

प्रमाद. [प्र+मद्+घञ्] 1 अवहेलना असावधानी, अनवधान, लापरवाही, भूल-चूक - ज्ञातुं प्रमादस्खलितं न शक्यम्—श० ६।२६, वी० १ 2 मादकता, पागलपन, उन्मत्तता 4 गलती, भारी भूल, गलत निर्णय 5 दुर्घटना, उत्पात, संकट, भय - अहो प्रमाद मा० ३, उत्तर० ३।

प्रमाथनम् [प्र+मी+णिच्+ल्युट्, पुक्] वध, हत्या।

प्रमार्जनम् [प्र+मृज्+णिच्+ल्युट्] मिटा देना, रगड़ देना, धो देना।

प्रमित (भू० क० कृ०) [प्र+मा (मि)+क्त] 1 नपा तुला, सीमित 2 कुछ, थोड़ा प्रमितविषया शक्तिर्विदल्—महावी० १।५१, शि० १६।८० 3 ज्ञात, समझा हुआ 4. प्रमाणित, प्रदर्शित।

प्रमितिः (स्त्री०) [प्र+मा (मि)+क्तिन्] 1 माप, नाप 2 सत्य या निश्चित ज्ञान, यथार्थ भाव या प्रत्यय 3 किसी प्रमाण या ज्ञान के स्रोत से प्राप्त जानकारी।

प्रमीढ (वि०) [प्र+मिह्+क्त] 1 घना, सघन, सटा हुआ 2 मूत्र बनकर निकला हुआ।

प्रमीत (भू० क० कृ०) [प्र+मी+क्त] मरा हुआ, मृतक, तः यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या वध किया हुआ पशु।

प्रमीतिः (स्त्री०) [प्र+मी+क्तिन्] मृत्यु, विनाश, निधन।

प्रमोक्षा [प्र+मोक्ष्+अ+टाप्] 1 तन्द्रा, आलस्य, उत्साहहीनता 2 स्त्रियों के राज्य की प्रभुसत्ताप्राप्त स्त्री का नाम, (जब अर्जुन का घोड़ा उस स्त्री के राज्य में पहुँचा तो उसने अर्जुन के साथ युद्ध किया, परन्तु अर्जुन के विजय हो जाने पर प्रमीला, अर्जुन की पत्नी बन गई)।

प्रमीलित (भू० क० कृ०) [प्र+मील्+क्त] मुँदी हुई आँखों वाला।

प्रमुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+मुच्+क्त] 1 विश्लिष्ट 2. स्वाधीन किया हुआ, स्वतन्त्र छोड़ा हुआ 3 तिरस्कृत, धिक्कृत 4 डाला हुआ, फेंका हुआ। सम० कण्ठम् (अव्य०) फूट फूट कर।

प्रमुख (वि०) [प्रा० ब०] 1 मुँह किये हुए, मुँह मोड़े हुए 2 मुख्य, प्रधान, अग्रणी, प्रथम 3. (समास के अन्त में) (क) प्रधानता में, प्रधान या मुख्य बनाकर—वार्त्तिक—प्रमाणा कु० २।३८ (ख) से युक्त, सहित प्रीति-प्रमुखवचन स्वागत व्याजहार—मेघ० ४, खः 1 आदरणीय पुरुष 2 ढेर, समुच्चय, खम् 1 मुह 2 अध्याय या परिच्छेद का आरम्भ (प्रमुखतः, प्रमुखे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'के सामने' 'सामने' 'के विरुद्ध' अर्थ को प्रकट करते हैं भग० २।५५, ग० ७।२२)।

प्रमुग्ध (वि०) [प्र+मुह्+क्त] 1 मूर्छित, अचेत, 2 अत्यन्त प्रिय।

प्रमुद (स्त्री०) [प्र+मुद्+क्विप्] अत्यन्त हर्ष।

प्रमुदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+क्त] उल्लसित, आह्लादित, प्रसन्न, आनन्दित। सम० हृदय (वि०) प्रसन्नमना।

प्रमुषित (भू० क० कृ०) [प्र+मुष्+क्त] चुराया हुआ, अपहृत—शि० १७।७१, ता एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+क्त] 1 विस्मित, उद्विग्न, व्याकुल 2 मूर्ख, जड़।

प्रमृत (भू० क० कृ०) [प्र+मृ+क्त] मरा हुआ, मृतक, तम् 1 मृत्यु 2 खेती।

प्रमृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+मृज्+क्त] 1 रगड़ दिया गया, घो दिया गया, मिटा दिया गया, साफ किया गया—रघु० ६।४१, ४४ 2 चमकाया हुआ, चमकीला, स्वच्छ।

प्रमेय (वि०) [प्र+मा+यत्] 1 मापे जाने योग्य, निश्चित 2 प्रमाणित किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय, यम् 1 निश्चित ज्ञान की वस्तु, प्रदर्शित उपसंहार, साध्य 2 सिद्ध करने योग्य बात, जो विषय सिद्ध (प्रमाणित) किया जा सके।

प्रमेह [प्र+मिह्+घञ्] एक प्रकार का मूत्र रोग (वातु शोणता या मधुमेह आदि) जिसमें मूत्र के साथ वातु या शक्कर निकलती हो।

प्रमोक्षः [प्र+मोक्ष्+घञ्] 1. गिराना, गिरने देना 2 मुक्त करना, स्वतन्त्र करना।

प्रमोक्षणम् [प्र+मुच्+ल्युट्] 1 मुक्त करना, स्वतन्त्र छोड़ना 2 उतारना, छोड़ना।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] हर्ष, आह्लाद, उल्लास, प्रसन्नता —प्रमोदनार्थं मह वारयोषिताम् रघु० ३।१९, मनु० ३।६१।

प्रमोदनम् [प्र+मुद्+णिच्+ल्युट्] 1 आह्लादित करना आनन्दित करना, प्रसन्न करना 2. प्रसन्नता न. विष्णु का विशेषण।

प्रमोदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+णिच्+क्त] प्रसन्न, आह्लादित, हृष्ट, आनन्दित,—त: कुबेर का विशेषण।

प्रमोह [प्र-मुह्+घञ्] 1 मूर्छा, बेहोशी, जड़ता —रिरयति करुणाना ग्राहकत्वं प्रमोहः भा० १।४१, 2 विकलता, घबड़ाहट।

प्रमोहित (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+णिच्+क्त] आकुलित, उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

प्रयत (भू० क० कृ०) [प्र+यम्+क्त] 1 नियन्त्रित, जितेन्द्रिय, पूत, पावन, भक्त, धार्मिक अनुष्ठानों एवं साधनाओं से जिसने अपने आपको पवित्र बना लिया है, आत्मसंयमी,— रघु०—१।९५, ८।११, १३।७०, कु० १।५८, ३।१६ 2 सोत्साह, अत्युत्सुक 3 सुशील, विनम्र।

प्रयत्न [प्र+यत्+घञ्] 1 प्रयास, चेष्टा, उद्योग—रघु० २।५६, मुद्रा० ५।२० 2 अनवरत प्रयास, धैर्य 3 श्रम कठिनाई प्रयत्नप्रेक्षणीय स्वरूप—शा० १, 'दुर्दृष्ट' 'दुर्दृष्ट' 4 बड़ी सावधानी, चौकसी—कृतप्रयत्नोऽपि गृहं विनश्यति पञ्च० १।२०५ 5 (व्या० में) उच्चारण में प्रयास, मुख का वह व्यापार जिसके सहारे वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयत्नत (भू० क० कृ०) [प्र+यत्+क्त] अभ्यस्त, सिखाया हुआ, प्रमाणे आदि डाल कर स्वादिष्ट किया हुआ।

प्रयागः [प्रकृष्टो यागफल यत्र—प्रा० ब०] 1. यज्ञ 2 इन्द्र 3 घोड़ा 4 वर्तमान इलाहाबाद के पास गंगा यमुना के संगम पर बसा प्रसिद्ध तीर्थस्थान—मनु० २।२१ (इस अर्थ में शब्द नपु० भी है)। सम०—भेद इन्द्र का विशेषण।

प्रयाचनम् [प्र+याच्+ल्युट्] माँगना, प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

प्रयाजः [प्र+यज्+घञ्] प्रधानयज्ञ सम्बन्धी एक अनुष्ठान।

प्रयाणम् [प्र+या+ल्युट्] 1 कूच करना, प्रस्थान करना, विदा 2. अभियान, यात्रा—यावत् तावदनु कथयत-

स्वत्प्रयाणानुरूपम् मेघ० १३ 3 प्रयाति, अग्रगमन 4 (शत्रु का) अभियान, हमला, आक्रमण, चढाई – काम पुर. शुक्रमिव प्रयाणे कु० ३।४३, रघु० ६। ३३ 5 आरंभ, शुरु 6 मृत्यु (इस संसार से) विदा – भग० ७।३० 7 घोड़े की पीठ 8 किसी भी जन्तु का पिछला भाग। सम०–भंग यात्रा के बीच कहीं रुक जाना, ठहरना पञ्च० १।

प्रयाणकम् [प्रयाण+कन्] यात्रा, प्रस्थान का० ११८, २०५।

प्रयात (भू० क० कृ०) [प्र+या+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ, गया हुआ, विसर्जित 2 मृतक, मरा हुआ—त. 1 आक्रमण 2 चढ़ान, दलवाँ चढ़ान।

प्रयापित (भू० क० कृ०) [प्र+या+णिच्+क्त, पक्] 1 आगे पहुँचाया हुआ भेजा हुआ 2 भगाया हुआ।

प्रयास [प्र+यस+घञ्] 1 अभाव, कमी, (अन्नादि की) महँगाई 2 शोकश्राम, नियन्त्रण 3 लम्बाई।

प्रयास [प्र+यस्+घञ्] 1 प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग रघु० १२।५३ १४।५१ 2 श्रम, कठिनाई।

प्रयुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+युज्+क्त] 1 जोता हुआ काठी जीन आदि कसा हुआ 2 प्रचलित, (शब्द आदि) व्यवहार में लाया हुआ 3 प्रयोग में लाया गया 4 नियत किया हुआ, मनोनीत 5 किया हुआ, प्रतिनिर्दिष्ट 6 उदित, उद्गत, उत्पन्न, फलित 7 युक्त 8 ध्यानमग्न, बेसुध 9 (रुपया आदि) ब्याज पर दिया हुआ 10 प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ (दे० प पूर्वक युज्)।

प्रयुक्ति (स्त्री०) [प्रयुज्+क्तिन्] 1 इस्तेमाल, उपयोग प्रयोग 2 उत्तेजना उकसाना 3 प्रयोजन, मुख्य उद्देश्य या ध्येय, अवसर 4 परिणाम, फल।

प्रयुतम [प्रा० स०] दस लाख की संख्या।

प्रयुयुत्सु [प्र+युध्+सन्+उ,] 1 योद्धा 2 भेंड़ा 3 हवा, वायु 4 संन्यासी 5 इन्द्र।

प्रयुद्धम् [प्रा० स०] संग्राम, लड़ाई।

प्रयोक्तृ (वि०) [प्र+युज्+तृच्] 1 उपाय, शब्द आदि का) उपयोग करने वाला 2 अनुष्ठाता, निदेशक, परिचायक 3 प्रेरक, उत्तेजक, उकसाने वाला 4 प्रणेता, अभिकर्ता–उत्तर० ३।४८ 5 (नाटक का) अभिनयकर्ता 6 ब्याज पर रुपया देने वाला, साहूकार 7 तीरंदाज।

प्रयोग [प्र+युज्+घञ्] 1 इस्तेमाल, व्यवहार, उपयोग जैसा कि 'शब्द प्रयोग' में अर्थ शब्दों भूरिप्रयोग, अल्पप्रयोग इस शब्द का बहुल प्रयोग, या विरल प्रयोग होता है 2 प्रचलित रूप, सामान्य प्रचलन 3 फेंकना, प्रक्षेपण, मुक्त करना (विप० 'संहार')—प्रयोगसंहार विभक्तमन्त्रम्–रघु० ५।५७ 4 प्रदर्शनी अनुष्ठान, (नाटकीय) अभिनयन, नाटक खेलना–देव प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम् मालवि० १ नाटिका न प्रयोगतो दृष्टा—रत्न० १ मंच पर अभिनीत नहीं देखी गई 5 अभ्यास, (किसी विषय का) प्रायोगिक भाग (विप० शास्त्र या सैद्धान्तिक ज्ञान) लक्षणं भवतीमं मा च शास्त्रेण योगे च विमृशत् मालवि० १ 6 कार्यविधि का क्रम, सांस्कारिक रूप 7 कृत्य, कार्य 8 पाठ करना, पढ़कर सुनाना 9 आरंभ, शुरू 10 योजना, साधन, युक्ति, नरकौशल 11 साधन, उपकरण 12 फल, परिणाम 13 आदु-प्रयोग, ऐन्द्रजालिक रचना, अभिचार 14 ब्याज पर रुपया देना 15 घोड़ा। सम०- अतिशय प्रस्तावना के पाँच भेदों में से एक जिसमें प्रस्तुत प्रयोग के अन्तर्गत दूसरा प्रयोग इस रीति से उपस्थित किया जाता है कि अकस्मात् पात्र रंगमंच पर प्रवेश करते हैं अर्थात् वहाँ सूत्रधार पात्र [illegible] का संकेत करता है और इस प्रकार अपने भावी कार्य (नृत्य) की पूर्व सूचना देता है—सा० द० परिभाषा देता है—यदि प्रयोग एकस्मिन् प्रयोगोऽन्य प्रयुज्यते, तेन पात्रप्रवेशसूचेत् प्रयोगातिशयस्तदा। २९१, निपुण (वि०) नृत्याभ्यास में कुशल – मालवि० ३।१

प्रयोजक (वि०) [प्र+युज्+ण्वुल्] निमित्त बनने वाला, कारण बनने वाला, सम्पन्न करने वाला, नेतृत्व करने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक, क. 1 नियुक्त करने वाला, जो इस्तेमाल करे या काम ले 2 प्रवर्तक 3 संस्थापक, प्रवर्तक 4 साहूकार, महाजन 5 धर्म शास्त्री, विधायक।

प्रयोजनम् [प्र+युज्+ल्युट्] 1 इस्तेमाल काम में लगाना, नियुक्ति 2 उपयोग, आवश्यकता, (आवश्यक वस्तु में करण०, तथा उपयोक्ता में सम्ब०) सर्वैरपि राज्ञा प्रयोजनम्–पञ्च० १, बाले किमनेन पृष्टेन प्रयोजनम् का० १४४ 3 ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिप्राय प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते, पुत्र प्रयोजना दारा पुत्र पिण्डप्रयोजन हितप्रयोजन मित्र जन सर्वप्रयोजनम् सुभा०, गुणवताऽपि परप्रयोजना –रघु० ८।३१ 4 प्राप्ति का साधन – मनु० ७।१०० 5 कारण, उद्देश्य, निमित्त 6 लाभ, स्वार्थ।

प्रयोज्य (स० कृ०) [प्र+युज्+ण्यत्] 1 इस्तेमाल करने के योग्य, काम में लाने के योग्य 2 अभ्यास करने के लायक 3 उत्पन्न या पैदा करने के योग्य 4 नियुक्त करने के योग्य 5 चलाने या फेंकने के योग्य (अस्त्र) 6 कार्य आरम्भ करने के योग्य।

प्रलपित (भू० क० कृ०) [प्र+रुद्+क्त] फूट फूट कर रोया हुआ, मुक्त कंठ से रुदन।

प्रलब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+रुह्+क्त] 1 पूरा बड़ा

हुआ, पूर्ण विकसित 2 उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ यस्यायमगात् कृतिन: प्ररूढ श० ७।१९ 3 बढ़ा हुआ 4 गहराई तक गया हुआ यथा 'प्ररूढमूल' में 5 लम्बे बढ़े हुए यथा 'प्ररूढकेश' 'प्ररूढश्मश्रु' में।

प्ररूढि (स्त्री०) [प्र+रुह्+क्तिन्] वर्धन, वृद्धि।

प्ररोचनम् [प्र+रुच्+णिच्+ल्युट्] 1 उत्तेजना, उद्दीपन 2 निदर्शन, व्याख्या 3 (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन जिससे लोग देख सकें और पसंद करें—अलोकसामान्य-गुणस्तनूज प्ररोचनार्थं प्रकटीकृतश्च मा० १।१० (यहाँ 'प्ररोचनार्थं' का अर्थ जगद्धर पंडित 'प्रवृत्ति पाठार्थं'—'संसार से पूर्णतः परिचित होने के लिए' करते हैं) 4 नाटक में आगे आने वाली बात का रोचक वर्णन 5 ध्येय की पूर्णरूप से प्रतिस्थापना —दे० सा० द० ३८८ (अन्तिम दोनों अर्थ को बतलाने के लिए 'प्ररोचना' भी)।

प्ररोह [प्र+रुह्+घञ्] 1 अंकुरित होना, अंकुर या निकलना, बढ़ना, बीजांकुरण यथा प्रवालप्ररोह 2 अंकुर, अंखुवा (आलं० से भी)—लक्षणप्ररोह इव सौम्यतल विभेद रघु० ८।९३ लक्षान् प्ररोहदटिला-निव मार्गवृक्षान् १३।७१, कु० ३।६०, ७।१७ 3 किसलय, संतान हा सर्वस्यकुलप्ररोह वेणी० ४ महावी० ६।२५ 4 प्रकाशांकुर कुर्वंति सामंतशिखा-मणयः प्रभाप्ररोहैस्तमय रजांसि- रघु० ६।३३ 5 नवपल्लव या टहनी, शाखा, कोंपल।

प्ररोहणम् [प्र+रुह्+ल्युट्] 1 उगना, अंकुरण स्फुटन 2 कली खिलना अंकुरण या उभार 3 टहनी, किसलय स्फुटन कारक।

प्रलपनम् [प्र+लप्+ल्युट्] 1 बात चीत करना बात, शब्द, संलाप 2 बकवाल बालकलम्ब बड़बड़, असंबद्ध बात, बकवास उद्दं कश्चिदि प्रलपितम् 3 विलाप, रोना पीटना उत्तर० ३।२९।

प्रलपित (भू० क० कृ०) [प्र+लप्+क्त] कहा हुआ, उच्चारण किया हुआ, तथ्य बात दे० ऊपर 'प्रलपन'।

प्रलब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+लभ्+क्त] धोखा दिया हुआ, ठगा हुआ।

प्रलम्ब (वि०) [प्र+लम्ब्+अच्, घञ् वा] 1 लटकनशील, नीचे की ओर लटकने वाला जैसा कि 'प्रलम्ब केश' में 2 उन्नत—यथा प्रलम्बनासिक' में 3 मन्थर, विलंबकारी,—ब 1 लटकता हुआ, आश्रित 2 कोई भी नीचे को लटकने वाली वस्तु 3 शाखा 4 कण्ठहार 5 एक प्रकार का हार 6 स्त्री की छाती 7 जंघा या सोंटा 8 एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार डाला था। समं० अर्क वह पुरुष जिसके पोते लटकते हों,—घ्न, भञ्जन, हन्(पुं०) बलराम का विशेषण।

प्रलम्बनम् [प्र+लम्ब्+ल्युट्] नीचे लटकना, आश्रित रहना।

प्रलम्बित (वि०) [प्र+लम्ब्+क्त] लटकनशील, लटकने वाला, निलंबित।

प्रलभ [प्र+लभ्+घञ्, मुमागम] 1 प्राप्त करना, लाभ उठाना, अवाप्ति 2 धोखा देना, छलना, ठगना, प्रवंचना।

प्रलय [प्र+ली+अच्] 1 विनाश, संहार, विघटन—स्थानानि किं हिमवत प्रलय गतानि—भर्तृ० ३।७० ६९, प्रलय नीतवा श० ११।६६, 'तिरोहित करके' (कल्प के अन्त में) 2 संसार का विनाश विश्वव्यापी विनाश कु० २।६८, भग० ७।६ 3 व्यापक विनाश या बरबादी 4 मृत्यु, मरना, निधन—प्रारब्धा प्रलयाय मासवदहा विश्रंतुमेते वयम् मुद्रा० ५।२१ १।१४ भग० ११।१४ 5 मूर्छा, बेहोशी, चेतना का न रहना, यथा कु० ४।२ 6 (अलं० शा० में) चेतना का हानि (३ व्यभिचारिभावों में से एक—प्रलय सुख-दुःखादी-नाहर्मिन्द्रियमूर्छनम्— प्रताप० 7 स्फोटध्वनि, 'ओम्' या प्रणव। समं० काल विश्वनाश का समय,—जलधर-सृष्टि-विघटन के अवसर की काली घटा,—वह्नि सृष्टि विघटन के अवसर पर आग,—योनि सृष्टि के विनाश का समुद्र।

प्रलम्बशिर (वि०) [ब० स०] उन्नत मस्तक वाला।

प्रलव [प्र+लू+अप्] टुकड़ा कतला, खंड।

प्रलवित्रम् [प्र+लू+इत्र] काटने का उपकरण।

प्रलाप [प्र+लप्+घञ्] 1 बात, वार्तालाप, प्रवचन 2 बातचीत अलंकरण, असंबद्ध बात या बकवाद मनु० १२।९३ विलाप, रोना धोना।—उन्मादप्रलापा-पजनिर्यथा भगवान् वासुदेव —का० १५५, वेणी० ५।२०। समं०—वृक्ष (प० वृ०) एक प्रकार का अंजन।

प्रलापिन् (वि०) [प्र+लप्+णिनि] 1 बातूनी, बातचीत करने वाला—दा असंबद्धप्रलापिनि—रघु० १२ बातचीत, बातचीत करना।

प्रलीन (भू० क० कृ०) [प्र+ली+क्त] 1 पिघला हुआ, घुला हुआ 2 लुप्त, विनष्ट 3 निर्बुद्धि, चेतना शून्य।

प्रलून (भू० क० कृ०) [प्र+लू+क्त] काट कर गिराया हुआ।

प्रलेप [प्र+लिप्+घञ्] लेप, मलहम, चौपड़।

प्रलेपक [प्र+लिप्+ण्वुल्] 1 मलने वाला, लेप करने वाला 2 एक प्रकार का मंत्र।

प्रलेह [प्र+लिह्+घञ्] एक प्रकार का रसा, शोरबा।

प्रलोठनम् [प्र+लुठ्+ल्युट्] 1 (भूमि पर) लोटना 2 लोटन, लुढ़कना।

प्रलोभ [प्र+लुभ्+घञ्] 1 अतितृष्णा लालच, लालसा 2 ललचाना, फुसलाना।

प्रलोभनम् [प्र+लुभ्+ल्युट्] 1 आकर्षण 2 ललचाना, फुसलाना, लालच देना 3 प्रलोभन की वस्तु, चारा, दाना।

प्रलोभनी [प्रलोभन+ङीप्] रेत, बालू।

प्रलोल (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत क्षुब्ध, बराबर करने वाला।

प्रवक्तृ (पु०) [प्र+वच्+तृच्] 1 वर्णन करने वाला, वक्ता, उद्घोषक 2 अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3 सुवक्ता, धाराप्रवाह बोलने वाला।

प्रवगः, प्रवङ्गः, प्रवङ्गम (पु०) बंदर, दे० 'प्लवग' और 'प्लवङ्गम'।

प्रवचनम् [प्र+वच्+ल्युट्] 1. बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना, पंच० १।१९० 2 अध्यापन, व्याख्यान 3 बोलकर समझाना, व्याख्या करना, अर्थ करना --महावी० ४।२५ 4 वाग्मिता 5 धर्मशास्त्र, मनु० ३।१८४। सम० -पटु (वि०) बात करने में कुशल, वाग्मी।

प्रवट [प्र+वट्+अच्] गेहूँ।

प्रवण (वि०) [प्र+वण्+अच्] 1 ढलवाँ, रुझान वाला, झुकावदार, नीचे को बहने वाला 2 ढालू, दुरारोह, विषमीतल, चट्टान जैसा 3 कुटिल, झुका हुआ, 4 अनुरक्त, प्रवृत्त, संलग्न (प्रायः समास के अन्त में) वचनप्रवण --कि० ३।१९ 5 झुका, अनुरक्त, व्यस्त, तुला हुआ, झुका हुआ, भरा हुआ नृमि प्राणत्राण-प्रवणमतिभि कैश्चिदधुना भर्तृ० ३।२९, शि० ८।३५, मुद्रा० ५।२१, कि० २।४४ 6 अनुकूल, उत्सुक—कु० ४।४२ 7 आतुर, तत्पर कि० २।८ 8 युक्त, सम्पन्न 9 विनम्र, सुशील, विनीत 10 मुझाया हुआ, बर्बाद, क्षीण, ण चौराहा, नम् 1. उतार, ढलवाँ उतार, चट्टान 2 पहाड़ का पार्श्वभाग, ढलान, झुकाव।

प्रवत्स्यत् (वि०) (स्त्री०-न्ती, न्ती) [प्र+वस्+स्य (लृट्)+शतृ] यात्रा पर जाने के लिए तैयार। सम० पतिका उस नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकाव्यों में आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक)।

प्रवयणम् [प्र+वे+ल्युट्] 1 बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2 अङ्कुश शि० १३।१९।

प्रवयस् (वि०) [प्रगतं वयो यस्य प्रा० ब०] बड़ी उम्र का, वृद्ध, बूढ़ा केऽप्येते प्रवयसस्तवा दिदृक्षव --उत्तर० ४, रघु० ८।१८।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1 मुख्य, प्रधान, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य, सर्वोत्तम, श्रीमान् मकैलके चिरयति प्रवरो विनोद मृच्छ० ३।३, मनु० १०।२७, घट० १६ 2 ज्येष्ठ, रः 1 बुलावा, आह्वान 2 एक विशेष प्रकार का आवाहन जो अग्न्याधान के अवसर पर अग्नि को सम्बोधित किया जाता है 3 वंश परम्परा 4 कुल, परिवार, वंश 5 पूर्वज 6 गोत्रप्रवर्तक ऋषि 7 संतान, रक्षज 8 ढकना, चादर, रम् अगर की लकड़ी। सम०—अरणी (द्वि० व०) अश्विनी-कुमारों का विशेषण।

प्रवर्ग्यः [प्रवृज्यते नि क्षिप्यते हविरादिकमस्मिन्--प्र+वृज्+घञ्] 1 यज्ञीय अग्नि 2. विष्णु का विशेषण।

प्रवर्ग्यः [प्र+वृज्+ण्यत्] सोमयाग से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान।

प्रवर्तः [प्र+वृत्+घञ्] आरंभ, उपक्रम, काम में लगाना।

प्रवर्तक (वि०) (स्त्री०-तिका) [प्र+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1 चालू करने वाला, स्थापित करने वाला 2 प्रगतिशील, उन्नतिशील, आगे बढ़ाने वाला 3 पैदा करने वाला, जन्म देने वाला 4 प्रबोधक, प्रोत्साहक, उकसाने वाला, भड़काने वाला (बुरे अर्थ में),—कः जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रणेता 2 प्रबोधक, प्रोत्साहक 3. विवाचक, मध्यस्थ।

प्रवर्तनम् [प्र+वृत्+ल्युट्] 1 चलते रहना, आगे बढ़ना 2 आरंभ, शुरू 3 कार्यारम्भ, नींव डालना, संस्थापन, प्रतिष्ठापन 4 प्रोत्साहन, बलपूर्वक चलाना, उद्दीपन 5 व्यस्त होना, काम में लगना 6 होना, घटित होना 7 क्रियता, कार्य 8 व्यवहार, आचरण, कार्यविधि, ना कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना।

प्रवर्तयितृ (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+तृच्] संचालन करने वाला, जो नींव डालता है, संस्थापित करता है और उसे चलाता रहता है या ढकेलता है।

प्रवर्तित (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+(णिच्)+क्त] 1 मोड़ दिया हुआ, चलाया हुआ, लुढ़काया हुआ, चक्कर खाने वाला रघु० ९।६६ 2 नींव डाला हुआ 3 प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ, भड़काया हुआ 4. सुलगाया हुआ 5 जन्म दिया हुआ, निर्मित 6 पवित्र किया हुआ, छाना हुआ मनु० ११।१९६।

प्रवर्तिन् (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+णिन्] 1 प्रगतिशील, आगे बढ़ने वाला 2 सक्रिय रहने वाला 3 जन्म देने वाला, प्रभावी 4 इस्तेमाल करने वाला।

प्रवर्धनम् [प्र वृध्+ल्युट्] वृद्धि करना, बढ़ाना।

प्रवर्षः [प्र+वृष्+घञ्] भारी वृष्टि, मूसलाधार वर्षा।

प्रवर्षणम् [प्र+वृष्+ल्युट्] 1 बरसना 2 पहली वृष्टि।

प्रवसनम् [प्र+वस्+ल्युट्] विदेश जाना, विदेश यात्रा, यात्रा पर जाना।

प्रवाह [प्र+वह्+अच्] 1 बहना, धार बनकर बहना 2 वायु 3 वायु के सात मार्गों में से एक (जो ग्रहों को गतिमान् करता है।

प्रवाहणम् [प्र वह्+ल्युट्] 1. बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए) 2 गाड़ी, वाहन, सवारी 3 जहाज।

प्रवल्हिका—ल्ली [प्र+वल्ह+इन्, प्रवल्हि+कीष्] दे० 'प्रहेलिका'।

प्रवाच् (वि०) [प्रा० ब०] वाग्मी, वक्ता—(कुर्वते) अज्ञानप्यनुलोमाभिः प्रवाचः कृतिनो गिर.—शि० २।२५ 2 बातूनी, वाचाल—मुद्रा० ३।१६।

प्रवाचनम् [प्र+वच्+णिच्+ल्युट्] घोषणा, उद्घोषणा, प्रकथन।

प्रवाणम् [प्र+वे+ल्युट्] बुने हुए कपड़े के किनारों के गोट लगाना या छाँटना या सम्भालना।

प्रवाणि,—नी (स्त्री०) [प्रवाण+कीष्, नि० ह्रस्वो वा] जुलाहे की ढरकी।

प्रवात (भू० क० कृ०) [प्रकृष्टो वातो यस्मिन्—प्रा० ब०] तूफान में पड़ा हुआ—तम् 1 वायु का झोंका, ताजा हवा—प्रवातशयनस्था देवी—मालवि० ४ 2 तूफानी हवा, आँधी—तनु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरय श० ६, 3. हवादार स्थान, कु० १।४६।

प्रवाद: [प्र+वद्+घञ्] 1 शब्द या ध्वनि का उच्चारण 2 अभिधान करना, उल्लेख करना, प्रकथन करना 3 प्रवचन, वार्तालाप 4. बात, प्रतिवेदन, अफवाह, किंवदन्ती—अनुरागप्रवादस्तु वत्सयो सार्वलौकिक मा० १।१३, व्याघ्रो मानुष खादतीति लोकप्रवादो दुर्निवार—हि० १, रत्न० ४।५ 5 आख्यायिका, गल्प 6 विवाद सबधी भाषा 7 चुनौती के शब्द, पारस्परिक विरोध—इत्थ प्रवाद युधि सप्रहार प्रचक्रुः रामनिशाविहारौ—भट्टि० २।३६।

प्रवार, प्रवारक: [प्र+वृ+घञ्, प्रवार+कन्] चादर, आच्छादन।

प्रवारणम् [प्र+वृ+णिच्+ल्युट्] 1 (इच्छा) पूर्ण करना छूट की प्रार्थमिकता 3 निषेध, विरोध 4 काम्यदान।

प्रवाल: (पु०) दे० 'प्रवाल'।

प्रवास: [प्र+वस्+घञ्] 1 विदेशगमन, विदेशयात्रा, घर पर न रहना, परदेशनिवास रघु० १६।४४। सम० गत, —स्थ,—स्थित (वि०) विदेश की यात्रा करना, घर पर न रहने वाला।

प्रवासनम् [प्र+वस्+णिच्+ल्युट्] 1 विदेश निवास, अस्थायी रूप से वास करना 2 निर्वासन, देशनिकाला, वध, हत्या।

प्रवासिन् (पु०) [प्र+वस्+णिनि] यात्री, बटोही, परदेशी।

प्रवाह. [प्र+वह+घञ्] 1 बहाव, धार बन कर बहना 2 नदी, पेटा या जलमार्ग, धारा—प्रवाहस्ते वाग श्रियमण्मपारां दिशतु न—गगा० २, रघु० ५।४६, १३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४६ 3 बहाव, बहता हुआ पानी 4. अविच्छिन्न बहाव, अटूट शृखला, नैरन्तर्य 5. चलना क्रम (नदी की धार की भाँति लुढ़कना) 6 क्रियता, सक्रिय व्यस्तता 7. तालाब, झील 8 बढ़िया घोड़ा (प्रवाहे मूत्रितम्) नदी में मूतना (ज्ञा०), व्यर्थ कार्य करना (आल०)।

प्रवाहक: [प्र+वह्+ण्वुल्] भूत प्रेत, पिशाच।

प्रवाहणम् [प्र+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 हाक कर आगे बढ़ना 2 दस्त कराना।

प्रवाहिका [प्र+वह्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] दस्त लग जाना।

प्रवाही [प्रवाह+कीष्] रेत, बालू।

प्रविकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+कृ+क्त] 1. बखेरा हुआ, इधर उधर छितराया हुआ 2 तितर बितर किया हुआ, फैलाया हुआ।

प्रविख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+वि+ख्या+क्त] 1. नामी, बुलाया हुआ 2 प्रसिद्ध, मशहूर, विश्रुत।

प्रविख्याति. [प्र+वि+ख्या+क्तिन्] मशहूरी, कीर्ति, प्रसिद्धि।

प्रविचय [प्र+वि+चि+अच्] परीक्षा, खोज, अन्वेषण।

प्रविचार. [प्रा० स०] विवेचन, विवेक।

प्रविचेतनम् [प्र+वि+चित्+ल्युट्] समझ।

प्रवितत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+तन्+क्त] 1 बिछाया हुआ, फैलाया हुआ 2 बिखरे हुए, अस्तव्यस्त (बाल)।

प्रविदार [प्र+वि+दृ+घञ्] फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खुलना।

प्रविदारणम् [प्र+वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1 फाड़ना, विदीर्ण करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना 2 कली लगना 3 सघर्ष, युद्ध, लड़ाई 4 भीड़भाड़, गड़बड़ी, हल्ला-गुल्ला।

प्रविद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+व्यध्+क्त] डाला, हुआ, फेंका हुआ।

प्रविप्लुत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+प्लु+क्त] तितर-बितर किया हुआ, भगाया हुआ, बखेरा हुआ।

प्रविभक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+भज्+क्त] 1 अलग किया गया, वियुक्त 2 हिस्से किया गया, विभाजन किया गया, बाँटा गया, विनरित किया गया—ज्योतीषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मि—श० ७।६।

प्रविभाग. [प्र+वि+भज्+घञ्] भाग, तकसीम, वितरण, वर्गीकरण—रघु० १६।२ 2 हिस्सा, अश।

प्रविर (पु०) पीला चन्दन।

प्रविरल (वि०) [प्रा० स०] 1 बहुत दूर दूर, वियुक्त, अलगाया 2 बहुत कम, बहुत थोड़े, स्वल्प, थोड़ा—प्रविरला इव मुग्धवधूकथा—रघु० ९।३४।

प्रविलय [प्र+वि+ली+अच्] 1 पिघलकर बह जाना 2 पूरी तरह घुल जाना या अदृश्य हो जाना।

प्रविलुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+लुप्+क्त] काटा हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ।
प्रविवादः [प्र+वि+वद्+घञ्] झगड़ा कलह, तकरार।
प्रविविक्त (वि०) [प्रा० सस]। 1 बिल्कुल अकेला 2. वियुक्त, अलग किया हुआ।
प्रविश्लेषः [प्र+वि+श्लिष्+घञ्] वियोग, जुदाई।
प्रविषण्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+सद्+क्त] खिन्न, उदास, हतोत्साह।
प्रविष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+क्त] 1 अन्दर गया हुआ, घुसा हुआ—गर्भकार्येण प्रविष्ट शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्—श० १।७ 2 लगा हुआ, व्यस्त 3 आरब्ध।
प्रविष्टकम् [प्रविष्ट+कन्] रंग भूमि का द्वार।
प्रविस्त (स्ता) रः [प्र+वि+स्तृ+अप्, घञ् वा] परिधि, वृत्त।
प्रवीण (वि०) [प्रकृष्टा संसाधिता वीणा येन प्रा० ब०] चतुर, कुशल, जानकार आमोदानव हृदितुराणि नेतुं नेतान्यो जगति मधीरणात्प्रवीण —भामि० १।१५, कु० ७।४८,।
प्रवीर (अ०) [प्रा० स०] 1 अग्रणी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य रघु० १४।२९ १६।१, भग० ११।४८ 2 मजबूत, शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न,—र 1 बहादुर व्यक्ति, नायक, योद्धा 2 मुख्य, पूज्य व्यक्तित्व।
प्रवृत (भू० क० कृ०) [प्र+वृ+क्त] चुना हुआ, संकलित, छांटा हुआ।
प्रवृत्त (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+क्त] 1 आरम्भ किया गया, शुरू किया गया, प्रगत 2 स्थिर किया हुआ —अचिरप्रवृत्त ग्रीष्मसमयमधिकृत्य—श० १ 3 व्यस्त, संलग्न 4 जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध 5 स्थिर, निश्चित, निर्धारित 6 निर्बाध, विषादरहित 7 गोल,—त्त गोल आभूषण।
प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त+कन्] रंग भूमि में अवतरण।
प्रवृत्ति (स्त्री०) [प्र+वृत्+क्तिन्] 1 निरन्तर प्रगमन, प्रगति, आगे बढ़ना 2 उदय, मूल, स्रोत, (शब्दों का) प्रवाह—प्रवृत्तिरासीच्छन्दानां चरितार्था चतुष्टयी —कु० २।१७ 3 दर्शन, प्रकटीकरण—कुसुमप्रवृत्तिसमये —श० ४।१७, रघु० ११।४३, १४।३९, १५।४ 4 उदय, आरम्भ, शुरु—आकालिकी वीक्ष्य मधुप्रवृत्ति —कु० ३।३४ 5 प्रयोग, व्यसन, झुकाव, रुझान, रुचि, प्रवणता—श० १।२२ 6 आचरण, व्यवहार—रघु० १४।७३ 7 काम में लगाना, व्यवसाय, क्रियाशीलता कु० ६।२६ 8 प्रयोग, नियोजन, (शब्द का) प्रचलन 9 अनवरत प्रयत्न, धैर्य 10 सार्थकता, भावार्थ, (शब्द की) स्वीकृति 11 निरन्तरता, स्थायिता, प्राचुर्य 12 सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय भाग लेना (विप० निवृत्ति) 13. समाचार, खबर, गुप्त वार्ता—श्रीमूर्तेव स्वकुशलमयी हारयिष्यन् प्रवृत्तिम् —मेघ० ४, विक्रम० ४।२० 14 नियम की प्रयोजनीयता या वैधता 15. भाग्य, नियति, किस्मत 16. संज्ञान, सीधा प्रत्यक्षज्ञान, समवबोध 17 हाथी का मद (जो मस्ती की अवस्था में उसके गण्डस्थल से निकलता है), 18 उज्जयिनी नगरी का नामान्तर। सम० —ज्ञः जासूस, भेदिया, दूत, गुप्तचर,—निमित्तम् किसी शब्द का किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने का कारण, —मार्गः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में अनुरक्ति, संसार में सुख तथा आनन्द।
प्रवृद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+वृध्+क्त] 1 पूरा बड़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विस्तारित, बढ़ा किया हुआ 3 पूरा, गहरा 4 घमंडी, अहंकारी 5 प्रचण्ड 6 विशाल।
प्रवृद्धि (स्त्री०) [प्र+वृध्+क्तिन्] 1 बढ़ना, वृद्धि —रघु० १३।७१, १७।७१ 2. उन्नति, समृद्धि, पदोन्नति, तरक्की, उत्कर्ष।
प्रवेक (वि०) [प्र+विच्+घञ्] उत्तम, मुख्य, छांट का, अत्यंत श्रेष्ठ।
प्रवेगः [प्र+विज्+घञ्] तीव्र चाल, वेग।
प्रवेट [प्र+वी+ट] जौ, यव।
प्रवेणि, —णी (स्त्री०) [प्र+वेण्+इन्, प्रवेणि+ङीष्] 1 बालों का जूड़ा—रघु० १५।३० 2 बिखरे हुए या शृंगारहीन बाल (पति की अनुपस्थिति में स्त्रियाँ प्रायः ऐसे बाल धारण करती हैं) 3 हाथी की झूल 4 रंगीन ऊनी कपड़े का टुकड़ा 5 (नदी का) प्रवाह या धार।
प्रवेतृ (पु०) [प्र+अच्+तृच् अजे वी आदेश] सारथि, रथवान्।
प्रवेदनम् [प्र+विद्+णिच्+ल्युट्] घोषणा, ऐलान करना, सूचना करना।
प्रवेप, प्रवेपकः, प्रवेपथु, प्रवेपनम् [प्र+वेप्+घञ्, प्रवेप+कन्, प्र+वेप्+अथुच्, प्र+वेप्+ल्युट्] कंपकंपी, ठिठुरन, थरथराहट, सिहरन।
प्रवेरित (वि०) [प्रवेर+इतच्] इधर उधर डाला हुआ, फेंका हुआ।
प्रवेल, [प्र+वेल्+अच्] एक प्रकार की मूंग।
प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. भीतर जाना, घुसना—पुरःप्रवेशाभिमुखो बभूव—रघु० ७।१, कु० ३।४० 2 अन्तर्गमन, पैठ, पहुँच 3. रंगभूमि में प्रवेश—तेन पात्रप्रवेशश्चेत् सा० द० ६ 4 (घर का) दरवाजा, घुसने का स्थान 5. आय, राजस्व 6. (किसी काम का) पीछा करना, प्रयोजन की तत्परता।

प्रवेशकः [प्र+विश्+घञ्] परिचायक, विज्ञापक (पात्रों (नौकर चाकर) द्वारा अभिनीत विष्कंभक (इसमें श्रोता को रंगमंच पर अप्रस्तुत घटना का आगे होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है); (विष्कंभक की भांति यह नाटक की कथा तथा कथावस्तु के अवान्तर भेदों को जो या तो अंकों के अन्तराल में घटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है; यह पूरे अंक के आरम्भ या अंतिम अंक के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) साहित्यदर्पणकार इसकी परिभाषा देते हैं–प्रवेशकोनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः, अकृत्यांतर्विज्ञेय शेष विष्कंभके यथा–३०८, दे० 'विष्कंभक'।

प्रवेशनम् [प्र+विश्+ल्युट्] 1 दाखिल होना, घुसना, अन्दर जाना 2. परिचय देना, नेतृत्व करना, संचालन 3. घर का मुख्य द्वार, फाटक 4. मैथुन, स्त्री संगम।

प्रवेशित (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+णिच्+क्त] परिचित कराया हुआ, अन्दर पहुँचाया हुआ, अन्दर ले जाया गया, घुसाया हुआ।

प्रवेष्टः [प्र+वेष्ट्+अच्] 1 भुजा 2 कलाई, पहुँचा 3 हाथी की पीठ का मांसल भाग (जहां महावत बैठता है) 4 हाथी के अगूंठे 5 हाथी की झूल।

प्रव्यक्त (भू० क० कृ०) [प्रकर्षेण व्यक्त –प्रा० स०] स्पष्ट, साफ, प्रकट, जाहिर।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) [प्र+वि+अञ्+क्तिन्] प्रकटीभवन, दर्शन।

प्रव्याहारः [प्र+वि+आ+हृ+घञ्] प्रवचन का फैलाव या विस्तार।

प्रव्रजनम् [प्र+व्रज्+ल्युट्] 1 विदेश जाना, अस्थायी रूप से बसना 2 निर्वासित होना 3 वानप्रस्थ हो जाना।

प्रव्रजित (भू० क० कृ०) [प्र+व्रज्+क्त] 1 विदेश गया हुआ या निर्वासित 2 सन्यासी या परिव्राजक बना हुआ,—तः 1 साधु, संन्यासी 3 चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, भिक्षु 3 जैन या बौद्ध भिक्षु का शिष्य, —त्वम् सन्यासी बन जाना, साधु का जीवन।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1 विदेश जाना, देशान्तरगमन 2 पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्तत) भ्रमण 3 सन्यास आश्रम, सन्यासी का जीवन, ब्राह्मण की जीवनचर्या में चौथा आश्रम (भिक्षु जीवन) –प्रव्रज्या कल्पवृक्षा इवाश्रिता कु० ६।६ (यहां मल्लि० के अनुसार 'प्रव्रज्या' का तात्पर्य वानप्रस्थ या तृतीय आश्रम है)। सम०—अवसितः वह पुरुष जिसने सन्यास ग्रहण करके उस आश्रम को छोड़ दिया हो।

प्रव्रश्चनः [प्र+व्रश्च्+ल्युट्] लकड़ी काटने का उपकरण।

प्रव्राज् (पुं०), **प्रव्राजकः** [प्र+व्रज्+क्विप्, ण्वुल् वा] साधु, संन्यासी।

प्रव्राजनम् [प्र+व्रज्+णिच्+ल्युट्] निर्वासन, देशनिकाला, निर्वासित करना।

प्रशंसनम् [प्र+शंस्+ल्युट्] प्रशंसा करना, स्तुति करना।

प्रशंसा [प्र+शंस्+अङ्+टाप्] प्रशंसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणगान करना–प्रशंसावचनम्, प्रशंसात्मक या सम्मानसूचक वाणी 2 वर्णन, उल्लेख—जैसा कि 'अप्रस्तुतप्रशंसा' में 3 कीर्ति ख्याति, प्रसिद्धि। सम०—उपमा दण्डिद्वारा वर्णित उपमा के अनेक भेदों में से एक —ब्रह्मणोऽप्युद्भुवं पद्मश्चन्द्रं शंभुशिरोधृतं, तौ तुल्यौ स्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमोच्यते काव्या० २।३१, —वादिन् (वि०) ऊँचे स्वर से प्रशंसा करने वाला।

प्रशंसित (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, गुणवान किया गया, तारीफ़ किया गया।

प्रशस्वन् (पुं०) [प्र+शंस्+क्वनिप्, तुट्] समुद्र, सागर।

प्रशस्वरी [प्रशस्वन्+ङीप्, र आदेश] नदी।

प्रशमः [प्र+शम्+घञ्] 1 शमन, शान्ति, स्वस्थचित्तता–प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवम् — रघु० ८।१५, कि० २।३२ 2 शान्ति, विश्राम 3 बुझाना, उपशमन —कु० २।२० 4 विराम, अन्त, विनाश–शि० २०।७३ 5 सान्त्वना, तुष्टीकरण—शि० १६।५१।

प्रशमन (वि०) (स्त्री०–नी) [प्रम्+णिच्+ल्युट्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला धीरज बंधाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को),—नम् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, धीरज बंधाना 2 दमन करना, धैर्यबंधाना, दिलासा देना, हलका करना—आर्तप्रातिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् —मेघ० ५३ 3 चिकित्सा करना, स्वस्थ करना—जैसा कि 'व्याधिप्रशमनम्' में 4 (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5. विराम, थामना 6. उपयुक्त रूप से प्रदान करना, सत्पात्र को प्रदान करना—मनु० ७।५६, (सत्पात्रे प्रतिपादनम्—कुल्लू०, परन्तु अन्य विद्वान् इसका अगला अर्थ समझते हैं) 7. प्राप्त करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—लब्धप्रशमनस्वस्थमर्थेन समुपस्थिता रघु० ४।१४ 8 वध, हत्या।

प्रशमित (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1. सान्त्वना दी गई, धीरज बंधाया गया, स्वस्थचित्त, तुष्टीकृत, शान्त किया गया 2 (आग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3. प्रायश्चित किया गया, परिशोधन किया गया—उत्तर० १।४०।

प्रशस्त (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] 1 प्रशंसा किया गया, तारीफ़ किया गया, श्लाघा की गई,

स्तुति की गई 2 प्रशंसनीय, तारीफ़ के योग्य 3 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 4. सौभाग्यशाली, प्रसन्न, ज्ञानन्वित, शुभ। सम०—अद्रिः एक पहाड़ का नाम।

प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र+शंस्+क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़ 2. वर्णन उत्तर० ७ 3 किसी की (उदा० संरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4 श्रेष्ठता, महत्त्व 5 शुभ कामना 6 निर्देशन, शिक्षण, निर्देश-नियम जैसा कि 'लेखप्रशस्ति' (लिखने का एक प्रकार) में।

प्रशस्य (वि०) (म० अ०—श्रेयस् या ज्यायस्, उ० अ०—श्रेष्ठ या ज्येष्ठ) [प्र+शंस्+क्यप्] प्रशंसा के योग्य, तारीफ़ के लायक़, श्रेष्ठ।

प्रशाख (वि०) [प्रशस्ता शाखा यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसकी अनेक शाखाएँ इधर उधर फैली हों 2 गर्भपिण्ड की पाँचवीं अवस्था कहते हैं कि इस समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं), —ख छोटी शाखा या टहनी।

प्रशाखिका प्रशाखा+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी शाखा, टहनी।

प्रशान्त (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+क्त] 1 शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित्त 2 निश्चल, सौम्य, निस्तब्ध, धीर, निश्चेष्ट—अहो प्रशान्तरमणीयतो-दात्तस्य 3 पालतू, वशीकृत, दबाया हुआ 5 समाप्त, विरत, निवृत्त—तत्सर्वमेकपद एव मम प्रशांतम्—मा० ९।३६, प्रशान्तमस्त्रम्—उत्तर० ६ 'कार्य करने से रुका हुआ या निवृत्त' 5 मृत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-शम्)। सम०—आत्मन् (वि०) स्वस्थमना, शान्ति-पूर्ण, अचंचल,—ऊर्मि (वि०) क्षीणशक्ति, निस्तेज, विदग्ध,—काम (वि०) सन्तुष्ट, —चेष्ट (वि०) आराम करने वाला, विश्रांत, विरत,—बाध (वि०) जिसकी समस्त बाधाएँ व संकट दूर हो गये हैं—कि० १।१८।

प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. धैर्य, शान्ति, मनकी स्थिरता, निःशब्दता, विश्राम 2. आराम, विराम, ठहराव 3 निराकरण करना, (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना।

प्रशमः [प्र+शम्+घञ्] 1 शान्ति, धैर्य, मनकी स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, निराकरण करना 3 विश्राम।

प्रशासनम् [प्र+शास्+ल्युट्] 1. शासन करना, हुकूमत करना 2 आदेश देना, बल पूर्वक वसूल करना 3. राज्य शासन।

प्रशास्तृ (पुं०) [प्र+शास्+तृच्] राजा, शासक, राज्यपाल।

प्रशिखिक (वि०) [प्रा० स०] बहुत छोटा।

प्रशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य, पड़शिष्य—शिष्य प्रशिष्यैरुपगीयमानमयेहि तन्मङ्गलमिज्यधाम—भाग०।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] स्वच्छता, पवित्रता।

प्रशोषः [प्र+शुष्+घञ्] सूखना, सूख जाना, सुखापन।

प्रश्नव्याकरणम् [प्र+श्नुत्+ल्युट्] छिड़कना, क्षरण—उत्तर० ३।११।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1 सवाल, पूछताछ, परिपृच्छा, परिप्रश्न (अविज्ञातप्रकथन प्रश्न इत्यभिधीयते) ज्ञाना-मयप्रश्न पूर्वकम्—शा० ५, 'कुशलप्रश्न के प्रश्न के साथ' 2 अन्वेषी आँख पड़ताल या गवेषणा 3 विवादपद, विवादास्पद विषय, विवादग्रस्त दृष्टिकोण —इति प्रश्न उपस्थित 4. समस्या, हिसाब का प्रश्न —अहं ते प्रश्नं वक्ष्यामि—मृच्छ० ५ 5 भविष्य सम्बन्धी पूछताछ 6 किसी ग्रन्थ का अनुच्छेद या परि-च्छेद। सम०—उपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम (इसमें छः प्रश्न तथा उनके छः उत्तर हैं) —कुलिः,-कुली (स्त्री०) पहेली, बुझौवल।

प्रश्नथः [प्र+श्रथ्+अच्] शिथिलता, ढीलापन, शिथिली-करण।

प्रश्रयः, प्रश्रयणम् [प्र+श्रि+अच्, ल्युट् वा] 1. आदर, शिष्टता, सुजनता, विनम्रता, सम्मानपूर्ण अथवा शिष्टतायुक्त व्यवहार, विनय—सभाजनैः प्रश्रयनम्र-मूर्तिभि —शि० १२।३३, रघु० १०।७०, ८३, उत्तर० ६।२३, साश्रयम् आदरपूर्वक, सविनय 2 प्रेम, स्नेह, आदर—पंच० २।२।

प्रश्रित (भू० क० कृ०) [प्र+श्रि+क्त] सुजन, नम्र, शिष्ट, विनीत, शिष्टाचरणयुक्त।

प्रश्लक्ष्ण (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत हौला या पिलपिला 2 उत्साह-हीन, निस्तेज।

प्रश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+श्लिष्+क्त] 1. जकड़ा दिया हुआ, ऐंठा दिया हुआ 2. तर्कसंगत, युक्तियुक्त।

प्रश्लेषः [प्र+श्लिष्+घञ्] गला सटना, सहति।

प्रश्वासः [प्र+श्वास्+घञ्] साँस, श्वसन, श्वास-प्रश्वासक्रिया।

प्रष्ठ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. सामने खड़ा हुआ —रघु० १५।२० 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, उत्तम, नेता—पुलस्त्यप्रष्ठ. महाभा० १।३०, ६।३०, वि० १९।३०। सम०—वाह् (पुं०) हल जोतने के लिए सधाया जाता हुआ जवान बैल।

प्रष्ठ् (स्वा०, दिवा०—आ० प्रष्ठते, प्रस्थते) 1. अच्छे को जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना, बढ़ाना।

प्रसक्त (भू० क० कृ०) [प्र+सञ्ज्+क्त] 1. लगा, युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेहशील—पंच० १।१९१

3. अनुगामी, अनुकूल 4. स्थिर, तुला हुआ, भक्त, आसक्त, व्यवसायरत, प्रवृत्त—वि० ५।६३, इसी प्रकार धृत,° निष्ठा° आदि 5. सटा हुआ, निकटस्थ 6. अविच्छिन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४।१८, रघु० १३।४०, मा० ४।६, मालवि० ३।१ 7 हासिल, प्राप्त, लब्ध,—क्तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार—कि० १६।५५।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र+सञ्ज्+क्तिन्] 1 आसक्ति, अभिरुचि, व्यसन, संलग्नता, अनुरक्ति 2. संबंध, संयोग, साहचर्य 3 प्रयोज्यनीयता, संबंध, प्रयोग जैसा कि 'अति प्रसक्ति' (अतिव्याप्ति) में 4. ऊर्जा, धैर्य—संतापे विधातु शिव शिवां प्रसक्तिम्—कि० ५।५० 5. उपसंहार, घटाना 6 विषय, प्रवचन का विषय 7. संभावना का घटित होना।

प्रसंख्या [प्रा० स०] 1 कुल योग, राशि 2 विचार विमर्श।

प्रसंख्यानम् [प्र+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. गिनना 2 विचारण, मनन, गहन चिन्तन, भाव चिन्तन—श्रुताधारोक्षीतिरपि सभेऽस्मिन् हर प्रसंख्यानपरो बभूव—कु० ४।३० 3 कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति,—नः अदायगी, भुगतान।

प्रसंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता—स्वरूपयोग्ये सुरतप्रसंगे—कु० १।१९, तस्यात्यायतकोमलस्य सतत द्यूत प्रसंगेन किम्—मृच्छ० २।११, शि० ११।२२ 2 मेल-जोल, अन्तःसंपर्क, साहचर्य, संबंध—निवर्तेतामस्माद् गणिका प्रसंगात्—मृच्छ० ४ 3 अवैध मैथुन 4 व्यस्तता, एकाग्रता, कार्यपरता—भूविक्रियाया विरतप्रसंगै—कु० ३।४७ 5 विषय, शीर्षक (प्रवचन या विवाद का) 6 अवसर, घटना - दिग्विजयप्रसंगेन—का० १९१, यात्राप्रसंगेन—मा० १ 7 संयोग, समय, अवसर—मनु० ९।५ 8 दैवयोग, घटना, काण्ड, संभावना का होना—ईश्वरो जगत. कारणमुपपद्यते कुत' वैषम्यनैर्घृण्य प्रसंगात्—शारी०, एव चालब्धस्था प्रसंग - तदेव, कु० ७।१६ 9 संबद्ध तर्कना, या युक्ति 10 उपसंहार, अनुमान 11. संबद्ध भाषा 12 अविभाज्य प्रयोग या संबंध (व्याप्ति) 13 माता पिता का उल्लेख (प्रसंगेन, प्रसंगतः, प्रसंगात्—यह क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—1 के संबंध में 2 के फल स्वरूप, के कारण, क्योंकि, के रूप में 3 अवसरानुसार 4 के क्रम में (यथा—कथाप्रसंगेन बातचीत के सिलसिले में)। सम०—निवारणम् भविष्य में इस प्रकार की स्थिति का रोकना,—वशात् (अव्य०) समय के अनुसार, परिस्थितिवश,—विनिवृत्ति (स्त्री०) इस प्रकार की संकटस्थिति की पुनरावृत्ति का न होना।

प्रसंजनम् [प्र+सञ्ज्+ल्युट्] 1 जोड़ने की क्रिया, मिलाना, एकत्र करना 2. व्यवहार में लाना, सबल बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसत्तिः (स्त्री०) [प्र+सद्+क्तिन्] 1 अनुग्रह, कृपालुता, शिष्टाचार 2 स्वच्छता, पवित्रता, विशदता।

प्रसन्नानम् [प्र+सम्+धा+ल्युट्] मिलान, मेल।

प्रसन्न (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+क्त] 1 पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, विमल, पारदर्शी—कु० १।२३, ७।७४, श० ५।२० 2 खुश, आनन्दित, प्रतुष्ट, शान्त—गंगा पारमयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम्—मुद्रा० ३।९, गम्भीराया पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने—मेघ० ४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), कु० ५।३५, रघु० २।६८ 3 दयालु, अनुग्रहशील, कृपालु, मंगलप्रद—अवेहि मा कामदुघां प्रसन्नाम्—रघु०२।६३ 4 सरल, सीधा, स्पष्ट, सुबोध (अर्थ) 5 सत्य, सही—प्रसन्नस्ते तर्क—विक्रम० २, प्रसन्नप्रायस्ते तर्कः—मा० १, —न्नः 1 प्रसादन, अनुरंजन 2 खींची हुई मदिरा। सम०—आत्मन् (वि०) कृपालुमना, मंगलप्रद,—हिरा खींची हुई मदिरा,—वक्त्र (वि०) 1 शान्त प्राय 2. सत्यप्राय,—मुख—वदन (वि०) कृपालुदृष्टि वाला, प्रसन्न चेहरे वाला, मुस्कराता हुआ,—सलिल (वि०) स्वच्छ पानी वाला।

प्रसभः [प्रगता सभां समानाधिकारो यस्मात्—प्रा० ब०] बल, हिंसा, प्रचण्डता—प्रसभोद्धतारि—रघु० २।३०, —भम् (अव्य०) 1 बलपूर्वक, जबरदस्ती,—इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः—भग० २।६०, मनु० ८।३३२ 2 बहुत अधिक, अत्यंत—तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, ऋतु० ६।२५ 3 आग्रहपूर्वक—भग० ११।४१। सम०—हरणम् बलपूर्वक दबाना—श० ७।३३,—हरण्यम् बलपूर्वक अपहरण।

प्रसमीक्षणम्, प्रसमीक्षा [प्र+सम्+ईक्ष्+ल्युट्, प्रसम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] विचारण, विचारविमर्श, निर्धारण।

प्रसयनम् [प्र+सि+ल्युट्] 1. बंधन, कसना 2 जाल।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] 1. आगे जाना, प्रगमन करना—श० १।२९ 2 मुक्त या निर्बाध गति, मुक्त क्षेत्र, पहुँच, गति—रघु० ८।२३, १६।२०, मुद्रा० ३।५, हि० १।१८६ 3. फैलाव, प्रसार, विस्तर, विस्तार, फैलना—शि० ९।७१ 4 विस्तार, आयाम, बड़ी मात्रा शि० ३।३५ 5 प्रचलन, प्रभाव—शि० ३।१०, 6. सरिता, प्रवाह, धारा, बाढ़—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः—गीत० ११ 7. समूह, 8 समुच्चय युद्ध, लड़ाई 9 लोहे का दाग 10 जाल 11 विनम्र याचना।

प्रसरणम् [प्र+सृ+ल्युट्] 1. आगे जाना, दौड़ना, बहना 2 बल निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना 4. शत्रु को घेरना 5. सौजन्य ।

प्रसरणिः,—णी [प्र+सृ+अनि, प्रसरणि+ङीष्] शत्रु को घेर लेना ।

प्रसर्पणम् [प्र+सृप्+ल्युट्] 1. चलना, सरकना, आगे बढ़ना २ व्याप्त करना, सब दिशाओं में फैलना ।

प्रसव (श्र) कः [प्र+शल्+अच्, पक्षे पृषो० शस्य स] हेमंत ऋतु ।

प्रसवः [प्र+सू+अप्] 1. जन्म देना, जनन, प्रसूति, जन्म, उत्पादन 2. बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति —यथा 'आसन्नप्रसवा' में 3 सन्तान, प्रजा, छोटे बच्चे, बालक—केवल वीरप्रसवा भुवः—उत्तर० १, कु० ७।८७ 4. स्रोत, मूल, जन्मस्थान (आलं० से भी) कि० २।४३ 5. फूल, मंजरी—प्रसवविभूतिषु भूरुहां विरक्त—शि० ७।४२, नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः—मेघ०, कुंदप्रसवशिथिल जीवितम्—११३, रघु० ९।२८, कु० १।५५, ४।४, १४, ८।५, ९, मा० ९।२७, ३१, उत्तर० २।२० 6 फल, उत्पादन । सम०—उन्मुख गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने वाला· पति प्रतीत प्रसवोन्मुखीं प्रिया ददर्श—रघु० ३।१२,—गृहम् प्रसूतिकागृह, जच्चाघर,—धर्मिन् (वि०) उपजाऊ, उर्वर, बन्धनम् फूल या पत्ते की डंठल, वृन्त—वेदना,—व्यथा प्रसव काल की पीड़ा, बच्चा जनने का कष्ट,—स्थली बाता,—स्थानम् 1 प्रसूतिकागृह, 2 जाल ।

प्रसवकः [प्रसवेन पुष्पादिना कायति शोभते—प्रसव+कै+क] चिरौंजी का पेड़ ।

प्रसवनम् [प्र+सू+ल्युट्] 1 पैदा करना 2 बच्चे को जन्म देना, उपजाऊपन ।

प्रसवन्तिः (स्त्री०) [प्र+सू+झिच्, अन्तादेशः] अच्छा स्त्री ।

प्रसवन्ती [प्र+सू+शतृ+ङीप्] अच्छा स्त्री —न पश्येत् प्रसवन्तीं च तेजस्कामो द्विजोत्तम —मनु० ४।४४ ।

प्रसवित्र् (पु०) [प्र+सू+तृ] पिता, प्रजनक ।

प्रसवित्री [प्रसवित्र्+ङीप्] माता ।

प्रसव्य (वि०) [प्रगत सव्यात्—प्रा० स०] प्रतिकूल, व्युत्क्रांत, बायाँ, उलटा ।

प्रसह (वि०) [प्र+सह्+अच्] सहनशील, सहिष्णु, सहन करने वाला,—हः 1 शिकारी जानवर या पक्षी 2 मुकाबला, सहन शक्ति, विरोध ।

प्रसहन [प्र+सह्+ल्युट्] शिकारी जानवर या पक्षी, नम् 1 सामना करना, मुकाबला करना 2 सहन करना, बर्दाश्त करना 3 पराजित करना, विजय प्राप्त करना 4. आलिंगन, परिरम्भण ।

प्रसह्य (अव्य०) [प्र+सह्+(क्त्वा) ल्यप्] 1 बल पूर्वक, प्रचण्डता के साथ, जबरदस्ती—प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्—भर्तृ० २।४, शि० १।२७, 2 अत्यधिक, अत्यंत ।

प्रसक्तिका [प्रसक्तं साति (नाश०)—सो+क्विप्—पक्षा.—प्रा० ब०, कप्+टाप्] एक प्रकार का बादाम (छोटे दानों वाला) ।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] 1 अनुग्रह, कृपा, दाक्षिण्य, कल्याणकारिता—कुरु दृष्टिप्रसादं 'कृपा दर्शन दीजिए', इत्याप्रसादादवस्थास्त्व परिचर्यापरो भव—रघु० २।१९, २।२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में कलुषाहीनता 3. धीरता, शान्ति, मन की स्वस्थता, सौम्यता, गाभीर्य, उत्तेजना का अभाव—भग० २।६४ 4. स्वच्छता, निर्मलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी या मन आदि की) पवित्रता—राज्ञा रोष पतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम्—विक्रम० १।८, श० ७।३२, प्राप्तबुद्धिप्रसादा'—शि० ११।६, रघु० १७।१, कि० ९।२५, 5. प्रसादगुणयुक्तता, शैली की विशदता, मम्मट के अनुसार, तीन गुणों में एक—प्रसाद गुण, परिभाषा-शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः, व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः—काव्य० ८, पादवर्धकपदत्वकल्पमर्थवैमल्यं प्रसादः, या श्रुतमात्रा वाक्यार्थं करतलबदरमिव निवेदयन्ती घटना प्रसादस्य —रस०, दे० काव्या० १।४५, सा० द० ६।११ भी 6. भगवान् की मूर्ति को भोग लगाया हुआ नैवेद्य का अवशिष्ट 7 चढ़ावा, पुरस्कार 8. शान्तिकर भेंट 9. कुशल, क्षेम । सम०—उन्मुख (वि०) अनुग्रह करने के लिए तत्पर · पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह को वापिस खींचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की अपेक्षा न करे,—पात्रम् अनुग्रह का पात्र,—स्व (वि०) 1. कृपालु, मंगलप्रद 2. शान्त, तुष्ट, आनंदित ।

प्रसादक (वि०) (स्त्री०—विका) [प्र+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्फटिक सदृश विशद करने वाला 2 तसल्ली देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3 आनन्दित करने वाला, खुश करने वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादन (वि०) (स्त्री० नी) [प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, निर्मल या विशुद्ध करने वाला—फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादनम् —मनु० ६।६७ 2 सांत्वना देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. खुश करने वाला, आनन्दित करने वाला, —नः राजकीय तंबू,—नम् 1 निर्मल करना, पवित्र करना 2 सांत्वना देना, ढाढस बंधाना, शान्त करना, मन स्वस्थ करना, 3. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, वा 1. सेवा, पूजा 2. निर्मली करण ।

प्रसादित (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+णिच्+क्त] 1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 खुश किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3. पूजा किया हुआ 4. वीरज बधाया हुआ, सान्त्वना दिया हुआ।

प्रसादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्र+साध्+ण्वुल्] 1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2 पवित्र करने वाला, छानने वाला 3 सजाने वाला, अलङ्कृत करने वाला, —कः पार्श्वचर, अपने स्वामी को वस्त्र पहनाने वाला सेवक।

प्रसाधनम् [प्र+साध्+ल्युट्] 1 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, करवाना 2 व्यवस्थित करना, क्रमबद्ध करना 3 सजाना, अलङ्कृत करना, विभूषित करना, शरीरसज्जा, वेशभूषा—कु० ४।१८ 4 सजावट, आभूषण, सजाने या विभूषित करने का साधन—कु० ७।१३, ३०,—नः,-नम्,-नी, कपी। सम०—विधिः सजावट, शृंगार,—विज्ञः सबसे ऊँचा शृंगार-प्रसाधन विधे प्रसाधन विशेष—विक्रम० २।३।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृंगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकालम्बितमग्रपादमाक्षिप्य—रघु० ७।७।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+साध्+क्त] 1 निष्पन्न, पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2 विभूषित, सुसज्जित।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2 फैलाव, प्रसृति, विस्तार, प्रसरण 3. विछावन 4. खाद्यान्वेषण के लिए देश में इधर उधर फैल जाना।

प्रसारणम् [प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. विदेशों में फैलना, बढ़ना, वृद्धि, प्रसृति, फैलाव 2. फैलाना—तथा 'बाहुप्रसारणम्' में 3. शत्रु को घेरना 4. शयन और वास के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर वर्णों (यरलव) का स्वरों (इ, ऋ ऌ उ) में बदल जाना, सम्प्रसारण।

प्रसारिणी [प्र+सृ+णिनि+ङीप्] शत्रु को घेरना।

प्रसारित (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+णिच्+क्त] 1 प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रसृत किया हुआ, बढ़ाया हुआ 2 (हाथों की भाँति) फैलाया हुआ 3 प्रदर्शित किया हुआ, रक्खा हुआ, (बिक्री के लिए) रक्खा हुआ।

प्रसाहः [प्र+सह्+घञ्] अपने प्रभाव में लाना, जीत लेना, पराजित करना।

प्रसित (भू० क० कृ०) [प्र+सि+क्त] 1. बांधा हुआ, कसा हुआ 2. संलग्न, व्यस्त, काम में लगा हुआ 3. तुला हुआ, प्रबल इच्छुक, लालायित (करण० या अधि० के साथ)—सहस्या सहस्या वा प्रसित—सिद्धा०, रघु० ८।२३,—तम् पीड, मवाद।

प्रसितिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1 जाल 2 पट्टी 3. बन्धन, नत्थे की पट्टी।

प्रसिद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+सिध्+क्त] 1. विश्रुत, विख्यात, मशहूर 2 सजा हुआ, अलङ्कृत, विभूषित—रघु० १८।४१, कु० ५।९, ७।१६।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सिध्+क्तिन्] 1 कीर्ति, ख्याति, मशहूरी, विश्रुति 2 सफलता, निष्पन्नता, पूर्ति—कि० ३।३९, मनु० ४।३ 3 शृंगार, सजावट।

प्रसीदिका [प्रसीदतेऽस्याम्—प्र+सद्+ण्वुल्, इत्वम्, टाप्, सीदादेशः] वाटिका, छोटा उद्यान।

प्रसुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+स्वप्+क्त] 1 सोया हुआ, निद्रित 2 प्रगाढ़ निद्रा में।

प्रसुप्तिः (स्त्री०) [प्र+स्वप्+क्तिन्] 1 निद्रालुता, प्रगाढ़ निद्रा 2 लकवे का रोग।

प्रसू (वि०) [प्र+सू+क्विप्] 1 प्रकाशित करने वाला, पैदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूदक्षाधिवेत्तव्या—याज्ञ० १।७३—(स्त्री०) 1 माता—मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ—अमर० 'जनक-जननौ' 2 घोड़ी 3 फैलने वाली लता 4 केला।

प्रसूका [प्र+सू+कन्+टाप्] घोड़ी।

प्रसूत (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त] 1. उत्पन्न, जनित 2 पैदा किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित,—तम् 1 फूल 2 कोई उपजाऊ स्रोत,—ता जच्चा स्त्री।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सू+क्तिन्] 1 प्रसर्जन, जनन, प्रसव 2 जन्म देना, पैदा करना, गर्भमोचन, बच्चे को जन्म देना—रघु० १४।६६ 3 बछड़े को जन्म देना 4 अंडे देना—मनु० १।३५ 5 जन्म, उत्पादन, जनन—रघु० १०।५३ 6 दर्शन, प्रकट होना, (फूलों का) विकसन—रघु० ५।१४, कु० १।४२ 7 फल, पैदावार 8 सतति, प्रजा, अपत्य—रघु० १।२५, ७७, २।४, ५।७, कु० २।७, श० ६।२४ 9 उत्पादक, जनक, प्रस्रष्टा—रघु० २।६३ 10 माता। सम०—जम् प्रसव से उत्पन्न होने वाली पीड़ा,—वायुः प्रसव के समय गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली वायु।

प्रसूतिका [प्रसूत+ठन्+टाप्] जच्चा स्त्री, वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चे को जन्म दिया है।

प्रसून (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त, तस्य नत्वम्] पैदा किया गया, उत्पन्न,—नम् 1 फूल—लतायाः पूर्वप्रसूनस्यागमं कुत—उत्तर० ५।२०, रघु० २।१० 2 कली, मंजरी 3 फल सम०—इषुः,—बाणः,—बाणः कामदेव का विशेषण,—वर्षः पुष्पवृष्टि।

प्रसूनकम् [प्रसून+कन्] 1 फूल 2 कली, मंजरी।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ 2. पसारा हुआ, बढ़ाया हुआ 3. फैलाया गया, प्रसारित किया गया 4. लंबा, लम्बा किया हुआ

5 अस्त, लगा हुआ 6 फुर्तीला तेज 7. सुशील, विनीत —तः हाथ की खुली हथेली, अंजलि,—ता,—तम् दो पल का माप,—ता टांग। सम०—अः पुत्रों का विशिष्ट वर्ग, व्यभिचार जनित पुत्र, कुंडगोलकवत्।

प्रसृतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1 आगे जाना, प्रगति 2 बहना 3 फैलाये हुए हाथ की हथेली, अंजलि 4 मुट्ठी भर (यही दो पल की माप समझी जाती है) —परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये —भर्तृ० २।४५, याज्ञ० २।११२।

प्रसृत्वर (वि०) [प्र+सृ+क्वरप्, तुकागम] इधर उधर फैलने वाला भामि० ४।१।

प्रसृमर (वि०) [प्र+सृ+क्मरच्] बहता हुआ, चूने वाला, टपकने वाला।

प्रसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+सृज्+क्त] 1 एक ओर डाला हुआ, त्यागा हुआ 2 घायल, क्षतिग्रस्त,—ष्टा फैलाई हुई अंगुली (अङ्गुल्य प्रसृता यास्तु ता प्रसृष्टा उदीरिता)।

प्रसेक [प्र+सिच्+घञ्] 1 बहना, रिसना, टपकना 2 छिड़कना, आर्द्र करना 3. उद्गिरण, प्रस्रवण —ऋतु० ३।६ 4 उद्गमन, कै।

प्रसेदिका [=प्रसीदिका, पृषो०] छोटा उद्यान, वाटिका।

प्रसेव, प्रसेवक [प्र+सिव्+घञ्, प्रसेव+कन्] 1 थैला, (अनाज के लिए) बोरी 2 चमड़े की दोतल 3 काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो वीणा की गर्दन के नीचे लगाया जाता है जिससे कि उसका स्वर अपेक्षाकृत कुछ गहरा हो जाय।

प्रस्कन्दनम् [प्र+स्कन्द्+ल्युट्] 1 कूद जाना, छलांग लगाना 2. विरेचन, जुलाब, अतिसार,—नः शिव का विशेषण।

प्रस्कन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्कन्द्+क्त] 1 फलांगा हुआ, छलांग लगाकर पार किया हुआ 2. पतित, टपका हुआ 3 परास्त,—न्नः 1 जातिबहिष्कृत 2. पापी, अतिक्रमणकारी।

प्रस्कुन्दः [प्रगत कुन्द चक्रम्—प्रा० स०] गोलाकार वेदी।

प्रस्खलनम् [प्र+स्खल्+ल्युट्] 1. लड़खड़ाना 2. डगमगाना, गिर जाना।

प्रस्तरः [प्र+स्तृ+अच्] 1. पर्णशय्या, पुष्पशय्या 2 पर्यंक, खटिया 3 समतल शिखर, डूंगर, समतल 4 पत्थर, चट्टान 5 मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

प्रस्तरणम्,—णा [प्र+स्तृ+ल्युट्] 1. पलंग 2. शय्या 3 बिछौना।

प्रस्तारः [प्र+स्तृ+घञ्] 1 बखेरना, फैलाना, आच्छादित करना 2 पुष्पशय्या, पर्णशय्या 3 पलंग, खाट 4. चपटी सतह, समतल डूंगर 5 वनस्थली, जंगल 6. (छन्द० में) समावित भेदों समेत छन्द की ह्रस्व तथा दीर्घ मात्राओं की द्योतिका तालिका।

प्रस्ताव [प्र+स्तु+घञ्] 1. आरंभ, शुरू 2. आमुख 3. उल्लेख, संकेत, सदर्भ —नामसाम्यप्रस्ताव - सं० ७ 4. अवसर, मौका, समय, ऋतु, उपयुक्तकाल —स्वराप्रस्तावोऽयं न खलु परिहासस्य समय'—मा० ९।४४, शिष्याय बृहतीं पत्थु प्रस्तावमविशद्दृशा —शि० २८ 5. प्रवचन का प्रयोजन, विषय, शीर्षक 6. नाटक की प्रस्तावना—दे० 'प्रस्तावना' नीचे। सम०—वक्रः ऐसा वार्तालाप जिसमें प्रत्येक अन्तर्वादी भाग ले।

प्रस्तावना [प्र+स्तु+णिच्+युच्+टाप्] 1. प्रशंसित या उल्लिखित होने का कारण बनना, प्रशंसा, सराहना 2 शुरू, आरंभ—आर्यबालचरितप्रस्तावनाडिण्डिम' महावी०—१५४ 3 परिचय, भूमिका, आमुख—प्रस्तावना इव कपटनाटकस्य—मा० २ 4. नाटक के आरंभ में सूत्रधार तथा किसी एक पात्र के बीच में हुआ परिचयात्मक वार्तालाप (इसमें नाटककार तथा उसकी योजना का परिचय देकर श्रोताओं के सम्मुख नाटक की घटनाओं को रखा जाता है) परिभाषा के लिए दे० 'आमुख'।

प्रस्तावित (वि०) [प्र+स्तु+णिच्+क्त] 1 आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 2. उल्लिखित, इङ्गित —मा० ३।३।

प्रस्तिरः [=प्रस्तरः नि० इत्वम्] पर्णशय्या, पुष्पशय्या।

प्रस्तीर्ण,—र्त (वि०) [प्र+स्तृ+क्त, सम्प्र०, पक्षे तस्य रः] 1. फैलाकर रखा हुआ, बखेरा हुआ 2 भीड़-भड़क्का, शुष्क बनाये हुए।

प्रस्तुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्तु+क्त] 1. जिसकी प्रशंसा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2 आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 3 निष्पन्न, कृत, कार्यान्वित 4. घटित 5. उपागत 6 प्रस्तुत किया गया, उद्घोषित, विचाराधीन या विचारणीय (दे० प्रपूर्वक स्तु),—तम् 1. उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय —अप्रस्तुतमनुस्रियताम् 2. (अलं० शा०) विचार के विषय को स्पष्टरेखा बनाना, उपमेय, दे० 'अप्रकृत'; अप्रस्तुतप्रशंसा सा या तैव प्रस्तुताश्रया —काव्य० १०। सम०—अङ्कुरः एक अलंकार जिसमें श्रोता के मन में निहित किसी बात को प्रकाशित करने के लिए सचारी परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, दे० चन्द्रा० ५।६४, और कुव० (प्रस्तुतांकुर के नीचे)।

प्रस्थ (वि०) [प्र+स्था+क] 1 जाने वाला, दर्शन करने वाला, गमन करने वाला—यथा 'वानप्रस्थ' में 2.बाहर पर जाने वाला 3.फैलाने वाला, विस्तार करने

वाला 4. दृढ़, स्थिर,—स्थः,—स्थम् 1. समतलभूमि, चौरस मैदान, जैसा कि औषधिप्रस्थ या इन्द्रप्रस्थ में 2 पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि,—प्रस्थे हिमाद्रेर्मृगनाभिगन्धि किंचित्क्वणल्किन्नरमध्युवास—कु० १।५४, मेघ० ५८ 3. पहाड़ का शिखर या चोटी —शि० ४।११ (यहाँ यह चौथे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5. 'प्रस्थ' के तोल के बराबर कोई वस्तु। सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, दोना मरुआ।

प्रस्थप्रस्थ (वि०)[प्रस्थ+पच्+अच्, मुमागमः] प्रस्थमात्र पकाने वाला।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1 प्रयाण करना, कूच करना, विदा, प्रगमन करना —प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थम्—शा० ५।३, रघु० ४।८८, मेघ० ४१, अमरु ३१ 2 पहुँचना—कु० ६।६१ 3 कूच करना, किसी सेना का या आक्रमण का कूच करना 4. प्रणाली, पद्धति 5. मृत्यु, मरण 6. निकृष्ट श्रेणी का नाटक—दे० सा० द० २७६, ५४४।

प्रस्थापनम् [प्र+स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. भेजना, तितर-बितर करना, प्रेषित करना 2 द्यूतावास में नियुक्ति 3 प्रमाणित करना, प्रदर्शन करना 4 उपयोग करना, काम में लगाना 5. पशुओं का अपहरण।

प्रस्थापित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+णिच्+क्त, पुकागमः] 1 भेजा गया, प्रेषित 2 स्थापित, सिद्ध।

प्रस्थित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+क्त] प्रयात, आगे बढ़ा हुआ, विदा हुआ, विसर्जित, यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था')।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र+स्था+क्तिन्] 1. चले जाना, विदा होना 2 कूच करना, यात्रा।

प्रस्नः [प्र+स्ना+क] स्नान-गात्र।

प्रस्नव [प्र+स्नु+अप्] 1 उमड़ कर बहना, बह निकलना, नि स्रवण—उत्तर० ६।२२ 2. (दूध की) धार या प्रवाह—रघु० १।८४।

प्रस्नुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्नु+क्त] झरता हुआ, रिसता हुआ, बहकर निकलता हुआ। सम०—स्तनी वह स्त्री जिसकी छाती से (मातृस्नेहातिरेक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० ३।

प्रस्नुषा [प्रा० स०] पौत्रवधू।

प्रस्पन्दनम् [प्र+स्पन्द्+ल्युट्] फड़कन, थरथराहट, कंपकंपी।

प्रस्फुट (वि०) [प्र+स्फुट्+क] 1 खिला हुआ, विकसित, (फूल आदि) फूला हुआ 2 उद्घोषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट आदि) फैलाई हुई 3 सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्फुरित (भू० क० कृ०) [प्र+स्फुर्+क्त] हिलता हुआ, काँपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

प्रस्फोटनम् [प्र+स्फुट्+ल्युट्] 1 फूट निकलना, खिलना, मुकुलित होना 2 स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3 टुकड़े-टुकड़े करना 4 खिलाना, विकसित करना 5. अनाज फटकना 6. छाज 7 ठोकना, पीटना।

प्रस्खलित् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+स्खल्+णिनि] समय से पूर्व गिर जाने वाला (गर्भ), कच्चा गिरना।

प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1 बूंद-बूंद गिरना, टपकना, बहना रिसना 2 बहाव, धारा 3 औंडी या स्तन से टपकने वाला दूध —प्रस्रवेण (पाठान्तर 'प्रस्नवेन') अभिवर्धन्ती वत्सालोकप्रवर्तिना—रघु० १।८४ 4. मूत्र,—वा—(ब० व०) उमड़ते हुए आँसू।

प्रस्रवणम् [प्र+स्रु+कान्+ल्युट्] 1 बह निकलना, उमड़ना, टपकना, झरना, बूंद बूंद गिरना 2 स्तन या औंडी से दूध बहना—(वृक्षकान्) घटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयत्—कु० ५।१४ 3 जलप्रपात, प्रपातिका, निर्झर 4 झरना, फौवारा—समर्चिता प्रस्रवणैः समन्तत—ऋतु० २।१३ मनु० ८।२४८ याज्ञ० १।१५९ 5 नाली, टोंटी 6 पहाड़ी सरिताओं से बना पोखर, पल्वल 7 स्वेद, पसीना 8 मूत्रोत्सर्ग,—णः एक पहाड़ का नाम—अनस्थानमध्यगो गिरि प्रस्रवणो नाम उत्तर० १।

प्रस्राव [प्र+स्रु+घञ्] 1 बहाव, उमड़न, मूत्र।

प्रस्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्रु+क्त] उमड़ा हुआ, टपका हुआ, बूंद-बूंद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ।

प्रस्वन (स्वा) अ. [प्र+स्वन्+अप्, घञ् वा] ऊँची आवाज।

प्रस्वाप [प्र+स्वप्+घञ्] 1 निद्रा 2 स्वप्न 3 निद्रा लाने वाला अस्त्र।

प्रस्वापनम् [प्र+स्वप्+णिच्+ल्युट्] 1 सुलाना, निद्रित करना 2 ऐसा अस्त्र जो आक्रान्त व्यक्ति को सुला दे —रघु० ७।६१।

प्रस्विन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+क्त] पसीना आया हुआ, पसीने से तर।

प्रस्वेद [प्र+स्विद्+घञ्] बहुत अधिक पसीना।

प्रस्वेदित (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+णिच्+क्त] 1 स्वेदाच्छन्न, पसीने से सराबोर, पसीना आया हुआ 2 पसीना लाने वाला, गर्म।

प्रहणनम् [प्र+हन्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रहत [प्र+हन्+क्त] 1 घायल, वध किया हुआ, मारा हुआ 2 पीटा हुआ, (ढोल आदि) बजाना या स्वयं प्रहलपुष्कर कुलो—रघु० १९।१४, मेघ० ६४ 3 पीछे ढकेला हुआ, विजित, पराजित 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ 5 सटा हुआ 6 (पगड़ी) घिसा-पिटा, गतानुगतिक 7. निष्पन्न, विद्वान्।

प्रहरः [प्र+हृ+अप्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय)–प्रहरे प्रहरेऽसहोच्चारितानि गायनानर्घेत्यादिपदानि न प्रमाणम्–तर्क०।

प्रहरकः [प्रहर+कन्] एक पहर।

प्रहरणम् [प्र+हृ+ल्युट्] 1 प्रहार करना, मारना 2 डालना, फेंकना 3 धावा करना, आक्रमण करना 4 घायल करना 5 हटाना, बाहर निकालना 6 शस्त्र अस्त्र, या (उर्वशी) सुकुमार प्रहरण महेन्द्रस्य –विक्रम० १, रघु० १३।७३ भग० १।९, मा० ८।९ 7 संग्राम, युद्ध, लड़ाई 8 ढकी हुई पालकी या डोला।

प्रहरणीयम् [प्र+हृ+अनीयर्] अस्त्र, शस्त्र।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर+इनि] 1 रखवाला 2 पहरेदार, घंटी वाला।

प्रहर्तृ (वि०) [प्र+हृ+तृच्] 1 प्रहार करने वाला, पीटने वाला, हमला करने वाला 2. लड़ने वाला, संयोधी, योद्धा 3 तीरंदाज, निशाने बाज, धनुर्धर।

प्रहर्ष [प्र+हृष्+घञ्] 1 अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द, उल्लास –गुरु प्रहर्षं प्रभवो हि तन्मनि–रघु० ३।१७ 2 लिङ्ग का खड़ा होना।

प्रहर्षणम् [प्र+हृष्+ल्युट्] उल्लसित करना, प्रहृष्ट करना, आनन्दित करना,–ना बुध ग्रह।

प्रहर्षा (वि) जी [प्र+हृष्+णिच्+ल्युट्+ङीप्+प्र +हृष्+णिच्+णिनि+ङीष्] 1 हल्दी 2 एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

प्रहर्षुल [प्र+हृष्+उलच्] बुध ग्रह।

प्रहसनम् [प्र+हस्+ल्युट्] 1 जोर की हँसी, अट्टहास, खिलखिलाकर हँसना 2 मजाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति, उपहास—धिक् प्रहसनम्–उत्तर० ४ 3 व्यंग्यलेख, व्यंग्य 4 स्वांग, तमाशा, हँसी का सुखान्त नाटक –सा० द० में दी गई परिभाषा–भाणवत्सन्धिसभ्यङ्गलास्याङ्कैर्विनिर्मितम्, भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम् ५५३ तथा आगे, उदा० 'कन्दर्पकेलि'।

प्रहसन्ती [प्र+हस्+शतृ+ङीप्] 1 एक प्रकार की चमेली, जुही, यूथिका, वासन्ती 2 एक बड़ी अगीठी।

प्रहसित (भू० क० कृ०) [प्र+हस्+क्त] हँसता हुआ,–तम् हँसी, हास्य।

प्रहस्त [प्रगत प्रस्तो हस्त - प्रा० स०] 1 खुला हाथ जिसकी अँगुलियाँ फैली हों, (थप्पड़) 2 रावण के एक सेनापति का नाम)।

प्रहाणम् [प्र+हा+ल्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना –मनु० ५।५८।

प्रहाणि. (स्त्री०) [प्र+हा+नि, णत्वम्] 1 त्यागना 2 कमी, अभाव।

प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1 वार करना, पीटना, चोट करना याज्ञ० ३।२४८ 2. घायल करना, मार डालना 3 आघात, मुक्का, चोट, ठोकर, चोंच–रघु० ७।४४, मुष्टिप्रहार, तलप्रहार आदि 5. ठोकर– जैसा कि पादप्रहार और लताप्रहार में 6. गोली मारना।

प्रहारणम् [प्र+हृ+णिच्+ल्युट्] वाञ्छनीय उपहार।

प्रहास [प्र+हस्+घञ्] 1 जोर की हँसी, अट्टहास 2. मजाक, दिल्लगी, हँसी 3 व्यंग्योक्ति, व्यंग्य 4 नर्तक, नट, पात्र 5. शिव 6 दर्शन, दिखावा –वेणी० २।२८ 7 एक तीर्थ स्थान का नाम–तु० प्रहास।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र+हस्+णिच्+णिनि] विदूषक, मसखरा।

प्रहिः [प्र+हि+क्विप्] कुआँ।

प्रहित (भू० क० कृ०) [प्र+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2 बढ़ाया हुआ फैलाया हुआ 3 भेजा हुआ, प्रेषित, निर्देशित – विचारमार्गप्रहितेन चेतसा – कु० ५।४२ 4. छोड़ा हुआ, निशाना लगाया हुआ (तीर आदि का) 5 नियुक्त किया गया 6 समुचित, उपयुक्त, –तम् घात, घटना।

प्रहीण (भू० क० कृ०) [प्र+हा+क्त, ईत्, तस्य न, णत्वम्] छोड़ा गया, खाली किया गया, त्यागा गया, –णम् विनाश, निराकरण, घाटा।

प्रहुतः, –तम् [प्र+हु+क्त] भूतयज्ञ, बलिवैश्यवदेव, दैनिक पाँच यज्ञों में एक, तु० मनु० ३।७४।

प्रहुत (भू० क० कृ०) [प्र+हृ+क्त] पीटा गया, आघात किया गया, चोट किया गया, घायल किया गया। –तम् मुक्का, प्रहार, चोट।

प्रहृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+हृष्+क्त] 1. खुश, प्रसन्न, आनंदित, आह्लादित 2 पुलकित करना, रोमांचित करना (रोंगटे खड़े होना)। सम० –मनस् (वि०) मन से खुश, हृदय से आनन्दित।

प्रहृष्टकः [प्रहृष्ट+कन्] काक, कौवा।

प्रहेलक. [प्र+हिल्+ण्वुल्] 1 एक प्रकार का सुहाल, मीठी रोटी 2 पहेली—दे० नी० 'प्रहेलिका'।

प्रहेला [प्र+हिल्+अ+टाप्] युक्त या अनियन्त्रित व्यवहार, शिथिल आचरण, रंगरेली, विहार।

प्रहेलिः (स्त्री०), प्रहेलिका [प्र+हिल्+इन्, प्रहेलि+कन् +टाप्] पहेली, बुझौवल, कूट प्रश्न, विदग्धमुखमण्डन में दी गई परिभाषा–व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्, यत्र बाह्यान्तरालापौ कल्प्यते सा प्रहेलिका। यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की है। तरुण्यालिङ्गिते कण्ठे नितम्बस्थलशायिते., युवत्या सन्निधानेऽपि क कूजति मुहुर्मुहु। (यहाँ पहेली का उत्तर है ईषद्घनजलपूर्णकुंभ) यह आर्थी का उदाहरण है। सदारिसंश्यापि न वैरिवत्सता नितान्तरक्ताप्यसितैव नित्य यथोक्तवादिन्यपि नैव पूजी का

नाम कान्तेति निवेदयामः। (यहाँ पहेली का उत्तर है सारिका) यह शब्दों का उदाहरण है। दण्डी ने सोलह प्रकार की पहेलियाँ बतलाई है—काव्या० ३।९६—१२४।

प्रह्लन (भ्वा० क० कु०) [प्र+ह्लाद्+क्त, ह्रस्व] खुश, आनंदित, प्रसन्न।

प्रह्लाद (ह्लाद) पः [प्र+ह्लाद्+घञ्, रलयोरैक्यम्] 1 अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द 2 शब्द, आवाज 3 हिरण्यकशिपु राक्षस के पुत्र का नाम (पद्मपुराण के अनुसार प्रह्लाद अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। अब उसने हिरण्यकशिपु के यहाँ जन्म लिया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनन्यभक्ति बनी रही। उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके घोर शत्रु देवों का ऐसा पक्का भक्त बने। अतः उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसने अपने पुत्र प्रह्लाद को नाना प्रकार की यातनाएँ दीं। परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा, उसने और भी अधिक उत्साह से इस बात का उपदेश करना आरम्भ कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है। हिरण्यकशिपु ने क्रोधावेश में प्रह्लाद से पूछा कि बता कि यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस वृक्ष के स्तंभ में वह मुझे क्यों नहीं दिखाई देता? इस पर प्रह्लाद ने स्तंभ पर मुक्के का आघात किया (दूसरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में भरकर अपने पुत्र के विश्वास की मूर्खता का उसे विश्वास दिलाने के लिए स्वयं स्तंभ को ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर दिये। प्रह्लाद अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा न्यायपूर्वक राज्य किया)।

प्रह्लाद(ह्लाद)न (वि०) [प्र+ह्लाद्+णिच्+ल्युट्, रलयोरैक्यम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला —रघु० १३।४,—नम् हर्ष या प्रसन्नता पैदा करना, आनन्द देना, खुश करना—यथा प्रह्लादनाच्चन्द्र —रघु० ४।१२।

प्रह्व (वि०) [प्र+ह्वे+अच्, नि० साधु] 1 झुका हुआ, तिरछा, झुका हुआ शि० १२।५६ 2 झुकता हुआ, नीचे को झुका हुआ, विनम्र, विनीत एवं प्रह्वोऽस्मि यत्किञ्चन् एषा विज्ञापना च न—महावी० १।४७, ६।३७ 3. दीन, विनीत, सुशील, विनयी प्रह्वेष्वनिर्बन्धरुषो हि सन्त —रघु० १६।८० 4 अनुरक्त, भक्त, व्यस्त, आसक्त। सम०—अञ्जलि (वि०) सम्मान के चिह्न स्वरूप दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुकाए हुए।

प्रह्वयति (ना० धा०—पर०) विनीत करना, वशवर्ती बनाना।

प्रह्वलिका (स्त्री०) दे० प्रहेलिका।

प्रह्वाय [प्र+ह्वे+घञ्] बुलावा, आमन्त्रण, निमन्त्रण।

प्रांशु (वि०) [प्रकृष्टा अंशवो यस्य—प्रा० ब०] 1 ऊँचा, लंबा, कद्दावर, ऊँचे कद का (मनुष्य)—शालप्रांशुर्महाभुज —रघु० १।१३, १५।१९ 2 लंबा, बढ़ाया हुआ —श० २।१५,—शुः लंबा मनुष्य, बड़े कद का आदमी—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन - रघु० १।३।

प्राक् (अव्य०) [प्राचि सप्तम्यर्थे असि तस्य लुक्] 1 पहले (अपा० के साथ)—सकलानि निमित्तानि प्राक्प्रभानात्ततो मम भट्टि० ८।१०, ६, प्राक् सृष्टेः केवलान्मनेः कु० २।४, रघु० १४।७८, श० ५।२१ 2 सबसे पहले, पहले ही—प्रमन्यव प्रागपि कोशलेन्द्रे रघु० ७।३४ 3 पहले, पूर्व, पूर्व अंश में (पुस्तक के)—इति प्रागेव निर्दिष्टम् । मनु० १।७१ 4 पूर्व में, से पूर्व दिशा में—ग्रामात्प्राक् पर्वतः 5 सामने 6 जहाँ तक हो वहाँ तक, पर्यंत, तक प्राक् कडारात्।

प्राकट्यम् [प्रकट+ष्यञ्] प्रकट करना, प्रकाशित करना, कुख्याति।

प्राकरणिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकरण+ठक्] विचारणीय विषय से संबंध रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अलंकार शास्त्रियों द्वारा प्रायः 'उपमेय' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबद्ध,—अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुतप्रशंसा—काव्य० १०।

प्रार्कार्हिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रकर्ष+ठक्] श्रेष्ठतर या अधिक अच्छा समझा जाने का अधिकारी।

प्राकृतिक [प्र+आ+कृष्+इकन्] 1 लौंडा, गाड़ 2 दूसरे की स्त्री से अपनी जीविका चलाने वाला।

प्राकाम्यम् [प्रकाम+ष्यञ्] 1 इच्छा की स्वतंत्रता —प्राकाम्यं ते विभूतिषु- कु० २।११ 2 स्वेच्छाचारिता 3 अनिवार्य संकल्प, शिव की आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक (जिसकी प्राप्ति से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि'।

प्राकृत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [प्रकृति+अण्] 1 मौलिक, नैसर्गिक, अपरिवर्तित, अविकृत—स्थानामित्रो मित्रे च सहजप्राकृतावपि—शि० २।३६, (इस पर देखो मल्लि०) 2 प्रचलित, सामान्य, साधारण 3 असंस्कृत, गंवार, असभ्य, अशिक्षित प्राकृत इव परिभूयमानमात्मानं न रुणत्सि—का० १४६, भग० १८।२४ 3 नगण्य, महत्त्वहीन, तुच्छ—मुद्रा० १, 4 प्रकृति से उत्पन्न प्राकृतो लयः 'प्रकृति में ही पुनः लीन होना' 5 प्रान्तीय, देहाती (बोली), दे० नी०,—तः ओछा मनुष्य, साधारण व्यक्ति, देहाती पुरुष,—तम् एक देहाती या प्रान्तीय बोली जो संस्कृत से व्युत्पन्न तथा उससे मिलती-जुलती है—प्रकृतेः

संस्कृत तत्र भव तत आगतं च प्राकृतम्—हेम० (इनमें बहुत सी बोलियाँ संस्कृत नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं) तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेक प्राकृतक्रम—काव्या० १।३३, ३४, ३५ त्वमप्यस्मादृशजनयोग्ये प्राकृतमार्गे प्रवृत्तोऽसि—विक्र० १। सम०—अरि नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ौसी देश का शासक दे०, शि० २।२६ पर मल्लि०,—उदासीन. नैसर्गिक तटस्थ अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक मित्र राज्य के परे है,—ज्वरः सामान्य या साधारण बुखार,—प्रलयः विश्व का पूर्ण विघटन,—मित्रम् नैसर्गिक मित्र अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक शत्रु राज्य से मिला हुआ है (अथवा जिसका देश उस देश से पृथक् है जिसके साथ मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकृति+ठक्] 1 नैसर्गिक, प्रकृति से व्युत्पन्न—महावी० ७।३९ 2 भ्रान्तिजनक, भ्रमोत्पादक।

प्राक्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राच्+ट्यु, तुडागम] 1 पहला, पूर्व का, पिछला—प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्या—कु० १।३० 2 पुराना, प्राचीन, पहले का 3 पूर्वजन्म से संबद्ध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य—संस्कारा प्राक्तना इव—रघु० १।२०, कु० ६।१०।

प्राखर्यम् [प्रखर+ष्यञ्] 1 पैनापन 2 तीक्ष्णता 3 दुष्टता।

प्रागल्भ्यम् [प्रगल्भ+ष्यञ्] 1 साहस, भरोसा—नि.साध्वसत्वं प्रागल्भ्यम्—सा० द० 2 घमंड, अहंकार, 3 प्रवीणता, कुशलता 4 विकास, बड़प्पन, परिपक्वता—बुद्धिप्रागल्भ्य, तम प्रागल्भ्य आदि 5 प्रकटीकरण, प्रतीति—अवाप्त प्रागल्भ्य परिणतरुच शैलतनये काव्य० १० 'जो प्रतीत हुआ' 6 वाक्पटुता प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या शस्त्र यथा कापुरुषस्य हस्ते (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा० ३।११ 7 धूमधाम, मर्यादा 8 धृष्टता, ढिठाई।

प्रागार [प्रकृष्ट आगार—प्रा० स०] घर, भवन।

प्राग्रम् [प्रा० स०] उच्चतम बिन्दु। सम०—सर (वि०) प्रथम, अग्रणी, -हर (वि०) मुख्य, प्रधान—रघु० १६।२३।

प्राग्राट [प्राग्र+अट्+अच्] पतला जमा हुआ दूध।

प्राग्र्य (वि०) [प्राग्र+यत्] मुख्य, अग्रणी, उत्तम, अतिश्रेष्ठ।

प्राघात [प्रकृष्ट आघात—प्रा० स०] युद्ध, लड़ाई।

प्राघार. [प्र+घृ+घञ्] टपकना, बूंद बूंद गिरना, रिसना।

प्राघुणः, प्राघुणकः, प्राघुणिकः, प्राघूर्णक, प्राघूर्णिकः [प्र+घुण्+क, प्राघुण+कन्, प्राघुण+ठक् प्र+आ+घूर्ण्+ण्वुल्, प्राघूर्ण+ठञ्] अतिथि, पाहुना, अभ्यागत, मेहमान—चिरापराधस्मृतिश्लांसकोपि रोषं क्षणप्राघुणिकीकृता जनै (कथा)—नै० २।५६।

प्राङ्क्ष् [प्रकृष्टमङ्ग यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार की दोलक, पपड़।

प्राङ्गण (वि०) [प्रकर्षेण अङ्गन गमन यत्र—प्रा० ब०] 1 सहन, आंगन 2. (घर का) फर्श 3 एक प्रकार की दोलक।

प्राच्, प्राञ्च् (वि०) (स्त्री०—ची) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1 सामने की ओर मुड़ा हुआ, सामने बिल्कुल आगे रहने वाला 2. पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3 प्राथमिक, पहला, पूर्वकाल का (पु० ब० व०) 1 पूर्वदेश के लोग 2 पूर्वीय वैयाकरण। सम०—अग्र (वि०) (प्रागग्र) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि फेरे हुए,—अभावः (प्रागभाव) पिछला, सत्ता का अभाव, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का अनस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था,—अभिहित (वि०) (प्रागभिहित) पूर्वोक्त, —अवस्था (प्रागवस्था) पहली दशा,—न तर्हि प्रागवस्थाया परिहीयसे—मा० ४, 'पहली अवस्था की अपेक्षा कमी पर नहीं हो,'—आयत (वि०) (प्रागायत) पूर्वदिशा की ओर बढ़ा हुआ,—उत्तिकः (स्त्री०) (प्रागुत्तिक) पूर्वकथित,—उत्तर (ब०) (प्रागुत्तर) पूर्वोत्तर का,—उदीची (स्त्री०) (प्रागुदीची) पूर्वोत्तर दिशा,—कर्मन् (नपु) (प्राक्कर्मन्) पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य,—कालः (प्राक्काल.) पहला युग,—कालीन (वि०) (प्राक्कालीन) पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, पुराना, प्राचीन,—कूल (वि०) (प्राक्कूल) जिसकी नोक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुशघास) मनु० २।७५,—कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वजन्म में किया गया कार्य,—चरणा (प्राक्चरणा) स्त्री की जननेन्द्रिय, योनि, चिरम् (अव्य०) (प्राक्चिरम्) समय रहते, देर न करके,—जन्मन् (नपु०) (प्राग्जन्मन्),—जातिः (स्त्री०) (प्राग्जाति) पूर्वजन्म —ज्योतिषः (प्राग्ज्योतिष) 1 एक देश का नाम, कामरूप देश का नामांतर 2 (ब० व०) इस देश के रहने वाले लोग, (अम्) एक नगर का नाम, °अरिष्ट विष्णु का विशेषण, दक्षिण (वि०) (प्राग्दक्षिण) दक्षिणपूर्वी,—देश (प्राग्देश) पूर्वदिशा का देश,—द्वार,—द्वारिक (वि०) (प्राग्द्वार, प्राग्द्वारिक) जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—न्यायः (प्राङ् न्याय) पहली आपत्तिजनक का तर्क, पहले से ही निर्णीत मुकदमा—आचारेणावसन्नोऽपि पुनर्लंक्षयते यदि, सोऽभिधेयो जित पूर्व प्राङ्न्यायस्तु स उच्यते 1. प्रहारः (प्राक्प्रहार) पहला धक्का, फलः

(प्राक्फल्गुः) कटहल का पेड़,—फल्गुनी (प्राक्फल्गुनी) स्त्री० बारहवाँ नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी, °भवः 1. बृहस्पतिग्रह 2. बृहस्पति का नाम,—फल्गुनः, - फाल्गुनेयः (प्राक्फाल्गुन, प्राक्फाल्गुनेय) बृहस्पतिग्रह,—भक्तम् (प्राग्भक्तम्) भोजन से पूर्व औषधिसेवन—भागः (प्राग्भाग) 1. सामने का भाग 2. अगला भाग,—भारः (प्राग्भारः) 1 पहाड़ का शिखर या चोटी—मा० ९।१५ 2 सामने का भाग, (किसी चीज़का) अगला भाग या किनारा· कन्दलैरवच्यवज्ञातकृतिभृतप्राग्भारभीरुस्तटैः —मा० ९।१५ 3. बड़ा परिमाण, ढेर, समुच्चय, बाढ़—मृच्छ० ३।१२९, मा० ५।२९,—भावः (प्राग्भाव) 1. पूर्वजन्म 2 श्रेष्ठता, उत्तमता,—मुख (वि०) (प्राङ्मुख) 1 पूर्व की ओर को मुड़ा हुआ—कु० ७।१३, मनु० २।५१, ८।८७, 2 झुका हुआ, कामना करता हुआ, इच्छुक,- -शंसः (प्राग्वंश) 1 यज्ञशाला जिसके स्तम्भ पूर्व की ओर मुड़े हुए हों—रघु० १६।६१ (प्राचीनस्थूणो यज्ञशालाविशेषः - मल्लि०, परन्तु कुछ लोगों के मतानुसार इस का अर्थ है 'वह कक्ष जहाँ यजमान का परिवार और मित्र इकट्ठे रहते हों') 2 पहला वंश या पीढ़ी, —शंसम्=दे० प्राङ् न्याय, - शंसनम्: (प्राग्वृत्तान्त) पहली घटना,—शिरस्, - शिरस्क—शिरस्क (वि०) (प्राक्शिरस् आदि) पूर्वदिशा की ओर सिर मोड़े हुए, —संध्या (प्राक्संध्या) प्रातःकालीन सन्ध्या,—सेवनम् (प्राक्सेवनम्) प्रातःकालीन जलतर्पण या यज्ञ, —स्रोतस् (वि०) (प्राक्स्रोतस्) पूर्व की ओर बहने वाला।

प्राचण्ड्यम् [प्रचण्ड+ष्यञ्] 1. उत्कटता, उग्रता, 2. भीषणता, विकराल दृष्टि—मा० ३।१७।

प्राचिका [प्र+अञ्च्+वकुन्+टाप्, इत्वम्] 1. मच्छर डाँस की जाति की एक जंगली मक्खी।

प्राची [प्र+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पूर्व दिशा,—तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनम्- शा० ४।१८। सम०—पति इन्द्र का विशेषण, मूलम् पूर्वी क्षितिज प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषां हिमांशोः - मेघ० ८९।

प्राचीन (वि०) [प्राच्+यत्] 1 सामने की ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ, पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 2. पहला, पूर्वकाल का, पूर्वोक्त 3 पुराना, पुरातन, —नः, - नम् बाड़, दीवार। सम०- अग्र (वि०) दे० प्राग्र,- आवीतम् यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो दाहिने कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहना हुआ हो जैसा कि श्राद्ध के अवसर पर), आवीतिन्, —उपवीत (वि०) जनेऊ को दायें कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहनने वाला—मनु० २।६३,—कल्पः पहला कल्प,—गाथा पुरानी कहानी, —तिलकः चन्द्रमा,—वंशः बेल का वृक्ष,—वंशिक् (पु०) इस का विशेषण,—शस्त्र पुरानी सम्पत्ति।

प्राचीरम् [प्र+आ+चि+क्रन्, दीर्घः] घेरा, बाड़, दीवार।

प्राचुर्यम् [प्रचुर+ष्यञ्] 1 बहुतायत, पर्याप्तता, बहुलता 2. समुच्चय।

प्राचेतसः [प्रचेतस् अपत्यम्-प्रचेतस्+अण्] 1. मनु का पैतृक नाम 2. दक्ष का कुलसूचक नाम 3. वाल्मीकि का गोत्रीय नाम।

प्राच्य (वि०) [प्राचि भवः यत्] 1 सामने से स्थित या विद्यमान 2 पूर्व दिशा में रहने वाला, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 3 प्राथमिक पूर्ववर्ती, पहला 4 प्राचीन, पुराना- (ब० व०—प्राच्याः) 1 पूर्वी देश, सरस्वती के दक्षिण में या पूर्व में स्थित देश 2 इस देश के निवासी। सम० भाषा पूर्वी बोली, भारत के पूर्व में बोली जाने वाली भाषा।

प्राच्यक (वि०) [प्राच्य+कन्] पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी।

प्राड् (वि०) [प्रच्छ्+क्विप्, नि० दीर्घः] (कर्तृ०, ए० व०—प्राट्,प्राड्) पूछने वाला, पृच्छताछ करने वाला, प्रश्न करने वाला, जैसा कि 'शब्द प्राट्' में। सम०—विवाकः (प्राड्विवाकः) न्यायाधीश, कचहरी या अदालत में प्रधान पद पर अधिष्ठित अधिकारी —मनु० ८।७९, १८१, ९।२३४।

प्राजकः [प्र+अज्+णिच्+ण्वुल्] सारथि, चालक, रथवान् मनु० ८।२९३।

प्राजनम् [प्र+अज्+ल्युट्] हंटर, चाबुक, अंकुश —त्यक्तप्राजनरश्मिरश्मिततनुं पार्थोद्धतं मार्गणैः —वेणी० ५।१०।

प्राजापत्य (वि०) [प्रजापति+यक्] प्रजापति से सम्बन्ध रखने वाला या जो प्रजापति के लिए पुण्यप्रद हो,—त्यः हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें लड़की का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इस लिए कन्यादान करता है जिससे वह सानन्द, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक साथ २ रहकर दाम्पत्य जीवन बिताएँ, सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च, कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिः स्मृतः - मनु० ३।३०, या, इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सह या दीयतेऽग्नये, स कायः (अर्थात्-प्राजापत्यः) पावयेत्तज्ज षट् षष्ठं वंश्यान्सहात्मना-- याज्ञ० १।६० 2 गंगा और यमुना का संगम, प्रयाग,- त्यम् 1 एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्रहीन पिता अपनी लड़की के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत करने से पूर्व करता है 2 सर्जनात्मक

ऊर्जा या शक्ति,—त्रया संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संपत्ति को दान कर देना।

प्राजिकः [प्र+अज्+ठक्] बाज, पक्षी, श्येन।

प्राजित्, प्राजिन् (पु०) [प्र+अज्+क्विप्, प्र+अज्+णिनि] सारथि, चालक, रथवान्—शि० १८।७।

प्राजेशम् [प्रजेशो देवताऽस्य–प्रजेश+अण्] रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०–ज्ञा, ज्ञी) [प्रकर्षेण जानाति इति –प्र+ज्ञा+क=प्रज्ञ, तत. स्वार्थे–अण्] 1 मतीषी 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर—किमुच्यते प्राज्ञ खलु कुमार – उत्तर० ४,—ज्ञः 1 बुद्धिमान् पुरुष तेन्य प्राज्ञा न विभ्यति –वेणी० २।१४, भग० १७।१४ 2. एक प्रकार का तोता,—ज्ञा 1 बुद्धि, समझ 2 चतुर या समझदार स्त्री,—ज्ञी 1 चतुर या विदुषी स्त्री 2 विद्वान् पुरुष की पत्नी 3 सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य (वि०) [प्र+अज्+क्यप्] 1 प्रचुर, पर्याप्त, बहुल, अधिक, बहुत—तव भवतु विशेषा प्राज्यवृष्टिः प्रजासु—श० ७।३४, रघु० १३।६२, शि० १४।२५ 2 बड़ा, विशाल, महत्त्वपूर्ण—प्राज्यविक्रमाः—कु० २।१८, अपि प्राज्य राज्य तृणमिव परित्यज्य सहसा —गया० ५।

प्राञ्जल (वि०) [प्र+अञ्ज्+अलच्] निष्कपट, स्पष्टवक्ता, खरा, ईमानदार, निष्कपट।

प्राञ्जलि (वि०) [प्रवद्धा अञ्जलि र्येन–प्रा० ब०]विनम्रता और सम्मान के चिह्नस्वरूप जिसने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

प्राञ्जलिक, प्राञ्जलिन् (वि०) [प्राञ्जलि+कन्, इनि वा] दे० 'प्राञ्जलि'।

प्राण [प्र+अन्+अच्, घञ् वा] 1 सांस, श्वास 2 जीवन का सांस, जीवनशक्ति, जीवन, जीवनदायी वायु, जीवन का मूलतत्त्व (इस अर्थ में प्राय ब० व०, क्योंकि प्राण गिनती में पाँच हैं—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान) —प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३, १२।५४ 3 जीवन के पाँच प्राणों में से पहला (जिसका स्थान फेफड़े हैं) भग० ४।२० 4. वायु, अन्दर खींचा हुआ सांस 5 ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, शक्ति, जैसा कि 'प्राणसार' में 6 जीव या आत्मा (विप० शरीर) 7 परमात्मा 8 ज्ञानेन्द्रिय,—मनु० ४।१४० 9 प्राणों के समान आवश्यक या प्रिय, प्रिय व्यक्ति या पदार्थ,—कोश–कोशा कोशवत प्राणा प्राणा प्राणा न भूपते —हि० २।९२, अर्थपतेर्विमर्दको बहिश्चरा प्राणाः—दश० 10 कविता का तत्त्व, काव्यमयी प्रतिभा, स्फूर्ति 11 महत्त्वाकांक्षा, श्वासग्रहण —जैसा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12 पारद 13 समय का मापक सांस 14 लोबान, गोंद। सम० —अतिपातः जीवित प्राणी का वध, जान लेना, —अत्ययः जीवन की हानि,—अधिक (वि०) 1. प्राणों से भी प्रिय, 2 सामर्थ्य और बल में श्रेष्ठ, —अधिनाथः पति,—अधिपः आत्मा,—अन्तः मृत्यु, —अन्तिक (वि०) 1. घातक, नश्वर 2 जीवन भर रहने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला 3. फांसी का दण्ड (कम्) वध,—अपहारिन् (वि०) घातक, प्राणनाशक,—अयतन् ज्ञानेन्द्रिय,—आबाधः जीवन का नाश, जीवित प्राणी का वध—मनु० ३।६३, —आयार्थः राजा का वैद्य,—आय (वि०) घातक, नश्वर, प्राणघातक,—आयासः जीवन को क्षति,—आयामः देवगणों का मानस-पाठ करते हुए सांस रोकना,—ईशः, —ईश्वरः प्रेमी, पति—अमरु ६७, मालवि० २।५७, —ईश,—ईश्वरी पत्नी, प्रिया, गृहस्वामिनी,—उत्क्रमणम्—उत्सर्गः आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना, मृत्यु,—उपाहारः भोजन, – कृच्छ्रम् जीवन का खतरा, प्राणों को भय,—घातक (वि०) जीवन का नाश करने वाला,—घ्न (वि०)घातक, जीवन-नाशक,—छेद वध, हत्या,—त्यागः 1 आत्महत्या 2 मृत्यु,—त्रम् 1 पानी 2 घृत,—दक्षिणा प्राणों की भेंट,—दण्डः फांसी का दण्ड,—दयितः पति,—दानम् प्राणों की भेंट, किसी को जान बचाना,—द्रोह. किसी की जान पर आक्रमण,—धारः जीवित प्राणी, – धारणम् 1. भरण-पोषण, जीवन का सहारा 2 जीवनशक्ति,—नाथः 1. प्रेमी, पति 2. यम का विशेषण,—निग्रहः सांस रोकना, श्वासावरोध,—पतिः 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा, —परिक्रय जान जोखिम में डालना,—परिग्रहः जीवन-धारण करना, जीवन या अस्तित्व रखना,—प्रद (वि०) जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,—प्रयाणम् प्राणों का चला जाना मृत्यु,—प्रियः 'प्राणों के समान प्यारा' प्रेमी, पति,—भक्ष (वि०) वायुपक्षी,—भास्वत् (पु०) समुद्र,—भृत् (पु०) प्राणधारी जन्तु —अन्तर्गत प्राणभृता हि देह—रघु० २।४३,—मोक्षः, —त्यम् 1 प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2 आत्महत्या, —यात्रा जीवन का सहारा, भरण-पोषण, जीविका —पिण्डपातनमात्रप्राणयात्रा भवत्वसौ—मा० १—योनिः (स्त्री०) जीवन का स्रोत,—रन्ध्रम् 1 मुंह 2 नथना, —रोधः 1. श्वासावरोध 2. जीवन को खतरा, —वियोगः,—विश्लेषः जीवन की हानि मृत्यु,—विसर्गः शरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,—व्ययः प्राणों का उत्सर्ग, संयमः सांस का रोकना,—संशयः, —सङ्कटम् —संहारः जीवन को खतरा, जीवन को भय, भीषण खतरा,—स्थम् (नपु०) शरीर,—सार(वि०) जीवन ही जिसका बल है, सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, बलिष्ठ —शिरिवर इव नाम प्राणसार (सारम्) बिभर्ति श० २।४,—हर (वि०) 1. प्राणघातक, जीवन का अप-

हरण करने वाला, घातक—पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि, गीत० ७ 2. फांसी,—हारक (वि०) घातक (कर्म) भयंकर विष।

प्राणकः [प्राण+कै+क] 1. जीवित प्राणी, जीवधारी जन्तु 2. लोबान।

प्राणदः [प्र+अन्+अच] 1. वायु, हवा 2. ज्येष्ठ स्थान 3. प्राणधारियों का स्वामी।

प्राणनः [प्र+अन्+ल्युट्] गला,—नम् 1 श्वासप्रश्वास, सांस लेना 2. जीवन, जीवित रहना।

प्राणन्तः [प्र+अन्+झ, अन्तादेश] वायु, हवा।

प्राणन्ती [प्राणन्त+ङीष्] 1. मूली 2. तुलसी 3 हिचकी।

प्राणात्मय (वि०) (स्त्री० -यी) [प्र+अन्+णिच्+यत्] उचित, योग्य, उपयुक्त।

प्राणित (वि०) [प्र+अन्+क्त] जीवित, जीवधारी।

प्राणिन् (वि०) [प्राण+इनि] 1 सांस लेने वाला, जीने वाला, जीवित (पु०) जीवित या जीवधारी प्राणी, जीवित जन्तु यथा—प्राणिनः प्राणवन्तः—भा० १।१,मेधा० ५ 2. मनुष्य। सम० अङ्गज किसी जन्तु का अंग, —जातम् प्राणीवर्ग, —द्यूतम् (मुर्गों की लड़ाई, भेड़ों की लड़ाई) तीतर बटेर आदि जन्तुओं को लड़ा कर जुआ खेलना, —पीडा जन्तुओं के प्रति क्रूरता, हिंसा जीवन को क्षति, जीवित जन्तुओं को कष्ट देना, हिंसा वृत्ति, बूट।

प्राणीत्यम् [प्रणीत+ष्यञ्] ऋण।

प्रातर् (अव्य०) [प्र+अत्+अरन्] 1 तड़के, पौ फटने पर, प्रभात काल में 2. कल तड़के, अगले दिन सुबह, कल प्रातः काल। सम० -अह्नः दिन का प्रारम्भिक काल, दोपहर पहले, आशः प्रातःकालीन भोजन, कलेवा—अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामहं वयम् भट्टि० ८।९८,—आशिन् (पु०) जिसने कलेवा कर लिया है, या प्रातःकाल का भोजन कर लिया है, —कर्मन् (नपु०)—कार्यम्—कृत्यम् (प्रातः कर्म—आदि) प्रातःकालीन कर्म,—कालः (प्रातःकाल) प्रातः का समय,—बोधः चारण जिसका कर्तव्य किसी राजा या अन्य महापुरुष को उपयुक्त गान द्वारा प्रातःकाल जगाना है,—भिवर्षा (प्रातर्भिवर्षा) यमा नदी, —भिनम् दोपहर से पहले,—प्रहरः दिन का पहला पहर —भोक्तृ (पु०) कौवा,—भोजनम् प्रातःकाल का भोजन, कलेवा,—सन्ध्या (प्रातः सन्ध्या) 1 प्रातःकाल की संध्या या भजन,—समयः (प्रातः समयः) सवेरे का समय, प्रभातकाल,—स्नः,—स्नानम् (प्रातः सव—आदि) सोमयाग द्वारा प्रातःकालीन तर्पण, —स्नानम् (प्रातः स्नानम्) सवेरे ही नहाना,—होमः (प्रातर्होमः) प्रातःकाल का यज्ञ।

प्रातस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रातर्+ट्यु, तुट्] प्रातःकाल से संबद्ध, सुबह का।

प्रातस्तरम् (अव्य०) [प्रातर्+तरप्+आम्] सुबह बहुत सवेरे—प्रातस्तरां प्रतिमिम्य प्रबुद्ध प्रणमन् रविम् —भट्टि० ४।१४।

प्रातस्त्य (वि०) [प्रातर्+त्यक्] सुबह का, प्रभात कालीन।

प्रादेश (स्त्री०) [प्र+अद्+इन्] 1 अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2 भरना।

प्रादेशिका [प्र+अद्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] जवा का पौधा।

प्रातिकूलिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिकूल+ठक्] विरुद्ध, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला।

प्रातिकूल्यम् [प्रतिकूल+ष्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध, शत्रुता, अननुकूलता, असंगीपूर्णता।

प्रातिजनीन (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिजन+खञ्] शत्रु का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त।

प्रातिज्ञम् [प्रतिज्ञा+अण्] विचाराधीन विषय।

प्रातिदैवसिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिदिवस्+ठक्] प्रतिदिन होने वाला।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [प्रतिपक्ष+अण्] 1 विरुद्ध, प्रतिकूल 2 शत्रुतापूर्ण, शत्रुसंबन्धी।

प्रातिपक्ष्यम् [प्रतिपक्ष+ष्यञ्] शत्रुता, विरोधिता।

प्रातिपद (वि०) (स्त्री० दी) [प्रतिपदा+अण्] 1 उपक्रम करने वाला 2 प्रतिपदा के दिन उत्पन्न, प्रतिपदा से संबद्ध।

प्रातिपदिक [प्रतिपदा+ठक्] अग्नि,—कम् नाम शब्द का परिपक्व रूप, विभक्ति चिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

प्रातिपौरुषिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिपुरुष+ठक्] पौरुषेय मर्दानगी या पराक्रम से संबद्ध।

प्रातिभ (वि०) (स्त्री०—भी) [प्रतिभा+अण्] प्रतिभा या दिव्यता से संबंध रखने वाला, भव्य प्रतिभा या विशद कल्पना। जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रातिभाव्यम् [प्रतिभू+ष्यञ्] जमानत या प्रतिभूति होना, जामिनपना, किसी कर्जदार को (कचहरी में) उपस्थित करने का उत्तरदायित्व होना (क्योंकि वह विश्वासपात्र है तथा कर्ज का रुपया वापिस कर देगा)।

प्रातिभासिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिभास+ठक्] 1 जो केवल दिखाई तो दे पर वस्तुतः हो उसका अभाव 3 वास्तविक 2 दिखाई सी देने वाली।

प्रातिलोमिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिलोम+ठक्] लाभ के विरुद्ध, विरोधी, शत्रुतापूर्ण, अहितकर।

प्रातिलोम्यम् [प्रतिलोम+ष्यञ्] 1 उलटापन, व्युत्क्रान्त या प्रतिकूल क्रम—मनु० १०।१३ 2 शत्रुता, विरोध, शत्रु जैसी भावना।

प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्मक, प्रातिवेश्यक. [प्रतिवेश+ठक्, प्रतिवेश्म+अण् + कन्, प्रतिवेश+ष्यञ्+कन्] पड़ौसी।

प्रातिवेश्य. [प्रतिवेश+ष्यञ्] 1 सामान्यतः पड़ौसी 2 बराबर के घर में रहने वाला पड़ौसी (निरंतर-गृहवासी—कुल्लू०।

प्रातिशाख्यम् [प्रतिशाख भव —ष्य] व्याकरण का एक ग्रंथ जिसमें स्वरसंधि तथा अन्य वर्णपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किसी भी शाखा में पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वराघात समेत उच्चारण की पद्धति बतलाई गई है (प्रातिशाख्य चार हैं—एक तो ऋग्वेद की शाकल शाखा का दो यजुर्वेद की दोनों शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का)।

प्रातिस्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिस्व+ठक्] विशिष्ट, असामान्य, अपना निजी।

प्रातिहन्यम् [प्रतिहन्तृ+अण्] बदला, प्रतिशोध।

प्रातिहार, प्रातिहारक, प्रातिहारिक [प्रतिहार+अण्, प्रातिहार+कन्, प्रतिहार+ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक।

प्रातीतिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतीति+ठञ्] मानसिक, केवल मन में विद्यमान, काल्पनिक।

प्रातीप [प्रतीप+अण्] शान्तनु का पैतृक नाम।

प्रातीपिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतीप+ठक्] 1 उलटा विरोधी, विपरीत।

प्रात्यन्तिक [प्रत्यन्त+ठक्] प्रत्यन्त का एक राजकुमार।

प्रात्ययिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रत्यय+ठक्] 1 भरोसे का, विश्वासपात्र 2 किसी ऋणी की विश्वासयोग्यता के हेतु जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रात्यहिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यह+ठक्] प्रतिदिन होने वाला, नित्य, प्रतिदिन।

प्राथमिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रथम+ठक्] 1 प्रारंभिक 2 पूर्व जन्म का, पूर्वकाल का पहली बार होने वाला।

प्राथम्यम् [प्रथम+ष्यञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता।

प्रादक्षिण्यम् [प्रदक्षिण+ष्यञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर बायें से चल कर दायें को जाना, और प्रदक्षिणा किये जाने वाले पदार्थ को सदैव अपनी दाईं ओर रखना।

प्रादुस् (अव्य०) [प्र+अद्+डुसि] दिखाई देने के भाव स्पष्टतः, प्रकटरूप से, दृष्टि में (प्रायः भू, कृ और अस् के साथ प्रयोग,—प्रादुः ष्यात्क इव जित पुरः परेण—श० ८, १२, कृ, भू और अस् के अन्तर्गत भी देखिए)। सम०—करणम् (प्रादुष्करण) प्रकटीकरण, दृश्यमान करना,—भावः (प्रादुर्भाव) 1 अस्तित्व में आना, उदय होना—वपुः प्रादुर्भावात्—काव्य० १० 2 प्रकट या दृश्यमान होना, प्रकटीकरण, दर्शन 3 सुनने के योग्य होना 4 पृथ्वी पर देवता का प्रगट होना।

प्रादुष्यम् [प्रादुस्+यत्] प्रकटीकरण।

प्रादेशः [प्र+दिश्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2 स्थान, जगह, प्रदेश।

प्रादेशनम् [प्र+आ+दिश्+ल्युट्] भेंट, दान।

प्रादेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रदेश+ठक्] 1 पूर्व दृष्टांत वाला 2 सीमित, स्थानीय 3 सवार्थ,—कः एक जिले का स्वामी।

प्रादेशिनी [प्रादेश+इनि+ङीप्] तर्जनी अँगुली।

प्रादोष (वि०) (स्त्री०—षी), **प्रादोषिक** (वि०) (स्त्री०—की) [प्रदोष+अण्]+प्रादोष+ठञ्] सन्ध्याकालीन, सन्ध्या से संबद्ध।

प्रायणिकम् [प्रयण संग्राम, तत्साधनमस्त्र—प्रयण+ठक्] नाशकारक शस्त्र, कोई भी युद्धोपकरण।

प्रायानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रधान+ठक्] 1 अत्यन्त श्रेष्ठ या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त पूज्य 2 प्रधान से संबद्ध या उससे उत्पन्न।

प्रायाण्यम् [प्रधान+ष्यञ्] 1 प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रमुत्व, उदग्रता 2 प्रायत्य, सर्वोच्चता 3 मुख्य या प्रधान कारण (**प्रायाण्येन, प्रायाण्यात्, प्रायाण्यतः** 'मुख्य रूप से' 'विशेष रूप से' तथा 'प्रधान रूप से' भग०—१०।१९)।

प्रायोत (वि०) [प्र+अधि+इ+क्त] भली-भांति पढ़ा लिखा, (ब्राह्मण की भांति) अत्यन्त शिक्षित।

प्राय्य (वि०) [प्रगतोऽध्वानम्—प्रा० स०] 1 दूर का, दूरवर्ती, दूर 2 झुका हुआ, रुचि रखता हुआ 3 कसा हुआ, बंधा हुआ 4 अनुकूल,—य्यः गाड़ी,—य्यम् (अव्य०) 1 अनुकूलता के साथ, रुचिपूर्वक, समनुरूपता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—समाजने मे भुजमूर्ध्वबाहु सव्येतर प्राय्यमिव प्रयुञ्जते—रघु० १३।४३ 2 टेढ़ेपन से।

प्रान्त [प्रकृष्ट अन्त —प्रा० स०] 1 किनारा, हाशिया, झालर, मगजी, छोर—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भा —श० ४।७ 2 (ओष्ठ व आँख आदि का) किनारा—मा० ७।२, ओष्ठ०, नयन० 3 हद, सीमा 4 अन्तिम किनारा, सीमा,—यौवनप्रान्त · पंच० ४ 5 बिन्दु, नोक। सम०—ग (वि०) पास ही रहने वाला,—भूमि नगर के बाहर का, नगरांचल, किले के निकट होने वाला

उपनगर,—विरल (वि०) अन्त में रसहीन,—शून्य (वि०) दे० 'प्रांतरशून्य',—स्थ (वि०) जो सीमा पर रहता है।

प्रान्तरम् [प्रकृष्टम् अन्तरं व्यवधानं यत्र—प्रा० ब०] 1 लंबा और सुनसान मार्ग, जनशून्य या वीरान सड़क 2 छायारहित सड़क, निर्जन भूखण्ड 3 जंगल, उजाड़ 4 वृक्ष की कोटर। सम०—शून्य लंबी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो)।

प्रापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्र+आप्+ण्वुल्] 1 ले जाने वाला, पहुँचाने वाला 2. प्राप्त कराने वाला, सामग्री से युक्त कराने वाला 3. स्थापित करने वाला, वैद्य बनाने वाला।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] 1 पहुँचना, बढ़ जाना 2 प्राप्त करना, अधिग्रहण, अवाप्ति 3 ले आना, पहुँचाना, ले जाना 4 सामग्री से युक्त करना।

प्रापणिक [प्र+आ+पण्+किकन्] सौदागर, व्यापारी —आढ्यादिव प्रापणिकादवज्ञानम्—शि० ४।११।

प्राप्त (भू० क० कृ०) [प्र+आप्+क्त] 1 हासिल, अवाप्त, उपलब्ध, अर्जित 2 पहुँचा हुआ, निष्पन्न 3 घटित, मिला हुआ 4 (स्वयं) उठाया हुआ, ग्रस्त, सहन किया हुआ 5 पहुँचा हुआ, आया हुआ, उपस्थित 6 पूरा किया हुआ 7. उचित, सही 8 नियम के अनुसार। सम०—अनुज्ञ (वि०) आने के लिए अनुमत, विदा होने के लिए जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है,—अर्थ (वि०) सफल (वः) लब्ध पदार्थ,—अवसर (वि०) जिसे मौका या अवसर मिल चुका है,—उदय (वि०) जो उन्नत हो गया है, या जिसने उन्नति अथवा उन्नत पद प्राप्त कर लिया है,—कारिन् (वि०) सही कार्य करने वाला,—काल (वि०) 1. समयानुकूल, यथाऋतु, उपयुक्त दे० 'अप्राप्त काल, 2. विवाह के योग्य 3 नियत, भाग्य में लिखा, (लः) उचित समय, उपयुक्त या अनुकूल क्षण,—पञ्चत्व (वि०) पाँचों तत्त्वों में समाविष्ट अर्थात् मृत, तु० 'पंचत्व',—प्रसव (वि०) जिसने बच्चे को जन्म दे दिया है,—बुद्धि (वि०) शिक्षण प्राप्त किया हुआ, प्रकाश युक्त,—भार, बोझा ढोने वाला पशु,—मनोरथ (वि०) जिसका मनोरथ पूरा हो गया है,—यौवन (वि०) तरुण, वयस्क, जवान,—रूप (वि०) 1 सुन्दर, मनोहर 2 बुद्धिमान्, विद्वान् 3 उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य,—व्यवहार (वि०) वयस्क, बालिग जो कानून की दृष्टि से अपने कार्यों को सम्भालने का अधिकारी हो, (विप० अव्यवस्क) श्री (वि०) जिसकी उन्नति किसी और के द्वारा हुई हो।

प्राप्ति (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1 प्राप्त करना, अधिग्रहण, उपलब्धि, अवाप्ति, लाभ—द्रव्य,° यश,° सुख° आदि 2 पहुँचना, प्राप्त करना 3 पहुँच, आगमन 4 देखना, मिलना 5 परास, पहुँच 6 अनुमान, अटकल 7 हिस्सा, अंश, ढेर 8 भाग्य, किस्मत 9 उदय, पैदावार 10 किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (आठ सिद्धियों में से एक) 11 संघ, समुच्चय, संहति 12 किसी योजना की सफल समाप्ति, सुखागम। सम० आशा किसी चीज को प्राप्त करने की आशा (नाटकीय कथावस्तु के विकास का एक भाग)—उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसंभवा—सा० द० ६।

प्राबल्यम् [प्रबल+ष्यञ्] 1 प्रभुता, सर्वोच्चता, बोलबाला 2 शक्ति, बल, ताकत।

प्राभा (वा) लिक [प्रभा (वा) ल+ठक्] मूली का व्यापार करने वाला।

प्रबोध (वि) क [प्र+आ+बुध्+णिच्+ण्वुल्, प्रबोध+ठञ्] 1 तड़का, प्रभात 2 चारण जिसका कर्तव्य प्रातःकाल उपयुक्त भजन गाकर अपने आश्रयदाता राजा को जगाना है।

प्राभञ्जनम् [प्रभञ्जन+अण्] स्वातिनक्षत्र।

प्राभञ्जनि [प्रभञ्जन+इञ्] 1 हनुमान् का विशेषण 2 भीम का विशेषण।

प्राभवम् [प्रभु+अण्] सर्वोच्चता, सर्वोपरिता, प्रभुता।

प्राभवत्यम् [प्रभवत्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, अधिकार, सत्ता, शक्ति मनु० ८।४१२।

प्राभाकर [प्रभाकर+अण्] 'प्रभाकर का अनुयायी' मीमांसा के आचार्य प्रभाकर के मत (प्राभाकर) का अनुयायी।

प्राभातिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रभात+ठञ्] प्रातःकाल संबंधी, प्रभातकालीन।

प्राभृतम्, प्राभृतकम् [प्र+आ-भृ+क्त, प्राभृत+कन्] 1 उपहार, भेंट, किसी राजा या देवता को भेंट, नजराना 2 रिश्वत।

प्रामाणिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रमाण+ठक्] 1 प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाण पर आधारित या आश्रित 2 शास्त्रसिद्ध 3 अधिकृत, विश्वसनीय 4 प्रमाण संबंधी, क 1 जो प्रमाण को मानता है 2 जो नैयायिकों के प्रमाणों का ज्ञाता है, तार्किक 3 किसी व्यवसाय का प्रधान।

प्रामाण्यम् [प्रमाण+ष्यञ्] 1 प्रमाण होना या प्रमाण पर आश्रित होना 2 विश्वसनीयता, प्रामाणिकता 3 प्रमाण, साक्ष्य, अधिकार।

प्रामादिक (वि०) [प्रमाद+ठक्] असावधानतावश, गलत, दोषयुक्त, अशुद्ध इति प्रामादिक प्रयोग या पाठ आदि।

प्रामाद्यम् [प्रमाद+ष्यञ्] 1 त्रुटि, दोष, गलती, अशुद्धि, 2 पागलपन, उन्माद 3 नशा, मादकता।

प्राय. [प्र+अय्+घञ्] 1 अपगमन, विदायगी, जीवन से प्रयाण 2 आमरण अनशन, व्रत रखना, किसी इष्टसिद्धि के लिए खाना पीना छोड कर मरना देना, (प्राय 'आस्' 'उपविश' आदि शब्दों के साथ, दे० नी० प्रायोपवेशन 3 बडे से बडा भोग, अधिकाश अवस्था 4. अधिकता, बहुलायत, प्रचुरता 5 जीवन की एक दशा, विशे० (समास के अन्त में लग कर 'प्राय' का अनुवाद निम्नांकित होता है (क) अधिकाश में, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तकरीबन,—**पतनप्रायो** गिरने वाला, **मृतप्राय** लगभग मरा हुआ, मरने से जरा कम, तकरीबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, समृद्ध, भरा हुआ, अत्यधिक, प्रचुर **कष्टप्राय शरीरम्** उत्तर १, **शालीप्रायो देश** पच० ३ **कमलमोदप्राया वनानिला** उत्तर० ३।२४, सुगन्ध से भरा हुआ या (ग) के समान, मिलता-जुलता - **दर्शनप्राय दिनम्**, **श्रमप्राय वचनम्** आदि। सम० **उपगमनम्**, **उपवेश उपवेशनम्**, **उपवेशनिका**, बिना खाये पीये मरना देना और इस प्रकार मरने की तैयारी करना, आमरण अनशन **मया प्रायोपवेशन कृत विद्धि** पच० ४, **प्रायोपवेशनमलिनपतिबभूव** रघु० ८।९४ **प्रायोपवेशमदश क्षतमास्थितस्य वेणी०** ३।१५, **उपेत** (वि०) बिना खाये रहकर मृत्यु की बाट जोहने वाला, **उपविष्ट** (वि०) आमरण अनशन करने वाला, **दर्शनम्** सामान्य घटनातत्त्व।

प्रायणम् [प्र+अय्+ल्युट्] 1 प्रवेश, आरभ, शुरू 2 जीवनक्षय 3 ऐच्छिक मृत्यु, मनु० ५।३२३ 4 शरण लेना।

प्रायणीय (वि०) [प्र+अय्+अनीयर्] परिचयात्मक, आरभिक, दीक्षात्मक,—**इष्टि** सोमयाग का प्रथम दिन।

प्रायशस् (अव्य०) [प्राय+शस्] बहुधा, अधिकतर, अधिकाश में, सर्वथा—**आशाबन्ध कुसुमसदृश प्रायशो ह्यङ्गनाना सद्यपाति प्रणयिहृदय विप्रयोगे रुणद्धि** मेघ० १०।

प्रायश्चित्तम्, प्रायश्चित्ति (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य-चित्त विशोधन यस्मात् ब० स०, नि० मुट्] 1 परिशोध पापनिष्कृति, क्षतिपूर्ति पाप से निस्तार पाने के लिए धार्मिक साधना मातु पापस्य भरत प्रायश्चित्तमिदाकरात् रघु० १२।१९ (प्राया नाम तप प्राकृत चित्त निश्चय उच्यते, तपोनिश्चयसयोगात् प्रायश्चित्तमिदीयते हेमाद्रि) 2 सशोधन, सुधार।

प्रायश्चित्तिन्, (वि०) [प्रायश्चित्त+इनि] जो पापो का परिशोध करे।

प्रायस् (अव्य०) [प्र+अय्+असुन्] 1 अधिकतर, बहुधा, साधारणत, अधिकाशत, प्राय प्रत्ययप्रार्थने **स्वगुणेष्वेतमादर** कु० ६।२०, **प्रायो भृत्यास्त्यजति प्रचलितविभव स्वामिन सेवमाना** मुद्रा० ४।२१, **प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापद** भर्तृ० २।९३ 2 सर्वथा, अधिकतर, सभवत, कदाचित् **तव प्राज्ञ प्रसादाद्धि प्राय प्राप्स्यामि जीवितम्** महा०।

प्रायणिक, प्रायायिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रयाण+ठक्, प्रयात्रा+ठक्] यात्रा के लिए आवश्यक या उपयुक्त।

प्रायिक (वि०) (स्त्री० की) [प्राय+ठक्] प्रचलित, सामान्य।

प्रायुद्धेषिन् (पु०) [प्रायुधि हेषते-प्रायुध्+हेष्+णिनि] घोडा।

प्रायेण (अव्य०) [करण०] 1 अधिकतर, साधारण नियम के अनुसार **प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनाना विनोदा** मेघ०, **प्रायेण सत्यपि हितार्थकरे विधौ हि श्रेयासि लब्धुमसुखानि विनान्तरायै** कि० ५।४९, कु० ३।२८, ऋतु० ६।२३।

प्रायोगिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रयोग+ठक्] 1 प्रयुक्त 2 प्रयुज्यमान।

प्रारब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरभ किया गया शुरू किया गया,—**कर्म** 1. जो शुरू किया गया है, व्यवसाय 2 भाग्य, नियति।

प्रारब्धि (स्त्री०) [प्र+आ+रभ्+क्तिन्] 1. आरभ शुरू 2 खूटा जिससे हाथी बाधा जाय, हाथी को बाधने के लिए रस्सी।

प्रारम्भ [प्र+आ+रभ्+घञ्, मुम्] आरभ, शुरू **प्रारम्भेऽपि त्रियामा तरुणयति निज नीलिमान वनेषु** मा० ५।६, रघु० १०।९, १८।४९ 2. व्यवसाय, काम साहसिक कार्य, आगमै सदृशारम्भ प्रारम्भसदृशोदय—रघु० १।१५, **फलानुमेया प्रारम्भा सस्कारा प्राक्तना इव** - २०।

प्रारम्भणम् [प्र+आ+रभ्+ल्युट्, मुम्] आरभ करना, शुरू करना।

प्रारोह [प्ररोह+अण्] अकुर, अखुवा, किसलय, दे० प्ररोह।

प्रार्घम् [प्रकृष्टमूल्यम्—प्रा० स०] मूल्य ऋण।

प्रार्थक (वि०) (स्त्री०—चिका) [प्र+अर्थ+ण्वुल्] पूछने वाला, मागने वाला, प्रार्थना करने वाला, निवेदन करने वाला, अनुरोध करने वाला, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला,—क. आवेदक, प्रार्थी।

प्रार्थनम्, ना [प्र+अर्थ+ल्युट्] 1 याचना, अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन ये वर्धन्ते धनपतिपुर प्रार्थनादु लभाज —भर्तृ० ३।४७ 2 कामना, इच्छा—लब्धावकाशा मे प्रार्थना, या—न दुरवापेषु खलु प्रार्थना—श० १, उत्सर्पिणी खलु महता प्रार्थना—श० ७, ७।२

3. तालिका, आवेदन, विनती, प्रणय-प्रार्थना - कदाचिदत्रभवत्प्रार्थनामन्तरेण पुरेभ्य कथयेत्—श० २। सम० भङ्ग प्रार्थना अस्वीकार करना, सिद्धि इच्छा की पूर्ति. प्रार्थनासिद्धिवासित —रघु० १।४२।

प्रार्थनीय (त० कृ०) [प्र+अर्थ+अनीयर्] 1 प्रार्थना या आवेदन किये जाने के उपयुक्त 2 अभिलषणीय, चाहने के योग्य,—यम् तृतीय या द्वापर युग।

प्रार्थित (भू० क० कृ०) [प्र+अर्थ+क्त] 1 याचना किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, पूछा हुआ, आवेदन किया गया 2 अभिलषित, इच्छित 3 आक्रान्त, शत्रु के द्वारा विरोध किया गया—रघु० ९।५६ 4 मारा गया, चोट की गई (दे० प्र पूर्वक अर्थ)।

प्रार्थिन् (वि०) [प्र+अर्थ+णिनि] 1 मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला 2 कामना करने वाला, इच्छा करने वाला—मन्द कवियश प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् —रघु० १।३।

प्रालम्ब (वि०) [प्र+आ+लम्ब्+अच्] 1 झूलता लटकता हुआ—प्रालम्बद्विगुणितभास्करप्रहास वर्णी० २।२८,—बः 1. मोतियों का बना आभूषण 2 स्त्री का स्तन,—बम् छाती तक लटकने वाला कण्ठहार —प्रालबमुरुकृष्य यथावकाश निनाय साक्षीकृतचारुवक्त्र —रघु० ६।१४, मुक्ताप्रालम्बेषु का० ५२।

प्रालम्बकम् [प्रालम्ब+कन्] दे० 'प्रालम्ब'।

प्रालम्बिका [प्रालम्ब+कन्+टाप्, इत्वम्] सोने का हार।

प्रालेयम् [प्र+ली+घञ् · प्रलेय+अण्] हिम, कुहरा, ओस, तुषार—ईशाचलप्रालेयप्लवनेच्छया गीत० १ प्रालेयशीतमचलेश्वरमीक्ष्वराऽपि (अधिशेते)—शि० ४।६४, मेघ० ३९। सम० अद्रि, शैल हिमाच्छादित पहाड, हिमालय मेघ० ५३ अंशु, कर, रश्मि 1 चन्द्रमा 2 कपूर, सेंधा नोन।

प्रावट् [प्र+अव+अट्+अच्] जो।

प्रावणम् [प्र+आ · वन् ण] फावड़ा, खुरपा, कुदाल।

प्रावर [प्र+आ+वृ+अप्] 1 ओढ़, चोगा 2 (हेम० के मतानुसार) उत्तरीय वस्त्र 3 एक देश का नाम।

प्रावरणम् [प्र+आ+वृ+ल्युट्] आढनी, चादर विशेषतः कोई उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा या दुपट्टा।

प्रावरणीयम् [प्र+आ+वृ+अनीयर्] उत्तरीय वस्त्र।

प्रावार [प्र+आ+वृ+घञ्] 1 उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा 2 एक जिले का नाम। सम० कोट दोमर, पतंग।

प्रावारक [प्रावार+कन्] उत्तरीय वस्त्र, चोगा या लबादा यदीच्छसि लम्बदर्शनविधानात् प्रावारकः मूर्धजै- रेवि धृतम् मृच्छ० ८।२२, जातीकुसुमवासित प्रावारकान्तप्रेषित मृच्छ० १।

प्रावारिक [प्रावार+ठक्] उत्तरीय वस्त्र का निर्माता।

प्रावास (वि०) (स्त्री० ी) [प्रवास+अण्] यात्रा सम्बन्धी, यात्रा में करने या दिये जाने के योग्य।

प्रावासिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रवास+ठक्] यात्रा के लिए उपयुक्त।

प्रावीण्यम् [प्रवीण+ष्यञ्] चतुराई, कुशलता, प्रवीणता, दक्षता -आविष्कृत कथा प्रावीण्य वत्सेन उत्तर० ४, १५।६८।

प्रावृत (भू० क० कृ०) [प्र+आ+वृ+क्त] ढका हुआ, घेरा हुआ, ढका हुआ, परदों वाला,—तः, तम् घूंघट, बुरका चादर (स्त्री० भी)।

प्रावृति (स्त्री०) [प्र+आ+वृ+क्तिन्] 1 घेरा, बाड़, आड़ 2 आध्यात्मिक अन्धकार।

प्रावृत्तिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रवृत्ति+ठक्] गौण, अप्रधान, क हुत।

प्रावृष् (स्त्री०) [प्र+आ+वृष्+क्विप्] वर्षा ऋतु, मौसमी हवा, वर्षा काल (आषाढ़ और श्रावण का महीना)—कलापिना प्रावृषि पश्य नृत्यम् रघु० ६।५१, १९।३७, प्रावृट् प्रावृषिनि त्रयोदशी गठधी क्षार क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८, मेघ० ११५। सम० अवसान (प्रावृडवसान) वर्षा ऋतु का अन्त,—काल (प्रावृट्काल) वर्षा ऋतु।

प्रावृष, षा [प्र+आ+वृष्+क, प्रावृष+टाप्] वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

प्रावृषिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रावृष+ठक्] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, क भार।

प्रावृषिज (वि०) [प्रावृषि जायते जन्+ड, अलुक् स०] वर्षा ऋतु में उत्पन्न।

प्रावृषेण्य (वि०) [प्रावृष+ण्य] वर्षा ऋतु में उत्पन्न वर्षा ऋतु में सम्बन्ध रखने वाला कि प्रवृषा जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारिदेन शाकि० १।३०, ४।९, रघु० १।३६ 2 वर्षा ऋतु में होने वाले (अन्न आदि) ण्यः 1 कदम्ब वृक्ष 2 कुटज वृक्ष, ण्यम् बहुसंख्यकता, बाहुल्य, प्राचुर्य।

प्रावृष्य [प्रावृष्+यत्] 1 एक प्रकार का कदम्ब का वृक्ष 2 कुटज वृक्ष, ण्यम् वैदूर्यमणि, नीलम।

प्रावेण्यम् (नपु०) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन (वि०) (स्त्री० नी) [प्रवेशन+अण्] प्रवेश करने पर जो दिया जाय या किया जाय (किसी घर में या रंगमंच पर)।

प्राव्रज्यम्, प्राव्राज्यम् [प्रव्रज्या+ष्यञ्, पक्षे उत्तरपदवृद्धिश्च] धार्मिक साधु या संन्यासी का जीवन।

प्राश् [प्र+अश्+घञ्] 1 खाना, स्वाद चखना, निर्वाह करना, पुष्ट होना मनु० ११।१४३, धर्म" आदि 2 आहार, भोजन।

प्राशनम् [प्र+अश्+ल्युट्] खाना, पुष्ट होना, स्वाद

चखना 2 विलासी, स्वाद चखाना—मनु० २।२९, 3. आहार, भोजन।

प्राशनीयम् [प्र+अश्+अनीयर्] आहार, भोजन।

प्राशस्त्यम् [प्रशस्त+ष्यञ्] श्रेष्ठता, स्तुत्यता, प्रभुता।

प्राशित (भू० क० कृ०) [प्र+अश्+क्त] खाया हुआ, चखा हुआ, उपभुक्त,—तम् मृत पुरखाओं के पितरों को उदकदान और पिण्डदान, पितरों के और्ध्वदेहिक संस्कार—प्राशितम् पितृतर्पणम् मनु० ३।७४।

प्राश्निक [प्रश्न+ठक्] 1 परीक्षक 2 मध्यस्थ, विवाचक, न्यायाधीश अहो प्रयोगस्यान्तर प्राश्निक —मालवि० १।

प्रास [प्र+अस्+घञ्] 1 फेंकना, डालना, (तीर) छोड़ना 2 बर्छी, भाला, फलकदार अस्त्र (जिसमें फल लगाया हुआ हो)। मनु० ६।७२, कि० १६।४।

प्रासक [प्रास+कन्] 1 बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ अस्त्र 2 फांसा।

प्रासंग [प सञ्ज् घञ्, उपसर्गस्य दीर्घ] बैलों के लिए जूआ।

प्रासङ्गिक (वि०) [स्त्री० की) [प्रसंग+ठक्] 1 घनिष्ट संबंध से उत्पन्न 2 संयुक्त, सहज 3 प्रसंगानुकूल, आकस्मिक आपाती, यदाकदा होने वाला —प्रासङ्गिकीना विषय कथानाम्—उत्तर० २।६ संबंधानुकूल ऋत्वनुकूल, अवसरानुकूल 6 उपास्थान विषयक।

प्रासङ्ग्य [प्रसंग+यत्] हल में जूतने वाला बैल।

प्रासाद [प्रसीदन्ति अस्मिन् प्रसद्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घ] 1 महल भवन, गगनचुंबी विशाल भवन भिक्षु कुटीमपि प्रासादे सिद्धा०, मेघ० ६४ 2 राजभवन 3 मंदिर का देवालय। सम०—अङ्गणम् किसी महल या मन्दिर का आंगन, आरोहणम् महल में जाना या प्रविष्ट होना, कुक्कुट, पालतू कबूतर, तलम् महल की समतल चपटी छत,—पृष्ठ महल की चोटी पर बना छज्जा,—प्रतिष्ठा मन्दिर की प्रतिष्ठा, या अभिमन्त्रण,—शायिन् (वि०) महल में सोने वाला, शृङ्गम् किसी महल या मन्दिर का कलश या मीनार, कगूरा।

प्रासिक [प्रास+ठक्] भाला रखने वाला, बर्छी-धारी।

प्रासूतिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रसूति+ठक्] प्रसव से संबंध रखने वाला, बच्चे के जन्म से संबद्ध।

प्रास्त (भू० क० कृ०) [प्र+अस्+क्त] 1 फेंका गया, (बर्छी भाला आदि) चलाया गया, डाला गया, छोड़ा गया 2 निर्वासित किया गया, बाहर निकाला गया।

प्रास्ताविक (वि०) (स्त्री०-की)[प्रस्ताव+ठक्] प्रस्तावना का काम देने वाला, प्रस्तावना या परिचय, भूमिका विषयक—जैसा कि 'प्रास्ताविक विलास' में (भूमिका-विलास का प्रथम या प्रारंभिक अंश) **प्रास्ताविकं वचनम्** भूमिका में दिया गया विवरण 2 ऋतु के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3 संगत, प्रसंगानुकूल, (प्रस्तुत विषय से) संबद्ध—अप्रास्ताविकी महत्यंथा कथा—मा० २।

प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत+ष्यञ्] विचार विमर्शका विषय होना।

प्रास्थानिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रस्थान+ठञ्] प्रयाण से संबद्ध या विदा के अवसर के उपयुक्त—रघु० २।७० 2 विदा के अनुकूल।

प्रास्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रस्थ+ठण्] 1 तोल में एक प्रस्थ 2 एक प्रस्थ में मोल लिया हुआ 3 प्रस्थभर तोल का 4 एक प्रस्थ बीज से बोया गया।

प्रास्रवण (वि०) (स्त्री०-णी) [प्रस्रवण+अण्] झरने से उत्पन्न स्रोत से निकला हुआ।

प्राह [प्रकर्षेण 'आह' शब्दो यत्र प्रा० ब०] नृत्यकला की शिक्षा।

प्राह्ण [प्रथम च तदहश्च, कर्म० स०, टच्, अह्नादेशः, णत्वम्] दोपहर से पहले का समय।

प्राह्णेतन (वि०) (स्त्री०-नी) [प्राह्ण+ट्यु, तुट्, नि० एत्वम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, या मध्याह्नपूर्व संबंधी।

प्राह्णेतरम्-तरम् (अव्य०) [प्राह्ण+तरप् (तमप्), आम्, नि० एत्वम्] प्रातःकाल, बहुत सवेरे।

प्रिय (वि०) [प्री+क] (म० अ०—प्रेयस्, उ० अ०—प्रेष्ठ] 1 प्रिय, प्यारा, पसन्द आया हुआ, रमणीय, अनुकूल बन्धुप्रियाम् कु० १।२६, रघु० ३।२९ 2 सुहावना, रुचिकर—तामुचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्याम् —रघु० १४।६ 3 चाहने वाला, अनुरक्त, भक्त —प्रियमण्डना श० ४।९, प्रियारामा सीतेही—उत्तर० २, ब. 1 प्रेमी, पति—स्त्रीणामाद्य प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु—मेघ० २८ 2 एक प्रकार का मृग,—या प्रिया (पत्नी), पत्नी, स्वामिनी—प्रिये चारुशीले प्रिये रम्यशीले प्रिये—गीत० १० 2. स्त्री 3 छोटी इलायची 4 समाचार, समूचन 5 सींची हुई मदिरा 6. एक प्रकार का चमेली (का फूल), —यम् 1 प्रेम 2 कृपा, सेवा अनुग्रह प्रियमाचरित ते त्वया मे —विक्रम०—१।१७, मरिप्रियार्थमियासो —मेघ० २२, प्रिय मे प्रिय मे, 'मेरी अच्छी सेवा की गई'—भग० १।२३, पंच० १।३६५,१९३ 3 सुखद समाचार—रघु० १२।९१, प्रियनिवेदमितारम् गा० ४ 4 आनन्द, सुख,—यम् (अव्य०) बड़े सुहावने या रुचिकर ढंग से। सम० अतिथि (वि०) आतिथेय, अतिथिसत्कार करने वाला,—अर्थ. किसी प्रिय वस्तु

का अभाव या हानि,—अप्रिय (वि०) सुखद और दुःखद, रुचिकर और अरुचिकर (भावनाएँ) (यम्) सेवा और अनिष्ट, अनुग्रह और क्षति,—आम्र आम का वृक्ष, आर्ह (वि०) 1 प्रेम या कृपा का अधिकारी उत्तर० ३ 2. मिलनसार (र्हः) विष्णु का नाम,—आलु (वि०) जीवन का प्रेमी,—आख्य (वि०) अच्छा समाचार सुनाने वाला, —आख्यानम् रुचिकर समाचार, —आलप्य (वि०) मिलनसार, सुखद, रुचिकर,—उक्ति (स्त्री०)—उदितम् कृपा से युक्त या मैत्रीपूर्ण बकवृत्ति, चापलूसी के वचन—,उपपत्ति (स्त्री०) आनन्दप्रद या सुखद घटना, उपभोगः किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रतिक्रीड़ा —रघु० १२।२२,—एषिन् (वि०) 1 भला चाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक 2 मित्रता से युक्त, स्नेही,—कर (वि०) सुख देने वाला या पैदा करने वाला, —कर्मन् वि०)अनुग्रह पूर्वक या मित्रता से युक्त व्यवहार करनेवाला,—कलत्र अपनी पत्नी से प्रेम करनेवाला पति, अपनी भार्या को अत्यन्त चाहने वाला, काम (वि०) मित्रवत् व्यवहार करनेवाला,सेवा करने का इच्छुक,—कार, —कारिन् वि)अनुग्रह करने वाला,भला करने वाला,—कृत् (पु०)भला करने वाला, मित्र, हितैषी,—जन प्रेमपात्र या प्यारा व्यक्ति,—जानि अपनी पत्नीको अत्यन्त प्यार करने वाला पति,—तोषण एक प्रकार का रतिबन्ध, मैथुन का आसन विशेष, - दर्श (वि०) देखने में सुन्दर, -दर्शन (वि०) देखने में सुहावना, सुन्दर दर्शनों वाला, सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत—अहो प्रियदर्शन कुमार —उत्तर० ५, रघु० १।४७, श० ३।११, (नः) 1 नाना 2 एक प्रकार का छुहारे का वृक्ष 3 गन्धर्वों के राजा का नाम—रघु० ५।५३,—दर्शिन् (वि०)राजा अशोक का विशेषण,—देवन (वि० जूआ खेलने का शौकीन,—धन्व शिव का विशेषण, —पुत्र एक प्रकार का पक्षी,—प्रसादनम् पति का प्रसन्न करना,—प्राय (वि०) अत्यन्त कृपालु या सुशील—उत्तर० ७।२, ,प्रम्)भाषा में बाक्चटुता,—प्रायम् (नपु०) बहुत ही रोचक बकवृत्ति, जैसा कि एक प्रेमी का अपनी प्रेयसी के प्रति कथन,—प्रेप्सु वि०) अपने अभीष्ट पदार्थको प्राप्त करने की इच्छा करने वाला, भाव. प्रेम की भावना उत्तर० ६।३१,—भाषणम् कृपा से युक्त या रुचिकर शब्द, —भाषिन् वि०)मधुरभाषी,—मण्डन (वि०) अलंकारों का प्रेमी—श० ६।१०,—मधु (वि०) मदिरा का शौकीन, (धुः) बलराम का विशेषण—,रथ (वि०) बहादुर, शूरवीर,—वचन (वि०) रोचक तथा कृपापूर्ण शब्द बोलने वाला (नम्) कृपा से युक्त प्रोत्साहक एवं मधुर शब्द -विक्रम० ३।१०, वयस्य प्रिय मित्र,—वर्ती प्रियंगु नामक पौधा, -वस्तु (नपु०) प्यारी चीज आद्य (वि०) कृपा से युक्त शब्द बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, (स्त्री०) कृपामय और रोचक शब्द, —वादिका एक प्रकार का वाद्ययंत्र,—वादिन् (वि०) कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, चापलूस —सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः रामा०, -वक्तृ (पु०) कृपण का विशेषण,—वयस् प्रिय व्यक्ति का सत्संग,- सख प्रिय मित्र, (स्त्री०—खी) सहेली, अन्तरंग सहेली (किसी स्त्री की),- सत्य (वि०) 1 सत्य का प्रेमी 2 सत्य होने पर भी प्रिय, सदेश 1 प्रिय समाचार, प्रेमी का समाचार 2 'चपक' नाम का वृक्ष,- समागम अपने प्रिय व्यक्ति (या पदार्थ) से मिलन, सहचरी प्यारी पत्नी, सुहृद् (पु०) प्रिय या प्राणप्रिय मित्र, हार्दिक मित्र, स्वप्न (वि०) सोने का प्रेमी रघु० १२।८१।

प्रियंवद (वि०) [प्रिय वदति प्रिय+वद्+खच्, मुम्] मधुरभाषी, प्रिय बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, मिलनसार कु० ५।२८, रघु० ३।६४, द 1 एक प्रकार का पक्षी 2 एक गन्धर्व का नाम।

प्रियक [प्रिय+कन्]1 एक प्रकार का हरिण—शि० ४।३२ 2 नीप नामक वृक्ष 3 प्रियंगु नाम की लता 4 मधुमक्खी 5 एक प्रकार का पक्षी 6 जाफरान, केसर रूप असन वृक्ष का फूल शि० ८।२८।

प्रियङ्कर, प्रियङ्करण, प्रियङ्कार (वि०) [प्रिय+कृ+खच्, ल्युट् अण् वा, मुम्] 1 अनुग्रह दर्शाने वाला, कृपा करने वाला, स्नेह करने वाला,—प्रियङ्करो मे प्रिय इत्यनन्दत् रघु० १४।४८ 2 रुचिकर 3 मिलनसार।

प्रियङ्गु [प्रिय+गम्+कु] एक लता का नाम (कहते हैं कि यह लता स्त्रियों के स्पर्श मात्र से खिल उठती है) प्रियङ्गुश्यामा तनुरतिकृशा दर्भसंस्तरेषु मा० ३।१, (निम्नांकित श्लोक में उन सभी कविसमयों को एकत्रित कर दिया गया है जहां विशिष्ट परिस्थितियों में वृक्षों के फूलों का आना बतलाया गया है पादाघाताद्शोकस्तिलककुरुबको वीक्षणालिङ्गनाभ्यां, स्त्रीणां स्पर्शात् प्रियङ्गुर्विकसति वकुलः सीधुगण्डूषसेकात्। मन्दारो नर्मवाक्यात् पटुमृदुहसनाच्चम्पको वक्त्रवातात् चूतो गीतान्मनोज्ञविकसति च पुरो नर्तनान् कर्णिकारः।) 2 बड़ी पीपल, न् (नपु०) 1 जाफरान, केसर।

प्रियतम [वि०] [प्रिय+तमप्] अत्यन्त प्रिय, सबसे अधिक प्यारा,- म प्रेमी, पति शिप्रावात प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः -मेघ० ३१।७०,-मा पत्नी, स्वामिनी, वल्लभा, प्रेयसी।

प्रियतर (वि०) [प्रिय+तरप्] अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा।

प्रियता,-त्वम् [प्रिय+तल्+टाप्, प्रिय+त्व] 1 प्रिय होना, प्यार 2 प्रेम, स्नेह।

प्रियम्भविष्णु, प्रियम्भावुक (वि०) [प्रिय+भू+विष्णच् वुकञ् वा, मुम्] स्नेह का पात्र अत्यन्त प्रिय।

प्रियालः [प्रिय+अल्+अच्] पियाल नामक वृक्ष, दे० 'पियाल',—ला अंगूरों की बेल।

प्री । (क्रया०उभ० प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति य सुचरितैः पितरं स पुत्र —भर्तृ० २।६८, सस्तु पितुः पितृयुरायतासु—भट्टि ३।३८, ५।१०४, ७।६४ 2 प्रसन्न होना, खुश होना—कश्चित्मनस्ते प्रीणाति वनवासे—महा० 3. कृपामय बर्ताव करना, अनुग्रह दर्शाना 4 प्रसन्न या हँसमुख रहना—प्रेर० (प्रीणयति-ते) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

॥ (दिवा० आ०) (प्रीयते-'प्री' क्रिया का कर्मवाच्य का रूप) सन्तुष्ट या प्रसन्न होना, तृप्त होना—प्रकामप्रीयत यज्ञना प्रिय - शि० १।१७, रघु० १५।३०, १९।३० याज्ञ० १।२४५ 2. स्नेह करना, प्रेम करना 3 सहमति या मंजूरी देना, सन्तुष्ट होना।

प्रीण (वि०) [प्री+क्त, तस्य न] 1 प्रसन्न, सन्तुष्ट, तृप्त 2 पुराना, प्राचीन 3 पहला।

प्रीणनम् [प्रीण्+ल्युट्] 1 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 2 जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है।

प्रीत (भू० क० कृ०) [प्री+क्त, नत्वाभाव] प्रसन्न, खुश, प्रहृष्ट, आनन्दित—प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व —रघु० २।६३, १।८१, १२।९४ 2 आनन्दयुक्त, आह्लादित, हर्षपूर्ण मेघ० ४ 3 सन्तुष्ट 4 प्रिय, प्यारा 5 कृपालु, स्नेही। सम०—आत्मन्, —चित्त मनस् (वि०) हृदय में खुश, मन से आनन्दित।

प्रीति (स्त्री०) [प्री+क्तिन्] 1 प्रसन्नता, आह्लाद, सन्तोष, खुशी, आनंद, हर्ष, तृप्ति -भुवनालोकनप्रीति कु० २।४५, ६।२१ रघु० २।५१ मेघ० ६२ 2 अनुग्रह, कृपालुता 3 प्रेम, स्नेह, आदर मेघ० ४।१६, रघु० १।५७, १२।५४ 4 पसन्द, चाह, खुशी, व्यसन —द्यूत° मृगया° 5 मित्रता, सौहार्द 6 कामदेव की एक पत्नी का नाम, रति की सौत (सरली सजाता रत्या प्रीतिरिति श्रुता)। सम०—कर (वि०) प्रेम या अनुराग उत्पन्न करने वाला, रुचिकर, -कमल (नपु०) मैत्री या प्रेम का बर्ताव, कृपापूर्ण कार्य,—र नाटक में विदूषक या मसखरा, -दत्त (वि०) स्नेह के कारण दिया हुआ (सम्) स्त्री को दी हुई सम्पत्ति, विशेषकर विवाह के अवसर पर साम या श्वसुर द्वारा, —दानम्,—दाय प्रेमोपहार, मित्रता के नाते दिया गया उपहार -तदवसरोऽयं प्रीतिदायस्य मा० ४, रघु० १५।६८, -दायक प्रेम या सौहार्द के कारण दिया हुआ धन —पात्रम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति, या वस्तु, —पूर्वम्, -पूर्वकम् (अव्य०) कृपा के साथ, स्नेहपूर्वक, —मनस् (वि०) मन में खुश, प्रसन्न, आनन्दित,—युक्त (वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा -कि० १।१०, —वचनम् (नपु०),—वचनम् मैत्री से भरी हुई या कृपापूर्ण वाणी, -वर्धन (वि०) प्रेम या हर्ष को बढ़ाने वाला (नः) विष्णु का विशेषण,—वाद मित्रवत् विचारविमर्श,—विवाहः प्रीति या प्रेम के कारण होने वाला विवाह, प्रेम-संबंध, (जो केवल प्रेम पर आधारित हो), श्राद्धम् पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला और्ध्वदैहिक संस्कार या श्राद्ध।

प्लु (भ्वा० आ०-प्लवते) 1 जाना, चलना-फिरना 2 कूदना, उछलना।

प्लुष् 1 (भ्वा० पर०—प्लोषति, प्लुष्ट) 1 जलाना, खा पी जाना 2 भस्म करना ॥ (क्रया० पर०-प्लुष्णाति) 1. आर्द्र या तर होना 2 उड़ेलना, छिड़कना 3 मरना।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] जलाया हुआ, खाया-पीया हुआ, जला कर राख किया गया।

प्लुषः [प्लुष्+क्वन्] 1 वर्षा ऋतु 2 सूर्य 3 पानी की बूंद—सिद्धा०।

प्रेक्षक [प्र-ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक, तमाशबीन, देखने वाला, दृश्य—द्रष्टा।

प्रेक्षणम् [प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1 देखना, दृष्टि डालना 2 दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3 आंख = चकित हरिणी प्रेक्षणा —मेघ० ८२ 4 तमाशा, सार्वजनिक दृश्य, दिखावा। सम०—कूटम् आंख का डेला।

प्रेक्षणकम् [प्रेक्षण+कन्] दिखावा, तमाशा।

प्रेक्षणिका [प्र+ईक्ष्+ल्युट्, इत्वम्] तमाशा देखने की शौकीन स्त्री।

प्रेक्षणीय (वि०) [प्र+ईक्ष्+अनीयर्] 1 दर्शनीय, विचारणीय, निगाह डालने के योग्य 2 देखने के लिए उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर—मेघ० २, रघु० १४।९ 3 विचारणीय, ध्यान देने के योग्य।

प्रेक्षणीयकम् [प्रेक्षणीय+कन्] दिखावा, दृश्य, तमाशा —शि० १०।८३।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1 दृष्टि डालना, देखना, तमाशा देखना 2 अवलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3 तमाशबीन होना 4 कोई सार्वजनिक तमाशा, दिखावा, दृष्टि 5 विशेष कर थियेटर का तमाशा, नाटकीय प्रदर्शन, अभिनय 6 बुद्धि, समझ 7 विमर्श, विचारणा, पर्यालोचन 8 वृक्ष की शाखा। सम० —अ(आ)गार, -गृह, -गृहम्, -स्थानम् 1 थियेटर, नाटकशाला, रंगशाला 2 मन्त्रणा-भवन सभाभवन जहां दर्शकों की भीड़ सभा।

प्रेक्षावत् (वि०) [प्रेक्षा+मतुप्] विचारशील बुद्धिमान् विद्वान् (पुरुष)।

प्रेक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+ईक्ष्+क्त] देखा हुआ विचार किया हुआ, नजर डाला हुआ, निगाह में से निकाला हुआ, अवलोकन किया हुआ,—तम्, रूप, छवि, झलक।

प्रेङ्ख,—खन् [प्र+इङ्ख्+घञ्] झूलना, पेंग (झोटा) लेना।

प्रेङ्खत् (वि०) [प्र+इङ्ख्+शतृ] घूमने वाला, इधर उधर फिरने वाला, प्रविष्ट होने वाला—भट्टि० ९।१०६,—नट् 1 झूलना 2. झूला 3 नायक, सूत्रधार आदि पात्रों से शून्य एकांकी नाटक—सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—गर्भविमर्शरहितं प्रेङ्खच हीननायकम्, असूत्रधारमेकाङ्कमविष्कम्भप्रवेशकम्, नियुद्धस्फोटयुतं सर्ववृत्तिसमाश्रितम्। ५४७, उदा० 'बालिवध'।

प्रेङ्खा [प्र+इङ्ख्+अच्+टाप्] 1. झूला 2 नृत्य 3 पर्यटन, घूमना, यात्रा करना 4 एक प्रकार का भवन या घर 5 घोड़े का विशेष कदम।

प्रेङ्खित (भू० क० कृ०) [प्र+इङ्ख्+क्त] झूला हुआ, हिलाया हुआ, प्रदोलित या डावाडोल।

प्रेङ्खोल् (चुरा० उभ०—प्रेङ्खोलयति—ते) झूलना, हिलना डावाडोल होना।

प्रेङ्खोलनम् [प्रेङ्खोल्+ल्युट्] 1 झूलना, हिलना, इधर से उधर प्रदोलित होना 2 झूला, पेंग।

प्रेत (भू० क० कृ०) [प्र+इ+क्त] इस संसार से गया हुआ, मृत—स्वजनाश्रु किलातिसंतत वहति प्रेतमिति प्रवक्षाने—रघु० ८।२६,—त 1 दिवंगत आत्मा, और्ध्वदेहिक क्रिया किये जाने से पूर्व जीव की अवस्था 2 भूत, पिशाच—भग० १७।४, मनु० १२।७१। सम०—अधिप, यमका विशेषण,—अन्न पितरों को अर्पित आहार,—अस्थि (नपु) मृतक पुरुष की हड्डी, °धारिन् शिव का विशेषण,—ईश, यम का विशेषण,—ईश्वर, यम का विशेषण,—उद्देश पितरों के निमित्त अर्पण,—कर्मन् (नपु०)—कृत्यम्,—क्रिया और्ध्वदेहिक या अन्त्येष्टि संस्कार, गृहम् कब्रिस्तान, शवस्थाल,—चारिन्(पु०) शिव का विशेषण, दाह मुर्दे का जलाना, शवदाह, —भूमः चिता से उठता हुआ धुआँ,—पक्षः पितृपक्ष, आश्विन का कृष्णपक्ष जब कि पितरों के सम्मान में श्रद्धाजलियाँ अर्पित की जाती हैं, तु० 'पितृपक्ष'। —पटहः अर्थी ले जाते समय बजाया जाने वाला ढोल,—पति. यम का विशेषण, पुरम् यमराज की नगरी,—भावः मृत्यु, भूमिः (स्त्री०) कब्रिस्तान, शवस्थान,—शरीरम् वियुक्त जीव का शरीर, मृत शरीर,—शुद्धि. (स्त्री),—शौचम् किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर शुद्धि पातक शुद्धि,—श्राद्धम् किसी मृत संबंधी के निमित्त बरसी से पहले २ किये जाने वाली और्ध्वदेहिक (मासिक) क्रियाएँ, हार 1 मृत शरीर को (श्मशानभूमि तक) ले जाने वाला 2 निकट संबंधी।

प्रेतिक [प्रकर्षेण इति गमनं यस्य प्रा० ब० प्र+इति+कन्,] भूत, प्रेत।

प्रेत्य (अव्य०) [प्र+इ+क्त्वा+ल्यप्] (इस संसार से) विदा होकर मरने के पश्चात् दूसरे लोक में—न च तत्प्रेत्य नो इह भग० १७।२८, मनु० २।९,२६। सम०—अवस्थितिः (स्त्री०) परलोक की स्थिति,—भाव. मरने के पश्चात् आत्मा की अवस्था।

प्रेत्वन् (पु०) [प्र+इ+क्वनिप्, तुकागम] 1 वायु 2 इन्द्र का विशेषण।

प्रेप्सा [प्र+आप्+सन्+अ+टाप्] 1 प्राप्त करने की इच्छा 2 इच्छा।

प्रेप्सु (वि०) [प्र+आप्+सन्+उ] 1 प्राप्त करने का इच्छुक, कामना करता हुआ, अभिलाषी, प्रबल इच्छुक 2 उद्देश्य रखने वाला।

प्रेमन् (पु०, नपु०) [प्रियस्य भाव इमनिच् प्रादेश एकाच्कत्वात् न टिलोप तारा०] प्रेम, स्नेह—तत्प्रेम-हेमनिकषोपलता तनोति—गीत० ११, मेघ० ४४ 2 अनुग्रह, कृपा, कृपापूर्ण या मृदु व्यवहार 3 आमोद-प्रमोद, मनोविनोद 4 हर्ष, खुशी, उल्लास। सम०—अश्रु (नपु०) हर्षाश्रु, स्नेहाश्रु,—ऋद्धि. (स्त्री०) स्नेहवर्धन, उत्कट प्रेम, पर (वि०) स्नेहशील, प्रिय, पातनम् 1 (हर्ष के) आँसू 2 (आँसू गिरानेवाली) आँख, भाजनम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति या वस्तु, बन्ध बन्धनम् स्नेहबन्धन, प्रेम की फाँस।

प्रेमिन् (वि०)(स्त्री०—णी) [प्रेमन्+इनि] प्रिय, स्नेह-शील।

प्रेयस् (वि०) (स्त्री० -सी) [अयमनयोः अतिशयेन प्रिय प्रिय+ईयसुन्, प्रादेश 'प्रिय' की म० अ०] अधिक प्यारा, अपेक्षाकृत प्रिय या रुचिकर (पु०) प्रेमी, पति (पु०,नपु०) चापलूसी, स्त्री पत्नी, स्वामिनी।

प्रेयोपत्य [अपत्यवत् प्रेय] बगुला, कंक पक्षी।

प्रेरक (वि०) (स्त्री०—रिका) [प्र+ईर्+णिच्+ण्वुल्] 1 प्रेरित करने वाला, उत्तेजक, उद्दीपक 2 भेजने वाला, निदेशक।

प्रेरणम्—ना [प्र+ईर्+णिच्+ल्युट्] 1 प्रेरित करना, उत्तेजित करना, आगे बढ़ाना, उकसाना, भड़काना 2. आवेग, आदेश 3 फेंकना, डालना अवति विफल-प्रेरणा चूर्णमुष्टि—मेघ० ६८ 4 भेजना, प्रेषित करना 5 आदेश, निदेश 6 (व्या० में) किसी अन्य से कार्य कराने की क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रेरित (भू० क० कृ०) [प्र+ईर्+णिच्+क्त] 1 आगे बढ़ाया गया, उत्तेजित किया गया, उकसाया गया 2 उत्तेजित, उद्दीपित, प्रभोदित 3 भेजा गया, प्रेषित 4 स्पर्श किया गया, न दूत, एलची।

प्रेष् (स्वा० उभ० प्रेषति—ते) जाना, चलना-फिरना।

प्रेष. [प्र+इष्+घञ्] 1 भेजना, प्रेषण करना 2 दूत के रूप में भेजना, निदेश देना, भार या बोझ डालना, आयुक्त करना।

प्रेषित (भू० क० कृ०) [प्र+इष्+क्त] 1 (संदेशा देकर) भेजा हुआ 2 आदिष्ट, निर्देशित 3. मुड़ा हुआ, स्थिर, निर्दिष्ट होकर, (दृष्टि) डाली हुई 4 निर्वासित ।

प्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेनाप्रेमेव प्रिय प्रिय+इष्ठन्, उ० ब०] अत्यत प्यारा, प्रियतम,—ष्ठः प्रेमी, पति, ष्ठा पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) [प्र+इष्+ण्यत्] आदेश दिये जाने के योग्य, भेजे जाने या प्रेषित किये जाने के योग्य, ष्यः सेवक, भृत्य, दास,- ष्या सेविका, दासी ,ष्यम् 1 दूतमंडली को भेजना 2 सेवा । सम० जन- सेवकों का समूह, भाव- सेवक की धारिता, सेवा, बन्धन मालवि० ५।१२, वधूः 1 सेवक की पत्नी 2 सेविका, दासी, - वर्गः सेवकवृन्द, अनुचरवर्ग ।

प्रेहि [प्र पूर्वक इ धातु, लोट्, मध्य० पु०, एक व०] । सम० कल्पा विशेष प्रकार की आचारविधि जिसमें चटाइयों का निषेध है, - कर्मन् एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता वर्जित है,-क्रियाविशेष एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति वर्जित है,-वाणिजा एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों की उपस्थिति निषिद्ध है (दे० पा० २।१।७२) ।

प्रेयस् [प्रिय+अण्] कृपालु होना, अनुग्रह प्रेम ।

प्रेष [प्र+इष्+घञ्, वृद्धि] 1 भेजना, निर्देश देना 2 आदेश, समादेश, आमन्त्रण 3 दुःख, कष्ट 4 पागलपन, उन्माद 5 कुचलना, दबाना, मर्दन करना, भींचना ।

प्रेष्य [प्र+इष्+ण्यत्, वृद्धि] सेवक, भृत्य, दास, ष्या दासी, सेविका, ष्यम् सेवा, दासता । सम० भावः सेवक की क्षमता, सेवक की भाँति उपयोग करना, सेवा--कु० ६।५८ ।

प्रोक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वच्+क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2 नियत किया हुआ, निर्धारित किया हुआ ।

प्रोक्षणम् [प्र+उक्ष्+ल्युट्] 1 छिड़काव, पानी छिड़कना, -मनु० ५।११८, याज्ञ० १।१८४ 2 छींटे देकर अभिमंत्रित करना 3. यज्ञ में पशु का वध, जो छिड़कने या अभिमंत्रण के लिए जल, पुष्पजल (ब० व०, कभी-कभी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रोक्षणीपात्र' है) ।

प्रोक्षणीयम् [प्र+उक्ष्+अनीयर्] पवित्रीकरण (प्रोक्षण) के लिए उपयुक्त जल ।

प्रोक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+उक्ष्+क्त] 1 जलमार्जन से पवित्र किया हुआ 2. यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ ।

प्रोच्चंड (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त भीषण या भयानक ।

प्रोच्चैः (अव्य०) [प्रा० स०] 1 बहुत ऊँचे स्वर से, जोर से 2. बहुत अधिकता से ।

प्रोच्छ्रित (भू० क० कृ०) [प्रा० स०] अति ऊँचा, उन्नत, उच्चत ।

प्रोज्झालनम् [प्र+उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या ।

प्रोज्झनम् [प्र+उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, खाली कर देना, छोड़ना ।

प्रोज्झित (भू० क० कृ०) [प्र+उज्झ्+क्त] त्यागा हुआ, खाली किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ ।

प्रोज्झनम् [प्र+उञ्छ्+ल्युट्] 1 मिटा देना, पोंछ देना, छील देना-नै० ५।३६ 2 अवशिष्ट पड़े हुए को चुन लेना ।

प्रोड्डीन (वि०) [प्र+उद्+डी+क्त] जो ऊपर उड़ गया हो, या उड़ गया हो ।

प्रोढ, प्रौढि [प्र+वह्+क्त, क्तिन् वा, सम्प्रसारण] दे० प्रौढ, प्रौढि ।

प्रोत (भू० क० कृ०) [प्र+वे+क्त, सम्प्रसारणम्] 1 सिला हुआ, टाका लगाया हुआ,—कु० ७।४९ 2 लंबा या सीधा फैलाया हुआ (विप० ओत) 3 बंधा हुआ, बाँधा हुआ, कसा हुआ-- महावी० ६।३३ 4 विद्ध किया हुआ, आर-पार किया हुआ —रघु० ९।७५ 5 पारित, आर-पार निकला हुआ —तर्कच्छिद्रप्रोतान् अर्थात् (चन्द्रकिरणान्) क्षिप्तमिति करी सकलयति—काव्य० १० 6 जमाया हुआ, चढ़ा हुआ—महावी० १।३५,—तम् वस्त्र, बुना हुआ कपड़ा । सम०—उत्सादनम् 1 छतरी 2 वस्त्रभंडार, तंबू ।

प्रोत्कण्ठ (वि०) [प्रकर्षेण उत्कण्ठ —प्रा० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए ।

प्रोत्कूजनम् [प्र+उत्+कूज्+क्त] कोलाहल, हल्लागुल्ला ।

प्रोत्खात (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+खन्+क्त] खोदा हुआ ।

प्रोत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] बहुत ऊँचा या उन्नत ।

प्रोत्फुल्ल (वि०) [प्रा० स०] पूरा खिला हुआ, फूला हुआ ।

प्रोत्सारणम् [प्र+उत्+सृ+णिच्+ल्युट्] छुटकारा करना, साफ कर देना, हटाना, निर्वासित करना ।

प्रोत्सारित (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+सृ+णिच्+क्त] 1 हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. आगे बढ़ाया गया, उकसाया 3 परित्यक्त ।

प्रोत्साह [प्र+उत्+सह्+घञ्] 1. अत्यनुरक्ति, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन ।

प्रोत्साहकः [प्र+उत्+सह्+णिच्+ण्वुल्] उकसाने वाला, भड़काने वाला।

प्रोत्साहनम् [प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्युट्] उकसाना, उद्दीपन, भड़काना, प्रलोभन।

प्रोथ् (स्वा० उभ०—प्रोथति-ते) 1 समान होना, जोड़ का होना, मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) पुप्रोथास्मै न कश्चन—भट्टि० १४।८४, १५।४०, 2 योग्य होना, यथेष्ट होना, सक्षम होना 3 भरा हुआ या पूरा होना।

प्रोथ (वि०) [प्रोथ्+घ] 1 विख्यात, सुविधुत 2 रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 3 भ्रमण करना, यात्रा पर जाना, मार्ग चलना- वृक्षान्तमुदकान्त च प्रिय प्रोथमनुव्रजेत्—तारा०, -थ,-थम् 1 घोड़े की नाक या नथुना—नै० १।६०, शि० ११।११, १२।७३ 2 सूअर की थूथन,—थः 1. कूल्हा, नितंब 2 खुदाई 3 वस्त्र, पुराने कपड़े 4 गर्भ, कलल।

प्रोथिन् (पु०) [प्रोथ+इनि] घोड़ा।

प्रोद्घुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+घुष्+क्त] 1 गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2 कोलाहल करना।

प्रोद्घोषणम्,-णा [प्र+उद्+घुष्+ल्युट्] 1 ऐलान करना, घोषणा 2 ऊँचा शब्द करना।

प्रोद्दीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+दीप्+क्त] आग पर रक्खा हुआ, जलता हुआ, देदीप्यमान—भर्तृ० ३।८८।

प्रोद्भिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भिद्+क्त] 1 अंकुरित, अंखुवा फूटा हुआ 2. फूट कर निकला हुआ।

प्रोद्भूत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भू+क्त] फूटा हुआ, निकला हुआ।

प्रोद्यत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+यम्+क्त] 1 उठाया हुआ 2 सक्रिय, परिश्रमशील।

प्रोद्वाहः [प्र+उद्+वह्+घञ्] विवाह।

प्रोन्नत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+नम्+क्त] 1 बहुत ऊँचा या उन्नत 2 उभरा हुआ।

प्रोल्लाघित (वि०) [प्र+उद्+लाघ्+क्त] 1 रोग से मुक्त हो उठा हुआ, स्वास्थ्योन्मुख 2. सुगठित, हट्टाकट्टा।

प्रोल्लेखनम् [प्र+उद्+लिख्+ल्युट्] खुरचना, चिह्न लगाना।

प्रोषित (भू० क० कृ०) [प्र+वस्+क्त] परदेश में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेश में रहने वाला। सम०—भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो, शृंगारकाव्यान्तर्गत आठ नायिकाओं में से एक, सा०द० में दी गई परिभाषा —नानाकार्यवशात्स्या दूरदेशे गत पति, सा मनोभवदुःखार्ता भवेत् प्रोषितभर्तृका—११९।

प्रौ (प्रौ) ष्ठ [प्रकृष्ट ओष्ठौ यस्य—प्रा० ब०, परंरूपम्, पक्षेवृद्धि] 1 बैल, बलीवर्द 2 तिपाई, चौकी 3 एक प्रकार की मछली (ष्ठी—भी)। सम०—पद भाद्रपद मास (वा) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नाम का पच्चीसवाँ व छब्बीसवाँ नक्षत्र।

प्रौ (प्रौ) ढ (वि०) [प्र+उह्+घञ्, परंरूपम्, पक्षे वृद्धि] तार्किक, विवादी,—ढः 1 तर्क, उक्ति 2 हाथी का पैर 3 ग्रंथि, जोड़।

प्रौ (प्रौ) ढ (वि०) [प्र+वह्+क्त, सम्प्रसारणम्, परंरूपम्, पक्षे वृद्धि] 1 पूरा बड़ा हुआ, पूर्णविकसित परिपक्व, पका हुआ, पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि चन्द्रमा)—प्रौढपुष्पं कदम्बं—मेघ० २५, प्रौढतालीविपाण्डु, आदि—मा० ८।१,९।२८ 2 वयस्क, बूढ़ा, वृद्ध —वर्नते हि मन्मथप्रौढसुहृदो निपीयस्य यौवनश्री —मा०८—शि० ११।३९ 3 घना, सघन घोर— प्रौढतम कुरुकृतज्ञतयैव भद्रम्—मा० ७।३, शि० ४।६२ 4 विशाल, बलवान्, समर्थ 5 प्रचंड, उत्कट 6 भरोसा करने वाला, साहसी, बेधड़क 7 धमंडी,— ढा साहसी और बड़ी उम्र की स्त्री, अपने स्वामी के सामने भी निर्भीक और निर्लज्ज, काव्यरचनाओं में वर्णित चार प्रकार की मुख्य स्त्रियों में से एक भेद- आषोडशाद्भवेद्बाला त्रिंशता तरुणी मता, पञ्चपञ्चाशता प्रौढा भवेद्वृद्धा तत परम्। सम०- अङ्गना साहसी स्त्री, दे० ऊपर,—उक्ति (स्त्री०) साहसयुक्त या दर्पपूर्ण उक्ति, प्रताप (वि०)बड़ा तेजस्वी, बलवान्,—यौवन (वि०) जवानी में बढ़ा हुआ, ढलती जवानी का।

प्रौ (प्रौ) ढि (स्त्री०) [प्र+वह्+क्तिन्] 1 पूर्ण वृद्धि या विकास, परिपक्वता, पूर्णता 2 वृद्धि, वर्धन 3 गौरव, ऐश्वर्य, समृद्धि, प्रताप—विक्रम० १।१५ 4 साहस, निर्भीकता 5 घमंड, अहंकार, आत्मविश्वास 6 उत्साह, चेष्टा, उद्योग। सम०- वाद वाग्विदग्धता से युक्त गर्वीली वाणी 2 साहसपूर्ण उक्ति।

प्रौढ (वि०) [प्र+ओण्+अच्] चतुर, विद्वान्, कुशल।

प्लक्ष [प्लक्ष्+घञ्] 1. बटवृक्ष, गूलर का पेड़—प्लक्षप्ररोह इव सौधतल विभेदं—रघु० ८।९३, १३।७१ 2 संसार के सात द्वीपों में से एक 3. पार्श्व द्वार या पिछवाड़े का दरवाजा, निजी गुप्त द्वार। सम० —जात,- समुद्रवाहका सरस्वती नदी का विशेषण, -द्वीपम्,—प्रस्रवणम्,- राज् (पु०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती निकलती है।

प्लव (वि०) [प्लु+अच्] 1 तैरता हुआ, बहता हुआ 2. कूदता हुआ, छलांग लगाता हुआ, —वः 1 तैरना, बहना 2 बाढ़, दरिया का चढ़ाव 3 कुलांच, छलांग 4. बेड़ा, घड़नई, डोंगी, छोटी नौका - नावायेष्वव शान्तं पश्चात् प्लव सलिलपूरवत्—मेघ० २।३८, सर्वं ज्ञान-

प्लवेनैव वृजिन सतरिष्यसि भग० ४।३६, मनु० ४।१९४, ११।१९, वेणी० ३।२५ 5 मेंढक 6 बन्दर 7 ढलान, ढलुआँ स्थान 8 शत्रु 9. भेड़ 10 नीच जाति का पुरुष, चाण्डाल 11 मछली पकड़ने का जाल 12 अंजीर का पेड़ 13 कारण्डव पक्षी, एक प्रकार की बतख 14 पद्योजना की दृष्टि से जुड़ी हुई पाँच या अधिक पंक्तियाँ, कुलक 15 स्वर का दीर्घीकरण। सम०—ग 1 बन्दर—रघु० १२।७८ 2 मेंढक 3 जलीय पक्षी, पनडुब्बी पक्षी 4 शिरीष का वृक्ष 5 सूर्य के सारथि का नाम (गा) कन्या-राशि,—गति. मेंढक।

प्लवक: [प्लु वाहु० अक] 1 मेंढक 2 कूदने वाला व्यक्ति कलाबाज, रस्से पर नाचने वाला नट 3 बड़ या पाकर का वृक्ष 4 चाण्डाल, जाति-बहिष्कृत 5 बन्दर।

प्लवङ्ग [प्लव+गम्+खच्, डित्, टिलोप मुम्] 1 लंगूर, बन्दर 2 हरिण 3 वटवृक्ष, पाकर का वृक्ष।

प्लवङ्गम [प्लव+गम्+खच्, मुम्,] 1 बन्दर—शि० १२।५५ 2 मेंढक।

प्लवनम् [प्लु+ल्युट्] 1 तैरना 2 स्नान करना, गोता लगाना मा० १।१९ 3 छलाँग लगाना, कूदना 4 बड़ी भारी बाढ़, प्रलय 5 ढलान।

प्लवाका [प्लु+आकन्+टाप्] घड़नई, बेड़ा।

प्लविक (वि०) [प्लव+ठन्] नाव में बिठाकर ले जाने वाला, खिवैया।

प्लक्षाम् [प्लक्ष+अण्] प्लक्ष का फल।

प्लाव. [प्लु+घञ्] 1 बह निकलना 2 कूदना, छलाँग लगाना 3 इतना भरना [किनारे से बाहर निकल जाय 4 तरल पदार्थ को छानना (उसका मैल दूर करने के लिए) याज्ञ० १।१९० (दे० इस पर मिता०)।

प्लावनम् [प्लु+णिच्+ल्युट्] 1 स्नान, आचमन 2 बाहर निकल कर बहना, बाढ़ आ जाना, जलमय हो जाना 3 बाढ़ प्रलय।

प्लावित (भू० क० कृ०) [प्लु+णिच्+क्त] 1 तैराया गया, बहाया गया, जलमग्न किया गया 2 जलमग्न किया गया, बाढ़ में डुबोया गया, जल से लबालब भरा गया 3 तर किया गया, गीला किया गया, छिड़का गया— शि० १२।२५, कि० ११।३६ 4 ढका हुआ, आच्छादित।

प्लिह् (भ्वा० आ०—प्लेहते) जाना, चलना-फिरना।

प्ली (क्रया०—पर० प्लीनाति) जाना, चलना-फिरना।

प्लीहन् (पु०) [प्लिह्+कनिन्, नि० दीर्घ] तिल्ली, तिल्ली का बढ़ जाना (प्लिहन् भी)। सम०—उदरम् तिल्ली का बढ़ जाना,—उदरिन् वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो।

प्लीहा (स्त्री०) तिल्ली।

प्लु (भ्वा० आ०—प्लवते, प्लुत) बहना, तैरना—किं नामैतत् मज्जत्यलाबूनि ग्रावाण: प्लवन्त इति—महावी १, क्लेशोत्तर रागवशात् प्लवन्ते—रघु० १६।६०, प्लवन्ते धर्मलघवो लोकेऽस्मिंसि यथा प्लवा सुभा० 2 नाव में बैठ कर पार जाना 3 इधर उधर झूलना, थर-थराना 4 कूदना, छलाँग लगाना, फलाँगना—भट्टि० ५।४८, १४।१३, १५।१६ 5 उड़ना, उड़ान भरना, हवा में मंडराना 6 फुदकना 7 (स्वर का) दीर्घ होना, प्रेर०—प्लावयति—ते 1 तैराना, बहाना 2 हटाना, बहा ले जाना 3 स्नान करना 4 जलमग्न एक करना, प्रलय आना, बाढ़ आना, जल में डुबोना झट बढ़ कराना, अभि—, 1 बह निकलना 2 हावी हो जाना, पराभूत करना (आल०), अव—, कूदना, छलाँग लगाकर बाहर होना, उद्—, 1 बहना, तैरना 2 उछलना, फलाँगना—मनु० ८।२३, ६३, कूदना, उचकना—शि० १२।२२, उप—, 1 बहना, तैरना 2 प्रहार करना, हमला करना, आक्रमण करना 3 अत्याचार करना, कष्ट देना, तंग करना, सताना निशाचरोपप्लुतभर्तृकाणां (तपस्विनीनाम्)—रघु० १४।६४, १०।५, मनु० ४।१८८, परि—, 1 तैरना, बहना 2 स्नान करना, डुबकी लगाना 3 कूदना, उछलना 4 जल प्लवन होना, जलमग्न होना, बाढ़ आना 5. ढकना 6 हावी हो जाना (आल०), वि—, 1 इधर उधर बहना, इधर उधर डावाँडोल होना, पटबढ़ होना 2 (समुद्र में) निरुद्देश्य संचरण करना, इतरेतरित होना—हि० ३।२ 3 (मन आदि का) अव्यवस्थित होना 4 बर्बाद होना, नष्ट हो जाना 5 असफल होना, प्रेर०—1 बहाना, तैरना 2. (अयोग्य व्यक्तियों का) अध्यापन करना - मनु० ११।१९९ 3 अव्यवस्थित होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना, सम्—, 1. घट बढ़ होना, इधर—उधर बहना 2 इकट्ठे बहना, (पानी की भाँति) मिलना—भग० २।४६।

प्लुत (भू० क० कृ०) [प्लु+क्त] 1. तैरता हुआ, बहता हुआ 2 जलमग्न हुआ, जल में डूबा हुआ, जल में बहा हुआ 3 कूदा हुआ, फलाँगा हुआ 4. (स्वर) दीर्घीकृत, प्रदीर्घ हुआ 5 ढका हुआ (दे० 'प्लु'), —तम् 1, कूद, उछल, उचक 2 कूद फाद, घोड़े का कदम विशेष। सम०—गति. अरलोप्त (स्त्री०) 1 उछल कूद कर चलना 2 सरपट दौड़ना, घोड़े की टप्पेदार चाल।

प्लुति. (स्त्री०) [प्लु+क्तिन्] 1. बाढ़, ऊपर से बहना, जलमग्न होना 2 उछल, कूद, उचक जैसा कि 'मेढक-प्लुति' में 3 कूदफाद कर चलना, घोड़े की एक चाल

विशेष 4 स्वर की ध्वनि का लंबा करना, प्रदीर्घ करना ।

प्लुष् 1 (म्वा०, दिवा० क्या० पर० प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति, प्लुष्ट) जलाना, झुलसना, चमकाना, गर्म लोहे से दागना ऋतु० १।२२, भट्टि० २०।३४ । 2 (क्या० पर० प्लुष्णाति) 1 छिड़कना, गीला करना 2 लेप करना 3 भरना ।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, दागा गया ।

प्लेष् (भ्वा० आ० प्लेषते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना ।

प्लोष: [प्लुष्+घञ्] जलाना, अग्निदाह होना ('प्रोष' भी) ।

प्लोषण (वि०) (स्त्री० णी) [प्लुष्+ल्युट्] जलना, झुलसना, जल कर राख हो जाना—तार्तीयीक पुरारेस्तदवनु मदनप्लोषण लोचन व भा० १, (पाठान्तर), -नम् जलना, झुलसना ('प्रोषण' भी) ।

प्सा (अदा० पर० प्साति, प्सात) खाना, निगल जाना ।

प्सात (भू० क० कृ०) [प्सा+क्त] 1 खाया हुआ 2 भूखा ।

प्सानम् [प्सा+ल्युट्] 1 खाना 2 भोजन ।

फ

फक्क् (भ्वा० पर० फक्कति, फक्कित) 1 धीरे-धीरे चलना-फिरना, फुर्ती से जाना, सरकना, धीरे-धीरे चलना 2 गलती करना, दुर्व्यवहार करना 3 फूल उठना ।

फक्किका [फक्क्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 एक अवस्था, सिद्ध करने के लिए पूर्वपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिसको बनाये रखना है फणिभाषितभाष्यफक्किका विषमा कुण्डलनामवापिता—नै० २।९५ 2 पक्षपात, पूर्वचिन्तित सम्मति ।

फट् (अव्य०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे जादू मन्त्रादिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है अस्त्राय फट् ।

फट [स्फुट्+अच्, पृषो०] 1 सांप का प्रसारित किया हुआ फण (फटा' भी इसी अर्थ में) निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फटा (पाठान्तर—फणा) विष भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयङ्कर पञ्च० १।२०४ 2 दांत 3 धूर्त, ठग, कितव ।

फडिंगा [फड् इति शब्दमिङ्गति फड्+इङ्ग+अच् टाप्] झींगुर, टिड्डी, टिड्डा, फतिंगा ।

फण् (भ्वा० पर० फणति, फणित) 1 चलना-फिरना, इधर उधर घूमना,—फणुर्भगिरे फेणुबंहुधाहरिराक्षसा भट्टि० १४।७८ 2 अनायास उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रम के पैदा करना (यह अर्थ कुछ के मतानुसार प्रेरणार्थक क्रिया का है) ।

फण,—क [फण्+अच्, स्त्रियां टाप्] किसी भी सांप का फैलाया हुआ फण विप्रकृत पन्नग फण (फणा) कुरुते—शि० ६।३०, मणिभि फणस्थै रघु० १३। १२, कु० ६।६८, वहति भुवनश्रेणि शेष फणाफलक-स्थिताम् भर्तृ० २।३५ । सम०—कर. सांप, धर 1 सांप 2 शिव का नाम भृत् (पु०) सांप, मणि सांप के फण में पाई जाने वाली मणि, मण्डलम् सांप का कुण्डलीकृत शरीर करालफलमण्डलम् रघु० १२। ९८, तत्फणामण्डलोदंचिमणिद्योतितविग्रहम्—१०।७ ।

फणिन् (पु०) [फणा+इनि] 1 फणधारी सांप, सामान्य सांप, सर्प उद्गिरतो मदगरल फणिन पुण्यांसि परिमलोदगारै भामि० १।१२,५८, फणी मयूरस्य तले निषीदति ऋतु० १।१३, रघु० १६।१७, कु० ३।२१ 2 राहु का विशेषण 3 पतंजलि का विशेषण, (पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य के प्रणेता)- फणिभाषितभाष्यफक्किका नै० २।९५ । सम० इन्द्र, ईश्वर 1 शेषनाग का विशेषण 2 सांपों के अधिपति अनन्त का विशेषण 3 पतंजलि का विशेषण, खेल लवा, बटेर, तल्प शेष विष्णु का (शेषनाग जिनकी शय्या है) विशेषण, पति 1 वासुकि या शेषनाग का विशेषण 2 पतंजलि का विशेषण—प्रिय. वायु, फेन अफीम, भाष्यम् (पाणिनि के सूत्रों पर किया गया भाष्य) महाभाष्य, भुज् (पु०) 1 मोर 2 गरुड का विशेषण ।

फत्कारिन् (पु०) [फत्कार+इनि] पक्षी ।

फरम् [फल्+अच्, लयोरभेद] ढाल तु० फलक ।

फलकम् (नपु०) पानदान पान रखने का डब्बा ।

फलकोक: [स्फुर्+ईकन्, घातो फर्फरादेश] खुले हुए हाथ की हथेली । फम् 1 ताजा अंकुर या टहनी का अंकुवा 2 मृदुता, का जूता ।

फल् 1 (भ्वा० पर० फलति, फलित) 1 फल आना, फल पैदा करना—नानाफलै फलति कल्पलतेव विद्या—भर्तृ०

२।४०, परोपकाराय दुहा फलन्ति सुभा०—विद्यातुल्यापिर फलतु च मनोऽप्यच भवतु—मा० १।१६ (इस अर्थ में प्राय सकर्मक के रूप म धातु का प्रयोग होता है) मौर्खस्यैव फलन्ति विविधक्लेशासि मन्त्रीनम —मुद्रा० २।१६ 'निष्पन्न या घटित करना' 2 परिणामयुक्त होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, कामयाब होना 'कैकेयि कामा फलितास्तवेति—रघु० १३।५९, १५।७८, यदा न फेलु क्षणदाचराणां (मनोरथा)—भट्टि० १४।११३, १२।६६, नैवाकृति फलति नैव कुल न शीलम्—भर्तृ० २।९६,११६ 3 फल निकलना, परिणाम या नतीजा पैदा करना - फलितमस्माक कपटप्रबन्धेन—हि० १, फलित तस्तर्हि भगवती पादप्रसादेन —मा० ६, कि० १८।२५, खल करोति दुर्वृत्त नूनं फलति साधुषु—हि० ३।२१, 'दुष्ट व्यक्ति बुरे कार्य करते हैं और भले पुरुषो को उनका परिणाम भुगतना पड़ता है' 4 पक्का होना, पक आना। II (प्रेरणा० पर०—फलति, फुल्ल या फुल्ल (पहले अर्थ में), दूसरे अर्थ में फलित) 1 बलपूर्वक तोडना, खड २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—तस्य मूर्धानमासाद्य एकालासिवरो हि स —महा० 2 प्रतिफलित होना, अक्स पडना—कि० ५।३८ 3 जाना।

फलम् [फल्+अच्] 1 फल (आल० से भी) जैसे वृक्ष का—उदेति पूर्व कुसुम तत फलम् - शं० ७।३०, रघु० ४।३३, १।४९ 2 फसल, पैदावार—कृषिफल —मेघ० १६ 3 परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव —अत्युत्कटै पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते —हि० १।८३, फलेन आस्यसि—पच० १, न नव प्रभुत्वफलोदयात् स्थिरकर्मा विरराम कर्मण रघु० ८।२२, १।३३ 4 (अत) पुरस्कार, क्षतिपूर्ति, पारितोषिक (शुभ या अशुभ) प्रतिफल - फलमस्यापहास्यस्य सद्य प्राप्स्यसि पश्य माम्—रघु० १२।३७ 5 कृत्य, कर्म (विप० वचन) —वदते हि फलेन साधवो न तु कठेन निजोपयोगिताम्—नै० २।४८, 'भले पुरुष अपनी उपयोगिता कर्मों से सिद्ध करते हैं न कि वचनो से' 6. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परिज्ञातज्ञानफला हि बुद्धय —पच० १।४३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २।२१ 'किस आशय को विचार मे रखकर', मेघ० ५४ 7 उपयोग, भलाई, लाभ, हित - जगता वा विफलेन वि फलम्—भामि० २।६१ 8 लाभ या मूलराशि का ब्याज 9 प्रजा, सन्तान - रघु० १४।३९ 10 (फल की) गिरी 11 पट्टिका या फलक 12 (तलवार का) फल 13 तीर की नोक या सिरा, बाण, गीतकार—मुद्रा० ७।१० 14. ढाल 15 अक्षकोष 16 उपहार 17 (गणित में) गणना-फल 18 गुणनफल 19 रज स्राव 20 जायफल 21 हल का फल, फाली। सम०- अशन:- फलाशन, - अनुबन्ध. परिणामक्रम, फलपरम्परा, अनुमेय (वि०) जिसका अनुमान फल या परिणाम पर निर्भर हो —फलानुमेया प्रारम्भा सस्कारा प्राक्तना इव रघु० १।२०, - अन्त. वास, अन्वेषिन् (वि०) (कर्मों के) पुरस्कार या क्षतिपूर्ति की खोज करने वाला, अपेक्षा (कर्मों के) फल या परिणामो की आशा, नतीजे का ध्यान, - अशक: तोता,-अम्लम् इमली,-अस्थि (नपु०) नारियल,—आकाक्षा (अच्छे परिणामो की) आशा —दे० फलापेक्षा, आगम: 1 फलो की पैदावार, फलो का भार, - भवन्ति नम्रास्तरव फलागमै श० ५।१२ 2 फलो का मौसम, पतझड, आढ्य (वि०) फलो से भरा हुआ,—आढ्या एक प्रकार के अगूर (जिसमें गुठलियाँ या बीज नही होते), उत्पत्ति (स्त्री०) 1 फलो की पैदावार 2 फायदा, लाभ (त्ति) आम का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ को प्रकट करने के लिए 'फलोत्पत्ति' भी लिखा जाता है), —उदय: 1 फलो का दिखाई देना (आना), फल या परिणाम का निकलना, अभीष्ट पदार्थ या सफलता की प्राप्ति—आफलोदयकर्मणाम्—रघु० १।५, उद्देश: फलो का ध्यान, दे० फलापेक्षा,- कामना परिणाम या फल की इच्छा,- काल: फलो का समय, केसर नारियल का पेड, ग्रह हित या लाभ को ग्रहण करने वाला, ग्रहि, - ग्रहिन् (वि०) (फले-ग्रहि या फलेग्राहिन्) फलो से भरा हुआ, मौसम में फल देने वाला, श्लाघ्यता कुलमुर्पति पैतृक स्यान्मनोरथतरु फलेग्रहि —कीर्ति० ३।६०, मा० ९।३९, —द (वि०) 1 उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला —मनु० ११।१४२ 2 लाभकर या फायदा पहुचाने वाला (द:) वृक्ष, निर्वृत्ति: (स्त्री०) परिणामो की समाप्ति,—निष्पत्ति: फलो का उत्पादन, पाक (फले-पाक भी) 1 फलो का पकना 2 परिणामो की पूर्णता, पादप फलवृक्ष, पूर:,—पूरक. सामान्य नीबू का पेड, प्रदानम् 1 फलों का देना 2 विवाह के अवसर पर एक सस्कार विशेष, प्रसविन् (वि०) फल को विकसित करने वाला या रूप देने वाला, —भूमि: (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने कर्मों का शुभाशुभ फल भोगता है (अर्थात् स्वर्ग या नरक),—भृत् (वि०) फलदायी, फलो से पूर्ण, भोग 1 फलो का आनन्द लेना 2 भोगाधिकार,—योग 1 अभीष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति मुद्रा० ७।१० 2 मजदूरी, पारिश्रमिक, राजन् (पु०) तरबूजा —वृन्तम् तरबूज,- वृक्ष: फलदारवृक्ष,- वृक्षक कटहल का वृक्ष,—शाखक: अनार का पेड,—शेष आम का पेड,—संपद् 1. फलों की बहुतायत 2. सफलता,

साधनम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय, उद्देश्य की पूर्ति, स्नेह. अखरोट का पेड़, हारी काली या दुर्गा का विशेषण ।

फलकम् [फल+कन्] 1 पट्ट, तख्ता, शिला, पटल या पट्टी--काल कालया भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारै --भर्तृ० ३।३९, द्यूत° [चित्र° आदि 2 चपटी सतह --चुम्बमानकपोल फलकाम्- का० २१८, घृतमुग्ध-गण्डफलकैर्विवस्वतु --शि० ९।६७,३७, नु० 'तट' 3 ढाल 4 पत्र पृष्ठ 5. नितंब, कूल्हा 6 हाथ की हथेली । सम० --वाचि (वि०) (याद्धा की भांति) ढाल से सुसज्जित,--यन्त्रम् भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिर्विषयक उपकरण ।

फलतः (अव्य०) [फल+तसिल्] फलस्वरूप, परिणामरूप, यथार्थतः ।

फलनम् [फल्+ल्युट्] 1 फल आना, फलवान् होना 2 फल या परिणाम उत्पन्न करना ।

फलवत् (वि०) [फल+मतुप्] 1 फलवान्, फलदार 2 फलदायी, परिणामदर्शी सफल, लाभकारी, ती 'प्रियंगु' नामक लता ।

फलिता [फल+इतच्+टाप्] रजस्वला स्त्री ।

फलिन् (वि०) [फल+इनि] फलों से पूर्ण, फलदायी, (पुल्लिं० भी) पुष्पिण फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयत स्मृता --मनु० १।४७, मृच्छ० ४।१०, (पुं०) वृक्ष ।

फलिन (वि०) [फल्+इनच्] फलों से पूर्ण, फलदायी, --न कटहल का पेड़ ।

फलिनी,-फली [फलिन्+ङीप्, फल्+अच्+ङीप्] प्रियंगु लता (कवियों के द्वारा इसे 'आम की पत्नी' कहा गया है तु० रघु० ८।६१) ।

फल्गु (वि०) [फल्+उ, गुक् च] 1 बिना गूदे का, रसहीन, तत्त्वरहित, सारविहीन- सार तता ग्राह्यम-पास्य फल्गु पच० १।२ 2 अयोग्य, निरर्थक, महत्त्वहीन--शि० ३।७६ 3 अल्प, सूक्ष्म 4 निर्मल, व्यर्थ 5 दुर्बल, बलहीन, निस्सार,--ल्गु (स्त्री०) 1 वसन्तऋतु 2 गूलर का वृक्ष 3 गया के पास एक नदी । सम० --उत्सव वसन्तोत्सव, होली का त्योहार ।

फल्गुन [फल्+उनन्, गुक् च] 1 फाल्गुन का महीना 2 इन्द्र का नामान्तर,--नी एक नक्षत्र का नाम कु० ७।६ ।

फल्यम् [फल+यत्] फल ।

फाणि, फाणितम् [फण्+णिच्+इञ्, क्त वा] मीरा, राब ।

फाण्ट (वि०) [फण्+क्त, नि० साधु] सुगम प्रक्रिया द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (जैसे काढ़ा), --ट:,-टम् अर्क, काढ़ा--फाण्टमनायाससाध्य कषाय-विशेष --सिद्धा०, फाण्टचिकित्स्यपाणय --भट्टि० ९।१७, (दे० भाष्य) ।

फाल:,-लम् [फल+अण्, फल्+घञ् वा] 1 हल का फल, फाली--मनु० ६।१६ 2 बाली की मांग निकालना, सीमंतभाग नै० १।१६,--ल: 1 बलराम का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3 नीबू का पेड़, लम् 1 सूती कपड़ा 2 जोता हुआ खेत ।

फाल्गुन [फाल्गुन+अण्] 1 महीने का नाम (जो फरवरी-मार्च में आता है) 2 अर्जुन का विशेषण महा० में नाम की व्याख्या इस प्रकार है--उत्तराभ्यां फल्गुनीभ्यां नक्षत्राभ्यामहं दिवा, जातो हिमवत पृष्ठे तेन मां फाल्गुन विदु 3 वृक्ष का नाम, जिसे 'अर्जुन' कहते हैं । सम० अनुज 1 चैत्र का महीना 2 वसंतकाल 3 नकुल और सहदेव का विशेषण ।

फाल्गुनी [फाल्गुनी+अण्+ङीप्] फाल्गुन मास की पूर्णिमा । सम० भव बृहस्पति ग्रह का विशेषण ।

फिरङ्ग (पु०) फिरंगियों अर्थात् यूरोपियनों का देश ।

फिरङ्गिन् (पु०) [फिरंग+इनि] फिरंगी, अंग्रेज, यूरोपियन ।

फुक [फु+कै+क] पक्षी ।

फु (फू) त् (अव्य०) अनुकरणमूलक शब्द जो प्राय 'कृ' के साथ प्रयुक्त होता है, तरल पदार्थों में फूंक मारने से पैदा होने वाली ध्वनि, कभी-कभी इससे घृणा सूचित होती है, फु (फू) त्कृ (किसी तरल पदार्थ में) फूंक मारना - बाल पायसदग्धो दध्यपि फूत्कृत्य भक्षयति हि० ४।१०३ । सम० कार., कृतम्, --कृति (स्त्री०) 1 फूंक मारना 2 सांप की फुफकार 3 सी सी करना, साथ साथ की ध्वनि 4 सुबकना 5 चीख मारना, डर की चीख, चीत्कार ।

फुप्फुस,-सम् (नपु०) फेफड़े ।

फुल्ल् (भ्वा० पर० फुल्लति, फुल्लित) कली आना, फूलना, फुलाना, (पुष्प का) खिलना ।

फुल्ल (भू० क० कृ०) [फल्+क्त, उत्व लत्वम्] 1 फैलाया हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ पुष्प च फुल्ल नव-मल्लिकाद्या प्रयाति कान्ति प्रमदाजनानाम् ऋतु० ६।६, फुल्लारविंदवदनाम् चौर० १ 2 फूल आना, खिला हुआ रघु० ९।६३ 3 विस्तारित, फैलाया हुआ, (आंखों की भांति) खूब खुला हुआ पच० १।१३६ । सम० लोचन (वि०) (हर्ष से) खिली हुई आंखों वाला (न) एक प्रकार का मृग ।

फेट्कार [फेट्+कृ+घञ्] चीख, हूक (बुरे भेड़िये की ध्वनि) ।

फेण,-क [स्फाय्+न, फे शब्दादेश, पक्षे गुत्वम्] 1 झाग, फेन (कफ आदि)--गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचना या विहस्येव फेनै मेघ० ५०, रघु० १३।११, मनु० २।६१

2 मुँह का झाग या बुलबुला 3 थूक। सम०-चिह्न 1 बुलबुला 2 खोखला विचार, अनस्तित्व, -वाहिन् (पु०) छानने के काम का कपड़ा।

फेज (म) क [फेण+कन्] दे० 'फेन'।

फेनिल (वि०) [फेन+इलच्] झागदार, बुलबुले वाला, फेनिलमम्बुराशि-रघु० १३।२।

फेरः, फेरण्ड. [फे+रा+क, फे+रण्ड्+अच्] गीदड़।

फेरव [फे इति रवो यस्य ब० स०] 1 गीदड़-कन्दफेरव-चण्डडाकृति-मा० ५।१९ 2 धूर्त, बदमाश, ठग 3 राक्षस, पिशाच।

फेव [फे+व+ड्] गीदड़।

फेल्लम्, फेला, फेलिका, फेली [फेल्यते दूरे निक्षिप्यते, फेल्+अड्, स्त्रियां टाप्, फेल्+इन्+कन्+टाप्, फेलि+ङीष्] उच्छिष्ट भोजन, भोजन का बचा खुचा भाग, जूठन।

ब

बह् (भ्वा० आ० बहते, बहित) बढ़ना, उगना।

बहिमन् (पु०) [बहुल+इमनिच्, बहादेश] बहुतायत, बाहुल्य।

बहिष्ठ (वि०) [बहुल+इष्ठन्, बहादेश उ० अ०] अत्यन्त अधिक, अत्यत बड़ा, बहुत ही ज्यादह।

बहीयस् (वि०) [बहुल्+ईयसुन्, बहादेश म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक, बहुत ज्यादह, अपेक्षाकृत बहुमल्यक।

बक. [वञ्च्+अच्, पृषो० साधु] 1 बगला 2. ठग, धूर्त, पाखंडी (बगला बड़ा धूर्त पक्षी है, वह अपने पंजे में दूसरों को फांस लेता है) 3 एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने मारा था 4 एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मारा था 5. कुबेर का नामान्तर। सम०-चर, -वृत्ति,-व्रतचर,-व्रतिक:, -व्रतिन् (पु०) बगले की भांति आचरण करने वाला, ढोंगी, पाखंडी-अधोदृष्टिर्नैष्कृतिक, स्वार्थसाधनतत्पर, शठो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विज -मनु० ४।१९६,-जित् (पु०) -निषूदन 1 भीम का विशेषण 2 कृष्ण का विशेषण,-व्रतम् बगले की भांति आचरण, पाखंड।

बकुल [बञ्च्+उलच्, रेफस्य लत्वम्, नलोप] एक (मौलसिरी) वृक्ष (कहा जाता है कि कवियों के अनुसार तरुणियों द्वारा मदिरा का गंडूष छिड़कने पर इसमें मंजरी फूट आती है)-कालरयन्यो (अर्थात् केसर या बकुल) वदनमदिरा दोहदच्छद्मनास्या -मेघ० ७८, बहुल सीधुगण्डूषसेकात् (विकसित) (इस प्रकार के अन्यवृक्षों से संबद्ध कविसमयों के लिए प्रियंगु के नीचे उदाहरण देखो),-स्रज् मौलसिरी वृक्ष का सुगंधित फूल-भामि० १।५४।

बकेयका [बकाना बकसमूहानाम् इदंक मतियंज्-ब० स०] छोटी बगली।

बकोट. (पु०) बगला।

बट्. [बट्+उ, बवयोरभेद] बालक, लड़का, छोकरा (बहुधा तिरस्कारसूचक) वाणकयबटु-आदि दे० 'बटु'।

बडिश (ति) शम् (नपु०) मछली पकड़ने का कांटा-भर्तृ० ३।३१।

बत (अव्य०) [बन्+क्त, बवयोरभेद] निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय 1 शोक, खेद-वय बत विदूरत्रमगता पशो कन्यका मा० ३।१८, अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्, भग० १।४५ 2 दया या करुणा-कथं बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलम् -श० १।१० 3 संबोधन, पुकारना-बत विसृज तावत् तोयवाहां नितान्तम् गण०, रघु० ९।४७ 4 हर्ष या संतोष-अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः -कु० ३।२० 5 आश्चर्य, अचंभा, अहो बत महच्चित्रम्-का० १५४, 6 निन्दा ('अहो' के साथ 'बत' के अर्थ 'अहो' के अन्तर्गत दे०)।

बदर [बद्+अरच्] बेर का पेड़ - रघु० बेर का फल, करबदरमदृशमखिल भुवनतले यत्प्रमादेन कवय, पश्यन्ति सूक्ष्ममतय सा जयति सरस्वती देवी-वाम० १, भामि० २।८। सम०-पाचनम् एक पुण्यतीर्थ स्थान।

बदरिका [बदरी+कन्+टाप्, ह्रस्व] बेर का पेड़ या फल, अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा-हि० १।९४ 2 गंगा का एक स्रोत, जो नर और नारायण के आश्रम के निकट स्थित है, इसे ही बदरीनारायण कहते हैं। सम०-आश्रमः बदरिका का आश्रम।

बदरी [बदर+ङीष्] 1 बेर का पेड़, दे० बादरायण 2 -बदरिका (ऊपर 2)। सम०-तपोवनम् बदरीस्थित तपस्या करने का उद्यान-कि० १२।३३, -फलम् बेर के पेड़ का फल,-वनम् (अम्) बेर की झाड़ी या जंगल,-शैल बदरी पर स्थित पहाड़।

बद्ध (भू० क० कृ०) [बन्ध्+क्त] 1. बांधा हुआ, बंधा

हुआ, कसा हुआ 2 शृंखलित, बेड़ियों से जकड़ा हुआ 3. बंदी, पकड़ा हुआ 4. अवरुद्ध, कारावासित 5, कमर कसे हुए 6. संयत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7 निर्मित, बनाया हुआ 8. प्यार किया गया, रिझाया गया 9 मिलाया गया, सहित 10 पक्का जमाया गया, दृढ़ । सम०—अङ्गुलित्र,—अङ्गुलित्राण (वि०) दस्ताना पहने हुए, अञ्जलि (वि०) हाथ जोड़े हुए, आदर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए,—अनुराग (वि०) स्नेह में बंधा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रेमबंधन में जकड़ा हुआ, अनुशय (वि०) पश्चात्ताप करने वाला, आशङ्कक (वि०) जिसकी आशंकाएं बढ़ गई हैं, शङ्काकुल,—उत्सव (वि०) उत्सव या त्यौहार मनाते हुए,—उद्यम (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले, कक्ष,—कक्ष्य (वि०) दे० 'बद्धपरिकर'—कोप,—मन्यु,—रोष (वि०) 1. क्रोध अनुभव करते हुए, क्रोध या रोष की भावना रखते हुए 2 अपने क्रोध का दमन करने वाला, चित्त, मनस् (वि०) मन को किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढ़तापूर्वक लगाने वाला, जिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा कील दी गई है, दृष्टि,—नेत्र, लोचन (वि०) आंख को एक ओर जमा कर ताकने वाला, टकटकी लगाकर देखने वाला, धार (वि०) लगातार अविच्छिन्न रूप से बहने वाला, वेषध्य (वि०) नाटकीय वेशभूषा धारण किये हुए, परिकर (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार, सज्जित, प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने कोई व्रत या प्रतिज्ञा की है 2 दृढ़ संकल्प वाला, भाव (वि०) स्नेहशील, दिल लगाये हुए, मुग्ध (अधि० के साथ) दृढ़ त्वयि बद्धभावोऽयं जनः विक्रम० २, मुष्टि (वि०) 1 मुट्ठी बांधे हुए 2 मुट्ठी भींचे हुए, कंजूस, मूल (वि०) जिसकी जड़ गहराई तक गई हो, जड़ पकड़ हुए · बद्धमूलस्य मूलं हि महद्बैरतरो स्थिरं शि० २।२८, मौन (वि०) जीभ थामे हुए, मौन रहने वाला, चुप अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम् रघु० १३।२३,—राग (वि०) आसक्त, मुग्ध, अनुरक्त पंच० १।१२३,—वासस् (वि०) अपना वास स्थान स्थिर करने वाला, वाच् (वि०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला, वेषधृ (वि०) कपटपूर्ण से ग्रस्त, वैर (वि०) जिसको किसी से घोर घृणा हो गई हो या पक्की शत्रुता हो गई हो, शिख (वि०) 1 जिसने अपनी चोटी बांध ली है, (चोटी में गांठ दे ली है) 2 जो अभी बच्चा है, बालक,—स्नेह (वि०) अनुराग करने वाला, स्नेहशील ।

बध् (भ्वा० आ०—बीभत्सते—मूल अर्थ को बताने वाले बध् धातु का सन्नन्त रूप) घिन करना, घृणा करना, अरुचि रखना, संकोच करना, झिझकना, ऊबना (अपा० के साथ) येभ्यो बीभत्समानाः—उत्तर० १ ।

बधिर (वि०) [बन्ध्+किरच्] बहरा,—ध्वनिभिर्जनस्य बधिरीकृतश्रुते —शि० १३।२, मनु० ७।१४९ ।

बधिरयति (ना० धा० पर०) बहरा बनाना (आल० से भी) बधिरिताशेषदिगन्तरालम् का०, महावी० ६।८० ।

बधिरित (वि०) [बधिर+इतच्] बहरा किया गया, बहरा बनाया गया ।

बधिरिमन् (पुं०) [बधिर+इमनिच्] बहरापन ।

बन्दिः, दी (स्त्री०) [बन्द्+इन्, बन्दि+ङीष्] 1 बंधन, कारावास 2 कैदी, बंधुआ—कु० २।६१ ।

बन्ध् (क्रया० पर० बध्नाति, बद्ध०, कर्म० बध्यते) 1 बांधना, कसना, जकड़ना—बद्धेन सभावित एव तावत्करेण रुद्धोऽग्नि च केशपाशे कु० ७।५७, रघु० ७।९, कु० ७।२५, भट्टि० ९।७५ 2 दबोचना, पकड़ना, जेल में डालना, जाल में फंसाना, बंदी बनाना कर्मभिर्न स बध्यते भग० ४।१४, बलिर्बबन्धे —भट्टि० २।३९, १४।५६ 3 जंजीर में बांधना, बेड़ी में जकड़ना 4 रोकना, ठहराना, दमन करना यथा बद्धकोष, बद्धकोष्ठ आदि में 5 पहनना, धारण करना न हि चूडामणिं पादे प्रभवामीति बध्यते —पंच० १।७२, बबन्धुरङ्गुलित्राणि भट्टि० १४।७, 6 (आंख आदि का) आकृष्ट करना, गिरफ्तार करना बबन्ध वसुधि यवप्ररोह कु० ७।१७, या बध्नाति मे चक्षुः (चित्रकूटः) रघु० १३।४७ 7 स्थिर करना, जमाना, (आंख या मन आदि) निर्देशित करना, डालना (अधि० के साथ) दृष्टिं लक्ष्येषु बन्धन्—मुद्रा० १।२, रघु० ३।४, ६।२६, भट्टि० २०।२२ 8 (जाल आदि) बांधना, मिलाकर जकड़ना मुद्रा० ३।१७ 9 निर्माण करना, सरचना करना, रूप देना, व्यवस्थित करना बद्धोष्मिनाकवनितापरिभुक्तमुक्तम्—कि० ८।५७, मृगकुल रोमन्थमभ्यस्यतु० श० २।६, तस्याञ्जलिं बन्धुमतो बबन्ध रघु० १६।५, ४।३८, ११।३५, ७८, कु० २।४७, ५।३० भट्टि० ७।७७ 10 एकत्र करना, रचना करना, (कविता श्लोक आदि) निर्माण करना तृष्टैर्बद्ध तदलघु रघुस्वामिन सच्चरित्रम् —विक्रम० १८।१०७, श्लोक एव त्वया बद्ध —रामा० 11 बनाना, पैदा करना, (फल आदि) जन्म देना —रघु० १२।६९, उ० ६।४ 12 रखना, अधिकार में करना, ग्रहण करना, सजा कर रखना उत्तर० २।८, ('बध्' के अर्थों में उन संज्ञाओं के अनुसार जिनसे वह

संयुक्त होना है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उदा० **भ्रकुटि बन्ध्** भौंहों में बल डालना, त्योरी चढ़ाना, **मुष्टि बन्ध्** मुट्ठी बाँधना, **अञ्जलि बन्ध्** नम्र निवेदन के लिए हाथ जोड़ना, **चित्तं, चित्त, मनः, हृदय, बन्ध्** मन लगाना, दिल लगाना, प्रीति, भाव, राग **बन्ध्**, प्रेमपाश में बद्ध होना, मुग्ध होना, **सेतु बन्ध्** पुल बनाना, सेतु का निर्माण करना **वैर बन्ध्** घृणा पैदा होना, शत्रुता, **सख्य, सौहृद बन्ध्** मैत्री करना, **गोल बन्ध्** गोल बाँधना, **मण्डल बन्ध्**, मण्डल बनाना गोल घेरा कर बैठना, **मौन बन्ध्**, चुप्पी साधना, **परिकर बन्ध्**, कमर कसना, तैयार हो जाना दे० शब्द के नीचे समस्त शब्द, प्रेर० बंधवाना, बनवाना, रचवाना, निर्माण करवाना रघु० १२।७०, **अनु** , 1 बाँधना, जकड़ना शि० ८।६९ 2 लग जाना चिपकना, मुड़ जाना **तान्येवाक्षराणि मामनुबध्नन्ति** उत्तर० ३ 3 उपस्थित रखना, चुपचाप आसरण करना, पद चिह्नों पर चलना **मधुकरकुलैरनुबध्यमानम्** कु० १।१०, **का नु खल्वयमनुबा** रमाभ्यर्थनोन्मत्तालसत्वो बाल श० ७ 4 दबाव डालना, प्रेरित करना अत्यंत आग्रह करना, **आ** , 1 बाँधना जकड़ना, कसना -मनु० ११।२०५ 2 बनाना, निर्माण करना व्यवस्थित करना -**आबद्धमण्डलः** नागस्तपस्विनाम् —कु० ६१, **आबद्धमाला** मेघ० ९, भट्टि० ३।३०, कि० ५।३३,—**आबद्धरेखमभितो नवमञ्जरीभि** —गीत० ११ 3 स्थिर करना, जमाना, निर्देशित करना—रघु० १।६०, **उद** , बाँधना, लटकाना **कण्ठमुद्बध्नाति** मुद्रा० ६, रघु० १६।६५ **नि** , बाँधना, कसना जकड़ना, भूचालित करना, बेड़ी में बाँधना **आत्मबन्ध न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय** भग० ४।४१, ९।९, १४।७, १८।१७, मनु० ६।७४, कु० ५।१० 2 स्थिर करना जमाना **स्त्रियि निबद्धरतेः** विक्रम० ४।२९ 3 बनाना, निर्माण करना, रचना करना व्यवस्थित करना—**हेमनिबद्ध चक्रम् पाषाणचयबद्ध कूप** आदि 4 लिखना, रचना करना **मया निबद्धेयं मतिद्वयी कथा**—कु० ५, **निस्** , दबाव डालना प्रेरित करना, अत्यंत आग्रह करना, **परि** , 1 कसना, बाँधना 2 पहनना 3 घेरा डालना, चारों ओर से बाँधना 4 गिरफ्तार करना, ठहराना 5 विघ्न डालना, रुकावट डालना, **प्रति** , 1 कसना, जकड़ना, थामना **-पोनप्रतिबद्धवत्साम्(धेनुम्)** रघु० २।१ 2 स्थिर करना, निर्देशित करना, कु० ३।९१ 3 खचित करना, जड़ना, भरना—**प्रति मणिस्तम्भेषु प्रतिबध्यते** पंच १।७५, **बहुलानुरागकुरुविन्ददलप्रतिबद्धमध्यमिव** [स्त्रियम् —शि० ९।८ 4 अवरोध करना, विघ्न डालना, पीछे हटाना, निकाल देना, बंद कर देना—**प्रतिबध्नाति हि श्रेय पूज्यपूजाव्यतिक्रम** रघु० १।७९ 5 रोकना, हस्तक्षेप करना -**मैनमन्तरा प्रतिबध्नीतम्** श० ६, **सम्** 1 मिला कर बाँधना या कसना, एकत्र करना, संयुक्त करना, साथ लगाना 2 सरचना करना, बनाना दे० सबद्ध।

बन्ध [बन्ध् घञ्] 1 ग्रन्थि, बन्धन यथा-आज्ञाबन्ध) 2 आलों या बाँधने की पट्टी, फीता विक्रम० ४।१०, श० ३।३० 3 शृंखला, बेड़ी 4 बेड़ी डालना, कारागार में डालना, जेल में बंद करना मनु० ८।१७० 5 दोहना, पकड़ना, पकड़ लेना **गजबन्ध** रघु० १७।२ 6 निर्माण, सरचना, व्यवस्थापन -**सगबन्धो महाकाव्यम्** सा० द० ६ 7 भावना धारणा, विचारना है **सज्जनस्यैव सुकविप्रेमबन्धे विशेषम्** -विक्रमा० १८।१०७ रघु० ६।८१ 8 सयोग, मिलन अथवा सम्पर्क 9 जोड़ना, मिलाना, मिश्रण करना रघु० ४४।१२ **अञ्जलिबन्ध** आदि 10 पट्टी, तगी 11 सहमति **मामनस्य** 12 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, निरूपण -रघु० १८।५२ 13 बधन, भवबधन (द्वि० सवि० अथवा सासारिक बधना से पूर्ण मोक्ष) **बन्ध मोक्ष च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्त्विकी** भग० १८।३०, **बन्धान्मुक्तः स्वयं मत्तमुच्चाने कुरुते कर्म पाशात्**—भाग० ४।२१, रघु० १३।५८, १८।३ 14 फल, परिणाम 15 स्थिति, अगविन्यास आसन-**कलबीर** रघु० ७।६ कु० ३।४५, ५९ 16 मैथुन करते समय विशेष आसन, रतिबध, (रतिमजरी में इस प्रकार के ९२ आसन बताये गये हैं जब कि और लेखक ८४ या बढ़ा देते हैं) 17 गाद, किनारी, रूप रेखा, छाया 18 किसी श्लोक का कोई विशिष्ट रूप-उदा० गतिबध, पद्मबध, मुरजबध काव्य० ९ 19 स्नायु, कण्डरा 20 शरीर 21 अभानत, धरोहर। सम०—**करणम्** बेड़ी डालना, कारागार में डालना, **तन्त्रम्** पूरी सेना या चतुरंगिणी सेना अर्थात् गजारोही, अश्वारोही, रथारोही तथा पदाति, **पाल्यम्** अस्वाभाविक या कृत्रिम शब्दरचना, **स्तम्भः** पशुओं को बाँधने का खूटा (उदा० हाथी आदि)।

बन्धक [बन्ध्+ण्वुल्] 1 बाँधने वाला, पकड़ने वाला 2 दोहने वाला 3 बैल, साठ रस्सी जमड़े का तस्मा 4 मेंढ़, किनारा बाध 5 धरोहर अभानत 6 धरोहर का अगन्यास 7 अदलाबदली विनिमय 8 भग करने वाला तोड़ने वाला 9 प्रतिज्ञा 10 नगर 11 भाग या अश (द्विगु समास के अन्त में)—**ऋण सदयबन्धकम्** -याज्ञ० २।७६,—**कम्** दे० ऊपर, सौमित करना, की 1 अपनी स्त्री न में रक्षा कौमारबन्धकी प्रयोजनम् —मा० ७, वेणी० २ 2 वेश्या वारांगना वेश्या

धृतोसि मयेति बन्धकीषार्ष्टम् का० २३७, 3 हथिनी।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] 1 बाँधने की क्रिया, जकड़ना, कसना, कु० ४।८ 2 चारों ओर से बाँधना, लपेटना, आलिंगन -बिलम्बशाखाभुजबन्धनानि—कु० ३।३९, घटय भुजबन्धनम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ 3 गाँठ, ग्रन्थि (आल० से भी) रघु० १२।७६, आशाबन्धनम् आदि 4 बेड़ी डालना, जंजीर से बाँधना, कैद करना 5 शृंखला, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि 6 गिरफ्तार करना, पकड़ना 7 बाँधना, कैद, जेल, कारा, जैसा कि 'बन्धनागार' में 8. बन्दीगृह कारागार, जेलखाना —त्वा कार्य्यामि कमलोदरबन्धनस्थम् श० ६।२०, मनु० ९।२८६ 9 बनाना, निर्माण, सरचना,—मंतु-बन्धनम्—रघु० ४।६ 10 संयुक्त करना, मिलाना, जोड़ना 11 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 12 हड्डी, ठठल, (फूल का) वृत्त—श० ३।६, ६।१८, कु० ४।१४ 13 स्नायु, पुट्ठा 14 पट्टी। सम० —आर(आ)गार, -रक्ष,-आलय, कारागार, जेलखाना, —ग्रन्थि 1 पट्टी की गाँठ 2 जाल 3 पशुओं को बाँधने का रस्सा,—पालक,-रक्षिन् (पु०) काराध्यक्ष, जेल का अधीक्षक,—क्षेपण (न०) कारागार स्थ: बंदी, कैदी,—स्तम्भ खूटा, (हाथी आदि पशुओं को बाँधने का) खंभा,—स्थानम् अस्तबल, घुड़साल।

बन्धित (वि०) [बध+क्त] 1 बंधा हुआ, जकड़ा हुआ 2 कैदी, बंदी।

बन्धित्र [बध्+इत्र] 1 कामदेव 2 चमड़े का पट्टा 3 चक्का, गन्ना।

बन्धु [बन्ध्+उ] 1 रिश्तेदार बंधु, बांधव, सबंधी—यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे उत्तर० ३।८, मातृ-बन्धुनिवासनम् रघु० १४।१२, श० ६।२२, भग० ६।९ 2 किसी प्रकार के संबंध से बंधा हुआ, भाई, —प्रवासबन्धु सह यात्री, धर्म बन्धु आध्यात्मिक भ्राता —श० ४।९ 3 (विधि में) सजातीय बंधुजन, अपना निजी सगोत्र बंधु (बंधु तीन प्रकार के हैं आत्म," पितृ" तथा मातृ") 4 मित्र (जैसा कि नीचे 'बंधुकृत्य' में) प्राय समास के अन्त में—मकरन्दगन्ध-बन्धो—मा० १।३९, 'गंध का मित्र अर्थात् सुवासित' ९।१३ 5 पति—वैदेहिबंधोर्हृदय विदद्रे रघु० १४।३३ 6 पिता 7 माता 8 भ्राता 9 बंधुजीव नाम का वृक्ष 10 वह व्यक्ति जिसका किसी जाति या व्यवसाय से नाममात्र का संबंध हो, अर्थात् जो जाति में जन्म लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का पालन न करता हो (प्राय तिरस्कारसूचक शब्द) स्वमेव ब्रह्मबन्धुनोद्धिस्तो दुर्गप्रयोग -मालवि० ४, तु० अजबंधु। सम० कृत्यम् 1 सगोत्रबंधु का कर्तव्य—त्वयि तु परिसमाप्त बन्धुकृत्य प्रजानाम् - श० ५।८ 2 मैत्रीपूर्ण कार्य या सेवा कच्चित्सौम्य व्यवसितमिद बन्धुकृत्य त्वया मे—मेघ० ११४,—जन, 1 रिश्तेदार, भाई-बन्धु 2 बंधुवर्ग, स्वजन, जीव, -जीवक वृक्ष का नाम—बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम्—गीत० २, रघु० ११।२५, दत्तम् एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के अवसर पर कन्या के संबन्धियों द्वारा कन्या को दिया गया धन- याज्ञ० २।१४४, -प्रीति (स्त्री०) 1. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या—मेघ० ४९ 2 मित्र के लिए प्रेम,—भाव. 1 मित्रता 2 रिश्तेदारी—वर्ग भाई-बन्धु, स्वजन,—हीन (वि०) बंधुबांधवों या मित्रों से रहित।

बन्धुक 1 बंधुजीव नामक पेड़ 2. हरामी (सन्तान) वर्ण-संकर, का,-की असती स्त्री (दे० बधकी)।

बन्धुता [बन्धु+तल्+टाप्] 1 रिश्तेदार, भाई-बंधु स्वजन (सामूहिक रूप से) 2 रिश्तेदारी संबंध।

बन्धुदा [बन्धु+दा+क+टाप्] असती स्त्री।

बन्धुर (वि०) [बध+उरच्] 1 डाँवाडोल, लहरदार, ऊँचा-नीचा—शि० ७।३४, कु० १।४२ 2 झुका हुआ, रुझान वाला, विनत बन्धुरयाति—रघु० १३।४७, (-सनतागि) 3 टेढ़ा, वक्र 4 सुहावना, मनोहर, सुन्दर, प्रिय—श० ६।१३, (यहाँ इसका अर्थ 'डावा-डोल' भी है) 5 बहरा 6 हानिकर, उत्पातप्रिय, —र 1 हंस 2 साल्म 3 औषधि 4 खली 5 योनि रा (ब० व०) मुर्गे या खाद्य पदार्थ, रा असती स्त्री, रम मुकुट, ताज।

बन्धुल (वि०) [बन्ध्+उलच्] 1 झुका हुआ, वक्र, रुझान वाला 2 सुहावना, खुशनुमा, आकर्षक, सुन्दर, -ल 1 हरामी (सनान)-परगृहललिता पराग्रपुष्टा परपुरुषजंघिनी परा ङ्गनारा, परधननिरता गुणैरवन्द्या भजकलभा इव बन्धुला ललाम —मृच्छ० ९।२८, (विदूषक के प्रश्न 'भो के यय बन्धुला नाम' का यह उत्तर है जो स्वय बंधुलो ने दिया) 2 वेश्या का सेवक 3 बंधूक नाम का पेड़।

बन्धूक [बन्ध्+ऊक] एक वृक्ष का नाम—तव करनिकरेण स्पष्टबन्धूकमूनस्तवकरचितमेते शेखर बिभ्रतीव—शि० ११।४६, ऋतु० ३।५ कम् इस वृक्ष का फूल बन्धूकबन्धुजिवबान्धवोऽयमधर —गीत० १०, ऋतु० ३।२५।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1 डावाडोल, उन्नतावनत 2 झुका हुआ, रुझानवाला, विनत 3 सुहावना, खुशनुमा, प्रिय, नु० बधुर, रम् छिद्र, सूराख।

बन्धूलि [बध्+ऊलि] बन्धुजीव नामक वृक्ष।

बन्ध्य (वि०) [बन्ध्+ण्यत्] 1 बांधे जाने के योग्य, बेड़ी

द्वारा जकड़े जाने योग्य, कैद किये जाने या हन्दी बनाये जाने के योग्य –याज्ञ० २।२४३ 2 मिलाकर बाँधने या जोड़ने के योग्य 3 निर्माण किये जाने के योग्य, बनाये जाने या सचरित किये जाने के योग्य 4 निरुद्ध, निगृहीत 5 बाँझ, बंजर, जो उपजाऊ न हो, निष्फल, निरर्थक (व्यक्ति या वस्तु)–बन्ध्यश्रमास्ते –रघु० १६।७५, अबन्ध्यस्तस्यापि बभूवतुः ते–३।२९, कि० १।४३ 6 जिसका मासिक रज स्राव आना बन्द हो गया हो 7 (समास के अन्त में) विहीन, विरहित। सम० फल (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, सुस्त।

बन्ध्या [बन्ध्य+टाप्] बाँझ स्त्री न हि बन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्–सुभा० 2 बाँझ गौ 3 एक प्रकार का गन्धद्रव्य–(बालछड़)। सम०–तनय, –पुत्र –सुत या दुहितृ,–सुता बाँझ स्त्री का पुत्र या पुत्री अर्थात् घोर असम्भाव्यता, जिसका न अस्तित्व है न हो सकता है, एव बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखर –दे० 'खपुष्प'।

बंधनम् [बन्ध्+ल्युट्] बन्धन, गांठ।

बभ्रवी [बभ्रु+अण्+ङीष्, नवृद्धि] दुर्गा की उपाधि।

बभ्रु (वि०) [भृ+कु, द्वित्वम्, बभ्रु+उ वा] 1 गहरा भूरा, खाकी, लाली लिये हुए भूरा–ज्वालाबभ्रशिरारुह –रघु० १५।१६, १९।२५, बबन्ध बालारुणबभ्रु वल्कलम्–कु० ५।८ 2 किसी रंग के कारण भूरे सिर वाला,–भ्रु 1 आग, 2 नेवला 3 खाकी रंग 4 भूरे बालों वाला 5 एक यादव का नाम–शि० २।४० 6 शिव का विशेषण 7 विष्णु का विशेषण। सम०–धातु 1 सोना 2 गेरु, सुवर्णगैरिक,–वाहन चित्रांगदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र, [युधिष्ठिर द्वारा छोड़े गये अश्वमेध के घोड़े की देखभाल अर्जुन करता था। वह घोड़ा घूमता हुआ मणिपुर देश में चला गया। उस समय वहाँ बभ्रुवाहन राज्य करता था। वह अद्वितीय पराक्रमी था। जब वह घोड़ा उसके पास लाया गया और उसने घोड़े के सिर पर बँधे पट्ट पर 'पाण्डवों' का नाम पढ़ा तथा यह जाना कि उसके पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो शीघ्रता से वह उनके पास गया, बड़े सम्मान, के साथ अपना राज्य और कोष, अश्वसहित उनके सामने प्रस्तुत किया। अर्जुन ने उस दूरे समय में बभ्रुवाहन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे डाँटा, फटकारा और कहा कि यदि वह सच्चा पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सच्चा पुत्र होता तो उसे अपने पिता से डरना नहीं चाहिए था, और न इस प्रकार दीनता दिखलानी चाहिए थी। इन शब्दों से उस वीर युवक को अत्यन्त क्रोध आया, जोश में भरकर उसने अर्जुन पर एक अर्धचन्द्राकार बाण छोड़ा जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। संयोगवश उस समय वहाँ चित्रांगदा के पास उलूपी विद्यमान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया। अर्जुन ने भी बभ्रुवाहन को अपना सच्चा पुत्र मान लिया और अपनी माता पर आगे चल दिया]।

बम्ब् (भ्वा० पर० बम्बति) जाना, चलना-फिरना।

बम्बरः [भृ+अच्, द्वित्व मुम् च] मधुमक्खी, भौंरा।

बम्बराली [बम्बर+अल्+अच्+ङीष्] मक्खी।

बरट [वृ+अटन्, बवयोरभेद] एक प्रकार का अन्न।

बर्ब् (भ्वा० पर० बर्बति) जाना, चलना-फिरना।

बर्बटः (बर्ब्+अटन्) एक प्रकार का अनाज, राजमाष।

बर्बटी [बर्बट+ङीष्] 1 एक प्रकार का अन्न, राजमाष 2 वेश्या, रंडी।

बर्बरा (स्त्री०) नीली मक्खी।

बर्बर [वृ+अरच्, वुट् बवयोरभेद] 1 जो आर्य न हो, अनार्य, असभ्य, नीच 2 मूर्ख, बुद्धू –शृणु रे बर्बर –हि० २।

बर्बूर [बर्ब्+ऊरच्] एक वृक्ष, आभल–उपसर्पेम भवन्त बर्बूर यद कस्य लोभेन–भामि० १।२४।

बर्ह् (भ्वा० आ० बर्हते) 1 बोलना 2 देना 3. हिंसा करना 4 क्षति पहुँचाना मार डालना, नष्ट करना 5 फैलाना, मि , मार डालना, नष्ट करना शि० १।२९।

बर्हः,-र्हम् [बर्ह्+अच्] 1 मोर की पूँछ–दवोत्काहतशेषबर्हा –रघु० १६।१४ (केशपाशे) सति कुसुम सनाथे क हरेदेष बर्हः –विक्रम० ४।१०, पाठान्तर 2 पक्षी की पूँछ 3 पूँछ का पंख (विशेषकर मोर की) मेघ० ४४, कु० १।१५, शि० ८।११ 4 पत्ता अपाण्डुर केतकबर्हमन्य –रघु० ६।१७ 5. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर। सम०–भार 1 मोर की पूँछ 2 मोरछल, लाठी की मूठ में लगा मोर के पंखों का गुच्छा।

बर्हणम् [बर्ह्+ल्युट्] पत्ता।

बर्हि [बर्ह्+इन्] आग–(नपु०) कुश नामक घास।

बर्हिण [बर्ह्+इनच्] मोर–आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि (वनानि) रघु० २।१७, १६।१४, १९।३७। सम०–बाजः मोर के पंख से युक्त बाण,–वाहन कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिन् (पु०) [बर्ह+इनि] मोर –रघु० १६।६४, विक्रम० ३।२, ४।१०, ऋतु० २।६। सम०–कुसुमम्, –पुष्पम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य, ध्वजा दुर्गा का विशेषण, यान, वाहन कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिस् (पु०, नपु०) [बर्ह्+(कर्मणि) इसि] कुश नामक घास–कु० १।६० 2 बिस्तरा या कुशघास का

बिछौना—(पु०) 1 आग 2 प्रकाश, दीप्ति (नपु०) 1 जल 2 यज्ञ। सम०—केश,—ज्योतिः (पु०) आग का विशेषण, -मुखः (बर्हिर्मुख) 1 आग का विशेषण 2 देवता (जिसका मुख अग्नि है),—सुष्वन् (पु०) आग का विशेषण, सद् (बर्हिषद्) (वि०) कुशनामक घास के आसन पर बैठा हुआ (पु०) पितर (ब० व०)।

बल्[1] (स्वा० पर० बलति) 1 सास लेना, जीना 2 अनाज संग्रह करना। (स्वा० उभ० बलति-ते) 1 देना 2 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना 3 बोलना 4 देखना, चिह्न लगाना। प्रेर०—(बालयति-ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना।

बलम् [बल्+अच्] 1 सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, वीर्य, ओज 2 जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलात्' में 3 सेना, चमू, फौज, सैन्यदल—भवेदभीष्मद्रोण धृतराष्ट्रबलं कथम् -वेणी० ३।२४,४३, भग० १।१०, रघु० १६।३० 4 मोटापन, पुष्टि (शरीर की) 5 शरीर, आकृति, रूप 6 वीर्य, शुक्र 7 रुधिर 8 गोंद, रसगंध (लोबान की तरह का सुगंधित गोंद) 9 अंकुर, अँखुआ, (बलेन 'सामर्थ्य के आधार पर', 'की बदौलत'—बाहुबलेन जित, वीर्यबलेन , बलात् 'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध' बलान्निद्रा समायाता -पंच० १, हृदयमदयें तस्मिन्नेव पुनर्बलते बलात्—गीत० ७),—रः 1 कौवा 2 कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम' 3 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०—अग्रम् अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (-ग्र) सेना का प्रधान,—आढ्यक, बसन्त—हेम० १५६,—आभिख्या बलराम की बीणा, आट एक प्रकार का शहतीर, —अधिक (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यंत बलशाली, अध्यक्ष 1 सेनापति मनु० ७।१८२, 2 युद्धमंत्री, अनुज कृष्ण का विशेषण,—अन्वित (वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली, —अबलम् 1 तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता, आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता रघु० १७।५९ 2 आपेक्षिक सार्थकता तथा नगण्यता, तुलनात्मक महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता समय एव करोति बलाबलम् शि० ६।४६, अभ्रः बादल के रूप में सेना, —अरातिः इन्द्र का विशेषण, अवलेप सामर्थ्य का अभिमान, आढ्य,—आस 1 क्षयरोग, तपेदिक 2 कफ का आधिक्य 3 गले में सूजन (आहार नली का अवरोध),- आह्विका एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, हस्तिशुंडी, आहः पानी, उपपन्न, उपेत (वि०) सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली, ओघः सैन्यदल का समूह, असंख्य सेना—शि० ५।२, -ओघः में अव्यवस्था, गदर, विद्रोह, कक्षम् 1 उपनिवेश, साम्राज्य 2 सेना, समूह, कर्म् 1 नगर का फाटक, मुख्यद्वार 2 खेत 3 अनाज, अन्न का ढेर, शि० १४।७ 4 युद्ध, लड़ाई 5 वसा, मज्जा (जा) 1 पृथ्वी 2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार की चमेली, द बैल, बलीवर्द, वर्धः शक्ति का अभिमान -देव, 1 वायु, हवा 2 कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम', द्विष् (पु०) निषूदनः इन्द्र के विशेषण —बलनिषूदनमर्थपति स तम् रघु० ९।३, पतिः 1 सेनापति, सेनानायक 2 इन्द्र का विशेषण,—प्रद (वि०) ताकत देने वाला, बलवर्धक, प्रसूः बलराम की माता रोहिणी, भद्र 1 बलवान् मनुष्य 2 एक प्रकार का बैल 3 बलराम का नाम, दे० नी० 4 लोध्र नामक वृक्ष, भिद् (पु०) इन्द्र का विशेषण श० २ भृत् (वि०) बलवान्, शक्तिशाली, राम 'बलवान् राम' कृष्ण के बड़े भाई का नाम (यह वसुदेव और देवकी का सातवाँ पुत्र था, कंस की क्रूरता का शिकार होने से बचाने के लिए यह रोहिणी के गर्भाशय में स्थानान्तरित कर दिया गया; यह और कृष्ण दोनों का गोकुल में नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया। जब यह बालक ही था तो इसने शक्तिशाली राक्षस धेनुक और प्रलब का मार गिराया, तथा अपने भाई कृष्ण की भाँति अनेक आश्चर्यजनक काम किये। एक बार मदिरा के नशे में जिसका कि वह बहुत शौकीन था यमुना नदी का निकट आने का आदेश दिया जिससे कि वह स्नान कर सके, जब उसकी आज्ञा पर ध्यान नहीं दिया गया तो उसने अपने हल को फाली से यमुना नदी को खींचा, अन्त में यमुना ने मनुष्य का रूप धारण कर उससे क्षमा माँगी। एक दूसरे अवसर पर उसने दीवार समेत समस्त हस्तिनापुर को अपनी ओर खींचा। जिस प्रकार कृष्ण पाडवों के प्रशंसक थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रशंसक थे जैसा कि उसकी इस बात से प्रकट होता है कि वह अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहता था न कि अर्जुन से। इतना होते हुए भी उसने महाभारत के युद्ध में न पाडवों का पक्ष लिया और न कौरवों का। इसका वर्णन नीली वेशभूषा धारण किये हुए 'हल' से जो कि उसका अत्यंत प्रभावशाली शस्त्र था, सुसज्जित किया जाता है। उसकी पत्नी का नाम रेवती था। कई बार इसे शेषनाग का अवतार और कई बार विष्णु का आठवाँ अवतार समझा जाता है—तु० गीत०),—विन्यासः सैन्यदल की व्यूहरचना,—व्यसनम् सेना की हार,—सूदन इन्द्र का विशेषण,—स्थ योद्धा, सैनिक,—स्थिति.

(स्त्री०) 1 शिविर, पड़ाव 2. राजकीय छावनी, —हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, —हीन (वि०) बलहीन, दुर्बल, अशक्त।

बलक्ष (वि०) [बल क्षायत्यस्मात्—क्षै+क] श्वेत - द्विर यदन्तबलक्षमलक्ष्यत स्फुरितभृङ्गमृगच्छवि केनकम् —शि० ६।३४। सम० नु. (गो 'किरण' का रूपान्तर) चन्द्रमा - यथानत्यजनाद्दन्मसदृक्षाको बलक्षनु काव्या० १।४६, (गौडीयों के प्रसाद गुण का एक उदाहरण)।

बलक्ष: [बल+क्ष+क] इन्द्र का विशेषण।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1 मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर—विधिरहो बलवानिति मे मति भर्तृ० २।९१ 2 बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा 3 सघन, घिनका (अंधकार आदि) 4 अधिभावी, सर्वप्रमुख, प्रभविष्णु —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५ 5 अति महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक—रघु० १४।४० (अव्य०) 1 मजबूती से, दृढ़ता के साथ - पुनर्वशित्वाद्बलवद्विगृह्य कुं० ३।६९ 2 अत्यधिक, अत्यत, अतिशय मात्रा में—बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेत —श० १।२, शीतांशु बलवदुपयुङ्क्षेव मोरै शि० ८।६२, श० ५।३१।

बला [बल्+अच्+टाप्] शक्तिसंपन्न ज्ञान या मन्त्रयोग (यह योग विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बतलाया था) सौ बलानिबलयो प्रमादन रघु० ११।०।

बलाक ,—का [बल+अक्+अच्, स्त्रियां टाप् च] बगला, —सेविष्यते नयनसुभग खे भवन्त बलाका मेघ० ९, मृच्छ० ५।१८, १९, का प्रिया, कान्ता।

बलाकिका [बलाका+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी जाति बगला।

बलाकिन् (वि०) [बलाका+इनि] बगलों या सारसों से भरा हुआ - कालिकेव निबिडा बलाकिनी रघु० ११।१५, कु० ७।३९।

बलात्कार: [बल+अत्+विच् बलात्+कृ०+अच्] 1 हिंसा का प्रयोग करना, बल लगाना 2 सतीत्व-नाशन, विनयभंग, बल, अत्याचार, लोनाक्षपटी रघु० १०।४७, बलात्कारेण निर्वर्त्य आदि 3. अन्याय 4 (विधि में) उत्तमर्ण द्वारा अधमर्ण को रोकना तथा ऋण की वापसी के लिए बल का प्रयोग करना।

बलात्कृत (वि०) [बलात्+कृ+क्त] जिसके साथ जबरदस्ती की गई हो या जो परास्त कर लिया गया हो।

बलाहक [बल+आ+हा+क्वुन] 1 बादल बलाहकच्छेदविभक्तरागामकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम् कु० १।४ 2 एक प्रकार का बगला या सारस 3 पहाड़ 4. प्रलयकालीन सात बादलों में से एक।

बलि: [बल्+इन्] 1 आहुति, भेंट, चढ़ावा (प्रायः धार्मिक) नीवारबलि विलोकयत—शं० ४।२०, १।४९ 2 दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा घी आदि) में से कुछ अंश का सब जीवों को उपहार, (इसे 'भूतयज्ञ' भी कहते हैं) दैनिक पंच महायज्ञों में से एक, बलिवैश्वदेव यज्ञ (दे० मनु० ३।६।९१) इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भोजन करने से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अंश बाहर आकाश में फेंक कर किया जाता है यासा बलि सपदि मरुद्गृहदेहलीना हर्म्यस्य मारसगणैश्च विलुप्तपूर्व मृच्छ० १।९ 3. पूजा, आराधना—कु० १।६०, मेघ० ५५, शं० ४ 4 उच्छिष्ट 5 देवमूर्ति पर चढ़ाया नैवेद्य 6 शुल्क, कर, चुंगी—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् रघु० १।१८, मनु० ७।८०, ८।३०७, 7 चंवर का डंडा 8 एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम (यह प्रह्लाद के पुत्र विरोचन का पुत्र था, बहुत शक्तिशाली था, देवताओं को अत्यंत पीड़ित करता था। फलस्वरूप देवताओं ने विष्णु से सहायता की प्रार्थना की। विष्णु ने कश्यप और अदिति का पुत्र बन कर वामन का अवतार धारण किया। उसने साधु का वेश धारण किया। और बलि के पास जाकर उससे तीन पग पृथ्वी मांगी। स्वभाव से उदार बलि ने निस्संकोच प्रकट रूप से इस सामान्य प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। परन्तु शीघ्र ही वामन ने अपना विराट् रूप दिखलाया और तीन पग मापना शुरू किया। पहले पग में उसने सारी पृथ्वी को आच्छादित कर लिया, दूसरे से समस्त अन्तरिक्ष को और तीसरे पग के लिए स्थान न पाकर उसे बलि के सिर पर रख दिया, और राजा बलि को उसकी असंख्य सेना समेत पाताल लोक भेज कर वहाँ का शासक बना दिया। इस प्रकार विश्व एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ गया)—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत—वामन—गीत० १, रघु० ७।३५, मेघ० ५७, लि (स्त्री०) तह, झुर्री (प्रायः 'वलि' लिखा जाता है)। सम० कर्मन् (नपुं०) 1 सब जीवजन्तुओं को भोजन देना 2 कर अदायगी, दानम् 1 देवता को नैवेद्य अर्पण करना 2 सब जीव जन्तुओं को भोजन देना, ध्वंसिन् (पुं०) विष्णु का अवतार, नन्दनः पुत्रः, सुत बलि के पुत्र बाण का विशेषण, पुष्ट ,—भोजन. कौवा,—प्रियः लोध्र वृक्ष,—बन्धन. विष्णु का विशेषण, भुज् (पुं०) 1 कौवा 2 चिड़िया 3 बगला या सारस,—भिद्वरम्, वेश्मन् सद्मन् (नपुं०) पाताल लोक, बलि का आवासस्थान,—व्याकुल (वि०) पूजा में अथवा सब जीव जन्तुओं को भोजन देने वाला मेघ० ८५—हृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण, हरणम् सब जीव जन्तुओं को भोजन देना।

बलिन् (वि०) [बल+इनि] मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० ७।१७४—(पु०) 1. भैंसा 2. सूअर 3 ऊँट 4 साँड 5 सैनिक 6 एक प्रकार की चमेली 7. कषायमक वृत्ति 8 बलराम का विशेषण।

बलिल, बलिस [बलि+न, स वा, ढयोरभेद] दे० 'बलिन' भ।

बलिसूदनः [बलि+दम्+ल्युट्, मुम्] विष्णु का विशेषण।

बलिहत् (वि०) [बलि+मतुप्] 1 पूजा या आहुति की सामग्री तैयार रखने वाला रघु० १४।१५ 2 कर उघाहने वाला।

बलिष्ठम् (पु०) [बल+इमनिच्] सामर्थ्य, ताकत, शक्ति।

बलिष्ठवं दे० बलीवर्द।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्)+इष्ठन्] अत्यन्त बलशाली, अत्यन्त मजबूत, अतिशय शक्तिशाली, —ष्ठ. ऊँट।

बलिष्णु (वि०) [बल्+इष्णुच्] अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।

बलीकः [बल्+ईकन्] छप्पर की मुंडेर।

बलीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [बलवत् (बलिन्+ ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत मजबूत, अधिक शक्तिशाली 2 अधिक प्रभावी 3 अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण।

बली (ली) वर्दः [वृ+क्विप्=वर्,ई वर्द=ईश्वरौ, तौ ददाति - दा+क, ईवर्दं, बलौ वासौ ईवर्दश्च कर्म० स०] साँड, बैल —गोरपत्यं पुनान् बलीवर्दं।

बल्य (वि०) [बल+यत्] 1 मजबूत, शक्तिशाली 2 शक्तिप्रद,—ल्यः बौद्ध भिक्षु,— ल्यम् वीर्य शुक्र।

बल्लवः [बल्ल्+अच् त वाति वा+क] 1 ग्वाला —कुञ्जेष्वाकात दीव्यन्निजयपरिचया बल्लवा सचरन्तु —वेणी० ६।२, शि० ११।८ 2 रसोइया 3 विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसोइये का कार्य करता था,—वी ग्वालिन— कि० ४।१७। सम० —युवतिः, - स्त्री (स्त्री०) जवान ग्वालिन (गोपी) हरिविरहाकुलबल्लवयुवतिसखीवचन पठनीयम् —गीत० ४।

बल्लवजः—जा [?] एक प्रकार का मोटा घास—मनु० २।४३।

बल्लिकाः, बल्हीकाः (ब० व०) एक (बल्ल) देश का तथा उसके अधिवासियों का नाम।

बल्लय (वि०) [बल्ल्+अयन्] बहुत (एक वर्ष का बछड़ा)।

बल्लय (वि) स्त्री (सी) (स्त्री०) [बल्लय+इनि+ङीप्] 1' वह गाय जिसका बछड़ा पूरा बढ़ गया हो- नै० १६।९२ 2. बहुप्रसवी गाय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं)।

बल्लः [बल्ल्+घञ्] बकरा। सम० —कर्ण' लाल वृक्ष।

बहुल (वि०) [बह्+अलच्] 1 अत्यधिक, यथेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध, महान्, मजबूत—उत्तर० १।३८, ३।२३, शि० २।८, मालवि० ४।२७ 2 घिनका, सघन 3 लोमश (पुरुष की भाँति)—मा० ३ 4 कठोर, दृढ़, सटा हुआ,—लः एक प्रकार का इक्षुरस, ईख, गन्ना, —ला बड़ी इलायची। सम० - गन्धः एक प्रकार का चंदन।

बहिस् (अव्य०) [बह्+इसुन्] 1. में से, बाहर (अपा० के साथ)—निवसन्नात्मसदने पुरादबहि —रघु० ८।१५, ११।२९ 2 बाहर की ओर, दरवाजे के बाहर (विप० अन्तर्) बहिर्गच्छ 3. बाहरी, बाहर की ओर से—अन्तर्बहि पुरतः एव विवर्तमानाम्- मा० १।४०, १४—हि० १।९४ (बहिष्कृ 1 बाहर की ओर रखना, से निकालना, हाँक कर बाहर कर देना—मनु० ८।३८०, याज्ञ० १।९३ 2 जाति से बाहर करना, बहिर्गम्, —या, - इ बाहर जाना, चले जाना)। सम०—अङ्ग (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का (गम्) 1 बाहरी भाग 2 बाहरी अंग,—उपाधिः (बहिरुपाधिः) बाहरी दशा या परिस्थिति—मा० १।२४, —चर (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का, बाहर की तरफ का—बहिश्चरा प्राणा —दश०, - द्वारम् बाहर का दरवाजा, दहलीज।

बहु (वि०) (स्त्री०—हु,—ह्वी) [बह्+कु अलोप —म० अ०—भूयस्, उ० अ०—भूयिष्ठ] 1 अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत तस्मिन् बहु एतदपि श० ४, 'यह भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितने की उससे अपेक्षा न की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र -मुद्रा० ३, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७ 2 अनेक, असंख्य- यथा 'बहुशस्' और 'बहु प्रकार' में 3 बार-बार किया गया, दोहराया गया 4 बड़ा, विशाल 5 भरापूरा, समृद्ध (समास के प्रथम पद के रूप में)—बहुकण्टकी देशः —आदि-(अव्य०) अति, बहुमात्रया से, अत्यधिक, अत्यंत, अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2 कुछ, लगभग, प्रायः जैसा कि 'बहूत्तृण' में (कि बहुना अधिक, कहने से क्या लाभ ? 'संक्षेप में' बहुमन् बहुत सोचना, बहुत मानना, ऊँचा मूल्य लगाना, बहुमूल्य मानना, कद्र करना स्वन्मनोभावितमात्मानं बहु मन्यामहे वयम्—कु० ६।२०, ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव—श० ४।६, ७।१, रघु० १२।८९ भग० २।३५, भट्टि० ३।५३, ५।८८, ८।१२)। सम० अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला, (अन्दः) बहुत से अक्षरों से बना हुआ,- अङ्ग, —अच् (वि०) अनेक स्वरों से युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अप्,—अम्बु (वि०) जलयुक्त, अपत्य (वि०) अनेक संतानों से युक्त (त्यः) 1 सूअर 2 सुंस,

चूहा, (त्या) वह गाय जिसके बहुत बछड़े बछड़ियाँ हैं, —अर्थ (वि०) 1 अनेक अर्थों से युक्त 2 बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3 महत्त्वपूर्ण, —आशिन् (वि०) बहुभोजी, पेटू, —उदकः एक प्रकार का भिक्षु जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिक्षा माग कर अपना निर्वाह करता है—तु० 'कुटीचक', —उपाय (वि०) प्रभावी, क्रियावान्, —ऋच् (वि०) अनेक ऋचाओं से युक्त, (स्त्री०) ऋग्वेद का नामान्तर, —एनस् (वि०) अति पापमय,—कर (वि०) अतिक्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी, (र०) 1 भड़भूजी, झाड़ देने वाला 2 ऊँट, (री) झाड़ू,—कालम् (अव्य०) बहुत देर तक,—कालीन (वि०) बहुत समय का, पुराना, प्राचीन, —कूर्च एक प्रकार का नारियल का पेड़,—गन्धा कस्तूरी, मृगक,—गन्धा 1 यूथिका लता 2 चपाकली, —गुण (वि०) 1 अनेक सद्गुणों से युक्त 2 कई प्रकार का, तरह-तरह का 3 अनेक धागों से युक्त, —ज्ञ (वि०) बहुभाषी, मुखर, वाचाल,—ज्ञ (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार, सुविज्ञ, —तृणम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भाँति हो अत महत्त्वशून्य या निरस्करणीय हो—निदर्शनमसारणा लघुबहुतृण नर —शि० २।५०, —त्वक्कः, —त्वच् (पु०) एक प्रकार का भोजवृक्ष,—दक्षिण (वि०) 1 जिसमें बहुत दान और उपहार प्रस्तुत किया जाय 2 उदार, दानशील,—दायिन् (वि०) उदार, दानशील, उदारतापूर्वक दान देने वाला,—दुग्ध (वि०) बहुत दूध देने वाला, (ग्र०) गेहूँ, (ग्या) बहुत दूध देने वाली गाय,—दृश्वन् (वि०) बड़ा अनुभवी, जिसने बहुत देखा सुना हो,—बोध (वि०) 1. जिसमें अनेक दोष हों, बहुत सी त्रुटियाँ हों, अतिदुष्ट पापपूर्ण 2 अपराधों से युक्त, भयदायी —बहुदोषा हि शर्वरी —मृच्छ० १।५८, धन (वि०) बहुत धनी, धनाढ्य,—धारम् इन्द्र का वज्र, धेनुकम् दूध देने वाली गौओं की बड़ी संख्या,—नाडः शस्त्र,—पत्रः प्याज, (त्रम्) अभ्रक, (त्री) तुलसी का पौधा,—पद्,—पाद् (पु०) बड़ का वृक्ष,—पुष्पः 1 मुर्गे का पेड़ 2 नीम का वृक्ष, - प्रकार (वि०) बहुत प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का, —प्रज (वि०) बहुत सन्तान वाला, अनेक बच्चों वाला, (ज.) 1 सूअर 2 मूत्र—एक घास,—प्रतिज्ञ (वि०) 1 नाना प्रकार की उक्ति और वाक्यों से युक्त पेचीदा 2 (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में जहाँ कई प्रकार का मुल्क लगे,—प्रद (वि०) अत्यन्त उदार, उदार, दाता, - प्रसू अनेक बच्चों की मा प्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी हों, फल (वि०) फलों से समृद्ध, (ल) कदम्ब का वृक्ष, बल. सिंह, भाषिन् (वि०) मुखर, वाचाल,—मञ्जरी तुलसी का पौधा,—मत (वि०) बहुत माना हुआ, मूल्यवान्, कीमती, सम्मानित, मतिः (स्त्री०) बड़ा मूल्य, या मूल्यांकन—कि० ७।२५, - मलम् सीसा,—मान बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यांकन,—पुरुषबहुमानो विगलित —भर्तृ० ३।९, वर्तमानकवे कालिदासस्य क्रियापा कथ परिषदो बहुमान —मालवि० १, विक्रम० ११२, कु० ५।३१, (नम्) उपहार जो बड़ो द्वारा छोटो को दिया जाय,—मान्य (वि०) आदरणीय, माननीय, —माय कलामय, छलयुक्त द्रोही पच० १।३२१,—मार्गगा गगा—रत्न० १।३,—मार्गी जहाँ बहुत सी सड़के मिलती हो,—मूत्र (वि०) मधुमेह रोग से पीड़ित,—मूर्धन् (वि०) विष्णु का विशेषण, मूल्य (वि०) मूल्यवान्, ऊँची कीमत का, मृग (वि०) जहाँ बहुत से मृग हों,—रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध,—रूप (वि०) 1 अनेक रूपों, बहुरूपी, विश्वरूपी 2 चितकबरा, धब्बेदार, रगबिरगा या चारखानेदार, (प०) 1 छिपकली, गिरगिट 2 बाल 3 सूर्य, 4 शिव 5 विष्णु 6 ब्रह्मा 7 कामदेव, —रेतस् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण,—रोमन् (वि०) बहुलोमी, रोएदार (पु०) भेड़, लक्षणम् लक्ष्मी धरती, वचनम् (व्या० में) एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार,—वर्ण (वि०) बहुरगी, रगबिरगा,—वार्षिक (वि०) बहुत वर्षों तक रहने वाला,—विघ्न (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ, विध (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का, —वी(बी) अव्य शरीफा,—व्रीहि (वि०) बहुत चावलों वाला—तत्पुरुष कर्मधारय येनाह स्या बहुव्रीहि —उद्भट (यहाँ यह समास का नाम भी है), (हि) सस्कृत के चार मुख्य समासों में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये जाते हैं, विशेषणात्मक पद (चाहे वह सज्ञा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विशेषित करता है, परन्तु वह दोनों पद पृथक्-पृथक् अभीष्ट अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ द्योतक शब्द का निर्माण होता है। यह समास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग सज्ञाओं की भाँति किया जाता है जहाँ यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के अर्थ में सनियमित होता है उदा० चक्रपाणि, शशिशेखर, पीताबर, धनुर्धर, त्रिनेत्र, कुसुमशर आदि,—शकु गौरैया चिड़िया,—शल्य. खदिरवृक्ष का एक भेद - शृङ्ग: विष्णु का विशेषण —श्रुत (वि०) 1 विज्ञ पुरुष, प्रविद्वान्—हि० १।१, पच० २।१. रघु० १५।३६ 2 वेदों का जानकार —मनु० ८।३५०, सन्तति (वि०) अनेक बाल-बच्चों

बाला (ति) एक प्रकार का बांस, —सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, सारयुक्त, (रः) खदिरवृक्ष, खैर,— सू० 1 अनेक बच्चों की मां 2 शूकरी, सरी, — सूतिः (स्त्री०) 1 अनेक बच्चों को मां 2 बहुत बार ब्याने वाली गाय, — स्थान (वि०) कोलाहलपूर्ण (न०), उल्लू, — स्वामिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हों।

बहुक (वि०) [बहु+कन्] महंगा खरीदा हुआ, क 1 सूप 2 मदार का पौधा 3 केकड़ा 4 एक प्रकार का जलकुक्कुट।

बहुतर (वि०) [बहु+तरप्] अपेक्षाकृत अधिक, ज्यादह।

बहुतम (वि०) [बहु+तमप्] अत्यन्त अधिक, अतिशय।

बहुतः (अव्य०) [बहु+तस्] नाना पार्श्वों से, कई तरफ से।

बहुता,-त्वम् [बहु+तल्+टाप्, त्व वा] बहुतायत, प्राचुर्य असंख्यता।

बहुतिथ (वि०) [बहु+तिथुक्] ज्यादह, अधिक, अनेक—काल गते बहुतिथे —शि० ५।३, तस्य भूयि बहुतिथा स्थितयः किं० १२।२।

बहुधा (अव्य०) [बहु+धाच्] 1 कई प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से बहुधाप्यागमैर्भिन्ना रघु० १०।२६, भग० १३।४ 2 भिन्न-भिन्न रूप से या रीतियों से 3 बारबार, दोहराकर 4 विविध स्थानों या दिशाओं में।

बहुल (वि०) [बह्+कुलच्, नलोपः] (म० अ० बर्हीयस्, उ० अ० बर्हिष्ठ) 1 घिनका, सघन, मरा हुआ 2 विशाल, विस्तृत, आयत, विपुल, बड़ा 3 प्रचुर, यथेष्ट, पुष्कल, अधिक, असंख्य अविनय-बहुलतया का० १४३ 4 अनेक, बहुत प्रकार का, अनगिनत मा० ९।१८ 5 भरापूरा, समृद्ध, प्रभूत जन्मनि क्लेशबहुले किं नु दुःखमतः परम्—वि० १।१८४, भग० २।४३ 6 सयुक्त सलग्न 7 कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ है 8 काला 9 1 मास का कृष्णपक्ष,—प्रादुरासबहुलप्रदोषतमिस्रा रघु० ११।१५, करेण भानोर्बहुलावसाने मथ्यस्यमाणेव शशाङ्करेखा कु० ७।८,४।१३ 2 अग्नि का विशेषण, — ला 1 गाय 2 इलायची 3 नील का पौधा 4. (द्व० व०) कृत्तिकानक्षत्र, —म् 1 आकाश सफेद मिर्च, (बहुलीकृ) 1 प्रकाशित करना, खोलना, भडाफोड करना 2 मथन या रगड़कर बनाना शि० १३।४४ 3 बढ़ाना, विस्तार करना, वृद्धि करना भूतेषु किं च करुणा बहुलीकरोति—मालवि० १।१२ 4 फटकना, बहुलीभू 1 फैलाना, विस्तृत करना, सुथरा करना —छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति -पञ्च० २।१७५ 2 दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बदनाम होना, सुविदित होना, दूर दूर तक फैल जाना बहुलीभवन्त ' सोढुं न तत्पूर्वमवर्णभीरोः रघु० १४।३८)। मन० आलाप (वि०) बातूनी, बाचाल, मुखर, गप्पी इलायची।

बहुलिका (स्त्री०—क० व०) कृत्तिकानक्षत्र।

बहुशः (अव्य०) [बहु+शस्] 1 अत्यन्त, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ मेघ० १०६ 2 बार बार, दोहरा कर, मुहुर्मुहुः—चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम् श० १।२२, कु० ४।३५ 3 साधारणतः, सामान्य रूप से।

बाकुलम् [बकुल+अच्] बकुल वृक्ष का फल।

बाड् (भ्वा० आ० बाडते) 1 स्नान करना 2 गीला लगाना।

बाडव [वडवा+अण्, वयोरभेदः] दे० 'वाडव'।

बाडवेय (वि०) [वडवा+ढक्] दे० 'वाडवेय'।

बाडव्यम् [बाडव+यत्] दे० 'वाडव्यम्'।

बाढ (वि०) [बृह्+क्त नि० साधुः] (म० अ०—साधीयस्, उ० अ० भाविष्ठ) 1 दृढ, मजबूत 2 ऊंचे स्वर का, —ढम् (अव्य०) 1 यकीनन, निश्चय ही, अवश्य, वस्तुतः, हां (प्रश्न के उत्तर के रूप में) —बाणक्य चन्दनदासः, एष ते निश्चयः, चन्दनदासः —बाढम्, एष मे स्थिरो निश्चयः —मुद्रा० १, बाढमेषु दिवसेषु पार्थिव कर्म साधयति पुत्रजन्मने रघु० १९।५२ 2 बहुत अच्छा, तथास्तु, शुभम् 3 अत्यन्त, बहुत ज्यादह शि० १।७७।

बाण [बण्+घञ्] तीर बाण, शर—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् -कु० ३।६६ 2 तीर का निशाना, बाण का लक्ष्य 3 तीर का पक्षयुक्त भाग 4 गाय का ऐन या औंडी 5 एक प्रकार का पौधा (नीलझिंटी भी)—विकचबाणदलावलयोऽधिक रुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमा शि० ६।१६ 6 एक राक्षस का नाम, बलि का पुत्र—तु० उषा 7 एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (दे० परिशिष्ट २), उसने कादंबरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्या० के ३७ वें श्लोक में गोवर्धन ने बाण के विषय में निम्नांकित कहा है —जाता शिखण्डिनी प्राग्यथा शिखण्डी तथोवगच्छति, प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति। इसी प्रकार —हृदयवसति पञ्चबाणस्तु बाण —प्रस० १।२२) 1 'पांच' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति। सम० -असनम् धनुष, - आवलिः, - ली (स्त्री०) 1 बाणों की श्रेणी 2 एक काव्य में अन्वित पांच श्लोकों का एक कुलक, —आसन, नरकसः, गोचर बाण का परास, —आस्त्रम्

बाणों का समूह, **जित्** (पु०) विष्णु का विशेषण, **-मुख:**, **—भि:** तरकस, **—मन्त्र** बाण का परास, **-वापि** (वि०) बाणों से सुसज्जित, **पात** 1 तीर की मार (छुरी की मार) 2 तीर की परास, **—मुक्ति:**, **—मोक्षणम्** बाण मारना, तीर छोड़ना, **—मोक्षणम्** तरकस, **—वृष्टि:** (स्त्री०) तीरों की बौछार, **—वार** वक्षस्त्राण, कवच, उरस्त्राण नु० वारबाण, **सुख** बाण की पुंखी ऊपर का विशेषण, **दे०** उपा, **हन्** (पु०) विष्णु का विशेषण।

बाणिनी [बाण + इनि + ङीप्] दे० बाणिनी।

बादर (वि०) (स्त्री०—री) [बदर + अण्] 1 बेर के वृक्ष से प्राप्त या सबद्ध 2 रूई का बना हुआ,—र रूई का पौधा, बाड़ी, - रस् 1 बेर 2 रेशम 3 पानी 4 रूई का वस्त्र 5 दक्षिणावर्त शंख, रा कपास का पेड़।

बादरायण [बदरी + फक्] वेदान्त दर्शन के शारीरक सूत्रों का प्रणेता बादरायण (जिसे प्राय व्यास का नामान्तर माना जाता है)। सम० **सूत्रम्** वेदान्त दर्शन के सूत्र, **सम्बन्ध** कल्पित या दूर का सम्बन्ध (आधुनिक रूप)।

बादरायणि [बादरायण + इञ्] व्यास का पुत्र शुक।

बादरिक (वि०) (स्त्री०—की) [बदर + ठक्] बेर एकत्र करने वाला।

बाध् (भ्वा० आ० बाधते, बाधित) 1 तंग करना, उत्पीड़ित करना, सताना, अत्याचार करना, छेड़ना, कष्ट देना, दुःखी करना, परेशान करना, पीड़ा देना ऊन न सत्वप्रधिका बबाधे रघु० २।१४, न तथा बाधते स्कन्धा यथा बाधति बाधते सुभा०, मनु० ५३, मनु० ९। २१, १०।१२२, भट्टि० १४।४५ 2 मकावला करना, विरोध करना, निष्फल करना, रोकना, रुकावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना -कि० १।११ उत्तर० ५।१० 3 आक्रमण करना, हमला करना, धावा बोलना 4 अनुचित व्यवहार करना, अन्याय करना 5 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 6 हाथ कर दूर करना पीछे हटाना, हटाना 7 स्थगित करना, एक ओर रखना, रद्द करना, तोड़ना, मिटाना (नियम आदि) रघु० १७।५७, अभि ,1 चोट पहुंचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुःख देना, तंग करना, सताना, आ दुःख देना, सताना, क्षति पहुँचाना, परि ,कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना शि० ७।२५, प्र ,1 कष्ट देना, सताना, तंग करना, चिढ़ाना, क्षति पहुँचाना समुच्छ्वासनेव तरून् प्रबाधते (प्रभञ्जन) हि० १, भट्टि० १२।२ 2 हाथ कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना—कथं नु देवं शक्नुयेत पौरुषेण प्रबाधितुम् महा०, सम् ,कष्ट देना, सताना।

बाध[1]**,—धा** [बाध् + घञ्] 1 पीड़ा, यातना, कष्ट, सन्ताप—रजन्या सह भूम्नेव मदनबाधा विक्रम० ३ 2 रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी इति भ्रमरबाधा निरूपयति शि० १ 3 हानि, क्षति, घाटा, चोट —चरणस्य बाधा मालवि० ४, याज्ञ० २।१५६ 4 भय खतरा 5 मुकाबला, विरोध 6 आपत्ति 7 प्रत्याख्यान, निराकरण 8 स्थगन, रद्द करना 9 अनुमान प्रक्रिया में त्रुटि, हेत्वाभास के पाँच रूपों में से दे० नी० 'बाधित'। सम० **अपवाद** अपवाद का खण्डन।

बाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [बाध् + ण्वुल्] 1 कष्ट देने वाला, सताने वाला, उत्पीड़क 2 छेड़छाड़ करने वाला, परेशान करने वाला 3 उन्मूलन 4 बाधा डालने वाला।

बाधनम् [बाध् + ल्युट्] 1 तंग करना, उत्पीड़न, परेशान करना, अशान्ति, पीड़ा—शि० १ 2 मिटाना 3 हटाना, स्थगन 4 निराकरण, प्रत्याख्यान, —ना पीड़ा, कष्ट, चिन्ता, अशान्ति।

बाधित (भू० क० कृ०) [बाध् + क्त] 1 तंग किया हुआ, उत्पीड़ित, परेशान 2 पीड़ित, सन्तप्त, कष्टग्रस्त 3 विरुद्ध, अवरुद्ध 4 रोका हुआ, प्रगृहीत 5 एक ओर रक्खा गया, स्थगित 6 निराकृत 7 (तर्क० में) खण्डित, विषादग्रस्त, असंगत (फलतः व्यर्थ)।

बाधिर्यम् [बधिर + ष्यञ्] बहरापन।

बान्धकिनेय [बन्धकी + ढक्, इनङादेश] दोगला, वर्ण संकर।

बान्धव [बन्धु + अण्] 1 रिश्तेदार, संबंधी—यस्यार्थास्तस्य बान्धवा—हि० १, मनु० ५।७४, १०१, ४।१७९ 2 मातृपरक रिश्तेदार 3 मित्र—धनेभ्य परो बान्धवो नास्ति लोके - सुभा० 4 भाई। सम० - **जन**, रिश्तेदार, बन्धु-बांधव - दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते - मृच्छ० १।३६, पंच० ४।७८।

बान्धव्यम् [बान्धव + ष्यञ्] संबंधता, रिश्तेदारी।

बाभ्रवी [बभ्रु + अण् + ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

बार्बदोरः [?] 1 आम का गूदा 2 जल 3 नया अंकुर 4 वेश्या का पुत्र।

बार्ह (वि०) (स्त्री० - र्ही) [बर्ह + अण्] मोर की पूँछ के चंदवों से बना हुआ।

बार्हद्रथ, बार्हद्रथि [बृहद्रथ + अण्, इञ् वा] राजा जरासंध का पितृपरक नाम।

बार्हस्पत्य (वि०) (स्त्री०—त्यी) [बृहस्पति + अण्] बृहस्पति से संबद्ध, बृहस्पति की संतान या बृहस्पति को प्रिय।

बार्हस्पत्य (वि०) [बृहस्पति+यक्] बृहस्पति से संबंध रखने वाला,—त्यः 1 बृहस्पति का शिष्य 2 भौतिकवाद के उग्ररूप के शिक्षक बृहस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—त्यम् पुष्यनक्षत्र ।

बार्हिण (वि०) (स्त्री०—णी) [बर्हिन्+अण्] मोर से संबद्ध या उत्पन्न ।

बाल (वि०) [बल्+घ या बाल+अच्] 1 बच्चा, शिशु-वत्, अवयस्क, न्याना—बालेन स्वविरेण वा मनु० ८।७०, बालाशोकमुपोढरागसुभगं मेदोन्मुखं तिष्ठति —विक्रम० २।७, इसी प्रकार बालमन्दारवृक्ष —मेघ० ७५, रघु० २।४५, १३।२४ 2 नया उगा हुआ, बाल (रवि या अर्क)—रघु० १२।१०० 3 नूतन, वर्धमान (चन्द्रमा)—पुपोष वृद्धिं हरिदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः रघु० ३।२२, कु० ३।२९ 4 बालिश 5 अनजान, अबोध, ल. 1 बालक, शिशु—बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम् मनु० २।२३९ 2 बालक, युवा, तरुण 3 अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—बाल आषोडशाद्वर्षाणि—नारद 4 बछेरा, अश्वक 5 मूर्ख, मोदू 6 पूँछ 7 बाल 8 पाँच वर्ष का हाथी 9 एक प्रकार का गन्धद्रव्य । सम०—अग्रम् बाल की नोक, —अध्यापक बच्चों का शिक्षक,—अभ्यासः बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) शीघ्र लगाना, अरुण (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति लाल, (णः) प्रभातकालीन उषा, —अर्कः नवोदित सूर्य—रघु० १०।१००, अवबोधः बच्चों की शिक्षा, अवस्था (वि०) तरुण, नवयुवक विक्रम० ५।१८, अवस्था बचपन, —आतपः प्रातःकालीन धूप,—इन्दुः नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।२९, इष्टः बेरी, बेर का पेड़, —उपचारः (आयु०) बच्चों की चिकित्सा,—उपवीतम् लंगोटी, रुमाली, कदली केले का नया पौधा, कुन्दः, —दम् एक प्रकार की नई चमेली (दम्) चमेली की नई खिली हुई कली अलके बालकुन्दानुविद्धम् मेघ० ६५, कृमिः जूँ, कृष्णः बालक के रूप में कृष्ण,—क्रीडनम् बच्चे का खिलौना या खेल,—क्रीडनकम् बच्चे का खिलौना, (कः) 1 गेंद 2 शिव का विशेषण,—क्रीडा बच्चों का खेल, बालकों या तरुणों का खेल,—खिल्यः ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न, अंगूठे के समान आकारवाली दिव्य मूर्तियाँ (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती हैं) तु० रघु० १५।१०, —गभिणी पहली बार गाभिन हुई गाय, गोपालः "तरुण ग्वाला" बालगोपाल के रूप में कृष्ण का विशेषण, ग्रहः बालकों को पीड़ा पहुँचाने वाला पिशाच (या उपग्रह),—चन्द्रः चन्द्रमस् (पुं०) दूज का चाँद, बढ़ता हुआ चाँद—मा० २।१०, —चरितम् 1 तरुणों के खेल 2 बाललीला, बाल्यजीवन के कारनामें—उत्तर० ६,—वर्यः कार्तिकेय का नाम, (र्या) बच्चे का व्यवहार, —ज (वि०) बालों से उत्पन्न,—तरुः खदिर का वृक्ष, खैर,—तन्त्रम् धात्रीकर्म,—तृणम् नई दूब, हरी घास, दलकः खैर, धि. बालों वाली पूँछ—शि० १२।७३, कि० १२।४७,—पाश्या 1 बालों की माँग में पहने जाने के योग्य आभूषण 2 बालों की चोटी में धारण की जाने वाली मोतियों की लड़ियाँ,—पुष्टिका, —पुष्टी एक प्रकार की चमेली, बोधः 1 बच्चों की शिक्षा 2 अनुभवशून्य नये बालकों की शक्ति के अनुसार कोई कार्य,—भल्लकः एक प्रकार का विष,—भारः बालों से भरी हुई लम्बी पूँछ—बाधेतोलकाक्षपितचमरीबालभारो दवाग्नि—मेघ० ५३,—भावः बचपन, बाल्यावस्था, भैषज्यम् एक प्रकार का अंजन,—भोज्यः मटर, —मृगः मृग छौना, यज्ञोपवीतकम् वक्ष स्थल के ऊपर से पहने जाने वाला जनेऊ,—राजम् वैदूर्यमणि, नीलम् —रोगः बच्चों का रोग,—लता नूतन बेल—रघु० २।१०,—लीला बच्चों के खेल, बालकों का मनोविनोद, —वत्सः 1 नन्हा बछड़ा 2 कबूतर,—वायजम् वैदूर्यमणि नीलम, —वासस् (नपुं०) ऊनी वस्त्र, वाह्यः जंगली बकरा,—विधवा बाल्यावस्था में ही जिसका पति मर गया हो, व्यजनम् चंवर, चौरी (सुरागाय के बालों से बनी चौरी जो एक प्रकार का राजचिह्न है)—रघु० ९।६६, १४।११, १६।३३, ५७, कु० १।१३, सखिः बाल्यावस्था से बना मित्र, बचपन का दोस्त,—सन्ध्या झुटपुटा,—सुहृद् (पुं०) बचपन का मित्र,—सूर्यः —सूर्यकः वैदूर्यमणि, नीलम,—हत्या बच्चे की हत्या, —हस्तः बालों वाली पूँछ ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल+कन्] 1 बच्चों जैसा, नन्हा, अवयस्क 2 अनजान,—कः 1 बच्चा, बाल 2 अवयस्क (विधि में) 3 अँगूठी 4 मूर्ख या वृद्ध 5 कड़ा, ककण 6 हाथी या घोड़े की पूँछ,—कम् अँगूठी । सम० हत्या, बच्चे की हत्या ।

बाला [बाल+टाप्] 1 लड़की, कन्या 2 सोलह वर्ष से कम आयु की युवती 3 तरुणी, युवती, जाने तापसी वीर्य सा बाला परवतीति मे विदितम्—श० ३।१, इयं बाला मा प्रत्यनवरतमिन्दीवरदलप्रभाचोर चक्षुः क्षिपति भनुं० ३।६७, मेघ० ८३ 4 चमेली का एक भेद 5 नारियल 6 घृतकुमारी का पौधा 7 इलायची 8 हल्दी । सम० हत्या स्त्रीहत्या ।

बालि [बल्+इन्] एक प्रसिद्ध वानरराज का नाम द० 'वालि' । सम० हन् हन्तृ (पुं०) राम का विशेषण ।

बालिका [बाला+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. लड़की 2 कान की बाली की घुंडी 3 छोटी इलायची 4 रेत 5 पत्तों की सरसराहट ।

बालिन् (पु०) [बाल+इनि] एक बानर का नाम—दे० 'वालि'।

बालिनी [बालिन्+ङीप्] अश्विनी नक्षत्र।

बालिमन् (पु०) [बाल+इमनिच्] बचपन, बाल्यावस्था, लड़कपन।

बालिश (वि०) [बालि श्यति, बालि+शो+ड] 1 बच्चों जैसा, अबोध, मूर्ख 2 बच्चा 3 मूर्ख, अनजान मनु० ३।१७६ 4 लापरवाह, —शः 1 मूर्ख, बुद्धू 2 बच्चा, बालक, शम् तर्किया।

बालिश्यम् [बालिश+ष्यञ्] 1 लड़कपन, बचपन 2 बचकानापन, मूर्खता, बेवकूफी।

बाली [बालि+ङीष्] एक प्रकार की कान की बाली।

बालीशः (पु०) मूत्रावरोध।

बालुः, +बालुकम् [बल+उण्, बालु+कन्] एक प्रकार का गंध द्रव्य।

बालुका दे० 'बालुका'।

बालुकी, बालुङ्गी, बालुङ्गी [बल+उकञ्+ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

बालुक [बल+उकञ्] एक प्रकार का विष।

बालेय (वि०) (स्त्री०—यी) [बलि+ढक्] 1 बलि देने के लिए उपयुक्त 2 मृदु, मुलायम 3 बलि को सताने,—यः गधा।

बाल्यम् [बाल+ष्यञ्] 1 लड़कपन, बचपन—बाल्यात्परामिव दशां मदनोध्युवास रघु० ५।६३, कु० १।२९ 2 (चन्द्रमा के) बढ़ने की अवधि—कु० ७।३५ 3 समझ की अपरिपक्वता, मूर्खता, अबोधता।

बाल्हका, बाल्हिका, बाल्हीका (पु० ब० व०) [बल्हिदेशे भवा बल्हि+वुञ्, बल्हि+ठञ्, पृषो० पक्षे दीर्घत्वम्] बल्हि के अधिवासी, कः 1 बाल्हीकों का राजा 2 बलख का घोड़ा,—कम् 1 केसर, जाफरान, 2 हींग।

बाल्हिः (पु०) एक देश का नाम। सम०—ज (वि०) बलख देश में पला, बलख देश की नसल।

बाष्पः—**ष्पम्** [बाष्—पृषो० सस्य पत्वं वा] 1 आँसू, अश्रु-कण्ठ स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषं—श० ४।५ 2 भाप, प्रवाष्प, कुहरा 3 लोहा। सम०—अम्बु (नपु०) आँसू, —उद्भवः आँसुओं का आना,—कण्ठ (वि०) जिसका गला भर आया हो, गद्गद कंठ वाला,—बुविन्दु आँसुओं की बाढ़, —पूरः आँसुओं का फूट पड़ना, आँसुओं की बाढ़,—वारंवार तिरयति दृशोरुद्गम बाष्पपूरः—मा० १।३५, —मोक्षः, मोचनम् आँसू बहाना,—बिन्दुः (पु) आँसू की बूँद, —सदिग्ध (वि०) जो आँसुओं के कारण अस्पष्ट हो।

बाष्पायते (ना० धा० आ०) आँसू बहाना, रोना—तत्किमिति बाष्पायित भगवत्या—मा० ६, विक्रम० ५।९।

बास्त (वि०) (स्त्री०—स्ती) [बस्त+अण्] बकरे से उत्पन्न या प्राप्त—मनु० २।४१।

बाहु [=बाहु पृषो० वह्+णिच्+अच्, ववयोरभेद] 1 भुजा 2 घोड़ा।

बाहा [दे० बाह] भुजा,—भा प्रत्यालिङ्गतेवागताभि शाखा-बाहाभि—श० ३। सम०—बाहवि (अव्य०) हस्ताहस्ति, भुजा से भुजा—तु० बाहु-बाहवि।

बाहीकाः (ब० व०) [वह्+ईकण् ववयोरभेद] पंजाब के अधिवासी,—कः 1 पंजाबी 2 बैल।

बाहु [बाध्+कु, धस्य ह] 1 भुजा—शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहु कुत फलमिहास्य—श० १।१६ इसी प्रकार 'महाबाहु', आदि 2 कलई 3 पशु का अगला पैर 4 द्वार की चौखट का बाजू 5 (ज्या० में) समकोण त्रिभुज का आधार,—हू (द्वि० व०) आर्द्रा नक्षत्र। सम०—उत्क्षेपम् (अव्य०) भुजाओं को ऊपर उठा कर—बाहूत्क्षेप क्रन्दितु च प्रवृत्ता—श० ५।३०, —कुण्ठ कुब्ज (वि०) लुंजा, जिसका हाथ विकृत हो गया हो,—कुक्षिः (पक्षी का) बाजू, डैना, —क्षयः पौरुष की माप, अर्थात् दोनों हाथों को फैलाकर मापी हुई दूरी,—ज क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति—तु० बाहु राजन्य कृत—ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १।३१, 2 तोता, —ज्या (गणि० में) चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा, —त्र, —त्रम्—त्राणम् भुजाओं की रक्षा करने वाला कवचविशेष, —दण्ड 1 डंडे की भांति लंबी भुजा 2 भुजा या मुक्के से दण्डित करना,—पाश 1 मल्लयुद्ध में एक घेरा बनाना जैसा कि आलिंगन के समय किया जाता है, प्रहरणम् घूंसों की लड़ाई, मल्लयुद्ध,—बलम् भुजा की ताकत मांसपेशियों की शक्ति, —भूषणम्, —भूषा भुजा में पहना जाने वाला आभूषण, बाजूबंद, अंगद, —भेदिन् (पु०) विष्णु का विशेषण,—मूलम् 1 कांख, 2 कंधे और बाहु का जोड़, युद्धम् हाथापाई, मल्लयुद्ध, घूंसों की लड़ाई, योधः योधिन् (पु०) मुष्टि योद्धा, घूंसेबाज,—लता भुजा की भांति बेल, °अन्तरम् स्तन, वक्ष स्थल, —वीर्यम् भुजाओं की शक्ति, व्यायाम कसरत, —शालिन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 भीम का विशेषण, —शिखरम् भुजा का ऊपरी भाग, कंधा,—सभव क्षत्रिय जाति का पुरुष, सहस्रभृत् (पु०) कार्तवीर्य राजा का विशेषण ('सहस्रार्जुन') भी इसका नामान्तर है।

बाहुक [बाहु+कै+क] 1 बन्दर 2 कर्कोटक के द्वारा कोला बना दिये जाने पर नल का बदला हुआ नाम।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण+ष्यञ्] अनेक सद्गुण और श्रेष्ठताओं का स्वामित्व।

बाहुदन्तकम् [बहुदन्तक+अण्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

क रूप में निरूपण जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

बाहुदन्तेय. [बहुदन्त+ढ] इन्द्र का विशेषण।

बाहुदा [बाहु+दा+क+टाप्] एक नदी का नाम।

बाहुभाग्यम् [बहुभाग्+ष्यञ्] मुखरता, वाचालता, वाक्पटुता।

बाहुरूप्यम् [बहुरूप+ष्यञ्] बहुरूपता, विविधता।

बाहुलः [बहुल+अण्] 1 अग्नि 2 कार्तिक का महीना, —लम् 1 बहुरूपता 2 भुजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष। सम०—ग्रीव मोर।

बाहुलकम् [बाहुल+कन्] 1 अनेकरूपता 2 व्याकरण में प्रयुक्त विधिविशेष बाहुलकाच्छन्दसि, किसी रूप, अर्थ या नियम की विविधता या अमोघ प्रयोजनीयता।

बाहुलेय [बहुला+ढक्] कार्तिकेय का विशेषण।

बाहुल्यम् [बहुल+ष्यञ्] 1 बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2 बहुरूपता, अनेकता, विविधता 3 वस्तुओं का सामान्य क्रम या प्रचलित व्यवस्था।

बाहूबाहवि (अव्य०) [बाहुभिर्बाहुभि प्रहृत्येदं प्रवृत्तं युद्धम्] भुजा से भुजा मिला कर, हस्ताहस्ति, घमासान युद्ध।

बाह्य (वि०) [बहिर्भव ष्यञ्, टिलोप] 1 बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाहर स्थित विरह किमिवानुनापयेद् वद बाह्यैर्विषयैर्विपश्चितम् रघु० ८।८९, बाह्योद्याने—मेघ० ७, कु० ६।४६, **बाह्यनामन्** 'बाहरी नाम', अर्थात् पत्र की पीठ पर लिखा हुआ पता या शिरोनाम, सन्नामा—मुद्रा० १ 2 विदेशी, अपरिचित—पञ्च० १ 3 बहिष्कृत, कटघर से बाहर—जातास्तदूर्वोरुपमानबाह्या—कु० १।३६ 4 समाज से बहिष्कृत, जातिबहिष्कृत, ह्यः 1 अपरिचित, ह्यम्, **बाह्यात्**, **बाह्ये** (अव्य०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी ढंग से।

बाह्वृच्यम् [बह्वृच+ष्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन।

बिट् (भ्वा० पर० बेटति) 1 शपथ लेना 2 अभिशाप देना 3 चिल्लाना, जोर से बोलना।

बिटक, कम्, बिटका [=पिटक, पृषो०] फोड़ा, फुंसी।

बिडम् [बिड्+क] एक प्रकार का नमक।

बिडाल [बिड्+कालन्] 1 बिल्ला, बिलाव 2 आँख का डेला। सम०—पद —पदकम् १६ माशे के तोल का बट्टा।

बिडालक [बिडाल+कन्] 1 बिलाव 2. आँख के बाहरी भाग पर मल्हम लगाना,- कम् पीली मल्हम।

बिडौजस् (पु०) [बिडेष्टि बिट् व्यापकमोजो यस्य बिडौजा, पृषो० वृद्धि] इन्द्र का विशेषण, - श० ७।३४।

बिद्, बिन्द् (भ्वा० पर० बिदति) 1 खण्ड खण्ड करना 2 बाँटना।

बिदलम् दे० 'विदल'।

बिन्दु [बिन्द्+उ] 1 बूंद, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः "छोटी-छोटी बूंदें मिल कर एक सरोवर बन जाता है", बिन्दीयते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि मनु० ७।३३, अधुना (कुतूहलस्य) बिन्दुरपि नावधीरितः -श० २ 2 बिंदु, बिंदी 3. हाथी के शरीर पर रंगीन बिंदी या चिह्न—कु० १।७ 4 शून्य, सिफर—न रोमकूपैर्बिभिदाज्जगत्कृता कृतोऽप्य किं दूषणशून्यबिन्दवः -नै० १।२१। सम० **चित्रक.** चित्तीदार हरिण, **जालम्** - **जालकम्** 1 बूंदों का समूह 2 हाथी के सूंड और शरीर पर बनाये गये चित्रण, चित्तियाँ,—**त्रय.** 1 पासा 2. शतरंज की बिसात,—**देव** शिव का विशेषण,—**पत्र.** एक प्रकार का मोक्षपत्र,—**फलम्** मोती, - **रेखक** 1 अनुस्वार 2 एक प्रकार का पक्षी, —**रेखा** बिन्दुओं की पंक्ति, -**वासर** गर्भाधान का दिन।

बिम्बोक., (बिम्बोक, बिम्बोक) [?] 1 अभिमान के कारण अपने प्रियतम पदार्थ की ओर उदासीनता का प्रदर्शन —मनाक् प्रियकथालापे बिम्बोकोऽनादरक्रिया—प्रताप० द, या, बिम्बोकस्त्वतिगर्वेण वस्तुनोऽप्येऽप्यनादरः —सा० द० १३९ 2 घमंड के कारण उदासीनता 3 केलिकर या प्रीतिविषयक संकेत —सशपथं क्षणमिति निश्चिकाय कश्चिद्बिम्बोकैकसहवासिना परोक्षैः - शि० ८।९ (विलासे - मल्लि०)।

बिभित्सा [भिद्+सन्+अ+टाप्] भेदने की इच्छा, बींधने की या छेद करने की इच्छा।

बिभित्सु (वि०) [भिद्+सन्+उ] छेदने या बींधने की इच्छा।

बिभीषण [भी+सन्+ल्युट्] एक राक्षस का नाम, रावण का भाई (यद्यपि वह जन्म से राक्षस था परन्तु तोभी सीता के अपहरण के कारण वह बड़ा खिन्न था, उसने रावण को इस दुष्कृत्य के लिए बहुत बुरा भला कहा। उसने बार-बार रावण को समझाया कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो। परन्तु उसने बिभीषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में जब उसने देखा कि रावण का विनाश अवश्यभावी है तो वह राम के पास चला गया और उनका पक्का मित्र बन गया। रावण की मृत्यु के पश्चात् राम ने बिभीषण को लंका की राजगद्दी पर बिठा दिया। बिभीषण सात चिरजीवियों में गिना जाता है—दे० 'चिरजीविन्')।

बिभ्रद्, बिभ्रद्वसु [भ्रस्ज्+शतृ+उ, विकल्पेन इट्] आग।

बिम्ब ,-म्बम् [बी+कन् नि० साधु:] सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल --वदनेन निर्जित तव लीलयते चन्द्रबिम्बमम्बुजरे सुभा०, इसी प्रकार सूर्य°, रवि° आदि 2 कोई गोल या मण्डलाकार सतह, मण्डल या गोला जैसे 'नितम्बबिम्ब' गोलाकार कूल्हा, 'श्रोणीबिम्ब' आदि 3 प्रतिमा, छाया, प्रतिबिंब 4 शीशा, दर्पण 5 कलश 6 उपमित पदार्थ (विप० प्रतिबिंब), **म्बम्** एक वृक्ष का फल (यह जब पक जाता है तो लाल रंग का हो जाता है, तरुण स्त्रियों के होंठों की तुलना इसी से की जाती है)-रक्तशोकरुचा विशोषितभुगा बिम्बाधरा-लक्तक मालवि० ३।५, पक्वबिंबाधरोष्ठी- मेघ० ८२, तु० नै० २४। सम० -ओष्ठ (वि०) (स्त्री० ष्ठी) बिंब फल के समान लाल-लाल सुंदर होंठों वाला मालवि० ४।१४, (-फल) बिंब फल की भांति आठ-उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे-कु० ३।६७।

बिम्बकम् [बिम्ब+कन्] 1 सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल 2 बिंबफल।

बिम्बिका [बिम्ब+कन्, इत्वम्] 1 सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल 2 बिंब का पौधा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब+इतच्] 1 प्रतिबिंबित, प्रति छाया पड़ी हुई 2 चित्रित।

बिल् (तु० पर०, चुरा० उभ० बिलति बेलयति-ते) खंड खंड करना फाड़ना, तोड़ना, बांटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

बिलम् [बिल्+क] 1 छिद्र, बिवर, सूई (हल चलाने से बना सीधी रेखा) खनन्नाबुबिले सिद्ध पातयति नारदश्च हि पंच० ३।१७, रघु० १२।५ 2 निवासस्थान, गर्त, छिद्र 3 द्वारक, छिद्र, सूराख, 4 कंदरा, कोटर रू. इन्द्र के घोड़े 'उच्चैःश्रवा' का नामान्तर। सम० **ओकस्** (पु०) बिल में रहने वाला जानवर, **कारिन्** (पु०) चूहा, -**योनि** (वि०) बिल में जन्तुओं की तरह के जानदार पदार्थ बिल-यानेव कु० ६।३२, -**वास** गंधमार्जार, **वासिन्** (बिलेवासिन्) (पु०) सांप।

बिलेशय [बिले शेते शी+अच्, अलुक् स०] 1 साप 2 चूहा, चूहा 3 बिल में रहने वाला कोई भी जन्तु।

बिल्ल [बिल्+ला+क नि० आकार लोप] 1 गर्त 2 विशेषतः घोंघला, आलवाल। सम०—**सूः** दस बच्चों की माँ।

बिल्व [बिल्+क्वन्] बेल नामक वृक्ष-**ल्वम्** 1 बेल का फल 2 एक विशेष तोल, पल भर। सम०-**भद्रः** शिव का विशेषण,-**पेशिका,-पेशी** बेल का छिलका (जो लकड़ी के समान कड़ा होता है), **वनम्** बेलों का जंगल।

बिल्वकीया [बिल्व+छ, कुक्] वह स्थान जहाँ बेल के पौधे लगाये गए हों।

बिस् (दिवा० प० बिस्यति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 उकसाना, प्रेरित करना, भड़काना 3 फेंकना, डाल देना 4 टुकड़े टुकड़े करना।

बिसम् [बिस्+क] 1 कमल तन्तु 2 कमल की तन्तु वाली डंडी-पाथेयमम्भोरुह बिस ग्रहणाय भूय -विक्रम० ४।१५, बिसमलमशनाय स्वादु पानाय तोयम् -भर्तृ० ३।२२, मेघ० ११, कु० ३।१७, ३।२९। सम० —**कण्टिका, कण्ठिका, कण्ठी** (पु०) छोटा सारस **कुसुमम्**, -**पुष्पम्**,—**प्रसूनम्** कमल का फूल,—**जटिल घृतवि-कासिबिसप्रसूना** शि० ५।५८, -**वादिका** 'कमल तन्तुओं की खाने वाली, -**ग्रन्थि** कमलडंडी के ऊपर की गांठ, **छेद** कमल की तन्तुमय डंडी का टुकड़ा, -**जम्** कमल, का फूल, कमल तन्तु कमल का रेशा, -**लता** (स्त्री०) कमल का पौधा, पद्मिनी,-**वासिका** एक प्रकार का सारस।

बिसलम् [बिस+ला+क] नया अंकुर, अंखुवा, कली।

बिसिनी [बिस+इनि] 1 कमलिनी, कमल का पौधा भर्तृ० ३।३६ 2 कमल तन्तु 3 कमलों का समूह।

बिसिल (वि०) [बिस+इलच्] बिस से संबद्ध या प्राप्त।

बिस्त [बिस्+क्त] (८० रतियों के बराबर) सोने का तोल।

बिल्हण (पु०) विक्रमांकदेवचरित नामक काव्य का रचयिता।

बीजम् [वि+जन्+ड उपसर्गस्थ दीर्घ वकयारभेद] बीज (आल० से भी) बीज का दाना, अनाज —अरण्यबीजाञ्जलिदानलालिता कु० ५।१५, बीजा-ञ्जलि पतति कीटमुखावलोढ़ -मृच्छ० १।९, रघु० १९।५७, मनु० ९।३३ 2 जीवाणु, तत्त्व 3 मूल, खात, कारण, बीजप्रकृति शि० १।१, (पाठान्तर) 4 वीर्य, शुक्र,—कु० ३।५, ६० 5 किसी नाटक की कथावस्तु का बीज, कहानी आदि,-दे० सा० द० ३१८ 6 गुदा 7 बीजगणित 8 बीजमंत्र, -**द्रु** नीबू का पेड़, (**बीजाङ्क** 1 बीज बोना-व्योमनि बीजाङ्कुरते-भामि० १।९८ 2 बीज बोने के बाद हल चलाना)। सम० -**अक्षरम्** मन्त्र का प्रथम अक्षर, **अङ्कुरः** बीज का अंकुर कु० ३।१८, **न्याय** बीज और अंकुर का न्याय, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, **अव्यक्त** शिव का विशेषण, **अश्व** जननाश्व, साँड घोड़ा,—**आम्रम्**, -**पूर**,-**पूरक** बिजौरा नीबू, चकोतरा, (**रम्**,-**रकम्**) नीबू का फल,-**उत्कृष्टम्** अच्छा बीज,—**उद्वपनम्** बोला, -**कर्तृ** (पु०) शिव का विशेषण,-**कोश**,-**कोष** 1 बीज पात्र 2 कमल का बीजपात्र,—**गणितम्** बीजगणित का विज्ञान,—**गुप्ति** (स्त्री०) बीजकोष, फली, सेम,

छोमी,—शाला रंगशाला का व्यवस्थापक,—शान्यम् धनिया,—शास्त्र नाटक की कथावस्तु के स्रोत को बतलाना,—शुक्र कुल प्रवर्तक, शलक बीजपूर का पेड़,—शब्द रहस्यमय अक्षर जिससे मंत्र आरम्भ होता है,—शातृका कमल का बीजकोष,—शेह दाना, अनाज,—शाप 1 बीज बोने वाला 2 बीज का बोना, —शाहन शिव का विशेषण,—सू पृथ्वी, सेक्तृ (पु०) प्रजापति, प्रजापति ।

बीजक [बीज+कन्] 1 सामान्य नीवृ 2 नीवृ या चकोतरा 3 जन्म के समय बच्चे की भुजाओं की स्थिति, कक् बीज ।

बीजल (वि०)[बीज+लच्] बीजों से युक्त, बीजों वाला ।

बीजिक (वि०) [बीज+ठन्] बीजों से भरा हुआ, जिसमें बहुत बीज हों ।

बीजिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [बीज+इनि] बीजों से युक्त, बीज रखने वाला (पु०) 1 वास्तविक पिता या प्रजनक (बीज का बोने वाला) (विप० क्षेत्रिन् - खेत या स्त्री का पति या स्वामी) द० - मनु० ९। ५१ तथा आगे 2. पिता 3 सूर्य ।

बीज्य (वि०) [बीज+यत्] 1 बीज से उत्पन्न 2 सम्मानित कुल का, सत्कुलोद्भव ।

बीभत्स (वि०) [बिभ्+सन्+घञ्] 1 घृणोत्पादक, घिनौना, दुर्गंधयुक्त, भीषण, जुगुप्साजनक - हन्त बीभत्समेवाग्रे वर्तते मा० ५, 'अहो ! यह निश्चित रूप से घिनौना दृश्य है' 2 डरावना, घबड़ाहट, विद्वेषपूर्ण 3 बर्बर, क्रूर, खूंखार 4 मन में विरक्त.—स्स 1 जुगुप्सा, घिनौनापन, गर्हणा 2 बीभत्सरस, काव्य के आठ या नौ रसों में से एक जुगुप्साप्रभवो यत्र भाव बीभत्स उच्यते रस मा० द० २३६ (उदा० मा० ५।१६) 3 अर्जुन का नामान्तर ।

बीभत्सु [बिभ्+सन्+उ] अर्जुन का विशेषण । महा० इस प्रकार व्याख्या करता है न कुर्यात्कर्म बीभत्सं यद्यप्यस्मिन् कथंचन, तेन देवमनुष्येषु बीभत्सुरिति स्मृत ।

बुक् (अव्य०) [बुक्क् + क्विप् पृषो० उपधालोप] अनुकरणमूलक शब्द । सम० कार गिरि की दहाड़ ।

बुक्क् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० बुक्कति, बुक्कयति-ते) 1 भौंकना—हि० ३।५२ 2 बोलना बात करना ।

बुक्का,—क्कम् [बुक्क+अच्] 1 हृदय 2 दिल छाती बुक्काघातैर्यतिनिकटे प्राहरत्कर्कशेन राधा उद्भट 3 रुपया, टका 1 टक्का 2 समय ।

बुक्कन् (पु०) [बुक्क+शन्] हृदय, दिल ।

बुक्कनम् [बुक्क्+ल्युट्] भौंकना, भौं भौं करना ।

बुक्कस: [पुक्कस, पृषो० साधु] चंडाल ।

बुक्का,—क्की [बुक्क+टाप्, ङीष् वा] हृदय, दिल ।

बुद् (भ्वा० उभ० बोदति-ते) 1 प्रत्यक्ष करना, देखना, समझना, पहचानना 2 समझ लेना, जान लेना ।

बुद्ध (भू० क० कृ०) [बुध्+क्त] 1 ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ 2 जगाया हुआ, जागरूक 3 देखा हुआ 4 प्रकाशमान ।

बुद्धिमान् (दे० बुध्)-वत् 1 बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि 2 (बौद्धों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानज्योति से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं मुक्त होने से पूर्व संसार को मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने की रीति बतलाता है 3 शाक्यसिंह का नाम 'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उसने कपिलवस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५४३ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का नवाँ अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजात सदयहृदय दर्शित-पशुघात केशव धृतबुद्धशरीर ! जय जगदीश हरे —गीत० १)सम०—आगम बौद्धधर्म के सिद्धान्त और मन्तव्य, उपासक बुद्ध की पूजा करने वाला, गया एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम, मार्ग, बुद्ध के सिद्धान्त और मत, बुद्धवाद ।

बुद्धि (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान, सबोध 2 मति, समझ, प्रज्ञा, प्रतिभा लोक्षणा लाक्षणिकी बुद्धि शि० २।११९, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धि —रघु० १।१९ 3 ज्ञान बुद्धिर्यस्य बल तस्य हि० २।१२२ 'ज्ञान ही शक्ति है' 4 विवेक, विवेचन, सूक्ष्म विचारणा " मन मूढ परप्रत्ययनेयबुद्धि मालवि० १।१७, इसी प्रकार कृष्ण पाप० आदि 6 औसान रहना प्रत्युत्पन्नमतित्व 7 धारणा, सम्मति, विश्वास, विचार, भावना, भाव दूरात्मनमलोक्य व्याघ्रबुद्धया पलायन्ते हि० ३, अनया बुद्धया मुद्रा० १, 'इस विश्वास से'—अनुकूलाभिरद्भिया मेघ० ११५ 8 आशय, प्रयोजन, प्रायोजना (बुद्धया) 'इरादतन' 'प्रयोजन से' 'जानबूझ कर 9 रचेन होना, मूर्छा से जागना मा० ४ .0 (सा० द० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा । सम० अतीत (वि०) बुद्धि की पहुँच से परे अवज्ञानम् किसी की समझ का तिरस्कार करना या निकाल मत रखना—अप्राप्तकाल वचन बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, प्राप्तानि बुद्धयवज्ञानमपमान च पुष्कलम् पंच० १।६३, इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय, विप०कर्मेन्द्रिय।(यह पाँच हैं—कान, त्वचा, आँख जिह्वा और नाक क्रमात् त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है) —ग्रह्य-ग्राह्य (वि०) पहुंच के भीतर, उपलब्ध करने योग्य, प्रतिभा जीवन् (वि०) 'तर्क' का

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला –पूर्वम्,-पूर्वकम्,पुरःसरम् (अव्य०) इरादतन, जानबूझ कर स्वेच्छा से, –भ्रम, मन का उचाट, मन को विपथगामिता, –योग ब्रह्म से बौद्धिक सायुज्य, –लक्षणम् बुद्धिमत्ता या प्रतिभा का चिह्न –आरब्धस्यान्तगमनम् द्वितीय बुद्धिलक्षणम्, –वैभवम् प्रतिभा की शक्ति,

शस्त्र (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त,—शालिन्-सचिव (वि०) बुद्धिमान् समझदार,–सखः,-सहायः परामर्शदाता, –हीन (वि०) प्रतिभाशून्य, मूर्ख, बेवकूफ।

बुद्धिमत् [बुद्धि –मतुप्] 1 समझ से युक्त, प्रज्ञावान्, विवेकपूर्ण 2 समझदार, विद्वान् 3 तेज, चतुर, तीक्ष्ण।

बुद्बुद (पु०) बुलबुला, –मतन जातविनष्टा पद्मसाभिव बुद्बुदा पयसि—पद्म०५।७।

बुध् (भ्वा० उभ०, दिवा० आ०–बोधति-ते, बुध्यते, बुद्ध) 1 जानना, समझना, सबोध होना–ऋषादस्मै नारद इत्य बोधि स –शि० १।३, ९।२४, नाबुद्ध कल्पद्रुमता विहाय जात तमान्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, यदि बुध्यत हरिणिशु स्तनन्धय –भामि० १।५२ 2 प्रत्यक्ष करना, देखना, पहचानना, ध्यान से देखना हिरण्मय हममबोधि नैषध —नै० १।११७, अपि लक्ष्मिनमध्वान बुबुधे न बुधोपम –रघु० १।४७, १२।३९ 3 सोचना, विचार करना, समझना, मानना आदि 4 ध्यान देना, चित्त लगाना 5 सोचना, विमर्श करना 6 जागना, सचेत होना, सोकर उठना —ददर्शपि गिरमल्पबुध्यते वा मनुष्य शि० ११।४, ते च प्रापुरुदन्वन्त बुबुधे नादिपूरुष —रघु० १०।६ 7 फिर से सचेत होना, होश में आना शनैरबोधि सुग्रीव सोऽकुञ्चीन्कर्ण नासिकम् –भट्टि० १५।५७, प्रेर०–बोधयति-ते 1 जतलाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना 2 अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि) प्रदान करना 3 परामर्श देना, चेतावनी देना –बोधयन्त हिताहितम्, भट्टि९८।८२, भग० १०।९ 4 पुनर्जीवित करना, फिर जान डालना, होश दिलाना, सचेत करना 5 फिर ध्यान दिलाना, याद दिलाना श० ४।१ 6 जगाना, उठाना, उत्तेजित करना (आल०)–अकाले बोधितो भ्राता –रघु० १२।८१, ५।७५ 7 (मधद्रव्य को) फिर से सुवासित करना 8 फैलाना, खिलाना –मधुरया मधुबोधितमाधवी –शि० ६।२० 9 द्योतित करना, सवहन करना, सकेत करना

इच्छा० बुभुत्स(बो) धियति-ते, बुभुत्सते–1 जानने की इच्छा करना आदि, अनु , 1 जानना, समझना 2 सीखना, जानकार होना, सचेत होना, प्रेर०— 1 परामर्श देना, चेतावनी –रघु० ८।७५ 2 ध्यान दिलाना—आर्ये सम्यगनुबोधितोऽस्मि—श० १, अव–, जानना, ज्ञात करना, समझना –मनु० ८।५३, भट्टि० १५।१०१, प्रेर० –1. ज्ञात कराना, सूचित करना, परिचय देना– ब्रह्मचोदनानुपूर्वमबबोधयत्येव केवलम्

शारी० 2 उठाना, जगाना रघु० १२।२३, उद्–, 1 जगाना, उठाना 2 फैलाना, खिलाना–प्रेर० जागरूक करना, उत्तेजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना, वि–, 1 जानना, समझना, ज्ञात करना—निर्दोष साधो तव चेतकुतूहलम्—कु० ५।५२, ३।१४, मनु० १।६८, याज्ञ० १।२ 2 मानना, विचार करना, समझना, प्र–, जागना, उठना, आख खोलना श० ५।११, शि० ९।३० 2 खिलाना, फैलाना, खिलना साम्रेऽह्नीव स्थलकमलिनी न प्रबुद्धा न सुप्ताम् मेघ० ९०,–प्रेर० 1 सूचित करना, जतलाना–रघु० ३।६८ 2 जगाना, उठाना रघु० ५।६५ ६।५६ 3 फैलाना, खिलाना –कु० १।१५, प्रति–, जगाना, उठना—मनु० १।७४, याज्ञ० १।३३०, प्रेर० 1 सूचित करना जतलाना, परिचित करना, समाचार देना रघु० १।७४, शि० ६।८, 2 जगाना, उठाना, वि–,जागना, उठना–कु० ५।५७। प्रेर० 1 जगाना, उठाना 2 फिर से सचेत करना—अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूविबोधिता—कु० ४।१, सम्,–जानना, समझना, ज्ञात करना, जानकार होना भट्टि०१९।३०, प्रेर० 1 सूचित करना, परिचित कराना, सूचना देना—नवागतिज्ञ समबोधयन्माम् रघु० १३।२५ 2 सबोधित करना।

बुध (वि०) [बुध्+क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्,—घ 1 बुद्धिमान् या विद्वान पुरुष निषेव्य सम्य क्षितिरक्षिण कथा तथाद्रियन्ते न बुधा सुधामपि नै० १।१ 2 देव. नै० १।१ 3 ब्रह्म यह रक्षत्येन तु बुधयोग –मुद्रा० १।६, (यहा 'बुध' का अर्थ 'बुद्धिमान्' भी है) रघु० १।४७, १३।७६। सम० ज्ञ बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, तारा चन्द्रमा, दिनम्, वार. वासर बुधवार,–रत्नम् मरकतमणि, पन्ना, —सुत पुरूरवा का विशेषण।

बुधान [बुध्+आनच्, कित् च] 1 बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि 2 धर्मोपदेष्टा, अध्यात्मपथदर्शक।

बुधित (वि०) [बुध्+क्त] जाना हुआ, समझा हुआ।

बुधिल (वि०) [बुध्+किलच्] विद्वान्, बुद्धिमान्।

बुध्न. [बन्ध्+नक्, बुधादेश] 1 बर्तन की तली 2 पेड की जड 3 निम्नतम भाग 4 शिव का विशेषण (अन्तिम अर्थ में 'बुध्न्य' भी)।

बुन्द्, बुन्द्(भ्वा० उभ० बुन्दति–ते, बुन्दति—ते) 1 प्रत्यक्ष करना, देखना, भापना 2 विमर्श करना, समझना।

बुभुक्षा [भुज्+सन्+अ+टाप्] 1. खाने की इच्छा, भूख 2 किसी भी पदार्थ के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) [बुभुक्षा+इतच्] भूखा, भुखमरा, क्षुधा-पीड़ित -बुभुक्षित किं न करोति पापम् पंच० ४। १५, या बुभुक्षित किं द्विकरेण भुङ्क्ते उद्भट।

बुभुक्षु (वि०) [भुज्+सन्+उ] 1 भूखा, सांसारिक उपभोगों का इच्छुक (विप० मुमुक्षु)।

बुभूषा [भू+सन्+अ+टाप्] होने की इच्छा।

बुभूषु (वि०) [भू+सन् | उ] बनने की या होने की इच्छा वाला।

बुल् (चुरा० उभ० बोलयति-ते) 1 डूबना, गोता लगाना बोलयति प्लवं पयसि 2 डुबोना।

बुलि (स्त्री०) [बुल्+इन्, किच्] 1 भय डर।

बुस् (दिवा० पर० बुस्यति) छोड़ना, उगलना, उड़ेलना।

बुसं (बस्) [बुस्+क पक्षे पृषो० मलोपः] 1 बूर, भूसी 2 कूड़ा, गंदगी 3 गाय का सूखा गोबर 4 धन, दौलत।

बुस्त् (चुरा० उभ० बुस्तयति ते) 1 सम्मान करना, आदर करना 2 अनादर करना, तिरस्कारपूर्वक अर्थात् घृणायुक्त व्यवहार करना।

बुस्तम् [बुस्त्+घञ्] भने हुए मांस का टुकड़ा।

बुक्कम् बुक्क।

बुशी, बुषी (सी) [बुध्नाऽस्यां सीदन्ति बुध्न+सद्+ड | ङीष् पृषो० धस्य बः] किसी संन्यासी या साधु महात्मा की गद्दी।

बृह् (भ्वा० तुदा० पर० बृंहति, बृंहित) 1 बढ़ना, उगना -बृंहितमन्युवेग- भट्टि० ३।४१, 2 दहाड़ना। प्रेर०—पालन-पोषण करना।

बृंहण [बृंह्+ल्युट्] (हाथी के) चिंघाड़ने का शब्द —शि० १८।३।

बृंहित (भू० क० कृ०) [बृंह्+क्त] 1 उगा हुआ, बढ़ा हुआ -भामि० २।१०९, 2 चिंघाड़ा हुआ, तम् हाथी की चिंघाड़ —शि० २२।१५, कि० ६।३९।

बृह् (भ्वा० तुदा० पर० बर्हति, बृंहति) 1 उगना, बढ़ना, फैलना 2 दहाड़ना उद्—, 1 उठाना, ऊपर को करना मनु० १।१०, भट्टि० १४।९, नि—, नष्ट करना, हटाना शि० १।२९।

बृहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [बृंह्+अति] 1 विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल मा० ९।५ 2 चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ दिलीपसूनो स बृहद्भुजान्तरम् रघु० ३।५४ 3 विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर 4 मजबूत, शक्तिशाली 5 लम्बा, ऊँचा देवदारु-बृहद्भुज कु० ६।५१ 6 पूर्णविकसित 7 सटा हुआ समन—स्त्री० वाणी—शि० २।६८,—नपुं० 1 वेद 2 सामवेद का मंत्र (साम)-भग० १०।३५ 3 ब्रह्म।

समं०—अङ्ग,—काय (वि०) स्थूलकाय, विशालकाय (गः) बड़े डीलडौल का हाथी, **आरण्यम्,—आरण्यकम्** एक प्रसिद्ध उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छ अध्याय, एला बड़ी इलायची, —**कुक्षि** (वि०) बुद्दिल, बड़े पेट वाला, —**केतु** अग्नि का विशेषण, —**गुह** एक देश का नाम, **गोलम्** तरबूज, —**छिद्** नीम का पेड़ **जघन** (वि०) प्रशस्तकूल्हों वाला, **जीवन्तिका, जीवन्ती** एक प्रकार का पौधा, —**ठक्का** बड़ा ढोल नट, नल ला, राजा विराट के दरबार में नृत्य और संगीत शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम, **नेत्र** (वि०) दूरदर्शी, मनीषी, पाटलि शनूरा, **पाल** बड़ या गलर का वृक्ष, **भट्टारिका** दुर्गा का विशेषण, **भानु** अग्नि,—**रथ** 1 इन्द्र का विशेषण 2 एक राजा का नाम, जरासंध का पिता, **रोहिन्** (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, —**श्लिष्** (वि०) प्रशस्त वाला, बड़े नितंबों वाला।

बृहतिका [बृहत्+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, चादर, चादर।

बृहस्पति [बृहत् वाच पतिः-पारस्करादि०] 1 देवों के गुरु, (इनकी पत्नी तारा के चन्द्र द्वारा अपहरण के लिए दे० तारा या सोम के नीचे) 2 बृहस्पति ग्रह बृहस्पतियोगदृश्य —रा० १३।७६ 3 एक स्मृतिकार का नाम याज्ञ० १।४। समं० **पुरोहित**, इन्द्र का विशेषण, **वार, वासर** गुरुवार।

बेडा [वेड+टाप्] नाव किश्ती।

बेह् (भ्वा० आ० बेहते) उद्योग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बैजिक (वि०) (स्त्री०—की) [बीज+ठक्] 1 वीर्यसंबंधी 2 मौलिक 3 गर्भविषयक 4 मैथुनसंबंधी, क अंकुर, तना अंकुर, **कम्** कारण, स्रोत, मूल।

बैडाल (वि०) [स्त्री०—ली] [बिडाल+अण्] 1 बिलाव से संबंध रखने वाला 2 बिलाव की विशिष्टता को रखने वाला। समं० **व्रतम्** 'बिलाव जैसा व्रत' अर्थात् बिलाव की भांति अपना ढोंग तथा दुर्भावनाओं को पवित्रता और सज्जनता की आड़ में छिपाये रखना। —**व्रति** या **व्रती** गृहवास न मिलने के कारण ही साधु जीवन बिताने (इस लिए नहीं कि उसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है) —**व्रतिक** —**व्रतिन्** (पुं०) धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, ढोंगी।

बैदल [विदल+अण् वकयोरभेदः] दे० 'वैदल'।

बैम्बिक [बिम्ब+ठक्] जो महिलाविषयक कार्यों में मनोयोगपूर्वक लगनेवाला हो, प्रेमनिपुण, प्रेमी —**दाक्षिण्य नाम बिम्बोष्ठि बैम्बिकाला कुलव्रतम्**—मालवि० ४।१४।

बैल्व (वि०) (स्त्री०—ली) [बिल्व+अण्] 1. बेल के वृक्ष

या लकड़ी से सबद्ध या निर्मित 2 बेल के पेड़ो से ढका हुआ,—स्वम् बेल के पेड़ का फल ।

बोध [बुध्+घञ्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ, आलोचना, विचार—कालाना सुखबोधाय—तर्क० 2 विचार, चिन्तन 3 समझ, प्रतिभा, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता 4 जागना, जागरूक होना, जागृति की स्थिति, चेतना 5 खिलना, फूलना, फैलना 6 शिक्षण, परामर्श, चेतावनी 7 जगाना उठाना 8 उपाधि, पद । सम० —अतीत (वि०) अज्ञेय, ज्ञान के परे, —कर (वि०) सिखाने वाला, सूचित करने वाला, (र:) 1 चारण या भाट (जो उपयुक्त भजन गाकर प्रात काल अपने स्वामी को जगाता है) 2 शिक्षक, अध्यापक, पूर्व (वि०) सप्रयोजन, सचेत नि० 'अबोधपूर्वं', —वासर: कार्तिक शुक्ला एकादशी, जब विष्णु भगवान् अपनी चार मास की निद्रा को त्याग कर जागे हुए समझे जाते हैं - दे० मेघ० ११०, और 'प्रबोधिनी' ।

बोधक (वि०) (स्त्री० धिका) [बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1 सूचना देने वाला, (स्थिति से) अवगत कराने वाला 2 शिक्षण देने वाला, अध्यापन करने वाला 3 अभिसूचक 4 जगाने वाला, उठाने वाला, —क: भेदिया, जासूस ।

बोधन [बुध्+णिच्+ल्युट्] बुधग्रह, —नम् समुचन, अध्यापन, शिक्षण, ज्ञान देना भयरुषोश्च तद्विद्भिर्बुद्धबोधनम् रघु० ९।४९ 3 ज्ञापन करना, निर्देश करना 3 जगाना, उठाना समयेन तेन चिरसुप्तमनोभवबोधन ममभवबोधिषत शि० ९।२८ 4 धूप देना,

—नी 1 कार्तिकशुक्ला एकादशी जब भगवान् विष्णु अपनी चार मास की नींद त्याग कर उठते हैं, देव उठनी एकादशी 2 बड़ी पीपल ।

बोधायन [बुध्+आयनङ्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 बृहस्पति का विशेषण ।

बोधि [बुध्+इन्] 1 पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश 2 बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3 पावन वटवृक्ष 4 मुर्गा 5 बुद्ध का विशेषण । सम० —तरु, द्रुम, वृक्ष, पावन वटवृक्ष, —द (जैनियों का) अर्हत्, —सत्त्व, बौद्ध सन्यासी या महात्मा जो पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट है जिनको पार करके वह पूर्णबुद्ध की स्थिति को प्राप्त कर लेगा और जन्ममरण के दुःख से छुटकारा पा जायगा (यह स्थिति पावन तथा सत्कर्मों की दीर्घशृङ्खला को पार करके प्राप्त की जाती है) —एवमिदं स्थितिविलसितैरनिबोधिसत्वै मा० १०।२१ ।

बोधित (भू० क० कृ०) [बुध्+णिच्+क्त] 1 जताया गया, सूचित किया गया, अवगत कराया गया 2. फिर ध्यान दिलाया गया 3 परामर्श दिया गया, शिक्षक प्रदान किया गया ।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०—द्धी) [बुद्धि+अण्] 1. बुद्धि या समझ से सम्बन्ध रखने वाला 2 बुद्ध विषयक, —द्धः बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी ।

बौध: [बुध+अण्] बुध का पुत्र, पुरूरवा का विशेषण ।

बौधायन: [बोधस्यापत्यं पुमान्—बोध+फक्] एक प्राचीन मुनि का पितृपरक नाम जिसने श्रौतादि सूत्रों की रचना की ।

ब्रध्न: [बन्ध्+नक्, धभद्देश] 1 सूर्य 2 वृक्ष की जड़ 3 दिन 4. सदार का पौधा 5 सीसा (पु० ?) 6 घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण ।

ब्रह्मन् [बृह्+मनिन् नकारस्याकारे कृते रत्वम्—ये च तान्ता ते अकारान्ता अपि इत्युक्ते अकारान्तोऽयं शब्द] परमात्मा ।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्रह्मन्+यत्] 1 ब्रह्मा से सबद्ध 2 ब्रह्मा या प्रजापति से सबद्ध 3 पुनीत ज्ञान के ग्रहण से सबद्ध, पवित्र, पावन 4 ब्राह्मण के योग्य 5 ब्राह्मण के लिए सौहार्दपूर्ण या शान्तिप्रकारी,—य: 1 वेदों में निष्णात व्यक्ति—महावीर० ३।२६ 2 बहुतुण का वृक्ष 3 ताड़ का पेड़ 4. मूज नामक घास 5 शनिग्रह 6. विष्णु का विशेषण 7 कार्तिकेय का विशेषण, —या दुर्गा का विशेषण । सम० —देव: विष्णु का विशेषण ।

ब्राह्मण्यत् (पु०) [ब्रह्मन्+मतुप्, वत्वम्] अग्नि का विशेषण ।

ब्राह्मला, स्थम् [ब्रह्मन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1 परमात्मा में लीन होना 2. दिव्य प्रकृति ।

ब्रह्मन् (नपु०) [बृह्+मनिन्, नकारस्याकारे कृते रत्वम्] 1 परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है (वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही इस दृश्यमान ससार का निमित्त और उपादान कारण है, यही सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीव शक्ति है, यही वह मूलतत्त्व है जिससे ससार की सब वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिसमें फिर यह लीन हो जाती हैं—अस्ति तावन्नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव सर्वज्ञ सर्वशक्तिसमन्वित ब्रह्म—शारी०) सञ्जीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म भवते—भर्तृ० ३।८४, कु० ३।१५ 2 स्तुतिपरक सूक्त 3 पुनीत पाठ 4 वेद—कु० ६।१६, उत्तर० ३।१५ 5 ईश्वरपरक पावन अक्षर ओ३म् —एकाक्षर परं ब्रह्म - मनु० २।८३ 6 पुरोहितवर्ग या ब्राह्मण समुदाय—मनु० ९।३२० 7 ब्राह्मण की शक्ति या ऊर्जा—रघु० ८।४ 8. धार्मिक साधना या तपस्या 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व—शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते —भ० १ 10 मोक्ष या निर्वाण 11. ब्रह्मज्ञान,

अध्यात्मविद्या 12 वेदों का ब्राह्मणभाग 13 धनदौलत, सपत्ति,—(पु०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम जिनको ससार की रचना का कार्य सौंपा गया है (ससार की रचना का वर्णन बहुत सी बातों में भिन्न २ है, मनुस्मृति के अनुसार यह विश्व अधकाराबृत था, स्वयभू भगवान् ने अधकार को हटा कर स्वय को प्रकट किया। सबसे पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजवपन किया। यह बीज स्वर्णिम अडे के रूप में हो गया, जिससे ब्रह्मा (ससार का स्रष्टा) के रूप में वह स्वय उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अडे के दो खण्ड किये—जिससे उसने द्युलोक और अतरिक्ष को जन्म दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियो (मानस पुत्रो) को जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य को पूरा किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार आकाश से ब्रह्मा का आगमन हुआ। उससे फिर मरीचि का जन्म हुआ, मरीचि से कश्यप और कश्यप से फिर विवस्वान् ने जन्म लिया। विवस्वान् से मनु की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव ससार का रचयिता है। तीसरे वृतान्त के अनुसार स्वयभू ने सुनहरे अडे को दो भागो (नर और नारी) में विभक्त किया उनसे विराज और मनु का जन्म हुआ—तु० कु० २।७, मनु० १।३२ तथा आगे। पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस कमल से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वय अपनी पुत्री सरस्वती से उसने अवैध सबध द्वारा सृष्टि रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पाँच सिर थे, परन्तु एक सिर शिव ने अपनी अनामिका से काट दिया या तृतीय नेत्र की आग से भस्म कर दिया। ब्रह्मा की सवारी हस है। उसके अनेक विशेषण है जिनमें से अधिकाश उसको कमल में उत्पत्ति का सकेत करते है) 2 ब्राह्मण —या० ४।४ 3 भक्त ४. सोमयाग में नियुक्त चार ऋत्विजो (पुरोहितों) में से एक 5 धर्मज्ञान का ज्ञाता 6 सूर्य 7 प्रतिभा 8 सात प्रजापतियो (मरीचि, अत्रि, अगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ) का विशेषण 9 बृहस्पति का विशेषण 10 शिव का विशेषण। सम०—अक्षरम् पावन अक्षर 'ॐ',—अजभू घोडा,—अञ्जलि वेद पाठ करते समय हाथ जोड कर सादर अभिवादन 2 आचार्य या गुरु का सम्मान (वेद पाठ के आरम्भ तथा समाप्ति पर),—अण्डम् 'ब्रह्मा' का अडा', बीजभूत अडा जिससे यह समस्त ससार या विश्व का उद्भव हुआ—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्ड —दश० १, —पुराणम् 1 अठारह पुराणों में से एक पुराण, — अभिजाता गोदावरी नदी का एक विशेषण, अभिगम, अभिगमनम् वेदों का अध्ययन, अभ्यास वेदों का अध्ययन, अम्भस् (नपु०) गोमूत्र, —अयन,—न नारायण का विशेषण, अर्पणम् 1 ब्रह्मज्ञान का अर्पण 2 परमात्मा में अनुरक्त 3 एक प्रकार का जादू या मन्त्र, - अस्त्रम् ब्रह्मा से अधिष्ठित एक अस्त्र, आत्मभू घोडा,—आनन्द ब्रह्म में लीन होने का आत्यन्तिक सुख या आनद—ब्रह्मानन्द साक्षात्क्रिया महावीर० ७।२१, आरम्भ वेदों का पाठ आरभ करना—मनु० २।७१, आवर्त (हस्तिनापुर के पश्चिमोत्तर में) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का भाग सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरं, तं देवनिर्मित देश ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते मनु० २।१७, १९, मेघ० ४८,—आसनम् गहन समाधि के लिए विशिष्ट आसन,- आहुति (स्त्री०) प्रार्थनापरक मन्त्रों का पाठ, स्वस्तिवाचन, दे० ब्रह्मयज्ञ, उच्छिष्टता वेदों को भूल जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० ११।५७, (अधीतवेदस्यानभ्यासेन विस्मरणम्—कुल्लू०),— उद्यम् वेद की व्याख्या करना, ब्रह्मज्ञानविषयक समस्याओं पर विचार विमर्श,- उपदेश ब्रह्मज्ञान या वेद का शिक्षण, °केतु (पु०) ढाक का वृक्ष,—ऋषि (ब्रह्मर्षि या ब्रह्म ऋषि) ब्राह्मण ऋषि, देश मडल, जिला (कुरुक्षेत्र च मत्स्याश्च पचाला शूरसेनका, एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तर —मनु० २।१९) —कन्या सरस्वती का विशेषण, कर पुरोहित वर्ग को दिया जाने वाला शुल्क,- कर्मन् (नपु०) 1 ब्राह्मण के धार्मिक कर्तव्य 2 यज्ञ के चार मुख्य पुरोहितों में ब्राह्मण का पद, कल्प ब्रह्मा की आयु, - काण्डम् ब्रह्मज्ञान से सबद्ध वेद का भाग, काष्ठ शहतूत का पेड,—कूर्चम् एक प्रकार की साधना - अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्या विशेषत, पञ्चगव्य पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,- कृत् (वि०) स्तुति करने वाला (पु०) विष्णु का विशेषण, गुप्त एक ज्योतिर्विद् का नाम जो सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था,— गोल विश्व,- गौरवम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र का सम्मान - भट्टि० ९।३६, (मा भून्मोघो ब्रह्म पाश इति),— ग्रन्थि शरीर का विशिष्ट जोड, ब्रह्मघाठ, घ्न, विशाच युवच,— रक्षस् (नपु०), —राक्षस एक प्रकार का भूत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस जो जीवन भर घृणित वृत्ति में सलग्न रहता है दूसरों को पत्नियों का तथा ब्राह्मणों की सपत्ति का अपहरण करता है (परस्य योषित हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च, अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षस याज्ञ० ३।२१२, तु० मनु० १२।६० भी), लक्षक ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—वादिनी ऋतु के दूसरे दिन की रजस्वला स्त्री, वेद: 1 वेद का सस्वर पाठ 2. पावन शब्द,

वेदस्मृती—उत्तर० ६।९ (पाठांतर), -घ्नः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,-चर्यम् 1 धार्मिक शिष्यवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम -अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावरेत् -मनु० ३।२, २।२४९, महावीर० १।२४ 2 धार्मिक अध्ययन, आत्मसंयम 3 कौमार्य, सतीत्व, विरति, इन्द्रियनिग्रह, (र्यः) वेदाध्ययनशील, —दे० ब्रह्मचारिन् ((र्या) सतीत्व, कौमार्य, °व्रतम् सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा °स्खलनम् सतीत्व या ब्रह्मचर्य से गिर जाना, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —चारिकम्, वेदों के विद्यार्थी का जीवन, चारिन् (पु०) 1 वेद का विद्यार्थी, जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण जो यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहता है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता है—मनु० २।४१, १७५, ६।८७ 2 जो आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है,—चारिणी 1 दुर्गा का विशेषण 2 वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है, -जः कार्तिकेय का विशेषण,-जारः ब्राह्मण की पत्नी का प्रेमी, —जीविन् (पु०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी आजीविका कमाता है,-ज्ञ (वि०) जो ब्रह्म को जानता है (ज्ञः) 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण,-ज्ञानम् सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान, विश्व की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान,—ज्येष्ठः ब्राह्मण का बड़ा भाई,—ज्योतिस् (नपु०) ब्रह्म या परमात्मा की ज्ञानज्योति,—तत्त्वम् परमात्मा का यथार्थ ज्ञान,—तेजस् (नपु०) 1. ब्रह्मा की कीर्ति 2. ब्रह्म की कान्ति, वह कीर्ति या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों ओर से घेरे हुए समझी जाती है,—त्रः वेदज्ञान के प्रदाता गुरु,—दण्डः 1 ब्राह्मण का शाप 2. ब्राह्मण को दिया गया उपहार 3. शिव का विशेषण,—दानम् 1 वेद पढ़ाना 2 वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वंशानुक्रम से प्राप्त होता है, —दायाद 1 ब्राह्मण, जो वेदों को आनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है 2 ब्राह्मण का पुत्र, —दारु शहतूत का पेड़, —दिनम् ब्रह्मा का दिन,-द्विट्ः वह ब्राह्मण जो राक्षस बन जाय-तु०, ब्रह्मबन्धु, —द्विष्,-द्वेषिन् (वि०) 1. ब्राह्मणों से घृणा करने वाला 2 वेदविहित क्रियाओं या भक्ति का विरोधी, अपावन, निरीश्वरवादी,-द्वेषः ब्राह्मणों की घृणा,—नदी सरस्वती नदी का विशेषण,—नाथः विष्णु का विशेषण,—निर्वाणम् परमब्रह्म में लीन होना,-निष्ठ (वि०) परमात्मचिन्तन में लीन, (ष्ठः) शहतूत का पेड़, -पदम् 1 ब्राह्मण का पद या दर्जा 2. परमात्मा का स्थान, —पवित्रः कुश नामक घास,—परिषद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा,—पादपः डाक का पेड़,—पारायणम् वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद—उत्तर० ४।९, महावीर० १।१४,—पाशः ब्रह्मा द्वारा अभिष्ठित अस्त्र विशेष —भट्टि० ९।७५,—प्रिया (पु०) विष्णु का विशेषण, —पुत्रः 1 ब्राह्मण का बेटा 2. हिमालय की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'ब्रह्मपुत्र' नाम का दरिया, (त्री) सरस्वती नदी का विशेषण,—पुरम्,-पुरी 1 (स्वर्ग में) ब्रह्मा का नगर 2 वाराणसी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम, प्रलयः ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर सृष्टि का विनाश जिसमें स्वयं परमात्मा भी विलीन माना जाता है,—प्राप्तिः (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना,—बन्धुः ब्राह्मण के लिए तिरस्कार-सूचक शब्द, अयोग्य ब्राह्मण—मा० ४, विक्रम० २ 2. जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, नाम मात्र का ब्राह्मण,—बीजम् ईश्वरवाचक अक्षर ॐ, —भूयम्ः जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है,—भवनम् ब्राह्मण का आवास,—भावः शहतूत का वृक्ष,—भावः परमात्मा में लीन होना, भुवनम् ब्रह्मा की सृष्टि —भग० ८।१६,—भूत (वि०) जो ब्रह्मा के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन,—भूतिः (स्त्री०) सत्ता, भूयम् 1 ब्रह्मा के साथ एकरूपता 2 ब्रह्मा में लीनता, मोक्ष, निर्वाण—स ब्रह्मभूय गतिमाजगाम -रघु० १८।२८, ब्रह्मभूयाय कल्पते -भग० १४।२६, मनु० १।९८ 2 ब्राह्मणत्व, ब्राह्मण का पद या स्थिति,-भूयम् (नपु०) ब्रह्म में लय, —मंगलदेवता लक्ष्मी का विशेषण मीमांसा, वेदान्तदर्शन जिसमें ब्रह्म या परमात्माविषयक चर्चा है,-मूर्ति (वि०) ब्रह्मा का रूप रखने वाला, मूर्धभृत् शिव का विशेषण,—यज्ञः मूंज घास का पौधा,—यज्ञः (गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पंचयज्ञों में से एक, वेद का अध्यापन तथा स्वर पाठ—अध्यापनं ब्रह्म यज्ञ -मनु० ३।७० (अध्यापनशब्देन अध्ययनमपि गृह्यते -कुल्लू०), योधः ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिग्रहण,—योनि (वि०) ब्रह्मा से उत्पन्न,—रत्नम् ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार, रन्ध्रम् मूर्धा में एक प्रकार का बिवर जहां से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है, राक्षसः दे० ब्रह्मराक्षस, —रातः शुकदेव का विशेषण, राशिः 1 ब्रह्मज्ञान का संग्रह या समस्त राशि, संपूर्ण वेद 2. परशुराम का विशेषण, रीतिः (स्त्री०) एक प्रकार का पीतल

रे(ले) खा,-लिखितम्,-लेखः विधाता के द्वारा मस्तक पर लिखी गई पंक्तियां जिनसे मनुष्य का भाग्य प्रकट होता है, मनुष्य का प्रारब्ध, लोकः ब्रह्मा

का लोक,—ऋषि (पुं०) वेदों का व्याख्याता, —वचस् ब्रह्म का ज्ञान, —वध्, —वध्या,—हत्या ब्राह्मण की हत्या,—वर्चस् (नपु०),—वर्चसम् 1 दिव्य आभा या कीर्ति, ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मशक्ति या तेज (तस्य हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्—रघु० १।६३, मनु० २।३७, ४।९४ 2 ब्राह्मण की अन्तर्हित पवित्रता या शक्ति, ब्रह्मतेज—श० ६, —वर्चसिन्, —वर्चस्विन् (वि०) ब्रह्म तेज से पवित्रीकृत, —शुद्धात्मा (पुं०) प्रमुख या श्रद्धेय ब्राह्मण,—सत्र दे० ब्रह्मावर्त,—सदनम् नाला,—सविद् (पुं०) 1 जो वेदों का अध्यापन करता है, वेदव्याख्याता उत्तर० १, मा० १ 2 वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—सात् ब्राह्मण का आवासस्थल,—सिद्-विद् (वि०) परमात्मा को जानने वाला, ब्रह्मज्ञ (पुं०) ऋषि, ब्रह्मवेत्ता, वेदान्ती, —सिद्धा ब्रह्मज्ञान, —सि (सि) दु वेद का पाठ करते समय मुँह से निकलने वाला थूक का छींटा, —सिरीषः इन्द्र का विशेषण, वृक्ष 1 ढाक का पेड़, 2 गूलर का वृक्ष,—सृति (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका, —सृन्दम् ब्राह्मणों की समूह,—सेव 1 वेदों का ज्ञान 2. ब्रह्म का ज्ञान 3 अथर्ववेद का नाम —सेविन् (वि०) वेदवेत्ता, तु० ब्रह्मविद्, संवर्तम् अठारह पुराणों में से एक,—सत्यम् सतीत्व या शुचिता की प्रतिज्ञा, शिरस्—शीर्षन् (नपु०) एक विशिष्ट अस्त्र का नाम, सत्रद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा —सती सरस्वती नदी का विशेषण,—सत्र्य 1 वेद का पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ 2 परमात्मा में लय होना, सदस् (नपु०) ब्रह्मा का निवासस्थान, —सभा ब्रह्मा का दरबार, ब्रह्मा की सभा या भवन,—सभव (वि०) ब्रह्मा से उत्पन्न या प्राप्त, (ब०) नारद का नामान्तर, सर्प एक प्रकार का साँप,—सायुज्यम् परमात्मा के साथ पूर्ण एकरूपता—तु० ब्रह्मण्य, —सार्ष्टिता ब्रह्मा के साथ एक रूपता मनु० ४।२३०, सावर्णि दसवें मनु का नामान्तर, सुत 1 नारद का नामान्तर, मरीचि आदि 2 एक प्रकार का केतु सू 1 अनिरुद्ध का नामान्तर 2 कामदेव का नामान्तर, सूत्रम् 1 जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे ब्राह्मण या द्विजमात्र कंधे के ऊपर से धारण करते हैं 2 बादरायण द्वारा रचित वेदान्तदर्शन के सूत्र, —सूत्रिन् (वि०) जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो, यज्ञोपवीतधारी, सृज् (पुं०) शिव का विशेषण, —स्तम्ब मलार, विश्व- -महावीर० ३।४८,—स्तेयम् अवैध उपायों से उपार्जित वेदज्ञान,—स्व ब्राह्मण की सम्पत्ति या धनदौलत, —हारिन् (वि०) ब्राह्मण का धन चुराने वाला,—हत्य (वि०) ब्रह्महत्यारा, ब्राह्मण की हत्या करने वाला, —हुतम दैनिक पाँच यज्ञों में से ९, जिसमें अतिथिसत्कार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं- मनु० ३।७४,—हृदयम्,—यम् एक नक्षत्र का नाम जिसे अंग्रेजी में कैपेल्ला कहते हैं।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्रह्मन् + यत्] 1 वेद से युक्त या व्युत्पन्न, वेद या वेदज्ञान से सम्बद्ध - ज्वलन्निव ब्राह्मण्येन तेजसा —कु० ५।३० 2 ब्राह्मण के योग्य, यम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र।

ब्राह्मत (वि०) [ब्रह्मन् + मतुप्] वेदज्ञान रखने वाला।

ब्राह्मसात् (अव्य०) [ब्रह्मन् + सात्] 1, ब्रह्म या परमात्मा की स्थिति 2 ब्राह्मणों की देखरेख में।

ब्राह्मणी [ब्रह्मन् + अण् + ङीप्] 1 ब्रह्मा की पत्नी 2 दुर्गा का विशेषण 3 एक प्रकार का गन्धद्रव्य (रेणुका) 4 एक प्रकार का पीतल।

ब्राह्मिन् (वि०) [ब्रह्मन् + इनि, टिलोप] ब्रह्मा से सम्बद्ध, (पुं०) विष्णु का विशेषण।

ब्राह्मिष्ठ (वि०) [ब्रह्मन्-+-इष्ठन्, टिलोप] वेदों का पूर्ण पण्डित, अतिशय विद्वान् या पुण्यात्मा—ब्राह्मिष्ठ-माधाय निजेऽधिकारे ब्राह्मणेभ्येव स्वजनूपमूतम्—रघु० १८।२८,—ष्ठा दुर्गा का विशेषण।

ब्राह्मी [ब्रह्मन् + अण् + ङीप्] ब्राह्मी बूटी का पौधा।

ब्राह्मेशम् [ब्रह्माणि तपसि शेते - शी + अच्, पृषो० साधु] 1 कार्तिकेय का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन् + अण्, टिलोप] ब्रह्मा विधाता या परमात्मा से सम्बद्ध,—रघु० १३।६०, मनु० २।४० भग० २।७२ 2 ब्राह्मणों से सम्बद्ध 3 वेदाध्ययन या ब्रह्मज्ञान से सम्बद्ध 4 वेदविहित वैदिक 5 विशुद्ध, पवित्र दिव्य 6 ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित जैसा कि मुहूर्त (दे० ब्राह्ममुहूर्त), या अस्त्र, हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें आभूषणों से अलंकृत कन्या, वर से बिना कुछ लिये, उसे दान कर दी जाती है (यही आठ भेदों में सर्वश्रेष्ठ प्रकार है)। —ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्तालङ्कृता - याज्ञ० १।५८, मनु० ३।२१,२७ 2 सामवेद का नामान्तर, —ह्यम् हथेली का अंगुष्ठमूल के नीचे का भाग 2 वेदाध्ययन। सम० अहोरात्र ब्रह्मा का एक दिन और एक रात, —वेद्या ब्राह्म विवाह की रीति से विवाहित की जाने वाली कन्या —मुहूर्त दिन का विशिष्ट भाग, दिन का सवेरा सवेरे का समय (रात्रेश्च पश्चिमे यामे मुहूर्तो ब्राह्म उच्यते) ब्राह्मो मुहूर्त किल तस्य देवी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् —रघु० ५।३६।

ब्राह्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [ब्रह्म वेदं शुद्धं चैतन्यं वा वक्तुमीष्टे वा - अण्] 1 ब्राह्मण का 2. ब्राह्मण के योग्य 3 ब्राह्मण द्वारा दिया गया,—णः 1 हिंदू

धर्म के माने हुए चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण का, (पुरुष- ब्रह्मा - के मुख से उत्पन्न—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक्० १०।९०।१२, मालवि० १।३१, ९६) ब्राह्मण - जन्मना जायते शूद्र संस्कारैर्द्विज उच्यते, विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते, या—जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, अभिर्यक्तो हि यस्तिष्ठेत्त्रिभिन्य स द्विज उच्यते) 2 पुरोहित, ब्रह्मज्ञानी या धर्मशास्त्री 3. अग्नि का विशेषण 4 वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है, साथ ही उनके मूल तथा विकरणात्मक व्याख्या को तत्संबंधी निदर्शनों के साथ जो उपाख्यानों के रूप में विद्यमान है, प्रस्तुत करता है वेद के मन्त्रभाग से यह बिल्कुल पृथक् है 5 वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण भाग सम्मिलित है (वेद के मन्त्रों की भाँति अपौरुषेय या श्रुति माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पृथक्-पृथक् ब्राह्मण है. ये हैं ऋग्वेद के ऐतरेय या आश्वलायन, और कौशीतकी या साङ्ख्यायन ब्राह्मण हैं, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का पञ्चविंश, षड्विंश तथा छ और हैं, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है) । सम० - अतिक्रम ब्राह्मणों के प्रति सदोष या तिरस्कार सूचक व्यवहार, ब्राह्मणों का अनादर ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये महावीर० २।८० - अभ्युपपत्ति (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा या पालन-पोषण, ब्राह्मण के प्रति प्रदर्शित कृपा मनु० ९।८७, -घ्न ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—जातम्,—जाति. (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति,—जीविका ब्राह्मण के लिए विहित वृत्ति के साधन, द्रव्यम्, -स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति, निन्दक ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला, —ब्रुव जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है, नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के विहित कर्तव्यों का पालन नहीं करता है बहवो ब्राह्मणब्रुवा निवसन्ति दश०, मनु० ७।८५, ८।२०, भूयिष्ठ (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हों —स्वः ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या, संतर्पणम् ब्राह्मणों को खिलाना या तृप्त करना ।

ब्राह्मणक [ब्राह्मण+कन्] 1 अयोग्य या नीच ब्राह्मण, नाम मात्र का ब्राह्मण 2. एक देश का नाम जहाँ योद्धा ब्राह्मणों का वास हो ।

ब्राह्मणता (अव्य०) [ब्राह्मण+तातिल्] 1. ब्राह्मणों में 2. ब्राह्मण की पदवी को—जैसा कि 'ब्राह्मणात् भवति धनम्' में ।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (पु०) [ब्राह्मणे विहितानि शस्त्राणि शंसति द्वितीयार्थे पञ्चम्युपसंख्यानम्—अलुक् स०, शंस्+इनि] एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋत्विज् का सहायक ।

ब्राह्मणी [ब्राह्मण+ङीष्] 1 ब्राह्मण जाति की स्त्री 2 ब्राह्मण की पत्नी 3 प्रतिभा (नीलकण्ठ के मतानुसार 'बुद्धि') 4 एक प्रकार की छिपकली 5. एक प्रकार की मिरड 6 एक प्रकार का घास । सम० —गामिन् (पु०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी ।

ब्राह्म्य (वि०) [ब्राह्मण+ष्यञ् या यत्] ब्राह्मण के योग्य,—ब्यः शनिग्रह का विशेषण, -ब्यम् 1 ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पौरोहित्य या याजकीय वृत्ति, —सत्य इमे ब्राह्म्येन—मृच्छ० ५, पञ्च० १।६६, मनु० ३।१७,७।४२ 2 ब्राह्मणों का समुदाय ।

ब्राह्मी [ब्रह्मा+ङीष्] 1 ब्रह्मा की मूर्तिमती शक्ति 2 वाणी की देवी सरस्वती 3 वाणी 4 कहानी, कथा 5 धार्मिक प्रथा या रिवाज 6 रोहिणी नक्षत्र 7 दुर्गा का नामान्तर 8 ब्राह्मविवाह की विधि से परिणीता स्त्री 9 ब्राह्मण की पत्नी 10 एक प्रकार की बूटी 11 एक प्रकार का पीपल 12 नदी का नामान्तर । सम० कल्प वाराही कल्प,—पुत्रः ब्राह्मी का पुत्र—दे० ऊ०, मनु० ३।२७,३७ ।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन्+ष्यञ्] 1 ब्रह्मा अर्थात् विधाता से संबंध रखने वाला 2 परमात्मा से संबद्ध 3 ब्राह्मणों से संबद्ध, -ह्यम् आश्चर्य, अचम्भा विस्मय । सम० मुहूर्त=ब्राह्ममुहूर्त,—हुतम् अतिथि-सत्कार दे० 'ब्रह्मयज्ञ' ।

ब्रुव (वि०) [ब्रू+क] बनने वाला, बहाना करने वाला, अपने आपको उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो, (समास के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव में ।

ब्रू (अदा० उभ० ब्रवीति-ब्रूते या आह) (आर्धधातुक लकारों में इस धातु में असाधारण परिवर्तन होता है, इसके रूप 'वच्' धातु से बनाये जाते हैं) 1 कहना बोलना, बात करना (द्विकर्मक धा०) तं ब्रूयाः एवम् मेघ० १०४, राम यथास्थितं सर्वं भ्राता ब्रूते स्म विस्तरम् भट्टि० ६।८, या लाघवेन कर्म ब्रूते —सिद्धा०, किं त्वां प्रतिब्रूमहे—भामि० १।४६ 2 कहना, बोलना, संकेत करना (किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर) - अहं तु शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि श० २, 3. घोषणा करना, प्रकथन करना, प्रकाशित करना, सिद्ध करना—ब्रूते हि फलेन साधवो न तु कत्थेन निजोपयोगितां - कै० २।४६, रत्न० २।१३ 4 नाम लेना, पुकारना, नाम रखना, - ब्रवीति वक्ता वे कवय-स्तन्वन्निमध्य ते बुधते - ऋक्० १५ 5. उत्तर देना —ब्रूहि मे प्रश्नान्, अनु कहना, बोलना, घोषणा करना, निह्, —व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

आ—,कहना बोलना, बात करना—मनु० ८।८५, प्रति—, उत्तर में बोलना, उत्तर या जवाब देना —प्रत्यवधीर्व्वचनम्—रघु० २।४२ वि—, 1. कहना, बोलना 2 गलत कहना, मिथ्या बतलाना।

अवेक्षणम् (नपु०) फंदा, जाल, पाश।

भ

भः [भा+ड] 1. शुक्र ग्रह का नामान्तर 2 भ्रम, भ्रान्ति, आभास, -भम् 1 तारा 2. नक्षत्र 3 ग्रह 4 राशि 5 सत्ताईस की संख्या 6. मधुमक्खी। सम०—ईश, —ईशः सूर्य,—गणः,—वर्गः 1 तारापुंज, नक्षत्रपुंज 2. राशिचक्र 3 ग्रहों का राशिचक्र में भ्रमण,—गोलः तारामंडल, —चक्रम् नक्षत्रमंडल राशिचक्र, पतिः चन्द्रमा,—भूचक्रः ज्योतिषी।

भंकिका [?] झींगुर।

भक्त (भू० क० कृ०) [भज्+क्त] 1. विभक्त, नियतीकृत, निर्दिष्ट 2 विभाजित 3. सेवित, पूजित 4 व्यस्त, दत्तचित्त 5 अनुरक्त, सलग्न, श्रद्धालु, निष्ठावान् —भग० १।३४ 6 प्रक्षालित, (भोजन आदि) पक्व, दे० भज्,—क्तः पूजक, आराधक, उपासक, पुजारी या दास, स्वामिभक्त नौकर—भक्तोऽसि मे सखा चेति —भग० ४।३, ९।३१, ७।२३,—क्तम् 1 हिस्सा, भाग 2 भोजन—मनु० ३।७४ 3 उबाला हुआ चावल, भात—उत्तर० ४।१ 4 पानी में डाल कर पकाया हुआ कोई भी अन्न। सम०—अभिलाषः भोजन की इच्छा, भूख,—उपजीवकः रसोइया,—कालः भोजन की घाली,—करः नाना प्रकार के मद्य द्रव्यों से तैयार की गई चूर्ण,—कारः रसोइया,—छन्दस् भूख,—दासः भोजन मात्र पर दूसरों की सेवा करने वाला नौकर, जिसे सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है—मनु० ८।४१५,- द्वेषः भोजन से अरुचि, मंदाग्नि,- पङ्क्तिः भात का मांड,—पोषण (वि०) भूख को उत्तेजित करने वाला,—वत्सल (वि०) अपने पूजक और भक्तों के प्रति कृपालु,—शाला 1 भोजन-कक्ष (प्राचियों की बात सुनने का कमरा) 2 भोजन-गृह।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1 विभाजन, पृथक्करण, विभाजन 2 प्रभाग, अंश, हिस्सा 3 उपासना, अनुरक्ति, सेवा, स्वामिभक्ति—कु० ७।३७, रघु० २।६३, मुद्रा० १।१५ 4 सम्मान, सेवा, पूजा, श्रद्धा 5 विन्यास, व्यवस्था—रघु० ५।७४ 6. सजावट, अलंकार, शृंगार —आबद्धमुक्ताफलभक्तिचित्रे—कु० ७।१०, ९४, रघु० १३।५९, ७५, १५।३० 7 विवेचन। सम०—नम्र (वि०) विनम्र अभिवादन करने वाला,—पूर्वकम् (अव्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक,—भाज् (वि०) 1 धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु 2 दृढ अनुराग रखने वाला, निष्ठावान्, श्रद्धालु,—मार्गः भक्ति की रीति अर्थात् परमात्मा की उपासना (शाश्वत शान्ति और मोक्ष प्राप्ति की रीति 'भक्ति या उपासना' ही समझी जाती है), योगः सानुराग निष्ठा, श्रद्धापूर्वक उपासना, राग अनुराग का विश्वास।

भक्तिमत् (वि०) [भक्ति+मतुप्] 1 उपासक, श्रद्धालु 2 निष्ठावान्, स्वामिभक्त, अनुरागी।

भक्तिल (वि०) [भक्ति+ला+क] स्वामिभक्त, विश्वासपात्र (जैसे कि घोड़ा)।

भक्ष् (चुरा० उभ०—भक्षयति-ते, भक्षित) 1 खाना, निगलना -यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि —पंच० १ 2 उपयोग में लाना, उपभोग करना 3. बर्बाद करना, नष्ट करना 4 काटना।

भक्षः [भक्ष्+घञ्] 1 खाना 2 भोजन।

भक्षक (वि०) (स्त्री०—लिका) [भक्ष्+ण्वुल्] 1 खाने वाला, निर्वाह करने वाला 2 पेटू, भोजनभट्ट।

भक्षण (वि०) (स्त्री०—णी) [भक्ष्+ल्युट्] खाने वाला, निगलने वाला,—णम् खाना, खिलाना, वीडिका चबाना।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लायक,—क्ष्यम् कोई भी भोज्य पदार्थ, खाद्य पदार्थ, आहार, (आल० भी)—भक्ष्यभक्षकयो प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम् हि० १।५५, मनु० १।११३। सम०—कारः ('भक्ष्यकार' भी) पाचक, रसोइया।

भगः [भज्+घ] 1 सूर्य के बारह रूपों में एक, सूर्य 2 चन्द्रमा 3. शिव का रूप 4. अच्छी किस्मत, भाग्य, सुखद नियति, प्रसन्नता - आस्ते भग आसीनस्य-ऐ० ब्रा०, भगमिन्द्रश्च वायुश्च भग सप्तर्षयो ददु —याज्ञ० १।२८२ 5 सम्पन्नता, समृद्धि 6. मर्यादा, श्रेष्ठता 7 प्रसिद्धि, कीर्ति 8. लावण्य, सौन्दर्य 9 उत्कर्ष, श्रेष्ठता 10 प्रेम, स्नेह 11. प्रेममय रतक्रीडाएँ, केलि, आमोद 12. स्त्री की योनि—याज्ञ० ३।८८, मनु० ९।२३७ 13. सद्गुण, नैतिकता, धर्म की भावना 14 प्रयत्न, चेष्टा 15 इच्छा का अभाव, सांसारिक

विषयों में विरक्ति 16 मोक्ष 17 सामर्थ्य 18 सर्वशक्तिमत्ता (लघु० भी अन्तिम १५ अर्थों में),—गम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र। सम०—अङ्कुरः (आयु० में) चिकु, योनिद्वार पर की गुटिका, -आवासम् दाम्पत्य-सुख प्रदान करना, ईश. शिव का विशेषण, देवः पूर्ण स्वेच्छाचारी, लम्पट —देवता विवाह की अधिष्ठात्री देवता, नक्षत्रम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र, -सदन विष्णु का विशेषण,—भक्षक बिट, दलाल, भड़ुआ, -वेदनम् वैवाहिक आनन्द की उद्घोषणा।

भगन्दर [भग+दृ+खच्, मुम्] एक रोग जो गुदावर्त में व्रण के रूप में होता है।

भगवत् (वि०) [भग+मतुप्] 1 यशस्वी, प्रसिद्ध 2 सम्माननीय, श्रद्धेय, दिव्य, पवित्र (देव, उपदेव तथा अन्य प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय व्यक्तियों का विशेषण) —अथ भगवान् कुशली काश्यप श० ५, भगवन्परदारनय जन रघु० ८।८१, इसी प्रकार भगवान् वासुदेव आदि (पु०) 1. देव, देवता 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4. जिन का विशेषण 5 बुद्ध का विशेषण।

भगवदीयः [भगवत्+छ] विष्णु का पूजक।

भगालम् [भज्+कालन्, कुत्वम्] खोपड़ी।

भगालिन् (पु०) [भगाल+इनि] शिव का विशेषण।

भगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [भग+इनि] 1 फलता-फूलता, सम्पन्न, भाग्यशाली 2 ऐश्वर्यशाली, शानदार।

भगिनिका [भगिनी+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] बहन।

भगिनी [भगिन्+ङीप्] 1 बहन 2 सौभाग्यवती स्त्री 3 स्त्री०। सम०—पति, भर्तृ (पु०) बहन का पति, बहनोई।

भगिनीयः [भगिनी+छ] बहन का पुत्र, भानजा।

भगीरथ [?] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा का नाम, सगर का प्रपौत्र, जो अनिशय घोर साधना करके स्वर्ग से दिव्य गंगा को उतार कर इस पृथ्वी पर लाया, तथा राजा सगर के ६० हजार पुत्रों (पूर्वपुरुषों) की भस्म को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी से पाताल लोक को ले गया। सम०—यत्नः,—प्रयत्न भगीरथ का प्रयास जो किसी अतिदुष्कर कार्य या भीम कर्म को आलंकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, सुता गंगा का विशेषण।

भग्न (भू० क० कृ०) [भञ्ज्+क्त] 1 टूटा हुआ, हड्डी टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पुराना 2 हताश, ध्वस्त, निराश 3 अवरुद्ध, गृहीत, निलंबित 4 बिगाड़ा हुआ, तोड़ा-फोड़ा हुआ 5 पराजित, पूर्णरूप से परास्त, छिन्न-भिन्न किया हुआ —उत्तर० ५ 6 दबाया हुआ, विनष्ट (दे० भञ्ज्),—व्रत पैर की हड्डी का टूटना। सम०—आत्मन् (पु०) चन्द्रमा का विशेषण,—आशय (वि०) जिसने कठिनाइयों और आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है, आश (वि०) निराश—भर्तृ० २।८४, हताश—भर्तृ० ३।५२, उत्साह (वि०) जिसका उत्साह टूट गया हो, जिसकी शक्ति अवसन्न हो गई हो, जिसका उत्साह, भग्न हो गया हो, -उद्यम (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर दिये गये हों, निराश, जिसका विकास अवरुद्ध हो गया हो, कामः,—क्रमः अभिव्यक्ति या निर्माण में क्रममिति का अतिक्रमण, दे० 'क्रमभंग', क्षेष्ट (वि०) निराश, हताश,—दर्प (वि०) विनीत, जिसका घमंड टूट गया हो,—निद्र (वि०) जिसकी नींद में बाधा डाल दी गई हो,—पार्श्व (वि०) जिसके पार्श्व में पीड़ा होती हो, —पृष्ठ (वि०) 1 जिसकी कमर टूट गई हो 2 सामने आता हुआ,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो, मनस् (वि०) निरुत्साहित, हतोत्साहित, व्रत (वि०) जो अपने व्रतों में निष्ठावान् न हो,—संकल्प (वि०) जिसकी योजनाओं को उत्साहहीन कर दिया गया हो।

भग्नी [=भगिनी, पृषो० साधु] बहन।

भङ्क्रा (या) स्त्री [भमिति शब्दं करोति भम्+कृ+अण्+ङीप्] दास, गोमक्षी।

भङ्क्तिः (स्त्री०) [भञ्ज्+क्तिन्] टूटना, (हड्डी का) टूटना।

भङ्गः [भञ्ज्+घञ्] 1 टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना—वार्यर्गलाभङ्ग इव प्रवृत्त —रघु० ५।४५, 2 टूट, हड्डी का टूटना, विच्छेद 3 उखाड़ना, काटना —आम्रकलिका भङ्ग —श० ६ 4 पार्थक्य, विश्लेषण 5 अंश, टुकड़ा, लड़, वियुक्त अंश—पुष्पोच्चय पल्लवभङ्गभिन्न कु० ३।६१, रघु० १६।१६ 6 पतन, अध पतन, ध्वंस, विनाश, बर्बादी जैसा कि राज्य°, सस्य° आदि में 7 अलग अलग करना, तितर-बितर करना—यात्राभङ्ग. मा० १ 8 हार, पलायन, पराभव, पराजय—पञ्च० ४।४१, शि० १६।७२ 9 असफलता, निराशा, हताश—रघु० २।४२, आशा-भंग आदि 10 अस्वीकृति, इंकारी—कु० १।४२, 11 छिद्र, दरार 12 विघ्न, बाधा, रुकावट—निद्रा° यति° आदि 13 अननुष्ठान, निलंबन, स्थगन 14 भंवर 15 मोड़, तह, लहर 16 सिकुड़न, झुकाव, संकोच या सटाना उत्तर० ५।३३ 17 गति चाल 18 लफ्फा, फालिज 19 जालसाजी, धोखेबाजी 20 नहर, जलमार्ग, नाली 21 गोलगोल या घुमघुमाकर कहने या करने का ढंग—दे० भंगि 22 पटसन। सम०—कः बाधाओं को हटाना,—काशा हल्दी,—भीरु (वि०) बेईमान, आलसी।

भङ्गया [भञ्ज्+अ+टाप्] 1 पटसन 2 पटसन से तैयार किया एक मादक पेय। सम०—कल्क पटसन का पराग।

भङ्गिमन्—गी (स्त्री०) [भञ्ज्+इन्, कुत्वम्, भङ्ग+ङीष्] 1 टूटना, हड्डी का टूटना, विच्छेद, प्रभाग 2 हिलोर 3 झुकाव, सिकुड़न—दृग्भङ्गीभि प्रथम-मधुरासवमे चुम्बितोऽसि उद्भट, गी० १३ 4 लहर 5 बाढ़, धारा 6 टेढ़ा मार्ग, घुमावदार या चक्करदार मार्ग 7 गोलमोल या घुमघुमाकर कहने या करने का ढंग, वाग्जाल भङ्ग्यन्तरेण कथनात्—काव्य० १०, बहुभङ्गिविशारद—दश० 8 बहाना, छद्मवेष, आभास —इ पाञ्चजन्यप्रतिबिम्बभङ्ग्या धाराम्भस फेनमिव व्यनक्ति—विक्रम० १।१ 9 दावपेंच, जालसाजी, धोखा 10 व्यंग्योक्ति 11 व्यंग्योत्तर, आशूत्तर 12 पद्य—रघु० १३।६९ 13 अन्तराल 14 हूी, लज्जा-शीलता। सम०—भक्ति (स्त्री०) तरंगवत् कदमों या तरंगों की शृंखला में विभाजन, लहरियेदार जीना —शिव० ६०।

भङ्गिन् (वि०) [भङ्ग+इनि] 1 शीघ्र टूटने वाला, भंगुर, अस्थायी—तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेत्—भर्तृ० २। ९१ 2 किसी अभियोग में पछाड़ा हुआ।

भङ्गिमन् (वि०) [भङ्गि+मतुप्] लहरियेदार, करारा।

भङ्गिमन् (पु०) [भङ्ग+इमनिच्] 1 (हड्डी का) टूटना, तोड़ना 2 झिकोर, हिलोर 3 घुमरालापन 4 छद्मवेश, धोखा 5 आशूत्तर, व्यंग्योक्ति 6 कुटिलता।

भङ्गिलम् [भङ्ग+इलच्] ज्ञानेन्द्रियों में कोई दोष।

भङ्गुर (वि०) [भञ्ज्+घुरच्] 1 टूटने के योग्य, भिदुर, कडकम्बल 2 दुबला-पतला, अस्थिर, अनित्य, नश्वर —आमरणान्ता प्रणया कोपास्तत्क्षणभङ्गुरा हि०। १।१८८, शि० १६।७२ 3 परिवर्तनशील, चर 4 कुटिल, टेढ़ा 5 बक, घुमरदार—शशिमुखि तव भाति भङ्गुरभ्रूः गीत० १० 6 जालसाज, बेईमान, चालाक, —रः किसी नदी का मोड़।

भज्। (भ्वा० उभ० भजति ते, परन्तु व्यवहारतः आ०, भक्त) 1 (क) हिस्से करना, विभक्त करना, बाँटना—भजेरन् पैतृकं रिक्थम्—मनु० ९।१०४, न तत्पुत्रैर्भजेत्साधर्म्यम् २०९, ११९, (ख) निर्दिष्ट करना, नियत करना, अनुभाजन करना—गायत्री-मन्वयमभजत् ऐ० ब्रा० 2 किसी के लिए प्राप्त करना, हिस्सा लेना, भाग लेना—पित्र्यं वा भजते शीलम् मनु० १०।५९ 3 स्वीकार करना, ग्रहण करना मा० ९।२५ (क) आश्रय लेना, (अपने आप को) समर्पण करना, पहुँच रखना—शिष्यस्तेऽहं भेजे का० १७९, मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम्—भर्तृ० ३।६४, न कदिचदुपात्तमप्यपथमपक्षुब्धोऽपि भजत-श० ५।१०, भामि० १।८३, रघु० १७।२८, (ख) अभ्यास करना, अनुगमन करना, पालन करना—भजे धर्ममनातुर रघु० १।२१ 5 उपभोग करना, अधिकृत करना, रखना, भोगना, अनुभव करना, मनोरंजन करना विधुरपि भजतेतरां कलङ्कम् भामि० १।७४, न भेजिरे भीमविशोष भीतिम्—भर्तृ० २।८०, व्यक्तिं भजन्त्यापदा श० ७।८, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, मा० ३।१, उत्तर० १।३५ 6 सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना रघु० २।२३ पंच० १।१८१, मृच्छ० १।३२ 7 आराधना करना, सत्कार करना (देव मान कर) पूजा करना 8 छाँटना, चुनना, पसंद करना स्वीकार करना सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मालवि० १।२ 9 शारीरिक सुखोपभोग करना,—पंच० ४।५० 10 अनुरक्त होना, भक्त बनना 11 अधिकार में करना 12 भाग्य में पड़ना (इस धातु के अर्थ—मज्जाओं के साथ जुड़कर विविध रूप ग्रहण कर लेते हैं उदा० निद्रां भज् सोना, मूर्छां भज् बेहोश होना, भाव भज् प्रेम प्रदर्शित करना आदि) वि—, 1 विभक्त करना, बाँटना—विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृत—नै० १।१६, पत्रिणां व्यभजदाश्वमाद्वहिः—रघु० ११।२९, १०।५४, शि० १।३ 2 अलग २ करना, (संपत्ति, पैतृक जायदाद आदि) बाँटना—विभक्ता भ्रातरः—'बटे हुए भाई' 3 भेद करना 4 सम्मान करना, पूजा करना, सवि—, हिस्सा लेना, हिस्से में किसी को प्रविष्ट करना वित्त यदा यस्य च सविभक्तम् ॥ (चुरा० उभ०—भाजयति-ते—कई विद्वानों के मतानुसार यह 'भज्' के ही प्रेर० रूप हैं) 1 पकाना 2 देना।

भजक [भज्+ण्वुल्] 1 बाँटने वाला, वितरक 2. पूजक, भक्त, उपासक।

भजनम् [भज्+ल्युट्] 1 हिस्से बनाना, बाँटना 2 स्वत्व 3 सेवा, आराधना, पूजा।

भजमान (वि०) [भज्+शानच्] 1 बाँटने वाला 2 उपभोक्ता 3 योग्य, सही, उचित।

भञ्ज्। (रुधा० प० भनक्ति, भग्न, इच्छा० बिभक्षति) 1 तोड़ना, फाड़ डालना, छिन्नभिन्न करना, चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, खण्डशः करना भनक्ति सर्वमर्यादा भट्टि० ६।३८, भङ्क्त्वा भुजौ—४।३, बभञ्जुर्बलयानि च ३।२२, धनुरभाजि यत्त्वया—रघु० ११।७६ 2 उजाड़ना, उखाड़ना—भनक्त्यपवनं कपि—भट्टि० ९।२ 3 (किले में) दरार डालना 4 भग्नाश करना, प्रयत्न व्यर्थ करना, निराश करना, प्रगति रोकना पिनाकिना भग्नमनोरथा सती—कु० ५।१ 5 पकड़ना, रोकना, विघ्न डालना, निलंबित

करना जैसा कि 'भग्नसिंह' में 6. हराना, परास्त करना -क्षत्राणि राम परिभूय रामात् क्षत्राद्वयाः मज्यत स द्विजेन्द्र —नै० २२।१३३, अक०—, तोड़ डालना, ध्वस्त करना—कु० ३।७४, प्र—, 1 तोड़ डालना, ध्वस्त करना, धज्जियाँ उड़ाना 2 रोकना, गिरफ्तार करना, निर्बन्धित करना 3 भग्नाश करना, निराश करना।

II (चुरा० उभ० भञ्जयति ते) उज्ज्वल करना, चमकाना।

भञ्जक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भञ्ज्+ण्वुल्] तोड़ने वाला, काटने वाला।

भञ्जन (वि०) (स्त्री०—नी) [भञ्ज्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला 2 गिरफ्तार करने वाला, रोकने वाला 3. भग्नाश करने वाला 4 प्रबल पीड़ा पहुँचाने वाला,—नम् 1 तोड़ डालना, ध्वस्त करना, विनष्ट करना 2 हटाना, दूर करना, भगा देना —तदुदितभयभञ्जनाय यूनाम्—गीत० १० 3 पराजित करना, हराना 4 भग्नाश करना 5 रोकना, विघ्न डालना, बाधा पहुँचाना 6 कष्ट देना, पीड़ित करना, -नः बातों का गिरना।

भञ्जनक. [भञ्जन+कन्] मुख का एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते हैं, होठ टेढ़े हो जाते हैं।

भञ्जाह. [भञ्ज्+अण्] मदिरा के पास उगा हुआ वृक्ष।

भट् I (भ्वा० पर० भटति, भटित) 1 पोषण करना, पालना पोसना, स्थिर रखना 2 भाड़े पर लेना 3 मजदूरी लेना II (चुरा० उभ० भटयति-ते) बोलना, बातें करना।

भट [भट्+अच्] 1 योद्धा, सैनिक, लड़ने वाला -तद्भट बानुरीनुरी नै० १।१२, वादिव्रजभृष्टिघंटते भटस्य २२।२२ भट्टि० १४।१०१ 2 भृतिभोगी, भाड़ैत सैनिक, भाड़े का टट्टू 3 जातिबहिष्कृत, वर्णसंकर 4 पिशाच।

भटित्र (वि०) [भट्+इत्र] शलाका पर रखकर पकाया गया मांस।

भट्ट [भट्+तन्] 1 प्रभु, स्वामी (राजाओं को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि) 2 विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि -भट्टगोपालस्य पौत्र—मा० १, इसी प्रकार 'कुमारिल भट्ट' आदि 3 कोई भी विद्वान् पुरुष या दार्शनिक 4 एक प्रकार की मिश्र जाति जिसका व्यवसाय भाट या चारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का स्तुति गान है—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टो जातोऽनुवाचक 5 भाट, वन्दीजन। सम०—आचार्य प्रसिद्ध अध्यापक या विद्वान् पुरुष को दी गई उपाधि 2 मिश्र,—प्रयागः =प्रयाग, इलाहाबाद।

भट्टार (वि०) [भर्तुं स्वामित्वमिच्छति भृ -अण्] 1 श्रद्धास्पद, पूज्य 2 व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि—यथा -भट्टार-हरिश्चन्द्रस्य प्रबन्धो नृपायते—हर्ष०।

भट्टारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [भट्टार+कन्] श्रद्धेय, पूज्य—आदि दे० ऊ० 'भट्टार'। सम०—वासर रविवार, ।

भट्टिनी [भट्ट+इनि+ङीप्] 1 (अभिषिक्त) रानी, राजकुमारी, (नाटकों में दासियों द्वारा रानी को संबोधन करने में बहुधा प्रयुक्त) 2 ऊँचे पद की महिला 3 ब्राह्मण की पत्नी।

भड [भण्ड्+अच्, नि० नलोप] विशेष प्रकार की एक मिश्र जाति।

भडिक [भण्ड्+इलच्, नि० नलोप] 1 नेता, धांधा 2 टहलुआ, नौकर।

भण् (भ्वा० पु० भणति,) 1 कहना, बोलना—पुरुषोत्तम इति भणितव्ये—विक्रम० ३, भट्टि० १४।१६ 2 वर्णन करना—काव्य स काव्येन सभामभाणीत्—नै० १०।५९ 3 नाम लेना, पुकारना।

भणनम्, भणितम्, भणितिः (स्त्री०) [भण्+ल्युट्, क्त, क्तिन्] 1 कहना, बोलना, बातें करना, वचन, प्रवचन, वार्तालाप- न मेधामानन्द जनयति जगन्नाथ भणिति -भामि० ४।३९, २।७७, श्रीजयदेव भणित हरिरभितम्—गीत० ७, इह रसभणने—नदेव।

भण्ड् I (भ्वा० आ० भण्डते) 1 भर्त्सना करना, छिड़कना 2 खिल्ली उड़ाना, व्यंग्य करना 3 बोलना 4 उपहास करना, मखौल करना II (चुरा० उ० —भण्डयति-ते) 1 सौभाग्यशाली बनाना 2 चमका देना (शुद्धपाठ—भट्)।

भण्ड [भण्ड+अच्] 1 भांड, मसखरा, विदूषक—त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः- सर्व० 2 एक मिश्रजाति का नाम—नु० 'भड'। सम०—तपस्विन् (पु०) बनावटी सन्यासी, ढोंगी,—हासिनी वेश्या, वारांगना।

भण्डक [भण्ड+कन्] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

भण्डनम् [भण्ड्+ल्युट्] 1 कवच, बख्तर 2 संग्राम, युद्ध 3 उत्पात, दुष्टता।

भंडिल-डी (स्त्री०) [भण्ड्+इ, भण्डि+ङीष्] लहर, तरंग।

भण्डिल (वि०) [भण्ड्+इलच्] सुखद, शुभ, सम्पन्न, सौभाग्यशाली,- लः 1 अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, कल्याण 2 दूत 3 कारीगर, दस्तकार।

भदन्त [भन्द्+झच्, अन्तादेश, नलोपश्च] 1 बौद्ध धर्मानुयायी के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक शब्द —भदन्त तिष्ठिरेव न बुध्यति—मुद्रा० ४ 2 बौद्धभिक्षु।

भद्राकः [भन्द्+आक, नलोपः] सम्पन्नता, सौभाग्य।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नि० नलोप] 1 भला, सुखद, समृद्धिशाली 2 शुभ, भाग्यवान् जैसा कि 'भद्रमुख' में 3 प्रमुख, सर्वोत्तम, मुख्य—पञ्चस्व भद्र विजितारिभद्र—रघु० १४।३१ 4 अनुकूल, अवसरभद्र 5 कृपालु, सदय, श्रेष्ठ, सौहार्दपूर्ण, प्रिय, (सबोधन एक वचन में प्रयुक्त होकर अर्थ होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य महिले' 'पूज्य श्रीमति' 6 सुहावना, उपभोज्य, प्रिय, सुन्दर—पञ्च० १।१८१ 7 स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय 8 प्रियतम, प्यारा 9 चटकदार, आकृत रमणीय, पाखण्डी, हर्ष उल्लास, सौभाग्य, कल्याण, आनन्द, समृद्धि—भद्रं भद्रं वितर भगवन् भूयसे मंगलाय—मा० १।३, ६।७, त्वयि वितरतु भद्रं भूयसे मंगलाय—उत्तर० ३।४८, (इस अर्थ में बहुधा ब० व० में प्रयोग), सर्वे भद्राणि पश्यतु भद्रं ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' तुम्हें ऐश्वर्यशाली बनाए' 2 सोना 3 लोहा, इस्पात, —न. 1 बैल 2 एक प्रकार का खजन पक्षी 3 विशेष प्रकार का हाथी 4 छप्परवेपी, पाखण्डी—मनु० ९।२५८ 5 शिव का नामान्तर 6 मेरुपर्वत का विशेषण 7 एक प्रकार का कदम्बवृक्ष (भद्रा कृ हजामत करना, बाल मूँडना भद्राकरणम् मुण्डन)। सम०—अङ्ग: बलराम का विशेषण, -आकार,—आकृति (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, आसन्न. तलवार,—आसनम् 1 राजासन, राजगद्दी, सिंहासन 2 समाधि की विशेष अवस्थिति, योग का आसन, ईश: शिव का एक विशेषण, एला बड़ी इलायची,—कपिल: शिव का एक विशेषण, कारक—(वि०) मंगलप्रद, -काली दुर्गा का नामान्तर, कुम्भ—किसी तीर्थ के जल से (विशेषकर गंगाजल से) भरा हुआ सुनहरी घड़ा,—चित्रम् जादू के रेखाचित्रों की बनावट, घट:, घटक: एक घड़ा जिसमें भाग्य की पर्चियाँ डाली जाय,—दारु (पु० नपु०) चीड़ का वृक्ष, —पीठम् (पु०) सजनपक्षी, —पीठम् 1. राजगद्दी, राज-कुर्सी, सिंहासन रघु० १७।१० 2 एक प्रकार का पंखदार कौड़ा, —भद्र: बलराम का विशेषण, —मुख (वि०) 'मांगलिक चेहरे वाला', विनम्र सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त 'मान्यवर महोदय' 'पूज्य श्रीमन्'—श० ७,—मुंज: एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण,—रेणु: इन्द्र के हाथी का नाम, वर्धन (पु०) एक प्रकार की नवमल्लिका, —शाख: कार्तिकेय का विशेषण,—श्रेष्ठ,—श्रीयम् चन्दन का काष्ठ,—श्री (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष,—सोमा नदी का विशेषण।

भद्रक (वि०) (स्त्री०—द्रिका) [भद्र+कन्] 1 शुभ, मंगलमय 2. मनोहर, सुन्दर, - क: देवदारु का वृक्ष।

भद्रकुर (नपु०) [भद्र+कृ+क्विप्, पृषो] शुभ सम्पत्ति का दाता, समृद्धकारी।

भद्रवत् (वि०) [भद्र+मतुप्] मंगलमय, (नपु०) देवदारु का वृक्ष।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1 गाय 2. चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, सप्तमी और द्वादशी 3 स्वर्गंगा 4 नाना प्रकार के पौधों के नाम। सम०—अयस् चन्दन की लकड़ी।

भद्रिका [भद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 ताबीज 2 दोयज, सप्तमी व द्वादशी नाम की तिथियाँ।

भद्रिलम् [भद्र+इलच्] 1 समृद्धि, सौभाग्य 2 कपनशील या थरथराहट वाली गति।

भम्भ. [भम्+भा+क] 1 मक्खी 2 घुआँ।

भम्भरालिका, भम्भराली [भम् इत्यव्यक्तशब्दस्य भर बाहुल्यम् आलाति—भम्भर+आ+ला+क+ङीष्=भम्भराली+कन् टाप्, ह्रस्व] 1 दीमकी 2 डाँस।

भम्भारव [भम्भा+रु+अच्] गाय का रंभाना।

भय [बिभेत्यस्मात् भी-अपादाने अच्] 1 डर, आतंक, विभीषा, आशंका (प्राय अपा० के साथ) भागे रण-भय कुले च्युतिभय विसे नपालाङ्कुशम्- भर्तृ० ३।३३ यदि स्मरमपास्य नास्ति मृत्योर्भयम् वेणी० ३।४ 2 डर, त्रास जगद्भयम् आदि 3 खतरा, जोखिम, संकट तावद्भयस्य भेतव्य यावद्भयमनागतम्, आगत तु भय वीक्ष्य नर कुर्याद्विधाचिन्तम्- हि० १।५७,—य बीमारी, रोग। सम०-अन्वित,—आक्रान्त (वि०) ज्वरग्रस्त आतुर,—आर्त (वि०) डरा हुआ आतंकित, भयभीत,- आवह (वि०) 1 भयोत्पादक 2 जोखिम वाला—स्वधर्मे निधनं श्रेय परधर्मो भयावह भग० ३।३५,- उत्तर (वि०) भय से युक्त, कर ('भयकर' भी) 1 डराने वाला, भयानक, भयपूर्ण 2 खतरनाक, संकटपूर्ण इसी प्रकार 'भयकारक' 'भयकृत', द्विग्निक युद्ध में प्रयुक्त किया जाने वाला ढाल, मारू बाजा,- द्रुत (वि०) भय के कारण भागने वाला, पराजित, भगाया हुआ, प्रतीकार भय को दूर करना, डर हटाना, प्रद (वि०) भयदायक, भयपूर्ण, भयानक, प्रस्ताव भय का अवसर,-ब्राह्मण डरपोक ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समझ कर कि ब्राह्मण अवध्य है) अपने ब्राह्मण होने की दुहाई देता है, -विप्लुत (वि०) आतंक-पीड़ित, व्यूह डर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था।

भयानक (वि०) [बिभेत्यस्मात्-भी+आनक] भयंकर, भीषण, भयजनक, डरावना—किमत्र परं भयानक स्यात्—उत्तर० २, शि० १७।२०, भग० ११।२७, -क 1 व्याघ्र 2 राहु का नामान्तर 3 भयानक रस, काव्य के आठ या नौ रसों में एक—दे० 'रस' के अन्तर्गत, कम् त्रास, डर।

भर (वि०) [भृ+अच्] धारण करने वाला, देने वाला,

भरणपोषण करने वाला आदि,—रः 1. बोझा, भार, वजन—खुरभरं भर हृत्वा—पंच० १, "अपने तीन खुरों पर ही अपने आपको सहारा देने वाला", फल-भरपरिणामप्रायाजम्बू—आदि—उत्तर० २।२०, भर-शत्या—मुद्रा० २।१८ 2 बड़ी संख्या, बड़ा परिमाण, संग्रह, समुच्चय—यत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम् —मालवि० १।१४,५४, शि० ९।४७ 3 प्रकाश, राशि ° आधिक्य—निर्भूडसौहृदभरेति गुणोज्झतेति—मा० ६।१७,लोकाभरं बिभृता—मालवि० १।१०३, कोपभरेण —गीत० ३।७ तोल की एक विशेष माप।

भरटः [भृ+अटन्] 1 कुम्हार 2 सेवक।

भरण (वि०) (स्त्री०—णी) [भृ+ल्युट्] धारण करने वाला, निर्वाह करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला, नम् 1 पालन-पोषण, निर्वाह करना, सहारा देना—रघु० १।२१, मा० ७।३३ 2 वहन करने या ढोने की क्रिया 3 लाना, प्राप्त करना 4 पुष्टिकारक भोजन 5 भाड़ा, मजदूरी, णः भरणी नामक नक्षत्र।

भरणी [भरण+ङीष्] तीन तारों का पुंज जो दूसरा नक्षत्र है, सम०—भूः राहु का विशेषण।

भरतः [भृ+क्तन्] 1 स्वामी, प्रभु 2 राजा, शासक 3 बैल, साँड 4 कीड़ा।

भरत्यम् [भरत+यत्] 1 लालन-पालन करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला 2 मजदूरी, भाड़ा 3 भरणी नक्षत्र,—त्या मजदूरी, भाड़ा। सम०—भृत् (पु०) भृति-सेवक, भाड़े का नौकर।

भरत्युः [भरत्य् (कंडवा०)+उ] 1 स्वामी 2 प्रेरक 3 मित्र 4 अग्नि 5 चन्द्रमा 6 सूर्य।

भरतः [भर तनोति-तन्+ड] 1 शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था। इसीके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष है। यह कौरव और पाण्डवों का दूरवर्ती पूर्वपुरुष था 2 दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी का बेटा, राम का एक भाई, यह बड़ा धर्मात्मा और पुण्यशील व्यक्ति था, राम के प्रति इसकी इतनी अगाध भक्ति थी कि जब कैकेयी की गर्हित माँग के अनुसार राम वन में जाने को तैयार हुए तो भरत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि उसकी अपनी माता ने ही राम को निर्वासित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर राम के नाम (राम की खड़ाऊओं को लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि चौदहवर्ष का निर्वासन समाप्त करके राम वापिस अयोध्या नहीं आये 3 एक प्राचीन मुनि का नाम जो नाटकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4. अभिनेता रंगमंच पर अभिनय करने वाला पात्र—नटीकथितवृत्तान्तो भरतः—मा० १।५ 5 भाड़े का सैनिक, केवल धन के लिए काम करने वाला नौकर 6 बंगाली, पहाड़ी 7 अग्नि का विशेषण। सम०—अग्रजः 'भरत का ज्येष्ठ भ्राता', राम का विशेषण—रघु० १४।७३, —अर्धम् भारत के एक भाग का नामान्तर,—ज्ञ (वि०) भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र का ज्ञाता, —पुत्रकः अभिनेता—वर्षः भरत का देश अर्थात् भारत, —वाक्यम् नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की नान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया)—तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् (प्रत्येक नाटक में उपलब्ध)।

भरथः [भृ+अथ] 1 प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2 अग्नि 3. संसार के किसी एक प्रदेश की अधिष्ठात्री देवी, लोकपाल।

भरद्वाजः [म्रियते मरुद्भि भृ+अप=भर, द्राग्म्या जायते द्वि+जन् ड=द्वाज, भरश्चासौ द्वाजश्च कर्म० स०] 1 सात ऋषियों में से एक का नाम 2 चातक पक्षी।

भरित (वि०) [भर+इतच्] 1 परिपूरित किया गया, पाला-पोसा गया 2 भरा हुआ, भरपूर—जयन्ताल कर्तां कुसुमभरसौरभ्यभरितम्—मालवि० १।५४, ३३।

भर्तृ [भृ+उन्] 1 पति 2 प्रभु 3 शिव का नामान्तर 4 विष्णु का नाम 5 सोना 6 समुद्र।

भर्जकः—का,—की (स्त्री०) [भ्रं इति शब्देन राजति —भ्रं+राज्+क] गीदड़।

भर्जटकम् [भृ+उट+कन्] तला हुआ मांस।

भर्गः [भृज्+घञ्] 1 शिव का नाम 2. ब्रह्मा का नाम।

भर्ग्यः [भृज्+ण्यत्] शिव का विशेषण।

भर्जन (वि०) [भृज्+ल्युट्] 1 भूनने वाला तलने वाला, पकाने वाला 2 नष्ट करने वाला,—नम् 1 भूनने या तलने की क्रिया 2 कड़ाही।

भर्तृ (पु०) [भृ+तृच्] 1 पति—यद्भूतहितमिच्छति तत्कलत्रम्—भर्तृ० २।८, स्त्रीणां भर्ता धर्मदारास्च पुंसाम् मा० ६।१८ 2. प्रभु, स्वामी, महत्तर—भर्तुः शापेन—मेघ० १, गण°, भूत° आदि 5 नेता, सेनापति, मुख्य—रघु० ७।४१ 4 भरणपोषण कर्ता, भारवहनकर्ता, प्रेरक। सम०—घ्नी अपने पति का वध करने वाली स्त्री, —दारक युवराज, राजकुमार, उत्तराधिकारी, कुमार (नाटक में बहुधा प्रयुक्त संबोधन),—दारिका युवराज्ञी (नाटकों में प्रयुक्त संबोधन शब्द),—देवम् पतिव्रत, पतिभक्ति (स्त्री) स्त्री पतिव्रता पत्नी—तु० पतिव्रता,—शोकः पति की मृत्यु पर शोक,—हरिः एक प्रसिद्ध राजा जो तीन

शतक (शृंगार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा भट्टिकाव्य का रचयिता है।

भर्तृमती [भर्तृ+मतुप्+ङीप्] विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित हो।

भर्तृमात् (अव्य०) [भर्तृ+मात्रि] पति के अधिकार में, पत्नी विवाहित हुई।

भर्त्स् (चुरा० आ०-भर्त्सयते, कभी २ पर० भी) 1 धमकाना, घुड़कना 2 झिड़कना, बुरा भला कहना, अपशब्द कहना 3. व्यय करना, निस्—, 1 झिड़कना, निन्दा करना, गाली देना 2 आगे बढ़ जाना, ग्रहण लगना, लज्जित करना कु० ३।५३, ।

भर्त्सक [भर्त्स्+ण्वुल्] धमकी देने वाला, घुड़कने वाला।

भर्त्सनम्, भर्त्सना, भर्त्सितम् [भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्, क्त वा] 1 धमकाना, घुड़कना 2 धमकी, झिड़की 3. बुरा भला कहना, गाली देना 4 अभिशाप।

भर्म् [भृ+मनिन्, नि० नलोप] 1 मजदूरी, भाड़ा 2 सोना 3 नाभि।

भर्म्या [भर्मन्+यत्+टाप्] मजदूरी, भाड़ा।

भर्म (नपु०) [भृ+मनिन्] 1 सहारा, सहायता, पालन-पोषण 2 मजदूरी, भाड़ा 3 सोना 4 सोने का सिक्का 5 नाभि।

भल् । (चुरा० आ०—भालयते, भालित) देखना, अवलोकन करना, -नि—, (पर० भी) 1 देखना, अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, निगाह डालना—निभाल्य भूयो निजगौरिमाण मा नाम मान सहसैव यासो—भामि० ३।१७६, या-यन्मा न भामिनि निभालयसि प्रभातभीलारविन्दमदभङ्गिपदं कटाक्षं—३।४ ।) (भ्वा० आ०) दे० 'भल्ल्'

भल्ल् (भ्वा० आ० भल्लते, भल्लित) 1 वर्णन करना, बयान करना, कहना 2 घायल करना, चोट पहुंचाना, मार डालना 3 देना।

भल्ल,-ल्लो-ल्लम् [भल्ल्+अच्, स्त्रियां ङीप्] एक प्रकार का अस्त्र या बाण—क्वचिद्दाकर्णविकृष्टभल्लवर्षी—रघु० ९।६६, ४।६३, ७।५८,—ल्ल. 1 रीछ 2 शिव का विशेषण 3 भिलावे का पौधा, ('भल्ली' भी)।

भल्लक [भल्ल+कन्] रीछ।

भल्लातः, भल्लातक [भल्ल्+आत्+अच्, भल्लात+कन्] भिलावे का पौधा।

भल्लूकः, भल्लूकः [भल्ल्+ऊक, पक्षे पृषो० ह्रस्व] 1 रीछ, भालू- वधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनाम्—उत्तर० २।२१ 2 कुत्ता।

भव (वि०) [भवत्यस्मात्-भू+अपादाने अप्] (समास के अन्त में) उदय होता हुआ या उत्पन्न, जन्म लेता हुआ,—वः 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2 जन्म, उत्पत्ति भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्—रघु० ३।१४, श० ७।२७ 3 स्रोत, मूल 4 सांसारिक अस्तित्व, सांसारिक जीवन, जीवन—जैसा कि भवार्णव, भवसागर आदि में—कु० २।५१ 5 संसार 6 कुशल-क्षेम, स्वास्थ्य, समृद्धि 7 श्रेष्ठता, उत्तमता 8 शिव का नाम दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी—कु० १।२१ ३।७२ 9 देव, देवता 10 अभिग्रहण, प्राप्ति। सम० अतिग (वि०) सांसारिक जीवन पर विजय पाने वाला, वीतराग, अन्तकृत् ब्रह्मा का विशेषण—अन्तरम् दूसरा जीवन (भूत या भावी) पंच० १।१२१,—अब्धिः,—अर्णवः, समुद्रः—सागरः,—सिन्धुः सांसारिक जीवन रूपी समुद्र, -अपगा, नी गंगा नदी, -अरण्यम् 'सांसारिक जीवन रूपी जंगल' सुनसान संसार, आत्मजः गणेश या कार्तिकेय का विशेषण, उच्छेदः सांसारिक जीवन का विनाश—रघु० १४।७४ क्षिति (स्त्री०) जन्मस्थान, घस्मरः दावानल, जंगल की आग,—छिद् (वि०) सांसारिक जीवन के बन्धनों को काटने वाला, जन्म की पुनरावृत्ति को रोकने वाला—भवच्छिदस्थम्बकपादपाश्रय का० १, छेदः पुनर्जन्म का रोकना शि० १।३५, -दारु (नपु०) देवदारु का वृक्ष, -भूतिः एक प्रसिद्ध कवि का नाम, (दे० परि० २) भवभूतेः सर्वत्राद्भूधरभूरेव भारती भाति, एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति प्राचा। आर्या सप्त० ३६, —रुः (पु०) अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर बजने वाला ढोल, वीति (स्त्री०) सांसारिक जीवन से छुटकारा- कि० ६।४१।

भवत् (वि०) (स्त्री०—ती) [भू+शतृ] 1 होने वाला, घटित होने वाला, घटने वाला 2 वर्तमान—समतीत च भवच्च भावि च—रघु० ८।७८, (सार्व० वि०) (स्त्री०—ती) आदरसूचक, या सम्मानसूचक सर्वनाम—जिसका अनुवाद है 'आदरणीय श्रीमान्' 'पूज्य श्रीमति' (मध्यम पुरुष, पुरुषवाचक सर्वनाम के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त, परन्तु क्रिया अन्य पुरुष की)—अथवा कथं भवान् मन्यते—मालवि० १, भवन्त एव जानन्ति रघूणां च कुलस्थितिम्—उत्तर० ५।२३, रघु० २।४०, ३।४८, ५।१६, प्रायः इसके साथ 'अत्र' या 'तत्र' भी जोड़ दिया जाता है (शब्दों का देखो) कभी कभी 'स' के साथ लगा दिया जाता है यन्मया विषयेषिणा मंसभवादृशेषुक्त—मा० १।९।

भवदीय (वि०) [भवत्+छ] माननीय महोदय का, आपका, तुम्हारा।

भवनम् [भू+ल्युट्] 1 होना, अस्तित्व 2 उत्पत्ति, जन्म 3 आवास, निवास, घर, मकान—अथवा भवन-

प्रत्ययात् प्रविष्टोऽस्मि—मृच्छ० ६, मेघ० ३२ 4 स्थान, आवास, आधार जैसा कि 'अखिलयज्ञभवनम्' में पद्य० १।१९१ 5 इमारत 6 प्रकृति । सम० —उदरम् घर का मध्यवर्ती भाग, —पतिः, —स्वामिन् (पु०) घर का स्वामी, कुल का पिता ।

भवन्तः,—न्ति [भू+शतृ (झिच्) अन्तादेश] इस समय, वर्तमान काल में ।

भवन्ती [भू+शतृ+ङीप्] गुणवती स्त्री ।

भवानी [भव+ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी या पार्वती का नाम —आलम्बतामग्रकरस्थमत्र भवो भवान्या —कि० ५।२९, कु० ७।८४, मेघ० ३६, ४४, । सम० गुरु. हिमालय पर्वत का विशेषण, पतिः शिव का विशेषण —अधिवसति सदा यदेन जनैरविदितविभवो भवानीपतिः कि० ५।२१ ।

भवादृक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) भवादृश (वि०) भवादृश (वि०) (शी) (वि०) आपका भांति, तुम्हारे भांति ।

भविक (वि०) (स्त्री०—की) 1 दाता, उपयुक्त, उपयोगी 2 सुखद, फलता-फूलता हुआ,—कम् सफलता, कल्याण ।

भवितव्य (वि०) [भू+तव्यत्] होने वाला, घटित होने वाला, होनहार (बहुधा भाववाच्य में प्रयोग होता है अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा क्रिया नपु०, ए० व० में रखकर—त्वया मम महायज्ञे भवितव्यम् —श० २, गुरुणा कारणेन भवितव्यम् —श० २), —व्यम् अवश्यभावी, भवितव्य भवत्येव यद्विधेर्मनसि स्थितम्—सुभा० ।

भवितव्यता [भवितव्य+तल्+टाप्] अनिवार्यता, होनी, प्रारब्ध, भाग्य —भवितव्यता बलवती—श० ६, सर्वं हुया भगवती भवितव्यतैव —मा० १।२३ ।

भवित्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [भू+तृच्] होने वाला, भावी—रघु० ६।५२, कु० १।५० ।

भविष्णुः [भवाय इन सूर्यं, पृषो० साधु] कवि (भविष्णु—पु० भी इसी अर्थ में) ।

भविष्णु [भू+इष्णुच्]—भूष्णु होने वाला ।

भविष्य (वि०) [भू+लृट्—स्य+शतृ, पृषो० त लोप] 1 आगे आने वाला 2 भावी आसन्न निकटवर्ती, —व्यम् भावी काल, उत्तर काल । सम०—काल भविष्यत् काल, ज्ञानम् आगे होने वाली बातों की जानकारी, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम ।

भविष्यत् (वि०) (स्त्री०—ती,—न्ती) भू+लृट् स्य+शतृ] होने वाला, आगामी समय में होने वाला । सम० —कालः उत्तर काल,—वक्तृ,—वादिन् (वि०) आगे होने वाली घटनाओं को बताने वाला, भविष्यवाणी करने वाला ।

भव्य (वि०) [भू+यत्] 1 विद्यमान, होने वाला, प्रस्तुत रहने वाला 2 आगे होने वाला, आने वाले समय में घटित होने वाला 3 होनहार 4 उपयुक्त, उचित, लायक, योग्य कि० ११।१३ 5 अच्छा, बढ़िया, उत्तम 6 शुभ, भाग्यवान्, आनन्दप्रद—कु० १।२२, कि० १।१२, १०।५१ 7 मनोहर, प्रिय, सुन्दर 8 सौम्य, शान्त, मृदु 9 सत्य, —व्यम् 1 सत्ता 2 भावी काल 3 परिणाम, फल 4 अच्छा फल, समृद्धि —रघु० १७।५३ 5 हड्डी ।

भष् (स्वा० पर० भषति) 1 भौंकना, गुर्राना, भूकना 2 गाली देना, झिड़कना, डाटना-फटकारना, धमकाना ।

भषः, भषकः [भष्+अच्, ण्वुल् वा] कुत्ता ।

भषणम् [भष्+ल्युट्] कुत्ता, —म् कुत्ते का भौंकना, गुर्राना ।

भस्त्र (पु०) [भस्+अत्रि] 1 सूर्य 2 मास 3 एक प्रकार की वस्त्र 4 समय 5 होगी 6 पिछला भाग (स्त्री० और नपु० भी) 7 योनि ।

भस्त्रन् [भस्+ष्ट्रन्] नपुंसकलिंग ।

भस्मन् [भस्+झच् अन्तादेश] काल, समय ।

भस्मित (वि०) [भस्+क्त] जल कर भस्म बना हुआ, —तम् भस्म भामि० १।८४ ।

भस्त्रका, भस्त्रा, भस्त्रिः (स्त्री०) [भस्+ष्ट्रन्+कन्+टाप्, भस्त्र+टाप्+भस्त्र+इका] 1 धौंकनी 2 जल भरने के लिए चमड़े का पात्र, मशक 3. चमड़े का थैला, खोली ।

भस्मकम् [भस्मन्+कन्] 1 सोना या चांदी 2 एक रोग जिस में जो कुछ खाया जाय तुरन्त पचा जैसा जाता हो (परन्तु वस्तुतः पचता नहीं) और तीव्र भूख लगी रहती है 3 आंखों का एक रोग ।

भस्मन् (नपु०) [भस् +मनिन्] 1 राख (कहावत) —ध्रुवं वितीर्णभस्मनां विशुद्धये—कु० ५।७९, 2. विभूति या पवित्र राख (जो शरीर में मली जाती है), (भस्मनि हु राख में आहुति देना अर्थात् व्यर्थ कार्य करना,—भस्मसात् भस्मीकृ जला कर राख करना, भस्मीभू जल कर राख हो जाना—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः सर्वे०) । सम० अग्नि भोजन के जल्दी पच जाने से तीव्र भूख का लगे रहना, —अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में रह जाय—कु० ३।७२, —आहुतः कपूर, उद्धूलनम् गुण्डनम् शरीर पर राख मलना भस्मोद्धूलनं भद्रमस्तु भवते काव्य० १०,—आरः खोवी,—कूटः

राख का ढेर,—अम्बाः,-अम्बिका,-अम्बिनी एक प्रकार का मक्खन, - तुल्य, 1 कुहरा, हिम 2. धूल की बौछार 3. बादलों का समूह,—प्रियः शिव का विशेषण,—रोग एक प्रकार की बीमारी—तु० भस्माग्नि, लेपनम् शरीर पर राख मलना, विधिः राख से किया जाने वाला अनुष्ठान,—शेषकः कपूर,—स्नानम् राख मल कर निर्मल करना।

भस्मता [भस्मन्+तल्+टाप्] राख का होना।

भस्मसात् (अव्य०) [भस्मन्+सात्] राख की स्थिति में, कुछ जलाकर राख कर देना।

भा (अदा० पर०—भाति, भात, प्रेर० भापयति-ते, इच्छा० बिभासति) चमकना, उज्ज्वल होना, चमकदार या चमकीला होना पङ्क्तिविना खरो भाति सदं खलजनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्य मालस विधर्यविना—भामि० १।११६, समतीत्य भाति जगती जगतो—कि० ५।२५, रघु० ३।१८ 2 दिखाई देना, प्रतीत होना—बुभुक्षित न प्रतिभाति किंचित्—महाभाष्य 3 होना, विद्यमान होना 4 इतराना, अभि—, चमकना—दिवि स्थिति सूर्य इवाभिभाति—महा०, आ—,1 चमकना, जगमगाना, शानदार प्रतीत होना—नरेन्द्रकन्यास्तमवाप्य सत्पति तमोनुद वत्सतुता इवाबभु—रघु० ३।३३ 2 दिखाई देना, प्रकट होना—रघु० ५।१५, ७०, १३।१४, निस्—,1 चमक उठना, जगमगाना—अलक्षितोज्वलयेन निर्वभौ—रघु० ११।६६ 2 प्रगति करना, उन्नति करना, विचारों में आगे बढ़ना—वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ—मनु० ५।४४, २।१०, प्र—, 1 प्रकट होना 2 चमकना, प्रकाशित होने लगना, प्रभात काल होना—ननु प्रभातारजनी या० ४, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी—रघु० २।३, प्रति—, 1 चमकना, चमकदार या चमकीला प्रकट होना—प्रतिभान्त्यद्य बनानि केतकानाम्—घट० १५ 2. इतराना, बनना 3 दिखाई देना, प्रकट होना—स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे—श० २।९, रघु० २।४७, कु० ५।३८, ६।५४ 4 सूझना, मन में आना—नोत्तर प्रतिभाति मे, वि—, 1 चमकना—भर्तृ० २।७१ 2 दिखाई देना, प्रकट होना, व्यति—, (आ०) बहुत चमकना, जगमगाना अपि लोकयुग वृत्तावपि श्रुतदृष्टा रमणीगुणा अपि, श्रुतिगामितया दमन्तसुव्यतिभाते नितरा धरापते—नै० २।२२, (यहाँ क्रिया इसी प्रकार 'युगम्', 'दृशौ' और 'गुणा' के साथ भी बन सकती है—तु० पा० १।३।१४)।

भा [भा+अङ्+टाप्] 1 प्रकाश, आभा, कान्ति, सौन्दर्य—तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदय—उद्भट 2 छाया, प्रतिबिंब। सम०—कोशः—कः सूर्य, - गणः तारापुंज, तारकावली,—निकरः प्रकाशपुंज, किरणों का समूह,—नेमिः सूर्य,—मंडलम् प्रभामंडल तेजोमंडल।

भाकर दे० भास्कर 'भास्' के अन्तर्गत।

भाक्त (वि०) [भक्त—अण्] 1. जो नियमित रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराश्रित, सेवा के लिए प्रतिश्रुत अर्थात् अनुजीवी 2 भोजन के योग्य 3 घटिया, गौण (विप० मुख्य) 4 गौण अर्थ में प्रयुक्त।

भाक्तिकः [भक्त+ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी।

भाक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी)[भक्षा+अण्] पेटू, भोजनभट्ट।

भाग [भज्+घञ्] 1 खण्ड, अंश, हिस्सा, प्रभाग, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागश आदि में 2. नियतन, वितरण, विभाजन 3 भाग्य, किस्मत - निर्भागभाग परिणत - उत्तर० ४ 4 किसी पूर्ण का एक खण्ड, भिन्न 5 किसी भिन्न का अंश 6 चौथाई, चतुर्थ भाग 7 किसी वृत्त की परिधि का ३६० वां भाग या अंश 8 राशिचक्र का तीसवाँ अंश 9 लब्धि 10 कक्ष, अन्तराल, जगह, क्षेत्र, स्थान रघु० १८।४७। सम० अर्ह (वि०) दाय या पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी, कल्पना हिस्सों का विभाजन, —जाति (स्त्री०) (गणि० में) भिन्न राशियों के घटा कर हर समान करना,—धेयम् 1 हिस्सा, खण्ड, अंश नीवारभागधेयोचितमृगं - रघु० १।५० 2 किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध 3 अच्छी किस्मत, सौभाग्य तद्भागधेय परम पशूना भर्तृ० २।१२ 4 सम्पत्ति 5 आनन्द, (म) 1 कर—शः २ 2 उत्तराधिकारी, —भाज् (वि०) स्वार्थपर, हिस्सेदार, साझीदार,—भृत् (पु०) राजा, प्रभु,—लक्षणा लक्षणा शब्दशक्ति का एक भेद या शब्द का गौण प्रयोग जिससे शब्द अपने अर्थ को अंशतः रखता है तथा अंशतः खो देता है, 'जहदजहल्लक्षणा' भी इसे ही कहते हैं—उदा० सोऽयं देवदत्तः, हरः 1 सहउत्तराधिकारी 2. (गणि० में) भाग या तक्सीम, हारः (गणि० में) भाग।

भागवत (वि०) (स्त्री०—ती) [भगवत भगवत्या वा इदं सोऽस्य देवता वा अण्] 1 विष्णु से संबंध रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2 देवता संबंधी 3 पवित्र, दिव्य, पुण्यशील,—तः विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भक्त,—तम् अठारह पुराणों में से एक।

भागशस् (अव्य०) [भाग+शस्] 1 खण्डों में या अंशों में, खण्ड खण्ड करके 2 हिस्से के अनुसार।

भागिक (वि०) [भाग+ठन्] 1. खण्ड सम्बन्धी 2 खण्ड बनाने वाला 3 भिन्न सम्बन्धी 4 ब्याज वहन करने वाला (भागिक शतम्) 'सौ में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत', इस प्रकार भागिक विंशति, आदि)।

भागिन् (वि०) [भज्+घिनुण्] 1. हिस्से या भागों से युक्त 2 हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3. हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, साझी यथा दुःख°

4 सम्बन्धित, ग्रस्त 5 अधिकृतधारी, स्वामी—मनु० ९।५३ 6 हिस्से का अधिकारी मनु० ९।१६५, याज्ञ० २।१२५ 7 भाग्यवान्, किस्मत वाला 8 घटिया, गौण।

भागिनेय [भगिनी+ढक्] बहन का पुत्र, भानजा,—यी भानजी।

भागीरथी [भगीरथ+अण्+ङीष्] 1 गंगा नदी का नामान्तर- भागीरथी निर्झरणोकराणाम् कु० १।१५ 2 गंगा की तीन मुख्य शाखाओं में एक।

भाग्यम् [भज्+ष्यत्] 1 किस्मत प्रारब्ध, तकदीर, सौभाग्य या दैव- स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्य — सुभा० (बहुधा ब० व० में) श० ५।३० 2 अच्छा भाग्य या किस्मत रघु० ३।१३ 3 समृद्धि, सम्पन्नता—भाग्येष्वनुत्सेकिनी श० ४।१७ 4 आनन्द, कल्याण। सम०- आयत्त (वि०) भाग्य पर आश्रित—भाग्यायत्तमतः परम् श० ४।१६ उदय सौभाग्य का प्रभात, भाग्यशाली घटना, -क्रम भाग्य की चाल, किस्मत का फेर—भाग्य क्रमेण हि घनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३, योग- भाग्य की बेला, किस्मत का मेल, - विपर्यय- बुरी किस्मत, दुर्भाग्य—रघु० ८।४७, वशात् (अव्य०) विधि की इच्छा से, भाग्य से, किस्मत से, भाग्यवश।

भाग्यवत् (वि०) [भाग्य+मतुप्] 1 भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, आनन्दित 2 समृद्धिशाली।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भङ्गा+अण्] पटसन से निर्मित, सन का बना हुआ।

भाङ्गक [भाङ्ग+कन्] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण शीर्ण, चिथड़ा।

भाङ्गीनम् [भङ्गाया भवनं क्षेत्रम् खञ्] सन या पटसन का खेत।

भाज् (चुरा० उभ०) बाँटना वितरित करना, दे० 'भज्' प्रेर०।

भाज् (वि०) [भाज्+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) 1 हिस्सेदार, साझी, भागी 2 रखने वाला, उपभोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुख°, रिक्थ° 3 अधिकारी 4 भोक्ता, अनुभव करने वाला, सचेतन 5 अनुरक्त 6 रहने वाला, आवासी, निवास करने वाला यथा 'कुहरभाज्' 7 जाने वाला, सहारा लेने वाला खोजने वाला 8 पूजा करने वाला 9 भाग्य से बना हुआ 10 अवश्यकरणीय, कर्तव्य भट्टि० ३।२१।

भाजकः [भाज्+ण्वुल्] 1. बाँटने वाला 2 (गणि० में) वह अंक जिससे भाग किया जाय।

भाजनम् [भाज्यतेऽनेन भाज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बाँटना 2 (अंक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला, थाली पुष्पभाजनम्—श० ४, रघु० ५।२२ 4 (आल०) आधार, ग्रहण करने वाला, आशय स श्रियो भाजन नर पञ्च० १।४३, कल्याणानां त्वमसि महसां भाजन विश्वमूर्ते मा० १।३, उत्तर० ३।१५, मालवि० ५।८ 5. योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्ति—भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम् - का० १०८ 6 प्रतिनिधान 7 ६४ पलों की माप।

भाजितम् [भाज्+क्त] हिस्सा, अंश।

भाजी [भाज्+घञ्+ङीष्] चावल, भात का माड़, दलिया।

भाज्यम् [भाज्+ण्यत्] 1 अंश, हिस्सा, दाय, 3 (अंक में) लाभांश।

भाटम्, भाटकम् [भट्+घञ्, ण्वुल् वा] मजदूरी, भाड़ा, किराया।

भाटिः (स्त्री०) [भट्+णिच्+इञ्] 1 मजदूरी, भाड़ा, 2 वेश्या की कमाई।

भाट्टः [भट्ट+अण्] भट्ट का अनुयायी, कुमारिल भट्ट द्वारा स्थापित मीमांसादर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

भाणः [भण्+घञ्] नाटकीय का एक भेद, इसमें केवल रंगमंच पर एक ही पात्र होता है, जो अन्तर्वर्तियों के स्थान को आकाशभाषित का यथेष्ट प्रयोग करके पूरा कर देता है भाण स्याद्धूर्तचरितो नानावस्थान्तरात्मक, एकाङ्क एकएव निपुण पण्डितो विट सा० द० ५१३, आगे के श्लोक भी देखिये, उदा० वसन्ततिलक, मुकुन्दानन्द, लोलामधुकर आदि।

भाणकः [भण्+ण्वुल्] उद्घोषक, घोषणा करने वाला।

भाण्डम् [भाण्ड+अच्, भण्ड+ड स्वार्थे अण् वा—तारा०] 1 पात्र, बर्तन, बासन (थाली, कटोरी गिलास आदि) नीलभाण्डम् 'नील रखने का मटका' इसी प्रकार 'क्षीरभाण्डम्' 'दूध की हाँडी' सुरा°, मद्य° आदि, 2. संदूक, ट्रंक, पेटी, संदूकची क्षुरभाण्ड —पञ्च० १ 3 औजार या उपकरण, यंत्र 4 संगीत-उपकरण 5 सामान, बर्तन, माल, पण्यसामग्री, दुकानदार की वाणिज्यवस्तु मकुरागामीनि भाण्डानि—पञ्च० १ 6 माल की गाँठ 7 (आल०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति, निधि - शान्त वा रघुनन्दने तदुभय तत्पुत्र-माप्त हि मे उत्तर० ४।२४ 8 नदी का तल 9 घोड़े की जीन या साज 10 भर्त्सना, भसर्त्सरापन,— अण्डाः (पु०,ब०व०) बर्तन, पण्यसामग्री। सम० अ(आ)गार, —रम् भण्डारघर, सामान का कोठा (जहाँ घर का सामान और बर्तन आदि रक्खे जाते हैं) - भाण्डागाराग्निकृत विदुषा सा स्वय भोगभाजि - विक्रमांक० १८।४५ 2. कोष, ज्ञान° 3. संग्रह, गोदाम, भण्डार, —धनिः सौदागर,—पुटः गाड़ी,—प्रतिभाण्डकम् विनिमय, सामान की अदलाबदली की संगणना,— भरकः बर्तन

की अन्तर्वस्तु, मूल्यवान् बर्तनों के रूप में पूंजी,—शाला गोदाम, भण्डार ।

भाण्डक,—कम् [भाण्ड+कन्] छोटा बर्तन, कटोरा,—कम् काल, पथ्यसामग्री, बर्तन ।

भाण्डागारम् [भाण्ड+आ+गृ+अण्] गोदाम, भण्डार ।

भाण्डागारिन् (पु०) [भाण्डागार+इनि] गोदाम या भंडार का रखवाला ।

भाण्डिः (स्त्री०) [भण्ड्+इन् पृषो० साधु] उस्तरे का घर, पेटी । सम० कार: नाई,—शाला नाई की दुकान ।

भाण्डिक,—ल [भाण्ड+ठन्, भाण्डि+लच्] नाई ।

भाण्डिका [भाण्डि+कन्+टाप्] उपकरण, औजार, यन्त्र ।

भाण्डिनी [भाण्ड+इनि+ङीप्] पेटी, टोकरी ।

भाण्डीरः [भण्ड्+ईरच्, पृषो० साधु] बड़ का या गूलर का वृक्ष ।

भात (भू० क० कृ०) [भा+क्त] चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, चमकीला,—तः उषःकाल, प्रभात, प्रातःकाल ।

भाति (स्त्री०) [भा+क्तिन्] 1 प्रकाश, चमक, कान्ति, आभा 2 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान या प्रतीति ।

भानु [भा+नु] सूर्य ।

भाद्र भाद्रपद [भाद्रपदी वा पौर्णमासी अस्मिन् मासे भद्रा (भाद्रपदा)+अण्] चान्द्रवर्ष के एक मास का नाम (अगस्त और सितम्बर के मास में आने वाला), -द्रा (स्त्री०—ब० व०) पच्चीसवां और छब्बीसवां नक्षत्र (पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा) ।

भाद्रपदी, भाद्री [भाद्रपद+ङीप्, भद्रा+अण्+ङीष्] भाद्रपद मास की पूर्णिमा ।

भाद्रमातुर [भद्रमातुरपत्यम् -भद्रमातृ+अण्, उकारादेश] सती साध्वी माता का पुत्र ।

भानम् [भा भाव ल्युट्] 1 प्रकट होना, दृश्यमान 2 प्रकाश, कान्ति 3 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान ।

भानु [भा+नु] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक 2 प्रकाश-किरण—मण्डलाखिलदिक्प्रान्ताश्चण्डांशो पास्तु मानव -भामि० १।१२९, शि० २।५३, मनु० ८।१३२ 3 सूर्य, भानु सकृद्युक्ततुरग एव—श० ५।४, भीमभानौ निदाघे—भामि० १।३० 4 सौन्दर्य 5 दिन 6 राजा, राजकुमार, प्रभु 7 शिव का विशेषण—स्त्री० सुन्दर स्त्री । सम० केतु (क:) रु सूर्य,—ज सनिग्रह —दिनम्, —वारः रविवार, इतवार ।

भानुमत् (वि०) [भानु+मतुप्] 1 ज्योतिर्मान्, चमकीला, जगमग करता हुआ 2 सुन्दर, मनोहर (पु० सूर्य कु० ३।५५, रघु० ६।३६ ऋतु० ५।२, स्त्री दुर्योधन की पत्नी का नाम ।

भामिनी [भाम्+णिनि+ङीप्] 1 सुन्दर तरुणी, कामिनी—रघु० ८।२८ 2 कामुकी स्त्री (बहुत प्यार के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चण्डी' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है)—उपचीयत एव कापि शोभा परिरम्भे भामिनि ते मुखस्य नित्यम्—भामि० २।१ ।

भार [भृ+घञ्] 1 बोझ, वजन, ताल (आलं० से भी) कुचभारानमिता न योषित—भर्तृ० ३।२७, इसी प्रकार—प्राणीभार—मेघ० ८२, भार कायो जीवित वज्रकीलम्—मा० ९।३७, 2 (आक्रमण आदि का) धक्का, (युद्ध आदि का) अत्यन्त विचपिच भाग उत्तर० ५।५ 3 अतिरेक, भार या उड़ान—रघु० १४।६८ 4 श्रम, मेहनत, आयास 5 राशि, बड़ी मात्रा —कम्°, अटा° 6 २००० पल सोने के तोल के बराबर 7 बोझा ढोने के लिए जूआ । सम०—आक्रान्त (वि०) बोझ से अत्यन्त दबा हुआ, अधिक बोझा लिए हुए,—उद्वह कुली, बोझा ढोने वाला, उपजीवनम् बोझा ढोकर जीवन-यापन करना, कुली का जीवन,—यष्टि बोझ उठाने की लकड़ी, -वाह (वि०) (स्त्री०—आरोही), बोझा ढोने वाला, वाह: बोझा ले जाने वाला, कुली,—वाहनः बोझा ढोने वाला जानवर (नम्) गाड़ी, मालगाड़ी का डिब्बा, वाहिक, कुली, सह (वि०) जो अधिक बोझा उठा सके, (अत) बहुत मजबूत बलवान, हर, हार बोझा ढोने वाला, कुली, हारिन् (पु०) कृष्ण का विशेषण ।

भारण्ड [?] एक प्रकार का काल्पनिक पक्षी जिसका वर्णन केवल कहानियों में पाया जाता है ('भारुण्ड' भी) पञ्च० ५।१०२ ।

भारत (वि०) (स्त्री० ती) [भरत+अण्] भरत से सम्बन्ध रखने वाला या भरत की सन्तान,—तः 1 भरत की सन्तान 2 भारतवर्ष या हिन्दुस्तान का निवासी 3 अभिनेता, तम् 1 भरत का देश, भारत शि० १४।५ 2 संस्कृत में लिखा हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अनन्त उपाख्यानों के साथ भरतवंशी राजाओं का इतिहास पाया जाता है (व्यास या कृष्ण-द्वैपायन इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु यह जिस विशाल रूप में आज मिलता है निश्चित रूप से अनेक व्यक्तियों की रचना है) श्रवणाजलिपुटपेय विरचित-वान् भारताख्यममृतं य, तमहमगण्यपुण्यं कृष्णद्वैपायनं वंदे—वेणी० १।४, व्यासगिरो निर्यासं सारं विदग्धभारतं चक्रे, भूयोऽतर्यैक संज्ञां यदीदृक्षा भारती वहति आर्या० ३१,—ती वाणी, वाक्य, वचन, वाणी-प्रवाह भारतीनिर्घोष उत्तर० ३, तमर्थमिव भारत्या सूनृतया योक्तुमर्हसि—कु० ६।७९ सुवरसरुचिरा निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति—काव्य० १ 2 वाणी की देवता, सरस्वती 3 विशेष प्रकार की शैली भारती संस्कृतप्राकृतो व्याख्याप्रायो नटाश्रय—सा० द० २८५ 4 लवा, बटेर ।

भारद्वाज. [भरद्वाजस्यापत्यम् -अण्] 1 कौरव पाण्डवों की सैनिक शिक्षा के आचार्य गुरु द्रोण 2 अगस्त्य का नामान्तर 3 नक्षत्रसमूह 4. चातक पक्षी, वन हड्डी।

भारवः [भार वहति -वा+क] धनुष की डोरी।

भारवि. [?] किरातार्जुनीय नामक संस्कृतकाव्य के रचयिता, तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदय, उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भा रवेरिव, भारवेरर्थगौरवम् - उद्भट।

भारिः [इभस्य अरि पृषो० साधु] सिंह।

भारिक, भारिन् (वि०) [भार+ठक्, इनि वा] भारी पु० बोझा ढोने वाला, कुली।

भार्ग [भर्ग+अण्] भर्ग देश का राजा।

भार्गव [भृगोरपत्यम् अण्] 1 शुक्राचार्य, शुक्रग्रह का शास्ता और असुरों का आचार्य 2 परशुराम, दे० परशुराम 3 शिव का विशेषण 4 धनुर्धर 5 हाथी। सम० प्रिय हीरा।

भार्गवी [भार्गव+ङीप्] 1 दुर्गा 2 लक्ष्मी का विशेषण।

भार्य. [भृ+ण्यत्] सेवक, पराश्रयी (भरण-पोषण किये जाने के योग्य)।

भार्या [भर्तुं योग्या+भार्य+टाप्] 1 धर्मपत्नी- सा भार्या या गृहदक्षा सा भार्या या प्रजावती, सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता हि० १।१९६ 2 मादा मानकर। सम०—आद (वि०) अपनी पत्नी के वेश्यापन से जीवन निर्वाह करने वाला,—ऊढ (वि०) विवाहित (पुरुष)-भार्योढ समवज्राय—भट्टि० ४।१५, —जित पत्नी से प्रभावित पति, जोरू का गुलाम।

भार्याक [भार्या+कन्+उण्] 1 एक प्रकार का मृग 2 उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो।

भालम् [भा+लच्] मस्तक, ललाट यद्वाचा निजभाल-पट्टलिखित स्तोक महद्वा धनम्--भर्तृ० २।४९, (स्मरस्य) वपु सद्यो भालानलभसितजालास्पदमभूत्-भामि० १।८४ 2 प्रकाश 3 अंधकार। सम० अक्ष 1 भाग्यवान् पुरुष जिसके मस्तक पर भाग्य रेखा विराजमान है 2 शिव का विशेषण 3 आरा 4 कछुवा, नेत्र 1 शिव का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, -दर्शनम् सिंदूर, -दर्शिन् (वि०) 'मस्तक या ललाट को देखने वाला' अर्थात् वह नौकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति सावधान रहता है, -दृश् (पु०)--लोचनः शिव का विशेषण, -पट्टः,—पट्टम् मस्तक, ललाट।

भालु [भू+उण्, वृद्धि., रस्य ल] सूर्य।

भालूक, भाल्लूक, भाल्लूक, भाल्लूक [भलते हिनस्ति प्राणिन भल्+ऊक (ऊक)+अण्, भल्लु (ल्लू)+क +अण्] रीछ, भालू।

भावः [भू भावे घञ्] 1. होना, सत्ता, अस्तित्व सासतो विद्यते भाव -भग० २।१६ 2. होना, घटित होना, घटना 3 स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था--लताभावेन परिणतमस्या रूपम् विक्रम० ४; कातरभाव, विवर्णभाव आदि 4 रीति, ढंग 5 दर्जा, स्थिति, पद, हैसियत—देवीभाव समिता -काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेष्यभावम्, किंकरभावम् 6 (क) यथार्थ दशा या स्थिति, यथार्थता, वास्तविकता - भग० १०।८ (ख) निष्कपटता, भक्ति - स्वयि मे भावनिबन्धना रति -- रघु० ८।५२, २।२६ 7 सहज गुण, चित्तवृत्ति, प्रकृति, स्वभाव --उत्तर० ६।१४ 8 झुकाव या मनोवृत्ति, भावना, विचार, मत, कल्पना पञ्च० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।६५ 9 भावना, संवेग, रस या मनोभाव एको भाव पञ्च० ३।६६, कु० ६।९५, (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुधा दो प्रकार के होते हैं प्रधान या स्थायीभाव, तथा गौण या व्यभिचारिभाव। स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी आठ या नौ हैं। व्यभिचारिभाव गिनती में तेंतीस या चौंतीस हैं तथा स्थायिभावों का विकास करने एवं संवर्धन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा गिनती के लिए—रस० का प्रथम आनन या काव्य० का चौथा समुल्लास देखो) 10 प्रेम, स्नेह, अनुराग —इन्द्वानि भावं क्रियया विवद्व कु० ३।३५, रघु० ६।३६ 11 अभिप्राय, प्रयोजन, तात्पर्य, आशय, इति भाव (प्राय भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12 अर्थ, आशय, तात्पर्य, व्यंजना मा० १।२५ 13 प्रस्ताव, संकल्प 14 हृदय, आत्मा, मन—नयोर्विवृतभावत्वात्—मा० १।१२, भग० १८।१६ 15 विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्त्वार्थ,—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादय. --मा० १।१७, ३६, रघु० ३।४१, उत्तर० ३।३२ 16 प्राणी, जीवधारी जन्तु 17 भावमय मनन, चिन्तन (=भावना) 18 आचरण, गतिविधि, हावभाव 19 प्रीति द्योतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम संकेत--श० २।१ 20 जन्म, 21. संसार, विश्व 22. गर्भाशय 23 इच्छाशक्ति 24. अतिमानव शक्ति 25 उपदेश, अनुदेश 26. (नाटकों में) विद्वान् और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (संबोधनशब्द)—भाव अयमस्मि विक्रम० १, तो खलु भावेन तथैव सर्वं वर्त्या पाटिता --मा० १ 27. (व्या० में) भाववाचक संज्ञा का आशय, भावात्मक विचार - भावे क्त 28 भावकाव्य 29 (ज्योति -- में) जन्मकुंडली के स्थान 30. सत्ता। सम०—अनुग (वि०) स्वाभाविक, (गा) छाया,—अन्तरम् भिन्न स्थिति - अर्थः 1. स्पष्ट अर्थ या ध्वनि (किसी वाक्य या

पदोच्चय की) 2 विषय-सामग्री, -आकूतम् मन के (गुप्त) विचार -अलंकृ ४, -आत्मक (वि०) वास्तविक, यथार्थ,—आभासः भावना का अनुकरण, बनावटी या मिथ्या संवेग,—आलीना छाया,—एकरस (वि०) केवल (निष्कपट) प्रेम के रस से प्रभावित -कु० ५।८२,—गम्भीरम् (अव्य०) 1 हृदय से, हृदयतल से 2. गंभीरता के साथ, संजीदगी से,- गम्य (वि०) मन से जाना हुआ—मेघ० ८५,—ग्राहिन् (वि०) 1 आशय को समझने वाला 2. मनोभाव की कदर करने वाला,—ज्ञः कामदेव,—ज्ञ—विद् (वि०) हृदय को जानने वाला,—दर्शिन् (वि०) दे० 'भावदर्शिन्',—बन्धन (वि०) हृदय को मुग्ध करने वाला या बांधने वाला, हृदयों की कड़ी को जोड़ने वाला—रघु० ३।२४,- बोधक (वि०) किसी भी भावना को प्रकट करने वाला, भिन्न योग्य व्यक्ति, सज्जन पुरुष (नाटकों में प्रयुक्त), रूप (वि०) वास्तविक, यथार्थ, —वचनम् भावात्मक विचार को प्रकट करने वाला, क्रिया की भावाशयता को वहन करने वाला,—वाचकम् भाववाचक संज्ञा,—शबलत्वम् नाना प्रकार के संवेगों और भावों का मिश्रण (भावानां वाच्यवाचकभावमापन्नानामुदासीनानां वा व्यामिश्रणम्—रस० तदगत उदाहरण दे०),—शून्य (वि०) यथार्थ प्रेम से रहित, —सन्धि. दो संवेगों का मेल या सह-अस्तित्व—(भावसन्धिरन्योन्यानभिभूतयोरन्योन्याभिभावनयोगश्चयो सामानाधिकरण्यम्—रस० दे० तद्गत उदाहरण), —सहाहित (वि०) भावमनस्क, भक्त,—सर्ग मानसिक सृष्टि अर्थात् मानव की मनश्शक्तियों की सृष्टि और उनका प्रभाव (विप० भौतिक सर्ग या भौतिक सृष्टि), —स्थ (वि०) आसक्त, अनुरक्त, कु० ५।५८,—स्थिर (वि०) मन में दृढतापूर्वक जमा हुआ—शा० ५।२, —स्निग्ध (वि०) स्नेहसिक्त, सत्यनिष्ठा पूर्वक आसक्त—पंच० १।२८५।

भावक (वि०) [भू+णिच्+ण्वुल्] 1 उत्पादक, प्रकाशक 2 कल्याणकारक 3 उत्प्रेक्षक, कल्पना करने वाला 4 उदात्त और सुन्दर भावनाओं के प्रति रुचि रखने वाला, काव्यपरकरुचि रखने वाला,—कः 1 भावना मनोभाव 2 मनोभावों (विशेष कर प्रेम के) को बाहर प्रकट करना।

भावन (वि०) (स्त्री०—नी) [भू+णिच्+ल्युट्] उत्पादक—दे० ऊ० भावक, नः 1 निमित्तकारण 2 सृष्टिकर्ता—मा० ९।४ 3 शिव का विशेषण-नम् -ना 1 पैदा करना, प्रकट करना 2 किसी के हितों को अनुप्राणित करना 3 सम्प्रत्यय, कल्पना, उत्प्रेक्षा, विचार, धारणा —मधुरिपुरहमिति भावनशीला—गीत० ६ या भावनया त्वयि लीना—४, पंच० ३।१६२ 4 भक्ति भावना, निष्ठा पंच० ५।१०५ 5 मनन, अनुध्यान, भावात्मक चिंतन 6 कल्पना, प्राक्—कल्पना 7 निरीक्षण, गवेषणा 8 निश्चयन, निर्धारण—याज्ञ० २।१४९ 9. याद करना, प्रत्यास्मरण 10 प्रत्यक्ष ज्ञान, सज्ञान 11. (तर्क० में) प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न स्मृति का कारण—दे०, तर्क० में 'भावना' और 'स्मृति' 12 प्रमाण प्रदर्शन, युक्ति 13 सिक्त करना, सराबोर करना, किसी सूखे चूर्ण को रस से भिगोना 14 सुवासित करना, फूलों और सुगंधित द्रव्यों से सजाना।

भावकः [भाव भावेन वा अटति—अट्+अण्, अच् वा] 1 संवेग, आवेग, मनोभाव 2 प्रेम की भावना का बाह्य संकेत 3. पुण्यात्मा या पुण्यशील व्यक्ति 4 रसिक व्यक्ति 5 अभिनेता 6. सजावट, वेशभूषा।

भाविक (वि०) (स्त्री०—की) 1 प्राकृतिक, वास्तविक, अन्तर्हित, अन्तर्जात 2 भावुकतापूर्ण, भावुकता या भावना से व्याप्त 3 भावी समय,—कम् 1 उत्कट प्रेम से पूर्ण भाषा 2. (अल० में) एक अलंकार का नाम जिसमें भूत और भविष्यत् का इस विशदता से वर्णन किया गया हो कि वस्तुतः वर्तमान प्रतीत हो। मम्मट की दी हुई परिभाषा—प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः, तद्भाविकम्—काव्य० १०।

भावित (भू० क० कृ०) [भू+णिच्+क्त] 1 पैदा किया गया, उत्पादित 2 प्रकटीकृत, प्रदर्शित, निदर्शित —भावितविबुधवेगविक्रियः दश० 3 लालन-पालन किया गया, पाला पोसा गया 4 संस्कृत किया गया, कल्पना किया गया, कल्पित, कल्पना में उपन्यस्त 5 चिन्तित, मनन किया गया 6 बनाया गया, रूपान्तरित किया गया 7 मनन द्वारा गायन किया गया—दे० भावितात्मन् 8 सिद्ध, स्थापित 9 व्याप्त, भरा हुआ, संतृप्त, प्रेरित 10 डुबाया गया, सराबोर, मग्न 11 सुवासित, सुगंधित 12 मिश्रित,—तम् गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल। सम०-आत्मन्—बुद्धि (वि०) 1. जिसका आत्मा परमात्म-चिन्तन से पवित्र हो गया है, जिसने परमात्मा को प्रत्यक्ष कर लिया है 2. विशुद्ध, भक्त, पुण्यशील—पंच० ३।६६ 3 चिन्तनशील, मनस्वी रघु० १।७४ 4 व्यस्त, व्यापृत - शि० १२।३८।

भावितकम् [भावित+कन्] गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल, तथ्यविवरण।

भाविलोक्य [भू+णि+अन्] तीन लोक- (स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताल लोक)।

भाविन् (वि०) [भू+इनि, णिच्] 1 होनहार, होने वाला,—मृत्यभाविं—रघु० ११।४९ 2 होने वाला, भविष्य में घटने वाला, आगे आने वाला- लोकेन भावी पितुरेव तुल्य—रघु० १८।३८, मेघ० ४१

3. भविष्य—समतीत च भवच्च भावि च—रघु० ८।७८, प्रत्यक्षा इव दृश्यन्ते भूतभाविन—काव्य० १०, नै० ३।११ 4 होने के योग्य 5. अवश्यभावी, भवितव्य, प्राक्नियत या पूर्वनिर्दिष्ट—यदभावि न तद्भावि भाविचेत्र तदन्यथा—हि० १ 6. उत्कृष्ट, सुन्दर, भव्य,—वी 1 सुन्दर स्त्री 2 उत्तम या साध्वी महिला—कु० ५।३८ 3 स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

भावुक (वि०) [भू+उकञ्] 1 होने वाला, बदने वाला 2 होनहार 3 समृद्ध, प्रसन्न 4 शुभ, मंगलमय 5 काव्य में रुचि रखने वाला, गुणग्राही,—क: बहनोई (बहुधा नाटकों में प्रयुक्त),—कम् 1 प्रसन्नता, कल्याण, समृद्धि स एतु वो दुश्चवनो भावुकानां परपराम्—काव्य० ७ ('अप्रयुक्तत्व' नाम काव्य रचना के दोष का उदाहरण 2 प्रेम और प्रणयोन्माद से पूर्ण भाषा।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1 होने वाला, घटित होने वाला, प्राय 'भवितव्यम्' की भाँति भावरूप में प्रयुक्त—किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसै - मर्तृ० ३।४ 2 भविष्य 3 अनुष्ठेय या जो पूरा किया जाय 4. सोचे जाने या कल्पना किये जाने योग्य 5 सिद्ध या प्रदर्शित किये जाने योग्य 6 निर्धारण या गवेषणा किये जाने योग्य,—व्यम् 1 प्रारम्भ, अवश्यभावी 2 भवितव्यता।

भाष् (भ्वा० आ० भाषते, भाषित) 1 कहना, बोलना, उच्चारण करना—स्वयंकर्मीव प्रति साधु भाषितम्—कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,—सीता प्रियामेत्य वचो बभाषे—रघु० ७।६६, आत्मानं कामगिदं बभाषे—कु० ३।११, भट्टि० ९।१२२ 2 बोलना, सबोधित करना—किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे - रघु० २।४६, ३।५१ 3 बोलना, घोषणा करना, प्रकथन करना—क्षितिपालमुखं प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव—रघु० २।५१ 4 बोलना, बातें करना 5 नाम लेना, पुकारना 6 वर्णन करना,—अनु 1 बोलना, कहना 2 समाचार देना, घोषणा करना - मनु० ११।२२८, अप—, झिड़कना, बुरा भला कहना, बदनाम करना, निन्दा करना, बुराई करना—अल्पमप्यमात्र न किंचिदपभाषे—भामि० ४।२७, न केवल यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि य स पापभाक्—कु० ५।८३, अभि—, 1 बोलना, भाषण देना—मनु० २।१२८ 2. बोलना, कहना 3 प्रकथन करना, घोषणा करना, कहना, समाचार देना 4. वर्णन करना, आ—,1 बोलना, भाषण देना,—वैशम्पायनहचन्द्रापीडमाजभाष - का० ११७ 2 कहना, बोलना,—आभाषि रामेण वचः कमीयान्—भट्टि० ३।५१, परि —,परिपाटी स्थापित करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र —,कहना, बोलना—स्थितधीः किं प्रभाषेत—भग० २।५४, प्रति—,1. बदले में कहना, उत्तर देना—भट्टि० ५।३९ 2 कहना, वर्णन करना 3 एक के बाद बोलना, सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना—कामिनि तामुपगीति प्रतिभाजन्ते महाकवय—श्रुत० ६, वि—, ऐच्छिक नियम के रूप में निर्धारित करना, सम्—, मिलकर बोलना, बातचीत करना—मनु० ८।५५।

भाषणम् [भाष्+ल्युट्] 1. बोलना, बातें करना, कहना 2 वक्तृता, शब्द, बात 3 कृपापूर्ण शब्द।

भाषा [भाष्+अङ्+टाप्] 1 वक्तृता, बात—यथा 'मारुभाष' में 2 बोली, अज्ञान—मनु० ८।१६४ 3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली संस्कृत भाषा (विप० छदस् या वेद)—विभाषा भाषायाम्—पा० ६।१।१८१ (ख) कोई प्राकृत बोली (विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4 परिभाषा, वर्णन—स्थितप्रज्ञस्य का भाषा—भग० २।५४ 5 सरस्वती का विशेषण, वाणी की देवी 6 (विधि में) अभियोग की चार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप, दोषारोपण। सम०—अन्तरम् 1 अन्य वाणी या बोली 2 अनुवाद, —पादः आरोप, शिकायत—दे० 'भाषा' 6 ऊपर,—सम: एक अलंकार का नाम जिसमें शब्दक्रम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि चाहे आप उसे संस्कृत समझें और चाहे प्राकृत (कोई न कोई भेद)—उदा०—मञ्जुलमणिमञ्जीरे कलनञ्जीरे विहारसरसीतीरे, किरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च गन्धसारसमीरे - सा० द० ६४२, (एष श्लोक संस्कृतप्राकृतशौरसेनीप्राच्यावन्तीनागरापभ्रंशेष्वेकविध एव), किं त्वा भणामि विच्छेददारुणायासकारिणि, काम कुरु वरारोहे देहि मे परिरम्भणम्—मा० ६।११, (यह संस्कृत या शौरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१०।

भाषिका [भाषा+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्वम्] वक्तृता, भाषा, बोली।

भाषित (भू० क० कृ०) [भाष्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, उच्चारण किया हुआ,—तम् भाषण, उच्चारण, शब्द, बोली—मनु० ८।२६। सम०—पुंस्क =उक्तपुंस्क।

भाष्यम् [भाष्+ण्यत्] 1 बोलना, बातें करना 2. सामान्य या देहाती भाषा की कोई रचना 3 व्याख्या, वृत्ति, टीका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4 विशेषकर सूत्रों की वृत्ति जिसमें शब्दश व्याख्या और टिप्पण होते हैं (सूत्राणि यत्रांते यत्र पदं सूत्रानुसारिभि, स्वपदानि च वर्णन्ते भाष्य भाष्यविदो विदु)—संक्षिप्तस्याप्तसोऽर्थस्य वाक्यस्यार्थगरीयस', सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूता भवन्तु मे—शि० २।२४ 5. पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि का महाभाष्य। सम०—कार:—कार:—कृत्

(पुं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2 पतंजलि।

भास् (स्वा० आ० भासते, भासित) 1 चमकना, जगमगाना, जगमग करना—तावत्कामनृपातपत्रसुषम बिम्ब बभासे बिभो.—भामि० २।७४, ४।१८, कु० ६।११, भट्ट० १०।६१ 2. स्पष्ट होना, विशद होना, मन में होना—स्वदङ्गमार्दवे दृष्टे कस्य चित्ते न भासते, भालतीशशभृल्लेखाकदलीना कठोरता—चन्द्रा० ५।४२ 3 प्रकट होना—प्रेर० (भासयति-ते) 1. चमकाना, देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना अधिवसस्तनुमध्यरदीक्षितामसमभासमभासयदीश्वर —रघु० ९।२१, भग० १५।६ 2 जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट करना—भट्टि० १५।४२, अव —, 1 चमकना, कि० ३।४६, 2 प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना —आहोस्विन्मुखमवभासते युवत्या —शि० ८।२९, आ—, प्रकट होना, के समान चमकना, की तरह दिखलाई देना—स्थानान्तर स्वर्ग इवावभासे—कु० ७।३, रघु० ७।४३, १४।१२, उद्—, चमकना, के समान दिखाई देना,—निस्—, चमकना—कि० ७।३६, प्रति —, 1 चमकना 2 दिखलाई देना 3 स्पष्ट होना, प्रकट होना, वि —, चमकना।

भास् (स्त्री०) [भास्+क्विप्] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक —दृशा निशीन्दीवरचारुभासा नै० २२।४३, रघु० ९।२१, कु० ७।३ 2 प्रकाश की किरण—कि० ५।३८, ४६, ९।६, रत्न० १।२४, ४।१६ 3 प्रतिबिंब, प्रतिमा 4 महिमा, कीर्ति, विभूति 5 लालसा, इच्छा। सम०—कर 1 सूर्य—शि० ११।६९ रघु० ११।७, १२।२५ कु० ६।४९ 2 नायक 3 अग्नि 4 शिव का विशेषण 5 एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो ११ वीं शताब्दी में हुए हैं, (रत्न) सोना, °प्रिय लाल, °सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी,—करि. शनिग्रह।

भासः [भास् भावे घञ्] 1 चमक, प्रकाश, कान्ति 2 उत्प्रेक्षा 3 मुर्गा 4 सिद्ध, 5 गोष्ठ, गौशाला 6 एक कवि का नाम—भासो हास. कविकुलगुरु कालिदासो विलास प्रसन्न० १।२२, मालवि० १।

भासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [भास्+ण्वुल्] 1 प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला 2 दिखलाने वाला, विशद करने वाला 3 बोधगम्य बनाने वाला,—क एक कवि का नाम।

भासनम् [भास्+ल्युट्] 1 चमकना, जगमगाना 2 ज्योतिर्मंय, द्युतिमान्।

भासन्त (वि०) (स्त्री०—ती) [भास्+झच्, अन्तादेश] 1 चमकदार 2 सुन्दर, मनोहर,—तः 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 नक्षत्र, तारा, ती नक्षत्र।

भासु [भास्+उन्] सूर्य।

भासुर (वि०) [भास्+घुरच्] 1 चमकीला, चमकदार भव्य कि० ५।५, रघु० ५।३० 2 भयानक,—रः 1 नायक 2 स्फटिक।

भास्मन (वि०) (स्त्री०—नी) [भस्मन्+अण्, मयन्तत्वात् न टिलोप] राख से बना हुआ, राख वाला—शि० ४।६५।

भास्वत् (वि०) [भास्+मतुप्, मस्य व] चमकीला, चमकदार द्युतिमान, देदीप्यमान् —कु० १।२, ६।६०, पुं० 1 सूर्य- भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजालि - सुभा०, रघु० १६।४४ 2 प्रकाश, कान्ति, आभा 3 नायक,—ती सूर्य की नगरी।

भास्वर (वि०) [भास्+वरच्] चमकीला, प्रकाशमान, चमकदार, उज्ज्वल—रः 1 सूर्य 2 दिन।

भिक्ष् (स्वा० आ० भिक्षते, भिक्षित) 1 पूछना, प्रार्थना करना, मांगना (द्विकर्मक)—भिक्षमाणो वन प्रिया —भट्टि० ६।९ 2 याचना करना (भिक्षा की) —न यज्ञार्थं शूद्राद्विप्रो भिक्षेत कर्हिचित् —मनु० ११।२४, २५ 3 बिना प्राप्त हुए पूछना 4 क्लान्त या दुखी होना।

भिक्षणम्, [भिक्ष्+ल्युट्,] मांगना, भिक्षा मांगना, भिक्षावृत्ति, भिखारीपन।

भिक्षा [भिक्ष्+अ+टाप्] 1 मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना—मनु० ६।५६ 2 दान के रूप में जो चीज़ दी जाय भीख,—भवति भिक्षा देहि 3 मजदूरी, भाड़ा 4 सेवा। सम० अटनम् भीख मांगते हुए घूमना (न) भिक्षापात्र, साधु—अर्जम् मांग कर प्राप्त किया गया अन्न, भीख, अयनम् (णम्)=भिक्षाटन, —अशिन् (वि०) भीख मांगने वाला (पुं०) भिखारी, —आर्ह (वि०) भिक्षा के योग्य, दान के लिए उपयुक्त पदार्थ,—आशिन् (वि०) 1 भिक्षा पर निर्वाह करने वाला 2 बेईमान, -उपजीविन् (वि०) भिक्षा पर जीने वाला, भिखारी,—करणम् भिक्षा लेना, भीख मांगना,—चरणम्,-चर्यम्, चर्या भीख मांगते हुए घूमना, पात्रम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन, भीख के लिए कटोरा—इसी प्रकार भिक्षाभाण्डम्, भिक्षाभाजनम्, —वासरः भिखारी कहकर (तिरस्कार-सूचक शब्द), —वृत्ति (स्त्री०) भीख मांग कर जीना, साधु या भिक्षुक का जीवन।

भिक्षाकः (स्त्री०—की) [भिक्ष्+पाकन्] भिखारी, साधु, भिक्षुक।

भिक्षित (भू० क० कृ०) [भिक्ष्+क्त] याचना की गई, मांगा गया।

भिक्षुः [भिक्ष्+उन्] 1 भिखारी, साधु भिक्षा च भिक्षवे दद्यात्—मनु० ३।९४ 2 साधु, चौथे आश्रम में पहुँचा हुआ ब्राह्मण (जब कि वह कुटुम्ब, घर द्वार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है), सन्यासी 3 ब्राह्मण का चौथा आश्रम, सन्यास

4. बौद्ध भिक्षुक। सम०—वर्या भिक्षा माँगना, साधु का जीवन,—सङ्घः बौद्ध भिक्षुओं का समाज —सङ्घाटी फटे पुराने कपड़े, चीवर।

भिक्षुकः [भिक्ष्+उक्] भिखारी, साधु—मनु० ६।५१।

भित्तम् [भिद्+क्त] 1. भाग, अंश 2 खण्ड, टुकड़ा 3 दीवार, विभाजक दीवार।

भित्तिः [भिद्+क्तिन्] 1 तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, बाँटना 2 दीवार, विभाजक दीवार, समया सौध-भित्तिम्—दश०, शि० ४।६७ 3 (अत) कोई स्थान, जगह या भूमि जिस पर कुछ किया जा सके, आधार, आश्रय—चित्र-कर्म रचनाभित्ति विना वर्तते—मुद्रा० २।४ 4 खण्ड, लव, टुकड़ा, अंश 5 कोई भी टूटी हुई वस्तु 6 दरार, तरेड़ 7 चटाई 8 कमी, खोट 9 अवसर। सम० -खातनः चूहा,—चोरः सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर,—पातनः 1. एक प्रकार का चूहा 2 चूहा।

भित्तिका [भिद्+तिकन्+टाप्] 1 दीवार, विभाजक दीवार 2 घर की छोटी छिपकली।

भिद् I (भ्वा० पर० भिन्दति) बाँटना, टुकड़े २ करके बाँटने वाला। II (रुधा० उभ० भिनत्ति, भिन्ते, भिन्न) तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिद्र करना, बीच में से तोड़ना -अतिशीतलमध्यम्भ किं भिनत्ति न भूभृत —हि० ३।४५ तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा—मुद्रा० ३।२४, शि० ८।३९, मनु० ३।३३ रघु० ८।५५, १२।७७ 2 खोदना, उखेड़ना, खुदाई करना—उत्तर० १।२३ 3 बीच में से निकल जाना पंच० १।२११, २१२ 4 बाँटना, पृथक्-पृथक् करना द्विधा भिन्ना शिखण्डिभि -रघु० १।३९, अप्रसन्न करना -रघु० १३।३ 5 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, तोड़ना, भंग करना -समयं लक्ष्मणोऽभिनत् -रघु० १५।९४, निहृतश्च स्थितिं भिन्दन् दानवोऽसौ बलद्विषा- भट्टि० ७।६८ 6 हटाना, दूर करना शि० १५।८७ 7 विघ्न डालना, रुकावट डालना जैसा कि 'समाधिभेदिन्' में 8 बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिदन्ति मन्दा गतिमश्वमुख्य -कु० १।११ या विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा —श० १।१४ 9. खिलाना, फुलाना, फैलाना -सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् -कु० १।१२, नवोषसा भिन्नमिवैकपङ्कजम् -श० ७।१६, मेघ० १०७, 10 तितरबितर करना, बखेरना, उड़ा देना—भिन्नसा-रङ्गमुखं—श० १।३३, विक्रम० १।१६ 11 जोड़ खोलना, वियुक्त करना, पृथक् २ करना मुद्रा० ३।१३ 12 ढीला करना, विश्राम करना, खोलना —पर्यङ्कबन्धं निबिडं विभेद कु० ३।५९ 13. भेद खोलना, भण्डाफोड़ करना 14 भटकाना, उचाट करना 15 भेद करना, विभिन्न करना। कर्मवाच्य - भिद्यते, 1. टुकड़े २ होना, फटना, थरथराना—मृच्छ० ५।२२ 2. बाँटा जाना, वियुक्त किया जाना 3 फैलाना, खिलना, खिलाना 4 शिथिल या विश्रान्त किये जाना —प्रस्थानभिन्नां न बबन्ध नीवीम् —रघु० ७।९, ६६ 5 पृथक् होना (अप० के साथ) रघु० ५।३७, उत्तर० ४ 6 नष्ट किया जाना 7 भंडाफोड़ किया जाना, धोखा दिया जाना, दूर चले जाना - षट्कर्णो भिद्यते मन्त्र —पंच १।९९ 8 तंग, पीड़ित, या व्यथित किये जाना - प्रेर० भेदयति ते 1 खण्ड २ करना, फाड़ना, बाँटना फाड़ना आदि 2 नष्ट करना, विघटित करना 3. जोड़ खोलना, पृथक् २ करना 4 भटकना 5 सतीत्व या सत्पथ से डिगाना। इच्छा० (बिभित्सति —ते) तोड़ने की अभिलाषा करना, अनु—, बाँटना, तोड़ डालना, उद्—, फूटना, जमना (पौधा) पैदा होना -कु० १।२४—रघु० १३।२१, निस्—, 1 फाड़ना, फटकर अलग २ होना, टूटना भट्टि० ९।६७ 2 खोलना, धोखा देना —उत्तर ३।१, प्र—, 1 तोड़ना, फाड़ना, फाड़कर पृथक् २ करना 2 चूना, (हाथी के गण्डस्थल से) कु० ५।५०, प्रति—, पाड़ लगाना, भेदना, घुसना 2 भेद खोलना, धोखा देना 3 झिड़कना, गाली देना, निन्दा करना - प्रतिभिन्ने कान्तमपराधकृतम्—शि० ९।५८, रघु० १९।२२ 4 अस्वीकार करना, मुकरना, 5. छूना, सम्पर्क करना - कु० ७।२५, वि—, 1 तोड़ना फाड़ना 2 छेद करना, घुसना 3 बाँटना, अलग २ करना 4 हस्तक्षेप करना 5 बखेरना, तितरबितर करना, सम्—, 1 तोड़ना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना 2 मिल जाना, संगठित होना, सम्बद्ध होना, मिश्रित होना, मिलाना, एक जगह रखना —अन्योन्यसंभिन्नदृशां सखीनाम् मा० १।३३, भट्टि० ७।५।

भिदकः [भिद्+क्वुन्] तलवार,—कम् 1 हीरा, 2. इन्द्र का वज्र।

भिदा [भिद्+अङ्+टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना, चीरना—शि० ६।५ 2 वियोग 3 अन्तर 4. प्रकार, जाति, किस्म।

भिदि, भिदिरम्, भिदुः [भिद्+इ, किरच् कु वा] इन्द्र का वज्र।

भिदुर (वि०) [भिद्+कुरच्] 1 तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2 भुरभुरा, शीघ्र टूटने वाला 3. सम्मिश्रित, चितकबरा, मिला हुआ, संश्लिष्ट—नीलाश्मद्युतिभिदुराम्भसोऽपरत्र—शि० ४।२९, १९।५८,—रः प्लक्ष वृक्ष,—रम् वज्र।

भिन्नः [भिद्+क्त] 1 वेग से बहने वाला दरिया 2. एक

विशेष गर्व का भाव—तोयदागम इवोद्वपभिजयोर्नामधेयसदृश विचेष्टितम्—रघु० ११।८ (दे० मल्लि०)।

भिद्यम् [भिद्+रक्] वज्र।

भिन्द (वि) वाक: [भिन्द्+इन्=भिन्दि पालयति—पाल्+अण्] 1 हाथ से फेंका जाने वाला छोटा भाला 2 गोफिया, (गोफिया या गुलेल जैसा एक उपकरण जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायें)।

भिन्न (भू० क० कृ०) [भिद्+क्त, तस्य न:] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, फाड़ा हुआ 2 विभक्त, वियुक्त 3. पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया हुआ 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ, खुला हुआ 5 अलग, इतर (अपा० के साथ)—तस्मादयं भिन्न 6 नानारूप विविध, 7 ढीला किया हुआ 8 सम्मिश्रित, मिलाया हुआ, मिश्रित 9 विचलित 10 परिवर्तित 11 प्रचण्ड, मदोन्मत्त 12 रहित, हीन, वर्जित, (दे०भिद्),—म्र किसी रत्न में दोष या खोट,—न्नम् 1 खंड, खण्ड, टुकड़ा 2 मजरी 3 घाव, (छुरे आदि भोंकने का) आघात 4 मिश्र राशि। सम०—अञ्जनम् बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया सुर्मा—प्रयान्ति भिन्नाञ्जनवर्णतां घना—शि० १२।६८ मेघ० ५९, ऋतु० ३।५,—अर्थ स्पष्ट, विशद, सुबोध,—उदर 'दूसरी माता से उत्पन्न' सौतेला भाई,—करट मदोन्मत्त हाथी (जिसके मस्तक से मद रिसता है),—कूट (वि०) नेतृहीन (सेना आदि),—क्रम (वि०) क्रमहीन, क्रमरहित,—गति (वि०) 1 पग छोड़ कर चलने वाला, 2 तेज चाल चलने वाला,—गर्भ (वि०) (केन्द्र में) टूटा हुआ, अव्यवस्थित,—गुणता भिन्न राशियों की गुणा,—ग्रह भिन्नराशि का त्रियात, —दर्शिन् (वि०) अन्तर देखने वाला, आंशिक, —प्रकार (वि०) अलग प्रकार या किस्म का, —भाजनम् टूटा बर्तन, ठीकरा,—मर्मन् (वि०) मर्मस्थल में घाव खाया हुआ, प्राणघातक चोट से आहत, मर्याद (वि०) जिसने उचित सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है, निरादरयुक्त,—आ, तातपवादभिन्नमर्याद—उत्तर० ५ 2 असयत, अनियन्त्रित, —रुचि (वि०) अलग रुचि रखने वाला,—भिन्नरुचिर्हि लोक—रघु० ६।३०,—लिङ्गम्—वचनम् रचना में लिंग और वचन की असंगति—दे० काव्य० १०, —वर्चस्, —वर्चस्क (वि०) मलोत्सर्ग करने वाला, —वृत्त (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त, —वृत्ति (वि०) 1 बुरा जीवन बिताने वाला, कुमार्ग का अनुसरण करने वाला 2 अलग प्रकार की भावनाएँ, रुचि या संकेत रखने वाला 3 नाना प्रकार के व्यवसाय करने वाला,—संहति (वि०) न जुड़ा हुआ, विघटित,—स्वर (वि०) 1 बदली हुई आवाज वाला, हकलाने वाला 2. बेसुरा,—हृदय (वि०) जिसका हृदय चीर दिया गया हो—रघु० ११।१९।

भिण्टिका (स्त्री) एक प्रकार का पौधा, स्वेतगुंजा, सफेद घुघची।

भिल्लः [भिल्+लक्] एक जंगली जाति। सम० गवी नील गाय, तरु. लोध्रवृक्ष, —भूवनम् घुघची का पौधा।

भिल्लोट, —टकः [भिल्लप्रियम् उट पत्र यस्य ब० स०, भिल्लोट+कन्] लोध्रवृक्ष।

भिषज् (पु०) [बिभेत्यस्मात् रोग भी+षुक्, ह्रस्वश्च] 1 वैद्य, चिकित्सक—भिषजामसाध्यम्—रघु० ८।९३ 2 विष्णु का नाम। सम० —जितम् औषधि या दवा, —राज. कठवैद्य, —वर: श्रेष्ठ वैद्य।

भिष्मा, भिष्मिका, भिस्सठा, भिस्सिटा (स्त्री०) भुना हुआ या तला हुआ अनाज।

भिस्सा (स्त्री०) [भस्+स, टाप्, इत्वम्] उबाले हुए चावल।

भी (जुहो० पर० बिभेति, भीत) 1 डरना, भय खाना, भयभीत होना—मृत्योर्बिभेषि किं बाल, न स भीत विमुचति 1 रावणाद्बिभ्यती भृशम् भट्टि० ८।७०, शि० ३।४५ 2 आतुर या उत्कंठित होना (आ०) प्रेर० (भाषयति) डराना,—कुक्षिकर्पेन भाषयति सिद्धा० (भाषयते, भीषयते) डराना, त्रास देना, संत्रस्त करना —मुहो भाषयते—सिद्धा०, स्तनितेन भीषयित्वा धारा-हस्तैः परामृशसि—मृच्छ० ५।२८।

भी (स्त्री०) [भी+क्विप्] भय, डर, आतंक, संत्रास, त्रास, अभी: 'निर्भय'—रघु० १५।८, वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते—मनु० ७।६४।

भीत (भू० क० कृ०) [भी+क्त] 1 संत्रस्त, डराया हुआ, आतंकित, ग्रस्त (अपा० के साथ)—न भीतो मरणादस्मि—मृच्छ० १०।२३ 2 खतरे में डाला हुआ, आपद्ग्रस्त। सम० भीत (वि०) अत्यन्त डरा हुआ।

भीतत्रार (वि०) [भीत+त्रा+अण्] डराने वाला।

भीतत्रारम् (अव्य०) [भीत+त्रा+घञ्] किसी को कायर के नाम से पुकारना।

भीति (स्त्री०) [भी+क्तिन्] 1 डर, आशंका, भय, त्रास 2 कपकपी, थरथराहट। सम०—नाटितकम् भयभीत होने का नाट्य करना या हावभाव दिखलाना।

भीम (वि०) [बिभेत्यस्मात्, भी अपादाने मक्] भयानक, त्रास देने वाला, भयावह, डरावना, भीषण—न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्—भर्तृ० २।८०, रघु० १।१६, ३।५४,—म: 1. शिव का विशेषण 2 द्वितीय

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था, बचपन से ही यह अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, अत. इसका नाम भीम पड़ा। वृकोदर 'भेड़िये के पेट वाला' भी कहते थे। इसका अचूक अस्त्र इसकी गदा थी। महाभारत के युद्ध में इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अमोघ गदा से दुर्योधन की जंघा को चीर दिया। इसके जीवन की कुछ पहली मुख्य घटनाएँ हैं- हिडिंब और बक राक्षस को पछाड़ना, जरासंध को परास्त करना, कौरवों के विशेष कर दुःशासन के (जिसने द्रौपदी के प्रति अपमानजनक आचरण किया) विरुद्ध भीषण प्रतिज्ञा, दुःशासन के रक्त को पीकर प्रतिज्ञा की पूर्ति, जयद्रथ को पराजित करना, राजा विराट के यहाँ रसोइये के रूप में कीचक के साथ मल्लयुद्ध, तथा कुछ और कारनामें जिनमें उसने अपनी असाधारण वीरता दिखलाई। इसका नाम अपनी असीम शक्ति व साहस के कारण लोक प्रसिद्ध हो गया)। सम० - उमा का विशेषण, -कर्मन् (वि०) भयंकर पराक्रम वाला भग० १।१५, -दर्शन डरावनी शक्ल का, विकराल, -नाद (वि०) डरावना शब्द करने वाला, (दः) 1 भयानक या ऊँची आवाज शि० १५।१०, 2 सिंह 3 उन सात बादलों में से एक जो सृष्टि के प्रलय के समय प्रकट होंगे, -पराक्रम (वि०) भयानक पराक्रम वाला,-रथी मनुष्य के सत्तरवें वर्ष में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अत्यंत संकट का काल कहा जाता है) (सप्तसप्ततिमे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमी, रात्रिर्भीमरथी नाम नराणामतिदुस्तरा।), -रूप (वि०) भयानक रूप का -विक्रम (वि०) भयानक विक्रमशील,-विक्रान्तः सिंह, -विग्रह (वि०) विशालकाय, डरावनी सूरत का,- शासनः यम का विशेषण, सेन० 1 द्वितीय पाण्डवराजकुमार 2 एक प्रकार का कपूर।

भीमरथ (नपु०) युद्ध, लड़ाई।

भीमा [भीम+टाप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य, रोचना 3 हल्दी।

भीरु (वि०) (स्त्री० ः, रु) [भी+कु] 1 डरपोक, कायर, भयभीत,-आत्मा भीरु --हि० २।२६ 2. डरा हुआ (बहुधा समास में) पाप,° अधर्म,° प्रतिज्ञाभंग° आदि,-रुः 1 गीदड़ 2 बाघ, -रु (नपु०) चाँदी, स्त्री० 1 डरपोक स्त्री 2 बकरी 3 छाया 4. कानखजूरा। सम० -चेतस् (पुं०) हरिण,-त्रस्त (वि०) कायर, डरा हुआ,-हृदयः हरिण।

भीरु (रू) रु (वि०) [भी+कु+कन्, ह्रस्वादेश वा] 1. डरपोक, कायर, बुजदिल, साहसहीन 2 संकोची, -रुः 1 रीछ 2 उल्लू 3 एक प्रकार का गन्ना,-रुत्व अगल, बन।

भीरुक (रू) (स्त्री०) [भीरु+ऊङ्, पक्षे रलयोरभेदः] डरपोक स्त्री,-त्व रक्षसा भीरु यतोऽपनीता—रघु० १३।२४।

भीलु (लू) रु [भी+कलुकन्] रीछ, भालू।

भीषण (वि०) [भी+णिच्+ल्युट्, षुकागम] त्रासजनक, विकराल, डरावना, घोर, दारुण - विद्युद्विडालेक्षणभीषणाभ्र.—शि० ३।४५, -णः (साहित्य में) 1 भयानक रस—दे० भयानक 2 शिव का नाम 3 कबूतर, कपोत,-णम् भय को उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु।

भीषा [भी+णिच्+अङ्+टाप्, षुकागम] 1 त्रास देने या डराने की क्रिया, धमकाना 2 डराना, त्रास देना।

भीषित (वि०) [भी+णिच्+क्त, षुकागम] डराया हुआ, संत्रस्त।

भीष्म (वि०) [भी+णिच् +मक् षुकागम] भयानक, डरावना, भीषण, कराल,--,ष्मः (साहित्य में) 1 भयानक रस, दे० भयानक 2 राक्षस, पिशाच, दानव, भूत-प्रेत 3 शिव का विशेषण 4 शान्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र (शांतनु से गंगा में आठ पुत्र हुए, आठवाँ पुत्र यही था, पहले सात पुत्रों के मर जाने के कारण यह आठवाँ पुत्र ही अपने पिता की राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा शांतनु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी दृष्टि सत्यवती नामक एक लावण्यमयी तरुणी कन्या पर पड़ी, वह एक मछुवे की बेटी थी। यद्यपि राजा ढलती उमर का था फिर भी उसके मन में उसके लिए उत्कट उत्कंठा जागरित हुई, फलतः उसने इस अपने पुत्र को बातचीत करने के लिए भेजा। लड़की के माता पिता ने कहा कि यदि शान्तनु द्वारा हमारी पुत्री के कोई पुत्र हुआ तो, राजगद्दी का उत्तराधिकारी शांतनु का पुत्र विद्यमान होने के कारण, उसे राजगद्दी न मिल सकेगी। परन्तु शांतनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उनके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राजगद्दी पर नहीं बैठूँगा, और न कभी विवाह करूँगा जिससे कि किसी समय भी किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो निश्चित रूप से वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा शीघ्र ही लोगों में विदित हो गई और तब से लेकर उसका नाम भीष्म पड़ गया। वह आजीवन अविवाहित रहा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज की दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया, एवं अपने पुत्र तथा पौत्रों (कौरव पांडवों) का अभिभावक बना रहा। महाभारत के युद्ध में वह कौरवों की ओर से लड़ा, परन्तु शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म को घायल कर दिया, तब उसे 'शरशय्या' पर रक्खा गया। परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि उत्तरायण में न प्रविष्ट हो, अब सूर्य ने वसन्त विषुव को पार किया तब कहीं उसने अपने प्राण त्यागे। वह अपने संयम, बुद्धिमत्ता, संकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हो गया)। सम०—जननी गंगा का विशेषण, —पञ्चकम् कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं)। —सूः (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण।

भीष्मक [भीष्म+कन्] 1 शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र 2 विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री रुक्मिणी को कृष्ण उठा लाया था।

भुक्त (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त] 1 खाया हुआ 2 उपभुक्त, प्रयुक्त 3 भोगा, अनुभव किया 4 अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया—दे० भुज्, —क्तम् 1 उपभोग करने या खाने की क्रिया 2 जो खाया जाय, आहार 3 वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है। सम०—उच्छिष्टम्, —शेषः, —समुज्झितम् किये हुए भोजन का अवशिष्ट, जूठन, उच्छिष्ट अंश, —भोग (वि०) 1 जिसने कुछ भोगा है, या आनन्द उठाया है, उपभोक्ता 2 जो प्रयुक्त किया गया है, उपभुक्त, नियुक्त,—सुप्त (वि०) भोजन करके सोया हुआ।

भुक्तिः (स्त्री०) [भुज्+क्तिन्] 1 खाना, उपभोग करना 2 (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुखोपभोग—पञ्च० ३।९४, याज्ञ० २।२२ 3 खाना 4 ग्रह की दैनिक गति। सम०—प्रदः एक प्रकार का पौधा, मूग, —वर्जित (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है।

भुग्न (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त, तस्य नः] 1 झुका हुआ, विनत, प्रवण—वायुभुग्न, रुजाभुग्न आदि 2 टेढ़ा, वक्र,—भट्टि० ११।८, विक्रम० ४।३२ 3 टूटा हुआ (भग्न का अर्थ)।

भुज् I (तुदा० पर० भुजति, भुग्न) 1 झुकाना 2 मोड़ना, टेढ़ा करना। II (रुधा० उभ० भुनक्ति, भुङ्क्ते) 1 खाना, निगलना, या पी जाना (आ०)—शयनस्थो न भुञ्जीत—मनु० ४।७४, ३।१४६, भट्टि० १४।९२, भग० २।५, 2. उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पत्ति, भूमि आदि को) अधिकार में करना—विक्रम० ३।१, मनु० ८।१४६, याज्ञ० २।२४ 3 शारीरिक उपभोग करना (आ०)—सदय बुभुजे महाभुज —रघु० ८।७, ४।७, १५।१, १८।४, सुरूप वा कुरूप वा पुमानित्येव भुञ्जते—मनु० ९।१४, 4 हुकूमत करना, शासन करना, रक्षा करना, रखवाली करना (पर०)—राज्यं न्यासमिवाभुनक्—रघु० १२।१८, एक कृत्स्ना(वरिष्ठी) नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति० श० २।१४, 5. भोगना, सहन करना, अनुभव करना—वृद्धो नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते—सिद्धा० 6 बिताना, (समय) यापन करना—प्रेर० (भोजयति-ते) खिलाना, भोजन कराना, इच्छा० (बुभुक्षति-ते) खाने की इच्छा करना आदि। अनु—उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे फल) भुगताना—प्रेक्षमुक्तविशदां सचन्द्रिकाम् (अन्वभुक्त)—रघु० १९।३९, कु० ७।५, उप—, 1 मजा लेना, चखना—तपसामुपभुञ्जाना. फलानि कु० ६।१०, 2 शारीरिक रूप से मजे लेना (यथा स्त्रीसंभोग) 3 खाना या पीना—अर्घोपभुक्तेन बिसेन कु० ३।३७, पय पुत्रोपभुक्तम्—रघु० २।६५, १।६७, भट्टि० ८।४०, 4 भोगना, सहन करना, झेलना—मनु० १२।८, 5 अधिकार में करना रखना, परि—1 खाना 2 उपयोग करना, आनन्द लेना—न वयं तु परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्—रा० ५।१९ कि० ५।५, ८।५७, सम्—1 खाना 2 उपभोग करना 3 शारीरिक रूप से मजे लेना।

भुज् (वि०) [भुज्+क्विप्] (समास के अन्त में) खाने वाला, मजे लेने वाला, भोगने वाला, राज्य करने वाला, शासन करने वाला, स्वबाभुज्, हुतभुज्, पाप° क्षिति° मही° आदि, (स्त्री०) 1 उपभोग 2 लाभ, हित।

भुजः [भुज्+क] 1 भुजा—आरप्स्यसि कियद्भुजो मे रक्षांसि मौर्वीकिणाङ्क इति—श० १।१३ रघु० १।३४, २।७४, २।५, 2 हाथ 3 हाथी का सूंड 4 झुकाव, वक्र, मोड़ 5 गणितविषयक आकृति का एक पार्श्व, यथा त्रिभुज त्रिकोण' 6 त्रिकोण आधार। सम० अन्तरम्,—अन्तराले हृदय, छाती—रघु० ३।५४ १९।३२, मालवि० ५।१०,—आबीडः भुजपाश में जकड़ना, बाहों में लिपटाना,—कोटरः बगल,—दण्डः आधार की लम्बरेखा,—बन्धः—बाहुबंध, बक्षः,—बन्धनम् हाथ,—बन्धनम् लिपटना, आलिंगन करना—घटय भुजबन्धनम्—गीत० १०, कु० ३।३९,—बलम्—वीर्यम् भुजा की सामर्थ्य, पुट्ठों की ताकत,—मध्यम् छाती—रघु० १३।७३,—मूलम् कंधा,—शिखरम्—शिरस् (नपुं०) कंधा,—सूत्रम् आधार लंबरेखा।

भुजगः [भुज् गच्छति क, भुज कुटिलीभवन् सन् गच्छति गम्+ड] साँप, सर्प - भुजगाश्लेषसवीतजागी —मृच्छ० १।१, मेघ० ६० । सम० —अशनः, अशनः —आयोजिन् (पु०),—धरः,—धारकः,—भोगिन् (पु०),— वरः,—वैरिन् (पु०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. और नेवले का विशेषण,—ईश्वरः—राजः शेष के विशेषण ।

भुजङ्गमः [भुज् सन् गच्छति गम्+खच्, मुम् टिच्च] साँप, सर्प —भुजङ्गमयति कोपित शिरसि धृत्यवद्वारयेत्—भर्तृ० २।४ 2. उपपति, रसिया या स्वेच्छाचारी अभूमिरेषा भुजङ्गभङ्गिभावितानाम् का० १९६ 3 पति, प्रभु 4 लौंडा, दुश्चरित्र 5 राजा का लम्पट शिष्य 6 आश्लेषा नक्षत्र 7 आठ की संख्या । सम० इन्द्रः नागराज शेषनाग का विशेषण, ईशः 1 वासुकि का विशेषण 2 शेषनाग का विशेषण 3. पातञ्जलि का विशेषण 4 पिंगल मुनि का विशेषण—कन्या साँप की तरुणी कन्या, भम् अश्लेषा नक्षत्र, —भुज् (पु०) 1 गरुड़ का विशेषण 2 मोर, —लता पान की बेल, ताम्बूली,—हन् (पु०) गरुड़ का विशेषण दे० भुजगातक आदि ।

भुजङ्गमम् [भुज+गम्+खच्, मुम्] 1 साँप 2. राहु का विशेषण 3 आठ की संख्या ।

भुजा [भुज्+टाप्] 1 बाहु, हाथ निहितभुजः लतयैकबाधकन्धम् - शि० ७।७१ 2. हाथ 3 साँप की कुण्डली 4 चक्कर, घेरा । सम० —कूटः अंगुली का नाखून, —दण्डः हाथ,—शब्दः 1 कोहनी 2. छाती,—सूनुः कन्धा ।

भुजिष्य [भुज्+किष्यन्] 1 दास, नौकर 2 सांपी 3 पोहची, भुज जो कलाई पर पहना जाय 4. रोग, व्या 1 परिचारिका, सेविका, दासी—अधांगदालिष्टभुजा भुजिष्या—रघु० ६।५३, मृच्छ० ४।८, मालवि० २।९० 2 वारांगना, वेश्या ।

भुज् (स्वा० आ० भुञ्जते) 1 सहारा देना, स्थापित रखना 2 झुकना, छाटना ।

भुजुंरिका, भुजुंरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

भुवनम् [भवत्यत्र, भू—आधारादौ-क्युन्] 1 लोक (लोकों के नाम या तो तीन हैं - त्रिभुवनम् या चौदह—इह हि भुवनान्यम्बे चतुर्दश सृजन्ति —भर्तृ० ३।२३ दे० 'लोक' भी, भुवनालोकनप्रीति —कु० २।४५, भुवनाविदितम् मेघ० ६ 2 पृथ्वी 3 स्वर्ग 4 प्राणी, जीवधारी जन्तु 5 मनुष्य, मानव 6 पानी 7 चौदह की संख्या । सम० —ईशः पृथ्वी का स्वामी, राजा,—ईश्वरः 1. राजा 2. शिव का नाम,—औकस् (पु०) देवता,—त्रयम् त्रिलोकी (भूलोक, अन्तरिक्ष और द्युलोक; या स्वर्गलोक भूलोक और पातालं लोक),—पावनी गंगा का विशेषण, पालिन् (पु०) राजा, शासक ।

भुवस्पृ [भू+क्यप्+क्विप्] 1. स्वामी, प्रभु 2. सूर्य 3. अग्नि 4 जलधारा ।

भुवर्, भुवस् (अव्य०) [भू०+असुन्] 1. अन्तरिक्ष, आकाश (तीनों लोकों में से दूसरा, भूलोक से ठीक ऊपर) 2. रहस्यमय शब्द, तीन व्याहृतियों में से एक (भूर्भुवः स्वः) ।

भुविज् (पु०) [भू+इजिन्, किच्च] समूह ।

भुशुण्डिः,—डी (स्त्री०) एक प्रकार का अस्त्र या अस्त्र ।

भू । (स्वा० पर०—(आ० विरल)—भवति, भूत 1 होना, घटित होना कथमयं भवेदस्माम्, अस्या किमभवत् - मा० ९।२९ 'उसके भाग्य का क्या हुआ' उत्तर० ३।२७, भवतु यदि तद्भवतु,—उत्तर० ३, 'होने वाली जो कुछ होता है' इसी प्रकार दुःखितो भवति, हृष्टो भवति आदि 2 उत्पन्न होना यथायथं भवेदस्माम् मनु० ९।१२७, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३ 3. फूटना, निकलना, उदय होना फोडाद्भवति सर्षपः—भर्तृ० २।६३, १४।१७ 4 घटित होना, होना, उपस्थित होना—नातताम्रिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन मनु० ८।३५१, यदि संशयो भवेत्—आदि 5 जीवित रहना, विद्यमान रहना - अभूदभूतपूर्वः राजा चित्रानभिनिर्माम—बाण०, अभूत्पुरो विभुवनस्य परमतपः—भट्टि० १।१ 6 जीवित रहना, जिंदा रहना, साँस लेना - त्वमिदानीं न भविष्यसि-हि० ६, आः पापस्यसहसक मय न भवसि —मृच्छ० ४, दुरात्मन् इहर नन्दयं न भवसि- मा० ५ (तुम मर चुके हो, अब तुम्हें साँस नहीं आवेगा) वेणी० ११।३२ 7. किसी भी दशा या अवस्था में रहना, अच्छी या बुरी तरह बीतना- भवान् स्वले कथं भविष्यति—पंच० २ 8. ठहरना, डटे रहना, रहना—उत्तर० ३।३७ 9 सेवा करना, काम आना —इदं पादोदकं भविष्यति—वेणी० १ 10. अलम् होना (इस अर्थ में प्रायः षष्ठ्यन्त शब्द के साथ)—भवति भवान् प्रायश्चित्तम् हि० 11 नेतृत्व करना, संचालन करना, प्रकाशित करना (संज्ञा० के साथ)—कालाय कपिला विद्युत् दीपा भवति रात्रये दुर्दिनाय स्थिता भवेत् —महावी०, कुशाय तस्यन्दनदिवं ययुषः—कु० १।२३ संस्तुतिर्नाम भवत्यभयाय कि० १८।२७, न तस्मा अभवे बभूव—रघु० ६।३४ 12 साथ देना, सहायता करना, सेवा अर्जुनतोऽभवम् 13. संकल्प रखना, पक्ष रखना—उत्तम हु सतां आत्मा बभूवुः—ऐत० ब्रा०, भग० ६।३९ 14. व्याप्त होना, व्याप्त होना (अधि० के साथ)—परमात्मानमेवं कृत्स्नो ब्राह्मणानां स्वयं ह्यभूत् —महा० 15. पूर्वकृदन्त संज्ञा या विशेषण से आगे 'भू' धातु का अर्थ है 'यह होना जो पहले नहीं था' या केवल साथ 'होना'—श्वेतीभू सफेद होना, कृष्णीभू

काला होना, पयोधरीभू स्तन का काम देना, इसी प्रकार अपत्नीभू साधु होना, अधिपोभू गुप्तचर का काम करना, आहोभू पिघलना, भस्मीभू राख बन जाना, विषयीभू विषय बनाना, इसी प्रकार एक मतीभू, तरुणीभू आदि विशे०, 'भू' धातु का अर्थ सबद्ध क्रिया विशेषण के अनुसार नाना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है, उदा० अग्रेभू आगे रहना, नेतृत्व करना अन्तर्भू लीन होना, सम्मिलित होना —ओजस्यन्तर्भवन्त्यन्ये—काव्य० ८, अन्यथाभू और तरह होना, बदलना —न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति श० ४, आविर्भू प्रकट होना, उदय होना, स्पष्ट होना दे० आविस्, तिरोभू ओझल होना, दोषाभू सध्या होना, सायकाल होना, पुनर्भू फिर विवाह करना, पुरोभू अग्रसर होना, आगे खड़े होना प्रादुर्भू उदय होना, दिखाई देना, प्रकट होना, विप्रकाभू झूठ निकलना, वृथाभू व्यर्थ होना आदि) प्रेर० (भावयति-ते) 1 उत्पन्न करना, अस्तित्व में लाना, सत्ता बनाना 2 कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 3 प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निदर्शन करना 4 पालना, परवरिश करना,सहारा देना,सम्भरण करना, जान डालना - पुन सृजति वर्षाणि भगवान् भावयन् प्रजा —महा०, देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु व, परस्पर भावयन्त श्रेय परमवाप्स्यथ—भग० ३।११, मनु० १६।२७ 5 सोचना, विमर्श करना, विचारना, खयाल करना, कल्पना करना 6 देखना समझना, मानना अर्थमनर्थं भावय नित्यम्—मोह० २ 7 सिद्ध करना, साबित करना, पक्का यज्ञ० २।११ 8 पवित्र करना 9 हासिल करना, प्राप्त करना 10 मिलाना, मिश्रण, तैयार करना 11 परिवर्तन करना, रूपान्तरित करना 12 डुबोना,—सराबोर करना । इच्छा०—बुभूषति, होने की या बनने की इच्छा करना, अति,—अतिरिक्त होना आगे बढ जाना, अधिक हो जाना, अनु—,1 मजे लेना, अनुभव करना महसूस करना, भोगना (बुरा या भला)—असक्त सुखमन्वभूत—रघु० १।२१, कु० २।४५ रघु० ७।२८, आत्मकृतानां हि दोषाणा फलमनुभवितव्यमात्मनैव —का० १२१, श० ५।७ 2 प्रत्यक्ष करना, बोध होना, समझना 3 जाच करना, परीक्षण करना,—प्रेर० - आनन्द मनवाना, अनुभव या महसूस करवाना —आमोदो न हि कस्तूर्या अपचेनानुभाव्यते—आमि० १।१२०, अभि—, 1 विजय प्राप्त करना, दमन करना, परास्त करना, आगे बढ जाना, उत्तम होना—भग० १।३९, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2 आक्रमण करना, हमला करना—विपदोऽभिभवत्यविक्रमम्—कि० २।१४ अभ्यभावि भरताग्रजस्तया—रघु० ११।१६ 3 नीचा दिखाना, अपमान करना 4 प्रभुत्व रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना, उप्—उदय होना, उगना उद्भूतध्वनि, प्रेर० - पैदा करना, सृजन करना, जन्म देना रघु० २।६२, परा—, 1. हराना, परास्त करना, जीत लेना 2 चोट पहुचाना, क्षति पहुँचाना, मनाना, परि—, 1 हराना, दमन करना, जीतना, हावी होना (अत) आगे बढ़ जाना, पछाड देना लग्नद्विरेफ परिभूय पद्मम्—मृच्छ० ७।१६, रघु० १०।३५ 2 तुच्छ समझना, उपेक्षा करना, घृणा करना, अनादर करना, अपमान करना, मा मा महात्मन् परिभू भवेद्दं० १।२२, ४।३७ 3 क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4 कष्ट पहुँचाना, दुख देना 5 नीचा दिखाना, लज्जित करना, प्र —, 1 उदय होना, निकलना, फूटना, जन्म लेना, उपजना, पैदा होना (अपा० के साथ)—लोभात्क्रोध प्रभवति हि० १।२७, स्वाय भुवान्वरोवेंयं प्रबभूव प्रजापति —ह० ७।९ पुरुष प्रबभूवान्तेविक्रमयेन सहस्रिणाम् -रघु० १०।५०, भग० ८।१८ 2 प्रकट होना, दिखाई देना हि० ४।८४ 3 गुणा करना, बढाना, दे० प्रभूत 4 मजबूत होना, शक्तिशाली होना, छा जाना, प्रमुख होना, बल दिखाना प्रभवति हि मन्त्रिमन्त्रा स्वेन योगीश्वरीय मा० १।५२, प्रभवति भगवान् विधि — का० ५, 5 योग्य होना, समान होना, शक्ति रखना ('तुमुन्नन्त के साथ)—कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितु यदि—रघु०८।४४, श० ६।३०, विक्रम० १।९, उत्तर० २।४ 6 नियत्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना, स्वामी होना (बहुधा सब० के कभी २ सप्त० या अधि० के साथ)—यदि प्रभविष्यास्यात्मन —श० १, उत्तर० १, प्रभवति निजस्य कल्यकाजनस्य महाराज —मा० ४, तत्प्रभवति अनुशासने देवी—वेणी० २ 7 जोडा का होना प्रभवति मल्लो मल्लाय —महाभा० 8 पर्याप्त होना, यथेष्ट होना—कु० ६।५९ 9 रक्षा जाना (अधि० के साथ)—गुरु प्रहर्षं प्रबभूव नात्मनि—रघु० ३।१७ 10 उपयोगी होना 11 याचना करना, अनुनय-विनय करना, वि—(प्रेर०) 1 सोचना, विमर्श करना, विचारना 2. जानकार होना, जानना, प्रत्यक्ष करना, देखना—श० ४ 3 फैसला करना, निश्चय करना, स्पष्ट करना, सम्—, 1 उदय होना, पैदा होना, उपजना, फूटना - कथमपि भुवनेऽस्मिन्स्त्रा-वृशा सभवन्ति—मा० २।९, धर्मसस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे—भग० ४।८, कि० ५।२२, भट्टि० ६।१३८, मनु० ८।१५५ 2 होना, बनना, विद्यमान होना 3 घटित होना, घटना होना 4 सभव होना, 5 यथेष्ट होना, सक्षम होना ('तुमुन्नन्त' के साथ) —न मन्त्रियन्तु समभावि भानुना—कि० १।२७

6. मिलना, एक होना, सम्मिलित होना—अभूदाम्नो-विमर्श्येति महानदा नदापत्ना—शि० २।१००, संभूयैव सुखानि भेतसि —मा० ५।९ 7 समर्थ होना 8. पकड़ने के योग्य, (प्रेर०) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. कल्पना करना, सोचना, उच्चारण करना, चिन्तन करना 3 अनुमान लगाना, अटकल लगाना—श० २, 4 सोचना, ख्याल करना 5 सम्मान करना, आदर करना, आदर प्रदर्शित करना—प्राप्तोऽसि मया-वधित्वं बलान्माम्—रघु० ५।११, ७।८ 6 सम्मान करना, उपहार देना, अर्पण करना—कु० ३।३७ 7 मढ़ना, बोपना—मृच्छ० १।३६।

ii (स्वा० उभ० भवति ते) हासिल करना, प्राप्त करना।

iii (चुरा० आ० भावयते) प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

iv (चुरा० उभ० –भावयति—ते) 1 सोचना, विमर्श करना 2. मिलाना, मिश्रित करना 3 पवित्र होना ('भू' के प्रेर० रूप से सबद्ध)।

भू (वि०) [भू+क्विप्] (समास के अन्त में) होने वाला, विद्यमान, बनने वाला, फूटने वाला, उगने वाला, उपजने वाला, चित्रभू, आत्मभू, कमलभू, चित्रभ् आदि—(पु०) विष्णु का विशेषण।

भू (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1 पृथ्वी (त्रिप० अन्तरिक्ष या स्वर्ग–दिव प्रस्तावानिव मोक्षयते भुवम्–रघु० ३।४, १८।४, मेघ० १८, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा 2 विश्व, भूमण्डल 3 भूमि, फर्श प्रासादोपरिभूमय मुद्रा० ३, मणिमयभुव (प्रासादा) –मेघ० ६४ 4 भूमि, भूसपत्ति 5 जगह, स्थान, क्षेत्र, भूखण्ड -कानलभुवि, उपवनभुवि आदि 6 सामग्री, विषय-वस्तु 7 'एक' की संख्या की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 8 ज्यामिति की आकृति की आधाररेखा 9 (धरती का प्रतिनिधान करने वाली) सबसे पहली (तीनों में) व्याहृति या रहस्यमूलक अक्षर 'अ' जिसका उच्चारण प्रतिदिन सन्ध्या के समय मनपाठ करते हुए किया जाता है। सम०—उत्तम् सोना, कदम्बः कदम्ब वृक्ष का भेद,—कम्पः भूचाल,—कर्षः धरती का व्यास, –कदम्बः कृष्ण के पिता वासुदेव का विशेषण,–काक 1 एक प्रकार का बगुला 2 पनभुर्वी 3 एक प्रकार का कबूतर,–केशः वट-वृक्ष,–केशा राक्षसी, पिशाचिनी, क्षित् (पु०) सूअर,–खरम् विशेष प्रकार का अहर, –गर्भ अग्निभूति का विशेषण,–गृहम्, –गेहम् भूमि के नीचे का गोदाम, तहखाना, गोलः भूमिगोल, भूमण्डल—भूगोलमुद्विभ्रते –गीत० १, चित्रा भूगोल, –जः कामा, मङ्गल –जम् विषुवरेखा, भूमध्यरेखा चर (वि०) भूमि पर घूमने वाला या रहने वाला (रः) शिव का विशेषण,—जन्मा, जन्मन् 1. भू लाला, (इसे ही आजीव 'राहु' कहते हैं) 2. अङ्गार–जम्बुः 1. एक जंगली का फीड़ा 2 हाथी, –जम्बूः,—बूः गेंहू – तलम् धरातल, पृथ्वीतल,–तृण. (भूस्तृण) एक प्रकार का सुगन्धयुक्त घास,—दारः सूअर,–देवः,—देवः ब्राह्मण, –नाथः राजा धरः 1 पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. कृष्ण का विशेषण 4. 'सात' की संख्या °ईश्वर. °राज हिमालय पहाड़ का विशेषण °ओकः वृक्ष,—नागः एक प्रकार का धरती का कीड़ा, केंचुआ,–नेतृ (पु०) प्रभु, शासक, राजा,—पः प्रभु, शासक, राजा,—पतिः 1 राजा, 2. शिव का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण,—पद्मः वृक्ष,—पर्णी एक विशिष्ट प्रकार की चमेली,—परिधिः पृथ्वी का घेरा, —पालः राजा, प्रभु—पालनम् प्रभुता आधिपत्य —पुत्रः,—सुतः मंगलग्रह,—पुत्री,—सुता 'धरती की बेटी' सीता का विशेषण,—प्रकम्पः भूचाल,—प्रदानम् भूदान,—बिम्बः,–बम् भूलोक, भूमण्डल,—भर्तृ (पु०) राजा, प्रभु,—भागः क्षेत्र, स्थान, जगह, भृत् (पु०) राजा,—भृत् (पु०) पहाड़—दादा वे भूभृतां नाथः प्रमाणीक्रियतामिति– कु० ६।१, रघु० १७।७८ 2 राजा, प्रभु —निष्प्रभस्यैव रिपुरास भूभृताम् रघु० ११।८१ 3 विष्णु का विशेषण –मण्डलम् पृथ्वी, भूमण्डल, धरती,–मह (पु०),–महः वृक्ष, –लोकः (भूर्लोक) भूमण्डल, वलयम् भूमण्डल, वल्लभः राजा, प्रभु, वृत्तम् भूमध्यरेखा, –शक्रः 'धरती पर इन्द्र, राजा, प्रभु, –शयः विष्णु का विशेषण,– शयम् (पु०) बमी, दीमक का मिट्टी का टीला,—सुरः ब्राह्मण, सृप् (पु०) 1 मनुष्य 2. मानवजाति 3 वैश्य, स्वर्गः मेरु पहाड़ का विशेषण,– स्वामिन् (पु०) भूमिधर, भूमि का स्वामी।

भृकः, कम् [भृ+कक्] 1 बिवर, रन्ध्र, छेद 2. झरना 3 काल।

भृकलः [भृवि कलयति कल्+अच्] अड़ियल घोड़ा।

भूत (भू० क० कृ०) [भू+क्त] 1 जो हो चुका हो, होने वाला, वर्तमान 2 उत्पन्न, निर्मित 3. वस्तुतः होने वाला, जो वस्तुतः घट चुका हो, यथार्थ 4. ठीक, उचित, सही 5 अतीत, गया हुआ 6 उपलब्ध 7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8 सदृश, समान दे० 'भू', –तः 1 पुत्र, बच्चा 2 शिव का विशेषण 3. चान्द्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का दिन,–तम् 1. प्राणी (मानव, दिव्य, या अचेतन)—कु० ४।४५, पञ्च० २।८७ 2. जीवित प्राणी, जन्तु, जीवधारी –भूतेषु किं च कथना बहुली करोति –भामि० १।१२२, उत्तर० ४।६ 3 प्रेत, भूत, पिशाच, दानव 4. तत्त्व (वे पाँच हैं– अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,

वायु और आकाश)—त मेया विदधे नूत महाभूत-सम्प्लविना - रघु० १।२९ 5 वास्तविक घटना, तथ्य, वास्तविकता 6 अतीत, भूतकाल 7 ससार 8 कुशल-क्षेम, कल्याण 9 पाँच की सख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०-- अनुकम्पा सब प्राणियो के लिए करुणा-भूतानुकम्पा तव चेत्--रघु० २।४८, - अन्तक: मृत्यु का देवता यम,- अर्थ: तथ्य, वास्तविक तथ्य, यथार्थ स्थिति, सचाई, वास्तविकता—आर्ये कथयामि ते भूतार्थम् श० १, भूतार्थशोभाह्रियमाणनेत्रा —कु० ७।१३, क अद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति - मृच्छ० ३।२४, °कथनम्, °व्याहृतिः (स्त्री०) तथ्यवर्णन-भूतार्थव्याहृति सा हि न स्तुति परमेष्ठिन - रघु० १०।३३,--आत्मक (वि०) तत्वो से युक्त या तत्वो से बना हुआ, आत्मन् (पु०) 1 जीवात्मा (विप० परमात्मा), आत्मा 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4. मूलतत्त्व 5 शरीर 6 युद्ध, सघर्ष,-आदि 1 परमात्मा 2 (सांख्य० में) अहकार का विशेषण, - आर्त (वि०) प्रेताविष्ट, - आवास: 1 शरीर 2 शिव का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण, - आविष्ट (वि०) भूता प्रेतादि से प्रभावित, —आवेश: भूत या प्रेत का किसी पर सवार होना, —इज्या, —इज्या भूतो को आहुति देना, - इष्टा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, - ईश: 1, ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण - भूतेशस्य भुजङ्गवल्लिवलयस्खलनद्बजूटाजटा मा० १।२, -ईश्वर शिव का विशेषण—रघु० २।४६, - उन्माद, भूत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन,—उपसृष्ट, -उपहत (वि०) पिशाच से पीडित,— ओदन: चावलो की थाली, कर्तृ - कृत् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, --काल. 1 बीता हुआ समय (व्या० में) अतीत या भूतकाल, - केशी तुलसी,—क्षान्ति: (स्त्री०) भूत-प्रेत की सवारी, गण उत्पन्न प्राणियो का समुदाय 2 भूतप्रेत या पिशाचो का समूह - भग० १८।४, --ग्रस्त (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो, —ग्राम: 1. जीवित प्राणियो का समूह, समस्त जीव, सृष्टि—उत्तर० ७, भग० ८।१९ 2 भूतप्रेतो का समूह 3. शरीर,—घ्न: 1 ऊँट 2 लहसुन, (घ्नी) तुलसी —चतुर्दशी कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, —चारिन् (पु०) शिव का विशेषण, - जय: तत्वो के ऊपर विजय,— दया सब प्राणियो के प्रति करुणा, प्राणिमात्र पर दया,—धरा, - धात्री.--धारिणी पृथ्वी, -नाथ. शिव का विशेषण,- नायिका दुर्गा का विशेषण,—निलय: 1 सिलारें का पौधा 2 सरसो 3. कालीमिर्च,—निवास: शरीर,—पति 1 शिव का विशेषण—कु० ३।४३, ७४ 2 अग्नि का विशेषण 3 काली तुलसी,—पूर्णिमा आश्विन मास का पूर्णमासी,—पूर्व (वि०) पहले से विद्यमान, पहला - भूतपूर्वकरालयम् —उत्तर० २।१७,--पूर्वम् (अव्य०) पहले,—प्रकृति: (स्त्री०) सब प्राणियो का मूल,— बलि:=भूतयज्ञ दे०,-- भावन (पु०) अधम ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मूर्ति पर चढावे से करता है दे० देवल,—भर्तृ (पु०) शिव का विशेषण, - भावन: ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, - भाषा —भाषित पिशाचों की भाषा,—महेश्वर. शिव का विशेषण, —यज्ञ: सब प्राणियो की बलि या आहुति देना, दैनिक पाँच यज्ञों में से एक बलिवैश्वदेव, योनि: उत्पन्न प्राणियो का मूलस्रोत,—राज: शिव का विशेषण, - वर्ग: भूत-प्रेतो का समुदाय, - वास: बहेडे का वृक्ष, - वाहन: शिव का विशेषण, - विद्या 1 अपस्मार, मिरगी 2 भूत या पिशाच की सवारी,—विज्ञानम्, - विद्या पिशाच विज्ञान,—वृक्ष: विभीतक वृक्ष, बहेडे का पेड, संचार: मर्त्यलोक, - संचार: भूत पिशाच का आवेश,—संप्लव: विश्व का जलप्रलय, या विनाश,—सर्ग: ससार की सृष्टि, उत्पन्न प्राणियो का समुदाय,— सूक्ष्मम् सूक्ष्म-तत्त्व, - स्थानम् 1 जीवधारी प्राणियों का आवास 2 पिशाचो का वासस्थान, हत्या जीवधारी प्राणियो की हत्या।

भूतमय (वि०) [भूत+मयट्] 1 सब प्राणियो समेत 2 उत्पन्न प्राणियो या मूलतत्त्वो से निर्मित।

भूति: (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1 होना, अस्तित्व 2 जन्म, उत्पत्ति 3 कुशल-क्षेम कल्याण, आनन्द, समृद्धि —प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् - रघु० १।१८, नरपतिकुलभूत्यै - २।७४, स वोऽस्तु भूत्यै भगवान मुकुन्द —विक्रमांक० १।२ 4. सफलता, अच्छा भाग्य 5 धन-दौलत, सौभाग्य - विपत्प्रतीकार-परेण मगल निषेव्यते भूतिसमुत्सुकेन वा कु० ५।७६ 6 गौरव, महिमा, विभूति 7 राख -भूतभूतिरहौन-भोगभाक्-- शि० १६।७१ (यहा 'भूति' शब्द का अर्थ 'धन' भी है), स्फुटोपम भूतिसितेन शम्भुना-१।४ 8 हलीन धारियो से हाथी का शृगार करना - मदित-च्छेदैरिव विरचिता भूतिमङ्गे गजस्य - मेघ० १९ 9 तपस्या या अभिचार के अनुष्ठान से प्राप्य अति-मानव शक्ति 10 तला हुआ मास 11 हाथियो का मद, —ति: 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 पितृगण का विशेषण। सम०—कर्मन् (नपु०) कोई भी शुभ कृत्य या उत्सव, - काम (वि०) समृद्धि का इच्छुक (म:) 1 राज्यमन्त्री 2 बृहस्पति का विशेषण, - काल: शुभ या सुखद समय, - कीला: 1 छिद्र, गर्त 1 खाई 3 भूतसमूह, तहखाना,—कृत् (पु०) शिव का विशेषण,- कर्म: भस्मभूति का विशे-

यज्ञ, - द्रः शिव का विशेषण, —सिद्धान्तम् धनिष्ठा नक्षत्र, —सूदनः शिव का विशेषण, —स्वामिन् शिव का विशेषण।

भूतिकम् [भूति+कन्] 1. कपूर 2 चन्दन की लकड़ी 3 औषधि का पौधा, कामफल।

भूमत् (वि०) [भू+मतुप् [भूमिधर—पु० राजा, प्रभु।

भूमन् (पु०) [बहोर्भावः बहु+इमनिच् इकारोपे स्वादेश] 1 भारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी संख्या —भूम्ना रसानां गहना प्रयोगा मा० १।४, सन्ति भूयांसि खेतसि पर भूमानमातन्वते ४।९ 2 दौलत नपु० 1. पृथ्वी 2 प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3 प्राची, जन्तु 4 बहुवचनता (संख्या की) आप स्त्रीभूम्नि अमर० तु० पृथून्।

भूमय (वि०) (स्त्री० -यी) [भू+मयट्] मिट्टी का, मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न।

भूमि (स्त्री०) [भवन्त्यस्मिन् भूतानि—भू+मि किच्च वा ङीप्] 1 पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन या पाताल)द्यौर्भूमिरापोहृदय यमवच-यच० १।१८२, रघु० २।७४ 2 मिट्टी, भूमि उत्खातिनीं भूमि —श० १. कु० १।२४ 3 प्रदेश, जिला, देश, भू विदर्भभूमि 4 स्थान, जगह, जमीन, भूखण्ड -प्रमदवनभूमयः—श० ६, अधित्यकाभूमि—नै० २२।४१, रघु० १।५२ ३।६१, कु० ३।५८ 5 स्थल, स्थिति 6 जमीन भूसपत्ति 7 कहानी, घर का फर्श यथा 'सप्तभूमिक प्रासाद' में 8 अभिरुचि, हार्दभाव 9 (नाटक में) किसी पात्र का चरित्र या अभिनय —तु० भूमिका 10. विषय, पदार्थ, आधार विश्वासभूमि, स्नेहभूमि आदि 11 दर्जा, विस्तार, सीमा कि० १०।५८ 12 जिह्वा, उद्यान। सम० अन्तरः पड़ोसी राज्य का राजा, इन्द्रः, ईश्वरः राजा, प्रभु, कदंबः कदम्ब का एक भेद, गृहं भूमि में बिवर या गुफा, —गृहम् भगर्भगृह, भौरा, तहखाना, - चक्रः चक्रम् भूचाल—जः 1 मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण 3 मनुष्य 4 भूनिंब नाम का पौधा, (जा) सीता का विशेषण, —जीविन् (पु०) वैश्य, - तलम् भूतल, पृथ्वी की सतह दानम् भूदान,—देवः ब्राह्मण धरः 1 पहाड़ 2 राजा 3 सात की संख्या,—धात्री, धृक्, पतिः, पालः,—भुज् (पु०) राजा, प्रभु—रघु० १।४७, —पलः तेज घोड़ा, पिप्पलम् ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी तैयार की जाती है),—पुत्रः मंगलग्रह,—पुरंदरः 1 राजा 2 दिलीप का नाम,—भृत् 1 पहाड़ 2 राजा, —मक्षा एक प्रकार की चमेली,—रक्षकः तेज घोड़ा,—लाभः भूष् (आ० मिट्टी में मिल जाना), —लेपनम् गोबर - वर्षकः—शय मृतक शरीर, शव,—शय (वि०) भूमि पर सोने वाला (यः) जंगली कबूतर, —शयनम्, —शय्या भूमि पर सोना,—संभवः-भुवः 1. मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण, (—वा-ता) सीता का विशेषण,—संसिद्धेदः देश का सामान्य दर्शन,—स्पृश् (पु०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य 4. चोर।

भूमिका [भूमि+कै+क+टाप्] 1 पृथ्वी, जमीन, मिट्टी 2 स्थान, प्रदेश, स्थल (भूका०) 3. कहानी, वृत्तान्त 4. पग, दर्जा —बहुमतीसङ्गां भूमिकां साक्षात्कुर्वन्ति —योग० या नैयायिकादिभिरात्मा प्रथमभूमिकायामवतारित.—सांख्यप्र० 5. लिखने के लिए तख्ता —दे० अक्षरभूमिका 6 नाटक में किसी पात्र का चरित्र या अभिनय—या यस्य दृश्यते भूमिका तां खलु तथैव भावेन सर्वे वर्त्मा पाठिता, कामन्दकया. प्रथमा भूमिका नाद्य एवावतीर्ते—मा० १, लक्ष्मीभूमिकाया वर्तमानोबंधी बालचीभूमिकाया वर्तमानया मेनकया दृष्टा—विक्रम० ३, शि० १।६९ 7 नाटक के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोशाक 8 सजावट 9 किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय।

भूमी [भूमि+ङीष्] पृथ्वी, दे० भूमि। सम०—कदम्ब =भूमिकदंब,—अतिः,—भुज् (पु०) राजा,—मुज् (पु०) वृक्ष।

भूयस् (नपु०) होने की स्थिति—जैसा कि 'ब्रह्मभूयम्' में —दाशरथिभूयम्—शि० १४।८१।

भूयस्तात् (अव्य०) [भूय+तास्] 1 अधिकतर, बहुधा, सामान्यतः, साधारण नियम के रूप में 2 अत्यधिक, बड़े परिमाण में 3 फिर, और आगे।

भूयस् (वि०) (स्त्री०—सी)[बहु+ईयसुन्, इलोपः स्वादेशः] 1 अधिकतर, अपेक्षाकृत संख्या में अधिक या बहुत 2. अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत—कु० ६।१३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4 बहुत बड़ा या विस्तृत, अधिक, बहुत, असंख्य भवति च पुनर्भूयान्भेदः फल प्रति तस्या—उत्तर० २।४, भद्र भद्र वितर भगवन्भूयसे मङ्गलाय मा० १।३, उत्तर० ३।८, रघु० १७।४१, उत्तर० २।३ 5 सम्पन्न, बहुल एवप्रायगुणभूयसी स्वकृति—मा १, अव्य० 1. अधिक, अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2. और अधिक, फिर, आगे, और फिर, इसके अतिरिक्त, -पार्थयमुत्सृज विस ग्रहणाय भूयः—विक्रम० ४।११ रघु० २।१६ मेघ० १११ 3 बार बार, मुहुर्मुहुः (इस शब्द का रूप भूयसा जब कि० वि० के रूप में प्रयुक्त होता है तो निम्नांकित अर्थ होते हैं 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधिकांश में —न खरो न च भूयसा मृदु रघु० ८।८, पश्चार्धेन प्रविष्ट शरपतनभयात् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. बहुधा, साधारणतः—भूयसा जीविषये एव—उत्तर० ५)। सम०—उक्तम् 1. बार बार

देखना 2 बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान,—भूयस् (अव्य०) पुन पुन, बार बार —भूयोभूय सविधनगरीरथ्यामापर्यटन्तम्—मा०१।१५, —विद् (वि०) 1 अपेक्षाकृत विद्वान् 2 अत्यन्त विद्वान्।

भूयस्त्वम् [भूमस्+त्व] 1 बहुतायत, बहुलता 2 बहुसंख्यकता, प्रबलता।

भूयिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहु+इष्ठन् स्थादेशे यलुक् च] 1 अत्यत, अत्यत असंख्यक या प्रचुर 2 अत्यत महत्त्वपूर्ण, प्रधान, मुख्य 3 बहुत बडा या विस्तृत, अत्यधिक, बहुत, बहुत से, असख्य 4 मुख्य रूप से, अत्यत स्वस्थचित्त, अत्यत सचरित या मुक्त, मुख्यत भरा हुआ या चरित्र से युक्त (समास के अन्त में) अभिरूपभूयिष्ठा परिषद्- श० १, शून्यमासभूयिष्ठ आहारोऽयते—श० २, रघु० ४।७० 5 प्राय अधिकतर, लगभग सब (बहुधा' कृतात' रूप के पश्चात्)—अर्थ उदितभूयिष्ठ एव तपन—मा० १, निर्वाणभूयिष्ठमवास्य वीर्यम्—कु० ३।५२, विक्रम० १।८, ष्ठम् (अव्य०) 1 अधिकाशत, अत्यत श० १।३१ 2 अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अधिक से अधिक —भूयिष्ठ भव दक्षिणा परिजने—श० ४।१७, रघु० ६।४, १३।१४।

भूर् (अव्य०) [भू+क्विप्] तीन व्याहृतियो में से एक।

भूरि (वि०) [भू+क्रिन्] 1 बहुत, प्रचुर, असख्य, यथेष्ट 2 बडा, विस्तृत, (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 इन्द्र का विशेषण (नपु०) सोना, (अव्य०) 1 बहुत, अधिक, अत्यधिक - नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घना—श० ५।१२ 2 बार बार प्राय मुहुर्मुहु। सम०—गन्धा,—तेजस् (वि०) अतिकान्तियुक्त (पु०) अग्नि, —दक्षिण (वि०) 1 मूल्यवान् उपहार या पुरस्कारो से युक्त 2 पुरस्कार देने में उदार, दानशील,—दानम् उदारता,—धन (वि०) दौलतमद, धनाढ्य,—नामन् (वि०) अतिकीर्ति से युक्त,—प्रयोग (वि०) जिसका बहुत उपयोग हुआ है, साधारण व्यवहार में आने वाला (शब्द),—प्रेमन् (पु०) चकवा,—भाग (वि०) धनाढ्य, समृद्धिशाली,—माय गोदड या लोमडी, रसगन्धा,—लाभ बहुत फायदा,—विक्रम (वि०) बडा बहादुर, बडा योद्धा, -वृष्टि: (स्त्री०) बहुत बारिश, —श्रवस् (पु०) कौरवो के पक्ष से लडने वाले एक योद्धा का नाम जिसे सात्यकि ने यमपुर भेजा था।

भूरिज् (स्त्री०) [भृ+इजि, पृषो० साधु] पृथ्वी।

भूर्ज: [भू+ऊर्ज्+अच्] भोजपत्र का पेड़- भूर्जगतोऽक्षरविन्यास वि० २, कु० १।७। सम०—कण्टक: वर्णसकर जाति का पुरुष, जाति से बहिष्कृत ब्राह्मण की उसी वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—ब्राह्मो तु जायते विप्रात्सापात्वा भूर्जकण्टक—मनु० १०।२१, पत्र: भोजपत्र का वृक्ष।

भूर्जि: (स्त्री०) [भृ+क्रि, ज्ञि० ऊत्वम्] पृथ्वी।

भूष् (स्वा० पर०, चुरा० उभ०—भूषति, भूषयति—ते, भूषित) 1 अलकृत करना, सजाना, शृगार करना —श्रुचि भूषयति श्रुत वपु—भट्टि० २०।१५ 2 अपने आपको सजाना (आ०) भूषयते कन्या स्वयमेव 3 फैलाना, दर्शाना, बिछाना—रघु० २।३१, आङ्,—अलकृत करना, भूषित करना, सौन्दर्य देना—शि० ७।३८, वि—, अलकृत करना, सजाना—केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषम्—भर्तृ० २।१९, शि० ९।४३, कु० १।२८।

भूषणम् [भूष्+ल्युट्] 1 अलकरण, सजावट 2 अलकार, शृगार, सजावट का सामान—क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषण भूषणम्—भर्तृ० २।१९, रघु० ३।२, १३।५७।

भूषा [भूष्+क+टाप्] 1 सजाना, भूषित करना 2 आभूषण, सजावट जैसा कि 'कर्णभूषा' 3 रत्न।

भूषित (भू० क० कृ०) [भूष्+क्त] सजाया हुआ, सुभूषित,—मणिना भूषित सर्प किमसौ न भयङ्कर।

भूष्णु (वि०) [भू+ष्णु] 1 होने वाला, बनने वाला जैसा कि अलभूष्णु 2 धन या समृद्धि की इच्छा करने वाला—मनु० ४।१३५।

भृ (स्वा० जुहो० उभ० भरति—ते, बिभर्ति—बिभृते भृत, कर्मवा० भ्रियते, इच्छा० बिभरिषति या बुभूर्षति)। भरना—उदर को न बिभर्ति केवलम्—पञ्च० १।२२ 2 भरना, व्याप्त होना, पूर्ण होना अभार्षीद् ध्वनिना लोकान्—भट्टि० १५।२४ 3 रखना, सहारा देना, सभालना, पोषण करना धुर धरिष्या विश्वरूपम्बभूव—रघु० १८।४४ कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठकेन वेणी० ५०, भट्टि० १७।१६ 4 सभालना करना, दूध पिलाना, लालन-पालन करना, प्रतिपालन करना, सँभाल रखना, परवरिश करना दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्—हि० १।१५ 5 धारण करना, रखना, अधिकार में लेना—सिन्धोर्भार सलिल शयनीयतलभीम्—कि० ७।५७, पिशुनजन खलु बिभर्ति क्षितीन्द्रा—मालवि० १।७४, बलिन्नय चाह बभार बाला—कु० १।३२ इन्दोर्दैन्य त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति—मेघ० ८४, श० २।४ 6 पहनना—बिभ्रत्कण्ठावलम्बम्—श० ७।११, ६।५ विवाहकौतुकं लक्ष्मि बिभ्रत एव (तस्य)—रघु० ८।१, १०।१० जटाश्च बिभृयात्त्रियम्—मनु० ६।६ 7. महसूस करना, अनुभव करना, भोगना, सहन करना (हर्ष या दुख आदि) भावशुद्धिसहितैर्मुहु खलो नाटकैरिव बभार

बोधनं—शि० १४।५०, ज्ञानाज्ञानविभ शक्तः—भट्टि० १७।१०८, भ० ७।२१ 8 समर्पण करना, प्रदान करना, देना, पैदा करना—बोधने सत्कारः. धाँसा बिभ्रति सुश्रुव.—सुभा० 9. रखना, थामना, धारण करना (स्मृति में) 10. आदे पर लेना—मनु० ११।६२, याज्ञ० ३।२३५ 11. लाना, या ले आना, उद्—, धारण करना, सहारा देना, सँभालना—भुवोलभुवृधि अद्रे—गीत० १, सम्—, 1 एकत्र करना, जोड़ना, इकट्ठा रखना —त्यागाय संभृतार्थानाम्—रघु० १।७, ५।५, ८।३, भट्टि० ६।८० 2 उत्पन्न करना, पैदा करना प्रकाशित करना, सम्पन्न करना—सुरतश्रमसंभृतो मुखे स्वेदलव —रघु० ८।५१, कि० ९।४९, मेघ० ११५ 3 संधारण करना, पालन-पोषण करना, दूध पिलाना 4. तैयार करना, सज्जित करना—विक्रम० ५, रघु० १९।५४ 5 देना, अर्पित करना, प्रस्तुत करना।

भृङ्गक (स) [भृङ्ग कुंभ (कुंभ् (भ्)+अच्) भाव-प्रकाश इतिशब्दापनं यस्य, नि० सप्तसारण] स्त्री का वेष धारण करने वाला नट।

भृकुटि, टी [भ्रुव कुटि (कुट्+इन्) कौटिल्य, नि० सप्त०] भौंह। दे० भ्रू (भ्रू) कुटि।

भृग् (अव्य०) अग्नि की चटपट आवाज को अभिव्यक्ति करने वाला अनुकरणात्मक (शब्द)।

भृगु [भ्रस्ज्+कु, सप्त, कुरवम्] एक ऋषि जो भृगुवंश का पूर्वपुरुष माना जाता है, इस वंश का वर्णन मनु० १।३५ में मिलता है; मनु से उत्पन्न दस मूलपुरुषों में से एक (एक बार जब ऋषियों का इस बात पर एक मत न हो सका कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में से कौन सा देवता ब्राह्मणों की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी है तो भृगु को इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण करने के लिए भेजा गया। वह पहले ब्रह्मा के निवास स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रणाम नहीं किया इस बात पर ब्रह्मा ने उसे बहुत फटकारा परन्तु क्षमा माँगने पर वह शांत हो गए। उसके पश्चात् वह कैलास पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले की भाँति प्रणामादि के शिष्टाचार का पालन नहीं किया। प्रतिहिंसापरायण शिव क्रुद्ध होकर भृगु का उस समय भस्म कर देता यदि भृगु अनुनय से भृगु ने उन्हें शांत न किया होता। (एक दूसरे वृत्तान्त के अनुसार भृगु का ब्रह्मा ने आदर सत्कार नहीं किया, इसलिए भृगु ने शाप दे दिया कि संसार में उसकी आराधना और पूजा नहीं होगी, शिव को भी 'लिंग' बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब भृगु शिव के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ विराजमान थे, अन्त में वह विष्णु के पास गया और जब उसे सोता हुआ पाया तो उसने विष्णु की छातीपर ठोकर मारी जिससे उसकी आँख खुल गई। को बनिस्बत के बजाय उस समय विष्णु ने मृदुता के साथ भृगु से पूछा कि कहीं उनके पैर में चोट तो नहीं लग गई, और यह कहने के साथ ही भृगु का पैर अनेक मलने लगा। तब भृगु ने कहा कि यह विष्णु ही सबसे अधिक दयालुता देवता है क्योंकि इसने अपने सबसे शक्तिशाली अस्त्र कृपालुता और उदारता से अपना स्थान सबसे प्रमुख बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब की पूजा का सर्वोत्तम अधिकारी समझा गया) 2 अग्निदग्ध ऋषि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4 शुक्र ग्रह 5. उत्प-पात, ज्वलां चट्टान मृगुपतनकारणमपृच्छम् —मृच्छ० 6. समतल भूमि, पहाड़ की समतल चोटी 7. कुम्भ का नाम। सम०—उद्वहः परशु राम का विशेषण, —कच्छः शुक्र का विशेषण,—कण्ठकः 1 परशुराम का विशेषण वीरो न यस्य समवात् मृगुपतिरपि—उत्तर० ५।३४ 2. शुक्र,—पतिः परशुराम का विशेषण—मृगुपतिसंज्ञोदर्तं यत् कीर्त्यरत्नम्—मेघ० ५७, इसी प्रकार मृगुणा पति, —वंशः परशुराम से प्रवर्तित वंश, वारः शनैश्चरः शुक्रवार, भृगु,—वासरः,—श्रेष्ठः,—सुतः परशुराम का विशेषण,—सुतः,—सूनुः 1. परशुराम का विशेषण 2. शुक्र का विशेषण।

भृङ्गः [भृ+गन् किच्, मुट् च] भौंरा -कामि० १।५, रघु० ८।५३ 2. एक प्रकार की चिरैं, तलैया 3. एक प्रकार का पक्षी, मीन राज 4. लम्पट, कामुक, व्यभिचारी, तु० भ्रमर 5. सोने का कलश,—मम् अञ्जन,—री भौंरी—भृंगी पुष्पं पुष्पं स्पृशति नव नवम्। सम०—अरीटः बाल का ऐब,—आमलकी भृंगिका बेल, —आवली भौंरों की पांत, मक्खियों का झुण्ड,—पत्रम् 1. अमर 2. अञ्जन (आ) बाल का पौधा,—पत्रिका छोटी इलायची,—राज् (पुं०) 1. एक प्रकार की बड़ी मक्खी 2. भंगरा नाम का पौधा,—रिटिः,—रीटिः शिव का एक गण (जो बहुत कुरूप कहा जाता है), —रोलः एक प्रकार की चिरैं, लवणः कदंब वृक्ष का एक भेद।

भृङ्गारः, रम् [भृङ्ग+ऋ+अण्] 1. सोने का कलश या घट 2. विशेष आकार का कलश, झारी शिशिर सुरभि-वासित पूर्णोऽम्ब भृङ्गारः वेणी० ६ 3. राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला घड़ा, —रम् 1 स्वर्ण 2. अभ्र।

भृङ्गारिका, भृङ्गारी [भृङ्गार+कन्+टाप्, इत्वम्] झींगुर।

भृङ्गिन् (पुं०) [भृङ्ग+इनि] 1. वट वृक्ष 2. शिव के एक गण का नाम।

भृङ्गिरिटि (री) डिः [भृङ्ग+रट्+इन्, पृषो० साधु] दे० भृङ्गरिटि।

भृङ्गेरिटि [भृङ्गे+रिट्+इ, अलुक् स०] शिव के एक गण का नाम।

भृज् (स्वा० आ० भर्जते) भूनना, तलना।

भृंडिका [=भिरिण्टिका, पृषो० साधु] एक प्रकार का बुनकी का पौधा।

भृण्डिः (स्त्री०) [?] लहर।

भृत ((भृ० क० कृ०) [भृ+क्त] 1. धारण किया हुआ 2 सहारा दिया हुआ, सत्कारित, पालन पोषण किया गया, दूध पिला कर पाला गया 3 अधिकृत, सहित, सज्जित 4. परिपूर्ण, भरा हुआ 5 भाड़े पर लिया गया, वैतनिक,—तः भाड़े का नौकर भाड़े का टट्टू, वेतनभोगी,—उत्तमस्त्वायुधीयो यो मध्यमस्तु कृषीवल., अधमो भारवाही स्यादित्येष त्रिविधो भृत —मिता०।

भृतक (वि०) [भृत भरण वेतनमुपजीवति कन्] मजदूरी पर रक्खा हुआ, वैतनिक,—कः भाड़े का नौकर। सम० -अध्यापकः भाड़े का अध्यापक, -अध्यापित (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा शिक्षित (त) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ा है (आधुनिक काल का फीस देकर पढ़ने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६।

भृतिः (स्त्री०) [भृ+क्तिन्] 1 धारण करना, सभालना, सहारा देना 2 सपालन, सधारण 3 नेतृत्व करना, मार्ग-प्रदर्शन 4. परवरिश, सहायता, सपोषण 5 आहार 6. मजदूरी, भाड़ा 7 भाड़े के बदले सेवा 8 पूजा, मूलधन। सम०—अध्ययनम् वेतन लेकर पढ़ाना (विशेषत 'वेदाध्ययन'),—भुज् (पु०) वेतनभोगी नौकर, भाड़े का टट्टू,—कर्मन् किसी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार।

भृत्य (वि०) [भृ+ण्यप् तक् च] जिसकी परवरिश की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य, —त्यः 1 कोई भी सहायता चाहने वाला व्यक्ति 2 नौकर, आश्रयी, दास 3 राजा का नौकर, राज्य मन्त्री, —त्या पालन-पोषण करना, दूध पिलाना, परवरिश करना, देखभाल करना जैसा कि 'कुमारभृत्य' में 2 सधारण, सपोषण 3 जीवित रहने का साधन, आहार 4 मजदूरी 5 सेवा। सम०—जनः 1 सेवक, पराश्रित 2 सेवकजन, वर्गः सेवकों का समूह,—वात्सल्यम् नौकरों के प्रति कृपा, वृत्तिः (स्त्री०) नौकरों का भरण-पोषण मनु० ११।७।

भृमिल (वि०) [भृ+विमप्] पाला पोसा गया, परवरिश किया गया।

भृमिः [भ्रम्+इ, सम्प्र०] भवर जलावर्त।

भृश् (दिवा० पर० भृश्यति) नीचे गिरना, दे० भ्रश्।

भृश (वि०) [भृश्+क] (म० अ० भ्रशीयस्, उ० अ० भ्रशिष्ठ) मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, गहन, अत्यधिक, बहुत ज्यादह, शम् (अव्य०) 1 ज्यादह, बहुत ज्यादह अत्यत, गहराई के साथ, प्रचण्डता के साथ, अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके नम-वेक्ष्य रुरोद सा भृशम् कु० ४।२५, रघुर्भृशं वक्षसि तेन ताडित' रघु० ३।६१, चुकोप तस्मै स भृशम ३।५६, मनु० ७।१७०, ऋतु० १।११ 2 प्राय, बार-बार 3. अपेक्षाकृत अच्छी रीति से। सम० कोपन (वि०) अत्यन्त क्रोधी, दुःखित, -पीडित (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त, सहृष्ट (वि०) अत्यन्त प्रसन्न।

भृष्ट (भू० क० कृ०) [भृश्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ, सेका हुआ। सम० अन्नम् उबाला हुआ या तला हुआ अन्न, अन्न -यवाः (ब० व०) भुने हुए जौ।

भृष्टिः (स्त्री०) [भ्रस्ज्+क्तिन्] 1 तलना, भूनना सेंकना 2 उजडा हुआ बाग या उपवन।

भृ (क्र्या० पर० भृणाति) 1 धारण करना, परवरिश करना, सहारा देना, पालन-पोषण करना 2 तलना 3 कलकित करना, निन्दा करना।

भेक [भी+कन्] मेढक,—पङ्के निमग्ने करिणि भेकः भवति मूर्धगः 2 डरपोक आदमी 3 बादल का 1 छोटा मेढक 2 मेढकी। सम० भुज् (पु०) साँप, रवः, -शब्द मेढकों का टर्राना।

भेंड [भी+ड] 1 मेढा, भेड 2 बेवा धनाई।

भेंडः [=भेड, पृषो० साधु०] भेंडा।

भेद [भिद्+घञ्] 1 टूटना, टुकड़े टुकड़े होना, फाड़ना, (लक्ष्यपर) आघात करना 2 चीरना, फाड़ना 3 विभक्त करना, विमुक्त करना 4 बीधना, छिद्रण 5 भग, विदारण 6 बाधा, विघ्न 7 विभाजन, वियोजन 8 छिद्र, गर्त, विवर, दरार 9 चोट, क्षति घाव 10 भिन्नता, अन्तर—वयोरूपभेदयोर्निपतितैरस्मि मे -भर्तृ० ३।९९, अगौरवभेदेन -कु० ६।१२, भग० १८।१९, २९, रस°, काल° आदि 11 परिवर्तन, विकार बुद्धिभेदम् भग० ३।२६ 12 फूट, असहमति 13 विवृति, भेद खोलना जैसा कि 'रहस्यभेद' में 14 विश्वासघात, देशद्रोह 15 किस्म, प्रकार भेदा पञ्चसत्यादयो मिश्रे -अमर० शिरीषपुष्पभेद 16 द्वैतवाद (राजनय में) शत्रुपक्ष में फूट डालकर उसको जीत कर किसी को ओर करना, शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के चार उपायों में से एक दे० 'उपाय' और 'उपायचतुष्टय' 18 पराजय 19 (आयु० में) रेचन विधि, अन्त कोष्ठ साफ करना। सम०—अर्हः

(द्वि० व०) 1 फूट और मेल, असहमति और सहमति 2 भिन्नता और एकरूपता -भेदाभेदज्ञानम् उन्मुख (वि०) फूटने वाला, खिलने वाला विक्रम० २।७, कर,—कृत् (वि०) फूट के बीज बोने वाला - बुद्धि—दृष्टि,—बुद्धि, (वि०) विश्व को परमात्मा से भिन्न समझने वाला,—प्रत्यय. द्वैतवाद में विश्वास, —वादिन् (पु०) जो द्वैत सिद्धान्त को मानता है,—सह (वि०) 1. जो विभक्त या वियुक्त हो सके 2 कलुषित होने योग्य, दूषणीय, प्रलोभन द्वारा जो कमाया जा सके।

भेदक (वि०) (स्त्री०—दिका) [भिद्+ण्वुल्] 1 तोड़ने वाला, खण्ड खण्ड करने वाला, विभक्त करने वाला, अलग अलग करने वाला 2 बींधने वाला, छिद्र करने वाला 3 नष्ट करने वाला, विनाशक 4 भेद करने वाला, अन्तर करने वाला 5 परिभाषा देने वाला, क विशेषण या विभेदकारी विशेषता।

भेदनम् [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, फाड़ना 2 बाँटना, अलग-अलग करना 3 भेद करना 4 फूट के बीज बोना, मनमुटाव पैदा करना 5 मंद कर, शिथिल करना 6 उघाड़ना, खोलना,—क सूअर।

भेदिन् (वि०) [भिद्+णिनि] तोड़ने वाला, विभक्त करने वाला, भेद करने वाला आदि।

भेदिरम्, भेदुरम् [भिद्+किरच्, कुरच् वा, पृषो० गुण] वज्र।

भेद्यम् [भिद्+ण्यत्] विशेष्य, संज्ञा। सम०—लिंग (वि०) लिंग द्वारा जो पहचाना जा सके।

भेर [विभेत्यस्मात्-भी+रन्] धौंसा, नाशा (बड़ा ढोल)।

भेरि,-री (स्त्री०) [भी+किन्, बा० गुण, भेरि+ङीष्] धौंसा, नाशा (बड़ा ढोल)। भग० १।१३।

भेरुण्ड (वि०) भयानक, भयपूर्ण, डरावना, भयंकर, ख पक्षियों का एक भेद, क्रम गर्भाधान, गर्भस्थिति।

भेरुण्डक [भेरुण्ड+कन्] गीदड़, शृगाल।

भेल (वि०) [भी+रन्, रस्य लः] 1 डरपोक, भीरु 2 मूर्ख, अनजान 3 अस्थिर, चंचल 4 लंबा 5 फुर्तीला, चुस्त -क नाव, बेड़ा, खिलाई।

भेलक, -कम् [भेल+कन्] नाव, बेड़ा।

भेव् (स्वा० उभ०—भेवति-ते) डरना, त्रस्त होना भय-भीत होना।

भेषजम् [भेषं रोगभयं जयति-जि+ड षत्वं च] औषधि, भैषज्य या दवा नरानन्त्य त्वामिह परम भेषजमसि—गंगा० १५, अनिर्दीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुण कि० २।४ 2 चिकित्सा या इलाज 3 एक प्रकार का मांस। सम०—अ (आ) गारः, रम् अगार (औषधविक्रेता) की दुकान,—अङ्गम् कोई चीज जो दवा खाने के बाद ली जाय।

भैक्ष (वि०) (स्त्री—क्षी) [भिक्षैव तत्समूहो वा—अण्] भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने वाला, क्षम् 1 मांगना भीख —मनु० ६।५५, याज्ञ० ३।४२ 2 जो कुछ भिक्षा में प्राप्त हो, भीख, दान—भैक्षेण वर्तयेन्नित्यम् मनु० २।१८८, ४।५। सम०—अन्नम् भिक्षा में प्राप्त आहार, भिक्षा का अन्न,—आशिन् (वि०) भिक्षा में प्राप्त अन्न को खाने वाला, (पु०) भिखारी, साधु, —आहारः भिखारी,- काल भीख मांगने का समय, चरणम्,- चर्यम्,—चर्या भीख मांगने के लिए इधर उधर फिरना, भीख मांगना, भिक्षा एकत्र करना, वीथिका,—वृत्ति- (स्त्री०) भिखारीपन,—भुज् (पु०) भिखारी, भिक्षमंगा।

भैक्षवम्, भैक्षुकम् [भिक्षूणां समूह—अण्] भिखारियों का समूह।

भैक्ष्यम् [भिक्षा+ष्यञ्] मांग कर प्राप्त किया हुआ अन्न, भिक्षा, भीख, दान दे० 'भैक्ष'।

भैम (वि०) (स्त्री०—मी) [भीम+अण्] भीमविषयक, —मी 1 भीम की पुत्री, नल की पत्नी दमयन्ती का पितृपरक नाम 2 माघ शुक्ला एकादशी, या उस दिन किया जाने वाला उत्सव।

भैमसेनि,—स्य [भीमसेन—इञ्, ष्य वा] भीमसेन का पुत्र।

भैरव (वि०) (स्त्री०—वी) [भीरु+अण्] 1 भयानक, डरावना, भीषण, भयावह 2 भैरवसंबंधी, ब शिव का (इसके आठ रूप गिनाये गये हैं) एक रूप। —वी 1 दुर्गादेवी का एक रूप 2 हिन्दू-संगीत पद्धति में एक विशेष रागिनी का नाम 3 बारह वर्ष की कन्या या किशोरी जो दुर्गा-पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे,- क्रम भय, भीषणता। सम० -ईश-विष्णु का विशेषण, शिव का विशेषण,-सर्जकः, —यातना काशी में जाकर शरीर त्यागने वाले व्यक्तियों की आत्मा को परमात्मा में लीन होने के योग्य बनाने के लिए भैरव द्वारा उनकी विशुद्धि के लिए उनको दी जाने वाली यातना।

भैषजम् [भेषज+अण्] औषधि, दवा,—ज लंबा पक्षी, लावक।

भैषज्यम् [भिषज कर्म भेषज+स्वार्थे वा ष्यञ्] 1 औषधियां देना, चिकित्सा करना 2 दवादारू, औषधि, दवाई 3 आरोग्यशक्ति, नीरोगकारिता।

भैष्मकी [भीष्मक+अण्+ङीष्] विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, रुक्मिणी का पितृपरक नाम।

भोक्तृ (वि०) [भुज्+तृच्] 1 उपभोक्ता 2. कब्जा करने वाला 3 उपभोग में लाने वाला, प्रयोक्ता 4 महसूस करने वाला, अनुभव करने वाला, भोगने वाला, (पु०) 1 कार्विज, उपभोक्ता, उपयोक्ता 2 पति 3 राजा, शासक 4 प्रेमी।

भोग. [भुज्+घञ्] 1 खाना, खा पी जाना 2 सुखोपयोग, आस्वाद 3 स्वामित्व 4 उपयोगिता, उपादेयता 5 हकूमत करना, शासन, सरकार 6 प्रयोग, (जरोहर आदि का) व्यवहार 7 भोगना, झेलना, अनुभव करना 8 प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9 स्त्रीसंभोग, मैथुन, विषयसुख 10 उपभोग, उपभोग की वस्तु —भोगे रोगभयम् भर्तृ० ३।३५, भग० १।३२ 11 भोजन, दावत, भोज 12 आहार 13 नैवेद्य 14. लाभ, फायदा 15 आय, राजस्व 16 धनसंपत्ति 17 वेश्या को दी गई मजदूरी 18. वक्र, घुमाव, चक्कर 19 साँप का फैलाया हुआ फण—स्वसदृशितभुजङ्गभोगाङ्कदग्रन्थि आदि—मा० ५।२३, रघु० १०।७, ११।५९ 20 साँप। सम०-अर्ह (वि०) उपभोज्य (हम्) संपत्ति, दौलत, -अर्हम् अनाज, अन्न,—आधि बन्धक में रक्खी हुई वस्तु जिसका उपभोग तब तक किया जाय जब तक कि वह छुड़ाई न जाय,—आवली किसी व्यावसायिक प्रशस्तिवाचक द्वारा स्तुतिगान —नन्न स्तुतिव्रतस्तस्य ग्रथो भोगावली भवेत्- हेम०, —आवासः जनानखाना, अन्तःपुर,- कर (वि०) सुखद या उपभोगप्रद,—गृह्यम् वेश्याओं को दी गई मजदूरी,—गृहम् महिलाकक्ष, अन्तःपुर, जनानखाना, —तृष्णा सांसारिक उपभोगों की इच्छा--तदुपस्थितमग्रहीदज पितुराज्ञेति न भोगतृष्णया—रघु० ८।२, 'स्वार्थपूर्ण उपभोग' मा० २,--देहः 'भोग-शरीर' सूक्ष्मशरीर या कारणशरीर जिसके द्वारा व्यक्ति परलोक में अपने पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों का समुचित भोगता है, —धर साँप,—पतिः राज्यपाल या विषयाधिपति,—पाल. साईस, -पिशाचिका भृत्य,- भृतक जो केवल जीविका के लिए नौकरी करता है, वस्तु (नपु०) उपभोग की वस्तु या पदार्थ,—सद्मन (नपु०) भोगावास, दे०,—स्थानम् 1 उपभोग का आसन शरीर 2 अन्तःपुर।

भोगवत् (वि०) [भोग+मतुप्] 1 सुखद, प्रसन्नता देने वाला, खुशी देने वाला 2 प्रसन्न, समृद्ध 3 वक्रवाला, मंडलाकार, कुण्डलाकार, (पुं०) 1 साँप 2. पहाड़ 3 नृत्य, अभिनय, और गायन—(स्त्री०—ती) 1 पातालगंगा का विशेषण 2 सर्पणिशाचिका 3 पाताललोक में नाग—पिशाचिकाओं का नगर 4 चान्द्रमास की द्वितीया तिथि की रात।

भौगिक [भोग+ठन्] साईस, घोड़े का रखवाला।

भोगिन् (वि०) [भोग+इनि] 1 खाने वाला 2 उपभोक्ता 3. भोगने वाला, अनुभव करने वाला, सहन करने वाला 4 उपभोक्ता, स्वामी —इन उपरिवत् चार अर्थों में (समास के अन्त में प्रयुक्त) 5 मालदार 6 फणदार 7. उपभोग में मग्न, विषयवासनाओं में लिप्त—पंच० १।६५, (यहाँ इसका अर्थ 'फण से युक्त' भी है) 8 धनाढ्य, सम्पत्तिशाली, (पुं०) 1 साँप यजाजिनालम्बि पिनद्धभोगि वा कु० ५। ७८ रघु० २।३२, ४।४८, १०।७, ११।५९ 2 राजा 3 विषयी 4 नाई 5. गाँव का मुखिया 6 आश्लेषा नक्षत्र,- नी राजा के अन्तःपुर की स्त्री जो रानी के रूप में अभिषिक्त न हो, रखैल, उपपत्नी। सम०—इन्द्रः, —ईशः शेष या वासुकि,—कान्ता वायु, हवा, —भुज् (पुं०) 1. नेवला 2 मोर, वल्लभम् चंदन।

भोग्य (वि०) [भुज्+ण्यत्, कृत्वम्] 1 उपभोग के योग्य, या काम में लाने योग्य—रघु० ८।१८, पंच० १।११७ 2 भोगने योग्य या सहन करने लायक —मेघ० १ 3. लाभदायक,—ग्यम् 1 उपभोग का कोई पदार्थ 2 दौलत, सम्पत्ति, जायदाद 3. अनाज, अन्न, या वेश्या, वारांगना।

भोज [भुज्+अच्] 1 मालवा (या धारा) का प्रसिद्ध राजा, (जिसा माना जाता है कि राजा भोज दसवीं शताब्दी के अन्त में या ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए थे, वे संस्कृत ज्ञान के बड़े अभिभावक थे, 'भरस्वयंवरकाठाभरण' आदि कई ग्रंथों का उन्हें प्रणेता समझा जाता है) 2 एक देश का नाम 3 विदर्भ के राजा का नाम भोजन दूतों रखवे विसृष्ट—रघु० ५।३९, ७।१ —३९ ३५, जाः (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम। सम०—अधिप कंस का विशेषण --इन्द्र भोजों का राजा,—कटम् स्वयं द्वारा स्थापित एक नगर का नाम, देव, राज। राजा भोज दे० (१) ऊपर —वंशिन् 1 राजा भोज, 2 कंस का एक विशेषण।

भोजनम् [भुज्+ल्युट्] 1 खाना, भोजन करना,—अजीर्णे भोजनं विषम् 2 आहार 3 भोजन (खाने के लिए) देना, खिलाना 4 उपयोग करना, उपभोग करना 5 उपभोग की सामग्री 6 जिसका उपभोग किया जाय 7 संपत्ति, दौलत, जायदाद, ८. शिव का विशेषण। सम०--अधिकार चार का कार्यभार, खाद्यसामग्री का अधीक्षण, कार्याध्यक्ष का पद —आच्छादनम् खाना-कपड़ा, काल, वेला, समय भोजन करने का समय खाने का समय त्यक्त आहार का त्याग, उपवास भूमि (स्त्री०) भोजनकक्ष, खाने का कमरा, विशेष विशिष्ट भोजन, विशिष्ट भोजन, वृत्ति (स्त्री०) भोजन, आहार, व्यय (वि०) खाने में व्यस्त, व्ययः खाने-पीने का खर्च।

भोजनीय (वि०) [भुज् अनीयर्] भक्षणीय, खाने योग्य, सम आहार।

भोजयितृ (वि०) [भुज् णिच् तृच्] जो दूसरों को भोजन कराये, खिलाने वाला।

भोज्य (वि०) [भुज्+ण्यत्] 1 जो खाया जा सके

2 उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य 3 भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4. संभोग सुख के योग्य, -व्यम् 1 आहार, खाना—न्च भोक्ता सह च भोज्यभूत -पंच० २, कु० २।१५, मनु० ३।२४० 2 खाद्य सामग्री का भंडार, खाद्य पदार्थ 3 स्वादिष्ट भोजन 4 उपभोग। सम०- काल: भोजन करने का समय,- संभव आमरस, शरीर का प्राथमिक रस।

भोज्या [भोज्य+टाप्] भोज की एक रानी—रघु० ६।५९ ७।२, १३।

भोट: एक देश का नाम, (कहते हैं कि 'तिब्बत' का ही यह नाम है)। सम०—अंग: 'भूटान' कहलाने वाला प्रदेश।

भोटीय (वि०) [भोट+छ] तिब्बतवासी।

भोमोरा (स्त्री०) मूंगा विद्रुम।

भोस् (अव्य०) [भा+डोस्] संबोधन सूचक अव्यय जिसका अनुवाद होता है 'अरे, ओ, अहो, ओह, आह' क कोऽत्र भो श० २, (स्वर या संघोष व्यंजन परे होने पर पदांत विसर्ग का लोप हो जाता है) अयि, भो महर्षिपुत्र—श० ७, कभी-कभी इसको दोहराया जाता है भो भो राकरग्रहाधिवासिनो जानपदा: मा० ३, इसके अतिरिक्त 'भो' का प्रयोग 'शोक' तथा 'प्रश्न-वाचकता' के लिए भी होता है।

भौजङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भुजङ्ग+अण्] सर्पिल, सांप जैसा गम् 'आश्लेषा' नामक नक्षत्र।

भौट्ट [भोट+अण् पृषो०] तिब्बती, तिब्बतवासी।

भौत (वि०) (स्त्री०—ती) [भूतानि प्राणिनोऽधिकृत्य प्रवृत्त, तानि देवता वा अस्य अण्] 1 जीवित प्राणियों से संबन्ध रखने वाला 2 मूलभूत, भौतिक 3 पंचभौतिक 4 पागल, विक्षिप्त, —त: भूतग्रस्त व पिशाचों की पूजा करने वाला, देवल, पुजारी, —तम् भूत-प्रेतों का समूह।

भौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [भूत+ठक्] 1 जीवित प्राणियों से संबंध रखने वाला— मनु० ३।७४ 2 स्थूल तत्त्वों से निर्मित, भौतिक, भौतिक—पिंडेष्वनात्मा खलु भौतिकेषु— रघु० २।५३ 3 भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला,—क: शिव का नाम, —कम् मोती। सम०—मंत्र—विद्या, विद्या जादूगरी, अभिचार।

भौम (वि०) (स्त्री०) [भूमि+अण्] 1 पार्थिव 2 पृथ्वी पर होने वाला, मिट्टी का बना हुआ, लौकिक भौमो मुने स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।३६, १५।५९ 3 मिट्टी का, मिट्टी से निर्मित 4 मंगल से संबद्ध, —म: 1 मंगलग्रह 2 नरकासुर का विशेषण 3 जल 4 प्रकाश। सम०—दिवस, —वार:, वासर: मंगल-वार, -शि० १५।१७, —रत्नम् मूंगा।

भौमन: [भूमन्+अण्] देवों के शिल्पी विश्वकर्मा का नाम।

भौमिक (वि०) (स्त्री०—की) } [भूमि+ठक् यत् वा]
भौम्य (वि०) } पार्थिव, लौकिक, पृथ्वी पर रहने वाला या विद्यमान।

भौरिक: [भूरि सुवर्णमधिकरोति - ठक्] राजकीय कोश में सुवर्णाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष।

भौवन: दे० भौमन।

भौवादिक (वि०) (स्त्री—की) [भ्वादि+ठक्] भ्वादि अर्थात् भू से आरम्भ होने वाली धातुओं से सम्बन्ध रखने वाला।

भ्रंश् (भ्वा० आ, दिवा० पर० भ्रशते, भ्रश्यति, भ्रष्ट (अधिकर० अपा० के साथ) 1. गिरना, टपकना, उलट जाना,—हस्ताद्भ्रष्टमिव विलापरत्नम्—श० ३।२६ 2. गिरना, विचलित होना, अलग छूट जाना - दूराद्भ्रष्ट —हि० ४, रघु० १४।१६ 3. वञ्चित होना, खो देना—अभ्रष्टोऽसौ धृतेस्तत:—भट्टि० १४।७१, पंच २।१०८ ४।३७ 4 बच निकलना, भाग जाना,—सद्यस्काद् बभ्रसु: केचित्—भट्टि० १४।१०५, १५।५९ 5 क्षीण होना, मुर्झाना, घटना 6. ओझल होना, नष्ट होना, अलग होना—मालवि० १।८, १२, प्रेर० भ्रंशयति-ते। गिराना, पछाड़ देना 2. वञ्चित करना, परि—, 1 गिरना, टपकना, उलटना, फिसलना 2 बहकना, भटकना 3 अलग हो जाना, पथभ्रष्ट होना, विचलित होना 4 खोना, वञ्चित होना—मनु० १०।२० प्र—, 1 गिरना, टपकना फिसलना, —प्रभ्रश्यमानाभरणप्रसूनाम्—रघु० १४।५४ 2 खो देना, वञ्चित होना - प्रभ्रश्यते तेजस:- मृच्छ० १।१४, प्रेर० पछाड़ना, नीचे डालना, नीचे गिरना रघु० १३।३६, वि—, 1. गिरना, टपकना 2 बर्बाद होना, क्षीण होना 3 गिरना, भटकना, पथभ्रष्ट होना 4. खो देना।

भ्रंश: -स: [भ्रंश् भावे घञ्] 1 गिर पड़ना, टपक पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना—हेहैरण्य न भ्रंशमतो न लोभात्—रघु० १६।७४, कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठ —मेघ० २ 2. क्षीण होना, घटना, ह्रास होना 3 पतन, नाश, बर्बादी, विध्वंस 4. भाग जाना 5 ओझल हो जाना 6. खो जाना, हानि, वञ्चना—स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाश:—भग० २।६३ इसी प्रकार 'जातिभ्रंश' 'स्वार्थभ्रंश' 7 भटकने वाला, भ्रष्ट हो जाने वाला, विचलित।

भ्रंशयु: [भ्रंश्+अयुच्] दे० 'प्रभ्रंशयु'।

भ्रंश्र (न) न (वि०) (स्त्री—श्री) [भ्रंश्+स्युट्] 1 नीचे फेंक देने वाला,—नम् 1 गिर पड़ने की क्रिया 2. गिरना, वञ्चित होना, खो देना।

भ्रंशिन् (वि०) [भ्रंश्+णिनि] 1 नीचे गिरने वाला, पतनशील 2. जीर्ण होने वाला 3 भटकने वाला 4. बर्बाद होने वाला, नष्ट होने वाला।

भ्रंस्=दे० 'भ्रंश'।

भ्रुकुंसः [भ्रुवा कुत्सो भाषण यस्य ब० स०, अकारादेश] स्त्री की वेशभूषा में नट (नाटक का पात्र)।

भक्ष् (स्वा० उभ० भक्षति—ते) खाना, निगलना।

भक्षणम् [भक्ष्+ल्युट्] खाने की क्रिया, भूखना, सेकना।

भक्ष् (स्वा० पर० भणति) शब्द करना।

भगंदरः=दे० भूभग।

भ्रम् (भ्वा० दिवा० पर० भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति, भ्रान्त) 1. इधर उधर घूमना, हिलना-डुलना, मारा मारा फिरना, टहलना, (आल से भी)—भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा—मा० १।१४, मनो निष्ठाशून्य भ्रमति च किमप्यालिखति च—३१, (बहुधा स्थान में कर्म) भुव बभ्राम—दश०,—दिङ्मण्डल भ्रमसि मानस चापलेन—मृच्छ० ३।७७, इसी प्रकार जिह्वां भ्रम् 1 इधर उधर मांगते फिरना 2 मुडना, चक्कर काटना, घूमना, वर्तुलाकार गति होना—सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने—भर्तृ० २।९५, भ्रमता भ्रमरेण—गीत० ३, 3 भटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना, विचलित होना 4 डगमगाना, लडखडाना, डावाडोल होना, संदेह की अवस्था में होना, झिझकना मा० ५।२० 5 भूल करना, भूल में ग्रस्त होना, गलती पर होना,—आभरणकारस्तु तालव्य इति बभ्राम 6 फुरफुराना, फडफडाना, कांपना, चचल होना—चक्षुर्भ्रमति—पच० ४।७८ 7 घेरना, प्रेर० (भ्रमयति—ते, भ्रामयति—ते) टहलाना, फिराना, घुमाना, चक्कर दिलाना, आवर्तित करना—भ्रमय जलदान मोघभानून्—मा० ९।४१ 2 भुलाना, भ्रम में डालना, गुमराह करना, उलझाना, उद्विग्न करना, झझट में डालना, चकरा देना, डावाडोल करना—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५९, भ्रमयन्ति च समीलयन्ति च उत्तर० १।३५ 3 लहराना, (तलवार) घुमाना, दोलायमान करना—लीलारविन्द भ्रमयाञ्चकार—रघु० ६।१३ उद्, 1 भ्रमण करना, इधर उधर घूमना, गडबडा जाना—धावत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युत्तिष्ठत्यपि—गीत० ४ 2 भूलना, भूल में पडना 3 विक्षुब्ध होना, व्याकुल होना—रघु० १२।७४, परि 1 टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर-उधर हिलना-डुलना—परिभ्रमसि किं वृथा क्वचन चित्त विश्राम्यताम्—भर्तृ० ३।१३७ 2 मडराना, चक्कर लगाना—परिभ्रमन्मूर्धजषट्पदाकुलं—कि० ५।१४ 3 घूमना, परिक्रमा करना, मुडना, 4 घूमना, मारा मारा फिरना (कर्म० के साथ) 5 मोडना, प्रदक्षिणा करना, वि—, 1. घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2. मडराना, आवर्तित होना, चक्कर खाना 3 उडा देना, तितर बितर करना, इधर उधर बखेरना 4 गडबडा जाना, अव्यवस्थित होना, व्याकुल होना, विस्मित होना—भग० १६।१६, (प्रेर०) घबरा देना, उद्विग्न करना प्रभामत्तद्दन्दो जगदिदमहो विभ्रमयति—काव्य० १०, सम—, 1 घूमना, टहलना 2 गलती पर होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, घबडा जाना।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1 घूमना, टहलना, चहलकदमी करना 2 चक्कर खाना, आवर्तित होना, घूम जाना 3 चक्राकार गति, परिक्रमा 4 भटकना, विचलित होना 5 भूल, गलती अशुद्धि, गलतफहमी, भ्रान्ति—शुक्तौ रजतमिति ज्ञान भ्रम 6 गडबडी, व्याकुलता, उलझन 7 भवर, जलावर्त 8 कुम्हार का चक्र 9 चक्की का पाट 10 खराद 11 घूर्णि 12 फौवारा, जल प्रवाह। सम०—आकुल (वि०) घबराया हुआ, —आलक्त सिकलीगर, अस्त्रमार्जक।

भ्रमणम् [भ्रम्+ल्युट्] 1 इधर-उधर घूमना, टहलना 2 मुडना, क्रान्ति 3 विचलन, पथभ्रंशन 4 कांपना, डगमगाना, चचलता, लडखडाना 5 गलती करना 6 घूर्णन, घुमेरी,—भी 1 एक प्रकार का खेल 2 जोक।

भ्रमत् (वि०) [भ्रम्+शतृ] घूमना, टहलना आदि। सम०—कुटी एक प्रकार का छाता।

भ्रमर [भ्रम्+करन्] 1 मधुमक्खी, भौंरा—मलिनेऽपि रागपूर्णा विकसितवदनामनल्पजल्पेऽपि, त्वयि चपलेऽपि च मरमा भ्रमर कथ वा सरोजिनी त्यजसि—भामि० १।१०० (यहाँ द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाता है) 2 प्रेमी, सौन्दर्यप्रेमी, लम्पट 3 कुम्हार का चाक, —रम् घूर्णन, घुमेरी। सम०—अतिथिः चम्पा का पौधा,—अभिलीन (वि०) मक्खियों से लिपटा हुआ, रघु० ३।८,—अलक मस्तक पर की लट,—इष्टः श्योनाक का वृक्ष,—उत्सवा माधवी लता, करण्डकः मक्खियों से भरी हुई पेटी (इसे चोर अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड देते हैं जिससे कि यह वर्तनी बुझा दें),—कीटः भिरों की जाति,—प्रिय कदम्ब वृक्ष का एक भेद, —बाधा भौंरे द्वारा मनाया जाना—श० १,—सङ्घातम् मक्खियों (भौंरों) का झुंड।

भ्रमरक [भ्रमर+कन्] 1 भौंरा 2 जलावर्त, भवर, —क,—कम् 1 मस्तक पर लटकने वाली बालों की लट 2 खेलने के लिए गेंद 3 लट्टू।

भ्रमरिका [भ्रमरक+टाप् इत्वम्] सब दिशाओं में घूमने वाली।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] 1 आवर्तन, मोड, चक्राकार गति, इधर-उधर घूमना, क्रान्ति—उत्तर० ३।१९, ६।३, मा० ५।२३ 2 कुम्हार का चाक 3 खैरादी की खराद 4 भवर 5 बवडर 6 गोलाकार सैनिक-व्यूह-व्यवस्था 7 भूल, गलती।

भ्रस्ज् दे० भ्रस्ज् ।

भ्रांशिमन् (पु०) [भृशस्य भावः इमनिच्, ऋतो र] प्रचंडता, अत्यधिकता, उग्रता, उत्कटता ।

भ्रष्ट (वि०) [भ्रंश्+क्त] 1 पतित, नीचे पड़ा हुआ 2 गिरा हुआ 3 भटका हुआ, विचलित 4 वियुक्त, वञ्चित, निष्कासित, निकाला हुआ—यथा 'भ्रष्टाधिकार' में 5 मुर्झाया हुआ, क्षीण, बर्बाद 6. ओझल, खोया हुआ 7. दुश्चरित्र, दूषितचरित्र । सम० —अधिकार (वि०) अपनी शक्ति या पद से वञ्चित, पदच्युत,- क्रिय (वि०) विहित कर्मों को जिसने नहीं किया,—गुद (वि०) एक प्रकार के गुदरोग से ग्रस्त, योग. जो समंच्युत हो गया हो ।

भ्रस्ज् (तुदा० उभ० - भृज्जति, भृष्ट - प्रेर० भर्जयति -ते, भ्रज्जयति -ते, इच्छा० बिभर्क्षति बिभर्जिषति, बिभ्रज्जिषति) तलना, भूनना, सेकना कील पर मांस भूनना, (आत्म० में भी)—बभ्रज्ज निहते तस्मिन् शोको रावणमग्निवत्- भट्टि० १४।८६ ।

भ्राज् (भ्वा० आ० भ्राजते) चमकना, दमकना, चमचमाना, जगमगाना - हरेर्जुभ्रेजिरे फेणबंधुधा हरिणाक्षसा भट्टि० १५।७८, १५।२४, वि जगमगा करना, देदीप्यमान होना -विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती रत्न० १।२१ ।

भ्राज [भ्राज्+क] सात सूर्यों में से एक,— अन् एक प्रकार का साम ।

भ्राजक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भ्राज्+ण्वुल्] चमकाने वाला. देदीप्यमान, कफ पित्त, त्वचा में व्याप्त पित्त ।

भ्राजथु [भ्राज्+अथुच्] आभा, कान्ति, उज्ज्वलता, सौन्दर्य ।

भ्राजिन् (वि०) [भ्राज्+णिनि] चमकने वाला, जगमगाने वाला ।

भ्राजिष्णु (वि०) [भ्राज्+इष्णुच्] चमकने वाला, देदीप्यमान, उज्ज्वल, दीप्तिकेन्द्र,—ष्णु. 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण ।

भ्रातृ (पु०) [भ्राज्+तृच् पृषो०] 1 भाई, सहोदर 2 घनिष्ठ मित्र या संबंधी 3 निकटवर्ती रिश्तेदार 4 मित्रवत् संबोधन का चिह्न (प्रिय मित्र,) भ्रातः कष्टमहो- भर्तृ० ३।३७, २।३४, तत्र चिन्तय तद्धि भ्रातः -मोह० । सम०—गन्धि,—गन्धिक (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम मात्र का भाई, -ज भतीजा (जा) भतीजी—जाया (भ्रातृर्जाया भी) भाई की पत्नी, भाभी, मेघ० १०,—दत्त बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन को दी गई संपत्ति, —द्वितीया कार्तिक शुक्ला द्वितीया (इस दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमन्त्रित करती हैं और उनकी खातिर करती हैं, भाई भी इस दिन बहनों को उपहार देते हैं, संभवतः यह दिन इस लिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई को आमन्त्रित किया था—तु० यमद्वितीया),—पुत्रः (भ्रातृव्यपुत्र) भतीजा,—भार्या भाई की पत्नी, —ज्यायसः पति का बड़ा भाई, जेठ,—हत्या भाई की हत्या ।

भ्रातृक (वि०) [भ्रातृ+कन्] भाई से संबंध रखने वाला ।

भ्रातृव्य. [भ्रातृ पुत्र व्यत्] 1 भाई का बेटा, भतीजा 2 शत्रु, विरोधी ।

भ्रातृवत (वि०) [भ्रातृ+वतच्] जिसके एक या अधिक भाई हों ।

भ्रात्रीयः, भ्रात्रेयः [भ्रातृ+छ] भाई का पुत्र, भतीजा ।

भ्रात्र्यम् [भ्रातृ+ष्यञ्] भाईचारा, भ्रातृभाव ।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1 इधर उधर घूमा फिरा हुआ 2 मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, घुमाया हुआ, 3 भूला हुआ, कुपथगामी, भटका हुआ 4. बढ़ाया हुआ, गड़बड़ाया हुआ, इधर उधर घूमने फिरने वाला इधर से उधर और उधर से इधर घूमने फिरने वाला, चक्कर काटने वाला -न्तम् 1 घूमना, इधर उधर फिरना,- चर पर्वततुर्गेषु भ्रान्त वनचरैः सह—भर्तृ० २।१४ 2 गलती, भूल ।

भ्रान्ति. (स्त्री०) [भ्रम्+क्तिन्] 1. इधर उधर फिरना, घूमना 2 घूमकर मुड़ना, मंडराना करना 3 भ्रान्ति, गोलाकार या चक्राकार घूमना—चक्रभ्रान्तिररान्तरेषु विननोत्पन्यामिवारावलीम्—विक्रम० १।५ 4 भूल, गलती, भ्रम, व्यामोह, मिथ्याभास—क्षितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाक विषद्रुमम्—उत्तर० १।४६ 5 घबराहट, उद्विग्नता 6 संदेह, अनिश्चय, शंका । सम०- कर (वि०) विह्वल करने वाला, भ्रम में डालने वाला,—भाजनः शिव का विशेषण,—हर (वि०) संदेह या भूल को दूर करने वाला ।

भ्रान्तिमत् (वि०) [भ्रान्ति+मतुप्] 1 घूमने वाला, मुड़ने वाला,-भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम्—मालवि० २।१३ 2. भूल करने वाला, गलती करने वाला, भ्रमयुक्त—पु० एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है, —भ्रान्तिमान्यत्सदृशेतुल्यदर्शने - काव्य० १०; उदा०—कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिन, आदि-विक्रम० ३।२, मा० १।२, भी ।

भ्रामः [भ्रम्+अण्] 1 इधर-उधर घूमना 2 मोह, भूल, गलती ।

भ्रामक (वि०) (स्त्री०-मिका) [भ्रम्+णिच्+ण्वुल्] 1 घुमाने वाला 2 आवर्तित करने वाला 3 उलझाने वाला, धोखा देने वाला—क 1. सूरजमुखी फूल 2 एक प्रकार का चुंबक पत्थर 3. धोखेबाज, बदमाश, ठग 4 गीदड़ ।

भ्रामर (वि०) (स्त्री०—री) [भ्रमरेण समृत भ्रमरस्येदं वा अण्] भ्रमर संबंधी,—रः,—रम् एक प्रकार का चुंबक पत्थर—रम् 1 चक्कर काटना, 2 आभूषण 3. अपस्मार, मिरगी 4. वाहन 5. एक प्रकार का रति-बंध, संभोग का आसन विशेष री 1 दुर्गा का विशेषण 2. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिण करना—दीपना भ्रामर्यं.—कर्पूर० ४, विद्ध० २।

भ्रा (भ्रास्) भ्वा० (भ्वा० दिवा० आ० भ्राशते, भ्राश्यते, भ्लाशते, भ्लाश्यते) चमकना, दमकना, जगमगाना।

भ्राष्ट्रः,—ष्ट्रम् [भ्रस्ज्+ष्ट्रन् भ्रष्ट्र-अण् वा] कड़ाही, —ष्ट्रम् 1 प्रकाश 2 अन्तरिक्ष।

भ्राष्ट्रभृज्ज (वि०) [भ्राष्ट्र+भृज्+ण, मुम्] तलने वाला या भूनने वाला, भड़भूजा।

भ्रा (भ्लास्) स्वा० 'भ्रा (भ्लास्) शू'।

भ्रू (भ्रू) स्त्री० [भ्रुवा कुत्सा (सा) भाषण यस्य ब० स० ह्रस्वो वैकल्पिक.] स्त्री की वेश्यावृत्ति में लगाने का पुरुषपात्र।

भ्रुकुटिः—टी [भ्रुव कुटि. कौटिल्यम्—ष० त०] दे० 'भ्रुकुटि'।

भ्रुच् (तुदा० पर० भ्रुचति) 1 संचय करना, एकत्र करना 2 हकना।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौंह, आँख की भौंह—कान्ति-भ्रुवोरायत्तलेखयोर्या—कु० १।४७। सम०—कुटि, —टी (स्त्री०) भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता, त्यौरी चढ़ाना, °बंध, °रचना भ्रूभंग या भ्रूभंगिमा, भ्रुकुटि बंधं या रच् भौंहें सिकोड़ना, त्यौरी चढ़ाना —क्षेपः भौंहों को सिकोड़ना—भ्रूक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम्—कु० ३।६०,—गाहम् भौंह का मूल,—भङ्गः, —भेदः भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता,—त्यौरी—तरङ्ग-भ्रूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना—विक्रम० ४।२८, सभ्रूभङ्गम् सभ्रिव—मेघ० २४, सभ्रूभङ्गम् 'त्यौरी—चढ़ा कर', —भेदिन् (वि०) त्यौरी चढ़ाए हुए,—मध्यम् भौंहों के बीच का स्थान,—लता बेल की भाँति भौंह, लहराबदार या कुटिल भौंह, विकारः,—विक्रिया, —विक्षेपः भौंहों की सिकुड़न, —विक्षेपिन्तम्,—विभ्रम., —विलास भौंहों का मादक संचालन, भौंहों की काम केलि,—भ्रूविलासमयं सोऽयमितीरयित्वा मा० १। २४, मेघ० १६।

भ्रूण [भ्रूण्+घञ्] 1 गर्भ, कलल 2 (गर्भस्थ) बच्चा, बालक। सम० घ्न हन् (वि०) भ्रूण हत्या करने वाला, —हत्या, —हत्या भ्रूण कायिराना, गर्भपात कराना—भ्रूणहत्या वा एते प्रान्ति—याज्ञ० १।६४।

भ्रेज् (भ्वा० आ० भ्रेजते) चमकना।

भ्रे (भ्रेष्) प् (भ्वा० उभ०—भ्रेषति-ते, भ्रेषयति—ते) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 गिरना लड़खड़ाना, डगमगाना, फिसलना 3 डरना 4 क्रोध करना।

भ्रेषः [भ्रेष्+घञ्] 1 हिलना-डुलना, गति 2. डगमगाना, लड़खड़ाना, फिसलना 3 विचलित होना, भटकना, पथभ्रंश 4 मार्ग से विचलन, अतिक्रमण, पाप 2 हानि, क्षति।

भ्रौणहत्यम् [भ्रूणहत्या—अण्] गर्भस्थ शिशु की हत्या।

भ्लक्ष् द० भक्ष्।

भ्लाश् दे० भाश्।

म

मः [मा+क] 1 काल 2. विष्णु 3 जादू का गुर 4 चन्द्रमा 5 ब्रह्मा 6 विष्णु 7 शिव 8 यम,—मम् 1. जल 2. प्रसन्नता, कल्याण।

मकरः [म+किप् किरति-कृ+अच्-तारा०] 1 एक प्रकार का समुद्री-जन्तु, घड़ियाल, मगरमच्छ,—ह्रियाणा मकरध्वजस्मि—भग० १०।३१, मकरवक्त्र—मनु० ७।४ ('मकर' कामदेव का प्रतीक या कुलचिह्न माना जाता है, तु० निम्नांकित समस्त पदों की) 2 मकरराशि 3. मकरव्यूह, सेना की मकराकार स्थिति में क्रमबद्ध करना 4 मकर के आकार का कुण्डल 5 मकर के रूप में हाथ को बाँधना 6. कुबेर की नौ निधियों में से एक। सम० अक्षः 1. कामदेव का विशेषण 2 समुद्र का विशेषण,—अक्ष. वरुण का विशेषण,—आकरः, —आलयः,—आवासः समुद्र, सागर,—कुण्डलम् मकर की आकृति का कुण्डल,—केतनः, —केतुः केतुमत् (पु०) कामदेव के विशेषण,—ध्वजः 1 कामदेव का विशेषण—तन्मे मकरध्वजप्रहरणं—वीर० ४।१ 2 सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था,—राशिः (स्त्री०) मकर राशि,—संक्रमणम् सूर्य की मकरराशि में गति,—सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी।

मकरन्दः [मकरमपि दति कामजनकत्वात् दो—अवखण्डने क पृषो० मुम्—तारा०] 1 फूलों से प्राप्त शहद,

मधु, फूलों का रस मकरन्दवृन्दिलानामरविन्दानामयं मद्यमान्य भामि० १।६, ८ 2 एक प्रकार की चमेली 3 कामदेव 4 भौंरा 5 एक प्रकार का सुगन्धित आम्रवृक्ष, इस फूलों का केसर।

मकरन्दवत् (वि०) [मकरन्द+मतुप्] मधु से पूर्ण,—ली पाटल की बेल या पाटल का फूल।

मकरिन् (पु०) [मकर+इनि] समुद्र का विशेषण।

मकरी [मकर+ङीष्] मादा घड़ियाल। सम०—पत्रम्, —लेखा लक्ष्मी के मुखपर 'मकरी' का चिह्न,—प्रस्थः एक नगर का नाम।

मकुटम् [मकु—उट, अतनालिकलोपः] ताज—नु० 'मुकुट'।

मकुलि [मकु+उलि पृषो०] शूद्रशासन, राजा की ओर से शूद्रों के लिए आदेश।

मकुर [मक्—उरच् पृषो०] 1 शीशा, दर्पण 2 बकुल का वृक्ष 3 काली 4 अरब की चमेली 5 कुम्हार के चाक का डंडा।

मकुल [मकु—उलच्, पृषो०] 1 बकुल का वृक्ष 2 काली।

मकुष्ट, मकुष्टक [मकु—ड पृषो० नलोपः मकु मुखं स्यकति प्रतिहन्ति—मकु+स्कक्—अच्] एक प्रकार की लोबिया।

मकुष्ठ [मकु+स्था+क] मोठ, (लोबिये का एक प्रकार)।

मकूलक [मकु—ऊलक्—कन् पृषो० नलोपः] 1. कली 2 दन्ती नामक वृक्ष।

मक्क् (म्वा० आ०—मक्कते) जाना, हिलना-जुलना।

मक्कुलः [मक्क्+उलच्] वृद्ध, बुड्ढा, बोक।

मक्कोल [मक्क्+ओलच्] चर्बिया मिट्टी।

मक्ष् (म्वा० पर० मक्षति) 1 इकट्ठा होना, ढेर लगना, सञ्चय करना 2 क्रुद्ध होना।

मक्ष [मक्ष्+घञ्] 1 क्रोध 2 पाखण्ड 3 समुच्चय, संग्रह। सम०—वीर्यः पियाल वृक्ष।

मक्षि (स्त्री) का [मक्ष्+क्विप्—टाप् इत्व] मक्खी, मधुमक्खी—भी उपस्थित नयनसंभृतसंनिहिता मक्षिका व मालवि० २। सम०—मलम् मोम।

मक्ष्, मक्ष् (म्वा० पर० मक्षति, मक्षति) जाना, चलना सरकना।

मखः [मख् मखायां घ] यज्ञ, यज्ञविषयक कृत्य,—अकिञ्चनाय मखजं व्यनक्ति रघु० ५।१६, मनु० ४।२४, रघु० ३।३९। सम०—अग्निः,—अलः यज्ञाग्नि —अनुहृद् (पु०) शिव का विशेषण जिसका यज्ञ विषयक कोई कृत्य,—भाक् (पु०) राम का विशेषण, द्विष् (पु०) पिशाच, राक्षस रघु० ११।२७ —द्वेषिन् (पु०) शिवका विशेषण,—हन् (पु०) 1 इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण।

मगधः [मगध्+अच्, मग दोषं दधाति वा मग+धा +क] एक देश का नाम, बिहार का दक्षिणी भाग —अस्ति मगधेषु पुण्यपुरी नाम नगरी—दश० १ अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठः—रघु० ६।२१ 2. भाट, बन्दी, चारण,—धाः (ब० व०) 1. मगध देश के अधिवासी, मागध 2 बड़ी पीपल। सम०—उदुम्बरा बड़ी पीपल,—पुरी मगध की नगरी,—लिपिः (स्त्री०) मागधी लिपि या लिखावट।

मग्न (भू० क० कृ०) [मस्ज्—क्त] 1 गोता लगा हुआ, डुबकी लगाई हुई 2 सराबोर, डूबा हुआ 3 लीन, लिप्त (दे० मस्ज्)।

मघः [मह्+अच्, पृषो०] 1 विश्व के एक द्वीप या प्रभाग का नाम 2 एक देश का नाम 3 एक प्रकार की औषधि। ॰घा नाम का दसवां नक्षत्र, घम् एक प्रकार का फूल।

मघव, मघवत् (पु०) [मघवन्+तृ अन्तादेश, ऋकारस्य इत्सञ्ज्ञा] इन्द्र का नाम।

मघवन् (पु०) [मह् पूजायां कनिन्, नि० ह्रस्व घ, वुगागमश्च] (कर्तृ० ए० व० मघवा, कर्म० ब० व० —मघोनः) 1. इन्द्र का नाम—बुबोधयिषुर्मघवप्रभावं सस्मार मघवा दिवम् रघु० १।२६, ३।४६, कि ३।५२, कु० ३।१ 2 उल्लू, पेचक 3 व्याध का नाम।

मघा [मह्+घ, ह्रस्व घत्वम्, टाप्] दसवां नक्षत्र, जो पांच तारों का समूह है। सम० ॰त्रयोदशी भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी, ॰भवः, ॰भूः मुक्तग्रह।

मङ्क् (म्वा० आ०—मङ्कते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 सजाना, अलंकृत करना।

मङ्किलः [मङ्क्+इलच्] दावानल, जंगल की आग।

मङ्कुरः [मङ्क्+उरच्] दर्पण, शीशा।

मङ्क्षणम् [मङ्क्ष्+ल्युट्, पृषो० ह्रस्य क्षत्वम्] टांगों की रक्षा के लिए कवच, पिंडलियों की रक्षार्थ कवच।

मङ्क्षु (अव्य०) [मङ्क्ष्+उन्, पृषो० ह्रस्य क्षत्वम्] तुरन्त, जल्दी से, शीघ्र,—मङ्क्षूदपादि पण्डितपटलैरस्मोनाम् —शि० ५।३७ 2 अत्यन्त, बहुत अधिक।

मङ्गः [मङ्ग्+अच्] 1 राजा का चारण 2 एक विशेष प्रकार की औषधि।

मङ्ग् (म्वा० उभ० मङ्गति-ते) जाना, हिलना-जुलना।

मङ्गः [मङ्ग्+अच्] 1. नाव का अगला भाग 2 नाव का एक पार्श्व।

मङ्गल (वि०) [मङ्ग्+अलच्] 1 शुभ, भाग्यशाली, कल्याणकारी, हितकारी—यथा मङ्गलदिवसे, मङ्गलवृषभ' में, 2 समृद्ध, कल्याणप्रद 3 बहादुर, ला 1 (क) शुभत्व, कल्याणकारिता जनकाना रघूणां च यत्कृत्यं तन्मङ्गलम् उत्तर० ६।४२, रघु० ६।९, १०।६७, (ख) प्रसन्नता, सौभाग्य, अच्छी किस्मत, आनन्द,

उल्लास - मा० १।३, उत्तर० ३।४८, (ग) कुशल, क्षेम, कल्याण, मंगल—सङ्कटसंता किमु न मङ्गलमानन्ति भामि० १।१२२ 2 शुभ शकुन, कोई भी शुभ घटना 3 आशीर्वाद, नांदी, शुभकामना 4 शुभ या मंगलकारी पदार्थ 5 शुभावसर, उत्सव 6 (विवाह आदि) शुभ संस्कार 7 कोई पुरानी प्रथा 8 हल्दी, -ल. मंगलग्रह,-ला पतिव्रता स्त्री। सम०—अक्षता: (पु०, ब० व०) आशीर्वाद देते समय ब्राह्मणों के द्वारा लोगों पर फेंके जाने वाले चावल,-अगुरु (नपु०) चन्दन का एक भेद, अयनम् आनंद या समृद्धि का मार्ग,—अलङ्कृत (वि०) शुभ अलंकारों से अलंकृत कु० ६।८७,--अष्टकम् विवाह के अवसर पर वरवधू की मंगलकामना के लिए पढ़े जाने वाले आशीर्वादात्मक श्लोक, —आचरणम् (सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से) किसी भी ग्रन्थ के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली प्रार्थना के रूप में मंगल-प्रस्तावना,—आधार 1 शुभ, पवित्र प्रथा 2 आशीर्वादोच्चारण, नांदी,—आतोद्यम् उत्सव के अवसर पर बजाया जाने वाला ढोल, --आदेशवृत्तिः भाग्य में लिखे को बताने वाला ज्योतिषी,---आरम्भ गणेश का विशेषण—आलम्भनम् किसी शुभ वस्तु को स्पर्श करना,---आलय --आवास: देवालय, मन्दिर,—आह्निकम् मंगल-कामना के लिए नित्य अनुष्ठेय धार्मिक कृत्य,—इच्छु आनन्द या समृद्धि का इच्छुक,—करणम् किसी (वि०) भी कार्य की सफलता के लिए पढ़ी जाने वाली प्रार्थना,- कारक,-कारिन् (वि०) शुभ, मंगलकारी,—कार्यम् उत्सव का अवसर, कोई भी मांगलिक कृत्य—श० ४, क्षौमम् उत्सव के अवसर पर पहना जाने वाला रेशमी वस्त्र—रघु० १२।८, —गृहः शुभग्रह षष्ठ,—पात्रम् उत्सव के अवसर पर पानी से भरा कलश जो देवताओं को अर्पित किया जाय, छाय प्लक्ष का वृक्ष, पाकड़ का पेड़,—तूर्यम्,—वाद्यम् एक वाद्य यंत्र विगुल, या ढोल आदि --जो उत्सवादिक के शुभ अवसरों पर बजाया जाय-रघु० ३।२०, देवता शुभ या रक्षक देवता,—पाठक भाट, चारण, बन्दीजन —आ दुरात्मन् वृथामंगलपाठक वेणी० १,—पुष्पम् शुभ फूल, - प्रतिसर,—सूत्रम् शुभ डोरी, शुभ डोरा जो सौभाग्यवती स्त्रियां अपने गले में तब तक पहनती हैं जब तक उनका पति जीवित है, —अयं कल्पितमङ्गलप्रतिसरः (अङ्गुलः)—मा० ५।१८ 2. नाबोझ को डोरा प्रद (वि०) शुभ (द्रा) हल्दी, —प्रस्थ एक पहाड़ का नाम, भावभूषण वि० शुभ अलंकार अर्थात् जनेऊ या कस्तूरी-तिलक आदि से सुभूषित,-वचस् (पु०)-वाद मंगलात्मक अभिव्यक्ति आशीर्वचन, मंगलाचरण,- वाद्यम् दे० 'मंगलतूर्यम्', वार, वासर: मंगलवार,—विधिः उत्सव या कोई शुभकृत्य,—शब्द अभिनन्दन, आशीर्वादात्मक अभिव्यक्ति,—सूत्रम् दे० 'मंगलप्रतिसर', स्नानम् मंगल कामना के लिए किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मङ्गलीय (वि०) [मङ्गल+छ] शुभ, सौभाग्यसूचक।

मङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+यत्] 1 शुभ सौभाग्यशाली, मानद, किस्मतवाला, समृद्ध --मनु० २।३१ 2 सुखद, रुचिकर, सुन्दर 3 पवित्र, विशुद्ध, पावन उत्तर० ४।१०, ल्य: 1 बट-वृक्ष 2. नारियल का पेड़ 3 एक प्रकार की दाल, मसूर की दाल, -ल्या 1 सुगन्धित चन्दन का भेद 2 दुर्गा का नाम 3 अनार की लकड़ी 4 एक विशेष सुगंध द्रव्य 5 एक प्रकार का पीला रंग,-ल्यम् (अनेक तीर्थ स्थानों से लाया गया) 1 राजा के राज्याभिषेक के लिए शुभ तीर्थजल 2 सोना 3 चन्दन की लकड़ी 4 सिंदूर 5 खट्टा दही।

मङ्गल्यक [मङ्गल्य+कन्] एक प्रकार की दाल, मसूर।

मङ्ग्, I (भ्वा० पर० मङ्गति) अलंकृत करना, सजाना। II (भ्वा० आ० मङ्गते) 1 ठगना, धोखा देना 2 आरम्भ करना 3 कलंकित करना 4 निन्दा करना 5 जाना, जल्दी से जाना 6 आरंभ करना प्रस्थान करना।

मच् (भ्वा० आ० मचते) 1 दुष्ट होना 2 ठगना, धोखा देना 3 गर्वी दिखाना = घमण्डी या अहंकारी होना।

मञ्चिका [मञ्चम् चर्चति-म+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 'श्रेष्ठता या सर्वोत्तमता' को प्रकट करने के लिए समास के अन्त में लगाया जाने वाला शब्द यथा गोमञ्चिका 'एक बढ़िया गाय या बैल, तु० उद्ध।

मञ्च [मञ्च्+क्विप्-ची+ड] (मत्स्य का भ्रष्ट रूप) मछली।

मज्जन् (पु०) [मस्ज्+कनिन्] मांस और हड्डियों में रहने वाली मज्जा, पौधे का रस। सम०—(नपु०) हड्डी, —शुक्र वीर्य, शुक्र।

मज्जनम् [मस्ज् भावे ल्युट्] 1 डुबकी लगाना, गोता लगाना पानी में डुबकी, सराबोर होना 2 स्नान करना, नहाना -प्रत्यग्रमज्जनविशेषविधिनलकानि --रत्न० १।२१, रघु० १६।५७ 3 डूबना 4 मांस और हड्डियों के बीच की मज्जा।

मज्जा [मज्ज्+अच्+टाप्] 1 मांस और हड्डियों के बीच का रस या क्वाथ 2 पौधों का रस। सम०—रजस् (नपु०) 1 एक विशेष तरल 2 सुश्रुत —रस. वीर्य, शुक्र, —सार. आमफल।

मञ्जूषा दे० मञ्जूषा ।

मञ्ज् (म्वा० आ० मञ्जते) 1 थामना 2 ऊँचा या उभरा होना 3 जाना, चलना-फिरना 4 चमकना 5 अलंकृत करना ।

मञ्चः [मञ्च्+घञ्] 1 शय्या, चारपाई, पलंग, बिस्तरा 2 उभरा हुआ आसन, वेदी, सम्मान का आसन, राज्यासन, सिंहासन—तत्र मञ्चेषु मनोज्ञवेषान् —रघु० ६।१, ३।१० 3 मकान, टाड (खेत के रखवाले के लिए) 4 व्यासपीठ, ऊँचा आसन ।

मञ्चकम् [मञ्च+कन्] 1 शय्या, बिस्तरा, पलंग 2 उभरा हुआ आसन या वेदी 3 आँख सुरक्षित रखने का हाल । सम० **आश्रयः** खटमल, खाट में रहने वाला कीड़ा ।

मञ्चिका [मञ्चक+टाप्, इत्वम्] 1 कुर्सी 2 कठौती, थाली, 3 मांचो (चार पायों में बनाया हुआ स्टैण्ड जिसपर बुनाई में मरा सामान लदा रहता है) ।

मञ्जरम् [मञ्ज्+अर] 1 फूलों का गुच्छा 2 मोती 3 तिलक नाम का पौधा ।

मञ्जरिः, -री (स्त्री०) [मञ्जु+ऋ+इन् शक० पररूपम्, पक्षे ङीप्] 1 कोमल अंकुर, बौर निवपे सहकार-मञ्जरी – कु० ४।३८, मदशकालिरलक्ष्यत मञ्जरी – रघु० ९।४४, १६।५१ इसी प्रकार—स्फुरत् कुच-कुम्भयोरुपरिमणिमञ्जरी–गीत० १०, मुख मधुलाकृष्टो-घने घर्माम्भ कणमञ्जरी–काव्य० २।७१, 2 फूलों का गुच्छा 3 फूल कली 4 फूल का वृन्त 5 समानान्तर रेखा 6 मोती 7 लता 8 तुलसी 9 तिलक का पौधा । सम०—**आकारम्** मञ्जरी की शक्ल का चवर पंखे जैसी मञ्जरी विक्रम० ४।४, नक्त 'वेतस' का पौधा ।

मञ्जरित (वि०) [मञ्जर+इतच्] 1 फूलों या बौरों के गुच्छों से युक्त 2 वृत पर लगी हुई कली आदि ।

मञ्जा [मञ्ज्+अच्+टाप्] 1 बकरी 2 बौरों (फूलों) का गुच्छा 3 लता ।

मञ्जि, -जी [मञ्ज्+इन्, पक्षे ङीप्] 1 फूलों (या बौरों) का गुच्छा 2 लता । सम० **फला** केले का पौधा ।

मञ्जिका [मञ्ज्+ण्वुल्+टाप्+इत्वम्] वेश्या, वारांगना, वाराङ्गना स्त्री, रंडी ।

मञ्जिमन् (पु०) [मञ्ज्+इमनिच्] सौन्दर्य, मनोहरता ।

मञ्जिष्ठा [अतिशयेन मञ्जिमनी इष्टन् मनुपो लोप तारा०] मंजीठ । सम० **प्रमेहः** एक प्रकार का मूत्र-रोग, **-रागः** 1 मंजीठ का रंग 2. मंजीठ के रंग जैसा आकर्षक और टिकाऊ अर्थात् स्थायी अनुराग ।

मञ्जीरः—रम् [मञ्ज्+ईरन्] नूपुर, पैर का आभूषण -मिलज्जानमञ्जुमञ्जीर प्रविवेश निकेतनम् गीत० ११, या मुखरमधीर त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् ५, मा० १,—**रम्** वह स्थूणा जिसमें रई की रस्सी लपेटी जाती है ।

मञ्जीरः (पु०) वह गाँव जिसमें घोबियों का निवास हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्ज्+उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मधुर, सुखद, रुचिकर, आकर्षक—स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पित ते (स्मरामि), उत्तर० ४।४, अयिदलदरविन्द स्यन्दमान मरन्द तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गा –भामि० १।५, तन्मञ्जुमन्दहसित ध्वसितानि तानि–२।५ । सम० **-केशिन्** (पु०) कृष्ण का विशेषण,—**गमन** (वि०) सुन्दर गति वाला, (ना) 1 हंसिनी 2 राजहंस,—**गः** नेपाल देश का नाम,—**गिर्** (वि०) मधुर स्वर वाला—गते मञ्जुगिरि शुक. – काव्य० २।९, —**गुञ्जः** प्यारी गूंज, —**घोष** (वि०) मधुर स्वर बोलने वाला, —**नादी** 1 सुन्दर स्त्री 2. दुर्गा का विशेषण 3 इन्द्र की पत्नी शची का विशेषण, —**पाठक** तोता,—**प्राणः** ब्रह्मा का विशेषण, **भाषिन्,—वाच्** (वि०) मधुर बोलने वाला गिरमनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पञ्जरस्थ —रघु० ५।७४, १२।३९,— **वक्त्र** (वि०) सुन्दर मुख वाला, मनोहर, **स्वन,—स्वर** (वि०) मीठे स्वर वाला ।

मञ्जुल (वि०) [मञ्ज्+उ+लच् वा] प्रिय, सुन्दर, रुचिकर, मनोहर, मधुर, सुरीली (आवाज)। सम्प्रति मञ्जुल-वञ्जुल सौमनि केलिशयनमनुयातम् गीत० ११, कूजित राजहंसाला वर्षेः मदमञ्जुलम्—काव्य० २।३३८ **लम्** 1 लतामण्डप, कुंज, लतागृह 2 निर्झर, कुआँ,—**लः** एक प्रकार का जलकुक्कुट ।

मञ्जूषा [मञ्ज्+ऊषन्+टाप्] 1 संदूक, बक्सा, पेटी, आधार मदीयपद्यरत्नाना मञ्जूषेषा मया कृता –भामि० ४।४५, 2 बड़ी टोकरी, पिटारा 3 मंजीठ 4 पत्थर ।

मटकी, मटली [मट्+अच्=मट+ङि+ङीष्, मट्+अल्+ङीष्] गोला ।

मटत्कार [मट+स्फट्+इ] 'घमंड का आरम्भ', आरब्ध अभिमान ।

मटुक्कम् (नपुं०) धुत की मुद्रा ।

मठ् (म्वा० पर० मठति) 1 रसना, बसना 2 जाना, 3 पीसना ।

मठः,—ठम् [मठत्यत्र मठ् घञर्थे क] 1 संन्यासी की कोठरी, साधक की कुटिया 2 विहार, शिक्षालय 3 विद्यामंदिर, महाविद्यालय, ज्ञानपीठ 4 देवालय, मंदिर 5 बैलगाड़ी, **-ठी** 1 कोठरी 2 मठी, विहार । सम० - **आयतनम्** विद्यामन्दिर, महाविद्यालय ।

मठर (वि०) [मद्+अरन्, ठ आदेश] नशे में चूर, मद्य पीकर मतवाला ।

मण्डिका [मठ+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी कोठरी, कुटी, कुटीर।

मण्डु:, मण्डुक [मस्ज्+डु, मड्ड्+कन्] एक प्रकार का ढोल।

मण् (भ्वा० पर० मणति) बजाना, गुनगुनाना।

मणि: (स्त्री० भी, परन्तु विरल प्रयोग) [मण्+इन्, स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप्] 1 रत्नजडित आभूषण, रत्न, मूल्यवान् जवाहर—अलब्धप्रार्थनोत्कर्षा नृपाणां न जातु मौलौ मणयो वसन्ति—भामि० १।७३, मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गति—रघु० १।४, ३।१८ 2 आभूषण 3 कोई भी उत्तम वस्तु नु० रत्न 4 चुम्बक, लोहमणि 5 कलाई 6 जलकलश 7 चिबुक, भगाकुर 8 लिंग का अगला भाग (इन अर्थों में 'मणी' भी लिखा जाता है)। सम०—**इन्द्र**, **-राज** हीरा, **कण्ठ** नीलकण्ठ पक्षी, **कण्ठक** मृग,—**कर्णिका**,—**कर्णी** वाराणसी में विद्यमान एक पवित्र कुण्ड, **काच** दाँत का वह भाग जहाँ पर मसूड़ा लगा रहता है, **कामनम्** ग्रीवा, **कार** रत्नाजीव, जौहरी, **तारक** सारस पक्षी, **दर्पण** रत्नजटित शीशा, **द्वीप** 1 अनन्त नाग का फण 2 अमृत सागर में विद्यमान एक काल्पनिक द्वीप, **-धनु**, **-धनुस्** (नपु०) इन्द्रधनुष, **पाली** जौहरिन, रत्न आभूषणों की देखभाल करने वाली स्त्री,—**पुष्पक** महादेव के शंख का नाम भग० १६,—**पूर** 1 नाभि 2 रत्नजटित चोली, **-(रम्)** कलिंग देश में विद्यमान एक नगर, **बन्ध** 1 कलाई श० ७, 2 रत्नों का बाँधना रघु० १२।१०२ **-बन्धनम्** 1 रत्नों का (कलाई में) बाँधना मोतियों की लड़ी 2 ककण या अंगूठी का वह भाग जहाँ उसमें नग जड़े जाते हों श० ६ 3 कलाई श० ३।१३, **बीज**, —**बीज** अनाज का पेड़,—**भित्ति** (स्त्री०) शीशमहल, **भू** (स्त्री०) रत्नजटित फर्श, **-भूमि** (स्त्री०) 1 रत्नों की खान 2 रत्नजटित फर्श, वह फर्श जिसमें रत्न जड़े हों, **मन्थम्** सेंधा नमक,—**माला** 1 रत्नों का हार 2 कान्ति, आभा, सौन्दर्य 3 (कामकेलि में) दांत से काटे का गोल निशान 4 लक्ष्मी 5 एक छन्द का नाम, **यष्टि** (पु०, स्त्री) रत्नजटित लकड़ी, रत्नों की लड़ी, **रत्नम्** आभूषण, जड़ाऊ गहना, रत्न, जवाहर, **राग**, रत्नों का रंग (नपु०) सिंदूर, **शिला** रत्नजटित शिला, **सर** रत्नों का हार,—**सूत्रम्** मोतियों की लड़ी, **सोपानम्** रत्नजटित पौड़ी जीना, **स्तम्भ** रत्नों से जड़ा हुआ खंभा, **हर्म्यम्** रत्नजटित या स्फटिक का महल।

मणिक कन् [मणि+कन्] जलकलश, क रत्न, जवाहर।

मणितम् [मण्+क्त] एक अस्पष्ट सी सीत्कार जो स्त्री—सम्भोग के समय उच्चरित होती है शि० १०।७५।

मणिमत् (वि०) [मणि+मतुप्] रत्नजटित (पु०) 1 सूर्य 2 एक पर्वत का नाम 3 एक तीर्थस्थान का नाम।

मणीचक [मणी+चक्+अच्] रामचिरैया, **कम्** चन्द्रकान्तमणि।

मणीवकम् [मणीव कायति मणी+कै+क] फूल, पुष्प।

मण्ड् (भ्वा० आ० मण्डते) 1 प्रबल अभिलाष करना 2 सादर स्मरण करना, शोक के साथ चिन्तन करना।

मण्ड [मण्ड्+अच्] एक प्रकार का पका हुआ मिष्टान्न।

मण्ड[1] (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मण्डति, मण्डयति—ते मण्डने) 1 अलंकृत करना, सजाना—प्रभवति मण्डयितुं वसुन्धरां—कि० १०।५९, भट्टि० १०।२३ 2 हर्ष मनाना।

II (भ्वा० आ० मण्डते) 1 वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 2. घेरना, घेरा डालना ३. विभक्त करना, बाँटना।

मण्ड[2]—**क्** [मण्ड्+अच्, मन्+ड तस्य नेत्वम् वा] 1 गाढा चिकना पदार्थ जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर जम जाता है 2 उबाले हुए चावलों का माँड—नीवारदनमण्डमुष्णमधुरम्—उत्तर० ४।१ 3 (दूध की) मलाई 4 झाग, फेनक, फफूंदन 5 उफान 6 भात का माड 7 रस, सत् 8 सिर,—**क** 1 आभूषण, शृंगार 2. मेंढक, 3 एरंड का वृक्ष,—**का** 1 खींची हुई शराब, 2 चावल का वृक्ष। सम०—**उड्डकम्** 1 खमीर, 2 उत्सवादिक के अवसर पर फर्श व दीवारों को सजाना 3 मानसिक क्षोभ या उत्तेजना, **प** (वि०) माँड पीने वाला, मलाई खाने वाला,—**हारक:** शराब खींचने वाला।

मण्डक [मण्ड+कन्] 1 कसार, एक प्रकार का पकाया हुआ मैदा 2 फुलका, पतली रोटी।

मण्डनम् [मण्ड्+ल्युट्] 1 सजाने या सुभूषित करने की क्रिया अलंकृत करना—रामेक्षणं मण्डनकालहानेः—रघु० १३।१६, मण्डनविधि.—श० ६।५ 2 आभूषण, शृंगार, सजावट—सा मण्डनान्यङ्गनमन्यभुङ्क्त—कु० ७।५, कि० ८।४०, रघु० ८।७१,—**न:** (मण्डनमिश्र) दर्शन शास्त्र के एक विद्वान् पंडित जो शास्त्रार्थ में शङ्कराचार्य से हार गये थे।

मण्डप[1] [मण्ड भूषां पाति—पा+क, मण्ड्+कपन् वा] 1 विवाहादि संस्कारों के अवसर पर बनाया गया अस्थायी मण्डप, खुला कमरा, विवाह मंडप 2 तंबू, मंडवा —रघु० ५।७३ 3 लता कुंज, लतागृह, लतामंडप

—मेघ०७८ 4 किसी देवता को अर्पित किया गया भवन। सम०—प्रतिष्ठा देवालय की प्रतिष्ठा।

मण्डन. [मण्ड्+णिच्+ल्युट] 1 आभूषण, शृंगार 2 अभिनेता 3. आहार 4 स्त्री सभा, स्त्री स्त्री।

मण्डनी [मण्ड+अरन्+ङीष्] सिल्ली, झींगुर विशेष।

मण्डल (वि०) [मण्ड्+कलच्] गोल, वृत्ताकार,—लः 1 सैनिकों का गोलाकार क्रमव्यवस्थापन 2 कुत्ता 3. एक प्रकार का साँप, लम् 1 गोलाकार पिण्ड, गोलक, चक्र, गोलाकार वस्तु, परिधि, कोई भी गोल वस्तु—करालफणमण्डलम्—रघु० १२।९८, आदर्श मण्डलनिभानि समुल्लसन्ति कि० ५।४१, स्फुरत्प्रभामण्डल, चापमण्डल, मुखमण्डल, स्तनमण्डल आदि 2 (जादूगर द्वारा खींची हुई) गोलाकार रेखा मुद्रा० २।१ 3 बिंब, विशेषतः चन्द्र या सूर्य का बिंब,—अपर्वाण ग्रहकलुषेन्दुमण्डला (विभावरी) मालवि० ४।१५, दिनमणिमण्डनमण्डपभयखण्डन ए गीत० 4 परिवेश, सूर्य-चन्द्र के इर्द गिर्द पड़ने वाला घेरा 5 ग्रहपथ या ग्रहकक्ष 6 समुदाय, समूह, संग्रह, संघात, टोली, वृन्द—एव मिलितेन कुमारमण्डलेन—दश०, अखिल वाग्मिमण्डलम्—रघु० ४।४ 7 समाज, सम्मेलन 8 बड़ा वृत्त 9 दृश्य क्षितिज 10 जिला या प्रान्त 11 पड़ोस का जिला या प्रदेश 12 (राजनीति में) किसी राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ोसियों का गुट्ट - उपगतोऽपि मण्डलनाभिताम् - रघु० ९।१५ (मल्लि० द्वारा उद्धृत कामन्दक के अनुसार राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ोसियों के गुट्ट में बारह राजा सम्मिलित हैं। एक तो केन्द्रीय राजा या विजिगीषु, पाँच अग्रवर्ती राज्यों के राजा, चार पश्चवर्ती राज्यों के राजा, एक मध्यम या अन्तर्वर्ती राजा तथा एक उदासीन अथवा तटस्थ राजा। अग्रवर्ती और पश्चवर्ती राजाओं की विशेष संज्ञाएं हैं—दे० तद्गत मल्लि०। शु० शि० २।८१ भी क्या इसके ऊपर मल्लि०। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार ऐसे राजाओं की संख्या, चार, छः, आठ, बारह या इससे भी अधिक है—दे० याज्ञ० १।३४५ पर मिता० और दूसरे विद्वानों के अनुसार गुट्ट में केवल तीन ही राजा होते हैं—प्राकृतारि या स्वाभाविक शत्रु (बगलवाले देश का प्रभु), प्राकृत मित्र या स्वाभाविक दोस्त (केन्द्रीय राजा से मिले हुए दूसरे अन्य राज्यों के बाद जिसका राज्य हो) और प्राकृतोदासीन या स्वाभाविक तटस्थ (जिसका राज्य स्वाभाविक मित्रराष्ट्र से भी परे हो)। 13 बन्दूक का निशाना लगाते समय विशेष पैंतरा 14 दिव्य विभूतियों का आवाहन करने के लिए एक प्रकार का गुप्त रेखाचित्र या तंत्र, 15 ऋग्वेद का एक खण्ड (समस्त ऋग्वेद दस मण्डलों या आठ अष्टकों में विभक्त है) 16 एक प्रकार का कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते पड़ जाते हैं 17 एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—ली वृत्त, समूह, संघात (**मण्डलीकृ** कुण्डलाकार या वृत्ताकार बनाना, लपेटना, **मण्डलीभू** वृत्त बनाना) सम०—**अग्रः** झुकी हुई या टेढ़ी तलवार, **अङ्क**, **अधिप**, **अधीश**, **ईश**, **ईश्वर** 1 किसी जिले या प्रान्त का राज्यपाल या शासक 2 राजा, प्रभु,—**आवृत्ति** (स्त्री०) गोलाकार गति—उत्तर० ३।१९,—**कार्मुक** (वि०) गोलाकार धनुष को धारण करने वाला,—**नृत्यम्** मण्डलाकार घूमते हुए नाचना, गोलाकार नाच,—**न्यास** वृत्त का वर्णन करना,—**कुण्डक** एक प्रकार का कीड़ा,—**वट**, गोलाकार रूप में बढ़ का वृक्ष,—**वर्तिन्** (पु०) एक छोटे प्रान्त का शासक,—**वर्षः** राजा के समस्त प्रदेश में बारिश का होना, देशव्यापी वर्षा।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1 वृत्त, 2 बिंब 3 जिला, प्रान्त 4 समूह, संग्रह 5 सैनिकों की चक्राकार-व्यूहरचना 6 सफेद कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते होते हैं 7 दर्पण।

मण्डलयति (ना० धा० पर०) गोल या वृत्ताकार बनाना।

मण्डलायित (वि०) [मण्डलवत् आचरितम्—मण्डल+क्यङ्, दीर्घः, मण्डलाय+क्त] गोल, वर्तुल,—तम् गेंद, गोलक।

मण्डलित (वि०) [मण्डल कृत—मण्डल+क्विप्=मण्डल्+क्त] गोल बना हुआ, वर्तुल या गोल बनाया हुआ।

मण्डलिन् (वि०) [मण्डल+इनि] 1 वृत्त बनाने वाला, कुण्डलाकृत 2 देश का शासन करने वाला, (पु०) 1 एक प्रकार का साँप 2 सामान्य सर्प 3 बिलाव 4 ऊदबिलाव 5 कुत्ता 6 सूर्य, 7. बटवृक्ष 8 किसी प्रांत का शासक।

मण्डित (वि०) [मण्ड्+क्त] अलंकृत, भूषित।

मण्डूक [मण्डयति वर्षासमय—मण्ड्+ऊकण्] मेंढक निपानमिव मण्डूका ओघाः परमायान्ति विद्यवाः सर्वसपदः, सुभा०, कम् स्त्रीसंभोग का एक प्रकार, रतिबन्धविशेष,—की 1 मेंढकी 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 कुछ पौधों के नाम। सम०—**अनुवृत्ति**,—**प्लुतिः** (स्त्री०) 'मेंढकों की उछल कूद' बीच बीच में छोड़ देना, बीच में छोड़कर आगे फलांग जाना (व्याकरण में यह शब्द कुछ सूत्र छोड़ कर उनके पूर्ववर्ती सूत्र से आपूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है)—क्रिया ग्रहण मण्डूकप्लुत्यानुवर्तते—सिद्धा०—**कुलम्** मेंढकों का समूह,—**योग** भाव-समाधि का एक प्रकार जिसमें साधक मेंढक की भांति निश्चल होकर समाधिस्थ होता है,—**सरस्** (नपु०) मेंढकों से भरा हुआ सरोवर।

मण्डूरम् [मण्ड्+ऊरच्] लोहे का जंग, लोहे का मैल (यह पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है)।

मत (भू० क० कृ०) [मन्+क्त] 1 चिंतित, विश्वसित, कल्पित 2 सोचा हुआ, माना हुआ, ख्याल किया हुआ, समझा हुआ 3. मूल्यवान् माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित—रघु० २।१६, ८।८ 4 प्रशंसित, मूल्यवान् 5 अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6 मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहचाना गया 7 सोचा गया 8 अभिप्रेत उद्दिष्ट 9 अनुमोदित, स्वीकृत (दे० मन्)-तम् चिन्तन, विचार, सम्मति, विश्वास, पर्यवेक्षण—निश्चितमतमुत्तमम् —भग० १८।६, केषांचिन्मतेन-आदि 2 सिद्धांत, उसूल, पन्थ, धर्ममत, विश्वास—ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवा —भग० ३।३१ 3 उपदेश, अनुदेश, सलाह 4 उद्देश्य, योजना, अभिप्राय, प्रयोजन 5 समनुमोदन, स्वीकृति प्रशंसा। सम०—अक्ष (व०) पासे के खेल में प्रवीण, अन्तरम् 1. भिन्न दृष्टि 2 भिन्न पन्थ,—अवलम्बनम् विशेष प्रकार की सम्मति रखना।

मतङ्ग [मातति अनेन—मद्+अङ्गच् दस्यत्व तारा०] 1 हाथी 2 बादल 3 एक ऋषि का नाम —रघु० ५।३३।

मतङ्गज [मतङ्ग+जन्+ड] हाथी—न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गज—मालवि० ३, कि० ५।४७, रघु० १२।७३।

मतल्लिका [मत मतिम् अलति भूषयति—मत+अल्+ण्वुल् पृषो० साधु] सर्वोत्तमता, सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए इस शब्द को संज्ञाओं के अन्त में जोड़ दिया जाता है, सोमतल्लिका 'श्रेष्ठ सोमलता' वृ० उ०।

मतल्ली दे० मतल्लिका।

मति (स्त्री०) [मन्+क्तिन्] 1 बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, संकल्प मतिरेव बलाद्धारीयसी हि० २।८६, अल्पविषया मति —रघु० १।२ 2 मन, हृदय—मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात् भामि० ४।२६, इसी प्रकार दुर्मति, सुमति 3 सोचना, विचार, विश्वास, सम्मति, भाव, कल्पना, सत्कार पर्यवेक्षण —विधिरहो बलवानिति मे मति—भर्तृ० २।९१, भग० १८।७८ 4 अभिप्राय, योजना, प्रयोजन दे० मत्य 5 प्रस्ताव निर्धारण 6 सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर कि० १०।९ 7. अभिलाष, इच्छा, कामना—प्रायापवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव रघु० ८।९४ 8 सलाह, परामर्श 9 याद, प्रत्यास्मरण (**मतिम्**-धा, आधा, मन लगाना, निश्चय करना, सोचना, **मत्या** (क्रि० वि०) 1. जानबूझकर, साभिप्राय, स्वेच्छा से मत्या भुक्त्वाचरेत् कृच्छ्रम्—मनु० ४।२२३, ५।११ 2 इस विचार से कि व्याघ्रमत्या पलायन्ते)। सम० **ईश्वरः** विश्वकर्मा का विशेषण, **गर्व** (वि०) प्रज्ञावान्, बुद्धिमान्, चतुर,—**ईप्सम्** मतभिन्नता, —**निश्चय**, निश्चित विश्वास, दृढ़ विश्वास,—**पूर्व** (वि०) साभिप्राय, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ,—**पूर्वम्**, —**पूर्वकम्** (अव्य०) सप्रयोजन, साभिप्राय, स्वेच्छा से, खुशी से,—**प्रकर्ष** बुद्धि की श्रेष्ठता, चतुराई,—**भेद** विचारभिन्नता,—**भ्रम**,—**विपर्यास** 1 व्यामोह, मानसिक भ्रम, मन की भ्रान्ति—श० ६।९ 2. त्रुटि, गलती, भूल, गलतफहमी,—**विभ्रम**, **विभ्रमः** मन की अव्यवस्था या दीवानापन, पागलपन, उन्माद, **शालिन्** (वि०) बुद्धिमान्, चतुर,—**हीन** (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, मूढ़।

मत्क (वि०) [अस्मद्+कन्, मदादेश] मेरा—सत्सृणुष्व कपे मत्कं मनश्चक्षुश्च वर्त्मनि शुभे —भट्टि० ८।१६ —**त्कः** खटमल।

मत्कुण [मद्+विच्, कुण्+क, तत कर्म० स०] 1 खटमल मत्कुणादिव पुरापरिप्लवी—शि० १४।६८, 2 बिना दाँत का हाथी 3 छोटा हाथी 4 बिना दाढ़ी का मनुष्य 5 भैंस 6 नारियल का पेड़,—**म्** टाँगों या जंघाओं के लिए कवच। सम०—**अरिः** पटसन का पौधा।

मत्त (भू० क० कृ०) [मद्+क्त] 1 नशे में चूर, मतवाला, मदोन्मत्त (आल० से भी)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गना—विद्ध० १।११, प्रभा मत्तश्चन्द्रो अगदिदमहो विभ्रमयति—काव्य० १०, इसी प्रकार ऐश्वर्य° धन° बल° आदि 2 पागल, विक्षिप्त 3 मदवाला, भीषण (हाथी)—रघु० १२।९३ 4 घमंडी, अहंकारी 5 खुश, अतिहृष्ट, हर्षोद्दीप्त 6 प्रीतिविषयक, केलिपरायण, स्वैरी,—**त्तः** 1 पियक्कड़ 2 पागल मनुष्य 3 मदवाला हाथी 4. कोयल 5 भैंसा 6 धतूरे का पौधा। सम०—**आलम्ब** (किसी धनी पुरुष के) विशाल भवन की बाड़, **इभ** मदवाला हाथी °**गमना** मस्त हाथी के सदृश चाल वाली स्त्री अर्थात् अलसगति, **काशि** (शि) सो एक सुन्दर लावण्यवती स्त्री, **द्विप्** (पुं०) नाग, **धारण**, मदवाला हाथी, (—ण—णम्) 1. विशालभवन के चारों ओर बाड़ 2 किसी विशालभवन के ऊपर बनी अटारी 3 बरामदा, अलिंद 4 भवन का सुसज्जित बहिर्भाग,—(**णम्**) कटी हुई सुपारी।

मत्यम् [मत+यत्] 1 हल द्वारा बनाया खड्ड 2 ज्ञान प्राप्त करने का साधन 3 ज्ञान का अभ्यास।

मत्स्य [मद्+मन्] 1 मछली 2. मत्स्य देश का स्वामी।

मत्सर [मद्+सरन्] 1 ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2 अतृप्त लालची, लोभी 3 दरिद्र 4 दुष्ट,—रः 1 ईर्ष्या, डाह—अदत्तावकाशो मत्सरस्य—का० ४५, परवृद्धिषु बद्धमत्सराणा—कि० १३।७, शि० ९।६३,

कु० ५।१७ 2 विरोधिता, शत्रुता -रघु० ३।६० 3 घमंड--शि० ८।७१, 4 लोभ, लालच 5 क्रोध, कोपावेश 6 डांस या मच्छर।

मत्सरिन् (वि०) [मत्सर+इनि] 1 ईर्ष्यालु, डाह करने वाला--परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्-शि० १५।१, २।११५ दुष्टात्मा परगुणमत्सरी मनुष्य -मृच्छ० ९।२७, रघु० १८।१९ 2 विरोधी, शत्रुतापूर्ण 3 लालायित, स्वार्थरत (अधि० के साथ) 4 दुष्ट।

मत्स्यः [मद्+स्यन्] 1 मछली--शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन् दुर्बलान्बलवत्तरा मनु० ७।२० 2. मछलियों की विशेष जाति 3 मत्स्य देश का राजा, **मत्स्यौ** (द्वि० व०) मीन राशि,--**मत्स्याः** (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम --मनु० २।१९ याज्ञ० १।८३, । सम०--**अक्षका**, --**अक्षी** एक विशेष प्रकार की सोमलता, --**अद्**, --**अशन** --**आद** (वि०) मछलियाँ खाकर पलने वाला मत्स्यभक्षी,--**अवतार** विष्णु के दस अवतारों में सबसे पहला अवतार (सातवें मनु के शासनकाल में दूषित हुई सारी पृथ्वी जलप्रस्त हो गई और पावन मनु तथा सप्तर्षियों (इनको विष्णु ने मछली बनाकर बचा लिया था) को छोड़कर सब जीवधारी प्राणी कालकवलित हो गये) नु० इस अवतार का जयदेवरचित वर्णन--प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेद विहितवहित्रचरित्रमखेद केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे--गीत० १, --**अशनः** 1 रामचिरैया (एक शिकारी पक्षी) 2 मत्स्यभक्षी,--**असुरः** एक राक्षस का नाम,--**आजीव** मछुवा, **आधानी** मछलियाँ रखने की टोकरी (जिसे मछुवे प्रयुक्त करते हैं)--**उदरिन्** (पु०) विराट का विशेषण,--**उदरी** सत्यवती का विशेषण --**उदरीय**. व्यास का विशेषण, **उपजीविन्** (पु०) मछुवा,--**करण्डिका** मछलियाँ रखने की टोकरी, **गन्ध** (वि०) मछली की गंध रखने वाला, (आ) सरस्वती का नाम--**चट** एक प्रकार की मछली की चटनी **घातिन्**--**जीवन्**, --**जीविन्** (पु०) मछुवा,--**जालम्** मछलियाँ पकड़ने का जाल, **देश** मत्स्यवासियों का देश,--**नारी** सत्यवती का विशेषण,--**नाशकः**--**नाशनः** मत्स्यभक्षी उकाब, कुररपक्षी--**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,--**बन्धः**,--**बन्धिन्** (पु०) मछुवा --**बन्धनम्** मछली पकड़ने का काँटा, बंसी,--**बन्ध** (वि) मी मछलियाँ रखने की टोकरी,--**रङ्कुः**,--**रङ्कूः**, --**रङ्कूकः** रामचिरैया (मछली खाने वाला एक शिकारी पक्षी),--**वेधनम्**,--**वेधनी** मछली पकड़ने की बंसी,--**संघात**. मछलियों का झुंड,--**मत्स्यण्डिका**, **मत्स्यण्डी** मोटी या बिना साफ की हुई चीनी ही ही इव सीधुपानोद्वेजितस्य मत्स्यण्डिकोपनता--मालवि० ३।

मद् दे० मन्थ।

मथ मथ।

मथन (वि०) (स्त्री० नी) [मथ्+ल्युट्] 1 बिलोने वाला, मथन करने वाला 2. चोट पहुँचाने वाला, क्षति देने वाला 3. मारने वाला, नष्ट करने वाला, नाशक--मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके--गीत० २--नः एक वृक्ष का नाम,--**नम्** 1 मन्थन करना, बिलोना, विक्षुब्ध करना 2 घिसना, रगड़ना 3 क्षति, चोट, नाश। सम०--**अचलः**, **पर्वत**. मन्दराचल पहाड़ जिसको रई का डंडा बनाया गया था।

मथि [मथ्+इ] रई का डंडा।

मथित (भू० क० कृ०) [मथ्+क्त] 1 मथा गया, बिलोया गया, विक्षुब्ध किया गया, खूब हिलाया गया 2 कुचला गया, पीसा गया, चूटकी काटी गई 3 कष्टग्रस्त, दुखी, अत्याचार पीड़ित 4. वध किया हुआ, नाश किया हुआ 5 स्थानभ्रष्ट (दे० मन्थ्),--**तम्** (बिना पानी डाले) मथा हुआ विशुद्ध मट्ठा।

मथिन् (पु०) [मथ्+इनि] (कर्तृ० ए० व०--मथा कर्म० ब० व० मथ) रई का डंडा --मुहु प्रणुन्नेषु मथा विवर्तनैर्नंदत्सु कुम्भेषु मृदङ्गमन्थरम् कि० ८।१६, नै० २२।४४, 2 वायु 3 उच्च, 4 पुरुष का लिंग।

मथु (थू) स्त्री [मथ्+उ (ऊ) स्त्री+टाप्] यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर, कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल, यह भारत की सात पुण्यनगरियों में एक है, (दे० अवन्ति) और आज भी हजारों की संख्या में भक्त लोग दर्शनार्थ यहाँ जाते हैं। कहा जाता है कि इस नगर को शत्रुघ्न ने बसाया था निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरा मधुराकृति --रघु० १५।८, कलिन्दकन्या मथुरा गतापि गङ्गोर्मिमसक्तजलेषु भाति --९।४८, । सम० --**ईशः**,--**नाथः** कृष्ण का विशेषण।

मद् उत्तमपुरुष सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्रायः समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है --यथा मदर्थं, 'मेरे लिए' 'मेरी खातिर' 'मच्चित्त' 'मेरे विषय में सोचकर' मद्वचनम्, मत्सन्देश, मत्प्रियम् आदि।

मद् । (दिवा० पर० माद्यति, मत्त) 1 मस्त होना, नशे में चूर होना--वीक्ष्य मद्यमितरा तु ममाद--शि० १०।२७ 2 पागल होना 3 आनन्द मनाना, खुशी मनाना 4 प्रसन्न या हृष्ट होना। प्रेर० (मादयति) 1 नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना, पागल बना देना 2 (मदयति) उल्लसित करना, प्रसन्न करना, खुश करना--मा० १।३६ 3 प्रणयोन्माद को उत्तेजित करना --मा० ३।६, **उद्**--, 1 मस्त या नशे में चूर होना (आत्म० से भी) 2 पागल होना--मनु० ३।१६१, प्रेर०---नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना

-- अद्यापि मे हृदयमुन्मदयन्ति हृत्ता भामि० २।५, म , 1 नशे में चूर होना, मस्त होना 2 उपेक्षक होना, लापरवाह या अवधान रहित होना (अधि० के साथ) अतोऽवन्ति प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चित मनु० २।२१३ 3 भूलचूक होना, भटक जाना, विस्मरित होना तथा स्वाधिकारात्प्रमत्त मेघ० १ में, 4 गलती करना, भूल करना राह भूल जाना-भट्टि० ५।८, १७।३९, १८।८, सम्-,1 नशे में चूर चूर होना, 2 हर्षयुक्त होना, प्रसन्न होना।

II (चुरा० आ० मादयते) प्रसन्न करना, खुश करना।

मदः [मद्+अच्] 1 मादकता, मस्ती, मदोन्मत्तता —मदेनास्पृश्ये--दश०, मदविकाराणां दर्शक -का० ४५, दे० नी० समस्त पद 2. पागलपन, विक्षिप्तता 3 उग्र प्रणयोन्माद, लालसापूर्ण उत्कण्ठा, गाढाभिलाषा, कामुकता, मैथुनेच्छा - इति मदमदनाभ्यां रागिणि स्पष्टरागात्" शि० १०।९१ 4 मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मद मदेन भाति कलभ प्रतापेन महीपति चन्द्र० ५।४५, इसी प्रकार दे० मदकल, मदोत्मत्त, मेघ० २०, रघु० २।७ १२।१०२ 5 प्रेम, इच्छा, उत्कंठा 6 घमण्ड, अहंकार, अभिमान पंच० १।२४० 7 उल्लास, आनन्दातिरेक 8 खींची हुई शराब 9 मधु, शहद 10 कस्तूरी 11 वीर्य, शुक्र। सम० अत्यय,— आतङ्क, सुरापान के परिणामस्वरूप होने वाला विकार (सिरदर्द आदि),- अन्ध (वि०) 1 मद से अन्धा, पीकर बेहोश, तीव्र उत्कण्ठा से पीते हुए अधरमित्र मदान्धा पातुमेषा प्रवृत्ता विक्रम० ४।१३, 2 अभिमान से अंधा, घमंडी, अपनयनम् नशा दूर करना,—अम्बर. 1 मदवाला हाथी 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत, अलस (वि०) नशे या जोश से निढाल,—अवस्था 1 पीकर मदहोशी की हालत 2 स्वेच्छाचारिता, कामासक्ति 3 मद चूने की स्थिति —रघु० २।७, आकुल (वि०) मदोन्मत्त,-- आढ्य (वि०) पीकर मस्त, नशे में चूर (द्य) ताड का पेड,—आमलकः हाथी की पीठ पर बजाया जाने वाला ढोल या नगाड़ा, आलापिन् (पु०)कोयल, —आर्द्र कस्तूरी, उत्कट (वि०) 1 नशे में चूर, मद्यपान से उत्तेजित 2 तीव्र प्रणयोन्मत्त, कामुक 3 अभिमानी, घमंडी, दर्पयुक्त 4 मदवाला, मदमत्त रघु० ६।७, (टः) 1 मदवाला ; ो 2 पैंडकी, (टा) खींची हुई शराब, -उद्यम, उन्मत्त (वि०) 1 पीकर मस्त, नशे में चूर 2 भयंकर, जोश से भरा हुआ--मदोदग्रा ककुभन्तः सरिता कूलमुद्गता -रघु० ४।२२, 3.अभिमानी, घमंडी, अहंकारी,-उद्धत (वि०)जोश से भरा हुआ --कु० ३।३१ 2 घमण्ड से फूला हुआ, —उल्लापिन् (पु०) कोयल, कर (वि०) मादक, नशे में चूर करने वाला, --कारिन् (पु०) मदवाला हाथी,--काल (वि०) मृदुभाषी, अव्यक्तभाषी, अस्पष्ट-भाषी रघु० ९।३७, प्रेम की मदध्वनि उच्चारण करने वाला 3 जोश से भरा हुआ—उत्तर० १।३१, मा० ९।१४ 4 अस्पष्ट परन्तु मधुर—मदकल कूजित सारसानाम्--मेघ० २१, 5 मदवाला, प्रचण्ड, मदोन्मत्त विक्रम० ४।२४, (-लः) मदवाला हाथी —कोहल (स्वेच्छा से भ्रमण करने के लिए) मुक्त सांड,--खेल (वि०) प्रणयोन्माद के कारण केलिप्रिय --विक्रम० ४।१६,—गन्धा 1 मादकपेय 2 पटसन, —गमन भैंसा --च्युत (वि०) 1 (हाथी की भांति) मद चुआने वाला 2 कामुक, स्वेच्छाचारी, पीकर धुत्त 3 आनन्ददायक उल्लासमय (पु०) इन्द्र का विशेषण --जालम्,-- वारि (नपु०) मदरस, मदवाले हाथी के गण्डस्थल से चूने वाला मद, ज्वर घमण्ड या जोश का बुखार -भर्तृ० ३।२३,—द्विप. उन्मत्त हाथी, मदमस्त हाथी,- प्रयोग ,-प्रसेक ,-प्रस्रवणम्— स्रावः, --स्रुति (स्त्री०) हाथी के गण्डस्थल से मद का चूना, -- मुच् (वि०) 'मद टपकाने वाला' मदोन्मत्त, नशे में चूर-उत्तर० ३।१५,--रक्त (वि०) जोशीला,—राग 1 कामदेव 2 मुर्गा 3 पीकर धुत्त,—विक्षिप्त (वि०) 1 मदमस्त, मदान्मत्त 2 कामलालसा से विक्षुब्ध विह्वल (वि०) 1 घमण्ड या काम लालसा से पागल 2 नशे के कारण निश्चेष्ट,-- वृन्द. एक हाथी, --शौण्डकम् जायफल.--सारः बाडी,--स्थलम्,--स्थानम् मदिरालय, शराबघर, मधुशाला।

मदन (वि०) (स्त्री नी) [माद्यति अनेन मद् करणे ल्युट्] 1 मादक, पागलपन लाने वाला 2 आनन्द-दायक, उल्लासमय, न. 1 कामदेव व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम् श० १।२७, हतमपि निहन्त्येव मदन - भर्तृ० ३।१८ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद, उत्कण्ठा, कामकुता विनयवारितवृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनो न च संवृत श० २।११, सतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपकम् ऋतु० १।३, रघु० ५।६३, इसी प्रकार 'मदनातुर' 'मदनपीडित' आदि 3 वसन्त ऋतु 4 मधुमक्खी, भौंरा 5 मोम 6 एक प्रकार का आलिंगन 7 धतूरे का पौधा 8. बकुल का वृक्ष, खैर, —ना,—नी 1 खींची हुई शराब 2 कस्तूरी 3 अतिमुक्त लता (—नी केवल इन दो अर्थों में),—मन् 1. मादक 2 प्रसन्न करने वाला, 3 आनन्ददायक। सम० —अग्रकः एक धान्यविशेष, कोदो,- आङ्कुशः 1 पुरुष का लिंग 2. नाखून या नखक्षत (सम्भोग के समय हुआ) —अन्तकः,—अरिः, दमनः, द्रुमः,- नाशनः, रिपुः शिव के विशेषण,—अवस्थ (वि०) प्रेमासक्त,

सानुराग--आतुर- आर्त, विह्वल पीडित (वि०) कामार्त, प्रेमविह्वल, कामरोगी रघु० १२।३२, शृ० ३।१०, -आयुधम् 1 स्त्री की भग या योनि 2 'कामदेव का अस्त्र' अर्थात् लावण्यमयी स्त्री, आलयः, यन् 1 स्त्री की योनि 2 कमल 3. राजा,--इक्षुकार्मुकम् आमों का राजा,--उत्सवः कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला वसन्त-कालीन उत्सव, (आ) अप्सरा, उत्सुक (वि०) प्रेम के कारण उत्कंठित या निढाल,--उद्यानम् 'प्रमोद वन' एक उद्यान का नाम,--कण्टकः 1 प्रेमभावना से उत्पन्न रोमाच 2 वृक्ष का नाम कलहः प्रेमकलह, मैथुन "छेदमुलभाम्, मा० २।१२, -काकुरव पेंडुकी या कबूतर, गोपालः कृष्ण का विशेषण,--चतुर्दशी चैत्रशुक्ला चतुर्दशी, इसी दिन कामदेव के सम्मानार्थ मनाया जाने वाला उत्सव,--त्रयोदशी चैत्रशुक्ला त्रयोदशी या काम के सम्मान में उस दिन मनाया जाने वाला उत्सव,--दात्रिका अनीस, स्त्री, --दक्षिन् (पु०) खजन पक्षी,--पाठकः कोयल,--पीडा,--बाधा प्रेमवेदना, प्रेम की टीस, महोत्सवः कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला महोत्सव,--मोहनः कृष्ण का विशेषण, --रक्षितम् प्रेमकेलि, रगरेली, कामक्रीडा, --लेखः प्रेम-पत्र,--वश (वि०) प्रेममुग्ध, मोहित, - शलाका 1 कोयल (मादा) 2 कामोद्दीपक।

मदनक [मदन+कन्] एक पौधे का नाम, दमनक।

मदयन्तिका, मदयन्ती [मदयन्ती+कन्+टाप् ह्रस्व, मद्+णिच्+अच्+ङीष्] एक प्रकार की चमेली (अरब की)।

मदयितृ (वि०) [मद्+णिच्+इत्नुच्] 1 मादक, पागल बनाने वाला 2 आनन्द देने वाला, - तृ 1 कामदेव 2 बादल 3 कलवार 4 पीकर मत्त हुआ 5 खींची हुई शराब, (इस अर्थ में 'नपु०' भी)।

मदार [मद्+आरन्] 1 मदवाला हाथी 2 सूअर 3 धतूरा 4 प्रेमी, कामुक 5 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 6 ठग या बदमाश।

मदि (स्त्री०) [मद्+इन्] अटेला, मैदा।

मदिर (वि०) [माद्यति अनेन मद् करणे किरच्] 1 मादक, दीवाना करने वाला 2 आनंददायक, आकर्षक, (आखों का) हर्ष कर, --र (लाल फूलों का) बेर का वृक्ष। सम० अक्षी, ईक्षण - नयना, --लोचना मनोहर और आकर्षक आंखों वाली स्त्री -मधुकर मदिरालय, नशा प्रवृत्ति--विक्रम० ४।२२, रघु० ८।८६, --आयतलोचन (वि०) बड़ी और मनोहर आंखों वाला - -प० ३।५, -आसव मादक पेय।

मदिरा [मदिर+टाप्] 1. खींची हुई शराब कादम्बर्यां वदनमदिरा दोहदच्छद्मनास्या --मेघ०७८, शि० ११।४९ 2 एक प्रकार का खजन पक्षी 3 दुर्गा का नामान्तर। सम०--उत्कट,- उन्मत्त (वि) शराब के नशे में चूर, - गृहम्,—शाला मदिरालय, शराबखाना, मधुशाला,—वृक्ष. आम का पेड़।

मदिष्ठा [अतिशयेन मदिनी—इष्ठन्, इनो लोप, टाप्] खींची हुई शराब।

मदीय (वि०) [अस्मद्+छ, मदादेश] मेरा, मुझसे संबद्ध, —रघु० २।४५, ६५, ५।२५।

मद्गु [मस्ज्+उ न्यङ्क्वा०] 1 एक प्रकार का जलचर जन्तु, जलकाक, पनडुब्बी पक्षी 2 एक प्रकार का सांप 3 एक प्रकार का जंगली जानवर 4 विशाल नौका या युद्धपोत काऽपि मद्गुरम्यधावत् दश० 5 एक पतित वर्णसंकर जाति, भाट जाति की स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान—दे० मनु० १०।४८ 6. जाति-बहिष्कृत।

मद्गुरः [मद्+गुक्+उरच्, न्यङ्क्वा०] 1 गोताखोर, मोती निकालने वाला 2. जंगलमछली 3 एक पतित वर्ण संकर जाति --दे० मद्गु (5)।

मद्य (वि०) [माद्यत्यनेन करणे यत्] 1 मादक 2 आनंद-दायक, उल्लासमय,—म् खींची हुई शराब, मदिरा, मादकपेय—रणक्षितिः शोणितमद्यकुल्या —रघु० ७।४९ —मनु० ५।२६, ९।८४ १०।८९। सम०—आमोदः मौलसिरी का पेड़,—कोटः एक प्रकार का कीड़ा,—द्रुमः एक प्रकार का वृक्ष, माहवृक्ष,—पः पियक्कड़, शराबी, नशेबाज, --पानम् 1 मादक मदिरा पीना 2 कोई भी मादक पेय,—पीत (वि०) पीकर नशे में चूर —पुष्पा धातकी नामक पौधा, धौ,—भृ (स्त्री) जम्, खमीर उठाने वाली औषध, खमीर पैदा करने वाली लेई,—भाजनम् शराब का गिलास, इसी प्रकार मद्य-भाण्डम्,—मद्य शराब का झाग, मद्यफेन,—वासिनी धातकी नामक पौधा,—सधानम् मदिरा खींचना।

मद्र. [मद्+रक्] 1 देश का नाम 2 उस देश का शासक, —द्राः (ब० व०) मद्र देश के अधिवासी,—द्रम् हर्ष प्रसन्नता (मद्राक्ष - भद्राक्ष बालकाटना, कैंची से कतरना, मूँडना)। सम०—कार (वि०) ('मद्रकार' भी) हर्षोत्पादक।

मद्रकः [मद्र+कन्] मद्र देश का शासक या अधिवासी, —का (ब०व०) दक्षिण देश की एक पतित जाति।

मधव्य [मधु+यत्] वैशाख का महीना।

मधु (व०) (स्त्री० - धु या० ध्वी) [मन्यत इति मधु, मन्+उ सम्प्र धः] मधुर, सुस्वद, रुचिकर, आनन्द युक्त -नपु० (धु) 1 शहद एतान्ता मधुनो धाराश्चोलन्ति सिन्धवस्तदयि उत्तर० २।३४, मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् 2 पुष्परस या फूलों का रस- -कु० ३।३६ देहि मकरन्दमधुपान

—गीत० १० 3 मीठा मादक, पेय, शराब, खींची हुई शराब—विनयन्ते स्म तद्रोधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।६५, ऋतु० १।३ 4 पानी 5 शक्कर 6 मिठास,—पु०(मधुः) 1 वसन्त ऋतु—क्व नु हृदयङ्गम सखा कुसुमायोजितकार्मुको मधु—कु० ४।२४-२५, ३।१०, ३०, चैत्र का महीना—भास्करस्य मधुमाधवाविव—रघु० ११।७, मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादे रामा हरन्ति हृदय प्रसभं नराणाम् —ऋतु० ६।२४ 3 एक राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मारा था 4 एक और राक्षस जिसके पिता का नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था 5 अशोक वृक्ष 6 कार्तवीर्य राजा का नाम। सम० —अष्ठीला शहद का लौंदा, जमा हुआ शहद, —आधारः मोम, आपात (वि०) पहली बार शहद चखने वाला—मनु० ११।९,—आम्र एक प्रकार का आम का वृक्ष,—आसव (शहद से) खींची हुई मीठी शराब,—आस्वाद (वि०) शहद का स्वाद चखने वाला, आहुतिः (स्त्री०) यज्ञ में मिष्टान्न की आहुति देना —उच्छिष्टम्,—उत्थम्,—उत्थितम् मधुमक्खियों का मोम,—उत्सवः वसन्तोत्सव,—उदकम् 'मधुजल', शहद मिला हुआ पानी, जलमधु उद्यानम् वसन्तोद्यान, —उपनम् 'मधु का आवास' मथुरा का नामान्तर —रघु० १५।१५,—कण्ठ कोयल, कर 1 भौंरा -कुटजे त्वयि तेनेहा तेने हा मधुकरेण कथम् —भामि० १।१०, रघु०९।३०, मेघ० ३५।४७ 2 प्रेमी, कामुक, °गण, °श्रेणि (स्त्री०) मक्खियों का झुंड, —कर्कटी 1 मीठा नीबू, चकोतरा 2 एक प्रकार का छुहारा, कानन्म्,—वनम् मधुराक्षस का वन, कारः,—कारिन् (पु० मधुमक्खी कुक्कुटिका, कुक्कुटी एक प्रकार का नीबू का पेड़,—कुल्या मधु की नदी, कृत् (पु०) मधुमक्खी,—केशट मधुमक्खी,—कोशः,—कः मधुमक्खियों का छत्ता, क्षम. शहद की मक्खियों का छत्ता (ब० व०) मदिरा पीने की होड़, आपानक,—क्षीर, क्षीरक. खजूर का पेड़, —गायन कोयल,—ग्रह मधु का तर्पण,—घोष कोयल, —जम् मोम,—ज्ञ 1 मिसरी 2 पृथ्वी, जम्बीर एक प्रकार का नीबू जित्, द्विष्,—निषूदन, —निहन्तृ (पु०), मथ, मथन,- रिपु,—शत्रु, सूदन, विष्णु के विशेषण - इति मधुरिपुणा मध्वो नियुक्ता,- गीत० ५, रघु० ९।४८, शि० १५।१, —तृण —वम् गन्ना, ईख,—त्रयम् तीन मीठे पदार्थ अर्थात् शक्कर, शहद और घी,—दीप कामदेव,—दूत आम का पेड़, दोह. मधु या मिठास खींचना,—द्रु. 1 भौंरा 2 कामुक,- द्रव लाल फूलों का एक वृक्ष, —द्रुमः आम का पेड़,—धातुः एक प्रकार का पीला मालिक,—धारा शहद की धार,—धूलिः राब, गुड़, नालिकेरक. एक प्रकार का नारियल, नेतृ(पु०) भौंरा, ध मधुकर, या पियक्कड़—राजप्रिया कैरविण्यौ रमन्ते मधुपैः सह—भामि० १।१२६, १।३३, (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं),—पटलम् शहद की मक्खियों का छत्ता,—पतिः कृष्ण का विशेषण, -पर्क 'शहद का मिश्रण' एक सम्मानयुक्त उपहार जो किसी अतिथि को या कन्या के पिता के द्वार पर आ जाने पर दूल्हे को अर्पित किया जाता है, इसमें निम्नांकित पांच पदार्थ डाले जाते हैं—दधि सर्पिर्जलं क्षौद्रं सितां चैतैश्च पञ्चभिः, प्रोच्यते मधुपर्कः, समासो मधुपर्कः —उशना ०४, असिस्त्वद्यन्मधुपर्कमर्पित स तद् व्यधात्तत्कर्मुदकंदर्शिनाम्, यदैव पास्यन्मधु भीमजाधरमिषेण पुण्याहविधि तदा कृतम् -नै० १६।१३, मनु० ३।११९ तथा आगे,—पर्क्य (वि०) मधुपर्क का अधिकारी, पर्णिका,—पर्णी नील का पौधा,—पाविन् (पु०) भौंरा,- पुरम्, -री, मथुरा का विशेषण - सप्रत्युज्जिगमदासन्न मधुपुरीमध्ये हरिं सेव्यते—भामि० ४।४४,- पुष्प 1 अशोक वृक्ष 2 मौलसिरी का वृक्ष 3 टन्टी वृक्ष 4 सिरस का पेड़, प्रणयः शराब की लत, प्रमेह मधुमेह, शर्करायुक्त मूत्र,—प्राशनम् शुद्धीकरण के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें नवजात शिशु को मधु चटाया जाता है,—प्रिय बलराम का विशेषण, - फल एक प्रकार का नारियल,—बालिका एक प्रकार का छुहारा, —बल्ली माधवी लता,—बी (बी) ज अनार का वृक्ष,—बी(बी) पुर एक प्रकार की नीबू, चकोतरा, मक्षः,—क्षा, - मक्षिका मधुमक्खी, —मज्जन अखरोट का पेड़—मद शराब का नशा —मल्लिः, ल्लिका (स्त्री०) माधवी लता,—माधवी 1 एक प्रकार का मादक पेय 2 कोई भी वसन्त ऋतु का फूल,—माध्वीकम् एक प्रकार की मादक मदिरा, —मारक भौंरा,—मेहः=मधुप्रमेह दे०,—यष्टिः (स्त्री०) गन्ना, ईख, मुलेठी, - रस 1 ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी बनती है) 2 गन्ना, ईख 3 मिठास, (सा) 1 अंगूरों का गुच्छा 2 अंगूरों की बेल,—लवः एक वृक्ष का नाम, -लिह्, लेह,—लेहिन् (पु०), —लोलुप भौंरा इसी प्रकार 'मधुनो लेह', वनम् वह जंगल जहां मधु नामक राक्षस रहा करता था जिसको मारकर शत्रुघ्न ने मथुरा नगरी बसाई थी, (म) कोयल, वारः (पु०, ब० व०) बार २ पीने वाले, शराब के जाम पर जाम चढ़ाने वाले, डटकर शराब पीने वाले अङ्गिरे बहुमतः प्रमदानामोष्ठयावकनदो मधुवारः —कि० ९।५९, लालित नु नमित नु वधूना द्रावित नु हृदय मधुवारैः शि० १०।१४, (कभी कभी यह शब्द एक वचनान्त भी होता है) दे०

कि० ८।५७, ततः भौंरा मार्मिक को मरन्दनामन्नरण मधुव्रतम् भामि० १।११७, तस्मिन्नय मधुव्रते विधिवशान्मार्ध्वीकमाकाङ्क्षति ४६, शक्कर या शहद से तैयार की हुई शराब,—आढ्यः एक प्रकार का (महुए का) पेड़,—द्विष्टम्,—द्वेषम् मोम, -नक्तः, -नक्तम्, —सारथि, सुहृद् कामदेव,—सिक्थकः एक प्रकार का विष,—सूदनः भौंरा, स्थानम् मधुमक्खियों का छत्ता, स्वरः कोयल, हन् (पु०) 1 शहद को नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला 2. एक प्रकार का शिकारी पक्षी 3. ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 4. विष्णु का नामान्तर।

मधुक [मधु+कन्, के+क वा] 1 एक वृक्ष (=मधूक, महुआ) का नाम 2 अशोक वृक्ष 3 एक प्रकार का पक्षी, कम् 1 जस्ता 2 मुलैठी।

मधुर (वि०) [मधु माधुर्यं राति रा+क मधु अस्त्यर्थे र वा] 1 मीठा 2 शहदयुक्त, मधुमय 3 सुखद, मनोहर, आकर्षक, रुचिकर—अहो मधुरमाकृतिर्दर्शनम् श० १ कु० ५।१९ उत्तर० १।२० 4 सुरीला (स्वर), 5 लाल रंग का गन्ना, ईख 2 चावल 3 गन्ना, गुड़ 4 एक प्रकार का आम, रम् 1 माधुर्य 2 मधुरपेय, शर्बत 3 विष 4 जस्ता, रम् (अव्य०) मिलाप के साथ सुहावने ढंग से, रोचकता के साथ। सम० अक्षर (वि०) मधुर ध्वनि वाला, मिष्टभाषी, रसीला, आलाप (वि०) मधुर शब्दों का उच्चारण करने वाला (प) मधुर या सुरीले स्वर मधुरालापनिसर्गं पण्डितानाम् —कु०४।१६, (—पा) मैना, मदनसारिका,—अष्टक एक प्रकार की मछली,—अम्बीरम् नीबू का एक जाति,—अम्लम्—मधुराम्लम् दे०, -फलः एक प्रकार का पेबदी पेड़,—भाषिन्,—भाष् (वि०) मधुरभाषी,—रसा एक प्रकार का छुहारे का पेड़, स्वर,—स्वन (वि०) मधुर स्वर से अलापने वाला, मधुरस्वर वाला।

मधुरता,—त्वम् [मधुर+तल्+टाप्, त्व वा] माधुर्य, सुहावनापन, रोचकता।

मधुरिमन् (पु०) [मधुर+इमनिच्] माधुर्य, रोचकता मधुरिमातिशयेन बधोऽमृतम्—भामि० १।१२३।

मधुलिका [मधुल+कन्+टाप्, इत्वम्] काली सरसो, राई।

मधूक [मधु+ऊक नि० ह्रस्व च] 1 भौंरा 2 एक वृक्ष का नाम महुआ, -कम् मधूक (महुए) वृक्ष का फूल—दूर्वाश्चता पाण्डुमधूकदाम्ना—कु० ७।१४, निरन्तरा मधूकच्छविगण्डभित्ति—गीत० १०, रघु० ६।२५।

मधूल [मधु+लाति ला+क पृषो०] एक प्रकार का वृक्ष, -ली आम का पेड़।

मधूलिका [मधूल+कन्+टाप् इत्वम्] एक प्रकार का वृक्ष।

मध्य (वि०) [मध्+यत्, नस्य च, तारा०] 1 बीच का, केन्द्रीय मध्यवर्ती, केन्द्रवर्ती—मेघ० ४६, मनु० २।२१ 2 अन्तर्वर्ती, मध्यवर्ती 3 बीच के दर्जे का, मध्यक, दक्षिणाने कदका, बीच का· प्रारम्भ विघ्नविहता विरमन्ति मध्या भर्तृ० २।२७ 4. तटस्थ, निष्पक्ष 5 न्याय्य, यथार्थ 6 (ज्यो० में) मध्यभाग,—ध्यः,—ध्यम् 1 मध्य, केन्द्र, मध्य या केन्द्रीय भाग अह्न मध्यम् दोपहर, दिन का मध्य—सहस्रदीधितिरस्तकूटरोहति मध्यमह्न मा० १, 'सूर्य शिरोबिन्दु पर है। अर्थात् 'ठीक सिर के ऊपर है, व्यौमयध्ये विक्रम० २।१ 2 शरीर का मध्यभाग, कमर —मध्ये क्षामा· मेघ० ८२, वेदिविलग्नमध्या कु० १।३९ विशालवक्षास्तनुवृत्तमध्य —रघु० ६।३२ 3 पेट, उदर मध्यन वलिभिन्न चार बजार वाला -कु० १।३९ 4 किसी वस्तु का भीतरी भाग 5 बीच की स्थिति या दशा 6 घोड़े की कोख 7 संगीत में मध्यवर्ती सप्तक 8 किसी श्रेणी की मध्यवर्ती राशि, क्या बीच की अंगुली, ध्यम् दस अरब की संख्या ('मध्य' के कर्म०, करण० अपा० और अधि० के रूप क्रि० वि० की भाँति प्रयुक्त होते हैं) (क) मध्यम् में, के बीच में (ख) मध्यात् में से, बीच में (ग) मध्यात् में से, के बीच (सब० के साथ) में तेषां मध्यात् काक प्रोवाच —पञ्च० १ (घ) मध्ये 1 बीच में, में, मध्य में रघु० १२।२९ 2 में, के अन्दर, के भीतर, बहुधा (जब कि अव्ययीभाव समास के आदि पद के रूप में प्रयोग हो) उदा० मध्येगङ्गम् 'गंगा में, 'मध्येजठरम् 'पेट में' भामि० १।६१, मध्येनगरम् 'नगर के भीतर' मध्येनदि 'नदी के बीच में' मध्येपृष्ठम् 'पीठ पर' मध्येभक्तम्, भोजन करने के पश्चात् फिर दोबारा भोजन करने से पूर्व बीच में ली जाने वाली औषधि, मध्येरणम् 'युद्ध में'—भामि० १।१२८, मध्येसभं 'सभा में या सभा के सामने'—नै० ६।७६, मध्येसमुद्रम् 'समुद्र के बीच में' शि० ३।३३) । सम०—अङ्गुलिः, —ली (स्त्री०) बीच की अंगुली —अह्न (अहन् के स्थान में) मध्याह्न, दोपहर, °कृत्यम्, °क्रिया दोपहर के समय की जाने वाली क्रिया, °काल· °वेला· °समय दोपहर का समय, °स्नानम् दोपहर का नहाना, —कर्णः अर्धव्यास, ग (वि०) बीच में जाने वाला गत (वि०) केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बीच में होने वाला, गन्धः आम का वृक्ष, -ग्रहणम् ग्रहण का मध्य, दिनम् ('मध्यदिनम्' भी) 1 मध्य दिन, दोपहर 2 दोपहर का उपहार, -दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, इसमें सामान्य विशेषण जो समस्त विशेषण

पर प्रकाश डालता है बीच में स्थापित किया जाता है, उदा०—भट्टि० १०।२४,—देश: 1 मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. पेट 4. याम्योत्तर रेखा 5 केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विंध्य पर्वत के बीच का भाग हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि, प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेश स कीर्तित —मनु० २।२१,—देह शरीर का प्रमुख भाग, पेट,—पदम् मध्यवर्ती पद, °लोपिन् दे० मध्यमपदलोपिन्, —पात सहधर्मचारिता, ममायम, —भाग: 1 मध्य भाग 2 कमर,—भाव बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—यव: पीली सरसो के छ दानो के बराबर का एक तोल, रात्र, —रात्रि. (स्त्री०) आधी रात, रात का बीच,—रेखा केन्द्रीय या प्रथमयाम्योत्तर रेखा,—लोक तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मर्त्यलोक या ससार, °ईश, , ईश्वर. राजा,—वयस् अधेड उम्र-वाला, वर्तिन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पु०) विवाचक, मध्यस्थ, वृत्तम् नाभि,—सूत्रम्= मध्यरेखा दे०,—स्थ (वि०) 1 बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का 4 बीच-बचाव करने वाला, दो दलो के बीच मध्यस्थता करने वाला 5 निष्पक्ष, तटस्थ 6 उदासीन, लगाव-रहित—श० ५, (स्थ) निर्णायक, विवाचक, मध्यस्थ 2 शिव का विशेषण, स्थलम् 1 मध्य या केन्द्र 2 मध्य स्थान या प्रदेश 3 कमर,—स्थानम् 1 बीच का पडाव 2 बीच का स्थान अर्थात् वायु 3 तटस्थ प्रदेश, —स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती।

मध्यत: (अव्य०) [मध्य+तसिल्] 1 बीच से, मध्य से, में से 2 में।

मध्यम (वि०) [मध्ये भव - मध्य+म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय पितु पद मध्यममुत्पतन्ती—विक्रम० १।१९, इसी प्रकार 'मध्यमलोकपाल' मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का, बीच की स्थिति या विशेषता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तमाधममध्यम' में 4 बीच का, औसत दर्जे का- तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितान्यत रघु० १७।५८ 5 बीच के कद का 6 न सबसे छोटा न सबसे बडा, (भाई) बीच मे उत्पन्न —प्रणमति पितरौ वा मध्यम पाण्डवाग्र्यम —वेणी० ५।२६ 7 निष्पक्ष, तटस्थ,—म: 1 सगीत में पचम स्वर 2 विशेष सगीत पद्धति 3 मध्यवर्ती देश, दे० मध्यदेश 4 (ब्या० मे) मध्यम पुरुष 5 तटस्थ प्रभु - धर्मोत्तर मध्यममाश्रयन्ते रघु० १३।७ 6 प्रान्त का राज्यपाल, मा 1 बीच की अगुली 2 विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3 कमल का बीजकोष 4 काव्यशास्त्रों में वर्णित एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हुई स्त्री, तु० सा० द० १००, मम् कमर। सम०—अङ्गुलि बीच की अगुली, आहरणम् (बीज० मे) समीकरण म बीच की राशि का निरसन, कक्षा बीच का आगन, जात (वि०) दो के बीच मे उत्पन्न, मझला,—पदम् (समास के) बीच का पद, °लोपिन् (पु०) तत्पुरुष समास का एक अवान्तर भेद जिसमे कि रचना के बीच का शब्द लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'शाकपार्थिव' है, इसका विग्रह है - शाकप्रिय पार्थिव, यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार छायातरु व गुडधाना आदि शब्द है पाण्डव अर्जुन का विशेषण, पुरुष (व्या० में) मध्यमपुरुष - वह पुरुष जिसको सम्बोधित किया जाय, - भृतक किसान, खेतिहर (जो अपने लिए और अपने स्वामी के लिए खेतो का काम करता है), - रात्र आधी रात,—लोक बीच का ससार, भूलोक, °पाल राजा रघु० २।१६, वयस् (नपु०) प्रौढावस्था, बीच की उम्र, वयस्क (वि०) प्रौढ, बीच की उम्र का, सद्भाव बीच के दर्जे का गुप्तप्रेम, जैसे कि गहने कपडे, पुष्प आदि उपहार भेज कर परस्त्री को फुसलाना, व्यास ने इसकी निम्नाकित परिभाषा की है- प्रेषण गन्धमाल्यानां वृषभूषणवाससाम्, प्रलोभनं चामुष्यानैमध्यम सग्रह स्मृत, —साहस्र तीन प्रकार के दण्डभेदो मे द्वितीय प्रकार मनु० ८।१३८, (स —सम्) मध्यवर्ग के प्रति अपराध या अत्याचार,- स्थ (वि०) बीच मे होने वाला।

मध्यन्दिन (वि०) (स्त्री०-नी) [मध्यम+कन्] बीच का, बिलकुल बीचोबीच का।

मध्यमिका [मध्यमक+टाप्, इत्वम्] वयस्क कन्या, जो विवाह योग्य उम्र की हो गई हो।

मध्ये दे० 'मध्य' के अन्तर्गत।

मध्व एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तसूत्रों के भाष्यकर्ता।

मध्वक [मधु+अक+अच्] भौरा।

मध्वजा [मधु ईजते प्राप्नोति—मधु+ईज्+क+टाप्, पृषो० ह्रस्व] कोई भी मादक पेय, खीची हुई शराब।

मन् I (भ्वा० पर० मनति) 1 घमण्ड करना 2 पूजा करना II (चुरा० आ० मानयते) घमण्डी होना, III (दिवा० तना० आ० मन्यते, मनुते, मत) 1 सोचना, विश्वास करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, विचारना—अङ्गं केऽपि शशाङ्कुरं जलनिधे पङ्कं परे मेनिरे- मुभा०, वत्सं मन्ये कुमारणायेन जुम्भकास्त्रमामन्त्रितम् -- उत्तर० ५, कथ भवान्मन्यते 'आपकी क्या सम्मति है' 2. खयाल करना,

आदर करना, मानना, देखना, समझना, मान लेना —समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते —भर्तृ० ३।८४, अमस्तत्रानेन परार्ध्यजन्मना स्थितेरमेत्या स्थितिमन्तमन्वयम्—रघु० ३।२७, १।३२, ६।८४, भट्टि० २।२६, ३५ भट्टि० ९।११७, स्तनविनिहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भारम्—गीत० ४ 3. सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, वरेण्य समझना —यस्यानुपङ्क्तिरुपे इमे भुवनाधिपत्य भोगाय कृपणलोकमता भवन्ति —भर्तृ० ३।७६ 4. जानना, समझना, प्रत्यक्ष करना, पर्यवेक्षण करना, लिहाज करना—मत्वा देव धनपति-सख्य यत्र साक्षाद्वसन्तम् मेघ० ७३ 5 स्वीकृति देना, हामी भरना, अमल करना—तन्मन्यस्व मम वचनम् मृच्छ० ८ 6. सोचना, विचार विमर्श करना 7 इरादा करना, कामना करना, आशा करना 8 मन लगाना, 'मन्' धातु के अर्थ उस शब्द के अनुसार जिसके साथ इसका प्रयोग होता है, विविध प्रकार से बदलते रहते हैं उदा० बहु मन् बहुत मानना, बड़ा समझना, बहुत मूल्य आंकना, वरेण्य समझना, पूज्य मानना बहु मनुते ननु ते तनुसंगत-पवनाचलितमपि रेणुम्—गीत० ५, 'बहु' के अन्तर्गत भी दे०, लघु मन् तुच्छ समझना, घृणा करना, अपमान करना—श० ७।१, अन्यथा मन् और संदेह सोचना, संदेह करना, साधु मन् भला सोचना, अनुमोदन करना, संतोषजनक समझना, श० १।२, असाधु मन् नापसंद करना, तृणाय मन् या तृणवत् मन् तिनके जैसा समझना, हलका मूल्य लगाना, तुच्छ समझना —हरिमध्यमसत तृणाय सि० १५।६१, न मन् अवज्ञा करना, अवहेलना करना, प्रेर० (मानयति-ते) सम्मान करना, श्रद्धा दिखाना, आदर करना, अभिवादन करना, मूल्यवान् समझना मान्यान्मानय —भर्तृ० २।७७, इच्छा० (मीमांसते) 1 विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेषण करना, पूछताछ करना 2 संदेह करना, पूछताछ के लिए बुलाना, (अधि० के साथ), अनु—स्वीकृति देना, हामी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना, अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मजूरी देना—राजन्यान्स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने —रघु० ४।८७, १४।२०, तत्र नाहमनुमन्तुमुत्सहे मोघवृत्ति कलत्रस्य चेष्टितम्—रघु० ११।२९, कु० १।५९, ३।६०, ५।६८, भर्तृ० ३।२२, रघु० १६।८५, प्रेर०—छुट्टी मांगना, अनुमति मांगना, स्वीकृति मांगना—अनुमान्यता महाराज —विक्रम० २, अभि—, 1 कामना करना, इच्छा करना, लालायित होना —मनु० ९०।९५ 2 अनुमोदन करना, हामी भरना 3 सोचना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, मानना, अव—, घृणा करना, हेय समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना, तुच्छ समझना—चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी—कु० ५।५३, मनु० ४।१३५, विक्रम० २।११ उप—, सोचना, विचारना प्रेर० 1 सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना 2. अनुमोदन करना, प्रशंसा करना 3 अनुज्ञा देना, अनुमति देना, वि—, (प्रेर०) अनादर करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना—स्त्रीभिर्विमानितानां कापुरुषाणां विकत्थते मदन —मृच्छ० ८।९, सम्—, 1 सहमत होना, एकमत होना, एक मन का होना 2 हामी भरना, स्वीकृति देना, अनुमोदन करना, पसंद करना 3 सोचना, खयाल करना, मानना 4 स्वीकृति देना, अधिकार देना 5 मान करना, सम्मान करना, महत्त्वपूर्ण समझना, कश्चिदभिज्ञानाख्य काले समन्वेष्टुमितिथिम् —भट्टि० ६।६५, समभ्यस्त बन्धून् १।२ 6. अनुज्ञा देना, अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना, आदर करना, प्रतिष्ठा करना।

मननम् [मन्+ल्युट्] 1 सोचना, विचार विमर्श करना, महत्त्वचिन्तन करना, अवधारणा करना—मननान्मुनिरेवासि —हरि० 2 प्रज्ञा, समझ 3 तर्कसंगत अनुमान 4 अटकल, अंदाजा।

मनस् (नपुं०) [मन्यतेऽनेन मन् करणे असुन्] 1. मन, हृदय, समझ, प्रत्यक्षज्ञान, प्रज्ञा, जैसा कि सुमनस्, दुर्मनस् आदि में 2 (दर्शन० में) संज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का आन्तरिक अंग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ आत्मा को प्रभावित करते हैं, (न्या० द० में मन एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःखासूपलब्धिसाधन-मिन्द्रिय प्रतिजीव भिन्नमनु नित्य च—त० की० 3 चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति 4 सोच, विचार, उत्प्रेक्षा, कल्पना, प्रत्यय, पश्यन्नदूरान्मनसाप्य-धृष्यम्—कु० २।५१, रघु० २।२७, कायेन वाचा मनसापि शश्वत्—५।५ 5 सोचना, प्रयोजन, अभि-प्राय 6 संकल्प, कामना, इच्छा, रुचि, इस अर्थ में 'मनस्' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के तुमुन्नत रूप के साथ (तुम् के अन्तिम 'म्' का लोप करके) होता है, और विशेषण शब्द बनते हैं—अथ मन प्रष्टुमनाः स्वयोनिधे—कु० ५।४०, तु० काम 7 विचारविमर्श 8 स्वभाव, प्रकृति, मिजाज 9 तेज, ओज, सत्त्व 10 मानस नामक सरोवर (मनसा सत् सोचना, चिन्तन करना, याद करना—कु० २।६३, सम्+धा मन को स्थिर करना, विचारों को निर्दिष्ट करना, (सम० या अधि० के साथ), समा+धा मन लगाना, स्नेह हो आना —अभिलाषे मनो बबन्धान्यरसान् विरक्तश्च स:—रघु० ३।४, मनः समाधा अपने आपको स्वस्थ करना, समनि-

उद्भू मन को पार करना, मनसि कृ सोचना, ध्यान रखना, दृढ संकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना)। सम०—अभिलाषः प्रेमी, पति, —अनवस्थानम् अनवधानता,—अनुज (वि०) मनो मुकूल, रुचिकर, —उपहारिन् (वि०) हृदयहारी, —अभिनिवेशः खूब मन लगाना, प्रयोजन की दृढता, —अभिराम (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को तृप्त करने वाला—रघु० १।३९,—अभिलाषः मन की लालसा या इच्छा,—आप (वि०) हृदयहारी, आकर्षक, सुहावना,—काम्य (वि०) (मनस्काम्य या मन, काम्य) मन का प्रिय, सुहावना रुचिकर, —कार पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (सुख या दुःख का) पूरी चेतना, —क्षोभ मन की उचाट, मानसिक अव्यवस्था, —गत (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्दरूनी, गुप्त, ज्ञेय न वक्ष्यति मनागनमाधिहेतुम् —०३।१२ 2 मन पर प्रभाव डालने वाला, वाञ्छित (शब्) 1 कामना, चाह—मनोगतं सा न शशाक शंसितुम्—कु० ५।५१ 2 विचार, चिन्तन भाव, सम्मति,—गति (स्त्री०) हृदय की इच्छा,—गवी कामना, चाह, गुप्ता मैनसिल -ग्रहणम् मन को हरना,—ग्राहिन् (वि०) मन का हरने वाला या आकृष्ट करने वाला,—ज, —जन्मन् (वि०) मनोजात, (पु०) कामदेव, -ज्ञ (वि०) विचार की भांति, फुर्तीला, आशुगामी 2 चिन्तन और विचारण में तेज, 3. पैतृक, पितृ तुल्य सबन्ध रखने वाला—ज्ञस् (वि०) पिता के समान, पितृतुल्य,—जात (वि०) मन में उत्पन्न, मन में उठित या पैदा हुआ,—जिह्म (वि०) मन से सूघने वाला अर्थात् दूसरों के मन के विचार भांपने वाला, -ज्ञ (वि०) सुहावना प्रिय रुचिकर, सुन्दर, लावण्यमय—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, रघु० २।७, ६।७ (ज्ञः) एक गन्धर्व का नाम, (-ज्ञा) 1 मैनशिल 2 मादक पेय 3 राजकुमारी,—ताप पीडा 1 मानसिक पीडा या वेदना व्यथा 2 पश्चात्ताप, पछतावा,—तुष्टि (स्त्री०) मन का सन्तोष,—तोका दुर्गा का विशेषण, —दण्ड मन या विचारों पर पूर्ण नियन्त्रण मनु० १०।१० तु० चित्तदण्डिन्, दत्त (वि०) एकचित्त, जिसका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लग रहा हो, मन से दिया हुआ दाह, -दुःख मन का कलेश, पीडा, मनस्ताप नाश बुद्धि का नाश, विक्षिप्तता, पागलपन, —नीत (वि०) पसन्द किया हुआ चुना हुआ, —पति विष्णु का विशेषण,—पूत (वि०) 1 मन जिसे पवित्र मानता हो, अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित, —मनःपूत समाचरेत्—मनु० ६।४६ 2 शुद्धात्मा, सच्चेन, प्रणीत (वि०) मन का रुचिकर या सुखद, —प्रसादः चित्त की स्वस्थता, मानसिक शान्ति, —प्रीति (स्त्री०) मानसिक सन्तोष, हर्ष, खुशी, —भवः, -भूः 1 कामदेव मनोज—रे रे मनो भव मनोभवशासनस्य पादाम्बुजद्वयमनारतमाश्रयन्तम् —भामि० ४।३३, कु० ३।७७, रघु० ७।२२ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद, कामुकता—अत्यारूढा हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १२।३३,- भवन कामदेव, -भव (वि) पूर्वक् देखिये,—यायिन् (वि०) 1 इच्छानुसार गमन करने वाला 2 तेज, फुर्तीला,—योग दत्त चित्तता, खूब ध्यान देना, योनि कामदेव रञ्जनम् 1 मन को प्रसन्न करना 2 सुहावनापन,—रथः 1 मन की गाढी कामना, चाह अवतरन्त सिद्धिपथं शब्द स्वमनोरथस्यैव —मालवि० १।२२, मनोरथानामगतिर्न विद्यते -कु० ५।६४, रघु० ३।७२, १२।५९ 2 अभीष्ट पदार्थ—मनोरथाय नाशंसे- श० ७।१२ 3 (नाटक में) सकेत, परोक्ष रूप से या गूढ रूप से प्रकट की गई कामना, °दायक (वि०) किसी एक व्यक्ति की आशाओं को पूरा करने वाला, (—क) कल्पना का नाम 'सिद्धि (स्त्री०) कल्पना की गई हवाई किले बनाना, -रम (वि०) आकर्षक, सुखद रुचिकर, प्रिय सुन्दर—अरुणनखमनोरमाङ्गुलीनां (अङ्गुलीः)—श० ६।१० (—मा) 1 कमनीय स्त्री 2 एक प्रकार का रंग, -राज्यम् कल्पना का राज्य हवाई किला मनोराज्य विजृम्भणमेतत् 'यह हवाई किले बनाना है' लयः चेतना का नाश, -लोलम् मन की चंचलता, मन की लहर या मौज, वाञ्छा,—वाञ्छितम् हृदय की अभिलाष इच्छा विकार, विकृति (स्त्री०) मन का संवेग —वृत्ति (स्त्री०) 1 मन की क्रियाशीलता इच्छाशक्ति 2 स्वभाव, चित्तवृत्ति, वेग विचार की तेजी, —व्यथा मानसिक पीडा या वेदना, शोल, सा मैनसिल मनः शिलाभल्लातकक्षारनिशेष कु० १।५५, रघु १०।८० शीघ्र (वि०) मन की भांति तेज,- सग मन की (किसी वस्तु में) आसक्ति, सन्ताप मन की व्यथा सद (वि०) हृदय में स्थित, मानसिक,- स्थैर्यम् मन की दृढता —हृत (वि०, निराश, हर (वि०) सुखद लावण्यमय, आकर्षक, कमनीय प्रिय—अस्याः कमनीयेहितं वपुः—श० १।१७, कु० ३।३५, रघु० ३।३२ (—रः) एक प्रकार की चमेली, (—रम) सोना, -हर्तृ—हारिन् (वि०) हृदय को हरण करने वाला, मनोहर, रुचिकर, सुखद हित मनोहारि च दुर्लभं वचः कि० १।४, हारी असती या व्यभिचारिणी स्त्री,—हाद हृदय का उल्लास,—ह्वा मैनसिल।

मनसा I मनस् + टाप्] कश्यप की एक पुत्री का नाम नागराज अनन्त की बहन तथा जरत्कारु मुनि की पत्नी, इसी प्रकार 'मनसादेवी'।

मनसिज [मनसि जायते–जन्+ड, अलुक् स०] 1 कामदेव रघु० १८।५२ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद–मनसिजरुज सा वा दिव्या ममालमपरोद्धितुम् – विक्रम० ३।१०, श० ३।९।

मनसिजशयः [मनसि शेते–शी+अच् सप्तम्या अलुक्] कामदेव शि० ७।२।

मनसा (अव्य०) [मनस्+तस्] मन से, हृदय से - रघु० १४।८१।

मनस्विन् (वि०) [मनस्+विनि] 1 बुद्धिमान्, प्रज्ञावान्, चतुर, ऊँचे मन वाला, उच्चात्मा—रघु० १।३२ पंच० २।१२० 2 स्थिरमना, दृढनिश्चय, दृढ संकल्प वाला कु० ५।६,—नी 1 उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री- मनस्विनीमानविघातदक्षम् कु० ३।३२, मालवि० १।१९ 2 बुद्धिमती या सती स्त्री 3 दुर्गा का नाम।

मनाक् (अव्य०) [मन्+आक्] 1 जरा, थोड़ा सा, अल्पमात्रा में, न मनाक् 'बिल्कुल नहीं' रे पान्थ विच्छ्रमना न मनागपि स्या - भामि० १।३७, १।११ 2 शनैः शनैः, विलंब से। समः–कर (वि०) थोड़ा करने वाला, (रः) एक प्रकार की गंधयुक्त अग्नि की लकड़ी।

मनाका [मन्+आक+टाप्] हथिनी।

मनित (वि०) [मन्+क्त] ज्ञात, प्रत्यक्षज्ञान, समझा हुआ।

मनीकम् [मन+कीकन्] धुरी, अक्षन।

मनीषा [मनस् ईषा ष० त०, शक०] 1 चाह, कामना, या दुर्जन वशयितुं तनुते मनीषा भामि० १।२५ 2 प्रज्ञा, समझ 3 सोच, विचार।

मनीषिका [मनीषा+कन्+टाप्, इत्वम्] समझ, प्रज्ञा।

मनीषित (वि०) [मनीषा+इतच्] 1 अभिलषित, वांछित, पसंद किया गया, प्यारा प्रिय -मनीषिता सन्ति गृहेषु देवता —कु० ५।४ 2 रुचिकर,—तम् कामना, इच्छा, अभीष्ट पदार्थ -मनीषितं सौरपि येन दुग्धा रघु० ५।३३।

मनीषिन् (वि०) [मनीषा+इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्, प्रज्ञावान् चतुर, विचारशील, समझदार रघु० १।१५, (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, मुनि, पंडित —माननीयो मनीषिणाम्— रघु०१।११, संस्कारवत्येव गिरा मनीषी कु० १।२८, ५।३९, रघु० ३।४४।

मनु [मन्+उ] 1. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रतिनिधि और मानवजाति का पिता माना जाता है (कभी कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) 2 विशेषतः चौदह क्रमागत प्रजापति या भूलोक प्रभु—मनु० १।६३ (सबसे पहले मनु का नाम स्वायंभुव मनु है, जो एक प्रकार से गौण स्रष्टा समझा जाता है, इससे वस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ। इसी को मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है सातवाँ मनु वैवस्वत मनु कहलाता है क्योंकि उसका जन्म विवस्वान् (सूर्य) से हुआ। यही जीवधारी प्राणियों की वर्तमान जाति का प्रजापति समझा जाता है। जल प्रलय के समय मत्स्यावतार के रूप में विष्णु ने इसी मनु की रक्षा की थी। अयोध्या पर शासन करने वाले सूर्यवंशी राजा के सूर्यवंश का प्रवर्तक भी यही मनु समझा जाता है—दे० उत्तर० ६।१८ रघु० १।११, चौदह मनुओं के क्रमशः निम्नलिखित नाम हैं—1 स्वायंभुव 2 स्वारोचिष 3 औत्तमि 4 तामस 5 रैवत 6 चाक्षुष 7 वैवस्वत 8 सावर्णि 9 दक्षसावर्णि10 ब्रह्मसावर्णि 11 धर्मसावर्णि 12 रुद्रसावर्णि 13 रौच्यदेवसावर्णि 14 इन्द्र सावर्णि। 3 चौदह की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति, —नुः (स्त्री०) मनु की पत्नी। समः अन्तरम् एक मनु का काल (मनु० १।७९ के अनुसार यह काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी को ब्रह्मा का १।१४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पूरा दिन होता है। इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अधिष्ठातृ-मनु पृथक् २ है इस प्रकार के छः काल बीत चुके हैं, इस समय हम सातवें मन्वन्तर में रह रहे हैं, और सात और मन्वंतर अभी आने हैं), -अः मानवजाति °अधिप, °अधिपति 'ईश्वर, °पतिः, °राजः राजा, प्रभु, °लोकः मानवों की सृष्टि—अर्थात् भूलोक, -जातः मनुष्य,—ज्येष्ठः तलवार,—प्रज्ञप्त (वि०) मनु द्वारा विधिवत् या व्याख्यात,—भूः मनुष्य, मानव जाति,—राज (पुं०) कुबेर का विशेषण,—श्रेष्ठः विष्णु का विशेषण,—संहिता धर्मसंहिता जो प्रथम मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत विधिविधान।

मनुष्य [मनोरपत्यं यक् सुक् च] 1 आदमी, मानव, मर्त्य 2 नर। समः—इन्द्रः,—ईश्वरः राजा, प्रभु—रघु० २।२, जातिः मानव जाति, इंसान, देवः 1 राजा -रघु० २।५२ 2 मनुष्यों में देव, ब्राह्मण,—धर्मः 1 मनुष्य का कर्तव्य 2 मानव चरित्र, इंसान की विशेषता, —धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण, —यज्ञः आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार, गृहस्थ के पाँच दैनिक कृत्यों में एक, दे० नृयज्ञ,—लोकः मरणशील (मर्त्यों) मनुष्यों का संसार, भूलोक, विद्या, विद्या (स्त्री०),—विधम् इंसान, मानवजाति,—शोणितम् मानवरक्त —(पदौ) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम् —रघु० ३।५४,—संख्या 1 मनुष्यों की संख्या 2 भीड़, जमाव।

मनोमय (वि०) [मनस्+मयट्] मानसिक, आत्मिक। सम० -कोशः,—कः आत्मा को आवृत करने वाले पाँच कोषों में से दूसरा कोष।

मन्तु: [मन्+तुन्] 1 दोष, अपराध—मुहुर्व मन्तु परिकल्प्य भामि० २।१३ 2 मनुष्य, मानवजाति, तु (स्त्री०) समझ।

मन्तृ (पु०) [मन्+तृच्] ऋषि, मुनि, बुद्धिमान्, मनुष्य, परामर्शदाता, सलाहकार।

मन्त्र्, (चुरा०आ० मन्त्रयते, कभी कभी 'मन्त्रयति' भी, मन्त्रित) 1. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना, मन्त्रणा करना, परामर्श लेना -न हि स्त्रीभि सह मन्त्रयितु युज्यते- पंच० ५, मनु० ७।१४६ 2 उपदेश देना, सलाह देना, परामर्श देना अतीतलाभस्य च रक्षणार्थं यन्मन्त्र्यते ऽसौ परमो हि मन्त्र —पंच० २।१८२ 3 वेदपाठ को अभिमन्त्रित करना, जादू से मुग्ध करना 4 कहना, बोलना, बातें करना, गुनगुनाना - किमपि हृदये कुरुता मन्त्र्यते - श० १, किमेकाकिनी मन्त्रयसि—श० ६, हला सगीतशालापरिसरेऽवलोकिता द्वितीया त्व कि मन्त्रयन्त्यासी मा० २, अनु—,1 अभिमन्त्रित करना, जादू करना विसृष्टश्च रामदेवानुमन्त्रितोऽवः—उत्तर० २ 2 आशीर्वाद देकर विदा करना -रथमारोप्य कृष्णेन यत्र कर्णोऽनुमन्त्रित —महा०, अभि ,1 वेदमन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करना, —यशुरसौ योऽभिमन्त्र्य सुनौ हृत —अमर०, याज्ञ० २।१०२, ३।३२६ 2 मुग्ध करना, मोहना, आ - 1, विदा करना, विसर्जन करना, आमन्त्रयस्व सहचरम् श० ३, कु० ६।९४ 2 बोलना, बुलाना, कहना, सबोधित करना, वार्तालाप करना तमामन्त्र्य याबभूव - का० ८१, वेणी० १ 3 कहना, बोलना पण्डितोऽप्येवमामन्त्र्यते का० १९५, भट्टि० ९।९८ 4 बुलाना, निमन्त्रित करना, उप ,उपदेश देना, उकसाना, फुसलाना, नि ,न्यौता देना, बुलाना, बुला भेजना दिव्यानिमन्त्रिताश्चैनमभिजग्मुर्महर्षय —रघु० १५।५९, ११।३२, याज्ञ० १।२२५, -,जादू से अभिमन्त्रित करना सम् -, सलाह करना, परामर्श या सलाह लेना,—मम हृदयेन सह समन्त्रोक्तवानसि -मुद्रा० १।

मन्त्र [मन्त्र्+अच्] 1 (किसी भी देवता को सबोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वेद मंत्र, (वेद का पाठ तीन प्रकार का है—यदि छन्दोबद्ध और उच्चस्वर से बोला जाने वाला है तो ऋक् है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुस् है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो सामन् है) 2 वेद का सहिता पाठ (ब्राह्मण भाग को छोड़कर) 3 मोहन, वशीकरण तथा आवाहन के मंत्र, न हि जीवन्ति जना मनागमन्त्रा—भामि० १।१११, अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीना प्रभाव रत्न० २, रघु० २।३२, ५।५७ 4 (प्रार्थना परक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो 'ओ नम शिवाय' आदि 5 गुप्तवार्ता, मन्त्रणा, परामर्श, उपदेश, सकल्प, योजना तस्य सचूतमन्त्रस्य रघु० १।२०, १७।२०, पंच० २।१८२, मनु० ७।१८ 6 गुप्त योजना या मन्त्रणा, रहस्य। सम०—आराधनम् मोहन परक या आवाहन के मंत्रों से सिद्धि की चेष्टा मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीता सखाने निशा - भर्तृ० ३।४, उदकम्, -अम्भस्, तोयम् वारि (नपु०) मंत्रों द्वारा अभिमन्त्रित जल, मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ पानी, उपबृंहणम् परामर्श द्वारा समर्थन करना, करणम् 1 वेदपाठ 2 स्वर वेदपाठ करना, कार वैदिक सूक्तों का कर्ता,—कालः मन्त्रणा या परामर्श का समय,—कुशल (वि०) परामर्श देने में चतुर, कृत् (पु०) वैदिक सूक्तों का प्रणेता या रचयिता रघु० ५।४, १।२१, १५।२१ 2 वेद पाठी 3 सलाहकार, परामर्शदाता 4 राजदूत गुप्तक ज्ञान, विज्ञान, गुप्ति (स्त्री०) गुप्त सलाह, -गूढ गुप्तचर, गुप्तदूत या अभिकर्ता,—जिह्व अग्नि—शि० २।१०७, ज्ञ 1 सलाहकार, परामर्शदाता 2 विद्वान् ब्राह्मण 3 गुप्तचर, द, दातृ (पु०) आध्यात्मिक गुरु या आचार्य, दर्शिन् (पु०) 1 वैदिक सूक्तों का द्रष्टा 2 वेदों में निष्णात ब्राह्मण —दीक्षित. अग्नि, दृश् (पु०) 1 वैदिक सूक्तों का द्रष्टा, ऋषि 2 परामर्शदाता सलाहकार, देवता मन्त्र द्वारा आहूत देवता धर. सलाहकार, —निर्णय मंत्रणा के पश्चात् अन्तिम निर्णय, पूत (वि०) मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ, प्रयोग मंत्रों का प्रयोग, बी (बी) अम् मंत्र का प्रथमाक्षर, -भेद गुप्त परामर्श का प्रकट कर देना, भेद खोल देना, मूर्तिः शिव का विशेषण मूलम् जादू, —यन्त्रम् जादू के संकेत से युक्त एक रहस्यमूलक रेखाचित्र, ताबीज, —योग 1 मंत्रों का प्रयोग 2 जादू, वर्जम् (अव्य०) बिना मंत्र बोले,—विद् दे० ऊ० 'मन्त्रज्ञ', —विद्या मंत्रविज्ञान, जादू —संस्कारः वेदपाठ से युक्त कोई संस्कार या अनुष्ठान, संहिता वेद के समस्त मंत्रों का संग्रह साधक जादूगर, बाजीगर

साधनम् 1 जादू द्वारा वश में करना, या कार्य सिद्धि 2 मोहनमंत्र, आवाहनयंत्र,—साध्य (वि०) जादू के मंत्रों से वशीकरण या कार्यसिद्धि के योग्य 2 मंत्रणा द्वारा प्राप्य,—सिद्धि (स्त्री०) 1 किसी मंत्र की क्रियाशीलता, या सम्पन्नता 2 मंत्रज्ञान से प्राप्त होने वाली शक्ति,—स्तुत् (वि०) मन्त्रों द्वारा

किसी सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—हीन (वि०) वेदमन्त्रों से रहित अथवा विरुद्ध ।

मन्त्रणम्,—णा [मन्त्र्+ल्युट्] विचार, परामर्श ।

मन्त्रवत् (वि०) [मन्त्र+मतुप्] मन्त्रों से युक्त—रघु० ३।३१ ।

मन्त्रि=मन्त्रिन्, दे० ।

मन्त्रित (भू० क० कृ०) [मन्त्र्+क्त] 1 जिसका परामर्श लिया जा चुका है 2 जिस पर सलाह ली गई, परामर्श लिया गया है 3 कहा हुआ, बोला हुआ 4 मन्त्र पढ़ा हुआ अभिमन्त्रित 5 निश्चित, निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पु०) [मन्त्र्+णिनि] मन्त्री, सलाहकार, राजा का मन्त्री रघु० ८।१७ मनु० ८।१ । सम०—चर (वि०) मन्त्रालय के भार को सम्भालने में समर्थ,—पति-, -प्रधान, -प्रमुख, -मुख्य-, वर, श्रेष्ठ प्रधान मन्त्री, मुख्यमन्त्री,- प्रकाण्ड श्रेष्ठ या प्रमुख मन्त्री, —ओत्रिय वेदों में निष्णात मन्त्री ।

मन्थ, मथ् (म्वा० क्र्या० पर० मन्थति, मथति, मथ्नाति, मथित, कर्म वा० मथ्यते) 1 बिलोना, मथना (प्रायः द्विकर्मक)—सुधा सागरं मथ्नन्तु —या देवासुरैरमृतमम्बुनिधिं मथ्नद्भि:—कि० ५।३० 2. क्षुब्ध करना, हिलाना घुमाना, ऊपर नीचे करना तस्मात् समुद्रादिव मथ्यमानात् —रघु० १६।७९ 3 पीस डालना, अत्याचार करना, सताना, कष्ट देना दुःखी करना मन्मथो मा मन्थ-श्चिरतामं सान्वयं करोति—दश०, जाता मन्थे शिशिर-मथिता पद्मिनी वान्यरूपम् —मेघ० ८३ 4 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5 नष्ट करना, मार डालना, संहार करना, कुचल डालना मन्थामि कौरवशतं समरे न कोपात् वेणी० १।१५, अमन्थीच्च परानीकम् भट्टि० १५।४६, १४।३६ 6 फाड़ डालना, विस्थापित करना, उद्—, 1. प्रहार करना, मारना, नष्ट करना - मीमांसाकृतनुन्नमाथ महता हस्ती मुनि जैमिनिम् -पच० २।३३, धैर्यमुन्मथ्य -मा० १।१८, 'नष्ट करके या उखाड़ कर' 2 हिलाना, अशान्त करना 3 फाड़ना, काटना या छीलना—रघु० २।३३, विस्—1 बिलोना, हिलाना, घुमाना —अमृत-स्यार्थे निर्मथिष्यामहे जलम् महा० 2 रगड़ से आग पैदा करना 3 खरोंचना, पीटना 4 पूर्णतः नष्ट करना, कुचल डालना, सं—, 1 बिलोना (समुद्र) प्रमथ्य-माना गिरिमेव भूयः -रघु० १३।१४ 2 तंग करना, अत्यन्त कष्ट देना, दुःखी करना, सताना 3 प्रहार करना, खरोंचना, आघात करना 4 फाड़ डालना, काट देना 5 उजाड़ देना 6 मार डालना, नष्ट करना मा० ४।९; ७।९ ।

मन्थ [मन्थ् करणे घञ्] 1 बिलोना, इधर उधर हिलाना, आलोडित करना, क्षुब्ध करना मन्थादिव क्षुभ्यति गाङ्गमम्भः —उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ 2 संहार करना, नष्ट करना 3. विश्रिष्ट ऐय + रई का डंडा ('मथानी' भी) 5 सूर्य 6 सूर्य की किरण 7 ओस का मैल, डीढ, मोतियाबिंद 8 पर्वत से अग्नि सुलगाने का उपकरण । सम० -अचल,—अद्रि-, गिरि-, —पर्वतः,—स्थान मन्दर पर्वत (जो रई के डंडे के रूप में प्रयुक्त हुआ)—भामि० १।५५,- उदकः, —उदधिः क्षीर सागर, - रज्जुः बिलोने के रस्सी, नेता, —दण्ड मथनदण्ड,—दण्डः, - दण्डकः रई का डंडा ।।

मन्थनः [मन्थ्+ल्युट्] रई का डंडा,— नम् बिलोना, क्षुब्ध करना, विलोडित करना, इधर उधर हिलाना 2 घर्षण द्वारा आग सुलगाना,- नी मथनी, बिलौनी । सम० -दण्डो बिलौनी, मथनी ।

मन्थर (वि०) [मन्थ्+अरच्] 1 शिथिल, मन्द, विलम्बकारी, सुस्त, अकर्मण्य—गर्भमन्थरा—शि० ४, प्रत्यभिज्ञानमयरा भवेत् तदेव, दरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११—शि० ६।४०, ७।१८, ५।६२, रघु० १९।२१ 2 जड़, मूढ़, मूर्ख—मथरकौलिक 3 नीच, गहरा, खोखला, मदस्वर 4 विस्तृत, विशाल, चौड़ा, बड़ा 5 झुका हुआ, टेढ़ा बक्र, - रः 1 भंडार, कोष 2 सिर के बाल 3 क्रोध, गुस्सा 4 राजा मक्खन 5 रई का डंडा 6 रुकावट, बाधा 7 गढ़ 8 फल 9 गुप्तचर, सूचक 10 वैशाख मास 11 मन्दर पर्वत 12 हरिण, बारहसिंगा,—रा कैकेयी की कुब्जादासी जिसने अपनी स्वामिनी को, राम के राज्याभिषेक के अवसर पर, अपने दो पूर्वदत्त वरदान (एक से राम का चौदह वर्ष के लिए निर्वासन, दूसरे से भरत का राज्यारोहण) राजा से मांगने के लिए उकसाया,—रम् कुसुम्भ । सम० विवेक (वि०) निर्णय करने में मन्द, विवेक-शक्ति से शून्य मा० १।१८ ।

मन्थक. [मन्थ्+अच्] चंवर डुलाने से उत्पन्न हवा ।

मन्थान. [मन्थ्+आनच्] 1 रई का डंडा, मथानी 2 शिव का विशेषण ।

मन्थानक. [मन्थान+कन्] एक प्रकार का घास ।

मन्थिन् (वि०) [मन्थ्+णिनि] 1 बिलोने वाला, मथन करने वाला 2 कष्ट देने वाला, तंग करने वाला (पु०) बीयं, शुक्र,—नी बिलौनी, मथनी ।

मन्द् (म्वा० आ० मन्दते - बहुधावैदिक प्रयोग) 1 पीकर धुत्त होना 2. प्रसन्न होना, हर्षयुक्त होना 3 डोला-डोला होना, शिथिल होना 4 चमकना 5 शब्द करना, टहलना, घूमना ।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1 धीमा, विलम्बकारी, अकर्मण्य, सुस्त, मंद, मंदरफ्तारी करने वाला—(न०) मिन्दन्ति मन्दा गतिमत्वमुच्चैः —कु० १।११, तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह—गीत० ६ 2. निष्-

त्साही, तटस्थ–उदासीन 3 जड, मंदबुद्धि, मूढ, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चित —मालवि० २।८, मन्द· कवियश- प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्– रघु० १।३, द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम् कु० ५।७५ 4 धीमा, गहरा, खोखला (ध्वनि आदि) 5 कोमल, धुधला, मृदु यथा 'मन्दस्मितम्' में 6 थोड़ा, अल्प, जरा सा, मन्दोदरी, दे० 'अमन्द' भी 7 दुर्बल, बलहीन, कमजोर यथा 'मन्दाग्नि' में 8 दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा 9 मुर्झाया हुआ 10 दुष्ट, दुश्चरित्र 11 शराब की लत वाला,—न्दः 1 शनिग्रह 2 यम का विशेषण 3 सृष्टि का विघटन 4 एक प्रकार का हाथी—शि० ५।४९,

मन्द् (अव्य०) 1. धीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे –एतां यत्त्वं नितम्बयोर्मुरुतया मंद विलासादिव—श० २।१ 2 धीरे २, हल्के २, शान्ति से–मन्द मन्द नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 3 धीमे-धीमे, मंद गति से, मंद स्वर से, हल्केपन से 4 मद्धमस्वर में, गहराई के साथ (**मन्दी कृ** ढीलढाल करना,–मन्दीकृतो वेग –श० १, **मन्दी भू** ढीला होना, कम ताकतवर होना)। सम० **अक्ष** (वि०) कमजोर आंखों वाला (—**क्षम्**) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्मीलापन, —**अग्नि** (वि०) दुर्बल पाचन शक्ति वाला, (**निः**) अग्निमाद्य, पाचनशक्ति की मंदता,—**अनिल** मृदु पवन, —**अंशु** (वि०) दुर्बल श्वास वाला,—**आक्रान्ता** एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट १, —**आत्मन्** मन्दबुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी—मन्दात्मानुजिघृक्षया मल्लि०, —**आदर** (वि०) 1 कम आदर प्रदर्शित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, लापरवाह 2 असावधान,–**उत्साह** (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन–मन्दोत्साह कृतोऽस्मि मृगयाप्रवृत्तिना मामवष्टभ्येन—श० २,—**उदरी** रावण की पत्नी का नाम, पांच सती स्त्रियों में से एक—तु० अहल्या,—**उष्ण** (वि०) कोष्ण, गुनगुना (—**ष्णम्**) कोष्णता, गुनगुनापन,—**औत्सुक्य** (वि०) धीमी उत्सुकता वाला पराङ्मुख, रुचिशून्य—मन्दौत्सुक्योऽस्मि तस्यागमन प्रति—श० १,—**कर्ण** (वि०) कुछ बहरा, सूक्ति –बधिरान्मन्दकर्णं भेषजम् 'अभाव की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—**कान्ति** चन्द्रमा, —**कारिन्** (वि०) धीमे २ काम करने वाला, —**गति**, –**गामिन्** (वि०) शनै २ चलने वाला, धीमी गति वाला,—**चेतस्** (वि०) 1. मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ 2 अन्यमनस्क 3 मुर्झाया, अचेत,—**छाय** (वि०) धुंधला, मद्धम, आभाशून्य –मेघ० ८०,—**जवनी** शनि की माता,—**द्युति**,– **प्रज्ञ**,—**मति**, –**मेधस्** मंद बुद्धि, मूर्ख, मूढ, **भागिन्**, **भाग्य** (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—**रश्मि** (वि०) धुंधला, **वीर्य** दुर्बल,—**वृष्टिः** (स्त्री०) हल्की बारिश, **स्मित**,—**हास**, हास्यम् हल्की हंसी, मंद मुस्कान।

मन्दट [मन्द+अट् + अच् शक० पररूपम्] मूर्ख का वृक्ष।

मन्दनम् [मन्द् + ल्युट्] प्रशंसा, स्तुति।

मन्दयन्ती [मन्द् +णिच्+शतृ+ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

मन्दर (वि०) [मन्द्+अर] 1 धीमा, विलम्बकारी, सुस्त 2 मोटा, सघन, दृढ 3 विस्तृत, स्थूल,—रः 1 एक पहाड़ का नाम (इसको समुद्रमथन के समय देवासुरों ने मथानी—रई का डंडा - बनाया था, और तब सृष्टा का मथन किया था)—पुनर्नेमन्दरोद्भूतं क्षीरोमेव हृषीकेशम् -रघु० ४।२७, अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए—गीत० १ शीर्षेव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताभोगिवर्णना- शि० २।१०७, कि० ५।८० 2 मोतियों (आठ या सोलह लड़ियों का) का हार 3. स्वर्ग 4 दर्पण 5 इन्द्र के नन्दनकानन में स्थित पांच वृक्षों में से एक मन्दार वृक्ष, दे० मदार। सम०- **आख्याता**, **वासिनी** दुर्गा का विशेषण।

मन्दयान [मन्द +सानच्] 1 अग्नि 2 जीवन 3 निद्रा ('मन्दमान' भी लिखा जाता है)।

मन्दाक [मन्द+आक] धागा, नदी।

मन्दाकिनी [मन्दमकति –अक्+णिनि+ङीष्] 1 गंगा नदी–मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूम –रघु० १३।४८, कु० १।२९ 2 स्वर्गगंगा, वियद्गंगा (मंदाकिनी वियद्गंगा)–मन्दाकिन्या सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः —मेघ० ६७।

मन्दायते (ना० धा० आ०) 1 शनैः शनैः चलना, विलंब करके चलना, पिछड़ना, मटरगश्त करना, देर लगाना –मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या –मेघ० ४०, विक्रम० ३।१५ 2 दुर्बल होना, कृश होना, धुंधला होना—रघु० ६।६२।

मन्दार [मन्द+आरक्] 1 मूर्ख का पेड़, इंद्र के नन्दन काननस्थित पांच वृक्षों में से एक—हस्तप्राप्यस्तबकनमिता बालमन्दारवृक्षा —मेघ ७५, ६७, विक्रम० ४।३५ 2 आक का पौधा मदार वृक्ष 3 धतूरे का पौधा 4 स्वर्ग 5 हाथी —रम् मूर्ख के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० ६।२३। सम०—**माला** मदार के फूलों की माला—मंदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२, **वती** माधवमुरो लठ।

मन्दारक मन्दारव, मन्दारु [मन्दार+कन्, मन्द+आ+क+अच्, मन्द+आरु] मूर्ख का वृक्ष दे० 'मदार'।

मन्दिमन् (पु०) [मन्द+इमनिच्] 1 धीमापन, विलंबकारिता 2 सुस्ती, जड़ता, मूर्खता।

मन्दिरम् [मन्दतेऽत्र मन्द्+किरच्] 1 रहने का स्थान, आवास, महल, भवन –कु० ७।५५, भट्टि० ८।९६,

रघु० १२।८३ 2 आवास, रहने का घर अथवा क्षीरार्णवमन्दिरः में 3 नगर 4 शिविर 5. देवालय। उप० —पति शिव का विशेषण।

मन्दिरा [मन्दिर+टाप्] घुड़साल, अस्तबल।

मन्दुरा [मन्द्+उरच्+टाप्] 1. अश्वशाला, घुड़साल अस्तबल-प्रभ्रष्टोऽयं प्रकाण्ड प्रविशति नृपतेर्मन्दिरं मन्दुरायाः रत्न० २।२, रघु० १६।४१ 2. शय्या, चटाई।

मन्द्र (वि०) [मन्द्+रक्] 1. नीचा, गहरा, गंभीर, खोखला, घरघराना -पयोदमन्द्रध्वनिना धरित्री-कि० १६।३, ७।२२, मेघ० ९९, रघु० ६।५६,—द्रः 1 मन्दध्वनि 2 एक प्रकार का ढोल 3 एक प्रकार का हाथी।

मन्मथः [मन्+किप्, मथ्+अच्, ष० त०] 1 कामदेव, प्रेम का देवता —मन्मथो मा मन्मथिज नाम सान्वयं करोति दश० २१, मेघ० ७३ 2 प्रेम, प्रणयोन्माद प्रबोध्यते सुप्त इवाशु मन्मथ ऋतु० १।८ इसी प्रकार 'परोक्षमन्मथ जन'-शि० २।१८ 3 कैथ। सम० आलंब एक प्रकार का आम का पेड़—आलय 1 आम का पेड़ 2 स्त्री की भग, -कर (वि०) प्रेमोत्तेजक,—युद्धम् प्रेमकेलि, सम्भोग, मैथुन लेख. प्रेम-पत्र—शि० ३।२६।

मन्मन (पु०) 1 गुप्त कानाफूसी (दयितोर्जल्पितम् मदम्) करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्कर, मन्मनो मन्मनोऽप्येष मत्तकोकिलनिस्वन काव्या० ३।११ 2 कामदेव।

मन्यु [मन्+युच्] 1 क्रोध, रोष, नाराजगी, कोप, गुस्सा -रघु० २।३२, ४९, ११।४६ 2. व्यथा, शोक, कष्ट, दुःख उत्तर० ४।३, कि० १।३५, भट्टि० ३।४९ 3 विपद्ग्रस्त या दयनीय स्थिति, कमीनापन 4 यज्ञ 5 अग्नि का विशेषण 6 शिव का विशेषण।

मन्थ् (स्वा० पर० मन्थति) जाना, हिलना-डुलना।

मम [अस्मद् शब्द-सर्वनाम उत्तमपुरुष-सब० ए० व०] मेरा। सम० कार,—त्वम् मेरापन, ममता, स्वार्थ।

ममता [मम+तल्+टाप्] 1 अपने मन की भावना, स्वार्थ, स्वहित 2 घमंड, अभिमान, आत्मनिर्भरता 3 व्यक्तित्व।

ममत्वम् [मम+त्व] 1 मेरापन, अपनापन, स्वामित्व की भावना 2 स्नेहयुक्त आदर, अनुराग, मानना—कु० १।१२ 3. अहंकार, घमंड।

ममोपपदात्. [मम्+आत्, पृषो०, मकारादेश, आप तुडागम] ज्ञानेन्द्रिय का विषय।

मम्मट. 'काव्यप्रकाश' का प्रणेता।

मय् (स्वा० आ० मयते) जाना, हिलना-डुलना।

मय (वि०) (स्त्री०-यी) 'पूर्ण से युक्त' भरपूर' 'से बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला तद्धित का प्रत्यय, उदा० कनकमय, काष्ठमय, तेजोमय और जलमय आदि, ब. 1 एक दानव, दानवों का शिल्पी (कहते हैं कि इसने पाण्डवों के लिए एक सभा भवन का निर्माण किया था 2 घोड़ा 3 ऊँट 4 अन्धकार।

मयटः [मय्+अटन्] घासफूस की झोंपड़ी, पर्णशाला।

मय (थु) अव्य [=मयुष्टक, पृषो० साधु]

मयुः [मय्+कु] 1 किन्नर, स्वर्गीय संगीतज्ञ 2 हरिण, बारहसिंगा। सम० राजः कुबेर का विशेषण।

मयूखः [मा+ऊख मयादेश] 1. प्रकाश की किरण, रश्मि, अंशु, कांति, दीप्ति—विस्फुरति हिमगर्भरोचिर्मिन्दुर्मयूखैः शि० ३।२, रघु० २।४६, शि० ४।५६, कि० ५।५, ८ 2 सौन्दर्य 3 ज्वाला 4 कुम्हड़ी की बेल।

मयूरः [मी+ऊरन्] 1 मोर -स्मरति गिरिमयूर एष देव्या -उत्तर० ३।२०, फणी मयूरस्य तले निषीदति —ऋतु० १।१३ 2 एक प्रकार का फूल 3 ('सूर्य शतक' का प्रणेता) एक कवि यस्यास्थानोपरिविलसत्कुन्तलीबर्हभारः कर्णापूरो मयूर प्रसभ० १।२२,—री मोरनी —मुक्ति- वर तत्कालोपनता तिलिरी न पुनर्दिवसान्तरिता मयूरी सिद्ध० १, वा- वरमद्य कपोतो न श्वो मयूर 'हाथ में आया एक पक्षी, झाड़ी में बैठे दो पक्षियों से अच्छा है' अर्थात् लौ नकद न तेरह उधार। सम० अरिः छिपकली,—केतुः कार्तिकेय का विशेषण, —चन्द्रकम् तूतिया, चटकः गृह कुक्कुट चूजा मोर की शिखा, तुत्थम् तूतिया—पक्षिन् (वि०) पंखयुक्त, मोर के पंखों से युक्त (बाण आदि)- रघु० ३।५६, रथः कार्तिकेय का विशेषण,—शिखकः बालाक मोर, शिखा मोर की शिखा।

मयूरकः [मयूर+कन्] मोर,- कः,- कम् तूतिया, नीलाथोथा।

मरकः [मृ+घञ्] महामारी, पशुओं का एक संक्रामक रोग, प्लेग प्रसारक रोग, संक्रामक रोग।

मरकतम् मरक तरत्यनेन—तृ+क] पन्ना- वापी चामल मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६, शि० ४।५६, ऋतु० ३।२१,(कभी-कभी 'मरकत' भी लिखा जाता है)। सम०- मणिः (पु०, स्त्री०) पन्ना, - शिला पन्ने की सिल्ली।

मरणम् [मृ+भावे ल्युट्] 1 मरना, मृत्यु—मरण प्रकृतिः शरीरिणाम्—रघु० ८।८७ या-सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते—भग० २।३४ 2 एक प्रकार का विष। सम० अंत, अंतक (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त होने वाला,—अभिमुख,—उन्मुख (वि०) मृत्यु के निकट, मरणासन्न, म्रियमाण,- कर्मन्

(वि०) मरणशील, मरणधर्मा, निश्चय (वि०) मरने के लिए दृढ निश्चय वाला पंच० १।

मरतः [मृ+अतच्] मृत्यु।

मरन्दः, न्दम् [मरन्द यति खण्डयति-मर+दो+क, पृषो०, मरन्द+कन्] फूलों का रस—भामि० १।५, १०।१५, सम०—ओकस् (नपु०) फूल।

मरारः [मर मरणमलति निवारयति-मर+अल्+अण् लस्य रत्वम्] खत्ती, धान्यागार, अनाज का भंडार।

मराल (वि०) [मृ+आलच्] 1 मृदु, चिकना, स्निग्ध 2 सौम्य कोमल,-लः (स्त्री०—ली) 1 हंस, बगुला, राजहंस—मरालकुलनायक कथय रे कथ वर्त्यताम्—भामि० १।३, विक्षेपि मरालविक्रमम्-गीत० ११, नै० ६।७२ 2 एक प्रकार का जलचर पक्षी, कारण्डव 3 घोड़ा 4 बादल 5 अजन 6 अनारों का बाग 7 बदमाश, ठग।

मरि (री) च [म्रियते नश्यति श्लेष्मादिकमनेन—मृ+इच, इत्वं] काली मिर्च की झाड़ी,—चम् काली मिर्च।

मरीचि (पु० स्त्री०) [मृ+इचि] 1 प्रकाश की किरण -न चन्द्रमरीचय—विक्रम ३।१०, सवितुर्मरीचिभि—ऋतु० १।१६, रघु० ९।१३, १३।४ 2 प्रकाश का कण 3 मृगतृष्णा,—चि प्रजापति, प्रथम मनु से उत्पन्न दस मूल पुरुषों में से एक, या—ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में एक, यह कश्यप का पिता था 2 एक स्मृतिकार 3 कृष्ण का नामान्तर 4 कमूम। सम०—तोयम् मृगतृष्णा,—मालिन् किरणों से घिरा हुआ, उज्ज्वल, चमकदार (पु०) सूर्य।

मरीचिका [मरीचि—कन्+टाप्] मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पुं०) [मरीचि+इनि] सूर्य।

मरीचिमत् (पु०) [मरीचि+मतुप्] सूर्य।

मरीमृज (वि०) [मृज् (यङन्तस्यान् द्वित्वम्)+अच्] बार २ मलने वाला।

मरु [म्रियतेऽस्मिन्-मृ+उ] 1 रेगिस्तान, रेतीली भूमि, वीरानां, जल से हीन प्रदेश 2 पहाड़ या चट्टान (पु०) ब० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। सम०—उद्भवा 1 कपास का पौधा 2 ककड़ी,—कच्छः एक जिले का नाम, जः एक प्रकार का लवणद्रव्य, देशः 1 एक जिले का नाम 2 जलशून्य प्रदेश, द्विष्,—प्रियः ऊंट,—भवः,—भवन् (पु०) वीरानां, उजाड़, पथः, पृष्ठम् रेतीली मरुभूमि वीरानां—रघु० ४।३१—भूः (ब० व०) मारवाड़ देश,—भूमि (स्त्री०) मरुस्थल, रेतीला मरुप्रदेश, -संभवः एक प्रकार की मछली,-स्थलम्, स्थली वीरानां, उजाड़, बंजर—तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ननो नाधिकम्—भर्तृ० २।४९।

मरुक [मरु+क] मोर।

मरुत् (पु) [मृ+उति] 1 हवा, वायु, पवन—दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४ 2 वायु का देवता-कि० २।२५ 3 देवता, देवी—वैमानिकानां मरुतामपथदाकृष्टलीलान्तर लोक पालान् रघु ६।१, १२।१०१ 4 एक प्रकार का पौधा, मरुवक (नपु) अधिपर्ण नाम का पौधा। सम०—आवोलः (हरिण या भैंसे की खाल से बना) एक प्रकार का पंखा, करः एक प्रकार की सेम, लोबिया,-कर्मन् (पु)—क्षित उदर, -वायु, अफारा,—कोणः पश्चिमोत्तर दिशा, गणः देवसमूह,—तनयः,—पुत्रः—सुतः, सूनुः 1 हनुमान् के विशेषण 2 भीम के विशेषण, पत्तनम् हवा में लहराने वाला झण्डा (सूत का बना कपड़ा),-पतिः बादलों का,—पालः इन्द्र का विशेषण, पथः आकाश, अन्तरिक्ष,—पथः सिंह, —पत्रम् ओला, बन्धुः 1 विष्णु का विशेषण 2 एक प्रकार का यज्ञ-पात्र,—रथः वह गाड़ी जिसमें देव प्रतिमाएँ रख कर इधर उधर ले जाई जाती हैं,—लोकः वह लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहते हैं,—वर्त्मन् (नपु) आकाश, अन्तरिक्ष, वाहः 1 घोड़ा 2 अग्नि, -सखः 1 अग्नि का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण।

मरुत [मृ+उत] 1 वायु 2 देवता।

मरुत्तः [मरुत+तप्] सूर्यवंश का एक राजा, कहते हैं उसने एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक सेवक का कार्य किया तु० तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे, आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति।

मरुत्तक, मरुदिव तनति हसति-मरुत+तक्+अच्] मरुवक पौधा।

मरुत्वत् (पु) [मरुत्+मतुप्, मस्य व] 1 बादल 2 इन्द्र का नामान्तर 3 हनुमान का नामान्तर।

मरुन्द [मृ+उन्द] एक प्रकार की बत्तख, कारण्डव।

मरुवक [मरु+वा+क, नि० दीर्घ] 1 एक पौधे का नाम मरुआ 2 राहु का विशेषण।

मरुवा (ब) क [मरुव+कन्, द्वयोरभेदे] 1 एक प्रकार का पौधा, मरुआ 2 चूने का एक भेद 3 व्याघ्र 4 राहु 5 सारस।

मरुष्क [मृ+ऊक] 1 मोर 2 बारहसिंगा हरिण।

मरुत [मर्क+अटन्] 1 लंगूर, बन्दर हारं वक्षसि केनापि दत्तमञ्जेन मर्कटं, लेढि जिघ्रति मक्षिप्य करोन्युप्तमासनम्—भामि० १।९९ 2 मकड़ी 3 एक प्रकार का सारस 4 एक प्रकार का रतिबंध, संभोग, मैथुन 5 एक प्रकार का विष। सम०—आस्य (वि०) बन्दर जैसे मुंह वाला (स्यम्) तांबा, -इक्षु आबनूस,—शिंशुकः एक प्रकार का आबनूस, धौत

अक्षर का कक्ष्या, बाल: लकड़ी का जाला, शोणम् सिंदूर।

मर्कटक: [मर्कट+कन्] 1 लंगूर 2 मकड़ी 3. एक प्रकार की मछली 4 एक प्रकार का अनाज, धान्य विशेष।

मर्करा [मर्क्+अर+टाप्] 1 पात्र, बर्तन 2 अन्त कंजीव छिद्र, सुराग, बिवर, खोह, गुफा 3 बांझ स्त्री।

मर्क्ष् (चुरा० उभ०—मर्क्षयति—ते) 1 लेना 2 साफ करना 3 शब्द करना।

मर्ज्: [मृज्+क] 1 धोबी 2 इलायची, लौंग, (स्त्री०) साफ करना, धोना, पवित्र करना।

मर्त्य: [मृ+तन्] 1. मनुष्य, मानव, मर्त्य 2 भूलोक, मर्त्यलोक।

मर्त्य (वि०) [मर्त+यत्] मरणशील, सं 1 मरणधर्मा, मानव, मनुष्य— मनु० ५।९७ 2 मर्त्यलोक, भूलोक स्वयं शरीर। सम०—धर्म मरणशीलता, -धर्मन् (वि०) मरणशील आदमी, -विक्रान्तिन् (पु) मनुष्य, मानव,—भाव मानव-स्वभाव, -भुवनम् मर्त्यलोक, भूलोक, -सहित: देवता, मुख: किन्नर, इसका मुख मनुष्य के मुख जैसा तथा और शेष शरीर जानवर के शरीर जैसा होता है, यह कुबेर का सेवक समझा जाता है), -लोक: मनुष्यलोक भूलोक सीधे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति—भग० ९।२१।

मर्द (वि०) [मृद्+घञ्] कुचलने वाला, चूर चूर कर देने वाला, पीसने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयोग), मर्द: 1 पीसना, चूरा करना 2. प्रबल प्रहार।

मर्दन (वि०) (स्त्री० नी) [मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला पीसने वाला, नष्ट करने वाला, मलने वाला - नम् 1 कुचलना, पीसना 2 रगड़ना, मालिश करना 3 लेप करना (उबटन आदि से) 4 दबाना, मारना 5 पीड़ा देना, सताना, कष्ट देना 6 नष्ट करना, उजाड़ना।

मर्दल [मर्द्+ला+क] एक प्रकार का ढोल शि० ५।३१, ऋतु० २।१।

मर्ष् (भ्वा० पर० मर्षति) जाना, हिलना—डुलना।

मर्मन् (नपु०) [मृ+मनिन्] शरीर का सजीव प्राण-मूलक भाग, जीवाधारक तर्पण तीक्ष्णे हृदि लोक-शकुर्मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढ उत्तर० २।३५, याज्ञ० १।१५३ भट्टि० १६।१५, स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति गीत० ४ 2 कोई भी दुर्बल या आलोच्य बिन्दु, दोष, त्रुटि 3 अन्तस्तल, सजीव 4 (किसी भी अंग का) सन्धिस्थान 5 गूढ़ार्थ, (किसी बात का) तत्त्व काव्यमर्म प्रकाशिका टीका, तत्त्वा मर्माकर मर्मप्रकाश तनुते गुरुम्—नागेश० 6 रहस्य भेद। सम० अन्वेषिन् (वि०) मर्मभेदी—शि० २०। ७० अन्वेषणम् 1 श्लोकापरीक्षण करना 2 दुर्बल और आलोच्य बातों की जांच पड़ताल करना, —आवरणम् कवच, जिरहबख्तर, -आविध्, -उद्घातिन् (वि०) (हृदय के) मर्म स्थलों को बेधने वाला महावी० ३।१०,—ज्ञ: पति,—ग (वि०) मर्मभेदी, तीक्ष्ण, घोर,—घ्न (वि०) मूल पर आघात करने वाला, अत्यन्त पीड़ाकर,—तरम् हृदय,—च्छिद्, —च्छिद् (दसी प्रकार छेदिन्, भेदिन्) (वि०) मर्म-स्थानों का भेदने वाला, हृदय पर चोट करने वाला, अत्यन्त कष्टदायक —उत्तर० ३।३१ 2 प्राणघातक चोट करने वाला, प्राणहर,—ज्ञ (वि०),—विद् (वि०) 1. दूसरे के दोष या दुर्बलताओं को जानने वाला 2. किसी विषय की अत्यन्त गूढ़ बातों को समझने वाला 3 किसी विषय गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, अत्यन्त निपुण या चतुर, (—द:) कोई भी प्रकार विद्वान्,—त्रम् जिरहबख्तर, धारण (वि०) गहन अन्तर्दृष्टि रखने वाला, पूरा जानकार, दूसरे के रहस्यों को जानने वाला,—भेद 1 मर्मस्थानों को छेदना 2 दूसरों के रहस्य या दुर्बलताओं को प्रकट करना, भेदक:,—भेदिन् (पु०) बाण, तीर,—विद देo 'मर्मज्ञ', स्थानम्, स्थानम् 1 भावप्रवण या सजीव भाग 2 कमजोरियाँ, आलोच्य बातें, स्पृश् 1. मर्मस्पर्शी, हृदयस्पर्शी 2. अतितीक्ष्ण, तीक्ष्ण, तेज या कटु (शब्द आदि)।

मर्मर (वि०) [मृ+अरन्, मुट् च] (पत्तों की) खड़-खड़ाहट, (वस्त्रों की) सरसराहट तीरेषु तालीवन-मर्मरेषु—रघु० ६।५७, ४।७३, १९।४१, सर्वोद्धता प्रत्यलिलं विचेलुश्चलन्त्यलीमर्मरचञ्चलाक्षा.— कु० ३।३१, —र: 1 खड़खड़ाहट की ध्वनि 2 सरसराहट।

मर्मरी [मर्मर+ङीष्] 1 देवदारु का एक भेद 2 हल्दी।

मर्मरीक: [मृ+ईकन्, मुट्] 1 निर्धन गुरुव, गरीब 2 दुष्ट मनुष्य।

मर्या [मृ+यत्+टाप्] सीमा, हद।

मर्यादा [मर्याया सीमाया वीयते मर्या+दा+अङ+टाप्] 1 सीमा, हद (आंख से भी) छोर, सीमान्त, सरहद, किनारा मर्यादामतिक्रम—पंच 1 2. अन्त, अव-सान, अन्तिम बंधिक, उद्देश्य 3 तट, किनारा 4 चिह्न, सीमाचिह्न 5 नीति का बंधन, निश्चित प्रथा या व्यवस्थित नियम, नैतिक विधि 6 शिष्टाचार या औचित्य का नियम, औचित्य की सीमा, सदाचरण का औचित्य—आस्तातापवादभिन्नमर्याद—उत्तर० ५, पंच० १।१४२ 7. संविदा, अनुबंध, करार। सम० -अचल:,—गिरि:, पर्वत: सरहद पर स्थित पहाड़, भेदक: सीमाचिह्नों को नष्ट करने वाला।

मर्यादिन् (पु०) [मर्यादा+इनि] पड़ोसी, सीमान्त वासी।

मर् (भ्वा० पर० मर्वति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2. भरना।

मर्क: [मृष्+घञ्] 1 विचारणा 2 परामर्श, सम्मन्त्रणा 3. नस्य, छींकलाने वाला।

मर्शनम् [मृष्+ल्युट्] 1 रगड़ना 2 परीक्षण, पूछताछ 3 विचारणा, सम्मन्त्रणा 4 उपदेश देना, सलाह देना 5. मिटाना, मल देना।

मर्ष:, मर्षणम् [मृष्+घञ्, ल्युट् वा] सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्य।

मर्षित (भू० क० कृ०) [मृष्+क्त] 1 सहन किया हुआ, सबर के साथ सहा हुआ 2 क्षमा किया गया, माफ किया गया, -त्व सहनशीलता, धैर्य।

मर्षिन् (वि०) [मृष्+णिनि] सहन करने वाला, धैर्यशील।

मल् (भ्वा० आ०, चुरा० पर० मलते, मलयति) कामना, अधिकार में रखना।

मल:,-लम् [मृज्यते शोध्यते मृज्+कल् टिलोप-तारा०] 1 मैल, गंदगी, अपवित्रता, धूल, अशुद्ध सामग्री मलदायका खला —का० २, छाया न मृष्णंति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा— श० ७।३२ 2 तलछट, कूड़ाकरकट, गाद, पुरीष, गोबर 3 (धातुओं का मैल, जंग, खोट 4 नैतिक दोष या अपवित्रता, पाप 5 शरीर का कोई भी अपवित्र स्राव (मनु के अनुसार इस प्रकार के बारह स्राव हैं—वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्रविड् घ्राणकर्णविट्, श्लेष्माश्रुदूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मला मनु० ५।१३५) 6 कपूर 7 'मसीक्षेपी' जलचरविशेष का प्रमार्जन के काम आने वाला भीतरी कवच 8 कमाया हुआ चमड़ा चमड़े का वस्त्र, लम् एक प्रकार की खोटी धातु। सम०-अपकर्षणम् 1 मैल दूर करना पवित्र करना 2 पाप दूर करना, -अरि: एक प्रकार की मछली,—अवरोध: कोष्ठबद्धता, कब्ज आकर्षिन् (पु०) झाड़ देने वाला, भंगी,—आवह (वि०) 1 मैल पैदा करने वाला, मैला करने वाला, मलिन करने वाला 2 दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला, आशय: पेट,—उत्सर्ग: टट्टी जाना, पेट से मल निकालना, घ्न (वि०) परिमार्जक, शोधक घ्न: पीप, मवाद,—दूषित (वि०) मैला, गंदा, मलिन,-द्रव: रेचन, जुलाब, धात्री दाई जो बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, -पृष्ठम् किसी पुस्तक का पहला पृष्ठ, आवरणपृष्ठ (बाह्य पृष्ठ), -भुज् (पु०) कौवा, -मलक: कौपीन, लंगोट,—मास: अंतरीय या लौंद का महीना ('मलमास' इसी लिए कहलाता है कि इस अधिक मास में कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं किया जाता है), -वासस् (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, जो स्त्री कपड़ों से हो,- विसर्ग:,—विसर्जनम्,- शुद्धि (स्त्री०) मलत्याग, कोष्ठशुद्धि,-हारक (वि०) मैल या पाप को दूर करने वाला।

मलनम् [मल्+ल्युट्] कुचलना, पीसना,—न: तबू।

मलय [मलते धरति चन्दनादिकम् मल्+कयन्] 1 भारत के दक्षिण में एक पर्वत शृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं (कविसम्प्रदाय प्राय मलयपर्वत से चलने वाली पवन का उल्लेख किया करता है, यह पवन चन्दन तथा अन्य सुगन्धित पौधों की सुगन्ध को इधर उधर फैलाने के साथ-साथ कामार्त व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है) स्तनाविव दिशस्तस्या शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१, ९।२५, १३।२ 2 मलयशृंखला के पूर्व में स्थित देश, मलाबार 3 उद्यान 4 इन्द्र का नन्दनकानन। सम०-अचल:,—अद्रि:,—गिरि:,—पर्वत: मलय पहाड़,—अनिल:,—वात:,—समीर: मलयपहाड़ से चलने वाली पवन, दक्षिणीपवन—ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे गीत० १, तु० अपगतदाक्षिण्यदक्षिणानिलहतक पूर्णास्ते मनोरथा कृत कर्तव्य वहेदानी यथेष्टम् का०, -द्रुमम् चन्दन की लकड़ी, -द्रु: चन्दन का वृक्ष - अयि मलयज महिमाय कस्य गिरामस्तु विषयस्ते—मालवि० १।११, (द्रु—द्रुम:) चन्दन की लकड़ी (—द्रुम:) राहु का विशेषण, °रजस् (नपु०) चन्दन का चूरा,—द्रुम: चन्दन का पेड़, -वासिनी दुर्गा का विशेषण।

मलाका [मलेन मनोमालिन्येन अकति कुटिल गच्छति-मल+अक्+अच्+टाप्] 1 शृंगारप्रिय या कामुक स्त्री 2 दूती, अन्तरंग सखी 3 हथिनी।

मलिन (वि०) [मल्+इनच्] 1 मैला, गन्दा, घिनौना अपवित्र, अशुद्ध, भ्रष्ट, कलंकित, कलुषित (आल० में भी) धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवंति श० ७।५७, किमिति मुधा मलिन यश कुरुध्वे—वेणी० ३।४ 2 काला, अंधकारमय मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्ममलक्ष्मी तनोति श० १।२०, अतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धी वास०, शि० ९।१८ 3 पापी, दुष्ट, दुश्चरित्र - मलिनाचरित कर्म सुरभेर्नन्दनमाप्तवम् काव्या० २।१७८ 4 नीच, दुष्ट, अधम लघव प्रकटी भवंति मलिनाश्रयात् शि० ९।२३ 5 मेघाच्छन्न, तिरोहित, नम् 1 पाप, दोष, अपराध 2 मट्ठा, 3 सौहागा,—ना,—नी रजस्वला स्त्री। सम०—अंबु (नपु०) 'काला पानी' मसी, स्याही,—आस्य (वि०) 1 काले या मैले मुंह वाला 2 नीच, गंवार 3 बहली, कू०—भस्म (वि०) तिरोहित, दूषित, मेघाच्छन्न,—मुख (वि०)=मलिनास्य, दे०

(क) 1 अग्नि 2. भूत, प्रेत 3 एक प्रकार का बंदर, गोलागूल।

मलिनयति (ना० धा० पर०) 1 मैला करना, मलिन करना, कलंकित करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, बिगाड़ना—यदा मेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो मनु—मालवि० १, 'बदनामी कमाता है या कलंकित होता है' 2 भ्रष्ट करना, बदचलन करना।

मलिनिमन् (पुं०) [मलिन+इमनिच्] 1 मैलापन, गंदगी अपवित्रता 2 कलिमा, कालापन—मलिनिमालिनि माधवयोषिता—शि० ६।४ 3. नैतिक अपवित्रता, पाप।

मलिम्लुच [मलो मलं म्लोचित—मलिम्+म्लुच्+क] 1 लुटेरा, चोर—शि० १६।५२ 2 राक्षस 3 डाकू, पिस्सू, खटमल 4 चाँद का महीना 5 वायु, हवा 6 अग्नि 7 वह ब्राह्मण जो दैनिक पंच महायज्ञों को नहीं करता है।

मलीमस (वि०) [मल+ईमसच्] 1 मैला, गन्दा, अपवित्र, अस्वच्छ, कलंकित, मलिन—मा ते मलीमसविकारमनो मनिर्भूत्—मा० १।३२, रघु० २।५३ 2 कृष्ण, काला, काले रंग का—मणिता न जनारर्वेरवेदपि कृजन्नलिमलीमसम्—नै० २।१२, विसारिनीमनिहत कोकिला-वलीमलीमसा अलदमदाद्दुराजय—शि० १७।५७, १।५८ 3 दुष्ट, पापपूर्ण, सदोष, बेईमान—मलीमसा मादृशे न पद्धतिम् रघु० ३।४६,—स. 1 लोहा 2 बुरा कमीज।

मल्क् (भ्वा० आ० मल्लते) थामना, अधिकार में करना।

मल्ल (वि०) [मल्ल+अच्] 1 हृष्टपुष्ट, व्यायामशील, बलिष्ठ कि० १८।८ 2 अच्छा, उत्तम—ल्लः 1 बलवान् पुरुष 2 कसरती, मुक्केबाज, पहलवान—अभूमल्ला मल्लाय—महा० 3 पान पात्र, प्याला 4 हव्यशेष 5 गाल, कपोल, गण्डस्थल। सम०—अरिः 1 कृष्ण का विशेषण 2 शिव का विशेषण,—क्रीडा मुक्केबाजी या मल्लयुद्ध,—ध्वज काली मिर्च,—तूर्यम् एक प्रकार का ढोल,—भू.—भूमिः (स्त्री०) 1 अखाड़ा, मल्लयुद्ध का मैदान 2 एक देश का नाम,—युद्धम् कुश्ती करना या मुक्केबाजी, मुष्टियुद्धीय भिड़न्त या मुठभेड़,—विद्या मल्लयुद्ध की कला,—शाला व्यायामशाला, अखाड़ा।

मल्लक [मल्ल+कन्, मल्ल्+क्वुल् वा] 1 दीवट 2 दीवा, तैलपात्र 3 दीपक 4 नारियल का बना हुआ प्याला 5 दाँत 6 एक प्रकार की चमेली।

मल्लि, -ल्ली (स्त्री०) [मल्ल्+इन्, मल्लि+ङीष्] एक प्रकार की चमेली। सम०—मल्लि (नपुं०) अक्षर, नाथ एक प्रसिद्ध भाष्यकार जो चौदहवीं या पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ (उसने 'रघुवंश' 'कुमार-संभव', 'मेघदूत' 'किरातार्जुनीय', 'नैषधचरित' और शिशुपालवध पर टीकाएँ लिखी), पत्रम् छुरा, साँप की छतरी।

मल्लिका [मल्लि+कन्] 1 एक प्रकार का हंस जिसकी टाँगें और चोंच मूंगे रंग की होती हैं 2 माघ का महीना 3 जुलाहे की ढरकी, फिरकी। सम०—अक्षः, —आख्यः एक प्रकार का हंस जिसकी टाँगें और चोंच मूंगे रंग की होती हैं—एतस्मिन्मदकलमल्लिकाक्षप-क्ष्याधूतस्फुरदुरुदण्डपुण्डरीका (भुजो विभाति)—उत्तर० १।३१, मा० ९।१४—अर्बुदः माउंट आबू नामक पर्वत पर विराजमान शिव का एक लिंग,—आख्या एक प्रकार की चमेली।

मल्लिका [मल्लिक+टाप्] 1 एक प्रकार की चमेली—वनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु—रघु० १६।४७ 2 इस चमेली का फूल—विन्यस्त मायंतनमल्लिकेषु (केशेषु)—रघु० १६।५०—काव्या० २।२१५ 3 दीवट 4 किसी विशेष आकृति का मिट्टी का बर्तन। सम०—गंध एक प्रकार की अगर।

मल्लीकरः [अमल्लमपि आत्मानं मल्लमिव करोति मल्ल+च्वि, ईत्वम्, कृ+अच्] कोर।

मल्लू [मल्ल+ऊ] रीछ, भालू।

मव् (भ्वा० पर० मवति) कसना, बाँधना।

मष् (भ्वा० पर० मष्यति) बाँधना।

मस् (भ्वा० पर० मसति) 1 भिनभिनाना, गुंजन करना ऊँ ऊँ करना 2 क्रोध करना।

मशः [मश्+अच्] 1 मच्छर 2 गूंजना, पुनगुनाना 3 क्रोध, सम०—हरी मच्छरदानी, मसहरी।

मशक [मश्+वुन्] 1 मच्छर, पिस्सू, डांस—सर्वं बलस्य वारयति मशक करोति—हि० १।७८, मनु० १।८५ 2 चमड़ी का एक विशेष रोग 3 मशक, कपड़े का बना पानी भरने का थैला। सम०—कुटिः, -टी (स्त्री०), -वारणम् मच्छर उड़ाने का चंवर(-हरी मसहरी, मच्छरदानी।

मशकिन् (पुं०) [मशक+इनि] गूलर का पेड़।

मशुनः (पुं०) कुत्ता।

मष् (भ्वा० पर० मषति) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना, नष्ट करना।

मषि—षी (स्त्री०) [मष्+इन्, मषि+ङीष्]=मसी दे०।

मस् (दिवा० पर० मस्यति) 1 तोलना, मापना, बराबर करना 2 रूप बदलना।

मसः [मस्+अच्] माप, तोल।

मसलम् [मस्+क्युट्] 1 मापना, तोलना 2. एक प्रकार की बूटी।

मसरा [मस्+अरच्+टाप्] एक प्रकार की दाल, मसूर।
मसार:, मसारक: [मस्+क्विप्, मस परिमाणम् ऋच्छति मस्+ऋ+अण्, मसार+कन्] पन्ना।
मसि: (पु० स्त्री) [मस्+इन्] 1 स्याही 2 दीवे की स्याही, काजल 3 आंखों में लगाने की काली काजल। सम० आधार:,—कूपी,—भाजनम्,—धानी,—भृति स्याही रखने की बोतल, दवात,—वर्णम् रोशनाई, —कार: लेखक, लिपिकार,—पत्र: कलम, लेखनी, —प्रसू (स्त्री०) 1. लेखनी 2. स्याही की बोतल, —वर्धनम् लोबान।
मसिक: [मसि+कन्] सौंफ का बिस्र।
मसी [मसि+ङीप्] दे० ऊपर 'मसि'। सम०—अक्षम् स्याही,—धानी दवात,—पटलम् काजल लगाना —शिरसि मसीपटलम् दधाति दीप भामि० १।७४।
मसुर (सू) र [मस्+उरन्, ऊरन् वा] 1 एक प्रकार की दाल, मसूर 2 तकिया,—रा 1. मसूर की दाल 2 देवया, रडी।
मसूरिका [मसूर+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 एक प्रकार का शीतला रोग, खसरा 2 मसहरी 3 कुटिनी, दूती।
मसूरी [मसूर+ङीष्] छोटी चेचक।
मसृण (वि०) [मृष् (क्षान्ति)+क,पृषो० साधु] 1 स्निग्ध, चिकना—मसृणचदनचर्चितागी—चौर० ७, या, सरस मसृणमपि मल्यजपकम्—गीत० ४ 2 मृदु, कोमल, सरल—उत्तर० १।३८ 3. सौम्य, मृदु, मधुरमसृणवाणि—गीत० १० 4 प्रिय, मनोहर विनयमसृणो वाचि नियम उत्तर० २।२, ४।२१ 5 चमकीला, उज्ज्वल—मा० १।२९, ४।२,—णा अलसी।
मस्क् (भ्वा० पर० मस्कति) जाना, हिलना-डुलना।
मस्कर [मस्क्+अरच्] 1 बाँस 2. खोखला बाँस 3 गति, चाल 4 ज्ञान।
मस्करिन् (पु०) [मस्कर+इनि] 1 सन्यासी या साधु, सन्यास आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण धारयन् मस्करिव्रतम् भट्टि० ५।६३ 2 चन्द्रमा।
मस्ज् (तुदा० पर० मज्जति, मग्न—प्रेर० मज्जयति—इच्छा० मिमक्षति) 1 स्नान करना, डुबकी लगाना, पानी में गोता लगाना—रघु० १५।१०१, भामि० २।९५ 2 डूबना, डलना, डूबजाना, नीचे बैठना, गोता लगाना (अधि० या कर्म० के साथ) सीदसघे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा—उत्तर० ३।३८, मा० ९।३० —सोऽसवृत नाम तम सह तेनैव मज्जति—मनु० ४।८१, रघु० १५।५२ 3 डूबना, पानी में नष्ट होना 4 दुर्भाग्यग्रस्त होना 5 हतोत्साह होना, निराश या उत्साहहीन होना, जड़ पानी से बाहर आना, दृष्टिगोचर होना, उठना—वन्य इरितो यत्र उन्मज्जन्ति—रघु० ५।४३, १६।७९, कि० ९।२३, शि० ९।३०, नि ,डूबना, नीचे बैठना डल जाना (आल से भी) यथा प्लवेनोपलेन निमज्जत्युदके तरन्, तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञो दातु प्रतीच्छको—मनु० ४।१९४, ५।७३, शोके मुहुश्चाकिरत न्यमालीत्—भट्टि० ३।३०, १५। ३१, शि० ९।७४ गीत० १ 2 भूल जाना, डूब जाना ओझल होना, नजर से बच निकलना, एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीदो किरणेष्विवाक—कु० १।३।
मस्तम् [मस्+क्त] सिर माथा। सम०—दारु (नपु०) देवदारु का पेड़,—मूलकम् गर्दन।
मस्तक:, कम् [मस्यति परिमाल्यनेन मस् करणेन स्वार्थे क तारा०] 1 सिर, माथा, खोपड़ी—अतिलोमा (पाठा० तृष्णा) भिभूतस्य चक्र भ्रमति मस्तके—पच० ५।२० 2 किसी चीज की चोटी या सिर न च पर्वतमस्तके —मनु० ४।४७, वृक्ष° चुल्ली° आदि। सम० आख्य. वृक्ष की चोटी, ज्वर:,—शूलम् तीव्र सिरदर्द, पिडक:,—कम् मदोन्मत्त हाथी के गण्डस्थल पर का गोल उभार, मूलकम् गर्दन, स्नेह: मस्तिष्क।
मस्तिकम् [=मस्तकम्, पृषो० इत्वम्] सिर।
मस्तिष्कम् [मस्त मस्तकम् इष्यति स्वाधारत्वेन प्राप्नोति मस्त+इष्+क, पृषो०] दिमाग। सम० ज्वर (स्त्री०) मस्तिष्क पर चारों ओर लिपटी हुई झिल्ली।
मस्तु (नपु०) [मस्+तुन्] 1 मट्ठा मलाई 2 छाछ। सम०—लुग., गस्, लुगक:, कम् मस्तिष्क दिमाग।
महँ I (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—महति, महयति—ते, महित) सम्मान करना, आदर करना, बड़ा मानना पूजा करना, श्रद्धा रखना, महत्त्वपूर्ण समझना—गोप्तारं न निधीना महयति महेश्वरम् विबुधा सुभा०, जयश्री विन्यस्तैर्महित इव मदारबुसुमै—गीत० ११, कु० ५।२५, ५।१२, कि० ५।७, २४, भट्टि० १०।२, रघु० ११।४९।

II (भ्वा० आ० महते) विकसित होना, बढ़ना।
मह [मह् घञर्थे क] 1 उत्सव, त्योहार बधुताह्लदय-कौमुदीमह मा० ९।२१, स मरु दूरगतोऽप्यनिवर्तनं महमसाविति बधुतयोदितं शि० ६।१९, मदनमहम्, रत्न० १ 2 उपहार, यज्ञ 3 भैंसा 4 प्रकाश, कांति तु० 'महस्' से भी।
महक: [मह+कन्] 1 प्रमुख पुरुष 2 कबूतर 3 विष्णु का नामान्तर।
महत् (वि०) (म० अ० महीयस्, उ० अ० महिष्ठ, कर्तृ० (पु०) महान् महान्तौ महान्त, कर्म०/(द्व० व०)

महत) [मह्+अति] 1 बड़ा, गुरुत्व, विस्तृत, विशाल, विस्तीर्ण महान् सिंह व्याघ्र आदि 2. पुष्कल, यथेष्ट, विपुल, बहुत से,असंख्य—महाजन, महान्, द्रव्यराशि 3 लम्बा, विस्तारित, व्यापक, महती बाहू यस्य स महाबाहु इसी प्रकार महती कथा, महानध्वा 4 हृष्टपुष्ट, बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीर 5 प्रचंड, गहन, अत्यधिक महती शिरोवेदना, महती पिपासा 6 स्थूल, निबिड, सघन —महान्धकार 7 महत्त्वपूर्ण, गुरुतर, भारी महत्कार्यमुपस्थितम्, महती वार्ता 8. ऊँचा, उन्नत, प्रमुख,पूज्य उदात्त महत्कुलम्, महान् जन 9 उत्ताल—महान् घोष, ध्वनि 10 सवेरे या देर में महति प्रत्यूषे, 'प्रातःकाल सवेरे' महत्यपराह्णे 'दोपहर बाद देर में' 11 ऊँचा-महार्घ (पु०) 1 ऊंट 2 शिव का विशेषण 3 (सांख्य में) महत्तत्व, बुद्धि तत्व (मन से भिन्न) सांख्य० द्वारा माने गये पच्चीस तत्वों में से दूसरा मनु० १२।१४, सा० ३।८।२२ आदि नपु० 1 बड़प्पन, अनन्तता, असंख्यता 2 राज्य, उपनिवेश 3 पवित्रज्ञान (अव्य०) बहुत अधिक, अत्यधिक, बहुतज्यादा, अत्यन्त (विशे० महत् शब्द तत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य स्थानों पर अपरिवर्तित ही रहता है, परन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में बदल कर 'महा' बन जाता है) । सम० आकाशः विशालभवन, आशा ऊँची आशा, —आश्चर्य (वि०) अत्यंत आश्चर्यजनक,—आश्रयः बड़ों का सहारा, बड़ों की शरण,—कथ (वि०) बड़ों द्वारा कथित या उल्लिखित, बड़े लोगों के मुख में,—क्षेत्र (वि०) विस्तृत प्रदेश पर अधिकार करने वाला,—तन्त्रम् सांख्यों के पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा,—त्रिदम् अन्तरिक्ष,—सेवा बड़ों की सेवा,—स्थानम् ऊँचा स्थान, उन्नत स्थान ।

महती [महत्+ङीप्] 1 एक प्रकार की वीणा 2 नारद की वीणा अवेक्षमाणा महती सुदुर्मुखं—शिशु० १।१० 3 सफेद बैंगन का पौधा 4 बड़प्पन, महत्त्व ।

महत्तर (वि०) [महत्+तरप्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल —रः 1 प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुरुष—उत्तर० ४ 2. कंचुकी या राज भवन का महाप्रतिहार 3 दरबारी 4 गांव का मुखिया या सबसे बड़ा आदमी ।

महत्तरक. [महत्तर+कन्] दरबारी आदमी, किसी राजभवन का महा प्रतिहार ।

महत्त्वम् [महत्+त्व] 1 बड़प्पन, विशालता, विस्तृति, महाविस्तार 2. शक्तिमत्ता, विभूति, ऐश्वर्य 3. आवश्यकता 4. उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नयन 5. महानता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण ।

महनीय (वि०) [मह्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित, श्रीमान्, शानदार, उदात्त, श्रेष्ठ—महनीयशासन —रघु० ३।६९, महनीयकीर्ति २।२५ ।

महंतः [मह्+झच्] किसी पद का मुख्याधिष्ठाता ।

महर् (महस्) (अव्य०) [मह्+अर्] भूलोक से ऊपर के लोकों में से चौथा लोक (स्वर् और जनस् के बीच का लोक) (इसी अर्थ में 'महर्लोक' शब्द भी) ।

महल्लः, महल्लिकः [अरबी भाषा से व्युत्पन्न शब्द महत्+ल्ला+क] राजा के अन्तःपुर में रहने वाला खोजा या हिजड़ा ।

महल्लकः [महल्ल+कन्] निर्बल, कमजोर, पुराना, —कः 1 राजा के अन्तःपुर का खोजा या हिजड़ा विशाल भवन, महल ।

महस् (नपु०) [मह्+असुन्] 1 उत्सव, त्योहार का अवसर 2 उपहार, आहुति, यज्ञ 3 प्रकाश, आभा —कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते—मा० १।३, उत्तर० ४।१० 4 सात लोकों में से चौथा दे० 'महर्' ।

महस्वत्, महस्विन् (वि०) [महस्+मतुप्, विनि वा] भव्य, उज्ज्वल, चमकीला, प्रकाशयुक्त, आभामय ।

महा [मह्+घ+टाप्] गाय ।

महा [कर्म० स० और ब० स० में प्रथम पद के रूप में, तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त 'महत्' का स्थानापन्न रूप] (विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद 'महा' है, बहुत अधिक है, तथा और अनेक शब्द बन सकते हैं, उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थ युक्त हैं, नीचे दिए गए हैं) । सम०—अक्ष शिव का विशेषण,—अंग (वि०) स्थूल, महाकाय (गः) 1 ऊँट 2 एक प्रकार का चूहा, घूस 3 शिव का नामान्तर,—अंजनः एक पहाड़ का नाम,—अत्यय संकट का भारी खतरा, अध्वनिक (वि०) 'दूर तक गया हुआ' महाप्रयात, मृत,—अध्वरः बड़ा यज्ञ, अनस् भारी गाड़ी (सः,—नस्) रसोई, अनुभाव (वि०) महाप्रतापी, ओजस्वी, उदात्त, यशस्वी, महाशय, उदार, श्रीमान्— शि० शि० १।१७, शि० १२ गुणवान् ईमानदार, धर्मात्मा, (भः) प्रतिष्ठित या आदरणीय व्यक्ति,—अंतकः 1 मृत्यु 2 शिव का विशेषण,—अंधकारः 1 घोर अन्धेरा 2. आध्यात्मिक अज्ञान,—अंध्राः (ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम,—अन्वय,— अभिजन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सत्कुलोद्भूत (नः,—नम्) उत्तम जन्म, ऊँचा कुल, अभिषवः सोम का अत्यन्त खींचा हुआ रस,—अवरजः (राजा का) मुख्य

या प्रधानयज्ञों,—अङ्कः शिव का विशेषण, अङ्कम् दम खरब, अम्ल (वि०) बहुत खट्टा (—म्लम्) इमली का फल, अरण्यम् सुनसान जंगल, विशाल जंगल, अर्घ (वि०) अतिमूल्यवान्, ऊँची कीमत वाला (—र्घः) एक प्रकार की बटेर, अर्च्य (वि०) मूल्यवान्, कीमती,—अर्चिस् (वि०) ऊँची ज्वालाओं वाला, अर्णवः 1 महासागर 2 शिव का नामान्तर,

अर्बुदम् एक अरब अर्ह (वि०) 1 अतिमूल्यवान्, बहुत कीमती कु० ५।१२ 2 अनमोल, अतुलनीय उत्तर० ६।११ (—र्हम्) सफेद चन्दन की लकड़ी,—अवरोह, वटवृक्ष, अक्षाभिध्वज, वृक्ष के रूप में एक बड़ा अड्डा रघु० ३।५६, अशन (वि०) पेटू, भोजनभट्ट, अश्मन् (पु०) मूल्यवान् पत्थर, लाल, अष्टमी आश्विन शुक्ला अष्टमी, दुर्गाष्टमी, —असि बड़ी तलवार, असुरी दुर्गा का नामान्तर,

अह्न् दोपहर बाद का समय,—आकार (वि०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा,—आचार्य 1 प्रधान अध्यापक शिव का विशेषण,—आढ्य (वि०) धनवान्, अमीर (—ढ्य) कदम्ब का वृक्ष, आत्मन् (वि०) 1 महाशय, महामनस्क, उदारचेता, महोदय, अय दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्य मुद्रा० ७, द्विरिति मन्दाक्षरित महात्मना कु० ५।७५, उत्तर० १।४९ 2 श्रीमान्, पूज्य, श्रेष्ठ, प्रभुत्व (पु०) परमात्मा मनु० १।५४ (महात्मवत् का भी वही अर्थ है जो 'महात्मन्' शब्द का), आतक एक प्रकार का बड़ा ढोल, आनन्द,

नन्द 1 बड़ा हर्ष या उल्लास 2 विशेष कर मोक्ष का आनन्द, - आपगा बड़ा दरिया,—आयुधः शिव का विशेषण,—आरम्भ (वि०) बड़े-बड़े कार्यों में हाथ में लेने वाला, साहसिक (—भ) कोई बड़ा साहसिक कार्य,—आलय 1 देवालय 2 पवित्र स्थान आश्रम 3 बड़ा आवासस्थान 4 तीर्थस्थान 5 ब्रह्मलोक 6 परमात्मा (—या) एक विशेष देवता का नाम, - आशय (वि०) महात्मा, महामनस्क, उदारचेता, उदात्तचरित्र दे० महात्मन् (—य) 1 उदारमना या उदारचेता व्यक्ति—महाशयचक्रवर्ती—भामि० १।७० ? समुद्र,- आसन (वि०) 1 उच्च पद पर अधिकार करने वाला 2 ताकतवर, बलवान्, —आह्वः बड़ा या महासंग्राम,—इच्छ (वि०) 1 उदारचेता, उदारमना महामना, उदात्तचरित्र—रघु० १८।३३ 2 महान् उद्देश्य और आशाएँ रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, इन्द्रः 1 महेन्द्र अर्थात् महान् इन्द्र कु० ५।५३, रघु० १३।२०, मनु० ७।७ 2 मुखिया या नेता 3 एक पर्वत शृङ्खला, °आकः इन्द्रधनुष, °नगरी इन्द्र की राजधानी अमरावती, °मन्त्रिन् (पु०) बृहस्पति का विशेषण,—इष्वासः बड़ा धनुर्धर, बड़ा भारी योद्धा भग० १।४, ईशः,—ईशानः शिव का नाम,

ईशानी पार्वती का नाम,—ईश्वर 1 महाप्रभु, स्वामी 2 शिव का नामान्तर 3 विष्णु का नाम, (—री) दुर्गा का नाम, —उक्षन् ('उक्षन्' के स्थान पर) महाकाय बैल, हृष्टपुष्ट बैल - महाक्षता वत्सतर स्थूलशिव—रघु० ३।३२, ४।२२, ६।७२, शि० ५।६३, —उत्पलम् एक बड़ा नील कमल,—उत्सव 1 एक बड़ा पर्व, या हर्ष का अवसर 2 कामदेव,—उत्साह (वि०) ऊर्जस्वी, ओजस्वी, धैर्यशाली (—हः) धैर्य, —उदधिः 1 महासागर रघु० ३।१७ 2 इन्द्र का विशेषण °ज शंख, सीपी, —उद्यम (वि०) बड़ा समृद्धिशाली या भाग्यवान्, बड़ा यशस्वी या भव्य अतिसमृद्ध (—म) 1 प्रोत्कर्ष, उन्नयन, बड़प्पन, समृद्धि —रघु० ८।१८ 2 मोक्ष 3 प्रभु, स्वामी 4 कान्यकुब्ज या कन्नौज नामक जिला 5 कन्नौज की राजधानी का नाम 6 मधुपर्क,—उदर (वि०) बड़े पेट वाला, मोटा (—रम्) 1 बड़ा पेट 2 जलोदर,—उदार (वि०) अतिदानशील, या उदारचेता, वदान्य,—उद्यम (वि०) =महोत्साह दे०,—उद्योग (वि०) अतिपरिश्रमी, मेहनती, परिश्रमशील,—उन्नत (वि०) अत्यन्त ऊँचा (—स) पलिया खजूर का वृक्ष —उन्नति (स्त्री०) प्रकर्ष, उन्नयन (आल० भी) उत्कृष्ट पद,

उपकार बड़ा आभार,—उपाध्यायः मुख्य गुरु, विद्वान् अध्यापक, उरगः बड़ा साँप —रघु० १२।१९, —उरस्क (वि०) विशाल वक्षस्थल वाला (—स्कः) शिव का विशेषण, उल्का 1 एक बड़ा टूटा तारा 2 बड़ी जलती हुई लकड़ी, ऋद्धिः (स्त्री०) बड़ी समृद्धि या सम्पन्नता, ऋषभः साँड़,—ऋषिः 1 बड़ा ऋषि या सन्त (मनु० १।३४ में यह शब्द मानवजाति के मूलपुरुष या दस प्रजापतियों के लिए प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यह 'बड़ा ऋषि' के सामान्य अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 2 शिव का नाम, —ओष्ठ (महौष्ठ) (वि०) बड़े होठों वाला (—ष्ठः) शिव का विशेषण,—ओजस् बहुत ताकतवर, अतिबलशाली, प्रतापी, यशस्वी, महौजसो मानधना मनस्विनः - कि० १।१९, (पु०) बड़ा शूरवीर या योद्धा, मल्ल, - ओजसम् विष्णु का चक्र, —ओषधिः (स्त्री०) 1 असाध औषधि का पौधा, अचूक दवा 2 दूर्वा घास,- औषधम् सर्वोपरि उपचार, रामबाण, सब रोगों की अचूक दवा 3 अदरक 4 लहसुन 5 एक प्रकार का विष, वत्सनाभ, - कक्षः 1. समुद्र 2 वरुण का नाम 3. पहाड़ का नाम, - कंदः लहसुन, —कपर्दः एक प्रकार की सीपी, कौड़ी, - कपित्थकः बेल का पेड़ 2 लाल लहसुन, - कबुः (वि०) बिल्कुल नंगा (—बुः) शिव का विशेषण, कर (वि०) 1 लंबे

हाथी वाला 2 जिसमें बहुत राजस्व मिलता हो—कर्णः शिव का विशेषण, -कर्मन् (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाला (पु०) शिव का विशेषण, कला शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्र, कविः 1 कविशिरोमणि कालिदास भवभूति, बाण और भारवि आदि महाकवि 2 शुक्राचार्य का विशेषण -काय: शिव का विशेषण (-या) पृथ्वी, काय (वि०) स्थूलकाय, बड़ा महाकाय, अतिकाय (-य) 1 हाथी 2 शिव का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण 4 शिव का एक अनुचर नंदी बैल, कार्तिकी कार्तिक मास की पूर्णिमा,

काल प्रलयकर्ता के रूप में शिव का एक रूप 2 एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाल) का मन्दिर, (महाकाल का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान है, कालिदास ने अपने मेघदूत की रचना द्वारा इसे अमर कर दिया है, वहां (महाकाल शिव) देवता, उसका मन्दिर, पूजा आदि के साथ-साथ नगरी का सचित्र वर्णन मिलता है तु० मेघ० ३०-३८, रघु० ६।३४ 3 विष्णु का विशेषण 4 एक प्रकार की लौकी या तरबूज, पुरम् उज्जयिनी की नगरी, काली दुर्गा देवी का डरावना रूप, काव्यम् लौकिक काव्य, महाकाव्य (इसके विषय में पूरा विवरण जो साहित्य शास्त्रियों ने दिया है गा० द० २५९ में दे०) (महाकाव्य गिनने में पांच हैं रघुवंश कुमारसंभव किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, और नैषधचरित। यदि खण्डकाव्य मेघदूत भी सूची में सम्मिलित किया जाय तो छः महाकाव्य हो जाते हैं परन्तु यह गणना केवल परम्परा-प्राप्त, क्योंकि भट्टिकाव्य, विक्रमाकदेवचरित और हरविजय आदि का भी महाकाव्य की दृष्टि से विचार किया जाने का समान अधिकार है)

कुमार राजा का सबसे बड़ा पुत्र, युवराज, कुल (वि०) सर्वश्रेष्ठ, -कुलकुलाद्रुम, ऊंचे कुल में जन्म (लग्न) उच्चतुरीय में जन्म, ऊंचा कुल, कृष्णम् (न०) मालती, भारी-भरकम, कोश शिव का विशेषण, -क्षेत्र महाक्षेत्र, उदा० अहक्षेत्र—रघु० २।४६, क्षम विष्णु का विशेषण, क्षोणः शिव का विशेषण क्षत्र महाराज्यपाल, उपशासक, क्षीर गन्ना उरा खर्वः, खंभ (बड़ी संख्या सौ खरब की संख्या) गज (पु०) हाथी दे० दिक्करिन्, गजपति. गणेश (बड़ा) का एक रूप गंध एक प्रकार की बेल (वम्) एक प्रकार का चन्दन की लकड़ी, गवः सुरासव, गुण (वि०) असंख्य, अचक (ओषधि आदि) गृष्टि बियाई हुई गाय, ग्रहः राहु का विशेषण गोप 1 ऊंट 2 शिव का विशेषण,-गोविन् (पु०) ऊंट घृणा खोदी हुई शराब, घोणम् मछली (-ण) ऊंचा स्वर, कोलाहल, गुलमपाडा,

-चक्रवर्तिन् (पु०) सार्वभौम नरेश, चमूः (स्त्री०) विशाल सेना, -छाय. बटवृक्ष,-जट. शिव का विशेषण, जडु (वि०) जिसकी हलचल की हड्डी बहुत बड़ी हो (-डुः) शिव का विशेषण, जन. 1 लोगों का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता- महाजनो येन गतः स पन्थाः महा० 2 जनसंख्या, भीड़-भाड़ —महाजन स्मेरमुखी भविष्यति कु० ५।७० 3 बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित पुरुष, प्रमुख व्यक्ति महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नति कारकः, पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ता फलश्रियम् सुभा० 4 किसी व्यवसाय का मुखिया 5 सौदागर, व्यापारी जातीय (वि०) 1 दान-शील 2 उत्तम जाति का, ज्योतिस् (पु०) शिव का विशेषण —तपस् (पु०) 1 कठोर तप करने वाला 2 विष्णु का विशेषण,—तलम् नीचे के सात लोकों में से एक, दे० पाताल, तिक्त निंबवृक्ष, तीक्ष्ण (वि०) अत्यंत तेज या तीव्र (क्षा) मिलावां,—तेजस् (वि०) 1 बड़ी भारी कांति या दीप्ति से युक्त 2 तेजस्वी, शक्तिशाली, दोषयुक्त (पु०) 1 शूरवीर, योद्धा 2 अग्नि 3 कार्तिकेय का विशेषण (न०) पारा,—दन्त. हस्त 1 बड़े दांत वाला हाथी 2 शिव का विशेषण 1 लंबी भुजा 2 भारी दंड दशा (मनुष्य के भाग्य पर) प्रबल ग्रह का प्रभाव,- दारु (न पु०) देवदारु वृक्ष, देव शिव का नामांतर (वी) पार्वती का नामांतर, द्रुम पीपल का वृक्ष, -धन (वि०) 1 धनाढ्य 2 कीमती, मूल्यवान् (-नम्) 1 सोना, 2 गंधरस 3 मूल्यवान् वेशभूषा,--धनुस् (पु०) शिव का विशेषण, धातु 1 सोना 2. शिव का विशेषण 3 मेरु का विशेषण,—नदः शिव का विशेषण

नद बड़ा दरिया, नदी 1 गंगा, कृष्णा जैसी बड़ी नदी सभयाम्भोधिमध्येति महानद्या नगाधिपः शि० २।१०० 2 बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी, नदा 1 खींची हुई शराब 2 एक नदी का नाम,- नरक इक्कीस नरकों में से एक,—नाथ एक प्रकार का नरकुल, नेजा —नवमीआश्विन शुक्ला नौमी दुर्गानवमी, नाटकम् 'महानाटक' एक नाटक का नाम जिसे हनुमन्नाटक' (हनुमान् के नाम से सर्वप्रिय होने के कारण) भी कहते हैं, नाद 1 ऊंची आवाज शोर 2 बड़ा ढोल 3 गरजने वाला बादल, 4. शंख 5 हाथी 6. सिंह 7 कांस 8 ऊंट 9 शिव का विशेषण, (दम्) एक वाद्ययंत्र, - नाथ शिव का विशेषण,—निद्रा 'महानिद्रा', मृत्यु, नियम विष्णु का विशेषण, - निर्वाणम् (बौद्धों के अनुसार) सृष्टि-सत्ता का पूर्ण नाश, निशा 1 आधीरात, रात का दूसरा या तीसरा पहर- महानिशा तु विज्ञेया मध्यम

प्रहरत्रयम्,—नीच धोबी,—नील (वि०) गहरा नील (कः) एक प्रकार का नीलम या पन्ना—शि० १।१६, ४।४४, रघु० १८।४२, °उपलः नीलम,—मृत्युः शिव का विशेषण, नेमि कौवा,—पक्षः 1 गरुड का विशेषण 2 एक प्रकार की बत्तख, (-क्षी) उल्लू,—पंचमूलम् पाँच पेडों की जडों का योग—बिल्वोत्पलिमन्थ श्योनाक काश्मरी पाटला तथा, सर्वैस्तु मिलितैरेतै स्यान्महापञ्चमूलकम्, पञ्चविषम् पाँच घातक विषों का योग—श्रृंगी च कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभक, शंखकर्णीति योगोऽयं महापञ्चविषाभिध, पथः 1. मुख्य सडक, प्रधान वीथी, राजमार्ग कु० ७।३ 2 परलोक अर्थात् मृत्यु का मार्ग 3 कुछ पर्वत के शिखर जहाँ से भक्त लोग स्वर्गपथ प्राप्त करने के लिए अपने आपको फेंका करते थे 4 शिव का एक विशेषण, पद्मः एक विशिष्ट बडी संख्या, (सौ पद्म की संख्या ?) 2 नारद का नामान्तर 3 कुबेर की नौ निधियों में से एक (-द्मम्) 1 श्वेत कमल 2 एक नगर का नाम, °पति नारद का नामान्तर,—पराह्ण देर में, दोपहर बाद, पातकम् बहुत बडा पाप, जघन्य अपराध ब्रह्महत्या सुरापान स्तेय गुर्वंगनागम, महान्ति पातकान्याहुस्तत्संसर्गश्च पञ्चमम् मनु० ११।५४ 2 कोई बडा पाप, या अतिक्रमण, पात्र प्रधान मन्त्री, पाद शिव का विशेषण, पाप्मन् (वि०) अत्यन्त पापपूर्ण या दुर्वृत्त, पुंस् महान् पुरुष पुरुष. 1 बडा आदमी, एक प्रमुख या पूज्य व्यक्ति -- शब्द महापुरुषसंविहित निशम्य उत्तर० ६।७ 2 परमात्मा 3 विष्णु का विशेषण, पूप्य एक प्रकार का कीडा, पूजा बडी पूजा, असाधारण अवसरों पर अनुष्ठित महती पूजा, पृष्ठ एक ऊँट, प्रपञ्च विश्व का विराट्रूप, प्रभ (वि०) बडी भारी कान्ति वाला (-भा) दीपक का प्रकाश,—प्रभु 1 परमेश्वर 2 राजा महाप्रभु 3 मुख्य 4 इन्द्र का विशेषण 5 शिव का विशेषण 6 विष्णु का विशेषण,—प्रलय 'महाविघटन' ब्रह्मा की शयन समाप्ति पर विश्व का पूर्ण विनाश जब कि अपने अधिवासियों सहित समस्त लोक, देव, सन्त, ऋषि आदि स्वयं ब्रह्मा समेत सभी विनाश को प्राप्त हो जाते हैं,—प्रसाद 1 एक बडा अनुग्रह 2 (भगवान् की मूर्ति पर चढाया हुआ भोग) एक बडा उपहार,- प्रस्थानम् इस जीवन से विदा लेना, मृत्यु ऊँचा स्वर या स्वाभाविक ध्वनि या ऊष्म वर्णों के उच्चारण में होने वाली है 2 स्वाभाविक से युक्त वर्ण - अर्थात् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह् 3 पहाडी कौवा,—प्लव भारी बाढ, जलप्लावन,—फल (वि०) बहुत फल देने वाला (-ला) 1 कडवी लौकी 2 एक प्रकार की बर्छी, (-लम्) बहुत फल या पुरस्कार,—बल बहुत मजबूत (-लः) हवा (-लम्) सीमा ईश्वरः वर्तमान महादेवेश्वर के लिए स्थापित शिव का लिंग, -बाहु (वि०) लंबी भुजाओं वाला, शक्तिशाली (हुः) विष्णु का विशेषण,—बिंदु (बिं) सम्—1 अन्तरिक्ष 2 हृदय 3 जलकलश, घडा 4 विवर, गुफा,—भ (भी) ज शिव का विशेषण, —भी (भी) ज्यम् मूलाधार,- भोधि. बौद्धभिक्षु, -ब्रह्मन्, ब्रह्मन् परमात्मा,—ब्राह्मण 1 एक बडा या विद्वान् ब्राह्मण 2 एक नीच या तिरस्करणीय ब्राह्मण, -भाग (वि०) 1 अतिभाग्यवान्, सौभाग्यशाली, समृद्ध 2 श्रीमान्, पूज्य, यशस्वी- -महाभाग काम नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ—श० ५।२०, मनु० ३।१९२ 3 अत्यन्त निर्मल या पवित्र, अत्यन्त गुणवान्, —भागिन् (वि०) अतिभाग्यवान् या समृद्ध,—भारतम् प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्रों की प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष का वर्णन है (इसमें अठारह पर्व या अध्याय हैं, कहा जाता है कि इसकी रचना व्यास ने की, तु० 'भारत' शब्द की भी), भाष्यम् 1 एक बडी टीका 2 विशेषकर पाणिनि के सूत्रों पर पतञ्जलि द्वारा लिखा गया महाभाष्य (विस्तृत टीका), भीम राजा शान्तनु का विशेषण, भीरु एक प्रकार का कीडा, गुबरैला, भुज (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, शक्तिशाली, भूतम् सर्वतन्त्र द० भूत—न वेत्ति विदुषेनेन महाभूतसमाधिना रघु० १।२६, मनु० १।६, (-तः) एक बडा जानवर, भोगा दुर्गा का विशेषण,—मणि कीमती या मूल्यवान् मणि, आभरण, जवाहर मति (वि०) 1 उच्चमनस्क 2 चतुर (तिः) बृहस्पति का नाम,—मद (वि०) नशे में अत्यन्त चूर (-दः) मतवाला हाथी, मनस्, -मनस्क (वि०) 1 उच्चमना उदात्तमनस्क, उदारात्मा 2 उदार 3 घमण्डी, अभिमानी (पुं०) शरभ नाम का एक कल्पनाप्रसूत जन्तु,—मन्त्रिन् (पुं०) प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री, महोपाध्याय 1 बहुत बडा उपाध्याय अध्यापक, महापंडित, विद्वान् और प्रसिद्ध पंडित को दी जाने वाली उपाधि उदा० महामहोपाध्याय मल्लिनाथ सूरि आदि, मानस 'मनस्वान्' भाग्यवान् विशेषकर नरमांस-श० ५।२० माप्त 1 राज्य का बडा अधिकारी, उच्च राजाधिकारी, मुख्यमन्त्री मन्त्रे कर्मणि भवाया जिसे मांसे परिच्छदे, मांसा च महती सेना महामात्रास्तु ते स्मृता मनु० ७।२५४ 2 महावत, हाथियों पर नियन्त्रण रखने वाला पद० १।१२१ 3 हाथियों का अधीक्षक (-त्री) 1 मुख्यमन्त्री की पत्नी 2 आध्यात्मिक गुरु की पत्नी, माय विष्णु का विशेषण, माया सांसारिक कारण भूता अविद्या जिससे यह समस्त भौतिक जगत वास्तविक प्रतीत

होता है, —भारी हैजा, बबाई रोग, सक्रामक बीमारी, —भाहेश्वरः शिव या महेश्वर का बड़ा भक्त, —मृगः मगरमच्छ, घड़ियाल, - मुनिः बड़ा ऋषि 2 व्यास (मनु० वि) आयुर्वेद की जड़ीबूटी, —मूर्धन् (पु०) शिव का विशेषण, मूलम् एक बड़ी मूली (लः) एक प्रकार का प्याज, मूल्य (वि०) अत्यन्त कीमती (ल्यः) लाल, यूथ 1 कोई भी बड़ा जानवर 2 हाथी, मेह· मूत्र का पेड़, - मोहः मन का भारी आकर्षण (—हा) दुर्गा का विशेषण, यज्ञः महायज्ञ' गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञ या और कोई धर्मकृत्य —अध्यापन ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञस्तु तर्पणम्, होमो दैवो (देवयज्ञ.) बलिर्भौतो (भूत यज्ञ) नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् मनु० ३।७०–७२.—यमकम् 'बृहद्यमक' अर्थात् किसी श्लोक के चारों चरण जहां शब्दशः एक से हैं, परन्तु अर्थतः भिन्न हैं, उदा० दे० वि० १५।५२, यत्रा विकाशमीयुर्जगतीशभागणा' पंक्ति के चार भिन्न २ अर्थ हैं तु० भट्टि० १०।१९ की भी, यात्रा 'बड़ी यात्रा' काशी यात्रा, मृत्यु, —याम्य विष्णु का विशेषण, युगम् बृहद् युग' मनुष्यों के चार युगों का समाहार अर्थात् ४३२००० मानववर्ष,

योगिन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 मुनि, - रजतम् 1 सोना 2 धतूरा,

रजनम् 1 केसर 2 सोना,- रत्नम् बहुमूल्य रत्न, रथ 1 बड़ी गाड़ी या रथ 2 बड़ा योद्धा या महान् कुल प्रभावो धनञ्जयस्य महारथजयद्रथस्य विशेषणमन्यादपितृम् वेणी० २, रघु० ९।१, शि० २।७२ (महारथ की परिभाषा एको दशसहस्राणि योऽयोधयति धन्विना, शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च विज्ञेय स महारथ), -रस (वि०) अत्यन्त रसीला (सः) 1 गन्ना, रैव 2 पारा 3 बहुमूल्य धातु (वम्) नागरमोथा का जायफेदार साग, राज 1 बड़ा राजा, प्रभु या सम्राट् 2 राजाओं या बड़े २ व्यक्तियों को सम्मान सम्बोधित करने की रीति (महाराज, देव पाद महामहिम), 'चूत' एक प्रकार का आम,

राजिका (पु०, ब० व०) एक देवसमूह का विशेषण (मिलती में यह देव ३३० या ३३६ माने जाते हैं), -राज्ञी मुख्य रानी, राजा का प्रधान पत्नी, रात्रि., —त्री (स्त्री०) दे० महाप्रलय, —राष्ट्रः 1 महाराष्ट्र भारत के पश्चिम में मराठों का एक देश 2 महाराष्ट्र देश के अधिवासी, मराठे (ब० व०) (स्त्री) मुख्य प्राकृत बोली, महाराष्ट्र के अधिवासियों की भाषा तु० दण्डी - महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः काव्या० १।३४, रूप (वि०) रूप में बलवान् (पः) 1 शिव का विशेषण 2 राल,

रेतस् (पु०) शिव का विशेषण, रौद्र (वि०) बड़ा डरावना (—द्री) दुर्गा का विशेषण, —रौद्र इकतीस नरकों में से एक—मनु० ४।८९–९०, लक्ष्मी 1 नारायण की शक्ति या महालक्ष्मी 2 दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या, —लिङ्गम् बृहल्लिङ्ग (ग·) शिव का विशेषण, —लोलः कौवा, —लोहम् घुम्बक, वनम् 1 एक बड़ा जंगल 2 विष्णुवन में एक बड़ा जंगल, वराहः 'महावराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'वराह शूकर' के रूप में, वल्ल· शिशुमार, सूस, —वाक्यम् 1 लम्बा वाक्य 2 अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3. महदर्थ प्रकाशक वाक्य—जैसे तत्त्वमसि, ब्रह्मवेद सर्वम् आदि, —वातः आंधी, झक्कावात, —वार्तिकम् पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा रचित वार्तिक, - विक्षेपः योगदर्शन में प्रदर्शित मन की अवस्थाविशेष या वृत्तिविशेष, —विकल्पः सविकल्प नियम,—विद्युत् मेघ की सक्रान्ति 'संक्रान्ति वसन्तविषुव (जब सूर्य मीन राशि से मेषराशि पर संक्रमण करता है), वीर· 1 बड़ा शूरवीर या योद्धा 2. सिंह 3 इन्द्र का वज्र 4 विष्णु का विशेषण 5 गरुड़ का विशेषण 6 हनुमान् का विशेषण 7 कोयल 8 सफेद घोड़ा 9 यज्ञाग्नि 10 यज्ञपात्र 11 एक प्रकार का बाज पक्षी, वीर्या सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, वृष, भारी बैल सांड, वेग (वि०) बहुत तेज प्रबलवेग वाला (गः) 1 लंबी चाल, प्रबल वेग 2 लंगूर 3 गरुड़ पक्षी, वेल (वि०) तरुणमय, व्याधिः (स्त्री०) 1 भारी बीमारी 2 (काला कोढ़) कोढ़ का भयानक रूप, व्याहृतिः (स्त्री०) अत्यंत पवित्र शब्द अर्थात् भूर्, भुवस् और स्वर्, व्रत (वि०) अत्यन्त धर्मनिष्ठ, कठोरतापूर्वक व्रत का पालन करने वाला (तम्) 1 महाव्रत, बहुत बड़ा कठिन व्रत, महान् धर्मकृत्य का पालन 2 कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य

प्राणैरपि हितावृत्तिरुद्रोहो व्याजवर्जनम् आत्मनीव प्रियापानमेतन्मैत्रीमहाव्रतम्—महावी० ५।५९, व्रतिन् (पु०) 1 भक्त, संन्यासी 2 शिव का विशेषण, —व्रतिः 1 शिव का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,— शङ्ख 1 बड़ा शंख भग० १।१५ 2 कनपटी की हड्डी, मस्तक 3 मानव अस्थि 4 विशिष्ट ऊँची संख्या, —शठ एक प्रकार का धतूरा,

शब्द (वि०) ऊँची ध्वनि करने वाला अत्यंत कोलाहलपूर्ण, ऊधम मचाने वाला, शफरः समुद्री केकड़ा या झींगा मछली मनु० ३।२७२, - शालः बड़ा गृहस्थ, शिरस् (पु०) एक प्रकार का सांप,

शुक्ति. (स्त्री०) मोतियों की सीपी, —शुक्ला सरस्वती का विशेषण, —शुङ्ग चांदी, शूद्र (स्त्री० —द्री) 1 उच्चवर्णस्थ शूद्र 2 ग्वाला, —शृङ्गाटक

वाराणसी का विशेषण, -जनकः बुद्ध का विशेषण, -ज्वालः एक प्रकार का बमा, -प्रवेता 1 सरस्वती का विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण 3. सफेद खांड, -संक्रांतिः (स्त्री०) मकर संक्रान्ति,-सती बड़ी सती साध्वी स्त्री, -सत्ता असीम अस्तित्व,- सत्यः यम का विशेषण, -सत्यः कुबेर का विशेषण, - संधिविग्रहः शान्ति और युद्ध के मन्त्री का पद, - सखः कुबेर का विशेषण, -सर्ज कटहल,-सांतपन एक प्रकार की घोर तपस्या -दे० मनु० ११।२१२,-सांधिविग्रहिकः शान्ति और युद्ध का (परराष्ट्र) मन्त्री,-सारः एक प्रकार का खैर का वृक्ष, सारकि अरुण का विशेषण,-साहसम् अतिसाहस, बलात्कार, अत्यधिक दिलेरी,-साहसिक डाकू, लटमार, साहसीलुटेरा,-सिंहः शरभ नाम का एक कथा से वर्णित जन्तु,-सिद्धिः (स्त्री०) एक प्रकार की जादू की शक्ति,- सुखम् 1 बड़ा आनन्द 2. सम्भोग,-सूक्ष्मा रेल,-सूत सैनिक ढोल,-सेन 1 कार्तिकेय का एक विशेषण 2 विशाल सेना का सेनापति (ना बड़ी सेना, -स्कंध ऊँट,--स्थली पृथ्वी,--स्थानम् बड़ा पद,-स्वन एक प्रकार का ढोल हस्त) विष्णु का विशेषण,—हविस् (नपु०) घी, हिमवत् (पु०) एक पहाड़ का नाम।

महिका [मह्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] कोहरा, धुंध।

महित (भू० क० कृ०) [मह्+क्त] सम्मानित, पूजित, बहुमानित, श्रद्धेय - दे० मह्,—तम् शिव का त्रिशूल।

महिमन् (पु०) [महत्+इमनिच् टिलोप] 1. बड़प्पन (जाल से भी) -अयि मलयज महिमाय कस्य विगमस्तु विषयमन्तं—भामि० १।११ 2. यश, गौरव, ताकत, शक्ति कु० २।६, उत्तर० ४।२१ 3 ऊँचा पद, उन्नत पदवी, या ऊँची प्रतिष्ठा 4 सिद्धियों में से एक—अपना शरीर फुलाना -दे० सिद्धि।

महिर [मह्+इलच्, लस्य रत्वम्] सूर्य।

महिला [मह्+इलच्+टाप्] 1 स्त्री 2. मदमत्त या विलासिनी स्त्री विग्रहेण विकलहृदया निर्जनमीलायते महिला - भामि० २।६८ 3 प्रियंगु नाम की लता 4. एक प्रकार का गंधद्रव्य या सुगंधित पौधा —रेणुका। सम०—आह्वया प्रियंगु लता।

महिलारोप्यम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का नाम।

महिष [मह्+इषच्] 1 भैंसा (यम का वाहन माना जाता है) गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगैर्मुहुस्ताडितम् - श० २।६, एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार गिराया था। सम०-अर्दन कार्तिकेय का विशेषण,—असुर महिष नाम का राक्षस °घातिनी, °मथनी, °मर्दनी, °सूदनी दुर्गा के विशेषण, ध्वज यम का विशेषण,- पाल, - दासकः भैंस रखने वाला, बाहनः-बाहनः यम के विशेषण—कृतान्त किं साक्षान्महिषवहनोऽसावपि पुनः काव्य० १०।

महिषी [महिष+ङीष्] 1. भैंस, मनु० ९।५५, याज्ञ० २।१५९ 2 पटरानी, राजमहिषी—महिषीसख —रघु० १।४८ २।२५, ३।९ 3. रानी 4. पक्षी की मादा 5. स्त्रीदासी, सेविका, सैरंध्री 6 व्यभिचारिणी स्त्री 7 अपनी पत्नी को वेश्यावृत्ति से अर्जित धन नु० माहिषिक। सम०—घातः भैंसों के रखने वाला, -स्तनः भैंस के सिर से अलकृत खड्ग।

महिष्मत् (वि०) [महिष] मनुप्, पृषो० टिलोप] बहुत सी भैंसे रखने वाला, या जहाँ भैंसे बहुतायत से हों।

मही [मह्+अच्+ङीष्] 1 पृथ्वी—जैसा कि महीपाल और महीभृत् आदि में--मही रम्या शय्या --भर्तृ० ३।३९ 2 भूमि, मिट्टी 3. भूसम्पत्ति, जमीन—जायदाद 4 देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो, खंभात की खाड़ी में गिरती है 6 (ज्या० में) समतल आकृति की आधाररेखा। सम० -कृत, -कृत् राजा,—न महीं नमहीनपराक्रमम् -रघु० ९।५, -कंप भूचाल -क्षित् (पु०) राजा, प्रभ रघु० १।११, ८५, १०। २० -ज 1 मंगलग्रह 2 वृक्ष (अम्) हरा अदरक, -तलम् धरातल, -मृत्तिका मिट्टी का किला, भवन - धर 1 पहाड़ रघु० ६।५२ कु० ६।८० 2 विष्णु का विशेषण, -ध्र 1 पहाड़ भर्तृ० २।१०, शि० १५।२४, रघु० २।६० १३।७ 2 विष्णु का विशेषण, -नाथ, -प, -पति, -भुज् (पु०), -भृत्वन् (पु०), -महेन्द्र राजा भग० १।२०, रघु० २।२८ ६।१३, -पुत्र, -सुत,—सूनु 1 मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण, -पुत्री, -सुता सीता का एक विशेषण, -प्रकंप भूचाल, -प्ररोहः, -रुह् (पु०) वृक्ष किरा० ५।१०, शि० २०।८९, -प्राचीरम्, -प्राकार समुद्र, --भर्तृ (पु०) राजा, भृत् (पु०) 1 पहाड़ —कु० १।३, किरा० ५।१ 2 राजा, प्रभु, -लता केंचुआ,--सुर ब्राह्मण।

महीयस् (वि०) [प्र० अ०, महत्+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल, अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली भारी या महत्त्वपूर्ण अधिक ताकतवर, मजबूत पु० महामना, उदारचेता प्रकृतिं स्वां मही यसीं सहन्ते नान्य समुन्नतिं यया किरा० २।२१, शि० २।१३।

महीला, महेला [=महिला, पृषो० साधु] स्त्री, नारी।

मा (अव्य) [मा+विच] प्रतिषेधबोधक अव्यय (मकारात्मक विरलतः) प्रायः लोट् लकार की क्रिया के साथ जुड़ा हुआ यद्यपि मा कुरु विषादमनादरेण भामि० ४।६१, (क) लुङ् लकार की क्रिया के साथ

जबकि उसके आगम 'अकार' का लोप भी हो जाता है - पापे रतिं मा कृथा —भर्तृ० २।७७, मा सुमुहुर्त् खलु भवतमनन्यजन्मा मा ते मनोभवविकारवशंगता मतिर्भूत् मा० १।३२ (ख) लङ् लकार की क्रिया के साथ भी (यहाँ भी आगम 'अकार' का लोप हो जाता है) मा चैवमभिभाषथाः राम० (ग) लुट् लकार या विधि लिङ् की क्रिया के साथ भी, 'ऐसा न हो कि' 'ऐसा नहीं कि' अर्थ को प्रकट करने में लघु एना परित्रायस्व मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति - श० २, मा कश्चिन्मन्मथाध्यनर्थो भवेत् पञ्च० ५, मा नाम देव्या, किमप्यनिष्टमुत्पद्य भवेत् का० ३०७, (घ) जब अभिशाप अभिप्रेत हो तो शत्रन्त (वर्तमानकालिक विशेषण) के रूप में प्रयुक्त—मा जीवन्य परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति शि० २।४५ या (ङ) सम्भावनार्थक कर्मवाच्य-प्रत्ययान्त क्रियाओं के साथ—नैव प्रार्थ्यम्, मा कभी कभी बिना किसी क्रिया की अपेक्षा किये प्रयुक्त होता है मा तावत् 'अरे ऐसा मत (कहो)' मा मैवम् मा तात्पर्यक्षिण—मृच्छ० ३, 'कहीं कोई पुलिस का आदमी न हो' दे० नाम के अन्तर्गत। कभी कभी 'मा' के बाद 'स्म' लगा दिया जाता है, और उस समय क्रिया में लङ् या लुङ् लकार का प्रयोग होता है तथा आगम 'अकार' का लोप हो जाता है, विधि-लिङ् के साथ प्रयोग विरलतः देखा जाता है कर्तव्य मा स्म गम पार्थ भग० २।३, मा स्म प्रतीप गम श० ४।१७, मास्म मोमतिनी वाचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्।

मा [मा+क+टाप्] १ धन की देवी लक्ष्मी—तमाद्युपत्र गोविन्द भज मा ज्ञानदायकम् सुभा० 2 माता 3 नाप। सम०—ध—पति विष्णु के विशेषण।

मा (अदा० पर०, जुहो० दिवा० आ० - माति, मिमीते, मीयते, मित) 1 मापना व्यधिक मिमान इवावनि पदानि शि० ७।१३ 2 नापतोल करना, चिह्न लगाना, सीमाकन करना दे० मित' 3 (डील डौल में) तुलना करना, किसी भी मापदण्ड से मापना रघु० ५।१५ 4 अन्दर होना, अन्दर स्थान ढूंढना, गुथन या सहित होना तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विष तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुद—शि० १।२३, बुद्धि गतेऽ-प्यन्तर्मनि नैव मान्ती ३।७३ १०।५०, मातिं मातुम-शक्यार्थेऽपि यत्नारम्भमदत्त ते काव्य० १० प्रेर० (मापयति-ते) मपवाना, नाप करवाना एतेन माप-यति भिक्षिषु कर्ममार्गम् मृच्छ० ३।१६ इच्छा० (मित्सति-ते) मापने की कामना करना। अनु० 1 अनुमान लगाना, घटाना (कुछ कारणों के आधार पर) सुमादग्निमनुमाय तर्क०, कु० २।२५, अन्दाज लगाना, अटकल लगाना—अन्वमीयत शुद्धेति शातेन वपुषैव सा—रघु० १५।७७, १७।११ 2 समाधान करना, पुनर्मिलित करना, ऊष —, तुलना करना, समानता करना—तेनोपमीयेत समालनीलम् शि० ३।८, स्तनौ मांसग्रंथी कनककलशाभित्युपमितौ - भर्तृ० ३।२०, निस् —, बनाना सृजन करना, अस्तित्व में लाना निर्मातु प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः—विक्रम० १।८, यस्मादेषा सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्मितो नृप —मनु० ७।५ १।१३ 2 (क) बनाना, रूप बनाना, सरचना करना स्वायुर्निर्मिता एते पाशा हि० १ (ख) बसाना, (नगर पुर आदि) नई बस्ती बसाना—निर्ममे निर्ममोऽर्केषु मथुरा मधुराकृतिः—रघु० १५।२८ 3 उत्पन्न करना, पैदा करना,—शलाकाञ्जननिर्मितेव —कु०४।४७, निर्मातु मम-व्यथाम्—गीत० ३ 4 रचना करना, लिखना—स्वनिर्मितया टीकया समेतं काव्यम् 5 तैयार करना, निर्माण करना, पार— 1 मापना 2 नाप कर निशान लगाना, सीमाकन करना, प्र—, 1. मापना 2 सिद्ध करना, स्थापित करना, प्रदर्शित करना, सम्—, 1 मापना 2 समान बनाना बराबर बराबर करना—कान्तामिमतयोपदेशयुजे —काव्य० १, दे० समित 3. समानता करना, तुलना करना 4. युक्त या सहित होना मृणालसूत्रमपि ते न समाति स्तनान्तरे—सुभा०।

मांस् (नपु०)[1] मास (इस शब्द के पहले पाँच वचनों के रूप नहीं होते और उसके पश्चात् इसके स्थान में विकल्प से 'मास' आदेश हो जाता है।)

मासलम् [मत्-स दीर्घश्च] 1 मास गाढत —समासो मधुपर्क उत्तर० ४ (इस शब्द की व्युत्पत्ति की उद्भावना मनु० ५।५५ में इस प्रकार की गई है—मा स भक्ष-यितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्, एतन्मांसस्य मांसत्व प्रवदन्ति मनीषिणः) 2 मछली का नाम 3 फल का गूदा,—क 1. क्रीडा 2 मास खेलनेवाली एक वर्ष मकर जाति। सम०—अद्—अद—आदिन् भक्षक (वि०) मांस खाने वाला, आमिषभोजी (जैसे कि एक जानवर)—भट्टि० १६।२८, मनु० ५।१५ अर्बुदः खण्ड मांस का टुकड़ा जो मुंह में नीचे लटकता है, —अशनम् मांस खाना, -आहारः पशुवत् भोजन, —उपजीविन् (पु०) मांस बेचने वाला,—ओदनः 1. मछली का भोजन 2 मांस के साथ पकाये हुए चावल, -कारि (नपु०) रक्त, छर्दिः मांस की गिल्टी, जम्, -तेजस् (नपु०) चर्बी, वसा, दालिन् (पु०) खटमिट्ठा चोका, खट्टी भाजी,— निर्यासः शरीर के बाल, पिटकः, पेशी 1 मांस की टोकरी 2 मांस का बड़ा ढेर, - पिण्डः हड्डी, - पेशी 1 पुट्ठा

2. मांस का टुकड़ा 3. आठ से चौदह दिन तक के गर्भ का विश्लेषण,—भोजिन् (वि०) मांस काटने वाला, -योनिः रक्त-मांस से बना जीव, —विक्रयः मांस की बिक्री, - सारः,—स्नेहः चर्बी, वसा, - हृल्ला शोर, चमड़ा।

मांसल (वि०) [मांस+लच्] 1 मांस से भरा हुआ, 2. पुट्ठेदार, मोटा ताजा, बलवान्, हृष्टपुष्ट—उत्तर० १ 3. स्थूलकाय, मजबूत, शक्तिशाली - शाला, शत मांसला —भामि० १।३४ 4 (ध्वनि की भांति) महरा—उत्तर० ६।२५ 5 महाकाय, हट्टाकट्टा मा० ९।११।

मांसिकः [मांस पण्यमस्य ठक्] कसाई, मांस विक्रेता।

माकन्द [मा+किप् मा. परिमित सुघटित कन्द इव फलं अस्य] आम का पेड़—भामि० १।२९,—दौ 1. आंवले का पेड़ 2. पीला चन्दन 3 गंगा के किनारे स्थित एक नगर का नाम।

माकर (वि०) (स्त्री०—री) [मकर+अण्] मगरमच्छ से संबद्ध, माघ मास से संबद्ध।

माकरन्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [मकरन्द+अण्] फूलों के रस से प्राप्त या, पुष्परस से संबद्ध, शहद से भरा हुआ, मधुमिश्रित- मा० ८।१, ९।१२।

माकलिः (पु०) 1 इन्द्र का सारथि मातलि 2 चन्द्रमा।

माक्षिक (ई) क (वि०) (स्त्री०-की) [मक्षिकाभिः संभृत्य कृतम्—अण् पक्षे नि० दीर्घ] मधुमक्खियों से उत्पन्न या प्राप्त,—कम् 1 मधु भामि० ४।३३ 2 मधु की भांति एक खनिज पदार्थ। सम० आमयम्, —अम् शोम,—कः एक प्रकार का नारियल,—शर्करा कदयुक्त खांड।

मागध (वि०) (स्त्री०-धी) [मगध+अण्] मगध देश में रहने वाला, या उससे संबद्ध, या मगध के अधिवासी, -धः 1 मगध का राजा 2 एक मिश्रजाति (कहा जाता है कि यह जाति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता की संतान, इस जाति का कर्तव्य कर्म व्यावसायिक भाटों का कार्य है)—मनु० १०।११।१७, याज्ञ० १।९४ 3 चारण या बन्दीजन, धाः (ब० व०) मगध के अधिवासी, धी 1 मगध देश की राजकुमारी—रघु० १।५७ 2 मागधी भाषा, चार मुख्य प्राकृतों में से एक 3. बड़ी पीपल 4 सफेद जीरा 5 परिष्कृत खांड 6 एक प्रकार की चमेली 7 छोटी इलायची।

मागधा, मागधिका [मागध+टाप्, मागध+ठक्+टाप्] बड़ी पीपल।

मागधिकः [मगध+ठक्] मगध का राजा।

माघः [मघानक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी माघी साऽत्र मासे अण्] 1 चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम (यह जनवरी-फरवरी मास में आता है) 2 एक कवि का नाम जिसने शिशुपालवध या माघकाव्य की रचना की (कवि ने शि० २०।८०-८४ में अपने कुल का वर्णन इस प्रकार किया है—श्रीधरम्यसुकृतसर्गसमाप्तिलक्ष्म लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनचारु माघ तस्यात्मज सुकविकीर्तिदुराशयाद काव्य व्यधत्त शिशुपालकधामिधानम्)—उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्, दण्डिन पदलालित्य माघे सन्ति त्रयो गुणा उद्भट,—घी माघ मास की पूर्णिमा।

माघवा (स्त्री०) माया केकड़ा।

माघवन (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवत्+अण्] इन्द्र से संबन्ध रखने वाला,—नी पूर्वदिशा। सम० चापम् इन्द्रधनुष - उत्तर० ५।११।

माधवन (वि०) (स्त्री०—नी) [मधवन्+अण्] इन्द्र से शासित या संबद्ध- ककुभ समस्कुरुत माधवनीम् – शि० ९।२५, अवनीतलमेव साधु मन्ये न पनी माधवनी विलासहेतु जग०।

माध्यम् [माधे जातम्—माघ+यत्] कुन्द लता का फूल।

माधृक् (भ्वा० पर० माधति) कामना करना, इच्छा करना, लालसा करना।

माङ्गलिक (वि०) (स्त्री० की) [मंगल+ठक्] 1 शुभ, मंगलसूचक, भाग्यवान्—मृदमस्य मांगलिकतूर्यकृता ध्वनय प्रतेनुरनुवप्रमयपाम् किं० ६।४, महावी० ४।३५, भामि० २।५७ 2 सौभाग्यशाली।

माङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+ष्यञ्] शुभ, सौभाग्यसूचक शि० ४।५,—ल्यम् 1 मांगलिकता, समृद्धि, कल्याण, सौभाग्य 2 आशीर्वाद, शुभकामना 3 पर्व, त्यौहार, कोई भी शुभ कृत्य। सम० तूर्यम् शुभ अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल उत्तर० ६।२५।

माच [मा+अच्+क] सड़क, मार्ग।

माचल [मा+चल्+अच्] 1 चोर, लुटेरा 2 मगरमच्छ।

माचिका [मा+अञ्च्+क+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] मकड़ी।

माञ्जिष्ठ (वि०) (स्त्री० ष्ठी) [मञ्जिष्ठया रक्तम् अण्] मजीठ की भांति लाल,—ष्ठम् लाल रंग।

माञ्जिष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [मञ्जिष्ठा+ठक्] मजीठ के रंग से रंगी हुई—उत्तर० ४।२०, महावी० १।१८।

माठरः [मठ्+अरन्, तत अण्] 1 व्यास का नाम 2 ब्राह्मण 3 ज्योतिषी, कलवार, शराब खींचने वाला 4 सूर्य का एक सेवक।

माठी (स्त्री०) कवच, जिरहबख्तर।

माडः (पु०) 1 विशेष जाति का वृक्ष 2. तोल, माप।

माडिः (स्त्री०) [माड्+क्तिन्] 1. किण्वक (जो

अभी खुला न हो) 2 सम्मान करना 3 उदासी, खिन्नता 4 निर्धनता 5 क्रोध, आवेश 6 वस्त्र की किनारी या झालर (घोट) 7 दुहरा दाँत

माणव [मनोऽपत्यम् अण्, अल्पार्थे णत्वम्] 1 लड़का, बालक, छोकरा, बच्चा 2 छोटा मनुष्य, मुण्डा (तिरस्कार सूचक) 3 सोलह (बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवक [माणव कन्] 1 लड़का, बालक, बच्चा, छोकरा (प्रायः तिरस्कारसूचक के रूप में प्रयुक्त) 2 छोटा मनुष्य, बौना, मुंडा—मायामाणवक हरिम् भग० 3 मूर्ख व्यक्ति 4 छात्र धर्मशास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी 5. सोलह (या बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवीन [वि०] [माणवस्येदं खञ्] बालकों जैसा, बच्चा जैसा।

माणवेय [माणवानां समूह यत्] बच्चों या छोकरों का टोला।

माणिका [मान+घञ्, नि० णत्वम्+कन्+टाप् इत्वम्] एक विशेष बाट (आठ पल वजन के बराबर) या तौल।

माणिक्यम् [मणि+कन्+ष्यञ्] लाल।

माणिक्या [माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबन्धम्, माणिमन्थम् [मणिबन्ध (मन्थ) + अण्] मेढा नामक।

माण्डलिक [वि०] (स्त्री० की) [मण्डल+ठक्] किसी प्रान्त पर शासन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला, एक प्रान्त का शासक, राज्यपाल।

मातङ्ग [मतङ्गस्य मुनेरयम् अण्] 1 हाथी—शि० १।६४ 2 नीचतम जाति का पुरुष, चाण्डाल 3 किरात, भील पहाड़ी या बर्बर 4 (समास के अन्त में) कोई भी सर्वोत्तम वस्तु—उदा० वल्लाहक मातंग। सम०—दिवाकर एक कवि का नाम, —यूथः हाथी जैसा विशाल मनुष्यसमूह—रघु० १३।११।

मातरिपुरुष [अव्य० समास] 'वह जो घर में अपनी माता के सामने ही अपनी मरकोरता बताता हो' डरपोक, कायर, शेखीबाज, बुजदिल।

मातरिश्वन् [पुं०] [मातरि अन्तरिक्षे श्वयति वर्धते क्विप्कनिन् डिच्च अलुक् स०] वायु—पुनश्चयति विविधैर्मातरिश्वा रजोभिः शि० ११।१७, कि० ५।३६।

मातलि [मतलस्यापत्यं पुमान्—मतल+इञ्] इन्द्र के सारथि का नाम। सम० सारथिः इन्द्र का विशेषण।

माता [मान् पूजायां तृच् न लोप] माता, माँ।

मातामहः [मातृ+डामहच्] नाना, हौ (द्वि० व०) नाना नानी,—ही नानी।

मातिः (स्त्री०) [मा+क्तिन्] 1 माप 2 चिन्तन, विचार, प्रत्यय।

मातुलः [मातुर्भ्राता मातृ+डुलच्] 1. मामा—भग० १।२६ मनु० २।१३०, ५।८१ 2. चतूरे का पौधा 3 एक प्रकार का साँप। सम० पुत्रकः 1 मामा का बेटा 2. चतूरे का फल।

मातुलङ्गः दे० मातुलिंग।

मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल+टाप्, ङीष्, वा, पक्षे आनुक् च] 1 मामी, मामा की पत्नी—मनु० २।१३१, याज्ञ० २।२३२ 2 पटसन।

मातुलिङ्गः, मातुलुङ्गः [मातुल+यक्+अच्, मुम्, पृषो० साधु] एक प्रकार का नींबू का वृक्ष (मुखौ) भागाः प्रक्षिप्तमातुलुङ्गवृक्षस्य प्रेयो विधास्यन्ति वाम्—मा० ६।१९,—ङम् इस वृक्ष का फल, चकोतरा।

मातुलेयः (स्त्री० यी) [मातुल+ढक्, मातुली+ढक् वा] मामा का पुत्र।

मातृ (स्त्री०) [मान् पूजायां तृच् न लोप] 1 माँ, माता —मातृवन्नरदारेषु यः पश्यति स पश्यति, सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते सुभा० 2 माता (आदर तथा वात्सल्य सूचक)—मातर्लक्ष्मि भजस्व कञ्चिदपरम् —भर्तृ० ३।६८, ८७, अयि मातर्वैदेहि जनसभवे देवि सीते उत्तर० 3. गाय 4 लक्ष्मी का विशेषण 5 दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिक्ष, आकाश 7 पृथ्वी 8 देव माता—मातृभ्यो बलिमुपहर मृच्छ० 1 (ब० व०) देव माताओं का विशेषण, जो शिव की परिचारिका कही जाती हैं परन्तु बहुधा स्कन्द की परिचर्या में लिप्त रहती हैं (ये गिनती में आठ हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चण्डी वाराही वैष्णवी तथा, कौमारी चैव चामुण्डा सप्तिकाश्चाष्टमातरः। कुछ के मत में वह केवल सात हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा, माहेन्द्री चैव वाराही चामुण्डा सप्त मातरः। कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बतलाते हैं)। सम०—कोशः माता,—गणः देव माताओं का समूह,—गामिन् विपरीत स्वभाव वाली माता,—गामिन् (पुं०) माता के साथ गमन करने वाला,—गोत्रम् मातृकुल,—घ्नः, —घातकः,—घातिन् (पुं०), अपनी माता की हत्या करने वाला,—चक्रम् 1 मातृहन्ता 2 इन्द्र का विशेषण,—चक्रम् देवमाताओं का समूह, देव (वि०) जो माता को ही अपना देवता मानता है, माता को देवता की भाँति पूजने वाला,—जन्मन् कार्तिकेय का विशेषण, —जम्—(वि०) मातृकुल से सम्बद्ध, (—जः) मामा, नाना आदि,—पितृ (द्वि० व०) (मातापितरौ या मातरपितरौ) माता-पिता,—पुत्रौ (मातापुत्रौ) माँ और बेटा,—पूजनम् देवमातृकाओं की पूजा,—बन्धुः, —बान्धवः मातृकुल के संबंधी—रघु० १२।१२, (ब०

ब०) मातृकुल के रिश्तेदारों का समूह, व ये हैं-मातृ पितृ स्वसृ पुत्रा मातुर्मातु स्वसृ सुत। मातृर्मातृकुलपुत्राश्च शिष्येा मातृबान्धवा, **मण्डलम्** देवमातृकाओं का समूह,—**मही**(स्त्री०) पार्वती का विशेषण,—**मुख** मूर्ख व्यक्ति, मोदू,—**यज्ञः** देवमातृकाओं के निमित्त किया गया यज्ञ,—**वात्सलः** कार्तिकेय का विशेषण—**स्वसृ** (स्त्री०) (मातृष्वसृ या मातृ स्वसृ) माता की बहन मौसी,—**स्वसेयः** (मातृष्वसेय) माता की बहन का पुत्र (वी) मौसी की पुत्री, इसी प्रकार **मातृष्वसीयः**—या।

मातृक (वि०) [मातृ+ठञ्] 1 माता से आया हुआ या उत्तराधिकार में प्राप्त-मातृक च धनमर्जितं दयत्—रघु० ११।६४, ९० 2 माता संबंधी -क मामा, का 1 माता 2 दादी 3 धात्री, दाई 4 सात मूल 5 देवमातृका 6 अक्षरों में लिखे हुए कुछ रेखाचित्र जो जादू की शक्ति रखने वाले कहे जाते हैं 7 इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमाला (ब० व०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—त्रा, त्री) [मा+त्रन्] इतनी मात्रा का जितना कि 'इतना ऊँचा लंबा या चौड़ा जितना कि' 'वहाँ तक पहुंचना हुआ जहां तक कि' अर्थ को प्रकट करने के लिए संज्ञाओं के साथ जोड़ा जाने वाला प्रत्यय, जैसा कि ऊरुमात्री भित्ति (इस अर्थ में समास के अन्त में 'मात्रा' शब्द का प्रयोग भी चिन्तनीय है, दे० नी०), **त्रम्** 1 एक माप (चाहे वह लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई की हो, चाहे क्षेत्रफल, स्थान, दूरी या संख्या की हो, प्रायः बहुधा समास के अन्त में उदा० **अङ्गुलिमात्रम्** अंगुलि के बराबर चौड़ाई, **किञ्चिन्मात्र** थोड़ा कुछ दूरी, **क्रोशमात्रे** एक कोस की दूरी पर **रेखामात्रमपि** रेखा तक की चौड़ाई भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की होती है, —रघु० १।१७, इसी प्रकार **क्षणमात्रम्** निमिषमात्रम् एक क्षण का अन्तराल, **शतमात्रम्** संख्या में सौ, **गजमात्रम्** इतना ऊँचा या बड़ा जितना कि हाथी **तालमात्र**, **वंशमात्रम्** आदि 2. किसी चीज का पूरा माप, वस्तुओं की पूर्ण समष्टि, राशि **जीवमात्र** या **प्राणिमात्रम्** जीवधारियों प्राणियों का समस्त समुदाय, **मनुष्यमात्रा** मर्त्य, प्रत्येक मनुष्य मरणशील है 3. किसी चीज का सामान्य माप, केवल एक बात का उससे अधिक नहीं, इसका अनुवाद प्रायः 'केवल,' 'सिर्फ' या 'भी, ही' आदि शब्दों से किया जाता है, —**जातिमात्रेण** हि० १।५८, केवल जाति से, **दिट्टिभमात्रेण** समुद्र, व्याकुलीकृत —२।१४९, केवल टिटहरे के द्वारा, **दत्तामात्रेण** जय्यसे— प० २, केवल वाणी द्वारा' इसी प्रकार **अर्थमात्रम्**, **समानमात्रम्**—पंच० १।८३, क्तान्त शब्दों के साथ जुड़ कर 'मात्र' शब्द का अनुवाद प्रायः 'ही' आदि है **दिष्टमात्र** रघु० ५।५१, 'ज्योंही वह देखा गया त्योंही' 'बीजे जाने पर ही', **भक्तमात्रे**, 'खाने के बाद ही', **प्रविष्टमात्र** एवं तत्पश्चात् प० ३ आदि।

मात्रा [मात्र+टाप्] 1 माप देखो 'मात्रम्' ऊपर 2. मापदंड, मानक, नियम 3. सही माप 4 भाग वा टुकड़ा, एक फुट का क्षण 6 कण, अणु 7 भाग, अंश —**मुरेन्द्रमात्राधिगमं भरत्वान्**-रघु० ३।११ 8 अल्पांश अल्प परिमाण, छोटी मात्रा दे० मात्र (३) 9 भव, महत्त्व **राजेति किमयी मात्रा** पंच० १।४०, 'राजा किस अर्थ का है, क्या महत्त्व है उसका' अर्थात् मैं उसे कोई महत्त्व नहीं देता **रायस्व इति लक्ष्मी मात्रा** मु० १ 10 घन, संपत्ति 11 (छन्द शास्त्र में) एक मात्रा का क्षण ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने वाला काल 12 लघु 13 गौणिक संख्या, भूयिष्ठ्य 14 नागरी के अक्षरों का ऊर्ध्वी (अशिरस्क) भाग, अर्थात् मात्रा 15. कान की बाली 16 आभूषण, अलंकार। **सम**· **छन्दस्**, आधीमात्रा का क्षण **छन्दस्**, **वृत्तम्** वह छंद जिसका विनियम मात्राओं की गिनती के आधार पर होता है उदा० आर्या,—**भस्त्रा** बटवा **सङ्ग** साहचर्य सामग्री या संगति में आसक्ति या अनुराग मनु० ३।५७,—**समक** एक प्रकार के खेलों का समूह दे० परिशिष्ट १ **स्पर्श**, गौणिक संख्या गौणिक संख्या के साथ इन्द्रियों का संयोग, भग० २।१४।

मात्रिका [मात्रा+कन्+टाप्] मात्रा, या छंद शास्त्र का ह्रस्वस्वर के उच्चारण में लगने वाला काल (=मात्रा)।

मात्सर (वि०) (स्त्री० री), **मात्सरिक** (वि०) (स्त्री० की) [मत्सर+अण् ठक् वा] डाह करने वाला ईर्षालु विद्वेषी असूयापरक।

मात्सर्यम् [मत्सर+ष्यञ्] ईर्षा डाह असूया विद्वेष अहो बत्सलु मात्सर्यम् वेणी० २।१४९, कि० ३।५३।

मात्सर्यक [मत्सर्य+ठक्] मत्सरता डाहीपन।

माथ [मथ्+घञ्] 1 विलोना मथन विलोडन करना 2 हत्या, विनाश 3 मार्ग, सड़क।

माथुर (वि०) (स्त्री० री) [मथुरा+अण्] 1 मथुरा में आया हुआ 2 मथुरा में उत्पन्न 3 मथुरा में रहने वाला।

माद [मद्+घञ्] 1 नशा, मस्ती 2 हर्ष, खुशी 3 घमंड, अहंकार।

मादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [मद्+णिच्+ण्वुल्] 1 नशा करने वाला, उन्मत्त बनाने वाला, बेहोश करने वाला 2 आनन्ददायक —म० जलकुक्कुट।

माद्यन (वि०) (स्त्री० नी) [मद्+णिच्+ल्युट्] नशे में चूर करने वाला दे० मादक —नः 1 कामदेव 2 बसूरा, नम् 1 नशा करना 2 आनन्द देना, उल्लास देना 3 लौंग।

माद्यनीयम् [मद्+णिच्+अनीयर्] एक नशीला पेय।

मादृक्ष (वि०) (स्त्री० —क्षी), मादृश् (वि०) मादृक्ष (वि०) (स्त्री० शी) [अस्मद्+दृश्+क्स (विप्, कञ्, वा) मदादेश, आत्वम्] मेरी भाँति, मुझसे मिलता जुलता—प्रकृतिसारा खलु मादृशो गिरः कि० १।२५, उत्तर० २, उपचारो नैव कल्प्य इति तु मादृशा वस०।

माद्रक [मद्र+वुञ्] मद्र देश का राजकुमार।

माद्रवती [मद्र+मतुप्, वत्वम् अण् ङीप्] पाण्डु की द्वितीय पत्नी का नाम।

माद्री [मद्र+अण्—ङीप्] पाण्डु की द्वितीय स्त्री का नाम। सम०—नन्दन—नकुल और सहदेव का विशेषण, पति—पाण्डु का एक विशेषण।

माद्रेय [माद्री+ढक्] नकुल और सहदेव का विशेषण।

माधव (वि०) (स्त्री० वी) [मधु+अण्, विष्णुपक्षे माया स्वस्या धव ष० त०] 1 मधु की तरह मीठा 2 शहद से बना हुआ 3 वासन्ती 4 मधु द्रव्य के व्यापार से सम्बन्ध रखने वाला, ब. कृष्ण का नाम राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलय—गीत० १, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये 2 कामदेव का मित्र वसन्त ऋतु स्मर पर्यस्यक एष माधव—कु० ४।२८, स माधवेनाभिमतेन सख्या (अनुययौ) ३।७३ 3 वैशाख मास भास्करस्य मधुमाधवाविव रघु० ११।७ 4 इन्द्र का नाम 5 परशुराम का नाम 6 यादवों का नाम (ब० व०) शि० १६।५२ 7 सायण का पुत्र एक प्रसिद्ध ग्रन्थकर्ता, सायण और भावनाथ इसके भाई थे, लोगों की मान्यता है कि माधव पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। यह बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् था, कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना का श्रेय इसे प्राप्त है। ऐसा माना जाता है कि सायण और माधव दोनों ने मिल कर समग्र ऋग्वेद तथा कतिपय अन्य वेदों पर भाष्य लिखा—धौतस्मृतिसदाचारपालको माधवो वृषः, स्मार्त्त व्याकुरुते सर्वं द्विजार्थं धौत उद्यतः। जै० न्या० वि०। सम०—कवी=माधवी दे०, —श्री वसन्त कालीन सौन्दर्य।

माधवक [माधव+कन्] एक प्रकार की नशीली शराब (मधु से बनाई गई)।

माधविका [माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्व] माधवी लता। माधविका परिमललालिते गीत० १।

माधवी [मधु+अण्+ङीप्] 1. कस्तूरी खाँड 2 शहद से बनाया हुआ एक प्रकार का पेय 3 वासन्ती लता जिसके सुगंधित श्वेत फूल आते हैं पत्राणामिव शोषणेन भग्ना म्लुष्टा लता माधवी श० ३।१० मेघ० ७८ 4 तुलसी 5 कुटिनी, दूती। सम० —लता वासन्ती लता, वनम् माधवी लताओं का उद्यान।

माधवीय (वि०) [माधव+छ] माधवसम्बन्धी।

माधुकर (वि०) (स्त्री०—री) [मधुकर+अण्] भौंरे से सम्बद्ध या मिलता-जुलता, जैसा कि 'माधुकरी वृत्ति' में,—री 1 घर २ जाकर भिक्षा माँगना, जिस प्रकार मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर मधु एकत्र करती है 2. पाँच भिन्न २ स्थानों से प्राप्त भिक्षा।

माधुरक [मधुर+अण्] मल्लिका लता का फूल।

माधुरी [माधुर+ङीप्] 1 मिठास, मधुर या मजेदार स्वाद बदले तव यत्र माधुरी सा—भामि० २।१६१, —कामाक्षस्खर्वामाधरमाधुरीमधरयन् वाचा विपाको मम ४।४२, ३७।४३ 2 खींची हुई शराब।

माधुर्यम् [मधुर+ष्यञ्] 1 मिठास, सुस्वादुता—माधुर्यमीषे हरितान् ग्रहीतुम्—रघु० १८।१३ 2 आकर्षक सौंदर्य, उत्कृष्ट सौन्दर्य,—रूप किमप्यनिर्वाच्यं तनोर्माधुर्यमुच्यते 3 (काव्य० में) मिठास, (मम्मट के अनुसार) काव्य रचनाओं में पाये जाने वाले तीन मुख्य गुणों में से एक—चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते—सा० द० ६।६, दे० काव्य० ८ भी।

माध्य (वि०) [मध्य+अण्] केन्द्री, मध्यवर्ती।

माध्यन्दिनः [मध्यंदिन+अण्] वाजसनेयिसंहिता की एक शाखा, शब्द शुक्लयजुर्वेद की एक शाखा जिसका अनुसरण माध्यंदिन करते हैं।

माध्यम (वि०) (स्त्री०—मी) [मध्यम+अण्] मध्यवर्ती अक्ष से सम्बद्ध, केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बिल्कुल मध्य का।

माध्यमक (वि०) (स्त्री०—मिका), माध्यमिक (वि०) (स्त्री०—की) [मध्यम+वुञ्, ठक् वा] मध्यवर्ती, केन्द्रीय।

माध्यस्थ्यं, माध्यस्थ्यम् [मध्यस्थ+अण्, ष्यञ् वा] 1. निष्पक्ष 2. तटस्थता, उदासीनता—अभ्यर्थनाभङ्गभयेन माध्यस्थ्यमस्मिन्नेष्यवलम्बतेऽर्थे—कु० १।५२, 3 मध्यस्थीकरण, बीचबचाव करना।

माध्याह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [मध्याह्न+ठक्] दोपहर से सम्बन्ध रखने वाला।

माध्व (वि०) (स्त्री०—ध्वी) [मधु+अण्] मधुर, मीठा, —ध्वः [मध्व+अण्] मध्वाचार्य का अनुयायी, ध्वी एक प्रकार की शराब जो मधु से तैयार की जाती है।

माध्वीकम् [मधुना मधूकपुष्पेण निर्वृत्तम् ठक्] एक प्रकार की शराब जो महुआ वृक्ष के फूलों से

तैयार की जाती है—चषाम मधु माध्वीकम् भट्टि० १४।९४ 2. अंगूरों से खींची हुई शराब साध्वी माध्वीकचिन्ता न भवति भवत -गीत० १२ (=मधो—टी०) 3 अंगूर। सम०-फलम् एक प्रकार का नारियल।

मान् I (भ्वा० आ० 'मन्' का इच्छा०=मीमांसते) II (स्वा० पर०, चुरा० उभ०='मन्' का प्रेर०)

मानः [मन्+घञ्] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर विचार—मानद्रविणास्त्यक्ता—पञ्च० २।१५९, भग० ६।७, इसी प्रकार 'मानधन' आदि 2 गर्व (अच्छे भाव में) आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा—अस्मिन्नो मानहीनस्य तृणस्य च समागति पञ्च० १।१०६, रघु० १६।८१ 3 अहंकार, घमण्ड, अवलेप, आत्मविश्वास 4 सम्मान की आहत भावना 5 ईर्ष्यायुक्त क्रोध, डाह के कारण उद्दीप्त रोष (विशेषतः स्त्रियों में), क्रोध, मुच मयि मानमनिदानम्- गीत० १०, माद्यसे मा कुरु मानिनि मानमये—९, शि० ९।८४, भामि० २।५६—मम् 1 मापना 2 माप, मापदण्ड 3 आयाम, संगणना 4 मापदण्ड, मापने का डंडा, मानदण्ड 5 प्रमाण सत्ताधिकार, प्रमाण या प्रदर्शन के साधन,—येऽमी माधुर्योज्ज्वलप्रसादा रसमात्रघर्मतयोक्तास्तेषां रसधर्मत्वे किं मानम्—रस०, मानाभावात्, (विवादास्पद भाषा में बहुधा प्रयुक्त) 6 समानता, मिलना-जुलना। सम०—आलयः (वि०) दर्पवान्, अहंकारी, घमंडी,—उन्नतिः (स्त्री०) बहुत आदर, भारी सम्मान, उच्चादरः घमंड का नाश, -कलहः,—कृतिः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से उत्पन्न झगड़ा,—क्षतिः (स्त्री०)—क्षुः,—हानिः (स्त्री०) सम्मान को क्षति, दीनता, अपमान, अप्रतिष्ठा,—ग्रन्थिः सम्मान या गर्व की क्षति—द (वि०) 1 सम्मान करने वाला 2 घमंडी,—दण्डः मापने का डंडा, गज—स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड -कु० १।१, —धन (वि०) सम्मानरूपी धन से समृद्ध—महीयसो मानधना धनाश्रिता कि० १।१९,—नाशिका ककड़ी, —परिच्छेदनम् मानध्वंस, दीनता,—भङ्ग दे० 'मानक्षति', —महत् (वि०) गौरव से समृद्ध, अत्यंत दर्पीला —किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९,—योगः माप तोल की ठीक रीति—मनु० ९।३३०, रज्जुः एक प्रकार की जलघड़ी, एक छिद्रयुक्त जलकलश जो पानी में रखा हुआ धीरे धीरे भरता रहता है, उसी से समय की माप की जाती है, सूत्रम् 1. मापने की डोरी 2 (सोने की) जंजीर जो शरीर में पहनी जाय, करधनी।

मान-शिल (वि०) [मन शिला+अण्] मैनसिल से युक्त।

मानन,—ना [मान्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 सम्मान करना, आदर करना 2 हत्या—वि० १६।२।

माननीय (वि०) [मान्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित होने का अधिकारी (सब० के साथ) मेना मुनीनामपि माननीयाम् कु० १।१८, रघु० १।११।

मानव (वि०) (स्त्री० वी) [मनोरपत्यम् अण्] मनु से संबंध रखने वाला, या मनु के वंश में उत्पन्न मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रभविनारं सविताश्रम्—उत्तर० ३, मनु० १२।१०७ 2 मानवसंबंधी,—वः 1 मनुष्य, आदमी, इन्सान,—मनोर्वंशो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽभवत्, ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोजातास्तु मानवा—महा०, मनु० २।९, ५।३५ 3 मनुष्यजाति (ब० व०),—वम् एक विशेष प्रकार का दर्भ। सम०—इन्द्रः, वेधः, —पतिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु—रघु० १४।३२ धर्मशास्त्रम् मनुसंहिता, मनुस्मृति, राक्षसः मनुष्य के रूप में राक्षस या पिशाच तेऽमी मानवराक्षसा परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये—भर्तृ० २।७४।

मानवत् (वि०) [मान+मतुप्, वत्वम्] घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, दर्पवान्, ती घमंडी या दर्पोद्धत स्त्री (ईर्ष्या के कारण क्रुद्ध)।

मानव्यम् [मानव+यत्] (माणव्यम् भी) लड़कों का समूह।

मानस (वि०) (स्त्री०-सी) [मन एव, मनस इदं वा अण्] 1 मन से संबंध रखने वाला, मानसिक, आत्मिक (विप० शारीरिक) 2 मन से उत्पन्न, इच्छा से उदित कि मानसी सृष्टि—रघु० ४, कु० १।१८, भग० १०।६ 3 केवल मनसा विचारणीय, कल्पनीय 4. उपलक्षित, ध्वनित 5 'मानस' सरोवर पर रहने वाला—सः विष्णु का एक रूप,—सम् 1. मन, हृदय —सपदि मदनानलो दहति मम मानसम्—गीत० १०, अपि च मानसमण्डनविधि—भामि० १।११३, मानस विधयैव विना (भाति) ११६ 2 कैलास पर्वत पर स्थित एक पुनीत सरोवर—कैलासशिखरे रम्ये मनसा निर्मितं सरः, ब्रह्मणा प्राग्दिशं यस्मात्तदभून्मानसं सरः। रामा० (कहा जाता है कि यह सरोवर ही राजहंसों की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष प्रस्थानकाल के प्रारंभ होने के अवसर पर या बरसाती हवाओं के आगमन पर इस सरोवर के तट पर जा विराजते हैं—मेघश्यामा दिशो दृष्ट्वा मानसोत्सुकचेतसाम्, कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४, १५, यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसं संनिकृष्टं मास्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसा—मेघ० ७६ दे० मेघ० ११, घट० ९ भी) रघु० ६।२६, मेघ० ६२, भामि० १।३ 3 एक प्रकार का नमक; सम०—आलयः राजहंस, मराल, उत्क (वि०) मानसरोवर जाने के लिए उत्सुक मेघ० ११,—ओकस्,—वासिन् (पुं०) राजहंस—जन्मन् (पुं०) 1. कामदेव 2. राजहंस।

मानसिक (वि०) (स्त्री०-की) [मनस्+ठक्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, मानसिक,—कः विष्णु का विशेषण।

मानिका [मन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार की खींची हुई शराब 2. एक प्रकार का ढोल।

मानित (भू० क० कृ०) [मान+इतच्] सम्मानित, आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित।

मानिन् (वि०) [मान्+णिनि] 1 मानने वाला, समझने वाला, अभिमान करने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि 'पण्डितमानिन्' में 2 सम्मान करने वाला, आदर करने वाला (समास के अन्त में) 3 अभिमानी, घमण्डी आत्माभिमानी—पराभवोऽभ्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१, परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्—शि० १५।१ 4 आदरणीय, अतिसम्मानित —भट्टि० १९।२४ 5 अवज्ञापूर्ण, क्रोधयुक्त, रुष्ट (पुं०) सिंह, नी 1 आत्माभिमानिनी स्त्री, दृढ़ संकल्प वाली, पक्के निश्चयवाली, गर्वयुक्त (अच्छे अर्थों में)—चतुर्दिगीशाननमत्यभामिनी कु० ५।५३, रघु० १३।३८ 2 कुपित स्त्री, (ईर्ष्यायुक्त गर्व के कारण) अपने पति से रुष्ट—माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—गीत० १, कि० ९।३६ 3 एक प्रकार का सुगन्धयुक्त या महकदार तौथा।

मानुष (वि०) (स्त्री० -षी) [मनोरयम् अण्, सुक् च] 1 मनुष्य की, मानवी, इंसानी -मानुषी तनु, मानुषी वाक् रघु० १।६०, १६।२२, मेघ० ४।१२, ९।११, मनु० ४।१२४ 2 कृपालु, दयालु,—षः 1 मनुष्य, मानव, इंसान 2 मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण,—षी स्त्री,—षम् 1 मनुष्यत्व 2 मानव प्रयत्न या कर्म।

मानुषक (वि०) (स्त्री—की) [मानुष+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी,मरणशील, मर्त्य।

मानुष्यम्, मानुष्यकम् [मनुष्य—अण्, ष्यञ् वा] 1 मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानियत 2 मनुष्य जाति, मानव-संतति 3 मानवसमुदाय।

मानोज्ञकम् [मनोज्ञ+कन्] सौन्दर्य, प्रियता, मनोहरता।

मान्त्रिकः [मन्त्र+ठक्] वह जो मंत्र-तंत्र से सुपरिचित है, जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

मान्द्यम् [मन्दर+ष्यञ्] 1. मन्दरता, मन्दता, अकर्मण्यता 2. दुर्बलता।

मान्दारः, मान्दारकः [मन्दार+अण्] एक प्रकार का वृक्ष।

मान्द्यम् [मन्द+ष्यञ्] 1 मन्दता, सुस्ती, मन्थरता 2 जड़ता 3. दुर्बलता, निर्बल स्थिति, अग्निमांद्य 4 बिराम, अनस्वस्थता 5. रोग बीमारी, अस्वस्थता।

मान्धातृ (पुं०) [मां धास्यति—मान्+धे+तृच्] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा (जो पिता के पेट से उत्पन्न हुआ था), ज्योंही वह पेट से बाहर निकला कि ऋषियों ने पूछा 'कम् एष धास्यति', इस पर इन्द्र नीचे उतरा और उसने कहा "मां धास्यति", इसीलिए यह बालक 'मांधातृ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मान्मथ (वि०) (स्त्री०—थी) [मन्मथ+अण्] काम से संबंध रखने वाला या काम से उत्पन्न—अ,थार्थक विजयि मान्मथमार्गणाक्षतात्—मा० १।२६, २।४।

माप्य (वि०)[मान् अर्थायां कर्मणि ण्यत्] 1 मान करने के योग्य, आदरणीय—अहमपि तव मान्या हेतुभिस्तैश्च तैश्च—मा० ६।२६ 2. आदर किये जाने के योग्य, सम्माननीय, श्रद्धेय रघु० २।४५, मालवि० १।११।

मापनम् [मा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1 मापना 2. रूप बनाना, बनावा, वः तराजू।

मार्गणः [मां विद्धाते अपत्य यस्य] कामदेव।

मामक (वि०) (स्त्री०—मिका)[अस्मद्+अण्, ममकादेशः] मेरा मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला,—मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय—भग० १।१ 2 स्वार्थी, लालची, लोभी,—कः 1. कंजूस 2 माया।

मामकीन (वि०) [अस्मद्+खञ्, ममकादेश] मेरा —यो मामकीनस्य मनसो द्वितीयम् निवचनम्—मा० २, भामि० २।३२, ३।६।

मायः [माया अस्ति अस्य—माया—अच्] 1. जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक 2. राक्षस, भूत प्रेत।

माया [मीयते अनया—मा+य+टाप् वा० नेत्वम्] 1 धोखा, जालसाजी, कपट, धूर्तता, दंभ, युक्ति, चाल -पंच० १।३५९ 2 जादूगरी, अभिचार, जादू-टोना, इन्द्रजाल—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।७ 3. अवास्तविक या मायावी विश्व, कल्पनासृष्टि, मनोलीला, अवास्तविक आभास, छाया—मायां मयोद्भाव्य परीप्सितोऽसि—रघु० २।६२, प्रायः समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'मिथ्या' 'आभास' 'छाया' अर्थ को प्रकट करता है—उपा० मायाशब्दनम् 'मिथ्या शब्द', मायामृग आदि 4 राजनैतिक दावपेंच, चाल, युक्ति, कूटनीति की चाल 5. (वेदान्त० में) अवास्तविकता, एक प्रकार की भ्रान्ति जिसके कारण मनुष्य इस अवास्तविक विश्व को वास्तविक तथा परमात्मा से भिन्न अस्तित्ववान् समझता है 6 (सांख्य० में) प्रधान या प्रकृति 7 बुद्धिमत्ता 8. दया, करुणा 9 बुद्ध की माता का नाम। सम०—आचार धोखे से काम करने वाला, आत्मक (वि०) मिथ्या, भ्रान्तिमान्, उपजीविन् (वि०) जालसाजी और कपटपूर्ण जीवन बिताने वाला—पंच० १।२८८, —कारः, कृत्, -जीविन् (पुं०) जादूगर, बाजीगर

देवी बुद्ध की माता का नाम, °सुतः बुद्ध, °मय (वि०) कपटपूर्ण, भ्रमात्मक,-वटु (वि०) धोखा देने में कुशल, जालसाज, ठग,-प्रयोगः 1 धोखा, जालसाजी या दाँवपेंच का प्रयोग 2. जादू का प्रयोग, °मृग (वि०) मिथ्याहरिण, भ्रमात्मक या छाया मृग, °यन्त्रम् जादू-टोना, °योग जादू करना, °वचनम् झूठे या कपटपूर्ण शब्द,-°वादः भ्रान्ति का सिद्धांत इस सिद्धान्त के अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है, बुद्धवाद, °विद् (वि०) कपट जाल रचने में कुशल, या जादू की कला, °सुत बुद्ध का विशेषण।

मायावत् (वि०) [माया+मतुप्] 1 कपटपूर्ण, जालसाज 2 भ्रान्तियुक्त, अवास्तविक, भ्रमोत्पादक 3 इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति लगाने वाला पु० कंस का विशेषण, ती प्रद्युम्न की पत्नी का नाम।

मायाविन् (वि०) [माया अस्त्यर्थे विनि] 1 धोखेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटयुक्ति का प्रयोग करने वाला, धोखेबाज जालसाज-व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः -किं० १।३० 2 जादू के कार्य में कुशल 3 अवास्तविक, भ्रान्तिजनक, (पु०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर 2 बिल्ली, नपु० माजूफल।

मायिक (वि०) [माया+ठन्] 1 कपटमय, जालसाज 2 भ्रान्तिमान्, अवास्तविक, क० जादूगर, कम् माजूफल।

मायिन् (वि०) [माया+इनि] दे० मायाविन्, -पु० 1 बाजीगर 2 धूर्त, ठग 3 ब्रह्मा या काम का नामान्तर।

मायुः [मि+उण्] 1 सूर्य 2 पित्त, पैत्तिक रस (इस अर्थ में नपु० भी)।

मायूर (वि०) (स्त्री० री) [मयूर+अण्] 1 मोर से सबंध रखने वाला, या मोर से उत्पन्न होने वाला 2 मोर के पंखों से बना हुआ 3 (गाड़ी की भाँति) मोर द्वारा खींचा जाने वाला 4 मोर को प्रिय, रम् मोरों का समूह।

मायूरकः, मायूरिकः [मयूर+वुञ्, ठक् वा] मोर पकड़ने वाला।

मार [मृ+घञ्] 1 हत्या, वध, कतल अशेषप्राणिनामासीन्मारो दश वत्सरान् राजत० ५।६४ 2 बाधा, विघ्न, विरोध 3 कामदेव,-श्यामात्मा कुटिल करोतु कबरीभारोऽपि मारोद्यमम् गीत० 3 (यहाँ 'मार' का मुख्य अर्थ 'हत्या' है) नाग० १।१ 4 प्रेम, प्रणयोन्माद 5 धतूरा 6 अनिष्ट, (बौद्धों के अनुसार) विनाशक। सम० °अरि (वि०) 'प्रेमचिह्नित' प्रेम के संकेत करने वाला मारारब्धे रतिकेलिसंकुलरभारम्भे-गीत० १२, °जित् (पु० ?) बुद्ध का विशेषण, °रिः रिपु शिव, °आत्मक (वि०) हत्यारा -कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः कर्तव्यः हि० १, -°जित् (पु०) 1. शिव का विशेषण 2 बुद्ध का विशेषण।

मारकः [मृ+णिच्+ण्वुल्] 1 कोई घातक रोग, महामारी, 2. कामदेव 3 हत्या करने वाला, विनाशकर्ता 4 बाज।

मारकत (वि०) (स्त्री०-ती) [मरकत+अण्] पन्ने से संबद्ध,-काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् -हि० प्र० ४१।

मारणम् [मृ+णिच्+ल्युट्] 1 हत्या, वध, कतल, विनाश -पशुमारणकर्मदारुणः -शि० ६।१ 2 शत्रु का विनाश करने के लिए किया गया जादूटोना 3 फूंकना, राख कर देना 4. एक प्रकार का विष

मारि (स्त्री०) [मृ+णिच्+इन्] 1 घातकरोग, महामारी 2. हत्या, बर्बादी, विनाश।

मारिष (वि०) (स्त्री० षी) [मरिच+अण्] मिर्च का बना हुआ।

मारिष [मा रिष्यति हिनस्ति--मा+रिष्+क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति, आदरणीय, श्रद्धेय -दे० उत्तर० १, मा० १।

मारी [मारि+ङीष्] 1 प्लेग, घातक रोग, संक्रामक रोग 2 घातक या मारक रोगों की अधिष्ठात्री देवता दुर्गा।

मारीच (पु०) 1 ताड़का और सुन्द राक्षस की संतान, मारीच नाम का राक्षस। यह स्वर्णमृग का रूप धारण करके राम को सीता से दूर भगा ले गया जिससे कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिल गया 2 एक विशाल या राजकीय हाथी 3 एक प्रकार का पौधा,-कम् मिर्च की झाड़ियों का समूह।

मारुतः (पु०) 1 साप का अण्डा 2. गोबर 3 पथ, मार्ग, सड़क।

मारुत (वि०) (स्त्री०-ती) [मरुत्+अण्] 1. मरुत् संबंधी या मरुत् से उत्पन्न होने वाला 2 वायु से संबंध रखने वाला, वायवी, हवाई,-तः 1 हवा-रघु० २।१२, ३४, ४।५४, मनु० ४।१२२ 2 वायु का देवता, पवन की अधिष्ठात्री देवता 3. श्वास लेना 4 प्राण, शरीर के तीन मूल रसों (वात, पित्त, कफ) में से एक 5 हाथी की सूंड़,-तम् स्वाति नाम का नक्षत्र। सम०-°अशनः साँप-°आत्मजः-सुतः, -सूनुः 1 हनुमान् के विशेषण 2 भीम के विशेषण।

मारुतिः [मरुतोऽपत्यम्—इञ्] 1 हनुमान् का विशेषण रघु० १२।६० 2. भीम का विशेषण।

मार्कंडः, मार्कंडेयः [मृकण्डो अपत्यम्—अण्, मृकण्डु+ढक्] एक प्राचीन ऋषि का नाम। सम०—पुराणम् (इस ऋषि द्वारा प्रणीत) एक पुराण।

मार्ग् I (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मार्गति, मार्गयति-ते) 1 खोजना, ढूंढना 2 तलाश करना, पीछे पड़ना 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करते रहना—आत्मोत्कर्षं न मार्गेत परेषां परिनिन्दया, स्वगुणैरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृथग्जनात् सुभा० 4 निवेदन करना, प्रार्थना करना, याचना करना वरं वरेण्यो नृपतेरमार्गितं भट्टि० १।१२, याज्ञ० २।६६, 5 विवाह के लिए मांगना।

II (चुरा० उभ० मार्गयति ते) 1 जाना, हिलना-जुलना, 2 सजाना, अलंकृत करना। परि—, खोजना, ढूंढना।

मार्ग: [मार्ग्+घञ्] 1 रास्ता, सड़क, पथ (आल० भी) अस्मिंश्चरण्यमार्गमादेशय—श० ५, इसी प्रकार—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२, रघु० २।७२ 2 क्रम, रास्ता, भूखंड (जो पार कर लिया गया हो) वायोरिव परिग्रहस्य वदन्ति मार्गम्—श० ७।७ 3 पहुंच, परास—किं० १८।४० 4 किरण, मयूखेष्विव रघु० ४।४८ १४।४ 5 ग्रहपथ 6 खोज, पूछताछ, गवेषणा 7 नहर कुल्या, जलमार्ग 8 साधन, गति 9 सही मार्ग उचित पथ सुमार्ग, अमार्ग 10 पद्धति रीति, प्रणाली, क्रम, चलन—शैली—रघु० ७।७१, इसी प्रकार कुल° शास्त्र° धर्म० आदि 11 शैली, वाक्यविन्यास—इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दश गुणाः स्मृता काव्या० १।४१, वाचां विचित्रमार्गाणाम्—१।९ 12 मुद्रा, अलङ्कार 13 कस्तूरी 14 'मृगशिरस्' नाम का नक्षत्र 15 मार्गशीर्ष का महीना। सम० तोरणम् सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक महराबदार द्वार—रघु० ११।५, दर्शकः पथप्रदर्शक, देखने वाला, क्रमुकम् चार कोस की दूरी,—क्रमणम् रोक, आड़,—रक्षकः सड़क का रखवाला, सड़क पर पहरा देने वाला,—शोधकः दूसरे के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला, स्थ (वि०) यात्रा करने वाला, यात्री, हर्म्यम् राजपथ पर बना हुआ महल।

मार्गकः [मार्ग+कन्] मार्गशीर्ष का महीना।

मार्गणम्,—ना [मार्ग्+ल्युट्] 1. याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना 2 खोजना, तलाश करना, ढूंढना 3 गवेषणा करना, पूछताछ करना, जांचपड़ताल करना,—णः 1 भिक्षुक, अनुनय विनय करने वाला, साधु 2 बाण दुर्धारा स्मरमार्गणा—काव्य० १०, अमोघं तत्तादृशनखमुखमार्गणैर्यदस्य पौष्पैरपि वैमर्कजन्मुकम् नै० १।४६, विक्रम १।७७, रघु० २।१७, ६५ 3 'बाण' की संख्या।

मार्गशिरः मार्गशिरस्, (पु०) मार्गशीर्षः [मृगशिरा+अण्, मृगशीर्ष+अण्] (नवंबर और दिसंबर में पड़ने वाला) हिन्दुओं का नवां महीना जिसमें कि पूर्णचन्द्रमा मृगशिरस् नक्षत्र में विद्यमान है।

मार्गशिरी, मार्गशीर्षी [मार्गशिर+ङीष्, मार्गशीर्ष+ङीष्] मार्गशीर्ष के महीने में आने वाली पूर्णमासी का दिन।

मार्गिकः [मृगान् हन्ति—मृग+ठक्] 1. बाघी 2 शिकारी।

मार्गित (भू० क० कृ०) [मार्ग्+क्त] 1 खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पूछताछ किया हुआ, 2. जिसके पीछे २ फिरा गया हो, अभीष्ट, निवेदित।

मार्ज् (चुरा० उभ० मार्जयति-ते) 1 निर्मल करना, स्वच्छ करना, पोंछना—तु० मृज् 2 ध्वनि करना।

मार्जः [मृज् (मार्ज् वा)+घञ्] 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना 2. धोबी 3 विष्णु का विशेषण।

मार्जक (वि०) (स्त्री०—जिका) [मृज्+ण्वुल्] स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला, धोने वाला।

मार्जन (वि०) (स्त्री०—नी) स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला,—नम् 1 स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2 पोंछ देना, रगड़ कर मिटा देना 3 साफ कर देना, पोंछ डालना 4 उबटन से मल मल कर शरीर स्वच्छ करना 5 हाथ से या कुशा से शरीर पर जल के छींटे डालना, नः लोध्रवृक्ष, वा 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ करना 2 होम की आज्याहुति—मार्जनारी मदयति मार्जना मनयंति—मालवि० १।१८,—नी बुहारी, झाड़ी झाड़ या कुश।

मार्जारः (लः) बिलाव कपाले मार्जार पद न्यस्ते करालेलिहि शङ्कितं काव्य० १० 2 पक्षमार्जार। सम०—कन्दः मोर, करणम् एक प्रकार का मैथुन या रतिबन्ध।

मार्जारिकः 1 बिलाव 2. मोर।

मार्जारी 1 बिल्ली 2 मुश्क बिलाव, ओतु 3 कस्तूरी।

मार्जारीयः 1 बिलाव 2 शूद्र।

मार्जितम् (भू० क० कृ०) 1 स्वच्छ किया हुआ, मल-मल कर माजा हुआ, निर्मल किया हुआ 2 बुहारा हुआ, झाड़ या कुश से साफ किया हुआ 3 अलंकृत किया हुआ।

मार्जिता दही में घीनी और मसाले डाल कर बनाया गया स्वादिष्ट पदार्थ, श्रीखंड।

मार्तंडः 1 सूर्य अथ मार्तंड कि स खलु तुरगै सप्तभिरित—काव्य० १०, उत्तर० ६।३ 2 मदार का पौधा 3 सूअर 4 बारह की संख्या (मार्तंड भी)।

मार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) मिट्टी का बना हुआ, मिट्टी का,—कः 1 एक प्रकार का बड़ा 2 घड़े का

स्थलम्, पाली,—कम् मिट्टी का ओदा—सुरभ्यम्बे हरिपाली मालिकमकर्तीनिहन्तुकामम् माम् —भामि० २।४९।

मालवम् – मरुवकीलता।

मालवकः—दीलकिया, मृदंग बजाने वाला,—कम् नगर, कस्बा।

मालविकः –मृदंग बजाने वाला, ढोलकिया।

मालवम् मृदुता (ला० और आल०) लचीलापन, दुर्बलता - अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु - रघु० ८।४३, 'मृदु हो जाता है', स्वशरीरमार्दवम् कु० ५।१८ 2 नरमी, कृपा, कोमलता, उदारता - मनु० १६।२।

मालवीक (वि०) (स्त्री० की) अंगूरों से बनाया हुआ, —कम् शराब—शि० ८।३०।

मालिक (वि०)—गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, तत्त्व ज्ञानादिक से पूर्ण परिचित,(मर्मज्ञ दे०)—मालिक को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम् भामि० १।११७, २।८, ४।४०।

मार्ष: –दे० 'मारिष'।

मार्ष्टि: (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर माजना, निर्मल करना।

माल: 1 बंगाल के पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम में एक जिले का नाम 2 एक बर्बर जाति का नाम, पहाड़ी 3 विष्णु का नाम, -लम् 1 मैदान 2 ऊँची भूमि, उठी हुई या उन्नत की हुई भूमि (मालमुन्नतभूतलम्) क्षेत्रमाहुर्माल मेघ० १६ (शैलप्रायमुन्नतस्थलम् -मल्लि०) 3. धोखा, जालसाजी। सम०—कदलम् कूल्हे का जोड़।

मालक: 1 नीम का पेड़ 2 गाँव के पास का जंगल 3 नारियल के खोल से बना पात्र, कम् माला।

मालतिः, ती (स्त्री०) (सुगंधित श्वेत फूलों से युक्त) एक प्रकार की चमेली—तन्मन्ये क्वचिदज्ञ भुक्ततरुणैर्नास्वादिता मालती —मृच्छ०, जालकैर्मालतीनाम्—मेघ० ९८ 2 मालती का फूल शिरसि बकुलमाला मालतीभि: समेता—ऋतु० २।२४ 3 कली, सामान्य फूल 4 कन्या, तरुणी 5 रात 6 चाँदनी। सम०—आरक्त: सुहागा, पत्रिका जायफल का छिलका,—फलम् जायफल, माला मालती या चमेली के फूलों की माला।

मालज (वि०) (स्त्री० जी) मलय पर्वत से आने वाला, —ज: चंदन की लकड़ी।

मालव 1 एक देश का नाम, मध्यभारत में वर्तमान मालवा 2 राग का नाम, या स्वरग्राम की रीति, —वा: (ब० व०) मालवा प्रदेश के अधिवासी। सम०—अधीश:—ईश्वर:,—नृपति: मालवा का राजा।

मालवक. 1. मालव वासियों का देश 2 मालवा का निवासी।

मालवी –एक पौधे का नाम।

माला—1. हार, स्रक्, गजरा - अनधिगतपरिमलाऽपि हि हरति दृशं मालतीमाला - काव्य० 2. रेखा, पंक्ति, सिलसिला, श्रेणी या तांता गण्डोड्डीनालिमाला - मा० १।१, आबद्धमाला: - मेघ० ९ 3. समूह, झुरमुट, समुच्चय 4 लड़ी, कण्ठहार - जैसा कि 'रत्नमाला' में 5. जपमाला, जंजीर—जैसा कि 'अक्षमाला' में 6 लकीर, लहर, कौंध जैसा कि 'तडिन्माला' और 'विद्युन्माला' में 7 विशेषताओं का सिलसिला 8 (नाटक में) अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए नाना वस्तुओं का उपहार। सम० उपमा उपमा का एक भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना की जाती है उदा० अनयेनेव राज्यश्रीर्दैन्येनेव मनस्विता, मन्त्रौ साथ विवादेन पथिनीव हियाम्बसा - काव्य० १०, कर:, - कार: 1 हार बनाने वाला, फूल-विक्रेता, माली, कुती मालाकारो बकुलमपि कुशापि निदधे भामि० १।५४, पद्य० १।२२० 2 मालियों की एक जाति,—तृणम् एक प्रकार का सुगंधित घास, दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, मम्मट ने इसकी परिभाषा बताई है मालादीपकमाद्यं वेद्यैर्थैरनुगावहम् काव्य० १०, उदा० देखें उसी स्थान पर।

मालिक. 1 फूलों का व्यापारी, माली 2 रंगने वाला, रंगरेज।

मालिका 1 माला 2 पंक्ति, रेखा, सिलसिला 3 लड़ी, कण्ठहार 4 चमेली का एक प्रकार 5 अलसी 6 बेटी 7 महल 8 एक प्रकार का पक्षी 9 नाटक भेद।

मालिन् (वि०) 1 माला पहनने वाला 2 (समास के अन्त में) मालाओं से सम्मानित, हुआ। सुशोभित गजरों से लपेटा हुआ समुद्रमालिनी पृथ्वी, अब्दमालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्मिमालिन् आदि, नपु० फूलमाली, हार बनाने वाला, नी 1 फूलमालिन्, हार बनाने वाले की पत्नी 2 चम्पा नगरी का नाम 3 सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे 4. दुर्गा का नाम 5 स्वर्गंगा 6 एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट १।

मालिन्यम् 1 मैलापन, गंदगी, अपवित्रता 2 मलिनता, दूषण 3 पापपूर्णता 4 कालिमा 5 कष्ट, दुःख।

मालु: (स्त्री०) 1 एक प्रकार की लता 2 एक स्त्री। सम०—आस: एक प्रकार का साँप।

मालूर: 1 बेल का वृक्ष 2 कैथ का वृक्ष।

मालेया बड़ी इलायची।

माल्य (वि०) हार के उपयुक्त या हार से संबद्ध, ल्यम् 1 हार गजरा मालाओं का निर्वचन अज्ञान कु०

७।१९, कि० १।२१ 2. फूल- भग० ११।११, मनु० ४।७२ 3 सुमिरनी या शिरोभूषण। सम० आलयः फूलों की मंडी, कीटकः फूलकाढ़ी, मालाकार,—कुलम् पटसन,—वृत्तिः फूलों का व्यापारी।

मालवत् (वि०) माला धारण किए हुए, हारों से सुशोभित (पु०) 1 एक पर्वत या पर्वतश्रृंखला का नाम —उत्तर० १।३३, रघु० १३।२६ 2 सुकेतु का पुत्र एक राक्षस (माल्यवान् रावण का मामा और मंत्री था, उसकी बहुत सी योजनाओं में वह सहायता देता था, अपने पूर्वकाल में घोर तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लंकाद्वीप की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों वह अपने भाइयों समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लंका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लंका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब रावण ने कुबेर को निर्वासित कर दिया तो माल्यवान् फिर अपने बंधु-बांधवों समेत वहाँ आ गया और बरसों रावण के साथ रहा)।

मालव एक प्रकार की वर्णसंकर जाति।

मालवी कुश्ती या मुक्केबाजी की प्रतियोगिता।

माष 1 उड़द (एक वचन पौधे के अर्थ में तथा ब० व० फल या बीज के अर्थ में) लिलेख्य प्रतिबध्नाति माषान् सिद्धा० 2. सोने की एक विशेष तौल, माशा मायां विधानिमो मास पंचस्य परिकीर्तित—या—गुञ्जाभिर्वंशभिर्माष 3 मूर्ख, बुद्धू। सम० अद्रः, आढ़क कछुवा—आढ्यम् घी के साथ पकाये हुए उड़द, आस घोड़ा, ऊन (वि०) एक माशा कम, वर्धक, सुनार।

मासिक (वि०) (स्त्री० की) एक माशे के मूल्य का।

माषीणम्, माषीनम् उड़दों का खेत।

मास् (पु०) = मास देo (पहले पांच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि० के द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से 'मास' के स्थान में 'मास्' आदेश हो जाता है)।

मास, सम्—महीना (यह चांद्र, सौर, सावन, नाक्षत्र या बार्हस्पत्य में से कोई भी हो सकता है)—न मासे प्रतिपत्तासे मां चेन्मतांसि मैथिलि—भट्टि० ८।९५, 2 'बारह' की संख्या। सम० अनुमासिक (वि०) प्रतिमास होने वाला, अन्तः अमावस्या का दिन, —आहार (वि०) मास में केवल एक बार खाने वाला, —उपवासिनी 1 पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री 2 कुट्टिनी, लम्पट या दुश्चरित्र स्त्री (व्यवहारोक्तिपूर्वक), कालिक (वि०) मासिक, —जात (वि०) एक मास का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हो चुका है, —ज: एक प्रकार का जलकुक्कुट,—देय (वि०) जिसे महीने भर में चुकाना हो,—प्रवासिनः अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, प्रवेशः महीने का आरंभ,—शेषः वर्ष।

मासकः महीना।

मासरः उगले हुए आखों की पीच, मांड।

मासलः वर्ष।

मासिक (वि०) (स्त्री०—की) 1 महीने से संबंध रखने वाला 2 प्रतिमास होने वाला 3 एक महीने तक रहने वाला 4 एक महीने में चुकाया जाने वाला 5 एक महीने के लिए नियुक्त,—कम् प्रत्येक मृत व्यक्ति के लिए किया जाने वाला श्राद्ध (मनुष्य के मरने के प्रथम वर्ष में)—त्रिधा मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विधुर्बुधा।

मासीन (वि०) 1 एक मास की आयु का 2. मासिक।

मासुरी दाढ़ी।

मह् (भ्वा० उभ० माहति ते) मापना।

महाकुल (वि०) (स्त्री०—ली), महाकुलीन (वि०) (स्त्री—नी) 1 सत्कुलोत्पन्न, उत्तम कुल का, नामी घराने या प्रख्यात कुल का।

महाजनिक (वि० स्त्री०—की), महाजनीन (वि०) (स्त्री०—नी) 1 सौदागरों के लिए उपयुक्त 2 महाजनोचित, बड़े आदमी के योग्य।

महात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) उन्नत-मना, उदाराशय, उत्तम, महानुभाव, यशस्वी।

महात्म्यम् 1 उदाराशयता, महानुभावता 2 ऐश्वर्य, महिमा, उत्कृष्ट पद 3 किसी इष्ट देव या दिव्य विभूति के गुण, वा ऐसी कृति जिसमें इस प्रकार के देवी देवताओं के गुणों का वर्णन किया गया हो—जैसा कि देवीमाहात्म्य, शनिमाहात्म्य आदि।

महाराजिक (वि०) (स्त्री०—की) सम्राट् के उपयुक्त, साम्राज्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित।

महारत्नम् प्रभुता।

महाराज्ञी दे० महाराज्ञी।

माहिरः इन्द्र का विशेषण।

माहिष (वि०) (स्त्री—षी) भैंस या भैंसे से उत्पन्न या प्राप्त, जैसा कि 'माहिषं दधि'।

माहिषिकः 1 भैंस रखने वाला, ग्वाला 2 छिनाल या व्यभिचारिणी स्त्री का यार—माहिषीरयुच्यते नारी या च स्वयं व्यभिचारिणी, तां दृष्ट्वा कामयति य स वै माहिषिक स्मृत —कालिका पुराण 3 जो अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति पर निर्वाह करता है महिषीरयुच्यते नार्यो भोग्योपार्जितं धनम्, उपजीवति वस्तस्या. स वै माहिषिक स्मृत —वि० पु० पर श्रीधर०।

माहिष्मती एक नगर का नाम, हैहय राजाओं की कुलक्रमागत राजधानी—रघु० ६।४३।

माहिष्यः क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक मिश्र या वर्णसंकर जाति।

माहेय (वि०) (स्त्री० —यी) इन्द्र से संबंध रखने वाला कु० ७।८४, रघु० १२।८६, —यी 1 पूर्व दिशा 2 वाय 3 इन्द्राणी का नाम।

माहेय (वि०) (स्त्री० —यी) भौतिक, —यः 1 मंगल ग्रह 2. धूमा।

माहेयी वाय।

माहेश्वर: शिव की पूजा करने वाला।

मि (स्वा० उभ० मिनोति, मिनुते क्रीकिनलाहित्य में विस्तृत प्रयोग) 1 फेंकना, डालना, क्षेपण करना 2 निर्माण करना (मकान) खड़ा करना 3 बाधना 4. स्थापित करना 5. ध्यानपूर्वक देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना।

मिक्ष् (चुरा० पर० मिक्षयति) 1 मिश्र डालना, बाधा डालना 2 तंग करना।

मित (भू० क० कृ०) 1 नापा हुआ, तोला हुआ 2. साप कर निशान लगाया हुआ, हदबन्दी की हुई, सीमाबद्ध किया हुआ 3 सीमित, परिमित, सर्वादित, थोड़ा, स्वल्प, अधिक रखने वाला, संक्षिप्त (शब्द आदि) —पुष्टः सत्य मित ब्रूते स भृत्यांर्हो महीभुजाम्—मच० १।८७, रघु० ९।३४ 4. मापने में, माप का (समास के अन्त में) जैसा कि 'ग्रहवसुकरिकन्दमिते वर्षे' अर्थात् १८८९ 5 जांच पड़ताल किया हुआ, परीक्षित (दे० मा०)। सम० अक्षर (वि०) 1 संक्षिप्त, तोला-तुला, थोड़े में, सामासिक—कु० ५।६३ 2 छन्दोबद्ध, पद्यात्मक, अर्थ (वि०) नपे-तुले अर्थ वाला आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, (—रः) परिमित आहार, —भाषिन्,—भाष कम बोलने वाला, नपेतुले शब्दों में अपनी बात कहने वाला महीयास प्रकृत्या मितभाषिण - शि० २।१३।

मितङ्गम (वि०) धीरे-धीरे चलने वाला —मः हाथी।

मितव्यय (वि०) 1 नपा-तुला अन्न पकाने वाला, थोड़ा पकाने वाला 2. मितव्ययी, दरिद्र कंजूस।

मितिः (स्त्री०) 1 नापना, माप, तोल 2 यथार्थ ज्ञान 3 प्रमाण, साक्ष्य।

मित्र 1 सूर्य 2 आदित्य (इसका वर्णन प्रायः वरुण के साथ मिलता है), —म् 1 दोस्त—तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० २।६८, मेघ० १७ 2 मित्रराष्ट्र, पड़ौसी राजा तु० 'मण्डल'। सम० —आचार. मित्र के प्रति व्यवहार,—उदयः 1 सूरज का उगना 2 मित्र का कल्याण या समृद्धि,—कर्मन् (नपु०)—कार्यम्,—कृत्यम् मित्र का कार्य, मित्रता-पूर्ण कार्य या सेवा -रघु० १९।३१,—घ्न (वि०) विश्वासघाती, द्रुह्, द्रोहिन् (वि०) मित्र से घृणा करने वाला, मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला, झूठा या विश्वासघाती मित्र, —भावः मित्रता, दोस्ती, मेल' मैत्रीभाव, —वत्सल (वि०) मित्रों के प्रति कृपालु, शिष्टाचारयुक्त, हृत्या मित्र का व० करना।

मित्रक (वि०) 1. मित्रवत् आचरण करने वाला, हितैषी 2 स्नेहशील, मिलनसार।

मित्र् (ना० उभ० मेत्रयति—ते) 1 सहकारी बनना, 2 एकत्र मिलाना, मैथुन करना, जोड़ा बनाना 3 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, प्रहार करना, वध करना 4 समझना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, जानना 5 झगड़ा।

मिथस् (अव्य०) 1 परस्पर, आपस में, एक दूसरे का भतृ० २।१८७, (प्रायः समास में)—मिथः प्रस्थाने श० २, मिथ समयात् श० ५ 2 गुप्त रूप से, व्यक्तिगत रूप से, चुपचाप, निजी रूप से भर्तुः प्रसादं प्रतिपद्य मूर्ध्ना वक्तुं मिथः प्राक्रमतैवमेनम्—कु० ३।२, ५।१, रघु० १३।१।

मिथिलः एक राजा का नाम,— ला. (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—ला नगर का नाम, विदेह देश की राजधानी।

मिथुनम् 1 जोड़ा, दम्पती— मिथुन परिकल्पित त्वया सह-कार फलिनी च नन्दिनी रघु० ८।६१, मेघ० १८, उत्तर० २।६ 2 यमज, 3 समागम, संगम 1 मैथुन, सम्भोग, सहवास 5 मिथुन राशि 6 (व्या० में) उस वर्ग से युक्त धातु। सम० भाव 1 जोड़ी बनाना जोड़ा बनने की स्थिति 2 सम्भोग, स्थित् (वि०) सहवास करने वाला।

मिथुनेचर. चकवाक, चकवा तु० 'द्वन्द्वचर'।

मिथ्या (अव्य०) 1 झूठमूठ, धोखे से, गलत तरीके से, अशुद्धता के साथ बहुधा विशेषण का बल रखते हुए मयी महालीले इति प्रभावादल्पप्रमाणेऽपि यथा न मिथ्या रघु० १८।४२, यदुवाच न तन्मिथ्या १७।४२, मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोद कुत श० २।५ 2 विपर्यस्त रूप से, विपरीततया 3 निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्फलता के साथ - मिथ्या कारयते चारैर्घोषणा राजसाचिव भट्टि० ८।४४ भग० १८।५९, मिथ्या वद् (वच्) मिथ्या कहना, झूठ बोलना, मिथ्या कृ —, मिथ्या सिद्ध करना, मिथ्या भू —, झूठ निकलना झूठ होना, मिथ्या ग्रह, गलत समझना, भूल होना या करना समास के आरंभ में प्रयुक्त 'मिथ्या' का अनुवाद 'झूठा' असत्य, अवास्तविक, झूठमूठ, छलयुक्त, जाली आदि शब्दों से किया जा सकता है। सम०—अध्यवसिति· एक अलंकार जिसमें किसी असंभव घटना पर आश्रित होने के कारण किसी वस्तु की असंभावना की अभिव्यक्ति हो—किंचिन्मिथ्यात्वसिद्ध्यर्थं, मिथ्याध्यवसितिर्यत्र वर्ण्यते अलंक सर्व० बहुत कुव०, —अपवादः झूठा आरोप—अभिधानम् झूठी युक्ति

—अभिशंसनम् झूठा या मिथ्या आरोप, —अभिसंधानम् झूठा आक्षेप, मिथ्या दोषारोपण, —अभिहारः 1. झूठी भविष्यवाणी 2. झूठा या अन्याय्य दावा, —आचारः गलत या अनुचित आचरण, —आहारः गलत भोजन, —उत्तरम् झूठा या गोलमोल जवाब, —उपचारः बनावटी कृपा या सेवा, —कर्मन् (नपु०) झूठा कार्य, —कोपः, —कोधः झूठ मूठ का गुस्सा, —क्रयः मिथ्या मूल्य, —ग्रहः, —ग्रहणम् समझने में भूल होना, गलत समझना, —चर्या पाखंड, —जालम् असत्य, त्रुटि, गलतफहमी, —धर्मिन् पाखंडधर्म, नास्तिकता, —दृष्टिः (स्त्री०) मतविरोध, नास्तिकता के सिद्धान्तों को मानना, —पुरुषः छाया पुरुष, —प्रतिज्ञ (वि०) झूठी प्रतिज्ञा करने वाला, दगाबाज, —फलम् काल्पनिक लाभ, —भीतिः भ्रम, अशुद्धि, त्रुटि, —वचनम्—वादनम् मिथ्यात्व, झूठ, —वार्ता झूठा विवरण, —साक्षिन् (पु०) झूठा गवाह।

भिद् I (भ्वा० आ०, दिवा०, चुरा०, उभ० भेदते, भेदति-ते, भेदयति ते) 1 चिकना या स्निग्ध होना 2 पिघलना 3 मोटा होना 4 प्रेम करना, स्नेह करना।
II (भ्वा० उभ० भेदति —ते) दे० भिद्।

भिद्धम् 1 तन्द्रा, निठल्लापन, सुस्ती 2 जड़ता, निद्रालुता, मन्दता (उत्साह की भी)।

भिन्द् (भ्वा० चुरा० पर० भिन्दति, भिन्दयति) दे० भिद् II.।

भिन्द् (भ्वा० पर० भिन्दति) 1 छिदकना, तर करना 2 सम्मान करना, पूजा करना।

भिल् (तुदा० उभ० भिलति ते, साभ्यास भिलति, भिलित) 1 सम्मिलित होना, मिलना, साथ होना —समभवतो मिलित रत्न० ४ 2. आना या परस्पर मिलना, सम्मिलित होना, इकट्ठे होना, एकत्र होना ये चान्ये सुहृद समृद्धिमत्ये इत्यामिलाषाकुलास्ते सर्वत्र मिलन्ति हि० १।२१०, यतो कि न मिलन्ति अमर १०, मिलितशिखरीमुख ·· गीत० १, स पात्रे समितोऽन्यत्र भोजनान्मिलितो न य —विक्र० 3 मिश्रित होना, मिलना, संपर्क में आना —मिलति तव तोयमंगमद —गंगा० ७ 4 मिलना, मुकाबला करना (युद्धादि में) सहन होना, सटना, 5 घटित होना, होना 6 मिलना, साथ आ पड़ना — प्रेर० मेलयति—ते, एकत्र लाना, इकट्ठे होना, सम्मेलन बुलाना।

भिलनम् 1. सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर एकत्र होना 2 मुकाबला करना 3 सम्पर्क, मिश्रित होना, संपर्क में आना आलिलिलयमिलनेन परलमिव कलयति मलयसमीरम् गीत० ४।

भिलित (भू० क० कृ०) 1 एक स्थान पर आया हुआ, एकत्र हुआ, मुकाबला किया गया, मिश्रित 2. मिला हुआ, मुठभेड़ हुई 3. मिश्रित, 4 एक स्थान पर रक्खे हुए, संकेत ग्रहण किया हुआ।

भिलिन्दः मधुमक्खी, भौंरा —परिणामकरस्तदभिकाले जगति भवन्तु चिरायुषो मिलिन्दाः — भामि० १।८,१५।

भिलिन्दकः एक प्रकार का साँप।

भिल्ल (भ्वा० पर० भेलति) 1. शोर करना, कोलाहल करना 2 क्रुद्ध होना।

भिल्ल (चुरा० उभ० भिल्लयति —ते 'भिल्ल' की धा० धा०) मिलाना, गड्डमड्ड करना, जोड़ना, बोलना, संयुक्त करना, बढ़ाना- वार्च न भिल्लयति यद्यपि मे बचोभिः—शृ० १।३१, न भिल्लयति लोचने - भामि० २।१४०।

भिल्ल (वि०) 1. मिला हुआ, बोला हुआ, गड्डमड्ड किया हुआ, मिलाया हुआ · गवं एवं भिल्ल च सतं विवेक व्यवस्थितम्—काव्या० १।११, ३१, ३२, रघु० १६। ३२ 2 साथ लगा हुआ, संयुक्त 3. बहुविध, नाना प्रकार का 4 उलझा हुआ, अन्तर्वेलित 5. (समास के अन्त में) मिश्रणसमेत, अधिकांशतः युक्त, —ः 1 आदरणीय या योग्य व्यक्ति, यह शब्द प्रायः बड़े बड़े पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है - आर्यमिश्रा प्रमाणम्- मालवि० १, दामोदरमिश्र, मंडनमिश्र आदि 2 एक प्रकार का हाथी, —म् 1 मिश्रण 2 एक प्रकार की धूली, सम्भोग। सम० —ः अक्षर,—वर्ण (वि०) मिश्रित रंग का (—र्णम्) एक प्रकार की काली अगर की लकड़ी, —शब्दः अक्षर।

भिल्लक (वि०) 1 मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ 2 फुटकर, —कः संयोजक 3. व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट करने वाला,—कम् खारी मिट्टी से पैदा किया गया नमक।

भिल्लयत् मिलाना, बोलना, संयुक्त करना।

भिल्लित (भू० क० कृ०) 1. मिला हुआ, घुला हुआ, संयुक्त 2 बढ़ाया हुआ 3. आदरणीय।

भिष् I (तुदा० पर० भिषति) 1 आंख खोलना, झपकना 2 देखना, विवेकतापूर्वक देखना—आत्मेदो मुखात्मादी विवेतामाच्छिनत्ति न.—कु० २।४६ 3. प्रतिद्वंद्विता करना, होड़ लेना, प्रतिस्पर्धा करना, उद्—, 1. आंखें खोलना—उन्मिषन्निमिषन्नपि—भग० ५।९, 2 (आंखों की तरह) खोलना—कु० ४।२ 3 खुलना, खिलना, प्रफुल्लित होना 4 उदय होना 5 चमकना, जगमगाना, नि—, आंखें बन्द करना—भग० ५।९।
II (भ्वा० पर० भेषति) आई करना, तर करना, छिड़कना।

भिषः प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता,—क्षम् आंखों का झपकना, पलक,

दांकपंच, चालसाजी, झूठा आभास—बालमेलमेकेन निवेदनीय—वक्ष०, (उत्प्रेक्षा प्रकट करने के लिए बहुधा 'छल' की भांति प्रयुक्त होता है)—स रोमकूपोद्भिन्नाज्जगत्कृता कृतार्थश्च किं दूषणशून्यविन्दवः—नै० १।२१, बदने विनिवेशिता मुजङ्गी पिशुनानां रसनामिवेण धात्रा—भामि० १।१११।

मिष्ट (वि०) 1. मधुर 2 स्वादिष्ट, मजेदार—किं मिष्टमन्न खरसूकराणाम्, तु० व्हाई कास्ट पर्ल्स बिफोर स्वाइन' (Why cast pearls before the swine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद 3 तर किया हुआ, गीला किया हुआ,—ष्टम् मिष्टान्न, मिठाई।

मिह् (भ्वा० पर० मेहति, मीढ) 1 मूत्रोत्सर्ग करना 2 गीला करना, तर करना, छिड़कना 3. वीर्यपात करना।

मिहिका पाला, हिम।

मिहिरः 1 सूर्य —भयि तावन्मिहिरोऽपि निर्दयोऽभूत्—भामि० २।३४, यावते मध्यचिरन्निदाघमिहिरज्वालाक्षते क्षुब्धताम्—१।१६, नै० २।३६, १३।५४ 2 बादल 3 चन्द्रमा 4 हवा, वायु 5 बूढ़ा आदमी।

मिहिरात्मज, शिव का विशेषण।

मी । (क्रया० उभ० मीनाति मीनीते, श्रेष्ठ्य साहित्य में विरल प्रयोग) 1 मार डालना, विनाश करना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना 2 घटना, कम करना 3 बदलना, परिवर्तित करना 4 अतिक्रमण करना, उल्लघन करना ॥ (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मयति, मापयति—ते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 जानना, समझना (गतिमत्योर्थं) ॥। (चुरा० आ० मीपते) मरना, नष्ट होना।

मीढ (भू० क० कृ०) 1. मूत्रोत्सृष्टि, पेशाब किया गया 2 (मूत्र की भांति) बहाया गया।

मीढुष्टमः, मीढ्वस् (पु०) शिव का विशेषण।

मीनः 1 मछली - सुप्तमीन इव ह्रदः—रघु० १।७३, मीनेषु हन्त कतमा गतिमभ्युपैतु—भामि० १।१७ 2 बारहवीं अर्थात् मीन राशि 3 विष्णु का पहला अवतार दे० मत्स्यावतार। सम० अण्डम् मछली का अडा, मछली के अडो का समूह,—आघातिन्, घातिन् (पु०) 1. मछुवा 2 सारस, आलय समुद्र,—केतन कामदेव, —गन्धा सत्यवती का विशेषण, गन्धिका जोहड़, पत्वल,—रङ्कु,—रङ्क रामचिरेया, बहरी (एक शिकारी पक्षी)।

मीनराः मगरमच्छ नाम का समुद्री-दानव।

मीम् (भ्वा० पर० मीमति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 शब्द करना।

मीमांसक 1 जो अनुसधान करता है, पूछताछ करता है, अनुसधानकर्ता, परीक्षक 2 मीमासादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

मीमांसनम् अनुसधान, परीक्षण, पूछताछ।

मीमांसा गहन विचार, पूछताछ, परीक्षण, अनुसधान,—रसमज्ञाश्चरनाम्नी करोति कुतुकेन काव्यमीमांसाम्- रस०, इसी प्रकार दशक° अलकार° आदि 2 भारत के छ मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्वमीमासा, और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तरमीमासा या ब्रह्ममीमासा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमासा तो मुख्यत वेद के कर्मकाण्डपरक मत्रों की सही व्याख्या तथा वेद के मूलपाठ के सदिग्ध अशों का निर्णय करता है। उत्तर मीमासा मुख्यत ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अत पूर्वमीमासा को केवल 'मीमासा' के नाम से तथा उत्तरमीमासा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते है। उत्तरमीमासा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र की उत्तरार्धता की कोई बात नही है, इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है), मीमासाकृतमुन्मथ सहसा हस्ती मुनि जैमिनिम्—पच० २।३३।

मीर 1 समुद्र 2 सीमा, हद।

मील् (स्वा० पर०+मीलति, मीलित) 1 आंखें मूदना, पलकों को बन्द करना, आंख झपकाना, झपकी--पत्रे विभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनात् गीत० १० 2 मूदना, (आंख या फूलों का) मुदना या बन्द होना नयनयुगममीलत्- शि० ११।२, तस्या मिमीलतुर्नेत्रे-- भट्टि० १४।५४ 3 मुझाना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिलना, एकत्र होना--प्रेर० (मीलयति ते) बन्द करवाना, मुदवाना, (आंख या फूल आदि का) बन्द करना शेषान्मासान्यमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, आ—, प्रेर० बन्द करना, नेत्रे चामीलयन्—काद्या० २।११, उद्—1 आंखें खोलना—उदमीलीच्च लोचने भट्टि० १५।१०२, १६।८ 2 जगाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना शि० १०।७२ 3 फूलना, फूक मारना कि० ४।३, मा० १।३८ 4 प्रसृत किया जाना, फैलाया जाना, गुच्छे बनना, झुण्ड हो जाना उन्मीलन्मधुगध - गीत० १, उत्तर० १।२० 5 दिखाई देना, अकुर फूटना स वामूर्ध्वमूलो जल क्षितिरिति श्लोकयन्मुन्मीलति—प्रसाद० १।२, भामि २।७२ (प्रेर०) खुलना तदेतदुन्मीलय चक्षुरायत विक्रम० १।५, मृच्छ० १।३३ नि , 1 आंखें मूदना रघु० १२।६५ मनु० १।५२ 2 मृत्यु के कारण आंखें मूदना, मरना निमिमील नरात्तमधिया हतत्रपा तमसेव कौमुदी रघु० १।६८

4 (आँख या फूल आदि का) मूदना या बन्द होना - निमीलितानमिव एकजाताम् रघु० ७।६४ 5 ओझल होना, नष्ट होना, अस्त होना (आल०) नरेशे जीवलोकोऽयं निमीलति निमीलति—हि० ३।१४५, द्वौनिमीलितनक्षत्रा हरि० (प्रेर०) बंद करना, मूदना - उन्मीलिताऽपि दृष्टिर्निमीलितेवाभवत्कारेण मृच्छ० १।३३, न्यमिमीलदक्षिनयन मलिनी—शि० ९।११, लीलापद्म न्यमीलयत्—काव्या० २।२६१, कु० ३।३६ ५।५७, रघु० १९।२८, सम्—,बंद होना, मूदना (प्रेर०) 1 बन्द करना या मूदना, उपात्त सम्मिलितलोचनो नृप—रघु० ३।२६, १३।१० 2 मलिन करना, अंधेरा करना, धुंधला करना विकारः खलु चैतन्य भ्रमयति च समीलयति च उत्तर० १।३६।

मीलनम् 1 आँखो का मूदना, झपकना, झपकी लेना 2 आँखो का मूदना 3 फूल का बन्द होना।

मीलित (भू० क० कृ०) 1 बन्द, मुदा हुआ 2 झपकी हुई 3 अधखुला, बिना खिला 4 नष्ट हुआ, ओझल -तम् (अल० में) एक अलकार जिसके वीच का अन्तर या भेद उनकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता के कारण पूर्णरूप से अस्पष्ट रहता है, मम्मट इसकी परिभाषा करता है-- समेन लक्षणा वस्तु वस्तुना यत्र गृह्यते, निजेनागतुना वापि तन्मीलितमिति स्मृतम्—काव्य० १०।

मीव् (भ्वा० पर० मीवति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 मोटा होना।

मीढर सेना का नायक, सेनाध्यक्ष।

मीढा [मी+क्त] 1 पशुकुम, अजकीट, केंचुआ 2 वायु।

मु [मुच्+डु] 1 शिव का विशेषण 2 बन्धन, कैद 3 मोक्ष 4. चिता।

मुकन्धक: प्याज।

मुकुः [मुच्+कु, पृषो०] मुक्ति, छुटकारा, विशेषत मोक्ष।

मुकुटम् [मक्+उटन्, पृषो०] 1 ताज, किरीट, राज- मुकुट मुकुटरत्नमरीचिभिरस्पृशत् — रघु० ९।१३ 2. शिखा 3 शिखर, नोक या सिरा।

मुकुटी [मुकुट+ङीष्] अगुलियाँ चटकाना।

मुकुन्द [मुकुम् दाति दा+क पृषो० मुम्०] 1 विष्णु या कृष्ण का नाम 2. पारा 3 मूल्यवान् पत्थर या रत्न 4 कुबेर की नौ निधियो में से एक 5 एक प्रकार का ढोल।

मुकुरः [मक्+उरच्, उत्वम्] मुह देखने का शीशा—गुणिनामपि निजरूपप्रतिपत्ति परत एव सभवति, स्वमहिमदर्शनमफलो मुकुरतले जायते यस्मात्—काम०, शि० ९।७२, न० २२।४३ 2 कली, दे० 'मुकुल' 3 कुम्हार के चाक का डडा 4 मौलसिरी का पेड़।

मुकुलः,—लम् [मुच्+उलच्] 1 कली --आविर्भूत प्रथम-मुकुला कन्दलीष्वालुकच्छम्—मेघ० २१, रघु० ९।३१, १५।९९ 2. कली जैसी कोई वस्तु—आलक्ष्यदन्तमुकुलान् (तनयान्)—ऋ० ७।१७ 3 शरीर 4. आत्मा, जीव (मुकुलीकृ,—कली की भाति मूदना—कु० ५।६३)।

मुकुलित (वि०) [मुकुल+इतच्] 1 कलियो से युक्त, कलीदार, फूल 2 अधमुदा, आधाबद-- दरमुकुलित नयनसरोजम्—गीत० २, कु० ३।७६।

मुकुष्कः, मुकुष्टकः [मुकु+स्था+क, मुकुष्ट+कन्] एक प्रकार का लोबिया, मोठ।

मुक्तः (भू० क० कृ०) [मुच्+क्त] 1 ढीला किया हुआ, शिथिलित, मद या ढीला किया हुआ 2 स्वतन्त्र छोडा हुआ, आजाद किया हुआ, विश्राम दिया हुआ 3 परित्यक्त, छोडा हुआ त्यागा हुआ, एक ओर फेंका हुआ, उतार दिया हुआ 4 फेंका हुआ, डाला हुआ, कार्यमुक्त किया हुआ, ढकेला हुआ 5. गिरा हुआ, अवपतित 6 म्लान, अवसन्न 7. निकाला हुआ, उत्सृष्ट 8. मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मुच्),—क्तः जो सासारिक जीवन के बन्धनो से मुक्ति पा चुका है, जिसने सासारिक आसक्तियो को त्याग कर पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लिया है, जीवन्मुक्त सत, —सुप्तापिङ्गेन गीतेन युवतीना च लीलया, मनो न विद्यते यस्य स वै मुक्तो अथवा पशु --सुभा०। सम०—अम्बरः दिगंबर सम्प्रदाय का जैन साधु,—आत्मन् (वि०) जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पु०) 1. सासारिक वासनाओ और पापो से मुक्त आत्मा 2 वह व्यक्ति जिसकी आत्मा अधमुक्त हो गई है,—आसन (वि०) अपने आसन से उठा हुआ, कच्छः दौड़, कच्छुकः वह साँप जिसने अपनी केंचली उतार दी है, - कच्छ (वि०) दुहाई मचाने वाला (अव्य० क्षम्) फूट फूट कर, ऊँचे स्वर से, ओर से—रघु० १४।६८,—कर, हस्त वि०) उदार, खुले हाथ वाला, दानी, केशः (पु०) सिंह, -वासस् दे० मुक्तांबर।

मुक्तकम् [मुक्त+कन्] 1 अस्त्र आयुधास्त्र 2 सरल पद्य 3 एक पृथक्कृत श्लोक जिसका अर्थ स्वय अपने में पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३ - मुक्तक श्लोक एवंकश्चमत्कारक्षम सताम्।

मुक्ता [मुक्त+टाप्] 1 मोती—हारोऽय हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यवस्थेय के वय स्वरकिङ्करा अमरु १०० (यहा 'मुक्तानां' का अर्थ 'दोषमुक्त सत' भी है) मोती अनेक स्रोतों से उपलब्ध बतलाये जाते है परन्तु विशेष कर समुद्री सीपी से प्राप्त होते है, -करीन्द्र जीमूतवराहशखमत्स्यादि शुक्त्युद्भवेभ्योऽजनि, मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि--मल्लि०) 2. बेसवा,

पधिका । सम०—अलंकारः, आभारः मोती का घोंघा, —आवलिः,–ली (स्त्री०)—कलापः मोतियों का हार —जालः मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी – मेघ० ४६, रघु० १६।१८, आलम् मोतियों की लड़ी या करधनी, —दामन् (नपु०) मोतियों की लड़ी, पुटः एक प्रकार की चमेली, प्रसूः (स्त्री०) मोती की सुक्ति, प्रालम्बः मोतियों की लड़ी, फलम् 1 मोती —कु० १।६, रघु० ६।२८ १६।६२ 2 एक प्रकार का फूल 3 सीताफल या कुम्हड़ा 4. कपूर, मणिः मोती, मातृ (स्त्री०) मोती का घोंघा, लता, —लम्ब हारः मोतियों की माला, शुक्तिः स्फोटः वह आधा या सीपी जिसमें से मोती निकलते हैं ।

मुक्तिः (स्त्री०) [मुच्+क्तिन्] 1 छुटकारा, निस्तार, उन्मोचन 2 स्वातन्त्र्य, उद्धार 3 मोक्ष. आवागमन के चक्र से आत्मा का मोचन 4 छोड़ना, त्याग, परित्याग, टालना–ससर्गमुक्ति खलेषु भर्तृ० २।६२ 5 फेंकना, गिरा देना, छोड़ देना, मुक्त करना 6. आजाद करना, खोलना 7 ऋण मुक्त होना, ऋण परिशोध करना । सम० क्षेत्रम् वाराणसी का विशेषण, मार्गः मोक्ष का रास्ता, मुक्तः लोबान ।

मुक्त्वा (अव्य०) [मुच्+क्त्वा] 1 छोड़कर, परित्याग करके 2 सिवाय, छोड़ कर, बिना ।

मुखम् [खन्+अच्, डित् वाली पूर्व मुट् च] 1 मुँह (आल० से भी) आह्लादोऽस्य मुखमासीत् ऋक् – १०।९०।१२ सम्भूभङ्ग मुखमिव—मेघ० २४, त्व मम मुख भव -विक्रम० १, 'मेरे मुखपात्र या प्रतिनिधिवक्ता बनिये 2 चेहरा, मुखमण्डल परिवृत्तार्धमुखी मयाद्य दृष्टा—विक्रम० १।१७, नियमलाममुखी धृतैकवेणि श० ७।२१, इसी प्रकार चन्द्रमुखी, मुखचन्द्र आदि 3 (किसी जानवर की) थूथन, थूथनी या मोहरी 4 अग्रभाग, हरावल, पुरोभाग 5 किनारा, नोक, (बाण का) फल, प्रमुख पुरारिमभ्राप्तमुख शिलीमुख - कु० ५।५४, रघु० ३।५७, ५० 6 (किसी उपकरण का) की धार या तेज नोक 7 चूचुक, स्तनाग्र—कु० १।४०, रघु० ३।८ 8 पक्षी की चोंच 9 दिशा, तरफ जैसा कि 'दिङ्मुख, अन्तर्मुख' में 10 बिवर, द्वार, मुँह—नीवारा शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामम श० १।१४, नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८, कु० १।८ 11 प्रवेश द्वार, दरवाजा, गमन मार्ग 12 आरम्भ, शुरू, सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम् रघु० ३।१, विनमुखानिरविहिंसनिग्रहैर्विगलयन् मलय नगमत्यजत् –९।२५, ५।७६, घट० २ 13 प्रस्तावना, 14 मुख्य, प्रधान, प्रमुख (इस अर्थ में प्रयोग समास के अन्त में) अन्योन्मुक्त्यै खलु मत्तमुखान्कुर्वते कर्मपाशान् मालवि० ४।२१, इसी प्रकार 'इन्द्रमुखा देवा' आदि 15 सतह, ऊपरी पार्श्व 16 साधन 17 स्रोत, जन्मस्थान, उत्पत्ति 18 उच्चारण जैसा कि 'मुखसुख' में 19 वेद, श्रुति 20 (काव्य में) नाटक में अभिनयादि कर्म का मूलस्रोत, एक संधि । सम० अग्नि 1 दावानल 2 आग के मुख वाला बेताल 3 अभिमन्त्रित या यज्ञीय अग्नि 4 चिता में अन्त्याधान के अवसर पर शव के मुख पर रक्खी जाने वाली आग, अभिलः, उच्छ्वासः सांस, अस्त्र केकड़ा, आकारः चेहरा, मुखछवि, दर्शन,—आसवः अधरामृत,–आह्लावः, आस्रवः थूक, मुँह की लार, इन्दुः चन्द्रमा जैसा मुँह अर्थात् गोल सुन्दर मुख, उल्का दावानल, कमलम् कमल जैसा मुख, क्षुरः दांत,—गन्धक. प्याज—चपल (वि०) बातूनी, वाचाल,– चपेटिका मुंह पर लगाई जाने वाली चपत, चोरिः (स्त्री०) जिह्वा,–ज: ब्राह्मण, जाहम् मुंह की जड़, कण्ठ, –दूषणः प्याज, दूषिका मुहासा, निरीक्षक· सुस्त, आलसी, मुंह की ओर ताकने वाला, - निवासिनी सरस्वती का विशेषण,–पटः घूघट–कुर्वन् काम क्षणमुखपटप्रीतिमैक्षतस्य मेघ० ६२, पिण्डः (भोजन का) ग्रास, पूरणम् 1 मुंह को भरना 2 एक कुल्ला पानी, मुहभर, प्रसादः प्रसन्नवदन, मुख की प्रसन्नमुद्रा, प्रिय सतर्रा, बन्ध. भूमिका, प्रस्तावना, बन्धनम् 1 भूमिका 2 ढक्कन, आवरण, मूखवस्त्रम् पान लगाना-दे० ताबूल, भेद चेहरे का विकृत हो जाना, मधु (वि) मिष्टभाषी, मधुराधर, मार्जनम् मुंह धोना, वल्गनम् लगाम की मुखरी या वल्गा, राग. चेहरे का रंग रघु० १२।८, १७। ३१, लालूलः सूअर, लेप 1 (ढोलक के) ऊपरी भाग पर लेप करना 2 कफ प्रकृति वाले पुरुष की एक बीमारी, वल्लज अनार का पेड़, वाद्यम् 1 मुँह से बजाया जाने वाला बाजा, फूंक मार कर बजाया जाने वाला बाजा 2 मुँह से 'बम् बम्' शब्द करना, वासः, वासस् श्वास को सुगंधित बनाने वाला एक गंधद्रव्य, विलम्बिका बकरी, - व्याव्हानम् मुँह फाड़ना, जमाई लेना, शुद्ध (वि०) गाली देने वाला, अश्लीलभाषी, बदजबान,–शुद्धिः (स्त्री०) मुँह को धोना या निर्मल करना, शोधः राहु का विशेषण,–शोधन (वि०) 1 मुँह को स्वच्छ करने वाला 2 तीक्ष्ण, तीखा, (नः) चरपराहट, तीखापन, (नम्) मुँह को साफ करना, श्री (स्त्री) 'मुख का सौन्दर्य' प्रिय मुखमुद्रा, सुखम् उच्चारण की सुविधा, ध्वन्यात्मक सुख, सूरम् होठों की तरावट ।

मुखम्पचः [मुख+पच्+अच्, मुम्] भिखारी, साधु ।

मुखर (वि) [मुख मुखव्यापार कथन राति - रा +क] । बातूनी, वाचाल, वाक्पटु —मुखरा

सल्लेखा गर्भवासी रत्न २, मुखरतावसरे हि विराजते —कि० ५।१६ 3 कोलाहलमय, लगातार शब्द करने वाला, टनटन बजने वाला, (पायेब की भांति) रुनझुन करने वाला—स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकविपस्तै —रघु० ५।७२, अन्तः कूजन्मुखरशकुनो यत्र रम्यो वनान्त उत्तर० २।२५, २०, मा० ९।५, मुखरमधीरं त्यज मञ्जीर रिपुमिव केलिषु लोलम्—गीत०५, मृच्छ० १।३५ 3 ध्वननशील, अनुनादी, गूजने वाला (प्राय समास के अन्त में)—स्थानें-स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम् —उत्तर० २।१४, मच्छली मुखर-शिखरे (लताकुंजे) गीत० २, रघु० १३।४६ 4 अभिव्यजक या सूचक 5. अश्लीलभाषी, गाली देने वाला, बदजबान 6. उपहास करने वाला, हँसी दिल्लगी करने वाला (मुखरीकृ , शब्द करवाना, बुलवाना, प्रतिध्वनित करवाना), र 1 कौवा 2. नेता मुख्य या प्रधान पुरुष—यदि कार्यविपत्ति स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते हि० १।२९ 3 शख ।

मुखरयति (ना० धा० पर०) 1. प्रतिध्वनित या कोला-हलमय करना, गुजाना 2 बुलवाना या बातें करवाना, अत एव शुश्रूषा मां मुखरयति—मुद्रा० ३ 3 अभि-सूचित करना, घोषणा करना, अभिज्ञापन करना ।

मुखरिका, मुखरी [मुखर+कन् टाप्, इत्वम्, मुखर+ङीष्] लगाम की बल्गा, लगाम का दहाना ।

मुखरित (वि०) [मुखर+इतच्] कोलाहलमय या अनु-नादित किया हुआ, बजता हुआ, कोलाहलपूर्ण—गण्डो-ड्डीनालिमाला मुखरितककुभस्ताण्डवे शूलपाणे मा० १। १।

मुख्य (वि०) [मुखे आदौ भव —यत्] 1 मूख या चेहरे से सबध रखने वाला 2 बडा, प्रधान, प्रमुख, प्रथम, सर्व प्रधान, उत्तम, द्विजातिमुख्य, वारमुख्या, योधमुख्या आदि,—ख्य नेता, पथप्रदर्शक ख्यम् 1 प्रधान यज्ञकृत्य या धार्मिक सस्कार 2 वेदों का पठनपाठन । सम० अर्थः शब्द का मुख्य या मूल (विप० गौण) आशय,—आत्मन् मुख्य आत्र मास, नृपः नृपतिः प्रभुसत्ताप्राप्त राजा, सर्वोपरि प्रभु,—मन्त्रिन् (पु) प्रधान मत्री ।

मुगूह. एक प्रकार का जल कुक्कुट ।

मुग्ध (वि)० [मुह्+क्त] 1 अडीकृत, मूर्छित 2. हत-बुद्धि, प्रमत्तोन्मत्त 3 मूढ, अज्ञानी, मूर्ख, जड—अशास्त्रज्ञेन मुग्धेन सुखमाराध्यते भवान् —मालवि० २।२९ 4 सरल, सीधासादा, भोला-भाला—उत्तर० १।४६ 5 भूल करने वाला, भूल में पड़ा हुआ 6 बालोचित सरलता से मोहित करने वाला (अभी प्रेमरस से अपरिचित), बालसुलभ,—(क्) अप्रमाणवरत्यविनय मुग्धासु तपस्विकन्यासु श० १।२५, रघु० ९।३४, (अत) सुन्दर, प्रिय, मनोहर, कांत—हरिरिह मुग्ध-वधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे गीत० १, उत्तर० ३।५,—ग्धा कुमारी सुलभ भोलेपन से आकर्षक किशोरी, सुन्दर तरुणी, (काव्यकृतियों में यह एक नायिका का भेद माना जाता है) । सम०—अक्षी सुन्दर आँखों वाली युवती स्त्री,—आलापा सुन्दर मुख वाली, धी, बुद्धि, मति (वि०) मूर्ख, मूढ, जड, भोला-भाला, भावः सादगी, भोलापन ।

मुच् 1 (भ्वा० आ० मोचते) धोखा देना, ठगना, दे० मुच्च् ।

II (तुदा० उभ०—मुञ्चति-ते, मुक्त) शिथिल करना, मुक्त करना, छोडना, जाने देना, ढीला होने देना, स्वतत्र करना, छुटकारा करना (बन्धन आदि से) बभाय यक्षोधनो वेणुभूर्वेणुमोक्षे— रघु० २।१ ३।२०, मनु० ८।२०२, मोक्ष्यते सुरकन्दीना वेणीर्वीर्य-विभूतिभि —कु० २।६१, रघु० १०।४७, मा भवान-ज्ञानि मञ्चतु विक्रम० २, भगवान् करे आपके मन म्लान न हो —हतोत्साह न होइए' 2 आजाद करना, ढीला छोडना (वाणी की भांति)—कण्ठ मुञ्चति वहिण समदन मृच्छ० ५।१४, 'अपनी वाणी या कठ को ढील देता है अर्थात् चीत्कार करता है' 3 छोड़ना, परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड देना, एक ओर डाल देना, उत्सर्ग करना रात्रिर्गता मतिमतां वर मुञ्च शय्याम् - रघु० ५।६६, मुनिसुता प्रणयस्मृति-राधिना मम च मुक्तमिद तमसा मनः मा० ६।७, मं मुञ्चति कि च कैरवकुले मालवि० १।४, आवि-र्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रि - विक्रम० १।८, मेघ० ९६, ४१, रघु० ३।११ 4 अलग रखना, अप-हरण करना, अलग-न, दे० मुक्ता 5 डालना, फेंकना, उछाल देना, पटक देना, बोझा उतारना - मृगेषु शरान्मुमुचो रघु० ९।५८, भट्टि० १५।५३ 7 निका-लना, गिराना, उडेलना, टपकाना (आँसू) ढलकाना —अपसृतपाण्डुपुत्रा मुञ्चन्त्यसूयेव लता —मा० ४।११, चिरविरहज मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२, भट्टि० ७।२ 8 उच्चारण करना, बोलना मा० ९।५, भट्टि० ७।५७ 9 प्रदान करना, अनुदान देना, अर्पण करना 10 पहनना (आ०) 11 उत्सर्ग करना (मलमूत्र का)—कर्मवा० (मुच्यते) ढीला किया जाना, छुटकारा पाना, स्वतत्र होना, दोषमुक्त होना,—मुच्यते सर्वपापेभ्यः —प्रेर० (मोचयति-ते) 1. स्वतत्र या मुक्त कराना 2. गिरवाना 3. ढीला छोड़ना, आजाद करना, छुटकारा देना 4 उद्धार करना, छुडाना 5. बुरा हटाना, (घोडे आदि पर से) बोझ उतारना

6. प्रदान करना, अर्पण करना 7 प्रसन्न करना, आनन्दित करना -इच्छा० 1 (मुमुक्षति) मुक्त या स्वतंत्र करने की इच्छा करना 2. मुमुक्षते,-भोक्षते) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना। अव-,उतार देना, उड़ा देना आ,--1 पहनना, धारण करना, चारों ओर बांधना या कसना आमुञ्चतीवाभरण द्वितीयम् रघु० १३।२१, १२।८६, १८।७४, कि० ११।१५, आमुञ्चद्भर्म रत्नाढ्यम्—भट्टि० १७।२ 2 डालना, फेंकना, दागना आमोक्ष्यन्ते त्वयि कटाक्षान्—मेघ० ३५, उद्,—1 खोलना, रघु० ६।२८ 2. ढीला करना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना 3 उतारना, खींच ले जाना, एक ओर करना, छोड़ना, परित्याग करना--भट्टि० ३।२२ निस्, 1. स्वतन्त्र करना, आजाद करना, मुक्त करना हिमनिर्मुक्तयोर्योगे विधा चन्द्रमसोरिव - रघु० १।४६, भग० ७।२८ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना, परि—,1 स्वतन्त्र करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, —प्रेक्षोपरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा - ऋतु० ३।७, और० ९ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना प्र , 1 स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, 2 फेंकना, डालना, उछालना 3 गिराना, उत्सर्जन करना, बीज बिखेरना, प्रति , 1 स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, आजाद करना,—गृहीत-प्रतिमुक्तस्य रघु० ४।३३, अभु तुरङ्ग प्रतिमोक्तुमर्हसि - ३।४६ 2 धारण करना, पहनना 3 खाली कर देना छोड़ना, परित्याग करना, 4 फेंकना, डालना, दागना, वि—, 1 स्वतन्त्र करना, मुक्त करना 2 छोड़ देना, एक ओर डाल देना, परित्याग करना, खाली कर देना—विमुच्य वासांसि गुरूणि साम्प्रतम् ऋतु० १।७ 3 जाने देना, ढील देना भट्टि० ७।५० 4 अलग होना, अलग रखना, कु० ३।३१ 5 गिराना, (आँसू) ढलकाना- चिरमश्रूणि विमुच्य राघव --रघु० ८।२५ 6 फेंकना, डालना, सम्—,गिराना, भारमुक्त करना।

मुक्तकः सरल।

मुचुः (ब) कुन्दः 1 एक वृक्ष का नाम 2 मान्धाता के पुत्र एक प्राचीन राजा का नाम (देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता के बदले उसे बिना किसी रोक के लम्बी नींद का सुख प्राप्त करने का वरदान मिला था। देवों का आदेश था कि जो कोई उसकी नींद में विघ्न डालेगा भस्म हो जायगा। जब कृष्ण ने बलवान् कालयवन को मारना चाहा तो उसे मुचुकुंद की गुफा में धकेल दिया। वहाँ प्रविष्ट होते ही मुचुकुंद राजा की नेत्राग्नि से कालयवन भस्म हो गया)। सम० - प्रसादकः कृष्ण का विशेषण।

मुञ्जिरः [मुञ्ज्+किरच्] 1 देवता 2 गुण 3 वायु।

मुञ्जिलिम्बः एक प्रकार का फूल, तिलपुष्पी।

मुञ्जुटी 1 अंगुलियाँ चटकाना 2 मुक्का।

मुञ्ज्, मुञ्ज् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० भोजति, मुञ्जति, भोजयति - ते, मुञ्जयति ते) 1 स्वच्छ करना, निर्मल करना 2 शब्द करना।

मुञ्जः [मुञ्ज्+अच्] एक प्रकार का घास (जिससे कि ब्राह्मण की तड़ागी तैयार करनी चाहिए)—मनु० २।४३ 2 धारापति राजा मुंज का नाम (कहते हैं कि मुंज राजा भोज का चाचा था)। सम० केशः 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, केशिन् (पु०) विष्णु का विशेषण, कम्बलम् यज्ञोपवीत पहनना अर्थात् तड़ागी धारण करना, अर्थात् उपनयन संस्कार, वासस् (पु०) शिव का विशेषण।

मुञ्जारम् [मुञ्ज्+अरन्] कमल की रेशेदार जड़।

मुट् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० मोटति, मोटयति - ते) 1 कुचलना, तोड़ना, पीसना, चूरा करना 2 कलंकित करना, बुरा भला कहना (इस अर्थ में धातु तुदा० की भी है)।

मुड् (तुदा० पर० मुण्डति) प्रतिज्ञा करना।

मुण्ड् (स्वा० पर० मुण्डति) कुचलना, पीसना।

मुण्ड् I (स्वा० पर० मुण्डति) 1 क्षौर कर्म करना, मूंडना 2 कुचलना, पीसना। II (स्वा० आ० मुण्डते) डूबना।

मुण्ड (वि०) [मुण्ड्+अच्] 1 मुंडा हुआ 2 कतरा हुआ, छांटा हुआ 3 कुत्सित 4 असभ्य, नीच, ढ 1 जिसका सिर मुंडा हुआ हो या गंजा हो 2 मुंडा हुआ या गंजा सिर 3 मस्तक 4 नाई 5 पेड़ का तना जिसकी ऊँची ऊँची शाखाएँ छांट दी गई हों, डा किसी विशेष आश्रम की स्त्रीभिक्षुणी,—डम् 1 सिर 2 लोहा। सम०—अयस्कम् लोहा, कल्पः नारियल का पेड़,—मण्डली ऐसा जनसमूह जिनके सिर मुंडे हुए हों,—लोहम् लोहा,—आलिः एक प्रकार का चावल।

मुण्डकः [मुण्ड-कन्] 1. नाई 2 पेड़ का तना जिसकी बड़ी बड़ी शाखाएँ छांट दी गई हों, ठूंठ, —कम् सिर। सम०-उपनिषद् (स्त्री०) अथर्ववेद की एक उपनिषद् का नाम।

मुण्डनम् [मुण्ड्+ल्युट्] सिर मूंडना, मुंडन।

मुण्डित (भू० क० कृ०) [मुण्ड्+क्त] 1 मुंडा हुआ 2 कतरा हुआ या छांटा हुआ, मांगा हुआ,—तम् लोहा।

मुण्डिन् (पु०) [मुण्ड+इनि] 1 नाई 2 शिव का विशेषण।

मुत्यम् मोती।

मुद् I (चुरा० उभ० मोदयति--ते) 1 मिलाना, घोलना 2 स्वच्छ करना, निर्मल करना।

॥ (भ्वा० आ० मोदते, प्रेर० मोदयति ते, इच्छा० मुमुदिषते या मुमोदिषते) हर्ष मनाना, प्रसन्न होना, हृष्ट या आनन्दित होना यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिता भग० १६।१५, मनु० २।२३२, २९१, भट्टि० १५।९६, अनु, अनुमोदन करना, मजूरी देना, अनुमति देना, स्वीकृति देना, रघु० १४।४३, आ , 1 प्रसन्न या हर्षित होना, हर्ष मनाना 2 सुगन्धित होना, (प्रेर०) सुगन्धित करना, सुवासित करना, परिमलैरामोदयन्तो दिश भामि० १।५६, प्र ,अत्यत प्रसन्न होना बहुत खुश होना, रघु० ६।८६ मा० ५।२३।

मुद्, मुदा (स्त्री०) [मुद्+(भावे) क्विप्, मुद्+टाप्] हर्ष, आनद, प्रसन्नता, खुशी, सतोष पितुर्मुद तेन ततान सोऽर्भक रघु० ३।२५, अस्मन् पुरो हरितको मुदमादधान शि० ५।५८, १।२३, विषादे कर्तव्ये किमिति जडा प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।२५, द्विपरद मुदा गीत० ११, कि० ५।२५, रघु० ७।३०।

मुदित (भू० क० कृ०) [मुद्+क्त] प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, खुश, हर्षयुक्त, तम् 1 प्रसन्नता, आनद, खुशी हर्ष 2 एक प्रकार का मैथुनात्मिकालिङ्गन, सा हर्ष, आनद।

मदिर [मुद् । किरच्] । बादल प्रचुर पुरन्दरधनुरञ्जितनमेदुरमुदिर सुवेशम् गीत० २, या, मुञ्चसि नाद्यापि रुष भामिनि मुदिरालिरदियाय भामि० २।८८ 2 प्रेमी, कामासक्त 3 मेंढक।

मुदी [मुद्+क+ङीष्] ज्योत्स्ना, चादनी।

मुद्ग [मुद्+गक्] 1 एक प्रकार का लोबिया, मूग 2 ढकना, आवरण 3 एक प्रकार का समुद्री-पक्षु। सम० भुज्,—भोजिन् (पु०) घोडा।

मुद्गर. [मुद गिरति गृ+अच्] 1 हथौडा, मोगरी, जैसा कि 'बाहुमुद्गर' शकराचार्य कृत एक छोटा काव्य) में—रघु० १२।७३ 2 गदका, गदा 3 मिट्टी के ढेले तोडने वाली मोगरी 4 डम्बल, लोहे के छोटे मुग्दर 5 कली 6 एक प्रकार की चमेली (इस अर्थ में यह शब्द नपु भी होता है)।

मुद्गल. [मुद्ग+ला+क] एक प्रकार का घास।

मुद्गशब्द. (पु०) एक प्रकार की मूग।

मुद्रयति [मुद्+रा+ल्युट्, पृषो०] । मोहर लगाना, मुद्राकित करना, छापना, चिह्न लगाना 2 मूदना, बद करना।

मुद्रयति (ना० धा० पर०) 1 मोहर लगाना अथवा मुद्र या मुद्रयेनम् —मुद्रा० १ 2 मुद्राकित करना, चिह्न लगाना, अकित करना 3 ढकना, मूदना (आल०) —विकराणि मुद्रयन् द्रागूर्णायुरिव लज्जनो जयति —भामि० १।९०।

मुद्रा [मुद्+रक्+टाप्] । मोहर लगाने या मुद्राकित करने का उपकरण, विशेषत मोहर लगाने की अगूठी नामाकित अगूठी—अनया मुद्रया मुद्रयेनम् मुद्रा० १, नाममुद्राक्षरावेक्षणव्याज परस्परमवलोकयत श० १ 2 मोहर, छाप, अक, चिह्न चतुःसमुद्रमुद्र का० १९१, सिन्दूरमुद्राङ्कित (बाहु), गीत० ४ 3 प्रवेश-पत्र, छोतपारक (जैसा कि मुद्राङ्कित रूप में दिया जाता है) अगृहीतमुद्र काटकाग्निष्कामसि—मुद्रा० ५ 4 मोहर लगा सिक्का, रुपया पैसा आदि सिक्के 5 पदक, तमगा 6 प्रतिमा चिह्न, बिल्ला, प्रतीकात्मक चिह्न 7 बंद करना, मूदना, मोहर लगा देना सैवोष्ठमुद्रा स च कर्णपाश —उत्तर० ६।२०, क्षिपन्निद्रामुद्रा मदनकलहच्छेद सुलभाम् मा० २।१५ 8 रहस्य 9 धर्मनिष्ठ भक्ति में अगुलियों की विशिष्ट मुद्रा। सम० अक्षरम् 1 मोहर का अक्षर 2 टाइप (छापने के अक्षर—आधुनिक प्रयोग), कार. मोहर बनाने वाला,—मार्ग. मस्तक के बीच में होने वाला रध्र जिसके द्वारा (योगियों का) प्राणवायु बाहर निकल जाता है, ब्रह्मरध्र।

मुद्रिका [मुद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] मोहर लगाने की अगूठी दे० 'मुद्रा'

मुद्रित (वि०) [मुद्रा+इतच्] 1. मोहर लगा हुआ, चिह्नित, अकित, मुद्राकित त्याज सप्तसमुद्रमुद्रितमही निर्व्याजदानाधिप —महावी० २।३६, काश्मीरपुरित मुरो मधुसूदनस्य गीत० १, स्वय सिन्दूरेण द्विपरद मुद्रामुद्रित इव ११ 2 बन्द किया हुआ, मुहर बद 3 अनखिला।

मुधा (अव्य०) [मुह्+का, पृषो० ह्रस्व च:] 1, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थकता के कारण, बिना किसी लाभ के—यत्किंचिदपि सवीक्ष्य कुरुते हसित मुधा—सा० द० 2 गलत रीति से, मिथ्यारूप से—रात्रि सैव पुन. स एव दिवसो मत्वा मुधा जन्तव —भर्तृ० ३।७८ (पाठान्तर)।

मुनि: [मन्+इन्, उच्चै मनुते जानाति य.] 1 ऋषि, महात्मा, सन्त, भक्त, सन्यासी—मुनीनामप्यह व्यास भग० १०।३७, पुत्र शब्दो मुनिरिति मुहु केवल राजपूर्व - श० २।२४, रघु० १।८, ३।४९, भम० २।५६ 2 अगस्त्य मुनि का नाम 3 व्यास का नाम 4 बुद्ध का नाम 5 आम का पेड 6 'सात' की सख्या (द० द०) सप्तर्षि। सम०—अन्नम् (द० द०) सन्यासियों का भोजन,—इन्द्र:—ईश:,—ईश्वर: एक बडा ऋषि,—त्रयम् 'मुनित्रय' अर्थात् पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि (जो कि अन्त प्रेरणा प्राप्त मुनि माने जाते हैं)—मुनित्रय नमस्कृत्य या, त्रिमुनि व्याकरणम् सिद्धा०,—वित्तम् तांबा, वृक्ष:—महान् या प्रमुख ऋषि,—वृक्षक: 1 वंजनपक्षी 2 दमनक वृक्ष

+अनशनम् 1 धरना दे कर उपवास,—व्रतम् सन्यासी की प्रतिज्ञा—कु० ५।४८।

मुच्लृ (भ्वा० पर० मुचति) जाना, हिलना-डुलना।

मुमुक्षा [मोक्तुमिच्छा मुच्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] छुटकारे या मोक्ष की इच्छा।

मुमुक्षु (वि०) [मुच्+सन्+उ] 1. बरी या स्वतन्त्र होने का इच्छुक 2. कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3 (बाण आदि) छोड़ने को प्रस्तुत रघु० ९।५८ 4. सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक, मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील,—क्षुः मोक्ष के लिए प्रयत्नशील ऋषि—कु० २।५१, भग० ४।१५, विक्रम० १।१।

मुमुचानः [मुच्+आनच्, सन्वद्भावाद्द्वित्वम्] बादल।

मुमूर्षा [मृ+सन्+अ+टाप्] मरने की इच्छा—भट्टि० ९।५७।

मुमूर्षु (वि०) [मृ+सन्+उ] मरणासन्न, मृत्यु के निकट।

मुर् (तुदा० पर० मुरति) घेरना, अन्तर्वृत्त करना, परिवृत्त करना, लिपटना।

मुरः [मुर्+क] एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मार गिराया था, रस्सा परिवृत्त करना, घेरना। सम०—अरिः 1 कृष्ण का विशेषण—मुरारिमारादुपदर्शयन्—यसौ गीत० १ 2 'अनर्घराघव' नाटक का प्रणेता,—जित्, -द्विष्, भिद्, मर्दनः,—रिपुः,—वैरिन्, हन् (पु०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण—प्रकीर्णसूम्बिन्दुजयति भुजदण्डो मुरजित—गीत० १, मुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् १०।

मुरजः [मुरात् वेष्टनात् जायते -जन्+ड] 1 एक प्रकार का ढोल या मृदंग—सानन्द नन्दिहस्ताहत मुरजरव मा० १।१, संगीताय प्रहृतमुरजा—मेघ० ४४, ५६, मालवि० १।२२, कु० ६।४१ 2 किसी श्लोक की भाषा को मुरज के रूप में व्यवस्थित करना, मुरजबन्ध भी इसे ही कहते हैं काव्य० ९। सम०—फलः कटहल का पेड़।

मुरजा [मुरज+टाप्] 1. एक बड़ा ढोल 2 कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरण्डला एक नदी का नाम (इसे ही बहुधा 'नर्मदा' मानते हैं)।

मुरला [मुर+ला+क+टाप्] केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर० ३ में 'तमसा' के साथ इसका उल्लेख आता है) मुरलामारुतोद्धूत-मगमत् कैतक रज रघु० ४।५५।

मुरली [मुरम् अङ्गुलिवेष्टन लाति—मुर+ला+क+ङीष्] बांसुरी, वंशी, वेणु। सम०—धरः कृष्ण का विशेषण।

मुर्छ् (भ्वा० पर० मूर्छति, मूर्छित, या मूर्त, इस धातु को 'मूर्छ्' या 'मूर्च्छ' भी लिखते हैं) 1 ठोस बनाना, जमना, गाढ़ा होना 2. मूर्छित होना, बेहोश होना, मूर्छा जाना, अचेतन होना, संज्ञारहित होना—पतत्यु-च्चैरपि मूर्छत्यपि—गीत० ४ क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छित-जनाघातेन किं पौरुषम्—गीत० ३, भट्टि० १५।५५ 3 उगना, बढ़ना, बलवान् या शक्तिशाली होना—मुमूर्छ सहज तेजो हविषेव हविर्भुज—रघु० १०।७९, मुमूर्च्छ सस्य रामस्य १२।५७, मूर्छन्त्यमी विकारा प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१८ 4 बल एकत्र करना, मोटा होना, सघन होना तमसा निधिं मूर्छताम्—विक्रम० ३।७ 5 (क) प्रभाव डालना—छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२, (ख) छा जाना, प्रभावित करना—न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य रघु० २।३४ 6 भरना, व्याप्त होना, प्रविष्ट होना, फैल जाना—कु० ६।५९, रघु० ६।९ 7 ओढ़ का होना 8 बार बार होना 9 ऊँचे स्वर से शब्द करवाना—प्रेर० (मूर्छयति-ते) जड़ीभूत करना, मूर्छित करना—म्लेच्छोन्मूर्छयते—गीत० १, वि—, मूर्छित होना, बेहोश होना, सम्—, 1 मूर्छित होना, बेहोश होना 2 ताकतवर या शक्तिशाली होना, बलवान् होना, प्रबल होना, कि० ५।४१।

मुर्मुरः [मुर्+क पृषो० द्वित्वम्] 1 तुषाग्नि, तुष या भूसी से तैयार की हुई अग्नि स्मरहुताशनमुर्मुरचूर्णता रघुरिवाश्रवणस्य रज कथाः—शि० ६।६ 2 कामदेव 3 सूर्य का एक घोड़ा।

मुर्व् (भ्वा० पर० मुर्वति) बांधना, कसना।

मुसली [मुस्+अटन्+ङीष्, पृषो० सस्य ष] एक प्रकार का अन्न।

मुस्त (स)को छोटी छिपकली।

मुष् 1 (क्रया० पर० मुष्णाति, मुषित, इच्छा० मुमुषिषति) 1 चुराना, उठा लेना, लूटना, डाका डालना, अपहरण करना (द्विक० मानी जाती है, देवदत्त शत मुष्णाति परन्तु लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग), मुक्ताफलैः रत्नानि—शि० १।५१, ३।३८, क्षत्रस्य मुष्णन् वसु जैत्रभोज कि० ३।४१ 2 ग्रहण लगना, ढकना, लपेटना, छिपाना—मैन्यरेणुभूषितार्कदीधिति—रघु० ११।५१ 3 बन्दी बनाना, मुग्ध करना, लुभाना 4 पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना—मुष्णन्ति प्रियमशोकाना रक्तं परिजनाम्बरं, गीतैर्वराङ्गनाना च कोकिलभ्रमरध्वनिम्—कथा० ५५।११३, रत्न० १।२४, भट्टि० ९।३२, मेघ० ४७, परि—, लूटना, वंचित करना—परिमुषितरत्न त्रिभुवनम्—मा० ५।३०, प्र—, अपहरण करना, निस्तेज करना भट्टि० १७।६०।

II (स्वा० पर० मोषति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, हत्या कराना।

III (दिवा० पर० मुष्यति) 1 चुराना 2 लोपना, नष्ट करना—भट्टि० १५।१६।

मुषकः [मुष्+ण्वुल्] चूहा।

मुषल दे० 'मुसल'।

मुषा-षी [मुष्+क+अप्, ङीप् वा] कुठाली।

मुषित (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] 1. लूटा गया, चोरी किया गया, अपहृत 2 अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया 3 वञ्चित, मुक्त 4 ठगा गया, धोखा दिया गया—दैवेन मुषितोऽस्मि-का०।

मुषितकम् [मुषित+कन्] चुराई हुई सम्पत्ति।

मुष्क [मुष्+कक्] 1 अण्डकोष 2 पोता 3 बलिष्ठ तथा हृष्ट-पुष्ट पुरुष 4 राशि, ढेर, परिमाण, समुच्चय 5 चोर। सम०-देशः अण्डकोष का स्थान,—छिन्नः हिजड़ा, बधिया किया हुआ पुरुष,—शोफः पोतों की सूजन।

मुष्ट (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] चुराया हुआ—ख० ५।२०,—ष्टम् चुराई हुई सम्पत्ति।

मुष्टि (पु०, स्त्री०) [मुष्+क्तिच्] 1 भींचा हुआ हाथ, मुट्ठी-कणाप्तनेरय विभिदे निबिडोऽपि मुष्टि-रघु० ९।५८, १५।२१, शि० १०।५९ 2 मुट्ठीभर, जितना एक मुट्ठी में आवे, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितक श० ४।१४, रघु० १९।५७, कु० ७।६९, मेघ० ६८ 3 मूठ, दस्ता 4 एक विशेष तोल, (=एक पल के बराबर) 5 पुरुष का लिंग। सम०-ग्रहः मुट्ठी बाँधना 2. मुट्ठीभर,—युद्धम् मुक्केबाजी, घूंसेबाजी।

मुष्टिकः [मुष्टिर्मोचण प्रयोजनमस्य कन्] 1 सुनार 2 हाथों की विशिष्ट स्थिति 3 एक राक्षस का नाम, —क्रम् मुक्केबाजी, घूंसेबाजी। सम०-अग्रजः बलराम का विशेषण।

मुष्टिका [मुष्टिक+टाप्] मुट्ठी।

मुष्टिन्धयः [मुष्टि+धे+खश् मुम्] बच्चा, बालक, शिशु।

मुष्टीमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मुक्केबाजी, घूंसेबाजी, हस्ताहस्ति युद्ध।

मुष्णकः राई, काली सरसों।

मुस् (दिवा० पर० मुस्यति) फाड़ना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना।

मुसलः, लम् [मुस्+कलच्] 1 गतका, गदा 2 मूसल (चावल कूटने के काम आता है)—मुसलमिदमिव च पातकाले मुहुरनु याति कलेन हुडुतेन—मृच्छ० १।४, मनु० ६।५६। सम०-आयुधः बलराम का विशेषण, उलूखलम् मूसली और खरल।

मुसलामुसलि (अव्य०) [मुसलै मुसलं प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मूसल या गदाओं से लड़ना।

मुसलिन् (पु०) [मुसल+इनि] 1. बलराम का विशेषण 2 शिव का विशेषण।

मुसल्य (वि०) [मुसल+यत्] गदा से चूर-चूर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य।

मुस्त् (चुरा० उभ० मुस्तयति ते) ढेर लगाना, इकट्ठा करना, संग्रह करना, संचय करना।

मुस्ता,—स्तम्, —स्तः [मुस्त्+क, स्त्रियां टाप्] एक प्रकार की घास, मोथा विलम्बं क्रियता वराहतर्तिर्मुस्ता-मति. पत्चले—का० २।६, रघु० ९।५९, १५।१९। सम०-अद्रः अद्रः सूअर।

मुस्तम् [मुस्+रक्] 1 मूसली 2 आँसू।

मुह् (दिवा० पर० मुह्यति, मुग्ध या मूढ) मूर्छित होना, मूर्छित होना, चेतना नष्ट होना, बेहोश होना इष्टाद् इष्टवाद्वा वा स्मरशेव मुमोह स. भट्टि० ६।२१, ११२०, १५।१६ 2 उद्विग्न होना, बिल्कुल होना, घबराना 3 मूढ बनना, जड़ होना, मोहित होना 4 गलती करना, भूल होना—प्रेर० (मोहयति ते) 1 जड़ करना, मोहित करना—मा मुमुहत्कलु भवन्त-मनन्यजन्मा मा० १।३२ 2 अस्तव्यस्त करना, घबराना, उद्विग्न होना—भग० ३।२, ४।१६, परि—, घबराया जाना, उद्विग्न हो जाना (प्रेर० आ०) फुसलाना, बहकाना, ललचाना—भट्टि० ८।६३, प्र—, जड़ीभूत होना, मुग्ध होना, वि—, अव्यवस्थित होना, घबराना, उद्विग्न होना, बिल्कुल होना—भग० २।७२, ३।६, २७ 2 मुग्ध होना या मोहित होना, सम्—, 1 व्याकुल होना 2 मूर्ख या अज्ञानी होना (प्रेर०) मोहित करना, जड़ीभूत करना—अवर-मधुस्यन्देन सम्मोहिता गीत० १२।

मुहिर (वि०) [मुह्+किरच्] मूर्ख, मूढ, जड़, —रः 1 कामदेव 2 मूर्ख, मूढ़।

मुहुस् (अव्य०) [मुह्+उसिक्] बहुधा, लगातार, निरन्तर, बार बार—श्रीवाक्यक्षणिराम मुहुरनुपतति स्वन्वने रत्नदृष्टिः श० १।७, २।६, (इस अर्थ में प्रायः 'द्वित्व' कर दिया जाता है) मुहुर्मुहुः 1. बार बार, फिर फिर, प्रायः बहुशः मुहुर्मुहुर्यदिवाननेऽपि क. कूजति मुहुर्मुहुः 2. कुछ समय या क्षण के लिए, थोड़ी देर के लिए—मेघ० ११५, उत्तरोत्तर वाक्यखण्डों में 'अथ, अथ' 'एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है—मुहुरनुपतते वाता मुहु पतति विद्युता, मुहुराकम्पते भीता मुहु कोसति रोदिती सुभा०, मुहा० ५।१। सम०—गता,

चञ्चत् (नपु०) पिष्टपेषण, पुनरुक्ति, चञ्चु (पुं०) घोड़ा।

मुहूर्तः-र्तम् [हृष्टं+कर्त्र वातो पूर्वं भुट् च] 1. एक क्षण, समय का अल्पांश, निमिष--मंदाम्बुदामीकमुहूर्तलाञ्छने रघु० ३।५३, सख्याक्षरेणेव मुहूर्तरागा --शि० १।१९४, मेघ० १९, कु० ७।५० 2 काल, समय (शुभ या अशुभ) 3 अड़तालीस मिनट का काल,- ते ज्योतिषी।

मुहूर्तकः [मुहूर्त+कन्] 1 निमिष, क्षण 2 अड़तालीस मिनट का काल।

मू (भ्वा० पर० भवति) बांधना, अकड़ना, कसना।

मूक (वि०) [मू+कक्] 1. गूंगा, मौन, चुप्पा, वाक्-शून्य मूक करोति वाचालं, मूकाग्रहव (काननम्) --कु० ३।४०, सखीमिव वीक्ष्य विषादमूकाम् रोत० ७ 2. बेचारा, दीन, दुःखी, क 1 गूंगा - मौनान्मूक —हि० २।२६ (पाठांतर), मनु० ७।१४९ 2 बेचारा, दीन 3 मछली। सम०—अम्बा दुर्गा का एक रूप, - आवः चुप्पी, मूकता, वाक्शून्यता।

मूकित्वम् (पु०) [मूक+इयनिच्] गूंगापन, मूकता, चुप्पी।

मूढ (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1 जड़ीभूत, मोहित 2 उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल, सूझबूझ से हीन—कि कर्तव्यतामूढः 'करणीय कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति' इसी प्रकार 'ह्रीमूढ' मेघ० ९८ 3. मोहग्रस्त, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जड, अज्ञानी अस्यस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्—रघु० २।४७ 4 भ्रान्त, भ्रमपूर्ण, प्रतारित, विचलित 5 अपक्व-जन्मा 6 संशयोत्पादक, ढः मूर्ख, बुद्धू, मन्दमति, अज्ञानी पुरुष—मूढ परप्रत्ययनेयबुद्धि मालवि० १।२। सम०—आत्मन् 1 मन से जड़ीभूत 2 निर्बुद्धि, जड, मूर्ख,—गर्भः मृत गर्भ,—ग्राहः अड़चन डाल, गलत, विचारण, गलत धारणा, चेतस्, -चेतस् (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी—अवमन्यते मूढधेतसं त्रिय-नाथ हृदि शल्यमर्पितं रघु० ८।८८, धी, - बुद्धि, --मति (वि०) निर्बुद्धि, जड, मूर्ख, सौजालादा —कि० १।३०,—हृदय (वि०) मोहित, बौराया।

मूत (वि०) [मू+क्त] 1 बांधा हुआ, करता हुआ 2 जड़ी किया हुआ।

मूत्रम् [मूत्र्+घञ्] मूत्र, पेशाब, नाप्सु मूत्रं समुत्सृजेत्—मनु० ४।५६, मूत्र करना 'मूत्रा, समुत्सर्ग करना सम० -आशयः मूत्रसंबंधी रोग,—आशयः पेट के नीचे का स्थल जहां मूत्र भरा रहता है, उत्सङ्ग दे० 'मूत्रसंग',—कृच्छ्रम् पीड़ा के साथ मूत्र का आना, मूत्रकृच्छ्र, बूंद २ पेशाब का पीड़ा देकर आना, —ौकस्: अड़कोश, पोता,—ग्रहः मूत्र का साथ कम होना, अवरोधः, रुक्ष् मूत्र रुक जाने से पेट की सूजन, —रोग मूत्रसंबंधी रोग, विरोधः मूत्र का रुक जाना, —वसनः मधुमक्खी, पथः मूत्रनलिका, परीक्षा मूत्र-निरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना, पुटम् पेट का निचला भाग, मूत्राशय, मार्गः मूत्रनलिका मूत्रद्वार, वर्धक (वि०) अधिक पेशाब लाने की दवा, मूत्रल, शूलः, संग् मूत्रसंबंधी पीड़ा, सृज् पेशाब आने में रुकावट, पीड़ा के साथ रक्त पेशाब आना।

मूत्रयति (ना० धा० पर०) पेशाब, लघुशंका करना - तिष्ठन्मूत्रयति महा०।

मूत्रल (वि०) [मूत्र+ला+क] पेशाब लाने वाली (दवा), मूत्रवर्धक औषधि।

मूत्रित (वि०) [मूत्र+इतच्] मूत्र के रूप में निकला हुआ।

मूर्ख (वि०) [मुह्-ख, मूर् आदेश] जड़ मन्दमति, बुद्धू, मूढ, अनजान ख 1 मन्दमति, बुद्धू न तु प्रलिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् भर्तृ० २।९, ८, मूर्खबलावपरार्धिन मा प्रतिपादयिष्यसि विक्रम० 2 एक प्रकार का लोबिया। सम० भूयस् मूर्खता, जड़ता, अज्ञानता।

मूर्च्छन (वि०) (स्त्री०-नी) [मूर्च्छ्+णिच्+ल्युट्] 1 जड़ीभूत करने वाला, जड़ता या बेहोशी पैदा करने वाला, (कामदेव के एक बाण का विशेषण) 2 बढ़ाने वाला, वर्धन करने वाला, बल देने वाला,— नम् 1 मूर्छित होना, बेहोश होना 2. (संगी० में) स्वरा-रोहण, स्वरविन्यास, स्वरों का नियमित आरोहणाव-रोहण, सुचारु स्वरसंधान करना, लयपरिवर्तन करना, स्वरसामञ्जस्य, स्वरमाधुर्य —स्फुटीभवद्ग्रामविशेष-मूर्च्छनाम् शि० १।१०, भूयोभूय स्वयमपि कृतां मूर्च्छना विस्मरन्ति मेघ०८६, वर्णानामपि मूर्च्छना-नियतश्रुतिवृत्ति विरायते मृदु मृच्छ० ३।५, सप्त स्वरा-स्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनाश्चैकविंशति पंच० ५।५४ (मूर्च्छा या मूर्च्छना की परिभाषा क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहरवावरोहणम्, सा मूर्च्छनेत्युच्यते ग्रामस्था एता सप्त सप्त च, अधिक विवरण के लिए दे० शि० १।१० पर मल्लि०।

मूर्च्छा [मूर्च्छ् (भावे) अङ्+टाप्] 1 बेहोशी, संज्ञा हीनता-- रघु० ७।४४ 2 आरंभ अज्ञान या व्यामोह 3 धातु फूंक कर भस्म बनाने की प्रक्रिया,—मूर्च्छां गतौ मृतौ वा निदर्शनं पारदोऽत्र रस —भामि० १।८२।

मूर्च्छित (वि०) [मूर्च्छा+तच्] बेहोश, अचेत, चेतना-रहित।

मूर्छित (भू० क० कृ०) [मूर्च्छा आता अस्य-इतच्, मूर्च्छ् +क्त वा] 1 बेहोश, संज्ञाहीन, चेतनारहित 2 मूर्ख, जड, मूढ 3 बढ़ाया हुआ, वर्धित 4 प्रचंड

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5. उद्विग्न, व्याकुल 6. जरा हुआ, 7 फूका हुआ।

मूर्त (वि०) [मूर्च्छ्+क्त] 1. देहीय, सज्ञाहीन 2 जड, मूढ 3. शरीरधारी, मूर्तिमान्—मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथ.—श० १।३६, प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्श स्नेहार्द्रशीतल—उत्तर० ३।१४, रघु० २।६९, ७।७०, कु० ७।४२, पच० २।९९ 4 भौतिक, पार्थिव 5. ठोस, कड़ा।

मूर्ति: (स्त्री०) [मूर्च्छ्+क्तिन्] 1 निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु, भौतिक तत्त्व, द्रव्य, सत्त्व 2 रूप, दृश्यमान आकृति, शरीर, आकृति, मुद्रा० २।२, रघु० ३।२७, १४।४५ 3 मूर्तिमत्ता, शरीरधारण, प्रतिबिंब, स्पष्टीकरण—करुणस्य मूर्ति उत्तर० ३।४, पच० २।१५९ 4 प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, पुतला, बुत 5 सौन्दर्य 6 ठोसपना, कड़ापन। सम०—धर, —धर (वि०) शरीरधारी, मूर्तिमान् उत्तर० ६,—ध. प्रतिमा का पुजारी, जो किसी देव प्रतिमा के पूजाकृत्य में लगाया गया है।

मूर्तिमत् (वि०) [मूर्ति+मतुप्] 1 भौतिक, पार्थिव 2 शरीरधारी, देहवान्, साकार - शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया—श० ५।१५, तत्र मूर्तिमानिव महोत्सव कर—उत्तर० १।१८, रघु० १२।६४ 3. कड़ा, ठोस।

मूर्धन् (पु०) [मुह्यत्यस्मिन्नाहते इति मूर्धा—मुह्+कनि, उपधाया दीर्घो धोऽन्तादेशो रमागमश्च] 1 मस्तक, माँ 2 सिर,—नतेन मूर्ना हरिरग्रहीदप —शि० १।१८, रघु० १६।८१, कु० ३।१२ 3 उच्चतम या प्रमुख भाग, चोटी, शिखर, शृंग, सिर—अतिष्ठन्मनुजेन्द्राणा मूर्धनि देवपतिर्यथा —महा० "सब राजाओं के शीर्षभाग पर" आदि—भूम्या पर्वतमूर्धनि—श० ५।७, पच० १७ 4 (अत.) नेता, मुखिया, मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख 5 सामने का, हरावल, अग्रभाग—स किल सयुगमूर्ध्नि सहामता मघवत प्रतिपद्य महारथ —रघु० ९।१९। सम०—अक्ष: सिर का मुकुट,—अभिषिक्त (वि०) अभिमंत्रित, किरीटधारी, यथाविधि पद पर प्रतिष्ठापित,—रघु० १६।८१ (क्त:) 1 अभिमंत्रित या अभिषिक्त राजा 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष 3 मन्त्री 4 मूर्धाभिषिक्त (1)—अभिषेक: अभिमंत्रण, प्रतिष्ठापन,—अवसिक्त: 1 ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति 2 अभिमंत्रित राजा —कर्णी —कर्णरी (स्त्री०) छतरी, —ज: 1 (सिर के) बाल—पर्याकुला मूर्धजा —श० १।३०, विललाप विकीर्णमूर्धजा—कु० ४।४, 'शोकातिरेक में उस स्त्री ने अपने बाल नोच डाले' 2 अयाल,—ज्योतिस् (नपुं०) दे० ब्रह्मरन्ध्र या मुद्धा-मार्ग —द्रुम: शिरीष का पेड़,—रुह: उगले बालों का सांड,—वेष्टनम्, साफा, मुकुट, शिरोभूषण।

मूर्धन्य (वि०) [मूर्धि भव: - यत्] 1 सिर पर विद्यमान 2 मूर्धन्य अर्थात् मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण अ, आ, ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष्, झटुरषाणां मूर्धा 3 मुख्य, प्रमुख, सर्वोत्तम।

मूर्धन्वत् दे० 'मूर्धन्'।

मूर्वा, -र्वी, मूर्विका [मुर्च्छ+अच्+टाप्, ङीष् वा, मूर्वा +कन्+टाप् इत्वम्] एक प्रकार की लता जिसके रेशों से धनुष की डोरी या क्षत्रियों की (कटिसूत्र) तड़ागी तैयार की जाती है।

मूल् I (स्वा० उभ० मूलति—ते, जड़ जमना, दृढ़ होना, स्थिर होना II (चुरा० उभ० मूलयति—ते मूलित) पौधा लगाना, उगाना, पालना, जड़—,उखाड़ना, जड़ से काटना, मूलोच्छेदन करना—कि० १।४१, विनष्ट करना, विध्वंस करना, निस् —,जड़ से उखाड़ना, उन्मूलित करना।

मूलम् [मूल्+क] 1 जड़ (आल० से भी) —तस्यमूलानि गृहीमवन्ति तेषाम्—श० ७।२०, या, आश्रिनो भीतमूला: १।२०, मूलबन्ध् जड़ पकड़ना, जड़ जमना, —बद्धमूलस्य मूल हि महद्वैरतरो स्थिर—शि० २।३८ 2 जड़, किसीवस्तु का सबसे नीचे का किनारा या छोर—कस्यादिधदासीद्वसना तदानीम-इगुष्ठमूलार्पित बालयेषा—रघु० ७।१०, इसी प्रकार 'प्राचीमूले—मेघ० ९१ 3 नीचे का भाग या किनारा, आधार, किसी भी वस्तु का किनारा जिसके सहारे वह किसी दूसरी वस्तु से जुड़ी हो - आङ्गोर्ध्वलम्- शि० ७।३२, इसी प्रकार पादमूल, वर्णमूल, ऊरुमूलम् आदि 4. आरम्भ, शुरू - आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि श० १ 5 आधार, नींव, क्षोत, मूल, उत्पत्ति—सर्वेगार्हस्थ्यमूलका —महा०, 'रक्षोगृहे स्थितिर्मूलम्—उत्तर० १।६, इति केनाप्युक्त तत्र मूलं मृग्यम्, 'इसका क्षोत या प्रमाण मालूम किया जाना चाहिए' 6 किसी वस्तु का तल या पैर, पर्वतमूलम्, गिरिमूलम् आदि 7. पाठ, मूल सदर्भ (भाष्य से विविक्त) 8 पड़ोस, आस पास, सामीप्य 9. मूलधन, मूलपूजी 10 कुलक्रमागत सेवक 11 वर्णमूल 12 राजा का अपना निजी प्रदेश—स गुप्तमूलप्रबलस्त —रघु० ४।२६, मनु० ७।१८४ 13. विक्रेता जो स्वय विक्रेयवस्तु का स्वामी न हो—मनु० ७।२०२, (अस्वामिविक्रेता मूलम्०) 14. स्वारह तारकाओं का पुज जो सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवां (मूलनक्षत्र) है 15. छाती, आड़-आड़ाव 16. पीपरा मूल 17 अंकुकिरों की विशेष स्थिति। सम०—आधारम् 1 नाभि 2. जननेन्द्रिय के ऊपर एक रहस्य मय वृत,—आलवम्

मूली,—आवसतनम् मूल आवासस्थान—,आशिन् (वि०) जो कन्दमूलादि खाकर जीवित रहे,—आहृतम् मूली —उच्छेदः पूर्णध्वंस, पूर्णविनाश, पूरी तरह उखाड़ फेंकना,—कर्मन् (न०) जादू,—कारण मूलहेतु, आदि कारण, कु० ६।१३,—कारिका भट्टी, चूल्हा —कृच्छ्रः—कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपस्या, केवल जड़ें खाकर निर्वाह करना,—केशरः नीबू,—गुणः किसी मूल का गुणाक,—जः जड़ बोने से उत्पन्न होने वाला पौधा,(जम्) हरा अदरक,—देवः कंस का विशेषण —द्रव्यम् धनम् मूलधन, माल, वाणिज्यवस्तु, पूंजी, —धातुः लसीका,—निकृन्तन (वि०) जड़ से काट डालने वाला,—पुरुष 'पशुपाल' किसी परिवार का वंशप्रवर्तक पुरुष,—प्रकृति. (स्त्री०) सांख्यों का प्रधान या प्रकृति, -फलदः कटहल का पेड़,—भद्रः कंस का विशेषण,—भृत्यः पुराना तथा कुलक्रमागत सेवक,—यज्ञनम् मूलपाठ, -वित्तम् पूंजी, वाणिज्य वस्तु, माल, विभुजः रथ, शाकटः,—शाखिनम् वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मूल-पौधे बोये जाते हैं,—स्थानम् 1. आधार, नींव 2 परमात्मा 5 हवा, वायु,—स्रोतस् (नपु०) प्रधान धारा या किसी नदी का उद्गम स्थान।

मूलक:, -कम् [मूल+कन्] 1 मूली 2 भक्ष्य जड़, —कः एक प्रकार का विष। सम०—पोतिका मूली।

मूला [मूल+अच्+टाप्] 1 एक पौधे का नाम, सतावर 2. मूल नक्षत्र।

मूलिक (वि०) [मूल+ठन्] मूलभूत, मौलिक,—कः भक्त, संन्यासी।

मूलिन् (पु०) [मूल+इनि] वृक्ष।

मूलिन (वि०) [मूल+इन] जड़ बोने से उगने वाला।

मूली [मूल+ङीष्] एक छोटी छिपकली।

मूलेरः [मूल+एरक्] 1 राजा 2 जटामासी, बालछड़।

मूल्य (वि०) [मूल+यत्] 1 उखाड़ देने योग्य 2 मोल लेने के योग्य,—ल्यम् 1 कीमत, मोल, लागत—क्रीणन्ति स्म प्राणमूल्ययशांसि—शि० १८।१५, शान्ति० १।१२ 2 मजदूरी, किराया या भाड़ा, वेतन 3. लाभ 4. पूंजी, मूलधन।

मूष् (भ्वा० पर० मूषति, मूषित) चुराना, लूटना, अपहरण करना।

मूष [मूष्+क] 1 चूहा, मूसा 2 गोल खिड़की, मोखा रोशनदान।

मूषकः [मूष+कन्] 1 चूहा, मूसा 2. चोर। सम०—अराति: बिलाव,—आखुः गणेश।

मूषणम् [मूष्+ल्युट्] चुराना, चुपके से खिसका लेना, उठा लेना।

मूषा, मूषिका [मूष+टाप्, मूषिक+टाप्] चूहिया कुठाली।

मूषिकः [मूष्+किकन्] 1 चूहा 2 चोर 3 शिरीष का पेड़ 4 एक देश का नाम। सम०—अखुः,—अशन्यः —रथः गणेश के विशेषण,—अरिः बिलाव,—अराति: बिलाव,—उत्करः, स्थलम् बांबी।

मूषिकारः (पु०) चूहा।

मूषी, मूषीका, मूषीका [मूष+ङीष्, मूष्+ईकन्, स्त्रियां टाप् च] चूहा, मूसा, मूसी।

मृ (तुदा० आ०—[परन्तु लिट्, लुट्, लृट् और लृङ् में पर०] म्रियते, मृत) मरना, नष्ट होना, मृत्यु को प्राप्त होना, जीवन से विदा लेना—प्रेर० (मारयति —ते) वध करना, हत्या करना—इच्छा० (मुमूर्षति) 1 मरने की इच्छा करना 2 मरने के निकट होना, मरणासन्न अवस्था में होना, अनु—, बाद में मरना, मर कर अनुगमन करना—रघु० ८।८९।

मृक्ष् दे० भ्रक्ष्।

मृग् (दिवा० पर०, चुरा० आ० मृग्यति, मृगयते, मृगित) 1 ढूंढना, खोजना, तलाश करना, —न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् —कु० ५।४५, गता दूता दूर क्वचिदपि परेतान् मृगयितुम् —गंगा० २५ 2 शिकार करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 लक्ष्य बांधना, यत्न करना 4 परीक्षण करना, अनुसंधान करना—अविचलितमनोभि: साधकैर्मृग्यमाण - मा० ५।१, अन्तर्यत्नेन मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते—विक्रम० १।१, 'अन्दर से खोजा गया, और अनुसंधान किया गया' 5. मांगना, याचना करना—एतावदेव मृग्ये प्रतिपक्षहेतो: मा० ५।२०।

मृग. [मृग्+क] 1 जानवर, पशु—नाभिषेको न संस्कार: सिंहस्य क्रियते मृगै:, विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता। दे० नी० 'मृगाधिप' 2 हरिण, बारहसिंगा—विश्वासोपगमादभिन्नगतय: शब्दं सहन्ते मृगा —श० १।१४, रघु० १।४९, ५०, आर्यमृगोऽयं न हन्तव्य —श० १।३, आखेट 4. चन्द्रमा का लाञ्छन जो हरिण के रूप में लगा हुआ है 5 कस्तूरी 6 खोज, तलाश, 7 पीछा करना, अनुसरण, शिकार 8 पूछ ताछ, गवेषणा, 9. प्रार्थना, निवेदन 10 एक प्रकार का हाथी 11 मनुष्यों की एक विशिष्ट श्रेणी—मृगे तुष्टा च चिन्निभी, वदति मधुरवाणीं दीर्घनेत्रोऽतिभीरुश्चपलमतिसुवेह. क्षीघ्रवेगो मृगोऽयम्—शब्द० 12. 'मृगशिरा' नक्षत्र 13 'मार्गशीर्ष' का महीना 14 मकर राशि। सम० आली हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—अङ्कः 1 चन्द्रमा 2. कपूर 3 हवा,—अङ्गना हरिणी, अजिनम् मृगछाला,—अण्डजा कस्तूरी,—अद्

(पु०),—अधमः,—अन्तकः छोटा शेर या चीता, लकड़बग्घा,—अधिपः,—अधिराजः सिंह,—केशरी निष्ठुरक्षिप्तमृगवृन्दो मृगाधिप—शि० २।५३, मृगाधिराजस्य वधो निशम्य—रघु० २।४१,—अरातिः 1 सिंह 2 कुत्ता,—अरिः 1. सिंह 2 कुत्ता 3 शेर 4 बुध का नाम,—अशनः सिंह,—आजिन् (पु०) शिकारी,—आस्यः मकर राशि,—इन्द्रः 1 सिंह—ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३० 2 शेर 3 सिंह राशि °आसनम् सिंहासन °आस्यः शिव का विशेषण °उत्कः बाज पक्षी,—इक्षणा हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—ईक्षणः 1 सिंह 2. सिंहराशि,—उत्तमम्,—उत्तमाङ्गम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज, कानन्म् उद्यान,—कामिनी एक प्रकार का औषधद्रव्य, —जलम् मृगमरीचिका °स्नानम् मृगमरीचिका के जल में स्नान करना—अर्थात् असम्भावना, जीवनः शिकारी, बहेलिया,—तृष्, तृषा —तृष्णा, तृष्णिका (स्त्री०) मृगमरीचिका—मृगतृष्णाम्भसि स्नातः, दे० 'सपुण्य',—दंशकः कुत्ता,—दृश् हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री—तदीयदृष्टिस्तारि स्तनयुगलमासीन्मृगदृशः—उत्तर० ६।३५,—धूर्तः शिकारी,—द्विष् (पु०) सिंह,—धरः चन्द्रमा,—धूर्तः —धूर्तकः गीदड़, —नयना हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—नाभिः 1 कस्तूरी—कु० १।५४, ऋतु० ६।१२, चौर० ८, रघु० १७।२४ 2 हरिण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है—रघु० ४।७४, °जा कस्तूरी,—पतिः 1 सिंह 2 हरिण 3 शेर,—पालिका कस्तूरीमृग,—पिप्पः चन्द्रमा,—प्रभुः सिंह, बन्धः बाधोबः शिकारी,—बन्धिनी हरिणी को पकड़ने का जाल,—मदः कस्तूरी—कुचतटीगतो यावन्मात्रमिलति तव तोयैर्मृगमदः—गंगा० ७, मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे गीत० ७, °आसा कस्तूरी का बैला—यूथः हाथियों की एक श्रेणी, यूथिका हरिणी, यूथम् मकरराशि, यूथम् हरिणों का झुण्ड, राज् (पु०) 1 सिंह—शि० ९।१८ 2 शेर 3 सिंह राशि, राजः 1, सिंह—रघु० ६।३ 2 सिंह राशि 3 शेर 4 चन्द्रमा °वारिन्, °लक्षणम् (पु०) चन्द्रमा,—रिपुः सिंह,—रोमन् ऊन, °रोम् ऊनी कपड़ा,—लाञ्छनः चन्द्रमा—अङ्काधिरोपितमृगश्चन्द्रमा मृगलाञ्छन—शि० २।५३, °जः बुधग्रह,—लेखा चन्द्रमा में हरिण जैसी धारी—मृगलेखामुपवसेव चन्द्रमा —रघु० ८।४२, -लोचनः चन्द्रमा (—ना —नी) हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—वाहनः हवा,—व्याधः 1 शिकारी 2. तारामंडल या नक्षत्रपुंज 3 शिव का विशेषण,—शावः छौना, हरिण का बच्चा —मृगशावैः समयेधितो वनः—श० २।१८,—शिरः,—शिरस् (नपुं०) —शिरा पांचवें नक्षत्र (मृगशिरस्) का नाम जो तीन तारों का पुंज है,—शीर्षम् मृगशिरा नाम का नक्षत्रपुंज,(र्षः) मार्गशीर्ष का महीना,—शीर्षेण (पु०) मृगशिरा नाम का नक्षत्र,—श्वेष्टः शेर,—हन् (पु०) शिकारी।

मृगया [मृग्+युच्+टाप्] खोजना, तलाश करना, पूछताछ, अनुसंधान।

मृगया [मृग मार्गणया या चञ्यर्थे क] शिकार, पीछा करना—मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः—श० २।५, मृगयापवादिना माद्रव्येन ह० २ मृगयाशील, मृगयाविहारिन् आदि।

मृगयुः [मृग अस्त्यर्थे युच्] 1 शिकारी, बहेलिया हन्ति नोपशयस्थोऽपि शयालुर्मृगयुर्मृगान्—शि० २।८० 2 गीदड़ 3 ब्रह्मा का विशेषण।

मृगयेय [मृग+क्यच्+ड] 1 पीछा करना, शिकार करना—कि० १३।९ 2 निशाना, लक्ष्य।

मृगी [मृग+ङीष्] 1 हरिणी, मृगी 2. मिरगी रोग 3 स्त्रियों की एक विशिष्ट श्रेणी। सम०—दृश् (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आंखें हरिणी जैसी होती हैं, पतिः कृष्ण का विशेषण।

मृग्य (वि०) [मृग्+क्यत्] खोजे जाने या तलाश किये जाने योग्य, शिकार किये जाने के योग्य तव मूलम् मृग्यम्।

मृज्, (भ्वा० पर० मार्जति) शब्द करना।

II (अदा० पर०, चुरा० उभ० मार्ष्टि, मार्जयति-ते, इच्छा० मिमृक्षति या मिमार्जिषति) 1. पोंछना, धो डालना, स्वच्छ करना, साफ करना 2. बुहारी देकर साफ करना (आल० से भी) स्वेदलवान्यमार्ष्टु शि० ३।७९ 3 चिकना करना, (घोड़े आदि को) खरहरे से रगड़ना 4 सजाना, अलंकृत करना 5. निर्मल करना, पानी से धोना, साफ करना—अक्षुः सहस्रान्यमार्जुश्च यमयुश्च परस्परान् भट्टि० १४।९२, (शुद्धान् चक्षु या शोधितवन्त), अव—, 1. मलना, गुदगुदाना 2 धो डालना, उद्—, पोंछ देना, हटाना,—रघु० १५।३२, निस्—, पोंछना, धो देना, परि—, पोंछ डालना, धो देना, हटाना—(कर्म्म) स्वावेग परमाः परिमार्ष्टुमैच्छत्—रघु० १४।३४ 2. मलना, गुदगुदाना, प्र—, पोंछ डालना, हटाना, प्रायश्चित्त करना—स्वभावलोलेन यत्न प्रमृष्टम्—रघु० ६।३१, प्रविपाटलक्षत प्रमार्ष्टुकामा—विक्रम० ३, मालवि० ४, वि—, 1 पोंछ डालना, पोंछ देना 2 निर्मल करना, स्वच्छ करना सम्—, 1 बुहार कर साफ करना, निर्मल करना 2 पोंछ देना, पोंछ डालना, हटाना 3. मलना, गुदगुदाना 4 निचोड़ना, छानना।

मृजः [मृज्+क] 'मूरख' नाम का वाद्ययन्त्र।

मृज्जा [मृज्+अङ्+टाप्] 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, नहाना-धोना 2. स्वच्छता, निर्मलता —मनु० २।१३, शुद्धि 3. आकार-प्रकार, निर्मल त्वचा और स्वच्छ मुखमण्डल।

मृष्ट (वि०) [मृज्+क्त] धो डाला गया, स्वच्छ किया गया, हटाया गया।

मृडः [मृड्+क] शिव का विशेषण।

मृडा, मृडानी, मृडी [मृड+टाप्, मृड+ङीष्, पक्षे आनुक्] पार्वती का विशेषण- शङ्कु सुन्दरि कालकूट-मपिबत् मूढो मृडानीपतिः— गीत० १२।

मृध् (तुदा० पर० मृधति) वध करना, हत्या करना, नष्ट करना।

मृणालः,—लम् [मृण्+कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु— भङ्गेऽपि हि मृणालानामनुबध्नन्ति तन्तव —हि० १।९५, सूत्र मृणालादिव राजहंसी -विक्रम० १।१९, ऋतु० १।१९, विक्रम० ३।१३,—लम् सुगन्धित घास की जड़, वरिणमूल। सम—भङ्ग- कमलतन्तु का टुकड़ा, - सूत्रम् कमलवृन्त का तन्तु।

मृणालिका, °लिकी [मृणाल+कन्+टाप्, इत्वम्, मृणाल +ङीष्] कमलवृन्त या तन्तु—परिमृदितमृणाली-म्लानभङ्ग-भा० १।२२, या, परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४।

मृणालिन् (पु०) [मृणाल+इनि] कमल।

मृणालिनी [मृणालिन्+ङीष्] 1 कमल का पौधा 2 कमलों का समूह 3 जहाँ कमल बहुतायत से खिलते हों।

मृत (भू० क० कृ०) [मृ+क्त] 1 मरा हुआ, मृत्यु को को प्राप्त 2 मृतक जैसा, व्यर्थ, निष्फल मृतो दरिद्र पुरुषो मृतं मैथुनमप्रजम्, मृतमश्रोत्रियं श्राद्ध मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः- पञ्च० २।९४ 3 भस्म किया हुआ, फूँका हुआ—मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शन पारदोऽत्र रस —भामि० १।८२,—तम् 1 मृत्यु 2 भिक्षा में प्राप्त अन्न, दान या भिक्षा -दे० अमृतम् (८)। सम०—अङ्गन् शव,—अन्नः सूर्य,—अशौचम् किसी सम्बन्धी की मृत्यु से उत्पन्न अपवित्रता, अशौच, दे० 'अशौच',—उद्भवः समुद्र, सागर,—कल्प (वि०) मृतप्राय, बेहोश, -गृहम् कब्र, दारः रण्डवा, विधुर, —निर्वपणकः जो शवों को कब्रिस्तान में ढोकर ले जाता है,—भस्मः,—मस्तकः गीदड़,- संस्कारः अन्त्येष्टि या और्ध्वदेहिक कृत्य,- संजीवन (वि०) मुर्दों को जिलाने वाला (मन्त्र, - नी मुर्दों का पुनर्जीवित करना, (- नी) मुर्दों को जिलाने का मन्त्र, गण्डा या ताबीज, सूतकम् मरे हुए (मृत जात) बच्चे को जन्म देना,—स्नानम् किसी की मृत्यु होने पर स्नान करना।

मृतकः, कम् [मृत+कन्] मुर्दा शव -ध्रुवं ते जीवन्तो-ऽन्यहृद्द मृतका मन्दमतयो, न येषामानन्द जनयति जन-आधभणिति —भामि० ४।१९,— कम् किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाने पर उत्पन्न अशौच। सम०- अंशुकः गीदड़।

मृतच्छदः (पु०) सूर्य।

मृत्तालकम् [मृत+अल्+णिच्+क्वुल्] एक प्रकार की मिट्टी, पिंडोर या चिकना मृत्तिका।

मृतिः (स्त्री०) [मृ+क्तिन्] मृत्यु, मरण।

मृत्तिका [मृद्+तिकन्+टाप्] 1 पिंडोर, मिट्टी मनु० १।१८२ 2 ताजी मिट्टी 3 एक प्रकार की गन्धयुक्त मिट्टी।

मृत्युः [मृ+त्युक्] 1 मरण— जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु-ध्रुवं जन्म मृतस्य च—भग० २।२७ 2 मृत्यु का देवता यमराज 3 ब्रह्मा का विशेषण 4 विष्णु का विशेषण 5 माया का विशेषण 6 कलि का विशेषण 7 काम-देव। सम० - तूर्यम् एक प्रकार का ढोल जो और्ध्वदेहिक संस्कार के अवसर पर बजाया जाता है,—नाशकः पारा, —नाः शिव का विशेषण,—पाशः मृत्यु या यम का फन्दा —पुत्रः ईख, गन्ना, - प्रतिबद्ध (वि०) मरणशील, मर्त्य —बला, —ली केला,— वीजः, - वोजः बास,- राज् (प्र०) मौत का देवता, यमराज, - लोकः 1 मुर्दों की दुनिया, यमलोक 2 भूलोक, मर्त्यलोक—तु० 'मर्त्यलोक —वचनः 1. शिव का विशेषण 2 पहाड़ी कौवा, —सूति (स्त्री०) केकड़ी।

मृत्युञ्जयः [मृत्यु+जि+अच्, मुम्] शिव का विशेषण।

मृत्सा, मृत्सना [मृद्+स (स्न)+टाप्] 1 मिट्टी, पिंडोर 2 अच्छी मिट्टी या पिंडोर, चिकना मिट्टी 3 एक प्रकार की गन्धयुक्त मिट्टी।

मृद् (क्रया० पर० मृद्नाति, मृदित) 1 निचोड़ना, दबाना भींचना मम च मृदित क्षौम बाल्यत्वदङ्गविवर्तनै —वेणी० ५।४० 2 कुचलना, रौंदना, टुकड़े-टुकड़े कर देना, हत्या करना, नष्ट करना, पीस देना, रगड़ देना, चकनाचूर कर देना—तानमर्दीदलादीन्द्र— भट्टि० १५।१५, बालान्यमृद्नाल्लिनाभवक्त्र - रघु० १८।५ 3 मसलना, गुदगुदाना छिलना, स्पर्श करना - शि० ४।६१ 4 जीत लेना, आगे बढ़ जाना 5 पोंछ देना, रगड़ देना, हटाना, अभि , निचोड़ना, भींचना, कुचलना, अव- रौंदना, कुचलना, उप-, 1 निचोड़ना भींचना 2 नष्ट करना, मार डालना, कुचल देना —यामिकाननुपमृद्य नै० ५।११०, परि—, भींचना निचोड़ना—परिमृदितमृणाली दुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ 2 मार डालना, नष्ट करना 3 पोंछ देना, रगड़ देना, प्र , कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या कर देना, वि , 1 भींचना, निचोड़ना 2 चक-नाचूर करना, कुचलना, पीसना -मनु० ४।७० 3 मार

डालना, नष्ट करना, सम्—, इकट्ठा कर लिचोड़ना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या करना।

मृद् (स्त्री०) [मृद्+क्विप्] 1 चिरौंजी, मिट्टी, मिट्टी का गारा—आमोद कुसुमभवं मृदेव खलु मृद्भवं न हि-कुसुमानि धारयन्ति—सुभा०, प्रभवति शुचिर्निम्नोद्गाहे मणिर्न मृदा चयः उत्तर० २।४ 2 मिट्टी का ढेला, चिकनी मिट्टी का लौंदा 3 मिट्टी का टीला 4. एक प्रकार की सुगन्धित मिट्टी। सम०—कण्डः मिट्टी की डली या लौंदा,—करः कुम्हार, कांस्यम् मिट्टी का बर्तन, गः एक प्रकार की मछली, —घटः (मृण्मय) मिट्टी का ढेर,—घट्टः कुम्हार, पात्रम्,—भाण्डम् मिट्टी का बर्तन, चिकनी मिट्टी के बने पात्र, पिण्डः मिट्टी का लौंदा, —बुद्धिः 'आलसी' बुद्धू, —मया च मत्पितृबुद्धिना तथैव गृहीतम्—श० ६, —लोष्टः मिट्टी का ढेला, शकटिका (मृच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी; (शूद्रक द्वारा लिखित इस नाम का एक नाटक)।

मृदङ्ग [मृद्+अगच् किच्च] 1 एक प्रकार का ढोल या मृदंग, डफली 2 बाँस। सम०—फलः कटहल का वृक्ष।

मृदर (वि०) [मृद्+अरच्] 1 कीड़ाधीन, खिलाड़ी 2 क्षणभङ्गुर, क्षणिक, अस्थायी।

मृदा दे० 'मृद्' (स्त्री)।

मृदित (भू० क० कृ०) [मृद्+क्त] 1 मींचा हुआ, निचोड़ा हुआ—सुरतमृदिता बालवनिता—मनु० २।६४ 2 कुचला गया, पीसा गया, पीस डाला गया, रौंदा गया, मार डाला गया 3 दबा दिया गया, हटाया गया (दे० मृद्)।

मृदिमा [मृद्+क+इमनिच्] नम्रता, चिकनी मिट्टी।

मृदु (वि०) (स्त्री०—दु,—दवी) [मृद्+कु] (म० अ० म्रदीयस्, उ०अ० म्रदिष्ठ) 1 चिकना, कोमल, पतला, लचीला, सुकुमार—मृदु तीक्ष्णतर मनुष्यते तदिह मन्मथ दुष्यते त्वयि—माल०वि० ३।२, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते प्रजान्तक—रघु० ८।४५, ५७ शि० १।१०, ४।१०, 2. कोमल, सुकुमार, नम्र न खरो न च भूयसा मृदुः—रघु० ८।९, बाण कृपामृदुमना प्रनिसजहार—९।४७ 'दया के कारण कोमल मन वाला' ११।८३, श० ६।१ महर्षिमृदुतामगच्छत् रघु० ५।५४, 'दयार्द्र' खातमूलमभितो नदीरयैः पातयत्यपि मृदुस्तटद्रुमम् ११।७६, 'मृदु और मन्द पवन भी' 3 दुर्बल, कमजोर—सर्वथा मृदुरसौ राजा—हि० ३, ततस्ते मृदवोऽभूवन् गन्धर्वा खर-पीडिता—महा० 4. मधुर, श्रुत,—दुः ग्रहनिग्रह, —दु (अव्य०) कोमलता से, मन्दस्वर में, मधुर ढंग से —स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचर श० १।२३, वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५। सम०—अङ्ग (वि०) कोमल अंगों वाला, (—अङ्गम्) टीन, जस्ता (—ङ्गी) कोमल अंगों वाली स्त्री, —उत्पलम् कोमल अर्थात् नीलकमल, —कार्मुकलक्षम् सीसा, कोष्ठ (वि०) नरम कोठे वाला जिसे हल्के विरेचन से दस्त आ जाय,—मवस (वि०) भद्र या आलसपूर्ण चाल वाला, (सा) हल्दी, राजहंसी, —चर्मन्,—छदः, त्वच्, त्वचः (पु०) एक प्रकार के भोजपत्र का वृक्ष,—पत्र सरकण्डा या नरकुल,—पर्वकः, पर्वन् (नपु०) नरकुल, बेंत, —पुष्पः शिरिष का वृक्ष,—पूर्व (वि०) जो आरम्भ में मंद हो, स्निग्ध हो, सौम्य तथा सुहावना हो, —भाषिन् (वि०) मधुर बोलने वाला, —रोमन् (पु०) —रोमकः खरगोश,—स्पर्श (वि०) छूने में नरम।

मृदुलकम् [मृद्+उद्+ली+ड+कन्] सोना, स्वर्ण।

मृदुल (वि०) [मृदु+लच्] 1 स्निग्ध, कोमल, सुकुमार 2. मृदु, सरल, साधु,—लम् 1. जल 2 अगर की लकड़ी का एक भेद।

मृद्वी, मृद्वीका [मृदु+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् च] अंगूरों की बेल या गुच्छा—आच तदीया परिणीय मृद्वीकया तुल्यरसां स हंस—नै० ३।६०, माघ० ४।१३, ३७।

मृद्ग् (भ्वा० उभ० मर्दति-ते) गीला होना, या गीला करना।

मृध्र [मृद्+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई—सस्वविहिनमनुल मृधवोर्बलमस्य पस्मत मृधेऽधिकुप्यतः कि० १२।३९, रघु० १३।६५, महावी० ५।१३।

मृण्मय (वि०) [मृद्+मयट्] मिट्टी का बना हुआ, रघु० ५।२।

मृद्ग् (चुरा० पर० मर्दयति, मृष्ट) 1 स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना 2 मलना, गुदगुदाना 3 सोचना, विमर्श, विचार करना, अभि—, स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना, आ—, स्पर्श करना, हाथ लगाना, हाथ डालना (आत्मने० से भी); नवातपामृष्टसरोजवासभि—कि० ५।१४, करालनख्या मुहुरामृशन्ती—कु० ३।६४, शि० ५।३४ 2. अपहृत करना, आ जाना—रघु० ५।९ 3 आक्रमण करना, हमला करना; आमृष्ट न पद पटै—कु० २।३१, परा—, 1. स्पर्श करना, मलना, गुदगुदाना; परामृशन् हर्षजडेन पाणिना तदीयमङ्ग पुलिन्दसन्निधौ—रघु० ३।६८, शि० १७।११, मृच्छ० ५।२८ 2. किसी पर हाथ डालना, आक्रमण करना, हमला करना, पकड़ लेना—मृच्छ० १।३९, 3. दूषित करना, भ्रष्ट करना, बलात्कार करना, 4 विचार विमर्श करना, चिंतन करना—किं भविष्येति सहसा पदुजनमना परामृशति—मालवि० २।५३ 5. मन से सोचना, कल्पना करना—प्रस्तावरम्भे विघ्नविघातायं समुचितेष्टदेवता प्रस्तुतपरामृशति—काव्य० १, परि—, 1 स्पर्श करना, जरा छू जाना—शिखरदशनैः परिमृष्टदेशवोष्ठम्—भट्टि० १०।४५ 2. ग्रास करना, वि—,

1 स्पर्श करना 2 चिन्तन करना, सोचना, विचार करना, मनन करना—वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धा स्वयमेव संपदः कि० २।३०, रामप्रवासे व्यमृशन्न दोषं जनापवाद सतरेरुदमूलयम्—भट्टि० ३।७, १२।२४, कु० ६।८७, मृग० १८।६३ 3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, पर्यवेक्षण करना 4 परीक्षा लेना, परीक्षण करना—तदत्रभवानिमं मां च शास्त्रे प्रयोगे च विमृशतु—मालवि० १।

मृष् i (म्वा० पर० मर्षति) क्षिप्तकरना ii (भ्वा० उभ० मर्षति-ते) बर्दाश्त करना, सहन करना—आदि (प्राय दिवा० उभ०) iii (दिवा०, चुरा० उभ०—मृष्यति-ते, मर्षयति—ते, मर्षित) 1 झेलना, भोगना, सहन करना, साथ रहना—तत्किमिदमकार्यमनुष्ठितं देवेन, लोको न मृष्यतीति—उत्तर० ३ रघु० ९।६२ 2 अनुमति देना, इजाजत देना 3 क्षमा करना, माफ करना, दोषमुक्त करना, क्षमाशील होना—मृष्यन्तु भवन्त एवमस्य बालिशता तातपादा—उत्तर० ६, प्रथममिति प्रेक्ष्य दुर्विनीतजनस्यैकोऽपराधो भगवता मर्षयितव्यः—श० ४, आर्ष मर्षय मर्षय वेणी० १, महाब्राह्मण मर्षय मृच्छ० १।

मृषा (अव्य०) [मृष्+का] मिथ्या, गलती से, असत्यता के साथ, झूठमूठ—यद्वचस्तन्मृषेक्षणे न घटिना वृषे न चाटु मृषा—भर्तृ० ३।१४७, मृषाभाषासिन्धो—भामि० २।२४ 2 व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थक। सम०—अध्यायिन् (पु०) एक प्रकार का सारस,—अर्थक (वि०) 1 असत्य 2 बेहूदा (—कम्) असगति, असभावना,—उक्तम् मिथ्यात्व, झूठ, झूठी उक्ति—तत्किं मन्यसे राजपुत्रि मृषोक्तं तदिति उत्तर० ४,—ज्ञानम् अज्ञान, अशुद्धि, भूल, वादिन्, —वादिन् (पु०) झूठा, झूठ बोलने वाला, वाद (स्त्री०) असत्योक्ति, व्यङ्गोक्ति, व्यग्यकाव्य, ताना,—वाद 1. असत्योक्ति, झूठ, मिथ्या 2 कपटपूर्ण उक्ति, चापलूसी 3 व्यग्य, व्यग्योक्ति।

मृषालकः [मृषा+अल+कै+क] आम का पेड़।

मृष्ट (भू० क० कृ०) [मृज्, मृश् वा+क्त] 1 स्वच्छ किया हुआ, निर्मल किया हुआ 2 लीपा हुआ 3. प्रसाधित, पकाया हुआ 4 छूआ हुआ 5 सोचा हुआ, विचारा हुआ 6 चटपटा मसालेदार, रुचिकर। सम० मन्थः चटपटी और रोचक मद्य।

मृष्टि (स्त्री०) [मृज् (मृश्)+क्तिन्] 1 स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2. पकाना, प्रसाधन करना, तैयारी करना 3 स्पर्श, संपर्क।

मे (भ्वा० आ० मयते, मित, इच्छा० मित्सते) विनिमय करना, बदला बदली करना, मि , विमि , विनिमय या बदला बदली करना।

मेकः [मे इति कायति शब्द करोति मे+कै+क] बकरा।

मेकल (मेखल भी) 1 एक पहाड़ का नाम 2 बकरा। सम०—अद्रिजा, —कन्यका, कन्या नर्मदा नदी के विशेषण।

मेखला [मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागे—मी+खल+टाप्, गुण] 1 करधनी, तगड़ी, कमरबन्द, कटिबन्ध (आल० से भी), कोई वस्तु जो चारों ओर से लपेट सके—मही सागरमेखला 'सागरावेष्टित भूमण्डल' —रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिश यपत्नी भव दक्षिणस्या—रघु० ६।६३, ऋतु० ६।२ 2 विशेष कर स्त्री की तगड़ी नितम्ब बिम्बं सुदुकूलमेखलं—ऋतु० १४, रघु० ८।६४, मेखलागुणरुत गोत्रस्खलितेषु बन्धनम् कु० ४।८ 3 तीन लड़ी वाली मेखला जो पहले तीन वर्ण के ब्रह्मचारियों द्वारा पहनी जाती है—तु० मनु० २।४२ 4 पहाड़ का ढलान,—आमेखलं सचरता घनानाम् कु० १।५, मेघ० १२ 5 कूल्हा 6 तलवार की मूठ 7 तलवार की मूठ में बंधी हुई डोरी की गाठ 8 घोड़े की तग 9 नर्मदा नदी का नाम। सम० पदम् कूल्हा, बन्ध कटिसूत्र धारण करना।

मेखलाल [मेखला+अल्+अच्] शिव का विशेषण।

मेखलिन् (पु०) [मेखला+इनि] 1 शिव का विशेषण 2 धर्मशिक्षा ग्रहण करने वाला ब्रह्मचारी।

मेघ [मेहति वर्षति जलम्, मिह्+घञ्, कुत्वम्] 1 बादल,—, कुर्वन्नञ्जनमेचका इव दिशो मेघ समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, २, ३ आदि 2 ढेर, समुच्चय 3 सुगन्धित घास धम् सेलखड़ी। सम०—अम्बुन् (पु०)—पथ,—मार्ग 'बादलों का मार्ग' अन्तरिक्ष,—अन्ते शरद् ऋतु—अरि वायु, अस्थि (नपु०) ओला—आडम्बरम् सेलखड़ी,—आगम वर्षा का आना, बरसात, आटोप. सघन मोटा बादल, आडम्बर मेघों की गर्जन,—आनन्दा एक प्रकार का सारस, आनन्दिन् (पु०) मोर,—आलोक बादलों का दिखाई देना मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः—मेघ० ३, आस्पदम् आकाश, अन्तरिक्ष,—उदकम् वृष्टि,—उदय बादलों का घिर आना, कालः ओला, काल वृष्टि, वर्षा ऋतु,—गर्जनम्, गर्जना चिंतक चातक पक्षी, जः बड़ा मोती, जालम् 1 बादलों के सघन समूह 2 सेलखड़ी,—जीवक, —जीवनः चातक पक्षी, ज्योतिस् (पु०, नपु०) बिजली, डम्बर बादलों की गरज,—तोयः बिजली, —द्वारम् आकाश, अन्तरिक्ष,—नादः 1 बादलों की गरज, गड़गड़ाहट 2 वरुण का विशेषण 3 रावण के पुत्र इन्द्रजित् का विशेषण °अनुलासिन्, °अनुलासकः मोर, °जित् (पु०) लक्ष्मण का विशेषण,—निर्घोषः

बादलों की गरज, पंक्तिः, आला बादलों की श्रेणी, पुष्पम् 1 पानी 2 ओला 3 नदियों का पानी, प्रसादः पानी, भूतिः वज्र, मण्डलम् अन्तरिक्ष, आकाश, माला, मालिन् (वि०) बादलों से घिरा हुआ, योनिः धूप, धूआँ,—रवः गरज,—वर्णा नील का पौधा, वर्त्मन् (नपु०) अन्तरिक्ष, वह्निः बिजली, वाहनः 1 इन्द्र का विशेषण अयति स्म मेघानिव मेघवाहन शि० १३।१८ 2 शिव का विशेषण, - विस्फूर्जितम् 1 गरज, बादलों की गड़गड़ाहट 2 एक छन्द का नाम दे० परि० १,—वेश्मन् (नपु०) अन्तरिक्ष, सार एक प्रकार का कपूर, सुहृद् (पु०) मोर, स्तनितम् गरज।

मेघङ्कर (वि०) [मेघ करोतीति कृ+अच्] बादलों को पैदा करने वाला।

मेचक (वि०) [मच्+वुन्, इत्व च] काला, गहरानीला, काले रंग का कुर्वंश्चञ्जनमेचकं दव दिशो मेघः समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, उत्तर० ६।२५, मेघ० ५९, क। कालिमा, गहरा नीला वर्ण 2 मोर की पूँछ (पंख) की आँख (चंद्रक) 3 बादल 4 धूआँ 5 चूचुक 6 एक प्रकार का रत्न,—कम् अंधकार। सम० आपगा यमुना का विशेषण।

मेट् मेड् (भ्वा० पर मेटति, मेडति) पागल होना।

मेटृत्र आंवले का पेड़।

मेठ 1 मेष 2 हाथी का रखवाला, महावत।

मेठि, मेथि 1 खंभा, स्थाणु 2 खलिहान में गड़ा हुआ खंभा जिससे बैल बांधे जाते हैं 3 गाय भैंस आदि बांधने का खूंटा 4 गाड़ी के जुए को सहारने के लिए बल्ली।

मेढ् [मिह्+क्त्रुन्] मेंढा, मेष, कुछ पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग (गम्य) मेढ्रं वोन्मादशुक्राभ्यां हीनं क्लीबं स उच्यते। सम० चर्मन् (नपु०) लिंग की सुपाड़ी का चमड़ा—ज शिव का विशेषण,—रोग लिंग संबंधी रोग।

मेढ्रक [मेढ्र+कन्] 1 भुजा 2 लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय।

मेण्ठ, मेण्ढ हाथी का रखवाला, महावत।

मेंढ मेढ्रक मेंढा, मेंढा।

मेंढ द० मठ।

मेथ् (भ्वा० उभ० मेथति ते) 1 मिलना 2 एक दूसरे से मिलन होना (आ०) 2 बुरा भला कहना - जानना, समझाना 5 चोट मारना, क्षति पहुँचाना, जान से मार डालना।

मेथिका, मेथिनी [मेथ्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, मेथ+णिनि+ङीष्] एक प्रकार का घास, मेथी।

मेद [मेदते स्निह्यति—मिद्+अच्] 1 चर्बी 2 एक विशेष प्रकार की वर्णसंकर जाति 3 एक नाग राक्षस का नाम। सम० अम्ल एक प्रकार का गूगल,—जिह्वकः एक पतित जाति का नाम।

मेदकः [मिद्+ण्वुल्] अर्क जो शराब खींचने के काम आता है।

मेदस् (नपुं०) [मेदते स्निह्यति-मिद्+असुन्] 1 चर्बी वसा (शरीर के सात धातुओं में से एक जिसका पेट में विद्यमान होना माना जाता है) मनु० ३।१८२, याज्ञ० १।४४ 2 मांसलता, शरीर का मोटापा—मेदश्छेदकृशोदर लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपु—श० २।५। सम०—अर्बुदम् एक मोटी रसौली,—ऋत् (पु०, नपु०) मांस,—ग्रन्थिः मेद युक्त गांठ या रसौली,—जम्, —तेजस् (नपु०) हड्डी,—पिण्डः, चर्बी का डला,—वृद्धिः (स्त्री०) 1 चर्बी की वृद्धि, मोटापा 2 फोतों का बढ़ जाना।

मेदस्विन् (वि०) [मेदस्+विनि] 1 मोटा स्थूलकाय 2 मजबूत, हृष्टपुष्ट शि० ५।६४।

मेदिनी [मेद+इनि+ङीष्] 1 पृथ्वी न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी—रघु० १।६५, चञ्चल वसुनितान्तमुग्धता मेदिनीमपि हरन्त्यतरातयः—कि० १३।५३ 2. जमीन, भूमि, मिट्टी 3. स्थान, जगह 4 एक कोश का नाम। सम०—ईशः—पतिः राजा, ह्रद धूल।

मेदुर (वि०) [मिद्+घुरच्] 1 मोटा 2 चिकना, स्निग्ध मृदु 3 ठोस, सघन मा० ८।११. फूला हुआ, भरा हुआ, ढका हुआ (प्रायः करण० के साथ या समास के अन्त में)—मेघैर्मेदुरमम्बरम् गीत० १, मकरन्दसुन्दरगलन्मन्दाकिनीमेदुर (पदारविंदम्)—३।

मेदुरित (वि०) [मेदुर+इतच्] मोटा, फुलाया हुआ, सघन किया हुआ—उत्तर० १।

मेध्य (वि०) [मेद+यत्] 1 चर्बीयुक्त 2 सघन मोटा।

मेध् (भ्वा० उभ० दे० 'मेथ्'।

मेधः [मेध्यते हन्यते पशु अत्र- मेध्+घञ्] 1 यज्ञ जैसा कि 'नरमेध' में 2 यज्ञीय पशु, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु। सम०—घ्नः विष्णु का विशेषण।

मेधा [मेध् अच्+टाप्] (ब० स० में सु दुस्, तथा नकारात्मक अ पूर्व आने पर मेधा का बदल कर 'मेधस्' रूप रह जाता है) 1 धारणात्मक शक्ति, (स्मरण शक्ति की) धारणाशक्ति गोर्धारणावती मेधा अमर० 2 प्रज्ञा बुद्धि भग० १०।३४, मनु० ३।२६३, याज्ञ० ३।१७४ 3 सरस्वती का एक रूप - यज्ञ। सम०—अतिथिः मनुस्मृति का एक विद्वान् भाष्यकार, रुद्रः कालिदास का विशेषण।

मेधावत् (वि०) [मेधा+मतुप् वत्वम्] बुद्धिमान समझदार।

मेधाविन् (वि०) [मेधा+विनि] 1 बहुत समझदार अच्छी स्मरणशक्ति वाला 2 बुद्धिमान् समझदार प्रज्ञावान्—पुं० 1 विद्वान् पुरुष, ऋषि विद्यासंपन्न 2 तोता 3 घातक पेड़।

मेधि दे० 'मेधि'।

मेध्य (वि०) [मेध्+ष्यत् मेधाय हितं यत् वा] 1. यज्ञ के लिए उपयुक्त—याज्ञ० १।१९४, मनु० ५।५४ 2. यज्ञ संबंधी, यज्ञीय—मेध्येनाश्वेनेजे, रघु० १३।५, 3 विशुद्ध, पुण्यशील, पवित्रात्मा, रघु० १।८४, ३।३१, १४।८१,—ध्यः 1. बकरा 2 खैर का पेड़ 3 जौ (मेदिनी के अनुसार),—ध्या कुछ पौधों के नाम।

मेनका [मन्+क्वुन् अकारस्य एत्वम्] 1 एक अप्सरा (शकुन्तला की माता) का नाम 2. हिमालय की पत्नी का नाम। सम०—आत्मजा पार्वती का नाम।

मेना [मान+इनच्, नि० साधु] 1 हिमालय की पत्नी का नाम—मेना मुनीनामपि माननीया (उपयमे) कु० १।१८, ५।५ 2 एक नदी का नाम।

मेनादः [मे इति नादोऽस्य] 1 मोर 2. बिलाव 3 बकरा।

मेन्धिका, मेधी (स्त्री०) एक पौधा जिसे महदी कहते हैं (इसके पत्तों से लाल सा रंग निकाला जाता है, जिससे कि अंगुलियों के नाखून, पैरों के तले तथा हाथ की हथेलियाँ रंगी जाती हैं)।

मेय् (भ्वा० आ० मेयते) जाना, हिलना-डुलना।

मेय (वि०) [मा (मि)+यत्] 1 नापने योग्य, जो नापा जा सके 2 जिसका अनुमान लगाया जा सके 3. पहचाने जाने के योग्य, ज्ञेय, जो जाना जा सके।

मेरुः [मि+रु] उपाख्यानों में वर्णित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि समस्त ग्रह इसके चारों ओर घूमते हैं, यह भी कहते हैं कि मेरु सोने और रत्नों से भरा हुआ है)—विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः—नै० १।१६, स्वात्मन्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते—भर्तृ० ३।१५१ 2 रुद्राक्षमाला के बीच का गुरिया 3 हार के बीच की मणि। सम०—दामन् (पु०) शिव का विशेषण, —यन्त्रम् तकुवे के आकार की बनी एक आकृति।

मेरुकः [मेरु+कन्] धूप, धूनी।

मेलः [मिल्+घञ्] मिलाप, एकता, संलाप, समवाय, सभा ('मेलक' भी)।

मेलनम् [मिल्+णिच्+ल्युट्] 1 एकता, संयोग 2 समाज 3 मिश्रण।

मेला [मिल्+णिच्+अच्+टाप्] 1. मिलना, समागम 2 समवाय, सभा, समाज 3 दुर्गा 4 नील का पौधा 5 स्याही, मसी 6. संगीत की ताप, स्वरग्राम। सम०—ग्रन्थुकः,—ग्रन्थुः,—ग्रन्थः,—ग्रन्था माला कलम दान, दवात।

मेव् (भ्वा० आ० मेवते) पूजा करना, सेवा करना, टहल करना।

मेषः [मिषति अन्योऽन्यं स्पर्धते—मिष्+अच्] 1 मेढ़ा, भेड़ 2 मेष राशि। सम०—अक्षः इन्द्र का विशेषण, —अम्बरः एक ऊनी कंबल या घुस्सा, —पालः,—पालकः गड़रिया, —लोमन् भेड़ या बकरे का बाल, —यूथम् भेड़ों का रेवड़।

मेषा [मिष्यतेऽसौ मिष्+घञ्+टाप्] छोटी इलायची।

मेषिका, मेषी [मेष+कन्+टाप्, इत्वम्, मेष+ङीष्] भेड़ (मादा)।

मेहः [मिह्+घञ्] 1 छिड़काव करना, मूत्र करना 2 मूत्र 3 मूत्र संबंधी रोग 4 मेंढा 5. बकरा। सम०—द्रुमी हल्दी।

मेहनम् [मिह्+ल्युट्] 1 मूत्रोत्सर्ग करना 2 मूत्र 3 लिंग।

मैत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [मित्र+अण्] 1 मित्रसंबंधी 2 मित्र द्वारा दिया गया 3 दोस्ताना, कृपापूर्ण, सौहार्दपूर्ण, कृपालु मनु० २।८७, भग० १२।१३ 4 मित्र नाम के देवता से संबंध रखने वाला (जैसा कि 'मुहूर्त') कु० ७।९, त्रः 1 ऊँचा या पूर्ण ब्राह्मण 2 एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०। २३ 3 गुदा, त्रम् 1 मित्रता, दोस्ती, सद्भाव 2 घनिष्ठ संबंध या साहचर्य, मिलाप, संपर्क प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषाय मेघ० २१ 3 अनुराधा नाम का नक्षत्र, त्री 1 मित्रता, दोस्ती 2 मलोत्सर्ग करना—मनु० ४।१५२ 3 अनुराधा नाम का नक्षत्र, (इसी अर्थ में 'मैत्रभम्' शब्द भी)।

मैत्रकम् [मैत्र+कन्] मित्रता, दोस्ती।

मैत्रावरुणः [मित्रश्च वरुणश्च द्व० स०, मित्रस्यानङ्; मित्रावरुण+अण्] 1 वाल्मीकि का विशेषण 2 अगस्त्य का विशेषण 3 यज्ञ के प्रतिनिधि ऋत्विजों में से एक।

मैत्रावरुणिः [मित्रावरुण+इञ्] 1 अगस्त्य का विशेषण 2 वसिष्ठ का विशेषण 3 वाल्मीकि का विशेषण।

मैत्रेय (वि०) (स्त्री० यी) [मैत्र्या मित्रतायाः साधुः, मैत्र+ढक्] दोस्त या मित्र से संबंध रखने वाला, दोस्ताना,—यः एक वर्णसंकर जाति का नाम।

मैत्रेयकः [मैत्रेय+कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०।३३।

मैत्रेयिका [मैत्रेयक+टाप्, इत्वम्] मित्रों या मित्रराष्ट्रों में संघर्ष, मित्रयुद्ध।

मैत्र्यम् [मित्र+ष्यञ्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री।

मैथिलः [मिथिलायां भवः—अण्] मिथिला का राजा रघु० ११।३२, ४८,—ली सीता का नाम रघु० १२।२९।

मैथुन (वि०) (स्त्री०—नी) [मिथुनेन निर्वृत्तम्—अण्] 1. युग्ममय, जुड़ा हुआ 2. विवाहसूत्र में आबद्ध 3. संभोग से संबंध रखने वाला,—नम् 1. रति क्रीड़ा,

सभोग, -मूल मैथुनमग्रजम् पंच० २।९४ 2. विवाह 3. मिलाप, संयोग। सम०—ज्वरः मैथुनोन्माद की उत्तेजना,—वर्जित् (वि०) ब्रह्मचारी,- वैराग्यम् स्त्री-सभोग से विरक्ति।

मैथुनिका [मैथुन+ठन्+टाप्, इत्वम्] विवाह द्वारा मिलाप, वैवाहिक गठबंधन।

मैधावकम् (नपु०) समझ, बुद्धि।

मैनाकः [मेनकाया अयं अण्] हिमालय और मेना के पुत्र (एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था जिसके द्वारा समुद्र से मिलता होने के कारण अक्षुण्ण रहे जबकि इन्द्र ने और दूसरे पर्वतों के बाजू काट डाले। तु० कु० १।२०। सम० स्वसृ (स्त्री०) पार्वती का विशेषण।

मैनाल (पु०) मछुवा, माहीगीर।

मैन्दः (पु०) एक राक्षस का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मार गिराया था। सम० द्विष् (पु०) कृष्ण का विशेषण।

मैरेय,-यम्, मैरेयक,-कम् [मिरा इवास्मादे भव —ढक्] एक प्रकार का मादक पेय अधिरजनि कर्पूरं पीत-मैरेयसीकरम् शि० १२।५१, गंगा० ३८।

मैलिन्दः [मिलिन्द -अण्] मधुमक्खी, भौंरा।

मोकम् (नपु०) किसी आलवर की उतरी हुई खाल।

मोक्ष् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० मोक्षति, मोक्षयति-ते) 1 छोड़ना स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, मुक्ति देना 2 क्षीण करना, खोलना, विघाड़ना 3 अक्षपूर्वक फेंकना 4 डालना, फेंकना, उछालना 5 हलकाना।

मोक्ष [मोक्ष् + घञ्] 1. मुक्ति, छुटकारा, बचाव, स्वतन्त्रता साधनं तव बन्धे मोक्षे च प्रभवति का०, मेघ० ६१, लब्धमोक्षा शुकादय रघु० १७।२० मुमोचाश्रु च पुरा मोक्षम् १७।१९, 2 उद्धार, परित्राण, साधन 3 परममुक्ति, आवागमन अर्थात् पुनर्जन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति, मानवजीवन के चार उद्देश्यों में से अन्तिम दे० अर्थ, भग० ५।२८, १८।३०, रघु० १०।८४, मनु० ६।३५ 4 मूत्र, 5 अक्षपतन अक्षपतन, गिरना अलम्बलीमंबरपक्ष-मोक्षा -कु० ३।३१ 6 खोलना करना, खोलना, बन्धन-मुक्त करना वेणिमोक्षोत्सुकानि मेघ० ९९ 7 हलकाना, गिराना, बहाना वाष्पमोक्ष, अश्रुमोक्ष 8 निशाना लगाना, फेंकना, दागना शस्त्रमोक्ष-शि० ३।५ 9. अवहेलना, छितराना 10 (किसी ऋण आदि का) परिशोध करना 11 (ज्योतिष में) ग्रहणग्रस्त ग्रह की मुक्ति। सम०—उपायः मोक्ष प्राप्त करने का साधन,—देवः प्रसिद्ध पौराणिक देवता ह्यूनत्साङ्ग के साथ व्यवहृत होने वाला विशेषण, -द्वारम् सूर्य,-पुरी काशी नामक नगरी का विशेषण।

मोक्षणम् [मोक्ष+ल्युट्] 1. छोड़ना, मुक्त करना, परम मुक्ति, स्वतंत्रता देना 2. उद्धार, छुटकारा 3. क्षीण करना, खोलना 4. छोड़ना, परित्याग करना, त्याग देना 5 हटकाना 6 अपव्यय करना।

मोक्ष (वि०) [मुह्+घञ् वा, कुत्वम्] 1. व्यर्थ, अर्थ-हीन, निष्फल, लाभरहित असफल—दाक्ष्यं मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ०६, मोघवृत्ति कलयन्त्य चेष्टितम्—रघु० ११।३९, १४।६५, भग० ९।१२ 2. निरुद्देश्य, निष्प्रयोजन, अनियन्त्रित 3 छोड़ा गया परित्यक्त 4 आलसी,—घः बाण, तीर, झाड़बन्दी, -घम् (अव्य०) व्यर्थ, बिना किसी प्रयोजन के, बिना किसी उपयोग के। सम०—कर्मन् (वि०) अनुपयुक्त कार्यों में व्यस्त,—पुष्पा बांझ स्त्री।

मोघोप्पि झाड़बन्दी, बाड़।

मोचः [मुच् +अच्] 1. केले का पौधा 2. लोध्रवृक्ष या सोहञ्जने का पेड़,—चा 1 केले का वृक्ष 2 कपास का पौधा 3 नील का पौधा,- चम् केले का फल।

मोचकः [मुच्+ण्वुल्] 1 भक्षा, सन्यासी 2 परममुक्ति, छुटकारा 3 केले का पौधा।

मोचक (वि०) (स्त्री०-चिका) [मुच्+ण्वुल्] छोड़ने वाला, स्वतन्त्र करने वाला,— कम् 1 छोड़ना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना, मोक्ष 2 बुरा उतारना 3. निर्मोक्षण करना, उत्सर्जन करना 4 किसी कर्तव्यभार या ऋण का परिशोध करना। सम०—वस्त्रकः छन्ना, (कपड़ा जिससे दूध जल आदि छाना जाय)।

मोचयितृ (वि०) [मुच्+णिच्+तृच्] छुड़ाने वाला, स्वतन्त्र करने वाला।

मोचाटः [मुच्+णिच्+अच्=मोच+अट्+अच्] 1. केले का सूखा या फल 2. चन्दन की लकड़ी।

मोचकः,-कम् [मुट्+ण्वुल्] घंटी, घोंघी,—कम् कुशा घास की दो पत्तियाँ जो श्राद्ध के अवसर पर दी जाती हैं, (अग्रकुशपवित्रकम्)।

मोट्टायितम् [मुट्+घञ् या० गुक्+क्यङ्+(भावे) क्त] जब कभी बातचीत चलती है या अन्यमनस्का होकर नायिका कान आदि खुरेदती है तो उस समय चुप-चाप बिना इच्छा के अपने प्रिय के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति। उज्ज्वल मणि ने इसकी परिभाषा दी है —कान्तस्यरभसारम्भे वृत्ति तद्भावबोधिका। प्राकट्यमभिलाषस्य मोट्टायितमुदीरितं॥ दे० सा० द० १४१ भी।

मोदः [मुद्+घञ्] 1 आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी प्रमोदस्तदाख्य मोदाख्य- उत्तर० २।१२, रघु० ५।१५ 2 सुगन्ध, सुवास। सम०—आख्यः आम का पेड़।

मोदक (वि०) (स्त्री०-का,-की) [मोदयति-मुद्+णिच्+ण्वुल्] सुगन्धित, आमोदकर, प्रसन्नतादायक,—कः-

—क्रम् मिठाई, लड्डू—याज्ञ० १।२८९,—क: एक वर्ण संकर जाति (क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न)।

मोदनम् [मुद्+ल्युट्] 1 हर्ष, प्रसन्नता 2 प्रसन्न करने की क्रिया 3. मोम।

मोदयन्तिका, न्मोदयन्ती [मुद्+णिच्+शतृ+कीप्—मोदयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार की चमेली।

मोदिन् (वि०) [मुद्+णिनि] 1 प्रसन्न, सुखी, खुश 2 प्रसन्नता-दायक, आनन्दप्रद, —नी 1 नाना प्रकार (अमोद, मल्लिका, जूही) के पौधों के नाम 2 कस्तूरी 3 मादक या खींची हुई शराब।

मोरट: [मुर्+अटन्] 1 मीठे रस वाला एक पौधा 2 ताजी ब्याई गाय का दूध, —टम् गन्ने की जड़।

मोष: [मुष्+घञ्] 1 चोर, लुटेरा 2 चोरी, लूट 3 लूटखसोट, चोरी, उठा ले जाना, हटाना (आत्म० से भी)—न पुनर्मोषमर्हत्यनुशासनम्—मृच्छ० १, दृष्टिमोषे प्रदोषे—गीत० ११ 4 चुराई हुई सम्पत्ति। सम० कृत् (पु०) चोर।

मोषक: [मुष्+ण्वुल्] लुटेरा, चोर।

मोषणम् [मुष्+ल्युट्] 1 लूटना, खसोटना, चोरी करना, ठगना 2 काटना 3 नष्ट करना।

मोषा [मुष्+अ+टाप्] चोरी, लूट।

मोह [मुह्+घञ्] 1 चेतना की हानि, मूर्च्छित होना, निःसंज्ञा, बेहोशी मोहेनान्तर्बहिस्तुरिव लक्ष्यते मुह्यमाना—विक्रम० १।८, कु० ३।७३ 2 घबराहट, व्यामोह, उद्विग्नता, अव्यवस्था—पञ्जाम्बा न पुनर्मोहमेव यास्यामि पाण्डव—भग० १।२५, 3 मूर्खता, अज्ञान, दीवानापन तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् रघु० १।२, शि० ३।२९ 4 त्रुटि, भूल, अशुद्धि 5 आश्चर्य, अचम्भा 6 कष्ट, पीड़ा 7 जादू की कला या शत्रु का पराभव करने में प्रयुक्त की जाय 8 (दर्शन० में) व्यामोह या सत्य को पहचानने में अवरोधक है, (जिसके अनुसार मनुष्य का सांसारिक पदार्थों की वास्तविकता में विश्वास होता है, और वह विषय सुखों में लिप्त करने का अभ्यस्त हो जाता है)। सम० कलिल मोटा और व्यामोहक जाल, निद्रा अन्धविश्वास मात्र व्यामोहक जादू,—रात्रि: (स्त्री०) प्रलय की रात जब कि समस्त विश्व नष्ट हो जायगा, शास्त्रम् मिथ्या सिद्धान्त या मत।

मोहन (वि०) (स्त्री०-नी) [मुह्+णिच्+ल्युट्] 1 बदहवास करने वाला 2 व्याकुल करने वाला, उद्विग्न करने वाला, विह्वल करने वाला 3 व्यामोहक, संभ्रामक 4 आकर्षक, न 1 शिव का विशेषण 2 काम के पांच बाणों में से एक बाण, नम् 1 बदहवास करना 2 मुग्ध करना, धोखा देना, विह्वल करना, 3 जकड़ना, बेहोशी 4. रीवामापन, व्यामोह, गलती 5 फुसलाना, प्रलोभन करने के लिये जादू-टोना। सम० अस्त्रम् एक ऐसा आयुध-अस्त्र जो उस व्यक्ति को जिस पर कि चलाया जाय, मूर्ख कर दे।

मोहनक: [मोहन+के+क] चैत्र का महीना।

मोहित (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1. अचेतन किया हुआ 2 घबराया हुआ, विह्वल 3 व्यामुग्ध, आकृष्ट, मुग्ध किया हुआ, फुसलाया हुआ।

मोहिनी [मुह्+णिच्+णिनि+कीप्] 1. एक अप्सरा का नाम 2. मनोहारिणी स्त्री (अमृत बांटते समय राक्षसों को ठगने में विष्णु ने यही रूप धारण किया था) 3 एक प्रकार का चमेली का फूल।

मौक (कु) क्लि० (पु०) कौवा—उत्तर० २।२१।

मौक्तिकम् [मुक्तैव स्वार्थे ठक्] मोती मौक्तिकं न सृजेद्गजे सुभा०। सम०—आवली मोतियों की लड़ी—गुम्फिका मोती की मालाएँ गूंथने वाली स्त्री,—दामन् (नपु०) मोतियों की लड़ी—प्रसवा मोतियों का जन्म देने वाली सीपी—सूक्ति (स्त्री०) मोतियों की सीपी, सर: मोतियों की लड़ी, या हार।

मौक्ष्यम् [मूक+ष्यञ्] गूंगापन, मूकता, गौन।

मौखरि [मुखर+इञ्] एक कुल का नाम—पदे पदे मौखरिभि: कृतार्चनम् का०।

मौखर्यम् [मुखरस्य भाव ष्यञ्] 1 वाचालीपना, बहु भाषिता 2 गाली गलौज, झूठा आरोप।

मौख्यम् [मुख+ष्यञ्] पूर्वभाषिता, वरिष्ठता।

मौग्ध्यम् [मुग्ध+ष्यञ्] 1 मूर्खता, मूढ़ता 2 बचकानापन, सरलता, भोलापन 3 लावण्य, सौन्दर्य।

मौञ्जम् [मौञ्ज+अण्] केले का फल।

मौञ्ज (वि०) (स्त्री० ञ्जी) [मुञ्ज+अण्] मूंज की घास का बना हुआ, —ञ्जी मूंज की घास की तीन लड़ों वाली करधनी जो ब्राह्मण की उपनीति—कु० ५।१०, मनु० २।४२; सम०—लिङ्गधारणम्,—बन्धनम् मूंज की घास की बनी करधनी पहनना, उपनयन संस्कार,—मनु० २।६९,१७०।

मौढ्यम् [मूढ+ष्यञ्] 1 अज्ञान, जड़ता, मूर्खता 2 बचकानापन।

मौत्रम् [मत्रस्येदम् अण्] मूत्र की मात्रा।

मौदकिक: [मोदक+ठक्] हलवाई।

मौद्गलि: [मुद्गल+इञ्] कौवा।

मौद्गील (वि०) [मुद्गल+अञ्] (बैल) जो गायिया (मुग) खाने के उपयुक्त हो।

मौन्यम् [मुनेर्भाव ष्यञ्] मूर्खता, मूकभाव, मौन मनोभावसाधनम्, मौनं व्रतञ्च 'ढाठ हिलाना' मौन समाधि 'ईश्वर की गाला समाधी'। सम० व्रत मौन धारण की अभिरुचि, —व्रतम् चुप रहने की प्रतिज्ञा।

मौनिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मौन+इनि] चुप रहने की प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, चुप, मूक,—मनु० १२।१९ पुं० एक पुण्यशील ऋषि, ऋग्वेदी, साधु।

मौरविकः [मुरज+ठक्] मृदंग बजाने वाला।

मौर्ख्यम् [मूर्ख+ष्यञ्] मूर्खता, बुद्धूपन, जड़ता।

मौर्यः [मुरायाः अपत्यम् मुरा+ष्यञ्] चन्द्रगुप्त से आरम्भ करके राजाओं का एक वंश मौर्याः नवे राजानि मुद्रा० ६।१५, मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चा प्रकल्पिताः महा० (इस शब्द में 'मौर्य' शब्द के अर्थ में विद्वानों में मतभिन्नता है)।

मौर्वी [मुर्वाया विकार अण्+ङीप्] 1 धनुष की डोरी —मौर्वीकिणाङ्को भुज श० १।१३, मौर्वी धनुषि धातता रघु० ११।९, १४।४८, कु० ३।५५ 2 मूर्वा घास की बनी तगड़ी (क्षत्रियों के धारण किये जाने योग्य मनु० २।४२।

मौल (वि०) (स्त्री०—ला—ली) [मूल देत्ति मूलादागतो वा अण्] 1 मूलभूत, मौलिक 2 प्राचीन, पुराना, (प्रथा आदि) बहुत समय से चली आती हुई 3 मन्त्रकुलोद्भव, उच्च कुल में उत्पन्न 4 पीढ़ियों से राजा की सेवा में लगा हुआ, प्राचीन काल से पदाक्रान्त, श्रानवंशिन्, मनु० ७।५४, रघु० १२।५३, ख पुराना या वंशक्रमागत गर्व।—रघु० १२।१२, १४।१०, १४।८।

मौलि (वि०) [मूलस्याधुरभव इञ्] प्रधान, प्रमुख, सर्वोत्तम—अनिच्छन्निव मौलिना सौरभेयः, भामि० १।१२१, सिं० 1. प्रधान, शिरोमणि मौनी वा रत्नमाल्यालिम् वेणी० ३।४० रघु० १३।५१ कु० ५।७५ 2 किसी वस्तु का सिर या चोटी, उच्चतम बिन्दु, उत्तर० २।२० 3 अलंकरण, लिः (पुं० या स्त्री०) 1. ताज, किरीट, मुकुट—भामि० १।७३ 2 सिर की चोटी के बाल, शिखा जटामौलि कु० ५।१२ (जटाजूट मल्लि०) 3 मौनी, केशविन्यास वेणी० ६।३४ ब०—ली (स्त्री०) पृथ्वी। सम०—मणिः,—रत्नम् मुकुट की मणि मुकुट में लगा रत्न, सर्वोत्तम शिरोभूषण, मुकुटम् ताज, किरीट।

मौलिक (वि०) (स्त्री० की) [मूल+ठक्] 1. मूलभूत 2 मुख्य, प्रधान 3. पटिया।

मौल्यम् [मूल्य+अण्] मूल्य, कीमत।

मौष्टिः [मुष्टि ग्रहणं अस्या क्रीडायाम्—मुष्टि+अ] मुक्के बाजी, घूंसे बाजी, मुष्टामुष्टि मुठभेड़।

मौष्टिकः [मुष्टि+ठक्] बटमार, ठग, धूर्त।

मौसल (वि०) (स्त्री० ली) [मुसल+अण्] 1. मूसल की भांति बना हुआ, मूसल के आकार का 2 (युद्ध आदि) जो गदाओं से लड़ा जाय 3. (पर्व आदि) जो गदा युद्ध से सम्बद्ध हो।

मौहूर्तः, मौहूर्तिकः [मुहूर्त+अण्, ठक् वा] ज्योतिषी।

म्ना (म्वा० पर० म्नाति, म्नात) 1. (मन में) दोहराना 2. परिश्रम पूर्वक याद करना 3. स्मरण करना, आ—, 1. सोचना, मनन करना—यदाम्नासुब्रह्मण्यमारतगामलक्ष्म · भामि० ४।०२ 2 परम्परानुसार दे देना, निर्धारित करना, उल्लेख करना, सोचना, सोचना त्वामात्मतन्त्रिं प्रकृतिं पुरुषार्थप्रवर्तिनीम् कु० २।१३, ५।८१, ६।३१ 3 अध्ययन करना, सीखना, याद करना मधुव्रता सम्परिताम्नानम् कु० ६।१६, भट्टि० १७।२०; म्ना , 1 आवृत्ति करना 2. निर्धारित करना, निश्चित करना, तं हि धर्मसूत्रकारः समाम्नासिषुः उत्तर० ४।

म्नात (भू० क० कृ०) [म्ना+क्त] 1 दोहराया गया 2 याद किया गया, अध्ययन किया गया।

म्रक्ष् (म्वा० पर० म्रक्षति) 1. रगड़ना 2 ढेर लगाना, संचय करना, इकट्ठा करना 3 लेप करना, रगड़ना, सनना 4 मिश्रण करना, मिलाना।

म्रक्षः [म्रक्ष्+घञ्] पाखंड, कपटाचरण।

म्रक्षणम् [म्रक्ष+ल्युट्] 1 शरीर पर उबटन मलना 2 लेप करना सानना 3 संचय करना, ढेर लगाना 4. तेल, मलहम।

म्रद् (म्वा० आ०—म्रदते प्रेर० म्रदयति ते) पीसना, चूरा करना, कुचलना, रौंदना।

म्रदिमन् (पुं०) [मृदोर्भावः इमनिच्] 1 कोमलता, मृदुता, 2 ऋजुता, दुर्बलता (स्वभावतः) हिमांशुमाशु वसते तन्मदिम्न स्फुटं फलम् शि० २।४९।

म्रुक्ष् (म्वा० पर० म्रोक्षति) जाना, हिलना-डुलना।

म्रुच् (म्वा० पर० म्रोचति) जाना हिलना-डुलना।

म्रुष्क् चुरा० उभ० म्रोक्षयति—ते काटना, विभक्त करना।

म्लक्त (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त] मुर्झाया हुआ, लटाया हुआ।

म्लान (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त कर्तरि न] 1. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 2 थका हुआ, निढाल 3 निरुत्साहित, खिन्न, दुर्बल, कृश 4. उदास, खिन्न अवसन्न 5. गन्दा, मलिन। सम०—अङ्ग (वि०) क्षीणकाय (—ङ्गी) रजस्वला स्त्री,—अम्बुज (वि०) उदास मन वाला, उत्साहहीन, हताश।

म्लानिः (स्त्री०) [म्लै+क्तिन्] 1. मुर्झाना, कुम्हलाना, ह्रास 2 क्लान्ति, शैथिल्य, थकान 3. उदासी, खिन्नता 4. गन्दगी।

म्लायत्,—म्लायिन् (वि०) [म्लै+शतृ, णिनि वा] कुम्हलाता हुआ, पतला और कृश होता हुआ।

म्लायुः (वि०) [म्लै+क्नु] 1. मुर्झाया हुआ या कुम्हलाया हुआ सा होने वाला 2. पतला और कृश होने वाला 3. निढाल और क्लान्त होने वाला।

म्लिष्ट (वि०) [म्लेच्छ+क्त नि० साधु] 1 अस्फुट बोला हुआ (मानो बर्बर लोगों ने बोला हो) 2 अस्पष्ट असभ्य (बर्बर), असंस्कृत 3 कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ,—ष्टम् अस्फुट या असंस्कृत भाषण।

म्लुच्, **म्लुञ्च्**, दे० म्रुच्, म्रुञ्च्।

म्लेच्छ या **म्लेछ** (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० म्लेच्छति, म्लेच्छयति, म्लिष्ट, म्लेच्छित) अव्यवस्थित रूप से बोलना, अस्फुट स्वर से बोलना, या बर्बरतापूर्वक बोलना।

म्लेच्छ: [म्लेच्छ+घञ्] 1 असभ्य, अनार्य (जो संस्कृत भाषा न बोलता हो, जो हिन्दू या आर्य पद्धतियों का पालन न करता हो), विदेशी,—म्लेच्छाः म्लेच्छप्रसिद्धिस्तु विरोधादर्शने स्मृति—जै० न्या०, म्लेच्छान् म्लेच्छते या—म्लेच्छनिवहनिधन कल्पसि करवालम्—गीत० १ 2 जाति से बहिष्कृत नीच मनुष्य, बौधायन 'म्लेच्छ' शब्द की परिभाषा देता है—गोमांसखादको यस्तु विरुद्धं बहु भाषते सर्वाचार-विहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते 3 पापी दुष्ट पुरुष,—च्छम् तांबा। सम० आस्यम् तांबा,—आशः गेहूँ—आस्यम्,—मुखम् तांबा—काम् लहसुन,—जातिः (स्त्री०) असभ्य, जंगली (बर्बर) जाति, पहाड़ी, बर्बर,—देशः,—मण्डलम् वह देश जहाँ अनार्य लोग (बर्बर) रहते हों, विदेश या असभ्य देश मनु० २।२३, —भाषा विदेशी भाषा,—मोदकः गेहूँ,(—कम्) जौ, —वाच् (वि०) बर्बर जाति की या विदेशी भाषा बोलने वाला।

म्लेच्छित (भू० क० कृ०) [म्लेच्छ+क्त] अस्फुट रूप से या बर्बरतापूर्वक बोला हुआ,—तम् विदेशी भाषा 2 व्याकरण विरुद्ध शब्द या भाषण।

म्लेड्, **म्लेड्** (म्लेट इ लि) पागल होना।

म्लेव् (भ्वा० आ० म्लेवते) पूजा करना, सेवा करना।

म्लै (भ्वा० पर० म्लायति म्लान) मुर्झाना कुम्हलाना म्लायन्ती भूरुहाणां—भामि० १।३६, शि० ५।८३ 2 थक जाना, निढाल होना, श्रान्त या क्लान्त होना पथि मन्थरत्वं मम्लुषीव दृष्टिर्मोघीवती रघु० ११।०, भट्टि० १४।६ 3 उदास या खिन्न होना, उत्साहहीन या हतोत्साह होना मम्लौ साथ विषादेन काव्य० १०, म्लायते मे मनो हीदम्—महा० 4 पतला या कृशकाय होना 5 ओझल होना, नष्ट होना परि—, 1 मुर्झाना, कुम्हलाना, परिम्लानमुखश्रियम् कु० २।२ रघु० १४।५० 2 खिन्न या निरुत्साहित होना, प्र—, 1 मुर्झाना, कुम्हलाना 2 उदास या खिन्न होना 3 निढाल होना 4 मलिन या गन्दा होना, मैला होना।

य

य [या+ड] 1. जो चलता है या गतिमान है, जाने वाला, गन्ता 2 गाड़ी 3 हवा, वायु 4. सिलाई 5 यज्ञ 6 जौ।

यकृत् (नपुं०) जिगर (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म०, द्वि० व०, के पश्चात् 'यकृत्' शब्द का ही यह वैकल्पिक रूप है)।

यकृत् (नपुं०) [य मयम करोति कृ क्विप् तुक च] जिगर, या तद्गत प्रभावशालिता। सम०—आलिका तैलचोर (भौंरे के आकार का एक छोटा सा कीड़ा)। —दरम् जिगर की वृद्धि, कोष जिगर को ढकने वाली झिल्ली।

यक्ष: [यक्षयति—यक्ष्+(कर्मणि) घञ्] एक देवयोनि विशेष जो धनपति के देवता कुबेर के सेवक हैं तथा उसके कोष और उद्यानों की रक्षा करते हैं यक्षाणामधिपतिं धनेशं रक्षसां विभुम् हरि०, मेघ० १, ६६, भग० १०।२३, ११।२२ 2 एक प्रकार का भूत-प्रेत 3 इन्द्र का महल 4 कुबेर,—क्षी यक्ष जाति की स्त्री। सम०—अधिप,—अधिपतिः,—इन्द्रः यक्षों का राजा कुबेर, आवासः अजीर का वृक्ष, कर्दमः एक प्रकार का लेप जिसमें कपूर, अगर, कस्तूरी और केसर समान मात्रा में डाले जाते हैं (कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चन्दन और केसर भी इसमें सम्मिलित किये जाते हैं (कर्पूरागुरुकस्तूरी-कक्कोलैर्यक्षकर्दमः अमर०, कुङ्कुमागुरुकस्तूरी कर्पूर चन्दनैस्तथा। महामुगन्धिमित्युक्तो नामतो यक्ष कर्दमः॥), —ग्रहः यक्ष या भूत प्रेतादि की बाधा से युक्त व्यक्ति, तरुः बटवृक्ष, —द्रुः गूगल, लोबान, —रसः एक प्रकार का मादक पेय, —राज् (पुं०) —राजः कुबेर का नाम, —रात्रिः दीपमालिका का उत्सव —विलः यक्ष जैसा आचरण जो विपुलधनसंपत्ति का स्वामी हो परन्तु व्यय कुछ न करे।

यक्षिणी [यक्ष+ङीप्] 1 यक्ष जाति की स्त्री 2 कुबेर की पत्नी का नाम 3 दुर्गा की सेवा में रहने वाली यक्षकन्या 4 एक अप्सरा (इसका संबंध मत्स्यलोक वासियों से कहा जाता है)।

यक्ष्मः, **यक्ष्मन्** (पुं०) [यक्ष्+मन्, मांसन् वा] 1 फेफड़ों

का रोग, क्षयरोग 2 रोगमार्ग। सम० ग्रह क्षयरोग का आक्रमण,—ग्रस्त (वि०) क्षयरोगी, क्षीण क्षयूर।

क्षयिन् (वि०) [यक्ष्म+इनि] जो क्षयरोग से ग्रस्त या पीड़ित है मनु० ३।१५४।

यज् (स्वा० उभ० यजति-ते, इष्ट, कर्मवा० इज्यते, इच्छा० यियक्षति-ते) 1 यज्ञ करना, त्याग पूर्वक पूजा करना (प्रायः 'यज्ञार्थक' शब्दों के करण० से सबद्ध), —यजेत राजा क्रतुभि—मनु० ७।७९, ५।५३, ६।३६, ११। ४०, भट्टि० १४।९० इसी प्रकार 'अश्वमेधेनेजे, पाकयज्ञेनेजे—आदि 2 आहुति देना (देवतापरक कर्म० तथा यज्ञीय साधन या आहुतिपरक करण० के साथ) —घृतेना ह्व यजते—सिद्धा० यस्मिन्नं यजते पितृन् —महा० मनु० ८।१०५, ११।११८ 3 पूजा करना, सुभूषित करना, सम्मान करना, आदर करना प्रेर० (याजयति-ते) 1 यज्ञ करवाना 2 यज्ञ में सहायता देना। अव, परि, प्र यज्ञ करना, आहुति देना, सम् अलंकृत करना, पूजा करना समवष्टारस्वयं-वरम् भट्टि० १५।९६।

यजतिः [यज् + तिप्] 1 उन यज्ञीय अनुष्ठानों का पारिभाषिक नाम जिनके साथ 'यजति' क्रिया का प्रयोग होता है (आगे के विवरण के लिए 'जुहोति' शब्द देखो)।

यजकः [यज् + ण्वुल्] 1 वह गृहस्थ जो यज्ञीय अग्नि को स्थिर रखता है, अग्निहोत्री, अग्नि अग्निसंस्थित अग्नि का स्थापित रखना।

यजनम् [यज् + ल्युट्] 1 यज्ञ करने की क्रिया 2. यज्ञ, -देवयजन सजवे देखि सीते -उत्तर० ४ 3 यज्ञ करने का स्थान।

यजमानः [यज् + शानच्] 1 वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और उसका व्ययभार स्वयं वहन करता है 2 वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है 3 अतिथेयी, संरक्षक, धनी व्यक्ति 4 कुल का प्रधान पुरुष। सम० शिष्यः स्वयं यज्ञ करने वाले ब्राह्मण का शिष्य—मा० ४।

यष्टि [यज्+इन्] 1 यज्ञकर्ता 2. यज्ञ करने की क्रिया 3 यज्ञ—दानमध्ययनं यष्टि मनु० १०।७९।

यजुस् (नपु०) [यज्+उसि] 1 यज्ञीय प्रार्थना या मन्त्र, 2 यजुर्वेद का पाठ, यजुर्वेद के गद्यात्मक मन्त्रों का समूह जो यज्ञ के अवसर पर पढ़े जाय—तु० मन्त्र 3 यजुर्वेद का नाम। सम० विद् (वि०) यज्ञीय विधि का ज्ञाता, वेदः तीन (अथर्ववेद को अन्तर्भावित करके) या चार प्रधान वेदों में द्वितीय (यह यज्ञ सम्बन्धी पवित्र पाठ का गद्यात्मक संग्रह है, इसकी दो मुख्य शाखाएं हैं—तैत्तिरीय या कृष्णयजुर्वेद, तथा वाजसनेयि या शुक्लयजुर्वेद।

यज्ञः [यज्+(ज्ञाने)नङ्] 1 याग या यज्ञ, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा, तस्माद्यज्ञात्सर्वं हुतं —आदि 2. पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या भक्ति सम्बन्धी क्रिया (प्रत्येक गृहस्थ, विशेषतः ब्राह्मण को प्रति पाँच ऐसे भक्तिपरक कृत्य प्रतिदिन करने पड़ते हैं, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ, यही पाँचों समष्टिरूप से 'पञ्च महा यज्ञ' कहलाते हैं, दे० 'महायज्ञ' और 'पाँच' शब्द पृथक्-पृथक्) 3 अग्नि का नाम 4 विष्णु का नाम। सम० अंशः यज्ञ का एक भाग, °भुज् (पु०) देवता देव—कु० ३।१४ अ(आ)गारः,—वेश्म एक यज्ञीय यूपि,—अङ्गम् 1 यज्ञ का एक भाग 2. कोई भी यज्ञीय आवश्यकता, यज्ञ का साधन यज्ञाङ्गधेनोस्तनमेकमस्य—कु० १।१७, (—गः) 1 मूसर का पेड़ 2. विष्णु का नाम, अरिः शिव का विशेषण, -अर्हकः देव, आत्मन् (पु०), ईश्वरः विष्णु का नाम, उपकरणम् यज्ञपात्र या यज्ञ का कोई आवश्यक उपकरण,—उपवीतम् द्विजों द्वारा पहना जाने वाला यज्ञोपवीत (अब आज कल और निम्न जातियाँ भी पहनती हैं) जो बायें कन्धे के ऊपर तथा दाहिनी भुजा के नीचे पहना जाता है दे० मनु० २।६३ (मूल रूप से 'यज्ञोपवीत' उपनयन संस्कार का ही नाम है जिसमें जनेऊ पहना जाय), कर्मन् (वि०) यज्ञकार्य में व्यस्त (नपु०) यज्ञीय कृत्य,—कल्प (वि०) यज्ञ की प्रकृति का, या यज्ञ के समान, कौलकः वह बूटा जिसके साथ यज्ञीय बलि-पशु बाँधा जाता है, कुण्डम् हवनकुण्ड, अग्नि-कुण्ड, कृत् (वि०) यज्ञानुष्ठान करने वाला, (पु०) 1 विष्णु का नाम 2. यज्ञ कराने वाला पुरोहित,—क्रतुः 1 यज्ञीय कृत्य 2 पूर्णकृत्य या मुख्य अनुष्ठान 3. विष्णु का विशेषण,- घ्नः वह राक्षस जो यज्ञों में विघ्न डालता है, दक्षिणा यज्ञीय उपहार, यज्ञानुष्ठान कराने वाले पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा, दीक्षा 1 किसी यज्ञीय कृत्य में प्रवेश या उपक्रम 2. यज्ञ का अनुष्ठान मनु० ५।१६९,—द्रव्यम् यज्ञ के लिए प्रयुक्त होने वाली कोई वस्तु (उदा० यज्ञ पात्र आदि), धरः 1 जो किसी यज्ञ की स्थापना या प्रतिष्ठा करता है दे० 'यजमान' 2 विष्णु का नाम, —पशुः 1. यज्ञ के लिए पशु, यज्ञीय बलि 2. घोड़ा, पुरुषः, यज्ञेशः विष्णु के विशेषण, भागः 1 यज्ञ का एक भाग, यज्ञ के उपहारों में हिस्सा 2. देव. देवता, भुज् (पु०) देव, देवता, भूमिः (स्त्री०) यज्ञ के लिए स्थान, यज्ञीय यूपि, भृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण, - वीजम् (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण

--रसः, --रेतस् (नपुं०) सोम, वराहः शूकरावतार में विष्णु, वल्लिः, -ल्ली (स्त्री०) सोम की बेल या पौधा, वाटः यज्ञ के लिए तैयार की गई या घेरी गई भूमि, --बान्धवः विष्णु का विशेषण, --वृक्षः वट वृक्ष, वेदिः,--वी (स्त्री०) यज्ञ की वेदी, शरणम् यज्ञकक्ष या अस्थायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ किया जाय, शाला यज्ञ का कमरा, शेष, शेषम् यज्ञ का अवशिष्ट--यज्ञशेषं तथामृतम् मनु० ३।२८५, -श्रेष्ठा सोम का पौधा, --सदस् (नपुं०) यज्ञ में उपस्थित जनमण्डली, -संभारः यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री, -सारः विष्णु का विशेषण, -सिद्धि (स्त्री०) यज्ञ की पूर्ति, -सूत्रम् दे० यज्ञोपवीत, सेन राजा द्रुपद का विशेषण,--स्थाणुः यज्ञ का खम्भा, --हन् (पुं०) -हन् शिव का विशेषण।

यज्ञिकः [यज्ञ+ठन्] ढाक का पेड़।

यज्ञिय (वि०) [यज्ञाय हित--घ] 1 यज्ञसम्बन्धी, यज्ञोपयुक्त, या यज्ञपरक 2 पुनीत, पवित्र, दिव्य 3 अर्चनीय, पूजनीय 4 भक्त पुण्यशील, पुं 1 देव, देवता 2 तीसरा युग, द्वापर। सम० देश यज्ञों का देश कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः, स ज्ञेयो यज्ञिया देशो म्लेच्छदेशस्ततः परः मनु० २।२३, शाला यज्ञमण्डप।

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ+छ] यज्ञ संबंधी, यज्ञ संबंधी, पुं गूलर का पेड़। सम०--ब्राह्मणम् विकटन नामक ग्रंथ।

यजन (वि०) (स्त्री०-यजनी) [यज्+ल्युट्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला आदि, (पुं०) 1 जो वेदविहितविधि के अनुसार यज्ञानुष्ठान करता है, यज्ञों का अनुष्ठाता -नीपान्वयः पार्थिवः पय यजता रघु० ६।४६, १।४४, ३।३९, १८।१२, कु० २।४६ 2 विष्णु का नाम।

यत् (भ्वा० आ० यतते, यतित) 1 यत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा तुमुन्नन्त के साथ) गर्वं कन्ये वयसि यतते लब्धुमर्थान् वृतुर्वा विक्रम० ३।१ 2 प्रयास करना, उत्सुक या आतुर होना, उत्कण्ठित होना--यां न यया प्रियमन्यवधूभ्यः सारन्नरागमना यतमानम् शि० ८।४५, रघु० ९।७ 3 हाथ पैर मारना, निरन्तर उद्योग करना, श्रम करना 4 सावधानी बरतना, खबरदार रहना--भग० २।६०--प्रेर० (यातयति-ते) 1 लौटाना वापिस करना, बदला देना, हरजाना देना, फेर देना 2 घृणा करना, निन्दा करना 3 प्रोत्साहन देना, प्राण फूंकना, सजीव बनाना 4 सताना, दुःखी करना, परेशान करना 5 तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, आ--, 1 प्रयास करना कोशिश करना 2. भरोसे पर रहना, निर्भर रहना, (आत्म० के साथ)--वयं स्वव्यायतास्महे महावी० १।४९, नि्--, प्रेर० 1 लौटाना, फेर देना--निर्यातय हस्तान्यासम्--विक्रम० ५, मनु० ११।१९।१ 2 बदला देना, वापिस करना, प्रतिहिंसा करना--रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै --रामा०, प्र--, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, प्रति--, चेष्टा करना (प्रेर०) फेर देना, वापिस करना दे० निस् पूर्वक यत्, रभ्--, सयत्न करना, तर्क वितर्क करना देवासुरा वा एषु लोकेषु सयेतिरे।

यत (भू० क० कृ०) [यम्+क्त] 1 प्रतिबद्ध, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, पराभूत 2 सीमित, संयत, मर्यादित, तम् महावत द्वारा हाथी को एड लगाना। सम० आत्मन् (वि०) स्वयं अपने को अनुशासित करने वाला, स्वसंयत, जितेन्द्रिय, (त्मा) परमात्मा रोचयितुं यतस्व कु० ३।१६, १।५० आहार (वि०) मिताहारी, संयमी, इन्द्रिय (वि०) जितेन्द्रिय, पवित्र, संयतोक्ष्या, जिह्व, मनस् मानस (वि०) मन का वश में रखने वाला, वाच् (वि०) मितभाषी, मौनी, योनावलम्बी दे० यादव वृत्त (वि०) 1 प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, अपना वचन पूरा करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ।

यतनम् [यत्+ल्युट्] चेष्टा प्रयत्न।

यतम (वि०) (नपुं० यत्) [यद्+तमप्, त+] कौन सा (बहुतों में से)।

यतर (वि०) (नपुं० रत्) [यद्+तरप्] जो (दो में से)।

यतस् (अव्य०) [यद्+तसिल्] (बहुधा संबंधवाची सर्वनाम 'यद्' के अर्थ० के रूप में प्रयुक्त) 1 जहां से (व्यक्ति या वस्तु का उल्लेख करने हुए) जिस जगह से, जिस स्थान से या जिस दिशा से यतः इदं ज्ञानमशेषमाप्तम् रघु० ५।४ (अत यस्मात् जिस से) यतश्च भयमाशङ्केत्तराद्दी ना कल्याणसंग्रहः मनु० ७।१८९, 2 जिस कारण, जिस लिए 3 क्योंकि, चूंकि, के कारण से, इस लिए कि उत्पन्न चैन परमार्थेषु हरं न वेत्सि मूढ़ यतः एवमाद्य मोम कु० ५।७५, रघु० ८।७६, प्राय सहसूची यत के साथ, रघु० १६।७४ 4 जिस समय से लेकर जब से कि 5 यदि, जिससे कि (यतस्ततः 1 जिस किसी जगह से, किसी भी दिशा से 2. चाहे किसी व्यक्ति से 3 चाहे जहां, चारों ओर, किसी भी दिशा में, मनु० ४।१५, यतो यतः 1. चाहे जिस जगह से 2 चाहे जिस से, किसी भी व्यक्ति से 3 चाहे जहां, चाहे जिस दिशा में यतोक्त षट्चरणोऽभिवर्तते --शि० १।२४, भग० ६।२६; यतः प्रभृति जिस समय

से लेकर) । सम० भव (वि०) जिससे उत्पन्न, भूत (वि०) जिससे जन्म लेने वाला, या जिससे उदित ।

यति (सर्व० वि०) [यद् परिमाणे अति] (रूप केवल बहुवचन में कर्तृ० और कर्म० यति) जितने, जितनी बार, जितने कि ।

यति, (स्त्री०) [यम् + क्तिन्] 1 प्रतिबंध, रोक, नियंत्रण 2 रुकना, ठहरना आराम 3 डिग्दर्शन 4 संगीत में विराम ५ (छन्द० में) विश्राम - यांतत्रिजुष्टं-विश्रामस्थान कविभिरुक्तं सा विच्छेदविरामार्हैः पदैरोध्यः निजरूपया ह० ४, अन्यैर्यतीना त्रयेण विश्रान्तिर्यातिधुना सत्यरा कौशिकेयम् ७ विश्वा, -ति सन्यासी जिसने संसार का त्याग दिया है और अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है यथा दान विना स्वर्गो यथा ज्ञान विना यति भामि० १।२६ ।

यतित (भू० क० कृ०) [यत् + क्त] चेष्टा की गई, प्रयत्न किया गया कोशिश की गई, प्रयास किया गया ।

यतिन् (पु०) [यत् + इनि] संन्यासी ।

यतिनी [यतिन् + ङीप्] विधवा ।

यत्न [यत् + नङ्] 1 प्रयत्न करना प्रयास कोशिश इसलिए यत्न करो यदि न सिद्ध्यति कस्मात्र दोषः हि० प० २१ 2 मेहनत, श्रम, परिश्रम, प्रयत्नसाध्य 3 रक्षण, देखभाल, सावधानता आवश्यकता-मदीयोऽयं यत्नस्तव रक्षणे रत्न० २।१६, प्रतिपालयमात्मानं यत्नं —श० १ ५ पीड़ा कष्ट श्रम, कठिनाई तदाङ्गनिर्यातनाविधौ विधातुरीक्षेय उपास्त्र इवाय दम्भः कु० ५।२० ३।६६, रघु० ३।६० ।

यत्र (अव्य०) [यद् + त्रल्] 1 जहां, जिस स्थान में जिधर सैव मां (हो) यत्रास्ति यत्र हि भिन्नम नै० ५।२७ मु० १।१ वे० 2 जब जैसा कि यत्र काले में 3 चाहे कहीं, कहीं भी, जहां (सर्वत्र यहां वहां यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः तर्क० यत्र तत्र चाहे जिस स्थान में सर्वत्र, सर्वकुत्र यत्रतत्रवा कदापि 1 जहां कहीं, चाहे जिस जगह 2 जब कभी

यत्रत्य (वि०) [यत्र + त्यप्] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहता हुआ ।

यथा (अव्य०) [यद् प्रकारे थाल्] 1 स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) कौटिलीय के अनुसार यथाज्ञापयति महाराज 'जैसा कि महाराज आज्ञा करते हैं' (ख) सामान्य, जैसा कि आगे आता है तद्यथानुभूयते प० १, उत्तर० २।४ (ग) जैसा कि, की भांति (तुलनात्मकोक्ति तथा समानता के चिह्न का सूचक) आमीदिय यद्वरवस्य गृहे यथा श्री

—उत्तर० ४।८, कु० ४।३४, प्रभावप्रभव कान्त स्वाधीनपतिका यथा (न भूयति) काव्य० १० (घ) जैसा कि उदाहरणस्वरूप,-दृष्टान्त यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निर्यथा महानसे तर्क०, पंच० १।२८८, (ङ) प्रत्यक्ष इंगित को आरंभ करने के समय प्रयुक्त, अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोक्ष्यतेऽवनस्येति—श० १, विदित वस्तु से यथा स्मर, ज्ञानमप्युत्सहते न मां विना कु० ४।३६, (स्त्री०) जिससे कि, इसलिए कि - दर्शय न चौरसिंह यथा व्यापादयामि पंच १ 2 तथा के सहसंबंधित्व में प्रयुक्त होकर 'यथा' के निम्नलिखित अर्थ हैं : (क) जैसा, वैसा (इस अवस्था में तथा के स्थान में 'एव' और 'तद्वत्' भी बहुधा प्रयुक्त होते हैं) यथा वृक्षस्तथा फलम् —या यथाबीजं तथाङ्कुरः—भग० ११।२९ (इस अवस्था में संबंध की समानता को अधिक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली बनाने के लिए 'एव' शब्द यथा के साथ, अथवा दोनों के साथ जोड़ दिया जाता है) —बन्धूनामेष यथैव शान्ता प्रिया तनूजास्य तथैव सीता—उत्तर० ४।१६, न तथा बाधते स्कन्धो (या लोलम्) यथा बाधति बाधते, (इतना-जितना, जैसा कि)—कु० ६।७०, उत्तर० २।४, विक्रम० ४।३३, इस अर्थ में 'तथा' का बहुधा लोप कर दिया जाता है, सब उस अवस्था में 'यथा' का अर्थ उपर्युक्त (ग) में दिया हुआ है, (ख) ताकि जिससे कि (यहां 'यथा' 'जिससे' और तथा 'कि' का सूचित करता है) —यथा अन्धजनस्योच्चा न भवति तथा निर्वाह्य श० ३, तथा प्रयतेथा यथा नापहस्यसे जनै का०—१०१, तस्मात्मुच्चे यथा नाम लविष्यामि तथा-हंसि रघु० १।७२, २६, ३।६६ १५।६८, (ग) क्योंकि इसलिए, क्योंकि, अत -यथा इतायुस्त्वागतैरपि कलकल श्रुतस्तथा तर्कयामि आदि मा० ८, कभी-कभी तथा को लुप्त कर दिया जाता है—मन्द मन्द नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् सचिरयतेनयनसुभग खे भवन्त कलाका —मेघ० ९ (घ) यदि -तो, इसमें विश्वास से कि, बड़े निश्चय से (उक्ति और अनुरोध का दृढ़ रूप) वाङ्मन कर्मभि पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे तथा त्रिपथगभूते देवि मामन्तर्धातुमर्हसि रघु० १५।८१, यथा यथा-तथा तथा-जितना अधिक···उतना ही···जितना कम ···उतना ही यथायथा यौवनमंगिनाम-धिरूढ तथा, तथाधर्षतास्य सताप —का० ५९, मनु० ८।२८९, १२।३३, यथा-तथा किसी रीति से, किसी भी ढंग से, यथाकथंचित् किसी न किसी प्रकार । (जिसे० अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'यथा' का प्राय अनुवाद किया जाता है . के अनुसार, के अनुरूप, तदनुसार, तदनुरूप, के अनुपात से, अधिक न होकर, से० समस्त अव्य नीचे, - क्रमम्, - क्रमात्

(अव्य०) ठीक-ठीक अनुपातनुरूप में,- **अधिकारम्** (अव्य०) अधिकार या प्रमाण के अनुसार, **अधीत** (वि०) जैसा पढ़ा हुआ या अध्ययन किया हुआ है, मूलपाठ के समनुरूप,-**अनुपूर्वम्**-**अनुपूर्व्यम्**, **अनुपूर्व्या** (अव्य०) नियमित क्रम या परम्परा में, क्रमशः, यथाक्रम,- **अनुभूतम्** (अव्य०) 1 अनुभव के अनुसार 2 पूर्वानुभव के अनुरूप,—**अनुरूपम्** (अव्य०) यथार्थ समनुरूपता में, उचित रूप से, -**अभिप्रत**-**अभिमत**, **अभिलषित**, **अभीष्ट** (वि०) जैसा कि चाहा था, जैसा कि इरादा था या इच्छा की थी, इच्छा के अनुकूल, **अर्च** (वि०) 1 सचाई के अनुरूप, सत्य, वास्तविक, सही—सौम्येति चाभाष्य यथार्थमाथी रघु० १४।४४, इसी प्रकार 'यथार्थानुभव' (सही या शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थवक्ता' 2 सत्य अर्थ के समनुरूप, अर्थ के अनुसार सही ठीक, उपयुक्त, सार्थक -करिष्यन्निव नाभास्य (अर्थात् शत्रुघ्न) यथार्थरश्मिग्रहात् रघु० १५।६, एषि सद्य शिशुपाल ता यथार्था -शि० १६।८५, कि० ८।३९ कु० १।१६ 3 योग्य, उपयुक्त (**यंत्र—अर्थतः**) सत्यतापूर्वक, सही, उचित प्रकार से, °**अक्षर** (वि०) सार्थक, अक्षरशः सत्य वि० १।१, °**नाम्न्** (वि०) जिसका नाम अर्थ की दृष्टि से सही है या पूर्णतः सार्थक है (जिसके कार्य नाम के अनुरूप है) ध्रुवसिद्धेरपि यथार्थनाम्नः मिद्धि न मन्यते—मालवि० ४, परन्तपो नाम यथार्थनामा —रघु० ६।२१, °**वर्ण गुप्तचर** ('यथार्थवर्ण' के स्थान पर), -**र्ह** (वि०) 1 गुणों के अनुसार अधिकारी 2 समुचित, उपयुक्त न्यायोचित, °**वर्ण गुप्तचर**, द्वा **अर्हम्**, **अर्हतः** (अव्य०) गुण या योग्यता के अनुरूप—रघु० १६।४०, -**अर्हम्** (अव्य०) 1 औचित्य के अनुरूप 2 गुण या योग्यता के अनुरूप,— **अवकाशम्** (अव्य०) 1 कक्ष या स्थान के अनुसार 2 जैसा कि अवसर हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, औचित्यानुकूल 3 ठीक स्थान पर प्रासन्नमुत्कृष्य यथावकाशं निनाय —रघु० ६।१४, **अवस्थम्** (अव्य०) दशा या परिस्थिति के अनुकूल, **आख्यात** (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पूर्वोल्लिखित,—**आख्यातम्** (अव्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, **आगत** (वि०) मूलं, ग्रह, (अव्य० तम्) जैसा कि कोई आया, उसी रीति से जैसे कि कोई आया यथागत मातलिसारथिर्ययौ —रघु० ३।६७,—**आचारम्** (अव्य०) प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, **आम्नातम्**, **आम्नायम्** (अव्य०) जैसा कि वेदों में विहित है, —**आरम्भम्** (अव्य०) आरंभ के अनुसार, नियमित क्रम या अनुक्रम में,—**आवासम्** (अव्य०) अपने रहने के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने निवास के अनुसार, —**आशयम्** (अव्य०) 1 इच्छा या आशय के अनुसार 2 करार के अनुसार, **आश्रमम्** (अव्य०) आश्रम या किसी व्यक्ति के धार्मिक जीवन के विशिष्ट के अनुसार, **इच्छा**, **इष्ट**, **ईप्सित** (वि०) इच्छा या कामना के अनुसार, अपनी रुचि के अनुकूल, यदेष्ट, जैसा कि चाहा गया हो या कामना की गई हो, (अव्य० **क्षम्**, **टम्**, **तम्**) 1 इच्छा या कामना के अनुसार, इच्छा या मन के अनुकूल रघु० ४।५१ 2 जितनी आवश्यकता हो, मन भर कर यथेष्ट दुभुजे मोसम् चौर० ३, **ईक्षितम्** (अव्य०) जैसा कि स्वप्न देखा हो, जैसा कि वस्तुतः प्रत्यक्ष किया हो, **उक्त**, **उदित** (वि०) जैसा कि ऊपर कहा गया है, पूर्वोक्त, उपर्युल्लिखित यथोक्तसंज्ञा पंच० १, यथोक्तव्यापारा भ० १, रघु० २।७१, **उचित** (वि०) उपयुक्त, उचित, याजिद, योग्य (अव्य०—तम्) ठीक-ठीक, उपयुक्त रूप से, उचित रूप से, **उद्धारम्** (अव्य०) नियमित क्रम या परम्परा में, क्रमशः, सबन्धोऽत्र यथोद्धारम् मा० द० ७२९, **उत्साहम्** (अव्य०) 1 अपनी शक्ति या ताकत के अनुसार 2 अपनी पूरी शक्ति से, **उद्दिष्ट** (वि०) जैसा कि वर्णन किया गया है या संकेतित है, (**ष्टम्**) या **उद्देशम्** (अव्य०) संकेतित रीति से, **उपदेशम्** (अव्य०) मन या इच्छा के अनुसार, -**उपदेशम्** (अव्य०) जैसा कि परामर्श या अनुदेश दिया गया है, **उपयोगम्** (अव्य०) आवश्यकता या कार्य की दृष्टि से, परिस्थिति के अनुसार, **काम** (वि०) इच्छा के अनुरूप (अव्य० **मम्**) रुचि के अनुकूल, इच्छा के अनुरूप, मन भर कर यथाकामार्चितार्थानाम् रघु० १।६, ४।५१, **कामिन्** (वि०) स्वतन्त्र, प्रतिबंधरहित, -**कालः** ठीक या सही समय, उचित समय—रघु० १।६, (अव्य०—**लम्**) ठीक समय पर, समयानुकूल, मौसम के अनुसार, —सोपसर्पज्जलागार यथाकालं स्वपन्नपि- -रघु० १७।५१, **कृत** (वि०) जैसा कि मान लिया गया है, किसी नियम या प्रथा के अनुसार किया गया, प्रथानुकूल —मनु० ८।१८३,—**क्रमम्**,- **क्रमेण** (अव्य०) ठीक क्रम या परम्परा से, नियमित रूप से, सही रूप में, उचित रीति से—रघु० ३।१०, ९।२६, **क्षमम्** (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना संभव हो, - **ज्ञ**(वि०)मूर्ख, बेवकूफ, **ज्ञानम्**(अव्य०) व्यक्ति की अधिक से अधिक जानकारी या बुद्धि के अनुसार, **तथेनम्** (अव्य०) एवं के अनुसार, परिपक्वता के अनुसार,—**तथ** (वि०) 1 सत्य, सही 2 परिशुद्ध, खरा, (-**थम्**) किसी वस्तु के विवरण या

विशेषताओं का आख्यान, विवरण मूलक या सूक्ष्म कथन, (अव्य० - वत्) 1 यथार्थतः, सूक्ष्मतया 2 सही तौर पर, उचित रूप से, जैसा कि वस्तुतः बात हो, - दिक्,—दिशम् (अव्य०) सब दिशाओं में, - निर्दिष्ट (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है, जैसा कि ऊपर विशेषता बता दी गई है—यथानिर्दिष्ट-व्यापारा सखी—आदि, —न्यायम् (अव्य०) न्यायतः, सही रूप से, उचित रीति से—मनु० १।१, पुरम् (अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरों पर था, —पूर्व (वि०), पूर्वक (वि०) जैसा कि पहले था, पूर्ववर्ती—रघु० १२।४८, (—र्वम्)—पूर्वकम् (अव्य०) 1 जैसा कि पहले था—मनु० ११।१८७ 2 क्रम या परंपरा में, क्रमशः —गते भान्वा यथापूर्वम् —याज्ञ० १।३५,- प्रदेशम् (अव्य०) 1 उचित या उपयुक्त स्थान में—यथाप्रदेश विनिवेशितेन—कु० १।४९, आसञ्जयामास यथाप्रदेश कण्ठे गुणम्—रघु० ६।८३, ७।३४ 2 विधि या निर्देश के अनुसार, -प्रधानम्, —प्रधानतः (अव्य०) पद या स्थिति के अनुकूल, पूर्ववर्तिता के अनुसार—आलोकमार्गेण सुरा-नर्सधान् समावयामास यथाप्रधानम् -कु० ७।४६, प्रभावम् (अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, अपनी पूरी शक्ति से,—प्राप्त (वि०) परिस्थितियों के अनुरूप, - प्रार्थितम् (अव्य०) प्रार्थना के अनुकूल,- बलम् (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी शक्ति से,— भागम्, -भागशः (अव्य०) 1. प्रत्येक के भाग के अनुसार, ठीक अनुपात से 2. प्रत्येक अपने क्रमिक स्थान पर—यथाभागमवस्थिताः भग० ११।११ 3 ठीक स्थान पर - यथाभागमवस्थिनेपि रघु० ६।१९, भूतम् (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके अनुसार, सचाई के अनुसार, सत्यतः, यथार्थतः,—भूतदर्श (वि०) ठीक सामने देखने वाला (सब० के साथ) (मुक्तः) यथाभूतदर्शीव सीतया पुष्पकं बहु सोभयत् भट्टि० ५।४८, -मति (अव्य०) 1. यथा योग्य, जैसा कि योग्य है, यथोचित कि० ८।२ 2. नियमित क्रम में, पृथक् पृथक् एक एक करके बीजकर्त्ता मुखावर्त्ता विप्रकीर्णा यथायथम् सा० द० ३३७ -युक्तम्, —योगम् (अव्य०) परिस्थितियों के अनुकूल, यथायोग्य, उपयुक्त रूप से, योग्य (वि०) उपयुक्त, योग्य, उचित, सही, —रुचि (अव्य०) अपनी पसन्द या रुचि के अनुकूल, - वत्, —वत् (अव्य०) 1. क्रम या दर्शन के अनुसार 2 ठीक-ठीक, यथोचित, यथायोग्य, - वस्तु (अव्य०) जैसे कि तथ्य हैं, यथार्थतः, विशुद्ध रूप से, सचमुच, विधि (अव्य०) नियम या विधि के अनुसार, ठीक-ठीक, यथोचित यथाविधिहुताग्नीनाम् - रघु० १।६, संचस्कारोचित-प्रीत्या मैथिलेयौ यथाविधि—१५।२१, ३।७०,—विध-वत् (अव्य०) अपनी आय के अनुपात से, अपने साधनों के अनुरूप,—वृत्त (वि०) जैसा कि हो चुका है, किया गया है, (—त्तम्) वास्तविक तथ्य, किसी घटना की परिस्थितियाँ या विवरण,—वर्णम्, —शक्ति (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के अनुसार, जहाँ तक संभव हो,—शास्त्रम् (अव्य०) धर्मशास्त्रों के अनुसार जैसा कि धर्मशास्त्रों में विहित है मनु० ६।८८,—श्रुतम् (अव्य०) 1. जैसा कि सुना है, या बताया गया है 2. (अथानुपूर्वि) वैदिक विधि के अनुसार, संसृष्टि अलंकार शास्त्र में एक अलंकार यथासंख्य क्रमेणैव क्रमिकाणां समन्वय.—काव्य० १०- उदा० अद्य मित्र शिरसि च जय रक्तजय सज्जय चन्द्र० ५।१०७, (—क्यम्), संख्येन (अव्य०) संख्या के अनुसार, क्रमशः, संख्या के संख्या - याज्ञ० १।२१,—समम् (अव्य०) 1 उचित समय पर, करार के अनुसार, सर्वसम्मत प्रचलन के अनुसार, संभव (वि०) शक्य, जो हो सके, सुखम् (अव्य०) 1. मन या इच्छा के अनुसार 2. आराम से, सुखपूर्वक, इच्छानुकूल, जिससे सुख हो,—अङ्क निधाय करकोरु यथासुखं ते सखाहयामि चरणावुत पद्मताम्रौ—भ० ३।२२, रघु० ८।४८, ४।४३, स्थानं सही और उचित स्थान, (अव्य० नम्) उचित स्थान पर, ठीक-ठीक, स्थित (वि०) 1. वास्तविक तथ्य या परिस्थितियों के अनुकूल, जैसी कि स्थिति हो भट्टि० ८।८ 2 सचमुच, उचित रूप से,—स्वम् (अव्य०) 1 अपने अपने क्रम से, क्रमशः अभ्यासते वीरभुतो यथास्वम् रघु० १३।२२, कि० १४।४३ 2. वैयक्तिक रूप से रघु० १७।६५, 3 ठीक ठीक, यथोचित, सही रूप से।

यथावत् (अव्य०) [यथा+वति] 1 ठीक ठीक, जैसा का त्यों, यथोचित, सही रूप से, प्रायः विशेषण के अर्थ के साथ अध्यापिपद् साधिसुतो यथावत्—भट्टि० २।२१, लिपेर्यथावद्ग्रहणेन—रघु० ३।२८ 2. विधि या नियम के अनुसार, जैसा कि नियमों द्वारा विहित है,-ततो यथावद् विहिताध्वराय—रघु० ५।१९, मनु० ६।१, ८।२१४।

यद् (सर्व० वि०) [यच्+अदि, डित्] (कर्तृ०, ए० व०, पु० य, स्त्री० या, नपु० यत्-द्) संबंधबोधक सर्वनाम जो कोई सा, जो कुछ (क) इसका उपयुक्त सहसंबंधी 'तद्' है,—यस्य बुद्धिर्बले तस्य, परन्तु कभी-कभी 'तद्' के स्थान पर इदम्, अदस् या एतद् को भी प्रयुक्त किया जाता है, कभी कभी 'यद्' शब्द अकेला ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसंबंधी सर्वनाम का ज्ञान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों संबंध-

बोधक सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् (ख) जब इस शब्द की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'समष्टि' तथा इस शब्द का अनुवाद होता है 'जो कोई' 'जो कुछ', इस अवस्था में सह-सम्बन्धी सर्वनाम 'तद्' की भी आवृत्ति की जाती है—यो य शस्त्र बिभर्ति स्वभुजगुरुबल पाण्डवोना चमूनाम् कोधान्धस्तस्य तस्य स्वयमिह जगतावन्तकस्यान्तकोऽहम् —वेणी० ३।३० (ग) जब 'यद्' का किसी प्रश्न-वाचक सर्वनाम या उससे व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद् चन, वा या अपि' लगे हो या न लगे हों, तो इसका अर्थ होता है 'कुछ भी' 'चाहे जो कोई' 'कोई', येन केन प्रकारेण जिस किसी प्रकार से, किसी न किसी प्रकार से यत्र कुत्रापि यो वा को वा, य कश्चन आदि, यत्किंचिदेतद् 'यह तो केवल कुछ ज्ञात है'। यानि कानि च मित्राणि आदि, (अव्य०) अवयव के रूप में 'यद्' नाना प्रकार से प्रयुक्त होता है 1 किसी प्रस्तुत या चर्चित वाक्य का आरम्भ करने में अन्त में चाहे 'हि' हो या न हो सर्वोपरि जनप्रवादो यन्मातृमपदयत्युवध्नातीति का० ७२ —तस्य कदा-चिच्चिन्ता समुत्पन्ना यदर्थो वस्तुपाषादिचन्तनीया कल०गाद्य—पञ्च० १ 2 क्योंकि चूंकि त्रिगामाचरित लत स्वया म 'यदिद पुनरन्यथाङ्गनेत्रा परि-वृत्तार्धमुखी मयाद्य दृष्टा विक्रम० १।१७, या-चि संपद्य भरतस्या न वपुषि हसा न मिषत्येव यत् —मृदा० ७।१८, रघु० १।२७, ८३, इस अर्थ में 'यद् के पश्चात् इसका सहसम्बन्धी तद् या तत् आता है. दे० नै० २२।४६। सम० अपि (अव्य०) यद्यपि, अगले वक्ष पन्था यदपि भवन —मेघ० २७. —अर्थम्, —अर्थे (अव्य०) 1 जिस लिए, जिस कारण, जिस बात से, जिस हेतु, श्रुयता यदर्थमस्मि हरिणा भवत्सकाश प्रेषित प० ६, कु० ५।५२ 2 चूंकि, क्योंकि नूनं देव न शक्य हि पुरुषेणातिवर्तितुम्, यदर्थं बलवानेव न लभे विनया श्रिया मेघा०, कारणम्, कारणात् (अव्य०) 1 जिस लिए, जिस कारण 2 चूंकि क्योंकि,—कृते (अव्य०) जिस लिए, जिस बात से, जिस पुरुष या वस्तु के लिए,—भविष्य, भाग्यवादी (जो कहता है 'जो होना है वह होगा') - पञ्च० १।३१८ वा (अव्य०) अथवा, या,—नैतद्विद्म कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयु भग० २।६ (भाष्य-कार बहुधा इस शब्द को विकल्पार्थ बतलाते समय प्रयुक्त करते हैं), सत्यम् साम्प्रतिकता सत्यम् (अव्य०) निश्चय ही, सचाई तो यह है कि सायत सत्यमुच—अभज्ञानशकुन्तलस्य वो वचनस्य यत्सत्यम् कपित-मिव मे हृदयम्—वेणी० १, मुद्रा० १, मृच्छ० ४।

यदा (अव्य०) [यद्काले दाच्] 1 जब, उस समय जब कि, यदायदा जब कभी, यर्हितर्हि उसी समय, ज्योंही, यदाप्रभृति तदाप्रभृति जब से लेकर तब से लेकर 2 यदि पक्ष नैव यदा करीरकिंपचे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३ 3 जब कि, चूंकि, यत ।

यदि (अव्य०) [यद्+णिच्+इन्, णिलोप] 1 अगर, जो (शर्तसूचक, और इस अर्थ में प्राय विधिलिङ् के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी भविष्यत्काल अथवा वर्तमानकाल के साथ भी, प्राय इसके पश्चात् 'तर्हि' और कभी कभी 'तत' तदा, तत् या अत्र का प्रयोग किया जाता है) प्राणैस्तपोभिरयवाभिमत मदीयै कृत्य घटेत सुहृदो यदि तत्कृत स्यात्—मा० १।९, यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमति घोरम्—गीत० १०, यन्मे कृते यदि न सिध्यसि कोऽत्र (कन्दर्प) दोष हि० प्र० २५ 2 चाहे अगर

यद प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते—कु० ५।४४ 3 अवश्य कि, जब कि 4 यदि कदाचित्, शायद—यदि साक्षादेव क्रियता 'शायद आप ऐसा कर सकें' पूर्व स्पष्ट यदि किल भवेदङ्गमभिज्ञ वेत्ति मेघ० १०३, याज्ञ० ३।१०८, (यद्यपि) हालांकि, अगर्चे—शि० १९।८२ भग० १।३८ श० १।३१ यदि वा या, यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयु —भग० २।६ भर्तृ० ३।८३, या शायद कदा-चित्, भले ही, प्राय निजवाचक सर्वनाम के भी आवश्यकतानुसार आदर अभिव्यक्त कर दिया जाता है उत्तर० १।१२, ४।५।

यदु [यद् + उ पृषो० अस्य द] एक प्राचीन राजा का नाम, ययाति और देवयानी का ज्येष्ठ पुत्र यादवों का वंश प्रवर्तक। सम० कुलोद्भव —वंशज —श्रेष्ठ कृष्ण का विशेषण।

यदृच्छा [यत् कृच्छ्र + अङ्, टाप्] 1 मनमाना करना, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वतन्त्रता 2 संयोग घटना, इस अर्थ में प्राय करण० एक व० में प्रयुक्त होता है और 'घटनावश', संयोगवश' शब्दों से अनू-दित किया जाता है किंतर्हिमधुन यदृच्छयागता श्रीस् का०, देखने का संयोग हुआ आदि यदि-दृष्टेनेदृश यदृच्छयाऽऽगता श्रुतप्रभावा ददृशेऽथ दारिका रघु० ३।४२, विक्रम० १।१०, कु० १।१८। सम० अभिज्ञ ऐच्छिक अथवा स्वयंकृत साक्षी —लाभ 1 अकस्मात् वार्तालाप 2 स्वतन्त्र अथवा संयोगवश मिलन, घटनावश मिलाप।

यदृच्छातस् (अव्य०) [यदृच्छा + तसिल्] अकस्मात् घटनावश, संयोग से।

यन्तृ (पु०) [यम्+तृच्] 1 निदेशक, राज्यपाल, शासक 2 चालक (जैसे कि हाथी का, गाड़ी का), कोचवान सारथि—यन्ता गजस्याम्यपतद्गजस्य रघु० ७।३७, अथ यन्तारमादिश्य धुर्यान् विश्रामयेति सः १।५४ 3 महावत, हस्ति चालक, हस्त्यारोही।

यन्त्र् (स्वा० चुरा० उभ० यन्त्रति ते) नियन्त्रण में करना, दमन करना, रोकना, बांधना, कसना, बाध्य करना शापयन्त्रितपौलस्त्यबलान्धकारकक्षाहे रघु० १०।४७, नि , 1 दमन करना, नियन्त्रण में करना बेड़ियां डालना 2 कसना, बांधना, सम् , रोकना, नियन्त्रण में करना, ठहराना - संयन्त्रितो मया रघु० ७।

यन्त्रक [यन्त्र्+अच्] 1 जो नियन्त्रण करता है, या कसता है, खूंटी, अभा, सहारा टेक जैसा कि गृहयन्त्र' में (इस शब्द के नीचे उद्धरण देखिये) 2 बेड़ी, पट्टी, कसना, कठबंध या बंधि, कमरे का तस्मा 3 शल्योपयोगी उपकरण विशेष कर ठठा उपकरण (विप० शस्त्र) 4 कोई भी उपकरण या मशीन, यन्त्र, साधन, सामान्य उपकरण -कूपयन्त्रम्-यन्त्रा० १०।५९, कूएं से पानी निकालने वाली मशीन' इसी प्रकार -नेमि, -जल° आदि 5 चटकनी, कुंडी, सांकल 6 नियन्त्रण, बल 7. ताबीज, एक रहस्यमय ज्यामिति का रेखांकित जो ताबीज की भांति प्रयुक्त किया जाय। समा० यन्त्रक चक्की का पाट, कर्णिका एक प्रकार का आयु का पिटारा, कर्मकृत् (पु०) कलाकार, शिल्पकार, गृहम् 1 तेली का कोल्हू 2 निर्माणशाला, शिल्पगृह, -चेष्टितम् आयु का करतब जादू-टोना, वृद्ध (वि०) (द्वार) कुंडी या चटखनी जिसमें लगी हुई है, वाहकम् यन्त्रचालक कोई सेवा -पुत्रक, पुत्रिका यन्त्रचालित गुड़िया, या पुतला जिसमें डोरी या तार आदि कोई ऐसी कल लगा हो जिससे कि पुतली नाचे, प्रवाहः पानी की एक कृत्रिम सरिता रघु० १६।४९,—धारः एक नली या पतनाला, शरः कोई तीर या अस्त्र जो किसी यंत्र द्वारा छोड़ा जाय।

यन्त्रक [यन्त्र्+ण्वुल्] 1 जो कल-पुर्जों से सुसंरचित हो 2 कुशल धार्मिक, -कम् 1 पट्टी (आयु० में) 2 तैराक

यन्त्रणम्, -णा [यन्त्र्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 नियन्त्रण, दमन, रोक-थाम करयन्त्रणहतुरान्तरे व्यलिखत्कक्षकुचयुगेन पक्षतिः -नै० २।२ 2. नियन्त्रण, प्रतिबंध, रोक स्नेहयन्त्रणा तत्क्षणमन्तर्भूयस्यन्योन्यस्यालापि किमपि नानि कु० ७।३५, रघु० ७।२३ 3. यातना, कष्टदायक, -निधिः दीनकुचद्वययन्त्रणा तमरतस्मरयात् प्रतिबध्नती -नै० ४।१० 4. बल, बाध्यता, नियह, कष्ट, पीड़ा या वेदना (जो विवशता से उत्पन्न हो) -बलमल-पुपचारयन्त्रणया मालवि० ४ 5 अभिरक्षा, 6 पट्टी।

यन्त्रणी, यन्त्रिणी [यन्त्रण+ङीष्, यन्त्र्+णिनि+ङीष्] पत्नी की छोटी बहन, छोटी साली।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र+इतच्, यन्त्र्+क्त वा] 1 (घोड़ा आदि) जो जीन व साज से सुसज्जित हो 2 पीड़क, सताने वाला, 3 जिसने तावीज बांधा हुआ हो।

यम् (स्वा० पर० यच्छति, यत, इच्छा० यियंसति) 1. रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, वश में करना, दबाना, ठहराना, बन्द करना--यच्छेद्वाङ्मनसी प्रज्ञ. —कठ०, यतचित्तात्मन्--भग० ४।२१, दे० यत 2 प्रदान करना, देना, अर्पण करना-ग्रेर० (यमयति-ते) नियन्त्रण करना, रोकना आदि, आ , 1. विस्तार करना, लंबा करना, फैलाना,—बस्तम् पाणिमायच्छते --सिद्धा०, स्वाङ्गमायच्छमान---श० ४ (पाठान्तर) 2 ऊपर खींचना, घसीट खींचना, आयच्छति कूपाद्-उदकम्, सिद्धा०, बाहामुद्यतमायमीत्—भट्टि० ६।११९ 3 नियन्त्रित करना, थामना, दबाना, (श्वास आदि) रोकना—मनु० ३।२१७, ११।१००, याज्ञ० १।२४, अगवाई लेना, (आ०) लम्बा बढ़ जाना 5 ग्रहण करना अधिकार करना रखना--श्रियमायच्छमाना-मिरुत्तमाधिरनुलमाम्—भट्टि० ८।४६ 6 ले जाना, लेकर जाना, उद्--, (प्राय आ०) 1 उठाना, ऊपर करना, उद्यम करना- बाहू उद्यम्य—रा०१, परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् मनु० ४।१०४, रघु० ११।१७, १५। २४, भट्टि० ४।३१ 2 तैयार होना, प्रस्थान करना, आरंभ करना, (सप्त० या तुमुन्नंत के साथ) उद्यच्छ माना गमनाय भूप--रघु० १६।२९, भट्टि० ८।४७ 3 प्रयास करना, घोर प्रयत्न करना - उद्यच्छति वेदम् -सिद्धा० 4 शासन करना, प्रबन्ध करना, हुकूमत करना, उप (आ०) 1 विवाह करना भवानिमथ समयाविधानमुपायस्त श० ५, (मनः) आत्मानरूपा सिषिनोपयेमे कु० १।१८ रघु० १४।८७ शि० १५।२७ 2 पकड़ना, थामना, लेना, स्वीकार करना, अधिकार करना शस्त्राण्यु-पायसत जिघरासि--भट्टि० १।१६ १५।२१, ८।३३ 3. प्रकट करना, संकेत करना—भट्टि० ७।१०१, नि- , 1 नियन्त्रित करना, दमन करना, रोकना, वश में करना, शासन करना - प्रकृतीना नियता स्वया -भग० ७।२०, (मुद्रा) शस्त्रास्त्र फेंकना न निक्षिप्तमुप-शस्त्रात् कु० ५।५, 'उसे हटा नहीं सकता' आदि 2 दबाना, निलंबित करना, रोकना, (श्वास आदि) मनु० २।१९२ न कथंचन दुर्योनि प्रकृतिं स्वां नियच्छति मनु० १०।५९, 'न दबाना है न छुपाना

हैं' आदि 3 दान करना, देना—को म कुले निवपनानि नियच्छतीति—श० ६।२४ 4 सजा देना, दण्ड देना नियन्तव्यश्च राजभि मनु० ९।२।१३ 5 विनियमित करना या निर्देशित करना 6 प्राप्त करना, अवाप्त करना—तालज्ञत्वाश्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति याज्ञ० ३।११५ मनु० २।९३ 7 धारण करना (प्रेर०) 1 नियन्त्रित करना, वश में करना, विनियमित करना, रोकना, दण्ड देना—नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्मदण्ड श० ५।८ 2 बाँधना, कसना शि० ७।५०, रघु० ५।७३ 3. मर्यादित करना, हलका करना, विश्राम देना कु० १।६१, विनि—, दमन करना, नियन्त्रण रखना, भग० ६।२४, सम् 1 नियन्त्रित करना, दमन करना, रोकना, नियन्त्रण में रखना (आ०)—भग० ६।३६, मनु० २।१०० 2 बाधना, कैद करना, कसना, बंदी बनाना —बानर मा न सयमी भट्टि० ९।५०, मालवि० १।७, रघु० ३।२०, ४२ 3 एकत्र करना (आ)—व्रीहीन्सयच्छते—सिद्धा० सं. बन्द करना, भेंटना भग० ८।१२।

यमः [यम्+घञ्] 1 संयत करना, नियन्त्रित करना, दमन करना 2. नियन्त्रण, संयम 3 आत्मनियन्त्रण 4 कोई महान् नैतिक कर्तव्य या धर्मसाधना (विप० नियम)—तप्त यमेन नियमेन तपोऽनुत्तैव—कै० १३।१६, यम और नियम की निम्न प्रकार से भिन्नता दर्शायी गई है—शरीरसाधनापेक्ष नित्य यत्कर्म तद्यम, नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमानसानुसाधनम् अमर०, दे० कि० १०।१० पर मल्लि० भी, यमों की संख्या बहुधा दस बतलाई जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं—उदा० ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दान सत्यमकल्कता, अहिंसास्तेयमाधुर्यं दमश्चेति यमा स्मृता याज्ञ० ३।३१३, या आनृशस्य दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्, प्रीति प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश। कभी-कभी यम केवल पांच ही बताये जाते हैं—अहिंसा सत्यवचन ब्रह्मचर्यमकल्कता, अस्तेयमिति पञ्चैव यमाख्यानि बुधैर्जनै च 5 योग प्राप्ति के आठ अंगों या साधनों में पहला साधन। आठ अंग यह हैं —यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि 6. मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप, वह सूर्य का पुत्र माना जाता है—दत्तामसे त्वयि यमादपि दण्डधारे उत्तर० २।११ 7. यमल—यमौ रात्रिं प्रति यमौ च (अर्थात् नकुलसहदेवौ) कवीव सान्ति—वेणी० २।२५, यमयोरपि यत्पूर्वं जन्मतो ज्येष्ठता मता मनु० ९।१२६ 8. जोड़े में एक —वव् जोड़ा, जोड़ी। सम० अनुज अनुजवः यम का सेवक या टहलुआ, अन्तक 1 शिव का विशेषण 2 यम का विशेषण किङ्करः यम का सेवक, मृत्यु का दूत, कीलः विष्णु,—ज (वि०) यम से जुड़वा, यमल भ्रातरौ आवां यमजौ उत्तर० ६, दूत 1 मृत्यु का दूत 2 कौवा, द्वितीया कार्तिक शुक्ला दूज जब बहनें अपने भाइयों का सत्कार करती हैं, भाईदूज, तु० भ्रातृद्वितीया, धानी यम का निवास स्थान नर ससारान्ते विशति यमधानीजनैर्निकाम् भर्तृ० ३।११२, भगिनी यमुना नदी, यातना मरणोपरात पापियों को यम के द्वारा दी जाने वाली पीड़ा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग 'भीषण यातनाएं' या 'घोर पीड़ा' प्रकट करने के लिए भी किया जाता है), राज् (पु०) यम, मृत्यु का देवता, सभा यमराज की न्यायसभा, सूर्य एक भवन जिसमें केवल दो कमरे हों, एक का मुंह पश्चिम को तथा दूसरे का उत्तर को हो।

यमक: [यम+स्वार्थे कन्] 1 प्रतिबंध, रोक 2 यमल या जुड़वां 3 एक महान् नैतिक या धार्मिक कर्तव्य दे० यम,—कम् 1 दोहरी पट्टी 2 (अलं० में) एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति परन्तु अर्थ की भिन्नता के साथ, एक प्रकार की लय (इसके कई भेदों का वर्णन काव्या० ३।२।५२ में किया है) आवृत्ति वर्णसघातगोचरा यमक विदु काव्या० १।६१, २।१, सा० द० ६४०।

यमन (वि०) (स्त्री० नी) [यम्+ल्युट्] संयमी, दमन करने वाला, शासक आदि,—नम् 1 संयम करना, दमन करना, बाँधना 2 ठहरना, थमना 3 विराम, विश्राम, न मृत्यु का देवता यम।

यमनिका [यमन+कन्+टाप्, इत्वम्] परदा, ओट, तु० जवनिका।

यमल (वि०) [यम+ला+क] जोड़वां, जोड़ी में से एक, —ल दो की संख्या, लौ (द्वि० व०) जोड़ी, लम् —सी मिथुन, जोड़ी।

यमवत् (वि०) [यम+मतुप्, वत्वम्] जिसने अपनी वासनाओं पर संयम कर लिया है, आत्म नियन्त्रित —यमवतामवता च धुरि स्थित रघु० ९।१।

यमसात् (अव्य०) [यम+सात्] यम के हाथों में, यमकी शक्ति में, यमसात् कृ मृत्यु को सौंपना।

यमुना [यम्+उनन्+टाप्] एक प्रसिद्ध नदी का नाम (जो यम की बहन मानी जाती है)[1]। सम० जल (पु०) मृत्यु का देवता यम।

ययातिः [अस्य वायोरिव याति सर्वत्र रथमनिवर्तस्य] एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा का नाम, नहुष का पुत्र, [ययाति ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा

दासी के रूप में देवयानी के साथ गई, क्योंकि इसने किसी समय देवयानी का अपमान किया था और उस अपमान की क्षति पूर्ति के लिए आज शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा (दे० देवयानी)। परन्तु ययाति को इस दासी से प्रेम हो गया, फलतः उसने गुप्त रूप से उससे विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास वापस गई और उनसे अपने पति के आचरण की शिकायत की। शुक्राचार्य ने ययाति को प्राक्कालिक वार्धक्य तथा अशक्तता से ग्रस्त कर दिया। ययाति ने जब बहुत अनुनय-विनय किया तो प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को जिस किसी को दे सकता है यदि वह लेना स्वीकार करे। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, परन्तु सब से छोटे पुरु को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी जवानी ले ली। इस प्रकार इस समृद्ध यौवन को पाकर ययाति फिर विषयवासनाओं तथा आमोद प्रमोद में व्यस्त रहने लगा। इस प्रकार का क्रम १००० वर्ष तक चला परन्तु ययाति को तृप्ति नहीं हुई। आखिरकार, बड़े प्रयत्न के साथ ययाति ने इस विलासी जीवन को छोड़कर, पुरु की जवानी उसको वापिस कर दी और उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना स्वयं पवित्रजीवन बिताने तथा परमात्मचिन्तन करने के लिए वन को प्रस्थान किया।

ययावर = यायावर दे०।

यवि, वी (पुं०) [या+इ, कित्, यातेर्हित्वम्] 1 अश्वमेध या अन्य किसी यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा—शि० १५।६९ 2 घोड़ा।

यर्हि (अव्य०) [यद्+हिल्] 1 जब, जब कि, जब कभी 2 क्योंकि, यत, चूंकि, (इसका उपयुक्त सहसम्बन्धी 'तर्हि' या 'एतर्हि' है परन्तु अत्यूराम साहित्य में इसका विरल प्रयोग है)।

यव: [यु+अच्] 1 जौ या जौ के समान अनाजों से मिलता जुलता पौधा—मालवि० ४।१७ 2 जौ के दाने या जौ के दानों का भार 3 लम्बाई की एक माप एक अंगुल का १/६ या १/८ 4 हाथ की अंगुलियों में बना जौ के दाने का चिह्न जो समृद्धि, प्रजा, और सौभाग्य का सूचक है। सम०—अङ्कुरः, प्ररोहः जौ का अंकुर या पत्ती,—आग्रयणम् जौ की खेती का पहला फल, आर, अवाकार, शोरा, खारी, सज्जी, क्षुद्रः,—सूकरः जौ की भूसी को अलग कर उसकी राब से तैयार किया गया क्षारीय नमक, सज्जी,—सुरा जौ की शराब, यवमद्य।

यवन: [यु+ल्युट्] 1 ग्रीस देश का निवासी, यूनान देश का वासी 2 विदेशी, अनार्य—मनु० १०।४४ (आजकल इस शब्द का प्रयोग मुसलमान और यूरोपियन के लिए भी किया जाता है) 3 शराब।

यवनानी [यवनानां लिपिः यवन+आनुक् ङीष् च] यवनों की लिपि या लिखावट।

यवनिका, यवनी [यु+ल्युट्+ङीष्=यवनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1 यवनस्त्री, ग्रीस देश की स्त्री या मुसलमानी,—यवनी नवनीतकोमलाङ्गी—अम०, यवनी-मुखपद्मगता तेहे मधुमद न स—भृ० ४।६१, (नाटकों से ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यवन बालाएँ राजाओं की दासियों के रूप में नियुक्त की जाया करती थीं विशेषकर राजाओं के धनुष और तरकस को सम्भालने के लिए, तु० एष वामनहस्तार्पितयवनीभि परिवृत इव एवमवस्थाति प्रियवयस्य—श० २, प्रविश्य सान्तर्हस्ता यवनी श० ६, प्रविश्य चापहस्ता यवनी—विक्रम० ५ आदि) 2 परदा।

यवसम् [यु+असच्] घास, चारा, घरेलू पशुओं का घास यवसदेचनम् पंच० १, याज्ञ० ३।३०, मनु० ७।७५।

यवागू (स्त्री०) [यवसे मिश्रयते—यु+आगू] चावलों का माड़, चावलों के माड़ की काँजी, या जौ आदि किसी और अन्न की काँजी यवागूविरलद्रवा—सुश्रु०, सुधाय कल्पते यवागू—महा०।

यवागिका, यवागी [दुष्टो यवो यवागी—यव+ङीष्, आनुक्, पक्षे कन्+टाप्, ह्रस्व] अजवायन।

यविष्ठ (वि०) [युवन्+इष्ठन्, यवादेशः] कनिष्ट, सबसे छोटा, पु० सबसे छोटा भाई, कनिष्ठ भ्राता।

यवीयस् (वि०) [युवन्+ईयसुन् यवादेशः] छोटा, बच्चा,—पु० 1 छोटा भाई 2 क्षुद्र।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातो धुट् च] प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्ति, विभूति—विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि—मनु० ७।३४, यशस्तु रक्ष परतो यशोधनैः—रघु० ३।४८, २।४०। सम०-कर (वि०) (यशस्कर) कीर्ति देने वाला यशस्वी मनु० ८।३८७,—काम (वि०) (यशस्काम) 1 प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक 2 उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी,—कामम्, शरीरम् प्रसिद्धि के रूप में शरीर, कीर्तिदेह,—यशः शरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, रघु० १।५७, भर्तृ० २।३४,—दा (वि०) (यशोदा) कीर्तिकर (का) पारा (वा) नन्द की पत्नी और कृष्ण की पालक माता का नाम,—धन (वि०) (वि०) कीर्ति ही जिसका धन है, ख्याति में समृद्ध, आनन्द विभुत—अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियाणि यशो-धनानां हि यशो धरीयः—रघु० १४।३५, २।१,—भाज्ञः

यशरूपी ढोल,—शेष (वि०) जिसकी केवल ख्याति शेष हो, सिवाय कीर्ति के जिसका और कुछ न बचा हो,—अर्थात् मृतव्यक्ति, तु० कीर्तिशेष, (च) मृत्यु।

यशस्य (वि०) [यशसे हित—यत्] 1 सम्मान या कीर्ति की ओर ले जाने वाला—मनु० २।५२ 2 विश्रुत प्रसिद्ध, विख्यात।

यशस्विन् (वि०) [यशस्+विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत।

यष्टि,—ष्टी (स्त्री०) [यज्+क्तिन्, नि० न संप्रसारणम्]। 1. लकड़ी, लाठी 2. सोटा, गदका, गदा 3 खंभा, मस्तूल, स्तम्भ 4 अड्डा—जैसा कि 'वासयष्टि' में 5 वृन्त, सहारा 6 झंडे का डंडा जैसा कि 'ध्वजयष्टि' में 7 डंठल, वृन्त 8 शाखा, टहनी 'कदम्बयष्टि स्फुट-कोरकेव—उत्तर० ३।४१, इसी प्रकार 'सूतयष्टि—कु० ६।२, सहकारयष्टि आदि 9 डोरी, लड़ी, (जैसे मोतियों की) हार,—विभुज्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोल-यष्टि प्रविलुप्तचन्दनम् कु० ५।८, रघु० १३।५४ 10 कोई लंबा 11 कोई भी पतली या सुकुमार वस्तु ('शरीर' अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के पश्चात् समास के अन्त में प्रयोग)—न वीक्ष्य वेपथुमती सरसा-ङ्गयष्टि कु० ५।८५, 'पसीने से तर सुकुमार अंगों वाली'। सम०—ग्रहः गदाधारी, लाठी रखने वाला—निवास मोर आदि पक्षियों के बैठने का अड्डा—वृक्षेशया यष्टिनिवासभङ्गात् रघु० १६।१४ 2 खड़े हुए डंडों पर स्थिर कबूतरों का घर या छतरी—प्राण (वि०) 1 निर्बल, शक्तिहीन 2 प्राणहीन।

यष्टिक [यष्टि+कन्] टिटहरी पक्षी।

यष्टिका [यष्टिक+टाप्] 1 लाठी, डंडा, सोटा, गदका 2 (एक लड़का) मोतियों का हार।

यष्टी दे० यष्टि।

यष्टृ (पु०) [यज+तृच्] पूजा करने वाला, यजमान।

यस् (स्वा० दिवा० पर० यसति, यस्यति, यस्त) प्रयास करना, कोशिश करना, परिश्रम करना। प्रेर० (यास-यति—तो कष्ट देना, आ—1 प्रयास करना, कोशिश करना, चेष्टा करना मुद्रा० ३।१८ 2 थकना देना, थक जाना—नायस्यसि तपस्यन्ती भट्टि० ६।६०, १५।५४, (प्रेर०) कष्ट देना, सताना, पीड़ा देना प्र—, प्रयास करना, कोशिश करना।

या (अदा० पर० याति, यात) 1 जाना, हिलना-डुलना, चलना, आगे बढ़ना,—वयौ तदीयामवलम्ब्य वाहुमानम्र रघु० ३।२५, अन्वयौ अध्यमलोकपालम् २।१६ 2 चढ़ाई करना, आक्रमण करना मनु० ७।१८३ 3 जाना, प्रयाण करना, कूच करना (कर्म० या सम्प्र० के साथ अथवा 'प्रति' के साथ) 4 गुजर जाना, वापिस होना, बिदा होना 5 नष्ट होना, बीतना होना यातस्त्वयापि च विवेक भामि० १।६८, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३ 6 गुजर जाना, बीतना (समय का)—यौवनमनि-र्वार्ति यान्तु काव्य० १० 7 टिकना 8. होना घटित होना 9 जाना, पहुंचना, होना (प्राय भाव-वाचक संज्ञा के कर्म० के साथ) 10 उत्तरदायित्व संभालना न स्वस्य सिद्धौ यास्यामि सर्वव्यापार मात्मना कु० २।५४ 11 मैथुनसम्बन्ध स्थापित करना 12 प्रार्थना करना, याचना करना 13 ढूंढना, खोजना ('गम्' की भांति 'या' के अर्थ भी संयुक्त संज्ञा शब्द के अनुसार नाना प्रकार से बदलते रहते हैं—उदा० अग्रं या आगे आगे चलना, नेतृत्व करना, मार्ग दिखाना, अधो या डूबना, अस्तं या छिपना, अस्त होना क्षीण होना उदयं या उदय होना साक्ष्यं या नष्ट होना, निद्रां या सो जाना पदं या पद प्राप्त करना, पारं या पार जाना, स्वामी होना, पार कर जाना, आगे बढ़ जाना, प्रकृतिं या फिर स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना, लघुतां या लघुता होना वशं या वश में होना, अधिकारं में आना, वाच्यतां या निन्दित या निन्दित होना विपर्यासं या परिवर्तित होना का बदलना शिरसा वहीं या भूमि पर सिर झुकाना आदि), प्रेर० (यापयति-ते) 1 चलाना आगे बढ़ाना 2 हटाना, दूर हांकना रघु० ९।२१ 3 व्यय करना (समय) बिताना—नाटकीयेन विनोद-रसेन दिवसान् भामि० १, 4 सहारा देना, पालनपोषण करना इच्छा (दिवंगति) जाने की इच्छा करना, जाने को कहना अति —, 1 पार जाना, अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना 2 आगे बढ़ना अधि —, चले जाना, आगे बढ़ना अप निकलना दुरोदरियास्यसि कर्म निर-लस्तेन पणिभि भट्टि० ८।९०, अनु —, 1 अनुसरण करना पीछे जाना (आलं० से भी) अनुयास्यन्मुनि तनयौ रघु० १।९३, कु० ४।१, भट्टि० २।२० 2 नकल करना, बराबर करना स किलानुययौ तस्य राजानं रघिरन्वयम्—रघु० १।२७, ९।५ शि० १।१३ 3 साथ चलना, अनुगमन —, क्रमशः चलना अप —, चले जाना, बिदा होना, वापिस होना अभि —, पहुंचना, जाना नजदीक होना अभियया गिरावलम्बिनम्- शि० ५।१, रघु० ९।२ 2 पराजय करना, आक्रमण करना रघु० ५।३ 3 सम्पन्न करना आ —, 1 आना, पहुंचना निकट होना 2 पहुंचना, प्राप्त करना, भुगतना, किसी अवस्था में होना, क्षय, तुला, शरणम् आदि, उप 1 पहुंचना, निकट आना—कि० ९।१६ 2. (किसी विशेष अवस्था को) प्राप्त होना मृत्यु, पतन आदि

रुचम् आदि, निस्—, 1. निकलना, बाहर जाना --रघु० १२।८१ 2. बुजरना, (समय) बीतना, परि—, चारों ओर घूमना करके काटना, प्रदक्षिणा करना, प्र , 1 चलना, जाना—तस्तादमुल नवरदंचत-वत्प्रयाति - मृच्छ० ३।२७ 2. प्रयाण करना, कूच करना, प्रति , वापिस जाना, लौटना - रघु० १।७५, १५।१८, ८।९०, प्रत्युद्—, (आदर सत्कार) उठकर मिलना, अभिवादन करना, सत्कार करना—तामभ्यर्चा-मभ्यर्णमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरिं कु० ६।५०, मेघ० ७२, रघु० १।४९, विनिस्—, बाहर जाना, निकल जाना, में से चले जाना—प्राणास्तस्या विनिर्यंतु., —सम् , 1 चले जाना, बिदा होना, आगे पार कर लेना शा० १५।८ 2. जाना, प्रविष्ट होना सक्त शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही भग० २।२२ 3 पहुँचना।

याग [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1 उपहार, यज्ञ, आहुति 2 कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियाँ दी जायं - रघु० ८।३०।

याच (स्वा० आ० याचते-विरल प्रयोग-याचति याचित) मांगना, याचना करना, निवेदन करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना, अनुनय-विनय करना (द्विकर्म० के साथ)- बलिं याचते वसुधाम् सिद्धा०, पितरं प्रणिपत्य पादयोरपरित्यागमयाचतात्मन—रघु० ८।२२, भट्टि० १४।१०५ (उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई महान् परिवर्तन नहीं होता)।

याचक (स्त्री०-की) [याच्+ण्वुल्] भिक्षुक, भिखारी, आवेदक-तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः-सुभा०।

याचनम्,—ना [याच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 याचना, याचना करना, निवेदन करना, 2 प्रार्थना, अनुरोध, आवेदन याचना यासनाद्यैव, बध्यतायवयाचना-ञ्जलिः रघु० ११।७८।

याचनक [याचन्+कन्] भिखारी, अभियोक्ता, आवेदक।

याचिष्णु (वि०) [याच्+इष्णुच्] भीख मांगने पर उतारू याचनाशील, मांगने के स्वभाव वाला।

याचित (भू० क० कृ०) [याच्+क्त] मांगा गया, निवेदन किया गया, याचना किया गया, अनुरोध किया गया, प्रार्थना की गई।

याचितकम् [याचित+कन्] भिक्षा में प्राप्त वस्तु, उधार ली हुई कोई वस्तु।

याचना [याच्+अङ्+टाप्] 1. मांगना, याचना करना 2 भिखारीपन 3. प्रार्थना, निवेदन, अनुरोध-याचना मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा-भर्तृ० १।

याजक [यज्+णिच्+ण्वुल्] 1 यज्ञ करने वाला, यज्ञ कराने वाला पुरोहित 2 राजकीय हाथी 3 मदोन्मत्त हाथी।

याजनम् [यज्+णिच्+ल्युट्] यज्ञ का संचालन या अनुष्ठान कराने की क्रिया-मनु० ३।६५, १।८८।

याज्ञसेनी [यज्ञसेन+अण्+ङीप्] द्रौपदी का विशेषक नाम।

याज्ञिक (वि०) (स्त्री०-की) [यज्ञाय हितं, यज्ञ प्रयोजन-मस्य वा ठक्] यज्ञसंबंधी, -कः यज्ञ कराने वाला, या यज्ञ करने वाला, या यज्ञ कराने वाला पुरोहित।

याज्य (वि०) [यज्+ण्यत्] 1. त्याग करने के योग्य 2 यज्ञ संबंधी 3 जिसके लिये यज्ञ किया जाय 4. शास्त्र द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना है,-ज्यः यज्ञकर्ता, यज्ञसंस्थापक,--ज्यम् उपहार या दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में प्राप्त हो।

यात (भू० क० कृ०) [या+क्त] 1 गया हुआ, प्रयात, चला हुआ 2 बुजरा हुआ, विसर्जित, दूर गया हुआ (दे० 'या'),-तम् 1 चाल, गति 2 प्रयाण 3 भूतकाल। सम०-अग्नि, -अग्न्यग्नि (वि०) 1. बासी, इस्तेमाल किया हुआ, बिकृत, परित्यक्त, जो निरर्थक हो गया है यमातयाम्न यवः दश० 2. कच्चा, अधपका (भोजन आदि)--यातयाम गतरस पूति पर्युषितं च यत्-मनु० १७।२० 3 जीर्ण, बूढ़ा हुआ, घिसा-हुआ-पिटा-

यातनम् [यत्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रतिकार, बदला, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा जैसा कि 'वैरयातन' में 2. प्रतिहिंसा, वैरशोधन, वा 1. प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति, बदला 2 संताप संपीडन, वेदना 3. यम के द्वारा पापियों को दी गई यातना, नरक की यन्त्रणा (ब० व०)।

यातु: [या+तुन्] 1 मार्ग, बटोही 2 हवा 3. समय, पु०, नपु० भूतप्रेत, पिशाच, राक्षस। सम० -धान भूत-प्रेत, पिशाच, -भट्टि० २।२१, रघु० १२।४५।

यात्रा (स्त्री०) [यत्+ष्ट्रन्, वृद्धिरुच] जिठानी या देवरानी।

यात्रा [या+ष्ट्रन्+टाप्] 1. जाना, गति, सफर, यात्रा० ६।१. रघु० १८।१६ 2. सेना का प्रयाण, चढ़ाई, आक्रमण यात्रोद्योगे सुते सति मत्याज्ञायां महीपतेः - मनु० ७।८१, पंच० ३।३७, रघु० १७।५६ 3 तीर्थाटन करना तीर्थयात्रा 4. तीर्थ यात्रियों का समूह 5. उत्सव, पर्व, किसी उत्सव या संस्कार का अवसर—कालविशालाक्षस्य यात्राप्रसङ्गेन—का० १, उत्तर० 6. भ्रमण, उत्सवयात्रा, प्रभुता लघु यात्रासि-द्धयै यात्रारी —का० १, ६।२ 7. सड़क 8. जीवन का सहारा, जीविका, निर्वाह, यात्रामात्र प्रसिद्ध्यर्थं—मनु० ४।३, शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः - भग० ३।८ 9 (समय का) बीतना 10. संव्यवहार - यात्रा पैव हि लौकिकी—मनु० ११।१८४, लोकयात्रा देखो० १, मनु० ६।२७ 11. रीति, उपाय,

तरकीब 12 प्रथा, प्रचलन, दस्तूर, रीति—एकोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः परा—मनु० ९।२५, (लोकचार—कुल्लू०) 13 वाहन, सवारी।

यात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [यात्रा+ठक्] 1 यात्रा करता हुआ 2 किसी यात्रा या आन्दोलन से सम्बद्ध 3. जीवन-धारण की आवश्यक सामग्री 4. प्रचलित, प्रथानुकूल,—कः यात्री, —कम् 1. प्रयाण, अभियान या चढ़ाई 2. खाद्य सामग्री, (यात्रा के लिए) रसद, सम्भरण।

यात्रातथ्यम् [यथातथ+ष्यञ्] 1 वास्तविकता, सचाई 2 न्याय्यता, औचित्य।

यात्रार्थ्यम् [यथार्थ+ष्यञ्] 1 वास्तविक या सही प्रकृति, सचाई, सच्चा चरित्र—न सन्ति यात्रार्थ्यविदः पिनाकिनः—कु० ५।७७, रघु० १०।२४ 2 न्याय्यता, उपयुक्तता 3 उद्देश्य की पूर्ति या निष्पन्नता।

यादवः [यदोरपत्यम् अण्] यदु की सन्तान, यदुवंशी।

यादस् (नपुं०) [यान्ति वेगेन—या+असुन्, दुडागमः] कोई भी विशालकाय जलजन्तु, समुद्री दानव—यादांसि जलजन्तव—अमर०, अरुणो यादसामहम्—भग०, १०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम०—पतिः, —नाथः (यादसां पतिः, यादसां नाथः भी) 1 समुद्र, 2 वरुण का नाम—रघु० १७।२१।

यादृश (वि०) (स्त्री०—शी), **यादृश्**, **यादृक्ष** (वि०) (स्त्री० शी) [यद्+दृश्+क्त, क्विन्, कञ् वा, आत्वम्] जिस प्रकार का, जिसके समान, जिस प्रकृति का, जैसा।

यादृच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) [यदृच्छा+ठक्] 1 ऐच्छिक, स्वतः स्फूर्त, स्वतन्त्र 2 आकस्मिक, अप्रत्याशित।

यानम् [या भावे ल्युट्] 1 जाना, हिलना-डुलना, चलना टहलना, सवारी करना जैसा कि गजयानम्, उष्ट्र° रथ° आदि 2 जलयात्रा, यात्रा—समुद्रयानकुशला—मनु० ८।१५७, याज्ञ० १।१४ 3. अभियान करना, आक्रमण करना (राजनीति के छः गुणों में से एक)—अहितान् प्रत्यभीतस्य रणे यानम्—अमर०, मनु० ७।१६० 4 जलपोत, परिजन 5 सवारी, वाहन, गाड़ी, रथयाम सप्तमार कौवेरम्—रघु० १५।४५, १३।६९, कु० ६।७६, मनु० ४।१२०। सम० पात्रम् जहाज, नौका, —भङ्गः जहाज का टूट जाना,—मुखम् गाड़ी का अगला भाग, गाड़ी का वह भाग जहाँ जूआ बांधा जाता है।

यापनम्,—ना [या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, स्त्रियां टाप् च] 1 भगा देना, हाँक कर बाहर निकालना, निष्कासन, हटाना 2 (किसी रोग की) चिकित्सा या प्रशमन 3 समय बिताना जैसा कि 'कालयापन' में 4 विलम्ब, दीर्घसूत्रता 5. सहारा, निर्वाह 6 प्रचलन, अभ्यास।

याप्य (वि०) [या+णिच्+यत्, पुकागमः] 1 हटाये जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा अस्वीकार किये जाने के योग्य 2 नीच, तिरस्करणीय, मामूली, अनावश्यक। सम०—यानम् शिविका या पालकी, डोली।

यामः [यम्+घञ्] 1 निरोध, जैर्य, नियन्त्रण 2. पहर, दिन का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय—पश्चिमयामार्धमीक्षितप्रसाधनमिव चेतना—रघु० १७।१, इसी प्रकार यामवती, विभावरी आदि। सम०—घोषः 1 मूर्ख 2. घण्टा या घड़ियाल जिससे रात के पहरों की टनटन होती है—मन्द्रध्वनिर्यामघोषाजितयामतूर्यं—रघु० ६।५६, यमः प्रत्येक घण्टे के लिए निर्दिष्ट कार्य, —वृत्ति (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

यामलम् [यमल+अण्] जोड़ी, मिथुन।

यामवती [याम+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] रात—कि० ८।५६

यामिः,—मी (स्त्री०) [याति कुलात् कुलान्तरम्—या+मि, ङीप् च] 1. बहन (दे० जामि)—शि० १५।५८ 2. रात।

यामिकः [यामे नियुक्तः याम+ठक्] पहरेदार, रात को पहरे पर नियुक्त, चौकीदार—मनु० ५।११०।

यामिका, यामिनी [यामिक+टाप्, याम+इनि+ङीप्] रात—सविता विबधानि विधुरपि सवितरति दिनानि यामिन्यः, यामिनयोऽपि दिनानि च सुहृद् अवगीकृतमनसि—काव्य० १०। सम० पतिः 1 चन्द्रमा 2 कपूर।

यामुन (वि०) (स्त्री० नी) [यमुना+अण्] यमुना से सम्बद्ध, या निकला हुआ, या यमुना से उत्पन्न सब एक प्रकार का अञ्जन, सुर्मा।

यामुनेष्टकम् [यमुना+इष्टकम्] सीसा धातु।

याम्य (वि०) [यम+ष्यञ्] 1 दक्षिणी—द्वार रथमुपायास्यम्—भट्टि० १४।१५ 2. यम से सम्बद्ध रखने वाला या यम से मिलता जुलता। सम०—अयनम् दक्षिणायन, मकरसंक्रान्ति,—उत्तर (वि०) दक्षिण से उत्तर को जाने वाला।

याम्या [याम्य+टाप्] 1 दक्षिणदिशा 2 रात्रि।

याजयूकः [यज्+यङ्+ऊक] बार २ यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, जो लगातार यज्ञ करता रहता है। इज्याशीलः—स याजयूकः सह भिक्षुभूयैः—भट्टि० २।२०।

यायावर (वि०) [पुनः पुनः याति देशान्तरं गच्छति या+यङ्+क्वरप्] परिव्राजकीय साधु, सन्त,—यायावरा पुण्यकलेन चान्ये ज्ञानपूरिच्छा जगदर्चनीयम्—भट्टि० २।२०, महाभागस्तस्मिन्नयमयायावरकुले

—बालरा० १।१३ (यहाँ 'यावावर' एक कुल का नाम है)।

यावः,—यावकः,—कम् [यु+अच्+अण्=याव+कन्] 1. जौ से तैयार किया हुआ आहार 2. लाख, लाल रंग, महावर—लक्ष्यते स्म परिक्लमनयात्मा यावकेन विषतापि यथात्मा—शि० १०।९, १५।१३, कि० ५।४०।

यावत् (वि०) (स्त्री०—ती) [यद्+वतुप्, आत्वम्] ('तावत्' का सहसंबंधी) 1 जितना, जितने ('जितने' के लिए यावत् तथा 'उतने' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) पुरे तावन्तमेवास्य तनोति रविराटपम्। दीपकाकमलोन्मेषो यावन्मात्रेण साध्यते—कु० २।३३, ते तु यावन्त एकाकी तावत्य एवमे स्त्रियः—रघु० १२। ४५, १७।१७ 2 जितना बड़ा, जितना विस्तृत, कितना बड़ा या कितना विस्तृत यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके, तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः भग० २।४६, १८।५५ 3 सब, समस्त (यहाँ दोनों मिल कर समष्टि या साकल्य का अर्थ प्रकट करते हैं) —यावद्दत्तं तावद्भुक्तम् गद्य० अव्य०, 'यावत्' अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जहाँ तक, तक, पर्यन्त, जब तक कि, (कर्म० के साथ)—सत्यमाह यावत् पुत्रयोरवेक्षस्व उत्तर० ७, क्रियन्तमवधिं यावदस्मत्परिरक्षणे चित्रकारेणालिखितम् उत्तर० १, सर्पकोटर यावत् पद्य० १ (ख) तथा, ठीक उसी समय, इसी बीच में (मुख्य क्रिया जाने वाले कार्य को दर्शाने वाला)—तद्यावत् गृहिणीमाहूय मंगलकमनुतिष्ठामि अ० १, यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि अ० ३ 2 यदि यावत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हों तो निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इतनी देर कि, इतने समय तक कि, —यावद्विलोपार्जनसक्तस्तावज्जिजपरिवारो रक्त —मोह० ८ (ख) ज्योंही, अभी-अभी, इसी समय—एकस्य दुःखस्य न यावदन्त यच्छाम्यहं ''' तावद्विहतोऽयं समुपस्थितो मे हि० १।२०४, मेघ० १०५, कु० ३।७२ (ग) जबकि, उसी समय तक आश्रमवासिनो यावदेवेक्षाङ्कमुपागतं तावदाकृष्टा क्षिप्यन्तां वाजिनः श० १, प्रायः 'अ' के साथ भी प्रयोग जब कि 'यावत्' का अर्थ होता है 'इससे पूर्व कि' यावदेते सरसो नोत्पतन्ति तावदेतेभ्यः प्रयुक्तिरक्षमभिलक्ष्या विक्रम० ४ (घ) जब, जिस समय यावदुत्थाय निरीक्षते तावद् हंसोऽवलोकितः हि० १। सम० अवधि, —अवधि (अव्य०) अन्त तक, आखीर तक,—अर्थ (वि०) आवश्यकता के अनुसार, उतने जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आवश्यक हैं (अव्य)—यावदर्थपदा वाचमेवमाचाद्य मानवः विरराम —शि० २।१२, (अव्य० अर्थम्) 1. उतना जितना उपयोगी हो 2 सभी अर्थों में—अथापि च विरोधीनमहे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० (पाठान्तर),—इच्छम्, —ईप्सितम् (अव्य०) यथेच्छ, इच्छा के अनुकूल, —इष्टम् (अव्य०) आवश्यकता के अनुसार, जितना आवश्यक हो,—जन्म,—जीवम्,—जीवेन (अव्य०) जीवन भर, जीवनपर्यंत, आजीवन,—शक्ति (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना अधिक से अधिक बन पड़े,—सादित उक्त (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है,—स्थाय (वि०) 1. इतना बड़ा, इतना विस्तृत, जहाँ तक व्यापक हो—कु० २।३३ 2. नश्वर, तुच्छ, सामूली,—स्थायम्,—स्थित (अव्य०) जहाँ तक संभव हो, अपनी शक्ति के अनुसार—इसी प्रकार 'यावत्तरत्वम्'।

यावन (वि०) (स्त्री०—नी) [यवन+अण्, यु+णिच्+ल्युट् वा] यवनों से संबंध रखने वाला, न बदे-आवनी यावा प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०,—नः लोबान।

यावसः [यवस+अण्] 1 घास का ढेर 2. चारा, खाद्य-सामग्री।

यावसिक (वि०) (स्त्री०—की) [यष्टि प्रहरणमस्य —ठक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—कः लाठी से सुसज्जित योद्धा।

यास्कः [यस्कस्यापत्यम् · यस्क+अण्] निरुक्तकार का नाम।

यु। (अदा० पर० यौति, युत, प्रेर० यावयति, इच्छा० यियविषति या यूयूषति) 1 सम्मिलित होना, मिलना 2. मिलाना, गड्डमड्ड करना।

॥ (जुहो० पर० युनोति) अलग-अलग करना।

॥। (क्रया० उ० उ० युनाति, पुनीते) बाँधना, जकड़ना, सम्मिलित होना, मिलना।

॥ , बाँधना, अनुष्ठान करना, व्यति - , मिश्रण करना- अन्योन्य स्य व्यतिषक्त मनसाम् कर्मसु भीषणान्—भट्टि० ८।६।

युक्त (यु० क० कृ०) [युज्+क्त] 1. सम्मिलित, मिला हुआ 2 जकड़ा हुआ, जुए में जोता हुआ, साज-सामान से लदा 3 युक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित 4 सहित 5 सुसज्जित, युक्त, भरा हुआ, संहित (समास में या करण० के साथ) 6 स्थिर, तुला हुआ, लीन, व्यस्त (अधि० के साथ) 7 कर्मपरायण, परिश्रमी 8 कुशल अनुभवी, चतुर 9. योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त (तृ० या अधि० के साथ) 10. आदिकालीन, मौलिक (शब्द),—क्तः महात्मा जो परब्रह्म परमात्मा से सायुज्य प्राप्त कर चुका है,—क्तम् जोड़ी, युग्म। सम०—अर्थ (वि०) समझदार, विवेकी, सार्थक,—कर्मन् (वि०) जिसे किसी कर्तव्य कर्म पर

समझा गया है,—दण्ड (वि०) न्यायोचित दंड देने वाला—रघु० ४।८, -दर्शन् (वि०) सावधान,- रूप (वि०) योग्य, उचित, लायक, उपयुक्त (सब० या अधि० के साथ) —अन्य अस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव - श० १।७, अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि -- २।१६।

युक्ति (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] 1 मिलाप, संगम, सम्मिश्रण 2 प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लाना 3 जुए में जोतना 4 व्यवहार, प्रचलन 5 उपाय, तरकीब, योजना, युगुत 6 कपटयोजना, कूटयुक्ति, दाव-पेंच 7 औचित्य, योग्यता, सामञ्जस्य, संगति, उपयुक्तता 8 कौशल, कला 9 तर्कना, युक्ति, दलील 10 अनुमान, निगमन 11 हेतु, कारण 12 क्रमबद्धता, रचना यत्र खलिवय वाणीयुक्ति मा० १ 13 (विधि में) संभावना, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि से)—युक्तिप्राप्तिक्रियाविद्वसंबन्धायोगहेतुभि याज्ञ० २।९२, २१२ 14 (नाटकों में) घटनाओं की नियमित शृंखला, तु० सा० द० ३४३ 15 (अलं० में) किसी के प्रयोजन या अभिकल्प की प्रच्छन्न अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 16 कूट राग, योग 17 धातु में खोट मिलाना। सम० कल्पतरु हेतुओं का वर्णन, -कर (वि०) 1 उपयुक्त, योग्य 2 सिद्ध -ज्ञ (वि०) तरकीब या उपायों में कुशल, आविष्कार कुशल, -दक्ष (वि०) 1 उपयुक्त, योग्य 2 विशेषज्ञ, कुशल 3 स्थापित, सिद्ध 4 तर्कयुक्त।

युगम् [पृज्+घञ्, कुत्वम्, गुणाभाव] 1 भुजा (द्व० भी इस अर्थ में) -युगव्यायत बाहु रघु० ३।३४, १०।६७, शि० ३।६८ 2 जोड़ा, दम्पती, युगल कुचयोर्युगेन तरसा कलिता शि० ९।७२, स्तनयुग श० १।१९ 3 श्लोकार्ध जिसमें दो चरण होते हैं, युग्म 4 सृष्टि का युग (युग चार हैं कृत या सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२८०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष है, चारों को मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्तरोत्तर घटती हुई अवधि के अनुसार शारीरिक और नैतिक शक्ति भी मनुष्यों में बराबर गिरती गई है, संभवतः इसीलिए कृतयुग को स्वर्णयुग और कलियुग को लौहयुग कहते हैं) धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे भग० ४।८, युगक्षयपरिवर्तान्—श० ७।३४ 5 पीढ़ी, जीवन,—आ सप्तमाद्युगात् मनु० १०।६४, आयुष्कर्षे युगे ज्ञेय पञ्चमे सप्तमेऽपि वा याज्ञ० १।९६ (युगे=जन्मनि मिता०) 6 'चार' की संख्या की अभिव्यक्ति, 'बारह' की संख्या के लिए विरलप्रयोग। सम० अन्तः 1 जुए का किनारा 2 युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत शि० १।२३, रघु० १३।६ 3 मध्याह्न, दोपहर, अवधिः सृष्टि का अन्त या विनाश शि० १७।४०, कीलकः जुए की कीली पार्श्वग (वि०) जुए के पास जाने वाला, जुए में जुतने वाला बैल, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला—कु० २।१८।

युगन्धरः,-रम् [युग+धृ+अच्, मुम्] गाड़ी की जोड़ी जिसके साथ जुआ कस दिया जाता है।

युगपद् (अव्य०) [युग+पद्+क्विप्] एक ही समय, सब एक साथ, सब मिलकर उसी समय कु० ३।१ प्रायः समास में श० ४।२।

युगलम् [युज्+कलच्, कुत्वम्] जोड़ा दम्पती बाहु° हस्त° चरण° आदि।

युगलकम् [युगल+कन्] 1 जोड़ी, 2 श्लोकार्ध, जो दो मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाए, दे० युग्म।

युग्म (वि०) [युज्+मक्, कुत्वम्] सम० -युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु, तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्तवे स्त्रियम्—मनु० ३।४८, याज्ञ० १।७९ 1 जोड़ी, दम्पती, दे० अयुग्म 2 संगम, मिलाप 3 (नदियों का) संगम 4 जुड़वां 5 श्लोकार्ध जिन दो से मिलकर पूरा एक वाक्य बने - द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तम् 6 मिथुन राशि।

युग्य (वि०) [युगाय हितं-यत्] 1 जोतने के योग्य 2 जुता हुआ, साज सामग्री से सन्नद्ध 3 खींचा गया जैसा कि 'अश्वयुग्यो रथः' में, रथ जुता हुआ या खींचने वाला जानवर, विशेषतः रथ का घोड़ा—हरियुग्य रथ तस्मै - प्रजिघाय पुरन्दर—रघु० १२।८४।

युज् I (रुधा० उभ० युनक्ति, युङ्क्ते, युक्त) 1 सम्मिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना, संबद्ध होना, जुड़ना —तमर्धमिव भार्यया मुनेर्या योक्तुमर्हसि—कु० ६।७९, दे० कर्मवा० नीचे 2 जोतना, जीन कसकर सन्नद्ध करना, लगाना —भानुं सकृद्युक्ततुरङ्ग एव श० ५।४, भग० १।१४ 3 सुसज्जित करना, से युक्त करना जैसा कि गुणयुक्त में 4 प्रयुक्त करना, काम में लगाना, इस्तेमाल करना प्रशस्ते कर्मणि तथा मच्छब्द पार्थ युज्यते भग० १७।२६, मनु० ७।२०४ 5 नियुक्त करना, स्थापित करना (अधि० के साथ) 6 निर्देशित करना, (मन आदि का) स्थिर करना, जमाना 7 अपना ध्यान संकेन्द्रित करना - मन संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः —भग० ६।१४, युञ्जन्नेवं सदात्मानं—१५ 8 रखना, स्थिर करना, जमाना (अधि० के साथ)

9 तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सज्जित करना, युक्त करना 10 देना, प्रदान करना, सादर समर्पित करना—आशिष युयुजे, कर्मवा० (युज्यते) 1 सम्मिलित होने के योग्य रश्मिपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2 प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यस्व—भग० ५, महाधी० ७. रघु० २।६५ 3 योग्य या सही होना, समुचित होना, उपयुक्त होना (अधि० या संबंध के साथ) या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन तथैव सर्वे वर्त्या पाठिता आ० १, त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते—हि० १ 4 तैयार होना—ततो युद्धाय युज्यस्व भग० २।३८, ५० 5 तुल जाना, कीन होना, निर्देशित होना —मनु० ३।७५, १४।३५, कि० ७।१३। प्रेर० (योजयति—ते) 1 सम्मिलित होना मिलना एकत्र करना —रघु० ७।१४ 2 उपहार देना, समर्पण करना, प्रदान करना—रघु० १०।५६ 3. नियुक्त करना, काम पर लगाना, इस्तेमाल करना—अस्त्रविद्योऽयमेकस्मृम्—पञ्च० ४।१७ 4 मुड़ना, किसी ओर निर्देशित करना पापान्निवारयति योजयते हिताय—भर्तृ० २।७२ 5 उत्तेजित करना, प्रेरित करना, भड़काना 6 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7 तैयार करना, सुव्यवस्थित करना सुसज्जित करना इच्छा० (युयुक्षति-ते) सम्मिलित होने की इच्छा करना, जोतने की इच्छा करना, देने की कामना करना, अनु—,(आ०) 1 पूछना प्रश्न करना अन्वयुक्त मुक्तोत्तरं क्षिप्ते रघु० ११।६२, ५।१८, शि० १०।६८ 2 परीक्षण करना, जांच करना मनु० ७।७१, अभि ,(आ०) चेष्टा करना, काम में लिप्त आना 2 आक्रमण करना, धावा करना भक्तमभियास्यामि युयुक्षुर्वनं—दश० 3 दोषारोपण करना, दोषी ठहराना मनु० ८।१८३ 4 अधिकार जताना, मांग प्रस्तुत करना (जैसे कि किसी कानूनी अभियोग में)—विभाविते कर्मदोषेन देयं यदभियुज्यते—विष्णु० ४।१७, याज्ञ० २।९ 5 कहना, बोलना उप—,

उत्तेजित करना, सक्रियता उद्दीप्त करना 2. कोशिश करना, प्रयास करना अवस्तमभियोक्तुमुपयुङ्क्ते—दश० 3 तैयार करना, उप- ,(आ०) 1. इस्तेमाल करना, काम में लगाना—बाहुयुध्यमुपयुञ्जीत- शि० २।९३, पवनमनुसरिष्यन्नुद्यमायोपयुङ्क्ते सरसिजवनमेष प्रस्थितो राजहंसः रघु० ८।२१, मालवि० ५।१२ 2. पकड़ना, स्वाद लेना अनुभव करना (आत्म० से भी) रघु० १८।४९, भट्टि० ८।३९ 4 उपभोग करना, खाना—मनु० ८।४०, नि (आ०) 1. नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना, आदेश देना (अधि० के साथ) - यस्मा निवेदयिष्यन्ते स मयानियुज्यते—मा० १।९, बलाधिकृतौ तत्र भवान् कार्यान्तर. य इमामाश्रमपदमें नियुक्तवते श० १, कु० ३।१३, रघु० ५।२९ 2 सम्मिलित होना, मिलना 3. नियत करना आदिष्ट करना। (प्रेर०) 1 सम्मिलित करना, मिलाना, से युक्त करना, प्रदान करना—कु० ४।४२ 2 जोतना, संबद्ध करना, 3. उकसाना, प्रेरित करना—भग० ३।१, प्र—,(आ०) 1 इस्तेमाल करना, काम में लाना —अयमपि च शिरः शस्त्रव्यापारयोग्यमुपस्थाम्—रघु० ५।७५, सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते—भग० १७।२६ 2. नियत करना, काम में लगाना, निर्देशित करना, आदेश देना—मा मां प्रयुङ्क्ष्व. कुलक्रीतिकार्ये—भग० ३।५४, प्रायुङ्क्त गन्धे मम पुष्करे त्वाम्—३।५१, कु० ७।८५ 3 देना, प्रदान करना, अभिदान करना - अशिष प्रयुयुजे च वाहिनीम्—रघु० ११।६, २।७०, ५।३५, १५।८ 4 हिलना-डुलना, गतिदेना—मरुत्प्रयुता (वाक्लता)—रघु० २।१० 5 उत्तेजित करना, प्रेरित करना, प्रेरणा देना, हांकना—कु० १।२१, भग० ३।३६ 6 सपन्न करना, करना—रघु० ७।८९, १७।१२ 7 रंगमंच पर प्रतिनिधित्व करना, अभिनय करना, नाट्य करना—उत्तर रामचरितं तत्रभवान् प्रयुञ्जते उत्तर० १।२, परिषदि प्रयुञ्जानस्य भग कु० १. 8 इस्तेमाल करने के लिए उधार देना, (धन आदि) ब्याज पर देना मनु० ८।१४६, वि ,(आ०) 1 छोड़ना, परित्याग करना—कि० २।४९, रघु० १३।९३ 2 अलग-अलग करना—पुरो विभक्तैः सिकतेव कृपाक्षी कु० ५।२६ 3. दीक्षा करना, विधिवत् करना, विधि ,1 इस्तेमाल करना, व्यय करना 2. नियुक्त कर काम में लगाना 3 बांटना, अनुभाजन करना, विभाग करना—प्रत्येकं विनियुक्तात्मा कथं न ह्रासयेत्प्रभो—कु० २।३१ 4 नियुक्त करना, अलग करना, सम् ,सम्मिलित होना (कर्मवा० में)—सद्योऽयसे स्नेह वपुर्महिम्ना रघु० ५।२५, (प्रेर०) मिलाना, सम्मिलित करना।

II (स्वा० पर० योवति, योवयति) बाँधना, मिलाना, जोतना दे० ऊपर 'यु'।

III (दिवा० आ० युज्यते) मन को केन्द्रित करना ('युज्' के कर्मवा० रूप के समान)।

युज् (वि०) [युज्+क्विन्] (समास के अन्त में) 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ, युक्त हुआ, जोड़ा जाता हुआ 2 सम, अविषम, पुं० 1. इस्तेमाल, जो जोड़ देता है, मिला देता है 2. चूर्णि चूर्णि, जो अपने आपको भावसमाधि में संलग्न रखता है 3. जोड़ा, दम्पती (इस अर्थ में नपुं० भी)।

युज्यातः [युज्+घञ्] 1. हांकने वाला, रथवान् 2. वह व्यक्ति जो परमात्मा से सायुज्य प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास में लगा है।

युत (भू० क० कृ०) [यु+क्त] 1 जुड़ा हुआ, सम्मिलित,

मिला हुआ 2 से युक्त या सहित—जैसा कि 'गुणसम-युतो कर' में।

युतकम् [युत+कन्] 1 जोड़ी 2 मिलाप, मित्रता, मैत्री 3. विवाहोपहार 4 स्त्रियों की एक प्रकार की वेश-भूषा 5 स्त्रियों के वस्त्र की किनारी या झालर।

युतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्] 1 मिलाप, संगम 2 सुस-ज्जित होना, 3 स्वामित्व प्राप्त करना 4 जोड़, योग 5 (ज्योति० में) संयुक्ति, दो ग्रहों का स्पष्ट योग।

युद्धम् [युध्+क्त] 1 संग्राम, समर, लड़ाई, भिड़न्त, मुठ-भेड़, संघर्ष, द्वन्द्व वत्स केय बातां युद्ध युद्धमिति उत्तर० ६ 2 (ज्योति० में) ग्रहों का संघर्ष या विरोध। सम०—अवसानम् युद्ध की समाप्ति, सुलह, —आचार्यः सैन्यशिक्षा का गुरु उन्मत्त (वि०) युद्ध के लिए पागल, रणोन्मत्त, —कारिन् (वि०) लड़ने वाला, संघर्षशील, —भू, —भूमि (स्त्री०) रणक्षेत्र, मार्ग. सैनिक कूटचाल या छलबल, युद्धा-भिनय तिकड़मबाजी, —रङ्ग रणक्षेत्र लड़ाई का अखाड़ा —वीर 1 योद्धा, शूरवीर, मल्ल 2 (अल० में) सैन्यविक्रम में उत्पन्न वीरता का संचारीभाव, वीर-रस दे० सा० द० २३४, 'युद्धवीर' के नीचे रस०, —शौण्ड घोड़ा।

युध् (दिवा० आ० युध्यते, युद्ध) लड़ना, संघर्ष करना, विवाद करना, युद्ध करना—भग० १।२३, भट्टि० ५।१०१, प्रेर०- (योधयति—ते) 1 लड़वाना 2 युद्ध में सामना करना या विरोध करना—रघु० १२।५०

इच्छा० (युयुत्सते) लड़ने की इच्छा करना, सं—, मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, प्रति—, युद्ध में सामना करना, विरोध करना।

युध् (स्त्री०) [युध्+क्विप्] संग्राम, जंग, लड़ाई, मुठभेड़ —निषादयिष्यन् युधि यातुधानान् —भट्टि० २।२१, सदसि वाक् पटुता युधि विक्रम - मनु० २।६३।

युधान [युध्+आनच् स च किन्] योद्धा, क्षत्रिय जाति का पुरुष।

युप् (दिवा० पर० युप्यति) 1 मिटा देना, विलुप्त करना 2 कष्ट देना।

युवः [या+यङ्+डु] घोड़ा।

युयुत्सा [युध्+सन्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा।

युयुत्सु (वि०) [युध्+सन्+उ] लड़ने की इच्छा वाला

युवतिः,—ती (स्त्री०) [युवन्+ति, ङीप् वा] तरुणी स्त्री, तरुणी मादा (चाहे मनुष्य की हो या किसी पशु की हो) सुरयुवतिसमत्व किल पुनेर्न्यपत्यम्—शु० २।८, इसी प्रकार 'इभयुवति'।

युवन् (वि०) (स्त्री - युवतिः, ती, युनी—प्र० ब० —यवीयस् या कनीयस्, उ० ब०—यविष्ठ या कनिष्ठ) [यौतीति युवा, यु+कनिन्] 1 तरुण, जवान, वयस्क, परिपक्वावस्था को प्राप्त 2 हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ 3 श्रेष्ठ, उत्तम। पु० (कर्तृ० युवा, युवानौ, युवान, कर्म० ब० व० यूनः, करण० ब० व० युवभि आदि) 1 जवान आदमी, तरुण,—सा यूनस्तस्य विप्रस्य लावण्यं शशाक शान्तीनतया न वस्तुम्—रघु० ६।८१ 2 छोटी सन्तान (बड़ी सन्तान जीवित रहते हुए) —जीवति तु वडये युवा पा० ६।३।११३ (दे० इस पर सिद्धा०)। सम०—खलति (वि०) (स्त्री०—ति:,—ती) जवानी में ही गंजा - जरत् (स्त्री०—ती) जवानी में ही बूढ़ा दिखाई देने वाला, समय से पूर्व बूढ़ा हो जाने वाला, राज (पु०) - राज प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी, राज्याधिकारी राजकुमार राजा का उत्तराधिकारी पुत्र, (असौ) नृपण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।३५।

युष्मद् [युष्+मदिक्] मध्यमपुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक रूप (कर्तृ० त्वम् युवाम् यूयम्) तू, तुम (कई समासों के आरम्भ में प्रयुक्त)।

युष्मादृश्, श (वि०) [युष्मद्+दृश+क्विन्, आत्वम्] तुम्हारी तरह।

यूक,—का [यू+कन्, दीर्घ, स्त्रियां टाप्] जूं मनु० ११।१४५।

यूति (स्त्री०) [यु+क्तिन्, वि० दीर्घ] मिश्रण, मिलाप संगम, मेलजोल, करोमि वो द्विजियंतान शिवाय पाणिग्रिदृशा —भट्टि० ३।६९।

यूथम् [यु+थक् पृषो० दीर्घ] रेवड़, लहंडा, भीड़, टोली झुण्ड (जैसे वन्य पशुओं का) -स्त्रीरत्नेषु समाधेयी प्रियतमा पूर्वं सवेष दशा- विक्रम० ४।२५, श० ५।५। सम० नाथ प, पति. 1 किसी दलों या दल का नेता 2 किसी रेवड़ या भीड़ (प्रायः हाथियों की) का मुखिया, विलासलोल यूथी —राजयूथए यूथिकाजवलक्षेषी विक्रम० ४।२४।

यूथिका, यूथी [यूथ पुष्पमस्मिन् अस्या—यूथ+अन्+टाप्, यूथ+अण्+ङीष्] एक प्रकार की चमेली, जूही, बेला या इसका फूल यूथिकाजवलक्षेषी —विक्रम० ४।२४, मेघ० २६।

यूप [यु+पक्, पृषो० दीर्घ] 1. यज्ञ की स्थूणा (यह प्रायः बेल या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनाई जाती है) जिसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु, मेध के समय बाँध दिया जाता है अपेक्षसे साधुजनेन वैदिकी रमशान-सुकरस्य न यूपसन्निधा कु० ५।७३ 2 विजय-स्मारक, विजयोपहार।

यूषः, —षम्, यूषन् (पु०, नपु०) [यूष्+क, कनिन् वा] रसा, शोरबा, शोरवा, मटर का रसा ('यूषन्' शब्द के

पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० ब० के पश्चात् 'युष्' के स्थान में विकल्प से युवन् हो जाता है)।

येन (अव्य०) ['यद्' शब्द का करण० का एक वचनांत रूप जो क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होता है] 1 जिससे, जिसके द्वारा, जिस लिए, जिस कारण से, जिसके साधन से कि तद् येन मनो दुर्मनसं स्याता न श्रुध्यताम् - रघु० १५।६४, १४।७४ 2 जिससे कि दर्शय त चौरसिंहं येन व्यापादयामि पंच० ४ 3 चूंकि, क्योंकि।

योक्त्रम् [युज्+ष्ट्रन्] 1. डोरी, रस्सी, तस्मा, रज्जु 2 हल के जुए की रस्सी 3 वह रस्सी जिसके द्वारा किसी पशु को गाड़ी के जोड़े से बाँध दिया जाता है।

योगः [युज् भावादौ घञ्, कुत्वम्] 1. जोड़ना, मिलाना 2 मिलाप, संगम, मिश्रण, उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्—श० ७।२२, सुखमहता महते गुणाय योगः—कि० १०।२५, (वां) योगस्तडित्तोयदयोरिवास्तु रघु० ६।६५ 3 संपर्क स्पर्श, संबंध तमङ्कमारोप्य शरीरयोगजैः सुधानिषिक्तेव तमिवाभृत स्वयं रघु० ३।२६ 4 काम में लगाना, प्रयोग, इस्तेमाल —एतैरुपाययोगैस्तु शक्यास्ता परिरक्षितुम् - मनु० ९।१०, रघु० १०।८६ 5 पद्धति, रीति, ढंग, साधन—कषायोगेन दुष्यति—हि० १, बातचीत के ढंग में, 6 फल, परिणाम (अधिकतर समास के अन्त में या अपा० के साथ) रक्षायोगादयमपि तव प्रस्तुतः संविधानः—श० २।१४, कु० ७।५५ 7 जुआ 8 वाहन, सवारी, गाड़ी 9 जिरहबख्तर, कवच 10 योग्यता, औचित्य उपयुक्तता 11 व्यवसाय, कार्य, व्यापार 12 दाव-पेंच, जालसाजी, धूर्त चाल 13 तरकीब, युक्ति, उपाय 14 कोशिश, उत्साह परिश्रम, अध्यवसाय -मनु० ७।४४ 15 उपचार, चिकित्सा 16 इन्द्रजाल, अभिचार, मन्त्रप्रयोग, जादू, जादू-टोना 17 लब्धि, अवाप्ति, अभिग्रहण 18 धन दौलत, द्रव्य 19. नियम, विधि 20 पदार्थ, संबंध, नियमित आदेश या प्रयोग, एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता 21. निर्वचन, या अर्थ की दृष्टि से शब्द व्युत्पत्ति 22 शब्द के निर्वचनमूलक अर्थ (विप० रूढि) 23 गंभीर भावचिन्तन, मन का संकेन्द्रीकरण परमात्मचिन्तन, जिसे योगदर्शन में 'चित्तवृत्तिनिरोध' कहते हैं,—सती सती योगविसृष्टदेहा कु० १।२१, योगेनान्ते तनुत्यजाम्—रघु० १।८ 24 पतंजलि द्वारा स्थापित दर्शन पद्धति जो सांख्य दर्शन का ही दूसरा भाग समझा जाता है, परन्तु व्यवहारतः यह एक पृथक् दर्शन है (योगदर्शन का मुख्य सिद्धांत उन उपायों की शिक्षा देना है जिनके द्वारा मानव आत्मा पूर्ण रूप से परमात्मा में मिल जाय और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गंभीर भावचिन्तन ही मुख्य साधन बताया गया है, इस प्रकार के योग या मन के संकेन्द्रीकरण के समुचित अभ्यास के लिए विस्तार के साथ नियमों का प्रतिपादन किया गया है) 25 (अंक में) जोड़, संकलन 26 (ज्योति० में) संयुक्ति, दो ग्रहों का योग 27 तारापुंज 28. विशेष प्रकार का ज्योतिषीय संयोग-विभाग (इस प्रकार के बहुधा २७ योग गिनाये गये हैं) 29. किसी नक्षत्र पुंज का मुख्य तारा 30 संधि, परमात्मा की एकता योग 31. जोड़ना, गुणकर 32 ठोढ़ी, विश्वास-घाती : सम० अंगम् योग की प्राप्ति के साधन (यह गिनती में आठ हैं, नामों के लिए दे० यम 5.) —आचारः 1 योग का अभ्यास या पालन 2. बुद्ध के उस संप्रदाय का अनुयायी जो केवल विज्ञान या प्रज्ञा के शाश्वत अस्तित्व को ही मानता है,—आचार्यः, 1 जादू का सिद्धक 2 योग दर्शन का अध्यापक, —आत्मजम् जालसाजी से भरी अन्धकारमयता—मनु० ८।१६५, —आरूढ (वि० (सूक्ष्मभावचिन्तन में निमग्न, —ऽवस्था सूक्ष्मभावचिन्तन के अनुरूप आत्म-स्थिति, —इन्द्रः,—ईशः, - ईश्वरः 1 योग में निष्णात या सिद्धहस्त 2 जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली है 3 जादूगर 4. देवता 5 शिव का विशेषण 6 याज्ञवल्क्य का विशेषण, क्षेमः1 सामान की सुरक्षा, संपत्ति की देखभाल 2. दुर्घटनाओं से संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुल्क, बीमा 3 कल्याण, कुशलक्षेम, सुरक्षा समृद्धि—तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—भग० ९।२२, मूर्धायां मे अनन्या योगक्षेम वहन्त्य -मालवि० ४ 4 संपत्ति, लाभ, फायदा (पुं०, नपुं० द्वि० ब०, जौ,—क्षे, नपुं० ए० ब० भग्) (संपत्ति का) निग्रहण और धारण, उपलब्धि और सुरक्षा, पुराने का धारण तथा नूतन का अभिग्रहण (जो पहले से अप्राप्त हो) अलब्धलाभो योगः स्यात् क्षेमो लब्धस्य पालनम् दे० भाग० १।१०० और उस पर शिरो०, चूर्णम् जादू का चूर्ण, जादू की शक्ति वाला चूरा,—कल्पितायेन योगचूर्णमिवातीवं चन्द्रापीडाय—सुधा० २,—तारका,—तारा नक्षत्रपुंज का मुख्य तारा,—दानम् 1. योग के सिद्धांतों का संचारण 2. जालसाजी से मुख्य उपहार, धारणा उच्च भक्ति, अन्धकारावृत्त -भाव: शिव का विशेषण,—निद्रा अर्धचिन्तन और अर्धनिद्रित अवस्था, जागरण और निद्रा के बीच की स्थिति अर्थात् तन्द्रा—योगनिद्रां गतस्य ते-वेणी० १, हि० ३।७५, मनु० ३।४१ 2. बुद्ध के शब्द में

- विष्णु की निद्रा - रघु० १०।१४, १३।६, षट्दम् आत्मसमाधि के अवसर पर संन्यासियों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर घुटनों तक शरीर को ढक लेता है,- शक्तिः विष्णु का विशेषण, अस्त्रम् 1 भक्ति की शक्ति, भावचिंतन की शक्ति, अलौकिक शक्ति 2 जादू की शक्ति,—माया 1 योग की जादू जैसी शक्ति 2 ईश्वर की सर्जन शक्ति जिससे कि देवता के रूप में मूर्त धरा की रचना की जाती है (भगवत सर्जनार्था शक्ति) 3 दुर्गा का नाम,- रङ्गः नारंगी, रूढ (वि०) वह शब्द जिसके निर्वचनमूलक अर्थ भी है, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ है, उदा० 'पंकज' इसका व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है 'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ' परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका अर्थ 'कीचड़ में उत्पन्न किसी वस्तु अर्थात् कमल' में प्रतिबद्ध हो जाता है, तु० 'आतपत्र' छतरी, — रोचना एक प्रकार का जादू का लेप जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य और अभेद्य हो जाता है तेन च परितुष्टेन योगरोचना मे दत्ता—मृच्छ० ३,—वर्तिका जादू का लैम्प या बत्ती,- वाहिन् (पु०, नपु०) औषधियों को मिलाने का माध्यम—उदा० वहद्

नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि पर मनु सुश्रु०, —वाही 1 रेह, सज्जी 2 मधु 3 पारा,- विक्रयः खोये की बिक्री,- विद् (वि०) योग का जानकार (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 योगाभ्यासी 3 योग-सिद्धान्तों का अनुयायी 4 जादूगर 5 दवाइयों के बनाने वाला, विभागः बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुओं को अलग-अलग करना, विशेषतः सूत्र के शब्दों को अलग अलग करना, एक ही नियम के दो तीन टुकड़े करना (महाभाष्य में पतंजलि ने इसका बहुत प्रयोग किया है—उदा० अदसो मात् पा० १।१।१२), शास्त्रम् योगदर्शन,—समाधिः आत्मा का गूढ़ भावचिन्तन में लीन होना —तमस परमापदव्यय पुरुष योगसमाधिना रघु —रघु० ८।२४, योगविधि ८।२२, सारः सब रोगों की एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर, —सेवा भावचिंतन का अभ्यास करना।

योगिन् (वि०) [युज्+घिनुण्, योग+इनि वा] 1. से युक्त, या सहित 2 जादू की शक्ति से युक्त, पु० 1 चिन्तनशील महात्मा, भक्त, संन्यासी—सेवाध्यै. परमगहनो योगिनामप्यगम्यः पद्य० १।२८५, बभूव योगी किल कार्तवीर्यः —रघु० ६।३८ 2 जादूगर, ओझा, बाजीगर 3 योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी, —नी 1 जादूगरनी, अभिचारिका, ओझाइन, बाजीगरनी 2 भक्तिनी 3 शिव या दुर्गा की सेविकाओं की टोली (यह संख्या में आठ मानी जाती हैं)।

योगेष्टम् (नपु०) सीसा, राँगा।

योग्य (वि०) [योगमर्हति यत्, युज्+ण्यत् वा] 1 लायक, उचित, उपयुक्त, योग्यता-प्राप्त योग्यो ज्य वृषभस्ते वर 2 योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, सक्षम, अर्ह (अधि० तल०, सह० के साथ तथा समास में प्रयुक्त) 3 उपयोगी, सेवा करने के योग्य 4 योग या भाव-चिन्तन के योग्य, -क्षः युक्ति या तरकीबों का कल्पित, क्षम् 1 अभ्यास, व्यवहार- अपर प्रणिधान-योग्यता भक्त पञ्चशरीरयोगिनाम् रघु० ८।१९, इसी प्रकार 'मानयोग्या' काव्या० २।२४३, धनुर्योग्या अस्त्रयोग्या आदि 2 सैनिक कवायद, अभ्यास,—यम् 1 सवारी, गाड़ी, वाहन 2 चन्दन की लकड़ी 3 रोटी 4 घृत।

योग्यता [योग्य+तल्+टाप्] 1. सामर्थ्य, सक्षमता न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसै —रामा० 2 अनुरूपता, औचित्य 3 समुपयुक्तता 4 (न्या० में) ज्ञान की अनुकूलता या संगति, शब्दों द्वारा संकेतित वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की असंगति का अभाव -उदा० 'अग्निना सिञ्चति' में योग्यता नहीं है, इसकी परिभाषा यह है -एकपदार्थेऽपरपदार्थसंसर्गो योग्यता —त० को०।

योजयत् [युज् णिजन्त स्यट्] 1 जोड़ना, मिलाना, जोतना 2 प्रयोग करना, स्थिर करना 3 तैयारी, व्यवस्था 4 व्याकरणसम्मत रचना, सम्बन्धित 5 आठ कोस या चार मील अथवा चार कोस की दूरी की माप -न योजनान्तरं दूरं बान्धवानामभ्यमुपैति तृष्णया -हि० १।१४६ 6 उत्तेजित करना, भड़काना 7 मन का संकेन्द्रीकरण भाव (=योग), या 1 समय, मिलाप, संबंध 2 व्याकरणसम्मत शब्दान्वय। सम० गन्धा 1. कस्तूरी 2. व्यास की माता सत्यवती।

योजन दे० योजयत्।

योध [युध्+अच्] 1 योद्धा, सैनिक, लड़ाकू, सहाम्मदा-येरधि योधमुख्यः महा० 2 संग्राम, लड़ाई। सम० -अगारः, रम् सैनिकों का निवास, सैन्यावास द्वारकः, र्वः सैनिकों का कानून, सैन्यविधि या नियम, क्षत्रियः लड़ाकू सिपाहियों की पारंपरिक जमात, वाह्यालि।

योधनम् [युध् भावे स्यट्] संग्राम, लड़ाई, मुठभेड़।

योधिन् (पु०) [युध+णिनि] योद्धा, सिपाही, लड़ाकू।

योनि (पु०,स्त्री०) [यु+नि] 1. उत्पत्तिस्थान, उत्पत्तिसंबंधित 2. जन्मस्थान, मूलस्थान, उद्गम, मूल, उत्पत्तात्मक कारण, निर्झर, फौवारा या योनि सर्वेश्वराणां सा हि योनिरयोनिजा उत्तर० ५।३०, शु० २।९, ४।४३, उत्पन्न या उदित के अर्थ में प्रयोग प्राय. समास के अन्त में अग०

५।२२ 3 स्थान 4 आवास, स्थान, आसन या पात्र, आसन, आधार 5. घर, गात्र 6 कुल, गोत्र, वंश, जन्म, अस्तित्व का रूप —जैसा कि 'मनुष्ययोनि, पक्षि', पशु' आदि 7 जल। सम०—मुख: जन्मस्थान या गर्भाशय का मुख, —ज (वि०) गर्भाशय से जन्म लेने वाला, जरायुज, —देवता पुर्वाषाफल्गुनी नक्षत्र, —संकर: ब्रह्मदेशी का अपने स्थान से हट जाना, —रजस् रज:स्राव, शिशम् भ्रूणांकुर, शिशु,—संकर: अवैध अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न वर्ण संकर आदि।

योनी दे० योनि।

योपनम् [युप+ल्युट्] 1 मिटाना, विलुप्त करना 2. कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय 3 चिकनता, चिकनाहट 4 उत्पीडन, बलात्कार, ध्वंस।

योषा, योषित् (स्त्री०), योषिता [यौति मिश्रीभवति-यु+स+टाप्, योषति पुमांसम् यु+क्विप्, योषित्+टाप्] स्त्री, लड़की, तरुणी, जवान स्त्री—अध्यस्तीनां रमणवर्मणि योषिता तच्च सकल—मेघ० ३७, शि० ४।८२ ८।२५।

योषित्क (वि०) (स्त्री०—की) [युक्तित आगत' ठक्] 1 उपयुक्त, योग्य, उचित 2 तर्क संगत, तर्क का हेतु पर आधारित 3 तर्क्य, अनुमेय 4. प्रचलित, प्रथानुकूल, क: राजा का कामोद्दीपक साथी—मु० 'नर्मसचिव'।

योग [युज्+घञ्] योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

योगपद्यम् [युगपद्+ष्यञ्] समकालिकता, एकसाथ-स्थिकता।

यौगिक (वि०) (स्त्री० की) [योग+ठक्] 1 उपयोगी, सेवा के योग्य, उचित 2 प्रचलित 3 व्युत्पन्न, निर्वचनमूलक, साध्यव्युत्पत्ति के अनुरूप (विप० रूढ या परम्परागत) 4 उपचार परक 5 योग संबंधी, योग से व्युत्पन्न।

यौतक (वि०) (स्त्री०—की) [युते विवाहकाले अधिगतं वृत्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिस पर उसका एकान्ततः अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर यथार्थतः उसका ही एकमात्र अधिकार हो -'विभागसमये चैव पुत्रेभ्योपैत्र यौतकम्'—याज्ञ० २।११४—कम् 1. निजी सम्पत्ति 2. स्त्री का दहेज, स्त्रीधन (विवाह के अवसर पर कन्या को उपहार में दिया गया धन) - मातुस्तु यौतकं यत् स्यात् कुमारी भाग एव स: मनु० ९।१३१।

यौतवम् [यु+तु=वोतु+अण्] एक प्रकार की साग।

यौध (वि०) (स्त्री० - धी) [योध+अण्] लड़ाकू, लड़ने-वाला।

यौन (वि०) (स्त्री० - नी) [योनि: योनिं सम्बन्धात् वा अस्यास्ति - अण्] 1. सोदर 2. वैवाहिक, विवाह संबंधी —मनु० २।१०,—अम् विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध —मनु० ११।१८०।

यौवनम् [युवतीनां समूह:—अण्] तरुणियों या जवान स्त्रियों का समूह- अन्यसुरत विशेषेऽपि यौवतानां सहज-यौवनोद्भिन्नमाहात्म्य- मेघ० २।४१ 2. तरुणी स्त्री का गुण (सौन्दर्य आदि) तरुणी स्त्री होने की अवस्था —यद्दो विभूषणीयं बहति उन्मि पृथ्वीसता- गीत० १०, (युवतीजनोचितं रूपम्)।

यौवनम् [युवा भाव: अण्] 1 जवानी (आलं० से भी) तारुण्य, तरुणाई, जवानपना- युष्मत्समस्य च यौवनस्य च इमे गुणा: समुपजीव्य स्थिता--विक्रम० २।७, यौवनोद्भवरूपविभावरम् रघु० १।८, १।५० दिन-यौवनारम्भम्—१३।२० 2. जवान अभिलाषों का विशेष कर तरुणियों का समूह। सम०—अन्त (वि०) जवानी में समाप्त होने वाला, जवानी होना मु० ६।४४,—आरम्भ: जवानी का उभार, खिलती हुई जवानी,—वर्ष: 1. जवानी जैसा अधिमान 2. जवानी में सहसम्भूत अभिषेक,—व्यञ्जनम् 1. जवानी का चिह्न 2. मासधर्म, मासिक 3. तियों के गुप्त।

यौवनत्वम् [यौवन्+त्व] जवानी।

यौवनाश्व: [युवनाश्व+अण्] युवनाश्व का पुत्र मान्धाता।

यौवराज्यम् [युवराज+ष्यञ्] युवराज का पद या अधिकार, यौवराज्येऽभिषिक्त:, (युवराज पद का मुकुट धारण किये हुए)।

यौष्मक (वि०) (स्त्री०—की), यौष्मदीय (वि०) [युष्मद्+अण्, छ, वा, युष्मत् आदेश:] तुम्हारा, आपका।

र [रा+ड] 1 अग्नि 2. गर्मी 3. तेज, ज्वाला 4. वायु, गति।

रंह् (भ्वा० पर० रंहति) हिलना—डुलना, वेग से चलना, जल्दी करना—न रंहसा व्यतीपतम्—शिशु० १०।६ १४।१८, प्रेर०—(रंहयति - ते—कुछ के अनुसार चुरा० उभ०) 1. जल्दी से चलाना, प्रेरणा देना 2. बढ़ाना 3. बाजा 4. दौड़ाना।

रंहि: (स्त्री०) [रंह्+इसि] चाल, वेग।

रक्षस् (पु०) [रह्+असुन्, हुक् च] 1. चाल, वेग, रघु० २।३४ शि० १२।७, कि० २।४० 2 आतुरता, प्रबलता, उत्कटता, उग्रता।

रक्त (भू० क० कृ०) [रञ्ज् करणे क्तः] 1. रंगीन, रंगा हुआ, हलके रंग वाला, रंग लिप्त—आयाति बालातपरक्तसानुः—रघु० ६।६० 2 लाल, गहरा लाल रंग, लोहितवर्ण, सांध्य मेघ प्रतिनवजवापुष्परक्त इवाग्नि मेघ० ३६, इसीप्रकार रक्ताशोक, रक्तांशुक आदि 3 मुग्ध, आनुरागी, अनुरक्त, प्रेमासक्त—अथमैन्दीमुख पश्य रक्तमभ्रति चन्द्रमा —चन्द्रा० ५।५८ (यहां यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 4 प्रिय, वल्लभ 5 सुहावना, आकर्षक, मधुर, सुखद - श्रोत्रेषु समुत्कंठितं रक्तमासा गीतानुग वारिमृदङ्गवाद्यम्—रघु० १६।६४ 6 खेल का शौकीन, खिलाड़ी, क्रीडाप्रिय,—क्तः 1 लाल रंग 2 कुसुम्भ,—क्ता 1 लाल 2 गुंजा का पौधा,—क्तम् 1 रुधिर 2 ताबा 3 जाफरान 4 सिन्दूर। सम०—अक्ष (वि०) 1 लाल आंखों वाला 2 डरावना (—क्षः) 1. भैंसा 2. कबूतर,—अंकः मूंगा,—अंगः 1 लटजीरा 2 मङ्गलग्रह 3 सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल,—अधिवंध लालों की सजावट अंबरम् लाल वस्त्र (—रः) गेरुआ वस्त्रधारी परिव्राजक, —अर्बुद रसौली,—अशोकः लाल फूलों वाला अशोक वृक्ष—मालवि० ३।५,—आधारः चमड़ी, खाल, —आस्य (वि०) लाल दिखाई देने वाला, आस्रवः एक प्रकार का आस्रव जिसमें रुधिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृदय, तिल्ली और जिगर आदि),—उत्पलम् लालकमल,—उपलम् गेरु, लाल मिट्टी,—कण्ठ, कण्ठिन् (वि०) मधुरकण्ठवाला (पु०) कोयल कह,- कंबलः मूंगा, कमलम् लाल कमल कम्बलम् 1 लाल चन्दन, जाफरान, केसर,—कूष्माण्डम् सिन्दूर,—क्षि (स्त्री०) रुधिर की कै करना, क्षिद्धुः सिंह,—तुण्डः तोता,—तृष् (पु०) कबूतर,—धातु 1 गेरु या हरताल 2 ताबा—पः पिशाच, भूत-प्रेत,—पलाशः अशोकवृक्ष, या जोंक —पातः नरहत्या,—पाद (वि०) लाल पैरों वाला, (—दः) 1 लालपैरों का पक्षी, तोता 2 मुर्गा 3 हाथी,—पायिन् (पु०) लटजीरा,—पायिनी जोंक, —पित्तम् 1 लाल रंग की फुन्सी 2 नाक और मुंह से रक्तस्राव होना,—प्रमेहः मूत्र के साथ रक्त का निकलना, - मांसम् मांस, —मोक्षः,—मोक्षणम् रुधिर निकलना,—यष्टी,—यष्टी भेषक, रजः 1. लाल 2 अनार का पेड़ 3 कुसुम्भ, - वर्ण (वि०) लाल रंग का (र्णः) 1 लाल रंग 2 वीरबहूटी नामक कीड़ा (—र्णम्) सोना, - वस्त्र, - वाससू (वि०) लाल रंग की वस्त्र भूषा धारण किये हुए, सारस,—शालूकम् सिन्दूर,—शीर्षकः एक प्रकार का सारस, सरोरुहम् लाल कमल,—सारङ्ग लाल चन्दन।

रक्तक (वि०) [रक्त+कन्] 1 लाल, 2. आनुरागी, अनुरक्त, स्नेहशील 3 सुहावना, विनोदप्रिय 4 रक्तरञ्जित—क 1 लाल रंग की वेशभूषा 2 आनुरागी व्यक्ति, शृङ्गार-प्रिय पुरुष 3 खिलाड़ी।

रक्तिः (स्त्री०) [रञ्ज्+क्तिन्] 1 सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लावण्य 2 आसक्ति, स्नेह, निष्ठा, भक्ति।

रक्तिका [रक्ति+कन्+टाप्] गुंजा का पौधा या इसका बीज जो तोलने (एक रत्ती) के काम आता है।

रक्तिलम् (पु०) रक्त+इलच्] ललाई।

रक्ष् (भ्वा० पर० रक्षति, रक्षित) 1 रक्षा करना, चौकीदारी करना, देखभाल करना, पहरा देना, (पशु आदि) पालना, राज्य करना, (पृथ्वी पर) शासन करना--भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु—श० ६, आस्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति —श० १।१३ 2 सुरक्षित रखना, (भेद) न खोलना --हृत्य रक्षति 3 सम्भालना करना, बचाना, बचा कर रखना (बहुधा अपा० के साथ) अलब्ध चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेदवेक्षया—हि० २।८, आपदर्थे धनं रक्षेत् हि० १।१४१. रघु० २।५०. ११।७७ 4 टालमटूल करना— मुद्रा० १।२, (अभि, परि सम् आदि उपसर्ग जोड़ने पर इस धातु के अर्थों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता)।

रक्षक (वि०) (स्त्री—रक्षिका) [रक्ष्+ण्वुल्] चौकसी रखने वाला, रक्षा करने वाला—क रक्षवाला, अभिभावक, चौकीदार, पहरेदार।

रक्षणम् [रक्ष्+ल्युट्] रक्षा करना, बचाव, संभालना, चौकसी, देखभाल आदि ('रक्षणम् भी) की रास, लगाम।

रक्षस् (नपु०) [रक्षसेदुधिरस्मात्, रक्ष्+असुन्] भूत-प्रेत पिशाच, भूतना, वैताल —चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम्, वयञ्च शूरसंकाशरविभूयोनो रणे हता - उत्तर० २।१५। सम०-घ्नः, नाथ रावण का विशेषण सभा राक्षसों की सभा।

रक्षा [रक्ष्-भावे अ+टाप्] 1. बचाव, संभालना, चौकसी मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युक्ता स्वयंभुवा— कु० २।२८, शि० १८।३१, श० १।१४, रघु० २।४, मेघ० ४२ 2 देखभाल, सुरक्षा 3 चौकसी, पहरा 4 ताबीज या गण्डा, परिरक्षी, जैसे कि नीचे 'रक्षाकरण्ड में 5 अभिभावक देवता 6. भस्म, राख 7 रक्षाबन्धन, पहुंची (विशेषकर श्रावण पूर्णिमा के दिन कलाई में बांधी जाने वाली रेशम या सूत की डोरी) ताबीज या गण्डे के रूप में (इस अर्थ में 'राखी' शब्द भी प्रयुक्त है)। सम०—अधिकृतः जिसे अरक्षण या अधीक्षण कार्य

सुपुर्द किया गया है, अधीक्षक या शासक अथवा राज्यपाल 2. दण्डनायक, मजिस्ट्रेट 3. मुख्य अंगरक्षाधिकारी अपेक्षक: 1 कुली, द्वारपाल 2 अन्तःपुर का पहरेदार 3 साधु, लौंडा 4. नाटक का पात्र अभिनेता,—करण्डः करण्डकम् तश्तरी की डिबिया, गण्ड, आदू की डिबिया अहो रत्नाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते -का० ७,—गृहम् प्रसूति का गृह, रत्नागृहलता दीपा प्रत्यादिष्टा इवाभवन्—रघु० १०।५९,—गारः एक प्रकार का भोजपत्र,—गार्द,—गुप्तः पहरेदार, चौकीदार, प्रारक्षी,—प्रदीपः वह दीपक जो भूत प्रेत से बचाव के लिए जलता हुआ रखा जाता है,—भूषणम्,—मणि, —रत्नम् एक प्रकार का आभूषण जो तावीज की भांति भूत प्रेतादि की बाधा से बचाव के लिए पहना जाता है।

रक्षित्, रक्षिन् (वि०) [रक्ष्+तृच्, णिनि वा] बचाने वाला, चौकसी करने वाला, राज्य करने वाला - नै० १।१ (पु०) 1 रक्षा करने वाला, संरक्षक, बचाने वाला 2 चौकीदार, सन्तरी, प्रारक्षी —अयं पदमस्य इव मा नाम रक्षिष्य मृच्छ० ३।

रघु [लघति आशसीमान आप्नोति—लघ्+कु, न लोपः, लस्य रः] एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता (ऐसा प्रतीत होता है कि इसका नाम रघु [रघ् या रघ्=जाना] इस कारण पड़ा हो क्योंकि इसके पिता ने यह पहले ही जान लिया कि यह लड़का विद्या के ही पार नहीं जायगा अपि युद्ध में अपने शत्रुओं को भी परास्त कर देगा—तु० रघु० ३।२१ अपने नाम की सार्थकता के अनुसार उसने दिग्विजय आरम्भ किया, समस्त ज्ञात भूमण्डल का चक्कर लगाया और कीर्ति तथा विजयोपहार के साथ वापिस आया। यज्ञ कर उसने विश्वजित् यज्ञ का आयोजन किया और दक्षिणा में ब्राह्मणों को सर्वस्व दे डाला, तथा अज को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया)। सम० नन्दनः, —वंशः—वंश्यः—सिंहः राम के विशेषण।

रघु (वि०) [रमते तुष्यति रम्+कु] 1 अधम, दरिद्र नगण्य, अभागा, दयनीय 2 मन्थर,—कुः भिखारी मन्दभाग्य भूखा, क्षुधार्त, मुखमरा—प्रेतरघु —का ५।१६, दुर्मुलित या 'मुखमरी आदमी' पञ्च० १।२५४।

रङ्कु [रम्+कु] हरिण, कृष्णसार मृग नै० २।८३।

रङ्गः [रञ्ज् भावे घञ्] 1. रङ्ग, वर्ण, रङ्गने का मसाला रङ्गलेप या रोगन 2. रङ्गमंच, नाटकशाला, नाट्यगृह अखाड़ा, सार्वजनिक आमोदस्थली—जैसा कि रङ्गविघ्नोपशान्तये -का० द० २८१ 3 सभा-भवन, क्रीडागार—अहो रागवद्धचित्तवृत्तिरालिखितः इव सर्वतो रङ्गः -श० १, रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृपात्, पुरुषस्य तथाभावं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः - सर्व० 5. रणक्षेत्र 6 नाचना, बाला, अभिनय 7 आमोद, मनोविनोद 8 सुहावा 9 स्वर का अनुनासिक उच्चारण—सरङ्गम् कम्पयेत्कण्ठम् रङ्गीयेति निदर्शनम्—शिक्षा० ३०, इसी प्रकार २६, २७, २८, ग रङ्ग् राग, टित्व। सम०—अङ्गणम् अखाड़ा, नाचघर,—अवतरणम् 1 रङ्गमंच पर प्रवेश 2. अभिनेता या नाट्यपात्र का व्यवसाय,—अवतारकः—अवतारिन् (पु० अभिनेता, नाटक का पात्र,—आजीवः 1. अभिनेता 2. चित्रकार, इसी प्रकार, आजीविन् (पु०),—आरः -जीवकः चित्रकार, रङ्गोपजीवक,—आरुः 1. अभिनेता, नाटक का पात्र 2. कामी, लम्पट सिन्दूर,—देवता क्रीडा तथा सार्वजनिक आमोद-प्रमोद की अधिष्ठात्री देवता,—द्वारम् 1 रङ्गशाला का द्वार 2. किसी नाटक का मंगलाचरण या प्रस्तावना,—भूमिः (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा की रात,—भूमिः (स्त्री०) 1. रङ्गमंच, नाट्यशाला 2. अखाड़ा, रणक्षेत्र, संज्ञकः रङ्गशाला, —वस्तु (स्त्री०) 1. लाख, लाखरङ्ग, महावर, इसे पैदा करने वाला कीड़ा 2 कुटनी, दूती,—वस्तु (नपु०) रङ्गलेप, शालः अखाड़ा, बाड़ा जहां नाटक नाच आदि होते हों,—शाला नाचघर, नाट्यगृह, नाटकघर।

रन्ध् (स्वा० उभ० रन्धति-ते) 1 जाना 2 शीघ्र जाना, जल्दी करना—द्वारम् ररन्धतुर्यामम्—भट्टि० १४।१५।

रच् (चुरा० उभ० रचयति-ते ,रचित) 1 व्यवस्थित करना, सज्जित करना, तैयार करना, बना लेना, रचना करना—पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दवास्वाविधि —अमरु ४०, रचयति शयनं सचकितनयनम्—गीत० ५ 2 बनाना, रूप देना, कार्यान्वित करना, रचना करना पैदा करना—मायाविकल्परचितैर्मदनैं—रघु० १३।७५, माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं आराबुधेरीहते—मृच्छ० ७।६, मौलौ वा रचयाञ्जलिम् —वेणी० ३।४० 3 लिखना, रचना करना, (किसी कृति आदि को) एकत्र करना—अध्यधादीं जगन्नाथो विश्वसङ्गामरीरचत्-भट्टि० २६, शि० ३।१५ 4 रखना, स्थिर करना, जमाना—रचयति चिकुरे कुरबककुसुमम्—गीत० ७, कु० ४।१८, ३४, शि० ६।१७ 5 अलंकृत करना, सजाना मेघ० ६६ 6. (मन को) लगाना, आ—, व्यवस्थित करना, वि—, 1. व्यवस्थित करना 2. रचना करना 3 कार्यान्वित करना, पैदा करना, बनाना— मेघ० ९५, भामि० १।३०।

रचना—आ [रच्+युच्, स्त्रियां टाप् [1 व्यवस्था, तैयारी, विन्यास- अभिषेक°, संगीत° आदि 2. बनाना सर्जन करना, उत्पन्न करना—अन्यैव काऽपि रचना वचनावलीना—भामि० १।६९, इसी प्रकार—भ्रुकुटि रचना—मेघ० ९५ 3 सम्पन्नता, पूर्ति, निष्पत्ति,

कार्यान्वयन—कुरु मम वचन सत्वररचनम् - गीत० ५, रघु० १०।७७ 4. साहित्यिक रचना या सृजन, निर्माण, संरचना—संक्षिप्ता वस्तु रचना सा० द० ४२२ 5 बाल संवारना 6 सैन्यव्यूहन 7 मन की सृष्टि, कृत्रिम उद्भावना।

रजः देo रजस्।

रजक: [रञ्ज्+ण्वुल्, नलोप] धोबी।

रजका,—की [रजक+टाप्, ङीष् वा] धोबन।

रजत (वि०) [रञ्ज्+अतच्, नलोप] 1 चाँदी के रंग का, चाँदी का बना हुआ 2 उज्ज्वल - तम् 1 चाँदी —शुक्तौ रजतमिदमिति ज्ञान भ्रम कि० ५।४१, नै० २२।५२ 2 स्वर्ण 3 मोतियों का आभूषण या माला 4. रुधिर 5. हाथी दाँत 6 नक्षत्रपुंज, तारा-समूह।

रजनि:,—नी (स्त्री०) [रज्यतेऽत्र, रञ्ज्+कनि वा ङीप्] रात—हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरा-मम्—गीत० ५। सम० कर चन्द्रमा कर रात को घूमने वाला, पिशाच, वेताल,—जल आम, धुन्ध, —नाथ, रमण चन्द्रमा,—मुख सन्ध्या, सायं-काल।

रजनिचर (वि०) (वह दिन) जो रात जैसा बीते या रात जैसा दिखाई दे—भट्टि० ७।१३।

रजस् (पु०) [रञ्ज्+असुन्, नलोप.] 1 धूल, रेणु, गर्द—मन्दास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति सा० ७।७, आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलक्षणीया १।८, रघु० १। ४२, ६।१२ 2. फूल की रेणु या पराग भृङ्गाङ्गने-ष्वरजोमृदुरेणुरस्त्रः (पथा) - सा० ४।१०, मेघ० ३३,६५ 3. सूर्य किरणों में फैले हुए कण, कोई भी छोटा सा कण तु० मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६२ 4. बुती हुई भूमि, कृषियोग्य क्षेत्र 5. अन्धकार, अन्धेरा 6 मलिनता, आवेश, संवेग, मैतिक या मान-सिक अन्धकार—अपने पदवर्यन्ति हि धूतबन्धोऽपिर-क्षोनिमीलिता रघु० ९।७४ 7 सब प्रकार के भौतिक तत्वों के घटक गुणों अथवा तीन गुणों में से दूसरा -(दूसरे दो गुण हैं सत्त्व और तमस्, जीवतत्वों में बड़ी मात्रा क्रियाशीलता का कारण 'रजस्' समझा जाता है, यह गुण मनुष्यों में बहुतायत से पाया जाता है जैसे कि देवताओं में सत्त्व तथा राक्षसों में तमस् पाया जाता है), अन्तर्वेतमपास्तं में रजसोऽपि परं तम -कु० ६।९९, रघु० ६।२७, मा० १।२० 8. रजोगुण, चञ्चलता मनु० ४।४१, ५।९९। सम०—गुण: दे० (7) ऊपर, तमस्क (वि०) रज और तम दोनों गुणों से प्रभावित, लोक:,—वन्, —गुण: 1. लोलुपता, लालच 2. 'चोर का पुतला' यह प्रकट करने के लिए कि यह व्यक्ति तुच्छ है, नगण्य है, इस शब्द का प्रयोग किया जाता है,—दर्श-नम् प्रथम बार रजोधर्म का होना, सबसे पहला रज स्राव,—दूषक: रजोधर्म का बन्द हो जाना,—रूप अन्धेरा, घुंधि रजोधर्म की विशुद्ध दशा, हर 'मैल हटाने वाला' घोबी।

रजसावृ [रज्यतेऽस्मिन्—रञ्ज्+असावृ] 1 बादल 2 आत्मा, दिल।

रजस्वल (वि०) [रजस्+वलच्] 1 मैला, धूल से भरा हुआ - रघु० ११।६०, शि० १७।६१, (यहां इसका अर्थ 'रजोधर्म में होने वाली' भी है) 2. आवेश या संवेग से भरा हुआ - मनु० ६।७७,—ला मैला, ला 1 रजस्वला स्त्री रजस्वला परिभिक्षितावर्तिष्य शि० १७।६१, याज्ञ० ३।२२९, रघु० ११।६० 2 विवाह के योग्य कन्या।

रजु: (स्त्री०) [सृज्+उ, अनुनासिक धातोस्तलोप आगमस्वकारस्य सदृत्व दकार तस्यापि चुत्व जकार] 1 रस्सा, डोरी, सुतली 2 कसेरुका स्तम्भ से निक लने वाली स्नायु 3 स्त्रियों के सिर की चोटी। सम० वालकम् एक प्रकार का अंगूरी वस्त्र, इसी प्रकार रज्जुवाल,—खेल सुतली से बनी हुई टोकरी।

रज् (स्वा० दिवा० उभ०—रजति—ते, रज्यति—ते, रक्त कर्मवा० रज्यते, इच्छा० रिरङ्क्षति) 1 रंगे जाने के योग्य, लाल रंग से रंगना, लाल होना, चमकना, काप रज्यन्मुखश्री उत्तर० ५।२, नेत्रे स्वयं रज्यत -५।२९, नै० ३।१२०, ७।६०, २२।५२ 2 रंगना, हलका रंग देना रंगीन बनाना, रंगलेप करना 3 अनुरक्त होना, भक्त बनना (अधि० के साथ) देवानियं निधनराजन्य स्त्यभेती कणादरज्यत नलेन विदर्भसुभ्रू नै० १७।८ सा० द० १११ 4 मुग्ध होना, प्रेमासक्त होना, स्नेह की अनुभूति होना 5 प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, खुश होना—प्रेर० (रजयति—ते) 1. रंगना, हलका रंगना, रंगीन बनाना, लाल करना, रंगलेप करना —सा रजयित्वा चरणौ कृतार्थी: कु० ७।९०, ६।८१, कि० १।४०, ४।१४ 2 प्रसन्न करना, तृप्त करना, मनाना, सन्तुष्ट करना आनलहुविदग्ध ब्रह्मा नर न रजयति —भर्तृ० २।१ (इस अर्थ में रज यति' भी दे० कि० ६।२५) स्फुरतु कुचकुम्भयोर्मध्ये मनोहरमेखला रजयतु तव हृदयेशम् गीत० १० 3 खेल करना, जीत लेना, सन्तुष्ट रहना मनु० ७।१९ 4. हरिण का शिकार करना (इस अर्थ में केवल 'रञ्जयति'), अक्—, 1 लाल होना, शि० ९।७ 2 स्नेहशील होना, भक्त होना, अनुरक्त बनना, प्रेम करना, पसन्द करना (अधि० के साथ कर्म० के भी) मेघ० २।१०१, मनु० ३।१७१ 3. सुख होना भग० ११।३६ अव—, 1. असन्तुष्ट होना, अनीहारहित होना,

(अपा० के साथ, नवहीलाद्यपरज्यते जन.- कि० २।४९ 2 पीला होना, विवर्ण होना स्वाद्यपरक्ता-दर. ह० ६।५, जप-, 1 ग्रहणग्रस्त होना, उप-रज्यते भ्रमदाक्षत्व -मुद्रा० १ 2 हलके रंग का होना, रंगीन होना - शि० २।१० 3. कष्टग्रस्त या विपद्ग्रस्त होना वि-, 1 रागरहित होना, अलिप्त होना, घटिया या बड़ा होना—केषां अपि विरज्यते नि स्नेहा कि न सेवका -पञ्च० १।८२ (यहां यह द्वितीयार्थ में रहता है) 1 असन्तुष्ट होना, विलिप्त होना, नापसन्द करना, घृणा करना—विरागमुत्सोऽपि विरज्यते जन —मृच्छ० १।५३, या चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता—भर्तृ० २।२, भट्टि० १८।२२, संसार से विरक्त होना, सांसारिक आसक्तियों को छोड़ देना।

रञ्जक [रञ्जयति-रञ्ज्+णिच्+ण्वुल्] 1 चित्रकार, रंग-रेजक, रंगरेज 2 उत्तेजक, उद्दीपक,—कम् 1 लाल चन्दन 2 सिन्दूर।

रञ्जनम् [रञ्ज्यतेऽनेन-रञ्ज्+ल्युट्] 1 रंग करना, हलका रंगना, रंगलेप करना 2 रंग, रंग 3 प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट रहना, तृप्त होना प्रसन्नता देना —राजा प्रकृतिरञ्जनात्तवार्थं -रघु० ६।२१, तर्पयेत सोऽनुरक्तवर्गो राजा प्रकृतिरञ्जनात् —४।१२ 4 लाल चन्दन की लकड़ी।

रञ्जनी [रञ्जन+ङीप्] नील का पौधा।

रट् (भ्वा० पर० रटति रटित) 1 चिल्लाना, चीत्कार करना, चीखना, क्रन्दन करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना -घोरशरारिषु शिवा —भट्टि० १५।२०, एषात्र राक्षसो भूमौ रराट च मयाकरम् १४।८१ 2. जोर से बोलना, उद्घोषणा करना 3 प्रसन्नता से चिल्लाना, प्रशंसा करना आ-, पुकारना, चिल्लाना—प्रियसाहचर-मपश्यैरयानुरा पक्षवाक्यारटति—शि० ४।

रटनम् [रट्+ल्युट्] 1. क्रन्दन की क्रिया, चिल्लाना, जोर से आवाज देना 2 प्रशंसा का चीत्कार, एकदमी।

रण् (भ्वा० पर० रणति, रणित) ध्वनि करना, टनटनाना, झनझनाना, झनझनाना (पायजेब आदि का) —रण-द्भिरापतनया नवस्वतः पुरन्ध्रिभिश्चरणनूपुरैः स्वरैः शि० १।१०, करणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरत-वितानम्—गीत० २।

रण,-नम् [रण्+अच्] 1. संग्राम, समर, युद्ध, लड़ाई रण प्रवृत्ते तव भीम प्लवगराक्षसाम्—रघु० १२।७२, यशोधनानां रणसीम्नि दर्शने रणः पुनः० 2. युद्धक्षेत्र,—णः 1. शब्द, और 2. सारंगी बजाने का यन्त्र 3 गति, चाल। सम०-अङ्गणम् युद्ध का अगला भाग,—अजिरम् युद्धस्थल, समर स्थल, समरे क्षोणिं अयोध रणाजिरे प्रजवनम्—भट्टि० १४।९९,—अजिरम्,-नम् युद्धक्षेत्र,-अर्थी (वि०) युद्ध से भागने वाला, भगोड़ा—स समरे रणार्थी भर्तृ० -रणावस्थितम्—कि० १५।२३,—आह्वयः, —कर्मन् युद्धविधि: सैनिक शैली, मारु बाजा,—अवतीर्ण: युद्ध में प्रदर्शित विक्रम,—क्षितिः (स्त्री०),—क्षेत्रम्,- भू: (स्त्री०), भूमिः (स्त्री०), स्थानम् युद्धक्षेत्र,-मुख युद्ध में आगे रहना, युद्ध का द्वार—तातै वापहितानि बर्हाणि रणमुखे को मयस्यावकाश— वेणी० ३।५, शिर (वि०) युद्ध का शौकीन, लड़ाकू,-शस्त्र: हाथी -सूचकम्,--सूर्यम् (पु०), शिरस् (नपुं०) 1 युद्ध का अगला भाग, लड़ाई का मुख्य द्वार— ह० ६।१०, ७।२६ 2 सेना का अग्रभाग,— रंध्रः हाथी के दांतों के मध्य का फासला, रंध्रः युद्धक्षेत्र,- रंध्रः शत्रु, मच्छर (मन्) 1 प्रबल इच्छा, उत्कण्ठा 2. खोई हुई वस्तु के लिए खेद,—रणकः,—कम् 1. चिंता, बेचैनी, खेद, (किसी प्रिय वस्तु के लिए) कष्ट या सताप (प्रेम से उत्पन्न) रणरणकविवृद्धि विभ्रदावर्तमानम्—मा० १।४१, उत्तर० १ 2 प्रेम, इच्छा (कः) कामदेव,- वाद्यम् मार बाजा, सैनिक संगीत बाजा,- विद्या सैन्यविज्ञान, युद्धकला, या युद्ध विज्ञान, संकुलम् घोर-युद्ध, तुमुल-युद्ध,—सज्जा युद्ध की सामग्री, सैनिक साज-सामान सहायः मित्र, सहायक, -सूतः विजयसारथि; विजयचिह्न।

रणत्कारः [रण्+शतृ, ष० त०] 1. झनझनाहट, झन-झनाहट या झनझन की आवाज 2. (धनुषादि का) झनझनाना।

रणितम् [रण्+क्त] झनझनाहट, टनटन, झनझनाहट या झनझन की आवाज।

रतः [रम्+क] 1 वह पुरुष जो पुनर्विवाह करे 2. सुंदर वृक्ष, —ता फूहड़स्त्री, पुनर्भू, स्त्रियों को संभोगोचित करने में निदेशक शब्द - रते पंडितमानिनि—गीत० १।१९२, (पाठान्तर) प्रतिकूलमकूलजा पया यामा-नूवर्तिनीम्, केलेष्वाकुरुष्व तां रतां यामवत्येषु निरीक्षय प्रबो० २ 2 विवाहा स्त्री—रता गौनपोषरा: कृति यथा सोद्वाहपार्वतिकिता - प्रबो० ३।

रत (भू० क० कृ०) [रम्+क्त] 1. प्रसन्न, खुश, तृप्त 2. प्रसन्न या खुश, स्नेहशील, मुग्ध, अनुरक्त 3. लुका हुआ, व्यस्त, तत्पर, (दे० रम्),—तम् 1. प्रसन्नता 2. मैथुन, संभोग—रघु० १९।२१, २५, मेघ० ८९ 3 उपस्थ इन्द्रिय। सम०—अक्षी मैना, रंडी,—अर्थिन् (वि०) कामुक, कामातुरता,—उत्सवः कोयल,—गृहिणम् 1. दिन 2 आनन्द के लिए स्थान,—छेदः लुटा, —पूर्विका कामातुरता अथवा की मैथुन के समय की सीत्कार,—प्रियः कौवा,—लालिन् (पुं०) स्त्रीपरस्तकारी, कामातुरता,--लालसा कुटनी, धूर्ती,-- सारीवः 1. सिंदूरी 2 कामदेव, मदन 3 कुत्ता 4. मैथुन के समय की

कामार्त व्यक्ति की सी-सी ध्वनि,—संघः मैथुन, समोग, —हिंसकः 1. स्त्रियों को फुसलाकर उनसे बलात्कार करने वाला 2. बिलाती।

रतिः (स्त्री०) [रम्+क्तिन्] 1. आनन्द, खुशी, सन्तोष, हर्ष—श० २।१ 2. स्नेहशीलता, भक्ति, अनुराग, आनन्दानुभूति (अधि० के साथ) पाये रति मा कृथा —ऋतु० २।७७, स्वयोचिति रति—२।६२, रघु० १।२३ कु० ५।६५ 3 प्रेम, स्नेह, सा० द० द्वारा की गई परिभाषा—रतिर्मनोऽनुकूलेऽर्थे मनस प्रवणायितम् —२०७, तु० २०६ से भी 4 सम्भोग का आनन्द—दाक्षिण्योदकवाहिनी विगलिता यादा स्वदेश रति —मृच्छ० ८।३८, इसी प्रकार 'रतिसर्वस्वम्' दे० नी० 5. मैथुन, समोग, सहवास 6 रतिदेवी, कामदेव की पत्नी—साक्षात्काय नवमिव रतिर्मन्मथी माधव यत् —मा० १।१६, कु० २।२३, ४।४५, रघु० ६।२ 7 योनि, भग। सम०—अंगम्, —कुहर योनि, भग, —गृहम्,—मन्दिरम् 1 क्रीडा गृह 2 चकला, रडीखाना। 3 योनि, भग,—तस्करः फुसलाने वाला, व्यभिचारी,—दूतिः—ती (स्त्री०) प्रेम का सदेश ले जाने वाली—कु० ४।१६,—पतिः,—प्रिय,—रमणः कामदेव, अपि नाम मनागपतीर्णोऽपि रतिरमणबाण-गोचरम् मा० १, दर्शति स्फुट रतिपतेरिवच चिह्नतां बहुत्पलपलाशदृश्य वि० ९।६६, रसः सम्भोग का आनन्द, लम्पट (वि०) कामी, कामासक्त, कामुक, —सर्वस्वम् रतिक्रीडा का अत्युत्तम रस, अत्यानन्द —कर व्याधुन्वत्या चिरमिह रतिसर्वस्वमधरम् · श० १।२४।

रत्नम् [रमतेऽत्र, रम्+न, तान्तादेश.] 1 मणि, आभूषण, हीरा—कि रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्—कु० ५।४५, (रत्न गिनती में पांच, नौ या चौदह बतलाये जाते हैं—दे० शब्द पंचरत्न, नवरत्न, और चतुर्दशरत्न) 2. कोई भी मूल्यवान् पदार्थ, कीमती जवाहर 3 अपने प्रकार की अत्युत्तम वस्तु (समास के अन्त में) जातौ जातौ यदुत्कृष्ट तद्रत्नमभिधीयते—मालवि०, कन्यारत्न-मयोनिजन्म भवतामास्ते वयं कार्विनः · महावी० १।१०, इसी प्रकार पुष्प°, स्त्री°, अपत्य° आदि 4. भूषक। सम०—अनुविद्ध (वि०) रत्नों से जड़ा हुआ, आकरः 1. रत्नों की खान 2. समुद्र—रत्नेषु तृष्णा बहुभिस्तवैरपि रत्नाकर एव शिषु:—विक्रम० १।१२, रत्नाकरं धीरयसे—रघु० १३।१, —आलोकः मणि की कान्ति,—आवली,—माला रत्नों का हार, —उपलः मूंगा, खचित (वि०) रत्न या मणियों से जड़ा हुआ,—गर्भः समुद्र (—र्भा) पृथ्वी,—दीपः, —प्रदीपः 1. रत्नों का बना दीपक 2. रत्न जो दीपक का काम, दे० अधिस्तुलानमिमुखमपि प्राप्य रत्न प्रदीपान्—मेघ० ६८,—मुकुलम् हीरा,—राशिः 1. रत्नों का ढेर 2. समुद्र,—शानुः मेरु पर्वत,—सू (वि०) रत्नों को उत्पन्न करने वाला रघु० १।६५,—सू,- सूतिः (स्त्री०) पृथ्वी।

रत्निः (पु०, स्त्री०) [ऋ+कलिन्, मत्व] 1. कोहनी 2 कोहनी से मुट्ठी तक की दूरी, एक हाथ का परिमाण (पु०) बन्द मुट्ठी (यह शब्द 'अरलि' का ही अर्थ प्रतीत होता है)।

रथ [रम्यतेऽनेन अत्र वा—रम्+कथन्] गाड़ी, जंगली गाड़ी, यान, वाहन, विशेषकर युद्धरथ 2 नायक (रथिन्) 3 पैर, 4 अवयव, भाग, अंग 5 शरीर, तु० आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु कठ० 6. नरकुल। सम०—अक्षः गाड़ी का धुरा—अक्षम् 1. गाड़ी का कोई भाग 2 विशेषकर गाड़ी के पहिये —रथो रथाङ्गध्वनिना विजज्ञे · रघु० ७।४१, म० ७।१० 3 चक्र, विशेषकर विष्णु का,—चक्रधर इति रथाङ्गमद्-यतत विभर्षि भुवनेषु स्वयं—शि० १५।२६ 4 कुम्हार का चाक °आह्वयः, °नामकः, °मानम् (पु०) चकवा, चक्रवाक—रथाङ्गनामान् विषतो रथाङ्गश्रेणिविरहया, अय त्वां पृच्छति रथी मनोरथगतैर्वृत्त – विक्रम० ४।१८, कु० ३।३७, रघु० ३।२४, (कविसमय के अनुसार चकवा रात होने पर चकवी से वियुक्त हो जाता है, फिर सूर्योदय होने पर उनका मेल होता है) °पाणिः विष्णु का नाम,—ईशः रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा,—ईषा,—षा गाड़ी का जोड़ा (गाड़ी में लगने वाली सबसे लम्बी दो लकड़ियाँ जिन पर गाड़ी का सारा ढांचा जमाया जाता है),- उद्वहः, —उपस्थः रथ का वह स्थान जहाँ सारथि बैठता है, चालक का आसन,—कदम्बम्,—कदम्बा रथों का समूह, —कर्मन्यः राजा के रथों की व्यवस्था का अधिकारी, —कारः गाड़ी बनाने वाला, बढ़ई, पहिये घड़ने वाला रथकार स्वका भार्या सजारा शिरसावहत्—पञ्च० ४।५४,—कुटुम्बिकः,—कुटुम्बिन् (पु०) रथवान्, सारथि, - कूबरः,—रघ् गाड़ी की अहतीरी—केतुः रथ का झण्डा,—कोलः रथ का हुक्कोला—रघु १।५८, —गर्भकः डोली, पालकी,—चर्मिः (स्त्री०) रथ के चारों ओर लगा लोहे या लकड़ी का ढांचा जिससे रथ को किसी से टकराने पर रक्षा हो सके,- चरणः, —चक्रः 1. रथ का पहिया 2. चकवा,—चर्या रथ का इधर उधर घूमना, रथ का उपयोग, रथ पर सवारी करना—अनभ्यस्तरथचर्या—उत्तर० ५,—चूर्(स्त्री०) गाड़ी के जोड़े की अहतीरी,—नाभिः (स्त्री०) रथ के पहिये की नाह या नाभि,—नीडः रथ के अन्दर का स्थान या आसन,—पंक्तिः रथ का साज-सामान, रस्सी

आदि,—महोत्सवः,—शाला रथ में देव प्रतिमा स्थापित कर जलूस निकालना (ऐसे रथ को प्रायः मनुष्य स्वयं खींचते हैं),—मुखम् गाड़ी का अगला भाग,—युद्धम् 'रथों का युद्ध' वह युद्ध जिसमें योद्धा रथों पर बैठ कर युद्ध करते हैं,—रेखा (नपुं०),—वीथिः राजमार्ग, मुख्य सड़क,—वाहः 1. रथ का घोड़ा 2. सारथि, —वेला (स्त्री०) वह स्थान जिस पर रथ युद्ध की पताका लहराती रहती है,—शाला गाड़ीघर, गाड़ियां रखने का स्थान,—सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी का दिन।

रथिक (वि०) (स्त्री०—की) [रथ+ठन्] 1 रथ पर सवारी करने वाला 2 रथ का स्वामी।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1. रथ में सवारी करने वाला, या रथ हांकने वाला 2 रथ को रखने वाला या रथ का स्वामी—(पुं०) 1 गाड़ी का स्वामी 2. वह योद्धा जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है -रघु० ७।३७।

रथिन, रथिर (वि०) [रथ+इन, इरच् वा] दे० ऊ० 'रथिन्'।

रथ्य [रथ वहति यत्] 1. रथ का घोड़ा यावत्यमी मृगजवबालमयेव रथ्याः—श० १।८ 2 रथ का एक भाग।

रथ्या [रथ्य+टाप्] 1 गाड़ियों के आने जाने के लिए सड़क, राजमार्ग, मुख्य सड़क—भूयोभूयः सविधनगरोरथ्यया पर्यटन्तम् मा० १।१८ 2 वह स्थान जहां कई सड़कें मिलती हों 3 गाड़ियों या रथों का समूह शि० १८।३।

रद् (भ्वा० पर० रदति) 1 टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ना, 2 खुरचना।

रद [रद्+अच्] 1 टुकड़े टुकड़े करना, खुरचना 2 दांत, (हाथी का) दांत—दाताशवेन्न पराक्रमन्ति हिरदानां रदा इव—भामि० १।६५। सम० खण्डनम् दांत से काटना, -जनय रदखण्डनम् -गीत० १०,—छदः, ओष्ठ।

रदनः [रद्+ल्युट्] दांत। सम०—छदः ओठ।

रद् (दिवा० पर० रद्यति, रद, प्रेर० रदयति, इच्छा० रिरदिषति या रिरत्सति) 1. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, संताप देना मार डालना, नष्ट करना—अहं रदितुमारेभे —भट्टि० ९।२९ 2 भोजन बनाना (खाना) पकाना या तैयार करना।

रन्तिदेवः [रम्+तिक्=रन्तिश्चासौ देवश्च-कर्म० स०] एक चन्द्रवंशी राजा, भरत के बाद छठी पीढ़ी में (यह अत्यन्त पुण्यात्मा और उदार व्यक्ति था, उसके पास अपार धनराशि थी जो इसने बड़े २ यज्ञों के अनुष्ठान में व्यय की। उसके राज्य में यज्ञ में हत्या किये गये तथा उसकी रसोई में उपयुक्त किये गये पशुओं की इतनी बड़ी संख्या थी कि उनकी खालों से चर्मण्वती नदी निकली मानी जाती है, इसी नदी का बाद में 'चर्मण्वती' नाम पड़ गया—तु० मेघ० ४५, और तदुपरि मल्लि०)।

रन्धुः [रध्+तुन्] 1 रास्ता, मार्ग 2. नदी।

रन्धनम्, रन्धिः (स्त्री०) [रध्+ल्युट्, इन् वा, नुमागमः] 1 क्षति पहुंचाना, संताप देना, नष्ट करना 2. पकाना।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागमः] 1 बिवर, छेद, गर्त, मुंह बाई, दरार—रन्ध्रोच्छिन्नलक्षणनय प्रदेशा—रघु० १३।५६, १५।२, नासारन्ध्रम्—मा० १।१, कीचरन्ध्रम् मेघ० ५७ 2 (क) अवकाश, वह अवसर जहां आक्रमण किया जा सके—रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्थाः श० ६, रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषामाविशतां यथौ—रघु० १२।११, १५।१७, १७।३१, (ख) त्रुटि, दोष, कमी। सम०—अन्वेषिन्, अन्वेषिन् (वि०) दूसरों के कमजोर स्थलों को ढूंढने वाला वृक्ष० ८।५७, -बधूः चूहा,—वंशः खोखला या पोला बांस।

रभ् (भ्वा० आ० रभते, रब्ध, प्रेर० रम्भयति—ते; इच्छा० रिप्सते) आरम्भ करना, आ —,1 आरम्भ करना शुरू करना, काम में लग जाना, जिम्मेवारी से लेना आरभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः भर्तृ० २।२७, आरब्धस्यान्तमेवाप्ता सुभा०, भट्टि० ५।३८, रघु० ८।४५ 2. व्यस्त होना, सोत्साह होना—शि० २।९१. परि ,कसी भरना, आलिङ्गन करना इत्युक्तवन्तं परिरभ्य बाहुभ्यां—कि० ११।८०, भामि०१।९५, कु० ५।३, शि० ९।७२, सम्—, 1 शुरू होना भाव विभोर होना, प्रभावित होना 2 कुपित होना, उत्तेजित होना, क्रोधोन्मत्त या चिड़-चिड़ा होना (प्रायः समाप्त अर्थ प्रयुक्त) -रघु० १६।१६।

रभस् (नपुं०) [रभ्+असुन्] 1. प्रचण्डता, उत्साह 2. बल, सामर्थ्य।

रभस (वि०) [रभ्+असच्] 1 प्रचण्ड, उग्र, भीषण, प्रखर 2. प्रबल, बहुत, उत्कट, अतिशयशाली, तीक्ष्ण, तीव्र (उत्कण्ठा आदि) रभसया नृ विधन्तविद्धया —कि० ५।१, रघु० ९।६१, मुद्रा० ५।२४, -सः 1 प्रचण्डता, भीषणता, उग्रता, तीव्रता, वेग, आतुरता, उत्कटता—बालीषु केलीरभसेन बाला बहुप्रसंगाकुलपक्षपक्ष्मी—भामि० २।१२, स्वदधिसरचरजसेव बलन्ती -गीत० ६, शि० ६।२३, ११।२३, कि० ९।४७ 2. उतावलापन, साहसिकता, अविचारी —अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः—भर्तृ० २।९९ 3. क्रोध, आवेश,

कोप, भीषणता 4. क्रोध, शोक 5. हर्ष, आनंद, खुशी—मनसि रभसविभवे हरिरयमनु मुक्तवेग —गीत० ५।

रभ् (भ्वा० आ० रभते, परन्तु वि, आ, परि उपरि० लगने पर पर०, रब्ध) 1 प्रसन्न होना, खुश होना, हर्ष मनाना, तृप्त होना —रहसि रभते—आ० ३।२—मनु० २।२२३ 2 हर्षित होना,—प्रसन्न होना, आनन्द मनाना, स्नेहशील होना (करण० और अधि० के साथ) लोकापाङ्गैर्वृद्धि न रमसे लोचनैर्वीक्षितोऽसि —मेघ० २७, व्यजेष्ट षड्वर्गमरस्त नीतौ भट्टि० १।२ 3 खेलना, क्रीडा करना, प्रेमालिङ्गन करना, जी बहलाना, रावप्रिया कैरविण्यो रमन्ते मधुपै सह —भामि० १।१२६ (यहाँ दूसरा अर्थ भी संकेतित है) भट्टि० ६।१५, ६७ 4 संभोग करना—सा तत्पुत्रेण सह रमते -हि० ३ 5 रहना, ठहरना, टिकना प्रेर० -(रमयति -ते) प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना—इच्छा० (रिरंसते) क्रीडा करने की इच्छा करना -शि० १५।८८, अधि—हर्ष मनाना, प्रसन्न या आनन्दित होना, अत्यनुरक्त होना—भट्टि० १।७, भ्वा० १८।४५, आ , (पर०) 1. आनन्द लेना, खुशी मनाना भट्टि० ८।५२, ६।३८ 2 ठहरना, थमना, छोड देना (बोलना आदि), समाप्त करना—मनु० २।७३, उप—, (पर० और आ०) 1 रुकना, अन्त करना, समाप्त करना—सज्जनाद्युपररामे च लज्जा—शि० २।४४, १३।६९ 2 रुकना, थमना —भयाद्रणादुपरतं मस्यन्ते त्वां महारथा —भग० २।३५, भट्टि० ८।५४, ५५, कि० ४।१७ 3 खुश होना, शांत होना, भग० ६।२०, 4 मरना- दे० उपरत, परि—, (पर०) प्रसन्न होना, खुश होना —भट्टि० ८।५३, वि—,(पर०) 1 अन्त होना, समाप्त होना, अवसान होना अविवितपतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्—उत्तर० १।२७ 2. रुकना, अन्त होना थमना, छोड देना (बोलना आदि)-एकाग्रचेतसा विरते मृगेन्द्रे—रघु० २।५१, शि० २।१३, आय. अधा० के साथ, हा हन्त किमिति चित्त विरमति नाद्यापि विषयेभ्य— भामि० ४।२५, उत्तर० १।३४, सम्—(आ०) प्रसन्न होना, हर्ष मनाना—भट्टि० १९।३०।

रभ (वि०)[रभ्+अच्] सुहावना, आनन्दप्रद, सन्तोषजनक, आदि,—क 1. हर्ष, खुशी 2. प्रेमी, पति 3 कामदेव.

रभस् [रभे अठ्|हस्व। सम० -व्यक्ति: हीन।

रभस (वि०) (स्त्रीलिं०-सा) [रभ्यते-रभ्+घिञ्+सटच्] सुहावना, सन्तोषजनक, आनन्दप्रद, मनोहर - भट्टि० ६।७२,—क 1 प्रेमी, पति यश्च रामां रभसोऽभिलाषम्-रघु० १४।२७, शिव० १७,८७, कु० ४।२१, शि० ९।६० 2 कामदेव 3. हर्ष 4. अंडकोष —अच् 1 क्रीडा करना 2. प्रेमालिङ्गन, जी बहलाना, केलिक्रीडा 3. रति, मैथुन 4. हर्ष, उल्लास 5. कूल्हा, पुट्ठा।

रभसा, रभसी [रभस+टाप्,ङीप् वा] 1 सुन्दर तरुण स्त्री, लता रम्भा सेव भ्रमरकुलरम्भा न रभसो भामि० २।९० 2. पत्नी, स्वामिनी—भोग: का रमणी विना -सुभा०।

रभसणीय (वि०) [रभसेऽत्र-रभ् आधारे अनीयर्] सुहावना, आनन्दप्रद, प्रिय, मनोहर, सुन्दर स्मित मैतस्मिन्नु प्रकृतिरमणीय विकसितम् भामि० २।९०।

रमा [रमयति रम्+अच्+टाप्] 1 पत्नी, स्वामिनी 2 लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी तथा धनदौलत की देवी 3 धन। सम०—आनन्द:,—नाथ:, पति: विष्णु का विशेषण,—वेश्म: तारपीन।

रम्भा [रभ्+अच्+टाप्] 1. केले का पौधा —विजितरम्भमूरुयुगम्—गीत० १०, पिबोरुरम्भातरुपीवरोरु- नै० २२।४३ २।३७ 2 गौरी का नाम, कुबेर की पत्नी जो इन्द्र के स्वर्ग में अत्यंत सुन्दरी मानी जाती है —नम्भूरुयुगेन सुन्दरी किमु रम्भा परिरम्भदिदा परम्, तरुणीमपि विष्णुरेव तां मनसापत्यतया फलत्तनीम् नै० २।३७, सम० अक्ष (वि०) (स्त्री०-क्षी,-क्षा) केले के आन्तर भाग के समान आभा वाला या काली—शि० ८।१९, रघु० ६।३५।

रम्य (वि०) [रम्यतेऽत्र यत्] 1 सुहावना, सुखद, आनन्द प्रद, हर्षकर—रम्यासनयौवनानां क्रिया मनसोऽनुरोधा: का० १।११ 2. सुन्दर प्रिय, मनोहर—अरमिजमन् विद्ध शैवलेनापि रम्य का० १।२०, ५।२, स्य चम्पक नाम का वृक्ष,—म्यम् वीर्य।

रम् (भ्वा० आ-रमते, रमित) आना, हिलना-डुलना।

रय [रम्+अच्] 1 नदी की धारा, प्रवाह,—अम्बुकुम्भ प्रतिहतरय लोयमादाय गच्छे —मेघ० २० 2 बल, वाक, वेग उत्तर० ३।३६ 3 उत्साह, उत्कण्ठा, उत्कटता, उत्सुकता।

रयस: [रयमं रम्+असुन् इच्छा० स्य लोपः+क स्वार्थे +अस्] 1. ऊनी वस्त्र, कंबल 2. पलंग आदि मृदुतिरस्तक-मलयजरजोहृतो यवनि को न यथा पल- वेतन 3. एक प्रकार का हरिण।

रव [रु+अप्] 1 कलरव, चीख, चीत्कार, हू हू, (आनन्दों की) चिल्लाहट 2. गाना, (पक्षियों की) कूजनध्वनि —रघु० ९।२९ 3. जलप्रवाहट 4. शब्द, कोलाहल घंटा°, मूषक° वाद्य° आदि।

रवण (वि०) [रु+ल्युट्] 1. शब्द करने वाला, चिल्लाने वाला, चीखने वाला 2. शब्दायमान, शब्दायमान- —उत्कण्ठाकलकण्ठी: मुखं रवणैरम्बरं तनुम् भट्टि० ७।१४ 3. तीक्ष्ण, तप्त 4. चंचल, अस्थिर,—क: 1 ऊँट —शि० १२।२ 2. कोवल,—णम् पीतल, कांसा।

रविः [रु+इ] सूर्य—सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८। सम०—कान्त सूर्यकान्तमणि, -क्रः, —क्रमः, द्रुमः, पुष्पः 1 अनिवह 2. कर्ण के विशेषण 3 वालि के विशेषण 4. वैवस्वत मनु के विशेषण 5 यम के विशेषण 6. सुग्रीव के विशेषण, —दिन,—वारः, वासरः,—वासरव्रतम् रविवार, वासिरवार,—संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

रशना, रसना [अश्+युच्, रशादेशः] 1 रस्सी, डोरी 2 रास, लगाम 3 कटिबन्ध, कमरबन्द, स्त्रियों की करधनी रसनां रसनापि तव घनजघनमण्डले घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, रघु० ७।१०, ८।५७, मेघ० ३५ 4 जिह्वा भामि० १।११६। सम०—उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, यह उपमाओं की एक शृंखला है जिसमें पूर्व उपमेय, आगे चलकर उपमान बनता जाता है दे० सा० द० ६६४।

रश्मि [अश्+मि धातोरुट्, रश्+मि वा] 1. डोर, डोरी, रस्सी 2 लगाम, रास, मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकायाः शि० १।८, रश्मिसंयमनात् शि० १ 3 माला, लड़ 4 किरण, प्रकाश किरण—शि० ७।६, ९० ७२।५६, इसी प्रकार 'हिमरश्मि' आदि। सम० कलाप चन्दन लड़ियों की मोतियों की माला।

रश्मिमत् (पु०) [रश्मि+मतुप्] सूर्य।

रस् I (स्वा० पर० रसति, रसित) 1 चहकना, शब्द करना, चिल्लाना, चीखना करीव वन्य पक्षि रराम रघु० १६।७८, शि० ३।४८ 2 शब्द करना, कोलाहल करना, टनटन करना, झनझन करना राजन्यानिमकथाय रसति स्फीत मधोर्दुन्दुभि वेणी० १।२५, रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले गीत० १० 3 प्रतिध्वनि करना, गूंजना।

II (चुरा० उभ० रसयति-ते, रसित) चखना, स्वाद लेना मृदोका रसिता भामि० ४।१३, शि० १०।२७।

रस [रस्+अच्] 1 सार, (वृक्षों का) द्रव, रस, इक्षुरस कुसुमरस आदि 2 तरल, द्रव कु० १।७ 3 पानी —सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१९ भामि० २।१४४ 4 मदिरा, शराब—मनु० २।१७७, 5 बूटी एक मात्रा, खुराक 6 चखना, रस, स्वाद (भाला> से भी) (वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक, रस छः हैं -कटु, अम्ल, मधुर, लवण, तिक्त और कषाय) परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसः वेत्तु पुरुषः—मुद्रा० ३।४, उत्तर० २।२ 7. चटनी, सिर्फ मसाला 8 कोई स्वादिष्ट पदार्थ—रघु० ३।४ 9 किसी वस्तु के लिए स्वाद या रुचि, पसन्दगी, इच्छा इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति —मेघ० ११२ 10. प्रेम, स्नेह,—अरसा निःस्नेहाहृदयी रस.—उत्तर० १।३९, प्रसरति रसो निर्वृतिमयः ६।११, 'प्रेम की अनुभूति'—कु० २।३७ 11 आनन्द, प्रसन्नता, सुखी—रघु० ३।२६ 12 लावण्य, अभिरुचि, सौन्दर्य लावण्य 13. कामरस, भाव-भावना 14 (काव्य रचनाओं में) रस - शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः। बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥ परन्तु कभी कभी 'शांत' रस को जोड़ कर नौ रस बना दिये जाते हैं,—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः काव्य० ४; कभी कभी दसवां रस "वात्सल्य" और मिला दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रस आवश्यक घटक है, परन्तु विश्वनाथ के मतानुसार 'रस' काव्य की आत्मा है वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० ३) 15 मद्य, सार, तत्त्व, सर्वोत्तम भाग 16 शरीर के संघटक द्रव 17 वीर्य 18 पारा 19 विष, अफीम, जैसा कि 'वीर्यरसदायिनम्' में 20 कोई भी खनिज या धातुमलकी लवण।

सम०—अञ्जनम् रसौत, एक प्रकार का अंजन, —अम्लः अमलबेत,—अमृतम् 1 अमृत, कोई भी औषध जो बुढ़ापे को रोक कर जीवन को लम्बा करे,—निखिलरसायनमहिमो सन्धेनोऽयेन लक्ष्मण इव—रम० 2 (अला०) अमृत का काम देने वाला अर्थात् जो मन को तृप्त भी करे साथ ही हर्षित भी करे, आनन्दनानि हृदयंकरणानि मा० ६।८, मनसश्च रसायनानि उत्तर० १।३६, श्रोत्र कर्ण आदि 3 रससिद्धि, रसायन °वेत्ताः पारा, -आस्वादः (पु०) 1 रसीला, रसदार 2 तरल, द्रव, आस्वादः किसी रस का वाहकरूप या केवल प्रतीति 2 किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन, —आस्वादः 1 मद्य या रस आदि चखना 2 काव्य-रस की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण जैसा कि 'काव्यामृतरसास्वाद' में,—इन्द्रः 1 पारा 2 पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है), उद्भवम्,—उत्थम् मोती,—कर्मन् (नपु०) उन वस्तुओं को तैयार करना जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है, केसरम् कपूर, कच्छः, कम् लोहान की तरह का खुरदुरा घोड़, रसज्ञ,—ज्ञः (वि०) 1 रसों का ज्ञाता 2 आनन्द मनाने वाला, —तः राम, शीरा अन्न रुचिर,—त्र (वि०) 1 जो रस की उत्तमता को परखता है, जो स्वाद जानता है, तांसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः —उत्तर० २।२७ 2. वस्तुओं के सौन्दर्य को पहचानने में समर्थ (—त्रः) 1 स्वाद का जानकार, भावुक, विवेचक, काव्यमर्मज्ञ, कवि 2 रसविद्या का ज्ञाता 3 पारे

के योग से बनने वाली औषधियों के तैयार करने वाला वैद्य, (—ज्ञ) चिह्वा, भामि० २।५९, तेजस् (नपु०) रुधिर—द्रः वैद्य,—धातु (नपु०) पारा, —प्रबन्धः कोई भी काव्यरचना, विशेष कर नाटक, —फलः नारियल का पेड़, —भङ्ग रस का टूट जाना या अवरोध, भक्षम् रुधिर,—राजः पारा, विक्रय मदिरा की बिक्री, —शास्त्र रससिद्धि का विज्ञान, —सिद्ध (वि०) 1 काव्य-सम्पन्न, रसवेत्ता जयन्ति ते सुकृतिन रससिद्धा कवीश्वरा —भर्तृ० २।२४ 2 रस-सिद्धि में कुशल, सिद्धि (स्त्री०) रससिद्धि में कुशलता।

रसनम् [रस्+ल्युट्] 1. क्रन्दन करना, चिल्लाना, चिंघाड़ना, शोर मचाना, टनटन करना, कोलाहल करना 2 बादलों की गड़गड़ाहट, बादलों की गरज 3 स्वाद, रस 4. स्वाद लेने की इन्द्रिय, जिह्वा —इन्द्रिय रसग्राहक रसन जिह्वाग्रवर्ति —तर्क०, भग० १५।९ 5 प्रत्यक्षीकरण, गुणागुणविवेचन ज्ञान सर्वेऽपि रसनादृसा —सा० द० २४४।

रसना दे० रशना। समः—रङ्ग पक्षी, लिह (पु०) कुत्ता।

रसवत् (वि०) [रस+मतुप्] 1 रसेदार रसीला 2. स्वादिष्ट, मशालेदार, मजेदार, सुरस असारसुख-वृक्षस्य हे एव रसवत्फले, काव्यामृतरसास्वाद सम्पर्क सज्जनैः सह 3 तर, गीला, पानी से आर्द्र 4 मनोहर, शानदार, प्रांजल, परिष्कृत 5 भावों से भरा हुआ, जोशीला 6 स्नेहसिक्त, प्रेमपूरित 7 शृङ्गारी रसिक, —ती रसोई।

रसा [रस्+अच्=टाप्] 1 निम्नतर नारकीय प्रदेश, नरक 2 पृथ्वी, भूमि, मिट्टी—भामि० १।५९, रसस्य युद्धरङ्गता रसारसारसारमा - नला० २।१० 3 जिह्वा। समः—तलम् 1 पृथ्वी के नीचे सात पातालों में से एक, दे० पाताल 2 नीचे की दुनिया, नरक, राज्यं यातु रसातलं पुनरिदं न प्रार्थितुं कामये भामि० २।६३ जातिर्यातु रसातलम् भर्तृ० २।३१।

रसालः [रसमालाति-आ+ला+क, ष० त०] 1 आम का पेड़,—मुञ्जा रसालकुसुमानि समाश्रयन्ते - भामि० १।१७ 2 गन्ना, ईख,—ला 1 जिह्वा 2 वह दही जिसमें शक्कर तथा मसाले मिला दिए गये हों 3 'दूर्वा' घास, दूब 4 अंगूरों की बेल या अंगूर, —लम् लोबान।

रसिक (वि०) [रसोऽस्त्यस्य ठन्] 1 मसालेदार, मजेदार, स्वादिष्ट 2. शानदार, ललित, सुन्दर 3 जोशीला 4 उत्तमता या रस को पहचानने वाला, स्वादयुक्त, गुणग्राही, 'अवेक्षक—तद् कृत प्रवदन्ति काव्यरसिका शार्दूलविक्रीडितम्—मृत० ४० 5 आनन्द लेने वाला, खुशी मनाने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला, भक्त (प्रायः समास में) - इयं मालती भगवता सदृश-संयोगरसिकेन देवसा मन्मथेन मया च तुभ्यं दीयते —मा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिक'—भर्तृ० ३।११२, परोपकाररसिकस्य—मृच्छ० ६।१९,—कः 1 रसिया, गुणग्राही, सहृदय पुरुष तु० अरसिक 2 स्वेच्छाचारी 3 हाथी 4 घोड़ा, का 1 ईख का रस, राब, मीठा 2 जिह्वा 3 स्त्रियों की करधनी - दे० 'रसाला' भी।

रसित (भू० क० कृ०) [रस्+क्त] 1 चखा हुआ 2 रस या मनोभाव से युक्त 3 मुलम्मा चढ़ा हुआ, तम् 1 शराब या मदिरा 2 क्रन्दन, दहाड़, गरज चिंघाड़, कोलाहल, शोर—हेरम्बकण्ठरसितप्रतिमानमानि —मा० ९।३।

रसोन [रसेनैकेन ऊन] लहसुन तु० लशुन।

रस्य (वि०) [रस+यत्] रसवाला, मजेदार, सुस्वादु रुचिकर रम्या स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः भग० १७।८।

रह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० रहति, रहयति ते रहित) छोड़ देना, त्याग देना, परित्याग करना तिलाजलि देना, छोड़कर अलग हो जाना रहयतां पशुपतेर्मनोगतिं कि० २।१४।

रहस्यम् [रह्+ल्युट्] छोड़ कर पास जाना, परित्याग कर देना, अलग हो जाना सहकारवनं समये मह का रहणीय केन सम्भार पदम् नलो० २।१४।

रहस् (नपु०) [रह्+असुन्] 1 एकान्तता एकान्तवास, अकेलापन, एकाकीपन, निर्जनता रघु० ३।३, १४-९२, पद्य० ११।३८ 2 उजड़ा हुआ या सुनसान स्थान छिपने की जगह 3 भेद की बात, रहस्य 4 मैथुन सम्भोग 5. गुप्त इन्द्रिय (अव्य०) चुपचाप, आँख बचा कर, गुप्त रूप से, एकान्त में, निर्जनस्थान में अत परीक्ष्य कर्तव्य विशेषात्सङ्कुल रहः श० ५।२४, प्रायः समास में—दृष्ट रह प्रणयमप्रतिपद्यमाने ५।२३।

रहस्य (वि०) [रहसि भव—यत्] 1 गुप्त, निजी प्रच्छन्न 2 भेदभरा, स्यम् 1 भेद (आलं० से भी) —स्यं रहस्यभेद कृत - विक्रम० २ 2 रहस्य से भरा जादू, मन्त्र, (अन्धसंबंधी) भेद, गुप्त बात—गार स्यानि गुह्यकाख्यानि— उत्तर० १ 3 आचरण का भेद या रहस्य, गुप्त बात - रहस्यं साधूनामनघमधि विभुद्ध विजयते उत्तर० २।२ 4 मुद्रा या गोपनीय शिक्षा, एक रहस्यमय सिद्धान्त —अक्लोऽसि मे सखा चेति रहस्यं क्षेत्रयुग्लभम्—भग० ४।३, मनु० २।१५०। (अव्य०—स्यम्) चुपचाप, गुप्तरूप से—याज्ञ० ३। ३०१ (यहाँ यह विशेषण के रूप में भी समझा जा सकता है)। समः—आख्यायिन् (वि०) भेद की बात

बताने वाला—रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचर —श० १।२४, -भेदः —विभेदः किसी भेद या गुप्त बात का खोलना, —अस्त्रम् 1 गुप्त प्रक्रिया या साधना 2 जादू के शस्त्रास्त्रों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए एक रहस्यमय विज्ञान।

रहित (भू० क० कृ०) [रह् कर्मणि क्त] 1 छोड़ा गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त, सम्परित्यक्त 2 वियुक्त, मुक्त, वञ्चित, हीन, के बिना (करण० के साथ या समास के अन्त में रहित) भिक्षुभिर्यमि यात्रा० २।५०, गुणरहित, सत्त्वरहित आदि 3 अकेला, एकाकी, तम् गोपनीयता, परदा या ओट।

रा (अदा० पर० राति, रात) देना, अनुदान देना, समर्पण करना—स रातु वो दुरध्यवनो भावुवाना परभ्यराम् काव्य० ७।

राका [रा + कन् + टाप्] 1 पूर्णिमा का दिन, विशेषकर वे रात्रि शारिद्रय भजते कलानिधिरय राकाधुना कलानिधि भामि० २।७२, ५८, ९४, १७०, १६५, १७९, ३।६१ 2 पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी 3 वह अवस्था जिसमें अभी रजोधर्म होना आरम्भ हुआ है 4 खजली, खाज।

राक्षस (वि०) (स्त्री०-सी) [रक्षस इदम् अण्] दैत्य या राक्षस से सम्बन्ध रखने वाला, पैशाची, निशाचर के स्वभाव वाला उत्तर० ५।३०, मेघ० १।१२, -सः 1 निशाचर, भूतप्रेत, वैताल, दानव, पैशाच 2 हिन्दू-धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित विवाह के आठ भेदों में से एक प्रकार जिसमें दुलहिन के सम्बन्धियों को युद्ध में परास्त कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है राक्षसो युद्धहरणात्—याज्ञ० १।६१, मनु० मनु० ३।३३ भा (इसी ढंग से कृष्ण रुक्मिणी को उठा लाया था) 3 ज्योतिषविषयक एक योग 4 नन्द राजा का मन्त्री, जो मुद्राराक्षस नाटक में एक प्रधान पात्र है, सी पिशाचिनी।

राक्षा दे० लाक्षा (कदाचित् अशुद्ध रूप है)।

राग [रञ्ज् भावे घञ्, लोपकुत्वे] 1 वर्ण, रंग, रञ्जक वस्तु 2 लाल रङ्ग, लालिमा, अधर किसलयराग —श० १।२१ 3. लाल रङ्ग, लाल रङ्ग की लाख, महावर,—रागेण बालारुणकोमलेन चूतप्रवालोष्ठमलञ्चकार—कु० ३।३०, ५।११ 4 प्रेम, प्रणयोन्माद, स्नेह, प्रीतिविषयक या काम-भावना, मलिनेऽपि रागपूर्णाम् —भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'काली भी है) —अथ भवतस्तमलरेव कौशुधोऽयं दृष्टिरागः श० २, दे० 'अनुराग' भी 5 भावना संवेग, सहानुभूति, हित 6 हर्ष, आनन्द 7. क्रोध रोष 8 त्रिफला, सौन्दर्य 9 संगीत के राग या स्वरग्राम मुख्यतः छः हैं भैरव कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा। श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिता—भरत। दूसरे लेखकों ने भिन्न-भिन्न नाम बताये हैं, प्रत्येक राग के अनुरूप उनके साथ छः छः रागिनियाँ होती हैं, इस प्रकार सबको मिलाकर संगीत के अनेक राग हो जाते हैं) 10 संगीत की संगति, संगीतमाधुर्यं—हवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृत —श० १।५, अहो रागपरिवाहिणी गतिः—श० ५।11 खेद, शोक 12 लालच, ईर्ष्या। सम०—आलयः (वि०) जोशीला, चूर्णं 1 अबीर का चूर्ण 2. सिन्दूर 3 लाल 4 होली के उत्सव पर एक दूसरे पर फेंका जाने वाला गुलाल या अबीर 5 कामदेव,—उद्भवः रंगने वाला पदार्थ, रङ्गलेप, रङ्ग,— ज्ञः भावना का प्रकटीकरण, (नाना प्रकार संवेगों के) उपयुक्त वर्णन से उत्पन्न रुचि- भावा भाव नुदन्ति विषयाद्रागबन्धः स एव—मालवि० २।९, - युक्त्पु०) लाल,—सूत्रम् 1. रङ्गीन धागा 2 रेशमी धागा 3. तराजू की डोरी।

रागिन् (वि०) [राग + इनि] 1 रङ्गीन, रङ्गा हुआ 2 रङ्ग करने वाला, रञ्जनकर्म करने वाला 3 लाल 4 भावना और आवेश से पूर्ण, जोशीला 5 प्रेमपूरित 6 सावेश, स्नेहशील, श्रद्धानुरागपूर्ण, अभिलाषी, लालायित (समास के अन्त में), (पुं०) 1 चित्रकार 2 प्रेमी 3 स्वेच्छाचारी, कामासक्त, णी 1. संगीत के स्वरग्राम की विकृतियों जिनमें से सोम या छत्तीस भेद गिनाये जाते हैं 2 स्वैरिणी, पुंश्चली, कामुकी।

राघव [रघोर्गोत्रापत्यम् अण्] 1 रघुवंशी, रघु की सन्तान विशेषतः राम 2 एक प्रकार का बड़ा मत्स्य—भामि० ३।५५।

राङ्कव (वि०) (स्त्री०-वी) [रङ्कोरयं विकारो वा तस्यामजातत्वात् अण्] रङ्कु नाम की हरिण जाति से सम्बन्ध रखने वाला, या इसके बालों से बना हुआ, ऊनी विक्रमांक० १८।३१, वम् 1 हरिण के बालों से बनाया हुआ ऊनी कपड़ा, ऊनी, वस्त्र 2 कम्बल।

राज् (भ्वा० उभ० राजति-ते, राजित) 1 (क) चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख होना—रेजे ग्रहमयीव सा—भट्टि० १।१७, राजन् राजति वीरवैरिवनिता वैधव्यदस्ते भुज काव्य० १०, रघु० ३।७, कि० ४।२४, ११।६ (ख) प्रतीत होना, झलक दिखाई देना,—नोदाल्पमस्करावलीव रेजे पुनिपरम्परा—कु० ६।४९ 2. हुकूमत करना, शासन करना—प्रेर० (राजयति-ते) चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना। सिच्—,प्रेर० चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना, अलंकृत करना, देदीप्यमान करना विद्याराजकुरुद्वीपिचित्रिशालीराजितञ्च वनुः- उत्तर० ६।१८, गौराजयन्ति भूपाला पादपीठान्तभूतलम्—प्रबो० २ 2. आरती उतारना, गीराजन करना (पूजा या सम्मान की दृष्टि के कारण जलते हुए दीपकों के बाल को घुमाना)

—नानामोघसमाकीर्णो नीराजितहयद्विप ··काम० ४।६६ वि —, 1 चमकाना,—भामि० १।८८ 2 दिखाई देना, प्रतीत होना रघु० २।२०।

राज् (पु०) [राज्+क्विप्] राजा, सरदार, युवराज।

राजकः [राजन्+कन्] छोटा राजा, मामूली राणा,—कम् राजा या राजाओं का समूह, प्रभुसत्ता प्राप्त राजाओं का समुदाय- सहते न अनीप्स्यच क्रियां किमु लोकाधिकधाम राजकम्—कि० २।४७, शि० १४।४३।

राजत (वि०) (स्त्री०—ती) [रजत+अण्] चांदी का, चांदी का बना हुआ, शि० ४।१३,—तम् चांदी।

राजन् (पु०) [राज्+कनिन्, रञ्जयति रञ्ज्+कनिन् नि० वा] 1. राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया (तत्पुरुष समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर 'राज' बन जाता है) वनराज, महाराज आदि —तथैव सोऽभूदन्वर्था राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२ 2 सैनिक जाति का पुरुष, क्षत्रिय शि० १४।१४ 3 युधिष्ठिर का नाम 4 इन्द्र का नाम 5. चन्द्रमा- नामि० १।१२६ 6 यक्ष। सम० —अङ्गणम् राजकीय कचहरी या दरबार, महल का आंगन,—अधिकारिन्, अधिकृत 1 राजकीय अधिकारी या अफसर 2. न्यायाधीश,—अधिराजः, —इन्द्रः राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु, सम्राट्,—अमकः 1 घटिया राजा, छोटा राणा, 2 एक प्रकार की उपाधि जो पहले पूजनीय विद्वानों और कवियों को दी जाती थी,—अपसद अयोग्य या पतित राजा,—अभिषेकः राजा का राजतिलक,—अर्हम् अगर की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, —अर्हणम् राजकीय सम्मानसूचक उपहार,—आज्ञा राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अथवा आदेश, —आभरणम् राजा का आभूषण, ·आवलि.—ली राजकीय वंशावली, राजवंशावली, उपकरणम् (ब० व०) राजकीय साज-सामान, राजचिह्न, ऋषि (राज ऋषि या राजर्षि) राजकीय ऋषि, सन्त-समान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसने अपने पवित्र जीवन तथा साधनामय भक्ति से ऋषि का पद प्राप्त किया हो। जैसे पुरुरवा, जनक और विश्वामित्र, —करः राजा को दिया जाने वाला शुल्क ·कार्यम् राज्य का कार्य,—कुमारः युवराज, ·कुल 1 राजकीय परिवार, राजा का कुटुम्ब 2 राजा का दरबार 3 न्यायालय (राजकुले कार्य, या निविश् (प्रेर०) न्यायालय में किसी के विरुद्ध अभियोग चलाना, या नालिश करना) 4 राजा का महल 5 राज, महाराज (बोलने की सम्मानसूचक रीति), ·गामिन् (वि०) राज्याधीन या राजाधिकार में होने वाली सम्पत्ति आदि (जिस सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न हो),—गृहम् 1 राजकीय निवास, राजा का महल 2, मगध के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या ८० मील की दूरी पर स्थित है)—चिह्नम् राजचिह्न, राजाधिकार या राजशक्ति,—तरुः, ताली सुपारी का पेड़,—दण्डः 1 राजा के हाथ का डंडा 2 राज शासन या राजाधिकार 3 राजाद्वारा दिया गया दण्ड —दन्तः (दन्ताला राजा) आगे का दाँत नै० ७।४६,—दूतः राजदूत, राजा का प्रतिनिधि,—द्रोहः राजा के विरुद्ध विश्वासघात, राजसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन, राजविद्रोह,- द्वार् (स्त्री०), · द्वारम् राजा के महल का मुख्य द्वार या फाटक,—द्वारिकः राजमहल का रखवाला,—धर्म 1 राजा का कर्तव्य 2 राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (प्राय ब० व० में) —धानम्,—धानिका,—धानी राजा का निवास स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का स्थान,—रघु० २।२०, धुर् (स्त्री०), धुरा शासन का उत्तर दायित्व या भार,—नय,—नीति (स्त्री०) राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय, राजनीतिज्ञता, नीलम् पन्ना, मरकत मणि,—पट्ट घटिया हीरा,—पथ,—पद्धतिः (स्त्री०) = राज-मार्ग दे०, पुत्र 1 राजकुमार, युवराज 2. क्षत्रिय, सैनिक जाति का पुरुष 3 बुधग्रह, पुत्री राजकुमारी, पुरुषः 1 राजा का सेवक 2. मन्त्री, प्रेष्य राजा का सेवक (—प्रेष्यम्) राजा की सेवा (अधिक अच्छा 'राजप्रेष्य'), बोधिन्, बोध्य (वि०) राजा की सन्तान, राजवंशज, भृत राजा का सिपाही, भृत्यः 1 राजा का सेवक या मन्त्री 2 कोई सरकारी अधिकारी, भोग राजा का भोजन, खाना, भौत राजा का विदूषक या हंसोड़ा, मात्रवर, मन्त्रिन् (पु०) राजा का सलाहकार —मार्ग 1 मुख्य मार्ग, मुख्य सड़क, राजकीय या मुख्य पथ, मुख्य रास्ता या प्रधान मार्ग 2 राजाओं की कार्य-विधि प्रणाली, या रीति, मुद्रा राजा की मोहर, यक्ष्मन् (पु०) क्षयरोग, फुफ्फुसीय क्षयरोग, तपस्विक,—राजयक्ष्मपरिहानिरायत्यौ कामयान-समवस्थया तुलाम् रघु० १९।४५, राजयक्ष्मेव राष्ट्राणां समग्रं सहीभृताम् शि० २।९६ (इस शब्द की व्याख्या के लिए दे० मल्लि० इस पर और शि० १३।२९ पर),—यानम् राजा की सवारी, पालकी, योग 1 जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का ऐसा संरूपण जिससे उस व्यक्ति के राजा होने का संकेत मिले 2 धार्मिक चिन्तन का एक सरल योग (राजाओं द्वारा अभ्यास करने योग्य) जो हठ योग (दे०) जैसे और कठोर योगों से भिन्न है, रजतम् चाँदी, राजः 1 प्रमुख राजा, सर्वोपरि प्रभु, सम्राट्

2. कुबेर का नाम—अलकाध्यक्षश्चिरमनुचरो राज-राजस्य तस्यौ—मेघ० ३ 3. चन्द्रमा, रौतिः (स्त्री०) रेखा, धूल, लक्षणम् 1 मनुष्य के शरीर पर कोई ऐसा चिह्न, जो उसकी भावी राजकीयता को प्रकट करे 2. राजकीय चिह्न, राजचिह्न, राज-लक्षित,—लक्ष्मी:,श्री: (स्त्री०) राजा का सौभाग्य या समृद्धि, (देवी का मूर्तरूप) राजा की कीर्ति या महिमा—रघु० २।७,—वंशः राजाओं का वंश, वंशावली राजाओं की वंशावली, राजाओं का वंश-विवरण, विद्या 'राजकीय नीति' राजा का कौशल, राज्य की नीति, राजनीति (तु० राजनय) इसी प्रकार 'राजशास्त्रम्',—विहारः राजकीय शिक्षालय,—शासनम् राजा का अनुशासन, भृङ्गारम् सुनहरी झड़ी का राज-कोष, खाता,—सदस् (स्त्री०) न्यायालय,—सदनम् महल, सर्षपः काली सरसों, सामुद्रकम् प्रभुसत्ता, सारसः मोर, सूयः,—यज्ञ एक बृहद यज्ञ जिसका अनुष्ठान चक्रवर्ती राजा (इसमें सहायक राजा लोग भी भाग लेते हैं) इसलिए करता है जिससे कि प्रकट हो कि उनका राजतिलक बिना किसी विरोध के सर्व-सम्मति से हो रहा है—राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति—शत०, तु० 'सम्राट' से भी, स्कन्ध, घोड़ा, स्वम् 1 राजकीय सम्पत्ति 2. राजा को दिया जाने वाला शुल्क, मालगुजारी, हंसः मराल (श्वेत-रंग का हंस जिसकी चोंच और टांगें लाल हों) सपत्नस्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः, मेघ० ११, -हस्तिन् (पु०) राजकीय हाथी अर्थात् शाही तथा सुन्दर हाथी।

राजन्य (वि) [राजन्+यत्] शाही, राजकीय,—न्यः 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष, राजकीय व्यक्ति—राजन्यान् स्वपुरनिवृत्तयेऽनुययौ—रघु० ४।८७, ३।३८, मेघ० ४८ 2 बन्धु या पूज्य व्यक्ति।

राजन्यकम् [राजन्य+कन्] क्षत्रिय या योद्धाओं का समूह।

राजन्वत् (वि०) [राजन्+मतुप्, वत्वम्] न्यायपरायण या उत्तम राजा द्वारा शासित (देश के रूप में, यह शब्द राजवत्—'केवल राजा से युक्त'—शब्द से भिन्न है) सुराष्ट्रि देशे राजन्वान् स्यात् ततोऽन्यत्र राजवान् अमर०, राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम् रघु० ६।२२, काव्या० ३।६।

राजस (वि०) (स्त्री०-सी) [रजसा निर्मितम्-अण्] रजोगुण से प्रभावित या सम्बद्ध, रजोगुण से युक्त —ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसा मनु० १४।१८, ७।१२, १७।२।

राजसात् (अव्य०) [राजन्+सात्] राज्य में सम्मिलित या राजा के अधिकार में।

राजि:-जी (स्त्री०) [राज्+इन् या ङीप्] धारी, रेखा, पंक्ति, कतार—सर्वे पण्डितराजराजितिलकेनाकारि लोकोत्तरम्—भामि० ४।४४, दानराजि—रघु० २।७, कि० ४।५।

राजिका [राजि+कन्+टाप्] 1. रेखा, पंक्ति, कतार 2. क्षेत्र 3. काली सरसों 4 सरसों (एक परिमाण, तोल)।

राजिल [राज्+इलच्] सांपों की एक सरल जाति जिसमें विष नहीं होता—कि महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु सहज प्रवर्तते - रघु० ११।२७, तु० 'धूमुख'।

राजीव [राजी इकराजी अस्त्यस्य व] 1 एक प्रकार का हरिण 2. सारस 3 हाथी,—वम् नील कमल, कु० १।४६। तम०—क्षण (वि०) कमल जैसी आंखों वाला।

राज्ञी [राजन्+ङीप्, अकारलोप] रानी, राजा की पत्नी।

राज्यम् [राज्ञो भावः कर्म वा, राजन्+यत्, नलोप] 1 राजकीयता, प्रभुसत्ता, राजकीय अधिकार—राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः—रघु० २।५३, ४।१ 2. राजधानी, राज्य, साम्राज्य रघु० १।५८ 3 हकूमत, राज्य, शासन, राज्य का प्रशासन। तम० अङ्गम् राज्य का संविधायी सदस्य, राजप्रशासन की आवश्यक शाखा, यह बहुधा सात बतलाई जाती हैं—स्वाम्य-मात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च—अमर०, अधिकारः 1 राज्य पर अधिकार 2. प्रभुसत्ता का अधिकार, अध्रुवत्वम् हड़पना, बलात् हकूमत करना, अभि-षेकः राजा का राजतिलक या सिंहासनारोहण,—अंशः वह शुल्क जो एक अधीनस्थ राजा द्वारा दिया जाता है, च्युत (वि०) गद्दी से उतारा हुआ, सिंहासन-च्युत,- तन्त्रम् शासनविज्ञान, प्रशासन पद्धति, राज्य का शासन या प्रशासन मुद्रा० १, -धुरा, -भारः शासन का जुआ, सरकार का उत्तरदायित्व या प्रशा-सन,—भ्रंशः प्रभुसत्ता का विनाश, लोभः उपनिवेश बनाने की इच्छा, प्रादेशिक वृद्धि की इच्छा,—व्यव-हारः प्रशासन, सरकारी काज-काज,—सुखम् राजकीय-सामर्थ्य।

राज्ञा (स्त्री०) 1 आज्ञा 2. बंगाल के एक जिले का नाम, उसकी राजधानी—गौडं राष्ट्रमनुत्तमं किमपरा तत्रापि राज्ञापुरी प्रबो० २।

रात्रि:-त्री (स्त्री०) [राति सुखं ददाति वा रा+त्रिप् वा ङीप्] रात—रात्रिर्गतेति मतिमतां वर मुञ्च शय्याम् रघु० ५।६३, दिवा काकरवाकुलीता रात्रौ चरति सर्वतः। तम०—अटः 1 बेताल, पिशाच, भूत-प्रेत 2 चोर, अन्ध (वि०) जिसे रात को दिखाई न दे,—करः चन्द्रमा,—चरः ('रात्रिचर' भी) (स्त्री० री) 1. निशाचर, जादू, चोर 2. पहरेदार, सारसी,

चौकीदार 3 पिशाच, भूत, प्रेत–(त) रात बने रात्रिचरी डुढौके—मट्टि० २।२३, –चर्या 1. रात में इधर उधर घूमना 2. रात को होने वाला कार्य या संस्कार, –जम् तारा, नक्षत्रपुंज, –जलम् ओस, –जागर 1 रात को पहरा देना, रात को जागते रहना, रात में बैठे रहना–रघु० १९।३४ 2 कुत्ता,– तमा आधी रात, मध्यरात्रि –पुष्पम् कुमुद (जो रात को ही खिलता है), –भोग रात का आ जाना, –रक्षः, –रक्षकः पहरेदार, रखवाला, –राग अंधकार, घना अंधेरा,–वासस् (नपुं०) 1 रात की वेशभूषा 2 अंधकार –विगम रात का अंत, दिन का निकलना, पौ फटना, प्रभात का प्रकाश–वेद वेदिन् (पुं०) मुर्गा।

रात्रिन्दिवम्, रात्रिन्दिवा (अव्य०) [द्वं० स०] रात दिन लगातार, अनवरत–रात्रिन्दिव मन्वयवद् प्रयाति – श० ५।४।

रात्रिन्मन्य (वि०) [रात्रिम् + मन् + यत्] रात की भांति दिखाई देने वाला (जैसे दुदिन या मेघाच्छादित दिन हो) तु० 'रजनिमन्य'।

राद्ध (भू० क० कृ०) [राध् कर्तरि कर्मणि वा क्त] 1 आराधित, प्रसादित, मनाया गया 2 कार्यान्वित सम्पन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित 3 पकाया हुआ, (खाना) राधा हुआ 4 तैयार किया हुआ 5 प्राप्त किया हुआ हासिल किया हुआ 6 सफल, सौभाग्यशाली, प्रसन्न 7 जादू की शक्ति से पूर्ण, दे० राध्। सम० –अन्त सिद्ध या स्थापित तथ्य, प्रदर्शित उपसंहार या सचाई, अन्तिम निर्णय सिद्धान्त, अत एवंनासिकराद्धान्तो नितरामनपेक्षितव्य इतीदानीमुपक्रम्यते शारी०, –असित (वि०) प्रदर्शित, प्रमाणों द्वारा स्थापित, तर्कसिद्ध।

राध् I (स्वा० पर० राध्नोति, राद्ध, इच्छा० रिराधिषति परन्तु 'मारना चाहता है' के लिए रिरित्सति) 1 राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना 2 सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, पूरा करना, अनुष्ठान करना, निष्पन्न करना 3 प्रस्तुत करना, तैयार करना 4 क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, मार डालना, उखाड़ना बानरा भवद्भान रेधु –भट्टि० १४।१९।

II (दिवा० पर० राध्यति, राद्ध) 1 अनुकूल या दयालु होना 2 सम्पन्न, या पूर्ण होना 3 सफल होना कामयाब होना, समृद्ध होना 4 तैयार होना 5 मार डालना, नष्ट करना, प्रेर० (राधयति-ते) 1 राजी करना 2 सम्पन्न करना, पूरा करना, अनु –, आराधना करना, पूजा करना, मनाना, अप 1 नष्ट करना, क्षति पहुंचाना, साध करना (सब० या अधि० के साथ, अथवा स्वतन्त्र रूप से) यस्मिन्नरीयमाणेपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला– श० ४, अपराद्धोऽस्मि तव भवत कण्वस्य–श० ७ 2. चूक जाना, लक्ष्यवेध न कर सकना, शि० २।२७ 3 सताना, चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना–न तु ग्रीष्मस्यैव सुभगमपराद्ध युवतिषु श० ३।९, आ–, आराधना करना (प्रेर०) 1. राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहुधा भर्तृ० ३।३४, २।४, ५ 2 पूजा करना, सेवा करना मेघ० ४५, वि –, चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना, दुष्ट करना, ठेस पहुंचाना, –क्रियासमभिहारेण विराध्यन्त क्षमेन क –शि० २।४३, विराद्ध एव भवता विराद्धा बहुधा च न –२।४१।

राध I राधा विशाखा तद्युतो पौर्णमासी राधी, सा अस्मिन् अस्ति –राधी + अण्] वैशाख का महीना।

राधा [राध्नोति साधयति कार्याणि–राध् + अच् + टाप्] 1 समृद्धि, सफलता 2 प्रसिद्ध गोपिका जिस पर कृष्ण भगवान का बड़ा अनुराग था (इसकी छवयोक्ति का जयदेव ने अपने गीतगोविन्द की रचना द्वारा अमर कर दिया है) तदिदं राधे गृह प्रापय गीत० १ 3 अधिरथ की पत्नी तथा कर्ण की पालिका माता का नाम 4 विशाखा नाम का नक्षत्र 5 बिजली।

राधिका दे० 'राधा'।

राधेय, [राधा + ढक्] कर्ण का विशेषण।

राम (वि०) [रम् कर्तरि घञ्, ण वा] 1 सुहावना, आनन्दप्रद, हृदयाह्लादक 2. सुन्दर, प्रिय, मनोहर 3 मलिन, धूमिल, काला 4 श्वेत,–म 1 तीन पौराणिक व्यक्तियों का नाम–(क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जो कृष्ण का भ्राता था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र या सीताराम रामायण का नायक। [जब राम बालक ही थे तो विश्वामित्र, दशरथ की अनुमति लेकर लक्ष्मण सहित राम को, राक्षसों से अपने यज्ञों की रक्षा करने के लिए अपने आश्रम में ले गये। राम ने अनायास ही उन सब राक्षसों को मार गिराया और पुरस्कार के रूप में ऋषि से कई चमत्कारयुक्त अस्त्र प्राप्त किये। उसके पश्चात् राम विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी मिथिला गये, वहां शिव के धनुष को झुकाने का आश्चर्य जनक करतब दिखाकर सीता से विवाह किया और वापिस अयोध्या आ गये। यह देखकर कि राम ही राज्य का उपयुक्त अधिकारी हो रहा है दशरथ ने उसे अपना युवराज बनाने का निश्चय किया, परन्तु ठीक राज्याभिषेक के दिन दशरथ की प्रियपत्नी कैकेयी ने अपनी दुष्ट दासी मन्थरा के द्वारा बहकाये जाने पर, दशरथ को अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वरदान पूरा करने के लिए कहा, एक में उसने रामको चौदह वर्ष

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने प्रिय पुत्र भरत का युवराज के रूप में राज्याभिषेक माँगा। राजा को इस माँग से भयानक धक्का लगा, उसने कैकेयी को उन दुष्ट माँगों से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुकना पड़ा। तुरन्त ही आज्ञाकारी पुत्र राम अपनी सुन्दर तरुण पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासित होने को तैयार हो गये। उनका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनों भाइयों ने कई शक्तिशाली राक्षसों का काम तमाम कर दिया, फलतः रावण की ईर्ष्याग्नि भड़क उठी। दुष्ट रावण ने मारीच की सहायता से राम की शक्ति का देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात् अपहरण किया। सीता का पता लगाने के लिए अनेक निष्फल पृच्छाओं के पश्चात् हनुमान ने यह निश्चय किया कि सीता लङ्का में है, और फिर उसने राम को प्रेरित किया कि लङ्का के ऊपर चढ़ाई की जाय तथा दुष्ट रावण को मौत के घाट उतारा जाय। वानरों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर से अपनी असंख्य सेना के साथ पार होकर राम लङ्का में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीत कर सब राक्षसों समेत रावण का वध किया। उसके पश्चात् राम अपनी पत्नी सीता, तथा अन्य युद्ध-मित्रों के साथ, विजयपताका फहराते हुए दीपित अयोध्या आये जहाँ वसिष्ठ द्वारा उनका राज्याभिषेक किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक न्यायपूर्वक राज्य किया उसके पश्चात् कुश युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान् का सातवाँ अवतार माना जाता है दे० जयदेव—विनिन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदय दर्शितपशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे—गीत० १। सम० अनुज एक प्रसिद्ध सुधारक, वेदान्ती सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा कई पुस्तकों के प्रणेता वैष्णव अयनम् (अयन) १ राम के साहसिक कार्य 2 वाल्मीकिप्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सात काण्ड तथा २४००० श्लोक हैं। गिरिः एक पहाड़ का नाम—(चके) नीताभद्रात्तरुस्थ स्थिर रामगिर्याश्रमेषु -मेघ० १, -चन्द्र, -भद्र, इत्यादि राम का नाम—दूतः, हनुमान् का नाम, नवमी चैत्रशुक्ला नवमी, राम की जयन्ती सेतु राम का पुल भारत और लङ्का को मिलाने वाला रेत का पुल जिसे आजकल एडम्स ब्रिज कहते हैं।

रामठ, -ठम् [रम् + अठ, धातोर्वृद्धि] हींग।

रामणीयक (वि०) (स्त्री० की) [रमणीय + कन्] प्रिय, सुन्दर सुखद, चारु प्रियता, सौन्दर्य आ रामणीयकनिधेरधिदेवता या मा० १।२१, ९।४७, तरुणीस्तन एव मणिहारावलिरामणी—नै० २। ४४, कि० १।३३ ४।४।

रामा [रमतेऽनया रम् करणे घञ्] 1 सुन्दरी स्त्री, मनोहारिणी तरुणी—अथ रामा विकसन्मुखी वसुधे - भामि० २।१६, ३।६ 2 प्रिया, पत्नी, गृहस्वामिनी —रघु० १२।२३ १४।२७ 3 स्त्री,—रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्—ऋतु० ६।२५ 4. नीच जाति की स्त्री 5 सिंदूर 6 हींग।

रामभ [रम्भा + अण्] बाँस की लाठी जिसे ब्रह्मचारी या संन्यासी रखते हैं।

राव [रु + घञ्] 1 क्रन्दन, चीत्कार, चीख, दहाड़, किसी जानवर की चिंघाड़ 2. शब्द, ध्वनि—मुरज-वादरावं—मालवि० १।२१, मधुरिपुरावम्—गीत० ११।

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु + णिच् + ल्युट्]

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु + णिच् + ल्युट्] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला, दहाड़ने वाला, शोक के कारण रोने धोने वाला, न एक प्रसिद्ध राक्षस, लङ्का का राजा, राक्षसों का मुखिया (रावण के पिता का नाम विश्रवा तथा माता का कैकेसी या कैकशी था, इसी लिए वह कुबेर का सौतेला भाई था। पुलस्त्य ऋषि का पौत्र होने के कारण वह पौलस्त्य कहलाता है। मूल रूप से लङ्का पर पहले कुबेर का अधिकार था, परन्तु रावण ने उसे वहाँ से निकाल दिया और लङ्का को अपनी राजधानी बनाया। उसके दस सिर (इसीलिए वह दशग्रीव, दशवदन, आदि कहलाता है) और बीस भुजाएँ थीं, कुछ के अनुसार उसकी टाँगें भी चार थीं (दे० रघु० १२।८८ और उस पर मल्लि०) ऐसा वर्णन मिलता है कि रावण ने ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए दस हजार वर्ष तक कठोर तपश्चर्या की, और प्रति हजार वर्ष के पश्चात् अपना सिर ब्रह्मा के आगे प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने नौ सिर प्रस्तुत किये और दसवाँ सिर प्रस्तुत करने लगा ही था कि ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि उसकी मृत्यु न मनुष्य द्वारा होगी और न देवता द्वारा। इस शक्ति से सम्पन्न होकर वह बड़ा अत्याचार करने लगा, उसने लोगों को सब प्रकार से सताना आरम्भ किया। उसकी शक्ति इतनी अधिक हो गई कि देवता भी उसके घरेलू नौकरों की भाँति उसकी सेवा करने लगे। उसने अपने समय के प्रायः सभी राजाओं को जीत लिया, परन्तु कार्तवीर्य ने उसे कारागार में डाल दिया अतः कि रावण ने उसके देश पर आक्रमण किया। एक बार उसने कैलास पर्वत उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु शिव ने ऐसा दबाया

कि उसकी अक्षुक्षियाँ कुचल गईं। फलतः उसने शिव की एक हजार वर्ष तक इतने ऊँचे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम रावण पड़ गया, और उसे शिव ने उस पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि वह इतना बलवान् और अजेय था, तो भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम -जिन्होंने इस राक्षस का वध करने के लिए ही विष्णु का अवतार धारण किया था,—अपना निर्वासित जीवन जंगल में रहकर बिता रहा था। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उससे अपनी पत्नी बन जाने का अनुरोध करने लगा—परन्तु उसने रावण की प्रार्थना को ठुकराया और वह उसके यहाँ रहती हुई भी पतिव्रता, सती साध्वी बनी रही। अन्त में राम ने अपनी वानरसेना की सहायता से लंका पर चढ़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का काम तमाम किया। वह राम का उपयुक्त शत्रु था और इसीलिए यह कहावत प्रसिद्ध हुई—रामरावणयोर्युद्धम् रामरावणयोरिव)।

रावणि: [रावणस्यापत्यम्-इञ्] 1 इन्द्रजित् का नाम, —रावणिश्चाध्यगो योद्धुमारब्ध च महौजसा. भट्टि० १५।७८, ८९ 2 रावण का कोई पुत्र—भट्टि० १५।७९, ८०।

राशिः [अश्नुते व्याप्नोति-अश्+इञ्, धातोरुद्भागमश्च] 1 ढेर, अंबार, संग्रह, परिमाण, समुदाय धनराशि, तोयराशि, यशोराशि आदि 2 अंक या संख्याएं जो अंकगणित की किसी विशेष प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त की जायँ (जैसे जोड़ना, गुणा करना आदि) 3 ज्योतिश्चक्र, बारह राशियाँ। सम०- -अधिप कुण्डली में किसी विशेष घर का स्वामी, -चक्रम् तारामण्डल, बारह राशियाँ, -त्रयम् त्रैराशिक गणित,—भागः किसी राशि का भाग या अंश,- भोग: सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का राशिचक्र में से होकर मार्ग अर्थात् किसी ग्रह का किसी राशि पर रहने का काल।

राष्ट्रम् [राज्+ष्ट्रन्] 1 राज्य, देश, साम्राज्य—राष्ट्रदुर्गबलादि च—अमर०, मनु० ७।१०९, १०।६१ 2 जिला, प्रदेश, देश, मण्डल जैसा कि 'महाराष्ट्र' में —मनु० ७।३२ 3 अधिवासी, जनता, प्रजा—मनु० ९।२५४,- भङ्ग—भ्रंश् कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक संकट।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1 किसी राज्य या देश का वासी मनु० १०।६१ 2 किसी राज्य का शासक, राज्यपाल।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय (वि०) [राष्ट्रे भव य] राज्य से सम्बन्ध रखने वाला, -यः 1 राज्य का शासक, राजा —जैसा कि 'राष्ट्रियश्याल' में, मृच्छ० ९ 2 राजा का साला (रानी का भाई) श्रुत राष्ट्रियमुखाद् यावदक्षकुलीयकदर्शनम् श० ६।

रास् (स्वा० द्वा० रासते) शब्द करना, चिल्लाना, किलकिलाना, शब्द करना, हुंकृत करना।

रासः [रास्+घञ्] 1 होहल्ला, कोलाहल, घोरगुल 2 शब्द, ध्वनि 3. एक प्रकार का नाच जिसका अभ्यास, कृष्ण और गोपिकाएं करती थीं, विशेषतः वृन्दावन की गोपियाँ उरसुक्य रासे रस पक्षन्तीम् वेणी० १।२, रासे हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृत परिहासम् गीत० २, १ भी। सम०- -क्रीडा, -मण्डलम् क्रीडामूलक नाच, कृष्ण और वृन्दावन की गोपिकाओं का वर्तुलाकार नाच।

रासकम् [रास+कन्] एक प्रकार का छोटा नाटक दे० सा० द० ५४८।

रासभ [रासेः अभ्राच्] गधा, गर्दभ।

राहित्यम् [रहित+ष्यञ्] बिना किसी वस्तु के रहना, अभाव, किसी वस्तु का न होना।

राहुः [रह्+उन्] एक राक्षस का नाम, सिंहिका का पुत्र इसीलिए कई बार यह सैंहिकेय कहलाता है (अब समुद्रमन्थन के परिणाम स्वरूप समुद्र से निकला अमृत देवताओं को परोसा जाने लगा तो राहु ने वेश बदलकर उनके साथ स्वयं भी अमृत पीना चाहा। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा को इस षड्यन्त्र का पता लगा तो उन्होंने विष्णु को इस चालाकी का ज्ञान कराया। फलतः विष्णु ने राहु का सिर काट डाला, परन्तु चूंकि थोड़ा सा अमृत वह चख चुका था, तो उसका सिर अमर हो गया। परन्तु कहते हैं कि पूर्णिमा या अमावस्या को वे दोनों चन्द्र और सूर्य को अब भी सताते रहते हैं तु० भर्तृ० २।३४। ज्योतिष में राहु भी केतु की भाँति समझा जाता है, यह आठवाँ ग्रह है, या चन्द्रमा का आरोही शिरोबिन्दु है) 2 ग्रहण, का ग्रस्त होने का क्षण। सम०- -ग्रसनम्,—ग्रासः, —दर्शनम्, संस्पर्शः (चाँद या सूर्य का) ग्रहण, -सूतकम् राहु का अन्त अर्थात् (चाँद या सूर्य का) ग्रहण याज्ञ० १।१४६ तु० मनु० ४।११०।

रि i (तुदा० पर० रिणति, रीण) जाना, हिलना-डुलना।

ii (कण्डा० उभ० दे० 'री')।

रिक्त (भू० क० कृ०) [रिच्+क्त] 1 खाली किया गया, साफ किया गया, रिताया गया 2. खाली, शून्य 3 से रहित, वञ्चित, के बिना 4. खोखला किया गया (जैसे हाथ की अंजलि) 5 दरिद्र 6 विभक्त, वियुक्त (दे० रिच्), -क्तम् 1 खाली स्थान, शून्यक निर्जनता 2. जंगल, उजाड़, बियाबान। सम०—पाणि, हस्त (वि०) खाली हाथ वाला, (फूल आदि के) उपहार

से रहित अहमपि देवीं प्रेक्षितुमरिक्तपाणिर्नवामि मालवि० ४।

रिक्तक (वि०) [रिक्त+कन्] दे० 'रिक्त'।

रिक्ता [रिक्त+टाप्] चान्द्रमास के पक्ष की चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी का दिन।

रिक्थम् [रिच्+थक्] 1 दायभाग, उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति, मरने के पश्चात् विरासत में छोड़ी हुई सम्पत्ति - विभजेरन् सुता पित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणं समम् - याज्ञ० २।११७, मनु० ९।१०४, -मनु धर्म. रिक्थं रिक्थमर्हति—शा० ६ 2 सम्पत्ति धनदौलत, सामान मनु० ८।२७, 3 सोना। सम० -ग्राहः,—भाक्, भाज् (पु०),—हर,—हारिन् (पु०) उत्तराधिकारी।

रिङ्ख्, रिङ्ख् (तुदा० पर० रिङ्खति, रिङ्खति) 1 रेंगना, दबे पाँव चलना 2. अन्यगति से चलना।

रिङ्खणम्, रिङ्खनम् [रिङ्ख्+(ल्यु)—ल्युट्] 1 रेंगना, पेट के बल चलना (घुटनियों चलना) 2 (सदाचार से) विचलित होना, उन्मार्गगामी होना।

रिच् (रुधा० उभ० रिणक्ति, रिङ्क्ते, रिक्त) 1 खाली करना, रिताना, साफ करना, निर्मल करना—रिचे च जलमेस्तोयम्—भट्टि० ६।३६, आविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः - विक्रम० १।८ 2. वञ्चित करना, विरहित करना (प्राय भू० क० कृ०) दे० रिक्त, अति—, आगे बढ़ना, प्रगति करना, पीछे छोड़ देना (कर्म वा० में और अपा० के साथ) - मुहुः तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते—पञ्च० ४।८१, हि० ४।१३१, मृग० २।३६, वाचः कर्मातिरिच्यते "उपदेश से निदर्शन उत्तम है" एम्प्रापल इज बेटर दैन प्रिसेप्ट Example is better than Precep) —उद्, 1. आगे बढ़ना, पीछे छोड़ देना, प्रगति करना 2. बढ़ाना, विस्तार करना, -अति बढ़ जाना, पीछे छोड़ना स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते - रघु० १०।३०।

॥ (भ्वा० चुरा० पर० रेचति, रेचयति, रेचित 1. विमुक्त करना, वियुक्त करना, अलग-अलग करना 2. परित्याग करना, छोड़ना 3 सम्मिलित होना, मिलना, आ—, सिकोड़ना, खेल-खेल में चलना - आरेचित-भ्रूचतुरं कटाक्षैः—कु० ३।५।

रिचिः [रि+क्विन्] 1. एक प्रकार का बाजा 2. शिव के एक सेवक (गण) का नाम-तु० 'भृङ्गि (ङी) रिटिः'।

रिपु [रप्+उन्, पृषो० इत्वम्] शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी।

रिप् (तुदा० पर० रिपति, रिपित) 1. कटकटाने का शब्द करना 2 बुरा भला कहना, कलङ्क लगाना।

रिष् (भ्वा० पर० रेषति, रिष्ट) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना तत्संदेहादों न रिष्यते—महा०, तेन दाक्षायणी मार्गस्तेन वक्ष्यन् न रिष्यते मनु० ४।१७८ 2 मार डालना, नष्ट करना भट्टि० ९।३१।

रिष्ट (भू० क० कृ०) [रिष्+क्त] 1 क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ, 2. अभागा,—ष्टम् 1 उत्पात, क्षति, ठेस 2. अदक्षिस्यत, दुर्भाग्य 3 विनाश, हानि 4. पाप 5. सौभाग्य, समृद्धि।

रिष्टिः (स्त्री०) [रिष्+क्तिन्] दे० ऊ० 'रिष्टम्',— पुं० तलवार।

री। (दिवा० आ० रीयते) टपकना, बूंद-बूंद गिरना, रिसना, पसीजना, बहना।

॥ (क्रया० उभ० रिणाति, रिणीते, रीण-प्रेर० रेपयति-ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3 हू हू करना।

रीक्षा (स्त्री०) 1 निन्दा, झिड़की, कलंक 2 शर्म, हया

रीक्षः (पुं०) भेड़ बकरा, रीछ की तरह की।

रीक्षा [रिष्+क्त+टाप्] अनादर, तिरस्कार, अपमान।

रीण (भू० क० कृ०) [री+क्त] टपका हुआ, बहा हुआ, बूंद-बूंद करके गिरा हुआ।

रीतिः (स्त्री) [री+क्तिन्] 1 हिलना-जुलना, बहना 2. गति, क्रम 3 धारा, नदी 4 रेखा, सीमा 5 प्रणाली, ढंग, तरीका, मार्ग, खेवी, विधा, प्रक्रिया—रीतिं विरामसुखदुःखिकरीं तनीयां भामि० ३।१९, सर्वत्रैषा विहिता रीतिः —बोध० २, उक्तरीत्या, अनेन रीत्या आदि 6 रिवाज, प्रथा, प्रचलन 7 शैली, काव्यविन्यास—पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्था विशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनां सा पुनः स्याच्चतुर्विधा। वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा - सा० द० ६२४-५ 8 पीतल, कांसा (इस अर्थ में 'रीती' भी) 9 लोहे का मैल, मुर्चा 10 धातु के तल पर लगा वारेश।

रु (अदा० पर० रौति, रवीति, रुत) भजन करना, स्तुति करना, चिल्लाना, चीखना, जोर से बोलना, दहाड़ना (जिसियों का) भनभनाना, शब्द करना कर्णे कर्णे किमपि रौति शनैर्विचिन्त्यम्—हि० १।८१, भट्टि० ३।१७, १२।७२, १४।२१, वि 1 क्रन्दन करना, विलाप करना शोक में रोना—मनु गहचरीं हुरे मत्वा विरौषि वधूरुकः विक्रम० ४।२०, भट्टि० ५।५४, ऋतु० ६।२७, 2 कोलाहल करना, शोर मचाना न स विरौति न चापि न क्रीडते - पंच० १।७५, कीर्तयन् सुहृदस्य विरौति कपाट - मृच्छ० ३, एते त एव विरुतैः विक्लवन्त्यपुरा—उत्तर० २।२३।

रुक्मः (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] उज्ज्वल, चमकदार, रुक्मः सोने का आभूषण-शि० १५।७८,-क्मम् 1. सोना, 2 लोहा। सम० कारः सुनार,—पृष्ठः

(वि०) सोने के गहनों से युक्त, सोना चढ़ा हुआ, —आहव द्रोणाचार्य का नामान्तर।

रुक्मिन् (पुं०) [रुक्म+इनि] भीष्मक के ज्येष्ठ पुत्र तथा रुक्मिणी के भाई का नाम।

रुक्मिणी [रुक्मिन्+ङीप्] विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री का नाम (रुक्मिणी की सगाई रुक्मिणी के पिता ने शिशुपाल से कर दी थी, परन्तु रुक्मिणी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी। उसने कृष्ण को एक पत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसका अपहरण कर लिया जाय, बलराम सहित कृष्ण आया और रुक्मिणी के भाई को युद्ध में परास्त कर रुक्मिणी को उठा कर ले गया। रुक्मिणी से कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ)।

रुक्ष (वि०)=रूक्ष, दे०।

रुग्ण (भू० क० कृ०) [रुज्+क्त] 1 टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट 2 अवरोधित 3 झुका हुआ, वक्रीकृत 4 क्षति ग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 5 रोगी, बीमार (दे० रुज्)। सम०—ग्रह (वि०) जिसका आक्रमण रोक दिया गया हो, जिसका धावा विफल कर दिया गया हो।

रुच् (भ्वा० आ० रोचते, रुचित) 1 चमकना, सुन्दर या शानदार दिखलाई देना, जगमगाना—रुरुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमा—शि० ६।४६, मनु० ३।६२ 2 पसन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (वस्तुओं से) प्रसन्न होना, रुचिकर होना, (प्रसन्न व्यक्ति के लिए सम्प्र० तथा वस्तु के लिए कर्तृ०)—न अलं रुचिरे रमणीय—कि० ९।३५, यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत् तस्य सुन्दरम् हि० २।५३, कई बार व्यक्ति के लिए सब०,—दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्-मृच्छ० १।११, प्रेर०—(रोचयति-ते) पसन्द कराना, रुचिकर या सुहावना करना—कु० ३।१६,—इच्छा० (रुरु-रोचिषते) पसन्द करने की इच्छा करना, आदि०, पसन्द करना, रुचिकर होना—यदभिरोचते मह्यं—विक्रम २, अ—, 1 बहुत चमकना 2 पसन्द किया जाना, वि० चमकना जगमगाना—रघु० ६।५, १७।१४, भट्टि० ८।६६।

रुच, रुचा (स्त्री०) [रुच्+क्विप्, रुच्+टाप्] 1 प्रकाश, कान्ति, उज्ज्वलता,—क्षणदासु यत्र च रुचेकना गता—शि० १३।५३ ९।२३, २५, शिखरमणिरुच कि० ५।४३, मेघ० ४४ 2 रङ्ग, छवि (समास के अन्त में) वलयन्मृगरुचस्तालकान् रघु० ८।५३, कु० ३।६५, कि० ५।४५ 3 अभिरुचि, इच्छा।

रुचक (वि०) [रुच्+क्वुन्] 1 रुचिकर, सुखद 2 क्षुधावर्धक या भूख बढ़ाने वाली (औषधि) 3 तीक्ष्ण, चरपरा, कः 1 नीबू 2 कबूतर, क्लम् 1 दाँत 2 सोने का आभूषण विशेषकर हार 3 पौष्टिक या पाचनशक्तिवर्धक 4 माला, हार 5 काला नमक।

रुचा दे० 'रुच्'।

रुचि (स्त्री०) [रुच्+क्तिच्] 1 प्रकाश, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता,—रुचिमिन्दुरले करोत्यज परिपूर्णेन्दुरुचिर्मही-पतिः—शि० १६।७१, रघु० ५।६७, मेघ० १५ 2. प्रकाश किरण—जैसा कि 'रुचिरत्व' में 3 छवि, रङ्ग, सौन्दर्य बहुधा समास के अन्त में—पटल बहिर्बहलपङ्कजरुचि—शि० ९।१९ 4 स्वाद, मजा—जैसा कि 'रुचिकर' में 5 सुस्वाद, भूख, क्षुधा 6 कामना, इच्छा, खुशी,—स्वेच्छया स्वेच्छा से, खुशी से 7 अभिरुचि, स्वाद—विभावनोपायश्च रुचि' स्वकाले—भामि० १।१२५, 'अभिरुचि या प्रेम' —न स क्षितीशो रुचये बभूव, क्षिप्तरुचिर्हि लोक—रघु० ६।३०, नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येक समाराधनम् मालवि० १।४, 'सलग्न' 'व्यस्त' या 'अनुरक्त' के अर्थ में प्रयोग बहुधा समास के अन्त में हिमाद्रेर्मा० ५।२९ 8 प्रणयोन्माद, किसी की बात में लवलीनता। सम०—कर (वि०) 1 स्वादिष्ट, चटपटा मजेदार 2 इच्छा का उत्तेजक 3 पाचनशक्तिवर्धक पौष्टिक,—कृत् (पुं०) 1 सूर्य शि० ९।१३ 2 चन्द्र।

रुचिर (वि०) [रुचि राति ददाति—रुच्+किरच्] 1 उज्ज्वल, चमकदार, प्रकाशमान, जगमगाता, सम-रुचिरगात्रः—वीर० १४, कनकरुचिरम्, रत्नरुचिरम् आदि 2 स्वादिष्ट, मजेदार 3 मधुर, ललित 4 क्षुधा-वर्धक, भूख बढ़ाने वाला 5 पुष्टिदायक, बलवर्धक, रः 1 एक प्रकार का पीला रंग 2 वृत्तविशेष द० परिशिष्ट १,—रम् 1 केसर 2 लौंग।

रुच्य (वि०) [रुच्+क्यप्] उज्ज्वल, प्रिय आदि दे० 'रुचिर'।

रुज् (तुदा० पर० रुजति, रुग्ण) 1 तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट करना—रघु० ९।६३।१२।७३ भट्टि० ८।४५ 2 पीड़ा देना, क्षति पहुँचाना, अस्वस्थ करना, रोगग्रस्त करना रावणस्येव रोदयन्ति कपयः सीता-विक्रमा भट्टि० ८।१२० 3 झुकना।

रुज्, रुजा (स्त्री०) [रुज्+क्विप्, रुज+टाप्] 1 कष्ट अभिघात 2 पीड़ा, सताप, यातना वेदना अतिसर्ग-मपि सहन्ते मुमूर्षन्तो रुजमाहारमभिमता मे शा० ३।८, यत्र रुजा हृदयप्रमाथिनी मालवि० ३।७, करुण रुजापरीतम् ८।२ 3 बीमारी, व्याधि, रोग रघु० १२।५२ 4 थकावट, श्रम प्रयत्न, कष्ट। सम० प्रतिक्रिया प्रतिकार या रोग की चिकित्सा उपाय, चिकित्सा का अवलम्बन, -भेषजम् औषध, सदन (नपुं०) चिता, चल।

रुज्य,—**ज्** [रुज्+ड, रुज्+अच् वा] सिर सहित धड़ का कबन्ध, कबन्ध—वेलद्भूरवरुद्धमुद्धतरिपोरुद्यन्निव क्षिपन् मुखम् उत्तर० ५।१६, मा० ३।१७।

रुज्ञ् [रुज्+क्त] कम्पन, खिलखिलाना, ठहाका, शब्द

करना, कोलाहल, (पक्षियों का) कूजना, (मक्खियों का) भनभनाना, पक्षि°, हंस°, कोकिल° आदि°। सम०- अः भविष्यवक्ता, नजूमी,—आशा. 1 कूटकथन 2 स्वांग।

रुद् (अदा० पर० रोदिति, रुदित,- इच्छा० रुरुदिषति) 1 क्रन्दन करना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना, आँसू बहाना -निराधारो हा रोदिमि कथय केनामिह पुरः—गंगा० ४, अपि ग्रावा रोदिति अपि दलतिदक्षस्य हृदयम् उत्तर० १।२८ 2. हुहू करना, दहाड़ना, चिल्ली मारना, प्र— , फूट फूट कर रोना।

रुदनम्, रुदितम् [रुद् + ल्युट्, क्त वा] रोना, क्रन्दन करना, विलाप करना, शोक में रोना-धोना अत्यन्तमात्मीदुदिते तनेजसि रघु० १४।६९, ७०, मेघ० ८४।

रुद्ध (भू० क० कृ०) [रुध्+क्त] 1 अवरुद्ध, बाधायुक्त, विरोधी 2 घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, घेरा हुआ।

रुद्र (वि०) [रोदिति—रुद् + रक] भयानक, भयंकर, डरावना, भीषण,—द्रः 1 देवसमूह विशेष, (गिनती में ग्यारह), ऐसा माना जाता है कि शंकर या शिव के ही यह अपकृष्ट रूप हैं, शिव स्वयं इस समूह के मुखिया हैं रुद्राणां शंकरश्चास्मि— भग० १०।२३, रुद्राणामपि मूर्धानं क्षतहुंकारशंसिन कु० २।२६ 2 शिव का नाम। सम० अक्ष एक प्रकार का वृक्ष, (क्षम्) इसी वृक्ष के फल के बीज, जिनसे रुद्राक्षमाला बनाई जाती है -भस्मोद्धूलन मङ्गमस्तु भवते रुद्राक्षमाले शुभम् काव्य० १०, आवासः 1 रुद्र का निवासस्थल, कैलास पर्वत 2 वाराणसी, 3 श्मशान नृ० पितृसद्मगोचर।

रुद्राणी [रुद्र + ङीप् आनुक्] रुद्र की पत्नी, पार्वती का नामान्तर।

रुध् (रुधा० उभ० रुणद्धि, रुन्धे, रुद्ध, इच्छा० रुरुत्सति -ते) 1 अवरुद्ध करना, उकसाना, गिरफ्तार करना, रोकना, विरोध करना, विघ्न डालना, बाधा डालना, मना करना इव रुणद्धि मां पथिमन्तःक्षिप्तबहूदरम् विक्रम० ४।२१, रुद्धालोके नरपतिपथे— मेघ० ३७ ९१, प्राणान्तानयती रुरुक्षा०—भग० ८।२९ 2 थामना सम्भालना करना, (घिरने से) बचाना ओजोऽन्यं कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि, मेघ० १० 3 बन्द करना, ताला लगाना, रोकना, भेड़ना, बन्द कर देना अधि० के साथ, परन्तु कभी-कभी द्वि०कर्म० के साथ - भट्टि० ६।३५, द्वयं रुणद्धि गात्रम्—शिशु० 4 थामना, सीमित करना -व्याले बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धं समुज्जृम्भते—भर्तृ० २।६ 5. घेरा डालना, घेरना नाकेबन्दी करना- एवमस्तु वारणवतीं नगरीं मदीया —मुद्रा० ४।१७ अरुणद् यवन साकेतं मा—माध्यमिकान् —महा०, भट्टि० १४।२९ 6 छिपाना, ढकना, आच्छन्न करना, गुप्त करना 7 अत्याचार करना, सताना, अत्यन्त कष्ट देना, अनु , (कहीं कहीं प्रयोग ऐसा होता है मानो धातु विद्या० की है) 1 अभ्यास करना, अभ्यास करना—मनु० ५।६३ 2. प्रेम करना, अनुरक्त होना—स्वधर्ममनुरुन्धते— कि० ११।७८, वानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मी - भट्टि० १६।२३ 3. आज्ञा मानना, अनुसरण करना, अनुकूल होना—नियतिं लोक इवानुरुध्यते—कि० २।१२, अनुरुध्यस्व जनकेनोद्वेजन- उत्तर० ५, मद्वचनमनुरुध्यते वा भवान् कि० १८१ 4 स्वीकृति देना, सहमत होना, अनुमोदन करना 5 प्रेरित करना, दबाव डालना, अव- , 1 रोकना, अटकाना—श० २।२ 2 बन्दी बनाना, कैद करना, बन्द करना (कभी-कभी दो कर्मों के साथ) -श्लोक त्रिभिरवारुणम् भट्टि० ६।९ 3 घेरा डालना, उप , 1 अवरुद्ध करना, विघ्न डालना—उपरुध्यते नगोऽभ्युत्थानम् श० ४ 2 तंग करना, दुखी करना, कष्ट देना पौरान्लपोषनमुपरुन्धन्ति श० १ 3. पार कर लेना, दबा देना रघु० ४।८३ 4 कैद करना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण में रखना 5 छिपाना, ढक लेना, वि ,1 अवरुद्ध करना, रोकना, विरोध करना बन्द करना न्यरुधदश्वास्य पन्थानम् भट्टि० १७।४९, १६।२०, मुच्छ० १।२२ 2 बन्दी बनाना, कैद करना - मनु० ११।१७६, भग० ८।१२ 3 ढकना, छिपाना -मनु० १४।१६, प्रति- ,अवरुद्ध करना, वि—,विरोध करना, अवरोध करना 2 विवाद करना, झगड़ना 3 भिन्नमत का होना, सम् ,1 अवरुद्ध करना, अटकाना, रोकना स चेत् पशिं सरुद्ध पशुभिर्वा रथेन वा मनु० ८।२९५ 2 ढकना, छिपाना, रुकावट डालना, रोकना - रघु० २।४२ 3 दृढ़तापूर्वक थामना, शृंखलाबद्ध करना तृणमिव सकुलक्ष्मीर्नैव तान्सुरुन्धि भर्तृ० २।१७ 4 अधिकार में करना, बलात् अभिग्रहण करना, पकड़ना -मनु० ८।३३५।

रुधिरम् [रुध्+किरच्] 1 लहू 2. जाफरान, केसर, ९ मंगलग्रह। सम० -अशनः 'खून पीने वाला' राक्षस, भूत-प्रेत,—आशयः रक्ताशय, - वाहिन् (पुं०) शिरा।

रुक्षः [रौति रु+क्षुन्] एक प्रकार का हरिण रघु० १।५१, ७२।

रुष् (तुदा० पर० रुष्यति) चोट पहुँचाना, घात से मार डालना, नष्ट करना।

रुषत् (वि०) [रुष् + शतृ] चोट पहुँचाने वाला, अहितकर, (शब्द आदि जो) बुरे लगे।

रुष् : (दिवा० पर० रुष्यति—विरुष्यप्रद्वेष-रुष्यते, रुषित, रुष्ट) क्रुद्ध होना, नाराज होना, क्रुद्ध होना—तत्तोऽरुष्यद्वल

दंश्य—भट्टि० १७।४०, मामुहो मा स्वोऽधुना —१५।२६, २।२० ।

ii (भ्वा० पर० रोषति) 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. नाराज करना, सताना ।

रुष्, रुषा (स्त्री०) [रुष्+क्विप्, रुष्+टाप्] क्रोध, रोष, गुस्सा,—निर्बन्धतप्तातरुषा रघु० ५।२१, प्रह्वेष्व-निर्बन्धरुषा हि सन्त —१६।८०, १९।२० ।

रुह् (भ्वा० पर० रोहति, रूढ) 1 उगना, फूटना, अंकुरित होना, उपजना—रूढरागप्रवाल - मालवि० ४।१, केसरैरवंरूढै —मेघ० २३, छिन्नोऽपि रोहति तरु —ऋतु० २।८७ 2 उपजना, विकसित होना, बढ़ना 3. उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4 पकना, (व्रण आदि का) स्वस्थ होना—प्रेर० (रोपयति ते, रोहयति—ते) 1. उगाना, पौधा लगाना, भूमि में (बीज) बखेरना 2 उठाना, उन्नत करना 3 सौंपना, सुपुर्द करना, देखरेख में देना,—गुणवत्सुतरोपितश्रिय —रघु० ८।११ 4 स्थिर करना, निर्देशित करना, जमाना -रघु० ९।२२, इच्छा० (रुरुक्षति) उगाने की इच्छा करना, अधि —, चढ़ना, सवार होना, सवारी करना रघु० ७।३७, कु० ७।५२ (प्रेर०) उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिठाना —रघु १९।४४, अव —, नीचे आना, उतरना शि० ७।८, आ —, चढ़ना, सवार होना, पकड़ लेना, सवारी करना, (आ पूर्वक रुह् धातु के अर्थ प्रयुक्त संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार के होते हैं—उदा० प्रतिज्ञाम् आरुह् वचन देना, प्रतिज्ञा करना, समताम् आरुह् समानता के स्तर पर होना, संशय आरुह् असमंजस उठाना, सन्दिग्धावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1 उन्नत होना, उठाना 2 रखना, जमाना, निर्देशित करना 3 मढ़ना, बोपना, आरोपित करना 4 (धनुष पर) प्रत्यंचा चढ़ाना 5 नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना, प्र —, उगना, अंकुरित होना न पंकेनाग्रे नलिनी प्ररोहति मृच्छ० ४।१७, वि —, उगना, अंकुर फूटना रघु० २।२६, मृच्छ० १।९ (प्रेर०) (व्रण आदि का) स्वस्थ होना, सम् —, उगना, रघु० ६।४७ ।

रुह्, रुह (वि०) (समास के अन्त में) [रुह्+क्विप्, क वा] उगा हुआ या उत्पन्न, जैसा कि 'मद्दोरुह्' और 'पङ्केरुह्' में ।

रुहा [रुह्+टाप्] दूर्वा घास, दूबड़ा ।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1 खुरदरा, कठोर, (स्पर्श या शब्द आदि) जो मृदु न हो, रूक्षा—रूक्षस्वर वाशति वायसोऽयम् मृच्छ ९।१०, कु० ७।७० 2 कसैला (स्वाद) 3 ऊबड़-खाबड़, असम, कठिन, कर्कश 4 दूषित, मलिन, मैला रघु० ७।७०, मुद्रा० ४।५ 5 क्रूर, निर्दय, कठोर—नितान्तरूक्षाभिनिवेशमीक्षम् —रघु० १४।४३, शि० ७।३२, पंच० ४।९१ 6. नीरस, भुना हुआ, सूखा, घीरहित लिम्बरूक्षया सर्वावदपरतो भीषणाभोगरूक्षाः—उत्तर० २।१४, (रूक्षीकृ—, ऊबड़-खाबड़ करना, मैला करना, मिट्टी लपेटना) ।

रूक्षणम् [रूक्ष्+ल्युट्] 1 सुखाना, पतला करना 2 (आयु० में) (शरीर की) मेद को घटाने की चिकित्सा ।

रूढ (भू० क० कृ०) [रुह्+क्त] 1 उगा हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ, उपजा हुआ 2 जन्मा हुआ, उत्पन्न 3 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विकसित 4 उठा हुआ चढ़ा हुआ 5 विस्तृत बड़ा, स्थूलकाय 6 विकीर्ण इधर उधर फैला हुआ 7 विदित, ज्ञात, व्यापक —अतात्किल भायत इत्युदय आस्य शब्दो भुवनेषु रूढ रघु० २।५३, (यहाँ रूढ का अर्थ 'योगरूढ' है) 8 सर्वजनस्वीकृत, परम्पराप्राप्त, प्रचलित, सर्वप्रिय (शब्द या अर्थ, विप० यौगिक या निर्वचनमूलक अर्थ) —व्युत्पत्तिरहिता शब्दा रूढा आख्यातलादय यास्कमते च व्युत्पत्तिमत्त्वे सि० १०।२३ 9 निश्चित निश्चित किया हुआ ।

रूढिः (स्त्री०) [रुह्+क्तिन्] 1 उगना, उपजना 2 जन्म, पैदायश 3 वृद्धि, विकास, बर्धन, प्रवृद्धता 4 ऊपर उठना, चढ़ना 5 प्रसिद्धि, ख्याति, बदनामी —शि० १५।२६ 6. परम्परा, प्रथा, परम्परागत रिवाज —शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी, 'विधि से प्रथा अधिक बलवती है' 7 सामान्य प्रचार, साधारण व्यापकता या प्रचलन 8 सर्वमान्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्—काव्य० २ ।

रूप् (चुरा० उभ०—रूपयति-ते, रूपित) 1 रूप बनाना, गढ़ना 2 रूप धर कर रंगमंच पर आना, अभिनय करना, हावभाव प्रदर्शित करना —रूपवेष विकल्प्य—शि० १।१ चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना, देखना, नजर डालना 4. मालूम करना, ढूंढना 5 सवाल करना, विचार करना 6 तय करना, निश्चय करना 7 परीक्षा करना, अन्वेषक करना 8 नियुक्त करना, वि—, विकसित करना, रूप बिगाड़ना ।

रूपम् [रूप्+क, भावे अच् वा] 1 शक्ल, आकृति, मूरत विरूप रूपवन्त वा पुमांसमेवेव भुञ्जते - पंच० १।१४३, इसी प्रकार 'कुरूप' 'सुरूप' 2 रूप या रंग का प्रकार (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में एक)—चक्षुर्मात्र ग्राह्यजातिमान् गुणो रूपम्—तर्क० (यह छ प्रकार का है शुक्ल, कृष्ण, पीत, रक्त, हरित और कपिल यदि 'चित्र' को जोड़ दिया जाय तो सात हो जाते

है) 3. कोई भी दृश्य पदार्थ या वस्तु 4 मनोहर रूप या आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः—श० १। २६, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—मर्तृ० २।२०, रूप जरा हन्ति आदि 5 स्वाभाविक स्थिति या दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, मूलतत्त्व 6. ढंग, रीति 7 चिह्न, चेहरा-मोहरा 8 प्रकार, भेद, जाति 9 प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10 सादृश्य, समरूपता, 11 नमूना, प्रकार, बनत 12. किसी क्रिया या संज्ञा का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13 'एक' की संख्या, गणित की एक इकाई 14 पूर्णांक 15 नाटक, खेल, दे० रूपक 16 किसी ग्रंथ को बार बार पढ़ कर या कंठस्थ करके पारंगत होने की क्रिया 17 चमड़ी 18 ध्वनि, शब्द, ('रूप का प्रयोग बहुधा समास के अन्त में होता है यदि निम्नांकित अर्थ हो—'बना हुआ' 'से युक्त' 'के रूप में' 'नामक' 'सूरत शक्ल में' तथोक्त धन धर्मरूप सभा) । सम० अभिज्ञः आंखों द्वारा किसी पदार्थ के रंग रूप का प्रत्यक्ष करना, अभिधानहीन (वि०) काम करते हुए पकड़ा गया, मौके पर पकड़ा गया —आजीवा वेश्या, रंडी, गणिका,—आढ्यः अत्यंत सुन्दर व्यक्ति, इन्द्रियम् आँख, रमरूप को प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय, उपचयः लक्षित वर्णों का समूह श० २।९, —कार,—कृत् (पुं०) मूर्तिकार, शिल्पी तस्य अन्तर्हित गुण मूलतत्त्व, धर (वि०) रूप धरे हुए, छद्मवेषी, नाशकः उल्लू, लावण्यम् रूप की उत्कृष्टता, चारुता, विपर्ययः विरूपण, शारीरिक रूप में विकृत परिवर्तन, शालिन् (वि०) सुन्दर सत्त्व, संपत्तिः (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की वृद्धि, सौन्दर्यातिरेक ।

रूपक | रूप्+ण्वुल्, रूप+कन् वा] विशेष सिक्का, रुपया कम् 1 शक्ल, आकृति, सूरत, (समास के अन्त में) 2 कोई वर्णन या प्रकटीकरण 3 चिह्न, चेहरा-मोहरा 4 प्रकार, जाति 5 नाटक, खेल नाट्य-कृति (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो भेदों में से एक, दृश्य, इसके फिर आगे दस भेद हैं, इसके अतिरिक्त इसके और अवान्तर भेद हैं जो गिनती में अठारह हैं तथा 'उपरूपक' नाम से विख्यात हैं) —दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात् रूपकम् -सा० द० २७२, २७३ 6 (अलं० में) अंग्रेजी के मैटाफर (metaphor) के अनुरूप एक अलंकार जिसमें उपमेय को उपमान के ठीक समरूप वर्णित किया जाता है—तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः—काव्य० १० (विवरण के लिये देखो यही स्थान) 7 एक प्रकार का तोल । सम०—ताल: संगीत में विशेष समय,—अलंकारः आलंकारिक या रूपकोक्ति ।

रूपकम् [रूप्+ल्युट्] 1. शारीरिक वर्णन या आलंकारिक वर्णन 2. गवेषणा, परीक्षा ।

रूपवत् (वि०) [रूप+मतुप्, वत्वम्] 1. रूपरूप वाला 2 शारीरिक, दैहिक 3 सशरीर 4. मनोहर, सुन्दर, -ती सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) [रूप+इनि] 1 के सदृश दिखाई देने वाला 2. शरीर, मूर्तिमान् 3. सुन्दर ।

रूप्य (वि०) [रूप+यत्] सुन्दर ललित, -प्यम् 1 चांदी 2 चांदी (या सोने) का सिक्का, मुद्रांकित सिक्का, रुपया 3. शुद्ध किया हुआ सोना ।

रूप् । (स्वा० पर० रूपति, रूपित) 1 अलंकृत करना, सजाना 2 पोतना, चुपड़ना, मंडित करना, लीपना (मिट्टी आदि से) ।

॥ (चुरा० उभ० रूपयति-ते) 1 कांपना 2. फट जाना ।

रूपित (भू० क० कृ०) [रूप्+क्त] 1 अलंकृत 2. पोता हुआ, ढका हुआ, छिपाया हुआ 3 मिट्टी में लपेटा हुआ 4 अुपहार, ऊपर लादा हुआ 5 कूटा हुआ, चूर्ण किया हुआ ।

रे (अव्य०) [रा+ए] संबोधनात्मक अव्यय -रे रे शकर-मूर्खाधिवासिनो जानपदाः मा० ३ ।

रेखा [लिख्+अच्+टाप्, लस्य र] 1 लकीर, धारी, मदरेखा, हारलेखा, रामरेखा आदि 2. लकीर की मात्र, अल्पांश, लकीर इतना—न रेखामात्रमपि व्यतीयुः रघु० १।१७ 3 पंक्ति, परास, लकीर, बेधी 4. आलेखन, रूपरेखा, चित्रांकन लावण्य रेखया किंचिदन्वितं श० ६।१४ 5. भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम याम्योत्तर रेखा जो लंका से उज्जैन होते हुए मेरु पर्वत तक खिंची हुई है 6 पूर्णता, सन्तोष 7 शोभा, आलंकारिकता । सम० अंशः रेखांश, द्राघिमांश के घात, देशान्तरीय घात, अवन्तरम् प्रथम याम्योत्तर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—आकार (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखांकन, धारीदार, -गणितम् ज्यामिति ।

रेच दे० 'रेचक' ।

रेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [रेचयति रिच्+णिच्+ण्वुल्] 1. रिक्त करने वाला, निर्मल करने वाला 2 दस्तावर, मुलायम (मल को ढीला करने वाला) 3 फेफड़ों को खाली करने वाला, श्वास को बाहर फेंकने वाला, —कः 1. श्वास का बाहर निकालना बहिःश्वसन, निःश्वसन विशेष कर एक नथने से (विप० पूरक अर्थात् अन्तः श्वसन, साँस अन्दर ले जाना और कुम्भक, श्वास को जहां का तहाँ रोकना) 2 वस्तिकर्म या पिचकारी 3. अनाज, ओरा, -कम् दस्तावर, विरेचन ।

रेचनम्, --ना [रिच्+ल्युट्] 1 रिक्त करना 2 घटाना, कम करना 3 श्वास बाहर निकालना 4 निर्मल करना 5 मल बाहर निकालना।

रेचित (वि०) [रिच् +णिच्---क्त] रिताया गया, साफ किया गया, तम् घोड़े की दुलकी चाल।

रेणुः (पु०, स्त्री०) [रीयते- णु नित्] 1 धूल, धूलकण रेत आदि -तुरगखुरहतस्तथा हि रेणु मा० १।३१ 2 पराग, पुष्परज।

रेणुका [रेणु+कै+क+टाप्] जमदग्नि की पत्नी तथा परशुराम की माता दे० जमदग्नि।

रेतस् (नपु०) [री+असुन्, नुट् च] वीर्य, धातु।

रेफ (वि०) [रेफ्+अच्] नीच, कमीना, तिरस्करणीय, ---कः 1 कर्कश ध्वनि, गड़गड़ध्वनि 2 'र्' वर्ण 3 प्रणयोन्माद, अनुराग।

रेवट [रेव्+अटन्] 1 सूअर 2 बाँस की छड़ी 3 बवंडर।

रेवतः [रेव्+अतच्] नीबू का पेड़।

रेवती [रेवत+ङीष्] 1 सत्ताइसवां नक्षत्रपुंज जिसमें बत्तीस तारे होते हैं2 बलराम की पत्नी का नाम -शि० २।१६।

रेवा [रेव्+अच्+टाप्] नर्मदा नदी का नाम,---रेवा-रोधःसु वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते---काव्य० १, रघु० ६।४३, मेघ० १९।

रेव् (भ्वा० आ० रेवते, रेवित) 1 दहाड़ना, हुंह करना, किलकिलाना 2 हिनहिनाना।

रेवत्क्, **रेवा** [रेव्+ल्युट्, रेव्+अ+टाप्] दहाड़ना, हिनहिनाना।

रै (पु०) [राते दैं] (कर्तृ० रा रायौ राय) दौलत, सम्पत्ति, धन।

रैवत, **रैवतक** [रेवत्या अदूरे देश ---श्वेतो+अण् रैवत +कन्] द्वारका के निकट विद्यमान पहाड़, (इस पहाड़ के विवरण के लिए दे०, शि० १)।

रोकस् [रुक+कन्] 1 छिद्र 2 नाव, जहाज 3 हिलता हुआ, लहराता हुआ।

रोग [रुज्+घञ्] रुजा, बीमारी, व्याधि, मनोव्यथा या आधि, अशक्तता मनाग्यस्ति कमण्यभुज न रोगा —हि० ३।११७, भोगे रोगभयम् भर्तृ० ३।३५, सम० आयतनम् शरीर,—आर्त (वि०) रोगग्रस्त, बीमार, शान्तिः (स्त्री०) रोग का उपशमन या चिकित्सा, हर (वि०) चिकित्सापरक (—रः) औषधि,—हारिन् (वि०) चिकित्साविषयक, (—पुं०) वैद्य, डाक्टर।

रोचक (वि०) [रुच्+ण्वुल्] 1. सुखद, रुचिकर 2 भूख बढ़ाने वाला, क्षुधोत्तेजक,---कम् 1 भूख 2. मन्दाग्नि को दूर करने वाली कोई पुष्टि कारक औषधि उद्दीपक, पौष्टिक 3. काँच की चूड़ियाँ या अन्य बनावटी आभूषण बनाने वाला।

रोचन (वि०) (स्त्री० ना, नी) [रुच्+ल्युट्, रोचयति वा] 1 प्रकाश करने वाला, रोशनी करने वाला, जगमगा देने वाला 2 उज्ज्वल, शानदार, सुन्दर, प्रिय, सुहावना रत्नैकरः भट्टि० ६।७३ 3 क्षुधावर्धक, ---न भूख बढ़ाने वाली औषधि,---नम् उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष।

रोचना [रोचन+टाप्] 1 उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष 2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार का पीला रंग -गोरोचना रघु० ६।६५, १७।२४, शि० ११।५१।

रोचमान (वि०) [रुच्+शानच्] 1 चमकदार, उज्ज्वल 2 प्रिय, सुन्दर, मनोहर, नम् घोड़े की गर्दन के बालों का गुच्छा।

रोचिष्णु (वि०) [रुच् इष्णुच्] 1 उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार, देदीप्यमान 2 छैल-छबीला, भड़कीले कपड़े वाला, प्रफुल्लवदन 3 क्षुधावर्धक।

रोचिस् (नपु०) [रुच इसि] प्रकाश, आभा उज्ज्वलता, ज्वाला शि० ११५।

रोदनम् [रुद्+ल्युट्] 1 रोना, दे० रुदन 2 आंसू।

रोदस् (नपु०) (स्त्री० द्वि० व० रोदसी) [रुद् +असुन्] आकाश और पृथ्वी तव श्रवणभैरव स्थगितरोदसीकन्दर —वेणी० २।२, वेदान्तेषु यमाहुरेक पुरुष व्याप्य स्थित रोदसी—विक्रम० १।१, शि० ८।१५।

रोध [रुध्+घञ्] 1 रोकना, पकड़ना, रुकावट डालना शि० १०।८० 2 अवरोध, ठहराना, बाधा, रोक प्रतिषेध, दबाना —शापादस्त्रं प्रतिहतमिव स्मृतिरोधरूक्षे मा० ७।३२, उपरोध—कि० ५।१५, शाम० २।२२० 3 बन्द करना, रोकना, नाकेबंदी करना, घेरा डालना प्रोत्तिरोधमसहिष्ट सा पुरी---रघु० ११।५२ 4 बाँध।

रोधस्, [रुध्+ल्युट्] सुपग्रह, नम् ठहराना, रोकना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण, रोक थाम।

रोधस् (नपु०) [रुध्+असुन्] 1 तट, पुश्ता, बांध-गङ्गा रोध पतनकल्पा गृहणतीव प्रसादम् विक्रम० १।८, रघु० ५।४२, मेघ० ५१ 2 किनारा, ऊंचा तट-रघु० ८।३३। सम० अन्ध, वती 1 नदी 2 वेग से बहने वाली नदी।

रोध्रः [रुध्+रन्] एक प्रकार का वृक्ष, लोध्रवृक्ष, ध्र, अम् पाप, अम् अपराध, दुरित।

रोपः [रुह्+णिच्+अच्, ह्रस्व प] 1. उगाना, बोना 2. पौधे लगाना 3. बाण—शि० १९।१२० 4 छिद्र, गड्ढा।

रोपयत् [रुह्+णिच्+क्यूट् ह्रस्य प] 1. सीधा खड़ा करना, जमाना, उठाना 2. पौधे लगाना 3. स्वस्थ होना, 4 (व्रण आदि पर) स्वास्थ्यप्रद औषध का प्रयोग।

रोमकः [रामन्+कन्] 1 रोम नाम का नगर 2 रोम-वासी, रोम नगर का निवासी (ब० व० में)। सम० पत्तनम् रोम नगर, सिद्धान्तः पाँच मुख्य सिद्धान्तों में से एक (रोमवासियों में प्राप्त होने के कारण ही सम्भवतः इसका यह नाम पड़ा)।

रोमन् (नपु०) [रु+मनिन्] मनुष्य और अन्य जीव जन्तुओं के शरीर पर होने वाले बाल, विशेषतः, छोटे-छोटे बाल, रुएँ बाल मनु० ४।१४४, ८।११६। सम० अङ्कः बाल का चिह्न, बिभ्रती श्वेतरोमाङ्कम् -रघु० १।८३, अञ्चः (हर्षातिरेक, बिभीषिका या आश्चर्य आदि में पुलक, रोंगटे खड़े होना हर्षाद्भुत-समागमादिभ्यो रोमाञ्चो रोमविक्रिया सा० द० १६७, अञ्चित (वि०) हर्ष के कारण पुलकित, आलः हथेली की पीठ पर के बाल, आली, -आवलिः, स्त्री (स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट पर ठीक नाभि के ऊपर को गई हो—शिखा धूमस्येव परिणमति रोमावलिषु—काव्य० १०, दे० 'रोमराजि' भी, -उद्गमः, -उद्भेदः (शरीर पर) बालों का खड़ा होना पुलक, रोमांच कु० ७।७७, कूपः, पम्, गर्त, चमड़ी के ऊपर के छिद्र जिनमें रोम उगे हों, नाभिछिद्र, केशरम्, -केसरम् मुखमल, मखर,—पुलकः रोंगटे खड़े होना, हर्षातिरेक शिरो० ३४, भूमिः 'बालों का स्थान' अर्थात् बाल, चमड़ी,—रन्ध्रम् रोम-कूप, राजिः,—ली, लता (स्त्री०) पेट पर ठीक नाभि के ऊपर रोमावली रराज रन्ध्रेषु नवरोमराजी (स्त्री)-मराजि—कु० १।३८, शि० ९।२२,—विकारः, विक्रिया,—विभेदः पुलक, रोमांच,—क्रि० ९।४६, कु० ५।१०, हर्षः बालों या रोंगटों का खड़े होना, पुलक वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते—भग० १।२९, हर्षण (वि०) पुलक या रोमांच करने वाला, रोंगटे खड़े कर देने वाला, विस्मयोत्पादक—एतानि खलु सर्वभूतरोम (लो) महर्षणानि उत्तर० २, सवाद-मिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्- भग० १८।७४ (—णः) सूत का नामान्तर, व्यास का एक शिष्य जिसने शौनकमुनि को कई पुराण सुनाये थे, (—णम्) शरीर पर रोंगटे खड़े होना, पुलक।

रोमन्थः [रोम मन्थति—मन्थ्+अच्, पृषो० मकारोप] 1 जुगाली करना, खाये हुए घास को चर्वण करना, छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु -श०२।८ 2. (अत) लगातार पिष्टपेषण।

रोमश (वि०) [रोमाणि सन्त्यस्य अच्] बालों वाला, बहुत से रोओं से युक्त, पशमदार या ऊनीमय,—शः 1 मेढ़ा, मेंढा 2. कुत्ता, सूअर।

रोमहा [रुह्+मह्+ड+टाप्] प्रचण्डक्रन्दन, अत्यन्त विलाप मुठमम् मनोज्ञो भुविरो रुदाक्षान् भट्टि० ३।३२।

रोलम्बः [रो+लम्ब्+अच्] भौंरा तस्या रोलम्बावली केशपाशे इव, शाभि० १।११८।

रोषः [रुष्+घञ्] क्रोध, कोप, गुस्सा रोषोऽपि निर्मल-धिया रमणीय एव शाभि० १।७१, ४४।

रोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [रुष्+युच्] क्रोधी, चिड़-चिड़ा, गुस्सैल, आवेशी, णः 1 कसौटी 2. पारा 3 बंजर पड़ी हुई रिहाली जमीन।

रोह [रुह्+अच्] 1 उठान, ऊँचाई, गहराई 2 किसी चीज का ऊपर उठाना (जैसे कि एक छोटी संख्या को बड़ी संख्या बनाना) 3 वृद्धि, विकास (आल०) 4 नयी डाल, अंकुर।

रोहण [रुह्+ल्युट्] लंका के एक पहाड़ का नाम,—अम् सवार होने, सवारी करने, चढ़ने और स्वस्थ होने की क्रिया। सम० द्रुमः, चन्दन का पेड़।

रोहस [रुहे असच्] वृक्ष,—हो लता।

रोहि [रुह्+इन्] 1 एक प्रकार का हरिण 2 धार्मिक पुण्य 3 वृक्ष 4 बीज।

रोहिणी [रुह्+इनन्+ङीष्] 1 लाल रंग की गाय 2 गाय—शि० १२।४० 3 चौथा नक्षत्रपुंज (जिसमें पाँच तारे हैं) जिसकी आकृति 'गाड़ी' की है, दक्ष की एक पुत्री जो चन्द्रमा की अत्यन्त प्रिय संगिनी है—उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम् श० ७।२२ 4. वसुदेव की एक पत्नी तथा बलराम की माता का नाम 5. सत्रह कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरम्भ हुआ है नवधर्मा च रोहिणी 6. बिजली। सम० पतिः,—प्रियः,—वल्लभः रत्नम् 1. सांड 2 चन्द्रमा शकटः 'गाड़ी' की आकृति का रोहिणी नक्षत्रपुंज—रोहिणी शकटसंस्थानस्तस्योद्भेदनसि रुधिरो-द्गमो यस्मात् पञ्च० १।२१३ (=बराह० ४७।१४)।

रोहित (वि०) (स्त्री० रोहिणी, रोहिता) [रुह्+इतन् रत्व नो वा] लाल, लालरंग का,—तः 1. लाल रंग 2 लोमड़ी 3 एक प्रकार का हरिण 4. मछली की एक जाति, तम् 1. रुधिर 2. लालरंग, केसर। सम० अश्वः अग्नि।

रोहिषः [रुह्+इषन्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार का हरिण।

रौक्षम् [रूक्ष+अण्] 1. कठोरता, रूखापन, अनुपजाऊपन 2. खुरदुरापन, ककंशता, कृपणता प्रतिषेधरौक्ष्यम् -रघु० ५।५८, सिद्धा० १४।५८।

रौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री, द्री) [रुद्र+अण्] 1. रुद्र जैसा प्रचण्ड, चिड़चिड़ा, गुस्सैल 2. भीषण, घोर, भयानक,

अवली,—द्वः 1. रुद्र का उपासक 2. गर्मी, उत्कण्ठा, सरगर्मी, जोश, मन्यु या भीषणता का अभिप्राय दे० सा० द० २३२ या काव्य० ४, -द्रम् 1. क्रोध, कोप 2. उग्रता, भीषणता, बर्बरता 3 गर्मी, उष्णता, सूर्यताप।

रौप्य (वि०) [रूप्य+अण्] चाँदी का बना हुआ, चाँदी, चाँदी जैसा,—प्यम् चाँदी।

रौरव (वि० (स्त्री०—वी) [रुरु+अण्] 1 'रुरु' मृग की खाल का बना हुआ—रघु० ३।३१ 2. डरावना, भयानक 3 ज्वालाओं से भरा हुआ, देदीप्यमान, -वः 1 बर्बर 2 एक नरक का नाम—मनु० ४।८८।

रौहिणः [रोहिण+अण्] 1 चन्दन का वृक्ष 2 बटवृक्ष।

रौहिणेयः [रोहिणी+ढक्] 1 बलराम 2 अक्रूर का नामांतर 3 बुधग्रह,—यम् पन्ना, मरकतमणि।

रौहिष (पु०) एक प्रकार का हरिण।

रौहिष [रुह्+टिषच्, धातोरुत्व वृद्धि] दे० 'रोहिष',—षम् एक प्रकार का घास।

ल

ल: [ली+ड] 1 इन्द्र का विशेषण 2 (छन्द० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3 पाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दस लकारों के लिए) परिभाषिक शब्द, जो दस काल तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं।

लक्ष् (चुरा० उभ० लाक्षयति ते) 1 स्वाद लेना 2. प्राप्त करना।

लक्षः [लक्ष्+अच्] 1 मस्तक 2 जंगली घासकों की बाल।

लक्षकः, लक्षुकः [लक्ष्+अच्, उकन् वा] बड़हर का पेड़, —कम् बड़हर का फल।

लक्षुटः [लक्ष्+उटन्] मुद्गर, सोटा।

लक्षुतकः [लक्ष्+क्त+कन्, रक्त+कै+क, रस्य लत्व वा] 1 लाल, महावर 2 चिथड़ा, जीर्ण कपड़ा।

लक्षिका [लक्षतक+टाप्, इत्वम्] छिपकली।

लक्ष् 1 (स्वा० आ० लक्षते, लक्षित) प्रत्यक्ष करना, समझना, अवलोकन करना, देखना।

II (चुरा० उभ० लक्षयति ते, लक्षित) 1 देखना, अवलोकन करना, निरखना, ज्ञात करना, प्रत्यक्ष करना—आर्यपुत्र शून्यहृदय इव लक्ष्यते—विक्रम० २, रघु० ९।७२, १६।७ 2. चिह्न लगाना, प्रकट करना, चरित्रचित्रण करना, संकेत करना सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता—मनु० ९।३५ 3 परिभाषा करना—इदानीं कारणं लक्षयति—आदि 4 गौण रूप से संकेत करना, गौण अर्थ में सार्थक करना—यथा गंगा शब्द: स्रोतसि सवाह इति तटे लक्षयति तद्वत् यदि तटेऽपि सवाह स्यात्तत्प्रयोजन लक्षयेत् काव्य० २, अत्र गोशब्दो वाह्लीकार्थं लक्षयति—सा० द० २ 5 लक्ष्य करना 6 खयाल करना, आदर करना, सोचना, अंकित करना, देखना, आ—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना—आलक्ष्य दन्तमुकुलान्—श० ७।१७, नातिपर्याप्तमालक्ष्य भोजनम्—रघु० १५।१८, उप—, 1 देखना, अवलोकन करना, निशान डालना, अंकित करना, सम्यगुपलक्षित भवत्या—श० ३ 2 अंकित करना, चिह्न लगाना—याज्ञ० १।३०, २।१५१ 3 प्रकट करना, मनोनीत करना 4 अतिरिक्त उपलक्षित होना, वस्तुत अभिव्यक्त की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करना लक्षणशब्देन ज्योतिःशास्त्रमुपलक्ष्यते मनु० ३।१६२ पर कुल्लू० 5 मनन करना विचारकोटि में लाना 6 खयाल करना, मानना वि—, 1, अवलोकन करना, ध्यान देना, देखना 2. चरित्रचित्रण करना, अन्तर प्रकट करना 3 व्याकुल होना, चकित होना घबरा जाना—निर्व्यापारविनिश्चितानि सात्वत बलानि—उत्तर० ६, सम्—, 1 अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, देखना, ध्यान देना आश्चर्यदर्शन संलक्ष्यते मनुष्यलोक, श० ३ संलक्ष्यते न छिद्रोऽपि हारे रघु० १६।९२, 'ध्यान नहीं दिया जाता' या 'ज्ञात नहीं होता' ८।४० 2 परीक्षण करना, सिद्ध करना, निर्धारित करना—हेम्न संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकापि वा—रघु० १।१० 3 सुनना, जानना, समझना 4 चरित्रचित्रण करना, भेद बताना।

लक्षम् [लक्ष्+अच्] 1 सौ हजार (इस अर्थ में पु० भी) —इच्छति शती सहस्रं सहस्री लक्षमीहते—मुद्रा०, नया लक्षाम्बु विक्षेया—याज्ञ ३।१०२ 2 चिह्न, बाँदमारी लक्ष्य निशाना—अन्यलक्षवदाकाशे लक्ष बध्वा—मुद्रा० १ 3 निशान, निशानी, चिह्न 4 दिखावा, बहाना, आत्मश्लाघा, छद्मवेश, जैसा कि 'लक्षमुष्टि' में 'मुठमुठ मारा हुआ'। सम०—अधीश: लाखों की सम्पत्ति का स्वामी।

लक्षक (वि०) [लक्ष्+ण्वुल्] अप्रत्यक्षरूप से सूचित करने वाला, गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला, कम सौ हजार, एक लाख।

लक्षणम् | लक्ष्यतेऽनेन-लक्ष् करणे ल्युट्] 1 चिह्न, निशानी, निशान, संकेत, विशेषता, भेद बोधक चिह्न,—बधूदुकूल कलङ्कलक्षणम् -कु० ५।७७, अनारम्भो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम् मुद्रा० अव्याक्षेपो भविष्यन्त्या कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६, १२।४७, गर्भलक्षण —श० ५, पुरुषलक्षणम्, वीर्यवत्ता का चिह्न या पुंस्त्व-द्योतक इन्द्रिय 2 (रोग का) लक्षण 3 विशेषण, खूबी 4 परिभाषा, यथार्थ वर्णन 5 शरीर पर भाग्य-सूचक चिह्न (यह गिनती में ३२ है)—द्वात्रिंशल्लक्षणो-पेत 6 (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चिह्न कथं तद्विधस्य कथं च पुण्यलक्षणा- कु० ५।३७, क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्—रघु० १४।५ 7. नाम, पद, अभिधान (प्रायः समास के अन्त में) —विदिशालक्षणां राजधानीम्— मेघ० २५, ने० २२।४१ 8 श्रेष्ठता उत्कर्ष, अच्छाई जैसा कि 'आहितलक्षण' —रघु० ६।७१ में (यहाँ मल्लि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातगुण' और अमर० का उद्धरण—गुणे प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ—दिया है) 9 उद्देश्य, क्रियाविशेष या लक्ष्य, ध्येय 10 (कर आदि का) निश्चित भाव—मनु० ८।४०५ 11 रूप, प्रकार प्रकृति 12 कथन-व्यनिर्वाह, कार्यप्रणाली 13 कारण, हेतु 14 सिर, शीर्षक, विषय 15 बहाना, छद्मवेश (—लक्ष) प्रसृष्टलक्षण —मा० ७,—अः सारस,—आ 1 उद्देश्य, ध्येय 2 (अलं० में) शब्द का परोक्षप्रयोग या गौण सार्थकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है —मुख्यार्थ-बाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्, अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया काव्य० २, द० मा० द० १२ भी 1 हंस। सम० अङ्कित (वि०) शुभलक्षणों से युक्त,—ज्ञ (वि०) (शरीर पर विद्यमान) चिह्नों की व्याख्या करने में सक्षम,—भ्रष्ट (वि०) अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त, लक्षणा अलङ्कारलक्षणा, दे०,—सञ्जित दाग लगाना, कलंकित करना।

लक्षण्य (वि०) [लक्षण +यत्] 1 चिह्न का काम देने वाला 2 अच्छे लक्षणों से युक्त।

लक्षशस् (अव्य०) [लक्ष + शस्] लाख-लाख करके अर्थात् बड़ी संख्या में।

लक्षित (भू० क० कृ०) [लक्ष्+क्त] 1 दृष्ट, अवलोकित चिह्नित, निगाह डाली गई 2 प्रकट किया गया, संकेतित 3 परिभाषित, चिह्नित, अलंकृत बनाया गया 4. परिभाषित 5 उद्दिष्ट 6 परोक्ष रूप से अभिव्यक्त संकेतित, इशारा किया गया 7 पूछताछ की गई, परीक्षित।

लक्षिन् (वि०) [लक्षमन्+अच्, न वृद्धि] 1 चिह्नों से युक्त 2 शुभलक्षणों से युक्त, सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला 3 समृद्धिशाली, फलता-फूलता। ब

लक्ष्मण [लक्ष्मन्+अण्] 1 सारस 2 सुमित्रा नामक पत्नी से उत्पन्न दशरथ का एक पुत्र (बचपन से ही लक्ष्मण राम में इतना अधिक अनुरक्त था कि वह उसकी वनयात्रा में जाने को तैयार हो गया। राम के चौदह वर्ष के निर्वासन काल में घटित घटनाओं में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था। लङ्का के युद्ध में उसने कई बलवान् राक्षसों को, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत शक्तिशाली मेघनाद को मार डाला। सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई संजीवन बूटी के उपयोग से सुषेण वैद्य ने उसे फिर जीवित कर दिया। एक दिन काल साधु के वेश में राम के पास आया और कहा कि "जो कोई उनको एकान्त में वार्तालाप करते हुए कभी देख ले तो तुरन्त उसका परित्याग किया जाना चाहिए" यह बात मान ली गई। एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्तता में भंग डाल दिया, फलतः लक्ष्मण ने अपने भाई राम के वचन को 'स्वयं सरयू में छलांग लगा कर सत्य सिद्ध करके दिखा दिया (दे० रघु० १५।९२-५, उस का विवाह ऊर्मिला से हुआ, तथा अंगद और चन्द्र केतु नामक दो पुत्र हुए)। —आ हुसैनी,—अम् 1. नाम अभिधान 2 चिह्न, संकेत, निशानी। सम०—प्रसू: लक्ष्मण की माता सुमित्रा।

लक्ष्मन् (पु०) [लक्ष्+मनिन्] 1 चिह्न, निशान, निशानी, विशेषता ग्रि० ११।३०, कि० ११।२८, १४।६४, रघु० १०।३० कु० ७।४३ 2 बिंदी, धब्बा —मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति—श० १।२०, मा० ९।२५ 3 परिभाषा पु० 1 सारस पक्षी, 2 लक्ष्मण का नामान्तर।

लक्ष्मी. (स्त्री०) [लक्ष्+ई, मुट्+च] 1 सौभाग्य, समृद्धि, धनदौलत सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्—कि० ८।१८, तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान् संचकर्ष भर्तृ० २।१७ 2. सौभाग्य, अच्छी किस्मत 3 सफलता, सम्पन्नता उत्तर० २।१८ 4 सौन्दर्य, श्रीकता, अनुग्रह, लावण्य, आभा, कान्ति—मलिनमपि हिमांशो-र्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति श० १।२०, मा० ९।२५, ५।३९, ५२, ९।२, कु० ३।४९ 5 सौभाग्यदेवी, समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी विष्णु की पत्नी मानी जाती है (देवासुरों द्वारा अमृत प्राप्ति के लिए समुद्रमंथन किये जाने पर अन्य मूल्यवान् रत्नों के साथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली)—इस नेहे लक्ष्मी उत्तर० १।३८, राजकीय या प्रभुशक्ति, उपनिवेश, राज्य (यह बहुधा रानी की सपत्नी के रूप में मानी जाती है, और राजा की रानी के रूप में इसका मूर्तिकरण किया जाता है)—तामेकजायां परिवादभीरोः साध्वीमपि त्यक्तवतो नृपस्य, बलस्यसंघट्टमुखं बलारेः लक्ष्मीं रयेणेव तरंगिणी-

रोहितेव लक्ष्मी—रघु० १४।८६, १२।२६ 7 नायक की पत्नी 8. मोती 9 हल्दी । सम०—ईशः 1 विष्णु का विशेषण 2 आम का वृक्ष 3 समृद्ध या भाग्यशाली पुरुष,—कान्तः 1 विष्णु का विशेषण 2 राजा, —कुमुदम् लाल कमल का फूल, तालः एक प्रकार का ताड का वृक्ष,—नाथः विष्णु का विशेषण,—पतिः 1 विष्णु का विशेषण, 2. राजा विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकम् कि० १।४४ 3 सुपारी का पेड, लौंग का वृक्ष,—पुत्रः 1 घोडा 2 कामदेव का नामान्तर,—पुष्पः लाल,—पूजनम् लक्ष्मी के पूजा करने का कृत्य (दुलहन को विवाह करके घर लाने के पश्चात् दूल्हे द्वारा दुलहन के साथ मिलकर किया जाने वाला अनुष्ठान), पूजा कार्तिकमास की अमावस्या के दिन किया जाने वाला लक्ष्मीपूजन (मुख्य रूप से साहूकार और व्यापारियों के द्वारा जिनका कि वाणिज्यवर्ष, आज के दिन समाप्त होकर नया वर्ष आरम्भ होता है), - फलः बिल्व वृक्ष, रमण विष्णु का विशेषण,—वसतिः (स्त्री०) 'लक्ष्मी का निवास' लाल कमल का फूल, वार बृहस्पतिवार, वेष्ट तारपीन,—सद्मः लक्ष्मी की कृपा का पात्र,—सहज, —सहोदरः चन्द्रमा के विशेषण ।

लक्ष्मीवत् (वि०) [लक्ष्मी+मतुप्, वत्वम्] 1 सौभाग्यशाली, किस्मत वाला, अच्छे भाग्य वाला 2 दौलतमंद, धनवान्, समृद्धिशाली 3 मनोहर, प्रिय सुन्दर ।

लक्ष्य (स० कृ०) [लक्ष्+ण्यत्] 1 देखने के योग्य, अवलोकन करने योग्य, दृश्य, अवेक्षणीय, प्रत्यक्ष जानने के योग्य दुर्लक्ष्यचित्ता महता हि वृत्ति—कि० १७।२३ 2 संकेतित या अभिज्ञेय (करण० के साथ या समास में)—दूरालक्ष्य सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५, प्रवेपमानाधरलक्ष्यकोपया कु० ५। ७४, रघु० ४।५, ७।६० 3 ज्ञातव्य या प्राप्य, सुराग लगाने योग्य—कु० ५।७२, ८१ 4 चिह्नित या चिह्नित किया जाना 5 परिभाषा के योग्य 6 उद्दिष्ट किये जाने योग्य 7. अभिव्यक्त किया जाना या परोक्ष रूप से प्रकट किया जाना 8 खयाल किये जाने योग्य, चिन्तनीय, लक्ष्यम् 1 उद्देश्य, निशाना, चिह्न, बादमारी, उद्दिष्ट चिह्न, (आलं० से भी) —उत्कर्ष स च धन्विना यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २।५, दृष्टिं लक्ष्येषु बध्नन्—मुद्रा० १।२, रघु० १।६१, ६।११, ९।६७, कु० ३।४७, ६४, ५।४९ 2. निशान, निशानी 3 वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है (विप० लक्षण) - लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्याकृत्स्नमव्याप्तिः तर्क० 4 परोक्ष या गौण अर्थ जो लक्षणा शक्ति से प्रतीत हो, वाक्यलक्ष्यव्यङ्ग्या अर्था—काव्य० २ 5 बहाना, झूठमूठ, छद्मवेश इदानीं परोक्षं किं लक्ष्यमुपलभ्य परमार्थमुपलभिद इव मृच्छ० ३, ३।१८, कन्दर्प प्रवणमना सखीमिमिक्षालक्ष्येण प्रतिमुखमञ्जलिं चकार—शि० ८।३५, रघु० ६।५८ 6 लाख, सौ हजार । सम० —ज्ञ (वि०) शब्दों आदि अर्थ जिनकी प्रणाली (गौणरूप से) प्रत्यक्षज्ञेय है,—भेदः, वेधः निशाना लगाना—कि० ३।२७,—सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ, हन् (वि०) निशाना मारने वाला, (पुं०) बाण, तीर ।

लक्ष्, लक्षय् (भ्वा० पर० लक्षति, लक्षयति) जाना, हिलना जुलना ।

लग् (स्वा० पर० लगति, लगते) 1 लग जाना, दृढ रहना, चिपकना, जुड जाना—व्यायामाय हृतस्य करालवेर्मन्दाक्षलक्ष्या लगति स्म पश्चात् —नै० ३।८, गमनसमये कण्ठे लग्ना निरुध्य मां—मा० ३।२ 2 स्पर्श करना, संपर्क में आना कर्णे लगति चान्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते—पञ्च० १।३०५, यथा यथा लगति शीतवातः—मृच्छ०, ५।११ 3 स्पर्श करना, प्रभावित करना, लक्ष्य स्थान तक जाना—विदितेङ्गिते हि पुरः स्थिते जने सपदीरिता खलु लगन्ति गिरः —शि० ९।६९ 4 मिल जाना, सम्मिलित होना, (रेखा आदि) काटना 5 ध्यानपूर्वक अनुसरण करना अनुघटित होना, बाद में घटित होना,—अनावृष्टिः सस्यानि लगयति—पञ्च० १ 6 नियुक्त करना, अटकाना, (किसी को) धन्धे में लगाना - तत्र दिनानि कतिचिल्लगिष्यन्ति—पञ्च० ४, 'मुझे कुछ दिन वहाँ लग आयगें', अव—, मुड जाना चिपक जाना- रघु० १६।६८, आ—, जमे रहना,—काव्य० ३।५०, वि ,चिपकना, लग जाना, जुड जाना ।

उ॰ (तुदा० उभ०—लाजयति-ते) 1 स्वाद लेना 2 प्राप्त करना ।

लगड (वि०) [लग्+अलच्, डस्यो ऐकयात् ड] प्रिय मनोहर, सुन्दर ।

लगित (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1 जुडा हुआ, चिपका हुआ 2 संबद्ध, अनुसक्त 3 प्राप्त, उपलब्ध ।

लगुड, लगुर, लगुल [लग्+उलच्, पक्षे लस्य ड, र वा] मुद्गर, छडी, लाठी, सोटा ।

लग्न (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1 जुडा हुआ, चिपका हुआ, सटा हुआ, दृढ थामा हुआ—लतावितपे तरावली लग्ना—विक्रम० १ 2 स्पर्श करना, संपर्क में आना ३ अनुषक्त, संबद्ध 4. चिपटा हुआ, जुडा हुआ साथ लगा हुआ 5 काटना, (रेखा आदि का) मिलाना 6 ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, आसन्न या निकटवर्ती 7 व्यस्त, काम में लगा हुआ 8 शुभ

(दे० लघ्), —क्षः 1. भाट, चारण 2 यवोत्पन्न हाथी, —क्षत् 1 सपर्क बिन्दु, भिवसंवेदन-बिंदु, वह बिन्दु जहाँ कि क्षितिज और क्रान्ति-वृत्त या ग्रहपथ मिलते हैं 2. क्रान्ति वृत्त का बिन्दु जो एक समय क्षितिज या याम्योत्तर-रेखा पर होता है 3. वह क्षण जिसमें सूर्य का प्रवेश किसी राशि विशेष में होता है 4 बारह राशियों की आकृति 5 शुभ या सौभाग्य क्षण 6 (अत) कार्यारंभ का उचित समय। सम० —ग्रहः, —दिनम्, —दिवसः, —वासरः, शुभदिन ज्योतिषियों द्वारा (विवाहादि संस्कार के लिए) बताया गया शुभ समय, —नक्षत्रम् शुभ नक्षत्र,—नवकम् राशिचक्र,—मासः शुभ महीना,—वृद्धिः (स्त्री०) किसी धर्मकृत्य के अनुष्ठान के लिए बताये गये मुहूर्त की मांगलिकता।

लम्भकः [लम्भ+कन्] प्रतिभू, जमानत, वह जो जमानत करे।

लम्भिका [लम्भ+कन्+टाप्, इत्वम्] 'लम्भिका' का अपभ्रंश रूप, दे०।

लघयति (ना० धा० पर०) 1 हलका करना, भार कम करना (गा०)—लिलाघवेषी लघयिष्यन्नुरुम्—रघु० १३।३५ 2 कम करना, घटाना, धीमा करना, न्यून करना—विक्रम० ३।१३, रघु० ११।६२ 3 तुच्छ समझना, तिरस्कार करना, घृणा करना—कि० २।१८, महत्त्वहीन या नगण्य समझना—कि० ५।४, १३।१८।

लघिमन् (पु०) [लघु+इमनिच्] 1. हलकापन, भार का अभाव 2 लघुता, अल्पता, नगण्यता 3 तुच्छता, ओछापन, नीचता, कमीनापन—मानुषतामुत्क्रान्तो लघिमा प्रकृतकर्मणि वा नियोज्यति—का० 4 नासमझी, छिछोरपन 5 इच्छानुसार अत्यंत लघु हो जाने की अलौकिक शक्ति, आठ सिद्धियों में से एक।

लघिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन लघु —इष्ठन्] हलके से हलका, निम्नतम, अत्यन्त हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघीयस् (वि०) [अयमनयो अतिशयेन लघु ईयसुन्] अपेक्षाकृत हलका, निम्नतर, बहुत हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघु (वि०) (स्त्री०—घ्वी, घ्वी) [लङ्घने कुः नलोपश्च] 1 हलका, जो भारी न हो—तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः—सुभा०, रिक्त सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय—मेघ० २० (यहाँ शब्द का अर्थ तिरस्करणीय भी है) रघु० ९।६२ 2. तुच्छ, अल्प, न्यून पंच० १।२५१, कि० ९।१८, ७८ 3 ह्रस्व, संक्षिप्त, सामान्यिक लघुसंक्षेपया सरस्वती—रघु० ८।७७ 4. क्षुद्र, तृणप्राय, नगण्य, महत्त्वहीन कायस्थ इति कथमी मात्रा—मुद्रा० १ 5. नीच, अधम, निंद्य, तिरस्करणीय—कि० ९।२९, पंच० १। १०९ 6 अशक्त, दुर्बल 7. मोटा, मन्दबुद्धि 8 फुर्तीला, चुस्त, चपल, स्फूर्त इ० २।५ 9. शीघ्र, द्रुतगामी, त्वरित—किंचित् पश्चात् अब लघुगतिः —मेघ० ११, रघु० ५।४५ 10. सरल, जो कठिन न हो—रघु० १२।६६ 11 सुलभ, सुपाच्य, हलका (भोजन) 12 ह्रस्व (जैसे कि छन्द शास्त्र में स्वर) 13 मृदु, मन्द, कोमल 14. सुखद, रुचिकर, वांछनीय —रघु० ११।१२ ८० 15 प्रिय, मनोहर, सुन्दर 16 विशुद्ध, स्वच्छ अव्य० 1. हलकेपन से, अहंभाव से, अनादरपूर्वक 2 शीघ्र, फुर्ती से, लघु लघूत्थिता —का० ४, 'सवेरे उठा हुआ', (वपु०) 1. काला अगर, या विशेष प्रकार का अगर 2 समय की विशेष माप। सम०—आशिन्,—आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, मितभोजी, मिताहारी,—उक्तिः (स्त्री०) अभिव्यक्ति का संक्षिप्त प्रकार,—उत्थान,—समुत्थान (वि०) फुर्तीला, द्रुतगति से कार्य करने वाला,—काय (वि०) हलके शरीर वाला, (कः) बकरा,—क्रम (वि०) शीघ्र पग रखने वाला, जल्दी चलने वाला,—कर्षिका खटोला, छोटी खाट,—गोधूमः छोटी जाति का गेहूँ,—चित्त, —चेतस्,—मनस्,—हृदय (वि०) 1. हलके मन वाला, नीचहृदय, क्षुद्रमना का, कमीने दिल का 2. मन्दबुद्धि 3 चपल, अस्थिर,—जङ्घनः अच्छा पक्षी,— जातीय बिना बीज का अनार, किशमिश,—द्राविन् (वि०) अनायास पिघल जाने वाला,—पाक (वि०) सुपाच्य,—पुष्पः एक प्रकार का कदंब का वृक्ष,—प्रकाश (वि०) 1. (वर्ण आदि) थोड़े से चिह्नव्यापार से उच्चरित 2. चिटखा, आसानी,—प्रहरः,—प्रहरी (स्त्री०) एक प्रकार का बेर, अच्छा नीच योनि या क्षुद्र घर में जन्म,—भोजनम् हलका भोजन,—भोजः एक प्रकार का तीतर,—मूलम् समीकरण की राशि का न्यूनतर मूल,—मूलकम् मूली, लयम् एक प्रकार सुगन्धित घास, खस, वीरणमूल, वासस् (वि०) हलके और निर्मल वस्त्र धारण करने वाला,—विक्रम (वि०) शीघ्र कदम वाला, शीघ्र पग उठाने वाला,—वृत्ति (वि०) 1. बदचलन, नीच, दुष्ट 2 क्षुद्र, मंदबुद्धि, कुव्यवस्थित, दुर्जन,—वेधिन् (वि०) बारीक निशाना लगाने वाला,—हस्त (वि०) —स्तः (वि०) 1. हलके हाथ का, चतुर, दक्ष, विशेषतः रघु० ९।६१ 2 सक्रिय, फुर्तीला, (स्तः) विशेषतः या कुशल धनुर्धर।

लघुता,—त्वम् [लघु+तल्+टाप्+लघु+त्व वा] 1. हलकापन, भोलापन 2 छोटापन, ओछापन 3. नगण्यता, महत्त्वहीनता, तिरस्कार, अपमान का अभाव —इत्येतैरपि लघुता याति स्वयं प्रत्यर्थिभिर्नृपैः 4. अपमान, तिरस्कार—मेघ० १।१४०, ३५३ 5. निंदा-

शीलता, फुर्ती 6 संक्षेप, संक्षिप्तता 7 सुगमता, सुविधा 8. नासमझी, निरर्थकता 9. स्वेच्छाचारिता।

लघ्वी [लघु+ङीप्] 1. कोमलांगिनी स्त्री 2 हलकी गाड़ी—शि० १२।२४।

लङ्का [लङ्+अच्, मुम् च] 1 रावण का निवास और राजधानी, वर्तमान सीलोन टापू या तद्वर्ती राजधानी उस समय की लंका है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार वह लंका सीलोन के वर्तमान टापू से कहीं अधिक बड़ी थी। मूलरूप से यह माल्यवान् के लिए बनाई गई थी 2. व्यभिचारिणी स्त्री, रंडी, वेश्या 3 शाखा 4 एक प्रकार का अनाज। सम०—अधिपः, —अधिपति,—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः, पति लंका का स्वामी अर्थात् रावण या विभीषण,—अरि राम का विशेषण,—दाहिन् (पु०) हनुमान् का विशेषण।

लङ्कानी [लङ्का+ल्युट्+ङीप्] लगाम की वल्गा (लोहे का बना वह भाग जो मुँह में रहता है), मुखरी।

लङ्गः [लङ्ग्+अच्] 1 लंगड़ापन 2 सभ्य समाज 3 प्रेमी, यार (उपपति)।

लङ्गूलम् [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] जानवर की पूँछ, दे० 'लांगूलम्' से।

लङ्घ् (म्वा० उभ० लङ्घति-ते, लङ्घित, इच्छा० लिलङ्घिषति-ते) 1. उछलना कूदना, छलांग लगाना 2 सवारी करना, चढ़ना - अन्ये चालङ्घिषुः शैलान् —भट्टि० १५।३२ 3 परे चले जाना, अतिक्रमण करना—लङ्घते स्म मुनिरेष विमानिन्—नै० ५।४ उपवास करना, अनशन करना 5 सूखना, सूख जाना (परः) 6 झपट्टा मारना, आक्रमण करना, खा जाना, क्षति पहुँचाना—एतल्लङ्घन् हरिणो लङ्घितुमागच्छति—मालवि० ४, प्रेर० या चुरा० उभ० (लङ्घयति—ते) 1. ऊपर से कूद जाना, छलांग लगा देना, परे जाना—सागरं प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितम्—महा०, मनु० ४।३८ 2 तय कर लेना, चल कर पार कर लेना (दूरी आदि) रघु० १।४७ 3 सवारी करना, चढ़ना - रघु० ४।५२ 4 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना - रघु० ९।९ याज्ञ० २।१८७ 5 रुष्ट करना, अपमान करना, निरादर करना, उपेक्षा करना - हस्त इव मूर्तिमन्तिो यथा यथा लंघयति खल सुजनम्, दर्पणमिव तं कुरुते तथा-तथा निर्मलच्छायम्—वास० 6 रोकना, विरोध करना, ठहराना, टालना, हटाना -मार्गं न लङ्घयति कोऽपि विधिप्रणीतम्—सुभा०, मृच्छ० ६।२ 7 आक्रमण करना, झपट्टा मारना, क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना—रघु० ११।९२ 8 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षाकृत अधिक चमकना, ग्रहणग्रस्त करना,—(यङ्) अत्यत्कार्षां तवसेवमिज्यया भवद्गुरुर्लङ्घयितुं ममोद्यत —रघु० ३।४८ 9. उपवास करवाना 10 चमकना 11 बोलना, अभि - , 1 परे चले जाना, ऊपर से छलांग लगा देना 2 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना, उद्—, 1 पार जाना, पार कर लेना, परे चले जाना—शि० ७।७४ 2 सवारी करना चढ़ना 3. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना— मुद्रा० १।१०, शि० १२।५७, वि -, 1 पार जाना, उछलकर पार करना, यात्रा करना—निवेशयाभास विलङ्घिताम्बा —रघु० ५।४२, १६।३२, शि० १७।२४ 2 उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, बाहर कदम रखना, अवहेलना करना, उपेक्षा करना—सन्तु प्रवृत्ते समये विलङ्घ्य कु० ५।२५, रघु० ५।४८ 3 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना—रघु० ९।७४ 4 उठाना, चढ़ना, ऊपर जाना —कि० ५।१, नै० ५।२ 5 छोड़ देना, परित्याग करना एक ओर फेंक देना—मनोभवबन्धान्यरमान् विलङ्घ्य मा —रघु० ३।४ 6 आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना -इति कर्णोत्पल प्रायस्तव दृष्टया विलङ्घ्यते—काव्या० २।२२४ 7 उपवास कराना।

लङ्घनम् [लङ्घ+ल्युट्] 1 छलांग लगाना, कूदना 2. उछल कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, चलना, गतिशील होना -यूथमेव पवि सीघ्रलङ्घनाः—घट० ८ 3 सवारी करना, चढ़ना, उठना (आत्म० में भी) नभोलङ्घन —रघु० १६।३३, अनोऽयमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुक —कु० ५।६४, उच्चपद प्राप्त करने की इच्छुक 4 धावा बोलना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गादि हथिया लेना, अधिकार में कर लेना—जैसा कि 'दुर्गलङ्घनम्' में 5 आगे बढ़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लंघन, अतिक्रमण 'आज्ञालङ्घन' 'नियमलङ्घनम्' आदि 6 अवहेलना करना, घृणा करना, तिरस्कार पूर्वक व्यवहार करना, अपमान करना--प्रविपातलङ्घन प्रमार्ष्टुकामा - वि० 3, मालवि० ३।२० 7 अन्यायाचरण, मानहानि, अपमान 8 . अनिष्ट, क्षति, जैसा कि आतपलङ्घनम् में दे० 9 उपवास करना, संयम - शि० १७।२५ (यहाँ इसका अर्थ छलांग भी होता है) 10 घोड़े का एक कदम।

लङ्घित (भू० क० कृ०) [लङ्घ्+क्त] 1 ऊपर से कूदा हुआ पार गया हुआ 2. यात्रा द्वारा पार किया हुआ 3. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया हुआ 4 अवज्ञात, अपमानित, अनादृत (दे० 'लङ्घ्')।

लञ्छ् (म्वा० पर० लञ्छति) चिह्न लगाना, देखना, दे० 'लक्ष्'।

लञ्ज् । (तुदा० आ० लञ्जते) लज्जित होना।

II (म्वा० पर० लञ्जति) कलंकित करना आदि, दे० 'लञ्ज्' म्वा०।

III (चुरा० उभ० लञ्जयति) 1 सिखाई देना, प्रतीत

होना, चमकना 2 डरना, छिपाना (कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'लाजयति' रूप भी बनता है)।

लज्ज् (तुदा० आ० लज्जते लज्जित) लज्जित होना, शर्मिंदा होना।

लज्जकः [लज्ज् + अच् + कन् + टाप्] अगली कपास का पौधा।

लज्जा [लज्ज् + अ + टाप्] 1 शर्म—कामातुराणां न भयं न लज्जा - सुभा०, विहाय लज्जाम्- रघु० २।४०, कु० १।४८ 2 शर्मीलापन, विनय -मुक्ताकारलज्जा विलम्बयति—शा० १, कु० ३।७, रघु० ७।२५ 3 छुईमुई का पौधा। सम०—अन्वित (वि०) विनयशील, शर्मीला,—आवह,—कर (वि०) (स्त्री०—री,—रो) लज्जाजनक, शर्मनाक, अकीर्तिकर, कलंकी, शील (वि०) शर्मीला शालीन,—रहित—शून्य,—हीन (वि०) निर्लज्ज, ढीठ बेहया।

लज्जालु (वि०) [लज्जा—आलुच्] विनयशील, शर्मीला पु० स्त्री० छुईमुई का पौधा।

लज्जित (भू० क० कृ०) [लज्ज—क्त] 1 विनयशील, शर्मीला 2 लजाया हुआ, शर्मिंदा।

लञ्ज् । (भ्वा० पर० लञ्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, बदनाम करना 2 भूनना, तलना।

॥ (चुरा० उभ० लञ्जयति—ते) 1 क्षतिग्रस्त करना, प्रहार करना मार डालना 2 देना 3 डोलना 4 सबल या शक्तिशाली होना 5 निवास करना, 6 चमकना।

लञ्ज [लञ्ज् + अच्] 1 पैर 2 घोड़ी की लाग या किनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है 3 पु० बकरा ४ पूँछ।

लञ्जा [लञ्ज + टाप्] 1 धार 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 लक्ष्मी का नामान्तर 4 निद्रा।

लञ्जिका [लञ्ज् - ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] रण्डी, वेश्या।

लट् (भ्वा० पर० लटति) 1 बालक बनना 2 बालकों की तरह व्यवहार करना 3 बच्चों की भांति तोतली बातें करना, तुतलाना 4 क्रन्दन करना, रोना।

लट [लट् + अच्] 1 मूर्ख, बुद्धू 2 त्रुटि दोष 3 लुटेरा।

लटक [लट् + वुन्] ठग, बदमाश, पाजी, दुष्ट।

लटभ (वि०) [प्राकृत 'लडह' शब्द से संबद्ध, स्वयं 'लडह' शब्द भी इस 'लटभ' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक, प्रिय,—अतिक्रान्त कालो लटभललनामोरसुलभम् —भर्तृ० ३।१२, (यहां भाष्यकार 'लटभ' का अर्थ 'सलावण्य' करते हैं), तस्या पादनखश्रेणि शोभते लटभप्रभु - विक्रमांक० ८।६, बिल्हण ने इस शब्द को इसी पुस्तक में और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है जहां इसका अर्थ 'सुन्दर स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत होता है—उदा० कि वा वर्णनया समस्तलटभाल-ङ्कारतामेष्यति—८।८६, अमर्त्यलावण्यनिधानभूमिर्न कस्य लोभं लटभा तनोति—१।९८ केशबन्धविभवर्जटभाना विम्बतामिव अगाम नमिलम् ११।१८।

लटुः (पु०) दुष्ट, बदमाश, दे० 'लटक'।

लट्टकः [लट् वुन्] 1 घोड़ा 2 नाचने वाला लड़का 3 एक जाति का नाम,—दृढ़ा 1 एक प्रकार का पक्षी 2 मस्तक पर बालों का घूंघर, अलक 3 चिड़िया, गौरैया 4 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 5 एक छन्द 6 आफ़ताब, केसर 7 व्यभिचारिणी स्त्री।

लड् । (भ्वा० पर० लडति) खेलना, क्रीड़ा करना, हाव-भाव दिखलाना।

॥ (भ्वा० पर०, चुरा० पर० लडति, लडयति) 1 फेंकना, उछालना 2 कलंक लगाना 3 क्रीड़ा करना 4. तंग करना सताना।

॥। (चुरा० उभ० लाडयति—ते) 1 लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2 सताना।

लडह (वि०) [प्राकृत शब्द] सुन्दर, मनोहर।

लडु=लटक दे०।

लड्डुः, लड्डुकः (पु०) एक प्रकार की मिठाई, लड्डू, मोदक (चीनी, आटा, घी आदि पदार्थों को मिलाकर बनाये हुए गोल गोल पिंड)।

लड्ड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लड्डति, लड्डयति—ते) 1 ऊपर को उछालना, ऊपर की ओर फेंकना 2 डोलना।

लड्डनम् [लड्ड् + ल्युट्] बिछौना।

लड्डु [संभवतः फ्रैंच भाषा के लौंजुए (Lo: dro०) शब्द का आधुनिक रूप] लन्दन।

लता [लत् + अच्—टाप्] 1 बेल, फैलने वाला पौधा लताभावेन परिणतमस्या रूपम् - विक्रम० ४, लतेव मनोज्ञमनोज्ञपल्लवा रघु० ३।७, (विशेष रूप से 'भुजा' 'बाँह' 'बिजली' आदि अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ समास के अन्त में, सौन्दर्य, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग - भुजलता बाहुलता, भ्रूलता, विद्युल्लता, इसी प्रकार अङ्गुलि°, अलक° आदि, शु०, कु० २।६४, मेघ० ४३, शि० ३।१५, रघु० ९।४५) 2 शाखा 3 प्रियंगु लता 4 'माधवी लता' 5 कस्तूरी लता 6 हुंटर या कोड़े का सड़ाका 7 मोतियों की लड़ी 8 सुकुमार स्त्री। सम०—अन्तम् फूल,—अम्बुजम् एक प्रकार की ककड़ी, —अर्भः हरा प्याज,—अलकः हाथी,— अञ्जलिः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा,— उद्गमः लता का ऊपर को चढ़ना,—करः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, - कस्तूरिका,— कस्तूरी कस्तूरी की बेल,—गृहम्, —ह्रम् लतागृह, लतागृह—कु० ४।४१,— जिह्वः,

—रसः सर्प,—वृक्षः 1. साल का वृक्ष 2 सतरे का पेड़,—वृक्षः तरकुज,—व्रतातः लतातन्तु - रघु० २।८, —भवनम् लतागृह, लताकुंज,—भूमिः मूँगा, - मण्डपः लताकुंज लतागृह,—मृगः बन्दर,- यावकम् अंकुर, अंकुआ, - वलयः,—वनम् लताकुंज,- वृक्षः नारियल का पेड़,—वेल्लः एक प्रकार का रतिबंध, सम्भोग का प्रकार,—वेल्लितकम्,—वेष्टितकम् आलिङ्गन का प्रकार।

लतिका [लता+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 छोटी लता, बेल 2 मोतियों की लड़ी।

लत्तिका [लत्+तिकन्+टाप्] एक प्रकार की छिपकली।

लप् (भ्वा० पर० लपति) 1 बोलना, बातें करना 2 चाहे चाहे करना, ची ची करना 3 कानाफूसी करना - कपोलतले मिलितां लपितुं किमपि श्रुतिमूले गीत० १, प्रेर०—(लापयति-ते) बातें करवाना, बहु , दोहराना, बार बार बातें करना, जप—,मुकरना, स्वीकार नहीं करना, इन्कार कर देना —शतमपलपति —सिद्धा० 2 छिपाना, ढकना, अप—, 1. बातें करना, वार्तालाप करना 2 बातें करना बोलना 3 चाह चाह करना, ची ची करना उद्—, ऊंचे से पुकारना, प्र—, 1 बातें करना बोलना —यथा वै देहीति (वैदेहीति) प्रतिपदमुदप्रं प्रलपितम् सा० द० ६ 2 यूं ही बोलना, अनर्गल बातें करना, चाह चाह करना, ची ची करना, टक-टक करना, निरर्थक बातें करना, वि -,1 कहना, बोलना 2 विलाप करना, शोक मनाना, क्रन्दन करना, रोना विललाप विकीर्णमूर्धजा कु० ४।४, विललाप स बाष्पगद्गदं - रघु० ८।४३, ७०, भट्टि० ६।११, तामिह वृथा किं विलपामि गीत० ३, विप्र , झगड़ा करना, विरोध करना, वादविवाद करना, तू तू मैं मैं करना, सम्—, 1 बातें करना, वार्तालाप करना सलपतो जनसमाजात्—दश० 2 नाम लेना, पुकारना।

लपनम् [लप्+ल्युट्] 1 बातें करना, बोलना 2 मुख।

लपित (भू० क० कृ०) [लप्—क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, ची ची किया हुआ, शब्द वाणी, आवाज।

लब्ध (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त] 1 हासिल किया, प्राप्त किया, अवाप्त 2 लिया, प्राप्तकिया 3 प्रत्यक्ष-ज्ञान प्राप्त किया, बोध पाया 4 उपलब्ध किया (भाग आदि में), दे० लभ् - अभ् जो प्राप्त कर लिया गया, या सुरक्षित हो गया - लब्ध स्नेहदक्षयात् हि० २।८, रघु० १९।३। उप०—अन्तर (वि०) 1 जिसने कोई अवसर प्राप्त कर लिया है 2 जिसकी कहीं पहुंच हो गई है या प्रवेश मिल गया है रघु० १६।७, - अवकाश, अवसर (वि०) 1 जिसे किसी बात का अवसर मिल गया है 2 (कोई भी बात) जिसे (कार्य के लिए) क्षेत्र मिल गया है —लब्धाव-काशा मे प्रार्थना श० १ 3 जिसने छुटकारा प्राप्त करली है, जिसे अवकाश का समय मिल गया है, इसी प्रकार 'लब्धक्षण',—आस्पद (वि०) जिसने कहीं पैर जमा लिया है, या कोई पद प्राप्त कर लिया है मालवि० १।१७,—उदय (वि०) 1 जन्मलिया हुआ, उत्पन्न, उदित लब्धोदया पाद्मसदीव लेखा - कु० १।२५ 2 समृद्धिशाली, या उन्नत—स त्वतो लब्धोदय 'उसकी उन्नति तुम्हारी बदौलत हुई', —काम (वि०) जिसे अभीष्ट पदार्थ मिल गये हैं कीर्ति (वि०) विश्रुत, प्रसिद्ध विख्यात,—जन्मन्,—जन्मा (वि०) जिसे होश आ गया है, जिसकी बेहोशी दूर हो गई है,—जन्मन् (वि०) उत्पन्न, पैदा,—नाशम् - नष्ट (वि०) विश्रुत, विख्यात, नष्ट प्राप्त की हुई वस्तु का नाश लब्धनाशो यथापूर्वम्, प्रजालब्धम् 1 प्राप्त की हुई वस्तु की सुरक्षापूर्वक रखना 2 सुपात्र को दान या धनसमर्पण - मनु० ७।५६ पर कुल्लू०, लक्ष,—लक्ष (वि०) 1 जिसने ठीक निशाने पर आघात किया है 2 अस्त्रप्रयोग में कुशल,—वर्ण (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान् चित्र स्वदोषे विषये समस्तान् सर्वेऽपि स्मरका किल लब्धवर्णा —राजत० 2 प्रसिद्ध, विश्रुत, विख्यात मृच्छ० ४।२६, 'वर्ण (वि०) विद्वानों का आदर करने वाला—कु लब्ध-लक्षमपि लब्धवर्णमाकृत निर्देशं मनये सलक्षणम् रघु० ११।२, विद्य (वि०) विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्, सिद्धि (वि०) जिसने अभीष्ट पदार्थ (सफलता) या पूर्णता प्राप्त कर ली है।

लब्धि (स्त्री०) [लभ्+क्तिन्] 1 अभिग्रहण, प्राप्ति, अवाप्ति 2 लाभ, फायदा 3 (गणि० में) भजनफल

लब्धिमत् (वि०) [लब्धि+मतुप्] प्राप्त, अवाप्त, उपलब्ध।

लभ् (भ्वा० आ० लभते, लब्ध) 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अवाप्त करना लभेत सिक-तासु तैलमपि यत्नत पीडयन् -भर्तृ० २।५, विनय पाधार्यमलम्भि दिग्गजै शि० १।६४, रघु० ९।२९ 2 रखना, अधिकार में लेना, कब्जे में होना 3 लेना, प्राप्त करना 4 पकड़ना, लेना, ग्रहोचना रघु० १।३ 5 मालूम करना, मुकाबला होना प्रतिक्षिप्तलभते पदि 6 वसूल करना, उगाहना 7 जानना, सीखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना श्रवणं ...मननादेव लभ्यते भावा० ६, तत्त्वमलभमान मनु० ८।१६९ पर कुल्लू० 8 (किसी बात को करने के) योग्य होना (तुमुन् के साथ) नर्तुमपि न लभ्यते, नामभों लभ्यते कर्तुं लोके वैद्याचरे (संज्ञाशब्दों के साथ प्रयुक्त होकर 'लभ्' के अर्थों में तदनुकूल परिवर्तन हो जाता

है, उदा० गर्भंलभ् गर्भवती होना, गर्भ धारण करना, पद लभ्, आस्पदं लभ् पैर जमाना, प्रभाव रखना, दे० 'पद' के नीचे, आन्तर लभ् पता लगना, प्रविष्ट होना, लभेऽन्तर येनासि लोपदेश रघु० ६।६६, मन पर प्रभाव नहीं पड़ा, वेलामा लभ् ,सज्जा लभ् होश में आना, जन्म लभ् पैदा होना, कि० ५।४३, दर्शनं लभ् भेंट होना, साक्षात्कार होना, दर्शन करना स्वास्थ्य लभ् स्वस्थ होना, आराम में होना) – प्रेर० (लम्भयति –ते) 1 प्राप्त करवाना, दिलाना कि० २।५८ 2 देना, प्रदान करना, अर्पण करना मोदकशराव मालवक लम्भय विक्रम० ३ 3 कष्ट उठाना। प्राप्त करना, लेना 5 मालूम करना, खोजना इच्छा० (लिप्सते) प्राप्त करने की इच्छा करना, प्रबल लालसा रखना अलब्ध चैव लिप्सेत – हि० २।८ आ , 1 स्मरण करना गार्हस्थ्यकर्मौद्देश्य का मनु० ५। ८७, भट्टि० १४।२१ 2 प्राप्त करना, हासिल करना, पहुँचना येन श्याम वपुरतितरां कान्तिमालम्स्यते ते मेघ० १५ (पाठान्तर) 3 मार डालना, (यज्ञ में पशु का बलिदान करना –गदभं पशुमालम्भ्य–याज्ञ० ३।२८०, उप , 1 जानना, समझना, देखना प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना पंच० १।३६ 2 निश्चय करना, मालूम करना कृति यदुपलब्धम् उत्तर० १ तस्मात एतामुपलप्स्ये शा० १ 3 हासिल करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना उपभोग करना, अनुभव प्राप्त करना उपलब्धसुखस्तद्वा स्मर वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति कु० ४।४२, विक्रम० २।१० रघु० ८।८२, १०।२ १८।२१, मनु० ११।१७, उपा , 1 कलंक लगाना, बुरा भला कहना, चुगली बात कहना, खरी खोटी सुनाना पयोधरविस्तारयितुरात्मनो यौवनमुपालभ्यस्व मा किमुपालभसे शा० १, कु० ५। ५८, रघु० ७।४४, शि० ९।६०, प्रति –, 1 वसूल करना, फिर से उपलब्ध करना 2 हासिल करना, प्राप्त करना, वि – , 1 ठगना, धोखा देना, आँख में धूल झोंकना 2 वसूल करना, फिर से प्राप्त करना 3 अपमान करना, अनादर करना, सम् हासिल करना।

लम्भनम् [लभ् + ल्युट्] 1 हासिल करने की क्रिया, प्राप्त करना 2 प्रत्यय (पहचानने) की क्रिया।

लम्भः [लभ् + अप्] 1 दौलत, धन 2 जो निवेदन करता है, निवेदक, –म्, घोड़े को बाँधने की रस्सी (पुं० भी)।

लभ्य (वि०) [लभ् कर्मणि यत्] 1 प्राप्त होने के योग्य, पहुँचने के योग्य अवाप्त होने या प्राप्त करने के योग्य प्राप्तुलभ्ये फले लोभाद्बाहुरिव वामन –रघु० १।३, ४।८८ कु० ५।१८ 2 मिलने के योग्य– कु० १।४० 3 योग्य, उपयुक्त, उचित 4. सुबोध।

लम्बकः [रम्ब् + क्वुन्, रस्य लत्वम्] प्रेमी, आर (उपपति)।

लम्पट (वि०) [रम्प् + अटन्, पुक्, रस्य ल] 1 लालची, लोलुप, लालायित 2 विषयी, विलासी, कामुक, व्यसनी, इन्द्रियपरायण, दः स्वेच्छाचारी दुश्चरित्र, दुराचारी ('लम्पाक' शब्द भी इसी अर्थ में)।

लम्फः [लम्फ् + घञ्] कूद, उछाल, छलाग।

लम्फनम् [लम्फ् + ल्युट्] कूदना, उछलना।

लम्ब् (स्वा० आ० लम्बते लम्बित) 1 लटकना, टाँगना, दोलायमान होना ऋक्षपो हृत्व लम्बन्ते महा० 2 अनुपक्व होना चिपकना, सहारा लेना, आश्रित होना–ललम्बिरे सदसि लता प्रिया इव शि० ७।७५, प्रस्थान ते कथमपि सखे लम्बमानस्य सानि–मेघ० ८१ (यहाँ ल० का अर्थ है 'नीचे लटकता हुआ' या 'कन्धों का सहारा लिये हुए') 3 नीचे जाना, डूबना, (सूर्य आदि का) अस्त होना या डूबना, नीचे गिरना लम्बमाने दिवाकरे–शि० ९।३०, कि० ९।१, स्वेदक्षरच्चन्दनलम्बिनकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने गीत० १२ (=गलित) 4 पीछे गिरना या पड़ना, पिछड़ना 5. विलंब करना, ठहरना 6. ध्वनि करना प्रेर० (लम्बयति–ते), 1 झुकाना, नीचे लटकाना 2 ऊपर लटकाना, स्थगित करना 3 बिछाना, (हाथ आदि) फैलाना करेण वातायनलम्बितेन रघु० १३।२१, को लम्बयेदाहरणाय हस्तम् ६।७५, अक –, लटकना, लटकाना, स्थगित होना - कनकभूङ्गलावलम्बिनी – मुद्रा० २ 2 नीचे डूब जाना, उतरना 3 थामना, झुकना, झुकना या सहारा लेना, पालनपोषण करना – दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थित शा० २, यथा नदीवामवलम्ब्य बाहुगुलिम्–रघु ३।२५ 4 थामना, सम्भालना, पालनपोषण करना, जीवित रहना (आत्म० से भी) ले लेना हस्तेन तस्याबलम्ब्य वास रघु ७।९, कु० ३।५५, ६।६८, हृदयं न त्वबलम्बितुं क्षमा – रघु० ८।६० 5 निर्भर रहना, टिकना–अथहारोऽप्य चारुदत्तमवलम्बते मृच्छ० १, भट्टि १८।४१ 6. सहारा लेना, आश्रय लेना, भरोसा करना, धैर्यमवलम्ब्य धैर्य या साहस से काम लेना,–किं स्वातन्त्र्यमवलम्बसे – वेणी० ५, माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे कु० १।५२, शि० २।१५, आ , 1 आराम करना (किसी के सहारे) झुकना 2 लटकना, स्थगित होना विक्रम० ५।२, 3 हथियाना, पकड़ना – अवालम्ब्य धनु राम: – भट्टि० ६।३५, १४।९५ 4. पालनपोषण करना, थामना, उत्तर दायित्व लेना आधोरणालम्बित – रघु० १८।३९ 5 निर्भर होना – तमालम्ब्य रसोद्गमात् – सा० द० ६३ 6 सहारा लेना, आसरा लेना, हाथ पकड़ना, धारण करना - अथवेदार्थमालम्ब्य न जिजीविषाम् – मुद्रा० २।२०, कि० १७।३४, उद् –, अड़ा होना, सीधा अड़ा

होना,—पादेनैकेन गगने द्वितीयेन च भूतले, तिष्ठाम्युत्तम्भितस्तावद्यावत्तिष्ठति भास्कर मृच्छ० २।१० वि —, 1 लटकाना, लटकना, स्थगित होना रघु० १०।६२ 2 अस्त होना, क्षीण होना (सूर्यादि का) 3 ठहरना, पिछड़ना, रह जाना—कु० ७।१३, 4 देर करना, मन्दगति होना—विलम्बितफलैः काल निनाय स मनोरथैः—रघु० १।३३, किं विलम्ब्यते त्वरितं प्रवेश्यताम्—उत्तर० १।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] 1 नीचे की ओर लटकता हुआ, झूलता हुआ, लम्बमान, दोलायमान पाण्ड्यो-ऽसक्तापितलम्बहारः—रघु० ६।६०, ८४, मेघ० ८४ 2 लटकता हुआ, अनुषक्त 3 बड़ा, विस्तृत 4. विस्तीर्ण 5 लंबा, ऊँचा,—बः 1 लम्बभाषक 2 सह-अक्ष-रेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वबिन्दु और ध्रुव-बिन्दु का मध्यवर्ती चाप, अक्षरेखा का पूरक। सम० —उदर (वि०) बड़े पेट वाला, तोंदवाला, स्थूलकाय भारीभरकम (रः) 1 गणेश का नामान्तर 2. भोजन भट्ट, —ओष्ठः (लम्बो—बौ—ष्ठः) ऊँट,—कर्णः 1. गधा, 2 बकरा 3 हाथी 4 बाज, शिकरा 5 पिशाच, राक्षस, —उदर (वि०) मोटे पेट वाला, भारीभरकम, —पयोधरा वह स्त्री जिसके स्तन भारी हों और नीचे को लटकते हों, —स्फिच् (वि०) जिसके नितंब भारी और उभरे हुए हों।

लम्बकः [लम्ब+कन्] (ज्या० में) 1 लंबरेखा 2 अक्षरेखा का पूरक, (ज्यो० में) सह-अक्षरेखा।

लम्बनः [लम्ब्+ल्युट्] 1 शिव का विशेषण 2 कफ-प्रधान प्रकृति, नम् 1 नीचे लटकना, निर्भर रहना, उतरना आदि 2 आलंबन 3 (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-भ्रंश 4 एक प्रकार का लंबा हार।

लम्बा [लम्ब+टाप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2 लक्ष्मी का विशेषण।

लम्बिका [लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कोमल तालुका लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्दर का कौवा।

लम्बित (भू० क० कृ०) [लम्ब्+क्त] 1 नीचे लटकता हुआ, झूलता हुआ 2 स्थगित 3 डूबा हुआ, नीचे गया हुआ 4 सहारा लिये हुए, अनुषक्त (दे० लम्ब्)।

लम्बुषा (स्त्री०) सात लड़ियों का हार।

लम्भः [लभ्+घञ्, नुम्] 1 सिद्धि, अवाप्ति 2. मिलन 3 पुनः प्राप्ति 4 लाभ।

लम्भनम् [लभ्+ल्युट्, नुम्] 1 सिद्धि, अवाप्ति 2 पुनः प्राप्ति।

लम्भित (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त, नुम्] 1 उपार्जित, हासिल, प्राप्त 2 दत्त, 3 सुधारा हुआ 4 नियुक्त, प्रयुक्त 5 सयोया 6 कहा गया, संबोधित।

लय् (भ्वा० आ० लयते) जाना, हिलना-जुलना।

लय [ली+अच्] 1 चिपकना, मिलाप, संयोग 2 प्रच्छन्न, छिपा हुआ 3 गलन, पिघलना, घोल 4 अदर्शन, विघटन, बुझाना, विनाश, लय या विघटित होना, नष्ट होना 5 मन की लीनता, गहन एकाग्रता अनन्य भक्ति (किसी भी पदार्थ के प्रति;—पश्यन्ती शिवरूपिणी लयदशापन्ना मानसमध्यासीना - मा० ५।२८, ३, ध्यानलयेन —गीत० ४ 6 संगीत की लय (तीन प्रकार की —द्रुत, मध्य और विलंबित)—विलसत्यै सलयैरिव पाणिभिः—रघु० ९।३५, पादन्यासैः लयानुगैः —मालवि० २।१० 7 संगीत में विश्राम 8 आराम 9 विश्राम स्थान, आराम, निवास—अलया—शि० ४।५७, 'कोई स्थिर निवास न रखते हुए, घूमते हुए' 10 मन की शिथिलता, मानसिक अकर्मण्यता 11 आलिंगन। सम०—आरम्भ, —आलम्भ, पात्र, अभिनेता, नर्तक, काल: (सृष्टि का) प्रलयकाल,—प्राप्त (वि०) विघटित, पिघला हुआ,—पुत्री नटी, अभिनेत्री, नर्तकी।

लयनम् [ली+ल्युट्] 1. अनुषक्त होना, जुड़ना, चिपकना 2 विश्राम, आराम 3 विश्रामस्थल, घर।

लर्व् (भ्वा० पर० लर्वति) जाना, हिलना-जुलना।

लल् I (स्वा० उभ० ललति—ते) खेलना, क्रीड़ा करना इठलाना, किलोल करना पवनफलानीव वानरा ललन्ति मृच्छ० ८।८, गजकुलमिव इव वन्यूथं ललाम ४।२८।

II (चुरा० उभ० या प्रेर० लालयति ते) खेलने की प्रेरणा देना, पुचकारना, लाड़-प्यार करना दुलार करना प्रेमालिंगन करना सराहना, दोषान्वेषण करना गुणा, तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत् सुभा० कु० ५।१७ 2 इच्छा करना।

III (चुरा० उभ० लालयति ते) 1 लाड़-प्यार करना, मृच्छ० ४।२८ 2 जीभ लपलपाना 3 इच्छा करना।

लल (वि०) [लल्+अच्] 1. क्रीड़ासक्त, विलास प्रिय 2 लपलपाने वाला 3 अभिलाषी, इच्छुक। सम० जिह्व —ललज्जिह्व, जीभ से लपलप करने वाला।

ललत् (वि०) [लल्+शतृ] 1 खेलने वाला, विहार करने वाला 2 लपलपाता हुआ। सम० जिह्व (वि०) (ललज्जिह्व) 1 जीभ से लपलपाने वाला 2 बड़ा भीषण (ह्वः) 1 कुत्ता 2 ऊँट।

ललनम् [लल्+ल्युट्] 1 क्रीड़ा, खेल, आमोद, रतिक्रीड़ा 2 जीभ बाहर निकालना।

ललना [लल्+णिच्+ल्युट्+टाप्] स्त्री,—साठ नाकलोक-ललनामिरविरतरत रिरंसवे शि० १५।८८

2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 त्रिवृत्। सम०—प्रियः कदंब का पेड़।

ललनिका [ललना+कन्+टाप् इत्वम्] छोटी स्त्री, अभागी स्त्री—काव्या० २।५०।

ललम्भिका [लल्+शप्+डीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 लंबी माला 2 छिपकली।

ललाक [लल्+आकन्] पुरुष का लिंग, जननेन्द्रिय।

ललाटम् [लड्+अच् उभय ल, ललमटति अट्+अण् वा] मस्तक लिखितमपि ललाटे प्रोञ्छितुं क समर्थः—हि० १।२१, नै० १।१५। सम०—अक्ष शिव का विशेषण, **तटम्** मस्तक का ढलान, माथा,—पट्ट, **पट्टिका** 1 मस्तक का माथा तल 2 (तेहरा) शिरोवेष्टन, किरीट, सिर की चोटी, केशबंध,—लेखा मस्तक की रेखा।

ललाटकम् [ललाट+कन्] 1 मस्तक 2 सुन्दर माथा।

ललाटन्तप (वि०) [ललाट+तप्+खश् मुम्] 1 (मस्तक) को जलाने या तपाने वाला ललाटन्तपस्तपति तपन मा० १, उत्तर० ६, 'सूर्य ऊपर ठीक सिर पर चमक रहा है'—ललाटन्तपसंप्रति—रघु० १३।८१ 2 (अत) बहुत पीड़ाकर—लिखितं ललाटन्तपनिष्ठुराक्षरा नै० १।१३८,—पः सूर्य।

ललाटिका [ललाट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 मस्तक पर पहना जाने वाला आभूषण, टीका 2 मस्तक पर चन्दन का या अन्य किसी सुगंधित चूर्ण का तिलक कु० ५।५५।

ललाटिल (वि०) उन्नत और सुन्दर मस्तकवाला।

ललाम (वि०) (स्त्री० मी) [लड्+विच्प्, अन्य लम्बम्, तम् अयति अम्+अण्] सुन्दर प्रिय, मनोहर,—मम् मस्तक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार (इस अर्थ में पु० भी)—अहं नु लाभायमलंलाममूता मकुन्तलामभिकृत्य ब्रवीमि—श० २, शि० ४।२८ 2 कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3 मस्तक का तिलक 4 चिह्न, प्रतीक, तिलक 5 झण्डा, पताका 6 पंक्ति, माला, रेखा 7 पूंछ 8 अयाल, चन्दन के डाल 9 प्राधान्य, मर्यादा, सौन्दर्य 10 सींग,—क घोड़ा।

ललामकम् [ललाम+कन्] फूलों का गजरा जो मस्तक पर धारण किया जाता है।

ललामन् (नपुं०) [लल्+इमनिन्] 1 अलंकार, आभूषण, 2 (अत) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु—कन्यालंलाम कमनीयमजस्य लिप्सो—रघु० ५।६४ 'कन्याओं में श्रेष्ठ या अलंकारभूत' 3 ध्वजा पताका 4 साम्प्रदायिक चिह्न तिलक, मनका, प्रतीक 6 पुत्र।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1 क्रीडामग्न, खेलने वाला, इठलाने वाला 2. शृंगारप्रिय, क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी, विषयासक्त 3 प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्राञ्जल,—सलीलाललितललितैरंगैस्तावद्भिरुद्दामविभ्रमैः (अनङ्गः) उत्तर० १।२०, विधाय सृष्टिं ललितां विधातुः—रघु० ६।३७, १९।३९, ८।१, मा० १।१५, कु० ३।७५, ६।४५, मेघ० ३२,६४ 4 सुहावना, लावण्यमय, रुचिकर, बढ़िया -प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ—रघु० ८।६३, सदृशिनेव ललितामिनयस्य शिक्षा—मालवि० ४।१, विक्रम० २।१८ 5 अभीष्ट 6 मृदु, कोमल शि० ७।६४ 7 थरथराता हुआ, कम्पायमान,—तम् 1 क्रीडा, रमरेली, खेल 2 शृंगार परक विनोद, गतिलावण्य, स्त्रियों में प्रीति विषयक हावभाव—शि० ९।७०, कि० १०।५२ 3 सौन्दर्य, लावण्य, आकर्षण 4 कोई भी प्राकृतिक या स्वाभाविक क्रिया 5 सरलता, भोलापन। सम०—अर्थ (वि०) सुन्दर या प्रीतिविषयक अर्थ वाला विक्रम० २।१४, पद (वि०) प्राञ्जलरचनायुक्त—प्र० ३, प्रहारः मृदु या कोमल आघात।

ललिता [ललित+टाप्] 1 स्त्री 2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 कस्तूरी 4 दुर्गा का एक रूप 5 विभिन्न छन्दों के नाम सम, पञ्चमी आश्विनशुक्ल का पांचवां दिन, - सप्तमी भादपद के शुक्लपक्ष का सातवां दिन।

लवः [लू+अप्] 1 उत्पाटन, उल्लूचन 2 कटाई, (एक अनाज की) लावनी 3 अनुभाग, टुकड़ा, खण्ड, कवल या ग्रास 4 कण, बूंद, अल्पमात्रा, थोड़ा (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—अललवमुच—मेघ० २०,७०, आधामति स्वेदलवान् मुखे ते—रघु० १ ›, ६।५७, १६।६६, अमरु० १५।९७, अमृत०—कि० ५।४४, भूक्षेपलक्ष्मीलवकीर्तितो दास इव गीत० ११, इसी प्रकार तृण°, अपराध° ज्ञान°, सुख° धन° आदि 5 ऊन, पशम 6 क्रीडा 7 समय का सूक्ष्म विभाग (एक निमेष का छठा भाग) 8 किसी मिश्र राशि अंश 9 (ज्योति० में) घात 10 हानि, विनाश 11 राम का एक पुत्र, यमल (जोड़वां) में से एक—दूसरे का नाम कुश था, लव का अपने भाई कुश के साथ वाल्मीकि मुनि के द्वारा पालनपोषण हुआ, सभास्थल आदि स्थानों में पाठ करने के लिए दोनों को महा कवि द्वारा रामायण की शिक्षा दी गई, (इस नाम की व्युत्पत्ति के लिये दे० रघु० १५।३२), —वम् 1 लौंग, 2 जायफल, वम् (अव्य०) कुछ, थोड़ा सा—लवमपि लवङ्गे न रमते—सरस्वती० १।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा द्वीपान्तरानीतलवङ्गपूगैः—रघु० ६।५७, ललित लवङ्गलता परिशीलन कोमल मलयसमीरे गीत० १,—ङ्गम् लौंग। सम० कलिका लौंग।

लवङ्गकम् [लवङ्ग+कन्] लौंग।

लवण (वि०) [लू+ल्युट्, पृषो० नत्वम्] 1 क्षारीय, सलोना, नमकीन 2 प्रिय, मनोहर, चः 1 खारी स्वाद 2 नमकीन पानी का समुद्र 3 एक राक्षस का नाम, मधु का पुत्र, यह शत्रुघ्न के द्वारा मारा गया था रघु० १५।२, ५,१६, २६ 4 एक नरक का नाम, णम् 1 नमक 2 समुद्री नमक, लूण 3 कृत्रिम नमक। सम०—अम्बुकः शत्रुघ्न का विशेषण,—अब्धिः खारी समुद्र, °जम् समुद्री नमक,—अम्बुराशिः समुद्र,—आभानि वेला लवणाम्बुराशेः —रघु० १३।१५, विक्रम० १।१५, अम्भस् (पु०) समुद्र —रघु० १२।७०, १७।५४, (नपु०) नमकीन पानी, आकरः 1 नमक की खान 2 नमकीन जलाशय अर्थात् समुद्र 3 (आल०) लावण्य की खान —आलय. समुद्र, उत्तमम् 1 सेंधा नमक 2 यवक्षार, —उद 1 समुद्र 2 नमकीन पानी का समुद्र,—उदक, —उदधिः—जलः समुद्र,—क्षारम् एक प्रकार का नमक, मेहः एक प्रकार का मूत्ररोग, समुद्रः नमकीन समुद्र, सागर।

लवणता { लवण+टाप् } कान्ति, सौन्दर्य।

लवणिमन् (पु०) [लवण+इमनिच्] 1 नमकीनपना लावण्य 2 सौन्दर्य, मनोहरता, चारुता।

लवनम् [लू भावे कर्मणि च ल्युट्] 1 लुनाई, लावनी, (पके अनाज की) कटाई 2 काटने का उपकरण, दराती, हँसिया।

लवली [लव+ला+क+ङीष्] एक प्रकार की लता, —मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभ उत्तर० ३।४०।

लवित्रम् [लूयतेऽनेन+लू+इत्र] काटने का उपकरण, दराती, हँसिया।

लस् (चुरा० उभ० लसयति ते) किसी कला का अभ्यास करना, तु० 'लस्'।

लसुन (क्लु) नः,—नम् [अशौ उनन्, लशादेश्च] लहसुन, —निखिलरसाग्र्यमहितो गन्धेनोग्रेण लसुन इव रस० (=भामि० १।८१), यश -सौरभ्यलशुन भामि० १।९३।

लस् (भ्वा० दिवा० पर० लसति, स्यति, लसित) चाहना, इच्छा करना, लालायित होना, उत्सुक होना (प्रायः 'अभि' उत्सर्ग के साथ), अभि—, चाहना, इच्छा करना, लालायित होना—मानुषानभिलस्यन्ति - भट्टि० ४।२२, तेन दत्तमभिलेभुरङ्गनाः -रघु० १९।१२।

लसित (भू० क० कृ०) [लस्+क्त] चाहा हुआ, वाञ्छित।

लस्कः [लस्+घञ्] नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, नर्तक।

लस् (भ्वा० पर० लसति, लसित) 1. चमकना, दमकना, जगमगाना,—मुक्ताहारेण लसता हसतीव स्तनद्वयम् —काव्य० १०, करवाणि चरणद्वय सरसलसदलक्तकराग —गीत० १०, अमरु १६, नै० २२।५३ 2 प्रकट होना, उगना, प्रकाश में आना 3 आलिंगन करना 4 खेलना, किलोल करना, उछल-कूद करना, नाचना प्रेर० (लासयति ते) 1 चमकना, शोभा बढ़ाना, अलंकृत करना 2 नचाना 3 कला का अभ्यास करना, उद् , 1 क्रीडा करना, खेलना, लहराना, फड़फड़ाना शि० ५।४७ 2 चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना—उल्लसत्काञ्चनकुण्डलाग्रम्—शि० ३।५, ३३, ५।१५, २०।२६ 3 उदित होना, उगना शि० ४।५८, ६।११, मा० ९।३८ 4 फूंक मारना, खुलना, विस्तीर्ण होना, (प्रेर०) रोशनी करना, उज्ज्वल करना, परि—, चमकना, सुन्दर लगना, वि—, 1 चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना,—त्रियति च विललास सद्मदिन्दुविलसति चन्द्रमसो न यद्वदन्य —भट्टि० १०।६८, मेघ० ४७, रघु० १३।७६ 2 दिखाई देना, उदय होना, प्रकट होना प्रेम विलसति महत्सदहा शि० १५।१४, ९। ८७ 3 क्रीडा करना, मनोविनोद करना, खेलना, किलोल करना,—कापि चपला मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा गीत० ७, हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे गीत० १, 4 ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना।

लसा [लसति-लस्+अच्+टाप्] 1 जाफरान, केसर 2 हल्दी।

लसिका [लस्+अच्+कन्+टाप् ह्रस्वम्] चूक खार।

लसित (भू० क० कृ०) [लस्+क्त] खेला, क्रीडा की, दिखाई दिया, प्रकट हुआ, इधर उधर उछल कूद करने वाला, दे० 'लस्'।

लसीका [लस+ङीष्+कन्+टाप्] 1 चूक 2. पीप, मवाद 3 ईख का रस 4. टीके का रस।

लस्ज् (भ्वा० आ० लज्जते, लज्जित) 1 शर्मिन्दा होना, लज्जा अनुभव करना (बहुधा करण० या तुमुन्नन्त के साथ)—स्त्रीजन प्रहरन्कथ न लज्जसे—रत्न० २, भट्टि० १५।३३ 2 शर्माना, लजाना प्रेर० (लज्जयति —ते) लज्जित करना—रघु० १९।१४, वि—, शर्मीला, या विनीत होना, सकोच करना - यत्प्रांशुकाक्षेपविलज्जितानां—कु० १।१४, रघु० १४।२७।

लस्त (वि० [लस्+क्त] 1 आलिङ्गित, भुजपाशबद्ध 2 दक्ष, कुशल।

लस्तकः [लस्त+कन्] धनुष का मध्यभाग, वह भाग जहाँ हाथ से पकड़ा जाता है।

लस्तकिन् (पु०) [लस्तक+इनि] धनुष।

लहरिः,—री (स्त्री०) [लेन श्लेषेण इव हियते ऊर्ध्वगमनाय ल+ह+इन्, पक्षे ङीष्] लहर, तरंग, बड़ी

लहर, झाल—करेणोत्क्षिप्तास्ते जगति विजयन्ता लहरय —गंगा० ४०, इमा पीयूषलहरीं जगन्नाथेन निर्मिताम्—५३, इसी प्रकार आनन्द°, तरुणा°, सुधा° आदि।

ला (अदा० पर० लाति) लेना, प्राप्त करना, ग्रहण करना सभालना—लातु वज्रान्—भट्टि० १४।९२, १५।९३।

लाकुटिक (वि०) (स्त्री०-की) [लकुट प्रहरणमस्य ठक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित, कः सन्तरी, पहरेदार पंच० ४।

लाक्षणी (स्त्री०) सीता का नाम।

लाक्षणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लक्षणया बोधयति ठक्] 1 वह जो चिह्न या निशानों से परिचित हो 2 विशिष्ट, संकेतक 3. गौण अर्थ रखने वाला, गौण अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि—लक्षक जो वाच्य और व्यंजक से भिन्न हो)—स्याद्वाचको लाक्षणिक शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा —काव्य० २ 4 गौण, निकृष्ट 5 पारिभाषिक,—कः पारिभाषिक शब्द।

लाक्षण्य (वि०) [लक्षण वेत्ति भव्य] 1 चिह्न संबंधी, संकेतद्योतक 2 लक्षणों का ज्ञान, लक्षण या संकेतों की व्याख्या करने के योग्य।

लाक्षा [लक्ष्यतेऽनया लक्ष्+अच्, पृषो० वृद्धि] एक प्रकार का लाल रंग, महावर, लाख (प्राचीनकाल में यह स्त्रियों की एक प्रसाधन सामग्री थी, वे इससे अपने पैर के तलवे तथा ओष्ठ रंगती थीं, तु० 'अल क्तक'। कहते हैं कि वीरबहूटी नामक कीड़े से अथवा किसी विशेष वृक्ष की राल से यह रंग तैयार किया जाता था)—निष्ठ्यूतहरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित् (तरुणा)—पं० ४।५, ऋतु० ६।१३, कि० ५।२३ 2 'वीरबहूटी' जिससे यह रंग बनता है। सम० तरु: एक वृक्ष का नाम, पलाश, ढाक प्रसादः,—प्रियालः लाख लोध्रवृक्ष, - रक्त (वि०) लाख से रंगा हुआ।

लाक्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [लाक्षा+ठक्] 1 लाख से संबंध रखने वाला, लाख से बना हुआ या रंगा हुआ 2 एक लाख (संख्या) से संबद्ध।

लाक्ष् (स्वा० पर० लाक्षति) 1 सूख जाना, नीरस होना 2 अलंकृत करना 3 पर्याप्त होना, समर्थ होना 4 प्रदान करना 5 रोकना।

लागुडिक (वि०) [लगुड+ठक्] दे० 'लाकुटिक'।

लाघ् (स्वा० आ० लाघते) बराबर होना, पर्याप्त होना, समर्थ होना।

लाघवम् [लघोर्भावः अण्] 1 अल्पता, छोटापन 2 लघुता, हलकापन 3. अविचार, विचक्षणता 4. असभ्यता 5. अनादर, घृणा, अपमान, अप्रतिष्ठा—सेवा लाघवकारिणी कृतधिय स्वाने स्वयमेति विधु—मुद्रा० ३।१४, मनु० २।३५ 6. फुर्ती, चुस्ती, वेग 7 क्रियाशीलता, दक्षता, तत्परता—हस्तलाघवम् 8 संक्षेपीकृत प्रतिमा —बुद्धिलाघवम् 9. संक्षेप, (ग्रन्थित की संक्षिप्तता) 10 (कविता में) मात्रा की कमी।

लाङ्गलम् [लङ्ग्+कलच्, पृषो० वृद्धि] 1. हल 2. हल का शकल का अहतीर 3 ताड़ का वृक्ष 4 शिश्न, लिंग, 5. एक प्रकार का फूल। सम०—ग्रहः हाली, किसान, —दण्डः हल का लट्ठा, हलस,—धरः बलराम का नामान्तर,—पद्धतिः (स्त्री०) खूड, हल से बनी रेखा, सीता,—फालः हलकी फाली।

लाङ्गलिन् (पु०) [लाङ्गल+इनि] 1 बलराम का नाम —अन्वग्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली या सिषेवे—मेघ० ४९ 2 नारियल का पेड़ 3 सांप।

लाङ्गली [लाङ्गल+अच्+ङीष्] नारियल का पेड़।

लाङ्गलीया [लाङ्गल+ईषा] हलस, हल का लट्ठा।

लाङ्गूलम् [लङ्ग्+ऊलच्, वा० वृद्धि] 1. पूंछ 2. शिश्न, लिंग।

लाङ्गूलक [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] 1. पूंछ—लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातम् क्वा पिण्डस्य कुशले—मृच्छ० २।३१, 'कुत्ता पूंछ हिलाता है' 2. शिश्न, लिंग।

लाङ्गूलिन् (पु०) [लाङ्गूल+इनि] बन्दर, लंगूर।

लाञ्छ्, लाञ्छय् (स्वा० पर० लाञ्छति, लाञ्छयति) 1 कलंक लगाना, निन्दा करना 2 भूलना, छलना।

लाञ्छ [लाञ्छ+अच्] गीला घास,—छाः (ब० व०) भुना हुआ, या तला हुआ धान (स्त्री० भी) —(त) अवाकिरन्बालललाजधानैरद्भूतैराचारलाजैरिव पौरकन्याः —रघु० २।१०, ४।२७, ७।२५, कु० ७।९९, ८०।

लाञ्छ् (स्वा० पर० लाञ्छति) 1 भेद करना, चिह्नित करना, विशिष्ट बनाना 2 सजाना, अलंकृत करना।

लाञ्छनम् [लाञ्छ् कर्मणि ल्युट्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशिष्टताद्योतक चिह्न—सवान्युदानीकमुहूर्तलाञ्छने (वनम्नि) —रघु० ३।५३, प्रायः समास के अन्त में 'चिह्नित' 'विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—बालेऽपि देवस्य तवाहमेवं विद्यासहायेऽप्युदयोन्मुखस्य विक्रमांक० १०।२, रघु० ६।१८, १६।८४, इसी प्रकार 'शीकण्ठपदलाञ्छन' मा० १, 'शीकण्ठ' विशेषण को धारण करते हुए 2. नाम, अभिधान 3. दाग, धब्बा, अपकीर्ति का चिह्न 4. चन्द्रमा का कलंक (काला धब्बा) कु० ७।३५ 5 सीमान्त।

लाञ्छित (वि०) [लाञ्छ्+क्त] 1 चिह्नित, अन्तरचिह्नित, विशिष्ट 2. नामी, नामक 3 विभूषित 4. सुलक्षित।

लाट (पु०, ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम—एष च (लाटानुप्रासः): प्रायेण लाटदेशप्रियस्वाल्लाटानुप्रासः—सा० द० १०,—टः 1. लाट देश का राजा 2. पुराने वीर्यहीन पदार्थ 3. कपड़े

4 शब्दों जैसी भाषा। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक, शब्द या शब्दों की पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु भिन्न प्रयोग के साथ, मम्मट ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है —शब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः -उदा० वदन करवर्णिन्यास्तस्या, सत्यं सुधाकर सुधाकर एव नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्—या—यस्य न सन्निधौ दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सन्निधौ दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य काव्य० ९।

लाटिक (वि०) (स्त्री०—टिकी) [लाट्+ठक्] लाट देश से सम्बद्ध।

लाटिका, लाटी [लट्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्वः, लाट्+अच्+ङीष्] रचना, की एक विशेषशैली—दे० सा० द० ६२९ 2 एक प्राकृतिक बोली का नाम दे० काव्या० १।३५।

लाड् (चुरा० उभ० लाडयति ते) 1 लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2 कलङ्कित करना, निन्दा करना 3 फेंकना, उछालना—तु० 'लड्'।

लाण्डनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।

लात (भू० क० कृ०) [ला+क्त] लिया, ग्रहण किया।

लाप [लप्+घञ्] 1 बोलना, बातें करना 2. किलकिलाना, तुतला कर बोलना।

लाबः, लाबकः [लू+घञ्, पृषो०] एक प्रकार का लवा पक्षी, बटेर।

लाबुः (बूः) (पु०) एक प्रकार की लौकी, तूमडी।

लाबुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारंगी।

लाभः [लभ्+घञ्] 1 उपलब्धि, प्राप्ति, अवाप्ति, अधिग्रहण—शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिर्लाभममन्यत—रघु० १२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।३४, ११।९२, क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ—रघु० ८।८७ 2 नफा, मुनाफा फायदा सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ भग० २।३८, याज्ञ० २।२५९ 3 सुखोपभोग 4 लूट का माल, विजित प्रदेश 5 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, संबोध। सम० कर, कृत् (वि०) लाभकारी, फायदेमंद,—लिप्सा लाभ की इच्छा, लोलुपता, लालच।

लाभकः [लाभ+कन्] फायदा, मुनाफा।

लामज्जकम् [ला+विच्, ला आदीयमाना मज्जा सारो यस्य ब० स०, कप्] एक सुगन्धयुक्त घास विशेष की जड, खस, वीरणमूल।

लाम्पट्यम् [लम्पट+ष्यञ्] लम्पटता, कामुकता, भोगासक्ति।

लालनम् [लल्+ल्युट्] 1 दुलारना, लाड प्यार करना, पुचकारना सुतलालनम् आदि 2. तुष्ट करना, आवश्यकता से अधिक स्नेह करना, आत्मरञ्जन, अत्यधिक लाडप्यार—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणा —दे० लल्।

लालस (वि०) [लस्+घञ्, लुक् द्वित्वम्, अच्] 1 अत्यंत लालायित, बहुत इच्छुक, आतुर-प्रकामलालसा का० १४, ईक्षानसदर्शनलालसानां-कु० ७।५६, शि० ४।६ 2 आनन्द लेने वाला, भक्त, अनुरागी, लीन—विलासलालसम्—गीत० १, श्लोक,° मृगया° आदि।

लालसा [लस् स्पृहायां घञ् लुक् भावे अ] 1 प्रबल इच्छा उत्कण्ठा, बडी अभिलाषा, उत्सुकता 2 याचना, निवेदन, अभ्यर्थना 3 खेद, शोक 4 दोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

लालसीकम् (नपु०) चटनी।

लाला [लल्+णिच्+अच्+टाप्] लार, थूक भर्तृ० २।९। सम०—आढ्यः मकडा,—स्रावः 1 लार बहाना 2 मकडा।

लालाटिक (वि०) (स्त्री० की) [ललाट प्रयोजनमिति ठञ्] 1 मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबंधी 2 भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला प्राप्तिस्तु लालाटिकी उद्भट 3 निकम्मा, नीच, कमीना, कः 1 सावधान सेवक (सा० जो अपने स्वामी की मुखमुद्रा से समझ लेता है कि अब क्या क्या करना आवश्यक है) 2 निठल्ला, लापरवाह, निश्चेष्ट व्यक्ति 3 एक प्रकार का आलिंगन।

लालाटी [ललाट+अण्+ङीप्] मस्तक, माथा।

लालिकः [लाला+ठञ्] भैंसा।

लालित (भू० क० कृ०) [लल्+णिच्+क्त] 1 दुलार किया गया लाडप्यार किया गया, लालन किया गया, अत्यंत स्नेह किया गया 2 सत्पथ से डिगाया गया 3 प्रेम किया गया, अभिलषित,—लम् आनन्द, प्रेम, हर्ष।

लालितकः [लालित+कन्] लाडला, दुलारा, प्रिय, स्नेहभाजन।

लालित्यम् [ललित+ष्यञ्] 1 प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य, दक्षिण पदलालित्यम् उद्भट 2 प्रीति विषयक हार्द भाव।

लालिन् (पु०) [लल्+णिच्+णिनि] बहकानेवाला, फुसलाने वाला।

लालिनी [लालिन्+ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

लालुका (स्त्री०) एक प्रकार की माला, हार।

लाव (वि०) (स्त्री०-वी) [लू कर्तरि घञ्] 1 काटने वाला, कटाई करने वाला, उखाडनेवाला—कुशलूविलावम्-रघु० १३।४३ 2. उत्पाटन करने वाला, एकत्र करने वाला 3 काट कर गिराने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला—भट्टि० ६।८७,—वः 1 काटना 2 लवा नामक पक्षी।

लावकः [लू+ण्वुल्] 1 काटने वाला, खर-खांड करने वाला 2 लावनी करने वाला, एकत्र करने वाला 3 लवा, बटेर।

लावण (वि०) (स्त्री०-णी) [लवणं संस्कृतम् अण्] 1 नमकीन 2. लवण से युक्त, लवण द्वारा संस्कृत।

लावणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लवणे संस्कृत ठण्] 1 नमकीन, नमक से प्रस्तावित 2 नमक का व्यापारी 3 प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय—शि० १०।३८, (यहाँ इसका अर्थ 'नमक का व्यापारी' भी है), क० नमक का व्यापारी, कम् लवण-पात्र, नमक का बर्तन।

लावण्यम् [लवण+ष्यञ्] 1 नमकीनपना 2 सौन्दर्य सकलोपपन्नं मनोहरता तथापि तस्या लावण्यं रेखया किंचिदन्वितम् श० ६।१३, कु० ७।१८, शब्द० में 'लावण्य' की परिभाषा मुक्तफलेषु छायायास्तरलत्वमन्तरेण प्रतिभाति यदङ्गनेषु तल्लावण्यमिहोच्यते। सम० अधिकम् विवाहिता स्त्री की निजी सम्पत्ति जो विवाह के अवसर पर उसे अपने पिता या सास से प्राप्त हुई हो।

लावण्यमय, लावण्यवत् (वि०) [लावण्य+मयट्, मतुप् वा] प्रिय, मनोहर।

लावाणकः [लू+आनक] मगध के निकट एक जिले का नाम।

लाविकः [लाव+ठक्] भैंसा।

लावुक (वि) (स्त्री०-का,-की) [लभ्, उकञ्] लोलुप, लोभी लालची।

लास [लस्+घञ्] 1 कूदना खेलना, उछलना, नाचना 2 प्रेमालिंगन, केलि क्रीड़ा 3 स्त्रियों का नाच, रास-लीला 4 रमा, शोभा।

लासक (वि०) (स्त्री०-सिका) [लस्+ण्वुल्] 1 खेलने वाला, किलोल करने वाला, विहार करने वाला, इधर उधर घूमने वाला, कः 1. नर्तक 2 घोड़ 3 आलिंगन 4 शिव का नामान्तर, कम् चौबारा, कुर्ब।

लासकी [लासक+ङीष्] नर्तकी।

लासिका [लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 नर्तकी 2 वेश्या, स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

लास्यम् [लस्+ष्यञ्] 1. नाचना, नृत्य,—आस्ये वास्यति कस्य लास्यमधुना...दाक्षी विपाको मम-मालि० ४।४२, रघु० १६।१४ 2 गाने बजाने के साथ साथ 3 वह नृत्य जिसमें प्रेम की भावनाएँ विभिन्न हाव भाव तथा अंगविन्यासों द्वारा प्रकट की जाती हैं, स्त्रः नट, नर्तक, अभिनेता, स्त्रा नर्तकी।

लिङ्गुच [लङ्+उच, पृषो० इत्वम्] दे० 'लङ्गुच'।

लिक्षा [रिष् स लिट्] 1 लीख, जूओं के अंडे 2 अत्यन्त सूक्ष्म नाप (जो बार या आठ परमेणु के बराबर मानी जाती है)—बालाग्रशतभागस्तु तस्य भागस्य कल्पितः, तस्यांशः सप्तधा कार्यस्ते भागाः परमाणवः, त्रसरेणवोऽष्टौ विज्ञेया लिक्षैका परिमाणतः मनु० ८।१३३, दे० याज्ञ० १।३६२ भी।

लिक्षिका [लिक्षा+कन्+टाप्, इत्वम्] लीख।

लिख (तुदा० पर० लिखति, लिखित) 1. लिखना, लिख रखना, अक्षरकर्म करना, रेखांकन करना, उत्कीर्ण करना,—अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख उच्चटं, ताराक्षरैर्यामसिते कठिन्या निशाऽलिखद् व्योम्नि तमः प्रशस्तिम्—नै० २२।५४, याज्ञ० २।८७, श० ७।५ 2 रेखाचित्र बनाना, रेखा खींचना, आलेखन, चित्रित करना, रङ्ग भरना—मृग-मदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनिकरे गीत० ७, मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती—मेघ० ८५, ८०, कु० ६।४८, स्मित्वा पाणौ खड्गलेखां लिलेख—काव्य० १० 3 खुरचना, रगड़ना, घिसना, फाड़ देना न किंचिदूचे चरणेन केवलं लिलेख बाष्पाकुल-लोचना मुखम् कि० ८।१४, मूर्ध्नां दिवमिवालेखीत्—भट्टि० १५।२२ 4 (शस्त्रक्रिया) करना, खाल काटना 5 स्पर्श करना, खरोंच पैदा करना 6. (पक्षी की भांति) चोंचें मारना 7 चिकना करना 8 स्त्री के साथ सहवास करना, आ—, 1 लिखना, चित्रित करना, रेखाएँ खींचना मा० १।३१ 2 रङ्ग भरना, चित्र बनाना—आलिखित इव सर्वतो रङ्गः—श० १, स्वामा-लिख्य प्रणयकुपिताम्—मेघ० १०५, रघु० १९।१९ 3 खुरचना, छीलना, उद्—, 1 खुरचना, छीलना, फाड़ना, खोदा लगाना शि० ५।२०, मनु० १।२३ 2 पीस डालना, रोगन करना—त्वष्टा दिवस्पतिमिवो-ल्लिलेख,—कि० १७।४८, रघु० ६।३२, श० ६।६ 3 रङ्ग भरना, लिखना, चित्रित करना—कु० ५।५८ 4 खोदना, काटकर बनाना, प्रति—, उत्तर देना, जवाब देना, बदले में लिखना, वि—, लिखना, अन्तरकर्म करना 2 रेखांकन करना, रङ्ग भरना, चित्रित करना, चित्र बनाना लिलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम् - गीत० ४ 3 खुरचना, छीलना, फाड़ना—मन्द मन्दा-यमानो विलिखति शयनादुत्थित इव खुरेण—काव्य० १०, व्यलिखच्चञ्चपुटेन पत्रालीं—नै० २।२, पादेन हंस विलिलेख पीठम्—रघु० ६।१५, कु० २।२३ 4 रोपना, जमाना—हि० ४।७२ पाठान्तर, सम्—, खुरचना, छीलना।

लिखनम् [लिख्+ल्युट्] 1 लिखना, अन्तरकर्म 2. रेखांकन रङ्ग भरना 3 खुरचना 4 लिखित दस्तावेज, लेख या हस्तलेख।

लिखित (भू० क० कृ०) [लिख्+क्त] लिखा हुआ, रङ्ग भरा हुआ, खुरचा हुआ आदि दे० लिख्,—तः विधि या धर्मशास्त्र के एक प्रणेता का नाम (शंख के साथ

इस नाम का उल्लेख मिलता है),—सम् 1. लेख, दस्तावेज 2 कोई पुस्तक या रचना।

लिम्पः [लिम्+कु] 1 हरिण 2 मूर्ख, बुद्धू,—नपुं० हृदय।

लिल्ल (भ्वा० पर० लिलति) जाना, हिलना-जुलना।

लिल्ल। (भ्वा० पर० लिल्लति, लिल्लित) जाना, हिलना-जुलना, आ -, आलिङ्गन करना, परिरम्भण करना। II (चुरा० उभ० लिङ्गयति-ते) रङ्ग भरना, चित्रित करना 2 किसी संज्ञाशब्द की उसके लिङ्ग के अनुसार रूपरचना करना।

लिङ्गम् [लिङ्ग्+अच्] 1 निशान, चिह्न, निशानी, प्ररूप, बिल्ला, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण—यतिपार्थिव-लिङ्गधारिणी—रघु० ८।१६ मुनिर्दौहृदलिङ्गदर्शी १४।७१, मनु० १।३०, ८।२५, २५२ 2 अवास्तविक या मिथ्या चिह्न, वेश, छद्मवेश, धोखे में डालने वाला बिल्ला—लिङ्गमेतत् सवृत्तविध्रियास्ते रघु० ७।३०, क्षपणकलिङ्गधारी मुद्रा० १, न लिङ्गम् धर्मकारणम्—हि० ४।८५, दे० नी० लिङ्गिन् 3. लक्षण, रोग के चिह्न 4 प्रमाण के साधन, प्रमाण, सबूत साक्ष्य 5 (तर्क० में) किसी प्रतिज्ञा का विधेय 6 लिङ्गचिह्न 7 योनि गुणा पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गम् न च वय उत्तर० ४।११ 8 पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 9 (व्या० में) स्त्री या पुरुषवाची शब्द पहचानने का चिह्न, लिङ्ग 10 शिवलिङ्ग 11 देवमूर्ति, प्रतिमा 12 एक प्रकार का सबध या अभिसूचक (जैसे कि सयोग, वियोग और साहचर्य आदि) जो किसी शब्द के किसी विशेष सदर्भ में अर्थ निश्चित करने का काम देता है उदा० कुपितो मकरध्वज में कुपित शब्द मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'काम' के अर्थ में सकेत कर देता है काव्य० २, तथा तत्स्थानीय भाष्य 13 (वेदात० में) सूक्ष्म शरीर, दृश्यमान स्थूल शरीर का अविनश्वर मूल शरीर, तु० पचकोष। सम० —अग्रम् लिङ्ग की मणि, सुपारी,—अनुशासनम् व्याकरण विषयक लिङ्ग ज्ञान, वे नियम जिनसे शब्द के लिङ्गों का ज्ञान मिलता है,—अर्चनम् शिव की लिङ्ग के रूप में पूजा,—देह—शरीरम् सूक्ष्म शरीर दे० लिङ्ग (१३) ऊपर,—धारिन् (वि०) बिल्लाधारी—नाशः 1 विशिष्ट चिह्नों का लोप 2 शिश्न का न रहना 3 दृष्टिशक्ति का अभाव, एक प्रकार का आँखों का रोग, परार्थे' (तर्क० में) विचिह्न को ढूंढना या विचारना (उदा० 'अग्नि' का सूचक चिह्न 'धूआँ' है),—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, प्र ठा 'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डी की स्थापना, वर्धन (वि०) पुरुष की जननेन्द्रिय में उत्तेजना पैदा करने वाला,—विपर्ययः लिङ्गपरिवर्तन,—वृत्तिः (वि०) पाखण्ड से भरा हुआ, वृत्ति धर्म के कार्यों में पाखण्ड करने वाला,—वेदी वह आधार जिस पर शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है।

लिङ्गकः [लिङ्ग+कै+क] कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड़।

लिङ्गनम् [लिङ्ग्+ल्युट्] आलिङ्गन करना।

लिङ्गिन् (वि०) [लिङ्गमस्त्यस्य इति] 1 चिह्न या निशान रखने वाला 2 विशेषतायुक्त 3 बिल्ला या निशान रखने वाला, दिखाई देने वाला, छद्मवेशी, पाखण्डी, झूठे बिल्ले लगाने वाला (समास के अन्त में) स वर्णिलिङ्गी विदित समायया युधिष्ठिर द्वैतवने वनेचर —कि० १।१, इसी प्रकार 'लिङ्गिन्' 4 लिङ्ग से युक्त 5 सूक्ष्म शरीरधारी 1 —पुं०, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण सन्यासी पञ्च० ४।३९ 2 शिवलिङ्ग की पूजा करने वाला 3 पाखण्डी, बना हुआ भक्त, सन्यासी 4 हाथी 5 (तर्क० में) प्रतिज्ञा का विषय।

लिपिः, -पी [लिप्+इक, ङीप् वा] 1 लीपना, पोतना 2 लिखना, लिखावट 3 लिखित अक्षर, वर्ण, वर्णमाला—यवनालिप्याम्—वा०, लिपेर्यथावद् ग्रहणेन वाङ्मय नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत्—रघु० ३।२८, ४६ 4 लिखने की कला 5. (अक्षर, दस्तावेज, या हस्तलेख आदि) लिखना—अय दरिद्रो भवितेति वेधसो लिपि ललाटेऽविजनस्य जाग्रतीम्—नै० १।१५, १३८ 6. चित्रकला, रेखांकन। सम० —करः 1 पलस्तर करने वाला, सफेदी करने वाला, राज 2 लेखक, लिपिक 3 उत्कीरक (उभरा हुआ लिखने वाला, नक्काशी करने वाला) (ई भी),—कार लेखक, लिपिक, ज्ञ (वि०) जो लिख सकता है, व्याप्तः लिखने या नकल करने की कला,—फलकम् लिखने का पट्ट या तख्ता, शाला वह स्कूल जहाँ लिखना सिखाया जाय, सज्जा लिखने का सामान या उपकरण।

लिपिका [लिपि+कन्+टाप्] दे० 'लिपी'।

लिप्त (भू० क० कृ०) [लिप्+क्त] 1 लीपा हुआ, पोता हुआ, साना हुआ, ढका हुआ 2. दाग लगा, बिगड़ा हुआ, दूषित, मलिन 3 विषयुक्त, (बाण आदि) जहर में बुझाया हुआ 4 खाया हुआ 5 जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

लिप्तकः [लिप्त+कन्] जहर में बुझा तीर।

लिप्सा [लभ+सन् भावे अ] 1. प्राप्त करने की इच्छा, कामि० १।१२५ 2. अभिलाषा।

लिप्सु (वि०) [लभ्+सन्+उ] प्राप्त करने का इच्छुक।

लिपिः, -पी (स्त्री०) [लिप्+इन्, वा० पक्ष में ङ] दे० 'लिपि'।

लिपिकरः [लिपि करोति कृ+ट, पृषो० द्वितीयायाः अलुक्] लिपिक, लेखक, लिपिकार।

लिम्प् (तुदा० उभ० लिम्पति-ते, लिप्त) 1. लीपना, पोतना

सानना –लिम्पतीव तमोऽङ्गानि–मृच्छ० १।३४ 2 ढक देना, बिछा देना –शि० ३।४८ 3. दाग लगाना, दूषित करना, मलिन करना, कलंकित करना, कलुषित करना—य करोति स लिप्यते—पञ्च० ४।६४, न मां कर्माणि लिम्पन्ति –भग० ४।१४, १८।१७, मनु० १०।१०६ 4. प्रज्वलित करना, सुलगाना—तस्यालिप्तं शाकाग्नि स्वास्तं काष्ठमिव ज्वलन् –भट्टि० ६।२२, अनु–, लीपना, पोतना वपुरन्वलिप्त न बधू –शि०९।५१ १५ 2. ढक देना, फैलाना, घेर लेना रघु० १०।१०, शि० ७।७, अव–, लीपना, पोतना (कर्मवा०) फूल जाना घमंडी बनना, उन्नत होना, आ—, 1 लीपना पोतना –उत्तर० ३।३९, ऋतु० ६।१२ 2 दूषित करना, दाग लगाना, उप –, धब्बा लगाना, मलिन करना, भग० १३।३२, वि –, लीपना, पोतना, मलना, कु० ५।७९, भट्टि० ३।२०, १५।६, शि० १६।६२ ।

लिम्प [लिप् + श, मुम्] लेप, पोतना, मालिश ।

लिम्पट (वि०) [लम्पट, पृषो०] कामासक्त, विषयी, —ट. व्यभिचारी, दुश्चरित्र ।

लिम्पाक: [लिप्+आकन्, पृषो०] 1 नीबू या चकोतरे का वृक्ष 2 गंधा, कम् चकोतरा, नीबू ।

लिश् 1 (तुदा० पर० लिशति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 चोट पहुँचाना —दे० रिश् ।

II (दिवा० उभ० लिश्यति —ते) छोटा होना, घटना ।

लिष्ट (भू० क० कृ०) [लिश्–क्त] जो छोटा हो गया हो, घट गया हो या न्यून हो गया हो ।

लिष्व [लिष् + क्वन्] अभिनेता, नटक ।

लिह् (अदा० उभ० लेढि, लीढे, लीढ, इच्छा० लिलक्षति ते) 1 चाटना कपाले क्षारलेढि लक्षिन –काव्य० १९, भामि० १।१९, कि० ५।३८, शि० १।४० 2 चाट जाना, चबाना, घूंट-घूंट से पीना, लप-लप करके पीना मनु० २।९९, १००, अव—, 1 चाटना, लपलप करके पीना, थोड़ा थोड़ा करके चबाना –अदत्त्वालावणं रात्रमन —गंगा० ५०, वेणी० ३।५, भामि० १।१११ 2 चबाना, खाना दर्भैरर्धचिलीढै शि० १।७ मृच्छ० १।९, आ—, 1 चाटना, लपलप करके पीना 2 घायल करना, आघात पहुँचाना–सेनान्यमालीढमिवाग्रसैन्यं —रघु० २।३७ 3 (आँखों से) ग्रहण करना, देखना,–न यास्यामालीढा पुरः स्मरीया तव मनु.—गंगा० ३२, उद्—, चमकाना, घर्षण द्वारा चिकना बनाना, रगड़ना अधि शाणोल्लीढ – भर्तृ० २।४४, परि—, सब्—, चाटना–भट्टि० १३।४२ ।

ली 1 (श्या० पर० लयति) चिपकना, विघटित होना ।

II (क्रया० पर० लिनाति) 1. जुड़ जाना 2. चिपकना –प्राय 'वि' उपसर्ग के साथ ।

III (दिवा० आ० लीयते, लीन) 1 चिपकना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना, जुड़ जाना भामवि० ३।५ 2. भुजपाश में बांधना, आलिंगन करना 3. लेटना, विश्राम करना, टेक लेना, ठहरना, रहना, दुबकना, छिपना, लुकना (भृङ्गाङ्गना) लीयन्ते मुकुलान्तरेषु सनकै सव्रीतलज्जा इव –रत्न० १।२६, रघु० ३।९, शि० ६।१६, कु० १।१२, ७।२१, भट्टि० १८।१३, कि० ५।२६ 4 विघटित होना, पिघलना 5 चिपचिपा, लसलसा 6 लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त होना, मानवमनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लोला लीना० ६ 7 नष्ट होना लोप होना,– प्रेर० (लापयति ते) लाययति-ते, लीनयति-ते लालयति-ते) चिपलाना, विघटित करना, तरल बनाना, गलाना ('लापयते' रूप सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—जटाभिर्लापयते—पूजामभिगच्छति –सु० पा० १।३।७०), अभि—, 1 जुड़ना, चिपकना–रघु० ३।८ 2 ढक लेना, ऊपर फैला देना— पक्षादुत्क्षेपभ्रु-जतरुबल मण्डलेनाभिलीन मेघ० ३८, आ—,1 बस जाना, छिपना, दुबकना, विक्रम० २।२३, 2 जुड़ना, चिपकना—रघु० ४।५१, नि –, 1 चिपकना, जमे रहना, लेट जाना, आराम करना, बस जाना, उतर पड़ना निलिल्ये मूर्ध्नि मृधोऽस्य भट्टि० १४।७६, २।५ 2 दुबकना, छिपना, अपने आपको छिपा लेना, गुहास्वन्ये न्यलेषत भट्टि० १५।३२ निशि रहसि निलीय—गीत० २ 3 अपने आपको छिपा लेना (अपा० के साथ)—मातुर्निलीयते कृष्ण – सिद्धा० 4 मरना, नष्ट होना, प्र—, 1 लीन होना, विघटित होना, गल जाना –आत्मना कृतिना च त्वमात्मन्येव प्रलीयस–कु० २।१०, राज्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तमूलके भग० ८।१८, मनु० १।५४ 2. नष्ट होना, लोप होना 3 नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना, वि –, 1 जुड़ना, चिपकना, जमे रहना 2 विश्राम करना, बस जाना, उतर पड़ना—पुरोऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत शि० १।१२ 3. विगलित होना, पिघल जाना, लीन होना महावीर० ६।६०, ७।१४ 4. लोप होना, ओझल होना 5. नष्ट होना, सम् , 1 चिपकना, जुड़ना 2 लेट जाना, बस जाना, उतरना 3 दुबकना, छिपना 4 पिघलना ।

लीकार (स्त्री०) लीक, रेखा, दे० लिखार ।

लीढ (भू० क० कृ०) [लिह् + क्त] चाटा गया, चुसकी ली गई, चखा गया, खाया गया आदि०, दे० 'लिह्' ।

लीन (भू० क० कृ०) [ली + क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, चूसा हुआ 2 दुबकाया हुआ, छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 3 विश्राम करता हुआ, टेक लगाये हुए

4 पिघला हुआ, विगलित मा० ५।१० 5 पूर्णरूप से विलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ नद्य सागरे लीना भवन्ति 6 भक्त, छोड़ा हुआ 7 ओझल लुप्त (दे० ली)।

लीला [ली+क्विप् लिय लाति ला+क वा] 1 खेल, क्रीडा, विनोद, दिलबहलावा, आनन्द, मनोरञ्जन कलम यथो कन्दुकलीलयापि या कु० ५।१९ (प्राय समास के प्रथमखण्ड के रूप में प्रयुक्त) लीला कमल, लीलाशुक आदि 2 प्रीतिविषयक मनोविनोद, स्वेच्छाचारिता, रतिक्रीडा, केलिक्रीडा—उत्सृष्टलीलागति रघु० ७।७, ८।२२, ५।७०, क्षुभ्यन्ति प्रसभमहो विनाऽपि हेतोर्लीलाभि किमु सति कारणे रमण्य —शि० ८।२४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इस अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है —अप्राप्तबल्लभसमागमनायिकाया सख्या पुरोऽत्र निजचित्तविनोदहेतुरुक्त्या । आलापवेशगतिहास्य विलोकनाद्यै. प्राणेश्वरानुकृतिमाकलयन्ति लीलाम् ॥) 3 अनायास, सुविधा, क्रीडामात्र, बच्चों का खेल —लीलया वधान 'आसानी से मार डाला' 4 दर्शन, आभास, हावभाव, छवि -य सगति प्राप्तपिनाकिलील —रघु० ६।७२, 'पिनाकी की भाति दिखलाई देने वाला' 5 सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मुहुरवलोकित मण्डनलीला—गीत० ६, रघु० ६।१, १६।७१ 6 बहाना, छद्मवेश, ढोंग, बनावट यथा लीलामनुष्य, लीलानट । सम०—अ (आ) गार:, —रम्, —गृहम्, —वेश्म्, —वेश्मन् (नपु०) आनन्दभवन रघु० ८।९५, अङ्ग (वि०) ललित अगों वाला, —अब्जम् अम्बुजम्, —अरविन्दम्, —कमलम्, —तामरसम्, —पद्मम् 'कमल-खिलौना' कमल का फूल जो खिलौने की भाति हाथ में लिया हुआ हो - रघु० ६।१३, मेघ० ७५, कु० ६।८६, अवतार: (विष्णु का) पृथ्वी पर मनोरञ्जन के लिए उतरना, उद्यानम् 1 प्रमोदवन 2 देववन, इन्द्र का स्वर्ग, कलह: 'क्रीडामय कलह' नु० प्रणय कलह, —चतुर (वि०) विशुद्ध मनोहर, -मनुष्य: कपटी मनुष्य, छद्मवेशी, —मात्रम् क्रीडामात्र, केवल खेल, बच्चों का खेल, अनायास, - रति: (स्त्री०) मनोविनोद, क्रीडा, — वापी आनन्दबावडी, —शुक: आनन्द के लिए पाला हुआ तोता ।

लीलायितम् [लीला+क्यच्+क्त] खेल, क्रीडा, मनोरञ्जन, आनन्द ।

लीलावत् (वि०) [लीला+मतुप्, मस्य व] क्रीडामय, खिलाड़ी, ती 1. मनोहर या लास्यवती स्त्री 2 शृगारप्रिय या स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 दुर्गा का नाम ।

लुक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है ।

लुञ्च् (म्वा० पर० लुञ्चति, लुञ्चित) 1 तोड़ना, खींचना, छीलना, काटना 2 फाड़ देना, उखाड़ देना, खींच डालना ।

लुञ्च,-चनम् [लुञ्च्+घञ्, ल्युट् वा] छीलना, उखाड़ना ।

लुञ्चित (भू० क० कृ०) [लुञ्च्+क्त] 1 छीला हुआ 2 तोड़ा हुआ, उखाड़ा हुआ, फाड़ा हुआ ।

लुट् । (म्वा० आ० लोटते) 1 मुकाबला करना, पीछे धकेलना, विरोध करना 2 चमकना 3 कष्ट उठाना, ॥ (चुरा० उभ० लोटयति-ते) 1 बोलना 2 चमकना ॥। (म्वा० दिवा० पर० लोटति, लुटयति) 1 लोटना, जमीन पर लुढ़कना तु० लुठ् 2 सबद्ध होना, 3 अपहरण करना, लूटना, खसोटना (सभवत 'लुण्ठ्' या 'लुण्ट्')।

लुठ् । (म्वा० पर० लोठति) प्रहार करना, पछाड़ देना ।
॥ (म्वा० आ० लोठते) 1 भूमि पर लोटना, इधर उधर करवटें बदलना, गड़मुड़ी खाना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना—मणिर्लुठति पादेषु काच शिरसि धार्यते हि० २।६८ लुठति न मा हिमकरकिरणेन - गीत० ७ हारोऽय हरिणाक्षीणा लुठति स्तनमण्डले अमरु १००, भट्टि० १४।५४ मामि० २।१७६ प्र—, वि- लोटना, लुढ़कना, आदि, भट्टि० ५।१०८ ।

लुठनम् [लुठ्+ल्युट्] लोटना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना ।

लुठित (भू० क० कृ०) [लुठ्+क्त] लोटा हुआ, लोटता हुआ या जमीन पर लुढ़कता हुआ ।

लुड् । (म्वा० पर० लोडति) हरकत देना, क्षुब्ध करना, विलोना, आन्दोलित करना—प्रेर० (लोडयति ते) हरकत करना, विलोना, विलोडित करना (इसी अर्थ में 'वि' उपसर्ग के साथ प्रयुक्त)—शि० ११।८, १९।९९ ।
॥ (तुदा० पर० लुडति) 1 जुड़ना, चिपकना 2 ढकना ।

लुण्ट् । (म्वा० पर० लुण्टति) 1 जाना 2 चुराना, लूटना, खसोटना 3 लँगड़ा या विकलाग होना 4 आलसी या सुस्त होना ।
॥ (म्वा० पर०, चुरा० उभ० लुण्टयति-ते) 1 लूटना, खसोटना, चुराना 2 अदला करना, बदला करना ।

लुण्टाक (वि०) (स्त्री०—की) [लुण्ट्+घाकन्] चोरी करने वाला (आलं० से भी) लुटेरा, डाकू—तत्कालना हृदयलुण्टाकी परिष्वङ्गकथामपि निवारयति काव्य० १०, या सितलुण्टाक केश लुण्टाकता बालरा० ५।

लुण्ड् (म्वा० पर० लुण्डित) 1. जाना 2 हरकत देना, क्षुब्ध करना, गति देना 3 सुस्त होना 4. लँगड़ा होना 5 लूटना, खसोटना 6. मुकाबला करना ।

लुण्टक [लुण्ट् + ण्वुल्] लुटेरा, डाकू, चोर।

लुण्ठनम् [लुण्ठ् + ल्युट्] खसोटना, लूटना, चुराना, यदस्य देव्या इव लुण्ठनाय काव्यावधीरा प्रगुणीभवन्ति विक्रमाङ्क० १।११।

लुण्ठा [लुण्ठ् + अ + टाप्] 1 लूट, खसोट 2 लूटक-पूटक।

लुण्ठाक [लुण्ठ् + घञ्] 1 लुटेरा 2 कौवा।

लुण्ठि, ष्टी (स्त्री०) [लुण्ठ् + इन्, लुण्टि + ङीष्] खसोटना, लूटना, डकैती डालना।

लुण्ठ् [चुरा० उभ० लुण्ठयति-ते] खसोटना, लूटना डकैती डालना।

लुण्ठिका [लुण्ठ् + इन् + कन् + टाप्] 1 गोल पिंडी, गेंद 2 उचित चाल चलन।

लुण्ठी [लुण्ठि + ङीष्] उचित या शोभन चालचलन।

लुत्व् (स्वा० पर० लुन्वति) 1 प्रहार करना, चोट पहुचाना, मार डालना 2 भुगतना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना।

लुप् (दिवा० पर० लुप्यति) 1 घबड़ा देना, विस्मित करना 2 विस्मित हो जाना या घबड़ा जाना।

लुप् (तुदा० उभ० लुम्पति-ते, लुपति) 1 तोड़ना, भंग करना, काट देना, नष्ट करना अतिक्रम्य करना अनुभव करना मनसि लुम्पसि नै० ४।१०५ 2 अपहरण करना, वञ्चित करना हटाना, लूटना 3 छीन लेना, झपट्टा मार लेना 4 लोप करना, दबा देना, ओझल करना कर्मवा० (लुप्यते) 1 भंग होना टूट जाना 2 लुप्त होना नष्ट होना, ओझल या लोप होना, (स्वा० से) प्रेर० (लोपयति-ते) 1 तोड़ना, भंग करना, उल्लंघन करना, अपकार करना 2 भूल जाना उपेक्षा करना वियुक्त करना रघु० १२।९, इच्छा० (लुलुप्सति, लोपिषति)—यद्यन्त लोलुप्यते या लोलुप्यति अव-, प्र-, अपहरण करना, नष्ट करना वि- 1 तोड़ देना फोड़ना 2 छीन लेना खसोटना लूट लेना उठा कर मार डालना 3 विनाश करना 4 नष्ट करना बर्बाद करना, ओझल करना—प्रियकथा-विलुप्तदर्शनम् कु० ४।०, 'मरा के लिए ओझल हो गया' उत्तर० ३।२८ 5 पोंछ देना मिटा देना।

लुप्त (भू० क० कृ०) [लुप् + क्त] 1 टूटा हुआ, भग्न, क्षतिग्रस्त, नष्ट 2 खोया हुआ, वञ्चित रघु० १४।५६ 3 लूटा गया, ठगा गया 4 हटाया गया, लोप किया गया, ओझल या लोप हुआ (व्या० में) 5 भूल से रहा हुआ, उपेक्षित 6 व्यवहारातीत, अप्रयुक्त अप्रचलित उत्तर ३।३३, दे० लुप् पद चुराई हुई सम्पत्ति, लूट का माल। सम० उपमा वह उपमा या न्यून पद उपमा अर्थात् वह उपमा जिसमें उपमा के आवश्यक चारों अंगों में से एक, दो, अथवा तीन पद लुप्त हो गये हों—दे० काव्य० १० उपमा के अन्तर्गत,—पद (वि) न्यून पदों से युक्त, पिंडोदक-क्रिया (वि०) श्राद्धकर्म से विरहित,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है, श्रद्धाहीन, विश्वास-घाती, प्रतिज्ञ (वि०) तर्कनाशक्ति से हीन।

लुब्ध (भू० क० कृ०) [लुभ् + क्त] 1. लालची, लोभी, लोलुप 2 इच्छुक, लालायित, उत्सुक यथा धनलुब्ध, मांसलुब्ध और गुणलुब्ध आदि में, आ: 1 शिकारी 2 स्वेच्छाचारी, लम्पट।

लुब्धक: [लुब्ध + कन्] 1 शिकारी, बहेलिया, मृगयानिरतं लुब्धकं सलीलधनुर्विहितवृत्तीनाम्, लुब्धक धीवर-पिशुना निष्कारणवैरिणो जगति भर्तृ० २।६१ 2 लोभी या लालची पुरुष 3 स्वेच्छाचारी 4 उत्तरी गोलार्द्ध का एक तेजस्वी तारा।

लुभ् (दिवा० पर० लुभ्यति, लुब्ध) 1 लालच करना, लालायित होना, उत्सुक होना (सप्त० या अधि० के साथ) तथापि रामो लुलुभे मृगाय 2 रिझाना फुसलाना 3 घबरा जाना, विस्मित होना, भटकना—प्रेर० (लोभयति-ते) 1 ललचाना, लालायित करना, उत्कण्ठित करना—पुष्पैर्बहु लोभयन् सृष्टि० ५।४८ 2 वासना को उत्तेजित करना 3 फुसलाना, बहकाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना—लोभ्यमानमपि स्वपाशुकैर्मेखलाकुसुमदर्शनिर्तम्बिभि रघु० १९।२६ 4 अस्तव्यस्त करना, अव्यवस्थित करना, व्याकुल करना, इ , ललचना या इच्छुक होना (प्रेर०) रिझाना, आकृष्ट करना, फुसलाना, वि—, अव्यवस्थित या अस्तव्यस्त होना भट्टि० ९।४०, (प्रेर०) रिझाना फुसलाना, आकृष्ट करना स्मर यावदस्य विलोभ्यसे हृदि कु० ४।२०, अज्ञातास्त्रमधिक व्यलोभयत् (मृगं)—रघु० १९।१२ 2 बहलाना, मनोरंजन करना, रिझाना क्व दृष्टि विलोभयामि—शा० ६।

लुभ् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लुम्बति, लुम्बयति ते) सताना, तंग करना।

लुम्बिका [लुम्ब् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

लुल् (भ्वा० पर० लोलति लुलित) 1 लोटना, इधर-उधर लुढ़कना, इधर उधर घूमना, करवटें बदलना—लुलित-दृष्टि मदादिव चक्रवाके—कि० १८।६, शि० ३।७२, १०।२६ 2 हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना, कम्पायमान करना, अव्यवस्थित करना 3 बजाना, कुचलना —दे० नी० 'लुलित,' प्रेर०(लोलयति ते) हिलाना, चालित करना शि० ९।५, आ—, बरा छूना मालवि० २।७, वि—, 1 इधर उधर चक्कर काटना 2. हिला देना, कम्पायमान करना 3 अव्यवस्थित करना, अस्तव्यस्त करना, (बालों को) छितराना।

लुलायः, लुलाय [लुल् बलवर्धे क, तमाप्नोति अण्] भैंसा, —खुरविधुरधरित्री चित्रकायो लुलाय ।

लुलित (भू० क० कृ०) [लुल्+क्त] 1 हिलाया हुआ, करवट बदला हुआ, इधर उधर लुढ़काया हुआ, कम्पायमान, लहराता हुआ—सुरालयप्राप्तिनिमित्तमन्यस्त्रैलोक्यलीलुलितं दधन्दे रघु० १६।३४, ५९ 2 अशान्त किया हुआ, दुःखित-लुलितमकरन्दो मधुकरैः वेणी० १।१ 3 अव्यवस्थित, (बाल) छितराये हुए ऋतु० ४।१४ 4 दबाया हुआ, कुचला हुआ, क्षतिग्रस्त शि० ३।२७ 5 दबाने वाला, मर्मस्पर्शी,- अनतिलुलितज्यातातांक (कनकवलयम्)—शि० ३।१४ 6 थका हुआ, झुका हुआ—अलसलुलितभुग्नान्यस्वसजातखेदात् (अंगकानि) उत्तर० १।२४, मा० १।१५ ३।६ 7 प्राञ्जल, सुन्दर वन लुलितपल्लवम् भट्टि० ९।५६ ।

लुष् (स्वा० पर० लोषति) दे० 'लुष्' ।

लुषाकः [रुषे अकच् नित् लुश् च] मदोन्मत्त हाथी ।

लुह् (स्वा० पर० लोहति) लालच करना, उत्सुक होना, लालायित होना । तु० 'लुभ्' ।

लू (क्रया० उभ० लुनाति लुनीते, लून—प्रेर० लवयति—ते, इच्छा० लुलूषति ते) 1 काटना, कतरना, चुटकी से एकट्ठा करना, वियुक्त करना, विभक्त करना, तोड़ना, लुनाई करना, (फूल) चुनना—शरासनज्यामलुनाद् विडौजसम् रघु० ३।५९, ७।४५, १२।४३—पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्—शि० १।५१, कीर्तिर्न कांकरिव लूनपक्षा पंच० १।१८७, कु० ३।६१, मेघ० १।८० 2 काट देना, पूर्णतः नष्ट कर देना विध्वस्त करना—लोकानलावोद्विजिताश्च तस्य—भट्टि० २।५३, आ—, आहिस्ता से उखाड़ना—कु० २।४१, वि—, काटना, छाँटना, उखाड़ देना—उत्तर० ३।५ ।

लूता [लू+तक्+टाप्] 1 मकड़ी 2 चींटी । सम० -तन्तु- मकड़ी का जाल, -दष्टकः 1 लंगूर 2 एक प्रकार का चमेली का फूल ।

लूतिका [लूता+कन्+टाप्, इत्वम्] मकड़ी ।

लून (भू० क० कृ०) [लू+क्त] 1 काटा गया, छाँटा गया, वियुक्त किया गया, काट दिया गया 2 तोड़ा गया, (फूल आदि) चुने गये 3 नष्ट किया हुआ 4 कर्तन किया गया, कुतरा गया 5 घायल किया गया,—नम् पूँछ ।

लूनम् [लू+मक्] पूँछ । सम० विष, 'लहरीली पूँछ वाला वह जानवर जो अपनी पूँछ से रक्त मारता है' ।

लूष् (स्वा० पर० लूषति) 1 चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना 2 लूटना, डकैती डालना, चुराना ।

लेख [लिख्+घञ्] 1 लिखावट, दस्तावेज, (किसी प्रकार का) लिखा हुआ दस्तावेज पत्र लेखोऽयं न ममेति नोत्तरमिदं मुद्रा मदीया यतः मुद्रा० ५।१८, निर्धारितेऽर्थे लेखेन बलवत्ता खलु कारिताम् शि० २।७०, अनघलेख- कु० १।७, मन्मथलेख शि० ३।२६ 2 देव, सुर । सम० अधिकारिन् (पु०) पत्र लिखने का कार्य भारवाहक, (राजा का) सचिव, -अर्हं एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष, -अक्षर छन्द का नामान्तर, -पत्रम्, -पत्रिका 1 पत्र में लिखी कविता, पत्र, लेख या चिट्ठी 2 लेख या पट्टा दस्तावेज (विधि), संदेश लिखा हुआ संदेशा, -हारिन् (पु०) पत्रवाहक ।

लेखकः [लिख्+ण्वुल्] 1 लिखने वाला लिपिक, लिपिकार 2 चितेरा । सम० दोष,- प्रमाद, लिपिक की भूल-चूक, लिपिकार की त्रुटि ।

लेखन (वि०) (स्त्री०-नी) [लिख्+ल्युट्] लिखने वाला लिपिक, लिपिकार, चितेरा, खरचने वाला आदि,—नः एक प्रकार का नरकुल जिसकी कलम बनती है,—नम् 1 लिखना प्रतिलिपि करना 2 खरचना, छोड़ना 3 चलाना, स्पर्श करना 4 पतला करना, दूध या दुहना करना 5 चाकपट (लिखने के लिए), -नी 1 कलम लिखने के लिए नरकुल, नरकुल की कलम 2 खड़िया । सम० -साधनम् लिखने की सामग्री या उपकरण ।

लेखनिक [लेखन+ठन्] पत्रवाहक ।

लेखिनी [लेख्+ल्युट्+ङीप्] 1 कलम 2 खड़िया ।

लेखा [लिख्+अ+टाप्] 1 रेखा, धारी, लकीर अक्षिरेखा वाग्यतलेखयोर्यो कु० १।४७ कु० ३।१० [illegible] कि० १६।२, मेघ० ६८, विक्रमो० 2 दरार, खड्डा आदि 2 लकीर सीधा या टेढ़ा चिह्न चोटी धारा 3 लिखावट, रेखांकन, आलेख्य १।१ - पाण्डित्यशालिषु लिपेः प्रतिभेव सा कस्य न ८।३५, 4. दूज का चाँद, चाँद की एक [illegible] नाटकमर्मावं लेखा कु० १।५५, २।३८ वि० [illegible] 5 आकृति, समानता, छाप, निशान उपमिति भवप्रपंचकथा [illegible] कि० ५।८० 6 गाय, बिल्ली [illegible] झालर 7 चोटी ।

लेख्य (वि०) [लिख्+ण्यत्] अंकित किये जाने के योग्य लिखे जाने योग्य रंग भरे जाने योग्य, खरचने योग्य, -ख्यम् 1 लिखने की क्रिया 2 लिखना प्रति लिपि करना 3 लेख पत्र दस्तावेज, हस्ताक्षर 4 [illegible] लेख 5 चित्रण, रेखांकन 6 चित्रित आकृति [illegible]

-आरूढ, -स्थ (वि०) लिख लिया गया लिख कर रख्खा गया, -स्थ (वि०) चित्रित लिखा हुआ

-चूर्णिका कूची, तूलिका, **-पत्रम्, -पत्रकम्** पत्र दस्तावेज 2 ताड़ का पत्ता, **-प्रकाशः** दस्तावेज

-स्थानम् लिखने का स्थान ।

लेखडम् (नपु०) खिड़ा, मल ।

लेखः,–खम् (पुं०, नपुं०) आदू ।

लेप् (स्वा० आ० लेपते) 1. डालना, छिलना-बुलना 2 पूजा करना ।

लेपः [लिप्+घञ्] 1. लीपना, पोतना, मालिश करना –याज्ञ० १।१८८ 2 उबटन, मल्हम, अनुलेप 3 पलस्तर करना (सफ़ेदी करना या चूना पोतना) 4. हाथों को पोछना 3 हाथों में चिपके भोजन का अवशेष) जब कि श्राद्ध में सबसे पहले तीन पुरुषाओं पितृ, पितामह और प्रपितामह–को श्राद्ध में आहुतियाँ प्रस्तुत करने के पश्चात्, (प्रपितामह के पश्चात्, यह पोछन तीन पूर्वपुरुषों को प्रस्तुत की जाती है अर्थात् चौथी पाचवीं और छठी पीढ़ी के पितृतुल्य पूर्वपुरुषों की)–लेपभाजश्चत्वारस्त्रयो पिण्डान्वाहिन 5 पत्थर, क्षार, दूषण, कालुष्य 6 नैतिक अपवित्रता, पाप 7 भोजन । सम० कर: पलस्तर करने वाला, सफेदी करने वाला, दाँत की चिनाई करने वाला, –भागिन्, भुज् (पुं०) चौथी, पाचवीं और छठी पीढ़ी के पितृसंबंधी पूर्वपुरुष मनु० ४।२१६ ।

लेपक: [लिप्+ण्वुल्] पलस्तर करने वाला, राज, सफेदी करने वाला ।

लेपन [लिप्+ल्युट्] धूप, लोबान,–नम् 1 मालिश करना पोतना, लीपना याज्ञ० १।१८८ 2 पलस्तर, मल्हम 3 चूना, सफेदी 4 क्षार, गोटाई ।

लेप्य (वि०) [लिप्+ण्यत्] लीपे या पोते जाने के योग्य, –प्यम् 1 लीपना पोतना 2. डालना, मूर्ति बनाना, आवर्त या प्रतिकृति बनाना । सम०–हस्त (पुं०) 1 प्रतिमाकार 2 ईंट का रद्दा लगाने वाला, (स्त्री) वह स्त्री जिसने उबटन का लेप किया तथा लेपादिक से शरीर सुवासित किया हुआ है ।

लेप्यमयी [लेप्य+मयट्+ङीप्] मूर्तिका पुतली ।

लेलायमाना [लेला इवाचरन्ति क्यच्+शानच्+टाप्] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

लेलिह: [लिह्+यङ्, लुक् द्विर्वादि, सन् अच्] सर्प, साँप ।

लेलिहान [लिह्+यङ्, लुक्, द्विर्वादि, सन् शानच्] 1 सर्प, साँप 2 शिव का विशेषण ।

लेश: [लिश्+घञ्] 1 थोड़ा सा टुकड़ा, अल्प क्षण, अणु अत्यल्प सूक्ष्म मात्रा, कलेवा' पाठा० स्वेद)–लेशैरनिष्ठम् –शि० २।४, अमवारिलेशैः –कु० ३।३८, इसी प्रकार भक्ति°, गुण° आदि 2 समय की मात्रा (दो कलाओं के बराबर 3 (अलं० में) एक प्रकार का अलंकार जिस में इष्ट का अनिष्ट के रूप में तथा अनिष्ट का इष्ट के रूप में वर्णन विद्यमान होता है, रस० में इसको परिभाषा गुणस्यानिष्टसाधनतया दोषत्वेन दोषस्येष्टसाधनतया गुणत्वेन च वर्णन लेश:, उदाहरणों के लिए दे० तत्स्वामीय (प्रतीत होता है कि मम्मट ने इस अलंकार को 'विशेष' के साथ मिलाया है–दे० काव्य० १०, 'विशेष' के नीचे तथा भाष्य) । सम०–व्यक्त (वि०) सुझावभाव, संकेतित, वक्रोक्ति द्वारा सूचित ।

लेश्या (स्त्री०) प्रकाश, रोशनी ।

लेष्टु: [लिष्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा । सम०–भेदनः वह उपकरण जिससे ढेले फोड़े जाते हैं ।

लैलिक: (पुं०) गजारोही, हाथी पर चढ़ने वाला ।

लेह: [लिह्+घञ्] 1. चाटना, आचमन, जैसा कि 'मधुनो लेह' –भट्टि० ६।८२ में 2. चखना 3 चाट, चटनी 4 भोज्य पदार्थ ।

लेहनम् [लिह्+ल्युट्] चाटना, जिह्वा से आचमन करना ।

लेहिका: [लिह्+ण्वुल्] सुहागा ।

लेह्य (वि०) [लिह्+ण्यत्] चाटे जाने या चाट कर खाये जाने के योग्य, औष से खाकर पीने के योग्य,–ह्यम् 1 कोई भी चाटकर खाई जाने वाली वस्तु (जैसे कि कोई भोज्यपदार्थ), चाट 2 भोजन,

लैङ्गम् [लिङ्गस्य इदम्–लिङ्ग+अण्] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम ।

लैङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) [लिङ्ग+ठक्] 1. किसी चिह्न या निशान पर निर्भर या तत्संबंधी 2. अनुमित, –क: प्रतिमाकार, मूर्तिकार ।

लोक् (स्वा० आ० लोकते, लोकित) देखना, नजर डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, अव –, देखना, निगाह डालना –लोलुकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् –भर्तृ० २।९३, आ–, देखना, निगाह डालना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना – भट्टि० २।२४ ।

॥ (चुरा० उभ० या प्रेर० लोकयति–ते, लोकित) 1 देखना, निगाह डालनी, निहारना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 जानना, आलंकार होना 3 चमकना 4. बोलना, अव –, 1 देखना, निहारना, निगाह डालना – परिक्रम्यावलोक्य (नाटकों में) 2. मालूम करना, जानना, निरीक्षण करना—अवलोकयामि किमदश्चिष्ट स्वजन्या –शा० ४ 3 परखना, मनन करना, विचार करना—कु० ८।५०, रघु० ८।३४, आ –, 1 देखना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निहारना, निगाह डालना 2 ख्याल करना, विचार करना, ध्यान देना गृणन्निह आत्मन्यालमालोकयात्म. – भर्तृ० ३।६६ 3 जानना, मालूम करना 4. अभिवादन करना, बधाई देना, वि –, 1 देखना, निहारना, निगाह डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना त्रिलोक्या वृद्धोक्षमधिष्ठितं स्वया महाजन स्वैरयुजो भविष्यति –कु० ५।७०, रघु० २।११, ६।५९ 2 तलाश करना, ढूंढना ।

लोक: [लोक्यतेऽसौ लोक्+घञ्] 1 दुनिया, संसार, विश्व का एक प्रभाग (स्थूलरूप यदि कहा जाय तो

लोक तीन हैं - स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक, अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं, सात तो पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमशः एक दूसरे के ऊपर अर्थात् 'भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, और सत्य या ब्रह्मलोक, तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के नीचे—अर्थात् अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल) 2. भूलोक, पृथ्वी इहलोके 'इस संसार में' (विप० परत्र) 3 मानव जाति, मनुष्य जाति, मनुष्य— लोकातिग, लोकोत्तर इत्यादि 4 प्रजा, राष्ट्र के व्यक्ति (विप० राजा) स्वमुख-निरभिलाष जिह्वसे लोकहेतो शि० ५।७, रघु० ४।८ 5. समुदाय, समूह, समिति आकृष्टलीलान् सरलोकपालान् रघु० ६।१, शशाम तेज अभिपाल-लोकः - ७।३ 6 क्षेत्र, इलाका, जिला प्रान्त 7. सामान्य जीवन, (संसार का) सामान्य व्यवहार —लोकवत् लीलाकैवल्यम् ब्रह्म० २।१।३३, यथा लोके कस्यचिदाप्तैषणस्य राज्ञ शारी० (इसी ग्रन्थ के और अन्य स्थल) 8 सामान्य लोक प्रचलन (विप० वैदिक प्रयोग या आम्नाय—वेदोक्ता वैदिका शब्दा सिद्धा लोकाच्च लौकिका, प्रियतद्धिता दाक्षिणात्या, यथा लोके वेदे चेति प्रयोगलक्ष्ये यथा लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुक्तजने महा० (और अन्य अनेक स्थानों पर)—अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम —भग० १५।१८ 9 दृष्टि, दर्शन 10 'सात' या चौदह की संख्या। सम० अतिग (वि०) असाधारण, अति-प्राकृतिक, —अतिशय (वि०) संसार के लिए श्रेष्ठ, असाधारण, अधिक (वि०) असाधारण, असामान्य, सर्वं पंडितराजराजिलिलकेनाकारि लोकाधिकम् —भामि० ४।४४, वि० २।४३, अधिप: 1 राजा 2 सुर, देव, —अधिपति: संसार का स्वामी,—अनुराग: 'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वप्रेम, साधारण हितैषिता, परोपकार, अन्तरम् 'परलोक' दूसरी दुनिया, भावी जीवन रघु० १।६९, ६।४५, लोकान्तर गम्, —प्राप्, मरना, अपवाद: सब लोगों में बदनामी, सार्वजनिक निन्दा लोकापवादो बलवान्नतो मे रघु० १४।४०, —अभ्युदय: लोककल्याण,—अयन: नारायण का सामान्तर, अलोक: एक काल्पनिक पहाड़ जो इस पृथ्वी को घेरे हुए है और निर्मल जल के उस समुद्र से परे स्थित है जिसने सात महाद्वीपों में से अन्तिम द्वीप को घेर रक्खा है, इस लोकालोक से परे घोर अन्धकार है, और इस ओर प्रकाश है इस प्रकार यह पहाड़ इस दृश्यमान संसार को अन्धकार के प्रदेश से विभक्त करता है- प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचल - रघु० १।६८, (आगे की व्याख्या के लिए दे० मा० १०।७९ पर डा० भाण्डारकर का नोट), (कं.) दृश्यमान और अदृष्ट लोक, आचार सामान्य प्रचलन, सार्वजनिक या साधारण प्रथा, लोकव्यवहार, आत्मन् (पु०) विश्व की आत्मा, आदि. 1 संसार का आरंभ 2 संसार का रचयिता,—आयत (वि०) नास्तिकतासंबंधी, अनात्मवाद संबंधी, (—त.) भौतिकवादी, नास्तिक, चार्वाक दर्शन का अनुयायी,(तम्) भौतिकवाद नास्तिकता, (इसके वर्णन को सर्वदर्शनसंग्रह के प्रथम अध्याय में देखिये).—आयतिक नास्तिक, अनात्म-वादी, —ईश. 1. राजा (संसार का प्रभु) 2 ब्रह्मा 3 परम 'उचित' (स्त्री०) 1 कहावत, लोकोक्ति 2 सामान्य चर्चा, लोकमत उत्तर (वि०) असाधारण असामान्य, अप्रचलित लोकोत्तरा च कृति मालवि० १।६१, उत्तर० २।७, (र) राजा, एकला स्वर्ग की इच्छा, कण्टक कष्ट देने वाला या दुष्ट पुरुष, मानवजाति का अभिशाप द० कण्टक, कथा सर्वप्रिय कहानी, कर्तृ, कृत् (पु०) संसार का रचयिता, गाथा परम्परा से लोगों में गाया जाने वाला गान, चक्षुस् (नपु०) सूर्य, चारित्रम् लोकव्यवहार, जननी लक्ष्मी का विशेषण जित् (पु०) 1 बुद्ध का विशेषण 2 संसार का विजेता, —ज्ञ (वि०) संसार को जानने वाला, ज्येष्ठ बुद्ध का विशेषण,—तत्त्वम् मनुष्यजाति का ज्ञान, तन्त्रम् जनतन्त्र, तुषार: कपूर, त्रयम्, त्रयी सामूहिक रूप में तीनों लोक,- उत्सादितलोकत्रयकण्टकोऽपि रघु० १४।३२, द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा, -धातु संसार का विशेष प्रकार का विभाजन, धातृ (पु०) शिव का विशेषण, नाथ: 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3 शिव 4 राजा, प्रभु 5 बुद्ध, नेतृ (पु०) शिव का विशेषण —पः, पाल दिक्पाल० लक्षितोमिमयं तमसः भर्ता मघवा इदमुवाच सलोकपालः विक्रम० २।१८, रघु० २।३५, २।८९, १३।३८, (लोक पाल गिनने में आठ हैं -दे० अष्ट दिक्पाल) 2 राजा, प्रभु,—पंक्ति (स्त्री०) मनुष्यजाति का आदर, साधारण आदरशीलता, पति: 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 राजा, प्रभु,—पद्धति, पद्धति (स्त्री०) साधारण व्यवहार, दुनिया का तरीका,—पितामह ब्रह्मा का विशेषण,—प्रकाश: सूर्य,—प्रवाद: किंवदन्ती अफवाह, सर्वसाधारण में प्रचलित बात, प्रसिद्ध (वि०) सुज्ञात, विश्वविख्यात,—बन्धु,—बान्धव सूर्य,—बाह्य, बाह्य (वि०) 1 समाज से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज 2 दुनिया से भिन्न, अनोखा (—ह्य:) जातिच्युत व्यक्ति, मर्यादा मानी हुई या प्रचलित प्रथा, भातृ (स्त्री०) लक्ष्मी का

विशेषण, आर्षः लोकसमत प्रथा,—यात्रा 1 दुनिया के मामले, लौकिक जीवनचर्या, लोकव्यवहार—एव किलेय लोकयात्रा महाबी० ७, यावदय ससारस्तावत्स्थितिर्द्वयेय लोकयात्रा - वेणी० ३ 2 सासारिक अस्तित्व, जीवनचर्या मा० ४ 3 आजीविका, वृत्ति, —रक्ष राजा, प्रभु, —रञ्जनम् जनता को सतुष्ट करना, सर्वप्रियता, —वः जनश्रुति, सार्वजनिक चर्चा, लोकनम् सूर्य —वचनम् सार्वजनिक किंवदन्ती, अफवाह,—वाद किंवदन्ती, सामान्य चर्चा, सार्वजनिक अफवाह—श्री लोकवादश्रवणादहमी —रघु० १४।६१,—वार्ता किंवदन्ती, अफवाह, विद्विष्ट (वि०) जिससे सब लोग घृणा करते हो, जिसे लोग पसद न करते हो, विधि 1 कार्य विधि का प्रकार, लोक में प्रचलित प्रक्रिया 2 ससार का रचयिता, विश्रुत (वि०) दूर दूरतक मशहूर, अतिविख्यात, प्रसिद्ध यशस्वी,—वृत्तम् 1 लोक व्यवहार, ससार में प्रचलित प्रथा 2 इधर उधर की बातें, गपशप, वृत्तान्तः, व्यवहार 1 लोकाचार, लोकरीति, साधारण प्रथा—श० ५, 2 घटनाक्रम,—श्रुतिः (स्त्री०) 1 जनश्रुति 2 विश्वविख्यात कीर्ति, संकरः ससार की साधारण अव्यवस्था,—संग्रहः 1. समस्त विश्व, 2 लोककल्याण 3 लोगो की भलाई चाहना,—सारिन् (पु०) 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 अग्नि —सिद्ध (वि०) 1 लोगो में प्रचलित, रिवाजी, प्रचागत 2 लोक या समाज द्वारा स्वीकृत,—स्थितिः (स्त्री०) 1 विश्व का अस्तित्व या सचालन, सासारिक अस्तित्व 2 विश्वनियम,—हास्य (वि०) ससार द्वारा उपहसित, उपहसित, लोकनिन्दित, हित (वि०) मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी, (तम्) जनसाधारण का कल्याण।

लोकनम् [लोक् + ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निहारना।

लोकम्पृण (वि०) [लोक + पृण् + क, मुमागम] ससार में व्याप्त या ससार को भरनेवाला, लोकम्पृणं परिस्फीतं परिपूरितस्य काश्मीरजस्य कटुताऽपि नितान्तरम्या —भामि० १।३०।

लोक् (स्वा० आ० लोकते) देखना, निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निरीक्षण करना :: (चुरा० उभ० या प्रेर० लोकयति-ते) दिखलाना, आ-, 1. देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना, सोचना आलोकयन्तो विस्तारमस्यमा दक्षिणोदधेः —भट्टि० ७।४०।, परि० उभ० लोकयति-ते) 1 बोलना 2 चमकना।

लोकम् [लोक् + अच्] आँसू।

लोकः [लोक् + घञ्] 1 मूर्ख पुरुष 2 आँख की पुतली 3 दीपक की कालिख, काजल 4 एक प्रकार का कान का कुंडल 5 काला या नीला वस्त्रखंड 6. धनुष की डोरी 7 स्त्रियों द्वारा मस्तक पर धारण किया जानेवाला आभूषण, टीका 8 मांसपिंड 9. सांप की केंचुली 10 छुरीदार बरछी 11 माँ जिसमें छुरियाँ पड़ी हैं 12 केले का पौधा।

लोकनम् [लोक् + ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि, दर्शन 2 आँख —लोपान्मासात् गमय धनुरो लोचने नीलयित्वा—मेघ० ११०। यम० लोचनः,—वः, आर्षः दृष्टि परास, दृष्टिक्षेत्र।

लोट् (स्वा० पर० लोटति) पागल या मूर्ख होना।

लोटः [लुट् + घञ्] भूमि पर लोटना, लुढ़कना।

लोड् (स्वा० पर० लोडति) पागल या मूर्ख होना।

लोडनम् [लोड् + ल्युट्] अशान्त करना, उद्विग्न करना, आलोडित करना।

लोडारः [लवण + ऋ + अण्, पृषो०] नमक का एक प्रकार।

लोतः [लू + तन्] 1 आँसू 2. विशाल, विशु, निकम्मी।

लोतम् [लू + क्त] चुराई हुई सम्पत्ति, लूट का माल, लोत्रेण (लोप्त्रेण) गृहीतस्य कुम्भीलकस्यादित्सा या प्रतिग्रहणम्—विक्रम० २।

लोध्रः, लोध्रः [रुणद्धि क्षीणम्, रुध् + रन्] लाल या सफेद फूलों वाला वृक्ष विशेष—लोध्रद्रुम सानुमतः प्रफुल्ल - रघु० २।२९, सुकेन सालक्तक लोध्रपाण्डुना १।२, कु० ७।९।

लोप्तः [लुप् भावे घञ्] 1. लूटा लेना, चुराना 2. क्षति, विनाश 3 उन्मूलन, अपाकरण, (प्रथाओं का) उच्छादन, अन्तर्धान, अपसारण 4 उल्लंघन, अतिक्रमण रघु० १।७६ 5 अभाव, असफलता, अनुपस्थिति रघु० १।६८ 6 भूल-चूक, छूट—तद्वदर्थस्य लोपेऽपि स्यात् काव्य० १० 7 अदर्शन, वर्णलोप (व्या० में), अदर्शन लोप —पा० १।१।६०।

लोपनम् [लुप् + ल्युट्] 1. उल्लंघन, अतिक्रमण 2 भूल-चूक, छूट।

लोपा, लोपामुद्रा [लुप् + णिच् + अच् + टाप्, लोपा + मातृका कर्म० स०] विदर्भराज की एक कन्या, अगस्त्य मुनि की पत्नी (कहा जाता है कि विभिन्न जन्तुओं के अवयव सुन्दर भागों से मुनि ने स्वयं इस कन्या का, निर्माण किया था जिससे कि उसे अपने मनोनुकूल पत्नी मिल सके; उसके पश्चात् इसे चुपचाप विदर्भराज के महल में पहुँचा दिया गया जहाँ यह राजा की पुत्री के रूप में पलती रही। बाद में अगस्त्य मुनि के साथ इसका विवाह हो गया। लोपामुद्रा ने अगस्त्य मुनि से कहा कि मुझे से संबंध रखने के लिए विपुल धनराशि प्राप्त करो। तदनुसार मुनि पहले तो राजा श्रुतर्वा के पास गया, वहाँ से फिर

और राजाओं के पास, इस प्रकार वह अत्यन्त घनाढ्य राक्षस इल्वल के पास गया, और उसे परास्त कर उसकी विपुलधनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट किया)।

लोपाकः, लोपाकः [लोपम् आकर्षनमाप्नोति, लोप+आप्+ण्वुल्] एक प्रकार का गीदड़, शृगाल।

लोपाशः, लोपाशकः [लोपमाकुलीभाव चकितमश्नाति लोप+अश्+अण्, लोप+अश्+ण्वुल्] गीदड़, लोमड़।

लोपित् (वि०) [लुप्+णिनि] 1 क्षतिग्रस्त करने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला 2 लुप्त होने वाला।

लोभनम् [लुभ्+ल्युट्] दे० 'लोभन'।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1 लोलुपता, लालसा, लालच, अतितृष्णा—लोभश्चेदगुणेन किम् भर्तृ० २।५५ 2 इच्छा, उत्कण्ठा (सम० के साथ या समास में) —कङ्कणस्य तु लोभेन—हि० १।५, आननदर्शनलोभात् —मेघ० १०५। सम०—अन्वित (वि०) लोलुप, लालची, लोभी,—विरहः लोलुपता का अभाव —हि० १।

लोभनम् [लुभ्+ल्युट्] 1 प्रलोभन, ललचाना, ढकाना, फुसलाना 2 सोना।

लोभनीय (वि०) [लुभ्+अनीयर्] फुसलाने वाला प्रलोभन देने वाला, आकर्षक, इसी प्रकार 'लोभ्य'।

लोम (पु०) पूछ।

लोमकर्तृ (पु०) [लोमक+हृ] एक पक्षी।

लोमन् (नपु०) [लू+मनिन्] मनुष्य और जानवरों के शरीर पर उगने वाले बाल -दे० रोमन्। सम० —अञ्चः='रोमाञ्च' दे०,- आलि,—ली, आवलि:, —ली,—राजि (स्त्री०) छाती से लेकर नाभि तक बालों की पंक्ति—दे० रोमावली आदि,—कर्णः खरगोश, —कीटः, —पूः, यूका,—कूप,—गर्त, - रन्ध्रम्,—विवरम् बाल में छिद्र,—स्तम् दूषित मल,—मणि. बालों से बनाया हुआ तावीज,—हर्षिन् (वि०) पुलकधारी, —हर्षण (वि०) पुलकित करने वाला, रोमाच पैदा करने वाला,—हारः पक्षी, हर्षः,—हर्षण,—हर्षिन् —दे० रोमहर्ष,- हृत् (पु०) हरताल।

लोमश (वि०) [लोमानि सन्ति अस्य लोमन्+श] 1 बालों वाला, ऊनी, रोएँदार 2 ऊनी 3 बालों वाला,—शः भेड़, मेंढा, शा 1 लोमड़ी 2 गीदड़ी 3 लंगूर 4 कासीस। सम०—जालिः गर्भविलाव।

लोमशः [लोमन्+अश्+अण्] गीदड़, शृगाल।

लोल (वि०) [लोड्+अच्, ह्रस्य ल, लुल्+घञ् वा] 1 हिलता हुआ, काँपता हुआ, कापता हुआ, डोलायमान, थरथराता हुआ, बहता हुआ, लहराता हुआ (जैसे कि बाल, अलकें) परिस्फुरल्लोल मिलाग्रजिह्वं अग-जिघत्सतामिवान्तवह्निम्—कि० ३।२०, लोलाक्षुकस्य पवनाकुलिताशुकान्तम्—वेणी० २।२२, लोलापाङ्गे. लोचने मेघ० २७, रघु० १८।४३ 2 विक्षुब्ध अशान्त, बेचैन, परेशान 3 चचल, चपल, परिवर्ती, अस्थिर येन श्रिय सश्रयदोषरूढ स्वभावलोलस्य यश प्रमृष्टम् रघु० ६।४१, इसी प्रकार कु० १।४३ 4 अस्थायी, नश्वर—श० १।१० 5 आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित (प्राय समास में,—अर्थे लोल वारिकलमको य पुरा पोषितोऽभूत्—उत्तर० ३।६, कर्णे लोलः कथयितुमनुदानस्पर्शलोभात्—मेघ० १०३, शि० १।६१, १८।४६, १०।६६, कि० ४।२०, मेघ० ६१, रघु० ७।२३, ९।२७, १६।५४, ६१,- ला 1 लक्ष्मी का नाम 2 बिजली 3 जिह्वा। सम० अक्षि (नपु०) चचल नेत्र, अक्षिका चचल नेत्रों वाली स्त्री, - जिह्व (वि०) चचल जिह्वा से युक्त, लालची, -लोल (वि०) अत्यत चचल होने वाला, महान् बेचैन।

लोलुप (वि०) [लुभ+यङ्+अच्, पृषो० भस्य प] बहुत उत्सुक, अत्यन्त इच्छुक, लालायित लालची अभिनव-मधुलोलुपस्त्व तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्, कमलवन-निमात्रनिवृत्त मधुकर किमन्यतोऽस्येना कथम् श० ५।१, मिथस्त्वदाभाषणलालुप मनः शि० १।४०, रघु० ११।२४,— पा लालसा, उत्कण्ठा, उत्सुकता।

लोलुभ (वि०) [लुभ्+यङ्+अच्] अत्यन्त लालसायुक्त, लालची दे० 'लोलुप'।

लोष्ट् (चुरा० आ० लोष्टयते) ढेर लगाना, अबार लगाना।

लोष्टः, ष्टम् [लुष्+तन्] ढेला मिट्टी का लौदा,—पर-द्रव्येषु लोष्टवत् य पश्यति स पश्यति, समलोष्टकाञ्चन रघु० ८।२१, - ष्टम् लोहे का मोर्चा, जग। सम० —घ्न, —भेदन, - मर्द ढेलों को फोड़ने का उपकरण, पटेला, हेंगा।

लोष्टु [लुष्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौदा।

लोह (वि०) [लुप्तनेत्रेन, ल+ह] 1 लाल, लाल रंग का 2 लोहे का बना हुआ, लौहमय 3 लोहे का बना हुआ, हः हम् 1 लोहा 2 लोहा 3 इस्पात 4 कोई धातु 5. सोना 6. रुधिर 7. हथियार मनु० ९।३२१ 8 मछली पकड़ने का काटा,—हः लाल बकरा हम् अगर की लकड़ी। सम० अङ्गः लाल बकरा,—अभि-सारः, अभिहारः 'लौहाभिसार' से मिलता जुलता एक सैनिक-सस्कार, उदकम् सोना,—कान्तः लोहमणि, चुम्बक, कारः लुहार,—किट्टम् लोहे का जग,—जातक. लुहार, चूर्णम् रेतने से निकला हुआ लोहे का पूरा लोहे का जग, जम् 1 कासा 2 लोहे का बुरादा, - जालम् कवच,—जित् (पु०) हीरा,—द्राविन् (पु०) सुहागा, - नालः लोहे का बाण, - पुष्पः एक

प्रकार का बगला, बकपक्षी, प्रतिमा 1 घन 2 लोहमूर्ति, बद्ध (वि०) लोहे से युक्त या जिसकी नोक पर लोहा जड़ा हो, -मूर्तिका लाल मोमी, रजस् (नपु०) लोहे का जंग, मोर्चा, राजकम् बादी, -वरम् माला, -शङ्कुः लोहे की सलाख -शलेयकः सुहागा, -संकरम् नीले रंग का इस्पात।

लोहल (वि०) [लोहमिव लाति—ला+क] लोहे का बना हुआ 2 अस्पष्टभाषी, तुतला कर बोलने वाला।

लोहिका [लोह+ठन्-टाप्] लोहे का पात्र।

लोहित (वि०) (स्त्री०—लोहिता, लोहिनी) [रुह्+इतन्, रस्य ल] 1 लाल, लाल रंग का, लसत्सावर्तिमाबलोहितलतौ बाहू घटोत्क्षेपणात्—श० १।३०, कु० ३।२५, मुहुश्चलत्पल्लवलोहितौजिरुच्चैः शिखाभि शिखिनावलीढा कि० १६।५३ 2 ताँबा, ताँबे से बना हुआ, न 1 लाल रंग, 2 मंगल ग्रह 3 साँप 4 एक प्रकार का हरिण 5 एक प्रकार के बाबल,—सा आग की सात जिह्वाओं में से एक,—सम् 1 ताँबा 2 रुधिर मनु० ८।८४, 3 आफरान केसर 4 गुड़ 5 लाल चन्दन 6 एक प्रकार का चन्दन 7 इन्द्र धनुष का अधूरा रूप। समः अङ्क 1 लाल रंग 2 एक प्रकार का साँप 3 कार्तिकेय 4 विष्णु का विशेषण अङ्गारक मङ्गलग्रह, -अयस् (नपु०) ताँबा, अशोक (लाल फूलों का) अशोक वृक्ष, -अक्ष आग,—आनन नेवला, ईक्षण (वि०) लाल आँखों वाला, उद (वि०) लाल या गेरुए के समान लाल पानी वाला कलाप (वि०) लाल पंखों वाला अय. लोहे का नाश, बीज आग का विशेषण चन्दनम् केसर, जाफरान,-पुष्पक अनार का वृक्ष मूलिका लाल बरियारा, शेफ शालपर्णम् लोध्र वृक्ष का फूल।

लोहितक (वि०) (स्त्री० तिका) [लोहित+कन्] लाल, क 1 लालमणि, शि० १३।५० 2 मंगल ग्रह 3 एक प्रकार का बाबल कम् काया।

लोहितिमन् (पु०) [लोहित+इमनिच्] लालिमा, लाली।

लोहिनी [लोहित+ङीष् तकारस्य नकार] वह स्त्री जिसका चमड़ी लाल रंग की हो।

लौकायतिक [लोकायतमधीते वेद वा लोकायत+ठक्] चार्वाकमतानुयायी, नास्तिक, अनीश्वरवादी, भौतिकवादी।

लौकिक (वि०) (स्त्री० की) [लोके निर्वृत्तः प्रसिद्धो वितो वा ठञ्] 1 सांसारिक, दुनियावी, मौलिक, पार्थिव 2 साधारण, सामान्य, प्रचलित, मामूली, गवाक्ष उत्तर० १।१० 3 दैनिक जीवन संबंधी, सामान्यतः माना हुआ, सर्वप्रिय, प्रथागत—कु० ७।८८ 4 सामयिक, धर्मनिरपेक्ष (विप० आर्ष, या शास्त्रीय) मनु० ३।२८२ 5 जो वैदिक न हो, सांसारिक (शब्द या उसका अर्थ) वाक्य द्विविध वैदिक लौकिक च तर्क० (दे० लोक ८ के नीचे उद्धृत महा०) 6 संसार से संबंध रखने वाला—जैसा कि 'ब्रह्मलौकिक' में,—काः (ब० व०) सामान्य मनुष्य, संसार के लोग, कम् कोई साधारण लोकाचार। समः ज्ञ (वि०) लोकव्यवहार को जानने वाला, लोक प्रथाओं से परिचित—अनौकसोऽपि समता लौकिकज्ञा वयम्—श० ४।

लौकिक (वि०) [लोके भवः लोक+ष्यञ्] 1 सांसारिक, दुनियावी, ऐहिक, मानवी 2 सामान्य, मामूली, रिवाजी।

लौठ् (भ्वा० पर० लौठति) पागल या मूर्ख होना।

लौल्यम् [लोलस्य भावः ष्यञ्] 1 चंचलता, अस्थिरता, चाञ्चल्य 2 उत्सुकता, उत्कण्ठा, लालच, लालसापूर्णता, अत्यन्त प्रणयोन्माद या अभिलाषा, जिह्वालौल्यात् पंच० १, रघु० ७।६१, १६।७६, १८।३०, कु० ६।३०।

लौह (वि०) (स्त्री० ही) [लोह+अण्] 1 लोहे का बना हुआ, लोहा 2 ताम्रमय 3 धातु का बना 4 ताँबे के रंग का, लाल,—हम् लोहा, भट्टि० १५।२४, हा कड़ाही। समः -आरम्भ (पु०)—भू (स्त्री०) बायलर, कड़ाही, कड़ाह,—कारः लुहार, जम् लोहे का जंग, वज्रम् जम् लोहे की बेड़ी, जंजीर, भाण्डम् लोहे का पात्र, -मलम् लोहे का जंग, -शङ्कुः लोहे की सलाख।

लौहित्यः [लोहितस्य भावः ष्यञ् स्वार्थे ष्यञ् वा] एक नदी का नाम, ब्रह्मपुत्र चक्रमे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः रघु० ८।८१, (यहाँ मल्लि० बिना किसी प्रमाण के कहता है तीर्णा लौहित्या नाम नदी येन),-त्यम् लाली।

ल्ली, ल्ली (क्रया० पर० ल्लिनाति, ल्लिनाति) मिलना, सम्मिलित होना, मेलजोल करना।

ल्ली (क्रया० पर० ल्लिनाति) जाना, हिलना-जुलना, पहुँचना।

वः [वा+ड] 1 वायु, हवा 2 भुजा 3 वरुण 4 समाधान 5 संबोधित करना 6 मांगलिकता 7 निवास, आवास 8. समुद्र 9. व्याघ्र 10 कपड़ा 11. राहु, -वम् वरुण (मेदिनी)—अव्य० की भांति, के समान 'जैसा कि' मनो बोद्धुस्य लम्बते प्रियौ वत्सतरौ मम-सिद्धा० (यहाँ शब्द 'व' अथवा 'वा' हो सकता है)।

वंश: [वंशति उद्गिरति वम्+श तस्य नेत्वम्] 1 बांस—अनूर्वंशविशुद्धोऽपि निर्गुण किं करिष्यति—हि० प्र० २३, वंशभवो गुणवानपि सपत्निविशेषेण पूज्यते पुरुष. भामि० १।८० (यहां 'वंश' का अर्थ 'कुल या परिवार' भी है) मेघ० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा—य जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्-हि० २, वंश सूर्यप्रभवो वंश —रघु० १।२, दे० वंशकरम्, वंशस्थिति आदि 3. लाठी 4 बांसुरी, मुरली, अलगोझा या विपंचीनाद कूजद्भिरापादित-वंशकृत्य—रघु० २।१२ 5. संग्रह, संघात, समुच्चय (प्राय एक समान वस्तुओं का)—सान्द्रीकृत स्यन्दन-वंशचक्रै रघु० ७।३९ 6 आरपार, गहराई 7 (बांस में) जोड़ 8. एक प्रकार का हिरण 9 रीढ़ की हड्डी 10 साल का वृक्ष 11 लम्बाई नापने का एक विशेष माप (दस हाथ के बराबर)। सम० -अङ्कुर, अङ्कुर 1 बांस का किनारा 2 बांस का अंकुआ,—अनुकीर्तनम् वंशावली,—अनुक्रम: वंशावली, —अनुचरितम् एक परिवार या कुल का परिचय, —आवली, वंशतालिका, वंशविवरण,—आह्व: बंसलोचन —कठिन: बांसों का झुरमुट, कर (वि०) 1 कुल-प्रवर्तक 2 वंशव्यापक—रघु० १८।३१ (-र:) मूल-पुरुष, कर्पूरशोभना, रोचना, लोचना बंसलोचन, तवाशीर,-कृत् (पु०) कुल संस्थापक, या वंशप्रवर्तक, —क्रम वंशपरंपरा,—जीरी बंसलोचन,—चरितम् कुलपरिचय,—चिन्तक: वंशावली जानने वाला, जेतृ (वि०) किसी कुल का अंतिम पुरुष,—ज (वि०) 1. कुल में उत्पन्न—रघु० १।३१ 2. सत्कुलोद्भव (-ज:) 1 प्रजा, संतान, औलाद 2. बांस का बीज (-जम्) बंसलोचन, दंडिन् (पु०) नट, ममखरा, -दारु(ली) का बांस की बनाई बांसुरी,-नाथ: किसी वंश का प्रधान पुरुष,—नेत्रम् ईख की जड़,—पत्रक्ष बांस का पत्ता (त्र:) नरकुल, पत्रक 1 नरकुल 2 पौंडा, गन्ने का श्वेत प्रकार, (-कम्) हरताल, —परंपरा वंशानुक्रम, कुलपरंपरा, पूरकम् गन्ने की जड़, -भोज्य (वि०) आनुवंशिक (-ज्यम्) आनुवंशिक भूमिपति,-लक्ष्मी: (स्त्री०) कुल का सौभाग्य, विशालि: (स्त्री०) 1 परिवार, संतान 2 बांसों का झुरमुट, —शर्करा बंसलोचन, शलाका वीणा में लगी बांस की खूंटी, स्थिति: (स्त्री०) कुल की अविच्छिन्नता रघु० १८।३१।

वंशक [वंश+कन्] 1 एक प्रकार का गन्ना 2 बांस का जोड़ 3 एक प्रकार की मछली,—कम् अगर की लकड़ी।

वंशिका [वंश+ठन्+टाप्] 1 एक प्रकार की बांसुरी, अगर की लकड़ी।

वंशी [वंश+अच्+ङीष्] 1 बांसुरी, मुरली—न वंशी-मज्ञासीद्मुनि करमणेऽाहितगलिताम्—हंस० १०८, कंसरिपोर्व्यपोहतु स वोऽप्रेयासि वंशीरव गीत० ९ 2. शिरा या धमनी 3 बंसलोचन 4. एक विशेष तोल। सम० धर:,—धारिन् (पु०) 1 कृष्ण का विशेषण 2 बंसी बजाने वाला,।

वंश्य (वि०) [वंशे भव यत्] 1 मुख्य गहतीर से संबंध रखने वाला 2 मेरुदण्ड से संबंध रखने वाला 3 परिवार से संबंध रखने वाला 4. अच्छे कुल में उत्पन्न, उत्तम कुल का 5 वंशधर, वंशप्रवर्तक,—श्य: 1 संतान परंपरा (ब० व०) इतरेऽपि रघोर्वंश्या —रघु० १५ ३', 2 पूर्वज, पूर्वपुरुष नून मत्त पर वंश्या पिण्ड-विच्छेददर्शिन रघु० १।६६ 3 परिवार का कोई सदस्य 4 आरपार, गहराई 5. भुजा या टांग की हड्डी 6 शिष्य।

वंह दे० बंह्।

वक् दे० बक्।

वकुल दे० बकुल।

वक्क (म्वा० आ०—वक्कते) जाना, हिलना-डुलना।

वक्तव्य (स० कृ०) [वच्+तव्यत्] कहे जाने या बोले जाने के योग्य, बता दिये जाने या प्रकथन के योग्य नन्वहि वक्तव्य न वक्तव्यम् (महा० में अनेक बार) 2 किसी विषय में कहे जाने के योग्य 3 गर्हणीय, दूषणीय, निन्दनीय 4 नीच, दुष्ट, कमीना 5 स्पष्टव्य, उत्तरदायी 6 आश्रित, -व्यम् 1 बोलना भाषण 2 विधि, नियम, सिद्धान्त वाक्य 3 कलंक, निन्दा, भर्त्सना।

वक्तृ (वि०, या पु०) [वच्+तृच्] 1. बोलने वाला बातें करने वाला, वक्ता 2 वाकपटु, प्रवक्ता कि करिष्यन्ति वक्तार श्रोता यत्र न विद्यते, दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौन हि शोभनम्—सुभा० 3 अध्यापक व्याख्याता 4 विद्वान पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति।

वक्त्रम् [वक्ति अनेन वच्-करणे ष्ट्रन्] 1 मुख 2 चेहरा —यद्वक्त्र मुहुरीक्षते न चलितं दृष्टे न चान्यत्र या-भर्तृ० ३।१४७ 3. वचन, शब्द, बोल 4 आरम्भ 5 (बाण की) नोक, किसी पात्र की टोंटी 6. एक प्रकार का वस्त्र 7 अनुष्टुप् से मिलता-जुलता एक छन्द, दे०

सा० द० ५६७, काव्या० १।२६। सम०—आशयः लार,—क्षुरः दांत,—ः ब्राह्मण, —तालम् मुह से बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र, —दलम् तालु, —पदः परदा, —स्वभाव मुखविवर, —वर्णिन्यासः भाषण,—वेधिन् (वि०) चरपरा, तीक्ष्ण,—वातः सन्तरा, —शोधनम् 1 मुंह साफ करना 2 नीबू, चकोतरा,—शोधिन् (नपुं०) चकोतरा (पु०) चकोतरे का वृक्ष।

वक्र (वि०) [वक्र्+रन्, पृषो० नलोप] 1 कुटिल (आलं० से भी) झुका हुआ, टेढ़ा, चक्करदार, घुमावदार—वक्र पन्था यदपि भवत प्रस्थितस्योत्तराशाम् मेघ० २७, कु० ३।२९ 2 गोलमोल, परोक्ष, टालमटोल, मध्यलाकार, घुमा फिरा कर बात कहना, द्वयर्थक या सन्दिग्ध (भाषण) किमेतैर्वक्रभणितैः —रत्न० २, वक्तव्यार्थस्यानारभणीय सुभगता प्रबन्धे परिहास - वि० १०।१२ दे० 'वक्रोक्ति' भी 3 छलीदार, लहरियेदार, घुंघराले (बाल) 4 प्रतिगामी (गति आदि) 5 बेईमान आलसाज, कुटिल स्वभाव का 6 क्रूर, घातक (ग्रह आदि) 7 छन्द शास्त्र की दृष्टि से गुरु (दीर्घ), —क्रः 1 मंगलग्रह 2 शनिग्रह 3 शिव 4 त्रिपुर राक्षस, —क्रम् 1 नदी का मोड़ 2 (ग्रह का) प्रतिगमन। सम० —अङ्गम् टेढ़ा, अवयव (वि०) 1 हंस 2 चकवा 3 सांप, —उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटोल करने वाली बात या तो श्लेषपूर्ण ढंग से कही जाती है या स्वर बदल कर। मम्मट इसकी परिभाषा इस प्रकार देता है—यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथान्येन योज्यते, श्लेषेण काकुवा सा श्लेषा या वक्रोक्तिस्तया द्विधा—काव्य० ९, उदाहरण के लिए मुद्रा० का आरम्भिक श्लोक (अन्या केव स्थिता) देखिए 2 वाक्कुशल, कटाक्ष व्यय—सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रय, वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा 3 कदाचित्, शायद, कच्छ देश का देश, कच्छक देश का वृक्ष, -कच्छ, कच्छकः कटार, टेढ़ी तलवार, गति, गामिन् (वि०) 1. टेढ़ी चाल वाला, चक्करदार 2 आलसाज, बेईमान,—ग्रीवः ऊंट —चक्षुः तोता, तुण्ड 1 नखक्षत का विशेषरूप 2 तोता, —दृष्टि सूअर, दृष्टि (वि०) -देखी आंख वाला, ऐंचाताना 2 विद्वेषपूर्ण दृष्टि रखने वाला 3 हानि करने वाला, (स्त्री०) तिरछी निगाह, तिर्यग्दृष्टि, नक्र 1 तोता 2 नीच पुरुष, नासिकः तोता, —पुच्छ, पुच्छिकः कुत्ता, पुच्छः बांका बाल, बालधिः, लांगूल कुत्ता,—भावः 1. टेढ़ापन 2 धोखा, —रुक सूअर।

वक्रय (पु०) मूल्य, कीमत ('क्रयक्रय' के बदले)।

वक्रिन् (वि०) [वक्र+इनि] 1 कुटिल 2 प्रतिगामी (पु०) शनि या बुद्ध।

वक्रिमन् (पु०) [वक्र+इमनिच्] 1 कुटिलता, वक्रता, 2 वाक्कौशल, टालमटोल, संदिग्धता, चक्कर, घुमाव, (बाणों की) परोक्षता,—तद्दत्काम्बुजसौरभं स च मुखास्यन्दी गिरा वक्रिमा गीत०, ३ 3. धूर्तता, चालाकी, मक्कारी।

वक्रोष्ठिः, वक्रोष्ठिका (स्त्री०) [वक्र ओष्ठो यस्या ब० स०, कप्+टाप् इत्वम्] मृदु मुसकान।

वक्ष् (स्वा० पर० वक्षति) 1 वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना 2 शक्तिशाली होना 3 क्रुद्ध होना 4 संचित होना।

वक्षस् (नपुं०) [वह्+असुन्, सुट् च] छाती, हृदय, सीना कपाटवक्षा परिणद्धकन्धरः—रघु० ३।३४। सम०—अन्तः, —स्थ, स्थः (वक्षोजः, वक्षोरुह्, वक्षोरुह) स्त्री की छाती भामि० २।२७, स्थलम् (वक्ष या वक्षस् स्थलम्) छाती या हृदय।

वक्ष्, वक्ष् (वक्षति, वक्षति) जाना, हिलना-जुलना।

वगाह [भागुरिमते 'अवगाह' इत्यत्र अकारलोप] दे० 'अवगाह'।

वङ्कः [वङ्क्+अच्] नदी का मोड़।

वङ्का [वङ्क+टाप्] घोड़े की जीन की अगली पेंडी।

वङ्कालः [वङ्क+इलच्] कौंटा।

वङ्कि [वंक+क्विन्, इदित्त्वात् नलोपश्च] 1 (किसी जानवर या भवन की पसली), (कुछ लोग इस शब्द को स्त्रीलिंग बनाते हैं) 2 छत का शहतीर 3 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र (इन दो अर्थों में नपुं० भी)।

वङ्गः [वङ्ग्+कु, नुम्] गंगा नदी की एक शाखा।

वङ्ग् (स्वा० पर० वङ्गति) 1 जाना 2 लंगड़ाना, लंगड़ा कर चलना।

वङ्गाः (ब० व०) [वङ्ग्+अच्] बंगाल प्रदेश तथा उसके अधिवासियों का नाम वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्धतान्—रघु० ४।३६, रत्नाकर समारभ्य ब्रह्मपुत्रान्तग प्रिये, बङ्गदेश इति प्रोक्त,—ङ्गः 1 कपास 2 बैंगन का पौधा —ङ्गम् 1 सीसा 2 रांगा। सम० अरिः हरताल, अङ्गः 1 पीतल 2 सिंदूर, जीवनम् जौंदी, मुखजम् कांसा।

वङ्घ् (स्वा० आ० वङ्घते) 1 जाना 2 तेजी से चलना, 3 आरम्भ करना 4 निन्दा करना, दूषित करना।

वच् (अदा० पर०) (आर्धधातुक लकारों में आ० भी, कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि सार्वधातुक लकारों में, अन्यपुरुष बहुवचन के रूप सदोष होते हैं, तथा कुछ के अनुसार समस्त बहुवचन में वक्षि, उक्षम्) 1 कहना, बोलना—वैराग्यादिव वक्षि काव्य० १०,

(गौण दो कर्मों के साथ)—तामूचतुस्त प्रियमप्यमिथ्या - रघु० १४।६, कभी कभी 'भाषण' अर्थ को बतलाने वाले शब्दों के साथ दूसरी विभक्ति में—उवाच भाग्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।५०, २।५९, क एव वक्ष्यते वाक्यम् रामा० 2 वर्णन करना, बयान करना रघूणामन्वयं वक्ष्ये—रघु० १।९ 3 कहना, समाचार देना, घोषणा करना, प्रकथन करना उच्यतां मद्वचनात् सारथि—श० २, मेघ० ९८ 4 नाम लेना, पुकारना—तदेकसप्ततिगुणं भन्वन्तरमिहोच्यते मनु० १।७९, प्रेर०—(वाचयति ते) 1 बुलवाना 2 निगाह डालना, पढ़ना, अवलोकन करना 3. कहना, बोलना, प्रकथन करना 4 प्रतिज्ञा करना, इच्छा० (वक्तुमिच्छति) बोलने की इच्छा करना, (कुछ) कहने का इरादा करना, अनु,—बाद में कहना, आवृत्ति करना, पाठ करना, (प्रेर०) - मन में पढ़ना —नाममुद्राक्षरव्यनुवाच्य— श० १, सिस् 1 अर्थ करना, व्याख्या करना वेदा निर्वक्तुमक्षमा 2 वर्णन करना, बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना 3 नाम लेना, पुकारना, प्रति , उत्तर में बोलना, जवाब देना, प्रतिवाद करना न चेद्दृश्य प्रतिवक्तुमर्हसि—कु० ५।४२, रघु० ३।४८, वि , व्याख्या करना, सम् —कहना, बोलना।

वक्र [वच्+अच्] 1 तोता 2 सूर्य, वा 1 मैना पक्षी 2 एक सुगन्धित जड़, वम् बोलना, बातें करना।

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1 बोलने, उच्चारण करने या कहने की क्रिया 2 भाषण, उद्गार, उक्ति, वाक्य—तन् वक्तुविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः - कु० २।५, प्रीत प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार मेघ० ४ 3 बोलना, पाठ करना 4 सूत्र, वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक ग्रन्थ का सन्दर्भ —शास्त्रवचन, श्रुतिवचन, स्मृतिवचनम् आदि 5 आदेश, हुक्म, निदेश, 'मद्वचनात्' मेरे नाम से अर्थात् मेरे आदेश से 6 उपदेश, परामर्श, अनुदेश 7 घोषणा, प्रकथन 8 (व्या० में) (वर्ण का) उच्चारण 9 शब्द की यथार्थता—अथ पयोधर शब्द मेघवचन 10 (व्या० में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस प्रकार वचन तीन होते हैं) 11 सूक्ष्मा अदरक। सम० उपक्रमः प्रस्तावना, आमुख, कर (वि०) आज्ञाकारी, आदेश का पालन करने वाला,—कारिन् (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, क्रम प्रकथन, ग्राहिन् (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत,- पटु (वि०) बोलने में चतुर, विरोध, विधियों की असङ्गति, विरोध, पाठ की अशुद्धता, —शतम् सौ भाषण, अर्थात् बार बार घोषणा, पुनरुक्त उक्ति, स्थित (वि०) ('वचने स्थित' भी) आज्ञाकारी, अनुवर्ती।

वचनीय (वि०) [वच्+अनीयर्] 1 कहे जाने, बोले जाने या वर्णन किये जाने के योग्य 2 निन्दनीय, दूषणीय, - अम् कलङ्क, निन्दा, निर्भर्त्सना न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२, वचनीयमिदं व्यवस्थित रमस त्वामनुयामि यद्यपि—४।२१, भवति धोजयितुर्वचनीयता—पञ्च० १।७५, कि० ९।३९, ६५, मृच्छ० ४।१।

वचरः (पुं०) 1 मूर्ख 2 बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट।

वचस् (नपुं०) [वच्+असुन्] 1 भाषण, वचन, वाक्य, —उवाच भाग्या प्रथमोदितं वचः—रघु० ३।२५, ४७, इत्थव्यभिचारि तद्वचः कु० ५।३६, वचस्तव प्रयोक्तव्यं यथोक्तं लभते फलम् सुभा० 2. हुक्म, आदेश, विधि, निषेधाज्ञा 3 उपदेश, परामर्श 4 (व्या० में) वचन। सम० कर (वि०) 1 आज्ञाकारी, अनुवर्ती 2. दूसरों की आज्ञा पालन करने वाला,—क्रमः प्रकथन, - गृह्यः कान, प्रवृत्तिः (स्त्री०) भाषण करने का प्रयत्न श० ७।१७।

वचस्पतिः [वचसां वाचां पतिः षष्ठ्या अलुक्] बृहस्पति का विशेषण, गुरु ग्रह।

वच् 1 (भ्वा० पर० वजति) जाना, हिलना-डुलना, इधर-उधर घूमना। 2. (चुरा० उभ० वाजयति—ते) काटछाटकर ठीक करना, तैयार करना 2 बाण की नोक में पर लगाना 3 जाना, हिलना-डुलना।

वज्र ,—ज्रम् [वज्+रन्] 1 वज्र, बिजली, इन्द्र का शस्त्र, (कहते हैं कि इन्द्र का वज्र ऋषि दधीचि की हड्डियों से बना था) - आशासते अमितिषु सुरा सक्तवेरा हि दैत्यैरस्याभिजये धनूंषि विजयं पौरुहूत च वज्रे—श० २।१५ 2 इन्द्र के वज्र जैसा कोई भी घातक या विनाशकारी हथियार 3 हीरे की अणि, मणि माणिक्यों को बींधने का उपकरण—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 4 हीरा, वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि उत्तर० २।५, रघु० ६।१९ 5 काँसा, ज्रम् 1 एक प्रकार का सैनिकव्यूह 2 एक प्रकार का कुश नामक घास 3 अनेक पौधों के नाम, ज्रा 1 इस्पात 2 अभ्रक 3 वज्र जैसी या कठोर भाषा 4 बालक, बच्चा 5. आवला। सम०—अङ्गः साँप,—अस्थि: इन्द्र का वज्र, अक्षरः हीरों की खान, रघु० १८।२१,—आख्यः एक बहुमूल्य पत्थर, मणि,—आघातः 1 बिजली का प्रहार 2. (अत आलं० से) आकस्मिक धक्का या सङ्कट,—आयुधः इन्द्र का हथियार —कपाटः हनुमान् का विशेषण, कीलः वज्र, बिजली, वज्र की कील— कीर्णितं वज्रकीलजम् मा० ९।३७,

पु० उत्तर० १।४७, शारद् रिहाली मिट्टी,—कोष, —द्रुमशोष वीरबहूटी, वज्रभृत् गिद्ध, वर्षम् (पु०) नेहा, जित् (पु०) गरुड़,—ज्वालनम्, ज्वाला बिजली,—तुण्डः 1 गिद्ध 2 मच्छर, डांस 3 गरुड़ 4. गणेश, -तुल्य नीलम, दण्डः एक प्रकार का कीड़ा, दन्तः 1 सूअर 2 चूहा, -दशन एक चूहा, -देह, देहिन् (वि०) दृढ़ शरीर वाला, धरः इन्द्र का विशेषण —वज्रधरप्रभाव रघु० १८।२१,—नाभः कृष्ण का (सुदर्शन) चक्र, निर्घोष,—निस्वेष बिजली की कड़क, पाणि, इन्द्र का विशेषण—कथं मुमुक्षसि बज्रपाणि रघु० २।४२, पातः बिजली का गिरना, बिजली का आघात,—पुष्पम् गिरि का फूल भृत् (पु०) इन्द्र का विशेषण, मणिः हीरा, कड़ा पत्थर भर्तृ० २।६,—मुष्टि इन्द्र का विशेषण, रवः सूअर,—लेप एक प्रकार बढ़िया कड़ा सीमेंट, वल्लेखाघटितम् मा० ५।१०, उत्तर० ४ (इसके बनाने के लिए बहुत से पदार्थों के लिए द० बृहत्० अ० २७), लाहक वज्रधर,—व्यूह एक प्रकार का सैनिक व्यूह, शल्य साही नामक जानवर, सार (वि०) पत्थर की भांति कठोर, बिजली सा तेजस्वी, अत्यन्त कड़ा—क्व च निशित-तरुणा वज्रसारा प्रयोगाः मा० १।१०, त्वमपि कुसुमप्रायान्वज्रसारान् करोषि ३।२,—सूचि, -सूची (स्त्री०) हीरे की सुई,—हृदयम् पत्थर जैसा कड़ा दिल।

वज्रिन् (पु०) [वज्र+इनि] 1 इन्द्र—ननु वर्णप्रधान एव संप्रति वज्रिणो वर्तते द्विजेषु मदस्य पक्षपा—विक्रम० २।५, रघु० १।२४ 2 उल्लू।

वञ्च् (भ्वा० पर० वञ्चति) 1 जाना, पहुँचना—वञ्चन्पुरन्ध्रीनयनावलिम्—भट्टि० १४।७४, ७।१०६ 2 घूमना 3 चूपचाप चल जाना, खिसक जाना प्रेर० (वञ्चयति-ते) 1 डालना अर्पना, खिसकना, विदकना अति वञ्चयति, अवञ्चयत मायाश्च स्वमायाभिर्नर-वीरम् भट्टि० ८।४३ 2 ठगना, धोखा देना, जाल-साजी करना (आ० मानी जाती है, पर बहुधा पर० भी)—मुग्धास्त्वामवञ्चयन्—भट्टि० १५।१५, कथमस्य वञ्चयेयं प्रसभमुद्गतयशसश्चारुणम् गीत० ८, (कर्मवा०) वञ्चयन् प्रस्वाप्य स रघु० १२।१७, कु० ४।१०, ५।४९, रघु० १२।५३ 3 वंचित करना, वंचित करना रघु० ७।८।

वञ्चक (वि०) [वञ्च्+णिच्+ण्वुल्] 1 बालसाज, धोखेबाज, मक्कार 2 ठगने वाला, धोखा देने वाला, क. 1 बदमाश, ठग, उचक्का 2 गीदड़ 3 छछूंदर 4 घालमेल करने वाला।

वञ्चतिः (पु०) अग्नि, आग।

वञ्चथः [वञ्च्+अथः] 1. ठगना, बदमाशी, धोखा, चालाकी 2 ठग, बदमाश, उचक्का 3. कोयल।

वञ्चनम्,-ना [वञ्च्+ल्युट्] 1. ठगना, 2 दावपेंच, धोखा, जालसाजी, धोखादेही, चालाकी वञ्चना परिहर्तव्या बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८, स्वर्गीमिसन्धि-मुकृत वञ्चनामिव मेनिरे—कु० ५।४७ 3 माया, भ्रम 4 हानि, क्षति, अङ्गवन—दृष्टिपातवञ्चना—मा० ३, रघु० ११।३६।

वञ्चित (भू० क० कृ०) [वञ्च्+क्त] 1 प्रतारित, ठगा गया 2 विरहित,—ता एक प्रकार की पहेली या बुझौवल।

वञ्चुक (वि०) (स्त्री०—की) [वञ्च्+उकञ्] धोखे से पूर्ण, जालसाज, मक्कार, बेईमान,—कः गीदड़।

वञ्चुल [वञ्च्—उलच्, पृषो० वस्य ज] 1. बेंत या नरकुल —आमञ्जुवञ्जुलतानि च तान्यमूनि नीरन्ध्रनील निचुलानि सरित्तटानि—उत्तर० २।२३, या, मञ्जुल-वञ्जुलकुञ्जगत विचकर्ष करेण दुकूलं—गीत० १ 2 एक प्रकार का फूल 3 अशोकवृक्ष 4 एक प्रकार का पक्षी। सम० द्रुमः अशोकवृक्ष,—प्रियः बेंत।

वट् (भ्वा० पर० वटति) घेरना।

॥ (चुरा० उभ० वाटयति-ते) 1 कहना, 2 बाँटना, विभाजन करना 3 घेरना, घेरा डालना।

वट [वट्+अच्] 1 बड़ का पेड़—अथ च चित्रकूटपार्श्वनिवर्तिनि वटे स्वामी नाम उत्तर० १, रघु० १३।५३ 2 छोटी शुक्ति या कौड़ी 3 छोटी गेंद, गोलिका, वटिका 4 गोलअंक, शून्य 5 एक प्रकार की रोटी 6 डोरी रस्सी (इस अर्थ में नपु० भी) 7. रूपसादृश्य। सम०—पत्रम् श्वेत तुलसी का एक भेद (श्रा) चमेली,- वासिन् (पु०) यक्ष।

वटक [वट+कन्, वट्+क्वुन् वा] 1 बाटी, एक प्रकार की रोटी 2 छोटा पिंड, गेंद, गोली, वटिका।

वटर [वट्+अरच्] 1 मूर्ख 2. चटाई 3. पगड़ी 4 चोर, लुटेरा 5 रुई का ढेर 6 सुगन्धित घास।

वटाकरः, वटारकः (पु०) डोरा, डोरी।

वटिक [वट्+इन्+कन्] जुआरज का मोहरा।

वटिका [वट्+इन्+कन्+टाप्] 1 टिकिया, गोली 2 जुआरज का मोहरा।

वटिन् (वि०) [वट्+इन्] डोरीदार, वर्तुलाकार—पु० =वटिक।

वटी [वट्+अच्+ङीष्] 1 रस्सी या डोरी 2. गोली, वटिका।

वटुः [वटति अल्पवस्त्वम् वट्+उः] 1. छोकरा, लड़का जवान, किशोर (बहुधा अंग्रेजी के 'चैप—chap या फैलो—fellow शब्द के समान प्रयोग) अपलोभ्य वटुः श्व० २, निर्दार्यतामाशु किमप्यवं वटुः

पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः—कु० ५।८३, तु० 'वटु' से भी 2 ब्रह्मचारी।

वटुकः [वटु+कन्] 1 छोकरा, लड़का 2 ब्रह्मचारी 3 मूर्ख, बुद्धू।

वठ् (भ्वा० पर० वठति) 1 बलवान् या शक्तिशाली होना 2 मोटा होना।

वठर (वठ्+अरन्) 1 मन्दबुद्धि, जड़ 2 दुष्ट, र० 1 मूर्ख या बुद्धू 2 बदमाश, या दुष्ट 3 वैद्य या डाक्टर 4 जल-पात्र।

वडभि.,—भी दे० वलभि, भी।

वडवा [वल वाति वल+वा+क+टाप्, डलयोरैक्यात् लस्य डत्वम्] 1 घोड़ी 2 अश्विनी नाम की अप्सरा जिसने घोड़ी के रूप में सूर्य के द्वारा अश्विनीकुमार नाम के दो पुत्र उत्पन्न करवाये दे० संज्ञा 3 दासी 4 वेश्या रण्डी 5 ब्राह्मण जाति की स्त्री, द्विजयोषित्। सम० अग्नि, अनल समुद्र के भीतर रहने वाली आग, मुख 1 समुद्र के भीतर रहने वाली आग 2 शिव का नाम।

वडा [वड्+अच्+टाप्] एक प्रकार की साड़ी।

वडिशम् [बलिनो मत्स्यान् श्यति नाशयति शो+क, लस्य डत्वम्] दे० 'बंडिश'।

वड् (वि०) [वड्+रक्] विशाल, बड़ा, महान्।

वण् (भ्वा० पर० वणति) शब्द करना, ध्वनि करना।

वणिज् (पु०) [पणायते व्यवहरति पण्+इजि पस्य व] 1 सौदागर, व्यापारी—अस्यागमः केवलजीविकायै न ज्ञानपण्ये वणिजः वदन्ति मालवि० १।१७ 2 तुला राशि (स्त्री०) पण्यवस्तु, क्रयविक्रय। सम० कर्मन् (नपु०),—क्रिया क्रयविक्रय, व्यापार,—जन 1 (सामूहिक रूप से) व्यापारी वर्ग 2 व्यापारी, सौदागर, पथ 1 व्यापार, क्रयविक्रय 2 सौदागर 3 बनिये की दुकान, आपणिका 4 तुलाराशि, वृत्ति (स्त्री०) व्यापार, क्रयविक्रय भर्तृ० ३।८१,—संघ व्यापारियों का दल, टोली।

वणिज. [वणिज्+अच् (स्वार्थे)] 1 सौदागर, व्यापारी 2 तुला राशि।

वणिजकः [वणिज+कन्] सौदागर, बनिया।

वणिज्य, वणिज्या [वणिज्+यत्, स्त्रियां टाप् च] व्यापार क्रयविक्रय।

वत् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० वर्तति, वर्तयति-ते) बाटना, अंश बनाना, विभाजन करना, हिस्से करना।

वत्स [वद्+सक्] 1 भाग या खण्ड, अंश, हिस्सा 2 दराती का दस्ता 3 अविवाहित पुरुष, कुँआरा।

वत्सकः [वत्स+कन्, स्वार्थे क] 1 बाँटने वाला, वितरण करने वाला 2 विदूषक 3 भाग, अंश, हिस्सा।

वत्सनम् [वत्स्+ल्युट्] विभाजन करना, अंश बनाना, बाँटना या विभक्त करना।

वत्साल, वत्साल [वत्स+आलच्, पक्षे पृषो० टस्य डत्वम्] 1 शूरवीरों की प्रतियोगिता 2 कुदाल, खुर्पा 3 नाम।

वत्स् (भ्वा० आ० वत्सते) अकेले जाना, बिना किसी को साथ लिए चलना।

वत्स (वि०) [वत्स्+अच्] 1 अविवाहित 2 ठिगना 3 विकलाङ्ग, ठ. 1 अविवाहित पुरुष, कुँआरा 2 सेवक 3 ठिगना 4 भाला, नेजा।

वत्सर [वत्स्+अरन्] 1 बाँस का आवेष्टन, बाँस का मोटा पत्ता 2 ताड़ का नया किसलय 3 (बकरे की) बाँधने के लिए रस्सी 4. कुत्ता 5 कुत्ते की पूँछ 6 बादल 7 स्त्री की छाती।

वद्। (भ्वा० आ० वदते) 1 बाँटना, हिस्से करना, अंश बनाना 2 घेरना, चारों ओर से आवेष्टित करना। ॥ (चुरा० उभ० वर्दयति-ते) हिस्से करना, बाँटना, अंश बनाना।

वद्ध (वि०) [वद्+अच्] 1 अपाङ्ग, अपाहिज, विकलाङ्ग 2 अविवाहित 3 नपुंसक बनाया हुआ, ढ० 1 वह आदमी जिसकी बधना हो चुकी है या जिसको जननेन्द्रिय के अग्रभाग को ढकने वाला चमड़ा नहीं है 2 बिना पूँछ का बैल, डा व्यभिचारिणी स्त्री —तु० 'वण्ढा'।

वद्धर [वद्+अरन्] 1 कल्पद्रुम, मकरीवृक्ष 2 हिजड़ा।

वत् (वि०)। एक प्रत्यय जो 'स्वामित्व' की भावना को प्रकट करने के लिए 'संज्ञाशब्दों' के साथ लगाया जाता है —उदा० धनवत्—धनाढ्य, रूपवत् सुन्दर, इसी प्रकार भगवत्, भास्वत् आदि, (इस प्रकार बने हुए शब्द विशेषण होते हैं) 2 मू० क० कु० के आधार से 'वत्' लगा कर कर्तृका० का रूप बना लिया जाता है—इत्युक्तवन्तं जनकात्मजायाम् —रघु० १४।४३ 3 अव्य० 'समानता' और 'सादृश्य' अर्थ को प्रकट करने के लिए संज्ञा या विशेषण शब्दों के साथ 'वत्' जोड़ दिया जाता है उदा० आत्मवत्सर्वभूतानि य पश्यति स पण्डित ।

वत [वन्+क्त] दे० वत।

वतस [अवतस्+अच् या षत्वं, भागुरिमते 'अव' इत्यस्य अकारलोपः] दे 'अवतंस' कपोलविलोलवतंसम —गीत० २।

वतोका [अवगतं तोकं यस्या —अवस्य अकार लोप] बांझ या निस्सन्तान स्त्री, वह गाय या स्त्री जिसका किसी दुर्घटनावश गर्भपात हो गया हो।

वत्स [वद्+स] 1 बछड़ा, किसी जानवर का बच्चा, तेनाहं वत्समिव लोकमपुष्णाम—भर्तृ० २।५६, य सर्वशैला परिकल्प्य वत्सं—कु० १।२ 2 लड़का

पुत्र, (यह शब्द इस अर्थ में बहुधा संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है, वात्सल्य द्योतक शब्द 'मेरे प्रिय' 'मेरे लाल' आदि शब्दों से व्यवहृत)- अयि वत्स कृत कृतमतिविनयेन किमपराद्ध वत्सेन—उत्तर० ६ 3 संतान, बच्चे, जीववत्सा 'जिसके बच्चे जीवित हों' 4 वर्ष 5 एक देश का नाम (इसकी राजधानी कौशाम्बी थी जहाँ उदयन राज्य करता था) या उसके अधिवासी,—क्षा 1 बछिया 2 छोटी लड़की 'बन्मे मांते' (बेटी मीता) आदि, -क्षम् छाती। -मय० अच्छी एक प्रकार की ककड़ी,—अक्षन भेड़िया, ईक्षा —राज वत्स देश का राजा, लावे तावि च वत्सराज-चरित नाट्ये च दक्षा वयम् -नाग० १,- काम (वि०) बच्चों का प्यार करने वाला, (मा) वह गाय जो बछड़े से मिलने की प्रबल लालसा रखती है,—नाभ 1 एक वृक्ष का नाम 2 एक प्रकार अफीम का विष,- पाल बछड़ों का पालने वाला, कृष्ण या बलराम,—शाला गोशाला।

वत्सक [वत्स+कन्] 1 नन्हा बछड़ा बछड़ा 2 बच्चा 3 कुटज नाम का पौधा -कम् पुष्पकेसर।

वत्सतर [वत्स+तरप्] वह बछड़ा जिसने अभी हाल में दूध चूसना छोड़ा है, जवान बैल जिसके ऊपर अभी जूआ नहीं रक्खा गया है महोक्षता वत्सतर स्पृशा-निव रघु० ३।३२, ी बछिया, कलार थाश्रिया-श्रमयसनाय वत्सतरी वा महोक्ष वा निर्वपन्ति गृहमेधिन' उत्तर० ४।

वत्सर [वस्+सरन्] 1 वर्ष याज्ञ० १।२०५ 2 विष्णु का नाम। -मुखम् वह ऋण जो वर्ष की समाप्ति पर वापिस किया जाय।

वत्सल (वि०) [वत्स स्नाति ला+क] 1 बच्चों को प्यार करने वाला, बच्चों के प्रति स्नेह शील जैसा कि वत्सला धेनु, माता 2. स्नेहशील, अतिप्रिय, स्नेहानुरागी, दयालु,—करुणामयतद्वत्सल वध स नपस्वि-जनस्य हन्ता- मा० ८।८, ९।१४, रघु० २।६९. ८।०१, इसी प्रकार 'जरत्सागनवत्सल दीनवत्सल आदि, ईंधन से प्रज्वलित अग्नि, या अपने बछड़े का प्यार करने वाली गाय,—त्व स्नेह, प्यार।

वत्सलयति (ना० धा० पर०) उत्कण्ठा पैदा करना, उत्सुक बनाना, स्नेहयुक्त करना - नूतनमनपत्या मा वत्सलयति धा० ७।

वत्सा, वत्सिका [वत्स+टाप्, वत्सा+कन्+टाप् इत्वम्] बछिया, बछड़ी।

वत्सित्वम् (नपु०) [वत्स+इमनिच्] बचपन, कौमार्य, उम-रती जवानी।

वत्सीय [वत्स+छ] गोप, ग्वाला।

वद् (स्वा० पर० वदति, परन्तु कुछ अर्थों में तथा कुछ उपसर्गों के साथ आ०, दे० नी०, उदित, कर्म वा० उद्यते, इच्छा० विवदिषति) 1 कहना, बोलना, उच्चारण करना, संबोधित करना, बातें करना—वद-प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते —कु० ५।४४, वदता वर --रघु० १।५९, 'वाक्पटुर्जो में प्रभुरुत्तम' 2 घोषणा करना, कहना, समाचार देना, सूचित करना यो गोत्रादि वदति स्वयम् 3 किसी के विषय में कहना, वर्णन करना, भग० २।२९ 4 अंकित करना, निर्धारित करना, बयान मनु० २।९, ४।१४ 5 नाम लेना, पुकारना वदन्ति वर्ण्याविर्ण्यानां धर्मैक्य दीपक बुधा —चन्द्रा० 6 संकेत करना, आभास देना कृतज्ञतामस्य वदन्ति संपद -कि० १।१४ 7 स्वर ऊँचा उठाना, क्रन्दन करना, गायन करना' कोकिल पंचमेन वदति, वदन्ति मधुरा बाच —आदि 8 होशियारी या प्रवीणता दर्शाना, किसी विषय पर अधिकारी होना (आ०) शास्त्रं वदन्ते, पाणिनिर्वदते—काप० 9 चमकना, उज्ज्वल या देदीप्यमान दिखलाई देना (आ०), भट्टि० ८।२७ 10 उद्योग करना, चेष्टा करना, परिश्रम करना (आ०) कर्त्रे वदते सिद्धा०, प्रेर० (वादयति-ते) 1. कहलवाना 2. शब्द करवाना, बाजा बजवाना—वीणामिव वादयन्ती-विक्रम० १।१०, वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५, मनु०, 1 बोलने में नकल करना, दोहराना (गिरः) अनुवदति शुकस्ते मञ्जु-लाक्षण्डजस्य -रघु० ५।७४ 2 प्रतिध्वनि करना, गूंजना (पर० और आ०) अनुवदति वीणा 3 अनु-मोदन करना (उसी मनोभाव की प्रतिध्वनि करके) शि० २।६७ 4 नकल करना (आ०) भट्टि० ८।२९ 5 समर्थन के रूप में आवृत्ति करना, अप्-, (सदैव आ० परन्तु कभी कभी पर० भी) 1 बुरा भला कहना, गाली देना, निन्दा करना शि० १७।१९, मनु० ४।२३६, कभी कभी सह० के साथ—भट्टि० ८।४५, 2 न अपनाना, 3 किसी विरोध करना, अभि-, 1 अभिव्यक्त करना, उच्चारण करना, मूल्य या वजन रखना यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युदाते, तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केन०, 2 नमस्कार करना, अभिवादन करना, (प्रेर०) प्रणाम करना—भगवन्नभिवादये,उप-, (आ०) 1 लुभाना, चापलूसी करना, फुसलाना—भट्टि० ८।२८, 2. मनाना, अनुकूल करना परि-, गाली देना, निन्दा करना, बुरा भला कहना, प्र-, 1. बोलना, उच्चारण करना 2 बातें करना, संबोधित करना —भट्टि० ७। २४ 3 नाम लेना, पुकारना 4 खण्डन करना, सोचना, प्रति-, उत्तर में बोलना, जवाब देना—रघु०

३।६४ 2. बोलना, उच्चारण करना 3. दोहराना वि-, (आ०) 1 झगड़ा करना, विवाद करना-परस्पर विवदमानौ भ्रातरौ 2. भिन्नमत का होना, प्रतिकूल होना, विरोधी होना-परस्पर विवदमानानां शास्त्राणां—हि० १ 3 (न्यायालय आदि में) युक्तिपूर्वक कहना, सम्-,(पर० आ०) वादविवाद करना, कलह करना, झगड़ा करना -भट्टि० ८।४२, सिद्धा० , 1 असंगत होना, भिन्न मत का होना 2 असफल होना (प्रेर०) असंगत बनाना सम् , 1 बातें करना, संबोधित करना 2 मिलकर बोलना, वार्तालाप करना, प्रवचन करना 3 समरूप होना, अनुरूप होना, समान होना (करण० के साथ)—अस्य मुखं सीताया मुखचन्द्रेण सदृश्यमेव—उत्तर० ४ 4 नाम लेना पुकारना ॰ बोलना, उच्चारण करना (प्रेर०) 1 परामर्श करना, सलाह-मशवरा (करण० के साथ) करना 2 शब्द करवाना, वाद्ययंत्र बजाना, संज्ञा , (आ०) (मनुष्यों की तरह) ऊँचे स्वर से या स्पष्ट बोलना संप्रवदन्ते ब्राह्मणा—सिद्धा० 2 क्रन्दन करना, क्रन्दन ध्वनि का उच्चारण करना (पर०)—वरत्नु संप्रवदन्ति कुक्कुटा महा०।

वद (वि०) [वद् + अच्] बोलने वाला, बातें करने वाला, अच्छा बोलने वाला।

वदनम् [वद् + ल्युट्] 1 चेहरा आगीद्विवृत्तवदना च बिम्बोष्ठयन्ती शं० २।१०, इसी प्रकार 'सुवदना' कमलवदना आदि 2 मुख वदने विनिवेशिता भुजङ्गी पिशुनाना स्मनाभिरेषा घाधा—भामि० १।१११ 3 पहलू, छवि, दर्शन 4 अगला भाग 5 (किसी माला का) पहला शब्द। सम० अलंकार।

वदन्ती [वद् + झच् + ङीप्] भाषण, प्रवचन।

वदन्य (वि०) [वद् + अन्य, पृषो० ह्रस्व] दे० 'वदान्य'।

वदर [वद् + अरच्] दे० 'बदर'।

वदाल [वद् + क, अद् + अच्] 1 बवण्डर, भंवर 2 एक प्रकार की जर्मन मछली।

वदावद (वि०) [अत्यन्तं वदति—वद् + अच्, नि०] 1 बोलने वाला, बातूनी 2 बातूनी, वाचाल।

वदान्य (वि०) [वद् + आन्य] 1 धारा प्रवाह से बोलने वाला, वाक्पटु 2 सत्यवादी बोलने वाला 3 उदार, दयालु, दानशील मनु० ४।२२४, स्त्री० दानी या दानशील व्यक्ति, दाता, अन्नदाता व्यक्ति—शिरसा वदान्यगुरवे सादरमेव वहन्ति सुरनरवः—भामि० १।१९, या तस्मै वदान्यगुरवे तरवे नमोऽस्तु—१।३४ नै० ५।११, रघु० ५।२४।

वदि (अव्य०) (चान्द्रमास का) कृष्णपक्ष, ज्येष्ठवदि (विप० सुदी)।

वद्य (वि०) [वद् + यत्] 1 कहने के योग्य, दूषण देने के अयोग्य तु० अवद्य 2 कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का एक पक्ष वद्यपक्ष =कृष्णपक्ष),—ग्रम् भाषण, इधर-उधर की बातें करना।

वध् (स्वा० पर० वधति) मारना, कतल करना (लौकिक या शास्त्रीय संस्कृत में इसका प्रयोग केवल लुङ् व आशीर्लिङ् में 'हन्' धातु के स्थान पर होता है)।

वध [हन् + अप्, वधादेश] 1. मार डालना, हत्या कतल, विनाश—आत्मनो वधमाहर्ता ब्रह्मणः विहगस्कर —विक्रम० ५।१, मनुष्यवध मानवहत्या, पशुवध आदि 2 आघात, प्रहार 3 सजा, 4 लाभ, अन्तर्धान 5 (गणित में) गुणा, सम० अर्हः (वि०) फांसी के दण्ड का अधिकारी —उद्यत (वि०) 1 हत्या संबंधी 2 हत्यारा, कातिल उद्यमः हत्या की तरकीब, कर्मन्धिकारिन् (वि०) फांसी पर लटकाने वाला, जल्लाद, जीविन् (पु०) 1 शिकारी 2 कसाई, दण्डः 1 शारीरिक दण्ड (हंटर आदि लगाना) 2 फांसी, भूमिः (स्त्री०) —स्थली (स्त्री०) -स्थानम् 1 फांसी की जगह 2 बूचड़खाना, -स्तम्भः फांसी मृच्छ० १०।

वधक [हन् वधुन्, वध च] 1 जल्लाद, फांसी पर लटकाने वाला 2 कातिल, हत्यारा।

वधत्रम् [वध + अत्रम्] घातक हथियार।

वधित्रम् [वध् + इत्र] 1 कामदेव 2. कामोन्माद, कामातुरता।

वधू, वधूका [वह् + ऊ, नि० ह्रस्व] 1 पुत्रवधू, स्नुषा 2 युवती स्त्री।

वधू (स्त्री०) [उद्वाह पितृगेहात् पतिगृहं वह् + ऊङ्] 1 दुल्हिन घर से बधू वह राजमार्गे प्रसृत ध्वजच्छायानिवारितातपम्—रघु० ७।४, १९, समानय स्तुल्यगुणं वधूवर चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः श० ५।१५, कु० ६।८२ 2 पत्नी, भार्या इयं गर्भान्तं सखीमिच्छाचतुर्थीयति - कु० ६।८९, रघु० १।९० 3 पुत्रवधू एषा च रघुकुलमहत्तराणां वः उत्तर० ४, ४।१६, तथा वधूस्वयंवरसि नोन्दनं पार्थिवानाम् १।९ 4. महिला, लड़की, स्त्री—परिणत मृगवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे गीत० स्वयंवरसि विक्रमश्चेत्तामक्षता न वधूश्चेत्तां समुद्वहति क्षिप्रं - कि० ६।४५, नै० २२।४३, मेघ० १२ ९५ 5 अपने से छोटे रिश्तेदार की पत्नी, लाड़ में छोटी स्त्री 6 किसी भी पशु की मादा मृगवधू (हरिणी) व्याघ्रवधू, गजवधू आदि। सम०—गृह प्रवेशः - प्रवेश दुल्हिन का अपने पति के घर में सर्व प्रथम पदार्पण, जनः पत्नी, स्त्री, पक्षः (विवाह के अवसर पर) कन्या पक्ष के लोग,—वस्त्रम् दुल्हिन की वेशभूषा वैवाहिक पोशाक।

वधूटी [अल्पवयस्का वधू---वधू+टि+ङीष्] 1 तरुणी, स्त्री, नवयुवती—रक्ष वधूटीमारोप्य पाप वक्ष्यथ गच्छति महावीर० ५।१७, गोपवधूटीदुकूलचौराय (कृष्णाय)---भाषा० १, पुत्रवधू ।

वध्य (वि०) [वधमर्हति वध+यत्] 1. मारे जाने के योग्य, हत्या किये जाने के योग्य 2 जिसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है 3. शारीरिक दण्ड दिये जाने के योग्य, शारीरिक रूप से दण्डनीय,---ध्यः 1 शिकार, मृत्यु की तलाश में मुद्रा० १।९ 2. शत्रु० । सम० यष्टिः वह ढोल जो किसी को फांसी पर लटकाते समय बजाया जाय । ---भूमि, -भूमिः (स्त्री०) स्थलम्, स्थानम् फांसी घर, माला फूलों की माला जो फांसी पर लटकाने के लिए तैयार व्यक्ति को पहनाई जाय ।

वध्या [वध्य+टाप्] वध करना, कत्ल ।

वध्रम् [वध्र+ष्ट्रन्] 1 चमड़े का तस्मा---शि० २०।५० 2 लोमा, भौं चमड़े की पट्टी ।

वध्रिः [वध्र+इन्] जुआ ।

वन (स्वा० उभ० वनोति, वनुते) 1 सम्मान करना, पूजा करना 2. सहायता करना 3 शब्द करना 4 व्याप्त या आवृत होना ।

वन (चुरा० उभ० वनयति, वनयते) 1 याचना करना, कहना, प्रार्थना करना (द्वि० कर्मानी जाती है) ---आयदाहितर देव वानका वनुते जलम् 2 भोज करना, प्राप्त करने की चेष्टा करना 3 जीतना, स्वामित्व प्राप्त करना ।

वन (स्वा० पर० चुरा० उभ० वनति, वानयति-ते) 1 अनुग्रह करना, सहायता करना 2. चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 ध्वनि करना 4. विश्वास करना ।

वनम् [वन+अच्] अरण्य, जंगल, वृक्षों का झुरमुट ---एको वासः पत्तने वा वने वा---भर्तृ० ३।१२०, वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति---रागिणाम् 2 गुल्म, झुरमुट, सघन क्यारी में उगे हुए रंगल या अन्य पौधों का समूहसंचय,---त्रिधा पद्मवनावलीर्जगौ रघु० १६।१६, ६।८६ 3. आवासस्थल, निवासस्थान, घर 4 फौवारा (पानी का) झरना 5 पानी---शि० ६।७३ 6. लकड़ी, काष्ठ (समास) में प्रथमपद के रूप में इसका प्रयोग 'जंगली' 'वनैला' अर्थों में होता है उदा० वनवराह, वनकदली, वनपुष्पम् आदि) । सम० अग्निः दावानल, ---अज जंगली बकरा,---अन्तः 1 किसी जंगल की सीमा या दामन रघु० २।५८ 2 वन्यप्रदेश, जंगल ---उत्तर० २।२५,---अन्तरम् 1 दूसरा जंगल 2. जंगल का भीतरी प्रदेश विक्रम० ४।२६, अरिष्टा जंगली हल्दी,---आलवालम् लाल मिट्टी, गेरु या लाल खड़िया, ---आलिका मरुआलली, आलुः अरण्यज,---आलुकः एक प्रकार का लोबिया,---आश्रयः जंगली नदी, अरण्यस्थिता, आह्वकः जंगली अदरक,---आश्रयः जंगल में आवास, वानप्रस्थ-जीवन का तीसरा आश्रम, आश्रयिन् (पु०) वानप्रस्थी, सन्यासी, तपस्वी, आश्रयः 1 वनवासी 2 एक प्रकार का पहाड़ी कौवा,---उत्थाहः गैंडा,---उद्भवा जंगली कपास का पौधा,---उपप्लवः दावानल,---ओकस् (पु०) 1 वनवासी, जंगल में रहने वाला 2 सन्यासी, तपस्वी 3 जंगली जानवर, जैसे कि बन्दर, सूअर, कच्चा वनपिप्पली,---कदली जंगली केला, करिन् (पु०) कुक्कुटः, ---गज जंगली हाथी, कुक्कुट जंगली मुर्गा, ---खण्डम् जंगल का एक भाग,---गज. जंगली बैल, गहनम् झुरमुट, जंगल का सघन भाग, गुप्त मेंदिया, ग्रासम् गुल्म, जंगली झाड़ी,---चोदर (वि०) बार-बार जंगल में जाने वाला, (रः) 1. शिकारी 2 वनवासी (रम्) वन जंगल,---चन्दनम् 1 देवदारु का वृक्ष 2 अगर की लकड़ी,---चल्लिका,---चोल्लका एक प्रकार की चमेली, चम्पक. जंगली चम्पा का पौधा, चर (वि०) वनवासी, वन में विचरने वाला, वन देवता, (रः) 1. वनवासी, वन में रहने वाला, जंगली आदमी उपनन्थुनान्धिनविषादधिय शरण्य-उकरी वनचरा वसतिम्---कि० ६।२९, वेणी० १२ 2 वन्य पशु 3 आठ पैरों वाला शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु, चर्या जंगल में घूमना या निवास, छागः 1 जंगली बकरा 2 सूअर, ज 1 हाथी 2 एक प्रकार का सुगन्धित घास 3 जंगली नीम का पेड़ (---जम्) नीलकमल,---जा 1. जंगली अदरक 2 जंगली कपास का पौधा---जीविन् वनवासी, जंगली आदमी,---द. बाडव, ---दाहः दावानल, ---देवता वनदेवी, जंगल---परी, रघु० २।१२, १।५२, शि० ६।६, कु० ३। ५२, ६।३१, द्रुम जंगली पेड़, ---धारा वृक्षावलि, छायादार मार्ग, धेनु (स्त्री०) गाय, जंगली बैल की मादा, पांसुल शिकारी पार्श्वम् जंगल के आस पास का क्षेत्र, वनप्रदेश, पुष्पम् जंगली फूल, पूरकः जंगली नीम का पेड़, प्रवेशः तपस्विजीवन का आरम्भ, प्रस्थ अधित्यका या पठार में स्थित जंगल, ---प्रिय कोयल, (प्रम्) दारचीनी का पेड़, बर्हिणः, ---बर्हिणः जंगली मोर,---भूः जंगल की भूमि---मक्षिका गोमक्षी, ग्राम ---मल्ली जंगली चमेली, माला जंगली फूलों की माला जैसी कि श्रीकृष्ण पहनते थे रघु० ९।५१, इसका वर्णन है आजानुलम्बिनी माला सर्वर्तुकुसुमोज्ज्वला । मध्य स्थूलकदम्बबद्धमधुपश्रेणिं कीर्तिता ॥ °धर श्रीकृष्ण का विशेषण, माल्यम् (पु०) कृष्ण का एक विशेषण धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली---गीत०

५, तव विरहे वनमाली सखि क्षीदति गीत० ५, —वासिनी द्वारका नगर का नामांतर, - वृष्ट् (वि०) जल डालने वाला,—रघु० ९।२२, (पु०)--वृत: बादल,--वृष्टि: एक प्रकार की मूग,—वेला जंगली केला, रक्षक: वन का रखवाला,—राज: सिंह, वह्नि कमल का फूल,—लक्ष्मी: (स्त्री०) 1 जंगल का आभूषण या सौंदर्य 2 केला— लता जंगली बेल, लता दूरीकृता खलगुणैरुद्यानलता वनेलतामि'—श० १।१७, -वह्नि,—हुताशन: दावानल, वास: 1 जंगल में रहना, वन में वास श० ४।१० 2 जंगली या यायावरीय (घुमक्कड़) जीवन 3 वनवासी, वन में रहने वाला,- वासन. गंधविलास, वासिन् (पु०) 1 जंगल में रहने वाला, वनवासी 2 तपस्वी इसी प्रकार 'वनस्थायिन्', वीहि जंगली धावल, स्रोज-स् कमल, स्वन् (पु०) 1 गीदड़ 2 व्याघ्र 3 गंधविलाव,—सकट एक प्रकार की दाल, मसूर --सद्,—सवासिन्(पु०)वनवासी सरोजिनी(स्त्री०) जंगली कपास का पौधा, सर्ष 1 हरिण 2 तपस्वी स्था बरगद का पेड़, स्थली जंगल, जंगल की भूमि, स्रज् (स्त्री०) जंगली फूलों की माला।

वनर (पु०) दे० 'वानर'।

वनस्पति. [वनस्य पति, नि० सुट्] 1 एक बड़ा जंगली वृक्ष, विशेषकर वह जिसे बिना फूल आये फल लगता है 2 वृक्ष, पेड़, नमाशु विघ्न तपसस्तस्मिन्वो वनस्पति वक्ष इवाबभञ्ज कु० ३।७८।

वनायु [वन+इण्+उण्, वन् आयुच् वा] एक जिले का नाम रघु० ५।७३। सम० ज (नपु०) वनायु में उत्पन्न घोड़ा आदि।

वनि: (स्त्री०) [वन्+इ] कामना, इच्छा।

वनिका [वनो+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटा जंगल, जैसे कि 'अशोकवनिका'।

वनिता [वन्+क्त+टाप्] 1 स्त्री, महिला वनितेति वदत्येना लोका सर्वे वदन्तु ते, यूना परिणता मेय तपस्येति मन मम भामि० २।१७, पथिकवनिता —मेघ० ८ 2 पत्नी, गृहस्वामिनी—वनेचराणा वनिता-सखानाम् कु० १।१०, रघु० २।१९ 3 कोई भी प्रेयसी स्त्री 4 किसी भी जानवर की मादा। सम०--द्विष् (पु०) स्त्रीद्वेषी, स्त्रियों से घृणा करने वाला,--विलास स्त्रियों का इच्छानुकूल मनोरंजन।

वनिन् (पु०) [वन+इनि] 1 वृक्ष 2 सोम लता 3 वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में रहने वाला।

वनिष्णु (वि०) [वन्+इष्णुच्] मांगने वाला, याचना करने वाला।

वनी [वन+ङीष्] जंगल, अरण्य, (वृक्षों का) झुरमुट अवनीतलेऽस्मिन्न साधु मन्ये न वनी माधवनी विलासहेतु —जग०।

वनीयक:, वनीयक: [वनि याचनामिच्छति - वनि+क्यच्, +वुल्] भिक्षुक, साधु--वनीयकानां स हि कल्प-भूरुह- नै० १५।६०।

वनेकिंशुका: (ब० व०) [वने किंशुक इव, सप्तम्या अलुक्] जंगल में किंशुक' अनायास ही मिलने वाला पदार्थ।

वनेचर: [वने चरति—चर्+ट, सप्तम्या अलुक्] जंगल में रहने वाला, रु० 1 वनवासी, जंगल में रहने वाला आदमी वनेचराणा वनितासखानाम्--कु० १।१० १।२ 2 सन्यासी, तपस्वी 3 वन्य पशु 4 वनदेवता, वनमानुष 5 पिशाच।

वनेजव: [वने ह्रस्व, स० त०] एक प्रकार का आम।

वंद् (भ्वा० आ० वदते, वदित) प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना अञ्जलि प्रदाय करना—जगत पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ--रघु० १।१, १३।७७, १४।५ 2 आराधना करना, पूजा करना 3 प्रशंसा करना, स्तुति करना, अभि - प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना—रघु० १६।८१।

वन्दक [वन्द्+ण्वुल्] प्रशंसक।

वंदक: [वन्द्+अच्] प्रशंसक, चारण या भाट, स्तुति गायक।

वंदनम् [वन्द्+ल्युट्] 1 नमस्कार, अभिवादन 2 श्रद्धा सत्कार 3 किसी ब्राह्मणादि को (चरणस्पर्श करते हुए) प्रणाम 4 प्रशंसा, स्तुति—मा 1 पूजा, अर्चना 2 प्रशंसा, भी 1 पूजा, अर्चना 2 प्रशंसा 3 याचना ४ मृतक को पुनर्जीवित करने वाली औषधि। सम० माला, वालिका किसी द्वार पर लगाई गई फूलमाला।

वंदनीय (वि०) [वन्द्+अनीयर्] अभिवादन के योग्य, सत्कार के योग्य,- या हरिताल, गोरोचना।

वंदा [वन्द्+अच्+टाप्] भिक्षुणी, भीख मांगने वाली स्त्री।

वंदारु (वि०) [वन्द्+आरु] 1 प्रशंसा करने वाला 2 श्रद्धालु, सम्मानपूर्ण, विनीत, शिष्ट परमगुरुहोता महामुनिवंदारु मुद्रा० ७, नपु० प्रशंसा।

वंदिन् (पु०) [वन्द्+इन्] 1 स्तुति गायक, चारण भाट अमरुशत (भाट या चारण एक विशिष्ट जाति है जो क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की सन्तान है) 2 बंदी, कैदी।

वंदी (स्त्री०) [वन्दि+ङीष्] दे० वंदी। सम० पाल कारागाध्यक्ष, जेलर।

वंद्य (वि०) [वन्द्+ण्यत्] 1 सत्कार के योग्य, श्रद्धेय 2. सादर नमस्करणीय रघु० १३।७८, कु० ६।८३, मेघ० १२ 3 स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

वंश [वद्+रक्] पूजा करने वाला, भक्त,—ह्रस्व समृद्धि।

वंधुर (वि०) दे० 'बन्धुर'।

वंध्य, वंध्या दे० बन्ध्य, बन्ध्या।

वन्य (वि०) [वने भव. यत्] 1 जंगल से संबंध रखने वाला, जंगल में उगने वाला या उत्पन्न, जंगली कल्पविकल्पयामास वन्यामेवास्य संविधाम्—रघु० १।९४, वन्यानां मार्गशाखिनाम् ४५ 2 बर्बर, जो पालतू या घरेलू न हो रघु० २।८, ३७, ५।४३, न्य जंगली जानवर,—न्यम् जंगली पैदावार (जैसे कि फल, मूल आदि) रघु० १२।२०। सम०

इत्तर (वि०) पालतू, घरेलू, गज,—हीनः जंगली हाथी।

वन्या [वन्य+टाप्] 1 विशाल जंगल, झुरमुटों का समूह 2 जलराशि, बाढ़, जल-प्रलय।

वप् (भ्वा० उभ० वपति, वपते, उप्त, कर्मवा० उप्यते, इच्छा० विवप्सति ते) 1 बोना, (बीज) बिखेरना, पौधा लगाना यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्—मनु० ३।१४२, न विद्यामिरिणे वपेत्—२।११३, यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम् सुभा०, कु० २।५, श० ६।२३ 2 फेंकना, (पासा) डालना 3 जन्म देना, पैदा करना 4 चुनना 5 मूँडना, बाल काटना (प्रायः वैदिक), प्रेर० (वापयति—ते) बोना, पौधा लगाना, भूमि में डालना, आ 1 बिखेरना, इधर उधर फेंकना 2 बोना 3 यज्ञ आदि में आहुति देना उद्, उछालना नि 1 (बीज) इधर-उधर बिखेरना 2 (आहुति) देना, विशेषतः पितरों को न्यप्य पिण्डान्वष्टकासु मनु० ३।२१६, (स्मारयमुद्दिश्य) निश्चले सहकार मञ्जरी कु० ४।३८ 3 बलि चढ़ाना, यज्ञ के पशु का वध करना निस्—, 1 बिखेरना, (बीज आदि) छितराना 2 प्रस्तुत करना, पेश करना - श्रोत्रियायान्नमेवाग्र्यं वन्यवरी वा महाक्रतौ वा निर्वपति गृहमेधिन उत्तर० ४ 3 तर्पण करना विशेषकर पितरों का ४ अनुष्ठान करना प्रति—, 1 बोना 2 पौधा लगाना, जमाना, रोपना उत्तर० ३।४६, मा० ५।१० 3 जमाना (रत्नादिक) जड़ना, प्र—, फेंकना डालना प्रस्तुत करना मृच्छ० ९।९८।

वप्र [वप्+र] 1 बीज बोना 2 जो बीज बोता है, बोने वाला 3 मूँडना 4 चुनना।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1 बीज बोना 2 मूँडना, काटना मनु० ११।१५१ 3 बोने, गाड़ने, बीज बोने की दुकान 2. चुनने का उपकरण 3 नम्रु झाड़ना।

वपा [वप् अच्+टाप्] 1 चर्बी, वसा—याज्ञ० ३।९८ 2 छिद्र, रन्ध्र 3 कमी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला। सम०—मज्जन् (पु०) वसा, मज्जा।

वपिः [वप्+इलच्] प्रजापति, पिता।

वपुस (पु०) सुर, देवता।

वपुष्मत् (वि०) [वपु+उसि+मतुप्] 1 मूर्त, देहधारी, शरीरधारी—दधुर्वपुष्मतीमूर्जा मुनि सप्त वपुष्मानिव पुण्यसंचयः—कि० २।५६ 2 सुन्दर, मनोहर, पु० विश्वेदेवों में से कोई एक।

वपुस् (नपुं०) [वप्+उसि] 1 (क) शरीर, देह (स्मर) वपुषा स्वेन नियोक्ष्यिष्यति—कु० ४।४२, नव वयः कामिदं वपुश्च रघु० २।४७, शि० १०। ५०, (ख) रूप, आकृति, सूरत या छवि—लिखितवपुषौ शलभौ न दृष्टवा—मेघ० ८०, परिघसनजवतुल्यबाहु बृहत्० ३०।२५ 2 रस, प्रकृति मनु० ५।९६ 3 सौन्दर्य, सुन्दर रूप या छवि। सम० वृत्त, प्रकर्ष रूप की श्रेष्ठता, वैशिष्ट्य सौन्दर्य—सचेलस्नानेव वपुर्दर्शनेन—कु० ३।५२

वपुष् प्रकर्षादजयद् गुरुं रघु रघु० ३।३४, शि ३।२, **वप्र** (वि०) 1 मूर्त 2 सुन्दर वप्रं तत्र से चूने वाला तरल रस।

वप्तृ (पु०) [वप्+तृच्] 1. (बीज का) बोने वाला, पौधा लगाने वाला, किसान ०, शाले स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते—मुद्रा० १।३, मनु० ३।१४२ 2. पिता, प्रजापति 3 कवि, अस्त स्फुरं या प्रकाशित बुद्धि।

वप्र,—त्रम् [उप्यते अत्र वप्+रन्] दुर्गप्राकार मिट्टी की दीवार, गारे की भित्ति केलाद्यवलया (ऊर्वीम्) रघु० १।३० 2 तटबंध या टीला (जिसमें कि हाथी या साँड टक्कर लगाते हैं) रघु० १३।४७ दे० नी० वप्रक्रीडा 3 किसी पहाड़ या चट्टान का ढलान बृहच्छिलावप्रघनेन वत्सला—कि० १४।४० 4. चोटी, शिखर, अधित्यका—तीव्र महावप्रमिवाम्बु चरन्ति धेनवः शि० ४।५८, ३।३७, कि० ५।३६, ६।७ 5 नदीतट, पार्श्व, किनारा, वेलातट, प्लवगप्रतेनरनुवप्रनयाम्—कि० ६।४, ७।११, १७।५८ 6 किसी भवन की नींव 7 शहरपनाह या दुर्गप्राकार से युक्त नगर का फाटक 8. खाई 9 वृक्ष का व्याम 10 खेत 11 मिट्टी का टीला (जिसको कि हाथी या साँड टक्कर मारें)—प्र पिता, ब्रह्म सीसा। सम०

अभिघातः (किसी पहाड़ या नदी आदि के) तटबंध पर टक्कर मारना कि० ५।४२, तु० 'तटाघात'

क्रिया, क्रीड़ा किसी टीले या तटबन्ध पर हाथी (या साँड) का टक्कर मार कर विहार करना—वप्रक्रियामजलतटेषु रघु० ५।४४, वप्रक्रीडापरिणत गजप्रेक्षणीय ददर्श मेघ० २।

वप्रिः [वप्+क्रिन्] 1 खेत 2 समुद्र।

वप्री [वप्रि+ङीष्] मिट्टी का टीला, पहाड़ी।

वञ्च् (भ्वा० पर० वञ्चति) जाना, हिलना-डुलना।

वम् (भ्वा० पर० वमति, वांति, प्रेर० वामयति, वमयति, परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'वमयति') 1 वमन करना, थूक देना, मुँह से बाहर निकालना—रक्तं वाममिषुमुखैः —भट्टि० १५।६२, ९।१०, १४।३० 2 बाहर भेजना, उँडेलना, बाहर करना, उद्गीरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (आल० से भी) किमाग्नेयमाबा विकृत इव तेजांसि वमति —उत्तर० ६।१४, श० २।७, रघु० १६।६६, मेघ० २०, अविदितगुणापि सत्कविभणितिं कर्णेषु वमति मधुधाराम्—वाम० 3 बाहर फेंकना नीचे डाल देना —वान्तमाल्य —रघु० ७।६ 4 अस्वीकृत करना, छोड़—1 थूक देना, उद्वमन करना 2 कै करना, भेज देना, उँडेल देना—उद्वामेन्द्रमणिप्रभा भुविलसन्नागाधिपोरगी —रघु० १२।५, मुद्रा० ६।१३।

वम [वम्+अप्] कै करना, वमन करना, बाहर निकालना।

वमथु: [वम्+अथुच्] 1 कै करना, उद्वमन, थूकना 2 हाथी के द्वारा अपनी सूँड से फेंका गया पानी।

वमनम् [वम्+ल्युट्] 1 कै करना, उलटी 2 बाहर खींचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिष्यन्द-वमनम्' में, रघु० १५।२९, कु० ६।३७ 3 उलटी लानेवाली 4 आहुति देना न गाजा - भी जोक।

वमनीया [वम्+अनीयर्+टाप्] मकरी।

वमि [वम्+इन्] 1 आग 2 ठग, बदमाश—नि (स्त्री०) 1 बीमारी, जी मिचलाना 2 उलटी लाने वाली (औषधि)।

वमी [वमि+ङीष्] उलटी करना।

वंभारवः [प० त०] पशुओं के रंभाने की आवाज।

वक्रः,-क्री [वम्+रक्, वमि+कीष्] चिउँटी। सम०—कूटम् बाँबी।

वय् (भ्वा० आ०—वयते) जाना, हिलना-डुलना।

वयनम् [वे+ल्युट्] बुनना।

वयस् (नपुं०) [अज्+असुन्, वीभाव] 1 आयु जीवन का कोई काल या समय, गुणा पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः उत्तर० ४।११, नवं वयः —रघु० २।४७, पश्चिमे वयसि - १०।१, न खलु वयस्ते-जसां हेतुं —शकु० २।३८, तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते —रघु० ११।१, कु० ५।२६ 2 जवानी, जीवन का प्रमुख अंग—अयागते किं वनितासिलाषे सुभा० इसी प्रकार 'अनित्यालवयः' 3 पक्षी—स्मरन्तीयां समये वयः वयः —नै० २।६२, मृगयोगवयांपक्ष्मि वनम् रघु० ९।५३, २।९, शि० ३।५५, ११।४७ 4 कौवा —पञ्च० १।२३ (यहाँ इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है)। सम०—अतिग अतीत (वि०) (वयोतिग आदि) बड़ी आयु का, बूढ़ा, जीर्ण, शक्तिहीन,—अधिक (वि०) (वयोधिक) आयु में अधिक, वयोवृद्ध, वरिष्ठ अवस्था (वयोऽवस्था) जीवन की एक अवस्था, आयु की माप,—मा० ९।२९,—कर (वि०) स्वास्थ्य देनेवाला, जीवन को पुष्ट करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला गत (वि०) 1 वयस्क 2 वयोवृद्ध परिणति, परिणाम आयु की परिपक्वावस्था, वयोवृद्धता—प्रमाणम् 1 जीवन का माप या लम्बाई 2 जीवन की अवधि,—वृद्ध (वि०) वयोवृद्ध) बूढ़ा, बड़ी आयु का,—सन्धि 1 जीवन के एक काल से दूसरे काल में संक्रमण—क्रयो यत्र संक्रय 2 वयस्कता, परिपक्वावस्था (वयस्क होने का काल),—स्थ (वि०) (वयः स्थ-या-वयस्थ) 1 जवान 2 बच प्राप्त, बालिग 3 उपयुक्त शक्तिशाली (—स्था) सखी, सहेली, —हानि (वयोहानि) 1 जवानी का ह्रास 2 यौवन का ह्रास।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्य यत] 1 समान आयु का 2 समसामयिक,—स्यः मित्र, सखा, साथी (प्रायः समान ही आयु का) -स्या सखी, सहेली।

वयुनम् [वय्+उनन्] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति 2 मन्दिर (ज्ञानादिमूलों में इस शब्द का इसी अर्थ में पल्लिङ्ग भी प्रयुक्त किया गया है)।

वयोभवः (पु०) [वयो यौवनं हरति - वयस्+हृ+अण् मुमि] यमराज या पाप व्यक्ति।

वयोरामः [वयसा रामितः] सीमा

वर् (चुरा० उभ० वरयति ते, वरित या व का प्रेर० रूप) माँगना, चुनना, छाँटना, खोज करना,—देo 'वृ'।

वर (वि०) [वृ+कर्मणि अप] 1 श्रेष्ठ उत्तम मूल्यवान् या अत्यन्त मूल्यवान्, छाँटा हुआ वाञ्छित (सब० स० अथवा समास के अन्त में) बहुत वर रघु० १।५९, वेदविदां वरेण्य - ५।२३, ११, ५४, कु० ६।१८ नृवर, तरुवर, मणिवर आदि 2. अपेक्षाकृत अच्छा, दूसरे से अच्छा, अधिकतर वाञ्छित इत्या. सन० १।३०३, याज्ञ० १।३५१ 3 चुनने और छाँटने की क्रिया 2 छाँट, चुनाव 3 वरदान, आशीर्वाद, अनुग्रह, वरं वृ या याच् का मामाद्य पोलाग्नि ते पुत्र वरं वृणीष्व रघु० ३।६२ भवत्प्रसादस्यवरोऽयमर्णः—कु० ३।३२, ('वर' और 'आशिस्' का अन्तर जानने के लिए दे० 'आशिस्') 4 भेंट, उपहार, पारितोषिक पुरस्कार 5 कामना, इच्छा 6 याचना, अनुरोध 7. दुल्हा, पति—वर वरयते कन्या दे० वध (२) के नीचे भी 8 पाणिग्रहणार्थी विवाहार्थी 9 स्त्रीधन, दहेज 10 जामाता 11 कामुक कामासक्त 12 चिड़िया,—रम् आफरात, केसर, (वरम् को पृथक् देखिये)। सम०—अङ्ग (वि०) उत्तम रूप

माला (—कः) हाथी (,—नी) हल्दी, (,—मन्) 1. सिर 2. उत्तम भाग 3 पांजल रूप 4 योनि, 5 हरी दारचीनी,—अंगना कमनीय स्त्री—अर्ह (वि०) वर पाने के योग्य,—आजीवन (पुं०) ज्योतिषी, —आरोह (वि०) सुन्दर कूल्हों वाला (—हः) उत्तम सवार (—हा) सुन्दर स्त्री,—आलिः चोर, आसनम् 1 उत्तम चौकी 2 मुख्य आसन, सम्मान की कुर्सी 3 चीनी गुलाब,—इक्षुः,—क्षः (स्त्री०) सुन्दर स्त्री (शा० सुन्दर अवयवों से युक्त स्त्री), कन्दुः इस का विशेषण,—कण्डनम् 1. एक प्रकार की बन्धन की लकड़ी 2 देवदार, चीड़ का पेड़, —तरु (वि०) सुन्दर अवयवों वाला (स्त्री० रु:) सुन्दर स्त्री—वरतनु-रयंवासी मैंव दृष्टा स्वप्ने मे—विक्रम० ४।२२,—तंडुः एक प्राचीन मुनि का नाम—रघु० ५।१,—तरुः नीम का पेड़ द (वि०) 1 वर देने वाला, वरदान प्रदान करने वाला 2 मंगलप्रद (—दः) 1. उपकारी 2 पितृवर्ग (—दा) 1 नदी का नाम मालवि० ५।१ 2. कुमारी, कन्या,—दक्षिणा दुलहिन के पिता-द्वारा दूल्हे को दिया गया उपहार,—दानम् वर प्रदान करना द्रुमः अगर का वृक्ष,—निश्चयः दूल्हे का चुनाव, पक्षः (विवाह में) दूल्हे के दल के लोग रघु० ६।८६,—प्रस्थापनम्,—यात्रा विवाह संस्कार के लिए दूल्हे का जलूस के रूप में दुलहिन के घर की ओर कूच करना, फलः नारियल का पेड़, —पुष्पिका, —पुष्पी (स्त्री०) सुन्दर तरुणी स्त्री,—रुचिः एक कवि और वैयाकरण का नाम (विक्रमादित्य राजा के दरबार के नवरत्नों में से एक, दे० नवरत्न, कुछ लोग पाणिनि के सूत्रों पर प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन से इसकी अभिन्नता सिद्ध करते हैं),—लब्ध (वि०) जिसने वरदान प्राप्त कर लिया है (ब्धः) चम्पक वृक्ष,—वल्कला लाख, वल्लभ, वर्णिन् सोना, —वर्णिनी 1. उत्तम और सुन्दर रंगरूप वाली स्त्री 2 स्त्री 3 हल्दी 4. लाख 5 लक्ष्मी का नामांतर 6 दुर्गा का नामांतर 7. सरस्वती का नाम 8. 'प्रियंगु' नाम की लता, —वल्कु 'दूल्हे की माला' वह माला जो दुलहिन, दूल्हे के गले में डालती है।

वरकः [वृ+वुन्] 1. इच्छा, प्रार्थना, वर 2 घोड़ा लादिये की एक प्रकार, कम् 1 नाव को हकने की चादर 2 गौलिया, अंगोछा।

वरट [वृ+अटन्] 1. हंस 2 एक प्रकार का अनाज 3. एक प्रकार की बर्र, भिड़,—टा,—टी 1. हंसिनी, नवप्रसूति-वंरटा तपस्विनी—मे० १।२३५ 2 भिड़, बर्र या उसके प्रकार - जो वयस्य एते वत्स वास्या पुत्रा अर्धकल्पवती वरटा भीता इव गोपालवारका आरभ्ये वयसम न जानंते तत-तत पलायंती—मृच्छ० १,—टम् खुद का फूल।

वरणम् [वृ+ल्युट्] 1. छांटना, चुनना 2. मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना 3 घेरना, घेरा डालना 4. ढकना, परदा डालना, परदा करना 5. दुलहिन का चुनाव,—णः 1. परकोटा, प्राचीर 2 पुल 3 वरुण नामक वृक्ष 4 पुल यह विचारपूर्ण वरणा-वरणा करिणां मुदे मनस्वदानलवा. कि० ५।२५ 5 ऊँट। सम०—माला,—अन् दे० वरत्रा।

वरणसी (अधिक प्रचलित रूप=वाराणसी)—दे०।

वरत्रः [वृ+अत्रच्] 1 समुदाय, वर्ग 2 मुंह पर लिपटी पूली 3. वरामदा 4 बाल का ढेर 5. छोला (यदि-दमीमहं वरत्रबन्धुक इव दुरनुशिष्य पातित—मृच्छ० में 'वरत्रबन्धुक' शब्द का अर्थ संदिग्ध है, इसका अर्थ प्रतीत होता है 'ऊपर लटकती हुई या उभरी हुई दीवार' जो यदि और ऊपर उठाई गई तो उसका गिरना आसान निश्चित है; यही बात कुम्हार के विषय में है जिसकी आशाएं अत्यंत ऊंची उठी परन्तु केवल निराशा में परिणत होने के लिए)।

वरत्रकः [वरत्र+कन्] 1 मिट्टी का टीला 2. हाथी की पीठ पर बना होदा 3 दीवार 4. मुंह पर मुहासा।

वरत्रा [वरत्र+टाप्] 1. छुरी, छुरी 2. एक पक्षी —त्रिका 3. दीपक की बत्ती।

वरत्रा [वृ+अत्रच्+टाप्] फीता, (कपड़े का) तस्मा या पट्टी, शि० ११।४४ 2. घोड़े या हाथी का साज।

वरम् (अव्य) [वृ+अप्] अपेक्षाकृत, श्रेष्ठतर, श्रेयस्कर, अधिक अच्छा, कभी कभी यह अव्य० के साथ प्रयुक्त होता है—समुज्झितं भूतिसमार्थसंचयादहो विरोधोऽपि समं महात्मभि —शि० ४।८, परन्तु इस शब्द का प्रयोग बहुधा बिना किसी तुलना के होता है, 'वरम्' प्रायः उस वाक्य खंड के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें अपेक्षित वस्तु विद्यमान है; तथा 'न च' 'न तु' और 'न पुनः' उस वाक्यखंड के साथ जिसमें वह वस्तु विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती को प्रमुखता दी गई है। (दोनों वर्तु० में रखने वाले हैं), वरं भीम कार्यं न च कदनमुखं सहृदां.....वरं विद्वांसोऽपि न च परवशत्वावमुखम् हि० १, वरं मरणमेवात्रो न पुनरयमायासमुपमः—मालवि०, कभी कभी न' का प्रयोग 'च, तु, और पुनः' के बिना भी होता है—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६।

वरटः [वृ+अलच्] एक प्रकार की बर्र, भिड़,—टा 1. हंसिनी 2 एक प्रकार की भिड़, बर्र।

वरा [वृ+अच्+टाप्] 1. छिपकली 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3. हल्दी 4. पार्वती का नाम।

वराक (वि०) (स्त्री०—की) [वृ+आकन्] बेचारा, दयनीय दशा, मन्दभाग्य दुःखी, अभागा (बहुधा दया दिखाने के लिए प्रयुक्त) सम्भवतः न पुनर्वत्स वराक

वराकीयमानित –पद० १, तत्किमुज्जिहानजीविता वराकी नानुकपसे – मा० १०,–क 1 शिव 2 संग्राम, युद्ध ।

वराट: [वरमल्पमटति अट्+अण्] 1 कौडी 2 रस्सी, डोरी ।

वराटक [वराट+कन्] 1 कौडी–प्राप्ता कालवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुच माम्—भर्तृ० २।४ 2 कमल फूल का बीजकोष 3 डोरी, रस्सी (इस अर्थ में 'नपु० भी) । सम० – रज्जु (पु०) नाग केसर नामक वृक्ष ।

वराटिका [वराट्+कन्+टाप्, इत्वम्] कौडी – भामि० २।४२ ।

वराक: [वृ+घान च्] इन्द्र का विशेषण ।

वराणसी दे० वाराणसी ।

वरारकम् [वर+ऋ+ण्वुल्] गेरा ।

वराल, वरालक. [वृ+आलच् स्वार्थे कन् च] लौंग ।

वरासि:–सि: [वरम् आवरणमश्नुते वर+अश्+इन्, वरं श्रेष्ठं अस्यते क्षिप्यते –वर+अस् इन्] मोटा कपडा ।

वराह: [वराय अभीष्टाय मुक्तादिलाभाय आहन्ति भूमिम्—आ+हन्+ड] सूअर, खोदा किया गया सूअर,–विलग्न क्रियता वराहतनिभिर्भुक्तोज्झितं पल्वले —शा० २।६ 2 मेंढा 3 बैल 4 बादल 5 मस्तमछली 6. शुक्राकृति में बना सैनिक व्यूह 7 विष्णु का तीसरा वराह–अवतार—तु० वमति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलङ्क कलेव निमग्ना । केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे गीत० १ 8 एक विशेष माप 9 वराहमिहिर का नामान्तर 10 अठारह पुराणों में से एक । सम० –अवतार विष्णु का तीसरा अवतार, वराहावतार,–कन्द वाराहीकन्द, एक खाद्य पदार्थ,–कर्ण एक प्रकार का बाण, –क्रान्ता एक प्रकार का अस्त्र,—कल्प वराहावतार का समय, वह काल जब विष्णु का वराह का अवतार धारण किया, मिहिर एक विख्यात ज्योतिर्वेत्ता, बृहत्संहिता का प्रणेता (राजा विक्रमादित्य की राज-सभा के नवरत्नों में से एक),– शूल शिव का नाम ।

वरिमन् (पु०) [वर+इमनिच्] श्रेष्ठता, सर्वोपरिता, प्रमुखता ।

वरिवसित (स्त्रि) त [वरिवस् (स्या)+इतच्] पूजा गया, सम्मानित, अर्चित, सत्कृत ।

वरिवस्या [वरिवस पूजाया करणम्—वरिवस्+क्यच् +अ+टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, भक्ति ।

वरिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वर उरुर्वा उरु +इष्ठन् वरादेश उरु की उ० अ०] 1 सर्वोत्तम, अत्यत श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य, प्रमुख 2 अत्यन्त विशाल, उरुतम् 3 अत्यन्त विस्तृत 4 गुरुतम, –ष्ठ: 1. तित्तिर पक्षी, तीतर 2 मलेरे का पेट, ष्ठम् 1 नाखून 2 मिर्च ।

वरी [वृ+अच्+ङीष्] 1 सूर्य की पत्नी छाया 2 शतावरी नाम का पौधा ।

वरीयस् (वि०) [अयमनयोरतिशयेन वर उरुर्वा उरु +ईयसुन् वरादेश, उरु की उ० अ०] । अत्यधिकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ, अधिमान्य 2 अत्युत्तम, बहुत अच्छा मा० १।१६ 3 अत्यधिकृत बडा, चौडा या विस्तृत ।

वरी (ली) वर्द [व+किप्=वर्, ई वाच्य ईश्वरी, स्त्री दद्यात् दा+क+ईवर्द, वत्सो चासौ ईवर्दश्च, कर्म० स०] बैल साँड ।

वरीयु [वर श्रेष्ठ इषु यस्य, पृषो०] कामदेव का नाम ।

वरुट (पु०) म्लेच्छ जाति का नाम ।

वरुड (पु०) एक नीच जाति का नाम ।

वरुण [वृ+उनन्] 1 आदित्य का नाम (बहुधा 'मित्र' के साथ युक्त होकर) 2 परवर्ती पौराणिकता के अनुसार) समुद्र की अधिष्ठात्री देवता पश्चिम दिशा का दिग्पाल (हाथ में पाश लिए हुए) यामो राजा वरुणो यादि मध्ये सत्यानृत अथ पश्यञ्जनानाम् वरुणा यादसामाहुप - भग० १०।२९, प्रतीची वरुण पति –मनु० अतिसर्वत्रिमेण्य वरुणस्य दिशा भुवाम् व रुणादनुपारकर शि० २।३ 3 समुद्र 4 अग्नि । सम० अगस्त्य अगस्त्य का विशेषण,–आत्मजा मदिरा (समुद्र से निकलने के कारण इसका यह नाम पडा) – आलय, - आवास. समुद्र पाश' घटिकाल लोक 1 वरुण का संसार 2 जल ।

वरुणानी [वरुण+ङीप्, आनुक] वरुण की पत्नी ।

वरुत्रम् [वृ+उत्र] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा ।

वरूथम् [वृ+ऊथन्] 1 एक प्रकार का लकडी का बना आवरण जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की रक्षा करे (इस अर्थ में पु० भी) वरूथं रथगुप्तिर्यां निरोधस्त्वन्धिनिम् 2 कवच वख्तर 3 ढाल 4 वंश, समुच्चय, समवाय, थे 1 कौशल 2 छल ।

वरूथिन् (वि०) [वरूथ+इन्] 1. कवचधारी, वख्तरयुक्त 2 अगारगुप्ति या बचाव जगले से सुसज्जित अव-निमेकरथेन वरूथिना जितबल किल तस्य यतुर्भुव --रघु० ९।११ 3 बचाने वाला, आश्रय देने वाला 4 गाडी में बैठा हुआ, पु० 1 रथ 2 अभिरक्षक, प्रतिरक्षक,—नी सेना स्खलितमभिप्रायमुत्सर्ज्यतेना जगाम वरूथिनी शि० १।७७, रघु० १२।५० ।

वरेण्य (वि०) [वृ+एण्य] 1 अभिलषणीय, वाञ्छनीय, पात्र वरणीय – अनेन वैदिच्छसि गृह्यमाण पाणि वरेण्येन रघु० ६।२४ 2 (अत) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ-तम, प्रमुख, पूज्यतम, मुख्य–वेदा विधाय पुनरक्त-

मिवेन्दुदिव दूरीकरोति न कथं विदुषा वरेण्य –भामि० २।१५८, न-सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि ऋक् ३।३२।१०, रघु० ६।८४, मट्टि० १।४, कु० ७।९०, स्वर्ण जाफरान, केसर।

वरोट [वराणि श्रेष्ठानि उटानि दलानि यस्य ब० स०] मरुवे का पौधा,—टम् मरुए का फूल।

वरोल [वृ+ओलच्] बर, भिड़।

वर्कर [वृक्+अरन्] 1 भेड़ या बकरी का बच्चा मेमना 2 बकरा 3 कोई पालतू जानवर का बच्चा 4 आमोद, क्रीडाविहार, मनोरञ्जन। सम० कर्कर, चमड़े की रस्सी या तस्मा जिससे बकरी या भेड़ बाँधी जाय।

वर्करात [वर्कर परिणामम् अटति गच्छति वर्कर+अट्+अण्] 1 तिरछी नजर, कटाक्ष 2 स्त्री के कुचों पर उसके प्रेमी के नखक्षतों के चिह्न।

वर्कुट (पु०) कील, अर्गला, बटखरी।

वर्ग [वृज्+घञ्] 1 श्रेणी, प्रभाग समूह, दल समाज आदि, समूह (एक समान वस्तुओं का), न्यायेन शेषाण्यनुपरिवर्ग —रघु० २।४ ११।३, इसी प्रकार पौरवर्ग, नक्षत्रवर्ग आदि 2 टोली, पक्ष, कु० ३।७२ 3 प्रबन्ध 4 एक स्थान पर वर्गीकृत शब्दसमूह यथा मनुष्यवर्ग वनस्पतिवर्ग आदि 5 वर्णमाला में व्यञ्जनों का समूह 6 अनुभाग अध्याय, या पुस्तक का परिच्छेद 7 विशेषकर ऋग्वेद के अध्यायान्तर्गत अवभाग सूक्त 8 पास दो समान अंकों का गुणनफल 9 सामर्थ्य। सम०—अन्त्यम्, अन्तिमम् पाँचों वर्गों में से प्रत्येक का अन्तिम वर्ण अर्थात् अनुनासिक अक्षर, आद्य वर्ग का घनफल नवम्, मूलम् वर्गमूल, यह अंक जिसके घात से को वर्गांक बने —वर्ग, वर्ग का वर्ग।

वर्गणा (स्त्री०) गणन, घात।

वर्गशस् (अव्य०) [वर्ग+शस्] समूहों में श्रेणीवार।

वर्गीय (वि०) [वर्ग+छ] किसी श्रेणी या प्रवर्ग से सम्बद्ध, या सहपाठी।

वर्ग्य (वि०) [वर्गे भवः यत्] एक ही श्रेणी का,—स्यः एक ही श्रेणी या दल से सम्बद्ध, सहयोगी, सहपाठी, सहाध्यायी (शिक्षा में) या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन नयेन सर्वे वर्ग्याः पाठिताः मा० १, शि० ५।१५।

वर्च् (भ्वा० आ० वर्चते) चमकना, उज्ज्वल या आभायुक्त होना।

वर्चस् (नपु०) [वर्च्+असुन्] 1 वीर्य, बल, शक्ति 2 प्रकाश, कान्ति, उजाला, आभा 3. रूप, आकृति, शकल 4. विष्ठा, मल। सम० –घ्नः कोष्ठ बद्धता, कब्ज।

वर्चस्क [वर्चस्+कन्] 1 उजाला, कान्ति 2 वीर्य 3 विष्ठा।

वर्चस्विन् (वि०) [वर्चस्+विनि] 1 शक्तिशाली, ओजस्वी, सक्रिय 2 देदीप्यमान्, उज्ज्वल, तेजस्वी।

वर्ज् [वृज्–घञ्] छोड़ देना परित्याग।

वर्जनम् [वृज् ल्युट्] 1 छोड़ना, त्याग, तिलाञ्जलि 2 वैराग्य 3 अपवाद, बहिष्करण 4 चोट, क्षति, हत्या।

वर्जम् (अव्य०) निकाल कर, बाहर करके, सिवाय (समास के अन्त में) गौतमीवर्जमिलाया निष्क्रान्ता दश० ४, कु० ७।७२।

वर्जित (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, अलगाया हुआ 2 परित्यक्त, उत्सृष्ट 3 बहिष्कृत 4 रहित, विरहित, हीन जैसा कि 'गुणवर्जित' में।

वर्ज्य (वि०) [वृज्+ण्यत्] 1 टाल जाने के योग्य, छिड़काये जाने के योग्य 2 बहिष्कृत किये जाने के योग्य या छोड़े जाने के योग्य 3 छोड़कर, सिवाय के,।

वर्ण (चुरा० उभ० वर्णयति–ते वर्णित) 1 रंग करना, रंगना, रोगन करना, रंगना यथा हि भरतो वर्णैर्वर्णयत्यात्मतस्तनुम् मुमा० 2 बयान करना, वर्णन करना, व्याख्या करना, लिखना, चित्रित करना, अंकित करना, निरूपण करना अनिल जयदेवेन हरेरिद प्रबन्धन गीत० 3, कि० ५।१० 3 प्रशंसा करना, स्तुति करना 4 फैलाना, विस्तृत करना 5 रोशनी करना, उप–बयान करना, वर्णन करना वि– 1 ध्यान से देखना, सावधानता पूर्वक अंकित करना 2 देखना, निहारना।

वर्ण [वर्ण्+घञ्] 1 रंग, रोगन—अत शुद्धस्वभावेऽपि भविता वर्णसाङ्कर्यं कृष्ण –मेघ० ४९ 2 रोगन, रंग, दे० वर्ण (1), 3 रंग, रूप, सौन्दर्य, स्वच्छायादल अलमवनते शार्ङ्गिणो वर्णचौरे—मेघ० ४६, रघु० ८।४२ 4 मनुष्य श्रेणी, जनजाति या कबीला, जाति (मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण के लोग) वर्णानामानुपूर्व्येण– याज्ञ० न कश्चिद्वर्णानामपकृष्टोऽपि भवते—मृ० ५।१०, रघु० ५।१९ 5 श्रेणी, वंश, जनजाति, प्रकार, जाति जैसा कि 'सर्ववर्णम् अक्षरम्' में 6. (क) अक्षर, वर्ण, ध्वनि में वर्णविचारस्तमादृष्टि विक्रम० ५, (ख) शब्द, मात्रा—सा० द० ९ 7 ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति राजा प्रजारञ्जनलब्धवर्णः रघु० ६।२१ 8 प्रशंसा 9 देवमूर्ति, सचाबट 10 बाहरी छवि, रूप, आकृति 11 चादर, दुपट्टा 12 ढकने के लिए ढक्कन, चपनी 13 किसी विषय का कथनीत में, गीतक्रम –उपोद्घातवर्णे चरिते पिनाकिनः कु० ५।५६, 'गीतिविधात' अर्थात् गान का विषय बना हुआ

14. हल्दी की झुल 15 गुण, धर्म 16 धर्मानुष्ठान 17. ब्रह्मा राशि वर्ण् 1. केसर, जाफरान 2 रंग-दार उबटन या सुगन्धद्रव्य। सम० अंका लेखनी, —अपसदः जातिभ्रष्ट—अरेत (वि०) जातिशून्य, जातिभ्रष्ट, पतित अर्हः एक प्रकार का लोबिया, —आगमः किसी अक्षर का जोड़ना अवेहुर्णागमाद्वस —सिद्धा०, आत्मन् (पु०) शब्द,—उद्धकम् रंगीन पानी रघु० १६।७०, - कूपिका दवात,—कर्मः 1. वर्ण व्यवस्था, रंगों का काम 2 वर्णमाला—कारकः चितेरा, ब्लोक. ब्राह्मण, तूलिः, तूलिका,—तूली (स्त्री०) कूची, चितेरे का ब्रुश,—द (वि०) रंगसाज (—दम्) दारुहल्दी—दारु हल्दी—दूतः एक,—धर्मः प्रत्येक जाति के विशिष्ट कर्तव्य,—नाशः किसी अक्षर का लोप हो जाना,—पुष्पम् पारिजात का फूल,—पुष्पकः पारिजात —प्रकर्षः रंग की श्रेष्ठता, प्रलोभनम् अगर की लकड़ी, -मातृ (स्त्री० लेखनी, पैंसिल, कूची,—मातृका सरस्वती,—माला, रीतिः (स्त्री०) अक्षरों की यथाक्रमसूची, वर्णमाला,—यतिः,—यतिका (स्त्री०) रंग भरने की तूलिका, विपर्ययः वर्णों का उलट फेर-(भवेत्) सिद्धिः वर्ण विपर्ययात्-सिद्धा०, विलासिनी हल्दी, विलोडकः 1 सेंध लगाकर घर में घुसने वाला 2. साहित्य चोर (डा० शास्त्रचोर),—वृत्तम् वर्णों की गणना के आधार पर विनियमित छन्द या वृत्त (विप० मात्रावृत्त), व्यवस्थितिः (स्त्री०) वर्णव्यवस्था, वर्णविभाग,—शिक्षा वर्णमाला सिखलाना,—श्रेष्ठः ब्राह्मण,—संयोगः एक ही वर्ण के लोगों में विवाहसम्बन्ध होना,—संकर 1. अन्तर्जातीय विवाह के कारण वर्णों का सम्मिश्रण 2 रंगों का मिश्रण —विशेषेषु वर्णसंकर.—का० (यहाँ, दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) वि० १४।३७, संघातः, समाम्नायः वर्णमाला।

वर्णकः [वर्णयति—वर्ण्+ण्वुल्] 1. मुखावरण, नकाब अभिनेता की वेशभूषा 2 चित्रकारी, चित्रकारी के लिए रंग वि० १६।१२ 3 रंगलेप या कोई उबटन के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु - एतैः पिष्टतमालवर्णकनिभैरालिप्तमन्मोदरैः मृच्छ० ५।४६, भट्टि० १९।११ 4. आठ, चारण, स्तुतिगायक 5. चन्दन (वृक्ष)।—का 1 कस्तूरी 2. रंगलेप, चित्रकारी के लिए रंग 3. उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, कम् 1 रंगलेप, रंग, वर्ण द्र० ६।१५ 2. चन्दन 3 परिच्छेद, अध्याय, प्रभाग।

वर्णनम् या [वर्ण्+ल्युट्] 1. चित्रकारी 2 वर्णन, आलेखन, चित्रण -स्वमनोभिलषितम् विभाव्य स्वकिया-स्यवर्णनम्—काव्य० १० 3. लिखना 4 वक्तव्य, उक्ति 5. प्रशंसा, संस्तव (—ना केवल इसी अर्थ में)।

वर्णनिः [वृक्ष्+अनि, नुक्] जल।

वर्णाढ्यः [वर्ण+अट्+अच्] 1. चित्रकार 2 गायक 3 जो अपनी आजीविका अपनी पत्नी के द्वारा करता है, स्त्रीकृताजीव।

वर्णिका [वर्ण अक्षरादि लेख्यत्वेन सन्त्यस्या ठन्] 1 अभिनेता की वेशभूषा या नकाब 2 रंग, रंगलेप 3 स्याही, मसी 4. लेखनी, पैंसिल। सम०—परिग्रहः स्वांग भरना या नकाब धारण करना तत प्रकरणे नायकस्य माधवीवल्लभस्य माधवस्य वर्णिकापरिग्रह कथम् - मा० १।

वर्णित (भू० क० कृ०) [वर्ण्+क्त] 1 चित्रित 2 वर्णन किया गया, बयान किया गया 3 स्तुति की गई, प्रशंसा की गई।

वर्णिन् (वि०) [वर्णोऽस्त्यस्य इनि] (समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 इस रूप वाला 2 जाति से सम्बन्ध रखने वाला—पुं० 1 चित्रकार 2 लिपिकार, लेखक 3 ब्रह्मचारी, दे० ब्रह्मचारिन्।—अथाह वर्णी —कु० ५।६६, ५२, वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी विचक्षण प्रस्तुत माचष्टे—रघु० ५।१९ 4 इन चार मुख्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति। सम० लिङ्गिन् (वि०) ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण किए हुए, या उसके चिह्नों को धारण करने वाला स वर्णिलिङ्गी विदित समायमौ युधिष्ठिर द्वैतवने वनेचर कि० १।१।

वर्णिनी [वर्णिन्+ङीप्] 1 स्त्री 2 चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण की स्त्री 3 हल्दी।

वर्णुः [वृ+णु नित्] सूर्य।

वर्ण्य (वि०) [वर्ण्+यत्] वर्णन करने के योग्य (प्रकृत और प्रस्तुत शब्दों की भांति यह 'वर्ण्य' शब्द भी काव्य ग्रन्थों में प्राय प्रयुक्त होता है),—र्ण्यम् केसर, जाफरान।

वर्त्तः [वृत्+घञ्] (प्राय समास के अन्त में) जीविका, वृत्ति—जैसा कि 'कस्यवर्तम्' में। सम० आत्मन्

वर्त्तक (वि०) [वृत्+ण्वुल्] जीवित, विद्यमान, वर्तमान क 1 बटेर, लवा 2 घोड़े का सुम, कम् एक प्रकार का पीतल या कांसा।

वर्त्तका,—की [वर्तक+टाप्, ङीष् वा] बटेर, लवा।

वर्त्तन (वि०) [वृत्+ल्युट्] 1 टिकाऊ, रहने वाला ठहरने वाला, विद्यमान 2 स्थिर, —नः ठिकाना, बोना —नी 1 मार्ग, सड़क 2 जीना, जीवन 3 पीसना चूर्ण बनाना 4. नकुआ,—नम् 1 जीना, विद्यमान रहना 2 ठहरना, डटे रहना, निवास करना 3 वर्त्त, गति, जीने का ढंग या तरीका, - स्मरसि त्व तदुपा लेख्यावयोर्वर्तनानि—उत्तर० १।२६, (यहाँ शब्द का अर्थ 'आवास या निवास' भी है) 4 जीविका रहना

जीवनयापन करना (समास के अन्त में) 5. आजीविका, जीवन निर्वाह, वृत्ति 6 जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7 चालचलन, व्यवहार, आचरण 8 मजदूरी, वेतन, भाड़ा 9 व्यापार, लेनदेन 10. नकद 11 गोलक, गेंद।

वर्तनिः [वर्तन्तेऽस्या जना, वृत्+नि] 1 भारत का पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2. सूक्त, प्रशंसा, स्तोत्र —निः (स्त्री०) मार्ग, सड़क।

वर्तमान (वि०) [वृत्+शानच् मुक्] 1. मौजूद, विद्यमान 2 जीता हुआ, जीवित रहने वाला, समसामयिक—प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविकालिदासादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १ 3 मुड़ना, चक्कर काटना, घूम जाना—नः (व्या० में) वर्तमान काल—वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा—पा० ३।३।१३१।

वर्तलकः [वर्त+ल+ऊक] 1 पोखर, जोहड़ 2 भँवर, बवंडर, जलावर्त 3 चीते का घोंसला 4. द्वारपाल 5 नदी का नाम।

वर्तिः,—र्ती (स्त्री०) [वृत्+इन् का ङीप्] 1. कोई भी लिपटी हुई गोल वस्तु, पत्राली, बही 2 उबटन, मलहम, आँखों का लेप, काजल, अगराग (गोली या टिकिया के रूप में)—सा पुनर्मम प्रथमदर्शनात्प्रभृत्यमृतवर्तिरिव चक्षुषोरानन्दमुत्पादयन्ती मा० १, इयमपनवनिर्वपनयोः उत्तर० १।३८, कर्पूरवर्तिरिव लोचननागहरी—मालवि० ३।१६, विक्र० १ 3 दीपक की बत्ती मा० १०।४ 4 (कपड़े की) झालर, फलवे, किनारी 5 जादू का लैंप 6 बर्तन के चारों ओर का उभार 7 जर्राही उपकरण (रक्तनाल आदि) 8 धारी, रेखा।

वर्तिक [वृत+ठिकन्] बटेर, लवा।

वर्तिका [वर्त+ठिकन्+टाप्] 1 चित्रकार की कूँची तदनय चित्रफलके चित्रवर्तिकाहस्त मा० १, अंगुलिक्षरणगलद्वर्तिक रघु० १९।१९ 2. दीपक की बत्ती 3 रंग रंगने 4 बटेर, लवा।

वर्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वृत्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1 डटा रहने वाला, होने वाला, सहारा लेने वाला, टिकने वाला, स्थित 2 जाने वाला, वर्तिशील, मुड़ने वाला 3 अभिनय करने वाला, व्यवहार कर ने वाला 4 अनुष्ठाता, अभ्यास करने वाला।

वर्तिः (स्त्री) रः [वृत्+इरच्, पक्षे पृषो० दीर्घः] बटेर, लवा

वर्तिष्णु (वि) [वृत्+इष्णुच्] 1 चक्कर काटने वाला 2. वर्तमान, डटा रहने वाला 3. वर्तुलाकार।

वर्तुल (वि०) [वृत्+उलच्] गोल, कुण्डलाकार, मण्डलाकार—लः 1. एक प्रकार की दाल, मटर 2. बैंत, —लम् वृत्त।

वर्त्मन् (नपु०) [वृत्+मनिन्] 1 रास्ता, सड़क, पथ, मार्ग पलाडडो - वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९, पारसीकान्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना, 'स्थलमार्ग से' आकाशवर्त्मना 'आकाश के मार्ग से' 2 (आल०) रीति, मार्ग, सर्वसम्मत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रचलित रीति या आचरण क्रम—मम वर्त्मानुगच्छन्ति मनुष्या पार्थ सर्वशः भग० ३।२३, रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नियमस्थिरम् — रघु० १।१७ (यहाँ पर शाब्दिक अर्थ भी अभिप्रेत है), अङ्गमेव पतगवर्त्मना पुनरकाण्डे क्षयिणो भवाणि ते कु० ४।२०, 'परकाले के ढंग से' 3. स्थान, कर्म के लिए क्षेत्र न वर्त्म कर्म्मेच्छिदपि प्रदीयताम् कि० १४।१४ 4 पलक 5 धार, किनारा। सम० पात. मार्ग से व्यतिक्रम,—क्षयः, -क्षेपक पलकों का एक रोग।

वर्त्मनिः,—नी (स्त्री०) सड़क, रास्ता।

वर्त्म् (चुरा० उभ० वर्त्मयति-ते, वर्त्मापयति भी) 1 काटना छाँटना, मूँड़ना 2 पूरा करना।

वर्धः [वर्ध्+अच्, थञ् वा] 1. काटना, छाँटना 2 बढ़ाना, वृद्धि या समृद्धि करना 3. वृद्धि, बढ़ोतरी, धन 1 सोना 2 सिंदूर।

वर्धक, वर्धकि, वर्धकिन (पु०)) [वृध्+णिच्+ण्वुल्, वर्ध+कन्—ठि, वर्ध्—अच्+कन्—इनि] बढ़ई।

वर्धन (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्] 1 बढ़ने वाला उगने वाला 2 बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला, आवर्धन करने वाला, —न 1 समृद्धिकारक 2 वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है 3 शिव का नाम—नी 1 बुहारी, झाड़ू 2 विशेष आकार का जलघट, —नम् 1 उगना, फलना फूलना 2. विकास, वृद्धि, समृद्धि, आवर्धन, विस्तार 3 उन्नति 4 उल्लास, सजीवता 5 शिक्षा देना पालन-पोषण करना 6. काटना, छाँटना जैसा कि नाभिवर्धनम् में।

वर्धमान (वि०) [वृध्+शानच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला —नः 1 एरंड का पौधा 2 एक प्रकार की पहेली 3 विष्णु का नाम 4 एक जिले का नाम (इसी का लोग वर्तमान बर्दवान मानते हैं),—नः, -नम् 1 एक विशेष सुरत की तश्तरी, डमरू 2. एक रहस्यमय रेखाचित्र 3 वह भवन जिसका दक्षिण की ओर कोई द्वार न हो, —ना एक जिले का नाम (वर्तमान बर्दवान)। सम० पुरम् बर्दवान नामक नगर।

वर्धमानक [वर्धमान+कन्] एक प्रकार का पात्र, तश्तरी, डमरू, चषनी।

वर्धयित्नु [वर्धं छेदं करोति वृध्+णिच्+आयुच् ततो जाये स्युट्] 1. काटना, छाँटना 2. बालच्छेदन या

तत्सबधी कोई संस्कार 3 जन्मदिन का उत्सव 4 कोई सामान्य उत्सव जब समृद्धि की मंगलकामनाएँ तथा बधाइयों की अभिव्यक्ति की जाती है।

वर्धित (भू० क० कृ०) [वृध्+क्त] 1 विकसित बढ़ा हुआ 2 विस्तृत किया हुआ, विशाल बनाया हुआ।

वर्धिष्णु (वि०) [वृध्+इष्णुच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला, फलने फूलने वाला।

वर्धीनम् [वृध्+रन्] 1 चमड़े का तस्मा या पट्टी 2 चमड़ा 3 सीसा।

वर्धिका, वर्धी [वर्धं+कीष्, वर्धी+कन्+टाप्, ह्रस्व] चमड़े का तस्मा या पट्टी।

वर्मन् (नपु०) [आवृणोति अंगम्-वृ+मनिन्] 1 कवच, जिरहबख्तर -स्वहृदयममंणि वर्म करोति सजल-नलिनीदलजालम्—गीत० ४, रघु० ४।५६, मुद्रा० २।८ 2 छाल, वल्कल, पु० क्षत्रियों के नामों के साथ लगने वाला एक प्रत्यय -यथा चंडवर्मन्, प्रहारवर्मन् तु० दास। सम०—हर (वि०) 1 कवचधारी 2 इतना बड़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य)—सम्यग्विनीतमथ वर्महरं कुमारम्—रघु० ८।९४।

वर्मन (पु०) नारङ्गी का पेड़।

वर्मि (पु०) मत्स्य विशेष, बामी मछली।

वर्मित (वि०) [वर्मन्+इतच्] जिरहबख्तर पहने हुए, कवच से सुसज्जित।

वर्य (वि०) [वृ+यत्] 1 चुने जाने या छाँटे जाने के योग्य पात्र 2 सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान (बहुधा समास के अन्त में) अन्वीत स कतिपयै किरातवर्यै कि० १२।५४,—र्यं कामदेव—र्या 1 वह कन्या जो स्वयं अपना पति वरण करे 2 कन्या।

वर्वट दे० 'बर्बट'।

वर्वणा दे० 'बर्बणा'।

वर्वर (वि०) [वृ+अरच्, वुट् च] 1 हकलाने वाला 2 बल खाता हुआ, रः 1 बर्बर देश का वासी 2 बुद्धू, प्रलापी मूर्ख 3 जातिच्युत 4 घुंघराले बाल 5 हथियारों की झनकार 6 नृत्य की एक भावमुद्रा —रा, —री 1 एक प्रकार की मक्खी 2. जंगली तुलसी —रम् 1 पीला चन्दन 2 सिन्दूर 3 लोबान।

वर्वरकम् [वर्वर+कन्] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

वर्वरीकः [वृ+ईकन्, द्वित्वम् अभ्यासस्य] 1 घुंघराले बाल 2. एक प्रकार की तुलसी 3 एक झाड़ी विशेष।

वर्षु (र्षू) रः [वृ+उरच् पक्षे उरच्] एक वृक्ष विशेष, बदर, बेर।

वर्षः,-र्षम् [वृष् भावे घञ् कर्तरि अच् वा] 1 वर्षा, बारिश, वृष्टि की बौछार विद्युत्स्तनितवर्षेषु—मनु० ४।१०३ मेघ० ३५ 2 छिड़कना, उत्सरण, फैलना, बौछार सुरभि सुरविमुक्तम् पुष्पवर्षं पपात रघु० १२।१०२, इसी प्रकार शरवर्ष, शिलावर्ष, तथा लाजवर्ष आदि ३ वीर्यपात 4 वर्ष, साल (प्राय नपु०) ददति वर्षाणि तया सहोग्रमभ्यस्यतीव इतरा-सिधारम्—रघु० १३।६७, न वर्षं वर्षाणि द्वादश दक्षयागाता—दश०, वर्षभोग्येण शापेन—मेघ० १ 5 सृष्टि का प्रभाग, महाद्वीप (इस प्रकार के प्राय नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं 1 कुरु 2 हिरण्मय 3 रम्यक 4 इलावृत 5 हरि 6 केतुमाला 7 भद्राश्व 8 किंपुरुष और 9 भारत) एतद्गुरुगुरुभारभारत वर्षमद्य मम वर्तते वशे—शि० १४।५ 6 भारतवर्ष, हिन्दुस्तान 7 बादल (हेमचन्द्र के अनुसार केवल पु०)। सम०—अग्र,—अग्रज,—आद्य महीना, मास,—अब्द (नपु०) बारिश का पानी,—अयुतम् दस हजार वर्ष —अवग्रह,—अवस्थानम् शस्य ऋतु —आशय. मेंढक,—आवर्तः मोर,—उपल ओला,—कर बादल (—री) झींगुर,—कोशः,—क 1 मास, महीना 2 ज्योतिषी,—गिरि,—पर्वतः 'वर्ष-पहाड़' अर्थात् वह पर्वतश्रृंखला जो सृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभागों को एक दूसरे से पृथक् करती है,—ज (वि०) ('वर्षेज' भी) बरसात में उत्पन्न,—धर 1 बादल 2 हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक, खोजा—मालवि० ४, (इसी अर्थ में वर्षधर शब्द भी है),—पुराः वर्षों का समुच्चय, —प्रतिबन्ध सूखा, अनावृष्टि, प्रिय चातक पक्षी, वरः हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक, खोजा, वृद्धि (स्त्री०) जन्मदिन, —शतम् शताब्दी सौ वर्ष,—सहस्रम् एक हजार वर्ष।

वर्षक (वि०) [वृष्+ण्वुल्] बरसने वाला।

वर्षणम् [वृष्+ल्युट्] 1 वृष्टि, वर्षा 2 छिड़कना, बौछार, (आलं० से भी) द्रव्यवर्षणम्, 'धन की बौछार या धन बखेरना'।

वर्षणिः (स्त्री०) [वृष्+अनि] 1 वृष्टि 2 यज्ञ, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य 3 क्रिया, कर्म 4 टिकना, रहना, डटे रहना, वर्तन।

वर्षा [वृष्+अच्+टाप्] (प्राय स्त्री०, ब० व०) 1 बरसात, वर्षाऋतु, वर्षावायु सीध्ये पद्मान्मिमध्यस्था वर्षासु स्थगितिलशय—याज्ञ० ३।५२, मनु० ७।१ 2 बारिश, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन)। सम० —काल बरसात, वर्षाऋतु, इसी प्रकार 'वर्षासमय', —कालीन (वि०) वर्षा से उत्पन्न या संबंध रखने वाला—भू (पु०) 1 मेंढक 2 एक कृषि विशेष, इन्द्रगोप, —भूः, भ्वी (स्त्री०) मेंढकी या छोटा मेंढक,—रात्र 1 बरसात की रात 2 बरसात।

वर्षिक (वि०) [वर्ष+ठिकन्] बरसने वाला, बौछार करने वाला, —कम् अमर की लकड़ी।

वर्षित्नु [वृष्+क्त] वृष्टि, वर्षा ।

वर्षिष्ठ (वि०) [अतिशयेन वृद्धः, वृद्ध+इष्ठन्, वर्षादेश. वृद्ध की उ० अ०] 1 अत्यन्त बूढ़ा बहुत बड़ा 2. अत्यन्त बलवान् 3 विशालतम, अत्यन्त विस्तृत ।

वर्षीयस् (वि०) स्त्री०—सी) [अमनयोरतिशयेन वृद्ध वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेश, वृद्ध की म० अ०] 1. अपेक्षाकृत बड़ा, बहुत बूढ़ा 2 अपेक्षाकृत बलवान् ।

वर्षुक (वि०) (स्त्री०—की)[वृष्+उकञ्] बरसने वाला, जलमय, पानी डालने वाला —वर्षुकस्य किमप क्षुतोऽनेरबुदस्य परिहार्यमुचरम् शि० १४।४६, भट्टि० २।३७ । सम० अम्बु,—अंबुकः बारिश करने वाला बादल ।

वर्ष्मन् [वृष्+मन्] शरीर, दे० नी० ।

वर्ष्मन् [वृष् + मनिन्] 1 शरीर, देह 2 माप, ऊँचाई —वर्ष्म छिपाना विरुदत उच्चकैर्वनेचरेभ्यश्चिरमाचचक्षिरे—शि० १२।६४, रघु० ४।७६ 3 सुन्दर या मनोहर रूप ।

वर्ह्, वर्ह, वर्हण, वर्हिण, वर्हिन्, वर्हिस् दे० बर्ह्, बर्ह, बर्हण, बर्हिण, बर्हिन्, बर्हिस् ।

वल् (स्वा० आ० वलते—परन्तु कभी कभी 'वलति' भी, वलित) 1 जाना, पहुचना जल्दी करना, अन्योन्य शरवृष्टिरेव वलते महावी० ६।४१, प्रथयिन परिरक्षणप्रवाणता वलन्ति वलिरेखिलधन्यता शि० ६।३१, ६।११, १९।४२, त्वदभिसरणरभसेन वलती पतति पदानि कियन्ति चलति —गीत० ६ 2 हिलना-जुलना, मुड़ना, घूम जाना—वलितकधर मा० १।२९ 3 मुड़ना आकृष्ट होना, अनुरक्त होना हृदयमदये तस्मिन्नेव पुनर्वलते बलात् गीत० ७, नलो० ३।५ 4 बढ़ाना वलन्मृदुनिस्वना मा० ६० ११६, अमन्द कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया वलद्बाहुं राधा सरसमिदमूचे सहचरी—गीत० १ 5 ढकना, घेरना 6 ढका जाना, घेरा जाना या घिर जाना, वि , इधर-उधर मरकना, इधर-उधर मुड़कना स्खलति कूजति वेल्लति विवलति विलिखति विलोकयति निषेदुः—काव्य० १०, वल्, , 1. मिलाना, गड़बड़ करना 2 बदल करना, जोड़ना (बहुधा कर्मवाच्य रूप - दे० संवलित) ।

वल, दे० वल ।

वलञ्ज, दे० वलञ्ज ।

वलन्त, —न्तस् [अवलम्ब इत्यत्र भागुरिमते अकारलोप.] कमर ।

वलनम् [वल् भावे ल्युट्] 1 मरकना, मुड़ना 2 वर्तुलाकार घूमना 3 (ज्यो० में) ग्रह की वक्रगति ।

वलभि,—भी [वलते आच्छादते वल्+अभि वा ङीप्] ('वलभि, —भी' का प्रयोग भी अनेक बार होता है) 1 ढकवा छत, लकड़ी का बना छप्पर का ढाचा —कूर्पजलिविनि मृतैर्वलभय सदिग्धपारावता.—विक्रम० ३।२, मालवि० २।१३ 2 (घर का) सबसे ऊँचा भाग, दृष्ट्वा दृष्ट्वा भवनवलभीनुन्नवातायनस्था —मा० १।१५, मेघ० ३८, शि० ३।५३ 3 सौराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत एक नगर का नाम—अस्ति सौराष्ट्रेषु वलभी नाम नगरी— दश०, भट्टि० २२।३५ ।

वलय [अवलम्ब इत्यत्र भागुरिमते अकारलोप] दे० 'अवलम्ब' ।

वलय:, [वल्+अयन्] कङ्कण, बाहुवद— विहितविवाद विलकितलवलया जीवति परमिह तव रतिकलया गीत० ६, भट्टि ३।२२, मेघ० २, ६०, रघु० १३। २१, ४३ 2 छल्ला, कुंडल श० १।३३, ७।११ 3 विवाहित स्त्री की कलाई 4 वृत्त, परिधि (प्रायः समास के अन्त में) भ्रान्तभ्रवलय दश० वेलावप्रवलयाम् (उर्वीम्)—रघु० १।३०, दिग्वलय— शि० ९।८ 4 बाड़, निकुंज यथा 'लतावलयमण्डप' में, —यः 1 बाड़, झाड़बन्दी 2 गलगण्ड रोग (वलयी हू ककण बनाना, वलयी भू करधनी या ककण का काम देना) ।

वलयित (वि) [वलय+इतच्] घिरा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ ।

वलरक दे० 'वलाक' ।

वलाकिन् दे० 'बलाकिन्' ।

वलाहक दे० 'बलाहक' ।

वलि:, ली (स्त्री०) (वलि—की भी लिखा जाता है) [वल्+इन्, पक्षे ङीष्] 1 (खाल पर) सिकन या झुर्री वलिभिर्मुखमाक्रान्तम् 2 पेट के ऊपरी भाग में कमरे पर पड़ी सिकन, झुर्री, सिकुड़न, (विशेष कर स्त्रियों के यह एक सौन्दर्य का चिह्न समझा जाता है) मध्येम सा वेदिभिलितमध्या वलिभय चारु बभार वासो कु० १।३९ 3 छप्पर की छत की बडेरी । सम० भृत् (वि०) घूघर वाला, घुघराले बालों वाला —कुसुमोत्खचितान् वलीभृतश्चलयत् भृङ्गकदम्बकान् रघु० ८।५३,—मुख,—वक्त्र बदर, मा० ९।३१ ।

वलिक:, कम् [वलि+कन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती ।

वलित (भू० क० कृ०) [वल्+क्त] 1 गतिशील 2 हिला-डुला, घूम हुआ, मुड़ा हुआ 3 घिरा हुआ, लिपटा हुआ 4 झुर्रीदार कि० ११।४ ।

वलिन, **वलिम** (वि०) [वलि+न (म)] 1 झुर्रीदार, सिकुड़नदार, झुर्रियों के रूप में आकुंचित, जिसमें झुर्रियां पड़ी हुई हों, शिखरिणी—शि० ६।१३ ।

वलिमत् (वि) [वलि+मतुप्] झुर्रीदार ।

बलिश (वि) [बल्+किरच्] भैंगी आंख वाला, ऐंचाताना, कनखी से देखने वाला।

बलिशम्,—शी [बलि+शो+क, बलिश+ङीष्] मछली पकड़ने का काँटा।

बलीकम् [बल्+कीकम्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती - शि० ३।५३।

बलूक: [बल्+ऊक] एक पक्षाविशेष,—कम् कमल की जड़, बिस।

बलूस (वि०) [बल्+लच्, ऊङ्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली।

बल्क् (चुरा० उभ० बल्कयति-ते) बोलना।

बल्क:, -कम् [बल्+क, कस्य नेत्वम्] 1 वृक्ष की छाल- स बल्कवाससि तवाधुना हरन् करोति मन्यु न कथं धनंजय—कि० १।३५, रघु० ८।११, भट्टि० १०।१ 2. मछली की खाल की परत या पपड़ी 3 भाग, खण्ड। सम०—तरु: वृक्षविशेष, -लोध्र: लोध्र वृक्ष का एक भेद।

बल्कल:, लम् [बल्+कलच्, कस्य नेत्वम्] 1 वृक्ष की छाल 2 वक्कल से बनाई गई पोशाक, छाल से बने वस्त्र—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० १।२०, १९, रघु० १२।८, कु० ५।८, हेमवल्कला -६।६, 'सुनहरी छालवस्त्र धारी' (तु० चीरपरिग्रहा कु० ६।९२)। सम० वसन (वि०) छालवस्त्रधारी।

बल्कवत् (वि०) [बल्क+मतुप्] मछली (जिसके शरीर पर पपड़ी हो)।

बल्किल [बल्क+इलच्] काँटा।

बल्कुटम् (नपुं०) छाल, वक्कल।

बल्ग् (भ्वा० उभ० बल्गति ते, बल्गित) हिलना-डुलना, जाना, इधर उधर घूमना, शि० १२।२० 2 कूदना, उछलना, चौकड़ी भरना, छलांग मार कर चलना, सरपट दौड़ना (आत्म० से भी) -पच० १।६२ 3 नाचना -भट्टि० ३।१२, शि० १८।५३ 4 प्रसन्न होना - भट्टि० १३।२८ 5 खाना, शि० १४।२९ 6 अकड़ कर चलना, डींग मारना-भामि० १।७२।

बल्गनम् [बल्ग्+ल्युट्] उछलना कूदना, सरपट दौड़ना। रघु० ९।५१।

बल्गा [बल्ग्+अच्+टाप्] लगाम, रास आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते मृच्छ० १।५०।

बल्गित (भू० क० कृ०) [बल्ग्+क्त] 1 कूदा हुआ, छलांग लगाई हुई, उछला हुआ 2 गतिशील किया गया, नचाया गया—काव्या० २।७३, -तम् 1 सरपट दौड़, घोड़े की एक प्रकार की दौड़ 2 अकड़ कर चलना, शेखी बघारना, डींग मारना निमित्ताद्-पराद्धेषोर्धनुष्कस्येव बल्गितम्—शि० २।२७।

बल्गु (वि०) [बल् सवरणे उ गुक् च] 1 प्रिय, सुन्दर, मनोहर, आकर्षक - रघु० ५।६८, शि० ५।२९, कि० १८।११ 2 मधुर भामि० २।१३६ 3 मूल्यवान्, —गु: बकरा। सम०—शक: एक प्रकार की जंगली दाल।

बल्गुक [बल्गु+कन्] मनोहर, प्रिय, सुन्दर—कम् 1. चन्दन 2 मूल्य 3. लकड़ी।

बल्गुक: [बल्गु+उक] गीदड़।

बल्गुलिका [बल्गुल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 तैलचोर 2 पेटी, डब्बा।

बल्ग्व् (म्वा० आ०) खाना, निगलना।

बल्मिक,-बल्मीक (पु०, नपुं०) दे० 'वल्मीक'।

बल्वजी [बल्+अच्, मुम्, ङि० ङीष्] चिउँटी। सम० कृतम् बामी, दीमकों द्वारा बनाया मिट्टी का टीला।

बल्मीक,—कम् [बल्+ईक, मुट् च] बामी, दीमकों से बनाया गया मिट्टी का टीला, —धर्मं शनैः सचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिका सुभा०, मेघ० १५, श० ७।११,—क: 1 शरीर के कुछ भागों का सूज जाना, हाथी पाँव 2 वाल्मीकि कवि। सम०—ज्योति: एक प्रकार का सुरमा (जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है)।

बल्यु (स्यू) क् (चुरा० पर० बल्यूलयति) 1 काट डालना 2 निर्मल करना।

बल्ल् (भ्वा० आ० बल्लते) 1 ढकना 2. ढका जाना 3 जाना, हिलना-डुलना।

बल्ल [बल्ल्+अच्] 1 चादर 2 सौ गुंजाओं के बराबर भार (वजन) 3 दूसरा बाट जो डेढ़ या दो गुंजा के बराबर होता है (आयु० में) 4 प्रतिषेध।

बल्लकी [बल्ल् -क्वुन्+ङीष्] वीणा अजस्रमास्फालितबल्लकीगुणक्षतोत्तम्बलाङ्गुलत्राणसुभिन्नया—शि० १।९, ४।५७, ऋतु० १।८, रघु० ८।४१, १९।१३।

बल्लभ (वि०) [बल्ल+अभच्] 1 प्यारा, अभिलषित, प्रिय 2 सर्वोपरि—भ: 1 प्रेमी, पति मा० ३।८, शि० ११।३३ 2 कृपापात्र, -पच० १।५३ 3 नपुंसक, अध्यर्धकाक 4 मुख्य गोप 5 उत्तम घोड़ा (शुभ लक्षणों से युक्त)। सम०—आचार्य: वैष्णव सम्प्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक का नाम, काल: साईस।

बल्लभायितम् [बल्लभ+क्यङ्+क्त] सुरतानन्द का आनन्द विशेष, रतिबन्ध, तु० 'पुरुषायित'।

बल्लरम् [बल्ल्+अरन्] 1 अगर की लकड़ी 2 निकुंज 3 झुरमुट।

बल्लरी,-री (स्त्री०) [बल्ल्+अरि वा ङीष्] 1 बेल, लता—अनर्गायिनि बल्लरीमिव गजस्तम्बे पतन्तीं बल्लरी—कु० ४।३१, लतोल्लरी—मा० ५।६ 2. मंजरी।

वल्लवः (स्त्री०—वी) [वल्ल+वा+क] दे० 'वल्लव' शि० १२।१९।

वल्लिः (स्त्री०) [वल्ल्+इन्] 1 लता, बेल—भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्खलनद्धजूटा जटा. मा० १।२ 2 पृथ्वी। सम०—कुशा एक प्रकार का घास।

वल्ली (स्त्री०) [वल्लि+ङीष्] बेल, घुमावदार पौधा, लता। सम०—अम्ल मिर्च,—वृक्षः साल का वृक्ष।

वल्वजः [वल्व्+उरन्] 1 निकुञ्ज, पर्णशाला 2. वनस्थली, घुरमुट 3 मंजरी 4 अनजुता खेत 5 रेगिस्तान, जंगल, उजाड़ 6 सूखा मांस।

वल्वजम् [वल्व्+ऊरन्] 1 सूखा मांस 2 (जंगली) सूअर का मांस,—रम् 1 घुरमुट 2 उजाड़, वीरान 3 अनजुता खेत।

वल्ह् । (म्वा० आ० वल्हते) 1 प्रमुख होना, सर्वोत्तम होना 2 हकना 3 मार डालना, चोट पहुंचाना 4 बोलना 5 देना।

॥ (चुरा० उभ० वल्हयति-ते) 1 बोलना 2 चमकना।

वल्हिक, वल्हीक दे० बल्हिक बल्हीक।

वश् (अदा० पर० वष्टि, उशित) 1 चाहना, इच्छा करना कामना करना निःस्वो वष्टिदानं शतौ दशानम् - शान्ति० २।६, अमी हि वीर्यप्रभव भवन्त्य वश्याय सेनान्यमशान्ति देवा - कु० १।१५, शि० ७।२० 2 अनुग्रह करना 3 चमकना।

वश (वि०) [वश् कर्तरि अच् भावे अप् वा] 1 अधीन, प्रभावित, प्रभावगत, नियन्त्रणगत (प्राय समास में) शाकवश, भृत्यवश आदि 2 आज्ञाकारी, विनीत, अनुवर्ती 3 विनम्र, वशीकृत 4 मृग, आकृष्ट 5 आदू द्वारा वश में किया हुआ,—शः, —शम् 1 अभिलाषा, चाह, इच्छा 2 शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण, स्वामित्व, अधिकार अधीनता, दीनता, स्वतन्त्रता 'अपने अधीन' स्वतन्त्र, परवश दूसरों के प्रभाव में'—अनयत् प्रभुशक्तिसम्पदा वशमेको नृपतीननन्तरान् —रघु० ८।१९, वशं गो,- आनी अधीन करना, वश में करना जीत लेना, वशं गम्, —इ,—या, अधीन होना, मार्ग से हट जाना, दब जाना, विनीत होना न शुचौ वशं वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि— रघु० ८।१० वशे कृ या वशीकृ वश में करना, हाथी होना, जीत लेना, मुग्ध करना, आदू से वश में करना, वशात् (अपा०) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'शक्ति के द्वारा' 'प्रभाव के द्वारा' 'के कारण' 'प्रयोजन से' अर्थ प्रकट करता है, दैववशात्, वायुवशात्, कार्यवशात् आदि 3. पालतू, रहने वाला 4 जन्म, ज्ञ. वेश्याओं का वासस्थान, चकला। सम०—अनुग, वर्तिन् (इसी प्रकार 'वशगत') (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की इच्छा का वशवर्ती, विनीत, अधीन (पुं०) सेवक, —आह्वयः सूस,—क्रिया जीतना, अधीन करना—ग (वि०) अधीन, आज्ञाकारी—वर्तृ० २।९४ (—गा) आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशंवद (वि०) [वश+वद्+खच्, मुम्] आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, अधीन, प्रभावित (प्रा० तथा आल०) कोपस्य किं नु करभोरु वशंवदाऽयम् भामि० ३।९, २।१३६, १५७, नै० १।२३, सा ददर्श गुरुहंव-शवदवदनमनगनिवासम् गीत० ११।

वशका [वश+कै+क+टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशा [वश्+अच्+टाप्] 1 स्त्री, अबला 2 पत्नी 3 पुत्री 4 ननद 5 गाय 6 बांझ स्त्री 7 अध्या गाय 8 हथिनी स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूये तवेयं वशा—विक्रम० ४।२५।

वशित्व [वशिन्+त्व] 1 अधीनता 2 सम्मोहन, मन्त्रमुग्धता (नपु०) वश्यता।

वशिक (वि०) [वश+ठन्] शून्य, रहित,—का अदरक की लकड़ी।

वशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वश अस्त्यस्य इनि] 1 शक्तिशाली 2 नियन्त्रण में, वशीभूत, अधीन, विनीत 3 जिसने अपनी विषयवासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, जितेन्द्रिय (संज्ञा शब्द की भांति भी प्रयुक्त) - रघु० २।७०, ८।९०, १९।१, शि० ५।२८।

वशिनी [वशिन्+ङीप्] शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़।

वशिर [वश्+किरच्] एक प्रकार की मिर्च, - रम् समुद्री नमक।

वशिष्ट दे० 'वसिष्ठ'।

वश्य (वि०) [वश्+यत्] 1 वश में होने के योग्य, नियन्त्रणीय, शासित होने के योग्य—आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रमादमधिगच्छति—भग० २।६४ 2 वशीभूत, विजित, सधा हुआ, विनीत—भग० ६।३६ 3 प्रभाव या नियन्त्रण में, अधीन, आश्रित, आज्ञाकारी—तस्य पुत्रो भवेद्वश्य समृद्धो धार्मिक सुधीः हि० प्र० १८, (प्राय समास में) (मन) हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यम् कु० ३।५०,—श्यः सेवक, आश्रित,—श्या विनम्र या आज्ञाकारिणी पत्नी - य ब्रह्मणस्मिन देवी वाग्वश्यैवानुवर्तते उत्तर० १।२ (जिसका भाषा पर पूरा आधिपत्य है),—श्यम् लौंग।

वश्यका [वश्य+कन्+टाप्] दे० 'वश्या'।

वश् (म्वा० पर० वर्शति) क्षति पहुंचाना, चोट मारना, वध करना।

वषट् (अव्य०) [वह्+डषटि] किसी देवता को आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द (देवता के लिए सप्र० के साथ) इन्द्राय वषट्, पूषणे वषट्

आदि। सम०—कर्तृ (पु०) पुरोहित जो 'वषट्' का उच्चारण करके आहुति देता है, कार वषट् शब्द का उच्चारण करना।

वष्क् (स्वा० आ० वष्कते) जाना, हिलना-डुलना।

वष्कयः [वष्क+अयन्] एक वर्ष का बछड़ा।

वष्कयणी, वष्कयिणी (स्त्री०) [वष्कय+ङी+विवप्+ङीष्, यत्वम्, वष्कय+इनि+ङीष् यत्वम्] वह गाय जिसके बछड़े बहुत बड़े हो गये हैं, चिर प्रसूता, बहुत दिनों की ब्याई हुई।

वस् १ (स्वा० पर० वसति—कभी कभी—वसते, उषित) 1 रहना, बसना, निवास करना, ठहरना, डटे रहना बास करना (प्रायः अधि० के साथ, परन्तु कभी कभी कर्म० के साथ) धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत० ५ 2 होना, विद्यमान होना, मौजूद होना, वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि कि० ८।३७, यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति, भूमि श्रीर्हीर्यत्र कीर्तिर्दक्षे वसति नालसे—सुभा० 3 वेग से चलना, (समय) बिताना (कर्म० के साथ), प्रेर० बसाना, आवास देना, आबाद करना इच्छा० (विवत्सति) रहने की इच्छा करना, अधि—, (कर्म० के साथ) 1 रहना, बसना, निवास करना, बस जाना यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम् उत्तर० ३।८, बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३, ११।६१, शि० ३।५९, मेघ० २५, भट्टि० १।३ 2 उतरना या अड्डे पर बैठना आदि—, (कर्म० के साथ) निवास करना, आ—, (कर्म० के साथ) निवास करना, बसना—रविमावसन्ते सता क्रियायै विक्रम० ३।७, मनु० ७।६९ 2 कार्यारम्भ प्रारम्भ करना—मनु० ३।२ 3 व्यय करना, (समय) बिताना उष—, 1 रहना, ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) 2 उपवास रखना, अनशन करना—मनु० २।२२०, ५।२०, (आल० से भी) उषोषिताभ्यामिव नेत्राभ्या विवर्णी—दश०, नि—, 1 रहना, निवास करना, ठहरना—अहो निवत्स्यति मम हरिणाङ्कसाक्षि —श० १।२७, निवत्स्यसि मय्येव—भग० १२।८ 2 मौजूद होना, विद्यमान होना—पच० १।३१ 3 अधिकार करना, बसना, अधिकार में लेना, निस्—, रह चुकना, अर्थात् (किसी विशेष काल) की समाप्ति तक जाना, प्रेर०—निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, देश निकाला देना,—रघु० १४।६७, परि—, 1 निवास करना, ठहरना 2 रात बिताना—दे० पर्युषित, प्र—, 1 रहना, निवास करना 2 विदेश जाना, यात्रा करना, घर से बाहर जाना, देशाटन करना—विधाय वृत्तिं भार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः—मनु० ९।७४, रघु० ११।४, (प्रेर०) देशनिकाला देना, निर्वासित करना प्रति—, निकट रहना पास में होना, वि—, परदेश में रहना (प्रेर०) देश निकाला देना, निर्वासित करना भट्टि० ४।३५, विप्र—, देशाटन करना, घर से बाहर जाना—रघु० १२।११, सम्—, 1 रहना, निवास करना 2 साथ रहना, साहचर्य करना—मनु० ८।७० याज्ञ० ३।१५। II. (अदा० आ० वस्ते) पहनना, धारण करना—वसते परिधिमरं वसाना—श० ७।२१, शि० २।३५, रघु० १२।८, कु० ३।५४, ७।९, भट्टि० ४।१०, प्रेर० (वासयति—ते) पहनवाना, वि—, सुसज्जित करना—भट्टि० १५।७ वि—, धारण करना, पहनना—भट्टि० ३।२०।

वस् २ (दिवा० पर० वस्यति) 1 सीधा होना 2 दृढ़ होना 3 स्थिर करना।

वस् ३ (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1 काटना छाँटना, काट डालना 2 रहना 3 लेना, स्वीकार करना 4 चोट पहुँचाना, हत्या करना।

वस् ४ (चुरा० उभ० वासयति—ते) सुगन्धित करना सुवासित करना।

वसति—स्त्री (स्त्री०) [वस+अति का ङीप्] 1 रहना निवास करना, टिके रहना आश्रमेषु वसतिं वक्ष —मेघ० १, 'अपना निवास स्थिर किया' श० ७।१ 2 घर, आवास, निवास, वासस्थान—क्वयं हयो हृतपथे वसतिं पतङ्गवाणस्तु बाल—प्रसन्न० ९।२२, शि० २।१४ 3 आधार, आश्रय पात्र (आल०) कु० ६।३७, इसी प्रकार 'किंनयवसति' 'धर्मैकवसति' 4 शिविर, पड़ाव 5 ठहरने और आराम करने का समय अर्थात् रात्रि, तस्य मार्गवशादेका बभूव वसतिर्यतः —रघु० १५।११, (वसति = रात्रि, मल्लि०) 'उसने रात का विश्राम किया, निशो वसतीरुषित्वा—७।३३, ११।३६।

वसतम् [वस्+क्त] 1 रहना, निवास करना, ठहरना 2 घर निवास स्थान 3 प्रज्वालन करना अग्नि धारण करना, कपड़े पहनना 4 वस्त्र, कपड़ा, परिधान, कपड़े जैसे परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, उत्सृज्य वा मलिनवसने सौम्ये निक्षिप्य वीणाम् मेघ० ८६, ४१ 5 कारखाना, दुकान।

वसन्त [वस्+झच्] 1 वसन्त ऋतु, बहार का मौसम (चैत्र और वैशाख यह दो मास वसन्त ऋतु के होते हैं) मधुमाधवौ वसन्त—सुश्रु०, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, विहरति हरिरिह सरसवसन्ते—गीत० १ 2 मूर्त या मानवीकृत वसन्त जो कामदेव का साथी माना जाता है—मुहुर एष वसन्त किं स्थितम् —कु० ४।२७ 3 पक्षिस 4 चन्दन 5 शीतला। सम०—उत्सवः वसन्तोत्सव, वसन्त ऋतु की रंगरेलियाँ (यह आनन्दमय पहले चैत्र की पूर्णिमा को होली—उत्सव के अवसर पर मनाये जाते हैं),

काल, वसन्त की लहर, वसन्त ऋतु,—कोकिल् (पु०) कोयल, -जा 1 वासन्ती या माधवी लता 2 वासन्ती चहल-पहल, दे० वसन्तोत्सव, तिलक कम् वसन्त ऋतु का अलंकार -फुल्ल वसन्ततिलक तिलक बनाना। छंद० ५, (क, का, कम्) एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १, दूत 1 कामदेव 2 चैत्र का महीना 3 हिंदोल राग 4 आम का वृक्ष, दूती मालतीलता का फूल, -द्रुः,-द्रुम आम का वृक्ष, पंचमी माघ शुक्ला पंचमी, बन्धु, सखा कामदेव के विशेषण।

वसा [वस् +अच् +टाप्] 1 मेद, चरबी, मज्जा, पशुमज्जा, पशुओं के गुर्दे की चर्बी—मनु० ३।२८, रघु० १५।१५ 2 काई तेल या चर्बीदार स्राव 3 अस्थिरक्त। सम० -आशय, -आशयक मूत्र, छोटा मेजा—धानिन् (पु०) कुत्ता।

वसि [वस् +इन्] 1 कपड़े 2 निवास आवास।

वसित (भू० क० कृ०) [वस् णिच् +क्त] 1 पहना हुआ धारण किया हुआ 2 निवास 3 (अनाज आदि) संगृहीत।

वसिरच् [वस् +किरच्] मंजूषा नमक।

वसिष्ठ ('वशिष्ठ' भी लिखा जाता है) 1 एक विख्यात ऋषि का नाम, सूर्यवंशी राजाओं का कुल पुरोहित, कई वैदिक सूक्तों के ऋषि, विशेष कर ऋग्वेद के सातवें मंडल के, ब्राह्मणोचित प्रतिष्ठा तथा शक्ति के आदर्श प्रतिनिधि, विश्वामित्र ने उनकी समानता करने का बहुत प्रयत्न किया और इसी कारण सम्बन्धी अनेक उपाख्यान प्रचलित हो गये तु० विश्वामित्र 2 स्मृति के प्रणेता का नाम। (कभी-कभी ऋषि के नाम पर ही इसका नाम धर्मिष्ठ स्मृति लिया जाता है)।

वसु (नपु०) [वस् +उन्] 1 दौलत, धन स्वयं प्रत्यक्षेऽन्य गुणेष्वनुना वसुमानस्य वसुनि मतिर्नो कि० १।१८, शि० ८।३१, ९।५ 2 मणि, रत्न 3 सोना 4 पानी 5 धन्तु द्रव्य 6 एक प्रकार का नमक 7 एक संख्या-विशेष वसि (पु०) 1 एक देव समूह (इस अर्थ में ब० व०) जो गिनती में आठ है 1 आप 2 ध्रुव 3 सोम 4 धर या धव 5 अनिल 6 अनल 7 प्रत्यूष और 8 प्रभास, कभी-कभी आप के स्थान में 'अह' को मिलते हैं यथा ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनल: प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृता: 2 आठ की संख्या 3 कुबेर 4 शिव 5 अग्नि 6 वृक्ष 7 सरोवर तालाब 8 रात 9 जवा आदमी की रस्सी १० दामोदर ११ प्रकाश की किरण—निरकाश यद्वदिमपेनवसु क्रियदा-लयाधपरिमाणिका - कि० ९।१०, निखिलवसुमयाचे मानमापरयमोघो— कि० १।४६, (दोनों अवस्थाओं में 'वसु' शब्द का अर्थ धन दौलत भी है) 12 सूर्य —स्त्री० प्रकाश, किरण। सम० -ओ (ओ) कसारा 1 इन्द्र की नगरी अमरावती 2 कुबेर की नगरी अलका 3 एक नदी का नाम जो अलका या अमरावती से संबद्ध है, कीट:,—कृमि: झिल्लक, धर पृथ्वी, देव कृष्ण के पिता और सूर के पुत्र का नाम एक वसुदेवी, भू:, भुव: कृष्ण के विशेषण देवता, दत्ता धनिष्ठा नाम का नक्षत्र, धमिका स्फटिक,— धा 1 पृथ्वी वसुधेवमवेक्ष्यता त्वया—रघु० ८।८३ 2 भूमि कु० ६।४, "धमिप राजा धर पहाड़ विक्रम० १।७ अलका कुबेर की राजधानी धारा, -धारा कुबेर की राजधानी —प्रभा आग की सात जिह्वाओं में से एक,- प्राण अग्नि का विशेषण, रेतस् (पु०) अग्नि, श्रेष्ठम् 1 तपाया हुआ सोना 2 चाँदी, - श्रेष्ठ कर्ण का नाम स्थली कुबेर की नगरी का विशेषण।

वसु (सू) क [वसु +कै +क] आक का पौधा,—कम् 1 मंजूषा नमक 2 शिलाजीत लवण।

वसुन्धरा [वसूनि धारयति—वसु +धृ +णिच् अच् +टाप् मुम्] पृथ्वी, नानारत्नों वसुन्धरा रघु० ६।७।

वसुमत् (वि०) [वसु +मतुप्] दौलतमंद, धनवान तो पृथ्वी वसुमत्या हि नृपा कलत्रिण —रघु० ८।८२, शि० १।२५।

वसुल [वसु +ला +क] सूर, हवना।

वसुरा [वस् +ऊरच् +टाप्] वेश्या रंडी गणिका।

वस्क् (म्वा० आ० वस्कते) जाना हिलना-डुलना।

वस्कय दे० 'वष्कय'।

वस्कयणी दे० 'वष्कयणी'।

वस्करटिका (स्त्री०) चिड़ा।

वस्त् (चुरा० उभ० वस्तयति—ते) 1 क्षति पहुँचाना, हत्या करना 2 माँगना, निवेदन करना, याचना करना 3 जाना हिलना-डुलना।

वस्त्र [वस् +त्रन्] आच्छादनवस्त्र स्त्री. वस्त्रा दे० 'वस्त्र'।

वस्तकर्म [वस्त +कै +क] कृत्रिम लवण।

वस्ति (पु०, स्त्री०) [वस् +ति] 1 निवास, आवास, टिकना 2 उदर, पेट का नाभि से नीचे का भाग 3 पेडू 4 मूत्राशय 5 पिचकारी, एनीमा। सम० -कर्मन् मूत्र,—शिरस् (नपु०) 1 एनीमा की नली, -शोधनम् (मूत्राशय साफ करने की) मूत्र बढ़ाने वाली दवा।

वस्तु (नपु०) [वस् +तुन्] 1. वस्तुत विद्यमान चीज, वास्तविक, वास्तविकता वस्तुन्यवस्तुसंस्कारोपालम्भम् 2 चीज, पदार्थ, सामग्री, द्रव्य, मामला—अथवा

मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते कृतान्तः'—रघु० ८।४५, किं वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम् ५।१८, ३।५, वस्तुनीष्टेप्यनादरः—सा० द० 3 धनदौलत, सम्पत्ति, वैभव 4 सत्, प्रकृति, नैसर्गिक या प्रधान गुण 5 सामान (जिससे कोई वस्तु बन सके), सामग्री, मूलपदार्थ (आल० से भी) आकृतिप्रत्ययादेर्वैनामनुवस्तुका सनाथयामि मालवि० १ 6 (नाटक की) कथावस्तु, किसी काव्यकृति की विषयवस्तु, कालिदासप्रथितवस्तुना नवेनाभिज्ञानशाकुन्तलाख्येन नाटकेनोपस्थातव्यमस्माभिः—श० १, अथवा सद्वस्तु पुरुषबहुमानात्—विक्रम० १।२, आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्—सा० द० ६, वेणी० १ 7 किसी वस्तु का गुणा 8 योजना, रूपरेखा। सम०—अभावः 1 वास्तविकता की कमी 2 सम्पत्ति की हानि, उत्थापनम् ओझाई या झाड़फूंक अथवा अभिचार के द्वारा (नाटकों में) किसी उपाख्यान की रचना—सा० द० ४२०, उपमा, दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद, दण्डी द्वारा निरूपित लक्षण राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव, इस प्रतीयमानैकधर्मा वस्तूपमैव सा—काव्या० २।१६, (यह एक ऐसी उपमा की बात है जहां साधारण धर्म का लोप हो गया है),—उपाहृत (वि०) उपयुक्त पदार्थ के साथ व्यवहृत, उपयुक्त सामग्री पर अर्पित रघु० ३।२९, —व्याजम् किसी विषय की केवल रूपरेखा या छाया (जिसे बाद में विकसित किया जा सके)।

वस्तुतस् (अव्य०) [वस्तु+तस्] 1 दरअसल, वास्तव में, सचमुच, वाकई 2 अनिवार्यतः, यथार्थतः तत्त्वतः 3 इसका स्वाभाविक फल यह है कि सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह।

वस्त्यम् [वस्ति+यत्] घर, आवासस्थान, निवासस्थान शि० १३।६३।

वस्त्रम् [वस्+ष्ट्रन्] 1 परिधान, कपड़ा, कपड़े, पहनावा 2. वेशभूषा, पोशाक। सम०—अगारः,—गृहम्, तम्बू,—अञ्चलः,—अन्त कपड़े की किनारी या वस्त्र की झालर,—ग्रन्थिः 1 तम्बू 2 छतरी,—ग्रन्थिः धोती या साड़ी की गांठ (जो नाभि के निकट कपड़े में लगाई जाती है), तु० नीवि,—निर्णेजकः धोबी,—परिधानम् कपड़े पहनना, वस्त्रधारण करना,—पुत्रिका गुड़िया, पुतलिका, पूत (वि०) कपड़े में छाना हुआ—वस्त्रपूत पिबेज्जलम्—मनु० ६।४६, —भेदकः,—भेदिन् (पु०) दर्जी,—योनिः कपड़े का उपादान (कपास आदि),—रञ्जनम् कुसुंभ।

वस्त्यम् [वस्+त्न] 1. भाड़ा, मजदूरी (इस अर्थ में पु० भी) 2. निवासस्थान, आवासस्थान 3 वस्त्र, द्रव्य 4. वस्त्र, कपड़े 5 चमड़ा 6 मूल्य 7. मृत्यु।

वस्त्यम् [वस्+त्न] करधनी, पटका या तागड़ी।

वस्त्रला [वस्त्र चर्म सीव्यति—सिव्+ड+टाप्] कम्बरा, स्नायु।

वह् (चुरा० उभ० वहयति-ते) उज्ज्वल करना, चमकाना, रोशनी करना।

वह् (स्वा० उभ० वहति ते, ऊढ, कर्म० उह्यते) 1 ले जाना, नेतृत्व करना, धारण करना, वहन करना, परिवहन करना, (प्रायः दो कर्म० के साथ) अजा ग्रामं वहति, वहति विधिहुतं या हविः—श० १।१, न च हव्यं वहत्यग्नि—मनु० ४।२४० 2 होना, आगे चलाना, वहा कर ले जाना, धकेलना—अक्षानि यो तीव्रनिपातयूषा वहत्ययोध्यामनु राजधानीम्—रघु० १३।६१, विस्रोतसः वहति यो गगनप्रतिष्ठाम् श० ७।७ रघु० ११।१० 3 जाकर लाना, ले आना—वहति जलमियम् मुद्रा० १।४ 4 धारण करना, सहारा देना थाम लेना, जीवित रहना -न गर्दभो वाजिधुरं वहति मृच्छ० ४।१७, नाने चापद्वितीये वहति रणधुरां मय्यवष्टम्भकाशः—वेणी० ३।५, 'अब मेरे पिता हलायुध का नेतृत्व कर रहे हैं, वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थिताम् भर्तृ० २।३५, श० ७।१७, मेघ० १७ 5 उठाकर ले जाना, अपहरण करना अद्रे शृङ्गं वहति (पाठान्तर—'हरति') पवनः किं स्विद्—मेघ० १४ 6 विवाह करना—यदूढया धारणयाजहार्यया—कु० ५।७०, मनु० ३।३८ 7 रखना, अधिकार में करना, भारवहन करना वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरम्—मृच्छ० १।३१ वहति विषयसान् पक्षीरजन्मा भामि० १।७४ 8 धारण करना, प्रदर्शित करना, दिखाना—लक्ष्मीमुद्वाहं मकलस्य शशाङ्कमूर्त्तेः कि० ५।९२ १।२ 9 मुंह ताकना, सेवा करना, देखभाल करना - मुग्धायां मे जनन्यां योगक्षेमं वहस्व—मालवि० ४ तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—भ० ९।२२ 10 भुगतना टटोलना, अनुभव करना, भामि० १।९४, इमां प्रकार -द्युम्न, हर्ष, शोक ताप आदि 11 (इस अर्थ में तथा निम्नांकित अर्थों में अकर्मक) धारण किया जाना, ले जाया जाना, चलते रहना, वहतं शकीश्वरौ वहतम्—मृच्छ० ६. उत्थाय पुनर्वहन्—का०, पञ्च० १।४२ २९१ 12 (नदी आदि का) बहना—प्रत्यग्रहमहाम्भस्य—महा०, परोपकाराय वहति नद्यः—सुभा० 13 (हवा का) चलना, मद वहति मारुतः—रामा०, वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय वीत० ५, प्रेर० (वाहयति-ते) 1 धारण कराना, भिजवाना, भेंट भिजवाना, ले जाया जाना 2 हांकना, ठेलना, निर्देश देना 3 आरोहण करना, पालन करना मनाङ्गणे राजपथे शिवायिते रघु० १६।१२, अवाप्य वाहयेदश्वमेधम्

मेघ० ३८ 4 उपयोग करना, ले जाना –भट्टि० १४।२३, इच्छा० (विवक्षति—ते) ले जाने की इच्छा करना, अति , पुनरारम्भ, (समय) बिताना, मुख्य रूप से प्रेर०, मा० ६।१३, रघु० ९।७०, अप–. 1 हांक कर दूर भगा देना, हटाना, दूर ले जाना रघु० १३। २२, १६।६ 2 छोड़ना, त्यागना, तिलाञ्जलि देना रघु० ११।२५ 3 घटाना, व्यवकलन करना, आ–, 1 पूरी तरह समझा देना 2 अन्त देना, बँदा करना प्रवृत्त होना या झुकना क्रीडमावहति मे स मथति रघु० ११।७३, शि० ३।४ 3 वहन करना, कन्धे में करना, रखना वेणी० १८ 4 बहना > प्रयोग करना, उपयोग करना (प्रेर०) (देवता का) आवाहन करना, उद् , 1 विवाह करना पाणिमुदवहद्-इयुद्वह रघु० ११।५४, मनु० ३।८, भट्टि० २।४८ 2 ऊपर उठाना, उन्नत होना 3 सभालना, जीवित रखना, ऊँचे उठाना, सहारा देना –रघु० १६।६० 4. सुगतना, अनुभव करना 5 अधिकार में करना, रखना, पहनना, धारण करना, कु० १।१९, विक्रम० ४।४० 6 समाप्त करना पूरा करना, उप –, 1 निकट लाना 2 उपक्रम करना, आरम्भ करना, वि—, सम्भाले रखना, जीवित रखना, सहारा देना वेदानुद्धरते जगन्निवहते गीत० १, सिद्–, 1 समाप्त होना 2 अवलम्बित होना, की सहायता से निर्वाह करना,(प्रेर०) समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना, समाप्त करना, प्रबन्ध करना—शि० 3, परि , छक-कना, प्र , वहन करना, ले जाना, खींचते रहना 2 यहां ले जाना, ले जाना, वहन करते जाना–भट्टि० ८।५२ 3 सहारा देना, (भार) वहन करना, 4. बहना 5 खिसना 6 रखना, अधिकार में करना, स्पर्श करना या महसूस करना, वि – , विवाह करना, सम् , 1. ले जाना, धारण किये जाना 2 मसलना, रखना, दे० प्रेर० 3 विवाह करना, दिखाना, प्रदर्शित करना, प्रस्तुत करना, (प्रेर०) मसलना, या मालिश करना शि० ३।२१।

वह [वह्+कर्तरि अच्] 1 वहन करने वाला, ले जाने वाला, सहारा देने वाला 2 बैल के कन्धे 3. सवारी यान 4 विशेष करके घोड़ा 5 हवा, वायु 6. मार्ग सड़क 7 नद, नाला 8. चार होल की माप।

वहत [वह्+अतच्] 1 गाड़ी 2 बैल।

वहति: [वह्+अति.] 1. बैल 2 हवा, वायु 3 शिव, परामर्शदाता, सलाहकार।

वहती, वहा [वहति+ङीष्, वह+टाप्] नदी, सरिता।

वहतु: [वह्+अतु] बैल।

वहत्र [वह्+ष्ट्रन्] 1 ले जाना, धारण करना, होना 2 सहारा देना 3. वहना 4 गाड़ी, यान 5 नाव, डोंगी।

वहंत: [वह्+अन्त्] 1 वायु 2 शिव।

वहल (वि०) दे० 'बहल'।

वहित्र, वहित्रक, वहित्री [वह्+इत्र, वहित्र+कन्, वह्+इनि+ङीष्] डोंगी, बेड़ा, नाव, किश्ती,–प्रत्य-क्षस्यदृक्षत्र किमपि वहित्रम्–दश०, प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेद विहितवहित्रचरित्रमखेदम्—गीत० १।

वहित्र दे० 'वहित्र'।

वहित्रक (वि०) [वहित्र+कन्] बाहरी, बाह्यपक्षसम्बन्धी।

वहेडक: (पु०) बहेड़े का पेड़, विभीतक का वृक्ष।

वह्नि: [वह्+नि] 1 अग्नि अनृणे पतिनो वह्नि स्वयमे-वोपजाम्यति सुभा० 2 पाचनशक्ति, आमाशय का रस 3 हाजमा, भूख लगना 4 यान। सम० कर (वि०) 1 अन्तर्दाहक 2 पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला, क्षुधावर्धक,—काष्ठम् एक प्रकार की अगर की लकड़ी, सख: घृत, लोबान, –सूनु: 1 बाण 2 सर्पी या जैठी का वृक्ष, तु० अग्निसख, –शेषक: कुलुथ का पेड़, शौच्यम् घी,—शिख: हवा, वायु, शेखर (पु०) शिव का विशेषण,–लोहम्, लोहकम् तांबा, वर्चस् साल रस का कुमुद, रक्तोत्पल, वल्लभ: राल, वीजक 1 सोना 2. चना—शिखम् 1 केसर 2 कुसुम, सख हवा, संज्ञक: चित्रकवृक्ष।

वह्नय् [वह्+यत्] 1 गाड़ी 2 यान, सवारी,—ह्या एक मुनि की पत्नी।

वह्लिक, वह्लीक दे० बाह्लिक, बाह्लीक'।

वा (अव्य०) [वा+क्विप्] 1 विकल्प बोधक अव्यय, या, परन्तु संस्कृत में इसकी स्थिति भिन्न है, या तो यह प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा अन्तिम के साथ, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं होता, तु० 'च' 2 इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) और, भी, वायुर्वा दहनो वा–गण०, अस्ति ते माता स्मरसि वा नाम् उत्तर० ४, (ख) के समान, जैसा कि जातो मन्ये गृहिणसचिव: पक्षिणी वान्धवेषु—मेघ० ८३, मनौ बोद्धव्य अवतेः सिद्धा०, हृष्टो गर्जति वातिदर्पितबलो दुर्योधनो वा शिखी –मृच्छ० ५।६, मालवि० ५।१२, शि० ३।६३, ४।३५, ७।६४, कि० ३।१३ (ग) विकल्प से– (इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण के नियमों में जैसा कि पाणिनि के सूत्र' होता है) डोर्वो यो वा चित्तविरागे—पा० ६।४।९०, ९१ (घ) सम्भावना (इस अर्थ में 'वा' बहुधा प्रश्नवाचक सर्वनाम और उससे व्युत्पन्न 'इव' 'नाम' जैसे शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है तथा 'सम्भवतः' या 'कदाचित्' शब्दों से उसे अनूदित किया जाता है —कस्य वास्यस्य वपुषि मया स्थातव्यम् का०, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते—पंच०

१।२७, (५) कभी-कभी केवल पादपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होना है 3 जब 'वा' की पुनरुक्ति की जाती है तो इसका अर्थ होता है या—या—सा वा क्षणोत्तेदोया वा मूर्तिर्जलमयी मम—कु० २।६०, तदद्य परिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तकथावस्तुगौरवाद्वा नवनाटकदर्शनकुतूहलाद्वा भवद्भिरवधानं दीयमानं प्रार्थये-विक्रम० १, (अथवा या, कुछ-कुछ, अन्यथा दे० 'अंश' के नीचे, न का सही, न तो, न, यदि का असर, अन्यथा, कि वा कि, क्या, आया कि आदि।

वा (भ्वा० अदा० पर० वाति, वात या वान) 1 हवा का चलना बाना बाना दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्तभिधा—वेणी० ३।६, दिश प्रसेदुर्मरुतो ववु सुखा—रघु० ३।१४, मघ० ४२, भट्टि० ७।१, ८।६१ 2 जाना, हिलना-डुलना 3 प्रहार करना, चोट पहुचाना, क्षतिग्रस्त करना प्रेर० (वापयति—ते) 1 हवा चलवाना 2 बाजयति ते हुलना, जा—, हवा का चलना —बद्धा बद्धा भित्तिशकामधुष्मिन्नावा-नावान्मानस्त्रिवा निर्हान्ति—कि० ५।३६, भट्टि० १४।९७, निस्—, 1 खिलना 2 ठंडा होना, शान्त होना, (आलं० से भी) वपुर्जलादार्द्रपदेनैनं निर्वदा —शि० १।६५, त्वयि दृष्टे एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलिते मुखा० 3 फूंक मारना, बुझना, तिरोहित होना —निर्वाणदीपे किमु तैल दानम्, निर्वाणभूयिष्ठ-मथास्य वीर्य मधुक्षयतीव वपुर्गुणेन कु० ३।५२, शि० १४।८५, (प्रेर०) 1 फूंक मारना, बुझाना 2 शांत करना, गर्मी दूर करना शीतल करना—रघु० ३।११, रघु० १९।५६ 3 रिझाना, सान्त्वना देना, आराम पहुंचाना रघु० १२।६३, प्र—, वि—, हवा का चलना —वायुर्विवानि हृदयानि हरन्नराणाम् कर्तृ० ६।२२।

वात (वि०) (स्त्री० ती) [वश+क्त] बस का बना हुआ, जो दिखलाया।

वातिक [वश+ठक्] 1 बांस काटने वाला 2 बांसुरी बजाने वाला, बांसुरिया।

वाकम् [वक+अण्] सारसों का समूह या उड़ान।

वाकुल दे० 'बाकुल'।

वाक्यम् [वच+ण्यत्, चस्य क] 1 वक्तृता, वचन, वक्तव्य उक्ति, कथन भूयस् मे वाक्यम् 'मेरे वचन सुनो', वाक्ये न तिष्ठते 'आज्ञा पालन नहीं करता है' —शि० २।२४ 2 बात, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्णोच्चारण)—वाक्य स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्त पदोच्चय —सा० द० ६, औत्पत्तिकी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा—काव्य १० 3 तर्क, अनुमान (तर्क में) 4 विधि, नियम, सूत्र। सम०—अर्थः वाक्य का अर्थ, °उपमा वर्णों के अनुसार उपमा का एक भेद—दे० काव्या० २।४३, —आलापः बातचीत, बातचीत, प्रवचन, —खण्डनम् किसी उक्ति या तर्क का निराकरण, —पदीयम् भर्तृहरि द्वारा रचित एक पुस्तक का नाम, —पद्धति (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, लेखनशैली, —प्रबन्धः 1 पुस्तक, सुसंबद्ध रचना 2 वाक्य प्रवाह, —प्रयोगः वक्तृता को काम में लाना, भाषा का उपयोग, —भेदः भिन्न उक्ति, विभिन्न वक्तव्य मुद्रा० २, रचना, विन्यासः वाक्य में शब्दों का क्रम, शब्द योजना, वाक्यरचनाविचार, —शेषः 1. किसी बात का अवशिष्ट भाग, पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य संक्षोपाकाक्षा इव ते वाक्य शेष विक्रम० ३ 2 न्यून पद वाक्य।

वाकर [वाचा इयर्ति गच्छति, वाच्+कृ+अच्] 1 ऋषि, मुनि पुण्यात्मा 2 विद्वान् ब्राह्मण, विद्यार्थी 3 सूर, वीर, सूरमा 4 सान, मिस्री 5 बाजा, ठेकावट 6 निश्चिति 7 बड़वानल 8 भेड़िया।

वागा (स्त्री०) लगाम।

वागुरा [वा हिंसो उरच् गत् च] जटकेदार पिंजड़ा, जाल पाश फन्दा आखेटोद्यत फन्दा —को वा दुर्जन-वागुरासु पतित श्रमेण क्षमः पुमान्—पंच० १।१४६। मघ० वृत्ति जगली जानवरों को पकड़ कर प्राप्त होने वाली आजीविका (—त्तिः) बहेलिया, शिकारी।

वागुरिक [वागुरा+ठक्] बहेलिया, शिकारी, हरिण पकड़ने वाला रघु० ९।५३।

वाग्मिन् (वि०) [वाच् अस्त्यर्थे गिनि चस्य क] 1 वाकपटु, वाक्चतुर 2 वाग्मी 3 शब्दालङ्करपूर्ण शब्दसम्पन्न पु० 1 प्रवक्ता सुवक्ता—अनिर्भेदित-कार्यस्य वाग्मि व वाग्मिनो वृथा शि० २।२७, १०९, कि० १४।६ पंच० ८।८६ 2 बृहस्पति का नाम।

वाग्य (वि०) [वाच यच्छति-यम्+ड] 1 कम बोलने वाला, मितभाषी 2 सत्य बोलने वाला, स्वः विनय नम्रता।

वाङ्क (पु०) समुद्र।

वाङ्क् (भ्वा० पर० वाङ्कति) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

वाङ्मय (वि०) (स्त्री०-यी) [वाच्+मयट्] 1 शब्दों से युक्त रघु० ३।२८ 2 वाणी या वचनों से सम्बन्ध रखने वाला मनु० १२।९, मघ० १७।१५ 3 वाणी से युक्त 4 वाकपटु, अलंकारपूर्ण, वाग्विदग्ध, यम 1 वाणी भाषा—स्यरव्यञ्जनभर्मात्रैरनिर्देश्याभिरक्षरै समस्त वाङ्मय व्याप्त त्रैलोक्यमिव विष्णुना —छान्द० १ कु० ७।९०, शि० २।७२ 2 वाग्मिता 3 आलंकारिक, श्री सरस्वती देवी।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप् दीर्घोऽसम्प्रसारणं च] 1 वचन प्रश्न पदावली (विप० अर्थ) वाग्वर्धिव

सम्पन्नो वागर्थप्रतिपत्तये रघु० १।१ 2 वचन, बात, भाषा, वाणी—वाचि पुण्यापुण्यश्लेषव —मा० ४, लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते. रघु० १।२ पुनरावाना वाचमर्पोऽनुधावति उत्तर० १।१०, विनिश्चितामेमिति वाचमादद्दे कि० १।१०, 'यह वचन कहें', निम्नांकित कहा' १४।२, रघु० १।५९ शि० २।१३, ७२, कु० २।८ 3 वाणी शब्द - अगोचरीयं वाङ्मनसयोः—उत्तर० २ मनुष्यवाचा —रघु० ३।५३ ४ उक्ति, वक्तव्य ५ भाषा प्रतिज्ञा ६ गद्यकाव्य, कहानी, लोकोक्ति 7 विद्या की देवी सरस्वती । सम० अर्थ (वागर्थ) शब्द और उसका अर्थ —रघु० १।१ उ० द०, —आडम्बर (वागाडम्बर) शब्दाडम्बर, वाग्जाल, आत्मन् (वागात्मन्) (वि०) शब्दों में युक्त उत्तर० २ ईश (वागीश) 1 मूकवक्ता, वाक्पटु 2 देवताओं के गुरु बृहस्पति का विशेषण 3 ब्रह्मा का विशेषण कु० २।३ (-शा) सरस्वती का नाम, —ईश्वर (वागीश्वर) 1 मूकवक्ता, वाक्पटु 2 ब्रह्मा का विशेषण (-री) वाणी की देवता सरस्वती देवी, उद्यम (वागुद्यम) बोलने में प्रमुख, वाक्पटु या विद्वान पुरुष कलह (वाक्कलह) झगड़ा, उत्पात, कीर (वाक्कीर) पत्नी का भाई, - गुप्त (वागुप्त) एक प्रकार का पक्षी, - गुलि, - गुलिक (वागुलि आदि) राजा का पानदान-वाहक—तु० वाग्गुलिकरङ्क काहिनं -छल (वि०) (वाक्छल) बकवास करने वाला निरर्थक और असंगत बातें करने वाला जालम् (वाक्जालम्) निरर्थक बातें बकवास गपशप छलम् (वाक्छलम्) शब्दों के द्वारा [illegible] उत्तर वाग्व्यवहार—मुद्रा० १, —आलम् (वाजालम्) वाग्जाडम्बरपूर्ण अलंकार वाली [illegible] उ० ७।७, डम्बर (वाग्डम्बर) 1 निरर्थक उक्ति 2 बड़े बड़े शब्द दत्त (वाग्दत्त) 1 मन्त्रोच्चारण द्वारा [illegible] विवाह करवाना, जिसकी 2 बोलने पर नियन्त्रण, शब्दों या वचनों पर रोक नि० विदह, दग्ध (वाग्दग्ध) (वि०) प्रशिक्षित सभ्य, जिसकी सफाई हो चुकी हो, (स्त्री) सभ्य या सफाई हुई कन्या, दरिद्र (वाग्दरिद्र) (वि०) वचन में दरिद्र अर्थात् कम बोलने वाला दत्तम् (वाग्दत्तम्) आठ—दानम् (वाग्दानम्) सगाई, दुष्ट (वाग्दुष्ट) (वि०) 1 गाली देने वाला बदजबान, अशोभनभाषी 2 व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषा बोलने वाला (ष्टः) 1 निन्दक वह ब्राह्मण जिसका उपनयनसंस्कार ठीक समय पर न हुआ हो, देवता,—देवी (वाग्देवता, वाग्देवी) वाणी की देवता सरस्वती देवी वाग्देवता-या सरस्वतीमाराधने मा० द० १, दोष (वाग्दोष) 1 (अर्थविकार) शब्द का उच्चारण शब्दोच्चारण गर्दभो हत —हि० ३ 2 अपशब्द, मानहानि 3 व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषण,— निबन्धन (वाग्निबन्धन) (वि०) वचनों पर आश्रित रहने वाला, निश्चय (वाङ्निश्चय) मुख के वचन से पक्की, विवाह-संविदा, निष्ठा (वाङ्निष्ठा) (अपने वचनों या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति या श्रद्धा, पटु (वि०) (वाक्पटु) बोलने में कुशल, वाक्चतुर, -पति (वि०) (वाक्पति) वाक्चतुर, अलंकारयुक्त, (तिः) बृहस्पति का नाम (इस अर्थ में 'वाचस्पति' का भी प्रयोग होता है), - पारुष्यम् (वाक्पारुष्यम्) 1 भाषा की कर्कशता 2 शब्दों द्वारा अपमान, अपशब्दयुक्त भाषा, मानहानि, प्रबोधनम् (वाक्प्रबोधनम्) वचनों में अभिव्यक्त किया गया आदेश, प्रवेद (वाक्प्रवेद) वचनों द्वारा उकसाना, भड़काने वाली या उत्तेजनापूर्ण भाषा,— प्रलाप (वाक्प्रलाप) बातचीत.—बन्धनम् (वाग्बन्धनम्) भाषण बंद करना, चुप करना अमर० १३,—बल्ली (वि० व०—वाङ्मनसी—वैदिक भाषा में) वाणी और मन. मात्रम् (वाङ्मात्रम्) केवल वचन,—मुखम् (वाङ्मुखम्) किसी वक्तृता का आरम्भ या प्रस्तावना, आमुख भूमिका - यत्त (वि०) (वाग्यत्त) जिसने अपनी वाणी का नियन्त्रित कर लिया है या दमन कर लिया है, मौनी यम (वाग्यम) जिसने अपनी वाणी का नियन्त्रित कर लिया है मुनि, ऋषि,—यामः (वाग्याम) मूक पुरुष युद्धम् (वाग्युद्धम्) शब्दों की लड़ाई, शास्त्रार्थरूप वादविवाद या चर्चा, विवादास्पद विषय, वज्र (वाग्वज्र) 1 कठोर (वज्र की भांति) शब्द अहह दारुणो वाग्वज्र —उत्तर० १ 2 कठोर भाषा,- विदग्ध (वाग्विदग्ध) (वि०) बोलने में कुशल (ग्धा) मधुरभाषिणी और मनोहारिणी, विभव (वाग्विभव) शब्दों का भंडार, वर्णनशक्ति, भाषा पर आधिपत्य— मा० १।२६, रघु० १।९. विलास (वाग्विलास) ललित या प्राञ्जल भाषा - व्यवहार (वाग्व्यवहार) मौखिक विचारविमर्श प्रयोगप्रधान हि नाटकशास्त्रं किमन्य वाग्व्यवहारेण मालवि० १ व्ययः (वाग्व्यय) शब्दों का ह्रास व्यापार (वाग्व्यापार) 1 बोलने की शैलि 2 भाषणशैली या अभ्यास. संयत (वाक्संयम) भाषण या बोलने पर नियन्त्रण।

वाच [वच् + णिच् + अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2 एक नाम का पौधा।

वाचंयम (वि०) [वाचो वाक्यात् यच्छति विरमति—वाच् + यम् + खच् नि० अम्] जिह्वा को रोकने वाला, चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी -उपस्थिता देवी तद्वाचंयमो भव—विक्रम०

३, विद्वांसो वसुधातले परवश इलाघासु आर्चयमा —भामि० ४। ४२, रघु० १३।४४,—क: मौन रहने वाला मुनि।

वाचक (वि०) [वक्ति अभिधावृत्त्या बोधयति अर्थान् वच् +ण्वुल्] 1 बोलने वाला, घोषणा करने वाला, व्याख्यात्मक 2 अभिव्यक्त करने वाला, अर्थ बताने वाला, प्रत्यक्ष संकेत करने वाला (शब्द के रूप में, 'लाक्षणिक' और 'व्यंजक' से भिन्न) दे० काव्य० २ 3 मौखिक—क: 1 वक्ता 2 पाठक 3 महत्त्वपूर्ण शब्द 4 दूत।

वाचनम् [वच्+णिच्+ल्युट्] 1 पढ़ना, पाठ करना 2 घोषणा, प्रकथन, उच्चारण जैसा कि 'स्वस्ति-वाचन' 'पुण्याहवाचनम्' में।

वाचनकम् [वाचन+कन्] पहेली, बुझौवल।

वाचनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वचनेन निर्वृत्तम्—ठक्] मौखिक, शब्दों में अभिव्यक्त।

वाचस्पतिः [वाच पतिं यष्ठ्यलुक्] 'वाणी का स्वामी', देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण।

वाचस्पत्यम् [वाचस्पति+ष्यञ्] वाक्पटुतायुक्त भाषण, वक्तृता, प्रभावशाली भाषण—तदूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्य प्रतायते हि० ३।९६ (=शि० २।३०)।

वाचा [वाक्+आप्] 1 भाषण 2 धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, सूत्र 3 शपथ।

वाचाट (वि०) वाच्+आटच्, चस्य न क] बातूनी, वाचाल, बहुत बातें करने वाला अरेरे वाचाट —वेणी० ३, महावीर० ६, भट्टि० ५।२३।

वाचाल (वि०) [वाच्+आलच्, चस्य न क] 1 कोलाहलपूर्ण, शब्दायमान, क्रन्दनशील 2 बातूनी, बकवास करने वाला, दे० वाचाट, शि० १।४०।

वाचिक (वि०) (स्त्री०—का—की) [वाचाकृत वाच्+ठक्, चस्य क] 1 शब्दों से युक्त या अभिव्यक्त वाचिक पारुष्यम् 2 मौखिक, शाब्दिक मौखिक रूप से अभिव्यक्त,—कम् 1 संदेश, मौखिक या शाब्दिक समाचार —वाचिकमप्यार्येण सिद्धार्थकाच्छ्रोतव्यमिति लिखितम्—मुद्रा० ५, निर्धारितेऽर्थे लेखेन ललकत्वा खलु वाचिकम् शि० २।७० 2 समाचार, वार्ता, खबर।

वाचोयुक्ति (वि०) [वाचो युक्तिः यस्य ब० स०, षष्ठ्या अलुक्] बोलने में कुशल, वाक्पटु, —क्तिः (स्त्री०) 'शब्दों का कम' धारणा, अभिज्ञापन, भाषण—अब खलिवयं वाचोयुक्तिः—मा० १।

वाच्य (वि) [वच्+कर्मणि ण्यत्] 1 कहे जाने या बतलाये जाने के योग्य, संबोधित किये जाने योग्य—वाच्यस्त्वया मद्वचनान्म राजा—रघु० १४।६१, 'मेरी ओर से राजा को कहिए' 2 अभिधानीय, गुणवाचक, विशेषक 3 अभिव्यक्त (शब्दार्थ आदि) तु० लक्ष्य व्यंग्य 4 दूषणीय, निन्दनीय, डाटने-फटकारने योग्य —शि० २०।६४, हि० ३।१२९,—च्यम् 1 कलंक, निन्दा, झिड़की—प्रमदामनु संस्थितं शुचा नृपतिं सन्निति वाच्यदर्शनात् रघु० ८।७२, ८४, चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः—शि० ५।१५, शि० ३।५८ 2 अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा ज्ञात हो, तु० लक्ष्य, व्यंग्य, अपि तु वाच्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव चारुताप्रतीतिः—काव्य० १० 3. विधेय 4 क्रिया की वाच्यता (कर्मवाच्य या भाववाच्य)। सम०—अर्थ, अभिव्यक्त अर्थ,—चित्रम् अधम काव्य के दो भेदों में से एक, इसमें काव्य सौन्दर्य चमत्कार युक्त तथा उद्भावना युक्त विचारों की अभिव्यंजना में निहित है (विप० शब्द चित्र), दे० 'चित्र' भी, वच्यम् कठोर और कर्कश भाषा।

वाज: [वज्+घञ्] 1 बाजू, डैना 2 पंख 3. बाण का पंख 4 युद्ध, लड़ाई 5 ध्वनि, अन्न 1 घी 2 श्राद्ध या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया गया पिण्ड 3 भोज्यसामग्री 4 अन्न यज्ञ की पूर्णाहुति का मन्त्र। सम०—पेयः, यम् एक विशेष यज्ञ का नाम,—सनः 1 विष्णु का नाम 2 शिव का नाम,—सनिः सूर्य।

वाजसनेयः [वाजसनस्य सूर्यस्य छात्र वाजसनि+ढक्] शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता के प्रणेता याज्ञवल्क्य का नाम।

वाजसनेयिन् (पु०) [वाजसनेय+इनि] 1 शुक्लयजुर्वेद के प्रवर्तक तथा प्रणेता याज्ञवल्क्य मुनि का नाम 2 शुक्लयजुर्वेद का अनुयायी, वाजसनेयि सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला।

वाजिन् (पु०) [वाज+इनि] 1 घोड़ा—न गर्दभा वाजिवरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, रघु० ३।४३, ४।२५ ६७, शि० १८।३१ 2 बाण 3. पक्षी 4 यजुर्वेद की वाजसनेयिशाखा का अनुयायी। सम०—वृष्टं गोसदाहार, —अक्षः छोटी मटर,—गोजनः एक प्रकार का लोबिया, मेधः अश्वमेध यज्ञ,—शाला अस्तबल, घुड़शाला।

वाजीकर (वि०) [वाज+च्वि+कृ+अच्] कामकेलि इच्छाओं का उद्दीपक।

वाजीकरण [वाज+च्वि+कृ+ल्युट्] कामोद्दीपकों द्वारा कामनाओं को उत्तेजित या उद्दीप्त करना।

वाञ्छ् (भ्वा० पर० वाञ्छति, वाञ्छित) अभिलाषा करना, चाहना न महतामल्पस्य न भिन्नरुचेर्य प्रियाणि वाक्यान्युपि समीहितुम्—कि० १।१९, अभि सम् , कामना करना, अभिलाषा करना, इच्छा करना, —भट्टि० १७।५३।

वांछनम् [वांछ्+ल्युट्] कामना, इच्छा करना।

वांछा [वाञ्छ्+अ+टाप्] कामना, इच्छा, अभिलाषा, —वाञ्छा सज्जनसङ्गमे भर्तृ० २।६२।

वांछित (भू० क० कृ०) [वांछ्+क्त] अभीष्ट, इच्छित, —न्तम् अभिलाष, इच्छा।

वांछिन् (वि०) [वाञ्छ्+णिनि] 1 अभिलाषी 2 विलासी।

वाट:,—टम् [वट्+घञ्] 1. बाड़ा, घिरा हुआ भूभाग, अहाता—स्वबाटकुक्कुटविजयहृष्ट —दश०, इसी प्रकार देश°, श्मशान° आदि 2 उद्यान, उपवन, फलोद्यान 3. सड़क 4. तट पर लगाया गया लकड़ी के तख्तों का बाध 5 अन्न विशेष। सम०—जात: ब्राह्मण स्त्री में पतित ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान —दे० मनु० १०।२१।

वाटिका [वट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाना हो 2 फलोद्यान, वगीचा —अये दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते—श० १, इसी प्रकार पुष्प°, अशोक° आदि।

वाटी [वाट+ङीष्] 1 वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाया है 2 घर, आवास स्थान 3 अहाता, बाड़ा 4 उद्यान, उपवन, फलोद्यान वाटीभुवि क्षिति-भुजाम् —आर्या० ५ 5. सड़क 6. पानी रोकने के लिए लकड़ी के तख्तों का बाँध 7 एक प्रकार का अन्न।

वाट्या, वाट्याल:, वाट्यालकी [वाटी+यत्+टाप्, वाटी +अस्+अच्, वाट्याल+ङीष्] एक पौधे का नाम, अतिबला।

वाड् (म्वा० आ० वाडते) स्नान करना, गोता लगाना।

वाडव: [वडवाया अपत्य वडवाना समूहो वा अण्] 1 वडवानल 2 ब्राह्मण, - वम् घोड़ियों का समूह। सम० —अग्नि:, - अनल: समुद्र के भीतर रहने वाली आग।

वाडवेय: [वडवा+ढक्] 1 सांड 2 घोड़ा, वौ (पु०, द्वि० व०) दोनों अश्विनी कुमार।

वाडव्यम् [वाडव+यत्] ब्राह्मणों का समूह।

वाड्व दे० 'वाड्'।

वाण दे० 'वाण'।

वाणि. (स्त्री०) वण्+इन्] 1 बुनना 2. जुलाहे की लड़की, करघा।

वाणिज: [वणिज्+अण् (स्वार्थे)] व्यापारी, सौदागर।

वाणिज्यम् [वणिज्+ष्यञ्] व्यापार, वनिज, लेन देन।

वाणिनी [वण्+णिनि+ङीष्] 1 चतुर और धूर्त स्त्री 2. वेश्या, वाणिनेयी 3. वह स्त्री (या० का आत्म० रूप से) मुद्गारादिव स्वेच्छाचारिणी स्त्री—रघु० ६।७५।

वाणी [वण्+इन्+ङीष्] 1 भाषण, वचन, भाषा —वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते —भर्तृ० २।१९ 2 बोलने की शक्ति 3 ध्वनि, आवाज—केका वाणी मयूरस्य —अमर० इसी प्रकार आकाशवाणी 4 साहित्यिक कृति या रचना—महान्ति वा कुरु विषादमनादरेण मात्सर्यमन्यमनसा सहसा जनानाम् भामि० ४।४१, उत्तर० ७।२१ 5. प्रशंसा 6 विद्या की देवी सरस्वती।

वात् (चुरा० उभ० वातयति-ते) 1 हवा का चलना 2 पंखा करना, हवादार करना 3 सेवा करना 4 प्रसन्न करना 5 जाना।

वात (भू० क० कृ०) [वा+क्त] 1. बही हुई 2 इच्छित या अभीष्ट, प्रार्थित,—त: 1 हवा, वायु 2. वायु का देवता, वायु की अधिष्ठात्री देवता 3 शरीर के तीन दोषों में से एक 4 गठिया, सन्धिवात। सम०—अट 1 वातमृग, वातरंगिया 2 सूर्य का घोड़ा,—अंग फोतों का रोग, अण्डकोषवृद्धि,—अतिसार: शरीरगत वायु के विकृत होने से उत्पन्न पेचिश,—अयनम् पंखा, —अयन: घोड़ा, (नम्) 1 खिड़की, झरोखा—भा० २।११, कु० ७।५९, रघु० ६।२४ १३।२१ 2. आलिन्द, द्वारमण्डप 3 मढवा मण्डप, अयु: वातरंगिया,—अरि: एरण्ड का वृक्ष, अश्व: बहुत तेज चलने वाला घोड़ा, —आलोडा कस्तूरी,—आलि (स्त्री०) भंवर, आहत (वि०) 1 हवा से हिलाया हुआ 2 गठिया रोग से ग्रस्त, आहति: (स्त्री०) हवा का प्रचंड झोंका, उद्धि: (स्त्री०) 1 वायु की अधिकता 2 गदा, मुद्गर, लोहे की स्थूल छड़ से जटित लाठी,—कर्मन् (नपु०) पाद मारना, कुण्डलिका मूत्ररोग जिसमें मूत्र पीड़ा के साथ बूंद-बूंद उतरता है,—कुम्भ: हाथी का गण्डस्थल, केतु: धूल, केलि: 1 प्रेमरसयुक्त बातचीत, प्रेमियों की कानाफूसी 2 प्रेमी या प्रेमिका के शरीर पर नख क्षत,—खुल्ल: 1 ओखी, खड्ग 2 गठिया,—ज्वर: विषाक्त वायु से उत्पन्न बुखार ज्वल: बादल, पुत्र: भीम, हनुमान्,—पोत:,—पोतक: पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़,—प्रकोप: वायु की अधिकता,—प्रमी (पु०, स्त्री०) तेज चलने वाला हरिण,—मंडली भंवर,—मृग: वेग से दौड़ने वाला हरिण,—रक्तम्,—शोणितम् तीक्ष्ण गठिया,—रुज: सूअर का वृक्ष,—वश्म: 1 तूफान, प्रचंड हवा, आंधी 2 इन्द्रधनुष 3 रिश्वत,—रोग:,—व्याधि: गठिया का रोग, - वीथि: (स्त्री०) मूत्ररोकना,—वृद्धि: (स्त्री०) अण्डकोष की सूजन, शीर्षम् पेड़, शूलम् उदर पीड़ा के साथ अफारा होना, - सारथि: आग।

वातक: [वात +कन्] 1 उपपति, यार 2. एक पौधे का नाम।

वातकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वातोऽस्तिनिश्चयितोऽस्ति अस्य वात+इनि, कुक्] गठिया रोग से ग्रस्त।

वातगवः [वातमभिमुखीकृत्य अजति गच्छति—वात+अज्+खश्, मुम्] तेज दौड़ने वाला हरिण।

वातर (वि०) [वात+रा+क] 1 तूफानी, झंझामय 2 तेज, चुस्त। सम०—अयन 1 बाण 2 बाण की उड़ान, तीर के लक्ष्य तक पहुंचने की दूरी, शरपरास 3 चोटी, शिखर 4 आरा 5 पागल या नशे में उन्मत्त पुरुष 6 निठल्ला 7 सरल वृक्ष, चीड़ का पेड़।

वातल (वि०) (स्त्री०—ली) [वात रोगभेद लाति ला+क] 1 तूफानी, झंझामय 2 हवा से फूला हुआ —लः 1 वायु 2 चना।

वातापि (पु०) एक राक्षस का नाम जिसको अगस्त्य ने खा कर पचा लिया। सम० द्विष् (पु०) —सूदन —हन् (पु०) अगस्त्य के विशेषण।

वातिः [वा+क्तिच्] 1 सर्प 2 वायु, हवा 3 चन्द्रमा। सम०—ग,—गम वैगन ('वातिंगण' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है)।

वातिक (वि०) (स्त्री०—की) [वातादागत—ठक्] 1 तूफानी, हवाई, झंझामय 2 गठियासंबन्धी, सन्धिवात से पीड़ित 3 पागल, —क वायु की विकृत अवस्था से उत्पन्न ज्वर।

वातीय (वि०) [वात+छ] हवादार, यम् भात का माड़।

वातुल (वि०) [वात+उलच्] 1 वायु रोग से ग्रस्त, गठिया पीड़ित 2 पागल वायुप्रकोप के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो हि० २।२६, —ल भँवर।

वातुलि [वा+उलि, तुट्] बड़ा चमगीदड़।

वातूल (वि०) [वात+ऊलच्] दे० 'वातुल'।

वातृ (पु०) [वा+तृच्] हवा, वायु।

वात्या [वातानां समूह यत्] तूफान, अन्धड़, भँवर, तूफान या झंझामय वायु वात्यासि पर्यणीकृता इव दिशश्चण्डानिलेनेव दुःसह भामि० १।१३, रघु० ११। १६, कि० ५।३०, वेणी० २।२१।

वात्सकम् [वत्स+वुञ्] बछड़ों का समूह।

वात्सल्यम् [वत्सलस्य भाव ष्यञ्] 1 (अपने बच्चों के प्रति) स्नेह, वत्सलता सुकुमारता न पुत्रवात्सल्य-मपाकरिष्यति—कु० ५।१४, पतिवात्सल्यात्—रघु० १५।०८, इसी प्रकार भार्या प्रजा शरणागत आदि 2 लाड़प्यार या पक्षपात।

वात्सि,—**सी** (स्त्री०) शूद्र स्त्री की ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न पुत्री।

वात्स्यायनः [वत्सस्य गोत्रापत्य—वत्स+यञ्+फक्] 1 कामसूत्र (रतिशास्त्र पर लिखा गया एक ग्रन्थ) के प्रणेता 2 न्यायसूत्र पर किये गये भाष्य के प्रणेता।

वाद [वद्+घञ्] 1 बात करना, बोलना 3 भाषण, वचन, बात सामवादा सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपका शि० २।५५, इसी प्रकार 'कैतववाद' गीत० ८, सत्यवाद आदि 3 सकल्प, उक्ति, आदेश—अवाच्य-वादाश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिता —भग० २।३६ 4 वर्णन, यत्र शाकुनशास्त्रीतिहासवादान् मा० ३।२ 5 विचार विमर्श, विचार, वादविवाद, तर्क वितर्क - वादे वादे जायते तत्त्वबोध सुभा०, सोमा मनु० ८।६५ 6 उत्तर 7 विवाद, अभ्यर्थना 8 प्रतिज्ञात उपसंहार, सिद्धान्त तत्त्व हृदानीं पर माणुकारणवाद निराकरोति शारी० (तथा पुस्तक के अन्य विभिन्न स्थलों पर) 9 ध्वनन, ध्वनि 10 विकरण अफवाह 11 (विधि में) अभियोग, नालिश। सम० अनुवादी (पु० द्वि० व०) 1 उक्ति और उत्तर अभियोग तथा उसके उत्तर दायरोपण तथा उसका बचाव 2 वादविवाद शास्त्रार्थ, —कर, कृत् (वि०) विवाद करने वाला —ग्रस्त (वि०) विवादास्पद विवादग्रस्त वाद ग्रस्तोऽयं विषय, जय (वि०) तर्कसंगत उत्तर देने में निपुण दार्शनिकवाद प्रतिवाद शास्त्रार्थ युद्धम् विवाद सर्कवितर्क विचारविमर्श वादप्रतिवादौ।

वादक [वद्+णिच्+ण्वुल्] बजाने वाला।

वादनम् [वद+णिच्+ल्युट्] 1 ध्वनि करना 2 बाजा बजाना।

वादर (वि०) (स्त्री०—री) 1 बादरायण सम्बन्धी, विकार वादरः अण् 2 खाने में चुकर या हजम में निर्मित या बनाया हुआ सोंठ रस सूखी करना।

वादरंग [वादर+अम्+अङ्गु, टित्] पीपल का पेड़ गूलर का वृक्ष।

वादरायण दे० 'बादरायण'।

वादाल [वात+ला+क पृषो०] अर्श या बवासीर।

वादि (वि०) [वदन्ति वैकरण्यादयोऽर्थान् वद्+णिच्+इञ्] बुद्धिमान्, विद्वान् कुशल।

वादित (भू० क० कृ०) [वद्+णिच्+क्त] 1 उच्चारित कराया गया, बुलवाया गया 2 बजाया गया, ध्वनि किया गया।

वादित्रम् [वद्+णिच्+ष्ट्रन्] 1 बाजा दे० २।१२० 2 संगीत।

वादिन् (वि०) [वद्+णिनि] 1 बोलने वाला, बात करने वाला, प्रवचन करने वाला 2 दुःखसूचक कहने वाला 3 तर्क-वितर्क करने वाला, विवादी मृच्छ० ५।१०, रघु० १२।७२ 3 दावा करने वाला अभियोक्ता 4 व्याख्याता, अध्यापक।

वाडिवः (पु०) विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्याव्यसनी।

वाद्यम् [वद्+णिच्+यत्] 1 बाजा 2 बाजे की ध्वनि रघु० १६।६४, (वाद्यध्वनि मल्लि०)। सम०—करः संगीतज्ञ, भांडम् 1 बाजों का समूह, वाद्य यन्त्रों का ढेर 2 मृदंग आदि बाजे।

वाय्, **वाध्**, **वाधक**, **वाधन-ना**, **वाधा** दे० 'बाध्, बाध, बाधना-ना, बाधा'।

वान्धु (पु) वयम् [बन्धु (पु)+ष्यञ्, कुक्] विवाह।

वाभ्रीलस [=वाभ्रीणस, पृषो०] गैंडा।

वान (वि०) [वन्+अण्] 1 बिका हुआ, 2 (हवा से) सूखा हुआ, शुष्क 3 जंगली नम् 1 सूखा फल (पु० भी) 2 (हवा का) चलना 3 जीत, 4 लुढ़कना हिलना-डुलना 5 गन्ध द्रव्य, सुगन्ध 6 वृक्षों का समूह या झुरमुट 7 बुनना 8 तिनकों से बनी चटाई 9 घर की दीवार में छिद्र।

वानप्रस्थ [वानं वनसमूहं प्रतिश्रयत्वेन स्था+क] 1 अपने पारिवारिक जीवन के तीसरे आश्रम में प्रविष्ट ब्राह्मण 2 तीसरी अवस्था 3 संयुक्त वृक्ष 4 पलाश वृक्ष, ढाक।

वानर [वानं वनसमूहं प्रतिश्रयत्वेन प्राप्तोति गच्छति या+क या विद्यमानं नरा यत्र] बन्दर, लंगूर। सम० अक्ष जंगली अखरोट, —आह्वात शाल नामक वृक्ष इक्ष्वाकु सुग्रीव या हनुमान प्रिय खिरनी (क्षीरिन्) का पेड़।

वानल [वानं वनसमूहं लिखतीव लाति ला+क] तुलसी का पौधा (काली तुलसी)।

वानस्पत्य [वनस्पति+ष्यञ्] वह वृक्ष जिसके फल उसका संसर्ग से उत्पन्न होता है उदा० आम का पेड़।

वाना [वान+टाप्] झंझरी जैसा।

वानायु [=वनायु पृषो०] भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित देश। सम०—ज, वनायु घोड़ा अर्थात् वनायु देश में उत्पन्न घोड़ा।

वानीरः [वन्+ईरन्+अण्] एक प्रकार का बेत—स्मरारिवानीरमुरुद्रुमं सृजत् रघु० १३।३५, मेघ० ६१ मा० २।१५ रघु० १३।३०, १६।२१।

वानीरक [वानीर+कन्] मुंज नामक घास, एक प्रकार का नरकुल।

वानेयम् [वन+ढक्] एक सुगन्धित घास, खस।

वान्तम् (भू० क० कृ०) [वम्+क्त] 1 के की गई, थूका गया 2 उगला गया, प्रक्षिप्त, उड़ेला हुआ। सम०—अन्न कुत्ता।

वान्ति (स्त्री०) [वम्+क्तिन्] 1 वमन 2 प्रक्षेप, उगाल। सम०—कृत्, द वमन कराने वाला।

वान्या [वन+यत्+टाप्] उपवनों या जंगलों का समूह।

वाप [वप्+घञ्] 1 बीज बोना 2 बुनना 3 क्षौरकर्म करना, बाल मूंडना मनु० ११।१०८। सम०—मन्त्रः जुलाहे का करघा।

वापनम् [वप्+णिच्+ल्युट्] 1 बुवाना 2 मुंडन, क्षौर।

वापित (भू० क० कृ०) [वप्+णिच्+क्त] 1 बोया हुआ 2 मूंडा हुआ।

वापिः,—पी (स्त्री०) [वप् इञ्, वा ङीप्] कुआं, बावड़ी पानी का विस्तृत आयताकार जलाशय वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६। सम० हू चातक पक्षी।

वाम (वि०) [वम्+ण, अथवा वा+मन्] बायां (विप० दायां) विलोचन दक्षिणमञ्जनेन संभाव्य तद्वंचितवाम-नेत्रा—रघु० ७।८, मेघ० ७८, ९६ 2 बायें ओर स्थित या विद्यमान—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्ध —मेघ० ९ (वामेन क्रिया विशेषण के रूप में इसी अर्थ को प्रकट करता है उदा० वामेनाप्य ददस्तमध्व-गजनं सर्वात्मना सेवते काव्य० १०) 3 (क) उलटा, विरुद्ध, विरोधी, विपरीत, प्रतिकूल नदहो कामस्य वामा गति गीत० १२ मा० ९।८, भट्टि० ६।१७, (ख) विरुद्ध-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति का, शठ ४।१८, (ग) कुटिल, वक्रप्रकृति, दुराग्रही, हठी, शठ २ ४, दुष्ट, दुर्जन, अधम, नीच, कमीना कि० ११।२४ 5 प्रिय, सुन्दर लावण्यमय जैसा कि 'वामलोचना', मः 1. सजीव प्राणी, जन्तु 2. शिव 3 प्रेम का देवता, कामदेव 4 सांप 5 ओखी, ऐन, स्त्री की छाती, मम् धनदौलत, जायदाद। सम० आचार,—मार्गः तान्त्रिक मत में प्रतिपादित अनु-ष्ठानपद्धति, आवर्त शंख जिसका घुमाव दाईं ओर से बाईं ओर को गया हो, उरु, ऊरू (स्त्री०) सुंदर जंघाओं वाली स्त्री ऊरुः (स्त्री) (मनोहर जांघों से युक्त) स्त्री, देवः 1 एक मुनि का नाम 2. शिव का नाम —लोचना मनोहर आंखोंवाली स्त्री—विरूपाक्षस्य प्रियमेतस्ता स्तुवे वामलोचनाः काव्य० १०, रघु० १९।१३, शील (वि०) कुटिल या वक्र प्रकृति का (लः) कामदेव का विशेषण।

वामक (वि०) [वाम+कन्] 1 बायां 2 विपरीत, विरुद्ध—मा० १।८ (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं)।

वामन (वि०) [वम्+णिच्+ल्युट्] 1 (क) कद में छोटा, ठिगना, बौना छलवामनम् शि० १३।१२ (ख) (अत) स्वल्प, ह्रस्व, थोड़ा, लंबाई में कम—वामनादिरिव दीपभाजनम् रघु० १९।५१, कच कचानि (दिनानि) च वामनानि—नै० २२।५७ 2 विनत, नम्र- शि० १३।१२ 3 दुष्ट, नीच, ओछा,—नः 1 बौना, ठिगना —प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामन रघु० १।३, १०।६० 2 विष्णु का पांचवां अवतार जब उन्होंने बलि राक्षस को विनम्र करने के लिए बौने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि)—क्रमयति बिलमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजनपावन

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे गीत० १ 3 दक्षिण दिशा का दिक्पाल हाथी 4 पाणिनि के सूत्रों पर काशिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेता 5 अकोट नामक वृक्ष। सम० आकृति (वि०) ठिगना, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वामनिका [वामनी + कन् + टाप्, ह्रस्व] ठिगनी स्त्री।

वामनी [वामन+ङीप्] 1 बौनी स्त्री 2 घोंडी 3 एक स्त्रीविशेष।

वामलूर [वाम+लू+रक्] बांबी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर।

वामा [वामति सौन्दर्यम् - वम्+अण् + टाप्] 1 स्त्री 2. मनोहारिणी स्त्री—भामि० ४।३९, ४२ 3 गौरी 4 लक्ष्मी 5 सरस्वती।

वामिल (वि०) [वाम+इलच्] 1 सुंदर, मनोहर 2 घमंडी, अहंकारी 3 चालाक, कपटपूर्ण।

वामी [वाम+ङीष्] 1 घोंडी—अथाप्टवामीशतं हितार्थं रघु० ५।३२ 2 यज्ञी 3 हथिनी 4 गीदड़ी

वाय: [वे+घञ्] बुनना, सीना। सम०—वह अगहनी का करघा।

वायक: [वे+ण्वुल्] 1 जुलाहा 2 ढेर समुच्चय, संग्रह।

वायनम्, वायनकम् [वे+णिच्+ल्युट्, वायन+कन्] नैवेद्य, उत्सव के अवसर पर किसी देवता या ब्राह्मण को दिया गया मिष्टान्न, उपवास रखना आदि।

वायव (वि०) (स्त्री०—वी) [वायु+अण्] वायु से संबद्ध या प्राप्त 2 हवाई।

वायवीय, वायव्य (वि०) [वायु+छ, यत् वा] हवा से सम्बन्ध रखने वाला, हवाई। सम० -पुराणम् एक पुराण का नाम।

वायस [वयोऽस्त्यस्य इति] 1 कौवा - बलिमिव परिभाक्तुं वायसास्तत्कयन्ति -मृच्छ० १०।३ 2 सुगन्धित अगर की लकड़ी, अगरुकाष्ठ 3 तारपीन। सम०—अरातिः, —अरिः उल्लू,—आह्वा एक प्रकार भक्ष्य शाक,—इक्षु: एक प्रकार का लम्बा घास।

वायु: [वा उण् युक् च] 1 हवा, पवन – वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् - कवि० (इसकी उत्पत्ति के लिए दे० मनु० १।७६ --सात पवनमार्ग हैं -आवह प्रवह-श्चैव संवहश्चोद्वहस्तथा, विवहाख्य परिवह परावह इति क्रमात्) 2 वायुदेवता, पवनदेवता 3 जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण पांच प्रकार का वायु गिनाया गया है प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान 4 वात-प्रकोप, वातरोग में ग्रस्तता। सम० आत्मजम् आकाश, अन्तरिक्ष,—केतु धूल, - कोण: पश्चिमोत्तरी कोना,—खण्ड: अफारा (जो अनपच के कारण हुआ हो),—गुण: 1 आंधी, तूफान 2. भंवर, बौण्डर: पवन का परास, —ग्रस्त (वि०) 1 वातरोग में ग्रस्त, जिसे अफारा हो गया हो 2 महिमा रोग से ग्रस्त, - जात, तनय., -नन्दन, पुत्र, सुत:, सूनु: हनुमान् या भीम के विशेषण, — दण्ड: बादल,—निज (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित सनकी, पागल, उन्मत्त, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,- फलम् ! लौंग 2 इन्द्रयवनुष, भक्ष., भक्षण:, —भुज् (पु०)! जो केवल वायु पीकर रहे, तपस्वी 2 सांप—भुज पवनाशन. रोधा रात्रि, वश्य (वि०) वायुप्रकोप के कारण अस्वस्थ—रघु० १।६३,—वर्त्मन् (पु० नपु०) आकाश, अन्तरिक्ष, बाह बुआ, बाहिनी शिरा, धमनी, शरीर की नाड़ी, वेग,- सख (ब०) पवन की भांति तेज,—सखः, सखि (पु०) आग।

वार् (नपु०) [वृ - णिच् + क्विप्] जल भामि० १।३०। सम०—आसनम् जलाशय,—किटिः (वा किटि) सूअर, जलहस्तिनी या हथिनी द बादल,- धरम् 1 जल 2 रेशम 3 आभूषण 4 आम का बीज 5 घोड़े के गरदन की भौंरी 6 शंख,- धि समुद्र, भवम् एक प्रकार का नमक पुष्पम् (वा पुष्पम्) लौंग —घट मगरमच्छ, घटिकाल, -मुच् (पु०) बादल, राशि समुद्र, वट किश्ती, नाव, सदनम् (वा सदनम्) जलाशय, टंकी, -स्थ (वि०) (वा स्थान) जल में विद्यमान।

वार[2] [वृ - घञ्] 1 आवरण, चादर 2 समुदाय, बड़ी संख्या जैसा कि 'वारयुवति' में 3 ढेर परिमाण 4 रेवड़, लहंडा शि० १८।५६ 5. सप्ताह का, एक दिन यथा बुधवार, शनिवार 6 समय, बारी यद् कस्य वार समायातं पंच० १, रघु० १९।२८ अंग्रेजी के 'टाइम्ज' Times शब्द की भांति बहुधा ब० व० में प्रयुक्त, बहुवारान् बहुत बार, कतिवारान् कितनी बार) 7 अवसर, मौका 8 दरवाजा, फाटक 9 नदी का सामने का तट 10 शिव, रघु 1 अंजलि भर 2 जलौघ, जल का ढेर। सम० अंगना—नारी, युवति (स्त्री०), वनिता, विलासिनी,—कुम्बी,—स्त्री गणिका, वाराङ्गना स्त्री, वेश्या, पतुरिया, रण्डी—रत्न० १।२, शृंगार० १६,—वीर: 1 पत्नी का भाई, साला (त्रिका० के अनुसार) 2 घरजामिल 3 कुत्ता 4 जल युद्ध का घोड़ा (यह अर्थ मेदिनीकोश में दिये हुए हैं) वृ (वृ) आ केले का वृक्ष, - मुख्या प्रधान वेश्या - या (आ) च:, जम् कवच, शिरस्त्राण—रघु० ४।८४, - वाणि: 1 बाजीगर, मदारी बाजे बजाने वाला 2 वादित्र-कुशल 3. वर्ष 4 व्यापारी (- णि) वेश्या, छोटी वेश्या, वेश्या 1. वेश्यावृत्ति, रंडी का व्यवसाय 2 वेश्याओं का समुदाय।

वारक (वि०) [वृ+णिच्+ण्वुल्] रुकावट डालने

वाला, विरोध करने वाला, —क 1 एक प्रकार का पाढा 2 सामान्य घोड़ा 3 घोड़े का कदम, कम् 1 पीड़ा होने का स्थान 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, खुशबू।

वारकिन् (पु०) [वारक+इनि] 1 विरोधी, शत्रु 2 समुद्र 3 शुभ लक्षणों से युक्त एक घोड़ा 4 वह मन्त्री जो केवल पक्ष लेकर रहता है।

वारक: (पु०) पक्षी।

वारण [वृ+अच् णिच्] किसी चाकू का दस्ता या तलवार की मूठ।

वारणम् [वृ+णिच् + अप्च] 1 वेग 2 घोड़ों का समूह, टा इसिनं०।

वारण (वि०) (स्त्री० -णी) [वृ+णिच् + ल्युट्] हटाने वाला, मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, आगे बढ़ना रोकना, अड़चन डालना या अड़चन, विघ्नबाधा वारणानाम् भर्तृ० २।१७ 2 रुकावट, विघ्न 3 मुकाबला, विरोध 4 प्रतिरक्षा, बचाव, प्रत्याख्या, —ण 1 हाथी —न प्रयति विघ्नबाधा-रणं वारणानाम् भर्तृ० २।१७, कु० ५।७०, रघु० १२।९३, शि० १८।५६ 2 कवच, शिरस्त्राण। सम० —पुष्पी, —सी, —वल्लभा केले का वृक्ष, —साह्वयम् हस्तिनापुर का नाम।

वारणी दे० 'वारणा'।

वारणावत (पु० न०) एक नगर का नाम।

वारत्रम् [वारयति त्रायते वा] कवच का तस्मा।

वारम्वारम् (अव्य०) [वृ णमुल् द्वित्वम्] बार बार, बहुधा, बार बार, फिर फिर —वारंवार विरचयति दृशारुदगम् वारणपूर —मा० १।३५।

वारला [वार+ला+क+टाप्] 1 घर, भिट्ट 2 हथिनी, दे० 'बरदा'।

वाराणसी [वरणा च असी च नद्यौरन्तरे भवा इत्यर्थे अण्—ङीप्, पृषो० साधु] बनारस का पावन नगर।

वारानिधि: [वारां जलानां निधि: षष्ठ्यलुक् स०] समुद्र।

वाराह (वि०) (स्त्री०—ही) [वराह+अण्] सूकर से सम्बद्ध,—मुद्रा० ८।१५, याज्ञ० १।२५९,—ह 1. सूकर 2 एक प्रकार का वृक्ष। सम०—कल्प वाराह-मान कल्प (जिसमें हम रह रहे हैं) का नाम, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक।

वाराही [वाराह+ङीप्] 1 सूकरी 2 पृथ्वी 3 'वराह' के रूप में विष्णु भगवान की शक्ति 4 मांस। सम०—कंद: महाकंद, गेंठी।

वारि (नपु०) [वृ+इञ्] 1 जल यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति सुभा० 2 तरल पदार्थ 3 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, खुशबेर,—रि, —री (स्त्री०) 1. हाथी को बांधने का तस्मा—वारी वारे तस्मरे वारणानाम् शि० १८।५६, रघु० ५।४५ 2. हाथी को बांधने का रस्सा 3 हाथियों को पकड़ने का गड्ढा या खिड़की 4 बर्छी, कैंची 5 जलपात्र 6 हरदलों का नाम। सम०—ईश: समुद्र,—उद्भवम् कमल, ओक: ओक, कार्पूर: एक प्रकार की मछली, इलीश, कुम्भक: मिश्राहा, नृपाटक का पौधा—खिली: जोंक, —चारक: जलाशय, —चर (वि०) जलचर (—र:) 1 मछली 2 कोई जलजन्तु —ज (वि०) जल में उत्पन्न, (ज:) 1 कमल—शि० १५।७२ 2 कोई भी त्रिकोणीय (जम्) 1 कमल शि० ४।६६ 2 एक प्रकार का नमक 3 एक प्रकार का पौधा, सौरसुवर्ण 4 लौंग, —तस्कर: बादल, —त्रा छतरी —द बादल —दिव्य वारि वारि इवानुरे —मुभा० भामि० १।३० (दम्) एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—द: चातक पक्षी, —धर: बादल—नवधारिधरावयादहोनिर्भविनश्च च निरानन्दस्वरम्यं - विक्रम० ४।३,—धारा वृष्टि की बौछार,—धि: समुद्र—वारिधिमुषामक्षया विदधु: क्षतै —गीत० १२, नाथ 1 समुद्र 2 वरुण का विशेषण 3 बादल, —निधि: समुद्र, पथ,—मार्ग समुद्र यात्रा जलयात्रा, प्रवाह: झरना, जलप्रपात, बलि:,—मुच्, —द: बादल,—यन्त्रम् जलघटिका, रहट। मालवि० २।१३, रथ: डोंगी, नाव, चढ़नई —राशि: 1. समुद्र सरोवर, सुहृद् कमल, वाह: कलाल, शराब बेचने वाला, —वाह,—वाहन: बादल,—श विष्णु का नाम, समय 1 लौंग 2 अजवायन विशेष 3. खस की सुगन्धित जड़, उशीर।

वारित (भू० क० कृ०) [वृ+णिच्+क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ रोका हुआ 2 प्रतिरक्षित, प्रत्याख्यात।

वारी दे० (स्त्री०—रि)।

वारीश: [वारि : इट्+क] हाथी।

वारुक [वारयति त्रिपून् वृ+णिच्+उक्] विजयकुंजर, जंगी हाथी।

वारुक: (पु०) अरबी [वह टिकटी जिस पर शव रख कर श्मशानभूमि में ले जाया जाता है]।

वारुण (वि०) (स्त्री०—णी) [वरुणस्येदम्—अण्] 1 वरुण-सम्बन्धी 2 वरुण को आदर समर्पित 3. वरुण को दिया हुआ —ण: भारतवर्ष के नौ प्रभागों या खण्डों में से एक,—णम् पानी।

वारुणि: [वरुण+इञ्] 1 अगस्त्य मुनि 2. भृगु।

वारुणी [वारुण+ङीप्] 1 पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अधिष्ठित दिशा) 2. कोई मदिरा-पर्योपि शौण्डिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते—हि० ३।११, पंच० १।१७८,

(यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) कु० ४।१२ 3 शतभिषज् नामक नक्षत्र 4 एक प्रकार का धान, व्रीहि। सम० -कल्पम् वैद्यक का विश्लेषण।

वारङ्ग [वृ+णिच्+उंड] नाग जाति का प्रधान, ङ, ङी 1 अन्न का मैल या छाल 2 कान का मैल 3 नाव में से पानी उलीचने का बर्तन।

वारेन्द्री बंगाल के एक भाग का नाम, बरेन्द्र राजशाही।

वार्क्ष (वि०) (स्त्री०-र्क्षी) [वृक्ष+अण्] वृक्षों से युक्त -र्क्षम् जंगल।

वार्णिक [वर्ण+ठक्] लिपिकार, लेखक।

वार्तक, वार्तकि (स्त्री०) **वार्तकिन्** (पु०) } [वृत्+
वार्ताकी (स्त्री०) **वार्ताकु** (पु०, स्त्री०) } ण्वुल्, ण्वुच्, इक, इन् वृद्धिरूप वर्त्+काकु, वर्त्+काकु, वृद्धि] बैंगन का पौधा।

वार्तिका (स्त्री०) बटेर पक्षी।

वार्त्त (वि०) [वृत्ति+अण्] 1 स्वस्थ, नीरोग तन्दुरुस्त 2 धनी, समृद्ध, मालदार 3 जीविकायुक्त -र्त्तम् 1 कल्याण, अच्छा स्वास्थ्य सर्वत्र वार्त्तमादेहि मातुलम् रघु० ५।१६, १८।३१, मृच्छ० ४।१६, शि० १९।८ 2 कुशलता, दक्षता-आयुर्वेद इव स्वयातमन्वै —कि० २।३।४ 3 सूचना, खबर।

वार्त्ता [वार्त्त+टाप्] 1 उदरभरण, रोटी कमाना 2 समाचार खबर, गप्प शप्प मारनेवालों का धंधा—रघु० ८।१ धर्मोपनिषदं स्मृतिं। जीविका वैद्यक का अध्ययन रघु० १।२८ मनु० ७।१४३, याज्ञ० १।३१० मेघ० ४० 4 खेती, कृषि। सम०—अध्यक्ष, -कारिक, -कार, -जीवक, -जीविन्, -वह, -हर 1 कृषि, अर्थशास्त्र आदि विद्याएं पढ़ने वाला,—वृत्ति जीविका के साधनों के अध्यक्ष रघु०, -व्यतिकर समाचार विवरण।

वार्त्तायन [वार्त्ता+अयनङ्] समाचारों का संग्रहकर्ता, भेदिया, जासूस।

वार्त्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [वृत्ति+ठक्] 1 समाचार संबन्धी 2 समाचार देने वाला 3 व्याख्यात्मक, कोष संबन्धी,—क 1 दूत, संदेशवाहक 2 किसान (वैश्यवर्ण का व्यक्ति), काम एक व्याख्यात्मक अतिरिक्त नियम जो उक्त, अनुक्त या किसी अधूरी बात की व्याख्या करता है अथवा किसी छूटी हुई बात का जोड़ देता है—उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तिकृत् (चिन्ता) वार्त्तिकम् [यह शब्द पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा निर्मित व्याख्यात्मक नियमों के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त होता है)।

वार्त्रघ्न [वृत्रहन्+अण्] अर्जुन का नाम—कु० ४।५।

वार्द्धकम् [वृद्धानां समूह इत्य भाव कर्म वा वुञ्] 1 बुढ़ापा—किमिन्द्रियाण्याभरणानि योषिते श्रुतं स्वयं वार्द्धकमाहि वल्कलम्—कु० ५।८४, रघु०, १।८ मेघ० १।३७ 2 बुढ़ापे की दुर्बलता 3 बूढ़ों का समुदाय।

वार्द्धकम्य [वार्द्धक+ष्यञ्] 1. बुढ़ापा 2 बुढ़ापे की दुर्बलता।

वार्द्धुषि वार्द्धुषिक., वार्द्धुषिन् (पु०) [=वार्द्धुषिक पृषो० कलोप वृद्ध्यर्थं प्रयुक्त वृद्धि+ण्, या पक्वान्नादि वृद्धिकरं वस्तु भक्षयति वार्द्धुषि+इनि] सूदखोर-ब्याज पर रुपया देने वाला।

वार्द्धुष्यम् [वार्द्धुषि+ष्यञ्] सूद, अत्यन्त ऊंचा सूद दर से ज्यादह ब्याज।

वार्ध्रम्, वार्ध्री [वार्+ध्रक् ङीष् वा] चमड़े का तस्मा।

वार्ध्रीणसम् [वार्ध्रीण नासिका अस्य ब० स० तां नासिकां नयति देश, यत्+अण्] गैंडा द० 'वाध्रीणसम' भी।

वार्मणम् [वर्मन्+अण्] कवच से सुसज्जित सुभटों का समूह।

वार्षम् [वृष+यत्] आशीर्वादि अरदान (द० व०) समा० जायदाद।

वार्षणा [वर्षण+अण्+टाप्] नीले रंग की मक्खी।

वार्षा (वि०) (स्त्री०-र्षी) [वर्ष+अण्] 1 वर्ष भर रहने वाला 2 वार्षिक।

वार्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [वर्ष+ठक्] 1 वर्ष संबंधी वार्षिक महोत्सवो यत्रत्रैव रघुवंशी—रघु० ८।१२ 2 सालाना, प्रतिवर्ष घटित होने वाला, 3 एक वर्ष तक रहने वाला—मानुषाणां वयसा त्रिंशत्वर्षाणि रूपवर्षिकी, इसी प्रकार वार्षि) धनम्-याज्ञ० १।१२८।—कम् जौ का खेत।

वार्षिल्ला [वार्षीला शिरः पा०ब० अस्य च । ४।१।

वार्ष्णेय [वृष्णि+ढक्] 1 वृष्णि का संतान 2 विशेष रूप से कृष्ण 3 नल के सारथि का नाम।

वार्हे, वार्हेय, वार्हद्रथि, } द० वार्हे, वार्हेय, वार्हद्रथि।
वार्हेस्पत्य, वार्हेस्पत्य, } वार्हस्पत्य, वार्हेस्पत्य वार्हिण
वार्हिण, वाल, वार्ष्णक } वाल वार्ष्णक।

वार्ष्णेयत्व द० 'वार्ष्णेयकर'।

वालि [वाः केशे जातः वाः+डलच्] प्रसिद्ध वानरराज वालि जो उसके छोटे भाई सुग्रीव की इच्छानुसार राम के द्वारा मारा गया।

(वर्णन मिला मिलता है कि वानरराज वालि अत्यन्त बलवान् था, कहते हैं कि उसने रावण को बगल में दबा उसमें लड़ने गया, पकड़ कर अपनी कांख में रख लिया। जब वालि दशरथि के भाई को मारने के लिए किष्किन्धापुरी में पहुंच गया तो उसके और सुग्रीव ने वालि को युद्ध में मरा जान, उसका सिंहासन हथिया लिया। जिस समय वालि वापिस आया

तो सुग्रीव का भाग कर ऋष्यमूक पर्वत पर शरण लेनी पड़ी। सुग्रीव की पत्नी तारा को वालि ने छीन लिया, परन्तु राम के द्वारा वालि का वध होने पर वह फिर सुग्रीव को मिल गई)।

वालुका [वल् + उण् + कन् + टाप्] 1 रेत, बजरी—अकूतजन्यायाकूल वालुकान्विव मूत्रितम् 2 चूर्ण 3 कपूर, का,—की एक प्रकार की झाड़ी। सम०—आलिका झरोखा।

वालेय दे० वार्षेय।

वाल्क (वि०) (स्त्री०—की) [वल्क + अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ।

वल्कल (वि०) (स्त्री०—ली) [वल्कल + अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ, जैसे वल्कल की पोशाक, ली मुद्रा आदि।

वाल्मीकि, वाल्मीकि [वल्मीके भव अण् इञ् वा] एक विख्यात ऋषि तथा संस्कृत रामायण के प्रणेता का नाम (कहा जाता है कि प्रारम्भ में वाल्मीकि डाकू थे परन्तु बचपन में वाल्मीकि द्वारा परिचर्या होने पर यह कुछ वर्षों तक एक स्थान पर बैठे रहे जिसके कारण इनके शरीर पर वल्मीक (बांबी) बन गया। तत्पश्चात् इन्होंने इसे छोड़ना सिखलाया। इस प्रकार ही चौर्यकर्म से प्रायश्चित्त हो गया और कुछ वर्षों तक ऋषियों की सेवा करने और कुटने का कार्य करते रहे। एक दिन उन पर महामुनि मिला जिसने इनसे मारे डालने का भय दिखा कर कहा कि जो कुछ राम है सब निरर्थक है। तब मुनि ने उन्हें कहा कि यह 'मरा मरा' जपते रहो। इस पर वाल्मीकि ने 'मरा मरा' जपना आरम्भ कर दिया। यह मुनि ने इनकी श्रीकृष्ण की जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह मुनि ने उन 'मरा मरा' (जो राम उच्चारण करने के लिए कहा और अन्तर्धान हो गया। यह कुछ इस प्रकार का बना जो कि उसका शरीर दीमकों द्वारा खाई हुई मिट्टी से ढक गया। वहीं मुनि फिर आया और उसने उस बांबी से निकाला वाल्मीक (बांबी) से निकलने के कारण इसका नाम वाल्मीकि पड़ गया। यहीं बाद में बड़ा प्रसिद्ध मुनि हुआ। एक दिन जब कि वह स्नान कर रहा था, उसने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को बहेलिये द्वारा मारते हुए देखा इस पर इस ऋषि के मुख से उस दुष्ट बहेलिये के लिए अनजाने में कुछ अभिशाप के शब्द निकल गये। उन्होंने अनुष्टुप् छन्द में श्लोक का रूप धारण किया। रचना की यह नई शैली थी। ब्रह्मा के आदेश से इसने 'रामायण' नामक प्रथम काव्य की रचना की। जब राम ने सीता का परित्याग कर दिया तो इस ऋषि ने सीता को अपने आश्रम में शरण दी, उसके दोनों पुत्रों का पालन पोषण किया, उन्हें शिक्षा दी। बाद में इसने इनको राम के सुपुर्द कर दिया।

वाल्लभ्यम् [वल्लभ + ष्यञ्] प्रिय होने का भाव, वल्लभता।

वाचाल (वि०) [पुनः पुनरनिशमेव वा वदति—वद् + घञ्, लुक्, द्वित्वम्=वावद् + अलच्] 1 बातूनी, मुखर 2 वाक्पटु।

वाच्यः [वच् + यत्, लुक्, द्वित्वम्, अच्] एक प्रकार की तुलसी।

वाजपट (पु०) नाव, डोंगी।

वाजय् (दिवा० आ० वाजयते) 1 छांटना, पसन्द करना, चुनना, प्रेम करना ततो वावृत्यमानासौ रामशाला न्यविशत भट्टि० ६।२८ 2 सेवा करना।

वाजित (वि०) [वाजय् + क्त] छांटा गया चुना गया, पसन्द किया गया।

वाश् (दिवा० आ० वाशयते, वाशित) 1 दहाड़ना, क्रंदन करना, चीत्कार करना, चिल्लाना, हू हू करना, (पक्षियों का) चहचहाना, ध्वनि करना (शिवा) या शिवा प्रतिभय वेवाशिरे—रघु० ११।६१, शि० १८।५५, ७९, भट्टि० १४।१४, ७६ 2 बुलाना।

वाशक [वाश् + ण्वुल्] दहाड़ने वाला, मुखर, निनादी।

वाशनम् [वाश् + ल्युट्] 1 दहाड़ना चिंघाड़ना, गुर्राना, आक्रोश करना 2 पक्षियों का चहचहाना, कूकना, (सर्वत्र या) भिनभिनाना।

वाशि [वाश् + इञ्] अग्नि दहकता आग।

वाशितम् [वाश् + क्त] पक्षियों का कलरव।

वाशिता वाशिता [वाशित + टाप्, वश् + णिच् + क्त + टाप्] 1 हथिनी अभ्यासतः स वाशितासङ्ग पुरन्ध्रया कमलिनीरिव द्विप रघु० ११।११ 2, रघु०।

वाश्य [वाश् + क्यप्] दिन अम् 1 आवास स्थान, घर 2 चौराहा 3 गोबर।

वाश्य, अम् दे० 'वास्य'।

वास् (चुरा० उभ० वासयति ते) 1 सुवासित करना, सुवासित करना, धूप देना, धूनी देना, खुशबूदार करना वासितानवनिश्वसितगन्धा कि० ९।८०, प्रकटित पटवासवासितयन काननानि गीत० १, उत्तर० ३।१५, रघु० ८।३४, मेघ० २० ऋतु० ५।५ 2. गिनना, भिगोना 3 मसाला डालना, मसालेदार बनाना।

॥ (दिवा० आ०) दे० 'वाश्'।

वास [वास् + घञ्] 1 सुगन्ध 2 निवास, आवास वासो यस्य हरे करे—भामि० १।६३, रघु० ११।२,

मृग० १।४४ 3 आवास, रहना, घर 4 जगह, स्थिति 5 कपड़े, पोशाक। सम० अ(आ) गार,—रम्, —गृहम्, वेश्मन् (नपु०) घर का आन्तरिक कक्ष, विशेषत शयनागार धर्मासनाद्विजति वासगृहं नरेन्द्र उत्तर० १।३, विक्रम० १, कभी कभी वह कमरा जहां सार्वजनिक प्रदर्शन (नाच, कुश्ती, तथा अन्य प्रतियोगिताएँ) होते हैं, **तालूलम्** अन्य सुगन्धित मसालों से युक्त पान, **भवनम्, मन्दिरम्, सदनम्** निवासस्थान, घर, **यष्टि** (स्त्री०) पक्षियों के बैठने का डंडा, छतरी, अड्डा, वेणी० २।१, मेघ० ७९, **-योग** एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण, **सज्जा**= वासक सज्जा दे०।

वासक (वि०) (स्त्री० का -सिका) [वास्+णिच्+ण्वुल्] 1 सुगन्धित करने वाला, सुवासित करने वाला, धूपना वाला, धूप देने वाला 2 बसाने वाला, आबाद करने वाला, **कम्** वस्त्र, कपड़े। सम० **—सज्जा सज्जिका** वह स्त्री जो अपने प्रेमी का स्वागत, सत्कार करने के लिए अपने आपको वस्त्राभूषण से भूषित करती तथा घर को साफ सुथरा रखती है, विशेषत उस समय जब कि प्रेमी का मिलन नियत किया हुआ हो, भावी नायिका नायिका का भेद साहित्यदर्पणकार परिभाषा देता है कुरुते भवने यस्या (भर्तृ) सज्जिते वासवेश्मनि, सा तु वासकसज्जा स्याद्विदितप्रियसंगमा २८०, भवति विलसितसज्जा विरचयति रतिदिने वासकसज्जा गीत० ६।

वासस | वास्+असच् | वस्त्र।

वासतेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वसन्तये हित साधुवा ढक्] निवास करने के योग्य, यी रात।

वासयत् [वास्+ल्युट्] 1 सुगन्धित करना, सुवासित करना 2 धूपना 3 निवास करना, टिकना 4 आवासस्थान निवासस्थान 5 कोई पात्र, आधार, टोकरी, सन्दूक, बर्तन आदि याज्ञ० २।१६५, [वासन निक्षेपाधारभूत मंजूषादिक मंजुष ध्यर्थादिवृतम्] 6 ज्ञान 7 वस्त्र, परिधान 8 गिलाफ, लिफाफा।

वासना [वास्+णिच्+युच्+टाप्] 1 स्मृति में प्राप्त ज्ञान, तु० भावना 2 विशेषत अपने पहले शुभाशुभ कर्मों का अनजाने में मन पर पड़ा हुआ संस्कार जिससे सुख या दुःख की उत्पत्ति होती है 3 उत्प्रेक्षा, कल्पना, विचार 4 मिथ्या विचार, अज्ञान 5 अभिलाषा, इच्छा, रुचि -समारब्धासनाकल्पृङ्खला—गीत० ३ 6 आदर, रुचि, सादर मान्यता तेषां (पक्षिणां) मध्ये मम तु महती वासना चातकेषु-भामि० ४।१७।

वासन्त (वि०) (स्त्री० ती) [वसन्त+अण्] 1 वसन्त कालीन, माधवी, बहार के लायक, वसन्त में उत्पन्न 2 जीवन का वसन्त, जवान 3 परिश्रमी, सावधान (कर्तव्यपालन में),—तः 1 ऊँट 2 जवान हाथी 3 कोई भी जवान जन्तु 4 कोयल 5 दक्षिणी पवन मलय पहाड़ से चलने वाली हवा तु० मलय समीर 6 एक प्रकार का लोबिया 7 लम्पट, दुराचारी, ती 1 एक प्रकार की चमेली (सुगन्धित फूलों से लदा हुआ) वसन्ते वासन्तीकुसुममुकुमारैरवयवैः -शिशु० ७ 2 बड़ी पीपल 3 जही का फूल 4 कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव-तु० कामोत्सव।

वासन्तिक (वि०) (स्त्री० की) [वसन्त+ठक्] वसन्त ऋतु से संबद्ध —क 1 नाटक का विदूषक या हंसोड़ 2 अभिनेता।

वासर रम् [सुख वासयति जनान् वास्+अरन्] (संध्या० का) एक दिन। सम० **-प्रान्त** वासर।

वासव (वि०) (स्त्री० वी) [वसुरेव स्वार्थे अण्, वसोरपत्यस्य अण् वा] इन्द्र सम्बन्धी या इन्द्र से उत्पन्न दिगायामोत्र का०, वासवीना वसूनाम् मनु० ९।

—वः इन्द्र का नाम कु० ३।२८, रघु० २।५५। सम० **-दत्ता** 1 सुबन्धु की एक रचना 2 कथा में वर्णित नायिका (इस स्त्री) का बाल मित्र कवि विविध प्रकार से करते हैं। कथासरित्सागर के अनुसार वह उज्जयिनी के महाराजा चण्डमहासेन की पुत्री थी जिसका अपहरण वत्स के राजा उदयन ने किया था। भवभूति उसे प्रद्योत राजा की पुत्री बताते हैं (दे० रत्ना० १।१०) और मल्लिनाथ का कथन के अनुसार प्रद्योतकन्या प्रियदुहिता वत्सराजस्य वह उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री थी भवभूति कहते हैं कि उसके पिता ने उसकी सगाई राजा संजय के साथ की थी, परन्तु उसने स्वयं आपको उदयन की सेवा में अर्पित किया (२० ४।२) परन्तु सुबन्धु की वासवदत्ता का कथानक कहानी में कोई समानता नहीं। हां उसका नाम अवश्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उसके पिता ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, परन्तु कदर्पकेतु उसे अपहृत कर ले गया। यह संभव है कि 'वासवदत्ता' नाम की कई नायिकाएँ हों)।

वासवी [वासव+ङीप्] व्यास की माता का नाम।

वासस् (नपु०) [वस् आच्छादने असि णिच्च] वस्त्र परिधान, कपड़े वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि भग० २।२२ मनु० ७।९, मेघ० ५९।

वासि (पु०, स्त्री०) [वस्+इञ्] बसूला, छोटी कुल्हाड़ी छेनी, **सिः** निवास, आवास।

वासित (भू० क० कृ०) [वास्+क्त] 1 सुवासित, या धूपित 2 बिछौना, घर किया हुआ 3 बसाकेदार, मसाला डाला हुआ 4 कपड़े पहने हुए, वस्त्रों से सज्जित 5 अनुकूल, आबाद 6 विख्यात, प्रसिद्ध, ख्यात 1. पक्षियों का कलरव या कूजना 2 आलबाल० वासना (२)।

वासिता [वास्+क्त+टाप्] दे० 'वासिका'।

वासि (ष्ठि) ष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [वसि+ष्ठिष्ठ+अण्] वसिष्ठ संबंधी, वसिष्ठ द्वारा रचित (वसिष्ठ दृष्ट) जैसा कि ऋग्वेद का दसवां मण्डल, ष्ठ वसिष्ठ की संतान।

वासु [सर्वोऽत्र वसति-वस्+उन्] 1 आत्मा 2 विश्वात्मा, परमात्मा 3 विष्णु।

वासुकि, वासुकेयः [वसुक+इञ्, ढक् वा] एक विख्यात नाग का नाम, नागराज (कहते हैं कि यह कश्यप का पुत्र था)—कु० २।३८, मेघ० १०।३८।

वासुदेव [वसुदेवस्यापत्यम् अण्] 1 वसुदेव की संतान 2 विशेष रूप से कृष्ण।

वासुरा [वस+उरच्+टाप्] 1 पृथ्वी 2 रात 3 स्त्री 4 रमणी।

वासू (स्त्री०) [वास्+ऊ] नवयौवना कन्या, कुमारी, (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त)—एषासि वासु शिरसि गृहीता मृच्छ० १।४१, वासु प्रवीद—मृच्छ०।

वास्त दे० वास्य।

वास्तव (वि०) (स्त्री० वी) [वस्तु+अण्] 1 असली, सच्चा, सारयुक्त 2 निर्धारित, निश्चित,—वम् कोई भी निश्चित या निर्धारित बात।

वास्तवी [वास्तव+टाप्] प्रभात, उषा।

वास्तविक (वि०) (स्त्री०—की) [वस्तुतो निर्वृत्तं ठक्] सच्चा, असली, सारसंयुक्त, यथार्थ, विशुद्ध।

वास्तिकम् [वस्ति+ठक्] बकरों का समूह।

वास्तव्य (वि०) [वस्+तव्यत्, णित्] 1 निवासी, वासी, रहने वाला- पुरेऽस्य वास्तव्यकुटुंबिता वयुः शि० १।६६ 2 रहने के योग्य, वास करने के योग्य —व्यः 1 आवासी, रहने वाला, निवासी—नानादिगंतवास्तव्यो महाजनसमाज—मा० १, —व्यम् 1. रहने के योग्य स्थान, घर 2. वसति, निवासस्थान।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुन्] 1 घर बनाने की जगह, भवनभूखण्ड, जगह 2 घर, आवास, निवास भूमि,—रक्षेद्वास्तुबलिं चैव वास्तुपूजा० मनु० ३।८९। सम०—कर्म: घर की आधारशिला रखते समय किया जाने वाला यज्ञानुष्ठान।

वास्तेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वस्ति+ढक्] 1 रहने के योग्य, निवास करने के योग्य 2. वेदू संबंधी।

वास्तोष्पतिः [वास्तोः पतिः, वि० समासा अलुक्, षत्वम्] 1 एक वैदिक देवता (घर की आधारशिला की अधिष्ठात्री देवता मानी जाती है) 2. इन्द्र का नाम।

वास्त्र (वि०) [वस्त्र+अण्] वस्त्र से निर्मित,—त्रम् कपड़े से ढकी हुई गाड़ी।

वास्य दे० 'वास्य'।

वास्येवः [वास्याय हितं वास्य+ढक्] 'नागकेशर' नाम का वृक्ष।

वाह् (भ्वा० आ० वाहते) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, उद्योग करना।

वाह (वि०) [वह्+घञ्] धारण करने वाला, ले जाने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि अश्ववाह, और स्तोयवाह' में, हः 1 ले जाना, धारण करना 2 कुली 3 बोझ ले जाने वाला जानवर, बोझा ढोने वाला जानवर 4 घोड़ा रघु० ४।५६, ५।७३ १४।५२ 5 सांड —कु० ७।४९ 6 भैंसा 7 गाड़ी, यान 8 भुजा 9. वायु हवा 10 एक मापविशेष जो दस कुम्भ या चार भार के तुल्य होती है वाहो भारचतुष्टय। सम०—द्विपत् (पुं०) भैंसा, वोढृ: घोड़ा।

वाहक [वह्+ण्वुल्] 1. कुली 2. गाड़ीवाला, गाड़ीवान् चालक 3 घुड़सवार।

वाहनम् [वाहयति-वह्+णिच्+ल्युट्] 1 धारण करना, ले जाना, ढोना 2 (घोड़े आदि को) हाँकना 3 गाड़ी, किसी प्रकार की सवारी मनु० ७।७५, नै० २२।४५ 4 खींचने वाला या सवारी का जानवर, जैसा कि घोड़ा स दुष्प्रापयशा प्रापदाश्रमं श्रान्तवाहनः रघु० १।४८, ९।२५, ६० 5 हाथी।

वाहनः [न वहति नगच्छति, वह्+असच्] 1 पतनाला, जलमार्ग 2 बड़ा साप, अजगर।

वाहिकः [वाह+ठक्] 1 बड़ा ढोल 2. बैलगाड़ी 3 बोझ ढोने वाला।

वाहित्रम् [वह्+णिच्+क्त] भारी बोझ।

वाहित्थम् [वाहित्+स्था+क] हाथी के मस्तक का ललाट से नीचे का भाग।

वाहिनी [वाहो अस्त्यस्यां इनि ङीप्] 1 सेना, वाहिनीं प्रययुजे न वाहिनीम्—रघु० ११।६, १३।६६ 2 अक्षौहिणी सेना जिसमें ८१ गजारोही, ८१ रथारोही, २४३ अश्वारोही तथा ४०५ पदाति सम्मिलित हैं 3 नदी। सम०—निवेशः सेना का पड़ाव, शिविर,—पतिः 1 सेनापति, सेनाध्यक्ष 2. (नदियों का स्वामी) समुद्र।

वाहीक दे० 'बाहीक'।

वाहुक दे० 'बाहुक'।

वाह्य दे० 'बाह्य'।

वाह्लिः (पुं०) एक देश का नाम, (आधुनिक बलख)। सम०—अः बलख देश का घोड़ा।

वाह्लि (ह्लो) कः (पु०) 1. एक देश का नाम (आधुनिक बलख) 2 बलख देश का घोड़ा, बलख देश में पला घोड़ा, —**कम्** 1 जाफरान, केसर 2 हींग।

वि (अव्य०) [वा+इण्, स च डित्] 1 धातु और संज्ञा शब्दों के पूर्व जुड़ कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है —(क) पृथक्करण, वियोजन (एक और अलग-अलग, दूर परे आदि) यथा विभुज भिड़, विचल् आदि (ख) किसी कर्म का उलटा यथा क्री खरीदना, विक्री बेचना, स्मृ याद करना विस्मृ भूल जाना (ग) प्रभाग यथा विभज् विभाग (घ) विशिष्टता यथा विशिष्य विशेष विशेषतः, विशेष (ङ) विभेदीकरण व्यवच्छेद (च) क्रम व्यवस्था यथा विधा, विरच् (छ) विरोध यथा विरुध, विरोध अभाव यथा विनी, विनयन (ज) विकार, यथा विकर, विचार (झ) तीव्रता-विशेषण 2 संज्ञा या विशेषण शब्दों में (जो कि क्रिया से बने हुए न हों) जुड़कर यह निम्नांकित अर्थ प्राप्त करता है (क) निषेध या अभाव (ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग अधिकतर उसी प्रकार होता है जैसे कि अ या 'निर्' का, अर्थात् इसके लगने पर बहुव्रीहि समास बनता है—विपत्ति, व्यसु आदि (ख) तीव्रता महत्ता यथा विकराल (ग) वैलक्षण्य—यथा विचित्र (घ) अन्तर—यथा विलक्षण (ङ) अस्वीकृति—यथा विविध (च) वैपरीत्य, विरोध यथा विक्राम (छ) परिवर्तन यथा विकार (ज) अनौचित्य यथा विजन्मन्।

वि (पु० स्त्री०) [वा+इण्, स च डित्] 1 पक्षी 2 घोड़ा।

विंश (वि०) (स्त्री०—शी) [विंशति+डट् ते लोप] बीसवाँ, श बीसवाँ भाग।

विंशक (वि०) (स्त्री०—की) [विंशति+स्वार्थे कन्] बीस।

विंशतिः (स्त्री०) [द्वे दशा परिमाणमस्य वि० सिद्धि] बीस, एक कोड़ी। समः ईश, ईशिन् (पु०) बीस गाँवों का शासक।

विकम् [विगत क जल मुख वा यत्र] ताजा ब्यायी गाय का दूध।

विकङ्कटक, —तः [वि+कङ्क्+अटच्, अतच् वा] एक वृक्ष विशेष (जिसकी लकड़ी से धुरा बनते हैं) —रघु० ११।२५।

विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1 खिला हुआ फूला हुआ, खुला हुआ, (जैसा कि कमल आदि,—विकचकोकनदशुकसहनिरुच्चके—शि ६।२१, रघु० ९।३७ 2 फैलाया हुआ, बखेरा हुआ भामि० १।३ 3 बाला से शून्य, —**कः** 1 बौद्धसाधु 2 केतु।

विकट (वि०) [वि+कटच्] 1 विकराल, कुरूप 2 (क) दुर्धर्ष, भयानक, भीषण डरावना - पृथुललाटतटघटित विकट भ्रूकुटिना वेणी० १, विधुमिव विकटविधुतुददशनगलितामृतधारम्—गीत० ४ (ख) दारुण कठोर, बर्बर 3 बड़ा, विस्तृत, विशाल, प्रगल्भ आदि—जघनविटपिविकटोदरमरुतु चापम्—उत्तर० १।९, आवर्णिष्ट विकटेन विवोदुबलसेव कुचमण्डल मनो—शि० १०।४२, १३।१०, मा० ७ 4 घमण्डी अभिमानी विकट परिक्रामति उत्तर०६, महावीर० ६।। 5 सुन्दर मूल्य० २ 6 त्योरी चढ़ाये हुए 7 मद से मस्त होकर हुए, टम् फोड़ा, अर्बुद या रसौली।

विकत्थन [वि+कत्थ्+ल्युट्] 1 शेखी बघारने वाला डींग मारने वाला, आत्मश्लाघा करने वाला अपनी प्रशंसा करने वाला विद्वांसोऽप्यविकत्थना भवन्ति मृच्छ० ३, रघु० १४।७२ 2 व्यर्थाकित पूर्वक प्रशंसा करने वाला,—**नम्** 1 दर्पोक्ति, शेखी जमाना 2 व्यर्थ की मिथ्या प्रशंसा।

विकत्था [वि+कत्थ्+अच्+टाप्] शेखी बघारना, डींग मारना-अहंमाघा, दर्पोक्ति 2 प्रशंसा 3 मिथ्या प्रशंसा-दम्भोक्ति।

विकत्र्य (वि०) [विशेषेण कर्त्तुं योग्य-प्रा० त०] 1 छोटे टिश्वास लेने वाला 2 अस्थिर, चञ्चल।

विकार [विकीर्यते इन्द्रियादिकमनेन-वि+कृ+घञ्] बीमारी, रोग।

विकरण [वि+कृ+ल्युट्] क्रियारूपरचनाकारक तिबिकरण आदि (अनेकसो), क्रिया के रूपों की रचना के समय धातु और लकार के प्रत्ययों के बीच में रखना जाने वाला गणद्योतक चिह्न।

विकराल (वि०) [विशेषेण कराल प्रा० स०] अत्यन्त डरावना या भयानक, भयपूर्ण।

विकर्ण [विशिष्टौ कर्णौ यस्य प्रा० ब०] एक कुरुवंशी राजकुमार का नाम भग० १।८।

विकर्तन [विशेषेण कर्तन यस्य प्रा० ब०] 1 सूर्य—उत्तर० ५ 2 मदार का पौधा 3 वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

विकर्मन् (वि) [विरुद्धं कर्म यस्य प्रा० ब०] अनुचित रीति से कार्य करने वाला, त्रयी० अवैध या प्रतिषिद्ध कार्य तापकर्म भग० ४।१७, मनु० ९।२२६। समः क्रिया अवैध कार्य, अधार्मिक आचरण, स्थ (वि०) प्रतिषिद्ध कार्यों को करने वाला दुष्कर्मी में प्रवृत्त।

विकर्ष [वि+कृष्+घञ्] 1 अलग-अलग खींचना करना, स्वतन्त्र रूप से खींचना 2 तीर, बाण।

विकर्षण [वि+कृष्+ल्युट्] कामदेव के पाँच बाणों में

से एक, -कृष् 1 रेखाकन, खींचना, अलग-अलग खींचना 2 तिरछा फेंकना।

विकल (वि०) [विगत कलो यत्र प्रा० ब०] 1 किसी भाग या अंग से वञ्चित, सदोष, अधूरा, अपाहज, विकलांग कूटबुद्धिकलेन्द्रियाः —याज्ञ० २।७०, मनु० ८।६६, उत्तर० ४।२४ 2 डरा हुआ, त्रस्त 3 शून्य, विरहित आरामाधिगतिविवेकविकला भामि० १।१, मृच्छ० ५।४१ 4 विक्षुब्ध, कमजोर, उत्साह शून्य, हतोत्साह म्लान, अवसन्न, स्फूर्तिहीन -किमिति विषीदसि रोदिषि विकला विहसति युवतिसभा तव सकला -गीत० ९, विरहेण विकलहृदया —भामि० २।७१, १६४, श्रुतियुगले शिरुकलविकले - गीत० १०, उत्तर ३।३१, मा० ७।१, ९।१२ 5 मुर्झाया हुआ, क्षीण। सम० अङ्ग (वि०) अधिक या कम अंगों वाला, इन्द्रिय (वि०) जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ दूषित या विकृत हैं, वाणिज्य. लूला-लंगड़ा।

विकला [विगता कला यस्याः—प्रा० ब०] कला का सोलहवाँ भाग।

विकल्प [वि+कृप्+घञ्] 1 सन्देह, अनिश्चय, अनिर्णय, संकोच तन् सिद्धये नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः रघु० १७।४९ 2 शंका, भ्रान्ति० २।३ कुटकल्पिक, कला मायाविकल्पगर्भितैः रघु० १३।७५ 4 वर्णसम्बन्धता, (अलं० में) वैकल्पिक 5 प्रकार भेद 6 अशुद्धि, भूल, अज्ञान। सम०-उपहार दैनन्दिक पुरस्कार, आत्मन् आत्म की सतह का अनिर्णय, दुविधा।

विकल्पनम् [वि+कल्प्+ल्युट्] 1 सन्देह में पड़ना 2 इच्छा की वृत्ति 3 अनिर्णय।

विकल्मष (वि०) [विगतं कल्मषो यस्य प्रा० ब०] निष्पाप, कलंकरहित, निर्दोष।

विकसा (स्त्री) [वि+कस् (स)+अच्+टाप्] बगल की गलोठ।

विकच [वि+कस्+अच्] चन्द्रमा।

विकसित (भू० क० कृ०) [वि+कस्+क्त] खिला हुआ, या खुला हुआ या फूला हुआ भामि० १।१००।

विकस्वर (वि) र (वि०) [विकस्+वरच्] 1. खुला हुआ, फूला हुआ कुशेशयैरव वकाशयोचिता मृदा रमन्ते कलमा विकस्वरैः शि० ४।३३ 2 ऊँचे स्वर वाला (ध्वनि आदि) जो स्पष्ट सुनाई दे, उदात्तीयत वैकृतात्करणहृदादस्य विकस्वरस्वरः - नै० २।५।

विकार [वि+कृ+घञ्] 1 रूप या प्रकृति का परिवर्तन, रूपान्तरण, प्राकृतिक अवस्था से व्यत्यय, मनु० विकृति 2 परिवर्तन, बदल-बदल, सुधार—पंच० १।४४ 3 बीमारी, रोग, व्याधि विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञानमारभ्भः प्रतीकारस्य सा० ४, कु० २।३८ 4 मन या अभिप्राय का बदलना -मूढेष्वयमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु- मा० ५।१९ 5 भावना, संवेग—उत्तर० १।३५, ३।२५, ३६ 6 विश्राम, उत्तेजना, उद्वेग कि० १७।२३ 7 विकृत रूप, आकृंचन (मुखमुद्रा, हावभाव आदि) प्रमथमुखविकारैर्हासयामास भूतम् कु० ७।९५ 8 (साख्य० में) जो पूर्वभोग या प्रकृति से विकसित हो। सम० हेतु प्रलोभन, फुसलाना, उद्वेग का कारण -विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः कु० १।५९।

विकारित (वि०) [वि-कृ+णिच्+क्त] परिवर्तित, पथभ्रष्ट, भ्रष्टाचारग्रस्त।

विकारिन् (वि०) [वि+कृ+णिनि] परिवर्तनशील, संवेग तथा अन्य संस्कारों को ग्रहण करने वाला,- भ्रमति भुवने कंदर्पाज्ञा विकारि च यौवनम् मा० १।१७।

विकाल, विकालक [विरुद्धं कालं प्रा० स०] संध्या, सायंकालीन झुटपुटा, दिन की समाप्ति।

विकालिका [विज्ञातः कालो यया प्रा० ब०] पानी में रक्खा हुआ छिद्रयुक्त ताम्रकलश जो क्रमशः पानी भरने के द्वारा समय का अंकन करता है-तु० मानस्तम्भ।

विकाश [वि+कश्+घञ्] 1 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखलावा 2 खिलना, फूलना (इस अर्थ में प्रायः विकाश लिखा जाता है) कु० ३।२९ 3 खुला सीधा मार्ग - कि० १५।५२ 4 टेढ़ा मार्ग—कि० १५।५२ 5 हर्ष, आनन्द—कि० १५।५२ 6 उत्सुकता, प्रबल उत्कंठा शि० ५।०१, (यहाँ इसका अर्थ खिलना, भी है) 7 एकान्तवास, एकाकीपन, सुनापन।

विकाशक (वि०) (स्त्री० शिका) [वि+काश्+ण्वुल्] 1. प्रदर्शन करने वाला 2 खोलने वाला।

विकाशनम् [वि+काश्+ल्युट्] 1 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखावा 2 खिलना, (फूलों का) फूलना।

विकाशि (शिन्) नृ (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+काश्] (इ)+णिनि] 1 दिखाई देने वाला, चमकने वाला 2 फूलने वाला, खुलने वाला, खिलने वाला।

विकास [वि+कस्+घञ्] खिलना, फूलना—दे० ऊ० विकाश।

विकासनम् [वि+कस्+ल्युट्] फूलना, खुलना, खिलना।

विकिर [वि+कृ+अप्] 1 बिखरा हुआ भाग या बिखरा हुआ नन्हा टुकड़ा 2 जो फावड़ा या बखेरता है पक्षी -कंकोलीफलजग्धिमुग्धविकिरव्याहारिबर्हद्भुवो भागाः मा० ६।१९, 3 कूआँ 4 वृक्ष।

विकिरणम् [वि+कृ+ल्युट्] 1. बखेरना, इधर उधर फेंकना छितराना 2 दूर-दूर तक फेंकना 3. फाड़ डालना 4. छिन्न करना 5. ज्ञान।

विकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+कृ+क्त] 1. बखेरा हुआ छितराया हुआ 2 प्रसृत 3 विख्यात। सम० केश, —मूर्धज (वि०) बालों को नोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलझा-पुलझा करने वाला,—जम् एक प्रकार की सुगन्ध।

विकुण्ठ [विगता कुण्ठा यस्य प्रा० ब०] विष्णु का स्वर्ग।

विकुर्वाण (वि०) [वि+कृ+शानच्] 1 परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2 प्रसन्न, खुश, हृष्ट।

विकुशः [वि+कस्+रक्, उत्वम्] चन्द्रमा।

विकूजनम् [वि+कूज्+ल्युट्] 1 गुटुरगू करना, कलरव करना 2 (अंतड़ियों या नलों में) गुड़गुड़ाहट।

विकूणनम् [वि+कूण्+ल्युट्] तिरछी चितवन, कटाक्ष।

विकूणिका [वि+कूण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक।

विकृत (भू० क० कृ०) 1. परिवर्तित, बदला हुआ, सुधारा हुआ 2 रोगी, बीमार 3 क्षतविक्षत, विरूपित, जिसकी सूरत बिगड़ गई हो 4 अपूर्ण अधूरा 5 आवेशग्रस्त 6 पराङ्मुख, ऊबा हुआ 7 वीभत्स 8 अनोखा, असाधारण (दे० वि पूर्वक कृ),—सम् 1 परिवर्तन, सुधार 2 और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3 अरुचि, जुगुप्सा।

विकृति (स्त्री०) [वि+कृ+क्तिन्] (अभिप्राय, मन, रूप आदि का) बदलना चित्तविकृति, अंगुलीयक सुवर्णस्य विकृति 2 अस्वाभाविक, अचानक घटित होने वाली परिस्थिति, दुर्घटना मरण प्रकृति शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधै रघु० ८।८७ 3 बीमारी 4 उत्तेजना, उद्वेग, क्रोध, रोष कि० १३।५६, शि० १५।११, ४०, दे० 'विकार' और 'विक्रिया' भी।

विकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+कृष्+क्त] 1 अलग-अलग घसीटा हुआ, इधर-उधर खींचा हुआ 2 आकृष्ट, खींचा हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3 विस्तारित, फैलाया हुआ 4 शब्दायमान (दे० वि पूर्वक कृष्)।

विकेश (वि०) (स्त्री० शी) [विकीर्णाः केशाः यस्य प्रा०ब०] 1 बिखरे बालों वाला 2 बिना बालों का गंजा (सिर), शी 1 ढीले बालों वाली स्त्री 2 बालों के शून्य (गंजी) स्त्री 3 मौढ़ी, या बालों की छोटी छोटी लटों को मिला कर बनाई हुई चोटी, वेणी।

विकोश व (वि०) [विगतः कोशो यस्य प्रा० ब०] 1 बिना मूठों का 2 बिना म्यान का, बिना ढका हुआ —कि० १७।४५, रघु० ७।४८।

विक्क [विक्+कै+क] तरुण हाथी।

विक्रमः [वि+क्रम्+घञ्, अच् वा] 1. कदम, डग, पग —श० ७।६, तु० त्रिविक्रम 2 कदम रखना, चलना 3. पकड़ लेना, प्रभाव डाल लेना 4 वीरता, शौर्य, नायक की बहादुरी, अनुप्रेक्ष. ह्यलं विक्रमालंकार विक्रम० १, रघु० १२।८७, ९३ 5 उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध राजा का नाम —दे० परि० २ 6 विष्णु का नाम। सम० —अर्कः आदित्य दे० विक्रम, कर्मन् (नपु०) शूरवीरता का कार्य पराक्रम के करतब।

विक्रमणम् [वि+क्रम्+ल्युट्] (विष्णु का) एक डग स्तूयसे त्रिक्रमणे बलिमद्भुतवामन तैत्त० १।

विक्रमिन् (वि०) [वि+क्रम्+णिनि] पराक्रमी, शूरवीर पु० 1. सिंह 2 नायक 3 विष्णु का विशेषण।

विक्रय [वि+क्री+अच्] बिक्री, बेचना मनु० ३।५४। सम० अनुशयः बिक्री का खण्डन करना,—पत्रम् बिक्री का पत्र, बैनामा।

विक्रयिक, विक्रयिन् (पु०) [विक्री+इकन्, णिनि वा] व्यापारी, विक्रेता, बेचने वाला।

विक्रशः [वि+कस्+रक्, अत्व, रेफादेश] चाँद।

विक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+क्रम्+क्त] 1 परे तक गया हुआ, डग रक्खे हुए 2 शक्तिशाली, शूरवीर बहादुर, पराक्रमी 3 विजयी, (अपने शत्रुओं का) पराभूत करने वाला,—न्तः 1 शूरवीर, योद्धा 2 सिंह, न्तम् 1 पद, डग 2 घोड़े की सरपट चाल। शूरवीरता, बहादुरी, पराक्रम।

विक्रान्ति (स्त्री०) [वि+क्रम्+क्तिन्] 1 कदम रखना, डग भरना 2. घोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता बहादुरी, पराक्रम।

विक्रान्तृ (वि०) [वि+क्रम्+तृच्] बहादुर, विजयी। पु० सिंह।

विक्रिया [वि+कृ+श+टाप्] 1. परिवर्तन, सुधार, बदलना—क्रमशुद्धवृद्धिजनितानवविक्रियान्—रघु० १।७१, १०।१७ 2 विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग आदि आना अथ तेन निगृह्य विक्रियामभिशस्त फलमेनदन्वभूत् कु० ४।४१, ३।३४ 3 क्रोध, गुस्सा, अप्रसन्नता - साधो प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् सुभा०, लिंगैर्मुदः सवृतविक्रियास्ते—रघु० ७।३० 4 उलट, अनिष्ट कु० ६।२९ (विक्रियार्थं वैकल्योत्पादनाय 'दोष' मल्लि) 5. (भोजे इत्यादि) सूनना, आकुंचन का (माँहों की) सिकुड़न अविक्रियाया विरतप्रसवैः कु० ३।४७ 6 आकस्मिक आन्दोलन जैसा कि 'रोमविक्रिया' में विक्रम० ४।१२, 'रोमांच होना' 7. अकस्मात् रोगग्रस्तता, बीमारी 8 उल्लंघन, (उचित कर्तव्य का) बिगाड़ देना, रघु० १५।४८। सम० उपमा दण्डी द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद दे० काव्य० २।४१।

विक्लव (भू० क० कृ०) [वि+क्लव्+क्त] 1 घोंकर किया, विस्मयाहत 2. कमजोर, शूर, निर्बल, अत्व

1. सहायता प्राप्त करने के लिए क्रंदन करना, दुहाई देना 2 गाली।

विक्रेय (वि०) [वि+क्री+यत्] बेचने के योग्य, (कोई वस्तु) बिक्री कर दी जाने के योग्य।

विक्रोशनम् [वि+क्रुश्+ल्युट्] 1 चिल्लाना, चीत्कार करना 2 गाली देना।

विक्लव (वि०) [वि+क्लु+अच्] 1 भयभीत, भड़का हुआ, चौंका हुआ, त्रस्त आचकाक्ष चलशब्दविक्लवा—रघु० १९।३८, कु० ४।११ 2 उत्पीड़ित शि० ७।४३, मेघ० ३७ 3 रोगग्रस्त, पराजित कि० १।६ 6 विक्षुब्ध, उत्तेजित, घबराया हुआ, विह्वल श० ३।२६ 5 दुखी, कष्टग्रस्त, संतप्त—शि० १२।६३, कु० ४।३९ 6 ऊब, हुआ, अशक्तिवान् मृगयाविक्लव चेत श० २ 7 हकलानेवाला, लड़खड़ानेवाला प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थी श० ५।३।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि+क्षिप्+क्त] 1 अत्यंत सोया, पूरी तरह सोया हुआ 2 मुर्झाया हुआ, सूखा हुआ 3 पुराना।

विक्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+क्लिश्+क्त] 1 अत्यंत कष्टग्रस्त, दुखी 2 घायल, नष्ट किया हुआ, क्षत उच्चारण दोष।

विक्षत (भू० क० कृ०) [वि+क्षण्+क्त] फाड़ कर अलग अलग किया हुआ, घायल, चोट पहुंचाया हुआ, अंगभंगग्रस्त।

विक्षार [वि+क्षु+घञ्] 1 खांसी, छींक आना 2 ध्वनि।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि+क्षिप्+क्त] 1 बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ, छितराया हुआ, डाला हुआ 2 अलग करना, पदच्युत करना 3 भेजा गया, प्रेषित 4 भ्रान्त, व्याकुल, विक्षुब्ध 5 तिरस्कृत (दे० वि पूर्वक क्षिप्)।

विक्षोणक (पु०) 1 शिव के सेवकगण का मुखिया 2 देवसभा।

विक्षीर [विशिष्टं क्षीरं यस्य प्रा० ब०] मदार का पौधा।

विक्षेप [वि+क्षिप्+घञ्] 1. इधर-उधर फेंकना, बखेरना 2. डालना, फेंकना 3 कर्तव्य निर्वाह करना (विप० संहार) रघु० ५।४५ 4. भेजना, प्रेषण 5 ध्यान हटाना, हड़बड़ी, व्याकुलता—मा० १ 6 झटका, भय 7 तर्क का निराकरण 8 भूकंप अक्षरेखा।

विक्षेपणम् [वि+क्षिप्+ल्युट्] 1, फेंकना, डालना, निकाल बाहर करना 2 प्रेषण, भेजना 3 बखेरना, छितराना 4 हड़बड़ी, व्याकुलता।

विक्षोभ [वि+क्षुभ्+घञ्] 1 हिलाना, हलचल, आन्दोलन, वीचि° रघु० १।४३ 2. मन की हलचल, ध्यान हटाना, खलबली 3 द्वन्द्व, संघर्ष।

विक्ष, विक्षु, विक्ष्व, } [विगता नासिका यस्य ब० स०
विक्षु, विक्षू, विक्ष } नासिकाया खु, ख्य, खु, ख्, ष वा आदेश.] नासिका से रहित, बिना नाक।

विखण्डित (भू० क० कृ०) [वि+खण्ड्+क्त] 1. टूटा हुआ, विभक्त किया हुआ 2 दो खण्डों में किया हुआ।

विखानसः (पु०) एक प्रकार का साधु।

विखुरः (पु०) 1 राक्षस, पिशाच 2 चोर।

विख्यात (भू० क० कृ०) [वि+ख्या+क्त] 1. प्रख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, मशहूर 2 नामवर, नामधारी 3. स्वीकृत, माना हुआ।

विख्यातिः (स्त्री०) [वि+ख्या+क्तिन्] प्रसिद्धि, कीर्ति, यश, नाम।

विगणनम् [वि+गण्+ल्युट्] 1 गिनना, संगणन, हिसाब लगाना 2 विचारना, विचारविनिमय करना 3 ऋण का परिशोध करना।

विगत (भू० क० कृ०) [वि+गम्+क्त] 1 जिसने प्रयाण कर लिया है, जो चला गया है, लुप्त 2 जो अलग किया गया है, वियुक्त 3 मृतक 4 विरहित, शून्य, रहित (समास में) विगतभय 5 खोया हुआ 6 धुंधला, अस्पष्ट। सम०—आर्तव वह स्त्री जिसे ऋतु होना (या रजोधर्म होना) बन्द हो चुका हो, —कल्मष (वि०) निष्पाप, पवित्र, —भी (वि०) निर्भय, निडर, —लक्षण (वि०) भाग्यहीन अशुभ।

विगन्धकः [विरुद्धः गन्धो यस्य ब० स०] दुगुंदी नाम का पेड़।

विगमः [वि+गम्+अप्] 1 प्रस्थान करना, अन्तर्धान, समाप्ति, अन्त चरणैर्न्यविगमे च तन्मुखम् रघु० १९।१५, ऊतिविगम मालवि० ५।२०, ऋतु० ६।२२ 2 परित्याग करणविगमात्—मेघ० ५५ (देहत्यागात्) 3 हानि, नाश 4 मृत्यु।

विगरः (पु०) 1 नग्न रहने वाला संन्यासी 2 पहाड़ 3 वह पुरुष जिसने भोजन करना त्याग दिया हो।

विगर्हणम्,—णा [वि+गर्ह्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] निन्दा, कलंक, भर्त्सना, अपशब्द वेणी० १।१२।

विगर्हित (भू० क० कृ०) [वि०+गर्ह्+क्त] 1 निन्दित, फटकारा हुआ, गाली दिया हुआ 2 तिरस्कृत 3 दोषी ठहराया गया, बुरा भला कहा गया, प्रतिषिद्ध 4 नीच, दुष्ट 5 बुरा, बदमाश।

विगलित (भू० क० कृ०) [वि+गल्+क्त] 1 बूंद बूंद चूता हुआ, मन्द मन्द नि सृत 2 अन्तर्हित, गया हुआ 3 अब पतित 4 पिघला हुआ, घुला हुआ 5. तितर-बितर हुआ 6 ढीला किया हुआ, खोला हुआ विक्रम० ४।१० 7 खुला हुआ, बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त (बाल आदि) (दे० वि पूर्वक 'गल्')।

विगर्हणम् [विरुद्धा गर्हा प्रा० स०] 1 निन्दा, भर्त्सना, गाल-

हानि, बदनामी 2 परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध, असंगति (शांकरभाष्य में बहुत प्रयुक्त)।

विगाह [वि + गाह् + घञ्] डुबकी लगाना, स्नान, गोता।

विगीत (भू० क० कृ०) [वि + गै + क्त] 1 निन्दित, बुरा-भला कहा गया, डांटा फटकारा गया 2 विरोधी अभिमत।

विगीति (स्त्री०) [वि + गै + क्तिन्] 1 निन्दा, बुरा-भला कहना, झिड़कना 2 परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध।

विगुण (वि०) [प्रायः विपरीतार्थ का गुणा बहु० स०] 1 गुणों से शून्य, निकम्मा, बुरा भग० १३।५, हि० ९।१०, मुद्रा० ९।११ 2 गुणों से हीन 3 बिना रस्सी का मुद्रा० ७।१।

विगुप्त (भू० क० कृ०) [वि + गुप् + क्त] 1 भेद, गुप्त, छिपा हुआ 2 निन्दित, निन्दनीय।

विगृहीत (भू० क० कृ०) [वि + ग्रह् + क्त] 1 विभक्त, अलग किया हुआ, निकाला हुआ, (समास के रूप में) विग्रहवाक्य में विग्रहित, विग्रह किया हुआ 2 पकड़ा हुआ 3 मुकाबला किया गया, विरोध किया गया (दे० वि पूर्वक ग्रह्)।

विग्रह [वि० + ग्रह् + अप्] 1 फैलाव, विस्तार, प्रसार 2 रूप, आकृति, शक्ल 3 शरीर, वपु, विग्रहवत्त्व समयध्वान्तमर्यादा —मालवि० १।४, पद विग्रह रघु० ३।३९, २।५२ कि० ८।१९, १६।८० 4 पृथक्करण, विघटन, विश्लेषण, विभाजन (समास के घटक पदों का पृथक् पृथक् करना) वाक्यं समासायं) वाक्य और विग्रह 5 कलह, झगड़ा, (बहुधा प्रयुक्त) विग्रहाय शस्त्रे परामृशन्तो-नीतिनृशंसाः भट्ट० करें —रघु० ९।३८, १।६०, शि० ११।२५ 6 संग्राम, लड़ाई, युद्ध (विप० संधि) संधि के छः गुणों में से एक दे० गण 7 अनुग्रह 8 भाग, अंश, प्रभाग।

विघटनम् [वि + घट् + ल्युट्] अलग-अलग करना, बर्बादी, विनाश।

विघटिका [विभक्ता घटिका यथा—ष० स०] समय की माप, एक घण्टे का साठवां भाग, पल (या लगभग चौबीस सेकेण्ड के बराबर समय)।

विघटित (भू० क० कृ०) [वि + घट् + क्त] 1 वियुक्त, अलग-अलग किया हुआ 2 विभक्त।

विघट्टनम्, -ना [वि + घट्ट् + ल्युट्] 1 प्रहार करना, टक्कर मारना 2 घिसना, रगड़ना 3 वियोजन, विघाटना, खोलना 5 ठेस पहुंचाना, चोट पहुंचाना।

विघट्टित (भू० क० कृ०) [वि + घट्ट् + क्त] 1 विभक्त किया हुआ, वियुक्त किया हुआ, अलग-अलग किया हुआ, तितर-बितर किया हुआ—भर्तृ० ३।५४ 2 ढीला हुआ, ढीला किया हुआ, विवृत किया हुआ 3 रगड़ा हुआ, रगड़ा किया हुआ 4 हिलाया हुआ, विलोड़ित किया हुआ 5 चोट पहुंचाया हुआ, आघात किया हुआ।

विघन [वि + हन् + अप् घनादेश] मूसरी, हथौड़ा।

विघस [वि + अद् + अप् घसादेश] 1 आधा चबाया हुआ ग्रास, भोज्य पदार्थ का अवशेष या जूठन—विघसाशी भुक्तशेष तु—मनु० २।५५, ३।२८५, ४।३, मा० ५।१२ 2 भोजन सम् मांस। सम० आश, आशिन् (पु०) भुक्तशेष या चढ़ावे के जूठन को खाने वाला।

विघात [वि + हन् + घञ्] 1 विनाश, हटाना, दूर करना—क्रिया दधाना मधवा विघातम् कि० ३।५३ 2 हत्या, वध 3 बाधा, रुकावट, विघ्न क्रिया विघातोपनता पवित्रता रघु० ३।४४, अकर्तृविघातकारणम् —५।१७ 4 आघात, प्रहार 5 परित्याग करना, छोड़ना। सम० सिद्धि (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना।

विघूर्णित (भू० क० कृ०) [वि + घूर्ण् + क्त] लड़खड़ाता हुआ, डगमगाता हुआ (आंखें आदि) चारों ओर घुमाई हुई।

विघुष्ट (भू० क० कृ०) [वि + घुष् + क्त] 1 अच्छी तरह कहा हुआ, घोषित किया हुआ 2 प्रतिध्वनित।

विघ्न [विरुद्धं हन्यते] [वि + हन् + क] 1 बाधा, रुकावट, अड़चन, इसी प्रकार अकस्मात् होने वाली प्रतिकूल घटना जो शुभ कार्य में बाधा डाले—रघु० ५।१४, १।६२, कु० ३।७२ 2 कठिनाई, संकट। सम०—ईश, —ईशान, ईश्वर गणेश का विशेषण वाहनम् चूहा कर, कर कारिन् (वि०) विघ्न करने वाला, अवरोध करने वाला, नाशन, विघात बाधाओं को दूर करने वाला, नायक, नाशक, नाशन गणेश का विशेषण -प्रतिक्रिया बाधाओं को दूर करना रघु० १५ - राज, विनायक - हारिन् (पु०) गणेश का विशेषण सिद्धि (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना।

विघ्नित (वि०) [विघ्न + इतच्] बाधायुक्त, अड़चन भरा हुआ, अवरुद्ध, रुकावटयुक्त।

विघ्नेश (पु०) गणेश का विशेषण।

विच् (तुदा० पर० उभ० सेट् विचति, विचते, विक्त) 1 वियुक्त करना, विभक्त करना, अलग अलग करना 2 विवेचन करना, विभक्त करना, अन्तर पहचानना 3 निश्चय करना, निर्धारण करना (प्रायः वि के साथ) भट्टि १०।१०२, वि—, 1 वियुक्त करना, दूर करना विविनक्ति दिव सुरान् आदि - 2 अन्तर पहचानना, विवेचन करना 3 निश्चय करना, निर्धारण करना - ये यज्ञं तो वयं विदुः रघुवंशेषु विविच्य कर्माणि—भगि० १८।१ 4 वर्णन करना, वर्णित करना 5 फाड़ देना।

विचकिल [विच् + क, किच् + क, ष० स०] एक प्रकार की चमेली, मदन नामक वृक्ष।

विचक्षण (वि०) [वि+चक्ष्+ल्युट्] 1 स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, सावधान 2. बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् रघु० ५।१९, 3 विशेषज्ञ, कुशल, योग्य –रघु० १३।६९, ब० विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् आदमी न दत्वा कस्यचित्कन्या पुनर्दद्याद्विचक्षण मनु० ९।७१ ।

विचक्षुस् (वि०) [विगत विनष्ट वा चक्षुर्यस्य] अंधा, दृष्टिहीन 2 व्याकुल, उदास ।

विचय [वि+चि+अप] 1. खोज, ढूंढ, तलाश उत्तर० १।२३ 2 छानबीन, तहकीकात ।

विचयनम् [वि०+चि+ल्युट्] खोजना, छानबीन करना ।

विचर्चिका [विशेषेण चर्च्यते पाणिपादस्य त्वक् विदार्यतेऽनया वा वि+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] खुजली, विसर्पिका, खाज ।

विचर्चित (वि०) [वि चर्च्+क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मालिश किया हुआ ।

विचल (वि०) [वि+चल्+अच्] 1 इधर उधर घूमने वाला, हिलने वाला, थरथराने वाला, लड़खड़ाने वाला, चंचल 2 अभिमानी, घमंडी ।

विचलनम् [वि+चल्+ल्युट्] 1 स्पन्दन 2 व्यतिक्रम 3 अस्थिरता, चंचलता 4. अभिमान ।

विचार [वि+चर्+घञ्] 1 विमर्श, विनिमय, चिन्तन, ध्यान–विचारमार्गप्रहितेन चेतसा– कु० ५।४७ 2 परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, तत्त्वार्थविचार 3 (किसी बात की) जाँच-पड़ताल मृच्छ० ९।४३ 4 निर्णय, विवेचन विवेक, तर्कना विचारसूढ प्रतिभासि मे त्वम् रघु० २।४७ 5 निश्चय निर्धारण 6 कारण 7 संदेह संकोच 8 दूरदर्शिता, सतर्कता । समः अ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, -भू (स्त्री०) 1 न्यायाधिकरण, न्यायासन 2 विशेष कर यम की न्यायासन, शील (वि०) विचारपूर्ण, सचेत, दूरदर्शी, -स्थानम् 1 न्यायाधिकरण 2 संकेतस्थान चर्चा ।

विचारक [वि०+चर्+ण्वुल्] छानबीन या तहकीकात करने वाला, न्यायाधीश ।

विचारणम् [वि+चर्+णिच्+ल्युट्] 1 चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण 2 संदेह, संकोच ।

विचारणा [वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्] 1 परीक्षण, विचारविमर्श, गवेषणा 2 पुनर्विचार, सोच-विचार, चिन्तन 3 संदेह 4 दर्शनशास्त्र की मीमांसापद्धति ।

विचारित (भू० क० कृ०) [वि+चर्+णिच्+क्त] 1 सोचा गया, पूछताछ की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2 निश्चित, निर्धारित ।

विचि नपुं०, स्त्री०) **विचीः** (स्त्री०) [विच्+इन् स च किच्, विचि+ङीष्] लहर, तरंग ।

विचिकित्सा [वि+कित्+सन्+अ+टाप्] 1 सन्देह, शक 2 भूल, चूक ।

विचित (भ० क० कृ०) [वि+चि+क्त] खोजा, तलाशा की गई ।

विचिति (स्त्री०) [वि+चि+क्तिन्] ढूंढना, खोज, तलाश करना ।

विचित्र (वि०) [विशेषेण चित्रम्, प्रा० स०] 1 रंग-बिरंगा, चितकबरा, चित्तीदार, धब्बेदार 2 नानाविध, बहुविध 3 रंगबिरंगा 4 सुन्दर, मनोहर क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम् रघु० १।८ 5 आश्चर्यजनक, अचम्भे वाला, अजीब–अनविधिलसितानां ही विचित्रो विपाक –शि १२।६४ अव्य–1 बहुरंगी रूप से 2 आश्चर्य । समः –अंग (वि०) जिसका शरीर चितकबरा हो, (–गः) 1 मोर 2 व्याघ्र, देह (वि०) मनोहर शरीर वाला (हः) बादल, रूप (वि०) विविध प्रकार का, वीर्यः एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी से उत्पन्न राजा शन्तनु का एक पुत्र तथा भीष्म का सौतेला भाई था । जब निस्सन्तानावस्था में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र (विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्यास को बुलाया और नियोग की विधि से विचित्रवीर्य के नाम पर सन्तानोत्पादन के लिए प्रार्थना की । व्यास ने माता की आज्ञा का पालन किया और फलतः अम्बिका तथा अम्बालिका (उसके भाई की विधवा पत्नियों) से क्रमशः धृतराष्ट्र और पाण्डु का जन्म हुआ) ।

विचित्रक [विचित्र+कन्] आश्चर्य का खेल - कर्म आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा ।

विचित्रता [वि+चित्र+तल्+टाप्] 1 खोज 2 गवेषणा 3 शूरवीर ।

विचीर्ण (वि०) [वि+चृ+क्त] 1 अधिकृत, व्याप्त 2 प्रविष्ट ।

विचेतन [वि०) [विगता चेतना यस्य प्रा० ब०] 1 चेतनारहित, निर्जीव, अचेतन, मृतक 2 प्राणहीन ।

विचेतस् (वि०) [विगत चेतो यस्य –प्रा० ब०] 1 संज्ञाहीन, मूढ, अज्ञानी 2 व्याकुल घबड़ाया हुआ, उदास ।

विचेष्टा [विशिष्टा चेष्टा प्रा० स०] प्रयत्न, उद्यम, कोशिश ।

विचेष्टित (भू० क० कृ०) [वि+चेष्ट्+क्त] 1 उद्योग किया गया, कोशिश की गई, संघर्ष किया गया 2 परीक्षण किया गया गवेषणा की गई 3 दुष्कृत, मंत्रणापूर्वक किया गया, कृत्य 1 कर्म, कार्य 2 प्रयत्न, आन्दोलन, उद्योग सामूहिक कार्य 3 आचरण 4. कार्यकरण, गवेषणा, खोज–विक्रम० २।९ 5. कूट प्रबन्ध, षड्यन्त्र ।

विच्छ् । (चुरा० पर० विच्छयति–विच्छयति-ते भी–) जाना, हिलना-डुलना ।

II (चुरा० उभ० विच्छर्पयति-ते) 1 चमकना 2 बोलना।

विच्छन्न, **विच्छन्नक**: [विशिष्टः छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन् —ब० स० पक्षे कन् च] महल, विशालभवन जिसमें कई खण्ड या मञ्जिलें हों।

विच्छर्दक [वि+छर्द्+ण्वुल्] महल, प्रासाद, दे० ऊ० 'विच्छर्द'।

विच्छर्दनम् [वि+छर्द्+ल्युट्] कै करना, उलटी करना, उगलना।

विच्छर्दित (भू० क० कृ०) [वि०+छर्द्+क्त] 1 कै किया हुआ, उगला हुआ 2 जिसकी अवज्ञा की गई हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो 3 टूटा-फूटा, न्यूनीकृत।

विच्छाय (वि०) [विगता छाया यस्य प्रा० ब०] निष्प्रभ, धुन्धला,—रत्न० १।२६,—य वर्णि, ग्ल्य।

विच्छित्ति (स्त्री०) [वि+छिद्+क्तिन्] 1 काट डालना, फाड देना —भर्तृ० ३।११ 2 बाटना, अलग-अलग करना 3 अन्तर्धान, अनुपस्थिति, लोप 4 विराम 5 शरीर को उबटन या रङ्गलेप से रञ्जना, रङ्गचित्रण, महावर—शृं० ७।५, शि० १६।८४ 6. सीमा (पर आदि की) हद 7 कविता में विराम, यति 8 विशेष प्रकार की शृङ्गारप्रिय आकर्षणक्रिया, जिसमें वेशभूषा के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (अपने व्यक्तिगत सौन्दर्य के अभिमान के कारण)—स्तोकाप्यकल्परचना विच्छित्ति कापिपांगकृत् सा० द० १३८।

विच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि-छिद्-क्त] 1 फाड़ा हुआ, काटा हुआ 2 तोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ, विभक्त, वियुक्त अतः विच्छिन्नम् श० १।९ 3 हस्तक्षेप किया गया, रोका गया 4 अन्त किया गया, बन्द किया गया, समाप्त किया गया 5 चितकबरा 6 गुप्त 7 उबटन आदि रंगलेप से पोता गया (दे० वि पूर्वक छिद्)।

विच्छुरित (भू० क० कृ०) [विच्छुर्+क्त] 1 डका गया, ऊपर से फैलाया गया, पोता गया 2 जड़ा गया 3 लीपा गया, पोता गया।

विच्छेद [वि-छिद्+घञ्] 1 काट डालना, काटना, विभक्त करना, विराम —मा० ६।११ 2 तोड़ना—शि० ६।५१ 3 रोक, हस्तक्षेप, विराम, अन्त कर देना विच्छेदमापुर्भुवि यस्तु कथाप्रबन्ध का०, पिङ्-विच्छेदशिल रघु० १।६६ 4 हटाना, प्रतिषेध 5 फूट अनबन 6 पुस्तक का अनुभाग या परिच्छेद 7 अन्तराल, व्यवधान।

विच्युत (भू० क० कृ०) [वि-च्यु+क्त] 1 अध पतित, नीचे गिरा हुआ 2 विस्थापित, पतित 3 व्यतिक्रान्त, पथविचलित।

विच्युति (स्त्री०) [वि+च्यु+क्तिन्] 1 अध पतन, पृथक् होना वियोग 2 ह्रास, क्षय, पतन 3 विचलन 4 गर्भस्राव, असफलता जैसा कि 'गर्भविच्युति' में।

विच् । (रुधा० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्त) 1 वियुक्त करना, विभक्त करना 2 भेद करना, अन्तर पहचानना, विवेचन करना (प्रायः वि पूर्वक, तथा विपूर्वक विच् के समान)।

II (तुदा० आ०, चुरा० पर० विजते, विजयति, विजित) 1 हिलना, कांपना 2 विक्षुब्ध होना, भय से कांपना 3 डरना, भयभीत होना—भक्षाद् विभ्यत् कुरुरोद भूयः रघु० १४।६८ 4 दुखी होना, कष्टग्रस्त होना, प्रेर० (वेजयति ते) त्रास देना, डराना, आ , डराना, , भयभीत होना, डरना (प्रायः अपा० के साथ, कभी कभी सम्ब० के साथ) तीक्ष्णादु द्विजते मूढः ३।५, यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः भग० १२।१५, भट्टि० ७।९२ 2 खिन्न या कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् भग० ५।२० 3 ऊबना (अपा० के साथ) जीविताद्द्विजमानेन मा० ३ मनो नोद्विजते तस्य दहतोऽग्निमहर्निशम्, उद्विजन्ति नु सत्रारादमाराद्रासवेदिन कवि० 4 डराना कष्ट देना, (प्रेर०) 1 कष्ट देना, नम्र करना कु० ११५ ११ 2 डराना।

विजन (वि०) [विगतो जनो यस्मात् ब० स०] अकेला सेवानिवृत्त, एकाकी, अव एकान्त स्थान, सुनसान स्थान (**विजने** निजी रूप से)।

विजनन [वि+जन्+ल्युट्] जन्म प्रसूति प्रसव।

विजन्मन् [वि० या पु०] [विरुद्धं जन्म यस्य प्रा० ब०] हरामी, जो अवैधकर से उत्पन्न हुआ है।

विजपिलम् [विज्+क, पिल्+क, कर्म० स०] गारा कीचड़।

विजय [वि-जि+अच्] 1 जीतना, हराना, पराजय करना 2 जीत, फतह जय यात्रा—वि० १०।३५ रघु० १२।१ कु० ३।१९, शि० २।१४ 3 देवताओं का रथ, दिव्य रथ 4 अर्जुन का नाम महा० नाम की व्याख्या करना है—अभिप्रयामि संग्राम यदहं युद्धदुर्मदान् निर्जित्य विनिकर्षामि तेन मां विजय विदुः 5 एक प्रकार का विशेषण 6 बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष 7 विष्णु के सेवक का नाम। सम० **अस्त्रपाय**. विजय का साधन या उपाय, **कुञ्जरः** लड़ाई का हाथी, एक पाँचवी लड़ी का हार, **क्षितिप**. सेना का विशाल दल, **नगरम्** एक नगर का नाम, **अर्जुन**. एक विशाल मैत्रिक दल,—**सिद्धि**. (स्त्री०) सफलता, जीत फतह।

विजयपाल: (पु०) इन्द्र का नाम।

विजया [विजय+टाप्] 1 दुर्गा का नाम 2 उसकी सेवि

कालों में से एक · मुद्रा० १।१ 3 एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई थी भट्टि० २।२१ 4 भाग 5 एक उत्सव का नाम=विजयोत्सव, दे० नी० 6 हरीतकी। सम० दशमी दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है, यात्रा यात्रा आश्विनशुक्ला दशमी।

विजयिन् (पु०) [वि+जि+इनि] विजेता, जीतने वाला।

विजरद् [विगता जरा यस्मात् · प्रा० ब०] वृक्ष का तना।

विजल्पः [वि०+जल्प+घञ्] 1 बाल कलरव, ऊटपटांग या मूर्खतापूर्ण बात 2 सामान्य बातें 3 दुर्भावनापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजल्पित (भू० क० कृ०) [वि+जल्प्+क्त] 1 कहा गया, जिससे बातें की गई 2 भोली भाली बात, बाल सुलभ तुतलाहट।

विजात (भू० क० कृ०) [विरुद्ध जात जन्म यस्य—प्रा० ब०] 1 नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर 2 उत्पन्न, जन्मा हुआ 3 रूपान्तरित, —ता माता, मातृका वह स्त्री जिसके अभी सन्तान हुई हो।

विजाति (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० स०] 1 भिन्न मूल या जाति 2 भिन्न प्रकार, जाति, या कुटुम्ब।

विजातीय (वि०) [विजाति+छ] 1 भिन्न प्रकार या जाति का, असमान, विषम 2 भिन्न वर्ण या जाति का 3 मिली जुली जाति का।

विजिगीषा [वि+जि+सन्—अ+टाप्] 1. जीतने की या विजय प्राप्त करने की इच्छा 2 आगे बढ़ने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, महत्त्वाकांक्षा।

विजिगीषु (वि०) [वि+जि+सन्+उ] 1 जीत का इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला—यशसे विजिगीषूणा—रघु० १।७ 2. प्रतिस्पर्धी, महत्त्वाकांक्षी,—पु० 1. योद्धा, सूरवीर 2. प्रतिद्वन्द्वी, झगड़ालू, प्रतिपक्षी।

विजिज्ञासा [वि+ज्ञा+सन्+आ] स्पष्ट जानने की इच्छा।

विजित (भू० क० कृ०) [वि+जि+क्त] पराजित किया हुआ, जीता हुआ, जिसके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ। सम० आत्मन् (वि०) जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर दिया है, जितेन्द्रिय, —इन्द्रिय (वि०) जिसने इन्द्रियों का दमन कर दिया है, या नियन्त्रण कर लिया है।

विजितिः (स्त्री०) [वि+जि+क्तिन्] जीत, फतह, विजय—काव्या० ३।८५।

विजिरः —रम् (र, —रम्) [विज्+इरच्, इरच् वा] चटनी (कांजी मिश्रित)।

विजिह्म (वि०) [विशेषेण जिह्म—प्रा० स०] 1. कुटिल झुका हुआ, मुड़ा हुआ—कि० १।२१, रघु० १९।३५ 2. बेईमान।

विजुकः [विज्+उलच्] शाल्मलि या सेमल का पेड़।

विजृम्भणम् [वि+जृम्भ्+ल्युट्] 1 मुँह फाड़ना, जम्हाई लेना 2. और आना, खिलना, विकसित होना, बनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्भूतिमिव कुड्मलेषु—रघु० १६।४७ 3 दिखलाना, प्रदर्शन करना, खोलना 4 फैलाना 5 मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, रंगरेलियाँ।

विजृम्भित (भू० क० कृ०) [वि०+जृम्भ्+क्त] 1. मुह फाड़ा, जम्हाई ली—मृच्छ० ५।५१ 2 उद्घाटित, विकसित, फैलाया हुआ 3 प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया—रघु० ७।४२ 4 दर्शन दिये गये 5. खेला गया,—न० 1 क्रीडा, मनोरंजन 2 अभिलाषा, इच्छा 3 प्रदर्शन, प्रदर्शनी—अज्ञानविजृम्भितमेतत् 4 कृत्य, कर्म, आचरण—मा० १०।२१।

विज्ञ—ज्ञ [विज्+ञ (अङ्—इलबोरभेदः) +ज्ञ्] 1. एक प्रकार की चटनी, दे० 'विजुल' 2 तीर, बाण।

विज्ञकम् (नपु०) दारचीनी।

विज्ञ (वि०) [वि+ज्ञा+क] 1 जानने वाला, प्रतिभावान्, बुद्धिमान्, विद्वान् 2. चतुर, कुशल, प्रवीण, —ज्ञ. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष।

विज्ञप्त (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञप्+क्त] सादर कहा गया, प्रार्थित।

विज्ञप्ति [वि+ज्ञप्+क्तिन्] 1 सादर उक्ति या समाचार, प्रार्थना, अनुरोध 2 घोषणा।

विज्ञात (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+क्त] 1 विदित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञान किया हुआ 2 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध।

विज्ञानम् [वि+ज्ञा+ल्युट्] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ,—विज्ञानमय कोश, 'प्रज्ञा का स्थान' (आत्मा के पाँच कोशों में से पहला) 2 विवेचन, अन्तर पहचानना 3 कुशलता प्रवीणता -प्रयोगविज्ञानम् —श० १।२ 4 सांसारिक या लौकिक ज्ञान, सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान (विप० 'ज्ञानम्' वह या परमात्मविषयक जानकारी)—भग० ३।४१, ७।२, (भग० का समस्त सातवाँ अध्याय ज्ञान और विज्ञान की व्याख्या करता है) 5. व्यवसाय, विनोदन 6 संगीत। सम० ईश्वरः याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका का प्रणेता, —भिक्षुः व्यास का नाम, —मातृकः बुद्ध का विशेषण, —वादः ज्ञान का सिद्धान्त बुद्ध द्वारा सिखाया गया सिद्धान्त।

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठन्] बुद्धिमान्, विद्वान् दे० 'विज्ञ'।

विज्ञापकः [वि+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्, पुकागमः] 1 सूचना देने वाला 2 अध्यापक, शिक्षक।

विज्ञापनम्,–ना [वि+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 शिष्ट उक्ति या संवाद, प्रार्थना, अनुरोध - काल-प्रयुक्ता खलु कार्यसिद्धिर्विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति —कु० ७।९३, रघु० १७।४० 2 सूचना, वर्णन 3 शिक्षण।

विज्ञापित (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1 शिष्टतापूर्वक कहा हुआ या संवाद दिया हुआ 2 प्रार्थित 3 संसूचित 4 शिक्षित।

विज्ञाप्तिः [वि+ज्ञा+णिच्+क्तिन्, पुकागम] दे० 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्यम् [वि+ज्ञा+णिच्+यत्, पुकागम] प्रार्थना –उत्तर० १।

विज्वर (वि०) [वियतो ज्वरो यस्य–ब० स०] ज्वर से मुक्त, चिन्ता या दुःख से मुक्त।

विज्वारम् (नपु०) आँखों की सफेदी, नेत्रों का श्वेत भाग।

विज्योलिः, ली (स्त्री०) [विज्+उलच्, पृषो० साधु] रेखा, पंक्ति।

विट् (स्वा० पर० वेटति) 1 ध्वनि करना 2 अभिशाप देना, दुर्वचन कहना।

विट [विट्+क] 1. जार, यार, उपपति—मा० ८।८, शि० ४।४८ 2 लंपट, कामुक 3 (नाटकों में) किसी राजा या दुश्चरित्र युवक का साथी, किसी ऐसी वेश्या का साथी, जिसका गायन, संगीत तथा कविता निर्माण की कला में कुशलता प्राप्त हो, नायक पर आश्रित परान्नभोगी या विदूषक का कार्य करे—दे० मृच्छ० अंक १, ५ व ८) परिभाषा के लिए दे० मा० द० ७८ 4 भूना हुआ, पका हुआ 5 चूहा 7 खैर या खदिर का पेड़ 8 नागरमोथा का पेड़ 9 पल्लवयुक्त शाखा। समः० **पालिकम्** एक प्रकार का खनिजपदार्थ, सामान्यतः, **लवणम्** रोग-नाशक नमक।

विटङ्कः [विशेषेण टङ्कयते बध्यते इति वि+टङ्क्+घञ्] 1 चिड़िया-घर, कबूतर का दरबा 2 महल के ऊँचे सिरे, कलश या किंगूरा, ऊँचाई - अयमेव महीधर विटङ्क –मा० १०, विक्रम० ५।७१।

विटङ्कुकः [विटङ्क+कन्] दे० विटङ्क।

विटङ्कित (वि०) [वि+टङ्क+क्त] चिह्नित, मुद्राङ्कित।

विटप [विट् विस्तार वा याति पिबति—पा+क] 1 शाखा, (लता या वृक्ष की) टहनी कामलविटपानुकारिणौ बाहू शि० १।२१, ३१, यदनेन तरुः पानितः संपिता तद्विटपाधिना लता रघु० ८।४३, शि० ४।४८, कु० ६।४१ 2 झाड़ी 3 नया अंकुर या किसलय –शि० ७।५३ 4 गुल्म, झुण्ड, शुरमुट 5 विस्तार 6 अहंकोष पटल।

विटपिन् (पु०) [विटप+इनि] 1 वृक्ष परितो वृष्टाश्च विटपिन सर्वे भागि० १।२१, २९ 2 वटवृक्ष, गूलर। समः०—**मृगः** बन्दर, लंगूर।

विट्ठ (ठ)ल (पु०) विष्णु या कृष्ण का रूप (बंबई प्रान्त में स्थित पंढरपुर में इस रूप की पूजा होती है)।

विठङ्कु (वि०) बुरा, दुष्ट, अधम, नीच।

विठर (पु०) बृहस्पति का नाम।

विड् (स्वा० पर० वेडति) 1 अभिशाप देना, दुर्वचन कहना, बुरा भला कहना 2 जोर से चिल्लाना।

विडम् [विड्+क] एक प्रकार का कृत्रिम नमक।

विडङ्ग, –गम् [विड्+अङ्गच्] एक प्रकार का शाक, वायविडंग (कृमिनाशक औषधि के रूप में बहुधा प्रयुक्त)।

विडम्ब [विडम्ब्+अप्] 1 नकल 2. दुःखी करना, तंग करना, कष्ट देना।

विडम्बनम्, ना [विडम्ब्+ल्युट्] 1 नकल 2 छद्मवेश, छलयुद्ध 3 धोखेबाजी, जालसाजी 4 क्लेश, संताप 5 पीड़ित करना, दुःख देना 6 निराश करना 7 मजाक, उपहास, परिहासविषय इव च पेऽस्या पुरो विडंबना कु०५।७०, अलमिति त्वयि वीरकीर्तयः प्रमदानामधुना विडंबना ४।१२।

विडम्बित (भू० क० कृ०) [विडम्ब्+क्त] 1 अनुकरण किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया; मजाक बनाया गया 3 ठगा गया 4 क्लेश पहुंचाया गया; संतप्त किया गया 5 हताश किया गया 6 नीच कर्मों में लीन।

विडारक [विडाल+कन्, लस्य र] बिलाव।

विडाल, विडालक (पु०) दे० बिडाल, बिडालक।

विडौजस् [वि+डी+क्विप्] पक्षियों की एक उड़ानविशेष दे० डीन।

विडूरः [विड्+कुरच्] एक प्रकार की बेल।

विडूरजम् [विडूर+जन+ड] वैदूर्य, नीलम।

विडो (डौ) जस् (पु०) [विट् व्यापकम् ओजो यस्य ब० स०] इन्द्र का नाम, दे० 'विडौजस्'।

विडस [वि+तन्+घञ्] 1 पक्षियों का शिकार 2 रस्सी, शृंखला, जाल या जंजीर आदि जिनसे बंधे हुए पशु-पक्षी कैद किये जायें।

वितङ्क [वि+तङ्+अच्] 1 हाथी 2 एक प्रकार का नाला या घाटनाली।

वितण्डा [वितड+टाप्] 1 सदोष आक्षेप, निराधार खंडन, खंडन, ओछा तर्क, निरर्थक तर्कवितर्क—सः (अत्र) प्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितंडा गौत० 2 सूत्र-नियम दोषपूर्ण आलोचना 3 धर्मच्छल 4 मुगुल, धूप।

वितत (भू० क० कृ०) [वि+तन्+क्त] 1 फैलाया

हुआ, विस्तृत किया हुआ, बिछाया हुआ 2 आयत, विशाल, विस्तीर्ण 3 सम्पन्न, निष्पन्न, कार्यान्वित —वितनयज्ञ रघु० ७।३४ 4 ढका हुआ 5 प्रसृत —दे० वि पूर्वक तन्, सम् कोई भी ऐसा उपकरण जिसमें तार लगे हों वीणा आदि। सम० धन्वन् (वि०) जिसने अपने धनुष को पूरी तरह तान लिया है।

वितति (स्त्री०) [वि+तन्+क्तिन्] 1 विस्तार, प्रसार 2 परिमाण, संग्रह, गुच्छा, झुण्ड 3. रेखा, पंक्ति—मा० १।४७।

वितथ (वि०) [वि+तन्+क्थन्] 1 झूठ, मिथ्या—आज न्यनो न मघना वितथ विलोकतम् वेणी ३।१३, ५।६१, रघु० ९।८ 2. व्यर्थ, निरर्थक—यथा 'वितथ-प्रयत्न' में।

वितथ्य (वि०) [वितथ+यत्] मिथ्या, दे० ऊपर।

विनदु (स्त्री०) [वि—तन्+रु, दुट्] पंजाब की एक नदी का नाम, वितस्ता या झेलम नदी।

विनतु (पु०) अच्छा घोड़ा स्त्री० विनदी।

विनश्यम् [वि—तृ+ल्युट्] 1 पार जाना 2 उपहार, दान 3 छोड़ देना, त्याग करना, विसर्जांजलि देना।

वितर्क [वि+तर्क्+अच्] 1 युक्ति, दलील अनुमान 2 अन्दाज अटकल, कल्पना, विश्वास शिरीषपुष्पा-धिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयावितिं मे वितर्क —कु० १।४१ 3 उद्भावना, चिन्तन भर्तृ० ३।४५ 4 सन्देह, वि० ४।५, १३।२ 5. विचारविनिमय, विचारविमर्श।

वितर्कणम् [वि+तर्क्+ल्युट्] 1 तर्क करना 2 अटकल लगाना, अन्दाज लगाना 3. सन्देह 4 तर्क वितर्क।

वितर्दि, दी **वितर्दिका** (स्त्री०) [वि+तर्द्—इन् (तर्दि+ङीष्, वितर्दि+कन्+टाप्] 1 आंगन में बना हुआ चौकोर चबूतरा 2 छज्जा, बराबदा।

वितर्दि, -र्दी, **वितर्दिका** (स्त्री०) दे० वितर्दि आदि।

वितल (न०) [विशेषेण तलम्—प्रा०स०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात तलों में से दूसरा—दे० पाताल या लोक।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसको यूनानी ...ydaspes कहते हैं तथा जो आजकल 'झेलम' या 'वितस्ता' के नाम से विख्यात है।

वितस्ति [वि+तस्+क्तिन्] बारह अंगुल की लम्बाई की माप (हाथ को पूरा फैला कर अंगूठे से कनिष्ठा अंगुली तक की दूरी)।

वितान (वि०) [वि+तन्+घञ्] 1 खाली, रीता 2 सार-3 हतोत्साह, उदास—रघु० ४।८६ 4 बुद्धू, जड़ 5. दुष्ट, परित्यक्त (न०) 1 फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना—शि० ११।२८ 2. आच्छादन, चंदोवा —विद्युल्लेखाकनकरुचिरश्रीवितानं वमाद्यत् विक्रम० ४।१३, रघु० १९।३९, कि० ३।४२, शि० ३।५० 3. गद्दी 4 संग्रह, परिमाण, समवाय—कि० १७।६१, मा० ६।५ 5 यज्ञ, आहुति—वितानेष्वप्येवं तव मम च सोमे विधिरभूत्—वेणी० ६।३०, ३।१६, शि० १४।१० 6 यज्ञ की वेदी 7 ऋतु, मौसम, सम् अवकाश, विश्राम।

वितानक, कम् [वितान+कन्] 1 प्रसार 2. ढेर, परिणाम, संग्रह राशि शि० ३।६ 3 चांदोवा, चन्दोवा 4 सरई नामक वृक्ष।

वितीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+तृ+क्त] 1 पार किया हुआ, पास से गुजरा हुआ 2. दिया हुआ, अर्पित, प्रदत्त शि० ७।६७, १७।६५ 3 नीचे गया हुआ, अवतरित रघु० ६।३७ 4 ढोया गया 5 दमन किया गया, जीत लिया गया (दे० वि पूर्वक तृ)।

वितुन्नम् [वि०+तुद्+क्त] 1 'मुनिवल्लक' नामक शाक, सुसना 2 सैंदाल नाम का पौधा, सेवार।

वितुन्नकम् [वितुन्न+कन्] 1 धनिया 2 तूतिया, एक तांबेकी नामक पौधा।

वितुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+तुष्+क्त] असन्तुष्ट, अप्रसन्न, सन्तोष से शून्य।

वितृष्ण (वि०) [विगता तृष्णा यस्य प्रा० ब०] इच्छा से मुक्त, सन्तुष्ट।

वित्त (चुरा० उभ० वित्तयति ते, कुछ के मतानुसार वित्तापयति—ते भी) पुरस्कार देना, दान देना।

वित्त (भू० क० कृ०) [विद् लाभे+क्त] 1 पाया, खोजा 2 लब्ध, अवाप्त 3 परीक्षित, अनुमोदित 4 विख्यात, प्रसिद्ध, सम् 1 धन दौलत जायदाद, संपत्ति, द्रव्य 2 शक्ति। सम० आगम,—उपार्जनम् धन का अभिग्रहण,—ईश, कुबेर का विशेषण, भग० १०।२३, मनु ७।४, ब दानो, दाता,—आढ्य संपत्ति।

वित्तवत् (वि०) [वित्त-मतुप्] धनवान्, दौलतमंद।

वित्ति (स्त्री०) [विद् क्तिन्] 1 ज्ञान 2 निर्णय, विवेचन, चिन्तन 3 लाभ, अधिग्रहण 4 संभावना।

वित्रास [वि+त्रस्+घञ्] भय, खटका, त्रास या डर।

वित्सल [विद्+क्विप्, सद्+अच्] बैल, सांड।

विद् (ब्रह्मा० आ० वेदते) प्रार्थना करना, निवेदन करना।

विदुर [व्यध्+उरच्, सम्प्रसारण च] 1 राक्षस 2. चोर।

विद् (अदा० पर० वेत्ति या वेद, विदित, इच्छा० विवि-दिषति) 1 जानना, समझना, सीखना, मालूम करना, निश्चय करना, खोजना अवैल्लक्षणतोयस्य स्थिता हक्षिणत कथम्—भट्टि० ८।१०६, त मोहांध कथमद मयु वेत्तु देव पुराणम् वेणी० १।२३, ३।३९, अ० ५।२७, भग० ४३५, १८।१ 2. महसूस करना, अनुभव करना मुद्रा० ३।४ 3 मुंह ताकना, सम्मान करना, मानना, जानना, समझना विद्धि व्याधिव्याल बस लोक लोकहृत च समस्तम् मोह० ५, भग०

२।१७, रघु० ३।३९, मनु० १।३३, कु० ६।३०, प्रेर० —(वेदयति- ते) 1 जतलाना, सूचना देना, सूचित करना, अवगत कराना, बताना 2 अध्यापन करना, व्याख्या करना,—वेदार्थस्त्वानवेदयत्—सिद्धा० 3 महसूस करना, अनुभव करना -मनु० १२।१३, आ -, (प्रेर०) 1 घोषणा करना, कहना, प्रकथन करना—किमिति नावेदयति अथवा किमावेदितेन—वेणी० १, रघु० १२।५५, कु० ६।२१, भट्टि० ३।४९ 2 प्रदर्शन करना, दिखाना इंगित करना--आवेदयति प्रत्यासन्नमानदमग्नजातानि शुभानि निमित्तानि का० 3 प्रस्तुत करना, देना, नि—, (प्रेर०) 1 बताना, समाचार देना, सूचित करना (सम्० के साथ)—रघु० २।६८ 2 अपनी उपस्थिति की घोषणा करना—कथं मात्मानं निवेदयामि—श० १ 3 इंगित करना, दिखलाना -दिगंबरत्वेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२ 4 प्रस्तुत करना, उपस्थित होना, भेंट चढ़ाना—मनु० २।५१, याज्ञ० १।२७ 5 देख रेख में सौंपना, दे देना. प्रति--(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, सम्--. (आ०) जानना, सावधान होना- भट्टि० ५।३७ ८।१७ 2 पहचानना, (प्रेर०) जतलाना, प्रत्यक्ष ज्ञान कराना -भट्टि० १७।६३।

II (दिवा० आ० विद्यते, विन्न) होना, विद्यमान होना —अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते मृच्छ० ९।३७, नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः भग० २।१६ (तु० 'अस्')।

III (तुदा० उभ० विंदति—ते, विन्न) 1 हासिल करना प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपलब्ध करना—एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विंदते फलम्—मनु० ५।४, याज्ञ० ३।१९२ 2 मालूम करना, खोजना, पहचानना, यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विंदति मातरम्—सुभा०, कु० १।६, मनु० ८।१०९ 3 महसूस करना, अनुभव करना—रघु० १४।५६, भग० ५।२१, ११।२४, १८।४५ 4. विवाह करना—मनु० ९।९९, अनु—, 1 हासिल करना, प्राप्त करना 2 भुगतना, अनुभव करना, महसूस करना -पापं मदमते किं वा संतापमनु विंदसि —भामि० २।११२, गीत० ४।

IV (दिवा० आ० विद्ये, विन्न या विन्न) 1 जानना, समझना 2 मानना, लिहाज करना, समझना—न तृणेऽपीति लोकोऽयं विद्ये मां निष्पराक्रमम्—भट्टि० ६।३९ 3 मालूम करना, भेंट होना 4 तर्क करना, विमर्श करना 5 परीक्षण करना, पूछताछ करना।

V (चुरा० आ० वेदयते) 1. कहना, प्रकथन करना, घोषणा करना, सन्देश देना 2 महसूस करना, अनुभव करना 3 रहना (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूपों का उल्लेख है) वेत्ति सर्वाणि शास्त्राणि गर्वस्तस्य न विद्यते विन्ते धर्मं सदा सद्भिस्तेषु पूजां च विंदति)।

विद् (वि०) [विद् + क्विप्] (समास के अन्त में) जानने वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पु०) 1 बुधग्रह 2. विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य (स्त्री०) 1 ज्ञान 2 समझ, बुद्धि।

विद [विद् + क] 1 विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य, पंडितजन 2 बुधग्रह, बुध 1 ज्ञान, अधिगम 2 समझदारी।

विदग्ध [वि + दह् + घञ्] चटपटा भोजन जिसके खाने से प्यास अधिक लगे।

विदग्ध (भू० क० कृ०) [वि + दह् + क] 1. जला हुआ, आग से भस्म हुआ 2 पका हुआ 3 पचा हुआ 4 नष्ट किया हुआ, गला-सड़ा 5 चतुर, कुशाग्रबुद्धि, निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6 धूर्त, कलाभिज्ञ, षड्यंत्रकारी 7 अनजला या अनपचा,—ग्धः 1 बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2 स्वेच्छाचारी, - ग्धा चालाक, चतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री।

विदग्ध [विद् + ग्धच्] 1 विद्वान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2 संन्यासी, मुनि।

विदर [वि + दृ + अप्] तोड़ना, फाड़ना, विदीर्ण होना - रघु० काँटेदार नाशपाती, कंकारी वृक्ष।

विदर्भ (पु०, ब० व०) [विगता दर्भा कुशा यत्र] 1 एक जिले का नाम, आधुनिक बरार—अस्ति विदर्भो नाम जनपदः—दश०, अस्ति विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम् मा० १, रघु० ५।४०, ६०, नै० २।५० 2 विदर्भ के निवासी, र्भः 1 विदर्भ देश का राजा 2 मूली या मरुभूमि। सम० जा, जया, राजतनया,—सुता विदर्भ- राज की पुत्री दमयन्ती के विशेषण।

विदल (वि०) [विदीर्णानि दलानि यस्य वि + दल + क] 1 टुकड़े टुकड़े हुए, आरपार चीरा हुआ 2 खुला हुआ, (फूल आदि) खिला हुआ, लः 1 विभक्त करना, अलग अलग करना 2 फाड़ना टुकड़े टुकड़े करना 3 रोटी 4 पहाड़ी आबनूस, लम् 1 बाँस की अपच्चियों की बनी टोकरी, या लकड़ी डालियों की बनी वस्तुएँ 2 अनार की छाल 3 छत्ती 4 किसी द्रव्य की फाँक।

विदलनम् [वि + दल् + ल्युट्] अच्छ अच्छ करना, फाड़ कर अलग अलग करना, काटना, विभक्त करना।

विदारः [वि + दृ + घञ्] 1 फाड़ना, चीरना, खंड खंड करना 2 संग्राम, युद्ध 3 (किसी नदी या तालाब से) ऊपर से बहना, जलप्लावन।

विदारकः [वि + दृ + ण्वुल्] 1. फाड़ने वाला, काटने वाला 2. नदी की धार के मध्य में स्थित वृक्ष या चट्टान

(जो नदी के मार्ग को विभक्त कर दे) 3 किसी शुष्क नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र।

विदारणः [वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1 नदी के मध्य में स्थित चट्टान या वृक्ष (जिससे नाव बाँध दी जाय) 2. संग्राम, युद्ध 3 कर्णिकार या कनियर का वृक्ष, ना० संग्राम, युद्ध, वि० 1 फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, चीरना, छिन्न करना, तोड़ना—श्रुत सम्यक् श्रवणविदारण दक्ष —मुद्रा० ५।६, युवजनहृदयविदारणमनसिजनखपदलेखा इव शशिनः १, कि० १४। ५४, (यहाँ 'विदारण' विशेषण का कार्य करता है) 2 कष्ट देना, सन्ताप देना 3 वध, हत्या।

विदाहः [वि+दह्+णिच्+३] छिपकली।

विदित (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1 ज्ञात, समझा हुआ, सोचा हुआ 2 सूचित 3 विश्रुत, विख्यात, प्रसिद्ध भुवनविदिते वंशे—मेघ० ६ 4 प्रतिज्ञात, इकरार किया हुआ,—तः विद्वान पुरुष, विद्याध्ययनी, —तम् ज्ञान, सूचना।

विदिश् (स्त्री०) [विरुद्धो दिशायाः] दो दिशाओं का मध्यवर्ती बिन्दु।

विदिशा (स्त्री०) दशार्ण नामक प्रदेश की राजधानी (वर्तमान भेलसा नगर) नेदी (दशार्णानां) विदिशु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम् –मेघ० २४ 2 मालवा प्रदेश की एक नदी का नाम 3 =विदिश् ३०।

विदीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+दृ+क्त] 1 फाड़ा हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ, विदारण किया हुआ, फाड़ कर खोला हुआ 2 खोला हुआ, फैलाया हुआ (दे० विपूर्वक 'दृ')।

विदु [विद्+कु] हाथी के गण्डस्थल का मध्य भाग, हाथी का ललाट, (हस्तिकुम्भमध्यभाग)।

विदुर (वि०) [विद्+कुरच्] बुद्धिमान्, मनीषी, —रः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 2 धूर्त आदमी, षड्यन्त्रकारी 3 पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्यवती को ज्ञात हुआ कि व्यास द्वारा उसकी दोनों पुत्रवधुओं से उत्पन्न दोनों पुत्र शारीरिक रूप से सिंहासन के अयोग्य हैं क्योंकि धृतराष्ट्र अन्धा था तथा पाँडु पीला एवं अस्वस्थ था—तो उसने उन्हें एक बार फिर व्यास की सहायता मानने के लिए कहा। परन्तु व्यास मुनि की तपोमय उग्र दृष्टि से भयभीत होकर बड़ी विचक्षणा अपनी एक दासी को अपने वस्त्र पहना कर उनके पास भेजा और यही दासी विदुर की माता बनी। वह अपनी बड़ी बुद्धिमत्ता सचाई और चोर निष्पक्षता के कारण प्रसिद्ध है. वह पाण्डवों से विशेष स्नेह रखते थे, तथा कई बार उन्हें अनेक संकटग्रस्त विपत्तियों से बचाया)।

विदुल [वि+दुल+क] 1 एक प्रकार का काष्ठा, बेंत 2 लोबान की तरह का एक सुगन्धित पदार्थ।

विदूण (भू० क० कृ०) [वि+दु+क्त] कष्टग्रस्त, संतप्त, दुःखी (दे० वि पूर्वक 'दु')।

विदूर (वि०) [विशेषेण दूरं प्रा० स०] जो बहुत दूर हो, दूरस्थित—सन्निहितदूरान्तरभावतन्वी रघु० १३।४८, —रः पहाड़ का नाम जहाँ से वैदूर्यमणि निकलती है—विदूरभूमिर्वमथेभशृङ्गादुद्भिद्यया रत्नशलाकयेव—कु० १।२४, द० इस पर तथा शि० ३।४५ पर मल्लि० **विदूरम्, विदूरेण, विदूरतः, विदूरात्** शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'दूर से' 'दूरी पर' 'दूर' अर्थ को प्रकट करते हैं। सम० -ग (वि०) दूर दूर तक फैला हुआ, —जम् वैदूर्य मणि।

विदूषक (वि०) (स्त्री०—की) [विदूषयति स्म पर आ—वि+दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1 दूषित करने वाला, मलिन करने वाला, झूठ फैलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला 2 बदनाम करने वाला, गाली-गलौज बकने वाला 3 रसिक, मसखरा, ठिठोलिया —कः 1 हलोड़, भाड़, परिहासक 2 विशेषतः नाटक में नायक का दिल्लगी-बाज साथी और अन्तरंग मित्र जो अपनी अनोखी वेशभूषा बातचीत, हावभाव, मुखमुद्रा आदि से तथा अपने आपको परिहास का पात्र बना कर उल्लास में वृद्धि करता है, सा० द० ७९ पर दी गई परिभाषा कुसुमवसनाद्यभिश्च कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः, हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः 3 स्वेच्छाचारी, लम्पट।

विदूषणम् [वि+दूष्+ल्युट्] 1 मलिनीकरण, भ्रष्टाचार 2 दुर्वचन, झिड़की, परिवाद।

विदृतिः [वि+दृ+क्तिन्] सीवन, संधि।

विदेशः [विप्रकृष्टो देशः प्रा० स०] दूसरा देश, परदेश भजते विदेशमधिकेन विलसदनुभवेशपथवधूं कुशलः —शि० ९।४८। सम० -ज (वि०) विदेशी, परदेशी।

विदेशीय (वि०) [विदेश+छ] परदेशी, विदेशी।

विदेहाः (पु० ब० व०) [विगतो देहो देहसम्बन्धो यस्य —प्रा० ब०] एक देश का नाम, प्राचीन मिथिला (दे० परि० ३)—रघु० ११।३६, १७।३६ 2 इस देश के निवासी,—हु विदेह का स्त्रीलिंग, -हा विदेह।

विद्ध (भू० क० कृ०) [व्यध्+क्त] 1 बींधा हुआ, चुभा हुआ, घायल, छुरा भोंका हुआ 2. पीटा हुआ, कशाहत, बेंताहत 3 फेंका गया, निर्देशित, प्रक्षिप्त 4 विरोध किया गया 5 विकसित खुलना, —द्धम् घाव। सम० -कर्ण (वि०) जिसके कान छिदे हों।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1 ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान—(तां) विद्यामन्यस्तनेनेव प्रभावविभुर्महर्षि

—रघु० १।८८, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् भर्तृ० २।२०, (कुछ विद्वानों के मतानुसार विद्या चार है -आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती काम०, कि० २।६, इन चारों में मनु० ७।४३ पांचवीं विद्या—आत्मविद्या का और जोड़ देता है। परन्तु विद्या साधारणतः चौदह मानी जाती है—अर्थात् चार वेद, छः वेदांग, धर्म, मीमांसा, तर्क या न्याय, और पुराण - दे० चतुर के नीचे चतुर्दश विद्या, तथा नै० १।८) 2 यथार्थ ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान—उत्तर० ६।६, तु० अविद्या 3 जादू, मन्त्र 4 दुर्गादेवी 5 ऐन्द्रजालिक कुशलता। सम०—अनुपालिन्—अनुसेविन् (वि०) ज्ञानार्जन करने वाला, आगम,—अर्जनम्,—अभ्यास ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा ग्रहण करना, अध्ययन, अर्थ ज्ञान की खोज, —अर्थिन् (वि०) छात्र, विद्याध्ययनार्थी, शिष्य —आलयः विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर, उपार्जनम् = विद्यार्जनम्, —कर विद्वान् पुरुष, धन, चक्षु (वि०) अपने ज्ञान एवं शिक्षा के लिए प्रसिद्ध, देवी सरस्वती देवी,—धनम् विद्यारूपी दौलत, धर (स्त्री० री) एक दवयोनि विशेष, अर्धदेवता,—प्राप्ति —विद्यार्जन, लाभ, ! ज्ञान की प्राप्ति 2 ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया गया धन आदि, विहीन (वि०) निरक्षर, अज्ञानी, वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ, शिक्षा में प्रगतिशील, व्यसनम्, व्यवसाय ज्ञान की खोज।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषेण द्योतते - वि + द्युत् + क्विप्] बिजली बनाय इति विद्युत्—महा०, मनु० ३८, ११५ 2 वज्र। सम० उन्मेष बिजली की कौंध, -जिह्व एक प्रकार का राक्षस,—ज्वाला,-द्योत बिजली की कौंध या कांति दामन् (नपुं०) वक्र गति से युक्त बिजली की कौंध या चमक, पात बिजली का गिरना या प्रहार, प्रियम् सोना, लता, लेखा (विद्युल्लता, विद्युल्लेखा) 1 बिजली की कौंध या लहर 2 वक्रगतिशील या कुटिल बिजली।

विद्युत्वत् (वि०) [विद्युत् + मतुप्] बिजली से युक्त —मनु० ६८. (पुं०) बादल कु० ६।२७।

विद्योतन (वि० स्त्री० नी) [वि + द्युत् + णिच् + ल्युट्] 1 प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला 2 मीमांसा निरूपण करने वाला व्याख्या करने वाला।

विद्र [व्यध् + रक्, दान्तादेशः, सम्प्रसारणम्] - फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, छेद करना 2 दरार, छिद्र, विवर।

विद्रधि [विद् + रक्, धि च पृषो०] फोड़ा।

विद्रव [वि + द्रु + अप्] 1 भाग जाना, उड़ान, प्रत्यावर्तन 2 आतंक 3 प्रवाह 4 विचलना, गलना।

विद्राण (वि०) [वि + द्रा + क्त] नीचे से जाया हुआ, उद्वृद्ध।

विद्रावणम् [वि + द्रु + णिच् + ल्युट्] 1 भगाना, खदेड़ना, हांक कर दूर करना, पराजय करना 2 गलाना, पिघालना।

विद्रुमः [विशिष्टो द्रुमः] 1 मूंगे का वृक्ष (लाल रंग के मूल्यवान मूंगों (मणियों) को पैदा करने वाला) 2 मूंगा प्रवाल तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु—रघु० १३।१३ कु० १।४४ 3 कोपल या किसलय। सम० लता 1 मूंगे की शाखा 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—वलिका 'वलिका' नामक एक गंध द्रव्य।

विद्वस् (वि०) [विद् + क्वसु] (कर्तृ०, ए० व०, पुं० विद्वान्, स्त्री० विदुषी, नपुं० विद्वत्) 1 जानने वाला (कर्म० के साथ) आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचन, तत्र विद्वानपि नाशकारणम् रघु० ८।७६, कि० १।३० 2 बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) विद्वान् मनुष्य या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्याव्यसनं किं वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम् रघु०५।१८। सम० कल्प, देशीय,—देश्य (वि०) विद्वत्कल्प, विद्वद्देशीय विद्वद्देश्य) थोड़ा पढ़ा लिखा, कम विद्वान जन (विद्वज्जन) विद्वान् या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि।

विद्विष् (पुं०) **विद्विषत्** [वि + द्विष् + क्विप् क वा] शत्रु दुश्मन—विद्विषोऽप्यनुनय भर्तृ० २।७७ रघु० ३।६० शाक० १।१६।

विद्विष्ट [भू० क० कृ०) [वि + द्विष् + क्त] घृणित अनीप्सित कुत्सित।

विद्वेष [वि—द्विष् + घञ्] 1 शत्रुता घृणा, कु गा मनु० ८।३८६ 2 तिरस्करणीय घमण्ड, गर्व। मान हानि)—विद्वेषाभिभवस्थानादपि गरीयानहं मन्ये।

विद्वेषण [वि द्विष् + ल्युट्] 1 घृणा करने वाला शत्रु, जो रागपूर्ण स्वभाव की स्त्री, क्रम घृणा और शत्रुता पैदा करना 2 शत्रुता, घृणा।

विद्वेषिन्, विद्वेष्टृ (वि०) [विद्विष् + णिनि, तृच् वा] घृणा करने वाला, शत्रुतापूर्ण (पुं०) घातक, शत्रु।

विध् (तुदा० पर० विधति) 1 घुसाना, काटना 2 सम्मान करना, पूजा करना 3 शान्त करना शमन करना, प्रशमन करना।

विध [विध् + क] 1 प्रकार, किस्म यथा बहुविध नानाविध में 2 ढंग, रीति, रूप 3 तह (समास के अन्त में, विशेष कर अंकों के पश्चात्) त्रिविध अष्टविध आदि 4 शाखियों का आहार - समृद्धि 6 छेद करना।

विधमनम् [वि + धम् + ल्युट्] 1. हिलाना, विक्षुब्ध करना 2 घबराहट, कंपकंपी।

विधवा [विगतो धवो यस्या सा] रांड, बेवा सा नारी विधवा जाता गृहे रोदिति तत्पति सुभा० । सम० —आवेदनम् बेवा स्त्री से विवाह करना, गामिन् जो विधवा स्त्री से सहवास करता है ।

विधवस्यम् [वि + धू + ल्यप्] अस्तव्यस्तता, विक्षोभ ।

विधातृ (पु०) सर्व सृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा ।

विधा [वि + धा + विच्] 1 ढंग, रीति, रूप 2. प्रकार, किस्म 3 समृद्धि, सम्पन्नता 4 हाथी घोड़ों का चारा, खाद्य पदार्थ 5 छेद करना 6 किराया, मजदूरी ।

विधातृ (पु०) [वि + धा + तृच्] 1 निर्माता, स्रष्टा —कु० ७।३६ 2 स्रष्टा, ब्रह्मा—विधाता भद्रं नो वितरतु मनीषाय विदुषे -भा० ६।७, रघु० १।३५, ६।११, ७।३५ 3 अनुदाता, दाता, प्रदाता—कु० १।५३ 4 भाग्य, दैव—हि० १।४० 5 विश्वकर्मा 6 कामदेव 7 सूर्य । सम० आयुस् (पु०) 1 सूर्य की चमक, धूप 2 सूरजमुखी फूल,—मुनि नारद का विशेषण ।

विधानम् [वि + धा + ल्युट्] 1 क्रम से रखना, व्यवस्था करना 2. अनुष्ठान, निर्माण, करण,—कार्यान्वयनलेपव्यविधानम् शि० १, आज्ञा' यज्ञ° आदि 3 सृष्टि, रचना रघु० ६।११, ७।१४, कु० ७।६६ 4 नियोजन, उपयोग, प्रयोग प्रतिकारविधानम् रघु० ८।४० 5 नियत करना, विहित करना, आदेश देना 6 नियम, उपदेश, अध्यादेश, धार्मिक नियम या विधि, निषेध—मनु० १।१४८, भग० १६।२४ १७।२४ 7 ढंग, रीति 8 सज्जन या तरकीब 9 हाथियों का आहार (जो उन्हें मदोन्मत्त करने के लिए दिया जाता है) विधानसमादितदानवारिभिर्ने का० (यहाँ 'विधान' का अर्थ 'नियम' भी है) वि० ५।५१ 10 धन दौलत 11 पीड़ा, वेदना, सन्ताप, दुःख 12 शत्रुता का कार्य । सम० मत्, वत् बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष कल्प (वि०) वेदविधि के अनुरूप, या अनुकूल ।

विधानकम् [विधान + कन्] दुःख, कष्ट, पीड़ा ।

विधायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि + धा + ण्वुल्] 1. क्रमबद्ध करने वाला, व्यवस्थित करने वाला 2 बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला 3 रचना करने वाला 4 व्यवस्थित करने वाला, विहित करने वाला, निर्धारित करने वाला 5 अर्पण करने वाला, सौंपने वाला, (किसी को देख रेख में) हवाले करने वाला ।

विधि. [वि + धा + कि] 1 करना, अनुष्ठान, अभ्यास कृत्य, कर्म ब्रह्मज्यायाम्यसत्रविधिना योगनिद्रा गतस्य मे मुरा० ३।४१, योगविधि रघु० ८।२२, लेखाविधि—मा० १।३५ 2 प्रणाली, रीति, पद्धति, साधन, ढंग पञ्च० १।३७६ 3 नियम, समादेश, कोई विधि जो सबमें किसी बात को लागू करती है (यह 'विधि' सब नियम और परिसंख्या से भिन्न है) विधिरत्यन्तमप्राप्तौ ^ वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निषेध, कानून, वेदाज्ञा धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद' अर्थात् व्याख्यापरक उक्ति जिसमें आख्यान और दृष्टान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) श्रद्धा वित्त विधिश्चेति त्रितय तत्समागतम् शि० ७।२९, रघु० २।१६ 5 कोई धार्मिक कृत्य या संस्कार, धार्मिक रस्म, संस्कार—स चेत् स्वय कर्मसु धर्मचारिणा स्वमंतरायो भवति च्युतो विधि —रघु० ३।४५, १।३४ 6 व्यवहार, आचरण 7 दशा विक्रम० ४ 8 रचना, बनावट सामग्र्यविधौ कु० ३।२८, कान्यानी विधिषु विचित्रता विधातु° कि० ७।७ 9 सृष्टा 10 भाग्य, दैव, किस्मत विधौ वामारभे मम समुचितैवा परिणति मा० ४।४ 11. हाथियों का खाद्य पदार्थ 12 काल 13 डाक्टर, वैद्य 14. विष्णु । सम० ज्ञ (वि०) कर्मकाण्ड का ज्ञाता (ज्ञ) कर्मकाण्ड में निष्णात ब्राह्मण, कर्मकाण्डी, दृष्ट विहित (वि०) नियत, विहित, दृष्टम् नियमों की विविधता, विधि या समादेश की विभिन्नता, पूर्वकम् (अव्य०) नियमानुकूल, प्रयोग नियम का व्यवहार, शेष भाष्य का बल या प्रभाव, वधू (स्त्री०) सरस्वती का विशेषण, हीन (वि०) नियम शून्य, अनधिकृत, अनियमित ।

विधित्सा [वि + धा + सन् + अ + टाप्] 1 सम्पन्न करने की इच्छा 2 आयोजन, प्रयोजन इच्छा ।

विधित्सित (वि०) [वि + धा + सन् + क्त] किये जाने के लिये अभिप्रेत, तत् इरादा, अभिप्राय, आयोजन ।

विधु: [व्यध् + कु] 1 चन्द्रमा, सविता विधुरपि सविधुरति दिनति यामिन्य काव्य० १० 2 कपूर 3 पिशाच, दानव 4 पार्थिवलपरक आहुति 5 विष्णु का नाम 6 ब्रह्मा । सम० अस्त: चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, कृष्ण पक्ष का समय, दत्तर: (विदर भी) खड्ग, कटार, प्रिया रोहिणी नक्षत्र ।

विधुत दे० 'विधूत' ।

विधुति: (स्त्री०) [वि + धू + क्तिन्] हिलना, डोलना, अस्तव्यस्तता, अव्यवस्थाविधुर दो अदनादिधुतय धातु को स्वरूप भा० १।१ ।

विधुननम् [वि + धू + णिच् + ल्युट्, नुट्, पक्षे० ह्रस्व] 1 हिलना, झूमना, विक्षुब्ध होना 2 कंपकंपी अस्तव्यस्तता ।

विधुन्तुद: [व्यध् तुदति पीडयति- विधु + तुद् + अच्,

मुम्] राहु - विधुमिव विधुन्तुद दतदलनगलितामृत-धारम् वेणी० ४, नै० ४।७१, शि० २।६१ ।

विधुर (वि०) [विगता धूः कार्यभारो यस्मात् प्रा० ब०] 1 दुखी, विपद्ग्रस्त, कष्टग्रस्त, शोकाकुल, दयनीय—मा० २।३, ९।११, उत्तर० ३।१८, ६।४१, कि० ११।२६ 2. जिससे प्रेम करने वाला कोई न रहा हो, शोकग्रस्त, पत्नी या पति की विरहव्यथा से व्याकुल—मयि च विधुरे भाव काला प्रवृत्तिपराङ्मुख —विक्रम० ४।२०, विधुरा ज्वलनानिसर्जनान्नन् मा प्रापय पत्युरन्तिकम् –कु० ४।३२, शि० ६।२०, १२।८ 3 शून्य, वञ्चित, विरहित, मुक्त —सा वै कलत्र-विधुरो मधुरानभिज्ञो —भामि० २।५ 4 विरोधी, वैरी, शत्रु पंच० २।८१,—रः रडुवा,—रम् 1 खटका, भय, चिन्ता 2 पति या पत्नी से वियोग, प्रेमी या प्रेमिका द्वारा शोकाकुलता ।

विधुरा [विधुर+टाप्] दही जिसमें चीनी व मसाले डाले हुए हों ।

विधुवनम् [वि+धू+ल्युट्, कुटादित्वात् षत्वं] हिलना, थरथरी, कपकपी ।

विधूत (भू० क० कृ०) [वि+धू+क्त] 1 हिला हुआ, उथलपुथल हुआ, तरंगित 2 थरथराता हुआ 3 उखड़ा हुआ, मिटाया हुआ, हटाया हुआ 4 अस्थिर 5 परित्यक्त,—तम् किरकिरा, अभ्रक ।

विधूति (स्त्री०) **विधूनम्** [वि+धू+क्तिन्, वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुक्] हिलना, थरथरी, कपकपी विक्षोभ ।

विधृत (भू० क० कृ०) [वि+धृ+क्त] 1 पकड़ा हुआ थामा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2 वियुक्त, अलग-अलग रक्खा गया 3 धारण किया गया, कब्जे में किया गया 4 रोका गया, नियन्त्रित किया गया 5 सहारा दिया गया, प्ररक्षित, समर्थित (दे० वि पूर्वक धृ) —तम् 1 आदेश की अवहेलना 2 असन्तोष ।

विधेय (स० कृ०) [वि+धा+यत्] 1 किये जाने के योग्य, अनुष्ठेय 2 विहित या नियत किये जाने के योग्य 3 (क) आश्रित, निर्भर अब विविधिविधेय परिचय —मा० २।१३ (ख) अधीन, प्रभावित नियन्त्रित, दमन किया गया, परास्त किया गया (प्रायः समास में) निद्राविधेय नरदेवमैक्ष्यम् रघु० ७।६२, समाध्यमानस्नेहरसेनाभिसंधिना विधेयीकृतोऽपि मा० १, मा० २।६४, मुद्रा० ३।१, शि० ३।२०, रघु० १९।४ 4. आज्ञाकारी, शासनीय, अनुवर्ती, वश्य, —अविधेयेंद्रिय पुंसा मौरिवैति विधेयताम्—कि० ११।३३ 5. (व्या०) विधेय—(कर्ता के संबंध में कही गई बात) होने के योग्य—अत्र मिथ्याग्रहित्वं नानुवाद्यं अपि तु विधेयम् –काव्य ७, यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य,—कि० १६।६२ 2 प्रतिज्ञा या प्रस्थापना की उक्ति, यः सेवक, भृत्य । समः अविमर्शः रचनासंबंधी दोष जिससे विधेय आश्रित स्थिति का हो जाय या उसका अधूरा कथन किया जाय –अविमृष्ट प्राधान्येनानिर्दिष्टो विधेयांशो यत्र –काव्य० ७, उदा० उस स्थान पर देखो, आत्मन् (तृ०) विष्णु, ज्ञ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानता है—पंच० १।३३७, पक्ष 1. सम्पन्न किया जाने वाला उद्देश्य 2 कर्ता के संबंध में कही गई उक्ति विधेय ।

विध्वंसः [वि+ध्वंस+घञ्] 1 बरबादी, विनाश 2 अशुद्धता, अशुचि, नापसन्दगी 3 अपमान, अपराध ।

विध्वंसिन् (वि०) [वि+ध्वंस्+णिनि] बरबाद होने वाला, टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला ।

विध्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+ध्वंस्+क्त] 1 बरबाद हुआ, विनष्ट 2. इधर उधर बिखेरा हुआ छितराया हुआ 3 अस्पष्ट, धुंधला 4 ग्रहणग्रस्त ।

विनत (भू० क० कृ०) [वि+नम्+क्त] 1 झुका हुआ नवा हुआ 2 अवनत हुआ, लटकता हुआ, मुड़ा हुआ शि० ३।११ 3 दबा हुआ, अवसन्न 4 झुका हुआ, कुटिल, वक्र 5 विनीत, शिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्) ।

विनता [विनत+टाप्] 1 अरुण और गरुड़ की माता जो कश्यप की एक पत्नी थी - दे० गरुड़ 2 एक प्रकार की टोकरी । समः नंदन, सुत, सूनु गरुड़ या अरुण के विशेषण ।

विनति (स्त्री०) [वि+नम्+क्तिन्] 1 नमना, झुकना, नीचे को होना 2 विनय, विनम्रता 3 प्रार्थना ।

विनद [वि+नद्+अच्] 1 ध्वनि, कोलाहल 2 एक वृक्ष का नाम ।

विनमनम् [वि+नम्+ल्युट्] झुकना, नमना, सिर और कंधे झुका कर चलना ।

विनम्र (वि०) [वि+नम्+र] 1 झुका हुआ, झुक कर चलता हुआ कि० ४।३ 2. अवसन्न, दबा हुआ 3 विनयशील, विनीत ।

विनम्रकम् [विनम्र+कन्] 'तगर' वृक्ष का फूल ।

विनय (वि०) [वि+नी+अच्] 1 डाला हुआ, फेंका हुआ 2 गुप्त 3 अशिष्टाचारी, यः 1 निर्देश, अनुशासन, अनुदेश (अपने कर्तव्यक्षेत्र में) नैतिक प्रशिक्षण – रघु० १।२४, मा० १०।५ 2. औचित्य, शिष्टाचार सुशीलता - श० १।२१, 3 शिष्ट आचरण, सज्जनोचित व्यवहार, सच्चरित्र, अच्छा चलन—रघु० ६।७९, मा० १।१८ 4 नाबालिगता, विनयमाहारयेत्यत्र गोभिर्मे आर्यपुत्र गतेन विनयमाहारयेत्यत्र –उत्तर० १, विनयादानि विनयम्, तथापि नीचैर्विनयावदभ्यसन रघु० ३।३४, १०।७१, (यहां मल्लि० 'विनय' शब्द का

अर्थ 'इन्द्रियजय' बतलाता है जो हमारे मतानुसार अनावश्यक है) 3 श्रद्धा, शिष्टता, सौजन्य 6 सदाचरण 7 खींच लेना, दूर करना, हटाना —शि० १०। ४२ 8 जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है जितेन्द्रिय 9 व्यापारी, सौदागर। सम० -अवनत (वि०) झुका हुआ, विनम्र, -आहित (वि०) शासनीय, आज्ञाकारी अनुवर्ती,—काम् (वि०) मृदुभाषी, मिलनसार,—स्थ (वि०) विनयशील, शालीन।

विनयनम् (वि०+नी+ल्युट्] 1 हटना, दूर करना—मेघ० ५२ 2 शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुशासन।

विनाशनम् [वि+नश्+ल्युट्] नाश, हानि, विनाश, लोप,—म उस स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हो गई है - तु० मनु० २।२१।

विनष्ट (भू० क० कृ०) [वि+नश्+क्त] 1 ध्वस्त, उच्छिन्न, बर्बाद 2 भ्रान्त, लुप्त 3 बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट।

विनस (वि०) (स्त्री०-सा,-सी) [विगता नासिका यस्य, नासिकाशब्दस्य नसादेशः] बिना नाक का, नाकरहित —भट्टि० ५।८।

विना (अव्य०) [वि+ना] बर्गर, सिवाय (कर्म०, करण० या अप० के साथ) यथा ज्ञान विना रागो यथा मान विना नयं, यथा दान विना हस्ती तथा ज्ञान विना यति भामि० १।११९, पक्षैर्विना यथा भानि सद्जनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्य मानस विषयैर्विना १।११६, विना बाहुबलं हस्तिन्य क्रियना सचमात्र मुद्रा०७, शि० २।९, (किसी को छोड़ना, परित्याग करना, विरहित करना, वञ्चित करना—मदनेन विनाकृता रति कु० ४।२१, काम से विरहित)। सम० -उक्ति (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें बिना काव्य की दृष्टि से सुन्दर ढंग से प्रयुक्त होता है, -विनार्थसम्बन्ध एक विनोक्ति —रस०, द०, काव्य० १० भी।

विनाडि, विनाडिका [विगता नाडि नाडिका वा यस्याः] समय का एक माप जो घड़ी के साठवें भाग के बराबर होती है, एक पल या चौबीस सैकंड।

विनायक. [विशिष्टो नायक प्रा० स०] 1 (बाधाओं के) हटाने वाला 2 गणेश 3 बुद्ध धर्म का देवरूप अध्यापक 4 गरुड़ 5. रुकावट, अड़चन।

विनाशः [वि+नश्+घञ्] 1 ध्वंस, बर्बादी, भारी हानि, क्षय 2. हटाना। सम० उन्मुख (वि०) नष्ट होने वाला, मरने के लिए तैयार, -धर्मन्, -शिन् (वि०) क्षीण होने वाला, नष्ट होने वाला, क्षणभंगुर विषयेषु विनाशधर्मसु विनिवर्त्येष्वपि नि स्पृहाः मवत् रघु० ८।१०।

विनाशनम् [वि+नश्+णिच्+ल्युट्] विनाश, बर्बादी, उन्मूलन,—नः विनाशक, विनाशकर्ता।

विनाहः [वि+नह्+घञ्] कुएँ के मुंह का ढकना। तु० 'वीनाह'।

विनिक्षेपः [वि+नि+क्षिप्+घञ्] फेंक देना, भेज देना।

विनिग्रहः [वि+नि+ग्रह्+अप्] 1 नियन्त्रण करना, दमन करना, वश में करना अप० १३।७, १७।१६, मनु० ९।२६३ 2 पारस्परिक विरोध या अर्थान्तरन्यास।

विनिद्र (वि०) [विगता निद्रा यस्य—प्रा० ब०] 1 निद्रारहित, जागा हुआ (आल० से भी) रघु० ५।६५ 2 मुकुलित, खुला हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ —विनिद्रमन्दारस्रजाऽनुगुञ्जा कु० ५।८०।

विनिपातः [वि+नि+पत्+घञ्] 1 अध पतन, गिराव 2 भारी अवपात, संकट, बुराई, हानि, बर्बादी, विनाश —विवेकभ्रष्टाना भवति विनिपातः शतमुखः—भर्तृ० २।१० (यहाँ यह 'प्रथम अर्थ' भी प्रकट करता है) कि० २।३४ 3 क्षय, मृत्यु 4 नरक, नारकीय यन्त्रणा—शि० ५ 5 घटना, घटित होना 6 पीड़ा, दुःख 7 अनादर।

विनिमयः [वि+नि+मी+अप्] 1 अदला-बदली, वस्तु के बदले वस्तु का लेन-देन—कार्यं विनिमयेन—मालवि० १, सपदिविनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्—रघु० १।२६ 2 न्याय, धरोहर, अमानत।

विनिमेषः [वि+नि+मिष्+घञ्] (आखों का) झपकना।

विनियत (भू० क० कृ०) [वि+नि+यम्+क्त] नियन्त्रित, रोका गया, प्रतिबद्ध, विनियमित—यथा विनियताहार तथा विनियतज्ञाक् आदि में।

विनियमः [वि+नि+यम्+अप्] नियन्त्रण, प्रतिबन्ध, रोक।

विनियुक्त (भू० क० कृ०)[वि+नि+युज्+क्त] 1 अलग किया हुआ, ढीला, विच्छिन्न 2 अलग किया, नियुक्त 3. व्यवहृत 4. समादिष्ट, विहित।

विनियोगः [वि+नि+युज्+घञ्] 1. अलग होना, जुदा होना, विच्छिन्न होना 2 छोड़ना, त्यागना, तिलाञ्जलि देना 3 काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग, नियन्त्रण —अभूच्च विनियोगेषु साधनीयेषु वस्तुषु रघु० १७।६७, प्राणायामे विनियोगः 4 किसी कार्यभार पर लगाना, कार्याधिकार, कार्यभार—विनियोगप्रसादो हि किंकरेषु प्रभविष्णुषु—कु० ६।६२ 5 रुकावट, अड़चन।

विनिर्जयः [वि+निर्+जि+अच्] पूर्ण विजय।

विनिर्णयः [वि+निर्+नी+अच्] 1 पूर्ण रूप से निबटारा या निर्णय, पूरा फैसला 2 निश्चय 3 निश्चित नियम।

विनिर्बन्धः [वि+नि+र्+बन्ध्+घञ्] आग्रह, दृढ़ता।

विनिर्मित (भू० क० कृ०) [वि+निर्+मा+क्त] 1 बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ 2 बना हुआ, रचा हुआ।

विनिवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+वृत्+क्त] 1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2 ठहरा हुआ, थमा हुआ, रुका हुआ 3 (सेवा) मुक्त, फारिग।

विनिवृत्ति (स्त्री०)[वि+नि+वृत्+क्तिन्] 1 विश्रान्ति, रोकना, हटाना - शक्राभ्यसूयाविनिवृत्तये-रघु० ६।७४ 2 अन्त, अवसान, समाप्ति।

विनिश्चय: [वि+निस्+चि+अच्] 1 स्थिर करना, तय करना, निश्चय करना 2 फैसला, पक्का निश्चय।

विनिश्वास: [वि+नि+श्वस्+घञ्] कठिनाई से साँस लेना, आह भरना, आह (गहरी साँस)।

विनिष्पेष: [वि+निस्+पिष्+घञ्] चूर चूर करना कुचलना, पीस डालना।

विनिहत (भू० क० कृ०)[वि+नि+हन्+क्त] 1 आहत, घायल 2 मार डाला हुआ 3 पूरी तरह पराजित किया हुआ, —स. 1 कोई बड़ा या अनिवार्य संकट, जैसे कि भाग्य-दोष से या दैवात् आपदग्रस्त होना 2 अपशकुन, धूमकेतु।

विनीत (भू० क० कृ०) [वि+नी+क्त] 1 दूर ले जाया गया, हटाया हुआ 2 सुप्रशिक्षित, अनुशासित 3 संस्कृत, आचरणशील 4 सुशील, विनम्र, विनीत, सौम्य 5 शिष्ट, शालीन, सौजन्यपूर्ण 6 प्रेषित, विसर्जित 7 पालतू, सधाया गया 8 सीधा, सरल (वेशभूषा आदि) 9 आत्म संयमी, जितेन्द्रिय 10 सजा प्राप्त, दण्डित 11 शासनीय, शासन किये जाने के योग्य 12 प्रिय मनोहर (दे० वि पूर्वक नी), —त 1 सधाया हुआ घोड़ा 2 व्यापारी।

विनीतक [विनीत+कन्] 1 गाड़ी, सवारी (डोली आदि 2 ले जाने वाला, वाहक।

विनेतृ (पु०) [वि+नी+तृच्] 1 नेता, पथ प्रदर्शक 2 अध्यापक, शिक्षक रघु० ८।९१ 3 राजा, शासक 4 सजा देने वाला, दण्ड देने वाला अथ विनेता दृष्टानाम्—महावी० ३।४६, ४।१, रघु० ६।३९, १४।२३।

विनोद: [वि+नुद्+घञ्] 1 हटाना, दूर करना—श्रम विनोद 2 मनोरंजन, दिल बहलाव, कोई भी रोचक या रंजनकारी व्यवसाय प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदा मेघ० ८७, श० २।५ 3 खेल, क्रीडा, आमोद-प्रमोद 4 उत्सुकता, उत्कण्ठा 5 आनन्द, प्रसन्नता, परितुष्टि - विलपनविनोदोऽप्यसुलभ —उत्तर० ३।३०, जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् गीत० १२ 6 एक प्रकार का रतिबन्ध।

विनोदनम् [वि+नुद्+ल्युट्] 1 हटाना 2 मनोरंजन आदि -दे० 'विनोद'।

विन्दु (वि०) [विद्+उ, नुमागम] 1 मनीषी, बुद्धिमान् 2 उदार, —न्दुः बूँद, दे० 'बिन्दु'।

विन्ध्य [विदयानि करोति भयम्] एक पर्वत श्रेणी जो उत्तर भारत को दक्षिण से पृथक् करती है, यह सात कुल पर्वतों में से एक है, यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा है, दे० मनु० २।२१, (एक उपाख्यान के अनुसार विन्ध्य पर्वत को मेरु पर्वत हिमालय पहाड़) से ईर्ष्या हुई। अतः उसने सूर्य से मांग की कि जिस प्रकार वह मेरु के चारों ओर घूमता है, उस प्रकार उसे विन्ध्य के चारों ओर घूमना चाहिए, सूर्य ने विन्ध्य पर्वत की मांग ठुकरा दी। फलतः विन्ध्य पर्वत ने ऊपर को उठना आरम्भ किया जिससे कि सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग रोका जा सके। देवताओं में आतंक छा गया, उन्होंने अगस्त्य मुनि से सहायता मांगी। अगस्त्य विन्ध्य पर्वत के पास गया और उससे निवेदन किया कि जरा नीचे झुक जाओ जिससे कि मुझे दक्षिण में जाने का मार्ग मिले, और जब तक मैं वापिस न आऊँ, इसी प्रकार झुके रहो। विन्ध्य पर्वत ने इस बात को मान लिया (क्योंकि एक वर्णन के अनुसार अगस्त्य मुनि विन्ध्य पर्वत का गुरु माना जाता है) परन्तु अगस्त्य फिर दक्षिण से वापिस न लौटा, और विन्ध्य को मेरु जैसी उत्तुंगता न मिल सकी) 2 शिकारी। सम०-अटवी, विन्ध्य महावन, -कूट, कूटस्थ अगस्त्य ऋषि के विशेषण वासिन् पु०वैयाकरण व्याडि का विशेषण, (स्त्री०) दुर्गा का विशेषण।

विन्न (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1 ज्ञात 2 हासिल प्राप्त 3 विचार विमर्श किया हुआ, अनुमोदित 4 रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 5 विवाहित (दे० विद्)।

विन्हक [विन्ह+कन्] अगस्त्य का नाम।

विन्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+अस्+क्त] 1 रक्खा हुआ डाला हुआ 2 अङ्कित हुआ, फर्श जमाया हुआ या सजाया सजाया हुआ 3 स्थिर 4 क्रमबद्ध 5 समर्पित 6 उपस्थित किया गया, प्रस्तुत 7 प्रभावित किया हुआ निक्षिप्त।

विन्यास [वि+न्यस्+घञ्] 1 सौंपना, जमा करना 2 धरोहर 3. क्रमपूर्वक रखना, समजन, निपटारा, अक्षरविन्यास अक्षर उत्कीर्ण करना—प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधि —बाण०, किसी ग्रन्थ की रचना 4 संग्रह समवाय 6 स्थान, आधार।

विपक्वित्व (वि०) [वि+पच्+क्त्वा+मतुप्] 1 पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, (पूर्वजन्मों के परिणाम स्वरूप) पूर्णता को प्राप्त।

विपक्व (वि+पच्+क्त) 1 पूर्णरूप से पका हुआ, परिपक्व 2 विकसित, पूर्ण अवस्था को प्राप्त कि० ६।१६ 3 पकाया हुआ।

विपक्ष (वि०) [विरुद्ध पक्षो यस्य प्रा० ब०] वैरी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल, विरुद्ध, सं० 1 शत्रु, विरोधी, प्रतिरोधी- रघु० १७।७५, शि० ११।५९ 2 वह पक्ष जिसकी दूसरी के साथ प्रतिद्वन्द्विता चल रही हो -रघु० १०।२० 3 असद्भाव कि० १७।४३ 4 (तर्क में) नकारात्मक दृष्टान्त, विपक्षियों की ओर से दिया गया दृष्टान्त (अर्थात् वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो), निश्चितसाध्याभाववान् विपक्ष -तर्क०, मुद्रा० ५।१०।

विपञ्चिका, विपञ्ची [विपञ्ची+कन्+टाप्] 1 वीणा 2. खेल, क्रीडा, मनोरंजन।

विपण, विपणनम् [वि+पण्+घञ्, ल्युट् वा] 1 बिक्री मनु० ३।१५२ 2 छोटा व्यापार।

विपणि, णी (स्त्री०) [विपण्+इन्, विपणि+ङीष्] 1 बाजार, मण्डी, हाट, -हा हा नष्यति मन्मथस्य विपणि शोभातरङ्गाकर पञ्च० ८।३८, शि० ५।२४ 2 बिक्री के लिए रक्खा हुआ माल, सामान 3 वाणिज्य, व्यापार-मनु० १०।११६।

विपणिन् (पु०) [विपण+इनि] व्यापारी, सौदागर, दुकानदार शि० ५।२४।

विपत्ति (स्त्री०) [वि+पद्+क्तिन्] 1 संकट, दुर्भाग्य, अनर्थ आपत्पात, आफत सपत्नो च विपत्तौ च भ० शतक० 2 मृत्यु, विनाश अति रभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्य-मन्तर्या विपाक -मृच्छ० २।१९, रघु० १९।५६, वेणी० ३।५, त्रिसप्तकविपत्ति नलिनी रघु० ८।४५ 3 वेदना, यातना शि० (पु०) श्रेष्ठ पदाति, पैदल-सिपाही -शि० १५।१६।

विपथ [विरुद्ध पन्था--प्रा० ब०] बुरी सड़क, कुमार्ग। (या० तथा आल०)।

विपद् (स्त्री०) [वि+पद्+क्विप्] 1 संकट, दुर्भाग्य, आपदा, दुःख तत्प्रतिकारपरावा तु सेवा (सिद्धाना) विपद हि० १।२१० 2. मृत्यु त्रिदशवधूप्रिपद समर, रघु० १८।३५। सम०-उद्धरण,-उद्धार, मुसीबत से छुटकारा, विपत्ति से मुक्ति, काल: आवश्यकता का समय, संकट-काल, मुसीबत, मुक्त (वि०) अभागा, दुःखी।

विपदा - दे० 'विपद्'।

विपन्न (भू० क० कृ०) [विपद्+क्त] 1 मरा हुआ 2 मृत नष्ट 3 अभागा, कष्टग्रस्त, दुःखी, मुसीबत-मारा 4 क्षीण 5 अपराध, अशक्त (दे० वि पूर्वक पद्)।

विपरिणमनम्, विपरिणामः [वि+परि+नम्+ल्युट्, घञ् वा] 1. परिवर्तन, बदलना 2. रूपपरिवर्तन, रूपान्तरण।

विपरिवर्तनम् [वि+परि+वृत्+ल्युट्] इधर उधर मुड़ना, लुढ़कना।

विपरीत (वि०) [वि+परि+इ+क्त] 1. प्रतिवर्तित विपर्यस्त 2. प्रतिकूल विरोधी, प्रतिवर्ती, बाधा-रघु० २।५३ 3. अशुद्ध, नियमविरुद्ध 4 मिथ्या, असत्य -भामि० २।१७७ 5. अननुकूल उल्टा 6 अन्यायपूर्ण, उल्टे ढंग से अभिनय करने वाला 7 अहितकर, अशुभ, न कि प्रतिषेध, सं० 1 दुश्चरित्रा अनैतिक पत्नी 2 पुंश्चली स्त्री। सम० कार,-कारक-कारिन्, कृत् (वि०) कुमार्गी, विरुद्ध ढंग से कार्य करने वाला - शि० १४।६६.-चेतस्,-मति (वि०) जिसका दिमाग फिर गया हो, रतम् रतिक्रिया का उल्टा आसन, तु० 'पुरुषायित'।

विपर्णकः [विशिष्टानि पर्णानि यस्य प्रा० ब०] पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़।

विपर्यय [वि परि+इ+अच्] 1 वैपरीत्य, व्यतिक्रम, औंधापन, -आत्मना अयमविपर्ययोऽपि मे श्लाघ्य एव परमेष्ठिना स्वया रघु० ११।८६, ८।८९, नमस स्फुटनारम्भ रात्रेरिव विपर्यय (न भाजनम्) कि० ११।४४, विपर्यये तु श० ५, 'यदि अन्यथा हुआ' यदि इसके विपरीत हुआ' 2. (अभिप्राय, वेश आदि बदलना--कथमेतेषु मतिविपर्यय करिणो पकमिवाव-सीदति -कि० २।६, इसी प्रकार 'वेषविपर्यय' -पञ्च० १ 3 अभाव, अनस्तित्व समुद्दामाकृतिविपर्ययेऽपि कु० ७।४२, त्याग श्लाघाविपर्यय रघु० १।२२ 4 लोप, हानि निद्रा मनाविपर्यय कु० ६।४४, 'सुधबुध न रहना' 5 पूर्ण विनाश, ध्वस 6 विनिमय, अदल बदल 7 त्रुटि, उल्लंघन, भूल, कुछ का कुछ समझना 8 संकट, दुर्भाग्य, उल्टा भाग्य 9. शत्रुता, दुश्मनी।

विपर्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+परि+अस्+क्त] 1 परिवर्तित, व्युत्क्रान्त, उल्टा हुआ इति विपर्यस्त सप्रति लोकवृत्त उत्तर० १ 2. विरोधी, प्रतिकूल 3 भूल से वास्तविक समझा हुआ।

विपर्यास [वि+परि+इ+घञ्] 1 उलटापन, वैपरीत्य, दे० 'विपर्यय'।

विपर्यास [वि+परि+अस्+घञ्] 1 परिवर्तन, वैपरीत्य, व्यतिक्रम-विपर्यास याति घनविरलभावः क्षितिरहाम् उत्तर० २।२७ 2 विपरीतता, अननुकूलता यथा 'दैवविपर्यासात्' में 3 अन्त परिवर्तन, अदल-बदल -ग्रहणविपर्यासेनागता--मृच्छ० ८ 4. त्रुटि भूल।

विपलम् [विभक्त पलं येन—प्रा० ब०] क्षण, समय का अत्यंत छोटा प्रभाग (जो पल का साठवां या छठा भाग समझा जाता है)।

विपलायनम् [विशेषेण पलायनम्—प्रा० स०] दौड़ जाना, विभिन्न दिशाओं को भाग जाना।

विपश्चित् (वि०) [विप्रकृष्टं चिनोति चेतति चिन्तयति वा—वि+प्र+चित्+क्विप्, पृषो०] विद्वान्, बुद्धिमान्—विपश्चितो चिन्तयेत्न गुरुवो गुरुप्रियम्—रघु० ३।२९, पु०—एक विद्वान् या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि—भवति ते सम्यतमा विपश्चितां मनागपि वाचि निवेशयति ये—कि० १४।४।

विपाक: [वि+पच्+घञ्] १ खाना पकाना, भोजन बनाना 2 पाचनशक्ति 3 पकना, पक्वता, परिपक्वता, विकास (आल० भी)—अभी पृथग्भूतविभूतिदुर्लभा गता विपाकेन फलस्य शालयः—कि० ४।२६, वाचां विपाकों मम—भामि० ४।४२, 'मेरे परिपक्व पूर्ण विकसित अथवा गौरवान्वित शब्द' 4 परिणाम, फल, नतीजा, पूर्वजन्म अथवा इस जन्म के कर्मों का फल, अहो मे दारुणतरं कर्मणां विपाकः—का० ३५४, समैव जन्मान्तरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्य—रघु० १४।६२, मनु० ७।९९ महावी० ५।५६, 5 (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ४।६, (ख) असंभावित बात या घटनाव्यतिक्रम, भाग्य का पलटा खाना दुःख, संकट, उत्तर० ३।३, ४।१२ 6 कटिनाई, उलझन 7, रसास्वाद, स्वाद।

विपाटनम् [वि+पट्+णिच्+ल्युट्] १ खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर खोलना 2 उखाड़ना 3 अपहरण।

विपाठ (पु०) एक प्रकार का लंबा तीर।

विपाण्डु, विपाण्डुर (वि०) [विशेषेण पाण्डु, पाण्डुर प्रा० स०] विवर्ण, पीला, कि० ५।६, शि० ९।३, इसी प्रकार 'विपाटुर' शि० ४।५, रत्न० २।४।

विपादिका (स्त्री०) १ पैर का एक रोग, बिवाई 2 पहेलिका, पहेली।

विपाश्, विपाशा (स्त्री०) [पाशं विमोचयति वि+पश्+णिच्+क्विप्, वि+पश्+णिच्+अच्+टाप्] पंजाब की एक नदी, वर्तमान व्यास नदी।

विपिनम् [वेपन्ते जना अत्र वेप्+इनन्, ह्रस्व] जंगल, वन, वाटिका भ्रमद्भृङ्ग—वृन्दावन विपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् गीत० १, विपिनानि प्रकाशानि शक्तिमन्त्वाञ्चकार सः—रघु० ४।३१।

विपुल (वि०) [विशेषेण पोलति वि+पुल्+क] 1 विशाल, विस्तृत, आयत, विस्तीर्ण, चौड़ा, प्रशस्त विपुल नितम्बदेशे—मालवि० ३।७, शिरसि तनुविपुलश्च मध्यदेशे—मृच्छ० ३।२२, इसी प्रकार विपुलम् पृष्ठम्, विपुल कुक्षि 2 बहुत, पुष्कल, पर्याप्त, —कि० १८।१४ 3 गहरा, अगाध—महावी० १।२, रोमाञ्चित, पुलकित शि० १९।३, (यहाँ 'प्रथम' अर्थ भी घटता है, रत्नः 1 मेरु पर्वत 2 हिमालय पर्वत 3 समानतीय पुरुष। सम०—छाय (वि०) छायादार छायामय,—जघना विशाल कूल्हों वाली स्त्री—मति (वि०) मनीषी, प्रज्ञावान्,—रत्नः गन्ना, ईख।

विपुला [विपुल+टाप्] पृथ्वी।

विपूय [वि+पू+क्यप्] मूज' नामक घास।

विप्र [वप्+रन् पृषो० अत इत्वम्] 1 ब्राह्मण, उत्पत्ति के 'ब्राह्मण' के अन्तर्गत 2 मुनि, बुद्धिमान् पुरुष 3 पीपल का पेड़। सम०—कर्षिः—बृहस्पति के०, काष्ठम् लाल का पौधा, क्रिया पलाश का वृक्ष, ढाक, समाजः ब्राह्मणों का समाज या धर्मपरिषद् स्वम् ब्राह्मणों की संपत्ति।

विप्रकर्ष [वि—प्र—कृष्+घञ्] दूरी, फासला।

विप्रकार [वि—प्र+कृ+घञ्] 1 अपमान, कटु व्यवहार, दुर्वचन तिरस्कारयुक्त व्यवहार—कि० ३।५० 2 क्षति, अपराध 3 दुष्टता 4 विरोध, प्रतिक्रिया 5 प्रतिहिंसा।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1. इधर उधर फैलाया हुआ, तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ 2 ढीला, (बाल आदि) बिखरे हुए 3 प्रसारित बिछाया हुआ 4 चौड़ा, विस्तृत।

विप्रकृत (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1 आहत जिसे चोट पहुंचाई गई है, घायल 2 अपमानित जिसे गाली दी गई है जिसके साथ कटुव्यवहार किया गया है 3 जिसका विरोध किया गया है 4 प्रतिहिंसित जिससे बदला ले लिया गया है (दे० विप्र पूर्वक कृ)।

विप्रकृति (स्त्री०) 1 क्षति आघात 2 अपमान अपशब्द कटुव्यवहार 3 प्रतिहिंसा, बदला।

विप्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृष्+क्त] 1 खींच दिया गया, हटाया हुआ 2 फासले पर दूर का, दूरवर्ती 3 सुदीर्घ, लम्बा किया गया विस्तारित।

विप्रकृष्टक (वि०) [विप्रकृष्ट+कन्] दूरवर्ती, फासले पर।

विप्रतिकार [वि+प्रति+कृ+घञ्] 1 प्रतिक्रिया विरोध, वचनविरोध 2 प्रतिहिंसा।

विप्रतिपत्ति (स्त्री०) [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1 पारस्परिक असंगति, प्रतियोगिता, संघर्ष, झगड़ा विरोध (मतों का या हितों का) 2 असहमति, आपत्ति 3 हैरानी, घबड़ाहट 4 पारस्परिक संबन्ध परिचय, जानपहचान।

विप्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [वि+प्रति+पद्+क्त]

1 परस्परविरुद्ध, विरोधी, असङ्गत 2 चकराया हुआ, व्याकुल, हैरान 3 मुकाबले का, विवादग्रस्त 4 परस्परसंयुक्त या सम्बद्ध।

विप्रतिषेधः [वि + प्रति + सिध् + घञ्] 1 नियन्त्रण में रखना, वश में रखना 2. समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का संघर्ष —हरिविप्रतिषेध समाधत्ते विचक्षण शि० २।६, (तुल्यबलविरोधो विप्रतिषेध मल्लि०) 3 (व्या० में) दो नियमों का (जिनसे दो भिन्न नियमों के अनुसार व्याकरण की दो भिन्न प्रक्रियाएं सम्भव हों) संघर्ष, समानरूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर विप्रतिषेधे परं कार्यम् पा० १।४।२, इस पर दे० काशिका या महाभाष्य) 4. रोक, बन्धन।

विप्रति (ती) सार [वि + प्रति + सृ + घञ्, पक्षे ङीष्] 1 पश्चात्ताप, शि० १०।७० 2 क्रोध, रोष, गुस्सा 3 दुष्टता अनिष्ट।

विप्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + दुष् + क्त] दूषित, बिगड़ा, मलिन 2 भ्रष्ट।

विप्रनष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + नश् + क्त] 1 खोया हुआ, लुप्त 2 व्यर्थ, निरर्थक।

विप्रमुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + मुच् + क्त] 1 स्वतन्त्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, खुला छोड़ा हुआ 2 गालों का निशान बनाया गया, नखक्षत से दागा गया 3 अहंकार पाया हुआ।

विप्रयुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + युज् + क्त] 1 पृथक् किया हुआ, वियुक्त, विच्छिन्न 2 अलग हुआ, अनुपस्थित मेघ० ३ 3 मुक्त किया हुआ, रिक्त किया हुआ वञ्चित, विरहित (विना समास के)।

विप्रयोग [वि + प्र + युज् + घञ्] 1 अनैक्य, पार्थक्य, वियोग अलगाव, जैसा कि प्रिय से 2 विशेषकर प्रेमियों का विच्छेद—मा भूदेव प्रभवति चिरं दुःखमेषा विधुरा विप्रयोग मेघ० ११५, १० रघु० ८।२८, १४।६९ 3 कलह अनबनी।

विप्रलब्ध (भू० क० कृ०) [वि + प्र + लभ् + क्त] 1 धोखा दिया गया, ठगा गया 2 निराश किया गया 3 चोट पहुंचाया गया, क्षतिग्रस्त, आया वह स्त्री जो अपने प्रियतम को नियत स्थान पर न पाकर निराश हो गई हो (काव्यग्रन्थों में वर्णित एक नायिका) —सा० द० ११८ पर दी गई परिभाषा प्रियं कृत्वापि सङ्केतं यस्या नायाति सन्निधिम्। विप्रलब्धेति सा ज्ञेया निस्तान्तमवमानिता॥

विप्रलम्भ [वि + प्र + लभ् + घञ्] 1 धोखा, छल, चालाकी कि० ११।२७ 2 विशेषकर मिथ्या उक्तियों या झूठी प्रतिज्ञाओं से छलना 3 कलह, असहमति 4. अनैक्य, पार्थक्य, अलगाव 5 प्रेमियों का विछोह - शृणुयुः प्रियजनस्य कातरं विप्रलम्भपरिशङ्किनो वचः रघु० १९।२८, देवी० २।१२ 6 (अल० में) विप्रलम्भ शृंगार (इसमें नायक नायिका के विरह-जन्य सन्ताप आदि का वर्णन किया जाता है) शृंगार के दो मुख्य भेदों में से एक, (विप० सम्भोग) - अपर (विप्रलम्भ) अभिलाष विरहेर्ष्या प्रवासशापहेतुक इति पञ्चविध काव्य० ४, यूनोरयुक्तयोर्भावो युक्तयोर्वाऽपि भिन्न। अभीष्टालिङ्गनादीनामनवाप्तौ प्रहृष्यते। विप्रलम्भे स विज्ञेय उज्ज्वलनीलमणि, तु० सा० द० २१२, तथा आगे।

विप्रलाप [वि + प्र + लप् + घञ्] 1 व्यर्थ या निरर्थक बात, बकवास, अनाप-शनाप निम्बास 2 पारस्परिक वचनविरोध, विरोधी उक्तियां 3 झगड़ा, तू-तू मैं-मैं 4 अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना, वचन पूरा न करना।

विप्रलय [विशेषेण प्रलय प्रा० स०] पूर्ण विनाश या विघटन, सर्वनाश, विश्वाकल्पेन मरुता मेघाना यूथ-साम्प्रति, इहाणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलय कृत - उत्तर० ६।६।

विप्रलुप्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + लुप् + क्त] 1 अपहृत, छीना हुआ 2 बाधायुक्त, हस्तक्षेप किया गया।

विप्रलोभिन् (पु०) [वि + लुभ् + णिच् + णिनि] दो दृश्यों के नाम, अशोक और किंशुक।

विप्रवास [वि - प्र - वस् + घञ्] परदेश में रहना, विदेश में निवास करना (अपनी जन्मभूमि से दूर रहना)।

विप्रश्निका [विशेषेण प्रश्नो यस्या वि प्रश्न + कप् + टाप्, इत्वम्] स्त्री ज्योतिषी, जो भाग्य की बातें बतलाये।

विप्रहीण (वि०) [वि - प्र + हा + क] वञ्चित, विरहित।

विप्रिय (वि०) [वि प्री क, इडभाव] अरुचिकर, जो पसन्द न हो, जो सुखद न हो, जो स्वादिष्ट न हो, यम् अप्रसाद, अनिष्ट, अरुचिकर कार्य मनसापि न विप्रिय मया कृतपूर्वं तव किं जहामि माम् रघु० ८।५२, कु० ४।७, कि० ९।३९, शि० १५।११।

विप्रुष् (स्त्री०) [वि - प्रुष् + क्विप्] 1 (पानी या किसी अन्य द्रव की) बूंद सतापं नवजलविप्रुषो गृहीत्वा शि० ८।४० स्वेदविप्रुष २।१८ 2. चिह्न, बिन्दु, धब्बा।

विप्रोषित (भू० क० कृ०) [वि - प्र + वस् + क्त] 1 परदेश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2 निर्वासित, देशनिकालाप्राप्त रघु० १२।११। सम० भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हुआ है।

विप्लव [वि + प्लु + अप्] 1. बहना, इधर-उधर टहलना, विभिन्न दिशाओं में बहना 2 विरोध, वैपरीत्य,

3 हैरानी, व्याकुलता 4 हुल्लड, हंगामा, हल्ला-गुल्ला मालवि० १ 5 निर्जनीकरण, वह संग्राम जिसमें लूटपाट खूब हो, शत्रु से भय 6 बलात् लूटपाट 7 हानि, विनाश—सत्त्वविप्लवात् रघु० ८।४१ 8 आपदा, आपत्काल अथवा मम भाग्यविप्लवात् —रघु० ८।४७ 9 दर्पण पर जमी हुई धूल या जंग अपवर्जितविप्लवे शुचौ मनिरादर्श इवाभिदृश्यते —कि० २।२६, (यहाँ 'विप्लव' का प्रमाणबाध' अर्थात् तर्काभाव भी है) 10 अतिक्रमण, उल्लंघन कि० १।१३ 11 अनिष्ट, संकट 12 पाप दुष्टता, पापमयता।

विप्लवः [वि+प्लु+घञ्] 1 जलप्लावन, बाढ़ 2 उपद्रव 3 घोड़े की सरपट दौड़।

विप्लुत (भू० क० कृ०) [वि+प्लु+क्त] 1 जो इधर उधर बह गया हो 2 डूबा हुआ निमग्न, बाढ़ग्रस्त, किनारों से बाहर होकर बहता हुआ 3 हैरान, परेशान 4 विध्वस्त, उजाड़ा, हुआ 5 लुप्त ओझल 6 अपमानित, अनादृत 7 बर्बाद 8 तिरोहित, विरूपित 9 दुश्चरित्र, लम्पट, दुराचारी, लुच्चा 10 विपरीत उलटा 11 मिथ्या, झूठा उत्तर० ४।१८।

विप्लुष् दे० 'विप्रुष्'।

विफल (वि०) [विगतं फलं यस्य प्रा० ब०] 1 फलरहित अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य अलाभकर—मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनं गीत० ७, जगता वा विफलेन किं फलम् रघु०, शि० ९।६, कु० ७।६६ मुद्रा० ६।८ 2 बेकार, निरर्थक।

विबंध [वि+बन्ध्+घञ्] 1 कोष्ठबद्धता 2 रुकावट।

विबाधा [विशिष्टा बाधा—प्रा० स०] पीड़ा, वेदना, सताना, मानसिक कष्ट।

विबुद्ध [भू० क० कृ०] [वि+बुध्+क्त] 1 उठाया हुआ, जगाया हुआ, जागरूक शि० २ 2 फुलाया हुआ, मजरीयुक्त, पूरा खिला हुआ 3 चतुर, कुशल।

विबुध [विशेषेण बुध्यते बुध्+क] 1 बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष, ऋषि, मुनि सभ्य सोऽनपदीन आ इत्याहुर्विबुधा जना पंच० २।४३ 2 सुर, देवता, -अभूत्सुधा विबुधसख परन्तप भट्टि० १।१, गोप्तारं न विमोक्तारं महेश्वरं विबुधा सुभा० 3 चाँद। सम०- अधिपति, इन्द्र, ईश्वरः इन्द्र का विशेषण, द्विष्, शत्रु राक्षस विक्रम १।३।

विबुधालयः [वि+बुध्+आलच्] 1 विद्वान् पुरुष 2 अध्यापक।

विबोध [विबुध्+घञ्] 1 जागरण, जागते रहना 2 प्रत्यक्षज्ञान, खोजना 3 बुद्धि मतिभा 4 जाग जाना, सचेत होना, अलं० में ३३ या ३४ व्यभिचारी भावों में से एक, -निद्रानाशोत्तरं जायमानो बोधो विबोधः—रस०।

विब्बोक दे० 'विब्बोक'।

विभक्त (भू० क० कृ०) [वि+भज्+क्त] 1 बाँटा हुआ, विभाजित की हुई संपत्ति आदि) 2 बँटा हुआ, स्वार्थ की दृष्टि से अलग अन्य किया हुआ, 'विभक्ता भ्रातरः' में 3 बुद्धा किया हुआ, अलग किया हुआ, भिन्न किया हुआ,—शि० १।३ 4 विभिन्न, विविध 5 सेवानिवृत्त, एकान्तवासी 6 नियमित, समंजित 7 विभूषित (दे० वि पूर्वक भज्)। -भूः कार्तिकेय।

विभक्ति (स्त्री०) [वि+भज्+क्तिन्] 1 बाँटना, प्रभाग, विभाजन बँटवारा 2 पार्थक्य, स्वार्थ में अलगाव 3 हिस्सा, दायभाग 4 (व्या० में) संज्ञा शब्दों के साथ लगा कारक या कारक चिह्न।

विभग [वि+भज्+घञ्] 1 टूटना, अस्थिभंग 2 उहराना, अवरोध, पड़ाव भग० २।२६ 3 झुकना, (भौंहों आदि का) सिकोड़ना भ्रूविभंगकुटिल च वीक्षितं—रघु० १९।१७ 4 शिकन, झुर्री 5 पंख, सीपी रघु० ६।३ 6 फूट पड़ना, प्रकटीकरण -विविधविकार विभंगयं गीत० ११।

विभव [वि+भू+अच्] 1 दौलत, धन, सम्पत्ति—अपनयतु विभवस्य मत्तमस्तु नाम भर्तृ० ५।८, रघु० ८।६० 2 ताकत शक्ति, पराक्रम, महत्त्व ऐश्वर्यान्मम मनोरथस्य विक्रम०२, वाग्मिभव मा० १।२० रघु० १।९, कि० ५।२१ 3 उच्च अवस्था, पद प्रतिष्ठा 4 महत्ता 5 मोक्ष, मुक्ति।

विभा [वि+भा+क्विप्] 1 प्रकाश, आभा 2 प्रकाश, किरण 3 सौन्दर्य। सम०- कर सूर्य -वन्त वत्स लक्ष्मीं तेजःपुञ्जौ विभान्ति कः—काव्य० १० 2 मदार का पौधा 3 चन्द्रमा, -भुज् 1 सूर्य 2 अग्नि रजनि त्यजसि नन्वेनं विभावसौ- -कु० ४।३४, रघु० ३।२० १०।८३, भग० ७।९ 3 चन्द्रमा 4 एक प्रकार का हार।

विभाग [वि+भज्+घञ्] 1 प्रभाग विभाजन भाग (दायभाग आदि का) —समधत्त विभागं स्वान् पनु० ९।१२०, २१०, याज्ञ० २।११४ 2 हार भाग 3 भाग या हिस्सा 4 बाँटना, अलग अलग करना, पार्थक्य (न्या० में यह एक गुण माना जाता है) -कु० २४, भग० ३।२९ 5 अंश 6 अनेभाग। सम०-कल्पना हिस्सों का नियत करना—याज्ञ० २।१४०

-धर्म दायभाग की विधि, बटवारे का कानून,-पत्रिका विभाजन की दस्तावेज, भाज् (पु०) पहले से बटी हुई सम्पत्ति का हिस्सेदार याज्ञ० २।११२।

विभाजनम् [वि+भज्+णिच्+ल्युट्] बटवारा, विभक्त करना।

विभाज्य (वि०) [वि+भज्+ण्यत्] 1 अंशों में विभक्त किये जाने के योग्य, बाँटे जाने के योग्य 2 विभाजनीय।

विभातम् [वि + भा + क्त] प्रभात, पौ फटना ।

विभाव: [वि + भू + घञ्] मन या शरीर को किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा, रस-भाव की उद्बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक (दूसरे दो हैं—अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव) रत्यादि-उद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययो —सा० द० ६१, (इसके मुख्य अवान्तर भेद हैं—आलम्बन और उद्दीपक—दे० आलम्बन) 2 मित्र, परिचित ।

विभावनम्,—ना [वि + भू + णिच् + ल्युट्] 1 स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय, विवेक, निर्णय 2. विचार विमर्श, गवेषणा, परीक्षा 3 प्रत्यय, कल्पना,—ना और (दे० आल) एक अलंकार जिसमें बिना कारण के कार्यों का होना वर्णित होता है—क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना - काव्य० १० ।

विभावरी [वि + भा + वनिप् —ङीप्, र आदेश] 1 रात—अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला विभावरी कथय कथं भविष्यति -मालवि० ४।१५, ५।७, कु० ५।४४ 2 हल्दी 3 कुटनी 4 वेश्या 5 रात्राचारिणी स्त्री 6 सुन्दर स्त्री, बाजूबंद ।

विभाविन (भू० क० कृ०) [वि + भू + णिच् क्त] 1 प्रकटीकृत, स्पष्ट रूप से दर्शनीय किया हुआ 2 ज्ञात जाना हुआ, निश्चित किया हुआ 3 देखा हुआ, माना हुआ 4 निर्णीत, विवेचन किया हुआ 5 अनुमित सकेतित 6 सिद्ध, सकलम्भन । सम० एकदेश (वि०) 'जिसके साथ एक भाग का पता लगाया गया' अर्थात् जो (विवादास्पद विषय के) एक भाग के सबध मे आपत्तिजनक पाया गया विभाविनैकदेशेन देय यदभियुज्यते - विक्रम० ४।१७ ।

विभाषा [वि + भाष् + अ + टाप्] 1 इच्छित वस्तु, विकल्प 2 नियम की वैकल्पिकता ।

विभासा [वि + भास् + अ + टाप्] प्रकाश कान्ति, आभा ।

विभिन्न (भू० क० कृ०) [वि + भिद् + क्त] 1 तोड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ बोया हुआ, घायल 3 दूर हटाया हुआ, भगाया हुआ 4 तितर बितर किया हुआ, परेशान व्याकुल, 5 इधर उधर डाला हुआ 6 निराश किया हुआ 7 विविध, नानाप्रकार के 8 मिश्रित मिलाया हुआ, चितकबरा, रगबिरगा -विभिन्नवर्णा मणिदण्डमण्डिता मुखेन्दुना रश्मय इव स्फुरन्त्या शि० ४।१४, (दे० वि पूर्वक भिद्), —ः शिव का नाम ।

विभीत, तक, विभीतक., कक, } [विशेषेण भीयते- वि + भी + क्त, विभीतक + ङीप्, विभीत + टाप्] एक वृक्ष का नाम, बहेड़ा, (त्रिफला में से एक) बहेड़े का पेड़ ।

विभीषक (वि०) [विशेषेण भीषयते- वि + भी + णिच् + ण्वुल् वुक् आगम] डराने वाला, त्रास या भय देने वाला ।

विभीषिका [वि + भी + णिच् + ण्वुल् + टाप्, वुकागम, ह्रस्व च] 1 त्रास 2 डराने के साधन, हौवा (चिड़ियों को डराने के लिए फूस का पुतला, डू डू) —यदि ते सति सन्देह केयमन्या विभीषिका—उत्तर० ४।२९ ।

विभु (वि०) (स्त्री०—भ्वी,—भ्वी) [वि + भू + डु] 1. ताकतवर, शक्तिशाली 2 प्रमुख, सर्वोपरि 3 योग्य, समर्थ (तुमुन्नन्त के साथ)—(वनु) पूरयितु प्रभवति विभव शिखरम्भणिरिव —कि० ५।४३ 4. आत्मसयमी, धीर, जितेन्द्रिय—कमपरमवश न विप्रकुर्यु विभुमपि न यदमी स्पृशन्ति भावा—कु० ६।९५ 5 (न्या० में) नित्य०, सर्वव्यापक सर्वगत,—भुः 1. अन्तरिक्ष 2 आकाश 3 काल 4 आत्मा 5. स्वामी, शासक, प्रभु, राजा 6 सर्वोपरि शासक मनु० ५।१४, १०।१२ 7 सेवक 8 ब्रह्मा 9 शिव—कु० ७।३१ 10 विष्णु ।

विभुग्न (वि०) [वि + भुज् + क्त] वक्र, झुका हुआ, टेढ़ा, कुटिल ।

विभूति: (स्त्री०) [वि + भू + क्तिन्] 1 ताकत, शक्ति, बलप्पन —शि० १४।५, कु० २।६१ 2 समृद्धि, कल्याण 3 प्रतिष्ठा, उच्च पद 4 धन, ऐश्वर्य, महिमा, कान्ति अहो राजाधिराजमन्त्रिणो विभूति - मुद्रा० ३, रघु० ८।३६ 5 दौलत धन—रघु० ४।१९, ६।७६, १७।४३ 6. अतिमानव शक्ति (इसमें आठ शक्तियाँ सम्मिलित हैं अणिमन्, लघिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन्, ईशिता, वशिता और कामावसायिता) -कु० २।११ 7 कुबेर की राख ।

विभूषणम् [वि + भूष् + ल्युट्] अलंकार, सजावट,—विशेषत: सर्वविदा समाजे विभूषण मौनमपण्डितानाम् भर्तृ० २।७, रघु० १६।८० ।

विभूषा [वि + भूष् + अ + टाप्] अलंकार, सजावट,—सर्वेषां समसलिलोद्गमो विभूषा— कि० ७।५, रघु० ४।५४ 2 प्रकाश, कान्ति 3 सौंदर्य, आभा ।

विभूषित (भू० क० कृ०) [वि + भूष् + णिच् + क्त] अलंकृत, सुशोभित, सुभूषित ।

विभृत (भू० क० कृ०) [वि + भृ + क्त] सभाला गया, सहारा दिया गया, सजाया हुआ, सवारित या सपोषित ।

विभ्रंश: [वि + भ्रंस् + घञ्] 1 गिरना, टूट पड़ना 2. ह्रास, क्षय, बर्बादी 3 चट्टान ।

विभ्रंसित (भू० क० कृ०) [वि + भ्रंस् + क्त] 1. बहकाया गया, फुसलाया गया 2 वंचित, विरहित ।

विभ्रम: [वि + भ्रम् + घञ्] 1 इधर उधर घूमना

भूलना 2 भ्रमण, फेरा, इधर उधर लुढ़कना 3 त्रुटि, भूल, गलती 4 उतावली, अव्यवस्था, हड़बड़ी, घबड़ाहट विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अस्थिरता —चित्तभ्रमस्थनवस्त्रान मुक्ताहारश्च भ्रमो भवेत् 5 (अतः) हड़बड़ी के कारण अलंकारादिक का उलटा-सीधा पहनना —विभ्रमस्तस्वरमाजकाले भूषास्थान विपर्ययः, दे० कु० १।४ तदुपरि मल्लि० 6 रसरेलिबाँ, कामकेलि, आमोद-प्रमोद मा० १।२६, ९।३८ 7 सौन्दर्य, लालित्य, लावण्य- मै० १५।२५, उत्तर० १।२०, ३४, ६।४, शि० ६।४६, ७।१५, १६।६४ 8 सन्देह, आशंका 9. सनक, वहम।

विभ्रमता [वि+भ्रम्+अन्+टाप्] बुद्धापा।

विभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1 गिरा हुआ, पड़ा हुआ, अलग किया हुआ 2 क्षीण, लुप्त, पतित, बर्बाद 3 ओझल, अन्तर्हित।

विभ्राज् (वि०) [वि+भ्राज्+क्विप्] चमकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान।

विभ्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] 1 चक्कर खाया हुआ 2 विक्षुब्ध, व्याकुल, अव्यवस्थित, हड़बड़ाया हुआ 3 भ्रम में पड़ा हुआ, भूल करने वाला। सम० नयन (वि०) विलोलदृष्टि, चंचल आंखों वाला, शील (वि०) 1 जिसका चित्त अव्यवस्थित हो 2 नशे में चूर, मतवाला, क 1 बन्दर 2 सूर्य-मंडल या चन्द्रमंडल।

विभ्रान्तिः (स्त्री०) [वि+भ्रम्+क्तिन्] 1 चक्कर, फेरा 2 हड़बड़ी, त्रुटि, गड़बड़ी 3 उतावली, जल्दबाजी।

विभ्रम (भू० क० कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] 1 असहमत, असम्मत, भिन्न मत रखने वाला 2 विषम, असंगत 3 अनादृत, अपमानित, उपेक्षित, त न शत्रु।

विभ्रमति (वि०) [विरुद्धा विगता वा मतिर्यस्य प्रा० ब०] मूर्ख, प्रज्ञाशून्य, मूढ,—तिः (स्त्री०) 1 असम्मति, असहमति, मतविभिन्नता 2 अरुचि 3 जड़ता।

विभत्सरम् (वि०) [विगतः मत्सरो यस्य —प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित भग० ४।२२।

विभद (वि०) [विगतः मदो यस्य प्रा० ब०] 1. नशे से मुक्त 2 हर्षशून्य, ईर्ष्यालु।

विभनस्क, विभनस्क (वि०) [विरुद्धं मनो यस्य, पक्षे कप्, प्रा० ब०] 1 उदास, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न, म्लान - उत्तर० १।७ 2 अनमना 3 हैरान, परेशान 4. अप्रसन्न 5 जिसका मन या भावना बदली हुई हो।

विभन्यु (वि०) [विगतः मन्युर्यस्य प्रा० ब०] 1 क्रोध से मुक्त 2 शोक से मुक्त।

विभयः [वि+भी+अच्] विनिमय, अदला-बदली।

विभर्दः [वि+मृद्+घञ्] 1 चूरा करना, कुचलना, चकनाचूर करना 2. मसलना, रगड़ना —विमर्दः सुरभिर्बकुलावलिका सल्यहम् मालवि० ३, रघु० ५।६५ 3 स्पर्श 4. उबटन आदि शरीर पर मलना 5 संग्राम, युद्ध, लड़ाई, भिड़न्त विमर्दसमो भूमिमवतस्थे —उत्तर० ५ 6 विनाश, उजाड़, —रघु० ६।६२ 7 सूर्य और चन्द्रमा का मेल 8 ग्रहण।

विभर्दक [वि+मृद्+ण्वुल्] 1 पीसने वाला, चूरा करने वाला, चकनाचूर करने वाला 2 गन्ध द्रव्यों की पिसाई 3 ग्रहण 4 सूर्य और चन्द्र का मेल।

विभर्दनम्,—ना [वि+मृद्+ल्युट्] 1 चूरा करना, कुचलना रौंदना 2 आपस में मसलना; रगड़ना 3 विनाश, हत्या 4 गंध द्रव्यों की पिसाई 5 ग्रहण।

विभर्शः [वि+मृश्+घञ्] 1 विचार विनिमय, सोच विचार, परीक्षण, चर्चा 2 तर्कना 3 विपरीत निर्णय 4 संकोच, संदेह 5 पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी छाप, दे० वासना।

विमर्श [वि+मृश्+घञ्] 1 विचार, विचारविनिमय 2 असहिष्णुता 3 असन्तोष, अप्रसन्नता 4 (नाटक में) नाटकीय कथा वस्तु की सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रेमाख्यान के सफल क्रम में किसी अदृष्ट दुर्घटना के कारण परिवर्तन सा० द० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है —यत्र मुख्यफलापाय उद्भिन्नो गर्भतोऽथिकः, आपाद्यः सातरायश्च स विमर्श इति स्मृतः दे० मुद्रा० ४।३, (इन सब अर्थों के लिए बहुधा विमर्श लिखा जाता है)।

विमल वि० [विगतो मलो यस्मात् —प्रा० ब०] 1 पवित्र, निर्मल, मलरहित, स्वच्छ (आल० से भी) 2 साफ, शुभ्र, स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विमलं जलम् 3 श्वेत, उज्ज्वल, —लम् 1 चांदी की कटोरी 2 तालक सेलखड़ी। सम० आदित्य देवता के लिए चढ़ावा, —मणि स्फटिक।

विमांसः,—सम् [विरुद्धं मांसम्—प्रा० स०] अस्वच्छ मांस (जैसे कुत्ते का)।

विमातृ (स्त्री०) [विरुद्धा माता—प्रा० स०] सौतेली मां। सम०—जः सौतेली मां का बेटा।

विमानः,—नम् [वि+मन्+घञ्, वि+मा+ल्युट् वा] 1 अनादर, अपमान 2 माप 3. गुम्बज, व्योमयान (आकाश में घूमने वाला) यद विमानेन निर्याति मान रघु० १३।१, ७।५१, १२।१०४, कु० २।४५ ७।४०, विक्रम० ४।४३, कि० ७।११ 4 यान, सवारी रघु० १६।६८ 5 बजरा, शानदार कमरा या सभाभवन—रघु० १७।९ 6 (सात मंजिलों का) महल —नेत्रा नीता सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी मेघ० ६९ 7 घोड़ा। सम०—चारिन्, यान (वि०) गुब्बारे में बैठ कर घूमने वाला, राजः 1 श्रेष्ठ व्योमयान - उत्तर० ३ 2. व्योमयान का सचालक।

विमानना [वि+मन्+णिच्+युच्+टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग विमानना सुभ्रु कुतः पितुर्गृहे कु० ५।४३, अभवत्प्रायस्य विमानना क्वचित् —रघु० ८।८ ।

विमानित (भू० क० कृ०) [वि+मन्+णिच्+क्त] अनादृत, निरादृत ।

विमार्ग [विरुद्धो मार्ग —प्रा० स०] 1 खराब सड़क 2 कुपथ, दुराचरण, अनैतिकता 3 छाड़ । सम० —गा अनती स्त्री विमार्गगायाश्च रुचिं स्वकाये —भामि० १।१२५,—गामिन्, प्रस्थित (वि०) असदाचारी—शा० ५।८ ।

विमार्गणम् [वि+मार्ग्+ल्युट्] ढूंढना, खोजना, तलाश करना ।

विमिश्र, विमिश्रित (वि०) [वि+मिश्र्+अच् पक्ष का] मिला हुआ सम्पृक्त, गड्डमड्ड किया हुआ (करण० के साथ या समास में) —पतिविमिश्रा नार्यश्च—महा०, दयायोरिह का न का न तस्मिन् क्रीडाविमिश्रो रस मीन० ५ ।

विमुक्त (भू० क० कृ०) [वि+मुच्+क्त] 1 आजाद किया हुआ, रिहा किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ, 2 परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, पीछे रहा हुआ 3 स्वतन्त्र 4 जोर से फेंका गया, (धनुष से) दागा गया 5 अभिशप्त । सम० कण्ठ (वि०) क्रन्दन करने वाला, फूट फूट कर रोने वाला ।

विमुक्ति (स्त्री०) [वि+मुच्+क्तिन्] 1 रिहाई, छुटकारा 2 वियोग 3. मोक्ष, उद्धार ।

विमुख (वि०) (स्त्री०—खी) [विरुद्धमननुकूलं मुखं यस्य प्रा० ब०] 1 मुंह मोड़े हुए 2 पराङ्मुख, अनिच्छुक विरुद्ध —न क्षुद्रोऽपि प्रथममुपकुर्वापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुख किं पुनर्यस्त्वाकर्थे मेघ० १७, २, (रघुणा) मन परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति रघु० १६।८, १९।४७ 3 शत्रु-हि० १।१२० 4 रहित, शून्य (समास में) कठमाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम् रघु० ८।६७ ।

विमुग्ध (वि०) [वि+मुह्+क्त] अत्यधिक भकचाया हुआ, व्याकुल ।

विमुद्ध (वि०) [विगता मुद्रा यस्य प्रा० ब०] 1 बिना मोहर लगा 2 खुला हुआ, मुकुलित, खिला हुआ ।

विमुह (भू० क० कृ०) [वि+मुह्+क्त] 1 अचकाया हुआ, व्याकुल 2 बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, फुसलाया हुआ 3 जड़ ।

विमृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+मृज्+क्त] 1. मला हुआ, पोंछा गया, साफ किया गया 2 सोचा हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तन किया हुआ ।

विमोक्ष [वि+मोक्ष्+घञ्] 1. रिहाई, मुक्ति, छुटकारा 2 गोली दागना, निशाना लगाना 3. मुक्ति ।

विमोक्षणम्,-क्षा [वि+मोक्ष्+ल्युट्] 1. छुटकारा, रिहाई मुक्त करना 2 गोली दागना 3 त्यागना, छोड़ना, परित्यक्त करना 4 (अण्डे) देना ।

विमोचनम् [वि+मुच्+ल्युट्] 1 खोल देना, जूआ हटा लेना 2 रिहाई, स्वतन्त्रता 3 छुटकारा, मोक्ष ।

विमोहन (वि०) (स्त्री० ना,-नी) [वि+मुह्+णिच्+ल्युट्] 1 रिझाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना, —न, सम्मोहन का एक प्रभाग, मन्त्र फुसलाना, लुभाना, आकृष्ट करना ।

विम्ब, मम् दे० 'बिम्ब' ।

विम्बक दे० 'बिम्बक' ।

विम्बट [विम्ब्+अट्+अच्, शाक० परुषपम्] राई का पौधा ।

विम्बिका दे० 'बिम्बिका' ।

विम्बा,-म्बी (स्त्री) [विम्ब्+अच्+टाप्, ङीष् वा] एक देश का नाम ।

विम्बित दे० 'बिम्बित' ।

विम्बु (पु०) सुपारी का पेड़ ।

वियत् (नपु०) [वियच्छति न विरमति- वि+यम्+क्विप्, म लोप, तुकागम] आकाश, अन्तरिक्ष, निरभ्रव्योम —पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतर स्तोकमुर्व्यां प्रयाति- शा० १।७, रघु० १३।४० । सम० —गंगा 1 स्वर्गीय गंगा 2 आकाशगंगा,—चारिन् (वियच्चारिन्) (पु०) चील,—भूतिः (स्त्री०) अन्धकार, मणिः (वियन्मणि) सूर्य ।

वियति (पु०) पक्षी ।

वियम [वि+यम्+अप्] 1 प्रतिबंध, रोक, नियन्त्रण 2 दुःख, पीड़ा, कष्ट 3 विराम, पड़ाव ।

वियात (वि०) [विरुद्ध निंदां यातं—प्रा० स०] 1 भ्रष्ट 2 साहसी, निर्लज्ज, ढीठ ।

वियाम दे० 'बियम' ।

वियुक्त (भू० क० कृ०) [वि+युज्+क्त] 1 विच्छिन्न, पृथक्कृत, अलग किया हुआ 2 जुदा किया हुआ, परित्यक्त 3. मुक्त, वंचित (करण० के साथ या समास में) ।

वियुत (भू० क० कृ०) [वि+यु+क्त] वियुक्त, विरहित, तज्जिहीर्षा वियुतम० ४।१८ ।

वियोग [वि+युज्+घञ्] 1 जुदाई, विच्छेद,—अयमेकपदे नया वियोगः सहसा घोषलता मृदुः सहो मे—विक्रम० ४।३, स्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि समवस्था दुरतेः श० ४, सकले मृदामरति हि सङ्गियोग कि० ५।४१, रघु० १२।१०, शि० १२।६३ 2. अभाव, हानि 3 व्यवकलन ।

वियोगिन् (वि०) [वियोग+इनि] वियुक्त—(पु०) चकवाक ।

वियोगिनी [वियोगिन्+ङीष्] 1 अपने पति या प्रेमी से

वियुक्त स्त्री,—गृहनिःक्षसितैः कविभिर्नीवी विरणेपीवरा ता विद्योभिनीति—भामि० ४।१५ 2 एक छन्द या वृत्त का नाम (दे० परि०१)।

विद्योजित (भू० क० कृ०) [वि+युज्+णिच्+क्त] 1. अलगाया हुआ 2 जुदा किया हुआ, वञ्चित।

विद्योनिः,–नी [विविधा विरुद्धा वा योनिः प्रा० स०] 1. नाना जन्म 2 पशुओं का गर्भाशय (मनु० १२।७७ पर कुल्लू०) 3 हीन या कलंकपूर्ण जन्म।

विरक्त (भू० क० कृ०) [वि–रञ्ज+क्त] 1 बहुत लाल, लालिमा से युक्त -रघु० १३।६४ 2 वैराग्य 3 अनुरागहीन, स्नेहशून्य, अप्रसन्न–भर्तृ० २।२ 4 सांसारिक राग या लालसा से मुक्त, उदासीन 5 आवेश पूर्ण।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि+रञ्ज्–क्तिन्] 1 चित्तवृत्ति में परिवर्तन, असन्तोष, असन्तृप्ति, स्नेहशून्यता 2 अलगाव 3 उदासीनता, इच्छा का अभाव, सांसारिक लालसा या आसक्तियों से मुक्ति।

विरचनम्–ना [वि+रच्+ल्युट्] 1 क्रम व्यवस्थापन –शि० ५।२१ 2 रचना करना, संरचना 3 निर्माण करना, सृजन करना 4 साहित्य-रचना करना, संकलन करना।

विरचित (भू० क० कृ०) [वि+रच्+क्त] 1 क्रम से रक्खा गया, बनाया गया, निर्मित, तैयार किया गया 2 घटित किया हुआ, संरचना किया हुआ 3 लिखा हुआ, साहित्य-सृजन किया हुआ 4 काट-छांट किया गया, सजाया गया, परिष्कृत किया गया, बनाव-सिंगार किया गया 5 धारण किया गया, पहनाया गया 6. जड़ा गया, बैठाया गया।

विरज (वि०) [विगतं रजो यस्मात् प्रा० ब०] जिस पर धूल या गर्द न हो, जिसमें राग न हो,—जः विष्णु का विशेषण।

विरजस्, विरजस्क (वि०) [विगतं रजः यस्मात् यस्य वा प्रा० ब०] 1 जिस पर धूल न पड़ी हो, राग रहित शि० २०।८० 2 जिसका रजोधर्म आना बंद हो गया हो।

विरजस्का [विरजस्+कप्+टाप्] वह स्त्री जिसको रजोधर्म आना बन्द हो गया हो।

विरञ्चः, विञ्चिः [वि+रच्+अच्, इन् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरटः (पु०) एक प्रकार का काला अगुरु, अगर का वृक्ष।

विरणम् [विशिष्टो रणो मूलं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का सुगन्धित घास, तु० वीरण।

विरत [वि+रम्+क्त] 1 बन्द किया हुआ, रुका हुआ (अपा० के साथ) 2 विश्रान्त, थका हुआ, ठहरा हुआ 3. समाप्त, उपसंहृत, समाप्ति पर विरत मेघमृतुनिवसतः रघु० ८।६६।

विरतिः (स्त्री०) [वि+रम्+क्तिन्] 1 बन्द करना, ठहरना, रोकना 2 विश्राम, अवसान, यति 3 सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता भर्तृ० ३।७९।

विरम [वि+रम्+अप्] 1 रात्रि, याम 2 सूर्य का छिपना।

विरल (वि०) [वि+रा+कलच्] 1 छिद्रों से युक्त, जिसके बीच में अन्तराल हों, पतला, जो सघन न हो सटा हुआ न हो विपर्यास यातो घनविरलभाव स्तितिरुहाम् - उत्तर० २।२७, भवति विरलभक्ति-म्लान पुष्पापहार रघु० ५।७४ 2 पतला, कोमल 3 ढीला, विस्तृत 4 निराला, दुर्लभ अनूठा,—पद्य० १।२१ 5 कम, थोड़ा (संख्या या परिमाण सम्बन्धी) नरस्य किमपि काव्यज्ञा जानाति विरला भुवि–भामि० १।११७, विरला सज्जनाः शि० २।३ 6 दूरवर्ती, दूरस्थ, लम्बा (समय या दूरी आदि),—लम् दही, जमाया हुआ दूध, लम् (अव्य०) कठिनाई से, कभी कभी, जो बहुतायत में न हो, नहीं के बराबर। सम० जानुक (वि०) घना पढ़ी, जिसके घुटने में अधिक दूरी हो, - द्रुघ्ना, एक प्रकार की लपसी।

विरस (वि०) [विगतं रसो यस्य प्रा० ब०] 1 स्वाद-रहित, फीका, नीरस 2 अप्रिय, अरुचिकर, पीड़ाकर–लावण्यकान्ति विरसान् यामान् विरसान् वनान्तरे विरसम्–भामि० १।७ 3 कटु, निष्ठुर,—सः पीड़ा।

विरह [वि–रह्+अच्] 1 विच्छेद वियोग 2 विशेषतः प्रेमियों की जुदाई—सा विरहे तव दीना गीत० ४, लक्ष्यसि विरह पुरा न मेऽद्य नयन० ८ १२ २१, ८५, ८७ 3 अनुपस्थिति 4 अभाव 5 उज्झना, परित्याग, छोड़ देना। सम० अग्नि वियोगाग्नि,—अवस्था वियोगदशा,—आर्त,—उत्कण्ठ, उत्सुक (वि०) वियोग का कष्ट भोगने वाला विछोह के कारण दुःखी,—उत्कण्ठिता वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के वियोग से दुःखी है काव्यग्रन्थों में वर्णित एक नायिका—दे० सा० द० १२१ ज्वरः वियोग की वेदना या ज्वर।

विरहिणी [विरहिन्+ङीप्] 1 अपने पति या प्रेमी से वियुक्त स्त्री 2 मजदूरी, भाड़ा।

विरहित (भू० क० कृ०) [वि+रह्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2 वियुक्त 3 अकेला एकाकी 4 हीन, शून्य, मुक्त (बहुधा समास में)।

विरहिन् (वि०) (स्त्री० विरहिणी) [विरह+इनि] अनुपस्थित, अपनी प्रेयसी या प्रेमी से वियुक्त होने वाला,—तरयति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते—गीत० १।

विरागः [वि+रञ्ज्+घञ्] 1 रंग का बदलना 2 वृत्तिपरिवर्तन, स्नेहाभाव, असन्तृप्ति असन्तोष,–

विरागकारणेषु परिहृतेषु मुद्रा० १ 3 अरुचि, इच्छा न होना 4 सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता, राग से मुक्ति।

विराज् (पु०) [वि+राज्+क्विप्] 1 सौन्दर्य, आभा 2 क्षत्रिय जाति का पुरुष 3 ब्रह्मा की प्रथम सन्तान, तु० मनु० १।३२, तस्माद् विराडजायत ऋग्० १०। ९०।५ (यहाँ 'विराज्' को पुरुष से उत्पन्न बतलाया गया है) 4 शरीर, स्त्री० एक वैदिक वृत्त या छन्द का नाम।

विराज द० 'विराज'।

विराजित (भू० क० कृ०) [वि+राज्+क्त] 1 देदीप्यमान, प्रकाशित 2 प्रदर्शित, प्रकटीकृत।

विराट् [विशेषेण राजते अत्र] 1 भारतवर्ष के एक जिले का नाम 2 मत्स्य देश के एक राजा का नाम [पाण्डव लोग ने एक वर्ष तक इस राजा की सेवा में छद्मवेश में रहकर अपने अज्ञात वास का समय बिताया। यह उनके निर्वासन का तेरहवाँ वर्ष था। विराटराज की कन्या उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ। उत्तरा परीक्षित् की माता थी। परीक्षित् ने हस्तिनापुर में युधिष्ठिर के बाद राज्य की बागडोर सम्भाली। महा० इस एक प्रकार का घटिया हीरा, पर्वन् (नपु०) महाभारत का चौथा पर्व।

विराटक [विराट+कन्] घटिया प्रकार का हीरा, हीरे का घटिया प्रकार।

विराणिम (पु०) [वि+रण्+णिच्+डिमच्] हर्ष।

विराद्ध (भू० क० कृ०) [वि+राध्+क्त] 1 विरुद्ध गया हुआ 2 क्रोधित, अभिशप्त, घृणापूर्वक व्यवहृत उद्धरण प्रायः वि पूर्वक राध् के नीचे।

विराध [वि+राध्+घञ्] 1 विरोध 2 सताना, सन्तप्त करना, छेड़खानी 3 राम के द्वारा मारा गया एक बलवान् राक्षस।

विराधनम् [वि+राध्+ल्युट्] 1 विरोध करना 2 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, पीड़ित करना 3 पीड़ा देना।

विराम [वि+रम्+घञ्] 1 रुकना, बन्द करना 2 अन्त समाप्ति, उपसंहार रजनिरियं दानीमियमपि गति विरामम् गीत० ५, उत्तर० ३।१६ भर्तृ० १।३४ 3 यति, ठहराव 4 आराम का रुकना या थमना मृच्छ० ३।५ 5 एक छोटी तिरछी लकीर जो व्यञ्जन के नीचे लगाई जाती है, प्रायः वाक्य के अन्त में, पूर्णविराम 6 विष्णु का नाम।

विराल द० 'बिडाल'।

विराव [वि+रु+घञ्] कोलाहल, शोर, ध्वनि—आलोकशब्द वयसा विरावैः —रघु० २।९, १६।३१।

विराविन् (वि०) [विराव+इनि] 1 रोने वाला, चिल्लाने वाला, शोर मचाने वाला 2. विलाप करने वाला,—नी 1 रोने या चिल्लाने वाली 2 मादा।

विरिञ्चः, विरिञ्चनः [वि+रिच्+अच्, ल्युट् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरिञ्चिः [वि+रिच्+इन्, मुम्] 1 ब्रह्मा—विक्रम० १।४६, नै० ३।७४, शि० ९।९ 2 विष्णु 3 शिव।

विरिक्त (भू० क० कृ०) [वि+रिच्+क्त] 1 टूटे टुकड़े टुकड़े हुआ 2 विनष्ट 3 झुका हुआ 4 ठूँठा।

विरुत (भू० क० कृ०) [वि+रु+क्त] 1 चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ 2 गुञ्जायमान, चीत्कारपूर्ण,—तम् 1 चिल्लाना, चीखना, दहाड़ना आदि 2 चिल्लाहट, ध्वनि, शोर, कोलाहल, घोष 3 गाना भिनभिनाना, कूजना, गुञ्जारना परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिबोधितोऽयमिदृशम् श० ४।९।

विरुद, —दम् (पु०, नपु०) 1 घोषणा करना 2 जोर से चिल्लाना 3 स्तुतिपरक कविता गद्यपद्यमयी राजस्तुतिविरुदमुच्यते मा० द० ५३०, नदन्ति मदशालिन परितोषन्ति वाग्विदज्ञा, पठन्ति विरुदावली महिनमस्थिरे वन्दिन —रत्न०।

विरुदितम् [विरुद+इतच्] जोरजोर से रोना चीखना, विलाप करना उत्तर० ३।३० (पाठान्तर)।

विरुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+रुध्+क्त] 1 बाधित, रोका गया विरोध किया गया, रुकावट डाली गई 2 घेरा हुआ, कैद में बन्द किया हुआ 3 विपरीत, घेरा डाला हुआ, लोकेबन्दी की गई 4. विपरीत, प्रतिकूल, असंगत बेमेल, असम्बद्ध 5 प्रतिकूल, विरोधी, गुणों में विपरीत 6 परस्पर विरोधी, वैपरीत्य को सिद्ध करने वाला (जैसा कि तर्क० में 'हेतु') उदा० शब्दो नित्य कृतकत्वात् तर्क० 7 विरोधी, उलटा, एकतापूर्ण 8 अननुकूल, अनुपयुक्त, 9 प्रतिषिद्ध, वर्जित (भोजन आदि) 10 अशुद्ध, अनुचित, —द्धम् 1 विरोध, वैपरीत्य, असंगति 2 वैमनस्य, असद्भावना।

विरुद्धकरणम् [वि+रुध्+ल्युट्] 1 रुकावट करना 2 रक्तस्राव को रोकने का कार्य करने वाली (औषधि) 3 कलंक, निन्दा 4 अभिशाप, कोसना।

विरुध (भू० क० कृ०) [वि+रुह्+क्त] 1. उपजाया हुआ, अंकुरित फूटा हुआ मृच्छ० १।९ 2. उत्पन्नप्रेरित, उपजाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ 3. उगा हुआ, अभिवर्धित 4 मुकुलित, खिला हुआ 5 चढ़ा हुआ, सवारी की हुई।

विरूप (वि०) स्त्री० पा, पी) [विरुद्धं रूपं यस्य प्रा० ब०] 1 विकृतित, कुरूप, अवयवकल, बदसूरत पञ्च० १।१४३ 2 अयाकृतिक, विकटाकार 3 विलक्षण, विविधरूपों वाला, —पम् 1. कुत्सित

रूप, कुरूपता 2. रूप, स्वभाव या चरित्र की विभिन्नता। सम० अक्ष (वि०) भद्दी आंखों वाला बभूविरूपाक्षम् कु० ५।७२, (क्षः) शिव (विषम संख्या की आँखें होने के कारण) -वृथा दग्धे मनसिज जीवयन्ति दुर्वधे या, विरूपाक्षस्य अयिगीस्ता स्तुवे वामलोचना -विक्र० १।२, कु० ६।२१,—करणम् 1. बदसूरत बनाना 2 क्षति पहुँचाना,—चक्षुस् (पु) शिव का विशेषण, रूप (वि०) भद्दा, बेडौल।

विरूपिन् (वि०) (स्त्री० णी) [विरूप अस्मिन् अस्य वा-विरूप+इनि] भद्दा, कुरूप, बदसूरत।

विरेकः [वि+रिच्+घञ्] 1 मलाशय को रिक्त करना, साफ करना 2 विरेचक, जुलाब की दवा।

विरेचनम् दे० 'विरेक'।

विरेचित (वि०) [वि+रिच्+णिच्+क्त] पेट साफ किया गया, पेट निर्मल और रिक्त किया गया।

विरेफः [विशिष्टो रेफो अस्य वि+रिफ्+अच्] 1 नदी, सरिता 2 'र' अक्षर का अभाव।

विरोकः,—कम् [वि+रुच्+घञ्, अच् वा] दिन, सूराख, दरार, कः प्रकाश की किरण।

विरोचनः [विशेषेण रोचते वि+रुच्+ल्युट्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 अग्नि 4 प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता का नाम। सम०—सुत. बलि का विशेषण।

विरोधः [वि० रुध्+घञ्] 1 प्रतिरोध, रुकावट, विघ्न 2 नाकेबंदी, घेरा, आवरण 3 प्रतिबन्ध, रोक 4 असंगति, असंबद्धता, परस्परविरोध 5. अर्थ विरोध वैषम्य 6 शत्रुता, दुश्मनी -विरोधो विश्रान्त -उत्तर० ६।११, पंच० १।३३२, रघु० १०।१३ 7 कलह, असहमति 8 संकट, दुर्भाग्य 9 (अलं० में) प्रतीयमान असंगति जो केवल शाब्दिक हो, तथा संदर्भ को ठीक से अन्वित करने पर स्पष्ट हो जाय, इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले शब्द (जो वस्तुतः वैसे न न हों) सम्मिलित रहते हैं, वस्तुओं का ऐसा वर्णन करना जो मिली हुई प्रतीत हो, परन्तु वस्तुतः हों भिन्न भिन्न, (इस अलंकार का व्यास और सुबन्धु ने बहुत उपयोग किया है -पुष्पवन्त्यपि पत्रिण्या, कृष्णोऽप्यसुदर्शन., भरतोऽपि शत्रुघ्न. आदि उदाहरण प्रसिद्ध हैं) मम्मट ने इसकी परिभाषा दी है -विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः -काव्य० १०, इस अलंकार का नाम विरोधाभास भी है। सम०—उक्तिः (स्त्री०), वचनम् परस्परविरोध, विरोध, कारिन् (वि०) झगड़ा करने वाला, घ्न् (वि०) विरोधी (पु०) शत्रु।

विरोधनम् [वि+रुध्+ल्युट्] 1 बाधा डालना, विघ्न डालना, रुकावट डालना 2 घेरा डालना, नाकेबंदी करना 3 प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4. परस्परविरोध, असंगति।

विरोधिन् (वि०) (स्त्री० णी) [वि+रुध्+णिनि] 1 मुकाबला करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2 घेरा डालने वाला 3 परस्पर विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, असंगत. तपोवनं शं० १ 4. विद्वेषी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल विरोधिसत्त्वोज्झित-पूर्वमत्सरम् कु० ५।१७ 5 झगड़ालू—पु० शत्रु शि० १६।६८।

विरोप (ह्) अव्य [वि+रुह्+ल्युट्] (घाव आदि का) भरना व्रणविरोपणं नेत्रम् शं० ४।१६।

विलः (तुदा० पर० विलति) 1 ढकना, छिपाना 2 तोड़ना, काटना 3 (चुरा० उभ० वेलयति—ते) फैंकना, धकेलना।

विलम् दे० 'बिल'।

विलक्ष (वि०) [विलक्ष्+अच्] 1 जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2 व्याकुल, विह्वल 3 आश्चर्यान्वित, अचंभे में पड़ा हुआ 4 लज्जित, शर्मिंदा, अशान्त गोत्रेषु स्खलितस्तदा भवति च क्रोडाविलक्षः स्त्रियम् -शं० ६।५, अनोखा, अनूठा।

विलक्षण (वि०) [विगतं लक्षणं यस्य-प्रा० ब०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2 भिन्न, इतर 3 अनोखा, असाधारण, अनूठा 4 अशुभ लक्षणों से युक्त अव्य व्यर्थ या निरर्थक स्थिति।

विलक्षित (भू० क० कृ०) [वि, लक्ष्+क्त] 1 विश्रुत, प्रत्यक्षीकृत, दृष्ट, आविष्कृत 2 विवेचनीय 3. उद्विग्न, घबराया हुआ, विह्वल, व्याकुल 4 प्रकुपित नारायः।

विलग्न (वि०) [वि+लस्ज्+क्त] 1 चिपटा हुआ, चिपका हुआ, अवलम्बित, लगा हुआ शं० ७।२५, शि० ९।२० 2 डाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निर्दिष्ट कु० ७।५० 3 विगत, बीता हुआ (समय आदि) 4. पतला, छरहरा, सुकुमार —नयनं सा वेदिविलग्न-मध्या कु० १।३९, विक्रम० ४।३७, अव्य कमर 2. कूल्हा 3. तारामण्डल का उदित होना।

विलंघनम् [वि+लघ्+ल्युट्] 1 अतिक्रमण करना, लांघ जाना 2 अपराध, अतिक्रमण, क्षति।

विलंघित (भू० क० कृ०) [वि+लघ्+क्त] 1 पार या परे गया हुआ, दूर गया हुआ 2. अतिक्रान्त 3. आगे गया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. पराश्त, पराजित।

विलज्ज (वि०) [विगता लज्जा यस्य प्रा० ब०] निर्लज्ज, बेशर्म।

विलपनम् [वि+लप्+ल्युट्] 1. बातें करना 2 निकम्मी बातें करना, बहकबहाना, बड़बड़ाना 3. विलाप करना, रोना-धोना,—विलपनविनोदोऽप्यसुलभः—उत्तर० ३।३० 4 चीखट, तलछट।

विलपितम् [वि+लप्+क्त] 1 विलाप करना, क्रन्दन 2 रोदन।

विलम्बः [वि+लम्ब्+घञ्] 1. लटकना, दोलायमानता 2 धीमापन, देरी, दीर्घसूत्रता।

विलम्बनम् [वि+लम्ब्+ल्युट्] 1 लटकना, निर्भरता 2 देरी, टालमटोल न कुरु निनम्बिनि गमनविलम्बनम् —गीत० ५, या तस्मुखे विफलं विलम्बनवती रम्योऽभिसारक्षण —तदेव।

विलम्बिका [वि+लम्ब्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] कलंकी, कोष्ठबद्धता।

विलम्बित (भू० क० कृ०) [वि+लम्ब्+क्त] 1 लटकना, निर्भरता 2 लम्बमान, लटकाने वाला 3. आलिप्त, सुसम्बद्ध मन्द, दीर्घसूत्री, आलसी 5 मन्थर, धीमा (संगीत में काल आदि), द० वि पूर्वक 'लम्ब्', —लम्ब् देरी।

विलम्बिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [विलम्ब+णिनि] 1 नीचे लटकता हुआ, निर्भर, लटकन—नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घना: ऋ० ५।१२, अनम्बुविलम्बिपयोधरोपरुद्धा शि० ४।२१, ५९, कु० १।१६, कि० ५।६, रघु० १६।८४, १८।२५, मृच्छ० ५।१३ 2 देर करने वाला, टालमटोल करने वाला, मन्द रहने वाला भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा गीत० ६।

विलम्भ [वि+लभ्+घञ्, मुम्] 1 उद्धारना 2 भेंट, दान।

विलय [वि+ली+अच्] 1 विघटन, पिघलना 2 विनाश, मृत्यु, अन्त उत्तर० ७ 3 शरीर का विघटन या विनाश, (विलय गम् घुल जाना, अन्त हो जाना, समाप्त हो जाना दिवसाऽनुभिश्चमयत्खड्गिलक्ष्यम् —शि० ९।१७।

विलयनम् वि+ली+ल्युट्] 1 घुल जाना, पिघल जाना, गल या विघटन 2 अंग लग जाना मूर्छा आ जाना 3 हटाना, दूर करना 4 पतला करना 5. पतला करने वाली औषधि।

विलसत् (शब्दरूप वि०) (स्त्री० —न्ती) [वि+लस्+शतृ] 1 चमकने वाला, प्रकाशमान, उज्ज्वल 2 चमचमाने वाला, लहरा कौंधने वाला 3 लहराने वाला 4 क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय।

विलसनम् [वि+लस्+ल्युट्] 1 चमकना, चमचमाना चमकना, जगमगाना 2 क्रीडा करना, इठलाना, चोचले करना।

विलसित (भू० क० कृ०) [वि+लस्+क्त] 1 चमकता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ 2 प्रकट हुआ, प्रकटीकृत 3 क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी,—क्त 1. चमकना, जगमगाना 2 चमक, दमक—रोचीभूता मुहुरमुत्र हिरण्मयीना भासस्तडिल्लसितानि विडम्बयन्ति कि० ५।४६, मेघ० ८१, विक्रम० ४ 3 दर्शन, प्रकटीकरण- जैसा कि अज्ञातविलसितम् आदि में 4 क्रीडा, खेल, रंगरेली, सानुराग हावभाव।

विलापः [वि+लप्+घञ्] क्रन्दन, शोक करना, रोदन, कराहना—कक्षान्तरीणां पुनरुच्चकै विलापाचार्यक सरै. रघु० १२।७८।

विलासः [वि+लस्+घञ्] 1 विलास 2. उपकरण, यन्त्र।

विलासः [वि+लस्+घञ्] 1 क्रीडा, खेल, मनोरंजन 2. केलिपरक मनोविनोद, दिलबहलावा, प्रसन्नता जैसा कि 'विलासमेखलाम् —रघु० ८।६४ में, इसी प्रकार विलासकाननम्, विलासमन्दिरम् आदि 3. ललित अभिनय, रंगरेली, अनुराग, कामुकता, सुन्दर चाल, रतिक्रीडक कोई भी स्त्रियोचित हावभाव ऋ० २।२, कु० ५।१३, शि० ९।२६ 4 लालित्य सौन्दर्य, चारुता; लावण्य मा० २।६ 5 चमक, दमक।

विलासनम् [विलस्+णिच्+ल्युट्] 1. क्रीडा, खेल मनोरंजन 2 कामुकता, रंगरेली।

विलासवती [विलास+मतुप्+ङीप्, मस्य व] स्वेच्छाचारिणी या कामुक स्त्री - रघु० ९।४८, ऋतु० १।१२।

विलासिका [वि+लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] प्रेमलीला से पूर्ण एकाङ्की नाटक, इसकी परिभाषा सा० द० ५५२ पर इस प्रकार दी है शृङ्गारबहुलैकाङ्का दशलास्याङ्गसंयुता, विदूषकविटाढ्या च पीठमर्दैन भूषिता। हीना गर्भविमर्शाभ्यां सन्धिभ्यां हीनसंधिका। स्वल्पवृत्ता मुनेपथ्या विख्याता सा विलासिका॥

विलासिन् (वि०) (स्त्री० नी) [विलास+इनि] क्रीडा युक्त, लीलापर, रंगरेली में व्यस्त, कामुक, चोचले करने वाला, रघु० ६।१४, ५० 1 विषयी, क्रीडाशक्त, रतिकुशल, उपमानमभूद्विलासिनां करण यत्नव कान्तिमताम् कु० ४।५ 2 अग्नि 3 चन्द्रमा 4 साप 5. कृष्ण या विष्णु का विशेषण 6 शिव का विशेषण 7. कामदेव का विशेषण।

विलासिनी [विलासिन्+ङीप्] 1. रमणी 2 हावभाव करने वाली स्त्री,—हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनी विलसति केलिपरे गीत० १, कु० ७।५९, शि० ८।७०, रघु० ९।१७ 3 स्वेच्छाचारिणी, वेश्या।

विलिखनम् [वि+लिख्+ल्युट्] खुरचना, कुरेदना, खींचना।

विलिप्त (भू० क० कृ०) [वि+लिप्+क्त] लीपा हुआ, पोता हुआ, चुपड़ा हुआ

विलीन (भू० क० कृ०) [वि+ली+क्त] 1 चिपकने वाला, चिपटा हुआ, अनुषक्त 2 अड्डे पर बैठा हुआ, बसा हुआ उतरा हुआ 3 सलग्न, सम्पर्की 4 पिघला हुआ, घुला हुआ, गलाया हुआ 5 अन्तर्हित, ओझल 6 मृत, नष्ट।

विलुंचनम् [वि+लुच्+ल्युट्] फाड डालना, छीलना।

विलुंठनम् [वि+लुठ्+ल्युट्] लूटना, डाका डालना।

विलुप्त (भू० क० कृ०) [वि+लुप्+क्त] 1 तोडा हुआ, फाडा हुआ—पञ्च० २।२ 2 पकडा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3 लूटा हुआ, डाका डाला हुआ 4 विनष्ट, बर्बाद 5 विगाडा हुआ, तोडा-फोडा हुआ।

विलुंपकः [वि+लुप्+ण्वुल्, मुम्] चोर, लुटेरा, अपहर्ता।

विलुलित (भू० क० कृ०) [वि+लुल्+क्त] 1 इधर उधर घूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ, लुढका हुआ, थरथराता हुआ 2 क्रमरहित, क्रमशून्य गलित कुसुमदलविलुलितकेशा—गीत० ७।

विलून (भू० क० कृ०) [वि+लू+क्त] कटा हुआ, काट डाला हुआ, चीरा हुआ, काट कर टुकडे टुकडे किया हुआ।

विलेखनम् [वि+लिख्+णिच्+ल्युट्] 1 खुरचना, कुरेदना, गूदना 2 खोदना 3 उखाडना।

विलेप (वि+लिप्+घञ्) 1 उबटन, मलहम 2 चूना 3 लिपाई-पुताई।

विलेपनम् [वि+लिप्+ल्युट्] 1 लीपना, पोतना 2 मलहम, उबटन, कोई भी शरीर पर लेप करने के योग्य सुगन्धित पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) आस्यतां सुरभिकुसुमसूपविलेपनादीनि का०।

विलेपती [विलेपन+ङीष्] 1 सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित स्त्री 2' सुवेशा 3 चावल का माड।

विलेपिका, विलेपी, विलेप्य [विलेपी+कन्+टाप्, ह्रस्वः विलेप+ङीष्, वि+लिप्+ण्यत्] चावल का माड।

विलोकनम् [वि+लोक्+ल्युट्] 1 देखना, निहारना, दृष्टि डालना कि० ५।१६ 2 दृष्टि, निरीक्षण—शि० १।२९।

विलोकित (भू० क० कृ०) [वि+लोक्+क्त] 1 देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2 परीक्षित, चिन्तन किया गया,—तम् दृष्टि, नजर—श० २।३।

विलोचनम् [वि+लोच्+ल्युट्] आंख रघु० ७।८, कु० ४।१, ३।६७। तम० अम्बु (नपु०) आंसू।

विलोडनम् [वि+लोड्+ल्युट्] विक्षुब्ध होना, दोलायमान होना, हिल-जुल, मन्थन करना शि० १४।८३।

विलोडित (भू० क० कृ०) [वि+लोड्+क्त] हुलाया हुआ, हिलोया हुआ, हिलाया हुआ, विक्षुब्ध, तम् बिलोया हुआ दूध।

विलोपः [वि+लुप्+घञ्] 1 ले जाना, अपहरण करना पकडना, लूटना 2 लोप, हानि, नाश, अदर्शन।

विलोपनम् [वि+लुप्+ल्युट्] 1 काट डालना 2. अपहरण 3 नष्ट करना, विनाश।

विलोभः [वि+लुभ्+घञ्] आकर्षण, फुसलाहट, प्रलोभन।

विलोभनम् [वि+लुभ्+णिच्+ल्युट्] 1 मोह लेना, ललचाना 2 रिझाना, प्रलोभन, फुसलाना 3. प्रशंसा खुशामद।

विलोम (वि) (स्त्री०-मी) [विगतं लोम यत्—प्रा० ब०] 1 व्युत्क्रान्त, प्रतिकूल, प्रतिलोम, विपरीत, विरुद्ध 2 प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3 पिछडा हुआ, म. विपरीत क्रम, प्रतिलोम 2 कुत्ता 3 साँप 4 वरुण, मम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र। सम० **जात** ज, ~ जातः, वर्णः (वि०) प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न अर्थात् ऐसी माता से जन्म लेना जो पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की हो—मनु० प्रतिलोमका भी **क्रिया** ~ विधि. 1 प्रतिकूल क्रम 2 प्रतिलोम विवाह (गणि० में) **जिह्व** हाथी।

विलोमी [विलोम+ङीष्] आंवला।

विलोल (वि०) [विशेषेण लोल—प्रा० स०] 1 दोलायमान काँपता हुआ, थरथर करने वाला, अस्थिर, हिलने वाला, चंचल, इधर उधर लुढकने वाला पृथग्विलोलमौक्तिकम् रघु० ८।५९, शि० ८।८, १५।६०, ७।८२, वेणी० २।४८ रत्न० ३।८१, १६।६८ 2 ढीला विशेषतः बिखरे हुए (बाल आदि) उत्तर० ३।८।

विलोहित [विशेषेण लोहित प्रा० स०] सर्प का नाम।

विल्ल दे० 'बिल्ल'।

विल्व दे० 'बिल्व'।

विवक्षा [वच्+सन्+अ+टाप्] 1 बोलने की इच्छा 2 अभिलाषा, इच्छा 3 अर्थ, प्रयोजन 4 इरादा प्रयोजन।

विवक्षित (वि०) [विवक्षा+इतच्] 1 कहे जाने या बोले जाने के लिए अभिप्रेत—विवक्षितैः शनकैरयुतैरजनि—शि० ३।२ अभीष्ट, अभिप्रेत, इच्छित 3 अभिलषित इच्छुक 4 प्रिय, तम् 1 प्रयोजन अभिप्राय 2 आशय, अर्थ।

विवक्षु (वि०) [वच्+सन्+उ] बोलने की इच्छा वाला—कु० ५।८३।

विवत्सा [विगता वत्सा यस्याः प्रा० ब०] बिना बछडे की गाय।

विवध [विवधा विगतो वा वधः हननं यस्मिन् यत्र प्रा० ब०] 1 बोझा ढोने के लिए जूआ 2 गाय, बछडा 3 बोझा, भार 4 अनाज का संग्रह 5 वध।

विवधिक: [विवध+ठक्] 1 बोझा ढोने वाला, कुली 2 फेरी वाला, आवाज लगा कर बेचने वाला।

विवरम् [वि+वृ+अच्] 1. दरार, छिद्र, रन्ध्र, खोखलापन, रिक्तता—मध्यकार विवरं शिलायाने ताडकोरसि स रामसायक रघु० ११।१८, ९।६१, १९।७ 2 अन्तर्धान, अन्तराल, बीच की जगह शि० ७।७ 3 एकान्त स्थान कि० १२।३७ 4 दोष, त्रुटि, ऐब, कमी 5 विच्छेद, घाव 6 'नौ' की संख्या। सम०—मालिका बसरी, बंशी, मुरली।

विवरणम् [वि+वृ+ल्युट्] 1 प्रदर्शन, अभिव्यंजन, उद्घाटन, खोलना 2 अनावृत करना, खुला छोड़ना 3 विवृति, व्याख्या, वृत्ति टीका, भाष्य।

विवर्जनम् [वि+वृज्+ल्युट्] छोड़ना, निकाल देना, परित्याग करना याज्ञ० १।१८१।

विवर्जित (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2 परिहृत 3 वञ्चित, विरहित, के बिना (प्रायः समास में) 4 प्रदत्त, विनियत।

विवर्ण (वि०) [विगतः वर्णो यस्य—प्रा० ब०] 1 बिना रंग का, निष्प्रभ, पीला, फीका, नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भीमसेनजः—रघु० ६।६७ 2 जिस पर कोई रंग न चढ़ा हो, निर्मल, शि० ३।१४, 3 नीच, दुष्ट 4. अज्ञानी, मूढ़ विस्तार में अज्ञानिबहिष्कृत, नीच जाति से संबंध रखने वाला।

विवर्त [वि-वृत्+घञ्] 1 गोल चक्कर खाना, चारों ओर घूमना भंवर 2 आगे को लुढ़कना 3 पीछे को लुढ़कना लौटना 4 नृत्य 5 बदलना, सुधारना रूप में परिवर्तन बदली हुई दशा या अवस्था—शब्दब्रह्मणस्तावद् विवर्तोनिहास रामायण पाणिनाय उत्तर० ४, एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्न पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् उत्तर० ३।४७, महावी० ५।५३ 6 (वेदान्त० में) एक प्रतीयमान भ्रान्तिजनक रूप, अविद्या या मानव की भ्रांति से उत्पन्न मिथ्या रूप (यह वेदान्तियों का एक प्रिय सिद्धान्त है जिसके अनुसार यह समस्त संसार एक माया है मिथ्या और भ्रान्तिजनक रूप जब कि ब्रह्म या परमात्मा ही वास्तविक रूप है, जैसे कि साप रस्सी का विवर्त है, इसी प्रकार यह संसार उस पर ब्रह्म का विवर्त है, यह भ्रान्ति या माया सम्यक् ज्ञान अथवा विद्या से ही दूर होती है पु० भवभूति विद्याकल्पेन मरुता समाधिना भूयमायषि, कल्याणीव विवर्तनाय ब्रह्मणि विप्रलम्भ इव उत्तर० ६।६ 7 ढेर, समूह, संग्रह, समवाय। सम०—वाद वेदान्तियों का सिद्धान्त कि यह दृश्यमान संसार माया है केवल ब्रह्म ही एक वास्तविकता है।

विवर्तनम् [वि+वृत्+ल्युट्] 1. चक्कर खाना, घूमना, भंवर 2 इधर उधर लुढ़कना, करवटें बदलना—रघु० ५।६ 3 पीछे लुढ़कना, लौटना 4 नीचे की लुढ़कना, उतरना 5 विद्यमान रहना, वृद्ध रहना 6 संसरण अभिवादन 7 नाना प्रकार की संस्थाओं व स्थितियों में से गुजरना 8 परिवर्तित दशा—उत्तर० ४।१५, मा० ४।७।

विवर्धनम् [वि+वृध्+ल्युट्] 1 बढ़ना 2 वृद्धि, वर्धन, बढ़ती 3 विस्तार, अभ्युदय।

विवर्धित (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2 प्रगत, प्रोन्नत, आगे बढ़ाया हुआ 3 संतृप्त, संतुष्ट।

विवश (वि०) [वि+वश्+अच्] 1 अनियन्त्रित जो वश में न किया गया हो 2 लाचार, आश्रित, अधीन, दूसरे के नियन्त्रण में, असहाय—परोक्षा रक्षोभि अयति विवशा कामपि दशाम् भामि० १।८३, मुद्रा० ६।१८, शि० २०।५८, कि० १।१७२, महावी० ६।३२, ६३ 3 बेहोश, जो अपने आपको काबू में न रख सके विवशा कामदयूविबोधिता—कु० ४।१ 4 मृत, नष्ट—उपलब्धवती दिवश्च्युतं विवशा शापनिमित्तकारणम् रघु० ८।८२ 5 मृत्युकामी, मृत्यु की आशंका करने वाला।

विवसन (वि०) [विगतं वसनं यस्य प्रा० ब०] नंगा, विवस्त्र, जैन साधु।

विवस्वत् (पु०) [विशेषेण वस्ते आच्छादयति—वि+वस्+क्विप्+मतुप्] 1 सूर्य—त्वष्टा विवस्वतमिवोल्लिलेख कि० १७।४८, ५।४८, रघु० १०।३०, १७।४८ 2 अरुण का नाम 3 वर्तमान मनु का नाम 4 देव 5 अर्क का पौधा, मदार।

विवहः [वि+वह्+अच्] आग की सात जिह्वाओं में से एक।

विवाक: [विशिष्टो वाको यस्य—प्रा० ब०] न्यायाधीश, पु० 'प्राड्विवाक'।

विवाद: [वि वद्+घञ्] (क) कलह, प्रतियोगिता, संघर्ष विजय, शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद-विवाद, झगड़ा, झंझट—अलं विवादेन,—कु० ५।८३ एतयोर्विवाद एव मे न रोचते—मालवि० १, एकाध्वरं प्राप्तितयोर्विवादः रघु० ३।५३ (ख) तर्क, तर्कना, चर्चा 2 असहमति विरोध एवं विवाद सब प्रत्याययति—शि० ७ 3 मुकदमेबाजी, कानूनी नालिश, कानूनी संघर्ष, सीमाविवाद विवादपदम् आदि, परिभाषा इस प्रकार की गई है ऋणादिदायकलहे द्वयोर्बहूत्तरस्य वा विवादो व्यवहारस्य दे० 'व्यवहार' भी 4 उच्चकथन, उच्चारण 5 आदेश, आज्ञा—रघु० १८।४३। सम०—अर्थिन् (पु०) 1 मुकदमेबाज 2 वादी, अभियोक्ता, प्राभिवोक्ता,—पदम् कलह का शीर्षक, —अस्पद (नपु०) कलह का विषय विचारणीय विषय।

विवादिन् (वि०) [विवाद+इनि] 1. कलह करने वाला, तर्क वितर्क करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील 2. (कानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—पु० मुकदमेबाज, कानूनी अभियोग में भाग लेने वाला।

विवारः [वि+वृ+घञ्] 1 मुँह, विस्तार 2 अक्षरों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विस्तार (एक आभ्यंतर प्रयत्न, विप० संवार, दे० पा० १।१।९ पर सिद्धा०)।

विवासः, विवासनम् [वि+वस्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] देश निर्वासन, देशनिकाला, निष्कासन, रामस्य गात्रमसि दुर्वहगर्भखिन्नसीताविवासनपटो करुणा कुतस्ते —उत्तर० २।१०।

विवासित (भू० क० कृ०) [वि+वस्+णिच्+क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकाला दिया गया, निष्कासित।

विवाहः [वि+वह्+घञ्] शादी, ब्याह (हिन्दू स्मृतिकारों ने आठ प्रकार के विवाह बताये हैं ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधम मनु० ३।२१, दे० याज्ञ० १।५८, ६१ भी, इन रूपों की व्याख्या के लिए उस शब्द को देखो। सम०—चतुष्टयम् चार पत्नियों से विवाह करना,—दीक्षा विवाह संस्कार या कर्म।

विवाहित (भू० क० कृ०) [वि+वह्+णिच्+क्त] ब्याहा हुआ।

विवाह्य [वि+वह्+ण्यत्] 1 जामाता 2 दूल्हा।

विविक्त (भू० क० कृ०) [वि+विच्+क्त] 1 वियुक्त, पृथक्कृत, अलगाया हुआ, बेसुध 2 अकेला, एकाकी, निवृत्त, विलग्न 3 एकल, एकी 4 अभिन्न, विवेचन किया हुआ 5 विवेकशील 6 पवित्र, निर्दोष रत्न० १।२१,—क्तम् 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान शि० ८।७० 2 अकेलापन, निर्जता, एकान्तस्थान—क्ता भाग्यहीन या अभागी स्त्री, जो अपने पति को प्यारी न हो, दुर्भगा।

विविक्त (वि०) [विशेषेण विक्त वि+विच्+क्त] अत्यन्त क्षुब्ध, या डरा हुआ रघु० १८।१३।

विविध (वि) [विभिन्ना विधा यस्य—प्रा० ब०] नाना प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुरूपी, विश्वरूपी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९।

विवीतः [विशिष्टं वीतं गवादिप्रचारस्थानं यत्र—प्रा० ब०] घिरा हुआ स्थान, बाड़ा, जैसे चरागाह।

विवृक्त (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त, सपरित्यक्त।

विवृक्ता [विवृक्त+टाप्] वह स्त्री जिसको उसका पति प्यार नहीं करता, तु० 'विविक्ता'।

विवृत (भू० क० कृ०) [वि+वृ+क्त] 1 प्रदर्शित, प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2 स्पष्ट, सामने खुला हुआ 3 खुला हुआ, अनावृत, नंगा पड़ा हुआ 4. खोला, प्रकट किया हुआ, नग्न, उद्घाटित 5 उद्घोषित 6 भाष्य किया गया, व्याख्या की गई, टीका की गई 7 विस्तारित, फैलाया गया 8 विस्तृत, विशाल, प्रशस्त। सम० अक्ष (वि०) बड़ी बड़ी आँखों वाला, (क्षः) मृग, द्वार (वि०) खुले दरवाजों वाला कु० ४।३६।

विवृतिः (स्त्री०) [वि+वृ+क्तिन्] 1 प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2. विस्तार 3 अनावरण, व्यक्तीकरण 4 भाष्य, टीका, वृत्ति, व्याख्यान्तर।

विवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+वृत्+क्त] 1 मुड़ कर आया हुआ 2 मुड़ना, चक्कर काटना, लुढ़कना, भंवर।

विवृत्तिः (स्त्री०) [वि+वृत्+क्तिन्] 1 मुड़ना, भंवर, चक्कर 2 (व्या०) उच्चारण भंग।

विवृद्ध (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1 विकसित 2 बड़ा हुआ, आवर्धित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, तीव्र (शोक हर्षादिक) 3. विपुल, विशाल, प्रचुर।

विवृद्धिः (स्त्री०) [वि+वृध्+क्तिन्] 1 बढ़ना, बर्धन, बढ़ती, विकास यथुः शरीरावयवा विवृद्धिम् रघु० १७।४९, विवृद्धिमत्त्वमनुते वसूनि १३।४, इसी प्रकार शोक हर्ष° आदि 2. समृद्धि।

विवेकः [वि+विच्+घञ्] 1 विवेचन निर्धारण, विचारणा, विज्ञता,—कार्यऽपि यानस्तवापि च विवेकः भामि० १।६८,६६, ज्ञानोदय० जलधर तावक। विवेक —९६ 2 विचार, विचारविमर्श, गवेषणा यत्कृतारविवेकलक्ष्यमपि यत्काव्येषु लीलायितम् गीत० १२, इसी प्रकार द्वैत° धर्म° 3 भेद, अन्तर, (दो वस्तुओं में) प्रभेद नीरक्षीर विवेके हंसालस्य त्वमेव तनुषे चेतः भामि० १।५३, मनु० १७।९० 4 (वेदान्त० में) दृश्यमान जगत् तथा अदृश्य आत्मा में भेद करने की शक्ति, माया या केवल ज्ञान रूप से वास्तविकता को पृथक् करना 5 सत्य ज्ञान 6 जलाशय, पात्र, जलाधार। सम०—ज (वि०) विवेकशील, विवेचक,—ज्ञानम् विवेचन करने की शक्ति, दृश्यम् (पु०) सूक्ष्मदर्शी पुरुष, पक्का पुनर्विमर्श, विचार, चिन्तन।

विवेकिन् (वि०) [विवेक+इनि] विवेचक, विचारवान् विवेकशील, पु० 1 न्यायकर्ता, गुणदोषविवेचन 2 दार्शनिक।

विवेक्तृ (पु०) [वि+विच्+तृच्] 1 न्यायकारी 2 ऋषि, दार्शनिक।

विवेचनम्,—ना [वि+विच्+ल्युट्] 1. गुणदोषविचारणा 2. विचारविमर्श, विचार 3 फैसला, निर्णय।

विवोढृ (पु) [वि+वह+तृच्] दूल्हा, पति।

विव्योक दे० विव्योक—विव्योकस्ते मुरविजयिनो वर्मपाली बभूव—उ० स० ४३।

विश् (तुदा० पर० विशति, विष्ट) 1 प्रविष्ट होना, जाना, दाखिल होना विवेश कश्चिकजटिलमन्तर्बभम्—कु० ५।३०, रघु० ६।१०, १२, मेघ० १०२, भग० ११।२९ 2. आना या पहुचना, अधिकार में आना किसी के हिस्से में पडना—उपदा विविशु शपथप्रोतलेखा कोशलेश्वरम् रघु० ४।७० 3 बैठ जाना, बस जाना 4 घुस जाना, व्याप्त हो जाना 5 स्वीकार करना, उत्तरदायित्व लेना, प्रेर० (वेशयति-ते) घुसाना, प्रविष्ट कराना -इच्छा० (विविक्षति) प्रविष्ट होने की इच्छा करना अनु -, 1 सम्मिलित होना 2 किसी का अनुगमन करना, बाद में प्रविष्ट होना, अनुप्र ,सम्मिलित होना (आल० से) दूसरे की इच्छानुसार अपने आप को ढालना, यस्य यस्य हि यो भावस्तस्य तस्य हित नर, अनुप्रविश्य मेधावी शिष्यमात्मवश नयेत् -पच० १।६८, अभि , (आ०) 1 सम्मिलित होना, अधिकार करना 2 सहारा लेना, अधिकार कर लेना अभिनिविशते सन्मार्गम् सिद्धा०, मय तावत्तेष्वादभिनिविशते—मुद्रा० ५।१२, भट्टि० ८।८०, आ ,1 प्रविष्ट होना रघु० २।२६ 2 अधिकार करना, कब्जे में ले लेना, काब कर लेना 3 पहुँचना 4 किसी विशेष स्थिति पर पहुचना, उप -,1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना भग० १।४६ 2 डेरा डालना 3 स्वीकार करना, अभ्यास करना -प्रायमुपविशति 4 उपवास करना भट्टि० ७।७५, नि—, (आ०) 1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना—नवाम्बुदश्यामवपुर्न्यविशत (आसने) शि० १।१९ 2 पड़ाव डालना, डेरा लगाना रघु० १२।६८ 3 प्रविष्ट होना, रामशाला न्यविशत—भट्टि० ४।२८, ६।१४३, ८।७, रघु० ९।८२ 4 स्थिर किया जाना, निर्विष्ट किया जाना सूर्य-निर्विष्टदृष्टि—रघु० १४।६६ 5 व्यस्त होना, अनुरक्त होना, तुल जाना, अभ्यास करना—श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्स्वधर्मे निविशेत वै मनु० २।८ 6 विवाह करना ('निविश्' के स्थान पर), (प्रेर०) 1 जमाना, निर्दिष्ट करना, (मन, चित्त) लगाना, भग० १२।८ 2 स्थित करना, धरना, रखना रघु० ६।१६, ४।३९ ७।६३ 3 बिठाना, स्थापित करना रघु० १५।९७ 4 जीवन में स्थित कराना, विवाह करना—श्रु० ४।१९ 5. (सेना आदि का) डेरा डालना रघु० ५।४२, १६।३७ 6 रेखांकन करना, चित्रित करना, चित्र बनाना - चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा -श० २।९, मालवि० ३।११ 7. लिख लेना, उत्कीर्ण करना—विक्रम० २।१४ 8. सुपुर्द करना, सौंपना रघु० १९।४, निस्—, 1. सुखोपभोग करना—ज्योत्स्नावतो निविशति प्रदोषान् रघु० ६।३४, निविष्टविषयस्नेह स दशरथमुपेयिवान् रघु० १२।१, ४।५१, ६।५०, ९।३५, १३।६०, १४।८०, १८।३, १९।४७, मेघ० ११० 2 अलकृत करना, आभूषित करना 3 विवाह करना, प्र—, 1 प्रविष्ट होना 2 आरम्भ करना, शुरू करना, (—प्रेर०) प्रस्तुत करना, प्रवेष्टा के रूप में आगे आगे चलना, वि—, रक्खा जाना, बिठाया जाना, (प्रेर०) 1 स्थिर करना, रखना कु० १।४९, रघु० ६।६३, मधुरसि कुचकलशे विनिवेशय—गीत० १२ 2 बसाना, नई बस्ती बसाना—कु० ६।३७, शम्—, 1 प्रविष्ट होना 2 सोना, लेटना, आराम करना—सविष्टः कुसुमशयने निशा निनाय रघु० १।९५ मनु० ४।५५, ७।२२५ 3. सहवास करना, मैथुन करना - षोडशर्तु-निशा स्त्रीणा तस्मिन् युग्मासु संविशेत्—याज्ञ० १।७९, मनु० ३।४८ 4 सुखोपभोग करना, क्षमा—, 1 प्रविष्ट होना, भट्टि० ८।२७ 2 पहुचना 3 कम हो जाना, तुल जाना, क्षपि, (प्रेर०)—1 रखना, धरना 2 स्थापित करना, ऊपर धरना—रघु० १२।५८।

विश् (पु०) [विश्+क्विप्] 1 तीसरे वर्ण का मनुष्य, वैश्य 2 मनुष्य 3 राष्ट्र, स्त्री० 1 राष्ट्र, प्रजा 2 पुरी। सम०—कर्मन् सामान, व्यापारिक माल, पतिः (विशांपति' भी) राजा, प्रजा का स्वामी।

विशम् [विश्+क] कमल की गठी के तन्तु, रेशे—तु० बिस। सम० आकरः एक प्रकार का पौधा, भद्र-मुस्त, कठा सारस।

विशकूट (वि०) (स्त्री०—टा,—टी) [वि+शक्+अटच्] 1 बड़ा, विशाल, बृहत्—विशकूटो वक्षसि बाहुपाशि भट्टि० २।५०, शि० १३।३४ 2. मजबूत, प्रबल, शक्तिशाली।

विशकुड़ा [विशिष्टा विगता वा शकुा—प्रा० स०] घर, आश्रय।

विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, विमल, विशुद्ध—योगनिद्रास्तविशदै पावनैरवलोकनै रघु० १०।१४, १९।३९, रत्न० ३।९, कि० ५।१२ 2. सफेद, विशुद्धश्वेत रङ्ग का—निर्धौतहारगुलिकाविशद हिमाभ रघु० ५।७०, कु० १।४०, ६।२५, शि० ९।२६, कि० ४।२३ 3. उज्ज्वल, चमकीला, सुन्दर—कु० ३।३३, शि० ८।७० 4. साफ, स्पष्ट, प्रकट 5 शान्त, निश्चिन्त आराम सहित—यातो ममाय विशद प्रकाम (अन्तरात्मा) —श० ४।२२।

विशदः [वि+शो+अच्] 1. सन्देह, अनिश्चयता, अधिकरण के पाच अर्थों में से दूसरा 2. सरण, सहारा।

विशसन [वि+शस्+ल्युट्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ डालना 2 वध, हत्या, विनाश।

विशल्य (वि०) [विगतं शल्यं यस्मात् प्रा० ब०] कष्ट और चिन्ता से मुक्त, सुरक्षित।

विशसनम् [वि+शस्+ल्युट्] 1 वध, हत्या, पशुमेध —उत्तर० ४।५ 2 बर्बादी,—न० 1 कटार, टेढ़े फल की तलवार 2 तलवार।

विशस्त (भू० क० कृ०) [वि+शस्+क्त] 1 काटा हुआ, चीरा हुआ 2 उजड्ड, अशिष्ट 3 प्रशस्त, विख्यात।

विशस्तृ (पु०) [वि+शस्+तृच्] 1 हत्या करने वाला या बलि के लिए वध करने वाला व्यक्ति 2 चाण्डाल।

विशस्त्र (वि०) [विगतं शस्त्रं यस्य] बिना हथियारों के, शस्त्ररहित, जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो।

विशाख [विशाखानक्षत्रे भवः -विशाखा+अण्] 1 कार्तिकेय का नाम महावी० २।३८ 2 धनुष से तीर छोड़ते समय की स्थिति (इसमें धनुर्धारी एक पग पीछे रखता तथा एक जरा आगे करके खड़ा होता है) 3 भिक्षुक, आवेदक 4 नकुल 5 शिव का नाम। सम०——अ नारंगी का पेड़।

विशाखिल दे० विशाख (2)।

विशाखा [विशिष्टा शाखा प्रकारो यस्य—प्रा० ब०] (प्रायः द्विवचनान्त) सोलहवां नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित होते हैं—कियत्य चित्र यदि विशाखे शशाङ्कलेखामनुयायिनीते—श० ३।

विशाय [वि+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना अर्थात् पहरेदारों का बारी-बारी से पहरा देना।

विशारणम् [वि+शृ+णिच्+ल्युट्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना फाड़ना 2 हत्या, वध।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क लस्य रः] 1 चतुर, कुशल, प्रवीण, विज्ञ, जानकार (प्रायः समास में)—मधुदान विशारदा रघु० ९।२९, ८।१७ 2 विद्वान्, बुद्धिमान् 3 मशहूर, प्रसिद्ध 4 माहिर भरोसे का,—द० अंकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़।

विशाल (वि०) [वि-शालच्] 1 विस्तृत, चौड़ा, दूर तक फैला हुआ, प्रशस्त, व्यापक, चौड़ा, गृहैर्विशालैरपि भूरिशालं शि० ३।५०, १।२३, रघु० २।२१, ६।३२, भग० ९।२१ 2 समृद्ध भरपूर —श्रीविशालां विशालाम्—मेघ० ३० 3 प्रमुख श्रीमान महान्, उत्तम, प्रख्यात, —ल 1 एक प्रकार का हरिण 2 एक प्रकार का पक्षी, —ला 1 उज्जयिनी नगर का नाम पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालाम्—मेघ० ३० 2 एक नदी का नाम। सम० अक्ष (वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला, (-क्षः) शिव का विशेषण (-क्षी) पार्वती का विशेषण।

विशिख (वि०) [विगता शिखा यस्य प्रा० ब०] मुकुट रहित, बिना चोटी का, बिना लोक का,—खः 1 बाण, माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना—गीत० ४, रघु० ५।५०, महावी० २।३८ 2 एक प्रकार का नरकुल 3 एक लोहे का कौवा।

विशिखा [विशिख+टाप्] 1. फावड़ा 2 नकुला 3 मुट्ठी या पिंड 4 बारीक बाल 5 राजमार्ग 6 नाई की पत्नी।

विशित (वि०) [वि+शो+क्त] तीव्र, नोकदार।

विशिपम् [विशं वसति] 1 मन्दिर 2 आवासस्थान, घर।

विशिष्ट (भ० क० कृ०) [वि+शिष्+क्त] 1 विलक्षण स्वतन्त्र 2 विशेष असामान्य, असाधारण, प्रभेदक 3 विशेषगुणसम्पन्न, लक्षणयुक्त, विशेषतायुक्त, सविशेष 4 श्रेष्ठ सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, बढ़िया। सम० अद्वैतवाद रामानुज का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार ब्रह्म और प्रकृति सारूप तथा सम्बन्धित माना जाता है अर्थात् मूलतः दोनों एक ही हैं

बुद्धि (स्त्री०) प्रभेदक ज्ञान, प्रभेदीकरण—वर्ण (वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रंग का।

विशीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+शृ+क्त] 1 छिन्न भिन्न किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2 मर्झाया हुआ कुम्हलाया हुआ 3 गिरा हुआ, रघु० ५।२८ 4 सिकुड़ा हुआ, संकुचित, या झुर्रियों जिसमें पड़ गई हों। सम० पत्र (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया हो, अनंग (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया हो, अनंग रघु० ५।२४, (वि) काम देव का विशेषण।

विशुद्ध (वि०) [वि-शुध्+क्त] 1 शुद्ध किया हुआ स्वच्छ 2 पवित्र, निष्कलंक, निष्पाप 3 बेदाग निष्कलंक 4 सही, यथार्थ 5 सद्गुणी पुण्यात्मा, ईमानदार खरा मा० ७।१ 6 विनीत।

विशुद्धि (स्त्री०) [वि-शुध्+क्तिन्] 1 परिष्कारण शुद्धिकरण नहि समर्थमवाप्य कल्पते ध्रुव चिरात् स्मरजा विशुद्धये कु० ५।७९, भग० ६।१२, मनु० ६।६९, ११।२३ 2 पवित्रता, पूर्णपवित्रता, रघु० १।१०, १२।४८ 3 यथातथ्य, यथार्थता 4 परिष्कार भूलसुधार 5 समानता, समता।

विशूल (व०) [विगतं शूलं यस्य प्रा० ब०] बिना बर्छी जिसके पास बर्छी न हो—रघु० १५।५।

विशृङ्खल (वि०) [विगता शृङ्खला यस्य प्रा० ब०] 1 जो शृङ्खला में न बंधा हो (शा०) 2 विशृङ्खलित, अनियन्त्रित, अप्रतिबद्ध, निरंकुश, बेरोक—शि० २।७०, भामि० २।७७ 3 सब प्रकार के नैतिक बंधनों से मुक्त, लम्पट भर्तृ० २।५९।

विशेष (वि०) [विगतं शेषं यस्मात्—प्रा० ब०] 1 असीम 2 पुष्कल, प्रचुर रघु० २।१४, —ष 1 विवेचन, विभेदीकरण 2 प्रभेद, अन्तर, विशिष्टता

विशेष भर्तृ० ३।५० 3. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशेषता, वैशिष्ट्य,प्राय. समास में प्रयुक्त तथा 'विशिष्ट' और'अजीब' शब्दों से अनूदित श० ६।६ 4 अच्छा मोड़, रोग में मोड़, अर्थात् अपेक्षाकृत अच्छा परिवर्तन --अस्ति मे विशेष —श० ३, 'अब अपेक्षाकृत अच्छा हूँ' 5 अवयव, अंग—पुपोष लावण्यमयान् विशेषान् कु० १।२५ 6 जाति, प्रकार, प्रभेद, भेद, वर्ग (प्राय समास के अंत में,—भूतविशेष उत्तर० ४, परिमलविशेषात् पञ्च० १. कदलीविशेषा कु० १।३६ 7 विविध उद्देश्य, नाना प्रकार के विवरण (ब० व०) - मेघ० ५८, ६४ 8 उत्तमता, श्रेष्ठता, भेद, प्राय समास के अन्त में, उत्तम, पूज्य, प्रमुख, उत्कृष्ट अनुभाव-विशेषात् रघु० १।३७, वपुर्विशेषेण श० ५।२१, रघु० २।७, ६।५, कि० ९।५८, इसी प्रकार आकृति विशेषा 'उत्तम रूप' अतिथिविशेष 'पूज्य अतिथि' आदि 9 अनोखा विशेषण, नौ द्रव्यों में से प्रत्येक को शाश्वत विभेदक प्रकृति 10 (तर्क० में) वैयक्तिकता (विप० सामान्य) अनुष्ठापन 11. प्रकार, वर्ग 12 मस्तक पर चन्दन या केसर का तिलक 13 वह शब्द जो किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है, दे० विशेषण 14 ब्रह्माण्ड का नाम 15 (अलं० में) एक अलंकार का नाम जिसके तीन भेद बताये गये हैं, मम्मट ने इसकी परिभाषा यह दी है —विना प्रसिद्धमाधारमाधेयस्य व्यवस्थिति, एकस्मिन् युगपद् वृत्तिरेकस्यानेकगोचरा। अन्यत्रकुर्वत कार्यमशक्यान्यस्य वस्तुन, तथैव करण चेति विशेवस्त्रिविध स्मृत काव्य० १०। सम० अतिशेष: विशेष अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग,—उक्ति: (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें कारण के विद्यमान रहते हुए भी कार्य का होना नहीं पाया जाता विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावच काव्य० १०, उदा० हृदि स्नेहक्षयो नामुत्स्मरदीपे ज्वलत्यपि, ज्ञ, विद् (वि०) 1 भेदों को जानने वाला, गुणदोषविवेचक, पारखी 2. विद्वान्, बुद्धिमान् भर्तृ० २।३, लक्षणम्,-लिङ्गम् विशेष या लक्षणदर्शी चिह्न, —वचनम् वि पाठ या विधि, विधि, आ स्थम् विशेष नियम।

विशेषक (वि०) [वि+शिष्+ण्वुल्] प्रभेदक, ज्ञा, कम् 1. एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषण 2 चन्दन या केसर का माथे पर लगा तिलक —मालवि० ३।५ 3 रंगीन उबटन तथा अन्य सुगन्धित पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखाकन करना—स्वेदोद्गम किंपुरुषागनानां चक्रे पत्रम् पत्रविशेषकेषु—कु० ३।३३, रघु० ९।२९, शि० ३।६३, १०।१४, कम् तीन श्लोकों का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य बनता है द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्त त्रिभि श्लोकैर्विशेषकम्, कलापक चतुर्भि स्यात्तदूर्ध्वं कुलक स्मृतम्।

विशेषण (वि०) [वि+शिष्+ल्युट्] गुणवाचक, नम् 1 विभेदन, विवेचन 2 प्रभेदन, अन्तर 3 वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द गुण, विशेषता, (विप० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार का बताया जाता है व्यावर्तक विशेष और हेतुगर्भ) 4. प्रभेदक लक्षण या चिह्न, 5 जाति, प्रकार।

विशेषतस् (अव्य०) [विशेष+तस्] विशेष रूप से, खास तौर से।

विशेषित (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+णिच्+क्त] 1 विलक्षण 2 परिभाषित, जिसके विवरण बता दिये गए हों 3 विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई हो 4 श्रेष्ठ, बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि+शिष्+यत्] 1. विलक्षण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया, व्यम् वह शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया गया हो, सज्ञाशब्द, विशेष्य नाभिधा गच्छेत्सामर्थ्यगणक्रियाविशेषणे --काव्य० २।

विशोक (वि०) [विगत शोको यस्य प्रा० ब०] शोक से मुक्त, प्रसन्न, क अशोक वृक्ष,—का शोक से छुटकारा।

विशोधनम् [वि+शुध्+ल्युट्] 1 शुद्ध करना, स्वच्छ करना (आल० में) —राज्यकटक विशोधनोद्यत विक्रम० ५।१ 2 परिशोधन निष्पाप या दोषरहित होना 3 प्रायश्चित्त, परिशोधन।

विशोध्य (वि०) [वि+शुध्+ण्यत्] पवित्र किये जाने के योग्य, निर्मल या शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोषणम् [वि+शुष्+ल्युट्] सुखाना, शुष्कीकरण।

विश्राणनम्, विश्राणनम् [वि+श्रण्+ल्युट्, पक्षे णिच्] प्रदान करना, समर्पण करना, अनुदान, उपहार, दान—विश्राणनाकल्पान्यपयस्विनीनाम् —रघु० २।५४।

विश्रब्ध (भू० क० कृ०) (विश्रब्धम् भी) [वि+श्रम्भ+क्त] 1 बन्द किया गया, विश्वास किया गया, सौंपा गया 2 विश्वस्त, निडर, भरोसा करने वाला मुद्रा० ३।३ 3 विश्वसनीय, भरोसे का 4 निश्चल, सौम्य, शान्त, निश्चिन्त 5 दृढ़, स्थिर 6. नम्र, विनीत 7 अत्यधिक, बहुत ज्यादह,— ब्धम् (अव्य०) विश्वास-पूर्वक, निर्भीकता के साथ, बिना डर व संकोच के — विश्रब्ध क्रियता वराहततिभि मुस्ताक्षति पल्वले —श० २।६।

विश्रमः [वि+श्रम्+अप्] 1 आराम, विश्रान्ति 2 विराम, विश्राम।

विश्रम्भः [वि+श्रम्भ्+घञ्] 1 विश्वास, भरोसा, अन्तरंग विश्वास, पूर्ण घनिष्ठता या अन्तरंगता-विश्रम्भाङ्कुरसि निपत्य लब्धनिद्रा—उत्तर० १।४९, मा० ३।१ 2 गुप्त बात, रहस्य विश्रम्भेष्वन्यतरोकरणीया —का० 3 आराम, विश्राम 4 स्नेहसिक्त परिपृच्छा 5. प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक झगड़ा 6 हत्या। सम० **आलापः, आलापनम्** गुप्त वार्तालाप, वार्तालाप, **पात्रम्, भूमिः, स्थानम्** विश्वास करने के योग्य पदार्थ या व्यक्ति, विश्वस्त, विश्वसनीय व्यक्ति।

विश्रयः [वि+श्रि+अच्] शरण, आश्रयस्थल।

विश्रवस् (पु०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, जो कैकसी से उत्पन्न रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा का पिता था, कुबेर के एक पुत्र का नाम जो उसकी पत्नी इडाविडा से उत्पन्न हुआ था।

विश्राणित (भू० क० कृ०) [वि+श्रण्+णिच्+क्त] प्रदान किया गया, अर्पित किया गया निःशेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१।

विश्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+श्रम्+क्त] 1 बन्द किया हुआ, रोका गया 2 आराम किया हुआ, विश्राम किया हुआ 3 सौम्य, शान्त, स्वस्थ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि+श्रम्+क्तिन्] 1 आराम विश्राम 2 रोक, थाम।

विश्राम [वि+श्रम्+घञ्] 1 रोक, थाम 2 आराम, चैन विश्रामो हृदयस्य यत्र उत्तर० १।३९ 3. शान्ति, सौम्यता, स्वस्थता।

विश्रावः [वि+श्रु+घञ्] 1 चूना, टपकना, बहना ('विस्राव' के स्थान में) 2 ख्याति, कीर्ति।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि+श्रु+क्त] प्रख्यात, लब्धप्रतिष्ठ, यशस्वी, प्रसिद्ध 2 प्रसन्न, आनन्दित, खुश 3 बहता हुआ।

विश्रुतिः (स्त्री०) [वि+श्रु+क्तिन्] प्रसिद्धि, ख्याति।

विश्लथ (वि०) [विशेषण श्लथ प्रा० स०] 1 ढीला, शिथिल, खुला हुआ, -रघु० ६।७३ 2 स्फूर्तिहीन, निस्तेज।

विश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग अलग किया हुआ रघु० १२।७६।

विश्लेषः [वि+श्लिष्+घञ्] 1 अलगाव, वियोजन 2 विशेषतः प्रेमियों अथवा पति-पत्नी का बिछोह 3 वियोग तनयाविश्लेषदुःखं ज० ४।५, चरण रविदविश्लेष—रघु० १३।२३ 4 अभाव, हानि, शोकावस्था 5 दरार, छिद्र।

विश्लेषित (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+णिच्+क्त] अलग किया हुआ, वियुक्त, जुदा किया हुआ।

विश्व (सा० वि०) [विश्+व] 1 सारे सारा, समस्त, सार्वलौकिक 2 प्रत्येक, हरेक, (पु० ब० व०) दस देवों का समूह (यह 'विश्वा' के पुत्र समझे जाते हैं, इनके नाम हैं वसु सत्य क्रतुर्दक्ष काल कामा धृति कुरु, पुरूरवा माद्रवाश्च विश्वेदेवा प्रकीर्तिता—**-अम्** 1 सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त संसार इदं विश्वं पालयिष्यति उत्तर० २।३०, विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलवतां पालयिष्यति क भामि० १।१३ 2 सूखा अदरक, सोंठ। सम० **आत्मन्** (पु) 1 परमात्मा (विश्व की आत्मा) 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण—अथ विश्वात्मने गौरी सदिदेश मिथः सखीम् कु० ६।१ 4 विष्णु का विशेषण, **-ईश्वरः** 1 परमात्मा, विश्व का स्वामी 2 शिव का विशेषण, **-कद्रु** (वि०) दुष्ट, नीच, दुर्जन, (द्रु) 1. शिकारी कुत्ता, मृगयाकुक्कुर 2 स्वस्थ, **-कर्मन्** (पु०) 1 देवों का शिल्पी, त्वष्टृ 2 सूर्य का विशेषण, **°जा, °सुता**, सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, **-भुज्** (पु०) 1 सब प्राणियों का स्रष्टा 2. विश्वकर्मा का विशेषण—,केतु' अनिरुद्ध का विशेषण, **-गर्भ**. प्याज, (**-र्भम्**) लौबान, गुग्गुल, **-धरा** पृथ्वी, **-नरः** मानवजाति, **-नीन**,—**-न्य** (वि०) मानवमात्र के लिए हितकर, मनुष्य जाति के उपयुक्त, सब मनुष्यों के लिए लाभकर—भट्टि० २।४८, २१।१७, **-जित्** (पु०) 1 यज्ञ विशेष का नाम रघु० ५।१ 2 वरुण का पाश, **-देव** विश्व (पु०) देवों के देव, **-धारिणी** पृथ्वी, **-धारिन्** (पु०) देव —**-नाथ** विश्व का स्वामी, शिव का विशेषण, **-पा** (पु०) 1 सब का रक्षक 2 सूर्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि **-पावनी**. पूजिता तुलसी का पौधा, **-पेशस्** (पु०) 1 देव 2 सूर्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि का विशेषण **-भुज्** (वि०) सर्वोपभोक्ता, सब कुछ खाने वाला (पु०) इन्द्र का विशेषण, **-भेषजम्** सूखा अदरक सोंठ, **-मूर्ति** (वि०) सब रूपों में विद्यमान, सब व्यापक, विश्वव्यापी,—मा० १।३, **-योनि**. 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, **-राज्, -राज** विश्वप्रभु, **-रूप** (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (पः) विष्णु का विशेषण, (**-पम्**) अगर की लकड़ी, —**-रेतस्** (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, **-वाह** (वि०) (स्त्री० विश्ववाही) सब कुछ ढोने वाला, सब का भरण पोषण करने वाला, **-वहा** पृथ्वी, **-सृज्** (पु०) —ब्रह्मा का विशेषण, स्रष्टा प्रायेण सामग्र्याविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृज प्रवृत्तिः —कु० ३।२८, १।४९।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति- कृ+ट, द्वितीयायाः अलुक्] आँख, (शुक्र के अनुसार—नपुं०)।

विश्वतस् (अव्य०) [विश्व+तसिल्] सब ओर, सर्वत्र, सब जगह भाषि० १।३०। सम० मुख (वि०) सब ओर मुख किये हुए—भग० ९।१५।

विश्वधा (अव्य) [विश्व+धाल्] सर्वत्र, सब जगह।

विश्वंभर (वि०) [विश्वं बिभर्ति विश्व+भृ+अच्, मुम्] सब का भरणपोषण करने वाला, रः 1 सर्व व्यापक प्राणी, परमात्मा 2 विष्णु का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, रा पृथ्वी विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत उत्तर० १।९, विश्वम्भराप्यतिलघूत्तरनाथ तवातिके नियतम्—काव्य० १०।

विश्वसनीय (स० कृ०) [वि+श्वस्+अनीयर्] 1 विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके 2 विश्वास उत्पन्न करने के योग्य स० २, मालवि० ३।२।

विश्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+श्वस्+क्त] 1 जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2 विश्वास करने वाला, भरोसा करने वाला 3 निडर, निश्शङ्क 4 विश्वास के योग्य, जिस पर भरोसा किया जा सके।

विश्वात्मात्मन् (पु०) [विश्वं दधाति पालयति—विश्व+धा णिच्+असुन्, पूर्वदीर्घ] देव, सुर।

विश्वात्मन्† [विश्व+तन्, पूर्वपददीर्घ] सविता का विशेषण।

विश्वामित्र [विश्व+मित्र, विश्वमेव मित्रं यस्य ब० स०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घ] एक विख्यात ऋषि का नाम। यह कान्यकुब्ज का राजा होने के कारण क्षत्रिय था, इसके पिता का नाम गाधि था। एक बार यह मृगया के लिए घूमता-घूमता वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक गौओं को देख कर उसने अतुल धन राशि देकर भी उनको लेना चाहा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान् संघर्ष हुआ, और राजा विश्वामित्र पूर्ण-रूप से पराजित हो गया। इस पराजय से विश्वामित्र अत्यन्त क्षुब्ध हुआ और साथ ही वसिष्ठ के ब्राह्मणत्व की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करता रहा। यहाँ तक कि बाद में उसे क्रमशः राजर्षि, ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि वसिष्ठ ने अपने मुख से उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा। विश्वामित्र हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, तब कहीं जाकर वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विश्वामित्र ने कई बार वसिष्ठ को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया, उदाहरणतः वसिष्ठ के सौ पुत्रों को विश्वामित्र ने मौत के घाट उतार दिया, परन्तु वसिष्ठ तब भी नहीं घबराया। अन्तिमरूप से ब्रह्मर्षि बनने से पहले विश्वामित्र की शक्ति बहुत अधिक थी, उदाहरणतः उसने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने, इन्द्र के हाथ से यज्ञ-शेषकी रक्षा करने, तथा ब्रह्मा की भाँति पुनः सृष्टि की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। यह बालक राम का साथी और परामर्श दाता था, इसने राम को अनेक आश्चर्य जनक अस्त्र प्रदान किये)।

विश्वावसु [विश्व+वसुः, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक गन्धर्व का नाम।

विश्वास [वि+श्वस्+घञ्] 1 भरोसा, प्रत्यय, निष्ठा, विश्वस्तम्,—दुर्जनः प्रियवादीति नैतद्विश्वासकारणम्—सू० १।१४, रघु० १।५१, हि० ४।१०३ 2 भेद, रहस्य, गोपनीय समाचार। सम०—आत्मन्, अंगः विश्वास को तोड़ देना, धोखा देही, द्रोह, घातिन् (पु०) धोखा देने वाला मनुष्य, द्रोही, पात्रम्, भूमिः, स्थानम् भरोसे की वस्तु, विश्वसनीय या भरोसे का मनुष्य, विश्वासी पुरुष।

विष् I (जुहो० उभ० वेवेष्टि, वेविष्टे, विष्ट) 1. घेरना 2. फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3 सामने जाना, मुकाबला करना (परिनिष्ठित संस्कृत में इसका प्रयोग बहुधा नहीं होता)।

II (क्रया० पर० विष्णाति) वियुक्त करना, अलग-अलग करना।

III (स्वा० पर० वेषति) छिड़कना, उड़ेलना।

विष् (स्त्री०) [विष्+क्विप्] 1 मल, विष्ठा, लीद 2 फैलाना, प्रसारण 3 लड़की जैसा कि 'विट्पति' में। सम०—कारिका (विट्कारिका) एक प्रकार का पक्षी, गृहः (विड्गृहं) कोष्ठबद्धता, कब्ज, —चरः, -वराहः (विट्चर, विड्वराह) पालतू या गाँव का सूअर, -लवणम् (विड्लवणम्) एक प्रकार का औषधियों में प्रयुक्त होने वाला नमक, सङ्गः (विट्सङ्गः) कोष्ठबद्धता, कब्ज,—सारिका (विट्-सारिका) एक प्रकार का पक्षी, मैना।

विषम् [विष्+क] 1 जहर, हलाहल (इस अर्थ में 'पु०' भी कहा जाता है) विष भवतु या भूद्वा फटाटोपो भयङ्करः—पञ्च० १।२०४ 2. जल, विष जलधरैः पीत मुक्तिता पथिकाङ्गना—चन्द्रा० ५।८२, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3 कमलदण्डी के तन्तु या रेशे 4 लोबान, एक सुगन्धित द्रव्य का गोंद, रस०, गन्ध। सम० अक्त,—द्विग्ध (वि०) विषैला, जहरीला, अंकुरः 1 अर्छी 2 विष में बुझा तीर,—अंतकः शिव का विशेषण,—अरिः,—घ्न (वि०) विषनाशक, विषनिवारक औषधि, अशनः,—आयुधः, आस्यः, साँप,—आस्वाद (वि०) जहर चखने वाला, कुम्भः जहर से भरा हुआ घड़ा, —कृमिः जहर में पला हुआ कीड़ा, °न्याय दे० न्याय के अन्तर्गत,—ज्वरः मैना,

–द्रः बादल (द्रम्) तृतिया,—दन्तकः साँप,—दर्शन-मूलकः,–मूत्रः एक पक्षी (इसे चकोर कहते हैं), —धरः साँप—भामि० १।७४, °बिलः निम्नतर प्रदेश, साँपों का बिल,–पुष्पम् नील कमल, प्रयोगः जहर का इस्तेमाल, जहर देना,—भिषज्, —वैद्यः विषनाशक औषधियों का विक्रेता, साँपों के काटने की चिकित्सा करने वाला –सप्रति विषवैद्यानां कर्म-मालवि० ४,—मन्त्र 1 साँप के काटे का विष उतारने का मन्त्र 2 सपेरा, बाजीगर, – वृक्ष. जहरीला पेड़, विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् –कु० २।५५, °न्याय न्याय के नीचे देखो,—वेगः जहर का संचार या प्रभाव,—शालूक कमल की जड़, –शूकः,—सृष्टिन्, सृक्कन् (पु०) भिड़, बर्र, —हृदय (वि०) विषाक्त दिलवाला अर्थात् दुष्टहृदय, मलिनात्मा।

विषक्त (भू० क० कृ०) [वि+सञ्ज्+क्त] 1 दृढ़ता-पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ 2. चिपटा हुआ, चिपका हुआ।

विषण्णम् [विशेषेण षदम्—प्रा० स०] कमलडण्डी के तन्तु या रेशे।

विषण्ण (भू० क० कृ०) [वि+सद्+क्त] खिन्न, मुह लटकाये हुए, उदास, दुःखी, निरुत्साह, हताश। सम० —मुख, वदन (वि०) उदास दिखाई देने वाला, —रूप (वि०) उदासी की अवस्था में पड़ा हुआ।

विषम (वि०) [विगतो विरुद्धो वा समः—प्रा० स०] 1 जो सम या समान न हो, खुरदरा, ऊबड़-खाबड़ पथिषु विषमेष्वप्यचलता मुद्रा० ३।२, पञ्च० १६४, मेघ० १९ 2 अनियमित, असमान–मा० ९।४३ 3 उच्चा-वच, असम 4 कठिन, समझने में दुष्कर, आश्चर्य-जनक कि० २।३ 5 अगम्य, दुर्गम कि० २।३ 6 मोटा, स्थूल 7 निरक्षा—मा० ४।२ 8 पीड़ाकर, कष्टदायक—भर्तृ० ३।१०५ 9 बहुत मजबूत, उत्कट —मा० २।९ 10 खतरनाक, भयानक मृच्छ० ८।१, २७ मुद्रा० १।१८, २।२० 11 बुरा, प्रतिकूल, विपरीत—पंच० ४।१६ 12 अजीब, अनोखा, अनु-पम 13 बेईमान, कलापूर्ण,—अस् 1 असमता 2 अनोखापन 3 दुर्गम स्थान, चट्टान, गड्ढा आदि 4. कठिन या खतरनाक स्थिति, कठिनाई, दुर्भाग्य,— मुग्ध प्रमत्त विषममिव वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा-कृतानि भर्तृ० २।९७, भग० २।२ 5 एक अलंकार का नाम जिसमें कार्य कारण के बीच में कोई अनोखा या अघटनीय संबंध दर्शाया जाता है यह चार प्रकार का माना जाता है दे० काव्य०, का० १२५ व १२७,—मः विष्णु का नाम। सम० अक्षः, —ईक्षणः, –नयनः, नेत्रः, –लोचनः शिव के विशेषण, –अन्नम् अनोखा या अनियमित आहार आयुध,—इषुः, –शरः कामदेव के विशेषण, कालः अननुकूल ऋतु, चतुरस्रः,—चतुर्भुजः विषम कोण वाला चतुष्कोण,– छदः सप्तपर्ण नाम का पेड़, ज्वरः कभी कम तथा कभी अधिक होने वाला बुखार,– दैवी. दुर्भाग्य, विभागः सम्पत्ति का असमान वितरण, स्थ (वि०) 1. दुर्गम स्थिति में होने वाला 2 कठिनाई में रहने वाला, अभागा।

विषमित (वि०) [विषम+इतच्] 1 ऊबड़-खाबड़ किया हुआ, असम, कुटिल 2 सिकुड़न वाला, त्योरीदार 3 कठिन या दुर्गम बनाया गया।

विषय [विषिञ्वन्ति स्वात्मकतया विषयिणं संबध्नन्ति –वि+सि+अच्, षत्वम्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त पदार्थ (यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के अनुरूप गिनती में पाँच हैं रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द जिनका संबंध क्रमशः आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है),—श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् श० १।१ 2 लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मामला, लेन-देन 3 ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त आनन्द, लौकिक या मैथुनसंबन्धी उपभोग वासनात्मक पदार्थ (प्रायः ब० व० में), यौवने विषयैषिणाम्—रघु० १।८, निर्विष्ट विषयस्नेह – १२।१, ३।७०, ८।१०, १९।४०, विक्रम० १।९, भग० २।५९ 4 पदार्थ, वस्तु, मामला, बात—तार्यो न जन्मविषयान्तराणि—रघु० ७।१२ ८।८९ 5 उद्दिष्ट पदार्थ या वस्तु, चिह्न, निशान भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्या श० १।२१, शि० ९।४० 6 कार्यक्षेत्र, पहुंच, परिधि —सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र प्रिये स्वामि भा उत्तर० ३।४५, सकलवचनानामविषय – मा० १।३०, ३६ उत्तर० ५।१९, कु० ६।१७ 7 विभाग, क्षेत्र, प्रान्त, भूमि, तत्त्व सकलैंदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषय विक्रम० ३ 8 विषयवस्तु, आलोच्य विषय, प्रसंग, –भामि० १।१०, इसी प्रकार 'शृङ्गारविषयिका ग्रन्थ' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रीतिविषयक बातों का उल्लेख हो 9 व्याख्येय प्रसंग या विषय, शीर्षक, अधिकरण के पाँचों अंगों में से पहला 10 स्थान, जगह —परिसरविषयेषु लीलमृगता किं० ५।३५ 11 देश, राष्ट्र, राज्य, प्रदेश, मंडल, साम्राज्य 12 शरण, आश्रय 13 ग्रामों का समूह 14 प्रेमी, पति 15 शौर्य, शूरता 16 धार्मिक अनुष्ठान (विषय की बाबत, के विषय में, के संबंध में, इस मामले में के बारे में, बाबत —या तवास्ते युद्धनिर्विषये सृष्टिरा-शंक धातु – मेघ० ८२, स्त्रीणां विषये, धनविषये आदि)। सम० अभिरतिः 1 सांसारिक विषय वासनाओं में आसक्ति कि० ६।४४, इसी प्रकार

अभिलाष–कि० ३।१३,—आसक्त (वि०) सांसारिक पदार्थों में युक्त, आसक्त,–विरक्त (वि०) विषयवासनाओं में लिप्त, विषयी, विलासी, इन्द्रियासक्त, आसक्ति उपदेश, विरक्ति. (स्त्री०), –प्रसक्त भोगविलास, कामासक्ति, ग्राह्य उन पदार्थों का समूह जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं,–सुखम् इन्द्रियासक्ति, विषयोपभोग।

विषयाविन् (पु०) [विषयान् अत्त प्राप्नोति - विषय+अद्+क्विनि] 1 इन्द्रियसुखों में लिप्त, भोगविलासी 2 भंवर के कीड़ों में लिप्त मनुष्य 3 कामदेव 4 राजा 5 ज्ञानेन्द्रिय ७ भौतिकवादी।

विषयिन् (वि०) [विषय+इनि] इन्द्रियसुखमग्नी, शारीरिक, पु० 1 सांसारिक पुरुष, विषयी, दुनियादार आदमी 2 राजा 3 कामदेव 4 भोगविलासी, लम्पट पञ्च० १।१४६, शि० ५, नपु० 1 ज्ञानेन्द्रिय 2 ज्ञान।

विषल (पु०) ऊदबिलाव।

विषह (वि०) [वि+सह+क] 1 सहन करने के योग्य, जो बर्दाश्त किया जा सके अविषह्यमनेन घृणितम् कु० ४।३० रघु० ९।४३ 2 जो बसाया जा सके जो निर्वाहित किया जा सके मनु० ८।३६५, समर्थ शक्य।

विषा [विष्+अच्+टाप्] 1 विष्टा, मल 2 प्रतिभा समझ।

विषाण, अस्, णी [विष्+कानच्, स्त्रियां ङीप्] 1 सींग साहित्यमर्मज्ञकर्त्तव्यविहीन साक्षात्साम्य पुच्छविषाणहीनैः भर्तृ० २।१० कदाचिदपि पर्यटन् शशस्य शृङ्गमिच्छति प्रमथ्य फणमात्मनः स्फुरदपारदुर्वारविषाग्निभिन्न प्रह्लाद पुच्छविषाण शस्त्रक्षतम् शि० ७।६२, शि० १।६० 2 हाथी या सूअर के दांत—पश्य पाण्डुरदन्तिदन्तविषाणभिन्ना प्रह्लाद पुच्छविषाण शस्त्रक्षतम् शि० ७।६२, शि० १।६०।

विषाणिन् (वि०) [विषाण इनि] सींगों वाला या दांतों वाला, पु० 1 वह जानवर जिसके सींग हों या दांत बाहर निकले हों 2 हाथी शि० ४।६३, १२।७० 3 सांड।

विषाद [वि-सद्+घञ्] 1 खिन्नता, उदासी, उत्साहहीनता, रंज, शोक मङ्गलानि मा कुरु विषादम् भामि० ४।४१ विषादे कर्तव्ये दिवसनि जरा प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।३५, रघु० ८।५४ 2 निराशा, हताशा, वैराग्य, विषादकृच्छ्रप्रतिपत्तिमैत्र्यम्—रघु० २।४० (विषादनेतरि, भव उपायसाधनताशायी) 3 थकान, ग्लानि अवसन्नता, मा० ३।५ 4 मन्दता, जड़ता, राजावलिता।

विषादिन् (वि०) [विषाद+इनि] 1 खिन्न, उद्विग्न 2 उदास, विषण्ण।

विषार: [विष+ऋ+अच्] सांप।

विषालु (वि०) [विष+आलुच्] विषैला, जहरीला।

विषु (अव्य०) [विष्+कु] 1 दो समान भागों में, समान रूप से 2 भिन्नताएँ, विविध प्रकार से 3 समान, सदृश।

विषुवत् [विषु+मा+क] दो ध्रुवबिन्दु जहाँ पर सूर्य विषुवत् रेखा को पार करता है।

विषुवत् [विषु+मा+क] मेषराशि या तुलाराशि का प्रथम बिन्दु जिसमें सूर्य आनुदीय या वासन्तिक विषुव में प्रविष्ट होता है, विषुवीय बिन्दु। सम०—छाया मध्याह्नकाल में घड़ियों के शंकु की छाया, दिवस विषुवीय दिन, रेखा विषुवीय रेखा,–संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का विषुवीय मार्ग।

विषूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, पृषो० इत्वम्, इत्वम्] हैजा।

विस् (चुरा० उभ० विस्कयति ते) 1 वध करना, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना (इस अर्थ में केवल आत्मनेपदी) 2 देखना, प्रत्यक्ष करना।

विस्कन्द् [वि+स्कन्द्+अच्, घञ् वा] 1. नितरविचर होना 2 जाना, गमन।

विस्कम्भ: [वि+स्कभ्+अच्] 1 अवरोध रुकावट, बाधा 2 दरवाजे की सांकल, चटकनी 3. घर में लगा शहतीर 4 वृणी, अंश 5 वृत्त 6 (नाटकों में) नाटकों के अंकों के मध्य में मध्यस्था का प्रयोग जो दो मध्यम या निम्नवर्ग के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है तथा जिसमें श्रोताओं के सामने अंकों के अन्तराल में तथा बाद में होने वाली घटनाओं को संक्षेप में कह कर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों का नाटक की मुख्य कथा से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है। साहित्यदर्पण में इसकी निम्नांकित परिभाषा दी गई है कृतवर्तिष्यमाणानां कथा भागानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु विस्कम्भ अङ्कयोरुभयोरपि। मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः। शुद्ध स्यात् स तु सङ्कीर्णो नीचमध्यमकल्पितः ६०८ 7. वृत्त का व्यास 8. योगियों की विशेष मुद्रा 9 विस्तार, लम्बाई।

विस्कम्भक दे० विष्कम्भ।

विस्कम्भित (वि०) [विस्कम्भ+इतच्] बाधायुक्त, अवरुद्ध।

विस्कम्भिन् (पु०) [विस्कम्भ+इनि] द्वार की अर्गला, सांकल या चटखनी।

विस्किर: [वि+कृ+क, सुट्, परसवर्ण] 1 इधर उधर बखेरना, फाड़ डालना 2 मुर्गा 3 पक्षी, तीतर की जाति का पक्षी–छायापस्किरमाणविस्किरमृगव्याकृष्टकीटस्थलः उत्तर० २।९।

विस्तर:,–रम् [वि+स्तृ+अप्, तु] संसार, भूयस्– कु०

३।२०, तु० त्रिविष्टप। सम० हारिन् (वि०) जो संसार को प्रसन्न करता है भर्तृ० २।२५।

विष्टब्ध (भू० क० कृ०) [वि+स्तभ्+क्त] 1. पक्का जमाया हुआ भली भांति आश्रित 2 टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ 3 अवरुद्ध, सबाध 4 लकवा के रोग से ग्रस्त, गतिहीन।

विष्टम्भः [वि+स्तभ्+घञ्] 1 पक्की तरह से जमाना 2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3 मूत्रावरोध, मलावरोध कोष्ठबद्धता 4 लकवा 5 ठहरना, टिकाव।

विष्टर [वि+स्तृ+अप्, पत्वम्] 1. आसन, (स्टूल, कुर्सी आदि)· रघु० ८।१८ 2 तह, परत, बिस्तरा (कुश आदि घास का) 3. मुट्ठीभर कुशाघास 4. यज्ञ में ब्रह्मा का आसन 5. वृक्ष। सम० भाज् (वि०) आसन पर बैठा हुआ, आसन पर विराजमान- कु० ७।७२, —श्रवस् (पु०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण —शि० १४।१२।

विष्टि (स्त्री०) [विष्+क्तिन्] 1 व्याप्ति 2 कर्म, व्यवसाय 3. भाड़ा, मजदूरी 4 बेगार 5 प्रेषण 6 परकाम।

विष्ठलम् [विदूर स्थलम् प्रा० स०] दूरवर्ती स्थान, फासले पर स्थित।

विष्ठा [वि+स्था+क+टाप्, षत्वम्] 1 मल, लीद, पाखाना, मनु० ३।१८०, १०।९१ 2 पेट।

विष्णुः [विष्+नुक्] देवत्रयी में दूसरा, जिसको संसार का पालनपोषण सौंपा गया है, (इस कर्तव्य को भिन्न भिन्न अवतार धारण करके सम्पन्न किया जाता है, अवतारों के विवरण के लिए दे० अवतार) इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है यस्मादिदमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मन, तस्मादेवोच्यते विष्णु- विशधातो प्रवेशनात् -- 2 अग्नि 3 पुरुषात्मा 4 विष्णु-स्मृति के प्रणेता। सम० कांची एक नगर का नाम, -क्रम विष्णु के पग, नुप्तः वासुदेव का नाम, -तैलम् एक प्रकार औषधियों से बनाया गया तेल, —वैधव्या प्रत्येक पक्ष (चान्द्रमास के) की एकादशी और द्वादशी, पदम् 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 क्षीर-सागर 3 कमल, पदी गंगा का विशेषण, - पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, प्रीतिः (स्त्री०) विष्णुपूजा को स्थापित रखने के लिये ब्राह्मणों को अनुदान के रूप में दी गई भूमि, रथः गरुड़ का विशेषण, रिवी बटेर, लक्ष्मा, लोकः विष्णु का संसार,—वल्लभा 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 तुलसी का पौधा, - वाहनः, वाहः गरुड़ के विशेषण।

विष्पन्दः [वि+स्पन्द+घञ्] फड़कन, स्पन्दन, धक-धक होना।

विष्फार [वि+स्फुर+णिच्, उकारस्य आत्वम्] 1 धनुष की टंकार 2 घरघराहट।

विष्य (वि०) [विशेषेण वध्यः, विष+यत्] विष देकर मारे जाने योग्य, जिसको जहर देकर मार दिया जाय।

विष्यन्द [वि+स्यन्द्+घञ्] बहना, टपकना।

विष्य (वि०) पीड़ाकर, अतिकर, उत्पातकारी।

विष्वक्, विष्वञ्च (वि०) [विषुम् अञ्चति विष+अच् क्विन्] (कर्तृ०, ए० व० पु० विष्वङ्, स्त्री० विषूची नपु० विष्वक्) 1 सर्वत्र जाने वाला, सर्वव्यापक, विष्वङ्मोहः स्मयति कथ मन्दभाग्यः करोमि उत्तर०३।३८, मा० ९।२० 2 भागों में अलग अलग करने वाला 3 भिन्न, (विष्वक् शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ है 'सर्वत्र' 'सब ओर' 'चारों तरफ'—कि० १५।५९, पञ्च० २।२, मा० ५।४, ९।२५)। सम०- सेन (विष्वक्सेन, या विष्वक्सेन) विष्णु का विशेषण साम्यमाप कमलासनविष्वक्सेनमेकितगुणान्त-रयोर्घे शि० १०।५५ विष्वक्सेन स्वतनुमविशत्सर्व लोकप्रतिष्ठाम् रघु० १५।१०३, प्रिया लक्ष्मी का नाम।

विष्वजनम्, विष्वाण [वि+स्वन्+ल्युट्, घञ् वा, षत्वणत्वे] भोजन करना, खाना।

विष्वद्रय (द्र्य) च् (वि०) (स्त्री० विष्वद्रीची) [विष्वच्+अञ्च्+क्विन् अचि आदेश] सर्वग, सर्वव्यापक, विश्वद्रीचीविक्षिपन् सैन्यवीची· शि० १८।२५ विश्वद्र्योच्या भुवनमभितो भ्रामते यस्य भामा भामि० ४।१८।

विस् । (दिवा० पर० विस्यति) डालना, फेंकना, भेजना। ।। (स्वा० पर० वेसति) जाना, हिलना-डुलना।

विस् दे० 'बिस'।

विसयुक्त (भू० क० कृ०) [वि+सम्+युज्+क्त] अलग-अलग किया हुआ, पृथक् पृथक् किया हुआ।

विसयोगः [वि+सम्+युज्+घञ्] अलग-अलग होना विश्लेष, वियोग।

विसंवाद [वि+सम्+वद्+घञ्] 1 धोखा, प्रतिज्ञा भंग करना, निराशा 2 असंगति, असम्बद्धता, असङ्गति 3 वचनविरोध।

विसंवादिन् (वि०) [विसंवाद+इनि] 1 निराश करने वाला, धोखा देने वाला 2. असंगत, विरोधात्मक 3 भिन्न मत रखने वाला, असहमत रघु० १२।६७ 4 आलसाज, धूर्त, मक्कार।

विसंष्ठुल (वि०) [वि+सम्+स्था+कलच्] 1 अस्थिर, विशृंखल 2. असम।

विसंस्कट (वि०) [विशिष्टः संकटो यस्मात् प्रा० ब०]

भयानक, डरावना—मा० ५।१३—नु० विकराल, —ः 1 सिंह 2 इगुदी का वृक्ष।

विसंगत (वि०) [वि+सम्+गम्+क्त] अयोग्य, असम्बद्ध, बेमेल।

विसंधि. [विरुद्ध सन्धि,- प्रा० स०] असंभिमत सन्धि या सन्धि का अभाव (यह साहित्यरचना में एक दोष माना जाता है) दे० काव्य० ७।

विसर: [वि+सृ+अप्] 1 जाना 2 फैलाना, विस्तार करना 3 मोड़, समुच्चय, ढेर, लहरदार 4 बड़ी राशि, ढेर मा० १।३७।

विसर्ग: [वि+सृज्+घञ्] 1 भेज देना, उद्गार 2 गिराना, उड़ेलना, बूंद-बूंद करके गिराना रघु० १६।३८ 3 डालना, फेंकना 4 प्रदान करना, भेंट, दान —आदान हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, (यहाँ शब्द का अर्थ 'उड़ेलना' भी है) 5 भेज देना, विसर्जन 6 परित्याग, छोड़ देना 7 उत्सर्जन, मलत्याग जैसा कि 'पुरीष विसर्ग' में 8 जुदाई, वियोग 9 मोक्ष 10 प्रकाश, इत्यादि 11 लिखने में एक प्रतीक, जो स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा जो विन्दु ( ) लगा कर प्रकट किया जाता है 12 सूर्य का दक्षिणायन 13 लिङ्ग, शिश्न।

विसर्जनम् [वि+सृज्+ल्युट्] 1. उद्गार, प्रेषण, उड़ेलना—समतया वसुवृष्टिविसर्जनै—रघु० ९।६ 2 प्रदान करना, भेंट, दान —रघु० ९।६ 3 मलत्याग, मनु० ४।४८ 4 डाल देना, त्याग देना, परित्याग करना—रघु० ८।२५ 5 भेज देना, विदा करना 6 (देवता को) विदा करना (विप० आवाहन) 7 किसी विशेष अवसर पर सांड का छोड़ देना।

विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज्+अनीयर्] परित्यक्त किये जाने के योग्य,—ः=विसर्ग ( ) दे०।

विसर्जित (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+णिच्+क्त] 1 उद्गीर्ण, उगला गया 2 प्रदत्त 3 छोड़ा गया, त्याग दिया गया, परित्यक्त 4 भेजा गया, प्रेषित 5 विदा किया गया, तितर बितर किया गया।

विसर्प. [वि+सृप्+घञ्] 1 रेंगना, सरकना 2. इधर से उधर आना और जाना 3 फैलाव, संचार—उत्तर० १।३५ 4. किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित फल 5 एक प्रकार का रोग, सूजी खुजली। सम०—स्थान शोथ।

विसर्पणम् [वि+सृप्+ल्युट्] 1 रेंगना, सरकना, शनैः शनैः चलना 2 प्रसारण, फैलाव, विस्तारण।

विसर्पि:, विसर्पिका दे० ङ० विसर्प (5)।

विसल दे० 'बिसल'।

विसार: [वि+सृ+घञ्] 1 फैलाना, बिछाना, प्रसारण 2 रेंगना, सरकना 3 मछली,—रम् 1. मछली 2 शहतीर।

विसारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [वि+सृ+णिनि] 1. फैलाने वाला, प्रसार करने वाला 2 रेंगने वाला, सरकने वाला, पु० मछली।

विसिनी दे० 'बिसिनी'।

विसिल दे० 'बिसिल'।

विसूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] हैजा।

विसूरणम्,—ना [वि+सूर्+ल्युट्] दुःख, शोक।

विसूरितम् [वि+सूर्+क्त] पश्चात्ताप, दुःख,— ना बुखार, ज्वर।

विसृत (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1 फैलाया हुआ, विस्तृत किया हुआ, प्रसारित किया हुआ 2 विस्तारित, तनाया हुआ 3. कहा हुआ।

विसृत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [वि+सृ+क्वरप्, तुट्] 1 इधर उधर फैलने वाला, व्याप्त होने वाला - विसृत्वरैरंशुभिरुह्यते रजोभि—शि० ३।११ 2 रेंगना, सरकना।

विसृमर (वि०) [वि+सृ+क्मरच्] 1 रेंगने वाला, सरकने वाला, शनैः शनैः चलने वाला—विसृमरैर्हरिभिरुह्यते—वेणी० ४।

विसृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+क्त] 1 उद्गीर्ण, उगला हुआ 2 उत्पन्न, निःसृत 3 डलकाया हुआ, टपकाया हुआ 4. भेजा हुआ, प्रेषित—रघु० ५।३९ 5 विदा किया गया, जाने दिया गया, कार्यभार से मुक्त किया गया - रघु० २।९ 6 निकाल बाहर किया गया, फेंका गया 7 दिया गया, प्रदत्त, स्वीकृत-कामेष्वारम्भविसृष्टेषु रघु० १।४४ 8 परित्यक्त, उन्मुक्त, हटाया गया (दे० वि पूर्वक सृज्)।

विसृत दे० 'बिसृ'।

विस्तर: [वि+स्तृ+अप्] 1 विस्तार, फैलाव 2 सूक्ष्म विवरण, ब्यौरेवार वर्णन, सूक्ष्म ब्यौरे सहित-लक्ष्याप्यलोप्रयोग वाक्यस्यार्थगरीयस, सुविस्तरतरा वाचो भाष्यमूला भवन्तु मे शि० २।२४ (विस्तरेण विस्तरतः, विस्तरशः ब्यौरेवार, विस्तारपूर्वक, पूरी तरह से, सूक्ष्म विवरण सहित, पूरी विशेषताओं के साथ —अङ्गुलिमुद्राधिगम विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि—मुद्रा० १, भग० १०।१८) 3 सुविस्तरता, प्रसार—अर्थं विस्तरेण 4. बहुतायत, परिमाण, समुच्चय, संख्या 5 बिस्तरा, तह, स्तर 6 आसन, तिपाई।

विस्तार: [वि+स्तृ+घञ्] 1 फैलाव, विस्तृति, प्रसारण—ज्ञातविस्तारमाज्ञाम्—मा० १।२७ 2 आयाम, चौड़ाई —विलोकयन्त्यो वपुरात्मनश्च प्रकामविस्तारफलं हरिण्य· रघु० २।११, भग० १३।३० 3 फैलाव, विपुलता, विशालता—अध्य दयाम स्तन इव भुवः श्वेतविस्तार-पाडु —मेघ० १८ 4 विवरण, पूरा ब्यौरा— सम्बोऽपि

तावच्छुतविस्तारः क्रियताम्—श०७ 5 वृक्ष का व्यास 6 छाती 7 नूतन पल्लवों से युक्त पेड़ की छाल।

विस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. बिछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2 चौड़ा, विस्तृत 3 विशाल, बड़ा, विस्तारयुक्त। सम०—वर्चस् एक प्रकार की जड़, मानक।

विस्तृत (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2 चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4 सुविस्तर, लंबा-चौड़ा।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि+स्तृ+क्तिन्] 1 विस्तार फैलाव 2. चौड़ाई, फासला, विशालता 3 वृक्ष का व्यास।

विस्पष्ट (वि०) [विशेषेण स्पष्ट—प्रा० स०] 1 सीधा, साफ, सुबोध 2 प्रकट, स्फुट, सुव्यक्त, खुला, प्रत्यक्ष।

विस्फार [वि+स्फुर्+घञ्, उकारस्य आकार] 1 थरथराहट, कम्पन, धड़कन 2 धनुष की टंकार।

विस्फारित (भू० क० कृ०) [विस्फार+इतच्] 1 थरथरी पैदा की गई 2 कम्पमान, थरथराता हुआ 3 टंकारयुक्त 4 विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5 प्रकटित प्रदर्शित।

विस्फुरित (भू० क० कृ०) [वि+स्फुर्+क्त] 1 थरथराने वाला, काँपने वाला 2 सूजा हुआ, विस्तारित।

विस्फुलिंगः [वि+स्फर्+डु=विस्फु तादृश लिंगमस्ति अस्य] 1 आग की चिनगारी अग्नेर्ज्वलतो विस्फुलिंगा विप्रनिष्ठेरन्—शारी० 2 एक प्रकार का विष।

विस्फूर्जथुः [वि+स्फूर्ज्+अथुच्] 1 दहाड़ना, गरजना, कड़कना 2 बादल की गरज, बिजली की कड़क 3 बिजली जैसी कड़क, अकस्मात् आभास या आघात—अनेन अन्यातरपातकाना विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्य—रघु० १४।६२ 4 (लहरों का) आन्दोलित होना, लहरों का उठना—महीमविस्फूर्जथुनिर्विशेषा—रघु० १३।१२।

विस्फूर्जितम् [वि+स्फूर्ज्+क्त] 1 दहाड़, चीत्कार 2 फड़कना 3 फल, परिणाम मनु० २।१२५, ३। १४८।

विस्फोटः,-टा [वि+स्फुट्+घञ्] 1 फोड़ा, अर्बुद, रसौली 2 शीतला, चेचक।

विस्मयः [वि+स्मि+अच्] 1 आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा, अचरज—पुरुष, प्रभवत्यात्मविस्मयेन सहस्रिजाम्—रघु० १०।५। 2 आश्चर्य या अचम्भे की भावना, जिससे अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है, सा० द० २०७ पर इसकी परिभाषा दी गई है विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु, विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृत 3. घमंड, अभिमान,—तपः क्षरति विस्मयात्—मनु० ४।२३७ 4 अनिश्चय, सन्देह। सम०—आकुल, आविष्ट (वि) आश्चर्ययुक्त, अचरज से भरा हुआ।

विस्मयनीय (वि०) [विस्मय गच्छति -विस्मय+गम्+खश्, मुम्] अचरज से भरा हुआ, आश्चर्यजनक।

विस्मरणम् [वि+स्मृ+ल्युट्] भूल जाना, विस्मृति, स्मृति का न रहना, निसर जाना—श० ५।२३।

विस्मापन (वि०) (स्त्री० -नी) [वि+स्मि+णिच्+ल्युट्, पुकागम, आत्वम्] आश्चर्यजनक,—नः 1 कामदेव 2 बाल, धोखा, भ्रम,—नम् 1 आश्चर्य पैदा करना 2 कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3 गन्धर्वों का नगर (पु० भी कहा जाता है)।

विस्मित (भू० क० कृ०) [वि+स्मि+क्त] 1 आश्चर्यान्वित, चकित, भौचक्का, हक्काबक्का 2 उलटपुलट किया गया 3 घमंडी।

विस्मृत (भू० क० कृ०) [वि+स्मृ+क्त] भूला हुआ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि+स्मृ+क्तिन्] भूल जाना, बिसार देना, अस्मरण।

विस्मेर (वि०) [वि+स्मि+रन्] भौचक्का, आश्चर्यान्वित, चकित।

विस्रम् [विस्+रक्] कच्चे मांस की गंध के समान गंध। सम०—गंधि हरताल।

विस्रंस, -सा [वि+स्रंस्—घञ्] 1 नीचे गिरना 2 क्षय, शैथिल्य, कमजोरी, निर्बलता।

विस्रंसन (वि०) [वि+स्रंस्+ल्युट्] 1 पतनशील या बिन्दुपाती—अन्तर्मौलिशिखण्डनेबलन्मन्दारविस्रंसन—गीत० ३ 2 खोलने वाला, ढीला करने वाला नीवीविस्रंसन कर काव्य० ७ —नम् 1 अध पतन 2 बहना, टपकना 3 खोलना, ढीला करना 4 रेचक, दस्तावर।

विस्रब्ध, विस्रंभ दे० विश्रब्ध, विश्रम्भ।

विस्रम्भा [वि+स्रंभ्+क+टाप्] क्षय, निर्बलता, अर्जरता।

विस्रस्त (भू० क० कृ०) [वि+स्रंस्+क्त] 1. ढीला किया हुआ 2 दुर्बल, बलहीन।

विस्रवः, विस्रावः [वि+स्रु+अप्, घञ्, वा] बहना, बूंद बूंद टपकना, चूना, रिसना।

विस्रावणम् [वि+स्रु+णिच्+ल्युट्] रक्त बहना।

विस्रुतिः (स्त्री०) [वि+स्रु+क्तिन्] बह जाना, चूना, रिसना।

विस्वर (वि०) [विगतो वा स्वरो यस्य प्रा० ब०] बेसुरा।

विहग [विहायसा गच्छति गम्+ड, नि०] 1 पक्षी —मेघ० २८, ऋतु० १।२३ 2 बादल 3. बाण 4 सूर्य 5 चाँद 6 नक्षत्र।

विहंग: [विहायसा गच्छति – गम्+डच्, मुम्] 1 पक्षी - रघु० १।५१, मनु० ९।५५ 2 बादल 3 बाण 4 सूर्य 5 चन्द्रमा । सम० इन्द्र:,—ईश्वर:,—राज: गरुड के विशेषण ।

विहंगम: [विहायसा गच्छति—गम्+डच्, मुम्, विहादेश.] पक्षी (गृह दीर्घिका) मदकलोलकलोलविहंगमा· रघु० ९।३७, मनु० १।९९, हि० १।३७।

विहंगमा, विहंगिका [विहगम+टाप्, विहग+कन्+टाप्, इत्वम्] बिहंगी, वह बांस जिसके दोनों सिरों पर बोझ बांध कर लटका दिया जाता है ।

विहत (भू० क० कृ०) [वि+हन्+क्त] 1 पूरी तरह आहत, वध किया गया 2 चोट पहुंचाई गई 3 अवरुद्ध, विरोध किया गया, मुकाबला किया गया ।

विहति: [वि+हन्+क्तिच्] मित्र, साथी, – (स्त्री०) 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 असफलता 3 पराजय, हार ।

विहननम् [वि+हन्+ल्युट्] 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 चोट, क्षति 3 अवरोध, रुकावट, अड़चन 4 वह धुनने की धुनकी ।

विहर: [वि+हृ+अप्] 1 अपहरण करना, हटना 2 वियोग, बिछोह ।

विहरणम् [वि+हृ+ल्युट्] 1 दूर करना, अपहरण करना 2 सैर करना, हवाखोरी, इधर उधर टहलना 3 आमोद-प्रमोद, मनोरञ्जन ।

विहर्तृ (पु) [वि+हृ+तृच्] 1 भ्रमणशील 2 लुटेरा ।

विहर्ष [विशिष्टो हर्ष प्रा० स०] बहुत अधिक प्रसन्नता, उल्लास ।

विहसनम् विहसितम् विहास: [वि+हस्+ल्युट्, क्त घञ् वा] मन्द हंसी, मुस्कान ।

विहस्त (वि०) [विगत. हस्तो यस्य प्रा० ब०] 1 हस्तरहित 2 घबराया हुआ, व्याकुल, पराभूत, शक्तिहीन किया हुआ, मा० १, रघु० ५।५९ 3 अयोग्य (उपयुक्त कार्य करने के लिए) अक्षम, रजा विहस्तचरणम् मालवि० ४ 4 विद्वान्, बुद्धिमान् ।

विहा (अव्य०) [वि+हा+आ, नि०] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

विहापित (भू० क० कृ०) [वि+हा+णिच्+क्त, पुकागम] 1 परित्यक्त कराया गया 2 तोड़ मरोड़ कर निकाला गया, छुड़ाया गया, तम् भेंट, दान ।

विहायस् (पु० नपु०) [वि+हा+असुन्, नि० वृद्धि], आकाश, अन्तरिक्ष शि० १९।४३, (पु) पक्षी —नै० ३।९९ ।

विहायस दे० 'विहायस्' ।

विहार: [वि+हृ+घञ्] 1 हटाना, दूर करना 2 सैर सपाटा, हवाखोरी, भ्रमण, सैर करना 3 क्रीडा, खेल, मनोविनोद, मनोरञ्जन, आमोद-प्रमोद, विलास - विहारशैलानुपतेव नागै रघु० १६।२६, ७६, ५।४१, ९।६८, १३।२८, १९।३७ 4 पग रखना, कदम बढ़ाना,—चरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११, कि० ४।१५ 5. वाटिका, उद्यान, विशेषत: प्रमोदवन 6 कक्षा 7 जैनमन्दिर या बौद्धमन्दिर, मठ, आश्रम या सभाराम 8 मन्दिर 9 जागिन्द्रिय का बृहद् विस्तार । सम०—गृहम् प्रमोदभवन, दासी सन्यासिनी, बिजली ।

विहारिका [विहार+ कन्+टाप्, इत्वम्] बौद्धमठ ।

विहारिन् (वि०) [विहार+इनि] मनोविनोदी या दिलबहलावा करने वाला - मृगयाविहारिण –का० १ ।

विहित (भू० क० कृ०) [वि+धा+क्त] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ 2. क्रमबद्ध किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सुव्यवस्थित, नियोजित, निर्धारित 3 आदिष्ट, विधान किया हुआ, समादिष्ट 4 निर्मित, सरचित 5 रक्षा हुआ, जमा किया हुआ, 6 सुसज्जित, सम्पन्न 7 किये जाने के योग्य 8 वितरित, बांटा गया (दे० वि पूर्वक धा),—तम् आदेश, आज्ञा ।

विहिति: (स्त्री०) [वि+धा+क्तिन्] 1 अनुष्ठान, क्रिया, कर्म 2 व्यवस्था ।

विहीन (भू० क० कृ०) [वि+हा+क्त] 1 छोड़ा गया, परित्यक्त, त्यागा गया 2 शून्य, रहित, वञ्चित (प्राय समास में) विद्याविहीन पशु भर्तृ० २।२० 3 अधम, नीच, कमीना । सम०—जाति योनि (वि०) नीच घर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ ।

विहृत (भू० क० कृ०) [वि+हृ+क्त] 1 क्रीडा की, खेला हुआ 2 फुसलाया हुआ, तम् स्त्रियों द्वारा प्रेम प्रदर्शित करने की दस रीतियों में से एक दे० सा० द० १२५, १४६. (इस अर्थ में 'विहृत' भी लिखा जाता है) ।

विहृति: (स्त्री०) [वि+हृ+क्तिन्] 1 हटाना, दूर करना 2 क्रीडा, मनो विनोद, विहार 3 प्रसार ,

विहेठक: [वि+हेठ्+ण्वुल्] क्षति पहुंचाने वाला ।

विहेठनम् [वि+हेठ्+ल्युट्] 1 क्षति पहुंचाना, घायल करना 2 मसलना, पीसना 3 कष्ट देना ' पीड़ा, दुःख, सताना

विह्वल (वि०) [वि+हृ,वल्+अच्] 1 विक्षुब्ध, अशान्त, व्याकुल, घबराया हुआ रघु० ८।३७ 2 डरा हुआ, सन्त्रस्त 3. उन्मत्त, आपे से बाहर 4 कष्टग्रस्त, दुःखी–कु० ४।४ 5 विषादपूर्ण 6 गला हुआ, पिघला हुआ ।

वी (अदा० पर० वेति—शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 पहुंचना 3 व्याप्त होना

4. लाना, पहुँचाना 5, फेंक देना, डालना 6 खाना, उपभोग करना 7 प्राप्त करना 8 गर्भधारण करना, उत्पन्न करना 9. पैदा होना जन्म लेना 10 चमकना, सुन्दर होना।

वीक: [अज्+कन्, वी आदेशः] 1 वायु 2 पक्षी, 3. कन।

वीकाश दे 'विकाश'।

वीक्षण [वि+ईक्ष्+अच्] 1 दृश्य पदार्थ 2 अचम्भा, आश्चर्य, -क्षः, -क्षा, देखना, ताकना।

वीक्षणम्,—ना [वि+ईक्ष्+ल्युट्] देखना, निहारना, दृष्टि डालना।

वीक्षितम् [वि+ईक्ष्+क्त] दृष्टि, झलक।

वीक्ष्य (वि०) [वि+ईक्ष्+ण्यत्] 1 देखे जाने के योग्य 2 दृश्य, दृष्टिगोचर,- क्ष्यः 1 नर्तक तट, अभिनेता, पात्र 2 घोड़ा, क्ष्यम् 1 देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, दृश्यमान पदार्थ 2 आश्चर्य, अचम्भा।

वीक्षा [वि+ईक्ष्+अ—टाप्] 1 जाना, हिलना-जुलना, प्रगति 2 घोड़े का कदम 3 नाव 4 संगम, मिलन।

वीचिः (पु०, स्त्री०) **वीची** [वे+ईचि, डिच्च वीचि —ङीष्] 1 लहर—समुद्रवीचीव चलस्वभावा—पंच० १।१९४, रघु० ६।५६, १२।१००, मेघ० २८ 2 गति, विचारशून्यता 3 आनन्द, प्रसन्नता 4 विश्राम, अवकाश 5 प्रकाश की किरण 6 स्वल्पता। सम० —मालिन् (पु०) समुद्र।

वीची दे० 'वीचि'।

वीज् 1 (म्वा० आ० वीजते) जाना।

II (चुरा० उभ० वीजयति ते) पंखा करना, पंखा करके ठंडा करना ल वीज्यते मणिमयैरिव तालवृन्तैः —मृच्छ० ५।१३, कु० २।४२, अभि—, उप—, परि—, पंखा करना ऋतु० ३।८, श० ३।

वीज वीजक, वीजल, } दे० वीज, वीजक, वीजल,
वीजिक वीजिन्, वीज्य } वीजिक, वीजिन और वीज्य।

वीजनः [वीज्+ल्युट्] 1 चक्रवाक 2 एक प्रकार का चकोर, नम् 1 पंखा करना कु० ४।३६ 2 पंखा।

वीटा [वि+इट्+क+टाप्] 1 लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगभग एक बालिश्त) जिसको लड़के डंडा मार कर खेलते हैं, गुल्ली डंडा।

वीटिः, वीटिका, वीटी [वि—इट्+इन्, ह्रस्व किन्, वीटि+कन्+टाप्, वीटि+ङीष् वा] 1 पान की बेल, 2. पान लगाना 3 बधना, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने वाले वस्त्र की) 4 चोली की तनी अमरु २३।

वीणा [वेति वृद्धिमार्गमपगच्छति—वी+न, नि० गत्वम्] 1. सारंगी, वीणा मूकीभूतायां वीणायाम् का०, मेघ० ८६ 2 बिजली। सम० —वाद्यः नारद का विशेषण,—वाद्यः वीणा की गर्दन—भामि० १।८०,—वादः, —वादक, वीणा बजाने वाला।

वीत (भू० क० कृ०) [वि+इ+क्त] 1 गया हुआ, अन्तर्हित 2 जो चला गया, बिदा हो गया 3 जिसको जाने दिया गया, ढीला, उन्मुक्त 4 अलगाया हुआ, विमुक्त किया हुआ 5 अनुमोदित, पसंद किया गया 6 युद्ध के अयोग्य 7 पालतू, शान्त 8 मुक्त, शून्य (बहुधा समास में) वीतचिन्त, वीतस्पृह, वीतभी, वीतशंक आदि,—तः हाथी या घोड़ा जो युद्ध के अयोग्य हो या सधाया न गया हो,—तम् (हाथी को) अंकुश से गोदना तथा पैरों से प्रहार करना, —वीतवीतभया नागा कु० ६।३९ (पाठान्तर—दे० इस पर मल्लि०) शि० ५।४७। सम० —जन्मन् (वि०) विनम्र, विनीत, —भय (वि०) निर्भय, निडर (यः) विष्णु का विशेषण, —मल (वि०) पवित्र, निर्मल, —राग (वि०) 1 इच्छारहित कु० ६।४२ 2 निरपेक्ष, सौम्य, शान्त 3 विवर्ण, बिना रंग का, (गः) एक ऋषि जिसने अपने रागों का दमन कर लिया था,—शोक (—अशोक) अशोक वृक्ष।

वीतंस [विशेषेण बहिरेव तस्यते भृज्यते वि+तंस्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 पींजरा या जाल जिसमें पक्षी या अन्य वन्य पशु फंसाये जाते हैं 2 चिड़ियाघर, शिकार के पशुओं को पालने का स्थान।

वीततनी (पु०, द्वि० व०) [विशिष्ट तनोति—वि+तन्+अच्, पृषो० दीर्घः] गले के अगल बगल के पार्श्व।

वीर्य [वी+किरच्] घोड़ा,—र्या (स्त्री०) 1 गति, चाल 2 पैदावार, उपज 3 सुखोपभोग 4 भोजन करना 5 प्रकाश, कान्ति। सम०—होत्रः 1 अग्नि 2 सूर्य।

वीथिः, थी (स्त्री०) [विथ+इन्, ङीष् वा, पृषो०] 1 सड़क, मार्ग, कि० ७।१३ 2 पंक्ति, कतार 3 हाट, आपणिका, मंडी में दुकान कि० ९।३२ 4 नाटक का एक भेद। इसकी परिभाषा सा० द० निम्नांकित है वीथ्यामेकोऽथवाऽनेकः कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते, आकाशभाषितैरुक्तैश्चित्रार्थाः प्रत्युक्तिमाश्रिताः। मुखयेदभूरि शृङ्गारं किञ्चिदन्यान्यरसानपि। मुखनिर्वहणे सन्धी अंगप्रहसनयोर्जिह्मा, ५२०।

वीथिका [वीथि+कन्+टाप्] 1 सड़क आदि 2 चित्रशाला, चित्रसारी (जिस पर चित्र चित्रित किये जाते हैं) चित्रागार, चित्रावली—आर्यस्य परिजनस्य वीथिकायामालिखितम्—उत्तर० १।

वीध्र (वि०) [विशेषेण इन्धते—वि+इन्ध्+क्रन्, उपसर्गस्य दीर्घः] निर्मल, स्वच्छ, ध्रः 1 आकाश 2 वायु, हवा 3 अग्नि।

वीवाह् [वि+वह्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] कुएँ का ढक्कन या मणि।

वीषा (स्त्री०) बिजली, बिजली।

वीप्सा [वि+आप्+सन्+अ+टाप्, ईत्वम्] 1 परिव्याप्ति 2 (गौरव प्रकट करने के लिए) शब्द द्विरुक्ति—यथा वृक्षं वृक्षं सिञ्चति इति वीप्सायां द्विरुक्तिः 3 सामान्य पुनरुक्ति।

वीभ् (स्वा० आ० वीभते) डींगें मारना, डींग मारना।

वीर (वि) [अजे रक् वीभावश्च] 1 शूर, वीर 2 ताकतवर, शक्तिशाली, दृढ़ 1 शूरवीर, योद्धा, प्रजेना कोऽप्येष सम्प्रति नव पुरुषावतारो वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽसि उत्तर० ५।३४ 2 (आल० में) वीरभावना, वीररस, इसके चार भेद (दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किये गये हैं, स्पष्टीकरण के लिए दे० इन शब्दों को 3 अभिनेता 4 आग 5 यज्ञ की अग्नि 6 पुत्र 7 पति 8 अर्जुन वृक्ष 9 विष्णु का नाम, रस् 1 नरकुल 2 मिर्च 3 चावल का माड़ 4 उशीर का अर्क, सत्त्व। सम० आसनम् 1 निगरानी रखना 2 युद्ध में कौशिक से मरा पड़ा 3 छोड़ी हुई आशा, -आसनम् 1 योगाभ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा, परिभाषा के लिए दे० पर्यंक (३) 2 एक घुटना मोड़ कर बैठना 4 सतरी की चौकी, ईक्षः,—ईक्षणः 1 शिव के विशेषण 2 महान् वीर, उत्तम वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्नि में आहुति नहीं डालता, अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण,—कोदः तुच्छ सैनिक, कथालिका 1 रणनृत्य 2 संग्राम, युद्ध, तरुः अर्जुनवृक्ष, -दमनः (पुं०) कामदेव,—दलम् (पुं०) एक उत्तेजक या श्रमापहारक तेल जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं, भद्रः 1 एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव ने अपनी जटाओं से निकाला था दे० 'दक्ष' 2 माना हुआ योद्धा 3 अश्वमेध यज्ञ के उपकूल बांधा 4 एक प्रकार का सुगन्धित घास,—मुद्रिका पैर की मध्यमा अंगुली में पहना जाने वाला छल्ला, रजस् (नपुं०) सिन्दूर, रस 1 वीरता का भाव 2 सामरिक भावना,—रेचुः भीमसेन का नाम, विष्कम्भकः सूत्र से मन लेकर हवन करने वाला,—वृक्षः 1 अर्जुन वृक्ष 2 जिलाधे का वृक्ष, -सू (स्त्री०) शूरवीर पुत्र की माता (इसी प्रकार वीरप्रसवा, प्रसू, प्रसविनी), सैन्यम् अहसुन, -स्थानः भैंसा —हन् (पुं०) 1 वह ब्राह्मण जिसने दैनिक अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है 2 विष्णु।

वीरण [वि+ईर्+ल्युट्] एक सुगन्धित घास, उशीर (जिसकी जड़ें—खस—शीतलता प्रदान करने के लिए प्रयुक्त होती हैं)।

वीरणी [वीरण+ङीष्] 1 तिरछी चितवन, कटाक्ष 2 गहरा स्थान।

वीरतरः [वीर+तरप्] 1 महान् वीर 2 बाण, -रम् एक प्रकार का सुगन्धित घास, उशीर।

वीरद्वरः [वीर+द्व+अच्, मुम्] 1 मोर 2 अन्य पशुओं के साथ लड़ाई 3 चमड़े की जाकेट।

वीरवत् (वि०) [वीर+मतुप्] शूरवीरों से भरा हुआ, -ती वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हो।

वीरा [वीर+टाप्] 1. शूरवीर पुरुष की स्त्री 2 पत्नी 3 माता, गृहिणी 4. मुरा नामक एक गन्धद्रव्य, 5 शराब 6 अगर की लकड़ी 7. केले का पेड़।

वीरिचिन् दे० 'ईरिचि'।

वीरुध्,-धा (स्त्री०) [विशेषेण रुणद्धि अन्यान् वृक्षान् - वि+रुध्+क्विप् पक्षे टाप्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 लहलहाने वाली लता अन्या प्रतानिनी वीरुत् —भट्टि०, आहोस्विदस्मत्सखो ममापकर्तुर्विष्टपिनो वीरुधाम् रघु० ५।१९, कु० ४।३४, रघु० ८।३६ 2 शाखा, अङ्कुर 3 काटने पर ही बढ़ने वाला पौधा 4 बेल, लता, झाड़ी—कि० ४।१९।

वीर्यम् [वीर+यत्] 1 शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी —वीर्यावदानेषु कृतावमर्शः —कि० ३।४३, रघु० २।४, ३।६२, ११।७८, वेणी० ३।३ 2 बल, सामर्थ्य 3 पुंस्त्व 4 ऊर्जा, दृढ़ता, साहस 5 शक्ति, क्षमता मनु० ३।२ 6 (औषधियों की) अचूकता, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरत्नीयमिति दृश्यते गुणे कि० २।२४, कु० २।४८ 7 शुक्र, वीर्यं —कु० ३।१५, पञ्च० ४।५० 8 आत्मा, कान्ति 9 गौरव, महिमा। सम० -वत् पुत्र, —प्रवाहः वीर्य का क्षरण या स्खलन।

वीर्यवत् (वि०) [वीर्य+मतुप्] 1. मजबूत, हृष्टपुष्ट, बलवान् 2 अचूक, अमोघ।

वीवधः [वि+वह्+घञ्, वृद्धभावो दीर्घश्च] 1 बोझा ढोने के लिए जूआ, बहंगी 2 बोझा 3 अनाज का मझार भरना 4 मार्ग, सड़क।

वीवधिकः [वीवध+ठन्] बहंगी ढोने वाला।

वीहारः [वि+हृ+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 बौद्ध विहार या बौद्धमठ 2. देवालय।

वृक्ष् (स्वा० पर० वृक्षति) छोड़ना, परित्याग करना।

वृक्ष् (चुरा० उभ० वृक्षयति-ते) 1 चोट पहुँचाना वध करना 2 नष्ट करना।

वृक्षुः (वि०) [वृ+सन्+उ] पसन्द करने का इच्छुक।

वृक्ष दे० 'वृक्ष'।

वृक्ष (वि०) [वृ+क्त] छांटा हुआ, चुना हुआ।

वृ १ (भ्वा०, स्वा०, क्रया० उभ० वरति-ते, वृणोति-वृणुते, वृणाति-वृणीते, वृत, कर्मवा० क्रियते) 1 छांटना, चुनना, पसन्द करना—वृत तेनेदमेव शाक्-कु० २।५६, स्वयं

रामस्य वनप्रयाणम्—भट्टि० ३।६ 2 अपने लिए चुनना (आ०) गुणैर्हि विमृष्यकारिण गुणलुब्धा स्वयमेव सम्पद—किं० २।३०, रघु० ३।६ 3 विवाह के लिए वरण करना, प्रणय-प्रार्थना करना, प्रणयाभ्यर्थना करना —महावी० १।२८, अनर्घ० ३।४२ 4 प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना 5 ढकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना—येषैर्वृतश्चन्दनमारुतोऽपि—मृच्छ० ५।१४ 6 घेरना, लपेटना भट्टि० ५।१०, रघु० १२।६१ 7 परे हटना, दूर करना, नियन्त्रण करना, रोकना 8 विघ्न डालना, विरोध करना, अड़चन डालना, प्रेर०—(वारयति-ते) 1 ढकना, छिपाना 2 (किसी वस्तु से) आँख फेर लेना (अपा० के साथ) 3 रोकना, हटाना, नियन्त्रण करना, दबाना, आग पड़ताल करना, विघ्न डालना —शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्—भर्तृ० २।११, इच्छा० विवूर्षति-ते, विविरिषति-ते, विवरिषति-ते, चुनने की इच्छा करना, अप , खोलना (प्रेर०) ढकना, छिपाना अपा—, खोलना आ—, 1 ढकना, छिपाना, गुप्त रखना आवृणोदास्यमन्तो रन्ध्रं रन्ध्रेषु प्रहरन् रिपून् रघु० १७।६१, भट्टि० ९।२४ 2 पूरना, व्याप्त होना भग० १३।१३, मनु० २।१४४ 3 चुनना, इच्छा करना 4 निवेदन करना, प्रार्थना करना 5 घेरना, नाके बन्दी करना, रोकना —रघु० ७।३१ 6 दूर रखना —भट्टि० १४।१०९, वि—, घेरा डालना, घेरना भट्टि० १४।१९, (प्रेर०)— परे हटना दूर करना, आँख फेरना (अपा० के साथ) पापान्निवारयति योजयते हिताय —भर्तृ० २।७२, निस् , (बहुधा कर्मवा० रूप) प्रसन्न होना, सन्तुष्ट या सन्तृप्त होना निर्वर्णयन्नयनपीडिय-वर्ग —शि० १०।३, दे० निर्वृत, परि , घेरना, प्र—, 1 ढकना, लपेटना प्रावारिणीरिव क्षोणी शिलावृक्षा समन्तत भट्टि० ९।२५ 2 पहनना, धारण करना 3 चुनना, छाँटना, प्रा —, पहनना, धारण करना, वि—, 1 ढक देना, ठहरना 2 खोलना—कु० ४।२६ 3 तह खोलना, भेदाफोड करना, भेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना नै० ९।१, कु० ३।१५, रघु० १।८५, भट्टि० ७।७३ 4 सिखाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना—महावी० २।४३ 5 फैलाना, भामि० १।५ 6 चुनना शिवि—, (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, दबाना विनय विनिवार्य मा० १।१८ सम्—, 1 छिपाना, ढकना, प्रच्छन्न करना—मुहु-रङ्गुलिसंवृताधरोष्ठम्—शि० ३।२५, २।१०, रघु० १।२०, ७।३० 2 दबाना, नियन्त्रित करना, विरोध करना भट्टि० ९।२७ 3 बन्द करना।

II (चुरा० उभ० वरयति-ते) 1 वर्णन करना, चुनना —वर वरयते कन्या माता वित्तम् पिता श्रुतम्—पंच० ३।६७ 2 विवाह के लिए पसन्द करना 3 याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना।

वृंह्, वृंहित दे० बृंह् बृंहित।

वृक् (स्वा० आ० वर्कते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।

वृक [वृ+कक्+] 1 भेड़िया 2 लकड़बग्घा 3 गीदड़ 4 कौवा 5 उल्लू 6. लुटेरा 7. क्षत्रिय 8 तारपीन 9 गन्धद्रव्यों का मिश्रण 10 एक राक्षस का नाम 11 एक वृक्ष का नाम, बकवृक्ष 12 जठराग्नि। सम० अरातिः,—अरिः कुत्ता,—उदरः 1 ब्राह्मण का विशेषण 2. द्वितीय पाण्डव राजकुमार भीम का विशेषण भग० १।१५, कि० २।१, —क्षः कुत्ता, धूपः 1 तारपीन 2 मिश्रगंध,—धूर्तः गीदड़।

वृकक,—कः 1 हृदय 2 गुर्दा (इस अर्थ में द्वि० व०)।

वृक्ण (भू० क० कृ०) [व्रश्च्+क्त] 1 कटा हुआ, काटा हुआ 2 फाड़ा हुआ 3 तोड़ा हुआ।

वृक्त (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] स्वच्छ किया गया, साफ किया गया, निर्मल किया गया।

वृक्ष् (स्वा० आ० वृक्षते) 1 स्वीकार करना, चुनना 2 ढकना।

वृक्ष [व्रश्च्+क्स] 1 पेड़—आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्। सम० अम्ल 1 बढ़ई की चौरसी 2 कुल्हाड़ी 3 बड़ का पेड़ 4 पियाल वृक्ष, आम्ल आमड़ा, -आलयः एक पक्षी, -आवासः 1 एक पक्षी 2 संन्यासी, आश्वत्थिन् (पु०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, कुक्कुटः जंगली मुर्गा खण्ड निकुञ्ज, वृक्षों का समूह, -चर बन्दर, -छाया वृक्ष की छाया (यम्) सघन छाया, बहुत से वृक्षों का (घाटी) छाया,- -धूप तारपीन -नाथ बड़ का पेड़, -नियामः गोंद राल —पाक बड़ का पेड़ भिद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी —मर्कटिका सिलहरी,—वाटिका, वाटी उद्यान उपवन, -शाखिका सिलहरी।

वृक्षक [वृक्ष+कन्] 1 छोटा पेड़— कु० ५।१८ 2 पेड़।

वृक्ष् (रुधा० पर० वृणक्ति) छोड़ना, चुनना।

वृज् (अदा० आ० वर्जते) टाल जाना, कतराना, परित्याग करना।

II (रुधा० पर० वृणक्ति) 1 टाल जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना 2 चुनना आत्मामेकमना वृत्रि सकर्णां स्वर्गभूषणाम् भाग० 3 प्रायश्चित्त करना, पोंछ डालना, निर्मल करना तस्मै रेत पिता वृक्षामित्यस्यैतन्निदर्शनम् – मनु० ९।२० 4 मूतना, आँख फेरना।

III (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० वर्जयति, वर्जयते-ते वर्जित) 1 कतराना, टाल जाना 2 छोड़ना, परित्याग करना 3 निकाल देना, एक ओर रख देना 4 अलग रहना 5 टुकड़े टुकड़े कर देना (कविरहस्य से उद्धृत

निम्नांकित पद्य धातु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है वृणक्ति वृंक्ते वर्क्ते वृश्चते व वृणते सह, वर्जयत्यर्जयोपेतं स वर्जयति दुर्जनं, अर्थ—1. नष्ट करना 2. समाप्त करना 3 छोड़ना, त्याग देना —रघु० १७।१९, कि० १।२९ 4 उड़ेलना, फेंकना —शि० १३।३७ आ—, 1 झुकना, मुड़ना, —आवश्यं शाखा सदय व यामा—रघु० १६।१९, १३।१७, आवश्यं दृष्टी —मेघ० ४६ 2 प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।५६, कु० ५।३४ 3 पराजय करना, जीतना, परि—, टाल जाना, कतराना, वि —1 कतराना, टाल जाना 2 विरहित करना, वञ्चित करना।

वृजनः [वृजे क्यु] 1 बाल 2 चुधरालेे बाल,— नञ् 1 पाप 2 संकट 3 आकाश 4 वेग, आहार, विशेषतः एक गोचरभूमि।

वृजिन [वृजे इनच् किच्च] 1 कुटिल, झुका हुआ, वक्र 2 दुष्ट, पापी, क 1 बाल, घुंघराले बाल 2 दुष्ट पुरुष—वृणक्ति वर्जिनं संगम्—कवि०,—नञ् 1 पाप,—सर्वं आत्मलाभेनैव वृजिनं मन्तरिष्यसि- भग० ४।३६, रघु० १४।५७ 2 पीड़ा दुःख (इस अर्थ में पु० भी माना जाता है)।

वृञ् (तना० उभ० वृणाति, वृणुते) छाना उपभोग करना

वृत् I (दिवा० आ० वृत्यते) 1 चलना, गमन करना तु० आवृत् 2 विवरण करना, बाँटना।

II (चुरा० उभ० वर्तयति—ते) चमकना।

III (स्वा० आ० वर्तते, परन्तु लृङ्, लृट्, लुट् तथा सन्नन्त में पर० भी, वृत्त) 1 होना, विद्यमान होना, बने रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना इह में मनसि वर्तते,—भग० १, अत्र विषयेऽस्माकं महत्कुतूहलं वर्तते पंच० १, सरलाकुलनामक कथय रे कथ वर्तताम् भामि० १।३, केवल सयोजक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, अनीत्य हरिता हरीश्च वर्तते वाजिन —शि० १ 2 किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना—पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य—का० इसी प्रकार दुःखे, हर्षे, विषादे—वर्तते 3 होना, घटित होना, आ पड़ना, सामने आना—सीता देव्या किं वृत्तमित्यस्मिन् काश्चित्प्रदेशे —उत्तर० २, साम्प्रतं वर्तते चधिक रे स्थानान्तर गम्यताम् सुभा०, 'अब सायकाल हो गया है' ' शृङ्गार० ६, भग० ५।२६ 4 चलते रहना प्रगतिशील रहना -सर्वथा वर्तते यज्ञ —मनु० २।१५, निर्व्याजमिज्या वर्तते—भट्टि० २।३७, रघु० १२।५६ 5 समाप्त हो या सम्पन्न होना, जीवित रहना, जीते रहना (आत्म० से भी) —फलमूलवारिभिर्वर्तमाना—का० १७२, मनु० ३।७७ 6 मुड़ना, लुढ़कते रहना, चक्कर खाना—यावदिय लोकयात्रा वर्तते -वेणी० ३ 7 अपने आप को कार्य में लगाना, काम में लगना, आरम्भ करना (अधि० के साथ)—भगवान् काश्यप साध्वते ब्रह्मणि वर्तते —श० १, इतरो वहते स्वकर्मणां वर्तते आत्मभवेन बन्धुना रघु० ८।२०, मनु० ८।३४६, भग० ३।२२ 8 कर्तव्य निभाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (प्राय अधि० के साथ या स्वतन्त्र रूप से) आर्योऽस्मिन् विनयेन वर्तताम् उत्तर० ६, कविनिसर्गसौहृदेन मरतेषु वर्तमान मा० १, औदासीन्येन वर्तितुम्- रघु० १०।२५, मनु० ७।१०४, ८।१७३, ११।३० 9 कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना—साध्वीं वृत्ति वर्तते 'वह सत्कार्य में प्रवृत्त होता है' 10 अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना —पुष्यसमीपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते—पा० ४।२।३ पर महाभाष्य (प्राय कोशों में इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) 11 प्रवृत्त करना, प्रेरित करना (सम्प्र० के साथ)—पुत्रेण किं फलं यो वै पितृद्वेषु वर्तते 12 सहारा लेना, आश्रित होना—प्रेर० (वर्तयति ते) 1 प्रवृत्त कराना 2 घुमाना, चक्कर दिलाना श० ७।६ 3 (अन्न-आदि) घुमाना, पैनरे बदलना, घुमा कर फेंकना—भट्टि० १५।३७ 4 कार्य करना, अभ्यास करना, प्रदर्शित करना- मा० ९।३३ 5 सम्पन्न करना, निबटाना, ध्यान देना, मजर डालना सोऽधिकारमभिक्ष कुलोचित कार्यचन स्वयमवर्तयत्समा -रघु० १९।४, महावी० ३।२३ 6 बिताना, (समय आदि) गुजारना 7. जीवन निर्वाह करना जीते रहना कि० २।१८, रघु० १२।२० 8 वर्णन करना, बयान करना—इच्छा० (विवृत्सति, विवर्तिषते), अति—, 1 परे जाना, आगे बढ़ जाना, मा० १।२६ 2 आगे निकल जाना, सर्वोत्कृष्ट होना कि० ३।४०, शि० १४।५९ 3 उल्लंघन करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना—शि० ६।१९ 4 उपेक्षा करना, अवहेलना करना मनु० ५।१६ 5. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, नाराज करना 6 पराजित करना, वशीभूत करना 7 (समय का) बिताना 8 विलंब करना, देरी करना— मनु० २।३८, अनु—, 1 अनुसरण करना, अनुरूप होना, अनुकूल कार्य करना प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते—शि० १५।४१, मा० ३।२ 2 अनुरंजन करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने आपको बनाना, दूसरे के द्वारा पक्षप्रवर्धन प्राप्त किया जाना 3 आज्ञा मानना 4 मिलना-जुलना, नकल करना 5 प्रसन्न करना, खुश करना 6 (व्या० में) किसी पूर्ववर्ती शब्द से आवृत्ति प्राप्त करना (प्रेर०) 1, मुड़ना 2 अनुगमन

करना, आज्ञा मानना, अप--, 1 मुड़ जाना, पीठ मोड़ना तस्मादपावर्तत दूरकृष्टा नीत्येव लक्ष्मी प्रतिकूलदैवात्—रघु० ६।५८, ७।३३ 2 व्यत्यस्त या व्युत्क्रान्त होना, उलटा हो जाना –कि० १२।४९ 3 मुँह नीचे कर लेना मा० ३।१७, (प्रेर०) एक ओर हो जाना, झुकना मा० १।४०, कि० ४।१५, अभि , 1 पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना इत एवाभिवर्तते—श० १, रघु० २।१० 2 आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना —कि० १३।३ 3 आरम्भ करना, (दिन), निकलना 4 सर्वोपरि होना, सबसे ऊपर होना 5 होना, मौजूद होना, घटित होना, आ–, 1 चक्कर खाना 2 वापिस आना–रघु० १।८९, २।१९ 3 पास जाना 4 बेचैन होना, चक्कर खाना-मा० १।४१, उद्–,1 चढ़ना 2 उदित होना, बढ़ना 3 घमंडी या अभिमानी होना 4 उभरना, बह निकलना—उद्वृत्त क इव सुखावह परेषाम् —शि० ८।१८, मुद्रा० ३।८, रघु० ७।५६, उप , 1 पहुँचना 2 लौटना नि , 1 वापिस आना, लौटना न च निम्नादिव सलिल निवर्तते मे ततो हृदयम् श० ३।१, कु० ४।३०, रघु० २।४३, भग० ८।२१, १५।४ 2 भाग जाना, पलायन करना-भट्टि० ५।१०२ 3 मुड़ जाना, आखें फेर लेना-रघु० ५।२३, ७।६१ 4 अलग रहना प्रमदीश्य निवर्तत सर्वमांसस्य भक्षणात् मनु० ५।४९, ११।५३, भट्टि० १।१८, निवृत्तमांसस्तु जनक. उत्तर० ४ 5 मुक्त होना, बच निकलना भग० १।३९, 6 बोलना बन्द कर देना, रुक जाना, ठहर जाना 7 हट जाना, अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्धान होना- भग० २।५९, १४।२२, मनु० ११।१८५, १८६ 8 रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1 लौटाना, वापिस भेजना रघु० २।३, ३।४७, ७।४८ 2 वापिस लेना, दूर रखना, मुड़ जाना, मन फेर लेना रघु० २।२८, कु० ५।११, निस् , 1 समाप्त होना, अन्त होना, भट्टि० ८।६९ 2 सम्पन्न होना–रघु० १७।६८, मनु० ७।१६१, 3. रुक जाना, न होना,—भट्टि० १६।६, (प्रेर०) 1 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना--रघु० २।४५, ३।३३ ११।३०, परा—, लौटना, वापिस आना, परि –, 1 घूमना, चक्कर खाना कु० १।१६ 2 इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना 3 बदलना, विनिमय करना, अदला-बदली करना 4 पीठ मोड़ना रघु० ४।७२, विक्रम० १।१७ 5 होना, आ पड़ना— मा० ९।८ 6. क्षीण होना, नष्ट होना, लुप्त होना– मा० १०।६, प्र --, 1 आगे चलना, चलते जाना, प्रगति करना, पंच० १।८१ 2 उदित होना, उत्पन्न होना, फूट निकलना 3 होना, घटित होना, आ पड़ना 4 आरंभ करना, शुरू करना, (प्राय तुमुन्नन्त)–हन्त प्रवृत्त संगीतकं --मालवि० १, कु० ३।२५ 5 प्रयत्न करना, जोर लगाना -- प्रवर्तता प्रकृतिहिताय पार्थिव - श० ७।३५ 6 अमल करना, अनुसरण करना पंच० १।११६, 7 कार्य में लगना, व्यस्त होना, श० १, कु० ५।२३ 8 करना, कार्य में लगना—श० ६, 9 व्यवहार करना 10 व्याप्त होना, विद्यमान होना - राजन् प्रजासु ते कश्चिदपचार प्रवर्तते -- रघु० १५।४७ 11 ठीक उतरना 12 बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-फूलना,- भग० १७।२४, मनु० ३।६१, (प्रेर०) 1 प्रगति करना, जारी रखना - मुद्रा० १ 2 सूत्रपात करना 3 जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना 4 हाकना, प्रेरित करना, उकसाना, उद्दीप्त करना 5 उन्नति करना प्रगति करना, प्रतिनि—, 1 पीठ मोड़ना, लौटना – गत्वेव पुन प्रतिनिवृत्त श० १।२९, विक्रम० १ 2 चक्कर काटना, वि , 1 मुड़ना, लुढ़कना, चक्कर काटना, घूमना मा० १।४० 2 एक ओर हो जाना, झुकना–रघु० ६।१६, श० २।११ 3 होना, घटित होना, विनि –, 1 लौटना 2 रुक जाना, अन्त होना भ० २।५९, मनु० ५।७ 3 हाथ खींचना, मुड़ जाना, अलग रहना देवनात् युद्धात् आदि विपरि , चक्कर काटना (आल० से भी) भग० ९।१०, व्यप , 1 लौटना, वापिस मुड़ना—चेत् वय कथमपि व्यपवर्तते— मा० १।१८ 2 हाथ खींचना छोड़ देना उत्तर० ५।८, व्या –, 1 वापिस होना, मुड़ना महभुवा व्यावर्तमाना क्रिया—रत्न० १।२ 2 मुड़ना, हटना, उलट होना—विषमव्यावृत्तकौतूहल -- विक्रम० १।९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना, निकाल देना, गिरफ्तार करना—नु शब्द पूर्वपक्ष व्यावर्तयति शारी० अपवाद इवात्मनं व्यावर्तयितुमीश्वर रघु० १५।७, सम् , 1 होना, घटित होना – ते यथोक्ता समवृत्ता पंच० १ 2 पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3 घटित होना, आ पड़ना 4 सम्पन्न होना।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृ+क्त] 1 छांटा गया, चुना गया 2 ढका गया, पर्दा डाला गया 3 छिपाया गया 4 घेरा गया, लपेटा गया 5 सहमत या सम्मत 6 किराये पर लिया गया 7 बिगाड़ा गया, विकृत किया गया 8 सेवित, सेवा किया गया।

वृत्तिः (स्त्री०) [वृ–क्तिन्] 1 छांटना, चुनना 2 छिपाना ढकना, गुप्त रखना 3. याचना करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5 घेरना, लपेटना 6 झाड़बंदी, बाड़, बाड़ा मेघ० ७८।

वृत्तिकर (वि०) [वृत्ति+कृ+ट, मुम्] घेरने वाला, लपेटने वाला,—र: विकंकत नाम का पेड़ ।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृत्+क्त] 1 जीवित, विद्यमान 2 घटित, सभूत 3 सम्पूर्ति, समाप्त 4 अनुष्ठित, कृत, किया गया 5 गुजरा हुआ, बीता हुआ 6 गोल, वर्तुलाकार—रघु० ६।३२ 7 मृत, स्वर्गगत 8 दृढ़, स्थिर 9 पठित, अधीत 10 व्युत्पन्न 11 प्रसिद्ध (दे० वृत्), —त्त. कछुवा, -त्तम् 1 बात, घटना 2 इतिहास, वर्णन रघु० १५।६४ 3 समाचार, खबर 4. प्रवर्तन, पेशा, जीवनवृत्ति, व्यवसाय—सतां वृत्तमनुष्ठिता —मनु० १०।१२७ (पाठान्तर) ७। १२२, याज्ञ० ३।४४ 5 आचरण, व्यवहार, रीति, कर्म, कृत्य, जैसा कि सद्वृत्त या दुर्वृत्त में 6 साधु या सत्य आचरण पंच० ४।२८ 7 माना हुआ नियम, प्रचलन या कानून, प्रथा, इस प्रकार के नियम या प्रचलन का पालन करना, कर्तव्य, रघु० ५।३३ 8 गोल घेरा, वृत्त की परिधि 9 छन्द, विशेषकर मात्राओं की गणना के आधार पर विनियमित (विप० जाति) दे० परि० १ । समः—अनुपूर्व (वि०) गोल गुब्बाकार,—कु० १।३५,—अनुसार 1 विहित नियमों की अनुरूपता 2 छन्द की अनुरूपता, अन्त. 1 अवसर, घटना, बात अनेनारण्यकवृत्तान्तेन पर्याकुला स्म श० १, रघु० ३।६६, उत्तर० २।१७ 2 समाचार, खबर, गुप्तवार्ता को नु खलु वृत्तान्त विक्रम० ४, रघु० १४।८७ 3 वर्णन, इतिहास, कथा, आख्यान, कहानी 4 विषय, प्रकरण 5 प्रकार, किस्म 6 ढंग रीति 7. अवस्था, दशा 8 कुलयोग, समाप्ति 9 विश्राम, अवकाश 10 गुण, प्रकृति —कर्कटी नागदंती, सरडा,—गन्धि (नपु०) एक प्रकार का गन्ध जो पकने से पद्म जैसा आनन्द दे, चूड़,-चौल (वि०) मुण्डित, जिसका मुण्डन संस्कार हो चुका हो —उत्तर० २, पुष्प. 1 बेंत, बानीर 2 सिरस का पेड़ 3 कदम्ब का पेड़, फल 1 बेर, उन्नाव का पेड़ 2 अनार का पेड़, शास्त्र (वि०) जिसने शास्त्र विज्ञान में पाण्डित्य प्राप्त कर लिया है—भट्टि० ९।१९ ।

वृत्ति. [वृत्+क्तिन्] 1 अस्तित्व, सत्ता 2 टिकना, रहना, ठहरना, किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि विरुद्धवृत्ति या विपक्षवृत्ति में 3 अवस्था, दशा 4 कार्य, गति, कृत्य, कार्यवाही शर्वस्मन्मक्षणाम-न्त्रिप्रयवृत्तिभि रघु० ३।४३, कु० ३।७३, श० ४।१५ 5 क्रम, प्रणाली, श० २।११ ० आचरण, व्यवहार, चालचलन, कार्यपद्धति—कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने श० ४।१८, मेघ० ८, वैतसीवृत्ति, दक्षवृत्ति आदि 7 पेशा, व्यवसाय, काम-धन्धा, रोजगार, जीवन-चर्या (प्रायः समास के अन्त में)—वार्धके मुनिवृत्तीनाम् —रघु० १।८, श० ५।६, पंच० ३।१२५ 8 जीविका, संपोषण, जीविका के उपाय (बहुधा समास में)—रघु० २।३८, श० ७।१२, कु० ५।२८, (जीविका के विभिन्न उपायों के लिए दे० मनु० ४।४-६ 9 मजदूरी, भाड़ा 10 क्रियाशीलता का कारण 11 सम्मानपूर्ण बर्ताव 12 भाष्य, टीका, विवृति सद्वृत्ति सन्निबन्धना शि० २।११२, काशिकावृत्ति आदि 13 चक्कर काटना, मुड़ना 14 किसी वृत्त या पहिये की परिधि 15 (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े 16 शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, संकेत अथवा व्यंजना की जाय (यह शक्तियाँ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के नाम से विख्यात) 17 रचना की शैली (यह चार हैं—कैशिकी, भारती, सात्वती और आरभटी) । समः अनुप्रास एक प्रकार का अनुप्रास, दे० काव्य० ९, उपायः जीविका का उपाय,—कर्षित (वि०) जीविका के अभाव में अत्यन्त दुःखी मनु० ८।४११, क्षयम् गज चक्रं पञ्च० १।८१, - छेद. जीविका के साधनों से वञ्चित,—भङ्गः, - भंजकत्वम् जीविका का अभाव—पञ्च० १।१५३, स्थ (वि०) 1 किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहने वाला 2 सदाचारी, अच्छा बर्ताव करने वाला, (स्थ) छिपकली, गिरगिट ।

वृत्र. [वृत् +रक्] 1 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था (वह अन्धकार का मूर्तरूप माना जाता है). दे० इन्द्र 2 बादल 3 अन्धकार 4 शत्रु 5 ध्वनि 6 पर्वत । समः—अरि.—द्विष् (पु०) शत्रु- हन् (पु०) इन्द्र के विशेषण- कुद्धेऽपि पक्षिच्छिदि वृत्रशत्रौ कु० १।२०, वाचा हरिं वृत्रहणं स्मितेन —७।४६ ।

वृथा (अव्य०) [वृ +थाल् किच्च] 1 बिना किसी अभिप्राय के, व्यर्थ, निरर्थक, बिना किसी लाभ के, (बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त) व्यर्थं यत्नः कथान्द्रसरुष्यमपि मे हीयें हरीणा वृथा—उत्तर० ३।४५, दिव यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः—कु० ५।४५ 2 अनावश्यक रूप से 3 मूर्खता से, आलस्य पूर्वक, बेलगाम 4 गलत तरीके से, अनुचित रूप से (समास के आरम्भ में वृथा शब्द का अनुवाद 'व्यर्थ, निरर्थक', अनुचित, मिथ्या या आलसी, किया जा सकता है । समः अट्या अलसता के साथ टहलना, सायोद भ्रमण करना, —आकार मिथ्या रूप, खाली तमाशा, —कथा बेहूदी बात, जन्मन् (नपु०) अलाभकर या व्यर्थ जन्म,— दानम् वह उपहार जो प्रतिज्ञात होने पर भी न दिया गया हो,—भृति (वि०) दुर्बुद्धि, मूर्ख, मांसम् वह मांस जो देवताओं

या पितरों के लिए अभिप्रेत न हो, **वादिन्** (वि०) मिथ्या भाषी, **-श्रम** व्यर्थ चेष्टा या कष्ट उठाना।

वृद्ध (वि०) [वृध्+क्त] (म० अ० ज्यायस् या वर्षीयस्, उ० अ० ज्येष्ठ या वर्षिष्ठ) 1 बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2 पूर्णविकसित, बड़ी उम्र का 3 बूढ़ा, वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः उत्तर० ५।२५ 4 प्रगत या विकसित (समास के अन्त में), तु० तपोवृद्ध धर्मवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, आगमवृद्ध 5 बड़ा, विशाल 6 एकत्रित, संचित 7 बुद्धिमान्, विद्वान्, **द्धः** 1 बूढ़ा व्यक्ति हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् रघु० १।४५, ९।८, मेघ० ३० 2 योग्य या आदरणीय पुरुष 3 मुनि, संत 4 वराज, **द्धम्** गुग्गुल। **समः**—**अङ्गुलि** (स्त्री०) पैर का अंगूठा, **अवस्था** बुढ़ापा, **आचार** प्राचीन प्रथा, **उक्ष** बूढ़ा बैल,—**काकः** पहाड़ी कौवा, **-नाभि** (वि०) स्थूलकाय मोटे पेट वाला,—**भाव** बुढ़ापा, **-मत** प्राचीन ऋषियों का उपदेश, **याहव** आम का पेड़, **श्रवस्** (पु०) इन्द्र का विशेषण,—**सभा** वृद्धजनों की सभा, **सूत्रकर्मन्** रूई का गल्हा कपास का गाला, इन्द्रतूल।

वृद्धा वृद्ध+टाप्] 1 बूढ़ी स्त्री 2 वराजा (स्त्री)।

वृद्धि [वृध्+क्तिन्] 1 विकास, बढ़ोतरी, वर्धन, सम्वर्धन पुपोष वृद्धि हरिदश्वदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः रघु० ३।२२, तपोवृद्धि, ज्ञानवृद्धि आदि 2 (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना, पर्यायपीनस्तनमेहिमांशोः कलाक्षयश्लाघ्यतरो हि वृद्धेः रघु० ५।१६, कु० ७।१ 3 धन की वृद्धि, समृद्धि, धनाढ्यता—पञ्च० २।११२ 4 सफलता, बढ़ावट, उन्नति, प्रगति परिवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिना—शि० १५।१ 5 दौलत, जायदाद 6 ढेर, परिमाण, समुच्चय 7 सूद, ब्याज, सरला वृद्धि, चक्रवृद्धि 8 सूदखोरी 9 लाभ फायदा 10 अङ्कोंकी वृद्धि 11 शक्ति या राजस्व 12 विस्तार 12 (व्या० में) स्वरों का लंबा करना 13 वृद्धि, अ, इ, उ, ऋ (चाहे ह्रस्व हो या दीर्घ) और ऌ को क्रमशः आ, ऐ, औ, आर् और आल् में बदलना 13. परिवार में, (प्रसव के कारण) उत्पन्न अशौच, जननाशौच। **समः**—**आजीव**,—**आजीविन्** (पु०) सूदखोर, साहूकार, ब्याज पर रुपया उधार देनेवाला,—**जीवनम्**,—**जीविका** सूदखोरी, साहूकारी,—**द** (वि०) समृद्धि को उन्नत करने वाला, **पत्रम्** एक प्रकारका उत्सव, **श्राद्धम्** पुत्रजन्मादि के उत्सवों पर पितरों का श्राद्ध, नान्दीमुख श्राद्ध।

वृध् (भ्वा० आ०—परस्मै० वर्धते, वर्धित, वृद्ध, इच्छा० विवृत्सति या विवर्धिषते) 1 विकसित होना, बढ़ना, विस्तृत होना, मजबूत या बलवान् होना, फलना, समृद्ध होना—अन्योन्यजनसरभौ ववृधे वादिनोरिव—रघु० १२।९२, १०।७८, वनलये वर्धते जाठराग्नि—सुभा०, भट्टि० १४।१३, १९।२६ 2. आरी रखना, टिकाऊ रहना 3 उठना, चढ़ना 4. बधाई का कारण होना—(प्रायः 'दिष्ट्या' के साथ) दिष्ट्या धर्मपत्न्यासमागमेन पुत्रमुखदर्शनेन वायुष्मान् वर्धते शा० ७, "धर्मपत्नी के मिलने के उपलक्ष्य में आपको बधाई हो, प्रेर० (वर्धयति—ते, वर्धापयति—ते भी) 1 विकसित कराना, बढ़ाना, वृद्धियुक्त करना, ऊँचा उठाना, ऊँचा करना, उन्नत करना वर्धयन्निव नाकपृष्ठानुदग्रैर्बाहुभिरुत्क्षिपद्भिः रघु० ७।७१ 2 समृद्ध कराना, यशस्वी बनाना, विस्तीर्ण करना, बढ़ाई करना हि० ३।३ 3 बधाई देना, अभिनन्दन करना (इस अर्थ में वर्धापयति) **अभि**—, विकसित होना बढ़ना—क्षीणोऽपि शशी भूयो भूयोऽभिवर्धते नित्यम्—काव्य० १०, **परि प्र वि**—, विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना **सम्**—, बढ़ना, रघु० ५।६।

२ (चुरा० उभ० वर्धयति—ते) 1 बाँधना, चमकना।

वृधसान [वृधे छन्दसि असानच्, किच्] मनुष्य।

वृधसानु [वृध+असानुच्] 1 मनुष्य 2 पिता 3 वज्र, काय।

वृन्तम् [वृ+क्त, नि० गुम्] 1 किसी फल या पत्ते का डंठल, डंडी—वृन्ताच्छलेन हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९ 2 घड़ीकी 3 स्तन की चोंटी या अग्रभाग।

वृन्ताक, **को** [वृन्त+अक्+अण्] बैंगन का पौधा।

वृन्तिका [वृन्त+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटा डंठल।

वृन्दम् [वृ+दन्, नुम्, गुणाभाव] 1 समुच्चय, समूह बड़ी संख्या, दल अनुगतमलिवृन्दैर्गण्डभित्तीर्विहाय रघु० १२।१०२, मेघ० ९९, इसी प्रकार अन्य 2 ढेर, परिमाण।

वृन्दा [वृन्द+टाप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गोकुल के निकट एक वन। **समः** **अरण्यम्**, **कानन** गोकुल के निकट एक जंगल—वृन्दारण्ये कमपि रघुना केवलं दुःखहेतुं पदा० ३८।४१, रघु० ६।५०,—**वनी** तुलसी का पौधा।

वृन्दार (वि०) [वृन्द+ऋ+अण्] 1 अधिक, बड़ा विशाल 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक, सुन्दर।

वृन्दारक (वि०) (स्त्री०—का,—रिका) [वृन्द+आरकन्, पक्षे टाप्, इत्वम् च] 1 अधिक, बड़ा, बहुत 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, मनोहर 4 आदरणीय, सम्माननीय,—**कः** 1 देव, सुर,

श्रितो वृन्दारण्य नतनिखिलवृन्दारकवृत भाग० ४।५ 2 किसी भी चीज का मुख्य (समास के अन्त में) दे० (२) ऊपर।

वृन्दिष्ठ (वि) [अयमेषामतिशयेन वृन्दारक' इष्ठन्, वृन्दादेश] 1 अत्यत बडा या विशालतम 2 अत्यत मनोहर, सुन्दरतम।

वृन्दीयस् (वि०) ['वृन्दारक' की म० अ० अयमनयोरतिशयेन वृन्दारक+ईयसुन्, वृन्दादेश] 1 अपेक्षाकृत बडा, विशालतर 2 अपेक्षाकृत मनोहर, सुन्दरतर।

वृश् (दिवा० पर० वृश्यति) छाँटना, चुनना।

वृश [वृश्+क] चूहा,—ना एक औषधि, अडूसा, शब्द अदरक।

वृश्चिक [वृश्च्+किकन्] 1 बिच्छू 2 वृश्चिक राशि 3 केंकडा 4 कानखजूरा 5 बर्रा, गोबर का कीडा 6 एक रोएदार कीडा।

वृष् I (भ्वा० पर० वर्षति, वृष्ट) 1 बरसना (बहुधा 'इन्द्र' 'पर्जन्य' या बादल आदि सार्थक शब्दों के साथ कर्ता के रूप में, या कभी-कभी भावात्मक रूप में) —द्वादशवर्षाणि न ववर्ष दशशताक्ष दश०, काल वर्षतु मघा, गर्जा वा वर्षा वा शक मृच्छ० ५।३१, मेघा वर्षन्तु गर्जन्तु मुञ्चन्त्वशनिमेव वा—५।१६ 2 बारिश करना, उडेलना, बौछार करना —वर्षतीवाञ्जन नभ - मृच्छ० १।३४ इसी प्रकार—शरवृष्टिम कुसुमवृष्टि तथति आदि 3 बरसाना ढलकाना 4 अनुदान देना, अर्पण करना 5 तर करना 6 पैदा करना, उत्पन्न करना 7 सर्वोपरि शक्ति रखना 8 प्रहार करना, चोट मारना, अभि—, 1 बौछार करना, बरसाना, उडेलना, छिडकना रघु० १।८४, १०।४८ 2 प्रदान करना, अर्पण करना, प्र—, बरसाना, बौछार करना—यस्यायमर्भित पुष्पं प्रवृष्ट इव केसर —राम० (—उत्तर० ६।३६)।

II (चुरा० आ० वर्षयते) 1 शक्तिशाली या प्रभुत्व होना, 2 उत्पन्न करने की शक्ति रखना।

वृष [वृष्+क] 1 साँड—असपदस्तस्य वृषेण गच्छत —कु० ५।८०, मेघ० ५२, रघु० २।३५, मनु० ९।१२३ 2 वृष राशि 3 किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम, अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) मुनिवृष, कपिवृष आदि 4 कामदेव 5 मजबूत या व्यायाम शील व्यक्ति 6 कामातुर, रतिक्रिया में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक दे० रति० ३७ 7 शत्रु, विपक्षी 8. चूहा 9. शिव का नदी बैल 10 नैतिकता, न्याय 11 सुख, सत्कर्म या पुण्यकार्य—न सद्गति स्याद् वृषवर्जितानाम्—कीर्ति० २।६२, (यहाँ 'वृष' का अर्थ साँड भी है) 12. कर्ण का नामान्तर 13 विष्णु का नाम 14 एक विशेष औषधि का नाम —अम् मोर का पख। सम० अङ्क शिव का विशेषण—रघु० ३।२३ 2 पुण्यात्मा, सद्गुणी 3 छिलावा 4 पटह, °क: छोटा ढोल, अङ्कन: शिव का विशेषण —अन्तक: विष्णु का विशेषण, आहार छिलावा, —उत्सर्ग: मृत पुरुष के नाम पर दाग कर साँड छोडना, —दंश:,—दंशक: छिलावा, ध्वज: 1.शिव का विशेषण—रघु० ११।४४ 2 गणेश का विशेषण 3 सद्गुणी, पुण्यात्मा,—पति: शिव का विशेषण,

वर्धन (पु०) 1. शिव का विशेषण 2 एक राक्षस का नाम जिसने असुराचार्य शुक्र की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं से संघर्ष किया, इसकी पुत्री शर्मिष्ठा का विवाह ययाति के साथ हुआ—दे० ययाति और देवयानी 3 बर, भिरड, भाला इन्द्र और देवताओं का आवास—अर्थात् अमरावती, -लोचन छिलावा, वाहन शिव का विशेषण।

वृषण [वृष्+क्यु] अडकोष, अड या फोते।

वृषन् (पु०) [वृष्-कनिन्] 1 साँड 2 वृषराशि 3 किसी वर्ग का मुखिया—महावी० १।७ 4 बोझाश्व, साँड घोडा 5 पीडा, शोक 6 घोडे के प्रति असंवेदना 7 इन्द्र का नाम —वृषेव सीता तदवग्रहक्षमाम्—कु० ५।६१ ८०, रघु० १०।५२, १७।७७ 8 कर्ण का नाम 9 अग्नि का नाम।

वृषभ [वृष्+अभच् किच्च] 1 साँड 2 कोई भी नर जानवर 3 अपने वर्ग का मुखिया (समास के अन्त में) द्विजवृषभ —रत्न० १।५, ४।२१ 4 वृषराशि, 5 एक प्रकार की औषधि—नि० ऋषभ 6 हाथी का कान 7 कान का विवर। सम०—गति,—ध्वज: शिव के विशेषण—रघु० २।३६, कु० ३।६२।

वृषभी (स्त्री०) [वृषभ+ङीष्] 1 विधवा 2 कवच।

वृषल [वृष्+कलच्] 1 शूद्र 2 घोडा 3 लहसुन 4. पापी, दुष्ट, अधर्मी 5 जाति से बहिष्कृत 6 चन्द्रगुप्त का नाम (विशेषत चाणक्य द्वारा प्रयुक्त—दे० मुद्रा० अक १, ३)।

वृषलक [वृषल+कन्] तिरस्करणीय शूद्र।

वृषली [वृषल+ङीष्] 1 बारह वर्ष की अविवाहित कन्या, रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के कारण पिता के घर रहने वाली कन्या—पितुर्गेहे च या नारी रजः पश्यत्यसंस्कृता, भ्रूणहत्या पितुस्तस्या सा कन्या वृषली स्मृता 2 रजस्वला 3 वाम स्त्री 4 सद्योजात बच्चे की माता 5 शूद्र की पत्नी या शूद्रा स्त्री। सम०—पति शूद्र स्त्री का पति, सेवनम् शूद्रा स्त्री के साथ समागम।

वृषवृक्षी (स्त्री०) भिरड।

वृषस्यन्ती [वृष+क्यच्, शुक्, शतृ+ङीप्, नुम्] 1 सम्भोग करने की इच्छा वाली स्त्री (पुरुष में कर्म० के साथ,

— रघुनन्दन वृषस्यन्ती शूर्पणखा प्राप्ता—महावी० ५, भट्टि० ४।३०, रघु० १२।३४ 2 कामासक्त या कामातुरा स्त्री 3 गर्भायी हुई गाय।

वृषाकपायी [वृषाकपेः पत्नी—वृषाकपि+ङीष्, ऐ आदेश] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 गौरी का विशेषण 3 शची का विशेषण 4 अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण 5 सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण।

वृषाकपि. [वृष. कपि अन्य—ब० स०, पूर्वपददीर्घ] 1 सूर्य का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 इन्द्र का विशेषण 5 अग्नि का विशेषण।

वृषायण (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 गोरैया चिड़िया।

वृषिन् (पु०) [वृष—इनि] मोर।

वृषी (स्त्री०) संन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन (कुश घास से बना हुआ)।

वृष्ट (भू० क० कृ०) [वृष् + क्त] 1 बरसा हुआ 2 बरसता हुआ 3 बौछार करता हुआ, उड़ेलता हुआ।

वृष्टि (स्त्री०) [वृष् + क्तिन्] 1 बारिश, बारिश की बौछार आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः—मनु० ३।७६ 2 (किसी भी वस्तु की) बौछार अस्त्रवृष्टि—रघु० ३।५८, पुष्पवृष्टि २।६०, इसी प्रकार शर° घन° उपल° आदि। सम० काल बरसात का समय, जीवन (वि०) बारिश द्वारा सिंचित (प्रदेश), नु० देवमातृक, भू मेंढक।

वृष्टिमत् (वि०) [वृष्टि + मतुप्] बरसने वाला, बरसाती, (पु०) बादल।

वृष्णि (वि०) [वृषे नि किच्च] 1 धर्मभ्रष्ट, पाखंडी 2 क्रुद्ध, कोपाविष्ट, (पु०) 1 बादल 2. मेढ़ा 3 प्रकाश की किरण 4 कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम 5 कृष्ण का नाम 6 इन्द्र 7 अग्नि। सम० गर्भ कृष्ण का विशेषण।

वृष्य (वि०) [वृष्+क्यप्] 1 जिसके ऊपर वीर्य सींचा जा सके, बौछार की जा सके 2 कामोद्दीपक, वाजीकर, पुंस्त्व बढ़ाने वाला, ब्य. भाव, उड़द।

वृह्, वृहत्, वृहतिका दे० बृह्, बृहत्, बृहतिका।

वृहती [बृह्+अति+ङीष्] 1 नारद की वीणा 2 छन्दों की संख्या 3 दुपट्टा, चोगा, आवरण 4 शरण आश्रय (जैसे जलाशय) दे० 'बृहती' भी। सम० —पति बृहस्पति का विशेषण।

वृहस्पति दे० 'बृहस्पति'।

वृ (क्रया० उभ० वृणाति, वृणीते, वर्ण अनेका० वूर्यते, इच्छा० विवरिषति-ते) छांटना चुनना (दे० 'वृ' 1)।

वे (स्वा० उभ० वयति-ते, उत, प्रेर० वाययति-ते) 1 बुनना सिताशुवर्णैर्वयति स्म तद्गुणै—नै० १।१२ 2 बाल गूंथना, पौधे लगाना 3 सीना 4 बनाना, रचना, नक्शा करना प्र—, 1 बुनना 2 बांधना, कसना 3 जमाना, स्थिर करना 4 परस्पर बुनना, सम्बन्धित करना, दे० 'प्रोत'।

वेकट (पु०) 1 हथौड़ा 2 जौहरी 3 युवा पुरुष।

वेग [विज् + घञ्] 1 आवेग, संवेग 2 गति, प्रवेग, शीघ्रता 3 विक्षोभ 4 अनिवेगशीलता, प्रचण्डता, बल 5 प्रवाह, धारा जैसा कि 'अम्बुवेग' में 6 तेज, क्रियाशीलता, संकल्प 7 शक्ति, सामर्थ्य,—मदनज्वरस्य वेगान् का० 8 संचार, क्रिया (विष—आदि का) प्रभाव उत्तर० ।२६, विक्रम० ५।१८ 9 शीघ्रता जल्दबाजी, आकस्मिक आवेग पंच० १।१०९ 10 बाण की गति—कि० १३।२४ 11 प्रेम, प्रणयोन्माद 12 आन्तरिक भाव का बाहर प्रकट होना 13 आनन्द, प्रसन्नता 14 मलत्याग 15. शुक्र, वीर्य। सम० अनिल 1 आंधी का झोंका विक्रम० १।४ 2 प्रचण्ड वायु,- आघात 1 अकस्मात् वेग का अवरोध, गति को रोकना, 2 मलावरोध काष्ठबद्धता, आशयः श्लेष्मा, कफ, वाहिन् (वि०) स्फूर्त, तेज - विधारणम् गति का रोकना, मल मूत्र।

वेगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वेग+इनि] तेज, चुस्त द्रुतगामी, प्रचण्ड, फुर्तीला (पु०) 1 हरकारा 2 वेग —नी नदी।

वेङ्कट (पु०) एक पहाड़ का नाम, वेंकटाचल।

वेट्टा [विच् +अच्+टाप्] शाला, मजदूरी।

वेडन् [विड् + अच्] एक प्रकार का चन्दन।

वेडा [वेड + टाप्] किश्ती, नाव।

वेद्, वेत् (स्वा० उभ० वेदति-ते, वेत्ति-ते) 1 जानना हिलना-जुलना 2 जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना 3 विचारविमर्श करना, सोचना 4 कहना 5 बाजा बजाना।

वेण. [वेण् + अच्] 1 गायक जाति का पुरुष नृ० मनु० १०।१९, वेणानां भाङ्वादनम्—१०।४१ 2 एक राजा का नाम, अङ्ग का पुत्र और स्वायंभुव मनु का वंशज (जब यह राजा बना तो उसने सब प्रकार की पूजा व यज्ञादि का बन्द करने की घोषणा कर दी। ऋषियों ने इसका बड़ा विरोध किया, परन्तु जब उसने उनकी एक न सुनी तो उन्होंने अभिमन्त्रित कुशतृण की पत्नी से उसको मरवा कर दी। अब देश में कोई शासक न रहा। अतः उन्होंने उस मृतक शरीर की जंघा को मसला, तब उसमें से एक निषाद निकला जो शरीर का गिट्टा तथा चौड़े मुख वाला था। उसके पश्चात् उन्होंने उसकी दक्षिण भुजा को रगड़ा जहाँ से भव्य पृथु (दे० पृथु) का

जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार यह भली भाति शासन करने लगा, परन्तु बाद में वह जैन-नास्तिकता में फंस गया। यह भी कहा जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था में गड़बड़ी फैलाई, तु० मनु० ७।४१, ९।६६-६७)।

वेणा [वेण+टाप्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में आकर मिलती है)।

वेणि,-णी (स्त्री०) [वेण् + इन्, ङीप् वा] 1 गुंथे हुए बाल, बालों की मींढी,—नरशिखण्डी वेणिरिवायता भुव —शि० १२।३५, मेघ० १८ 2 बालों की एक अलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती है (कहा जाता है कि उसी स्त्रियां ऐसी चोटी करती हैं जिनके पति घर पर न हों) दवाग्निदग्धेन रघूत्तमेन मुक्ता स्वयं वारिधिवाभवासे —रघु० १४।१२, अबलावेणि मा धारयुकानि—मेघ० ९१, कु० २।६१ 3 अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता अलकेशिरम्या रेवा यदि प्रेक्षितुमस्ति काम —रघु० ६।४३, मेघ० २९, तु० 'त्रिवेणी' शब्द की भी 4 दो या अधिक नदियों का संगम 5 गंगा यमुना और सरस्वती का संगम 6 एक नदी का नाम। सम०—बन्ध गुंथे हुए बाल, मींढी रघु० १०।४३,—बेधनी जोंक,—वेणिनी कवी, -संहार 1 बालों का गुंथ कर मींढी बनाना वेणी० ६ 2 भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम।

वेणु [वेण् + उण्] 1 बांस, मलयेऽपि स्थितो वेणुर्वंशुरेव न चन्दनम् सुभा०, रघु० १३।४१ 2 नरकुल 3 बंसरी, मुरली नासमर्पेन कृतसंकेत सादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५। सम०—ज —बांस का बीज, -ध्म बांसुरी बजाने वाला, मुरलीवाला, निर्मुक्ति हंस, -यष्टि बांस की लकड़ी, -वाद,—वादक मुरली वाला बांसुरी बजाने वाला, -वीजम् बांस का बीज।

वेणुकम् [वेणु+कन्] बांस की सठ वाला अंकुश।

वेणुनम् [वेणु + उनन्] काला सिर्स।

वेत्र (वे) ब (पु०) हाथी भाग० १।६२।

वेतनम् [अद्+ल्युट् वीभावः] 1 किराया, मजदूरी, भृति, तनख्वाह, वृत्ति —रघु० १७।६६ 2 आजीविका, जीवननिर्वाह का साधन। सम०—अदानम्,—अनपाकर्मन् (नपु०), अनपाक्रिया 1 पारिश्रमिक या मजदूरी न देना 2 मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न **जीविन्** (पु०) वेतन पाने वाला, वैतनिक।

वेतस [वेत् + असुन् तुट् च वीभावः] 1 नरसल, नरकुल, बेंत—प्रतिलम्बितमेघि वेतसस्तवकन्यायेन मा स्म भूरधः शि० १६।५३ रघु० ९।७५ 2 नीबू, बिजौरा।

वेतसी [वेतस्+ङीष्] नरसल,—वेतसीतरुतले—काव्य० १।

वेतस्वत् (वि०) (स्त्री०—ती) [वेतस+इमतुप्, मस्य व] जहां नरकुल बहुतायत से पाये जायें।

वेताल: [अद्+घिञ्, वी आदेशः, तल्+घञ् कर्म० स०] 1 एक प्रकार की भूतयोनि, पिशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत · मा० ५।२३, शि० २०।६० 2 द्वारपाल।

वेत्तृ (पु०) [विद्+तृच्] 1 ज्ञाता 2 ऋषि, मुनि 3 पति, पाणिग्रहीता।

वेत्र [अद्+त्रल, वी भाव] 1 बेंत, नरसल 2 लाठी, छड़ी, विशेष कर द्वारपाल की छड़ी,—वामप्रकोष्ठार्पित-हेमवेत्र —कु० ३।४१। सम०—आसनम् बेंत की बनी गद्दी,—धर,—धारक 1 द्वारपाल 2 आसाधारी, छड़ीबरदार।

वेत्रकीय (वि०) [वेत्र+छ, कुक्] वेत्रबहुल, जहां नरकुल बहुत पाये जायें।

वेत्रवती [वेत्र+मतुप्+ङीप्] 1 स्त्री० द्वारपाल 2 एक नदी का नाम—मेघ० २४।

वेत्रिन् (पु०) [वेत्र+इनि] 1 द्वारपाल, दरबान 2 चोबदार।

वेद् (स्था० आ० वेदते) प्रार्थना, निवेदन करना, कहना।

वेद [विद्+घञ्, अच् वा] 1 ज्ञान 2 आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ (मूलरूप में केवल तीन वेद थे ऋग्वेद यजुर्वेद, और सामवेद जिन्हें समष्टिरूप में 'त्रयी' कहते थे, परन्तु बाद में 'अथर्ववेद' उनके साथ जोड़ दिया गया। प्रत्येक वेद के दो भाग हैं · मन्त्र या संहिता पाठ तथा ब्राह्मण भाग। हिन्दुओं की निरी धर्मनिष्ठता के अनुसार वेद अपौरुषेय (जो पुरुषों द्वारा की गई रचना न हो) है, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं, इसीलिए उन्हें 'श्रुति' कहते हैं, इसके विपरीत 'स्मृति' अर्थात् जो याद रक्खे जाय या जो पुरुषों की कृति हो, दे० 'श्रुति' तथा 'स्मृति' भी इसीलिए बहुत से ऋषि जिनका नाम वेद के सूक्तों से सम्बद्ध है 'द्रष्टार' देखने वाले कहलाते हैं उन्हें 'कर्तार' या 'स्रष्टार' अर्थात् रचयिता नहीं कहा जाता) 3 कुशा घास का गुच्छा मनु० ४।३६, 4 विष्णु का नाम। सम०—अङ्गम् वेद का अंग एक प्रकार के ग्रन्थ जो मन्त्रोच्चारण, व्याख्या और संस्कारों में यत्र-तत्र सही विनियोग में सहायता देने के लिए प्रयत्न होते हैं अतः वेदाध्ययन में सहायक हैं, (वेदांग गिनती में छः हैं 1 शिक्षा, अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2 छन्दस् छन्द शास्त्र, 3 व्याकरण 4 निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों की निर्वचनपरक व्याख्या 5 ज्योतिष अर्थात् नक्षत्र-विद्या या गणितज्योतिष और 6 कल्प अर्थात् कर्म-काण्ड या अनुष्ठानपद्धति),-अधिगमः, अध्ययनम्

धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन, **अध्यापकः** वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु,—**अन्तः** 1 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में आने वाली) उपनिषद् 2 हिन्दुओं के छः मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन ('वेदान्त' इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य-क्षेत्र की शिक्षा देता है, या इसलिए कि यह उन उपनिषदों पर आधारित है जो वेद का अन्तिम भाग हैं), (दर्शन की इस पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही जैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्ध, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहारतः यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सर्वेश्वरवाद का प्रवर्तक है, इसके अनुसार समस्त विश्व एक ही अनादि शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का सश्लिष्ट रूप है, दे० 'ब्रह्मन्' भी) °ग, °ज्ञ, वेदान्त दर्शन का अनुयायी, —**अन्तिन्** (पु०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—**अर्थः** वेदों का अर्थ, -**अवतारः** वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय संदेश - **आदि** (नपु०),—**आविर्भावः** —**आविर्भावजम्** 'ओम्' की पुनीत ध्वनि, **उक्त** (वि०) शास्त्रसम्मत, वेदविहित, **कौलेयकः** शिव का विशेषण, -**गर्भः** 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण, ज्ञ वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, —**त्रयम्**, **त्रयी** सामूहिक रूप से तीनों वेद, —**निन्दकः** नास्तिक, पाखण्डी, श्रद्धाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उसके अपौरुषेयत्व पर विश्वास नहीं करता है), -**निन्दा** अविश्वास, पाखण्ड,—**पारगः** वेदों में पारंगत ब्राह्मण, **पूतः** (स्त्री०) वेदविहित पुनीत मंत्र, गायत्रीमंत्र, **पठनम्**,—**पाठ्यम्** वेद का मूलपाठ, **पठनम्** व्याकरण,—**पारः** ब्राह्मण, -**बाह्य** (वि०) वेद के विरुद्ध, जो वेद में उपलब्ध न हो, **विद्** (पु०) वेदविशारद ब्राह्मण, —**विहित** (वि०) वेदों में जिसका विधान पाया जाय, **व्यासः** व्यास का विशेषण जिसने वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यास,—**संन्यासः** वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग।

वेदनम्, वेदना [विद्+ल्युट्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान 2 भावना, संवेदन 3 पीड़ा, संताप, क्लेश, अ वि —**अवेदनाश्च कुलिशक्षतानाम्** कु० १।२०, रघु० ८।५० 4 अधिग्रहण, दौलत, जायदाद 5 विवाह —मनु० ३।४४, ९।६५, याज्ञ० १।६२।

वेदारः [वेद+ऋ+अण्] गिरगिट।

वेदि [विद्+इन्] विद्वान् पुरुष, ऋषि, पण्डित, **दिः**,—**दी** (स्त्री०) 1 यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी, 2 वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों—मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या—कु० १।३७ (कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'माहर की अंगूठी' समझते हैं 3 किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन 4 मुद्रा—अंगूठी 5 सरस्वती 6 भूखण्ड, प्रदेश। सम०—**जा** द्रौपदी का विशेषण, क्योंकि यह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 यज्ञभूमि या वेदी 3 चबूतरा उच्चसमतलभूमि (जो प्रायः धर्मकार्यों के लिये ठीक की गई हो—सप्तपर्णवेदिका— मा०१, कु० ३।४४ 3 आसन 4 वेदी, ढेर, टीला, मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः —कु० १।२९, 'वेदी या रेत के टीले बना कर 5 आगन में बीच में बना चौकोर चबूतरा 6 लतामण्डप निकुञ्ज।

वेदिन् (वि०) [विद्+णिनि] 1 ज्ञाता जैसा कि 'कृत-वेदिन्' में 2 विवाह करने वाला, (पु०) 1 जानकार 2 अध्यापक 3 विद्वान् पुरुष 4 ब्राह्मण का विशेषण।

वेदी दे० 'वेदि (स्त्री०)।

वेद्य (वि०) [विद्+ण्यत्] 1 ज्ञात होने के योग्य 2 व्याख्येय या शिक्षणीय 3 विवाहित होने के योग्य।

वेध [विध्+घञ्] 1 छेद करना, बींधना, छिद्र बना करना 2 घायल करना घाव 3 छिद्र सुराख या गर्त 4. (खुदाई की) गहराई 5 समय का भाग विशेष।

वेधकः [विध्+ण्वुल्] 1 नरक के एक प्रधान का नाम 2 कपूर, कम् बाल में विद्यमान नाखून।

वेधनम् [विध् ल्युट्] 1. छेदने या बींधने की क्रिया 2 प्रवेशन, छेदन 3 शल्यीकरण, वेधन 4 घुभाना घायल करना 5 (खुदाई की) गहराई।

वेधनिका [वेधनी+कन्+टाप् ह्रस्व] एक तेज नोक वाला उपकरण जिससे मणि या सीप आदि में छिद्र किये जाते हैं वर्मा।

वेधनी [वेधन ङीप्] 1 हाथी का कान बींधने वाला उपकरण 2 एक तेज नोक का सीप व मणि आदि को बींधने वाला उपकरण वर्मा।

वेधस् (पु०) [विधा+असुन्, गुण] 1 स्रष्टा—मा० १।२१ 2 ब्रह्मा, विधाता त वेधा विदधे नव ब्रह्म-मूतसमाधिना रघु० १।२९, कु० २।१६, ५।८१ 3 शैव सृष्टिकर्ता (जैसे कि ब्रह्मा से उत्पन्न दक्ष प्रजापति) कु० २।१४ 4 शिव 5 विष्णु 6 सूर्य 7 मदार का पौधा 8 विद्वान् पुरुष।

वेधस्यम् [वेधस्+अण्] अंगूठे की जड़ के नीचे का हथेली का भाग।

वेपित (भ० क० कृ०) [वेप+इतच्] काँपा हुआ हिलता।

वेप् (म्वा० उभ० वेपति—ते) दे० वेप्।

वेप्या दे० 'वेपथु'।

वेप् (स्वा० आ० वेपते, वेपित) काँपना, हिलना, थर-थराना, लरजना कृताञ्जलिर्वेपमान किरीटी,—भग० ११।३५, रघु० ११।६५, भ्र ,थरथराना, थड़कना, काँपना—कु० ५।२७,७४।

वेपथु [वेप्+अथुच्] थरथरी, कँपकँपी, (स्तनों का) हिलना अद्यापि स्तनवेपथु जनयति स्वेदाम्बु प्रमाणाधिकं शृ० १।३०, शि० ९।२२, ७३, रघु० १९।२३, कु० ४।१३, ५।८५।

वेपथुमत् [वेपथु+मतुप्] थरथरी, कँपकँपी।

वेश्म, वेश्मन् (पु०, नपु०) [विश्+मन्, मनिन् वा] करना, लड़ाई महामिवेश्मन महहुस्वरो बहुभ —नै० १।१२, तुरीवेमादिकम् तर्क०।

वेर, रम् [व्रज्+रन्, दीर्घादेश] 1 शरीर 2 केसर जाफरान 3 वेगन।

वेरट (पु०) नीच पुरुष, छोटी जाति का पुरुष, तथा बेर का फल।

वेल् I. (स्वा० पर० वेलति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 हिलना, इधर उधर घूमना करना।

II. (चुरा० उभ० वेलयति ते) समय की गणना करना।

वेलम् [वेल्+अच्] उद्यान, वाटिका।

वेला [वेल्+टाप्] 1 समय वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि गु० ४ 2 ऋतु अवसर 3 विश्राम का अन्तराल, अवकाश 4 लहर, प्रवाह धारा 5 समुद्र तट, समुद्री किनारा वेलानिलाय रमते भुजङ्गः रघु० ६।७०, १५, १३०, ८।८० १३।३, शि० २।७०, ९।३८ 6 सीमा हृदवन्दी 7 भोजन 8 बीमारी 9 महत्व मूल्य 10 समुद्र। समः कुलम् साधुलिप्त लोगों का जिला, मूलम् समुद्र-तट, वनम् समुद्रीकिनारा का जंगल।

वेल्ल I. (स्वा० पर० वेल्लति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 हिलाना, इधर उधर घुमाना, हिलना आभि० १।५५, शि० ७।७८।

वेल्ल वेल्लनम् [वेल्ल+घञ्, ल्युट् वा] हिलना गतिशील होना 2 (भूमि पर) लोटना।

वेल्लहल [वेल्ल+हलच् अच् पृषो०] लापट दुराचारी।

वेल्लि (स्त्री०) [वेल्ल+इन् [स्त्रि० ङीष् च० वल्लि]।

वेल्लित (भू० क० कृ०) [वेल्ल् का] 1 कंपायमान थरथराने वाला, हिलाया हुआ 2 टेढ़ा-मेढ़ा, तप् 1 जाना, चलना-फिरना 2 हिलना।

वेवी [अदा० आ० वेवीते] 1 जाना 2 प्राप्त करना 3 गर्भधारण करना गर्भवती होना 4 व्याप्त करना 5 दान देना, फेंकना 6 चाहना 7 कामना करना, चाहना (शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग)।

वेश [विश्+घञ्] 1. प्रवेशद्वार 2 अन्त प्रवेश, पैठना 3 घर, आवासस्थल 4 वेश्याओं का घर, चकला,—तरुणजनमनोहारिविभ्रमस्य वेशवासः मृच्छ० १।३१ 5 पोशाक, वस्त्र, कपड़े (इस अर्थ में 'वेष' भी लिखा जाता है)- मृगयाविषयारी,—विनीतवेशेन —शृ० १, कृतवेशः केशवे गीत०११। समः —द्वारम् सूरजमुखी फूल,—धारिन् (वि०) छद्मवेशी, कपटरूपधारी,—नारी, वनिता वेश्या—मुद्रा० ३।१०,—वास वेश्याओं का घर, चकला।

वेशक [वेश+कन्] घर।

वेशनम् [विश्+ल्युट्] 1 प्रवेश करना, प्रवेशद्वार 2 घर।

वेशन्तः [विश्+शतृ] 1 छोटा तालाब, पोखर 2 आग।

वेशर [वेश+रा+क] खच्चर।

वेशवत् (नपु०) [विश्+मतिन्] घर, निवासस्थान, आकाश, भवन, महल - रघु० १४।१५ मेघ० २५, मनु० ४।७३, ९।८५। समः कर्मन् (नपु०) घर बनाना, कलिङ्ग एक प्रकार की चिड़िया, सकुल छछून्दर, भू (स्त्री०) वह स्थान जहाँ घर बनाना है, भवननिर्माण के लिए भूखण्ड।

वेशयम् [विश्+यत्, वेशाय हितं वा यत्] वेश्याओं का घर, चकला।

वेश्या [वेशेन पण्ययोषेण जीवति वेश+यत्+टाप्] बाजारू स्त्री, रंडी, गणिका, रण्डा मृच्छ० १।३२, मेघ० ३० याज्ञ० १।१४१। समः -आचार्य 1 वह पुरुष जो वेश्याओं का स्वामी हो, उन्हें रखता हो 2 भड़वा 3 लौंडा, पोंड़, आधमः वेश्याओं का वासस्थल चकला, -गमनम् व्यभिचार, रंडीबाजी, गृहम् चकला, जन रंडी, पण्य भोग के लिए रंडी का दी जाने वाली मजदूरी।

वेश्वर (पु०) खच्चर।

वेष दे० वेश।

वेष्टनम् [विष्+ल्युट्] अधिकृत वस्तु, स्वामित्व, कब्जा।

वेष्ट् (स्वा० आ० वेष्टते) 1 घेरना, अड़ाना बनाना, घेरा डालना, लपेटना 2 चादर देना, सरोढ़ना 3 वस्त्र पहनना। प्रेर० (वेष्टयति ते) 1. घेरना 2 घेराबन्दी डालना, आ , तह करना, परि , तथ्य—,परस्पर तह करना, लपेटना, सरोढ़ना, उमेठना।

वेष्ट [वेष्ट्+घञ्] 1 घेरा, घिराव 2 बाड़ा, बाड़ 3 पगड़ी 4 गोंद, राल रस 5 तारपीन। समः -अङ्ग एक प्रकार का बाँस, -तारपीन।

वेष्टक [वेष्ट्+ण्वुल्] 1 बाड़ा, बाड़ 2 लौकी,—कम् 1 पगड़ी 2 चादर, लबादा 3 गोंद, रस 4 तारपीन।

वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] 1. लपेटना, चारों ओर से घेरना,

घेराबन्दी करना,—अङ्गुलिवेष्टनम्, 1 अंगूठी 2 कुंडलित होना, गोल मरोड़ी लेना,—रघु० ४।३८ 3 लिफाफा, रैपेटर 4 ओढ़नी, ढकना, संदूक ० पगड़ी, किरीटमुकुट—अस्पृष्टालकवेष्टनौ रघु० १।४२, शिरसा वेष्टनशोभिना—८।१२ 6 बाड़ा, घेरा क्रीडाशैल कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीय—मेघ० ७७ 7 तगड़ी, कमरबन्द 8 पट्टी 9 बाहरी कान 10 गुग्गुल 11 नृत्य का विशेष मुद्रा।

वेष्टनकः [वेष्टन+कन्] सभांग के अवसर की विशेष अवस्थिति।

वेष्टित (भू० क० कृ०) [वेष्ट्+क्त] 1 घिरा हुआ, घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ, बन्द किया हुआ 2 लिपटा हुआ, वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ 3 ठहराया हुआ, रोका हुआ, विघ्न डाला हुआ 4 घेराबन्दी किया हुआ।

वेण्वः, वेण्वः [विशे प] जल, पानी।

वेण्वा. दे० 'वेण्वा'।

वेसरः [वेस्+अरन्] खच्चर—शि० १२।१९।

वेस (स) वारः [वेस्+वृ+अण्] गर्म मसाला, (जीरा, राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किया गया मसाला)।

वेह् (भ्वा० आ० वेहते) दे० 'वेह्'।

वेहत् (स्त्री०) [विशेषेण हन्ति गर्भम्—वि+हन्+अति] बांझ गौ।

वेहारः [=विहार, पृषो०] एक देश का नाम, बिहार।

वेल्ल् (भ्वा० पर० वेल्लति) जाना, हिलना-डुलना।

वैं (भ्वा० पर० वायति) 1 सूखना, शुष्क होना 2 म्लान, निष्प्रभ, अवसन्न।

वै (अव्य०) [वा+ई] स्वीकृति या निश्चयद्योतक अव्यय (निःसन्देह, सचमुच, वस्तुतः) परन्तु केवल पूरक के रूप में प्रयुक्त आपो वै नरसूनव मनु० १।१०, २।२३१, २।४९, ११।३७. यह कभी कभी सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी अनुनय को प्रकट करता है।

वैकक्षिक (वि०) (स्त्री० की) [विकक्षिक+अण्] बांह में मोल लिया हुआ।

वैकक्षम् [विशेषेण कक्षति व्याप्नोति—अण्] 1 एक माला जो यज्ञोपवीत की भांति एक कंधे के ऊपर से तथा दूसरे कंधे के नीचे से धारण की जाती है 2 उत्तरीय वस्त्र, चोगा, ओढ़नी।

वैकक्षकम्, वैकक्षिकम् [वैकक्ष+कन्, ठन वा] यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला।

वैकटिकः (पु०) ओहरी।

वैकर्तनः [विकर्तनस्यापत्यम् · अण्] कर्ण का नाम।

वैकल्पम् [विकल्प+अण्] 1 ऐच्छिकता 2 संशय, संदिग्धता 3 अनिश्चय, असमंजस।

वैकल्पिक (वि०) (स्त्री० की) [विकल्प+ठक्] 1 ऐच्छिक 2 संदिग्ध, संशयग्रस्त, अनिश्चित, अनिर्णीत।

वैकल्यम् [विकल+ष्यञ्] 1 त्रुटि, कमी अधूरापन 2 अङ्गभङ्ग, विकलाङ्ग या पंगु होना 3 असक्षमता 4 विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना, ० अनस्तित्व।

वैकारिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकार+ठक्] 1 विकारविषयक 2 विकारशील 3 विकृत।

वैकालः [विकाल+अण्] तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल, सायंकाल।

वैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) वैकालीन (वि०) [विकाल+ठक्, ख वा] सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला।

वैकुण्ठः [विकुण्ठाया मायायां भव अण्] 1 विष्णु का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण 3 तुलसी का पौधा, —कम् 1 विष्णु का स्वर्ग 2 अभ्रक। मम० चतुर्दशी कार्तिकशुक्ला चौदस, -लोक विष्णु की दुनिया।

वैकृत (वि०) (स्त्री० ती) [विकृत+अण्] 1 परिवर्तित 2 बदला हुआ,—तम् 1 परिवर्तन अदल-बदल, हेर-फेर 2 अवनति, अधोगति, विनोदापन 3 अवस्था या सूरत शक्ल में परिवर्तन, विकृतता आदि नै० ४।५ ° अपशकुन कारी भी अनिष्टसूचक घटना तत्पतंगपरवनादि वैकृत प्रेक्ष्य रघु० ११।६२। मम० विद्यते दुर्दशा, दयनीय दशा, कष्टग्रस्त—वैकृत विवर्तदारुण - मा० १।३१।

वैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकृति+ठक्] 1 परिवर्तित, संशोधित 2 विकृति सम्बन्धी (सांख्य० भा०)।

वैकृत्यम् [विकृत+ष्यञ्] 1 परिवर्तन, अदल-बदल 2 दूसरी स्थिति, दयनीय दशा ० अनुपस्थिति।

वैकाल्यम् [विकाल्या दीव्यति विकाल+अण्] एक प्रकार का रत्न।

वैक्लव्य, वैक्लव्यम् [विक्लव+अण्, ष्यञ् वा] 1 घबड़ाहट, विश्राम, घबराहट 2 हृल्लड़, हलचल 3 कष्ट, दुःख, शोक, रञ्ज शि० ८।६, वेणी० ५, मृच्छ० ३।

वैखरी [विशेषेण व्यक्ति-रा+क+अण्+ङीप्] 1 स्पष्ट उच्चारण, ध्वनि-उत्पादन, दे० कु० २।१७ पर मल्लि० 2 वाक्शक्ति ० वाणी, भाषण।

वैखानस (वि०) (स्त्री०—सी) [वैखानसस्य इदम्-अण्] किसी वानप्रस्थ, संन्यासी, या भिक्षु आदि से सम्बन्ध -- वैखानसं किमनया कृतमात्मदानाद् व्यापारणादि मदनस्य निषेधिनस्यम् शि० १।२७, स: वैखानसो वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण - रघु० १४।२८, मृच्छ० ३।४९।

वैगुण्यम् [विगुण+ष्यञ्] 1. गुण या विशेषता का अभाव

2. सद्गुणों का अभाव, त्रुटि, दोष, कमी 3 गुणों की भिन्नता, विविधता, विरोधिता 4 घटियापन, तुच्छता 5 अकुशलता।

वैचक्षण्यम् [विचक्षण+ष्यञ्] कौशल, निपुणता, प्रवीणता।

वैचित्त्यम् [विचित्त+ष्यञ्] शोक, मानसिक विकलता, अफसोस -मा० ३।१।

वैचित्र्यम् [विचित्र+ष्यञ्] 1 विविधता, विभिन्नता 2 बहुविधता 3 अचरज 4 विस्मयोत्पादकता जैसा कि 'वाक्यवैचित्र्य' में, काव्य० १० 5 आश्चर्य।

वैजनन्यम् [विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

वैजयन्त [वैजयन्ती+अण्] 1 इन्द्र का महल 2 इन्द्र का झण्डा 3 ध्वज, पताका 4 घर।

वैजयन्तिकः [वैजयन्ती+ठक्] झण्डा उठाने वाला।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 झण्डा, पताका (आल० में भी) -सचारिणीव देवस्य मकरकेतोर्जयन्निजमवैजयन्तिका काप्यागतवती -मा० १ 2 एक प्रकार की मोतियों की माला।

वैजयन्ती [वि+जि+अच् = विजयन्त+अण्+ङीप्] 1 झंडा, पताका—स्मरपरिणाहविलासवैजयन्ती—मा० ३।१५ 2 शिव 3 माला, हार 4 विष्णु का हार 5 एक शब्दकोश का नाम।

वैजात्यम् [विजात+ष्यञ्] 1 जाति या प्रकार की भिन्नता 2 जाति या वर्ण की भिन्नता 3 अचरज 4 जातिबहिष्कार 5 बदचलनी, स्वेच्छाचारिता।

वैजिक (वि०) दे० 'बैजिक'।

वैज्ञानिक (वि०) (स्त्री० की) [विज्ञान-ठक्] चतुर, कुशल, प्रवीण।

वैठाल दे० 'बैठाल'।

वैण [वेणु+अञ्, उकारस्य लोप] बांस का काम करने वाला।

वैणव (वि०) (स्त्री०-वी) [वेणु+अण्] 1 बांस से उत्पन्न या बांस का बना हुआ, -वः 1 बांस की लड़ी 2 बांस का कार्य करने वाला, बसोड़, -वी बंसलोचन, -वम् बांस का फल या बीज।

वैणविक [वैणव +ठक्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला।

वैणविन् (पु०) [वैणव +इनि] शिव की उपाधि।

वैणिक [वीणा +ठक्] वीणा बजाने वाला।

वैणुक [वेणुक +अण्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला, -कम् अंकुश दे० 'वेणुक'।

वैतंसिकः [वितंस +ठक्] मांस विक्रेता।

वैतण्डिकः [वितण्डा +ठक्] वितंडावादी, व्यर्थ विवाद करने वाला, छिद्रान्वेषी।

वैतनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेतन + ठक्] वेतन से निर्वाह करने वाला,—कः 1 वेतन लेकर काम करने वाला, अधिक 2 वेतन भोगी (कर्मचारी)।

वैतरणि,—णी (स्त्री०) [वितरेयम् यातेन लभ्यते —वितरण+अण्+ङीप्, पक्षे पृषो० ह्रस्व] 1 नरक की नदी का नाम 2 कलिङ्ग देश की नदी का नाम।

वैतस (वि०) (स्त्री० सी) [वेतस+अण्] 1 बेंत से सम्बन्ध रखने वाला 2 नरकुल जैसा अर्थात् अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के सामने घुटने टेक देने वाला —जैसा कि 'वैतसी वृत्ति' रघु० ४।३५, पंच० ३।१९।

वैतान (वि०) (स्त्री०—नी) [वितान+अण्] यज्ञीय, पवित्र, वैतानास्त्वा वसवः पावयन्तु—मा० ४।७, —नम् 1 यज्ञीय कृत्य 2. यज्ञीय आहुति।

वैतानिक (वि०) (स्त्री०—की) [वितान+ठक्] दे० 'वैतान'।

वैतालिकः [विविधस्तालस्तेन व्यवहरति—ठक्] 1 भाट, चारण 2 जादूगर, बाजीगर, विशेषकर वह जो वेताल का भक्त हो।

वैत्रक (वि०) (स्त्री० की) [वेत्र+वुञ्] बेंत से युक्त, नरकुल का।

वैद. [वेद+अण्] बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष।

वैदग्ध्यम्, वैदग्धी, वैदग्ध्यम् [विदग्ध+अण्=वैदग्ध+ङीप्, विदग्ध+ष्यञ्] 1. कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता—अहो वैदग्ध्यम्—मा० १, प्रबन्धविन्यास-वैदग्ध्यनिधि —वास०, शि० ४।२६ 2 कथनोपकथन में कौशल, सौन्दर्य मा० १।३७ 3 बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई—रत्न० २ ४ बुद्धि।

वैदर्भ [विदर्भ +अण्] विदर्भ देश का राजा—र्भी 1 दमयन्ती 2 रुक्मिणी 3 रचना की विशेष शैली, सा० द० में दी गई परिभाषा—माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका। अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वदर्भी रीतिरिष्यते ॥ ६२६, दण्डी ने बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक गौड़ी रीति से इसकी विभिन्नता दर्शायी है—दे० काव्या० १।४१-५३।

वैदल (वि०) (स्त्री०—ली) [विदलस्य विकार विदल +अण्] 1 बेंत या टहनियों से बनाया हुआ,—लः एक प्रकार की रोटी 2. कोई भी दाल का अनाज, —लम् 1 भिक्षुओं का कमण्डलु भिक्षापात्र 2 बांस या टहनियों की बनी डलिया, या आसन।

वैदिक (वि०) (स्त्री०-की) [वेद वेत्त्यधीते वा ठक्, वेदेषु विहित वेद+ठक्] 1 वेदों से व्युत्पन्न या वेदों के समानुकूल, वेदविषयक 2 पवित्र, वेदविहित, धर्मनिष्ठ —कु० ५।७३, कः वेदों में निष्णात ब्राह्मण। सम० पाशः वेद का अल्पज्ञान रखने वाला, कठमुल्ला, जिसे वेद का अधूरा ज्ञान हो।

वेदुषी (स्त्री०) **वेदुष्यम्** [विदुस् + अण् + ङीप्, विदुस् ष्यञ्] ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता ।

वैदूर्य (वि०) (स्त्री०–री, –र्यी) [विदूर + ष्यञ्] विदूर से उत्पन्न या लाया गया, **मणि** वैदूर्य मणि, नीलम —कु० ७।१०, शि० ३।४५ ।

वैदेशिक (वि०) (स्त्री०–की) [विदेश + ठञ्] दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का और देशों में लाया हुआ,—क अन्य देश का व्यक्ति, विदेशी ।

वैदेश्यम् [विदेश + ष्यञ्] विदेशीपन विदेशी होना ।

वैदेह [विदेह + अण्] 1 विदेह देश का राजा 2 विदेह का रहने वाला 3 व्यापारी वैश्य 4 ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान मनु० १०।११, हा (पु०, ब० व०) विदेह देश के राष्ट्रजन, –ही सीता –वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदेह्याः रघु० १४।३३ (यहाँ 'वैदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है) ।

वैदेहक [वैदेह + कन्] 1 व्यापारी 2 वैद्य (प्र) ।

वैदेहिक [विदेह + ठक्] सौदागर ।

वैद्य (वि०) (स्त्री०–द्यी) [वेद + यत्] 1 वेद सम्बन्धी, आध्यात्मिक 2 आयुर्वेद सम्बन्धी, आयुर्वेद विषयक, —द्य [विद्या अस्ति अस्य विद्या + अण्] 1 विद्वान् पुरुष, विद्यावान्, पण्डित 2 आयुर्वेदाचार्य चिकित्सक वैद्यपत्यभिभाविन गद न प्रदीप इव आयुरन्तकाले रघु० १९।५३ वैद्यानामायुर्वेदानां मुख्य० 2 वैश्य जाति का पुरुष, जो वर्णसङ्कर समझा जाता है (वैश्य स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान) । सम० **क्रिया** वैद्य का व्यवसाय चिकित्सक के रूप में अभ्यास, **नाथ** 1 धन्वन्तरि 2 शिव ।

वैद्यक [वैद्य + कन्] वैद्य, चिकित्सक **कम्** चिकित्सा-विज्ञान ।

वैद्युत (वि०) (स्त्री०–ती) [विद्युत + अण्] बिजली से सम्बद्ध या उत्पन्न, विद्युत् वज्रमय वैद्युत इवाग्नि रुपस्थितोऽयम् विक्रम० ४।१२ उत्तर० ५।१३ । सम० **अग्नि**, **अनल** **वह्नि** बिजली की आग ।

वैध (वि०) (स्त्री०–धी), **वैधिक** (वि०) (स्त्री०–की) [विधि + अण् ठक् वा] 1 नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक 2 कानूनी विधि या कानून सम्मत ।

वैधर्म्यम् [विधर्म + ष्यञ्] 1 असमानता भिन्नता 2 लक्षण गुणों का अन्तर 3 कर्तव्य या आचार का अन्तर 4 वैपरीत्य 5 अवैधता, अनौचित्य अन्याय 6 पाखण्ड ।

वैधवेय [विधवा + ढक्] विधवा का पुत्र ।

वैधव्यम् [विधवा + ष्यञ्] विधवापन, कु० ४।१ मालवि० ५ ।

वैधुर्यम् [विधुर + ष्यञ्] 1 शोकावस्था 2. विक्षोभ घबराहट, सिहरन ।

वैधेय (वि०) (स्त्री०–यी) [विधि + ढक्] 1. नियमानुकूल, विहित 2 मूर्ख, बुद्धू, जड, –यः मूर्ख, जडमति–अलपत्येव वैधेय शि० २, विक्रम० २ ।

वैनतेय [विनता + ढक्] 1 गरुड, –वैनतेय इव विनतानन्दन –का०, रघु० ११।५९, १६।८८, भग० १०।३० 2 अरुण ।

वैनयिक (वि०) (स्त्री०–की) [विनय + ठक्] 1 शिष्टता, सौजन्य, सदाचरण या अनुशासनसम्बन्धी 2 शिष्टाचार का आचरण करने वाला, क सामरिक रथ ।

वैनायक (वि०) (स्त्री० की) [विनायक + अण्] गणेशसम्बन्धी मा० १।१ ।

वैनायिक [विनाय खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थ विनाय ठक्] 1 बौद्ध सम्प्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त 2 उस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

वैनाशिक [विनाश + ठक्] 1 दास 2 मकड़ी 3 ज्योतिषी 4 बौद्ध के सिद्धान्त 5 उन सिद्धान्तों का अनुयायी ।

वैनीतक दे० विनीतक ।

वैपरीत्यम् [विपरीत + ष्यञ्] 1 विरोधिता विरोध 2 असंगति ।

वैपुल्यम् [विपुल + ष्यञ्] 1 विस्तार, विशालता 2 पुष्कलता, बहुतायत ।

वैफल्यम् [विफल + ष्यञ्] निष्फलता, विफलता ।

वैबोधिक [विबोध ठक] 1 नौकादार 2 विशेषकर जो रात में सोने वालों को, पहरा देने समय समय का घोषणा करके जगाता रहता है वि० ४।७९ ।

वैभवम् [विभु + अण्] 1 उत्पत्ति, यश, महिमा चमत्कार, ठाट-बाट, दौलत 2 शक्ति, सामर्थ्य वि० १२।३ ।

वैभाषिक (वि०) (स्त्री० की) [विभाषा + ठक] ऐच्छिक, वैकल्पिक ।

वैभ्रम (वप्०) विष्णु का वैजयन्ती ।

वैभ्राजम् [विभ्राज् + अण्] कश्मीर उपवन या उद्यान ।

वैमत्यम् [विमत + ष्यञ्] 1 मतभेद, अनबन 2 संशय, सन्देह, अरुचि ।

वैमनस्यम् [विमनस् + ष्यञ्] 1 मन का उदासीन मानसिक अवसाद, शोक, उदासी- शा० ६ 2 रोष ।

वैमात्र, वैमात्रेयः [विमातृ + अण्, ढक् वा] सौतेला भाई का बेटा ।

वैमात्रा, वैमात्री, वैमात्रेयी [वैमात्र + टाप्, ङीप् वा वैमात्रेय ङीप्] सौतेली मां की बेटी ।

वैमानिक (वि०) (स्त्री० की) [विमान + ठक्] विमान में आसीन, —कः गगनविहारी ।

वैमुख्यम् [विमुख + ष्यञ्] 1 मुंह मोड़ना, पलायन, प्रत्यावर्तन 2 अरुचि, जुगुप्सा।

वैमेय. [विमय + अण्] बदला, विनिमय।

वैयग्र्यम्, वैयग्र्यम् [व्यग्र + अण्, ष्यञ् वा] 1 व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट 2 अनन्य भक्ति, तल्लीनता महावी० ७।२८।

वैयर्थ्यम् [व्यर्थ + ष्यञ्] व्यर्थता, अनुपादेयता।

वैयधिकरण्यम् [व्यधिकरण + ष्यञ्] भिन्न स्थानों में होने का भाव, दे० 'व्यधिकरण'।

वैयाकरण (वि०) (स्त्री० णी) [व्याकरणमधीते वेत्ति वा अण्] व्याकरणविषयक, व्याकरणसम्बन्धी — स व्याकरण जानने वाला वैयाकरणीकरानादयशब्द-भृगा वत यातु मत्रत्ता सुभा०। सम०—पाश जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो, भार्या जिसकी पत्नी व्याकरण को जानने वाली हो।

वैयाघ्र (वि०) (स्त्री० घ्री) [व्याघ्र + अञ्] 1 चीते की तरह का 2 चीते की खाल से ढका हुआ म चीते की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

वैयात्यम् [वियात + ष्यञ्] 1 साहस, अविनय, निर्लज्जता अन्यदाभरण पुंसा क्षमा लज्जेव योषिताम् पराक्रम परिभवे वैयात्य सुनेश्चिव— शि० २।८४ 2 उजड्डपन अक्खड़पन।

वैयासिक [व्यासस्य अपत्यम् व्यास + इञ्, अकङ् आदेश, यकारात पूर्व तेन] व्यास का पुत्र।

वैर [वीरस्य भाव अण्] 1 विरोध, शत्रुता दुश्मनी वैमनस्य, द्वेष, प्रतिपक्ष कलह जानते वैरात्यपि यान्ति नाशनम् सुभा०, अज्ञातदुष्टयोर्वय वैरामवति सौहृदम् शि० ५।२३, 'वैरभाव में परिणत हो जाता है,' विधाय वैर सामर्थे नराऽरौ च उदामते, प्रक्षिप्योदधिमध्ये वज्रे मेरुरे तेजोभिरात्तम् शि० २। ४२ 2 घृणा ईर्ष्या 3 शत्रुता पराक्रम। सम० अनुबन्ध शत्रुता का आरम्भ अनुबन्धिन् (वि०) शत्रुता की ओर ले जाने वाला — आतङ्क अजेयत्वम्,—आदृत्यम्, उद्धार,— निर्यातनम्,—प्रतिक्रिया,—प्रतीकार —यातना,—शुद्धि (स्त्री०),—साधनम् शत्रुता का बदला, बदला देना प्रतिहिंसा करना, कार, कृत् (पु०) शत्रु — भाव शत्रुतापूर्ण रवैया रक्षिन् (वि०) शत्रुता का निवारण करने वाला।

वैरक्तम्,—क्त्यम् [विरक्त + अण्, ष्यञ् वा] 1 सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2 अप्रसन्नता, नापसन्दगी अरुचि।

वैरङ्गिक. [विरङ्ग विराग नित्यमर्हति ठक्] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, सन्यासी, वैरागी।

वैरल्यम् [विरल + ष्यञ्] 1 न्यूनता, विरलता 2 ढीलापन 3 पृथुता।

वैरागम् दे० 'वैराग्यम्'।

वैरागिक, वैरागिन् (पु०) [विराग + ठक्, विराग + अण् + इनि] वह सन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है।

वैराग्यम् [विरागस्य भाव ष्यञ्] 1 सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बन्धनों से उदासीनता, विरक्ति भग० ६।२५, १३।८ 2 असन्तुष्टि, अप्रसन्नता, असन्तोष काम प्रकृतिवैराग्य सह शर्मणि क्षम रघु० १४।५९ 3 अरुचि, नापसन्दगी 4 रज शाक, अफसोस।

वैराज (वि०) (स्त्री०—जी) [विराज् + अण्] ब्रह्मासम्बन्धी—उत्त० २।

वैराट (वि०) (स्त्री० टी) [विराट + अण्] विराट सम्बन्धी —ट. एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, इन्द्रगोप।

वैरिन् (वि०) [वैर + इनि] विरोधी, शत्रुतापूर्ण (पु०) शत्रु,—गौर्य वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु न केवलम् भर्तृ० २।२२, भग० ३।३७, रघु० १२।१०४।

वैरूप्यम् [विरूप + ष्यञ्] 1 विकृतता, कुरूपता रघु० १२।८० रूपों की विभिन्नता या वैषम्य।

वैरोचन-, वैरोचनि-, वैरोचि [विरोचनस्यापत्यम् अण्, इञ् वा विरोच + फक्] विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण।

वैलक्षण्यम् [विलक्षणस्य भाव ष्यञ्] 1 आश्चर्य 2 वैपरीत्य विरोध 3 अन्तर, भेद।

वैलक्ष्यम् [विलक्ष + ष्यञ्] 1 उलझन गड़बड़ी 2 अस्वाभाविकता कृत्रिमता वैलक्ष्यस्मिनम् कृत्रिम या बलपूर्वक की गई मुस्कान 3 लज्जा 4 वैपरीत्य, व्युत्क्रम।

वैलोम्यम् [विलोम + ष्यञ्] विरोध, व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

वैल्व (वि०) दे० 'बैल्व'।

वैवधिक [विवध + ठक्] 1 फेरी वाला आवाज लगा कर बेचने वाला 2 (बहंगी में रख कर) भार ढोने वाला।

वैवर्ण्यम् [विवर्णस्य भाव – ष्यञ्] 1 रंग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निष्प्रभता 2 विभिन्नता विविधता 3 जाति से निकलना।

वैवस्वत [विवस्वतोऽपत्यम् अण्] 1 सातवाँ मनु, जो वर्तमान युग का अधिष्ठाता है मनु के नीचे दे० वैवस्वतो मनुर्नाम मानवीयो मनीषिणाम् रघु० १।११ उत्तर० ६।१८ 2 यम रघु० १५।४५ 3 शनिग्रह, - तम् विवस्वान् के पुत्र मानव मनु, द्वारा अधिष्ठित वर्तमान युग या मन्वन्तर।

वैवस्वती [वैवस्वत + ङीप्] 1 दक्षिण दिशा 2 यमुना नदी।

वैवाहिक (वि०) (स्त्री० की) [विवाह+ठक्] विवाहसंबंधी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला कु० ७।२,—कः, —कम् विवाह, शादी,—क पुत्र वधू का श्वसुर, या दामाद का श्वसुर।

वैशद्यम् [विशद+ष्यञ्] 1 स्वच्छता, निर्मलता (आल०) 2, स्पष्टता 3 सफेदी 4 शान्ति, (मन की) स्वस्थता।

वैशसम् [विशस+अण्] 1 विनाश, हत्या, वध—कु० ४।३१, उत्तर० ४।२४, ६।४० 2 दुःख, सन्ताप, पीडा, कष्ट, कठिनाई—उपरोधवैशसम्—मुद्रा० २, मा० ९।३५।

वैशारद्यम् [विशारद+अण्] 1 अनुरक्षा 2 राजकीय शासन।

वैशाखः [विशाख+अण्] 1 चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अप्रैल-मई) 2 रई की डण्डा द्रुतनरकरदक्षाक्षिप्तवैशाखशैले कलशिमुदधिगर्भां वल्लवा लोडयन्ति —शि० ११।८, कम् बाण चलाते समय की एक मुद्रा, दे० 'विशाख' —खी वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशिक (वि०) [वेशेन जीवति वश+ठक्] वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त—वैशिकी कलाम् मृच्छ० १।३, वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त कलाएँ,—कः वेश्याओं के साहचर्य में रहता है, शृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक, कम् वेश्यावृत्ति, वेश्याओं की कलाएँ।

वैशिष्ट्यम् [विशिष्ट+ष्यञ्] 1 भेद, अन्तर 2 विशिष्टता, विशेषता, अनूठापन—वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत्सार्थसम्भवा—सा० द० २७ 3 श्रेष्ठता—सा० द० ७८ 4 विशिष्टलक्षणसम्पन्नता।

वैशेषिक (वि०) (स्त्री० -की) [विशेष पदार्थभेदमधिकृत्य कृतः अण्—विशेष+ठक्] 1 विशेषता युक्त 2 वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाला, कम् छः हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे, गौतम के न्यायदर्शन से इसकी भिन्नता इस बात में है कि इसमें सोलह के बजाय केवल सात तत्त्वों का विवेचन है तथा 'विशेष' पर विशेष बल दिया गया है।

वैशेष्यम् [विशेष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता।

वैश्य [विश+ष्यञ्] तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका आदर्श व्यवसाय व्यापार और कृषि है विहितव्याधं पशुभ्यश्च कृष्याद्यावश्यकत्वि शुचि, वेदाध्ययनसम्पन्न स वैश्य इति सज्ञित पद्य०। सम० कर्मन् (नपु०) वृत्ति (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि।

वैश्रवण [विश्रवणस्यापत्यम्- अण्] 1 धन का स्वामी कुबेर,—विभाति यस्या ललितालकायां मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मीः- भामि० २।१० 2 रावण का नाम। सम० आलय, आवासः 1 कुबेर का आवासस्थल 2 बड का वृक्ष,—उदयः बड का पेड।

वैश्वदेव (वि०) (स्त्री०-वी) [विश्वदेव+अण्] विश्वेदेवों से सम्बन्ध रखने वाला,- वम् 1 विश्वेदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार 2 सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर)।

वैश्वानर [विश्वानर+अण्] 1 अग्नि का विशेषण,—स्वस्ति खाण्डवकृत्तखाण्डवनटो दूरेऽस्तु वैश्वानर - भामि० १।५७ 2 जठराग्नि, अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् (वेदान्त०) 3 परमात्मा।

वैश्वासिक (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वास+ठक्] विश्वसनीय, गोपनीय।

वैषम्यम् [विषम+ष्यञ्] 1 असमता 2 खुरदरापना, कठोरता 3 असमानता 4 अन्याय 5 कठिनाई, विपत्ति, सकट 6 एकाकीपन।

वैषयिक (वि०) (स्त्री०—की) [विषय+ठक्] 1 किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2 विषयों में सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, शारीरिक, क. कामी, लम्पट।

वैष्टुतम् [विष्टुत्या निर्वृत्तम् विष्टुति+अण्] धर्मोत्सव आहुतियों का रस्म।

वैष्णु [विष्+स्नु वृद्धिः] 1 अन्तरिक्ष, आकाश 2 हवा, वायु 3 लोक, विश्व का एक प्रभाग।

वैष्णव (वि०) (स्त्री०—वी) [विष्णु+अण्] 1 विष्णु सम्बन्धी, रघु० ११।८५ 2 विष्णु की पूजा करने वाला, क० तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू-सम्प्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त, वम् धर्मीकृत आहुतियों की रस्म। सम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वैसारिन् [विशारण मर्हति विसार, मत्स्य स च विसा रिन्+अण्] मछली।

वैहायस (वि०) (स्त्री०—सी) [विहायसि अण्] हवा में विद्यमान, हवाई।

वैहार्य (वि०) [विहारेण निर्वृत्तं-वि+हृ घञ्+अण्] जिसमें हवा विहारों की जाय, जिसे उपहार में विक्रय बनाया जाय (जैसे पत्नी का भाई, या ससुराल का कोई रिश्तेदार)।

वैहासिक [विहास एवार्थे-विहास+ठक्] हसोकड़ा विदूषक।

वोढृ [वह+तृच्] 1 एक प्रकार का साँप 2 एक तरह का मछली।

वोढ्री [वोढृ+ङीष्] एक का चौथा भाग।

वोढृ (पु०) [वह्+तृच्] 1 ढोने वाला, कुली 2 नेता

3 पवि 4 साँड 5 रथवान् 6 सीचने वाला घोड़ा।

बोंट (पु०) डंठल, वृन्त।

बोद (वि०) [अवनिक्तमुदकं यत्र-प्रा० ब०, उदकस्य उदादेश, भागुरिमते अकार लोप' —] तर, गीला, आर्द्र।

बोदालः [बोदे आर्द्रे सन् अलति बोद+अल्+अच्] जर्मन-मखली।

बोर (ल) क [अवनत लेखन काले उरो यस्य-प्रा० ब०, कप्, अवस्य अकारलोप, पृषो० मलोप पक्षे रलबोरभेद] लिपिकार, लेखक।

बोरटः [बो इति रटन्ति भृङ्गा यत्र-बो+रट्+क] कुंद का एक भेद।

बोल [बुल्+अच्] गूगुल, रसगंध।

बोल्लाह (पु०) एक प्रकार का घोड़ा।

बौद्ध (वि०) दे० 'बौद्ध'।

बौषट् (अव्य०) [उह्यतेऽनेन हवि वह्+डौषट्] पितरों या देवों को आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला उद्गार या वाकेतिक शब्द।

व्यडक [विशिष्टं अडं यस्य-प्रा० ब०, कप्] पहाड़।

व्यडुक (वि०) [विगतम् अडुकं यस्य-प्रा० ब०] वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा-कि० ९।२४।

व्यलीक [वि+अल्+ख्युन्] धूर्त, ठग, जैसा कि 'अहह व्यलीक' 'वचन मार कठमयूर'।

व्यलीकम् [वि; अल्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना।

व्यक्त (भू० क० कृ०) [वि अञ्ज+क्त] 1 प्रकटीकृत, प्रदर्शित 2 विकसित, रचित कु० २।११ 3 स्पष्ट, प्रकट साफ, सरल, निश्चित, विशद रूप से विद्यमान 4 विशिष्ट, विदित, विख्यात 5 अकेला मनुष्य 6 बुद्धिमान्, विद्वान् क्तम् (अव्य०) स्पष्ट, स्पष्ट रूप से साफतौर पर, निश्चित रूप से। सम० गणितम् अव्यक्तगणित, दृष्टार्थ वह साक्षी जिसने घटना अपनी आँखों से देखी है गवाह, -राशिः ज्ञात अंक, रूप विष्णु का विशेषण,-विक्रम (वि०) शक्ति प्रदर्शित करने वाला

व्यक्ति (स्त्री०) [वि+अञ्ज् क्तिन्] 1 प्रकटीकरण, दृश्यमानता, विशद प्रत्यक्षज्ञान,—राज्ञः सपत्नमेधाधरीत्तरव्यक्तिर्भविष्यति—मालवि० 1 स्नेहव्यक्ति – मेघ० १८ 2 दृश्यमान मूरत, स्पष्टता, विशदता श० ७।८ 3 भेद, विवेचन,—न सन्ति, श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः —रघु० १।१० 4 वास्तविक रूप या प्रकृति, सच्चरित्र,—न हि ते भगवान् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः —भग० १०।१४ 5 वैयक्तिकता (विप० जाति) वेम० ८।१८ 6 अकेला मनुष्य, पुरुष 7 (व्या० में) लिंग 8 विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय।

व्यग्र (वि०) [विरुद्धम् अगति वि+अञ्ज्+रक्] 1 व्याकुल, विस्मित, उद्विग्न 2 भयाक्रान्त, भयभीत 3 किसी कार्य में साभिप्राय व्यस्त (अधि० या करण० के साथ अथवा समास में)—रघु० १७।२७, महावी० १।१३, ४।२८, कु० ७।२, उत्तर० १।२६, भामि० १।१२३, शि० २।७९।

व्यङ्ग (वि०) [विगतं वा अङ्गं यस्य प्रा० ब०] 1 देहहीन 2 अङ्गहीन, विरूप, विकलाङ्ग, अपाहज, लुञ्जा, -ग 1 लुञ्जा 2 मेंढक 3 गाल पर पड़े काले धब्बे।

व्यङ्गुलम् (नपु०) लम्बाई का अत्यन्त छोटा माप, अंगुल का ६० वाँ अंश।

व्यञ्जक (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] 1 व्यञ्जना शक्ति द्वारा ध्वनित, परोक्षसङ्केत द्वारा सूचित 2 ध्वनित (अर्थ), स्वयं उपलक्षित अर्थ व्यञ्जनाशक्ति, परोक्ष सङ्केत (विप० वाच्य 'मुख्यार्थ' और लक्ष्य 'गौण या सङ्केतित अर्थ')—इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथित काव्य० १।

व्यच् (तुदा० पर० विचति, कर्मवा० विच्यते) ठगना, धोखा देना, चाल चलना।

व्यजः [वि+अञ्ज्+घञ्] पंखा।

व्यजनम् [वि+अञ्ज्+ल्युट्] पंखा, निवर्तितव्यजनम्—हि० २।१६५, रघु० ८।८०, १०।५२ नृ० 'बालव्यजन'।

व्यञ्जक (वि०) (स्त्री० जिका) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] 1 स्पष्ट करने वाला, सङ्केतक, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला 2 अर्थ को उपलक्षित या ध्वनित करने वाला (शब्द), (विप० वाचक और लाक्षणिक), कः 1 नाटकीय हावभाव, आलंकारिक भावों को उपयुक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाह्य सङ्केत 2 सङ्केत, प्रतीक।

व्यञ्जनम् [वि+अञ्ज् ल्युट्] 1 स्पष्ट करना, सङ्केत करना, प्रकट करना 2 चिह्न, निशान, सङ्केत 3 स्मारक मा० ९ 4 छद्मवेश परिधान—शि० २।५६, तापसिव्यञ्जनदोषेण आदि 5 व्यञ्जन अक्षर 6 लिङ्गद्योतक चिह्न अर्थात् स्त्री या पुरुष का परिचायक अङ्ग 7 अधिकार-चिह्न, बिल्ला 8 वयस्कता का चिह्न 9 दाढ़ी 10 अङ्ग, सदस्य 11 मिर्च मसाला, चटनी, मिठाई हुई वस्तु नै० १६।१०४ 12 तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है, दे० अञ्जन ना (४) (इस अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी लिखा जाता है)। सम० उदय (वि०) वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन अक्षर आता है, स्वरैः व्यञ्जन वर्णों का संयोग या सम्बन्ध।

व्यञ्जना दे० ऊ० 'व्यञ्जन (12)'।

व्यञ्जित (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] 1 साफ किया गया, प्रकट किया गया, सङ्केत किया गया

2 चित्रित, भिन्न, चित्रित 3 सुझाव दिया गया, ध्वनित।

व्यडम्बक व्यडम्बन [डम्ब्+ण्वुल्, ल्युट् का विशेषण न डम्बक] अण्ड का पेड़।

व्यतिकर: [वि+अति+कृ+अप्] 1 मिश्रण, अन्त मिश्रण, इकट्ठा मिला देना तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वो -रघु० ८।९५ व्यतिकर इव भीमस्तामसो बंधुतश्च—उत्तर० ५।१२, मा० ९।५२ 2 सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन मालवि० १।४, शि० ४।५३, ७।२८ 3 रगड़ना कु० ५।८५ 5 घटना, सम्भूति, वृत्तान्त, दशा, मामला, एवंविधे व्यतिकरे -'ऐसी बात होने पर' 6 अवसर 7 मुसीबत, संकट 8 पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिकता 9 विनिमय, अदलाबदली।

व्यतिकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+अति+कृ+क्त] 1 मिला हुआ, मिश्रित 2 संयुक्त।

व्यतिक्रम [वि+अति+क्रम्+घञ्] 1 अतिक्रमण, विचलन, भटकना 2 उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान —यथा 'सविद् व्यतिक्रम -रघु० १।३९ 3 अवहेलना, उपेक्षा, भूल 4 वैपरीत्य, उलट, व्यत्यास 5 पाप दुर्व्यसन, जुर्म 6 आपत्काल दुर्भाग्य।

व्यतिक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि अति+क्रम्+क्त] 1 पार किया गया, अतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया उपेक्षित 2 बीता, बिताया हुआ, गुजरा हुआ (समय)।

व्यतिरिक्त (भू० क० कृ०) [वि अति+रिच्+क्त] 1 वियुक्त, भिन्न अव्यतिरिक्तेयमस्मत्परीक्षात -का०, कृ० १।३१, ५।२० 2 आगे बढ़ने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला 3 प्रत्याहृत, रोका हुआ 4 अलगाया हुआ।

व्यतिरेक [वि+अति+रिच्+घञ्] 1 भेद, अन्तर 2 वियोग 3 निष्क्रमण, आक्रमण 4 श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाना 5 वैपरीत्य असमानता 6 (तर्क० में) अनन्वय (विप० अन्वय) उदा० 'यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमो नास्ति' यह व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7 (अल० में) एक अर्थालंकार जिसमें किन्हीं विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बताया जाता है - उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेक पदद्वयः काव्य० १०।

व्यतिरेकिन् (वि०) [व्यतिरेक+इनि] 1 भिन्न 2 आगे बढ़ जाने वाला, आगे निकल जाने वाला 3 बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4 अभाव या अनस्तित्व दर्शाने वाला जैसा कि 'व्यतिरेकि लिङ्गम्' में।

व्यतिषक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+सञ्ज्+क्त] 1 आपस में मिला हुआ, पारस्परिक संबद्धयुक्त, शृंखलाबद्ध या एकत्र जुड़ा हुआ 2 अन्त मिश्रित 3 अन्तर्जातीय विवाह करने वाला।

व्यतिषङ्ग: [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1 पारस्परिक सम्बन्ध, अन्योन्यसम्बन्ध 2 अन्त मिश्रण 3 संयोग, या मिलाप।

व्यति (ती)हार [वि+अति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घः] 1 अदल-बदल विनिमय 2 पारस्परिकता, अन्त परिवर्तन रघु० १२।७३।

व्यतीत (भू० क० कृ०) [वि+अति+इ+क्त] 1 गुजरा हुआ, गया हुआ, बीता हुआ, पार किया हुआ -रघु० १५।१४ 2 मृत 3 छोड़ा हुआ, परित्यक्त, विसर्जित 4 अवज्ञात।

व्यतीपात [वि+अति+पत्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 समूचा प्रपात, सम्पूर्णविचलन 2 भारी उत्पात, भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन 3 अनादर, तिरस्कार।

व्यत्यय [वि+अति+इ+अच्] 1 पार करना 2 विरोध वैपरीत्य 3 व्यत्यस्त क्रम व्युत्क्रान्ति 4 अन्त परिवर्तन, रूपान्तरण 5 अवरोध, अड़चन।

व्यत्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+अस्+क्त] 1 व्युत्क्रान्त, विपर्यस्त 2 विपरीत, विरोधी 3 असदृश व्यत्यस्त पाणि- -भामि० २।८४ 4 विरेखित इस प्रकार रक्खी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो व्यत्यस्त पाद, व्यत्यस्त भुज आदि।

व्यत्यास [वि+अति+अस+घञ्] 1 व्युत्क्रान्त स्थिति या क्रम 2 विरोध वैपरीत्य।

व्यथ् (स्वा० आ० व्यथते, व्यथित) 1 आन्दोलित होना, पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना, विचलित या अशान्त होना -विश्वभराऽपि सा व्यथते इति [कालिदास स्नेहेन उत्तर० ७, न विव्यथे तथा मनः कि० १।२, २४ 2 आन्दोलित होना, दोलायमान होना-कि० ५।११ 3 काँपना 4 भयभीत होना 5 घूमना, शुरू होना, प्रेर० (व्यथयति-ते) पीड़ा देना, कष्ट देना नाराज करना, दुःखी करना उत्तर० १।२७ ३ अत्यन्त क्षुब्ध होना भग० ११।२०।

व्यथक (वि०) (स्त्री० थिका) [व्यथ्+णिच्+ण्वुल्] पीड़ाजनक, दुःखद, कष्टकर कि० २।४।

व्यथयत् [व्यथ्+ल्युट्] पीड़ा देना, सताना।

व्यथा [व्यथ्+अङ्+टाप्] 1 पीड़ा वेदना, आधि —तां न व्यथां प्रलयकालकृतामवाप्य—उत्तर० ४।२३ १।१२ 2 भय, आतंक विस्मा -स्वजनविप्रियजनधाम् तद्व्यथाम् —रघु० ११।६२ 3 विलाप, अशान्ति 4 रोग।

व्यथित (भू० क० कृ०) [व्यथ् + क्त] 1 कष्टग्रस्त, दुखी, पीड़ित 2 आलोड़ित 3 विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन।

व्यध् (दिवा० पर० विध्यति, विद्ध) 1 बींधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, छुरा भोंकना, मार डालना अभिनवास्त्रमुं विध्यामि द्विषन्तं स तनुत्रिणं शि० १२।१०, विद्धमात्र - रघु० ५।५१, ९।६०, १४।७०, भट्टि० ५।५२, ९।६६, १५।६९ 2 सुराख करना, छिद्र करना, आरपार बींधना 3 खोदना, गड्ढा करना, मनु० -, 1 बींधना, चोट पहुँचाना, घायल करना 2 सूचना घेरना 3 जकड़ना, जटिल करना—दे० अनुविद्ध, अप—, 1 फेंकना, डालना, उछालना —महावी० २।२३ रघु० १९।४४ 2 बींधना हृदयमप्राप्य मे पक्ष्मलाक्ष्या कटाक्षैरपह्नुतमप्यविद्धं पौलस्त्यमुन्मथितं च मा० ४।२८ 3 त्यागना, परित्यक्त करना आ- , 1 बींधना 2 फेंकना डालना दे० आविद्ध, परि , घेरना, बींधना घायल करना।

व्यध [व्यध- अच्] 1 बींधना, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना शि० ७।२४ ? आघात करना, घायल करना, प्रहार 3 छिद्र करना।

व्यधिकरणम् [वि + अधि कृ -ल्युट्] भिन्न आधार या स्थान पर अवस्थित रहना। जैसा कि 'व्यधिकरण बहुव्रीहि' में, अर्थात् वह बहुव्रीहि समास जहाँ पहला पद दूसरे पद से विभक्ति भिन्न कारक का हो, यदि उनका विग्रह करके दिखा जाय उदा० चक्रपाणि कंटमौलि आदि।

व्यध्य [व्यध् + ण्यत्] चौराहों के बीच का खेला, निशाना, लक्ष्य।

व्यध्व [विरुद्ध अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग, बुरी सड़क।

व्यनुनाद [विशिष्ट अनुनाद प्रा० स०] प्रतिध्वनि, ऊँची गूंज।

व्यन्तर [विशिष्ट अन्तरा यस्य—प्रा० ब०] 1 पिशाच यक्ष आदि एक प्रकार का अतिप्राकृतिक प्राणी।

व्यप् (चुरा० उभ० व्यापयति—ते) 1 फेंकना 2 घटाना, बरबाद करना, कम करना।

व्यपकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि + अप् + कृष् + क्त] एक ओर खींचा हुआ, दूर किया हुआ हटाया हुआ।

व्यपगत (भू० क० कृ०) [वि + अप + गम् + क्त] 1 गया हुआ, विसर्जित, अन्तर्हित मदो मे व्यपगत, भर्तृ० २।८, मेघ० ७६ 2 हटाया हुआ 3 मिटाया हुआ।

व्यपगम [वि + अप + गम् + अप्] विसर्जन, अन्तर्धान।

व्यपत्रप (वि०) [विगता अपत्रपा यस्य प्रा० ब०] निर्लज्ज, ढीठ।

व्यपदिष्ट (भू० क० कृ०) [वि + अप + दिश् + क्त] 1 नामांकित 2 बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया, घोषित 3 बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया।

व्यपदेश [वि + अप + दिश् + घञ्] 1 निरूपण, सन्देश, सूचना 2 नामकरण, नाम रखना 3 नाम, अभिधान, उपाधि एष व्यपदेशभाज —उत्तर० ६।४, परिवार, वंश,—अथ कोऽस्य व्यपदेश - श० ७, व्यपदेशमाबिभ्रति किमीहसे जनमिमं च पातयितुम् श० ५।२० 5 कीर्ति, यश, प्रसिद्धि 6 चाल, बहाना, दाँव, उपाय 7 जालसाजी, चालाकी।

व्यपदेष्ट् (पु०) [वि + अप + दिश् + तृच्] छलिया धोखेबाज।

व्यपरोपणम् [वि + अप + रुह् + णिच् + ल्युट् ह्रस्य प] 1 उन्मूलन, उखाड़ना 2 भगाना, हटाना, दूर करना 3 काट डालना, फाड़ डालना, खाद लेना चुकोप तस्मै स भृशं सुरन्त्रियं प्रसह्य केशव्यपरोपणादिव रघु० ३।५६।

व्यपाकृतिः (स्त्री०) [वि + अप + आ + कृ + क्तिन्] 1 निष्कासन, दूरीकरण, निकाल देना 2 मुकरना।

व्यपाय [वि + अप + इ + घञ्] अन्त, लोप, समाप्ति, - कु० ३।३३, रघु० ३।३७।

व्यपाश्रय [वि + अप + आ - श्रि + अप्] 1 उत्तरदायित्व 2 शरण लेना सहारा लेना, भरोसा करना भग० ३।१८ 3 निर्भर होना धर्मो रामव्यपाश्रय रामा०।

व्यपेक्षा [वि + अप + ईक्ष् अङ् + टाप्] 1 प्रत्याशा आशा 2 निहोर विचार रघु० ८।२८ 3 पारस्परिक सम्बन्ध, अन्योन्याश्रय 4 पारस्परिक निहोर 5 व्यवहार 6 (व्या० मे) दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग।

व्यपेत (भू० क० कृ०) [वि + अप + इ + क्त] 1 वियुक्त अलगाया हुआ 2 गया हुआ, विसर्जित, (प्राय समास में व्यपेतकल्मष, व्यपेतभी, व्यपेतहर्ष आदि)।

व्यपोढ (भू० क० कृ०) [वि + अप + वह + क्त] 1 निकाला गया, हटाया गया 2 विपरीत, विरोधी कि० ४।१२ 3 प्रकटीकृत, प्रदर्शित बतलाया गया।

व्यपोह [वि + अप + ऊह् + घञ्] निकालना दूर करना, अलग रखना।

व्यभि (भी) **चार** [वि + अभि + चर् + घञ्] 1 दूर चले जाना, विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना कुमार्ग का अनुसरण करना मन्त्रस्यमन्यमनिन व्यभिचारविधिरिनम् हि० ३।१६ मृग० १४।२६ 2 अतिक्रमण, उल्लंघन मनु० १०।२४ 3 अशुद्धि, जुर्म, पाप 4 विश्वासघातता, अलग होने की सामर्थ्य 5 अभक्ति, अनास्था, पति-पत्नी मे अविश्वास, व्यभिचार या पत्नी-

व्रत का अभाव,—व्यभिचारात् भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति निन्द्यताम् -मनु० ५।१६४, वाङ्मनः कर्मभि परयौ व्यभिचारो यथा न मे - रघु० १५।८१, याज्ञ० १।७१ 6 असंगति, अनियमितता, अपवाद 7. (तर्क० में) आभासी हेतु, हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता।

व्यभिचारिणी [व्यभिचारिन्+ङीप्] असती स्त्री, परपुरुषगामिनी स्त्री।

व्यभिचारिन् (वि०) [व्यभिचार+इनि] 1. भटका हुआ, भूला हुआ, पथभ्रष्ट, भ्रान्त, नियम भंग करने वाला 2 अनियमित, असंगत 3. असत्य, मिथ्या —दे० अव्यभिचारिन् 4. श्रद्धाहीन, जो ब्रह्मचारी न हो, परस्त्रीगामी, (पु०—व्यभिचारिभावः संचारिभाव, सहकारी भाव (विप० स्थायी भाव) यद्यपि स्थायी भावों की भांति यह सहकारी भाव रस का कोई आधारभूत रूप नहीं बनाते, फिर भी यह प्रवहमान रस के पोषक हैं, अतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह रस की पुष्टि करते हैं। इनकी संख्या तेंतीस या चौंतीस है, इनकी गणना के लिए दे० काव्य० ४, कारिका ३१–३४, सा० द० १६९, या रस० प्रथम आनन, तु० विभाव और स्थायिभाव की।

व्यय I (चुरा० उभ० व्याययति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2 व्यय करना, प्रदान करना, अर्पण करना। II (भ्वा० उभ० व्ययति ते) जाना, हिलना-जुलना। III (चुरा० उभ० व्याययति—ते, व्यापयति ते भी) 1 फेंकना, डालना 2. हाँकना।

व्यय (वि०) [वि+इ+अच्] परिवर्तनीय, परिणामशील, विकारवान्—तु० अव्यय, पुं० 1 (क) हानि, लोप, विनाश—आपाद्यते न व्ययमन्तरायैः कश्चिन्मनस्वी त्रिविधं तपस्तत्—रघु० ५।५, १२।३३, (ख) क्षमा लगाना, त्याग—प्राणव्ययेनापि मया विधेयं —मा० ४।४, कु० ३।२३ 2. क्षयवाद, अवक्षय—रघु० १५।३७, 3. क्षय, ह्रास, पराभव, अपकर्षण 4 खर्च, मूल्य, परिव्यय, विनिमोय, प्रदोष, (विप० आय) आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्था, कष्टसंश्रया - पञ्च० १।१९३, आयाधिकं व्ययं कुरुते 'अपनी आय से अधिक व्यय करता है'—रघु० ५।१२, १५।३, मनु० ९।११ 5 अपव्यय, फिजूलखर्ची। सम०—कर (वि०) मुक्तहस्त से खर्च करने वाला,—कराङ्मुख (वि०) कृपण, कंजूस, मक्खीचूस, - शील (वि०) अतिव्ययी, फिजूलखर्च,—शुद्धिः (स्त्री०) हिसाब चुकाना।

व्ययनम् [व्यय्+ल्युट्] 1. खर्च करना 2. बर्बाद करना, विनष्ट करना।

व्ययित (भू० क० कृ०) [व्यय्+क्त] 1. व्यय किया गया, खर्च किया गया 2 बर्बाद किया गया, क्षयग्रस्त।

व्यर्थ (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मात्—प्रा० ब०] 1 अनुपयोगी, निरर्थक, विफल, अलाभकर व्यर्थं यत्र कर्णेन्द्रसख्यमपि मे - उत्तर० ३।४५ 2 अर्थहीन, निरर्थक, बेकारी।

व्यलीक (वि०) [विशेषेण अलति - वि+अल्-कीकन्] 1 मिथ्या, झूठा 2 कुत्सित, अनभिमत, अप्रिय 3 जो मिथ्या न हो—शि० ५।१,—कः 1 स्वेच्छाचारी 2 साँड, लौण्डा,—कम् कोई भी अप्रिय या अशुभद वस्तु, अप्रियता—इत्थं गिरः प्रियतमा इव मोऽव्यलीका ग्राह्याः सुतस्तनयस्य सदा व्यलीका शि० ५।१ 2 बेचैनी का कारण, पीड़ा, शोक या रंज का कारण सुतनु हृदयान्यदाक्षीर्व्यलीकमयैनु न शि० ७।२८, कि० ३।१९, कु० ३।२५, रघु० ४।८७ 3 दोष, अपराध, अतिक्रमण, अनुचित कार्य, सख्यर्व्यलीकमवधीरितसम्भ्रमेण प्रस्थित सपदि कोपवदेन -कि० ९।४५, शि० ९।४९, रत्न० ३।५ 4 जालसाजी, चाल, धोखा पञ्च० १।२०, २।४२ 5 मिथ्यापन 6 व्युत्क्रम वैपरीत्य।

व्यवकलनम् [वि+अव+कल्+ल्युट्] 1 विभाग 2 (गणि० में) घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि कम करना।

व्यवक्रोशनम् [वि+अव+क्रुश्+ल्युट्] तू तू मैं मैं, आपस में गाली-गलौज।

व्यवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि+अव+छिद्+क्त] 1 काट डाला गया, चीरा गया फाड़ा गया 2 विभक्त 3 विशिष्ट किया गया, विशिष्ट 4 अंकित, विलक्षण -शरीरं नावच्छिद्यते व्यवच्छिन्ना पताकेव - काव्या० २।१० 5 अवरुद्ध, बाधित।

व्यवच्छेद [वि+अव+छिद्+घञ्] 1 काट डालना फाड़ देना 2 विभाजन, वियोजन 3 चीर फाड़ करना 4 विशिष्टीकरण विभेदक, विशिष्ट 6 वैषम्य, वैशिष्ट्य 7 निर्धारण 8 बन्दूक दागना, तीर छोड़ना 9 किसी पुस्तक का अध्याय या अनुभाग।

व्यवधा [वि+अव+धा+अङ्+टाप्] 1 व्यवधायक 2 आड़, पर्दा, व्यवधान 3 छिपाव, दुराव।

व्यवधानम् [वि+अव+धा+ल्युट्] 1 हस्तक्षेप, अन्तक्षेप, वियोग 2 अवरोध, दृष्टि से गुप्त रखना - दृष्टि विघातान्व्यवधानमुक्ता पुनः सखीनामिति निर्बभाषे रघु० ३३।४४ 3. छिपाना, अन्तर्धान 5 पर्दा, व्यवधान 6 ढकना, आवरण- कु० ३।४८ 7 अन्तराल, अवकाश 8. (व्या० में) किसी अक्षर या मात्रा का बीच में आ पड़ना।

व्यवधायक (वि०) (स्त्री०-यिका) [वि+अव+धा+ण्वुल्] 1 बीच में आ पड़ने वाला, आवरण, ढकने

वाला 2. अवरोध करने वाला, छिपाने वाला 3 मध्यवर्ती।

व्यवधिः [वि+अव+धा+कि] आवरण, हस्तक्षेप आदि, दे० व्यवधान।

व्यवसायः [वि+अव+सो+घञ्] 1 प्रयत्न, चेष्टा, ऊर्जा, उद्योग, धैर्य—करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः हि० २।१४ 2 संकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण—मन्दीचकार मरणव्यवसायबुद्धिम्—कु० ४।४५, 'मरने के संकल्प का विचार' भग० २।४१, १०।३६ 3 कृत्य, कर्म, क्रिया—व्यवसाय प्रतिपत्तिनिष्ठुर रघु० ८।६५ 4 व्यापार, नौकरी, वाणिज्य 5 आश्वास, व्यवहार 6 उपाय, कूटयुक्ति, जुआ 7 धैर्यी आराधना 8 विष्णु।

व्यवसायिन् (वि०) [व्यवसाय+इनि] 1 ऊर्जस्वी, उद्योगी, परिश्रमी 2 दृढ संकल्पी, धैर्यवान्।

व्यवसित (भू० क० कृ०) [वि+अव+सो+क्त] 1 प्रयास किया गया, कोशिश की गई, - शि० ६।९ 2 जिम्मेदारी ली गई, 3 संकल्प किया गया, निर्धारित, निश्चित 4 प्रकल्पित, आयोजित 5 प्रयत्नशील, दृढ निश्चयी 6 यत्नवान्, ऊर्जस्वी 7 ठगा गया, छला गया, -तम् निश्चयन, निर्धारण।

व्यवस्था [वि+अव+स्था+अङ्+टाप्] 1 समझन, क्रमस्थापन, निपटारा—यथा वर्णाश्रम व्यवस्था 2 स्थिरता, निश्चितता, रघु० ७।५८ 3 दृढता, दृढ आधार—आजह्नुस्तत्कवर्णी पथिश्रा स्थम्भारविदश्रिय-मस्यव्यवस्थाम्—कु० १।३३ 4 संबद्ध स्थिति [निश्चित नियम, कानून, संविधि आदेश, निर्णय, कानूनी सलाह, कानून की लिखित घोषणा (विशेष कर संदिग्ध स्थलों पर या जहां विरोधी पाठों का समझन करना हो 6 सहमति, संविदा 7 अवस्था, दशा।

व्यवस्थानम्, व्यवस्थितिः (स्त्री०) [वि+अव+स्था+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण, फैसला 2 नियम, विधान, निश्चय 3 स्थिरता अचलता 4 दृढता, धैर्य 5 वियोग।

व्यवस्थापक (वि०) (स्त्री०-पिका) [वि+अव+स्था+णिच्+ण्वुल्, पुक्] 1 क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त क्रम में रखने वाला, समझन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फैसला करने वाला 2 वह जो कानूनी सलाह देता है 3 प्रबन्धक (वर्तमान प्रयोग)।

व्यवस्थापनम् [वि+अव+स्था+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1 क्रमस्थापन, उपयुक्त समझन 2 स्थिर करना, निर्धारण, निश्चय करना, फैसला करना।

व्यवस्थापित (भू० क० कृ०) [वि+अव+स्था+णिच्+क्त, पुक्] क्रमबद्ध, निश्चित आदि, °वाद्—कु० ५।६८।

व्यवस्थित (भू०क०कृ०) [वि+अव+स्था+क्त] 1 क्रम में रक्खा हुआ, समंजित, क्रमविन्यस्त 2 निश्चित, स्थिर—किं व्यवस्थितिविषया क्षात्रधर्मा—उत्तर० ५ 3 फैसला किया गया, निर्धारित, कानून द्वारा घोषित 4 एक ओर रक्खा हुआ, वियुक्त 5 निकाला हुआ (रस आदि) 6 आधारित, अवलम्बित। सम० —चित्त निश्चित इच्छा।

व्यवस्थिति दे० 'व्यवस्थान'।

व्यवहर्तृ (पु०) [वि+अव+हृ+तृच्] 1 किसी व्यवसाय का प्रबंधकर्ता 2 नालिश करने वाला, अभियोक्ता, वादी या मुद्दई 3 न्यायाधीश 4 साथी, संगी।

व्यवहार [वि+अव+हृ+घञ्] 1 आचरण, बर्ताव, कर्म 2 मामला, व्यवसाय, काम 3 पेशा, धंधा 4 लेनदेन, काम-काज 5 वाणिज्य, तिजारत, सौदागरी 6 रुपये पैसे का लेनदेन सूदखोरी 7 प्रचलन, प्रथा दस्तूर, रिवाज 8 संबन्ध, मेलजोल पंच० १।७९ 9 न्यायालयों या अदालती कार्यविधि, किसी अभियोग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन, —व्यवहारस्तमाह्वयति, अल लज्जया व्यवहारस्त्वा पृच्छति—मृच्छ० ९, रघु० १७।३९ 11 कानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुकदमेबाजी का अवसर। सम० —अङ्गम् दीवानी और फौजदारी कानूनों का समूह, अभिप्रस्त (वि०) अभियोजित, दोषारोपित,—आसनम् न्यायाधिकरण, न्यायासन—रघु० ८।१८, ज्ञ 1 जो व्यवसाय को समझता है 2 वयस्क युवा, बालिग, 3 जो न्यायालयीय कार्यविधि से परिचित हो, -तन्त्रम् आचरणक्रम, मा०४, —दर्शनम् आज, न्यायिक जांच-पड़ताल, पदम् व्यवहार विषय,- पाद 1 कानूनी कार्यवाही की चार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2 चौथी अवस्था अर्थात् निर्णयपाद जिसमें व्यवस्था या फैसला बतलाया गया है, मातृका 1 कानूनी प्रक्रिया 2 न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं),—विधिः कानून का नियम, विधिसंहिता, विषयः (इसी प्रकार—पदम्—मार्गः,—स्थानम्) कानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय (यह विषय अठारह हैं, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४—७)।

व्यवहारक [वि+अव+हृ+ण्वुल्] विक्रेता, व्यापारी, सौदागर ।

व्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—का,—की) [व्यवहार+ठन्] 1 व्यवसाय सम्बन्धी 2 व्यवसाय में लगा हुआ, अभ्यासप्राप्त 3 न्यायालयसंबंधी, कानूनी 4 मुकदमेबाज 5 प्रचलित, रूढ या प्रथानुसार ।

व्यवहारिका [वि+अव+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 रिवाज, प्रथा 2 झाड़ू 3 इगुदी का वृक्ष ।

व्यवहारिन् (वि०) [व्यवहार+इनि] 1 व्यवसायी कर्मशील, अभ्यासपरायण 2 अभियोग में व्यस्त, मुकदमेबाज 3 चिरप्रचलित, प्रथानुसार ।

व्यवहित (भू० क० कृ०) [वि अव+धा+क्त] 1 अलग अलग रक्खा हुआ 2 किसी अन्तर्वर्ती वस्तु के कारण वियुक्त किया गया शि० २।८५ 3 बाधित रोका गया, अवरुद्ध अदर्शन में पक्ष 4 दृष्टि से ओझल छिपाया हुआ, गुप्त 5 जिसका तिरन्तर सम्बन्ध न हो 6 किया गया सम्पन्न 7 भूला हुआ छोड़ा हुआ 8 आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ 9 विपक्षी, विरोधी ।

व्यवहृति (स्त्री०) [वि+अव+हृ+क्तिन्] 1 अभ्यास, प्रक्रिया 2 कर्म, सम्पादन ।

व्यवाय [वि+अव+अय्+अच्] 1 वियोजन, विश्लेषण (अवयवों का) पृथक्करण 2 विघटन 3 आवरण छिपाव 4 हस्तक्षेप, अन्तर्वाय अदृष्टव्यवहितमव्यवायेऽपि 5 अड़चन रुकावट 6 मैथुन, सम्भोग 7 पवित्रता, —प्रभ् दीप्ति, आभा ।

व्यवायिन् (पु०) [व्यवाय+इनि] 1 विलासी, स्वेच्छाचारी 2 कामोद्दीपक, वाजीकरण ।

व्यवेत (भू० क० कृ०) [वि+अव+इ+क्त] 1 वियोजित, विश्लिष्ट 2 भिन्न ।

व्यष्टि (स्त्री०) [वि+अश्+क्तिन्] 1 वैयक्तिकता, एकाकीपन 2 वितरणशील फैलाव 3 (वेदान्त० में) समष्टि को उसके पृथक्-पृथक् अवयवों के रूप में देखना, एक अंश (विप० समष्टि) ।

व्यसनम् [वि+अस्+ल्युट्] 1 फेंक देना, दूर कर देना, वियोजन, विभाजन 3 उल्लंघन, व्यतिक्रमण 4 हानि विनाश, पराजय, पतन, दोष, दुर्बलपक्ष अमात्यव्यसनम् पंच० ३, स्वबलव्यसने कि० १३।१५ 5 (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, संकट, अभाग्य—अज्ञातभर्तृव्यसना महान्तं कुलोपकारेव रतिर्बभूव कु० ३।७३, ४।३०, रघु० १२।५३ (ख) आपत्काल, आवश्यकता—स सुहृद् व्यसने य स्यात्—पंच० १।३२७ 'आवश्यकता पड़ने पर जो मित्र रहे वही मित्र है' 6 (सूर्य आदि का) अस्त होना तेजोहरं यस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्याम् शि० ४।११, (यहाँ 'व्यसन' का अर्थ 'पतन' भी है) 7 दुर्व्यसन, बुरी लत, बुरा आदत मिथ्येव व्यसनं यदस्ति मृगयामीदृग् विनोद कुत्र शा० ४।५, रघु० १८।१४, याज्ञ० १।३०९ (इस प्रकार के दुर्व्यसन दस बताये गये हैं मनु० ७।४७-८) समानशीलव्यसनेषु सख्यं सुभा० 8 संलग्नता, जुट जाना, परिश्रमपूर्वक आसक्ति विद्याया व्यसनं भर्तृ० २।६७-३ 9 बहुत ज्यादा आदी होना 10 ऋण, पंचा० 11 दण्ड 12. अयोग्यता, अक्षमता 13 निष्फल प्रयत्न 14 हवा, आयु । समा० अतिभार भारी अनर्थ या संकट रघु० १४।६८ आत्मन्, —आर्त, पीड़ित (वि०) संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ ।

व्यसनिन् (वि०) [व्यसन+इनि] 1 किसी दुर्व्यसन या बुरी लत दुश्चरित्र 2 अभाग्य भाग्यहीन 3 किसी काम में अत्यन्त संलग्न (प्रायः समास में) ।

व्यसु (वि०) [विगता असव प्राणा यस्य प्रा० ब०] निर्जीव मृतक शि० २०।३ ।

व्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अस्+क्त] 1 डाला हुआ फेंका हुआ उछाला हुआ मा० ५।२३ 2 तितर बितर किया हुआ बिखेरा हुआ उत्तर० ५।२० 3 हटाया हुआ दूर फेंका हुआ 4 वियुक्त, विभक्त अलगाया हुआ विक्रम० ५।२३ 5 पृथक् रूप में विचारित, एक एक करके ग्रहण—किं पुनर्व्यस्तैः—उत्तर० २ यद्यपि किं व्यस्तमपि विलोचने—कु० ५।३० 6 सरल, समासरहित (शब्द आदि) 7 बहुविध 8 हटाया गया, निकाला गया 9 विक्षुब्ध, कष्टमय अव्यवस्थित 10 क्रमरहित, भग्नक्रम, विसृंखलित 11 पलटाया हुआ उलट-पुलट किया हुआ 12 विपर्यस्त (अनुपात आदि) ।

व्यस्तार (पु०) हाथी के गण्डस्थलों से मद का निकलना ।

व्याकरण [व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा येन—वि+आ+कृ+ल्युट्] 1 विग्रह, विश्लेषण 2 व्याकरण सम्बन्धी शब्द पृथक्करण-प्रक्रिया, छ वेदांगों में से एक, व्याकरण सिंह व्याकरणस्य कर्तुरहरन्प्रथमं प्रियान् यामिनं पंच० २।३३ ।

व्याकार [वि+आ+कृ+घञ्] 1 रूपान्तरण, रूप परिवर्तन 2 विकृतता ।

व्याकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि, आ+कृ+क्त] 1 बिखेरा हुआ इधर उधर फेंका हुआ 2 अस्तव्यस्त किया हुआ ।

व्याकुल (वि०) [विशेषेण आकुल—प्रा० स०] 1 विक्षुब्ध विह्वल, घबराया हुआ, किंकर्तव्य विमूढ, भाव-व्याकुल, वाष्प° 2 आतंकित, उद्विग्न, भयभीत वृष्टिव्याकुलगोकुलं गीत० ४ 3 भरापूरा, घिरा हुआ 4 संलग्न, व्यस्त आलोके ते निपतति पुरा सा

बलिव्याकुला वा मेघ० ८५ 5 दमकने वाला, इधर उधर हिलजुल करने वाला -उत्तर० ३।४३ ।

व्याकुलित (वि०) [वि+आ+कुल्+क्त] विक्षुब्ध, हतबुद्धि, घबराया हुआ, उद्विग्न आदि ।

व्याकृतिः (स्त्री०) [विशिष्टा आकृति –प्रा० स०] आलसाजी, छद्मवेश, धोखा ।

व्याकृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] 1. विश्लिष्ट, वियुक्त 2 व्याख्यात, स्पष्ट किया गया 3 विकृत, व्याकुल, बिगाड़ा हुआ, विरूपित ।

व्याकृति. (स्त्री०) [वि+आ+कृ+क्तिन्] 1 विग्रह 2 विश्लेषण, व्याख्या 3 रूप परिवर्तन, विकास 4 व्याकरण ।

व्याकोश (ष) (वि०) [वि+आ+कुश् (ष्) +अच्] 1 फूलाया हुआ, प्रफुल्लित, पुष्पित, मुकुलित व्याकोशकोकनदता दधते नलिन्य -शि० ६।४६ 2 विकसित -मनु० ३।१७ ।

व्याक्षेप [वि+आ–क्षिप्+घञ्] 1 इधर उधर उछालना 2 अवरोध, रुकावट 3 विलम्ब -अव्याक्षेपो भविष्यन्त्या कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम् –रघु० १०।६ 4 उल्लंघन ।

व्याख्या [वि+आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1 वृत्तान्त वर्णन 2 स्पष्टीकरण, विवृति, टीका भाष्य ।

व्याख्यात [वि+आ+ख्या+क्त] 1 कथित, वर्णित 2 स्पष्टीकृत विवृत, टीकायुक्त ।

व्याख्यातृ (पुं०) [वि+आ+ख्या+तृच्] व्याख्याकार, भाष्यकार ।

व्याख्यानम् [वि+आ+ख्या+ल्युट्] 1 समूचन, वर्णन 2 भाषण, वक्तृता 3 स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थकरण, टीका ।

व्याघट्टनम् [वि+आ+घट्+ल्युट्] 1 हिलोना, मथना 2 रगड़ना, घर्षण ।

व्याघात. [वि+आ+हन्+क्त] 1 रुकावट 2 धक्का, प्रहार 3 विघ्न, रुकावट 4 बंधन विरोध 5 एक अलंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं, मम्मट इसकी परिभाषा निम्नांकित करता है तथा साधित केनाप्यपरेण चेत्स्यात्। तदेव यद्विधीयेत स व्याघात इति स्मृत ॥ काव्य० १०, उदा० दे० विद्ध० १।२, या विकल्पाक्ष के नीचे दिया गया उदाहरण ।

व्याघ्र [व्याजिघ्रति–वि+आ+घ्रा+क] 1 बाघ, चीता 2 (समास के अन्त में) सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य जैसा कि नरव्याघ्र या पुरुषव्याघ्र में 3 लालरंग का एरण्ड का पौधा, श्वेत मादा चीता व्याघ्रीव तिष्ठति जग परिरक्षणाय मनु० ३।१०९ । सम० अट: घातक पक्षी, –आस्य: बिलाव, नख, नख 1 बाघ का पंजा 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य 3 सरौंच, नखक्षत,–नायक. गीदड़ ।

व्याज: [व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन—वि+अज्+घञ्] 1 धोखा, चाल, छल, जालसाजी 2 कला कौशल अव्याज मनोहर वपु. शि० १।१८, 'स्वाभाविक रूप से प्रिय' 3 बहाना, व्यपदेश, आभास व्याजव्याजमुपेत्य निशा० १।१, रघु० ८।२५, ५८, १०।६६ ११।६६ 4 युक्ति, चाल, कूटयुक्ति व्याजार्थसन्दर्शितमेखलानि–रघु० १३।४२ । सम०–उक्ति. (स्त्री०) एक अलङ्कार जिसमें किसी कारण से स्पष्ट फल का आनवृक्ष कर कोई दूसरा कारण बताया जाता है, जहाँ वास्तविक भावना का कोई दूसरा कारण बताकर छिपा लिया जाता है दे० काव्य० १० 'व्याजोक्ति' के नीचे 2 परोक्ष संकेत, व्यायोक्ति, –निन्दा छल या कपट से की गई निन्दा, स्तुत (वि०) झूठमूठ सराया हुआ, स्तुति (स्त्री०) अंग्रेजी के 'आइरनी' (Irony) से मिलता जुलता एक अलङ्कार जिसमें व्यक्त की गई प्रशंसा से निन्दा तथा प्रत्यक्ष निन्दा से स्तुति उपलक्षित होती है–व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा सदिच्छया -काव्य० १० ।

व्याड [वि+आ+अड्+अच्] 1 मांस भक्षी जानवर, जैसे कि चीता, शेर आदि 2 बदमाश, गुण्डा 3 साँप 4 इन्द्र तु० 'व्याल' ।

व्याडि. (पु०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण ।

व्यात (भू० क० कृ०) [वि+आ+दा+क्त] विवृत, फैलाया गया फुलाया गया ।

व्यायामभूमी [वि+आ+अति+यम्+णिच्+अच्+ङीप्] जलविहार, जलक्रीडा ।

व्यावर्तनम् [वि+आ+वृत्+ल्युट्] रोकना, उद्घाटन ।

व्यादिशः [विशेषेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति – वि+आ+दिश्+क] विष्णु का विशेषण ।

व्याध [व्यध्+अ] 1 शिकारी, बहेलिया (जाति से या पेशे के कारण) 2 दुष्ट मनुष्य, अधम पुरुष । सम० भीत हरिण ।

व्याधाम:, व्याधाव. [व्याध+अम्+णिच्+अच्] इन्द्र का वज्र ।

व्याधि [वि+आ+धा+कि] 1 बीमारी, रोग, रुजा, अस्वस्थता (प्रायः शारीरिक—वि० आधि अर्थात् मानसिक रोग दुःख, चिन्ता आदि।–त्रिपुरुषव्रतमीश्वरेतरं सततव्याधिरनौषधिस्मृ ते शि० १६।११ (यहाँ 'व्याधि' का अर्थ 'आधि से मुक्त' भी है) तु० आधि 2 कोढ़ । सम० कर (वि०) अस्वास्थ्यकर,—ग्रस्त (वि०) रोगाक्रान्त, बीमार ।

व्याधित (वि०) [व्याधि मत्वर्थीयोऽस्य इतच्] रोगाक्रान्त, बीमार ।

व्याधूत (भू० क० कृ०) [वि + आ + धू + क्त] झकझोरा हुआ, कांपता हुआ, थरथराता हुआ।

व्यान [व्यानिति सर्वशरीरं व्याप्नोति वि + आ + अन् + अच्] शरीरस्थ पांच प्राणों में से एक जो समस्त शरीर में व्याप्त है।

व्यायतम् [वि + आ + यम् + क्त] मैथुन का एक विशेष प्रकार, रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) (स्त्री०–पिका) [विशेषेण आप्नोति वि + आप् + ण्वुल्] 1 फैला हुआ, बहुव्याही, प्रसारी, विस्तृत रूप में फैलने वाला, सर्वत्रामुखी –नियंगूर्ध्वमधश्चाऽपि व्यापिका महिमा हरे—कु० ६।७१ 2 नितान्त सहवर्ती,–क नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित विशेषण, कम् नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित गुण।

व्यापत्ति (स्त्री०) [वि + आ + पद् + क्तिन्] 1 बर्बादी, संकट, दुर्भाग्य–मनु० ६।२० 2 स्थानापन्नता 3 मृत्यु रघु० १२।५९।

व्यापद् (स्त्री०) [वि + आ + पद् + क्विप्] 1 संकट, दुर्भाग्य, भर्तृ० ३।१०५ 2 रोग 3 चित्तव्याकुलता, चित्तविक्षेप 4 मृत्यु, निधन।

व्यापनम् [वि + आप् + ल्युट्] फैलना, पैठना, सर्वत्र फैल जाना।

व्यापन्न (भू० क० कृ०) [वि + आ + पद् + क्त] 1 दुर्भाग्यग्रस्त, बर्बाद 2 विफल, उल्टा गया (गर्भस्राव हो गया) 3 चोट लगा हुआ, घायल 4 मृत, उपरत, मरा हुआ जैसा कि 'अव्यापन्न' में 5 विक्षिप्त, विकृत 6 स्थानापन्न, परिवर्तित।

व्यापादः, व्यापादनम् [वि + आ + पद् + णिच् + घञ्, ल्युट् वा] 1 हत्या, वध 2 बर्बादी, विनाश 3 दुर्भावना, द्वेष।

व्यापादित (भू० क० कृ०) [वि + आ + पद् + णिच् + क्त] 1 वध किया हुआ, कतल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ 2 बर्बाद, घायल, चोटिल।

व्यापार [वि + आ + पृ + घञ्] 1 नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, धन्धा तत प्रविशति यथोक्तव्यापारा शकुन्तला श० १, कु० २।५४ 2 प्रयोग, काम मु० २।४ 3 पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य यथा 'शस्त्रव्यापार' में 4 कर्म, क्रिया, निष्पादन 5. कार्यपद्धति, प्रक्रिया, क्रम, प्रभाव–(वतं) व्यापारोधि मदनस्य निषेदिवस्थम्—श० १।२७, तस्यात्मनैव भगवान् विमन्युर्व्यापारमात्मन्यपि नायकानाम् कु० ७।९३, विक्रम० ३।१७ 6 ऊपर रक्खा जाने वाला, –वत्सवि० ४, १४ 7 उद्योग, प्रयत्न –आर्याभ्यर्थनी तत्र व्यापार कर्तुमर्हसि कु० ६।३२, 'उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रयत्न होगी' (व्यापारं कृ 1 भाग लेना 2 प्रभाव डालना 3 हाथ डालना –जैसा कि 'अव्यापारेषु व्यापार यो नरः कर्तुमिच्छति पञ्च० १।२१)।

व्यापारित (भू० क० कृ०) [वि + आ + पृ + णिच् + क्त] 1 काम पर लगाया हुआ, स्थापित, नियोजित, नियुक्त रघु० २।३८ 2 रक्खा हुआ, निक्षिप्त, जमाया हुआ वेणी० ३।१९।

व्यापारिन् (पु०) [व्यापार + इनि] 1. विक्रेता, व्यापार करने वाला 2 व्यवसायी।

व्यापिन् (वि०) [वि + आप् + णिनि] 1 व्याप्त होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला (समास के अन्त में) 2 सर्वव्यापक, सर्वविस्तृत, नितान्त सहवर्ती 3 आवरक (पु०) विष्णु का विशेषण।

व्यापृत (भू० क० कृ०) [वि + आप् + क्त] 1 काम में लगा हुआ, व्यस्त, नियोजित (अधि० के साथ) 2 स्थापित, स्थिर किया हुआ–(पुं०) कर्मचारी मन्त्री।

व्यापृतिः (स्त्री०) [व्याप् + क्तिन्] 1 काम में लगाना व्यस्त करना, व्यवसाय स्वस्वव्यापृतिमात्रमानसतया भामि० १।५७ 2 प्रकार्य, कर्म 3 चेष्टा 4 पेशा, व्यवसाय दे० 'व्यापार'।

व्याप्त (भू० क० कृ०) [वि + आप् + क्त] 1 चारों ओर फैला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ 2 व्यापक, सर्वत्र फैला हुआ 3 भरा हुआ, पूर्ण 4 चारों ओर से लपेटा हुआ, घिरा हुआ 5 स्थापित, जमाया हुआ 6 प्राप्त किया हुआ, अधिकृत 7. समझा हुआ, सम्मिलित 8 नितांत संसक्त (तर्क० में) 9 प्रसिद्ध, विख्यात 10 फैलाया हुआ, बिछाया हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) [वि + आप् + क्तिन्] 1 प्रसार, फैलाव 2 (तर्क० में) विश्वतः फैलाव, नितांत सहवर्तिता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होना–यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यं नियमो व्याप्तिः –तर्क० 3 सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता 4 पूर्णता 5 प्राप्ति। सम० ग्रह सार्वजनिक सहवर्तिता का बोध, ज्ञानम् सार्वजनिक सहवर्तिता की जानकारी।

व्याप्य (वि०) [वि + आप् + ण्यत्] व्यापकता के योग्य भरे जाने के योग्य, व्याप्य (तर्क० में) अनुमान प्रक्रिया का चिह्न (= हेतु, साधन)।

व्याप्यत्व [व्याप्य + त्व] नित्यता। सम० असिद्धि (स्त्री०) अधूरी अटकल, अपूर्ण अनुमान।

व्याप्यवृत्ती = व्यापयवृत्ती (वे०)।

व्यामः–व्यामलवम् [वि + आ + यम् + घञ्, ल्युट् वा] एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर

फैलाये हो ता हाथों की अंगुलियों के कोनों के बीच की दूरी।

व्याभिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र+अच्] मिला हुआ मिश्रित, गड्ड-मड्ड किया हुआ।

व्यामोह [वि+आ+मुह्+घञ्] 1 प्रणयोन्माद 2 व्याकुलता, परेशानी, बेचैनी कमलव्यालमृणालजालिनमिनि व्यामोहकालाहल गीत० १०, काव्या० ३।१०१।

व्यायत (भू० क० कृ०) [वि+आ+यम्+क्त] 1 लम्बा, विस्तृत यूपा यत्रव्यायतबाहुरत्यसकः—रघु० ३।३४ 2 फैलाया हुआ, खुला हुआ 3 जिसने व्यायाम किया है, अनुशिष्ट 4 व्यस्त, काम में लगा हुआ, अधिकृत 5 कठोर, दृढ 6 मजबूत, गठन अत्यधिक 7 नाकतवर, शक्तिशाली 8 गहरा कु० ५।५४।

व्यायतत्वम् [व्यायत+त्व] पुट्ठों का विकास श० ७।४।

व्यायाम [वि+आ+यम्+घञ्] 1 विस्तार करना, फैलाना 2 कसरत, शारीरिक व्यायामों का अभ्यास - शि० २।९४ 3 थकान, श्रम 4 प्रयत्न, चेष्टा 5 वाग्युद्ध, मल्लयुद्ध 6 दूरी की माप विशेष (=व्याम दे०)।

व्यायामिक (वि०) (स्त्री० की) [व्यायाम+ठक्] मल्लविद्या-विषयक, शारीरिक कसरत सम्बन्धी।

व्यायोग [वि+आ-युज्+घञ्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का एकांकी नाटक, सा० द० ५१४ पर इसकी निम्न परिभाषा दी गई है—व्यायोगे विख्यातो व्यायोग स्वल्पस्त्रीजनयुत। द्वौनो गर्भविमर्शाभ्या नरैर्बहुभिरन्वित। एकाङ्कश्च भवेदस्मिन्निमित्तमरोदय। कैशिकीवृत्तिरहित, प्रख्यातसन्त्र नायक। राजर्षिरथ दिव्यो वा भवेद्वीरोद्धतश्च स। हास्यशृङ्गारशान्तेभ्य इतरे ओङ्गिनी रसा॥

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] 1 दुष्ट, दुर्व्यसनी —कालव्याला यन्नभिरुन्मदिष्णव शि० १२।२८, यता गज स्यालमिवापराद्ध कि० १७।२५ 2 बुरा, पापिष्ठ 3 क्रूर भीषण, बर्बर कि० १३।४, सः 1 जंगली हाथी व्याल बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धु समुज्जृम्भते भर्तृ० २।६ 2 शिकार का जानवर 3 साँप—हि० ३।२९ 4. बाघ, मा० ३।५ 5. चीता 6 राजा 7 ठग, बदमाश 8 विष्णु। सम० अङ्गः, - गन्धः एक प्रकार की बूटी, ग्राहः, ग्राहिन् (पु०) सपेरा, - मृगः 1 जंगली जानवर 2. शिकारी चीता, ईशः शिव का विशेषण।

व्यालकः [व्याल+कन्] दुष्ट या जंगली हाथी।

व्यालम्ब [विशेषेण आलम्बते वि+आ+लम्ब्+अच्] एक प्रकार का एरण्ड का पौधा।

व्यालोक (वि०) [वि+आ+लोक्+अच्, इत्वम्] 1 काटने वाला, बरबराने वाला 2 अभ्यवस्थित, अस्त-व्यस्त व्यालोक केशपाशः गीत० ११।

व्यावकलनम् [वि+आ+अव+कल्+ल्युट्] घटाना।

व्यावक्रोशी, व्यावक्रोशी [वि+आ+अव+क्रुश् (भाष्) +णिच्+अच्+ङीष्] परस्पर दुर्वचन कहना, आपस की गालीगलौज।

व्यावर्तः [वि+आ+वृत्+घञ्] 1 घेरना, लपेटना 2. भ्रान्ति, भ्रमण, चक्कर खाना 3 फटी हुई अर्थात् आगे को निकली हुई नाभि।

व्यावर्तक (वि०) (स्त्री०- त्रिका) [वि+आ+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. लपेटने वाला, घेरा डालने वाला 2 निकालने वाला, अपरञ्जन करने वाला, वियुक्त करने वाला 3. मुड़ने वाला 4 मांद खाने वाला।

व्यावर्तनम् [वि+आ+वृत्+ल्युट्] 1 घेरना, लपेटना 2 घुमना, मुड़ना चक्कर खाना कि० ५।३० 3 रस्सी आदि का बोझ लपेट, पट्टी।

व्यावर्तित (भू० क० कृ०) [वि+आ+वर्त्+क्त] पसीजा हुआ, द्रवित, विद्रुत्य।

व्यावहारिक (वि०) (स्त्री०-की) [व्यवहार+ठक्] 1 व्यवसाय सम्बन्धी, प्रयोगात्मक 2 कानूनी, वैध 3 प्रथागत, प्रचलित 4. प्रयोगात्मक—नु० प्रातिभासिक,—क परामर्शदाता, वकील।

व्यावहारी [वि+आ+अव+हृ+णिच्+अच्+ङीष्] पारस्परिक बर्ताव, लेन देन।

व्यावहासी [वि+आ+अव+हस्+णिच्+अच्+ङीष्] पारस्परिक अवज्ञा, एक दूसरे को हँसी उड़ाना।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+वृत्+क्तिन्] 1 आवरण, परदा डालना 2. निकाल देना, निष्कासन।

व्यावृत्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+वृत्+क्त] 1 हटाया हुआ, वापिस किया हुआ - व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः धृतौ तस्करता स्थिता - रघु० १।२१, विक्रम० १।९ 2. विमुक्त किया गया, अलग हटाया हुआ 3 निकाला हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 4 थककर खाया हुआ, बुरा हुआ 5 लपेटा हुआ, घिरा हुआ 6 रुका हुआ, उपरत—कु० २।६५ 7 काटकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

व्यासः [वि+अस्+घञ्] 1. वितरण, विभाजन 2 समास का विग्रह या विश्लेषण 3 अलगाव, पृथक्ता 4. प्रसार, फैलाव 5. अर्थ, चौड़ाई 6. वृत्त का व्यास 7 उच्चारणदोष 8. अवस्था, मकान 9 व्यवस्थापक, संकलनकर्ता 10. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह पराशर का पुत्र था, सत्यवती इसकी माता थी) (सत्यवती का शन्तनु के साथ विवाह होने से पूर्व इसका

जन्म हुआ था) और जन्म होते ही यह वन में चला गया। जहाँ यह वानप्रस्थ होकर घोर तपस्साधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों में सन्तान उत्पन्न करने के लिए इसे नहीं बुलाया। इस प्रकार यह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर का पिता था। पहले पहल यह रंग का काला होने तथा एक द्वीप पर सत्यवती में जन्म लेने के कारण 'कृष्णद्वैपायन' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास पड़ा क्यों कि इसने ही वेदों के मन्त्रों का क्रमबद्ध कर वर्तमान रूप दिया। "विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इतिस्मृतः"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी ने महाभारत की रचना कर उसे गणपति द्वारा लेखबद्ध करवाया। अठारह पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह सात चिरंजीवियों में से एक है (दे० 'चिरंजीविन्') 11 वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है।

व्यासक्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+सञ्ज्+क्त] 1 जा टूटना पूर्वक डटा रहे 2 जड़ा हुआ, लगा हुआ, तुला हुआ व्यस्त (अधि० के साथ) 3 नियुक्त, पथक् किया हुआ अलग किया हुआ 4 परेशान, व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

व्यासङ्ग [वि+आ+सञ्ज्+घञ्] 1 सटा होना, डटे रहना, जुटा रहना 2 एकनिष्ठता भक्ति-भामि० १।७९, 3 मनोरंजन अध्ययन 4 ध्यान 5 पृथक्ता, वियोग।

व्यासिद्ध (भू० क० कृ०) [वि+आ+सिध्+क्त] 1 प्रतिषिद्ध वर्जित 2 निषिद्धपण्य, चोरी का माल।

व्याहत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हन्+क्त] 1 अवरुद्ध, रोका हुआ 2 हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3 विफल किया हुआ, निराश शि० ३।४० 4 व्याकुल घबड़ाया हुआ, आतंकित। सम० **अर्थता** रचना का एक दोष दे० काव्य० ७।

व्याहरणम् [वि, आ+हृ+ल्युट्] 1 बोलना, उच्चारण करना 2 भाषण, वर्णन।

व्याहार [वि+आ+हृ+घञ्] 1 भाषण, बोलना, वचन उत्तर० ४।१८, ५।२९ 2 आवाज, स्वर, ध्वनि मालवि० ५।१।

व्याहृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हृ+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ उच्चारण किया हुआ।

व्याहृति (स्त्री०) [वि+आ+हृ+क्तिन्] 1 उच्चारण, भाषण वचन न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्- कु० ३।६० 2 वक्तव्य, अभिव्यक्ति-मृतार्थव्याहृतिं वा हि न स्तुतिं व्रजमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 3 सन्ध्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर परक शब्द विशेष (यह व्याहृतियाँ तीन हैं—भूर्, भुवस्, तथा स्वर् जिनका 'ओ३म्' के पश्चात् उच्चारण किया जाता है कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार व्याहृतियाँ सिलों में सात हैं)।

व्युच्छित्ति (स्त्री०), **व्युच्छेद** [वि+उत्+छिद्+क्तिन् घञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्युत्क्रम [वि+उत्+क्रम्+घञ्] 1 अतिक्रमण, विचलन 2 उलटा क्रम, वैपरीत्य 3 अव्यवस्था गड़बड़ी।

व्युत्क्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+उत्+क्रम्+क्त] 1 अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया 2 जो बिदा हो गया हो, छोड़कर चला गया हो बीत गया हो।

व्युत्थानम् व्युत्थिति (स्त्री०) [वि+उत्+स्था+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 महान् क्रियाकलाप 2 किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट 3. स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य 4 (योग० में) धार्मिक मनोयोग को पुनः या भावात्मक मनन 5 एक प्रकार का नृत्य 6 (हाथों को) उठाना शि० १८।२६

व्युत्पत्ति (स्त्री०) [वि, उत् पद् क्तिन्] 1 मूल उत्पत्ति 2 व्युत्पादन निर्वचन 3 पूरी प्रवीणता पूरी जानकारी 4 विद्वत्ता, ज्ञान व्युत्पत्तिरागर्भिता कोविदानि न रञ्जनाय क्रमा ज्ञानाम् विक्रम० १।४५ १४।२०८।

व्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [वि+उत्+पद्+क्त] 1 उत्पादित, पैदा किया गया 2 निर्वचन द्वारा निष्पन्न 3 व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निरुक्त (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हो (विप० अव्युत्पन्न या मूल) 4 पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया मालवि० ४।५, 5 पूरी तरह प्रवीण, विद्वान् पण्डित।

व्युप्त (भू० क० कृ०) [वि+उप्+क्त] बिखरा, और निगोया हुआ।

व्युदस्त (भू० क० कृ०) [वि, उद्+अस्+क्त] एक ओर फेंका हुआ, अस्वीकृत, दूर किया हुआ।

व्युदास [वि, उद्+अस्+घञ्] 1 एक ओर फेंकना अस्वीकृति 2 (व्या० में) निकाल देना 3 प्रतिषेध 4 उपेक्षा, उदासीनता 5 हत्या, विनाश शि० १५।३७

व्युपदेश [वि+उप+दिश्+घञ्] व्याज, बहाना।

व्युपरम [वि, उप+रम्+अप्] विराम, यति, समाप्ति।

व्युपशम [वि, उप+शम्+अच्] 1 विराम का अभाव 2 अशान्ति 3 पूर्ण विराम (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीव्रता' है)।

व्युष्ट (भू० क० कृ०) [वि+उद्+क्त] 1. जलाया गया 2. पौफटी, प्रभात 3 जो उज्ज्वल या स्वच्छ हो 4 बसा हुआ, --अब्द 1 पौ फटना, प्रभात—शि० १२।४ 2. दिन 3 फल।

व्युष्टिः (स्त्री०) [वि+वस्+क्तिन्] 1 प्रभात 2 समृद्धि 3 प्रशंसा 4 फल, परिणाम।

व्यूढ (भू० क० कृ०) [वि+वह्+क्त] 1 फैलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक व्यूढोरस्को वृषस्कन्ध —रघु० १।१३ 2 दृढ, सटा हुआ 3 क्रमबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) सुविन्यस्त—भग० १।२ 4 अव्यवस्थित, क्रमहीन 5 विवाहित। सम० -कक्षकट (वि०) कवचित, जिरह बख्तर पहने हुए।

व्यूत (वि०) [वि+वे+क्त] 1 अन्तर्वेष्टित, सीया गया, बुना गया।

व्यूतिः [स्त्री०) [वि+वे+क्तिन्] 1 बुनाई, सिलाई 2 बुनाई की मजदूरी।

व्यूह [वि+ऊह्+घञ्] 1 सैनिक विन्यास—मनु० ७।१८७ 2 सेना, दल, टुकडी -व्यूहाश्चभौ तावितरेतरस्मात् भङ्गं जयं वापतुरव्यवस्थम् रघु० ७।५४ 3 बडीमात्रा, समवाय, समुच्चय, संग्रह 4 भाग, अंश, उपशीर्ष 5 शरीर 6 संरचना, निर्माण 7 सर्कना, तर्क। सम० पार्श्व (स्त्री०) सेना का पिछला भाग,—भङ्गः,—भेदः सैनिक व्यूह को तोड देना।

व्यूहनम् [वि+ऊह्+ल्युट्] 1 सेना को व्यवस्थित करना, सेना को क्रमबद्ध करना 2 शरीर के अंगो की संरचना।

व्यृद्धि (स्त्री०) [विगता ऋद्धि —प्रा० स०] 1 समृद्धि का अभाव, बुरी किस्मत, दुर्भाग्य (विगता ऋद्धि-व्यृद्धि) जैसा कि यवनानां व्यृद्धिर्दंयवनम्—सिद्धा०।

व्ये (भ्वा० उभ० व्ययति -ते, ऊत, प्रेर० व्याययति ते, इच्छा० विव्यासति) 1 ढकना 2 सीना।

व्योकारः [व्यो+कृ+अण्] लुहार।

व्योमन् (नपु०) [व्ये + मनिन्, पृषो०] आकाश, अन्तरिक्ष —अवरुध्य अवयाम्यता नु भवतो यद् व्योम्नि विस्फूर्जसे —काव्य० १०, वेष० ५१, रघु० १२।६७, नै० २२।५४ 2 जल 3 सूर्य का मन्दिर 4 अभ्रक। सम०—उदकम् बारिश का पानी, ओस, —केशः,—केशिन् (पु०) शिव का विशेषण,—गंगा स्वर्गीय गंगा, चारिन् (पु०) 1 देव 2 पक्षी 3 सन्त, महात्मा 4 ब्राह्मण 5 पारा, नक्षत्र, —यान बादल,—वाहिका एक प्रकार की बटेर, लवा, वेश्मन्, —वल्लभम् झण्डा, पताका, —शुषिरः हवा का झोंका, -सदम् वि०संवारो, आकाशयान, —सद् (पु०) 1 देव, सुर 2 गन्धर्व 3 भूत-प्रेत,—स्थली पृथ्वी,—स्पृश् (वि०) गगनचुंबी, अत्यन्त ऊँचा।

व्रज् (भ्वा० पर० व्रजति) 1. जाना, चलना, प्रगति करना, —साधिमीतर्व्रजद् धुर्यं —मनु० ४।६७ 2. पधारना, पहुँचना दर्शन करना—मामेकं शरणं व्रज—भग० १८।६६ 3 विदा होना, देश से निकल होना, पीछे हटना 4. (समय का) बीतना—इय व्रजति यामिनी त्यज नरेन्द्र निद्रारसम्—विक्रम० ११।७४, (यह धातु प्राय गम् या या धातु की भाँति प्रयुक्त होती है), अनु —, 1 बाद में जाना, अनुगमन करना—मनु० ११।१११ कु० ७।३८ 2 अभ्यास करना, सम्पन्न करना 3 सहारा लेना, आ—, जाना, पहुँचना, परि —, भिक्षु या साधु के रूप में इधर-उधर घूमना, संन्यासी या परिव्राजक हो जाना, प्र—, 1 निर्वासित होना 2 सांसारिक वासनाओं को छोड देना, चौथे आश्रम में प्रविष्ट होना, अर्थात् सन्यासी हो जाना—मनु० ६।३८, ८।३६३।

व्रजः [व्रज्+क] 1 समुच्चय, संग्रह, रेवड, समूह —नेमवजा पौरजनस्य तस्मिन् विहाय सर्वान्नृपतीञ्जिगीषुः —रघु० ६।७, ७।६७, शि० ६।६, १४।३३ 2 ग्वालों के रहने का स्थान 3 गोष्ठ, गोशाला—शि० २।६४ 4 आवास, विश्रामस्थल 5 सड़क, मार्ग 6 बादल 7 मथुरा के निकट एक जिला। सम०—अङ्गना, युवतिः (स्त्री०) व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालन —भामि० २।१६५,—अजिरम् गोशाला, किशोरः —नाथः,—मोहनः,—वरः,—वल्लभः कृष्ण के विशेषण।

व्रजनम् [व्रज्+ल्युट्] 1 घूमना, फिरना, यात्रा करना 2 निर्वासन, देश निकाला।

व्रजया [व्रज्+क्यप्+टाप्] 1. साधु या भिक्षु के रूप में इधर-उधर घूमना 2 आक्रमण, हमला, प्रस्थान 3 खेड, समुदाय, जनपदाति या कबीला, समवाय 4 रंगभूमि, नाट्यशाला।

व्रज्य (भ्वा० पर० व्रज्यति) जाना, करना।

॥ (चुरा० उभ० व्रजयति—ते) चोट पहुँचाना, घायल करना।

व्रणः, व्रणम् [व्रण्+अच्] 1 घाव, क्षत, जख्म, चोट —रघु० १२।५५ 2 फोडा, नासूर। सम०—आहिः बोल नामक गन्धद्रव्य,—कृत् (वि०) घाव करने वाला, (पु०) जिमीकंद का पेड़,—विरोपण (वि०) घाव भरने वाला —श० ४।१६,—शोधनम् घाव का साफ करना तथा पट्टी बाँधना, -हः एरंड का पौधा।

व्रणित (वि०) [व्रण+इतच्] घायल, जिसके अवरोध आ गई हो—उत्तर० ४।३।

व्रतः, व्रतम् [व्रज् +क, अस्य त] 1 यज्ञ या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञात का पालन, प्रतिज्ञा, पद—अन्यस्तीव्रव्रतमातिष्ठारव्रम्—रघु० १३।६७, २।४, २५,(जिन जिन पुराणों में अनेक व्रतों का वर्णन किया गया है,

परन्तु उनकी संख्या निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि बराबर नये नये व्रतों की रचना प्रतिदिन होती रहती है यथा सत्यनारायण व्रत 2 संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्चय—सोऽभूत् भग्नव्रतः शत्रुनुद्धृत्य प्रतिरोपयन् —रघु० १७।४२, इसी प्रकार 'सत्यव्रत, दृढ़व्रत' इत्यादि 3. भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति, जैसा कि पतिव्रता (पतिर्व्रतं यस्या सा)—यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रता —भग० ९।२५ 4 संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास, जैसा कि 'अर्कव्रत' में 5 जीवन-चर्या, आचरण, चालचलन—शं० ५।२६ 6 अध्यादेश, विधि, नियम 7 यज्ञ 8 कर्म, करतब, कार्य। सम०—आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना, —आदेशः (किसी द्विज के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार,—उपवासः किसी प्रतिज्ञा के पूरा करने के लिए अनशन करना, —ग्रहणम् किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए संकल्प लेना,—चर्या ब्रह्मचारी, देवविद्यार्थी—दे० ब्रह्मचारिन्, चर्या व्रतचर्या का पालन करना, —चारणम्, —चार्या उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति,—भङ्गः 1 संकल्प तोड़ना 2 प्रतिज्ञा तोड़ना,—भिक्षा उपनयन संस्कार के अवसर पर भिक्षा मांगना, —लोपणम् प्रतिज्ञा को तोड़ना,—वैकल्यम् किसी धार्मिक संकल्प का अधूरा रह जाना,—संयुतः व्रत की दीक्षा लेना,—स्नातकः वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था को पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम—दे० स्नातक।

व्रतति:,-ती (स्त्री०) [व्रत्+क्तिच्, पृषो० पस्य व ततति+ङीष्] 1 बेल, लता —पावकृष्टव्रततिविवलया-तस्तजातपरागः शं० १।३३, रघु० १४।१ 2 फैलाव, विस्तार।

व्रतिन् (वि०) [व्रत+इनि] प्रतिज्ञा पालन करने वाला, भक्त, पुण्यात्मा, (पुं०) 1 ब्रह्मचारी 2 संन्यासी, भक्त—शं० ५।९ 3. जो यज्ञ का उपक्रम करता है—दे० 'यजमान'।

व्रध्न दे० 'ध्रुन'।

व्रध्नस् दे० 'ध्रुवस्'।

व्रश्च् (तुदा० पर० वृश्चति, वृक्ण, प्रेर० व्रश्चयति—ते, इच्छा० विवृक्षिषति या विवक्षति) 1. काटना, काट डालना, फाड़ना, चीरना 2 घायल करना।

व्रश्चन, [व्रश्च्+ल्युट्] 1 छोटी आरी 2 बारीक रेती जिसे सुनार काम में लाते हैं,—नम् काटना, फाड़ना घायल करना।

व्रश्चिः (स्त्री०) [व्रश्च्+इञ्] हवा का झोंका, तूफानी हवा, झंझावात।

व्रातः [वृ+क्तच्, पृषो० साधु] समुदाय, रेवड़, समूहसमय —वयपाकानां जातौ —गंगा० २९, रघु० १२।९४, शि० ४।३५, रत्न० 1 शारीरिक श्रम, मजदूरी 2 दैनिक मजदूरी 3 यज्ञ-कर्म कार्य में नियुक्ति।

व्रातीन (वि०) [व्रातेन जीवति—व्रात+ख] दैनिक-मजदूरी से जीविका चलाने वाला, किराये का मजदूर, बेलदार, हल्ली वाला।

व्रात्य [व्रातात् समूहात् भवति-यत्] 1 प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ), जातिबहिष्कृत भवत्या हि व्रात्यायामसंपन्नसंपालक्ष्य परित्यक्तित्राणस्नेह गंगा० ३७ 2 नीच पुरुष, अधम पुरुष 3 विशेष नीच जाति (शूद्रपिता और क्षत्रिय माता की सन्तान) का पुरुष। सम०—ब्रुव जो अपने आपको 'व्रात्य' कहता है,—स्तोमः उपर्युक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीने गये अधिकारों को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ।

व्री I (क्रया० पर० व्रिणाति-व्रीणाति) छांटना, चुनना, तु० 'वृ'।

II (दिवा० आ० व्रीयते, व्रीण) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 चुना जाना।

व्रीड् (दिवा० पर० व्रीड्यति) 1 लज्जित होना, शर्मिन्दा होना 2 फेंकना, डालना, भेज देना।

व्रीड,—डा [व्रीड्+घञ्+व्रीड+अ+टाप] 1 लज्जा व्रीडादिवाभ्यामगतेविलिख्ये शि० ३।४०, व्रीडमावहति मे स (शब्द) सम्प्रति—रघु० ११।५३ 2 विनय, लज्जाशीलता शि० १०।१८।

व्रीडित (भू० क० कृ०) [व्रीड्+क्त] लज्जित किया गया शर्मिन्दा, लज्जाशील।

व्रीह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० व्रीहति, व्रीहयति—ते) छोड़ देना, त्याग करना।

व्रीहि. [व्री+हि किच्च] 1 चावल, जैसा कि 'ब्रह्मव्रीहि में 2 चावल का दाना। सम०—अगारम् धान्यागार कोठी, कांजिकम् मसूर की दाल,—राजिकम् बना कंगू या काकनी चावल।

व्रुड् (तुदा० पर० व्रुडति) 1 ढकना 2. इकट्ठा होना 2 एकत्र करना, संचय करना 4 डूबना, नीचे जाना

व्रुड् (भ्वा० पर०, उभ०) दे० 'व्रीड्'।

व्रैहेय (वि०) (स्त्री०—यी) [व्रीहि+ढक्] 1 चावलों के योग्य 2 चावल के साथ बोया हुआ, यम् चावल का खेत, वह खेत जिसमें चावल बोये जाने चाहिए।

व्लीक् (क्रया० पर० व्लिनाति—व्लीनाति' विरल प्रयोग—प्रेर० व्लेपयति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 भरण-पोषण करना, थामे रखना, निर्वाह करना 3 छांटना, चुनना।

व्लेक्ष् (चुरा० उभ० व्लेक्षयति—ते) देखना।

शः [शो+क] 1. काटने वाला, विनाशकर्ता कि० १५। ४५ 2. शस्त्र 3 शिव,—शम् आनन्द—भर्तृ० २।१६।

शंभु (वि०) [श शुभम् अस्त्यस्य—शुभ्+युन्] प्रसन्न, समृद्ध भट्टि० ४।१८।

शंव [शम्+व] 1 प्रसन्न, भाग्यशाली—(पुं०) 1 ठीक दिशा में हल चलाना 2 इन्द्र का वज्र 3 मूसल का सिर जो लोहे का बना होता है।

शंस् (स्वा० पर० शंसति, शस्त, कर्मवा० शस्यते) 1 प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना —साधु साध्विति भूतानि शशंसुर्मुदितात्मजम्—रामा०, भाग० ५।१ 2 कहना, बयान करना, अभिव्यक्त करना, प्रकथन करना, समुचित करना, घोषणा करना, विवरण देना (सम्प्र० या कभी सब० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) शासस मोता एन्दिवलाल्मनुष्टित शासनमव्रजाय—रघु० १४।८३, न मे क्रियाः शंसति किंचिदीप्सितम् -३।५, २।६८, ४।७२, ९।७७ ११।८६, कु० ३।६०, ५।५१ 3 संकेत करना, कह रखना, जताना—य (अशोक) सावज्ञो माधवश्रीनिरोधे पुष्पैः शमस्यादर त्वत्प्रयत्ने —मालवि० ५।८ कि० ५।२३, कु० २।२२ 4 आवृत्ति करना, पाठ करना 5 चोट मारना, क्षति पहुँचाना 6 बुरा भला कहना, बदनाम करना, अभि—, 1. अभिशाप देना 2 दोषारोपण करना, निन्दा करना बदनाम करना याज्ञ० ३।२८६ 3 प्रशंसा करना, आ—(प्राय आ) 1 आशा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना अभिलाषा करना—स्वकार्यसिद्धिं पुनराशशंसे—कु० ३। ५७, संग्राम चाशंसत सिरे—भट्टि० १४।७०, ९० मनोरथाय नाशंसे किं बाहुः स्पन्दसे वृथा -शा० ७।१३, २।१५ 2 आशीर्वाद देना, सदिच्छा प्रकट करना, मंगलकामना करना एवं ते देवा आशासतु मृच्छ० १, राज्ञ शिव मावरजस्य मृगादित्याशासते कर्षं-रवाहुं. रघु० १४।५० 3 कहना, वर्णन करना -आशंसता वाणगति वृषाके कार्यं त्वया न प्रतिपन्नमस्य -कु० ३।१४ 4 प्रशंसा करना 5 दोहराना, प्र—, सराहना, स्तुति करना, अनुमोदन करना, गुणकथन करना, श्लाघा करना -हरिणाङ्गवति प्रशशंसे -गीत० १, यज्ञ वाचा प्रशस्यते—मनु० ५।१२७, प्राशंसीत्स निशाचरः—भट्टि० १२।६५, रघु० ५।२५, १७।३६।

शंसनम् [शंस्+ल्युट्] 1 प्रशंसा करना 2 कहना, वर्णन करना 3 पाठ करना।

शंसा [शंस्+अ+टाप्] 1 श्लाघा 2 अभिलाषा, इच्छा, आशा 3 दोहराना, वर्णन करना।

शंसित (भू० क० कृ०) [शंस्+क्त] 1 जिसकी श्लाघा की गई हो, स्तुति की गई हो 2 बोला गया, कहा गया, उक्त, घोषित 3 अभिलषित, इच्छित 4 निश्चय किया गया, स्थापित, निर्धारित 5 जिस पर मिथ्या दोषारोपण किया गया हो, कलंकित।

शंसिन् (वि०) [शंस्+इनि] (प्राय समास के अन्त में) 1 श्लाघा करने वाला 2 कहने वाला, घोषणा करने वाला, समुचित करने वाला, प्रजावती दोहदशंसिनी ते—रघु० १४।४५ 3 संकेत करने वाला, पहले से कह रखने वाला मूर्धानं जतहुंकारशंसिन. —कु० २।२६, प्रार्थनासिद्धिशंसिन रघु० १।४२, शि० ९।७७ 4 शकुन बताने वाला, भविष्य कथन करने वाला—रघु० ३।१४, १२।९०।

शक् । (स्वा० पर० शक्नोति, शक्त) 1 योग्य होना, समर्थ होना, सबल होना, अमल में लाना (प्राय 'तुमुन्नन्त' के साथ, प्रयुक्त होकर 'सकना' अर्थ प्रकट करना)—अदर्शयन् वक्तुमशक्यनुद्यत्य शाखाभिरावर्जित-पल्लवाभि —रघु० १३।२४, भट्टि० ३।६, मेघ० २० कभी कभी कर्म० या सम्प्र० के साथ—मनु० ११।१९४ 2 सहन करना, बर्दाश्त करना 3 शक्तिशाली होना

कर्मवा० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के योग्य होना (निम्नांकित तुमुन्नन्त को कर्मवा० का अर्थ देना) तत्कर्तुं शक्यते 'यह किया जा सकता है', इच्छा० (शिक्षति) 1 समर्थ होने की इच्छा करना 2 सीखना।

II (दिवा० उभ०—शक्यति-ते, शक्त) 1 समर्थ होना, अमल में लाने की शक्ति रखना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना।

शकः [शक्+अच्] 1 एक राजा (विशेषत 'शालिवाहन', परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा क्षेत्र के विषय में अभी तक विद्वानों में मतैक्य नहीं हो सका) 2 काल, सम्वत् (यह शब्द विशेष रूप से शालिवाहन सम्वत् के लिए जो ईस्वीसन् से ७८ वर्ष के पश्चात् आरम्भ हुआ, प्रयुक्त होता है), कः (पु० ब० व०) 1 एक देश का नाम 2. एक विशेष जन-जाति या राष्ट्र का नाम (मनु० १०।४४ में 'पौण्ड्रक' के साथ इस शब्द का भी प्रयोग मिलता है) सम०—अन्तकः, —अरिः राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों का उन्मूलन किया, कालः शकसंवत् का वर्ष, कर्तृ, —कृत् (पुं०) संवत् का प्रवर्तक।

शकटः,—टम् [शक्+अटच्] गाड़ी, छकड़ा, भार ढोने की गाड़ी—रोहिणी शकटम्—पंच० १।२१३, २११, याज्ञ० ३।४२, टः 1. सैनिक व्यूहविशेष—मनु० ७।१८७ 2. एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाड़ी-भर बोझ या २००० पल के बराबर है 3. एक राक्षस का

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था 4. तिनिश नामक वेड। सम०—अरिः, हन् (पु०) कृष्ण के विशेषण, —भेदनः रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है), —विल्लः अलकुकुट।

शकटिका [शकट+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटी गाडी, बिलौना-गाडी जैसा कि 'मृच्छकटिका' में।

शकन् (नपु०) मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का मल, लीद गोबर आदि (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० से आगे विकल्प से शकृत् आदेश हो जाता है)।

शकलः [शक्+कलच्] 1 भाग, अंश, हिस्सा, टुकड़ा, खण्ड (इस अर्थ में नपु० भी) उपलकलमेतद्भेदकं गोमयानां मुद्रा० ३।१५, रघु० २।४६, ५।७० 2 छलका, छिलका 3 (मछली की) खाल, परत।

शकलित (वि०) [शकल+इतच्] खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

शकलिन् (वि०) [शकल+इनि] मछली।

शकारः (पु०) राजा की रखैल का भाई, राजा की उस पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह न किया गया हो, अनूढ़ा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिश्रित मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मूर्खता, घमंड, आदि अवगुणों के विद्यमान रहते हुए भी राजा का साला होने के कारण इसे उच्चपद मिल जाता है, शूद्रकरचित मृच्छकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या यश, झूठकापन तथा ओछापन इसके चरित्र की विशेषता है, बार-बार उसके उच्चसम्बन्ध का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मूर्खता, एक प्रमाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर नायिका का वस्त्र खींचने की क्रूरता इसकी योग्यता के परिचायक हैं सा० द० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है मदमूर्खतादिभरितो दुष्टकृतैश्चन्द्रवंशसंयुक्तः। सोऽयमनृताभिधानो राज्ञ्यालः शकार इत्युक्तः॥

शकुनः [शक्+उनन्] 1 पक्षी—शकुनोच्छिष्टम्—याज्ञ० १।१६८ 2 पक्षिविशेष, चील, गिद्ध, - नम् 1 शगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न शि० १।८३ 2 शकासूचक सगुन। सम०—ज्ञ (वि०) सगुनों को जानने वाला, ज्ञानम् सगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होनहार, - शास्त्रम् वह शास्त्र जिसमें सगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, सगुन शास्त्र।

शकुनिः [शक्+उनि] 1 पक्षी—उत्तर० २।२५, मनु० १२।६३ 2 गिद्ध, चील, बाज 3 मुर्गा 4 गान्धारराज सुबल का एक पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्योधन का मामा था। इसी ने पाण्डवों को उखाड़ने के लिए दुर्योधन की अनेक दुरभिसंधियों में सहायता दी। आजकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्जन रिश्तेदार के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने। सम० ईश्वरः गरुड़, अपी पक्षियों को पानी पिलाने की कूँड़ वादः 1 पक्षी की कूजन 2 मुर्गे की बाँग।

शकुनी [शकुन+ङीप्] 1 चिड़िया, गौरैया 2 एक पक्षिविशेष।

शकुन्त [शक्+उन्त] 1 एक पक्षी—असंशयमिदं शकुन्तनीडनिभं विभ्रज्जटामण्डलम् श० ७।११ 2 नीलकंठ पक्षी 3 पक्षिविशेष।

शकुन्तक [शकुन्त+कन्] पक्षी।

शकुन्तला [शकुन्तैः लायते—ला यत्नार्थे क+टाप्] विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री (जब मेनका स्वर्ग गई तो वह इस बच्ची को एकान्त जंगल में छोड़ गई, वहाँ पक्षियों ने इसका पालन पोषण किया, इसी लिए इसका नाम शकुन्तला पड़ा। बाद में वह महर्षि कण्व को मिली। कण्व ने उसे अपनी पुत्री की भाँति पाला। जब आखेट करता हुआ दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम की ओर आया तो वह शकुन्तला के लावण्य से आकृष्ट हो गया। उसने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे राजी कर उससे गान्धर्व विवाह कर लिया (दे० दुष्यन्त)। शकुन्तला से एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था, यह चक्रवर्ती राजा बना, इसी के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

शकुन्तिः [शक्+उन्ति] पक्षी कलमविरल्यरुतकला क्वणन्तु शकुन्तय उत्तर० ३।२४।

शकुन्तिका [शकुन्ति+कन्+टाप्] 1 पक्षी—उत्तर० १।४५ 2 पक्षिविशेष 3 टिड्डी, झींगुर।

शकुल, लो [शक्+उलच्] एक प्रकार की मछली। सम०—अदनी एक जड़ीबूटी, कटकी या कुटकी अर्भक. एक प्रकार की मछली।

शकृत् (नपु०) [शक्+ऋतन्] मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों की लीद, गोबर आदि। सम० करि (पु०, स्त्री०)—करी बछड़ा,—शकृत्कार्श्वस्य—सिद्धा०. द्वारम् गुदा, मलद्वार, पिण्डः, पिण्डक गोबर का लोंदा शकृत्पिण्डैरपि पथिकानां मात्रान् उत्तर० ४।२३।

शक्करः, शक्करि [शक्+किरच्, कृ+अप्, कर्म० स०] बैल, साँड़।

शक्करी [शक्कर+ङीप्] 1 मदी 2 करधनी, मेखला 3 नीच जाति की स्त्री।

शक्त (भू० क० कृ०) [शक्+क्त] 1 योग्य, समर्थ

(सम्ब०, अधि० या तुमुन्नन्त के साथ) -अहमेतज्ज्य । कर्मण शक्यता वेणी० ३, सम्योपकारे शक्तस्य किं जीवन् किमुतान्यथा—न० 2 मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली 3 धनाढ्य, समृद्धिशाली --मनु० ११।९ 4 सार्थक अभिव्यञ्जक (शब्द) ५ चतुर, प्रज्ञावान् 6 प्रियवादी ।

शक्ति (स्त्री०) [शक् + क्तिन्] 1 बल, योग्यता, शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा, पराक्रम दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या -पञ्च० १।३९१, आने मौन शक्ता शक्ती रघु० १।२२, इसी प्रकार यथाशक्ति, स्व-शक्ति आदि, राज्यशक्ति (इस के तीन तत्त्व हैं 1 प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति 'राजा की अपनी प्रभुत्व सत्ता' 2. मन्त्रशक्ति मन्त्रणा की शक्ति तथा 3 उत्साह शक्ति 'प्रेरणाशक्ति') शब्द नाम शक्ति-त्रयात्मनम् दश०, त्रिनाथेना शक्तिनिर्वाहसंपत्त्यम् --रघु० ३।१३, ६।३३, १७।६३ शि० २।२६ 2. रचनाशक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा--शक्तिर्नि-पुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्य० १, दे० तत्सम्बन्धी व्याख्या 3 देव की सक्रिय शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी, विद्यमा (इनकी गिनती विविध प्रकार से की जाती है कहीं आठ कहीं नौ और कहीं पचास तक) स जयति परिणद्ध शक्तिभि शक्तिनाथ –मा० ५।१, रा० ७।३५ 4. एक प्रकार का अस्त्र,—शक्तिसंपातसंक्षिप्त गाण्डीवविनोदनम् वेणी० ३, ततो विभेद पीलस्य शक्त्या वक्षसि लक्ष्मणम् रघु० १२।७७ ५ बर्छी, नेजा, शूल, भाला 6 (न्या० में) किसी पदार्थ का उसके वाचक शब्द से सम्बन्ध 7 कारण की अन्तर्हित शक्ति जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है 8 (काव्य० में) शब्दशक्ति या शब्द की अर्थशक्ति (यह संख्या में तीन हैं अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) सा० द० १२ ९ अभिधाशक्ति, शब्दशक्ति (विप० लक्षणा और व्यञ्जना), 10 स्त्री की जननेन्द्रिय, भग, शाक्तसम्प्रदाय के अनुयाइयों द्वारा पूजित शिवलिङ्ग की मूर्ति । सम० अर्थ उद्योग तथा श्रम के फलस्वरूप सम्पत्ति पाना या शरीर का पसीने से तर होना, अपेक्ष, अपेक्षिन् (वि०) सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला,—कुण्ठनम् शक्ति को कुण्ठित करना, -ग्रह (वि०) 1 बल या अर्थ को धारण करने वाला 2 बर्छीधारी, (-ग्रहः) बल या अर्थ का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान 3 बर्छीधारी, भालाधारी 4 शिव का विशेषण 5. कार्तिकेय का विशेषण,—ग्राहक (वि०) शब्द के अर्थ की स्थापना या निर्धारण करने वाला, (-कः) कार्तिकेय का विशेषण, त्रयम् राज्यशक्ति के संघटक तीन तत्त्व --दे० शक्ति (2) ऊपर, -धर (वि०) मजबूत, शक्तिशाली, (-रः) 1 बर्छीधारी 2 कार्तिकेय का विशेषण, पाणिः, भृत् (पु०) 1 बर्छीधारी 2 कार्तिकेय का विशेषण, भग्नः शक्ति क्षय, पराजय, मुक्तकः शाक्त, मुद्रा शक्ति की मुद्रा, —वैकल्यम् शक्तिक्षय, दुर्बलता, अक्षमता,-हीन (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित, नपुंसक हैतिक. भाला धारी, बर्छीधारी ।

शक्तितः (अव्य०) [शक्ति+तसिल्] शक्ति के अनुसार, सामर्थ्यानुसार, यथाशक्ति ।

शक्तिमत्, शक्तिमान् (वि०) [शक्ति + मतुप्, वत्व वा] शक्तिशाली, प्रियवादी ।

शक्य (सं० कृ०) [शक्+यत्] 1 समर्थ, क्रियात्मक, किये जाने के योग्य, (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ) शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् मनु० २।१९, रघु० २।४९ ५४ 2 कार्यान्वयन के योग्य 3 कार्यान्वयन में सरल 4 प्रयत्न कहा गया, अभिहित (शब्दार्थ आदि) – शक्योऽवोऽभिमयो ज्ञेय सा० द० ११ 5 सम्भाव्य (कभी-कभी शक्यम् शब्द कर्मवा० में तुमुन्नन्त के साथ विधेय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उस समय तुमुन्नन्त का वास्तविक अभिप्राय कर्तृ० में होता है एवं हि प्रणयवती सा शक्यमुपेक्षितुं कुपिता —मालवि० ३।२२, शक्यं अविरलमालिङ्गितुं पवन सं० ३।६, विभूतय शक्यमवाप्तमुज्झिता —सुभा०, भग० १८।११ । सम० अर्थ प्रत्यक्ष अभिहितार्थ ।

शक्रः [शक्+रक्] 1 इन्द्र – एक बार शकुन्तलेयं योग्यं शक्रान्त याचते कुवलं० 2 अर्जुन का वृक्ष 3. कुटज का पेड़ 4 उल्लू 5 ज्येष्ठा नक्षत्र 6 चौदह की संख्या । सम०–अजाजः कुटज का वृक्ष, आख्यः उल्लू, —आत्मजः 1 इन्द्र का पुत्र जयन्त 2 अर्जुन,—उत्सवः, उत्सवः भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, पर्व, क्रीडः एक प्रकार का खेल कीड़ा, तु० इन्द्रक्रीड—जः, जाः कौवा,—जित्, जिद् (पु०) रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण, द्रुमः देवदारु का वृक्ष, -धनुस्, धनुषम् इन्द्रधनुष, ध्वजः इन्द्र के सम्मान में स्थापित झंडा, पर्यायः कुटज का वृक्ष, पादपः 1 कुटज का पेड़ 2 देवदारु वृक्ष, प्रस्थ इन्द्रप्रस्थ, भवनम्,—भुवनम्, लोकः स्वर्ग, वैकुण्ठ, मूर्धन् (नपुं०) शिरस् (नपुं०) बांबी, वल्मीक, -लोकः इन्द्र का संसार,-वाहनम् बादल, शालिन् (पु०) कुटज का वृक्ष, सारथिः इन्द्र का रथवान्, मातलि का विशेषण, -सुतः 1 जयन्त का विशेषण 2 अर्जुन का विशेषण, 3 वालि का विशेषण ।

शक्राणी [शक्र+ङीप्, आनुक्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

शक्रिः [शक्+क्रिन्] 1. बादल 2 इन्द्र का वज्र 3 पहाड़ 4 हाथी ।

शङ्करः [शक्+वन्, र] साँड, बैल, तु० शङ्कर।

शङ्कू (स्वा० आ० शङ्कते, शङ्कित) 1 संदेह करना, अनिश्चित होना, सकोच करना, संदिग्ध होना शङ्के जीवति वा न वा - राम० 2 डरना, भय होना, त्रस्त होना (अप० के साथ)—नाशाङ्कितुष्ट विवस्वत —भट्टि० १५।३९—अशङ्कितेभ्य शङ्कते शङ्कितेभ्यश्च सर्वत —सुभा० 3 शका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना स्वदोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्य मृच्छ० ४।२ 4 सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, समझ समझना, शका करना, डरना त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्या —मेघ० ९५, नाह पुनस्तथा त्वयि यथा हि मा शङ्कसे भीरु विक्रम० ३।१४, भट्टि० ३।२६, नै० २२।४२ 5 आक्षेप करना, अपनी शका या ऐतराज उठाना —अवेद शङ्क्यते, (बहुधा विवादास्पद भाषा में प्रयुक्त) —न च ब्रह्मण प्रमाणान्तरगम्यत्व शङ्कितु शक्यम् सर्व०, अभि , 1 शका करना 2 संदिग्ध या अनिश्चयी होना—मनु० ६।६६, आ , शङ्का करना, भरोसा न करना संदेह रखना भट्टि० २१।१ 2 सन्देह करना, विश्वास करना सोचना—आशङ्कसे यदग्नि तदिद स्पर्शक्षम रत्नम्—शा० १।२८, शि० ३।७२ भट्टि० ६।६ मनु० ७।१८५ 3 डरना, आशका करना, भरतागमन पुन. आशङ्क्य—रघु० १२।२४, पञ्च० १।३, ९२ 4 आक्षेप करना, सदेह करना अत एव न ब्रह्मशब्दस्य आत्याद्यर्थान्तरमाशङ्कितव्यम् शारी० (तथा कुछ अन्य स्थानो पर), परि 1 शका करना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना पत्रेऽपि सचारिणि प्राप्त त्वा परिशङ्कते- गीत० ६ 2 सदेह करना, सदेहशील होना 3. डरना, भयभीत होना, रघु० ८।७८, वि , 1 शका करना, डरना, सदेहशील या शकालु होना,—विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम् श० ३।१४, मतीमपि ज्ञातिकुलैकसश्रया जनोऽन्यथा भर्तृमती विशङ्कते ५।१७ 2 सन्देह का चित्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना विशङ्कमाना रमित कयाऽपि जनार्दन दृष्टचक्रेतदाह—गीत० ७।

शङ्कक [शङ्क्+अच्] कपेक बैल, (गाडी) खीचने वाला बैल।

शङ्कर (वि०) (स्त्री० रा, री) [श सुख करोति —कृ+अच्] आनन्द या समृद्धि देने वाला, शुभ, मङ्गलमय, —रः 1 शिव 2. विख्यात आचार्य और ग्रन्थप्रणेता शकराचार्य दे० परि० २, री 1 शिव की पत्नी पार्वती 2 मजिष्ठा, मजीठ 3 शमीवृक्ष।

शङ्का [शङ्क्+अ+टाप्] 1 सदेह, अनिश्चितता 2 सकल्प-विकल्प, दुविधा 3. आशका, अविश्वास, अनिष्टशका, अपायशका, अरिष्टशका आदि 4 डर, आशका, त्रास, आतक—आतिशङ्कैर्वैमनस्यैश्च नाना-प्सरा प्रेषिता श० १, कैकेयीशङ्कयेवाह—रघु० १२।२, १३।४२, मेघ० ६९ 5 आशा, प्रत्याशा 6 (भ्रान्त) विश्वास. आशका, (मिथ्या) धारणा—लज्जमपि शिरस्यन्य क्षिप्त्वा घनोन्यहिशङ्कया श० ७।२४, कुर्वन् बधूजनमन सु शशाङ्कशङ्काम्—कि० ५।४२, हरितृणाङ्कुरलोभविलम्बिनी शङ्कया ५।३८।

शङ्कित (भू० क० कृ०) [शङ्क्+क्त] 1 सन्दिग्ध, आशकायुक्त, त्रस्त 2 शकालु, आशका करने वाला, अविश्वासपूर्ण 3 अनिश्चित, सदिग्ध 4 भयपूर्ण, सशक, आतकित (दे० शङ्क्)। सम०—चित्त,—मनस् (वि०) भीरु, कातरहृदय 2 शकाकुल, अविश्वासपूर्ण 3 सदिग्ध।

शङ्किन् (वि०) [शङ्का+इनि] सन्देह करने वाला, शका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला (समास के अत में) स्वकुलावतंनशङ्कि मे मन - रघु० ८।५३, अतिस्नेह पापशङ्की श० ४।

शङ्कु: [शङ्क्+उन्] 1 नेजा, बर्छी, नुकीली कील, शकित, कटार, (प्राय: समास के अन्त में)—वीरशङ्कु 'शाक-रूपी कटार' अर्थात् तीक्ष्ण एव हृदयविदारक शोक —उत्तर० ३।२५, रघु० ८।९३ 2. खूँटा, खम्बा, स्तम्भ, शूल या नोकदार छड़ 3 कील, मेख खूँटी रघु० १२।९५ 4 दाँत की तीखी नोक, काँटा या अंकुश 5 (कटे हुए वृक्ष का) तना, पेड़ का ठूँठ, मूखा पेड़ 6 घड़ी की सूई 7 बारह अगुल की माप 8 गज, मापने का डडा 9 (ज्यो० में) लबरेखा या ऊँचाई 10 सौ खरब या एक नील की सख्या 11 पत्तो के रेशे 12 बल्मीक, बमी 13 पुरुष की जननेन्द्रिय 14 एक प्रकार की मछली, तनुवा 15 राक्षस 16 शिव 17 पाप 18 जलचर, विशेष कर कलहस 19 शिव 20 साल का पेड़। सम० कर्ण (वि०) जिसके कान शकु के समान लबे और नुकीले हों, (कर्ण:) गधा—तरु वृक्ष साल का पेड़।

शङ्कुकर्ण [शङ्कु+उत्तम्] 1 एक प्रकार का चाकू या दो धार वाला नश्तर 2 मरोता। सम०- खड मरोते से काटा हुआ टुकड़ा।

शङ्कुः,—कम् [शम्+कु] 1 सत्य, धोखा—न एवेतभाव मुज्जहति शङ्कु शिखिभुक्तमुक्तोऽपि पद्य० ४।११० शङ्खान् दध्मु पृथक् पृथक्— भग० १।१८ 2 मस्तक की हड्डी, कु० ७।३३ 3 कनपटी की हड्डी 4 हाथी के दोनो दाँतो के बीच का भाग 5 दस नील की सख्या 6. सैनिक हाल या माल्वाजा 7 एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी 8 कुबेर की नवनिधियों मे से एक 9 एक राक्षस जिसको विष्णु ने मार डाला था 10 एक स्मृतिकार ('लिखित' के साथ

मयुक्त नाम का उल्लेख)। सम०-- उदकम् शंख में डाला हुआ पानी, कारः, कारकः शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति, चारी, चर्ची (मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक चूर्णम् शंख को पीस कर बनाया गया चूरा, ध्मः, ध्मायकः एक प्रकार का ढोल जिसमें शंख भी फूंक जाता है, ध्मः —ध्मा (पु०) शंख बजाने वाला, ध्वनिः शंख की आवाज (कभी-कभी, परन्तु प्रायः आतंक या निराशा की द्योतक ध्वनि), भृत्कः चन्द्रमा का कलंक,—भृत् (पु) विष्णु का विशेषण, मुखः घड़ियाल, मगर, स्वनः शंखध्वनि।

शङ्खकः,-कम् [शंख+कन्] 1 शंख 2 कनपटी की हड्डी, क (शंख का बना) कड़ा—शि० १३।४१।

शङ्खनकः, (-क) एक छोटा शंख या घोंघा।

शङ्खिन् (पु०) [शङ्ख+इनि] 1 समुद्र 2 विष्णु 3 शंख बजाने वाला।

शङ्खिनी [शङ्खिन्+ङीप्] काम शास्त्र के लेखकों के अनुसार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक, रतिमञ्जरी में लिखा है दीर्घातिदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता। श्रेष्ठात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा सम्भोगकेलिरसिका किल शङ्खिनी सा—६, तु० चित्रिणी, हस्तिनी और पद्मिनी भी 2 प्रेतात्मा, अप्सरा, परी।

शंक् (भ्वा० आ० शंकते) बोलना, कहना, बतलाना।

शंकिः,-ची (स्त्री०) [शंक्+इन्, शंचि+ङीष्] इन्द्र की पत्नी रघु० ३।१३, २३। सम०—पतिः,—भर्तृ (पु०) इन्द्र के विशेषण।

शंक्ष् (भ्वा० आ० शंक्षते) जाना, हिलना-जुलना।

शंट् (भ्वा० पर० शंटति) 1 बीमार होना 2 बांटना, वियुक्त करना।

शंड (वि०) [शंड्+अच्] लूला, अन्धा, कसेरा।

शंडा [शंड+टाप्] संन्यासी के उलझे बाल—तु० जटा।

शंडि (स्त्री०) [शंड्+इन्] कचूर का पौधा, आमा हल्दी।

शंड् 1 (भ्वा० पर० शंडति) 1 धोखा देना, ठगना, जालसाजी करना 2 चोट मारना, मार डालना 3 कष्ट उठाना।

2 (चुरा० पर० शाठयति) 1 समाप्त करना 2 असमाप्त छोड़ देना 3 जाना, हिलना-जुलना 4 आलसी या सुस्त होना 5 धोखा देना, ठगना (इस अर्थ में 'शठयति')।

शंठ (वि०) [शंठ्+अच्] 1 चालाक, धोखेबाज, जालसाज, बेईमान, कपटी 2. धृष्ट, दुर्वृत्त, ठः 1 धूर्त, ठग, बदमाश, मक्कार मनु० ४।१०, मृच्छ० १८।२८ 2. लूला या धोखेबाज हंसी. (जो एक स्त्री के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु मन किसी दूसरी स्त्री में रमाया रहता है)—ध्रुवमस्मि शठ शुचिस्मिते विदित कैतववत्सलस्त्वय—रघु० ८।४९, १९।३१, मालवि० ३।१९, सा० द० 'शठ' की इस प्रकार परिभाषा देता है—शठोऽपमेकत्र बद्धभावो य दक्षिणवहिरनुरागो विप्रियमन्यत्र गूढमाचरति—७४ 3. मूढ, बुद्धू 4 मध्यस्थ, विवादक 5 बतूरे का पौधा 6 आलसी पुरुष, सुस्त व्यक्ति, -ठम् 1. लोहा 2 केसर, जाफरान।

शंडम् [शंड्+अच्] सन, पटसन। सम०—सूत्रम् 1 सन की बनी डोरी या रस्सी 2. सन का बना आ० 3 रस्सियाँ, डोरियाँ।

शंढः [शंढ्+अच्]1 नपुंसक, हिजड़ा 2. सांड 3 छोड़ा हुआ सांड,—ढम् समूह, समुच्चय —तु० षंढ या षण्ढ भी।

शण्ढः [शाम्यति शाम्यधर्मात्—शम्+ढ] 1. हिजड़ा, नपुंसक 2. अन्तःपुर में रहने वाला दुहरूआ, पुंश्चलीसेवक (हिजड़ों या बधिया किये गये पुरुषों में से चुना हुआ) 3 सांड 4 छोड़ा हुआ सांड 5 पागल आदमी।

शतम् [दश दशत परिमाणमस्य—दशन्+त, स आदेशः नि० साधु] सौ की संख्या—नित्यो बहिष्टात शत —शान्ति० २१६, शतमेकोऽपि सचरते प्रहारस्त्यो धनुर्धर पञ्च० १।२२९ ('शत' शब्द किसी भी गिनती के बहुवचनांत संज्ञा शब्दों के साथ एक वचन में ही प्रयुक्त होता है—शत नरा., शतं गावः, या शत गृहाणि, इस दशा में यह संख्यावाचक विशेषण माना जाता है, परन्तु कभी कभी द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है - द्वे शते, दश शतानि आदि। सम० के संज्ञा-शब्द के साथ भी प्रयुक्त होता है—शतं शतम्,; समास के अन्त में यह अपरिवर्तित रूप में रह सकता है अथवा शती शारच्छतम्, या अदन्त कर 'शती' हो जाता है यथा गोवर्धनाचार्य की कृति 'आर्यासप्तशती') 2. कोई भी बड़ी संख्या। सम०- अक्षी 1. रात्रि, 2. दुर्गादेवी, अङ्गः गाड़ी, छकड़ा विशेषतः युद्धरथ, -अजीवः बूढ़ा आदमी,—अरम्, आरम् इन्द्र का वज्र, -आनन्दम् श्मशान, कबरिस्तान, आनन्दः 1 ब्रह्मा 2 विष्णु, कृष्ण 3 विष्णु का बाहन 4. गौतम और अहिल्या का पुत्र, जनकराज का कुलपुरोहित—उत्तर० १।१६, आयुस् (वि०) सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला, आयुषी, —आयुषिन् (पु०) विष्णु, ईशः 1 सौ के ऊपर शासन करने वाला, 2 सौ गाँव का शासक मनु० ७।११५,—कुम्भः एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि यहाँ पर सोना पाया जाता है), -कृत्व (अव्य०) सौ गुना, -कोटि (वि०) सौ बार बराबर,

(क्लिः) इन्द्र का वज्र, (स्त्री०) एक अरब या सौ करोड़ की संख्या, क्रतु इन्द्र का विशेषण—रघु० ३।३८, क्रतुः सोना,—मुख (वि०) सौ गायों का स्वामी,—मुख, गुणित (वि०) सौगुणा बड़ा हुआ —विक्रम० ३।२२, क्षत्रिः (स्त्री) दूर्वा घास,—क्षी 1 एक प्रकार का शस्त्र जो अस्त्र की भांति प्रयुक्त किया जाय (कुछ विद्वानों के मतानुसार यह एक प्रकार का राकेट है, परन्तु दूसरों के मतानुसार यह एक प्रकार का विशाल पत्थर है जिसमें लोहे की शलाकाएँ जड़ी हुई हैं यह लम्बाई में 'चार ताल' है —शतघ्नी च चतुस्तालः लोहकण्टकसंचिता, या, अयः कण्टकसञ्छन्ना शतघ्नी महती शिला) रघु० १२।९५ 2 विष्णु की गदा 3. गन्ने का एक रोग जिष्णु. शिव का विशेषण,—तारका,—भिषज्,—भिषा (स्त्री०) सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र,—दला सफेद गुलाब,—द्रुः (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है,—धामन् (पु०) विष्णु का विशेषण, धार (वि०) सौ धारों वाला, (—रम्) इन्द्र का वज्र,—धृतिः 1 इन्द्र का विशेषण, 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 स्वर्ग,—पत्रः 1 मोर 2 सारस 3 खुट-बढ़ई पक्षी, 4 तोता या तोते की जाति, (त्रा) स्त्री (त्रम्) कमल—आवृत्तबृत्तशतपत्रनिभं (आननम्) वहत्या—मा० १।२९, °योनिः ब्रह्मा का विशेषण,—कम्पेन मूर्ध्ना शतपत्रयोनिं (समाधयामास) कु० ७।३६,—पत्रक खुटबढ़ई,—पद्, पाद् (वि०) सौ पैरों वाला, -पदी कानखजूरा, -पत्रम् 1 वह कमल जिसमें सौ पंखड़ियाँ हों 2 श्वेत कमल, —पर्वन् (पु०) पौष (स्त्री०) 1 आश्विन मास की पूर्णिमा 2 दूर्वा घास 3 कटुक का पौधा, °द्विजः शुक्र, ग्रह,—भीषः (स्त्री०) अरबदेश की चमेली, भुज, —मन्युः 1 इन्द्र के विशेषण, कि० २।२३, भट्टि० १।५, कु० २।६४, रघु० ९।१३ 2 उल्लू, मुख (वि०) 1 जिसके सौ रास्ते हों 2. सौ द्वार या मुँह वाला—विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः —भर्तृ० २।१०, (यहाँ शब्द का (१) अर्थ भी है। (—खम्) सौ रास्ते या द्वार, (—खी) बुहारी, झाड़ू, —मूला दूर्वा घास, दूबड़ा, —यज्वन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—यष्टिकः सौ लड़ियों का हार, रूपा ब्रह्मा की एक पुत्री (जो ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है, अपने पिता के साथ इस व्यभिचार के परिणाम स्वरूप उससे स्वायम्भुव मनु का जन्म हुआ),—वर्षम् सौ बरस, शताब्दी, वेधिन् (पुं०) एक प्रकार का खटमिट्ठा शाक, भोका,—सहस्रम् 1. सौ हजार 2. कई हजार अर्थात् एक बड़ी संख्या,—साहस्र (वि०) 1. सौ हजार से युक्त 2. सौ हजार में मोल लिया हुआ, हुआ 1 बिजली, कु०७।३९, मृच्छ० ५।४८ 2 इन्द्र का वज्र।

शतक (वि०) [शत+कन्] 1 सौ 2 सौ से युक्त, क्रम् 1 शताब्दी 2 सौ श्लोकों का संग्रह जैसा कि नीति,° वैराग्य° और शृङ्गार°, अर्थात् नीति आदि विषयक सौ श्लोकों का संग्रह।

शततम (वि०) (स्त्री०—मी) [शत+तमप्] सौवाँ।

शतधा (अव्य०) [शत+धाच्] 1. सौ तरह से 2 सौ भागों में या सौ टुकड़ों में 3 सौगुना।

शतशस् (अव्य०) [शत+शस्] 1 सौ सौ करके 2 सौ बार—शतशः शपे—प्रबो० 3, मनु० १२।५८ सौगुना, 3 सौ तरह से, विविध प्रकार से, नाना प्रकार से —भग० ११।५।

शतिक (वि०) (स्त्री० की), शत्य (वि०) [शत+ठन् यत् वा] 1 सौ से युक्त- याज्ञ० २।२०८ 2 सौ से सम्बन्ध रखने वाला 3 सौ से प्रभावित 4 सौ में मोल लिया हुआ 5 सौ से बदला किया हुआ 6 प्रतिशत शुल्क या ब्याज लेने वाला 7 सौ का मूचक।

शतिन् (वि०) [शत+इनि] 1 सौगुणा 2 असंख्य—पु० सौ का स्वामी नि स्वो वष्टि शत शती शतानन शालि० २।६, पञ्च० ५।८२।

शत्रिः [शद्+त्रिप्] हाथी।

शत्रु, [शद्+त्रुन्] 1 परास्त करने वाला, विनाशक, विजेता 2 दुश्मन, वैरी, प्रतिपक्षी—क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—सुभा० 3 राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी, पड़ौस का प्रतिद्वन्द्वी राजा। सम० उपजाप दुश्मन की गुपचुप कानाफूसी, शत्रु का विश्वासघाती प्रस्ताव, कर्षण, दमन, निर्हन्तृ (वि०) शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला,—घ्नः 'शत्रुओं को नष्ट करने वाला' सुमित्रा का पुत्र होने के कारण लक्ष्मण का यमलभ्राता, राम का भाई। इसने 'लवण' नामक राक्षस का वध किया, मथुरा को बसाया। सुबाहु और श्रुतसेन नाम के इसके दो पुत्र थे दे० रघु० १५,—घ्नः 1 शत्रु का पक्ष या दल 2 प्रतिपक्षी, विरोधी, जिनाशनः शिव का विशेषण,—हन्ता शत्रु की हत्या,—हन् (वि०) शत्रु का वध करने वाला।

शत्रुञ्जयः [शत्रु+जि+खच्, मुम्] 1 हाथी 2 एक पहाड़ का नाम, सिरमौर पर्वत।

शत्रुमतः (वि०) [शत्रु+मत्+खच्, मुम्] अपने शत्रु को परास्त करने वाला या नष्ट करने वाला।

शत्वरी (स्त्री०) रात।

शद् 1 (स्वा० पर० (परन्तु सार्वधातुक लकारों में आ०) —शीयते, शन्न) 1 पतन होना, नष्ट होना, मुर्झाना, कुम्हलाना 2. जाना—मेर० (णाचयति-ते) 1. पहुँचाना,

ठेलना 2 शातयति-ते (क) गिराना, नीचे फेंक देना, काट डालना शि० १४।८०, १५।२४ (ख) वध करना, नष्ट करना।

शा (स्वा० पर० शक्नोति) जाना (प्राय 'आ' पूर्वक)।

शाक [शक्+घञ्] साग, शाकभाजी (फल मूल आदि)।

शाक्तिः [शक्+क्तिन्] 1 बर्छी 2 बादल 3 अर्जुन,—क्ति (स्त्री०) बिजली।

शाकुः (वि०) [शक्+कु] 1 जाने वाला, गतिशील 2 पतनशील, नश्वर, क्षय होने वाला।

शाकैः (अव्य०) [शनैस्+अकच्] शनैः शनैः दे० शनैः।

शनिः [शो+अनि किच्च] 1. शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, जो काले रंग का है काले वस्त्रों से सुज्जित बताया गया है) 2 शनिवार 3 शिव। सम० कृष्ण काली मिर्च,—प्रदोषः शिव की (सायंकालीन) पूजा जो कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को शनिवार का पड़ने पर की जाती है,—प्रियम् नीलमणि, वारः,—वासरः शनिवार का दिन।

शनैस् (अव्य०) [शम्+ऐस्, पृषो० मुक्] 1. आहिस्ता से, धीरे, चुपचाप 2. यथाक्रम क्रमशः, थोड़ा थोड़ा करके धर्म—सञ्चिनुयाच्छनैः—कु० ३।५९, मनु० ३।२१७ 3 उत्तरोत्तर, उपर्युक्त क्रम में मनु० १।१५, 4 मृदुता से, नरमी से 5 सुस्ती के साथ, आलस्यपूर्वक शनैः शनैः आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता। सम०—चर (वि०) शनैः शनैः घूमने वाला या चलने वाला शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेवे ब्रह्ममयीव मा—मनु० १।१७, (यहाँ इसका अर्थ 'शनि' भी है) (रः) शनिग्रह

शतधनुः [श यज्ञात्मका तनूर्यस्य—ब० स०] एक चन्द्रवंशी राजा जिसने गंगा व सत्यवती से विवाह किया। गंगा का पुत्र भीष्म था, तथा सत्यवती के चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए। भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहा, तथा इसके छोटे भाई निस्सन्तान स्वर्ग सिधारे, दे० 'भीष्म'।

शप् (भ्वा०, दिवा० उभ० शपति ते, शप्यति ते, शप्त) 1 अभिशाप देना, कोसना असपद्भूय मानुषीति तान्—रघु० ८।०, सोऽभूत् परासुरुच भूमिपति शशाप (वृक्षः) १।७८, १।७७ 2. शपथ लेना, कसम उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, सौगन्ध खाना (प्रायः प्रतिज्ञात 'शप्त' तथा प्रतिज्ञाता के लिए करण० प्रयुक्त होता)—भरतेनात्मना चाहं शपे ते मनुजाधिप। यथा लक्ष्मण तथ्यमेतत् रामविवासनात् शप्त०, कर्मरहित प्रयोग होने पर शपथवस्तु में करण० तथा जिसके द्वारा शपथ की जाय उसमें शप्त० प्रयुक्त होता। शप्त्य शपादि से पादपूरकशब्दस्वरूप—का०, घट० २२ शप्तः निह्नवाशंसी सीतायां स्मरबाधितः भट्टि० ८।७४, ३३, कभी कभी 'शप्' का सकर्मीय कर्म के अनुसार प्रयोग होता है सहस्रशोऽन्यो शपथावशप्यात्—भट्टि० ३।३२ 3. कलंकित करना, धमकाना, बुरा-भला कहना, गाली देना (शप्त० के साथ या स्वतन्त्ररूप से)—द्विषद्भ्यश्चाशपंस्तथा भट्टि० १७।४, प्रतिवाचमदत्त केशव. शपमानाय न वेदिमूर्धजे शि० ४।२५, —शेर० (शापयति ते) शपथद्वारा बाँध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना—शापितोऽसि गोत्राह्मणकाम्यया मृच्छ० ३, मा० ८।

शप्तः [शप्+क्त] 1. अभिशाप, सरापना, कोसना 2. शपथ, सौगन्ध।

शपथः [शप्+अथन्] 1 कोसना 2 अभिशाप, आक्रोश, फटकार 3 सौगन्ध, कसम खाना, शपथ लेना या दिलवाना, शपथोक्ति—आमोदो न हि कस्तूर्या शपथेनानुभाव्यते—भामि० १।१२०, मनु० ८।१०९ 4 शपथपूर्वक अनुरोध, सौगन्ध से बांधना—मा० ३।२।

शपथ्य [शप्+स्युट्] दे० 'शपथ'।

शप्त (भू० क० कृ०) [शप्+क्त] 1 अभिशप्त 2 जिसने सौगन्ध खायी है 3 बुरा भला कहा गया, दुर्वचन कहा गया (दे० शप्)।

शफः,—फम् [शप्+अच्, पृषो० पस्य फ] 1 सुम 2 वृक्ष की जड़।

शफरः (स्त्री० री) [शफ राति—रा+क] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली—मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि—मेघ० ४०, शि० ८।२४। कु० ४।३९। सम०—क्रीडितः 'हलीसक' नामक मछली।

शब (ब) रः [शब्+अरन्] 1 पहाड़ी, असभ्य, भील, जंगली—राजन् गुञ्जाफलानां जञ्ज इति शबरा नैव हारं हरन्ति काव्य० १० 2 शिव 3 हाथ 4 अक्ष 5 एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक 6 मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार, री 1 भीलनी 2 राम की अनन्य भक्त एक भीलनी। सम० आलयः जंगली, पहाड़ियों और भीलों का निवासस्थान,—कीट जंगली लोहे का बना।

शब (ब) लः (वि०) [शप्+अलच्, बस्य] 1. चितकबरा, रंग-बिरंगा, चितकबरी—रघु० ५।४४, १३।५६, महावीर० ७।२६ 2 नानारंग, अनेक भागों में विभक्त, लः नानारंगों का रंग,—ला, —ली 1 चितकबरी गाय 2. कामधेनु, —लम् पानी।

शब्द (चुरा० उभ० शब्दयति—ते, शब्दित) 1 ध्वनि करना, शोर मचाना 2. बोलना, बुलाना, आवाज देना —विलपन्मृदुकरुणं शब्दयन्त्या मयोच्चैः परिपतति दिवोऽङ्के हंसमा बालसूर्यं —शि० ११।४५ 3. नाम

लना, पुकारना अत एव सागरिकेति शब्द्यते रत्न० ४, अभि–, नाम रखना, प्र , व्याख्या करना, सम् , बुलाना ।

शब्दः [शब्द्+घञ्] 1 ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय, आकाशगुण, रघु० १३।१ 2 आवाज़, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादि को का), कोलाहल, विश्वासोपगमादभिन्नगतय शब्द सहन्ते मृगा श० १।१४, भग० १।१३, श० ३।१, मनु० ४।११३, कु० १।४५, 3 बाजे की आवाज़ वाद्यशब्द पञ्च० २।२४, कु० १।४५ 4 वचन, ध्वनि, सार्थक ध्वनि, शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना) एक शब्द सम्यग्ज्ञात सम्यक् प्रयुक्त स्वर्गे लोके कामधुग्भवति, इसी प्रकार 'शब्दार्थौ' 5 विकारीशब्द, संज्ञा, प्रातिपदिक 6 उपाधि, विशेषण यस्यार्थयुक्त गिरिराजशब्द कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्य –कु० १।१३, श० २।१४, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५, २।५३, ६४, ३।४९, ५।२२, १८।४१, विक्रम० १।१ 7 नाम, केवल नाम जैसा कि 'शब्दपति' में 8 शाब्दिक प्रामाणिकता (नैयायिकों के द्वारा 'शब्द प्रमाण' माना जाता है) । सम० अतीत (वि०) शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय अधिष्ठानम् कान, अध्याहारः (शब्दन्यूनता को पूरा करने के लिए) शब्दपूर्ति,–अनुशासनम् शब्दों का शास्त्र अर्थात् व्याकरण, अर्थ शब्द के अर्थ (षो–ष० त०) शब्द और उसका अर्थ अदोषौ शब्दार्थौ- काव्य० १, अलङ्कार वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तो उसका सौन्दर्य लुप्त हो जाता है (विप० अर्थालङ्कार) उदा० दे० काव्य० ९, आख्येय (वि०) शब्दों में भेजा जाने वाला समाचार मेघ० १०३ (श्रम्) मौखिक या शाब्दिक सन्देश, आडम्बर बाजागल, वाक्प्रपञ्च, शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द, आदि (वि०) 'शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय) रघु० १०।२५, कोशः अभिधान, शब्दसंग्रह, गत (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला, ग्रह 1 शब्द पकड़ना 2 कान, चातुर्यम् शैली की निपुणता, वाक्पटुता, चित्रम् कविता की अलिष्ट शैली के दो उपभेदों में से एक (अक्षर या अक्षम) (इस प्रकार के काव्य में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्णमधुर होते हैं, 'चित्र' के अन्तर्गत दिया हुआ उदाहरण देखो), चौरः 'शब्दचोर' साहित्यचोर, तन्मात्रम् ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व, –वृत्तिः नाममात्र स्वामी, ई का प्रभु–ननु शब्दपति क्षितेरहं त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः–रघु० ८।५२, पातिन् (वि०) शब्द सुन कर ही अचूक निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना लगाने वाला–रघु० ९।७३, प्रमाणम् शाब्दिक या मौखिक प्रमाण, बोध. मौखिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान ब्रह्मन् (नपु०) 1. वेद 2 शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा या परमात्मसम्बन्धी ज्ञान उत्तर० २।७ २० 3 शब्द का गुण, 'स्फोट', भेदिन् (वि०) शब्दवेधी निशाना लगाने वाला (पु०) 1 अर्जुन का विशेषण 2 मुद्गा 3 एक प्रकार का बाण, योनिः (स्त्री०) धातु, मूल शब्द,—विद्या, शास्त्रम्, शास्त्रम् शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण –अनन्तपार किल शब्दशास्त्रम्–भट्ट० १, शि० २।११२, १४।२४, विरोध. (शास्त्र में) शब्दों का विरोध, विशेषः ध्वनि का एक भेद,– वृत्ति (स्त्री०) साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, वेधिन् (वि०) ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला दे० 'शब्दपातिन्' (पु०) 1 अर्जुन का विशेषण 2 एक प्रकार का बाण, शक्तिः (स्त्री०) शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता—दे० शक्ति, शुद्धि (स्त्री०) 1 शब्दों की पवित्रता 2 शब्दों का शुद्ध प्रयोग,–श्लेषः शब्द में अनेकार्थता, द्व्यर्थकता (यह अलङ्कार 'अर्थश्लेष' से इसलिए भिन्न है कि इसके संघटक शब्दों को हटाकर समानार्थक शब्दों को रख देने मात्र से शिष्टता नष्ट हो जाती है, जबकि 'अर्थश्लेष' अपरिवर्तित ही रहता है शब्दपरिवृत्तिसहत्वमर्थश्लेषे)–संग्रहः शब्दकोश, शब्दावली, सौष्ठवम् शब्दों का ललित्य, ललित और प्राञ्जल शैली सौष्ठवम् अभिव्यक्ति की सरलता ।

शब्दक (वि०) [शब्द+स्वुल्] शब्द करनेवाला, ध्वननशील नम् ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करना 2 आवाज़, कोलाहल 3 पुकारना, बुलाना 4 नाम लेना ।

शब्दायते (नामधातु आ०) 1 कोलाहल करना, शोर करना शब्दायन्ते मुखरमनिलं कीचका पूर्यमाणा - मेघ० ५६ 2 ध्वनन करना, दहाड़ना, चिल्लाना, सीं सीं करना भट्टि० ५।५२, १७।९१ 3 बुलाना, पुकारना एते हस्तिनापुरवासिन जनाय शब्दायन्ते श० ४, मुद्रा० ६, मृच्छ० १, वेणी० ३ ।

शब्दित (भू० क० कृ० [शब्द+क्त] 1 ध्वनित, आवाज़ निकाली गई, (सामान्यतया) बजाया गया 2 कहा गया, उच्चारण किया गया 3 बुलाया गया, पुकारा गया 4 नाम रखा गया, अभिहित ।

शम् (अव्य०) [शाम्+विच्] कल्याण, आनन्द, समृद्धि, स्वास्थ्य को क्षेम करने वाला अव्यय, आशीर्वाद या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (सम० या सर्व० के साथ) सं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा

(आधुनिक पत्रों में शुभ समाप्तिसूचक प्रयोग -इति शम्)। सम०--कर दे० धातु के नीचे, तालि (वि०) आनन्द प्रदान करने वाला, मंगलमय, शुभ पाक 1 लाल, महावर, लाल रंग 2 पकाना, परिपक्व करना, भू दे० धातु के नीचे।

शम् : (दिवा० पर० शाम्यति, शान्त) 1 शान्त होना, चुप होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः --कु० २।४० रघु० ७।३, शान्तो रसः --उत्तर० ६।७ 2 थमना, ठहरना, समाप्त होना - चिन्ता शशाम सकलाऽपि सरोरुहाणाम् --भामि० ३।७, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति मनु० २।९४, 'संतुष्ट नहीं होता' 3 शांत होना, बुझना--शशाम वृष्ट्यापि विना हुताग्निः रघु० २।१४, उत्तर० ५।७ 4 काम तमाम करना, नष्ट करना मार डालना (इसी अर्थ में कथा० भी) --प्रेर० (शमयति--ते, परन्तु देखना अर्थ में 'शामयति ते' दे० शम् ४) 1 प्रसन्न करना, उपशमन करना, शान्त करना, धीरज देना, सांत्वना देना, ढाढस बंधाना क शीतलैः शमयिता वचनैस्तमाधिम् भामि० ३।१, शि० ५।७ 2 अन्त करना, रोकना --कु० २।५६ 3 हटाना, परे करना--प्रतिकूलं दैवं शमयितुम् शि० १ 4 दमन करना, पालतू बनाना, हराना, छीनना, पराजय करना शमयति गजानन्यान् गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्--विक्रम० ५।१८, रघु० ९।१२, ११।५९ 5 मार डालना, नष्ट करना, वध करना--वेणी० ५।५ 6 शान्त करना, बुझाना मेघ० ५३, हि० १।८८ 7 त्याग देना, रुकना, थमना, उप . 1 शान्त करना - भट्टि० २०।५ 2 थमना, ठहरना, बुझना 3 हट जाना, बोलना बन्द होना परे रहना, बुझ जाना --प्रशान्त पावकाः स्वयम् उत्तर० ६ 5 मुर्झाना, कुम्हलाना (प्रेर०) 1 सांत्वना देना, प्रसन्न करना, शान्त करना,--मनु० ८।३९१ 2 दूर करना, बुझाना, शीतल करना, दबा देना --त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवम्--मेघ० १७ 3 हटाना, अन्त करना--तम् (अपचार) अन्विष्य प्रशमयेत्--रघु० १५।४७ 4 जीतना, परास्त करना, वशीभूत करना--मृच्छ० १०।६० 5 प्रतिष्ठित होना, समझना करना, स्वस्थचित्त होना प्रशमयसि विवाद कल्पसे रक्षणाय- शि० ५।८, शम् , 1 शान्त करना 2 निराकृत होना, बुझना, लुप्त होना--सस्य सशाम्यतीव मे --भट्टि० १८।२८ 3 हट जाना।

II (चुरा० उभ० शामयति--ते) 1 देखना, निगाह डालना, निरीक्षण करना 2 बतलाना, प्रदर्शन करना, दि , 1. देखना, अवलोकन करना 2 सुनना, कान देना निशामय प्रियसखि--मा० ७।

शमः [शम्+घञ्] 1 मूकता, शान्ति, धैर्य 2 विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति 3 वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव, मानसिक शान्ति, विरक्ति --शमरतेःप्रभवत्तेजसि पार्थिवे रघु० ९।४, कि० १०।१०, १६।४८, शि० २।९४ शि० २।७, भग० १०।४ 4 निराकरण, लघूकरण, उन्नयन, सन्तोषीकरण, (शोक, प्यास, भूख आदि का) प्रशमन शमम्पुपयातु ममापि चित्तदाहः उत्तर० ६।८, शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से शा० ४।२० 5 शान्ति, जैसा कि 'शमोपन्यास' वेणी० ५ 6 (संसार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष 7 हाथ। सम०--आत्मकः कामदेव (मानसिक शान्ति को नष्ट करने वाला), --धर (वि०) शान्त, मूक, विषयविरागी।

शमथः [शम्+अथच्] 1 शान्ति, स्थिरता, विशेषतः मानसिक शान्ति, आवेशाभाव 2 परामर्शदाता, मन्त्री।

शमन (वि०) (स्त्री०--नी) [शम्+णिच्+ल्युट्] शमन करने वाला, दमन करने वाला, वशीभूत करने वाला आदि,--नम् 1 प्रसन्न करना, निराकरण करना, ढाढस बंधाना जीतना, उन्नयन करना 2 स्थैर्य, शान्ति 3 अन्त, ठहराव, समाप्ति, विनाश 4 चोट पहुँचाना, घायल करना 5 यज्ञ के लिए पशुबध करना, पशुमेध 6 निगल जाना, पचाना,--नः 1 एक प्रकार का हरिण, बारहसिंगा 2 मृत्यु का देवता, यम। सम० स्वसृ (स्त्री०) 'यमस्वसा' यमुना नदी का विशेषण।

शमनी [शमन+ङीप्] रात। सम० सखः (शखः) राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत।

शमलम् [शम्+कलच्] 1 मल, कीट, विष्ठा 2 अपवित्रता, गंदा, तलछट 3 पाप, नैतिक मलिनता।

शमित (भू० क० कृ०) [शम्+णिच्+क्त] 1 प्रसन्न किया गया, निराकृत, ढाढस बंधाया गया, शान्त 2 पीया किया गया, चिकित्सा की गई, भारमुक्त किया गया 3 विश्राम दिया गया 4 शान्त, सौम्य परिमित किया गया, मृदु किया गया।

शमिन् (वि०) [शम+इनि] 1 सौम्य, शान्त, प्रशान्त 2 जिसने अपने आवेशों का दमन कर लिया है, आत्मनियन्त्रित भट्टि० ७।५।

शमी (शमि) [शम्+इन्, ङीप् वा] 1 एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें आग रहती है) अग्निगर्भा शमीमिव शा० ४।२, मनु० ८।२४७, याज्ञ० १।३०२, 2 फली, छीमी, सेम। सम० गर्भः 1 अग्नि का विशेषण 2. ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण, --धान्यम् फलियों में उत्पन्न या दाल आदि, द्विदलीय अन्न।

शम्या [शम्+या+क] बिजली।

शम्ब् १ (भ्वा० पर० शम्बति) जाना, हिलना-डुलना। ११ (चुरा० पर० शम्बयति) संचय करना, ढेर लगाना।

शम्ब (व) [शम्ब्+अच्] 1 प्रसन्न, भाग्यशाली 2. बेचारा, अभागा,- ब: 1 इन्द्र का वज्र 2. मूसली का लोहे का बना शिर 3 लोहे की जञ्जीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय 4 नियमित रूप से हल चलाना 5 जुते हुए खेत में हल चलाना (जबाड़ दोबारा हल चलाना)।

शम्बर: [शम्ब्+अरच्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था 2 पहाड़ 3 एक प्रकार का हरिण 4 एक प्रकार की मछली 5 युद्ध,--रम् 1 जल 2. बादल 3 दौलत 4 संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान। सम०-अरि, सूदन: प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण, असुर: शंबर नामक राक्षस।

शम्बरी [शम्बर+ङीष्] 1 माया, जादू 2 स्त्री जादूगरनी।

शम्बल:,--लम् [शम्ब्+कलच्] 1 तट, किनारा 2 *पाथेय, मार्गव्यय, राहखर्च* 3 *स्पर्धा, ईर्ष्या*।

शम्बली [शम्बल+ङीष्] कुटनी।

शम्बु, शम्बुक, शम्बूक: [शम्ब्+उण्, शम्बु+कन्] द्विकोषीय घोंघा।

शम्बूक: [शम्ब्+ऊक] 1 द्विकोषीय घोंघा 2 शंख 3 घोंघा 4 हाथी की मूंड की नोक 5 एक शूद्र (इसे राम ने उसकी जाति के लिए वर्जित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उत्तर० २, तथा रघु० १५।

शम्भ: [शम् +भ] 1. प्रसन्न मनुष्य 2 इन्द्र का वज्र।

शम्भली [शम्भ+ङीष्] दूती, कुटनी।

शम्भु (वि०) [शम्+भू+डु] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला—भु: 1 शिव 2 ब्रह्मा 3. ऋषि, अक्षय पुण्य 4 एक प्रकार का सिद्ध। सम०-तनय: स्कन्द:,--सुत: कार्तिकेय या गणेश के विशेषण, प्रिया 1 दुर्गा 2 कमल की,-अम्बुजम् श्वेत कमल।

शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1 लकड़ी की छड़ी या खूंटी 2 डंडा 3 जूए की कील, सिलम 4 एक प्रकार की झाँझ 5 यज्ञीय पात्र।

शय (वि०) (स्त्री०—या, यी) [शी+अच्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्राय: समास के अन्त में) —*राजिशागरपरो दिवाशय*—रघु० १९।३४, इसी प्रकार उत्तानशय, पार्श्वशय, वृक्षशय, विलेशय आदि, -य: 1 नींद 2. बिस्तरा, शय्या 3 हाथ 4 साँप विशेषत अजगर 5 दुर्वचन, कोसना, अभिशाप।

शयथ (वि०) [शी+अथच्] निद्रालु, सोया हुआ,—थ: 1 मृत्यु 2 एक प्रकार का साँप, अजगर 3 मछली।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1 सोना, निद्रा, लेटना 2. बिस्तरा, शय्या -शयनस्थो न मुञ्जीत मनु० ४।७४, रघु० रघु० १।९५ विक्रम० ३।१० 3 मैथुन, संभोग। सम० -अ (आ) गार:, रघु,—गृहम् शयनकक्ष, सोने का कमरा, एकादशी आषाढ़ शुक्ला एकादशी (इस दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं),--सखी एक शय्या पर साथ सोने वाली सहेली -स्थानम् सोने का कमरा, शयनकक्ष।

शयनीयम् [शी+अनीयर्] बिस्तरा, शय्या, -परिवृत्य शयनीयमध्य से रघु० ८।६६ कान्तासमागम्य शयनीय शिलातल से-- उत्तर० ३।२१ (इसी अर्थ में शयनीय-कम्)।

शयानक: [शी+शानच् +कन्] 1 गिरगिट 2 एक साँप, अजगर।

शयालु (वि०) [शी+आलुच्] निद्रालु, नन्दालु, आलसी शि० २।८०, लु: 1 एक प्रकार का साँप, अजगर 2 कुत्ता 3. गीदड़।

शयित (भू० क० कृ०) [शी कर्तरि क्त] 1 सोने वाला, विश्रान्त, सुप्त 2 लेटा हुआ।

शयु [शी+उ] बड़ा साँप, अजगर।

शय्या [शी आधारे क्यप्+टाप्] 1 बिस्तरा, बिछौना —शय्या भूमितलम् शान्ति० ४।९, मही रम्या शय्या नर्तु० ३।७९, रघु० ५।६६ 2. बाँधना, नत्थी करना। सम० अध्यक्ष:, पाल राजा के शयन-कक्ष का अधीक्षक, उत्सङ्ग: पलंग का एक पार्श्व, —गत (वि०) 1 पलंग पर लेटा हुआ 2 रोगी, गृहम् शयन-कक्ष, रघु० १६।४।

शर [शृ+अच्] 1 बाण, तीर—*शर च निशितनिपाता वज्रसारा धरास्ते* श० १।१० 2 एक प्रकार का सफेद सरकंडा या घास *शरकाण्डपाण्डुगण्डस्थला* —मालवि० ३।८, *मुञ्जेन सोता शरपाण्डुरेण* रघु० १४।२६, शि० ११।३० 3 कुश जमे हुए दूध की मलाई, मलाई 4 चोट, क्षति, घाव पाँच की संख्या, रघु पानी। सम० अग्र: बढ़िया तीर, अभ्यास: तीरंदाजी, -आसनम्, आस्यम् धनुष, कमान रघु० ३।५२, कु० ३।६४, -आलेय तीरों की वर्षा,—आरोप, आधाय: धनुष,—आधाय: तरकस —आहत (वि०) जिसके तीर लगा हो, -ईषिका बाण, इक्ष: आम का वृक्ष, ओघ: बाणों का समूह, बाणवर्षा काण्ड: 1 सरकुंडा की डंडी 2 बाण की लकड़ी, घात बाण से लक्ष्यवेध करना, तीरंदाजी, जन्मन् लावा मक्खन —जन्मन् (पु०) कार्तिकेय का विशेषण—रघु० ३।२८,-जालम् बाणों का समूह या ढेर

—धिः तरकस, धरः बाण का छोड़ना, °स्थानम् बाण का निशाना, -पुङ्खः, पुङ्खा बाण का पंखदार किनारा,—फलम् बाण का फल -भङ्गुः एक ऋषि जिसके दर्शन राम ने दण्डकारण्य में किये थे रघु० १३।४५, —भूः कार्तिकेय,—शस्त्रः धनुर्धर, तीरंदाज, —शल्यम् (शल्यम्) नरकुली का अगमुट मेघ० ४५, °शङ्खकः, °शयः कार्तिकेय के विशेषण,—शयः बाणों की वर्षा या बौछार, शल्यिः 1 बाण का सिरा 2 धनुर्धर 3 बाणनिर्माता 4 पदाति,—शृष्टिः (स्त्री०) बाणों की बौछार -सात बाणों का समूह,—संधानम् बाण का निशाना लगाना -सन्धानं नाटयति—शा० १, —सन्धाय (वि०) बाणों से ढका हुआ, सल्यम् नरकुली का गुच्छा।

शरट. [शृ+अटन्] 1 गिरगिट 2 कुसुम्भ।

शरणम् [शृ+ल्युट्] 1 प्ररक्षा, सहायता, माहात्म्य, प्रतिरक्षा —रघु० १४।६४, विक्रम० १।३, उत्तर० ४।२३ 2 आसरा आश्रयस्थान —कु० ३।८, पंच० २।२३ 3 ओट, सहारा, विश्रामस्थल (व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त)—सुराभुम्य जगत शरणम्—कि० १८।२२, सतां नाना त्वमसि शरणम् मेघ० ७, शरण गम् हैं -या शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना यामि हे कपिनह शरणम् गीत० ७ 4 देवालय, गोचारागार, कक्षा—अग्निशरणमार्गमादेशय पा० ५ ३ आवास, घर, निवासस्थल मुद्रा० ३।१५, मनु० ६।९ 6 भट, किल, मोद 7 लाभ, हत्या। सम० आयिन् (वि०) एषिन् (वि०) शरण या रक्षा देने वाला,—मनु० २।७६, - आगत, आपन्न (वि०) प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी, उन्मुख (वि०) शरण या प्ररक्षा खोजने वाला—रघु० ६।२१।

शरण्य. [शृ+अण्य] 1 पक्षी 2 गिरगिट 3 ठग, धूर्त 4 लम्पट, स्वेच्छाचारी 5 एक प्रकार का आभूषण।

शरण्य (वि०) [शरणे साधु यत्] 1 रक्षा करने के योग्य, शरण देने वाला, प्ररक्षक, आश्रय असौ शरण्यः शरणार्थिनामुक्तानाम्—रघु० ६।२१, शरण्यो लोकानाम् महावी० ४।१, रघु० २।३०, १४।६४, १५।२, कु० ५।७६ 2 जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन, दयनीय, ण्यः शिव का विशेषण, ण्यम् 1 आश्रयस्थल, शरणगृह 2 प्ररक्षक, जो शरणागत की रक्षा करता है 3 प्ररक्षा, प्रतिरक्षा 4. क्षति, चोट।

शरण्यु [शृ+अन्यु] 1 प्ररक्षक 2 बादल 3 हवा।

शरद् (स्त्री०) [शृ+अदि] 1. पतझड़, शरदृतु (आश्विन तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु),—बाभार्य षोडशमासं त शक्तेः प्रथमं शरद् रघु० ४।२४ 2 वर्ष,—त्वं जीव शरदः शतम्—रघु० १०।१, उत्तर० १।२५, मालवि० १।१५। सम०—अन्तः शरद् का अन्त, सर्दी का मौसम, अम्बुधरः शरदृतु का बादल, —उदन्वत्: शरत्कालीन सरोवर, -कारिन् (पु०) कुत्ता, -कालः शरत् काल, पतझड का मौसम, जलः, —मेघः शरदृतु का बादल, वक्त्रः (शरच्चन्द्र) शरत्कालीन चन्द्रमा, विभावरी शरत्कालीन रात्रि, पद्मः,—वधूः श्वेत कमल, पर्वन् (नपु०) को, आश्विन नाम का उत्सव, मुखम् शरदृतु का आरम्भ।

शरदा [शरद्+टाप्] 1 पतझड 2 वर्ष।

शरदिज (वि०) [शरदि जायते—जन्+ड, सप्तम्या अलुक्] पतझड या शरदृतु से सम्बन्ध रखने वाला।

शरभः [शृ+अभच्] 1 हाथी का बच्चा 2 आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैर का जन्तु जो सिंह से बलवान् होता है शरभकुलमाजिघ्रः प्रोद्धरन्यस्यूकपात्—ऋतु० १।२३, अष्टपाद शरभ सिंहघाती महा० 3 ऊँट 4 टिड्डा 5 टिड्डी।

शरयूः (यू) (स्त्री०) [शृ+अयु, पक्षे ऊङ्] एक नदी, सरयू, दे० सरयु (यू)।

शरल (वि०) [शृ+अलच्] दे० सरल

शरलकम् [शरल+कन्] पानी।

शरव्यम् [शरवे शरनिक्षेपाय हित—शरु+यत्] (तीर मारने का) निशाना, लक्ष्य (आल० से भी)—तौ शरव्यमकरोत्स नेतरान् रघु० ११।२७, कृता शरव्या हरिणा तवासुरा —शि० ९।२९, रघु० ७।४५, शि० ७।२४, व्यसनक्षतशरव्यतां गता - का०।

शरारिः, रिः [शर+अट् (अत्)+इन्] एक प्रकार का पक्षी।

शरारु (वि०) [शृ+आरु] अहितकर, अनिष्टकर, क्षतिकारक।

शरावः,—वम् [शर इव्यादिसारमवति। अव्+अण्] 1 कम गहरा बर्तन, खाली मिट्टी का तौला, कसोरा, तस्करी मोदकशरावं मुहीत्वा—विक्रम० ३, मनु० ६।६५ 2 ढकना, ढक्कन 3 दो कुडव के बराबर नाप।

शरावती [शर+मतुप्+ङीप्, दीर्घ वकारश्च] वह नगर जिसका शासक राम ने लव को बनाया था रघु० १५।९७।

शरिरम् (पु०) [शृणाति शोषनम् शृ+इसन्] पैदा करना, जन्म देना।

शरीरम् [शृ+ईरन्] (जड चेतन पदार्थों की) काया, देह, —शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् कु० ५।३३ 2 सकटक तत्त्व—काव्या० १।२० 3 दैहिक शक्ति 4 मृत शरीर, शव। सम० -आवरणम् 1. शरीर का आन्तरिक भाग 2 दूसरा शरीर,—आवरणम् 1. खाल, चमडी,—कर्तृ (पु०) पिता,—कर्मन् शरीर की

कृशता, ज्व. 1. रोग 2 काम, प्रणयोन्माद 3. कामदेव 4 पुत्र, सन्तान—कि० ४।३१,—तुल्य (वि०) समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—दण्ड 1 शारीरिक दंड 2 कायं-साधना (जैसा की तपस्या में), धृक् (वि०) शरीरधारी, पतनम्, पातः मृत्यु, मौत,—पाक (शरीर की) कृशता,—बद्ध (वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी कु० ५।३०, बन्ध. 1 शारीरिक ढाचा रघु० १६।२३ 2 शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का जन्म—रघु० १३।५८—बन्धक. सशरीर प्रतिभू,—भाज् (वि०) शरीरधारी, शरीरी (पु०) जन्तु, शरीरधारी प्राणी,—भेद (आत्मा से) शरीर का वियोग, मृत्यु, —यष्टि (स्त्री०) पतला शरीर, सुकुमार, दुबला-पतला, -यात्रा आजीविका,—विमोक्षणम् आत्मा का शरीर से छुटकारा, मुक्ति, वृत्ति. (स्त्री०) शरीर का पालनपोषण—रघु० २।४५,—व्यसनम् शारीरिक रोग, बीमारी, व्याधि शुश्रूषा व्यक्तिगत सेवा, —संस्कार 1 व्यक्ति की सजावट 2 नाना प्रकार के गृह्यसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल करना,—संपत्ति (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अच्छा) स्वास्थ्य,—सादः शरीर की दुर्बलता, कृशता—रघु० ३।२, स्थिति (स्त्री०) 1 शरीर का पालन-पोषण —रघु० ५।९ 2 भोजन करना, खाना (क० में बहुधा प्रयुक्त)।

शरीरकम् [शरीर+कन्] 1 देह 2 छोटा शरीर,—क आत्मा।

शरीरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शरीर+इनि] शरीरधारी, शरीरयुक्त, शरीरी—करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी उत्तर० ३।४, मालवि० १।१० 2 जीवित (पु०) 1 कोई भी शरीरधारी वस्तु (चाहे जड़ हो चाहे चेतन) शरीरिणा स्थावरजंगमाना सुखाय तज्जन्मदिन बभूव-कु० १।२३, रघु० ८।४३ 2 सजीव प्राणी 3 मनुष्य आत्मा (शरीर से युक्त) —रघु० ८।८९, भग० २।१८।

शर्करवत् [शृ+करन्+जन्+ड+टाप्] कंकड़युक्त चीनी, मिश्री।

शर्करा [शृ+करन्+टाप्] 1 कंकड़युक्त चीनी 2 ककड़ी, रोड़ी, बजरी मृच्छ० ५ 3 कंकरीला कण 4 बालू से युक्त भूमि, रेत 5 टुकड़ा, खण्ड 6 ठीकरा, 7 कोई भी कड़ा कण जैसा कि 'जलशर्करा', पानी का कण अर्थात् ओला 8 पथरी का रोग। सम० उदकम् खाण्डमिश्रित जल, चीनी डाल कर मीठा किया हुआ पानी, सप्तमी वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान।

शर्करिल (वि०) (स्त्री०—ली) शर्करिल (वि०) [शर्करा+ठक्, इलच् वा] ककरीला, बजरीदार, किरकिरा।

शर्करी (स्त्री०) 1 नदी 2 करधनी, मेखला।

शर्धः [शृध्+घञ्] 1 अपानवायु का त्याग, अपहार (इस अर्थ में नपु० भी होता है) 2 दल, समूह 3 सामर्थ्य, शक्ति।

शर्धंजह (वि०) [शर्धं+हा+खश्, मुम्] अपहार उत्पन्न करने वाला,—हू उड़द या माष की दाल।

शर्धनम् [शृध्+ल्युट्] अपानवायु को छोड़ने की क्रिया।

शर्ध् (भ्वा० पर० शर्धति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

शर्मन् (पु०) [शृ+मनिन्] ब्राह्मण के नाम के आगे जोड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्, तु० वर्मन्, दास, गुप्त (नपु०) 1 प्रसन्नता, आनन्द, सुख-त्यजन्त्यमूरुशर्म न मानिनो वर त्यजन्ति न त्वेकमयाचित व्रतम्-नै० १।५०, रघु० १।६९, भर्तृ० ३।९७ 2 आशीर्वाद 3 घर, आधार (इस अर्थ में बहुधा वैदिक)। सम० द (वि०) आनन्ददायक (—द) विष्णु का विशेषण।

शर्मरः [शर्मन्+रा+क] एक प्रकार का परिधान, वस्त्र।

शर्वरी [शृ+वन्+ङीप्] 1 रात्रि 2 अंगुली।

शर्व् (भ्वा० पर० शर्वति) 1 जाना 2 चोट पहुंचाना क्षति पहुंचाना, मार डालना।

शर्वः [शृ+व] 1 शिव—रघु० ११।९३ कु० ६।९० 2 विष्णु।

शर्वरः [शृ+वरच्] कामदेव, नपुं० अन्धकार।

शर्वरी [शृ+वनिप्, ङीप्, वलोर च] 1 रात अर्थात् पुनरेति शर्वरी रघु० ८।९३, ३।२, ११।९३, शि० ११।५ 2 हल्दी 3 स्त्री। सम० ईश चन्द्रमा।

शर्वाणी [शर्व+ङीष्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शर्वारीक (वि०) [शृ+ईकन्, द्वित्वादि] उपद्रवी दुष्ट, —क: धूर्त, पाजी, दुर्जन।

शल् I. (भ्वा० आ० शलते) 1 हिलाना, हरकत देना सुन्न करना 2 काँपना।

II (भ्वा० पर० शलति) 1 जाना 2 तेज दौड़ना।

III (चुरा० आ० शालयते) प्रशंसा करना।

शलः [शल्+अच्] 1 साँप, बर्छी 2 मेघ 3 भृगु नाम का शिव का एक गण 4 अहंकार, नपुं० साही का काँटा (कुछ के अनुसार पु० भी)।

शलकः [शल+कन्] मछली, मछरा।

शलभः [शल+अलच्] राजा, प्रभु।

शलभः [शल्+अभच्] 1 टिड्डा, टिड्डी रा० १।३२ 2 पतंगा कौरव्यवशादवेक्ष्यन्ति क एव शलभायते वेणी० १।१९, शि० २।११७, कु० ४।४०।

शल्यकम् [शल्+अकच्] साही का काटा, ली 1 साही का काटा 2 छोटी साही।

शलाका [शल्+आक, टाप्] 1 छोटी छड़ी, खूँटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला शीशा—अयस्कान्तशलाका- मा० १ 2 पेन्सिल (आँख में सुर्मा आजने की) सलाई—अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ शिक्षा० ५८, कु० १।४७, रघु० ७।८ 3 बाण 4 सींग, नेजा 5 एक नोकदार शल्योपकरण (घाव की गहराई नापने के लिए) 6 छतरी की तीली 7 (हाथ पैर की अंगुलियों की गद्दी) हड्डी—याज्ञ० ३।८५ 8 अंकुर, फुनगी, कोपल—कु० १।२४ 9 रंग भरने की कूची 10 दाँत साफ करने की कूची, दाँत-कुरेदनी 11 साही 12 हाथी दाँत या हड्डी का बना चूआ खेलने का आयताकार (पासा) टुकड़ा। सम०—चूर्ण (शलाकाचूर्ण) उचक्का, ठग, परि (अव्य०) जूए में मनहूस पासा पड़ना, तु० परि, अक्षपरि।

शलाटु (वि०) [शल्+आटु] अनपका, दुःखदविशेष।

शलाभोलि (पु०)-ऊँट।

शल्कम्, शल्कलम् [शल्+कन्, कलच् वा] 1 मछली का बल्कल या छिलका मनु० ५।१५, याज्ञ० १। १७८ 2 बल्कल, छाल (वृक्षों की) 3 भाग, अंश, खण्ड।

शल्कालिन्, शल्किन् (पु०) [शल्कल् (शल्क)+इनि] मछली।

शल्म् (भ्वा० आ० शल्मते) प्रशंसा करना।

शल्मलि, —ली (स्त्री०) [शल्+मलच्+इन् पक्षे ङीष्] रेशमी रूई का वृक्ष, सेमल।

शल्यम् [शल्+यत्] 1. बर्छी, नेजा, साग 2 बाण, तीर, शल्य निशातमुद्धारयतामुरस्तः रघु० ९।७८, शल्य-प्रोतम् ९।७५, शि० ६।१, 3 काँटा, खपच्ची 4. मेख, खूँटी, धूणी (उपर्युक्त चारों अर्थों में पु० भी होता है) 5 शरीर में घुसा हुआ कोई पीड़ा कारक काँटा आदि शल्यमुद्धरन्ति—उत्तर० ३।३५ 6 (अल०) हृदयविदारक शोक या किसी तीक्ष्ण पीड़ा का कारण —उद्धृतविषादशल्यः कथयिष्यामि—वेणी० ७ 7 हड्डी 8 कठिनाई, कष्ट 9 पाप, जुर्म 10 विष, शल्यः 1 साही, साहु चूहा 2. काँटेदार झाड़ी 3 (आयु० में) शल्यचिकित्सा में शरीर के अंगों का उच्छेदना 4 साह, सीमा 5 एक प्रकार की मछली 6 मद्रदेश का राजा, पाण्डु की द्वितीय पत्नी माद्री का भाई, नकुल और सहदेव का मामा (महाभारत के युद्ध में उसने पाण्डवों की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु दुर्योधन ने चालाकी से उस पर प्रभाव डाल कर उसे अपनी ओर कर लिया, अन्तत वह कौरवों की ओर से लड़ा। कर्ण के सेनापति बनने पर वह उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे गौरव सेना का सेनापतित्व मिला। एक दिन तक उसने सेनापतित्व का भार सम्भाला, परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे मौत के घाट उतार दिया)। सम० अरिः युधिष्ठिर का विशेषण, आहरणम्, उद्धरणम्, उद्धारः, क्रिया, —शास्त्रम् काटा या फाल आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से सम्बन्ध रखता है,—शङ्कुः साहु चूहा, लोमन् (नपु०) साही का काँटा, हृत् (पु०) निरैया, निराने वाला।

शल्यक [शल्य+कन्] 1 सींग, नेजा, सलाख 2. खपच्ची, फाल, काटा 3 साहु चूहा, साही।

शल्कः [शल्+अच्] मेंढक, शल्कम् बल्कल, छाल।

शल्लकः [शल्ल+कन्] वृक्ष, सोण वृक्ष,—कम् बल्कल, छाल।

शल्लकी [शल्लक+ङीष्] 1. साही 2 एक वृक्ष विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है—तु० उत्तर० २।२१, ३।६, मा० ९।६, विक्रम० ४।२३। सम० —अन्न धूप, लोबान।

शल्वः [शल्+वन्] एक देश का नाम, दे० 'शाल्व'।

शव् (भ्वा० पर० शवति) 1. जाना, पहुँचना 2 बदलना परिवर्तन करना, रूपान्तर करना।

शवः, वम् [शव्+अच्] लाश, मुर्दा शरीर -मनु० १०।५५, वम् जल, आच्छादनम् मृतक शरीर का आवरण, कफन,—आश (वि०) मुर्दा खाकर जीने वाला—भट्टि० १२।७५,—काम्या कुत्ता आवप्, —यः मुर्दा ढोने की गाड़ी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं।

शवर, शबल दे० शबर शाबल।

शवसान [शव+असानच्] 1 यात्री 2 मार्ग, सड़क, —वम् कब्रिस्तान, श्मशानस्थान।

शश [शश्+अच्] 1 खरगोश, खरहा—मनु० ३।२७०, ५।१८ 2 चन्द्रमा का कलंक (जो खरगोश की आकृति का समझा जाता है) 3 कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद। ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं मृदुवचनसुशील कोमलाग सुकेश, सकलगुणनिधान अल्पवादी शशोऽयम्—शब्द०, दे० रति० ३५ भी 4 लोध्र वृक्ष 5 बांस नामक घासदार गोद। सम० अङ्कः 1. चांद 2 कपूर °अर्धमुख (वि०) अर्धचन्द्राकार सिर वाला (बाण आदि) °भृत्, चन्द्रमा का विशेषण °रेखा चांद की कला, चन्द्रकला, —शः 1 बाज, श्येन 2 पुरञ्जय के पिता इक्ष्वाकु का एक

पुष्प, अक्षतः बाण, प्रवेग,- कर्मन्, —लोमन् खरगोश के बाल, खरहे की त्वचा, वरः 1 चन्द्रमा—प्रसरति शशधरबिम्बे गीत० ७ 2 कपूर °क्षीकिः शिव का विशेषण, नखम् नखक्षत, नाखून का घाव, भृत् (पु०) चाँद °भृत् (पु०) शिव का विशेषण,—लक्षणः चाँद का विशेषण,—लाञ्छनः 1. चन्द्रमा कु० ७।६, 2 कपूर—बिं(बि) कुः 1 चाँद 2 विष्णु का विशेषण, —विषाणम्—शृंगम् खरगोश का सींग (असम्भव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त (असम्भावना) कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् —भर्तृ० २।५, शशभृच्छ्रुवनुधंर —दे० 'अपूप', स्थली गंगा यमुना के बीच की भूमि, दोआबा।

शशकः [शश+कन्] 1 खरगोश, खरहा 2 शश (३)।

शशिन् (पु०) [शशोऽस्त्यस्य इनि] 1 चाँद शशिन पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५६, ६।८५, मेघ० ४१ 2 कपूर। सम० -ईश, शिव का विशेषण,—कला चन्द्रमा की एक लेखा मुद्रा० १।१, —कान्तः चन्द्रकान्तमणि (-न्तम्) कमल,- कोटि चन्द्रभृङ्ग, ग्रहः चन्द्रमा का ग्रहण, ज बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र), -प्रभ (वि०) चन्द्रमा की कान्ति वाला, चाँद जैसा उज्ज्वल और श्वेत रघु० ३।१६, (-भम्) कुमुदिनी,—प्रभा चाँद का प्रकाश,—भूषणः, भृत्, (पु०) मौलिः, शेखरः शिव के विशेषण, लेखा चन्द्रमा की कला।

शश्वत् (अव्य०) [शस्+क्वत्, वा] 1 लगातार, अनादि काल से, सदा के लिए 2 सतत, बार-बार, सदैव, हुत, पुनः पुनः—रघु० २।४५, ४।७०, मेघ० ५५ 3 समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है 'टिकाऊ, नित्य' यथा शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति।

शष्कुः (स्कु) स्त्री [शष् (स्)+कुलच् ङीप्] कान का बिदर श्रवण-मार्ग अवलम्बितकर्णशष्कुलीकलसीकं श्लेष्मलवोचत नै० २।८, याज्ञ० ३।९६ 2 एक प्रकार की पकी हुई रोटी, याज्ञ० १।१७३ 3 आवले की खाजी 4 कान का एक रोग।

शष्पः (ष्पा) [शष्+पक्] प्रतिग्राश्रय, ओषान का अभाव, —ष्पम् नया घास उत्तर० ४।२७, रघु० २।२६।

शस् 1 (स्वा० पर० शसति) काटना, मारडालना, नष्ट करना, वि—काट डालना, मार डालना उत्तर० ४। 2 (अदा० पर० शस्ति) मानना, तु० 'शंस्' से भी।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1 घायल करना, मार डालना 2 बलि, मेध, (यज्ञ में पशु का)।

शस्त (भू० क० कृ०) [शस्+क्त] 1 प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया 2 शुभ आनन्द प्रद 3 यथार्थ, सर्वोत्तम 4 अतिशस्त, घायल 5 वध किया हुआ, —स्तम् 1 आनन्द, कल्याण 2 श्रेष्ठता, मांगलिकता 3 शरीर 4 अंगुलित्राण (इसी अर्थ में 'शस्तकम्' भी)।

शस्तिः (स्त्री०) [शस्+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1 हथियार, आयुध क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति सुभा० - रघु० २।४०, ३।५१, ६२, ५।२८ 2 उपकरण, औजार 3 लोहा 4 इस्पात, 5 स्तोत्र। सम० अभ्यासः शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक व्यायाम, —अयसम् 1 इस्पात 2 लोहा,—अस्त्रम् प्रहार करने और फेंक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र 3 आयुध या शस्त्र, आजीवः उपजीविन् (पु०) पेशेवर सिपाही,—उद्यमः (प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना, उपकरणम् युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र सैनिक सामग्री, - कारः शस्त्रनिर्माता कोशः किसी हथियार का म्यान, आवरणम्,- धारिन् (वि०) (युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला उत्तर० ५।३३,—धीरिन्, कुशल (पु०) शस्त्र प्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक, देवता 1 आयुधों की अधिष्ठात्री देवता 2 देवरूपकृत हथियार, घरः शस्त्रभृत्,—न्यासः हथियार डाल देना, इसी प्रकार शस्त्र (परि) त्यागः

पाणि (वि०) शस्त्र धारण करने वाला शस्त्रों से सुसज्जित (पु०) सशस्त्र योद्धा, पूत (वि०) 'शस्त्रों द्वारा परिशोधित' युद्धक्षेत्र में मारे जाने से मुक्त अशस्त्रपूत निर्व्याजं (महाभाष्य)—भा० ५।१। (दे० शस्त्र की अपनी कृत व्याख्या) अहमपि सदा शिवप्रतिज्ञार्थकलापपरिक्षणकृतशस्त्रपूत मनोभवपरिहासिनी० २, प्रहारः हथियार से किया गया आघात

भृत् (पु०) सैनिक, योद्धा - रघु० २।४०,—मार्ज हथियार साफ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, सिक्थकोशः विद्या शस्त्रास्त्र शस्त्र विज्ञान, संहतिः (स्त्री०) 1 शस्त्रसङ्ग्रह 2 आयुधागार, सहसा: हथियारों का अकस्मात् गिरना, हत (वि०) हथियार से मारा गया, हस्त (वि०) शस्त्रधारी (स्तः) शस्त्रधारी मनुष्य।

शस्त्रकम् [शस्त्र+कन्] 1 इस्पात 2 लोहा।

शस्त्रिकः [शस्त्रक+ठक्, इत्वम्] चाकू।

शस्त्रिन् (वि०) [शस्त्र+इनि] शस्त्रधारी, हथियारबंद शस्त्रास्त्र से सुसज्जित।

शस्त्री [शस्त्र+ङीष्] चाकू—यज्ञपशोर्यत्र विवेकशस्त्रिका शस्त्रीषु पशुयोग क— सुभा०, शि० ४।४०।

शस्यम् [शस्+यत्] 1. अन्न, धान्य दुहाते स्म स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम् रघु० १।८६ 2 किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज - शस्य क्षेत्र

गत प्राहु सतुष धान्यमुच्यते—दे० 'तण्डुल' भी 3 गुण। सम० ओदन् अन्न का खेत, अन्नज (वि०) अन्नहारी, अनाज खाने वाला, अन्नारी अनाज की बाल, -आलिन् (वि०) जिसका खेत हरा भरा खड़ा हो,—आलिन्, संपन्न (वि०) अन्न या धान्य से परिपूर्ण, सूकम् अनाज का सिट्टा,—संपद् (स्त्री०) अनाज की बहुतायत, सस्य (पु) दे० साल का वृक्ष, साल का पेड़।

शाक, कम् [शक्यते भोक्तुम् √शक्+घञ्] शाक, साग-भाजी, साहपत्ने, फल या कन्द जो शाक की भाँति उपयोग में लाये जायें—दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा मनोरथान् पूरयितु समर्थः, अन्यें-र्पाले परिदीयमाने शाकाय का स्वाल्पकथाय का स्यात् अप०,—कः 1 शक्ति, सामर्थ्य 2 सागौन का वृक्ष 3 शिरीष का वृक्ष 4 एक जाति का नाम—दे० शक 5 वर्ष, विशेषतः शालिवाहन सवत्सर। सम०—अङ्गम् मिर्च, अम्लम् महाटा इमली। आह्वयः सागौन का वृक्ष, (क्यम्) शाकभाजी आहार शाकभाजी खाने वाला (वनस्पति शाकर जीवित रहने वाला), पूर्णिका इमली, -सह. सागौन का वृक्ष, पत्रः 1 मुट्ठीभर भार के बराबर साल 2 मुट्ठीभर शाकभाजी,—वार्धिकः अपने नाम से वर्ष चलाने का कौकीन, दे० मध्यमपदलोपिन्, प्रति (अव्य०) बीजी सी वनस्पति,—वीरः धन्या-वृक्षः सागौन का पेड़, शालिकम् साग भाजी का खेत, रसोई के योग्य सब्जियों का उद्यान।

शाकट (वि०) (स्त्री०—टी) [शकट+अण्] 1 गाड़ी सम्बन्धी 2 गाड़ी में बैठकर जाने वाला, -टः 1 गाड़ी खींचने वाला बैल 2 लवणयुक्त वृक्ष (नपु०) खेत दे० शाकशाकटम्।

शाकटायन [शकटस्यापत्यम् शकट+फक्] भाषा-विज्ञान और व्याकरण का पण्डित जिसका पाणिनि और यास्क ने कई बार उल्लेख किया है दे० व्याकरणे शकटस्य च तोकम् सिद्ध०।

शाकटिक (वि०) (स्त्री० की) [शकट+ठक्] 1 गाड़ीसम्बन्धी 2. गाड़ी में बैठकर जाने वाला।

शाकटीन [शकट+खञ्] गाड़ी में लगाने योग्य बोझ, बोझ ढोने के समान बोझ की तोल।

शाकल (वि०) (स्त्री० ली) [शकल+अण्] टुकड़े से सम्बन्ध रखने वाला,—लः ऋग्वेद की एक शाखा, इस शाखा के अनुयायी (ब०व०)। सम०—प्रातिशाख्यम् ऋग्वेद का प्रातिशाख्य, शाखा ऋग्वेद का परम्परागत पाठ जो शाकल शाखा में उपलब्ध है।

शाकल्यः [शकलस्यापत्यम् यञ्] एक प्राचीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है (कहा जाता है कि इसी ने ऋग्वेद के पद-पाठ को व्यवस्थित किया था)।

शाकारी (स्त्री०) प्राकृत का एक निम्नतम रूप, चकार द्वारा बोली गई बोली जैसा कि मृच्छकटिक में।

शाकिनम् [शाक+इनच्] खेत जैसा कि 'शाकशाकिन' में।

शाकिनी [शाकिन्+ङीप्] 1. साग-भाजी का खेत 2. दुर्गा-देवी की सेविका (जो एक पिशाचिनी या परी समझी जाती है)।

शाकुन (वि०) (स्त्री०—नी) [शकुन+अण्] 1. पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला—मनु० ३।२६८ 2. शकुन सम्बन्धी 3 शकुनसम्बन्धी।

शाकुनिकः [शकुनेन पक्षिवधादिना जीवति ठक्] बहेलिया, चिड़ीमार—मृच्छ० ६, मनु० ८।२६०, कम् शकुनों की व्याख्या।

शाकुनेय [शकुनि+ढक] छोटा उल्लू।

शाकुन्तल [शकुन्तला+अण्] भरत का मातृपरक नाम (शकुन्तला का पुत्र) कम् कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक।

शाकुनिकः [शकुन+ठक्] मछुआ, मछली मारने वाला।

शाकृतः [शकृत्+अण्] बैल।

शाक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शक्ति+अण्] 1 शक्ति-सम्बन्धी 2 दिव्यशक्ति की स्त्री प्रतिमा से सम्बन्ध रखने वाला, क्तः शक्तिपूजक (शाक्त लोग प्रायः दुर्गा के उपासक होते हैं, दुर्गा ही दिव्यशक्ति की स्त्रीमूर्ति है, अनुष्ठान पद्धति दो प्रकार की है, दक्षिण अर्थात् दक्षिणाचार तथा अपवित्र अर्थात् वामाचार)।

शाक्तिकः [शक्ति+ठक्] 1 शक्ति का पूजक 2. बर्छी-धारी, भाला रखने वाला।

शाक्तीक [शक्ति+ईकक्] बर्छी रखने वाला, भालाधारी।

शाक्तेयः [शक्ति+ढक] शक्ति का उपासक।

शाक्यः [शक्+यक्, तस्य चापु, यत्] 1 बुद्ध के कुटुम्ब का नाम 2 बुद्ध। सम० सिंहः बौद्धसिंह, मुनिः, सिंहः बुद्ध के विशेषण।

शाक्री [शक्र+अण्+ङीप्] 1. इन्द्र की पत्नी शची 2 दुर्गादेवी।

शाक्वरः [शक्वर+अण्] बैल, तु० 'शाकरः'।

शाखा [शाखति वर्धन व्याप्नोति—शाख्+अच्+टाप्] 1 (वृक्ष आदि की) डाली शाख—बाहवर्त्य शाखाः —रघु० १६।१९ 2 भुजा 3. दल, अनुभाग, गुट 4 किसी कार्य का भाग या उपभाग 5 सम्प्रदाय, शाखा, पन्थ 6. परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी सम्प्रदाय द्वारा आम्नायप्राप्त परम्परागत पाठ तथा व्याकरण शाखा, आश्वलायन शाखा, शाकल शाखा आदि। सम० चन्द्रन्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, नगरम्, पुरम् नगराञ्चल, नगर परिसर, सिंहः

शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों में सूजन, -भुज् (पु०) वृक्ष, -भेदः (बेर की) शाखाओं का अन्तर, -मृगः 1 बन्दर, लंगूर 2 गिलहरी, -राज अपनी शाखा के प्रति द्रोह करने वाला, वह ब्राह्मण जिसने अपनी वैदिक शाखा को बदल दिया है, -रथ्या गली, वीथिका।

शाखाकः [शाखा+ला+क] एक प्रकार का बैंत वानीर।

शाखिन् (वि०) [शाखा+इनि] 1 शाखाधारी (आल० से भी) 2 शाखाओं से युक्त, शाखामय 3 (वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला—(पु०) 1 वृक्ष श० १।१५ 2 वेद 3 वेद की किसी भी शाखा का अनुयायी।

शाखोटः, शाखोटक [शाख्+ओटन, शाखोट+कन्] एक वृक्ष, पेड़—कन्दं भो कथयामि दैवहतक मा विद्धि शाखोटकम्—काव्य० १०।

शाखूर [शाखा+अण्] बैल।

शाखूरि [शाखूर+इञ्] 1 कार्तिकेय 2 गणेश 3 अग्नि।

शाङ्खिक [शङ्ख+ठक्] 1 शङ्खकार, शङ्ख को काट कर उनकी चीजें बनाने वाला 2 एक वर्णसङ्कर जाति 3 शङ्ख बजाने वाला—शि० १५।७२।

शाट, शाटी [शट्+घञ्, शाट+ङीष्] 1 वस्त्र, कपड़ा 2 अधोवस्त्र, साड़ी।

शाटक, -कम् [शाट+कन्] 1 वस्त्र, कपड़ा अधोवस्त्र साड़ी—पञ्च० १।१४४।

शाठ्यम् [शठ+ष्यञ्] बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, जालसाजी, दुष्कर्म—आत्मनश्च शाठ्यमनिक्षिप्तं न शं० ५।२५, मुद्रा० १।१।

शाण (वि०) (स्त्री० णी) [शणेन निर्वृत्तम्-अण्] सन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ,—ण 1 कसौटी—भामि० १।७३, मनु० ७।४४, 2 मान रखने वाला पत्थर 3 आरा 4 चार माशे की तोल, णम् 1 मोटा कपड़ा, खुरदरा या मैला वस्त्र 2 सन का बना वस्त्र मनु० २।४१ १०।८७। सम०—द्वारम् शाल्वनिर्मितम्, सिंहद्वार।

शाणिः [शण्+इन्] एक पौधा जिसके रेशों से वस्त्र बनता है, पटुआ।

शाणित (भू० क० कृ०) [शण्+णिच्+क्त] शाण पर रखा हुआ, पीसा हुआ, (शाण पर रख कर) पैनाया हुआ।

शाणी [शण+ङीष्] 1 कसौटी 2 मान 3 आरा 4 सन का बना वस्त्र 5 फटा कपड़ा, चिथड़ा 6 छोटा पर्दा या तम्बू 7 अवधिविशेष, हाथ या आँख आदि से संकेत करना।

शाणीरम् [शण्+ईरच्] सोन नदी का तट, सोन नदी का मुहाना।

शाण्डिल्य [शण्डिल+यञ्] 1 एक ऋषि जिसने विधिशास्त्र पर ग्रन्थ लिखा 2 बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़ 3 अग्नि का रूप। सम० -गोत्रम् आदित्य का परिवार।

शात (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1 तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ 2 पतला, दुबला 3 दुर्बल, कमजोर 4 सुन्दर मनोहर 5 प्रसन्न फलना-फूलना,—तः घतूर का पौधा तम् आनन्द प्रसन्नता, खुशी मानिनीजनमानिनशातम्—गीत० १०। सम०—उदरी कृशोदरी पतली कमर वाली स्त्री—शि० ५।२३, रघु० १०। ६०,—शिख (वि०) तेज नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार।

शातकुम्भम् [शातकुम्भे पर्वते भवम् अण्] 1 सोना,—शि० ४।४ नै० १६।३४ 2 धतूरा।

शातकौम्भम् [शातकुम्भ+अण्] सुवर्ण, सोना।

शातनम् [शो+णिच्+ल्युट्] 1 पैनाना तेज करना 2 काटने वाला विनाशकारी रघु० ३।४ 3 गिराना या नष्ट करना 4 कुम्हलाहट पैदा करना 5 पतला या छोटा होना पतलापन 6 मुझाना कुम्हलाना।

शातपत्रक, -त्री [शतपत्र+अण्+कन्] भौंरा का प्रकार।

शातशीत [शाता दुर्बलः पान्था भीरवो यस्या—ब० स०] एक प्रकार की मक्खी।

शातवान् (वि०) (स्त्री० वती) [शातमस्यास्ति मतुप् अस्य वः] एक सौ से युक्त जिसके सौ हों।

शातिर (वि०) (स्त्री०—री) [शठ+अण्] 1 धोखेबाज रघु० ६।२२ 2 विश्वासी धोखेबाजी से पूर्ण, ई दुष्कर्म लि० १४,४४, १४।२०, वेणी० ५।१ भट्ट० ५, ८१ लि० १४। मुद्रा० २।५ अव 1 शठों का समूह 2 धोखा, दुष्कर्म वेणीसंहार शातय रघु०।

शात्रवीय (वि०) [शत्रु+छ] 1 शत्रुसम्बन्धी 2 विरोधी शत्रुतापूर्ण।

शाद [शद्+घञ्] 1 छोटी घास 2 कीचड़। सम० हरित् तम् नयी घास के कारण हरियाली भूमि वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है)

शाद्वल (वि०) [शादा मत्वर्थीय वलच्] 1 तृणयुक्त 2 जहाँ नई घास, या हरी हरी घास उग आई हो 3 हरा भरा, सरस, हरियाली से युक्त—लः, लम् घास से युक्त भूमि, हरियाली, घासफूस वाला शाद्वलम् शाद्वलि०।

शान् (स्वा० उभ० शानयति-ते—वि०सन्नन्त शा से शान का इच्छा० रूप, मूल अर्थ में प्रयुक्त) तेज करना पैनाना।

शानः [शान+अण्] 1 कसौटी 2 मान का पत्थर। सम०—द्वारः 1 चन्दन पीसने का पत्थर 2 पानी पर पर्वत।

शान्त (भू० क० कृ०) [शम्+क्त] 1 प्रशमन किया हुआ, दमन किया हुआ, खारिज किया हुआ, सन्तुष्ट किया हुआ, प्रशान्त-रघु० १२।२० 2. चिकित्सित, सान्त्वना दिया हुआ -शान्तरोग 3 बताया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, बुझाया हुआ शान्तरक्षोभपरिश्रमम् -रघु० १।५८, ५।४७, शान्तक्रियं दीपशिख प्रकाशते कि० १७।१६ 4. विरत, ठहराया हुआ कु० ३।४२ 5 मृत, उपरत 6. शान्त किया हुआ, दबाया हुआ 7. सौम्य, चुपचाप, वाक्हीन, निस्तब्ध, मूक, मौन शान्तमिदमाश्रमपदम् श० १।१६, ४।१९ 8. बझाया हुआ, पाला हुआ - रघु० १४।७९ 9 आवेशरहित, आराम से, सन्तुष्ट 10 छायादार 11 संविधोक्त 12 शुभ (शकुन) (शान्त वाचयन् 'बहुत अच्छा' नहीं, यह कैसे हो सकता है, भगवान् करे ऐसी अशुभ या दुर्भाग्यपूर्ण घटना न घटे' श० ५, मुद्रा० १)। न 1 दैनन्दी, सन्तोष 2 शान्ति, निस्तब्धता, मौनभाव, सांसारिक विषय वासनाओं के प्रति उदासीनता की प्रभावना, दे० निर्वेद और रस,-तम् (अव्य०) कम और नहीं, ऐसा नहीं शब्द की अन्त है, चुप रहो, भगवान् न करे शान्तं पाप दुर्जनेषु पौरजानपदा उत्तर० १, सादेव शान्तमथवा विमिहोमरेण ३।२६। सम० आत्मन्, -चेतस् (वि०) सौम्य, शान्तमना, धीर, स्वस्थमना, शीघ्र (वि०) जिसका पानी स्थिर हो,—रसः मौनभाव—दे० उ० शान्तम्।

शान्तनव [शन्तनु+अण्] शन्तनु का पुत्र भीष्म।

शान्ता [शान्त+टाप्] दशरथ की पुत्री जिसे लोमपाद ऋषि ने गोद ले लिया था तथा जो ऋष्यशृङ्ग को ब्याही गई थी। दे० उत्तर० १।४, 'ऋष्यशृङ्ग भी।

शान्ति (स्त्री०) [शम्-क्तिन्] 1 प्रशमन निराकरण सान्त्वना, हटाव —अक्षरविधानशान्त्यर्थं रघु० ११।१, ६२ 2 धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, प्रशमन-चैन विश्राम - कु० ४।१७, मा० ६।१ 3 वैराग्य भाग० १।२५ 4 विराम, निवृत्ति 5 आवेश का अभाव मौनभाव, सभी सांसारिक भोगों के प्रति पूर्ण उदासीनता-रघु० ३।७१ 6 सान्त्वना, शमन 7 शान्तस्वस्थविश्राम, विरोधोपशमन 8 शुभ की सूचित 9 प्रायश्चित्त अनुष्ठान, पाप को दूर करने के लिए तुष्टिप्रद अनुष्ठान 10 सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद, मङ्गलिकता 11 दोषशमन, कलंक से मुक्ति, परित्राण। सम०—उदक,-उदकम्,-जलम् शान्तिकर तथा प्रभावपूर्ण जल श० १,-कर, कारिन् (वि०) शान्तिक, शमनकर, सुखद, विघ्नशमनकर,—होम पाप का निवारण करने के लिए यज्ञ करना—मनु० ४।१५०।

शान्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [शान्ति+कन्] प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, तुष्टिकर, अशुभ संकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान।

शान्त्व दे० 'सान्त्व'।

शाप: [शप्+अञ्] 1 अभिशाप, अवकोश, फटकार -शापेनास्त गरिमगरिमा दर्शनस्योन्मुखेन मेघ० १, १२, रघु० १।७८, ५।५६, ५९, ११।१४ 2 सौगन्ध, शपथोक्ति 3 दुर्वचन, मिथ्या आरोप। सम०-अन्त: -अवसानम्, निवृत्तिः (स्त्री०) अभिशाप की समाप्ति, मेघ० ११०, रघु० ८।८२, अन्त: 'अभिशाप की हद' जिसने अपना आयुष्य बढ़ाया है' ऋषि, मङ्गल्या रघु० १२।२ —उत्सर्ग: अभिशाप का उच्चारण, उद्धार',—मुक्ति',—मोक्ष: अभिशाप से छुटकारा, उक्त (वि०) अभिशाप से डरकर परिभ्रमण करने वाला,-मुक्त (वि०) अभिशाप से जिसने छुटकारा पा लिया है,--अन्वित (वि०) अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण।

शापित (भू० क० कृ०) [शप्—णिच्+क्त] 1 सौगन्ध से बद्ध हुआ, शपथपूर्वक उक्त 2 गृहीतशपथ, जिसने शपथ ले ली है।

शाप्तरिक 'शाकराद् हन्ति-शप्तार—ठक्] मछुआ, मछली पकड़ने वाला।

शाब (अ) र (वि०) (स्त्री०-री) [शब (ब) र+अण्] 1 अशस्य, अगली 2 नीच, कमीना, अधम र: 1 अपराध, दोष 2 पाप, दुष्टता 3 लोध्र नामक वृक्ष दे० प्रकृत कोशों का एक विम्लकल्प (पहाड़ी लोगों में दोना आने वाला। सम० -लोध्रकम् (लोध्रकम् भी) लोध्र।

शाबल (वि०) (स्त्री०-ली)[शबल+अण्] 1 शबल सम्बन्धी या शबल से व्युत्पन्न 2 ध्वनि पर निर्भर या ध्वनि सम्बन्धी (विप० आर्थ)3 शाब्दिक, मौखिक 4 शमनशील मृदु,—ल: वैयाकरण। सम०-बोध: शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण,—व्यञ्जना शब्दों पर आधारित व्यञ्जोक्ति।

शाब्दिक (वि०) (स्त्री० की)[शब्द+ठक्] 1. ध्वन्यात्मक, मौखिक 2 निनादी,—क: वैयाकरण।

शाभन [शभन—अण्] शभ शब्द 1. शुभ्र, श्वेत 2 शान्ति, शमन-चैन 3 शान्त, जो दक्षिण दिशा।

शाभिक्षम् [शम्—णिच्—इषच्] 1 यज्ञ करना 2. मेघ, यज्ञ में पशुवध करना 3 यज्ञ के लिए अभिषिक्त दीक्षना 4 यज्ञीय पात्र।

शामित्रम् [शमी—ष्ट्रन्] अग्नि, राख।

शामित्री [शामित्र+ङीष्] यज्ञीय सुवा, स्रुच्।

शाम्बरी [शम्बर—अण्+ङीष्] 1. जादूगरनी, जादूगरी 2 जादूगरनी।

शाम्भविकः [शम्भु+ठक्] शंभु का उपासक।
शाम्भु (भू) क, [शम्भुक+अण्] त्रिकोणाकार घोंघा।
शाम्भव (वि०) (स्त्री० वी) [शम्भु+अण्] शिव-सम्बन्धी अनु शाम्भवी गणपतेरनु क्षुधाने पत्नी पंच० १।१५९,—व 1 शिवोपासक 2 शिव जी का पुत्र 3 कार्तिकेय 4 एक प्रकार का विष—वम् वैदहार वृक्ष।
शाम्भवी [शाम्भव+ङीप्] 1. पार्वती 2 एक पौधा, मीमदुर्वा।
शायक [शो+ण्वुल्] 1 बाण 2 तलवार, तु० सायक।
शार् (चुरा० उभ० शारयति, ते) 1 दुर्बल करना 2 कमजोर होना।
शार (वि०) [शार्+अच्, पृ- पक्षा० वा] विचित्रवर्ण धब्बेदार, चितकबरा, चंचल, —र 1 रंगबिरंगा रंग 2 हरा रंग 3 हल्का, बाघ 4 अजगर का साहरा गोट भट्टि० ३।३९ 5 क्षति पहुँचाने वाला, आघात करने वाला।
शारङ्ग [शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०] 1 चातक पक्षी 2 मोर 3 भौंरा 4 हरिण 5 हाथी, तु सारंग।
शारङ्गी [शारङ्ग+ङीष्] एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है, तु० सारंगी।
शारद (वि०) [शरदि भवम् अण्] 1 पतझड़ से संबंध रखने वाला, शरत्कालीन, इस अर्थ में स्त्री०—शारदी है) विमलशारदचन्द्रिकाचन्द्रिका —भामि० १।११३, रघु० १०।२ 2 वार्षिक 3 नया, नूतन 4 अनुभव-हीन नौसिखिया 5 निर्लज्ज, बेशर्मी लज्जालु 5 शर्मालु, साहसहीन, द 1 वर्ष 2 शरत्कालीन बीमारी 3 शरत्कालीन फूल 4 एक प्रकार का लोबिया या उड़द 5 बकुल का वृक्ष मौलसिरी,—दी कार्तिक मास की पूर्णिमा,—वम् 1 अनाज धान्य 2 श्वेत कमल, वा 1 एक प्रकार की वीणा या सारंगी 2 दुर्गा 3 सरस्वती।
शारदिक [शरद्+ठक्] 1 शरत्कालीन रोग 2 शरत्कालीन फूल या सर्दी, कम् शरत्कालीन या वार्षिक श्राद्ध।
शारदीय (वि०) [शरद्+छ] शरत्कालीन, पतझड़ संबंधी।
शारि: [शृ+इन्] 1 शतरंज का साहरा, गोट 2 छोटी गोल गेंद 3 एक प्रकार का पासा, रि (स्त्री०) 1 मादिका पक्षी, मैना 2 जानसाड़ी, बाल 3 हाथी की झूल। सम०—पट्ट,—फलम्,—फलक,—कम् शतरंज खेलने की बिसात,।
शारिका [शारि+कन्+टाप्] 1 एक पक्षी, मैना 2 सम्बद्धक वाद्ययन्त्रों को बजाने वाला गज 3 शतरंज खेलना 4 शतरंज का मोहरा, गोटी।
शारी [शारि+ङीष्] एक पक्षी मैना।
शारीर (वि०) (स्त्री०- री) [शरीर+अण्] 1. शरीर से संबद्ध शारीरिक, दैहिक 2 शरीरधारी, मूर्तिमान्, र शरीरधारी, जीवात्मा, मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा? साँड 3 एक प्रकार की औषधि।
शारीरक (वि०) (स्त्री० की) [शरीर+कन्+अण्] शरीर सम्बन्धी, —कम् 1 मूर्तिमान् जीव, जीव के स्वरूप की पृच्छा (ब्रह्मसूत्रों पर शङ्कराचार्य द्वारा लिखा गया भाष्य)। सम० सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र।
शारीरिक (वि०) (स्त्री०—की) [शरीर+ठक्] दैहिक शरीर संबंधी, भौतिक।
शार्क (वि०) (स्त्री०—की) [शृ+उकञ्] अनिष्टकर चोट पहुँचाने वाला उत्पादक।
शार्कर [शर्करा+अण् कन्] दानेदार चमकीली खांड मिसरी।
शार्करं (वि०) (स्त्री०—री) [शर्करा+अण्] 1 चीनी का बना हुआ, शर्करामिश्रित 2 पथरीला, कंकरीला र कंकरीला स्थान 2 दूध का झाग, दही 3 मलाई।
शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग+अण्] 1 सींग का बना हुआ सींग वाला 2 धनुर्धारी, धनुष से सुसज्जित —भट्टि० ८।१२३ र्ङ्गं—र्ङ्गम् 1 धनुष 2 विष्णु का धनुष। सम०—धन्वन् (पु०), —धर, पाणि—धृक् विष्णु के विशेषण।
शार्ङ्गिन् (पु०) [शार्ङ्ग+इनि] 1 तीरंदाज, धनुर्धारी 2 विष्णु का विशेषण धर्मसंरक्षणार्थं प्रवर्तितधनुषि शार्ङ्गिणि —रघु० १५।४ १२।७०, मेघ० ४६।
शार्दूल: [शृ+ऊलच् दुक् च] 1 व्याघ्र 2 चीता 3 सिंह 4 एक पक्षी 5 (समास के अन्त में) प्रमुख या पराक्रमी पुरुष, अग्रणी - जैसा कि 'नरशार्दूल' में, तु० कुञ्जर। सम०—क्रीडितम् 1 चीते की क्रीड़ा—कन्दर्पोद्रेपि यमायमं विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् - गीत० ४ 2 छन्द का वृत्त दे० परि० १।
शार्वर (वि०) (स्त्री०—री) [शर्वरी+अण्] 1 रात्रि-कालीन—रघु० ८।५८ 2 उपद्रवी, प्राणहर, —रम् अंधकार, घुप अंधेरा,—री रात।
शास् (स्वा० आ० शास्ते) 1 प्रशंसा करना, खुशामद करना 2 चमकना 3 घृणित होना—किं० ५।४४ पर मल्लि० 4 कहना।
शाल: [शाल्+घञ्] 1 एक वृक्ष (बड़ा लंबा, और शानदार, —रघु० १।१८, शि० ३।४० 2 वृक्ष, पेड़,—रघु० १।१३, वेणी० ४।३ 3 साड़ी, शाल 4. एक प्रकार की मछली 5 राजा शालिवाहन। सम० शाल: विष्णु भगवान्

की आदर्श प्रस्तरमूर्ति जैसा कि शिवलिंग, 'शिरि पर्वत का नाम, 'शिखा शालग्राम स्थिर,—ग्रः,—शिलीय. सालवृक्ष का प्रकार, रघु० १।३१, मञ्जिका 1 गुड़िया, पुत्तलिका, मूर्ति—विक्र० १, मै० २।८१ 2 वेश्या, रंडी,—भञ्जी गुड़िया, पुत्तलिका,—वेष्टः साल के पेड़ से निकली राल, तु० 'साल',—वरः 1 उत्कृष्ट-वृक्ष 2 द्रौपी ।

शालक. [शाल+वन्—ड] लोध्र वृक्ष ।

शाला [शाल्+अच्+टाप्] 1 कक्ष, प्रकोष्ठ, बैठक, कंदरा—गृहेविशालेऽपि मुनिशालै —शि० ३।२०, इसी प्रकार मंत्रीशाला, रंगशाला आदि 2 घर, आवास —रघु० १६।४१ 3 वृक्ष की मुख्य शाखा 4. वृक्ष का तना । समः—अङ्गिरः, रस मिट्टी का कसोरा, -अग्रः गौडव,—वृक्षः 1 कुशा घास। ३।३२ 2 अंडिया हरिव 4 छिपकली 5 गौडव 6 अन्दर ।

शालाक (पु०) पाणिनि ।

शालाधिप (पु०) [शालाक—इन्] 1 शाला रखने वाला बहीखारो 2 अरीह 3 नाई ।

शालातुरीय [शलातुर+छ] पाणिनि का विशेषण (जन्म स्थान 'शलातुर' होने के कारण 'शालोत्तरीय' भी लिखा जाता है) ।

शालावत् [शाल:+चु+अच्] 1 शीघ्र, जल्दी 2 निडर ।

शालि [शाल्+णिनि] चावल —न शालेः स्तम्बकरिमा रघु [लभ्यपेक्षते मुद्रा० १।१३ एवा प्रकीर्णा न मलीन शालय मृच्छ० ४।१६ 2 गन्धद्रव्य । समः गोदन,—तण्डुल शालि (उत्कृष्टतम प्रकार का) —गोपी चावल के खेत की रखवाली करने वाली स्त्री, रघु० ४।३०, चूर्णः, पंक् चावल का आटा विष्टम् स्फटिक मणिमय चावल का खेत,—व्रीहिः शालि का एक विशेषण राजा जिसके नाम से शिलालेख ७८ में एक संवत्सर आरम्भ हुआ,—होत्र 1 पशुचिकित्सा पर ग्रन्थ लिखने वाला 2 घोड़ा,—होत्रिन् (पु०) घोड़ा ।

शालिक [शालि+कै+क] 1 धुनकिया 2 चावलों का व्यापारी, दुकान ।

शालिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [शाला+इनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1. सहित, युक्त, सम्पन्न, चमकीला, चमकदार—कि० ८।१३, ५५, भट्टि० ४।२ 2 घरेलू ।

शालिनी [शालिन्—ङीप्] 1 घर की स्वामिनी, गृहिणी 2 छन्द का नाम छ० परि० १ ।

शालीन (वि०) [शाला—खञ्] 1 विनीत, लज्जाशील, मर्यादा, लज्जालु विनम्रतापूर्ण स्वीकरण—शाकुं० ४, रघु० ६।८१, १८।३७, शि० १६।८३ 2 सभ्य, समान, नः गृहस्थ (शालीनौ तु विनयी सभ्याचार, विनम्र करना) ।

शालु: [शाल्—उण्] 1 मेंढक 2 एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, लु (नपु०) कुमुदिनी के फूल ।

शालुक (लू) कम् [शाल्—ऊकञ्] 1 कुमुदिनी की जड़ 2 जायफल, कः मेंढक ।

शालुक (लू) रः [शाल्—ऊर] मेंढक ।

शालेयम् [शालि—ढक्] चावलों का खेत ।

शालोत्तरीयः [शालोत्तरे ग्रामे भवः—छ] पाणिनि का विशेषण—दे० शालातुरीय ।

शाल्मल [शाल्—मलच्] 1 सेमल का पेड़ 2 भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक ।

शाल्मलिः [शाल्—मलिच्] 1 सेमल का पेड़—भामि० १।११५, मनु० ८।२४६ 2 भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक 3 नरक का एक भेद। समः स्थ. सेमल का विशेषण ।

शाल्मली [शाल्मलि+ङीष्] 1 सेमल का पेड़ 2 पाताल लोक की एक नदी 3 नरक का एक भेद। समः द्वीपः, वेष्टकः सेमल के पेड़ का गोंद ।

शाल्व [शाल्+क] 1 एक देश का नाम 2 शाल्व देश का राजा ।

शाव (वि०) (स्त्री०—वी) [शव—अण्] शवसम्बन्धी, (किसी स्त्रियेदार की) मृत्यु से उत्पन्न—दशाह शाव-मासौच मपित्रेयु विधीयते—मनु० ५।७९, ६१ 2 भूरे रङ्ग का गहरे पीले रङ्ग का ः किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्गक, मृगशावा वन्यपशुशावक स्व वय स्व परामन्यथो मृगशावै मनसेक्षितो मम —श० १।१८, मृगशावक रघु० ६।३, १८।३७ ।

शावक [शाव—कन्] किसी भी बन्य पशु का बच्चा ।

शावर दे० 'शाबर' ।

शाश्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [शश्वद् भवः अण्] नित्य, सनातन, चिरस्थायी शाश्वती समा राज्ञः । —उत्तर० ७।५) 'अनिश्चित वर्षों के लिए,' 'सदा के लिए' 'समस्त आगामी समय के लिए' उत्तर० ७।२३ रघु० १४।१४,—तः 1 शिव 2. आत्मा 3 सूर्य, तम् (अव्य०) नित्य, निरन्तर, सदा के लिए ।

शाश्वतिक (वि०) (स्त्री०—की) [शाश्वत+ठक्] नित्य, स्थायी सनातन, सतत—शाश्वतिको विरोधः 'वैरसिक विरोध' ।

शाश्वती [शाश्वत+ङीष्] पृथ्वी ।

शाष्कुल (वि०) (स्त्री०—ली) [शष्कुल+अण्] मांस (या मत्स्य) भक्षी ।

शाष्कुलिकम् [शाष्कुली+ठक्] पूरियों का ढेर ।

शास् (अदा० पर० शास्ति, शिष्ट) 1. अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, अधिशिक्षित (इस अर्थ में धातु द्विकर्म० है) शास्यमानं वर्म शास्ति—शिशु०, भट्टि० ६।१०. शिष्यमेतद् आदि में स्था प्रयुक्त—चक्र०

२।७ 2. राज्य करना, शासन करना, -अनन्यशासना-मुर्वीं शशासैकपुरीमिव—रघु० १।३०, १०।१, १४।८५, १९।५७, कु० १।१४, भट्टि० ३।५३ 3 आज्ञा देना, समादिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना - रघु० १२।३४, कु० ६।२४, भट्टि० ९।६८ - कहना, सम्बोधन देना, सूचित करना, (सप्र० के साथ) तस्मिन्नायाधने वृत्र अक्रमणायाशिषन्महत् -भट्टि० ६।२७, मनु० ११।८२ 5 उपदेश देना—स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् किं० १।५ 6 आदेश देना, राजाज्ञा लागू करना 7 दण्ड देना, सजा देना, निर्दोष बनाना, मनु० ४।१७५, ८।२९ 8 सधाना, वशीभूत करना, महावी० ६।२०, अनु० , 1 (क) उपदेश देना, प्रेरित करना—कु० ५।५, (ख) अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना, आदेश करना - रघु० ६।५९, १३।७५, भट्टि० २०।१७ 2 राज्य करना, शासन करना 3 सजा देना दण्ड देना वेणी० २ 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना, आ—, (बहुधा आ०) 1 आशीर्वाद देना, आशीर्वाद उच्चारण करना, अकृच्छ्रलभ्यस्त आशास्ते - शा० ४, उत्तर० १ 2 आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना (इस अर्थ में पर०) भट्टि० ६।४ 3 इच्छा करना, सोचना, आशा करना, प्रत्याशा करना —सर्वमस्मिन्नयमाशास्महे शा० ७, आशासत तत्र शान्तिमयन्त्रणीसहायत्—भट्टि० १७।१, ५।१९, मनु० ३।८० 4 प्रशंसा करना, इ , 1. अध्यापन करना, शिक्षण देना, उपदेश करना, भट्टि० १९।११, 2 आदेश देना, समादिष्ट करना —प्रणामि यन्मया कार्यम् मार्कण्डेय० 3 राज्य करना, शासन करना, प्रभु बनना—इदं प्रणामि गलितावधिकालम् मै० ५।२४, रघु० ६।७६, ९।१४ दण्ड देना, सजा देना 5 प्रार्थना करना, याचना करना, मनाना करना, (आ०) —इदं कविभ्य पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे उत्तर० १।१ (आपूर्वक शास् के अर्थ में प्रयुक्त)।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1 शिक्षण, अध्यापन, अनु० शासन 2 राज्य, प्रभुत्व, सरकार अनन्यशासना-मुर्वीम्—रघु० १।३०, इसी प्रकार 'अप्रतिशासनम्' 3 आज्ञा, आदेश, निदेश —तदधिरोपितं हरस्य शासन प्रमाणीकृतम्—शा० ६, रघु० ३।६९, १४।८३, १८। १८ 4 राजविज्ञप्ति, अधिनियम, राजाज्ञा 5 विधि, नियम 6 अवहार, राजा द्वारा दान की हुई भूमि, अधिकार-पत्र, यह स्वां शासनमतेन योजयिष्यामि —पंच० १, याज्ञ० २।२४०, २९ 7 पट्टा, दस्तावेज, लिखित समझौता 8. आदेशों का निबन्धन (समास के अन्त में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, दण्ड देने वाला, विनाशक, या मारक यथा स्मरशासन, पाकशासन)। सम० --पत्रम् 1 वह ताम्रपत्र जिस पर भूदान की राजाज्ञा खोदी गई हो 2 वह कागज जिस पर कोई राजाज्ञा अंकित हो. हारिन् (पु०) राजदूत, संदेशवाहक रघु० ३।६८।

शासित (भू० क० कृ०) [शास्+क्त] 1. राज्य किया गया, शासन किया गया 2 दण्डित।

शासितृ (पु०) [शास्+तृच्] 1 राज्य करने वाला, शासक 2 दण्ड देने वाला—शा० १।२५।

शास्तृ (पु०) [शास्+तृच्, इडभाव] 1 अध्यापक, शिक्षक 2 शासक, राजा प्रभु 3 शिव 4 बुद्ध या जैन धर्म का गुरु, आचार्य।

शास्त्रम् [शिष्यतेऽनेन-शास्+ष्ट्रन्] 1 आज्ञा, आदेश, नियम, विधि 2 वेदविधि, धर्मशास्त्र की आज्ञा 3 धार्मिक ग्रन्थ, वेद, धर्मशास्त्र, दे० नी० यमनियमपद ४ विद्याविभाग विज्ञान इति गुह्यतम शास्त्रम् - भग० १५।२०, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धि - रघु० १।१९, प्राय समास के अन्त में विषयवाचक शब्द के पश्चात् या उस विषय पर सुपरिष्ट-अध्ययन का सूचक अलङ्कार वेदान्त शास्त्र, न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, अलङ्कार शास्त्र आदि 5 पुस्तक, ग्रन्थ तन्त्रं पञ्चशिरोनामधेयं सुमनोहरं शास्त्रम् - पञ्च० १ 6 सिद्धान्त (विप० प्रयोग या अभ्यास)—मालवि० १। सम० --अतिक्रम अवमूल्यन वैदिक विधियों का उल्लङ्घन धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना अनु शासनम् वेदविधि का पालन या तदनुकूलता अभिज्ञ (वि०) शास्त्रों में निष्णात, अर्थ: 1 वेदविधि का अर्थ 2 वैदिक विधि या शास्त्रीय व्यवस्था, आचरणम् वेदविधि का पालन, उक्त (वि०) शास्त्रविधि से विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वेद, कानूनी, कार, कुल (पु०) 1 किसी धर्मशास्त्र का स्थापित 2 ग्रन्थ प्रणेता, - बोधित (वि०) शास्त्रों में निष्णात, गुरु दिखाऊ पाठक, इनका अध्ययन करने वाला (व्याकरण पक्षपाती बहुल (मनु०) व्याकरण (शास्त्रों का समझने के लिए बोध), ज्ञ, विद् (वि०) शास्त्रों का जानकार, ज्ञानम् धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की जानकारी, तत्त्वम् शास्त्रों में वर्णित सच्चाई यौगिक तत्त्व, दर्शिन् (वि०) धर्मशास्त्रों का ज्ञाता - दृष्ट (वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त दृष्टि (स्त्री०) शास्त्रीय दृष्टिकोण, द्रोहिन् शास्त्रों का द्रोह या उल्लङ्घनकारी, विज्ञानम्, विधि: शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा, -विप्रतिषेध:, -विरोध 1 शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि-विधान का अनवगति 2 वेद विधि के विरुद्ध आचरण, विमुख (वि०) अध्ययन से पराङ्मुख—पंच० १ विरुद्ध (वि०) शास्त्रों के विपरीत, अवैध, संस्कारवती,

व्युत्पत्ति (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का अन्तरंग ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता, विशिष्ट (पु०) काश्मीरदेश, सिद्ध (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित।

शास्त्रिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [शास्त्र इनि] शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल (पु०) शास्त्रों में पारंगत, विद्वान् पुरुष भगवान् पतंजलि।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रस्य विहितं छ] 1 वेदविहित, शास्त्रानुमोदित 2 वैज्ञानिक।

शास्य (वि०) [शास् यत्] 1 सिखलाये जाने योग्य, उपदेश दिये जाने योग्य 2 विनियमित या शासित किये जाने के योग्य 3 दण्डनीय, दण्डार्ह।

शि (स्वा० उभ० शिनोति, शिनुते) 1 तेज करना, पैनाना 2 क्षय करना, पतला करना 3 उत्तेजित करना 4 भाषण करना, शंसन करना।

शि [शि विच्] 1 भाग्यशालिता, स्वरसाम्यता 2 स्वस्थता, सौम्यता, आदि अमन-चैन 3 शिव का विशेषण।

शिखण्डा [शिखे पानि—शिख + पा + क, पृषो० साधु] 1 गौतम का वेध 2 अपाक यज्ञ।

शिखण्डु (वि०) [शिख् + कु, पृषो०] सुस्त, आलसी, अकर्मण्य।

शिखण्डम् [शिख + अच्, पृषो०] मोम, दे० सिक्थ।

शिखण्डिन्, शिखण्डी [अस् धन् कुत्वाभाव शि आदेश —शिखण्ड + टाप्] 1 (स्त्री से दुगना हुआ) छक्का, हीजड़ा 2 बहुतों पर मरदाना कर के आदि जाने वाला शोक।

शिखण्डिल (वि०) [शिखण्ड + शिच् + कल] छीके में लटकाया हुआ।

शिक्ष (भ्वा० आ० शिक्षते शिक्षित) सीखना, अध्ययन करना, आत्मार्जन करना, अधिकारपूर्वक पितृदेय धनादि का दावा करना ऋ० १।३१।

शिक्षक (स्त्री० शिक्षका, शिक्षिका) [शिक्ष् + ण्वुल्] 1 सीखने वाला 2 अध्यापक, सिखाने वाला —सम्प्रयोग (अर्थात् क्रिया और संज्ञादि) आयु न शिक्षकाणां धृनि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६।

शिक्षणम् [शिक्ष् + ल्युट्] 1 सीखना, अधिगम, आत्मार्जन 2 अध्यापन, सिखाना।

शिक्षमाण [शिक्ष् शानच्] शिष्य विद्यार्थी, विद्याभ्यासी।

शिक्षा [शिक्ष् भाव अ + टाप्] 1 अधिगम, अध्ययन, आत्माधिग्रहण ऋ० ९।६३ 2 किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्णात होने की इच्छा 3 अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण कामन्दकीयनीतिशास्त्र काव्य० १, अभूच्च नक्षं प्रतिपत्तिशिक्षया —रघु० ३।२५, मालवि० ४।९, रत्नशिक्षा 'मुद्रविज्ञान' 4. छ: वेदांगों में से एक जिसके द्वारा शब्दों का सही उच्चारण तथा सन्धि के नियम सिखाये जाते हैं 5 विनय, विनम्रता। सम० कर 1 अध्यापक, शिक्षक 2. शत्रु, वर इन्द्र का विशेषण, क्षमित (स्त्री०) कुशलता।

शिक्षित (भू० क० कृ०) [शिक्ष् + क्त, शिक्षा आस्तेऽस्य —तारा० इतच्] 1 अधिगत, अर्जित 2 अभ्यासित, सिखाया गया—अशिक्षितास्त्रत्वम् श० ५।२१ 3 प्रशिक्षित, अनुशासित 4. सधाया हुआ, विनयशील 5 कुशल, चतुर 6 विनीत, सलज्जशील। सम० आचार शिष्ट, आयुध (वि०) हथियारों के संचालन में अभिज्ञ।

शिखण्ड [शिखामर्हति—अम् + ड, सक० परुषम्] 1 मुण्डन संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा, चोटी, या दोनों पार्श्वों में छोड़े गये बाल, काकपक्ष 2. मोर की पूँछ।

शिखण्डक [शिखण्ड इव + कन्] 1 चूड़ाकर्म संस्कार के अवसर पर सिर पर रक्खी गई चोटी 2. सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये बाल (क्षत्रियों के लिए यह चोटी नीचे या पाँच इंची है) उत्तर० ४।१९, 3 कलगी, डालों का गुच्छा, चूड़ा या सेहरा 4 मयूर पुच्छ।

शिखण्डिकः [शिखण्डिन् + कै + क] मुर्गा।

शिखण्डिनिका दे० शिखण्ड (1)।

शिखण्डिन् (वि०) [शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि] कलगीदार, शिखाधारी (पु०) 1 मोर—नदति स एष बधूजनः शिखण्डी —उत्तर० ३।१८, रघु० १।३९, कु० १।१५ 2 मुर्गा 3 बाण 4 मोर की पूँछ 5 एक प्रकार की चमेली 6 शिव 7 द्रुपद के एक पुत्र का नाम (शिखण्डी मूलरूप से स्त्री था, क्योंकि अंबा ने भीष्म से बदला चुकाने के लिए द्रुपद के घर जन्म लिया (दे० अंबा)। परन्तु जन्म से ही उसे कन्या की पुत्रवत् में घोषणा की गई और पुत्र की भांति ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। समय पाकर उसका विवाह हिरण्यवर्मा की पुत्री से हुआ, परन्तु जब हिरण्यवर्मा को ज्ञात हुआ कि मेरा जामाता तो वस्तुतः स्त्री है तो उसे बड़ा दुःख हुआ, इसलिए उसने इस धोखा दिये जाने के कारण द्रुपद की राजधानी पर चढ़ाई करने की सोची। परन्तु शिखंडी ने एक जंगल में रह कर घोर तपस्या की, और किसी उपाय से उसने अपना स्त्रीत्व यक्ष को देकर उसका पुरुषत्व बदले में प्राप्त किया और इस प्रकार द्रुपद के ऊपर आए हुए संकट को टाला। बाद में यक्ष-

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह को मारने का एक साधन बना। जब अर्जुन ने शिखंडी को अपने योद्धा के रूप में आगे कर दिया तो भीष्म पितामह ने स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ खींच लिया। बाद में अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला)।

शिखण्डिनी [शिखण्डिन्+ङीप्] 1 मोरनी 2 एक प्रकार की चमेली 2 द्रुपद की पुत्री दे० ऊ० 'शिखंडिन्'।

शिखर, रम् [शिखा अस्त्यस्य-अर्श आद्यच्] 1 चोटी, पहाड का सिरा या शृंग -जगाम गौरी शिखरं शिखण्डिमत् कु० ५।७, १।४, मेघ० १८ 2 वृक्ष का सिर या चोटी 3 कलगी, चूडा 4 तलवार की नोक या धार 5 चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु 6 काव, वगल 7 बालो का कडा होना 8 अरबी चमेली की कली 9 एक लाल की भाति मणि। समः—वासिनी दुर्गा का विशेषण।

शिखरिणी [शिखरिन्+ङीप्] 1 नारीरत्न 2 दही मिश्रित खीर जिसमें मसाले पडे हो, श्रीखड 3. रोमावली जो वक्ष स्थल से चलकर नाभि को पार कर जाती है 4. एक छन्द का नाम दे० परि० १।

शिखरिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [शिखरमस्त्यस्य इनि] 1 चोटी वाला, शिखाधारी 2 नुकीला, शिखरयुक्त —शिखरिदशना मेघ० ८२, (पु०) 1 पहाड —इतश्च शरणार्थिना शिखरिणां गणाः शेरते भट्ट० २।७६, मघ० १३, रघु० ९।१२, २२ 2 पहाडी दुर्ग 3 वृक्ष 4. टिटिहरी 5 अनाज का दाना।

शिखा [शि—खक् तस्य नेत्वम्, पृषो०] 1 सिर की चोटी पर बालो का गुच्छा मुद्रा० ३।३०, शि० ४।५०, मा० १०।६ 2 चोटी, शिखाग्रन्थि 3 चूडा, कलगी 4 चोटी, शिखर, शीर्षबिन्दु कि० ६।१७ 5 तेज सिरा धार, नोक या सिरा मा० १।४, भामि० १।२ 6 वस्त्र का छोर मा० १।१४ 7 अग्नि ज्वाला प्रभामहत्या शिखयेव दीप्त कु० १।२८, रघु० १३।३४ 8 प्रकाश की किरण कु० २।३८ 9 मोर की कलगी 10 जटायुक्त जड 11 शाखा (विशेष रूप से जड पकडती हुई) 12 प्रधान या मुखिया 13 कामदेव। समः—अक्ष दीपाधार, दीवट,—अर मोर, "अम् मोर का पख, —आरः मोर, —मणिः चूडामणि, मुकुट 1 नाजर 2 मूली, —द्रुः कटहल का पेड,—द्रुम (वि०) नुकीला कलगीदार, (—मः) मोर —धरः दीपाधार, दीवट —बुद्धिः (स्त्री०) प्रतिदिन बदने वाला ब्याज।

शिखालुः [शिखा+आलच्] मोर की कलगी।

शिखावत् (वि०) [शिखा+मतुप्] 1 कलगीदार 2 ज्वालामय, (पु०) 1 दीपक 2 आग।

शिखिन् (वि०) [शिखा अस्त्यस्य इनि] —1 नुकीला 2 कलगीदार, शिखाधारी 3 चमडी (पु०) 1 मोर—पक्ष० १।१५९, विक्रम० २।२३ शि० ४।५० 2 अग्नि रिपुरिव सद्योत्सवाशाद्य शिखीव त्रिमानिल गीत० ७, पक्ष० ४।१।०, रघु० १९।५८, शि० १५।७ 3 मुर्गा 4 बाण 5 वृक्ष 6 दीपक 7 साँड 8 घोडा 9 पहाड 10 ब्राह्मण 11 साप 12 केतु 13 सोना की सख्या 14 चित्रक वृक्ष। समः —कण्ठम् —ग्रीवम् तूतिया, नीला थोथा रत्नम् 2 कार्तिकेय का विशेषण 2. बृहत् पिच्छम् पुच्छम् मोर की पूँछ, द्रुम,—वृषः बारहसिंगा वर्धकः गोल लौकी,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण शिखा 1 ज्वाला 2 मोर की कलगी।

शिग्रु [शि+क्रक् गुक् च] 1 सागपाजी 2 सहिजन का पेड।

शिङ्घ् (स्वा० पर० शिङ्घति) जाना, हिलना-डुलना।

शिङ्घ् (स्वा० पर०) सूघना।

शिङ्घाण [शिङ्घ्+आणक, पृषो० कलोप] 1 नासिका मल 2 बलगम कफ,—णम् 1 नाक की मैल, सिंघाण 2 लोहे का जग 3 सोने का बर्तन।

शिङ्घाणक कम् [शिङ्घ्+अणक] नासिकामल, सिंघाण क कफ, बलगम।

शिञ्ज् (स्वा० अदा० आ०, चुरा० उभ०—शिञ्जते, शिञ्जयति ते, शिञ्जित) टनटनाना, झनझनाना खडखडाना—शि० १०।६२।

शिञ्ज [शिञ्ज्+घञ्] टकार, झनझनाहट, टनटनाहट झनझन का ध्वनि विशेषकर झांझर आदि गहनो को झकार।

शिञ्जकशिञ्जका (स्त्री०) कटिबन्ध, करधनी।

शिञ्जा [शिञ्ज्+अ+टाप्] 1 टकार झकार और 2 धनुष की डोरी।

शिञ्जित (भू० क० कृ०) [शिञ्ज्+क्त] टकृत हुआ, झन् टकार, (झांझर आदि पहनना करना) अवः कर्जित राजहंसाना नेदे नूपुरशिञ्जितम् विक्रम० ४।१४।

शिञ्जिनी [शिञ्ज् शिनि+ङीप्] 1 धनुष की डोर 2 झांझर नूपुर (पैरो में पहना जाने वाला गहना)।

शिट् (स्वा० पर० शेटति) मुख साफ करना, थूक आदि निकालना, थूकना।

शित (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1 तेज किया हुआ पैनाया हुआ 2 पतला, कृश 3 घीसा हुआ थोडा दुर्बल बनाया। समः अग्रः काँटा, धारः तेज धार वाला, शुकः 1 जौ 2. गेहूँ।

शितांशु (स्वा०) गन्धर्वराज आम का मदी दे० गन्धर्व।

शिति (वि०) [शि+क्तिन्] 1 सफेद 2 काला १।२० १५।४८ —तिः अग्निशिखा। समः —अक्षः 1 [illegible]

का विशेषण —तस्यात्मा शिलिमुखस्य सैनापत्यमुपेत्य च —कु० २।६१, ६।८१ 2 मोर.—श्रवणशिलिमुख कण्ठलक्ष्मीमिव दधति स्फुरितापुरेणुजाला—शि० ४।५६ 3 जङ्गली कुक्कुट, छत्र., चक्र. हंस.—रत्नम नीलम.—वासस् (पु०) बलराम का विशेषण - विदम्बयन्त शिलिवासस्तनुम् शि० १।६ ।

शिथिल (वि०) [श्लथ् + किलच्, पृषो०] 1 ढीला, ढीमा, सुस्त, विश्रान्त 2 विसबधा, खुला हुआ प० २।६ 3 वियुक्त, डाल से टूटा हुआ —प० २।८, 4 निडाल, निरुत्साह, असमर्थ 5 दुर्बल, कमजोर—अशिथिल-परिरम्भ उत्तर० १।३४, २७, सख्त या मुट्ठीवाला 6 शिथिलिला, ढीलाढाला 7 खुला हुआ 8. मुर्झाया हुआ 9 निष्क्रिय, निरर्थक, व्यर्थ 10 असावधान 11 हीलेहवाले ढग से किया हुआ, पूरी पाबन्दी के साथ जिसको सम्पन्न न किया गया हो 12 फेंका हुआ, परित्यक्त. क्ली 1 ढीलापन, शिथिलता 2 सुस्ती (शिथिलो भू 1 ढीला करना, खोलना, खुला छोड़ना, 2 छूट देना, ढील डालना 3 दुर्बल करना, निर्बल करना कमजोर बनाना 4 छोड़ देना, परित्याग करना रघु० २।४१ शिथिली भू 1 ढीला होना सुस्त होना 2 गिर पड़ना —मृच्छ० १।२३) ।

शिथिलयति (ना० धा० पर०) 1 विश्राम करना, ढीला करना, ढीला करना 2 छोड़ देना परित्याग करना वर्णो० ५।६ 3 कम करना, शान्त होने देना शिक्षा० ७ ।

शिथिलित (वि०) [शिथिल + इतच्] 1 ढीला किया हुआ 2 विश्रान्त, खोला हुआ 3 खुला हुआ, प्रविकल ।

शिनि (पुं० नि० ह्रस्वश्च) यादवों के वंश का एक राजा (शिनेर्नप्तृ (पु०) सात्यकि) ।

शिपि (पा०+विच्, पा० - पा० + क, पृषो० ह्रस्व इत्व च) प्रकाश का एक किरण- (स्त्री०) त्वचा, चमड़ा (नपुं०) ऊन सैन्धवाख्यलवणोद्भवाख्य शिलापत्रादि प्रवलन आम । मम० विद्ध (वि०) (शिपिविष्ट, तथा शिपिविष्ट भी लिखा जाता है) 1 किरणों से सज्जित 2 गजा, सम्राट्सिर वाला 3. काढ़ी (अर्थ) 1 विष्णु 2 शिव 3 नङ्गी खोपड़ी वाला 4 शिलाखण्डविशेष 5 कोढ़ी ।

शिप्र (नि + रक् पक) हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर ।

शिप्रा (शिप् + रक्, टाप्) शिप्र सरोवर से निकली एक नदी का नाम (जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है —शिप्रावात प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकार —मेघ० ३१ ।

शब्द के० शिक्य' ।

शिफा (स्त्री०) 1. रेशेदार जड़ 2 कमल की जड़ 3. जड़ 4 कोढ़ की मार 5 मां 6 एक नदी । सम०- धर वाला.—वृक्षः वटवृक्ष ।

शिफाकः [शिफा + कन्] कमल की जड़ ।

शिबि (वि) [शि + बि] 1 शिकारी जानवर 2. मूर्ज-वृक्ष 3 एक देश का नाम (ब० व०) 4 एक राजा का नाम (कहते हैं कि कबूतरी के रूप में इसने बाज रूपधारी इन्द्र से अग्नि की रक्षा की थी, और तौल में कबूतर के बराबर अपना मास इन्द्र के सामने प्रस्तुत किया था) नु० मुद्रा० ६।१७ ।

शिबि (वि) का [शिव करोति शिव + णिच् + ण्वुल्] 1 पालकी, डोली 2 अरणी ।

शिबि (वि) रक्ष् [क्षेत्रे राजबलानि अत्र शी + किरच्, कुकागमः, ह्रस्वः] 1 वह धृष्टद्युम्न स्कन्धावारमय यानि सर्वं सहध्वम् -वेणी० ३।१८, शि० ५।६८ 2. राजकीय तंबू, या डेरे या 3 सेना की रक्षा के लिए अकाट्य निवेश 4 एक प्रकार का अन्न ।

शिबि (वि) रथ [शिबे मूर्जवृक्षस्य हैं शोभा रथ तादृशो रथ] पालकी, डोली ।

शिम्बा [शम् + इम्बच्, पृषो०] फली, छीमी, सेम ।

शिम्बिका [शिम्बा + कन् + टाप् इत्वम्] 1 फली, सेम 2 एक प्रकार के काले उड़द (कुछ के अनुसार पु० भी) ।

शिम्बी (स्त्री०) 1 फली, सेम 2 एक प्रकार का पौधा ।

शिरस् [शॄ + असुन्] 1 सिर 2 शिरस्त्राण (इन अर्थों में कुछ के अनुसार पु० भी), क. 1 संख्या 2 अग्र-भाग । सम० ज ज्ञान ।

शिरस् (नपु०) [शॄ + असुन्, निपात] 1 सिर शिरमा-ऽऽक्रमणे पूर्व (गुण) पर (दाप) कष्टे नियच्छति सुभा० 2 खोपड़ी 3 शृङ्ग, चोटी, शिखर (पहाड़ आदि का) —हिमशीकरैश्चलकारिण शिरोभि कि० ५। ११, शि० ४।५४ 4 वृक्ष की चोटी 5 किसी चीज का सिर या शिरोबिन्दु, शिरसि मक्षीरदल अथवा दीप आदि० १।७४ 6 कमल, कलम, उच्चतम बिन्दु 7 अग्रभाग, अगला भाग, सेना का अगला भाग प० ३।२६ उत्तर० ३।५ 8 मुख्य, प्रधान परिषदा (बहुधा समास के अन्त में) (संबोध व्यक्तियों के पूर्व शिरस् शब्द रख समास में 'शिरो' हो जाता है) । सम० अस्थि (शिरोऽस्थि) खोपड़ी,—कपालिन् (पु०) मनुष्य खोपड़ी रखने वाला संन्यासी, ब्रह्म सबसे ऊपर का घर, चन्द्रशाला, अट्टालिका. ब्रह्मः सिर पीड़ा, सिर दर्द, छेदः छेदनम् (शिरश्छेद. आदि) सिर काट देना, सिर कलम कर देना,—त्राणम् (पु०) हाथी वस्त्र, वाणम् 1 चोटे की टोप, व्यूहं शिरस्येकमकोत्तरेण

—रघु० ७।४९, ६६, अपनीतशिरस्त्राणा—४।६४ 2 सिर की टोपी, पगडी,—धरः,—धिः शीर्षा, गरदन, शि० ४।५२, ५।६५,—पीड़ा सिर दर्द करने वाला नारियल का पेड़, भूषणम् सिर पर पहनने का आभूषण —मणि 1 मस्तक पर धारण करने का रत्न 2 चूड़ामणि 3 विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानसूचक उपाधि, शर्मन् (पु०) सूअर,—शालिन् पु० शिव का विशेषण,—रत्नम् शिरोमणि, रुजा सिरदर्द, रुह् (पु०) रुह. (शिरसिरुह्-रुह भी) सिर के बाल —ऋतु० १।४, कु० ५।९, रघु० १५।१६,—वर्तिन् (वि०) मुखिया (पु०) मुख्य, प्रधान के रूप में रहने वाला वृत्तम् सिरका, वेष्ट,—वेष्टनम् सिर पर पहनने का वस्त्र, पगड़ी, शूलम् सिरदर्द.—हारिन् (पु०) शिव का विशेषण।

शिरसिज [शिरसि जन्—ड मध्यमपदलोपी अलुक्] सिर के बाल,—शि० ७।६२।

शिरस्कम् [शिरस्+कन्] 1 लोहे का टोप 2 पगड़ी, टोपी।

शिरस्का [शिरस्क-टाप्] पालकी।

शिरस्तस् (अव्य०) [शिरस्+तस्] सिर से कु० ३।४९, भर्तृ० २।१०।

शिरस्य (वि०) [शिरसि भव यत्] सिर सबधी या सिर पर स्थित,—स्यं स्वच्छ केश।

शिरा (शॄ+क+टाप्] नलिका के आकार की शरीर की वाहिका नाड़ी, खून की नाड़ी, रक्तवाहिनी नाड़ी। सम०—पत्र. फणिज्झ, कैपर्यक वृक्षम् सोमा।

शिराल (वि०) [शिरा+लच्] स्नायुवाला, शिरायुक्त, शिरा-बहुल।

शिरि. [शॄ+कि] 1 तलवार 2 वध करने वाला, कत्ल करने वाला 3 बाण 4 टिड्डी।

शिरीष [शॄ—ईषन् किच्च] सिरस का पेड़. सम सिरस का फूल (यह सुकुमारता का नमूना समझा जाता है) —शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्या बाहू तवीयावधिना मयि विनतं —कु० १।४१, ५।४, रघु० १६।४८, मेघ० ६५।

शिल् (तुदा० पर० शिलति) शिलोञ्छन, सिला चुगना, बालें इकट्ठा करना।

शिलः,-लम् [शिल्+क] शिलोञ्छन, बालें चुनना,—दे० मनु० १०।११३ पर कुल्लू०। सम०—वृत्ति 1 शिलावृत्ति 2 अनियमित वृत्ति।

शिला [शिल—टाप्] 1 पत्थर चट्टान 2 चक्की 3 कोयट की नीचे की लकड़ी 4 सज्जी की चोटी 5 कड़वा, रक्तवाहिका 6 मन शिला, मैनसिल 7 कपूर। सम० अष्टकः 1 छिद्र 2. बाड़, बाड़ा 3 घोड़ावार, अटारी, आत्मजम् लोहा,—आत्मिका कुठाली, घरिया, —आरम्भा काष्ठकदली, अंगली केला, आसनम् 1 पत्थर का आसन, चौकी आदि 2 शैलेय गन्धद्रव्य, गुग्गुल आह्वम् सिलाजतु. - उच्चयः पहाड़, शिलाचट्टान—रघु० २।३४ - उत्थम् शैलेयगन्धद्रव्य, गुग्गुल उद्भवम् 1 शैलेयगन्धद्रव्य 2 बढ़िया किस्म का चन्दन की लकड़ी, ओकस् (पु०) पत्थर का विशेषण - कुट्टक पत्थर तोड़ने की छेनी, टांकी. - कुसुमम्, पुष्पम्, शैलेय गन्धद्रव्य, ज (वि०) शिलाजात खनिजद्रव्य (-जम्) 1 शिलाजीत 2 शैलेयगन्धद्रव्य 3 पटाल 4 लोहा . काई भी शिलीभूत पदार्थ जतु (नपु०) 1 शिलाजीत 2 गेरू जित् (स्त्री० यी) शिलाजतु। - जातुः 1 खड़िया मिट्टी 2 गेरू 3 सोना शिलाजत्वादि पदार्थ, पट्ट, पत्थर की शिला जिस पर बैठा जाय, शिलासन - पुत्र,-पुत्रक. मसाला पीसने का पत्थर शिला, सिल प्रतिकृति (स्त्री०) पत्थर मूर्ति फलकम् पत्थर की सिल भवम् शैलेयगन्धद्रव्य, - भेद लवणरस की छनी टांकी -रस 1 शैलेयगन्धद्रव्य 2 धूप, वल्कलम् एक प्रकार की काई जो पत्थर पर जम जाती है, वृष्टि (स्त्री०. 1 पत्थरों की वर्षा 1 ओलों की वर्षा, - वेश्मन् (नपु०) गुफा, पत्थर की दरार, व्याधि शिलारोग।

शिलि [शिल्+कि] भूरंवल्ल (स्त्री०) कोयट की नीचे की लकड़ी।

शिलिन्ध्र [शिलि+दा+क पृषो० मुम्] एक प्रकार की मछली।

शिलो [शिल+ङीष्] 1 हरवाहे की कोयट या नीचे की लकड़ी 2 एक प्रकार का मुकौट कैंचुआ 3 खड़ की खाटी 4 भाला 5 बाण 6 गण्डूपद 7 मेंढकी सम० मुख मौरा --मिश्रितशिलीमुखघटितलिपिटलक्ष्मस्मरतूणविलासे—गीत० १, रघु० ४।५७ 2 बाण अ कुसुमघटितशिलीमुखमनोहरान्मदनचापादिव प्रभा बनात् अस्यन्ति --का० २२५, या एतावदिकं समुदयाद्गमिते शशिन शिलीमुखसखोऽभव दि० १।४१, (दोनों सदर्भों में शब्द (1) तथा (2) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) 3 भ्रमर।

शिलीन्ध्रः [शिलीं धरति धृ+क पृषो० मुम्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक वृक्ष, - ध्रम् 1 कुकुरमुत्ता साँप की छतरी, जैसा कि 'उच्छिलीन्ध्रं में 2 बेल के वृक्ष का फूल—अधिपुरन्ध्रि शिलीन्ध्रमुलल्लिथि -दि० ६।३२, या, अलिनारयतालिनी शिलीन्ध्रे—३ 3 ओला।

शिलीन्ध्रकम् [शिलीन्ध्र+कन्] कुकुरमुत्ता, सड़े, साँप की छतरी।

शिलीन्ध्री [शिलीन्ध्र+ङीष्] 1 मूर्तिका, मिट्टी 2 केंचुआ।

शिल्पम् [शिल्+पक्] 1 कला, ललितकला, यान्त्रिक

कला, (इस प्रकार की कलाएं चौंसठ गिनाई गई हैं) 2 (किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी —मालवि० १।६, मृच्छ० ३।१५ 3 विदग्धता, पटुता 4 कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य 5 कृत्य, अनुष्ठान 6 मशीन चलाना या कूदना। सम० कर्मन् (नपु०)—किसी कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी, —कार,—कारक, —कारिन् दस्तकार, कारीगर, —शालम्,—आला कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय, शिल्पगृह, शास्त्रम् 1 कला विषय पर (चाहे ललित हो या यान्त्रिक) लिखा गया ग्रंथ 2 शिल्पविज्ञान।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प + इनि] 1 ललित या यान्त्रिक-कला सम्बन्धी 2 यान्त्रिक, यन्त्रवत् (पु०) 1 दस्तकार कलाकार, कारीगर 2 जो किसी भी कला में प्रवीण हो।

शिव (वि०) [श्यति पापम्—शो + बन् पृषो०] 1 शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली—इदं शिवाया नियतस्त्रिवार्षिकं — कि० ४।२१, १।३८, रघु० ११।३३ 2 स्वस्थ, प्रसन्न, समृद्ध सौभाग्यशाली शिवानि वस्त्रोपयंजनानि कल्पन्ताम् रघु० ५।८, (अनुपप्लवानि 'शान्त') शिवास्ते सन्तु पन्थान 'भगवान आपकी यात्रा सफल करें',—ब त्रिदेवों के तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का संहार करना है (जिस प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पादन तथा विष्णु का सृष्टि-पालन है) एको देव कपाली वा शिवो वा —भर्तृ० २।१।५ 2 पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 3 शुभ ग्रहों का योग 4 बेर 5 मोक्ष 6 यमुना का बांधने का खूंटा 7 सुर, देवता 8 पारा 9 गुग्गल 10 काला धतूरा, द्यौ (पु०, द्वि व०) शिव और पार्वती कि० ५।४०.—अम् 1 समृद्धि, कल्याण, मंगल आनन्द तव वर्त्मसु वर्तता शिवम् - मै० २।६२ रत्न० १।२, रघु० १।६० 2 परमानन्द, मोक्षिकता 3 मोक्ष 4 जल 5 समुद्री नमक 6 सेंधा नमक 7 शुद्ध सोहागा। सम०—अक्षम् = शिव १०,—आत्मकम् सेंधा नमक —आदेशकः 1 शुभ समाचार लाने वाला 2 भविष्यवक्ता, आख्यः 1 शिव का नाम 2 लाल तुलसी (वृक्ष) 1 शिव मन्दिर 2 श्मशान,—इतर (वि०) अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण—निर्देशः शतये काश्य० १, कर (शिवंकर भी) (वि०) आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद, —कीर्तनः शनी का नाम, गति (वि०) समृद्ध, आनन्दित,—धर्मनः मंगलग्रह, तनि (वि०) जिसका अन्त कल्याणकारी हो, आनन्ददायक, मंगलप्रद प्रपन्न कुरुनाथ पालयनु शिवतातिरेव भवतु मा० ६।७ 2. मृत्यु, जो राक्षसों में हो -मा पूजनात्यनुपमा. शिवतातिरेषि —१।४९, (शिः) मांगलिकता, आनन्द, कल्याण, विष्णु का चक्र, वाद (नपु०) देवदारु का पेड़ वृक्षः बेल का पेड़,—शिखा केतकी का पेड़, —धातुः पारा, पुरम्,—पुरी बनारस, वाराणसी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक, शिवः 1 स्फटिक 2 बेल नाम का पेड़ 3 धतूरा, वृक्षकः अर्जुनवृक्ष,—राजधानी वाराणसी,—रात्रिः (स्त्री०) फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी जब शिव के सम्मान में कठोरव्रत का पालन किया जाता है शिवलिङ्गम् शिव जिसकी पिंडी या लिंग के रूप में पूजा होती है, लोकः शिव का संसार —वल्लभः आम का वृक्ष,(—भा) पार्वती, वाहनः सांड, वीजम् पारा, शेखर 1 चांद 2 धतूरा —सुन्दरी दुर्गा का विशेषण।

शिवक [शिव + कन्] 1 वह मेंढा जिसके साथ प्रायः भेड़ आदि पशु आये जाते हैं 2 वह खंभा जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है, पशुओं के शरीर को खुजलाने के लिए खूंटा।

शिवा [शिव + टाप्] 1 पार्वती 2 गीदड़ी अट्टहासं शिवाश्चक्रुः शिवाश्चक्रुः कि० १।३८, हरेरन्तं द्वारे शिवशिव शिवानां कलकल —भामि० १।३२, रघु० ७।५०, ११।६१, १२।३० 3 गाय + शमी (जैंडी) का वृक्ष 5 आंवला 6 दूर्वाघास दूब 7 पीला रंग 8 हल्दी, सम० अरातिः कुत्ता, -प्रिय बकरा, फला शमी (जैंडी) का वृक्ष, फलम् गोदड़ का सोना कि० १।३८।

शिवानी [शिव + ङीप् आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शिवालु [शिव + आलुच्] गीदड़।

शिशिर (वि०) [शश् + किरच्—नि] ठंडा शीतल सर्द जमा हुआ कुह यदुत-दलचन्दनशिशिरकरेण करेण पयोधरे गीत० १२, रघु ९।५१, १४।३, १६।४९, —र —रम् 1 आगे सुधार या पाला—पद्मानां शिशिरात्ययं आता मन्ये शिशिरमथिनां पद्मिनीं वान्यरूपाम् —मेघ० ८३ 2. जाड़े का मौसम, (माघ और फाल्गुन को) सर्दी - कण्ठेषु स्खलित गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां स्वरम् ऋ० ६।३ 3 ठंडक, शीतलता। सम० अंशुः,—कर,—किरणः,—द्यौतिः,—रश्मिः चन्द्रमा —वृत्त इव शिशिरांशौ —विक्रम० ५।२१, शिशिरकिरणकान्तं वासरान्तेऽभिसार्य शि० ११।२१, शिशिरदीधितिना रजन्य रघु० ३।२, अन्तरम्, अवसरः, जाड़े का अन्त, समय ऋतु स्वाङ्गसङ्गसुखं शिशिरास्यपक्षम (पुष्पाक्षम्) —कु ३।६१, उपहित शिशिरोपसमर्थिया रघु० ९।३१ —कालः, समयः जाड़े की ऋतु,—मणि का विशेषण।

शिशुः [शो + कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्] 1. बालक, बच्चा, शिशुर्वा शिष्या वा —उत्तर० ४।११ 2 किसी भी जानवर का बच्चा (लड़का, पिल्ला, छौना आदि)

श० १।१४, ७।१४,१८ 3 आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक। सम०—क्रन्द — क्रन्दनम् बच्चे का रोना, गन्धा एक प्रकार की मल्लिका, पाल दमघोष का पुत्र तथा चेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार यह राजा पूर्वजन्म में राक्षसों का राजा पापी हिरण्यकशिपु था जिसे नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था। उसके पश्चात् इसने दस सिर वाले रावण के रूप में जन्म लिया, और राम ने इसको मार डाला। फिर इसी ने दमघोष के घर जन्म लिया और विष्णु के आठवें अवतार कृष्ण भगवान् से और भी अधिक निष्ठुरता के साथ निरन्तर द्वेष करता रहा (दे० शि०)। जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण से मिला तो उसे बुरा भला कहने लगा कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काट डाला। इसकी मृत्यु ही माघकवि के प्रसिद्धकाव्य का विषय है), हन्, (पु०। कृष्ण का विशेषण, मार संसनाम का जरूजन्तु वाहक, —वाहक जंगली बकरा।

शिशुक [शिशु+कन्] 1 बालक, बच्चा 2 किसी भी जानवर का बच्चा 3 वृक्ष 4 सूँस।

शिश्नम्, शिस्नम् [शश्+नक् डित्वम् पुरुष की जननेन्द्रिय लिङ्ग याज्ञ० १।७७, मनु० ११।१०६।

शिशिवदान (वि०) [शिक्+सन्+आनच्, सनो लुक् डित्वम्, रकारस्य दकार 1 पवित्र आचरण वाला सद्गुणी, पुण्यात्मा 2 दुष्ट, पापी।

शिष्। (म्वा० पर०, शेषति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

॥ (म्वा० पर० चुरा० उभ० शेषति, शेषयति—ते) अवशिष्ट छोड़ देना, बचा देना।

॥। (दिवा० पर० शिष्यति, शिष्ट) 1 बाकी छोड़ना, बचा रखना, अवशिष्ट छोड़ना 2 दूसरों से भिन्नता करना।—प्रेर० (शेषयति—ते) छोड़ना, अब बाकी छोड़ना, पीछे छोड़ना (प्रेर० कर्मवा० में) स्वस्वेन लीलया इवावशिष्ट-रघु० ५।१५, क्रियादवशिष्ट रजन्या श० ४, निद्रामसंमीलन क्रियादवशिष्टम् महावी० ६, भग० ७।२, उद्, बाकी छोड़ना—दे० 'उच्छिष्ट', परि—, अवशिष्ट छोड़ना (प्रेर० भी—भवितव्यं करेणापरिशेषितेन मृच्छ०-भामि० १।५३, वि—, 1 विशिष्ट करना, विशेषता बताना, विशेष रूप से कहना, परिभाषा करना 2 भेद करना, विवेचन करना 3 बढ़ाना, ऊँचा करना, वृद्धि करना, ग्रहण करना पुनरुक्तवदिवर्तनदाक्ष्यात् विविक्तविशिनष्टि मनोरजम्-माघ० ४।४, उत्तर० ६।१५ (कर्मवा०) 1 भिन्न होना रघु० १७।६७ 2 अपेक्षाकृत अच्छा या ऊँचे दर्जे का होना, आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, (अपा० के साथ) अपेक्षाकृत बढ़िया और दूसरों से अच्छा होना मनु० २।८३, ३।२०३, (प्रेर०) आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना—मृच्छ० ४।४, मालवि० ३।५।

शिष्ट (भू० क०कृ०) [शास्+क्त, शिष्+क्त वा] 1 छोड़ा हुआ, बचा हुआ, अवशिष्ट, बाकी 2 आदिष्ट, समादिष्ट 3 प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट 4 सधाया हुआ, पालतू, वश्य 5 बुद्धिमान्, विद्वान् शि० २।१० 6 सद्गुणसंपन्न, माननीय 7 शिष्ट, नम्र 8 मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य, प्रमुख,—ष्टः प्रमाणभूत या पूज्य व्यक्ति 2. बुद्धिमान् पुरुष 3 परामर्शदाता। सम० आचार 1 बुद्धिमान् मनुष्यों का आचरण शिष्टाचरण, सच्चरित्र,—सभा विद्वान् या गण्य पुरुषों की सभा, राज्यसभा।

शिष्टि (स्त्री०) [शास्+क्तिन्] 1 राज्य शासन 2 आज्ञा, आदेश 3 सजा, दण्ड।

शिष्य [शास्+क्यप्] 1 छात्र, वह विद्यार्थी शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् भग० २ 2 छात्र, चेला। सम० परम्परा चेलों का क्रम, किसी गुरु-सम्प्रदाय की परंपरित शिष्यमण्डली शिष्टि (स्त्री०) छात्र का शोधन, अनुशासन।

शिह्लः, शिह्लक [शिह्+लक्, नि० मध्य द] देखो गन्धद्रव्य।

शी (अदा० आ० शेते, शयित, कर्मवा० शय्यते इच्छा० शिशयिषति) 1. लेटना, सेट जाना, विश्राम करना आराम करना, इतश्च शयनार्थिनि शिखरिणि त्वया शेतव्यं- भर्तृ० २।३६ 2. सोना, (आलं० से भी) -नि नि शाङ्के शेते-शेते वयम् समाधया मृत्यु, अवश्यं मृत्यु शय्यायां निकटे आगति अङ्गुलौ इतनौ भामि० ४।३०, भर्तृ० ३।७९, कु० ५।१२, प्रेर० शाययति—ते सुलाना, थपकाना, अति—, 1 सोने में देर करना 2. खाट में सोना- अपेक्षाकृत देर तक सोना अह पतीक्षातिशये महा० 3 श्रेष्ठ होना आगे बढ़ जाना पूर्वाभिदाभाव मयातिशेषे रघु० ८।२१, चरितेन धामिकयासि मृत्यु—कि० ९।३८, भट्टि० ७।४६, (प्रेर०) आगे बढ़ने का कारण बनना-सामर्थ्य निशाययति चाम्र महाकाव्य मुद्रा० ३।१७ अधि—(स्थान में कर्म० के साथ) लेटना, सोना आराम करना अध्यशयिष्ट गाम्-भट्टि० १५।१९ अनु युगान्तोचितशेषनिद्र महत्त्व लोकान् पुरायानिवर्त्य रघु० १३।६, १६।४९, १९।३०, कि० १।३८ 2 बसना, रहना, भट्टि० १०।३५, उप सोना निकट लेटना, आस , सहारे में होना, सर्वाः शिव शिरस्ते य —कि० ९।१४, ४२, भामि० २।१५

शी [शी+क्विप्] 1 निद्रा, विश्राम 2 शान्ति।

शेक् । (भ्वा० आ० शीकते) 1. तर करना, छिड़कना 2 धीरे धीरे जाना, हिलना-डुलना ।
॥ (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० शीकति, शीकयति-ते) 1 कांच करना 2. आई करना, गीला करना ।

शीकर [शीक् + अरन्] 1 वायुप्रेरित छींटे, सूक्ष्मवृष्टि, बौछार, तुषार—कु० १।१५, २।५२, रघु० ५।४२, ९।६८, शि० ५।१५ 2 अलकण, वृष्टिकण—गतमुन्मिषतानां वारिणश्चोदराणां पिबतयति रचनां शीकरिस्निग्धनेमि —ऋ० ७।७, रघु० १३।६२,—रम् 1 सरलवृक्ष 2 देवदारु वृक्ष की राल ।

शीघ्र (वि०) [शिक्षु + रक्, नि०] फुर्तीला, त्वरित, सत्वर —विक्रमोर्वशीयमणि मन्दलघुशीघ्रः विक्रम०५।२, —घ्रम् (ज्योति० में) ग्रहयोग, —घ्रम् (अव्य०) फुर्ती से, तेजी से, जल्दी से । सम०—कर्णः (ज्योति० में) ग्रहयोग, —कारिन् (वि०) फुर्तीला, चुस्त, —कोपिन् (वि०) चिड़चिड़ा, क्रोधी, —केतन, —कुलज, —बुद्धि (वि०) तीक्ष्णबुद्धि वाला, तेज बुद्धिवाला, —गन्तृ (वि०) तेज जाने वाला, पैर फुर्ती से रखने वाला —भट० ८, —वेधिन् (पु०) तेज धनुर्धर ।

शीघ्रिन् (वि०) [शीघ्र + इनि] सत्वर, फुर्तीला ।

शीघ्र्य (वि०) [शीघ्र + ष्य] चुस्त,—र्यः 1 विष्णु 2 शिव 3 लड़ाई ।

शैघ्र्यम् [शीघ्र + यत्] चुस्ती, शीघ्रता ।

शीत (अव्य०) आकस्मिक पीड़ा या आनन्द को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि (विशेषकर आनन्दातिरेक की वह ध्वनि जो सम्भोग के समय होती है) । सम० —कार,—कृत् (पु०) उपर्युक्त ध्वनि, सिसकारी ।

शीत (वि०) [शी + क्त] 1 ठण्डा, शीतल, जमा हुआ, तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दो —ऋ० ३।२ 2 मन्द, सुस्त, उदासीन, आलसी 1 आलस, सुस्ती आदि, त. 1 एक प्रकार का सरकुल 2 बेंत का वृक्ष 3 जाड़े की ऋतु, (बहु० भी) 4 कपूर, सम् 1 ठण्डक, शीतलता, सर्दी या शीत तुहिनाचलमभ्य करया —काव्य० १० 2 जल 3 वारुणी । सम० —अंशु 1 चांद वसन्तेऽहो तव सन्यय यदपर शीतांशुरुच्चम्भते काव्य० १० 2 कपूर, —अङ्गः मनुष्य के पक्षाघात या उसमें अंग हो जाने का रोग, पक्षाघात, —अद्रिः हिमालय पहाड़,- अश्मन् (पु०) चन्द्रकान्तमणि,— आर्त (वि०) ठंड से व्याकुल, जाड़े से ठिठुरा हुआ, उदकम् पानी, —कालः जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम, —कालीय (वि०) जाड़े में होने वाला, —कृच्छ्र,— —क्षुद् एक प्रकार की धार्मिक साधना, —गन्धम् सफेद चन्दन,—गुः 1 चांद 2 कपूर, —गन्धकः 1 दीपक 2. दर्पण, —गोधिनिः चांद,—च्छदः शिरीष का वृक्ष, शिरस का पेड़, —पुष्पकम् वेतस गन्धद्रव्य, —प्रभः कपूर, —भानुः चांद,- —भीरुः एक प्रकार की मल्लिका, —मयूखः, —मरीचि, —रश्मि, 1 चांद 2 कपूर,—रम्यः दीपक, —वल्ल (पु०) चांद, —शल्कः सुनार का पेड़, —शीर्षकः बड़ का पेड़, —शिव शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़, (—वम्) 1 सेंधानमक 2 सुहागा, —शूकः जौ, —स्पर्श (वि०) ठंडक पहुँचाने वाला ।

शीतक (वि०) [शीत + कन्] ठण्डा, दे० 'शीत', क. 1 कोई ठण्डी वस्तु 2 जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम 3 मन्थर, दीर्घसूत्री 4 आनन्दित, निश्चिन्त 5 छिछला ।

शीतल (वि०) [शीत लाति-ला + क, शीतमस्त्यस्य मत्व वा] ठण्डा, शीतलगुण युक्त, मंद, (ठण्ड के कारण) जमा हुआ (आल० से भी) अनिर्शीतलमध्यम्भ कि भिनत्ति न भूधृत —भट्टा०, महदपि परदु ख शीतल मन्यगाहू —विक्रम० ४।१३ क 1 चांद, 2 एक प्रकार का कपूर 3 एक प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान, —लम् 1 ठण्डक, ठण्डापन 2 जाड़े की ऋतु 3 शैलेयगन्धद्रव्य 4 सफेद चन्दन, रक्त चन्दन 5 मोती 6. तूतिया 7 कमल 8 वीरण नामक मूल । सम० —अम्बः चम्पक वृक्ष,—अम्बुज कमल,—द्रव—द्रव्य चन्दन, —षष्ठी माघ शुक्ला छठ ।

शीतलकम् [शीतल + कन्] सफेद कमल ।

शीतलता [शीतल — टाप्] 1 शैत्यक 2 चेचक (शीतला) की अधिष्ठात्री देवता । सम० पूजा शीतला देवी की पूजा ।

शीतलत्व [शीतल + त्व] शैत्यक ।

शीतला दे० 'शीतला' ।

शीतालु (वि०) [शीत न सहते शीत + आलुच्] सर्दी से ठिठुरता हुआ, जिसे सर्दी लग गई है, जाड़े के कारण कष्ट पाता हुआ शि० ८।१९ ।

शीत्य दे० 'शैत्य' ।

शीधु (पु०, न०) [शी + धुक्] 1 कोई भी आसुत मदिरा अंगूरी शराब 2 शराब । सम० —मातृका अंगूरी शराब, —शालिनिरी का पेड़, —सारकी ।

शीन (वि०) [शी + क्त] 1. जमा हुआ, घनीभूत, —नः 1 अजगर, बुद्धू 2 अजगर ।

शीभ् (भ्वा० आ० शीभते) 1 शेखी बघारना 2 बकवास करना, बोलना, (कथने ?) ।

शीभ्रः [शीभ् + रक्] 1 सांड 2 शिव ।

शीर [शीङ् + रक्] अजगर दे० 'सीर' भी ।

शीर्ण (भू० क० कृ०) [शृ + क्त] 1 कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ, सड़ा हुआ 2 सूखा, शुष्क 3 टूटा फूटा, चूर चूर हुआ 4 दुबला-पतला, कृश (दे० शृ),—र्णम् एक प्रकार का सन्धि दोष । सम० —अङ्गुलिः,—नखः 1. एक का विशेषण 2. अनिष्ट का विशेषण,—पर्णम्

कुम्हलाया हुआ पत्ता (इसी प्रकार 'शीर्णपत्रम्' (कः) नाम का पेड़, वृक्षम् तरुवृक्ष ।

शीर्णि (वि०) [शृ+क्विन्] विनाशकारी, आघातयुक्त, अनिष्टकर, क्षतिकर ।

शीर्षम् [शिरस् पृषो० शीर्षादेश, शृ+क सुक् च वा] 1 सिरशीर्ष सर्पो वेश्मान्तरे वंश कर्पूर०, मुद्रा० १।२१ 2. काला अगर । सम० अवशेषः केवल सिर ही बचा हुआ,—आमयः सिर का कोई भी रोग, —छेदः सिर काट डालना, छेद्य (वि०) जिसका सिर काट डालना चाहिए, सिर काट कर मारे जाने के योग्य —उत्तर० २।८, रघु० १५।५१, रक्षकम् लोहे का टोप ।

शीर्षक [शीर्ष+कन्] गाहु का विशेषण, कम् 1 सिर 2 खोपड़ी 3 लोहे का टोप 4 सिर का वस्त्र, (टोपी, टोप आदि) 5 व्यवस्था, निर्णय, न्यायालय का निर्णय ।

शीर्षण्यः [शीर्षन्+यत्] साफ तथा सुलझे हुए सिर के बाल, ण्यम् 1 लोहे का टोप 2 टोप, टोपी ।

शीर्षन् (नपुं०) [शिरस् शब्दस्य पृषो० शीर्षन् आदेशः] सिर, (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० ब० के पश्चात् 'शिरस्' या 'शीर्ष' को विकल्प से आदेश हो जाता है) ।

शील् । (भ्वा० पर० शीलति) 1 मध्यस्थता करना, भली भाँति सोचना 2 सेवा करना, सम्मान करना, पूजा करना 3 सम्पन्न करना, अभ्यास करना ।

॥ (चुरा० उभ० शीलयति-ते) 1 सम्मान करना, पूजा करना 2 बार बार अभ्यास करना, प्रयोग करना, अध्ययन करना, चिन्तन करना, ध्यान करना -श्रुतिशतमपि भूय शीलित भारत वा भामि० २।३५, शीलयन्ति मुनय सुशीलनाम् कि० १३।४३ 3 धारण करना, पहनना—चल मनि कुञ्ज मनिमिर-पुञ्ज शीलय नीलनिचोलम्—गीत० ५ 4 जाना देखना, बार बार जाना—यदनुगमनाय निशि गहन-मपि शीलितम् गीत० ७, स्मेरानना मपदि शीलय सौधमौलिम्—भामि० २।४, अनु , परि , बार बार अभ्यास करना, सुधारना, चिन्तन करना—शब्द-च्छलोऽपि मनसा परिशीलितोऽपि —राज० ।

शील [शील्+अच्] अजगर, लम् 1 स्वभाव, प्रकृति, चरित्र, प्रवृत्ति, रुचि, आदत, प्रथा समानशीलव्य-सनेषु सख्यम् सुभा०, 'अनुसृत' 'दुर्व्यस्त' 'प्रवण' 'लीन' 'अभ्यास' आदि अर्थ प्रकट करने के लिए बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त, कलहशील 'कलह करने के स्वभाव वाला' 'झगड़ालू' भावनाशील चिन्तन-शील, इसी प्रकार दान°, मृगया°, दया°, पुण्य°, आश्वासन° आदि 2 आचरण, व्यवहार 3 अच्छा स्वभाव, अच्छी प्रकृति शील पर मुखनम्—मनु० २।८२ पद्य० ५।२ ४. सद्गुण, नैतिकता, सदाचरण, सज्जीवन, शुचिता, ईमानदारी—शीलम्स्थाप्यपतिर्वि-नश्यति ·· शील खलोपासनात्—मनु० २।४२, ३१, तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम्—कु० ५।३६, कि० ११।२५, रघु० १०।७० 5 सौन्दर्य, सुन्दर रूप । सम० खण्डनम् शुचिता या नैतिकता का उल्लंघन—पद्य० १, धारिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—वचना शुचिता का उल्लंघन, प्राप्तेय शीलवचना—मृच्छ० १।४४ ।

शीलनम् [शील्+ल्युट्] 1 बार बार अभ्यास, प्रयोग अध्ययन, मनन 2 निरन्तर प्रयोग 3 सम्मान करना सेवा करना 4 वस्त्र पहनना ।

शीलित (भू० क० कृ०) [शील्+क्त] 1 अभ्यस्त, प्रयुक्त 2 धारण किया हुआ 3 बार-बार किया हुआ, देखा हुआ 4 कुशल 5 युक्त, सहित, सम्पन्न ।

शीलिन् (पुं०) [शील+क्विनिप्] अजगर ।

शुंशुमारः ['शिशुमार' का भ्रष्ट रूप] सूँस नामक जल जन्तु ।

शुक (स्वा० पर० शोकति) जाना, हिलना-डुलना ।

शुक [शुक्+क] 1 तोता—आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः —सुभा० । तुङ्गैरालक्ष्यकूटैर्लसति पवनैर्हरिताकामलैः । त्रिस्रोतोराजिभिः कण्ठैरेतैः मजुमिव शुका' काव्या० २।१ 2 सिरस का पेड़ 3 व्यास का एक पुत्र (कहा जाता है कि 'शुक' व्यास के वीर्य से उत्पन्न हुआ था, जब घृताची नाम की अप्सरा शुकी के रूप में इस पृथ्वी पर घूम रही थी तो उसको देख कर व्यास का वीर्यपात हो गया था । शुक जन्म से ही दार्शनिक था उसने अपनी नैतिक वाक्-पटुता से स्वर्गीय अप्सरा रम्भा के काम मार्ग पर प्रेरित करने के प्रत्येक प्रयत्न को सफलता पूर्वक मुकाबला किया । कहते हैं कि उसी ने राजा परीक्षित को भागवत पुराण सुनायी । अत्यन्त कठोर साधक के रूप में उसका नाम किंवदन्ती को तरह प्रसिद्ध हो गया,—कम् 1 कपड़ा, वस्त्र 2 लोहे का टोप 3 पगड़ी 4 वस्त्र की किनारी या झालर । सम०—आलयः अनार का पेड़,—तरुः, द्रुमः सिरस का पेड़ नास (वि०) तोते जैसी नाक वाला, नासिका तोते की नाक जैसी नाक, पुच्छः गन्धकः पुष्पः, प्रियः सिरस का पेड़,—फलः जामुन का पेड़ —वल्लभः अनार का पेड़, वाहः कामदेव का विशेषण ।

शुद्ध (भू० क० कृ०) [शुध्+क्त] 1 उज्ज्वल, विशुद्ध, स्वच्छ 2. असल, खरा 3 कर्तव्य, जरूरी, कला, कठोर 4 समझा, बुझा हुआ 5 परित्यक्त, एकाकी,

शुक्र 1 मास 2 काजी 3 एक प्रकार का खट्टा तरल पदार्थ, (सिरका आदि)।

शुक्ति (स्त्री०) [शुच् + क्तिन्] 1 सीप का खोल —मौक्तिकं शुक्तिसम्भवम् पार्वतिशेषन्यायेन गुणान्तर उक्तिः शुक्तिमाधातुं। जलमिव समुद्रनुक्तौ मुक्ताफलता पयोदस्य—मालवि० १।६, मनु० २।६७ रघु० १३।१७ 2 अक्ष 3 छोटी सीप, घुटला 4 खोपड़ी का एक भाग 5 घोड़े की खोपड़ी या गर्दन पर) पर डाला का घुंघर शि० ५।४, दे० उस पर मल्लि० 6 एक प्रकार का गन्धद्रव्य 7 दो कर्ण के समान विशेष ताल। सम०—उद्भव अक्ष मोती, पुटज,—पेशी मादी की सीप का खोल —वक्त्र मादी का सीप, घोंघा, मोती।

शुक्तिका शुक्ति + कन् + टाप्] मादी का सीप, सीपी।

शुक्र [शुच् + रक्] (वि० कुत्वम्) 1 शुक्रग्रह 2 राक्षसों के गुरु जिसने अपने जादू के मंत्रों से युद्ध में मरे हुए राक्षसों का पुनर्जीवित कर दिया था दे० 'कच' ययाति' और 'ययाति' 3 ज्येष्ठभ्राता 4 अग्नि, —क्रम् 1 वीर्य पुमान् पुंसोऽभिषेके शुक्रं स्त्री प्रजनप्रक्रिया मनु० ३।६० ५।६३ 2 किसी भी पदार्थ का सत्। सम० अङ्ग मार, —कर (वि०) शुक्र या वीर्य सम्बन्धी, (-रः) वृषियों में रहने वाली मछली, —वारः, —वासरः भृगुवार, शुक्रवार शिष्य राक्षस।

शुक्रल, शुक्रिय (वि०) [शुक्र + ला + क शुक्र + घ] 1 वीर्यवर्धक 2 शुक्र या वीर्य को बढ़ाने वाला।

शुक्ल (वि०) [शुच् + रक् कुत्वम्] सफेद विशुद्ध, उज्ज्वल जैसा कि 'शुक्लपक्ष' में, —क्लः 1 सफेद रंग 2 चान्द्रमास का उज्ज्वल या सुदी पक्ष 3 शिव, —क्लम् 1 चाँदी 2 आँखों की सफेदी में होने वाला रोग विशेष 3 राजा मक्खन 4 (खट्टी) कांजी। सम०—अक्षु अपाङ्गु भार (आँखों के ऊपर कोण (दोनों के मध्य) शुक्लापाङ्गौ सजलनयनौ स्वामिसौभाग्यगर्वेण मेघ० २०, अजमोदा एक प्रकार का खट्टा साग, —उपला श्वेतसार पीली,—कण्डकः एक प्रकार का जंगली कुकुरमुत्ता, कर्मन् (वि०) शुद्धाचारी, सद्गुणी, कुष्ठम् सफेद कोढ़, —मृत्तिका खड़िया मिट्टी, —पक्षः मास का सुदी पक्ष,—वस्त्र (वि०) श्वेत वस्त्रधारी, —वासस् सारस

शुक्लक (वि०) [शुक्ल + कन्] सफेद, —कः 1 सफेद रंग, 2 चान्द्र मास का सुदी पक्ष।

शुक्लल (वि०) [शुक्ल + ला + क] सफेद।

शुक्लता [शुक्ल + तल् + टाप्] 1 सफेदी 2 श्वेतसार पीली 3 श्वेतवर्ण वाली स्त्री 4 काकोली नाम का पौधा।

शुक्लिमन् (पु०) [शुक्ल + इमनिच्] सफेदी, सफेदी।

शुचि [शुच् + कि] 1 वायु, हवा 2 प्रकाश, कान्ति 3 अग्नि।

शुङ्ग [शुच् + क, नि० साधु] 1 वट का पेड़ 2. पैंवदी वट का पेड़ 3 अनाज का टूंड, किनाड़।

शुङ्गा [शुङ्ग + टाप्] 1 नूतन फलों का क्वाथ 2 जौ या अनाज की बाल, किनाड़।

शुङ्गिन् (पु०) [शुङ्गा + इनि] बड़ का पेड़, वटवृक्ष।

शुच् (भ्वा० प० शोचति) चिन्ता होना, दुःखी होना, शोक करना विलाप करना —अशोचीद्राक्षसीमेषी-त्माह चाङ्गिथियत्तारम् भट्टि० १५।७१, २१।६, भग० १६।५ 2. स्पष्ट प्रकट करना, पछताना, अनु ,शोक मनाना, विलाप करना, स्पष्ट प्रकट करना नष्टं मनसश्चिकाल नानुशोचन्ति पण्डिता पंच० १।३३३ भग० २।११, वेणी० ५।४, उत्तर० ३।३२, परि - , विलाप करना, शोक मनाना।

शुच (दिवा० उभ० शुच्यति ते) 1 खिन्न होना, दुःखी होना 2 आर्द्र होना 3 चमकना 4 स्वच्छ या निर्मल होना 5 कुम्हलाना मुरझाना।

शुच्, शुचा (स्त्री०) [शुच् + क्विप्, टाप् वा] रञ्ज, शोक, कष्ट, दुःख—विकलीकरणं पाण्डुच्छायाः शुचा परिदुर्बलं —उत्तर० ३।२३, काम कोकिलः मे नाथ इति सा विजहौ शुचम्—रघु० १२।७५, ८।३२, मेघ० ८८, भर्तृ० ४।१८।

शुचि (वि०) [शुच् + कि] 1 विमल, विशुद्ध, स्वच्छ सकलङ्कमपि शुचिमानसम् - कि० ५।१३ 2. श्वेत, कि० १८।१८ 3 उज्ज्वल, चमकदार—प्रथमवलि शुचि-बिम्बाधरोष्ठे मलिनं मुखं मम —उत्तर० २।४ 4 सद्गुणी, पवित्रात्मा, पुण्यात्मा, निष्पाप, निष्कलंक अथ तु खलु शुचिचरितमात्मनः कुरु० ५।२७, पद्म. शुचेर्देवविचारं ईश्वरा —रघु० ३।४६, कि० ५।१३ 5 परिशोधित, निर्मल किया हुआ, पूतीकृत बनाया हुआ —रघु० १।८१, मनु० ४।३१ 6 ईमानदार, खरा, निष्ठावान्, सच्चा, निष्कपट—पद्म० १।२०० 7 सही शब्दार्थ,- क्लिः 1. श्वेत वर्ण 2. पवित्रता, परिशोधकत्व 3 भास्कर, सद्गुण, भद्रता, खरापन 4 अद्भुत यथार्थता 5 ब्रह्मचारी की दशा 6 पवित्रात्मा 7 ब्राह्मण 8 सोम वृक्ष -उपयमी चिरकल्प-कथन्निका शुचिरसौ चिरसौरभमस्पृह शि० ६।२२, १।५८ रघु० ३।३, कु० ५।२० 9. ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने 10 निष्ठावान् या सच्चा मित्र 11 सूर्य 12 चन्द्रमा 13 अग्नि 14. सुनार रंग 14 मुक्ताहार 16 विषक वृक्ष। सम०—द्रुः पवित्र वट-वृक्ष, मल्लि० स्मृतिक मल्लिका एक प्रकार की चमेली नवमल्लिका, —रोहिणी (पु०) चन्द्रमा, —वस्त्र (वि०) पुण्यात्मा, सद्गुणी,—स्थित (वि०) मधुर सुखकर बोला कु० ५।२०, रघु० ८।४८।

शुचिस् (नपु०) [शुच्+इसुन्] प्रकाश, कान्ति।

शुच् (भ्वा० पर० शुच्यति) 1 स्नान करना, नहाना-धोना 2 निचोड़ना (रस) निकालना 3 अर्क खींचना 4 बिलोना।

शुद्धीर [=सौठीर, पृषो०] वीर नायक।

शुठ् (भ्वा० पर० सोठति) 1 बाधा डाली जाना, रुकावट डाली जानी 2 लड़खड़ाना, लंगड़ा होना 3 मुकाबला करना।
॥ (चुरा० उभ० सोठयति-ते) सुस्त होना, आलसी होना, मन्द होना।

शुण्ठ् (स्वा० पर०, चुरा० उभ० शुण्ठति, शुण्ठयति-ते) 1 पवित्र करना 2 सूखना, दे० शुठ् (1) भी।

शुण्ठि-ठी (स्त्री०), **शुण्ठ्यम्** [शुण्ठ्+इन् शुण्ठि+ङीष्, शुण्ठ्+यत्] सोंठ, सूखा अदरक।

शुण्ड [शुण्ठ्+अच्] 1 मदमाते हाथी के गण्डस्थल से निकलने वाला रस 2 हाथी की सूँड।

शुण्डक [शुण्ड+कन्] 1 शराब खींचने वाला कलाल 2 एक प्रकार का सैनिक संगीत या वाद्ययन्त्र।

शुण्डा [शुण्ड+टाप्] 1 हाथी की सूंड 2 खींची हुई शराब 3 मद्यपानगृह, मधुशाला 4 कमर के इर्दगिर्द 5 वेश्या, रंडी 6 कुटनी, दूती। सम०—आपणः मदिरालय, शराबखाना।

शुण्डार [शुण्ड+अ+अण्] 1 शराब खींचने वाला 2 हाथी की सूंड या तामावृद्धि—महाबी० १।५३।

शुण्डाल [=शुण्डार, स्वार्थे-अण्] हाथी।

शुण्डिका [शुण्डा ' कन्+टाप्, इत्वम्] दे० 'शुण्डा'।

शुण्डिन् (पु०) [शुण्ड+णिनि] 1 शराब खींचने वाला, कलाल 2 हाथी। सम० भुविका छछून्दर।

शुतुद्रि, -द्रु (स्त्री०) सतलुज नदी तु० 'शतद्रु'।

शुद्ध (भू० क० कृ०) [शुध्+क्त] 1 विशुद्ध, विमल, पवित्रीकृत—अन्त शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्ण —मेघ० ४९ 2 पुनीत, अकलुषित, शुचि, निर्दोष —अन्वमीयत शुद्धेति शान्तेन वपुषैव सा रघु० १५।७७, १४।१४ 3 स्वच्छ, उज्ज्वल 4 निष्कलंक, बेदाग 5 भोला-भाला, सीधा-सादा, निर्दोष 6 ईमानदार, खरा 7 सही, अशुद्धिरहित, यथार्थ 8 ऋण चुकाया गया, कर्ज अदा किया गया 9 केवल, मात्र 10 सरल, विशुद्ध, अनमिश्रित, (क्रिए० क्रिवि०) 11 अद्वितीय 12 अधिकृत 13 पैनाया हुआ, तेज किया हुआ 14. अननुनासिक, द्र. शिव का विशेषण, -द्धम् 1 कोई भी विशुद्ध वस्तु 2 विशुद्ध सुरा 3 मेंधा नमक 4 काली मिर्च। सम० अन्त राजा का अन्तःपुर, रनवास, अन्दर महल—शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य—श० १।१७, कु० ६।५२, °चारिन् (पु०) अन्तःपुर का सेवक, कञ्चुकी उत्तर० १, °पालकः, °रक्षक अन्तःपुर का रखवाला, आत्मन् (वि०) शुद्धात्मा, ईमानदार -ओदन (शुद्धोदनः) विख्यात बुद्ध का पिता 'शुद्ध बुद्ध चैतन्यम् विभुः, प्रतिभा, प्रज्ञा आदि' गधा बी,—भाव, मति (वि०) विशुद्धमना, निर्दोष, ईमानदार।

शुद्धि (स्त्री०) [शुध्+क्तिन्] 1 विशुद्धता, स्वच्छता 2 चमक, कान्ति—शुक्लापाङ्गशुद्धयोऽपि (चन्द्रमसः) —रघु० १६।१८ 3 परिष्करण, पुण्यशीलता—सीतां मिथिलेशजा शुद्धिभावधाना महीक्षित - रघु० १।८५ 4 पवित्रीकरण, प्रायश्चित्त, परिशोधन, प्रायश्चित्त परक कृत्य - शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभममन्यत —रघु० १२।१० 5 पवित्रीकरणमूलक या प्रायश्चित्त परक संस्कार 6 (ऋण) परिशोध 7 प्रतिक्रिया, प्रतिशोध 8 छुटकारा, (लाभ द्वारा सिद्ध) निर्धारणा 9 संज्ञा, यथार्थता, दायादव्यवहार 10 समाधान संशोधन 11 व्यवकलन 12 दुर्गा। सम० पत्रम् ऐसी भू अमर्में अशुद्ध शब्द शुद्ध रूपों सहित लिख गये हों . प्रायश्चित्त के द्वारा हुई शुद्धि का प्रमाणपत्र।

शुध् (दिवा० पर०) - शुध्यति, शुद्ध०) 1 शुद्ध या पवित्र होना, (आत्मने० में भी) मुखोवें शुध्यन्त शाध्य नदी वेगेन शुध्यति। अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति मनु० ५।१०८-९ 2 शुभ होना, अनुकूल होना, पात्र होना तिलिरेव प्रायेण शुध्यति-मृच्छ० 3 स्पष्ट किया जाना, संदेह दूर करना - न शुध्यति मे अन्तरात्मा-मृच्छ० ८ 4 व्यय किया जाना (ऋण) चुकाया जाना व्यय शुध्यति पंच० ५, प्रेर० (शोधयति - ते) 1 पवित्र करना, निर्मल करना धो डालना 2 (ऋण) परिशोध करना, चुकाना वरि , वि —, सम्—, पवित्र किया जाना, रघु० १२।१०४, मनु० ५।६४।

शुन् (तुदा० पर० शुनति) जाना, हिलना-डुलना।

शुनःशेपः (पु०) [शुन इव शेपः यस्य—अलुक् स०] एक वैदिक ऋषि, अजीगर्त का पुत्र (तैत्तिरीय ब्राह्मण में बताया गया है कि राजा हरिश्चन्द्र ने निस्सन्तान होने के कारण यह प्रतिज्ञा की कि यदि मुझे पुत्र लाभ हुआ तो मैं अपना देवता के लिए उसकी बलि दे दूंगा। अन्त में उसके घर पुत्र ने जन्म लिया उसका नाम रोहित रक्खा गया। राजा अपनी प्रतिज्ञा को किसी न किसी बहाने टालता रहा। अन्त रोहित ने सौ गौओं के बदले अजीगर्त के मध्यम पुत्र शुन शेप को अपने स्थान पर बलि दिये जाने के लिए खरीद लिया। परन्तु बालक शुन शेप ने विष्णु, इन्द्र तथा अन्य देवताओं की स्तुति

करके अपने आपको मृत्यु से बचा लिया। उसके पश्चात् विश्वामित्र ने उस लड़के को अपने कुल में गोद ले लिया और उसका नाम रक्खा 'देवरात')।

शुनक: [शुन्+क शुन् 'वन'] 1 भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि का नाम 2 कुत्ता।

शुनाशीर (सी) र [शुनाशीरो वायुर्यू अस्य स्व इति अच्] 1 इन्द्र का विशेषण 2 उल्लू।

शुनि [शुन्+इन] कुत्ता।

शुनी (स्त्री०) [स्त्रियां ङीष्] कुतिया कुत्तकुत्ती।

शुनीर [शुनी+र] कुतियों का समूह।

शुन्ध् (स्वा० चुरा० उभ० शुन्धति--ते, शुन्धयति--ते) 1 पवित्र या विमल होना 2 विमल करना पवित्र करना।

शुन्ध्यु [शुन्ध्+यु] हवा वायु।

शुभ् (दिवा० आ० शोभते) 1 चमकना शानदार होना सुन्दर होना 2 मनोहर दिखाई देना—शुभ्र शोभसे पत्रेण विनयस्य दुरात्मनः—उत्तर० १, रघु० ८।६ 2 लाभकर प्रतीत होना मत्त हि दुरात्मनः शोभते मृत्यु० १।२० 3 उपयुक्त होना, शोभा देना, योग्य होना (मव० के साथ)—रामभद्र दुर्लभेदारः शोभते वत्स तस्यास्तव समः० 4 प्रार० (ज्ञा० के साथ) सजाना, सवारना, अलंकृत करना वधि वि, अलंकार शानदार दिखाई देना।

शुभ (वि०) [शुभ् क] 1 चमकीला, उज्ज्वल 2 सुन्दर मनोहर जैसे शुभे मुष्टवस्त्रदीये रघु० १।२५ 3 मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्न समृद्ध 4 प्रसन्न अच्छा, सद्गुणी पंच० १।३५८—अम् प्रसन्नता कल्याण, अच्छा भाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि मा० ३।३ 2 अलंकार 3 जल 4 एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। सम०—अङ्ग: शिव का विशेषण, —अङ्ग (वि०) सुन्दर (ङी) 1 सुन्दर स्त्री 2 कामदेव की पत्नी रति अर्थात् सुन्दरा स्त्री,—अङ्गुलम् शुभ-दृष्ट, भला-बुरा आचार (वि०) पवित्र आचरण वाला, सदाचारी—आत्मन् मनोरम स्त्री—इतर (वि०) (वि०) 1 बुरा खराब 2 अशुभ अमांगलिक, उदक (वि०) जिसका जल आनन्ददायक हो—कर (वि०) कल्याणकर, मंगलप्रद—कर्मन् (नपु०) पुण्यकार्य सत्कर्म एक सम्बोधन, दीक्ष,—ग्रह: अनुकूल ग्रह, ग्रहबल ग्रहों का सुन्दर होना दाक्षी,—क्षण, क्षम् शुभ मुहूर्त मंगल घड़ी,—क्षान्ति शुभ समाचार, क्षेमम् गृह को सुसज्जित करने वाला पंचद्रव्य, क्षेमिन् (वि०) सुखसूचक, मंगल की सूचना देने वाला रघु० ३।१४ स्थली 1 वह मंगल यज्ञों का अनुष्ठान होता हो, यज्ञभूमि 2 मंगलभूमि।

शुभंयु (वि०) [शुभमस्यास्ति—युस्] 1 मंगलमय, सौभाग्य-सूचक, भाग्यशाली, मंगलान्वित—अधिक शुभंयुना द्वितयेन इयमेव संगतम् —रघु० ८।६, भट्टि० १।२०।

शुभङ्कर (वि०) [शुभ+कृ+अच्, मुम्] 1 कल्याणकारी 2 आनन्ददायक।

शुभंयावन् (वि०) [शुभम्+यु+णिच्+ल्युल्] सजाया हुआ, सुसज्जित, अलंकृत, उज्ज्वल।

शुभा [शुभ+टाप्] 1. कान्ति, प्रकाश 2 सौन्दर्य 3 इच्छा 4 पीलापन, गोरोचन 5 शमी वृक्ष 6. देवसभा 7 दूब 8 त्रिवृत् लता।

शुभ्र (वि०) [शुभ्+रक्] 1 चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2 श्वेत पश्यति पित्तोपहत. शशिशुभ्रमपीव पीतं -काव्य० १०, रघु० २।६९, कः 1 श्वेत रंग 2 चन्दन (नपु०), भस् 1 चांदी 2 अभ्रक 3 सेंधा नमक 4 कसीस। सम० अंशु, करः 1 चन्द्रमा 2 कपूर, रश्मिः चन्द्रमा।

शुभ्रा [शुभ्र+टाप्] 1 गंगा 2 स्फटिक 3 बलालोचन।

शुभ्रिः [शुभ्र+किन्] ब्रह्मा का विशेषण।

शुम्भ् (स्वा० पर० शुम्भति) 1 चमकना 2 बोलना 3 आघात पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

शुम्भ [शुम्भ+अच्] एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था। सम० घातिनी, वधिनी दुर्गा का विशेषण।

शु (शू) र (दिवा० आ० शूर्यते) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना।

शुल्क् (चुरा० उभ० शुल्कयति ते) 1 लाभ उठाना 2 देना करना, देना 3 रचना करना 4 कहना, वर्णन करना 5 छोड़ना त्यागना, परित्यक्त करना।

शुल्क शुल्क् [शुल्क्+घञ्] 1 चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क विशेषतः वह कर जो राज्य द्वारा घाट या मार्ग आदि पर लिया जाता है—क मुंची शुल्कवेलाक्रम्य शुल्कस्थैर्यातिमात्रमात्—हि० ३।१२५, मनु० ८।१५९, याज्ञ० २।४७ 2 किसी सौदे को पक्का करने के लिए दिया गया असाढ़ धन 3 (कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन

पीडितो पुत्रिणशुल्कसम्पदा - रघु० ११।४७, न कन्यायाः पिता विद्वान् गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि मनु० ३।५१, ८।२०४, ९।९३, ९८ 4. विवाहोपहार 5 विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज 6 वर पक्ष की ओर से दुल्हिन को दिया गया उपहार। सम० ग्रहण, ग्राहिन् (वि०) शुल्कग्रहण-कर्ता, क: 1 विवाहोपहार देने वाला 2. कामदेव विवाहार्थी, ज्ञान, स्थान शुल्क वसूल करने की जगह, चुंगीघर।

शुल्बम् [शुल्ब्+अच्, पृषो०] 1 सुतली, रस्सी, डोरी 2 तांबा।

शुल्व् (स्वा) (चुरा० उभ० शुल्वयति-ते) देना, प्रदान करना 2 भेजना, तितर बितर करना, 3 मापना।

शुल्वम् (लवम्) [शुल्व्+अच्] 1 रस्सी, डोरी 2 ताँबा 3 यज्ञीय कर्म 4 जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान 5 नियम, कानून, विधिसार, स्था, —स्थी दे० ऊपर।

शुल्बु (स्त्री०) [शु+बक् लुक्, द्वित्वादि+विच्] माता।

शुश्रूषक (वि०) [शु+सन्, द्वित्वादि+ण्वुल्] सावधान, आज्ञाकारी, क. सेवक, टहलुआ।

शुश्रूषणम्, णा [शु+सन्+द्वित्वादि+ल्युट्] 1 सुनने की इच्छा 2 सेवा, टहल 3 आज्ञाकारिता, कर्तव्यपरायणता।

शुश्रूषा [शु+सन्, द्वित्वादि+अ+टाप्] 1 सुनने की इच्छा—अतएव शुश्रूषा मा मुक्तस्यनि मुद्रा० २ 2 सेवा, टहल 3 कर्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता 4 सम्मान 5 बोलना, कहना।

शुश्रूषु (वि०) [शु+सन्, द्वित्वादि+उ] 1 सुनने का इच्छुक 2 सेवा या टहल करने की इच्छा वाला 3 आज्ञाकारी, सावधान।

शुष् (दिवा० पर० शुष्यति, शुष्क) 1 सूखना, शुष्क हना शुष्क होना—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि भर्तृ० ३।९२ 2 मुर्झा जाना, प्रेर० (शोषयति-ते) 1 सुखाना, मुर्झाना, शुष्क होना 2 कृश करना, उद्—, परि—, 1 सुखाया जाना, मुरझाना भट्टि० १०।४१, भाग० १।२५ 2 म्लान होना, कुम्हलाना, मुर्झाना, वि—, सम्—, सुखाया जाना।

शुष, शुषी [शुष्+क, शुष—ङीष्] 1 सूखना सुखाना 2 बिल, सुराख।

शुषिः [शुष्+कि] 1 सुखाना 2 रन्ध्र, छिद्र 3 बाँस के बिधने दाने का पोला भाग।

शुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्रयुक्त, रन्ध्रमय —रः 1 आग 2 चूहा, रम् 1 छिद्र 2 अन्तरिक्ष 3 हवा या फूंक से बजने वाला बाजा।

शुषिरा [शुषिर+टाप्] 1 नदी 2 एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

शुषिलः [शुष्+इलच्, स च किन्] हवा, वायु।

शुष्क (भू० कृ० कृ०) [शुष्+क्त] 1 सूखा, सुखाया हुआ शास्त्राया शुष्क करिष्यामि—मच्छ० ८ 2 मुना हुआ म्लान 3 मूर्खीदार, सिकुड़न वाला कृश 4 झूठ मूठ, व्यर्थमुक्त, नकली कामिन स्म रुदते करभोरुर्हारि शुष्करुदित च मृगेक्षि शि० १०।६९ 5 रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी अनुत्पादक मालवि० २ 6 निराधार, निष्कारण 7 बुरा लगने वाला कठोर —स्कम् नारिकेल सूपाग्र शुष्का गिरमीरयेत् मनु० ११।३५। सम०—अङ्ग (वि०) कृशकाय, (गी) छिपकली, अक्षत वह अनाज जिसमें से भूसा अलग नहीं किया गया, कलह 1 व्यर्थ या निराधार झगड़ा 2 बनावटी झगड़ा—मुद्रा० ३,—केरल निराधार वैर, क्षत वह घाव जो अच्छा हो गया है, घाव का चिह्न।

शुष्कल, —कम् [शुष्क+ला+क] 1 सूखा मांस 2 मांस।

शुष्म | शुष्+मन्, किच्च] 1 सूर्य 2 आग 3 वायु, हवा 4 पक्षी, —ष्मन् 1 पराक्रम, सामर्थ्य 2 प्रकाश, कान्ति।

शुष्मन् (पु०) [शुष्+क्, मनिप्] अग्नि० शि० १४।२८ —(नपु०) 1 सामर्थ्य, पराक्रम 2 प्रकाश कान्ति।

शूक, —कम् [शिव+कक्, सम्प्रसारणम्] 1 जौ की बाल आदि 2 पौधा के कड़े रोएं, घास के तिनके आदि —भामि० १।२० 3 नाक सिरा, नोक किनारा 4 मुकाबला करना एक प्रकार का विषैला कीड़ा। सम० —कीट, —कीटक एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएं खड़े हों, —धान्यम् कोई भी ऐसा अन्न जो बाला द्वारा में से निकलता है (जौ आदि), —पिप्पली, —शिम्बा, —शिम्बिका, —शिम्बि कपिकच्छु।

शूकक [शूक+कन्] 1 एकार का अन्न 2 मुकाबला करना।

शूकर [यह शब्द व्युत्पत्तिक शब्द बनाति शू+क अब मुझे शक्ति शकर भाई में बद लिखा गया है पीछेना एक जानवर सिहशूकरन्यायेनागम—मुद्रा० सम० दुष्ट एक प्रकार का धान्य मोथा।

शूकल शूकवत् कर्णेन वदति—शूक+ला+क अर्श० आदि पाड़ा।

शूद्र [शुच+रक्, पृषो० चस्य द, दीर्घ] वर्ण का चौथा पुरुष, हिन्दुओं के चार मुख्य वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि यह पुरुष या ब्रह्मा के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रो अजायत ऋ० १०।९०।१२, मनु० १।८७, उसका मुख्य कर्तव्य उच्चवर्णों की सेवा करना है मनु० ८।४१० सम० आह्निकम् शूद्र का दैनिक अनुष्ठान, उदकम् शूद्र के स्पर्श से दूषित जल, —कुलम्, —वर्ग शूद्रों का समूह, —धर्मः शूद्र का कर्तव्य, —प्रियः प्याज, लहसुन, शैवः शैवों की उच्चवर्णों के किसी एक वर्ण का पुरुष जो शूद्र के समान है —भूयिष्ठ (वि०) जहाँ अधिकांश शूद्र रहते हों—याजक जो शूद्र के लिए यज्ञ का अनुष्ठान करता है वर्णसङ्करजाति या मिश्रजाति, —लेखकम् शूद्र की सी लिखावट, शूद्र का लेखक बनना।

शूद्रक [शूद्र+कन्] एक राजा, मृच्छकटिक का प्रसिद्ध प्रणेता।

शूद्रा [शूद्र+टाप्] शूद्र वर्ण की स्त्री। सम०—भार्यः जिसकी पत्नी शूद्रवर्ण की हो,—वेदनम् शूद्रस्त्री से विवाह करना,—सुत. (किसी भी जाति के पिता द्वारा) शूद्र माता का पुत्र।

शूद्राणी, शूद्री [शूद्र+ङीप् पक्षे आनुक्] शूद्र की पत्नी।

शून (भू० क० कृ०) [शिव+क्त] 1 सूजा हुआ 2 वर्धित उगा हुआ, समृद्ध।

शून्य [शिव अधिकरणे क्त, सम० दीर्घत्व] 1 शून्य तालु, घंटी, उपजिह्विका 2 वृक्षकाना 3 कोई भी वस्तु (जैसे कि घर गृहस्थी का कुछ सामान) जिसमें जीव हिंसा होती हो (यह गिनती में पाँच हैं—चूल्हा, चक्की बहारनी, ओखली और मूसल)—एतत्सर्वं शून्यं गृहस्थस्य यत्र्यां पेषणादिकम् । कण्डनी चादकुम्भश्च मार्जनं यत्र नित्यशः —मनु० ३।६८।

शून्य [वि०] 1 शून्यमें प्राणिवधाय हिंस रहस्यस्थानत्वात् यत्] रिक्त, खाली 2 सूना [शून्यय, नया चिपकने आदि के लिए भी प्रयुक्त] नयनमलम शून्या दृष्टि पं० १।१७ वे० भी० शून्यहृदय 3 अविद्यमान 4 एकान्त, निर्जन, विविक्त वीरान—शून्येषु सूना न के काव्य० ७ भट्टि० ६।१, उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 5 भिन्न उदास उत्साहहीन शून्या आशाय अवसादिषु सर्वत्र कु० ३।३५ वि० १।३३० 6 निकम्मा रहित, अकिञ्चन, निर्धन प्रभावयुक्त (करण० के साथ या समास में) अनुभवशून्यया मे आदि शा० ५, दया ज्ञान आदि 7 तटस्थ निर्दोष 9 अर्थहीन, निरर्थक वि० १।१८ 10 छिपा हुआ —न्यम् 1 निर्जनता रिक्त, खोखलापन 2 आकाश, अन्तरिक्ष 3 सिफर बिन्दु 4 अविद्यमानता (गणि. अंकीय) अविद्यमानता—वृषण मार बिन्दु नं० १।२१ 1 सम० अक्ष खोखला नरनाल —अवस्-अवकाश (वि०) अवसरशून्य अवकाश -मूल, वदन (वि०) हक्का-बक्का, उदास, किंकर्तव्यविमूढ़ बाद पर दार्शनिक सिद्धान्त हो (जैसे बिग्रह आदि) हमारे में शून्य को सत्ता स्वीकार नहीं करना बौद्ध दर्शन, वादिन् (पु०) 1 नास्तिक 2 बौद्ध हृदय (वि०) 1 अन्तर्यामक विक्रम० ८, श० ४ 2 सूने दिल वाला, जो दूसरों पर किसी प्रकार का संदेह न करे।

शून्या [शून्य+टाप्] 1 लोबिया नरकुल 2 खाली नहीं।

शूर (चुरा० उभ० शूरयति-ते) 1 शौर्य के कार्य करना, वीरतापूर्ण होना 1 उद्यम उद्योग करना।

शूर (वि०) [शूर्+अच्] बहादुर, वीर पराक्रमी, शक्तिवर—शूरेषु शूरा न के काव्य० ७, वा० १, शूरमा योद्धा, पराक्रमी 2 सिंह 3 सूअर 4 सूर्य 5. आक का पेड़ 6. कुश का घास, एक आसव। सम०—ओजः निरस्करणीय योद्धा, महावीर० ६।३२,—मानम् अभिमान, अहंकार, सेन (पु० ब० व०) मथुरा के निकट एक देश या उस देश के अधिवासी - रघु० ६।४५।

शूरण [शूर्+ल्युट्] सूरन नामक एक कन्दमूल, कंद।

शूरंमन्य (वि०) [आत्मानं शूरं मन्यते—शूर+मन्+क्यच्, मुम्] डा. व्यक्ति अपने आपको पराक्रमी समझता है।

शूर्प, र्पम् [शू+र उत्वम् निच्] छाज,—र्पः दो द्रोण का तोल। सम०—कर्णः हाथी,—नखा, खी (नखा के स्थान पर) जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम (यह राम के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उनसे विवाह करने की प्रार्थना करने लगी। परन्तु राम ने कहा कि मेरे साथ तो मेरी पत्नी है, अच्छा हो कि तुम लक्ष्मण के पास जाओ। परन्तु जब लक्ष्मण ने भी उसकी प्रार्थना न मानी तो वह वापिस राम के पास आई। इस बात पर सीता को हंसी आ गई। फलतः शूर्पणखा ने अपने आपको अत्यधिक अपमानित समझकर बदला लेने की इच्छा से सीता पर आक्रमण किया और सीता को खाने के लिए दौड़ी। परन्तु उसी समय लक्ष्मण ने उसके कान और नाक काटकर और उसका रूप बिगाड़ दिया —रघु० १२।३२ ४०),—जातः छाज को हिलाने से उत्पन्न हुआ —भूमिः, हाथी।

शूर्पी [शूर्प+ङीप्] 1 छोटा छाज या टोकरा 2 शूर्पणखा।

शूर्प, शूर्पि (पु०, स्त्री०) शूर्पिका, शूर्पी [मुष्टु ऊर्मि अस्मिन् अस्ति पक्षे अण्, ऊर्मि+कन्+टाप्, ऊर्मि ङीप्] 1 लोहे की बनी प्रतिमा 2 धन, सिक्काई।

शूल (रुधा० पर० शूलति) 1 कोमल होना 2 कामातुर करना 3 गड़बड़ करना, बिगाड़ना।

शूल,—शम् [शूल्+क] 1 पैना या नोकदार हथियार, नुकीला कांटा नेजा, बर्छी, भाला 2 शिव का त्रिशूल 3 लोहे की सलाख (जिस पर मांस भूना जाता है) शूल समस्त शूलम्—पु० अप शूल 4 एक स्थूल जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी—(क्रियते) स्कन्धेन शूल हृदयेन दारुम् —मृच्छ० १०।२१, कु० ५।८३ 5 तीव्र पीड़ा 6 उदरशूल 7. गठिया, जोड़ों में दर्द 8 मृत्यु 9 अच्छा, अच्छा (शूलाग्र लोहे की सलाख पर रख कर भूनना)। सम० अग्रम् सलाख की नोक, धनिका (स्त्री०) एक प्रकार का धान, दूषः, आयसम् लोहे का बरछा, लोहे का चूरा जो लोहे को रेतने से निकलता है अद्य (वि०) शूलक औषधि, केवलाहार, जलम्, वर, वारिन्,—भूः, धारिन्, भृत् (पु०) शिव के विशेषण अधिगतशूलनिग्रहं शूलपाणेरिवाश्रमम्—कि० ४।६५, रघु० २।३८, अङ्कः एरण्ड का पौधा, अस्त्र (वि०) शूली

पर चढ़ाया गया, हल्की एक प्रकार का जौ, —हस्त भालाधारी ।

शूलकः [शूल+कन्] अड़ियल घोड़ा ।

शूला [शूल+टाप्] 1 अपराधियों को सूली देने की स्थूणा 2. वेश्या ।

शूलाकृतम् [शूल+आच्+कृ+क्त] भुना हुआ मांस ।

शूलिक (वि०) [शूल+ठन्] 1 शूलधारी 2 सलाख पर भूना हुआ, क: बरगोश, कम् भुना हुआ मांस ।

शूलिन् (वि०) [शूलमस्त्यस्य इति] 1 बर्छीधारी दुर्जनो लवस शूली—रघु० १५।५ 2 उदरशूल से पीड़ित (पु०) 1 बर्छीधारी 2 बरगोश 3 शिव कुर्वन् सन्ध्याबलिपटहता शूलिन. बलाबनीयाम् —मेघ० ३६, कु० ३।५३ ।

शूलिन. [शूल+इनच्] बरगद का पेड़ ।

शूल्य (वि०) [शूल+यत्] 1 सलाख पर भूना हुआ —दश० २ 2 सूली पाने के योग्य स्यम् भुना हुआ मांस ।

शृध् (स्वा० पर० शृधति) 1 पैदा करना, उत्पन्न करना 2 जन्म देना ।

शृगालः [=शृगाल] गीदड़—दे० 'शृगाल' ।

शृगाल [अशृं लाति—ला+क, पृषो०] 1 गीदड़ 2 ठग, धूर्त, उचक्का 3 भीरु 4 दुष्ट प्रकृति, कटुभाषी 5 कृष्ण । सम० केलिः एक प्रकार का बेर,—जम्बुः, -जूः (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी, बीरा,—योनिः गीदड़ की योनि में जन्म लेना, वसः शिव का विशेषण ।

शृगालिका, शृगाली [शृगाल+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् ह्रस्व] 1 गीदड़ी 2 लोमड़ी 3 एलापन, प्रत्यावर्तन ।

शृङ्खलः,-ला,-लम् [शृङ्खान् प्राधान्यात् स्वीकरोति अनेन, पृषो०] 1 लोहे की जञ्जीर, बेड़ी 2 जञ्जीर, हथकड़ी (आल० भी) —भट्टि० ९।९०, लीलाकटाक्ष-मालाशृङ्खलाभिः -दश०, मदारवासनाबद्ध शृङ्खलाम् गीत० ३ 3 हाथी के पैरों को बाँधने की जञ्जीर —स्तम्भेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते—रघु० ५।७२, कि० ७।३१ 4 कमर की पेटी, करधनी 5 नापने की जञ्जीर 6 जञ्जीर, श्रेणी, परम्परा । सम०—यमकम् यमक अलङ्कार का एक भेद दे० कि० १५।४२ ।

शृङ्खलकः [शृङ्खल+कन्] 1 जञ्जीर 2 ऊँट ।

शृङ्खलित (वि०) [शृङ्खला+इतच्] जञ्जीर में जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ, बँधा हुआ ।

शृङ्ग [शृ+गन्, पृषो० मुम् ह्रस्वश्च] 1 सींग—कर्णे-रिवानीं महिषेस्तदग्रं शृङ्गाहृतं कोपति दीधिकाणाम् —रघु० १६।१३, गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गै-र्मुहुस्ताडितम्— श० २।६ 2 पहाड़ की चोटी—आदौ शृङ्ग हरति पवन: किं शिखिनस्तुमस्य —मेघ० १४, ५२, कि० १५।४२, रघु० १३।२६ 3 भवन की चोटी, बुर्जी 4 उत्तुंगता, ऊँचाई 5 प्रभुता, स्वामित्व, सर्वोपरिता, प्रमुखता शृङ्गाणि दृप्तविनृपक्षतजोपभुक्ते परै-रासात्मशिक्षित न मनुष्ये न तु दीर्घसत्त्वे रघु० ९।६२, (यहाँ शब्द का अर्थ 'सींग' भी है) 6 चन्द्रकला, चाँद की नोक 7 चोटी, नोक, अग्रभाग 8. (भैंस आदि का) सींग जो फूंक मार कर बजाया जाता है 9 पिचकारी वसन्तदूतेऽस्मिन्नवशृङ्गमुक्तै —रघु० १६।७० 10 कामदेव, अभिलाषोद्दीपन 11 निशान, चिह्न 12 कमल । सम० अन्तरम् (गौ आदि पशुओं के) सींगों का मध्यवर्ती स्थान,—उच्छ्राय ऊँची चोटी, -क: बाण (अन्) अगर की लकड़ी, -प्रहारिन् (वि०) सींग से मारने वाला, प्रिय शिव का विशेषण, -बोहिन् (पु०) बरगद वृक्ष —वेरम् 1 वर्तमान सिरोंपुर के निकट गंगा के किनारे बसा हुआ एक नगर—उत्तर० १।२१ 2. अबरक ।

शृङ्गक, -कम् [शृङ्ग+कन्] 1 सींग 2 चन्द्रमा की नोक, चन्द्रकला 3 कोई भी नोकीली वस्तु 4 पिच-कारी रघु० १ ।

शृङ्गवत् (वि०) [शृङ्ग+मतुप्] चोटीवाला —(पु०) पहाड़ ।

शृङ्गाट, शृंगाटक [शृङ्गं प्रधानम् अटति —शृङ्ग+अट् —अच्] 1 एक पहाड़ 2 एक पौधा कम्, कम् चौराहा ।

शृङ्गार [शृङ्ग कामोद्रेकमूच्छत्यनेन अ —अण्] प्रणयरस, कामोन्माद, रतिरस (काव्यरचनाओं में वर्णित आठ या नौ प्रकार के रसों में सबसे पहला रस यह दो प्रकार का है —सम्भोग शृंगार और विप्रलम्भ शृंगार)

शृङ्गार सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरि क्रीडति —गीत० १. (इसकी परिभाषा यह है - पुंसि स्त्रियां स्त्रियः पुंसि सम्भोग प्रति या स्पृहा । स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारम्भादिकारकः ॥ दे० सा० द० २१० भी) 2 प्रेम प्रणयोन्माद सम्भोगेच्छा विक्रम० १।९ 3 शृङ्गारिक गतिविधियों के उपयुक्त वेश, ललित वेशभूषा 4 मैथुन, सम्भोग 5 हाथी के शरीर पर बनाये गए सिंदूर के निशान 6 चिह्न, रघु० 1 सींग 2. सिंदूर 3 अबरक 4 शरीर या वस्त्रों के लिए सुगन्धित चूर्ण 5 काला अगर । सम०—चेष्टा कामा-नुरक्ति का संकेत रघु० ६।१२, जनितम् प्रेमा-लाप, प्रणयकथा,—भूषणम् सिंदूर,—योनिः कामदेव का विशेषण, रसः साहित्यशास्त्र में वर्णित शृंगाररस, प्रणयरस, -विधिः,—वेश: प्रेमालापों के उपयुक्त वेश-भूषा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने प्रिय से मिलता है), —सहायः प्रेमव्यापार में सहायक व्यक्ति, मर्म-सचिव ।

शृङ्गारकः [शृङ्गार+कन्] प्रेम, कम् सिंदूर।
शृङ्गारित (वि०)[शृङ्गार+इतच्] 1 प्रेमाविष्ट, प्रणयोन्मत्त 2 सिंदूर से लाल 3 अलङ्कृत, सजा हुआ।
शृङ्गारिन् (वि०) [शृङ्गार+इनि] शृङ्गारप्रिय, प्रेमासक्त, प्रणयोन्मत्त (पु०) 1 प्रणयोन्मत्त, प्रेमी 2 लाल 3 हाथी 4 बेशर्म बूढ़ा, सठियाया 5 सुपारी का पेड़ 6 पान का बीड़ा दे० 'ताम्बूल'।
शृङ्खि [--शृङ्खी, पृषो० ह्रस्व] आभूषणों के लिए सोना (स्त्री०) सिंगी मछली।
शृङ्खिकम् [शृङ्ख+ठन्] एक प्रकार का विष, का एक प्रकार का भूर्जवृक्ष।
शृङ्खिन् [शृङ्ख+इनच्] मेढ़ा, मेंढा।
शृङ्खिनी [शृङ्खिन्+ङीष्] 1 गाय 2. एक प्रकार की अस्थिरता, मोतिया।

शृङ्खिन् (वि०) (स्त्री० नी) [शृङ्ख+इनि] 1 सींगों वाला 2 शिखाधारी, चोटी वाला, (पु०) 1 पहाड़ 2 हाथी 3 वृक्ष 4 शिव 5 शिव के एक गण का नाम शृङ्गी भृङ्गी रिटिस्तुण्डी—अमर०।
शृङ्खी [शृङ्ख+ङीष्] 1 आभूषणों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सोना 2 एक औषधि—मूल, काकड़ासिंगी, अतीस 3 एक प्रकार का विष 4 सिंगी मछली। सम०—कवचम् गहना बनाने के लिए सोना।
शृङ्खिः (स्त्री०) [शृ+क्विन्, पृषो० तस्य न, ह्रस्वश्च] अंकुश, प्रताड़ना।
शृत (भू० क० कृ०) [शृ+क्त] 1 पकाया हुआ 2 उबाला हुआ (पानी, दूध आदि)।
शृध् । (स्वा० आ०—परन्तु कहीं, कहीं और कहीं में पर० भी प्रयुक्त) अपान वायु छोड़ना, पाद मारना।
॥ (स्वा० उभ० शर्धति—ते) 1 आर्द्र करना, गीला करना 2 काट डालना।
॥। (चुरा० उभ० शर्धयति—ते) 1 प्रयत्न करना, 2 लेना, ग्रहण करना 3 अपमान करना (पाद मार कर) नकल करना मजाक उड़ाना।

शृधु [शृध्+कु] 1 वृद्धि 2 गुदा।
शृ (क्रया० पर० शृणाति शीर्ण) 1 फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर डालना 2 चोट पहुँचाना, क्षति ग्रस्त करना 3 मार डालना, नष्ट करना कि० १४।१३, कर्मवा० (शीर्यते) 1 चिथड़े-चिथड़े होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बर्बाद होना, अव , अवसन्न हो जाना (कर्मवा०) मुर्झाना, कुम्हलाना—मुखि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत अनेऽथवा—भग० २।१०४।
शेखरः [शिख्+अरन्, पृषो०] 1 चूड़ा, कलगी, चूड़ी का गजरा, सिर पर लपेटी हुई माला—कपालि वा स्यादवशेषपुष्पशेखरम् कु० ५।९८, ७।१२, मकरकृत विकीर्ण स्पष्टबन्धुकसूनसंहतकरश्रितशेखरं विक्लवम् -शि० ११।४६, ३।५०, मलयदेवशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी -दश० 2 किरीट, मुकुट, 3 चोटी, शृंग 4. (समास के अन्त में प्रयुक्त) किसी भी श्रेणी का सर्वोत्तम या प्रमुखतम 5 सीसे का शुद्ध विशेष,—रम् लौंग।
शेफः, शेफस् (नपु०) शेकः, कम्, शेफस् (नपु०) [शी+पन्, शी+असुन्, पृद् शी+फन्, शी+असुन्, कुक्] 1 लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय 2 अण्डकोष 3 पूँछ।
शेफालिः, ली, शेफालिका (स्त्री०) [शेफाः शयनशालिनः अलयो यत्र—ब० स०, शेफालि+ङीष्, कन्—टाप् वा] एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिंधुवार का पौधा।
शेमुषी [शी+मिच्=से योद्दं न मुञ्चति—शे+मुष्—क+ङीष्] बुद्धि, समझ।
शेल् (स्वा० पर० शेलति) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 काँपना।
शेवः [शुक्लाते सति शेते—शी+वन्] 1 साँप 2 सिर 3 ऊँचाई, उन्नतता 4 आनन्द 5 दौलत, खजाना, —वम् 1 लिंग 2 आनन्द। सम०—विः 1 मूल्यवान् कोष विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् मनु० ७।११४, सर्वे कामा शेवधिर्जीविते वा स्त्रीणां भर्ता धर्मदारास्तथैव पुंसाम्—प्रा० ६।१८ 2 कुबेर के नौ कोषों में से एक।
शेवलम् [शी+क्विप् तथा भूत वन् अक्षते वल्+अच्] मोथे की भाँति हरे रंग का पदार्थ जो पानी के ऊपर उग आता है, काई 2 एक प्रकार का पौधा।
शेवलिनी [शेवल+इनि+ङीष्] नदी।
शेवाकः दे० 'शेवल'।

शेष (वि०) [शिष्+अच्] बचा हुआ, बाकी, अन्य सब —यथेच्छसेवोत्पन्नधामिकर्म—रघु० २।४, ४।९४, १०।३०, शेष० १०।८७, मनु० ३।४२, कु० २।४४, इस अर्थ में प्राय. समास के अन्त में—भक्षितशेष, आस्वेद्यशेष, आदि,—षः, —षम् 1 बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट अन्नभोज्यादिभिन्नशेषस्य व्याधिशेषस्तथैव च। पुनश्च वर्धते यस्मात्तस्मात्शेष न कारयेत्—काव्य० ४०, अन्नशेष —मेघ० २८, विभवशेष कु० ५।५७, वाक्यशेष —विक्रम० ३ 2 छोड़ी हुई कोई बात, या भूली हुई बात, ('इतिशेषः' बहुधा ग्रन्थकारों द्वारा रचना को पूरा करने के लिए किसी आवश्यक शब्द पद की पूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है) 3. अभाव, कमी, हानि,—षः 1 परिणाम, प्रभाव 2. अन्त, समाप्ति, उपसंहार 3 मृत्यु, विनाश 4. एक विख्यात नाग का नाम, जिसके एक हजार फनों का होना कहा जाता है, तथा जिस का वर्णन विष्णु की

शय्या के रूप में, या समस्त संसार को अपने सिर पर सम्भाले हुए मिलता है—किं शेषस्य भरक्षयेण न बभूवि श्रमो, न शिषत्येष यत्—मुद्रा० २।१८, कु० ३।१३, ६।६८, मेघ० ११०, रघु० १०।१३ 5 बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है, या फल तथा अन्य चढ़ावा जो मूर्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुण्य अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बाँट दिया जाता है—श० ३, कु० ३।२२,—अन्न उच्छिष्ट अन्न, चढ़ावे का अवशेष (शेषे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है—1 अन्त में, आखिरकार 2 अन्य विषयों में)। सम० अशनम् जूठन, अवस्था बुढ़ापा,—आगः शेष, बाकी, भोजनम् जूठनखाना, —रात्रि, रात का चौथा पहर,—शयन,—शायिन् (पु०) विष्णु के विशेषण।

शेषः [शिक्षा वेत्त्यधीते अण् वा] 1 शिक्षा अर्थात् उच्चारण शास्त्र का पढ़ने वाला विद्यार्थी जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है 2 नौसिखिया, नवशिष्य।

शैक्षिक [शिक्षा—ठक्] शिक्षाशास्त्र में निष्णात।

शैक्ष्यम् [शिक्षा—यत्] अधिगम, प्रवीणता।

शैघ्र्यम् [शीघ्र—ष्यञ्] फुर्ती, सम्वरता

शैत्यम् [शीत—ष्यञ्] ठंडक, शीतलता अभाव—शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य—रघु० ५।६४, कु० १।३४।

शैथिल्यम् [शिथिल—ष्यञ्] 1 ढीलापन, नरमी 2 मन्दगति 3 दीर्घसूत्रता, अनवधानता 4 कर्मण्यता, जीवटता।

शैनेयः [शिनि—ढक्] सात्यकि का नाम।

शैन्याः (पु०, ब० व०) [शिनि—यञ्] शिनि की सन्तान, शिनि के वंशज।

शैब्य दे० 'शैव्य'।

शैलः [शिला—अण्] 1 पर्वत, पहाड़—शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे—भाग० ५५ शैलो मलयदर्दुरौ—रघु० ६।५१ 2 चट्टान, बड़ा भारी पत्थर,—लम् 1 सुहागा धूप, गुग्गुल 2 शिलाजीत 3 एक प्रकार का अंजन। सम०—अग्रम् एक देश का नाम,—अग्रम् पहाड़ की चोटी,—अटः 1 पहाड़ी, वनस्थ 2 किसी देवमूर्ति का पुजारी 3 सिंह 4. स्फटिक,—अधिप,—अधिराजः, इन्द्रः,—पतिः, —राजः हिमालय पर्वत के विशेषण, आरण्यम् शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप,—कदलः पहाड़ की ढलान,—गन्धम् एक प्रकार का चन्दन,—जम् 1 शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत,—जा, तनया,—पुत्री,—सुता पार्वती के विशेषण—अवापत प्रागल्भ्य परिग्रहारुचं शैलतनये—काव्य० १०, कु० ३।६८,—वन्यम् (पु०) शिव का विशेषण,—वरः कृष्ण का विशेषण,—शिलाजः शैलेयगन्धद्रव्य, धूप,—वृक्षः बेल का पेड़,—शिल्पिः (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टाकी, —सानुः गुफा, कन्दरा, —सिन्धुरम् समुद्र,—सार (वि०) पत्थर की तरह मजबूत, चट्टान की तरह दृढ़ किं० १०।१४।

शैलकम् [शैल+कन्] 1 शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2 शिलाजीत।

शैलादि. [शिलादस्यापत्यम्—शिलाद+इञ्] शिव का गण, नन्दी।

शैलालिन् (पु०) [शिलालिना मुनिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते —शिलालि+णिनि] अभिनेता नर्तक।

शैलिक [सह्यते शालमस्यास्य—ठन्, शैलिक+टाप्] पालकवहा, डंडी ढोने वाला।

शैली [शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि वलोपः] 1 व्याकरण सूत्र की संक्षिप्त वृत्ति 2 अभिनय किए या अर्थघटन का एक प्रकार प्रायेणाचार्याणामियं शैली यत्स्वाभिप्रायमपि परापदेशमिव वर्णयन्ति—मनु० १।४ पर कुल्लू० 3 व्यवहार, काम करने का ढंग, आचरण क्रम।

शैलूषः [शिलूषस्यापत्यम्—शिलूष+अण्] 1 अभिनेता नर्तक आ शैलूषप्रसङ्गात्—वर्णो० १, एते पुरुषा सर्वमेव शैलूषजनं व्याहरन्ति—तत्त्व, अलाभ्यं शैलूष इव भूमिकाम् शि० १।६९ 2 सांघिक-कुशल —शैलूषराजे का नायक सर्वान् मण्डला का प्रधान 3 सभा में नालधारक 4 धूर्त 5 बल का पेड़।

शैलूषिक. [शैलूष नटमिव अनेकार्टा—ठक्] जो अभिनेता का व्यवसाय करता हो।

शैलेय (वि०) (स्त्री० यी) [शिलायां भवः शिला+ढक्] 1 पहाड़ी 2 चट्टानों में उत्पन्न 3 पत्थर की तरह कड़ा पथरीला,—यः 1 सिंह 2 भ्रमर,—यम् 1 पर्वत पर उत्पन्न धूप शैलेयगन्धीनि शिलातलानि —रघु० ६।५१, कु० १।५५ 2 मूर्गाभत्त नाल 3 सेंधा नमक।

शैल्य (वि०) (स्त्री०—ल्या) [शिला+ष्यञ्] पथरीला, स्थान चट्टान जैसी कठोरता कड़ापन।

शैव (वि०) (स्त्री० वी) [शिवो देवतास्य अण्] शिवसम्बन्धी, —वः 1 हिन्दुओं के तीन मुख्य सम्प्रदायों में से एक 2 शैव सम्प्रदाय का पुरुष,—वम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

शैवक [शैव+कन्] एक प्रकार का जलीय पौधा, पनकाष्ठ, सेवार, काई, सोवा—अनिशमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् श० १।२० —लम् एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी।

शैवलिनी [शैवल+इनि+ङीप्] नदी।

शैवाल दे० 'शैवल'।

शैब्यः [शिबि + ष्य] 1. कृष्ण के चार घोड़ों में से एक 2 पांच सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम 3 घोड़ा।

शैशवम् [शिशोर्भावः अण्] बचपन, बाल्यावस्था (सोलह वर्ष से नीचे का समय) -शैशवात्प्रभृति पालिता प्रियाम् उत्तर० १।४५, शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्-रघु० १।८।

शैशिर (वि०) (स्त्री०—री) [शिशिर + अण्] जाड़े के मौसम से सम्बन्ध रखने वाला, -रः काले रंग का चातकपक्षी।

शैशोपाध्यायिका [शिष्योपाध्याय + कन् + टाप्] शिक्षागुरुओं के छात्रों को पढ़ाना।

शो [दिवा० पर० श्यति, शात या शित, कर्मवा० शायते —प्रेर० शातयति, इच्छा० शिशासति] 1 पैनाना, तेज करना 2 पतला करना कृश करना वि—तेज करना।

शोक [शुच् + घञ्] अफसोस, रंज, दुःख, कष्ट विलाप रुदन, वेदना—इत्याकस्मिकात्तस्य शोक -रघु० १४।७० भग० १।६। सम० अग्निः, अनल शोक रूपी आग —अपनोद रंज को दूर करना,—अभिभूत, आकुल,—आविष्ट, उपहत,—विप्लुत (वि०) कष्टग्रस्त वेदनायुक्त,—कर्ता शोक में लीन, मातृ अभावग्रस्त परायण, कालक (वि०) शोक से ग्रस्त, पीड़ाभिभूत,—क्षिकल (वि०) शोकाकुल,—स्थानम् शोक का कारण।

शोकनम् [शुच् + ल्युट्] रंज, अफसोस दिलाना।

शोचनीय (वि०) [शुच् + अनीयर्] विलाप करने योग्य, खिन्न, शोच्य, दुःखद।

शोच्य (वि०) [शुच् + ण्यत्] 1 शोचनीय, विलाप करने योग्य, खिन्नतीय, दयनीय रघु० ३।१० 2 कमीना दुश्चरित्र।

शोचिस् (नपुं०) [शुच् + इसि] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक 2 ज्वाला। सम०—केश (शोचिष्केशः) अग्नि का विशेषण।

शोटीर्यम् [शुटीर + ष्यञ्, 'शौटीर्यम्' इति साधु] पराक्रम, शौर्य, शूरवीरता।

शोण (वि०) [शुण् + अच्] 1 सुर्ख 2 कमीना, अधम 3 आलसी, सुस्त —ः 1 सुर्ख 2 निकम्मा, आलसी 3 अधम या कमीना पुरुष 4 घूर्त, ठग।

शोण् (स्वा० पर० शोणति) 1 जाना हिलना-जुलना 2 लाल होना।

शोण (वि०) (स्त्री०—णा, णी) [शोण + अच्] 1 लाल, गहरा लाल रंग हल लालसा रंग —स्यात्सावत्सङ्कनशोणिताशोणगणिकनमविष्यति कथांस्य देहि भोम -वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८, कु० १।७ 2 खून के रंग का, कालिमायुक्त भूरा,—णः 1 लोहित वर्ण, लाल रंग 2 आग 3 एक प्रकार का लाल रंग का गन्ना, ईख 4 कुम्मैत घोड़ा 5 एक दरिया का नाम जो मैकलपर्वत से निकलकर पटना के निकट गंगा में गिरती है—प्रत्यग्रहीत् पार्थिवकाहिनी सा भागीरथी शोण इवोत्तरङ्गः—रघु० ७।३६ 6 मंगलग्रह नु० लोहित, रक्त 1 रुधिर 2 सिंदूर। सम० अम्बुः एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है, अश्मन् (पुं०)—उपलः 1 लाल पत्थर 2 लाल, एक माणिक्य, उत्पल लाल रंग का कमल,—रत्नम् लाल नामक माणिक्य, पद्मरागमणि।

शोणित (वि०) [शोण + इतच्] 1 लाल, लोहित, रक्त वर्ण का,—तम् 1 रुधिर उपस्थिता शोणितपारणा मे—रघु० २।३९, वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८ 2 केसर, जाफरान। सम०—आक्तुमत् केसर, जाफरान,—उक्षित (वि०) रक्तरंजित, उपलः पद्मरागमणि —चन्दनम् लाल चंदन,—प (वि०) रुधिर पीने वाला,—पुरम् बाणासुर का नगर।

शोणिमन् (पुं०) [शोण + इमनिच्] लालिमा, लाली।

शोथः [शु + घञ्] सूजन, स्फीति। सम० घ्न,—जित् (वि०) सूजन को दूर करने वाला, सूजन या स्फीति को हटाने वाली औषधि, जिह्वा पुनर्नवा, रोगः हाथ पांव आदि में सूजन होने का रोग जलोदर, —हृत् (वि०) सूजन हटाने वाली दवा (पुं०) भिलावा।

शोध [शुध् + घञ्] 1 शुद्धिसंस्कार 2 संशोधन, समाधान 3 ऋणभुगतान, (ऋण) परिशोध 4 प्रतिहिंसा, प्रतिदान, बदला।

शोधक (वि०) (स्त्री०—का, धिका) [शुध् + णिच् + ण्वुल्] 1 शुद्ध करने वाला 2 रेचक 3 संशोधन करने वाला

शोधन (वि०) (स्त्री—नी) [शुध् + णिच् + ल्युट्] शुद्ध करने वाला, स्वच्छ करने वाला, -नम् 1 शुद्ध करना, स्वच्छ करना 2 संशोधन, (ऋण) परिशोधन करना 3 यथार्थ निर्धारण 4 जवाबदेही, बेबाकी, ऋण चुकाना 5 प्रायश्चित्त, परिशोधन 6 धातुओं को साफ करना 7 प्रतिहिंसा, प्रतिदान, दण्ड 8 (गणि० में) अवकलन 9 तूतिया 10 मल, विष्ठा।

शोधनकः [शोधन + कन्] दंड-न्यायालय का एक अधिकारी, मच्छ० ९, फौजदारी अदालत का अफसर।

शोधनी [शोधन + ङीष्] झाड़ू, बुहारी।

शोधित (भू० क० कृ०) [शुध् + णिच् + क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 संस्कृत 3 छाना हुआ 4 संशोधित, समाहित 5 ऋण परिशोध किया हुआ चुकाया हुआ 6 बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा की हुई।

शोध्य (वि०) [शुध् + णिच् + यत्] शुद्ध किये जाने के

योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य ऋण परिशोध किये जाने के योग्य,—यः अभियुक्तव्यक्ति, वह पुरुष जिसने लगाये हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है।

शोफः [शु+फन्] सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ। सम० जिह्व, —हृत् (पु०) भिलावे का पौधा।

शोभन (वि०) (स्त्री०—नी) [शोभते—शुभ्+ल्युट्] 1 चमकीला, शानदार 2 मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3 भद्र, शुभ, सौभाग्य शाली 4 खूब सजाया हुआ 5 सदाचारी, पुण्यात्मा, —नः 1 शिव 2 बुद्ध 3 अच्छे परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति,—ना 1. हल्दी 2 सुन्दर या सती स्त्री कु० ४।४४ 3 एक प्रकार का पीला रंग, गोरोचना,—नम् 1 सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति 2 कमल।

शोभा [शुभ्+अ+टाप्] 1 प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, चमक 2 (क) वैभव, सौन्दर्य, ऊर्जस्विता, चारुता, लावण्य —वपुरभिनवशोभा पुष्यति स्वामनोभाम्—श० १।१९, मेघ० ५२,५९, (ख) नैसर्गिक सौन्दर्य, (पर्वत आदि की) गरिमा,—अद्रिशोभा रघु० २।३७ 3 अलंकार, ललित अभिव्यक्ति शोभेव मन्दरभुव्यसुभिक्षाम्भाधि वर्णना शि० २।१०७ 4 हल्दी 5 एक प्रकार का रंग, गोरोचना। सम०—अञ्जन एक अत्यन्त उपयोगी वृक्ष, सौहजना।

शोभित (भू० क० कृ०) [शुभ्+णिच्+क्त] 1 अलंकृत, चारु, सजाया हुआ 2 सुन्दर, प्रिय।

शोषः [शुष्+घञ्] 1 सूखना, सुखाना, द्रवशोषविकल्पनम्—कु० ६।३०, इसी प्रकार आस्यशोष कण्ठशोष 2, कृशता, कुम्हलान—शरीरशोष, कुसुमशोष आदि 3 फफूंदीय क्षय, या क्षयरोग सशोषणाद् रसादीनां शोष इत्यभिधीयते सुश्रु०। सम०—मूलम् पित्तज्वर-मूल।

शोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 1 सूखना, शुष्क करना 2 सुखाना, कृश करना, —न कामदेव का एक बाण, —णम् 1 सूखना, शुष्क होना 2 सूखना, रसाकर्षण, अवशोषण 3 नि:श्वास, क्लान्ति 4 कृशता, कुम्हलाहट 5 सोंठ।

शोषित (भू० क० कृ०) [शुष्+णिच्+क्त] 1 सुखाया गया 2 कृश हुआ, कुम्हलाया हुआ 3 परित्यक्त।

शोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+णिच्+णिनि] सुखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, क्षीण होने वाला।

शौकम् [शुक+अण्] तोतों की लार, तोतों का झुण्ड।

शौकर (वि०) (स्त्री० —री) [शूकर+अण्] अश्व, सिरके का।

शौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शुक्ति+ठक्] 1 सीपी से सम्बन्ध रखने वाला 2 खट्टा, सिरके का, खट्टाई।

शौक्तिकेयम्, शौक्तेयम् [शुक्तिका+ढक्, शुक्ति+ढक्] मोती।

शौक्तिकेय [शुक्तिका+ढक्] एक प्रकार का विष।

शौक्ल्यम् [शुक्ल+ष्यञ्] पवित्रता, सफेदी, स्वच्छता।

शौचम् [शुचेर्भाव अण्] 1 पवित्रता, स्वच्छता—मनु० १।१४७ 2 मलत्याग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण विशेषतः किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होने पर (लोक-व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर शौचकर्म आदि करना कर) शुद्ध होना 3 स्वच्छ होना, निर्मल होना 4 मलत्याग करना 5 खरापन, ईमानदारी। सम० आचारः कर्मन् (नपु०) कृत्यः शुद्धि विषयक संस्कार, कूपः मण्डास, गौचालय।

शौचेय [शुचि+ढक्] घोड़ा।

शौट (स्वा० पर० शौटति) घमण्डी या अहंकारी होना।

शौटीर (वि०) [शौटि ईरन्] घमण्डी, अहंकारी र 1 शरवीर, बलवान् योद्धा 2 घमण्डी अनुचर 3 संन्यासी।

शौटीर्यम्, शौण्डीर्यम् [शौटीर (शौण्डीर)+ष्यञ्] घमण्ड, अभिमान, दर्प।

शौण्डति (स्वा० पर० शौण्डति) दे० 'शौट'।

शौण्ड (वि०) (स्त्री० ण्डी) [शुण्डायां भवः शुण्डाया अभिजनः अण्] 1 शराबी, शराब पीने का शौकीन, शराब 2 उत्तेजित, मदमाता, नशे में चूर (आलं०) धनिकपरिपोषितनिपुण न वेष्टित मानदाक्ष्य—वेणी० १।२१ अभिमान में चूर, घमण्डी 3 कुशल, दक्ष (प्रायः के साथ या समास में) अक्षशौण्ड दानशौण्ड आदि।

शौण्डिक, शौण्डिन् (पु०) [शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक् इनि वा] शराब बेचने वाला, कलाल, शराब विक्रेता सुराजीवी की०,—की कलाली, शराब बिक्री पयांसि शौण्डिकीनस्य कालमेयमिवोदकम् शि० ३।१२।

शौण्डिकेय [शुण्डिका+ढक्] व्यास।

शौण्डी [शुण्डा कण्डिच्च० अण्] अभिमान, घमण्ड शुण्डा+अण् ङीप्] मदमाती स्त्री, बड़ी चौधराइन।

शौण्डीर (वि०) [शुण्डा शौण्डीनां समूहः शुण्डा+ईरन्+अण्] 1 घमण्डी, अभिमानी 2 उत्साही, उद्यमी।

शौद्धोदनि [शुद्धोदन इदम्] बुद्ध का विशेषण, शुद्धोदन का पुत्र।

शौद्र (वि०) (स्त्री० द्री) [शूद्र+अण्] शूद्र सम्बन्धी, —द्रः शूद्रा स्त्री का पुत्र [जिसका पिता (तीन वर्णों में से) किसी भी वर्ण का हो—दे० मनु० १०।१६।

शौनम् [शुना+अण्] कुत्तों के झुण्ड में रक्खा हुआ मांस।

शौनक [शुनक+अण्] एक महर्षि, ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता।

शौल्किक, [शुल्का प्रायित्वमस्यात प्रयोजनमस्य ठक्] 1 कमाई, —छलना परिहरामि भृत्यवे, शौल्किको गृहशकुनिका—मिव —उत्तर० १।४५ 2 बहेलिया, चिड़ीमार 3 शिकार, आखेट।

शौभः [शोभार्थं हितम् शोभा+अण्] 1 देवता, विश्वकर्मा 2 सुपारी का पेड़।

शौभाञ्जनः [शोभाञ्जन+अण्] एक वृक्ष का नाम, दे० 'शोभाञ्जन'।

शौभिक [शौभ व्यायामपूर्व शिल्पमस्य शौभ+ठक्] 1 मदारी, बाजीगर 2 शिकारी, बहेलिया इति चिन्तयन्ती हृदये प्रकम्प्य मम्यामि शौभिकेन शर भागि० १।११८।

शौरसेनी [शूरसेन+अण्+ङीप्] एक प्रकार की प्राकृत बोली का नाम।

शौरि [शूर+इञ्] 1 कृष्ण या विष्णु 2 बलराम 3 जीवग्रह।

शौर्यम् [शूरस्य भाव ष्यञ्] 1 पराक्रम, शूरता वीरता, —शौर्यं वैरिणि वज्रमायुधनिपातक्रौञ्चे मे केवलम् भर्तृ० २।३१, नये च शौर्ये च वसन्ति सम्पद —सभा० 2 सामर्थ्य शक्ति, ताकत 3 युद्ध और विग्रहात्मक घटनाओं का रंगमंच पर अभिनय करना नृ० 'आरभटी'।

शौल्क, शौल्किक [शुल्के नदादानेऽधिकृत अण्, ठक् वा] चुंगी का अध्यक्षक शुल्काधिकारी।

शौल्विक [शिल्प] क [शुल्व+ठक्] सोने के बर्तन बनाने वाला, कसेरा।

शौव (वि०) (स्त्री० वी) [श्वन्+अण्, टिलोप] कुत्ता से सम्बन्ध रखने वाला कुक्कुरसम्बन्धी, -वम् 1 कुत्तों का झुंड 2 कुत्तों का स्वभाव।

शौष (वि०) आगामी कल सम्बन्धी।

शौवन (वि०) (स्त्री० -नी) [श्वन+अण्] 1 कुक्कुर सम्बन्धी 2 कुत्ते के गुणों से युक्त, -नम् 1 कुत्ते का झुंड 2 कुत्ते का स्वभाव।

शौवस्तिक (वि०) (स्त्री० -की) [श्वस्—ठक्, तट च] आगामी कल सम्बन्धी या आगामी कल तक ठहरने वाला, एकदिवसीय, अल्पजीवी।

शौष्कल [शुष्कल+अण्] 1 मांस बिक्रेता 2 मांसभक्षी, -लम् सूखे मांस का मूल्य।

श्च्युत् दे० सौ० 'श्च्युत्'।

श्च्युत् (स्वा० पर० अव्यर्तति) 1 टपकना, रिसना बहना, चूना —शि० ८।६३, कि० ५।२९ 2 डालना, उड़ेलना, फैलाना बखेरना, वि — बहना, रिसना टपकना निश्चयोत्पन्न सुतनु कवरीविस्रंसो बाहदेशे -मा० ८।२।

श्च्यो (श्यो) त, **श्च्यो (श्यो)** तवत् [श्च्यु (श्यु) + घञ्, ल्युट् वा] रिसना, बहना, क्षरित होना, चूना।

श्मशानम् [शमात शयो शेरतेऽत्र —शी+आनच्, दिच्च, अथवा शमन् शब्देन शवे शेरते, तस्य ज्ञान शयनम्] शवस्थान, कब्रिस्तान, शवदाह स्थान, मरघट—राजद्वार श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धव सुभा०। सम०—अग्नि, मरघट की आग,—आलयः कब्रिस्तान, गोचर (वि०) श्मशान में घूमने वाला -मनु० १०। ३१, -निवासिन्, वसिन् (पु०) भूत, -भाज्, भागिन् (पु०) शिव के विशेषण, वैराग्यम् क्षणिक विरक्ति, श्मशान भूमि के दर्शन से उत्पन्न अल्पायी संसार त्याग की भावना, —शूलः,—कम् श्मशान भूमि में स्थित लोहे या लकड़ी की सूली कु० ५।७३, साधनम् भूत-प्रेतों को वश में करने के लिए श्मशान में तांत्रिक मन्त्रों की साधना करना।

श्मश्रु (नपु०) [शम् पु० सुखं श्रयते लक्ष्यतेऽनेन श्रि+डु] दाढ़ी-मूंछ उपरि कपालस्तमश्रु कण्ठनालादधोनयत् रघु० १४।५८। सम०—प्रवृद्धि दाढ़ी का बढ़ना, रघु० १३।७१, —धरी दाढ़ीमूंछ वाला स्त्री० धरक नाई।

श्मश्रुल (वि०) [श्मश्रु+लच्] दाढ़ी मूंछ वाला, श्मश्रुलाः भल्लाग्रवक्रिनैस्तया शिरांसि श्मश्रुलैर्मही (तस्यार) रघु० ७।६३।

श्मील् (स्वा० पर० श्मीलति) आंख झपकना पलक मारना आंखें मटकाना।

श्मीलनम् [श्मील्+ल्युट्] आंख मीचना, पलक झपकना।

श्यान (भू० क० कृ०) [श्यै+क्त] 1 गया हुआ 2 जमा हुआ पिंडीभूत 3 घनीभूत, चिपकला, सांद्र 4 सिकुड़ा हुआ, सूखा मनु० २।४८, कम् घृणा।

श्याम (वि०) [श्यै+घञ्] 1 काला, गहरा नीला, काले रंग का प्रत्याख्यातविशेषक कुरबक श्यामावशाताश्मम्—मालवि० ३।५, विक्रम० २।७ कुवलयदलश्यामा-मस्त्रिनश्च —उत्तर० ४।११, मेघ० १५, २३ 2 धूरा 3 गहरा-हरा या 1, काला रंग 2 बादल 3 कोयल 4 प्रयाग में यमुना के किनारे स्थित बरगद का पेड़ अत्र च कालिन्दीतटे वट श्यामो नाम - उत्तर० १, सोऽयं वट श्याम इति प्रतीत —रघु० १३।५३, -मम् 1 यमुना नामक 2 काली मिर्च। सम० अङ्ग (वि०) काला, (गः) बुध ग्रह, अम्बः 1 शिव (नीलकंठ) का विशेषण 2 मोर,- कर्णः अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा,- पत्र: नागरमोथा वृक्ष,

—भाव्,—वर्ण (वि०) चमकीला काला,—सुन्दरः कृष्ण का विशेषण ।

श्यामल (वि०) [श्याम+लच्, ला+क वा] काला, गहरानीला, साँवला, निशितश्यामलस्निग्धमुखी शक्ति. वेणी० ४, शि० १८।३६, उत्तर० २।२५ —ल 1 काला रंग 2 काली मिर्च 3. मौरा 4 बटवृक्ष ।

श्यामलिका [श्यामल+कन्+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ।

श्यामलिमन् (पु०) [श्यामल+इमनिच्] कालिमा कालापन श्यामा श्यामलिमानमानयत भो सान्द्रैमंरीकृत्यकं —विद्ध० २।१ ।

श्यामा [श्याम+टाप्] रात. विशेषतः काली रात —श्यामा श्यामलिमानमानयत भो सान्द्रैमंरीकृत्यकं —विद्ध० २।१ 2 छाँह, छाया 3 काली स्त्री 4 स्त्री विशेष (नै० ३।८ पर मल्लि० के अनुसार 'यौवनमध्यस्था' —शि० ८।३६ मेघ० ८२. या, शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला । तप्तकाञ्चनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते भट्टि० ५।१८ तथा ८।१०० पर एक टीकाकार के अनुसार) 5 निस्सन्तान स्त्री 6 साग 7 हल्दी 8 माड़ा कायल 9 प्रियंगुलता—मालवि० २।३, मेघ० १०८ 10 नील का पौधा 11 तुलसी का पौधा 12 कमल का बीज 13 यमुना नदी 14 कई पौधों का नाम ।

श्यामाक [श्याम+अक-अण्] एक प्रकार का अन्न, सावाँ, सावाँ चावल—(न) श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति —श० ४।१३, ('श्यामक' भी) ।

श्यामिका [श्याम+उन् भावे] 1. कालिमा श्यामता —कु० ५।२१ 2 मलिनता खट्टापन (चतुर्थ अतिका का) —हेम्न मलक्षये ह्यन्नौ विशुद्धि श्यामिकापि च —रघु० १।१० ।

श्यामित (वि०) [श्याम+इतच्] काला किया हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ कलूटा ।

श्याल. [श्यै+कालन्] पत्नी का भाई, साला ।

श्यालक [श्याल+कन्] 1 पत्नी का भाई 2 साला ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली [श्यालक-ङीष्-टाप् इत्व वा, श्याल+ङीष्] पत्नी की बहन, साली ।

श्याव (वि०) (स्त्री० वा,—वी) [श्यै+वन्] कपिश, गहरा भूरे रंग का, काला, धूमर, धूमैला 2 लाल के रंग का, भूरा, —वः भूरा रंग । सम०—वंश आम का वृक्ष ।

श्वेत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [श्वि+इतच्] सफेद —तः सफेद रंग ।

श्वेत [श्वि+इतन्] 1 सफेद रंग 2 सफेदी 3 बाज, शिकरा 4 हिंसा, प्रजघन्या । सम०—अरण्य, —करणिका 1 अलग चिता पर दाह करना 2 बाज की भाँति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना, —चित्,—जीविन् (पु०) बाज को पकड़ कर तथा उसे बेच कर जीवन निर्वाह करने वाला ।

श्वे [स्वा० आ० श्वयते, श्वान, शीत या शीन) 1. जाना, हिलना-डुलना 2 अभ्र जाना 3 सूज जाना, कुम्हलाना आ ,सूख जाना रघु० १७।३७, दे० 'आश्यान भी ।

श्वेतपाता [श्वेतस्य पातोऽत्र अण्, मुम् च] बाज की भाँति झपटना शिकार, झापेट ।

श्वेतोत्पाक., श्वेतोत्पाक. [श्वे+ओत्पा (वा) क] एक वृक्ष का नाम, सोना पाढ़ा ।

श्वेद्क् (स्वा० आ० श्वेदते) जाना, रेंगना ।

श्वेल् (स्वा० पर० श्वेलति) जाना, हिलना-डुलना, रेंगना ।

श्वि (स्वा० पर० श्वयति, श्वायति—ते) देना, प्रदान करना, अर्पण करना (प्रायः वि पूर्वक) रघु० ५।१ ।

श्वित् (अव्य०) [श्वी+डति] एक प्रकार का उपसर्ग जो 'धा' धातु के पूर्व में लगता है, दे० 'धा' के अन्तर्गत ।

श्वि । (स्वा० पर०, क्या० पर० श्वयति श्वयति) चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना ।

॥ (स्वा० पर० पर० चुरा० उभ० श्वयति, श्वाययति-ते) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2. क्षीण करना, हीना करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना ।

॥॥ (चुरा० उभ० श्वाययति-ते) 1. प्रयत्न करना, व्यस्त रहना 2 विवेक होना, कलाकार होना 3. प्रसन्न होना ।

श्वेषय [श्वि+णिच्+ल्युट्] 1 मारना, विनाश करना 2 खाली, हीना करना, मुक्त करना 3. प्रयत्न, चेष्टा 4 बाधना, बन्धन में डालना ।

श्रद्धा [श्रत्+धा+अङ्+टाप्] 1 आस्था, निष्ठा, विश्वास, भरोसा 2 ईश्वरीसन्देशों में विश्वास, धार्मिक निष्ठा —श्रद्धा वित्त विधिरहेति चित्तय तत्समागमम —भी० ७।२१, रघु० २।१६, मनु० ६।३३ १७।३ 3 शान्ति मन की स्वस्थता 4. घनिष्ठता, परिचय 5 आदर, सम्मान 6 प्रबल या उत्कट इच्छा—तथापि वैदिग्धरहस्यलक्षणाः श्रद्धा विधास्यन्ति मनोहरां तव विक्रम० १।१३, मालवि० ६।१८ 7 दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा ।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा+आलच्] 1 विश्वास करने वाला, निष्ठावान् 2 इच्छुक, (किसी वस्तु का) अभिलाषी, लु (स्त्री०) दोहदवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे ।

श्रन्थ् । (स्वा० आ० श्रन्थते) 1 दुर्बल होना 2. निढाल या विश्रान्त होना 3 हीला करना, विश्राम करना ।

॥ (क्रया० पर० श्रथ्नाति) 1 हीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना 2 खूब प्रसन्न होना ।

अम्भः [अम्भ्+घञ्] 1 ढीला करना, स्वतन्त्र करना 2 ढीलापन, 3 विष्णु।

अम्भनम् [अभ्+ल्युट्] 1 ढीला करना, ढीलना 2 चोट पहुँचाना, मार डालना, विनाश करना 3 बाँधना, बन्धन में डालना।

अयनम्,-ना [आ+णिच्+ल्युट्] उबलवाना, गरम करना।

अर्पित (भू० क० कृ०) [आ-णिच्+क्त] गरम किया गया या उबलाया गया, तप्त मांड, काजी।

अस् (दिवा० पर० आस्यति, आस्त) 1 चेष्टा करना, उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2 तपश्चर्या करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना —किमधिकमाम्यसि धीरि—वेणी० ५।५० 3 थक्न होना, थकना, परिश्रान्त होना—रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि - काव्य० १०, शि० १४।३८, भट्टि० १४।११० 4 कष्टग्रस्त होना, दुखी होना —यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम् —मेघ० ५०, प्रेर० (श्रम-आ-मयति-ते) थकाना, परि-, अत्यन्त थक जाना—आ० १, वि-, 1 विश्राम करना, आराम करना, ठहरना कु० ३।१, 2 थमना, अन्त होना, दे० 'विश्रान्त' भी रघु० ११५४, उतरवाना बसाना।

अम [श्रम्+घञ्, न वृद्धि] 1 मेहनत, परिश्रम, चेष्टा, प्रयत्न अल्प महीपाल तव श्रमेण —रघु० २।३४, जातारि हि पुनः सम्यक् कविरेव कवे श्रमम्—सुभा० —रघु० १६।७५, मनु० १।२०८ 2 थकावट, थकान, परिश्रान्ति, विनयन्ते स्म तद्योधा मरुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।३५, ६७, मेघ० १७५, कि० ५।२८ 3 कष्ट, दुःख 4 तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन,—दिव यदि प्रार्थ्यसे वृथा श्रम कु० ५।७५ 5 व्यायाम, विशेषतः सैनिक व्यायाम, कवायद 6 घोर अध्ययन। समः अम्बु (नपुं०)—जलम् पसीना कर्षित (वि०) थका-मादा, साध्य (वि०) परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य।

अमण (वि०) (स्त्री०—णा,-णी) [श्रम्+युच्] 1 परिश्रमी, मेहनती 2 नीच, अधम, कमीना,—णः 1 सन्यासी, भक्त, साधु 2 बौद्धभिक्षु, णा, णी 1 भक्तिनी, भिक्षुणी 2 तपस्विनी स्त्री 3 नीच जाति की स्त्री 4 बंगाली मजीठ 5 अठामासी, बालछड़।

अम्भ् (स्वा० आ० अम्भते, अब्ध) 1 उपेक्षक होना, अवधानरत होना, लापरवाह होना 2 गलती करना, वि —, विश्वास करना, भरोसा करना—दे० 'विश्रब्ध'।

अम्भः, अम्भस् [अभ्+असुन्, ल्युट् वा] आराम, थकावट, आश्रय।

अव: [अव्+अप्] 1. सुनना, जैसा कि 'श्रुतावधान' में 2. कान 3 किसी त्रिकोण का कर्ण।

अवणः,-णम् [श्रु+ल्युट्] 1 कान—श्रवणति मनुष्य समूहे श्रवणमपि दयाति गीत० ५ 2 किसी त्रिकोण का कर्ण, क, —ण इस नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित हैं), णम् 1 सुनने की क्रिया,—श्रवणसुभगम् मेघ० ११ 2. अध्ययन 3 ख्याति, कीर्ति 4 जो सुना गया या प्रकट हुआ, वेद, इति श्रवणात् 'वैदिक पाठ ऐसा होने के कारण' 5. दीक्षान्त। समः इन्द्रियम् श्रोतेन्द्रिय, कान,—द्वयम् कान का बाह्यविवर, गोचर (वि०) श्रवणपरास के अन्तर्गत (रः) सुनाई देने की सीमा तक, यथा 'श्रवणगोचरे तिष्ठ, अर्थात् जहाँ तक सुनाई देता रहो वहीं तक रहो,—कटुः, विषयः कान की पहुँच, श्रवण परास बृहत्संहिता श्रवणविषयप्राप्तिषु रघु० १४।८७, वारिः—की (स्त्री०) कान का सिरा,—सुखद (वि०) कर्णसुखद।

श्रवस् (नपुं०) [श्रु+असि] 1. कान 2. ख्याति कीर्ति, 3 दौलत 4 सूक्त।

श्रवस्यम् [श्रवस्+यत्] ख्याति, कीर्ति, विभूति।

श्रवायः,-व्य [श्रु+आरप] यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु।

श्रविष्ठा [श्रव ख्याति अस्ति अस्या श्रव+मतुप्, इष्ठनि मतुवो मुक्] 1 धनिष्ठा नाम का नक्षत्र 2. श्रवणा नाम का नक्षत्र। समः -ज- बृहस्पति।

श्रा (अदा० पर० श्रात, श्राण या शृत, प्रेर० श्रपयति-ते) पकाना, उबालना, भोजन बनाना, परिपक्व करना, पकना।

श्राण (वि०) [श्रा-क्त] 1 पकाया हुआ, भोजन बनाया हुआ, उबाला हुआ 2 आर्द्र, गीला, तर।

श्राणा [श्राण+टाप्] काजी, मांड।

श्राद्ध (वि०) [श्रद्धा हेतुत्वेनास्त्यस्य अण्] विश्वास करने वाला, द्धम् 1 मृतक सम्बन्धियों की दिवङ्गत आत्माओं के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार—श्रद्धया दीयते यस्मात्तस्माच्छ्राद्ध निगद्यते, यह तीन प्रकार का है—नित्य, नैमित्तिक और काम्य 2 और्ध्वदैहिक आहुति, श्राद्ध के अवसर पर उपहार या भेंट। समः कर्मन् (नपुं०)—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, कृत् (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला, दः अन्त्येष्टि आहुति या श्राद्ध भेंट करने वाला दिनः, -नम् उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय, -देवः, —देवता 1 अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता 2 यम का विशेषण 3 विश्वेदेव दे० 4 पिता, प्रजनक, मुख, -भोजक (पुं०) दिवङ्गत, पूर्व पुरुष।

श्राद्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्राद्धेन, श्राद्धे तदुद्दिश्य प्रक्रियत्वेनास्त्यस्य वा ठन्] श्राद्ध सम्बन्धी और्ध्व दैहिक

भेंट को स्वीकार करने वाला, - कर्म् श्राद्ध के अवसर पर दिया गया उपहार।

श्राद्धीय (वि०) [श्राद्ध+छ] श्राद्ध सम्बन्धी।

श्रान्त (भू० क० कृ०) [श्रम्+क्त] 1 थका हुआ, थका-मादा, क्लान्त, परिश्रान्त 2 शान्त, सौम्य, - त. सन्यासी।

श्रान्ति (स्त्री०) [श्रम्+क्तिन्] क्लान्ति, परिश्रान्ति थकावट।

श्राम [श्रम्+अच्] 1 श्रम 2 तपस्या 3 अध्यायी छात्रजन।

श्राय [श्रि+घञ्] आश्रय, बनाव, शरण, सहारा।

श्राव [श्रु+घञ्] सुनना, कान देना।

श्रावक [श्रु+ण्वुल्] 1 श्रोता 2 छात्र शिष्य—श्रावकाचार-स्थायाम् मा० १०, अर्थात् छात्रावस्था में 3 बौद्ध-भिक्षु बौद्ध सन्त, महात्मा 4 बौद्ध भक्त 5 पाखण्डी, 6 कौवा।

श्रावण (वि०) (स्त्री०—णी) [श्रवण+अण्] 1 श्रवण सम्बन्धी 2 श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न, —क: सावन का महीना, (जुलाई—अगस्त में आने वाला) 2 पाखण्डी 3 छद्मवेशी 4 एक बेटा सन्यासी जिसको दशरथ ने अन्धे जाने मार डाला, बाद में उसके माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी हृदय होकर मरेगा।

श्रावणिक (वि०) [श्रावण+ठक्] श्रावण मास सम्बन्धी —क: सावन का महीना।

श्रावणी [श्रवणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी —श्रवण+अण्+ङीप्] 1 श्रावण मास की पूर्णिमा 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सलोनो, रक्षाबन्धन।

श्रावस्ती, स्ती (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर।

श्रावित (वि०) [श्रु+णिच्+क्त] कहा हुआ, सुनाया गया, वर्णन किया गया।

श्राव्य (वि०) [श्रु+णिच्+यत्] 1 सुने जाने के योग्य (विप० दृश्य) 2 जो सुना जा सके, स्पष्ट।

श्रि (स्वा० उभ० श्रयति ते, श्रित, प्रेर० श्राययति —ते, इच्छा० शिश्रीषति-ते, शिश्रयिषति—ते) जाना, पहुँचना, सहारा लेना, दौड़ होना बचाव के लिए पहुँच होना —य देश श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० १।१७१, रघु० ३।७०, १९।१ 2 जाना, पहुँचना, भुगतना, (अवस्था) धारण करना परीता रक्षोभि श्रयति विकृतां कामपि दशाम् मालवि० १।८३, द्विपेन्द्रभावं कलभ श्रयन्निव —रघु० ३।३२ 3 चिपकना, झुकना, आश्रित होना, निर्भर रहना—उत्तर० १।३० 4 निवास करना, बसना 5 सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6 सेवन करना काम पर लगाना, 7 संलग्न करना, अनुषक्त होना। अधि- —, 1 निवास करना 2 सवारी करना, चढ़ना, आ—, 1 सहारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब होना, विक्रम० ५।१७, भट्टि० १४।१११ 2 अनुगमन करना - रघु० ४।३५ 3 शरण लेना, निवास करना, बसना—रघु० १३।७, पञ्च० १।५१ 4 आश्रित होना, मनु० ३।७७ 5 पार जाना, अनुभव प्राप्त करना, भुगतना, धारण करना एको रस करुण एव निमित्तभेदाद्विभिन्न पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् - उत्तर० ३।४७ 6 जमे रहना, डटे रहना 7 चुनना छांटना, पसन्द करना 8 सहायता करना, मदद करना, उद्—, ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना, उप—, पहुँच या अवलम्ब होना, भग० १४।२, उत्तर० १।३७, सम्—, 1 पहुँच होना, सहारा होना शरण में जाना सहायता के लिए पहुँचना 2 अवलम्बित होना, आश्रित होना —उत्तर० ६।१२ मा० १।२४ 3 हासिल करना, प्राप्त करना 4 अभिगमन करना, सम्भोग के लिए पहुँचना 5 सेवा करना।

श्रित (भू० क० कृ०) [श्रि+क्त] 1 गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ 2 चिपका हुआ, सहारा लिया हुआ, बैठा हुआ 3 संयुक्त, संमिलित, सबद्ध 4 बचाया हुआ 5 सम्मानित, सेवित 6 अनुसेवी सहकारी 7 आच्छादित बिछाया हुआ 8 युक्त, पूर्ण, समवेत, सर्वांचित 10 सहित, सपक्ष।

श्रिति (स्त्री०) [श्रि+क्तिन्] अवलम्ब, सहारा, पहुँच।

श्रियस्क (वि०) 1 अपने आप को श्रेय मानने वाला 2 घमंडी।

श्रियापति (पु०) शिव का विशेषण।

श्रिष् (स्वा० पर० श्रेषति) जलाना।

श्री (क्रया० उभ० श्रीणाति, श्रीणीते) पकाना भोजन बनाना उबालना, तैयार करना।

श्री (स्त्री०) [श्रि+क्विप्, नि०] 1. धन, दौलत, प्राचुर्य, समृद्धि, पुष्कलता अभिवर्धते श्रियो मूलम् रामा०, साहसं श्री. प्रतिवसति—मृच्छ० ४, 'सौभाग्य वैभव पर अनुग्रह करता है'—मनु० ९।३०० 2 राजभक्ति, ऐश्वर्य, राजकीय धनदौलत—कि० १।१ 3 गौरव महिमा, प्रतिष्ठा—श्रीलक्षण कु० ७।४६, अर्थात् महिमा या गौरव का चिह्न 4 सौन्दर्य, चारुता, लालित्य, कान्ति (मुख) कमलश्रिय दधौ कु० ५।२१, ७।३२, रघु० ३।८, कि० १।७५ 5 रंग, रूप, कु० २।२ 6 विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है,—आशीर्विष इवारक्षस्य मूर्ध्नि यस्या श्रीः—उत्तर०

४।६, शि० ३।१४, शि० १।१ 7 गुण, श्रेष्ठता 8 सचाबट 9 वृद्धि, समझ 10 अतिमानव शक्ति 11. मानवजीवन के तीन उद्देश्यों की समष्टि (धर्म, अर्थ, और काम) 12 सरल वृक्ष 13 बेल का पेड़ 14 हींग 15 कमल ('श्री' शब्द सम्मान सूचक पद है जो पूज्य व्यक्तियों तथा देवों के नामों के पूर्व लगाया जाता है श्रीकृष्ण श्रीराम, श्री वाल्मीकि, श्रीजयदेव', कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थों के पूर्व भी जिनका विषय धार्मिक है - श्रीभागवत, श्रीरामायण आदि, किसी पाण्डुलिपि या पत्रादिक के आरम्भ में भी मंगलाचरण के रूप में प्रयुक्त होता है, माघ ने अपने 'शिशुपालवध' काव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में इस शब्द का प्रयोग किया है, जिस प्रकार भारवि ने 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है) । सम० आसनम् कमल, -ईश, विष्णु का विशेषण -कण्ठः 1 शिव का विशेषण 2 भवभूति कवि का विशेषण - -श्रीकण्ठपदलाञ्छन -उत्तर० १, सखः कुबेर का विशेषण, - करः विष्णु का विशेषण (-रम्) लाल कमल, करणम् लेखनी, कामः विष्णु का विशेषण, कारिन् (पु०) एक प्रकार का बारहसिंगा, काष्ठः, -ष्ठम् चन्दन की लकड़ी श्रीखण्डविलेपन सुखयति - हि० १।१७, केलिः (पुं०) एक प्रकार का छोटा नाटक, - गर्भः 1 विष्णु का विशेषण 2 तलवार

गृहः पक्षियों को पानी पिलाने की घुण्डी, घनम् जमी दही, (नः) बौद्ध महात्मा, - चक्रम् 1 मृदङ्ग भूमण्डल 2 इन्द्र के रथ का पहिया, - चः काम का विशेषण, - द कुबेर का विशेषण, दयित: वरः विष्णु के विशेषण, नगरम् एक नगर का नाम —नाथः राम का विशेषण, - निकेतनः, -निवासः विष्णु के विशेषण,—पतिः 1 विष्णु का विशेषण शि० १३।६९ 2 राजा, प्रभु,—पथः मुख्य सड़क, राजमार्ग, पर्णम् कमल,- पर्वतः एक पहाड़ का नाम

मा० १, पिण्डः तारपीन, पुष्पम् लौंग, फलः बेल का पेड़ (-लम्) बेल का फल,—फला,-फली 1. नील का पौधा 2 आमलकी, आंवला,—भानुः (पु०) 1 चांद 2 घोड़ा, मस्तकः लहसुन, मुद्रा वैष्णवों का विशेष तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है,—मूर्तिः (स्त्री०) 1. विष्णु या लक्ष्मी की प्रतिमा 2 कोई भी प्रतिमा,—युक्त,-युत,-, 1 सौभाग्यशाली, प्रसन्न 2. धनवान्, समृद्धिशाली (प्राय पुरुषों के नामों के पूर्व लगाया जाने वाला सम्मान सूचक पद,—रङ्गः विष्णु का विशेषण, - रसः 1 तारपीन 2 राल,—वत्सः 1. विष्णु का विशेषण, विष्णु की छाती पर बालों का घूघर या चिह्नविशेष-प्रभावनिष्प्रतीकारतया श्रीवत्सचिह्नमदर्पणम् रघु० १०।१०, °अङ्कः °धारिन्, °भृत्, °लक्षण, °लाञ्छन, (पुं०) विष्णु के विशेषण कु० ७।४३, वत्सलिन् (पुं०) एक घोड़ा जिसकी छाती पर बालों का घूघर होता है, वरः, वल्लभ विष्णु के विशेषण, - वल्लभः लक्ष्मी का प्रिय, सौभाग्यशाली या सुखी व्यक्ति, वासः 1 विष्णु का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3 कमल 4 तारपीन,- वासस् (पु०) तारपीन, वृक्षः 1 बेल का पेड़ 2 अश्वत्थवृक्ष 3 घोड़े के मस्तक और छाती पर बालों का घूघर, शेखरः 1 तारपीन 2 राल, संज्ञम् लौंग, सहोदरः चन्द्रमा, सूक्तम् एक वैदिक सूक्त का नाम, हरिः विष्णु का विशेषण, हस्तिनी सूर्यमुखी फूल का पौधा ।

श्रीमत् (वि०) [श्री + मतुप्] 1 दौलतमन्द, धनवान् 2 सुखी, सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली, फलता-फूलता 3 सुन्दर, सुहावना, मृच्छ० वि० ३।१ 4 विख्यात, प्रसिद्ध कीर्तिशाली, प्रतिष्ठित (प्रसिद्ध और सम्मानित पुरुष या वस्तुओं के नामों के पूर्व आदरसूचक शब्द (पुं०) विष्णु का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 तिलक वृक्ष 5 अश्वत्थवृक्ष ।

श्रीमत् (वि०) [श्री अस्ति अस्य मतुप्] 1 धनवान्, दौलतमन्द 2 सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली 3 सुन्दर 4 विख्यात, प्रसिद्ध ।

श्रु १ (स्वा० पर० श्रवति) जाना, हिलना, चूलना—तु० 'सु'। २ (स्वा० पर० शृणोति, श्रुत) 1 सुनना, (ध्यानपूर्वक) श्रवण करना, कान देना शृणु मे भाषितम् यथा विक्रम० २, इतानि चाश्रावयते षडङ्गानाम्—भट्टि० २।१०, सदेवा मे तदनु जलदः श्रोष्यति, श्रोष्यसे—मेघ० १३ 2 अधिगम करना, अध्ययन करना—द्वादशवर्षाणि व्याकरणं श्रूयते पंच० १ 3 सावधान होना, आज्ञा मानना (इत्यिश्रूयते—(ऐसा सुना जाता है अर्थात् वेदों में इसका विधान है, ऐसा धर्मविधि), प्रेर० (श्रावयति-ते) सुनवाना, समाचार देना, कहना बयान करना —इच्छा० (शुश्रूषते) 1 सुनने की इच्छा करना 2 सावधान होना, आज्ञाकारी होना, हुक्म मानना - पंच० ४।७८ 3. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना—शुश्रूषस्व गुरून् - मनु० ४।१७, कु० १।५९, मनु० २।४४, अनु-, 1 सुनना मनु० ९।१००, तच्चकानुशुश्रुमे—पंच० १ 2 गुरुपरम्परा से प्राप्त, अभि-, 1 सुनना 2. ध्यान देकर सुनना, आ-, 1. सुनना 2. प्रतिज्ञा करना (अधिक में सप्र०)—याज्ञ० २।१९६, सु० पा० १।४।४०, उप-, 1 सुनना 2. जानना, निश्चय करना—केशिना हतामुर्वशी नारदानुपश्रुत्य गन्धर्वसेना समादिष्टा विक्रम० १, परि-, सुनना, प्रति-, प्रतिज्ञा करना (इस अर्थ में सप्र० जिसके

लिए प्रतिज्ञा की जाय—तस्यै प्रतिश्रुत्य रघुप्रवीरस्तदीप्सितम्—रघु० १४।२९, २।५६, ३।६७ १५।४, क्रि० ,सुनना (प्राय क्तांत रूप प्रयुक्त), सम् सुनना, ध्यान लगा कर सुनना—सम्शृणोति न श्लोकान्ति—भट्टि० ५।१९, ६।५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में आ०)—हितान्न यः सम्शृणुते स किं प्रभुः किरा० १।५।

श्रुत्किका (स्त्री०) ओरा, सज्जी, खार।

श्रुत (भू० क० कृ०) [श्रु+क्त] 1 सुना हुआ, ध्यान लगा कर श्रवण किया हुआ 2 वर्णित कर्णगोचर 3 अधिगत, निर्धारित, समझा गया 4 सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत रघु० ३।४०, १४।६१ 5 नामक, पुकारा हुआ, तम् 1 सुनने का विषय 2 जो दैवी संदेश से सुना गया, अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम, पुनीत ज्ञान—श्रुतप्रकाशम् रघु० ५।२ 3 सामान्य अधिगम, विद्या, श्रुत्वा श्रुतेनैव न कुण्डलेन (विभाति) भर्तृ० २।७१, रघु० ३।२१ ५।२६, पंच० २।१४७, ४।६१। सम० अध्ययनम् वेदों का पढ़ना,—अन्वित (वि०) वेदों का ज्ञाता अर्थात् मौखिक रूप में या जबानी कहा गया तथ्य, -कीर्ति (वि०) प्रसिद्ध, विश्रुत, (पु०) 1 उदार व्यक्ति 2 दिव्य ऋषि (स्त्री०) दक्षपुत्र की पत्नी, -देवी सरस्वती,—धर (वि०) सुनी हुई बात को याद रखने वाला, मेधावी।

श्रुतवत् (वि०) [श्रुत+मतुप्] वेदज्ञाता, वेदवेत्ता, वेदज्ञ रघु० ९।७४।

श्रुतिः (स्त्री०) [श्रु+क्तिन्] 1 सुनना सम्प्रस्य ग्रहणमिति श्रुते—मुद्रा० १।७, रघु० १।२७ 2 कान,—श्रुति सुखभ्रमरस्वनगीतय—रघु० ९।३५, शि० १।१, वेणी० ३।२३ 3 विवरण, अफवाह, समाचार मौखिक संवाद 4 ध्वनि 5 वेद (दिव्य संदेश होने के कारण—विप० स्मृति—दे० 'वेद' के अन्तर्गत) 6. वैदिकपाठ वेदमन्त्र,- इतिश्रुते या इति श्रुति 'ऐसा वेद कहता है' 7 वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुण्य अधिगम 8. (संगीत में) सप्तक का प्रभाग, स्वर का चतुर्थांश या अन्तराल—शि० १।१०, २१।१, (दे० तत्स्थानीय मल्लि०) 9. श्रवण नक्षत्र। सम० अनुप्रास अनुप्रास का एक भेद—दे० काव्य० ९,—उक्त,—उदित (वि०) वेदविहित,—कटु 1 साँप 2 तपश्चर्या पायश्चित्त साधना, —कटु (वि०) सुनने में कड़वा (—) कर्णकटु, अमधुर ध्वनि, (यह रचना का एक दोष माना जाता है), —कोदनम्,—ना आम्नायिक विधि, वेदविधि,—कौशिका धर्मशास्त्र, विधिसंहिता,—द्वैधम् वेदविधियों का परस्पर विरोध या विरुद्धता,—धर (वि०) सुनने वाला, निगदांतम् वेदों का पाठ,—पथ कर्णपथम्—मालवि० ४।१,—प्रकाशन (वि०) कर्णप्रिय,—प्रामाण्यम् वेदों की प्रामाणिकता या स्वीकृति, मण्डलम् कान का बाहरी भाग,—मूलम् 1 कान की जड़,—लघिम् किमपि श्रुतिमूले गीत० १ 2 वेद का संहितापाठ, —मूलक (वि०) वेद पर आधारित,—विषयः 1 सुनने का विषय, अर्थात् ध्वनि—शि० १।१ 2 कर्ण परास एतत्प्रायेण श्रुतिविषयमापतितमेव—का० 3 वेद का विषय 4 धार्मिक अध्यादेश,—वेद्यः कान बींधना, —स्मृति (स्त्री०) (द्वि० व०) वेद और धर्मशास्त्र।

श्रुक् [श्रु+क] 1 यज्ञ 2. यज्ञीय चमस।

श्रुवा [श्रुव+टाप्] 1 यज्ञीय चमस, तु० स्रुवा। सम० —वृक्षः विकटक वृक्ष।

श्रेढी [श्रेण्यां गणीकरणाय ढौकते—श्रेणी+ढौक्+ड, पृषो०] (गणि० में) भिन्न जातीय द्रव्यों को मिलाने के लिए गणनाम भेद। सम० फल श्रेढी का योग जोड़।

श्रेणि (पु०, स्त्री०) श्रेणी (स्त्री०) [श्रि+णि, या ङीप्] 1 रेखा, शृङ्खला, पंक्ति, तरङ्गभ्रुभङ्गा श्रेणिर्नर्तयितुः श्रेणिरभवत्—वेणी० ४।२८ न पद्मरागश्रेणिविरेव पङ्कज मणीवलासङ्गमपि प्रकाशते—कु० ५।९, मेघ० २८, ३५ 2 दल, संचय, समूह उत्तर० ४ 3 व्यापारियों का संघ, शिल्पियों का संगठन, निगम 4 बाजार, बालटी। सम० धर्मा (पु०, ब० व०) व्यापारियों या शिल्पकार-संघों के नियम, रीतियाँ आदि।

श्रेणिका [श्रेणि+कन्+टाप्] रस्सी, बेमा।

श्रेयस् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यम्—ईयसुन्, आदेश] 1. अपेक्षाकृत अच्छा वरीयम्, श्रेष्ठतर वर्धनादक्षय श्रेय—कि० ३।३, भग० ३।३५, २।५ 2 सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम 3 अधिक सुखी या सौभाग्यशाली 4 अधिक आनन्ददायक, श्रियतर (पु०) 1 सद्गुण, पुण्यकर्म, नैतिक गुण, धार्मिक गुण 2 आनन्द, सौभाग्य मंगल, शुभ, कल्याण, आशीर्वाद, शुभ परिणाम पूर्वार्धश्रीरिव श्रया दूरं हि परिवर्तते शि० ७।१३, यानि कल्याणि हि श्रेय पूजापूजाव्यतिक्रमे रघु० १।७१, उत्तर० ५।२३, मा० ७, रघु० ५।३४ 3 शुभ अवसर का० 4 मोक्ष, मुक्ति। सम० अधिन् (वि०) 1 आनन्द का अन्वेषक, आनन्द का इच्छुक 2 हितैषी, —कर 1 आनन्ददायक, अनुकूल 2 मंगलमय, शुभ, परिणाम, मुक्ति प्राप्त करने की घण्टी।

श्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्य, इष्ठन् आदेश] 1 सर्वोत्तम, अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रमुखतम (सर्व० या अधि० के साथ) 2. अत्यन्त प्रमुख या समृद्ध 3 प्रियतम, अत्यन्त प्रिय 4 सबसे अधिक पुराना, वृद्धतम, ष्ठः 1 ब्राह्मण 2 राजा 3 कुबेर का नाम 4 विष्णु का नाम, ष्ठम् गाय का दूध। सम०—आश्रमः 1 मनुष्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम 2 गृहस्थ, श्रम् (वि०) धार्मी।

श्रेष्ठिन् (वि०) [श्रेष्ठ अनादिकमस्यास्य इनि] किसी व्यापारसंघ या शिल्पिसंस्थान का प्रधान या अध्यक्ष—निक्षेपे पतिते हर्म्ये श्रेष्ठी स्तौति स्वदेवताम्—यच० १।१४।

श्रै (स्वा० पर० श्रायति) 1 स्वेद आना, पसीना निकलना 2 पकाना, उबालना।

श्रोण् (स्वा० पर० श्रोणति) 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2 एकत्र होना, संचित होना।

श्रोण (वि०) [श्रोण्+अच्] विकलांग, लंगड़ा,—ण: एक प्रकार का रोग।

श्रोणा [श्रोण+टाप्] 1 कांची 2 अवयव नितंब।

श्रोणि,—णी (स्त्री०) [श्रोण्+इन् का ङीप्] 1. कूल्हा, नितम्ब, चूतड़ श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२ श्रोणीभारस्त्वयति तनुताम् · काव्य० १० 2 सड़क, मार्ग। सम० तट: कूल्हों की ढलान, -फलकम् 1 विशाल कूल्हे 2 नितम्ब, · बिम्बम् 1 गोल कूल्हे विक्रम० ४।१८ 2 कमर-पट्टा, सूत्रम्—1 मेखला 2 कमर से लटकती हुई तलवार का बन्धन।

श्रोतस् (नपु०) [श्रु+असुन् तुट् च] 1 कान 2 हाथी का सूंड 3 ज्ञानेन्द्रिय 4 सरिता, प्रवाह ('स्रोतस्' के स्थान पर)। सम० एकाग्र सूंड का शिकार, नखना—मेघ० ४२, ('स्रोतोरन्ध्र' भी लिखा जाता है)।

श्रोतृ (पु०) [श्रु+तृच्] 1 सुनने वाला 2 छात्र।

श्रोत्रम् [श्रूयतऽनेन —श्रु करणे+ष्ट्रन्] 1 कान—ऋक्० ८।७१ 2 वेदों में प्रवीणता 3 वेद। सम० वेद (वि०) कान से ग्रहण करने के योग्य, ध्यानपूर्वक सुनने के योग्य सदस्य मे तदनु श्रवस्य श्रोत्रमि श्रोत्र-पेयम् मेघ० १३, -सूक्तम् कान की जड़।

श्रोत्रिय (वि०) [छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा छन्दस्+घ, आत्वादेश] 1 वेद में प्रवीण या अभिज्ञ 2 शिष्य, अनुज्ञापित होने के योग्य,—य विद्वान् ब्राह्मण, धर्मज्ञान में सुविज्ञ जन्मना ब्राह्मणों श्रेय संस्कारेद्विज उच्यते। क्रियया याति विप्रत्व त्रिभि श्रोत्रिय उच्यते—मा० १।५, स्मृ० १६।२५। सम०—ब्रुव विद्वान् ब्राह्मण की उपाधि।

श्रौत (वि०) (स्त्री०—ती) [श्रुतौ विहितम् अण्] 1. कान से संबंध रखने वाला 2 वेदसंबंधी, वेद पर आधारित, वेदविहित, -सत्र 1 वेदविहित कोई भी कर्म या अनुष्ठान 2 वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड 3. यज्ञाग्नि का संधारण करना 4 तीनों यज्ञाग्नियों की समष्टि (अर्थात् दक्षिणाग्नि, आहवनीय और गार्हपत्य)। सम० कल्पस् (नपु०) वैदिक कृत्य, सूत्रम् वेद पर आधारित सूत्रग्रन्थों का संग्रह (आश्वलायन, सांख्यायन और कात्यायन आदि के नाम से अभिहित)।

श्रौषट् (अव्य०) [श्रु+वौषट्] दिवंगत आत्मा या देवों को उद्देश्य करके यज्ञाग्नि में आहुति देते समय उच्चारित होने (बोला जाने) वाला अव्यय, तु० वषट् या वौषट्)।

श्लक्ष्ण (वि०) [श्लिष्+क्त, नि०] 1 कोमल, मृदु, सौम्य, स्निग्ध (शब्द आदि) 2 चिकना, चमकदार, शि० ३।४६ 3 स्वच्छ, सूक्ष्म, पतला, सुकुमार 4 सुन्दर, लावण्यमय 5 निश्छल, ईमानदार, सच्चा।

श्लक्ष्णकदल [श्लक्ष्ण+कन्] सुपारी, पूगीफल।

श्लङ्क् (स्वा० आ० श्लङ्कते) जाना, हिलना-डुलना।

श्लङ्ग् (स्वा० आ० श्लङ्गते) जाना, हिलना-डुलना।

श्लथ् (चुरा० उभ० श्लथयति ते) 1 शिथिल या ढीला-ढाला होना 2 दुर्बल या बलहीन होना 3 शिथिल होना, ढीला होना विश्राम करना (आत्म० भी) श्लथयितु क्षणमक्षमता क्षणा न सहसा सहसा कृतवेपथु —शि० ६।५७, परिश्रान्तस्नेह श्लथविनुमशक्य चलनु यदा—गंगा० ३७ 4 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

श्लथ (वि०) [श्लथ्+अच्] 1 ढिला ढाँचा, ढिला अकड़ा 2 शिथिल, विश्रांत, सूखा हुआ, फिसला हुआ -बृन्ताच्छ्लथ हरति पूर्वमनोकहानाम्—रघु० ५। ३७, १९।२६ 3 बिखरे हुए (जैसे बाल)। सम० —उद्यम (वि०) जिसने अपने प्रयत्न ढीले कर दिये हों, लम्बित (वि०) ढीला-ढाला, नीचे लटकता हुआ, कु० ५।४७।

श्लथ् (स्वा० पर० श्लाथति) व्याप्त होना, प्रविष्ट होना।

श्लाघ् (स्वा० आ० श्लाघते) प्रशंसा करना, स्तुति करना सराहना, गुणगान करना शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुण) पर (बाद) कण्ठे नियच्छति—सुभा०, यजैव श्लाघ्यते गङ्गा पादेन परमेष्ठिन कु० ६।७० (कुछ लोग यहाँ 'श्लाघ्यते' के स्थान पर 'श्लाघते' पाठ समझते हैं और अगला अर्थ घटाते हैं) 2 शेखी बघारना, घमंड करना, श्लाघिष्ये केन को बन्धूनेष्यन्युन्तिमुन्नत भट्टि० १६।४ 3 खुशामद करना, फुसलाकर काम निकालना (संप्र० के साथ) गोपी कृष्णाय श्लाघते सिद्धा०, भट्टि० ८।७३।

श्लाघनम् [श्लाघ्+ल्युट्] 1 प्रशंसा करना, स्तुति करना 2 खुशामद करना।

श्लाघा [श्लाघ्+अ+टाप्] 1 प्रशंसा, स्तुति, सराहना, -कर्ण-जयद्रथयोर्वा कात्र श्लाघा —वेणी० २ 2. आत्म-प्रशंसा, शेखी बघारना- -हते जयति राजेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्, या श्लाघा पाण्डुपुत्राणा सैवास्माक भविष्यति—वेणी० २।४ 3 खुशामद 4. सेवा 5. कामना, इच्छा। सम०- विपर्यय: डींग मारने का अभाव, त्यागे श्लाघा विपर्यय: रघु० १।२२।

श्लाघित (भू० क० कृ०) [श्लाघ् + क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, सराहा गया।

श्लाघ्य (वि०) [श्लाघ् + ण्यत्] 1 प्रशंसनीय, प्रायः —उत्तर० ४।९, १३ 2 आदरणीय, श्रद्धेय।

श्लिक्कुः [श्लिष् + कु, पृषो०] 1 कामुक, लंपट 2 दास, आश्रित (नपुं०) नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष।

श्लिक्कुः [श्लिष् + क्कु, पृषो०] 1 लंपट 2 सेवक।

श्लिष् I (भ्वा० पर० श्लेषति) जलना।

II (दिवा० पर० श्लिष्यति, श्लिष्ट) आलिंगन करना, श्लिष्यति चुम्बति आलम्बते इत्यभिप्रायः इति तिमिरवसनलक्षम गीत० ६ 2 जमे रहना, चिपके रहना, डटे रहना 3 संयुक्त होना सम्मिलित होना 4 ग्रहण करना, लेना समझना नै० २।९०

आ —, उप—, आलिंगन करना, परिरंभण करना, वि—, 1 वियुक्त होना, दूर होना 2 फट जाना, फट कर उड़ जाना, भट्टि० १४।६७, (प्रेर०) अलग-अलग करना, भेद० उ सम् —, 1 डटे रहना, चिपके रहना 2 सम्मिलित होना, मिलना।

III (चुरा० उभ० श्लेषयति—ते) जोड़ना संमिलित करना, मिलाना।

श्लिष्टा [श्लिष् + अ + टाप्] 1 आलिंगन 2 चिपकना, जुड़ जाना।

श्लिष्ट (भू० क० कृ०) [श्लिष् + क्त] 1 आलिंगित 2 चिपका हुआ जुड़ा हुआ 3 टिका हुआ अड़ा हुआ 4 श्लेष से युक्त, दो अर्थों की संभावना से युक्त अत एव विरुद्धार्थ शब्दों से लिपटा —काव्य० १०।

श्लिष्टि (स्त्री०) [श्लिष् + क्तिन्] 1 आलिंगन 2 परिरंभण।

श्लीपदम् [श्लीः पदम् यत्र वृत्तिर्यस्य वा पादम् अस्मात्, पृषो०] सूजी हुई टांग या फूला हुआ पैर, फीलपांव। सम० —प्रभव आम का पेड़।

श्लीलः (वि०) [श्री अस्ति अस्य—लच्, पृषो०] 1 भाग्यशाली समृद्ध, दे० श्रील, 2 शिष्ट नु० 'अश्लील'।

श्लेषः [श्लिष् + घञ्] 1 आलिंगन 2 चिपकना, जुड़ना 3 मिलाप, संगम, संपर्क—निरन्तरश्लेषघना वा० (यहां इसमें अगला अर्थ भी घटित होता है) 4 अनेकार्थी शब्द प्रयोग, एक से अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, दुष्प्रयोक, किसी शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की संभाव्यता, (यह एक अलंकार समझा जाता है, कवि इसका बहुत प्रयोग करते हैं, परिभाषा के लिए दे० काव्य० कारिका ८४ तथा ९६)—आश्लेषि न श्लेषकवेर्भवत्या श्लोकद्वयार्धं सुधिया मया किम्—नै० ३।९९, दे० शब्दश्लेष भी। सम०—अर्थः अनेकार्थी शब्द प्रयोग, दुष्प्रयोक शब्द प्रयोग, भिन्नित्व (वि०) श्लेष पर टिका हुआ (शा०—आधारित)।

श्लेष्मकः [श्लेष्मन् + कन्] कफ, बलगम।

श्लेष्मजः (वि०) [श्लेष्मन् + जन् + ड] कफ से उत्पन्न, कफमूलक।

श्लेष्मन् (पुं०) [श्लिष् + मनिन्] कफ, बलगम, कफ की प्रकृति। सम० अतिसारः कफविकार से उत्पन्न पेचिश, आढ्य ओजस् (नपुं०) कफ की प्रकृति,—ऊर्ध्वा स्त्री 1 मल्लिका, एक प्रकार का मोतिया 2 केतकी केवड़ा।

श्लेष्मलः (वि०) [श्लेष्मन् + लच्] कफ प्रकृति का, बलगमी।

श्लेष्मान्तकः, श्लेष्मान्तकः [श्लेष्मन् + अन्त + अच् पक्षे कन्] एक वृक्ष विशेष, लिसोड़े का पेड़।

श्लोक् (भ्वा० आ० श्लोकते) 1 प्रशंसा करना, पद्य रचना करना छन्दोबद्ध करना 2 अभ्यास करना 3 त्यागना, छोड़ना।

श्लोकः [श्लोक् + अच्] 1 कवितामय प्रशंसन, स्तुति करण 2 ख्याति यशः मनु० ७।२६ 3 ख्याति प्रसिद्धि विश्रुति, यश, यथा 'पृथ्वश्लोकः' में 4 प्रशंसा का विषय 5 किंवदन्ती, कहावत 6 पद्य, कविता रघु० १४।७० 7 अनुष्टुप् छन्द में कोई पद्य या कविता।

श्लोकय् (भ्वा० पर० श्लोकयति) एकत्र करना इकट्ठा करना बोलना पु० 'आख्' ।

श्लोणः [श्लोण् + अच्] लंगड़ा पुरुष, विकलांग।

श्वङ्क् (भ्वा० आ० श्वङ्कते) जाना, हिलना-डुलना।

श्वञ्च्, श्वञ्च् (भ्वा० आ० श्वञ्चते श्वञ्चयते) 1 जाना हिलना-डुलना 2 खुला होना, मुंह बाना फटना दरार हो जाना।

श्वञ्च् (भ्वा० आ० श्वञ्चते) जाना, हिलना-डुलना।

श्वठ् (चुरा० उभ० श्वठयति ते) 1 निन्दा करना (कुछ के मतानुसार श्वठयति) 2 (श्वाठयति—ते) (क) जाना, हिलना-डुलना (ख) अलंकृत करना (ग) समाप्त करना संपन्न करना (कुछ के मतानुसार इन अर्थों में केवल 'श्वठयति')।

श्वठ् (चुरा० उभ० श्वठयति ते) निन्दा करना।

श्वन् (पुं०) [शिव + कनिन्, शि० (कर्तृ० श्वा, श्वानौ, श्वानः कर्म० व० व० शुनः, स्त्री० शुनी) कुत्ता इदं यदि विश्वासे राज्ञा न किं नाम्नामृतपानम् सुभा० मनु० २।३१, मनु० २।२०१। सम० —कोविद् (पुं०) शिकारी कुत्तों को पालने वाला, —यः कुत्तों का झुंड, —चिकः 1. शिकारी, 2 कुत्ता को खिलाने वाला, —चूर्तः भेड़िया, —नरः कमीना आदमी, नीच व्यक्ति, —निद्रम् निद्रा यह रात जिसमें कुत्ते भौंकते हों, —पद् (पुं०) वृक्षः 1. अतिनीच और

पतित जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत, चाण्डाल,—भाग० ४।२३ 2 कुत्ता का खिलाने वाला, श्वन् कुत्ते का पैर, श्वादः जाति से बहिष्कृत, चाण्डाल मनु० २९, श्वन्य खट्टा नींबू या चकोतरा, श्वनः अङ्कुर के पिता का नाम, श्रीफ गोंदह, शुन्यम् कुत्ते का झुंड, श्वनि (स्त्री०) कुत्ते का जीवन, (बहुधा नौकरी की समता इससे की जाती है)—सेवा न्यायवक्तारिणी कृतधिय स्वामेव वक्ति विदु मुद्रा० ३।१४, मनु० ४।६ 2 सेवावृत्ति, सेवा मनु० ४।४, श्वाघ्र. 1 शिकारी जानवर 2 बाघ 3 चीता, हन् (पु०) शिकारी।

श्वभ्र् (चुरा० उभ० श्वभ्रयति- ते) 1 जाना, हिलना-डुलना 2 डींगना, सूराख करना, छिद्र करना 3. दरिद्रता में रहना।

श्वभ्रम् [श्वभ्र् + अच्] रन्ध्र, बिवर,- विक्रम० १।१८, कि० १४।३३।

श्वभ्र. [भ्वि + अच] भूजन, भाग्य, वृद्धि।

श्वभ्रयु. [श्वि + अयुच्] भूजन शाख।

श्वभ्रीयी [श्वि + ईचि - ईय्] बीमारी रोग।

श्वयथ् (भ्वा० प० श्वयथति) दौड़ना, फूलों से आना।

श्वयथ् (चुरा० उभ० श्वन्थयति ते) कहना, वर्णन करना।

श्वयथ्य् (भ्वा० प० श्वयथति) दौड़ना ये० श्वयथ्)

श्वशुर [स आबु अस्तुत आबु + अश् - उरच् पृषो०] ससुर, पत्नी या पति का पिता - मनु० २।१२९।

श्वशुरक. [श्वशुर + कन्] ससुर।

श्वशुर्य [श्वशुरस्यापत्यम् श्वशुर + यत्] 1 साला पत्नी या पति का भाई 2 पति का छोटा भाई, देवर।

श्वश्रू (स्त्री०) [श्वशुर + ऊङ्, उकार अकारस्याद.] सास, पत्नी या पति की माँ - रघु० १४।१३। सम०—श्वशुर (पु०) द्वि० व०) सास और ससुर।

श्वस् (अदा० प० श्वसिति, श्वस्त श्वसित) 1 साँस लेना, साँस निकालना, साँस खींचना स कर्मकारक-श्वसेव श्वसनमपि न जीवति हि० २।११ रघु० ८।८७ 2 आह भरना, हाँपना, ऊँचा साँस लेना, श्वसितिनि विहगवर्ग ऋतु० १।१३ 3 फूत्कार करना, खर्राटे भरना, प्रेर० (श्वासयति ते) साँस दिलाना, जीवित रखना, आ - 1 साँस लेना, महावीर० ५।५१ 2 साँस लेने लगना, साहसी बनना, हिम्मत करना सेत० ८ 3 पुनर्जीवित करना भट्टि० ९।५६ (प्रेर०) सान्त्वना देना आराम देना प्रसन्न करना उद्- , 1 साँस लेना, जीना सेत० ५।१५, मनु० ३।७२ 2. उत्साह बढ़ाना, जी उठना, हिम्मत बाँधना कि० ३।८, शि० १८।५८ 3 खुलना, खिलना, (जैसे कमल का) शि० १०।५८,११।१५ 4. हाँपना, गहरा साँस लेना—भट्टि० ६।१२०, १४।५५ 5 ऊँचा साँस लेना, घबड़ना 6 उन्मुक्त होना, वि विश्व्- , आह भरना, ऊँचा साँस लेना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना, विश्वास रखना (प्राय अधि० के साथ)—यामि विश्वसिमि कुञ्ज कुमारी— ने० ५।११० - कु० ५।१५ (कभी कभी सब० के साथ) 2 सुरक्षित रहना निर्भय या विश्वस्त होना—विश्वस्यते पक्षिगणै. समन्तात् भट्टि० ८।१०५, सम - , साहसी होना, हिम्मत बाँधना, ढाढस रखना (प्रेर०) सान्त्वना देना, प्रोत्साहित करना, उत्साह बढ़ाना।

श्वस् (अव्य०) [आशासि अहः पृषो०] 1 आने वाला कल,—अरमद कपोतो न श्वो मयूर —सुभा० 2. भविष्य काल (समास के आरंभ में)। सम०- भूत (वि०) (श्वोभूत) कल होने वाला —,वसीय,-वसीयस् (श्वोवसीय, श्वोवसीयस्) (वि०) प्रसन्न, शुभ, भाग्यशाली, (नपु०) प्रसन्नता, सौभाग्य,- श्रेयस् (श्व. श्रेयस्) (वि०) प्रसन्न, समृद्धि, (सम्) 1. प्रसन्नता, समृद्धि 2 ब्रह्मा या परमात्मा का विशेषण।

श्वसन. [श्वस्यिमन्नेन—श्वस् + ल्युट्] 1 हवा, वायु,—श्वसनसुरभिगन्धि —शि० ११।२१ 2 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था , नम् 1 श्वास, साँस लेना, साँस निकालना श्वसनचलितपल्लवाधरोष्ठे कि० १०।३४, रघु० २।४, (यहाँ यह प्रबल अर्थ भी प्रकट करता है) शि० ९।५२ 2 आह भरना कि० २।४५। सम०—अरातः साँप, ईश्वरः अर्जुन वृक्ष, उत्सुकः साँप, - ऊर्मि (स्त्री०) हवा का झोंका।

श्वसित (भू० क० कृ०) [श्वस् + क्त] 1 साँस लिया हुआ, आह भरी हुई 2. साँस लेने वाला, - नम् 1 साँस लेना, साँस निकालना 2 ऊँचा साँस लेना।

श्वस्तन (वि०) (स्त्री० नी) श्वस्त्य (वि०) [श्वस् + टयुल्, तुट् श्वस्+त्यप् वा] आनेवाली कल से संबंध रखने वाला, भावी, आगे आने वाला।

श्वाकर्ण [शुन कर्ण ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घ] कुत्ते का कान।

श्वाजनिकः [श्वजनयोग चरति—श्वजन + ठक्] कुत्ते रखने वाला, कुत्ते पाल कर अपनी जीविका चलाने वाला।

श्वादन्तः [शुनो दन्त ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घ] कुत्ते का दाँत।

श्वान [श्वन् + अण् न टिलोप] कुत्ता। सम० - निद्रा कुत्ते की नींद, बहुत हल्की नींद,—वैकारी कुछ कुत्ते का गुर्राना।

श्वापद (वि०) (स्त्री० दी) [शुन इव आपद् अस्यात्

व० स, श्वन्+आपद्+अच्,] बर्बर, हिंस्र, -दः 1 शिकारी जानवर, जंगली जानवर 2 बाघ।

श्वापुच्छः - च्छम् [शुनः पुच्छम् ष० त०, नि० दीर्घ] कुत्ते की पूंछ, दुम।

श्वाविध् (पु०) [शुना आविध्यते—श्वन्+आ+व्यध्+क्विप्] साही, शल्यक।

श्वासः [श्वस्+घञ्] सांस लेना, सांस, श्वासप्रश्वास किया, ऊँचा सांस अद्यापि स्तनवेपथु अनयति श्वास प्रमाणाधिक - श० १।२९, कु० २।४२ 2. आह, हांफना 3 हवा, वायु 4 दमा। सम० काशः दमा, -रोधः सांस का रोकना, हिचकी एक प्रकार की हिचकी, -हेतिः (स्त्री०) नींद।

श्वासिन् (वि०) [श्वास+इनि] सांस लेने वाला-(पु०) 1. हवा, वायु 2. श्वास लेने वाला जानवर, जीवित प्राणी 3 जो फूत्कार की ध्वनि के साथ (वर्ण) उच्चारण करता है।

श्वि (स्वा० पर० श्वयति, श्वून) 1 विकसित होना, बढ़ना (आत्म० में भी) सूजना (जैसे आँख का) —अतोऽशिश्वियच्चक्षुरास्य हेतोस्तवाश्रुबयोत् भट्टि० ६।१९ ३१, १४।७९, १५।३० 2 फलना-फूलना, समृद्ध होना 3 जाना, पहुंचना, अभिमुख चलना, अव —, सूजना, बढ़ना, विकसित होना प्रबलकदिनोच्छूननेत्र (मुखम्)—मेघ० ८४ 2 घमण्डी होना, घमण्ड से फूल जाना।

श्वित् (स्वा० आ० श्वेतते) श्वेत होना, सफेद होना —अतिकरितदिगन्ता श्वेतमानैर्यशोभि - मा० २।९।

श्वित (वि०) [श्वित्+क] सफेद।

श्वितिः (स्त्री०) [श्वित्+इन्] सफेदी।

श्वित्य (वि०) [श्वित्+यत्] सफेद।

श्वित्रम् [श्वित्+रक] 1 सफेद कोढ़ 2. फुलबहरी, कोढ़ का दाग (त्वचा पर)—तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कवेर्यशः। स्यादपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम् काव्या० १।७।

श्वित्रिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [श्वित्र+इनि] कोढ़ के रोग से ग्रस्त (पु०) कोढ़ी।

श्विन्द् (स्वा० आ० श्विन्दते) सफेद होना।

श्वेत (वि०) (स्त्री०-ता,-ती) [श्वित्+घञ्, अच् वा] सफेद,—तत एवेनैर्ग्रहैर्युक्ते महति स्यन्दने श्वेतनो-भग० १।१४, -तः 1 सफेद रङ्ग 2 बङ्गा 3 कौड़ी 4. रति कूट पौधा 5. शुक्र ग्रह, शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री देवता 6 सफेद बादल 7 जौरा 8 पर्वतश्रेणी दे० कुलाचल या कुलपर्वत 9 ब्रह्माण्ड का एक प्रभाग,—तम् चाँदी। सम० अम्बर,—वासस् (पु०) जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय, इक्षुः एक प्रकार का ईख, गजा,—ईश्वर कुबेर का विशेषण, कमलम्, पद्मम् सफेद कमल कुञ्जरः इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,-कुष्ठम् सफेद कोढ़, —केतुः बौद्ध भगवान् या ज्ञानसागर, कोल एक प्रकार की मछली, शफरी, गजः हिंसः 1 सफेद हाथी 2 इन्द्र का हाथी, गरुत् (पु०) गरुड़ हंस, छद 1 हंस 2 एक प्रकार की तुलसी, सफेद तुलसी, द्वीपः इस महाद्वीप के अठारह लघु प्रभागों में से एक,—धातु 1 सफेद खनिज पदार्थ 2 खड़िया मिट्टी, 3 दूधिया पत्थर, धामन् (पु०) 1 चाँद 2. कपूर 3 समुद्रफेन, नील बादल,—पद्मः हंस, ब्रह्मा का विशेषण, पाटला शुक्लवस्त्रों का फूल —पिङ्गः सिंह,-पिङ्गलः 1 सिंह 2 शिव का विशेषण, मरिचम् सफेद मिर्च, मालः 1 बादल 2 धूआँ, रक्षतः गुलाबी रङ्ग, रक्तचन्दनम् सीमा, रश्मिः शुक्र-ग्रह, रोहितः चन्द्रमा, -रोहितः गरुड़ का विशेषण, वर्णकः सुनार का रंग, वाजिन् (पु०) 1 चन्द्रमा 2 अर्जुन का विशेषण,—वाहः (पु०) इन्द्र का विशेषण, वाहः 1 अर्जुन का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण, वाहनः 1 अर्जुन का विशेषण 2 चन्द्रमा 3 समुद्री दानव मगरमच्छ, घड़ियाल, वाहिन् (पु०) अर्जुन का विशेषण,-शुक्लः,-शुक्ल जौ, हयः 1 इन्द्र का घोड़ा 2 अर्जुन का विशेषण —हस्तिन् (पु०) इन्द्र का हाथी ऐरावत।

श्वेतक [श्वेत+कन्] कौड़ी, कम् चाँदी।

श्वेता [श्वित्+अच्+टाप्] 1 कौड़ी 2 फुलबहरी 3 सफेद दूब 4 स्फटिक 5 श्वेतसार चीनी 6 दमनकपौधा 7 अनेक पौधों के नाम (श्वेत कण्टकारी, श्वेत गुडूची आदि)।

श्वेतद्वीपी (स्त्री०) [श्वेतद्वीप+ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची।

श्वेतपद्मम् (नपु०) सफेद कोढ़।

श्वेतपत्रम् [श्वेत+पत्र] पत्रटा 1 सफेदी 2 सफेद कोढ़।

श्वेतपद्मम्, श्वेतपद्मम् [श्वित्+अप्, पद्मम् वा] सफेद कोढ़।

ष

वि०—बहुत सी धातुएँ जो 'स्' से आरम्भ होती हैं, धातु पाठ में 'ष' पूर्वक लिखी जाती हैं जिससे कि यह प्रकट हो सके कि कुछ उपसर्गों के पश्चात् 'स्' बदल कर 'ष्' हो जाता है। इस प्रकार की धातुएँ 'स्' के अन्तर्गत ही आने उचित स्थान पर मिलेंगी।

ष (वि०) [सो+क पृषो० दस्यम्] छब्बीसवाँ, छठी-

क्षुब्ध, क्षः 1 हानि, विनाश 2 अन्त 3 शेष, अवशिष्ट 4 मोक्ष।

षड्क (वि०) [षड्भि क्रीतम् - वत् + कन्] छ गुना, -कम् छ की समष्टि मानषट्क, उत्तर षट्क आदि।

षड्वा दे० षोडा।

षष्ठ [षष् + ड, पृषो० दस्य षः] 1 और 2 नपुंसक (भिन्न-भिन्न लेखकों ने नपुंसक के १ से २० तक अनेक भेद लिखे हैं) 3 समूह, समुच्चय, संग्रह ढेर, राशि, (इस अर्थ में नपु० भी) कलरवमधुलीन षट्पदौघेन चक्रे कुमुदकमलखण्डे तुलाकोटिविलग्नम्-शि० ११।१५ नपु० प्रायः भी।

षष्ठक [षष्ठ + कन्] नपुंसक, हिजड़ा।

षष्ठाली [षष्ठ + अल् + अच् + ङीष्] 1 नाटक, जाहिर 2 आभीरनारियों का झगड़ी स्त्री)।

षष्ठ [षष् + ड, पृषो० दस्य षः] 1 नपुंसक, हिजड़ा, याज्ञ० १।१५ 2 सैन्यसन्निवेश शिविर वर्ग अमर०। समा० क्लिन्न षष्ठ क्लिन्न, वह जिस को उगा न सके।

षष् (संख्या० वि०) [सा + विभक्ति पृषो०] (केवल ब० व० में प्रयुक्त करण० षड्, सब० षण्णाम्) छः-मनु० १।१६, ८।४०२। समा०-अक्षीण (षडक्षीण) छठवां, -अङ्गवत् समष्टि रूप से ग्रहण किये गये शरीर के छः भाग अर्थात् सिर धड़ दो भुजाएं और दो टांगें, -अङ्गविदध्येते 2 वेद के छः अंग सहायक ग्रन्थ जिन्हें कल्प व्याकरण निरुक्त छन्दस् ज्योति। ज्यौतिषामयनं चैव षडङ्गो वेद उच्यते, दे० वेदांग भी 3 छः गुण वस्तुएं अर्थात् सामान्य से प्राप्त छः पदार्थ-ज्ञानयुक्त संयम वीर्य संपत्ति च रावणः। षडङ्गमेतन्नाम्नस्य पठितं सर्वदा नरैः अङ्गुलि. (षडङ्गुलिः) भीरु, -अधिक (वि०) (षडधिक) वह जिसमें छः अधिक हों मा० ५।१, -अशीत (वि०) (षडशीत) छयासीवां -अशीति (स्त्री०) (षडशीति) छयासी, -अहः (षडहः) छः दिन का समय या अवधि आगत षडहः, -आनन (षडानन, षडास्य, षडानन) कार्तिकेय के विशेषण षडाननजनीस्तन्यमोषरासु नेता वसूनामिव कृत्तिकासु रघु० १४।२२, -आम्नायः (षडाम्नाय) छः तन्त्र, -उपनत (षडुपनत) समष्टि रूप से ग्रहण किये हुए छः मसाले -पनकोल स मरिचं तद्वदुषणमुदाहृतम्, -कर्ण (वि०) (षट्कर्ण) छः कानों से सुना गया, अर्थात वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी सुना गया एक से अधिक श्रोताओं को सुनाया गया (परामर्श, भेद आदि)-षट्कर्णो भिद्यते मन्त्र पंच० १।१९९, (कः) एक प्रकार की वीणा, -कर्मन् (नपु०) (षट्कर्मन्) 1 ब्राह्मणों के लिए विहित छः कर्तव्य-अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः मनु० १०।७५ 2 छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका के लिए विहित हैं उञ्छं प्रतिग्रहो भिक्षा वाणिज्यं पशुपालनम्। कृषिकर्म तथा चेति षट्कर्माण्यग्रजन्मनः 3 जादू के छः करतब शान्ति, वश्यीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण 4 योगाभ्याससंबंधी छः क्रियाएं-धौतिर्बस्ती तथा नेती (नौलिकी) वाटकस्तथा। कपालभाती चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत्॥ (पुं०) ब्राह्मण, -कोण (वि०) (षट्कोण) 1. छः कोनों से युक्त (क्षम्) 1 षड्भुज, छः कोनियां 2 इन्द्र का वज्र, -गव्य (षड्गव्य) 1 छः, ईख की जोड़ी 2 वह जवा जिसमें छः बैल जोते जाय (कभी कभी अन्य जानवरों के नाम पर) उदा० 'हस्ति, 'अश्व छः हाथी छः घोड़े आदि, -गुण (वि०) (षड्गुण) 1 छः गुना 2 छः विशेषणों से युक्त (गुणः) 1 छः गुणों का समुदाय 2 किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोजनीय छः उपाय द० 'गुण' के अन्तर्गत (२१), तृ० 'पाड्गुण्य' के साथ भी, -ग्रन्थि (वि०) (षड्ग्रन्थि) पिप्पलीमूल, -ग्रन्थिका (षड्ग्रन्थिका) छोटी, आकाशबल्ली, चक्रम् (षट्चक्रम्) शरीर के छः रहस्यमय चक्र (मूलाधार अधिष्ठान, मणिपूर अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा),-चत्वारिंशत् (षट्चत्वारिंशत्) छयालीस, -चरण (षट्चरण) 1 मधुमक्खी 2 टिड्डी 3 जूं,-ज (षड्ज) भारतीय स्वरग्राम के सात प्राथमिक स्वरों में से पहला स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छः अंगों से व्युत्पन्न है नासाकण्ठमुरस्तालु जिह्वा दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्ज स्तजायते (षड्भ्य स्तजायते) यस्मात् तस्मात् षड्ज इति स्मृत, कहते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर मिलता-जुलता है- षड्ज रौति मयूरस्तु - कार० षड्जसम्भाविनी केका द्विधा भिन्ना शिखण्डिभिः - रघु० १।३१, -त्रिंशत् (स्त्री०) (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (षट्त्रिंश) (वि०) छत्तीसवां,-दर्शनम् (षड्दर्शनम्) हिन्दू दर्शन के छः युग्म अर्थात् सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त,-दुर्ग (षड्दुर्ग) छः प्रकार के गढ़ों की समष्टि धन्वदुर्गं महीदुर्गं गिरिदुर्गं तथैव च। मनुष्यदुर्गं प्रथमं वनदुर्गमितिक्रमात् - शब्दार्थः (षड्दर्शनिः) छप्पनवें, -पञ्चाशत् (स्त्री०) (षट्पञ्चाशत्) छप्पन,-पद (षट्पद) 1 भौंरा-न षट्पदः तत्रवलीनषट्पदे न षट्पदोऽसौ न जुगुप्स्य एष कुमार० २।१९, कु० ५।९, रघु० ६।६९ 2. जूं

°अतिथिः आम का वृक्ष, °आरग्वधबन्धन अशोक या किंकिरात वृक्ष, °इव (वि०) छिद्र की ओरी ओरी से बनी है (जैसे कि कामदेव का धनुष्)—प्रायश्चाप न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम् मेघ० ७३, °प्रियः नागकेसर नाम का वृक्ष, पदी (षट्पदी) 1 छ पक्षियों का श्लोक 2. भ्रमरी 3 जूं,—प्रज्ञ (षट्प्रज्ञ.) जो छ विषयों में सुपरिचित है अर्थात् चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, वह्मप्रकृति—धर्मार्थ-काममोक्षेषु लोकतत्त्वार्थयोरपि। षट्सु प्रज्ञा तु यस्यासौ षट्प्रज्ञ परिकीर्तितः॥ 2 विलासी, कामासक्त पुरुष

विन्दुः (षड्विन्दुः) विष्णु का विशेषण, भाग (षड्भाग) छठा भाग, ‡ भाग दश० २।१३, मनु० ७।१३१, ८।३३, भुज (वि०) (षड्भुज) 1 छ हैं सहायक जिसके, छ कानों वाला, (जः) षट्कोण (जा) 1 दुर्गा का विशेषण 2 नरबुज, मासः (षण्मासः) छ महीने का समय, सांसिक (वि०) (षाण्मासिक) छमाही, अर्धवार्षिक, मुख. (षण्मुख) कार्तिकेय का विशेषण रघु० १३।६३, (—खः) नरबुज,—रसज्ञ—रसः (पु० ब० व०) (षड्रसम् आदि) छ रसों की समष्टि दे० रस के अन्तर्गत, रात्रम् (षड्रात्रम्) छ रातों का समय या अवधि, वर्गः (षड्वर्गः) 1 छ वस्तुओं की समष्टि 2 विशेष रूप से मनुष्य के छ शत्रु, (षड्रिपु भी कहते हैं) काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः। कृतान्तिषड्वर्ग-जयेन—वि० १।१, अवेहि षड्वर्गमं— भट्टि० १।२, विंशतिः (स्त्री०) (षड्विंशतिः) छब्बीस (षड्विंश छब्बीसवां), विध (षड्विध) (वि०) छ प्रकार का, छ गुना रघु० ८।२२, शक्तिः (स्त्री०) (षड्शक्तिः) छागल,—सप्तति (षट्-सप्ततिः) छिहत्तर।

षष्टिः (स्त्री०) [षड्भिर्गुणिता दशतिः वि०] साठ मनु० ३।७७, याज्ञ ३।८४, साठवां। सम०—अब्द (षष्ट्यब्द) शिव का विशेषण,—अब्द साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मस्तक से मद चूता है योजनी (स्त्री०) साठ योजन का विस्तार या यात्रा, संवत्सर साठ वर्ष की अवधि या समय,—हायन 1 (साठवर्ष की आयु का) हाथी 2 एक प्रकार का धान्य।

षष्ठ (वि०) (स्त्री० ष्ठी) [षण्णां पूरणः षष्+डट्, कुक्] छठा, छठा भाग -षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्क्षेत्रिकाद्धनात् मनु० ९।१६४ ७।३०, षष्ठे भागे विक्रम० २।१, रघु० १७।३८। सम०—अंश 1 सामान्य छठा भाग—याज्ञ० ३।२५ 2 विशेष कर उपज का छठा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से भूमिकर के रूप में ग्रहण करता है उपस्थास्यन्ति षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितारः—रघु० २।६६, (उपज के भिन्न भिन्न भेद जिनके छठे भाग का अधिकारी राजा है· मनु० ७।१३१—२ में बताये गये हैं) °भृत् उपज के छठे भाग का अधिकारी राजा, षष्ठांशवत्तेरपि धर्म एव—रघु० ५।४, °अन्न छठा भोजन, °काल तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तस्वरूप किया जाता है।

षष्ठी [षष्ठ+ङीप्] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ 2 (व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक 3 कात्यायनी के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो सोलह दिव्य मातृकाओं में से एक है। सम०—तत्पुरुष छठी विभक्ति के रूप वाला तत्पुरुष समास ऐसे समास में विग्रह करने पर पहला पद सदैव छठी विभक्ति का होता है, पूजनम्, पूजा बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना।

षष्मान् [सह+मप्, असुक् पृषो० षत्वम्] 1 मोर 2 यज्ञ।

षट् (अव्य०) [सह+क्विप्, पृषो० षत्वम् सम्बोधक अव्यय।

षाट्कौशिक (वि०) (स्त्री० की) [षट्कोश+ठक्] छ कोशों में लिपटा हुआ।

षाडव [षड+अण्+अच् स्वार्थे अण्] 1 राग, मनोरंग 2 गाना, संगीत 3 (संगीत में) एक राग जिसमें संगीत के सात स्वरों में से छ स्वर प्रयुक्त होते हैं पंचम पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षाडवसंज्ञितः षाडव।

षाड्गुण्यम् [षड्गुण स्वार्थे ष्यञ्] 1 छ गुणों की समष्टि 2 राजा के द्वारा प्रयुक्त छ युक्तियाँ, राजनीति के छ उपाय—शि० २।२१, दे० 'गुण' के अन्तर्गत 3 छ से किसी संख्या का गुणन। सम०—प्रयोग राजनीति के छ उपाय या छ युक्तियों का प्रयोग।

षाण्मातुर [षण्णां मातृणाम् अपत्यम्, षण्मातृ+अण्, उत्व, रपर] छ माताओं वाला, कार्तिकेय का विशेषण।

षाण्मासिक (वि०) (स्त्री० की) [षण्मास+ठक्] 1 छमाही, अर्धवार्षिक 2 छ महीने का, सौकिकाना षाण्मासिकाणाम्—विक्र० १।१७।

षाष्ठ (वि०) (स्त्री० -ष्ठी) [षष्ठ+अण् स्वार्थे] छठा।

षिक्तन [सिच्+क्त, पृषो० षत्वम्] 1 विलासी, ऐयाश कामुक, कामासक्त 2 प्रेमनिपुण अनुभवी प्रेमी, सिक्तं सिक्तैरनुभवमिव क्वापि-शि० ५।३४।

सू [सु+क्विप्, पृषो० साधुः] प्रसूति, प्रजनन ।

षोडश (वि०) (स्त्री०—डशी) [षोडशन्+डट्] सोलहवाँ=मनु० २।६५,८६।

षोडशन् (संख्या० वि०) ब० व०, सोलह । सम०—अक्षः शुक्रग्रह,—अङ्ग (वि०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य, अङ्गलक (वि०) छ अंगुल की चौड़ाई का,—अर्हन्ति केकड़ा, अर्चिस् (पु०) शुक्र ग्रह,—आर्षेय गोत्र, —उपचार (पु०, ब० व०) किसी देवता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ, जिनकी गिनती यह है—आसन स्वागत पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । मधुपर्कोचमस्नानं वसनाभरणानि च । गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्य वन्दन तथा, कला चन्द्रमा की सोलह कलाएँ, जिनके नाम यह हैं— अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः । शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्री. प्रीतिरेव च । अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वें कला, चण्डा दुर्गा की एक मूर्ति,—मातृका (स्त्री०) ब० व०, सोलह दिव्य माताएँ जिनके नाम निम्नांकित हैं· गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः । शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिः कुलदेवतमदेवता ॥

षोडशधा (अव्य०) [षोडशन्+धाच्] सोलह प्रकार से ।

षोडशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षोडशन्+ठक्] सोलह भागों से युक्त, सोलह गुना षोडशिको देवतोपचारः ।

षोडशिन् (पुं०) [षोडशन्+इनि] अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर ।

षोढा (अव्य०) [षष्+धाच्, षस्य उत्वम्, षस्य ढत्वम्] छ प्रकार से । सम०—म्लातः मल पड़ने हुए शरीर स्थानों के छः प्रकार,—मुखः छ मुंह वाला, कार्तिकेय, —क्षोढा अनोर्जस्विषोढामुग्र सहिति षोढा सा हाटकगिरेः अज० ७ ।

क्ष्विद् (भ्वा० दिवा० पर० क्ष्वेदति, क्ष्वेद्यति, क्ष्विण्ण) 1 थूकना, मुँह से लार निकालना, 2 राल टपकना, —भट्टि० १२।१८, वि , 1 प्रक्षेपण करना, निकालना, धकेलना शि० ४।४, रघु० २।७५ भट्टि० १४।१००, १७।१०, १८।१४, काव्या० १।९५ 2. मुँह से लार निकालना मनु० ४।१३२, याज्ञ० ३।२१३ ।

क्ष्वेडनम्, क्ष्वेलनम् [क्ष्वेड्+ल्युट्, क्ष्विद्+ल्युट्] 1 थूकना 2 लार, थूक, लसदार ।

क्ष्वेण्ण (भू० क० कृ०) [क्ष्विद्+क्त, ङ] थूका हुआ, लसदारा हुआ ।

क्ष्वेल्, क्ष्वेल् (भ्वा० आ० क्ष्वेलते, क्ष्वेलते) जाना, हिलना-डुलना ।

स

स (अव्य०) सह, सम्, तुल्य या सदृश, और एक अथवा समान शब्दों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग, जो विशेषण अथवा क्रियाविशेषण बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ समास में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) के साथ, मिला कर, के साथ साथ, संयुक्त होकर, युक्त, सहित सपुत्र, सभार्य, सतृण सचन, सरोषम्, सकोपम्, सहरि आदि (ख) समान, सदृश, समधर्मन् 'समान प्रकृति का', इसी प्रकार सजाति, सवर्ण (ग) वही, सोदर, सपक्ष, सपिंड, सनाभि आदि, (पु०) 1. साँप 2 वायु, हवा 3 पक्षी 4 'षड्ज' नामक संगीत स्वर का संक्षिप्त 5 शिव का नाम 6 विष्णु का नाम ।

संकः [सम् ; कम्+ड] कंकाल, पंजर ।

संकत् (स्त्री०) [सम्+कम्+क्विप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई य संकति प्राप्तविद्याकिलीव रघु० ६।७२, ७।३९, १८।२०, कि० १।१९, शि० १६।१५ । सम० —वर राजा, राजकुमार ।

संकल्प (भू० क० कृ०) [सम्+कल्प+क्त] 1 रोका हुआ, रचाया हुआ, मन में किया हुआ 2. अकड़ा हुआ, एक स्थान पर रोका हुआ 3 हड्डियों से जकड़ा हुआ 4. बन्दी, कैदी, कारागारी—रघु० ३।२० 5 उद्यत, तैयार 6 अवस्थित, दे० सम् पूर्वक 'कल्प' । सम०—अञ्जलि (वि०) जिसने विनम्र प्रार्थना के लिए हाथ जोड़े हुए हैं,—आत्मन् (वि०) जिसने मन को वश में कर लिया है, नियन्त्रितमना, आत्मनिग्रही ।

आहार (वि०) मिताहारी,—उपस्कर (वि०) जिसका घर सुव्यवस्थित हो, जिसके घर का सामान सब क्रमपूर्वक रक्खा हो, केतस्, मनस् (वि०) मन को नियन्त्रण में रखने वाला, प्राण (वि०) जिसका श्वास नियन्त्रित किया हुआ है, प्राणायाम का अभ्यास करने वाला,—वाच् (वि०) मूक, मौन रहने वाला, मितभाषी ।

संकल्प (वि०) [सम्+कल्प+क्त] 1. सन्नद्ध, तत्पर, तैयार महावीर० ५।५। 2 सावधान, सतर्क ।

संकल्पः [सम्+कल्प्+घञ्] 1 प्रतिज्ञा, दृढ़निश्चय, विधेय-अर्थादीनीच्छिताध्यस्यं संकल्पादिषु चुरादि-अम०

४।२६, २७ 2 मन की एकाग्रता, योग की अंतिम तीन अवस्थाओं को प्रकट करने वाला शब्द—धारणा-ध्यानसमाधित्रयमन्तरङ्गं सयमपदवाच्यम् - सर्व०, कु० २।५९ 3 धार्मिक व्रत 4 धार्मिक भक्ति, तपस्साधना, —क्ष० ४।१९ 5 दयाभाव, करुणा की भावना।

संयमनम् [सम्+यम्+ल्युट्] 1 प्रतिबन्ध, रोकथाम 2 अंत कर्षण ग० १ 3 बाँधना - उत्तर० १ विक्रम० ३।६ 4 कैद 5 आत्मोत्सर्ग, नियन्त्रण 6 धार्मिक व्रत या आभार 7 चार घरों का वर्ग, —नः नियामक, शासक,—नी यम की नगरी का नाम।

संयमित (भू० क० कृ०) [यमम्+णिच्+क्त] 1 नियन्त्रित 2. बद्ध, बेड़ी से जकड़ा हुआ 3 निरुद्ध, रोका हुआ।

संयमिन् (वि०) [सम्+यम्+णिनि] दमन करने वाला, रोकने वाला, नियन्त्रित करने वाला—(पुं०) जिसने अपने आवेगों को रोक लिया या नियन्त्रण में कर लिया, ऋषि, सन्यासी रघु० ८।११, भग० २।६९।

संयाव [सम्+या+ल्युट्] मांजा, सम् 1 साथ-साथ जाना, मिलकर चलना 2 बाधा करना, प्रगति करना 3 शव को उठा कर ले जाना।

संयावः [सम्+यम्+घञ्] दे० 'सयम'।

संयावः [सम्+यु+घञ्] गेहूँ के आटे का मिश्रण हलुवा - मनु० ५।७।

संयुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+युज्+क्त] 1 मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिलित 2 सम्मिश्रित, मिला हुआ, सपृक्त 3 सहित ५ सपन्न, से युक्त 5 अन्वित, बना हुआ।

संयुगः [सम्+युज्+क, अस्य न] 1 सयोजन मिलाप, मिश्रण 2 लड़ाई, सग्राम, युद्ध, सघर्ष —सयुगे सायसीनं तमुद्यत प्रमहेत क कु० २।५३, रघु० ९।१२। सम० योग्यम् भिड़न्त, सघर्ष या युद्ध जैसा मामूली बात पर कलह।

संयुज् (वि०) [सम्+युज्+क्विन्] सबद्ध, सबध रखने वाला शि० १४।५५।

संयुत (भू० क० कृ०) [सम्+यु+क्त] 1 मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, सबद्ध 2 सपन्न, सहित, दे० सम् पूर्वक 'यु'।

संयोगः [सम्+युज्+घञ्] 1 सयोजन, मिलाप, मिश्रण, सगम, मिलना-जुलना, घनिष्ठता सदाणो हि विशेषस्य समुच्चयति समवम् सुभा० 2 जोड़ना, (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में से एक) 3 जोड़, मिलाना 4 सघर्ष आभरणसयोगा —मा० ५ 5 दो राजाओं में किसी एक से समान उद्देश्य के लिए मिलना 6 (व्या० में) सयुक्त अक्षर 7 (ज्यो० में) दो तारिकाओं का मिलन 8. शिव का विशेषण। सम०—पृथक्त्वम् अनित्य सबधों का पार्थक्य,—विरुद्धम् साथ-साथ मिलाकर खाने से रोग उत्पन्न करने वाला खाद्यपदार्थ।

संयोगिन् (वि०) [सयोग+इनि] 1 मिलाया हुआ, सम्मिलित 2. मिलने वाला।

संयोजनम् [सम्+युज्+ल्युट्] 1. मिलाप, एक साथ जोड़ना 2 मैथुन, सभोग।

संरक्त (भू० क० कृ०) [सम्+रञ्ज्+क्त] 1 रगीन, लाल 2 आवेशपूर्ण, प्रणयाग्नि में दग्ध 3 क्रुद्ध, चिड़चिड़ा, क्रोधाग्नि से जलता हुआ 4 मोहित, मुग्ध 5 लावण्यमय, सुन्दर।

संरक्ष [सम्+रक्ष्+घञ्] सरक्षण, देख-भाल, सभाल।

संरक्षणम् [सम्+रक्ष्+ल्युट्] 1 सरक्षण, सभाल 2 उत्तरदायित्व, निगरानी।

संरब्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रभ्+क्त] 1 उत्तेजित विक्षुब्ध 2 प्रज्वलित, सक्षुब्ध, क्रुद्ध, भीषण 3 अंकित 4 छूआ हुआ 5 अभिभूत।

संरभः [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. आरभ 2 हुल्लड़, खलबली, उग्रता, प्रचण्डता क्ष० ७ 3 विक्षोभ, उत्तेजना, हड़बड़ी कु० ३।४८ 4 ऊर्जा, उत्साह, उत्कण्ठा - रघु० १२।९६ 5 क्रोध, रोष, कोप - प्रतिपालप्रतीकार सरभो हि महात्मनाम् रघु० ४।६४ १२।३६, विक्रम० २।२१, ४।२४ 6 घमड, अहकार 7 क्षोभ और जलन (फोड़े फुंसी की)। सम०—कृत (वि०) जो युद्ध के कारण कठोर हो गया हो, रस (वि०) अत्यत क्रुद्ध, तेज क्रोध की उग्रता।

संरम्भिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सरम्भ+इनि] 1 उत्तेजित, विक्षुब्ध, हड़बड़ी से युक्त शि० २।५३ 2 क्रुद्ध, प्रकुपित, रोषाविष्ट 3 घमडी अहकारी।

संरावः [सम्+रु+घञ्] 1 रुदन 2 प्रलापोन्माद, बड़बड़ाहट 3 रोष, क्रोध।

संराधनम् [सम्+राध्+ल्युट्] 1 प्रसन्न करना, मेल करना, पूजा आदि के द्वारा तुष्ट करना 2 सम्पन्न करना 3 प्रहृष्ट या सहृदय मनन।

संरावः [सम्+रु+घञ्] 1 गुलगपाड़ा, हुल्लागुल्ला, शोरगुल 2 कोलाहल।

संरुग्ण (भू० क० कृ०) [सम्+रुज्+क्त] जो टुकड़े टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, छिन्न-भिन्न।

संरुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रुध्+क्त] 1 रोका गया बाधित, अवरुद्ध 2 थका हुआ, घिरा हुआ 3 घेरा डाला हुआ, वेष्टित, उपरुद्ध 4. ढका हुआ, छिपाया हुआ 5 अन्तर्हित, अटकाया हुआ, दे० सम् पूर्वक रुध्।

संरुध (भू० क० कृ०) [सम्+रुह्+क्त] 1 साथ-साथ

उगा हुआ 2 किसान्वित, भाव भरा हुआ, जैसा कि 'संस्यक्षत' में 3 फूटा हुआ, अंकुर निकला हुआ, मुकुलित, उपजा हुआ रघु० ६।४७ 4. पक्का जमा हुआ, जिसकी जड़ दृढ़ हो गई हो 5 साहसी, भरोसे का।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] 1 पूरी रुकावट या विघ्न, अवरोधन, रोक, रोक थाम 2 घेराबंदी, घेरना 3. बंधन, बेड़ी 4 फेंकना, डालना।

संरोधनम् [सम्+रुध्+ल्युट्] रुकावट, ठहराना, रोकना।

संलक्षणम् [सम्+लक्ष्+ल्युट्] निशान लगाना, पहचानना, चित्रण करना।

संलग्न (भू० क० कृ०) [सम्+लग्+क्त] 1 अनिष्ट, सटा हुआ, सहित, जुड़ा हुआ 2. गुप्तमंत्रणा होना, भिड़ जाना।

संलयः [सम्+ली+अच्] 1 लेटना, सोना 2. घुल जाना 3 प्रलय।

संलयनम् [सम्+ली+ल्युट्] 1 जुड़ जाना, चिपक जाना 2 घुल जाना।

संलिप्त (भू० क० कृ०) [सम्+लिप्+क्त] लाद लगाया हुआ, प्लास्टर किया हुआ।

संलापः [सम्+लप्+घञ्] 1 समालाप, बातचीत, प्रवचन 2 गोपनीय या गुप्त बातें, अंतरंग बातचीत, 3 (नाटकों में) एक प्रकार का संवाद, सम्भाषण।

संलापकः [संलाप+कन्] एक प्रकार का उपरूपक, संवादात्मक प्रकार का, दे० सा० द० ५४९।

संलीढ (भू० क० कृ०) [सम्+लिह्+क्त] चाटा हुआ, उपभुक्त।

संलीन (भू० क० कृ०) [सम्+ली+क्त] 1 चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 2 साथ साथ मिलाया हुआ 3 छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4 दबाया हुआ 5 सिकुड़ा हुआ, शिकन पड़ा हुआ। सम०—कर्ण (वि०) जिसके कान नीचे लटके हों,—वासस् (वि०) खिन्नमना, उदास।

संलोडनम् [सम्+लोड्+ल्युट्] बाधा डालना, गड़बड़ करना।

संवत् (अव्य०) [सम्+वद्+क्विप्, संपोः तुक् च] 1 वर्ष 2 विशेष कर विक्रमादित्य वर्ष, (जो ईसवी सन् से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था।

संवत्सरः [संवसन्ति ऋतवोऽत्र- संवस्+सरन्] 1 वर्ष 2 विक्रमादित्याब्द 3. शिव। सम० करः शिव का विशेषण, जातः (वि०) एक वर्ष में पूरा चक्कर करने वाला (सूर्य), रथः एक वर्ष में पूरा होने वाला मार्ग।

संवदनम् [सम्+वद्+ल्युट्] 1 वार्तालाप करना, मिल कर बातें करना 2 समाचार देना 3 परीक्षण, सवाल करना 4 वायु मंत्र के द्वारा वश में करना 5 मन्त्र, ताबीज।

संवरः [सम्+वृ+अप् या अच्] 1 ढक्कन 2 समूह 3 संपीडन, संकोचन 4 बाँध, सेतु, पुल 5 एक प्रकार का हरिण 6 एक राक्षस का नाम—दे० संवर, रघु 1 छिपाव 2. सहनशीलता, आत्मनियन्त्रण 3. जल 4 बौद्धों का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान।

संवरणम् [सम्+वृ+ल्युट्] 1 आवरण, आच्छादन 2 छिपाव, दुराव—मा० १ 3 बहाना, छद्मवेश दे० 'संवर' भी।

संवर्जनम् [सम्+वृज्—ल्युट्] 1. आत्मसात्करण 2 उपभोग करना, खा जाना।

संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] 1 घूमना 2 घूमना, विनाश 3 संसार का नियतकालिक प्रलय - महावीर० ६।२६ 4 बादल 5 (अन्न से भरा हुआ) बासन 6 संसार में प्रलय होने पर उठने वाले सात बादलों में से एक 7 वर्ष 8 समूह, समुच्चय।

संवर्तकः [सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का बादल 2 प्रलयाग्नि, विश्वप्रलय के समय संसार को भस्म करने वाली आग—इत्येवमि बडवानलः सह समरं संवर्तकै—भर्तृ० २।७६ 3 बडवानल 4 बलराम का नाम।

संवर्तनिन् (पुं०) [संवर्तक+इनि] बलराम का नाम।

संवर्तिका [संवर्तक+टाप्, इत्वम्] 1. कमल का बड़ा पत्ता 2 पराग केसर के पास की पंखड़ी 3. दीप शिखा आदि (दीपादे- शिखा—तारा०)।

संवर्धक (वि०) (स्त्री० -धिका) [सम्+वृध्+णिच्+ण्वुल्] 1. पूर्ण विकसित करने वाला, बढ़ाने वाला 2. साकार करने वाला, स्वायत्त करने वाला (अभिलाषों का), आतिथ्यकारी।

संवर्धित (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+णिच्+क्त] 1. पाला-पोसा हुआ, पालन-पोषण किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ।

संवलित (भू० क० कृ०) [सम्+वल्+क्त] 1. साथ मिला हुआ, मिलाया हुआ, लिपटा हुआ—मा० ६।५ 2. तर किया हुआ,—मा० ४।९ 3. संवृद्ध, संपृक्त 4. टूटा हुआ उत्तिष्ठोत्कम्पसंवलितशिखाः (अग्नयः) —कि० ६।४।

संवलीकृत (वि०) [अभू+कृ+क्त] परिवर्तित किया हुआ, अन्य स्थिति मा० ५।१९।

संवसथः [सम्+वस्+अथच्] मिलकर रहने का स्थान, धाम, बस्ती।

संवह् [सम्+वह्+अच्] वायु के सात मार्गों में से तीसरा मार्ग।

संवादः [सम्+वद्+घञ्] 1. मिलकर बोलना, बात चीत, वार्तालाप, कथोपकथन, महावीर० १।१२ 2 चर्चा, वादविवाद 3 समाचार देना 4 सूचना, समाचार 5. स्वीकृति, सहमति 6 समनुकंपना, मेल-जोल, समानता, सादृश्य —रूपसंवादाच्च संशयादनया पृष्ट दशा०, (नाद) चित्ताकर्षी परिचित इव श्रोत्र-संवादमेति मा० ५।२०।

संवादिन् (वि०) [संवाद+इनि] 1 बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2 सदृश, समान, मिलता-जुलता अनुरूप —बहुजनवादिनो वेका —रघु० १। ३९, अस्मदङ्गसंवादिन्याकृति उत्तर० ६।

संवारः [सम्+वृ+घञ्] 1 आवरण, आच्छादन 2 वर्णोच्चारण के समय कण्ठादिकों का संकोचन मन्द उच्चारण (विप० विवार) 3 न्यूनता 4 प्रक्षालन, संरक्षण 5 सुव्यवस्थापन।

संवासः [सम्+वस्+घञ्] 1 मिलकर रहना 2 समाज, मण्डली —पंच० १।२५० 3 घरेलू व्यवहार 4 घर, आवास स्थान 5 मनोरंजन के या सभा आदि के लिए खुला मैदान।

संवाहः [सम्+वह्+घञ्] 1 ले जाना, ढोना 2 मिलकर दबाना 3 मालिश करना, मुट्ठी भरना 4 वह नौकर जो मालिश करने या मुट्ठी भरने के लिए रक्खा गया हो।

संवाहकः [सम्+वह्+ण्वुल्] मालिश करने वाला, दे० ऊपर संवाह (4)।

संवाहनम्,—ना [सम्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1 बोझा ढोना, उठाकर ले जाना 2 मालिश करना, मुट्ठी भरना, उत्तर० १।२४, मा० १।२५।

संविक्तम् [सम्+विच्+क्त] अलग किया हुआ, विशिष्ट।

संविग्न [सम्+विज्+क्त] 1 विक्षुब्ध, उत्तेजित, अशान्त, उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ जैसा कि 'संविग्न-मानस' में 2 त्रस्त, भीत।

संविज्ञात (भू० क० कृ०) [सम्+वि+ज्ञा+क्त] विश्वविदित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्मत।

संविति: (स्त्री०) [सम्+विद्+क्तिन्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान चेतना, भावना स्वसंवेद्या सुखसंविति स्मरणीयाऽनुभावनी—कि० ११।३४, १६।३२ 2 समझ, बुद्धि 3 पहचान, प्रत्यास्मरण 4 (भावना का) सामनस्य, मानसिक समझौता।

संविद् (स्त्री०) [सम्+विद्+क्विप्] 1 ज्ञान समझ, बुद्धि, —कि० १८।४२ 2 चेतना, प्रत्यक्षज्ञान मा० ६।१३ 3 इकरार, वचन, संविदा, अनुबन्ध, प्रतिज्ञा —रघु० ७।२१ 4 स्वीकृति, सहमति 5 माना हुआ प्रचलन, विहित प्रथा 6 संग्राम, युद्ध, लड़ाई 7 युद्ध की ललकार, प्रहरी-संकेत 8 नाम, अभिधान 9 चिह्न, संकेत 10 प्रसन्न करना, खुश करना, तुष्टीकरण शि० १६।३७ 11. सहानुभूति, साथ देना 12 मनन 13 वार्तालाप, संलाप 14 आँख। सम०—अतिक्रम प्रतिज्ञा भंग करना, संविदा का उल्लंघन।

संविदा [संविद्+टाप्] करार, प्रतिज्ञा, ठेका।

संविदात (वि०) जानने वाला, प्रतिभाशाली 2 सामनस्य पूर्ण।

संविदित (भू० क० कृ०) [सम्+विद्+क्त] 1 जाना हुआ, समझा हुआ 2 पहचाना हुआ 3 सुविदित, विश्रुत 4 खोजा हुआ 5 सम्मत 6 उपदिष्ट, समझाया बुझाया हुआ दे० सम् पूर्वक विद्, तथ्य करार, प्रतिज्ञा।

संविधा [सम्+वि+धा+अङ्+टाप्] 1 व्यवस्था, उपक्रमण, आयोजन—रघु० ७।१७, १४।१७ 2. जीवन यापन का ढंग, जीवनचर्या के साधन - रघु० १।९४।

संविधानम् [सम्+वि+धा+ल्युट्] 1 व्यवस्था, प्रबन्ध मा० ६ 2 अनुष्ठान 3 आयोजन, रीति 4. कृत्य 5 (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम - मा० ९।

संविधानकम् [संविधान+कन्] 1 (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम, किसी नाटक की कथावस्तु—अहो संविधान-कम—उत्तर० ३ 2 अद्भुत कर्म, असाधारण घटना।

संविभागः [सम्+वि+भज्+घञ्] 1 विभाजन, बाँटना 2 अंश, अंश, हिस्सा।

संविभागिन् (पु०) [संविभाग+इनि] सहभागी, हिस्सेदार, साझीदार।

संविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+विश्+क्त] 1 सोता हुआ लेटा हुआ रघु० १।९५ 2 साथ-साथ घुसा हुआ 3 मिलकर बैठा हुआ 4 वस्त्र पहने हुए, कपड़े धारण किये हुए।

संवीक्षणम् [सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] सब दिशाओं में देखना, खोज, खोई हुई वस्तु की तलाश।

संवीत (भू० क० कृ०) [सम्+व्ये+क्त] 1 कपड़ों से सज्जित, कपड़े पहने हुए 2 ढका हुआ, लिपटा हुआ अभिच्छादित 3 अलङ्कृत 4 लपेटा हुआ, घेरा हुआ, बन्द किया हुआ, परिवेष्टित 5 अभिभूत।

संवृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृज्+क्त] 1 त्यागा हुआ, उपयुक्त 2 नष्ट।

संवृत (भू० क० कृ०) [सम्+वृ+क्त] 1 ढका हुआ, आच्छादित मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं (प्रथमम्)—कु० ३।२६ 2 प्रच्छन्न, गुप्त रघु० २।११ 3 रहस्य 4 समाप्त, बन्द, सुरक्षित 5 अवकाश प्राप्त, एकान्त-सेवी 6 संकुचित, भींचा हुआ 7 अन्यपूर्वक छीना हुआ, अंधा किया हुआ 8 भरा हुआ, पूर्ण 9 सहित. दे० सम् पूर्वक वृ, तम् 1 गुप्त स्थान, एकान्त स्थान

गोपनीयता 2 उच्चारण का एक प्रकार। सर्व० आकार (वि०) जो अपनी आन्तरिक भावनाओं को बाहर प्रकट नहीं होने देता है, जो अपने मन के विचारों का अता पता नहीं देता, अन्ध (वि०) जो अपनी योजनाओं को गुप्त रखता है –रघु० १।२०।

संवृतिः (स्त्री०) [सम्+वृ+क्तिन्] 1 आवरण, आच्छादन 2 छिपाव, दबाना, गुप्त रखना कि० १०।४४ 3 गुप्त प्रयोजन, अभिसंधि।

संवृत्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृत्+क्त] 1 हुआ, घटा, घटित हुआ 2 मरा गया, सम्भ्रम 3 संचित, एकस्थान पर राशीकृत 4 ढीला हुआ, गया हुआ 5 ढका हुआ 6 सुसज्जित,–त्तः बरगद का नाम।

संवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+वृत्+क्तिन्] 1 होना, घटना घटित होना 2 निष्पन्नता 3 आवरण।

संवृद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+क्त] 1 पूर्ण-विकसित, बढा हुआ, पूर्ण वृद्धि को प्राप्त 2 ऊँचा या लंबा, बड़ा हुआ, बड़ा विशाल 3 समृद्धिशाली, खिलता हुआ, फूलता फूलता हुआ।

संवेगः [सम्+विज्+घञ्] 1 विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना महावीर० १।३९ 2 प्रचंड गति, तीव्रगामिता, प्रचंडता उत्तर० २।२४, मा० ५।९ 3 घबराहट, त्रास 4 तड़पाने वाली पीड़ा, वेदना, लोकोत्तर।

संवेद [सम्+विद्+घञ्] प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, चेतना, भावना।

संवेदनम्, ना [सम्+विद्+ल्युट्] 1 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 2 तीव्र अनुभूति, भावना, अनुभूति, भोगना तुलसंवेदनायैव राम चैतन्यमर्पितम्–उत्तर० १।४७ 3 देना, आत्मसमर्पण करना–मुद्रा० १।२३।

संवेश [सम्+विश्+घञ्] 1. निद्रा, विश्राम रघु० १।९३ 2 स्वप्न 3 आसन (कुर्सी आदि) 4 मैथुन, संभोग या संतिबंध विशेष।

संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] मैथुन, संभोग।

संव्यानम् [सम्+व्ये+ल्युट्] 1 आवरण, परिवेष्टन 2 वस्त्र, कपड़ा, परिधान 3 उत्तरीय वस्त्र शि० १८।६९।

संशप्तकः [सम्यक् शपथमङ्गीकारो यस्य कप्] वह योद्धा जिसने युद्ध में न भागने की शपथ खायी हो और जो दूसरे योद्धाओं को भागने से रोकने के लिए रखा गया हो 2 छटा हुआ योद्धा 3 सहयोगी योद्धा 4 वह षड्यन्त्रकारी जिसने किसी को मार डालने का बीड़ा उठाया हो।

संशय [सम्+शी+अच्] 1 संदेह, अनिश्चिति अपकल्पना, संकोच, मनस्तु मे संशयमेव गाहते–कु० ५।४६, स्वदत्त्य. संशयस्यास्य छेत्ता न हि उपपद्यते - भग० ६।३९ 2. शंका, शक 3 संदेह, या अनिर्णय (न्या० में) न्यायदर्शन में वर्णित सोलह पदों में से एक –एक धर्मिकविरुद्धभावावधारणज्ञान संशय 4 डर, आतंक, जोखिम न संशयमारुह्य नरो भद्राणि पश्यति–हि० १।७, यावा पुन संशयमन्यजैव–मा० १०।१३, कि० १३।१६, वेणी० ६।१ 5 संभावना।

समः आत्मन् (वि०) संदेह करने वाला, शंकाशील, आत्मन्,–उपेत, स्थ (वि०) संदेहपूर्ण, अनिश्चित, अस्थिर, मल (वि०) खतरे में पड़ा हुआ - भ० ६,–छेद संदेह का निवारण, निर्णय, छेदिन् (वि०) सभी संदेहों को मिटाने वाला, निर्णयात्मक–भ० ३।

संशयान, संशयानु (वि०) [सम्+शी+शानच्, संशय+आलुच्] संदेहपूर्ण, अस्थिर, अनिश्चित, चंचल।

संशारम्भ [सम्+रभ्+ल्युट्] युद्ध का आरम्भ, आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

संशित (भू० क० कृ०) [सम्+शो+क्त] 1 तेज किया हुआ प्रोत्तेजित किया हुआ 2 तेज, तीक्ष्ण 3 सजग पूरा किया हुआ, कियान्वित, निष्पन्न 4 निर्णीत, सुनिश्चित, निर्धारित, निश्चित। सम०–आत्मन् (वि०) जिसका मन सर्वथा परिपक्व या अनुशिष्ट है, व्रत (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली है।

संशुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+शुध्+क्त] 1 पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, पवित्र 2 पालिश किया हुआ, परिष्कृत 3 प्रायश्चित के द्वारा विशुद्ध किया हुआ।

संशुद्धिः (स्त्री०) [सम्+शुध्+क्तिन्] 1 नितान्त पवित्रीकरण, भग० १५।१ 2 स्वच्छ करना, विमल करना 3 संशोधन, समाधान, परिशोधन 4 स्वच्छता, सफाई 5 (ऋण का) भुगतान।

संशोधनम् [सम्+शुध्+ल्युट्] पवित्रीकरण, स्वच्छता आदि।

संशोभन् (नपुं०) [सम्+शुभ्+डति] दाव-पेंच, जादूगरी, इन्द्रजाल, मरीचिका–पुं० जादूगर।

संशान्त [भू० क० कृ०] [सम्+शम्+क्त] 1. संकुचित, सिकुड़ा हुआ 2 जमा हुआ, ठिठुरा हुआ 3 लपेटा हुआ 4. अवसन्न।

संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] विश्रामस्थल, आवास स्थान, निवासस्थान, वासस्थान–परस्पर विरोधिन्योरेकसंश्रयः दुर्लभः विक्रम० ५।२४, रघु० ६।४१, इस अर्थ में शब्द समास के अन्त में, 'साथ रहने वाला' 'संबद्ध या विषयक' 'निर्देशानुसार'–जातिकुलैकसंश्रयाम्–रघु० ५।१७, गौसंश्रय रघु० १६।५७, मनोरथोऽस्या दयितोसिसंश्रयः –कु० ५।६०, द्विजसंश्रयां प्रीतिमवाप्य

लक्ष्मी० १।४३ एकार्थसंश्रयमुभयो प्रयोगम् —मालवि० १ 2. प्ररक्षण या शरण की खोज, शरण के लिए दौड़ना, मित्रता करना, पारस्परिक प्ररक्षण के लिए संघटित होना, राजनीति में वर्णित छ उपायों में से एक, दे० 'गुण' के अन्तर्गत भी, मनु० ७।१६० 3 आश्रय, शरण, आश्रम, प्ररक्षण, पनाह अनपायिनि संश्रयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी कु० ४।३१ मेघ० १७, पंच० १।२६।

संश्रवः [सम्+श्रु+अप्] 1 ध्यानपूर्वक सुनना 2 प्रतिज्ञा, करार, वादा।

संश्रवणम् [सम्+श्रु+ल्युट्] 1 सुनना 2 कान।

संश्रित (भू० क० कृ०) [सम्+श्रि+क्त] 1 शरण में गया हुआ 2 सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ।

संश्रुत (भू० क० कृ०) [सम्+श्रु+क्त] 1 प्रतिज्ञात, करार किया हुआ 2 भली भांति सुना हुआ।

संश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+श्लिष्+क्त] 1 जोड़ा हुआ, साथ साथ मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त 2 आलिंगित 3 संबद्ध, साथ साथ जुड़ा 4 सटा हुआ, सम्पर्की, संसक्त 5 सुसज्जित, युक्त, सहित।

संश्लेषः [सम्+श्लिष+घञ्] 1 आलिंगन, परिरम्भण 2 मिलाप, संगम, संपर्क।

संश्लेषणम्,-णा [सम्+श्लिष्+ल्युट्] 1 मिला कर भींचना 2 साथ साथ बांधने का साधन।

संसक्त (भू० क० कृ०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1 साथ जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2 जमा हुआ, मिलाप, आसक्त, सटा हुआ 3 साथ मिलाया हुआ, शृंखलाबद्ध, पास पास मिला हुआ रघु० ७।२४ 4 निकट, आसन्न, सटा हुआ 5 अन्तर्ग्रथित मिला हुआ, मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ संसक्तमुक्तसमवर्तकेव मा० ९।५, कालिन्दकन्या मथुरा गतापि गङ्गाभिसंसक्तजलेव भाति रघु० ६।४८, मा० ५।११ 6 सटा हुआ तुला हुआ 7 साथ, सहित 8 जकड़ा हुआ, प्रतिबद्ध। सम० **मनस्** (वि०) जिसका मन किसी विषय पर जमा हुआ हो, **यूप** (वि०) जूए में जुता हुआ, जोत कसा हुआ- शि० ३।६३।

संसक्तिः [सम्+सञ्ज्+क्तिन्] 1 सटे रहना, घनिष्ठ मिलन या संगम कि० ७।२७ 2 घनिष्ट संपर्क, सामीप्य 3 आपसी मेलजोल, घनिष्ठता, घनिष्ट परिचय -शि० ९।६७ 4 बांधना, मिला कर जकड़ना 5 भक्ति, (किसी कार्य में) दुर्व्यसनता।

संसद् (स्त्री०) [सम्+सद्+क्विप्] 1 सभा, सम्मिलन, मंडल -संसत्सुजाते पुरुषाधिकारे कि० ३।५१, छात्रसंसदि लब्धकीर्ति -पंच० १, रघु० १६।२८ 2 न्यायालय मनु० ८।५२।

संसरणम् [सम्+सृ+ल्युट्] 1 जाना, प्रगति करना, चक्कर काटना 2 संसार, सांसारिक जीवन, लौकिक सत्ता प्रोन्मण्डकरम्भमण्डलभीष्मज्वालसंसरणतापित-मूर्त्ते -भामि० ४।६ 3 जन्म और पुनर्जन्म 4 सेना का निर्याण कूच 5 युद्ध का आरम्भ 6 राजमार्ग 7 नगर के दरवाजों के समीप की धर्मशाला।

संसर्ग [सम्+सृज्+घञ्] 1 सम्मिश्रण, संगम, मिलाप 2 संपर्क, संगति, साहचर्य, समाज संसर्गमुक्ति खलेषु भर्तृ० २।६२, पंच० २।३ 3 सामीप्य, संस्पर्श 4 मेल-जोल परिचय 5 मैथुन, संभोग मनु० ६।७२ 6 सह-अस्तित्व, घनिष्ठ संबंध। सम०

अभाव अभाव के दो मुख्य भेदों में से एक, सापेक्ष अभाव जो तीन प्रकार का है (प्रागभाव पूर्ववर्ती अभाव, प्रध्वंसाभाव आपाती अभाव, और अत्यन्ताभाव निरपेक्ष, अनस्तित्व), **दोष** साहचर्य या संगति के विशेषकर कुसंगति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली बुराई या दोष।

संसर्गिन् (वि०) [समर्ग+इनि] संयुक्त, मिला हुआ, (पु०) सहचर, साथी।

संसर्जनम् [सम्+सृज्+ल्युट्] 1 सम्मिश्रण 2 छोड़ना, परित्याग करना 3 खाली करना, शून्य करना।

संसर्प [सम्+सृप्+घञ्] 1 सरकना रेंगना 2 मल-मास, लौंद का महीना जो छयमास वाले वर्ष में होता है।

संसर्पणम् [सम्+सृप्+ल्युट्] 1 सरकना 2 अचानक आक्रमण, सहसा धावा।

संसर्पिन् (वि०) [सर्प+इनि] सरकने वाला रेंगने वाला, कु० ७।८१।

संसव [सम्+सद्+घञ्] सभा।

संसार [सम्+सृ+घञ्] 1 मार्ग चलना 2 सांसारिक जीवनचक्र, पुनर्जन्मयुक्त जीवन लौकिक जिंदगी, दुनिया असार संसार उत्तर० १ मा० ५।३०, संसारबन्धच्छिदि कि आत्मामृगमिसमाधुना शुभमते -आर्या० २७, या, परिवर्तिनि संसारे मृत को वा न जायते-पंच० १।२७ 3 आवागमन, जन्मान्तर, जन्मपरम्परा 4 सांसारिक भ्रम। सम०—**गुरु** आवागमन - गुरु, कामदेव का विशेषण, **मार्ग** 1 लौकिक बातों का क्रम, सांसारिक जीवन 2 बीतिमुख मनहर, मोक्ष, - **मोचनम्** लौकिक जीवन से मुक्ति।

सांसारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [संसार+इनि] लौकिक दुनियावी, देहान्तरगामी पु० 1 संजीव प्राणी जीवजन्तु 2 जीवधारी, जीवात्मा।

संसिद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+सिध्+क्त] 1 सर्वथा निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2 जिसे मोक्ष की सिद्धि प्राप्त हो गई है, मुक्त।

संसिद्धिः (स्त्री०) [सम्+सिध्+क्तिन्] 1 पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम्—भाग०, कु० २।६३ 2 कैवल्य, मोक्ष—संसिद्धिं परमां गता—भग० ८।१५ ३।२० 3 प्रकृति, नैसर्गिक वृत्ति, अवस्था या गुण 4 प्रणयोन्मत्त या नशे में चूर स्त्री।

संसूचनम् [सम्+सूच्+ल्युट्] 1 प्रकट करना, सिद्ध करना 2 सूचित करना, कहना 3 संकेत करना, भेद खोलना अर्थस्य संसूचनम् 4 भर्त्सना, झिड़कना।

संसृतिः (स्त्री०) [सम्+सृ+क्तिन्] 1. मार्ग, धारा, प्रवाह 2 लौकिक जीवन, संसारचक्र 3 देहान्तरगमन, आवागमन—कि मा निपतसि संसृतिगर्तमध्ये—भामि० ४।३० शि० १४।६३ तु० 'संसार'।

संसृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+सृज्+क्त] 1 मिश्रित मिला हुआ, साथ साथ मिलाया हुआ, सम्मिलित किया हुआ 2 साझीदारों की भाँति साथ साथ संबद्ध 3 प्रशान्त 4 पूर्वोक्त 5 फँसा हुआ, 6 लिप्त 7 स्वच्छ वस्त्रों से सुसज्जित।

संसृष्टता-त्व [सम्+सृज्+क्त+ता (त्व)] 1 समाज, संघ 2 (विधि में) धार्मिक हित की दृष्टि से बहु बालकों का वैधिक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और पुत्र का अथवा भाइयों के विभाजन के पश्चात् भाइयों का)।

संसृष्टिः (स्त्री०) [सम्+सृज्+क्तिन्] 1 संबंध, मिलाप 2. सहचर्य, मेल-जोल, सहभागिता साझीदारी 3 एक ही परिवार में मिलकर रहना दे० संसृष्टता (2) 4 संग्रह 5 संचय करना, जोड़ना 6 (सा० में) एक ही संदर्भ में दो या दो से अधिक अलंकारों का स्वतन्त्र रूप से सह-अस्तित्व निरपेक्षयोस्तेषां (शब्दार्थालङ्कारयोरङ्गाङ्गिभावेन) स्थितिः संसृष्टिरुच्यते—सा० द० ५५२।

संसेक [सम्+सिच्+घञ्] छिड़कना, जल से तर करना।

संस्कर्तृ (पु०) [सम्+कृ+तृच्] 1 जो सुसज्जित करता है, खाना बनाता है, या किसी प्रकार की तैयारी करता है मनु० ५।५१ 2 जो अभिमन्त्रित करता है, पवित्र करता है उत्तर० ७।१३।

संस्कारः [सम्+कृ+घञ्] 1. पूर्ण करना, संस्कृत करना, पालिश करना, (मणि) प्रकृतसंस्कार इवाधिकं बभौ—रघु० ३।१८ 2 संस्क्रिया, पूर्णता, व्याकरण की दृष्टि से (शब्दों की) विशुद्धता—कु० १।२८ (यहाँ मल्लि० 'व्याकरणजन्या शुद्धि' लिखता है) रघु० १५।३६ 3 शिक्षा, अनुशीलन (मानसिक) परिक्रम—नियमसंस्कारविनीत इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५, कु० ७।२० 4 तैयार करना, आसवज्ञा 5 खाना बनाना, भोज्य पदार्थ तैयार करना 6 सुधार, सजावट, अलंकार—स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते—दृष्टान्त० ४९, श० ७।२३, मुद्रा० २।१० 7 अभिमन्त्रण, मन्त्र-शुद्धि, पवित्रीकरण 8 छाप, रूप, साँचा, कार्यवाही, प्रभाव—यस्मिन् भाजने लग्न संस्कारो नान्यथा भवेत्—हि० प्र० ८, भर्तृ० ३।८४ 9 विचार भाव, प्रत्यय 10 मन शक्ति या चारित्र 11 कार्य का प्रभाव, किसी कर्म का गुण रघु० १।२० 12. अपनी पूर्व-जन्म की वासनाओं को पुनर्जीवित करने का गुण, छाप डालने की शक्ति, वैशेषिकों द्वारा माने हुए चौबीस गुणों में से एक (यह गुण तीन प्रकार का है—भावना, वेग और स्थिति-स्थापकता) 13 प्रत्या-स्मरणशक्ति, स्मरण संस्कारमात्रजन्य ज्ञान स्मृति—तर्क० 14 शुद्धिसंस्कार, पुनीत कृत्य पुण्यसंस्कार संस्काराहं शरीरस्य—मनु० २।६६, रघु० १०।७९ (मनु बारह संस्कारों का उल्लेख करता है—दे० मनु० २।२७, कुछ लेखक इस संख्या को सोलह तक बढ़ाते हैं) 15 धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान 16 उप-नयन संस्कार 17 अन्त्येष्टि संस्कार 18 माजकर चमकाने के काम आने वाला पत्थर, साँचा—श० ६।६, (यहाँ 'संस्कार' का अर्थ 'भावना' भी है)। सम०—पूत (वि०) 1 पुण्यकृत्यों द्वारा शुद्ध किया हुआ 2 शिक्षा या अन्य संस्कारों द्वारा पवित्र किया हुआ, रहित वर्जित,—हीन (वि०) वह द्विज जो संस्कार हीन हो, अथवा जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, और इस लिए जो सावित्र्य (पतित, जाति-बहिष्कृत) हो गया हो—तु० 'सावित्र'।

संस्कृत (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1 पूरा किया गया, परिष्कृत, साफ कर चमकाया हुआ, आवर्धित—काव्येषु संस्कृतः कुरुते पुत्रं या संस्कृता आर्यते—भर्तृ० २।१९ 2 कृत्रिम रूप से बनाया गया, सुरक्षित, सुनिर्मित, सुसम्पादित 3 तैयार किया गया, सवारा गया, सुसज्जित किया गया, पकाया गया (भोजन) 4 अभिमन्त्रित, पूनीत किया गया 5 सांसारिक जीवन में दीक्षित, विवाहित 6 स्वच्छ किया गया, पवित्र किया गया 7 अलंकृत किया गया, सजाया गया 8 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम,—सः 1. व्याकरण के नियमों के अनुसार सिद्ध किया गया शब्द, निर्धारित व्युत्पन्न शब्द 2 द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका शुद्धिसंस्कार हो चुका हो 3. विद्वान् पुरुष,—सम् 1 परिष्कृत या अत्यन्त परिमार्जित भाषा, संस्कृत भाषा 2 धार्मिक प्रचलन 3. चढ़ावा, आहुति (वैदिक वाङ्मय)।

संस्क्रिया [सम्+कृ+श, इयङ्, टाप्] 1 शुद्धिसंस्कार

2 अभिमन्त्रण 3 और्ध्वदेहिकक्रिया, अन्त्येष्टि संस्कार ।

संस्तम्भः [सम्+स्तम्भ्+घञ्] 1 सहारा, टेक 2 दृढ करना, सबल बनाना, जमाना 3 विराम, यति 4 अकड़ना, लकवा ।

संस्तरः [सम+स्तृ+अप्] 1 शय्या, पलंग, बिस्तर नवपल्लवसंस्तरेऽपि ते रघु० ८।५७ मदपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनु विगाढनौ--कु० ४।३८ 2 यज्ञ ।

संस्तवः [सम+स्तु+अप्] 1 प्रशंसा, स्तुति 2 जान-पहचान, घनिष्ठता, परिचय गुणा प्रियन्तेऽधिकृता न संस्तवः--कि० ६।२५, नवैर्गुणैः सम्प्रति संस्तवस्थिरः तिरोहितः प्रेम घनायमाश्रयः ६।२८ शि० ७।३१ ।

संस्तावः [सम्+स्तु+घञ्] 1 प्रशंसा करना 2 सम्मिलित स्तुतिपाठ 3 यज्ञ में स्तुति पाठक ब्राह्मणों के बैठने का स्थान ।

संस्तुत (भू० क० कृ०) [सम्+स्तु+क्त] 1 प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गई हो 2 मिलकर प्रशंसा किया गया 3 सम्मत, संवादी 4 घनिष्ठ, परिचित ।

संस्तुतिः (स्त्री०) [सम्+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति ।

संस्त्याय [सम्+स्त्यै+घञ्] 1 संचय, राशि, संघात 2 सामीप्य 3 फैलाव, प्रसार, विस्तार 4 घर, निवासस्थान, आवास संस्त्यायमेव गच्छाव मा० १।९ 5 परिचय, मित्रों या परिचितों की बातचीत ।

संस्थ (वि०) [सम्+स्था+क] 1 ठहरने वाला, डटा रहने वाला, टिकाऊ 2 रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, स्थित (मास के अन्त में) शिष्टा क्रिया कस्य विशेषसंस्था मालवि० १।५६, कु० ६।६०, मा० ५।१६ 3 पालतू, घरेलू बनाया हुआ, सधाया हुआ 4 स्थिर, अचल 5 समाप्त, नष्ट, मृत, स्थः 1 निवासी, वास्तव्य 2 पड़ौसी, स्वदेशवासी, 3 गुप्तचर ।

संस्था [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1 संघात, संचय 2 स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3 रूप, प्रकृति रघु० ११।३८ 4 चर्चा, व्यवसाय, रहन-सहन का बंधा हुआ तरीका पृथक् संस्थास्थ निर्मम मनु० ६।२१ 5 मृत्यु और उचित आचरण 6 अन्त, पूर्ति 7 विराम, यति 8 हानि, विनाश 9 प्रलय 10 अनुरूपता 11 राजकीय आज्ञा 12 सोम यज्ञ का एक रूप ।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1 संचय, राशि, आधार 2 प्राथमिक अणुओं की समष्टि 3 संकरण, विनाश आकृतिरवयवसंस्थानविशेषः 4 रूप आकृति, दर्शन, मूरत, शक्ल स्त्री संस्थान काश्यपसीमंतमार्गवृत्तिच्छेदेना ज्योतिरेक अगाम- शि० ५।२९, मनु० ९।२६१ 5 संरचना, निर्माण 6 पड़ौस 7 आवास का सामान्य स्थल, सार्वजनिक स्थान 8 स्थिति अवस्था 9 कोई स्थान या जगह 10 चौराहा 11 निशान, चिह्न, विशेषक चिह्न 13 मृत्यु ।

संस्थापनम् [सम्+स्था+णिच्+ल्युट्] 1 एक स्थान पर रखना, संचय करना 2 जमाना, निर्धारण करना, विनियमित करना कुर्वीत चैषां प्रत्यक्षमथैसंस्थापनं नृपः--मनु० ८।४२२ 3 स्थापित करना, पुष्ट करना 4 नियंत्रित करना, दमन करना, या 1 नियंत्रण, दमन 2 शान्त करने के उपाय, संस्थापना प्रियतमा विरहातुराणाम् मृच्छ० ३।३ ।

संस्थित (भू० क० कृ०) [सम्+स्था+क्त] 1 साथ साथ खड़ा होने वाला, 2 विद्यमान, ठहरने वाला नियोगसंस्थित--पंच० १।१२ 3 मरा हुआ मिला हुआ 4 मिलना-जुलना, समान 5 संचित, राशीकृत 6 स्थिर, जमा हुआ, स्थापित 7 अन्दर ला कर रक्खा हुआ, अन्तर्वर्ती 8 अचल 9 रोका हुआ पूरा किया हुआ, अन्त तक निष्पन्न, समाप्त शं० । 10 मन उपसर्ग द० सम् पूर्वक 'स्था' ।

संस्थिति (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1 साथ-साथ होना, मिल कर रहना 2 सटा होना, निकटता सामीप्य 3 निवासस्थान, आवासस्थल, विश्रामगृह यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् मनु० ६।९० 4 संचय, ढेर 5 अवधि कालावधि शि० १।४३ 6 अवस्थान, स्थिति, जीवन की दशा 7 प्रलय 8 मृत्यु ।

संस्पर्श [सम्+स्पृश्+घञ्] 1 छूपर्क, छूना सम्मिलन मिश्रण 2 छूना जगना, प्रभावित होना 3 एन्द्रियज्ञान संवेदन ।

संस्पर्शी [सम्+स्पृश्+अच्+ङीष्] एक प्रकार का गंध वृक्ष पौधा ।

संस्फाल [सम्यक् स्फालः स्फुरणं यस्य प्रा० ब०] 1 मेंढा 2 बादल ।

संस्फोट, संस्फोड [सम् स्फिट् (स्फुट्)+घञ्] संग्राम युद्ध ।

संस्मरणम् [सम्+स्मृ+ल्युट्] याद करना, मन में लाना ।

संस्मृतिः (स्त्री) [सम्+स्मृ+क्तिन्] याद दिलाना संस्मृतिर्बंध अवश्यमवाय कि० १८।२७ ।

संस्राव, संस्रावः [सम्+स्रु+अप्, घञ् वा] 1 बहना टपकना रिसना 2 गलित 3 तर्पण का अर्पित पानी 4 एक प्रकार का चढ़ावा या तर्पण ।

संस्रुत (भू० क० कृ०) [सम्+स्रु+क्त] 1 मिलकर आपात किया हुआ, घोषल 2 मन्द, अवरुद्ध, 3 सुरक्षित, सुरक्षापूर्वक बहा हुआ 4 मिलाकर जोड़ा हुआ, मिश्रण में बदला हुआ कि० १।१९, 5 संगृहीत

दृढ़, ठोस 6 सबद्ध, युक्त, मिलाकर रक्खा हुआ, शरीर का अंग बना हुआ, सटा हुआ आत्मसादाय गच्छन्ति सहता पक्षिणोऽध्वगे पञ्च० २।९, ५।१०१, हि० १।३७ 7 एकमत 8 सचात, सचित। सम० जानु (वि०) जिसके घुटने आपस में टकराते हों, सजानुक, भ्रू (वि०) सघन भौंहों से युक्त, स्तनी वह स्त्री जिसके दोनों स्तन सटे हुए हों।

सहतता, त्वम् [सहत+तल्+टाप् (त्व)] 1 बना सपर्क, सयोजन 2 सम्पृक्तता 3 सहमति, एकता 4 साधनत्व, समेकता।

सहतिः (स्त्री०) [सम्+हन्+क्तिन्] 1 दृढ़ या घना सपर्क, घनिष्ट मेल कु० ५।८ 2 मेल, सम्मिलन, सहति कार्यसाधिका, सहति श्रेयसी पुसा हि० १, तु० 'सघे शक्ति' 3 सघनता, दृढ़ता, ठोसपन 4 पुज राशि—मुक्ता नवान्ति हि गुणा न सहति कि० १२।१० 5 सहमति, सामनस्य 6 सचय, ढेर, सघात समुच्चय वनान्यवाप्यश्च चकार सहति कि० १४।३४, २७, ३।२०, ५।४ मुद्रा० ३।२ 7 सामर्थ्य 8 पिण्ड, समवाय।

सहनम् [सम्+हन्+ल्युट्] 1 सघनता, दृढ़ता 2 देह, व्यक्ति—अमृताभ्यान बीमूतस्निग्धसहननस्य मे उत्तर० ६।२१, महावीर० २।४६ 3 सामर्थ्य, दे० सहति भी।

सहरणम् [सम्+हृ+ल्युट्] 1. एकत्र करना साथ-साथ मिलाना, सचय करना 2 लेना, ग्रहण करना 3 सिकोड़ना 4 निमन्त्रित करना 5 नष्ट करना, बर्बाद करना।

सहर्तृ (पु०) [सम्+हृ+तृच्] विनाशक नष्ट करने वाला।

सहर्षः [सम्+हृष्+घञ्] 1 रोमाच होना, भय या हर्ष से पुलकित होना 2 आनन्द, हर्ष, खुशी 3 प्रतियोगिता, होड़, प्रतिद्वन्द्विता 4 साथ 5 साथ-साथ रगड़ना।

सहसः [सम्+हन्+घञ्, वा० कुत्वाभाव, सम्प्रसारण का पाठान्तर] इक्कीस नरकों में से एक मनु० ४।८९।

सहस् [सम्+हृ+घञ्] 1 मिलाकर खींचना या साथ-साथ लाना, सचय करना अनुभवन वर्णसहार-सहोत्सवम्—वेणी० ६ 2 सकोचन, खींचना, सक्षेपण 3 रोकदेना, पीछे खींच लेना, वापस लेना (विप० प्रहार या विक्षेप) प्रयोगसहारविभक्तमन्त्रम्—रघु० ५।५३, ४५ 4 प्रतिबन्ध लगाना, रोक लेना 5 विनाश, विशेषकर सृष्टि का, प्रलय विश्वसहार 6. समाप्ति, अन्त, उपसहार 7 सघात, समूह 8 उच्चारण दोष 9 आयु के शस्त्रास्त्रों को वापिस हटाने के लिए मन्त्र या आयु 10 व्यवसाय, कुशलता 11 नरक का एक प्रभाग। सम० मुद्रा तन्त्र-पूजा में विशेष प्रकार की मुद्रा, इसको परिभाषा अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वास्य दक्षहस्तकम्। क्षिप्ताङ्गुलीरङ्गुलीभि सगृह्य परिवर्तयेत्॥

सहित (भू० क० कृ०) [सम्+धा+क्त, हि आदेश] 1 साथ-साथ रक्खा हुआ, मिला हुआ, सयुक्त 2 सहचर, समनुरूप, अनुकूल 3 सम्बन्धी 4 सचित 5 अन्वित, सुसज्जित, सहित युक्त 6 उत्पन्न दे० सम् पूर्वक धा।

सहिता [सहित+टाप्] 1 सम्मिश्रण, सघ, सयोजन 2 सचय सकलन, सग्रह 3 कोई पद्य या गद्यसग्रह जिसका क्रम मुख्यतया स्थित हो 4 विधि या कानूनों का सग्रह या सकलन, (किसी विषय के) नियम नियमावली, सारसग्रह, मनुसहिता 5 वेद का क्रमबद्ध मत्रपाठ, या विभिन्न शाखाओं के अनुसार उच्चारण-सम्बन्धी परिवर्तनों से युक्त पदपाठ—पदप्रकृति सहिता नि० 6 (व्या० में) सन्धि के नियमों के अनुसार वर्णों का मेल पा० १।४।१०९ वर्णानामतिशयित सन्निधि सहितासज्ञ स्यात् सिद्धा०, वा वर्णानामेकप्रायोगे सहिता 7 विश्व को सघटित रखने वाली शक्ति, परमात्मा।

सहिति (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] चीखना चिल्लाना, भारी हगामा अत्यन्त शोरगुल।

सहृत (भू० क० कृ०) [सम्+हृ+क्त] 1 मिलाकर खींचा हुआ 2 सिकोड़ा हुआ, सक्षिप्त किया हुआ, 3 वापिस लिया हुआ, पीछे खींचा हुआ 4 सचित, सगृहीत 5 पकड़ा हुआ, हाथ डाला हुआ 6 दबाया हुआ, नियन्त्रण में रक्खा हुआ 7 नष्ट किया हुआ।

सहृति (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] 1 सिकुड़न, भींचना 2 विनाश, हानि 3 लेना, पकड़ना 4 प्रतिबन्ध, 5 सचय।

सहृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+हृष्+क्त] 1 पुलकित, या हर्ष से रोमाचित, प्रसन्न 2 जिसके रोंगटे खड़े हैं या जो काँप रहा है 3 स्पर्श के भाव से उद्दीप्त।

सहृषः [सम्+हृष्+घञ्] 1 शोरगुल, चीत्कार, हो-हल्ला 2 कोलाहल।

सहृषीक (वि०) [सम्+हृषी+कन्] 1 विनयशील, शर्मीला 2 सर्वेन्द्रिय सज्ञित।

सकट (वि०) [कटेन अनुचिना सवादिना सह वर्तमानः] बुरा कुत्सित, दुष्ट।

सकण्टक (वि०) [कण्टेन सह कप् ब० स०] 1 काटेदार, कण्टों वाला 2 कण्टप्रद, भयानक, 3 अवाछनीय पौधा, झाँखड़ झे०।

सकम्प, सकम्पन (वि०) [कम्पेन, कम्पनेन सह वा, ब० स०] काँपता हुआ, थरथराता हुआ।

सकरुण (वि०) [करुणया सह ब० स०] कोमल, दयालु ।

सकर्ण (वि०) (स्त्री० र्णा, - र्णी) [कर्णेन श्रवणेन सह—ब० स०] 1 कान वाला, जिसके कान हों 2 सुनने वाला, श्रोता ।

सकर्मक (वि०) [कर्मणा सह कप् ब० स०] 1 कर्मशील या कर्मकर्ता 2 (व्या० में) कर्म रखने वाला, (क्रिया) कर्म से युक्त ।

सकल (वि०) [कलया कलेन सह वा—ब० स०] 1 भाग सहित 2 सब समस्त पूरा, पूर्ण 4 सब अंशों से युक्त, पूरा (जैसे कि चाँद) यथा 'सकलेन्दु-मुखी में 5 मधु या मन्द स्वर वाला । समा० कर्ण (वि०) (अर्थात् पद का धारक) क और र वर्णों से युक्त अर्थात् झगड़ालू, (अर्थात् क—ल + ह) मल० ४।१४ ।

सकल्प (वि०) [कल्पेन सह ब० स०] यज्ञ सम्बन्धी कृत्यों से युक्त, वेद के कर्मकाण्ड का अनुष्ठाता, - मनु० ३।१४०, स्व शिव ।

सकाकाल [काकोलेन सह - ब० स०] इक्कीस नरकों में से एक नरक दे० मनु० ४।८९ ।

सकाम (वि०) [कामेन सह - ब० स०] 1 इच्छापूर्ति प्रयत्नोन्मुख, प्रिय 2 कामनायुक्त कामी 3 लब्धकाम, तुष्ट, तृप्त, - काम इदानीं सकामो भवत्—श० ४ अम् (अव्य०) 1 प्रसन्नतापूर्वक 2 सन्तोष के साथ 3 विश्वासपूर्वक निस्सन्देह ।

सकाल (वि०) [कालेन सह, ब० स०] ऋतु के अनुकूल समयोचित, लम् (अव्य०) कालानुरूप, समय से पूर्व, ठीक समय पर तड़के ।

सकाश (वि०) [काशेन सह - ब० स०] दर्शन देने वाला, दृश्य प्रस्तुत, निकटवर्ती, श उपस्थिति पष्ठ्यन्त सामीप्य (सकाशम्, सकाशात् क्रि० वि० की भाँति प्रयुक्त,) निकट 2 निकट से पास से)

सकुक्षि (वि०) [सह समाने कुक्षि यस्य ब० स०] एक ही कोख से उत्पन्न, एक ही माता से जन्म लेने वाला, सहोदर, (भाई आदि) ।

सकुल (वि०) [कुलेन सह ब० स०] 1 उच्चवंश से सम्बन्ध रखने वाला 2 एक ही कुल में उत्पन्न 3 एक ही परिवार का 4 सपरिवार, लः 1 रिश्तेदार 2 एक प्रकार की मछली, सकुली ।

सकुल्य [समाने कुले भवः सकुल + यत्] 1 एक ही परिवार का 2 एक ही गोत्र का परन्तु दूर का रिश्तेदार, जैसे कि चौथी, पाँचवीं, छठी या सातवीं, आठवीं अथवा नवीं पीढ़ी का 3 दूरवर्ती रिश्तेदार ।

सकृत् (अव्य०) [एक मुच्, सकृत आदेशः, सुधा० लोप] 1 एक बार सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते । सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् मनु० ९।४७ 2 एक समय, एक अवसर पर, पहले एक दफा - सकृत्कृतप्रणयोऽयं जनः श० ५ 3 तुरन्त 4 साथ साथ - पुं०, स्त्री० मल, विष्ठा (प्रायः 'शकृत्' लिखा जाता है । समा० - गर्भा 1. खच्चर 2 एक ही बार गर्भवती होने वाली स्त्री, - प्रजः कौवा - प्रसूता, प्रसूतिका 1 वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान हुई हो 2 वह गाय जो केवल एक ही बार ब्याई हो, - फला केले का वृक्ष ।

सकोपन (वि०) [कोपेन सह—ब० स०] क्रोध देने वाला, जलाने वाला - क, ठः, सूर्य ।

सकोप (वि०) [कोपेन सह—ब० स०] क्रुद्ध, कुपित पम् (अव्य०) क्रोधपूर्वक, गुस्से से ।

सक्त (भू० क० कृ०) [सञ्ज + क्त] 1 चिपका हुआ, लगा हुआ, सटकर 2 व्यसनग्रस्त, भक्त, अनुरक्त श्रोत्रेण सक्तोऽसि किं कदर्य वैरिणं मोघयत्नेऽ-मुद्रा० २।६ 3 जमाया हुआ, जड़ा हुआ रघु० ४।८ 4 सम्बन्ध रखने वाला । समा० - वैर (वि०) शत्रुता में प्रवृत्त, लगातार विरोध करने वाला - श० ४।१४ ।

सक्तिः (स्त्री०) [सञ्ज् + क्तिन्] 1 संपर्क स्पर्श 2 मेल सङ्गम, मानेन प्रवादपतनान्न्यर्पितेव लता नाम किं० ५।४६ 3 अनुराग आसक्ति भक्ति (किसी वस्तु के प्रति) ।

सक्तु (पुं० ब० व०) [सञ्ज् + तुन्—क्विप्] सत्तू जौ को भून कर फिर पीस कर बनाया हुआ आटा, जौ से तैयार किया गया भोजन त्रिधासक्तुभरं सपादं शतं वर्षति सर्पीहासहे—मनु० ३।७८ ।

सक्थि । नपुं० । [सञ्ज् + क्थिन्] 1 कूल्हा । समास = उरु तथा पुच्छ शब्द के पश्चात् या अन्त स्थान में होना अभिप्रेत हो तो सक्थि को अक्ष आदेश हो जाता है ब० पा० ५।४।९४ । 2 टखना 3 गाड़ी का अठखा ।

सक्रिय (वि०) [क्रियया सह—ब० स० ; फलीभूत सार्थक] ।

सक्षण (वि०) [क्षणेन सह—ब० स०] जिसके पास अवकाश हो ।

सक्षि (पुं०) [सह समान व्याप्तं क्षयं + क्विप् नि०] (कर्तृ० सखा, सखायौ सखायः कर्म० सखायम् सखायौ सखः, तृ० व० सखभ्यः अधि० ष० ब० सखयोः) मित्र साथी, सहचर, सख्युरन्यस्य यन्मम तत्तवैव उत्तर० ५।१० सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः कि० १।१० (समास के अन्त में 'सखि' शब्द बदल कर सख हो जाता है वनिताजनसखानाम् कु० १।१०, मालविकाग्नि - रघु० ४।८७, १।४८ १।१९ भट्टि० १।१) ।

सखी [सखि + ङीष्] सहेली, सहचरी, नायिका की सहेली, -नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते गीत० १ ।

सख्यम् [सख्युर्भावः यत्] 1 मित्रता, घनिष्ठता, मैत्री, मुमुर्छ सख्ये रामस्य समानव्यसने हरौ रघु० १२। ५७, समानशीलव्यसनेषु सख्यम् मुभा० 2 समानता, ब्रह्मः मित्र ।

सगण (वि०) [गणेन सह - ब० स०] दल बल सहित उपस्थित, ब० शिव का विशेषण ।

सगर (वि०) [सह गरेण - ब० स०] विषैला जहरीला,-र एक सूर्यवंशी राजा । (यह बाहुराजा का पुत्र था, गर सहित पैदा होने के कारण इसका सगर पड़ा क्योंकि इसकी माता को इसके लिए को दूसरी पत्नी ने विष दे दिया था । सुमति नाम की इसकी पत्नी से इसके साठ हजार पुत्र हुए । इसने १०० यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न किये, परन्तु जब सौवाँ यज्ञ होने लगा तो इन्द्र ने इसका घोड़ा उड़ा लिया और पाताल लोक ले गया' इस बात पर सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को घोड़ा ढूंढने की आज्ञा दिया, जब इस पृथ्वी पर घोड़े का पता न लगा तो वह पाताल में जाने के लिए इस पृथ्वी को खोदने लगा, ऐसा करने पर समुद्र की सीमा बन गई और इसी लिए वह 'सागर' के नाम से विख्यात हुआ रघु० १३।३, जब उन्हें कपिल ऋषि के दर्शन हुए तो उन्होंने उस पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाकर बुरा भला कहा । ऋषि के शाप से ये साठ हजार पुत्र तुरन्त भस्म हो गए । फिर कई हजार वर्ष के पश्चात् उन्हीं का वंशज भगीरथ गंगा को पाताल लोक से लाने में सफल हुआ तब उसने उनकी भस्म को गंगा जल से सींच कर पवित्र किया तथा इस प्रकार उनको आत्माओं को स्वर्ग में भिजवाया) ।

सगर्भ ,-र्भ्य [सह समानो गर्भो यस्य-ब० स०, समाने गर्भे भव यत् वा] सहोदर भाई महावीर० ६।२७।

सगुण (वि०) [गुणेन सह-ब० स०] 1 गुणवान् गुणों से युक्त 2 अच्छे गुणों से युक्त, सद्गुणी 3 भौतिक 4 (धनुष की भांति) डोरी से सुसज्जित, ज्यायुक्त 5 साहित्यिक गुणों से युक्त ।

सगोत्र (वि०) [सह समान गोत्रमस्य - ब० स०] एक ही कुल में उत्पन्न बन्धु, रिश्तेदार, ब० 1 एक ही पूर्वज की सन्तान, स० ब० 2 एक ही कुल का, श्राद्ध, पिण्ड, तर्पण साथ करने वाला व्यक्ति 3 दूर का रिश्तेदार 4 परिवार कुल वंश ।

सङ्घः (स्त्री०) [सह +क्विप् वि० सि. महस्य स] साथ-साथ, मिलकर भोजन करना ।

सङ्कट (वि०) [सम्+कटच्, सम्+कट्+अच् वा] 1 सकरा, सिकुड़ा हुआ, भींचा, संकीर्ण 2 अभेद्य, अगम्य 3 पूर्ण, भरा हुआ, जड़ा हुआ, मालदार -सकटा झाहिलाग्नीना पत्यवार्यैर्गृहम्यता--महावीर० ४।२३, उत्तर० १।६, टम् 1 चौड़ा रास्ता, संकीर्ण घाटी, तंग दर्रा 2 कठिनाई, दुर्दशा, जोखिम, डर, संकट -सङ्कटेष्वधियण्यो --का०, सकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञा शूराश्च सत्तम कथा० २१।९३ ।

सङ्कथा [सम् -कथ् +अ + टाप्] समालाप, बातचीत ।

सङ्कर [सम् -कृ + अप्] 1 सम्मिश्रण, मिलावट, अन्तर्मिश्रण श० २ 2 साथ मिलाना, मेल 3 (जातियों का) मिश्रण या अन्तर्वर्णता, अन्तर्जातीय अवैध विवाह (जिसका परिणाम विभिन्न जातियाँ हैं जिनेषु वर्णसंकर का०, भग०, १।४२ मनु० १०।४० 1 (अलं०) दो या दो से अधिक आश्रित अलंकारों का एक ही सन्दर्भ में मिश्रण (विप० संसृष्टि जिसमें अलंकार स्वतन्त्र होते हैं अविश्रान्ति-जुषामानन्त्यकृदिह्यनेकशो तु संकर --काव्य० १०, या -अङ्गाङ्गित्वजुषङ्कृतीनां तद्वदकाश्रयस्थितौ । सांदृष्टत्वे च सर्वत्र संकरस्त्रिविध पुन मा० द० ७५७ ५ धूल बुहारन कूड़ाकरकट, डी ई० डी० सकारी ।

सङ्कर्षणम् [सम् + कृष् -ल्युट्] 1 मिलकर खींचने की क्रिया, सिकुड़न 2 आकर्षण 3 हल चलाना, खूब निकालना ब० बलराम का नाम--सकर्षणात् सर्वमस्य ग हि संकर्षणो युवा हरि० ।

सङ्कलः [सम् - कल -अच (भावे)] 1 संग्रह, संचय 2 जोड़ ।

सङ्कलनम् ना [सम् - कल् + ल्युट्] 1 ढेर लगाने की क्रिया 2 संपर्क संगम 3 इकट्ठा 4 मरोड़ना, गाँठना 5 (गणि० में) एक, जोड़ ।

सङ्कलित (भू० क० कृ०) [सम् + कल्- क्त] 1 ढेर लगाया गया, चट्टा लगाया गया, संचित किया गया 2 साथ-साथ मिलाया गया, अन्तर्मिश्रित 3 पकड़ा गया, हाथ में लिया गया 4 जाना गया ।

सङ्कल्पः [सम् +कृप् -घञ्, गुण, रस्य ल] 1 इच्छा-शक्ति, कामनाशक्ति, मानसिक इच्छा --क कामसंकल्प --दश० 2 प्रयोजन, उद्देश्य इरादा, विचार 3 कामना, इच्छा संकल्पमात्रोदितसिद्धयस्ते--रघु० १४।१७ 4 चिन्तन, विचार विमर्श, उत्प्रेक्षा, कल्पना तत्संकल्पापहितहृदयस्तत्क्षमप्यर्थयेति याचम् -मा० १।३५, पूर्वं संकल्पजातैरजलमनङ्ग नीतोऽसि मया विबुद्धिम् - श० ३।४ 5 मन हृदय,--मा० ७।२ 6 कोई धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा 7. किसी ऐच्छिक पुण्यकार्य से फल की आशा । सम० --ज,--जन्मन् (पु०) योनि कामदेव के विशेषण

—भगवन्मङ्गलयाने—मालवि० ४, कु० ३।२४,—कम (वि०) 1 ऐच्छिक 2. इच्छा के अनुरूप।

सङ्कल्पुक (वि०) [सम्+कल्+उकञ्] 1 अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, अनिश्चित, सन्दिग्ध 3 बुरा, दुष्ट 4 निर्बल, बलहीन, कमजोर।

सङ्कार [सम्+कृ+घञ्] 1 धूल, बुहारन कूड़ाकरकट 2 ज्वालाओं के चटखने का शब्द।

सङ्कारी [सकार+ङीष्] वह लड़की जिसका कौमार्य अभी अभी भग हुआ हो, नई दुलहिन।

सङ्काश (वि०) [सम्+काश्+अच्] 1 सदृश, समान, मिलता-जुलता (समास के अन्त में) अपि हिरण्य° 2. निकट, पास, नजदीक ग्रा 1 दर्शन उपस्थिति 2 पहुँच।

सङ्किल्क [सम्+किल्+क] जलती हुई लकड़ी, जलती हुई मशाल।

सङ्कीर्ण (भू० क० कृ०) [सम् कृ+क्त] 1 साथ साथ मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित 2 अव्यवस्थित, विभिन्न 3 बिखरा हुआ, फैला हुआ, खचाखच भरा हुआ 4 अस्पष्ट 5 दोष उत्पन्न हुआ, दोषी रघु० ४।१२, 6 वर्णसंकर जाति का, अपविद्ध० या संकरजाति में जन्मा हुआ 7 डरपोक, दोगला 8 तंग, संकुचित, —र्णः 1 संकर जाति का व्यक्ति, 2. मिश्रस्वर 3 वह ग्रामीण जिसके मस्तक में मद बहता हो, मस्तस्रावी —क्म् कठिनाई। समः जाति, योनि (वि०) वर्णसंकर, दोगली सन्तान का (जैसे कि खच्चर), -द्रुमः अव्यवस्थित लड़ाई झगड़ा।

सङ्कीर्तनम्,-ना [सम्+कृत+णिच्+ल्युट्, टिड्वा] 1 प्रशंसा करना, सराहना स्तुति करना 2 (किसी देवता का) यशोगान करना 3 भजन के रूप में किसी देवता के नाम का जप करना।

सङ्कुचित (भू० क० कृ०) [सम+कुच्+क्त] 1 सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ, संकुचित सङ्कुचित यथा यत् विक्रमांक० १।२७ 2 सिकुड़न वाला, झुर्रियां पड़ा हुआ 3. ढका हुआ, बंद किया हुआ 4 आवरण।

सङ्कुल (वि०) [सम+कुल+क] 1 अव्यवस्थित 2 आकीर्ण, खचाखच भरा हुआ, पूर्ण—नक्षत्रताराग्रह-सङ्कुलापि ज्योत्स्नावती चन्द्रमसैव रात्रि —रघु० ६।७७, मा० १।२ 3 विकृत 4 अमंगल, क्लम् 1 भीड़, जमघट, भीड़भाड़, गड्ढा, खला, झाड़—पतत परिजनस्य सङ्कुलेन विघटितायां वध्यभागभोजिन्याम् —मा० १ 2 अव्यवस्थित लड़ाई, घमासान युद्ध 3 असभ्य या परस्पर-विरोधी भाषण—उदा०—यादवस्त्रीसभमध्ये मोनी, ब्रह्मचारी च मे पिता। माता तु मम सम्बन्धे पुत्रहीन पितामह ॥

सङ्केत [सम्+कित्+घञ्] 1 इशारा, इंगित 2 निशान, अंगचेष्टा, मुद्रा-मुद्रा० १ 3 इंगितपरक चिह्न, निशानी प्रतीक 4 सहमति, सम्मिलन सङ्केतो गृह्यतां जातौ गुणदोषविचारणासु च सा० द० १२ 5 प्रेमी प्रेमिका का या स्मरिक ठहराव, नियुक्ति, (प्रेमी या प्रेमिका के मिलने का) निर्दिष्ट स्थान नामसमेत कृतसङ्केत वादयते मृदु वेणुम् गीत० ५ 6 (प्रेमियों का) मिलन-स्थल, समागम-स्थान कान्ताभिनी तु या याति सङ्केत साभिसारिका अमर० 7 प्रतिबंध, शर्त 8 (व्या० में) यावच्छब्द विवृत्ति, सूत्र। समः गृहम्,—निकेतनम्,—स्थानम् निर्दिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान।

सङ्केतक [सङ्केत+कन्] 1 सहमति, सम्मिलन 2 नियुक्ति, निर्देशन 3 प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान 4 वह प्रेमी या प्रेमिका जो मिलने के लिए समय या स्थान का संकेत करे सङ्केतके चिरयति प्रवरो विनाद्य मृच्छ० ३।३।

सङ्केतित (वि०) [सङ्केत+इतच्] 1 ठहराया हुआ, निश्चय किया हुआ, निर्धारित, साक्षात्सङ्केतित यात्रं-मभिधत्ते स वाचक काव्य० 2 आमन्त्रित, बुलाया हुआ।

सङ्कोच [सम्+कुच्+घञ्] 1 सिकुड़ना, सिकन पड़ना 2 संक्षेपण, न्यूनीकरण, घोंटना 3 त्रास, भय 4 बंद करना, मूंदना 5 बांधना 6 एक प्रकार की मछली, क्चः केसर, डाकराल।

सङ्कर्षण, [सम्+कृष्+ल्युट्] धड़ कृष्ण का भाई।

सङ्क्रम [सम्+क्रम+घञ्] 1 सहमति सहगमन, साथ जाना 2 संक्रान्ति, यात्रा, स्थानान्तरण, प्रगति 3 किसी ग्रह का एक राशिचक्र से दूसरी राशि में जाना 4 गमन करना यात्रा करना —अप्र 1 कठिन या संकरा मार्ग 2 सेतु पुल नदीमार्ग च तथा संक्रमानवनादयेत् —मनु० 1 किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन, नामेव संक्रमीकृत्य हसं०, मा० तिथि स्वयंसङ्क्रम —पंच० ४।४।

सङ्क्रमण [सम्+क्रम+ल्युट्] 1 सहगमन, सहयात्रा 2 संक्रान्ति, प्रगति, एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाना 3 सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना 4. सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5 मार्ग।

सङ्क्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+क्रम्+क्त] 1. में से गया हुआ, प्रविष्ट हुआ 2 स्थानान्तरित, स्थल, समर्पित -उत्तर० १।२२ 3 पकड़ा, ग्रस्त 4 प्रतिफलित, प्रतिबिंबित 5 विचित्र।

सङ्क्रान्ति (स्त्री०) [सम्+क्रम्+क्तिन्] 1 सहगमन, मेल 2 एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक का मार्ग, अवस्थान्तर 3 सूर्य या किसी और ग्रह का एक राशि से

दूसरी राशि में जाने का मार्ग 4 स्थानान्तरण, (किसी दूसरे को) सौंपना—संक्रामितो यथमो गर्भसंक्रान्त्यय —उत्तर० ३।१६ 5 (अपना ज्ञान दूसरों तक) हस्तान्तरित करना, (दूसरों को) विद्यादान की शक्ति —विवादे दर्शयिष्यन्ती क्रियासंक्रान्तिमात्मन —मालवि० १।१८, शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रान्तिमन्यस्य विशेषयुक्ता- १।१६ 6 प्रतिमा, प्रतिबिंब 7 चित्रण।

संक्राम दे० 'संक्रम'।

संक्रीडनम् [सम् क्रीड्+ल्युट्] मिल कर खेलना।

संक्लेद [सम्+क्लिद्+घञ्] 1 तरी, नमी 2 गर्भाधान के पश्चात प्रथम मास में क्षरित होने वाला रस जिससे भ्रूण के आरंभिक रूप का निर्माण होता है।

संक्षय [सम्+क्षि+अच्] 1 विनाश 2 पूर्ण विनाश या उपभोग 3 हानि, बर्बादी 4 अन्त 5 प्रलय।

संक्षिप्ति (स्त्री०) [सम्+क्षिप्+क्तिन्] 1 साथ साथ फेंकना 2 भर्त्सना, संक्षेपण 3 फेंकना भेजना 4 ध्यान में रखना।

संक्षेप [सम्+क्षिप्+घञ्] 1 साथ साथ फेंकना 2 भर्त्सना छोड़ा करना 3 लाघव, संक्षिप्ति 4 निचोड़, सारांश 5 फेंकना, भेजना 6 अपहरण करना 7 किसी अन्य व्यक्ति के कार्य में सहायता देना (**संक्षेपेण, संक्षेपतस्** (क्रि० वि०) थोड़े अक्षरों में, संक्षिप्त करके, संक्षेप में)

संक्षेपणम् [सम्+क्षिप्+ल्युट्] 1 ढेर लगाना 2 छोड़ा करना, संक्षुब्धकरण 3 भेजना आ।

संक्षोभ [सम्+क्षुभ्+घञ्] 1 आन्दोलन, कंपकंपी 2 बाधा, हलचल, मुक्त० १।3 उथल पुथल, उलट पुलट 4 घमंड, अहंकार।

संक्ष्यम् [सम्+क्ष्या+क] संग्राम युद्ध लड़ाई संक्ष्ये हिंसा ३।१२५ बकार विक्रम० २।६७ ३० बेणी० ३।२५, शि० १८।३०।

संख्या [सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1 गणना, गिनती, हिसाब लगाना संख्यामिवैतां भ्रमरपंक्तिकारं रघु० १६।४७ 2 अंक 3 अंकबोधक 4 जोड़ 5 हेतु, समझ, प्रज्ञा 6 विचार, विमर्श 7 रीति। सम०—अतिग, अतीत (वि०) असंख्य, अनगिनत, गणनातीत, वाचक (वि०) संख्या बोधक (क:) अंक।

संख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+ख्या+क्त] 1 गिना गया 2 हिसाब लगाया गया गिना हुआ, सम् अव्य० ठीक ठीक गिनकर या पहेली।

संख्यावत् (वि०) [संख्या+मतुप्] 1. संख्या वाला 2 हेतु से युक्त पुं० विद्वान् पुरुष।

संग [सञ्ज्+भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मेल संगम (जैसे नदियों का) 3 स्पर्श, सम्पर्क 4 संगति, साहचर्य, मैत्री, अनुराग सतां संगः सङ्ग कथमपि हि पुण्येन भवति—उत्तर० २।१, संगमनुज्झ संगति में रहना, मंडली में रहना,—मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति सुभा० 5 अनुरक्ति, प्रीति, अभिलाषा—व्यायतौ विषयान्पुंस संगस्तेषूपजायते —भग० २।६२ 6 सांसारिक विषयों में आसक्ति, मनुष्यों के साथ साहचर्य दोषमेष्यान्नृपतिर्विनश्यति यति संगात् भट्टि० २।४२ 7 मुठभेड़, लड़ाई।

संगणिका [सम्+गण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] श्रेष्ठ या अनुपम प्रवचन।

संगत (भू० क० कृ०) [सम्+गम्+क्त] 1 मिला, हुआ, मुड़ा हुआ, साथ साथ आया हुआ, साहचर्य से युक्त 2 एकत्रित, संचित, संयोजित, सम्मिलित 3 ग्रंथग्रंथित में आबद्ध, विवाहित 4 मैथुन द्वारा मिला हुआ 5 साथ साथ भरा हुआ समुचित, युक्तियुक्त, सवादी स० ३ 6 से युक्त (जैसे कि यहाँ में) 7 शिक्षकवाला सिकुड़ा हुआ, दे० सम् पूर्वक 'गम्', नम् 1 मिलाप, सम्मिलन, मैत्री,—विक्रम० ५।२४, श० ५।२३ 2 समाज, मण्डली 3 परिचय, मित्रता, घनिष्टता—कु० ५।३९ 4 सामंजस्यपूर्ण या सुसंगत वाणी, युक्तियुक्त टिप्पण।

संगतिः (स्त्री०) [सम्+गम्+क्तिन्] 1 मेल, मिलना, संगम 2 समर्ग, सहयोगिता, साहचर्य, पारस्परिक मेलजोल मनो हि अन्यान्तरसंगतिज्ञम् रघु० ७।१५ 3 मैथुन 4 दर्शन करना बार बार आना-जाना 5. योग्यता, उपयुक्तता, प्रयोजनीयकता, संगत, सम्बन्ध 6 दुर्घटना, दैवयोग, आकस्मिक घटना 7 ज्ञान 8 अधिक जानकारी के लिए पूछना।

संगम [सम्+गम्+अप्] 1 मिलना, मेल विक्रम० ४।३७, रघु० १२।६६, ९० 2 साहचर्य, संगति, सहयोगिता, पारस्परिक मेलजोल—जैसा कि 'सङ्गे संगम' में 3 सम्पर्क, स्पर्श—रघु० ८।४४ 4 मैथुन या रतिक्रिया अथ स तैः स्थितिसंगमोत्सुकैः श० ३।१४, रघु० १९।२३ 5 (नदियों का) मिलना, संगम स्थान गङ्गायमुनयो संगम 6. योग्यता अनुकूलन 7 मुठभेड़, लड़ाई 8 (ग्रहों का) संयोग।

संगमनम् [सम्+गम्+ल्युट्] मिलना, मेल, दे० 'संगम'।

संगर [सम्+गृ+अप्] 1 प्रतिज्ञा, करार,—तथेति तस्यावितथं प्रतीत प्रत्यग्रहीत्संगरमग्रजन्मा रघु० ५।२६, १३।४०, १३।५५ 2 स्वीकृति, हाथ में लेना 3 सौदा 4 संग्राम, युद्ध, लड़ाई—अतरस्वभुजौजसा मुहुर्मुहुः संगरसाधरानसौ शि० १९।९७ 5. ज्ञान 6 निगल जाना 7 दुर्भाग्य, संकट 8 विष।

संगवः [संगता गावो दोहनाय अत्र—नि०] प्रातःकाल के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाँच भागों में

से दूसरा है, और जब गाये दूहने के बाद चरने के लिए ले जाई जाती हैं।

सङ्गादः [सम्+गद्+घञ्] प्रवचन, सम्भाषण, बातचीत।

सङ्गिन् (वि०) [सञ्ज+घिनुण्] 1 संयुक्त, मिला हुआ 2 अनुरक्त, भक्त, स्नेहशील—श० ५।११, रघु० १९।१६, मालवि० ४।२, वेणी० ३।२६, १४।१५।

सङ्गीत (भू० क० कृ०) [सम्+गै+क्त] मिलकर गाया हुआ, सहगान, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ, —तम् 1 सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान,—अपू सुकण्ठयो गन्धर्व्य सङ्गीतसहमर्तृका —माल० 2 गायन, मधुर गायन, विशेषतः वह गायन जो नृत्य तथा वाद्ययन्त्रों के साथ गाया जाय, त्रिताल युक्त गान गीत वाद्य नर्तन च त्रयं सङ्गीतमुच्यते, किमन्यदस्या परिषद् श्रुतिप्रसादनात् सङ्गीतात् श० १, मृच्छ० १ 3 संगीत गोष्ठी, सहसंगीत 4 नृत्य वाद्य के साथ गाने की कला—भर्तृ० २।१२। सम० अर्थ 1 संगीत प्रदर्शन का विषय 2 संगीतशाला के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण —मेघ० ५६,—शाला गायनालय,—मा० २,—शास्त्रम् गानविद्या।

सङ्गीतकम् [सङ्गीत+कन्] 1 संगीतगोष्ठी, सुरताल से युक्त गान 2 सार्वजनिक मनोरंजन जिसमें नाच-गाना हो।

सङ्गृहीत (भू० क० कृ०) [सम्+ग्रह्+क्त] 1 सम्मत, स्वीकृत 2 प्रतिज्ञात।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] 1 पकड़ना ग्रहण करना 2 मुट्ठी बाँधना, चंगुल, पकड़ 3 स्वागत, प्रवेश 4 संरक्षण, प्रत्रक्षण—तथा ग्रामस्थानां च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम् मनु० ७।११४ 5 अनुग्रहण, प्रश्रयण, आदर-सत्कार करना, पालन-पोषण करना मनु० ३।१३८, ८।३११ 6 भरना, संग्रह करना, एकत्र करना, संचय करना —तैः कृतप्रकृतिसङ्ग्रहे रघु० १९।५५, १७।६० 7. शासन करना, प्रतिबन्ध लगाना, नियन्त्रण करना 8 राशीकरण 9 संयोजन 10 संघट्टीकरण (एक प्रकार का 'संयोग') 11 सम्मेल करना, अवधारणा 12 संकलन 13 संराम, मार, संक्षेपण, सारसंग्रह —सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्यामि भग० ८।११, इसी प्रकार 'सर्ग संग्रह' 14 जोड़, राशि, समष्टि करण कर्म कर्तेति विविध कर्मसङ्ग्रह — भग० १८।१८ 15 तालिका, सूची 16 भंडारगृह 17 प्रयत्न, चेष्टा 18 उल्लेख, हवाला 19 बड़प्पन, ऊँचापन 20 वेग 21. शिव का नाम।

सङ्ग्रहणम् [सम्+ग्रह्+ल्युट्] 1 पकड़ना, ले लेना 2 सहारा देना, प्रोत्साहित करना 3 संकलन करना, संचय करना 4 गड्डड-मड्डड करना 5 मढ़ना, जड़ना —कनकभूषणसङ्ग्रहणोचित (मणि)—पञ्च० १।७५ 6 मैथुन, स्त्रीसंभोग 7 व्यभिचार मनु० ८।६, ७२, याज्ञ० २।७२ 8 आज्ञा करना 9 स्वीकार करना, प्राप्त करना,—णी पेटिका।

सङ्ग्रहीतृ (पु०) [स+ग्रह्+तृच्] सारथि।

सङ्ग्रामः [सङ्ग्राम्+अच्] रण, युद्ध, लड़ाई—सङ्ग्रामाङ्गण-मागतेन मघवता पार्थे समारोपिते —काव्य० १०। सम० —जित् (वि०) युद्ध में जीतने वाला,—पटहः युद्ध में बजाया जाने वाला एक बड़ा भारी ढोल।

सङ्ग्राह [सम्+ग्रह्+घञ्] 1. हाथ डालना, ले लेना 2 बलात् छीन लेना 3 मुट्ठी बाँधना 4 तलवार की मूठ।

सङ्घ [सम्+हन्+अप्, टिलोप, धत्वम्] 1 समूह, संग्रह, समुच्चय, झुण्ड जैसा कि महर्षिसङ्घ, मनुष्यसङ्घ 2 एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। सम० चारिन् (पु०) मछली —जीविन् (पु०) किराये का मजदूर, कुली वृत्ति (स्त्री०) संघटनवृत्ति।

सङ्घट्टना [सम्+घट्+णिच्+युच्+टाप्] साथ साथ मिलना, मेल, सम्मेल—रत्न० ४।२०।

सङ्घट्ट [सम्+घट्ट+अच्] 1 संघर्षण, एक साथ घिसना, रगड़ना सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा (दवाग्नि) मेघ० ५३, मा० ५।३ 2 टक्कर, झटपट, मुठभेड़ शि० २०।२६ 3 भिड़न्त, संघर्ष 4 मिलना, सम्मिलन, टक्कर या स्पर्श (जैसे कि पत्नियों की) रघु० १४।८६ 5 आलिंगन—हृद एक बड़ी लता वेल।

सङ्घट्टनम्,—ना [सम्+घट्ट+ल्युट्] 1 मिला कर रगड़ना, संघर्षण 2 टक्कर, झटपट 3 घनिष्ठ संपर्क, लगाव 4 संपर्क, मेल, छिपकाव 5 पक्षधरों का पारस्परिक लिपटना 6 मिलना, मुठभेड़।

सङ्घशस् (अव्य०) [संघ+शस्] झुंडों में, दल बनाकर।

सङ्घर्ष [सम्+घृष्+घञ्] 1 दो चीजों की रगड़, घृष्टि 2 पीस डालना, चूरा करना 3 टक्कर, झटपट 4 प्रतिद्वन्द्विता प्रतिस्पर्धा, खेलों के लिए होड़, —तस्याश्च मम च कस्मिंश्चिदात्मसङ्घर्षे दश०, नाटयाचार्यस्योर्मेहान् ज्ञानसङ्घर्षो जात मालवि० १ 5 ईर्ष्या, डाह 6 सरकना, मन्द मन्द बहना।

सङ्घर्षणिका [सम्+घट्+णिच्+ल्युट्+टाप्, इत्वम्] 1. जोड़ा, दम्पती 2 दूती, कुटनी 3. रंग।

सङ्घाणकः, -कम् [सिंघाण पृषो०] नाक का मल, सिंघक।

सङ्घातः [सम्+हन्+घञ्] 1 संघ, मिलाप, समाज 2 समुदाय, समवाय, समुच्चय, उपायसङ्घात इव प्रवृद्ध —रघु० १४।११, कु० ४।६ 3. वध, हत्या 4 कफ 5. सम्मिश्रणों का निर्माण 6 नरक के एक प्रभाग का नाम।

सचकित (वि०) विस्मित, अचम्भित,—तम् (अव्य०) काँपते हुए, चौंक कर, चौकन्ना होकर, विस्मित होकर।

सचिः [सच्+इन्] 1 मित्र 2 पैत्नी, पत्निष्ठता स्त्री० इन्द्र की पत्नी, दे० 'शची'।

सचिवत्सल (वि०) [सह चिवत्सेन, सहस्य सः, कप्, नि०] चिवत्सल, चौबाई आँखों वाला।

सचिवः [सचि+वा+क] 1 मित्र, सहचर 2 मन्त्री एवामर्या दाता—सचिवान् मन्त्र चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् मनु० ७।५४, रघु० १।३४, ४।८३, कार्यान्तरसचिव – मालवि० १।

सची दे० 'शची'।

सचेतस् (वि०) [सह चेतसा ब० स०, सहस्य स] चेतनायुक्त, बौद्धधारी, विवेकपूर्ण।

सचेतस् (वि०) [सह चेतसा ब० स०] 1 प्रज्ञावान् 2 भावुक 3 एकमत।

सचेल (वि०) [सह चेलेन ब० स०] वस्त्रों से सुसज्जित।

सचैत्य [सह+अच्, तथाभूत सन् इष्ट] आम का वृक्ष।

सजन (वि०) [सह जनेन ब० स०] मनुष्यों या जीवधारी प्राणियों से युक्त,—नः एक ही परिवार का व्यक्ति, बन्धु, सम्बन्धी।

सजल (वि०) [सह जलेन—ब० स०] जलमय, जलयुक्त, आर्द्र, गीला, तर।

सजाति, सजातीय (वि०) [समान जाति अस्य, ब० स०, समानस्य सः, समाना जातिमर्हति—समान+ख] 1 एक ही जाति का, एक ही वर्ग का 2 समान, एक सा—पु० एक ही जाति के स्त्री और पुरुष से उत्पन्न पुत्र।

सजुष् (स्) (वि०) [सह जुषते जुष्+क्विप्, सहस्य सः] 1 प्रिय, अनुरक्त 2 साथ लगा हुआ—पु० (कर्तृ० सजूः, सजुषौ, सजुषः, करण० द्वि० सजूर्भ्याम्) मित्र साथी (अव्य०), सहित, युक्त।

सज्ज (वि०) [सस्ज्+अच्] 1 तत्पर, तैयार किया हुआ, तैयार कराया हुआ—सज्जो रथ—उत्तर० १ 2 वस्त्रों से सुसज्जित, कपड़े धारण किये हुए 3. सवारा हुआ, सजधज या टीपटाप से तैयार हुआ 4 पूर्णतः सुसज्जित, शस्त्र धारण किये हुए 5 क्रियेवन्दी करके सुसज्जित।

सज्जनम् [सज्ज+णिच्+ल्युट्] 1 जकड़ना, बाँधना 2 वेशभूषा धारण करना 3 तैयारी करना, सस्त्रास्त्र धारण करना, सुसज्जित करना 4 चौकीदार, पहरेदार 5. घाट,—नः या पुरुष, दे० 'सत्' के अन्तर्गत, वा 1. सजाना, सँवारना, सुसज्जित करना 2 वस्त्राभूषण धारण करके तैयार होना, सजावट।

सज्जा [सज्ज+अ+टाप्] 1. वेशभूषा, सजावट 2 युद्धसज्जा, जिरहबख्तर 3. सैनिक साज सामान, कवच, जिरहबख्तर।

सज्जित (वि०) [सज्जा+इतच्] 1. वस्त्र धारण किये हुए 2 सजाया हुआ 3 तैयार किया हुआ, साजसामान से लैस 4 सँवारा हुआ, हथियारों से लैस।

सज्ञ (वि०) [सहज्ञया ब० स०, सहस्य सः] 1 अनुज्ञ की डोरी से युक्त 2. डोरी से बंधा हुआ (धनुष आदि)।

सज्योत्स्ना [सह ज्योत्स्नया ब० स०] चाँदनी रात।

सञ्चय [सञ्चीयते अत्र—सम्+चि+अ] शव जलाने के काम आने वाले पत्तों का संग्रह।

सञ्चर (पु०) [सम्+चर्+क्विप्] ठग, चोर, बाजीगर।

सञ्चयः [सम्+चि+अच्] 1 ढेर लगाना, एकत्र करना 2 ढेर, राशि, संग्रह, भण्डार, वाणिज्यवस्तु – कर्तव्यः सञ्चयो नित्य कर्तव्यो नातिसञ्चयः—सुभा० 3 भारी परिमाण, संग्रह।

सञ्चयनम् [सम्+चि+ल्युट्] 1. एकत्र करना, संग्रह करना 2. फूल चुनना, शव भस्म हो जाने के बाद अस्थासञ्चय करना।

सञ्चरः [सम्+चर्+क] 1 मार्ग, एक राशि से दूसरी राशि पर स्थानान्तरण 2. रास्ता, पथ—अहोरात्रि-कालेन नक्त दर्शितसञ्चराः—हनु० ६।४१, रघु० १६। १२ 3 सीढ़ी सड़क, सकरा मार्ग, संकीर्ण पथ 4 प्रवेश द्वार 5. शरीर 6. हत्या 7. विकास।

सञ्चरत्नम् [सम्+चर्+ल्युट्] जाना, गमन करना, यात्रा करना।

सञ्चरत्न (वि०) [सम्+चर्+अच्] काँपने वाला, हिलने वाला।

सञ्चरत्नम् [सम्+चर्+ल्युट्] विक्षोभ, कंपकंपी, हिलना, थरथरी—अवसन्नसञ्चरत्नाङ्गरुहो रघु०—वि० १८।८।

सञ्चरायः] सम्+चि+घञ्, नि०] विशेष प्रकार का एक यज्ञ।

सञ्चारः [सम्+चर्+घञ्] 1. गमन, यति यात्रा, पर्यटन—सञ्चार पार्वसञ्चारं सञ्चरत्पदवीपतिः—काव्य० १०, रघु० २।१५ 2 मार्ग, संकल 3. पथ, रास्ता, सड़क, दर्रा 4 कठिन प्रगति या यात्रा 5 कठिनाई, दुःख 6. गतिमान् करना 7. प्रकाशना 8.सेतुबन्ध करना, मार्ग प्रदर्शन करना 9. संचालन स्पर्शसंचार 10. शरीर की फुरफुरी लाने वाली गति।

सञ्चारक (वि०) [सम्+चर्+ण्वुल्] संचार करने वाला, संक्रमण करने वाला,—कः 1. चेला, पथ प्रदर्शक 2 उकसाने वाला।

सञ्चारणम् [सम्+चर्+णिच्+ल्युट्] गतिशील होना प्रवोदित करना, संप्रेषण, सेतुबन्ध करना आदि।

सञ्चारिका [सम्+चर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. दूती (दो प्रेमियों की) परस्पर संदेशवाहिका 2. दूती छुटनी 3 घोड़ा, घुमक्कड़ 4. पंख, ब।

सञ्चारिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [सम्+चर्+णिनि] 1 गतिशील, गमनीय–सञ्चारिणी नगर देवतेव–भा०१, कु० ३।५४, ६।६७ 2 पर्यटन, भ्रमण 3 परिवर्तनशील, अस्थिर, चंचल 4 दुर्गम अगम्य 5 क्षणभंगुर जैसे कि भाव, दे० नी० 6 प्रभावशाली 7 आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि) 8 भूत का रोग 9 प्रणोदन, पु० 1 वायु, हवा 2 धूप 3 वह क्षणभंगुर भाव जो स्थायी को शक्तिसम्पन्न करता है दे० व्यभिचारिन् ।

सञ्चाली [सम्+चल्+ण+ङीप्] गुंजा की झाड़ी ।

सञ्चित (भू० क० कृ०) [सम्+चि+क्त] 1 ढेर लगाया हुआ, संगृहीत, जोड़ा गया इकट्ठा किया गया 2 रक्खा गया, जमा किया गया 3 गिना गया, गणना की गई 4 भरा हुआ, सुसम्पन्न, युक्त 5 बाधित, अवरुद्ध 6 सघन, घिनका (जैसे कि जंगल) ।

सञ्चितिः (स्त्री०) [सम्+चि+क्तिन्] संग्रह, सञ्चय ।

सञ्चिन्तनम् [सम्+चिन्त्+ल्युट्] विचार, विमर्श ।

सञ्चूर्णनम् [सम्+चूर्ण्+ल्युट्] चूर चूर करना ।

सञ्छन्न (भू० क० कृ०) [सम्+छद्+क्त] 1 लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ 2 वस्त्र पहने हुए ।

सञ्छादनम् [सम्+छद्+णिच्+ल्युट्] ढकना, छिपाना ।

सञ्ज् (स्वा० पर० सजति, सक्त, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर धातु का 'स्' बदल कर ष् हो जाता है) 1 संलग्न होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, –तुल्यगन्धिषु भक्तेभकटेषु परेरणेव (समसज्जत्)–रघु० ४।४७ 2 अकड़ना कर्मवा० (सज्ज्यते) संलग्न होना, चिमटना, जुड़े रहना प्रेर० (सञ्जयति-ते) –इच्छा० (सिसञ्जति), अनु–, 1 चिपकना, चिमटना 2 जुड़ना, साथ होना–मृत्युर्जरा च व्याधिश्च दुःखं चानेककारणम् । अनुषक्तं सदा देहे महा०, उत्तर० ४।२, (कर्मवा०) चिमटना, जुड़ जाना (आलं० से भी)–धर्मपुत्रे च मनसि तमसीव न भानु रजोऽनुषज्यते – दश०, भग० ६।४, १८।१०, अव–, चिपकाना, संलग्न करना, चिमटना, फेंकना, रखना–शि० ५।१६, ७।१६, ९।७, कु० ७।२३ 2 सौंपना, सुपुर्द करना, निर्दिष्ट करना, (कर्मवा०) 1. सम्पर्क में होना, मिलते रहना–मृच्छ० १।५४ 2. व्यस्त होना, तुल जाना, उत्सुक होना, आ–, 1 अकड़ना, जमाना, जोड़ना, मिलाना, रखना–आपमासज्य कण्ठे कु० २।६४, रा० ३।२६ (भुजे) भुज के भुजेनेवासज्य –रघु० २।७४ 2. अभिदान करना, प्रेरित करना कि० १३।४४ 3 सिपुर्द करना, निर्दिष्ट करना 4 चिमटना, लगे रहना वि–, 1. अलग रहना, चिमटना, काम किया जाना, रक्खा जाना–कण्ठे स्वयंग्राहनिपीडनानि कु० ३।७, रघु० ९।५०, ११।७०, १२।४५ 2 प्रतिबिम्बित होना–कु० १।१०, ७।३९ 3 संलग्न होना प्र , 1 चिमटना, जुड़ना 2 प्रयुक्त होना, अनुकरण करना, प्रयुक्त किया जाना, सही उतरना, ठीक बैठना इतरेतराश्रय प्रसज्येत, वैयस्यनैर्घृण्ये नेश्वरस्य प्रसज्येते – शा०भी० 3 संलग्न होना, तस्थामसौ प्रासञ्जत् दश०, व्यति , मिलाना, साथ-साथ जोड़ना, व्यतिषजति पदार्थानान्तर कोऽपि हेतु उत्त० ६।१२ ।

सञ्ज [सम्+सज्+क] 1 ब्रह्मा का नाम 2 शिव का नाम ।

सञ्जय [सम्+जि+अच्] धृतराष्ट्र के सारथि का नाम, (सञ्जय ने कौरवों और पाण्डवों के झगड़े में शान्तिपूर्ण समझौता कराने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा । इसी ने अंधे राजा धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाया–तु० भग० १।१)।

सञ्जल्प् [सम्–जल्प्–घञ्] 1 वार्तालाप 2 अव्यवस्थित वार्तालाप, बकवाद करना, बड़बड़ 3 शोरगुल, हल्ला ।

सञ्जवनम् [सम्–जु–ल्युट्] चन् शाल, आमने सामने के चार घरों का समूह जिनके बीच में आंगन बन गया हो ।

सञ्जा [सञ्ज–टाप्] बकरी ।

सञ्जीवनम् [सम्–जीव्–ल्युट्] 1 साथ साथ रहना 2 जीवित करना, जीवन देना, पुनर्जीवन, पुनः सजीवता 3 इक्कीस नरकों में से एक नरक दे० मनु० ४।८९, 4 चार घरों का समूह, चन् शाल,–नी एक प्रकार का अमृत (कहते हैं कि इसके सेवन से मृतक भी पुनर्जीवित हो जाता है) ।

सञ्ज्ञ (वि०) [सम्+ज्ञा+क] 1 जिसके घुटने चलते समय आपस में टकराते हों 2. ज्ञान में आया हुआ 3 नामवाला, नामक दे० नी० सञ्ज्ञा अन्य एक प्रकार का पीला सुगन्धित काष्ठ ।

सञ्ज्ञपनम् [सम्+ज्ञा+णिच्–ल्युट्, पुकागमः, ह्रस्वः] हत्या, वध ।

सञ्ज्ञा [सम्+ज्ञा+अङ्+टाप्] 1 चेतना, होश–सञ्ज्ञां सम्, आप् या प्रतिपद् फिर चैतन्य प्राप्त करना, होश में आना 2 जानकारी, समझ 3 बुद्धि, मन 4 संकेत, इंगित, निशान, हाव भाव–मुक्तापितैकागुलिसञ्ज्ञयैव या चापलायेति गणात् व्यमंसीत् –कु० ३।४१ 5 नाम, पद, अभिधान, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में– हन्तुर्विधुक्ता सुखसुप्तसञ्ज्ञा –भग० १५।५ 6 (व्या० में) 1 विशेष अर्थ रखने वाला नाम या संज्ञा, व्यक्ति वाचक संज्ञा 7 'प्रथम' का पारिभाषिक नाम 8 गायत्री मन्त्र, दे० गायत्री 9 विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की पत्नी, यम, यमी और दोनों अश्विनी कुमारों की माता, (इस विषय में

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है, कहते हैं एक बार संज्ञा अपने पितृगृह जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने पति सूर्य से अनुमति मांगी, परन्तु वह न मिल सकी। संज्ञा ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया, अतः अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा उसने ठीक अपने जैसी एक स्त्री का निर्माण किया, जो मानो उसकी छाया थी (और इसी लिए उसका नाम छाया पड़ा)। उस निर्मित स्त्री को अपने स्थान पर रख कर वह सूर्य को दिखा बताये अपने पितृगृह चली गई। बाद में सूर्य के छाया से तीन बालक उत्पन्न हुए (दे० छाया), छाया सुत पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब संज्ञा वापिस आई तो सूर्य ने उसे घर में नहीं रक्खा। अपमानित और निराश होकर संज्ञा ने घोड़ी का रूप धारण कर लिया और पृथ्वी पर घूमने लगी। समय पाकर सूर्य को वस्तुस्थिति का पता लगा, उसने जाना कि उसकी पत्नी घोड़ी के रूप में घूमती है। फलतः उसने भी घोड़े के रूप धारण कर अपनी पत्नी से समागम किया। उससे उसके अश्विनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए)। सम० अधिकारः एक प्रधान नियम जिसके अनुसार तदन्तर्गत नियमों का विशेष नाम रक्खा जाता है, और वे सब नियम उससे प्रभावित होते हैं, विषय विशेषण —सूत्र आदि का विशेषण।

संज्ञानम् [सम्+ज्ञा+ल्युट्] जानकारी, समझ।

संज्ञापनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1 सूचित करना 2 अध्यापन 3 वध, हत्या।

संज्ञावत् (वि०) [संज्ञा+मतुप्] 1 सचेतन, होश में आया हुआ, पुनर्जीवित 2 नाम वाला।

संज्ञित (वि०) [संज्ञा+इतच्] नाम वाला, नामक, नाम धारी।

संज्ञिन् (वि०) [संज्ञा+इनि] 1 नामधारी 2 जिसका नाम रक्खा जाय।

संज्ञु (वि०) [संहते जानुनी यस्य—ब० स०, जानुस्थाने ञुः] जिसके घुटने चलते समय टकराते हों।

संज्वर [सम्+ज्वर्+अप्] 1 अतिताप, बुखार 2 गर्मी 3 दाह।

सट् I (भ्वा० पर० सटति) बांटना, भाग बनाना।

II (चुरा० उभ० साटयति—ते) प्रकट करना, प्रदर्शन करना स्पष्ट करना।

सटम्, सटा [सट्+अच्+टाप् वा] 1 सन्यासी की जटाएँ 2 (सिंह की) अयाल—मुद्रा० ७।६, शि० १।४७ 3 सूअर के लंबे बाल विक्षत्सटमुद्धतसटा प्रतिहन्तुमीषु—रघु० ९।६० 4 शिखा, चोटी। सम० —अङ्गः सिंह।

सद् (चुरा० उभ० सादयति ते) 1. अति पहुँचाना, मार डालना 2 अवसन्न होना 3 देना 4 लेना, 5 रहना।

सदृक्षम् [सदृ+क्षच्] प्राकृत भाषा का एक उपरूपक, उदा० कर्पूरमञ्जरी—दे० सा० द० ५४२।

सदृक्षा (स्त्री०) [सदृ+क, पृषो०] 1 एक पक्षिविशेष 2 एक वाद्ययंत्र।

सद्द (चुरा० उभ० सादयति—ते) 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 अधूरा छोड़ देना 3 जाना, हिलना-डुलना 4 अलङ्कृत करना, सजाना।

सदसूत्रम् [=सदसूत्र, पृषो०] सन की बनी डोरी या रस्सी।

सद्य दे० 'सद्य'।

सद्विदः [=मन्दरः, पृषो०] चिमटा या सड़ासी।

सद्वीपम् [सम्+ही+क्त] पक्षियों की विशिष्ट उड़ानों में से एक, दे० 'हीन'।

सत् (वि०) (स्त्री०—) [सतीत्+क्विप्, तकारलोपः] 1 वर्तमान, विद्यमान, मौजूद—सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम् भामि० १।१२० द० ७।१२ 2 वास्तविक, असली, सत्य 3 अच्छा, सद्गुणसम्पन्न, धर्मात्मा या सती—सतीं वोधयितुश्चेष्टाः—कु० १।२१, द० ५।१७ 4. कुलीन, योग्य, उच्च, जैसा कि 'सत्कुलम्' में 5 ठीक, उचित 6 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 7 सम्माननीय, आदरणीय 8 बुद्धिमान्, विद्वान् 9 मनोहर, सुन्दर 10 दृढ़, स्थिर,—(पुं०) महापुरुष, सद्गुणी व्यक्ति, ऋषि—आदान हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव - रघु० ४।८६, अविरतं परकार्यकृता सता मसुरिमातिशयेन वचोऽमृतम् भामि० १।११३, भर्तृ० २।१८, रघु० १।१०, (नपुं०) 1. जो वस्तुतः विद्यमान हो, सत्ता, अस्तित्व, सर्वविरपेक्ष सत्ता, 2 वस्तुतः विद्यमान, सचाई, वास्तविकता 3 ब्रह्म, जैसा कि 'सदसत्' में 4 ब्रह्म या परमात्मा, (अक्र आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

सम० असत् (सदसत्) (वि०) 1 विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 असली और नकली 3 सच्चा और मिथ्या 4. अच्छा और बुरा, ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (नपुं० द्वि० व०) 1 अस्तित्व और अनस्तित्व 2 भलाई और बुराई, ठीक और गलत, °विवेकः भलाई और बुराई में अथवा सच और झूठ में विवेक, °विवेकहेतुः भलाई और बुराई में विवेक का कारण—त्व सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः—रघु० १।१०, —आचारः (सदाचारः) 1 सद्व्यवहार, शिष्ट आचरण 2 मानी हुई रस्म, परंपराप्राप्त धर्म, स्मरणातीत प्रथा मनु० २।१८, आत्मन् (वि०) पूजी, भद्र, —उत्तरम् उचित या अच्छा उत्तर, —कर्मन्

(नपुं०) 1 गुणयुक्त या पुण्यकार्य 2 सद्गुण, पवित्रता 3 आतिथ्य, काम्यः दास, चील, कारः 1. कृपा तथा आतिथ्यपूर्ण व्यवहार, सत्कारयुक्त स्वागत 2 सम्मान, आदर 3 देखभाल, ध्यान 4 भोजन 5. पर्व, धार्मिक त्योहार, कुलम् सत्कुल, उत्तम कुल, कुलीन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, कृत (वि०) 1 भलीभांति या उचित ढंग से किया गया 2 सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया 3. पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित 4 पूजित, अलंकृत 5 स्वागत किया गया, (तः) शिव का विशेषण, (तम्) 1 आतिथ्य 2 सद्गुण, शुचिता —कृति, (स्त्री०) 1 आदर व्यवहार, आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 2. सद्गुण सदाचार,—क्रिया 1 सद्गुण, भलाई—शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया-स० ५।१५ 2 धर्मार्थता, सत्कर्म, पुण्यकार्य 3 आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 4 शिष्टाचार, अभिवादन 5 शुद्धिसंस्कार 6 अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदेहिक क्रिया, गतिः (स्त्री०) (सद्गतिः) उत्तम स्थिति, आनन्द, स्वर्गसुख, —गुण (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, पुण्यात्मा, (णः) पुण्यकार्य, उपकार, भलाई, नेकी—चरित,—चरित्र (वि०) (सच्चरित्र —त्र) सदाचारी, ईमानदार,पुण्यात्मा, धर्मनिष्ठ मनु सच्चरित्र —मनु० २।२५, (नपु०) 1 सदाचार, पुण्याचरण 2 भद्रपुरुषों का इतिहास—त्र० १, जारा (सज्जारा) हल्दी,—चित् (नपु०) (सच्चित्) परमात्मा, °अंशः सत् और चित् का भाग, °आत्मन् (पु०) सत् और चित् से युक्त आत्मा °आनन्द 'सत् या अस्तित्व, ज्ञान और हर्ष' परमात्मा का विशेषण, —जनः (सज्जनः) भद्र पुरुष, पुण्यात्मा, —जम् कमल का नया पत्ता, पथः 1 अच्छा मार्ग 2. कर्तव्य का सन्मार्ग, सुआचरण, पुण्याचरण 3 शास्त्रविहित सिद्धान्त,—परिग्रहः योग्य व्यक्ति से (दान) ग्रहण करना,—पशुः यज्ञ में दी जाने वाली बलि के लिए उपयुक्त पशु, सुयोग्य यज्ञीय बलि,—पात्रम् योग्य व्यक्ति, पुण्यात्मा, °वर्षः योग्य आदाता के प्रति अनुग्रह की वर्षा, योग्यव्यक्ति के प्रति उदारता का बर्ताव, °चिन्तक (वि०) पात्रता का विचार कर दान आदि देने वाला,—पुत्रः 1 भला पुत्र, योग्य पुत्र 2 वह पुत्र जो पितरों के सम्मान में सभी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे,—प्रतिपक्षः (तर्क० में) पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक प्रति अनुमिति हेतु, वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य समर्थक हेतु भी हो, उदा० 'शब्द नित्य है क्योंकि वह अमूर्त है, —शब्द अनित्य है क्योंकि वह उत्पन्न हुआ है',—फलः अनार का पेड़, भावः (सद्भावः) 1. सत्ता, विद्यमानता, अस्तित्व 2. वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3 सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, सौजन्य 4 भद्रता, साधुता,—भावुकः (सद्भावुकः) धर्मपरायण आत्मा का पुत्र,—भावः (सद्भावः, जिसका केवल अस्तित्व माना जाय, जीव, आत्मा, मानः (सन्मानः) भद्रपुरुषों का सम्मान, मिश्रम् (सन्मिश्रम्) विश्वासपात्र मित्र, सूक्ति (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री, वंश (वि०) अच्छे कुल का, कुलीन,—वस्त्रम् (नपु०) सुन्दर वस्त्र तथा सुन्दर आभूषण,—वस्तु (नपु०) 1 अच्छी वस्तु 2 अच्छी कथावस्तु—विक्रम० १।२,—शिष्य (वि०) सुशिक्षित, बहुश्रुत, शूद्र (वि०) 1 अच्छे व्यवहार का, सदाचारी, पुण्याचरण करने वाला, खरा 2. बिल्कुल गोल, वर्तुलाकार सद्वृत्त स्तनमण्डलसंलग्न कच प्राणसमं क्षोदति—गीत० ३, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं, (त्तम्) 1 सदाचार, पुण्याचरण 2 अच्छा स्वभाव, रोचक प्रकृति,—संसर्गः, संगतिः, सङ्गः, —सङ्गतिः, समागमः, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों की संगति—तथा सम्यनिधानेन मुक्तो भवति प्रयोगतः हि० १- संस्कृतेन सही प्रयोग,—सहाय (वि०) अच्छे मित्र जिसके सहायक हैं, (यः) अच्छा साथी —हार (वि०) अच्छे रंग वाला (रः) 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 कवि 3. चित्रकार,—हेतुः (सद्धेतु) निर्दोष अथवा वैध कारण।

सततम् (वि०) [सम् + तन् + क्त, समः अन्त्यलोपः] निरन्तर नित्य, सदा रहने वाला, शाश्वत,—तम् (अव्य०) लगातार, अविच्छिन्न रूप से, नित्य, सदा, हमेशा - सुलभा पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः —रामा० ; सम०—ग —गतिः वायु—सलिलसिक्ते सततगतिनिरुद्धसंचारिणः अभिनवकथ्या कार्या - दश०, सततसमाहितसंगतगतिरात्मविनिग्रहः हि० ६।५, सेवा गीता सततगतिना यद्विमानाद्रियन्ते मेघ० ६९, चारिन् (वि०) 1 सदैव गतिशील 2 क्षयशील।

सतर्क (वि०) [तर्केण सह - ब० स०] 1 तर्क करने में निपुण 2 सचेत, सावधान।

सति (स्त्री०) [सम् + क्तिन् संप्रसारणम्] 1 उपहार, दान 2 अन्न, विनाश।

सती (स्त्री०) [सत् - ङीप्] 1 साध्वी स्त्री (या पत्नी) कु० १।२१ 2. सच्चरित्रा स्त्री 3 दुर्गादेवी - कु० १।२१।

सतीत्वम् [सती + त्व] सती होने का भाव, सतीपन।

सतीनः [सती + नी + ड] 1 एक प्रकार की घास, मटर 2. बाँस।

सतीर्थः, सतीर्थ्यः [समाने तीर्थे गुरुर्यस्य - ब० स० तीर्थे गुरौ वसति इत्यर्थे यत् प्रत्यये - समानस्य

स] सहाध्यायी, साथ अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी।

सतीन [सती+खञ्+ङ], 1 बीज 2 हुआ, दाम् 3 मटर, दाल (स्त्री० भी)।

सतेर [सत्+एर, तान्तादेश] भूसी, चोकर।

सत्ता [सत्+तल्+टाप्] 1 अस्तित्व, विद्यमानता, होने का भाव 2 वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3 उच्चतम जाति या सामान्यता 4 उत्तमता, श्रेष्ठता।

सत्त्रम् [बहुधा सत्रम् — लिखा जाता है, सद्+ष्ट्रन्] 1. यज्ञीय अवधि की प्राय १२ से १०० दिन तक होने वाले यज्ञों में पाई जाती है 2 यज्ञमात्र 3. आहुति, चढावा, उपहार 4 उदारता, वदान्यता 5 सद्गुण 6 घर, निवासस्थान 7 आवरण 8 धनदौलत 9 जंगल, वन कि० १३।९ 10 तालाब, पोखर 11 जालसाजी, ठगना 12. सञ्चयनगृह, आश्रम, आश्रयस्थान। सम० अहीन (वि०) यज्ञों का चलने वाला दीर्घ कार्यकाल।

सत्रा (अव्य०) [सद्+त्रा] के साथ, मिल कर, सहित। सम० हन् (पु०) इन्द्र का विशेषण।

सत्रिः [सद्+त्रि] 1 बादल 2 हाथी।

सत्रिन् (पु०) [सत्र+इनि] जो निरन्तर यज्ञानुष्ठान करता रहता है, उदार गृहस्थ शि० १४।३२।

सत्त्वम् (प्रथम दस वर्षों में पु० भी होता है) [सतो भाव सत्+त्व] 1 होने का भाव, अस्तित्व, सत्ता 2 प्रकृति, मूलतत्त्व 3 स्वाभाविक चरित्र सहज स्वभाव 4 जीवन, जीव प्राण, जीवनी शक्ति, प्राणशक्ति 5 सिद्धान्त श० २।९ 6 चेतना, मन, ज्ञान 7 भूत 7 तत्त्वार्थ वस्तु, सम्पत्ति 8 मूलतत्त्व, जैसे कि पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि 9 प्राणधारी जीव, जानदार, जन्तु,—सत्त्वान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्—रघु० २।८, १५।१५, श० २।७ 10 भूत, प्रेत, निशाचर 11 भद्रता, सद्गुण, श्रेष्ठता 12 सचाई, वास्तविकता, निश्चय 13 सामर्थ्य, ऊर्जा, साहस, बल, शक्ति, अन्तर्हित शक्ति, वह तत्त्व जिससे पुरुष बनता है, पुरुषार्थ सिद्धासिद्धि सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे —मुद्रा०—रघु० ५।३१, मुद्रा० ३।२२ 14 बुद्धिमत्ता अच्छी समझ 15 भद्रता और शुचिता का सर्वोत्तम गुण, सात्त्विकता, (देवों तथा स्वर्गीय प्राणियों में यह बहुतायत से पाया जाता है) 16 स्वाभाविक गुण या लक्षण 17 सत्ता, नाम। सम० अनुरूप (वि०) मनुष्य के सहज स्वभाव या अन्तर्हित चरित्र के अनुसार—मनु० २।३० 2 अपने लक्षण या प्रकृति के अनुसार रघु० ७।३२, (यहाँ मल्लि० व्याख्या प्रकरणानुकूल उपयुक्त प्रतीत नहीं होती),—उद्रेकः 1. भद्रता के गुण का आधिक्य 2 साहस या सामर्थ्य में प्रमुखता, लक्षणम् गर्भ के लक्षण—का० ५, —विप्लवः चेतना की हानि, विशुद्ध (वि०) 1. प्राकृतिक 2. सद्गुणी, पुण्यात्मा, खरा,—संशुद्धिः (स्त्री०) प्रकृति की पवित्रता या खरापन,—संस्थ (वि०) सद्गुणों में मुक्त, पुण्यात्मा,—संक्षयः 1 बल या सामर्थ्य की हानि 2 विश्वविनाश, प्रलय, —सारः 1 सामर्थ्य का सार, असाधारण साहस 2 अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष, —स्थ (वि०) 1 अपनी प्रकृति में स्थित 2 पशुओं में अन्तर्हित 3 सद्गुण 4 सद्गुणों विशिष्ट, उत्तम, श्रेष्ठ।

सत्त्वसंज्ञक (वि०) [सत्त्व+एज्+णिच्+खुञ्, मुम्] पशुओं या जीवधारी प्राणियों को डराने वाला।

सत्य (वि०) [सते हितम् — सत्+यत्] 1. सच्चा, वास्तविक, असली, जैसा कि सत्यव्रत, सत्यसन्ध में 2 ईमानदार, निष्कपट, सच्चा, निष्ठावान् 3 सद्गुणसम्पन्न, खरा, —त्यः ब्रह्मलोक, सत्यलोक, भूमि के ऊपर सात लोकों में सबसे ऊपर का लोक —दे० लोक 2 पीपल का पेड़ 3 राम का नाम 4 विष्णु का नाम 5 नान्दीमुख श्राद्ध की अधिष्ठात्री देवता,—त्यम् 1 सचाई —नात्यन्तसत्य विशिष्यते—मनु० २।८३, सत्य कृ 1 सच बोलना 2 निष्कपटता 3 भद्रता, सद्गुण, शुचिता 4 शपथ, प्रतिज्ञा, गंभीर दृढोक्ति—सत्याद् गुरुमलोपयन्—रघु० १२।९, मनु० ८।११३ 5 सचाई, प्रदर्शित सत्यता या रूढि 6 चारों युगों में पहला युग, स्वर्णयुग, सत्ययुग 7 पानी, —त्यम् (अव्य०) सचमुच, वस्तुतः, निस्सदेह, निश्चय ही वस्तुवस्तु—सत्य शपामि ते पादपङ्कजस्पर्शेन—का०, कु० ६।१९। सम० अनृत (वि०) 1 सच और मिथ्या —सत्यानृता च परुषा—हि० २।१८३ 2 सच प्रतीत होने वाला परन्तु मिथ्या (—तम्,—ते) 1. सचाई और झूठ 2. झूठ और सच का अभ्यास अर्थात् व्यापार, वाणिज्य मनु० ४।४, ६, अभिसन्धि (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला, निष्कपट,—उत्कर्षः 1 सचाई में प्रमुखता 3 सच्ची श्रेष्ठता, —उक्त (वि०) सत्यभाषी,—उपयाचित (वि०) प्रार्थना पूरी करने वाला,—कामः सत्य का प्रेमी, —तपस् एक ऋषि का नाम,—दर्शिन् (अव्य०) सचाई को देखने वाला, सत्यता को भाँपने वाला, —धन (वि०) सत्य के गुण में समृद्ध अत्यन्त सच्चा —धृति (वि०) परम सत्यवादी,—पुरम् विष्णुलोक, —पूत (वि०) सत्यता से पवित्र किया हुआ (जैसे कि वचन) सत्यपूता वदेद्वाणी—मनु०—६।४६,—प्रतिज्ञ (वि०) वादे का पक्का, अपने वचन का पालन करने वाला, भामा सत्राजित् की पुत्री तथा कृष्ण की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्यभामा के लिए कृष्ण ने इन्द्र से युद्ध किया, तथा नन्दनवन से पारि-

जात वृक्ष लाकर उसके उद्यान में लगाया), **युगम्** स्वर्णयुग, दे० ऊ० सत्य (६) **वचस्** (वि०) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, (पु०) 1 सन्त, ऋषि 2 महात्मा (नपु०) सचाई, ईमानदारी, **वत** (वि०) सत्यभाषी (व्रत) सचाई, ईमानदारी, **वाच्** (वि) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, खरा (पु०) 1 सन्त, महात्मा, ऋषि, कौवा, **वाचयम्** सत्यभाषण, खरापन, **वादिन्**(वि०) 1. सत्यभाषी 2 निष्कपट, स्पष्टभाषी, खरा, **वान, सगर,–संध** (वि०) 1 वादे का पक्का, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट, **वाक्यम्** शपथग्रहण, **संकाश** (वि०) प्रशस्त, सुआकृति वाला, देखने में ठीक जचता हुआ, सत्याभ।

सत्यङ्कार [सत्य+कृ+घञ्, सुम्] सत्य करना, वादा पूरा करना, सौदे या संविदा की शर्तें पूरी करना 2 बयाने की रकम, अगाऊ दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए जमानत के रूप में दी गई अग्रिम राशि कि० ११।५०।

सत्यवत् (वि०) [सत्य+मतुप्] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पु० एक राजा का नाम, सावित्री का पति, ती एक मछुए की लड़की जो पराशर मुनि के सहवास से व्यास की माता बनी, **सुत**, व्यास।

सत्या [सत्यमस्ति अस्या सत्य अच्+टाप्] 1. सचाई, ईमानदारी 2 सीता का नाम 3 द्रौपदी का नाम, —कि० ११।५० 4 व्यास की माता सत्यवती का नाम 5 दुर्गा का नाम 6 कृष्ण की पत्नी सत्यभामा का नाम।

सत्यापनम् [सत्य+णिच्+ल्युट्, पुकागम] 1 सत्यसाबित करना, सत्य का पालन करना 2 (किसी संविदा या सौदे आदि को) शर्तें पूरी करना।

सत्र दे० 'सन्त्र'।

सत्रप (वि०) [सह त्रपया–ब० स०] लज्जाशील, विनयी।

सत्राजित् (पु०) निघ्न का पुत्र तथा सत्यभामा का पिता (सत्राजित् को सूर्य से स्यमन्तक नाम की मणि प्राप्त हुई थी, और उसने उसको अपने कण्ठ में पहन लिया था। बाद में सत्राजित् ने इस मणि को अपने भाई प्रसेन को दे दिया प्रसेन से यह मणि वानरराज जाम्बवान् के हाथ लगी, जब कि उसने प्रसेन का वध किया। फिर कृष्ण ने जाम्बवान् से युद्ध किया और उसे पराजित कर दिया। अत जाम्बवान् ने अपनी पुत्री के साथ यह मणि कृष्ण को दे दी। दे० जाम्बवत्। कृष्ण ने इस मणि को इसके मूल अधिकारी सत्राजित् को दे दिया। सत्राजित् ने भी कृतज्ञता के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सत्यभामा समेत कृष्ण को ही अर्पित कर दी। उसके पश्चात् एक बार जब इस मणि के साथ सत्यभामा अपने पिता के घर विद्यमान थी तो अक्रूर नामक यादव के भड़काने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था शतधन्वा ने सत्राजित् का मार डाला और यह मणि लेकर अक्रूर को दे दी। उसके बाद कृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि यह मणि तो अक्रूर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार यह मणि सब लोगों को दिखा दी जाय तथा फिर अक्रूर भले ही इस मणि को अपने पास रक्खें)।

सत्वर (वि०) [सह त्वरया ब० स०] फुर्तीला, द्रुतगामी, क्षिप्र, –रम् (अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।

सत्कार (वि०) [सह थूत्कारेण] वह मनुष्य जिसके मुँह से बोलते समय थूक निकले, र. बात के साथ मुँह से थूक निकलना।

सद् (म्वा० पर०- कुछ के अनुसार भ्वा० पर०–सीदति सन्न प्रति को छोड़कर अन्य इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्गों के लगने पर सद् के स् को ष् हो जाता है) 1 बैठना, बैठ जाना, आराम करना, लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, रुक जाना, अभया मेदुरेकस्मिन् निशम्बे सिलिला सिदे–भट्टि० ९।५८ 2 डूबना, गोता लगाना नैन व विदुरा मध्ये पङ्कू सीदति मोदति कि० ५० २४ (यहाँ इस शब्द का अर्थ –४–भी है) 3 जाना, रहना, बसना, वास करना 4 खिन्न होना, हतोत्साह होना, निराश होना, हताश होना, भग्नाशा में डूब जाना नाथ हर जय नाथ हर मादति राधा वासगृहं मीत० ६ 5 म्लान होना, नष्ट होना बर्बाद होना, खोजना, नष्ट होना –विधात्रा मोघो सकलमवसो मीदति जगत् –कि० २।७५ रघु० ३।६८ कि० २।१३० 6 दुखी होना पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना, असहाय होना कि० १३।६०, मनु० ८।२१ 7 बाधित होना, विघ्न पड़ना होना, मनु० ९।९४ 8 म्लान होना, कुम्हला होना, थका हुआ होना, निढाल होना, अवसन्न होना —सीदति मे मुखम् का०, सीदन्ति मम गात्राणि भग० १।२८ 9 जाना, प्रेर० (सादयति ते) 1 बिठाना, आराम कराना इच्छा० (सिषत्सति) बैठने की इच्छा करना, अव , 1 निढाल होना, मूर्छित होना, विफल होना, रास्ते से हट जाना कश्चिदेवमवसीदति कि० २।६, ६।२०, भट्टि० ६।२४ 2 मुरझना, उपेक्षित होना 3 हतोत्साह होना, खिन्न होना 4 नष्ट होना, क्षीण होना, समाप्त होना -दास्यत्यसमयो बन्धु कृच्छ्राय नावसीदति, - (प्रेर०) 1 अवसन्न करना, हतोत्साह करना, बर्बाद करना—भग० ६।५ 2. दूर करना, हटाना –औन्मुख्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा श० ५।६ 3 नष्ट

करना, मार डालना, आ–, 1 नीचे बैठना, निकट बैठना 2 पास में रहना 3 पहुँचना, उपगमन करना, पास जाना–हिमालयस्यालयमासासाद–कु० ७।६९, शि० २।२ रघु० ६।४ 4 अकस्मात् मिलना, प्राप्त करना, निर्माण करना रघु० ५।६०, १४।२५ 5 भुग तना–भट्टि० ३।२६ 6 मुठभेड़ होना, आक्रमण करना 7 रखना, (प्रेर०) 1 दुर्घटना होना, पाना, हासिल करना, प्राप्त करना,—अमरगणनानेकयामास—रघु० ८।९५ 2 उपगमन करना, पास जाना, पहुँचना, अधिकार में करना तक स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पञ्च० ३।४६ मेघ० ३४ भट्टि० ८।३७ 3 पकड़ लेना—अनेन रथवेगेन पूर्वप्रस्थित वेनतेयमप्यासाद-येयम् विक्रम० १ 4 मुठभेड़ होना, आक्रमण करना – भट्टि० ६।९५, उप्–, 1. डूबना (आल० से भी), बर्बाद होना, क्षीण होना–उत्सीदेयुरिमे लोका —भग० ३।२४ 2 छोड़ देना, त्याग देना 3 विद्रोह के लिए उठना, (प्रेर०) 1 नष्ट करना, उन्मूलन करना उत्साद्यन्ते जातिधर्मा भग० १।४२ मनु० ९।२६५ 2 उलटना 3 मलना, मालिश करना, उप–, 1 निकट बैठना, पहुँचना, पास जाना उपसेदुर्दशा-योगम् भट्टि० ९।९२, ६।१३५ 2 सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना आकल्पसाधनैस्तैस्तैरुपसेदु प्रसाधका —रघु० १७।२२, शि० १३।३४ 3 चढ़ाई करना, नि , 1 नीचे बैठ जाना लेटना विश्राम करना उष्णालु शिशिर निषीदति नरा मूलालवाले सिंची विक्रम० २।२३ 2 डूबना, विफल होना, निराश होना, प्र , 1 प्रसन्न होना, कृपालु होना, मनःप्रसाद होना - प्राय तुमुन्नन्त के साथ नमाल-पत्रास्तरणासु रन्तु प्रसीद शाद्वलनिलयस्थलीषु - रघु० ६।६४ 2 आश्वस्त होना, परितुष्ट होना, सन्तुष्ट होना –निमित्तमुद्दिश्य हि य प्रकुप्यति ध्रुव स तस्या-गमे प्रसीदति पञ्च० १।२८३ 3 निर्मल होना, स्वच्छ होना, स्पष्ट होना, चमकना (गा० और आ०) दिश प्रसेदुर्मरुतो वह सुखा रघु० ३।१४, प्रससा-दोदयादम्भ कुम्भयोनेर्महौजस ४।२१ 4 फल आना, सफल होना, कामयाब होना—क्रिया हि वस्तु-पहिता प्रसीदति -रघु० ३।२९, वि० प्रसन्न, (प्रेर०) 1 राजी करना, अनुग्रह प्राप्त करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय काय प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्—भग० ११।४४, रघु० १।८८, याज्ञ० ३।२८३ 2 स्पष्ट करना चेत प्रसादयति भर्तृ० २।२३, वि , 1 डूबना, थक जाना, 2 हताश होना, निढाल होना, कष्टग्रस्त होना, खिन्न होना, निराश होना, साउम्मीद होना—विषीदति हसति विषीदसि रोदिषि वञ्चयति मुञ्चयति तापम् गीत० ४, भग० २।१, भट्टि० ७।८९, रघु० ९।७५, प्रेर० 1 निराश करना, हताश करना 2 कष्टग्रस्त करना, पीड़ित करना।

सद्य [सद् + अच्] वृक्ष का फल।

सद्यस्क [सद्यस सह कप्, ब० स०] केकड़ा।

सद्यस्यवदन [सदस वदन यस्य ब० स०] बगले का एक भेद, कंक पक्षी।

सदस् [सद् + असुन्] 1 घर, महल, भवन 2. स्नान होना, क्षीण होना, नष्ट होना 3 अवसाद, श्रान्ति, क्लान्ति 4 हानि 5 यज्ञ-भवन 6 यम का आवास स्थान।

सदय (वि०) [सह दयया – ब० स०] कृपालु, सुकुमार, दयापूर्ण, यम् (अव्य०) कृपा करके, दया करके।

सदस् (नपु०) [सीदन्त्यस्याम्–सद् + असि] 1 आसन, आवास, घर, निवासस्थान 2 सभा –पङ्क्तिर्विना सरो-भाति मद खलजनैरिव—भामि० १।११९, भर्तृ० २।६३। सम०—गत (वि०) सभा में बैठा हुआ, —रघु० ३६६ गृहम् सभा-भवन, परिषत्-कक्षा रघु० ३।६७।

सदस्य [सदसि साधु वसति वा यत्] 1 सभा का सभासद् या सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का मेम्बर (पञ्च, जूरी का सदस्य) 2 याजक, यज्ञ में ब्रह्मा या सहायक ऋत्विज् श० २।

सदा (अव्य०) [सर्वस्मिन् काले सर्व + दाच्, सादेश] हमेशा, सर्वदा नित्य सदैव। सम० आनन्द (वि०) सदा प्रसन्न रहने वाला, (द) शिव का विशेषण, गति 1 वायु 2 सूर्य 3 शाश्वत आनन्द, मोक्ष, शोभा, शीरा 1 कश्मीर की नदी का नाम 2 वह नदी जिसमें सदैव पानी रहता है, बहती हुई नदी, —दान (वि०) सदैव उपहार देने वाला, (वह हाथी) जिसके सदैव मद बहता हो–पञ्च० २।७९ (–नः) 1 मद बहाने वाला हाथी 2 गन्धहस्ति, 3 इन्द्र के हाथी का नाम 4 गणेश, मत्तः एक पक्षी, सजन फल (वि०) हमेशा फलने वाला (फः) 1 बेल का पेड़ 2 कटहल का पेड़ 3 सुपारी का पेड़ 4 नारियल का पेड़, योगिन् (पु०) कूष्माण्ड का विशेषण, शिवः शिव का नाम।

सदृक्ष (स्त्री०–क्षी), **सदृश**, **सदृश** (स्त्री० शी) (वि०) [समान दर्शनमस्य दृश् - क्स, क्विप् वा, समानस्य सादेश] 1 समान, मिलता-जुलता, तुल्य, अनुरूप (सब० या अधि० के साथ अथवा समास में प्रयुक्त) 2 योग्य, समुचित, उपयुक्त, समानरूप जैसा कि प्रस्तावसदृश आकृतम्—हि० २।५१ 3 योग्य, ठीक, शोभायुक्त श्रुतस्य किं तत्सदृश कुलस्य रघु० १४।६१, १।१५।

सदेश (वि०) [सह देशेन ब० स०] 1 किसी देश का

स्वामी 2 एक ही स्थान से सम्बन्ध रखने वाला 3 आसन्नवर्ती, पड़ोसी।

सद्मन् (नपु०) [सीदत्यस्मिन् सद्+मनिन्] 1 घर, मकान, आवासस्थान—चकितसननताक्षी सद्म सद्यो विवेश—भामि० २।३२ 2 स्थान, जगह 3 मन्दिर 4 वेदी 5 जल।

सद्यस् (अव्य०) [सदेऽह्नि—नि०] 1 आज, उसी दिन—सकादीना पयोऽन्येषु सद्यो का जायते दधि, पापस्य हि फलं सद्य—सुभा० 2 तुरन्त, तत्काल, फौरन अकस्मात्—चकितसननताक्षी सद्य सद्यो विवेश—भामि० २।३२, कु० ३।२९, मेघ० १६ 3 हाल ही में, कुछ ही समय पीछे, जैसा कि सद्यो हुतास्नीन्—शा० ४ में। सम० काल, वर्तमान काल, —कालीन (वि०) हाल ही का—जात (वि०) (सद्योजात) अभी पैदा हुआ, (तः) 1 बच्चा 2 शिव का विशेषण, —पातिन् (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला, नश्वर मेघ० १०, **शुद्धि**, **शौचम्** तत्काल की हुई शुद्धि।

सद्यस्क (वि०) [सद्यस्+कन्] 1 नूतन, अभिनव 2 तात्कालिक।

सद्यु (वि०) [सद्+कु] 1 विश्राम करने वाला, ठहरने वाला 2 जाने वाला।

सद्वन्द्व (वि०) [सह द्वन्द्वेन ब० स०] झगड़ालू, कलहप्रिय, विवादपूर्ण।

सद्वसः [सद्+वस्+अथच्] गाँव।

सधर्मन् (वि०) [समानो धर्मोऽस्य सधर्म+अनिच्, ब० स०] 1 समान गुणों से युक्त 2 एक जैसा कर्तव्यों वाला 3 उसी जाति या सम्प्रदाय का 4 समान मिलता-जुलता। सम० चारिणी देव स्त्री, शास्त्रीय-रीति से विवाहसूत्र में बद्ध स्त्री।

सधर्मिणी दे० ऊ० 'सधर्मचारिणी'।

सधर्मिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सहधर्मोऽस्ति अस्य सधर्म+इनि, ब० स०] दे० 'सधर्मन्'।

सधिस् (पु०) [सह+इसिन्, हस्य धः] बैल, साँड।

सध्रीची [सध्र्यच्+ङीष्, अलोप, दीर्घ] सखी, सहेली, अन्तरंग सहेली भट्टि० ६।७।

सध्रीचीन (वि०) [सध्र्यच्+अ, अलोप, दीर्घ] साथ रहने वाला, सहचर।

सध्र्यञ्च् (वि०) (स्त्री० सध्रीची) [सहाञ्चति सह+अञ्च्+क्विन्, सधि आदेश] साथ चलने वाला, सहचर, साथी, पुं०—सहचर (पति) —शि० ८।४४।

सन् (म्वा० पर०, तना० उभ० मनति, सनोति, सनुते, सात, कर्मवा० सन्यते, सायते, इच्छा० सिसनिषति, सिषासति) 1 प्रेम करना, पसन्द करना 2 पूजा करना, सम्मान करना 3 प्राप्त करना, अधिगत करना 4 अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5 उपहारों से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, वितरण करना।

सन. [सन्+अच्] हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

सनत् (पु०) [सन्+अति] ब्रह्मा का विशेषण—(अव्य०) सदा, नित्य। सम०—कुमारः ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक।

सनत्सुजात दे० 'सनत्सुजात'।

सनत् (अव्य०) [सदा, सि० दस्य नः] हमेशा, नित्य।

सनात् (अव्य०) [सना+अत्+क्विप्] सदा, हमेशा।

सनातन (वि०) (स्त्री० —नी) [सदा+टधुल्, तुट्, नि० दस्य नः] 1 नित्य, निरन्तर, शाश्वत, स्थायी एष धर्मः सनातनः 2 दृढ़, स्थिर, निश्चित उत्तर० ५।२२ 3 पूर्वकालीन, प्राचीन, पः पुराण पुरुष विष्णु सनातनं पितरमुपागमत् स्वयम् भट्टि० १।१ 2 शिव का नाम 3 ब्रह्मा का नाम, नी 1 लक्ष्मी का नाम 2 दुर्गा या पार्वती का नाम 3 सरस्वती का नाम।

सनाथ (वि०) [सह नाथेन ब० स०] 1 स्वामी वाला, प्रभु या पति वाला अथवा नाथेन बैदेही सनाथा ब्राह्म वर्तते रामा० 2 जिसका कोई अभिभावक या प्रेरक हो सनाथा इदानीं धर्मचारिणः शा० १ 3 कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ 4 सम्पन्न, सहित, युक्त, समेत, पूर्ण, प्रायः समास में सनाथतां इव प्रतिभाति मे १ शिलातलमनाथो नतामण्डपः—विक्रम० १, मेघ० १८, कु० ३।९।४, रघु० ९।६२, विक्रम० ४।१०।

सनाभि (वि०) [समाना नाभिर्यस्य ब० स०] 1. एक ही पेट का सहोदर 2 रिश्तेदार, बंधु 3 समान, मिलता-जुलता—नाकृतज्ञसनाभिनाम्—दया० 4 स्नेहशील—भि 1 सगा भाई, सहोदरी रिश्तेदार 2 रिश्तेदार, बंधु कि० १३।११ 3 रिश्तेदार जो सात पीढ़ी के अन्तर्गत हो।

सनाभ्य [सनाभि+यत्] सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का रिश्तेदार।

सनिः [सन्+इन्] 1 पूजा, सेवा 2 उपहार, दान 3 अनुरोध, आदर निवेदन (स्त्री०) भी इस अर्थ में)।

सनिष्ठीवक, सनिष्ठेवक [सह निष्ठी (ष्ठे) वेन ब० स०] वह भाषण जिसमें मुँह से थूक निकले, ऐसी बोली जिसमें थूक उछले।

सनी [सनि+ङीष्] 1 सादर अनुराग 2 दिशा 3 हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

सनीड (क) (वि०) [समानं नीडमस्यस्य—ब० स०] 1 एक ही घोंसले में रहने वाला, साथ-साथ रहने वाला 2 निकटस्थ, सन्नीपवर्ती।

सम्पुट [सम्+पुट्-] दोनों हाथ जुड़े हुए, अंजलि, सहततल।

सम्पुटनम् [सम्+पुट्+ल्युट्] ढांपना, आवरण, ढकने की क्रिया।

सम्पृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+पृच्+क्त] 1 फैलाया हुआ, विस्तारित 2 विच्छेदरहित, अनवरत, अनवच्छिन्न, नियमित 3 टिकाऊ, नित्य 4 बहुत, अनेक,—क्तम् (अव्य०) सदैव, लगातार, नित्य, निरंतर, शाश्वत।

सम्पृतिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] 1 बिछाना, फैलाना 2 फासला, प्रसार, विस्तार--रघु० ७।८ 3. अनवच्छिन्न पंक्ति, अविराम प्रवाह, श्रेणी, परास, परम्परा निरन्तरता—चिताससन्ततितनुज्वालनिबिड-स्वतेव लग्ना प्रिया भा० ५।१०० कुसुमसन्ततिसन्तत-सन्निभै - शि० ६।३६ 4 नित्यता, अविच्छिन्न निरन्तरता—रघु० ३।१ 5 कुल, वंश, परिवार 6 सन्तान, प्रजा—सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे रघु० २।६९ 7 ढेर, राशि (अलम्) महामा सन्ततिमहसा विहन्तुम्- कि० ५।१७।

सम्पापनम् [सम्+तप्+ल्युट्] 1 गरम करना, प्रज्वलित करना 2 पीड़ित करना।

सम्पप्त (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+क्त] 1 गर्म किया हुआ, प्रज्वलित, लाल-गरम, चमकता हुआ 2 दुःखी कष्टग्रस्त, पीड़ित मेघ०७। सम० अयस् (नपुं०) लाल-गरम लोहा,—अयस् (नपुं०) जिसे सांस लेने में कठिनाई हो।

सम्तमस् (नपुं०) सन्तमसम् [सन्तत तमा प्रा० स०, पक्षे अच्] सर्वव्यापी या विषयव्यापी अंधकार, घोर अंधकार—निमज्जयन्सन्ततमसे परात्मयम् - नै० ९।९८, शि० ९।२२, भट्टि० ५।२।

सम्पर्जनम् [सम्+तर्ज्+ल्युट्] धमकाना, डांटना-डपटना।

सम्पर्पणम् [सम्+तृप्+ल्युट्] 1 सन्तुष्ट करना, संतृप्त करना 2 खुश करना, प्रसन्न करना 3 जो खुशी का देने वाला हो 4 एक प्रकार का मिष्टान्न।

सम्पानः, नम् [सम्+तन्+घञ्] 1. बिछाना, विस्तृत करना, विस्तार, प्रसार, फैलाव 2 निरन्तर्य, अनवच्छिन्न पंक्ति या प्रवाह, परम्परा, अनवच्छिन्नता अच्छिन्नामलसन्तानां कु० ६।६९, सतानवाहीनि दुःखानि उत्तर० ४।८ 3 परिवार, वंश 4 प्रजा, औलाद, बाल-बच्चा—सन्तानार्थाय विधये रघु० १।२४, सतानकामाय राज्ञे- २।६५, १८५२ 5 इन्द्र के स्वर्गीस्थित पाँच वृक्षों में से एक।

सम्तानकः [सन्तान+कन्] इन्द्र के स्वर्गीय पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष या उसका फूल—कु० ६।४६, ७।३, शि० ६।६।

सम्तानिका [सम्+तन्+ष्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 फेन झाग 2 मलाई 3 मकड़ी का जाला 4. चाकू या तलवार का फल।

सम्तापः [सम्+तप्+घञ्] 1. गर्मी, प्रदाह, जलन मा० ३।४ 2. दुःख, संताप, मुसीबत, पीड़ा, वेदना, व्यथा सन्तापसन्ततिमहाव्यसनाय तस्यामासक्तमेतदन-पेक्षित हेतु चेत मा० १।२३ रघु० ३ 3. आवेश, रोष 4 पश्चात्ताप, पछतावा पंच० १।१०१ 5 तपस्या, तप की थकान, शरीर की साधना - सन्तापे दिवतु शिवः शिवां प्रसक्तिम्- कि० ५।५०।

सम्तापनम् (स्त्री० नी) [सम्+तप्+णिच्+ल्युट्], जलन, दाह, नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक, - नम् 1 जलाना, झुलसना 2 पीड़ा देना, कष्ट देना 3 आवेश उत्तेजित करना, जोश भरना।

सम्तापित (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त] गरम किया हुआ, कष्टग्रस्त, पीड़ित।

सम्तिः [सन्+क्तिन्] 1 अन्त, विनाश 2 उपहार—तु० सत्ति।

सम्तुष्टिः (स्त्री) [सम्+तुष्+क्तिन्] पूर्ण सतोष।

सम्तोषः [सम्+तुष्+घञ्] 1 शान्ति, परितुष्टि, सवर, सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्—सुभा० 2 प्रसन्नता, खुशी, हर्ष 3. अगूठा या तर्जनी अगुली।

सम्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] प्रसन्न करना, परितृप्त करना, आराम पहुंचाना।

सम्त्यजनम् [सम्+त्यज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग देना।

सम्त्रासः [त्रस्+घञ्] डर, भय, आतंक।

सम्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1 चिमटा, सन्डासी 2 स्वरों (या वर्णों) के उच्चारण में दांतों को भींचना 3 एक नरक का नाम।

सम्दंशकः [सदंश+कन्] चिमटा, सिडासी।

सम्दधः [सम्+दध्+घञ्] 1. मिलाकर गर्मी करना, ग्रथन करना, क्रम में रखना 2. संग्रह, मिलाप, मिश्रण 3. संगति, निरन्तरता, -नियमित संबंध, सगतता सन्दर्भशुद्धिं गिरां-गीत०१ 4 संरचना 5 निबंध, साहित्यिक कृति - रसगगाधरनामा सदर्भोऽयं चिरं जयतु -रस०, उत्तर० ४।

सम्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] 1 देखना, अवलोकन, नजर डालना 2 ताकना, टकटकी लगा कर देखना 3 मिलना, एक दूसरे को देखना 4 दृष्टि, दर्शन, निगाह 5 खयाल, ध्यान।

सम्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] 1. रस्सी, डोरी 2. शृंखला, बेड़ी, नः हाथी का गंडस्थलक जहां से मद बहता है।

सम्दानित (वि०) [सन्दान+इतच्] 1. बद्ध, कसा हुआ 2 बेड़ी में जकड़ा हुआ, शृंखलित।

सम्दानिनी [सन्दानं बन्धन यस्याम् अत्र-सन्दान+इनि+ङीप्] गोष्ठ, गोशाला।

सम्वाद [सम्+वद्+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन।
सम्वाह [सम्+वह्+घञ्] जलन, उपभोग।
सन्दिग्ध (भू० क० कृ०) [सम्+दिह्+क्त] 1 सना हुआ, ढका हुआ 2 भ्रामक, सन्देहात्मक, अनिश्चित जैसा कि 'सन्दिग्ध मति-बुद्धि' में 3 भ्रान्त, विह्वल -मा० १।२ 4 संशय, प्रश्नास्पद 5 अव्यवस्थित, अस्पष्ट, दुरूह (जैसे कि वाक्य) 6 खतरनाक, जोखिम से भरा हुआ, असुरक्षित 7 विषाक्त।
सन्दिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दिश्+क्त] 1 संकेतित, इंगित किया हुआ 2 निर्दिष्ट 3 उक्त, वर्णित सूचित 4 वादा किया हुआ, प्रतिज्ञात, द- जिसे संदेश पहुँचाने का कार्य सौंपा गया हो, संदेशवाहक, दूत हलकारा, संदिष्टार्थ, दम् सूचना समाचार खबर।
सन्दित (वि०) [सम्+दो+क्त] बद्ध, शृङ्खलित, बेड़ी में जकड़ा हुआ।
सन्दी [सम्+दो+ड+ङीष्] खटोला, छोटी खाट, शय्याकुश।
सन्दीपन (वि०) (स्त्री०-नी) [सम्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1 भुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला, भड़काने वाला उत्तर० ३ 2 उद्दीपक उत्तर० ४,-न 1 कामदेव के पांच बाणों में से एक,-नम् 1 भुलगाना, प्रज्वलित करना 2 भड़काना, उद्दीप्त करना अनंगसन्दीपनमाशु कुर्वते ऋतु० १।१२।
सन्दीप्त (भू० क० कृ०) [सम्+दीप्+क्त] 1 भुलगाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ 2 उत्तेजित, उद्दीपित 3 भड़काया हुआ, उकसाया हुआ, प्रणोदित।
सन्दुष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दुष्+क्त] 1 कलुषित किया हुआ, मलिन किया हुआ 2 दुष्ट, कमीना।
सन्दूषणम् [सम्+दूष्+णिच्+ल्युट्] मलिन करना, भ्रष्ट करना, विषाक्त करना, खराब करना।
सन्देश [सम्+दिश्+घञ्] 1 सूचना, समाचार, खबर 2. संदेश, संवाद सन्देश से हर वनस्पतिकोषविश्लेषितस्य मेघ० ७, १३, रघु० १३।६३, कु० ६।२ 3 आज्ञा, आदेश -अनुष्ठितो गुरो संदेश शि० ५। सम० अर्थ, संदेश का विषय, हर 1 संदेशवाहक, दूत 2 दूत, राजदूत।
सन्देह [सम्+दिह्+घञ्] 1 संशय, अनिश्चितता, शंका, -अत्र के सन्देह- 2 जोखिम, खतरा, हर जीवितसन्देहदोलामारोपित का०, अर्थान्तरे प्रवृत्ति समन्देह -हि० १ 3 (अलं० शा० में) इस नाम का एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की घनिष्ट समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाय (इस अलंकार को मम्मट तथा अन्य कुछ विद्वान् 'ससंदेह' नाम से भी पुकारते हैं) ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशय -काव्य० १०, उदा० दे० मा० १।२, (पाठान्तर), विक्रम० ३।२। सम० दोला अनिश्चिति का झूला, शंका की स्थिति, दुविधा, असमंजस।
सम्दोह [सम्+दुह्+घञ्] 1 दूध दुहना 2. किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय, ढेर, राशि, संघात कुन्दमकरन्दमधुबिंदु सन्दोहवाहिना मारुतेनोल्लास्यति मा० ३ भामि० ४।९।
सम्नाह [सम्+नह्+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन।
सन्धा [सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. मिलाप सादृश्य 2 घनिष्ठ मेल प्रगाढ़ संबंध 3 स्थिति, दशा 4 वादा, प्रतिज्ञा अनुबन्ध, सम्विदा तदार सन्धामिव मन्यसन्धं रघु० १४।५२, महावीर० ७।८ 5 सीमा, हद 6 स्थिरता, धैर्य 7 संध्या 8 मद्यसंधान।
सन्धानम् [सम्+धा+ल्युट्] 1 मिलाना, जोड़ना 2 मेल, संगम सम्बन्ध-मदर्थे विच्छिन्न भवति कृतसन्धानमिव तत्-श० १।९, कु० ५।२७, रघु० १३।१०।३ मिश्रण, (औषधि-आदि का) सम्मिश्रण 4 पुनरुद्धार, जीर्णोद्धार 5 ठीक बैठाना, जमाना (जैसे कि धनुष की डोरी पर बाण का साधना) तत्साधुकृतसन्धान प्रतिमहर सायकम् श० १।११, हि० २०।८ 6 मैत्री, मेल, दोस्ती मेल-मिलाप मृदुचरितसुखेव दुःसन्धानश्च दुर्जनो भवति हि० १।९२ (यहाँ इसका अर्थ 'मिलाना या जोड़ना' भी है) 7 जोड़ ग्रन्थि पादडकृत्या सन्धाने गुल्फ -सुश्रु० 8 अवधान 9 निदेशन 10 संभालना 11 (मदिरा का) आसवन 12 मदिरा या उसका कोई भेद 13 पीने की इच्छा उत्तेजित करने-वाली चटपटी चीजें 14 अचार आदि बनाना 15 रक्षणावरोधक औषधियों के द्वारा त्वचा की सिकुड़न 16 काँजी।
सन्धानित (वि०) [सन्धान+इतच्] 1 मिलाया हुआ, साथ साथ मन्धी किया हुआ 2 बांधा हुआ, कसा हुआ।
सन्धि [सम्+धा+कि] 1 मेल, संगम, सम्मिश्रण, सम्बन्ध सन्धये मरला सूची वस्त्र छेदाय कर्तरी सुभा०, मेघ० ५८ 2 संविदा, करार 3 मित्रता, संघटन, मैत्री मेल-मिलाप, सन्धिपत्र सुलहनामा (विदेशनीति में प्रयोज्य छः उपायों में से एक) कति प्रकारा सन्धयो भवन्ति- हि० (हि० ४।१०६—१२५ तक कई प्रकारों का वर्णन किया है), शत्रुणा न हि सदृश्यात्सुश्लिष्टेनापि सन्धिना हि० १।८८ 4 जोड़, (शरीर का) सन्धान गुल्फानुधावनकाश्चितसन्धे - शि० २ 5 (वस्त्र की) तह 6 छेद, बिवर, दरार 7 विशेषतया सुरंग, या सेंध जो चोर किसी मकान में घुसने के लिए बनाते हैं -मृत्प्राकारिका परिसरे सन्धि कृत्वा प्रविष्टोऽस्मि मध्यम-

कम्–मुच्छ० १, मनु० ९।२७९ 8. पार्थक्य, प्रधान 9 (व्या० में) संहिता, उच्चारण की सुगमता के लिए ध्वनिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, वर्णविकार 10 अन्तराल, विश्राम 11 संकट काल 12 उपयुक्त अवसर 13 युगांत-काल 14 (ना० में) प्रकाश या जोड़ (यह संधियाँ गिनती में पाँच हैं– सा० द० ३३०-३३२) कु० ७।९१ 15 भग, स्त्री की जननेन्द्रिय। सम० अक्षरम् संयुक्त स्वर संधिस्वर, (ए, ऐ, ओ, औ), ओरः घर में सेंध लगाने वाला, वह चोर जो घर में पैठ लगाता है,—छेदः (दीवार आदि में) छिद्र या सुराख करना, जम् मादक सुरा, –जीवक, जो अवर्म की कमाई से जीवन-निर्वाह करता है (विशेषतया जैसे कि दलाल) अर्थात् स्त्रियों को पुरुषों से मिला कर जीविका अर्जन करने वाला, –द्रूषणम् संधि या सुलह का भंग कर देना अरिषु हि विजयाविन क्षितीशा विदधति मोघमि सन्धिदूषणानि –कि० १।४५,—बन्धः जोड़ी का उलटा –श० २, बन्धनम् स्नायु, कण्डरा, शिरा, भङ्गः,–मुक्ति. (स्त्री०) किसी जोड़ का सचमुच टूट जाना, विग्रह (पु०, द्वि० व०) शान्ति और युद्ध संधिकार. विदेश विभाग का मन्त्रालय, –विच्छेदकः संधि की बातचीत करने में निपुण, विद् (पु०) संधि की बातचीत करने वाला,– वेला 1 संध्या-काल 2. कोई भी संधिकाल,—हारकः घर में सेंध लगाने वाला।

सन्धिकः [सन्धि + कन्] एक प्रकार का ज्वर।

सन्धिका [सन्धिक + टाप्] (मदिरा का) आसवन।

सन्धित (वि०) [सन्धा + इतच्] 1 मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ 2 बद्ध, कसा हुआ 3 समाहित, पुनर्मिलित, मित्रता में आबद्ध 4 स्थिर किया हुआ, ठीक बैठाया हुआ 5 आपस में मिलाया हुआ 6 अचार डाला हुआ, प्ररक्षित, तम् 1 अचार 2 मदिरा।

सन्धिनी [सन्धा + इनि + ङीप्] 1 गर्भाई हुई गाय (या तो साँड में मैथुन या उसके द्वारा गर्भित गाय) 2 असमय दुही जाने वाली गाय।

सन्धिका [सन्धि + का + क + टाप्] 1 भीत में किया हुआ छिद्र, गड्ढा, बिवर 2 नदी 3 मदिरा।

सन्धुक्षणम् [सम् + धुक्ष् + ल्युट्] 1 सुलगाना, प्रज्वलित होना 2 उत्तेजित करना, उद्दीपन।

सन्धुक्षित (भू०क०कृ०) [सम् + धुक्ष् + क्त] सुलगा हुआ, प्रज्वलित, प्रभड़काया हुआ।

सन्धेय (वि०) [सम् + धा + यत्] 1. मिलाये जाने या जोड़े जाने के योग्य 2 पुनर्मिलित होने के योग्य सुजनस्तु मनाक्कदाचन दुर्भेदश्चकास्तसन्धेय हि० १।९२ 3 जिसके साथ संधि की जा सके 4 जिस पर निशाना लगाया जा सके।

सन्ध्या [सन्धि + यत् + टाप्, सम् + ध्यै + अङ् + टाप् वा] 1 मिलाप 2 जोड़, प्रमाण 3 प्रात: या सायंकाल का संधिवेला, झुटपुटा - अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरस्सरः। अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः काव्य० ७ 4 प्रभात काल 5 सायंकाल, रात का समय 6. युग का पूर्ववर्ती समय, दो युगों का मध्यवर्ती काल, मनु० १।६९ 7 प्रात काल, मध्याह्न काल तथा सायंकाल की ब्राह्मण द्वारा प्रार्थना—मनु० २।६९, ४।९३ 8 प्रतिज्ञा, वादा, 9 हद, सीमा 10 चिन्तन, मनन 11 एक प्रकार का फूल 12- एक नदी का नाम 13 ब्रह्मा की पत्नी का नाम। सम० अभ्रम् 1 सायंकालीन बादल (सूर्य की सुनहली आभा से युक्त) सन्ध्याभ्रलेखेव मुहूर्तरागा पंच० १।१९४ 2 एक प्रकार की लाल खड़िया, गेरु,—अर्चा 1 संध्या का समय 2 रात, आदित्य (पु०) शिव का विशेषण, कुसुमी 1 एक प्रकार की चमेली 2. आँवला,—बलः राक्षस,—रागः सिंदूर,—रागः (कई विद्वान् यहाँ 'आराम' शब्द को रखते हैं) ब्रह्मा—का विशेषण, —वन्दनम् प्रात:काल और संध्या काल की प्रार्थना।

सन्न (भू० क० कृ०) [सद् + क्त] 1 बैठा हुआ, आसीन लेटा हुआ 2 खिन्न, दुःखी, उदास 3 म्लान, विश्रान्त 4 दुर्बल, निश्शक्त, कमजोर 5 क्षीण, छीजा हुआ 6 नष्ट, लुप्त 7. स्थिर, गतिहीन 8. सिकुड़ा हुआ 9 सटा हुआ, निकटस्थ –क्षः पियाल नामक वृक्ष, चिरौंजी का पेड़, म् थोड़ा सा, अल्पमात्रा।

सन्नक–(वि०) [सन्न + कन्] नाटा, छोटेकद का। सम० —द्रुः पियालवृक्ष।

सन्नत (भू० क० कृ०) [सम् + नम् + क्त] 1 झुका हुआ, नताग या प्रवण 2. उदास 3. सिकुड़ा हुआ।

सन्नतर (वि०) [सन्न + तरप्] अपेक्षाकृत धीमा विषण्ण (जैसे कि स्वर)।

सन्नतिः (स्त्री०) [सम् + नम् + क्तिन्] 1. अभिवादन, सादर प्रणाम, सम्मान 2 विनम्रता 3 एक प्रकार का यज्ञ 4 ध्वनि, कोलाहल।

सन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + नह् + क्त] 1 एक साथ मिलाकर कटिबद्ध 2 कवचित, सुसज्जित, बख्तरबंद 3 व्यवस्थित, तैयार, युद्धके लिए उद्यत, शस्त्रास्त्र से पूर्णतः सुसज्जित,—नवजलधर सन्नद्धोऽयं न दृप्तनिशाचर विक्रम० ४।१, मेघ० ८ 4 तत्पर, उद्यत, निर्मित, सुव्यवस्थित—कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्- श० १।२१ 6 किसी भी वस्तु से युक्त 7 घातक 8 नितान्त मग्न, संसक्त, निकटस्थ।

सन्नयः [सम् + नी + अच्] 1 संचय समुच्चय, परिमाण संख्या 2 पृष्ठभाग (किसी सेना का) पृष्ठभाग।

सन्नहनम् [सम्+नह्+ल्युट्] 1 तैयार होना, सन्नद्ध होना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना 2 तैयारी 3 कस कर बाँधना 4. उद्योग, प्रयत्न।

सन्नाह [सम्+नह्+घञ्] 1 अपने आपको शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, युद्ध के लिए तैयार होना, कवच पहनना 2 युद्ध जैसी तैयारी, सुसज्जा 3 कवच, बख्तर अस्मिन्कलौ खलोत्सृष्टदुष्टवाग्बाणदारुण। कथं जीवेज्जगत्स्थ सन्नाहा सज्जना यदि कीर्ति० १।३६, कि० १६।१२।

सन्नाहः [सम्+नह्+घञ्] युद्ध का हाथी।

सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1 निकट खींचना, समीप लाना, 2 पड़ोस, सामीप्य, उपस्थिति—उत्कण्ठते च युष्मत्सन्निकर्षस्य—उत्तर०६, ३।७४, रघु० ७।८, ६।१० 3 सम्बन्ध, रिश्तेदारी 4 (न्याय० में) इन्द्रिय का विषय से सम्बन्ध, (यह छ प्रकार का है)।

सन्निकर्षणम् [सम्+नि+कृष्+ल्युट्] 1 निकट लाना 2 पहुँचना, समीप जाना 3 सामीप्य, पड़ोस।

सन्निकृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+नि+कृष्+क्त] 1 समीप आया हुआ 2 समीपवर्ती, सटा हुआ, विकटस्थ, °ष्टम् सामीप्य, पड़ोस।

सन्निचयः [सम्+नि+चि+अच्] संग्रह, संचय।

सन्निधातृ (पु०) [सम्+नि+धा+तृच्] 1 निकट लाने वाला 2 जमा करने वाला 3 चोरी का माल लेने वाला मनु० ९।२७८ 4 न्यायालय में लोगों का परिचय कराने वाला अधिकारी।

सन्निधानम्, सन्निधि [सम्+नि+धा+ल्युट्, कि वा] 1 मिलाकर रखना, साथ साथ रखना 2 सामीप्य, पड़ोस, , उपस्थिति—नै० २।५३ 3 दृष्टिगोचरता दर्शन 4 आधार 5 ग्रहण करना कार्य भार लेना, 6 सम्मिश्रण, समष्टि।

सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना, उतरना, नीचे आना 2 एक साथ गिरना, मिलना, —कि० १३।५८ 3 टक्कर, सपर्क 4 मेल, संगम, सम्मिश्रण, मिश्रण, विविध संचय धूमज्योति सलिलमरुतां सन्निपात क्व मेघ—मेघ० ५ 5 संघात, संग्रह समुच्चय, संख्या - नानारत्नज्योतिषां सन्निपातैः कु० १।३ 6 आना, पहुँचना 7 (वात, पित्त कफ) तीनों दोषों का एक साथ बिगड़ना जिससे कि विषम ज्वर हो जाता है 8 संगीत में एक प्रकार का समय, ताल। सम०—ज्वरः तीनों दोषों के बिगड़ जाने पर उत्पन्न होने वाला भीषण ज्वर।

सन्निबन्धः [सम्+नि+बन्ध्+घञ्] 1 कस कर बाँधना 2. संबंध, आसक्ति 3 प्रभावकारिता।

सन्निभ (वि०) [सम्+नि+भा+क] समान, सदृश (समास के अन्त में प्रयुक्त) ऋतु० १।११।

सन्नियोगः [सम्+नि+युज्+घञ्] 1. मेल, अनुराग 2 नियुक्ति।

सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] अवरोध, रुकावट।

सन्निवृत्ति (स्त्री०) [सम्+नि+वृत्+क्तिन्] 1 वापसी —शा० ६।१०, रघु० ८।४९, १०।२७ 2 हटना रुकना 3 निग्रह, सहिष्णुता।

सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] 1 गहरी पैठ, उत्कट भक्ति या अनुराग, संलग्नता 2 संचय, समुच्चय, संघात 3 मेल, मिलाप, व्यवस्था रमणीय एष च सुमनसां सन्निवेशः मा० १।९ 4 स्थान, जगह, स्थिति, अवस्था कु० ७।२५, रघु० ६।१९ 5 पड़ोस सामीप्य 6 रूप, आकृति उद्दामशरीर सन्निवेश मा० ३, निर्माणसन्निवेश—का० 7 झोपड़ी, रहने की जगह—रघु० १४।७६ 8 उपयुक्तस्थानों पर आसन देना, बिठाना—क्रियतां समाजसन्निवेशः—उत्तर० ७ 9 बीच में रखना 10 नगर के निकट खुला मैदान जहाँ लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं।

सन्निहित (भू० क० कृ०) [सम्+नि+धा+क्त] 1 निकट रक्खा गया, पास पड़ा हुआ, निकटस्थ, सटा हुआ, पड़ोस का श० ४ 2 निकट, समीप, नजदीक 3 उपस्थित—अपि सन्निहितोऽत्र कृतपतिः—श० १. हृदयसन्निहिते मा० ३।२० 4 जमाया हुआ, रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5 उद्यत, तत्पर मुद्रा० १ 6 ठहरा हुआ, अन्तर्वर्ती। सम०—अदूर (वि०) जिसका विनाश निकट ही हो, अपरिणतुर नश्वर अन्यायी काय सन्निहितापाय—पञ्च० २।१७७।

सन्न्यसनम् [सम्+नि+अस्+ल्युट्] 1 त्याग, (हविष्यान्न डाल देना 2 पूर्ण वैराग्य, विरक्ति न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति भग० ३।४ 3 सौंपना, सुपुर्द करना।

सन्न्यस्त (भू० क० कृ०) [सम्+नि+अस्+क्त] 1 डाला हुआ, नीचे रक्खा हुआ 2 जमा किया हुआ 3 सौंपा हुआ, सुपुर्द किया हुआ 4 एक ओर डाला, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] 1 छोड़ना, त्याग करना 2 सांसारिक विषयों तथा अनुरागों से पूर्ण वैराग्य, सांसारिक कार्यकलापों का परित्याग, भग० ६।२, १८।२, मनु० १।११४, ५।१०८ 3 धरोहर, निक्षेप 4 खेल में हार स्वीकार करना 5 शरीर त्यागना, मृत्यु 6 जटाधारी, वानप्रस्थ।

सन्न्यासिन् (पु०) [सम्+नि+अस्+णिनि] 1 जो त्याग देता और जमा कर देता है 2 जो संसार और इसकी सांसारिकताओं का पूर्णतः त्याग कर देता है,

वैरागी, चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण जेय स नित्यसन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति भग० ५।३ 3. भोजन का त्याग करने वाला, उपवासकर, --महि० ७।७६ ।

सप् (स्वा० पर० सपति) 1 सम्मान करना, पूजा करना 2 संबंध जोड़ना ।

सपक्ष (वि०) [सह पक्षेण--ब० स०] 1 पंखों वाला, डैनों वाला 2 पक्षवाला, दलवाला 3 एक ही पक्ष या दल का 4 बन्धु, समान, सदृश--(आल०) दलद्-ग्राह्यानिर्यद्वमभारसपक्षा भणितिरम भामि० २।७७ 5 जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान हो, ---क्षः 1 समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती, हिमायती 2 मजलीय रिश्तेदार--मालवि० ४ 3 (तर्क० में) साध्यपक्ष का दृष्टान्त, समान उदाहरण--निश्चित-साध्यवान् सपक्ष तर्क० ।

सपत्न [सह एकार्थं पतति पत् + न, सहस्य स] बन्धु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी -रघु० ९।८ ।

सपत्नी [समानं पतिं यस्याः ब० स० ङीप्, न आदेशः] 1 प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी गृहिणी, सौत (एक ही पति की दूसरी पत्नी)- दिक्ष सपत्नी भव दक्षिणस्याः रघु० ६।६३, १४।८६ ।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी + कप्] पत्नी सहित ।

सपत्राकरणम् [सह पत्त्रेण सपत्र + आच् + कृ + ल्युट्] 1 इस प्रकार बाण मारना जिससे कि बाण का पूरा पंखदार भाग शरीर में घुस जाय 2 अत्यंत पीड़ाकारक तु० निष्पत्राकरण ।

सपत्राकृति (स्त्री०) [सपत्र + आच् + कृ + क्तिन्] वेदना, पीड़ा, अत्यंत कष्ट या मनस्ताप ।

सपदि (अव्य०) [सह + पद् + इन् सहस्य सः] तुरन्त, क्षण भर में, फौरन, तत्काल सपदि सदनानलो दहति मम मानसम् गीत० १०, कु० २।७६, ६।४ ।

सपर्या [सपर् + यक् + अ + टाप्] 1. पूजा, अर्चना, सम्मान --सोऽहं सपर्यांविधिभाजनेन रघु० ५।२२, २।२२, ११।३५, १३।४६, शि० १।१४ 2 सेवा, परिचर्या ।

सपाद (वि०) [सहपादेन ब० स०] 1. पैरों वाला 2 एक चौथाई बढ़ा हुआ ।

सपिण्डः [समानः पिण्डो मूलपुरुषो निवापो वा यस्य ब० स०] समान पितरों को पिंडदान देने वाला, एक समान पितरों को पिण्डदान देने के कारण संबंधी, बन्धु याज्ञ० १।५२, मनु० २।२४७, ५।५९ ।

सपिण्डीकरणम् [सपिण्ड + च्वि + कृ + ल्युट्] समान पितरों के सम्मान में किया जाने वाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान, (यह श्राद्ध किसी बन्धुबांधव की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् किया जाता है, परन्तु आजकल बहुधा मृत्यु से बारहवें दिन ही किया जाने लगा है) ।

सपीतिः (स्त्री०) [सह एकत्र पीतिः पानम्--या + क्तिन्] साथ साथ पीना, मिलकर पीना, सहपान ।

सप्तक (वि०) (स्त्री--का, की) [सप्तानां समूहः सप्तन् + कन्] 1 जिसमें सात सम्मिलित हों 2 सात 3 सातवां,---कम् सात वस्तुओं का समूह (कविता आदि का) ।

सप्तकी [सप्तभिः स्वरैः इव कायति शब्दायते सप्तन् + कै + क + ङीप्] स्त्री की करधनी या मेखला ।

सप्तगतिः (स्त्री०) [सप्तगुणिता दशगतिः --त०] सत्तर, °तम (वि०) सत्तरवाँ ।

सप्तधा (अव्य०) [सप्तन् + धाच्] सात गुण, सात प्रकार से ।

सप्तन् (ब० वि०) [सदैव बहुवचनान्त--कर्तृ० व कर्म० सप्त [सप् + तनिन्] सात । सम० अङ्ग (वि०) दे० नी० सप्तप्रकृति, अक्षिक (वि०) 1 सात जिह्वा या लौ वाला 2 बुरी आँख वाला, अक्षुण्ण दृष्टि वाला, (पुं०) 1 अग्नि 2 शनि, अशीतिः (स्त्री०) सतासी, अहन् सनकीन, अश्व सूर्य, °आहन् सूर्य,--अहः सात दिन अर्थात् एक हफ्ता, आत्मन् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, ऋषि (सप्तर्षि) (प० व० व०) 1 सात ऋषि, अर्थात् मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ 2 सप्तर्षि नामक नक्षत्रपुंज (सात तारों का समूह जो उपर्युक्त सात ऋषि कहे जाते हैं), चत्वारिंशत् (स्त्री०) सैंतालिस,--जिह्वः, -ज्वालः आग,--तन्तु. यज्ञ शि० १४।९, त्रिंशत् (स्त्री०) सैंतीस,--द्वीप (वि०) सप्तद्वीप,--धातवः अग्नि द्वारा पृथ्वी का विशेषण, धातु (पुं० ब० व०) शरीर के संघटक सात मूलतत्त्व अर्थात् अन्नरस, रुधिर, मांस, चर्बी, हड्डी, मज्जा, वीर्य, नवतिः (स्त्री०) सतानवे,--पदार्थशास्त्रम् ज्योतिष का एक रेखाचित्र जिसके द्वारा वर्षाविषयक भविष्यकथन किया जाता है,--पर्णः (इसी प्रकार सप्तच्छदः, सप्तपत्र) एक वृक्ष का नाम, पदी विवाह में सात पग चलना (दूल्हा और दुलहिन विवाह संस्कार के अवसर पर सात पग मिलकर चलते हैं---इसके बाद विवाहसम्बन्ध अटूट हो जाता है), प्रकृतिः (स्त्री० ब० व०) राज्य के सात संघटक अंग---स्वाम्यमात्य-सुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च अमर०, दे० 'प्रकृति' भी, -प्लक्षः सिरस का पेड़, भूमिक, भौम (वि०) सातमंजिल ऊँचा (जैसे कि महल),---रात्रम् सात रात का समय, विंशतिः (स्त्री०) सत्ताईस, विध (वि०) सातगुना, सात प्रकार का,---शतम् 1 सात सौ 2. एक सौ सात (सौ) सात सौ श्लोकों का संग्रह,

--सप्ति सूर्य का विशेषण --सर्वैरुद्भं समग्रैस्त्वमिव तृषगणैर्दीप्यते सप्तसप्ति - मालवि० २।१३ ।

सप्तम (वि०) (स्त्री०-मी) [सप्तानां पूरणः सप्तन् +डट्, मट्] सातवां, मी (स्त्री०) 1 सातवीं विभक्ति (व्या० में) अधिकरण कारक 2 चान्द्रवर्ष के किसी पक्ष का सातवां दिन ।

सप्तला (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली ।

सप्ति [सप् + ति] 1 जुआ 2 घोड़ा—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् सुभा० --दे० सप्तसप्ति भी ।

सप्रणय (वि०) [सह प्रणयेन ब० स०] स्नेही, मित्रतापूर्ण ।

सप्रत्यय (वि०) [प्रत्ययेन सह ब० स०] 1 विश्वास रखने वाला 2 निश्चित, विश्वस्त ।

सफर-री [सप् अरन् पृषो० पस्य फ] छोटी चमकीली मछली नु० शकर ।

सफल (वि०) [सहफलेन ब० स०] 1 फल से पूर्ण फल देने वाला उपजाऊ (आल० से भी) 2 सम्पन्न पूरा किया गया, कामयाब ।

सबन्धु (वि०) [सह बन्धुना-ब० स०] 1 जिसके साथ निकट सम्बन्ध हो 2 मित्रतापूर्ण मित्रता के नाते में बंधा हुआ, धु रिश्तेदार जैसा साथी ।

सबलि [सहबलिना ब० स०] सायंकालीन अल्पाहार या गोधूलिवेला ।

सबाध (वि०) [सह बाधया ब० स०] 1 अत्यावश्यक पीड़ादायक ।

सब्रह्मचर्यम् [समान ब्रह्मचर्यम् सहस्य सः] सहपाठिता (एक ही गुरु के शिष्य होने के कारण) ।

सब्रह्मचारिन् (पु०) [समान ब्रह्म वेदग्रहणकालीन व्रत चरति चर् + णिनि समानस्य सः] 1 सहपाठी (समान अध्ययन या समान साधना करने वाला) 2 सहयोगी, सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति दुःखसब्रह्मचारिणी वर्तिका कथं गता का०, हे दुःखसब्रह्मचारिन् यदि न गम्यते तेन धातुमिच्छामि - मुद्रा० ६ ।

सभा [सह भान्ति अर्थाद्यर्थमत्रेति भा+क+टाप् पृषो०] 1 जनसभा, परिषद्, गुप्तसभा परिषत्सभा कार्त्तिकेयान् - पंच० १, न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः -हि० १ 2 गोष्ठी, समाज, सम्मिलन वर्ग संस्था 3 परिषद्-कक्ष या सभा भवन 4 न्यायालय 5 सार्वजनिक जनसभा 6 जुआ खाना 7 कोई भी स्थान जहां लोग प्रायः आते जाते हों । सम० **आस्तार** 1 सभा में सहायक 2 सभासद्, **पति** सभा का अध्यक्ष, सभापति 2 जुए का अड्डा चलाने वाला, **पूजा** दर्शकों के प्रति सम्मान प्रदर्शन, **सद्** (पु०) 1 किसी सभा या क्लब में सहायक 2 सभासद्, मेम्बर, 3 अदालत की पंचायत का सदस्य, जूरी का सदस्य ।

सभाज् (चुरा० उभ० सभाजयति ते) 1 अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना, श्रद्धाजलि अर्पित करना, बधाई देना स्नेहात्सभाजयितुमैच्छत्, उत्तर० १।७, शि० १३।१८, शा० ५ 2 सम्मान करना, पूजा करना आदर करना 3 प्रसन्न करना, तृप्त करना 4 सुन्दर बनाना, अलंकृत करना, सजाना --उत्तर० ४।१९ 5 प्रदर्शन करना ।

सभाजनम् [सभाज्+ल्युट्] 1 (क) प्रणाम करना, अभिवादन करना, सम्मानित करना, पूजा करना --शि० १३।१४ (ख) स्वागत करना, बधाई देना रघु० १३।४२ १४।१८ 2 शिष्टता, शिष्टाचार, विनम्रता 3 सेवा ।

सभाजन [सह भावनेन ब० स०] शिव का नाम ।

सभि (भी) क [सभा धूत प्रयोजनमस्य ठक] जुए का अड्डा चलाने वाला, जुआ खेलाने वाला अयमस्माकं पूर्वसभिको माथुर इव लक्ष्यते मृच्छ० ३, याज्ञ० २।१३९ ।

सभ्य (वि०) [सभायां साधुः - यत्] 1 सभा में सदैव रखने वाला 2 समाज के योग्य 3 संस्कृत, परिष्कृत, विनीत 4 सुशील विनम्र शिष्ट रघु० १।५५, कु० ७।२९ 5 विश्वस्त, विश्वसनीय ईमानदार स्मृ० 1 मुख्यनिदर्शक 2 सभासद् 3 सभानिवास कुल में उत्पन्न 4 जुआ-खाने का संचालक 5 द्यूतगृह के संचालक का सेवक ।

सभ्यता त्व [सभ्य+तल + टाप् त्व वा] विनम्रता, सुशीलता कुलीनता ।

सम् I (स्वा० पर० समति) 1 विक्षुब्ध या अव्यवस्थित होना 2 विक्षुब्ध या अव्यवस्थित न होना ।

II (चुरा० उभ० समयति ते) विक्षुब्ध होना ।

सम् (अव्य०) [सो+मक्] धातु या कृदन्त शब्दों से पूर्व उपसर्ग के रूप में लगा कर इसका निम्नांकित अर्थ है (क) के साथ मिल कर, साथ साथ यथा संगम, संभाषण, संघ, संयुज् आदि में (ख) कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है और इसका अर्थ होता है 1 बहुत, बिल्कुल, खूब, पूर्णतः, अत्यन्त —यथा संतृप्त संताप, संन्यस्, संन्यास, संताप आदि 2 संज्ञा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका अर्थ है की भांति, समान, एक जैसा यथा 'समर्थ' में 3 कभी कभी इसका अर्थ होता है निकट, पूर्व, जैसा कि 'समज्' में ।

सम (वि०) [सम् + अच्] 1 बड़ी समकक्ष 2 समान, जैसा कि 'समलोष्टकाञ्चन' में रघु० ८।२१, भग० २।३८ 3 के समान, जैसा हो, मिलता-जुलता, करण० या सम्ब० के साथ अथवा समास में,—गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः —सुभा०—कु० ३।१२, २३,

4 समान, समतल चौरस समदेशवर्तिनस्ते न दुरासदो रघिपतिः ह० १ 5 सममत्या, 6 निष्पक्ष न्याययुक्त 7 न्यायोचित, ईमानदार, खरा 8 भला, सद्गुण सपन्न 9 सामान्य, मामूली 10 मध्यवर्ती, बीच का 11 सीधा 12 उपयुक्त सुविधाजनक 13 तटस्थ, अचल, निरादर 14 सब, प्रत्येक 15 सारा, पूर्ण, समस्त, पूरा —मम् समतल मैदान, चौरस देश कि० ९।११,—मम् (अव्य०) 1 से, के साथ, मिलकर, सहित, (करण० के साथ) आहो निवन्यनि सम हरिणाङ्गनाभि - शि० १।२७, रघु० ३।२५, ८।६३, १६।७२ 2 तब समान यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११ 3 के समान, इसी प्रकार, इसी रीति से रघु० १।७८ ' पूर्णत 5 युगपत्, एकही साथ, सब मिल कर, उसी समय साथ साथ—तद यथा यत्र धनैर्मया च स्वदिप्रयोगाश्च समं विसृष्टम् रघु० १२।८६ ८।८, १०।६० १४।१।

सम०—अंश समान भाग हारिन् (पु०) सहदायभागी अक्षर (वि०) समानाक्षर,—आचार 1 समान या एक जैसा आचरण 2 उचित व्यवहार, -उडुपम् आधा दूध और आधा पानी मिलाकर बनाई गई खाद्य सामग्री उदाहरण उपमा अलंकार का एक भेद कन्या (सम० + उद्वह् + ण्यत् + टाप्) विवाह के योग्य) कर्ण जैसा बनावट में विशेषकर कर्ण एक समान हो, कार्य वही समय या क्षण, कम् (अव्य०) उसी समय समान कालीन वि०) समवयस्क, समसामयिक, कोण रेखा, माप, क्षेत्रम् ज्योति० में) नक्षत्रों के एक विशेषक्रम का विशेषण खात समान खराई, समानान्तर चतुर्भुजों से बनी हुई आकृति गत्वरक एक जैसे पदार्थों से बना खण्ड, चतुरस्र (वि०) वर्ग (सम् समान भुज चतुष्कोण, चतुर्भुज —अम् त्रिभुजाकार समचतुर्भुज छिन्न (वि०) 1 समान-रूप एक समान प्रवाहवाला 2 उदासीन छेद, -छेदन (वि०) वह जिसके हर समान हो -जाति (वि०) समान जाति या वर्ग का,—जानु ज्योति --त्रिभुज (सम् समभुज त्रिकोण, दर्शन —दर्शिन् (वि०) समान रूप से देखने वाला निष्पक्ष, --विद्याविनयसपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन —भग० ५।१८ दुःख (वि०) दूसरों के दुःख को अपने जैसा दुःख समझने वाला, (दूसरों में) सहानुभूति रखने वाला, दुःख में साथी, कु० ४।४, 'सुख (वि०) सुख और दुःख का साथी श० ३।१२, दृश् दृष्टि (वि०) पक्षपातरहित बुद्धि (वि०) 1 निष्पक्ष 2 तटस्थ, निःसंग, भाव (वि०) एक-सी प्रकृति या गुण रखने वाला (क) समानता, तुल्यता, मण्डलम् (उप० में) मुख्य खड़ी रेखा,—मध्य (वि०) एक समान मूल वाले रंजित (वि०) हलके रंग वाला,- रेखः एक प्रकार का रोगविशेष, रेख (वि०) सीधा, प्रकृत्या ऋजुक तदपि समरेख नयनयो —भ० १।९, लम्बः —बम् विषम चतुर्भुज वर्णः एक ही जाति का, —वर्तिन् (वि०) समभावापन्न, पक्षपातरहित (पु०) मृत्यु का देवता, यमराज, वृत्तम् 1 वह छंद जिसके चारों चरण समान हों 2 दे० 'सममंडल',—वृत्ति (वि०) धीर, गंभीर --वेदः बीच के दर्जे की गहराई,

शोधनम् समीकरण के प्रश्नों में एक ही राशि का दोनों ओर घटाना समशोधकलन, संधि: एक समान मात्रा पर शान्तिस्थापन, सुप्तिः (स्त्री०) विश्वनिद्रा (कल्पान्त के अवसर पर समस्त चराचर विश्वनिद्रा में विलीन हो जाते हैं),—स्थ (वि०) 1 बराबर, एक रूप का 2 समतल, हमवार 3 समान,—स्थलम् समतल भूमि।

समक्ष (वि०) [अक्ष्णो समीपम् समक्ष + अच्] आँखों के सामने मौजूद दर्शनीय वर्तमान,—क्षम् (अव्य०) की उपस्थिति में, देखते देखते आँखों के सामने कु० ५।१।

समग्र (वि०) [सम सकल यथा स्यात्तथागृह्यत- सम् + ग्रह् + ड] सब, पूर्ण, समस्त पूरा—मालवि० २।१३।

समङ्गा [सम् + अञ्ज् + घ + टाप्] मजिष्ठा मजीठ।

समज [सम् अज् + अप्] 1 पशुओं का झुण्ड, पक्षियों का दल बड़ा रेवड 2 मूर्खों की मण्डली, जम् समान अरण्य।

समज्या [सम् + अज् + क्यप् + टाप्] 1 सम्मिलन, सभा 2 ख्याति, यश कीर्ति।

समञ्जस (वि०) [सम्यक् अञ्ज औचित्यं यत्र ब० स०] 1 उचित, तर्कसंगत, ठीक, योग्य 2 सही, सच, यथार्थ 3 स्पष्ट, बोधगम्य जैसा कि समञ्जस, सद्गुणसपन्न, भला, न्यायोचित —भूताभिरुद्भव समञ्जस जनम् कि० १०।१२ 5 अभ्यस्त, अनुभूत 6 स्वस्थ सम् 1 औचित्य, योग्यता 2 यथार्थता 3 मध्यवर्ती सदाहो।

समता, त्वम् [सम- तल् + टाप्, त्व-वा] 1 एकसापन, एकरूपता 2 समानता, एक जैसापन 3 बराबरी 4 निष्पक्षता, न्याय्यता, सज्जनों सी, समान आचरण करना मनु० ९।२१८ 5 सन्तुलन 6 पूर्णता 7 सामान्यता 8 समानता।

समतिक्रम [सम् + अति + क्रम् + घञ्] उल्लंघन, भूल।

समतीत (वि०) [सम् + अति इ + क्त] बीता हुआ गया हुआ रघु० ८।७८।

समद (वि०) [सह मदेन ब० स०] 1. नशे में चूर,

भीषण 2. मद के कारण मस्त 3 प्रणयोन्मत्त,—उत्तर० २।२० ।

समधिक (वि०) [सम्यक् अधिक—प्रा० स०] 1 अतिशय 2 अत्यत अधिक पुष्कल, बहुत अधिक -उत्तर० ४, **कम्** (अव्य०) अत्यन, अधिकता के साथ ।

समधिगमनम् [सम्+अधि+गम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, पार कर लेना, जीत लेना ।

समन्व (वि०) [समानः अध्वा यस्य—ब० स०] साथ यात्रा करने वाला ।

समनुज्ञानम् [सम्+अनु+ज्ञा+ल्युट्] 1 हामी भरना, स्वीकृति देना 2 पूर्ण अनुमति, पूरी सहमति ।

समन्त (वि०) [सम्यक् अन्तो यत्र ब० स०] 1 हर दिशा में मौजूद, विश्वव्यापी 2 पूर्ण, समस्त, स. सीमा, हद, मर्यादा (**समन्तम्, समन्तत:, समन्तात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं 'सब ओर से' 'चहुँओर' 'सब ओर' पूर्णरूप से, 'पूरी तरह से' । सम० **कुशा** घूहर, स्तूही, —**पञ्चकम्** कुरुक्षेत्र या उसके निकट का प्रदेश—**वेणी०** ६, **भद्र:** बुद्ध भगवान्,—**भुज्** (पु०) आग ।

समन्यु (वि०) [सह मन्युना ब० स०] 1 शोकाकुल 2 रोषपूर्ण, रुष्ट ।

समन्वय [सम्+अनु+इ+अच्] 1 नियमित परंपरा या क्रम 2 सबद्ध अनुक्रम, पारस्परिक सम्बन्ध, तात्पर्य, तत्तु समन्वयात् ब्रह्म० १।१।४, न च तदगताना पदाना अन्यस्वरूपविषये निश्चिते समन्वये ऽर्थान्तरकल्पना युक्ता शारी० 3 संयोग ।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+ल्लु+क्त] 1 सबद्ध, प्राकृतिक क्रम में आबद्ध 2 अनुगत 3 सहित, युक्त, भरा हुआ 4 ग्रस्त ।

समभिप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] 1 बाढ़ग्रस्त 2 ग्रहण ग्रस्त ।

समभिव्याहार [सम्+अभि+वि+आ+हृ+घञ्] 1 मिलाकर उल्लेख करना 2 साहचर्य, साथ 3 शब्द का साहचर्य या सामीप्य, जब कि उस (शब्द) का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो ।

समभिसरणम् [सम्+अभि+सृ+ल्युट्] 1 पहुँचना 2 खोज करना, कामना करना ।

समभिहार: [सम्+अभि+हृ+घञ्] 1 साथ-साथ ले जाना 2 आवृत्ति 3 अतिरिक्त, फालतू ।

समभ्यर्चनम् [सम्+अभि+अर्च्+ल्युट्] पूजा करना, अर्चना करना ।

समभ्याहार: [सम्+अभि+आ+हृ+घञ्] साथ रहना, साहचर्य ।

समय [सम्+इ+अच्] 1 काल 2 अवसर, मौका 3 योग्य काल, उपयुक्त काल, या ऋतु, ठीक वक्त कु० ३।२५ 4 करार, समझौता, संविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथ समयात्—रघु० ५ 5 रूढि, प्रथा 6 चालचलन का सम्मानित नियम, संस्कार, लोकप्रचलन कि० १।२८, उत्तर० १ 7 कवियों का अभिसमय (उदा० बादलों के दर्शन से प्रेमी और प्रेमिका का वियोग हो जाता है) 8 नियुक्ति, स्थिरीकरण 9 अनुबंध, शर्त—विक्रम० ५ 10 कानून नियम, विनियम याज्ञ० ३।१९ 11 निदेश, आदेश, निर्देश, विधि 12 आपत्काल, संकटकाल 13 शपथ 14 संकेत, इंगित, इशारा 15 सीमा, हद 16 प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धान्त, मतवाद बौद्ध,° वैशेषिक° 17 अन्त, उपसंहार, समाप्ति 18 सफलता, समृद्धि 19 कष्ट का अन्त । सम०—**अध्युषितम्** ऐसा समय जब कि न सूर्य दिखाई देता है न तारे **अनुवर्तिन्** (वि०) मानी हुई प्रथा का पालन करने वाला,—**अनुसारेण, उचितम्** (अव्य०) अवसर के अनुकूल जैसा मौका हो,—**आचार** लोकप्रचलित चलन, मानी हुई प्रथा, **क्रिया** करार करना,—**परिरक्षणम्** किसी समझौते का पालन करना, संधि या करार—न समयपरिरक्षण क्षम ति—कि० १।४५, **व्यतिक्रम:** प्रतिज्ञा तोड़ना, ठीक का उल्लंघन या भग,—**व्यतिक्रमिन्** (वि०) प्रतिज्ञा या वचन भग करने वाला ।

समया (अव्य०) [सम् इ आ] 1 ठीक, ऋतु के अनुकूल, ठीक समय पर 2 निश्चित समय पर 3 बीच में के अन्दर, (दो के) बीच में 4 निकट (कर्म० के साथ) समया सौधभित्तिम्—दश०, शि० ६।३३, १५।९, मनु० ४।८ ।

समर:, रम [सम्+ऋ+अप्] संग्राम, युद्ध, लड़ाई, कर्णादयोऽपि समरान्पराङ्मुखीभवन्ति वेणी० ३ । सम० **उद्देश:**—**भूमि** रणक्षेत्र, **मूर्धन्** (पु०) शिरस् (नपु०) युद्ध का अग्रभाग ।

समर्चनम् [सम्+अर्च्+ल्युट्] पूजा, अर्चना, आराधना ।

समर्द (वि०) [सम्+अर्द्+क्त] 1 कष्टग्रस्त, पीड़ित, घायल 2 नष्ट निर्वेतित ।

समर्थ (वि०) [सम्+अर्थ्+अच्] 1 मजबूत, शक्तिशाली 2. सक्षम, अभ्यनुज्ञात, पात्र, योग्यताप्राप्त प्रतिग्रहसमर्थोऽपि—मनु० ४।१८६, याज्ञ० १।२१३ 3 योग्य, उपयुक्त, उचित तदनुग्रहणमेव साधव. प्रत्यपद्यन्त समर्थमस्तम्—रघु० ११।७९ 4 होगए या समुचित बनाया हुआ, तैयार किया हुआ 5 समानार्थी 6 सार्थक 7 समुचित उद्देश्य या बल रखने वाला, अतिबलशाली 8 पास-पास विद्यमान 9 अर्थवत् सबद्ध, -र्थ: 1, (व्या० में) सार्थक शब्द 2 सार्थक वाक्य में मिला कर रक्खे हुए शब्दों की संसक्ति ।

समर्घकम् [सम्+अर्घ्+क्वुन्] अमरूद का फल।

समर्थनम् [सम्+अर्थ्+ल्युट्] 1. संस्थापन, पुष्टि करना, ताईद करना 2 रक्षा करना, सहारा देना, न्यायसंगत सिद्ध करना—स्थितेष्वेतत् समर्थनम्—काव्य० ७ 3 अवधारण करना, हिमायत करना 4 अनुमान लगाना, विचार करना, चिन्तन करना 5 विचार-विमर्श, निर्धारण, किसी वस्तु के औचित्यानौचित्य का निर्णय करना 6 पर्याप्तता, अनुकूलता, बल, दृढ़ता 7 ऊर्जा, धैर्य 8 भेदभाव दूर कर फिर समझौता करना, कलह दूर करना 9 आक्षेप।

समर्थक (वि०) [सम्+अर्थ्+ण्वुल्] 1 वरदाता 2 समृद्ध करने वाला।

समर्पणम् [सम्+अर्प्+ल्युट्] देना, हस्तांतरण करना, सौंपना, हवाले करना।

समर्पित (वि०) [सह समर्पितया ब० स०] 1 सौंपित, दिया हुआ 2 निकटवर्ती, समीपवर्ती 3 शुद्धाचारी, औचित्य की सीमा के अन्दर रहने वाला 4 सम्मान-पूर्ण, शिष्ट।

समम (वि०) [समेन सह ब० स०] 1 मेला, नत्था, मिलित, अविषम 2 पापपूर्ण, अन्य दुरीय, अन्य जिन्हा।

समवकार: [सम्+अव+कृ+घञ्] नाटक का एक भेद (सा० द० ५१५ में निम्नांकित परिभाषा दी गई है मुख समवकारे तु स्यात् देवासुरसमाश्रयम्। समवेतो त्रिभिरङ्कैस्तु त्रयोऽङ्काः॥)

समवतार: [सम्+अव+तृ+घञ्] 1 उतार 2. घाट-वहां से किसी नदी या पुण्यस्नानतीर्थ में उतरा जाय —समवतारसर्वस्वसर्वस्वटं —कि० ५।७।

समवस्था [समा तुल्या अवस्था यस्याः सम्+अव+स्था+अङ्+टाप्] 1 निश्चित अवस्था 2 समान दशा या स्थिति रा० ४ 3. अवस्था या दशा—रघु० १९।५०, मालवि० ४।७।

समवस्थित (भू० क० कृ०) [सम्+अव+स्था+क्त] 1 स्थिर रहता हुआ 2. स्थिर।

समवस्थिति: (स्त्री०) [सम्+अव+स्था+क्तिन्] दशा, अवस्थिति।

समवाय: [सम्+अव+इ+अच्] 1 सम्मिश्रण, मिलाप, संयोग, समष्टि, संग्रह—अवयविनयमानामेकैकशश्चेवामा-यतन किमुत समवाय.—का०, बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जय —सुभा० 2. सभा, समुच्चय, राशि 3 अनिष्ट संयोग, संघटित 4 (वैशे० में) प्रगाढ़ मिलाप, अविच्छिन्न तथा अनिवार्य संयोग, अनेक सजातता या एक वस्तु का दूसरी में अन्तर्भाव (जैसे पदार्थ और गुण, अंगी और अंग), वैशेषिकों के सात पदार्थों में से एक।

समवायिन् (वि०) [समवाय+इनि] 1. घनिष्ठ रूप से संबद्ध 2. समुच्चयबोधक, संग्रहवाचक। सम०—कारणम् अभेद कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित तीन कारणों में से एक)।

समवेत (भू० क० कृ०) [सम्+अव+इ+क्त] 1. एकत्र आये हुए, मिले हुए, जुड़े हुए, सम्मिलित 2. घनिष्ठता के साथ संबद्ध, अन्तर्भूत, अनेक रूप से संयुक्त 3. बड़ी संख्या में समाविष्ट या सम्मिलित।

समवेति (स्त्री०) [सम्+अव्+क्तिन्] समुच्चयात्मक व्याप्ति, एक जैसे अंगों का समूह, अवयवों की द्रव्य-तत्त्वता से युक्त अवयवों का पुंज है (विप० व्यष्टि) समष्टिरीश सर्वेषां स्वातन्त्र्यादाश्रयत्वतः। तद-भावात्तदन्ये तु आश्रये व्यष्टिसंज्ञया॥ पंच०।

समवेशनम् [सम्+अव्+ल्युट्] 1 एक साथ मिलाना, सम्मिश्रण 2 संयुक्त करना, समस्त (समास युक्त) शब्दों का निर्माण 3. संकुचित करना।

समवेत (भू० क० कृ०) [सम्+अव्+क्त] 1. एक जगह इकट्ठा हुआ, सम्मिलित 2. संयुक्त 3. किसी पदार्थ में पूर्णतः व्याप्त 4. संक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5. ठोस, पूर्ण, पूरा।

समवेत्य [सम्+अव्+क्त्वा+ल्यप्] 1 पूर्ण करने के लिए दिया जाने वाला अंश का चरण, कविता का वह भाग जो पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जाय—कः कवितां का विषया समवेत्य—सुभा०। इस प्रकार 'वाक्यपदीय समवेत्य' 'वाक्यकोटिमधिरूढवत्' 'पुराणादु पुरोधाय' पठितव्यो नेतु, सर्वे पुराः स्त्रियो' से पूर्ण हो जाती है) 2. (अतः) अधूरे को पूरा करना—वीरोद्यमा सुकृता कदाचित्कर्मीयमभ्यर्थनमु समवेत्य—नै० ७।८२, (समवेत्या=समवेत्य)।

समा [सम्+अम्+टाप्] (प्रायः ब० व० में प्रयोग; परन्तु पाणिनि द्वारा एक वचन में भी प्रयुक्त—उषा० समाम्—भा० ५।२।१२) वर्ष,—तेषामहो परिगणिताः समा कथंचित् - रघु० ८।९२, सर्वोत्कृष्टदीर्घेण वर्ष प्राह्यवल्क्यसमाः—१२।६, १९।४, महावीर० ४।४१, अव्य०—से, साथ मिला कर।

समाकलयति [समां कथां विधत्ते प्रयुक्ते—क्त प्रत्ययेन वि०] वह पात्र जो प्रविदूषक आती है और चकड़ा देती है।

समाकर्षिन् (वि०) [स्त्री०—णी] [सम्+आ+कृष्+णिनि] 1. आकर्षक 2. दूर तक धनुष खींचने वाला, या प्रहार करने वाला, पुं० प्रक्षुण्ण योद्धा, दूर तक खींचने वाले धनुष।

समाकुल (वि०) [सम्यक् आकुलः - प्रा० स०] 1. भरा हुआ, आकीर्ण, भीड़-भाड़ से युक्त 2. संकुल, व्याप्त हुआ, उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ।

समाकृति [सम्+आ+कृ+क्तिन्] 1 रूप, शैली, स्थिति 2 नाम, अभिधान।

समवधत्त (भू० क० कृ०) [सम्+आ+धा+क्त] 1. छिड़काव लगाया हुआ, गिना हुआ, जोड़ा हुआ 2. पूर्णतः वर्जित, उद्घोषित, प्रकथित 3. विख्यात, प्रसिद्ध।

समवाप्त (भू० क० कृ०) [सम्+आ+आप्+क्त] 1 साथ साथ आया हुआ, मिला हुआ, सम्मिलित, संयुक्त 2 पहुँचा हुआ 3 जो संयुक्त अवस्था में हो।

समवगतिः [सम्+आ+गम्+क्तिन्] 1 साथ साथ आना, मेल, मिलाप 2. पहुँचना, उपगमन 3 समान दशा या प्रगति।

समवायः [सम्+आ+गम्+घञ्] 1 मेल, मिलन, मुठभेड़, सम्मिश्रण,—अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः'—काव्य० ७ रघु० ८।४, ९२, १९।१६ 2 सहवास, साहचर्य, संगति जैसा कि 'सत्समागम' में 3 उपगमन, पहुँच 4 (ज्योति० में) संयोग।

समाघातः [सम्+आ+हन्+घञ्] 1 वध, हत्या 2 संग्राम, युद्ध।

समाचमनम् [सम्+आ+चि+ल्युट्] सञ्चयन, बीनना।

समाचरणम् [सम्+आ+चर्+ल्युट्] अभ्यास करना पालन करना, व्यवहार करना।

समाचारः [सम्+आ+चर्+घञ्] 1 प्रगमन, गति 2 अभ्यास, आचरण, व्यवहार 3 सदाचार या अच्छा चालचलन 4 खबर, सूचना, विवरण, वार्ता।

समाजः [सम्+अज्+घञ्] 1. सभा, मिलन, सम्मिलन —विशेषतः सर्वविद्या समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम् —भर्तृ० २।७ 2 मण्डल, गोष्ठी, समिति या परिषद् 3 संख्या, समुच्चय, संग्रह 4 दल, आमोद-प्रमोद विषयक मिलन 5 हाथी।

समाजिकः [समाज+ठक्] सभासद् दे० 'सामाजिक'।

समाज्ञा [सम्+आ+ज्ञा+अङ्+टाप्] यश, कीर्ति।

समादानम् [सम्+आ+दा+ल्युट्] 1 पूर्णतः लेना 2 उपयुक्त उपहार लेना 3 जैन सम्प्रदाय का नित्य-कृत्य।

समादेशः [सम्+आ+दिश्+घञ्] आज्ञा, हुक्म निर्देश निर्देश।

समाधा [सम्+आ+धा+अङ्+टाप्] दे० नी० 'समाधान'।

समाधानम् [सम्+आ+धा+ल्युट्] 1 साथ साथ रखना, मिलाना 2 ब्रह्म के गुणों का मन में चिन्तन करना, 3 भावचिन्तन, गहन मनन 4 एकनिष्ठता 5 स्थैर्य, स्वस्थता, (मन की) शान्ति, सन्तोष —चित्तस्य समाधानम्, कुरु समाधानम् गया० १८ 6 संदेह-निवारण करना, पूर्वपक्ष का उत्तर देना, आक्षेप का उत्तर देना 7 सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 8 (नाट० में) मुख्य घटना जिस पर नाटक की पूर्ण वस्तुकथा अवलम्बित है।

समाधिः [सम्+आ+धा+कि] 1 संग्रह करना, स्वस्थ करना, (मन को) एकाग्र करना 2 भावचिन्तन, किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करना, ब्रह्म-चिन्तन में पूर्णलीनता अर्थात् (योग की आठवीं और अन्तिम अवस्था) आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्ना समाधिभेदप्रभवा भवन्ति कु० ३।४०, ५० मुच्छ० १।१, मनु० ३।७०, रघु०८।७८, शि० ४।५५ 3 एक निष्ठता, मनोनिवेश, मनोयोग तस्या ललनसमाधि (मानसम्) —गीत० 4 तपस्या, धर्मकृत्य, साधना अन्योन्यव्यसमाधिभीरुषु देवानाम् दश० 1 तप समाधि —कु० ३।३४, ५।६ १।५२, ५।४० 5 साथ मिलाना, संयोजन, सम्मिश्रण, संग्रह न वेद्मि विदर्भे तव महामुने समाधिना - रघु० १।२९ 6 पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 7 निष्पन्नता 8 अंगीकार, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 9 प्रतिदान 10 पूर्ति, सम्पन्नता 11 अत्यन्त कठिनाइयों में धैर्य धारण करना 12 असम्भव बात के लिये प्रयत्न करना 13 (दुर्भिक्ष के अवसर पर) अनाज आदि का संचय करना अन्न संचय करना 14 संकलन, शव प्रकोष्ठ 15 संगठन का जोड़, संहनन की विशेष अवस्था - कि० १६।२१ 16 (अलं० में) एक अलंकार जिसकी परिभाषा दण्डी ने निम्नांकित परिभाषा की है समाधिः सुकर कार्य कारणान्तरयोगात् काव्य० १०, द० सा० द० ६।१० 17 शैली के दस गुणों में से एक द० काव्या० १।९३।

समाध्मात (भू०क०कृ०) [सम्+आ+ध्मा+क्त] 1 फूंक मारा हुआ 2 फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, स्फीत हवा भरा हुआ।

समान (वि०) [सम्+अन्+अण्] 1 वही, तुल्य, सदृश, एक जैसा समानशीलव्यसनेषु सख्यम् सुभा० 2 एक, एकरूप 3 भला, सद्गुणसम्पन्न, न्याय्य 4 सामान्य साधारण 5 सम्मानित, क 1 विष्णु, सुरा 2 पाँच प्राणों में से एक (इसका स्थान नाभि का माना है, तथा पाचन शक्ति के लिये उत्तरदायित्व है) समम् (अव्य०) समान रूप से, सदृश (करण० के साथ) अनलसेन समानमुपार्जनम् —कि० १८।४। समा० अधिकरण (वि०) 1 समान आधार वाला 2 उसी वर्ग या पदार्थ में विद्यमान 3 (व्या० में) एक ही कारक की विभक्ति में युक्त होना (अव्य) 1 वही स्थान या परिस्थिति 2 कारक में समान होना, कारक सम्बन्ध ! अर्थ (जिसमें अनेक सम्मिलित हों), प्रजातीय गुण. अर्थः उसी अर्थ वाला, पर्यायवाची उदकः ऐसा सम्बन्धी जो समान पिण्डों को जल तर्पण के कारण सम्बद्ध है (यह सम्बन्ध सातवीं या ग्यारहवीं पीढ़ी में तेरहवीं या कुछ के अनुसार चौदहवीं

पाठों तक जाता है)—समानोदकभावस्तु निवर्तेताचतुर्दशात् दे० मनु० ५।६०, भी, उदर्यः एक पेट से उत्पन्न, सहोदर भाई,—उपमा एक प्रकार की उपमा दे० काव्या० २।२९, काल—कालीन (वि०) एककालिक, समकालीन गोत्र = सगोत्र, एक ही गोत्र का, तुल्य (वि०) सहानुभूति रखने वाला, वर्णम् (वि० एक ही प्रकार के गुणों से युक्त, सहानुभूतिदर्शक, गुणों को सराहने वाला भा० ३।६, स्वर का वही उच्चग्राम रुचि (वि०) एक सी रुचि वाला।

समानयनम् [सम्+आ+नी+ल्युट्] साथ लाना, संग्रह करना, संचालन।

समाधः [समा आधा यस्मिन् ब० स०] देवताओं के प्रति यज्ञ करना या आहुति देना।

समापत्तिः (स्त्री०) [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1. मिलना, मुठभेड़ 2 दुर्घटना, आकस्मिक घटना, अकस्मात् मुठभेड़ समापत्तिदुष्टेन केनिता दानवेन—विक्रम० १, क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि रघु० ७।२३, कु० ७।७५।

समापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [सम्+आप्+ण्वुल्] समाप्त करने वाला, सम्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला।

समापनम् [सम्+आप्+ल्युट्] 1 पूर्ति, उपसंहार, समाप्ति करना मनु० ५।८८ 2 अभिग्रहण 3 मार डालना, नष्ट करना 4 अनुभाग, अध्याय 5 गहन मनन।

समापन्न (भू० क० कृ०) [सम्+आ+पद्+क्त] 1 प्राप्त, अवाप्त 2 घटित, हुआ 3 आगत, पहुंचा हुआ 4 समाप्त, पूर्ण, सम्पन्न 5 प्रवीण 6 सम्पन्न 7 दुःखी, कष्टग्रस्त 8 वध किया हुआ।

समापादनम् [सम्+आ+पद्+णिच्+ल्युट्] सम्पन्न करना पूरा कर देना।

समाप्त (भू० क० कृ०) [सम्+आप्+क्त] 1 पूर्ण किया हुआ, उपसंहृत पूरा किया हुआ 2 चतुर।

समाप्तालु [समाप्ताय अलति पर्याप्नोति—समाप्त+अल्+अच्] प्रभु, पति।

समाप्तिः (स्त्री०) [सम्+आप्+क्तिन्] 1 अन्त, उपसंहार, पूर्ति, समाप्त करना 2 निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्णता 3 पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना, विवाद को समाप्त करना।

समाप्तिक (वि०) [समाप्ति+ठन्] 1 अन्तिम, समापक 2. समापिका 3 जिसने कोई काम पूरा किया है वः 1 समापक 2 जिसने वेदाध्ययन का पूर्ण पाठक्रम समाप्त कर लिया है।

समाप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त, बाढ़ में डूबा हुआ 2 मरा हुआ।

समाभाषणम् [सम्+आ+भाष्+ल्युट्] समालाप, वार्तालाप रघु० ६।१६।

समाम्नानम् [सम्+आ+म्ना+ल्युट्] 1. आवृत्ति, दुहराना 2 गणना 3 परम्परा प्राप्त पाठ।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+घ] 1. परम्परागत पाठ, अनुश्रुति 2 परम्परागत (शब्द) संग्रह—अम्बष्ठाति पशुसमाम्नाये पठ्यते—उत्तर० ४ 3 साहित्य परम्परा, अनुश्रुति ' पाठ, शब्दावर पाठ, निर्देशन 5. जोड़, समष्टि, संग्रह अक्षरसमाम्नायम् शिक्षा० ५७, (अर्थात् अ से ह तक की वर्णमाला जो शिव की कृपा से पाणिनि को प्रगट हुई)।

समायः [सम्+आ+इ+अच्] 1. पहुँचना, आना 2. दर्शन करना।

समायत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+यम्+क्त] खींचा हुआ, बढ़ाया हुआ, लंबा किया हुआ।

समायुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+आ+युज्+क्त] 1 साथ जोड़ा हुआ, संबद्ध, संयुक्त 2 कृतसंकल्प, संकल्प 3 तैयार किया गया, उद्यत 4 युक्त, संज्ञित, भरा हुआ, सहित, अन्वित 5 जिसको कोई कार्यभार सौंप दिया गया है, नियुक्त किया हुआ।

समायुत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+यु+क्त] 1 संयुक्त, सम्बद्ध, साथ मिलाया हुआ 2 संगृहीत, एकत्र किया हुआ 3 सहित, युक्त, संज्ञित, अन्वित।

समायोगः [सम्+आ+युज्+घञ्] 1 मेल, सम्बन्ध, संयोग 2 तैयारी 3 धनुष पर (बाण) चढ़ाना 4 संग्रह, ढेर, समुच्चय 5 कारण, प्रयोजन, उद्देश्य।

समारम्भः [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1 आरम्भ, शुरू 2 साहसिक कार्य, उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य, काम, कर्म—मध्यमयोक्या समारम्भा तस्य गृह विवेशिरे—रघु० १७।५३, भग० ४।१९ 3 अगरबत्ती।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] 1 संतुष्ट करने का साधन, प्रसन्न करना, खुशी लाद्य भिन्नरुचेर्जनस्य बहुव्यापेक्ष समाराधनम्—मालवि० १।४ 2 सेवा, टहल, - रघु० २।५, १८।१०।

समारोपणम् [सम्+आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1 अवस्थित करना, रखना 2. सौंप देना, हवाले करना।

समारोपित (भू० क० कृ०) [सम्+आ+रुह्+णिच्+क्त पुक्] 1 चढ़ाया हुआ, सवार किया हुआ 2 (धनुष आदि) ताना हुआ—अथता चापे समारोपिते काव्य० १० 3 रक्खा गया, पीछे लगाई गई, ठहराया गया 4. सौंपा गया, हवाले किया गया।

समारोहः [सम्+आ+रुह्+घञ्] 1. चढ़ना, ऊपर जाना 2. सवारी करना 3. संयुक्त होना।

समालम्बनम् [सम्+आ+लम्ब्+ल्युट्] टेक लगाना, सहारा लेना, चिपटे रहना।

समालम्बिन् (वि०) [सम्+आ+लम्ब्+णिनि] लटकने वाला, सहारा लेने वाला,—नी एक प्रकार का घास।

समालम्भः, समालम्भनम् [सम्+आ+लभ्+घञ्, ल्युट् वा, मुम्] 1 पकड़ना, छीनना 2 यज्ञ में बलि-पशु का अपहरण करना 3 शरीर पर अगराग व उबटन आदि का लेप करना—मङ्गलसमालम्भन विरचयाव·—स० ४।

समावर्तनम् [सम्+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापसी 2 विशेष कर वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापिस आना।

समावायः [सम्+आ+अव+इ+घञ्] 1. साहचर्य, संबंध 2 अविच्छेद संबंध दे० न्यायसू० 3 समष्टि 4 समुच्चय, संख्या, ढेर।

समावासः [सम्+आ+वस्+घञ्] निवास स्थान, घर रहने का स्थान।

समाविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+आ+विश्+क्त] 1. पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्याप्त 2 छीना हुआ, पराभूत, एकाधिकृत 3 प्रेताविष्ट 4 सहित 5. निश्चित, स्थिर किया हुआ, बिठाया हुआ 6 सुनिर्दिष्ट।

समावृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+वृ+क्त] 1. परिवेष्टित, घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, लपेटा हुआ 2. पर्दा पड़ा हुआ, घूंघट से आच्छादित 3 गुप्त, छिपाया हुआ 4 प्रतिरोधित 5 बंद किया हुआ 6 रोका हुआ।

समावृत्तः, समावृत्तकः [सम्+आ+वृत्+क्त, पक्षे कन् च] वह ब्रह्मचारी जो अपना वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौट आया है।

समावेशः [सम्+आ+विश्+घञ्] 1 प्रविष्ट होना, साथ रहना 2 मिलना, साहचर्य 3 सम्मिलित करना, समेत 4. घुसना 5 प्रेतावेश 6. प्रत्ययोत्पाद, भावोद्रेक।

समाश्रयः [सम्+आ=श्रि+अच्] 1 प्रस्थान या पनाह ढूंढना 2. सरण, पनाह, प्रस्थान 3 शरणगृह, आश्रयस्थान, घर 4. आधारस्थान, निवास।

समाश्लेषः [सम्+आ+श्लिष्+घञ्] प्रगाढ़ आलिंगन।

समाश्वासः [सम्+आ+श्वस्+घञ्] 1 जी में जी आना, आराम की सांस लेना 2. राहत, प्रोत्साहन, सान्त्वना 3. आस्था, विश्वास, भरोसा।

समाश्वासनम् [सम्+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] 1 पुनर्जीवित करना, प्रोत्साहन, आराम देना 2 ढाढस बंधाना शिशु० २।

समासः [सम्+अस्+घञ्] 1 समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण 2 शब्दरचना, समाहार, मिलाना (समास के मुख्य चार भेद हैं द्वन्द्व, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव) 3 पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 4 संग्रह, संक्षेप 5 पूर्णता, समष्टि 6. शिकुड़न, सङ्कुचन, संक्षिप्तता, (समासेन, समासतः थोड़े में, संक्षेप से, संक्षेप के साथ—एवा वर्णस्य वो योनिं समासेन प्रकीर्तिता· मनु० २।२५, ३।२०, भग० १३।१८, समासत श्रृणुतम्—शिशु० २)। सम० —उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित दी है—परोक्तिर्भेदकैर्विष्टैः समासोक्तिः—काव्य० १०।

समासक्तिः (स्त्री०), **समासङ्गः** [सम्+आ+सञ्ज्+क्तिन्, घञ् वा] मिलाप, साथ-साथ रहना, अनुरक्ति, आसक्ति।

समासादनम् [सम्+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 मिलाना, संयुक्त करना 2 जमाना, रखना 3 संपर्क, सम्मिश्रण, संबंध।

समासेधनम् [सम्+आ+सिध्+ल्युट्] 1 पूर्णतः त्याग देना 2 सुपूर्द करना।

समासादनम् [सम्+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1 पहुँचना 2 प्राप्त करना, मिलना, अवाप्त करना 3 क्रियान्वित करना, कार्यान्वित करना।

समाहरणम् [सम्+आ+हृ+ल्युट्] संयुक्त करना, संग्रह करना, सम्मिश्रण, संचय करना।

समाहर्तृ (पु०) [सम्+आ+हृ+तृच्] 1 जो संग्रह करने में अभ्यस्त हो 2 (कर आदि का) संग्राहक, जमा करने वाला।

समाहारः [सम्+आ+हृ+घञ्] 1 संग्रह, समष्टि, संचय —आ० १ 2 शब्दरचना 3 शब्दों या वाक्यों का संयोजन 4 द्विगु और द्वन्द्व समास का समष्टिविधायक एक उपभेद 5 संक्षेपण, संकोचन, संक्षिप्ति।

समाहित (भू० क० कृ०) [सम्+आ+धा+क्त] 1 मिलाया गया, साथ जोड़ा गया 2 समर्पित, तय किया गया 3 इकट्ठा किया गया, संगृहीत, (मन आदि) प्रशांत 4 एकनिष्ठ, लीन, संकेन्द्रित 5. समाप्त 6 संक्षिप्त।

समाहृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+हृ+क्त] 1 मिलाया गया, संगृहीत, संचित 2 पुष्कल, अत्यधिक, बहुत 3 संक्षिप्त किया गया, स्वीकृत, किया गया संक्षेप किया गया, कम किया गया।

समाहृतिः (स्त्री०) [सम्+आ+हृ+क्तिन्] संकलन, संक्षेपण।

समाह्वः [सम्+आ+ह्वे+क] चुनौती, ललकार।

समाह्वयः [सम्+आ+ह्वे+अच्] 1. पुकारना, ललकारना 2. संग्राम, युद्ध 3 शास्त्रयुद्ध, दो व्यक्तियों में होने

वाला युद्ध 4 मनोरंजन के लिए जानवरों को लड़ाना, जानवरों की लड़ाई पर शर्त लगाना—याज्ञ० २।२०३, मनु० ९।२२१ 5 नाम, अभिधान।

समाह्वा [समा आह्वा यस्याः ब० स०] नाम, अभिधान, शि० ११।२६।

समाह्वानम् [सम् + आ + ह्वे + ल्युट्] 1 मिलकर बुलाना, सद्बोधन 2 ललकार, चुनौती।

समिधम् [समि (सम् + इ + कि) + कन्] भाला, बल्लम।

समित् (स्त्री०) [सम् + इ + क्विप्] संग्राम, युद्ध —समिति पतिनिपातार्कलंब . मै० १२।७५।

समिता [सम् + इ + क्त + टाप्] मैदे का आटा।

समिति [सम् + इ + क्तिन्] 1 मिलना, मिलाप, साहचर्य 2 सभा 3 रेवड़, लहंडा—कि० ४।३२ 4 संग्राम, युद्ध—शि० २।१४, कि० ३।१५, शि० १६।१३ 5 सादृश्य, समता 6 मर्यादा।

समितिञ्जय (वि०) [समिति + जि + अच्, मुम्] युद्ध में विजयी।

समिधः [सम् + इ + क्विप्] 1 संग्राम, युद्ध 2 आग।

समिद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + इन्ध् + क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ 2 आग लगाई हुई 3 प्रज्वलित, उत्तेजित।

समिध् (स्त्री०) [सम् + इन्ध् + क्विप्] लकड़ी, ईंधन, विशेष कर यज्ञाग्नि के लिए समिधाएँ, समिदाहरणाय - शि० १, कु० १।५७, ५।३३।

समिध [सम् + इन्ध् + क] आग।

समिन्धनम् [सम् + इन्ध् + ल्युट्] 1 आग सुलगाना 2 ईंधन।

समिर [= समीर, पृषो०] वायु, हवा।

समीकृत् [सम् + ईकक्] संग्राम, युद्ध,—शि० १५।८३।

समीकरणम् [असम सम क्रियतेऽनेन—सम + च्वि + कृ + ल्युट्] 1 पूरी छानबीन 2 दर्शनशास्त्र की साधक पद्धति शि० २।५९।

समीक्षा [सम् + ईक्ष् + अङ् + टाप्] 1 अनुसंधान खोज 2 विचार 3 भलीभांति निरीक्षण, समालोचना 4. समझ, बुद्धि 5 तर्कशास्त्र 6 अनिवार्य सिद्धांत 7 दर्शनशास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीचः [सम् + इ + चट्, कित् दीर्घ] संयुद्ध।

समीचकः [समीच + कन्] रतिक्रिया, मैथुन।

समीची [समीच + ङीप्] 1 हथिनी 2 प्रशंसा।

समीचीन [सम् + अञ्च् + खिन् + क] 1 ठीक, सही 2 सत्य शुद्ध 3 योग्य, समुचित 4 सुसंगत, सम् 1 सचाई 2. औचित्य।

समीजः (पु०) मैदे का बारीक बेसा।

समीत (वि०) [समाप्त अतीतो मृतो भूतो भावी वा—समा + क] 1 वार्षिक, सालाना 2. एक वर्ष के लिए भाड़े पर लिया हुआ 3. एक वर्ष का।

समीनिका [समा प्राप्य प्रसूते समा + इ + कन् + टाप्, इत्वम्] प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय।

समीप (वि०) [समता आपो यत्र—अच्, आत इत्वम्] निकट, पास हो, सटा हुआ, नजदीक, -पम् सामीप्य, पड़ोस (समीपम्, समीपतः, समीपे (क्रि० वि०) निकट, सामने, की उपस्थिति में'—अत समीपे परिवेत्तुरिष्यते शि० ५।१७।

समीरः [सम् + ईर् + अच्] 1 हवा, वायु, धीर-समीरे यमुनातीरे गीत० ५ 2. समीकृक्ष, जैंडी का पेड़।

समीरणः [सम् + ईर् + ल्युट्] 1 हवा, वायु—समीरणो नोदयिता प्रवेति व्यादिश्यते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, १।८ 2 सांस, 3 वायो 4. एक पौधे का नाम, मरुवक, अम् फेंकना, भेजना।

समीहा [सम् + ईह् + अ + टाप्] प्रबल इच्छा, चाह, प्रबल उद्योग।

समीहित (भू० क० कृ०) [सम् + ईह् + क्त] 1 अभिलषित, इच्छित, अभीष्ट 2 आरब्ध,—तम् कामना, अभिलाषा, इच्छा।

समुच्छ्रयणम् [सम् + उत् + श्रि + ल्युट्] बढ़ाना, बढ़ाव, प्रसार।

समुच्चयः [सम् + उत् + चि + अच्] 1 संग्रह, संचान, समष्टि, राशि, पुंज 2 शब्दों या वाक्यों का संयोग दे० 'च' 3 एक अलंकार का नाम काव्य० १० (११५ से ११६ कारिकाएँ तक)।

समुच्चरः [सम् + उत् + चर् + अच्] 1 चढ़ना 2 चलना, यात्रा करना।

समुच्छेदः [सम् उद् + छिद् + घञ्] पूर्ण विनाश, समूलोन्मूलन, उखाड़ देना।

समुच्छ्रयः [सम् + उद् + श्रि + अच्] 1 उत्तुंगता, ऊंचाई 2 विरोध, बाधा।

समुच्छ्रायः [सम् + उद् + श्रि + घञ्] उत्तुंगता, ऊंचाई।

समुच्छ्वासितम्, समुच्छ्वासः [सम् + उद् + श्वस् + क्त, घञ्, आ] गहरी सांस लेना, दीर्घ सांस लेना।

समुज्झित (वि०) [सम् + उज्झ् + क्त] 1 त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ 2 जाने दिया गया 3 मुक्त।

समुत्कर्षः [सम् + उत् + कृष् + घञ्] 1 उन्नति 2 अपने आपको ऊपर उठाना अपनी जाति की अपेक्षा किसी अन्य ऊंची जाति से सम्बन्ध रखना—मनु० ११।५६।

समुत्क्रमः [सम् + उत् + क्रम् + घञ्] 1 ऊपर उठना, चढ़ाई 2 औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना।

समुत्क्रोशः [सम् + उद् + क्रुश् + घञ्] 1 जोर से चिल्लाना 2 भारी कोलाहल 3 पुकार।

समुत्थ (वि०) [सम् + उद् + स्था + क] 1 उठता हुआ,

जागता हुआ 2 उगा हुआ, उत्पन्न, जन्मा (समास के अन्त में)—अथ नयनसमुत्थ ज्योतिरत्रेरिव द्यौ रघु० २।७५, भग० ७।२७ 3 घटित होने वाला, उत्पन्न।

समुत्थानम् [सम्+उद्+स्था+ल्युट्] 1 उठना, जागना 2 पुनरुज्जीवन 3 पूरी चिकित्सा, पूरा आराम 4 (घाव आदि का) भरना, स्वस्थ होना मनु० ८।२८७, याज्ञ० २।२२२ 5 रोग का चिह्न 6 उद्योग में लगना, परिश्रमयुक्त चेष्टा जैसा कि 'समुद्य समुत्थानम्', में—मनु० ८।४।

समुत्पतनम् [सम्+उद्+पत्+ल्युट्] 1 उड़ना, ऊपर चढ़ना 2 प्रयत्न, चेष्टा।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+उद्+पद्+क्तिन्] 1 पैदावार, जन्म, मूल 2 घटना।

समुत्पिञ्जल, समुत्पिञ्जल (वि०) [सम्+उद्+पिञ्ज्+अच्, कलच् वा] अत्यन्त उद्विग्न या घबराया हुआ, अव्यवस्थित,—जः, लः 1 अव्यवस्थित सेना 2 भारी अव्यवस्था।

समुत्सवः [सम्+उद्+सू+अप्] महान् पर्व।

समुत्सर्गः [सम्+उद्+सृज्+घञ्] 1 परित्याग छोड़ना 2 डालना, डालना, प्रदान करना 3 मलत्याग करना विष्ठा करना—मनु० ४।५०।

समुत्सारणम् [सम्+उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1 हाक देना 2 पीछा करना, शिकार करना।

समुत्सुक (वि०) [सम्यक् उत्सुक प्रा० स०] 1 अत्यन्त बेचैन, आतुर, अधीर विरौषि समुत्सुक—विक्रम० ४।२०, रघु० १।३३, कु० ५।७६ 2 उत्कंठित उत्सुक, शौकीन 3 शोकपूर्ण, खेदजनक।

समुत्सेधः [सम्+उद्+सिध् घञ्] 1 ऊँचाई, उन्नति 2 मोटापन, गाढ़ापन।

समुदक्त (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+अञ्च्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर खींचा हुआ (जैसा कुएं से पानी)।

समुदय [सम्+उद्+इ+अच्] 1 चढ़ाई, (सूर्य का) उदय होना 2 उगना 3 संग्रह, समुच्चय, संख्या, ढेर, - सामग्र्यानामिव समुदय मत्ययो वा गुणानाम् —उत्तर० ६।९, 4 सम्मिश्रण 5 संपूर्ण 6 राजस्व 7 प्रयत्न, चेष्टा 8. संग्राम युद्ध 9. दिन 10 सेना का पिछला भाग।

समुदायः [सम्+उद्+आ+गम्+घञ्] पूर्ण ज्ञान।

समुदाचारः [सम्+उद्+आ+चर्+घञ्] 1 उचित व्यवहार या प्रचलन 2 संशोधित करने की उपयुक्त रीति 3 प्रयोजन, इरादा, अपरेखा।

समुदायः [सम्+उद्+अय्+घञ्] संग्रह, समुच्चय आदि, दे० 'समुदय'।

समुदाहरणम् [सम्+उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1 उद्घोषणा, उच्चारण करना 2. निदर्शन।

समुदित (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+इ+क्त] 1 ऊपर गया हुआ, उठा हुआ, चढ़ा हुआ 2 ऊँचा, उन्नत 3 पैदा किया हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 4 संग्रह किया हुआ, संचित, समुच्चित मद्धात्म्योपचयादयं समुदित सर्वो गुणानां गण रत्न० १।६ 5 सहित, संयुक्त।

समुदीरणम् [सम्+उद्+ईर्+ल्युट्] 1 कह डालना, बोलना, उच्चारण करना 2 दुहराना।

समुद्ग (वि०) [सम्+उद्+गम्+ड] 1 उगने वाला चढ़ने वाला 2 पूर्णतः व्यापक 3 आवरण या ढक्कन से युक्त 4 पलियों से युक्त,—द्गः 1 ढका हुआ संदूक 2. एक प्रकार का कृत्रिम श्लोक—दे० नीचे 'समुद्गक'।

समुद्गकः [समुद्ग+कन्] 1 एक ढका हुआ संदूक या पेटी या ४ 2 एक प्रकार का श्लोक जिसके दो चरणों की ध्वनि समान हो परन्तु अर्थ पृथक्-पृथक् हो—उदा० कि० १५।१६।

समुद्गमः [सम्+उद्+गम्+घञ्] 1 उठान, चढ़ाई 2 उगना, निकलना 3 जन्म, पैदायश।

समुद्गिरणम् [सम्+उद्+गृ+ल्युट्] 1 वमन करना, उगलना 2 जो उगल दिया जाय, उल्टी 2 उठाना, ऊपर करना।

समुद्गीतम् [सम्+उद्+गै+क्त] ऊँचे स्वर से गाया जाने वाला गीत।

समुद्देशः [सम्+उद्+दिश्+घञ्] 1 पूर्णतः निर्देश करना 2 पूर्णविवरण, विशिष्टीकरण निर्देश करना।

समुद्धत (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+हन्+क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उन्नीत 2 उत्तेजित, हड़बड़ाया हुआ 3 घमण्ड से फूला हुआ, घमंडी, अभिमानी 4 अशिष्ट अभद्र 5 धृष्ट ढीठ।

समुद्धरणम् [सम्+उद्+हृ+ल्युट्] 1 ऊपर उठाना ऊँचा करना 2 उठाना 3 बाहर खींच लेना 4 उद्धार मुक्ति 5 निवारण संपूर्णाच्छेदन 6 (किनारे) से बाहर निकालना 7 डाला हुआ या उगला हुआ भोजन।

समुद्धर्तृ (पु०) [सम् उद्+हृ+तृच्] मोचक, मुक्तिदाता।

समुद्धूतः [सम्+उद्+धू+क्त] अन्न, उत्क्षिप्त।

समुद्यम [सम्+उद्+यम्+घञ्] 1 ऊपर उठाना 2 बड़ा प्रयत्न, चेष्टा कर्मेयं मह पांडवस्यात्मिनृण-समुद्यमे भग० १।२२, समुद्यम कार्य 1 उपक्रम, समारंभ 4 बाधा, चढ़ाई।

समुद्योगः [सम्+उद्+युज्+घञ्] मौलिक चेष्टा, ऊर्जा।

समुद्र (वि०) [सह मुद्रया—ब० स०] मुहर बंद, मुहर लगा हुआ मुद्रांकित—समुद्रो लिख, —द्र [सम् + उद् + रा + क] 1 सागर, महासागर 2 शिव का विशेषण 3 चार' की संख्या। समा० अन्तम् 1 समुद्रतट 2 जायफल,—अम्बरा पृथ्वी, अर्क,-आह्व 1 समुद्रमछली 2 एक बड़ी विशाल मछली 3 राम का पुल, कक्ष,-फेन समुद्रझाग, ग (वि०) समुद्र पर घूमने वाला, (गः) 1 समुद्री व्यापार करने वाला 2 समुद्री कार्य करने वाला, समुद्र में घूमने वाला इसी प्रकार 'समुद्र-गामिन्,-यायिन् आदि, (गा) नदी गृहम् समुद्री यात्रा के दिनों के लिए जल में बना हुआ भवन —मुलूक अगस्त्य मुनि का विशेषण, मथनीयम् 1 चन्द्रमा 2 अमृत, मुषा, मेखला,-रसना,-वसना पृथ्वी, यानम् 1 समुद्री यात्रा 2 पोत, जहाज, बिरती, यात्रा समुद्र के रास्ते यात्रा, यायिन् (वि०) दे० समुद्रग, योषित् (स्त्री०) नदी, वह्नि वडवानल सुखना गंगा नदी।

समुद्गह [सम् + उद् + ग्रह + अच्] 1 होना 2 उठाने वाला।

समुद्गाह [सम् + उद् + गाह् + घञ्] 1 होना 2 विवाह।

समुद्गिरण [सम् + उद् + गिर् + ल्युट्] वमन, आलंकारिक वमन।

समुद्गिलनम् [सम् + उद् + गिल् + ल्युट्] 1 आहार 2 गीलापन, सीलन, तरी।

समुद्ग (वि०) [सम् + उद् + गम् + क्त] गीला आर्द्र।

समुद्गत (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + गम् + क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2 ऊँचाई उठाया, (मानसिक भी) ऊँचा उठना मनस शिखराणा च सदृक्षी ते समुद्गति कु० ६।६६, रघु० ३।१० 3 प्रमुखता, ऊँचा पद या मर्यादा, उत्कर्ष उत्तमं सह मज्जेन को न याति समुद्गतिम्, स जातो यत्र जातेन याति वंश समुद्गतिम् सुभा० 4 उन्नति समृद्धि, वृद्धि, सफलता विनिपातोऽपि सतां समुद्गते —कि० २।३४, या प्रकृति खलु सा महीयसां महते नाम्यमुद्गति यया —२।२१ 5 घमंड अभिमान।

समुद्गत (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + गह् + क्त] 1 उन्नत, उच्छ्रित 2 सूजा हुआ 3 पूरा 4 घमंडी, अभिमानी, अहंकारशील 5 आत्माभिमानी, पण्डित-मन्य 6 बंधनमुक्त।

समुद्गमः [सम् + उद् + गम् + अच्] 1 हासिल करना प्राप्त करना 2 घटना, बात।

समुद्गूलनम् [सम् + उद् + मूल् + ल्युट्] जड़ से उखाड़ना, समूलोच्छेदन, पूर्ण विनाश।

समुद्गमः [सम् + उप + गम् + अप्] पहुँच, संपर्क।

समुद्गोषम् (अव्य०) [सम् + उप + घुष् + अम्] 1 बिल्कुल हल्ला के अनुसार 2 प्रसन्नतापूर्वक।

समुपभोग [सम् + उप + भुज् + घञ्] मैथुन, संभोग।

समुपवेशनम् [सम् + उप + विश् + ल्युट्] 1 भवन, आवास, निवास 2 बिठाना।

समुपस्था, समुपस्थानम् [सम् + उप + स्था + अङ्, ल्युट् वा] 1 पहुँच, समीप आना 2. सामीप्य, निकटता 3 होना, आ पड़ना, घटना।

समुपस्थिति = 'समुपस्थानम्' दे०।

समुपाजनम् [सम् + उप + अर्ज् + ल्युट्] एक साथ प्राप्त करना एक समय में ही अभिग्रहण।

समुपेत (भू० क० कृ०) [सम् + उप + इ + क्त] 1 मिल कर आये हुए एकत्रित, इकट्ठे हुए 2 पहुँचा 3 सज्जित, सहित, युक्त।

समुपोढ (भू० क० कृ०) [सम् + उप + वह् + क्त] 1 ऊपर गया हुआ, उठा हुआ 2 वृद्धि को प्राप्त 3 निकट लाया गया 4 निर्वाचित।

समुल्लास [सम् + उद् + लस् + घञ्] 1 अत्यन्त चमक 2 अति हर्ष, आनन्द।

समूढ (भू० क० कृ०) [सम् + ऊह् (वह्) + क्त] 1 निकट लाया गया, एकत्रित 2 संचित, संगृहीत 3 लपटा हुआ 4 सहित 5 सद्योजात, जो तुरन्त पैदा हुआ हो 6 शांत बनीकृत, शान्त किया हुआ 7 रुक रुका हुआ 8 निर्मल, स्वच्छ 9 साथ ही वहन किया गया 10 नेतृत्व किया गया, संचालित किया गया 11 विवाहित।

समूर, समूर, समूरक [सगतौ ऊरू यस्य—ब्रा० ब०] एक प्रकार का हरिण।

समूल (वि०) [सह मूलेन—ब० स०] जड़ों समेत जैसा 'समूलघातम्' पूर्णरूप से उखाड़ कर, जड़ समेत शाखाओं को उखाड़ देना।

समूह [सम् + ऊह् + घञ्] 1 समुच्चय, संग्रह, संघात, समष्टि, संख्या —जनसमूहः, हिन्दूसमूह, पदसमूह, आदि 2 रेवड़, टोली।

समूहनम् [समूह् + ल्युट्] 1 साथ मिलाना 2 संग्रह, राशि।

समूहनी [सम् + ऊह् + ल्युट् + ङीप्] बुहारी, झाड़।

समूह्य [सम् + ऊह् + ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

समृद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + ऋध् + क्त] 1 समृद्धिशाली, फलता-फूलता हुआ, हरा-भरा 2 प्रसन्न, भाग्यशाली 3 सम्पन्न, दौलतमंद 4 भरा पूरा, विशेषकर से युक्त या सम्पन्न, खूब बड़ा चढ़ा 5 फलवान्।

समृद्धि (स्त्री०) [सम् + ऋध् + क्तिन्] 1 भारी वृद्धि, बढ़ती, फलना-फूलना 2 सम्पन्नता, सम्पत्ति

ऐश्वर्य 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्य यथा 'धनधान्यसमृद्धिरस्तु' में 5 वक्ति, सर्वोपरिता।

सम्पेत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+इ+क्त] 1 साथ आया हुआ या मिला हुआ, एकत्रित 2 संयुक्त, सम्मिश्रित 3 निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4 से युक्त 5. सहित, सज्जित, युक्त, के साथ 6 टक्कर खाया हुआ, भिडा हुआ 7 सहमत।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+पद्+क्तिन्] 1 समृद्धि, धन की बढ़ती, सपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता —सुभा० 2 सफलता, पूर्ति निष्पन्नता 3 पूर्णता, श्रेष्ठता—जैसा कि 'रूपसम्पत्ति' में 4 प्राचुर्य, पुष्कलता, बाहुल्य।

सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] 1 धन, दौलत —नीता विनोदसाहगुणेन सम्पद्—कु० १।२२, आपन्नार्ति प्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम् मेघ० ५३ 2 समृद्धि, ऐश्वर्य, फलना-फूलना (विप० विपद् या आपद्)—ते भृत्या नृपते फलन्त्यमिनरे सम्पत्सु चापत्सु च—मुद्रा० १।१५ 3 सौभाग्य, आनन्द, किस्मत 4 सफलता, पूर्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—श० ७।३० 5 पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'रूपसंपद' में —शि० ३।३५ 6 धनाढ्यता, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य, आधिक्य — तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदाम् कु० ५।२७, रघु० १०।५९ 7 कोश 8 लाभ हित, वरदान 9 सद्गुणों की वृद्धि 10 सजावट 11 सही क्रम 12. योनियों का हार। सम०—घर, राजा, -विनिमयः हितों या सेवाओं का आदान-प्रदान—रघु० १।२६।

सम्पन्न (भू०क०कृ०) [सम् पद्+क्त] 1 समृद्धिशाली, फलता-फूलता, धनाढ्य 2 भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न 3 कार्यान्वित, साधित, निष्पन्न 4 पूरा किया गया, पूर्ण कर दिया गया 5 पूर्ण 6 पूर्णविकसित, परिपक्व 7 प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8 शुद्ध, सही 9 सहित, युक्त 10 हुआ हुआ, घटित, अधिक का विशेषण, नम् 1 धन, दौलत 2 स्वादिष्ट भोजन, मधुर और मजेदार भोजन।

सम्परायः [सम्+परा+इ+अच्] 1 संघर्ष, मुठभेड़, संग्राम, युद्ध 2 संकट, दुर्भाग्य 3 भावी स्थिति, भविष्य 4. पुत्र।

सम्पराय्य (वि) कम् [सम्पराय+कन्, ञ्य वा] मुठभेड़, संग्राम, युद्ध।

सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] 1 मिश्रण 2 रमलाप, मेल-जोल, स्पर्श —पादेन नार्पयति सुन्दरीणां सम्पर्कमाप्तिञ्जितनूपुरेण कु० ३।२६, मेघ० २५, विक्रम० १।१३ 3 मण्डली, समाज, साथ न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि—भर्तृ०—२।१४ 4 मैथुन, संभोग।

सम्पा [सम्यक् अतर्कित पतति—सम्+पत्+ड+टाप्] बिजली।

सम्पातक (वि०) [सम्यक् पाको यस्य यस्मात् वा—प्रा०ब०] 1 मुतार्किक, खूब बहस करने वाला 2. चालाक, चलता पुरजा 3 सम्पट, बिलासी 4 थोड़ा, अल्प, —कः 1 परिपक्व होना 2 आरम्भक वृक्ष।

सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] 1 शिकारी की बड़ी हुई भुजा से किसी रेखा का मिलना 2 तकुआ।

सम्पात. [सम्+पत्+घञ्] 1 मिल कर गिरना, सह-गमन 2 आपस में मिलना, मुठभेड़ होना 3 टक्कर, भिड़न्त 4 अध:पतन, उतरना भग० १।२० 5 (पक्षी आदि का) उतरना 6 (तीर की) उड़ान 7 आना, हिलना-डुलना 8 हटाया जाना, हटाना मनु० ६।५६ 9 पक्षियों की उड़ान विशेष तु० डोन 10 (खड्गादि का) अवशिष्ट अंश, उच्छिष्ट।

सम्पातिः [सम्+पत्+णिच्+इन्] एक पौराणिक पक्षी, गरुड़ का पुत्र, जटायु का बड़ा भाई।

सम्पादः [सम्+पद्+णिच्+घञ्] 1 पूर्ति, निष्पन्नता 2 अभिग्रहण।

सम्पादनम् [सम्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1 निष्पादन, कार्यान्वयन, पूरा करना 2 उपार्जन करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना 3 स्वच्छ करना, साफ करना, (भूमि आदि) तैयार करना, मनु० ३।२२५।

सम्पिण्डित (भू०क०कृ०) [सम्+पिण्ड्+क्त] 1 राशीकृत 2 सिकुड़ा हुआ।

सम्पीडः [सम्+पीड्+घञ्] 1 निचोड़ना, भींचना 2 पीड़ा, यातना 3 विक्षोभ, क्षोभ। भेजना निदेशन, आगे आगे हाँकना, प्रचोदन सम्पीडनार्थमिवतज्जलेषु तोयदेषु कि० ७।१२।

सम्पीडनम् [सम्+पीड्+ल्युट्] 1 निचोड़ना, भिकाकर दाबना 2 प्रेषण 3 दण्ड, कशाघात 4. अकोलना, क्षुब्ध होना।

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम्+पा+क्तिन्] मिल कर पीना, सहपान।

सम्पुट [सम्+पुट्+क] 1. गह्वर—स्वाती सागरशुक्ति-सम्पुटगत (पय) सम्मौक्तिक जायते भर्तृ० २।६७, (पाठान्तर) काव्य० २।२८८, ऋतु० १।२१ 2 रत्न-पेटी, डिब्बा 3 कुरबक फूल।

सम्पुटकः, सम्पुटिका [सम्पुट+कन्, सम्पुटक+टाप्, इत्वम्] संपुट, रत्नपेटी।

सम्पूर्ण (वि०) [सम्+पूर्+क्त] 1 भरा हुआ 2 सारे, सारा दे० पूर्ण, नम् अन्तरिक्ष।

सम्पृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+पृच्+क्त] 1 एकीकृत, मिश्रित 2 संयुक्त, सहित, सम्बद्ध, संबंध से युक्त —वासवीव सम्पृक्ता—रघु० १।५ 3. स्पर्श करता।

सम्प्रक्षालनम् [सम्+प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1 पूर्ण मार्जन 2 स्नान, नहलाई-धुलाई 3 जल-प्रलय।

सम्प्रक्षेतृ (पुं०) [सम्+प्र+क्षी+तृच्] शासक, न्यायाधीश।

सम्प्रति (अव्य०) [सम्+प्रति० ह्रस्व० त०] अब, हाल में, इस समय अयि सम्प्रति देहि दर्शनम् कु० ४।८।

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम्+प्रति+पद्+क्तिन्] 1 उपगमन, पहुँच 2 उपस्थिति 3. लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि 4 करार ३ मानना, स्वीकार कर लेना —मुद्रा० ५।१८ 6. किसी तथ्य को मानना, कानून में विशेष प्रकार का उत्तर 7 धावा, आक्रमण 8 घटना 9. सहयोग 10 करना, अनुष्ठान।

सम्प्रतिरोधकः, कम् [सम्+प्रति+रुध्+घञ्+कन्] 1 पूरा अवरोध 2 कैद, जेल।

सम्प्रतीक्षा [सम्+प्रति+ईक्ष्+अङ्+टाप्] आशा लगाना या बाँधना।

सम्प्रतीत (भू० क० कृ०) [सम्+प्रति+इ+क्त] 1 वापिस आया हुआ 2. पूर्णतः विश्वास दिलाया हुआ 3. प्रमाणित, माना हुआ 4 विश्वस्त 5 सम्मान पूर्ण।

सम्प्रतीति [सम्+प्रति+इ+क्तिन्] 1 पूरा निश्चय 2 कार्यपालन, प्रसिद्धि, ख्याति, कुख्याति कु० ३।४३।

सम्प्रत्यय [सम्+प्रति+इ+अच्] 1 दृढ़ विश्वास 2 करार।

सम्प्रदानम् [सम्+प्र+दा+ल्युट्] 1 पूरी तरह से दे देना, हवाले कर देना 2 उपहार भेंट, दान 3 विवाह कर देना 4 चतुर्थी विभक्ति द्वारा अभिव्यक्त अर्थ।

सम्प्रदानीयम् [सम्+प्र=दा+अनीयर्] भेंट, दान।

सम्प्रदायः [सम्+प्र+दा+घञ्] 1 परंपरा, परंपरा प्राप्त सिद्धान्त या ज्ञान परम्परा प्राप्त शिक्षा —उत्तर० ५।१५ 2 धर्म-शिक्षा की विशेष पद्धति, धार्मिक सिद्धान्त जिसके द्वारा किसी देवताविशेष की पूजा बतलाई जाय 3 प्रचलित प्रथा, प्रचलन।

सम्प्रधारणम् [सम्+प्र+धा+ल्युट्] निश्चय करना।

सम्प्रधारयम्—या [सम्+प्र+णिच्+ल्युट्] 1 विचार 2 किसी वस्तु का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित करना।

सम्प्रपातः [सम्+प्र+पत्+घञ्] पर्यटन, भ्रमण।

सम्प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [सम्+प्र+भिद्+क्त] 1 फटा हुआ, चिरा हुआ 2 मद में मत्त।

सम्प्रमोदः [सम्+प्र+मुद्+घञ्] हर्षातिरेक, उल्लास।

सम्प्रमोषः [सम्+प्र+मुष्+घञ्] हानि, विनाश, पृथक्करण, अलगाव।

सम्प्रयानम् [सम्+प्र+या+ल्युट्] विवाह।

सम्प्रयोगः [सम्+प्र+युज्+घञ्] 1. संयोग, मिलाप सम्मिलन, संयोजन, संपर्क—(अवयव) उच्चतमसम्भावितसम्प्रयोगात्—रघु० ५।५४, मालवि० ५।३ 3. संयोजक कड़ी, बंधन या जकड़न —एतेन मोचयति भूषणसम्प्रयोगात्—मृच्छ० ३।१६ 3. संबंध, निकटता 4 पारस्परिक संबन्ध या अनुपात 5. संयुक्त श्रेणी या क्रम 6 मैथुन, संभोग 7 प्रयोग, 8. जादू।

सम्प्रयोगिन् (वि०) [सम्+प्र+युज्+णिनुण्] साथ साथ मिलने वाला, पु० 1. मेलापक, संयोजक, 2. बाजीगर 3 लम्पट 4 चुगली, चाड़ू।

सम्प्रवृष्टम् [सम्+प्र+वृष्+क्त] अच्छी वर्षा।

सम्प्रश्नः [सम्यक् प्रश्न प्रा०स०] 1. पूरी या विशिष्टतापूर्ण पूछ-ताछ 2 पूछताछ, पूछ-ताछ।

सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] 1. प्रसादन, तुष्टीकरण 2 अनुग्रह, कृपा 3 शान्ति, सौम्यता 4 विश्वास, भरोसा 5 आत्मा।

सम्प्रसारणम् [सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] य्, व्, र्, ल्, के स्थान पर क्रमशः इ, उ, ऋ या ऌ को रखना इत्यण सम्प्रसारणम्—पा० १।१।४५।

सम्प्रहारः [सम्+प्र+हृ+घञ्] 1 पारस्परिक प्रहार 2 मुठभेड़, संग्राम, युद्ध संघर्ष—उत्तर० ६।७।

सम्प्राप्तिः (स्त्री०) [सम्+प्र+आप्+क्तिन्] मिलन, अभिग्रहण।

सम्प्रीतिः (स्त्री०) [सम्+प्री+क्तिन्] 1. अनुराग, स्नेह 2. सद्भावना, मैत्रीपूर्ण स्वीकृति 3 हर्ष, उल्लास।

सम्प्रेक्षणम् [सम्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. अवेक्षण, अवलोकन 2. विचार करना, गवेषणा करना।

सम्प्रेषः [सम्+प्र+इष्+घञ्] 1 भेजना, बर्खास्तगी 2 निदेश, समादेश, आज्ञा।

सम्प्रोक्षणम् [सम्+प्र+उक्ष्+ल्युट्] मार्जन, जल के छींटे देना, अभिमन्त्रित जल छिड़कना।

सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. प्लावन, जलप्लव 2 लहर 3 बाढ़ 4 बर्बाद हो जाना 5 विप्लव, तहसनहस।

सम्प्लावः [सम्यक् प्लावी गमन यस्य—प्रा०ब०] मेढ़ा, भेड़।

सम्प्लेटः (पुं०) क्रोधपूर्ण संघर्ष, दो क्रुद्ध व्यक्तियों की पारस्परिक मुठभेड़ को अभिव्यक्त करने वाली घटना—दे० मा०द० ३७९, ४२०, उदा०—माधव और अघोरघण्टके मध्य मुठभेड़—मा० ५।

सम्ब् (भ्वा० पर० सम्बति) जाना, हिलना-डुलना।

II (चुरा० उभ० सम्बयति-ते) संग्रह करना, संचय करना।

सम्बन् [सम्ब्+अच्] खेत को दूसरी बार जोतना (सम्बाह दो बार हल चलना) दे० 'सम्ब' भी।

सम्बद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+बंध्+क्त] 1. संयोजित,

मिलाकर बांधा हुआ 2 अनुरक्त 3 संयुक्त, जुड़ा हुआ, संबंध रखने वाला 4 सहित।

सम्बन्धः [सम्+बन्ध्+घञ्] 1 संयोग मिलाप, साहचर्य 2 रिश्ता, रिश्तेदारी 3 छठी विभक्ति या संबंध कारक के अर्थस्वरूप संबंध 4 वैवाहिक संपर्क—कु० ६।२९, ३० 5 मित्रता का संबंध, मैत्री, सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः - रघु० २।५८ 6 योग्यता, औचित्य 7 समृद्धि, सफलता।

सम्बन्धक (वि०) [सम्+बन्ध्+ण्वुल्] 1 रिश्ता रखने वाला, संबंध रखने वाला 2 योग्य, उपयुक्त,—कः 1 मित्र, जन्म या विवाह के कारण बना संबंध, एक प्रकार की शान्ति।

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध+णिनि] 1 संबंध रखने वाला 2 संयुक्त, जुड़ा हुआ, अन्तर्हित 3 अच्छे गुणों से युक्त—पुं० 1 विवाह के फल स्वरूप बनी बन्धुता —उत्तर० ४।१ 2 रिश्तेदार, बन्धु।

सम्बर [सम्ब्+अरन्] 1 बांध, पुल 2 एक हरिण विशेष 3 प्रद्युम्न के द्वारा मारा गया राक्षस दे० शम्बर और प्रद्युम्न 4 पहाड़ का नाम, —रम् 1 प्रतिबंध 2 जल। सम०—अरि-,—रिपु कामदेव।

सम्बल, **लम्** [सम्ब्+कलच्] पाथेय, यात्रा के लिए सामग्री, मार्गव्यय, लम् पानी।

सम्बाध (वि०) [सम्यक् बाधा यत्र—प्रा०ब०] संकुल, भीड़ से युक्त, अवरुद्ध, संकीर्ण सम्बाध इवाद्रयोऽपि तदबभूव यत्र—शि० ८।२, व्योम्नि सबाधवर्त्मनि—रघु० १२।६७, —धः 1 भीड़ का होना 2 दबाव, घिराव, चोट, —स्तनसम्बाधमुरो जघान च—कु० ४।२६ 3 रुकावट, कठिनाई, भय, विघ्न कि० ३।५३ 4 नरक का मार्ग 5 डर भय 6 भग, योनि।

सम्बाधनम् [सं+बाध्+ल्युट्] 1 रोकना, अवरोध 2 भींचना 3 शुल्कद्वार, फाटक 4 योनि, भग 5 सूली, या सूली की नोक 6 द्वारपाल।

सम्बुद्धिः (स्त्री०) [सम्+बुध्+क्तिन्] 1 पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2 पूर्ण चेतना 3 पुकारना, बुलाना 4 (व्या० में) संबोधन कारक एङ् ह्रस्वात् सम्बुद्धे —पा० ६।१।६९।

सम्बोधः [सम्+बुध्+घञ्] 1 व्याख्या करना, निर्देश देना, सूचित करना 2 पूर्ण या सही प्रत्यक्षज्ञान 3 भेजना, फेंक देना 4 हानि, विनाश।

सम्बोधनम् [सं+बुध्+णिच्+ल्युट्] व्याख्या करना 2. संबोधित करना 3 संबोधन कारक 4 (किसी को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द) विशेषण भामि० ३।१३।

सम्भक्तिः (स्त्री०) [सम्+भज्+क्तिन्] 1 हिस्सा लेना, अधिकार करना 2 वितरण करना।

सम्भग्न (भू० क० कृ०) [सम्+भञ्ज्+क्त] छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, —ग्न शिव का विशेषण।

सम्भली [सम्+भल्+अच्+ङीष्] बूती, कुटनी दे० शम्भली।

सम्भव [सम्+भू+अप्] 1 जन्म, उत्पत्ति, फूटना, उगना, अस्तित्व प्रियस्य सुहृदो यत्र मम नत्रैव सम्भवो भूयात् मा० ९, मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः श० १।२६, भग० ३।१४, (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त)—अप्सरःसम्भवेयं - श० १ 2 उत्पादन, पालन-पोषण—मनु० २।२२७ (इस पर कुल्लू० की टीका देखो) 3 कारण, मूल, प्रयोजन 4 मिलाना, मिलाप, सम्मिश्रण 5 संभावना

संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति सम्भवम् सुभा० 6 समनुकूलता, संगति 7 अनुकूलन, उपयुक्तता 8 करार, पुष्टि 9 धारिता 10 समानता (एक प्रमाण) 11 परिचय 12 हानि, विनाश।

सम्भार [सम्+भृ+घञ्] 1 एकत्र मिलाना, संग्रह करना 2 तैयारी, सामग्री आवश्यक वस्तुएँ, अपेक्षित वस्तुएं, उपकरण, किसी कार्य के लिए आवश्यक वस्तुएं सविशेषमद्य पूजासम्भारो मया संक्रियापनीय मा० ५, रघु० १२।४, विक्रम० २ 3 अवयव, संघटक, उपादान 4 समुच्चय, ढेर, राशि, संघात, जैसा कि शस्त्रास्त्रसम्भार में 5 पूर्णता 6 दौलत, धनाढ्यता 7 संधारण, पालन-पोषण।

सम्भावनम्, **ना** [सम्+भू+णिच्+ल्युट्] 1 विचारना, विचारविमर्श करना रघु० ५।२८ 2 उद्भावना, उत्प्रेक्षा—सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्—काव्य० १० 3 विचार, कल्पना, चिन्तन 4 आदर सम्मान, मान, प्रतिष्ठा सम्भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम् श० ७।२ 5 शक्यता 6 योग्यता, पर्याप्तता कि० ३।३९ 7 संक्षमता, योग्यता 8 संदेह 9 स्नेह, प्रेम 10 व्याप्ति।

सम्भावित (भू० क० कृ०) [सम्+भू+णिच्+क्त] चिन्तित, कल्पित, विचारित विवाहे दीक्षेषु सम्भावित का० 2 प्रतिष्ठित, सम्मानित, आदरित —भर्तृ० २।३४ 3 उपयुक्त, योग्य, पर्याप्त, युक्त 4 संभव।

सम्भाष [सम्+भाष्+घञ्] संभाषण—मनु० २।१९५, ८।३६६।

सम्भाषा [सम्भाष+टाप्] 1 प्रवचन, संभाषण 2 अभिवादन 3 आपराधिक संबंध 4 करार, संविदा 5 संकेत—शब्द, युद्धघोष।

सम्भूतिः (स्त्री०) [सम्+भू+क्तिन्] 1 जन्म, उद्भव, उत्पत्ति मनु० २।१४७ 2. संमिश्रण, मिलाप 3 योग्यता, उपयुक्तता 4 शक्ति।

सम्भृत (भू० क० कृ०) [सम्+भृ+क्त] 1 एकत्रित संगृहीत, संकेन्द्रित 2. उद्यत, तैयार, अन्वित, सज्जित 3 सुसज्जित, सपन्न, युक्त, सहित 4 रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5 पूर्ण, पूरा, समस्त 6 लब्ध, अवाप्त 7 ले जाया गया, वहन किया गया 8 पाचित 9 उत्पादित, पैदा किया गया।

सम्भृतिः (स्त्री०) [सम्+भृ+क्तिन्] 1 सग्रह 2 तैयारी, साज-सामान, सामग्री 3 पूर्णता 4 सहारा, सचारण, पोषण।

सम्भेदः [सम्+भिद्+घञ्] 1 टूटना, टुकड़े-टुकड़े करना 2 मिलाप, मिश्रण, सम्मिश्रण—आलोकनिमिरसम्भेदम्—मा० १०।११, हर्षोद्वेगसम्भेद उपनत—मा० ८ 3 मिलना (जैसे निगाहों का) 4 सगम, (दो नदियों का) मिलन तदुत्तिष्ठ पाराशर्यसम्भेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशाव, अथवा महानद्या सम्भेद—मा० ८, मधुमतीसिन्धुसम्भेदपावन ९।

सम्भोग [सम् भुज्+घञ्] 1 आनन्द लेना, मजे लेना °सम्भोगफला क्रिया सुभा० 2 कब्जा, उपयोग, अधिकृति मनु० ८।२०० 3 रति क्रीड़ा, मैथुन, सहवास—सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसवाहनानाम्—मेघ० ९५ 4 लम्पट, गाढ़ 5 शृगारस का एक उपभेद, दे० 'शृगार' के अन्तर्गत।

सम्भ्रम [सम्+भ्रम+घञ्] 1 मुड़ना, आवर्तन चक्कर काटना 2 अन्तर्वाती, उतावली 3 अव्यवस्था, विक्षोभ, हड़बड़ी कु० ३।४८ 4 डर, आतक, भय, श० १, कि० १५।२ 5 त्रुटि, भूल, अज्ञान 6 उत्साह, क्रियाशीलता 7 आदर, श्रद्धा पुङ्मुपपत सम्भ्रमविधि मनु० २।६३, नव यौवन कस्यिद्यस्मिन् मधि सम्भ्रमः—रामा०। सम० उद्भ्रान्त (वि०) विक्षोभ से उत्तेजित,—भृत् (वि०) घबड़ाया हुआ, हड़बड़ाया हुआ।

सम्भ्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+भ्रम्+क्त] 1 आवर्तित 2 हड़बड़ाया हुआ, विक्षुब्ध, विस्मित, व्याकुल।

सम्मत (भू० क० कृ०) [सम्+मन् क्त] 1 सहमत स्वीकृत, माना हुआ 2 पसन्द किया हुआ, प्रिय, प्रियतम 3 समान मिलना-जुलना 4 खयाल किया गया माना गया, विचारा गया 5 अत्यन्त आदृत, सम्मानित, प्रोत्साहित, तम् सहमति, दे० सम्मति।

सम्मति (स्त्री०) [सम्+मन्+क्तिन्] 1 सहमति 2 समनुकूलता, सानुकूलता, अनुमोदन, समर्थन 3 अभिलाषा, इच्छा 4 आत्मज्ञान, आत्मा की जानकारी मत्यज्ञात 5 खयाल, आदर, प्रतिष्ठा कथमिव त्व सम्पतिर्भविष्यसी मम्मतुभिर्मुनिभावधीरितस्य शि० १०।३६ 6 प्रेम, स्नेह।

सम्मद [सम्+मद्+अप्] अनिद्रा, बेहोशी, प्रमत्तता शि० १५।७७।

सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] 1. आपस में मिलना, सघर्ष 2 जमघट, भीड़, जमाव यद्गोप्रतरकल्पोऽभूत्सम्मर्दस्तत्र मज्जताम्—रघु० १५।१०१, मा० १० 3 कुचलना, पैरों से रौंदना 4. सग्राम, युद्ध।

सम्मातुर=संमातुर दे० 'मत्' के अन्तर्गत।

सम्माद [सम्मद्+घञ्] मद, नशा, पागलपन।

सम्मानः [सम्+मन्+घञ्] आदर, प्रतिष्ठा,—नम् 1 माप 2 तुलना।

सम्मार्गकः [सम्+मृज्+ण्वुल्] झाड़ने वाला, बुहारी देने वाला, भगी।

सम्मार्जनम् [सम्+मृज्+ल्युट्] 1 बुहारना, मांजना 2 निर्मल करना, साफ करना, झाड़ना।

सम्मार्जनी [सम्मार्जन+ङीष्] झाड़ू, बुहारी।

सम्मित (भू० क० कृ०) [सम्+मा+क्त] 1 नापा हुआ तोला हुआ 2 समान माप, विस्तार या मूल्य का, सम, वैसा ही, बराबर मिलना-जुलना कान्तासम्मितयोपदेशयुजे—का० १ रघु० ३।१६ 3 इतना बड़ा जितना कि पहुँचना हुआ 4 समरूप समनुकूल, समानुपातिक 5 से युक्त, सुसज्जित।

सम्मिश्र, सम्मिश्रित (वि०) [सम्+मिश्र+अच्, क्त वा] 1 परस्पर मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित।

सम्मिश्रलः [=सम्मिश्र, पृषो० रस्य ल] इन्द्रका विशेषण।

सम्मीलनम् [सम्+मील+ल्युट्] (फूल आदि का) बन्द होना, झपकना, लपेटना।

सम्मुख (वि०) [स्त्री०—खा, खी] समुन्मीन (वि०) [सगत मुख येन—प्रा० ब० सर्वस्य मुखस्य दर्शने—समसुख+ष, सम सख्यस्य अन्त्यलोप वि०] 1 सामने का, सम्मुख स्थित, आमने सामने, अभिमुखी, सामना करने वाला- काम न तिष्ठति मदाननसम्मुखी सा—श० १।३१, रघु० १५।१६, शि० १०।८६ 2 मुठभेड़ करने वाला मुकाबला करने वाला 3 स्वस्थ।

सम्मुखिन् (पु०) [सम्मुखमस्य अस्ति सम्मुख+इनि] दर्पण, शीशा आईना।

सम्मूर्छनम् [सम+मूर्छ=ल्युट्] 1 मूर्छा, बेहोशी 2 अधिक गाढा होना 3 गाढा करना, बढ़ाना 4 ऊँचाई 5 विश्वव्याप्ति, सर्व-विस्तार पूर्ण व्याप्ति।

सम्मृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+मृज्+क्त] 1 भली भांति रगड़ा गया, माजा-धोया गया 2 छना हुआ, छाना हुआ।

सम्मेलनम् [सम्+मिल्+ल्युट्] 1 परस्पर मिलना, मिलाप 2 मिश्रण 3 एकत्र करना, सग्रह करना।

सम्मोह [सम्+मुह्+घञ्] 1 अकबकाहट, अव्यवस्था, प्रेमोन्माद 2 मूर्छा बेहोशी 3 अज्ञान, मूर्खता 4 आकर्षण।

सम्मोहनम् [सम्+मुह्+णिच्+ल्युट्] संमुग्ध करना,

वशीकरण, नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक कु० ३।६६।

सम्यच् सम्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—सम्यीची) [सम्+अञ्च् +क्विन्, समि आदेशः पक्षे नलोपः] 1 साथ जाने वाला, साथ रहने वाला 2 सही, युक्त, उचित, यथोचित 3 शुद्ध, सत्य, यथार्थ 4 सुहावना, हर्षिकर -किं च कुलानि कदीना निसर्ग- सम्यञ्चि रत्नान्यतुरस० 5. बड़ी, एकरूप 6 सब, पूर्ण, समस्त—(अव्य० —सम्यक्) 1 के साथ, साथ-साथ 2 अच्छा, उचित रूप से, सही ढंग से, शुद्धतापूर्वक, सचमुच सम्यगिमामाह स० १, मनु० २।५, १४ ३ यथावत्, यथोचित रूप से, ठीक-ठीक, सचमुच 4 सम्मान पूर्वक 5 पूरी तरह से, पूर्णतः 6 स्पष्ट रूप से।

सम्राज् (पु०) [सम्यक् राजते-सम्+राज्+क्विप्] 1 सर्वोपरि प्रभु, विश्वराट्, विशेषतः वह जो अन्य राजाओं पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया हो—येनेष्टं राजसूयेन महत्सत्रेश्वरत्वं च। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट् अमर, रघु० २।५।

सय् (स्वा० आ० सयते) जाना, हिलना-जुलना।

सयूथ्यः [सयूथ+यत्] एक ही वर्ग या जाति का।

सयोनि (वि०) [समाना योनिर्यस्य ब० स०, समानस्य सादेशः] एक ही कोख का, एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर, -निः 1 सगा या सहोदर भाई 2 सरोता 3 इन्द्र का नाम।

सर (वि०) [सृ+अच्] 1 जाने वाला, गतिशील 2 रेचक, दस्तावर—रः 1 जाना, गति 2 बाण 3 आसव, दही का पानी, मलाई 4 नमक 5 लड़ी, हार—अयं कण्ठे बाहु शिशिरमसृणो मौक्तिकसर उत्तर० १।३९ २९ 6 जलप्रपात,—रम् 1. जल 2 क्षीर, सरोवर। सम०—उत्तमः सारस, सारम् ताजा मक्खन, नवनीत तु० शरद।

सरकः, -कम् [सृ+वुन्] 1 सड़क राजमार्ग की अनवरत पंक्ति, 2, मदिरा, उच्च सुरा—चक्रुश्च सह पुरन्ध्रिजनैरमर्षावसिद्धि सरक महीभृत—शि० १५। ८०, १०।१२ 4 पीने का बर्तन, शराब पीने का प्याला, कटोरा—शि० १०।२० 5 तेज शराब का विसरण,—कम् 1 जाना गति 2 तालाब सरोवर 3 स्वर्ग।

सरघा [सर मधुविशेषं हन्ति-सर+हन्+ड+टाप् नि०] मधुमक्खी,—तस्तार सरघाव्याप्तं स क्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३, शि० १५।२१।

सरङ्गः [सृ+अङ्गच्] 1 चतुष्पाद, चौपाया, 2 पक्षी

सरजस्,-सा (स्त्री०), सरजस्का [सहरजसा—ब० स०, पक्षे कप्+टाप्] रजस्वला स्त्री।

सरट् (पु०) [सृ+अटि] 1 हवा, वायु 2 बादल 3 छिपकली 4 मधुमक्खी।

सरटः [सृ+अटच्] 1 वायु 2 छिपकली—सूता हि सरटाना च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम्—मनु० १२।५७।

सरटिः [सृ+अटिन्] 1. वायु 2. बादल।

सरट्टः [सृ+अट्ट] छिपकली, गिरगिट।

सरण (वि०) [सृ+ल्युट्] 1 जाने वाला, गतिशील 2 बहने वाला,—णम् 1 प्रगतिशील, जाने वाला, बहनशील 2 लोहे का जंग, मुर्चा।

सरणिः,-णी (स्त्री०) [सृ+अनि] 1 पथ, मार्ग, सड़क, रास्ता—आनन्द० १८ 2 क्रम, विधि 3 सीधी अनवरत पंक्ति 4 कण्ठरोग।

सरण्युः [सृ+अण्युच्] 1 पक्षी 2 लम्पट, दुश्चरित्र व्यक्ति 3 छिपकली ४ चूहा 5 एक प्रकार का अलंकार।

सरण्यू [सृ+अन्यूच्] 1 वायु, हवा 2 बादल 3 जल 4. वसंत ऋतु 5 अग्नि 6 यम का नाम।

सरत्नि. (पु०, स्त्री०) [सह रत्निना ब० स०] एक हाथ का माप, तु० रत्नि या अरत्नि।

सरथ (वि०) [समानो रथो यस्य रथेन सह वा—ब० स०] एक ही रथ पर सवार, -थः रथ पर सवार योद्धा।

सरभस (वि०) [सह रभसेन ब० स०] 1 वेगवान्, फुर्तीला 2 प्रचण्ड उग्र 3 क्रोधपूर्ण 4 प्रसन्न,—सम् (अव्य०) अत्यन्त वेग से।

सरमा [सृ+अम+टाप्] 1 देवों की कुतिया 2. दक्ष की पुत्री का नाम 3 राक्षस के भाई विभीषण की पत्नी का नाम।

सरयू [सृ+अयु] वायु, हवा, सृ-सू- (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है - रघु० ८।९५, १३।५१, ६३, १४।३०।

सरल (वि०) [सृ+अलच्] 1 सीधा, अवक्र 2 ईमानदार, खरा, निष्कपट, निश्छल 3 सीधासादा, भोला भाला, स्वाभाविक- सरले साहसरागे परिहर -मा० ६।१०, अयि सरले किमत्र मया भवतस्या शक्यम्—२,—लः 1 चीड़ का वृक्ष विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम् कु० १।९, मेघ० ५३, रघु० ४।७५ 2 आग। सम०—द्रुः सरल वृक्ष का रस, चिरोजा, तारपीन, द्रवः सुगन्धित चिरोजा।

सरव्य दे० सरण्य।

सरस् (नपु०) [सृ+असुन्] 1 सरोवर, तालाब, पोखर, पानी का विशाल तलाव—सरसामस्मि सागरः—भग० १०।२१ 2 जल। सम०—अब्जम्,-अम्बुजम् (नपु०) —बहुत, (सरोजम्, सरोजन्मन्, सरोरुहम्) सरसिजम्, सरसिरुहम् कमल - सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् -शः १।२०, सरोरुहकुलिमपुष्पं रागोत्तमाशेषितुम् रत्न० १।३०,—जिनी,-वासिनी 1. कमल का पौधा

भ्रमर कब वा सरोजिनीं त्यजति–भामि० १।१०० 2 कमलों से भरा हुआ सरोवर,– रक्षक (सरोरक्षकः) तालाब का संरक्षक, रुह (सरोरुह) (नपुं०) कमल, वरः (सरोवरः) झील।

सरस (वि०) [रसेन सह ब० स०] 1 रसीला, सजल 2. स्वादु, मधुर 3 आर्द्र–भि० ११।५४ 4 पसीने से तर कु० ५।८५ 5. प्रेमपूर्ण, प्रणयोन्मत्त –भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'सचुम्बं' भी है) 6 लावण्यमय, प्रिय, रुचिकर, सुन्दर –सरसवसन्त गीत० १ 7 ताजा, नया, सद् 1 झील, तालाब 2 रसायन विद्या।

सरसी [सरस्+ङीष्] झील, पोखर, सरोवर—भामि० २।१४८। सम०–रुहम् कमल।

सरस्वत् (वि०) [सरस्+मतुप्] 1. सजल, जलयुक्त 2 रसीला, सजेदार 3 शक्तिसम्पन्न 4 भावुक, पु० 1 समुद्र 2 सरोवर 3 मेघ 4 बैल 5 वायु का नाम।

सरस्वती [सरस्वत्+ङीप्] 1 वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता जिसका वर्णन ब्रह्मा की पत्नी के रूप में किया गया है 2 बोली, स्वर, वचन कु० ४।३९, ४३, रघु० १५।४६ 3 एक नदी का नाम (जो कि मरुस्थल के रेत में लुप्त हो गई है) 4 नदी 5 गाय 6 श्रेष्ठ स्त्री 7 दुर्गा का नाम 8 बौद्धों की एक देवी 9 सोमलता 10 ज्योतिष्मती नामक पौधा।

सरस्य (वि०) [सह रसेन –ब० स०] 1 रसीला, हलके रंग वाला, रसदार–(अकारि) सरसमस्या रसनागुणास्पदम्–कु० ५।१० 2 लाल रंग की लाख से रंगा हुआ रघु० १६।१० 3 प्रणयोन्मत्त, प्रेमाविष्ट, मुग्ध –मनेरपि मनोऽवस्य सरास्य कुसुमेऽञ्जना–सुभा०।

सराव (वि०) [सह रावेण—ब० स०] 1 शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला, क: 1 ढक्कन, आवरण 2 कसोरा, चाय की तश्तरी, तु० 'सरावं'।

सरिः (स्त्री०) [सृ+इन्] झरना, फौवारा।

सरित् (स्त्री०) [सृ+इति] 1 नदी –अन्या सरिता शतानि हि समुद्रमा प्रापदवन्ध्यवस्थितम्–माल्वि० ५।१९ 2 धारा, डोरी। सम०–नाथः,–पतिः (सरितांपति भी), अर्णवः (पुं०) समुद्र, –वरा (सरितांवरा) गंगा का नाम, सुतः भीष्म का विशेषण।

सरि(री)सृप (पुं०) [सृ+इसिनिच्] 1. गति, सरकना 2 वायु।

सरिसम् [सृ+इसच्] जल।

सरीसृपः [कुटिलं सर्पति–सृप्+सक (कुक्) +इरेषादि +अच्] साँप।

सरुः [सृ+उरु] तलवार की मूठ।

सरूप (वि०) [समानं रूपमस्य–ब० स०] 1. समान रूप वाला 2 समान, मिलता-जुलता, वैसा ही–रघु० ६।५९।

सरूपता,-त्वम् [सरूप+तल्+टाप्, त्व वा] 1. समानता 2 ब्रह्मरूप हो जाना, मुक्ति के चार प्रकारों में से एक।

सरोष (वि०) [सह रोषेण ब० स०] 1 क्रुद्ध, रोषपूर्ण 2 कुपित।

सर्क: [सृ+क] 1 वायु, हवा 2 मन।

सर्ग [सृज्+घञ्] 1 छोड़ना, परित्याग 2 सृष्टि अस्या. सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदविक्रम० १।९ 3 सृष्टिरचना कु० २।६, रघु० ३।२७ 4 प्रकृति, विश्व 5 नैसर्गिक गुण, प्रकृति 6 निर्धारण, संकल्प गृहाण शब्द यदि सर्ग एष ते –रघु० ३।५१, १४।४२, शि० १९।३८ 7 स्वीकृति, सहमति 8 अनुमाग, अध्याय, (काव्य आदि का) सर्ग 9 धावा, हमला, (सेना का) प्रगमन 10 मलत्याग 11 शिव का नाम। सम० आद्यः सृष्टि का क्रम, –बन्धः महाकाव्य,–सर्गबन्धो महाकाव्यम्–सा० द०।

सर्ज् (स्वा० पर० सर्जति) 1 अवाप्त करना, उपलब्ध करना 2 उपार्जन करना।

सर्जः [सृज्+अच्] 1 साल का पेड़ 2 साल वृक्ष का धूमे वाला रस। सम० निर्यासकः,–अभिः,–रसः शिरोजा, लाख।

सर्जकः [सृज्+ण्वुल्] साल का वृक्ष।

सर्जनम् [सृज्+ल्युट्] 1 परित्याग, छोड़ना 2 ढीला करना 3 रचना करना 4. मलत्याग 5 सेना का पिछला भाग।

सर्जिः, सर्जिका, सर्जी (स्त्री०) [सृज्+इन्, सर्जि+कन्+टाप्, सर्जि+ङीष्] सज्जीखार।

सर्जुः, सर्जूः [सृज्+ऊ] व्यापारी- स्त्री० 1 बिजली 2 हार 3 गमन, अनुसरण।

सर्पः [सृप्+घञ्] 1 सर्पीली गति, घुमावदार चाल, खिसकना 2. अनुसरण, गमन 3 नाग, साँप। सम० अरातिः,– अरिः 1 नेवला 2 मोर 3 गरुड़ का विशेषण, अशनः मोर, –आवासम् –द्रुमम् चन्दन का वृक्ष, छत्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, जूह, –तृणः नेवला,–द्विषः साँप का विशेषण धन,–धारकः सपेरा,–भुज् (पुं०) 1 मोर 2. सारस 3. अजगर, –मणिः साँप के फण की मणि, –राजः वासुकि।

सर्पणम् [सृप्+ल्युट्] 1 रेंगना, सरकना 2. बकवृत्ति 3 बाग की भूमि के समानान्तर उद्यान।

सर्पिणी [सृप्+णिनि+ङीप्] 1 साँपिन 2 एक प्रकार की जड़ी बूटी।

सर्पिन् (वि०) [सृप्+णिनि] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, घुमावदार, टेढ़ी चाल चलने वाला 2. जाने

वाला, जलने-जलाने वाला—मूकः सन्दर्विसर्पिणी —पंच० १।२५२।

सर्पिस् (नपु०) [सृप् + इसि] पिघलाया हुआ घृत, घी (घृत और सर्पिस् के अन्तर को जानने के लिए दे० आज्य)। सम०—समुद्र घृतसागर नाम समुद्रों में से एक।

सर्पिष्मत् (वि०) [सर्पिस् + मतुप्] घी (से प्रभावित) युक्त।

सर्व् (स्वा० पर० सर्वति) जाना, हिलना-जुलना।

सर्व् [सृ + मन्] 1 चाल, गति 2 आकाश।

सर्व् (स्वा० पर० सर्वति) चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सर्व (त्रि० वि०) [सृणाति हिनस्ति सर्वम् रुत्व० ब० व० पु०, सर्व] 1 सब, प्रत्येक—उपयाचितसर्वस्व सर्व एव दरिद्रति,—हि० ४।२ स्थिते मयी सर्वति हि लघु पूर्णता गौरवाय भर्तृ० २०।९३ 2 पूर्ण समस्त, पूरा,—र्वः 1 विष्णु का नाम 2 शिव का नाम। सम०—अङ्गम् समस्त शरीर, अङ्गीण (वि०) समस्त शरीर में व्याप्त या रोमांचकारी सर्वाङ्गीण सुन्दर जिसका विकास० ५।११, अधिकारिन् (पु०) अध्यक्ष अधीक्षक, अन्नीन सब प्रकार के अन्न को खाने वाला सर्वान्नभोजिन आदि, आकारम् (समास में) सर्वथा पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, आत्मन् (पु०) पूर्ण आत्मा, सर्वात्मना सर्वथा, पूरी तरह से, पूर्ण रूप से, ईश्वर सबका स्वामी—रः, गामिन् (वि०) विश्वव्यापी, सर्वव्यापक, जित् (वि०) सर्वजेता अजेय, ज्ञ,—विद् (वि०) सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञ (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 बुद्ध का विशेषण, दमन (वि०) सब का दमन करने वाला, दुर्निवार, नामन् (नपु०) संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समूह —मंगला पार्वती का विशेषण, रस नाद, विरोजा लिपिन् (पु०) पावड़ी, छप्परबंदी छाती व्यापिन् (वि०) सर्वत्र व्याप्त रखने वाला, शेवम् (पु०) सर्वस्व दक्षिणा में देकर यज्ञानुष्ठान करने वाला, —सहा (सर्वंसहा भी) पृथ्वी, स्वम् 1 प्रत्येक वस्तु 2 किसी व्यक्ति की समस्त सम्पत्ति, जैसा कि 'सर्वस्वदण्ड' में, 'हरणम्' सारी सम्पत्ति का अपहरण या जब्ती 2 किसी वस्तु का सर्वांश दे० या० १।२४, ६।२, मा० ८।६, मिता० १।६३।

सर्वंकष (वि०) [सर्व—कष् + क] 'सब कुछ नष्ट करने वाला', सर्वसंहारक सर्वंकषा भगवती भविष्यत्येव मा० १।३०, मालवि० ४।२, 2 दुष्ट, बदमाश।

सर्वतः (अव्य०) [सर्व + तसिल्] 1 प्रत्येक दिशा से, सब ओर से 2 सब ओर, सर्वत्र, चारों ओर 3 पूर्णतः सर्वथा। सम०—गामिन् (वि०) 1 सर्वत्र पहुँच रखने वाला कु० ३।१२, भद्र 1 विष्णु का रथ 2 वीणा 3 एक प्रकार का चित्रकाव्य- उदा० कि० १५।२५ 4 मन्दिर या महल जिसके चारों ओर द्वार हों (इस अर्थ में नपु० भी) (द्रा) नर्तकी, नटी —मुख (वि०) सब प्रकार का, पूर्ण, असीमित—ब० ५।२५, (खः) 1. शिव का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण कु० २।८ (चारों ओर मुख किये हुए) 3 परमात्मा आत्मा 5 ब्राह्मण 6 आग 7 स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व + त्रल्] 1 प्रत्येक स्थान पर, सब जगहों पर 2 हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + थाल्] 1 हर प्रकार से सब तरह से उत्तर० १।५ 1 बिल्कुल, पूर्णतः (प्रायः नकारात्मक) 3 पूर्णतः, बिल्कुल, नितान्त। सब समय।

सर्वदा (अव्य०) [सर्व + दाच्] सब समय, सदैव, हमेशा।

सर्वरी दे० 'शर्वरी'।

सर्वशः (अव्य०) [सर्व + शस्] 1 पूर्णतः, सर्वथा, पूरी तरह से 2 सर्वत्र 3 सब ओर।

सर्वाणी दे० शर्वाणी'।

सर्वेक्ष [सृ + अप् सुक्] 1 सरसों सर्षपसदृशानि सर्षपसदृशानि गणयति सुभा०, मा०—१०।६ 2 एक छोटा बाट 3 एक प्रकार का विष।

सर्ह (स्वा० पर० सर्हति) जाना, हिलना-जुलना।

सल् [सल् + अच्] जल।

सलज्ज (वि०) [लज्जया सह ब० स०] विनीत, लज्जाशील।

सलिलम् [सलति गच्छति निम्नम् सल् + इलच्] पानी, सुभगसलिलावगाहा ३।० १।३। सम०—अर्णव (वि०) प्यासा, आशय तालाब, ताल, पानी की टंकी,—इन्धन बड़वानल—उपप्लव जलप्लावन, प्रलय बाढ़, क्रिया 1 अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर शवस्नान 2 जलतर्पण, उदकक्रिया,—जन्म कमल,—निधि. समुद्र।

सलील (वि०) [सह लीलया ब० स०] क्रीडाशील, स्वच्छन्दचर भृंगारप्रिय।

सलोकता [समानः लोकः यस्य इति सलोक तस्य भावः तल् + टाप्] एक ही लोक में होना, किसी विशेष देवता के साथ एक हो स्वर्ग में निवास (मुक्ति की चार प्रकार की अवस्थाओं में से एक)।

सल्लकी [शल् + ऊन्, कुक्, पृषो० शस्य स] एक प्रकार का पेड़, सलाई का पेड़, दे० 'सल्लकी'।

सव: [सु + अच्] 1 सोमरस का निकालना 2. चढ़ावा, तर्पण 3 यज्ञ 4 सूर्य 5. बाढ़ 6 प्रजा, अप् 1 पानी 2 फूलों से लिया गया मधु।

सवनम् [सु (सू) + ल्युट्] 1 सोम रस का निकालना या पीना 2 यज्ञ—अथ न सवनाय दीक्षसे. ऋ० ८।७५, पं० ३।२८ 3 स्नान, शुद्धिपरक स्नान 4. जनन, प्रसव, बच्चे पैदा करना।

सवयस् (वि०) [समान वयो यस्य - ब० स०] एक ही आयु का पु० 1 समवयस्क, समसामयिक 2 एक ही आयु के साथी स्त्री० सवी, सहेली।

सवर, (पु०) 1. शिव का नाम 2 अल।

सवर्ण (वि०) [समानो वर्णो यस्य ब०स०] 1 एक ही रंग का 2 एक सी सुरत शक्ल का, समान, मिलता-जुलता दुर्वर्णभित्तिरिह सान्द्रसुधासवर्णा - शि० ४। २८, मेघ० १८. ऋ० ९।२१ 3 एक ही जाति का 4 एक ही प्रकार का, एक जैसा ५. एक ही वर्णमाला का, एक ही स्थान से (वागिन्द्रियों द्वारा) उच्चारण किये जाने वाले वर्ण-तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम् पा० १।१।९।

सविकल्प, सविकल्पक (वि०) [सह विकल्पेन—ब० स० पक्षे कप्] 1 तर्कशील 2 संदिग्ध 3 कर्ता और कर्म के अन्तर को पहचानने वाला ज्ञाता और ज्ञेय के भेद को जानने वाला (विप० निर्विकल्पक)।

सविग्रह (वि०) [सह विग्रहेण ब०स०] 1 शरीरधारी, देहधारी 2 सार्थक, अर्थवाला 3 समर्थतत्, समासवाला।

सविचार, सविमर्श (वि०) [सह विचारेण विमर्शेन वा—ब० स०] विचारवान्, क्रमं, क्रमं (अव्य०) विचार-पूर्वक।

सवितृ (वि०) (स्त्री० त्री) [सू - तृच्] जनक, उत्पादक, फल देने वाला—सवित्री कामाना यदि जगति जातेति भवती गंगा० २३, पु० 1 सूर्य उदेति सविता ताम्रस्ताम्र स्त्वास्तमेति च - काव्य० ७ 2 शिव 3 इन्द्र 4 मदार का पेड़, अर्क वृक्ष।

सवित्री [सवितृ + ङीप्] 1 माता कु० १।२४ 2 गाय।

सविध (वि०) [सह विधया ब० स०] 1 एक ही प्रकार या ढंग का 2 निकट सटा हुआ, समीपी भूयो भूय सविधनगरीरथ्यया पर्यटन्तम्— मा० १।१५ अम् क्रियाविशे० पदोत्त०—ग्रस्य न सविधे दयिता दवदहनदुहितरीमिनिस्तस्य काव्य० १०, किमासेव्य पुमा सविधमनवद्य द्युसरितः १०, मे० २।४७, शि० १४।६९, कामि० २।१८२।

सविनय (वि०) [सह विनयेन—ब० स०] विनीत, विनम्र, -यम् (अव्य०) विनयपूर्वक।

सविभ्रम (वि०) [सह विभ्रमेण ब० स०] क्रीडायुक्त, विलासयुक्त।

सविशेष (वि०) [सह विशेषेण ब० स०] 1 विशिष्ट गुणों से युक्त 2 विशेष, असाधारण 3 विशिष्ट, खास—उत्तर० ४ 4 प्रमुख, श्रेष्ठ, बढ़िया 5 विलक्षण (सविशेषम्, सविशेषतः (क्रि० वि०) विशेष कर, खास तौर से, अत्यंत—अनेन धर्मं सविशेषमस्य मे विवर्धसार प्रतिभाति भामिनि कु० ५।३८, प्रायः समास में—कु० १।२७ रघु० १६।५३)।

सविस्तर (वि०) [सह विस्तरेण—ब० स०] विवरण सहित, सूक्ष्म, पूर्ण, रम् (अव्य०) विवरण के साथ, विस्तार पूर्वक।

सविस्मय (वि०) [सह विस्मयेन ब० स०] आश्चर्यान्वित, अचंभे से युक्त, चकित।

सवृद्धिक (वि०) [सह वृद्ध्या ब० स० कप्] जिसका ब्याज मिले, ब्याज से युक्त।

सवेश (वि०) [सह वेशेन ब० स०] 1 सजा हुआ, अलंकृत, वेशभूषा से युक्त 2 निकट, समीपवर्ती।

सव्य (वि०) [सु + य] 1 बायाँ, बा० हाथ 2 दक्षिणी 3 विरोधी, पिछड़ा हुआ, उलटा 4 सही, -व्यम् (अव्य०) जनेऊ का बायें कंधे पर लटकते रहना तु० अपसव्य। सम० इतर (वि०) सही, ठीक, साचिन् (पु०) अर्जुन का विशेषण निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्— भग० ११।३३, (महाभारत में नाम की व्याख्या निम्नांकित है उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे। तेन देवमनुष्येषु सव्य साचीति मां विदुः॥)।

सव्यपेक्ष (वि०) [व्यपेक्षया सह ब० स०] संयुक्त, निर्भर—स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत्—मा० १, उत्तर० ६।

सव्यभिचार: [सह व्यभिचारेण— ब० स०] (तर्क० में) हेत्वाभास के पाँच मुख्य भेदों में से एक, साधारण मध्यपद, व्याख्या के लिए दे० 'अनैकान्तिक'।

सव्याज (वि०) [सह व्याजेन - ब० स०] 1 चालबाज 2 बगुलाभगत, रंगासियार, चालाक।

सव्यापार (वि०) [व्यापारेण सह ब० स०] व्यस्त, व्यापृत, कार्य में नियुक्त।

सव्रीड (वि०) [व्रीडया सह— ब० स०] 1 लज्जाशील शर्मिन्दा।

सव्येष्ठ (पु०), सव्येष्ठः [सव्ये तिष्ठति-सव्ये + स्था + क्त, क का, अलुक् स०, षत्वम्] सारथि, रथ हाँकने वाला।

सशल्य (वि०) [सहशल्येन-ब०स०] 1 काटेदार 2 बर्छी या काँटों से बिंधा हुआ।

सशल्य (वि०) [सहशल्येन— ब० स०] शल्य से युक्त, अन्नोत्पादक,-ल्या सूर्यमुखी फूल का एक भेद।

सश्मश्रु (वि०) [सह श्मश्रुणा—ब० स०] दाढ़ी-मूंछ वाला, स्त्री० वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूंछ दिखाई दे।

सभीक (वि०) [श्रिया सह—ब० स०, कप्] 1 समृद्धिशाली, सौभाग्यशाली 2 प्रिय, सुन्दर।

सह् (अदा० पर० सस्ति) सोना।

ससत्त्व (वि०) [सह सत्त्वेन ब०स०] 1 जीवन शक्ति से युक्त, ऊर्जस्वी, बलवान्, साहसी 2 गर्भवती, स्त्री गर्भवती स्त्री।

ससन्देह (वि०) [सह सन्देहेन—ब० स०] सदिग्ध,—ह एक अलंकार का नाम दे० 'सन्देह'।

ससपस् [सस्+क्युट्] पशुमेध, यज्ञीयपशु का वध।

ससन्ध्य (वि०) [सन्ध्यया सह—ब० स०] सन्ध्यासम्बन्धी, सायंकालीन।

ससाध्वस (वि०) [सह साध्वसेन ब० स०] आतंकित, डरा हुआ, भीरु।

सस् दे० सञ्ज्।

सस्यम् [सस्+यत्] 1 अनाज, अन्न—(एतानि) सस्यं पूर्णं जठरपिठरे प्राणिना सम्भवन्ति—पञ्च० ५।९७ दे० 'धान्य' भी 2 किसी भी पौधे का फल 3 शस्त्र 4 सद्गुण, खूबी। सम०—इष्टि (स्त्री०) फसल पक जाने पर नये अन्न से किया जाने वाला यज्ञ,—घ्न (वि०) उपजाऊ,—घातिन् (वि०) अन्न को नष्ट करने वाला, (पु०) एक प्रकार का चूहा घूस,—शूकर: साल का पेड़।

सस्यक (वि०) [सस्य+कन्] अच्छे गुणों से युक्त, गुणान्वित श्लाघ्य, प्रशंसनीय, क 1 तलवार 2 शस्त्र 3 एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर।

सस्वेद (वि०) [सह स्वेदेन ब० स०] पसीने से तर, प्रस्विन्न,—दा वह कन्या जिसका हाल में ही कौमार्य-भंग हुआ हो।

सह्[1] (दिवा० पर० सह्यति) 1 सन्तुष्ट करना 2 प्रसन्न होना 3 सहन करना, झेलना।

[1] (स्वा० आ०—सहते, सोढ, नि, परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सह् के स का मूर्धन्य ष हो जाता है, यदि सह् के ह् को ढ नहीं हुआ) (क) झेलना, सहन करना, भुगतना, गम खाना—वक्त्रोल्लासा सोढा भर्तृ० ८।६, पद सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः—कु० ५।४, इसी प्रकार दृश, क्लेश आदि-रघु० १२।९२, ११।५२, भट्टि० १७।५९ (ख) 1 सहन करना, अनुमति देना,—प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यथा—कि० २।२१, मेघ० १०५, रघु० १४।६३ 2 क्षमा करना, सहलेना—बारबार मर्यतस्यापराधं मोढुं—शि० ३, भग० ११।४४ 3 प्रतीक्षा करना, सबर करना—द्विषान्यहार्यमिच्छन्मोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, १५।४५ 4 सहन करना, सहारा देना, ढकेलना श० 3 5 जीतना, परास्त करना, विरोध करना, मुकाबला करना 6 दबाना, रोकना 7 योग्य होना ('तुमुन्' के साथ), प्रेर० (सहयति-ते) 1 धारण करवाना, भुगतवाना 2 धारण करने या सहारा देने के योग्य बनना—गुर्वीरि विरहदुःखमाशाबन्ध साहयन्ति श० ४।१६, इच्छा० (सिसहिषते) सहन करने की इच्छा करना, सह्, 1 योग्य होना, शक्ति या ऊर्जा रखना, साहस करना, दिलेरी दिखाना तदानुवृत्तिं न च कर्तुमुत्सहे—कु० ५।६५, "मैं पसंद नहीं करता" आदि भट्टि० २।५४, ५।५४, १४।८९, शि० १४।८३ 2 (क) प्रयास करना, प्रवृत्त होना कि० १।३६ (ख) हानि सहना, विषण्ण न होना, हिम्मत न हारना भट्टि० १०।१६ 3 आराम में होना कु० ४।३६ 4 आगे बढ़ना प्रयाण करना (इच्छा०) उकसाना, उद्बुद्ध भट्टि० ९।६९, परि—, सहन करना भट्टि० ९।७३ प्र—, 1 सहन करना, झेलना—न तेजस्तेजस्वी प्रसृतमपरेषां प्रसहते उत्तर० ६।१४ 2 सामना करना, मुकाबला करना, पछाड़ना—सयुगे सायुगीनं तमुद्यतं प्रसहेत क कु० २।५७ 3 चेष्टा करना, प्रयास करना 4 योग्य होना 5 शक्ति या ऊर्जा रखना—दे० 'प्रसह्य' भी, वि—, 1 सहन करना, झेलना रघु० ४।६३, ८।५६ 2 मुकाबला करना, सामना करना, प्रतिरोध करने के योग्य होना—रघु० ४।४९ 3 योग्य होना 4 अनुमति देना 5 इच्छा करना, पसंद करना।

सह् (वि०) [सहते—सह्+अच्] 1 सहन करने वाला, झेलने वाला, भुगतने वाला 2 धीर 3 योग्य—दे० असह्, ह भर्तारं का पहिया, ह्, हम् शक्ति, सामर्थ्य।

सह (अव्य०) 1 के साथ मिलकर, साथ-साथ, सहित, से युक्त (करण०)—गच्छतां सह यातिं कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते कु० ४।३३ 2 साथ मिलकर, एक ही समय, युगपत् अभ्युदयौ सहैवासौ कुरुते नृपतिद्वयम् सुभा०। सम०—अध्यायिन् (पु०) सहपाठी,—अर्थ (वि०) समानार्थक (र्थः) समान या सामान्य उद्देश्य, उक्ति (स्त्री०) अलंकारशास्त्र में एक अलंकार का नाम सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकस्य द्विवाचकम्—काव्य० १०, उदा०—पतति भूमौ सह सैनिकाश्वभूमि रघु० ४।६१, उदज पर्णकुटी,—उदर एक ही पेट से उत्पन्न, सगा भाई विक्रमांक० १।२१, उपमा उपमा का एक भेद, ऊढ, ऊढज: विवाह के समय गर्भवती स्त्री का पुत्र (हिन्दूधर्मशास्त्रों में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक), कार (वि०) 'ह' की ध्वनि से युक्त नलं० २।१४, (र:) 1 सहयोग 2 आम का पेड़ क इदानीं सहकारभञ्जनेन पल्लवितामनिमुक्तलज्जता सहते—श० ३, कण्टिका एक प्रकार का बेल, कारिन्, कृत् (वि०) सहयोग

देने वाला (पु०) सहप्रकाशक, सहकारी, सहकर्मी -हृत (वि०) सहयोग दिया हुआ, से सहायताप्राप्त, गमनम् 1 साथ जाना 2. किसी स्त्री का अपने मृत पति के शरीर के साथ जलना, विधवा का सती होना चर (वि०) साथ आने वाला, साथ रहने वाला उत्तर० ३।८ (पुः) 1 साथी, मित्र, सहभागी 2 पति 3 प्रतिभू (स्त्री० री) 1 सहेली 2 पत्नी, सखी, चरित (वि०) साथ रहने वाला, संघ में उपस्थित रहने वाला, साथ देने वाला, चार 1 साथ रहना 2 सहमति, सामनस्य 3 (तर्क० में) हेतु के साथ साध्य का अनिवार्यतः साथ रहना चारिन् दे० 'सहचर', ज (वि०) 1 अन्तर्जन्मा, स्वाभाविक, अन्तर्जात 2 आनुवंशिक (जः) 1 सगा भाई 2 नैसर्गिक स्थिति या वृत्ति, °अरि. नैसर्गिक शत्रु, °मित्रम् नैसर्गिक दोस्त, जात (वि०) प्राकृतिक दे० 'सहज', —दार (वि०) 1 सपत्नीक 2 विवाहित,—देवः पांडवों का कनिष्ठ भ्राता, नकुल का जुड़वां भाई जो अश्विनीकुमारों की कृपा से माद्री के पेट से उत्पन्न हुआ, यह मानव-सौन्दर्य का एक आदर्श माना जाता है, धर्म समान कर्तव्य, °चारिन्(पु०)पति, °चारिणी 1 धर्मपत्नी, वैध पत्नी 2 सहकर्मी °पांसुक्रीडित, °पांसुकिल (पु०) सखा बचपन का मित्र, लंगोटिया यार, °भाविन् (पु०) मित्र, हितैषी, अनुयायी, भू (वि०) नैसर्गिक, सहजात रघु० १।२, °भोजनम् मित्रों के साथ बैठ कर भोजन करना, °यायिन् दे० सहयायिन्, °युद्धम् सगी साथी (युद्ध में साथ देने वाला),—वसति, °वास. मिलकर रहना अहह्वसन्निमुपेत्य यै प्रियायाः कृत इव भुग्नधियो-ऽस्तरुपदेशः - शि० २।३।

सहता, त्वम् [सह् + तल् + टाप्, त्व वा] मिलाप, साहचर्य।

सहन (वि०) [सह् + ल्युट्] सहन करने वाला, झेलने वाला, —नम् 1 सहन करना,झेलना 2 सहिष्णुता,सहनशीलता।

सहस् (पु०)[सह् + असि] 1 मगसिर का महीना शि० ६।४७ १६।४३ 2 आदे की ऋतु नपु० 1 शक्ति, ताकत, सामर्थ्य 2 बल, हिंसा 3 विजय, जीत 4 कान्ति, चमक।

सहसा [सह + सो + डा] 1 बलपूर्वक, उजड्डतापूर्वक 2 उतावली के साथ, अधाधुंध, बिना विचारे सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३० 2 अकस्मात्, अचानक आतंक शब्दे सह-सोत्पतन्ति —रघु० १३।११।

सहस्कारः [सह् + अस्कारच्] 1 मोर 2 यज्ञ, आहुति।

सहस्य [सहसे हलाय हितं सहस् + यत्] पौष मास, सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा —कु० ५।२६।

सहस्रम् [समानं हसति—हस् + र] हजार। सम०—अंशु, —अर्चिः, कर, किरण,—दीधिति,—धामन्,—धार - अरीचि,रश्मि (पु) सूर्य—ख० ७।४, रघु० १३।४४, मुद्रा० ६।१७, अक्ष (वि०) 1 हजार आँखों वाला 2 जागरूक, सजग (क्षः) 1 इन्द्र का विशेषण पुरुष का विशेषण ऋक्० १०।९० 3 विष्णु का विशेषण, काण्डा मर्कट तुल,—कृत्वस् (अव्य०) हजार बार, ग (वि०) उदार, धारः विष्णु का चक्र, पत्रम् कमल रघु० ७।११,—बाहु. 1 राजा कार्तवीर्य का विशेषण 2 बाण राक्षस का विशेषण 3 शिव का (कुछ के अनुसार विष्णु का) विशेषण, मुखः, -मूर्धन्, यौनि (पु०) विष्णु का विशेषण —रोमन् (नपु०) कमल,—वीर्या होम - शिखरः विन्ध्य पर्वत का विशेषण।

सहस्रधा (अव्य०) [सहस्र + धाच्] हजार भागों में, हजार प्रकार से—दीयें कि न सहस्रधाहमधवा रामेण किं दुष्करम् उत्तर० ६।४०।

सहस्रशस् (अव्य०) [सहस्र + शस्] हजार-हजार करके।

सहस्रिन् (वि) [सहस्र + इनि] 1 हजार से युक्त हजारी, - सहस्री लक्षमीहते—पंच० ५।८२ 2 हजारों से युक्त 3 हजार तक (मूल्यमान आदि)—मनु० ८।३३६, पु० 1. हजार मनुष्यों की टोली 2 हजार सैनिकों का सेनापति।

सहस्वत् (वि०) [सहस् + मतुप्] समर्थ, शक्तिशाली।

सहा [सह् + अच् + टाप्] 1 पृथ्वी 2 घीकुवार का पौधा केतकी का फूल।

सहायः [सह एति—सह् + इ + अच्] 1 मित्र, साथी—सहाय-साध्या प्रतिपत्तिः सिद्धयः - कि० १४।८४, कु० ३।२१ 2 अनुयायी, अनुगामी 3 'सधि' द्वारा बनाया गया मित्र 4 सहायक, अभिभावक 5 चकवाक 6 एक प्रकार का गन्धद्रव्य 7 शिव का नाम।

सहायता,-त्वम् [सहाय + तल् + टाप्, त्व वा] 1 साथियों का समूह 2 साथ, मिलाप, मैत्री 3 सहायता, मदद —कुसुमाभरणे सहायता बहुशः सौम्य गतस्त्वमावयोः कु० ४।२५, रघु० ९।१९।

सहायवत् (वि०) [सहाय + मतुप्] 1 मित्रों से युक्त 2 मित्रता में आबद्ध, सहायवान् सहायता प्राप्त।

सहारः [सह् + ह + अच्] 1 आम का पेड़ 2 विष्णु का नाम, प्रलय।

सहित (वि०) [सह् + इतच् सह् + क्त, हितेन सह वा स + धा + क्त] सहगत या सेवित, साथ-साथ, समेत, से युक्त - एवनाम्निसमायस्यो ग्राम्य सहित बंधु-स्थतेजसा रघु० ८।४, तम् (अव्य०) साथ-साथ, के साथ।

सहिष्णु (वि०) [सह् +तृच्] सहन करने वाला, सहनशील सहिष्णु ।

सहिष्णु (वि०) [सह् +इष्णुच्] 1 सहन करने के योग्य झेलने में समर्थ—रविकिरणसहिष्णुःश्लेषशैलैरभिन्नम् —शृ० २।४ 2 क्षमाशील, तितिक्षु, सहनशील सूकरस्तरुवन्मर्षिष्णुना रिपुरुन्मूलयितु महानपि —कि० २।५० ।

सहिष्णुता,—त्वम् [सहिष्णु—तल्+टाप्, त्व वा] 1 सहन करने की शक्ति, सहारा देने की शक्ति 2 क्षमा शीलता, तितिक्षा ।

सहुरिः [सह् +उरिन्] सूर्य, स्त्री० पृथ्वी ।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ब० स०] 1 अच्छे हृदय वाला, कृपालु, करुणाशील 2 निष्कपट, सः 1 विद्वान पुरुष 2. (गुणी की) सराहना करने वाला, रसिक, विवेकशील इत्यपदेशं कवे सहृदयत्व च करोति काव्य० १, पश्यन्तुवंश्यन्ये सहृदयधुरीणा कतिपये —रत्न० ।

सहृल्लेख (वि०) [हृदयस्य लेख कालुष्यकरणम्, सह हृल्लेखेन—ब० स०] घृणित, सदिग्ध, खम् दूषित आहार ।

सहेल (वि०) [सह हेलेन -ब० स०] क्रीडाशील केलि-परक, विनोदप्रिय ।

सहोढः [सह ऊढेन—ब० स०] चुराये गये सामान के साथ पकड़ा गया चोर ।

सहोत्त (वि) [सह् +ओत] अच्छा, श्रेष्ठ,—र. मन्त्र, महात्मा ।

सह्य (वि०) [सह् +यत्] 1 सहन करने के योग्य, सहारा दिये जाने के योग्य, सहन करने योग्य अपि सह्या ते शिरोवेदना -मुद्रा० ५, मालवि० ३।४ 2 सहन किये जाने योग्य, झेले जाने योग्य कथ तूष्णी सह्यो निग्रहविग्रहानी नु विरह — उत्तर० ३।४४ 3 सहन करने योग्य 4 सहन करने में समर्थ, सहन करने के योग्य 5 समर्थ, शक्तिशाली,—ह्यः भारत की सात प्रधान पर्वतश्रेणियों में एक समुद्र से कुछ दूरी पर पश्चिमी घाट का कुछ भाग, सह्याद्रिश्रेणी—राज्ञा स्त्रोत्साग्निरोऽपावीन्मलयन इवार्णव —रघु० ४।५३ ५२, कि० १८।५, ह्यम् 1 स्वास्थ्य, आरोग्यलाभ 2. सहायता 3. युक्तसाप यौगि ।

सा [सो+ड+टाप्] 1 लक्ष्मी का नाम 2 पार्वती का नाम ।

सांयात्रिकः [सयात्रा+ठक्] समुद्र-व्यापारी, पोतवणिक्, समुद्री व्यापार करने वाला पद्म० १।३१६ ।

सांयुगीन (वि०) [सयुग साधु छ] युद्धसबधी, रण-कौशल रघु० ११।३०, विक्रम० ५, जो भारी योद्धा, युद्धकुशल सैनिक—कु० २।५७ ।

सांराविणम् [सम्०+रु+णिनि—सरावित्+अण्] ऊँची आवाज, भारी कोलाहल—उत्तालाः कटपूतनाप्रभृतय सारावि कुर्वते—मा० ५।११, मुद्रि० ७।४३ ।

सांवत्सर (स्त्री० री), **सांवत्सरिक** (स्त्री०—की) (वि०) [सवत्सर+अण् ठक् वा] वार्षिक, सालाना, क ज्योतिषी, दैवज्ञ ।

सांवादिक (वि०) (स्त्री० की) [सवाद+ठक्] 1 (बोलचाल में) प्रचलित 2 विवादग्रस्त,—क वार्तालिक, नैयायिक ।

सांवृत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सवृत्ति+ठक्] भ्रामक, अलौकिक (घटना या तत्त्वविषयक) ।

सांशयिक (वि०) (स्त्री० की) [सशय+ठक्] 1 सन्देह 2 अनिश्चित, अस्थिरमति ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री०—की) [ससार+ठक्] दुनियावी, लौकिक—सासारिकेषु च सुखेषु वय रमज्ञा —उत्तर० २।२२ ।

सांसिद्धिक (वि०) [ससिद्धि+ठञ्] 1 प्राकृतिक, स्वत विद्यमान, सहज, अलक्षित 2 स्वभावत प्रदत्त, स्वत कृत 3 स्वयभू 4 अतिप्राकृतिक साधनों से प्रभा-वित; सम० —ज्ञ स्वाभाविक बुद्धिमत्ता (विप० नैमित्तिक - प्रतिभ) वेदान्त मतसबधी ।

सांस्थानिक [सस्थान+ठक्] समानदर्शीय, एक ही देश के निवासी ।

सांस्थानिकम् [सम्—स्था—णिनि+अण्] सामान्य प्रवाह या सीमा ।

साहस्रिक (वि०) (स्त्री० की) [सहस्र+ठक्] हजारीक, हजार ।

साकम (अव्य०) [सह अर्केण अच् - अम्, साहेश] 1 के साथ साथ (प्रायः तृ० के साथ) —भान्ति गुरुणा साकं सभवाना नवाधुना —नैष० २।१३८, १।८८ 2 उसी समय पश्चात्, एक ही समय ।

साकल्यम् [सकल ष्यञ्] समष्टि, सम्पूर्णता, किसी वस्तु का समूचा या सम्पूर्ण भाग साकल्याकल्पे—मच० २।१९, (साकल्येन) पूर्णत, पूरे तरह से पूर्ण रूप से मनु० २।१०५ ।

साकूत (वि०) [सह आकूतेन ब० स०] 1 साभिप्राय, सार्थक, अर्थपूर्ण साकूतमिदम् गीत० २, साकूत वचनम् आदि 2 सप्रयोजन 3 शृगार प्रिय, स्वेच्छा चारी तम् (अव्य०) 1 अर्थत, सार्थकतापूर्वक जैसा कि 'साकूत का निर्देश्य में 2 सानुराग 3 भावु-कता के साथ, भावुकतापूर्वक ।

साकेतम् [सह आकेतेन ब० स०] अयोध्या नगरी का नाम साकेतनाथोऽवलिभि प्रयुक्त रघु० १४।१३, १३।७९, १८।३५, अरुणद्यवन साकेतम् - महा०, ताः (पु०, ब० व०) अयोध्या निवासी ।

साकेतक [साकेत+कन्] अयोध्या का निवासी।

साक्तुकम् [संकृता समाहार संकु+ठक्] भुने हुए अन्न या सत्तू का ढेर, रू: जौ।

साक्षात् (अव्य०) [सह+अक्ष्+आति] 1 दो सामने, आंखों के सामने दृश्य रूप में हूबहू, स्पष्ट रूप से 2 व्यक्तिशः, वस्तुतः, मूर्तरूप में साक्षात्प्रियमामुपगतामपहाय पुत्रम् रघु० ६।१६, १।६ 3 प्रत्यक्ष, (समास में प्रायः 'शरीरी' – साक्षाद्यम्, या खुला, सीधा – तत्साक्षात्प्रतिषेधे कर्तायं मा० १।११ (साक्षात् कृ 'अपनी आंखों से देखना, स्वयं जान लेना')। सम०—करणम् 1 दृष्टिगोचर करना 2 इन्द्रियग्राह्य बनाना 3 अन्तर्ज्ञानिमूलक प्रत्यक्षज्ञान,—कारः प्रत्यक्ष-ज्ञान, समझ, जानकारी।

साक्षिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सह अक्षि अस्य, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी वा सह+अक्ष+इनि] 1 देखने वाला, अवलोकन करने वाला, सबूत देने वाला, पु० गवाह, अवेक्षक, चश्मदीद गवाह, आंखों देखी बात बताने वाला, फल रूप साक्षिणं दृष्टमेव्यपि कु० ५।६०।

साक्ष्यम् [साक्षिन्+ष्यञ्] 1 गवाही, साक्षादत्व -तमेव वाधाय विवाहसाक्ष्ये रघु० ७।२० 2 अभिप्रमाण, सम्पादन।

साक्षेप (वि०) [सह आक्षेपेण ब० स०] जिसमें आक्षेप या व्यय भरा हो, दुर्वचनयुक्त।

साक्षेप्य (वि०) (स्त्री० पी) [सक्षि+ष्यञ्] 1 मित्र-सम्बन्धी 2 मैत्रीपूर्ण सौहार्दपूर्ण।

साख्यम् [सखि+ष्यञ्] मित्रता, सौहार्द।

सागरः [सगरेण निर्वृत्तः—अण्] 1 समुद्र, उदधि सागर सागरोपम (आल० से भी) दयासागर, विद्यासागर आदि, तु० सवर 2 चार या सात की संख्या 3 एक प्रकार का हरिण। सम० अनूपज (वि०) समुद्र के किनारे स्थित, अन्त (वि०) समुद्र की सीमा से घिरा, जिसके सब ओर समुद्र छाया है, अम्बरा, धरणि, पृथ्वी, आलय वरुण का नाम,—उत्थम् समुद्रीनमक, - नागा, - नाभिनी नदी।

साग्नि (वि०) [सह अग्निना ब० स०] 1 अग्नि सहित 2 यज्ञाग्नि रखने वाला।

साग्निक (वि०) [सह अग्निना ब० स० कन्] 1 यज्ञाग्नि रखने वाला 2 अग्नि से संबद्ध रू: यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ।

साङ्ग (वि०) [सह अङ्गेन – ब० स०] 1 समस्त 2 अतिरिक्त सहित, अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला।

साङ्कर्यम् [संकुर+ष्यञ्] मिश्रण, सम्मिश्रण, गड्डमड्ड किया हुआ या मिलाया हुआ बोल।

साङ्कुल (वि०) (स्त्री० ली) [संकुल+अण्] जोड़ा या संकलन से उत्पन्न।

साङ्कुशम्, साङ्कुशा जनक के भ्राता कुशध्वज की राजधानी का नाम।

साङ्केतिक (वि०) (स्त्री० की) [संकेत+ठक्] 1 प्रतीकात्मक, संकेतपरक 2 व्यवहार-सिद्ध, रीतिअनुसार।

साङ्क्षेपिक (वि०) (स्त्री०-की) [संक्षेप+ठक्] संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ।

साङ्ख्य (वि०)[संख्या—अण्] 1 संख्या संबंधी 2 आकलन कर्ता, गणक 3 विवेचक 4 विचारक, तार्किक, तर्क कर्ता—त्व गति' सर्वमाङ्ख्यानां योगिना त्व परायणम् महा० —ख्यः— ख्यम् छ हिन्दू दर्शनों में से एक जिसके प्रवर्तक कपिल मुनि माने जाते हैं (इस शास्त्र का नाम 'सांख्य दर्शन' इस लिए पड़ा कि इसमें पच्चीस तत्त्व या सत्य सिद्धांतों का वर्णन किया गया है, इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य पच्चीसवें तत्त्व अर्थात् पुरुष या आत्मा—को अन्य चौबीस सत्यों के शुद्ध ज्ञान द्वारा तथा आत्मा की उससे समुचित भिन्नता दर्शाकर, उसे सांसारिक बन्धनों से मुक्त कराना है। सांख्य शास्त्र समस्त विश्व को निर्बाध प्रवाह या प्रकृति का विकास मानता है, जब कि पुरुष (आत्मा) सर्वथा निर्लिप्त एक निष्क्रिय दर्शक है। अद्वैतवादात्मक होने के कारण वेदान्त से इसकी समानता, तथा विश्लेषणपरक न्याय और वैशेषिक से भिन्नता कही जाती है। परन्तु वेदान्त से भिन्नताओं में सब से बड़ी बात यह है कि सांख्य शास्त्र दो (द्वैत) सिद्धान्तों का समर्थक है जिनको वेदान्त नहीं मानता। इसके अतिरिक्त सांख्यशास्त्र परमात्मा को विश्व के स्रष्टा और नियन्ता के रूप में नहीं मानता, जिसकी कि वेदान्त पुष्टि करता है), रू: सांख्य शास्त्र का अनुयायी भग० ३।५, ५।११। सम० प्रवचनः, —मुख्यः शिव के विशेषण।

साङ्ग (वि०) [सह अङ्गैः - ब० स०] 1 अंगों सहित 2 प्रत्येक भाग से पूर्ण 3 सहायक अंगों से युक्त।

साङ्गतिक (वि०) (स्त्री०-की) [संगति+ठक्] संगति या मेल से संबंध रखने वाला, साहचर्यशील, रू: दर्शक, अतिथि, मेलजोल।

साङ्गत्यम् [संगत+ष्यञ्] मिलाप, मिलन तु० सख्यम्।

साङ्ग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [संग्राम+ठक्] युद्ध संबंधी, योद्धा, अक्षत्र, सैनिक, सामरिक—उत्तर० ५।१२, रू: सेनाध्यक्ष, सेनापति।

साचि (अव्य०) [सच्+इन्] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिर्यक्, वक्रगति से, टेढ़े-टेढ़े,—साचि लोचनयुगं नमयन्ती शि० ९।४४, १०।५७, (साचीकृ मोड़ना, एक ओर झुकाना, टेढ़ा करना आदि साचीकृतचाक्षणः — रघु० ६।१४, कु० ३ ८, साचीकरोत्यानमम् —मालवि० ४।१४।

सचिवालयम् [सचिव+ष्यञ्] 1 मन्त्रालय, मन्त्रित्व 2 मन्त्रिमंडल, प्रशासन 3 मैत्री।

सजातीयम् [सजाति+ष्यञ्] 1 जाति की समानता, वर्ग, श्रेणी या प्रकार की समानता 2 जाति का समुदाय, समजातीयता।

सञ्जवनम् [सह अञ्जनेन ब० स०] छिपकली।

सट् (चुरा० उभ० साटयति-ते) बतलाना, प्रकट करना।

सटोप (वि०) [सह आटोपेन—ब० स०] 1. घमंड में भरा या फूला हुआ, अहंकारी 2 गौरवशाली, शानदार 3 उभरा हुआ, बढ़ा हुआ (जैसे पानी से) पद्य० १,—पम् घमंड के साथ, हेकड़ी के साथ, अकड़ कर, इठला कर, रौब से।

सात् (अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ इसलिए जोड़ा जाता है कि शब्द से अभिहित वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तदधीन या उसके नियन्त्रण में हो जाती है, भस्मसात् भू बिल्कुल राख बन जाना, अग्निसात् करना मालवि० ५, भस्मसात्कृतवत पितृव्रिषः पञ्चसाकथ वसुधा मसागराम्—रघु० ११।८६, विभज्य मेरुर्न यदग्निसात्कृत मैं० १।१६, इसी प्रकार ब्राह्मणसात्, राजसात् आदि०—शि० १४।३६।

सातत्यम् [सतत+ष्यञ्] निरन्तरता, स्थायित्व।

सातिः (स्त्री०) [सन्+क्तिन्] 1 भेंट, उपहार, दान 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. सहायता 4 विनाश 5 अन्त, उपसंहार 6. तेज या तीव्र बेदना।

सातीन, सातीनक [स्त्रीत+अण्, सातीन+कन्] मटर।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०—की)[सत्त्व—ठक्] 1 वास्तविक, आवश्यक 2 सत्य, असली, प्राकृतिक 3 ईमानदार, निष्कपट, अच्छा। सद्गुणी, मिलनसार 5 बलशाली 6 सत्त्वगुण से युक्त 7 सत्त्वगुण से सबद्ध या उत्पन्न—ये च सात्त्विका भावा—भग० ७।१२, १४।१६ 8 आन्तरिक भावनाओं से उत्पन्न (जैसे प्रेम आदि से) आन्तरिक तद्भूरिसात्त्विकविकारमपास्तधैर्यमाचार्यक विजयि मान्यधमाविरामीत् मा० १।२६, क (आन्तरिक) भावनाओं या सवेगों का बाह्य प्रकटन, काव्य में भावों का एक प्रकार (भाव आठ हैं: स्तम्भ स्वेदोऽथ रोमाञ्च स्वरभङ्गोऽथ वेपथु। वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्त्विका स्मृता॥ —मा० द० ११६ 2 ब्राह्मण 3. ब्रह्मा।

सात्यकिः [सत्यक+इञ्] यदुवंशी योद्धा जो कृष्ण का सारथि था तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया।

सात्यवतेयः, सात्यवतेयः [सत्यवती+अण्, ढक् वा] व्यास मुनि का मातृपरक नाम।

सात्वत् (पु०) [सात्वयति सुखयति—सात्+क्विप्, सात् परमेश्वर, स उपास्यत्वेन अस्ति अस्य—सात्+मतुप्, मस्य व] (कृष्ण आदि का) अनुयायी, उपासक।

सात्वत (पु०) 1 विष्णु का नाम 2 बलराम का नाम 3 जाति से बहिष्कृत वैश्य का पुत्र, सात्वः (पु०, ब० व०) एक जाति का नाम—शि० १६।१४।

सात्वती (स्त्री०) 1 चार प्रकार की नाटयशैलियों में से एक—दे० सा० द० ४१६ 2 शिशुपाल की माता का नाम शि० २।१।

सात् [सद्+घञ्] 1. बैठना, जमना 2 थकान, थकावट उदितोऽसादमन्विवेषधुमत् शि० ९।७७ 3 क्षीणता, दुबला-पतलापन, कृशता—शरीरमादावसमग्रभूषणा रघु० ३।२ 4 क्षय, ह्रास, लोप, विनाश, विसादि—गतिविभ्रमसादनीरवा—रघु० ८।५६, मलोद्व० ३।२४ 5 पीड़ा, सताप 6 स्वच्छता, पवित्रता।

सादनम् [सद्+णिच्+ल्युट्] 1 थकाना, क्लान्त करना 2 नष्ट करना 3 थकावट, क्लान्ति 4 घर, निवासस्थान।

सादि [सद्+इञ्] 1 सारथि, रथवान् 2 योद्धा।

सादिन् (वि०) [सद्+णिच्—णिनि] 1 बैठा हुआ 2 थकाने वाला, नष्ट करने वाला, पु० 1 घुड़सवार 2 हाथी पर सवार या रथ में बैठा हुआ।

सादृश्यम् [सदृश+ष्यञ्] 1 समानता, मिलता-जुलतापन, समरूपता सति पुनर्मानसेऽयसादृश्यादि च० ७, तवाशिसादृश्यमिव प्रयुज्यते- कु० ५।३५, ७।१६, रघु० २।४०, १५।६७ 2 प्रतिलिपि, आलेखचित्र प्रतिमा—मन्मादृश्य विरहतनु वा भावगम्य लिखन्ती मेघ० ८४।

सानुग (वि०) [सह अनुगेन—ब० स०] पूरा, समस्त।

सान्तानिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्तानक+अण्] शीघ्र होने वाला, जिसमें विलम्ब न हो।

साध् 1 (स्वा० पर० साध्नोति) 1 पूरा करना, समाप्त करना, सम्पन्न करना 2 जीतना।

.1 (दिवा० पर० साध्यति) पूरा किया जाना, निष्पन्न किया जाना, होना 1 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, घटित करना, सम्पन्न करना -अपि साधय साधयेप्सितं मैं० २।६२, कु० २।३३, रघु० ५।२५ 2 पूरा करना, समाप्त करना, उपसंहार करना 3 उपलब्ध करना, प्राप्त करना, पाना- रघु० १७।३८, मनु० ६।७५ 4 साबित करना, सिद्ध करना 5 दमन करना, पराजित करना, जीतना (शत्रु आदि का), वश में करना—न हि साध्या न दाक्षेण न मैत्रेण च पाण्डवा, शक्या साधयितुम् महा० 6 मार

डालना, नष्ट करना सुखीकान्तकमासेदु साधयिष्यामः इत्यरिम्--भट्टि० ७।३१ 7 समझना, जानना 8 चिकित्सा करना,स्वस्थ करना 9 जाना, अलग होना, अपने रास्ते लगना, साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते--रघु० ११।९१, आ० १।७--प्रायेण व्यस्तक साधिर्मन्त्रैरयं प्रयुज्यते--सा० द० ३।४० 10. (ऋच की भांति) उपाहरना 11 पूर्ण कर देना, प्र--(प्रेर०) 1 आगे बढ़ना, उन्नति करना 2. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना 3 उपलब्ध करना, प्राप्त करना ' पराभूत करना, दबाना 5 वस्त्र धारण करना, सजाना, सम् , 1. सफल होना (आ०) 2 निष्पन्न करना, पूरा करना --मनु० २।१०० 3. सुरक्षित करना, प्राप्त करना 4 बस जाना 5 पुन प्राप्त करना मनु० ८।५० 6 तय किया जाना या चुकता किया जाना -- मनु० ८।२१३ 7 नष्ट करना, मार डालना 8 बुझाना ।

साधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [साध्+ण्वुल्, सिध्+णिच्+ण्वुल् साधादेश वा] 1 सम्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, पूर्ण करने वाला 2 दक्ष, प्रभावशाली—कु० ३।१२ 3 कुशल, निपुण 4 जादू से कार्य में परिणत करने वाला, ऐन्द्रजालिक 5. सहायक, मददगार ।

साधन (वि० (स्त्री०—नी) [सिध्+णिच्+ल्युट्, साधादेश] निष्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, —नम् 1 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना जैसा कि 'स्वार्थसाधनम्' में 2 पूरा करना, सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवाप्ति प्रभावसाधने तौ हि पर्यायोद्यतकार्मुकौ रघु० ४।१६ 3 उपाय, तरकीब, किसी कार्य को सम्पन्न करने की तदवीर शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्,—कु० ५।३३, ५२, रघु० ११९, ३।१२, ४।३६, ६२ 4 उपकरण, साधनसामग्री, कुठार छिदिक्रियासाधनम् 5 निमित्तकारण, स्रोत, सामान्य हेतु 6 करण कारक 7. उपकरण, औजार 8 वस्त्र, सामग्री 9 मूल पदार्थ, सद्वटक तत्त्व 10 सेना या उसका अंग—मनु० ५।१० 11 सहायता, मदद सहारा 12 प्रमाण, सिद्ध करना, प्रदर्शन करना 13 अनुमान की प्रक्रिया में हेतु, कारण, जो हमें किसी परिणाम पर पहुँचाये--साध्ये निश्चितसम्बन्धेन अदिते विभ्रत् सपक्षे स्थिति, व्यावृत्त च विपक्षतो भवति यत्तल्लक्षण सिद्धये मुद्रा० ५।१० 14 दमन करना, जीत लेना 15. जादूमन्त्र से वश में करना 16 जादू या मन्त्र से किसी कार्य को निष्पन्न करना 17. स्वस्थ करना, चिकित्सा करना 18. वध करना, विनाश करना फल च तस्य प्रतिसाधनम्—कि० १४।१७ 19 आराधन, प्रसादन, तुष्टीकरण 20, बाहर जाना, कूच करना, प्रस्थान 21. अनुसरण, पीछे चलना 22 साधना, तपस्या 23 मोक्ष प्राप्त करना 24 औषधि निर्माण, भेषज, जड़ी-बूटी 25 (विधि में) ऋण आदि की प्राप्ति के लिए आदेश, जुर्माना करना 26 शरीर का कोई अवयव 27 शिश्न, लिंग 28 औजी, ऐन 29 दौलत 30 मैत्री 31 लाभ, फायदा 32 शव को दाह क्रिया 33 मृतकसंस्कार 34 धातुओं का मारण या जारण । सम०—क्रिया समाधिका क्रिया,—वचन् लिखित प्रमाण ।

साधनता,—त्वम् [साधन+तल्+टाप्, त्व वा] उपायवत्ता, उद्देश्यपूर्ति का जरिया होना -प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता--शि० ९।९ ।

साधना [सिध्+णिच्+युच्+टाप्, साधादेश] 1 निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्ति 2 पूजा, अर्चा 3 आराधन, प्रसादन ।

साधनिः [साध्+अनि, आत्वादेश] भिक्षुक, भिखारी ।

साधर्म्यम् [सधर्म+ष्यञ्] 1 समानता, कर्तव्य की एकता, समानधर्मता पञ्चमं लोकपालानामूचु साधर्म्ययोगतः रघु० १३।७८ 2. प्रकृति की समानता, समान चरित्र, समता, गुणों की समानता साधर्म्यमुपमा भेदे - काव्य० १०, भाव० १४।२, भाषा० १२ ।

साधारण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [सह धारणया—ब० स० सधारण+अण्] 1 (दो या दो से अधिक अर्थों में) समान, संयुक्त, —साधारणोऽयं प्रणय —श० ३, साधारणो युवयोर्व्यवहारः—कु० १।४३, रघु० १६।५, विक्रम० २।१६ 2 सामूली सामान्य साधारणी न खलु बाला अवस्था—अमर० १०, 3 सार्वजनिक, विश्वव्यापी 4 विभिन्न, भिन्न-भिन्न समान उत्कण्ठासाधारण परितोषमनुभवामि--श० ४, दीप्यते स हि संभूय स्वामिसाधारणानिलैः —कु० २।४२ 5 तुल्य, संयुक्त, समान 6 (तर्क० में) एक से अधिक निदर्शनों से संबद्ध, हेत्वाभास के तीन प्रभागों में से एक, अनैकान्तिक, —णम् 1 सामान्य या सार्वजनिक नियम, सार्वजनिक विधि या नियम 2. आलिंगन या निर्विशेष मुख । सम०—अन्न संयुक्त संपत्ति, —स्त्री सामान्य स्त्री, वेश्या, रंडी ।

साधारणता, त्वम् [साधारण+तल्+टाप्, त्व वा] 1 सामुदायिकता, विश्वव्यापकता 2 संयुक्त हित ।

साधारण्यम् [साधारण+ष्यञ्] समानता—दे० साधारणता ।

साधिका [सिध्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, साधादेश] 1 कुशल या निपुण स्त्री 2 गहरी नींद ।

साधित (भू० क० कृ०) [साध्+क्त] 1 निष्पन्न, कार्यान्वित, अवाप्त 2 पूरा किया हुआ, समाप्त 3 सिद्ध, प्रदर्शित 4 प्राप्त, उपलब्ध 5 उच्चारित 6. वश में किया हुआ, दमन किया हुआ 7. पूरा किया

हुआ, पुनः प्राप्त 8 दक्षिण 9 दापित 10 (दण्ड या जुर्माना) दिया हुआ।

साधिमन् (पु०) [साधु+इमनिच्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता।

साधिष्ठ (वि०) [साधु या साध को उत्तमावस्था अतिशयेन साधु—इष्ठन्] 1 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उचिततम 2 अत्यत भद्रतापूर्ण, कठोर या दुष्ट।

साधीयस् (वि०) [साधु+ईयसुन्, उकारलोप, साधु या साध की सम्यमावस्था] 1. अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ भामि० १।८८ 2 कठोरतर, अपेक्षाकृत भद्रतापूर्ण।

साधु (वि०) (स्त्री० -धु, -ध्वी) [साध्+उन्, मध्य० अ० साधीयस्, उत्त० अ० साधिष्ठ] 1 उत्तम, श्रेष्ठ, पूर्ण यदस्माधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा शा० ६।१३, आत्मन्येवात्मदुर्नयः न साधु सर्वत्र प्रयोगविज्ञानम् १।२ 2 योग्य, उचित यही जैसा कि 'साधुवृत्त, साधुसमाचार' में 3 गुणी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4 (क) कृपालु, दयालु रघु० २।२८, पञ्च० १।२४३ (ख) शिष्टाचारी (अविः के साथ) मानवि साधु—सिद्धा० ५ शुद्ध पवित्र, गौरवयुक्त या श्रेष्ठ (जैसे कि भाषा) 6 मुखकर, रुचिकर, सुहावना अनाहूतैमि सन्तुमसाधु साधु वा—कि० १।४ 7. भद्र, कुलीन, सत्कुलोद्भव, —धुः 1 सत्पुरुष, पुण्यात्मा—रघु० १३।५५, २।६२, मेघ० ८० 2 ऋषि, मुनि, सन्त—साधो प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् सुभा० 3 सौदागर कि० २।७३ 4 जैनसाधु 5 सूदखोर महाजन (अव्य०) 1 अच्छा, बहुत अच्छा, शाबास, बढ़िया साधु गीतम् शा० १, साधु रे पिंगलबानर साधु—मालवि० ४ 2 काफी, बस। समः —धी (वि०) अच्छे स्वभाव का, —वादः 'शाबास' की ध्वनि, 'धन्य' की ध्वनि—शि० १८।५५, —वृत्त (वि०) 1 अच्छे चालचलन का, खरा, सद्गुणी—प्रायेण साधुवृत्तीनामस्थायिन्यो विपत्तय —मृच्छ० २।८५, (यही दूसरा अर्थ भी अभिप्रेत है) 2 खूब गोल-गोल किया हुआ (त्तः) दृगुणी (सद्गुणी (त्तम्) अच्छा आचरण, सद्गुण, पवित्रता, सचाई, ईमानदारी, इसी प्रकार 'साधु वृत्ति'।

साधुत्वम् [सह आधुतेन ब० स०] 1 हाट, दुकान 2 छतरी 3 मोरों का झुंड।

साध्य (वि०) [साध्+णिच्+यत्] 1 कार्यान्वित होने योग्य, निष्पन्न होने योग्य, किया जाने योग्य साध्ये सिद्धिर्विधीयताम् हि० २।१५ 2 जो हो सके, जो किया जा सके, प्राप्य 3 सिद्ध किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय आप्तवाक्यानुमानाभ्यां साध्य त्वां प्रति का कथा —रघु० १०।२८ 4. स्थापित करने योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5 अनुमेय, उपसंहार्य, —अनुमान तदुक्तं यत्साध्यसाधनयोर्वचः —काव्य० १०, जीते जाने के योग्य, वध्य, जेय—कु० २।१५ 7 जिसकी चिकित्सा हो सके 8 वध किये जाने योग्य, विनष्ट किये जाने योग्य, न्य दिव्य प्राणियों का एक विशेष वर्ग—तु० मनु० १।२२, ३।१९५ 2 देवता 3 एक मन्त्र का नाम, प्याम् 1 निष्पन्नता, पूर्णता 2 वह बात जो अभी सिद्ध की जानी है, प्रमाणित की जाने वाली वस्तु 3 (तर्क० में) प्रस्ताव का विधेय अनुमानप्रक्रिया की बड़ी बात—साध्यं लिङ्गिसमन्वयेन घटितम् , यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमभयो पक्षे विरुद्ध च यत् मुद्रा० ४।१० अभाव मूल अर्थ या वचन को कमी,—सिद्धि (स्त्री०) 1 निष्पन्नता 2 उपसंहार।

साध्यता [साध्य—तल+टाप्] 1 सम्भाव्यता, शक्यता 2 (राग का) अच्छा किये जाने की स्थिति में होना। समः—अवच्छेदकम् जिस रूप से किसी के गुण का पता लगे, लक्षण की ज्ञानकारी हो, या सम्बन्ध जिस का पता चले।

साध्वसम् [साधु+असच्] 1 डर, आतंक, भय, त्रास, —कुसुमसदृसाध्वसात् —कु० २।३५, ३।५१ 2 जाड्य 3 विक्षोभ, अव्यवस्थितता।

साध्वी [साधु+ङीप्] 1. सती स्त्री 2 पतिव्रता स्त्री 3 एक प्रकार का क्षुप।

सानन्द (वि०) [सह आनन्देन ब० स०] प्रसन्न, खुश।

सानसि [सन्+इण्, असुक्] सोना, सुवर्ण।

सानिका, सानेधिका, सानेयी [सन+, ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, सानेयी+कन्+टाप्, ह्रस्व, सानेय+ङीप्] पीपनी, बाँसुरी।

सानु (पु०, नपु०) [सन्+कानुक्] 1 चोटी, शिखर शैल-शिला-सानुनि गन्ध सम्भोक्ष्यते कु० १।९, मेघ० २, कु० १।६, कि० ५।३६ 2 पहाड़ की चोटी पर समतल भूमि, पठार 3 अलका, चक्र 4 वन, जंगल 5 सड़क 6 सत्र, छिद्र किनारा 7 चट्टान 8 हवा का झोंका 9 विद्वान् पुरुष 10 सूर्य।

सानुमत् (पु०) [सानु+मतुप्] पहाड़,—ती एक अप्सरा का नाम शि० ६।

सानुक्रोश (वि०) [अनुक्रोशेन सह—ब० स०] दयालु, करुणाकर।

सानुनय (वि०) [सह अनुनयेन ब० स०] सभ्य, शिष्ट।

सानुबन्ध (वि०) [सह अनुबन्धेन—ब० स०] क्रमबद्ध, अविच्छिन्न।

सानुराग (वि०) [सह अनुरागेण—ब० स०] आसक्त, अनुरक्त, प्रेम में मुग्ध।

सान्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्+अण्] एक कठोर व्रत —नृ० मनु० ११।२१२।

सान्तर (वि०) [सह अन्तरेण ब०स०] 1 अन्तर या अवकाशयुक्त 2 होना।

सान्तानिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्तान+ठक्] 1. फैलने वाला, विस्तारयुक्त (जैसे कि वृक्ष) 2 सन्तानसम्बन्धी 3 सन्तान नामक वृक्षसम्बन्धी,—क वह ब्राह्मण जो सन्तान की इच्छा से विवाह करना चाहता है।

सान्त्व् (चुरा० उभ० सान्त्वयति ते) शान्त करना, खुश करना, सुलह करना, आराम देना, आराम पहुँचाना —भट्टि० ३।२३।

सान्त्व, सान्त्वन, ना [सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] 1 खुश करना, शान्त करना, आराम देना 2 सुलह करना, मृदु या हलका उपाय 3 कृपापूर्ण या आराम देने वाले शब्द 4 मृदुता 5 अभिवादन एवं कुशलक्षेम।

सान्दीपनि [सन्दीपन+इञ्] एक ऋषि का नाम (विष्णुपुराण के अनुसार वह कृष्ण और बलराम के आचार्य थे। गुरुदक्षिणा में उन्होंने अपने पुत्र को जिसे पञ्चजन नामक राक्षस उठा कर पानी में घुस गया था, वापिस माँगा। श्रीकृष्ण ने पानी में गोता लगाया। वहाँ उस राक्षस को मार डाला, और गुरु के पुत्र को लाकर उनके सुपुर्द कर दिया)।

सान्दृष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्दृष्टि+ठक्] देखते ही देखते होने वाला, तात्कालिक,—क्रम् तात्कालिक परिणाम।

सान्द्र (वि०) [सह अन्तेन—ब० स०] 1 पासपास, सटाहुआ, अनन्तराल 2 मोटा, घन, ठोस, गाढ़ा दुर्भेद्यमिन्द्रियं सान्द्रमुदाहरन्ति—शि० ४।२८, ६४, २।१५, रघु० ७।४१, ऋतु० १।२० 3 मुलम्मा बना हुआ, मढ़ा हुआ 4 हृष्टपुष्ट, पक्वकृत, हट्टाकट्टा 5 अत्यधिक, विपुल, प्रचुर सान्द्रानन्दसुधितहृदयप्रश्रयेणेव सिक्त उत्तर० ६।२७ 6 उग्र, प्रखर, प्रचण्ड—व्यापारान्तरा सान्द्रकुतूहलानाम्—रघु० ७।११, शि० ९।३७ 7 चिकना, तैलाक्त, विपक्षिप्त 8 स्निग्ध, मृदु, सौम्य 9 मुलायम, रुचिकर,—द्रः राशि, ढेर।

सान्धिक: [सन्धा पुराख्यानं शिल्पं वेत्ति-ठक्] कलाल, शराब बेचने वाला।

सान्धिविग्रहिक, [सन्धिविग्रह+ठक्] विदेश मंत्री (राज्यमन्त्रिन्) (जो संधि और विग्रह का निर्णय करे)।

सान्ध्य (वि०) (स्त्री०—न्ध्री) [सन्ध्या+अण्] सायंकालीन, साँझ-सम्बन्धी सान्ध्यं तेज प्रतिनवजपाकुसुमारक्त दधान. मेघ० ३५, कि० ५।८, रघु० ११।६०, शि० ९।२५।

सान्नहनिक (वि०) (स्त्री० - की) [सन्नहन+ठक्] 1 कवचधारी 2 शस्त्र उठाने के लिए कहने वाला, युद्ध के लिए तैयार होने को प्रोत्साहन देने वाला —शि० १५।७२,—क: कवचधारी।

सान्नाय्य: [सम्+नी+ण्यत्, नि०] घीयुक्त कोई पदार्थ जो आहुति के रूप में अग्नि में डाला जाय—शि० ११।४१।

सान्निध्यम् [सन्निधि+ष्यञ्] 1 पड़ोस, सामीप्य वयनान्मेनुसान्निध्यात् मा० ३५ 2. उपस्थिति, हाजरी —रघु० ४।६, ७।३, कु० ७।३३।

सान्निपातिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्निपात+ठक्] 1 विविध 2. जटिल 3 कफ, पित्त, वायु तीनों ही दोष जिसके विकृत हो गये हों—कु० २।४८, पञ्च० १।१२७।

सान्नाय्यिक [सान्नाय्य प्रयोजनमस्य—ठक्] 1 अपने गार्हस्थ जीवन के चौथे आश्रम में विद्यमान ब्राह्मण देखो सन्न्यासिन् 2 साधु।

सान्वय (वि०) [सह अन्वयेन ब० स०] आनुवंशिक।

सान्वय (वि०) (स्त्री०—यी) [सपत्नी+अण्] सौतेली पत्नी से उत्पन्न, स्याः (पु० ब० व०) एक ही पति से भिन्न भिन्न पत्नियों के बच्चे।

सान्वयन्य [सपत्नी+ष्यञ्] 1 सौतेली पत्नी की दशा 2 प्रतिद्वन्द्विता, महत्त्वाकांक्षा, शत्रुता,—न्यः 1. सौतेली पत्नी का पुत्र 2 शत्रु।

सापराध (वि०) [सह अपराधेन—ब० स०] अपराधी, जुर्म करने वाला, मुजरिम।

सापिण्ड्यम् [सपिण्ड+ष्यञ्] समान पितरों को पिण्डदान के सम्बन्ध, शत्रुता, रक्तसम्बन्ध।

सापेक्ष (वि०) [सह अपेक्षया—ब० स०] लिहाज करने वाला, निर्भर।

साप्तपद (वि०) (स्त्री०—दी) साप्तपदीन (वि०) [सप्तपद+अण् खञ् वा] सात पग साथ-साथ चलने से बनी हुई (मैत्री)—यत: सतां सप्तपदीनमुच्यते—कु० ५।३९ (यहाँ द्वितीयार्थ, अधिक अच्छा लगता है, पञ्च० २।४३, ४।१०३, शब्द, सप्त 1 विवाह के अवसर पर दूल्हा व दुल्हिन द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणाएँ करना (यह विवाहसम्बन्ध को अटूट बना देती है) 2 मित्रता, घनिष्ठता।

साप्तपौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [सप्तपुरुष+अण्] सात पीढ़ियों तक फैला हुआ—मनु० ३।१४६।

साफल्यम् [सफल+ष्यञ्] 1 सफलता, उपयोगिता, उपजाऊपन 2 लाभ, फायदा 3 कामयाबी।

साबी (स्त्री०) एक प्रकार का अंगूर।

साभ्यसूय (वि०) [सह अभ्यसूयया—ब० स०] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु।

साम् (चुरा० उभ० सामयति-ते) खुश करना, ढाढस बंधाना, तसल्ली देना।

सामक्कम् [समक+अण्] मूल ऋण, कः साण, (वह पत्थर जिस पर औजार तेज किये जाते हैं)।

सामग्री [समग्रस्य भाव ष्यञ् स्त्रीत्वपक्षे ङीषि मलोप] 1 सामान का संग्रह, या सम्भार, उपकरण, घर का सामान भर्तृ० ३।१५५ 2 सामान, माल-असबाब।

सामग्र्यम् [समग्र+ष्यञ्] 1 समग्रता, पूर्णता, समूहापन, समष्टि -प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृज प्रवृत्ति—कु० ३।२८ 2. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर 3 उपकरणों का संग्रह, औजारों का भण्डार 4 भण्डार, सामान।

सामञ्जस्यम् [समञ्जस+ष्यञ्] 1 योग्यता, संगति, औचित्य, तु० असमञ्जस 2 यथार्थता, शुद्धता।

सामन् (नपुं०) [सो+मनिन्] 1 खुश करना, शान्त करना, आराम पहुँचाना, तसल्ली देना 2. सुलह करना, शान्ति के उपाय, समझौता-वार्ता करना (राजा के द्वारा अपने शत्रु के प्रति किये जाने वाले चार साधनों में सबसे पहला)—सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्य राष्ट्राभिवृद्धये—मनु० ७।१०९ 3 शान्तिदायक या मृदु उपाय, शान्त या ढाढस बंधाने वाला आचरण, मृदुवचन —पंच० ४।२६, ४८ 4 मृदुता, कोमलता 5 छन्दोबद्ध सूक्त या प्रशंसात्मक गान सप्तसामोपगीत त्वाम् —रघु० १०।२१, भग० १०।३५ 6 सामवेद का मन्त्र 7 सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाता है—तु० मनु० १।२३)। सम०—उद्गीथः हाथी,—उपचारः, उपायः मृदु और शान्ति देने वाले उपाय, कोमल या शान्त युक्तियाँ, —गः सामवेद के मन्त्रों का गायन करने वाला ब्राह्मण, —ज, —जात (वि०) 1 सामवेद से उत्पन्न 2 शान्ति के उपायों से उद्भूत (—जः,—तः) हाथी—शि० १२।११, १८।३३, —जौनिः 1 ब्राह्मण 2 हाथी, —वाद: कृपावचन, मधुरशब्द,—शि० २।५५, —वेदः चारों में से तीसरा वेद।

सामन्त (वि०) [सम्+अन्त] 1 सीमावर्ती, सरहदी, पड़ोसी 2 विश्वव्यापक, —तः 1 पड़ोसी 2 पड़ोस का राजा 3 मांडलिक, कर देने वाला राजा सामन्त-मौलिमणिरञ्जितपादपीठम् विक्रम० ३।१९, रघु० ५।२८, ६।३२ 4 नेता, नायक, —तम् पड़ोस।

सामयिक (वि०) (स्त्री०—की) [समय+ठक्] 1 प्रथानुसारी, परम्परागत 2 सम्मत, प्रतिज्ञात 3 करार के अनुरूप, नियत समय का पालन करने वाला,—देवि, सामयिका भवाम मालवि० १ 4 समय पालक, वक्त का पाबन्द 5 ऋतु के अनुकूल, समय पर होने वाला—कि० २।१० 6 नियत समय पर होने वाला 7. अस्थायी। सम०—अभावः अस्थायी अनस्तित्व।

सामर्थ्यम् [समर्थ+ष्यञ्] 1 शक्ति, बल, धारिता, ताकत 2 उद्देश्य की समानता 3 अर्थ की एकता 4 पर्याप्ति योग्यता 5. शब्दार्थ शक्ति, शब्द की अर्थमूलक शक्ति 6 हित, लाभ 7 दौलत।

सामवायिक (वि०) (स्त्री०—की) [समवाय प्रभूत ठक्] 1 किसी संग्रह या समाज से संबद्ध 2 अटूट सम्बन्ध से युक्त, —कः मंत्री, पार्षद।

सामाजिक (वि०) (स्त्री०—की) [समाज-समावेशन प्रयोजनमस्य ठक्] किसी सभा से सम्बद्ध, —कः किसी सभा का सदस्य सभा में दर्शक तेन हि तत्प्रयोगादेवात्रभवत सामाजिकानुपास्महे मा० १।

सामानाधिकरण्यम् [समानाधिकरण+ष्यञ्] 1 उसी दशा या स्थिति में होना 2 सामान्य पद, कार्य या प्रशासन, समान सम्बन्ध (जैसे कि कारक का) 3 एक ही पदार्थ से सम्बन्ध होने की स्थिति।

सामान्य (वि०) [समानस्य भाव ष्यञ्] 1 समान, साधारण—सामान्यमेतत्प्रथमावरत्वम्—कु० ७।४४, आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् सुभा०, रघु० १४।६७, कु० २।२६ 2 सदृश, तुल्य, समान 3 मामूली, औसतदर्जे का, बीच का- भर्तृ० २।७४ 4 तुच्छ, नाचीज, नगण्य 5 समस्त, संपूर्ण,—न्यम् 1 समुदाय साधारणता, विश्वव्यापकता 2 सामान्य या संघटक गुण साधारणलक्षण 3 समष्टि, समस्तता 4 भेद, प्रकार 5 अनुरूपता 6 समानता, समता 7 सार्वजनिक कार्य 8 साधारण उक्ति -उक्तिरर्थान्तरन्यासः सामान्यविशेषयोः—चन्द्रा० ५।१२० 9 (अल० में) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित लिखी है—प्रस्तुतस्य यदन्येन गुणसाम्यविवक्षया, एकात्म्य ह्यते योऽसौ तत्सामान्यमिति स्मृतम काव्य० १०। सम०—ज्ञानम् सार्वविषयक व्यापक बातों का ज्ञान,—वचः सर्वस्थिति, —लक्षणम् व्यापक परिभाषा - इति द्रव्यसामान्यलक्षणानि शर्क०, वनिता सामान्य स्त्री, वेश्या, शास्त्रम् साधारण नियम।

सामासिक (वि०) (स्त्री० की) [समास+ठक्] 1 सामूहिक, समस्त को समझने वाला, संक्षेपात्मक 2 संहत, संक्षिप्त 3 समासखंडी, —कम् सब प्रकार के समासों का वर्ग इत्थं सामासिकस्य च भग० १०।३३।

सामि (अव्य०) [साम+इन्] 1 आधा, अर्धांश अपूर्ण —अभिधीय सामिकृतमध्वन यती करवद्धनीविगलदंशुका स्त्रिय —शि० १३।३१, रघु० १९।१६ 2 कल्पनीय, नीच, निंदनीय।

सामिधेनी [सम्+इन्ध्+क्यूट्, नि०] 1 एक प्रकार के प्रार्थनामंत्र जिनका पाठ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करते

समय या समिधाएँ हवन में डालते समय किया जाता है।

सामीची (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति।

सामीप्यम् [समीप+ष्यञ्] पड़ोस, निकटता, आसन्नता, पदः पड़ोसी।

सामुद्र (वि०) (स्त्री० द्री) [समुद्र+अण्] समुद्र में उत्पन्न, समुद्रसंबंधी जैसा कि 'सामुद्र लवणम्' में, —द्रः सामुद्रिक, समुद्रयात्री, —द्रम् 1 नमूदी नमक 2. समुद्रझाग 2 शरीर का चिह्न।

सामुद्रकम् [सामुद्र+कन्] समुद्री नमक।

सामुद्रिक (वि०) (स्त्री०-की) [समुद्र+ठक्] 1 समुद्र से उत्पन्न, समुद्रसंबंधी 2 शरीर के चिह्नों से संबद्ध (जो शुभाशुभ फल के सूचक समझे जाते हैं), —कः सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता, जो शरीर के लक्षणों को देखकर शुभाशुभ फल का कथन करे,—कम् हस्तरेखाओं को देखकर शुभाशुभ फल कहने की विद्या।

साम्पराय (वि०) (स्त्री०—यी) [सम्पराय+अण्] 1 युद्धसंबंधी, सामरिक 2 परलोक संबंधी, भावी,—यः 1 संघर्ष, झगड़ा 2. भावीजीवन, भवितव्यता 3. परलोक प्राप्ति के उपाय 4 भावी जीवन संबंधी पृच्छा 5. पूछा, गवेषणा 6 अनिश्चय।

साम्परायिक (वि०) (स्त्री०—की) [सम्पराय+ठक्] 1. सामरिक 2 सैनिक, सामरिक महत्त्व का 3 विपत्तिकारक 4 परलोकसंबंधी, कम् युद्ध, लड़ाई, संघर्ष शि० १८।१, कः लड़ाई का रथ। सम० कक्ष्यः सामरिक महत्त्व का व्यूह।

साम्प्रत (वि०) 1 योग्य, उचित, उपयुक्त—वेणी० ३।३ 2 संगत, —त्तम् (अव्य०) 1. अब इस समय हृत्स्थानं क्रोधस्य साम्प्रतं देह्यः वेणी० १ 2 तत्काल 3 ठीक प्रकार, उचित रीति से, ऋतु के अनुकूल।

साम्प्रतिक (वि०) (स्त्री० की) [सम्प्रति+ठक्] 1 वर्तमान काल संबंधी 2 योग्य, उचित, सही उत्तर० ३।

साम्प्रदायिक (वि०) (स्त्री०—की) [सम्प्रदाय+ठक्] परम्पराप्राप्त सिद्धांत से संबद्ध, परम्पराप्राप्त, क्रमागत

साम्बः [सह अम्बया—ब० स०] शिव का नाम।

साम्बन्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [सम्बन्ध+ठक्] संबंध से उत्पन्न, कम् संबंध, रिश्तेदारी मित्रता।

साम्बरी [शम्बर+अण्+ङीष्] जादूगरनी।

साम्बली [शाल्मलि+अण्+ङीष्] 1 सेमल वृक्ष 2 शक्यता, संभावना।

साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1 बराबरी, समता, समतलता —कु० ५।३१ 2. समानता, मिलना-जुलना, सादृश्य —स्पष्टं प्रापत्साम्यमुर्वीधरस्य शि० १८।३८, हि० १।४५, कि० १७।५१ 3 तुल्यता 4 सामञ्जस्य 5. अन्तर्भाव, विश्लेषपातिता, ऐकमत्य येषां साम्ये स्थितम् मनः मनु० ५।१९।

साम्राज्यम् [सम्राज+ष्यञ्] 1 विश्व प्रभुता, सार्वभौम-राज्य—साम्राज्यसक्तिनो भावाः कुलस्य च लक्ष्यस्य च —उत्तर० ६।२३, रघु० ४।५ 2 पूर्णाधिपत्य, प्रभुत्व।

सायः [सो+घञ्] 1 अन्त, समाप्ति, अवसान 2 दिन की समाप्ति, संध्या 3 शाम। सम०—अह्न् (पु०) (सायाह्न) सांझ, सन्ध्याकाल भामि० २।१५७।

सायकः [सो+ण्वुल्] बाण तत्सायकृतमन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११ 2 तलवार। सम०—पुङ्खः बाण का पक्षीला भाग—सक्ताङ्गुलि सायकपुङ्ख एव रघु० ३।६१।

सायन्तन [सो+ट्युट्] किसी ग्रह की लंबाई (देशान्तर रेखा) जो वासन्ती-विषुवीय बिन्दु से मापी जाती है।

सायन्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [सायम्+टघुल्, तुट्] संध्या-संबंधी, सायंकाल,—सायन्तनं सवनकर्मणि संप्रवृत्तं —श० ३।२७।

सायम् (अव्य०) [सो+अम्] सायंकाल के समय, प्रयता प्रातरन्वेतु सायं प्रत्युद्व्रजेदपि रघु० १।९०। सम० काल संध्या, सांझ, सन्धनम् 1 सूर्य का छिपना 2 सूर्य,—सन्ध्या 1. सायंकालीन झुटपुटा 2 सायंकालीन प्रार्थना।

सायिन् (पु०) [साय+इन्] घुड़सवार।

सारूप्यम् [समान+ष्यञ्] 1 घनिष्ठ मेल, समरूपता, लीनता विशेषतः देवता में (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 2 सादृश्य, समानता।

सार (वि०) [सृ+घञ्, सार्+अच् वा] 1. आवश्यक 2 सर्वोत्तम, उच्चतम, श्रेष्ठ—मुद्रा० १।१३ 3 वास्तविक, सच्चा, असली 4. मजबूत, बलवान् 5 ठोस, पूर्णतः सिद्ध,—रः,—रम् [प्रथम चार अर्थों के अतिरिक्त सर्वत्र पु०] 1 तत्, तत्त्व—स्नेहस्य तत्फलमसौ प्रणयस्य सारः मा० १।९, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्, काया वाचा मनसा संक्लेशो गमागमः अमुत्रोपनयम्—धर्म० १४ 2 निचोड़, रस 3 मज्जा 4 वास्तविक सचाई, सुव्यवस्थित 5 दूसरे का रस, सोंठ जैसा कि खदिरसार या सर्जसार में 6. सारांश, संक्षेप, संक्षिप्त संग्रह 7 सामर्थ्य, बल, शक्ति, ऊर्जा—सारः धरित्री-धरलक्ष्मणां च—कु० १।१७, रघु० २।७४ 8 पराक्रम, शौर्य, साहस—रघु० ४।७९ 9. दृढ़ता, कठोरता 10 घन, दौलत—रघु० ५।२६ 11 अमृत 12 ताजा मक्खन 13 हड्डी, —वायु 14 मलाई, दही की मलाई 15 रोग 16 मवाद, पीप 17. मूल्य, श्रेष्ठता, उच्चतम प्रत्यक्षज्ञान 18 शतरंज का मोहरा 19. सोने का बिना छना अमागाम्लयुक्त द्रव्य 20 अंग्रेजी के मलाई-

मैक्स (Climax) नाम अलंकार से मिलता जुलता एक अलंकार —उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सार परावधि काव्य १०, रघु 1 जल 2 योग्यता, औचित्य 3 जंगल, झाड़-झंखाड़ 4. इस्पात, लोहा। सम० —असार (वि०) मूल्यवान् और निर्मूल्य मजबूत और दुर्बल, (—रम्) 1 मूल्य और निर्मूल्यता 2 मूल-पदार्थ और रिक्तता 3 सामर्थ्य और कमजोरी,—गन्ध चन्दन की लकड़ी, -शैवः शिव जी का नाम आप्टे साक्षात् शंकरम्, -तरुः केले का पेड़, वा 1 सरस्वती का नाम 2 दुर्गा का नाम,—द्रुम खैर का पेड़, भङ्गः बल की हानि —भाण्ड 1 एक प्राकृतिक बर्तन 2 समान का गट्ठा, पर्यवसायी 3 उपकरण —लोहम् इस्पात।

सारधम् [सारयति निर्वृणम् - अण्] मधु, शहद।

सारङ्ग (वि०) (स्त्री०—ङ्गी) [सृ+अङ्गच् ; अण्] चित्र-कबरा, रंगबिरंगा, पुं० 1 रंगबिरंगा रंग 2 चित्र-मृग कुरंग—एष राजेव दुष्यन्त सारङ्गेणातिरंहसा—रघु० १।५ 3 हरिण -सारङ्गास्ते जललवमुच सूचयिष्यन्ति मार्गम् मेघ० २० (यहाँ 'हाथी' या 'भ्रमर' के बजाय यही अर्थ लेना ठीक है) 4 सिंह ५ हाथी 6 भौंरा 7 कोयल 8 सारस 9 राजहंस 10 मोर 11 छतरी 12 बादल 13 परिधान 14 बाण 15 शंख 16 शिव का नाम 17 कामदेव 18 कमल, 19 कपूर 20 धनुष 21 चन्दन 22 एक प्रकार का वाद्ययंत्र 23. आभूषण 24 सोना 25 पृथ्वी 26 रत्न 27 प्रकाश।

सारङ्गिक [सारङ्ग हन्ति—ठक्] बहेलिया, चिड़ीमार।

सारङ्गी [सारङ्ग+ङीप्] 1 एक प्रकार का वाद्ययंत्र, सितार, बायलिन 2 चितीदार हरिण।

सारच (वि०) (स्त्री० - ची) [सृ+णिच्—ल्युट्] भेजना, बहाना,—चः 1 पेंचिस 2 पेंचदार पेंच, - चम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सारणा [सृ+णिच्+युच्+टाप्] धातुओं की विजय कर पारे की एक प्रकार की प्रक्रिया।

सारणि, णी (स्त्री०) [सृ+णिच्+अनि पक्षे ङीप्] 1 नहर, नाली, पतनाला, जलमार्ग 2 एक छोटी नदी।

सारण्ड [सृ+णिच्+अण्ड] साँप का अण्डा।

सारतः (अव्य०) [सार+तसिल्] 1 बल के अनुसार 2 बलपूर्वक।

सारथि [सृ+अथिन् सह रथेन सरथः सोऽयं तत्र नियुक्तः इत्र् वा] 1 रथवान्—न शापो न त्वया राजन् न च सारथिना श्रुतः—रघु० १।७८, मालवि-सारथिर्मयी १।१७ 2. साथी, सहायक रघु० ३। ३० 3 समुद्र।

सारथ्यम् [सारथि+ष्यञ्] रथवान् का पद, गाड़ीवान् का पद।

सारमेय [सरमा+ढक] कुत्ता,—यी [सारमेय—ङीप्] कुतिया।

सारल्यम् [सरल+ष्यञ्] सरलता (आल० से भी) सीधापन, ईमानदारी, खरापन।

सारवत् (वि०) [सार+मतुप्] 1 सत्त्वयुक्त 2 उपजाऊ 3 रसीला।

सारस (वि०) (स्त्री—सी) [सरस इदम् अण्] सरोवर सम्बन्धी, काव्या० ३।१४, नलोद० २।४०,—सः 1 सारस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस') -विभिन्नमाना विससार सारसानुदस्य तीरेषु तरङ्गसन्ततिः कि० ८।३१, शि० ६।७५, १२।४४, मेघ० २१, रघु० १।४१ 2 पक्षी 3 चन्द्रमा,—सम् 1 कमल 2 स्त्री की तरुणी।

सारस (स) नम [सार+सन्+अच्] 1 तरुणी, कल्पनी —सारसान महतानद्रि—कि० १८।३२ 2. सैनिक पंक्ति।

सारस्वत (वि०) (स्त्री० ती) [सरस्वती देवतास्य. सरस्वत्या इदं वा अण्] 1 सरस्वती देवी से सबद्ध 2 सरस्वती नदी से सबद्ध रखने वाला - कुर्वन्ति सारस्वतीनाम् — मेघ० ४९ 3 वाक्पटु, —ः 1 सरस्वती नदी के आस पास का प्रदेश 2 ब्राह्मण जाति का एक भेद 3 विद्वान्, —ताः (पु० ब० व०) सारस्वत देश के निवासी —तम् भाषण, वाक्पटुता,—शुक्लाम्बरधरम्देवम् गीत० १२।

सारालः [सार+आ+ला+क] तिल का पौधा।

सारिः,—री (स्त्री०) [सृ+इन्] 1 शतरंज का मोहरा, गोट 2 एक प्रकार का पक्षी। सम०—क्षयः शतरंज खेलने की बिसात।

सारिका [सरति पक्षाभ्यां - सृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का पक्षी, मैना - आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिका —सभा०, सारिकां पञ्जरस्थाम् —मेघ० ८५।

सारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सृ+णिनि] 1 जाने वाला, सहारा लेने वाला-2 सत्त्वयुक्त, सारवान्।

सारूप्यम् [सरूप+ष्यञ्] 1 रूप की समता, समानता, सादृश्य, सरूपता, मिलना-जुलना —मा० ५ 2. देव में लीनता (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 3 (नाटकों में) रूपसादृश्यजन्य भ्रम में किया जाने वाला (कोषादि) व्यवहार- सा० द० ४६४ 4 किसी पदार्थ को या उसके मिलती जुलती सूरत को देख कर आश्चर्य।

सारोष्ट्रिकः [सार श्रेष्ठ उष्ट्रो यत्र, सारोष्ट्र. देवतेव तत्र भवः —सारोष्ट्र+ठक्] एक प्रकार का विष।

सार्वंक (वि०) [सह अर्वंकेन ब० स०] 1 रोका हुआ, अवरुद्ध, अड़चन वाला रघु० १।७९ ।

सार्व (वि०) [सह अर्वंन–ब० स०] 1 अर्थयुक्त, सार्थक 2. सोद्देश्य 3 समानार्थक, समानाक्षर 2 उपयोगी, कामचलाऊ 5 धनवान्, दौलतमंद, मालदार,—र्वः 1 धनवान् पुरुष 2 सौदागरों की टोली, व्यापारियों का दल सार्वाः स्वैर स्वकोयेषु चेरुर्वंसम स्विवाहिषु —रघु० १७।६४, दे० सार्थवाह 3 एक ऐसा लड़ैया, रेवड़ (एक ही जाति के जानवरों का)—अथ कदाचित्तरितस्तो भवन्ति सार्वाट् शब्द कथनको नामोष्ट्रो दृष्ट. पंच० १ 5 अन्वय, समूह- अश्विनार्थं –स्तम्भ० १, स्वयं चन्द्रमसा चातिसन्धीयते कार्मिजनसार्थं –शा० २ 6 तीर्थयात्रियों की टोली में से एक । समः एक काफ़िले में पला हुआ,–वाहः काफ़िले का नेता, व्यापारी, सौदागर मा० ६ ।

सार्वंक (वि०) [सह अर्वंन - ब० स० कप्] 1 अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2 उपयोगी, कामचलाऊ, लाभदायक ।

सार्वंवत् (वि०) [सार्थ + मतुप्] 1 अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2 बहुत साथियों से युक्त ।

सार्थिकः [सार्थ + ठक्] व्यापारी, सौदागर ।

सार्द्र (वि०) [सह आर्द्रेण ब० स०] गीला, भीगा, तर, सीला ।

सार्ध (वि०) [सह अर्धेन - ब० स०] जिसमें आधा बढ़ा हुआ हो, जिसमें आधा भूला हुआ हो, जिसमें आधा अधिक हो - 'सार्धशतम्' आदि ।

सार्धम् (अव्य०) [सह + ऋध् + अम्] साथ-साथ, के साथ, के साथ में (करण० के साथ)—अन मया सार्धमसि प्रपन्न —रघु० १४।६८, मनु० ४।४३, भट्टि० ६।२६, मेघ० ८९ ।

सार्ध (पुं०) [सर्वो देवताऽस्य सर्व + अण्, ष्यञ् वा] अग्नियों नाम का नक्षत्रपुंज ।

सार्पिष (वि०) (स्त्री०–षी), सार्पिषक (वि०) (स्त्री० –की) [सर्पिस् + अण्, ठक् वा] घी में तला हुआ, घी मिश्रित ।

सार्वकामिक (वि०) (स्त्री०–की) [सर्वकाम + ठक्] प्रत्येक इच्छा को शान्त करने वाला, समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला कि० १८।२५ ।

सार्वकालिक (वि०) (स्त्री०–की) [सर्वकाल + ठक्] नित्य, शाश्वत, सदैव रहने वाला ।

सार्वजनिक (वि०) (स्त्री० - की) सार्वजनीन (वि०) (स्त्री०–नी) [सर्वजन + ठक्, खञ् वा] सर्वजन व्यापक, विश्वव्यापी, सर्वसाधारण संबंधी ।

सार्वज्ञम् [सर्वज्ञ + अण्] सर्वज्ञता, सब कुछ जानना ।

सार्वत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [सर्वत्र + ठक्] प्रत्येक स्थान का, सामान्य, सब स्थानों या परिस्थितियों से संबंध रखने वाला—जैसा कि 'सार्वत्रिको नियम' में ।

सार्वधातुक (वि०) (स्त्री० की) [सर्वधातु + ठक्] संपूर्ण धातुओं में व्यवहृत होने वाला गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समस्त रूप में घटने वाला, अर्थात् चार गण और चार लकारों के साथ प्रयुक्त होने वाला, कुल चार लकारों (लट्, लोट्, लङ्, लिङ्) के तिङादि प्रत्यय (या लिट् तथा आशीर्लिङ् को छोड़ कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'सु' ध्वनि से प्रकट होने वाले विकरण) ।

सार्वभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वभूत - ठक्] 1 सभी मूलतत्त्वों या प्राणियों से संबंध रखने वाला 2 सभी जीवधारी जन्तुओं में युक्त ।

सार्वभौम (वि०) (स्त्री०—मी) [सर्वभूमि + अण्] समस्त धरती से संबद्ध या युक्त, विश्वव्यापी, –मः 1 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा—साम्राज्यं सप्तसे नृवर नृपतयस्त्वावृक्षा सार्वभौमा मुद्रा० ३।२२ 2 कुबेर की दिशा, उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर ।

सार्वलौकिक (वि०) (स्त्री०–की) [सर्वलोक + ठञ्] सब लोगों का ज्ञात, समस्त समाज में व्याप्त, सार्वजनिक, विश्वव्यापी अनुरायप्रवादस्तु वत्सयो सार्वलौकिकः मा० १।१३ ।

सार्ववर्णिक (वि०) (स्त्री०–की) [सर्ववर्ण + ठक्] 1 प्रत्येक प्रकार का, हर तरह का 2 प्रत्येक जाति या वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाला ।

सार्वविभक्तिक (वि०) (स्त्री०–की) [सर्व विभक्ति + ठञ्] किसी शब्द की सभी विभक्तियों में घटने वाला, सभी विभक्तियों से संबद्ध ।

सार्ववेदसः [सर्ववेदस् + अण्] जो किसी यज्ञ या अन्य पुण्यकार्य में अपना समस्त धन दे देता है ।

सार्ववेदस [सर्ववेद + ष्यञ्] सभी वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।

सार्षप (वि०) (स्त्री०–पी) [सर्षप + अण्] सरसों का बना हुआ, पक्व सरसों का तेल ।

सार्ष्टि (वि०) समान स्थान, दशा, या पद से युक्त समान अधिकार रखने वाला ।

सार्ष्टिता [सार्ष्टि + तल् + टाप्] 1 पद अधिकार व अवस्थाओं में समानता 2 शक्ति में तथा अन्य विशेषताओं में परमात्मा से समानता, मुक्ति की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था जहाँ मुक्त आत्मा ब्रह्मा जैसी शक्तियाँ (प्राप्नोति) मनु० ४।२३२ ।

सार्ष्टिभाव [सार्ष्टि + भाव] वही अर्थ जो मुक्ति ।

सालः [सल् + घञ्] 1 एक वृक्ष का नाम, या उसकी राल 2. वृक्ष—यथा 'कल्पसाल' 'रसालसाल' में 3 किसी भवन की चारदिवारी या फसील, परकोटा 4 भीत, दीवार 5. एक प्रकार की मछली (समासों के लिए देखो 'शाल' के अन्तर्गत) ।

सालनः [सल्+घिच्+ल्युट्] साल वृक्ष की राल।

साल. [सान्त. प्राकारोऽस्ति अस्याः - साल+अच्+टाप्] 1 दीवार, फसील 2 घर, मकान--दे० शाला। सम०—करी 1 घर, में कार्य करने वाला 2 बन्दी (विशेष कर वह जो युद्ध में पकड़ लिया गया हो) वृक्ष- दे० 'शालावृक'।

सालकारम् [साला+ऋ+अण्] दीवार में गड़ी खूटी, 'ब्रैकेट'।

सालकुर- [सल्+उरच्, णित्व, वृद्धि] मेंढक दे० 'शालकुर'।

सालेयम् [साला+ढक्] सोआ मेथी दे० 'शालेय'।

सालोक्यम् [समानो लोकोऽस्य - ब० स० सलोक+ष्यञ्] 1 उसी लोक या संसार में दूसरे के साथ रहना 2 उसी स्वर्ग में किसी देवता के साथ रहना।

साल्व [साल्व+अच्] 1 एक देश का नाम उसके निवासियों का नाम (इस अर्थ में ब० व०) 2 एक राक्षस का नाम जिसको विष्णु ने मार गिराया था। सम० हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण।

साल्विक. [साल्व+ठक्] मारिका नामक पक्षी, मैना।

साव- [सु+घञ्] तर्पण।

सावक (वि०) (स्त्री०-विका) [सू+ण्वुल्] उत्पादक, जन्म देने वाला प्रसवसम्बन्धी, के जानवर का बच्चा (दे० 'शावक')।

सावकाश (वि०) [सह अवकाशेन ब० स०] जिसको अवकाश हो, अवकाश वाला, खाली, अव्य० (अव्य०) अवकाश पाकर, अपनी सुविधानुकूल।

सावग्रह (वि०) [अवग्रहेण सह ब० स०] 'अवग्रह' चिह्न से युक्त।

सावज्ञ (वि०) [सह अवज्ञया ब० स०] घृणा करने वाला, तिरस्कारपूर्ण, अपमान अनुभव करने वाला।

सावद्यम् [अवद्येन सह ब० स०] सन्यासी के द्वारा प्राप्य।

सावधान (वि०) [अवधानेन सह ब० स०] 1 ध्यान देने वाला, दत्तचित्त, सचेत, सजगदार 2 चौकस 3 परिश्रमी, अव्य० (अव्य०) सावधानता से, ध्यान पूर्वक, चौकस होकर।

सावधि (वि०) [सह अवधिना ब० स०] सीमायुक्त, सीमित समाधिका, परिभाषित, साभाद्ध सावधि स्वामन्त्रणिस्ते यज्ञोरायोस्तु सावधि मुमा०।

सावन (वि०) (स्त्री०—नी) [सवन अण्] तीनों सवनों से युक्त या सबद्ध,- न० 1 यजमान, जो यज्ञ में पुरोहितों का वरण करता है 2 यज्ञ का उपसंहार, वह संस्कार जिसके द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति दी जाती है 3 वरुण का नाम 4 तीन सौरदिवस का नाम 5 सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिन 6 विशेष वर्ग।

सावयव (वि०) [सह अवयवेन ब० स०] भागों या अंगों से बना हुआ—सावयवत्वे घानित्यत्वप्रसङ्ग न ह्यविद्याकल्पितेन रूपभेदेन सावयव वस्तु संपद्यते शारी०।

सावर [सवरेण निर्वृत्तं अण्] 1. दोष, अपराध 2 पाप, दुष्टता, जुर्म 3 लोध्र वृक्ष।

सावरण (वि०) [सह आवरणेन ब० स०] 1 गूढ, गुप्त, रहस्य 2 ढका हुआ, बन्द।

सावर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [सवर्ण+अण्] एक ही रंग का, एक ही जाति का, एक ही रंग या जाति से सबद्ध,- र्ण 1 आठवें मनु का मातृपरक नाम, दे० सावर्णि। सम० चक्षुस् 1 एक ही रंग या जाति का चिह्न 2 त्वचा, खाल।

सावर्णि [सवर्णा+इञ्] आठवें मनु का मातृपरक नाम (सूर्य की पत्नी सवर्णा से उत्पन्न)।

सावर्ण्यम् [सवर्ण-ष्यञ्] 1 रंग की एकता 2 किसी श्रेणी या जाति की एकता 3 आठवें मनु द्वारा अधिष्ठित मन्वन्तर।

सावलेप (वि०) [सह अवलेपेन] अभिमानपूर्ण, घमंडी, हठधर्मी पम् (अव्य०) घमंड से, हेकड़ी के साथ, अहंकारपूर्वक।

सावशेष (वि०) [सह अवशेषेण ब० स०] 1 अवशिष्ट से युक्त जिसमें कुछ बाकी बचे 2 अपूर्ण, अधूरा असमाप्त।

सावष्टम्भ (वि०) [सह अवष्टम्भेन—ब० स०] 1 घमंडी, दर्पोद्धत, उद्धत शानदार 2. आत्मी दृढनिश्चयी 3 दृढता से पूर्ण, भम् (अव्य०) दृढनिश्चय के साथ, दृढतापूर्वक साहस के साथ।

सावहेल (वि०) [सह अवहेलया ब० स०] तिरस्कारपूर्ण निरादर करने वाला, घृणा करने वाला, लम् (अव्य०) निरादर के साथ, घृणापूर्वक।

साविका [सू+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] दाई, प्रसव के समय प्रसूता की देखभाल करने वाली।

सावित्र (वि०) (स्त्री० त्री) [सवितृ+अण्] 1. सूर्य सबधी 2 सूर्य की सतान, सूर्यवंश से सबद्ध, (राजाओं के) यस्याधिरैर्दीधिति भूमिपालै उत्तर० १।४२ 3 सावित्री मंत्र से युक्त, त्रः 1 सूर्य 2 अग्नि, गर्म 3 ब्राह्मण 4 शिव का विशेषण 5 कर्म का विशेषण, —त्रम् यज्ञोपवीत संस्कार (इसका "सावित्रम्" नाम इसी लिए पड़ा कि इस संस्कार में मुख्यरूप से सावित्री मंत्र का जाप करना पड़ता है, इसी समय यज्ञोपवीत धारण किया जाता है)।

सावित्री [सवित्र+ङीप्] 1 प्रकाश की किरण 2 ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र (इसका नाम 'सावित्र' सूर्य को सबोधित करने के कारण पड़ा) इसे गायत्री भी कहते हैं। अधिक जानकारी के लिए दे० 'गायत्री' 3 यज्ञोपवीत

संस्कार 4 ब्राह्मण की पत्नी 5 पार्वती 6 कश्यप की पत्नी 7 शाल्वदेश के राजा सत्यवान् की पत्नी (सावित्री राजा अश्वपति का एकमात्र सन्तान थी। वह इतनी सुन्दर थी कि वे सब वर जो उसे पाने की इच्छा से वहाँ आए उसकी अभिराम कान्ति से इतने चकित हुए कि वापिस ही लौट गये। विवाह योग्य अवस्था होने पर सावित्री को वर न मिल सका। अन्त में उसके पिता ने उसे कहा कि अब तुम स्वयं आओ और अपना इच्छा के अनुसार वर ढूंढो। सावित्री ने वैसा ही किया, और वर चुन कर वह पिता के पास वापिस आई और कहने लगी कि मैंने शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् को चुन लिया है। राजा द्युमत्सेन उन दिनों अपने राज्य से निकाल दिये गये थे—वे अपनी सहधर्मिणी समेत अब वानप्रस्थ जीवन बिता रहे थे। नारद मुनि भी घूमते हुए उस समय आ गये थे, जब उन्होंने सुना तो राजा अश्वपति तथा सावित्री को कहा कि मुझे तुम्हारे चुनाव पर खेद है, क्योंकि यद्यपि सत्यवान् सब प्रकार से तुम्हारे योग्य है परन्तु उसकी आयु अब केवल एक वर्ष और बाकी है। अतः उसका चुनना जीवन भर के लिए वैधव्य तथा कष्ट का भार लेना है। उसके मातापिता ने उसके मन का बदलने का घोर प्रयत्न किया परन्तु उस उच्चात्मा सावित्री ने कहा कि मेरा निश्चय अब नहीं बदल सकता। तदनन्तर समय पर उसका विवाह सत्यवान् से हो गया। विवाह के पश्चात सावित्री ने अपना सब राजसी ठाठबाट, बहुमूल्य आभूषण तथा वस्त्रादिक उतार दिये और अपने बूढ़े सास-ससुर की सेवा करने लगी। यद्यपि बाहर से उसकी मुख-मुद्रा से कुछ प्रकट न होता था, वह प्रसन्न ही रहती थी। परन्तु वह नारद के वचन अभी तक नहीं भूली थी। उसे दिन बीतते देर न लगी। और अन्त में वह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस जिस दिन सत्यवान् का प्राणान्त होना था निकट आ गया। उसने मन में सोचा कि अभी तीन दिन और बाकी हैं, इन तीनों दिन में कठोर व्रत साधन करूंगी। उसने व्रत किया और चौथे दिन जब सत्यवान् यज्ञ को समिधाएँ लेने के लिए जंगल जाने को तैयार हुआ तो सावित्री भी उसके साथ साथ गई। कुछ समिधाएँ एकत्र करने के पश्चात् सत्यवान् थक कर बैठ गया। और अपना सिर सावित्री की छाती पर रख कर सो गया। उसी समय यमराज आया और सत्यवान् की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चल दिया। सावित्री ने यह सब देखा और यमराज का पीछा किया। यमराज ने सावित्री को बताया कि सत्यवान् की आयु समाप्त हो चुकी है। परन्तु पतिव्रता सावित्री ने यमराज से ऐसे करुण स्वर में प्रार्थना की कि यमराज ने उसे सत्यवान् के प्राणों को छोड़ कर और कोई वर मांगने के लिए कहा। सावित्री की अनन्य भक्ति एवं पातिव्रत धर्म पर मुग्ध होकर अन्त में यमराज ने सत्यवान् के प्राण भी लौटा दिये। वह प्रसन्न होकर वापिस आई और देखा कि सत्यवान् मानो गहरी निद्रा से जाग गया है। उसने सत्यवान् को सारी घटना बता दी। तथा वे दोनों आश्रम में वापिस आ गये। शीघ्र ही उसके श्वसुर द्युमत्सेन ने यमराज के द्वारा दिये गये वरों का फल पाया। सावित्री पातिव्रत धर्म का उच्चतम आदर्श माना जाती है। बड़ी बड़ी स्त्रियाँ आज भी विवाहित तरुणी को आशीर्वाद (जन्मसावित्री भव) देती हैं तथा उसके सामने सावित्री का आदर्श पूरा करने के लिए उसका उदाहरण रखती हैं)। सम० पतित,-परिभ्रष्ट पहले तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, तु० व्रात्य ब्रतम् ज्येष्ठमास के शुक्लपक्ष के अन्तिम तीन दिनों का व्रत जिसे आर्य लक्ष्मणाएँ विशेष रूप से वैधव्य से बचने के लिए रखती हैं।

सावित्रीकार (वि०) [सह अवित्रीकारेण—ब० स०] 1 घमंडी, अहंकारी 2 प्रकट।

साशंस (वि०) [सह आशयया ब० स०] कामना और उत्कण्ठा से पूर्ण, इच्छुक, आशावान्, प्रत्याशी,—सम् (अव्य०) कामना पूर्वक आशा से।

साशङ्कु (वि०) [सह आशङ्कया ब० स०] संदेह अनुभव करने वाला, आशंका करने वाला, डरा हुआ, चकित।

साशमन्धक (पु०) एक छोटी जिप्सकी।

साशूकः (पु०) गलकंबल, सास्ना।

साश्चर्य (वि०) [सह आश्चर्येण ब० स०] 1 आश्चर्य जनक, विलक्षण 2 आश्चर्यचकित, यम् (अव्य०) आश्चर्य के साथ, अद्भुत प्रकार से।

साश्र (स्र) (वि०) [सह अश्रुणा—] 1 कान या किनारों से युक्त, कोणदार 2 आँसू से भरा हुआ, रोता हुआ।

साश्वश्रूकी [साश्रू व्यायति साश्रू+क्यङ्+क्विप्, सम्प्रसारण] सास, पति या पत्नी की माता।

साष्टाङ्गम् (अव्य०) [सह अष्टाङ्गैः ब० स०] लंबा दण्डवत् लेट कर (शरीर के आठ अंगों से पृथ्वी को छूकर—दे० 'अष्टन्' के अन्तर्गत 'अष्टाङ्ग प्रणाम')

सास (वि०) [सह असेन] धनुर्धारी—कि० १५।५।

सासुङ्ग (वि०) खड्ग धारण करने वाला—कि० १५।५।

सासूय (वि०) [सह असूयया] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, तिरस्कारपूर्ण,—यम् (अव्य०) डाह के साथ, रोषपूर्वक तिरस्कार के साथ—शि० २।२।

सास्ना [सस्+न, चित् वृद्धि] गाय या बैल का गल-

कम्बल, - गा सास्नादिमत्त्व लक्षणम्—तर्क०, रामन्य-मन्मरचलद्मुखसास्नमासांचके निमीलदलसेक्षण०, शैशवेन शि० ५।६२ ।

साहचर्यम् [सहचर+ष्यञ्] साथ, साथीपना, साथ रहना, साथ साथ बसना, सहवर्तिता कि न स्मरसि यदेकस्य नो विद्यापरिग्रहाय नानादिग्-वसतिना साहचर्यमासीत् —मा० १, कु० ३।२१ रघु० १६।८७, वेणी० १।२०, शि० १५।२४ ।

साहसम् [सह् + णिच् + ल्युट्] सहन करना, भुगतना ।

साहसम् [महसा बलेन निर्वृत्तम् अण्] 1 प्रचण्डता, बल, लूटखसोट मनु० ७।४८, ८।६ 2 कोई भी घोर अपराध (जैसे कि डाका, बलात्कार, लूट-खसोट आदि महापातक), जघन्य अपराध, अविचारपूर्वक कार्य 3 क्रूरता, अत्याचार शि० ९।५९ 4 हिम्मत, दिलेरी, उग्र शौर्य—साहसे श्री प्रतिवसति—मृच्छ० ४ 5 साहसिकता, उतावलापन, औद्धत्य, अविमृश्यकारिता, साहसिक कार्य तदपि साहसाभासम् मा० २, किमपरमतो निर्व्यूढ यत्करार्पणसाहसम् ९।१०, कि० ९७।४२ 6 सजा, दण्ड, जुर्माना (इस अर्थ में पु० भी), दे० मनु० ८।१३८, याज्ञ० १।१६६, ३६५ । सम०—अङ्क 1 राजा विक्रमादित्य का विशेषण 2 एक कवि का विशेषण 3 एक काश्मीरक का विशेषण —अध्यवसायिन् (वि०) उतावली या जल्दबाजी करने वाला, ऐकरसिक (वि०) नितान्त प्रचण्डता पर तुला हुआ, भीषण, क्रूर, कारिन् (वि०) 1 दिलेर, बेधड़क 2 जल्दबाज, अविवेकी लाञ्छन (वि०) जिसमें साहस परिचायक चिह्न हो ।

साहसिक (वि०) (स्त्री० की) [साहसे प्रयत्न ठक] 1 बहुत अधिक जोर लगाने वाला, नृशंस, प्रचण्ड, उत्पीडक, क्रूर, लूट-खसोट करने वाला 2 हिम्मती, दिलेर, निर्भीक, विचारशून्य, उद्धत न साहसमसाहसी शि० ९।५९, केचित् साहसिकास्त्वि-त्याचक्षते पर मल्लि० 3 दण्डमूलक, दण्डात्मक, क: 1 हिम्मतवर, दिलेर, उद्यमी —पञ्च० ५।२१ 2 आततायी भयंकर, भीषण या किल विविधजीवापहारप्रियेषु साहसिकाना प्रवाद मा० १ साहसिक सत्त्वेश्वर ६ 3 लुटेरा, लूटमार करने वाला, डाकू ।

साहसिन् (वि०) [साहस + इनि] 1 प्रचण्ड, उग्र, भीषण, क्रूर 2 हिम्मती, दिलेर, जल्दबाज, आशुकर्ता ।

साहस्र (वि०) (स्त्री०- स्री) [सहस्र + अण्] 1 हजार से सबद्ध रखने वाला 2 हजार से युक्त 3 एक हजार में मोल लिया हुआ 4 प्रति हजार दिया हुआ (ब्याज आदि) 5 हजार गुना, क: एक हजार सैनिकों की टुकड़ी, - सम् एक हजार का समूह ।

साहायकम् [सहाय+वुञ्] 1 सहायता, साहाय्य, मदद सकुलाचितमन्त्रस्य साहायकमुपेयिवान् रघु० १७।५ 2 सहचरत्व मैत्री, सौहार्द 3 मित्रमण्डली 4 सहायक सेना ।

साहाय्यम् [सहाय+ष्यञ्] 1 सहायता, मदद, सहकार 2 सौहार्द, मैत्री ।

साहित्यम् [सहित+ष्यञ्] 1 साहचर्य, भाईचारा, मेल मिलाप, सहयोगिता 2 साहित्यिक या आलंकारिक रचना—साहित्यसङ्गीतकलाविहीन साक्षात्पशु पुच्छविषाणहीन भर्तृ० ३।१२ 3 शैलिशास्त्र, काव्यकला—विक्रमाङ्क० १।११, साहित्यदर्पण आदि 4 किसी वस्तु के उत्पादन या सम्पन्नता के लिए सामर्थ्य का सग्रह (सदिग्ध अर्थ) ।

साहुम् [सह+ष्यञ्] 1 सयोजन, मेल, साहचर्य, सहयोग 2 सहायता, मदद । सम० कृत् (पु०) साथी ।

साहुक. [सह आह्वयेन ब० स०] जानवरों की लड़ाई करा कर जूआ खेलना ।

सि (स्वा० क्रया० उभ० सिनोति, सिनुते, सिनाति सिनीते) 1 बाधना, कसना, जकड़ना 2 बाल में फँसना ।

सिंह [हिंस्+अच्, पृषो०] 1 शेर (कहा जाता है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति 'हिंस' धातु से हुई है तु. भवेद्धलोपमाद्धस सिंहो वर्णविपर्ययात् सिद्धा०' न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा —सुभा० 2 'सिंह राशि का चिह्न 3 (समास के अन्त में प्रयुक्त; सर्वश्रेष्ठ, श्रेष्ठ म प्रयुक्त, उदा० रणसिंह, पुरुषसिंह । सम० अवलोकनम् शेर का पीछे मुड़ कर देखना, न्याय सिंहावलोकन का न्याय, वस्तु का प्राय. पूर्ववर्ती और परवर्ती सबध बतलाने के लिए प्रयुक्त, व्याख्या के लिए 'न्याय' के अन्तर्गत देखिए, -आसनम् राजगद्दी, सम्मान का आसन, (न०) एक प्रकार का रतिबध, आस्य हाथी की विशेष स्थिति,—न शिव का विशेषण.—कर्णम् अदरक, कुण्ड: एक प्रकार की सजावट, केतु: शिव का विशेषण, ग्रीव (वि०) शेर की भाँति गर्वीला,—द्वार,—द्वारक: 1 शेर की दहाड़ कु० १।५६, मृच्छ० ५।२९ 2 युद्ध-ध्वनि, ललकार, द्वारम् मुख्य दरवाजा,—यात्रा रथ पार्वती देवी, लोल एक प्रकार का सभोग, वाहन, शिव का विशेषण,—सहनम् (वि०) 1 शेर की भाँति बहादुर 2 सुन्दर, (नम्) शेर को मार डालना ।

सिंहलम् [सिंहोऽस्यस्य लच्] 1 टिन 2 पीतल 3 बल्क, वृक्ष की छाल 4 लङ्काद्वीप (प्राय. ब० व०)—सिंहलेभ्य प्रत्यागच्छता सिंहलकरदुरितु फलकासादनम्—दश०-१,— क: (पु० ब० व०) लका देशवासी लोग ।

सिंहलकम् [सिंहल+कन्] लंका का द्वीप ।
सिंहलम् (न्) [सिंह्+आलच्, पृषो०] 1. लोहे का जंग 2 राँगे का मल ।
सिंहिका [सिंह+कन्+टाप्, इत्वम्] राहु की माँ । सम० -तनयः, -सुतः -सूनुः राहु के विशेषण ।
सिंही [सिंह+ङीष्] 1 शेरनी 2 राहु की माता का नाम ।
सिकता [सिक्+अतच्+टाप्] 1. रेतीली जमीन 2 रेत (प्रायः ब० व० में)—अमृत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन्—भर्तृ० २।५ 3 बजरी, पथरी (एक रोग) ।
सिकतिल (वि०) [सिकता+इलच्] रेतीला,—भर्तृ० ३।३८।
सिक्त (भू० क० कृ०) [सिच्+क्त] 1 छिड़का गया, पानी से गीला किया गया 2. तर किया गया, गीला किया गया, भिगोया गया 3 संभिन्न, दे० 'सिच्' ।
सिक्थः [सिच्+थक्] 1 उबले हुए चावल 2 भात का पिंड—शमोद्गलितसिक्थेन का हानि करिणो भवेत् —सुभा०, क्थम् 1 मधुमक्खियों से बनाया गया मोम 2 नील ।
सिक्थम् दे० सिक्थम् ।
सिक्थ. (पु०, स्फटिक, सीसा ।
सिङ्घ (चा) क्वन् [सिङ्घ+आलच्, पृषो०] 1 नाक का मल 2 लोहे का जंग ।
सिङ्घाणी [सिङ्घ+णिनि+ङीष्, पृषो०] नाक ।
सिच् (तुदा० उभ० सिंचति-ते, सिक्त) (इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सिच् के स् को ष हो जाता है) 1 छिड़कना, छोटी-छोटी बूंदों में बखेरना भट्टि० १९।२३ 2 सींचना, तर करना, भिगोना, गीला करना मनु० २६, मनु० ९।२५५ 3 उंडेलना, उत्सर्जन करना, निकालना, डालना रघु० १६।६६ 4 भरना, बूंद-बूंद टपकाना, डालना आकृष्य शिरा हरति सिञ्चति बाधि सत्यम् —भर्तृ० २।२३ 5 उंडेल देना प्रस्तुत करना अन्यथा निर्लोदक में सिञ्चतम् स० ३. प्रेर० (सेचयति-ते) छिड़कवाना. इच्छा० (सिषिक्षति-ते) छिड़कने की इच्छा करना. अभि 1 छिड़कना, उंडेलना, सींचना, गीला करना, तैयार करना (आल० से भी) - अथ वपुरभिषेक्तुं तान्सदाम्भोभिरीषु शि० ७।७५ भट्टि० ६।२१ १५।३ 2 सेक करना, संस्कारित करना, नियत करना (सिर पर जल के छींटे देकर) मुकुट पहनाना, राज्याभिषेक करना, पदासीन करना—अभिवर्षमभिषिच्य साधव इव पादे रघु० १९।१. १७।१२ विक्रम० ५।२३ (प्रेर०) ताज पहनना, राजगद्दी पर बिठाना आ—, छिड़कना (प्रेर०) छिड़कवाना, उंडेलवाना - तप्तमानेचयेत्तैल वक्त्रे योषे च यावित मनु० ८।२७२, उद्—, छिड़कना, उंडेलना, फैलाना (कर्म० आ०) 1 तेज प्रवाहित होना, आग उगलना, ऊपर की ओर फेंका जाना 2. फूल जाना, उन्नत होना, अहंकार युक्त होना न तस्योत्सिषिचे मन —रघु० १७।४३ 3 आधित होना—मनु० ८।७२, (प्रेर०) बाहर से भरना, नि , छिड़कना, उंडेलना, ऊपर डाल देना, अन्दर डालना रघु० ३।२६, श० ४।१३, कु० २।५७ 2 गर्भयुक्त करना—निषिञ्चन्त्यावकीमेता लता कौन्दी च मत्तंयन् विक्रम० २।४, (यहां पहला अर्थ भी अभिप्रेत है), परि-छिड़कना, उंडेलना ।
सिच्यकः [सच्+अयच्, किन्] वस्त्र. कपड़ा ।
सिञ्जिका [सिंच+इतच्, पृषो०] पीपलामूल ।
सिञ्जिनी [=सिञ्जा, पृषो०] धातु के बने आभूषण की झनकार ।
सिञ्जिनीवत् [=सिञ्जित, पृषो०] झनझनाहट, झनकार —आदिनुभिर्नूपुरसिञ्जितानि —कु० १।३४, विक्रम० ४।१४ ।
सिट् (भ्वा० पर० सेटति) अवज्ञा करना, घृणा करना ।
सित (वि०) [सो (सि)+क्त] 1. सफेद 2. बंधा हुआ, कसा हुआ, जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ 3. घिरा हुआ 4 अवसित, समाप्त, तः 1 सफेद रंग 2 चान्द्रमास का शुक्ल पक्ष 3 शुक्रग्रह 4 बाण,—क्तम् 1 चाँदी 2 चन्दन 3 मूली । सम० अङ्ग. काँटा, -अम्बुजः मोर, अश्वः,—अश्वम् कपूर, अम्बरः श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी, -अर्जक सफेद तुलसी, अस्त्रः अर्जुन का विशेषण, असित बलराम का विशेषण आदि राज, ऋद्ध, आसिका कौंकला, सितुही, इतर (वि०) जो सफेद न हो अर्थात् काला,—उत्पलम् सफेद चन्दन, उपलः स्फटिक, उपला मिस्री, चीनी,—करः 1 चन्द्रमा 2 कपूर, धातु खाक, खड़िया, रश्मिः चाँद, वाजिन् (पु०) अर्जुन का नाम, शर्करा चीनी सिक्थिकः गेहूँ, -सिक्थम् सेंधा नमक,- सूकः जौ ।
सिता [सित+टाप्] चीनी, शक्कर,—पिसेन दूने रसने सितापि तिक्तायते हंसकुलावतंस मे० ३।९४, भामि० ४।१३ 2 ज्योत्स्ना 3 मनोरमा स्त्री 4 मदिरा 5. सफेद दूब 6 चमेली, बेला ।
सिति (वि०) [सो+क्तिच्] 1 सफेद 2 काला,—तिः सफेद या काला रंग । सम०—कण्ठ,—कण्ठक दे० तितिकण्ठ, तितिवासस् ।
सिद्ध (भू० क० कृ०) [सिध्+क्त] 1 सम्पन्न, कार्यान्वित, अनुष्ठित, अवाप्त, पूर्ण 2 प्राप्त, उपलब्ध, अवाप्त 3 कामयाब, सफल 4. बसा हुआ, स्थापित सैनसिकी सुरभिषु कुसुमेषु सिद्धा बुद्धि स्थितिर्न चरणैरचलाऽवनीनि उत्तर० १।१४ 5. साधित, प्रमाणित सम्भवदिभिरव प्रत्यक्षमनुमानमिति सिद्धम्-तर्क०, मनु० ८।१७८ 6 सैद्ध, स्वाभ्य (जैसे कि सिद्धय) 7 मरा माना हुआ 8 फैलाया किया हुआ, निर्णीत

(जैसे कि कोई कानूनी अभियोग) 9 दिया गया, भुगताया गया, (ऋण आदि) चुकता किया गया 10. पकाया गया, (भोजन) बनाया गया 11 परिपक्व, पका हुआ 12 सर्वथा तैयार किया गया, मिश्रित, (वनस्पति आदि) एकत्र पकाई गई 13 (रुपया आदि) तैयार 14 वश में किया गया, जीता गया, (जादू के द्वारा) अधीन किया गया 15 वशीभूत किया गया, मंगलप्रद बना हुआ 16 पूर्णतः सिद्ध या दक्ष, प्रवीण जैसा कि 'रससिद्धम्' 17 सम्पादित, (साधना आदि के द्वारा) परिष्कृत 18 मुक्त किया हुआ 19 अलौकिक शक्ति से युक्त 20 पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21 दिव्य, अविनश्वर, नित्य 22 विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 23 उज्ज्वल, शानदार,—द्धः 1 अर्धदिव्य प्राणी जो अत्यंत पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है विशेष रूप से देवयोनि विशेष जिसमें आठ सिद्धियाँ हों—उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रमान्ते शुद्धानि यस्यातपवन्ति सिद्धाः—कु० १।५ 2 अंतर्दृष्टि प्राप्त सन्त ऋषि या महात्मा (जैसे कि व्यास) 3 कोई भी संत, ऋषि या महात्मा—सिद्धादेश—रत्ना० १ 4 जादूगर, ऐन्द्रजालिक 5 कानूनी मुकदमा, अदालती जाँच 6 गुड़, द्धम् समुद्री नमक। सम० अन्तः 1 सर्वसम्मत फल 2 किसी तर्क का प्रदर्शित उपसंहार, किसी प्रश्न का सर्वसम्मत रूप, सही तथा तर्कसंगत उपसंहार (पूर्वपक्ष के निराकरण के पश्चात्) 3 प्रमाणित तथ्य, मानी हुई सचाई, सिद्धान्त, मत 4 निर्णायक साक्ष्य के आधार पर अवलंबित कोई माना हुआ मूलपाठ का ग्रन्थ, °कोटि (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कसंगत उपसंहार माना जाता है, °पक्षः किसी युक्ति का तर्कसंगत पार्श्व, -अन्नम् पकाया हुआ भोजन,—अर्थ (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सम्पन्न कर लिया है, सफल (—र्थः) 1 सफेद सरसों 2 शिव का नाम 3 महात्मा बुद्ध का नाम,—आसनम् धर्मसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—उक्षा, क्षी, —सिन्धुः स्वर्गंगा, आकाशगंगा, -कृतः विशेष प्रकार का पायसान्न, मनोविक्षिप्त,—अन्नम् खांडी, -धातुः पारा,—पक्षः किसी प्रतिज्ञा का सर्वसम्मत तथा तर्कसंगत पहलू, —प्रयोजनः सफेद सरसों, —योगिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रस (वि०) खनिज, धातुमय (—सः) 1. पारा 2. रसायनशास्त्री —सङ्कल्प (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया है, सेनः कार्तिकेय का नाम,—स्थाली ऋषि की बटलोई या पात्र (ऐसा समझा जाता है कि इस बर्तन से इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है और फिर भी यह भोजन से भरपूर रहता है)।

सिद्धता,—त्वम् [सिद्धि+तल्+टाप्, त्व वा] सम्पन्नता, पूर्णता, पूरा करना।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] 1 निष्पन्नता, पूर्णता, संपूर्ति, पूरा होना, (किसी पदार्थ की) पूर्ण अवाप्ति —क्रियासिद्धि सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे -सुभा० 2 सफलता, समृद्धि, कल्याण, कुशल-क्षेम 3 स्थापना प्रतिष्ठा 4. प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5 (किसी नियम या विधि की) खोज 6 फैसला, निर्णय, व्यवस्था (किसी कानूनी मुकदमे की) 7 निश्चिति, सचाई, यथार्थता, शुद्धता 8 अदायगी, (ऋण का) परिशोध 9 तैयार करना, (औषधि आदि का) पकाना 10 समस्या का समाधान 11 तत्परता 12 नितान्त पवित्रता या विशुद्धता 13 अतिमानव शक्ति—यह गिनती में आठ है—अणिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा, ईशित्व च वशित्व च तथा कामावसायिता 14 जादू के द्वारा अतिमानव शक्तियों को प्राप्त करना 15 विलक्षण कुशलता या क्षमता 16 अच्छा प्रभाव या फल 17 मुक्ति, मोक्ष 18 समझ, बुद्धि 19 छिपाना, अन्तर्धान होना, अपने आपको अदृश्य करना 20 जादू की लड़ाई 21 एक प्रकार का योग 22 दुर्गा का नाम। सम० -द (वि०) सफलता या सर्वोपरि आनन्दातिरेक देने वाला (—दः) शिव का विशेषण, —दात्री दुर्गा का विशेषण, योगः बहुत का विशेष प्रकार का क्रूर संयोग।

सिध् (दिवा० पर० सिध्यति, सिद्ध, प्रेर०—साधयति या सेधयति—इच्छा० सिषित्सति) 1 सम्पन्न होना, पूरा होना यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष हि० प्र० ३१, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ३६ 2. कामयाब होना, सफलता प्राप्त करना सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः —का० ७।४ 3 पहुँचना, आघात करना, सही पड़ना —का० २।५ 4 अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करना 5 सिद्ध होना, प्रमाणित होना, सच होना यदि वचनमात्रेणैवार्थिपत्यं सिध्यति हि० ३ 6 व्यवस्थित या अभिनिर्णीत होना 7 सर्वथा तैयार किया हुआ या पकाया हुआ होना 8 विजित या जीता हुआ होना—पच० २।३६, ब —, 1 सम्पन्न होना, कार्यान्वित होना, सफल होना शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः—भग० ३।८, तपसैव प्रसिध्यन्ति मनु० ११।२३१ 2. उपलब्ध या अवाप्त होना 3 विख्यात होना, दे० 'प्रसिद्ध', क्त—, 1 पूरा किया जाना 2 सर्वथा सम्पन्न या निष्पन्नित होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3 आवश्यकातिरेक प्राप्त करना, प्रदत्त होना—अप्रदेयं तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नास्य संशयः—मनु० २।८७।

II (स्वा० पर० सेधति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

उपसर्गों के पश्चात् 'सिच्' के 'स' को मूर्धन्य 'ष' हो जाता है) 1 जाना 2 हटाना, दूर करना 3 नियन्त्रण करना, रुकावट डालना, रोकना 4 निषेध करना, प्रतिषेध करना 5 आदेश देना, अधादेश देना, निर्देश देना 6 सुख निकलना, मंगलमय होना, अप—, दूर करना, हटाना सवत्सर यथान्यायस्तत्पापमपसेधति—मनु० ११।१९९, नि —, 1 परे हटाना, रोकना, नियंत्रण में रखना, पीछे हटाना—न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्ग रघु० २।४, ३।४२, ५।१८ 2 विरोध करना, प्रतिवाद करना, आक्षेप करना रघु० १४।४३ 3 प्रतिषेध करना, मना करना—निषिद्धो मायमाणस्तु सुवर्णं दण्डमर्हति—मनु० ८।३६१ 4 पराजित करना, जीतना—रघु० १८।१ 5. हटाना, दूर करना, निवारण करना—न्यषेधत्पावकास्त्रेण रामस्तद्राक्षसास्त्रम् —भट्टि० १७।८७, १।१५, प्रति —, 1 रोकना, दूर रखना, नियन्त्रित करना मनु० २।२०६, रघु० ८।२३ 2 मना करना प्रतिषेध करना नृपते प्रतिषिद्धमेव तत्कृतवान् पक्षिराजो विलम्ब्य यत् रघु० ९।७४, विप्रति —, प्रतिवाद करना, विरोध करना—स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चयति विप्रतिषिद्धमेतत् मा० १।

सिध्मन्, सिध्मल (नपु०) [सिध् + मन्, किच्च] 1 छाला, ददोरा, खुजली 2. कोढ़ 3 कुष्ठ ग्रस्त स्थान।

सिध्मल [सिध्म + लच्] 1 जिसको खुजली हो, कोढ़ के चिह्नों से युक्त, कोढ़ी।

सिध्मा [सिध्म + टाप्] 1 छाला, ददोरा, खुजली, कोढ़ युक्त स्थान 2 कोढ़।

सिध्मः [सिध् + सिच् + यत्] पुष्य नक्षत्र।

सिध्र [सिध् + रक्] 1 पवित्रात्मा, पुण्यात्मा 2 वृक्ष।

सिध्रकाश्वत्थम् [सिध्रकप्रधानं वनम्, अश्वत्थम्, दीर्घसत्र] दिव्य उद्यानों में से एक उद्यान।

सिनः [सि + नक्] प्रान्त, कौर।

सिनी [सिन + ङीष्] गौर वर्ण की स्त्री।

सिनीवाली [सिनीं प्रवेता चन्द्रकलां वलति धारयति, सिनी वल् + अण् + ङीष्] चन्द्रदर्शन से पूर्ववर्ती दिन, प्रतिपदा, (जिस दिन चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है), -या पूर्णिमावास्या सा सिनीवाली योदेति सा कुहू ऐ० ब्रा०, या—सा दृष्टेन्दु सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहू —अमर०।

सिन्धुकः, सिन्धुवारः [स्यन्द् + कु, संप्रसारणम्, सिन्धु + वृ + अण्] एक वृक्ष का नाम।

सिन्धूरः [स्यन्द् + उरन् सम्प्रसारणम्] एक प्रकार का वृक्ष, -रम् लाल रंग का सुरमा स्वयं सिन्धूरेण द्विपरत्नमुदा मुदित इव—गीत० ११, वे० २२।४५।

सिन्धुः [स्यन्द् + उ सम्प्रसारणं वस्य ध] 1. समुद्र, सागर 2 सिन्धुनदी के चारों ओर का देश 4. मालवा में बहने वाली एक नदी का नाम - मेघ० २९ (यहां पर मल्लि० का टिप्पण—सिन्धु नाम नदी तु कुत्रापि नास्ति—निरर्थक है) — मा० ४।९. (इस स्थान पर भाण्डारकर का नोट देखो) 5 हाथी के मुंह से निकला हुआ पानी 6 हाथी के गण्डस्थलों से बहने वाला दान या मद 7 हाथी (पुं०ब०व०) बड़ा दरिया या नदी —शिवास्पर्शी पायसते च सिन्धू —रघु० १३।९, मेघ० ४९। सम० ज (वि०) 1 नदी से उत्पन्न 2. समुद्र से उत्पन्न 3. सिन्ध देश में उत्पन्न, (—जः) चन्द्रमा (—जम्) सेंधा नमक,—नाथः सागर।

सिन्धुकः, सिन्धुवारः [सिन्धु + क,=सिन्धुवार, वस्य धः] एक वृक्ष का नाम।

सिन्धुरः [सिन्धु + र] हाथी।

सिन्ध् (क्या० पर० सिन्ध्नाति) पीला करना, बिगोना।

सिप्रः [सप् + रक्, पृषो०] 1. पसीना, स्वेद 2 चांद।

सिप्रा [सिप्र + टाप्] 1 स्त्री की करधनी या तगड़ी 2. मैल 3 उज्जयिनी के निकट एक नदी का नाम, दे० सिप्रा।

सिम (वि०) [सि + मन्] प्रत्येक, सब, सपूर्ण, समस्त।

सिम्बा,-बी दे० शिम्बा,-बी।

सिरः [सि + रक्] पीपलामूल की जड़।

सिरा [सिर + टाप्] 1. शरीर की नलिकाकार वाहिका (जैसे कि शिरा, धमनी, नाड़ी आदि) 2 डोलची, पानी उलीचने का बर्तन।

सिव् (दिवा० पर० सीव्यति, स्यूत) 1. सीना, रफू करना, तुरपना, टांका लगाना,—मनोभव. सीव्यति दुर्वचपटौ—नै० १।८०, मा० ५।१० 2. मिलाना, एकत्र करना स हि स्नेहात्मकस्तन्तुरत्नमेमांसि सीव्यति —उत्तर० ५।१७, अनु नत्थी करना, मिला कर जोड़ना।

सिवरः [सि + क्वरप्] हाथी।

सिषाधयिषा [साधयितुमिच्छा—साध् + सन् + अ + टाप्, वातोर्डित्वम्] सफल करने या सिद्धान्तबद्ध करने की इच्छा 2. स्थापित करने की इच्छा, सिद्ध करने की इच्छा, प्रदर्शित करने की इच्छा।

सिषृक्षा [सृज् + सन् + अ + टाप्, वातोर्डित्वम्] रचना करने की इच्छा।

सिषृक्षुः [सो + कि = सि- छेदः त सृज्यते—सि + सृज् + क्षु] बेहूदा (खेत की बाड़ में लगने वाला कांटेदार झुरिदार पौधा।

सिसृक्षुः, सिसृक्षुक [सिस्रह् + क्षु पृषो०, सिसृह् + कु] मुण्डक, संन्यासी।

सिसृक्षुकी, सिसृक्षी [सिसृक्षुक (सिसृह्) + ङीष्] कौवाठोंठ का वृक्ष।

सीक् १ (म्वा० आ० सीकते) 1 छिड़कना, छोटी छोटी बूंदें करके बखेरना 2 जाना, हिलना-जुलना।

सीक् २ (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० सीकति, सीकयति—ते) 1 उत्सुक होना 2 सहिष्णु होना 3 स्पर्धा करना।

सीकर [सीक्यते सिच्यतेऽनेन।-सीक्+अरन्] 1 फुहार वर्षा, जलकण पड़ना, फुही पड़ना 2 छोटे पानी की छोटी छोटी बूंदें, दे० सीकर।

सीता [सि+त पृषो० दीर्घ] 1 हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूड, हल की फाल से खुदी हुई रेखा 2 जुती हुई या खुदवाली भूमि, हल से जोती हुई भूमि—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१ 3 कृषि, खेती जैसा कि 'सीताहृत्य' में 4 मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल द्वारा बने खूड से प्राप्त किया। बात यह थी कि सन्तान प्राप्ति की इच्छा से राजा ने एक यज्ञ का आरंभ किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाते समय खूड में से मिली। इसीलिए 'अयोनिजा' या 'भूमिपुत्री' इसके विशेषण हैं। राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ वह वन में गई। जब रावण उसे वन में से उठा कर ले गया और उसका सतीत्व भंग करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके इस दुष्ट प्रस्ताव को घृणा के साथ ठुकरा दिया। जब राम को इस बात का पता लगा कि सीता लंका में है, तो उसने लंका पर चढ़ाई की, रावण और उसकी सेना का मार कर सीता का उद्धार किया। राम के द्वारा पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जाने से पूर्व सीता को भीषण अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। यद्यपि राम का उसके सतीत्व पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकापवाद के कारण उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया। सीता इस समय गर्भवती थी। वाल्मीकि ऋषि के रूप में अपने संरक्षक को पा सीता उन्हीं के आश्रम में रहने लगी। वहीं कुश और लव नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया वाल्मीकि मुनि ने बच्चों का पालन पोषण किया। अन्त में वाल्मीकि के द्वारा सीता राम को सौंप दी गई]। 5 एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6 उमा का नाम 7 लक्ष्मी का नाम 8 गंगा की चार धाराओं में से एक (पूर्वी धारा) 9 मदिरा। सम०—अग्रजन्मन् खेती के उपकरण, कृषि के औजार मनु० ९।२९०। —पति रामचन्द्र का नाम,—फल कुम्हड़े की बेल, (—फली) कुम्हड़ा।

सीतालक (पु०) मटर।

सीत्कृत, सीत्कृति (स्त्री०) [सीत+कृ+क्त, क्तिन्] सांस ऊपर खींचने का शब्द, सिसकारी, (आह भरने या सरदी से ठिठुरने के समय सी-सी करना या मर्मर ध्वनि)—तथा दष्टाधर तस्या सत्कृतीत्कार-मिवानलम्—विक्रम० ४।२१।

सीत्य (वि०) [सीता+यत्] जोते गये या हल की फाल से बने खूडों से मापा गया, क्षेत्र, खाद्य, धान्य, अन्न।

सीद्यम् (नपुं०) आलस्य, शिथिलता, सुस्ती।

सीधु (पु०) [सिध्+उ, पृषो०] राब या गुड़ से बनाई हुई शराब, ईख की मदिरा स्फुरदधरसीधवे तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् गीत० १०, शि० ९।८७, रघु० १६।५२। सम०—वन्य, बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़, पुष्प 1 कदम्ब का वृक्ष 2 मौल-सिरी का पेड़, रस आम का पेड़, वृक्ष मौलसिरी का पेड़।

सीध्रक (नपुं०) गुदा, मलद्वार।

सीप (पु०) नाव की शक्ल का एक-पात्र।

सीमन् (स्त्री०) [सि+मनिन्, नि० दीर्घ] 1 सीमा, हद, द० सीमा सीमानमन्यायतयोरयोजयन् शि० २।५७, द० 'नि सीमन्' भी 2 अवकाश सीम्नि पूरकलका हत सिद्धा०।

सीमन्त [सीम्नोऽन्ते अक० परकर्म] 1 सीमारेखा, सीमान्त 2 सिर के बालों को विभाजक रेखा सिर की मांग जिसके दोनों ओर बाल विभक्त हों-सामन्ते च स्वदुपगमज यत्र नीप वधूनाम् मेघ० ६५, शि० ८।६९, पंचतंत्र० ५।४४। सम० उन्नयनम् 'मांग का विभाजन' द्वारा संस्कारों में से एक जिसको स्त्रियाँ गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने में मनाती हैं।

सीमन्तक [सीमन्त+कन्] विशेष प्रकार के नरक का अधिवासी, कम् सिन्दूर।

सीमन्तयति (ना० धा०, पर०) 1 बालों को अलग-अलग करना 2 मांग निकालना मनो सीमन्तयन्त्या—कीर्ति० ५।४४।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्त+णिच्+क्त] 1 (बाल आदि) विभाजित 2 मांग निकाल कर अलग किये हुए सभारसीमन्तितकेसकोका (प्रदेशा) शि० ३।८०, स्थाङ्गसीमन्तितसान्द्रकदंबम् (पथ) कि० ४।१८।

सीमन्तिनी [सीमन्त+इनि+ङीप्] स्त्री, महिला या सम सीमन्तिनीकाङ्क्षिजनयेत्पुत्रमीदृशम् शि० २।७, सम० ११०, भट्टि० ५।२२।

सीमा [सीमन्+टाप्] 1 हद, मर्यादा किनारा, छोर, सरहद्द 2 खेत, गांव आदि की सीमा पर संभा चायक टीला या मेंड़ सीमा प्रति समूलान्ने विवार

—मनु० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२ 3 चिह्न, सीमान्त 4. किनारा, तीर, समुद्रतट 5. क्षितिज 6 सीवनी, मांग (जैसे खोपड़ी की) 7. शिष्टाचार या नीति की सीमा, औचित्य की मर्यादा 8 उच्चतम या अधिकतम सीमा, उच्चतम बिन्दु, चरमसीमा सीमव पद्मासन कौशलस्य भट्टि० १।६ 9. छंद 10 शोभा का पृष्ठ भाग 11 अभिधान। सम० अधिप: पड़ोसी राजा, —अन्त: 1 सीमारेखा, छोर, सरहद 2 अधिकतम सीमा, °पूजनम् 1 ग्राम की सीमा का पूजन 2 बरात के आने पर गाँव की सीमा पर दूल्हे का सत्कार, —उल्लङ्घनम् अतिक्रमण करना, सीमा पार करना, सरहद लाघना, विवाद: सीमान्त या सीमारेखाओं के विषय में कानूनी निर्णय,—चिह्नम् सीमा चिह्न, भू चिह्न, —ज्ञ: सीमा संबंधी झगड़ा, विनिर्णय: सीमारेखाओं के झगड़ों का फैसला, विवाद: सीमासंबंधी झगड़ा या मुकदमेबाजी, °वर्म सीमाविषयक झगड़ों से संबंध रखने वाला कानून, —वृक्ष: वह पेड़ जो सीमारेखा का काम दे रहा है, - सन्धि: दो सीमाओं का मिलन।

सीमिक [स्यम् + किनन्, सन्प्रसारणम्, दीर्घश्च] 1. एक वृक्षविशेष 2. बाली 3 चिऊँटी या ऐसा ही छोटा कोई जन्तु।

सीर [सि + रक्, पृषो०] 1 हल सम्भ. सीरोत्कर्षण-सुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम् मेघ० 2 सूर्य 3 बाड़ या मदार का पौधा। सम० ध्वज: बलराम के विशेषण, शोभ हल में पशु को जोतना, या हल में जुती पशु की जोड़ी।

सीरक [सीर+कन्] दे० 'सीर'।

सीरिन् (पु०) [सीर + इनि] बलराम का विशेषण शि० २।२।

सीलन्ध: ध (पु०) एक प्रकार की मछली।

सीवनम् [सिव्+ल्युट्, नि० दीर्घ] 1 सीना, तुरपना, टांका लगाना 2 जोड़, सन्धिरेखा (जैसे खोपड़ी की)।

सीवनी [सीवन+ङीष्] 1 सुई 2 सिलमणि का सन्धिलोप।

सीसम्, सीसकम्, सीसपत्रकम् [सि+क्विप्, पृषो० दीर्घ =सी, सो+क=स, सी+स कर्म० स०; सीस +कन्, सीस+पत्रक] सीसा, - मालवि० ५।१४४, याज्ञ० १।२९०।

सीहुण्ड: [=सिहुण्ड, पृषो०] सेहुड (बाड़ लगाने का एक कांटेदार पौधा)।

सु। (स्वा० उभ० सुवति-ते) जाना, हिलना-डुलना।

॥ (स्वा० अद० पर० सवति, सौति) अभिषव या सवौ-परि सत्ता धारण करना।

॥। (स्वा० उभ० सुनोति, सुनुते, सुत, इकारान्त या उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् धातु के स् को मूर्धन्य ष हो जाता है) 1 भींचना, दबा कर रस निकालना 2 अर्क खींचना 3 उड़ेलना, छिड़कना, तर्पण करना 4 यज्ञानुष्ठान करना, सोमयज्ञ करना 5 स्नान करना, इच्छा० (सुषूसति-ते)। अभि—, 1 सोमरस निकालना 2. मिलाना, मिश्रण करना, गड्डमड्ड करना यानि चैवाभिषुण्वन्ते पुष्पमूलफलैः शुभैः—मनु० ५।१० 3. छिड़कना भट्टि० ९।९०, उद्—उत्तेजित करना, विक्षुब्ध करना, प्र—, पैदा करना, जन्म देना।

सु (अव्य०) [सु+डु] एक निपात जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी जुड़ता है। निम्नांकित इसके अर्थ हैं 1 अच्छा, भला, श्रेष्ठ यथा 'सुगन्धि' में 2 सुन्दर, मनोहर—यथा 'सुमध्यमा, सुकेशी' आदि में 3 खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से सुबोधमग्न सुविच्छाय सुत सुशासिता स्त्री नृपति सुशेखित। सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम् - हि० १।२२ 4. आसानी से, तुरन्त यथा 'सुकर और सुलभ' में 5 अधिक, अत्यधिक, बहुत अधिक—यथा 'सुदारुण और सुदीर्घ' आदि। सम० अक्ष (वि०) 1 अच्छी आंखों वाला 2 उग्र और तेज आंखों वाला,—अङ्ग (वि०) सुडौल, मनोहर, प्रिय,- अच्छ (वि०) दे० शब्द के नीचे, अन्त (वि०) जिसका अंत भला हो, अच्छी समाप्ति वाला, अन्न, अन्नक (वि०) दे० शब्द के नीचे, अस्ति,—अस्तिक दे० शब्द के नीचे, - आकार, - आकृति (वि०) सुनिर्मित, मनोहर, सुन्दर, आगत दे० शब्द के नीचे,—आचार (वि०) बड़ा आचारवान् व प्रसिद्ध कि० १५।२२,—इष्ट (वि०) भली भांति किया गया यज्ञ, °धृक् (पु०) अग्नि का एक रूप, उक्त (वि०) अच्छा बोला हुआ, खूब कहा हुआ—अथवा सूक्त खलु वेनापि—वेणी० ३, (—क्तम्) अच्छी या समझदारी की उक्ति —नेतुं वाञ्छति यः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुवाग्यन्त्रिभिः भर्तृ० २।६, रघु० १५।९५ 2 वैदिक भजन या सूक्त यथा 'पुरुषसूक्त' आदि, °ऋषि (पं०) मन्त्रद्रष्टा, वैदिक ऋषि, °वाच् (स्त्री०) 1. भजन 2 स्तुति का शब्द, उक्ति: (स्त्री०) 1 अच्छा या सौहार्दपूर्ण भाषण 2 अच्छा या चातुर्यपूर्ण वचन 3 शुद्ध वाणी, उत्तर (वि०) 1. अतिशयेक 2. उत्तर दिशा की ओर, उत्थान (वि०) खूब प्रयत्न करने वाला, उत्साही, चुस्त, (—नम्) प्रबल प्रयत्न या उद्योग,—उत्थायिन्,—उत्थायी (वि०) बिल्कुल पास, दीवाना,—उपसदन (वि०) जिसके पास पहुँचना

आसान हो, उपस्कर (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, अच्छु: सुजली,—कच: 1 प्याज 2 आलू, कचालू, शकरकंद आदि कंद 3 एक प्रकार का घास, —कचक: प्याज,—कर (वि०) (स्त्री० रा—री) 1 जो आसानी से किया जा सके, क्रियात्मक, कार्य, —कर्तृ सुकर. कर्तुं (अव्यय)सितुम् दुष्करम्—वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 2 जिसका प्रबंध आसानी से किया जा सके, (रा) सुशील गौ, (—रम्) दान, परोपकार,—कर्मन् (वि०) 1 जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा, भला 2 सक्रिय, परिश्रमी, (पु०) विश्वकर्मा का नाम, कल (वि०) (वि०) (धन को) उदारता पूर्वक देने तथा सदुपयोग करने में जिसने कीर्ति अर्जित कर ली हो, कांक्षिन् (वि०) 1 सुन्दर वृतों से युक्त 2 सुंदरता के साथ जुड़ा हुआ, (पु०) भौंरा, कुन्दक प्याज,—कुमार (वि०) 1 मृदु, सुकुमार, कोमल 2 सौंदर्ययुक्त तरुण, (—र) 1 सुन्दर युवक 2 एक प्रकार का गन्ना,—कुमारक: 1 सुन्दर तरुण 2 'खाली' चावल, (कम्) तमालपत्र,—कृत् (वि०) 1 भला करने वाला, उपकारी 2. पवित्रात्मा, गुणसंपन्न, धर्मात्मा 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4 भाग्यशाली, किस्मत वाला 5 अच्छे यज्ञ करने वाला, (पु०) 1 कुशल कर्मकर 2. त्वष्टा का नाम,—कृत (वि०) भली-भांति किया हुआ 2 सर्वथा किया हुआ 3 खूब किया हुआ या सुरक्षित 4 जिसके साथ कृपापूर्वक व्यवहार किया गया हो, सहायता दिया गया, मित्रता के सूत्र में आबद्ध 5 सद्गुणी, धर्मात्मा, पवित्रात्मा 6 भाग्यशाली, किस्मत वाला, (तम्) कोई भी भला या अच्छा कार्य, कृपा, अनुग्रह, सेवा—नादत्ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृतं विभु भग० ५।१५, मेघ० १७ 2 सद्गुण, नैतिक या धार्मिक गुण—स्वर्गाभिसन्धि-सुकृत बन्धनामिव मेनिरे कु० ६।४७, तस्मिन्नयमान सुकृत लवेति—रघु० १४।१६ 3 सौभाग्य, मालदारिता 4 प्रतिफल, पुरस्कार,—कृतिः (स्त्री०) 1 कृपा, सद्गुण 2 तपस्या करना,—कृतिन् (वि०) 1 भलाई करने वाला, कृपापूर्वक व्यवहार करने वाला 2. सद्गुणसम्पन्न, पवित्रात्मा, भला, धर्मात्मा—सन्त. सन्तु निरापद सुकृतिना कीर्तिभिश्चर वर्धताम् हि० ४। १३२, भग० ७।१६ 3 बुद्धिमान्, विद्वान् 4 परोपकारी 5. भाग्यशाली, किस्मत वाला,—केश (श) र: मंगल का ग्रह, क्षु: 1. अग्नि का नाम 2 शिव का नाम 3 इन्द्र का नाम 4. मित्र और वरुण का नाम 5 सूर्य का नाम,—क्ष (वि०) 1 सर्पीली चाल चलने वाला 2 शोभन, लक्षित 3 सुगम्य—पथ० २।१४१ 4. बोधगम्य, आसानी से समझे जाने योग्य (त्रिप० दुर्ग) (—क्षत्) 1 विष्ठा, मल 2 प्रसन्नता,—क्षत (वि०) 1 भली-भांति किया हुआ 2. भली-भांति प्रदान किया हुआ, (त:) बुद्ध का विशेषण, गन्ध: 1 खुशबू, अच्छी गंध, गन्धाढ्य 2 गन्ध 3 व्यापारी, (—न्) 1 चन्दन 2 जीरा 3. नील कमल 4 एक प्रकार का सुगन्धित घास (—ा) पवित्र तुलसी, गन्धक: 1 गन्धक 2 लाल तुलसी 3 सन्तरा 4 एक प्रकार की लौकी, गन्धि (वि०) 1 मधुर गन्ध वाला, खुशबूदार, सुरभित 2 सद्गुणों से युक्त, पवित्रात्मा, (—धि:) 1. गंधद्रव्य, सुरभि 2 परमात्मा 3 एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (—धपु०—धि) 1. पिण्डखजूर 2 एक प्रकार का सुगन्धित घास 3 धनिया, °फल 1 आम्रफल 2 नींबू, गन्धिक: 1. धूप 2 गन्धक 3 एक प्रकार का (बासमती) चावल, (—कम्) सफेद कमल, --गम्य (वि०) 1 जहाँ आसानी से पहुँचा जाय, सुलभ 2 आसान 3 सरल, बोधगम्य, गहना व्रजस्थान को अस्पृश्यादि के संपर्क से बचाने के लिए बनाया गया घेरा, °घृष्टि: दे० ऊपर का शब्द, गृह (वि०) (स्त्री०-ही) सुन्दर घर वाला, भली भांति रहने वाला--सुगृही निर्गृही कृता पंच० १।३९०, गृहीत (वि०) 1 भली भांति पकड़ा हुआ, अच्छी तरह समझा हुआ 2 सभ्यतित रूप से या शुभ रीति से प्रयुक्त, °ग्राह्य (वि०) 1 वह जिसका नाम मांगलिक रूप से लिया जाय, या जिसका नाम लेना (बलि, युधिष्ठिर आदि) शुभ समझा जाय, प्रातः स्मरणीय, सम्मानपूर्वक नाम लेने की रीति को द्योतन करने वाला शब्द सुगृहीत-नाम्नः भट्टगोपालस्य दौत्य मा० १, --ग्राह: स्वादिष्ट कौर या निवाला ग्रीव (वि०) अच्छी गर्दन वाला, (—व:) 1 नायक 2 हंस 3. एक प्रकार का घास 4 सुग्रीव जो बालि का भाई था (कबन्ध की बात मान कर राम सुग्रीव के पास गये। सुग्रीव ने बतलाया कि किस प्रकार उसके भाई बालि ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। साथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम से सहायता मांगी। स्वयं सुग्रीव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी आपकी पत्नी सीता का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूँगा। फलतः राम ने बालि को मार गिराया, सुग्रीव को राजगद्दी पर बिठाया। तब सुग्रीव ने अपनी वानर सेना साथ लेकर राम का साथ दिया जिससे कि राम ने रावण को मार कर सीता का उद्धार किया), °ईश: राम का नाम,—ग्व (वि०) बहुत थका हुआ, श्रान्त, चक्षुस् (वि०) अच्छी आंखों वाला, भली भांति देखने वाला, (पु०) 1 विवेकशील, या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्वान् पुरुष 2 बृहस्पति

का पेड़, चरित, चरित्र (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचारयुक्त (—तम्,—त्रम्) 1 सदाचार, अच्छा चालचलन 2 गुण तव सुचरितमङ्गुलीय मूल प्रतनु -श० ६।११, (—ता,—त्रा) सदाचारिणी, पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री,—चिल्लकः 1. राम-चिरैया, एक पक्षी 2 चीतल सांप, चिल्ला एक प्रकार की लौकी, चिन्ता गहनचिन्तन, गम्भीर,—चिरम् (अव्य०) दीर्घ काल तक, बहुत देर तक, चिरायुस् (पु०) सुर देवता, अतः 1 भला पुरुष, सद्गुणी, परोपकारी 2 सज्जन,—चेतस् 1. भलाई, नेकी, परोपकार, सद्गुण—ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता—भर्तृ० २।८२ 2 भले पुरुषों का समूह, जन्मन् (वि०) सत्कुलोत्पन्न, कुलीन,—या कौमुदी नयनयोर्मुदमातनोति सुजन्मा —मा० १।३४, —जल्प: अच्छी बातों, —जात (वि०) 1 उच्चकुलोत्पन्न 2. सुन्दर, प्रिय -मा० १।१६, रघु० ३।८, —तनु (वि०) 1 सुन्दर शरीर वाला 2 अत्यन्त सुकुमार, दुबला-पतला 3 कृशकाय, दुर्बल-शरीर, (स्त्री० नु —नू) कोमलाङ्गी, सुन्दरशरीर —एता मृगनु मुख ते लक्ष्य पश्यन्ती हेमकूटतला —विक्रम० १।११, —तपस् (वि०) 1 जो घोर तपस्या करता हो 2 अतिशय तापयुक्त (पु०) 1 सन्यासी, भक्त, साधु, वैरागी 2 सूर्य, (नपु०) कठोर साधना —तराम् (अव्य०) 1 अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ ढंग से 2 अत्यत, अधिक, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—तया दुहित्रा सुतरां सविस्मयं स्फुरत्प्रभामण्डलया चकाशे कु० १।२४, सुतरां दयालु रघु० २।५३, ४।९, १८।२४ 3 और अधिक, और भी ज्यादह - मन्यप्यवस्था न ते चेरुर्यया सुतरामेव राजन् गतोऽस्मि —भर्तृ० ३।३०, तर्षण कोयल,—तलम् 1 'अत्यन्त गहराई' भूमि के नीचे सात लोकों में से एक, दे० 'पाताल' 2 किसी बड़े मकान की बुनियाद, तिलक भूमे का पेड़, तीक्ष्ण (वि०) 1 बहुत तेज 2 अत्यत तीक्ष्ण 3 बहुत पीड़ाकारक, (क्ष्णः) 1 सहिजन का पेड़ 2 एक ऋषि का नाम नाम्ना सुतीक्ष्णश्चरितेन शान्त रघु० १३।४१, °दर्शन शिव का विशेषण, - तीर्थः 1 अच्छा गुरु, 2. शिव का नाम, —तुङ्ग (वि०) बहुत ऊँचा या लंबा, (—ङ्गः) नारियल का पेड़, दक्षिण (वि०) 1 अत्यन्त निष्कपट व ईमानदार 2 बहुत उदार, यज्ञ में खूब दक्षिणा देने वाला—यज्ञ० १।३०, (—णा) दिलीप राजा की पत्नी का नाम, तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा। पत्नी सुदक्षिणेत्यासीत् रघु० १।३१, ३।१, दन्तः हाथ, दन्त (वि०) (स्त्री० ती) अच्छे दांतों वाला, -दत्तः 1 अच्छा दांत 2. अभिनेता, नर्तक, नट, (ती) पश्चिमोत्तर दिशा की दिक्करिणी, दर्शन (वि०) (स्त्री०—ना,-नी) 1 प्रियदर्शन, सुंदर, मनोहर 2 जो आसानी से दिखाई दे (नः) 1 विष्णु का चक्र, जैसा कि 'कृष्णोप्यसुदर्शनः' का० 2. शिव का अस्त्र 3. सिद्ध, (—नम्) जंबू द्वीप का नाम, दर्शना 1 सुन्दर स्त्री 2 स्त्री 3 आदेश, आज्ञा 4 एक प्रकार की बूटी, दा (वि०) यथेष्ट, दानम् (वि०) जो उदारता पूर्वक देता है (पु०) 1 बादल 2 पहाड़ 3 समुद्र 4 इन्द्र के हाथी का नाम 5. एक दरिद्र ब्राह्मण का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मिलने के लिए भूने चावलों की भेंट लेकर, द्वारकापुरी गया था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने फिर धनधान्य और कीर्ति से सम्पन्न किया,— दानः 1. मांगलिक उपहार 2 विशिष्ट अवसरों पर दिया जाने वाला विशेष उपहार —दिनम् 1 आनन्दप्रद शुभ दिवस 2 अच्छा दिन, अच्छा मौसम (विप० दुर्दिन), इसी प्रकार 'सुदिनाहम्' इसी अर्थ में, दीर्घ (वि०) बहुत लंबा या विस्तृत (र्घा) एक प्रकार की लकड़ी—दुर्लभ (वि०) अत्यंत दुष्प्राप्य या विरल, दूर (वि०) बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (दूरम् 1 बहुत दूर 2 बहुत ऊँचाई तक, अत्यधिक, दूरात् दूर से, फासले से), - दृश् (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (स्त्री०) सुन्दर स्त्री,—धन्वन् (वि०) बढ़िया धनुष को धारण करने वाला, (—पु०) 1 अच्छा तीरंदाज या धनुर्धारी 2 विश्वकर्मा का नाम धर्मन् (नि०) कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिषद्, देवसभा, धर्मा, —र्मां देवसभा ययातिपूर्वोत्तिलोक सुधर्माभिधया सभाम्—रघु० १७।२८,— धी (वि०) अच्छी समझ वाला, बुद्धिमान्, धनुर, प्रतिभाशाली, (—धीः) बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुरुष, विद्वान् पुरुष या पंडित, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, प्रज्ञा, —नयनः 1 एक विशेष प्रकार का बादल 2. कृष्ण के सेवक का नाम, (नयन) बलराम का मुद्गर, - नयना 1 स्त्री 2 उमा या उसकी कोई सखी 3 एक प्रकार का रंजक, नारी स्त्री, नयः 1 अच्छा चालचलन 2. अच्छी नीति, नयन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (नः) हरिण, (— ना) 1. सुन्दर आंखों वाली स्त्री 2. सामान्य स्त्री, नाभ (वि०) सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाद या केन्द्र वाला, (—भः) 1 पहाड़ 2 मैनाक पहाड़, निभृत (वि०) बिल्कुल अकेला, निजी, (अव्य० तम्) चुपचाप, छिपे-छिपे, सट कर, निजी रूप से, निरीक्षकः शिव का विशेषण, - नीत (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचार युक्त 2 नम्र, विनयी (तम्) 1. अच्छा चालचलन, शिष्ट आचरण 2 अच्छी नीति, सुदर्शिता नीतिः (स्त्री०) 1. अच्छा आचरण, शिष्टाचार,

औचित्य 2 अच्छी नीति 3 ध्रुव की माता का नाम, —शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, सद्गुणी, भला, (—क) 1 ब्राह्मण 2. शिशुपाल का नाम, —श्यामल (वि०) बिलकुल काला, या नीला, (—क:) अनार का पेड़ (—का) सामान्य मन का पौधा, श्रेत्र (वि०) सुन्दर आखों वाला, —पक्व (वि०) 1 अच्छा पका हुआ 2 सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (—क्व) एक प्रकार का सुगन्धित आम, पत्नी वह स्त्री जिसका पति भद्रपुरुष हो, पथ 1 अच्छी सड़क 2 सुमार्ग 3 अच्छा चालचलन पथिन् (पु०) (कर्तृ० ए० व० -सुपन्था) अच्छी सड़क, पर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी, —र्णी) 1 अच्छे पत्तों वाला 2 सुन्दर पत्तों वाला, (—र्ण.) 1 सूर्य की किरण 2 अतीन्द्रिय चरित्र के पक्षियों जैसे प्राणी, देवगन्धर्व 3 अलौकिक पक्षी 4 गरुड़ का विशेषण 5 मृग। —पर्णा, पर्णी (स्त्री०) 1 कमलों का समूह 2 कमलों से भरा ताल 3 गरुड़ की माता का नाम

पर्याप्त (वि०) 1 बहुत विस्तार युक्त 2 सुयोग्य —पर्वन् (वि०) अच्छे जोड़ों या संधियों वाला, जिसमें बहुत से जोड़ या ग्रन्थियां हों, (पु०) 1 बांस 2 बाण 3 सुर देवता 4 विशेष चान्द्र दिवस (प्रत्येक मास की पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी और चतुर्दशी) 5 यज्ञ —पात्रम् 1 अच्छा या उपयुक्त बर्तन, योग्य भाजन 2 योग्य या सक्षम व्यक्ति, किसी पद के समुपयुक्त व्यक्ति, समर्थ व्यक्ति, पाद (स्त्री० पाद्, —पदी) अच्छे या सुन्दर पैरों वाली, पाप्मन् पाकड़ का पेड़, प्लक्ष, पीलम् गाजर, (—ल.) पांचवां मुहूर्त, (—पुत्री) वह स्त्री जिसका पति भला व्यक्ति हो, पुष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पा, ष्पी) अच्छे फूल वाला, (ष्प) मूंगे का पेड़ (ष्पम्) 1 लौंग 2 स्त्रीरज, —प्रकर्ष स्वस्थ विचार, —प्रतिमा मदिरा, प्रतिष्ठ (वि०) 1 भली-भांति खड़ा हुआ 2 बहुत प्रसिद्ध, विश्रुत, कीर्तिशाली, विख्यात, (ष्ठा) 1 अच्छी स्थिति 2 अच्छा मान, प्रसिद्धि, ख्याति 3 स्थापना, निर्माण 4 मूर्ति आदि की स्थापना, अभिषेक, प्रतिष्ठित (वि०) 1 भली-भांति स्थापित, 2 अभिषिक्त 3 विख्यात, (—त) सुनार का पेड़, प्रतिसन्धात (वि०) 1 सर्वथा परिचीहृत 2 किसी विषय का अच्छा जानकार, प्रतीक (वि०) 1 सुन्दर आकृति वाला, प्रिय, मनोहर 2 सुन्दर स्कन्ध वाला, (क) 1 कामदेव का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3 पश्चिमोत्तर दिशा का दिग्गज, प्रभातम् अच्छा ताल, प्रभ (वि०) बड़ा प्रतिभाशाली, यशस्वी, (भा) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, प्रभातम् 1. शुभ प्रभात, मंगलमय प्रात काल दिष्ट्या सुप्रभातमद्य यदय देवो दृष्ट उत्तर० ६ 2 प्रात कालीन ऊषा, प्रयोग 1 अच्छा प्रबन्ध, भली-भांति काम में लाया जाना 2 दक्षता, —प्रसाद (वि०) अति करुणामय, कृपानिधि, (द.) शिव का नाम, प्रिय (वि०) अत्यन्त प्रिय, सत्कर, (या) 1 मनोहारिणी स्त्री 2 प्रेयसी।

फल (वि०) 1 अत्यन्त फल देने वाला, बहुत उत्पादक 2 बहुत उपजाऊ, (ल) 1 अनार का पेड़ 2 बेरी का पेड़ 3 एक प्रकार का लोबिया, (—ला) 1 कद्दू, लौकी 2 केले का पेड़ 3 भूरे रंग का अगुरु, बन्ध सिल, बल (वि०) अत्यन्त शक्तिशाली, (—ल) शिव का नाम बोध (वि०) जो आसानी से समझा जाय, (—ध) भला समाचार या उपदेश, ब्रह्मण्य 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 यज्ञ में वरण किये गये सोलह पुरोहितों में एक, —भग (वि०) 1 अत्यन्त भाग्यवान या समृद्धिशाली, प्रसन्न, सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुगृहीत 2 प्रिय, मनोहर सुन्दर, मनोज्ञ न तु ग्रामस्थेव सुभगमपगूढं युवतिषु—श० ३।१० कु० ४।३४, रघु० ११।८० मा० ९ 3 सुहावना, कृपालु, कृपाकर, मधुर—श्रवणसुभग मालवि० ३।४, श० १।३ 4 प्रियतम, इष्ट, स्नेही, प्रिय—सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् गीत० ५ 5 शोभन, (—ग) 1 सुहागा 2 अशोक वृक्ष 3 चमेली का वृक्ष 4 लाल कटसरैया 5 सदाबहार, (—क्त) अच्छा भाग्य "भाजिन्, सुभगम्मन्य (वि०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानने वाला सुशील हितकर बाबाल मा न स्वसु सुभगमन्यभाव करोनि वेम० १४, भगा 1 पति की प्रियतमा, प्रेयसी 2 सम्मानित मां 3 वनमल्लिका 4 हल्दी 5 तुलसी का पौधा, °सुत पतिप्रिया पत्नी का पुत्र

भङ्ग नारियल का पेड़, भद्र (वि०) अत्यानन्दित या सौभाग्यशाली, (—द्र.) विष्णु का नाम (द्रा) बलराम और कृष्ण की बहन का नाम जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। उससे अभिमन्यु नाम का पुत्र पैदा हुआ, —भाषित (वि०) 1 भली भांति कहा गया, सुन्दर रूप से कहा गया 2. सुन्दर भाषण करने वाला, वाग्मी, (तम्) 1 सुन्दर भाषण, वाग्मिता, अधिगम—जीवमनु सुभाषितम्—भर्तृ० ३।२ 2 नीतिवाक्य, सूक्ति, समुपयुक्त कथन सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया। मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः सुभा० 3 अच्छी उक्ति बालादपि सुभाषितं (ग्राह्यम्), —भिक्षा 1 अच्छी भिक्षा, सफल याचना 2. अन्न की बहुतायत, अनाज वान्यादिक की प्रचुर राशि, —मरुन्, —भू (वि०) सुन्दर भौंह वाला (स्त्री०—भ्रूः) मनोज्ञ स्त्री (इस

शब्द का संबोधन-ए० व० —सुभ्रु, बक्ता है, परन्तु भट्टि, कालिदास और भवभूति जैसे लेखकों ने 'सुभ्रु' का प्रयोग किया है सु० भट्टि० ६।११, कु० ५।४३, मा० ३।८), मति (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री० -ति) 1 अच्छा मन या स्वभाव, कृपा, परोपकार, सौहार्द 2 देवों का अनुग्रह 3 उपहार, आशीर्वाद 4 प्रार्थना, सूक्त 5 कामना, इच्छा 6. कुबेर की पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी, -मदन आम का वृक्ष, मध्य, मध्यम (वि०) पतली कमर वाला, मध्या, मध्यम, मनोरम स्त्री, मन (वि०) बहुत आकर्षक, प्रिय, सुन्दर (क) 1 गेहूँ 2. धनुष (मा) फूलों से लदी चमेली, मनस् (वि०) 1 अच्छे मन वाला, अच्छे स्वभाव का, उदार 2 खूब प्रसन्न, सन्तुष्ट, (पुं०) 1 देव, देवता 2 विद्वान् पुरुष 3 वेद का विद्यार्थी 4 गेहूँ 5 नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपुं० कुछ विद्वानों के अनुसार केवल ब० व० में प्रयोग) फूल रमणीय एष व सुमनसा मनिवेल —मा० १, (यहाँ संख्या १ में दिया गया विशेषणपरक अर्थ भी अभिप्रेत है),-कि सेव्यते सुमनसा मनसापि गन्ध कस्तूरिकाकलशचन्दनशालिभूता मृगेण रम०, शि० ६।६६, °फल: कैथ, °फलम् जायफल, त्रिया दशरथ की एक पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम,-मुख (वि०) (स्त्री० खा, खी) 1 सुन्दर चेहरे वाला, प्रिय 2 सुहावना 3 निर्वर्तित, आतुर कि० ६।४२, (ख:) 1 विद्वान् पुरुष 2 गरुड का विशेषण 3. कुबेर का विशेषण 4 शिव का विशेषण, (खम्) आनन्द की अनुभूति (खा स्त्री) 1. सुन्दर स्त्री 2. दर्पण, -मुखस्थ नाजर, मेधस् (वि०) अच्छी बुद्धि रखने वाला, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली (पुं०) बुद्धिमत्ता, सूझ, मेरु 1 'सुमेरु' नाम का पर्वत 2. शिव का नाम, रथस् सुन्दर रथ, अच्छी सवारी,-रोधस् दुर्योधन का विशेषण, -रसस: 1. मेरु 2. एक प्रकार का आम का पेड, रसू: 1. अच्छा रस 2. अच्छा °जातु: मेरु,-रसस: सुपारी का पेड, -वत् (वि०) 1 अति प्रसन्नी 2. सौजन्यशील 3. [illegible] 4 कवित्वमय, सुधार, (क) [illegible] अत्यानन्द 2 संतोष, सेवन, [illegible] बालबनिता—मा० २।४३, [illegible] 2. शिरोभूषण, सिर की माला, [illegible] 3 स्मरण कु० २।१९,—शील (वि०) [illegible] विलास, आनन्द, मजे,—सद (वि०) [illegible] बाला, रखैला, मनोहर 2 [illegible] 3 [illegible] (रचना), (क, का) शिवजटा सेवा (ता) दुर्गा का नाम,—सन (वि०) 1. [illegible] हुआ, सुंदर, मनोहर—सुकृपा कन्या 2 बुद्धिमान, विद्वान् (स:) शिव का विशेषण,—सेव (वि०) अच्छी आवाज वाला—कि० १५।१६, (सम्) टीन, जस्ता,—लक्षण (वि०) 1 शुभ व सुन्दर लक्षणों से युक्त 2 भाग्यशाली, (णम्) 1 निरीक्षण, सुपरीक्षण, निर्धारण, निश्चयन 2. अच्छा या शुभ चिह्न, लभ (वि०) 1 जो आसानी से मिल सके, सुप्राप्य, प्राप्य, सुकर-न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा विक्रम० २।९, इदमसुलभवस्तु प्रार्थना दुर्विचारम्—२।६ 2 तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त—निष्ठ्यूतरक्तरुचिपक्वफलसुलभो लाक्षारस. केनचित् - श० ४।५ 3. स्वाभाविक, समुपयुक्त—मानुषतासुलभो लघिमा -का०, °कोप (वि०) जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाय, जो आसानी से भड़काया जा सके, सोचन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (—न:) हरिण, (—ना) सुन्दर स्त्री, -सोहृदम् पीतल,—सोहित (वि०) गहरा लाल, (ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, -वक्त्रम् 1 सुन्दर चेहरा या मुख 2 शुद्ध उच्चारण, वचनम्, -वचस् (नपुं०) वाग्मिता, -वर्चिक:, - का सज्जी, क्षार,—वर्ण दे० शब्द के नीचे, सह (वि०) 1. सहनशील, सहिष्णु 2 धैर्यवान्, शेखने वाला 3. जो आसानी से ले आया जा सके, -सासिनी 1. विवाहित या एकाकिनी स्त्री जो अपने पिता के घर रहती है 2. विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित है, सिद्धान्त (वि०) बहादुर, साहसी, सूर (-शम्) वीर्य,—सिद्ध (पुं०) विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् व्यक्ति (स्त्री०) बुद्धिमती या चतुर स्त्री,—सिद्ध: अन्त: पुर का सेवक,—सिद्धा (पुं०) राजा,—सिद्धक: अन्त: पुर का सेवक ('सोसिद्धक' का अनुकृत रूप) (—कम्) अन्त: पुर, रनिवास,—सिद्धता विवाहित स्त्री,—सिध (वि०) अच्छी प्रकार का,- सिध्य (अव्य०) बड़ाकी से, -सिलेख (वि०) भली-भांति प्रशिक्षित, सिखाई, (ता) सुशील दास,—सिद्धि: (वि०) 1 भली भांति रचना हुआ, अच्छी तरह बना सिद्ध हुआ 2. कुशलतापूर्वक, सुसंपन्न, आसानी से सुख, भली-भांति व्यवस्थित—सुसिद्धसोपस्कर मार्गसेय न सिध्यति कौशलेऽपि—पं० १, व्यवहारकुशलैः सुसिद्धे कर्मणि सुशिक्षितम् पं० १, -सी (सी) व (वि०) अच्छी सीधी बात (—म्) 1. शिव का नाम 2. कल्याण (—सम्) अच्छा सौदा, -सीलम् अच्छी,—सीले (वि०) 1. अति प्रसन्नी 2. सौजन्यशील, सुशील, मनमौजी, (ला) 1. अविवाहित 2 कुमारियों की अधिष्ठात्री 3. शेर का नाम, (—ली) अच्छी सवारी, —सुख (वि०) 1. शिष्टाचार पूर्ण, सभ्यतापूर्ण, सेव, मजे, —सीले सत्य सुखसाधने नपु-

सन्देशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 2 अच्छा गोल सुन्दर वर्तुलाकार या गोल मृद्नाति सुवृत्तेन सुमृष्टेनातिहारिणा । मोदकेनापि किं तेन निष्पत्तिर्यस्य सेवया,—या मुमुक्षोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि च। महता पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टक (यहाँ सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए है) —शैल (वि०) 1 शान्त, निश्चल 2 विनम्र, निस्तब्ध (—लः) त्रिकूट पर्वत का नाम,—शील (वि०) धार्मिक व्रतों के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा सद्गुणी, (—ल) ब्रह्मचारी (—ला) 1 सुन्दर व्रत वाली साध्वी पत्नी 2 सुशील गाय, सीधी गाय जिसका दूध आसानी से निकाला जा सके,—श्लक्ष्ण (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, प्रशंसनीय, —श्लक्ष्ण (वि०) सुसाध्य, आसान, सरल —श्लक्ष्णः खदिर वृक्ष,—श्लक्ष्णम् अदरक,—श्लिष्ट (वि०) भली-भांति नियन्त्रण में, सुनियन्त्रित,—शिक्षित (वि०) सुशिक्षाप्राप्त, प्रशिक्षित, अच्छी तरह सधाया हुआ, —शिखः अग्नि (—खा) 1 मोर की शिखा 2 मुर्गे की कलगी,—शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार (—ला) 1 यम की पत्नी का नाम 2. कृष्ण की आठ प्रेमसियों में से एक, —श्रुत (वि०) 1. अच्छी तरह सुना हुआ 2 वेदज्ञ, (—तः) एक आयुर्वेद पद्धति का प्रणेता, जिसकी कृति, चरक की कृति के साथ-साथ आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है,—श्लिष्ट (वि०) 1 भली-भांति क्रमबद्ध, संयुक्त 2 भली-भांति उपयुक्त मा० १. श्लेषः आलिंगन या घनिष्ठ मिलाप, श्लक्ष्ण (वि०) देखने में रुचिकर,—सन्नत (वि०) सुनिर्देशित (जैसा कि बाण), सह (वि०) 1 जो आसानी से सहन किया जा सके 2 सहनशील, सहिष्णु (—हः) शिव का विशेषण, —सार (वि०) अच्छे रस वाला, रसीला (—रः) 1 अच्छा रस, सत या अर्क 2 मक्षमता 3 लाल फूल का खदिरवृक्ष, स्थ (वि०) 1. समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त 2 अच्छे स्वास्थ्य में, स्वस्थ, सुखी 3 अच्छी या समृद्ध परिस्थितियों में, समृद्धिशाली 4 प्रसन्न, भाग्यशाली, (—स्थम्) सुख की स्थिति, कल्याण सुस्थे को वा न पप्रिछे —हि० ३।२१ (इसी अर्थ में सुस्थित)—स्थिता, स्थितिः (स्त्री०) 1 अच्छी दशा, कुशल क्षेम, कल्याण, आनन्द 2 स्वास्थ्य, रोगोपशमन, स्मित (वि०) प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना, हँसमुख स्त्री, —स्वर (वि०) 1. सुरीला, सुमधुर स्वर वाला 2 उच्च स्वर, हित (वि०) 1 नितान्त योग्य, या उपयुक्त, समुचित 2 हितकर, श्रेयस्कर 3. सौहार्दपूर्ण, स्नेही 4 सन्तुष्ट (—ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक, हृद् (वि०) कृपापूर्ण हृदय वाला, हार्दिक, मैत्रीपूर्ण, प्रिय, स्नेही (पुं०) 1 मित्र सुहृद पश्य वसन्त किं स्थितम्—कु० ४।२७, मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या मेघ० ४० 2 मित्र, °भेद मित्रों का वियोग, °वाक्यम् सद्भावपूर्ण सम्मति, हृद मित्र, हृदय (वि०) 1 सुन्दर हृदय वाला 2 प्रिय, स्नेही, प्रेमी।

सुख (वि०) [सुख्+अच्] 1 प्रसन्न, आनन्दित हर्षपूर्ण, सुख 2 रुचिकर, मधुर, मनोहर, सुहावना दिश प्रमेदुरसो वधू मुखा रघु० ३।१४ इसी प्रकार— सुखश्रवा निम्बना —३।१९ 3 सद्गुणी, पुण्यात्मा 4 आनन्द लेने वाला, अनुकूल भा० ७।१८ 5 आसान, सुकर—कु० ५।४९ 6 योग्य, उपयुक्त, —म् 1 आनन्द, हर्ष, सुख, प्रसन्नता, आराम यदैवोपनतं दुःखात्सुखं तद्गमवर्तनम् विक्रम० ३।२१ 2 समृद्धि अर्हन्ति सुखदुःखयोरनुरूपं सर्वास्ववस्थासु यम् उत्तर० १।२९ 3 कुशल क्षेम, कल्याण, स्वास्थ्य—देवी सुखं प्रष्टुं गता मालवि० ४ 4 चैन, आराम, (दुःखादिकों का) प्रशमन (प्रायः समास में प्रयुक्त—यथा सुखशयन, सुखोपविष्ट सुखालय आदि) 5 सुविधा, आसानी, सहूलियत 6 स्वर्ग, वैकुण्ठ 7 जल, सुखम् (अव्य०) 1 प्रसन्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक 2 सकुशल, स्वस्थ—सुखमास्ता भवान् (भवान् आपको स्वस्थ तथा सकुशल रक्खे) 3 आसानी से, आराम से -असऊद्यातिकणस्कन्ध सुखं स्वपिति गौरिति —काव्य० १० 4 अनायास, आराम -अज्ञ सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ भर्तृ० २।३ 5 वस्तुतः, इच्छा पूर्वक 6 चुपचाप, शान्ति पूर्वक। सम०—आकरः स्वर्ग आप्लव (वि०) स्नान के लिए उपयुक्त, आयत —आयत सम सधाया हुआ या सीधा घोड़ा, आरोह (वि०) जिस पर चढ़ना आसान हो,—आलोक (वि०) सुदर्शन, प्रिय, मनोहर,—आवह (वि०) आनन्द की ओर ले जाने वाला, सुहावना सुखकर, आशः बेर का नाम,—आशाकः ककड़ी,—आस्वाद (वि०) 1 मधुर स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त 2 रुचिकर, आनन्ददायी (—दः) 1 सुखकर रस 2 (सुख का) उपभोग,—उत्सवः 1 आनन्द मनाना, खुशी, उत्सव, आनन्दोत्सव 2 पति —उदकम् गरम पानी उदयः आनन्द की अनुभूति या सुख का उदय, उदर्क (वि०) फल में सुखदायी उक्त (वि०) जिसका उच्चारण रुचि के साथ या सुख से हो सके, उपविष्ट (वि०) आराम से बैठा हुआ, सुख से बैठा हुआ, एधिन् (वि०) आनन्द चाहने वाला, सुख की अभिलाषा करने वाला, कर, —कार, दायक (वि०) आनन्द देने वाला, सुखकर, सुहावना,—द (वि०) सुख देने वाला, (—दा)

इन्द्र के स्वर्ग की वारांगना, (वम्) विष्णु का आसन, —बोध. 1. सूक्ष्म संवेदना 2 आसानी से प्राप्य ज्ञान, —भाविन्, भाव् (वि०) प्रसन्न,—मद्,मुति (वि०) कानों को मीठा, कर्णमधुर,—कि० १४।३, सङ्गिन् सुख का साथी, स्पर्श (वि०) छूने में सुखकर।

सुत (भू० क० कृ०) [सु+क्त] 1 उबला गया 2 निकाला गया, या निचोड़ा गया (जैसे कि सोमरस) 3 जन्म दिया गया, उत्पादित, पैदा किया गया, —म् 1 पुत्र 2 राजा। सम० आत्मज, पौत्र, (—जा) पोती —उत्पत्ति (स्त्री०) पुत्र का जन्म,—निर्विशेषम् (अव्य०) 'जो सीधे पुत्र से प्राप्त न हो' 'पुत्र की भांति' रघु० ५।६,—वत्सला सात पुत्रों की माता, स्नेहः पितृप्रेम, वात्सल्य।

सुतवत् (वि०) [सुत+मतुप्] पुत्रों वाला -पुः पुत्र का पिता।

सुता [सुत+टाप्] पुत्री, -नमर्थमिव भारत्या सुतया वाक्तुमर्हसि कु० ६।७९।

सुति [सु+क्तिन्] सोमरस का निकालना।

सुतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सुत+इनि] बच्चे वाला या बच्चों वाला, (पुः) पिता।

सुतिनी [सुतिन्+ङीप्] माता सेनाम्बा यदि सुतिनी स्याद्वद वन्ध्या कीदृशी भवति—सुभा०।

सुतुक् (वि०) अच्छी आवाज वाला।

सुत्या [सु+क्यप्+टाप्, तुक्] 1 सोमरस निकालना, या तैयार करना 2 यज्ञीय आहुति 3 प्रसव।

सुत्रामन् (पुः) [सुष्ठु त्रायते सु+त्रै+मनिन्, पृषो०] इन्द्र का नाम।

सुत्वन् (पुः) [सु+क्वनिप्, तुक्] 1 सोमरस को उपहार में देने वाला या पीने वाला 2 वह ब्रह्मचारी जिसने (यज्ञ के आरंभ में या पूर्णाहुति पर) आचमन और मार्जन का अनुष्ठान कर लिया है।

सुदि (अव्य०) [सुष्ठु दीव्यति सु+दिव्+कि] चान्द्र-मास के शुक्लपक्ष में तु० 'वदि'।

सुधन्वाचार्य (पुः) पतितसावित्रीक का सवर्णा स्त्री में उत्पन्न पुत्र—तु० मनु० १०।२३।

सुधा [सुष्ठु धीयते, पीयते वा (धा)+क+टाप्] 1 देवों का पेय, पीयूष, अमृत निपीय यस्य तिसृतिरक्षिक कथा तथादियन्ते न बुधा सुधामपि नै० १।६ 2 फूलों का रस या मधु 3 रस 4 जल 5 गंगा का नाम 6 सफेदी, पलस्तर, चूना —कैलासगिरिसंघ सुधासितेन प्राकारेण परिगता—का०, रघु० १६।१८ 7 ईंट 8 बिजली 9 सेंहुड़। सम० अंशुः 1 चांद 2 कपूर, °रत्नम् मोती, अङ्कः, आकरः चांद, -द्योषिन् (पुः) पलस्तर करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला, राज, इव अमृत के समान तरलद्रव्य,—वलक्षित (वि०) पलस्तर किया हुआ, सफेदी किया हुआ, सिन्धुः 1 चांद कपूर, अवलम् चूने लिपा-पुता मकान, सिन्धिः (स्त्री०) 1 पलस्तर की हुई दीवार 2 ईंटों की दीवार 3 पांचवां मुहूर्त या दोपहरबाद,—भृत् (पुः) सुर, देव - मूतिः 1 चांद 2 यज्ञ, आहुति - अवम् ईंट या पत्थरों का बना मकान 2 राजकीय महल, वर्षः अमृतवर्षा,—वर्षिन् (पुः) ब्रह्मा का विशेषण, वल्लः 1 चांद 2. कपूर, वल्ली एक प्रकार की ककड़ी,—सित (वि०) 1 चूने जैसा सफेद 2 अमृत जैसा उज्ज्वल 3 अमृत से भरा हुआ अपतीक्ष्णरसं युक्तो हरिकान्त सुधासित कि० १५।४५, (यहां पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय अर्थ भी घटता है), सूतिः 1 चांद 2 यज्ञ 3 कमल —स्यन्दिन् (वि०) अमृतमय, अमृत बहाने वाला —भर्तृ० २।६, स्रवा तालुचिह्ना, कोमल तालु का लटकता हुआ मांसल भाग, हरः गरुड़ का विशेषण, दे० 'गरुड़'।

सुधातिः (पुः, स्त्री०) [सु+धा+क्तिच्] कुल्हाड़ा।

सुधार [सुष्ठु नालमस्य—प्रा० ब०, लस्य र] 1 कुतिया की औलाद 2 सांप का अण्डा 3 चिड़िया, गौरैया।

सुधासी (श्री) रः [सुष्ठी नासी (श्री) रम् अस्यास्त्यस्य यस्य प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण।

सुन्द (पुः) एक राक्षस, उपसुन्द का भाई, यह दोनों भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हें ब्रह्मा से एक वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना वध न करें, मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। इस वरदान के कारण वे बड़ा अत्याचार करने लगे। अन्त में इन्द्र को तिलोत्तमा नाम की अप्सरा भेजनी पड़ी – जिसके लिए झगड़ा करते हुए दोनों ने एक दूसरे को मार डाला)।

सुन्दर (वि०) (स्त्री०—री) [सुन्द्+अरच्] 1 प्रिय, मनोज्ञ, मनोहर, आकर्षक 2 शुभार्थ, रः कामदेव का नाम,—री मनोरम स्त्री, एक भार्या सुन्दरी या दरी था—भर्तृ० २।११५, विद्याधरसुन्दरीणाम्—कु० १।७।

सुप्त (भू० क० कृ०) [स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, सोता हुआ, निद्रापस्त—न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा —हि० प्र० ३६ 2 लकवा मारा हुआ, स्तम्भित, सुन्न, बेहोश दे० स्वप्, —प्तम् निद्रा, गहरी निद्रा। सम० —जनः 1 सोता हुआ व्यक्ति 2 मध्यरात्रि, जागर्त् स्वप्न, —स्वप् (वि०) अर्धांग-ग्रस्त, लकवा मारा हुआ।

सुप्ति (स्त्री०) [स्वप्+क्तिन्] 1 निद्रा, सुस्ती, ऊंघ 2. बेहोशी, लकवा, स्तम्भ, जाड्य 3 विश्वास भरोसा।

सुधांशुः [सुष्ठु शोभनेऽंशवः यस्य—सु+मा+क] 1 चांद 2 कपूर 3 आकाश, -अम् फूल भामि० १।८४।

सुर [सुष्ठु राति ददात्यभीष्टम्—सु+रा+क] 1 देव, देवता सुराप्रतिग्रहाद् देवा सुरा इत्यभिविश्रुता राम०, सुधया तर्पयते सुरान् पितृवच—विक्रम० २।७ रघु० ५।१६ 2 ३३ की संख्या 3 सूर्य 4 ऋषि, विद्वान् पुरुष। सम०—अङ्गना दिव्यांगना, देवी, अप्सरा -रघु० ८।७९,—अधिपः इन्द्र का विशेषण अरिः 1 देवों का शत्रु, राक्षस 2 प्याज़ की चीची, अर्हम् 1 सोना 2 केसर, जाफ़रान,-आचार्य बृहस्पति का विशेषण,—आपगा 'स्वर्गीय नदी' गङ्गा का विशेषण, -आलयः 1 मेरु पर्वत 2 स्वर्ग, वैकुण्ठ, -इज्य बृहस्पति का नाम, इज्या पवित्र तुलसी, इन्द्रः, ईशः, ईश्वरः इन्द्र का नाम,—उत्तमः 1 सूर्य 2 इन्द्र, उत्तर चन्दन की लकड़ी, ऋषि (सुर्षि०) दिव्य ऋषि, देवर्षि,-कारुः विश्वकर्मा का विशेषण,—कार्मुकम् इन्द्रधनुष,—गुरुः बृहस्पति का विशेषण, द्रामणी (पुं०) इन्द्र का नाम,—द्रोहः ब्रह्मा का विशेषण, तरुः स्वर्ग का वृक्ष, कल्पवृक्ष तोयकः कौस्तुभ नाम की मणि, -दारु (नपुं०) देवदारु वृक्ष,—धौनिका गंगा का विशेषण, तुलसी पवित्र तुलसी, द्विपः 1 देवों का हाथी 2 ऐरावत, द्विष् (पुं०) राक्षस रघु० १०।१५, धनुस् (नपुं०) इन्द्रधनुष,—सुरधनुरिव दूराकृष्टं न नाम शरासनम् विक्रम० ४।१,—धुनी तारकीन, राल, निम्नगा गंगा का विशेषण,—पतिः इन्द्र का विशेषण, पथः आकाश, स्वर्ग,—पर्वतः मेरु पहाड़,—पादपः स्वर्ग का वृक्ष, जैसे कि कल्पतरु, प्रियः 1 इन्द्र का नाम 2. बृहस्पति का नाम, भूयम् देव के साथ अनन्यरूपता, देवत्वग्रहण, देवत्वारोपण, भूरुहः देवदारु वृक्ष, -भूतिः (स्त्री०) दिव्य तरुणी, अप्सरा,—मालिका मुरली, बांसुरी, लोकः स्वर्ग, वर्त्मन् (नपुं०) आकाश, वल्ली पवित्र तुलसी,—विद्विष्, वैरिन् —शत्रु (पुं०) असुर, दानव, दैत्य, सद्मन् (नपुं०) स्वर्ग, वैकुण्ठ,—सरित्, सिन्धु (स्त्री०) गंगा—सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमंशम्—रघु० २।७५, —सुन्दरी, स्त्री दिव्यांगना, अप्सरा विक्रम० १।३।

सुरङ्गः, गा [?] 1 सेंध 2 अन्त करण मार्ग, मकान के नीचे खोदा हुआ मार्ग—ऐकागारिकेण तावतीं सुरङ्गां कारयित्वा—दश०, सुरङ्गया बहिरपनेष्ये युष्मान् -मुद्रा० २, ('सुरङ्गा' भी लिखा जाता है)।

सुरभि (वि०) [सु+रभ्+इन्] 1. मधुर गंध युक्त, खुशबूदार, सुगंध युक्त पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता: श० १।३, मेघ० १६, २०, २२ 2 सुहावना, रुचिकर 3 चमकीला, मनोहर ता सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः 4 प्रियतम, मित्रसदृश 5 विख्यात, प्रसिद्ध 6 बुद्धिमान्, विद्वान् 7 नेक, भला, क्लिः 1 सुगंध, खुशबू, सुवास 2 जायफल 3 साल वृक्ष की राल, या कोई भी राल 4 चम्पक वृक्ष 5 शमी वृक्ष 6 कदंब का पेड़ 7 एक प्रकार की सुगंधित घास 8 वसन्त ऋतु विक्रम० २।२०, (स्त्री०) 1 लोबान का वृक्ष 2 तुलसी 3 मोतिया 4 एक प्रकार की सुगंध, या सुगंधित पौधा 5 मदिरा 6 पृथ्वी 7 गाय 8 समृद्धि देने में प्रसिद्ध गाय सुता तदीया सुरभेः कृत्वा प्रतिनिधिम् रघु० १।८१, ७५ 9 मातृकाओं में से एक, (नपुं०) 1 मधुर गंध, सुवास, खुशबू 2 गंधक 3 सोना। सम० -कुसुम सुगंधित मक्खन, खुशबूदार घी,—त्रिफला 1 जायफल 2 लौंग 3 सुपारी बाण. कामदेव का विशेषण, समय: वसंत ऋतु, सूचकम् वसंत ऋतु का आरम्भ।

सुरभिका [सुरभि+कन्+टाप्] एक प्रकार का केला।

सुरभिमत् (पुं०) [सुरभि+मतुप्] अग्नि का नाम।

सुरा [सु+क्रन्+टाप्] 1 मदिरा, शराब—सुरा वै मलमन्नानाम्—मनु० ११।९३, गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा ९४ 2 जल 3 पान-पात्र 4 मांस। सम० आकारः शराब खींचने की भट्टी, आसीव, आसोविन् (पुं०) कलाल,—आलयः मदिरालय मधुशाला, उद्धः शराब का समुद्र, कुम्भः मदिरा भर कर रक्खा हुआ बर्तन, कूपकः शराब की दुकान के बाहर टंगा हुआ झंडा, प (वि०) 1 शराबी, मद्यप 2 सुहावना, रुचिकर 3 बुद्धिमान्, ऋषि पानम्, पानम् मदिरा या शराब का पीना पात्रम्, भाण्डम् शराब का प्याला, या गिलास -फेन: शराबी, फेन, -मण्डः (शराब पैदा होने के समय) मदिरा के ऊपर उभरने वाला फेन,—सन्धानम् मदिरा खींचना।

सुवर्ण (वि०) [सुष्ठु वर्णोऽस्य- प्रा० ब०] 1. अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का, चमकीले रंग का, उज्ज्वल, पीला, सुनहरा 2 अच्छी जाति या बिरादरी का 3 अच्छी ख्याति का, यशस्वी, विख्यात,—र्णः 1 अच्छा रंग 2 अच्छी जाति या बिरादरी 3 एक प्रकार का गंध द्रव्य 4 शिव का विशेषण 5 धतूरा, र्णम् 1 सोना 2 सोने का सिक्का (पुं० भी) सम्प्रति दश सुवर्णान् प्रयच्छामि—मृच्छ० २ 3 सोलह माशे के बराबर सोने का तोल या १७५ ग्रेन के लगभग (पुं० भी) 4 धन, दौलत, ऐश्वर्य 5 एक प्रकार की पीले चन्दन की लकड़ी 6 एक प्रकार का गेरु। सम०- अभिषेकः दूल्हा और दुल्हिन पर उस जल के छींटे देने जिसमें सोने का टुकड़ा डाला हुआ हो,—कदली केले का एक

प्रकार,—कर्तृ, कार, —कृत् (पु०) सुनार,—गणितम् गणित में हिसाब लगाने की एक विशेष रीति, —चुम्बित (वि०) सोने से भरा-पूरा उदा० सुवर्ण-पुष्पितां पृथ्वी विचिन्वन्ति नरो जना । सुरश्च कृत-विद्यश्च मत्तश्च जानाति सेवितुम् पंच० १।४५,—पृष्ठ (वि०) सोना चढा हुआ, सोने का मुलम्मा चढा हुआ, माक्षिकम् खनिज पदार्थ विशेष, सोनामाखी, —यूथी पीली जूही,—रूप्यक (वि०) सोने और चांदी से भरपूर, रेतस् (पु०) शिव का विशेषण, वर्णा हरिद्रा, सिद्ध जिसने जादू से सोना प्राप्त कर लिया है,—स्तेयम् सोने की चोरी (पांच महापातकों में से एक) ।

सुवर्णकम् [सुवर्ण+कन्] 1 पीतल, कांसा 2 मीसा ।

सुवर्णवत् (वि०) [सुवर्ण+मतुप्] 1 सुनहरा 2 सुनहरे रंग का, सुन्दर, मनोहर ।

सुषम (वि०) [सुष्ठु सम सर्वं यस्मात् प्रा० ब०] अत्यन्त प्रिय या सुन्दर, बहुत सुथरा,—मा परम सौन्दर्य, अत्यधिक आभा या कान्ति कुरबकसुमं सुषमासुषमं—गीत० ७, सुषमाविषये परीक्षणे निखिल एवमभाजि तन्मुखात् नै० २।३७, भामि० १। २६, २।१२ ।

सुषवी [सु+सू+अच्+ङीष्] 1 एक प्रकार की लौकी 2 काला जीरा 3 जीरा ।

सुषाद (पु०) शिव का विशेषण ।

सुषि (स्त्री०) [सुष्+इन्, पृषो० शस्य स] छिद्र, सूराख, तु० 'शुषि' ।

सुषि (शी) म (वि०) [सु दर्शे+मक्, सम्प्रसारण, पृषो०] 1 शीतल, ठंडा 2 सुखकर, रुचिकर, —म 1 शीतलता 2 एक प्रकार का साग 3 चन्द्रकान्त-मणि ।

सुषिर (वि०) [शुष्+किरच्, पृषो० शस्य स] 1 छिद्रों से पूर्ण, खोखला, मरन्ध्र 2 उच्चारण में मन्द, रम् 1 छिद्र, रन्ध्र, सूराख 2 कोई भी बाजा जो हवा से बजे ।

सुषुप्ति (स्त्री०) [सु+स्वप्+क्तिन्] 1 गहरी या प्रगाढ निद्रा प्रगाढ विश्राम 2 भारी बेहोशी, प्रारम्भिक अज्ञान अविद्यात्मिका हि बीजशक्तिरव्यक्तशब्द-निर्देश्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुषुप्तिर्यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिता शेरते संसारिणो जीवा—ब्रह्मसूत्र पर शारी० भाष्य १।४।३ ।

सुषुम्ण [सुष्+म्ना+क] सूर्य की प्रधान किरणों में से एक, क्या शरीर की एक विशेष नाडी जो इडा तथा पिंगला नाम की वाहिकाओं के मध्य में स्थित है ।

सुष्ठु (अव्य०) [सु+स्था+कु] 1 अच्छा, उत्तमता के साथ, सुन्दरता से 2 अत्यंत, बहुत ज्यादह सुष्ठु लोभमेते आर्यपुत्र एतेषु विषयमाहात्म्येन उत्तर० १ 3 सचमुच, ठीक,—उक्त सुष्ठु प्रयुक्त—सर्व०, अथवा सुष्ठु खल्विदमुच्यते ।

सुष्मम् [सुष्+मक्, सुक्] रस्सी, डोरी, रज्जु ।

सुष्मिः (पु०, ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—आरमा सरस्वित सुष्मीर्यमिमाक्षित वेनसीम्—ऋ० ४।३५ ।

सू । (अदा० जुहो० भ्वा०—सूते, सूयते, सूत) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना (आत्म० से भी) अमृत सा नामवधूपयोम्बुद कु० १।२०, कीर्ति सूते दुष्कृत या हिनस्ति उत्तर० ५।३१, ब्र—, उत्पन्न करना पैदा करना, जन्म देना ।

॥ (चुरा० पर० सूचयति) 1 उत्तेजित करना, उकसाना, प्रेरित करना 2 (व्रण का) परिरोध करना ।

सू (वि०) [सू+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, फल देने वाला (स्त्री०) 1 जन्म 2 माता ।

सूक [सू+कन्] 1 वायु 2 हवा, वायु 3 कमल ।

सूकर [सू+करन्, कित्] 1 वराह, सूअर—दे० शूकर 2 एक प्रकार का हरिण 3 कुम्हार, री 1 सूअरी 2 एक प्रकार की काई, सेवाल ।

सूक्ष्म [सूक+मन्, सुक् च नेट्] 1 बारीक, महीन, आणविक—आकाशस्यसूक्ष्मो यत् सूक्ष्म दृश्यते रज 2 छोटा, छोटा—इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, रघु० १८।४९ 3 बारीक, पतला, कोमल, बढिया 4 उत्तम 5 तेज, तीक्ष्ण, बेधी 6 कलाभिज्ञ, चालबाज, धूर्त, प्रवीण 7 यथार्थ, यथा-तथ्य, बिल्कुल सही, ठीक,—क्ष्म 1 अणु, 2 केतक का पौधा 3 शिव का विशेषण, —क्ष्मम् 1 सर्वव्यापक सूक्ष्म तत्त्व, परमात्मा 2. बारीकी 3 अन्तर्वासियों द्वारा प्राप्य तीन प्रकार की शक्तियों में से एक, तु० साक्षात् 4 कलाभिज्ञता, प्रवीणता 5 चालबाजी, धोखा 6 बारीक वाणी 7 एक अलंकार का नाम जिसकी परिभाषा मम्मट ने इस प्रकार दी है कुतोऽपि लक्षित सूक्ष्मोऽप्यर्थोऽन्यस्मै प्रकाश्यते । सर्वेण केनचि-दंश तत्सूक्ष्म परिकल्पते ॥ काव्य० १० । सम०

एला छोटी इलायची, तण्डुल पोस्त, तण्डुला 1 पीपल, पीपली 2 एक प्रकार का घास, दर्शिता सूक्ष्मदृष्टि होने का भाव, तीक्ष्णता, अन्तर्दृष्टि, बुद्धि-मानी दर्शिन्, दृष्टि (वि०) 1 तेज नजर वाला यथेन जैसी दृष्टि वाला 2 बारीक विवेचनकर्ता 3 तीक्ष्ण, तेज मन वाला, —दल (नपु०) लकडी का पतला तख्ता, फलक, देह, —शरीरम् लिंग शरीर जो सूक्ष्म पंच महाभूतों से युक्त है,—धान्य 1 धनिया 2 एक प्रकार का जंगली जीरा 3 एक प्रकार का

लाल गन्ना 4. बबूल का पेड़ 5. एक प्रकार की सरसो, —पर्णी एक प्रकार की तुलसी,—पिप्पली वनपीपली —बुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, (स्त्री०—द्धिः) तेज बुद्धि, सूक्ष्म प्रतिभा, मानसिक प्रगल्भता,—कर्मिकम्, —का मच्छर, डांस, —मानम् यथार्थ माप, सही से गणना (विप० स्थूल-मान—जिसका अर्थ है—खुली माप, मोटी माप) —शर्करा बारीक बजरी, रेत, बालुका,—शालि एक प्रकार का बारीक चावल, —सूचरस. एक प्रकार की जू, जमजू।

सूच् (चुरा० उभ० सूचयति-ते, सूचित) 1 बींधना 2 निर्देश करना, इंगित करना, बतलाना, प्रकट करना, साबित करना त्वा सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोऽस्य (गन्ध) मृच्छ० १।३५, मेघ० २१, श० १।१४ 3 भेद खोलना, प्रकट करना, भण्डाफोड़ करना - स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न मुच्यते रघु० १७।५० 4 हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाक्षिस्पन्दनं सूचयति, रथवेगं सूचयति-आदि 5 पता लगाना, गुप्त भेद जानना, निश्चय करना। अभि , दिखलाना, संकेत करना अमन्यत तत्र प्राप्तं कर्मचेष्टाभिसूचितं-महा०, प्र,—सम्, संकेत करना, सूचित करना मयोगो हि वियोगस्य समूचयति सम्भवम् सुभा०।

सूचः [सूच् +अच्] कुशा का नुकीला अंकुर या पत्ता।

सूचक (वि०) (स्त्री०-चिका) [सूच्+ण्वुल्] 1 संकेत करने, संकेत करने वाला, सिद्ध करने वाला, दिखलाने वाला 2 प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला,— कः 1 बेधक 2 सूई, छिद्र करने या सीने के लिए कोई उपकरण 3. सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बदनाम करने वाला, भेदिया 4 वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5 किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6 बुद्ध 7 सिद्ध 8 दुष्ट, बदमाश 9 राक्षस, पिशाच 10 कुत्ता 11 कौवा 12 बिलाव 13. एक प्रकार का महीन चावल। सम० वाक्यम् किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना।

सूचनम्,—ना [सूच् भावे ल्युट्] 1 बींधने या छिद्र करने की क्रिया, सुराख करना, छेदना 2 इशारे से बताना, संकेत करना, सूचित करना 3 विरुद्ध सूचित करना, भेद खोलना, कलंक लगाना, बदनाम करना 4 हावभाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से संकेत करना 5. इशारा करना, इंगित 6 सूचना 7 पढ़ाना, दिखाना, वर्णन करना 8. गुप्त भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देखना, निश्चय करना 9 दुष्टता, बदमाशी।

सूचा [सूच्+अ+टाप्] 1 बींधना 2 हावभाव 3 भेद जानना, देखना, दृष्टि।

सूचि,—ची (स्त्री) [सूच् +इन् वा ङीप्] 1 बींधना, छेद करना 2 सूई 3 तेज नोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिनवकुशसूच्या परिक्षत इव चरणम्-श० १. इसी प्रकार 'मुने कुशसूचिविद्धे - श० ४।१४ 4 तेज नाक या किसी वस्तु का सिरा क० करप्रसारयेत् पद्मरागरत्नसूचय कु० ५।४३ 5 कलिका की नोक 6 एक प्रकार का सैनिकव्यूह, स्तम्भ या पंक्ति - दण्डव्यूहेन तन्मार्गं यायात्तु शकटेन वा। वराहमकरूप्या वा सूच्या वा गरुडेन वा मनु० ७।१८७ 7 समलम्बक के पार्श्वों से निर्मित त्रिकोण 8 शंकु स्तूप 9 अंगचेष्टाओं से संकेत करना, संकेतों द्वारा बतलाना, हावभाव 10 नृत्यविशेष 11 नाटकीय कथा 12 विषयानुक्रमणिका विषयसूची, 13 फलज्योतिष विवरणपत्रिका 14 (ज्योति० में) ग्रहण की गणना के लिए पृथ्वी का गोला। सम० अग्र (वि०) सूई की भांति नाक वाला, सूई के समान तेज नाक रखने वाला, पैना किया हुआ, (अग्रम्) सूई की नोक,—आस्य चूहा, कटाक्षन्याय दे० न्याय के नीचे, जात स्तूप की ऊंचाई, शंकु, पत्रकर्म अनुक्रमणिका, विषयसूची (—कः) एक प्रकार का शाक, मिलावर पुष्प केतक वृक्ष भिन्न (वि०) कली के किनारों का भिन्नना पाण्डच्छायांपवनचलयं केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २८, भेद (वि०) 1 जो सूई के द्वारा बांधा जा सके 2 मोटा सघन घोर, गाढ़ा, बिल्कुल,—छद्यालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः 3 स्पर्शनेय, महसूसाह्य, मुख (वि०) 1 सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला 2 नुकीला, (—खः) 1 पक्षी 2 सफेद कुशा 3 हाथी की विशेष स्थिति (—खम्) हीरा, रोमन् (पु०) सूअर, वदन (वि०) सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला, (—नः) 1. डांस, मच्छर 2 नेवला, —शालि एक प्रकार का बारीक चावल।

सूचिकः [सूचि + कन्] दर्जी।

सूचिका [सूचि + क + टाप्] 1 सूई 2 हाथी की सूंड़। सम०—मुख (वि०) नुकीले मुंह वाला, नुकीले सिर वाला, (—खम्) खाल, सीपी, शंख।

सूचित (भू० क० कृ०) [सूच् + क्त] 1 बींधा हुआ, सुराख किया हुआ, छिदित 2 इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, सूचना दिया हुआ, संकेतित, इंगित किया हुआ 3 बतलाया गया या हावभावों से संकेतित 4 समाचार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5 निश्चय किया गया, ज्ञात।

सूचिन् (वि०) (स्त्री० - नी) [सूच्+णिनि] 1 बेधने वाला, छिद्र करने वाला 2 इशारा करने वाला,

सूचना देने वाला, संकेत करने वाला 3 विवाह सूचित करने वाला 4 रहस्य का पता लगाने वाला (पु०) मेदिपा, सूचना देने वाला।

सूचिनी [सूचिन्+ङीप्] 1 सूई 2 रात।

सूची दे० 'सूचि'।

सूच्य (वि०) [सूच्+ण्यत्] सूचित किये जाने योग्य, बताया जाने योग्य।

सूत् (अव्य०) अनुकरणात्मक ध्वनि (जैसे खर्राटे का शब्द)।

सूत (भू० क० कृ०) [सू+क्त] 1 जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ 2 ब्रेरित, उद्गीर्ण, —त रथवान् सारथि -सूत चादयाश्वान् पुण्याश्रम-दर्शनेन तावदात्मान पुनीमहे श० १ 2 ब्राह्मणवर्ण की स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र (इसका कार्य रथ हाकने का होता है)—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातित मनु० १०।११, सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम् वेणी० २।३३ 3 बदीजन 4 रथ-कार 5 सूर्य 6 व्यास के एक शिष्य का नाम त, तम् पारा। सम०—तनय कर्ण का विशेषण, राज् (पु०) पारा।

सूतकम् [सूत+कन्] 1 जन्म, पैदायश- मनु० ४।११२ 2 प्रसव (या गर्भपात) के कारण उत्पन्न अशौच (जननाशौच),—क,—कम् पारा।

सूतका [सूत+कन्+टाप्] सद्य प्रसूता, वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जच्चा,—पु० ५।८५।

सूता [सूत+टाप्] जच्चा स्त्री।

सूति (स्त्री०) [सू+क्तिन्] 1 जन्म, पैदायश, प्रसव, जनन, बच्चा पैदा करना 2 सन्तान, प्रजा 3 स्रोत मूलस्रोत, आदिकारण तपसा सूतिरसूतिरापदाम् कि० २।५६ 4 वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाता है। सम०—अशौचम् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अपवित्रता (जो दस दिन तक रहती है), —गृहम् जच्चा घर, प्रसूति-गृह,—मासः (सूती-मास भी) प्रसव का महीना, गर्भाधान के पश्चात् दसवाँ महीना।

सूतिका [सूत+कन्+टाप्, इत्वम्] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, जच्चा। सम० अगारम्, -गृहम्, -गेहम्, -भवनम् जच्चाखाना, सौरी,—रोगः प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन्य रोग, —छठी प्रसव के पश्चात् छठे दिन पूजी जाने वाली देवी विशेष का नाम।

सूत्यरम् [सु+उद्+पू+अप्] मदिरा का सींचना या चुआना।

सूत्या [सू+क्यप्+टाप्, तुक्] दे० 'सुत्या'।

सूत्र् (चुरा० उभ० सूत्रयति-ते, सूत्रित) 1 बाधना, कसना धागा डालना, नत्थी करना 2 सूत्र के रूप में या संक्षेप से रचना करना तथा च सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन, जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूत्रयत्, आदि 3 योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, ठीक पद्धति में रखना तन्निपुण मया निसृष्टार्थदूतीकल्प सूत्रयितव्य मा० १ 4 शिथिल करना, ढीला करना।

सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1 धागा, डोरी, रेखा, रस्सी—पुष्पमा-लानुपक्षेण सूत्र शिरसि धार्यते—सुश्रु०, मयी बज्र-समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गति—रघु० १।४ 2 रेखा, तन्तु—सुरासना कर्षति खण्डितात्रासूत्र मृणा-लादिव राजहसी—विक्रम० १।१९, कु० १।४०, ४९ 3 तार 4 धागों की आटी 5 यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो पहले तीन वर्ण धारण करते हैं)—शिक्षासूत्रवान् ब्राह्मणः तर्क० 6 पुत्तलिका का तार या डोरी 7 संक्षिप्त विधि, गुर सूत्र 8 परिभाषा परक संक्षिप्त वाक्य परिभाषा—स्वल्पाक्षरममन्दिग्ध सारवद्विश्वतो मुखम्। अस्तोभमनवद्य च सूत्र सूत्रविदो विदु ॥ 9 सूत्रग्रन्थ उदा० मानवकल्प सूत्र, आपस्तबसूत्र 10. विधि, धर्म-सूत्र, आज्ञप्ति (विधि में)। सम० —आत्मन् (वि०) डोरी या धागे के स्वभाव वाला, (पु०) आत्मा, -आली माला, (जो कण्ठ में पहनी जाय, हार,—कण्ठ 1 ब्राह्मण 2 कबूतर, पेंडुकी 3 खजन पक्षी, —कर्मन् (नपु०) बढ़ई का काम —कारः, कृत् (पु०) सूत्र रचने वाला, कोशः, कोशकः डमरु, डुगडुगी,—गण्डिका एक प्रकार की यष्टिका जिसका उपयोग जुलाहे धागे लपेटने में करते हैं,—चरणम् वैदिक विद्यामन्दिर जिनके द्वारा अनेक सूत्रग्रन्थों का निर्माण हुआ,—जन्धि (वि०) कम धागों वाला वह कपड़ा जिसमें थोड़े धागे लगे हों, झीना —जय पट सूत्रदरिद्रता गत —मृच्छ० २।९, —धर, धार 1 'डोरी पकड़ने वाला' रङ्गमंच का प्रबन्धक, वह प्रधान नट जो पात्रों को एकत्र कर उन्हें प्रशिक्षित करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है —परिभाषा यह है—नाट्यस्य यदनुष्ठान तत्सूत्र स्यात् सबीजकम्। रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृत ॥ 2. बढ़ई, दस्तकार 3 सूत्रकार 4. इन्द्र का विशेषण, -पिटक बुद्धसम्बन्धी त्रिपिटक का प्रथम खंड,—पुष्पः कपास का पौधा,—भिद् (पु०) दर्जी —भृत् (पु०) सूत्रधार, -वस्त्रम् 1. 'धागा यज्ञ' डोरी 2 जुलाहे की खड्डी, वीणा एक प्रकार की आसुरी —वेष्टनम् जुलाहे की डरकी।

सूत्रयम् [सूत्र+ल्युट्] 1. मिला कर नत्थी करना, क्रम में रखना, क्रम बद्ध करना 2. सूत्रों के अनुसार क्रम-पूर्वक रचना।

सूचना [सूच+ना+क+टाप्] तकना, तकली।
सूचान्वय=सूचान्वय—दे०
सूचिका [सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेंवई, सीवी।
सूचित (भू० क० कृ०) [सूच्+क्त] 1 सजी हुई सिला हुआ, कसबद्ध, प्रणालीबद्ध, पद्धतिकृत 2. सूचीविद्धित, सूचों के रूप में अधिष्ठित।
सूचिन् (वि०) (स्त्री० नी) [सूच+इनि] 1. चतुर चालाक 2 सिलाई वाला,—(पु०) दर्जी।
सूद i (म्वा० आ० सूदते) 1 प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना करना, मार डालना, नष्ट करना 2. डालना, उड़ेलना 3 जमा करना 4 अवरोध, फेंक देना।
ii (चुरा० उभ० सूदयति-ते) 1. उकसाना, प्रवर्तित करना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, ग्राम पहुँचना 2 आघात करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3 खाना पकाना, रांधना, सिझाना, तैयार करना 4 उड़ेलना डालना 5 हानी करना, सहायक होना, प्रतिज्ञा करना 6 डालना, फेंकना, वि—, (विशेषकर —से) मारना।
सूद [सूद्+घञ्, अच्, वा] 1 नष्ट करना, विनाश, अनग्रहार 2 उड़ेलना, चुआना 3 कर्म, आरंभ 4 रसोइया, 5 चटनी, स्वाद, झोल 6 कोई भी वस्तु सिझायी हुई, तैयार खाना 7 दही हुई घटर 8 कीचड़, दलदल 9 पाप, दोष 10 लोहा वृक्ष। सम०—कर्मन् रसोइये का काम, —शाला रसोई।
सूदन (वि०) (स्त्री० नी) [सूद् ल्युट्] 1. नाश करने वाला, वध करने वाला, विनाशक दानवसूदन, अरिगणसूदन आदि 2 प्यारा, प्रियतम,—नः 1 नष्ट करना, विनाश, अनग्रहार 2 हानी करना, प्रतिज्ञा करना 3 डाल देना, फेंक देना।
सून (भू० क० कृ०) [सू+क्त, कर्मणि न] 1 जन्मा हुआ, उत्पन्न 2 फूला हुआ, मुकुलित, खुला हुआ कलिकायुक्त 3 रिक्त, खाली (सम्भवतः इस अर्थ में शून या शून्य समझा जाय),—नम् 1 जन्म देना, प्रसव होना 2 कली, मंजरी 3 फल।
सूनरी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
सूना [सूद+न+टाप्] 1 कसाई घर, बूचड़खाना, —भवानांय सूना परिचर इव गृध्र अभिषत्तलोलुपो भीष्मश्च - मा० २ 2 मांस की बिक्री 3 चोट पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना 4 मुद्गरालु, काकल 5. करधनी, मेखला 6 सत्यनिष्ठता की सूचना, झापू 7 प्रकाश की किरण 8. नदी 9 छुरी,—नाः (स्त्री०, ब० व०) घर में हानें वाली पाँच वस्तुएं जिनसे जीव हिंसा होने की सम्भावना होती है, दे० 'सूना' या 'पञ्च-सूना' के अन्तर्गत।
सूनिन् (पु०) [सूना+इनि] 1 कसाई, मांस-विक्रेता 2. शिकारी।
सूनु [सू+नुक्] 1. पुत्र—पितुरङ्गेभ्यैक सूनुरभवम् —का० 2. बालक, लड़का 3 पोता (दौहित्र) 4 छोटा भाई 5. सूर्य 6. बढ़ई का पौधा।
सूनृ (स्त्री०) [सूनु+ऋङ] पुत्री।
सूनृत (वि०) [सू+नृत्+क- उपसर्गस्य दीर्घः] 1 सत्य और सुखद, कृपालु और निष्कपट तत्रसूनृतागिरश्च सूनवः पुण्यश्लोकशुभ्रयशसीयत शि० १४।२१, रघु० १।९२ 2. कृपालु, सुशील, कृपालु, शिष्ट—ता आर्यता सखाई सूनृतानां वेद धीराः सूनृता वाचमाहु —उत्तर० ५।३१, सूनृतमि मनिवरयं वाक् चतुर्वी च सूनृता। एतान्वीरे सदा वेद्यो नोच्छिद्यन्ते कदाचन —मनु० ३।१०६, रघु० ६।९२ 3 सुख, सौभाग्यसूचक 4. प्रियवक्ता, प्यारा,—नम् 1 सत्य तथा रोचक भाषण 2. कृपापूर्ण एवं सुखकर वचन, शिष्ट भाषा रघु० ८।९२ 3 सौजन्यिकता।
सूप: [सूयते पीयते-सू+पा+कर्मणि क, पृषो०] 1 यूष रसा—न स आस्वादति जातकार्ये यवौ सूपरसानिव सुजा०, मनु० ३।२२९ 2 चटनी, मिर्च, मशाला 3 रसोइया 4. कड़ाही, बर्तन 5 दाल। सम०—कार: रसोइया, कृत्यम्, कृत्यम् हींग।
सूप्य: [सू+यक्] 1 पानी 2 दूध 3 आकाश, गगन।
सूर् (दिवा० आ० सूर्यते) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 दृढ़ करना या दृढ़ होना।
सूर्ण (वि०) [सूर् + क्त, कर्मणि न] चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त।
सूर: [सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकानुदयेन सू+क्त] 1 सूर्य 2 बढ़ई का पौधा 3 सोम 4 बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 5. नायक, राजा। सम०—अक्षुण्ण (वि०) सूर्य की भांति चमकीला, सूर्य शक्ति का विशेषज्ञ,—सूत: सूर्य का सारथि अर्थात् अरुण।
सूरक्ष [सूर्+रक्ष्] सूरज, सूर्यकिरण।
सूरत (वि०) [सू+रम्+क्त, पृषो० दीर्घः] 1 कृपालु, दयालु, सौजन्य 2 आनन्द, हर्ष।
सूरि: [सू+क्रिन्] 1 सूर्य 2 विद्वान्, या बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभि —रघु० १।८, शि० १४।२१ 3 पुरोहित 4 पूजा करने वाला, जैन मत के आचार्यों को दिया गया सम्मान-सूचक पद, उदा० अभिनवगुप्तसूरि 6. कृष्ण का नाम।
सूरिमत् (वि०) (स्त्री० मती) [सूरि+मतुप्] बुद्धिमान्, विद्वान् (पु०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, पंडित।
सूरी [सूरि+ङीष्] 1. सूर्य की पत्नी का नाम 2 कुन्ती का नाम।
सूर्द् (भ्वा० विदा० पर० सूर्दति, सूर्दयति) 1 सम्मान

करना, आदर करना 2 अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना।

सूअं (र्यं) अव्य० [सूअं (र्यं)+स्युट्] अनादर, अपमान।

सूक्ष्मः [सूक्ष्मं+घञ्] भाप, उबाल।

सूप दे० सूप।

सूमि,-मी (स्त्री०) [-शूमि, पृषो० शस्य स, पक्षे ङीप्] 1 लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मूर्ति मनु० ११।३ 2 घर का स्तम्भ 3 आभा, कान्ति 4 ज्वाला।

सूर्य. [सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति सू+क्यप्, नि०] 1 सूरज सूर्यं तपन्तमरुणाय दृष्ट्वा कल्पेत लोकस्य कथं नमस्या-रघु० ५।१३, (पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है तु० ऋ० ७, उसका वर्णन किया जाता है कि वह अपने सात घोड़ों के रथ में बैठ कर घूमता है, अरुण इस रथ का सारथि है। सूर्य भगवान् रथ में बैठा हुआ सब लोकों को तथा उनके शुभाशुभ कर्मों को देखता है। संज्ञा (छाया या प्रतिच्छवी) उसकी प्रधान पत्नी का नाम है, इससे यम और यमुना पैदा हुए तो अश्विनीकुमारों तथा शनि का जन्म भी इसी से हुआ। राजाओं के सूर्यवंश का प्रवर्तक विवस्वान् मनु भी सूर्य का ही पुत्र था) 2 मदार का पौधा 3. बारह की संख्या (सूर्य के बारह रूपों में उल्लेख)। भाम० अपाय सूर्य का छिपना मेघ० ८० अर्घ्यम् सूर्य को पवित्र जल में उपहार स्वरूप अर्पण करना,-अश्मन् (पु०) सूर्यकान्तमणि अश्व सूर्य का घोड़ा, अस्तम् सूर्य का छिपना आतप सूर्य की गरमी या चमक, धूप आलोक, यप, आवर्त एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, सूरजमुखी, आह्व (वि०) सूर्य के नाम पर जिसका नाम है (ह्व) मदार का भारी पौधा, आक, (-ह्वम्) ताम्बा इन्दुसङ्गम (सूर्यचन्द्रमा का मिलन) अमावस्या देखो सूर्येन्दुसङ्गम अमर०, उत्थानम्, उदय सूर्य का निकलना ऊढ 1 सूर्य द्वारा लाया गया मार्गशीर्ष 1 सफर करने वाला अतिथि-पञ्च० १ सूर्य विज्ञान का गर्मा कांत आतशीशीशा, एक स्फटिक पात्र जो० शा० कान्ति (स्त्री०) 1 सूर्य की दीप्ति 2 एक पुराना विमान 3 दिल का फल काल दिन का मध्य भाग, दिन अनलचक्रम् ज्योतिष-शास्त्र में शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र यह 1 सूर्य 2 सूर्यग्रहण 3 राहु और केतु का विशेषण 4 पूरे का पूरा, ग्रहणम् सूर्यग्रहण (चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्यबिंब का छिप जाना पौराणिक मत है कि राहु या केतु द्वारा सूर्य का ग्रास), चन्द्रौ (इसी प्रकार-सूर्याचन्द्रमसौ) (पु०, द्वि० व०) सूर्य और चांद,-ज तनयः, पुत्र. 1 सुग्रीव के विशेषण 2 कर्ण के विशेषण 3 शनिग्रह के विशेषण 4 यम के विशेषण, जा, तनया यमुना नदी, तेजस् (नपु०) सूर्य की चमक या गर्मी, नक्षत्रम् वह नक्षत्रपुंज जिसमें सूर्य हो, पर्वन् (नपु०) (सूर्य के नई राशि में प्रवेश या सूर्यग्रहण आदि का) पुण्यकाल, सूर्यपर्व, -प्रभव (वि०) सूर्य से उत्पन्न-रघु० १।७, बिम्ब-चक्रम्=सूर्यतालालचक्रम्, दे० ऊ०,- भक्त (वि०) सूर्य का उपासक, (क्तः) बन्दरकपूर या सप्तपर्ण का इसका फल, मणिः सूर्यकान्तमणि, मण्डलम् सूर्य का घेरा, परिवेश,-मन्त्रः 1 (सूर्योपासना में प्रयुक्त) सूर्य का चित्र या प्रतिमा 2 सूर्य के वेध में काम आने वाला एक उपकरण, रश्मिः सूर्य की किरण, सूर्य-वंशज या संतान,-लोकः सूर्य का लोक वह राजाओं का सूर्यवंश (जो अयोध्या में राज्य करते थे) इक्ष्वाकुवंश, -वर्चस् (वि०) सूर्य के समान तेजो-मंडित, विलोकनम् बच्चे को चार महीने का होने पर, बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन कराने का संस्कार-तु० उपनिष्क्रमणम्, -संक्रमः, -संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, सखः कैसर जाफरान, -सारथिः अरुण का विशेषण -स्तुतिः (स्त्री०) स्तोत्रम् सूर्य के प्रति की गई स्तुति,-हृदयम् सूर्य का एक स्तोत्र।

सूर्या [सूर्य+टाप्] सूर्य की पत्नी।

सूव (प्रेर० पर० सूवयति) फल प्रस्तुत करना, उत्पन्न करना पैदा करना जन्म देना।

सूवथः [सूव+क्थच्+टाप्] माता।

सूष्मली (स्त्री०) प्रसवोन्मत्त आसन्न प्रसवा।

से (स्त्री० द्वि० ए० सेम्, तृ० ए० सेमि सेमिं सेमां भी, ब० व० सेमः) 1 काटा सिलना-बुनना आदि करना मुखं सेव्यते सम्यक् भट्टि० १४।१४ 2 पास जाना, पहुंचना, निपतन्ति शलभाः सेवन्ते प्रदीपं शलभवत्सेमम् पञ्च० 3 पालन करना, सेवा करना (व) आत्मानं सेवस्व मां शाधि त्वं कुटुम्बानां मनो० 4 दोनों ओर बुनना सिलना आदि करके मढ़ना या ढकना मुखमात्रावस्त्रेण सेव्यते मालवि० ४।११ 5 (ऋण आदि) चुकाना 6 बेचना 7 सेवा करना, परिचर्या करना, हाथ-पैर दबाना आदि 8 पहन लेना आदि। ९) 1 चलना या जाना 2 विचार करना अनुचिन्तन करना (अनुचिन्तयति) आने से पहले ही सेना, पहले से ही अनुमान लगाना, आशंका करना, संदेह करना पञ्च० 1 पीछे पीछे जाना या चलना, अनुसरण करना अनु० 2 अनु

गमन करना (सभी अर्थों में), पीछे जाना, ध्यान देना, पैरवी करना 2 पहुँचना, (अपने को) पहुँचाना पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीम् मेघ० ३०, तेनोदीची दिशमनुसरेः—५७ 3 अनुशीलन करना, पार करना (प्रेर०) 1 अग्रणी होना वायुरनुसारयतीव माम् रामा० 2 पीछे चलना, अप , 1 अलग होना, निवृत्त होना, वापिस लेना यदपसरति मेघः कारण तन्मुहूर्तम्—पञ्च० ३।४३ 2 ओझल होना अन्तर्धान होना (प्रेर०) भिजवाना, पहुँचाना, हटाना, वापिस हटना, दूर हाक देना अपसार्य घनसार —काव्य० ९, मनु० ७।१४९, अभि 1 आना, पहुँचना - कि० ८।४ 2 मिलने के लिए जाना या आगे बढ़ना (किसी नियत स्थान पर), नियत करके मिलना सुन्दरीरभिसंसार का० ५८, शि० ६।२६ 3 आक्रमण करना, हमला करना, (प्रेर०) नियत करके मिलना, मिलने के लिए आगे बढ़ना वल्लभानभिसिसारयिषूणाम् शि० १०।२०, कि० ९।३८, मा० द० ११५, उप् .(प्रेर०) दूर भगाना, निकाल देना, उप—, 1 पास जाना, पहुँचना, रघु० १९।१६ 2 सेवा करना, दर्शन देना —कैलासनाथमुपसृत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।३ 3 चढ़ाई करना, आक्रमण करना 4 आदर्श मेल जोल करना, निस् -, 1 चले जाना, बाहर निकलना, विमुक्त जाना, निकलना -राणं स्वरक्षार्थकृति सर्वं राम०, इसी प्रकार —वमुद्यानानि सूनृतिर्वाग्निसृते शि० ९।२५ 2 विदा होना, कूच करना मनु० ६।८ 3 बहना, पसीजना, रिसना यो त्रैमकुभमन्वर्तनि मनसा स्वप्नदृश्य मातुपयसा रसज्ञ —रघु० २।३६ (प्रेर०) दूर कर दूर करना, निष्कासित करना बाहर निकाल देना परि—, चारों ओर बहना-वन सरय्वर्ती परिसारः तेन०, परिसृगप —महा० ८ चक्कर काटना, घूमना प्रदक्षिण न परिसृत्य-भाष्य०, (परिसारि-के स्थान पर परिसरति-पाठान्तर) शिखा आलिलिङ्गयिषन्त्यव —मालवि० २।१३, प्र -, 1 बह जाना, बहना, उदय होना, प्रादुर्भूत होना —ज्योत्स्नेवोडुपतेः प्रसादसलिलं चामीकरं प्रस्रवत् - महा० 2 गे जाना, आगे बढ़ना वैलासनिकाय प्रसृता मृगेन्द्राः रघु० १३।१०, अन्वेषण—प्रसृते च मिथिलेषु ४।७० 3 फैलना, चारों ओर फैलना कृशानु कि माक्षाप्रसरति दिशा नेत्र नियतम काव्य० १० प्रसरति तृणमन्ये तदवयवि धूमेन (दवाग्नि) कुमा० १।२५ 4 फैलना, छा जाना, व्याप्त होना प्रसरति परिमाणी कार्यस्य कारणा मा० १।४१ निस्ना (स्त्री०) प्रसरति यदाकाशि वेगादिवाहार—उत्तर० ३।३६ 5 विस्तृत होना, विस्तार करना -न मे हृष्यो प्रसरत्व ४० ४ 6 (किसी कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, इच्छुक होना, न मे उचितेषु करणीयेषु हस्तपाद प्रसरति—श० ४, प्रसरति मन कार्यारम्भे 7 छा जाना, आरम्भ करना, उपक्रम करना - प्रससार चोत्सव कथा० १९।८५ 8 लम्बा होना, दीर्घ होना विक्रम० ३।२२ 9 मजबूत होना, प्रबल होना-प्रसृततर सख्यम् दश०, 10 (समय) बिताना, (प्रेर०) 1 फैलाना, बिछाना भट्टि० १०।४४ 2 बिछाना, विस्तार करना, (हाथ आदि) फैलाना काल सर्वजनान् प्रसारितकरो गृह्णाति दूरादपि पञ्च० २।२० 3 फैलाना, किसी के लिए बिलाना—केदार कौणीसुरिति बुद्धयापणे प्रसारित कव्यम् सिद्धा०, मनु० ५।१२९ 4 चौड़ा करना, (आँखों की पुतली को) फैलाना 5 प्रकाशित करना, विद्वोग पीटना, प्रचारित करना, प्रति , 1 वापिस जाना, लौटना 2 आधा बोलना, चट आना, आक्रमण करना, हमला करना- दैत्य प्रत्यसरदैव मनो मत्तमिव द्विपम् हरि० (प्रेर०) पीछे का ओर हकेलना, बहल देना कमकवलय स्वस्त अस्त मया प्रतिसार्यते का० ३।१३, वि ,फैलाना, विस्तृत होना, प्रसृत होना- चक्रीवदङ्गरहधूसरको विसारम् —शि० ५।८, ९।१९ ३७, कि० १०।५३ (प्रेर०) 1 फैलना, बिछाना 2 व्याप्त होना, सम्—1 फैलना 2 हिलना-डुलना 3 मिलकर जाना या उड़ना 4 जाना, पहुँचना—यावान् समुद्य मसारान् प्रेष्यता यान्ति शत्रवः—मनु० १२।७०, (प्रेर०) 1 ऊपर फैलाना 2 घुमाना, चक्कर देना अन्यवद्विप्लयेनिव समारयति चक्रवत् मनु० १२।७८।

सृक [स्रु + क्विप्] 1 हवा, वायु 2 बाण 3 वज्र 4 कमल, कैरव।

सृकण्डु (स्त्री०) [स्रु + विच्, पृषो० नुक् न स-ः कण्ड क० स०] खुजली।

सृकाल [सृ + कालन्] दे० 'शृगाल'।

सृक्कम्, सृक्कणी, सृक्कन् (नपु०) } [सृज् + कन्, कर्मणि वा] मुंह का किनारा सृक्किणी पल्लिलिङ्गन् पञ्च० १।

सृक्किणी, सृक्किन् (नपु०), सृक्वम्, सृक्वणी, सृक्वन् (नपु०), सृक्विणी, सृक्विन् (नपु०) }

सृग [सृ + गक्] एक प्रकार का बाण या नेजा, भिन्दिपाल।

सृगाल [सृ + कालन्] दे० 'शृगाल'।

सृङ्का (स्त्री०) रस्सी या मणियों से बना हार, मणियों की बनी मालाओं वाली।

सृज् (तुदा० पर० सृजति, सृष्ट) 1 रचना करना पैदा करना, बनाना, प्रसव करना, जन्म देना अर्जुन

सारी तस्या स विराजमसृजत् प्रभु मनु० १।३२, ३३, ३४, ३६, तन्तुनाभ स्वत एव तन्तून् सृजति —सारी० 2 पहनना, रखना, प्रयोग में लाना 3 जाने देना, ढीला छोड़ना, मुक्त करना 4 उत्सर्जन करना, छितराना, प्रसूत करना, बिखेरना, डालना —जलाशुरक्त कर्दम रक्तन्त —भट्टि० ३।१७, आनन्द-शीतामिव वाष्पवृष्टि हिमस्रुति हैमवती ससर्ज —रघु० १६।४४, ८।३५ 5. कहना भेजना, उच्चारण करना, कु० २।५३ ७।४७ 6 फेंकना, डाल देना 7 छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना।

सृ (दिवा० आ० सृज्यते) ढीला होना, इच्छा० (सिसृक्षति) रचना करने की इच्छा करना। अति—, 1 देना, अर्पण करना—विक्रम० १।१५, रघु० ११।४८ 2 त्यागना, पदच्युत करना 3 उगलना 4 अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अभि , देना, प्रदान करना, अव , 1 डालना, फेंकना, बोना (बीज) बखेरना, अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् —मनु० १।८ 2 डालना, बूंद-बूंद टपकाना—उत्तर० ३।२३ 3 ढीला छोड़ना, उद् , 1 उड़ेलना, उगलना, निकाल देना,—व्यलीकनि श्वासमिवोत्ससर्ज कु० ३।२५, सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रस रवि —रघु० १।१८, 'उड़ेल देना, वापिस देना या लौटाना 2 (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना, —रघु० ५।५१, ६।४६, कु० २।३६, (ख) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—य आपमुत्सृज्य विवृद्ध-मन्यु —रघु० ३।५०, ४।५४ 3 ढीला छोड़ना, स्वच्छन्द घूमने देना तुरङ्गमुत्सृष्टमनर्गल पुन —रघु० ३।३९ 4 दागना, फेंकना, गोली मारना— भट्टि० १४।४५ 5. बोना, (बीज) बखेरना 6 उपहार देना, प्रदान करना 7 बिछाना, बिस्तार करना 8 हटाना 9 दूर करना 10 मिटाना, प्रतिबंध लगाना, उप , 1 उड़ेलना, (जल आदि) प्रस्तुत करना 2 जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना, समकक्ष करना, संबद्ध करना सुख दुखोपसृष्टम् 3 व्याकुल करना, अत्याचार करना, सताना -रोगोपसृष्टतनुर्वसति मुमुक्षु —रघु० ८।९४ 4. ग्रहण लगना, ग्रस्त करना, मनु० ४।३७ याज्ञ० १।२७२ 5 पैदा करना, क्रियान्वित करना 6 नष्ट करना, वि , 1 स्वतन्त्र करना, बरी करना —न स्वामिना निसृष्टोपि भृत्यो दास्याद्विमुच्यते —मनु० ८।४१४ 2 हवाले करना, सौंपना, सुपुर्द करना- तु० निसृष्ट, प्र , 1 छोड़ना, त्यागना 2. ढीला छोड़ना 3 बोना, बखेरना 4 अतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना, वि , 1 त्यागना, छोड़ना, तिलाजलि देना—विसृज सुन्दरि सज्जनसाध्वसम् —मालवि० ४।१३, पूर्वाधिविसृष्टतल्प रघु० १६।६, शाकि० १।७८ 2 जाने देना, ढीला छोड़ना 3 डालना, उड़ेलना—रघु० १३।२६ 4. भेजना, प्रेषित करना भोजन दूतो रथे विसृष्ट —रघु० ५।३९ 5. पदच्युत करना, जाने की अनुमति देना, भेजना—रघु० ८।९१, १४।१९ 6. देना—रघु० १३।६७, १८।७ 7 भेज देना, डाल देना, बिखार देना, फेंकना—विसृजति हिम-गर्भैरभिमिन्दुमंशुभिः—शि० ३।२ 8 डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विसृज क्षुद्रमृगे कृपाणम्—उत्तर० २।१० 9 उच्चारण करना—शि० १५।६२ 10 उतार फेंकना, संबंध-विच्छेद करना,—सम्—, 1. मिलना, मिश्रण करना, संयुक्त करना, संपृक्त करना—सस्-ज्यते सरसिजैरनुकूलसुरभिर्न —रघु० ५।६९, अस्ना रक्षा समृजन्त्यम्,—श्लेष० 2 मिलना,—सौमित्रिणा सदनु ससर्ज़े—रघु० १३।७३, कु० ७।७४ 3 रचना करना।

सृजिकाक्षार [ष० त०] सज्जी का क्षार, शोरा, रेह।

सृजया (पु० ब० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम।

सृणिः (स्त्री०) [सृ+निक्] अंकुश, हाथी को हांकने का आंकड़ा—मदान्धकरिणा दर्पोपसान्त्वे सृणि —हि० २।१६५, शि० ५।५, —नि० 1 शत्रु 2 चन्द्रमा।

सृणि (को) का [सृणि+कन् (ईकन्)+टाप्] क्षार, शोरा।

सृति (स्त्री०) [सृ+क्तिन्] 1 जाना, सरकना,—मनु० ६।६३ 2 रास्ता, मार्ग, पथ (आल० से भी—नेते सृणि पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन- भग० ८।२७ 3 चोट पहुँचाना, अतिक्रम्त करना।

सृत्वर (वि०) (स्त्री० री) [सृ+क्वरप्, नुक्] जाने वाला, सरणशील, री 1 नदी, दरिया 2 माता।

सृदर [सृ+अरक्, दुक्] सांप।

सृप्राकुः [सृ+काकु, दुक्च] 1 हवा, वायु 2 अग्नि 3 हरिण 4 इन्द्र का वज्र 5 सूर्यमंडल, स्त्री० नदी, सरिता।

सृप् (भ्वा० पर० सर्पति, सृप्त, इच्छा० सिसृप्सति) 1 रेंगना पेट के बल चलना, शनैः शनैः सरकना 2 जाना, हिलना-डुलना, अनु- , 1 पास जाना, पहुँचना गिरिमनुसपक्षाम —भट्टि० ६।२७ 2 पीछा करना भट्टि० १५।५९, अप , 1 चले जाना पीछे हट जाना, लौट पड़ना—तस्करितमनेन तदाहृतेनाप-सर्पत - उत्तर०४ 2 सरक जाना, मन्द मन्द चलना 3 (भेदिये की भांति) छिप कर देखना-- उत्तर० १ 4 अलग होना छोड़ना, उद्—, 1 ऊपर को उड़ना 2 ऊपर जाना, पहुँचना—तरिप्रवाहस्तटयूथमर्प-रघु० ५।४९, उप —, 1. पहुँचना, निकट जाना मालवि० १।१२ 2 हरकत करना, जाना दश० २।२३ 3 पहुँचना, प्राप्त करना भुवनमा-- दुर्लभ सुखम्··· 4 आरंभ करना -शि० १।१२०५ 5 आक्रमण

करना, परि–, 1 चारों ओर घूमना, छा जाना 2 इधर उधर घूमना, प्र–, 1 आगे जाना, बाहर निकलना, आगे आना, प्रगति करना—भट्टि० १४। २० 2 फैलाना, प्रचारित करना, (आत्म० से भी) रुधिरेण प्रसर्पता—महा०, आलकं विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्—उत्तर० १।४०, वि–, 1 जाना, प्रयाण करना, प्रगति करना—य सुबाहुरिति राजमाऽपरस्तत्र तत्र विसर्जं मायया—रघु० ११।२९, ४५२ 2 इधर उधर उड़ना या घूमना 3 फैलाना। मदोरुगन्धीव विषमिव विसर्पत्यविरतम् मा० २।१ 4 साथ साथ बहना, नीचे गिरना—(बाष्पोष्ण) विसर्पन् धारासिर्लठति धरणी अर्जरकण उत्तर० १।२६ 5 लेकर चम्पत होना, बच निकलना 6 छा जाना 7 मुड़ना, घूमना 8 भिन्न भिन्न दिशाओं में जाना सम्–, 1 हिलना-डुलना,—ममर्पेव्या मपदि भवत स्तोत्रमि ब्धारयामो मेघ० ५१ 2 साथ साथ चलना, बहना —मेघ० २९।

सृपाट. [सृप् –काटन्] एक प्रकार की साग।

सृपाटिका [सृपाट + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्व] पक्षी की चोंच।

सृपाटी [सृपाट + ङीष्] एक प्रकार की साग।

सृप्र [सृप् + कन्] चन्द्रमा।

सृभ्, सृम्भ (स्वा० पर० सर्भति, सृम्भति) चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सृमर (वि०) (स्त्री०री) [सृ + कमरच्] गमन करने वाला, जाने वाला, –र एक प्रकार का हरिण।

सृष्ट (भू० क० कृ०) [सृज् + क्त] 1 रचित, उत्पादित 2 उड़ेला हुआ उगला हुआ 3 ढीला छोड़ा हुआ 4 त्यागा हुआ, परित्यक्त 5 हटाया गया, दूर भेजा गया 6 निश्चय किया गया, निर्धारित 7 संयुक्त संबद्ध 8 अधिक, प्रचुर, अमर्याद 9 अलंकृत दे० सृज्।

सृष्टिः (स्त्री०) [सृज् + क्तिन्] 1 रचना, कोई भी रचित वस्तु–कि मानसी सृष्टि शा०४, या सृष्टि स्रष्टुराद्या रघु०१।१, सृष्टिराद्येव धातृ —मेघ० ८२ 2 संसार की रचना 3 प्रकृति, प्राकृतिक संपत्ति 4 ढीला छोड़ना, उड़ेलना 5 प्रदान करना, भेंट 6 शून्य का विद्यमानता 7 पदार्थ का अभाव। सम०—स्रष्टृ (पु०) स्रष्टा, रचयिता।

सृ (कथा० पर० सृणाति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

सेक् (स्वा० आ० सकते) जाना, हिलना-डुलना।

सेक [सिच् + घञ्] छिड़कना, (वृक्षों को) पानी देना, –सेक सीकरिणा करेण विहित स्नानम्—उत्तर० ३।१६, रघु० १।५१, ८।४५, १६।२०, १७।१६ 2 उद्गार, प्रसार 3 डोलयान 4 तर्पण, बढ़ावा। सम०—पात्रम् 1 पानी छिड़कने का पात्र, जल-पात्र 2 डोलची, बोका।

सेकिमम् [सेक + डिमच्] मूली।

सेक्तृ (वि०) (स्त्री०–त्री) [सिच् + तृच्] सींचने वाला (पु०) 1 छिड़काव करने वाला 2 पंखा।

सेक्त्रम् [सिच् + ष्ट्रन्] डोलची, सींचने का पात्र।

सेचक (वि०) (स्त्री०–चिका) [सिच् + ण्वुल्] सींचने वाला, –क बादल।

सेचनम् [सिच् + ल्युट्] सींचना (वृक्षों को) पानी देना, –वक्षसेचनैः इव धारयसि मे शा० १ 2 स्नान, छिड़काव 3 मन्द मन्द रिसना टपकना 4 डोलची। सम०–घट सींचने का बर्तन।

सेचनी [सेचन + ङीष्] डोलची।

सेटु [सिट + उन्] 1 तरबूज 2 एक प्रकार की ककड़ी।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम।

सेतु [सि + तुन्] 1. मिट्टी का टीला, मेड़ किनारा, ऊँचा मार्ग आदि –नलिनी क्षतसेतुबन्धना जलमयान इवाप्ति विप्लुत कु० ४।९, रघु० १६।२ 2 पुल —वेटेहि पश्यामलयादिभक्तं मन्यंमुना फेनिलमम्बु सैन्यैः क्षणिव रघु० १३।२ सेन्यैरुद्धतरेणुभिर्भुवि ४।३८, १३।७० कु० ७।५३ 3 सीमाचिह्न, मेड़ मनु० ८। २४५ 4 संकुचित मार्ग, दर्रा संकीर्ण गिरिपथ 5 ह्रद, सीमा 6 जगत् परिसीमा, किसी प्रकार का अवरोध –तूणे मन्त्रवर्णाश्च भिद्येरन् सर्वसेतवः सुभा० 7 निश्चित नियम या विधि, सर्वसम्मत प्रथा 8 'आम' पवित्र अक्षर मन्त्रादि का प्रणव सेतुस्त्वसेतु प्रणव स्मृत। सर्वत्रैवानाकृत पूर्व परस्माच्च विदीयते। शब्दरत्ना० । सम०–बन्ध 1 पुल का निर्माण नवारा की रचना यथाशास्त्र कि वनिताविलासो जले यत्ने कि खलु सेतुबन्ध सुभा० कु० ४।६ 2 लैंक प्रायद्वीप का रामेश्वर समुद्रतट की दक्षिणी सीमा से लंका तक फैली हुई है (कहते हैं कि यही वह पुल है जिसे लंकाजय के लिए बनाया था) 3 कोई भी पुल या नवारा, भेदिन् (वि०) 1 बन्धनों को तोड़ने वाला 2 रुकावटों को हटाने वाला (पु०) एक वृक्ष का नाम, हल्दी।

सेतुकः [सेतु + क] 1 समुद्रतट, नवारा, पुल 2. दर्रा।

सेत्रम् [सि + ष्ट्रन्] बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी।

सेदिवस् (वि०) (स्त्री०–सेदुषी) [सद् + लिट् + क्वसु] बैठा हुआ।

सेव्य (वि०) [सह इनेन य० स०] प्रभु बनने, जिसका कोई स्वामी हो, सेना हो।

सेना [सि + न + टाप्, सह इनेन प्रभुणा वा] 1 फौज –सेनाङ्गरिक्षकदस्तव्य हयमेधार्थसाधनम् रघु० ११।९,

2 षडानन के देवता कार्तिकेय की पत्नी सेना, फौज—तु० देवसेना। सम०—अग्रम् सेना का अग्रभाग, °ग सेना का नायक या सेनापति, अङ्गम् सेना का संघटक भाग (यह गिनती में चार हैं हस्त्यश्वरथ-पादाः सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्),—अर. 1 सैनिक 2 अनुचरवर्ग, निवेश सेना का शिविर रघु० ५। ४१, नी (पु०) 1 सेना का नायक, सेनापति, सेना-ध्यक्ष सेनानीनामहं स्कन्दः भग० १०।२४, कु० २।५१ 2 कार्तिकेय का नाम अथैनमद्रेस्तनया शुशाच सेनान्यमालोढ़मिवासुरास्त्रैः रघु० २।३७, पति. 1 सेना का नायक 2 कार्तिकेय का नाम परिच्छद (वि०) सेना से घिरा हुआ (रघु० ११।१ में सेना-परिच्छदः' कभी कभी एक ही शब्द समझा गया और तदनुकूल ही अर्थ किया गया, परन्तु इनको अलग-अलग दो शब्द समझना ज्यादह अच्छा है), पृष्ठम् सेना का पिछला भाग, भङ्ग सेना का भग्न हो जाना, सेना का तितर-बितर होना अन्यवस्थित रूप से इधर उधर भागना, मुखम् 1 सेना का एक दस्ता या भाग 2 विशेषतः वह दस्ता जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हों 3 नगर फाटक के बाहर बना मिट्टी का टीला, योग. सेना की सुसज्जा, रक्षः पहरेदार, सन्तरी।

सेकः [सिच्+क] पुरुष का लिंग तु० 'शेफ'।

सेचनी [सिच्+ल्युट्+ङीप्] सफेद गुलाब सेवली।

सेर (पु०) एक विशेष माप, सेर का बट्टा, (लीलावती इसकी परिभाषा की है पादोनगद्याणकतुल्यटङ्कैर्द्विसप्त-तुल्यैः कथितोऽत्र सेरः)।

सेरभ (पु०) दुग्ध के समान श्वेत रंग का घोड़ा।

सेव (वि०) [सिव्+क] बोने वाला, सीने वाला।

सेव् (भ्वा० पर० सेवति) जाना, हिलना-डुलना।

सेव् (भ्वा० आ० सेवते, सेवित, प्रेर० सेवयति ते, इच्छा० सिसेविषते नि, परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सेव का स् बदल कर प्रायः मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1 सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना —प्रायो भृत्यारतञ्जन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमाना मुद्रा० ४।२१, या, ऐश्वर्यादनपतमीश्वरमपि लोको° भर्तृ सेवते १।४ 2 अनुगमन करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 उपयोग में लाना, उपभोग करना किं सेव्यते सुमनसा मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजनन-शक्तिभृता मृगेण रस० 4 शारीरिक सुखोपभोग करना—भामि० १।११८ 5 अनुराग करना, अनुष्ठान करना मनु० २।१, कु० ५।३८, रघु० १७।४९ 6 सहारा लेना, आश्रित होना, रहना, बार-बार आना जाना, बसना,—तप्त वारि विहाय शीतसलिलां कारण्डवः सेवते—विक्रम० २।२३, पंच० १।९ 7 पहरा देना, रखवाली करना, रक्षा करना, आ—, उपभोग करना यद्गामुरन्विष्टमृगं किरातैरासेव्यते सिन्ध-शिलाशिखिवर्हं कु० १।१५, प्रजातमासेवमानां सिष्ठति - मालवि० १ 2 अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3 सहारा लेना, उप —, 1 सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० ४।१३३ 2 अभ्यास करना, अनुसरण करना, ध्यान देना, पीछा करना 3. व्यस्त होना, उपभोग करना—भग० १५।९ 4 (किसी स्थान पर) नित्य जाना, बसना 5 मरना, मालिश करना, नि—, पीछा करना, अनुसरण करना, मसलना, अभ्यास करना - श० १।२७ 2 उपभोग करना निषेवते प्रशस्तमना विविक्तम्—श० ५।५ कु० १।६ 3 शारीरिक सुखोपभोग करना—यथा यथा नामरसेक्षणया मया पुनः सङ्गम लिप्सया विना भामि० २।१५५ 4. सहारा लेना, बसना, नित्य आना-जाना—कु० ५। ७६ 5 उपयोग में लाना, काम में लाना विधिना निषेवितमपक्रियया समर्पयति सर्वमिति सत्यमेव —शि० २।६८ 6 सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7 नजदीक जाना, पहुँचना 8 भुगतना, अनुभव करना, परि- , 1 सहारा लेना 2 उपभोग करना, लेना।

सेव दे० 'सेवन'।

सेवक (वि०) [सेव्+ण्वुल्] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2 व्यवसाय करने वाला, अनुगामी 3 आश्रित, दास,—क 1 टहलुआ, - श्रित सेवया धनमिच्छन्ति सेवकं पण्य कि कृतम्। स्वातन्त्र्य यच्छरीरस्य मृद्दस्तदपि हारितम्—हि० २।२० 2 भक्त, पूजक 3 सीने वाला, दर्जी 4 ओरा, पैसा।

सेवधि (अव्य०) दे० 'शेव' के अन्तर्गत 'शेवधि'।

सेवनम् [सेव्+ल्युट्] 1 सेवा करना, सेवा हाजरी में खड़े रहना, पूजा करना—पात्रीकृतात्मा गुरुसेवनेन —रघु० १८।३० 2. अनुगमन करना, अभ्यास करना, काम में लगाना मनु० १२।५२ 3. उपयोग करना, उपभोग करना 4 शारीरिक सुखोपभोग करना —एकरात्रेण वृषली सेवनाद्द्विज —मनु० ११। १७९ 5. सीना, टाँका लगाना 6 ओरा, पैसा।

सेवनी [सेवन+ङीप्] 1. सुई 2. सीवन, सन्धिरेखा 3 सधि या सीवन की भाँति शरीर के अंगों का संधान।

सेवा [सेव्+अङ्+टाप्] 1. परिचर्या, शिष्यवृत्ति, दासता, टहल सेवा लाघवकारिणी कृतधिय स्वामिनं स्वयमुपैति विद्वान्—मुद्रा० ३।१४, हीनसेवा न कर्तव्या हि० ३।११ 2 पूजा, अर्चाविधि, सम्मान 3 संलग्नता,

भक्ति, चाव 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5 बार बार आना—जाना, आश्रय लेना 6 चापलूसी, बहकाना, चिकने चुपड़े शब्द अल सेवया मध्यस्थता गृहीत्वा मण—(मालवि० ३ । सम० **आकार** (वि०) दासता के रूप में—विक्रम० ३।१, **काकु** सेवा में आवाज में परिवर्तन (यह विक्रम० ३।१ में 'सेवाकारा' शब्द का रूपान्तर है), **धर्म** 1 सेवा करने का कर्तव्य सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य—पच० १।२८५ 2 सेवा का दायित्व,—**व्यवहार** सेवा की विधि या प्रथा ।

सेवि (नपु०) [सेव्+इन्] 1 बेर 2 सेव ।

सेवित (भू० क० कृ०) [सेव्+क्त] 1 सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2 अनुगत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3 जहाँ नित्य-प्रति आया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (लोग) बसे हुए हों, जहाँ संगी-साथी हों 4 उपभुक्त, उपयुक्त,—तम् 1 सेव 2 बेर ।

सेवितृ (पु०) [सेव्+तृच्] सेवक, दास ।

सेविन् (वि०) [सेव्+णिनि] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2 अनुगन्ता, अभ्यासी, उपयोक्ता 3 बसने वाला, रहने वाला, (पु०) सेवक ।

सेव्य (वि०) [सेव्+ण्यत्] 1 सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2 उपयोग में लाने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3 उपभोग किए जाने के योग्य 4 देख-भाल किए जाने के योग्य, पहरा दिए जाने के योग्य,—**व्य** 1. स्वामी (विप० सेवक),—**भय** तावत्से-व्यावभिनिविशते सेवकजनम्—मुद्रा० ५।१२, पच० १।४८ 2 अश्वत्थवृक्ष, **व्यम्** एक प्रकार की जड़ । सम०—**सेवकौ** (पु०, द्वि० व०) स्वामी और नौकर ।

सं (म्वा० पर०—सायति) बर्बाद होना, क्षीण होना, नष्ट होना ।

सैंह (वि०) (स्त्री० ही) [सिंह+अण्] सिंह से सबद्ध, सिंह सम्बन्धी—क्षुत्ति सैंही कि श्वा घृतकनक—मालोऽपि लभते हि० १।१७५ ।

सैंहल (वि०) [सिंहल+अण्] लंका सम्बन्धी, लंका में उत्पन्न, या लंका में होने वाला ।

सैंहिक., –सैंहिकेयः [सिंहिक+अण्, सिंहिका+ढक्] राहु का मातृ परक नाम ।

सैकत (वि०) (स्त्री० ती) [सिकता सन्यत्र अण्] 1 रेत युक्त या रेत से बना हुआ, रेतीला, ककरीला —तोयस्यैवाप्रतिहततरस्य सैकत सेतुबंध -उत्तर० ३।३६ 2 रेतीली भूमि वाला, **तम्** रेतीला तट —सुरगज इव गात्र सैकत सुप्तनीक रघु० ५।७५, ५।८, १०।६९, १३।१७, ६२, १६।७६, १६।२१, कु० १।२९, श० ६।१७ 2 रेतीले तटों वाला द्वीप 3 किनारा या होप । सम० **हृदयम्** अधरक ।

सैकतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सैकत+ठन्] 1 रेतीले तट से सबन्ध रखने वाला 2 चट-बट होने वाला, तरंगित सन्देह की अवस्था में रहने वाला, सन्देहजीवी, —क 1 साधु 2 सन्यासी, **कम्** मंगलसूत्र जो सौभाग्यशाली बनने के लिए कलाई में बांधा जाता है या कंठ में पहना जाता है ।

सैद्धान्तिक (वि०) (स्त्री० की) [सिद्धान्त+ठक्] किसी सिद्धान्त या प्रदर्शित सत्य से सम्बन्ध रखने वाला 2 जो वास्तविक सचाई को जानता है ।

सैनाधत्यम् [सेनापति+ष्यञ्] किसी सेना का सेना पतित्व सेनाध्यक्षता कु० २।६१ ।

सैनिक (वि०) (स्त्री० की) [सेना या समवैति ठक्] 1 सेनासम्बन्धी 2 फौजी, —क 1 सिपाही पयान भूमौ सह सैनिकाश्वभि रघु० ३।६१ 2 पहरेदार, संतरी 3 सामरिक व्यूह में व्यवस्थित सैन्यसमूह —रघु० ३।५७ ।

सैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भव अण्] 1 सिंधु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2 सिंधु नदी सबन्धी 3 नदी में उत्पन्न + समुद्र सबन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—**व** 1 घोड़ा, विशेषत वह जो सिंधु देश में पला हो—नै० १।७१ 2 एक ऋषि का नाम, **वम्** एक प्रकार का सेंधा नमक —**वा** (पु०, द० व०) सिंधु प्रदेश के अधिवासी । सम०—**अम्ल** नमक का ढेला, —**शिला** एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला नमक ।

सैन्धवक (वि०) (स्त्री०—की) [सैंधव+कन्] सैंधव सम्बन्धी, **क.** सिंधु देश का कोई आपद्ग्रस्त व्यक्ति जिसकी दशा दयनीय हो ।

सैन्धी (स्त्री०) एक प्रकार की मादरा (सम्भवत वह जो ताड़ के रस में तैयार की गई हो) नाड़ी

सैन्यः [सेनाया समवैति ण्य] 1 सैनिक, सिपा. शि० ५।२८ 2 पहरेदार, संतरी, **न्यम्** सेना, सेना की टुकड़ी—न प्रतस्थेऽरिनाशाय हरिसैन्यैरनुद्रुत -रघु० १२।६७ ।

सैमन्तिकम् [सीमन्त+ठक्] सिंदूर ।

सैरन्ध्र, सैरिन्ध्र [सीर हल चरति—सीर+घ्र+क, सम —सीरन्ध्र कृषक तस्येदं शिल्पकर्म सीरन्ध्र+अण पक्षे इत्वम्] 1 चरवाह, नौकर, किंकर 2 एक मिश्र जाति, दस्यु जाति के पुरुष तथा अयोगव जाति की स्त्री में उत्पन्न सन्तान—सैरिन्ध्र वामुराबृत्ति मृगा दस्यूरयोगवे मनु० १०।३२ ।

सैरन्ध्री, सैरिन्ध्री [सैर (वि) ध्र+ङीष्] 1 दासी या सेविका जो अन्तःपुर में काम करे (सैरन्ध्र 2 में

वर्णित मिश्र जाति की स्त्री) 2 स्वतन्त्र स्त्री जो शिल्पकारिणी के रूप में दूसरे के घर आकर काम करे 3 द्रौपदी का विशेषण (अज्ञात वास में विराट् की पत्नी सुदेष्णा की सेवा करते समय द्रौपदी ने यह नाम रख लिया था)।

सैरिक (वि०) (स्त्री० की) [सीर+ठक्] 1 हल-सम्बन्धी 2 खेती से युक्त, -कः 1 हल में चलने वाला बैल 2 हाली, हलवाहा।

सैरिभ [सीरे हले नियुक्तः इव सूरत्वात्, सक० पर०, सीर+इभ्+अण्] 1 भैंसा—अवमानित इव कुलीनो दीर्घं निःश्वसिति सैरिभ —मृच्छ० ४ 2 इन्द्र का स्वर्ग।

सैवाल दे० 'शैवाल'।

सैसक (वि०) (स्त्री० की) [सीमक+अण्] सीमे का बना हुआ, सीमा सम्बन्धी।

सो (दिवा० पर० स्यति सित, प्रेर० साययति ते, इच्छा० सिषासति, कर्मवा० सीयते · इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सो के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1 बध करना, नष्ट करना 2 समाप्त करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, अव —, 1 समाप्त करना, पूरा करना —युष्मन्नियोगविसिते क्रियाविधौ रघु० ११।३७, अवसितमण्डनासि—शि० ४।२ नष्ट करना 3 जानना, भट्टि० १९।२० 4 विफल होना, किनारे पर होना (अक०)—शक्तिर्मामवसीदति होमयज्ञे—कि० १६।१७, अभि 1 संकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना कथमिदानीं दुर्जनवचनादध्यवसितं देवेन उत्तर० १,' अभिधातुमध्यवसतो न गिरा—शि० २।७६, 2 प्रयास करना दायित्व लेना, सम्पन्न करना या साहसमध्यवस्य, दश० वक्तुं सुकरमध्य नाम दुष्करम् वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 3 दृढ़ निश्चय करना 4 सोचना, विचार करना पर्यव 1 पूरा करना, समाप्त करना 2 निर्धारित करना, संकल्प करना 3 परिणाम होना, घट जाना, समाप्त हो जाना एष एव समुच्चय सद्यौगेऽसद्योगे सदसद्योगे च पर्यवस्यतीति न पृथक् लक्ष्यते काव्य० १० 4 नष्ट होना, खो जाना क्षीण होना 5 प्रयत्न करना, व्यव—1 जोर लगाना, हाथ पाँव मारना, कोशिश करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, आरम्भ करना —ध्रुवं स लोलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति श० १।१८ 2 चिन्तन करना, कामना करना, चाहना-पानं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या—श० ४।९, 3 लगातार चेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4 संकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—श० ५।१८ 5 स्वीकार करना, दायित्व लेना कल्पिस्तौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे मेघ० १४८ 6 करना, सम्पन्न करना 7 विश्वास करना, विश्वस्त होना, प्रतीत होना 8 विचार-विमर्श करना, समव निर्णय करना, आदेश देना मनु० ७।१३।

सोढ (भू० क० कृ०) [सह्+क्त] सहन किया गया, भुगता गया, बर्दाश्त किया गया, झेला गया · आदि दे० 'सह्'।

सोढृ (वि०) (स्त्री०—ढ्री) [सह्+तृच्] 1 सहनशील बर्दाश्त करने वाला, सहिष्णु 2 शक्तिशाली, समर्थ।

सोत्कंठ, सोत्कण्ठ (वि०) [सह उत्कण्ठेन, उत्कण्ठया वा ब० स०] 1 अत्यन्त उत्सुक, अतीव आतुर, आकुल, यथा —'सोत्कण्ठमालिंगनम्' 2 खिन्न 3 शोकाकुल, खिन्नमान, —ठम् (अव्य०) 1 अत्यन्त उत्सुकता के साथ, बड़ी उत्कण्ठा के साथ, प्रतिदिशेव बलाकया सगर्भमं सोत्कण्ठमालिङ्गित मृच्छ० ५।२२ 2 खेदपूर्वक, दुःखपूर्वक।

सोत्प्रास (वि०) [सह उत्प्रासेन—ब०स०] 1 अन्यथित 2 अतिशयोक्तिपूर्ण 3 व्यंग्यात्मक, व्यंगपूर्ण,—स० दुहास,—सः,—सम्, व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति, व्यंगोक्ति, व्यंगवचन, तु० व्याजस्तुति।

सोत्साह (वि०) [उत्साहेन सह-ब०स०] उत्साहयुक्त उछाह भरा, हर्षपूर्ण।

सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन—ब०स०] प्रबल, सक्रिय, उत्साही, धीर,—हम् (अव्य०) फूर्ती से उत्साह पूर्वक, सावधानी से।

सोत्सुक (वि०) 1 खिन्न, अन्यमने वाला आतुर शोकान्वित 2 उत्कण्ठित, लालायित।

सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन ब०स०] उन्नत, उग्र, ऊँचा, उत्तुंग मालत्यै स्कन्धदेशं मुद्रा० ४।७।

सोदर (वि०) [सहोदर यत्] सहोदर भाई, सगा भाई (आलं० से भी)—भ्रातुः सोदर्यमाख्यानमिश्रजिदुचकोचिन — रघु० १५।२६, अवज्ञासोदर्यं दारिद्र्यम् दश०।

सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन ब०स०] प्रबल उद्योग करने वाला परिश्रमी सक्रिय, धीर मेहनती।

सोद्वेग (वि०) [सह उद्वेगेन ब०स०] 1 आतुर, आशंकालु 2 शोकान्वित —गम् (अव्य०) आतुरता के साथ, उतावलेपन में उत्सुकतापूर्वक।

सोन्माद [सु विच्+सो, न्मद्+क नद्] लहसुन।

सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन—ब०स०] पागल, दीवाना, आपे से बाहर अविचिन्तित।

सोपकरण (वि०) [सह उपकरणेन—ब०स०] सब प्रकार

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, सज्जित रूप से सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपकार'।

सोपद्रव (वि०) [सह उपद्रवेण ब०स०] संकट और उपद्रवों से युक्त।

सोपधि (वि०) [सह उपधया ब०स०] जालसाजी और धोखे से भरा हुआ, कपटपूर्ण।

सोपधि (वि०) [सह उपधिना ब०स०] जालसाज, अव्य० कपट के साथ, जालसाजी करके अस्मिन् हि विजयाधिन क्षितीशा विदधति मायाय सन्धिदूषणानि —किरा० १।८५।

सोपप्लव (वि०) [सह उपप्लवेन ब०स०] 1 संकटग्रस्त 2 शत्रुओं द्वारा आक्रान्त 3 ग्रहणग्रस्त (जैसे कि चन्द्र व सूर्य)।

सोपरोध (वि०) [सह उपरोधेन ब०स०] 1 अवरुद्ध, बाधायुक्त 2 अनुगृहीत, धन्य (अव्य०) सानुग्रह, सादर।

सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण—ब०स०] 1 संकटग्रस्त, दुर्भाग्यग्रस्त 2 अनिष्टसूचक 3 किसी भूत प्रेत से आविष्ट 4 उपसर्ग से युक्त (व्या० में)।

सोपहास (वि०) [सह उपहासेन ब०स०] व्यंगपूर्ण हंसी से युक्त उपालम्भपूर्ण, व्यंग्यमय, सम् (अव्य०) उपालम्भपूर्वक, उलाहने के साथ।

सोपाक [=श्वपाक, पृषो०] पतित जाति का पुरुष, चाण्डाल, दे० मनु० १०।३८।

सोपाधि (वि०) **सोपाधिक** वि०) (स्त्री०—की) [सह उपाधिना—ब०स०, पक्षे कप्] 1 किसी शर्त या सीमा से प्रतिबद्ध, विशिष्ट लक्षणों से युक्त, सीमित, मर्यादित विशिष्ट (दर्शन० में) 2 विशिष्ट विशेषण से युक्त।

सोपानम् [उप+अन्+घञ्=उपान उपरिगतिः सह विद्यमान उपान येन ब०स०] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा, जीना, सीढ़ी—आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३०; मेघ०—पद्धति (स्त्री०), —पथ, पद्धति (स्त्री०), परम्परा, मार्ग सीढ़ी, जीना यापी चास्मिन् मरकतशिला-बद्धसोपानमार्गा मेघ० ७६, समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये नवान सोपानपरम्परामिव—रघु०३।१०, ६।३, १६।५६।

सोम [सू+मन्] 1 एक पौधे का नाम, प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि 2 सोम' नामक पौधे का रस—जैसा कि सोमया तथा सोमपीथिन शब्दों में 3 अमृत, देवताओं का पेय पदार्थ 4 चन्द्रमा (पुराणों में चन्द्रमा को अत्रि ऋषि की आँख से उत्पन्न होने वाला वर्णन किया गया है (तु० रघु० ३।३५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि समुद्रमन्थन के अवसर पर चन्द्रमा भी समुद्र से निकला। पुराणों में वर्णित सत्ताईस नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ बतलाई गई हैं, चन्द्रमा की पत्नियाँ कही जाती हैं। चन्द्रमा की कलाओं के पाक्षिक क्षय की घटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा की अमृतमयी कलाओं को विविध देवताओं ने बारी बारी से पी लिया, इसी प्रसंग में एक और कथा का भी आविष्कार किया गया है जिसमें बतलाया गया है कि चन्द्र (रोहिणी (दक्ष की २७ कन्याओं में से एक) पर विशेष रूप से अनुरक्त था, अतः उसके श्वसुर दक्ष ने इसे 'क्षयरोग से ग्रस्त होने का शाप दे दिया, बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पड़ने पर यह शाप सीमित कालावधि (पाक्षिक) में बदल दिया गया। यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया उससे चन्द्रमा का बुध नामक एक पुत्र पैदा हुआ। यही बुध बाद में राजाओं के चन्द्रवंश का प्रवर्तक हुआ, (द० गाथा (ख. भी) 5 प्रकाश की किरण 6 कपूर 7 जल 8 वायु हवा 9 कुबेर 10 शिव 11 यम 12 (भगण के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मुख्य, प्रधान, उत्तम जैसा कि नृसोम' में,—अम् 1 चावलों की कांजी 2 आकाश, गगन। समः अभिषव सोमरस का पीसना,—अह्न् सोमवार,—आख्यम् लाल कमल, ईश्वर शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा सोमनाथ, —उद्भवा नर्मदा नदी रघु० ५।५१ (यहाँ मल्लि० ने अमर० का उद्धरण दिया है 'रेवातु नर्मदा सोमोद्भवा')। कान्त चन्द्रकान्त मणि, क्षय चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, गृह सोमरस रखने का पात्र, -ज (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न (—ज) बुधग्रह का विशेषण, (—जम्) दूध, द्वारा आकाश, गगन,—नाथ प्रसिद्ध 'शिव लिंग' या वह स्थान जहाँ यह प्रतिमा स्थापित की गई है (इसी प्रतिमा की अतुल धनराशि व वैभव ने गजनी के मोहम्मद गोरी को आकृष्ट किया, जिसने १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और उसके खजाने को उठा कर ले गया)—नेया मार्गं परिचयवशादङ्गिन गुर्जरीणां य सल्लाप विधिवमकरात् सोमनाथ विलोक्य ॥ विक्रमांक० १८।८७ —प,—पा (पुं०) 1 सोमपायी 2 सोमयाजी 3 पितरों का विशेष समूह, -पति इन्द्र का नाम, —पानम् सोमरस का पीना, पायिन्,- पीथिन् (पुं०) सोमरस को पीने वाला, तत्र केचित् सोमपीथिन उदुम्बरशाखानो ब्रह्मवादिन प्रतिवसन्ति स्म मा० १, पुत्र,- सू सुतः बुध के विशेषण, —प्रवाक सोमयज्ञ के पुरोहितों को वरण करने वाला, बन्धुः कुमुद, —यज्ञः, याग सोमपुत्र,—वल्लिः एक प्रकार का पीला और सुगन्धित चन्दन —वेधः, क्रियाओं का

एक विशेष राग, लता बल्लरी 1 साम का पौधा 2 गोदावरी नदी, वंश चंद्र द्वारा स्थापित राजाओं का चन्द्रवंश, वार, वासर सोमवार, विक्रयिन् (पु०) सोमरस विक्रेता, वृक्ष, सार. सफेद खैर का वृक्ष, शकला एक प्रकार की ककड़ी,—सवन कर्म०, सव (पु०) पितरों का विशेषवर्ग मनु० ३।१९५, सिन्धु. विष्णु का विशेषण, सुत् (पु०) सोमरस खींचने वाला, सुता नर्मदा नदी तु० सोमोद्भव, सूत्रम् शिव लिंग के स्नान का जल निकलने की नाली, प्रदक्षिणा शिवलिंग की इस तरह परिक्रमा करना कि नाली लांघनी न पड़े।

सोमल (पु०) [सु + मलिन्] चन्द्रमा।

सोमिन् (वि०) (स्त्री० नी) [साम + इनि] सामयज्ञ का अनुष्ठान करने वाला,—(पु०) सामयज्ञ का अनुष्ठाता।

सोम्य (वि०) [साम यत्] 1 साम के योग्य 2 सोम की आहुति देने वाला 3 आकृति में साम से मिलता-जुलता 4 मृदु, सुशील मिलनसार।

सोल्लुण्ठ, सोल्लुण्ठनम् [उल्लुण्ठेन उल्लुण्ठेन वा सह - ब० स०] व्यंग, ताना, चुटकी ठम्, नम् (अव्य०) व्यंग्यपूर्वक, ताने के साथ - उत्तर० ५।

सोष्मन् (वि०) [सह उष्मणा ब० स०] 1 गरम, तप्त 2 (व्या० में) ऊष्मा सहित (पु०) ऊष्मवर्ण।

सौकर (वि०) (स्त्री० री) [सूकर + अण्] सूअरसंबंधी, सूअर का कि० १।५३।

सौकर्यम् [सु (सु)कर + ष्यञ्] 1 सूअरपना 2 आसानी, सुविधा सौकर्यं च कार्यस्यानायासेन सिद्धया साध्यसिद्धया च बोध्यम् 3 क्रियात्मकता, सुकरता 4 निपुणता, कुशलता 5 किसी भोज्यपदार्थ या औषधि की सरल तैयारी।

सौकुमार्यम् [सुकुमार + ष्यञ्] 1 मृदुता, सुकुमारता, कोमलता —शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्या बाहू तदीयावितिं वितर्क कु० १।८१ 2 अवस्था।

सौक्ष्म्यम् [सूक्ष्म + ष्यञ्] बारीकी, महीनपना, सूक्ष्मता।

सौखशायनिक, सौखशायिक [सुखशयन पञ्चम्यां सुखशय (न) - ठक्] वह पुरुष जो किसी पुरुष से उसके सुखपूर्वक सोने की बात पूछे - भृत्यादीननुमृज्यन्त सौखशायनिकानरीन् रघु० १०।१६।

सौखसुप्तिक [सुखसुप्तिं सुप्तेन शयन पृच्छति-ठञ्] 1. किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का हाल पूछने वाला 2 चारण, भाट, बन्दी (इसका कार्य राजा या अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति को स्तुतिपाठ द्वारा जगाने का होता है)।

सौखिक (वि०) (स्त्री० की), **सौख्य** (वि०) (स्त्री० ख्यी) [सुख + ठक्, छण् वा] सुखसम्बन्धी, आनन्ददायक, हर्षप्रद।

सौख्यम् [सुख + ष्यञ्] सुख, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा, आनन्द।

सौगत: [सुगत + अण्] बौद्ध (बुद्ध या सुगत का अनुयायी) (बौद्धों के चार बड़े सम्प्रदाय हैं—माध्यमिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक)—सौगतजरत्परिव्राजकायास्तु कामन्दक्या प्रथमां भूमिका भाव एवावगीते मा० १।

सौगतिक: [सुगत + ठक्] 1 बौद्ध 2 बौद्धभिक्षु 3 नास्तिक, पाखंडी, अविश्वासी, कम् अविश्वास, पाखंडधर्म, नास्तिकता, अनीश्वरवाद।

सौगन्ध (वि०) (स्त्री०—धी) [सुगन्ध + अण्] मधुरगन्ध-युक्त, सुगन्धित, धम् 1 मधुरगन्धता, सुवास 2 एक प्रकार का सुगन्धित तृण, कतृण।

सौगन्धिक (वि०) (स्त्री० का—की) [सुगन्ध + ठन्] मधुरगन्ध वाला, सुगन्धित, क. 1 गन्ध द्रव्यों का विक्रेता, गन्धी 2 गन्धक, कम् 1 सफेद कुमुद 2 नील कमल 3 एक प्रकार का सुगन्धित घास, कतृण 4 लाल।

सौगन्ध्यम् [सुगन्ध + ष्यञ्] गन्धमाधुर्य, सुगन्ध, सुवास।

सौचि-, सौचिक [सूचि + इञ्, ठक्] दर्जी मनु ४।२१८ पर कुल्लूक।

सौजन्यम् [सुजन + ष्यञ्] 1 नेकी, कृपालुता, भलाई उत्तर० ३।१३, मुच्छ० ८।३८ 2 महिमा उदारता 3 कृपा, करुणा, अनुकम्पा 4 मित्रता, सद्भाव, प्रेम।

सौण्डी [शुण्डा तदाकारोऽस्ति अस्या शुण्डा - अण् + ङीप् पृषो०] गजपीपल।

सौति [सूत + इञ्] कर्ण का नामान्तर।

सौत्यक [सूत + ष्यञ्] सारथि का पद,—नल० ४।९।

सौत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [सूत्र + अण्] 1 धागे या डोरी से संबंध रखने वाला 2 सूत्रसंबंधी, सूत्र में वर्णित, सूत्र में निर्दिष्ट क्रः 1 ब्राह्मण 2 कृत्रिम धातु जो केवल सूत्रों में वर्णित है, नियमित धातुओं की भांति उसकी रूपरचना नहीं होती, यौगिक शब्दों के निर्माण में ही उसका उपयोग होता है।

सौत्रान्तिका (पु० ब० व०) बौद्धों के चार सम्प्रदायों में से एक, तु० 'सौगत'।

सौत्रामणी [सुत्रामा इन्द्रो देवता अस्या - सुत्रामन् + अण् + ङीप्] पूर्वदिशा चकोरनयनाकृष्णा भवति दिक् च सौत्रामणी विक्र० ४।१।

सौदर्यम् (नपु०) [सोदर + ष्यञ्] भ्रातृत्व, भ्रातृपना।

सौदामनी, सौदामिनी [सुदामा पर्वतभेद तेन एका दिक् सुदामन् + अण् + ङीप्, पक्षे पृषो० साधु] बिजली, सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीम् मेघ० ३९, सौदामिनीव जलदोदर मण्डितेना मृच्छ० १।३५।

सौदायिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुदाय+ठक्] स्त्रीधन, कन्या के विवाह के अवसर पर जो धन उसके माता पिता या सम्बन्धियों द्वारा उसे दिया जाता है, और जो उसकी निजी सम्पत्ति हो जाता है, कन्या दाय या स्त्रीधनसम्बन्धी।

सौध (वि०) (स्त्री०—धी) [सुधया निर्मितं रक्तं वा अण्] 1 अमृतमय, अमृतसम्बन्धी 2. पलस्तर से युक्त, या चूने से पुता हुआ,—क्लम् 1 वह भवन जिसमें सफ़ेदी की हुई है, सुधालिप्त, पलस्तरदार 2. विशालभवन, महल, बड़ी हवेली सौधनासमुट्टङ्गैः विस्तृत सन्धिकाय फलनिःस्पृहस्तप रघु० १९।२, ७।५, १३।४० 3 चाँदी 4 चूनेका पत्थर। सम०—कार 1 पलस्तर करने वाला 2 मकान बनाने वाला, वासः महल जैसा भवन।

सौन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूना+अण्] कसाईपने या कसाईखाने से सम्बन्ध रखने वाला,—क्लम् कसाई के घर का मांस। सम० धर्म्यम् घोर जघन्य की अवस्था।

सौनन्दम् [सुनन्द+अण्] बलराम का मूसल।

सौनन्दिन् (पु०) [सौनन्द+इनि] बलराम का विशेषण।

सौनिक [सूना+ठक्] कसाई, तु० 'शौनिक'।

सौन्दर्यम् [सुन्दर+ष्यञ्] सुन्दरता, मनोहरता, लावण्य, लालित्य—सौन्दर्यसारसमुदायनिकेतन वा—मा० १।२१, कु० १।४४, ५।४१।

सौपर्णम् [सुवर्ण+अण्] 1 सुश्रुत अदरक, सोंठ 2 मरकत।

सौपर्णेय [सुपर्णी. विनतायाः अपत्यम् सुपर्णी+ढक्] गरुड का विशेषण।

सौप्तिक (वि०) (स्त्री० की) [सुप्ति+ठक्] 1 निद्रासम्बन्धी 2 निद्राजनक, कर्म रात का आक्रमण, सोते हुए पर हमला। सम०—पर्वन् (नपु०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृप और कौरवसेना के बचे हुए योद्धाओं ने रात को पाण्डवशिविर पर आक्रमण कर हजारों सोते हुए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया,—वधः (उपवर्णन) पाण्डवशिविर के सैनिकों का रात में संहार मार्गो द्रोण नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रोणिना मृच्छ० ३।११।

सौबलः [सुबल+अण्] शकुनि का नामान्तर।

सौबली, सौबलेयी [सौबल+ङीष्, सुबला+ढक्+ङीष्] धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी।

सौभम् [सुष्ठु सर्वतो लोके भाति सु+भा+क+अण्] हरिश्चन्द्र का नगर (कहते हैं कि यह नगर अन्तरिक्ष में लटक रहा है)।

सौभगम् [सुभग+अण्] 1 अच्छा भाग्य, सौभाग्य 2 समृद्धि, धन, दौलत।

सौभद्र **सौभाद्र** [सुभद्रा+अण्, ढक् वा] सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का विशेषण।

सौभागिनेय [सुभगा+ढक्, इनङ्, द्विपदवृद्धिः] सबसे प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्यम् [सुभगायाः सुभगस्य वा भावः ष्यञ्, द्विपदवृद्धिः] 1 अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत, सौभाग्यशालिता (मुख्यतः इसमें पति-पत्नी का पारस्परिक अभ्युदय प्राप्त करना, तथा एक दूसरे के प्रति दृढ़ भक्ति का होना पाया जाता है)—विद्यु सौभाग्यफलां हि चारुतां कु० ५।१, सौभाग्यं च सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती मेघ० २२, (दोनों स्थानों में 'सौभाग्य' शब्द पर मल्लि० के विपरीत देखो) 2 स्वर्गीय सुख 3 सौन्दर्य लावण्य लालित्य, —(यस्य) प्रिय न सौभाग्यविलोपि जायते कु० १।३, रघु० ५।२५, १७।१९ उत्तर० ५।२७ 4 आभा उदयन्ता 5 अभिज्ञान (विप० वैधव्य) 6 बधाई मल्लिकामोद् 7 सिंदूर 8 महागा। सम० —चिह्नम् 1 अच्छे भाग्य का चिह्न अच्छा किस्मत का चिह्न 2 अभिज्ञान का चिह्न (जैसे कि मस्तक पर सिंदूर का तिलक), तन्तु (वह सूत जो विवाह में वर द्वारा कन्या के गले में बाँधा जाता है और जिसे स्त्री विधवा होने तक पहनती है) विवाहसूत्र, मङ्गलसूत्र —तृतीया भाद्रपद शुक्ला हरितालिका, तीज, देवता उमादेवता 2 अभिभावक देवता, —दायनम् [भाग्यस्य वा अभ्युदयस्य दायनम्] बधाई या बधावा।

सौभाग्यवत् (वि०) [सौभाग्य+मतुप्] 1 जिसका पति जीवित हो, शुभ, सौ विवाहित स्त्रियों में जिसका पति जीवित है विवाहित सधवा स्त्री।

सौभिक [सोभ कामचारिणः संग्रामाणः आयुधम् शस्त्रम्+ठक्] आयुधों से युद्ध करने वाला।

सौभ्रात्रम् [सुभ्रातृ+अण्] अच्छा भाईचारा, बढ़िया भ्रातृत्वभाव दि० [सौभ्रात्रमथो] रघु० १६।१ १७।८।

सौमनस (वि०) (स्त्री० सी या सौ) [सुमनस+अण्] 1 मनोहारक, सुखद 2 पुष्पसम्बन्धी पुष्पीय, —सम् 1 कृपालुता, दयालुता, दया 2 आनन्द, सन्तोष।

सौमनसा [सौमनस+टाप्] आकाशगङ्गा का सितारा।

सौमनस्यम् [सुमनस एव स्वार्थे ष्यञ्] मन का सन्तोष, आनन्द प्रसन्नता रघु० १५।५४ १७।८० 2 श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को दिया गया फल या उपहार।

सौमनस्यायनी [सौमनस्य भव+यत्+ङीष्] मालती लता का पौधा।

सौमापन [सोम पक्व+ण] चरु का सितारे के नाम।

सौमिक (वि०) (स्त्री०—की) [सोम+ठक्] 1. सोमरससम्बन्धी, सोमरस से अनुष्ठित यज्ञ 2 चन्द्रमासम्बन्धी।

सौमित्रः, सौमित्रि. [सुमित्रा+अण्, इञ् वा] लक्ष्मण का विशेषण सौमित्रेरपि परिणामविषये तव प्रिये क्वासि भो उत्तर० ३।४५।

सौमिल्लक (पु०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनाम् मालवि० १।

सौमेरुकम् (नपु०) सोना, स्वर्ण।

सौमेरुक [सुमेरु+ठक्] मुनि, ऋषि, अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न।

सौमेरुक (वि०) (स्त्री०-की) [सुमेरु+कञ्] सुमेरु सबंधी, सुमेरु से आया हुआ, या प्राप्त,—कम् सोना, स्वर्ण।

सौम्य (वि०) (स्त्री०-म्या,—म्यी) [सोमो देवतास्य तस्येदं वा अण्] 1 चन्द्र सबंधी, चन्द्रमा के लिए पावन 2 सोम के गुणों से युक्त 3 सुन्दर, सुखद, रुचिकर 4 प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-सरम्भ मैथिलीहास श्रवण-सौम्या निनाय ताम्-रघु० १२।३६, (इसके सबोधन का रूप 'सौम्य' शब्द श्रीमान् जी' 'सम्मान्य' 'भला मानस' अर्थों को प्रकट करता है—प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव—रघु० १४।५९ सौम्येति वाक्याद्य यथार्थवादी —१४।४४, मेघ० ४९, कु० ४।३५, मा० ९।२५ 5 क्रूर —म्य 1 बुधग्रह 2 ब्राह्मण को सम्बोधित करने का सम्मानित विशेषण आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्राभिवादने मनु० २।१२५ 3 ब्राह्मण 4 गूलर का पेड़ 5 लाल होने से पूर्व की दशा में रुधिर लसीका, रक्तोदक 6 अन्नरस जो पेट में जाकर जीवं होकर बनता है 7 पृथ्वी के नौ खण्डों में से एक, (पु० ब० व०) 1 मृगशिरा के पांच नक्षत्रों का पुंज 2 पितृवर्ग विशेष - मनु० ३।१९९। सम०—उपचार शान्त उपाय, मृदु चिकित्सा,—कुसुमः, सुमम् एक प्रकार की धर्म साधना —तु० याज्ञ० ३।३२२, सखी सफेद गुलाब, -ग्रहः शान्त और शुभ ग्रह, धातु कफ, श्लेष्मा, नामन् (वि०) जिसका नाम श्रुतिमधुर हो, सुखद हो —मनु० ३।१०, वार, वासर बुधवार।

सौर (वि०) (स्त्री०-री) [सूर+अण्] 1 सूरज-सम्बन्धी, सौर्य 2 सूर्य का अर्पित या पावन 3 स्वर्गीय, दिव्य 4 मदिरासम्बन्धी, र: 1 सूर्योपासक 2 शनिग्रह 3 सौर्य मास 4 सौर्य दिन 5 तुम्बुरु नाम का पौधा, रम् (ऋग्वेद से उद्धृत) सूर्यसम्बन्धी मन्त्रों का समूह। सम० व्रतम् एक विशेष व्रत जो रविवार को किया जाय, मासः सौर्य मास (जिसमें तीस बार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो), लोकः सूर्य लोक।

सौरथः [सुरथ+अण्] शूरवीर, योद्धा।

सौरभ (वि०) (स्त्री०-भी) [सुरभि+अण्] सुवासित, सुगन्धित 1 सुगन्ध वायु० १।१८, १२१ 2 केसर, जाफरान।

सौरभेय (वि०) (स्त्री०-यी) [सुरभि+ढक्] सुरभि से सम्बद्ध, यः बैल।

सौरभी, सौरभेयी [सौरभ+ङीष्, सौरभेय+ङीष्] 1 गाय 2 'सुरभि' नामक वायु की पुत्री—तौ सौरभेयी सुरभिर्यशोभि —रघु० २।३।

सौरभ्यम् [सुरभि+ष्यञ्] 1 सुगन्ध, सुवास, मधुर-गन्ध—सौरभ्य मुकुलत्वयेऽपि विदितम् मालवि० १।३७, पुनाना सौरभ्यं गया० ४३, रघु० ५।६९ 2 रावकता, सौन्दर्य 3 सदाचरण, प्रसिद्धि, कीर्ति, ख्याति।

सौरसेनाः (पु०, ब० व०) एक प्रदेश और उसके अधिवासियों का नाम, भी दे० शौरसेनी।

सौरसेयः [सुरस+ढक्] स्कन्द का विशेषण।

सौरसैन्धव (वि०) (स्त्री०-वी) [सुरसिन्धु+अण्] आकाशगंगा सम्बन्धी शि० १३।२७, व: सूर्य का घोड़ा।

सौराज्यम् [सुराज्य+ष्यञ्] अच्छा प्रशासन या राज्य एको ययौ वैदर्भप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरः विदर्भान् —रघु० ५।६०।

सौराष्ट्र (वि०) (स्त्री०-ष्ट्री, ष्ट्रा) [सुराष्ट्र+अण्] सौराष्ट्र (सूरत) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहां से प्राप्त, ष्ट्रः सौराष्ट्र प्रदेश, (पु० ब० व०) सौराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी, ष्ट्रम् पीतल, कांसा।

सौराष्ट्रकः [सौराष्ट्र+कन्] एक प्रकार का कांसा, फूल।

सौराष्ट्रिकम् [सुराष्ट्र+ठक्] 1 एक प्रकार का जहर।

सौरिः [सूरस्यापत्यं पुमान् इञ्] 1. शनिग्रह का नाम 2 असन नामक वृक्ष। सम० रत्नम् एक प्रकार का रत्न, नीलम।

सौरिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुर (रा) (सूर)+ठक्] 1 स्वर्गीय, दिव्य 2 मदिरासम्बन्धी, आसवीय 3 मदिरा पर गुजर करने वाला, शुल्क, कः 1 शनि 2. स्वर्ग, वैकुण्ठ 3 कलाल, मदिरा बेचने वाला।

सौरी [सौर+ङीष्] सूर्य की पत्नी।

सौरेय (वि०) (स्त्री०-यी) [सूर+ढक्] 1. सूर्य सम्बन्धी 2 सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त।

सौर्य (वि०) (स्त्री०-र्यी) [सूर्य+अण्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का।

सौलभ्यम् [सुलभ ष्यञ्] 1 प्राप्ति की सुविधा 2. सुकरता, सुलभता, सुगमता।

सौलिकः [सुल्व+ठक्] ताम्रकार, कसेरा।

सौव (वि०) (स्त्री०-वी) [स्व (स्वर्)+अण्] 1. अपनी, निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला 2. स्वर्गीय या स्वर्ग सम्बन्धी,—वम् आदेश, राजशासन।

सौवग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वग्राम+ठक्] अपने निजी गाँव से सम्बन्ध रखने वाला।

सौवर (वि०) (स्त्री० री) [स्वर+अण्] 1 किसी ध्वनि या संगीत के स्वर से संबंध रखने वाला 2 स्वरसम्बन्धी।

सौवर्चल (वि०) (स्त्री०—ली) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश में प्राप्त,—लम् 1 सोवर नमक 2 सज्जी का क्षार, रेह।

सौवर्ण (वि०) (स्त्री० र्णी) [सुवर्ण+अण्] 1 सुनहरी 2 तोल में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर।

सौवस्तिक (वि०) (स्त्री० की) [स्वस्ति+ठक्] आशीर्वादात्मक, कः कुलपुरोहित, या ब्राह्मण।

सौवाध्यायिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्यायसम्बन्धी, स्वाध्यायी।

सौवास्तव (वि०) (स्त्री०—वी) [सुवास्तु+अण्] अच्छे स्थान पर निर्मित, अच्छी वास्तुभूमि में युक्त।

सौविद, सौविदल्ल [सु+विद्+क, अथ मृष्टु विदन्नृप, न लाति—ला+क, अण्] अन्तःपुर की रखवाली पर नियुक्त व्यक्ति शि० ५।१७।

सौवीरम् [सुवीर+अण्] 1 बेर का फल 2 अंजन सुरमा 3 काजी, ए सुवीर देश या वहाँ का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में ब० व०)। सम० -अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन या सुरमा।

सौवीरक [सौवीर+कन्] 1 बेरी, बेर का पेड़ 2 सुवीर देश का अधिवासी 3 जयद्रथ का नाम, -कम् जौ की काजी।

सौवीर्य [सुवीर+ष्यञ्] बड़ा शूरवीरता या विक्रम।

सौशील्यम् [सुशील+ष्यञ्] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, सदाचरण।

सौश्रवसम् [सुश्रवस+अण्] ख्याति, प्रसिद्धि।

सौष्ठवम् [सुष्ठु+अण्] 1 श्रेष्ठता, भलाई, सौन्दर्य लालित्य, सर्वोपरि सौन्दर्य—गर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये विरलनेपथ्यया पात्र्या प्रवेशाज्ञप्तु मालवि० १, शरीरसौष्ठवम् मा० १।१७, 'जिसके शरीर की काटछाँट या टीपटाप अच्छी न हो' 2 परमकौशल, चातुर्य 3 अधिकता 4 लम्बाई, दीर्घता।

सौस्नातिक [सुस्नात+ठक्] स्नान मंगलकारी होने के सम्बन्ध में पूछने वाला सौस्नातिको यस्य भवत्यगस्त्य रघु० ६।६१।

सौहार्द [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र, -दम् हृदय की सरलता स्नेह, सद्भाव, मैत्री (बहुधा) विश्राम्य सौहार्दनिधि सुहृद्भ्य— रघु० १४।१५, सौहार्दहृद्यानि विचेष्टितानि—मा० १।४, मेघ० ११५।

सौहार्दम्, सौहृदम्-दम् [सुहृद्+ष्यञ्, मण् वा, यत् वा] मित्रता, स्नेह यत्सौहृदादपि जना शिथिलीभवन्ति —मृच्छ० १।१३, सखीजनस्ते किम् स्वसौहृदः —विक्रम० १।१०, मा० १।

सौहित्यम् [सुहित+ष्यञ्] 1 तृप्ति, संतुष्टि—शि० ५।६२ 2 पूर्णता, पूर्ति 3 कृपालुता, सद्भावना।

स्कन्द् (स्वा० आ० स्कन्दते) 1 कूदना 2 उठाना 3 उछलना, उगलना।

स्कन्द्। (स्वा० पर० स्कन्दति, स्कन्न) 1 उछलना, कूदना 2 उठाना, ऊपर की ओर उठना ऊपर को उछलना 3 गिरना टपकना भट्टि० २२।११ 4 पार जाना, छलकना 5 नष्ट होना, समाप्त होना—चस्कन्द तपः पतिश्वरम् 6 बिखर जाना, रिसना 7 उगलना डालना,

प्रेर० (स्कन्दयति-ते) 1 उछलना, फैलाना डालना, उगलना (जैसे वीर्यस्खलन)—एक शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित्—मनु० २।१८०, ५।५० 2 छोड़ देना, अवहेलना करना, पास से निकल जाना, अव-, आक्रमण करना, धावा बोलना आँधी की भाँति गरजना

पुरीमवस्कन्द ललोडि नन्दनम् शि० १।५१, आ—, आक्रमण करना, धावा बोलना आस्कन्दन्निलयमणैरत्यकामन्त तं हनम्—भट्टि० १७।८४, परि-, इधर उधर उछलना- मेघनाद परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्लमाश्वरिम्। अवध्नादपरिस्कन्द ब्रह्मपाशेन विष्फुरन् भट्टि० ९।७५, प्र—, 1 आगे को उछलना 2 झपट्टा मारना, आक्रमण करना।

वि (चुरा० उभ० स्कन्दयति-ते) एकत्र करना।

स्कन्द [स्कन्द्+अच्] 1 उछलना 2 पारा 3 कार्तिकेय का नाम सेनानीनामहं स्कन्दः —भग० १०।२४, रघु० २।३६, ७।१, मेघ० ४३ 4 शिव का नाम 5 शरीर 6 राजा 7 नवोनट 8 चतुर पुरुष। सम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,- षष्ठी (स्त्री०) चैत्र मास के छठे दिन कार्तिकेय के सम्मान में पर्व।

स्कन्दक [स्कन्द+ण्वुल्] 1 उछलने वाला 2 सैनिक।

स्कन्दनम् [स्कन्द् ल्युट्] 1 क्षरण, बहना 2 रेचन, पेट का चलना, (आँतों को या गला की) गिजिलना 3 जाना, हिलना-डुलना 4 सूचना 5 ठीक पहुँचा कर रखने का जमाना।

स्कन्न् (चुरा० उभ० स्कन्नयति-ते) एकत्र करना।

स्कन्ध, [स्कन्द्यते आरुह्यतेऽसौ सुखेन शाखया वा कर्मणि घञ्, पृषो०] 1 कंधा 2 शरीर 3 वृक्ष का तना —तीव्राघातप्रतिहतलतस्कन्धलग्नैकदन्त —मा० १।३४, रघु० ४।४७, मेघ० ५३ 4 शाखा या बड़ी डाली 5 मानव-ज्ञान की कोई शाखा या विभाग 6 (किसी पुस्तक का) परिच्छेद, अध्याय खण्ड 7 किसी सेना की टुकड़ी 8 सैनिक समुच्चय समूह 9 ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय 10 (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पाँच तत्त्वरूप—सर्वकार्येषु शरीरेषु मुनयः पञ्चस्कन्धपञ्चकम्

-शि० २।२८ 11 सङ्ग्राम, लड़ाई 12 राजा 13 करार 14 मार्ग, रास्ता 15 बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 16 ककपक्षी, बगला। सम० आवारः 1 सेना या सेना की टुकड़ी 2 राजा का निवास, राजधानी 3 शिविर,- उपजीव (वि०) जो कंधे पर ढोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली संधि जिसमें अधीनता के चिह्न स्वरूप कोई फल या धान्य उपहार में दिया जाय, चाप बहुगी, तु० शिक्य।

तरु नारियल का पेड़, देशः कंध, इदमुपहिन-सूत्रमवलम्बिनः स्कन्धदेशे—श० १।१८, परिनिर्वाण् शरीर के स्कंधों (पांचों तत्त्वों) का पूर्ण लोप या नाश (बौद्ध०),- फल 1 नारियल का पेड़ 2 बेल का वृक्ष 3 गूलर का पेड़, बच्चा एक प्रकार का सोया, मेथी,-भल्लक. ककपक्षी, बगला,-शाखः वटवृक्ष, वाहः, वाहक बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल, लद्दू बैल, - शाखा पेड़ की मुख्य शाखा या वृक्ष के तने से निकले,-सूक्ष्म. भेषज,-स्कन्ध प्रत्येक कथा।

स्कन्धस् (नपुं०) [स्कन्ध्+असुन्, पृषो०] 1 कथा 2 वृक्ष का तना।

स्कन्धिक [स्कन्ध+ठन्] बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल, तु० 'स्कन्धवाह'।

स्कन्धिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [स्कन्ध+इनि] 1 कंधों वाला 2 डालियों वाला, तने वाला, (पुं०) वृक्ष।

स्कन्न (भू० क० कृ०) [स्कन्द्+क्त] 1 पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2 रिसा हुआ, बूंद बूंद टपका हुआ 3 उगला हुआ, फैलाया हुआ, छिड़का हुआ 4 गया हुआ 5 सूखा हुआ।

स्कम्भ् (स्वा० आ०, स्वा० कर्मवा० स्कम्भते, स्कम्भ्यते, स्कम्भ्नाति) 1 रचना 2 रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना, अवरोध करना, रुकावट, नियन्त्रित करना - प्रेर० (स्कम्भयति-ते या स्कम्भयति-ते, वि,- बाधा डालना, अवरोध करना।

स्कम्भ [स्कम्भ्+घञ्] 1 सहारा, थूनी, टेक 2 आलंब आधार 3 परमेश्वर।

स्कम्भनम् [स्कम्भ्+ल्युट्] सहारा देने की क्रिया, सहारा, थूनी, टेक।

स्कान्द (वि०) (स्त्री० -दी) [स्कन्द+अण्] 1. स्कन्द-सम्बन्धी 2. शिवसम्बन्धी. इस् स्कन्द पुराण।

स्कु (स्वा० कर्मवा० उभ० स्कुनाति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते) 1 कूद कर चलना, उछलना, चौकड़ी भरना 2 उठाना, उद्वहन करना 3 देना, ऊपर छिड़ा देना भट्टि० १७।३२ 4 पहुँचना, प्राप्ति , ढापना भट्टि० १८।७३।

स्कुन्द् (स्वा० आ० स्कुन्दते) 1 कूदना 2. उद्वहन करना, उठाना।

स्कोडिका (स्त्री०) पक्षीविशेष।

स्खद् (भ्वा० आ० स्खदते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2 नष्ट करना 3 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4 परास्त करना, सर्वथा हरा देना 5 थकाना, श्रान्त करना कष्ट देना 6 दृढ करना।

स्खदनम् [स्खद्+ल्युट्] 1 काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2 चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3. कष्ट देना, दुःखी करना।

स्खल् (भ्वा० पर० स्खलति) 1 लड़खड़ाना, औंधे मुंह गिरना, नीचे गिरना, फिसलना, डगमगाना—स्खलति चरण भूमौ न्यस्तं न चालयसा मही -मृच्छ० ९।१३, ५।२४ 2 डगमगाना, लहराना, थरथराना, डगमग होना 3 आज्ञा भंग किया जाना, उल्लंघित होना (किसी आदेश का) - मुद्रा० ३।२५, रघु० १८।४३ 4 सन्मार्ग से च्युत होना—कि० ९,३७ 5 भ्रम होना, उत्तेजित होना कि० ३।५३, १३।५ 6 त्रुटि करना, बड़ी भूल करना, गलती करना स्खलनो हि करासम्भः मुहुस्सधिवेष्टितम् कि० ३।१३४, (यहाँ यह 'भ्रम' अर्थ को भी प्रकट करता है) 7 हकलाना, तुतलाना, रुक-रुक कर बोलना वदन-कमलक जिनो स्मरामि स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते - उत्तर० ४।४, रघु० ९।७६, कु० ५।५६ 8 विफल होना, कोई प्रभाव न होना—रघु० ११।८३ 9 बूंद बूंद गिरना, टपकना, चूना 10 जाना, हिलना-डुलना 11 प्रौढ़ता होना 12 एकत्र करना, इकट्ठा करना -प्रेर० (स्खलयति-ते) 1 लड़खड़ाने का कारण बनना, 2 त्रुटि या भूल कराना, डगमगाने या डावाडोल होने का कारण बनना - वचनानि स्खलयन् पदे पदे -कु० ६।१२, स्खलयति वचन ते मध्यपत्यङ्कमङ्कम्-मा० ३।८, प्र—, थक्कमथक्का होना—रघा प्रबन्धलतु-स्खादवा भट्टि० १४।९८, वि—, गलती करना, बड़ी भूल करना रघु० १९।२४।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] 1 लड़खड़ाना, फिसलना, डगमगाना, नीचे गिर पड़ना 2 डगमगाते हुए चलना 3 सन्मार्ग से विचलन 4 भारी भूल, त्रुटि, गलती 5 विफलता, निराशा, असफलता 6 हकलाना, बोलने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि, रुक रुक कर बोलना 7 चूना, टपकना 8 टकराना, उछलना- उत्तर० २।२०, महावीर० ५।४० 9. आपत्ति में फिसलना, रुकावट।

स्खलित (भू० क० कृ०) [स्खल्+क्त] 1. लड़खड़ाया, फिसला, डगमगाया 2 गिरा, पड़ा 3. थरथराने वाला, लहराने वाला, घबराहट होने वाला, अस्थिर 4. गले में भूर, विस्वर 5. हकलाने वाला, रुक रुक कर

बोलने वाला 6 विक्षुब्ध, बाधित 7 त्रुटि करने वाला, बड़ी भूल करने वाला 8 गिरा हुआ, उद्गीर्ण 9 टपकने वाला, चू कर नीचे गिरने वाला 10 हस्तक्षेप किया गया, रोका हुआ 11. व्याकुल 12. बीता हुआ, तम् 1. लड़खड़ाना, डगमगाना, गिरना 2. सन्मार्ग से विचलन 3 त्रुटि, भूल, गलती, नीवस्खलित कु० ४।८ 4 दोष, पाप, अतिक्रमण 5 धोखा, विश्वासघात 6 झांसा, कूटचाल। सम० —पुरुषम् (अव्य०) आकर्षक रीति से चले चलना—मेघ० २८।

स्खुद् (तुदा० पर० स्खुदति) ढकना।

स्तक् (भ्वा० पर० स्तकति) 1 मुकाबला करना 2. टक्कर लेना, प्रतिरोध करना, पीछे ढकेलना।

स्तन् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्तनति, स्तनयति-ते, स्तनित) 1 आवाज करना, शब्द करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2 कराहना, कठिनाई से सांस लेना, ऊँचा सांस लेना 3 गरजना, दहाड़ना तस्तनुर्जलदास्तडिन्मन्जुलकाञ्चनोज्ज्वलरुचिरे क्षता भट्टि० १४।३०, चि , 1 शब्द करना 2. आह भरना 3 विलाप करना, चि , दहाड़ना।

स्तनः [स्तन्+अच्] 1 स्त्री की छाती—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ—भर्तृ० ३।२०, (हरिदासा मनोरथा) हृदयेष्वेव लीयन्ते विधवास्त्रीस्तनाविव पञ्च० २।९१ 2. छाती, किसी भी मादा की ओढ़ी या चूचुक—अर्धपीतस्तन मातुरामर्दकिलष्टकेशरम् रा० ७।१४। सम० अंशुकम् स्तन ढकने का कपड़ा, —अग्रः चूची,—अङ्गरागः स्त्री के स्तनों पर लगाया जाने वाला रंग, अन्तरम् 1 हृदय 2 दोनों स्तनों के बीच का स्थान (न) मृणाल सूत्र रचित स्तनान्तरे लं० ६।१७, रघु० १०।६२ 3 स्तन का एक चिह्न (जो भावी वैधव्य का सूचक कहा जाता है),—आधानम् 1 स्तनों की पूर्णता या फैलाव 2 चूचियों की गोलाई 3 वह पुरुष जिसके स्त्रियों जैसे बड़े स्तन हों, तटः, —त्रम् चूचियों का ढलान, प,—पा, पायक, —पायिन् स्तन पान करने वाला, दुधमुहा,—पानम् स्तनपान करना, भरः 1 स्तनों की स्थूलता,—पादावस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रताम्—रत्न० १।१ 2 स्त्री जैसे स्तनों वाला पुरुष, भवः एक प्रकार का रतिबन्ध, मुखम्, वृन्तम्,—शिखा चूचुक, चूची।

स्तनथुः [स्तन्+क्थुन्] 1. ध्वनन, आवाज, कोलाहल 2 दहाड़ना, गरजना, (बादलों का) गड़गड़ाना 3 कराहना 4 कठिनाई से सांस लेना।

स्तनन्धय (वि०) [स्तन धयति-धे+अच्, मुम् च] स्तन्यपान करने वाला -यदि वुध्यते हरिशिशु स्तनन्धयो भविता करेणुपरिवेष्टिता मही भामि० १।५१, तवाङ्कशायी परिवृत्तभाग्यया मया न दृष्टस्तनक स्तनन्धय मा० १०।६, यः शिशु, दुधमुहा बच्चा रघु० १४।७८, शि० १२।४०।

स्तनयित्नुः [स्तन्+इत्नु] 1 गरजना, गड़गड़ाना, बादलों का कड़कड़ाना 2 बादल उत्तर० ३।७, ५।८ 3 बिजली 4 रोग, बीमारी 5 मृत्यु 6 एक प्रकार का घास।

स्तनित (भू० क० कृ०) [स्तन् कर्तरि क्त] 1 ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहलमय- मेघ० २८ 2. गरजने वाला, दहाड़ने वाला, तम् 1 बिजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गरज लोपोत्सर्गस्तनितमुखरो मास्म भूविक्लवास्ता मेघ० ३७ 2 गरज, शोर 3 ताली बजाने की आवाज।

स्तन्यम् [स्तने भवं यत्] मां का दूध, क्षीर— पिब स्तन्य पोत भामि० १।६०। सम० त्यागः मां का दूध छुड़ाना, स्तन्यत्यागप्रभृति भुवनी दन्तपाऽन्वालिकेव मा० १०।५, स्तन्यत्याग यावत्पुत्रयोरवेक्षस्व उत्तर० ७।

स्तबक [स्तु+बुन् या स्था+अबक्, पृ०त० अवयवभेद] गुच्छा, झुण्ड कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्त्रो मनस्विनाम्—भर्तृ० २।१०४, रघु० १३।३२, मेघ० ७५, कु० ३।३९।

स्तब्ध (भू० क० कृ०) [स्तम्भ् कर्मणि कर्तरि वा क्त] 1 रोका हुआ, घेराबन्दी किया हुआ, अवरुद्ध 2 लकवे से ग्रस्त, संज्ञाहीन, सुन्न जड़ीकृत 3 गतिहीन, स्थावर, अचल 4 स्थिर दृढ़, कड़ा, ठोस, कठोर ° होठ, अविग कठोरहृदय, निष्ठुर 6 उजड्ड, मोटा। सम० कर्ण (वि०) जिसके कान खड़े हों, रोमन् (पु०) सूअर, वराह, लोचन (वि०) जिसकी पलकें न झपकती हों (जैसे देवता)।

स्तब्धता,—त्वम् [स्तब्ध+तल्+टाप्, त्व वा] अनम्यता, दृढ़ता, कड़ाई 2 जाड्य, असंवेदता।

स्तब्धिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+क्तिन्] 1 स्थिरता कड़ापन, सख्ती, अनम्यता 2 दृढ़ता, अचलता 3 जाड्य, असंवेदन, जड़ता ° धृष्टता।

स्तभ् दे० 'स्तम्भ्'।

स्तभ (पु०) बकरा, मेढ़ा।

स्तभु (नपु०) = स्तम्भन।

स्तम् (भ्वा० पर० स्तमति) थकना जाना, व्याकुल होना।

स्तम्बः [स्था+अम्बच् किच्च, पृषो०] 1 घास का पूंज —रघु० ५।१५ 2 अनाज के पौधों की पुली जैसा कि 'स्तम्बकरिता' में 3 झुंड, पुंज, गुच्छा उत्तर० २।२९, रघु० १५।१९ ° झाड़ी, झुरमुट 5 गुल्म, प्रकाण्ड रहित झाड़ी 6 हाथी बांधने का खूंटा 7 लंभा 8 जड़ता, असंवेदनता (इन दो अर्थों में 'स्तम्भ')

९ पहाड़ । सम०—करि (वि०) पुतलियाँ बनाने वाला, भगोटा बनाने वाला, (रि) अनाज, धान्य, करिता पूजा या मुट्ठा बनना, प्रभूत या बुल्कल मात्रा में विकास न शाल स्तम्बकरिमा कण्डूयितमपोलते -मुद्रा० १।३, गुच्छ 1 सूखा (विशेष घास के गुच्छे जिनसे जाय) 2 (घोड़े काटने के लिए) बरसाती 3 तिनकों घास एकत्र करने का टोकरी स्तः दरारी, रूपा ।

स्तम्बेरम [स्तम्बे वृक्षादीनां काण्डे गुल्मे गुच्छे वा रमते रम् +अच्, अलुक् स०] हाथी स्तम्बेरमा मुखरमुद्गलकर्णिणस्ते -रघु० ५।८२, शि० ५।३४ ।

स्तम्भ् (स्वा० आ०, स्वा० चुरा० पर० स्तम्भते, स्तम्भयति स्तम्भयन्ति स्तम्भित, स्तब्ध इकारान्त उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् तथा अव के पश्चात् धातु के स का ष हो जाता है) 1 रोकना, बाधा डालना पकड़ना, दबाना -कृष्ण स्तम्भितदानवप्रतिकलुष -शि० ४।५ 2 दृढ़ करना कड़ा करना अचल बनाना 3 जड़ बनाना शक्तिहीन करना अनम्य बनाना प्राणा दयितेषु गात्र तम्भमे न हते प्रिये भट्टि० १४।५५ 4 टेक लगाना, सहारा देना, थामना, सभालें रखना 5 कड़ा होना, सख्त होना, अटल होना 6 थमही होना, उन्नत होना, सीधा खड़ा होना (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न अर्थ दर्शाये गये हैं) स्तम्भन मूर्ख प्राया यौवनेन धनेन च । न स्तम्भाति क्षितीशोऽपि न स्तम्भाति यथाप्यसौ ॥) प्रेर० (स्तम्भयति ते) 1 रोकना, पकड़ना 2 दृढ़ या कड़ा करना 3 गतिहीन करना 4 टेक लगाना सहारा देना । सम० अव 1 झुकना, निर्भर होना प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य भग० ९।८ 2 अवरुद्ध करना 3 सहारा देना टेक लगाना 4 थामना, कोली भरना, आलिंगन करना 5 लपेटना, लिफाफे में रखना 6 बाधा डालना, रोकना, पकड़ना, प्रतिबद्ध करना, उद् - , 1 रोकना, रुकावट डालना, पकड़ना 2 सहारा देना, टेक लगाना, थामे रखना, उप - , वि - , रोकना गिरफ्तार करना, पर्यव - , घेरना, पर्यवस्तम्भयतामेतत्करालायतनम् -भा० ५ वि 1 रोकना, 2 जमाना, पौधा लगाना, आश्रित होना अरुन्धिन्ते मन्थिनि पाणिवे न विगटम्य पादावपतिष्ठते श्री मुद्रा० ४।१३, सम् - , (प्रेर० भी) 1 रोकना, प्रतिबद्ध करना, नियन्त्रण करना प्रयत्नसम्भृतविक्रियाणा कथनिदोषा मनसा बभूवुः—कु० ३।३४ 2 गतिहीन करना अनम्य करना कु० ३।७३ 3 हिम्मत बाँधना साहस करना, प्रगल्भ होना, स्वस्थचित्त करना, सचेत होना -देवि मस्तकमयात्यास्तम्—उत्तर० ४ 4) दृढ़ या अटल करना, भग० ३।४१, उप्पर - , 1 सहारा देना, टेक लगाना 2 प्रोत्साहित करना, प्रोत्साहित करना ।

स्तम्भः [स्तम्भ् + अच्] 1 स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अटलता रम्भा स्तम्भ भजति—विक्रम० १८।२९, गात्रस्तम्भ स्तनमुकुलयोरुद्भेद प्रकम्प - मा० २।५, तत्कालोपहितजटिमस्तम्भमभ्येति गात्रम् - १।३५, ४।२ 2 असंवेदता, जड़ता, जाड्य, अक्रियता, लकवा 3 रोक, अवरोध, रुकावट—सोऽपश्यत्प्रतिघातेन सन्ततेः स्तम्भकारणम्—रघु० १।७९, वाक्स्तम्भनाटकानि मा० ८ 4 नियन्त्रित करना, दमन करना, दबाना—कृतविक्षतस्तम्भ प्रतिहतक्रियामप्यजस्रमिरपि -भर्तृ० ३।६ 5 टेक, सहारा, आलंब 6 स्थूण, आधार, पोल 7 प्रकाड, (वृक्ष का) तना 8 मूढ़ता, जड़ता 9 अवद्यभ्यता, अनुत्तेजनीयता 10 किसी अलौकिक शक्ति या जादू से भावना या शक्ति का दमन करना । सम०—कर्णीय किसी लकड़ी में खोद कर बनाई गई (मूर्ति), गर (वि०) 1 गतिहीन करने वाला, जड़ता लाने वाला 2 रोकने वाला, (रः) बाड़, कारम्भ अवरोध या रुकावट का कार्य, - पूजा विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अस्थायी मडपों के स्तम्भों की पूजा ।

स्तम्भकिन् (पु०) चर्ममंडित एक वाद्ययंत्र ।

स्तम्भनम् [स्तम्भ् + ल्युट्] 1 रोकना, अवरोध करना, रुकावट डालना, गिरफ्तार करना, दबाना, नियन्त्रित करना लोलोल्लोलक्षुभितकरणोद्रेकसम्भनम्भनार्थम् —उत्तर० ३।३६ 2 गतिहीन होना, अकड़ाहट, जड़ता 3. शान्त होना, स्वस्थचित्तता पंच० १।२६० 4. दृढ़ या कड़ा करना, बढ़ता पूर्वक जमाना 5. टेक देना, सहारा देना 6 अविरल प्रवाह का रोकना 7 कोई भी चीज जो रक्तस्रावरोधक हो 8 (मन्त्रादि के द्वारा) किसी की शक्ति कुण्ठित करना—द० स्तभ (१०),—कः कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

स्तर (वि०) [स्तृ (स्तृ) + अच्] फैलाने वाला, बिस्तार करने वाला, ढकने वाला, रः, 1. कोई भी बिछाई हुई चीज, रद्दा, तह, परत 2 शय्या, पलंग ।

स्तरणम् [स्तृ (स्तृ) + ल्युट्] फैलाने की क्रिया, बिछौना, बिस्तरा आदि ।

स्तरि (री) रम् (पु०) [तृ + इ (ई) कनिन्] शय्या, पलंग ।

स्तरी [स्तृ कर्मणि ई] 1 भूजी, भाप 2 अक्रिया 3. बाझ गाय ।

स्तव् [स्तु + अप्] 1. प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना 2. प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र ।

स्तवक (वि०) (स्त्री० -विका) [स्तु + वुल्] प्रशंसक,

स्तोता,—क्र. 1 स्तुति कर्ता, प्रशंसा, स्तुति 3. मञ्जरियों का गुच्छा 4 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, बंबरा, कुसुम-स्तबक 5 किसी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुवाक 6 समूहसूचक तु० 'स्तवक' भी।

स्तवनम् [स्तु + ल्युट्] 1 प्रशंसा करना सराहना 2 सूक्त।

स्तावः [स्तु+घञ्] प्रशंसा, स्तुति।

स्तावकः [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसक, स्तोता, चापलूस।

स्तिघ् (स्वा० आ० स्तिघ्नुते) 1 बढ़ना 2 धोखा देना 3 गिनना।

स्तिप् (स्वा० आ० स्तेपते) गिनना, इकट्ठा करना, संचय करना।

स्तिभिः [स्तिभ्+इन्, इत्वम्] 1 रुकावट, अवरोध 2 समुद्र, 3 गुदा, गुच्छा, पुंज।

स्तिम्, स्तीम् (दिवा० पर० स्तिम्यति स्तीम्यति) 1 गीला या तर होना 2 स्थिर या अटल होना, कड़ा होना।

स्तिमित (वि०) [स्तिम कर्तरि क्त] 1 गीला, तर 2 (क) निश्चल, निश्चेष्ट, शान्त क्षुभितमकलिकातरल मनपय इव स्तिमितमभ्यं महोदधे—मा० ३।१०, (ख) जमाया हुआ कठोर, अटल, गतिहीन, स्थिर—बाष्पः स्यति मयि माऽतिमूर्ती त्वाशास्यचिन्तास्तिमितो बभव कु० ७।८७, २।५९, मा० ११२७, रघु० २।२२, ३।१७, १३।४८, ७९, उत्तर० ६।२५ 3 मुदा हुआ, बद—रघु० १।७३ 4 अकड़ा हुआ, लकवाग्रस्त 5 मृदु, कोमल 6 तृप्त, सन्तुष्ट। समः वायुः शान्त पवन,—समाधिः स्थिर मनोनिग्रह।

स्तिमितत्वम् [स्तिमित+त्व] स्थिरता, निश्चेष्टता, शान्ति।

स्तीर्वि [स्तृ+क्विन्] 1 यज्ञ में स्थानापन्न ऋत्विक् 2 घास 3 आकाश अन्तरिक्ष 4 जल 5 रुधिर 6 छन्द का विशेषण।

स्तु (अदा० उभ० स्तौति—स्तुवीति, स्तुते—स्तुवीते, स्तुत, इच्छा० तुष्टूषति—ते, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के स् का ष हो जाता है) 1 प्रशंसा करना, सराहना स्तुति करना, स्तुतिगान करना—, कीर्तिगान करना ख्याति करना—भामि० १।४१, मुद्रा० ३।१६, भट्टि० ८।९२, १२।६०, २१।३ 2 प्रशंसागान करना, भजन गाना, स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रशंसा करना 2 आरम्भ करना, उपक्रम करना प्रस्तूयताम् विवादवस्तु मालवि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५।९, सम्—, 1 प्रशंसा करना—रघु० १३।६ 2 परिचित होना, आनकार या घनिष्ठ सम्बन्ध बनना इस अर्थ में प्रायः 'कर्मवत्' प्रयोग) अनेकधा संस्तूतमप्यनल्पं नव नव प्रीतिरहो करोति सि० ३।३१, कि० ३।२, दे० संस्तुत' भी।

स्तुक (पुं०) बालों की चोटी ग्रंथि या गोंठी।

स्तुका [स्तुक+टाप्] 1 बालों की ग्रंथि या गोंठी 2 साड़ी के दोनों सिरों के बांधे के घुघराले बालों का गुच्छा 3 कूल्हा, जंघा।

स्तुच् (स्वा० आ० स्तोचते) 1 अच्छा लगना, चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2 मंगलप्रद या शांत या सुखद होना।

स्तुत (भू० क० कृ०) [स्तु+क्त] 1 प्रशंसा किया गया, प्रशस्त, स्तुति किया गया 2 अनुमत किया गया।

स्तुतिः (स्त्री०) [स्तु+क्तिन्] 1 प्रशंसा, गुणकीर्तन, सराहना, ख्याति स्तुतिर्न्यायव्यतिरिक्तेषु दूरगति चरित्राणि ते रघु० १०।३० 2 प्रशंसात्मक सूक्त स्तोत्र रघु० ८।६ 3 बड़ाई, सराहना, झूठी प्रशंसा—धनार्थिनाहूति सा [इव] स्तुति परमेश्वरस्य —रघु० १०।३३ 4 दुर्गा का नाम। समः—गीतम् स्तुतिगान, सूक्त कीर्तिगान, पदम् प्रशंसा की वस्तु —पाठकः कीर्तिगायक, प्रशस्तिवाचक, भाट चारण, अंदेशवाहक बाद प्रशंसायुक्त भाषण, स्तोत्र, —भाजः भाट।

स्तुत्य (वि०) [स्तु+क्यप्] श्लाघ्य प्रशंसनीय, सराहनीय रघु० ४।६।

स्तुत्यकः [स्तु+नक्] ब्रह्मा।

स्तुभ्, (स्वा० पर० स्तोभति) 1 प्रशंसा करना 2 प्रसिद्ध करना, स्तुतिगान करना, पूजा करना।

॥ (स्वा० आ० स्तोभते) 1 रोकना दबाना 2 ठप्प करना, सुन्न करना, अवसन्न करना।

स्तुभः [स्तुभ्+क] ब्रह्मा।

स्तुभ्नाति (स्वा० क्र्या० पर० स्तुभ्नोति स्तुभ्नाति) 1 रोकना 2 सुन्न करना, अवसन्न करना 3 निकाल देना।

स्तूप् (दिवा० पर०, चुरा० उभ० स्तूप्यति, स्तूपयति—ते) 1 ढेर लगाना, संचित करना, चट्टा लगाना, एकत्र करना 2 खड़ा करना उठाना।

स्तूपः [स्तूप्+अच्] 1 ढेर, चट्टा ढाला (मिट्टी का) 2 बौद्ध स्मारकसिद्ध, पावन अवशेषों का (जैसे कि बुद्ध के) रखने के लिए एक प्रकार का स्तंभसदृश स्मृतिचिह्न 3 शिखा।

स्तृ। (स्वा० उभ० स्तृणाति, स्तृणुते, स्तृत कर्मवा० स्तर्यते) 1 फैलाना, बिछाना, ढकना, बिछाना (मही) तस्मिन् सस्यावशेषाने म औदपटसैकते —रघु० ४।९३, ७।५८ 2 फैलाना, प्रसार करना, बिखेरना करना 3 आच्छादित करना, छिपाना 4 कपड़े पहनाना, ढापना, बिछाना, लपेटना ५ मार डालना, प्रेर० (स्तारयति ते) बिछाना, ढापना, छिपाना

—रक्तनाविकिलदद्भूमि सैन्यैश्चानस्तरद्भुतै —भट्टि० १५।४८, इच्छा० (निस्तीर्षति त)।

II (स्वा० पर० स्तृणाति) प्रसन्न करना, तृप्त करना।

स्तृ (पु०) [स्तृ+क्विप्] तारा।

स्तृक्ष (स्वा० पर० स्तृक्षति) जाना।

स्तृणि (तना०) [स्तृ+क्विन्] 1 फैलाना बिछाना, प्रसार करना 2 ढकना, कपड़े पहनाना।

स्तृह्, स्तृह् (तुदा० पर० स्तृंहति, स्तृहति) प्रहार करना, चोट पहुँचाना मार डालना।

स्तृ (क्रया० उभ० स्तृणाति, स्तृणीते स्तीर्ण, इच्छा० तित्तरि (री) षति—ते, तित्तीर्षते) ढापना घेरना आदि. दे० 'स्तृ'। अत ढापना भरना बिछा देना—प्रकम्पयन् गामवतस्तरे दिशः—कि० १६। २९, आ—ढकना, आच्छादित करना रघु० ८।६५ उप— 1 बछेरना 2 क्रम में रखना परि 1 फैलाना, बिखेरना करना, प्रसार करना भट्टि० १४।२ 2 ढापना (आत्म० भी) अथ नागयज्ञपरिस्तरणाय ज्ञातव्यमित्यभिधाय परिस्तरणं—शि० ९।१८ अभिनवं पयासमूह स्तरेण परिस्तरं—कि० १२।८ 3 क्रम में रखना वि 1 फैलाना, बिखेरना करना 2 ढापना पर० फैलवाना, प्रसार करवाना —जैसा कि 'पयोधरविस्तारयितुक यौवनम' मा० १ 2 बढ़ना रघु० ७।३९ 3 फैलाना प्रसार करना सम्—, 1 फैलाना, बछेरना—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भा —शि० ४।७ 2 बिछाना।

स्तेन (चुरा० उभ० 'स्तेन का नामधातु—स्तेनयति-ते) चुराना लूटना —मनु० ८।३३३।

स्तेन (स्तन् कर्तरि अच्) चोर लुटेरा—न ते स्तेना न चामित्रा हरन्ति न च नश्यति—मनु० ७।९३ नम् चोरी करना चुराना। सम०—निग्रह 1 चोरों को दिया जाने वाला दण्ड 2 चोरों का रोकना।

स्तेप् I (स्वा० आ० स्तेपते) सिमटना।

II (चुरा० उभ० स्तेपयति-ते) भेजना, फेंकना।

स्तेय (स्तिन+घञ्) चोरी चौर्यापराध।

स्तेयम् (स्तेनस्य भावः यत् न लोपः) 1 चोरी, लूट—कु० २।३५ 2 चुराई हुई या चुराये जाने के योग्य कोई वस्तु 3 कोई निंद्य या गुप्त काम।

स्तेयिन् (पु०) (स्तेय+इनि) 1 चोर, लुटेरा 2 सुनार।

स्त्यै (स्वा० पर० स्त्यायति) एकत्र करना अनुकूल करना।

स्त्यम् (स्त्यै+अच्) चोरी, लूट।

स्त्येयम् (स्तेनस्य भावः यत्) चोरी, लूट,—मनु चोर।

स्त्यैमित्यम् (स्त्यैमित+ष्यञ्) 1 स्थिरता, कठोरता, अटलता 2 जड़ता, मूर्खता।

स्तोक (वि०) (स्तुच्+घञ्) 1 अल्प, थोड़ा—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पञ्च० १।१५०, स्तोक महद्वा धनम् —भर्तृ० २।४९ 2 छोटा 3 कुछ 4 अधम, नीच कः 1 थोड़ी मात्रा, बूंद 2 चातक पक्षी,—कम् (अव्य०) जरा सा, अपेक्षाकृत कम पश्यांदयप्लुतत्वाद्यियति बहुतर स्तोकमुर्व्या प्रयाति —श० १।७। सम०—काय (वि०) छोटे शरीर वाला, छोटा, ठिगना, लघु नद्ध, (वि०) जरा झुका हुआ, थोड़ा सा शिथिल या अवसन्न—श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्या मेघ० ८२।

स्तोकक (स्तोकाय उपदिश्यते कामनि शब्दाय्ये स्तोक+क+क) चातक पक्षी—मनु० १२।६७।

स्तोकशः (अव्य०) (स्तोक+शस्) थोड़ा-थोड़ा करके, कमी के साथ।

स्तोतव्य (वि०) (स्तु+तव्यत्) प्रशसनीय श्लाघ्य, तारीफ के लायक—स्तोतव्यगुणसम्पन्न केषा न स्यात्प्रियो जन।

स्तोतृ (पु०) (स्तु+तृच्) प्रशसक स्तुतिकर्ता।

स्तोत्रम् (स्तु+ष्ट्रन्) 1 प्रशसा स्तुति 2 प्रशस्ति, स्तुतिगान।

स्तोत्रिय,—या (स्तोत्र+घ, स्त्रियां टाप् च) एक विशेष प्रकार की ऋचा, स्तोत्र का पद्य।

स्तोभ (स्तुभ्+घञ्) 1 रोकना, अवरुद्ध करना 2 विराम, यति 3 निरादर, तिरस्कार 4 सूअर, प्रशस्ति 5 सामवेद का एक प्रभाग 6 अन्तर्निविष्ट।

स्तोम (स्तु+मन्) 1 प्रशस्ति, स्तुति, सूक्त 2 यज्ञ, आहुति जैसा कि ज्योतिष्टोम या अग्निष्टोम में 3 सोम द्वारा तर्पण 4 सग्रह, समुच्चय, सख्या, समूह, यथान उत्तर० १।५० 5 बड़ी मात्रा, ढेर भस्मस्तोमपरिप्लवाल्पशमुरो यत्ते त्वच रौरवीम्—उत्तर० ४।२० महावीर० १।१८ नम् 1 सिर 2 धन, दौलत 3 अज्ञान, धान्य 4 लोहे की नोक वाली छड़ी।

स्तोम्य (वि०) (स्तोम+यत्) श्लाघ्य, प्रशसनीय।

स्त्यान (वि०) (स्त्यै+क्त) ढेर के रूप में सचित मा० ५।११, वेणी० १।२१ 2 घनीभूत, स्थूल, ठोस 3 मृदु, स्निग्ध, कोमल, चिकना 4 शब्दायमान, मुखर नम् 1 सघनता, ठोसपना, आकार या फैलाव में वृद्धि दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामनुरसित-गुरूणि स्त्यानमम्भूरुहाणि मा० ९।६, उत्तर० २।२१, महावीर० ५।४१ 2 चिकनाई 3 अमृत 4 ढीलापन, आलस्य 5 प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्यानवत् (स्त्यै+क्यच्+क्वनिप्) ढेर के रूप में सचित करना, भीड़ लगाना, समष्टि।

स्त्येन (स्त्यै+इनच्) 1 अमृत 2. चोर।

स्त्य (स्वा० उभ० स्त्यायति-ते) 1. ढेर के रूप में एकत्र किया जाना, इधर-उधर फैलना, बिकीर्ण होना —शिशिरकटुकषाय स्त्यायते सल्लकीनाम्—मा० ९।६, २।२१, महावीर० ५।४१ 3 प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्री [स्त्यायते शुक्रशोणिते यस्याम् स्त्यै+ड्प्+ङीप्] 1 नारी, औरत 2 किसी भी जानवर की मादा —गज स्त्री, हरिण स्त्री आदि, श० ५।२२ 3 पत्नी —स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८, मेघ० २८ 4 स्त्रीलिंग, या स्त्रीलिंग का कोई शब्द आप स्त्रीभूमि—अमर०। सम०—अगारः,—रम् अन्तःपुर, जनानखाना, अध्यक्षः कंचुकी, अभिगमनम् सहवास, -आजीवः 1 अपनी स्त्री के सहारे रहने वाला 2 स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराकर जीवनयापन करने वाला,—काम 1 स्त्रीसंभोग का इच्छुक, स्त्रियों के प्रति चाव 2 पत्नी की इच्छा,—कार्यम् 1 स्त्रियों का व्यवसाय 2 स्त्रियों की टहल, अन्तःपुर की सेवा, —कुमारम् एक स्त्री और बच्चा —कुसुमम् रजःस्राव स्त्रियों में ऋतु-स्राव, क्षीरम् माँ का दूध—मनु० ५।९ —ग (वि०) स्त्रियों से संभोग करने वाला, गवी दूध देने वाली गाय,—गुरुः दीक्षा या मन्त्र देने वाली या पुरोहितानी,—गृहम् - स्त्र्यगारम्, दे०,—घोषः पौ फटना, प्रभात तड़का, घ्न स्त्रीघातो चरितम्, —त्रम् स्त्री के कर्म, चिह्नम् 1 स्त्रीत्व की विशिष्टता का कोई निशान 2 स्त्रीयोनि, भग चोरस्त्री को फुसलाने वाला लम्पट, जननी केवल कन्याओं को जन्म देने वाली स्त्री, जाति (स्त्री०) स्त्रीवर्ग, मादा,—जित स्त्री के वश में रहने वाला, जोरू का गुलाम —स्त्रीजितस्यांमात्रेण सर्वं पुण्यं विनश्यति—शब्द०, मनु० ४।२१३ धनम् स्त्री की निजी सम्पत्ति जिस पर उसका स्वतन्त्र अधिकार हो —धर्मः 1 स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2 स्त्रीसम्बन्धी नियम 3 रजःस्राव,—धर्मिणी रजस्वला स्त्री ध्वज किसी भी जानवर की मादा या स्त्रीलिंग, नाथ (वि०) स्त्री जिसकी स्वामिनी हो निबन्धनम् स्त्री का विशेष कार्य क्षेत्र, गृहकर्म, गृहिणी का कार्य —पण्योपजीविन् (पुं०) द० ऊपर 'स्त्र्याजीव' पर स्त्रियों से प्रेम करने वाला, कामी, लम्पट पिशाची राक्षसी जैसी पत्नी -पुंसौ (पु०, द्वि० व०) 1 पति और पत्नी 2 स्त्री और पुरुष—कु० २।३, पुंसलक्षणा पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री मर्दानी स्त्री प्रत्ययः (व्या० में) स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए शब्द के अन्त में जुड़ने वाला प्रत्यय प्रसङ्गः (अर्थाधि०) संभोग, प्रसूः (स्त्री०) पुत्रियों को जन्म देने वाली स्त्री—याज्ञ० १।७२—प्रिय (वि०) जिसको स्त्रियाँ प्यार करें (—यः) आम का पेड़, बुद्धिः स्त्री द्वारा परेशान किया जाने वाला बुद्धि (स्त्री०) 1 स्त्री की समझ 2 स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश, —भोग संभोग, -मत्त स्त्रीरत्न, स्त्री का भक्त, मुखः अशोकवृक्ष,—यन्त्रम् यन्त्र की भाँति स्त्री, स्त्री के रूप में मशीन या यन्त्र —स्त्रीयन्त्रं केन लोके विधिमसृजमयं धनाशाय सृष्टम् पञ्च० १।१९१, —रत्नम् श्रेष्ठ स्त्री स्त्रीरत्नेषु समोदेशी प्रियतमा यूथे तवैव दशा—विक्रम० ४।२५, राज्यम् स्त्रियों द्वारा शासित राज्य या प्रदेश, लिङ्गम् 1 (व्या० में) स्त्रीवाचकता 2 स्त्रीयोनि, वशः पत्नी के वश में होना, स्त्री की अधीनता, विधेय (वि०) पत्नी द्वारा शासित, जोरू भक्त अपनी स्त्री की बेहद चाहने वाला ऋग्० १९।८, -विवाहः स्त्री के साथ विवाह, संख्यं स्त्रियों का साथ, -संस्थान (वि०) स्त्री की आकृति वाला—श० ५।३१, संग्रहणम् 1 किसी स्त्री का बलात् आलिंगन 2 व्यभिचार, मनोल्लङ्घन, संभमः स्त्रियों की सभा, -संबन्धः 1 किसी स्त्री के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध 2 वैवाहिक सम्बन्ध 3 स्त्री के साथ सम्बन्ध, स्वभावः 1 स्त्रियों की प्रकृति 2 हीजड़ा हत्या स्त्री का वध या कत्ल, हरणम् 1 स्त्रियों का बलात् आहरण 2 बलात् संभोग, जबर्दस्ती।

स्त्रीतमा, स्त्रीतरा (स्त्री०) कुलीन स्त्री उत्तम जाति की सुसंस्कृत स्त्री।

स्त्रीता, त्वम् [स्त्री+तल्+टाप्, त्व वा] 1 नारीत्व 2 पत्नीत्व 3 स्त्री होने का भाव स्त्रैणता।

स्त्रैण (वि०) (स्त्री० णी) [स्त्रिया इदम् अण्] 1 मादा, स्त्रीवाचक 2 स्त्रियोचित या स्त्री संबन्धी 3 स्त्रियों में विद्यमान, जित 1 स्त्रीत्व स्त्रियों की प्रकृति, स्त्रीवाचकता पुंवत्० ८।१।२ 2 मादा का चिह्न, स्त्रैणता स्त्रैण का स्त्रैण या नपुं० समासान्त यान् विधौ अन० ८।१।२३ इह न्यग्रोधस्त्रीस्त्रैणमिति भवति प्रा० व्या० तस्मा नपुंसकलक्षणेन स्त्रैणमाकलयन्त -रा० ३ स्त्रियों का समूह।

स्त्रैणता, त्वम् [स्त्रैण+तल्+टाप् त्व वा] 1 स्त्री वाचकता, स्त्रीपना 2 स्त्रियों के प्रति अत्यधिक रुचि।

स्थ (वि०) [स्था+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) खड़ा होने वाला, ठहरने वाला, रहने वाला, विद्यमान मौजूद, वर्तमान आदि तटस्थ, अवस्थ प्रकृतिस्थ तत्पर।

स्थकरम् [स्थगा, पृषो०] मुसाफिरी।

स्थग् [स्था० पर० या प्रेर० स्थगयति ते] 1 ढांपना, छिपाना, गुप्त रखना परदा डालना —पक्षम्यङ्गुल्यानान्यपि तनुतराणि स्थगयति—मा० १।१४ 2 ढांपना, व्याप्त होना, भरना रुद्ध अवरुद्ध मैत्र्य स्थगितसरोदर्शनकल्प काव्य० ७।

स्थग (वि०) [स्थग्+अच्] 1 जालसाज, बेईमान 2 परित्यक्त, निर्लज्ज, लापरवाह, गः धूर्त, छली।

स्थगनम् [स्थग्+ल्युट्] छिपाना, गुप्त रखना।
स्थगरम् [थग् अरन्] सुपारी।
स्थगिका [स्थग्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 वेश्या 2 पान की दुकान 3 एक प्रकार की पट्टी।
स्थगित (वि०) [स्थग्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त रक्खा हुआ।
स्थगी [स्थग्+क+ङीप्] पान की डिबिया।
स्थगु [स्थग्+उन्] कूबड़, कुब्ज।
स्थण्डिलम् [स्थल+इलच्, नुक्, लस्य डः] 1. भूखंड (यज्ञ के लिए चौरस व चौकोर किया हुआ), वेदी—तिस्रोदृशो स्थण्डिल एव केवले—कु० ५।१२ 2 बंजर भूमि 3 ढेलों का ढेर 4 सीमा, हद 5 सीमा चिह्न। सम० शायिन् (पु०) ('स्थण्डिलेशय' भी) वह सन्यासी जो बिना बिस्तर के यज्ञभूमि पर सोता है, —सितकम् वेदी।
स्थपतिः [स्था—क, तस्य पतिः] 1 राजा, प्रभु 2 वास्तुकार 3 स्थपति बढ़ई 4 व्यापारी 5 बृहस्पति के प्रति बलि देने वाला, बृहस्पति-यज्ञ करने वाला 6 अन्तःपुर रक्षक 7 कुबेर।
स्थपुट (वि०) [निष्ठति स्था—क, स्थ पुट यत्र] 1 सकटग्रस्त विपन्न 2 ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा। सम० गत (वि०) विषम स्थानों में रहने वाला, कठिनाइयों में ग्रस्त अङ्कुस्थादस्थितस्थ स्थपुटगतमपि कल्यमव्यग्रमीति पा० ७।१६।
स्थल् (भ्वा० पर० स्थलति) दृढ़ता पूर्वक स्थिर रहना, अडिग रहना।
स्थलम् [स्थल्+अच्] 1 कठोर या शुष्क भूमि सूखी जमीन, दृढ़ भू (विप० जल)—भा दुरात्मन् (समुद्र) दीयता टिट्टिभायाण्डानि नो चेत्स्थलता त्वा नयामि-पञ्च० १, इसी प्रकार स्थलकमलिनी या स्थलपद्मिनी 2 समुद्रतट, समुद्रवेला, बालू-तट 3 पृथ्वी, भूमि, जमीन 4 जगह, स्थान 5 मैदान, भूखंड, शिखर 6 पहाड़ 7 उभरा हुआ भूखंड, टीला 8 प्रस्ताव, प्रसंग, विषय, विचारणीय बात-विवाद°, विचार° आदि 9 खंड या भाग (जैसे किसी पुस्तक का) 10. तम्बू। सम०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह,—आरूढ (वि०) थल पर उतरा हुआ, —अरविन्दम्, —कमलम्, —पद्मिनी पृथ्वी पर उगने वाला कमल मेघ० ९०, कु० १।३३,—चर (वि०) भूचर, (जो जलचर न हो),—च्युत (वि०) स्थान से पतित, अपनी पदवी से हटाया हुआ,—देवता स्थानीय या ग्रामदेवी,—पद्मिनी भूकमलिनी,—वर्त्म, —वर्त्मन् (नपु०) भूमि पर बनी हुई सड़क—स्थलवर्त्मना (भूमार्ग से), रघु० ४।६०,—शिखम् चौरस भूमि पर लड़ा जाने वाला युद्ध,—शुद्धिः (स्त्री०) किसी भी स्थल की शुद्धि भूमि की सफाई।
स्थला [स्थल+टाप्] ऊँची की हुई सूखी जमीन जहां जल के निकास का अच्छा प्रबंध हो (विप० स्थली, दे० नी०)।
स्थली [स्थल+ङीष्] 1. सूखी जमीन, दृढ़ भूमि 2 भूमि का प्राकृतिक स्थल, भूमि या भूखंड (जैसे कि वनस्थली)—विकत्थसे विकीर्णमृदंजसा समधु तावित कुबेरो स्थलीम्-कु० ४।४। सम०—देवता पृथ्वी की देवी, भूमि की अधिष्ठात्री देवी—मेघ० १०६।
स्थलेशय (वि०) [स्थले शेते शी+अच्, अलुक् स०] सूखी जमीन पर सोने वाला,—य कोई भी जल-स्थलचारी जानवर।
स्थविः [स्था+क्वि] 1 जुलाहा 2 स्वर्ग।
स्थविर (वि०) [स्था+किरच्, स्थबादेशः] 1 दृढ़, पक्का, स्थिर 2 बूढ़ा, वृद्ध, पुराना,—रः 1. बूढ़ा पुरुष 2 भिक्षुक 3 ब्राह्मण का नाम,—रा बूढ़ी स्त्री स्थविरे का त्वम् अयमर्थक कस्य नयनानन्दकरः दया०।
स्थविष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्थूल-स्थूल+इष्ठन् लस्य लोपः] सबसे बड़ा, बहुत हृष्टपुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत (स्थूल की उत्तमावस्था)।
स्थवीयस् [स्थूल+ईयसुन्, स्थूलशब्दस्य स्थबादेशः] सबसे बड़ा अपेक्षाकृत विस्तृत (स्थूल की मध्यमावस्था)।
स्था (भ्वा० पर० कुछ अर्थों में आत्मनेपद में भी —तिष्ठति ते स्थित, कर्मवा० स्थीयते इस धातु के पूर्व इकारान्त उपसर्ग आने पर धातु के 'स्' को ष् हो जाता है) 1 खड़ा होना—बलप्येकेन पादेन तिष्ठन्येकेन बुद्धिमान् सुभा० 2 ठहरना, टिके रहना, बसना, रहना—यावें गृहे का तिष्ठति 3 शेष रहना, बाकी रह जाना—एको यद्भूदलस्तिष्ठति —पञ्च० ४ 4 विलम्ब करना, प्रतीक्षा करना—किमिति स्थीयते रा० २ 5 ठहरना, उपरत होना, रुकना, निश्चेष्ट होना—तिष्ठत्येव क्षणमधिपतिर्ज्योतिषां व्योममध्ये विक्रम० २।१ 6 एक ओर रह जाना —तिष्ठतु तावत्पत्नीलोकाश्रमवृत्तान्त —का० (इस वृत्तान्त का ध्यान न कीजिए) 7 होना, विद्यमान होना, किसी भी स्थिति या अवस्था में होना, (प्राय. कृदन्त के रूप में प्रयोग)—मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे —कु० १।२, रा० १।१, विक्रम० १।१, काल नयमाना तिष्ठति- पञ्च० १, मनु ७।८ 8 डटे रहना, अनुरूप होना, आज्ञा मानना, (अधि० के साथ)—शासने तिष्ठ भर्तुः —विक्रम० ५।२७, रघु०, ११।६५ 9 प्रतिबद्ध होना—यदि ते तु न तिष्ठेयुस्त्रयाणां एकमेकिमि —मनु० ७।२०८ 10. निकट होना—न विप्र स्वेषु तिष्ठत्सु मृत शूद्रेण नाययेत्—मनु० ५।१०४ 11 जीवित रहना, सांस लेना—आ क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्त-

अभिप्रस्थितुमिच्छति—मुद्रा० १ 12. साथ देना, सहायता करना,—उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धव—हि० १।७३ 13 आश्रित होना, निर्भर होना 14 करना, अनुष्ठान करना, अपने आपको व्यस्त करना 15. (आ०) सहारा लेना, (मध्यस्थ मान कर उसके पास) जाना, मार्गदर्शन पाना—सभ्याः कार्याणि तिष्ठन्ते य—कि० ३।१३ 16 (आ०) (सुरतालिंगन के लिए) प्रस्तुत करना, वेश्या के रूप में उपस्थित होना (सम्प्र० के साथ) गोपी स्मरार्त कृष्णाय तिष्ठते—पा० १।३।३४ पर सिद्धा०,—प्रेर० (स्थापयति—ते) 1 खड़ा करना 2 जमाना, जड़ना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4 रोकना 5 पकड़ना रोकना—इच्छा० (तिष्ठासति) खड़े होने की इच्छा करना। अति—, अधिक होना, बढ़ जाना अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्—अधि—, 1 स्थिर होना, अधिकार करना (कर्म० के साथ)—अधासिष्ट योषभिवोऽधितस्थौ —रघु० ६।७३, भट्टि० १५।३१ 2 अभ्यास करना (साधना करना) कि० १०।१५ 3 अन्दर होना, रहना, बसना निवास करना,—पातालमधितिष्ठति —रघु० १।८०, श्रीजयदेवभणितमधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरलम्—गीत० ११ 4 अधिकार करना, जीतना, परास्त करना, पछाड़ना—सप्तार्चे तानधितिष्ठास्यन्—भट्टि० ९।७२, १६।४० 5 प्राप्त करना —कि० २।३१ 6 नेतृत्व करना, संचालन करना, शासन करना, निदेश देना, प्रधानता करना दधारचक्रं दारानधितिष्ठाय उत्तर० ४ 7 राज्य करना, शासन करना, नियन्त्रण करना - भग० ४।६ 8 उपयोग करना, काम में लगाना 9 चढ़ना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अधिरराधितिष्ठद्राज्यं बन्धु —मालवि० १।८, अनु—, 1 करना, संपन्न करना, कार्यान्वित करना, ध्यान देना—अनुतिष्ठेत्स्वाश्रमतो नियोगम् —मालवि० १ 2 पीछा करना, अभ्यास करना, पालन करना—भग० ३।३१ 3 देना, अनुदान देना, किसी के लिए कुछ करना—(षष्ठ्य) शैलाधिराजः स्वयमन्वतिष्ठत्—कु० १।१७ 4 निकट खड़े होना, - मनु० ११।११८ 5 राज्य करना, शासन करना 6 संकल्प करना 7 अपने आपको प्रस्तुत करना अव—, (प्राय आ०) 1 रहना, टिकना, डटे रहना —ओघ आव आवमेदावतस्थे—भामि० २।१७ प्रतीक्ष्य पन्थानं धूलिमूषक नावतिष्ठते—शि० २।३४, रघु० २।३१ 2 ठहरना, प्रतीक्षा करना-भट्टि० ८।११ 3 डटे रहना, अनुकूल रहना—भट्टि० ३।१४ 4 जीवित रहना—रघु०८।८७ 5 निर्वाह करना, रुकना, ठहरना —भग० १।३० ७. आ पड़ना, मिलना, निर्भर होना-अधि वृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता—कु० २।२८ 7 अक्षत खड़े होना, अक्षत रखना 8 निश्चित या निर्णीत होना (प्रेर०) 1० खड़ा करना, रोकना, पड़ाव डालना 2 प्रस्थापित करना, नींव डालना 3 स्वस्थ होना, सचेत होना, आ—, 1 अधिकार करना 2 चढ़ना, सवार होना—यथा 'एकस्यन्दनमास्थितौ'—रघु० १।३६ में 3 उपयोग करना, अवलम्ब लेना, सहारा लेना, अनुकरण करना, अभ्यास करना, लेना, धारण करना यथाहि पङ्कजमालिष्टत्यनुषङ्गवत् मनु० १०।१२८, २।२३३, १०।१०१ (यह अर्थ नाना प्रकार से—अक्षर शब्दों के अनुसार जिनके साथ कि शब्द का प्रयोग होता है, बदलता रहता है —दे० कु० ५।२, ८४ मुद्रा० ७।१९, रघु० ६।७२, १५।७९, कु० ५।७२, ७।२९, पंच० ३।२१ आदि) 4 करना, सम्पादन करना, पालन करना 5 अपनाना 6 लक्ष्य बनाना 7 दायित्व लेना 8 विशिष्ट ढंग से आचरण करना, व्यवहार करना 9 निकट खड़े होना, उद् - 1, खड़े होना उठना उठ कर खड़े होना —उत्तिष्ठेत् प्रथमं चाम्भ मनु० २।१९८, यथा निशम्योत्थितमुत्थितं मनु—रघु० २।६१ 2 त्याग देना, छोड़ना 3 पलट कर आना—रघु० १६।८३ 4 आगे आना, उदय होना, आगे बढ़ना, फूटना, निकलना—उदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षय सम्फलम् —शि० २।१३ 5 उदय होना उगना, क्षितिज में चढ़ना—शि० २।६ 6 सक्रिय होना, उठना, गतिशील होना सुदृढ़हृदयदोर्भ्यां यस्त्वयोत्तिष्ठ परस्य —भग० २।३, ३७ 7 चेष्टा करना, कोशिश करना, (आ०) कि० ११।१३, शि० १४।१७ (प्रेर०) 1 उठाना, उन्नत करना 2 काम करने के लिए उत्साहित करना, उत्तेजित करना, उप—, 1 निकट खड़ा होना, हिस्से में मिलना,—साहसमुपतिष्ठति पंच० २।१०३ 2 निकट आना, पहुँचना—कु० २।५४, रघु० १५।३६ 3 प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना मनु० २।४८ 4 पूजा करना, प्रार्थना के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रणाम करना (आ०) स आत्मकार्यसमुपस्थितायां—भट्टि० १।३, उदितमुपतिष्ठ एष भवदाश्रमपदमृगमुपतिष्ठे—शा०१, रघु० ४।६, १०।६३, १७।१०, १८।२२ 5 निकट खड़े होना 6 मैथुन के लिए पहुँचना 7 मिलना, संयुक्त होना यद्वा यमुनामुपतिष्ठते - सिद्धा० 8 नेतृत्व करना (आ०) 9 सिद्ध बनाना (आ०) 10 पहुँचना, निकट लिखना, आसन्नवर्ती होना 11 हेयावस्था में पहुँचना 12. उपस्थित होना (आ०) 13 घटित होना, उत्पन्न होना, परि—, घेरना, चारों ओर खड़े होना, वर्जन—, (प्रेर०) स्वस्थचित्त होना, सचेत होना पर्यवस्था

पयात्मानम् विक्रम० १, ब्र–, (आ०) 1 कूच करना, विदा होना पारसीकास्तमो जेतुं प्रस्थिते स्वप्नवर्त्मना –रघु० ४।६० 2 बढ़ना पूर्वक खड़े रहना 3 प्रस्थापित होना 4 पहुँचना, निकट आना (प्रेर०) 1 पीछे हटाना 2 भेजना, तितर-बितर करना तौ तपसी स्वा प्रति राजधानी प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठ –रघु० २।७०, प्रति –, 1 दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना, प्रस्थापित होना 2 सहायता किया जाना 3 आश्रित या निर्भर रहना 4 ठहरना, डटे रहना, स्थित रहना, प्रत्यय –, (आ०) विरोध करना, शत्रुवत् व्यवहार करना, आक्षेप करना (किसी तर्क का) अत्र केचित् प्रत्यवतिष्ठन्ते शारी०, भामि० १।७७, (प्रेर०) अपने आपको संचेत या स्वस्थ करना, वि –, (आ०) 1 अलग खड़े होना 2 स्थिर रहना, डटे रहना, बस जाना, अचल रहना 3 फैलना, विकीर्ण होना, विप्र –, (आ०) 1 कूच करना 2 फैलना, व्यव –, (आ०) 1 अलग-अलग रक्खा जाना 2 क्रमबद्ध किया जाना 3 निश्चित होना, स्थिर होना, स्थायी होना वचनीयमिदं व्यवस्थितम् –कु० ४।२१ 4 आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रेर०) 1 क्रमबद्ध करना, प्रबन्ध करना, समञ्जित करना 2 निश्चित करना, स्थापित करना 3 पृथक् करना, अलग-अलग रखना, सम् –, (आ०) 1 बसना, रहना, परस्पर निकटवर्ती होना –तीक्ष्णादृष्टिजले मृदौ परिभवत्रासान्ध सस्थिते –मृच्छ० ३।५ 2 खड़े होना 3 होना, विद्यमान होना, जीवित होना 4 डटे रहना, आज्ञा मानना, सिद्धान्त का निर्वाह करना—दारिद्र्यान्पुरुषस्य बान्धव-जनो वाक्यैं न संतिष्ठते मृच्छ० १।३६ 5 पूरा होना सद्य संतिष्ठते यज्ञस्तथा सौम्यमिति स्थिति –मनु० ५।९८ (यज्ञपुरुषेण युज्यते–कुल्लू०) 6 समाप्त हो जाना, विघ्न पड़ जाना–भट्टि० ८।११ 7 निश्चेष्ट खड़े रहना, स्थिर हो जाना (पर०) क्षण न संतिष्ठति जीवलोक. क्षपोदपात्र्या परिवर्तमान –हरि० 8 मरना, नष्ट होना (प्रेर०) 1 स्थापित करना, बनाना 2. रखना 3. स्वस्थचित्त होना, संचेत होना देवि संस्थापयात्मानम् –उत्तर० ४ 4 अधीन करना, नियंत्रण में रखना –मनु० ९।२ 5 रोकना, प्रतिबन्ध करना 6 मार डालना, संज्ञपि–, प्रधानता करना, शासन करना, प्रशासन करना, अधीक्षण करना, संस्था (आ०) 1. स्थिर रहना, अचल रहना 2 निश्चेष्ट रहना 3 तत्पर रहना (प्रेर०) 1. ध्यान डालना 2. रोकना,- क्षमा –, 1 सहना, अभ्यास करना –तपो महत्समास्थाय 2 व्यस्त करना, सम्पादन करना 3. प्रयोग में लाना, काम में लगाना 4 अनुसरण करना, पालन करना मनु० ४।२, ७।४४, समुत्– , 1. खड़ा होना, उठना 2 मिल कर खड़े होना 3 मृत्यु से उठना, फिर जीवित होना, होश में आना 4. उदय होना, फूटना, समुप–1 निकट आना, पास जाना, पहुँचना 2. आक्रमण करना 3 आ पड़ना, कठिन होना 4. डट कर खड़े होना, संप्र –, (आ०) कूच करना, विदा होना, संप्रति–, 1 लटकना, आश्रित होना, निर्भर होना 2. दृढ़ होना, स्थिर होना।

स्थाणु (वि०) [स्था+नु, पृषो० णत्वम्] 1 दृढ़, अटल, स्थिर, टिकाऊ, अचल, अविहीन, पुः 1. शिव का विशेषण—न स्थाणु स्थिरभक्तियोगसुलभो नि श्रेयसायास्तु व विक्रम० १।१ 2 टेक, पोल, स्तम्भ कि स्थाणुरयमुत पुरुषः 3. खूंटी, कील 4 धूपबत्ती का डंडा 5 बर्छी, भेदा 6 सीमको का बोंसला, बामी 7 औषधि या सुगन्ध द्रव्य, जीवक (पु०, नपु०) शाखा रहित तना, सूखा ठूंठ, सूखा पेड़, ठूंठ। सम० छेदः वह जो वृक्षों के तने काटता है, जो तने को छील कर साफ करता है—स्थाणुच्छेदस्य केदारमाहुः शस्यघ्नो मूलम्—मनु० ९।४४, —भेदः किसी खूंटी या पोल को कुछ और ही समझ लेना।

स्थाण्डिलः [स्थाण्डिल+अच्] 1 वह संन्यासी जो बिना बिस्तर के भूमि पर या यज्ञीय भूखंड पर सोता है 2 साधु या धार्मिक भिक्षु।

स्थानम् [स्था+ल्युट्] 1 खड़ा होना, रहना, ठहरना, बैठना, निवास स्थान—उत्तर० ३।३७ 2 स्थिर या अटल होना 3 स्थिति, दशा 4 जगह, स्थल, (भवन आदि के लिए) भूमि, सन्धिति अक्षमाला-मदस्थाम्मात्स्थानात्सदाप्यदमपि न गन्तव्यम्—का० 5 संस्थान, स्थिति, अवस्था 6 सम्बन्ध, हैसियत 'पितृस्थाने' (पिता के स्थान में या पिता की हैसियत से) 7 आवास, घर निवासस्थान स एव (नक्र) प्रच्युतः स्थानाच्छतमपि परिभूयते—पंच० ३।४६ 8 देश, क्षेत्र, जिला, नगर 9. पद, दर्जा, प्रतिष्ठा—अमात्यस्थाने नियोजित. 10. पदार्थ—मुद्राः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः –उत्तर० ४।११ 11 अवसर, बात, विषय, कारण परास्भूहुस्थाना-न्यपि तनुतेराणि स्थगयति—मा० १।१४, स्थानं प्रधानपरिभवस्य तदेव पुंसाम्–सुभा०, इसी प्रकार क्रमशः, कोप°, विवाद° आदि 12. उचित या उपयुक्त अवसर स्थानेष्वेव नियोज्यन्ते भृत्याश्चाभरणानि च पंच० १।७२ 13 उचित या योग्य पदार्थ—स्थाने खलु सज्जति दृष्टिः मालवि० १, दे० 'स्थाने' भी 14 अक्षर का उच्चारणस्थान (यह आठ हैं - अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च—शिक्षा० १३

15. पावन स्थान 16. देवी 17. नगरस्थ प्रांगण 18 मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होने वाला लोक 19 (नीति या युद्ध आदि में) दृढ़ता, आक्रमण का मुकाबला करने के लिए दृढ़ता,- मनु० ७।१९० 20 पड़ाव, डेरा 21 निश्चेष्ट दशा उदासीनता, 22 राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्थैर्य —अर्थात् सेना, कोष, नगर और प्रदेश --मनु० ७। ५६ (यहाँ कुल्लू० 'स्थान' का अर्थ करता है "दंड-कोशपुरराष्ट्रात्मक चतुर्विधम्") 23 सादृश्य, समानता 24 किसी ग्रंथ का भाग या खंड, परिच्छेद या अध्याय आदि 25 अभिनेता का चरित्र 26 अवसर, अवसर, अवकाश 27 (संगीत० में) सुर, स्वर के स्पंदन की मात्रा। सम० अध्यक्ष स्थानीय मजिस्ट्रेट, स्थान का अधीक्षक, आसन त्पु०, द्वि० व०) बैठा हुआ,—आवेश किसी स्थान पर कैद, कारावसन—तु० आवेश,—चिन्तक सेना के शिविर के लिए स्थान की व्यवस्था करने वाला अफसर,—च्युत दे० 'स्थानभ्रष्ट',—पाल रक्षवाला, रक्षक, आरक्षी, —भ्रष्ट (वि०) किसी पद से हटाया हुआ, स्थापित, पदच्युत बेकार, माहात्म्यम् 1 किसी स्थान का गौरव या महत्व 2 किसी स्थान में पाया जाने वाली असाधारण पवित्रता या दिव्य गुण, योग्य युक्त स्थान का निर्देशन द्रव्याणां स्थानसाहश्यं गुण-विकल्पमेव च- मनु० ९।३३२ —स्थ (वि०) उस स्थान पर स्थित, अचल।

स्थानकम् [स्थान+स्वार्थे क] 1 अवस्था, स्थिति 2 नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा० पताकास्थानक 3. शहर, नगर 4 आलबाल 5 शराब की सतह पर उठा हुआ फेन 6 सस्वर पाठ की एक रीति 7 यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक या प्रभाग।

स्थानतः (अव्य०) [स्थान --तसिल्] 1 अपनी स्थिति या अवस्था के अनुसार 2. अपने उपयुक्त स्थान से 3 उच्चारण करने के अंग के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्थान +ठक्] 1 किसी स्थान विशेष से संबंध रखने वाला, स्थानीय 2 (व्या० में) जो किसी अन्य वस्तु के बदले प्रयुक्त हो, या उसका स्थानापन्न हो,—क 1 कोई पदाधिकारी, स्थानविशेष का रक्षक 2 किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्यास्ति स्थानेन इनि] 1 स्थानदाता 2 स्थैर्यसम्पन्न, स्थायी 3 वह जिसका कोई स्थानापन्न हो (पु०) 1 मूलरूप या मौलिक तत्व, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो—स्थानिनिवेशोऽस्त्रियाम्—या० १।११५६ 2. जिसका अपना स्थान हो, अधिष्ठित।

स्थानीय (वि०) [स्थान+छ] 1 स्थानविशेष से संबद्ध, किसी स्थान का 2 किसी स्थान के लिए उपयुक्त, उदा० नगर, शहर।

स्थाने (अव्य०) ['स्थान' का अधि० का रूप] 1. ठीक या उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, उपयुक्त रूप से, ठीक समय पर, समुचित रीति से स्थाने युक्तं मृगयन्ति भिक्षवः रघु० ३।१३, स्थाने प्रयोगः कामिनां दूरयोजना मालवि० ३।१४, कु० ६।६७, ७।६५ 2 के स्थान में की बजाय, के बदले, स्थानापन्न के रूप में—स्थानो स्थाने इदादेश मुद्रांक सम्बन्धेश्वर रघु० १-१५८ 3 के कारण, के लिए 4. इसी प्रकार, भांति।

स्थापक (वि०) [स्थापयति—स्था +णिच् +ण्वुल्] खड़ा करने वाला, जमाने वाला, नींव डालने वाला स्थापित करने वाला, विनियमित करने वाला,- क. 1 यज्ञ के कार्य का निदेशक रंगमंच-प्रबंधक सूत्रधार 2 किसी देवालय का प्रतिष्ठाता, मूर्ति की स्थापना करने वाला।

स्थापत्य [स्थपति+ष्यञ्] अन्तःपुर का रक्षक, स्थापत्यं वास्तु विद्या, भवननिर्माण कला।

स्थापनम् [स्था +णिच् +ल्युट्, पुकागमश्च] 1 खड़ा करने की क्रिया, जमाना, नींव डालना निदेश देना, स्थापित करना, संख्या बनाना 2 विचारों को जमाना, मन को संकेन्द्रित करना, ध्यान, धारणा 3 निवास आश्रय 4. गर्भाधान संस्कार (जब गर्भवती स्त्री का गर्भस्थ शिशु में प्रौढ़संस्कार का प्रथम लक्षण ज्ञात हो, उस समय यह संस्कार किया जाता है), दे० पुंसवन।

स्थापना [स्था +णिच् + युच् --टाप्, पुक्] 1 रखना, जमाना नींव रखना स्थापित करना 2. व्यवस्था करना, विनियमन (नाटक में) रंगमंच का प्रबंध।

स्थापित (भू० क० कृ०) [स्था+णिच्+क्त पुक्] 1 रक्खा हुआ, जमाया हुआ, अवस्थित, धरा हुआ 2 नींव डाली हुई, निर्दिष्ट 3 खड़ा हुआ उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ 4 निर्धारित विनियमित, आदिष्ट, अभिप्रेत 5 निर्धारित तय किया हुआ, निश्चित किया हुआ 6 नियत, जिसका कोई पद या कर्तव्य सौंपा गया हो 7 विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो—या० १।५५ 8 दृढ़, स्थिर।

स्थाप्य (वि०) [स्था--णिच् + ण्यत्, पुकागमः] 1 रक्खे जाने या जमा किये जाने योग्य 2 नींव डाले जाने योग्य, स्थिर या स्थापित किये जाने योग्य, व्यय धरोहर, जमानत। सम०—अपहारकम् धरोहर की वस्तु हड़प कर जाना, जमानत में अपहरण।

स्थामन् (नपु०) [स्था+मनिन्] 1 आत्मबल, शक्ति स्थैर्य, जैसा कि 'अवस्थामन्' में, दे० 'अवस्था

मन्' के अन्तर्गत महा० का उद्धरण 2. स्थिरता, स्थायित्व।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] 1 खड़ा रहने वाला टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समास के अन्त में) 2 सहन करने वाला, निरन्तर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला शरीरं शतवर्षस्थि कल्पान्तस्थायिनो गुणा—सुभा०, कतिपय दिवसस्थायिनी यौवनश्री भर्तृ० २।८९, महाबार ३।१५ 3 जीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला मेघ० २३ 4. स्थिर, दृढ़, पक्का अपरिवर्ती जैसे न बदलने—स्थायी भवति (पक्का हो जाता है) (पु०) 1 नित्य या शाश्वत भावना, (द० सं० स्थायिभाव) शि० २।८३ (ना०) 1 कोई भी टिकाऊ वस्तु दृढ़ स्थिति या दशा। सम० भाव मन की स्थिर दशा, टिकाऊ या सदा रहने वाली भावना, (कहते हैं इन स्थायिभावों में हर काव्यरस विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है, प्रत्येक रस का अपना स्थायिभाव होता है) स्थायिभाव जिनकी मे आठ या नौ हैं —तिरस्कृत्य स्थायिन्यपरमपि भावान्तरमहो भवेत्तथा। मुधासा शिवस्यापीत्थम्भूतो ग्रसति शमयोर्पि च सा० द० २०६, सा० व्यभिचारिभाव, भाव या विभाव भी।

स्थायुक (वि०) (स्त्री०- का, की) [स्था+उकञ्, युक्] 1 जो ठहरने वाला हो, या जिसमें ठहरने की प्रवृत्ति हो 2 दृढ़ स्थिर, अचल —कः गाड़ी का मुखिया या संचालक।

स्थालक [स्थायति निरुद्धि अन्नादिकं आधारे अत्र] 1 थाली जैसी तश्तरी 2 कोई भोजनपात्र पाकपात्र बर्तन। सम० -पाक पाकपात्र की आकृति।

स्थाली [स्थाल ङीष्] 1 मिट्टी का घड़ा या हांडी, रांधने का बर्तन कहावत अटलाई—नहि भिक्षुका. सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते सर्व०, स्थाल्या वैदूर्य-मया पत्त्रि निलक्षणीयमिदमैक्षवन्दनार्हं भर्तृ० २। १०० 2 सोम तैयार करने के काम आने वाला विशेष पात्र, पाटल्यावृक्ष, तुरही के सदृश फूल। सम० -पाक एक धार्मिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं, पुरोडाश् पाक पात्र में जमा हुआ दूध या तरौंछ, पुलाक: पाकपात्र में पकाया हुआ चावल 'स्थाय. दे० 'स्थाय' के अन्तर्गत, शिखम् पाकपात्र का भीतरी हिस्सा।

स्थावर (वि०) [स्था+वरच्] 1 एक स्थान पर जमा हुआ, अचल, वहिल, अक्षर, जड़ (विप० जंगम) —शरीराणां स्थावरजङ्गमानां सुखाय तज्ज्ञान्यदिह बभूव कु० १।२३, ६।६७ ७३ 2 निश्चेष्ट, निष्क्रिय, जड़ 3. नियमित, स्थापित, दृ: पहाड़—स्थावराणां हिमालय:- भग० १०।२५, रघु० कोई भी स्थिर या जड़ पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि ब्रह्मा की सातवीं सृष्टि है मनु० ४१) —मान्य स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्ययहारहेतु: रघु० २।४४, कु० ६।५८ 2 धनुष की डोरी 3 अचल सम्पत्ति, माल असबाब 4 पैतृक या पैतृकी प्राप्त सम्पत्ति। सम० अस्थावरम्, जङ्गमम् 1 बल और अचल सम्पत्ति 2 चेतन और जड़ पदार्थ।

स्थाविर (वि०) (स्त्री०-रा,-री)[स्थविर+अण्] मोटा, दृढ़, रूक्ष दुबला।

स्थासक [स्था+स+स्वार्थादौ क] 1 सुवासित करना, शरीर पर सुगन्धित लेप करना 2 पानी का बुलबुला या कोई तरल पदार्थ -शि० १८।५।

स्थास्नु (नपुं०) [स्था+स्नु] शारीरिक बल।

स्थास्नु (वि०) [स्था+स्नु] 1 स्थिर, दृढ़, अचल 2 स्थायी, नित्य टिकाऊ, पायदार -शि० २।९३, कि० २।१९।

स्थित (भू० क० कृ०) [स्था+क्त] 1 खड़ा हुआ, रहा हुआ, ठहरा हुआ 2 खड़ा होने वाला 3 उठकर खड़ा होने वाला, उठा हुआ—स्थित. स्थितामुच्चलितां प्रयातां —स्थायेव ता भूपतिरन्वगच्छत्—रघु० २।६ 4 टिकने वाला, सहारा लेने वाला, जीवित, विद्यमान, मौजूद स्थित—धन्या केय स्थिता ते शिरसि मुद्रा० १।१, वेणी० ७ (प्राय: वर्तान्त के साथ विशेषक के रूप में) विक्रम० १।१, म० १।१, कु० १।१ 5 घटित, हुआ हुआ—कु०४।२७ 6 पदाय डाला हुआ, अधिकार किया हुआ, नियुक्त किया हुआ भ० ४।१८ 7 क्रियान्वित करने वाला, डटा रहने वाला, सयनुरूप रघु० ५।३३ 8 निश्चेष्ट खड़ा हुआ, रुका हुआ, ठहरा हुआ 9 जमा हुआ, दृढ़तापूर्वक लगा हुआ कु० ५।८२ 10 स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितधी' और 'स्थितप्रज्ञ' में 11 निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ —कु० ४।३९ 12. स्थापित, समादिष्ट 13. आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14. ईमानदार, धर्मात्मा 15. प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16 सहमत, व्यस्त, संविदाबद्ध 17. तैयार, निकटस्थ, समीप, स्वयं स्वयं खड़ा हुआ (जैसे कि काल) । सम० उपस्थित (वि०) 'इति' शब्द से युक्त या रहित (जैसे कि शब्द) धी(वि०) दृढ़मनस्क, स्थिरचित्त, शान्त,—धान्यम् खड़ी हुई स्त्रीलिंग द्वारा प्राकृत में पाठ.—प्रज्ञ (वि०) निर्णय या समझदारी में दृढ़, सब प्रकार के भ्रमों से मुक्त, सन्तुष्ट—प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्ट: स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते भग० २।५५, —प्रज्ञा (पु०) पक्का या विश्वासपात्र मित्र।

स्थिति: (स्त्री०) [स्था+क्तिन्] 1. खड़े होना, रहना, टिकना, डटे रहना, बीमित होना, ठहरना, निवास-

स्थान—स्थिति नो रे दय्या, क्षणमपि मदाश्लेषण सखे - भामि० १।५२, रक्षागृहे स्थितिर्मूलमग्नि- क्षुद्दो स्थितिरुच्यय —उत्तर० १।६ 2. रुकना, चुप होकर खड़े होना, एक ही अवस्था में रहना प्रस्थि- तायां प्रतिष्ठेथा स्थितायां स्थितिमावहे —रघु० १।८९ 3 अडिग रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता, लगे रहना, भक्ति मम भूयात् परमात्मनि स्थिति भामि० ४।२३ 4 हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा 5 प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव अथवा स्थिति- स्थि मन्दमतीनाम् हि० ४ 6 स्थिरता, स्थायित्व, चिरस्थायित्व, निरन्तरता - वशस्थितः रधिगमान्महति प्रमोदे विक्रम० ५।१५, कन्या कुलस्य स्थितये स्थितिज्ञ कु० १।१८, रघु० ३।२७ 7 आचरण की शुद्धता, कर्तव्यपालन में दृढ़ता, शिष्टता, कर्तव्य, नैतिक सदाचार, औचित्य रघु० ३।२७, ११।६५, १२।३१, कु० १।१८ 8 अनुशासन का पालन, (किसी राज्य में) सुव्यवस्था की स्थापना—रघु० १।२५, 9 दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा 10 निर्वाह जीवन का बने रहना—मा० १।३२, रघु० ५।१ 11 जीवन में नैरन्तर्य, रक्षितावस्था (मानव की तीन अवस्थाओं में से एक)—सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतु - रघु० २।४४ कु० २।६ 12 यति, विराम विरति 13 कुशलक्षेम, कल्याण 14 सगति 15 निश्चित नियम, अध्यादेश, आज्ञप्ति, सिद्धांतवाक्य नीतिवाक्य 16 निश्चित निर्धारण 17 अवधि, सीमा, हद 18 अड़चन, गति- हीनता 19 ग्रहण की अवधि। सम० रूपक (वि०) मूल अवस्था में जमाने वाला, पूर्वावस्था को प्राप्त करने की शक्ति रखने वाला, लचीलेपन को धारण करने वाला, क लचीलापन, पूर्वावस्था को पुन प्राप्त करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था+किरच्, म० त० स्थेयस्, उ० अ० स्थेष्ठ] 1 दृढ़, स्थिरमति, जमा हुआ भावस्थिरणि जननान्तरसौहृदानि—मा० ५।२, स स्थास्नु स्थिरभक्ति- योगमुलभो नि श्रेयसायास्तु व - विक्रम० ३।१, कु० १।३०, रघु० ११।१९ 2 अचल, शान्त, गतिहीन—कु० २।३८ 3 दृढ़तापूर्वक जमा उत्तर० ३।४० 4 स्थायी, नित्य, शाश्वत मेघ० ५५, मा० १।३१, 5 शान्त, सचेत, स्वस्थचित्त धीर, गम्भीर 6 मौन, अक्षुब्ध 7 आचरण में पक्का, दृढ़ 8 सतत, अविराम, दृढ़-संकल्प 9 निश्चित, विश्वास योग्य 10 कठोर, ठोस 11. मजबूत, अभेद्य 12 कड़ा, निष्करुण, कठोर- हृदय कु० ५।४७, --रः देव, सुर 2 वृक्ष, 3 पहाड़ 4 साल = शिव का नाम 6 कार्तिकेय का नाम 7. मोक्ष या निर्वाण 8. शनिग्रह (स्थिरीकृ 1 पुष्ट करना, मजबूत करना, समर्थन करना 2. रुकना, दृढ़ करना 3 प्रसन्न करना, तसल्ली देना, आराम पहुँचाना —त० त, स्थिरीभू- 1 स्थिर या दृढ़ होना 2 शान्त या धीर होना)। सम० अनुराग दृढ़ आसक्ति वाला, स्नेहमिक्त, आत्मन्,—चित्त, चेतस् बुद्धि, मति (वि०) 1 दृढ़मना, विचार या संकल्प का पक्का दृढ़ संकल्प, रघु० ८।२२ शान्त धीर, अक्षुब्ध, आयुस्, जीवित् (वि०) दीर्घजीवी, चिरजीवी, आरम्भ (वि०) दायित्व निर्वाह में दृढ़, धैर्यशाली, कुटुक 1 लगातार पीसने वाला 2 (बीजग० में) समान भाजक गन्ध चाकर फूल छत्र भाजपत्र का वृक्ष, छाय 1 व स्त्रियों का छाता देने वाला 2 वृक्ष, जिह्व मछली, जीविता मछली (मादा मछली) का पेट,—द्रुः साल वृक्ष 1 चंदन वृक्ष 2 बकुल वृक्ष, मौलसिरी, प्रतिज्ञ (वि०) दृढ़प्रतिज्ञ, हठी, आग्रही 2 वचन का पालन करने वाला, प्रतिज्ञत्व (वि०) विवाद करने में दृढ़, हठी त० त० फला कुमाड़ी, --शोणि बड़ा भारी वृक्ष का जाया और शाल द, शौबल (वि०) सदा चंचल रहने वाला। स० 1 विधायक परो 2 विश्वासी पात्रक, श्री (वि० सदा रहने व ली समृद्धि वाला संयर (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सच्चा, बात का धनी सौहृद (वि०) मित्रता में दृढ़ स्थायिन् (वि०) दृढ़ या अटल रहने वाला। पूर्णतः शान्त रहने वाला (जैन दि समाधि में)।

स्थिरता, त्व [स्थिर + तल्+टाप्, त्व वा] 1 दृढ़ता स्थैर्य विश्वासपात्र होने और कर्तव्यशीलता पालन शी० ४।२८ 3 सामर्थ्य मन की दृढ़ता 4 अचलता।

स्थिरा [स्थिर + टाप्] पृथ्वी।

स्थुड् [चुरा० पर० स्थुण्डति] रुकना।

स्थुलम् [स्थुड् अच् पृषो० दस्य ल] एक प्रकार का तृण तृण।

स्थूणा [स्था - नक्, ऊठादेश, पृषो०] 1 घर का खंभा मजबूत स्तंभ 2 पाल या खंभा स्थूणानिखननन्यायेन - शारी० 3 लौहमूर्ति या प्रतिमा 4 घर। सम० —निखननन्याय 'न्याय' के नीचे देखो।

स्थूणः [पुं०] 1 प्रकाश 2 अनुमान।

स्थूर [स्था + ऊरन्] 1 बोझ 2 मजदूरी।

स्थूल (वि०) [स्थूल् + अच् म० अ० स्थवीयस्, उ० अ० स्थविष्ठ] 1 विस्तृत, बड़ा बहुत विशाल, महान बहुस्थलाति स्थूलेन स्थीयसे दहिरम्बरेण शि० २।७८ (यहाँ छठा अर्थ भी घटता है) स्थूलस्तम्भावल- म्बम् मेघ० १४ १०६ रघु० ६।७४ 2 मोटा मोटक, हृष्टपुष्ट 3 मजबूत, अभिलाषी—स्थल स्थूल इवाभिनि—का० 'कठिनाई से साथ लगा हुआ'

4. बेढौल, भद्दा 5. सम्पूर्ण, साधारण, अनाड़ी (आल० से भी) जैसा कि 'स्थूलज्ञानम्' में 6 मूर्ख, मूढ़, बुद्धू, नाममात्र 7 आलसी, सुस्त, ठंडा 8 अपवित्र, सः कटहल,—कम् 1 ढेर, राशि 2 तन 3. पहाड़ की चोटी। सम०—अन्त्र बड़ी आंत जो गुदा के पास तक जाती है,—आस्थः गांठ, उभार 1 पर्वत जैसा जो सिर पर ऊबड़-खाबड़ टीले जैसा बन गया हो 2 अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3 हाथी की मध्यम गति 4 मूढ़ता 5 हाथी के दांत का रोग, —आस्य (वि०) मोटा, बेढंगा,—ओष्ठः- ओष्ठ, दांत, —कायः बुजकी, —तालः हिंताल.—त्वच्, —त्वच् (वि०) मूर्ख, बुद्धू, —नासः लम्बी जाति का सरकंडा —नास, नासिक (वि०) मोटी नाक वाला, (—सः,—कः) सूअर, वराह, पट —पटम् मोटा कपड़ा,—पट्ट कपाल, पाद (वि०) मोटे पैर वाला, सूजे पैर वाला, (- दः) 1 हाथी 2 श्लीपद रोग से ग्रस्त व्यक्ति, फलः सेमल (आसमली) का वृक्ष, बलम् मोटा हिसाब मोटा अन्दाज लक्ष, बुद्धि (वि०) 1 ज्ञानशील, बहादुर, उदार 2 समझदार, विद्वान् 3 लाभ-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, मूलम् बड़ी योनि वाली स्त्री,—शरीरम् भौतिक और नश्वर शरीर (विप० सूक्ष्म (लिंग) शरीर), शाटकः, शाटिः मोटा कपड़ा, शीर्षिका क्षुद्र-पिपीलिका, छोटी चिकड़ी जिसका सिर, शरीर के अनुपात से बड़ा हो, सूक्ष्म 1 मोटा 2 घिसा हुआ,—स्कन्धः लकुच वृक्ष, बड़हल का पेड़ हस्तः हाथी की सूंड़।

स्थूलक (वि०) [स्थूल+कन्] विस्तृत, बड़ा, महान्, विशाल, —कः एक प्रकार की घास या सरकुल (सरकंडा)।

स्थूलता, स्थूल्य [स्थूल+तल्+टाप्, त्व वा] 1 विस्तार, विशालता बड़प्पन 2 मूर्खता, जड़ता।

स्थूलयति (ना० धा० पर०) बड़ा होना, हृष्ट-पुष्ट होना, मोटा होना।

स्थूलिमन् (पु०) [स्थूल+इमनिच्] ऊंट।

स्थेमन् (पु०) [स्था+इमनिच्] दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, अडियलपन हठीयाम करना स्थेमसाद्यः —शि० १८।३३, न यत्र स्थेमानं दधुरतिभयभ्रान्त पवना —भामि० १।३२।

स्थेय (वि०) [स्था+यत्] जमाये जाने योग्य, रक्खे जाने योग्य, निक्षिप्त या निधारित किये जाने योग्य, —यः (दो दलों के बीच वर्तमान) 1 झगड़े का फैसला करने के लिए छांटा गया व्यक्ति विवादक, पंच, निर्णायक 2. पुरोहित।

स्थेयस् (वि०) (स्त्री० सी) [स्थिर+ईयसुन्, स्थादेश, प० अ० 'स्थिर' की] दृढ़तर, अपेक्षाकृत बलवान्।

स्थेष्ठ (वि०) [स्थिर+इष्ठन्, स्थादेश, उ० अ० 'स्थिर' की] अत्यन्त दृढ़, अत्यधिक।

स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] 1 दृढ़ता, स्थिरता अचलता, निश्चलता 2 निरन्तरता 3 मन की दृढ़ता, संकल्प, स्थायित्व भग० १३।७ 4 सहनशीलता 5 कड़ापन, ठोसपना।

स्थौणेयः, स्थौणेयकः [स्थूणा+ढक्, ढकञ् वा] एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

स्थौरम् [स्थूर+अण्] 1 दृढ़ता, सामर्थ्य, शक्ति 2. गधे या घोड़े पर लादने का पूरा बोझ।

स्थौरिन् (त्रि०) [स्थौर+इनि] 1 पीठ पर बोझा ढोने वाला घोड़ा, लद्दू घोड़ा 2 मजबूत घोड़ा।

स्थौल्यम् [स्थूल+ष्यञ्] बड़प्पन, विशालता, हृष्ट-पुष्टता।

स्नपनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1 छिड़कना, नहलाना 2 स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना देवैः स्नपनसाहसराईमूर्ति — शि० ५।५७।

स्नपक [स्नप+अण्] धोना, निखारना, टपकना।

स्नम्प् (स्ना० दिवा० पर० स्नप्यति स्नम्पति) 1 बसना 2 उपलना (जैसे मुंह से), परिश्राम करना।

स्ना (अदा० पर० स्नाति, स्नात) 1 स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना मृदुतुच्छाम्भसि स्नान 2 गुरुकुल छोड़ते समय स्नान करने के संस्कार का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्नापयति ते, स्नपयति—ते) नहलाना, धोना करना, तर करना, छिड़कना (तोयैः) सतुर्यमेना स्नपयांबभूवुः कु० ७। १०, सिमनस्पितावरा—शीत० १२, उत्तर० ३।२३, कि० ५।४४, ४७, शि० २।७, ८।३, वेणी० ४३, इच्छा० (सिस्नासति) स्नान करने की इच्छा करना, क्षय,—मृत्यु के कारण शोक मनाने के पश्चात् स्नान करना, शि,—मछली डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, दे० 'निस्नात'।

स्नातकः [स्ना+क्त+क] 1 ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन समाप्त कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2 वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त कर अभी गुरुकुल से लौटा है और गृहस्थ धर्म में दीक्षित हुआ है 3 वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि को पूरा करने के लिए शिक्षु बना हो मनु० ११।१ ' पढ़ने तीन वर्षों का कोई पुरुष जो गृहस्थधर्म में दीक्षित हो चुका है।

स्नानम् [स्ना भावे ल्युट्] 1. धोना, मार्जन करना, पानी में डुबकी लगाना तः प्रविशति स्नानीयार्थं. कादम्बरी पृ० ४ 2. स्नान द्वारा शुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कारिक मार्जन 3 मूर्ति का स्नान कराना 4 कोई, वस्तु जो स्नान या मार्जन में काम आवे। सम० अगारम् स्नानगृह, धोनी स्नान करने की

नांद,—वत्सा ज्येष्ठपूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व,—अवभृथ स्नान का वस्त्र—सकृत् कि पीडित स्नानवस्त्रं मुञ्चेत् वृतं पयः—हि० २।१०६,—विधि: 1 स्नान करने की क्रिया 2 स्नान करने के उचित नियम या रीति।

स्नानीय (वि०) [स्नानाय हित छ] स्नान के लिए योग्य, मार्जन के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ वस्त्र,—स्नानीयवस्त्रक्रियया एतदेव कोपयुज्यते —मालवि० ५।१२,—यम् जल या और कोई पदार्थ (जैसे कि उबटना, या सुवासित चूर्ण आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो—रघु० १६।२१।

स्नापक: [स्ना+णिच्+ण्वुल्, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए सामग्री लाने वाला नौकर।

स्नापनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की टहल करना—मनु० २।२०९।

स्नायु: [स्नाति कृच्छ्रात् दोषाऽनया—स्ना+उण्] 1 कण्डरा, पेशी, नस—स्नाय्व स्नायुवसावशेषमभित निर्मांसमस्थि यो —मनु० २।३० 2 धनुष की डोरी। सम०—अर्श (न्) आँख का एक विशेष रोग।

स्नायुक [स्नायु+कन्] दे० 'स्नायु'।

स्नाव, स्नावन् (पु०) [स्ना+वन्, वनिप् वा] कंडरा पेशी।

स्निग्ध (वि०) [स्निह्+क्त] 1 प्रिय, स्नेही, हितैषी, अनुरक्त, प्रेमी मा० ५।२० 2 चिकना तैलाक्त, मसृण, तेल में भीगा हुआ उत्पक्ष्मामि त्वयि नटमने स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे मेघ० ५९ स्निग्धश्चौमवसने —१८, शि० १२।२३, मा० १०।४ 3 लचीला, लसलसा, लेसदार, लिबलिबा 4 प्रभामित, चमकीला उज्ज्वल, चमकदार कनकनिकषस्निग्धा विद्युत् प्रियानु मनोदशी—विक्रम० ४।१, मेघ० २३ उत्तर० १।३३, ६।२१ 5 चिकना, स्निग्धकाशी 6 गीला, तर 7 ज्ञानी 8 कृपालु, मृदु, सौम्य, मिलनसार —प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनै पीयमान मेघ० १६ 9 प्रिय, रुचिकर, मोहक, रघु० १।३६, उत्तर० २।१४, ३।२२ 10 मोटा, सघन, घटा हुआ—स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु (चक्रे) —मेघ० १ 11 खुला हुआ, जमाया हुआ, (दृष्टि की भाँति) टकटकी लगाये हुए, —क: 1 मित्र, स्नेही, मित्रसदृश, हितैषी—विद्वे स्निग्धैरपकृतमपि ह्येष्यता यान्ति शिक्षित् हि० २।१६०, या, स स्निग्धोऽकुशलान्निवारयति य —सुभा०, पद्य० २।१६६ 2 लाल एरण्ड का पौधा 3. एक प्रकार का चीड़ का वृक्ष —क्षम् 1. तेल 2. मोम 3. प्रकाश, आभा 4 मोटापन, घुरघुरापन। सम०—अक्ष: स्नेही आँखों वाला, हितैषी मित्र—स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यबेदनं भवति —का० ३, —तण्डुल: एक प्रकार का चावल जो जल्दी उबलता है,—दृष्टि (वि०) टकटकी लगाकर देखने वाला।

स्निग्धता,—त्वम् [स्निग्ध+तल्+टाप्, त्व वा] 1 चिकनाहट 2 सौम्यता 3 सुकुमारता, स्नेह, प्रेम।

स्निग्धा [स्निग्ध+टाप्] मजबा, दस्त।

स्निह् (दिवा० पर० स्निह्यति, स्निग्ध) 1 स्नेह रखना, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, प्रिय होना (अधि० के साथ—जिससे प्रेम किया जाए)—कि नु खलु ताते।स्मिन्नकृत्रिमस्नेरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मन —श० ७, स च स्निह्यत्यात्मभो:—उत्तर० ६ (यहाँ 'आत्मजे' सम्प्रदान कारक भी हो सकता है) 2 अनायास ही अनुरक्त होना 3 किसी पर प्रसन्न होना, कृपालु होना 4 चिपचिपा होना, लसलसा या लिबलिबा होना 5 चिकना या सौम्य होना, प्रेम० (स्नेहयति ते) 1 चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना, चिकनाना, चिकने पदार्थ से लेप करना चिकना करना, तेल लगाना 2 प्रेम करना 3 विघटित करना, नष्ट करना, मार डालना।

स्नु (अदा० पर० स्नौति, स्नुत) 1 टपकना, क्षरण करना बूंद-बूंद गिरना, क्षरित होना पड़ना गिराना, चूना 2 बहना, धार बहना, झ — बह निकलना, उड़ेल देना —प्रस्नुतस्तनी उत्तर० ४।

स्नु (पु०, नपु०) [स्ना+कु] 1 पहाड़ का समतल भूतल 2 चोटी, मस्तक (यहाँ पाँच अर्थों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता कर्म० द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से यह 'स्नून्' शब्द के स्थान में प्रयुक्त होता है)।

स्नु (स्त्री०) [स्नु+क्विप्] स्नायु, कण्डरा, पेशी।

स्नु (वि०) [स्नु+क्त] गिरा हुआ बूंद-बूंद करके गिरा हुआ बहा हुआ आदि।

स्नुषा [स्नु+सक्+टाप्] पुत्रवधू समुपास्यत पुत्रवधूभिरिव स्नुषयेवानिशूलेन्द्रिय प्रिया रघु० ८।१४, १५।७२।

स्नुह् (दिवा० पर० स्नुह्यति, स्नुग्ध या स्नुढ) उबटी करना, मैल करना।

स्नेह: [स्निह्+घञ्] 1 अनुराग, प्रेम, कृपालुता सुकुमारता—स्नेहप्रवृत्तिरित्यपरोधिनाद् कारणाद् अनिभृतिं व विक्रम० २।४ (यहाँ इसमें छठा अर्थ भी घटता है), अस्ति मे वीतरम्भोहोत्तेषु व० १ 2 तैलाक्तता, चिकनाहट, चिकनापन, चिकनाहट (वैशेषिक के अनुसार २४ गुणों में से एक) 3 नमी 4 चर्बी, वसा, कोई भी चिकना पदार्थ 5 तेल निर्विष्टविषय स्नेह स हताशमनुशेविशान् रघु० १२।१ पद्य० १।८७, (यहाँ प्रथम अर्थ भी घटता है) रघु० ४।७५

6 शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि वीर्य। सम० अक्त तेल में सिगोया हुआ, चिकनाया हुआ, चर्बी से लिप्त, अनुवृत्ति (स्त्री०) स्निग्ध या मित्रों जैसा मेल-जोल,—आह्व. दीपक, - छेदः, भङ्गः मित्रता का टूट जाना, पूर्वम् (अव्य०) अनुराग पूर्वक, प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह—रघु० ४।१६, प्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्यारा हो, (—यः) दीपक, भू. इलेष्मा, रङ्गः तिल, वस्तिः (स्त्री०) तेल की भुई लगाना, तेल का अनीमा करना, गुदा के मार्ग से पिचकारी द्वारा तेल डालना,—विमर्दित (वि०) तेल से मालिश किया गया,—व्यक्तिः (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मित्रता का प्रदर्शन, (मदयति) स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२।

स्नेहन (पु०) [स्निह्+ल्युट्, णिच्] 1 मित्र 2 बन्दर 3 एक प्रकार का रोग।

स्नेहन (वि०) [स्निह्+णिच्+ल्युट्] 1 मालिश करने वाला चिकनाने वाला 2 नष्ट करने वाला, —नम् 1 तेल मालिश, चिकनाना, तेल या उबटना मलना 2 चिकनाहट 3 उबटन, स्निग्धकारी।

स्नेहित (भू० क० कृ०) [स्निह्+णिच्+क्त] 1. प्रेमातुर 2 कृपालु, स्नेही 3 लिपा हुआ, चिकनाया हुआ, —त मित्र प्यारा।

स्नेहिल् (वि०) (स्त्री०—ली) [स्निह्+णिलच्] 1 अनुरक्त, स्नेह करने वाला, मित्र सदृश 2 तैलाक्त, चिकना, चर्बी युक्त (पु०) 1 मित्र 2 मालिश करने वाला, तेल करने वाला 3 चिकार।

स्नेहु [स्निह्+उन्] 1 चन्द्रमा 2. एक प्रकार का रोग।

स्नै (भ्वा० पर० स्नायति) पट्टी बांधना, लपेटना, सुडोल करना, आवृत करना, परिवेष्टित करना।

स्नैग्ध्यम् [स्निग्ध+ष्यञ्] 1 चिकनाहट, स्निग्धता, चिकनन, चिक्कणता 2 सुकुमारता, प्रियता 3 चिकनाहट मृदुता।

स्पन्द् (भ्वा० आ० स्पन्दते, स्पन्दित) 1. फड़कना, धकधक करना अस्पन्दिष्टाक्षि वामं च —भट्टि० १५।२७, १४।८३ 2 हिलना, कांपना, ठिठुरना 3 जाना, गतिशील होना, परि—,फड़कना, कांपना, वि , इधर-उधर घूमना, संघर्ष करना।

स्पन्दः [स्पन्द्+घञ्] 1 फड़कन, धकधक 2. कंपकंपी, थरथराहट, गति —मनो मन्दस्पन्दं बहिरपि चिरस्यापि विमृशन्—भर्तृ० ३।५१।

स्पन्दनम् [स्पन्द्+ल्युट्] 1 फड़कना, नाड़ी का फड़कना, थरथराहट, कंपकंपी—बामाक्षिस्पंदनं सूचयित्वा मा० १, इसी प्रकार अधर°, बाहु°, शरीर° आदि 2. थरथरी, फड़कन 3. अर्थक में जीव का स्फुरण।

स्पन्दित (भू० क० कृ०) [स्पन्द्+क्त] 1. थरथरीयुक्त, ठिठुरा हुआ 2 गया हुआ,—नम् नाड़ी का स्फुरण, फड़कन, धकधक।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) 1. स्पृहा करना, होड़ लगाना, मुकाबला करना, प्रतिद्वन्द्विता करना, प्रतियोगिता करना, अस्पर्धिष्ट य रामेण—भट्टि० १५।६५ कस्तैस्सह स्पर्धते भर्तृ० २।१६ 2 ललकारना, चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति—, वि—, चुनौती देना, ललकारना।

स्पर्धा [स्पर्ध्+अङ्+टाप्] प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता, होड़—आत्मनस्तु चुर्वं स्पर्धां सुदुर्जीवंबहुमन्यत 2 ईर्ष्या, डाह 3 चुनौती 4. समानता।

स्पर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्पर्धा+इनि] 1. प्रतिद्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला, प्रतियोगिता करने वाला, प्रतिस्पर्धीनीव -तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु रघु० १३।१३, १६।६२ 2. प्रतिस्पर्धी, ईर्ष्यालु 3 घमंडी, (पु०) प्रतियोगी, समकक्ष व्यक्ति।

स्पर्श् (चुरा० आ० स्पर्शयते) 1 लेना, पकड़ना, छूना 2 मिलना, संयुक्त होना 3. आलिंगन करना, आश्लेषण।

स्पर्शः [स्पर्श् (स्पृश् धा)+घञ्] 1. छूना, संपर्क (सभी अर्थों में—तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्—रघु० १।२८, २।७ 2. संयोग (ज्यो० में) 3. संघर्ष, मुठभेड़ 4 भावना, संवेदना, छूने से होने वाला ज्ञान 5 त्वचा का विषय, स्पर्शयोग्यता, स्पर्शगुण स्पर्शगुणो वायु —तर्क० 6 प्रभाव, रोग, बीमारी का दौरा 7 रोग, व्याधि, विकृति, आदि का मनोव्याधा 8. (क से म तक) पाँचों वर्गों में कोई सा व्यंजन कादयो मान्ता स्पर्शा ° उपहार, दान, भेंट 10. हवा, वायु 11 आकाश 12. एक रतिबंध,—र्शा कुलटा, पुश्चली। सम०—ज्ञ (वि०) स्पर्शज्ञान से रहित, संवेदनशून्य —इन्द्रियम् स्पर्श का ज्ञान, या स्पर्शज्ञान प्राप्त करने वाली इन्द्रिय,—ज्ञत्व (वि०) जिसके पीछे व्यंजन वर्ण हो, ज्ञत्वम्,—मणिः पारस पत्थर -ज्ञानम् वह तत्त्व जिसका छूने से ज्ञान हो,—क्षमा छुईमुई का पौधा वेद्य (वि०) स्पर्श के द्वारा जिसका ज्ञान हो- संचारिन् (वि०) संक्रामक, छूत का,—स्नानम् सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण आरम्भ होने पर स्नान,—स्वरः, —स्वरः मेंढक।

स्पर्शक (वि०) (स्त्री०—की) [स्पर्श् (स्पृश् धा)+ण्वुल्] 1. छूने वाला, हाथ लगाने वाला 2. प्रभाव करने वाला, प्रभाव डालने वाला,—कः हवा, वायु, - कम् 1. छूना, स्पर्श, संपर्क 2. संवेदन, भावना 3. स्पर्शेन्द्रिय या स्पर्शजन्य ज्ञान 4. भेंट, दान।

स्पर्शनकम् [स्पर्शन+कन्] सांख्यदर्शन में प्रयुक्त 'त्वचा' का पर्यायवाची शब्द ।

स्पर्शवत् (वि०) [स्पर्श+मतुप्] 1 स्पर्श किये जाने के योग्य 2 मृदु, छूने में अधिकर या कोमल—कु० १।५५ ।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) गीला या तर होना ।

स्पर्ध् (पु०) [स्पृश्+तृच्] मनोव्यथा, शरीर में विकार, रोग ।

स्पश् (भ्वा० उभ० स्पशति) 1 अवरुद्ध करना 2 दायित्व ग्रहण करना, सपथ करना 3 नत्थी करना 4 छूना, देखना, निहारना, स्पष्ट दृष्टिगोचर होना, जासूसी करना, भांपना, भेद पाना ।

स्पश [स्पश्+अच्] 1 भेदिया, गुप्तचर,—स्पशो ग्रनेर्यंत-वति तत्र विद्विद्याम् शि० १७।२०, दे० 'अग्निस्पश' भी 2 लड़ाई, संग्राम, युद्ध 3 (पुरस्कार पाने के लिए) जंगली जानवरों से लड़ने वाला, या ऐसी लड़ाई ।

स्पष्ट (वि०) [स्पश्+क्त] जो साफ साफ देखा जा सके, व्यक्त, साफ दृष्टिगोचर, साफ, सरल, प्रकट स्पष्टे जाते प्रत्यूषे—का० 'जब धूप खिल गई थी' स्पष्टाकृति—रघु० १८।३०, स्पष्टार्थ—आदि 2 वास्त-विक, सच्चा 3 पूरा खिला हुआ, फूला हुआ 4 साफ साफ देखने वाला,—ष्टम् (अव्य०) 1 स्पष्ट रूप से, साफ तौर पर, साफ-साफ 2 खुल्लमखुल्ला, साहस पूर्वक (स्पष्टीकृ साफ करना, प्रकट करना, व्याख्या खोल कर कहना) । सम० पत्नी वह स्त्री जिसके गर्भ के चिह्न साफ देख पड़ें, प्रतिपत्ति (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, शुद्ध प्रत्यक्षज्ञान,—वादिन्, वक्तृ (वि०) साफ-साफ कहने वाला, मुंहफट, खरा, सरल ।

स्पृ (भ्वा० पर० स्पृणोति) 1. मुक्त करना, उद्धार करना 2 पुरस्कार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3 रक्षा करना 4 जीवित रहना ।

स्पृक्का [स्पृश्+कक् पृषो० अस्य क] एक जंगली पौधा ।

स्पृश् [तुदा० पर० स्पृशति स्पृष्ट] 1 छूना—स्पृशन्नपि गजां हन्ति—हि० ३।१८, कर्ण पद्म स्पृशति हन्ति पर समूलम्—पञ्च० १।३०४ 2 हाथ रखना, थपथपाना, छूना—कु० ३।२२ 3 जुड़ जाना, चिपक जाना, संपृक्त होना 4 पानी से धोना या छिड़काव करना मनु० २।६० 5 जाना, पहुँचना—श० २।१४, रघु० ३।४३ 6 प्राप्त करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना महोक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२ 7 कार्य में परिणत करना, प्रभावित करना, ग्रस्त करना, पसीजना, द्रवीभूत होना मुद्रा० ७।१६, कु० ६।९५ 8 संकेत करना, उल्लेख करना—प्रेर० (स्पर्शयति-ते) 1 छुवाना 2 देना, प्रस्तुत करना —गा कोटिश स्पर्शयता घटोच्चो—रघु० २।४९, अव=उपस्पृश्, अभि—,छूना, छुना—,1 छूना 2 शरीर पर पानी के छींटे देना या स्नान करना मनु० ४। १४३ 3 आचमन करना, पानी देना, कुल्ला करना म नद्यवस्कन्दमुपास्पृशत्यः—भट्टि० २।११, मनु० २।५३, ५।६३, अप उपस्पृश्य 4 स्नान करना—रघु० ५।५९, १८।३१, परि , छूना, अव् , 1 छूना 2 पानी में छिड़काव करना मनु० २।५३ 3 सम्पर्क स्थापित करना ।

स्पृश् (वि०) [स्पृश्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जो छूता है, छूने वाला, ग्रस्त करने वाला, देखने वाला, मर्मस्पृश्, हृदिस्पृश् आदि ।

स्पृष्ट (भू० क० कृ०) [स्पृश्+क्त] 1 छुआ हुआ, हाथ लगाया हुआ 2 सम्पर्क में आया हुआ, स्पर्शी 3 पहुँचने वाला उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पृष्टयुक्त्वान्तरम् कु० ६।७५ 4 ग्रस्त, पकड़ा हुआ मेघ० ६९, अनवस्पृष्टम्—रघु० १०।१९, ५ गन्दा, मलिन मनु० ८।२०५ 6 जिह्वा के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ (पांचों वर्गों में से कोई सा वर्ण) अघोऽस्पृष्टा यणस्त्वीषन्नेमस्पृष्टा अल स्मृता । ईषा स्पृष्टा हृस्व ओकार निर्बोधानुप्रदानत —शिक्षा० ३८ ।

स्पृष्टि ,—स्पृष्टिका (स्त्री०) [स्पृश्+क्तिन्, स्पृष्टि +कन्—टाप्] छूना, सम्पर्क तदुपरि अस्मच्छरीर-स्पृष्टिकया शापितोऽसि—मृच्छ० ३ ।

स्पृह् (चुरा० उभ० स्पृहयति-ते) कामना करना, लालायित होना, इच्छा करना, उत्सुक होना, चाहना (सप्त० के साथ) स्पृहयामि खलु दुर्लभितायाम्मे श० ७, तप क्लेशायापि स्पृहयन्ती का०, न मैथिलेय स्पृहयाम्बुज मम दिशो साम्यलक्ष्मेश्वराय रघु० १६।४२ मनु० २।४५ ।

स्पृहणम् [स्पृह्+ल्युट्] इच्छा या कामना करने की क्रिया, लालायित होना ।

स्पृहणीय (वि०) [स्पृह्+अनीयर्] चाहने के योग्य, अभिलषणीय, स्पृहा के योग्य, वाञ्छनीय अहो बताभि स्पृहणीयवीर्यं—कु० ३।२० वन्द्या स्वयंम जगत स्पृहणीयसिद्धि मा० १०।२१, परस्परेण स्पृहणीयशोभ न चेदिद हन्दमयोजयिष्यत् रघु० ७।१४, कु० ७।६०, उत्तर० ६।४० ।

स्पृहयालु (वि०) [स्पृह्+णिच्+आलुच्] इच्छा करने वाला, लालायित, उत्सुक, उत्कण्ठित (सप्त० या अधि० के साथ) भोगेष्व स्पृहयालवो न हि वयम् —भर्तृ० ३।६४, तपोवनेषु स्पृहयालुरेव—रघु० १४।४५ ।

स्पृहा [स्पृह्+अच्+टाप्] इच्छा, उत्सुकता, प्रबल

कामना, लालसा, ईर्ष्या, अभिलाषा - कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्य पुत्रिण स्पृहाम् वेणी० ३।२०, रघु० ८।३४।

स्पृह्य (वि०) [स्पृह्+णिच्+यत्] वाछनीय, स्पर्धा के योग्य,- ह्यः विभीरा नीबू।

स्पृ (क्या० पर० स्पृणाति) आघात करना, मार डालना।

स्पृष्ट् (पु०) दे० 'स्पष्ट्'।

स्फट् (भ्वा० पर० स्फटति) फट पड़ना, फूलना।

स्फटः [स्फट्+अच्] साँप का फैलाया हुआ फण तु० फट-टा।

स्फटा [स्फट+टाप्] 1 साँप का फैलाया हुआ फण 2 फिटकिरी।

स्फटिक [स्फटि+कै+क] बिल्लौर, काचमणि अगणितमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरणाभस्य सुख प्रविशन्त्यपदेशगुणा -का०। सम०-अचल मेरु पर्वत आदि: कैलास पहाड़, 'गिरि (पु०) कपूर अञ्जन, —अश्मन्, -अद्रि (पु०) शिला बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकारि, स्फटिकारिका (स्त्री०) फिटकिरी।

स्फटिकी [स्फटिक+ङीष्] फिटकिरी।

स्फण्ट् (भ्वा० पर० स्फण्टति) फट पड़ना, बिखरना, फूलना।

-(चुरा० उभ० स्फण्टयति-ते) मखौल करना, मज़ाक करना, हँसी उड़ाना।

स्फर् दे० स्फुर्।

स्फरणम् [स्फर्+ल्युट्] काँपना, थरथराना, फड़कना।

स्फल् (भ्वा० पर० स्फलति) काँपना, थरथराना, फड़कना, सरकना, (चुरा० उभ० या प्रेर० स्फालयति-ते) कंपा देना, हिला देना, आ-, 1 कंपाना, फड़फड़ाना, हिलाना, हुलाना 2 आघात करना, प्रतिरोध करना, खण्डन करना आत्मक्षालित यत्तमदाकरार्द्रं रघु० १६।१३, उत्तर० ५।९ 3 आघात करना, अनुचित लाभ उठाना - शि० १।१, 4 (धनुष को) टंकारना।

स्फाटिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्फटिक+अण्] बिल्लौर पत्थर का, जड़ बिल्लौर पत्थर।

स्फाटित (भू० क० कृ०) [स्फट्+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ फटा हुआ, फूला हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फातिः (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्, सम्प्रसा०] 1. सूजन, शोथ 2 वृद्धि, बढ़ती।

स्फाय् (भ्वा० आ० स्फायते, स्फीत) 1. मोटा होना, बड़ा होना, विस्तारयुक्त होना, विशाल होना 2 सूजना, बढ़ना, फूलना समुच्छ्वसे तयो कोष: पस्फाये अस्त्रसाधवम् भट्टि० १४।१०९ -प्रेर० (स्फाययति-ते) बढ़ाना, विकसित करना, विस्तारयुक्त करना, बड़ा करना—तावत्स्फाययतां शक्तीर्विधिराचकिरतो मुहुः -भट्टि० १७।४३, ४।३३, १२।७६, १५।९९।

स्फार (वि०) [स्फाय्+रक्] 1. विस्तृत, बड़ा, बड़ा हुआ, फूलाव हुआ -स्फारफुल्लकपालीठनिषण्ण-आदि-मा० ५।२३, महावीर० ६।३२ 2 अधिक, पुष्कल महावीर० ५।२, भर्तृ० ३।४२ 3 ऊँचा (स्वर), -र: 1 सूजन, वृद्धि, विस्तार, विकास 2 (सोने में पड़ी हुई) फुटकी 3 उभार, सिल्ली 4 खड़कना, थरथरी-युक्त स्पन्दन, धकधक 5 टंकार,—रम् प्रचुरता, आधिक्य, पुष्कलता (स्फारीभू सूज जाना, फूलना, फैलना, बढ़ना, वृद्धि होना सुस्निग्धा विमुखीभवन्ति मुहुद स्फारीभवन्त्यापद पृष्ठ० १।२६।

स्फारय [स्फुर्+णिच्+स्युट्, स्फारादेश] थरथराहट, स्फुरण, कंपकंपी।

स्फाल [स्फाल्+घञ्] थरथराहट, धकधक, धड़कन, कंपकंपी।

स्फालनम् [स्फाल्+ल्युट्] 1 स्पन्दन, धकधक 2 हिलाना-डुलाना 3 रगड़ना, घिसना 4 थपथपाना, सहलाना (घोड़े आदि को), धीरे-धीरे हाथ फेरना।

स्फिच् (स्त्री०) [स्फाय्+क्विप्] चूतड़, कूल्हा,—अस्स्फिक्पृष्ठपिण्डावयवमुलभान्युपपूनानि जग्ध्वा—मा० ५।१६।

स्फिट् (चुरा० उभ० स्फेटयति-ते) 1. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 2 वृथा करना 3 प्रेम करना 4 ढकना।

स्फिड् (चुरा० उभ० स्फिण्डयति-ते) चोट पहुँचाना आदि दे० ऊपर 'स्फिट्'।

स्फिर (वि०) [स्फाय्+किरच्, स० ब० स्फेयस्, उ० अ० स्फेष्ठ] 1 प्रचुर प्रभूत, बहुत 2 बहुत से, असंख्य 3 विस्तृत, आयत।

स्फीत (भू० क० कृ०) [स्फाय्+क्त, स्फी आदेश:] 1 सूजा हुआ बड़ा हुआ—वेणी० ५।४० 2. मोटा, पीन बड़ा विस्तृत, विशाल 3 बहुत से, असंख्य, अधिक पर्याप्त, पुष्कल, प्रचुर 4 पवित्र—मनु० ४।१२ सकल समृद्ध, फलता-फूलता 6 पैतृक गोत्र से वस्त्र (स्फीतीकृत बड़ा करना, विस्तृत करना)।

स्फीतिः [स्फाय्+क्तिन् स्फी आदेश] 1 वृद्धि बढ़ती, विस्तार 2 प्राचुर्य, अवेष्टता, पुष्कलता धनधान्यस्य च स्फीति सदा मे वर्तता गृहे 3 समृद्धि।

स्फुट् (तुदा० पर०, भ्वा० उभ० स्फुटति, स्फोटति ते, स्फुटित) 1 फट जाना अकस्मात् फूट जाना, टूट जाना, अचानक विदीर्ण होना, दरार पड़ना, भंग होना हा हा! वेधि स्फुटति हृदय जीवते देहजन्म-उत्तर० ३।३८, स्फुटति न सा मनसिजविधिविशिखेन गीत० ७, भट्टि० १४।९९ १५।७७ 2 फूलना, खिलना, फूल देना, कुसुमित होना—स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय गीत० ५ पद्य० १।३६ काव्य०

३।१६७ 3. भाग जाना, छलांग लगाना, तितर-बितर करना, -तुरङ्ग पुस्फुटुर्भीता —भट्टि० १४।६, १०।८ 4. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पड़ना प्रकट होना, स्पष्ट होना।

II (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) 1 फटना, तरेड आना, टूट जाना 2. निगाह में पड़ना,—प्रेर० स्फोटयति—ते, 1 फट कर टुकड़े टुकड़े होना खंडित होना, खोल कर फाड़ना, तरेड डालकर बांटना 2 प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना 3 खोलना भंडाफोड़ करना 4. चोट पहुँचाना, नष्ट करना मार डालना 5 पछोड़ना।

स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] 1 फटा पड़ा टूट कर टुकड़े हुआ, टूटा हुआ, खंडित 2 खिला हुआ फूला हुआ, प्रफुल्लित स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् शि० ६।२५ 3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, स्पष्ट किया हुआ 4 साफ, स्पष्ट साफ दिखाई देने वाला या अंकन

अत्र स्फुटो न दृश्यिदलस्फुटार - काव्य० १. कु० ५।४४, मेघ० ७० कि० ११।४४ 5 प्रत्यक्ष —उत्तर० ३।४२ 6 श्वेत, उज्ज्वल शुभ्र—मुक्ताफल का स्फुटविद्रुमस्थम् कु० १।४४ 7 सुविदित प्रसिद्ध. —स्फुटनृत्यलीलमभवत्सुतनो - शि० ९।७०. (अधिक) 8. प्रसारित, बिकीर्ण 9 उच्च 10 दृश्यमान, भव्य, —टम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, विशदतया, साफ तौर पर, निश्चय ही, प्रकट रूप में। सम० अर्थ (वि०) 1 बोधगम्य, स्पष्ट 2 सार्थक,—तार (वि०) जिसमें तारे रूपी रत्न जड़े हुए हों, उज्ज्वल,—फलम् (ज्या० में) 1 किसी त्रिकोण का यथार्थ क्षेत्रफल 2 किसी गणित का मूलफल - सार किसी ग्रह या तारे का वास्तविक आयाम, सूर्यगति (स्त्री०) सूर्य की दृश्यमान या वास्तविक गति।

स्फुटत्व [स्फुट्+त्व्] 1 तोड़ कर खोलना फाड़ देना, फूट जाना, फट कर खुल जाना 2 प्रसार होना, खुलना, प्रफुल्लित होना।

स्फुटि:, टी (स्त्री०) [स्फुट्+इन्, पक्षे ङीष्] पैरों की खाल का फट जाना, बवाई, पैरों का दुखना या सूजन।

स्फुटिका [स्फुटि+कन्+टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, खप्पर, फाक।

स्फुटित (भू० क० कृ०) [स्फुट्+क्त] 1 फटा हुआ, टूट कर खुला हुआ, खंड-खंड हुआ, तरेड युक्त हुआ 2 मुकुलित, खिला हुआ, प्रफुल्लित (जैसा कि फूल) 3 स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया, दिखलाया गया 4 फाड़ा हुआ, नष्ट 5 हवा उड़ाया हुआ। सम०—चरण (वि०) जिसके पैर फैले हों, बाहर को निकले हुए चौड़े चपटे पैर वाला।

स्फुड् (चुरा० उभ० स्फुडयति—ते) तिरस्कार करना, अपमान करना, तिरादर करना।

स्फुड् (तुदा० पर० स्फुडति) उकसाना।

स्फुण्ट् I (म्वा० पर० स्फुण्टति) खोलना, फुलाना।

II (चुरा० उभ० स्फुण्टयति—ते) मखौल करना, मजाक करना, उपहास करना।

स्फुण्ड् (म्वा० आ० चुरा० उभ० स्फुण्डते, स्फुण्डयति—ते) दे० 'स्फुण्ट्'।

स्फुत् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि। कर आर, -कार 'स्फुत्' ध्वनि, चटकाने की आवाज़।

स्फुर् (तुदा० पर० स्फुरति, स्फुरित) 1 (क) फड़कना, फरकना (जैसे आंख का) शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहु कुत फलमिहास्य श० १।१५, स्फुरता बाहुकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते पंच० १।८ (ख) हिलना, कांपना, लरजना, थरथराना स्फुरद्वल्लीबाहुद्वयविधुतया - उत्तर० १।२९, ६।३३ 2 खसोटना, संघर्ष करना विक्षुब्ध होना इस परिभाषा करण स्फुरन्तम् राम० 3 कूच करना, फेंकना, आगे उछलना-पुरस्फुरद्भिया परम्—भट्टि० १०।६ 4 ऊपर की ओर उछलना, प्रकट हो आना 5 उछलना फूट निकलना उद्गत होना, उठना—प्रभवेत स्फुरति स्वयं ६ दृष्टिगोचर होने लगना दिखाई देने लगना, प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रदर्शित होना

मुखाम्बुजश्री का हरत्यसौ स्फुरन्ती हर चित्तभृङ्गयोः - गंगा० ११८ स्फुरति निरवमादरं हि तस्यां जगाम शिव० ११ 7 चमक उठना, झमझमाना, बिजली उठना चमकना झलकना दिवमिवाभाति - स्फुरति कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी रुचिरयत् तव हृदयदेवता गीत० १०, (तथा) स्फुरन्मयूखावलया चकासे कु० १।२६, रघु० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२७ 8 चमकना विशिष्टता दिखाना, प्रमुख होना पंच० १।२७ 9 अचानक मन में फुरना, अकस्मात् स्मृति में आना 10 थरथराते हुए चलना 11 खरोंचना, नष्ट करना

स्फुर (स्फारयति—ते, स्फोरयति—ते) 1 थरथराना 2 चमकाना झमझमाना 3 फेंकना, डाल देना, आप चमक उठना, अधि 1 फैलाना, प्रकीर्ण होना, फूलना 2 आगे होना, परि ,चमकना, फरफराना, चमकाना करना तत्पर परिस्फुरितसंभ्रमालसासावा. उत्तर० ३।२८, प्र—, 1 फरकना, कांपना 2 फेंकना, प्रसूत होना- प्रास्फुरन्मदनम् - महा० 3 दूर-दूर तक फेंकना, विख्यात होना संस्थितस्य गुणोत्कर्षः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम्- सुभा०, वि—, 1. फरकना, कांपना 2 संघर्ष करना 3. चमकना, दमकना उत्तर० ४ 4 (धनुष को) तानना, टंकारना

(इसी अर्थ में प्रेर० रूप प्रयुक्त होता है) -एकोऽपि विस्फुरितमण्डलदण्डचक्रः किं विग्रहाय भवितुं समयः—वेणी० २।२५, कि० १४।३१।

स्फुटः [स्फुर् भावे घञ्] 1 फड़कना, थरथराना, फुरकना 2 सूजन 3 डाह।

स्फुरत्कम् [स्फुर+स्फुट्] 1 फड़कना, फरकना, थरथराना 2 शरीर के अंगों का (सुभाषुभसूचक) फरकना 3 फूट निकलना, उद्भित होना, दिखाई देने लगना 4 चमकना, दमकना, चमचमाना, झलकना, टिमटिमाना 5 मन में फुरना अचानक स्फुरण हो जाना।

स्फुरत् (वि०) [स्फुर्+शतृ] फड़कने वाला चमकने वाला। सम० -उल्काग्नि, टूटा तारा।

स्फुरित (भू० क० कृ०) [स्फुर्+क्त] 1 कंपायमान, फड़कता हुआ 2 हिला-डुला 3 चमकीला, दमकने वाला 4 अन्धित 5 सूजा हुआ, शब्द 1 फड़कना, फरकना, थरथराहट 2 विद्युत् का मन का संवेग।

स्फुर्छ् (म्वा० पर० स्फुर्छति) 1 फैलना, विस्तृत होना 2 भूल जाना।

स्फुर्ज् (म्वा० पर० स्फुर्जति) 1 गरजना, घरघराहट होना, धमाधम होना, विस्फोट होना,—मनु० १।५३ 2 दमकना चमकना 3 फट पड़ना, फूटना, स्फुर्जत्येव च एष सम्प्रति मम व्यक्तारम्भसम्भ्रमो -महावीर० ३।४० वि, 1 गरजना, घरघराना 2. सूजना 3 बढ़ना 4 चमकना, प्रतीत होना अन्यत्र उद्यतायां तु भवतां यद् अस्मिन् विस्फूर्जसे काव्य० १०।

स्फुल (तुदा० पर० स्फुलति) 1 काँपना, फड़कना, थरथर करना 2 खोलना, अचानक आ पड़ना 3. स्वस्थचित्त होना 4 भार डालना, नष्ट करना।

स्फुलक [स्फुल् - क] वध, नाश।

स्फुलनम् [स्फुल् + ल्युट्] काँपना, थरथराना, फरकना।

स्फुलिङ्ग, गम, स्फुलिङ्गा [स्फुल् + इङ्गच्] आग की चिनगारी -स्फुलिङ्गानस्यद्य अग्निरेषापेक्ष इव विभात. —शा० ३।१५, वेणी० ६।८।

स्फूर्ज [स्फुर्ज + घञ्] 1 काँपना को थरथराहट 2 इन्द्र का वज्र 3 अकस्मात् फट निकलना या उदय होना जैसा कि 'मनस्फूर्ज' में 4 नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसके आरम्भ में आनन्द और अन्त में भय की आशंका रहती है।

स्फूर्जथुः [स्फुर्ज + अथुच्] बिजली की थरथराहट, वज्र।

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर् (स्फुर्ज्) + क्तिन्] 1 थरथर, स्फुरण, थरथराहट 2 प्रकाश, चौकड़ी 3. फुलझिर, प्रफुल्लिता 4 प्रकटीकरण, प्रदर्शन 5. मन में फुरना 6. काव्य की उद्भावना।

स्फूर्तिमत् (वि०) [स्फूर्ति+मतुप्] 1. थरथराने वाला, थरथराने वाला, विस्फूर्त 2. कामक हृदय।

स्फेयस् (वि०) अतिशयेन स्फिरः, ईयसुन्, स्फादेशः 'स्फिर' की म० अ० [प्रचुर तर, अपेक्षाकृत विस्तारयुक्त।

स्फेयस (वि०) [स्फिर+इयसुन्, स्फादेशः, 'स्फिर' के, उ० अ०] प्रचुरतम, अत्यन्त विस्तारयुक्त।

स्फोटः [स्फुट् करणे घञ्] 1 फूट निकलना, चटक कर खुलना, फट पड़ना 2. भेद खुलना जैसा कि 'मर्मस्फोट' में 3. सूजन, फोड़ा, रसौली 4 शब्द के सुनने पर मन में आने वाला भाव, शब्द सुन कर मन में उत्पन्न होने वाला विचार—यूयमेवंविधाकारणे प्रधानभूतस्फोटकल्पस्य-ज्ञकस्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहार कुरुत - काव्य० १, सर्व० भी दे० (पाणिनीयदर्शन) 5. मीमांसकों द्वारा माना हुआ नित्य शब्द। सम०—वादिन् मिलावाँ।

स्फोटन (वि०) (स्त्री० नी) [स्फुट्+ल्युट्] फाड़कर अलग-अलग करना, प्रकट करना, भेद खोलना, स्पष्ट करना, न: परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण, नख काटना, अचानक फट पड़ना, टुकड़े टुकड़े होना, चटकना 2 अनाज फटकना 3. अंगुलियों को ग्रन्थियां चटकाना, अंगुलियां चटकना 4. दो मिले हुए व्यंजनों का अलग करना।

स्फोटनी [स्फोटन+ङीप्] सूराख करने का औजार, जमीन का बरमा।

स्फोटा [स्फोट+टाप्] साँप का फैलाया हुआ फन।

स्फोटिका [स्फुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक पक्षीविशेष।

स्फोरणम् (दे० स्फुरणम्)।

स्फ्यम् [स्फाय्+क्यप्, नि० साधु] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला लकड़ी के आकार का एक उपकरण —मनु० ५।११३, याज्ञ० १।१८४। सम०—अक्षि इस उपकरण द्वारा बनाया गया छिद्र (खुद)।

स्फ्य दे० स्फ्य।

स्म (अव्य०) [सि+ड] एक प्रकार का निपात जो वर्तमान काल की क्रियाओं के साथ (या वर्तमान कालिक कृदन्त शब्दों के साथ) जुड़कर भूतकाल का अर्थ देता है आसुरको मन्य सिंहः प्रतिबध्नाति स्म पदं० क्षीणन्ति स्म प्राणभृत्यैर्वलानि—शि० १७।१५ 2. सम्बन्धिक्य निपात (बहुधा निषेधात्मक निपात के साथ जोड़ा जाता है अभूदिमामुत्तरापि रोचयतया मा स्म प्रतीप गमः श० ४।१७, मा स्म सीमन्तिनी कान्तिरञ्जनयोत्पुत्रमीदृशम् शि० २।७।

स्मर [स्मि+अप्] 1 आश्चर्य, अचंभा, ताज्जुब 3. अभिमान, घमंड, हेकड़पना, पर्व तस्मै स्मयावेशविवर्जिताय रघु० ५।१९, भर्तृ० ३।३, ६९।

स्मरः [स्मृ भावे अप्] 1. प्रत्याभरण, याद 2. प्रेम 3. कामदेव, प्रेम का देवता,—स्मरपर्वसमुद्भव एष मारुतः -कु० ४।२८, ४२, ४३, रघु०—आतुरः 1. अंगूठी का याचक 2. प्रेमी, कामातुर आशिक,—आयतन्

- कूपकः,—गृहम् मन्दिरम् स्त्री की योनि, भग, —ज्ञ (वि०) कामांध, प्रेममुग्ध,—आतुर - आर्त —उत्सुक (वि०) काम से पीड़ित, कामतप्त, कामदग्ध, आसवः लार, कर्मन् (नपु०) कोई भी कामुकतापूर्ण व्यवहार, स्वैरकृत्य,—गुरु विष्णु का विशेषण —छदम् भगशिश्निका, दशा शरीर की कामजन्य अवस्था (यह दस है), ध्वजः 1 पुरुषेन्द्रिय 2 पौराणिक मछली 3 एक बालयक्ष, (—जम्) भग,(—जा) पौर्णमासी रात,—प्रिया रति का विशेषण,—भावित (वि०) कामोद्दीप्त, मोहः कामजन्य मत्ताहीनता, प्रणयी-माद, लेखनी सारिका पक्षी,—वल्लभ. 1 वसंत ऋतु का विशेषण 2 अनिरुद्ध का विशेषण,—वीथिका वेश्या, रंडी,—शासनः शिव का विशेषण, सखः चन्द्रमा, —स्तम्भः लिङ्ग, पुरुष का लिंग, स्वर्गः. रासभ, गधा हरः शिव का विशेषण।

स्मरणम् [स्मृ+ल्युट्] 1 स्मृति, याद प्रत्यास्मरण केवल स्मरणेनैव पुनासि पुरुष मन —रघु० १०।३० 2 चिन्तन करना—यदि हरिस्मरणे सरसं मन —गीत० १ 3 स्मृति, स्मरणशक्ति 4 परम्परा, परम्परागत विधि इति भृगुस्मरणात् (विष० श्रुति) 5 किसी देवता के नाम का मन में जाप करना 6 वेद में याद करना, वेद पढ़ना 7 काव्यगत प्रत्यास्मरण जो एक अलंकार माना जाता है, इसका परिभाषा है—यथानुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशे स्मृति स्मरणम्- काव्य० १०। सम०—अनुग्रहः 1 कृपापूर्वक स्मरण करना, 2 स्मरण करने की कृपा कु० ६।२०,- अपायसूचकः कम्पन कंपकंपी, अशौनपक्षम् प्रत्यास्मरणों की समसामयिकता का अभाव, पदवी मन्त्र।

स्मार (वि०) [स्मर + अण्] कामदेवसम्बन्धी स्मार पुष्पमय बाण: पुष्पमया अपि। तथाप्यनङ्गस्तैर्लोक्य करोति वशमात्मन रघु [स्मृ + घञ्] प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति।

स्मारक (वि०) (र्मा०—रिका) [स्मृ + णिच् + ण्वुल् स्त्रियां टाप् इत्व च] ध्यान दिलाने वाला, फिर याद कराने वाला,—कम् किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित कोई संस्था (आधुनिक प्रयोग)।

स्मारणम् [स्मृ+णिच्+ल्युट्] मनमें लाना, याद दिलाना, स्मरण कराना।

स्मार्त (वि०) [स्मृतौ विहितं, स्मृति+अण्] 1 स्मृतिसम्बन्धी, याद किया हुआ, स्मारक 2 स्मृति के भीतर 3 स्मृति पर आधारित या स्मृति में अभिलिखित, धर्मशास्त्र में विहित—कर्मस्मार्तविधानतो ध्रुवमीहेत प्रग्रह गृही—याज्ञ० १।९७, मनु० १। १०८ 4 वैध 5 धर्मशास्त्र को मानने वाला 6 वृद्ध (जैसे कि ब्राह्मण), - ः परम्पराप्राप्त धर्म का विशेषज्ञ ब्राह्मण 2 परम्पराप्राप्त धर्म का अनुयायी 3 (स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक) सम्प्रदाय।

स्मि (भ्वा० आ० स्मयते, स्मित) 1. मुस्कराना, हँसना (मंद मंद) कादम्बरस्य ईषत्स्मयमान आस्य—भट्टि० २।११, १५।८, स्मयमान वदनाम्बुज स्मरामि भामि० २।२७ 2 खिलना, फूलना पंच० १।१२६,—प्रेर० (स्मापयति ते) 1 मुस्कान पैदा करना, मुस्कराहट का जन्म देना 2 हँसना, उपहास करना 3 आश्चर्यान्वित करना (इस अर्थ में—स्मापयते) इच्छा० (सिस्मयिषते) 1 मुस्कराने की इच्छा करना। उद् , मुस्कराना, हँसना, वि- 1 आश्चर्य करना, अचंभे में आना—उभयोर्न तथा लोक प्रतीक्ष्येव विसिस्मिये—रघु० १५।६५, भट्टि० ५।५१ 2 मनोहर 3 घमंडी, अहंमन्य होना - न विस्मयेत तपसा—मनु० ४।२३६, (प्रेर०) मुस्कान पैदा करना, आश्चर्यान्वित कराना, आश्चर्य या अचंभे में भरना विस्मापयन् विस्मितमात्मवृत्ती रघु० २।३३, भट्टि० ५।५८, ८।४२।

स्मिट् (चुरा० उभ० स्मेटयति ते) 1 अपमानित करना, घृणा करना, मखौल करना 2 प्रेम करना 3 आना।

स्मित (भू० क० कृ०) [स्मि+क्त, 1 मुस्कानयुक्त, मुस्कराता हुआ 2 फूलता हुआ, खिला हुआ प्रफुल्लित तत् मुस्कान, मंद हँसी, अस्मितम् मुस्कराहट के साथ, स्मितसम्मिलितम् आदि। अस्त्र०—पूर्व (वि०) मुस्कानयुक्त दृष्टि रखने वाला (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, पूर्वम् (अव्य०) मुस्कराहट के साथ, मुस्कान से युक्त —मानसिद्धिमन्तान् स्मितपूर्वमाह कु० ७।४७।

स्मीलू (भ्वा० पर० स्मीलति) खखलाना, होंठ से संकेत करना।

स्मृ (भ्वा० पर० स्मर्वोति) 1 चमक होना, मनोहर होना 2 प्रशंसा करना, श्रद्धा रखना 3 दीप्तिमान रहना।

(भ्वा० पर०—महाकाव्यों में आ० भी—स्मरति, स्मृत—कर्मवा० स्मर्यते) 1 (क) याद करना, मन में रखना, प्रत्यास्मरण करना, मन में लाना विहित होना स्मरन्ति मुनयस्तीर्थं तत्र गोदावरी वा स्मरन्ति च तदुपान्तेष्वाश्रमधर्मस्तैर्यानि—उत्तर० १।२५, (ख) मन में पुकारना, मन से याद करना, घोषणा स्मरामस्तोत्राण्यष्टदेवताम् पंच० १, रघु० १५।४५ 2. किसी देवता के नाम का मन में ध्यान करना या मन में जाप करना, ब्रह्मस्मरन्नुपरिकाल न याज्ञवल्क्यमनसा स्मृति 3 स्मृति में अंकित करना या अभिलेख करना तथा च स्मरन्ति 4. प्रकथन करना, उच्चारण करना, घोषणा, पंच० १।३० 5. वेद के

साथ याद करना, आतुर होना, उत्कण्ठित होना, अभिलाषा करना (बहुधा संबंध के साथ) स्मर्तुं विसहसि न बिंब सुरसुन्दरीभ्यः -कि० ५।२८, कच्चि-च्चिरं स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति मेघ० ८५, मुद्रा० ५।१४, प्रेर० (स्मारयति-ते, परन्तु अस्मिन् अर्थे को प्रकट करने के लिए स्मरयति-ते) 1 याद कराना, फिर ध्यान दिलाना मन में लाना, सोचना —अनेन मतिभ्रमियोगेन स्मारयसि में पूर्वसिद्धां सीतामिनीम् मा० १. कभी कभी द्विकर्मक के रूप में प्रयुक्त अपि चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणान् स्मारयन्ति प्रकृतीः -मुद्रा० १, य एव दुस्सर कालमेव स्मारिता वयम् उत्तर० ५।३४ 2 सूचना देना 3 खेद के साथ स्मरण कराना, लालायित करना, अभिलाष पैदा करना -कि० ६।५६, शि० ६४, इच्छा० (सुस्मूर्षते) प्रत्यास्मरण करने की इच्छा करना, अनु , याद करना, प्रत्यास्मरण करना, मन में ध्यान करना, अप—, भूल जाना, आ , भूल जाना, वि—, भूल जाना—मधुकर विस्मृतोऽयमिदानीं कथम् शा० ५।१, (प्रेर०) भुलाना उत्तर० १, सम् , याद करना, चिन्तन करना—भग० १८।७६, मनु० ४।१४९, (प्रेर०) ध्यान दिलाना, मन में रखना, (पाताल) मामपि सस्मरयतीव भुजगलोकः —रत्न० १।१३ ।

स्मृतिः (स्त्री०) [स्मृ+क्तिन्] 1. याद, प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति अवयवानां करचरणादेः स्मृतिः —तर्क०, स्मृत्युपस्थितौ इमौ ही श्लोकौ—उत्तर० ६ 2 चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3 धर्मशास्त्र, परम्पराप्राप्त धर्मशास्त्र, स्मृतिवाक्य (नीति और धर्म से संबद्ध) (विप० श्रुति) 4 धर्मसंहिता, स्मृतिग्रन्थ 5. स्मृति का मूलपाठ, धर्मसूत्र, धर्म के नियम—इति स्मृतेः 6 इच्छा, कामना 7 सलाह। सम०—अक्षरम् दूसरा स्मृतिग्रन्थ,—अर्थः (वि०) 1. भूला हुआ 2 धर्मशास्त्रविरुद्ध 3 (अतः) अवैध, अन्धानुकूल,—उक्त (वि०) धर्मशास्त्र में विहित, धर्मसूत्र में प्रतिपादित, कर्म,—विषय, स्मरणशक्ति का पदार्थ, स्मृतिपथं,—विषयं गम् करना,—सूत्रं० ३।३०, १८, प्रत्यक्षवत्: स्मृति की यथार्थवादिता, प्रत्यास्मरण की प्रमाणता, प्रत्यक्ष धर्मशास्त्र की प्रमाणता,—लोपः स्मृति का नष्ट हो जाना, याद न रहना, रोधः अधिक विस्मरण, स्मृति का नाश—भग० ७।१२, —विभ्रमः स्मृति की गड़बड़, स्मरण याद न रहना —विरुद्ध (वि०) अवैध, विरोधः 1. धर्म का वैपरीत्य, अवैधता 2. दो या दो से अधिक स्मृतियों का पारस्परिक विरोध—स्मृतिविरोधं परिहरति—शारी०, —शास्त्रम् 1 धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्मसूत्र 2. धार्मिक विज्ञान, शेष (वि०) उपरत, मृत (कोई व्यक्ति) —क्षीणिमन् स्मरणशक्ति की दुर्बलता,—शास्त्र (वि०) धर्मशास्त्रसे सिद्ध होने योग्य,—हेतुः प्रत्या-स्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचार-साहचर्य।

स्मेर (वि०) [स्मि+रन्] 1. मुस्कराने वाला विशेषेण पृथ्वीमधिष्ठिता त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति कु० ५।३०, अमि० २।४, ३।२, मा० १०।६ 2. खिला हुआ, फूला हुआ, फैलाया हुआ, प्रफुल्लित, अधिकविकसदन्तविस्मयस्मेरतारैः मा० १।२८, 3. घमंडी 4. व्यक्त। सम०—दिङ्मुखः भोर।

स्यदः [स्यन्द्+क] चाल, तीव्रगति, तेजी से चलना, वेग।

स्यन्द् (भ्वा० आ० स्यन्दते, स्यन्न, इच्छा०—दिस्यन्दिषते, सिस्यन्दयिषति-ते, इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्यन्द् के स् को ष् हो जाता है)1. रिसना, चूना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, अर्क निकालना, बहना —अपि दलदरविन्द स्यन्दबाष्पं प्रसन्नं तव किमपि सिसृक्षो सम्भ्रमन्तु मुञ्चन्तु पृच्छा भामि० १।५ 2. झरना, उड़ेलना 3. भागना, दौड़ना, अनु—,बहना, अभि—, 1. रिसना, बहना 2. द्रवित होना, पानी गिरना —अभिस्यन्दमानबेभवमेदुरितगीरिव्रिभिः उत्तर०२ 3. पिघलना—उत्तर०६, वि— ,क्षरित ,बह निकलना, सं ,बह जाना, वि ,बहना—महि० १।७४ ।

स्यन्दः [स्यन्द भावे घञ्] 1. बहना टपकना 2. तेजी से जाना, चलना 3. गाड़ी, रथ।

स्यन्दन (वि०) (स्त्री०—ना, नी) [स्यन्द्+ल्युट्] 1. जल्दी से जाने वाला, द्रुतगामी, बहने वाला 2. मूत्र, पुरीष, औषधादि—स्यन्दना नो य सुरवाः—ऋ० १५। १६,—नः पुल-रथ, गाड़ी का रथ—वर्णारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः—श० १।११ 2. वायु, हवा 3. एक प्रकार का वृक्ष, शिंशिप, नम् 1. बहना, टपकना, रिसना 2. तेजी से जाना, बहना 3. पानी। सम०—आरोहः रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला।

स्यन्दनिका [स्यन्दन+कन्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] फूस की गुड़िया।

स्यन्दिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्यन्द्+णिनि] 1. रिसने वाला, बहने वाला, टपकने वाला 2. जल से जाने वाला 3. परिवर्तनशील।

स्यन्दिनी [स्यन्दिन्+ङीप्] 1. गाय, कूप 2. वह गाय जो दो बच्चों को एक साथ जन्म दे।

स्यन्न (भू० क० कृ०) [स्यन्द+क्त] रिसा हुआ, टपका हुआ, गिरा हुआ।

स्यम् (भ्वा० प० अ०, चुरा० उभ० स्यमयति, स्यमयते-ते) 1. शब्द करना, शोर से चिल्लाना, पीड़ना 2. जाना

3 विचार करना, विमर्श करना, चिंतन करना (केवल इस अर्थ में आ०)।

स्यमन्तकः [स्यम्+झच्+कन्] एक मूल्यवान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन आठ स्वर्ण भार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के संकट और अपशकुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तांत जानने के लिए दे० 'सत्राजित्'।

स्यमि (मी) कः [स्यम्+इकक् ईकक्] 1 आदमी 2 वायु 3. एक प्रकार का वृक्ष 4 समय।

स्यमिका [स्यमिक+टाप्] नींद।

स्यात् (अव्य०) [अस् धातु का विधिलिङ् में, प्र० पु०, ए० व०] ऐसा हो सकता है शायद, कदाचित्। सम०—वाद संभावना की उक्ति, संशयवाद (दर्शन० में), —वादिन् (पु०) संशयवादी, स्याद्वाद का अनुयायी।

स्याकः दे० 'श्याक'।

स्यूत (भू० क० कृ०) [सिव्+क्त] 1 सूई से सीया हुआ बखिया किया हुआ, बुना हुआ (आल० से भी) चिन्ता-सन्ततिसन्तुआवनिबिडस्यूतये मनसा प्रिया—मा० ५।१० 2 सीधा हुआ, तह किया।

स्यूति [सिव् भावे क्तिन्] 1 सीना, टांका लगाना 2 सूई का काम 3 थैला 4 वंशावली, कुल 5 संतति।

स्यूमः [सिव्+मक्] 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 थैला, बोरा।

स्यूमः [सिव्+मङ्] प्रकाश किरण।

स्योतः [=स्यूत, पृषो०] बोरा, थैला।

स्योन (वि०) [=स्यून, पृषो०] सुन्दर, मृदुल 2 शुभ, मंगलप्रद,—न. 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 बोरा, —नम् प्रसन्नता, आनन्द।

स्रंस् (स्वा० आ० स्रंसते, स्रस्त) 1 गिरना, नीचे गिर पड़ना—नाभ्रंसत करिणा पैव क्षिप्तदोष्छेदिनामपि—रघु० ४।४८, गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।३०, भट्टि० १४।७२, १५।६१ 2 हटना, घटना, गिर कर टुकड़े टुकड़े होना हाहा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते दारुबन्धः—उत्तर० ३।३८, मा० १।२० 3 नीचे लटकना 4 आना—प्रेर० (स्रंसयति-ते) 1. गिराना, खिसकना, लुढ़काना, बाहर डालना - बाष्पोऽपि नाभ्रंसयदक्षुकानि -रघु० ६।७५ 2 शिथिल करना, ढीला देना, वि, खिसकना, ढीला होना, (प्रेर०) 1. गिरना, गिरने देना,—विस्रंसयती मेखलिकाकारम् कु० ३।६२ 2 ढीला करना, शिथिल करना।

स्रंसः [स्रंस्+घञ्] गिरना, खिसकना।

स्रंसनम् [स्रंस्+णिच् ल्युट्] 1 गिराना 2 गिराना, नीचे पटकना।

स्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्रंस्+णिनि] 1. गिरने वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला ढीला होने वाला, मार्ग देने वाला - अंसे स्रंसिनि बैकहस्तयमिता पर्याकुला मूर्धजाः—श० १।२९ 2 निर्भर, लटकता, ढीला लटकने वाला।

स्रंह् (स्वा० आ० स्रंहते) विश्वास करना, भरोसा करना।

स्रक्विन् (वि०) (स्त्री० णी) [स्रज्+क्विनि, म० अ० स्रजीयस्, उ० अ० स्रजिष्ठ] हार या गजरा पहने हुए,—आमुक्ताभरणं सखीं हसदिवोल्लुङ्कुलवान् रघु० १७।२५।

स्रज् (स्त्री०) [सृज्यते सृज्+क्विन्, नि] गजरा, पुष्पमाला (विशेषतः वह जो मस्तक पर धारण की जाय) स्रजमपि शिरस्यन्ध लिप्सा धुनोत्यहिराकुलः -श० ७।२४ 2. माला, हार। सम०—दामन् (न्) (नपु०) माला की ग्रंथि या गांठ, धर (वि०) मालाधारी गीत० १२ (-रा) एक छंद का नाम।

स्रजा [सृज्+टा, नि०] रस्सी, डोरी सूत।

स्रद्धु (स्त्री०) अपान वायु।

स्रम्भ् (स्वा० आ० स्रम्भते, स्रब्ध) विश्वास करना, दे० 'श्रम्भ्', वि 1 विश्वस्त होना 2 आश्वस्त होना।

स्रव [स्रु+अप्] 1. चूना, रिसना, बहना 2 बूंद, प्रवाह, सरिता विपुलौ स्तनपर्वतौ सा स्तनौ स्रवदक्षयक्षीरौ —राम० 3 फौवारा, निर्झर।

स्रवणम् [स्रु+ल्युट्] 1 बहना, चूना, रिसना 2. पसीना 2 मूत्र।

स्रवत् (वि०) (स्त्री०—अन्ती) [स्रु+शतृ] बहने वाला, रिसने वाला, चूने वाला। सम०—प्रजा वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो 2 दुर्घटना के कारण गिर हुए गर्भ वाली गाय।

स्रवन्ती [स्रवत्+ङीप्] नदी, दरिया - वार्योघेनेव सरस्वतीं श्रुतवतः स्तोपु रघु० १७।६३।

स्रष्टृ (पु०) [सृज्+तृच्] 1 बनाने वाला 2 रचने वाला 3 सृष्टिरचयिता, ब्रह्मा का विशेषण -या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वः० १।१, सन्धास्यन्प्रकृतिमिव स्रष्टारमात्मानम् —७।२७ 4 शिव का नाम।

स्रस्त (भू० क० कृ०) [स्रंस्+क्त] 1 गिरा हुआ खिसका हुआ, नीचे पड़ा हुआ स्रस्तं स्रस्तमपि स्वहस्तात्—कु० ३।५१, कमलवलय स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते श० ३।१३, शि० ५।३१, वेणी० १ 2 लटका हुआ, नीचे लटकता हुआ—विशालवक्षस्थल लोलहारं मृच्छ० ४।८, अन्तासावलिमालकालिकलितस्कन्धे बाहू घटोत्क्षेपणात् श० ३।३० 3. ढीला किया हुआ 4. च्युत, ढीला पड़ा हुआ 5 नंगा, नीचे लटकता हुआ 6 अलग किया हुआ। सम० अङ्ग (वि०) ढीले अंगों वाला 2. मूर्छित, बेहोश।

स्रस्तर. [स्रस्+तरच्, किच्चाद्यर्थोप] पलंग या बीछा, (बिछाने के लिए) बिछौना जिसमें स्रस्तरास्तीर्य विस्तीर्य का०, मनु० २।२०४।

स्राक् (अव्य०) [स्रु+डाक्] फुर्ती से, तेजी से।

स्राव [स्रु+घञ्] प्रवाह, बहाव, रिसना, बूंद बूंद टपकना।

स्रावक (वि०) (स्त्री० विका) [स्रु+ण्वुल्] बहाने वाला, उड़ेलने वाला रिस कर बहने वाला—अम्ल क्षारी मिर्च।

स्रिम् (स्वा० पर० स्रेमति) चोट पहुंचाना, मार डालना।

स्रिम्भ् (स्वा० पर० स्रिम्भति) चोट पहुंचाना, मार डालना।

स्रिव् (दिवा० पर० स्रीव्यति, स्रूत) 1 जाना, 2 सूख जाना।

स्रु (स्वा० पर० स्रवति स्रुत) 1 बहना, धारा निकलना, चूना रिसना, बूंद बूंद करके गिरना, टपकना न हि निम्नास्रवत्तोयम् राम० 2 उड़ेलना, डालना, अर्पित करना अष्टाभिष्टं च भूयिष्ठं दोग्धि चाप्यमृतम् भट्टि० १५।७६, १७।१८ 3 जाना खिसकना घूमना 4 चूना, खिसक जाना खिसकना, नष्ट होना अङ्ग पतन निकलना—अथवा इह तस्यापि भिन्नाधारत्वात्तदा पथा आप०, भट्टि० ६।१८, मनु० २।७४ 5 इधर उधर फैलाना, सब दिशाओं में पहुंचाना, प्रकट हो जाना (भेद आदि) -प्रेर० (स्रावयति—ते) बहाना, उड़ेलना, डालना, अर्पित करना (रक्त आदि) न शास्त्रमस्रावयेत्सृक् मनु० ८।१६० (उपसर्गों से युक्त हो जाने पर धातु के लगभग सभी अर्थ स्रवन है)।

स्रुघ्न. (पु०) एक जनपद या जिले का नाम पञ्चाल श्रुघ्नमुपावृत्तः सिद्धा०, (इस स्थान पाटलिपुत्र से कुछ दूरी पर कम से कम एक दिन यात्रा पर—स्थित था) सु० न हि देवदत्त श्रुघ्नं गच्छन्पाटलिपुत्रं गच्छति पाटलिपुत्रं गच्छन्नपि श्रुघ्नमवश्यं गच्छति व्याकरणेकदेशप्रसङ्गात् -दारी०।

स्रुघ्नी [स्रुघ्न+अण्+ङीप्] सरस्वती, रेह।

स्रुच (स्त्री०) [स्रु+क्विप् किट् आगमः] लकड़ी का बना एक प्रकार का चमचा जिसके द्वारा यज्ञाग्नि में घी की आहुति दी जाती है, जुवा (प्राय खदिर के वृक्ष की बना हुआ)—रघु० ११।२५, मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८३। सम० प्रणालिका चमचे की पनाली।

स्रुत् (वि०) [स्रु+क्विप्, तुक्] (प्राय समास के अन्त में प्रयुक्त) बहने वाला, गिरने वाला, उड़ेलने वाला —स्वरेण तस्यामभवत्स्रुतेव—कु० १।४, ५, शि० १।६८।

स्रुति (स्त्री०) [स्रु+क्तिन्] 1. बहना, रिसना, बूंद निकालना, टपकना, चूना—कीटजनितमुलिखिरसमिवाङ्गमन्त मृद्रा० ६।१३, पद नुपाच्छ्रुतिधौतरक्तम् —कु० १।५, रघु० १६।४४, कि० ५।४४, १६।२, क्षीरश्रुतिसुरभय (धाना) मेघ० १०३ 'रसप्रवहण या स्राव' 2. रसस्रवण, रस 3 धारा।

स्रुव,—वा [स्रु+क, स्त्रियां टाप् च] 1 यज्ञ का चमचा 2 निर्झर, झरना या प्रपातिका।

स्रेक् (स्वा० आ०) आना, गतिशील होना।

स्रे (स्वा० पर० स्रायति) 1 उबालना 2 पकाना आना —दे० 'श्रै'।

स्रोतस् [स्रु+तस्] धारा, सरिता। दे० स्रोतस्।

स्रोतस् (नपु०) [स्रु+असि] 1 (क) सरिता, धारा प्रवाह, जलप्रवाह—पुरा यत्र स्रोत पुलिनमधुना तत्र सरिताम्—उत्तर० २।२३, मनु० २।१६३ (ख) धार, प्रवाहिणी,—यदन्यजाक्षमाक्षाया स्रोतस्यहरहर्दिशत् रघु० १।७८, स्रोतसवाह्यमानस्य प्रवाहस्थस्य हि तत् विक्रम० २।५ 2 सरिता, नदी, आसमासस्मि जाह्नवी—मृग० १०।३१ 3 लहर 4 जल 5 शरीरस्थ पोषण-नलिका 6 ज्ञानेन्द्रिय निगृह्य कर्मेन्द्रियाणि रघु० 7 हाथी की सूंड। सम०—जम्बालम् (स्रोतोजम्बालम्) सुरभा,—ईश सागर,—रुद्धम् हाथी की सूंड का छिद्र, नथना स्रोतोरन्ध्रध्वनिसुभग दन्तिभि पीयमान—मेघ० ४२, (द० इस पर मल्लि०) ('श्रोतारन्ध्र' भी पाठान्तर), वहा नदी—स्रोतोवहां पयसि निकामजलावगाह्यान् मेघ० ६।१५ कायां सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी - ६।१६, रघु० ६।५२।

स्रोतस्य [स्रोतस्—यत्] 1 शिव का नाम 2. चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी [स्रोतस् + मतुप्+(विनि) +ङीप्, वत्वम्] नदी।

स्व (सर्व० वि०) [स्वन्+ड] 1 अपना, निजी, (आत्मपरक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त)—स्वनियोगमशून्य कुरु—मा० २, प्रजा प्रजा स्वा इव तन्यमिच्छवे ५।५५, (इस अर्थ में प्राय समास में प्रयुक्त—स्वपुत्र, स्वकलत्र, स्वद्रव्य) 2. अन्तर्वर्ती, प्राकृतिक, अन्तर्हित, विशेष, अन्तर्जन्मा—सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्—मेघ० ८०, मा० १।१८, न तस्य स्वा भाव प्रकृतिनियतत्वादृतेऽतः—उत्तर० ६।१४ 3. अपनी जाति से सबध रखने वाला, अपनी जाति का—सूर्यस्य भार्या सूर्यस्य सा च स्वा च विप्र स्मृतेः —मनु० ३।१३, ५।१०४,—स्वः 1 रिश्तेदार, बांधव —मेघ० २।५६, मनु० २।१०९ 2 आत्मा, स्व, —स्वम् दौलत, सम्पत्ति—जैसा कि 'निःस्व' में। सम० अवबोधः न्यायदर्शन पढ़ाने का अनुभागी,

अक्षरम् अपना निजी हस्तलेख, अधिकारः अपना निजी कर्तव्य या राज्य--स्वाधिकारात्प्रमत्त मेघ० १, स्वाधिकारभूमौ--रा० ७, अधिष्ठानम् हठयोग में माने हुए छः चक्रों में से एक, अधीन (वि०) 1 अपने पर आश्रित, आत्मनिर्भर 2 स्वतंत्र 3 अपने वश में 4 अपनी निजी शक्ति में—स्वाधीना भवनीव-तापि हि वर बद्धो न सेवाञ्जलि मृच्छ० ३।११ °कृत (वि०) अपनी निजी शक्ति के आधार पर समृद्धिशाली स्वाधीनकुशला सिद्धिमन्त —रा० ४, °पतिका, भर्तृका वह पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, वह स्त्री जिसका पति पत्नी के वश में हो—अब सा निर्गता द्वारा राधा स्वाधीनभर्तृका निजगाद रतिरहस्यात् कान्त मण्डनवाञ्छया—गीत०१२, दे० सा० द० ११२, तथा आगे,—अध्यायः 1 मन में पाठ करना, मन मन में इसके जप करना 2 वेदों का पढ़ना, वैदिक पाठ, अनु-भूतिः (स्त्री०) आत्म अनुभव 2 आत्मज्ञान स्वानु-भूत्येकसाराय नमः शान्ताय तेजसे—भर्तृ० २।१, अन्वय् 1 मन,—भामि० ४।५, महावीर ७।१७ 2 कन्दरा, —अर्थः अपना निजी हित, स्वार्थ—सर्वं स्वार्थं समीहते—हि० २।६५ 2 अपना अर्थ भामि० १।७९ (यहाँ दोनों अर्थ—अभिप्रेत हैं) °अनुमानम् निजी अटकल, आगमनात्मक तर्क, अनुमानके दो मुख्य भेदों में से एक, (दूसरा है 'परार्थानुमान') °चेष्टित (वि०) 1 अपने निजी कार्यों में चतुर 2 अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, °चर, °चरायण (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर तुला हुआ, स्वार्थी, °चिन्तनः अपने उद्देश्य की मन्त्रणा, °सिद्धिः (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, आयत्त (वि०) अपने अधीन, अपने पर आश्रित मनु० २।७ —इच्छा अपनी अभिलाषा, अपनी रुचि, °मृत्यु भीष्म का विशेषण,—उदयः, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्गीय पिंड या दिव्य चिह्न का उदय होना, उपधिः अंचल वस्त्र, कम्पः वायु, हवा, -कामिन् (वि०) स्वार्थी, कार्यम् अपना निजी कार्य या स्वार्थ, - गतम् (अव्य०) मन में अपने आपको, एक ओर (नाट्यभाषा में), छन्द (वि०) 1. अपनी इच्छा रखने वाला, अनियन्त्रित, स्वेच्छाचारी 2 असली, (दः) अपनी निजी इच्छा, झोंक कल्पना या मर्जी, स्वतन्त्रता, (दम्) (अव्य०) अपनी इच्छा या मर्जी के अनुसार, स्वेच्छाचारिता के साथ, स्वेच्छा से—स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्द विन्दन्तो विबुधवधू सुखिन्दा भिलिन्दा –भामि० १।५. ज (वि०) आत्मजात, (—जः) 1 पुत्र, बाल 2. स्वेद, पसीना, (—जम्) रुधिर, जनः 1. बन्धु, रिश्तेदार—इत प्रत्या-देशात् स्वजनमनुगन्तु व्यवसिता श० ६।८, पंच० १।५ 2 अपने निजी पुत्र, बन्धुबान्धव, अपनी गृहस्थी, तन्त्र (वि०) आत्माश्रित, अनियन्त्रित, आत्मनिर्भर, स्वेच्छायुक्त, (त्रः) अपना पुत्र, —त्रः अपना देश, जन्मभूमि, °क °बन्धु अपने देश का आदमी, धर्म 1 अपना धर्म 2 अपना निजी कर्तव्य मनु० १।८८ —९।१ 3 विशेषता, अपनी निजी संपत्ति, पक्षः अपना निजी दल, परचक्रम् अपना और शत्रु का देश, प्रकाश (वि०) 1 स्वतः स्पष्ट 2 स्वतः चमत्कार, —प्रयोगात् (अव्य०) अपने प्रयत्नों के द्वारा, —भू° 1 अपना निजी घोड़ा 2 शरीर रक्षक, —भावः 1 अपनी स्थिति 2 अन्तर्हित या मूलगुण, प्राकृतिक संविधान, अन्तर्जात या विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति या स्वभाव, जैसा कि 'स्वभावो दुरतिक्रमः' में, इसी प्रकार कुटिल°, क्रूर°, मृदु°- चपल° कठोर° आदि, °उक्तिः (स्त्री०) 1 सहज स्फूर्त प्रकटन 2 (अल० में) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या बिल्कुल मिलता-जुलता वर्णन होता है स्वभावोक्तिरुच्यते डिम्भादे स्वक्रियाकथनम् – काव्य० १०, वा, सोमा-दय पदार्थानां रूप लावण्यादिवर्णनी—काव्या० २।८ एक सिद्धान्त (यह विश्व, भूतसंघों की अपने अन्त-र्जात गुणों के अनुसार, प्राकृतिक तथा आवश्यक क्रिया का परिणाम है और उसी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई विशिष्टकारणता नहीं), °सिद्ध (वि०) प्राकृतिक, सहज-स्फूर्त अन्तर्जात,—भूः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण

योनि (वि०) मातृपक्ष का सबन्धी (पु०, स्त्री०) उत्पत्तिस्थान, जो स्वयं अपना उत्पत्तिस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहन या निकटसंबंध वाली कोई स्त्री, रस 1 प्राकृतिक स्वाद 2 किसी का अपना (अभिप्रेत) रस या काव्यगत रस, आत्मानन्द, -राज् (पु०) परमात्मा, -रूप (वि०) 1 सहज, सहजरूप 2 सुन्दर, सुहावना, प्रिय 3. विद्वान्, समझदार, (-रूपम्) 1 असली सहज या मूलरूप, प्राकृतिक स्थिति या दशा 2 स्वाभाविक चरित्र या गुण, यथार्थ विवरण 3 प्रकृति 4 विशिष्ट उद्देश्य 5 प्रकार, किस्म, जाति, °लिङ्गिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, वश (वि०) 1 स्वनियन्त्रित 2 स्वतन्त्र, वासिनी विवाहित या अविवाहित स्त्री जो वयस्क होने पर भी अपने पिता के घर ही रहती रहे, —वृत्ति (वि०) स्वावलम्बी, अपने प्रयत्नों से ही जीवनयापन करने वाला, संपूर्ण आत्मनिर्भर, स्व-यंसिद्ध,—संस्थ अपने विचारों पर दृढ़ रहना 2. आत्म-स्थिरता 3 आत्मनिर्भरता,—स्थ (वि०) 1. अपने पर दृढ़ रहना 2. स्वाश्रित, स्वावलम्बी, विश्वस्त, दृढ़,

पक्का 3 स्वास्थ्य 4. अच्छा करने वाला, स्वस्थ, नीरोग, आराम देना, सुखद स्वस्थ एवास्मि—भा० ४, स्वस्थे को वा न पण्डित —पञ्च० १।१२७, दे० 'अस्वस्थ' भी 5 सन्तुष्ट, प्रसन्न, (-स्थम्) (अव्य०) आराम से, सुख पूर्वक, शान्ति से, स्वात्मन् अपनी जन्मभूमि, अपना निजी आवास स्थान—नक्र स्वस्थान-मासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति—पञ्च० ३।४६,—हस्त अपना निजी हाथ या लिखाई, आत्मलेख, दे० 'हस्त' के अन्तर्गत, हस्तिका कुम्हाड़ी,-हित (वि०) अपने लिए हितकर, (-तम्) अपना निजी लाभ, अपना कल्याण।

स्वक (वि) [स्व+अकच्] अपना निजी, अपना।

स्वकीय (वि०) [स्वस्य इदम्—स्व - छ, कुक् आगम] 1 अपना निजी, अपना 2 अपने परिवार का।

स्वक्षु (स्वा० पर० स्वक्षुति) जाना, हिलना-डुलना।

स्वङ्गः [स्वङ्ग्+घञ्] आलिंगन।

स्वच्छ (वि०) [सुष्ठु अच्छ—प्रा० स०] 1 अत्यन्त साफ, पारदर्शी, विशुद्ध, उज्ज्वल, अल्पपारभासी स्वच्छस्फटिक, स्वच्छं मुक्ताफलम्—आदि 2 सफेद 3 सुन्दर 4 स्वस्थ, —च्छः स्फटिक,—च्छम् पानी। सम०—कज्जल शासक मेलवाली,—जालकम् विशुद्ध आटिया - मणिः स्फटिक।

स्वञ्ज् (स्वा० आ० सकर्मक इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्वञ्ज् के न् का प्रायः लोप होता है) 1 आलिंगन करना, कौली भरना—कयाचिदात्मन्या विराय सस्वजे—भामि० २।१७८, पर्यश्रुरस्वजत मूर्ध्नि धेनुः—रघु० १३।७० 2 घेरना, मरोड़ना घेरि —, आलिंगन करना बाहे परिष्वजन्त या मलीजन्त च त० ८, भामि० २।१७८।

स्वद् (चुरा० उभ० स्वद (स्वा) यति—ते) 1 जाना 2 समाप्त करना।

स्वतम् (अव्य०) [स्व+तसिल्] अपने आप, स्वयम् (निश्चयार्थक के अर्थ में प्रयुक्त)।

स्वत्वम् [स्व+त्व] 1 अपनी विद्यमानता 2 स्वामित्व, स्वामित्व के अधिकार।

स्वद् 1 (स्वा० आ० स्वदते स्वदित) 1 पसन्द किया जाना, मधुर होना, स्वाद में वर्धिकर होना (तृ० के साथ)—यज्ञदत्ताय स्वदतेऽपूप —काशिका, अपां हि तृप्तायं न वारिधारा स्वादु सुतस्यि- स्वदते तुषारा —नै० ३।९३, तस्यदे मुखसुर प्रसवाम्ब वि० १०। २३ 2 स्वाद लेना, रस लेना, खाना 3 प्रसन्न करना 4 मधुर करना।

II (चुरा० उभ० या प्रेर० स्वादयति—ते) 1 चखाना, खाना 2. रस लेना 3 मधुर करना, आ 1. चखना, खाना (अन्न० से भी)—पयोवनास्वादितपूर्वमा-हुयः—रघु० ३।५४ 2. उपभोग करना —मेघ० ८७।

स्वदनम् [स्वद्+ल्युट्] चखना, खाना।

स्वदित (भू० क० कृ०) [स्वद्+क्त] चखा गया, खाया गया, सम् उद्गार विशेष जो श्राद्ध में पितरों को पिण्डदान करने के पश्चात् उच्चारित होता है और जिसका अर्थ है भगवान् करे, यह पदार्थ आपको अच्छा लगे, स्वादिष्ट लगे'—मनु० ३।२५१, २५४।

स्वधा [स्वद्+आ, पृषो० दस्य धः] 1. अपना निजी स्वभाव या निश्चय, स्वत स्फूर्तता 2 मृत पूर्वपुरुषों —पितरों—को प्रस्तुत की गई हवि की आहुति —स्वधास्वाहानमस्कारैः रघु० १।६६ मनु० ९।१४७, याज्ञ० १।१०२ 3 मृत पितरों को प्रस्तुत किया भोजन 4. अन्न या आहुति 5 माया या सांसारिक भ्रम, अव्य० पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उच्चरित उद्गार, (सम्प्र० के साथ) पितृभ्य स्वधा सिद्धा०। सम० कर (वि०) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, कारः 1 'स्वधा' नाम का शब्द पूर्वं हि तद्गृह्य यत्र स्वधाकारः प्रदीयते, पिता अग्नि, आत्म,—भुज् (पुं०) 1 मृत या देवत्व को प्राप्त पूर्वपुरुष 2 देवता, देव।

स्वधितिः (पुं०, स्त्री०) स्वधिती [स्वधा+इतच्, स्त्रियां ङीप् च] कुल्हाड़ी।

स्वन् (स्वा० पर० स्वनति) 1. शब्द करना, कोलाहल करना,-पूर्णा पेरावश्च सस्वनुः —भट्टि० १४।३, वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलाहताः अमर० 2. बजना, प्रेर० (स्वनयति-ते) 1 बजाना 2 शब्द करना 3 अलङ्कृत करना (इस अर्थ में स्वानयति')।

स्वनः [स्वन्+अप्] शब्द, कोलाहल -शिवाघोरस्वनां पश्चाद् बभूवे विद्युतेति ताम्—रघु० १२।३९, खेचर-स्वन, आदि। सम० उत्सङ्गः गेंदा।

स्वनिः [स्वन्+इन्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वनिक (वि०) [स्वन+ठक्] ध्वनि करने वाला—जैसा कि 'पाणिस्वनिक' (जो अपने हाथों से ताली बजाता है) में।

स्वनित (भू० क० कृ०) [स्वन्+क्त] ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहल करने वाला, —म् बिजली का शोर, बिजली की कड़कड़ाहट, नु० 'स्तनित'।

स्वप् (अदा० पर० स्वपिति, सुप्त, भावदा० सुप्यते, इच्छा० सुषुप्सति) (कभी-कभी स्वा० उभ० स्वपति-ते) सोना, नींद आ जाना, सोने जाना—अङ्गजालङ्गिय-स्वपन्तः सुखं स्वपिति नीलेयं—काव्य० १०, इतः स्वपिति केशवः अर्धं० २।७६ 2. सहारे का सहारा लेना, विश्राम करना, लेटना, आराम करना 3. तल्लीन होना—भामि० ४।१९, प्रेर० (स्वापयति-ते) सुलाना,

सोने के लिए थपथपाना, अव—,धि,—प्र,—सम् सोना, लेटना प्रसुप्तलक्षण मा० ७, कु० २।४२, रघु० ११।४।

स्वप्नः [स्वप्+नक्] 1 सोना, नींद अकाले बोधितो भ्राता प्रियस्वप्नो वृथा भवान्—रघु० १२।८१, ७।६१, १२।७० 2 स्वप्न, ख्वाब, सुपना आना —स्वप्नेगृहजालसदृशः खलु जीवलोक शान्ति० २।३, स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—मा० ६।९, रघु० १०।६० 3. शिथिलता, आलस्य, तन्द्रा। सम०—अवस्था सुपने की दशा, उपम (वि०) 1. सुपने से मिलता जुलता 2. अवास्तविक या (भ्रमात्मक स्वप्न की भाँति) —कर,—कृत् (वि०) निद्रा लाने वाला, निद्राजनक, आस्वापक, गृहम्,—निकेतनम् सोने का कमरा, शयनकक्ष,—दोषः स्वप्नावस्था में होने वाला शुक्रपात, —ज्ञानम्य (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल बुद्धि द्वारा अनुभूत होने वाला —मनु० १२।१२२, प्रपञ्चः निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला संसार, —विचारः स्वप्नों की व्याख्या, शील (वि०) जिसे नींद आ रही हो, निद्रालु, ऊँघने वाला, सृष्टिः (स्त्री०) स्वप्नों की रचना, निद्रावस्था में भ्रम।

स्वप्नज (वि०) [स्वप्+नजिङ्] निद्रालु, सोने वाला, ऊँघने वाला।

स्वयम् (अव्य०) [सु+अय्+अम्] 1 आप, अपने आप (निजवाचकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में व्यवहार्य यथा मैं स्वयं, हम स्वयं, वह स्वयं—आदि, कभी कभी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त) विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेतुमसांप्रतम्—कु० २।५५ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्—सुभा०, रघु० १।१७, २।५६, मनु० ५।३९ 2 आत्मस्फूर्त अपने आप, अनायास, बिना किसी कष्ट या चेष्टा के, स्वयमेवोल्लसन्त्येवविधा कुलशाखासु निःस्नेहा पल्लव —का० । सम०—अर्जित (वि०) आत्मार्जित,—वरः (स्त्री०) 1 ऐच्छिक प्रकथन 2 सूचना, अभिलाषव (विधि में),—वृत (वि०) ऐच्छिक, स्वयं चुन लेने वाला, (—तः) स्वयं चुन लेना, आत्मचुनाव कु० २।७, मा० ६।७, जात (वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो, दत्त (वि०) अपने आप दिया हुआ, (—त्तः) वह लड़का जिसने अपने आपको दत्तक पुत्र बनने के लिए दत्तक-ग्राही माता पिता को दे दिया, हिन्दू धर्म शास्त्र में वर्णित बारह पुत्रों में से एक,—भू ब्रह्मा का नाम —स्वम्भुस्वयम्भवस्यो हरिमेधसमाना वेनाकिञ्चन्न मनस गृहकर्मदासा मनु० १।१,—भुवः 1. प्रथम मनु 2 ब्रह्मा का नाम 3. शिव का नाम,—भू (वि०) आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—भूः) 1 ब्रह्मा का नाम 2 विष्णु का नाम 3 शिव का नाम 4 सूर्य 'काल' का नाम 5 कामदेव का नाम, वरः अपनी इच्छा, (दुलहिन द्वारा अपने वर का) अपने आप चुनाव, इच्छानुकूल विवाह,—वरा वह कन्या जो अपने पति का आप चुनाव करती है।

स्वर् (चुरा० उभ० स्वरयति-ते) शब्द निकालना, कलरव लगाना, बुरा भला कहना, निंदा करना।

स्वर् (अव्य०) [स्वृ+क्विप्] 1 स्वर्ग, वैकुण्ठ जैसा कि 'स्वर्लोक स्वर्वधू में 2 इन्द्र का स्वर्ग और मृत्यु के पश्चात् पुण्यात्माओं का अन्तिम आवास 3 आकाश, अन्तरिक्ष 4 सूर्य और ध्रुवतारे के बीच का रिक्त स्थान 5 तीनों व्याहृतियों में तीसरी जिसका उच्चारण प्रत्येक ब्राह्मण अपनी दैनिक प्रार्थना में करता है, दे० 'व्याहृति'। सम० आपगा गंगा 1 गंगा की स्वर्ग में बहने वाली धारा, मन्दाकिनी 2 आकाशगंगा, छायापथ, गति (स्त्री०) गमनम् 1 स्वर्ग में जाना, भावी आनंद 2 मृत्यु तरु (स्वस्तरु) स्वर्ग का एक वृक्ष, तृक् (पुं०) 1 इन्द्र का विशेषण 2 अग्नि का विशेषण 3 सोम का विशेषण, नदी (स्वर्णदी) आकाशगंगा नामक एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर, भानु सूर्य का नाम तुलसेतरार्थे स्वर्भानुर्भानुमन्त विरेण यत्। हिमांशुमाशु प्रगत तन्मन्दिस्मित स्फुट फलम् शि० २।४९, भूरुह, भूर्ज, —मध्यम् आकाश का मध्य बिन्दु, ऊर्ध्वभू,—लोक दिव्य जगत्, स्वर्गलोक, वधूः (स्त्री०) दिव्य कन्या, अप्सरा, वापी गंगा, वेश्या स्वर्ग की गणिका, दिव्य परी अप्सरा, वैद्य (पुं०, द्वि० व०) दो अश्विनीकुमारों का विशेषण, सद् 1 सोम का विशेषण 2 इन्द्र के वज्र का विशेषण, सिन्धु = स्वर्नदी।

स्वर [स्वर् + अच्, स्वृ + अप् वा] 1 शब्द, कलरव 2 आवाज स्वरेण सप्तमकलस्य प्रजल्पितायाम् विज्ञानराशि कु० १।४५ 3 संगीत के सुर, ध्वनि लय (सुर सात हैं निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यम धैवता । पञ्चमश्चेत्यमी सप्त सप्तीकण्ठोत्थिता स्वरा —अमर०) 4 सात की संख्या ५, स्वर अक्षर 6 स्वराघात (यह तिगनी में तीन हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित) 7 स्वरवाद्य 8 अक्षरों भरना। सम० अंकः आधा या चौथाई स्वर (गणित० में) अन्तरम् दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अवकाश, क्षमम्, - उदय (वि०) जिसके बाद स्वर हो - उपग (वि०) जिसके पूर्व स्वर हो, ग्राम स्वरात्मक, स्वरों का समूह,—ज्ञ (वि०) गान स्वर में बंधा हुआ गाना, भक्तिः (स्त्री०) र और ल् के उच्चारण में अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब इन अक्षरों के पश्चात् कोई अल्पप्राण या कोई अघोष

व्यञ्जन हो (उदा० वर्ण का उच्चारण 'वरिण' है), अङ्कु । उच्चारण की अस्पष्टता, टूटा हुआ उच्चारण, आवाज का बैठ जाना, —मन्थनिका एक प्रकार की वीणा, स्वनिका बांसुरी, मुरली, सूत्र्य (वि०) संगीतसुरों से रहित, बेसुरा, संगीत के ताल सुरों से हीन, संयोग: 1 स्वरों का मिल जाना 2 ध्वनि या स्वरों का मेल - अर्थात् आवाज—अन्य एवैव स्वरसंयोग - -मृच्छ० १।३, उत्तर० ३, पण्डित कौण्डिन्यदा इव स्वरसंयोग शृणते मालवि० ५, सङ्कल्प 1 सुरों के उतार-चढ़ाव का क्रम न मन्द स्वरसङ्कम मृदुभिः श्लिष्ट सन्तोलनम् मृच्छ० ३।५, 2 सरगम, सन्धि: स्वरों का मेल, सामन् (पु०, ब० व०) यज्ञीय सत्र में विशेष दिन के विशेषण।

स्वरवत् (वि०) [स्वर+मतुप्] 1 ध्वनियुक्त, निनादी 2 सुरीला 3 स्वरविषयक 4 स्वराघात से युक्त, सस्वर।

स्वरित (वि०) [स्वरा आतोऽस्य इतच्] 1 ध्वनियुक्त 2 ध्वनित, स्वर के रूप में बोला गया 3 उच्चरित 4 स्वरित उच्चारणचिह्न से युक्त,—त: उदात्त (ऊँचे) और अनुदात्त (नीचे) के बीच का स्वर समाहार स्वरित पा० १।२।३१, दे० इस पर सिद्धा० ।

स्वरु [स्वृ+उ] 1 यूप 2 यज्ञीयस्तम्भ का एक भाग 3 यज्ञ 4 वज्र 5 बाण।

स्वरुस् (पु०) [स्वृ+उस्] वज्र।

स्वर्ग: [स्वरित गौरवे गै-क, सु+ऋ+घञ्] वैकुण्ठ, इन्द्र का स्वर्ग, वहिश्चर -अहो स्वर्गादधिकतर निर्वृतिस्थानम्—श० ७। सम०—आपगा स्वर्गीय गंगा, ओकस् (पु०) सुर, देव, गिरि, स्वर्गीय पहाड, सुमेरु, -द्वार, —द्वार (वि०) स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला,—द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा, वैकुण्ठ का दरवाजा स्वर्ग में प्रवेश स्वर्गद्वारकपाटपटुर्मोऽपि मोपाजिन —भर्तृ० ३।१०, पति:, भर्तृ (पु०) इन्द्र, -लोक: 1 दिव्य प्रदेश 2 वैकुण्ठ,—वधू:, स्त्री (स्त्री०) दिव्य बाला, स्वर्ग की परी, अप्सरा —स्वर्गस्त्रीला परिष्वङ्ग कथ मार्येण लभ्यते,—साधनम् स्वर्ग प्राप्त करने का उपाय।

स्वर्गिन् (पु०) [स्वर्गोऽस्त्यस्य भोग्यत्वेन इनि] 1 सुर, देव, अमर, स्वमपि विनयज्ञ स्वर्गिण प्रीणयात्मम् श० ७।३४ वेम० २० 2 मृतक, मरा हुआ पुरुष।

स्वर्गीय, स्वर्ग्य (वि०) [स्वर्ग + छ, यत् वा] 1 स्वर्ग का, दिव्य, दैवी 2 स्वर्ग को ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला मनु० ४।१३, ५।४८।

स्वर्चक्षस् [सुष्ठु अर्चो वर्णो अस्य] 1 सोना 2 सोने का सिक्का। सम० अरि, गवक,—अक्ष, कसिका सोने के दाने, आभ (वि०) सुनहरी शरीर वाला, (—क्ष:) गरुड़ का नाम, कार: सुनार, —गैरिकम् पीत गेरू खड़िया, चूड: 1. नीलकण्ठ 2 सूर्य,— जम् रांगा —दीधिति: अग्नि, पक्ष: गरुड़, -पाशक: सुहागा, —पुङ्ख: चम्पक वृक्ष, शंख: सोना गिरवी रखना, —भृङ्गार: स्वर्णपात्र, माक्षिकम् सोनामक्खी नाम का एक खनिज पदार्थ, -रेखा, सोना घोने की सकोर, —वणिक् (पु०) 1 सोने का व्यापारी 2 सर्राफ, —वर्षा हल्दी।

स्वर्द् (स्वा० आ० स्वर्दते) चलना, स्वाद लेना।

स्वर्स् (स्वा० पर० स्वलति) जाना, हिलना-डुलना।

स्वल्प (वि०) [सुष्ठु अल्प प्रा० स० म० अ० स्वल्पीयस्, तथा उ० अ० स्वल्पिष्ठ] 1 बहुत छोटा या थोड़ा सूक्ष्म, निरर्थक 2 बहुत कम। सम०—आहार: (वि०) बहुत कम खाने वाला, संयमी, मिताहारी, —कम्बु घोंघे का एक भेद काय (वि०) अत्यन्त दुर्बल या कमजोर,—विषय: 1. नगण्य बात 2 छोटा भाग+काय अत्यन्त कम खर्च, दरिद्रता,—बीज (वि०) बहुत कम सम्पत्ति वाला, बेऔलाद, निर्वंश, शरीर (वि०) बहुत छोटे कद का, ठिगना।

स्वल्पक (वि०) [स्वल्प -कन्] बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, बहुत कम।

स्वल्पीयस् (वि० [स्वल्प +ईयसुन् 'स्वल्प' की म० अ०] बहुत कम, अपेक्षाकृत छोटा, अपेक्षाकृत सूक्ष्म।

स्वल्पिष्ठ (वि०) [स्वल्प+इष्टन्, 'स्वल्प' की उ० अ०] अत्यन्त कम सबसे छोटा अत्यन्त सूक्ष्म।

स्वश्रूः [=श्वश्रू] अपने पति या पत्नी का पिता, श्वसुर, तु० श्वशुर'।

स्वस् (स्त्री०) [सु+अस्+क्विप्] बहन, अनिनी —स्वसारमाददे विप्रपत्नीत्वाय पुरन्ध्रजातिमूलो ह्यय रघु० ७।१,२०।

स्वसृत् (वि०) [स्व+सृ+क्विप्] अपनी इच्छानुसार जाने या चलने-फिरने वाला।

स्वस्क् (स्वा० आ० स्वस्कते) दे० 'स्वद्'।

स्वस्ति (अव्य०) [सु+अस्+क्तिन्, का अस्तीति विग्रहकिल्पकम् अव्ययम्, प्रा० स०] अव्यय, इसका अर्थ है 'क्षेम, कल्याण हो' आशीर्वाद, जय जयकार, आते समय की नमस्ते (सदा० के साथ) स्वस्ति भवते ब्र० २, स्वस्त्यस्तु ते रघु० ५।१७ (प्राय अक्षरारम्भ में प्रयुक्त) । सम० अयनम् 1. समृद्धि के दिलाने वाला उपाय 2. मन्त्र पाठ या प्रायश्चित्त द्वारा पाप को हटाना 3. दान स्वीकार करने के बाद ब्राह्मण का धन्यवाद करना प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनं प्रयुज्य रघु० २।७०, उक्ति: शिव का विशे-

एण, मृगः 1 पशु 2. ब्राह्मण 3. बन्दी, स्तुति पाठक, —वाचनम्, -वाचनकम्, वाचनिकम् 1 यज्ञ या कोई मांगलिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य 2. फूलों द्वारा आशीर्वाद या बधाई देने का विशेष कर्म, वाच्यम् बधाई, आशीर्वाद।

स्वस्तिकः [स्वस्ति शुभाय हितं क] 1 एक मंगल चिह्न जो किसी शरीर या पदार्थ पर बनाया जाता है (卐) 2. कोई मंगलद्रव्य 3. चार मार्गों का मिलना 4. भुजाओं को व्यत्यस्त रूप से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यत्यस्त (×) चिह्न बने -'स्तनविनिहितहस्तस्वस्तिकामिर्वधूभि -मा० ४।१०, शि० १०।४३ 5 एक विशेष साइज का महल 6 चौराहे से बना हुआ एक त्रिभुजाकार चिह्न 7 एक तरह का पिष्टक 8 विधवी, व्यभिचारी 9 लहसुन, कः, -कम् 1 एक विशेष रूप का मन्दिर या भवन जिसके सामने चबूतरा बना हो 2 एक योगासन।

स्वस्रीयः, स्वस्रेयः [स्वसृ+छ, ढक् वा] भानजा, बहन का पुत्र।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी [स्वस्रीय+टाप्, स्वस्रेय+ङीप्] भानजी, बहन की पुत्री।

स्वागतम् [सु+आ+गम्+क्त] शुभागमन, मुबारक आमदनी (मुख्यतः सम्० में रखकर हुए व्यक्ति को अभिवादन करने में प्रयुक्त) स्वागत देवम् —मालवि० १, (तस्मै) दत्तं प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतव्याजहार -वेणी० ४, स्वागतं स्वानवीकारात् प्रभावैरवलम्ब्य च । युगपद् युगबाहुभ्य प्राप्तेभ्य प्रार्थयाधिकम्: कु० २।१८।

स्वाडुकः [स्वादु+ठक्] ढोल बजाने वाला।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्रस्य भावः ष्यञ्] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता —कन्याप्रदान स्वात्तन्त्र्यादासुरो धर्म उच्यते मनु० ३।३१ (स्वातन्त्र्येण, स्वातन्त्र्यतः अपनी इच्छा से, स्वेच्छा से)।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्र+ष्यञ्] इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, —न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति मनु० ९।३, न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः याज्ञ० १।८५।

स्वाति,-ती (स्त्री०) [स्व+अत्+इन्, पक्षे ङीष्] 1. सूर्य की एक पत्नी 2. तलवार 3 शुभ नक्षत्रपुञ्ज 4 पन्द्रहवां नक्षत्र जो शुभ माना गया है स्वात्यां सायन्तनशिवसम्पृक्तः सन्मौक्तिकं जायते—भर्तृ० २।६७। सम० योगः स्वाती का (चन्द्रमा के साथ) योग।

स्वात् दे० 'स्वद्'।

स्वादः, स्वादनम् [स्वद् (स्वाद्)+घञ्, ल्युट् वा] 1. मजा, रस 2. चखना, खाना, पीना 3. उपभोग करना, मजे लेना, उपभोग करना 4. मधुर करना।

स्वादिमन् (पु०) [स्वादु+इमनिच्] सुस्वादुता, माधुर्य।

स्वादिष्ठ (वि०) [स्वादु+इष्ठन्, 'स्वादु' की उ० अ०] अत्यन्त मधुर, सबसे मीठा कि स्वादिष्ठं मगधेष्वित्रं सदा सद्भि समागमः।

स्वादीयस् (वि०) [स्वादु+ईयसुन्, 'स्वादु' की म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक मीठा, बहुत मधुर—काव्यामृतरसास्वादः स्वादीयानमृतादपि।

स्वादु (वि०) (स्त्री०—दु,-दी) [स्वद्+उण्, म० अ० स्वादीयस्, उ० अ० स्वादिष्ठ] 1 मधुर, सुहावना, पचने में अच्छा, जायकेदार, मजेदार, रुचिकर, मीठा —सुधा सुख्यास्वे पितरि सकिल स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२, मेघ० २४ 2. सुखद, रुचिकर, सुन्दर प्रिय, मनोहर (पुं०) मधुररस, स्वाद की मिठास, मजा 2 क्षीरा, राब, (नपुं०) माधुर्य, मजा, रस —कवि करोति काव्यानि स्वादु जानाति पण्डित -सुभा०,—दुः (स्त्री०) अंगूर। सम० -अन्नम् मीठा या चुना हुआ भोजन, स्वादिष्ट खाद्य, पकवान, —आम्रः आम का पेड़,--आम्रः 1. किसी मीठी चीज का टुकड़ा 2 गुड़, राब,—कण्टम् बेर, बदर, फलम् गाजर, -रसा 1 द्राक्षा 2 शतावरी पौधा 3 कालीमूसली 4. मदिरा 5 अंगूर, -लवणम् 1 सेंधा नमक 2 समुद्री नमक।

स्वादुका [स्वादु+कन्+टाप्] द्राक्षा, अंगूर।

स्वानः [स्वन्+घञ्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वापः [स्वप्+घञ्] 1 निद्रा, सोना उत्तर० १।३७, 2 सुपना आना, स्वप्न 3 निद्राकृतता, ऊंघना, आलस्य 4 लकवा, कमरबाद, सुन्न हो जाना 5 किसी एक नाड़ी पर दबाव से अस्थायी या आंशिक असंवेदता, अवशता।

स्वापतेयम् [स्वापतेरागतं ढक्] धन, दौलत, सम्पत्ति—स्वापतेयकुले जातां कि कि नाम न कुर्वते पञ्च० २।१५६, शि० १४।९।

स्वापदः दे० 'श्वापदः'।

स्वाभाविक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वभावादागतं-ठक्] अपनी निजी प्रकृति से संबद्ध, अन्तर्जात, अन्तर्हित, विशेष, प्राकृतिक—स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां विनयकर्मणा। मृगयाशीलं सहजं तेषां हरिणेषु हरिणैश्चाय रघु० १०।७९, ५।६९, कु० १।७१, काः (पुं०, ब० व०) बौद्धों का एक सम्प्रदाय जो सभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमानुसार बनी मानते हैं।

स्वामिता,-त्वम् [स्वामिन्+तल् + टाप्, त्व वा] 1 मालिकपना, प्रभुत्व, अधिकार के अधिकार 2. एकाधिकता, प्रभुता।

स्वामिन् (वि०) (स्त्री०—नी)[स्व-अस्यास्त्यर्थे-इनि, ङीप्] एकाधिक अधिकारों से युक्त —(पुं०) 1. स्वामी,

मालिक, 2. प्रभु, स्वत्वाधिकारी --रघुस्वामिन मन्यसि किमभ्यर्थक० १८।१०७ 3. प्रभु, राजा, नरेश 4. पति 5 गुरु 6 विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊंचे दर्जे का धार्मिक पुरुष या संन्यासी (इस अर्थ में यह शब्द प्रायः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कार्तिकेय का विशेषण 8 विष्णु का विशेषण 9. शिव का विशेषण 10 वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11 गरुड़ का विशेषण। सम० उपकारकः घोड़ा, कार्यम् किसी राजा या प्रभु का कार्य, पाल (पुं०, द्वि० व०) (पशुओं का) मालिक और रखवाला -मनु० ८।५, —भावः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना, -वात्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,-सत्कृत्य 1 मालिक या प्रभु की सेवा करना 2 मालिक या प्रभु की अच्छाई, सेवा 1 स्वामी या मालिक की सेवा, टहल 2. पति का आदर, सम्मान।

स्वत्वम् [स्वामिन्+ष्यञ्] 1. स्वामित्व, प्रभुता, मालिकपना 2 सम्पत्ति का अधिकार या हक 3. राज्य, सर्वोपरिता, शासन।

स्वायंभुव (वि०) (स्त्री०-वी) [स्वयम्भू+अण्] 1 ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला कु० २।१ 2 ब्रह्मा से उत्पन्न, ब. प्रथम मनु का विशेषण (क्योंकि वह ब्रह्मा का पुत्र था)।

स्वारसिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वरस+ठक्] अन्तर्वर्ती रस या माधुर्य से ओतप्रोत (काव्यरूप)।

स्वारस्यम् [स्वरस+ष्यञ्] 1 स्वाभाविक रस या मधुरता का रखने वाला 2 लाक्षणिकता, यौग्यता।

स्वाराज् (पुं०) [स्व+राज्+क्विप्] इन्द्र का विशेषण।

स्वाराज्यम् [स्वराज+ष्यञ्] 1 स्वर्ग का राज्य, इन्द्र का स्वर्ग 2 स्वप्रकाशमान ब्रह्मा से तादात्म्य।

स्वारोचिष, स्वारोचिष (पुं०) [स्वरोचिष अपत्यम् +अण्] द्वितीय मनु का नाम -दे० 'मनु' के अन्तर्गत।

स्वालक्षण्यम् [स्वलक्षण+ष्यञ्] विशेष लक्षण, स्वाभाविक अवस्था, खासियत, मनु ९।१९।

स्वाल्प (वि०) (स्त्री०-ल्पी) [स्वल्प+अण्] 1 थोड़ा, छोटा 2 क्षुद्र, कम, स्वल्प 1. थोड़ापन, छुटपन 2. क्षमता का छोटापन।

स्वास्थ्यम् [स्वस्थ+ष्यञ्] 1 आत्मनिर्भरता, स्वाधीनता 2. साहस, दृढ़संकल्पता, दिलेरी, वीरता 3 सन्तुष्टता, शीतोष्णता 4 समृद्धि, कुशलक्षेम, मुखचैन 5 आराम, सुख, हिताय -अस्य मया स्वास्थ्यम् श० ४।

स्वाहा [सु+आ+हे+डा] 1. सभी देवताओं को बिना किसी विचार के दी जाने वाली आहुति 2. अग्नि की पत्नी का नाम (अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द -इत्याह स्वाहा अग्नये स्वाहा। सम०-कारः स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वधाकारविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि,-पतिः, -प्रिय आदि,--भुज् (पुं०) सुर, देव।

स्विद् (अव्य०) [स्विद्+क्विप्] प्रश्नवाचक या पृच्छापरक निपात, प्रायः 'सन्देह' 'आश्चर्य' को प्रकट करता है, इसका अर्थ है 'क्या' 'है' 'ए' 'हा, ओ, हो' की ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि, इस अर्थ में तथा अनिश्चयार्थ प्रकट करने के लिए इसे प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ जोड़ दिया जाता है कास्विदवगुण्ठनवती नातिपरिस्फुटशरीरलावण्या श० ५।१३, मेघ० १४, कभी कभी यह पृथक् रूप से 'या' और 'अथवा' अर्थ को प्रकट करता है, कभी कभी 'नु' 'उत' और 'वा' के साथ जुड़कर, दे० कि० ८।३५, १२। २५, १३।८, १४।६०, 'चाहो' के साथ भी।

स्विद्१ (दिवा० पर० स्विद्यति, स्विन्न) स्वेद आना, पसीना आना - स्विद्यति कूजति वेपते --काव्य० १०, उत्तर० ३।४१, कु० ७।७७, मा० १।३५, न स्वां पश्यति कपटे पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति गीत० ११।

स्विद्२ (भ्वा० आ० स्वेदते, स्विन्न या स्वेदित) 1. पसीना किया जाना 2 चिकनाया जाना 3. विद्युक्त होना —प्रेर० (स्वेदयति ते) 1 पसीना लाना 3 गरम करना।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्वी+च्वि+कृ+ल्युट् (घञ्, क्तिन् वा)] 1 लेना, ग्रहण करना 2. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा 3. वाग्दान, पाणिग्रहण, विवाह।

स्वीय (वि०) [स्व+छ] अपना, अपना निजी--लोकालोकविभागरहितं विहितं स्वीय विशुद्धम् यश --सा० द० ९७।

स्वृ (भ्वा० पर० स्वरति, इच्छा० सिस्वरिषति, सुस्वूर्षति) 1 शब्द करना, सस्वर पाठ करना 2. प्रशंसा करना 3 पीड़ा देना या पीड़ित होना 4 जाना, अभि—, प्र—, शब्द करना स्वृ , पीड़ा देना (आ०) भट्टि० ९।२८।

स्वृ (क्या० प० स्वृणाति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्वेड् (भ्वा० आ० स्वेडते) जाना।

स्वेदः [स्विद्+घञ्] पसीना, पसेउ, जलबिंदु -अङ्गुलिस्वेदेन कूर्परलक्षणाभि-विक्रम० २। सम० उदकम्,-उदकम्, जलम् पसीना, घर्मकण,-भूमन् शीतल मंद पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखाना),—ज (वि०) ताप या आप से उत्पन्न होने वाला, पसीने से उत्पन्न होने वाला (जूं, खटमल आदि जीव)।

स्वैर (वि०) [स्वस्य ईरम् ऐ+अच् वृद्धि] 1. प्रथमतः आचरण करने वाला, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश—अहविव स्वैरचलितैर्जनविह्वलं सुखयसि-

नमर्वमि श० ५।११, अभ्याहतं स्वैरगतं स तस्या रघु० २।५ 2 स्वतन्त्र, असंकोच, बिनदस्त, जैसा कि 'स्वैरालाप' मुद्रा० ४।८ 3 मन्थर, मृदु मुद्रा० १।२ 4 सुस्त, मंद 5 अपनी मर्जी चलाने वाला, ऐच्छिक, यथाकाम, रघु० स्वच्छन्दता, स्वेच्छाचारिता, रघु० (अव्य०) 1 इच्छा के अनुसार, मनपसंद, आराम से सार्थं स्वैरं स्वकीयेषु चेष्टवेश्मस्विवाद्रिषु—रघु० १७।६४ 2 अपने आप, स्वतः 3 धीरे धीरे, लज्जता पूर्वक, मृदुता के साथ उत्तर० ३।२ 4 आहिस्ता से, धीमी आवाज में, अस्पष्ट (विप० स्पष्ट)—पश्चात्स्वैरं रुज इति किल व्याहृतं सत्यवाचा वेणी० ३।९।

स्वैरता,-त्वम् [स्वैर + तल् + टाप्, त्व वा] स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता।

स्वैरिणी [स्वैरिन् + ङीप्] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी याज्ञ० १।६७।

स्वैरिन् (वि०) [स्वैर इरितुं शीलमस्य - स्व ईर् + णिनि] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी, अनियन्त्रित, निरंकुश।

स्वैरिन्ध्री दे० 'सैरन्ध्री'।

स्वोरस (पु०) मौलीय पदार्थ सिल पर पीसने के बाद उस में लगा हुआ (उस पदार्थ का) अंश या तलछट।

स्वोवशीयस (नपु०) आनन्द, समृद्धि (विशेषकर भावी जीवन के विषय में)।

ह

ह (अव्य०) [हा + ड] बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती शब्द पर बल देता है, इसका अर्थ है 'अवश्य' यथार्थ में निश्चय ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग बिना किसी विशेष अर्थ को प्रकट किये केवल पाद-पूर्ति के रूप में भी किया जाता है, विशेष कर वैदिक साहित्य में—तस्य ह यत्न आया बभूवुः, तस्य ह पर्वत-नारदौ गृह ऊषतुः आदि-ऐत०, यह कभी कभी सम्बोधन के लिए भी प्रयुक्त होता है, तिरस्कार या उपहास के लिए विरल प्रयोग - (पु०) 1 शिव का एक रूप 2 जल 3 आकाश 4 रुधिर।

हंसः [हन् + अच्, पृषो० दीर्घत्वम्, भवेद्वर्णागमात् हस, -सिद्धा०] 1 राजहंस, मराल, मुर्गाबी, कारण्डव-समाः सप्तपि पाण्डवा इव वनादज्ञातचर्यां गताः - मृच्छ०५।६ न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा-सुभा०, रघु० ३।१०, ५।१२, १७।२५ (हंस पक्षी का वर्णन जैसा कि संस्कृत के कवियों ने किया है, अधिकतर काव्यात्मक है, उसे ब्रह्मा का वाहन बताया जाता है वर्षात के आरंभ में उसे मानसरोवर की ओर उड़ता हुआ बताया जाता है तु० 'मानस'। एक सामान्य कविसमय के अनुसार हंस को दूध और पानी को पृथक्-पृथक् करने वाला विशेष शक्ति सम्पन्न पक्षी माना जाता है उदा० सार ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् पंच० १, हंसा हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः ह० ६।२७, क्षीर-क्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्। विश्वस्मिन्नधुनान्य कुलवत पालयिष्यति क भामि० १।१३, वे० भर्तृ० २।१८ भी 2 परमात्मा, ब्रह्मा 3 आत्मा, जीवात्मा 4 प्राण वायुओं में से एक 5 सूर्य 6 शिव 7 विष्णु 8 कामदेव 9 राजा जो मरुस्थलवासी न हो 10 विशेष सम्प्रदाय का संन्यासी 11 पीलापुर 12. ईर्ष्या, द्वेष से हीन व्यक्ति 13. पर्वत। सम० —अङ्गिका सिंदूर, अजिरवधू सरस्वती का विशेषण अजिरवधू चाँदी, कांता हंसिनी, कीलक, एक प्रकार का रतिबंध,—गति (वि०) हंस जैसी चाल चलने वाला राजसी ढंग से इतरा कर चलने वाला वधूरहा मधुरभाषिणी स्त्री भाषिणी 1 हंस की सी सुन्दर गति वाली स्त्री मनु० ३।१० 2 ब्रह्माणी -पुत्र, सफेद हंस के मुखाकार पर, दाहनम् अगर की लकड़ी, मार्ग हंस का कलरव, भाषिणी मधुर-भाषिणी स्त्रियों का भेद (पतली कमर, बड़े नितंब, गात्र को खाल और कोयल के स्वर वाली) सुदर स्त्री गजेन्द्रगमना तन्वी कोकिलालापमधुरा, सितवं पृथिवी या स्यान्मा स्मृता हंसभाषिणी, माला हंसों की पंक्ति - कु० १।३०, वृन्दम् (पु०) असंख्य हंस, रथः, वाहनः ब्रह्मा के विशेषण, - द्वयः हंसों का राजा, ब्रह्मा हंस, सोमसवम्, काशीस, सोहम्म् गीतक, जैसी हंसों की पंक्ति।

हंसक [हंस + कन्, हंस - कै + क वा] 1 कारंडव मराल 2 पैरों का आभूषण, नूपुर, वात्सायन सहित इस शब्द का प्रयोग पायलों के लिए हुआ है, विशेषतः लाक्षारस से रंगे हुए पैरों के लिए देखो याज्ञ० 'हंस'।

हंसिका, हंसी [हंस + कन् + टाप्, इत्वम्, हंस + ङीप्] हंसनी, मादा हंस।

हंहो (अव्य०) [हम् हर्षध्वनौ जहाति - हम् + हा + डो] संबोधनात्मक अव्यय जो आवाज देने में प्रयुक्त होता

हैं जैसे अंग्रेजी का 'हल्ला' (Hallo) शब्द हही चित्तसंक्षिप्तसंकल्पत्वम्, समर्थत्वम् स्मात् —चन्द्रा० १।२ 2 तिरस्कार एवं अभिमानसूचक अव्यय 3 प्रश्न वाचक अव्यय (नाटकों में इस शब्द का प्रयोग मध्यम पात्रों द्वारा प्राय सबोधन के रूप में किया जाता है हही ब्राह्मण या कुप्य मुद्रा० १)।

हुक्कः [हक् इति अव्यक्तं कायति–हक्+कै+क] हाथियों को बुलाना।

हुंजा हुंजे [हम् इति अव्यक्तं वर्णमेत्र हन्+जा+टा (ङी)] सबोधनात्मक अव्यय जो किसी दासी या नौकरानी को बुलाने में प्रयुक्त होता है हुंजे कथमसाधे अहम् ईदिसी करभाणिणी रत्ना० २।

हुड् (भ्वा० पर० हुटति, हुटित) चमकना उत्तेजित होना।

हुडु [हुट+ड, टस्य नेत्वम्] बाजार, हाट मेला। सम०—चौरकः वह चोर जो बाजार में चीजें चुराये गठकटा, विलासिनी 1 वारांगना, वेश्या, रण्डी 2 एक प्रकार का गंधद्रव्य।

हठ [हठ्+अच्] 1 प्रचण्डता, बल 2 अत्याचार, लूट-खसोट, (हठेन, हठात् (क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त) बलपूर्वक, प्रचण्डता से, अचानक, दुराग्रहपूर्वक आत्मोन्नतिका च चञ्चलवर्मणा हठात् परिवेत्तुमात्मसमर्पणमनीश्वर इव० वासवदत्ता वाच्यमाह हठेन मधुरेण च राम०। सम०—योगः योग की एक विशेष-रीति या भावचिन्तन व मनन का अभ्यास ('राजयोग' से भिन्नता दिखाने के लिए इसका नाम 'हठयोग' पड़ा इसका अभ्यास भी कुछ कठिन है, इसके अनुष्ठान की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल खड़ा होना, हाथों को ऊपर किये रहना, सिर ऊपर करके धूमपान करना आदि),—विद्या बलपूर्वक मनन करने का विज्ञान।

हठि [हठ्+इन्, पृषो०] काठ की बेड़ी।

हडि (डि) क., हुडि्ड [हड्+इकक्, पृषो०, हड्+इन्, पृषो०, कन् वादि] अत्यन्त नीच जाति का पुरुष, भंगी आदि।

हड्डुभ् [हड्+ड पृषो०] हड्डी। सम०—ब्रह्म मज्जा।

हड्डा (अव्य०) [हन्+डा] सबोधनात्मक अव्य० जो निम्न श्रेणी की स्त्रियों को बुलाने में, या निम्नतम जाति (भंगी आदि) के व्यक्तियों द्वारा आपस में एक दूसरे को सबोधित करने में प्रयुक्त होता है हड्डे हड्डे हलाद्धारे नीचां पेटीं सखीं प्रति अमर०, स्त्री० एक बड़ा मिट्टी का बर्तन।

हड्डिका, हड्डी [हड्डा+कन्+टाप्, ङीष्, हड्ड+ङीष्] हाँडी, मिट्टी का एक बर्तन।

हुडे (अव्य०) [हन्+डे] दे० 'हुडा (अव्य०)'।

हत (भू० क० कृ०) [हन्+क्त] 1 मारा गया, वध किया गया 2 चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया, क्षतिग्रस्त 3 नष्ट, बरबाद 4 वञ्चित, हीन, रहित 5 निराश भग्नाश 6. सूचित–दे० हन्, 'निष्काम' 'अभिशप्त' 'दयनीय' 'अधम' अर्थों को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है अनुशयदुःखावह हतहृदय तप्यति विबुद्धम् श० ६।६, कुर्वाधुपेक्षा हतजीविनेऽस्मिन्—रघु० १४।६५, हतविधिललितानां ही विधिर्वो विपाक –शि० ११।६४। सम०—आश (वि०) 1 आशा से रहित, निराश भग्नाश 2. दुर्बल, अशक्त 3 क्रूर, निर्दय, 4 आशा 5. नीच, दुष्ट, पापी, अभिशप्त, दुर्बल, कण्टक (वि०) काँटों से मुक्त, शत्रुओं से रहित —चित्त (वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ,—जित् (वि०) बुद्धू रघु० ३।१५, दैव (वि०) हत-भाग्य, भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त,—प्रभाव (वि०) ओज (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, बलहीन—बुद्धि (वि०) ज्ञान से वञ्चित, बेहोश, मूढ, मूर्ख वधा मूर्ख, बुद्धू, लक्षण (वि०) शुभलक्षणों से विरहित, अभागा, शेष (वि०) जीवित बचा हुआ,—श्री, संपद् (वि०) जिसका वैभव नष्ट हो गया हो, धन के न रहने पर जो दरिद्र हो गया हो, समयुक्त, निर्भय।

हतक (वि०) [हत+कन्] दुष्ट, दुःशील, दुर्वृत्त नीच, दुष्ट (प्राय. समास के अन्त में प्रयुक्त)—न खलु विदितास्ते सब विषयसंकल्पाध्यवसायहतकेन मुद्रा० २, पुनिता स्व परिभूता स्व राजहतकेन उत्तर० १, क: नीच पुरुष, कायर।

हति (स्त्री०) [हन्+क्तिन्] 1 हत्या, विनाश 2. प्रहार करना चोपल करना 3 आघात, प्रहार 4 नाश, अनुकल्पना 5 चोट, क्षोभ 6 पूजा।

हतुः [हन्+कनु] 1. वस्त्र 2. रोग या बीमारी।

हत्या [हन् भावे क्यप्] वध करना, मार डालना, संहार, कत्ल, अवन्य वध जैसे भ्रूणहत्या, गोहत्या, आदि।

हद् (भ्वा० आ० हदते, हत्त) पुरीषोत्सर्जन, मलत्याग करना, इच्छा० (जिहत्सते)।

हदनम् [हद्+ल्युट्] पुरीषोत्सर्ग, मलत्याग।

हन् (अदा० पर० हन्ति, हत, कर्मवा० हन्यते, प्रेर० घात-यति—ते, इच्छा० जिघांसति) 1. मार डालना, वध करना, नाश करना, प्रहार कर देना अवश्य दुरव-धारितमूर्धानो रचे हता: उत्तर० २।१५, हतमपि च हन्त्येव मदन: चतु० ३।१८ 2. आघात करना, पीटना—चण्डी चण्ड हनुचलनुता मां विधुदाम्ना मेघरावादिव त्रिभवम् –मालवि० ३।२०, शि० ७।५५ 3 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, सताप

देना जैसा कि 'कामहत' में 4. डाल देना, छोड़ देना, —भर्तृ० २।७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता—भर्तृ० २।४८ 6. जीतना, पछाड़ देना, पराजित करना, परास्त करना—विघ्नैः सहस्र-गुणितैरपि हन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति सुधा० 7. विघ्न डालना, बाधा डालना 8 नष्ट करना, बिगाड़ना—कि० २।३७ 9 उठाना तुरग-खुरहतमन्तया हि रेणुः श० १।३२ 10 गुणा करना (गणित में) 11 जाना (काव्य में इसका इस अर्थ में प्रयोग विरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो वह काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा० कुञ्ज हन्ति कुशोदरी—सा० द० ७. या, तीर्थान्तरेषु स्नानेन समुपार्जितसत्कृतिः। मुग्धाक्षान्मिनीमेष हन्ति सम्प्रति सादरम्—काव्य० ७, (असमर्थत्व' दोष का उदाहरण), अति—, अत्यन्त क्षतिग्रस्त करना, अन्तर् बीच में प्रहार करना, अप , 1 हटाना, पीछे धकेलना, नष्ट करना, वध करना 2 दूर करना, हटाना —न तु खलु तयोक्तिं शक्ति करोत्यवहन्ति का उत्तर० २।४, श० ४।७ 3 आक्रमण करना, बलात् ग्रहण करना, अभि—,1 प्रहार करना, आघात करना (आलं० से भी) पीटना—मा० १।२९, मालवि० ५।३ 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना हत्या करना, नष्ट करना 3 प्रहार करना पीटना (ढोल आदि) मृच्छ०—१।१३ 4 आक्रान्त करना ग्रस्त कर लेना, परास्त करना, अव—, 1 प्रहार करना मारना, वध करना 2 नष्ट करना, हटाना 3 (अनाज की भांति) कूटना, आ—, 1 आघात पहुँचाना, प्रहार, करना, पीटना—कुट्टिमेष्वाघात का०, कि० ७।१७ (आ० माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग हो—आहते शिर —शिखा०, परन्तु भारवि कहता है आजघ्ने विषम-विलोचनस्य वक्षः—कि० १७।६३, भट्टि० ८।१५, ५।१०२) रघु० ४।२३, १२।७७, कु० ४।२५, उ० 2 प्रहार करना, (घंटी आदि) बजाना, (ढोल आदि) पीटना,—भट्टि० १।२७ १७।७, मेघ० ६६, रघु० १७।११, उद् , 1 उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना 2 फूलना, घमंडी होना, दे० उद्वह, उप , 1 प्रहार करना, आघात करना 2 हरकारा करना अतिक्रम करना, नष्ट करना, वध करना लङ्का घोष-यन्तिभिस्ते—भट्टि० १६।१२, ५।१२, मेघ० ३।२४ 3 पीड़ित करना, त्रस्त करना, परास्त करना, उप-करना वातिक्षोपहत, भूकोपहत, कामोपहत आदि कु० ५।७६, भर्तृ० २।२६, नि , मार डालना, नष्ट करना भट्टि० २।३४, ६।१०, रघु० ११।७१, वास० ३।२६२ 2 प्रहार करना, आघात करना, तावेव सामर्थ्यतया विजघ्नुः रघु० ७।४४, मेघ० ७।२७ 3 जीतना, हराना—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमा-त्मशक्त्या— पञ्च० १।३६१ 4 पीटना, (ढोल आदि) बजाना, भट्टि० १४।२ 5 प्रतीकार करना, निष्फल करना, अप्रभाव करना रघु० १२।९२ 6 (रोग आदि को) चिकित्सा करना 7 अवहेलना करना, 8 हटाना, दूर करना, कि० ५।२६, परा- , 1. अवाजी मार करना, प्रत्याघात करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, निवारण करना, परास्त कर देना, खदेड़ देना—दैवं यत्पौरुषपराहतं राम० 2 आक्र-मण करना, बाधा डालना कटाक्षपराहतं वदनप्र-जम् मा० ७ 3 टक्कर मारना, प्रहार करना, प्र 1 वध करना, कत्ल करना, प्राणानिमान् रक्षसि येनाप्तानि वने मया। न प्रहृष्य कथं पाप वद पूर्वापकारिणम्- भट्टि० ९।१०८ 2 प्रहार करना, पीटना आघात करना तदाप्रहतवत् 3 प्रहार करना, पीटना, (ढोल आदि) रघु० १९।१५, मेघ० ६४ प्रति—,वध करना भट्टि० २।३५, प्रति—, जवाबी वार करना बदले में प्रहार करना (त) विध्यन्तमुद्धूतमना प्रतिहन्तुमीषुं—रघु० ९।६० 2 हटाना, परे करना, रोकना विरोध करना, मुकाब-ला करना- सोढुमेवाप्रतिहतरयं नैकतः सेतुबन्धः उत्तर० ३।२६ प्रतिहतविक्रिया किया सभयलोकद श० १।१३, मेघ० ३० कु० २।४८, विक्रम० ३। ९ 3 हटाना, खदेड़ना, धकेलना 4 दूर करना, नष्ट करना यद्यत् पापं प्रतिहति जगन्नाथ तत्तस्य तस्मै मा० १।३ 5 प्रतीकार करना उपचार करना, वि 1 वध करना कत्ल करना, नष्ट करना विध्वस्त करना, प्रहार करना (अस्त्र) फेंकना महिमानं महत्ता विहन्तुम् कि० ५।२७ 2 प्रहार करना, मार से आघात करना 3 अवरोध करना रुकावट डालना विरोध करना, मुकाबला करना विध्यन्ति रथारोहा वने कनकपुङ्खै भट्टि० १।१९ रघु० ५।२७ 4 अस्वी-कार करना इंकार करना क्षय होना रघु० २।५८ ११।२ 5 निगलना करना, हजम करना, सम , 1. सटा कर मिलाना आपस में जोड़ना हस्तौ सहस्य -मनु० ७।७१ हन्त एव हि मनुष्य भिन्नमेव च सन्धत्ते—७।६६ दे० सन्धि 2 ढेर लगाना संग्रह करना, संचय करना 3 संकुचित करना, सिकोड़ना 4 समर्थ होना 5. प्रहार करना मार डालना, नष्ट करना, सम , प्रहार करना आघात करना, अभि-हन्न करना।

हन् (वि०) [हन् + क्विप्] वध करने वाला, हत्या करने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त)

जैसा कि भ्रूणहन्, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन् आदि।

हन्: [हन्+अच्] वध, हत्या।

हनन्म् [हन्+ल्युट्] 1 वध करना, हत्या करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 गुणा।

हनु:—नू (पु०, स्त्री०) [हन्+उन्, स्त्रीत्वे वा ऊङ्] ठोढी, नू (स्त्री०) 1 जीवन पर आघात करने वाली चीज 2 शस्त्र 3 रोग, बीमारी 4 मृत्यु 5. एक प्रकार की औषधि 6 स्वेच्छाचारिणी स्त्री, देखो। समः ग्रह वध्य अवहा, भूकम्प अवहे की जड़।

हनु (नू) मत् (पु०) [हन्(नू)+मतुप्] एक असाधारण शक्तिशाली वानर का नाम (यह अंजना का पुत्र था, इसके पिता पवन का मरुत् थे, इसी कारण इसे मारुति कहते हैं। ऐसा वर्णन मिलता है कि उसमें असाधारण शक्ति और पराक्रम था जो उसने अपने हृदयाराध्य राम की ओर से कई अवसरों पर प्रकट किया। जब रावण सीता को अपहरण करके लंका में ले गया तो हनुमान् ने समुद्र पार करके उसका पता लगाया तथा अपने स्वामी राम को सूचित किया। लंका के महायुद्ध में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया)।

हन्त (अव्य०) [हन्+त] प्रसन्नता, हर्ष, और आकस्मिक हलचल को प्रकट करने वाला अव्यय, हन्त मो मया स्वास्थ्यम् रघु० ४, हन्त प्रवृत्तं संगीतकम् —मालवि० १, 2. करुणा, दया—पुत्रक हन्त ते धात्राका —मच्छ० 3. शोक, अफसोस—हन्त चिद्द मावबन्धम् —उत्तर० १।४३, स्मरामि हन्त स्मरामि —उत्तर० १, कार्यवशेन विस्मृतो हन्त विलासमणिमेखा—मा० १।१२, मेघ० १०४ 4 सौभाग्य, बधाई-सूचक 5 यह बहुधा आरम्भसूचक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त है—हन्त ते कथयिष्यामि—राम०। समः उक्तिः (स्त्री०) करुणा, मृदुता आदि द्योतक शब्द, खेद आदि शब्दों का कथन,—कारः 1 'हन्त' विस्मयादिद्योतक अव्य० 2 किसी अतिथि को दी जाने वाली भेंट—निवीती हन्तकारेण मनुष्यास्तर्पयेच्च।

हन्तृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हन्+तृच्] 1. प्रहारकर्ता, वधकर्ता, मनु० ५।३४, कु० २।२० 2. जो हटाता है, नष्ट करता है, प्रतीकार करता है,—पुं० 1 हत्यारा, घातिल 2. चोर, लुटेरा।

हन् (अव्य०) [हा+डन्] 1. खेद तथा 2. शिष्टाचार या आदर को प्रकट करने वाला उद्गार।

हम्बा (भ्वा०) [हम्+भा+अङ्+टाप्, पृषो०] गाय, मेम आदि पशुओं के बोलने का शब्द, रंभाना। समः रव: रंभाना।

हय् (भ्वा० पर० हयति, हयित) 1. जाना 2 पूजा करना 3. शब्द करना 4. चक जाना।

हयः [हय् (हि)+अच्] 1 घोड़ा, मनु० १।१४, मनु० ८।२२६ रघु० १।१० 2. एक विशेष श्रेणी का मनुष्य —दे० 'आश्व' के अन्तर्गत 3 'सात' की संख्या 4 इन्द्र का नाम। समः—अध्यक्षः घोड़ों का अधीक्षक आयुर्वेद अश्वचिकित्साविज्ञान, आश्विहोत्रविद्या, आरूढ अश्वारोही, घुड़सवार, —आरोह 1 घुड़सवार 2 घुड़सवारी, इष्ट जौ,—उत्तम बढ़िया घोड़ा, कौविद घोड़ों के प्रबन्ध, प्रशिक्षण तथा चिकित्साविज्ञान में परिचित, ज्ञ घोड़ों का व्यापारी, साईस, घोड़ेदार घुड़सवार,—शिक्षा (पु०) घोड़ा शिक्षा जो, शिक्षा सवार का कृत्य, वारः,—वारक गवयुक्त कम्बीर, कनेर, वारवः पवन कनेर,—मेध अश्वमेध यज्ञ—याज्ञ० १।१८१,—वाहन कुबेर का विशेषण, शास्त्र अश्वशास्त्र,—सूक्त्म् घोड़ों को सधाने या उनका प्रबन्ध करने की कला, संग्रहणम् घोड़ों का लगाम खींच कर रोकना।

हयग्रीवः [हय+ग्रह्+अच्+मुक्] घोड़ा, रथवान्।

हयी [हय+ङीष्] घोड़ी।

हर (वि०) (स्त्री० रा, -री) [हृ+अच्] 1 ले जाने वाला, हटाने वाला, वञ्चित करने वाला लेदहर, छीनहर 2. हरने वाला, ले जाने वाला, वहन करने वाला अपहरा —कि० ५।५०, रघु० १२।५१ 3 पकड़ने वाला, वहन करने वाला 4. आकर्षक, मनोहर 5 अध्यक्ष, दारोगा, अधिकारी- मनु० २।१९ 6. अधिकार करने वाला,—कु० १।५०, 7 बाँटने वाला,—रः 1 शिव, कु० १।५०, ३।४०, ६७, मेघ० ७ 2. अग्नि 3. सफा 4. भावक 5. गिनती की नीचे की संख्या। समः कौरी शिव और पार्वती का एक संयुक्त रूप (अर्धनारीनटेश्वर), चूड़ामणिः शिव की विभावरि, चन्द्रमा, तेजस् (नपु०) पारा, नेत्रम् 1. शिव की आँख 2 तीन की संख्या, बीजम् शिव का वीर्य, पारा,—क्षेत्रम् शिव की पिण्डी, गया, सूनुः स्कन्द रघु० ११।८३।

हरकः [हर+कन्] 1. चोरी करने वाला, चोर 2. दुष्ट, 3. भावक।

हरणम् [हृ+ल्युट्] 1 पकड़ना, वहन करना 2 ले जाना, दूर करना, हटाना, चुराना कन्याहरणम् —मनु० ३।३३, रघु० ११।७४ 3 वञ्चित करना, नष्ट करना, जैसा कि 'प्राणहरणम्' में 4. भाग देना 5. विवाही को उपहार 6. चुराना 7. सोना, खून 8. सोना।

हरि (वि०) [हृ+इन्] 1 हरा, हरा-पीला 2. काली, काले के रंग का, लालीयुक्त भूरा, कपिल हरिभ्यां रथे तस्थे प्रतिदिवाद इवांशुमान् रघु० १२।१४, ३।४३ 3. पीला, पुं: 1. विष्णु का नाम —हरिर्हरेक पुरु-

दानम् स्मृत०—रघु० ३।४९ 2 इन्द्र का नाम - रघु० २।५५, ६८, ८।३९ 3. शिव का नाम 4 ब्रह्मा का नाम 5 यम का नाम 6 सूर्य 7. चन्द्रमा 8 मनुष्य 9 प्रकाश की किरण 10 अग्नि 11 पवन 12 सिंह— भामि० १।५०, ५१ 13 घोड़ा 14 इन्द्र का घोड़ा सत्यमनीन्य हरिणो हरीश्च वर्तन्ते वाजिन -शि० १. ७।७ 15 लंगूर, बन्दर उत्तर० ३।४८, रघु० १२।५७ 16 कोयल 17 मेंढक 18 सीता 19 साँप 20 खाकी या पीला रंग 21 मोर 22 अर्जुन-हरि कवि का नाम। सम० अक्षः 1 सिंह 2 कुबेर का नाम 3. शिव का नाम, अक्ष 1 इन्द्र 2 शिव, काल (वि०) 1 इन्द्र की प्रिय 2 सिंह के समान सुन्दर, केशोम वन देश, गन्ध एक प्रकार का चन्दन, चन्दन नम् 1 एक प्रकार का पीला चन्दन (लकड़ी या वृक्ष) रघु० ३।५९, ६।६०, शि० ७।२, कु० ५।६० 2 स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष पञ्चैते देवतरवो मन्दार पारिजातक । सन्तान कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्—अमर०, (-नम्) 1. ज्यान्सा 2 केसर, जाफरान 3 कमल का पराग

तालः (कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानते हैं) पीले रंग का कबूतर, (-लम्) हरताल हम० १, शि० ४।२१, कु० ७।२३, ३३, (-ली) दूर्वा घास, दूब, तालिका माङ्गल्यकला चतुर्थी 2 दूर्वा घास

तुरङ्गमः इन्द्र का नाम, दासः विष्णु का उपासक, -दिनम् विष्णु पूजा का विशेष दिन, - देव श्रवण नक्षत्र,—द्रव: हरा रंग,—द्वारम् एक पुण्यतीर्थस्थान,—नेत्रम् 1. विष्णु की आँख 2. सफेद कमल, (-त्र) उल्लू,

पदम् वसन्त विषुव, प्रिय: 1 कदंब का वृक्ष 2 शंख 3 सूर्य 4 पागल मनुष्य 5 शिव, (-यम्) एक प्रकार का चंदन, प्रिया 1 लक्ष्मी 2 तुलसी का पौधा 3 पृथ्वी 4 द्वादशी - भुज् (पु०) साँप

मन्थः, मन्थक: पर्वत, वर्ण:,—लोचनः 1 केकड़ा 2. उल्लू,—वल्लभा 1 लक्ष्मी 2 तुलसी —वासरः विष्णु-दिवस, एकादशी, वाहनः 1 गरुड़ 2 इन्द्र, °दिक् (स्त्री०) पूर्वदिशा,—हरः शिव का विशेषण (त्रिपुर राक्षस के तीनों नगरों को भस्म करने के लिए शिव ने विष्णु को जलते सरकंडे की भाँति प्रयुक्त किया), - सखः एक गन्धर्व, - संकीर्तनम् विष्णु के नाम का कीर्तन करना, - सुतः सुनु अर्जुन का नाम,—हयः 1 इन्द्र रघु० ९।१८, 2 सूर्य, - हर. विष्णु और शिव की एक संयुक्त देवमूर्ति, हेतिः (स्त्री०) 1 इन्द्रधनुष कथमकलोक-येयमधुना हरिहेतिमती (ककुभ) - मा० ९।१८ 2. विष्णु का चक्र, °हेतिः चक्रवाक शि० ९।२५।

हरिकः [हरि संज्ञायां कन्] 1 खाकी या भूरे रंग का घोड़ा 2 चोर 3 भृङ्गारी।

हरिज (वि०) (स्त्री० जी) [हरि+जन्+ड] 1 पीला सा 2 लाल या पीला सफेद,—ज: 1 मृग, बारह-सिंगा (यह पाँच प्रकार का बताया गया है—हरिण-श्चापि विशेष पञ्चभेदोऽत्र मैरव। कृष्ण खड्गो रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा कालिका०)—अपि प्रसन्न हरिणेषु ते मन कु० ५।३५ 2 सफेद रंग 3 हंस 4 सूर्य 5 विष्णु 6 शिव। सम० अक्ष (वि०) मृगनयन, हरिण जैसी आँखों वाला,(-क्षी) मृगनयनी सुन्दर आँखों वाली स्त्री, अङ्क: 1 चन्द्रमा 2 कपूर कलङ्क, -धामन् (पु०) चन्द्रमा - नयन, नेत्र लोचन (वि०) हरिणाक्ष, मृग जैसी आँखों वाला हृदय (वि०) हरिण जैसे दिल वाला, भीरु।

हरिणक [हरिण+कन्] छोटा हरिण-वध कर हरिणकाला ज्ञापित वास्तिलालम् शि० १।१०।

हरिणी [हरिण+ङीष्] 1 मृगी मादा हरिण—चकित-हरिणप्रेक्षणा मेघ० ८३ रघु० १।५५, १४।६० 2 स्त्रियों के चार भेदों में से एक (चित्रिणी भी कहा है) 3 पीले फूल की चमेली 4 सुन्दर स्त्रीमूर्ति 5 एक छन्द का नाम। सम० दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला (स्त्री०), मृगनयनी—किमभवद्दृष्टि-र्यिने हरिणीदृशा उत्तर० ३।२७।

हरित् (वि०) [हृ+इति] 1 हरा, हरियाला 2 पीला, पीला सा 3 हरियाला लिये पीला, (पु०) 1. हरा या पीताभ हरा 2 सूर्य का घोड़ा, लाल के रंग का घोड़ा—सम्य मनोज्ञ हरिणो हरीश्च वर्तन्ते वाजिन शि० १ दिशो हरिन्हरिन्मिश्रवहः—रघु० ३।३०, कु० २।४२ 3 नल घोड़ा 4 किरण 5 सूर्य 6 विष्णु (पं० व०) 1 घोड़े 2 दिशा—रघु० ३।३०। सम०—अन्त दिशाओं का अन्त, दिगन्त, भामि० १।६० अन्तरम् भिन्न प्रदेश विविध दिशान्तरं भामि० १।१५, अश्व 1 सूर्य, कि० ४।४६, रघु० ३।२०, १८।३३ शि० १२।५६ 2 सवार का घोड़ा, अर्थ गधा चौड़े पत्तों की हरी हरी कुशा अग्नि (हरिन्मणि) मरकत मणि, पन्ना शि० ३।४९ आभ (वि०) हरियाली, हरे रंग का।

हरित (वि०) (स्त्री०—ती हरिती) [हृ+इतच्] हरा, हरे रंग का, हरा-भरा—स्थानान्तर कमलिनीहरितैः सरोभि - शि० ४।१०, कु० ४।१४ मेघ० २१ कि० ५।३८ 2 खाकी,—तः 1 हरा रंग 2 सिंह 3 एक प्रकार का धान। सम० अश्मन् (पु०) 1 मरकत मणि, पन्ना 2 तुलसी, मीठा पौधा,—द्रव (वि०) हरे हरे पत्तों का।

हरितकम् [हरित+कै+क] 1 साग—भाजी 2 हरा घास शि० ५।५८।

हरिता [हरित+टाप्] 1 दूर्वा घास 2 हरिद्रा 3 भूरे रंग का अश्व।

हरिवल्लभ दे० हरि के नीचे।

हरिद्रा [हरि+द्रु+क+टाप्] 1. हल्दी 2 पिसी हुई हल्दी दे० मे० २२।४९ पर मल्लि०। समा०—आभ (वि०) पीले रंग का, पतिः गणेशः गणेश देव का विशेष रूप, -राग, रागक (वि०) 1 हल्दी के रंग का 2. अनुराग में अस्थिर, (प्रेम में) चंचलमना हलायुध में इसकी परिभाषा क्षणभाजानुरागश्च हरिद्रारागवच्च यते)।

हरिद्रः [हरि+द्रा+क] पीले रंग का घोड़ा।

हरिश्चन्द्रः [हरि चन्द्र इव, सुडागमः ह्रस्वादेश] सूर्यवंश का एक राजा (यह त्रिशंकु का पुत्र था, अपनी दान-शीलता, सत्यनिष्ठता तथा सचाई के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। एक बार इसके कुल-पुरोहित वसिष्ठ ने इसकी प्रशंसा विश्वामित्र की उपस्थिति में की, विश्वामित्र ने विश्वास नहीं किया। इस पर विवाद खड़ा हो गया, अन्त में यह निर्णय किया गया कि विश्वामित्र स्वयं इसकी सत्य की परीक्षा लें। तदनुसार विश्वा-मित्र ने इसे अत्यन्त कठिन परीक्षण में डाला जिससे कि यह पता लग सके कि क्या अब भी यह अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। इसका होने पर भी राजा ने उस परीक्षण में उत्साहपूर्वक साहस का परिचय दिया। परन्तु इसे इस परीक्षा में अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा अपने पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा, यहां तक कि अन्त में अपने आपको भी एक चाण्डाल के घर बेचना पड़ा। अपने अक्षय साहस और सचाई के लिए हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी को माताविनी मान कर मारने के लिए भी तैयार होना पड़ा, तब कहीं विश्वामित्र ने अपनी हार मानी और बोध राजा को प्रजा समेत स्वर्ग में ऊँचा आसन दिया गया)।

हरीतकी [हरि पीतवर्णं फलाद्वारा हृता प्राप्ता हरि+इ का+कन्+ङीष्] हर्रे का पेड़।

हर्तृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हृ+तृच्] उठा कर ले जाने वाला, छीनने वाला, काटने वाला, ग्रहण करने वाला आदि, (पु०) चोर, लुटेरा भर्तृ० २।१६ 2 सूर्य।

हर्मन् (नपुं०) [हृ+मनिन्] मुंह फाड़ना, जमाई लेना।

हर्मित (नु० क+कृ०) [हर्मन्+इतच्] 1. जिसने मुंह फाड़ा है, जिसने जम्हाई ली है 2 डाल दिया गया, फेंका गया 3 जलाया गया।

हर्म्यम् [हृ+यत्, मुट् च] 1 प्रासाद, महल, कोई भी विशाल भवन या बड़ी इमारत हर्म्यपृष्ठं समारूढः काकोऽपि गरुडायते सुभा०, बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या-मेघ० ७ ऋतु० १।२८, भट्टि० ८।३६, रघु० ६।४७, कु० ६।४२ 2. तलघर, अंधेरी कोठरी 3 आग का कुंड नरकाग्नि-स्थान, नरक। समा० अङ्गणम्,-अजिरम् महल का आंगन, स्थलम् महल का कमरा।

हर्ष [हृष्+घञ्] 1 आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, सन्तोष, एक सुखात्मक भाव, आनन्दातिरेक, उल्लास, आह्लाद, प्रमोद हर्षो हर्षो हृदयवसति पञ्चबाणस्तु बाण -प्रसन्न० १।२२, सहोत्थितः सैनिकहर्षनिःस्वनः—रघु० ३।६१ 2 पुलक, रोमांच, रोंगटे खड़े होना—जैसा कि 'रोमहर्ष' में 3 'हर्ष', ३१ या ३४ संचारिभावों में से एक हर्षोन्मिषदात्मनेपदमसौ प्रस्तादोऽभूद्गुणादादिकर्मा० द० १९५ वा, इष्टाप्त्यादिभवो सुखविशेषो हर्ष रस०। समा० -अन्वित (वि०) आनन्दयुक्त, प्रसन्न, इसी प्रकार 'हर्षाविष्ट', -आधिक्यं प्रसन्नता का आधिक्य, आनन्दातिरेक, उद्गमः आनन्द का होना, -कर (वि०) तृप्त करने वाला, प्रसन्न करने वाला, -जड (वि०) सन्तोष मारे खुशी के जड़वत् हो जाने वाला रघु० ३।६८,—विवर्धन (वि०) आनन्द को बढ़ाने वाला, स्वनः आनन्द की ध्वनि।

हर्षक (वि०) (स्त्री०—र्षका, र्षिका) [हृष्+णिच्+ण्वुल्] खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनन्ददायक, सुखकर।

हर्षण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [हृष्+णिच्+ल्युट्] खुशी पैदा करने वाला, प्रसन्न करने वाला आनन्द से भरा हुआ, सुखद, पः 1 कामदेव के पांच बाणों में से एक 2 आम का एक वृक्ष 3 श्राद्ध की एक अधिष्ठात्री देवता,—नम् हर्ष, खुशी, प्रसन्नता आनन्द, उल्लास दुर्दामप्रहर्षाय सुहृदां हर्षणाय च-महा०।

हर्षयितृ (वि०) [हृष्+णिच्+तृच्] आनन्ददायक, सुख-कर, खुश करने वाला, प्रसन्नता देने वाला।

हर्षुल (हृष्+उलच्) 1 हरिण 2 प्रेमी।

हल् (भ्वा० पर० हलति, हलित) हल चलाना।

हलम् [हल् घञर्थे क] लांगल खेत जोतने का एक प्रधान उपकरण · बहति वपुषि विशदे वसनं जल-दाभम् । हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् - गी०—हल कलयत गीत० १। समा० आयुधः बलराम का विशेषण, धर,—भृत् (पु०) 1 हाली, हल चलाने वाला 2 बलराम का नाम केशवधृतहलधररूप जय जगदीश हरे गीत०, अमन्यताऽसौ सति हलभृतो मनाके वामत्वं नियत मेघ० ५९,—भृत्तिः, भृतिः हल चलाना, कृषिकर्म, किसानी, हृतिः (स्त्री०) 1 हल के द्वारा प्रहार करना या खूंट निकालना 2 जुताई या हल चलाना।

हलहला अहो, वाह रे आदि आश्चर्यसूचक अव्यय।

हला [ह इति लीयते हृ+ला+क+टाप्] 1 सखी, सहेली 2. पृथ्वी 3 जल 4 मदिरा (अव्य०) नाटकीय भाषा में किसी सखी या सहेली को सम्बोधित करना हला शकुन्तले अवैमि तावन्मुग्धा शिष्ट-अ० १, तु० 'हला' भी।

हलाहल,–कम् देखो 'हाल (ला) हल'।
हलिः [हल्+इन्] 1 बड़ा हल 2. खूंट 3. कवि।
हलिन् (पु०) [हल+इनि] 1 हाली, हलवाहा, किसान 2 बलराम। सम० प्रियः कदंब का वृक्ष (–या) मदिरा।
हलिनी [हलिन्+ङीष्] हलों का समूह।
हलीनः [हलाय हितः हल+ख] सागौन का पेड़।
हलीषा [हलस्य ईषा–ष० त०, शक० पररूपम्] हल का दण्ड, हलेस।
हल्य (वि०) [हल+यत्] 1 जोतने योग्य, हल चलाये जाने योग्य 2 कुरूप, विकृताकृति।
हल्या [हल्य+टाप्] हलों का समूह।
हल्लकम् [हल्ल+क्वुन्] लाल कमल।
हल्लनम् [हल्ल+ल्युट्] लोटना, इधर-उधर करवट बदलना (सोते समय)।
हल्लीशम् (क्लम्) [हल्+क्विप् लप् (स्)+अच्, पृषो० दीर्घत्वम्, कर्म० स०] 1 अठारह उपरूपकों में से एक (एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें प्रधानतः गायन और नृत्य होता है, तथा इसमें एक पुरुष और सात या आठ नर्तकियाँ भाग लेती हैं सा० द० ५५५ 2 एक प्रकार का वर्तुलाकार नृत्य।
हल्लीशकः [हल्लीश+कन्] घेरा बनाकर नाचना।
हवः [हु–अ, ह्वे+अप्, सम्प्र०, पृषो० वा] 1 आहुति, यज्ञ 2 आवाहन, प्रार्थना 3 आह्वान, आमन्त्रण 4 आदेश, समादेश 5 बुलावा, बुला भेजना 6 चुनौती, ललकार।
हवनम् [हु+भावे ल्युट्] 1 अग्नि में सामग्री की आहुति देना 2 यज्ञ, आहुति 3 आवाहन 4 बुलावा, आमन्त्रण 5 युद्ध के लिए ललकार। सम० आयुस् (पु०) अग्नि।
हवनीयम् [हु+अनीयर्] 1. कोई भी वस्तु जो आहुति देने के योग्य हो 2. घृत्त किया हुआ मक्खन या घी।
हवित्री [हु+इत्र्+ङीप्] हवनकुण्ड जो भूमि में खोद कर बनाया गया हो, (इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं)।
हविष्मत् (वि०) [हविस्+मतुप्] आहुतिवाला।
हविष्यम् [हविषे हितम् कर्मणि यत्] 1 कोई वस्तु जो आहुति के लिए उपयुक्त हो मनु० ३।२५६, ११।७७, १०६, याज्ञ० २।२३९ 2 घृत किया हुआ मक्खन। सम०–अन्नम् घृत के तथा अन्य पर्वों के अवसर पर खाने योग्य भोज्य पदार्थ, आशिन्–भुज् (पु०) अग्नि।
हविस् (नपुं०) [हूयते हु कर्मणि असुन्] 1 आहुति या हवनीय द्रव्य - वहन्ति विधिहुतं या हविः –भ० १।१, मनु० ३।८७, ११२, ५।७, ६।१२ 2 घृत किया हुआ मक्खन 3. यज्ञ। सम०–अशनम् (हविराशनम्) घी या हवनीय द्रव्यों का खाया जाना, (भुक्) अग्नि, —धान्या (हविर्धानी) गर्भाशय, जौ का पेड़,—भोजन् (हविर्भोजम्) यज्ञगृह जहाँ अग्नि में आहुति दी जाय, भुज् (हविर्भुज्) अग्नि अभ्यासितमखस्यापि स्वाहयैव हविर्भुजम् - रघु० १।५६ १०।८०, १३। ४१, कु० ५।२०, शि० १।२, काव्य० २।१६८, यज्ञः (हविर्यज्ञः) एक प्रकार का यज्ञ, वाहिन् (हविर्वाहिन्) (पु०) पुरोहित।
हव्य (वि०) [हु कर्मणि+यत्] आहुति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ,—व्यम् 1 घी 2 देवों को दी जाने वाली आहुति (विप० कव्य) 3 आहुति। सम० –आशः अग्नि, कव्यम् देवों तथा पितरों को आहुतियाँ–मनु० १।९४, ३।९७, १२८ आगे पीछे –वाह्, वाह आहुतियों को ले जाने वाला, अग्नि।
हस् (भ्वा० पर० हसति, हसित) 1 मुसकराना, मन्द हंसी हंसना –हसति यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम्–गीत० १०, भट्टि० ७।९३, १४।९३ 2 हंसी उड़ाना मखौल करना, उपहास करना (कर्म० के साथ)—यमवाप्य विदर्भभूः प्रभुं हसति स्वामपि सत्कुलक्रमम् नै० २।१६ 3 (आत्मनः) आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना, दूसरे को पीछे छोड़ देना—यो अहासेव वासुदेवम्—का० शि० १।७१ 4 मिलना-जुलना - क्रिया हसन्ति कथमात्मसम्मितैः - कि० ८।४४ 5 मखौल उड़ाना खिल्ली करना 6 चुनना खिलना, फूलना हसद्वसन्तद्रुमवल्लरीभरम् 7 चमकाना, माजकर साफ करना–आस्यानुदेष्यन्ति हसिष्यन्ति पङ्क्तयाली सुधा०, प्रेर० (हासयति—ते) मद हंसी हसना कु० ७।९५, अव—, हंसी उड़ना, तिरस्कार करना, उपहास करना, अप–, 1 तिरस्कार करना, बेइज्जती करना 2 आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना—सिताब्जहस्यैष पुरः मखौल भट्टि० १।६, उप ,उपहास करना, तिरस्कार करना, बुरा भला कहना–, मखौल करना, हंसी उड़ाना 2 उपहास करना, बुरा-भला कहना, (आत्) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना , अवज्ञामात्रानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम् मुद्रा० ५, ३ , 1. उपहास करना, मुसकराना तत प्रहस्योपभय पुरन्दरम् रघु० ३। ५१ 3 तिरस्कार करना, बुरा-भला कहना, मखौल उड़ाना–हसन्ति महतस्त्वेतान् स्वमत प्रकटयन्ति ये–सुभा० 4 चमकाना, शानदार दिखाई देना, वि –, 1. मुसकराना, मन्द मन्द हंसना किंचिद्विहस्यदशनेषति यत्प्रिये –रघु० २।४६ 2. उपहास करना, बुराभला कहना, अपमान करना - किमिति विषीदसि रोदिषि विकलम्

विहसति युवतिसभा तव विकला—गीत० ९, गौरी-वस्तुभ्रुकुटिरचना या विहस्येव खेलैः—मेघ० ५०।

हस [हस्+अच्] 1. हंसी, ठहाका 2 उपहास 3. आमोद, प्रमोद, खुशी, प्रसन्नता।

हसनम् [हस्+ल्युट्] हंसना, ठहाका, अट्टहास।

हसनी [हसन+ङीप्] ठठाऊ चूल्हा, कांगड़ी।

हसन्ती [हस्+शतृ+ङीप्] 1. ठठाऊ अंगीठी 2. एक प्रकार की मल्लिका।

हसिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] अट्टहास, उपहास।

हसित (भू० क० कृ०) [हस्+क्त] 1 जिसकी हंसी की गई हो, हंसना 2 विकसित, फूला हुआ, -न० 1 अट्टहास 2. मखौल, मजाक 3 कामदेव का धनुष।

हस्तः, [हस्+तन्, न इट्] हाथ, हस्तं गतः हाथ में पड़ा हुआ या अधिकार में आया हुआ,—गौतमीहस्ते विनयं विधास्यामि—श० ३, (मैं गौतमी के हाथ (द्वारा) इसे भेज दूंगा) इसी प्रकार 'हस्ते पतितं', 'हस्ते समर्पितं कुरु' आदि, तनुजा दत्तहस्ता मेघ० ९० (शम्भु का सहारा लिए हुए), हस्ते कृ (हस्तेकृत्य, कृत्वा) हाथ से पकड़ना, ले लेना, हाथ से ले लेना, हाथ में पकड़ लेना, अधिकार कर लेना, लोकोक्ति—हस्तकङ्कणं किं दर्पणे प्रेक्ष्यते (हाथ कंगन को आरसी क्या) अर्थात् हाथ पर रक्खी वस्तु को देखने के लिए शीशे की आवश्यकता नहीं होती 2. हाथी की सूंड—कु० १।३६ 3 तेरहवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे सम्मिलित हैं हाथभर, एक हस्तपरिमाण, (२४ अंगुल या लगभग १८ इंच की लंबाई, जो कोहनी से मध्य अंगुली की नोक तक होती है) 5 हाथ की लिखाई, हस्ताक्षर -धनीवोषयतं दद्यात् स्वहस्तपरिचिह्नितम्—याज्ञ० २।९३, स्वहस्तकालसंपन्न शासनम्—१।३२० (तारीख और हस्ताक्षर सहित), शासनमस्य प्रियायाः स्वहस्त —विक्रम० २, (मेरी प्रिया का आत्मसंदेश), २।२० (अत आल० से) प्रमाण, संकेत मुद्रा० ३ 7 सहायता, मदद, सहारा,—बाष्पाम्बु कृपाकृपा सुचिरमव-मर्दैस्तहस्ता करोति—वेणी० २।२१ 8. राशि, परिमाण, (बालों का) गुच्छा रचना में 'केश' 'कच' के साथ —यान पञ्चभिर्हस्तैश्च कलापार्थी कचान्परे अमर०, क्षति किंचिल्लिखन्ते केशहस्ते सुकेशाः, क्षति कुसुमसमार्थे किं करोत्येष वर्हीं, विक्रम० ४।१०,—स्थम् भौंरी। सम० अग्रम् अपने निजी अक्षर, हस्तलेख,—अग्रम् अंगुली (क्योंकि हाथ का सिरा यही होती है) —अंगुलिः हाथ की कोई सी अंगुलि, अभ्यासः हाथ से काम करने का अभ्यास, अवलम्बः -आलम्बनम् हाथ का सहारा -दत्तहस्तावलम्बो मारुतिभे -रघु० (सहारा दिये जाने पर),—आमलकम् 'हाथ में रक्खा आंवले का फल' यह एक कहावत है, और उस समय प्रयुक्त होती है जब कभी ऐसी बात का निर्देश करना हो जो बिल्कुल स्पष्ट और अनायास ही बोधगम्य हो; -आमलकः दक्षिणा, हस्तभाष, (व्यायामविशेष)—विक्र० ५, आ० १ —उद्यमम् 1. हाथ में लिया हुआ कमल 2. कमल जैसा हाथ, कौशलम् हाथ की दक्षता,—क्रिया हाथ का काम, दस्तकारी,- गत आगत (वि०) हाथ में आया हुआ, अधिकार में आया हुआ, प्राप्त, गृहीत स्वं प्राप्यमेते हस्तगता मयैव:—रघु० ७।६७, ८।१, ग्रह् हाथ से पकड़ना, ग्राहम् हस्तग्रहः, —तलम् 1 हाथ की हथेली 2 हाथी के सूंड की नोक, —ताडः हथेली बजाना तालियां बजाना, -दोषः हाथ से होने वाली त्रुटि, भूल, धारणम्—धारणम् (हा० से) आघात का निवारण करना, पादम् हाथ और पैर,—न से हस्तपादं प्रसारयति श० ४, पृष्ठम् कलाई से नीचे का भाग,—पृष्ठम् हथेली का पृष्ठभाग, -प्राप्त (वि०) 1 हस्तगत 2 उपलब्ध, सुरक्षित, -प्राप्य (वि०) वहां आसानी से हाथ पहुंच सके, जो हाथ की पहुंच में हो—हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः—मेघ० ७५,—बिन्दुम् शरीर में उबटन आदि मल द्रव्यों का लेप, बन्धः कलाई पर पहना जाने वाला रत्नाभूषण,—भ्यासम् 1. हाथ की तत्परता या कुशलता 2. हाथ की सफाई, बाजीगरी,—संवाहनम् हाथ से मलना या मालिश करना—मेघ० ९६,—सिद्धिः (स्त्री०) 1 हाथ का काम, हाथ से किया जाने वाला काम 2 मजदूरी, पारिश्रमिक, मजदूरी, सूत्रम् कलाई में बांधा हुआ मंगलसूत्र या कंगन, कड़ा —कु० ७।२५।

हस्तक: हस्तक्रम् [हस्त+कन्] 1. हाथ की अवस्थिति।

हस्तकर्तित (वि०) [हस्त+कर्तृ+क्त] दक्ष, कुशल, चतुर।

हस्तिकम् (अव्य०) [हस्तेन हस्तेन प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् ब० स०, दीर्घः, इत्वम्, अव्ययत्वं च] हाथा पाई, हस्ताहस्ति जन्मबलि दक्ष०।

हस्तिकम् [हस्तिनां समूह —कन्] हाथियों का समूह।

हस्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हस्तः शुण्डादण्डोऽस्यास्य इनि] 1. करयुक्त 2. सूंडवाला, -(पुं०) हाथी मनु० ७।९६, १२।४१, (हाथी चार प्रकार के बताये जाते हैं भद्र, मंद्र, मृग और मिश्र) 1. सम० अध्यक्षः हाथियों का अधीक्षक, आयुर्वेदः हाथियों के रोगों की चिकित्सा से संबद्ध कृति, रचना, आरोहः महावत, या हाथी की सवारी करने वाला, कक्षः 1. सिंह 2. बाघ -कर्णः एरण्ड का पौधा,-कलभः 1. हाथी को पालने वाला, —चारिन् (पुं०) पीलवान,—दन्तः 1. हाथी का दांत 2. दीवार में लगी हुई खूंटी (न्तम्) 1. हाथीदांत 2. मूसली,—दन्तकम् मूसल, दन्तम् पुरद्वार पर लगा हुआ खिड़की का डंडा,- पः दन्तः पीलवान, हाथी को

सवारी करने वाला – इति दोधयतीव हिडिम: करिणो हस्तिपकाहृत स्वपन्—हि० २।८६, मद: मस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मदरस,—मल्ल: 1. ऐरावत 2 गणेश 3 राख का ढेर 4 धूल की बौछार 5 कुहरा, –यूथ—यम् हाथियों का समूह, –वर्चसम् हाथी की शान, कान्ति, वाह: 1 पीलवान 2. हाथियों को हांकने का अंकुश, वृहयवम् छ हाथियों का समूह, स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अवक्षेन्द्रिय-चिंतना हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० १।१८ हस्त: हाथी की सूंड।

हस्तिन (ना) पुरम् [अलुक् समास हस्तिना तदाख्यनृपेण चिह्नित तत्कृतत्वात्] राजा हस्तिन् द्वारा बसाया गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तरपूर्व दिशा में, यही वह नगर है जहां महाभारत के कुरु का केन्द्रीय दुर्ग था, इसके अन्य नाम यह हैं—गजाह्वय, नागसाह्वय, नागाह्व और हास्तिन)।

हस्तिनी [हस्तिन्+ङीप्] 1. हथिनी 2 एक प्रकार की औषध और गन्धद्रव्य 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होंठ, अंगुलियां और कूल्हे मोटे, तथा स्तन भारी होते हैं, इसका रंग काला और कामलिप्सा अधिक होती है, रतिमंजरी में इसका वर्णन इस प्रकार है स्थूलाक्षरा स्थूलनितम्बबिम्बा स्थूलाङ्गुलि स्थूलकुचा सुशीला। कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितान्तभोक्त्री–चिरवल्लभा स्यात्—खलु हस्तिनी स्यात् (करिणी मता सा)।

हस्त्य (वि०) [हस्त+यत्] 1 हाथ से संबंध रखने वाला 2 हाथ से किया गया 3 हाथ से दिया हुआ।

हहलम् [ह+हल्+अच्] एक प्रकार का घातक विष।

हहा (पु०) [ह+हा+क्विप्] एक गन्धर्वविशेष—सु० हाहा।

हा (अव्य०) [हा+क] 1. शोक, उदासी, विकलता को प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये जानकि–उत्तर० ३, हा हा देवि स्फुटति हृदय–उत्तर० ३।३८, हा पित: क्वासि, हे सुभ्रु-भट्टि० ६।११, हा वत्से मालति क्वासि—मा० १० आदि (इस अर्थ में 'हा' प्राय: कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है हा कृष्णामक्तवान्–सिद्धा०) 2. आश्चर्य–हा कथं महाराज-दशरथस्य नन्दन: प्रियसखी मे कौसल्या–उत्तर०४ 3 क्रोंच या सिंहकी।

हा १ (जुहो० आ० जिहीते, हान, कर्मवा० हायते, इच्छा० जिहासते) 1 जाना, हिलना-डुलना – जिहीषा विधाता स्फुटमिह भवद्बान्धवस्यम्—हम्म० २८, कि० १३।२३, नलो० १।३८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, उद्—, 1. ऊपर की ओर जाना, (सभी अर्थों में) उठना—यतो रज: पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४, आविर्भूतानुराग: क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानो मुद्रा० ४।२१, नै० २२।४५, ५५, उज्जिहीर्षे महाराज त्व प्रशान्तो न किं पुन: भट्टि० १८।२७, 'तुम क्यों नहीं उठते हो अर्थात् जीवित होते हो' कोलाहलो लोकस्योदजिहीत–दश० 'लोगों ने एक शोर उठा' 2 जुदा होना, चले जाना – उज्जिहान-जीविता वराकी नानुकम्यसे मा० १० 3 उठाना –शिरसा यूपमुज्जिहीर्ते–काव्या० 4. चढ़ाना, (भौंहें) उठाना, सिकोड़ना–भट्टि० ३।४७, उप–, नीचे जाना, उतरना–निजौजसोज्जासयितु मगदङ्गुहामुपाजिहीषा न महीतल यदि शि० १।२१, सम्–, जाना, पहुंचना, उपभोग करना–जनता समहास्त मुदम् भट्टो० १।५४।

II (अदा० पर०, जहाति, हीन) 1 छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना,–छोड़ देना, तजना, तिलांजलि देना, पदत्याग करना मुह्यति हीहि घनागमतृष्णां सुर तनुबन्धे मनसि वितृष्णाम् मोह० १, सा स्त्रीस्वभावादसंज्ञा मन्मथ तथैवैनांरेकतर जहासि मुद्रा० ४।१३, रघु० ५।७२, ८।५२, १२।२४, १४।६१, ८७, १५।५९, शा० ४।१३, मृच्छ० २।५०, भट्टि० ३।५३, ५।९१, १०।७१, २०।१०, मेघ० ४९, ६०, भामि० २।१२९, ऋतु० १।३८ 2 पदत्याग करना, जाने देना 3 गिरने देना 4 भूल जाना, उपेक्षा करना, अवहेलना करना 5 बचना, विदकना– कर्म० (हीयते) 1 छोड़ दिया जाना, कि० १२।१२ 2 निकाल दिया जाना, वञ्चित किया जाना, लुप्त होना (करण० या अपा० के साथ) विक्लवाश्चो अहं प्राणै: भट्टि० १४।३५, जनयित्रीं सुत: सम्यग्ज्ञाह्यभ्यादेव हीयते–मनु० ३।१७, ५।१६१, ९।२११ 3 कम होना, थोड़ा हो जाना, प्राय 'परि' के साथ 4. घटना, कम होना, मुरझाना, क्षीण होना, आलं० से भी) ह्रास को प्राप्त होना

प्रबुद्धो हीयते चन्द्र: समुद्रोऽपि तथाविध —रघु० १७।७१, हि० प्र० ४२ 5 (जैसे मुकदमे में) हार जाना मृषाभ्युपन्यस्त हीयते व्यवहारत: याज्ञ० २।१९, 6 छूट जाना, भूल जाना 7 कमजोर होना

प्रेर० (हापयति-ते) 1. छुड़वाना, परित्यक्त कराना 2 अवहेलना करना, भुलना, अनुष्ठान में देर करना क्रि० १६।३१, मनु० ३।७१, ४२२, याज्ञ० १।१२१, इच्छा० (जिहासति) छोड़ने की इच्छा करना, अप, छोड़ना, त्यागना, तज देना - विलपाप न कापुरुषवद्गतं सहजामप्यपहाय शीलताम्–रघु० ८।४३ अपा–, छोड़ना, त्यागना, अव , छोड़ना, वञ्चित होना, परि , 1 छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल देना 2. भूल जाना, अवहेलना करना—यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय -मनु० १२।९२, (कर्मवा०) 1. अन्य

होना, कम होना—आर्यस्य बुद्धिर्हिंसाप्रधानेषु न किमपि परिहास्यते—ह०१ 2. चलित होना—लोभ-वित्तया न परिहीयते धन्या:—विक्रम०३, मालवि० २, ३—1. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना, तिला-जलि देना—प्रजाहानि यदा कामान्—मनु० २।५५ १९, मोहमेतौ प्रहास्यतः—राम० 2. आगे देना, फेंकना, डाल देना—प्रजहु सुमनश्चितान्—भट्टि० १४।२३, वि—, छोड़ना, परित्यक्त करना, उजाना, छोड़ देना—विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकं बलाकरः सन् जुहुवीह पावकम्—कि० १।४४, मेघ० ४१, रघु० २।४०, ५।६७,७३, ६।७, १२।१०२, १४।४८, ६९, कु० २१, (प्रेर०) पुरस्कार देना।

हाङ्गुर [हा विषादाय पीड़ायै वा अंग राति—हा+अङ्ग +रा+क] एक बड़ी मछली।

हाटक (वि०) (स्त्री०—की) [हाटक+अण्] सुनहरी, —कम् सोना। सम०—गिरिः सुमेरु पर्वत।

हाणम् [हा करणे ल्युट्] पारिश्रमिक, मजदूरी, भाड़ा।

हानम् [हा+ल्युट्] 1 छोड़ना, त्यागना, हानि, असफलता 2 बच निकलना 3 पराजय, क्षय।

हानिः (स्त्री०) [हा+क्तिन्, तस्य नि:] 1. परित्याग, तिलाञ्जलि 2. हानि, असफलता, अनुपस्थिति, अनस्तित्व - क्वचिन् स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यस्यहानि—काव्य० १, 'इसमें काव्य की हानि नहीं' 3 हानि, नुकसान, क्षति—वास्तोष्पतिसखिभ्येन का हानि करिष्यो भवेत्—सुभा०, का नो हानि—सर्व० 4 न्यूनता, कमी—यथा हानि क्रमप्राप्ता तथा वृद्धि क्रमागता—हरि०, याज्ञ० २।२०७, २४४ 5 अवहेलना, भूलना, भ्रम- प्रतिज्ञा°, कार्य° 6. नष्ट होना, बर्बाद होना, हानि -कालहानिः—रघु० १३।१६।

हानिका (स्त्री०) अनुहार, नुंआ।

हानकः, - नम् [हा+ल्यु] बर्छा,—कः 1. एक प्रकार का चावल 2 शिक्षा, ज्वाला।

हारः [हृ+घञ्] 1. ले जाना, हटाना, पकड़ना 2 पहुँचाना 3 अपकर्षण, अलगाव 4 चोरक, हरकारा 5 मोतियों की माला, हार—हारोऽयं हरिणाक्षीणां स्तनमण्डले—अमरु० १००, पाण्डवोऽयमवतार्यतां तत्सम्हार—रघु० ५।९०, ५।५२, ६।१६, मेघ० ६७, ऋतु० १।४, २।१८ 6. संग्राम, युद्ध 7. (ज्यो० में) किसी चित्र का नीचे का अंश 8 चोरक। सम० - आवलिः—ली (स्त्री०) मोतियों की लड़ी—तरुणी-स्तन एव शोभते मणिहारावलिरामनीयकम्—नै० २।४४, हारावलीतरलकान्तिसनाथकाञ्चिदाम—गीत०११, —यष्टि (स्त्री) वह माला का दाना या हार का मोती रघु० ५।७०,—वल्लिः हार, मोतियों की लड़ी—रचयति-पृथुकुचाभोगस्तेहारिवल्लिम्—ऋतु० २।२५, १।८, —हारा एक प्रकार का लालमूरे रंग का बछड़ा।

हारकः [हृ+ण्वुल्] 1. चोर, लुटेरा—याज्ञ० १।२१५ 2. ठग, धूर्त 3 मोतियों की लड़ी 4. (ज्यो० में) चोरक 5. एक प्रकार की पद्य रचना।

हारि (वि०) [हृ+णिच्+इन्] आकर्षक, मोहक, सुखकर, मनोहर,—रिः (स्त्री०) 1 पराजय 2. खेल में हार 3. वारियों का समूह, सार्थवाह। सम०—कम्बः कोयल।

हारिणिकः [हरिण+ठक्] हरिणों को पकड़ने वाला, शिकारी।

हारित (भू० क० कृ०)[हृ+णिच्+क्त] 1. हरण कराया हुआ, पकड़ाया हुआ 2. उपहार स्वरूप दिया गया, प्रस्तुत किया गया 3. आकृष्ट,—तः 1. हरा रंग 2. एक प्रकार का कबूतर।

हारिन् (वि०) (स्त्री० णी) [हारो अस्यास्य इति, हृ+णिनि वा] 1 ले जाने वाला, पहुंचाने वाला, होने वाला 2. लूटने वाला, हरण करने वाला —वाहि-कुलराजा व हारिणः याज्ञ० २।२७३, ३।२०८ 3 पकड़ लेने वाला, बाधा पहुँचाने वाला,—मनु० १२।२८ 4 प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला 5 आकर्षक, मोहक, सुखकर, आह्लादकर, आनन्दप्रद —तथास्मि मीतरामेव हारिणा प्रसभं हृता:—ह० १।५, शि० १०।१३, ६९, विष्टपहारिणि हरौ—भर्तृ० २।२५ 6 आगे बढ़ने वाला, अग्रसर होने वाला 7 हार धारण करने वाला।

हारिद्रः [हरिद्रा+अण्] 1 पीला रंग 2 कदंब का वृक्ष।

हारीतः [हृ+णिच्+इतच्] 1. एक प्रकार का कबूतर —रघु० ४।४६ 2. धूर्त, ठग 3. एक स्मृतिकार का नाम—याज्ञ० १।४।

हार्दम् [हृदयस्य कर्म वृद्धा० अण् हृदादेशः] 1, स्नेह, प्रेम अमर्षशून्येन मनसा जनस्य जनुना न जातार्हणेन न विद्विषा-दरः—कि० १।३३, शि० ५।६९, विक्रम० ५।१० 2 कृपा, सुकुमारता 3. इच्छाशक्ति 4. अभिप्राय, अर्थ।

हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] 1. हरण किये जाने योग्य, छीने जाने योग्य 2 सहज किये जाने योग्य, ले आये जाने योग्य—यद्यूढया वारवराजहार्यया—कु० ५।७० 3. अप-हरण किये जाने योग्य, छीने जाने योग्य—रघु० ७।९७ 4. विस्थापित होने योग्य, (हवा आदि के द्वारा) ले जाये जाने योग्य - रघु० १६।४१ 5. (अपने संकल्प से) चलायमान होने योग्य कु० ५।८ 6. उप-लब्ध किये जाने योग्य, जीते जाने योग्य, आकृष्ट किये जाने योग्य, विजित या प्रभावित किये जाने योग्य - सहसि हि मनोहार्यं पुष्पमूर्तं वपुरम्—मृच्छ०

१।३१, कु० ५।५३, मनु० ७।२१७ 7 पकड़े जाने योग्य लूटे जाने योग्य मनु० ८।४१७,—पुं. 1 साँप 2. बिभीतक या बहेड़े का वृक्ष 3 (गणि० में) भाज्य ।

हालः [हलो अस्त्यस्य अण्, हल एव वा अण्] 1 हल 2 बलराम का नाम 3 शालिवाहन का नाम । सम० —भृत् (पु०) बलराम का विशेषण ।

हालकः [हाल+कन्] पीले भूरे रंग का घोड़ा ।

हाल (ला) हलम् [=हलाहल, पृषो०] एक प्रकार का घातक विष जो समुद्रमन्थन के परिणाम स्वरूप मिला था । (अत्यन्त विषाक्त होने के कारण यह प्रत्येक वस्तु को भस्म करने लगा, इसलिए इसे शिव जी ने पी लिया) अहमेव गुरु सुदारुणानामिति हालाहल भारत तात पश्य । ननु सन्ति भवादृशानि भूयो भुवनेऽस्मिन् वचनानि दुर्जनानाम् सुभा० 2 (अत) घातक विष, या जहर, दे० भामि० १।९५, २।७३, पच० १।१८३, (हलाहल और हालहाल भी लिखा जाता है) ।

हालहलो, हाला [हालाहल+ङीप्, हल्+घञ्+टाप्] शराब,—मदिरा—हित्वा हालामभिमतरसा रेवतीलोचनाङ्काम् मेघ० ४९, पच० १।५८, शि० १०।२१ ।

हालिकः [हलेन वहति हल प्रहरणमस्य तस्येदं वा ठक् ठञ् वा] 1 हलवाला, किसान 2 जो हल चलाये (जैसे कि हल में जुता बैल) 3 जो हल के द्वारा युद्ध करता है ।

हालिनी [हल्+णिनि+ङीप्] एक प्रकार की बड़ी छिपकली ।

हाली [हल्+इन्+ङीष्] छोटी साली ।

हालुः [हल्+उण्] दाँत ।

हाव [ह्वे भावे घञ् वि० सम०, हुकरणे घञ् वा] 1. बुलावा, आमन्त्रण 2 स्त्रियों की शृंगारेच्छाओं जो पुरुषों को रत्यात्मक भावनाओं को उत्तेजित करती हैं, (प्रेम की) शृंगारेच्छा, मधुरभाषण हावहारि हसित वचनानां कौशल दृष्टि विकारविशेषा —शि० १०।१३, अनु सराग ननु सहावम् भट्टि० ३।४३, (उज्ज्वलमणि ने हाव की परिभाषा निम्नांकित की है —शृंगारेच्छकसयुक्तो भ्रूनेत्रादिविकासकृत् । भावादीषत् प्रकाशो य स हाव इति कथ्यते ॥ दे० सा० द० १२७ भी ।

हासः [हस्+घञ्] 1. ठहाका, हसी, मुस्कराहट भावो हास.—प्रसन्न० १।२२ 2 हर्ष, खुशी, आमोद 3. हास्यध्वनि, हास्यरस, - दे० सा० द० २०७ 4 व्यंग्यपूर्ण हंसी —रघु० १२।३६ 5. खुलना, विकसित होना, फूलना (कमल आदि का)—कुवलानि सामर्थलवेव तेनु सरोजलक्ष्मी स्वजनप्रहर्षि —भट्टि० २।३ ।

हासिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1 अट्टहास 2 खुशी, आमोद ।

हास्य (वि०) [हस्+ण्यत्] हसने के योग्य, हास्यास्पद, रघु० २।४३, स्यम् 1 हसी याज्ञ० १।८४ 2 खुशी, मनोरंजन, क्रीडा मनु० ९।२२७ 3 मजाक, मखौल 4 व्यंग्य, दिल्लगी, ठट्ठा, स्व काव्य में वर्णित हास्यरस, परिभाषा—विकृताकारवाग्वेषचेष्टादे कुहकाज्जुवेत् । हास्यो हासस्थायिभाव (हासो हास्यस्थायिभाव के स्थान पर) श्वेत प्रथमदेवत सा० द० २२८ । समः आस्पदम् हसी का पात्र, हसी उड़ाने की वस्तु, पदवी, पार्श्व खिल्ली, दिल्लगी - कुर्वन्नीतस्त्रिभुवनजय हास्यमार्गं दशास्य शिवम० १८। १०७, रस हसी या आमोदात्मक रस - दे० ऊपर 'हास्य' ।

हास्तिकः [हस्तिन् (=ठक्] महावत, या सवारोही, कम् हाथियों का समूह शि० ५।३० ।

हास्तिनम् [हस्तिना नृपेण निर्वृत्तम् नगरम्-हस्तिन् + अण्] हस्तिनापुर नगर का नाम ।

हाहा (पु०) [हा इति शब्द जायति-हा+हा + विच्] एक गन्धर्व का नाम—(अमर०) पाहा, शोक या आश्चर्य को प्रकट करने वाला उद्गार (यह केवल 'हा' शब्द है केवल इस अर्थ के लिए इसको 'द्विरुक्त' कर दिया गया है) । समः -कार 1 शोक, विलाप, रोना-धोना 2 युद्ध का शोर रव शब्द हाहा की ध्वनि ।

हि (अव्य०) (इसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में कभी नहीं होता) इसके अर्थ निम्नांकित हैं 1 इसलिए कि, क्योंकि (कारणवाची सूचित करने का निर्देश करना) —अनिर्विण्णानि पुष्पाणि हि दृश्यन्ते वनेषु, रघु० ५।१० 2 निस्सन्देह, निश्चय ही दत्तप्रत्यायनप्रधानं हि नाटकमाख्यानम् मालवि० १ न हि सभवितो दुष्टवाग्राह्यमवेक्षते मृच्छ० ७ 3 उदाहरणार्थक रूप, जैसा कि पूर्वनिर्दिष्ट है प्रकृतसमर्थ भवत्यो न खलु वा० वासवदत्ता० । भवत्यनुग्रह स्वप्नाधारम् हि रस रवि रघु० २।१८ 4 कर्तव्य अवश्य (किसी विचार पर बल देने के लिए) मया हि प्रसन्नमाख्यातं मा० १५५ 5 कभी कभी यह केवल पूरक की भाँति ही प्रयुक्त होता है ।

हि (स्वा० पर० हिनोति, हित-प्रेर० हापयति, इच्छा० जिघीषति) 1. भेजना, उकसाना 2 दान देना फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दागना तथा तत्सदृशता हिन्वे भट्टि० १४।३३ 3 उत्तेजित करना भड़काना, उकसाना, 4 प्रसन्न करना, आगे बढ़ाना 5 पूरा करना, प्रसन्न करना, उत्तेजित करना 6 जाना, प्रवृत्ति करना, प्र , 1 भेज देना, इकट्ठा 2 फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दाग देना

—विनाशायास्य वृक्षस्य रक्षस्तस्मै महीपतिः। प्रक्षिपाय —रघु० १५।२१, भट्टि० १५।१२१ 3 भेजना, प्रेषित करना, मा० १, रघु० ८।७९, ११। ४९, १२।८६, भट्टि० १५।१०४।

हिंस् (म्वा० रुधा० पर०, चुरा० उभ० हिंसति, हिंसन्ति, हिंसयति ते, हिंसित) 1 प्रहार करना, आघात करना 2 चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना 3 काट देना, संताप देना—मा० २।१ 4 मार डालना, हत्या करना बिल्कुल नष्ट कर देना —कीर्तिं सूते दुष्कृत या हिनस्ति उत्तर० ५।३१, रघु० ८।४५, मृच्छ० १३।२८, भट्टि० ६।३८, १४।५३, १५।७८।

हिंसक (वि०) [हिंस्+ण्वुल्] हानिकर, अनिष्टकर, क्षतिकर—कः 1 खूंखार जानवर, शिकारी जानवर 2 शत्रु 3 अथर्ववेद में निपुण ब्राह्मण।

हिंसनम्, ना [हिंस्+ल्युट्] प्रहार करना, चोट मारना, वध करना—मनु० ८।२७३, १०।६८, याज्ञ० १।३३।

हिंसा [हिंस्+अ+टाप्] 1 क्षति उत्पात, बुराई, नुकसान, चोट, (यह तीन प्रकार की मानी जाती है —कायिक, वाचिक और मानसिक) अहिंसा परमो धर्मः 2 वध करना, हत्या करना, विध्वंस —रघु० ५।५०, याज्ञ० ३।२१२, मनु० १०।६३ 3 लूटना डाका डालना। समः—आत्मक (वि०) हानिकर, विनाशकारी, कर्मन् (नपु०) 1 कोई भी हानिकर या क्षति पहुँचाने वाला कृत्य 2 शत्रु का नाश करने में प्रयुक्त जादू, अभिचार प्राणिन् अनिष्टकर जंतु,—रत (वि०) उत्पात में संलग्न, अधि उत्पात करने पर तुला हुआ, समुद्भव (वि०) क्षति से उत्पन्न।

हिंसाकः [हिंसा+कन्] 1 बाज, चीता 2 कोई भी अनिष्टकर जन्तु।

हिंसालु (वि०) [हिंसा+आलुच्] 1 हानिकर, उत्पाती, चोट पहुँचाने वाला 2 घातक (पु०) उत्पाती या जंगली कुत्ता।

हिंसालुक (वि०) [हिंसालु+कन्] उपद्रवी या जंगली कुत्ता।

हिंसीरः [हिंस्+ईरन्] 1 बाज 2 पक्षी 3 उपद्रवी व्यक्ति।

हिंस्य (वि०) [हिंस्+क्यत्] जो क्षतिग्रस्त किया जा सके या मारा जा सके—रघु० २।५७, मनु० ५।४१।

हिंस्र (वि०) [हिंस्+रक्] 1 हानिकर, अनिष्टकर, उपद्रवी, पीड़ाकर, घातक मनु० ९।८०, १२।५६ 2 भयंकर 3 क्रूर, भीषण, बर्बर—स्रः 1. भीषण जन्तु, शिकारी जानवर,—रघु० २।२७ 2. विनाशक 3 सिंह 4. भीम। समः—पशुः शिकारी जानवर, —यन्त्रम् 1. पिंजरा 2. दुर्भावनापूर्ण अभिप्रायों के लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमंत्र।

हिक्क् 1 (भ्वा० उभ० हिक्कति—ते, हिक्कित) 1. अस्पष्ट उच्चारण करना 2. हिचकी लेना।

1' (चुरा० आ० हिल्लयते) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

हिक्का [हिक्क्+अ+टाप्] 1. अस्पष्ट ध्वनि 2 हिचकी।

हिङ्कारः ['हिम्' इत्यस्य कारः] 1 'हिम्' की मन्द ध्वनि करना, हुंकार भरना 2. बाघ।

हिङ्गु (पु०, नपु०) [हिंस गच्छति—गम्+डु, नि०] 1 हींग का पौधा 2 इस पौधे से तैयार किया गया पदार्थ जो घर में खाद्यपदार्थों में छौंक के लिए प्रयुक्त होता है। समः—निर्यासः 1. हींग के वृक्ष का गोंद के रूप में रस 2 नीम का पेड़,—पत्रः इंगुदी का वृक्ष।

हिङ्गुलम् } [हिङ्गु+ला+क (कि, डु वा)]
हिङ्गुलिः } ईंगुर, सिंदूर।
हिङ्गुलुः (पु० नपु०)

हिङ्ग्वादिः (पु०) हाथी के पैरों को बाँधने की बेड़ी या रस्सी।

हिडिम्बः (पु०) वह राक्षस जिसे भीम ने मारा था,—वा हिडिंब की बहन जिसने भीम से विवाह कर लिया था। समः—जित्,—जिद्,—घ्न,—रिपु (पु०) भीम के विशेषण।

हिण्ड् (भ्वा० आ० हिण्डते, हिण्डित) जाना, घूमना, इधर उधर फिरना, आ—, घूमना, या इधर-उधर फिरना —सर्ग २।

हिण्डनम् [हिण्ड्+ल्युट्] 1 घूमना, इधर-उधर फिरना 2 संभोग 3 लेखन।

हिण्डिकः [हिण्ड्+इन्=हिण्डि+कन्] ज्योतिषी।

हिण्डिः (स्त्री) रः [हिण्ड्+किरच् (इरच्)] 1 समुद्रझाग 2 पुरुष, मर्द 3 भैरव।

हिण्डी [हिण्ड्+इन्+ङीप्] दुर्गा।

हित (वि०) [धा (हि)+क्त] 1 रखा हुआ, धारण किया हुआ, पहना हुआ 2 थामा हुआ, लिया हुआ 3 उपयुक्त, योग्य, समुचित, अच्छा (सप्त० के साथ)—गोष्ठ्यो हित गाहितम् 4 उपयोगी, लाभदायक 5 हितकारी, लाभप्रद, संपूर्ण, स्वास्थ्यवर्धक (अन्न या भोजन आदि)—हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—कि० १।४, १४।६३ 6. मित्रवत्, कृपालु, स्नेही, सहृदय (प्रायः अधि० के साथ)—तः मित्र, परोपकारी, मित्र जैसा परामर्शदाता—हितार्थं च अभ्युद्यते स हितम्:

—कि० १।५, हि० १।३०,—अम् 1. उपकार, काम, फ़ायदा 2. कोई भी उपयुक्त या समुचित बात 3. कल्याण, कुशल, क्षेम। सम०—अनुबन्धिन् (वि०) कल्याणप्रद,—अन्वेषिन्, —अर्थिन् कुशलाभिलाषी, —इच्छा सदिच्छा, मंगलकामना,—उपितः आरोग्य-वर्धक निवेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—उपदेशः हितकर उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—एषिन् हितेच्छु, भला चाहने वाला, परोपकारी,—कर (वि०) सेवा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला, मित्र-सा व्यवहार करने वाला, अनुकूल, —काम (वि०) हितेच्छु, मंगलाकांक्षी, —कामता दूसरे की मंगलकामना, सदिच्छा, कारिन्, —,कृत (पु०) परोपकारी,—प्रज्ञ (पु०) गुप्तचर —बुद्धि (वि०) मित्र-से मन वाला, सद्भावनापूर्ण, —वचनम् मैत्रीपूर्ण परामर्श,—वादिन् (पु०) सत्परामर्श देने वाला।

हितकः [हित+क] 1 बच्चा 2 किसी पशु का शावक।

हिन्तालः [हीनस्तालो यस्मात् —पृषो०] एक प्रकार का खजूर।

हिन्दोलः [हिल्लोल्+घञ्, पृषो०] 1 हिंडोल, झूला 2 श्रावण के शुक्ल पक्ष में दोलोत्सव के अवसर पर कृष्ण भगवान् की मूर्तियों को ले जाने वाला हिंडोल, या दोलोत्सव।

हिन्दोलकः, हिन्दोलिका [हिन्दोल+कन्, टाप् वा] झूला, हिंडोला।

हिम (वि०) [हि+मक्] ठंडा, शीतल, सर्द, तुषारयुक्त, ओसीला,—मः 1 जाड़े की मौसम, सर्द ऋतु 2 चन्द्रमा 3 हिमालय पर्वत 4 चन्दन का पेड़ 5 कपूर, —मम् कुहरा, पाला—रघु० १।४६, २।२५, कु० ७।१९ 2 बर्फ़, पाला—कु० १।३, ११, रघु० ९।२८, १५। १६, १६।४४, कि० ५।१२ 3 सर्दी, ठंडक 4 कमल 5. तांबा मक्खन, 6 मोती 7 रात 8 चन्दन की लकड़ी। सम०—अंशुः 1 चन्द्रमा,—मेघः ८९, रघु० ५।१६, ६।४७, १४।८०, शि० २।४९ 2. कपूर °अद्रिजम् चाँदी, —अचलः—अद्रिः हिमालय पहाड़ —कु० १।५४ रघु० ४।७९, १४।१३, °जा, °तनया 1. पार्वती 2. गंगा, —अम्बु,—अम्भस् (नपु०) 1 शीतल जल 2 ओस—रघु० ५।७०,—अनिलः शीतल वायु,—अम्भम् कमल,—अरातिः 1 शाम 2. सूर्य,—आगमः जाड़े का मौसम या सर्द ऋतु —आर्तः (वि०) पाले से ठिठुरा हुआ, ठंड से जमा हुआ,—आलयः हिमालय पहाड़—कु० १।१, °सुता पार्वती का विशेषण —आह्वः—आह्वयः कपूर, उज्जः चन्द्रमा,—ऋतुः 1. चाँद—कुठति न सा हिमकरकिरणेन —गीत० ७ 2. कपूर, कूटः 1. जाड़े की ऋतु 2. हिमालय पहाड़,—गिरिः हिमालय पहाड़,—गुः चाँद, —द्युतिः मैनाक पर्वत,—द्रवा 1. खिरनी का पेड़ 2 पार्वती, —नलम् एक प्रकार की कपूर की सुगन्ध, —द्योतितः चन्द्रमा—वि० २।२९—दुर्दिनम् अति ठंड से कष्ट-दायक दिन, ठंड और बुरा मौसम,—द्युतिः चन्द्रमा, —द्रुह् (पु०) सूर्य,—ध्वस्त (वि०) पाले से मारा हुआ, कुतरा हुआ या नष्ट हुआ, —नगः हिमालय पहाड़, —रश्मि (पु०) चाँद,—शकलम् कपूर,—शीतल (वि०) बर्फ़ की भाँति ठंडा, —शैलः हिमालय पहाड़,—संहतिः (स्त्री०) बर्फ़ का ढेर, —सरस् बर्फ़ की झील, ठंडा पानी—मा० १।३१, हालाकः दलदल में होने वाला खजूर का पेड़।

हिमवत् (वि०) [हिम+मतुप्] हिममय, बर्फीला, कुहरा से ढका हुआ,—(पु०) हिमालय पहाड़—रघु० ४।७९, विक्रम० ५।२२। सम० कुक्षिः हिमालय पर्वत की घाटी,—पुरम् हिमालय की राजधानी अलकापुरी का नाम, —भुज० ६।३३,—सुतः मैनाक पर्वत,—सुता 1 पार्वती 2 गंगा।

हिमानी [महद् हिमम्, हिम+ङीप् आनुक्] बर्फ का ढेर, हिम का समूह, हिमसंहति नगमुपरि हिमानीगौरमासाद्य जिष्णु कि० ४।३८, माघ० १।२५।

हिरण्यम् [हृ+रुट्, नि०] 1 सोना 2 चाँदी 3 कौड़ी। हिरण्मय (वि०) (स्त्री० यी) [हिरण्य+मयट् नि०] सोने का बना हुआ, सुनहरी—हिरण्मयी सीतायाः प्रतिकृति—उत्तर० २, रघु० १५।६१,—यः ब्रह्मा देवता।

हिरण्यम् [हिरण्यमेव स्वार्थे यत्] 1 सोना,—मनु० २।२४६, ८।१८२ 2 सोने का पात्र मनु० २।२९, 3 चाँदी 4. कोई भी मूल्यवान् धातु 5. दौलत, संपत्ति 6 कौड़ी, शुल्क 7 कौड़ी 8 एक विशेष माप 9. सारांश 10 पलाश 1 सम०—कक्ष (वि०) सुनहरी करधनी पहनने वाला, कशिपुः राक्षसों के एक प्रसिद्ध राजा का नाम (यह कश्यप और दिति का पुत्र था। यह इतना शक्तिशाली हो गया था कि इसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को पीड़ित करने लगा। इसने बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और अपने पुत्र प्रह्लाद को, विष्णु को ही परमात्मा मानने के कारण नाना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में उसे विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण कर यमपुर भेज दिया—दे० प्रह्लाद), कोशः सोना और चाँदी (चाहे कारीगरी बने हों या बिना गढ़ा सोना चाँदी) —गर्भः 1 ब्रह्मा (क्योंकि वह सोने के अंडे से पैदा हुआ) 2 विष्णु का नाम 3 सूक्ष्मशरीर धारण करने वाली आत्मा, द (वि०) सुवर्ण देने वाला मनु० ४।२३०, (दः) समुद्र, (दा) पृथ्वी, नाभः मैनाक पहाड़,—बाहुः 1 शिव का विशेषण 2 सोन नदी, —रेतस् 1. आग—रघु० १८।२५ 2. सूर्य 3 शिव

* चित्रक या मदार का पौधा,—वर्मा नदी,—जाहः सीन दरिया ।

हरिण्यय (वि०) (स्त्री० यी) [हिरण्य+मयट्, नि० मलोप] सुनहरी ।

हिवक् (अव्य०) [हि०+उकिच्, कुट्] 1 के बिना, के सिवाय 2 में, बीच में 3 निकट 4 नीचे ।

हिल् (तुदा० पर० हिलति) केलिक्रीडा करना, स्वेच्छा से रमण करना, प्रेमालिंगन करना, कामेच्छा प्रकट करना ।

हिल्ल [हिल् + लक्] एक प्रकार का पक्षी ।

हिल्लोल: [हिल्लाल्+अच्] 1 लहर, झाल 2 हिंडोल राग 3. घन, सनक 4 एक रतिबंध ।

हिल्वला. (स्त्री०, ब० व०) [हृल्वला, पृषो०] मृगशिरा नक्षत्र के शिर के पास के पाँच छोटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि+डी] 1 आश्चर्य प्रकट करने वाला अव्यय हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाक –शि० ११।६४, या - ही किल लक्ष्मणेनोक्तं—भट्टि० १४। ३०, (इस अर्थ में प्राय नाटकीय भाषा में इसकी आवृत्ति होती है) 2 थकावट, उदासी, खिन्नता वर्ग ।

हीन (भू० क० कृ०) [हा+क्त, तस्य न ईत्वम्] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2 रहित, वञ्चित, वियुक्त, के बिना (करण० या समास में)–गुणैर्हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका —सुभा०, इसी प्रकार दृष्य , धति' और उत्साह' आदि 3 मुझाया हुआ अपचित 4 त्रुटिपूर्ण, सदोष, हीनातिरिक्तलक्षणाभ्यो वा तमप्यपनयेत्तत मनु० ३।२४२ 5 घटाया हुआ 6 कम, निम्नतर मनु० २।१९४ 7 नीच, अधम, कमीना, दुष्ट, न 1 सदोष गवाह 2 अपराधों प्रतिवादी (नारद पाँच प्रकार के बताता है अन्यवादी क्रियाद्वेषी नोत्तरवादी निरुत्तर । आहूतप्रपलायी च हीन पञ्चविध स्मृत ॥) । सम० अङ्ग (वि०) अपाहीन, विकलांग, अपाहज, सदोष मनु० ४।१४१, याज्ञ० १।२२२, कुल, ज (वि०) ऊँचे कुल में उत्पन्न, नीच परिवार का, –क्रतु (वि०) जो अपने यज्ञानुष्ठान में अवहेलना करता है, जाति (वि०) 1 नीच जाति का 2 जाति से बहिष्कृत बिरादरी से खारिज, पतित,—योनि (स्त्री०) नीची कोटि का जन्मस्थान, वर्ण (वि०) 1 नीच जाति का 2 घटिया दर्जे का, वादिन् (वि०) 1 सदोष बयान देने वाला 2 अपलापी 3 गूंगा, मूक, सेवा नीच व्यक्तियों से मेलजोल सेवा नीच व्यक्तियों की टहल करना ।

हीनताल: [हीनस्तालो यस्मात्–पृषो०] हलदल में होने वाला खजूर का वृक्ष ।

हीर: [हृ+क, नि०] 1 साँप 2 हार 3. सिंह 4. 'सेतुबन्धचरित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम –र,—रम् 1 इन्द्र का वज्र 2 हीरा, (नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में आने वाला) । सम० —अङ्क. इन्द्र का वज्र ।

हीरक: [हीर+कन्] हीरा ।

हीरा [हीर+टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 बिजली ।

हीलम् [ही विस्मय लाति ला+क] पौरुषेय वीर्य ।

हीही (अव्य०) [ही+ही] आश्चर्य और प्रमोद को प्रकट करने वाला अव्यय ।

हु (जुहो० पर० जुहोति हुत- कर्मवा० हूयते, प्रेर० हावयति-ते, इच्छा० जुहूषति) 1 (हवनकुंड में आहुति के रूप में) प्रस्तुत करना, किसी देवता के सम्मान में भेंट देना (कर्म० के साथ), यज्ञ करना - यो मन्त्रपूता तनुमप्यहौषीत् –रघु० १३,४५, अहरहर्यत् जुहुयोह पावकम्—कि० १।४४ हविर्जुहुधि पावके–भट्टि० २०।११, मनु० ३।८३, याज्ञ० १।९९ 2 यज्ञ का अनुष्ठान करना 3 खाना ।

हुड् i (भ्वा० पर० होडति) जाना ।

ii (तुदा० पर० हुडति) संचय करना ।

हुड [हुड्+क] 1 मेढ़ा 2 चोरों को दूर रखने के लिए लोहे का काँटा 3 एक प्रकार की बाड़ 4 लोहे का मुद्गर ।

हुडु: [हुड्+कु०] मेंढा–जन्मकोटिहुडुयुद्धेन पद्य० १।१६२।

हुडुक्क [हुड्+उक्क] बालू की घड़ी के आकार का बना एक छोटा ढोल, नं० १५।१७ 2 एक प्रकार का पक्षी, दारुहू 3 दरवाजे की कुंडी 4. नखों में खुर पुराण ।

हुडुल (नपुं०) [हुड्–उलि] 1 साँड का रंभाना 2. धमकी का शब्द ।

हुण्ड [हुण्ड्+क] 1 व्याघ्र 2 मेढ़ा 3 दुष्ट 4. हाथीकुकर 5 राक्षस ।

हुत (भू० क० कृ०) [हु+क्त] 1 आहुति के रूप में आग में डाला हुआ पशुबलि भेंट के रूप में होम किया हुआ 2 जिसे आहुति दी जाय –श० ४, रघु० २।७१, ९।३३,—तः शिव का नाम, –स्रज् आहुति, चढ़ावा । सम०—अग्नि (वि०) जिसने अग्नि में आहुति डाली है–रघु० १।६, अशन 1 अग्नि–समीरणो नोदयिता प्रभेति व्यादिश्यते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, रघु० ४।१ 2. शिव का नाम 'हुताशः शिव का विशेषण, अर्चनी फाल्गुन मास की पूर्णिमा, होलिका, आशः आग—प्रदक्षिणीकृतः हुत हुताशम्–रघु० २।७१,—आत्मवेदस् (वि०) जिसने अग्नि में आहुति दी है भुज् (पुं०) आग—नैशान्धकारहुतभुज इव स्निग्धभूयिष्ठधूमा विक्रम० १।९, उत्तर० ५।९, 'जिसे अग्नि की बलि स्वाहा,—वह: आग—अनाकीर्ण

अन्ये हुतवदाहरीत गृहपिच—श० ५।१०, शीताशुस्तपनो हिम हुतवह सोम० ९, मेघ० ४३, ऋतु० १।२७,—होम. वह ब्राह्मण जिसने आग में आहुति दी है, (मनु) अग्नि हुआ ब्राह्मण ।

हुम् (अव्य०) [हु+डुमि] (मूल रूप से एक अनुकरणात्मक ध्वनि) निम्नांकित अर्थों को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय 1 बाद, पश्चात्—हुम् आत्मन्, या—रामो नाम बभूव ह तदन्वया मोतेति हुम् 2 सन्देह—कैधौ ह मैथा हुम् 3 स्वीकृति—उत्तर० ५।३५ 4 रोष 5 अरुचि 6 भर्त्सना 7 प्रश्नवाचकता (जादू के मन्त्रों में 'हुम्' का सम्प्र० के साथ प्रयोग उदा० श्रीं कवचाय हुम्,) (हुङ् 'हुम्' की ध्वनि करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना, रोकना यथा अनुहुङ् 'बदले में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहुङ्कृते घनध्वनि न हि गोमायुरुत्सहति केसरी- शि० १६।२५), सम० कार:—कृति (स्त्री०) 1 'हुम्' की ध्वनि करना—पृष्टा पुनः पुनः काली हुंकारैश्च भापते 2 गर्जना, ललकार अनहुंकारगर्जिन—कु० २।२६, हुंकारोद्गत घरत्न स हि विघ्नानपोहति श० ३।१, रघु० ३।५८, कु० ५।५४ 3 दहाड़ना, रोकना 4 सूअर का घुर्घुराना 5 धनुष की टंकार ।

हुर्छ् (भ्वा० पर० हुर्छति) टेढ़ा होना ।

हुल् (भ्वा० पर० होलति) 1 जाना 2 ढांपना, छिपाना ।

हुलहुली [हुल्+क, द्वित्वम्, ह्रस्व च] हर्ष के अवसरों पर महिलाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अस्पष्ट हर्षध्वनि ।

हुहु (हू) (पुं०) [हू+डु, नि०] एक गन्धर्व विशेष ।

हुहू (भ्वा० आ० हुहूते) जाना ।

हूक (न) [हू+नक्, सम्प्र०, पक्षे पृषो० धत्वम्] 1 अमर्ष, जलन, ईर्ष्या-सर्वाभ्युद्विग्नमनसामुद्धूय-चिरकृतस्यापि नारागकम् 2 एक सोने का सिक्का, (सम्भवतः यह हूणों के देश में प्रचलित था),—आ (पु०, ब० व०) एक देश या उसके अधिवासियों का नाम—हूणावरोधानां—रघु० ४।६८ ।

हूत (भू० क० कृ०) [हू+क्त सम्प्रसारणम्] आमन्त्रित, बुलाया गया, निमन्त्रित दे० 'हू' ।

हूतिः (स्त्री०) [हू+क्तिन्, सम्प्र०] 1. बुलावा, निमंत्रण 2 चुनौती 3 नाम—जैसा कि 'हरिहूतिः' में ।

हून् दे० हूण ।

हूरवः [हू इति रवो यस्य - ब० स०] गीदड़ ।

हूहू (पुं०) [=हुहू पृषो०] गन्धर्व विशेष ।

हृ (भ्वा० उभ० हरति-ते,हृत, कर्मवा० ह्रियते) लेना, ढोना, पहुंचाना, आगे आगे चलना (इस अर्थ में बहुधा द्विकर्मक प्रयोग)—अथो खलु हरति सिद्धा०, सर्वेषां मे हर धनपतिकोपाद्विश्लेषितस्य—मेघ० ७, मनु० ४।७४ 2. उठाकर ले जाना, अपहरण करना, चुरा कर ले जाना, भट्टि० ५।४७ 3 अपहृत करना, लूटना, डाका डालना, चुराना—बुबुधे आरब्धव्यानो हरिष्यन्नीति शत्रूणां भामि० ४।४५, रघु० ३।३९, कु० २।४७, भट्टि० २।३९, मनु० ७।८३ 4 विवस्त्र करना, वञ्चित करना, छीन लेना, अपहरण करना—मृत्योर्हरति पुरुषमनोकहानाम् रघु० ५।६९, ३।५४, भट्टि० १५।११६, मनु० ८।३३४ 5 ले जाना, स्वीकार करना, नष्ट करना तथापि हरते तापं लोकानामुन्नतो घनः भामि० १।४९, रघु० १५।२४, मेघ० ३१ 6 आकृष्ट करना, मुग्ध करना, जीत लेना, प्रभाव डालना, अधीन करना, वशीभूत करना - चेतो न कस्य हरते गतिरङ्गनायाः —भामि० २।१५७, ये भावा हृदयं हरन्ति -१।१०३, तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृत श० १।५, मृगया मदहार धनुरेव कामिनी —रघु० ९।६९, १०।८३, विक्रम० ४।१०, ऋतु० ६।२०, भग० ६।४४, २।६० मनु० ६।५९ 7 उपलब्ध करना, ग्रहण करना, लेना, प्राप्त करना तनो विश नृपो हरेत् मनु० ८।३९१, १५३, स हरतु सुधामपि ताकाम्—दश० 8 रचना, अधिकार में करना भामि० २।१६३ 9. पराभूत करना, नष्ट करना भट्टि० ५।७१, शि० ९।६३ 10 विवाह करना —मनु० ९।९३ 11 बाटना—प्रेर० (हारयति-ते) 1 उठवा देना, बुलाना, पहुंचाना, (कोई चीज) किसी के हाथ भिजवाना (करण० के कर्म० के साथ)—भृत्यं भृत्येन वा भार हारयति—सिद्धा०, जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, मनु० ८।११४ कु० २।३९ 2 अपहृत करवाना, नष्ट करवाना, वञ्चित होना 3 पुरस्कार देना, इच्छा० (जिहीर्षति —ते) लेने की इच्छा करना । अथवा ,न्यूनपद की पूर्ति करना, अनु , 1 नकल करना, मिलना-जुलना देहबन्धेन स्वरेण च रामभद्रमनुहरति उत्तर० ४ इसी प्रकार कि० ९।६७ 2 (अपने माता पिता से) मिलना-जुलना (इस अर्थ में आ०) दे० पा० १।३। २१ वार्तिक, अप —, 1 छीन लेना, उठा लेना—पराधास्त्रुटैरपहृतभर कल्पते विक्रमाय विक्रम० ३।१ 2. पराङ्मुख होना, मुड़ना—अपहरन्ती (सौरीम्) कु० ७।९५ 3 लूटना, डाका डालना, चुराना 4 (किसी को) वञ्चित करना, दूर करना, नष्ट करना स्व च कीर्तिमपहर्तुमुद्यत —रघु० ११।७४ 5. आकृष्ट करना, प्रभावित करना, जोर डालना, जीत लेना, वशीभूत करना (स) प्रियतमा यदमानमपाहरत् रघु० ९।७, इसी प्रकार 'अपहृियं अनु परिजनमनिहतया शिक्षया उत्तर० १, (प्रेर०) (दूसरों से) अपहरण करवाना—कि० १।११, अभि—,

उठाकर ले जाना, हटाना, अभ्यव —, जाना (प्रेर०) निकालना, भोजन करना, आ— ,1 (क) लाना, ले आना यदेव वर्षे तदपश्यदाहुनम् रघु० ३।९, १४। ७७ (ख) होना, पहुँचाना मनु० ९।५४ 2 निकट लाना, देना अयाचिताहृतम्—पाञ्च० १।१२५ 3 प्राप्त करना, लेना, हासिल करना मनु० २। १८३, ७।८०, ८।१५१ 4 रखना, धारण करना - आजह्रुस्तुल्यरत्नां पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियम-व्यवस्थाम् कु० १।३३ 6 (यज्ञ का) अनुष्ठान करना स विश्वजिन्नामाहरद्यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम् रघु० ४।८६, १४।३७ 7 वसूल करना, वापिस लेना 8 कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 9 पहनना, धारण करना 10 आकृष्ट करना 11 हटाना, दूर करना—(प्रेर०) 1 मनवाना 2 दिलवाना 3 एकत्र करना, इकट्ठा मिलाना, उद्—1 बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना, छुड़ाना—मा तावदुद्धर सुखी दयिताप्रबुद्धया विक्रम० ४।१५ 2 खोदना, बाहर निकालना (शरम्) उद्धर्मैच्छत्समरमोद्धतारि रघु० २।३०, ३।६४ 3. उन्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना, उद्धार करना नमयामास नृपानुद्धरन् रघु० ८।९, ४।६६, त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम्- शि० ७।३ 4 उठाना, ऊपर को करना, उन्नत करना, (हाथ आदि) फैलाना मनु० ४।६२, पञ्च० १।३६३ 5. (फल आदि) तोड़ना 6 अवज्ञापूर्ण करना —शि० ३।७५ 7 घटाना, व्यवकलन करना 8 छाटना, चुनना, उद्धृत करना--इदं पद्यं रामायणादुद्धृतम् —(प्रेर०) बाहर निकलवाना रघु० ९।७४, उद्दा ,1 वर्णन करना, बयान करना, प्रकथन करना कहना बोलना, उच्चारण करना -उदाहार हुपदा-रमना गिर —कि० १।२७, मृच्छ० ९।४, चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2 पुकारना, नाम लेना स्वां कामिनो मदनहेतिकामुदाहरन्ति —विक्रम० ४।११, मुतान्विनो दशरथ इत्युदाहृत - भट्टि० १।१ 3. सविस्तर बनाना, सोदाहरण विवेचन करना, उदाहरण या विस्तार उद्धृत करना, स्पष्ट-मादिहरस्व कथमन्यथा जनैः शि० १५।२९, उप , 1 के आना, निकट लाना शा० १ 2 प्रस्तुत करना, प्रदान करना, उपहार देना—नीवारभागधेयमस्माक-मुपहरन्तु—शा० २. मातृभ्यो बलिमुपहरा—मृच्छ० १. महावीर० ६।२२, रघु० १४।१० १६।८०, १९।१२, शा० ३ 3 (बलि के रूप में) प्रस्तुत करना, उपा—, लाना, ले आना, वि—, 1 बाहर निकालना, खींचना, उद्धृत करना—रघु० १४।४२ 2. अंश को बाहर निकालना मनु० ५।९१, याज्ञ० ३।१५ 3 (दोष की भांति) दूर करना, परि —, 1. बचना, दूर रहना — स्त्रीसन्निकर्षं परिहर्तुमिच्छन्मात्सर्यमूलपतिः स भूत कु० ३।७४, मनु० ८।४००, भट्टि० ३।४३ 2 रखाना, परित्यक्त करना, छोड़ना, तिला-जलि देना—कलि न कश्चिन्मिदमनुपदमधिरं मा परि-हर हरिमतिशयरुचिरम्—गीत० ९ 3 हटाना, नष्ट करना, उत्तर देना, प्रत्याख्यान करना (आक्षेप व आरोप आदि का) ब्रह्मास्य जगतो निमित्त कारणं प्रकृतिश्चोपादानत्वस्य पक्षस्याक्षेप स्मृतिनिमित्त परिहृत. । तर्कनिमित्त इदानीमाक्षेप परिहियते—शा० भा०, मेघ० १४, प्र , 1 प्रहार करना, आघात करना, पीटना लतया प्रहरति 'लात मारता है' रघु० ५। ६८, कु० ३।७०, भट्टि० ७।७ 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, घायल करना (अधि० के साथ) —आर्तत्राणाय व सस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि शा० १। ११, रघु० २।६२, ७।५९, ११।८४, १५।३ 3 आक्र-मण करना, हमला करना 4 फेंकना, डालना, प्रक्षेप करना (अधि० या सप्त० के साथ) 5 छापा मारना, वि—, 1 ले जाना, पकड़ कर दूर करना, 2. हटाना, नष्ट करना, 3 गिरने देना, (आंसू आदि) ढालना 4 (समय) बिताना 5 मनोरंजन करना, आमोद-प्रमोद में व्यस्त होना, खेलना विहरति हरिरिह सरसवसन्ते गीत० १, व्यव , 1 व्यवहार करना, व्यवसाय करना 2 करना, आचरण करना, व्यापार करना 3 कानून को अपने हाथ में लेना, कचहरी में नालिश करना अर्थापनिर्व्यवहर्तुमयंगोरक्षादभियोक्ष्यते—दश०, व्या , बोलना, कहना, बतलाना, वर्णन करना, प्रकथन करना कु० २।६२, ६।२, रघु० ११।८३, सम् , 1. लाना, मिला कर खींचना 2 (क) सिकोड़ना, संक्षिप्त करना, खींचना रघु० १०।३२, (ख) गिरा देना संहियतामियम् शा० 3 साथ साथ लाना, एकत्र करना, संचय करना 4 नष्ट करना, संहार करना (विप० 'सृज्') अमु युगान्तो-चितकालनिद्रा. संहृत्य लोकान् पुरुषोऽभिशेते रघु० १३।६ 5 वापिस लेना, रोकना, पीछे खींचना —अनिषुले मयि संहृतमोक्षितम् शा० २।११, ६।४, न हि संहरते ज्योत्स्ना चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः —हि० १।६१, रघु० ४।१६, १२।१०३, भग० २। २८ 6. दमन करना, निग्रहण करना, दबाना क्रोध प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति कु० ३।७२ 7. अन्त करना, समाप्त करना - संहा—, 1. लाना, पहुँचाना, होना सर्वं एव समाहारो दवा वैल: संहोषधि: भट्टि० १५।१०७ 2. संग्रह करना, साथ मिलाना, जोड़ना तत्र स्वयंवर समाहृतराजलो-कम्—रघु० ५।६२, भट्टि० ८।६३ 3 खींचना, आकृष्ट करना 4. नष्ट करना, संहार करना भग० ११।

३२ 5 पूरा करना (यज्ञ आदि) 6 वापिस लाना, अपने उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना—मनु० ८।३१९ 7. दमन करना, नियन्त्रित करना।

हृ (हिं) चौथे (ना० भा० आ०) 1 क्रुद्ध होना, 2 लज्जित होना (करण० या सब० के साथ) —स्वभाव तस्मिन्नपि दण्डधारिणि कथं न पत्या हरकोपहृण्यते नै० २।१३३, दिवोऽपि वज्रायुधभूषणा या हृणीयते शोरवतो न भूमि भट्टि० २।३८।

हृणी (स्त्री) या [हृणी+यक्+अ, टाप्] 1 निन्दा, भर्त्सना 2 लज्जा 3 करुणा।

हृत (वि०) [हृ+क्विप्, तुक्] (केवल समास के अन्त में) ले जाने वाला, अपहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ+क्त] 1 ले जाया गया 2 अपहरण किया गया 3 मग्न किया गया 4 स्वीकृत 5 विभक्त, दे० 'हृ'। मम० **अधिकार** (वि०) 1 जिसका अधिकार छीन लिया गया है, बाहर निकाला हुआ 2 अपने उचित अधिकारों से वंचित किया गया, **उत्तरीय** (वि०) जिसका उत्तरीय वस्त्र (चादर दुपट्टा आदि) छीन लिया गया हो **द्रव्य**, —**धन** (वि०) धन दौलत से वंचित,-**सर्वस्व** (वि०) जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो।

हृतिः (स्त्री०) [हृ+क्तिन्] 1 छीन लेना 2. लूटना, खसोटना 3 विनाश।

हृद (नपु०) [हृद्, षष्ठ० तस्य द, हृदयस्य हृदादेशो वा] (इस शब्द के सर्वनामस्थान के कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् हृदय के स्थान में यह रूप आदेश हो जाता है) 1 मन, दिल 2 छाती, दिल, सीना —इमा हृदि व्यायतपानमक्षिणोत् कु० ५।५४। सम० **आवर्तः** घोड़े की छाती के बाल, —**कम्पः** दिल की कंपन, धड़कन,—**गत** (वि०) 1 मन में आसीन, सोचा हुआ, अभिकल्पित 2. पाला-पोसा गया,—(तम्) अभिकल्पना, अर्थ, आशय, —**शेलः** हृदयतल -पिण्डः, हृद्, दिल, रोगः 1 दिल का रोग, दिल की जलन 2 शोक, गम, वेदना 3 प्रेम 4. कुबेरराशि, **व्यथः** (हृद्व्यथः) 1 हिचकी 2 अशान्ति, शोक,—**शेषः** (हृच्छेषः) 1 ज्ञान, तर्कना 2 दिल की पीड़ा, **लेखा** (हृल्लेखा) शोक, चिन्ता, -**वटकः** पेट, -**शोकः** हृदय को अलम, वेदना।

हृदयम् [हृ+कयन्, हृक् आगम] 1 दिल, आत्मा, मन —हृदये दिग्धशरेरिवाहत कु० ४।२५, इसी प्रकार 'अयोहृदय.—रघु० ९।९, पाषाणहृदय आदि 2 वक्षःस्थल, सीना, छाती -बाष्पभिन्नहृदया निपेतुषी—रघु० ११।९ 3. प्रेम, अनुराग 4. किसी चीज का रस या आन्तरिक भाग 5 रहस्य विज्ञान, अस्त्र°, अस्त्र°। सम०—**आत्मन्** (पु०) सारस,- **आविध्** (वि०) हृदयविदारक, दिल को बींधने वाला भट्टि० ६।७३, —**ईश** ईश्वर पति, (आ, ई) 1. पत्नी 2 गृहिणी, **कम्प** दिल का कांपना, धड़कन, **ग्राहिन्** (वि०) मनमोहक, चोरः जो दिल को या प्रेम को चुराता है **छिद्** (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को बींधने वाला,- **विध्**—**वेधिन्** (वि०) हृदय को बींधने वाला,—**वृत्ति** (स्त्री०) मन का स्वभाव,-**स्थ** (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान, -**स्थानम्** छाती, वक्षःस्थल।

हृदयङ्गम (वि०) [हृदय+गम्+खच्, मुम्] 1 हृदय का दहलाने वाला, मर्मस्पर्शी, रोमांचकारी 2 प्रिय, सुन्दर, -मा० १ 3 मधुर, आकर्षक, सुखद, रुचिकर अहो हृदयङ्गमः परिहासः —मा० ३, वल्लकी च हृदयङ्गमस्वना रघु० ११।१३, कु० २।१६ 4 योग्य, समुचित 5 प्यारा, वल्लभ, आत्म का तारा माना हुआ कथं नु ते हृदयङ्गमः सखा कु० ४।२४।

हृदयालु, हृदयिक, हृदयिन् (वि०) [हृदय+आलुच्, ठन्, इनि वा] कोमलहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही।

हृदि (दी) क (पु०) एक यादव राजकुमार।

हृदिस्पृश् (वि०) [हृदि+स्पृश्+क्विन्, अलुक् स०] 1 हृदय को छूने वाला 2 प्रिय, प्यारा 3 रुचिकर, मनोहर, सुन्दर।

हृद्य (वि०) [हृदि स्पृश्यते मनोहरत्वात् हृद्+यत्] 1 हार्दिक दिली, भीतरी 2 जो हृदय को प्रिय लगे, स्निग्ध, प्रिय, अभीष्ट, वल्लभ भामि० १।६१, 3 रुचिकर, सुखकर, मनोहर मा० ४, रघु० ११। ६८। सम० **गन्धः** बेल का पेड़ **गन्धा** फूलों से खूब लदा हुआ मालिया।

हृष् (स्वा० दिवा० पर० हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हर्षित) 1 मग्न होना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बाग बाग होना, हर्षोन्मत्त होना—अद्वितीय इवात्मानं मन्यते किल हृष्यसि—भामि० २।१०५, भट्टि० १५।१०४, मनु० २।५४ 2 रोमाञ्चित होना, रोंगटे खड़े होना—हृषितास्तनूरुहा —दश०, हृष्यन्ति रोमकूपानि महा० 3 खड़ा होना (कोई अन्य वस्तु—उदा० लिङ्ग का) प्रेर० (हर्षयति-ते) प्रसन्न करना, खुश करना, प्रसन्नता से भर जाना, प्र , 1 प्रसन्न होना, हर्षोन्मत्त होना न प्रहृष्यते प्रिय प्राप्य - भग० ५। २०, ११।३६ 2 रोंगटे खड़े होना, (शरीर के बाल) खड़े होना, वि , हर्षोन्मत्त करना, प्रसन्न होना, खुश होना।

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] 1 प्रसन्न, खुश,

आनन्वित, उल्लसित, आह्लादित, हर्षोन्मत्त 2 पुलकित, रोमांचित 3. आश्चर्यान्वित 4 सूखा हुआ, विगत 5 निराश 6 लज्जा ।

हृषीकेश [हृष्+ईकन्] ज्ञानेन्द्रिय । सम० ईशः विष्णु या कृष्ण का विशेषण --भग० १।१५ तथा आगे पीछे (हृषीकाणीन्द्रियाण्याहुस्तेषामीशो मनो मतम् । हृषीकेशस्ततो विष्णो ख्यातो देवेषु केशव—महा०)

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त (=हृषित) । सम० चित्त आत्मन् (वि०) मन से प्रसन्न, हृदय में सुखी, आनन्दित, रोमन् (वि०) (हर्ष के कारण) रोमांचित, पुलकित, वदन (वि०) प्रसन्नमुख,—संकल्प (वि०) संतुष्ट, सुखी, हृदय (वि०) प्रसन्नमना, प्रफुल्ल, उल्लसित ।

हृष्टि. (स्त्री०) [हृष्+क्तिन्] 1 आनन्द, उल्लास, हर्ष, सुखी 2. चमड़ा ।

हे (अव्य०) [हा+डे] 1 संबोधनपरक अव्यय (ओ, अरे)—हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति भग० ११।४१ हे राजानस्यजत सुकविप्रेमबन्धे विरोधम् - विक्रम० १८।१०७ 2. ईर्ष्या, द्वेष, डाह प्रकट करने वाला अव्यय ।

हेक्का [=हिक्का, पृषो०] हिचकी ।

हेठः [हेठ्+घञ्] 1. प्रकोपन 2 बाधा, अवरोध, विरोध रुकावट 3 क्षति, चोट ।

हेठ् i (स्वा० आ० हेठते) अवज्ञा करना, अपमान करना, तिरस्कार करना ।

ii (स्वा० पर० हेठति) 1. घेरना 2 वस्त्र पहनना ।

हेडः [हेड्+घञ्] अवज्ञा, तिरस्कार । सम० ज्ञ. क्रोध, अप्रसन्नता ।

हेडावुकः (पु०) घोड़ों का व्यापारी ।

हेतिः (पु०, स्त्री०) [हन् करणे क्तिन्,तिट्] 1 वज्र, अस्त्र —समर विजयी हेतिदलितः—मनु०२।४४, रघु० १०।१२ कि० ३।५६, १४।३० 2 आघात, क्षति 3. सूर्य की किरण 4. प्रकाश, आभा 5 ज्वाला ।

हेतु [हि+तुन्] 1 निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन इति हेतुस्तदुद्भवे काव्य० १, मा० १।२३, रघु० १।१०, मेघ० २५, श० ३।११ 2. ज्ञात, मूल—स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः --रघु० १।१४, अपने प्राणियों को पैदा करने वाले 3 साधन, उपकरण 4 तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पांच अंगों से युक्त अनुमानप्रक्रिया में द्वितीय अंग) 5 तर्क, तर्कशास्त्र 6. कोई भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति 7. साहित्यिक कारण (कुछ विद्वान् इसी को एक अलंकार भी मानते हैं) हेतोर्हेतुमता साकं भेदो हेतुरुच्यते (हेतुना, हेतोः कभी कभी हेतौ भी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—'के कारण' 'के निमित्त' क्योंकि, (सदा० के साथ या समास में प्रयोग जातस्यविज्ञान-हेतुना, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् रघु० २।४७, विस्मृत कस्य हेतो—मुद्रा० १।१ आदि) । सम० —अपदेशः हेतु का उल्लेख (पंचांगी अनुमान के रूप में), आभासः वह हेतु जो किसी कार्य का कारण तो न हो, परन्तु हेतु सा आभासित हो, कुतर्क, (यह पांच प्रकार का होता है सव्यभिचार या अनैकांतिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित), उपदेशः, उपन्यासः कारण देना, तर्क उपस्थित करना, कालः तर्कवितर्क, शास्त्रार्थ, —शास्त्रम् तर्कशास्त्र, तर्कयुक्त रचना, स्मृति या श्रुति की प्रामाणिकता पर प्रश्नांतर रूप में श्रुति मनु० २।११, —हेतुमत् (पु०, द्वि० व०) कारण और कार्य, °भावः कार्य और कारण में विद्यमान संबंध ।

हेतुक (वि०) [हेतु+कन्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) कः 1. कारण, तर्क 2 उपकरण 3. तार्किक ।

हेतुता,-त्वम् [हेतु+तल्+टाप्, त्व वा] कारणता, कारण की विद्यमानता ।

हेतुमत् (वि०) [हेतु+मतुप्] 1. सकारण 2. कारणयुक्त, तर्कयुक्त, पु० कार्य ।

हेमन् [हि+मन्] सोना, कः 1 काले या भूरे रंग का घोड़ा 2 सोने का विशेष तौल 3 दूध वाह ।

हेमन् (नपु०) [हि+मनिन्] 1. सोना 2. जल 3. वर्ष 4. धतूरा 5 केसर का फूल । सम०—अङ्ग (वि०) सुनहरी (अ) 1 पक्षी 2 सिंह 3 सुमेरु पर्वत 3. ब्रह्मा का नाम 5 विष्णु का नाम 6. चम्पक वृक्ष अङ्गदम् सोने का बाजूबन्द, अद्रिः सुमेरु पर्वत, अम्भोजम् सुनहरी कमल, —हेमाम्भोजप्रसविनि शलिल आनमस्यादतान —मेघ० ६२, -अम्भोरुहम् सुनहरी कमल—कु० २।४४,—आह्वः 1 जंगली चम्पक का पौधा 2 धतूरे का पौधा,—कंचलः प्रवाल, मूंगा,-करः, कर्तृ,-कारः कारकः सुनार मनु० १२।६१, याज्ञ० ३।१४७,-किञ्जल्कम् नागकेसर का फूल,-कुम्भः सुनहरी घड़ा, कूटः एक पहाड़ का नाम रा० उ०, केतकी केवड़े का पौधा जिसके पीले फूल आते हों, स्वर्ण-केतकी,—गर्भिणी रेणुका नामक गन्धद्रव्य, गिरिः सुमेरु पर्वत, गौरः अशोकवृक्ष,—जल (वि०) सोने से मढ़ा हुआ, (जम्) सोने का इलायची, —ज्वालः अग्नि,— तारम् तूतिया,—दुग्धः, दुग्धकः धूलर, पर्वतः सुमेरु पर्वत,-पुष्पः,-पुष्पकः 1. अशोकवृक्ष 2 लोध्रवृक्ष 3. चम्पक वृक्ष, (नपु०) 1. अशोक का फूल 2 पीली भुकाम का फूल,—प्रभ (भ) जम्बू, मोती, भानिन् (पु०) सूर्य,—यूथिका सोनजुही, स्वर्णयूथिका,—रागिणी (स्त्री०) हल्दी,—लंकः विष्णु

का नाम, --भृङ्गम् 1 एक सुनहरी सींग 2 सुनहरी चोटी, सारङ्गम् तूतिया,—सूत्रम् –सूत्रकम् एक प्रकार का हार।

हेमन्त,–न्तम् [हि+मन्, मुट् आगम] छ ऋतुओं में से एक जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौषमास में आता है) नवप्रवालोद्गमसस्वरस्य प्रफुल्ललोध्र परिपक्वशालि । विलीनपद्म प्रपतत्तुषारो हेमन्तकाल समुपागत प्रिये—ऋतु० ४।१।

हेमक: [हेम+ल+क] 1 सुनार 2 कसौटी 3 सिन्दूर।

हेय (वि०) [हा+यत्] त्याग करने योग्य।

हेरम्ब: [हे शिवे रम्बति रम्ब्+अच्, अलुक् स०] 1 गणेश 2 भैंसा 3 वीरोद्धत नायक। सम०–जननी पार्वती (गणेश की माता जी)।

हेरिक: [हि+रक्, कुट् आगम] भेदिया, गुप्तचर।

हेलनं–ना [हिल्+ल्युट्] अवज्ञा करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, अपमान करना।

हेला [हेड् भावे अस्य ल:] 1. तिरस्कार, अनादर, अपमान शि० ११।७२ 2. केलि, क्रीडा, प्रेमालिंगन, दे० सा० द० १२८, दश० २।३२ 3 धूर्त की अलबली इच्छा –प्रौढेच्छयाऽतिरूढाना नारीणा सुरतोत्सवे। भृङ्गारसास्वतस्वप्नहेला सा परिकीर्तिता ॥ 4 आराम, सुविधा—शि० १।३४, हेलया आसानी से, बिना किसी कष्ट या असुविधा के 5 चन्द्रिका।

हेलाधुक्क: (पु०) घोड़ों का व्यापारी।

हेलि: [हिल्+इन्] सूर्य, स्त्री०, केलिक्रीडा, सुरतक्रीडा, प्रेमालिंगन।

हेवाक: (पु०) [यह शब्द कदाचित् फारसी या अरबी से लिया गया है 'लटभ' शब्द की भांति इसका प्रयोग भी कादम्बरी विल्हण आदि पश्चवर्ती साहित्यकारों द्वारा ही हुआ है] उत्कट इच्छा, तीव्र स्पृहा, उत्कण्ठा —अस्मिन्नामोलदनु निविडाश्लेषहेवाकलीलावेल्लद्बाहु-कवलितवलया नन्तन राजलक्ष्मी: —विक्रम० १८।१०१, तु० 'हेवाकिन्'।

हेवाकवत् (वि०) [सम्भवत इस शब्द का 'हेवाक' से कोई संबंध नहीं] अत्यन्त, तीव्र, उत्कट, प्रचुर हेवाकवस्तु भृङ्गारो हावोक्तिभूमिकारूढत्वात्—दश० २।३१।

हेवाकिन् (वि०) [हेवाक+इनि] अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठित (समास में प्रयोग)—यावन्ते महतामहो निरूपमप्रस्थान-हेवाकिना नि सामान्यमहस्त्वयोनिधिमुखा वार्ता विपत्ता-वपि कल्हण।

हेष् (म्वा० आ० हेषते, हेषित) घोड़े के भांति हिनहिनाना, रेंकना, दहाड़ना।

हेष:, हेषा, हेषितम् [हेष्+घञ्, हेष्+अ+टाप्, हेष् +क्त] हिनहिनाहट, रेंक, रघाङ्गसंक्षोभितसप्तसिन्धु-हेष कि० १६।८।

हेषिन् (पु०) [हेष्+णिनि] घोड़ा।

हेहे (अव्य) [हे च हे च द्व० स०] सम्बोधन परक अव्यय जिसका उपयोग जोर से आवाज देने या बुलाने में किया जाता है।

हैं (अव्य०) [हा+कै] सम्बोधनात्मक अव्यय।

हैतुक (वि०) (स्त्री० की) [हेतु+ठक्] 1 कारण परक, कारण मूलक 2 तर्क संबंधी, विवेक परक,–क: 1. तर्कयुक्त हेतुवादी, तार्किक 2 मीमांसक 3 तर्क-वादी, अनीश्वरवादी, नास्तिक।

हैम (वि०) (स्त्री० - मी) [हिम (हेमन्) +अण्] 1 शीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा 2 हिम से उत्पन्न—मृणालिनी हैममिवोपरागम् रघु० १६। ७ 2 सुनहरी, सोने का बना हुआ—पादेन हैमं विलि-लेख पीठम् रघु० ६।१५, भट्टि० ५।८९, कु० ६।६, -अम् पाला, ओस, ब: शिव का विशेषण। सम० -मुद्रा,-मुद्रिका सुनहरी सिक्का।

हैमन (वि) (स्त्री० - नी) [हेमन्त एव हेमन्ते भवो वा, अण्, तलोप] 1 जाड़े में होने वाला, ठंडा शि० ६।५५, कि० १७।१२ 2 जाड़े से संबंध रखने वाला अर्थात् लम्बा (जैसे जाड़े की रातें) शि० ६।७७ 3 सर्दी में उगने वाला या जाड़े के उपयुक्त हैमने-निवसने सुषमामा रघु० १६।४१ 4 सुनहरी. सोने का बना हुआ,-न: । मार्गशीर्ष का महीना 2 जाड़े की ऋतु (=हेमन्त)।

हैमनिक (वि०) [हेमन्ते काले भव ठक्] 1 जाड़े का, ठंडा 2 सर्दी में उत्पन्न होने वाला, -कम् एक प्रकार का चावल।

हैमन्त दे० 'हैमन्त'।

हैमवत (वि०) (स्त्री०—ती) [हिमवतो अदूरभवो देव तस्येदं वा अण्] 1 बर्फीला 2. हिमालय पर्वत से निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ 3. हिमालय पर्वत पर उत्पन्न, पला-पोसा, स्थित विद्यमान या संबंध रखने वाला कु० ३।२३, २।६७, —वम् भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

हैमवती [हैमवत+ङीप्] 1 पार्वती का नाम 2. गंगा का नाम 3 एक प्रकार की हरड़, हरीतकी 4. एक प्रकार की ओषधि 5 दूध का पौधा, अपामार्ग 6. चूरे रंग की किसमिस।

हैमवतीयम् [ह्यो भवोद्यात् भवं छन्दसो+छ, वि०] 1. पिछले दिन के दूध से बनाया गया घी, ताजा घी हैमवतीयमादाय घोषवद्धानुपस्थितान्–रघु० १। ४५, भट्टि० ५।१२ 2 पिछले दिन का मक्खन, ताजा मक्खन।

हैरिक: [हिर+ठक्] चोर।

हैहय (पु० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, वः 1 यदु के प्रपौत्र का नाम 2 अर्जुन कार्तवीर्य (जिसके एक हजार भुजाएँ थीं, और जिसे परशुराम ने मार गिराया था)—बभूवतस्यहैहयाख्य हैहयस्य च कीर्तिमपहर्तुमुद्यत - रघु० ११।७४।

हो (अव्य०) [ह्वे+डो, नि] किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अव्यय, (हे, अरे)।

होड् 1 (म्वा० आ० होडते) उपेक्षा करना, अनादर करना।

ii (म्वा० पर० होडति) जाना।

होड [होड्+अच्] बेड़ा, नाव।

होतृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हु+तृच्] यजमान, हवन करने वाला,—बर्हिस विधिहुत या हविषा च हाविषो य० १।१, —(पु०) 1 ऋत्विज्, विशेषकर वह जो यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है 2 यज्ञकर्ता -रघु० १।६२, ८२, मनु० ११।३६।

होत्र [हु+ष्ट्रन्] 1 (घी आदि) कोई भी वस्तु जिसकी हवन में आहुति दी जाये 2 हवन में डाली हुई सामग्री 3 यज्ञ।

होत्रा [होत्र+टाप्] 1 यज्ञ 2 स्तुति।

होत्रीय: [होत्राय हितं हातृभ्यो वा छ] देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाला ऋत्विक्, - यम् यज्ञमण्डप।

होम [हु+मन्] यज्ञाग्नि में घी की आहुति देना, (ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले दैनिक पञ्चयज्ञों में से एक जिसे देवयज्ञ कहते हैं) 2 हवन, यज्ञ। सम० अग्नि- होम की आग,—कुण्डम् हवनकुंड, - तुरङ्ग: यज्ञ का घोड़ा रघु० ३।३८, धान्यम् तिल, धूम: होम की अग्नि का धुआं,- धेनु: (स्त्री०) हवन की गाय, - शेष हवन करने का समय श० ४, - शाला यज्ञशाला, यज्ञगृह।

होमक: दे० 'होतृ'।

होमि: [हु+इन्, मुट् च] 1 तपा हुआ मक्खन, घी 2 जल 3 अग्नि।

होमिन् (पु०) [होमोऽस्यास्त्य इनि] होम करने वाला, यजमान, यज्ञकर्ता।

होमीय, होम्य (वि०) [होम + छ, यत् वा] होम से संबद्ध, आहुति दिए जाने के योग्य, हवन संबन्धी, -म्यम् घी।

होरा [हु+रन्+टाप्] 1 राशि का उदय 2 राशि की सत्रिंश का अंश 3 एक घंटा 4. चिह्न, रेखा।

होलाका [हु+विच्, तं जाति -का+क+कन्+टाप्] वसन्त ऋतु के आने पर मनाया गया वसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के अन्तिम दिन, जिसे-गत तीन या चार दिन (इसी पर्व को हम 'होली' कहते हैं) 2 फाल्गुन मास की पूर्णिमा।

होलिका, होली (स्त्री०) होली का त्योहार, दे० 'होलाका'।

हो, होहो (अव्य०) [ह्वे+डो, नि०] संबोधनात्मक अव्यय, हो, अरे, भो।

होत्रम् [हातृभिदम्, अण्] होता नामक ऋत्विक् का पद।

होम्यम् [होम + ष्यञ्] घाया हुआ मक्खन, घी।

ह्नु (अदा० आ० ह्नुते, ह्नुत) 1 ले जाना, लूटना, छिपा देना, वञ्चित करना - अध्यगीष्टार्थं शास्त्राणि यशस्यान्नाप्ट विक्रमम्—भट्टि० १५।८८ 2 छिपाना, ढकना, रोकना,—आ० १ 3 किसी से छिपाव करना (सम्प्र० के साथ)—गोपो कृष्णाय ह्नुते—सिद्धा०। अप—, 1 छिपाना, दुराना मनु० ८।५६, रघु० २ 2 मुकरना, स्वामित्व को इन्कार करना, किसी से कोई चीज छिपाना - मृगयाव्यपह्नुतेऽस्त्राकम् भट्टि० ५।४४, अपह्नुवानस्य जनाय यज्ञियाय् (अश्वोत्तमम्) शि० १।४९, वि —, 1 छिपाना, गुप्त कर देना—भट्टि० १०।३६ 2. किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (सम्प्र० के साथ) भट्टि० ८।७४।

ह्यस् (अव्य०) [गते अहनि नि०] बीता हुआ कल। सम०—अब्द (वि०) जो कल हुआ था।

ह्यस्तन (वि०) (स्त्री० नी) [ह्यस्+ट्युल्, तुट्] बीते कल से संबद्ध रखने वाला यथा ह्यस्तनी वृत्ति। सम० दिवस् बीता कल, पिछला दिन।

ह्यस्त्य (वि०) [ह्यस्+त्यप्] कल से संबद्ध, (बीते हुए) कल का।

ह्रद [ह्लाद् + अच्, नि०] 1. गहरा सरोवर, जल का विस्तृत और गहरा तालाब—मेघ० ३।५३ 2. गहरा छिद्र या विवर—शि० ५।२९ 3. आकाश का क्षितिज। सम०—ग्रह: मगरमच्छ।

ह्रदिनी [ह्रद + इनि+ङीप्] 1. नदी 2 बिजली।

ह्रदोदर: [प्रादिसमास से व्युत्पन्न] कुम्भराशि।

ह्रस् (भ्वा० पर० ह्रसति, ह्रसित) 1. शब्द करना 2 छोटा होना।

ह्रसिमन् (पु०) [ह्रस्व+इमनिच्, ह्रसादेश] ह्रस्वकायत्व, छोटापन, लघुता।

ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+क्व, म० अ० ह्रसीयस्, उ० अ० ह्रसिष्ठ] 1. लघु, अल्प, थोड़ा 2. ठिगना, कद में छोटा 3 लघु (विप० दीर्घ छन्द:शास्त्र में), - स्व: बौना। सम०- अङ्ग (वि०) ठिगना, बिटु, (क:) बौना, गर्दभ: मुख नामक घास, वर्ष छोटा या संक्षेप कुलनामक घास,—वक्षुक (वि०) छोटी भुजाओं वाला, - मूर्धि (वि०) कद में छोटा, ठिगना, बौना।

ह्राद् (भ्वा० आ० ह्लादते) 1 शब्द करना 2 चहचहाना।
ह्रादः [ह्राद्+घञ्] जोर, आवाज—दुन्दुभीनां ह्रादः —कि० १६।८, इसी प्रकार 'जलहृदि' आदि।
ह्रादिन् (वि०) [ह्राद्+णिनि] शब्दायमान, चहचहाने वाला।
ह्रादिनी [ह्रादिन्+ङीप्] 1 इन्द्र का वज्र 2 बिजली 3 नदी 4 अल्लकी नामक वृक्ष।
ह्रासः [ह्रस्+घञ्] 1 शब्द, कोलाहल 2 घटी, कमी, क्षय, अवनति, पतन मनु० १।८५, याज्ञ० २।२४९ 3 छोटी संख्या।
ह्रिणीयते दे० 'ह्रणीयते' महावीर० १।५१।
ह्रिणीया [ह्रिणी+यक्+अ+टाप्] 1 भर्त्सना, निन्दा 2 शर्म, लज्जा 3 दया—तु० ह्रणीया।
ह्री (जुहो० पर० जिह्रेति, ह्रीण, ह्रीत) 1. लजाना, विनीत होना 2 लज्जित होना (स्वतन्त्र प्रयोग अथवा अपादान स० के साथ)—जिह्रेम्यार्यपुत्रेण सह गुरुसमीप गन्तुम् श० ७, अन्योऽन्यस्यापि जिह्रीमः किं पुनः सहवासिनाम्—कि० ११।५८, रघु० १५।४४, १७।७३, भट्टि० ३।५३, ५।१०२, ६।१३२—प्रेर० (ह्रेपयति-ते) शर्मिंदा करना, (आत्म० से भी) सकीलुम ह्रेपयतीव कृष्णम् रघु० ६।४९, ह्रेपिता हि बहवो नरेश्वरा-११।४०, किं वा आत्मा स्वामिनो ह्रेपयति—शि० १८।२३ कि० ११।५४, १३।४१, वेणी० १।१७।
ह्री (स्त्री०) [ह्री+क्विप्] 1 लज्जा—स्तेरपि ह्रीपदमादधाना—कु० ३।५७, दारिद्र्याद्धि म्रियमेति ह्रीपरिगत प्रभ्रश्यते तेजस मृच्छ० १।१४, रघु० ४।८० 2 शर्मीलापन, विनय ह्रीसङ्कथो कथयत्युदाच कु० ७।८५। सम० जित, -मूढ (वि०) लज्जा से अभिभूत या व्याकुल ह्रीमूढाना भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टि वेणी० ६८, अन्यथा लज्जा का दमन—रघु० ७।६३।
ह्रीका [ह्री+कक्+टाप्] 1. शर्मीलापन, लज्जाशीलता, सकोच 2. भीरुता, डर।
ह्रीकु (वि०) [ह्री+उन्, कुक् च] 1 शर्मीला, विनीत, सकोचशील 2 भीरु, डरपोक 3 रंगा 2 लाल।
ह्रीच, ह्रीत (भू० क० कृ०) [ह्री+क्त, पक्षे नस्य न] 1. लज्जित—वेणी० २।११ 2 शर्मीला, विनीत—नै० ३।५३।
ह्रीदेवम्,-कम् [ह्रियं लज्जायै देवम् अंशम् अस्य अनुग्रहात्, पृषो० आ रत्व स] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।
ह्रेष् (भ्वा० आ० ह्रेषते) 1. घोड़े की भांति) हिनहिनाना, रेंकना 2 जाना, सरकना।
ह्रेषा [ह्रेष्+अ+टाप्] हिनहिनाहट।
ह्लक् (भ्वा० पर० ह्लकति) कांपना।
ह्लक्तिः (स्त्री०) [ह्लाद्+क्तिन्, ह्लस्वता] हर्ष, प्रसन्नता।
ह्लक्ष् (भ्वा० पर० ह्लक्षति) शब्द करना।
ह्लाद् (भ्वा० आ० ह्लादते, ह्लन्न, ह्लादित) 1. प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना 2 शब्द करना, आ , प्र , हर्षित होना, प्रसन्न होना, खुश होना।
ह्लादः, ह्लादकः [ह्लाद्+घञ्, ण्वुल् वा] प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास।
ह्लादनम् [ह्लाद्+ल्युट्] हर्षित होने की क्रिया, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता।
ह्लादिन् (वि०) [ह्लाद्+णिनि] प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला।
ह्लादिनी दे० 'ह्लादिनी'।
ह्लल् (भ्वा० पर० ह्ललति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2 बरबराना, कांपना—प्रेर० (ह्लालयति-ते, ह्लालयति-ते, परन्तु पहला रूप उपसर्गयुक्त) हिलाना, कपकपी पैदा करना (विशेषत 'वि' पूर्वक)।
ह्लालम् [ह्लल्+घञ्] 1 आमन्त्रण 2 क्रन्दन, शब्द करना।
ह्वर् (भ्वा० पर० ह्वरति) 1 कुटिल होना 2 आचरण में टेढ़ा होना, उलटा, धोखा होना 3. कष्टग्रस्त, अतिदग्ध।
ह्वे (भ्वा० उभ० ह्वयति-ते, हूत, कर्मवा० ह्वयते, प्रेर० ह्वापयति-ते, इच्छा० जुहूषति-ते) 1 बुलाना—तां पार्थस्तेन्याभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव —कु० १।२६ 2 नाम लेकर पुकारना, आवाहन करना, आवाज देना 3 नाम लेना, बुलाना 4 ललकारना 5. प्रतियोगिता करना, होड़ाहोड़ी करना 6. प्रार्थना करना, याचना करना, आ , 1 बुलाना, निमन्त्रित करना—इत्थं एवाह्वयेनम् उत्तर० ६ 2 ललकारना (आ०)—मत्तभीराहूत वैदिराज्यरारिम् शि० २०।१, कृष्णश्चाभ्यह्वयते सिद्धा०, भट्टि० ८।१८, १५।८९, उप , बुलाना, भट्टि० ८।१७, सम् , इकट्ठा , मिलकर बुलाना।

अक्रूरः [न क्रूर-न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और चाचा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को मथुरा में आकर कंस को मारने की प्रेरणा दी थी। उसने इन दोनों को अपने आने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अधर्मी कंस ने इसके पिता आनकदुंदुभि, राजकुमारी देवकी तथा स्वयं अपने पिता उग्रसेन का अपमानित किया। कृष्ण ने अपने आने की स्वीकृति दे दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राक्षस को तीन रात के अन्दर मार डालूंगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति में सफल हुआ) दे० 'मत्राजित्' भी।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति, अस् + क्विप् शक०, या अग विन्ध्याचल स्तंभायति स्तम्भनि, स्तंभे + क, या अग कुम्भ तत्र स्तम्भनं महतः इत्यगस्त्य] एक प्रसिद्ध ऋषि या मुनि का नाम। ऋग्वेद में अगस्त्य और वशिष्ठ मुनि मित्र और वरुण की सन्तान माने जाते हैं। कहते हैं कि लावण्यमयी अप्सरा उर्वशी को देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया। उसका कुछ भाग एक घड़े में गिर गया तथा कुछ भाग जल में। घड़े से अगस्त्य का जन्म हुआ इसीलिए इसे कुम्भयोनि, कुम्भजन्मा, घटोद्भव, कलशयोनि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विन्ध्याचल पर्वत को जो बराबर उठता जा रहा था तथा सूर्यमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था, और जिसने इसके रास्ते को रोक दिया था, नीचे हो जाने के लिए कहा। दे० विन्ध्य० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार आर्य जाति की दक्षिण देश में विजय और भारत की सभ्यता के प्रति प्रगति का पूर्वाभास देती है) इसके नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र को पी जाने के कारण पीतताब्धि और समुद्रचुलुक आदि भी थे, क्योंकि समुद्र ने अगस्त्य को रुष्ट कर दिया था, और क्योंकि अगस्त्य युद्ध में इन्द्र और देवों की सहायता करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कालेय नामक राक्षसवंश से होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीनों लोकों को कष्ट देते थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विन्ध्य के दक्षिण में कुंजर पर्वत पर एक तपोवन में रहता था। उसने दक्षिण में रहने वाले सभी राक्षसों को नियन्त्रण में रक्खा। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार इसने वातापि नामक राक्षस को जो मेंढे का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को जो अपने भाई का बदला लेने आया था, अपनी एक दृष्टि से भस्म कर दिया। अपने वनवास के समय घूमते हुए भगवान् राम, सीता और लक्ष्मण सहित उसके आश्रम में गये। वहाँ अगस्त्य ने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और राम का मित्र, सलाहकार और अभिरक्षक बन गया। उसने राम को विष्णु का धनुष तथा कुछ और वस्तुएँ दीं (दे० रघु० १५।५५) ज्योतिष में इसे तारा भी माना जाता है नु० रघु० ४।२१ भी।

अग्निः [अङ्क्ते ऊर्ध्वं गच्छति अङ्क् + नि, न लोपश्च] अग्नि का देवता। ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्वाहा है। उससे इसके तीन सन्तान हुईं—पावक, पवमान और शुचि। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वस्त्र काले हैं, घड़ा ही इसकी टोपी है, तथा जिह्वाएँ इसका भाला है। इसके रथ में लाल घोड़े जुते हैं। यह भेंड़े के साथ या काली भेंड़ पर सवारी करता हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का वीर्य और विक्रम समाप्त हो गया और वह मन्द हो गया, क्योंकि उसने राजा श्वेतकी द्वारा यज्ञों में दी गई आहुतियाँ खा ली। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से खाण्डवन को निगलकर अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इस सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को गाण्डीव धनुष दिया गया।

अघः [अघ् कर्तरि अच्] एक राक्षस का नाम। यह बक और पूतना का भाई था तथा कंस का सेनापति। एक बार कंस ने इसे कृष्ण और बलराम को मारने के लिए गोकुल भेजा। उसने वहाँ एक विशालकाय अजगर का रूप धारण कर लिया जो चार योजन लम्बा था। इस रूप में वह ग्वालों के मार्ग में लेट गया तथा अपना मुख पूरा खोल लिया। ग्वालों ने इसे एक पहाड़ी गुफा समझा, वे इसमें घुस गये, सब गौएँ भी इसी में चली गईं। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलतः उसने अन्दर घुसकर अपना शरीर इतना फुलाया कि वह अजगररूपी राक्षस टुकड़े-टुकड़े हो गया तब कहीं इस प्रकार कृष्ण ने अपने साथियों की रक्षा की।

अंगद [अङ्गं दायति शोधयति भूषयति, अङ्ग् दाति वा, दो वा दो + क] वाली नाम की पत्नी से उत्पन्न वालि का एक पुत्र। जब राम ने समस्त सेना के साथ लंका को कूच किया तो अंगद को रावण के पास शान्ति के दूत के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहते रावण अपनी जान बचा सके। परन्तु रावण ने घृणापूर्वक उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, फलतः काल का ग्रास बना। सुग्रीव के पश्चात् किष्किन्धा का राज्य अंगद को मिला। रामायण बोलचाल में

वह व्यक्ति जो दो पक्षों के बीच असफल मध्यस्थता करता है, अगद नाम से पुकारा जाता है।

अंजना (स्त्री०) मारुति या हनुमान् की माता का नाम। वह कुंजर नामक वानर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठी थी, कि उसका वस्त्र अरा शरीर से हट गया। वायुदेवता उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया, उसने दिव्य शरीर धारण कर अंजना से अपनी इच्छापूर्ति की याचना की। अंजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतीत्व नष्ट न करें। वायु ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में मेरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है। यह कहकर वायु अन्तर्धान हो गया। यह पुत्र ही मारुति या हनुमान् था।

अत्रि: [अद्+त्रिन् = अत्रि] एक महर्षि का नाम। यह ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है। इसकी पत्नी का नाम अनसूया था। उससे तीन पुत्र हुए दत्त, दुर्वासा और सोम। रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अत्रि तथा अनसूया के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने उनका खूब आदर सत्कार किया (दे० अनसूया)। ऋषि के रूप में वह सप्त-ऋषियों में से एक है, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्त-र्षियों में एक तारा है। कहते हैं कि चन्द्रमा इस की आँख से पैदा हुआ तु० रघु० २।७५।

अदिति [न दीयते खण्ड्यते अद्यते बध्यते बृहत्त्वात्–दो+क्तिन्] दक्ष की एक कन्या का नाम जो कश्यप को ब्याही गई जिस समय विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी। वह इन्द्र की भी माता थी। इसके कारण वह उन सब देवताओं की भी माता कहलाती है जो आदितिनन्दन कहलाते हैं।

अनिरुद्ध [न निरुद्ध इति ब० स०] प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। अनिरुद्ध काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था। बाणासुर की पुत्री उषा उसमें प्रेम करने लगी थी। उसने जादू की शक्ति से अनिरुद्ध को अपने पिता की नगरी शोणितपुर के अपने भवन में मंगवा लिया। (दे० उषा का चित्रलेखा)। बाण ने कुछ रक्षक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अनिरुद्ध ने उन्हें लोहे की गदा से मौत के घाट उतार दिया। अन्त वह जादू की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया। जब कृष्ण, बलराम और काम को उनका पता लगा तो वे उसे लेने गये। वहाँ भारी युद्ध हुआ। बाण को यद्यपि शिव और स्कन्द सहायता करते थे, तो भी वह पराजित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने से उसके प्राण बच गये। अनिरुद्ध को उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया।

अंधक: [अन्ध+कन्] एक राक्षस का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था। इसकी शिव ने हत्या कर दी थी। इसके वर्णन मिलता है कि एक हजार भुजाएँ और सिर थे, २००० आँखें और पैर थे। वह अंधों की भाँति चलता था इस लिए लोग उसे अंधक कहते थे, चाहे वह पूर्णतः ठीक ठीक देख सकता था। जब उसने स्वर्ग से पारिजात वृक्ष उठा कर ले जाने का प्रयत्न किया तो शिव ने उसको हत्या कर दी।

अभिमन्यु (पु०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम। इसकी माता सुभद्रा थी जो श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहन थी। जब द्रोण को सलाह के अनुसार कौरवों ने 'चक्रव्यूह' नाम की विशिष्ट सैन्य-व्यूह रचना की और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन दूर है, उसके अतिरिक्त और कोई पाण्डव इस व्यूह का भेद नहीं सकेगा, तो अभिमन्यु आगे आया और उसने विश्वास दिलाया कि यदि आप लोग मेरी सहायता करें तो मैं अवश्य ही इस व्यूह को भेद सकूँगा। तदनुसार वह व्यूह में प्रविष्ट हुआ कौरवों के अनेक योद्धाओं को उसने मौत के घाट उतारा। एक बार तो उसने ऐसा घोर पराक्रम दिखाया कि द्रोण, कर्ण दुर्योधन आदि बड़े बड़े महारथी भी उसका मुकाबला न कर सके, परन्तु वह बहुत देर तक इस भीषण युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में पराजित हुआ और मारा गया। वह बहुत सुन्दर था। उसकी दो पत्नियाँ थीं बलराम की पुत्री वत्सला तथा राजा विराट की पुत्री उत्तरा। जिस समय वह मारा गया उस समय उत्तरा गर्भवती थी। उसके परीक्षित का जन्म हुआ। परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठा।

अरुण: [ऋ+उनन्] विनता के कश्यप से उत्पन्न एक पुत्र गरुड़ का। गरुड़ का उपरोक्त भाग ही अरुण कहलाया जाता है। विनता ने समय से पूर्व ही अंडे को तोड़ डाला था, उसकी जंघाएँ नहीं बनी थीं इस लिए उसका नाम 'अनूरु' (ऊरुरहित) या 'विपाद' (पैरों से हीन) पड़ गया। यह अरुण सूर्य का सारथि है। उसकी पत्नी श्येनी से विनय सम्पाति' और 'जटायु' नामक दो पुत्र पैदा हुए।

अरुन्धतीवल्लभ दे० 'ब्रह्मा' भी।

अलिवंशोद्भव दे० मरु।

अष्टावक्र [अष्टकुत्व अष्टसु स्थानेषु वा वक्र] कहोड़ के एक पुत्र का नाम। कहोड़ ऋषि इतने अधिक अध्ययन शील थे कि उन्होंने अपनी पत्नी की उपेक्षा की। इस अवहेलना से क्षुब्ध होकर उसके अजात पुत्र ने जो

अभी गर्भ में ही था, अपने पिता की भर्त्सना की। इस बात से क्रुद्ध होकर पिता ने शाप दिया कि तुम आठ अंगों से टेढ़े मेढ़े पैदा होगे। एक बार कहोड़ ने एक बौद्ध से शर्त लगाई और फिर उसमें हार जाने पर कहोड़ को नदी में डुबा दिया गया। युवा अष्टावक्र ने उस बौद्ध को परास्त किया और अपने पिता को मुक्त कराया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने समंगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह बिल्कुल सरल अंगों वाला हो गया।

न्याय

1 **विवक्तृनिन्याय** विष में पले कीड़ों का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो दूसरों के लिए घातक होते हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें जन्मे और पले हैं, क्योंकि वह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि विषकृमि जो विष में ही जन्मा है। विष चाहे दूसरों के लिए घातक हो परन्तु उनके लिए घातक नहीं होता जो उसी विषैली स्थिति में पले हैं।

2 **विषवृक्षन्याय** विषवृक्ष का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो यद्यपि उत्पातमय या आघातपूर्ण है तो भी उस व्यक्ति के द्वारा जिसने उसे बनाया है, नष्ट किये जाने के योग्य नहीं। जैसे कि एक वृक्ष चाहे वह विष का ही क्यों न हो, वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।

3 **स्थालीपुलाकन्याय** पकते हुए बर्तन में से एक चावल देखने का नीतिवाक्य। देगची में पड़े हुए सभी चावलों पर गर्म पानी का समान प्रभाव पड़ता है। जब एक चावल पका हुआ होता है तो यह अनुमान लगा लिया जाता है कि अन्य सब चावल भी पक गए हैं। अतः यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त श्रेणी का अनुमान उसके एक भाग को देख कर लगाया जाय। मराठी में इसे ही कहते हैं 'शितावरून भाताची परीक्षा'।

पण्डावत् (वि०) [पण्डा + मतुप्] बुद्धिमान—अथर्व० ६।

प्रकोप, [प्रा० स०] क्रोध, उत्तेजना, आवेश।

प्राकार (पु०) 1. चहारदीवारी, बाड़ा, बाड़े 2 चारों ओर घेरा डालने वाली दीवार, फसील अनमेवोपि सखले प्राकारस्थो धनुर्धर - पञ्च० १।२२९।

बाली (स्त्री०) एक प्रकार का कान का आभूषण अथर्व० २४।

युधिष्ठिर [युधि स्थिर - अलुक स०, षत्वम्] 'युद्ध में स्थिर' पाण्डवों में ज्येष्ठ राजकुमार। इसे 'धर्म' 'धर्मराज' और 'अजातशत्रु' आदि भी कहते हैं। यह धर्म द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था। सन्दलवादी की अपेक्षा यह अपनी सचाई और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अठारह दिन के महाभारत के पश्चात् इसे हस्तिनापुर की राजगद्दी पर सम्राट् के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पश्चात् इसने बहुत दिनों तक धर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए दे० 'दुर्योधन')।

वैशम्पायन (पु०) व्यास के एक प्रसिद्ध शिष्य का नाम। इसने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य को कहा कि वह समस्त यजुर्वेद जो तुमने मुझसे पढ़ा है उगल दो। तदनुसार उगल देने पर वैशम्पायन ने अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर वह समस्त यजुर्वेद चाट लिया। इसी लिए यजुर्वेद की उस शाखा का नाम 'तैत्तिरीय' पड़ गया। पुराणों का पाठ करने में वैशम्पायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उसने समस्त महाभारत का पाठ जनमेजय राजा को सुनाया।

हिरण्याक्ष (पु०) एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। हिरण्यकशिपु का जुड़वाँ भाई। ब्रह्मा से वरदान पाकर वह ढीठ और अत्याचारी हो गया, उसने पृथ्वी को समेट लिया और उसे लेकर समुद्र की गहराई में चला गया। अतः तब विष्णु ने वराह का अवतार धारण किया, राक्षस को यमलोक पहुँचाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगलऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रंथ है। अग्निपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—जैसे० श्रुतबोध, वाणीभूषण, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर, वृत्तकौमुदी और छन्दोमंजरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दोमंजरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रक्खा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोकों में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की संख्या से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जाति। वृत्त एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जाति एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

वृत्त तीन प्रकारके होते हैं—(१) **समवृत्त**—जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हों। (२) **अर्धसमवृत्त**—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हों। (३) और **विषमवृत्त** जिसके चारों चरण असमान हों।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक साँस में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर, इसके साथ चाहे एक व्यञ्जन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, गुरु भी जैसा कि उसका स्वर ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दःशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यञ्जन हो, जैसे कि 'गन्ध' का 'अ' या 'ग'। (ह्र, ह्लु और ह्म इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर यद्यपि एक प्रकार की काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११, या शि० १०।६०, तथापि यहाँ पर समालोचकों ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए संशोधन भी प्रस्तुत किये हैं)। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुरु माना जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

मात्रास्वरश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्ण संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

मात्राओं की संख्या से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की संख्या से विनियमित वृत्तों की माप तोल के लिए, छन्दःशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गण' (अक्षरसमूह) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुरु होने के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो,
भादिगुरु पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्य
सोऽन्तगुरु कथितोऽन्तलघुस्तः॥
आदिमध्यावसानेषु भरता यान्ति लाघवम्।
जसा गौरव यान्ति सती तु गुरुलाघवम्॥

श्लोकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुरु ऽ, लघु ।) भिन्न भिन्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं.—

ऽ ऽ ऽ मगण
। ऽ ऽ यगण
ऽ । ऽ रगण
। । ऽ सगण
ऽ ऽ । तगण
। ऽ । जगण
ऽ । । भगण
। । । नगण

इसी प्रकार 'ल' लघु तथा 'ग' गुरु का प्रकट करता है।

विशेष प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्दःशास्त्रियों ने वृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार के 'समवृत्तों' को क्रमशः

श्रेणियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पृथक्-पृथक् हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में लघु और गुरु की पृथक्-पृथक् भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे लघु हों या गुरु) संभावित संख्या २×२×२×२×२×२ या $२^६=६४$ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या $२^{२६}$ या ८७१०८८६४ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, क्षेमेन्द्र और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी निर्देशित गणना में किसी एक छंद विशेष की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिशिष्ट में नहीं रखी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जाति आदि

नोट—निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले भ म स और ल ग आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है—उदा० अम्बा प्रकट करता है म र भ न को, इसी प्रकार 'स्ता' बताता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में लक्षण और यति—विराम अर्थात् श्लोक या चरण का उच्चार पाठ करते में जहाँ रुकना होता है और जो कि परिभाषा में कण्ठकाक्ष द्वारा संकेतित किया गया है—(प्रकोष्ठ में अंकों अंकों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकांश माघ, भारवि, कालिदास और हर्ष की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रतिष्ठा)

वंशा

परि० स्यौ वेदलक्ष्या।
गण० ग, म
उदा० भास्वन्मणिका वंशा।
वंशा कूले कुम्भोद्भवोक्तम्॥

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त

(सुप्रतिष्ठा)

वंशित

परि० भूमौ निति पंक्ति
गण० भ, ग, ग
उदा० कृष्ण वंशावा तर्णकपंक्तिः।
यामुनकच्छे चारु चचार॥

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त

मालती

(1) तनुमध्यमा

परि० रंधा वेलनुमध्यमा।
गण० त, य।
उदा० मूर्तिमंरसत्रोरत्यद्भुतकथा।
आस्ता मम चित्ते नित्य तनुमध्या॥

(2) विद्युल्लेखा ('वाणी' भी कहते हैं)

परि० विद्युल्लेखा यो मः।
गण० म, म (3, 3)।
उदा० श्रोतोऽन्ती लोकोर्ती वीणीती मी प्रीती।
एवंते ते ते ते ये मेमे देवेशे॥ काव्य० ३।८६।

(3) अक्षिवदना

परि० शक्षिवदना न्यौ।
गण० न, य।
उदा० अक्षिवदनाना वजतरुणीनाम्।
अधरसुधोमि मधुरिपुरंक्षत्॥

(4) तोमरावली

परि० द्विजा तोमरावली।
गण० य, य (2, 4)।
उदा० हरे तोमरावली-समा ते यशः श्री।
जगन्मण्डलस्य क्षिनरथ्यन्धकारम्॥

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अत्यष्टि)

(1) कुमारललिता

परि० कुमारललिता असगा।
गण० ज, स, ग (3 4)।

उदा० मुरारितनुवल्ली कुमारललिता सा ।
व्रजेक्षणयनाना ततान मुदमुच्चैः ॥

(2) मदलेखा

परि० मस्तौ स्यान्मदलेखा ।
गण० म, स, ग (3 4) ।
उदा० रङ्गे बाहुविरुग्णाद् दन्तीन्द्रान्मदलेखा ।
कन्यामून्मुरवाञ्जौ कस्तूरीरसचर्चा ।

(3) मधुमती

परि० ननसि मधुमती ।
गण० न, न, ग (5 2) ।
उदा० रविदुहितृतटे नवकुसुमतति ।
व्यधित मधुमती मधुमथनमुदम् ॥

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुभ्)

(1) अनुष्टुभ्

(इसे 'श्लोक' भी कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं। परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मात्राये सबकी भिन्न-भिन्न। इस प्रकार प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण सदा छोटा (ह्रस्व), तथा सातवाँ वर्ण (प्रथम तृतीय चरण का) दीर्घ, गुरु (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

उदा० वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥रघु० १।१॥

(2) गजगति

परि० नभलगा गजगति ।
गण० न, भ, ल, ग (4 4) ।
उदा० रविसुतातीरे विहरन्ता दृशि हरे ।
व्रजवधूगर्वाक्षिमदमलं व्यनुनुद ॥

(3) प्रमाणिका

परि० प्रमाणिका जरौ लगौ ।
गण० ज, र, ल, ग (4 4) ।
उदा० पुनातु भक्तिरच्युता सदा सतामकिञ्चनस्य या ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

(4) मालवक

परि० भाललगा मालवकम् ।
गण० भ, न, ल, ग, (4 4) ।
उदा० चलच्चूड वपर्बर्हकुलं कलिन्दम् ।
व्यधाय सखे स्मरमुक्ष नन्दसुत मालवकम् ॥

(5) विद्युन्माला

परि० मा मा गा गो विद्युन्माला ।
गण० म, म, ग, ग (4 4) ।
उदा० शशोदस्तो विद्युन्माला वर्त्मश्रेणी शाक्रच्चाप ।
यस्मिन्नाम्ना तापार्च्छित्यै गोमध्यस्थ कृष्णाम्भोद ॥

(6) समानिका

परि० स्तौ रजौ समानिका गुरु ।
गण० स, ज, र, ज (4 4)
उदा० यस्य कृष्णपादपद्ममस्ति हृत्-तडागसद्म ।
श्री समानिका परेण नोचिताऽत्र मत्सरेण ॥

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(बृहती)

(1) भुजगशिशुभृता

परि० भुजगशिशुभृता नौ म ।
गण० म न म (7 2)
उदा० ह्रदतटनिकटक्षोणी भुजगशिशुभृता साऽऽसीत् ।
मुरहरपुरलिप्त नाम्ना व्रजजनमुखदा साऽभूत् ॥

(2) भुजङ्गसङ्गता

परि० सजरैर्भुजङ्गसङ्गता ।
गण० स ज, र (3 6)
उदा० तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता ।
कथयति जनस्य कर्णकपटं सदैव सा हरि ॥

(3) कलिवम्य

परि० स्यान्मलिवम्य चेद्गुमता ।
गण० म ज, स (5 4)
उदा० केलिरभसाभोगमन्थरमलिवम्यगीतरुचा ।
चित्रयदाभा नन्दसुतस्याऽनतं स्मेरमुखं ॥

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(पङ्क्ति)

(1) स्वरितललिता

परि० स्वारत्नगतिश्च सजसगै ।
गण० न ज, न ग (5 5)
उदा० स्वाम्यगमिन्द्रजयुवनिम्नरजिमुता विधिमगका ।
मुरहरपुरा मनिमुक्ता परिरमिता प्रमदामता ॥

(2) मता

परि० ज्ञेया मता मभसगसपटा ।
गण० म भ, स, ग (4 6)
उदा० पीत्वा मता मधु मधुराली
कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
उद्घोष्यन्तं व्रजजनराजा
कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

(3) चम्पकमाला (चम्पकमाला)

परि० रुचमजना सा यत्र भमस्ता ।
गण० भ, म, स, ग (5 5)
उदा० कायमनोवाक्यैः परिशुद्धैः
यस्य सदा कलहृदि भक्तिः ।

राज्यपदे हर्म्यालिरुदारा
रमणती विभ्रम खलु तस्य ॥

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(त्रिष्टुभ्)

(1) इन्द्रवज्रा

परि० स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग ।
गण० त, त, ज, ग, ग (5 6)
उदा० गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा
सप्तेत्यवज्राहतिमुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थम्
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणि ॥

(2) उपेन्द्रवज्रा

परि० उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा ।
गण० ज, त, ज, ग, ग (5 6)
उदा० उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभि-
र्विभूषणानां स्फुरितं वपुस्ते ।
स्मरामि तापोपशमाय मानस
सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

(3) उपजाति

परि० अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ता ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥
गण० जब इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा को एक ही श्लोक में मिला देते हैं तो उस उपजाति वृत्त कहते हैं। इसके चौदह भेद होते हैं।
उदा० अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराज ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड ॥ कु० १।१ ।
दे० रघु० २, ५, ६, ७, १३, १४, १६, १८,, कु०३, कु० १७ आदि। जब अन्य वृत्त भी एक ही श्लोक में मिला दिये जाते हैं तो भी उपजाति ही वृत्त होता है। उदा० माघ कवि के निम्नश्लोक में वंशस्थ और इन्द्रवंशा मिला दिए गए हैं।
इत्थं रथाश्वेभनिषादिना मृधे
गणो नृपाणामथ तोरणाद्वहि ।
प्रस्थानकालक्षमयेवकल्पना-
कृतक्षणक्षेपमुदीक्षताच्युतम् ॥ शि० १२।१ ।

(4) दोधक

परि० दोधकमिच्छति भणितयाद्यौ ।
गण० भ, भ, भ, ग, ग, (6 5)
उदा० या न ययौ प्रियमभ्यवचूत्य
सा रतरागमना यतमानम् ।
तेन सहेह विभाति रहःस्थी
सारतरागमनायतमानम् ॥शि० ४।४५ ।

(5) भ्रमरविलसितम्

परि० म्भौ स्लौ ग स्याद् भ्रमरविलसितम् ।
गण० म, भ, न, स, ग (4. 7)
उदा० प्रीत्यै पूता व्यवहितसपत्ना
प्रद्धध्वान्त दिनमिह जलदः ।
दोषामस्य विदधति सुरत-
क्रीडायासभ्रमशमपटवं ॥ शि० ४।६२ ।

(6) रथोद्धता

परि० रात्परैर्नरनगं रथोद्धता ।
गण० र, न, र, ल, ग (3 8 या 4 7)
उदा० कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
रामसख्यरविघातशान्तये ।
काकपक्षधरमेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वय समीक्ष्यते ॥ रघु० ११।१ ।
दे० कु० ८ भी ।

(7) वसन्ततिलका

परि० वसन्ततिलका तभौ जगौ ग ।
गण० त, भ, ज, ज, ग (4 7)
उदा० प्याना मुनि सलभमभ्युतस्थ
श्रेणी नाम्ना सदिता हेलयाऽपि ।
असारेऽस्मिन् दुरित हन्ति पुसाम्
वसन्तेली पोतमिवाऽम्भोधिमध्ये ॥

(8) मालिनी

परि० मालती यौ नेत्रद्वालिनी देवकैर्के ।
गण० म, म, त, न, य, (4. 7)
उदा० अहो हस्ति आनवृद्धि विवक्षे
स्वं दत्ते कामगर्व च सूते ।
दूरित हते सर्वदोषाश्रयमाना
पूता श्रद्धा जाह्नवी विष्णुवक्षित: ॥

(9) स्वागता

परि० स्वागता रनभदैर्गुरुणा च ।
गण० र, न, भ, भ, ग (3. 8)
उदा० यावदाश्रमपदेऽस्य नरेन्द्रान् स स्वयंवरसहान् महिम्नः ।
तावदेव ऋषिरिन्द्रविसृष्टु नारदस्त्रिदशलोकमजग्मे ॥
नै० ५।१ ॥
दे० कि०१, शि० १०.

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(जगती)

(1) इन्द्रवंशा

परि० तज्जेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ॥
गण० इन्द्रवंशा बिल्कुल वंशस्थविल या वंशस्थ (दे० वी० १३वाँ) के समान है, विशेष इसके कि इसका प्रथमाक्षर गुरु होता है। त, त, ज, र।

उदा० दैत्येन्द्रवंशाम्बिलवीर्यदीधिति.
पीताम्बरोऽसौ वसतां तमोपहः ।
यस्मिन् नमज्जु चकमा इव स्वयम्
ते कंसचाणूरमुखा मकाद्रिव ॥

(2) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रलभसैः ।
गण० र, न, भ, स (4, 8)
उदा० चन्द्रवर्त्म पिहित घनतिमिरैः
राजवर्त्म रहित जलगमनैः ।
इष्टवर्त्म तदलकुरु सरसे
कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी ॥

(3) जलधरमाला

परि० जलधरैः स्याज्जलधरमालाम्भौ स्मौ ।
गण० म, भ, स, म (4 8)
उदा० या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां
तापच्छेदे जलधरमाला नव्या ।
भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूल
केलीलोला हरितनुरव्यात सा व ॥
दे० कि० ५।२३ ॥

(4) जलोद्धतगति

परि० रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः ।
गण० ज स, ज, स (6 6)
उदा० समीरशिशिरः शिरस्सु वसताम्
सता जयनिका निकामसुखिनाम् ।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायधवला बलाहकततिः ॥ शि० ४।५९ ॥

(5) तामरस

परि० इह यद तामरसं नजजा य ।
गण० न, ज, ज, य (5 7)
उदा० स्फुटसुषमाकरन्दमनोज्ञम्
अजलजनानयनालिनिपीतम् ।
तव मुखतामरसं मुरशत्रो
हृदयतटाग विकासि मनास्तु ॥

(6) तोटक

परि० यद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।
गण० स, स, स, स (4 4 4)
उदा० स तवेति विनेतुरुदाहृते
प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम् ।
तदलञ्चपद हृदि तोटकने
प्रतियातमिवान्तिकमस्य गुरो ॥ रघु० ८।९१ ॥
दे० शि० ६।७१ ॥

(7) द्रुतविलम्बित

परि० द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
गण० न, भ, भ, र (4 8 या 4 4 4)
उदा० मुनिसुताग्रणयस्मृतिरोधिना
मम च मुक्तमिद तमसा मनः ।
मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता
धनुषि चूतशरश्च निवेशितः ॥ शि० ९ ।
दे० रघु० ९, शि० ६ भी ।

(8) प्रभा

परि० स्वरशरैरिरतिर्नभौ रौ प्रभा ।
गण० न, न, र, र (7 5)
उदा० अलिपुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरतयैव मतानक ।
तरुणसरभस स्वन रागिणा-
मतनुतरतये वसन्तानक ॥ शि० ६।६७ ॥
कि० ५।२१ भी ।

(9) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता ।
गण० स, ज स, स (5 7)
उदा० विहगाः कदम्बमुरभावहे गा
कथयन्त्यनुक्षणमनेकलयम् ।
भ्रमयन्त्यपैति मधुरं भ्रमयम्,
पवनश्च धूतनवपल्लवन ॥ शि० ४।३६ ॥
कि० ९, शि० ९ ।

(10) भुजंगप्रयात

परि० भुजंगप्रयात चतुर्भिर्यकारैः ।
गण० य य, य य (6 6)
उदा० घनैर्निष्कुलाना कुलानां मरुन्ति
घनैरारट मानवा निस्तरन्ति ।
घनेभ्य परा बान्धवा नास्ति लोके
घनान्यर्जयध्व घनान्यर्जयध्वम् ॥

(11) मणिमाला

परि० स्यो न्यो मणिमाला क्लिन्ना मुहुवर्क्तुं ।
गण० न, य, न, य (6 6)
उदा० इह वामनमौलौ रत्नापलकल्पे
आपप्रतिबिम्बा आपा मणिमाला ।
गोविन्दपदाब्जे गाढी नखराजा-
माल्मा श्रम विनेतु स्वाल सभवन्ती ॥

(12) मालती (यमुना भी कहते हैं)

परि० भवति मजावद्य मालती जरौ ।
गण० न, ज, ज, र (5 7)
उदा० इह कलयाम्यन कोलिकानने
मधुरमनोरममारकोकिल ।
कुसुमकृतस्मितनाथ विभ्रमा-
मकिरपि कूजसि मालती मुहु ॥

(13) यशस्विनी (यशस्य या यशस्तनित)

परि० यदसौ यशस्विनी जरौ जरौ ।
गण० ज, त, ज, र (5 7)

उदा० तथा समक्षं दहता मनोभवं
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती ।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ॥ कु० ५।१ ।
दे० रघु० ३ री ।

(14) वैश्वदेवी

परि० बाणाश्वैर्विश्लिष्टा वैश्वदेवी सभौ यौ ।
गण० म, स, य, य (5 7)
उदा० अर्धासन्येवा स्व विहायामराणा-
मर्हत्तेनैक विष्णुमभ्यर्च्य भक्त्या ।
तत्राक्षेपात्मन्यर्पिते भाविनी ते
भ्रात सपत्नारब्धना वैश्वदेवी ॥

(15) अश्विनी

परि० कीर्तितेयं चतुरेफिका अश्विनी ।
गण० र, र, र, र (6 6)
उदा० इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
शातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते ।
तस्यमेवच्छवि पीतवासा हरे-
र्धृतिरास्ता त्रयायारंभ अश्विनी ॥

तेरह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(1) कलहंस (सिंहनाद या कुटजा)

परि० मजसा सगौ च कथित कलहंस ।
गण० म, ज, स, स, ग (7 6)
उदा० यमुना विहारकुतुके कलहंसो
व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलि ।
जनचित्तहारिकलकण्ठिनाद
प्रमद तनोतु सच नन्दतनुज ॥ दे० शि० ६।७३ ।

(2) क्षमा (अन्दिका और उत्पलिनी)

परि० तुरगरसयतिर्नौ सभौ म क्षमा ।
गण० न, स, न, स, ग (7 6)
उदा० इह दुरधिगमे किंचिदेवागमे
सततममृतरं वर्णयन्प्रवचनरम् ।
अमृतलिंविपिन वेद दिव्यापिनम्
पुरुषमिव पर पद्मयोनि परम् ॥ कि० ५।१८।

(3) अहरिणी

परि० त्र्याशाभिर्मनजरगा अहरिणीयम् ।
गण० म, न, ज, र, ग (3 10)
उदा० ते रेखाध्वजवज्रकुलिशातपत्रचिह्न
सम्राजश्चरणयुग प्रसादकम्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, शि० ८ ।

(4) शंखनारी (सुमन्दिनी, और प्रबोधिता)

परि० सजसा जगौ च यदि शंखनारिणी ।
गण० स, ज, स, ज, ग (6 7)
उदा० यमुनामतीतमथ सुभुवासनुम्
तपसस्तनूज इति नारदोऽब्रवीत् ।
स वराऽवलम्बिजघुरादहनिशम्
नृपतेस्सदापि समचारि वार्तया ॥शि० १३।१।

(5) मत्तमयूरी

परि० केदैरन्ध्रैर्मनौ यसगा मत्तमयूरम् ।
गण० म, त, य, स, ग (4 9)
उदा० दृष्ट्वा दुश्चरितान्यात्मनोऽपि विधाय
प्रज्ञाकारी याति पद मुक्तसपार्थ ।
सम्यग्दृष्टिस्तस्य पर पश्यति यत्नाद्
यच्चोपास्ते साधु विधेय स विदधे ॥ कि० १८।
२८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० ९।७५ ।

(6) रुचिरा (प्रभावती)

परि० जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्थेऽहै ।
गण० ज, भ, स, ज, ग (4 9)
उदा० कदा मूढ चरतनु कारणादृते
तवागत क्षणमपि कोपपात्रताम् ।
अपवेणि मुखकलुषेन्दुमण्डला
विभावरी कथय कथ भविष्यति ॥ मालवि० ४।१३ ।
दे० भट्टि० १।१, शि० १७ ।

चौदह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अक्षरी)

(1) अपराजिता

परि० ननरसलघुर्ग स्वरैरपराजिता ।
गण० न, न, र, स, ल, ग (7 7)
उदा० मदनवधि मुजप्रतापकृतास्पदा
यदुनिलयमयं परैरपराजिता ।
व्यजयत समरेऽमस्तरिपुव्रजम्
स जयति जगता गतिर्वरुथाज ॥

(2) अलंघाया

परि० स्यो स्यो गावलयहरिरतिरसवाधा ।
गण० य, त, न, स, ग, ग (5 9)
उदा० दोर्वाम्नी येन ज्वलति रणवधान् क्षिप्रे
दैर्घेन्द्रे जाता धरविरिधमलंघाधा ।
धर्मेस्थित्यर्थं प्रकटितनृसम्बन्ध
साधना बाधा प्रलयतु स कमारि ॥

(3) वाणी (मञ्जरी)

परि० सजसा यसौ च सह येन वाणी मता ।
गण० स, ज, स, य, स, ग (5 9)
उदा० स्वयमयत्नयन्, क्षमितचातकार्तस्वरा
अलघास्तडिल्लुलितकान्तकार्तस्वरा ।
जगतीरिह स्फुरितचारु वामीकरा
सविधु वर्षयन्ति कपिलयन्ति वामीकराः ॥
शि० ४।२२

(4) प्रमदा (कुररीरुता)

परि० नजमजला गुरुश्च भवति प्रमदा ।
गण० न, ज, भ, ज, ल, ग (6 8)
उदा० अनतिचिरोज्झितस्य जलदेन चिर-
स्थितबहुबुद्बुदस्य पयसोऽनुकृतिम् ।
विरलविकीर्णवज्रशकला सकला-
मिह विदधाति धौतकलधौतमही ॥ शि० ४।४१ ।

(5) प्रहरणकलिका

परि० ननभनलगिति प्रहरणकलिका ।
गण० न, न, भ, न, ल, ग (7 7)
उदा० अथयति कुसुमप्रहरणकलिका
प्रमदजनभया तव धनुषि लता ।
विरहविपदि मे शरणमिह ननो
मधुमथनगुणस्मरणमविरतम् ॥

(6) अश्वललिता (हंसश्रेणी या कुटिल)

परि० मधुश्चामायुगदशविरमा स्यौ न्यौ गौ ।
गण० म, भ, न, य, य, य (4 10)
उदा० नीलोच्छाय मुहुरशिशिरस्मेरकुन्दै-
रानीलाभैर्विरचितपरीभासा रत्नै ।
ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हस्तमेनो
मध्येऽध्यह्नं स्फटिकरजतभित्तिच्छाया ॥
वि० ५।३१ ।

(7) वसन्ततिलका

(वसन्ततिलक, उद्धर्षिणी या सिंहोन्नता)

परि० उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ ग ।
गण० त, भ, ज, ज, ग, ग (8 6)
उदा० यान्येकनोऽन्तर्शिखर पतिरोषधीना-
मादिष्कृतारुणपुर सर एकनाऽर्कं ।
तेजाद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्या
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥ शि० ४।१ ।

(8) वासन्ती

परि० मान्तौ नौ मौ गौ यदि यतिरिह वासन्तीयम् ।
गण० म, त, न, म, ग, ग (4 6 4)
उदा० भ्राम्यद्भृङ्गी निर्भरमधुरालापोन्मत्तै-
र्लोलापाङ्गैर्दत्तभुजपरिरम्भान्दोला ।
कोलालोला पल्लवविलसद्धम्मिल्लान्तै
कान्तानन्तौ नृत्यति यदृशो वासन्तीयम् ॥

पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिशक्वरी)

(1) तूणक

परि० तूणक समानिका पदद्वय विनालिभम् ।
गण० त, ज, र, ज, र (4 4 4 3 या 7 8)
उदा० सा मुदर्णकेतक विकासि भृङ्गपूरितम्
पञ्चबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
राधिका विलक्ष्य माधवाद् भासि माधवे
माद्यतेति निर्भरं त्वया विभर्म कलानिधे ॥

(2) मालिनी

परि० ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।
गण० न, न, म, य, य (8 7)
उदा० शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्
जलनिधिमनुरूपं हन्त कुलं श्रवाप्ता ।
इति समगुणयोगप्रीतयस्तत्र पौरा
श्रवणकटु नृणामेककार्यं विवव्रु ॥ रघु० ९।८५ ।

(3) लीलाकेल

परि० एकत्यनौ विद्युन्मालाभादौ कल्लोलाकेल ।
गण० म, म, म, म, म
उदा० प्रा: कान्त पक्षमध्यान्ते पर्यङ्कादो देशे स्वाम्यं.
कान्ति कृत्वा वृत्त पूर्ण चन्द्र मत्वा गत्वा चत्र ।
अङ्गाभ्रान्त्या प्राप्तवैनतेयो यद्वद् कूर प्राक्षान्
तस्माद्रम्यान्त हर्म्यस्थान्त शर्यङ्कान्त कर्तव्या ॥
सरस्वती०

(4) शशिकला

परि० मुनीनवनमवलयरिह शशिकला ।
गण० न, न, न, न, म (अन्तिम को छोड़ कर सब लघु)
उदा० मलयजतिलकसमुदितशशिकला
रजतपरिलसदलिक गगनतला ।
सरसिजवनसहृदयमलिनिधि
व्यतनुत दिवसरमणपरिणामम् ॥

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अष्टि)

(1) चित्र

परि० चित्रमजर्सोगि रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ।
गण० र, ज, र, ज, र ग (8 8 या 4 4 4 4)
उदा० विद्युन्माल्याधरौष्ठश्रुतिविवरणुवाक्षुब्ध-
वल्गद्वीक्षाकूजगजादनवमधुकरश्रेणिकाञ्ची ।
स्त्री सर्वस्व वासुदेव पृथुजघनपदे देव
धन्यापुण्यैश्चिकेत मनसिजसि गतायेत ॥

(2) वज्रपञ्जर

परि० प्रथमाधिका पदद्वय यदलि पञ्चमाक्षरम् ।
(प्रथमं जगौ ततो जगौ च पञ्चमाक्षर यदेत्)
गण० ज, र, ज, र, ज, ग (8 8 या 4 4 4 4)
उदा० मुरदमलमन्दरे विचित्रकन्दरान्तिके
ललितनवभूमिके सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरगणाभवल्लवीकरग्रहोत्सवाकुल—
स्फुरत्स्मरोदयैरिव मदाध्युषं भजामि तम ॥

(3) वाजिनी

परि० नजभजरैर्यदा भवति वाजिनी तदुक्तौ ।
गण० न, ज, भ, ज, र, ग ।

उदा० स्फुरतु मयानतेऽद्य मनु वाणि नीतिरम्यम्
तव चरणप्रसादपरिपाकत कविताम् ।
भवजलराशिसारकरणाक्षम मुकुन्दम्
सततमह स्तवै स्मरविधै स्तवानि नित्यम् ॥

सत्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अत्यष्टि)

(1) चित्रलेखा (अतिशायिनी)

परि० समजा भवगा गु द्विकस्चरैर्भवति चित्रलेखा ।
गण० म, म, ज, म, ज, ग, ग (10 7)
उदा० वृत्ति धीनपुरभ्रिमस्मरान् स्मरसि यज्जनेन
श्रियमाणवनाऽतिशायिनीमपमन्यायमनसे ।
अकलाका तदेव सादवानारवारिराशे
शिशरत्वस्रोविधाव्यया तत्तिषु मयमुभीये ॥
शि० ८।७१ ।

(2) नर्दटक (कोकिलक)

परि० यदि भवना नजौ भजजला गुरु नर्दटकम् ।
गण० न ज, भ ज, ज, ल, ग (8 9)
उदा० तरुणतमालनीलमदुलाग्रमदम्बुधरा
शिशिरसमीरणाबधृतनूतनचारिकणा ।
कथमकलाकयेयमधुना हरिहेतिमती—
मंटकलनीलकठकलहैर्मुखरा ककुभ ॥
मा० ९।१८, वे०५।३१ ।

(3) पृथ्वी

परि० जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरु ।
गण० ज, स, ज, स, य, ल, ग (8 9)
उदा० इत स्वपिति केशव कुरुमितस्तरीवाविधा—
मितश्च शरणार्थिन शिखरिणा नगा शेरते ।
इतोऽपि बडवानल सह समस्तसवर्तकै—
रहो विहतमूर्जित भरसह च सिन्धोर्वपु ॥
वर्णो० २।७६ ।

(4) मन्दाक्रान्ता

परि० मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
गण० म, भ, न, न, त, त, ग (4 6. 7)
उदा० गायी भर्तुर्विरहविधुरा कापि विस्रोतसेव
उन्मार्गेव स्खलितकबरी नि पतन्ती क्षितायम् ।
अन्येद्यु स्मे मुररिपुरिति भ्रान्तिदूतीसहाया
स्वप्नेवा गेह झटिति यमुनातीरवृक्षुञ्जमाप ॥
पद्यांक० १ ।
[समस्त मेघदूत इसी वृत्त में लिखा गया है]

(5) वंशस्थविलित

परि० दिक्मुनिश्वरणयुग्मविलित भरस्थमनलैं ।
गण० भ, र, म, भ, न, ल, ग (10. 7)
उदा० दर्पणनिर्मलासु पतिते घनतिमिरमपि
ग्यानिधि रौप्यमिलिप् पुर प्रतिफलति मुहु. ।
शीकमसमूलोऽपि रमयैरहुनवसना
काम्यनकन्दरासु नरुणीरिह नयति रवि ॥
शि० ४।६७ ।

(6) शिखरिणी

परि० रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला ग शिखरिणी ।
गण० य, म, न, स, भ, ल, ग (6 11)
उदा० दिशन्ते शूयन्ते मदमलिनगण्डा करटिन
करिष्य काक्ष्यास्यदमनमशीला. खलु मृगा ।
इदानी लोकेऽस्मिन्नुपरमशिलाना पुरभ्यम्
नखाना पाण्डित्य प्रकटयतु कस्मिन् मृगपति ॥
मालवि० १।२ ।

(7) हरिणी

परि० नसमरसलास ह्रस्वैर्दैर्घ्यैर्हरिणी मता ।
गण० न, स, म, र, स, ल, ग (6 4 7)
उदा० मृगनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमसंतु ते
किमपि मनस समोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतमसामेवम्प्राया शुभेषु हि वृत्तय
सजमपि शिरस्यन्ध क्षिप्ता धुनोत्यहिशङ्कया ॥
श० ७।२४ ।

अठारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(धृति)

(1) कुसुमितलतावेल्लिता

परि० स्याद्मुतर्वसवै. कुसुमितलतावेल्लिता स्तौ नयौ यौ ।
गण० म, त, न, न, ज, ज, य (5. 6 7)
उदा० कीरत्कालिन्दीललितलहरीवारिभिर्वीचिहस्तै
दार्ती वेलामि कुसुमितलताबेल्लिता मन्दमन्दम् ।
मृद्नाली गीतै: किसलयकरैलासितैर्लास्यकर्मो-
त्सवाना वेला: समुचितरत चक्रवाकेषकार ॥

(2) चित्रलेखा

परि० मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा ।
गण० म, भ, न, न, ज, ज, य (4. 7. 7.)
उदा० सद्यो दृष्ट्वा विरहविधुरा कापि वेलेव सिन्धो-
राकूल्यैव स्वमनुपति सभा वेत्ति सा व्यथानि ।
नैतादृक्षेत् कथमुचितमस्मारेत्याभ्युपस्य
प्रीत तस्या नयनयुगमभूच्चित्रलेखेवदभुतार्द्रम् ।

(3) वन्धन

परि० नखमनरसैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्बन्धनम् ।
गण० न, ज, भ, ज, र, र (11 7.)
उदा० शरन्निशुम्भातरङ्गपवने सलीलमान्दोलितम्
मधुरिपुपादपकजरज सुपूतपृथ्वीतलम् ।
मुररुरिपुवेष्टितकलापकलापसस्मारकम्,
क्षितितलमन्दर कच सखे मुदाय वृन्दावनम् ॥

(4) नाराच

परि० इह नगरचतुष्कसृष्ट तु नाराचमाचक्षते ।
गण० न, न, र र, र, र, (8 5 5,)

उदा० रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां जनकसुतां जनकाय दत्तवान् ।
प्रियसुहृदि विभीषणे समस्तं त्रिदशरिपोर्विभवं वितीर्य वः ।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः सरभसविभिन्ना
भुवमधिवसति विमानरत्नाधिरूढः प्रसन्ने पुरीम् ॥
रघु० १२।१०४।

(5) शार्दूलललित

परि० म सौ ज सततं विनेह कथितम् शार्दूललालितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, स, (12 6.)
उदा० कुवलयदलश्यामे पराक्रमनिधि शार्दूललालितम्
मदकले क्षितिभारकारिणि वरं वैकुण्ठभूतिम् ।
सतोष परम तु देवनिवहे वैकुण्ठमध्यस्थम्,
श्रेयो न स तनोत्यपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतम ॥

सत्ताईस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिधृति)

(1) मेघविस्फूर्जिता

परि० रसत्वंधर्वर्यमौन्सौ ररगुरुयुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात् ।
गण० म, म, न, स, र, र, ग (6 6 7)
उदा० कदम्बामोदाढ्या विपिनपवन केकिन, कान्तकेका
विनिद्रा कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादा ।
निशा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघविस्फूर्जिता चेत्
प्रिय स्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो
राज्यमस्मात् किमन्यत् ॥

(2) शार्दूल विक्रीडित

परि० सूर्याश्वैर्यदि म सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, त, ग (12 7)
उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुष व्याप्य स्थित रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषय शश्वो यथार्थाक्षर ।
अन्तर्यंश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणु स्थिरभक्तियोगसुलभो नि श्रेयसायास्तु व ॥
शि० १।१।

(3) सुखदुरा

परि० श्री भ्यौ यो नो गुरुश्चेद् ह्यय ऋतुरसकला सुखदुरा ॥
गण० म, र, भ, न, य न, ग (7 6 6)
उदा० वेदार्थान् प्राकृतस्त्व वदसि न च ते विद्धा निपतिता
मध्याह्न दीक्षसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीप्ताग्नौ पाणिमन्त्र क्षिपसि स च ते
दग्धो मदति नो
कारिष्याक्ष्वारुदत्त वलयसि न ते देह हन्ति मृ ॥
मृच्छ० ९।२१।

(4) सुरता

परि० श्री भ्यौ यो नो गुरुश्चेत् स्वरमुनिकरभैराह सुरताम् ।
गण० म, र, भ, न, य, न, ग (7 7 5)
उदा० कामक्रीडासतृष्णो मधुसमयसमाभारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुञ्जे विहरणकुतुकाकृष्टहृदय ।
गोविन्दो बल्लवीनामधरसमुधां प्राप्य सुरताम्
जहौ पीयूषपानै प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरदसौ ॥

बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(कृति)

(1) गीतिका

परि० सजजा मरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका ।
गण० स, ज, ज, भ, र, स, ल, ग (5 7 8)
उदा० करतालपल्वलकूजितस्वनमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवेणुनिनादरञ्जितमानसेन सुखावहा ।
बहलानुरागनिवासरासरसम् कुर्वा भवरागिणम्
विदधौ हरि खलु बल्लवीजनवारु गामरगीतिका ॥

(2) सुखदता

परि० ज्ञेया सुखदता भरैर्भनयवैता स्त्री न सुखदता ।
गण० म, र, भ, न, य, भ, ल, ग (7 7 6)
उदा० उत्सृज्यान्तु कुलं सुतमपतिका प्रत्यन्दिमलिलम्
श्यामा श्यामोपकण्ठद्रुमपतिमुखरा कल्लोलमुखरम् ।
लोल ज्ञातावसीदत्पटमुकलनं रुन्मादिमनटा
लोल सिन्धुस्रोता मम गजपतय पास्यन्ति शतश ॥
मृच्छ० ४।१६।

इक्कीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रकृति)

(1) वज्रपञ्जरावली (वरली, घनश्री।

परि० नजभनजा अरौ सरपदे कथिता भुवि पञ्जरावली ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ज, र (7 7 7)
उदा० तुरगगताकुलस्य पतित पत्र्यैकतुरङ्गबन्धन
प्रसभितभूभृत प्रतिपद्य प्रविलस्य मुख महीपता ।
परिवृत्तो बलानुजबलस्य पुर सतत धृतश्रिय-
स्थिरगतिभिश्चिरं जयनिवेदक तदाऽभवदस्त्र महत् ॥
शि० ३।८२ ॥

(2) क्षमधरा

परि० जम्नैर्यांवा त्रयेण विश्वनिधिसयुता क्षमधरा
कीर्तिनेयम् ।
गण० म र, भ न य, य, य (7 7 7)
उदा० या सृष्टि स्रष्टुराद्या वहति विधिहुत
या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्त श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहु सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिन प्राणवन्त
प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश ॥
श० १।१ ।

बाईस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(आकृति)

हंसी

परि० यौ यौ नाश्चेद्गुरो यौ यौ
वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी ।

लक्ष० स, भ, त, न, न, न, त, ग
या (स, भ, त, न, न, न, त, ग) (8 14)

उदा० सार्धं कान्तेनैकान्तेऽसौ विकचकमलमधु सुरभि पिबन्ती
कामक्रीडाकूतस्फीतप्रमदरसतरमलघु रचन्ती ।
कालिन्दीयं पद्मारण्ये पवनपतनपरितरलपरागे
कंसारातेः पश्य स्वेच्छं सरभसगतिरिह विलसति हंसी ॥

तेइस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(विकृति)

अद्रितनया

परि० नजभजभाजजगी लघुगुरु वुधैस्तु गदितेयमद्रितनया ।

लक्ष० न, ज, भ, ज, भ, ज, भ, ल ग (11 12)

उदा० ज्वालरक्षोयंपावकशिखापतत्कुनिभमग्नदुष्टदनुजा
ऽलघिसुतविलासदमनि रणागतिरक्षेपमान्यमहिमा ।
भुवनहितावतारचतुरश्चरणाग्रचरीऽवतीर्य इह हि
क्षितिविलयेऽस्मि कलशमनस्तवेति नमतोचदद्रितनया ॥

चौबीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(संकृति)

तन्वी

परि० भूतमुनीनैर्यतिरिह भवना
स्त्री भनयाश्च यदि भवति तन्वी ।

लक्ष० म, त, न, म, भ, भ, न, य (5 7 12)

उदा० माधव मुग्धमधुकरविरुते
कोकिलकूजितमलयसमीरे
कम्पमुपेता मलयजसलिले
ध्यानलयं तव निवसति तन्वी ॥

पच्चीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिकृति)

कौञ्चपदा

परि० कौञ्चपदा स्त्री सभौ ननना
न्यायिधुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत् ।

लक्ष० भ, भ, त, भ, न, न, न, न, य (5.5 8 7)

उदा० कौञ्चपदावलीविलसिततीरा
वरकलभनमुखलक्षित चरिता
फुल्लसरोजनिविडिताशा
मधुमुदितमधुपरवरमसकरी ।
फेनविलासधोज्ज्वलहासा
कलितहरिवरपुलकितमुनयः
पश्य हरेर्जा कस्य न चेतो
हरति तरलगतिरिह सरिदियं वा ॥

छब्बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उत्कृति)

भुजंगविजृम्भित

परि० वसौ द्वावाभौ सप्तभेदोपेत नजतनजभुजरसलवैर्भुजङ्ग-
विजृम्भितम् ।

लक्ष० म, भ, त, न, न, न, र, स, ल, ग (8, 11 7)

उदा० हेलोद्वेल्लन्मत्तमातङ्गकुम्भ-
स्खलन्मुक्ताशालिनी वीरवक्षाः ।
रत्नाकेलिक्षुब्धबाहुर्भुजङ्ग-
विलासयस्तरङ्गितहारयष्टिः ।
यस्यास्थाने वीक्ष्य संस्था मुकुन्द-
स्त्रिलोकीरक्षायत्नं कृतस्तुतिरभ्युत-
स्थावाद्विश्वन्दन् कालिन्दीह्रदस्थ-
निजवसतिबृहद्भुजङ्गविजृम्भितम् ॥

दण्डक

जिन वृत्तों के प्रत्येक चरण में सत्ताईस या इससे अधिक वर्ण होते हैं उनका एक सामान्य नाम दण्डक है। इस वृत्त की जाति के चरण में वर्णों की संख्या अधिक से अधिक ९९९ बताई जाती है। प्रत्येक चरण में सबसे पहले दो नगण या छ लघु अक्षर होते हैं, शेष या तो रगण होते हैं या यगण या अन्त्य चरण सगण होते हैं। दण्डक की जिन श्रेणियों का अनुक्रम उल्लेख मिलता है वे हैं– चण्डवृष्टिप्रयात, प्रचितक, मत्तमातंग-लीलाकर, सिंहविक्रान्त, कुसुमस्तबक, अनङ्गशेखर, और संग्राम आदि। अन्तिम प्रकार के दण्डक का उदाहरण मा० ५।२३ है।

अनुवाद (ख)

अर्धसमवृत्त

(1) अपरवक्त्र ('वैतालीय' भी कभी कभी)

परि० अयुजि नयरहता गुरु समे
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ।

लक्ष० न, न, र, ह, ग (विषम चरण)
न, ज, ज, र, (सम चरण)

उदा० स्फुटबुसपूरवेणुरीतिभि-
स्तमयरवस्तमयत्यरण्यमेव सायकवत् ।

मृगयुवनिताभिः सम स्थिता
व्रजवनिता घृतचित्तविभ्रमा ॥

(2) उपचित्र

परि० विषमे यदि सौ सलगा हले
भौ युजिमाद् गुरुकाद्युपचित्रम् ।

गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)

उदा० मुरवैरिवधूस्तनुता मुद
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगन चपलाभिलिप्त यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताग्रा (औपच्छन्दसिक)

परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

गण० न, न, र, य (विषम चरण)
न, ज, ज, र, ग (सम चरण)

उदा० अथ मदनवधूरुपप्लवान्त
व्यसनकृशा परिपालयाम्बभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥ कु० ४।४६ ।

(4) वियोगिनी (वैतालीय या सुन्दरी)

परि० विषमे ससजा गुरु सभ
सभगा लाद्य गुरु वियोगिनी ।

गण० स, स, ज, ग (विषम चरण)
स, भ, र, ल, ग (सम चरण)

उदा० सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेक परमापदा पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणम्
गुणलुब्धा स्वयमेव संपदः ॥ कि० २।३० ।

(5) वेगवती

परि० मयगात् सगुरु विषमे वेद्
भवितृ वेगवती युजि भाद्गौ ।

गण० म, म, स, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)

उदा० स्मरवेगवती व्रजन्मना
केशवशरवैरतिमुग्धा ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जमुपाय जगाम ॥

(6) हरिणप्लुता

परि० मयगात्सलघु विषमे गुरु-
र्यदि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
म, भ, भ, र (सम चरण)

उदा० स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
बलिमनाञ्जनटा नरणे सुता ।
सकलङ्कमकुलारव शालिनो
विहरन्ती हरति स्म हरेर्मन ॥

विशे० अपरवक्त्र या औपच्छन्दसिक और वैतालीय या वियोगिनी प्राय आर्या समझ जाते हैं (दे० अनुभाग घ) । परन्तु कभी कभी लक्षणोजना में उनकी परिभाषा दी जाती है, इसी लिए वे यहाँ वृत्तो के अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

अनुभाग (ग)

विषमवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उन्हीं अन्य सामान्य वृत्त कहलाता है ।

परि० प्रथमे सजौ यदि सलौ ज
नसजाग्रुकाभ्यनन्तरम् ।
यदथ भनजलगा स्मरखो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

गण० स, ज, स, ल (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग (द्वितीय चरण)
म, न, ज, ल, ग (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग (चतुर्थ चरण)

उदा० अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुम्
विधिवत्तपसि विदधे मनश्चय ॥ कि० १२।१ ।
दे० शि० १५ भी ।

उद्गता का एक और भेद बताया जाता है जिसके तृतीय चरण में भ, न, ज, ल, ग के स्थान में म, न, म, य होते हैं । वृत्तो के अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरणों के वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है, 'गाथा' के सामान्यलक्षण के अन्तर्गत बतलाये है । चार से भिन्न चरणो की संख्या वाले वृत्तो के लिए भी यही नाम व्यवहृत होता है । जहाँ तक 'उपजाति' का सबध है वे किसी भी नियमित वृत्त के दो या दो से अधिक चरणो को मिला कर अर्धसमवृत्त या विषमवृत्त बना लिए जाते हैं ।

अनुबन्ध (ब)

जाति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से विनियमित किये जाते हैं)।

(अ) इस प्रकार के वृत्तों की अपेक्षा सामान्य प्रकार 'आर्या' है। इसके नौ अवान्तर भेद बताये जाते हैं

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिर्नवैव आर्याया ॥

इन नौ भेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है।

(1) आर्या

परि० यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥ श्रु० ४।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्रायें गिनी जाती हैं)। दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पति सेवन्ते भर्तृवत्सला माध्व्य।
अन्यभरिता अनानि हि सपत्नदुःखा प्रापयन्त्यधिकम् ॥
मालवि० ५।१९।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशती' इसी छन्द में लिखी गई है।

(2) गीति

परि० आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते।
छन्दोविदस्तदानीं गीतिं तामामनन्ति भावज्ञाः ॥

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० पाटीर तव पटीयान् क परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्।
पत्यिपतामपि नृणा पिष्टोऽपि ननाधि परिमलं पुष्टिम् ॥ भामि० १।१२।

(3) उपगीति

परि० आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्त चेत्।
कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभावन्तो महाकवय ॥
श्रु० ६।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नवनीपसुन्दरीणा रासोल्लासे मुरारातिम्।
अस्माभ्यङ्कणीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशा गीते ॥

(4) उद्गीति

परि० आर्यासिकलद्वितये विपरीते पुनरिहोद्गीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नारायणस्य लसतस्तुङ्गीतिः सस्मृतिर्मनस्या।
अर्चयिताखिलदुःस्तरसारसमरे तरति ॥

(5) आर्यागीति

परि० आर्यां प्राग्वत्कृत्वा द्वयधिकपुरा तादृक् परार्धमार्यागीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।

उदा० सचयन्ती सुचिरेणोल्लसन्मरतसमन्दरावतारसदृक्ष।
माहेऽहस्ते रसदजवरतसमन्दरावतारसदृक्ष ॥
शि० ४।५१।

नोट -यह पाँचों भेद कभी कभी सवयोजना में भी परिभाषित किये जाते हैं।

(आ) वैतालीय

परि० षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्तावत्य समे स्मुर्नो निरन्तरा।
न समाऽत्र परार्धिता कला वैतालीयेऽन्ते
स्त्री गुरु ॥

यह चार चरण का श्लोक है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह लघु मात्राओं का समय लगता है, और द्वितीय तथा तृतीय चरण में सोलह मात्राओं का। पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छ मात्राएँ होनी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (ऽ।ऽ) तथा लघु गुरु (।ऽ) होने चाहिए। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सम चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएँ, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अगले चरणों (अर्थात् तृतीय, पञ्चम और सप्तम) से समुक्त नहीं होनी चाहिए।

उदा० कुसुम खलु तुल्यमेव तद्
वचन कृष्ण यदव्यवामहम्।
उपदेशपरा परेष्वपि
स्वविनाशाभिमुखेषु साधव ॥ शि० १६।४१।

(इ) औपच्छन्दसिक

परि० पर्यन्ते यौ तदैव शेषलोपच्छन्दसिक सुधीभिरुदितम्।

यह वैतालीय के समान ही है। इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रगण और न, म के स्थान में रगण और यगण होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में यह वैतालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु जोड़ा हुआ है।

उदा० वपुषा परमेण भूधरात्मज सम्प्रत्यपराक्रम विभेदे।
भुवनानु विलोकयाधुना स्थिरदंष्ट्रोद्यतमुग्र
महेन्द्रसूनु ॥
कि० १३।१।

इसी प्रकार इसी वर्ण के अगले बारह श्लोकों में। दे० कि० २० भी।

यह बात ध्यान में रखने की है कि विद्योत्तिनी या सुंदरी तथा अपरवक्त्र, वैतालीय की ही विशेषताएँ हैं, और पुष्पिताग्रा तथा मालभारिणी, औपच्छन्दसिक की। छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन वर्णयोजना तथा मात्रा योजना दोनों स्थानों पर करते हैं। इसीलिए यह यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (ग) में भी।

(ई) मात्रात्मक

मात्रात्मक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ। इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है। इसकी परिभाषा की है मात्रात्मक नवमो लघ्वन्त्य।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व या दीर्घ होने के कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में, यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, शेष वर्ण ऐच्छिक हैं, तो वह वृत्त वानवासिका कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व है, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह वृत्त चित्रा कहलाता है। यदि पाँचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व है, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह उपचित्रा कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है, तथा शेष अनिश्चित हैं, तो वह विद्युल्लेखा कहलाता है। कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे पादाकुलक वृत्त कहते हैं, इसमें कोई विशेष प्रतिबन्ध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है।

उदा० मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ॥
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥
मोह० १

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल-क्रम

भासह एक प्रसिद्ध उपनिषिद्, जन्मकाल ४७६ ई०।

दण्डी—अलंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह काश्मीर के राजा जयापीड की राज्यसभा का मुख्य पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।

कैयट पतंजलिकृत महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता। डाक्टर बूह्लर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

कल्हण राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा जयसिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य किया समकालीन था।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत और ऋतुसंहार का रचयिता। इसके अतिरिक्त 'श्रुतबोध' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता। कालिदास का सबसे पहला अधिकृत उल्लेख हमें ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शाके) के शिलालेख में मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है —

येनायोजि न वेश्म
स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्ति
र्कविताश्रितकालिदासभारविकीर्ति ॥

हर्षचरित के आरम्भ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से कितना पूर्व इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका। रघुवंश के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा। यही काल दिङ्नाग का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के जन्मकाल का सही ज्ञान हो जाय। यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिज्ञानक के रूप में विक्रम का उल्लेख। यह कौन सा विक्रम है, इस बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है। प्रचलित परंपरा के अनुसार यह विक्रम संवत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था। यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा। परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जिसे हम विक्रम संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) कहते हैं वह शकों के महायुद्ध के काल के आधार पर बना है। इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में शकों को पराजित किया था। और उस समय ६०० वर्ष पीछे के जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते—तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है।

क्षेमेन्द्र—काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समयमातृका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

जगद्धर—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव और वेणीसंहार पर टीकाएँ लिखीं। यह चौदहवीं शताब्दी के बाद हुआ।

जगन्नाथ पंडित—एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का विवेचन है। उसकी अन्य कृतियाँ हैं—भामिनीविलास, पाँच लहरियाँ (गंगा, पीयूष, सुधा, अमृत, —और करुणा) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा माना जाता है कि यह दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के काल में हुआ। इसने जहाँगीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा १६५८ ई० में दारा का अस्थायी राज्याभिषेकारोहण देखा होगा। अतः इसका जन्म —और कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य—१६२० तथा १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

जयदेव—गीतगोविन्द नामक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता। यह बंगाल के वीरभूमि जिले के किंदुबिल्व नामक गाँव का निवासी था। कहा जाता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसकी एकात्मता डाक्टर बूह्लर ने बंगाल के सेन राजा से की है। इसका शिलालेख विक्रम संवत् ११७३ अर्थात् ११११ ई०

का मिलता है। अत यह कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

दंडिन् यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। माधवाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

पतंजलि—महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

बाराहस्वामी—(मट्टनारायण) वेणीसंहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५–८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण—हर्षचरित, कादंबरी और चंडिकाशतक का विख्यात प्रणेता। पार्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती है। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्यूएन त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६०९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का स्थानान्तिम्न उनका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है परिचायक है।

बिल्हण—महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा चौरपंचाशिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भट्टि—यह श्रीस्वामी का पुत्र था। राजा श्रीधरसेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीस्वामी वलभी में रहा। लैसन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि शतकत्रय और वाक्यपदीय का रचयिता। वेलवलकर महाशय के मतानुसार यह ईसवी सन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परम्परा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमराजा का भाई था। और यदि हम इस विक्रम को वही मानें जिसने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था तो हम समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के दरबार में रहता था। काश्मीर के राजा ललितादित्य (६९३ से ७२९ ई०) ने इसे पराजित किया था। अत भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अत यह काल सुसंगत है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि—किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास—बाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्ती बताया है अत यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

मम्मट काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १२९४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२९४ ई० में जयन्त ने काव्यप्रकाश पर जयन्ती नामक टीका लिखी है।

मयूर—यह बाण का श्वसुर था। इसने अपने कुष्ठ से मुक्ति पाने के लिए सूर्यशतक की रचना की। यह बाण का समकालीन था।

मुरारि—अनर्घराघव नाटक का रचयिता। राजशेखर कवि ने (जो नवीं शताब्दी में हुआ) अपने हरविलास ३८।७ में इसका उल्लेख किया है। अत इसे नवीं शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर बालरामायण बालभारत और विद्धशालभंजिका का रचयिता। यह भवभूति के पश्चात् दसवीं शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह नवमी शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

वराहमिहिर एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद, बृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

विक्रम—देखो कालिदास।

विशाखदत्त. मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल ठीक ठीक मालूम नहीं परन्तु अनुमान सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है

शंकर वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध आचार्य तथा शारीरक भाष्य का प्रणेता। इसके समय के विषय पर इसका अपना वक्तव्य है। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और ३२ वर्ष की थोड़ी आयु में ८२० ई० में परलोकवासी हुआ। परन्तु कुछ विद्वान लोग (जैसे भण्डारकर तथा डाक्टर भट्टाचार्य आदि) यह प्रमाण देते हैं कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ। देखो मुद्राराक्षस की भूमिका देखिये।

श्रीहर्ष—यह नैषधचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ और रचनाएँ भी मिलती

है। इसे प्राय बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विल्सन कहता है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलश के पश्चात् श्रीहर्ष राजगद्दी पर बैठा। अत रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११९ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूपमें इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध हैं। और दशरूप दशवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

कुन्तक वक्रोक्तिजीवित का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अत यह सातवीं शताब्दी के बाद का नहीं। इसने धर्मकीर्ति द्वारा लिखित कौद्धसमति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

परिशिष्ट २

प्राचीन भारतवर्ष के महत्त्वपूर्ण भौगोलिक नाम

अंग गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी चंपा थी, जो अंगपुरी भी कहलाती थी। यह नगर जिलाद्वीप के पश्चिम में लगभग २४ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसी लिए यह या तो वर्तमान भागलपुर था अथवा उसके कहीं अत्यंत निकट स्थित था।

अंध्र—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगण ही माना जाता है। गोदावरी का मुहाना अंध्रों के अधिकार में था। परन्तु इसकी सीमाएँ संभवतः पश्चिम में पूर्व, उत्तर में गोदावरी तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थीं। कलिंग देश इसकी एक सीमा था (देखो दश० ७ वाँ उच्छ्वास)। इसकी राजधानी अंध्रनगर संभवतः प्राचीन वेंगी या वेंगी थी।

अवंति नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवंतिपुरी या अवंति और विशाला (मच्छ० ३०) भी कहते थे। यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदातट तक तथा पश्चिम में माही के तट तक फैला हुआ था। अवंति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती नदी के तट पर स्थित दशपुर थी, यह जो वर्तमान मंदसौर प्रतीत होता है। यह रन्तिदेव की राजधानी थी।

अस्मक त्रावणकोर का पुराना नाम।

आनर्त—देखो सौराष्ट्र।

इन्द्रप्रस्थ—(इन्द्रप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी कहलाता है) इसी नगर का वर्तमान दिल्ली में होना माना जाता है। यह नगर यमुना के बाईं ओर बसा हुआ था जब कि वर्तमान दिल्ली दाईं ओर स्थित है।

उत्कल या ओड्र—एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताम्रलिप्ति के दक्षिण में स्थित है और वैतरणी नदी तक फैला हुआ है—तु० रघु ४।३८। इस प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जगन्नाथ का प्रसिद्ध मंदिर है।

कनखल हरद्वार के निकट एक ग्राम का नाम है। यह शैवालिक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर गंगा के किनारे बसा हुआ है। यहाँ के आसपास का प्रदेश भी कनखल कहलाता है।

कपिशा दे० 'मुंज' का अन्वयन।

कलिंग एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। ब्रिटिश शासन की दूसरी शताब्दी में इसकी एक शाखा स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी कलिंग नगर प्राचीन काल में समुद्रतट पर (तु० दश० ७ वाँ उच्छ्वास) कुछ दूरी पर संभवतः राजमहेंद्री में थी। दे० आंध्र भी।

काची दे० द्रविड़ के अन्वयन।

कामरूप—एक महत्त्वपूर्ण राज्य जो कि राजा या महाराजा के रूप में ऐतिहासिक काल से असम की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होता क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लोहित या ब्रह्मपुत्र नदी के दूसरे ओर प्राग्ज्योतिष थी। तु० रघु० ४।८१।

काम्बोज एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह हिंदूकुश पर्वत के उस प्रदेश पर रहने वाला जहाँ पर वंक्षु या आक्सस नदी का पुराना हरना है, तथा सिंधु और गंधार तक फैला हुआ है। यह प्रदेश घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर बहुत से अच्छे जानवरों को जन्म से शांत भी बनाया जाता था। इसके अधिकतर घोड़े अश्वारोहण के युद्ध बहुत पाये जाते हैं। तु० रघु० ४।७९।

कुतल प्राचीन देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कुंतल के दक्षिण में कदंबवंश के शासकों का एक राज्य इस प्रदेश की राजधानी था। यह पश्चिमी घाट के दक्षिण पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

कुरुक्षेत्र दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यह कौरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह थानेश्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र सरोवर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिण में तथा दृषद्वती के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'समंतपंचक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परशुराम द्वारा वध किये गये क्षत्रियों के रक्त के पाँच पोखर'।

कुलूत एक देश का नाम वर्तमान कुल्लू प्रदेश। यह प्रदेश जलंधर दोआब में उत्तरपूर्व की ओर [illegible] (सतलुज) नदी के दाईं ओर स्थित है।

कुशावती या कुशस्थली यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और विंध्यपर्वत की मकीर्ण घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विंध्यपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुंदेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजशेखर इस कुशस्थली के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुंदेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय सिंधुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

कोंकण—कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि को लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियां हैं वेत्रवती, भरावती तथा कालानदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ६।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से परे तक फैला हुआ है।

कोशल एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'गुप्त' है और यह अयोध्या के उत्तरी प्रदेश का प्रकट करता है जिसमें गुप्त तथा बहराइच सम्मिलित हैं। अज तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने या विंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया और स्वयं उत्तरी कोशल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कौशांबी वत्स देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील की दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कौशिकी एक नदी (कूसी) का नाम जो उत्तरी मालद पुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यशृंग ऋषि का आश्रम था।

गौड़ या पुंड्र - उत्तरी बंगाल। (पुंड्र मुख्यतः मे 'पुरी' के वैदिक प्रदेश को कहते हैं)।

चेदि एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। चेदियों को दाहल और चैपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, यह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्ण कहते हैं। एक समय इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान बुन्देल खण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान चन्देलिन था। जबलपुर से नीचे भेरा घर के आसपास विंध्य और रिक्ष पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नगरी में हैहय या कलचुरी लोग राज्य करते थे।

चोल एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

जनस्थान—(मानव बसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रस्रवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पंचवटी (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

जालन्धर - वर्तमान जलन्धर दोआब। शतद्रु और विपाशा (सतलुज और व्यास) से निर्मित प्रदेश।

ताम्रपर्णी- मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल ताम्बरारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवली जिले में से होती हुई मन्नार की खाड़ी में गिर जाती है तु० रघु० ४।४९-५०, और बा० रा० १०।५६।

तालकिरात दे० 'मुद्गल' के अन्तर्गत।

त्रिगर्त प्राचीन काल का एक अत्यन्त जलहीन मरु प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मरुस्थल था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुधियाना और पटियाला है तथा मरुस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

त्रिपुर-री—चेदि देश की राजधानी 'चन्द्रदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से शब्दायमान' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। जबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान तिवुर को ही त्रिपुर माना जाता है।

दक्षपुर दे० 'अवन्ति' के अन्तर्गत।

दशार्ण- एक देश का नाम जिसमें से दशार्ण (दसन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान भिलसा माना जाता है। यह बेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर स्थित है, तु० मेघ० २४।२५, और दादबरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम आजकल व्यास कहते हैं तथा जो बेतवा में मिल जाती है।

द्रविड कृष्णा और पोन्नर नदियों के मध्यवर्ती अंतरी भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रतट इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि कौशिक

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी काची थी जिसे आजकल काञ्जीवरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेगवती नदी के किनारे स्थित है।

द्वारका—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

त्रिदिव—एक देश का नाम जहाँ तल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूं प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक दर्पपर्वत का नाम भी है।

दंडकवटी—दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल—एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजशेखर के अनुसार (बा० रा० १०।८६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चर्मण्वती (चंबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाद्वार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर-पंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी अहिच्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग दक्षिणपंचाल कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

पद्मपुर—भवभूति कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्दपुर (वर्तमान चाँदा) के निकट कहीं पर बसा हुआ था।

पद्मावती—मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड से इसकी एकरूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियाँ पाश या पार्वती, लवण, और मधुमती हैं जिनका भवभूति ने पाशा लावणी और मधुमती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। भवभूति के मालतीमाधव का वर्णित दृश्य यह नगर है।

पंपा—एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पंपासर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यमूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है, विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलासरोवर से निकला है। यही सम्भवतः मूल पंपा थी, और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यमूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र—गंगा और शोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुसुमपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिक साहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पांड्य—भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश जो चोलदेश के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चित हो चुका है, तु० वा० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान निम्नश्रेणी से एकरूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पाण्ड्यदेश की राजधानी का नाम 'नाग-नगर' बताया है जो सम्भवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपत्तन' ही है, तु० रघु० ६।५९-६४।

पारसीक—पर्शिया देश के रहने वाले लोग। सम्भवतः यह शब्द उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में सीमावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश से 'वनायुदेश्य' नाम से घोड़ों के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र—भारत की एक मुख्य पर्वतशृंखला। सम्भवतः यह वही है जिस हम शिवालिक पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब का रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान—पुरूरवस की राजधानी। पुरूरवा एक प्राचीन काल का चन्द्रवंशी राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के सामने स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के संगम पर स्थित बताया है। तु० विक्रम० ५।

मगध—दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज (या राजगृह) थी। इसमें पाँच पर्वत विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि और वैभार (व्याहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कीकट भी आया है।

मत्स्य या विराट—जोधपुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पाण्डव लोग दक्षार्ण के उत्तर से सौरसेन तथा रोहितक के भूभाग से होते हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। विराट देश की राजधानी सम्भवतः वैराट ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में वैराट के नाम से विख्यात है।

मलय—भारत की सात मुख्य पर्वतश्रेणियों में से एक। इसकी एकरूपता सम्भवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो द्राविड़ कार की पूर्वी सीमा बनाता है। भवभूति के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से घिरा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा रघु० ४।४६)। कहते हैं कि यहाँ इलायची, काली मिर्च, चन्दन और सुपारी के

वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। रघु० ४।५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दर्दुर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो वक्ष स्थल हैं। अब दर्दुर घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र— भारत की सात मुख्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले में इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है जो कि महानदी को गोदावरी से अलग करता है। सम्भवतः इसमें महानदी और गोदावरी का मध्यवर्ती समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदय (कान्यकुब्ज या गाधिनगर) यह वही प्रदेश है जो गंगा के किनारे वर्तमान कन्नौज नाम से विख्यात है। सातवीं शताब्दी में यह नगर भारत का अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान था। तु० बा० रा० १०।८८-८९।

मानस एक सरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था, जिसे आज कल लद्दाख कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरुओं का देश है जिसका नाम हरिवर्ष है। पूर्वकाल में यह सरोवर किन्नरों के आवास के रूप में विख्यात था। कथित्रा की शंका के अनुसार वर्षा ऋतु के आरम्भ में हंस प्रतिवर्ष यहाँ आकर शरण लेते थे।

माहिष्मती द० 'अवंति' के अन्तर्गत।

मिथिला - दे० विदेह के अन्तर्गत।

मुरल दे० 'केरल' के अन्तर्गत।

मेकल अमरकण्टक नाम का पर्वत जहाँ से नर्मदा नदी निकलती है।

लाट- एक देश का नाम जो नर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें सम्भवतः आज बड़ौदा और अहमदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार सौराष्ट्र भी इसी में सम्मिलित था।

वंग (समतट) पूर्वी बंगाल का एक नाम (उत्तरी बंगाल या गौड़ देश से बिल्कुल भिन्न है) इसमें बंगाल का समुद्रतट भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय त्रिपुरा और गारो पहाड़ भी इसमें सम्मिलित थे।

वलभी—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

वाह्लीक, बाहीक पंजाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका देश वर्तमान बलख है। कहते हैं कि ये पंजाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पंजाब की अन्य पाँच नदियाँ सींचती हैं, परन्तु भारत की पुण्य भूमि से यह बाहर था। यह देश घोड़ों और ऊनों के कारण प्रसिद्ध है।

विदर्भ वर्तमान बरार देश। प्राचीन काल में कुंडल के उत्तर में स्थित एक बड़ा राज्य था जो कृष्णा के तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विशालकाय होने के कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था, तु० बा० रा० १०।७४। कुण्डिनपुर जिसे विदर्भ भी कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसीका सम्भवतः आजकल बीदर कहते हैं। विदर्भ देश को वरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है, तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विदिशा—दे० 'दशार्ण' के अन्तर्गत।

विदेह मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधुबनी के उत्तर में नेपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेह के अन्तर्गत, नेपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा सिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विराट—दे० 'मत्स्य'।

वृन्दावन - मथुरा का वन आज कल मथुरा से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बसा हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शाक एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान्त पर बसी हुई थी। संस्कृत के वेद्य साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। मिथियस से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

शुक्तिमान् भारत की सात प्रमुख पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। इसकी सही स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो पाया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नैपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती - उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ, कहते हैं कि लव राज्य किया करता था। तु० १५।९७ में इसीको 'शरावती' का नाम दिया है)। अयोध्या के उत्तर में वर्तमान साहेत साहेत से इसकी एकरूपता मानी जाती है। यह नगर बौद्धकाल में धर्मपुरी भी कहलाता था।

सह्य भारत की सात प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सह्याद्रि है। पश्चिमी घाट जो मलय के उत्तर में नीलगिरि के समय तक फैला है, वही सह्याद्रि है।

सिन्धु - दे० 'पंचनदी' के अन्तर्गत।

सिन्धुदेश. वर्तमान सिंध प्रदेश जो सिन्धु नदी का ऊपरी भाग है।

सुह्म—एक देश का नाम जो वंग के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त (जिसे ताम्रलिप्ति, दामलिप्त ताम्रलिप्तिका तथा तमालिनी भी कहते हैं) की

एकरूपता वर्तमान तमलूक से की जाती है। तमलूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समुद्र के अधिक निकट बसा हुआ था। यहाँ पर ही अधिकांश समुद्री व्यापार किया जाता था। सुह्य लोगों को ही कभी कभी राढ के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सौराष्ट्र—(आनर्त) काठियावाड का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनर्तनगरी या अनिवनगरी कहलाती थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में ७५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रैवतक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ का निकटवर्ती गिरिनार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी कभी प्रनीत होती है। इस नगर के खंडर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्वी नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध सरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

शूरसेन—पाटलिपुत्र से बांदी दूरी पर यह एक नगर तथा जिला था। यमुना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुप' में इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हस्तिनापुर 'हस्तिन' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर को बसाया था। वर्तमान दिल्ली के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकूट 'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत शृंखला में से एक है जो इस महाद्वीप की सात वर्षों (वर्ष पर्वत) में बाटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किंपुरुषवर्ष) की सीमा बनाता है। तु० का० १२६। कालिदास इसके विषय में कहता है "यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में डूबा हुआ है और सुनहरी पानी का स्रोत है" द० श० ७।

अज्ञ [न+ज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित।

अज्ञातकम [अज्ञात+कन्] मन का द्वारा या द्वारों का स्थिति विकार या उपलक्षण ज्ञान—अज्ञात वैकारिक ज्ञान नै० १।१८ पर नारायण।

अज्ञातकम [अज्ञ् कर्म स्वार्थे] मन का दुःख विज्ञान की क्रिया में प्रवर्तक धर्म।

अज्ञातकम (नपु०) आत्म का धर्मी।

अकर्मन् [न० त०] १ कर्म का अभाव अकरण प्रतिषेधरूप सां० सू० १०।८।१० 2 वह कार्य जो विधि से स्वीकृत न हो अकर्म च दुष्कृतिया या आत्मानमवकरोति मै० स० ८।२।२४ पर शा० भा० 3 बाल तथा नख का उतारा करना—मै०स० ६।३ ३ पर शा० भा०।

अकर्मकृत् [वि०] कर्मकर्तृरहित निष्क्रिय।

अकल्पनम न० त० अनुपपत्ति।

अकल्याण कोढ़ रोग के एक भेद का नाम।

अकाण्डताण्डवम अकस्मात् उत्पन्न हलचल (साहित्य के निरूपक प्रदर्शन के लिये प्रयुक्त शब्दावलि)।

अकालज्ञ [वि०] अनुपयुक्त समय पर करने वाला अन्यायकर्ता हि नारीणामकारज्ञा मनोभव रघु० ९।७२।

अकालिकम [अ०+अकाल+कन्] अकालिक तुरन्त का तात्कालिक मृच्छ० ४। २।२०।

अकिञ्चित्कर [वि०] [न० त०] निष्फल नपु० अकृतकिञ्चित्कर जिसने कोई काम नहीं किया हो।

अकृत्रक [वि०] [कृ+क्त, न० त०+स्वार्थे कन्] जो बनाया हुआ न हो स्वाभाविक न नकली या भद्दा प्रकृतिरमणीयत्वादकृत्रकः कुमा० ७।

अकृत्रिम [वि०] [न० त०] प्राकृतिक जो मनुष्यकृत न हो।

अक्क [अक्क कन्] मेढ़ा-मुंह अक्क वेन्मयु विन्देन हिमगा पवन कुबेर।

अक्का (स्त्री०) [अञ्च् कन्+टाप्] (वेद०) रात।

अक्लान्त [वि०] [न० त०] जो थका न हो।

अक्लीबत्व (भा०) पूर्णता, सचाई के साथ।

अक्ष [अक्ष+क] 1 हिड्डाने या पासे की खिलाड़ी 2 मुद्रा फेंकना। समः—हृदय वह लकड़ी जिसमें धुरी लगा रहता है वृक्षकर्मन् अनाज नाप करने के लिए क्षेत्रमिति की क्रिया,—विद् मुद्रा खेलने में निपुण, शलाका पासा,—शालिन्, —शालिक अनाज का अधीक्षक।

अक्षयनीवी (स्त्री०) स्थायी धर्मार्थ दान-निधि (बु०)।

अक्षयभुज् (पु०) [क्षि यत्, न० त०, +भुज्—क्विप्] अग्नि प्रदहेत्स्व हि न राजन् वक्षमक्षय्यभुग्यथा—महा० १३।०।२१।

अक्षि (नपु०) [अक्ष्—क्सि] आंख। समः आमय आंख का रोग आंख दुखना, आवरण (नपु०) नाप, नृ० नयनधर्मन् सर्वज्ञ कारण मज्ञान, प्रत्यक्ष आंख, दूषक आंख का रोगाज्ञानस्त [प्रतिमाविद्या विषयक]। —स्पन्दनम् आंख का फड़कना।

अक्षौरिकम् [न० त०] वह दिन या नक्षत्र जिसे चूड़ाकर्म संस्कार या मुण्डन के लिए अशुभ माना गया है।

अक्ष्णया [वद० अ०] टेढ़े-मेढ़े ढंग से। समः—रज्जु (स्त्री०) कर्णरज्जा शु०,—स्तोमीया इष्टका नामक यज्ञ नै० स०, शं०।

अक्षत [न० त०] उत्तम वैद्य, सिद्ध।

अक्षिलिका (वन०) कारवी नामक वनस्पति।

अगजा [न गच्छति इति अग, तस्मात् जायते अग+जन्+ड] पर्वत की पुत्री, पार्वती अगजाननपद्माकं गजाननमहर्निशं, अनेकदं तं भक्तानामेकदन्तमुपास्महे। समः आदि शिव।

अगच्छः [न० ब०] कबन्ध जिसमें हाथ पैर न हों—अगच्छभूता विबभौ दाशदश्व इव द्रुम रा० ६।६८।१५।

अगति [न० त०] बुरा भाग्य, नृ० अगत्य।

अगद [न० त० गदाभाव] औषधि। समः राज, उत्तम औषधि।

अगदंकर [न० त०] सर्पदंश।

अगाधसत्त्व (वि०) [न० ब०] प्रबल आत्मशक्ति रखने वाला अगाधसत्त्वो मयपद्मशिष्ट —रघु० ६।७१।

अगुल्माक्ष [अगुल्मीभूत—न० त०] अस्तव्यस्त, बिखरी हुई (सेना) गुल्मीभूतमगुल्मं स्म शुक्र० ४।८७०।

अगोत्र (वि०) जिसका कोई गोत्र या उद्गम स्थान न हो—अनवद्येयमयाचितमगोत्रम् मृच्छ० १।१।६।

अग्नि [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग्—नि, इलोपश्च] 1 आग 2 पित्तला नाड़ी—यत्र सोम महाग्निना महा० १४।२०।१० 3 अन्तरिक्ष अग्निर्मूर्धा—मुद्र० २।१।४। समः कुलः काकु,—कूट: लाल शिखा वाला एक जंगली पक्षी, कूर्मम् आकाश, —द्वारम् घर का दरवाजा जो आग्नेय दिशा की ओर हो,—यानम् हवाई जहाज व्योमयान विमान स्यात्तल्लिंगयानं तदेव हि—अ० स०, वेश्मन् 1 एक अध्यापक महा० 2 बाईसवां मुहूर्त,—सावर्णि: एक मनु का नाम,

—भूः स्कन्द, तु० अग्निभू सेनानीरग्निभूर्गुह —अम०,—होत्री (स्त्री०) अग्निहोत्र के लिए उपयुक्त गाय—तामग्निहोत्रीमृषयो जगृहुर्ब्रह्मवादिन —भाग० ८।८।२ ।

अग्न्या तित्तिर नाम का पक्षी ।

अग्रः [अक्त्+रक्, क्लोप] पहाड़ की नोक या अगला भाग – अयसानुषु नितान्तपिशङ्गं - कि० ९।७, अग्रम् समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किंचनाग्र आसीत् - बृ० १।२।१ । सम० आसनम् सम्मान का प्रथम पद,—उत्तमं वस्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे ग्रहण करना, -देवी पटरानी, अयमहिषी, -धान्यम् अनाज, गल्ला, --निरूपणम्, भविष्य कथन, भविष्य वाणी करना, पूर्व निर्णय, --प्रदायिन् जो सबसे पहले देता है—तेषामग्रप्रदायी स्या त्कल्योत्थायी प्रियंवद महा० ५।१३५।३५,—भाग. पूर्वभविता, - फलम् सत्योपयोगी उपकरण,—हार ब्राह्मणों की बस्ती जिसके एक ओर शिव का तथा दूसरी ओर विष्णु का मन्दिर हो, हरे अय हार, हरस्याय हार, हारस्य हारस्य हारो - यस्य स ।

अग्रथा [अग्रे जातं, अग्र+यत् + टाप्] जौ बेले का वृक्ष ।

अग्रन (वि०) [न० त०] जो घना या ठोस न हो ।

अङ्क+अङ्कुश (अङ्काङ्कुश्) [अङ्क् कर्तरि करणे वा अच्, अङ्कै मध्ये अङ्का' शतपथादि चिह्नादि तस्य —ता०] पानी, जल ।

अङ्काङ्कार [अङ्क + कार] सर्वोत्तम योद्धा,—अन्का ङ्कारं विजये तव राम लङ्का वा० रा० आठवीं अंक गौरवर्णशरीरकृतिभेदा जेवाङ्कारे नै० १।१६४ ।

अङ्कित (वि०) [अङ्क - क्त] चिह्नित, छाप लगा हुआ, गणना किया हुआ कमाङ्कित रावणसायकैर्हुतवहेन्धनधूर्ष्टि रघु० १२ ।

अङ्गम् [अम्+गन्] जैन धर्मविलम्बियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ । सम० क्रम वह क्रम या नियमित व्यवस्था जिसके अनुसार कर्मकाण्ड की नाना प्रकार की प्रक्रियायें अपने-अपने महत्त्व के अनुसार सम्पन्न की जाती हैं,—मै० म० ५।१।१४, अम् शरीर -अङ्ग शरीर का वह भाग जो मुद्दा और अवकाश का मध्यवर्ती है, भुजा, हाथ या तलवार का फलका —यदङ्गभूमौ बभवु नै० १६।७२, अन्त्योत्था युक्, ङ्, संहिता शब्द के अन्तर्गत स्वर और व्यञ्जनों का उच्चारणविषयक सम्बन्ध - मै० प्रा०, —पुष्टिः शरीर के अङ्गों का मोटा जाना ।

अङ्गना [अङ्ग+ल+टाप्] त्रिपत्र नामक पौधा जिससे सुगन्धित द्रव्य या अभ्यञ्जन तैयार किए जाते हैं ।

अङ्गार.-रक् [अङ्ग + आरच्] जलता हुआ कोयला । सम० - अवशेषम् कोयला का बुझाने पर रखने से उबर हटाने वाला बेलचा,—कर्करि (री) जलते हुए कोयलों पर पकी मोटी रोटी, बाटी, धारिका अंगीठी, - शुल्क. रक्तकरजवृक्ष, करौंदा ।

अङ्गिरकरणिक. [ष० त०] संभवतः अभिलेखाधिकारी (आजकल के Oath Commissioner) जैसा पद] पदाधिकारी ।

अङ्गिका [अङ्ग+इनि+क+टाप्] चोली, अंगिया ।

अङ्गुलीवेष्ट [अङ्गुलि + वेष्ट्] घञ्] अंगूठी ।

अङ्गो (अ०) क्रोध या शोकद्योतक अव्यय ।

अङ्घरि (नपु०) [अङ्घ् + किन्] 1 पैर 2 किसी भी वस्तु का चतुर्थांश । सम० कवच जूता,-ज शूद्र, - पाल (वि०) पैर का अंगूठा चूमने वाला चरणों में झुकने वाला, टखना, गिट्टे की हड्डी ।

अङ्घ्रिकवर्तिः (नपु०) दीपक के मध्य का उभरा हुआ भाग, दीप दण्ड ।

अचिन्त्य [न० त० चिन्त्+यत्] पागल, पाजी ।

अचोदनम् [न० त० चुद् + णिच् + ल्युट्] अव्यादेश, निदेशाभाव—तदकालज्ञमचोदनप्रयाणं नियममबाधात्—मी० सू० ८।१।२३ ।

अच्छ (अ०) प्राप्ति के भाव का द्योतन करने वाला अव्यय, अच्छशब्दो हि प्राप्तिमात्रार्थे वर्तते मै० सू० १०।१।१ पर शा० भा० ।

अच्युतजल्पकिन् (पु०) अमरकोश के एक टीकाकार का नाम ।

अजमीढ [अजा माद्यं यत्र सिक्ता यत्र ब०] सुहोत्र के एक पुत्र का नाम, यह ऋ० ७।४३ सूक्त का ऋषि हुआ है ।

अजमायाजिन् एक प्रजापति भाग० ४।२०।४८ ।

अजमाय भारतवर्ष का प्राचीन नाम भाग० ११।२।२४ ।

अजरक -कम् [न० ब०] अजीर्ण अपच ।

अजरत्स्थावंवृत्ति [न जरत्स्थावी यत्र, हा + शतृ न० ब०] वह शब्द जो अपने भाव को सुरक्षित रखता हुआ समस्त पद के अर्थ में कुछ वृद्धि करता है ।

अजादि पाणिनि का एक गण ।

अजिनकेशकम्बल पाखण्डी या अधर्मी अध्यापक जिसका बौद्धग्रन्थों में उल्लेख मिलता है ।

अजातशत्रुशास्त्रक्य पालकाप्य प्रतिपादक शास्त्र ।

अजक्रक विश्वामित्र के पुत्र का नाम—वि० पु० ।

अजक्रीडिका [अजक्रीडिन्य कायति वुन् + क, टाप्] बकरी या मेमना झूलने का एक खेल । सम० वेधः एक प्रकार का युद्धकौशल जानक्रजक्रीडिकावेध नाणाकाल्पत पाण्डव महा० ५।१६।२३ ।

अजिन्यक यदु के एक पुत्र का नाम ।

अजिन्सहिषा [अज् का सन्नन्त रूप अज् + सन् + टाप्] खाने की इच्छा भट्टि० ।

अजुष्ट (वि०) [अदुष्ट+अन्+अच्] ऊँचा, उन्नत ।

अतुलकः उत्तेज, बुर्द, --विकल्पवतुरश्रमट्टालकम् -- की० क० १।३।

अतृणाद [अट् + आगम] भूतकाल बोलने के लिए धातु के पूर्व लगाया जाने वाला 'अ' -- वार्तिक १। ३०।६०।४।

अतृष्क हरिण निघ०।

अत्यन्तादि जैनधर्मानुयायी लोगों के लिए बारह सामान्य प्रतिज्ञाएँ।

अत्यन्त वेद० सामरस को छानने की छलनी का छिद्र।

अत्यन्तक [अत् + ड, स्वार्थे कन्] गलाकार छत या मुण्डन-संस्कार में पञ्चकलीभिरण्डकैश्च विभूषित -म० पु० ६९।२०।

अत्यन्तत्वम् [न० ब०] बाहुल्य, अतिरिक्त मात्रा शेषद्वन्द्व-स्यात्यन्तत्वात्---सी० मु० पर शा० भा० ६।४।२०।

अत्यन् (वि०) [न० त०] जो छोटा न हो, बहुत, प्रचुर बोधप्रभावतरंगनुप्रभाव कि० १६।६४।

अत्रयि (वेद०) [अत्र आसिच्] फेरी देने वाला साधु, भिक्षुक---सप्तऽर्थो अत्रयोनो तुरा गृणान मन्ये -ऋ० ८।३।१३।

अत्रस्तिका [अत्र -अत्रच + ङीष् कन + टाप्] पटसन।

अत्रिकल्पम् (अ०) प्रभातकाल बहुत सवेरे नात्रिकल्प नात्रिभाय नात्रिमध्यन्दिने स्थिते। गच्छेत्...मनु० ८।१४०।

अत्रिकक्ष (वि०) [अतिक्रान्त कक्षाम् अव्या० स०] कोड़े की मार को भी न मानने वाला, उच्छृंखल।

अत्रिकामक [प्रा० स०] कुत्ता।

अतिकामता [अति कम् कन + टाप्] स्त्री के कामोन्माद से हटा अवस्था अतिकान्तकामः राजपतिरिव स्यादकल्प अगम्यं हन्त गर्भाभिलाषि कोधकलुष -पा० सी० ९।१७।

अतिकान्ति [अति + कम् + क्तिन्] सीमा के बाहर निकल जाना, उल्लंघन।

अतिगाहकम् [प्रा० स०] चौबारा, बियानी, भूमिगृहाश्चैव गहान गृहातिगृहकानपि रा० ५।१२।१५।

अतिजित (वि०) [प्रा० स०] पूर्णतया पराजित लोक अतिजित कृत्वा - रा० ३।७०।५।

अतिधेनु (वि०) [अतिरिक्ता धेनवो यस्य ब० स०] जो बढ़िया से बढ़िया गौओं का स्वामी है।

अतिनामन् (पु० बा) छठे मन्वन्तर के सप्तर्षि समुदाय के एक ऋषि का नाम।

अतिपात [अति + पत् + घञ्] ध्वंस, विनाश।

अतिपातित [अति + पत् + णिच् + क्त] 1 स्थापित, विलम्बित 2 पूर्णतः टूटा हुआ।

अतिपातुक (वि०) अतिक्रमणकारी, बढ़कर रहेसीमालक्ष्मी करेरतिपातुकै ---नै० १९।५।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक घनिष्ठता - लो० अतिपरिचयादवज्ञा।

अतिपक्षु [प्रा० स०] 1 असाधारण रूप से बड़ी भुजाओं वाला 2 चौदहवें मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम 3 एक गन्धर्व का नाम।

अतिपक्षुम् [प्रा० स०] प्रतिमा विद्या की दृष्टि से मूर्ति में दो सौ बत्तीस अंगुल या माप मानस० ६।७०-६।

अतिपात (वि०) [प्रा० स०] बहुत तेज चलने वाला -- महा० ३।२०१।१०।

अतिपाप [अत्या० स०] अत्यधिक उत्साह।

अतिपेक [अत्या० स०] 1 आधिक्य 2 बाहुल्य 3 अन्तर -- महा० ३।५२।३।

अतिपेचक एक पौधा जिसका सेवन बहुत दस्तावर होता है।

अतिपोष क्षय रोग, तपेदिक।

अतिक्रमणम् [अत्या० स०] क्षम्य अपराध दण्डानिवर्तनेनाऽऽहु मनु० ८।३१०।

अतिविधिस्थ (वि०) [अत्या० स०] 1 बहादुर पाठा विलम्बानविधिष्ठान् रा० ४।१८।३८ 2 सीमा का उल्लंघन करने वाला महा० ३।२१५।१६।

अतिविशाल (वि०) [अत्या० स०] चुभने वाले, क्रूरक, कठोर आदनायिभिरुत्सृष्टा क्षिप्ता वाचोऽतिवैशसा भाग० ३।१९।२१।

अतिसृष्टि [अति + सृज् + क्तिन्] उत्कृष्ट रचना।

अतस [न० त०] खोसी निघ०।

अतक [अत् + कन्] घर का एक कोना, दे० अक्क।

अत्यन्त + अपह्नव [अत्यन्त + अप् + ह्नु + अप्] बिल्कुल मुकर जाना, पूर्ण विरोध या निराकरण।

अत्यन्त - साहचरित (वि०) निश्चित रूप से साथ जाने वाला -- पा० ८।१।१५ वार्तिक।

अत्यन्तशील (वि०) [अत्यन्त + शक्] 1 अत्यन्त गमनशील 2 टिकाऊपन।

अत्यर्थ-वेदन [अतिक्रान्त अर्थम् विद + णिच् + ल्युट्] हाथियों का एक भेद जो बहुत ही संवेदनशील होता है जरा से दण्ड को भी नहीं भूलता, प्राजनाङ्कुशदण्डेभ्यो दूरादुद्विजते हि य, स्पष्टा का व्यक्तेऽप्यर्थ स गजोऽत्यर्थवेदन —मातङ्ग० ८।१९।

अत्यस्त (वि०) [अति + अस् + क्त] फेंका हुआ, चलाया हुआ, दूर परे उछाला हुआ—पा० २।१।२४ तरङ्गायितमत्यस्त कादम्बिका।

अत्याश्रम [अति + आ + श्रम् + घञ्] संन्यास, वैराग्य।

अत्याहारयशील (वि०) [अति + आ + हृ + णिच् + शानच्] बलपूर्वक ग्रहण करने वाला लोभाविष्टस्त्वात्युपर्ध्यमत्याहारयशील कौ० अ० १।

अत्रपु (वि०) [न० त०] टीन का बना हुआ, कलईदार।

अत्रिजात (वि०) [अद्+त्रिन्, जन्+क्त] तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनुष्य, द्विज।

अत्री अत्रि की पत्नी। सम०—**चतुरहः** एक यज्ञ का नाम। —**जात** 1 चन्द्रमा 2 दत्तात्रेय 3 दुर्वासा, भारद्वाजिका अत्रि वंशिया का भारद्वाजवंशिया के साथ वैवाहिक सम्बन्ध।

अत्वक्क (वि०) [न० ब०] त्वचारहित, जिस पर खाल न हो।

अथ (अ०) [अथ+क, पृषो० रलोप] मङ्गल सूचक अव्यय जो प्रायः रचनाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है। सम० **अतः** (अथातः) इसलिए, अब इसके पश्चात् अथाता धर्मजिज्ञासा मनु० १।१।१ **किम्** और कितना, और इतना,—तु परन्तु इसके विपरीत।

अदर्शनम् [दृश्+ल्युट्, न० त०] भ्रम, माया, अदृश्यता अदर्शनादापतितां पुनस्तादर्शने गता महा० १२। २।१३।

अदसीय (वि०) [अदस्+छ] इसमें या उसमें सम्बन्ध रखने वाला।

अदुपध (वि०) [अत्+उपध न० ब०] वह शब्द जिसकी उपधा (अन्तिम से पूर्ववर्ती) में अ न हो।

अदृष्टकल्पना किसी अज्ञात पदार्थ या विचार की कल्पना करना।

अद्भुत (वि०) [अद् भू+क्विप् च] 1 आश्चर्य जनक 2 ऊंचाई की माप के पास अङ्क में से एक जहां कि ऊंचाई, चौड़ाई से दुगुनी हो जाती है तु तृय तद् द्विगुण चतुर्भुज क्षेत्रफलम्—लीला० १२।८।१। सम० **रामायण** वाल्मीकि द्वारा रचित एक ग्रन्थ **शान्ति** (स्त्री०) 1 अथर्ववेद का ६७ वां परिशिष्ट 2 पुराणों में वर्णित एक व्रत का नाम।

अद्रिकटकम् [अद्रि+क्विप् कट् कन्] पर्वतश्रेणी।

अदृश्य (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य।

अद्वारायङ्ग [न० त०] दरवाजे पर अन्दर जाने वालों की पंक्ति का न होना - कार्यार्थिनामद्वारायङ्गं कार्यम् —कौ० अ० १।२१।२६।

अद्वेध (वि०) [न० ब०] अविभक्त, अमङ्गलकारक।

अधाम (वि०) [अध् अम, अधन अम वस्य धश्च] जो फल नहीं लगता, फलता नहीं बढ़ाता अधमं कुर्वन्ति सुते अधमस्थात्मानमेवापि लीला०।

अधःकण्टक एक कांटेदार पौधा, धमासा।

अधःशेय (अधीवेद) एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना।

अधिकरणम् [अधि, कृ+ल्युट्] 1 वह स्थान जहां बहुत लोग एकत्र हों, सभा १२।६०,५८ 2 विभाग महा० १२।६०,५८। सम०—**लेखक** (वि०) अधिलेखाधिकारी जो क्रयपत्र तथा अन्य दस्तावेज अपना देखरेख में तैयार कराता है नारद।

अधिगम [अधि+गम्+घञ्] जानकारी का समाचार अपनेत्यादि सल्लाप नवाधिगमप्रसन्नान राज० ५।३५।७७।

अधिपुष्पलिका खदिर का वृक्ष, खैर।

अधिमख [अधि+मख यत्र] यज्ञ की अधिष्ठात्री देवता।

अधिमुक्तक [अधि मुच्+क्त] मालती का एक प्रकार, चमेली।

अधिमुक्तिका [अधि+मुच्+क्तिन् स्वार्थे कन्] वह सीपी जिसमें मोती रहता है।

अधिरोध [अधि+रुध्+घञ्] दाम्पत्यसम्बन्ध करना।

अधिकथित (वि०) [अधि रूप्+क्त] भूगर्भशास्त्र लेख में अभ्यस्त सहस्राधिकथितपाठ्यग्रन्थलेखम्—वि० १०।४६।

अधिवास [अधि वस् घञ्] जन्मभूमि, जन्मस्थान महा० १०।३६।१९।

अधिष्ठानम् [अधि स्था ल्युट्] 1 अवस्था, आधार 2 नाम अभिशोणामधिष्ठानाद्वधाद् दुर्योधनस्य च महा० ९।६१।१४। सम० **अधिकरणम्** नगर-निगम, नगरपालिका का कार्यालय।

अधोविलम्ब हाथी के कामोन्माद की 9 वीं में तीसरी अवस्था मातं० १।१।१४।

अध्यायनम् [अधि-इ+ल्युट्] शिक्षा देना, अध्यापन करना कृत्वा वाक्यायनं तथा शिष्याणां शतमन्वयम् महा० १२।३४८।१७।

अध्यर्धशिल (वि०) [अध्यर्ध-सा-अच्, न० त्रि०] किसी वस्तु के पास-पड़ोस किसी एक ही स्थान पर अवस्थित हो जाने वाला महा० १३।६४।६।

अध्यासित (वि०) [अधि आस क्विप् क्त] बैठा हुआ, रमा हुआ।

अध्युषित (वि०) [अधि-वस्+क्त] ठहरा हुआ, रहा हुआ, अधिकार किया हुआ।

अध्यूढ [अधि+वह्+क्त] विवाह में पूर्व ग्रहण की हुई का पुत्र अध्यूढश्च भार्यायां महा० १३।४९।४।

अध्वर्युत्वम् अध्वर्यु नामक ऋत्विजा के लिए अभिप्रेत कर्मों का समूह।

अनक्ष (वि०) (बहु०) अन्धा।

अनघ (वि०)[न० त०] अन्धक, बिना आंख का हुआ—भाग० २।७।३२। सम० **अष्टमी** एक व्रत का नाम—भ० पु० ५५।

अनङ्ग [न० ब०] 1 वायु 2 भूत, पिशाच 3 गन्धराई, तु० अनङ्गे मन्मथे वायौ पिशाचच्छायपोरपि।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तरं व्यवधानं, मध्यं, अवकाशो

यस्य] सीधा, साक्षात् अथवा अनन्तरकृत किञ्चिदेव निदर्शनम् महा० १२।३०५।१० ।

अनन्य (वि०) [नास्ति अन्य विषयो यस्य] जो किसी और के साथ भाग न ले रहा हो, निर्विरोध—अनन्या पृथिवी अमरे सर्वभूतहिते रत - कौ० अ० ।

अनपगं (वि०) [न० ब०] स्थिर, दृढ ।

अनपवृक्त (वि०) जो रोगा हुआ न हो अव्यक्त न हृषुगनमनावृत्त सच्छास्त्रमुपेनुम—मै० स० १।१।१२ पर शा० भा० ।

अनपायं (वि०) [न० ब०] यथार्थ कारण से युक्त, न्याय्य, उचित ।

अनभिधानम् [न० त०] 1 अभीप्सित अर्थ का अप्रकाशन 2 व्याकरणसम्मत शब्द जो प्रयोग में न आता हो ।

अनभिवादक [न० त०] विरोध करने वाला प्रतिवादी —न खल्व भवानस्मत्सकाशानभिवादक आवि० १ ।

अनभ्यस्वर (वि०) [न० ब०] अपरिचित, अनजान, अनभ्यस्त—अनभ्यस्तरे स्वस्वामी मदनमनभ्य वृत्तान्तम्य —शृ० ३ ।

अनराल (वि०) [न० ब०] सीधा, अवक्र अन्तर्लोहादनराललनलिनीपत्रायतपत्र घृतम् उत्त० ३।१६ ।

अनल [नास्ति अल पर्याप्तिर्यस्य, अनान् प्राणान् लाति आत्मसात् करोति वा] क्रोध, कर्मणा मुद्दं सवलदानलदा कि० ५।२५ । सम०—आत्मज स्कन्द ।

अनवकाशिक [न० ब०] एक पैर से खड़ा होकर कठोर तपस्या करने वाला गात्रशय्या अनवकाशश्च तपोधनावकाशिका रा० ३।६।३ ।

अनवकल्पना (स्त्री०) [अनव - कल्प् + युच्] असभावना अविश्वसनीयता ।

अनवगीत (वि०) [न० ब०] निरपराध निर्दोष—प्रकृत्या कल्याणी प्रतिजनवगीत परिचय उत्त० २।२ ।

अनवद्याङ्गी (स्त्री०) [न० ब०] वह स्त्री जिसके शरीर के अङ्गों में कोई दोष या त्रुटि न हो, अत दवी का विशेषण ।

अनवद्यराग [न० त०] एक प्रकार का रत्न कौ० अ० २।११ ।

अनवर (वि०) [न० ब०] जो अधम न हो, जो घटिया न हो ।

अनवहवादिन् (वि०) [अन् अवहाद + णिनि] अनभिमानी, जो गर्व न करता हो ।

अनाकन्द (वि०) पीड़ा से पागल या अत्यन्त व्याकुल दृष्टि लोकमनाकन्द मोहणाकर्षणिष्ठुरम् महा० १२।३३१।२५ ।

अनाघ्रात (वि०) [अन् + आ - घ्रा + क्त] न सूंघा हुआ जो हाथ से न छुआ गया हो अनाघ्रात पुष्प किसलयमलून कररुहै रा० १ ।

अनाचर (वि०) [न० ब०] नये सिर वाला, जिसके सिर पर पगड़ी या टोपी कुछ भी न हो ।

अनारम्भ: [न० त०] शुरू न करना, आरम्भ न होना ।

अनार्यता [न० त०] अनुपयुक्तता अप्रायता ।

अनाख्याय (वि०) जो किसी नई वस्तु का अविष्करण नहीं करता है ।

अनाश्वास (वि०) [न० ब०] जिस पर विश्वास न किया जा सके कथमस्मिन्ननाश्वासे धृतधृश्रात्मना नवान् भाग० १।१८।२६ ।

अनाश्वासम् (अ०) बिना सांस लिए, बिना आराम किये ।

अनास्था स्त्री० [अन् आ स्था + टाप्] अप्रतिष्ठा 2 अराम का न होना धैर्य का अभाव—मै० १।८८ पर ना० भा० ।

अनिद (वि०) जो देखा या समझा न जा सके—उन्मिषदूरु पुरुष यदूत्तमनिद यथा भाग० १०।२।४८ ।

अनिमित्तम् (कि० वि०) जो ज्ञान का वैध साधन न हो, अनिमित्त विद्यमानायामप्यभावात् मै० स० १।१।५।

अनिमेष [अ - नि - मिष् घञ्] मनि क्रिया का विशिष्ट प्रकार, मैथुन का विशिष्ट आसन ।

अनिरिण (वि०) [अन् + इर् इनन् ह्रस्व] जहां किसी प्रकार की उथल-पुथल या ऊंच-नीच न हो —तस्मिन् देशे स्थनिरिणे ते तु यत्नमराचयन् महा० ७।५५।१८ ।

अनिर्वचनम् [न० त०] चुप रहना और मन न डालना मी० सू० १०।८।५२ पर शा० भा० ।

अनिलभाजक एक प्रकार का रथ (आकार की दृष्टि से रथ सात प्रकार—नभस्वत् प्रभञ्जन निवात, पवत परिपत्, इन्द्रक और अनिल के लिये गये हैं मान० ४३।११२-५ ।

अनिलस्तम्भनादि ध्यान का एक विशेष प्रकार य० ।

अनिविष्ट (वि०) [अ - नि विश् क्त] अविवाहित कलत्र स्वयमनिविष्ट अवि० १ ।

अनिष्ठुर (वि०) जो कठोर न हो, या क्रूर न हो ।

अनिपुण (वि०) जो निपुण न हो, कुशल न हो ।

अनिलसं (वि०) अप्राकृतिक ।

अनीकस्थानम् [ष० त०] सैनिक चौकी कौ० अ० २।३।

अनीर्षिमत् (वि०) [अन् + आप् + मत् - क्त] अवाछित, अनचाहा ।

अनीर्षु (वि०) [अन् — ईर्ष् - उण् ईर्षा] जो ईर्षालु न हो, जो डाह न करे भृत्यपुत्रा भृत्यामात्या भृत्यराष्ट्रानीर्षव महा० १२।२३१ ।

अनीह (वि०) [अन् + ईह् + अच्] जो प्रयत्नशील न हो, आलसी ।

अनूपकच्छम् [प्रा० स०] कच्छ या दलदली भूमि के साथ-साथ आविर्भूतप्रथममुकुरा वन्दलीपल्वलानूपकच्छम् मेघ० १।२१ ।

अनुकल्पम् [अनुकल्प्+अच्] 1 घटिया स्थानापति, –ध्वनिभिर्वर्णैरनुकल्पैर्व्यंजनादयन्–नै० १७।१२ 2 समान, एक जैसा ददर्शनु क्षममम्बुधीन् क्षणादनुकल्पाश्चित-चण्डपर्यावकम् यादव०।

अनुकूलित (वि०) [अनुकूल+इतच्] जिसका स्वागत सत्कार होता है, सम्मानित–मन्त्रिणा नैगमाश्चैव यथा-न्यायमनुकूलिता – रा० ७।७८।६।

अनुक्रम [अनु–क्रम् घञ्] दैनिक व्यायाम अश्वान् स्थान्यनुक्रम महा० १।१।२६३।

अनुक्षणम् (अ०) हर क्षण, प्रतिक्षण।

अनुगीता (स्त्री०) महाभारत के चौदहवें पर्व का एक अंश।

अनुग्रहण (स्त्री०) लम्बाई की ओर से मरोड़ना, रगड़ना।

अनुचर [अनु चर्–अच्] सेवक, अनुचर।

अनुज्ञात (वि०) [अनु+ज्ञा–क्त] शिक्षित, शिक्षाप्राप्त –शिष्याणामखिल कुर्व्वन्मनुज्ञात समग्रहम् महा० १२।३१८।२८।

अनुत्कट (वि०) [अन् उद्–कटच्] छोटा, थोड़ा।

अनुत्साल [अन्–उद्–तल्–घञ्] मधुर स्वर, रसीला गान।

अनुदिशम् (अ०) [प्रा० स०] प्रत्येक दिशा में।

अनुदृष्ट् (वि०) [अनु दृश्–तृच्] हितैषी अनुमुपुरनु-दृष्टा मरुत्तस्य पुरोहिता रा० ३।१००।११।

अनुद्य (वि०) [अन् –वद्+ण्यत्] अनुच्चारणीय पा० ३।१।१०१ सि०।

अनुद्भूषित (वि०) (वेद०) खुशामद से फूला हुआ उद्धत।

अनुनायनम् [अनु+नाय् ल्युट्] प्रार्थना, याचना, अनु नय यवाभ्यामनुनायने मिथ – नै० २।६४।

अनुनिशीथम् (अ०) आधी रात के समय।

अनुनेय (वि०) [अनु नी यत्] अनुसरणीय, अनुपालनीय।

अनुपस्कृत (वि०) [अनु उप कृ क्त, सुडागम] [अपनी बुद्धिमत्ता से कोई सन्देह न किया जा सके तस्मात्स्वयमप्रमाण्याय सुकृत सत्यकादिन। लोकस्य गुरवो भूत्वा ते भवन्त्यनुपस्कृता – महा० १२।१२।८५ 2 स्वार्थ का दूर रखने वाला देह-यात्रानुपस्कृत मनु० २।६२।

अनुपालय [अनु उप+इ अच्] किसी व्यवस्था का अनुपालन करना, अपनी ओर से अपना कार्य करना।

अनुपाल [अनु+पाल्+अच्] (घोड़े आदि पशुओं का) रक्षक, पालक।

अनुप्रकीर्ण (वि०) [अनुप्र+कृ+क्त] पूर्णतः व्यस्त, आच्छादित सोत्कर्षैरमरगणैरनुप्रकीर्णान्–कि० ७। २।

अनुप्रभव [अनुप्र+भू+अप्] जन्म-मरण का चक्र।

अनुप्रवण (वि०) [अनु+प्र+ल्युट्] रुचिकर, सुहावना –कौतूहलानुप्रवणा हृतं जलयनीव मे–महा० १२।३७।३।

अनुप्रहित (वि०) [अनु+प्र–धा+क्त] निर्देशित, नियत प्रियैषिणानुप्रहिता शिवेन–कि० १७।३३।

अनुभाजित (वि०) [अनु+भज्+णिच् क्त] पूजा किया गया।

अनुभू (स्वा०) (वेद०) अनुकूल आचरण करना।

अनुभावित (वि०) [अनु+भू+णिच्+क्त] अनुभवशील प्रदर्शित।

अनुभर्तृ (पु०) [अनु+भृ+तृच्] भरण पोषण करने वाला, पालन पोषण करने वाला।

अनुमन्त्रित (वि०) [अनु मन्त्र्+क्त] सत्कार किया गया, विनियुक्त।

अनुमात्रा (स्त्री०) प्रस्ताव, संकल्प।

अनुयुज् (रुधा०) प्रार्थना करना, याचना करना–आतरार्ष्ट्र महामात्य स्वयं समनुयुक्तः समझे महा० ५।७२।३।

अनुयुञ्जक (वि०) [अनुयुज्+ण्वुल्] पूर्यालु, डाह करने वाला।

अनुराद्ध (वि०) [अनु राध्+क्त] सम्पन्न, अर्जित।

अनुरुद्ध (वि०) [अनु–रुध्+क्त] 1 रोका हुआ। 2 विरुद्ध 3 शान्त किया हुआ सान्त्वना दिया हुआ।

अनुलोमय (वि०) [अनुगतं लोमं यस्य ब] सीधा जाने वाला, सीधा चलने वाला।

अनुवाक [अनुच्यते इति, कर्म घञ्, कुत्वम्] वाङ्मय ग्रन्थों का एक अध्याय या प्रभाग।

अनुविधेय [अनु वि धा+यत्, अत्, पत्वम्] वशंवदा।

अनुवृत्त [अनु वृत्+क्त] (क्रिया के रूप में प्रयुक्त) सेवा करना पूजा करना सुतं पैतामहवदनुवृत्त–रा० ७।१०।८।

अनुशासना (स्त्री०) दण्डस्वरूप छोटा कमरा।

अनुशिष्ट (वि०) [अनु–शास्+क्त] 1 सुप्रशिक्षित तस्यात्मा पुरुषमनुशिष्टं साधयत्यहु कृ० १।५।१७ 2 पूजा गया इति ह्यनुशिष्टस्तु खाद मन्दमदोरगम रा० ६।२७।८ 3 आदिष्ट, निर्दिष्ट अभिशिष्टो-ऽनुशासः प्राप्तो गुरुभ्यश्च महाभागो –रा० १।२६।३।

अनुशायिन् (वि०) [अनु शी+णिच् इनि] साथ-साथ फैला हुआ।

अनुशासिक (वि०) [अनु (शास्+अप्) स्वार्थे ठक] आज्ञा से संचालित किया हुआ पा० प्रा० ४।१।८।

अनुसदृश (वि०) [प्रा० स०] (वेद०) जो सत्य के अनुकूल हो सके।

अनुसमय [अनु+सम्+इ+अच्] भिन्न-भिन्न व्यक्ति या प्रयुक्त के अनुसार भिन्न-भिन्न व्यवहार करना। इसके तीन प्रकार हैं – पदार्थानुसमय, कालानुसमय और समुदायानुसमय।

अनुसंधानम् [अनु+सम्+धा+ल्युट्] गवेषणा, खोज।
अनुसधि [अनु+सम्+धा+कि] पूछ ताछ—नै० २।१२९।
अनुसन्धृति [अनु+सम्+सृ+क्तिन्] जन्म मरण की आवृत्ति।
अनुसरणा (स्त्री०) अनुगमन करना, अनुसरण करना।
अनुसरणी (स्त्री०) मंत्री प्रथा।
अनुसृत (वि०) [अनु+सृ+क्त] 1. अनुगत 2 चूने वाला, टपटप गिरने वाला—ऋतादिव सानुसृतामृतस्कोम् रा० ५।५।२५।
अनूचानम् (वेद०) [अनु+उच् समवाये+कानिन् कुत्वम्, नत्व] वेद की हड्डी कशेरुकीय, मेरुदण्ड।
अनूषस् (स्वा०) बाद ला देना, भर देना अनूषयामास विदर्भेष्वाश्रमौ नै० १२।६९।
अनेकपद (वि०) [न० त०] अनेक अवयवों से युक्त बहुत से अवयवों से बना हुआ।
अन्त [अम्+तन्] अन्तिम अंश, अवसान अंश नेऽन्तया कार्यायन्याऽन्त करवार्धानि ऋ० २।४।१। सम० ओष्ठ, अधरोष्ठ, निचला होठ, चक्षस् शकुन, तथा भविष्यसूचक भाव का जानना कौ० अ०, —परिधानम् वस्त्र के ऊपर कपड़े आदि की परत रखना।
अन्तवान् (पु०) [अन्त+मतुप्, मस्य वत्वम्] दिशाओं का स्वामी (दिक्पालानामीश्वरः) महा० ३।१९७।१५।
अन्तर् (अ०) [अम+अन्द, नुडागमश्च] (इसका प्रयोग धातुओं के साथ उपसर्ग की भाँति होता है और इसे गति माना जाता है) अन्दर, में, भीतर। सम० -अङ्गम् (अन्तरङ्गम्) जो अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध रखता है या जिससे दूसरी सबध न होकर घनिष्ठ सबध रहता है अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्ग बलीय —नै० स० १२।२।२९ पर शा० भा०—न्यायः इस न्याय के अनुसार जब एक बात के भीतर दूसरी बात छिपी रहती है जैसे गर्भाधय में गर्भ, तब इसका प्रयोग होता है—दी० सू० १०।३।६२ पर शा० भा०, —आत्मकः जो अपने हाथों को घुटनों के बीच में रख कर सोता है—अन्नजातिषया यस्तु भुञ्जते सकलाशन —महा० ३।५००।७५, —दृष्ट (वि०) जिसकी दृष्टि अन्दर की ओर होती है—अन्तर्मुखा मतमभा-स्थिधो महान्त —विक्र० १३९, —वैशिक अन्त पुर का अधिकारी—समुद्रमूषकरसमन्तर्वैशिक हस्ता-दादाय परिचरेयु:- कौ० अ० १।२१।
अन्तरङ्ग [अन्तं राति ददाति-रा+क] स्तम्भतल का अङ्गमूल (आधार) से सन्धान करना।
अन्तारः [अन्त+ऋ+अच्] गड़रिया, गोपाल ह० चि०।
अन्धः [अन्ध+अच्] 1 जिसे आँखों से दिखाई न दे, अधा —अन्ध सूचान्धोष्यसी विश्व १०१ 2 अस्पष्ट, धुधला निःशब्दमान्ध इवादर्शनेऽवस्थाना न प्रकाशते रा० ३।१६।१३।
अन्धंभट्टः तर्कसंग्रह नामक ग्रन्थ के रचयिता का नाम।
अन्नाद (वि०) [अन्नमत्तीति अद्+अच्] अन्न के खाने वाला- अन्नमन्नाद नै० १।७।
अन्य (वि०) [अन् अन्यादि० य] दूसरा, और, भिन्न। सम०—अन्य (वि०) आपसी पारस्परिक दे० अन्योन्य, अपदेशः किसी और के बहाने अप्रत्यक्ष उक्ति।
अन्यतः [अन्य+तस्] शस्या, साका, मंच, ऊँचा आसन मालवि० १६।४३।
अन्वर्थसंज्ञक [अन्+अर्थ+नामन्] जिसका नाम उसके अपने चरित्र के अनुसार यथार्थ है यथा नाम तथा गुण वाला।
अन्वारभ् (अन्+आ+रभ्) (स्वा० आ०) (वेद०) अनुरञ्जन करना, अनुकूल करना, प्रसन्न करना—अग्नि-मन्वारभामहे।
अन्वाहार्य (वि०) [अन्+आ+हृ+णिच्+यत्] जो क्रिया बाद में की जाय।
अन्वयव्यक्षित: [ष० त०] नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति, अधम, आछा लक्ष्मी प्राप्येवान्वयव्यक्षित रा०।
अन्वयायिन् (वि०) अपना वशज, सन्तान।
अन्वित (वि०) [अन्+इ+क्त] युक्त, योग्य सपन्ना चान्वितो वेद रा० ५।३३।१३।
आन्वीक्षिक (वि०) [अन्+ईक्षा+ठक्] हितैषी, बुरा भला देखने वाला- प्रजान्वीक्षिकया बुद्धया श्रेयो हृदस्य चिन्तयन् - रा० ७।२।४।
अन्विष्टम् (अपापितम्) अग्नि, आग।
अप (उप०) [न पाति रक्षति पतनात् पा+ड] धातुओं से पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है अर्थ होता है, ह्रास, कमी, विकृति, विरोध अभाव आदि। सम० —अङ्क: अन्त, समाप्ति, अस्त (वि०) परित्यक्त, दूर फेंका हुआ,—आवीर्य (वि०) दूर फेंका हुआ, अस्वीकृत,—कीर्ति: बदनामी, कलंक, कोच (वि०) आच्छादन रहित, म्यान से पृथक् की हुई कोई वस्तु, —दीक्ष (वि०) 1 जिसे किसी भाष्य या टीका की सहायता प्राप्त न हो 2. (अ+पटीक) जिस पर कोई ढकना या पदार्थ न हो, दृष्ट (वि०) आलोर या समझौते न लाया हुआ (अस्त) — तथा न्यायदृष्ट धार्य न चापदण्डमेव च महा० १३।२०४।८६, अप्य् [अप+इ+स्युट्] वह आख्यायिका जिसमें भूत और भावी अन्यों का वर्णन हो, देखः मय, अतरा —अपदेशः पदे लक्ष्ये स्वात्मसिद्धिनिमित्तयो। औदार्य धीर्यमैत्रेयु नि:सीमव्यपदेशयोः— नाना०,— हस्त् झुक कर जानना, दौड़ना—रा० ६।४०।२५, अक्ष: अने-

चिन्तना, दुष्टाचरण,—नयः अन्याय, अनुचित व्यवहार—श्रुण राजन् स्थिरो भूत्वा तवापनयनो महान्—महा० ६।४१।२२, नी (स्वा०) दुर्व्यवहार करना शत्रौ हि साहसं यत्किमिवाप्यनीयते रा० ६।६०।१०, लीन (वि०) गुप्त, छिपा हुआ औपसादमभयादपलीनम—कि० ९।११, —वत्स (वि०) बिना बछड़े का वत्सम् (ना० धा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा कि बिना बछड़े वाले के साथ किया जाता है, (न बहुत प्यार न निर्दयता), वर अन्दर का कमरा, सुरक्षित कक्ष नै० १।१८ महा० १२।१३९–४०, —वर्म अवमाल, अन्त वस्त्रित (वि०) निलम्बित, लटकाया हुआ शङ्क जो सड़ा न हो, द्विज, —च्छद (वि०) [अप स्या + कृ] गलत, त्रुटिपूर्ण अपरे पलित पाठमधिगाहि शङ्कय ने नै० १७।९६, —सृज् (तुदा०) छोड़ना, त्यागना स्वान्त अज्ञातवास, आर्या, हार समूह, अवलि।

अपराक् (अ०) 1 के सामने 2 पश्चिम की ओर।

अपरान्त [न० ब०] द्वीप वासी।

अपरापरम् (अ०) [अपर + अपर] आगे और आगे फिर।

अपाठ्य (वि०) [न० त०] जो पढ़ा न जा सके।

अपाणिग्रहण [न० त०] ब्रह्मचर्य।

अपादानम् [अप् + आ + दा + ल्युट्] स्रोत कारण नै० २०।१४१।

अपारद्वार (वि०) [न० ब०] असीम अपारकारुण्यमहार्ण्य मामभीयान्मायारोषम रा० २।३८।६०।

अपिनद्ध (वि०) [अपि नह् + क्त] बन्द, ढका हुआ गुप्त।

अपिपरिक्लिष्ट (वि०) [अपि परि + क्लिश् + क्त] अत्यन्त उत्पीड़ित, तंग किया हुआ।

अपिस्विन् (अ०) प्रश्नसूचक अव्यय।

अपीत (वि०) [अपि + इ + क्त] 1 विलीन, अन्तर्धान —लोकानपीतानुद दृशे स्वदेहे—भाग० ३।८।१२ 2 मृत।

अपूर्ति: (स्त्री०) [अ + पृ + क्तिन्] कार्य का पूरा न करना।

अपूर्विन् (वि०) (पुं०) जिसने विवाहित जीवन का अपनी पत्नी के साथ इससे पहले उपभोग न किया हो अपूर्वी भार्यया चार्थी वरुण —रा० ३।१८।४।

अपृथक्त्विन् (वि०) जो पुरुष और प्रकृति के भेद को नहीं समझता "पृथक्त्व पुरुषकृत्योर्विवेक, तदन्यास्तीति पृथक्त्वी, तदन्यस्य" नील०, वर्णाश्रमसपृथक्त्वे च दृष्टार्थस्यापृथक्त्विन महा० १२।३०८।१७७।

अपेहि (अप + एहि √इ लोट्, म० ए०) दूर हो, जाओ —अस्मत्पाप्मापेहि मार्गात्—नारा०।

अपोहित (वि०) [अप + उह् + क्त] 1 हटा हुआ, दूर किया हुआ —न च सावर्ण्यमपोहितं क्वचित्—कि० २।२७ 2 वादविवाद में निराकृत।

अप्रकट (वि०) [न० ब०] जो प्रकट या व्यक्त न हो, जो स्पष्ट या प्रदर्शित न हो।

अप्रख्याता [न० त०] बदनामी, अपकीर्ति—महा० १२। १५८।५।

अप्रबोधित (वि०) [अ + प्र + बुध् + णिच् + क्त] जिसे अभिप्रेरणा या प्रोत्साहन न मिला हो, अनादिष्ट।

अप्रज्ञात (वि०) [अ + प्र + ज्ञा + क्त] अज्ञात, जो समझ में न आया हो आसीदिद तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम मनु० १।५।

अप्रणिम (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त,—तस्मात्त्वया समारब्धं कर्म ह्यप्रतिम परैं रा० ६।१२।३५।

अप्रतिषेध [न० त०] वह आक्षेप जो विवादास्पदता न हो अर्थात् निराकरण।

अप्रतिहत देवताओं का एक प्रकार अपराजित-अप्रतिहत-जयन्त-वैजयन्त काष्ठकान् पुरमध्ये कारयेत् की० अ० २।४।

अप्रयुक्त (वि०) [अ + प्र + युज् + क्त] 1 जो किसी कार्य में व्यस्त न हो 2 जो सम्मिलित या प्रतिष्ठापित न हो 3 अनुपयुक्त।

अप्रसह्यिन् (वि०) [अप्र + सह् + ह्यस्नुच्] जो सहन न किया जा सके जिसका मुकाबला न किया जा सके जगत्प्रभारप्रसह्यिणु वैष्णवम् (वपुः) कु० १।५८।

अप्राज्ञ (वि०) [न० ब०] जो बुद्धिमान् न हो अज्ञानी।

अप्रातिपदिक (वि०) [न० ब०] 1 जो कोई सुबन्त न हो सके 2 किसी प्रदत्तविशेष से सम्बन्ध न रखता हो।

अप्राधान्य (वि०) [न० ब०] जिसका कोई महत्त्व न हो, गौण।

अप्रोक्षित (वि०) [न० ब०] जहाँ छिड़का न हुआ हो जो पवित्र न किया गया हो।

अप्लोट एक पक्षिविशेष, कुकुडकुआ।

अप्सुयोनि [अप्सु समास] जो जल में पैदा हुआ हो, घोड़ा।

अबन्धुत् (वि०) [अ + बन्धु + क्वनुप्] अबंधीन, जो व्याकरणसम्मत न हो यस्मिन्प्रतिनियोकमबन्धुत्वमपि भाग०१।५।११।

अबला (स्त्री०) किसी त्रिकोण की आधार रेखा का छिन्न अंश या खण्ड।

अबाधित (वि०) [न० ब०] बाधारहित, निर्बाध, अनिवारित, अनिराकृत।

अबीज (वि०) [न० ब०] 1 नपुंसक, निर्वीर्य 2 अकारण, च (न० त०) मन पर नियन्त्रक, जो एक प्रकार के अक्षर, अन्य अनुत्पादक बीज।

अबला (वि०) [न० ब०] प्रतिमा के हाथ की मुद्रा जो भक्त की रक्षा सूचित करती है। सम० अरक्षः

रक्षण और डर के देने वाला—स्वदन्य पाश्चिमभयवरदो देवगण —मी० ।

अभवत् (वि०) [अ + भू + शतृ] अविद्यमान । सम० अतयोग—सयोग, (काव्य) रचना का दोष —इसके अनुसार शब्द और अर्थ का अभिप्रेत सबध अपेक्षित रहता है जैसे ईशसे यत्कटाक्षेण तदा धन्वी मनोभव में यत् और 'तदा' का सबन्ध । अन्य उदाहरणों के लिए द० सा० द० ५७५ पृष्ठ ।

अभवभि जन्म का न होना हरि० ७ ।

अभाजिन् (वि०) [न० ब०] 1 अनधिकारी- महते यत्नसाध्येऽनाधानाभाजोऽग्नयो रा० ५।१६।२१ 2 जिसका कोई भाग न हो ।

अभिकर्षणम् [अभि + कृष् + ल्युट्] कृषि का एक उपकरण ।

अभिकृत्य (वि०) प्रबल लालसा से पकड़, इच्छुक ।

अभिजित् (पु०) [अभि + जि विद्या] पुनर्वसु का पुत्र हरि० पुनर्वसु के पिता का नाम वि० पु० ।

अभिज्ञात (वि०) [अभि ज्ञा क्त] जानकार, ज्ञाता, जानने वाला ।

अभित्वरचालक [अभि + त्वर् + णिच् + ण्वुल्] दूत, सदेशहर ।

अभिदेशनम् [अभि + दिश् + ल्युट्] पास से लेजाने की विधान शा० ।

अभिद्रुग्ध (वि०) [अभिदुह् + क्त] आहत, मताया हुआ ।

अभिधानम् [अभि + धा + ल्युट्] सज्ञा नामन—षट्पदनन्दीमयराभिधानम् रा० ४।२८।२६ । सम० —विद्वत्तिर्वत्ति शब्द और अर्थ का अनुकरण, अमरति —सी० मु० १।३।१२ पर शा० भा० ।

अभिनन्द (पु०) 1 अमरकोश के एक टीकाकार का नाम 2 योगवासिष्ठसार के रचयिता का नाम ।

अभिनवकालिदास आधुनिक कालिदास, यह पद किसी उत्तम कवि का दिया जाता है, माधवीय शकर विजय का नाम ।

अभिनवगुप्त नाट्यशास्त्र और ध्वन्यालोक का प्रसिद्ध भाष्यकार ।

अभिनिवन्ध [अभि नि + स्यन्द् + घञ्] टपकना, चूना ।

अभिनुन्न (वि०) [अभि + नुद् + क्त] आहत, क्षुब्ध । जिह्मदण्डकाष्ठाभिनुन्नाङ्गी महा० १४।५८।२९ ।

अभिपन्न (वि०) [अभि + पद् + क्त] 1 स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (अथवा उपपन्न) 2 प्रशिक्षित महा० १।५०।२० ।

अभिप्रयास [अभिप्र + णिच् + घञ्] 1 उद्यत होना, उद्यमना क्रियदभिप्रायसाधनेन 2 यत्न, विभाग ।

अभिपूर्तम् [अभि + पृ + क्त] जो पूर्णत सम्पन्न हो चुका है —अथ० ९।५।१३ ।

अभिप्लुत (वि०) [अभि + प्लु + क्त] 1. (भावनाधिक्य से) अभिभूत, व्याकुल 2 स्वीकृत ।

अभिभव्यमान (वि०) [अभिभू + शानच] किसी वस्तु पर अवैध अधिकार का इच्छुक—ब्राह्मणकन्यामभिभव्यमान - कौ० अ० १।६।

अभिमन्यु (पु०) चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम ।

अभिरम्भित (वि०) [अभिरभ् + क्त] पकड़ा हुआ, जकड़ा हुआ कामस्य महदभिरम्भित भाग० ५।८।१५।

अभिराधनम् [अभिराध् + ल्युट्] प्रसन्न करना, अनुकूल करना महा० ३।३०३।१४।

अभिलम्भनम् [अभिलभ् + ल्युट्] अधिग्रहण करना शासन पिने तन्मवं क्वोत्कृष्णभिलम्भनम् भाग० १।३।२३।

अभिवदन् (वि०) [अभिवद् + शतृ] जो अभिमानपूर्वक या डकी के साथ बोलता है—महा० १२।१८०।४८।

अभिशीत (-यात) (वि०) [अभि श्यै क्त—पा० ६।१।२६] शीतल, ठण्डा ।

अभिश्रुत (वि०) [अभिश्रु + क्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध ।

अभिसंवत्य (वि०) [अभिस सवत्य शुद्धचारित्र्यादिर्यस्य न० ब०] विशुद्ध चरित्र वाला, सदाचारी ।

अभिसक्त (वि०) [अभि + सञ्ज् + क्त] 1 भूत प्रेतादि से आविष्ट 2 अपमानित, पराभूत 3 तिरस्कृत, अभिशप्त ।

अभिसङ्ग [अभिसञ्ज् + घञ्] मानसिक क्षोभ की स्थिति - उच्चावचेषु भावेषु मनसोऽभिसङ्गात्— महा० ५।३०।१।

अभिसिक्त (वि०) [अभिषिच् + क्त] राजसिंहासन पर बिठाया हुआ, अभिषेचनीय जलों से स्नात, राजगद्दी पर आसीन कराया गया ।

अभिसेचनम् [अभिषिच् + ल्युट्] राजतिलक करने की तैयारी रा० २।१८।३६।

अभिष्टवः [अभि + स्तु + अच्] स्तुति—रामाभिष्टवसयुक्ता रा० २।६।१६।

अभिष्टुत (वि०) [अभि + स्तु + क्त] 1. जिसकी स्तुति की गई हो, जिसका कीर्तिगान किया गया हो 2 जिसका राज्याभिषेक कर दिया गया हो—ओङ्कारोभिष्टुतं सोमयाजिनं पावनं विदुः —महा० ३।३०६।

अभिसंहरणम् [अभि + सम् + हृ + ल्युट्] अतिपूर्ति—कौ० अ० ५।

अभिसंहित (वि०) [अभि + सम् + धा + क्त] सम्मिलित, सम्बद्ध रा० ७।८०।११।

अभिसमापन्न (वि०) [अभिसम् + आ + पद् + क्त] आमने सामने होने वाला, सामने होकर मुकाबला करने वाला - युद्धमभिसमापन्नमद्य गुरुद्वेषेण लोकवा—रा० ३।१९।३।

अभिसरी (रि) (स्त्री०) 1. पीछा करना—अनुपुरुषवे

सम्बन्धस्याभिसरीम् प्रति० ३।७ 2 सहायता के लिए जाना।

अभिहारः [अभि + हृ + घञ्] निकट लाना -अभिहारोऽभियोगे च

अमृत सनिवृत्ति (स्त्री०) फिर वापिस न आना, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा—मतिस्त्वं वीतरागोऽमृत सनिवृत्तये—रघु० १०।२७।

अम्यवयत् (दिवा आ०) रक्षा करना—ततस्तामभ्यवपत्तु-कामो यौगन्धरायण —स्वप्न०।

अम्यवमन् (दिवा० आ०) निरादर करना, तिरस्कार करना।

अम्यवमन्ता [अभ्यव + मन् + तृच्] अपमान करने वाला।

अम्यवहारः [अभ्यव + हृ + घञ्] खाने के योग्य, खाद्य क्षुद्धान्यभ्यवहार्याणि मूलानि च फलानि च रा० ४।५०।३५।

अम्यवहार्य } (वि०) [अभ्यव् + अनीय, ण्यत् वा]
अभ्यवह्य } आवृत्ति करने के योग्य, अभ्यास करने के लायक, अभ्यास किये जाने के लिये।

अभ्याकाशम् (वि०) [प्रा० स०] आकाश के नीचे बिना किसी आवरण के—अहनु सतत तिष्ठेदभ्याकाश निशा स्वपन् महा० १२।२५।३८।

अभ्याचष्ट (भ्वा० प०) 1 ध्यान देना 2 बोलना।

अभ्युपपन्न (वि०) [अभि + उप + पद् + क्त] 1 पहुँचा हुआ, पास गया हुआ 2 भय से आरक्षा के हेतु निकट गया हुआ—अभ्युपपन्नवत्सल खलु तत्र भवानार्यचारु-दत्त इति श्रूयते—मृच्छ० ७।

अभ्रमुः (स्त्री०) ऐरावत हाथी की प्रिया हथिनी प्रेमा-स्पदाश्रम - हर० ३१।२९, अभ्रमुवल्लभ —नै० १।१०८।

अभ्रयन्ती (स्त्री०) [अभ्र + यन् + ङीप्] 1 बादलों से युक्त वर्षा ऋतु को लाने वाले 2 कृत्तिका नक्षत्रपुंज।

अम्ब् (भ्वा० पर०) भयङ्कर होना, भयभीत होना -वराहमिन्द्र एमृधम् ऋ० ८।७७।१०।

अमण्डित (वि०) [न० ब०] अनलंकृत, न सजा हुआ।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्या न करे, जो घृणा न करे, जो निरीह रहे यद्यद्धावते विशेषमसत्तद्धा-दमत्सर —मनु० ३।२३१, मर्कटकस्तलमत्सरक्षुण्णं भान्तम्—नारा० २१।५।

अमर (वि०) [मृ—पचाद्यच्] [न० त०] जो मृत्यु को प्राप्त न हो, अनश्वर,—रः (पु०) देव, सुर। सम०—गुरुः बृहस्पति, बृहस्पति नामक ग्रह,—चन्द्रः 'बालभारत' का रचयिता,—राजः इन्द्र, देवों का स्वामी।

अमरी (स्त्री०) स्वर्गीय स्त्री, देवी—अमरीकबरीभार-अमरीमुखरीकृतम्—कुव० १।

अमर्मित (वि०) [मृद् + क्त, न० त०] जो मसला न गया हो, जो दबाया न गया हो।

अमर्मवेधिता (स्त्री०) मर्मस्थानों पर न आघात करने का गुण, दूसरों की भावनाओं को अपने आघातों से छेदना (तीर्थंकर के ३५ वाग्गुणों में से एक)।

अमा [न + मा + क] अमावस्या। सम०—वसुः पुरुरवा के वंश का एक राजा,—सोमवारः वह सोमवार जिस दिन अमावस्या हो,—सत्रम् अमावस्या वाले सोमवार को रक्खा जाने वाला सत्र,—हृतः एक मर्परराक्षस का नाम—महा०।

अमित्रकर्मन् [न० त०] 1 शत्रुतापूर्ण कार्य, -राजानमिम-मासाद्य सुहृच्चित्रमिमित्रकम् - रा० ६।६५।७।

अमुद्र (वि०) [न० ब०] सीमारहित, अमुद्रदारिद्र्य-समुद्रमग्ना—नै० ६।६५।७।

अमूर्तरयस् (पु०) कुश का एक पुत्र। इसकी माता का नाम वैदर्भी था।

अमृक्त (वि०) [न० ब०] जिसने स्नान नहीं किया है —परिक्लिष्टकबरीमामृजा राघवप्रियाम् रा० ६। ८।१०।

अमृत (वि०) [न + मृ + क्त] 1 जो मरा हुआ नहीं 2 जो अमर है। सम० अंशुकः एक प्रकार का रत्न—को० अ० २।११, अश्वः इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा, अमृताम्भव पुरेव पुच्छम् शि० १०। ४३,—ईशः (अमृतेश) शिव का नाम—उपस्तरणम् अमृत समान भोजन करने से पूर्व आचमन करने का पानी, कर, किरणः अमृत की किरणों वाला, चन्द्रमा, मन्थनः मन्दर जिसमें ५८ स्तम्भ लगे हों म० पु० २७०।८, नादोपनिषद् एक छोटी उपनिषद् का नाम,—बिन्दूपनिषद् अथर्व वेद की एक छोटी उपनिषद्, -भूतिः चन्द्रमा—आप्याययत्यमृतमूर्तिना लोक वदनामृतमूर्तिना भाग० ८।१६।९।

अमृषोद्यम् [न + मृषा + वद् + ण्यत्] सत्य उक्ति मनु० ६।५७।

अमोघ (वि०) [न० त०] 1 अचूक 2 अव्यर्थ। सम० —अस्त्री (स्त्री०) (अमोघास्त्री) दाक्षायणी का नाम, —अस्त्रिणी शिक्षा की एक पुस्तक का मूलपाठ, —वर्ष चालुक्यवंशी एक राजा का नाम।

अम्बराधिकारिन् [अम्बराधिकार + इनि] राजदरबार का एक वस्त्राधिकारी।

अम्बरीषकः [अम्ब् + ऋष + क नि० दीर्घ] अन्तर्निहित या गुप्त आग उदपाना कुलश्रेष्ठ तवैवाम्बरीषका —महा० १।१५।१६।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब् + उन्] जल, पानी। सम०—कणः एक जलीय पौधा, सिंघाड़ा, -कुक्कुटी जलीय मुर्गी, —केलम्,—केलास् पूर्वाषाढ नक्षत्र,—गर्भः लवण,

—गति वरुण, वेगः पानीका बहाव, बाढ़ अथवा नदीना बहवोऽम्बुवेगा—भग० ११।२८।

अम्बुजिनी (स्त्री०) [अम्बुज+इनि+ङीप्] कमल की बेल। सम० कुटुम्बिन् (पु०) सूर्य।

अम्मय (अप्+मय) (वि०) जलयुक्त, जलमय —न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामया भाग०।

अयन (वि०) [अय्+ल्युट्] जाने वाला, (प्रायेण प्राय समस्त पदों में)। सम० ग्रहः ग्रहणविषयक विचलन के लिए (मिनटों में) शोधन—सू० सि०, यह किसी ग्रह की देशान्तररेखा जब कि वह ग्रहण विषयक विचलन के लिए प्रयुक्त की गई हो, सू० सि०, परिवृत्ति अयन का बदलना अयन-परिवृत्तिर्व्यस्तशब्दनाख्याते मी० सू० ६।५।३७ पर शा० भा०।

अयत्नसाध्य (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न हो जाय।

अयत्नोपपन्न (वि०) [अयत्न+उपपन्न] जो बिना यत्न के प्राप्त हो जाय।

अयथाधिप्रेताख्यानम् (नपु०) वर समाचार का ऊँचे स्वर से उच्चारण करना या अच्छे समाचार का मन्दस्वर से कहना अयथाभिप्रेताख्यान नामाप्रियस्याख्यं, प्रियस्य च नाख्यं कथनम् सि०।

अयन् (वि०) [इ+असुन्] जाने वाला, स्पन्दनशील। सम० कर्णपत्र एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे की बनी गर्दनिया की बौछार करता है अय कर्णपत्र-क्षतज भयङ्करघूत्कारवाहक —महा० १।२२७।२५।, शिख बाण का नाला।

अयोग (न—युज्+घञ्) योगाभ्यास से विचलन, दत्तात्रेयादयोऽप्येवं योगान्नाशं भाग० ५।८।१६।

अयोनि (वि०) [न० ब०] अज्ञात माता-पिता की सन्तान अजानि च वियानि च न सन्देह विचक्षण महा० १।१९०।३३।

अरक [इनति गच्छत्यनेन अर्+अर्च्+स्वार्थे कन्] पहिए का अरा।

अरडा (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम गा०।

अरण्यपर्वन् (नपु०) महाभारत के एक अध्याय का नाम।

अरन्ध्र (वि०) [न० ब०] जिसमें छिद्र न हो—मदन पयोमय इवारन्ध्रा —कि० १५।४०।

अरव (वि०) [न० ब०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।

अरस (वि०) [न० ब०] 1 अरसिक, जो ललित कला का न समझ सके विमर्दयो नाप स्यादरसमुपलभ्यानाम्—शिशु० 2 जिसमें कोई सत्व न हो, नीरस न हो अरसा व्याधिजराविनाशधर्मी —सु० ब० ५।१२।

अरात् (अ०) तुरन्त, तत्काल—वर्तन्ति यवनीत्या ते तेन साकं पतन्त्यराट्—भट्टि० ४।१२।६६।

अराम (वि०) [न० ब०] अरुचिकर, बुरादा।

अरिकेलिः [ऋ+इन्+केल+इन्] शत्रुलीला, स्त्रीरमण —अरिकेलिः शत्रुलीला स्त्रीरत्योश्चापि कीर्तितः —नाना०।

अरित्रम् [ऋ+इत्र+अरि+त्र, वा] कवच, जो शत्रुओं से रक्षा करे (अरित्रं त्रायते) नै० १२।७१।

अरीय (वि०) पूर्ण, भरा हुआ —स्वरभम्बरीभरतस्कन्धः नै० ६।६५।

अरुज (वि०) [न० ब०] 1 जो रोग को नष्ट करे, रोग नाशक विवेद्य क्षतु सर्वेभ्य कपिकामजवा स्थिरम् —सु० 2. नीरोग, पीडारहित।

अरुणकेतुब्राह्मणम् (नपु०) अरुण और केतुओं के ब्राह्मण का नाम।

अरुणपराशराः (पु०) एक वैदिक शाखा के अनुयायी —अरुणपराशरा नाम शालिन —मै० स० ७।१।८ पर शा० भा०।

अरुद्ध (वि०) [न+रुध्+क्त] निर्बाध, जिसे रोका न गया हो, निर्विघ्न।

अरुन्धतीदर्शनम् (नपु०) विवाह सस्कार के अवसर पर की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुल्हन को अरुन्धती तारा दिखलाया जाता है।

अरुन्धतीदर्शनन्याय: यह एक न्याय है, इसके अनुसार 'ज्ञात से अज्ञात की ओर क्रमिक शिक्षा ग्रहण की ओर संकेत किया गया है जैसे अरुन्धती को दिखलाने के लिए पहले किसी और ज्ञात तारे की ओर संकेत किया जाय।

अरूप (वि०) (न० ब०) वह यज्ञ जिसमें रूप (द्रव्य और देवता) का अभाव हो।

अरूपिन् (वि०) [न+रूप+इनि] आकाररहित बिना किसी रूप का—बाधाधारमुसैम्बन्धान्नायमर्थोऽरूपिण. रा० १।२१।१६।

अरोगत्वम् [न० त०] रोग से मुक्त होने की स्थिति।

अर्क. [अर्च्+घञ्, कुत्वम्] 1 सूर्य 2 सूर्यकान्त मणि अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके—मे०। सम०—ग्रह सूर्य-ग्रहण,—ग्रीव इस नाम का एक 'साम'—पुष्पोत्तरत्व इस नाम का एक 'साम',—रेतोजः सूर्य का पुत्र रेवत, —लक्षणम् अयस्कार।

अर्घः [अर्घ+घञ्] मूल्य, कीमत। सम०—अपचय मूल्य कम हो जाना, कीमत गिर जाना, ईश्वर शिव, —निर्णयः मूल्य निर्धारण।

अर्चनाना (पु०) अत्रिकुल से सबध रखने वाला एक ऋषि।

अर्जित (वि०) [अर्ज्+क्त] प्राप्त, उपार्जित—न मे पितार्जित किञ्चिन्न मया किञ्चिदर्जितम्। अस्ति मे हस्तिशैलाग्रे वस्तु पैतामह धनम्—वे० दे०।

अर्जुनवरः अर्जुन नामक पौधे का रेशा, सन्तु ।
अर्जुनसखिः [ष० त०] कृष्ण ।
अर्णस् (नपु०) [ऋ+असुन्, नुट्] 1. पानी, जल 2 रस —श्रीह्रीविभूत्यात्मवदद्भुतार्णसु—भाग० २।६।४४ । सम०—जः (अर्णोज.) कमल—त्यर्णोदर्णोजनाभ, —मूलम् कमल, पद्म—वरगिरमुपकर्ण्यायमर्णोऽहार्षी —उत्त० ७।९२ ।

अर्थः [ऋ+थन्] विषय, पदार्थ, उद्देश्य, इच्छा, अभिप्राय । सम०—अतिदेशः (शब्दों के मुकाबले में) पदार्थों के विषय में लिङ्ग, वचन आदि का विस्तार अर्थात् एक विषय को ऐसा समझना मानो वे संख्या में बहुत हों, स्त्री को ऐसा समझना मानो वह पुरुष हो—त० वा०, —अनुपपत्तिः (स्त्री०) किसी विशेष अर्थ को निकालने या समझाने में कठिनाई,—अनुबन्धि भौतिक कुशलक्षेम से युक्त - तत्रिकालहितबान्धव धर्म्यमर्थानुबन्धि च —रा० ५।५१।२१,—अभिधानम् अभीष्ट अर्थ का प्रकट करना त० वा० ३।१।२।५,—अभिधानम् (वि०) जिसका नाम प्रयुक्त अर्थ से सबद्ध हो —अर्थाभिधान प्रयोजनसम्बद्धमभिधानं यस्य, यथा पुरोडाशकपालमिति —मै० स० ४।१।२६ पर शा० भा०,—आतुरः जो लोभी होने के कारण सदैव धन एकत्र करने के लिए दुःखी रहता हो— अर्थातुराणां न सुहृन्न बन्धुः,—आक्षिप्त् (वि०) जो उपदेश दिखाई दे (परन्तु वस्तुतः वैसा न हो), -आयासः धनसंबंधी कठिनाई निबन्धसञ्जातदयार्थकार्यसचिन्तिप्रिया—रघु० ५।२१,—किल्बिषिन् (वि०) रुपये पैसे के विषय में बेईमान व्यक्ति,—कोविद (वि०) जो राजनीति के विषय में विशेषज्ञ हो. अनुभवी —उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविद —रा० ६।४।८, —क्रिया 1. सार्थक कार्य, अर्थात् जो कार्य सचमुच किया ही जाता है (विप० शब्दोक्त क्रिया) —अस्ति शब्दोक्तेऽर्थक्रिया भवति मै० स० १२।१।१२ पर शा० भा० 2 साभिप्राय क्रिया अर्थात् मुख्य कार्य, —गतिः अर्थ या प्रयोजन को समझ लेना, अर्थावगम, —गुप्तः किसी उक्ति के अभिप्राय की सूचियाँ, —गृहम् कोश, खजाना—हरि०, चित्रम् अर्थों पर आधारित एक अर्थालंकार,—चोदकः अधिनिर्णायक, -ज्ञा (स्त्री०) सत्यता तथा तथ्यों का ध्यान रखना —तीर्थं त्रिलोकनुरुचर्यदुक्तं च यज्ञान् —भाग० १०।८६। २१, -द्वयविधानम्, ऐसी विधि जिसके दो अर्थ निकलते हों विधाने चार्थद्वयविधान दोष —मै० स० १०।८।७० पर शा० भा०,—पदम् पाणिनि पर एक वार्तिक समूहवन्त्यर्थपदं महार्थम्—रा० ७।३६।४५, —प्रकाशः किसी विषय पर विचारविमर्श, —प्रकाश (वि०) जैसा कि आवश्यकता या प्रयोजन के अनुसार निर्धारित हो (विप० शब्दलक्षण), विद्या सांसारिक पदार्थों का ज्ञान,- विप्रतिपत्तिः उद्देश्य की विफलता —समीक्ष्यतामर्थविपत्तिमार्गताम्- रा० २।१९।४०, —विप्रकर्षः अभिप्रेत अर्थ को समझने में कठिनाई, —विभागकः (वि०) धन का देने वाला— विप्रेभ्योऽर्थविभागकः —महा० ३।२३।८४,- शास्त्रिन् (वि०) धनी पुरुष, धनवान्, -संग्रहः लौगाक्षिभास्कर कृत मीमांसा के एक प्रकरण का नाम,—सत्यम् सचाई, - किं पुनरत्रार्थसतत्त्वम्—पा० ७।३।७२ पर म० भा०, धन का उपार्जन करना 2 उद्देश्य में सफलता,- हानिः (स्त्री०) धन का नाश, हारिन् (वि०) धन के चुराने वाला, जो धन चुराता है ।

अर्थात् (अ०) [अर्थ का अपादान में ए० व०] सच तो यह है कि, तथ्यतः । सम०—अधिगतम् (अर्थादधिगतम्) संकेत द्वारा समझा हुआ, -कृतम् सचमुच किया हुआ - न वार्थाकृत चोदकः प्राप्नोति मी० सू० ५।१।१८ पर शा० भा० ।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+ष्यञ्] 1 सच्चा, वास्तविक अर्थ्य विज्ञापयत्रेव रा० ६।१२७।२५ 2 धन प्राप्त करने में चतुर - तमर्थमर्थशास्त्रज्ञा प्राहुरर्थ्यां सुलक्षणम् रा० ३।४३।२२ ।

अर्द (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] आधा ।

अर्ध [ऋध्+घञ्] 1 वृद्धि 2 भाग, अंश, पक्ष । सम० असिः एक धार की तलवार, छोटी तलवार अर्धासिभिस्त्वया खड्गैः -महा० ७।१२३।१५, अर्धं अर्धेऽभ्यास, आधी चौड़ाई चित्र (वि०) अर्धपारदर्शी एक प्रकार का असल पारदर्शी पत्थर, जीविका, -ज्या, चाप का एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलाने वाली सम्बरेखा,—दक्षिण (वि०) साढ़े चार, -द्वारम् दो भागों का ऐसा सधान करना जैसा कि हृदय के दो टुकड़ों का- मूलाग्र कीलक युक्तमर्धप्राणमिति स्मृतम्--मान० १७।९९,—मागधी प्राचीन जैन ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत बोली,-मासः आंशिक पक्षाघात, एकांगी लकवा,- वृद्धि किसी राशि पर देय ब्याज का आधा भाग,- शतम् 1 पचास 2 डेढ़ सौ मै० स० ८।२६७, समस्या श्लोक जिसका पूर्वार्ध एक व्यक्ति बोले, तथा उत्तरार्ध दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरा किया जाय—मै० ४।१।१. सहः उष्ट्र ।

अर्ध्य (वि०) [अर्ध+य] अधूरा, जो अभी पूरा किया जाना है—अद्या ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यं - ऋ० १।१५६।१ ।

अर्पित (वि०) [ऋ+णिच्+क्त] 1 समाया गया, अंदर लाया —दुहितां विधिवत् पुत्रीं पत्नीसोमेऽर्पितां पितुः —रा० ४।१।८, रघु० ८।८८ 2 उंडेली गई हुताप्यर्पितनेत्रवारिशिरसः (सन्ताप)-रघु० ९।७८ 3 पीड़ित, दुःखी, व्यथित, अर्पितं मनः 4 दिया हुआ, सौंपा हुआ, समर्पित 5 रखा हुआ, जमा किया हुआ 6 भेजा हुआ, प्रेषित 7 लगाया हुआ, जोड़ा हुआ 8 प्रविष्ट, घुसा हुआ 9 फेंका हुआ, डाला हुआ 10 प्रस्तुत किया हुआ, उपहार में दिया हुआ 11 प्रदत्त, दिया हुआ 12 प्रतिज्ञात, वचनबद्ध 13 निर्धारित, नियत 14 निर्दिष्ट, विनियुक्त 15 उपयुक्त, उपयोग में लाया हुआ 16 उपस्थित, प्रस्तुत 17 उपलब्ध, प्राप्त 18 उपसंहृत, समाप्त 19 उपसंहृत, समाप्त 20 उपसंहृत, समाप्त 21 उपसंहृत, समाप्त 22 उपसंहृत, समाप्त 23 उपसंहृत, समाप्त 24 उपसंहृत, समाप्त 25 उपसंहृत, समाप्त 26 उपसंहृत, समाप्त 27 उपसंहृत, समाप्त 28 उपसंहृत, समाप्त 29 उपसंहृत, समाप्त 30 उपसंहृत, समाप्त 31 उपसंहृत, समाप्त 32 उपसंहृत, समाप्त 33 उपसंहृत, समाप्त 34 उपसंहृत, समाप्त 35 उपसंहृत, समाप्त 36 उपसंहृत, समाप्त 37 उपसंहृत, समाप्त 38 उपसंहृत, समाप्त 39 उपसंहृत, समाप्त 40 उपसंहृत, समाप्त 41 उपसंहृत, समाप्त 42 उपसंहृत, समाप्त 43 उपसंहृत, समाप्त 44 उपसंहृत, समाप्त 45 उपसंहृत, समाप्त 46 उपसंहृत, समाप्त 47 उपसंहृत, समाप्त 48 उपसंहृत, समाप्त 49 उपसंहृत, समाप्त 50 उपसंहृत, समाप्त 51 उपसंहृत, समाप्त 52 उपसंहृत, समाप्त 53 उपसंहृत, समाप्त 54 उपसंहृत, समाप्त 55 उपसंहृत, समाप्त 56 उपसंहृत, समाप्त 57 उपसंहृत, समाप्त 58 उपसंहृत, समाप्त 59 उपसंहृत, समाप्त 60 उपसंहृत, समाप्त 61 उपसंहृत, समाप्त 62 उपसंहृत, समाप्त 63 उपसंहृत, समाप्त 64 उपसंहृत, समाप्त 65 उपसंहृत, समाप्त 66 उपसंहृत, समाप्त 67 उपसंहृत, समाप्त 68 उपसंहृत, समाप्त 69 उपसंहृत, समाप्त 70 उपसंहृत, समाप्त 71 उपसंहृत, समाप्त 72 उपसंहृत, समाप्त 73 उपसंहृत, समाप्त 74 उपसंहृत, समाप्त 75 उपसंहृत, समाप्त 76 उपसंहृत, समाप्त 77 उपसंहृत, समाप्त 78 उपसंहृत, समाप्त 79 उपसंहृत, समाप्त 80 उपसंहृत, समाप्त 81 उपसंहृत, समाप्त 82 उपसंहृत, समाप्त 83 उपसंहृत, समाप्त 84 उपसंहृत, समाप्त 85 उपसंहृत, समाप्त 86 उपसंहृत, समाप्त 87 उपसंहृत, समाप्त 88 उपसंहृत, समाप्त 89 उपसंहृत, समाप्त 90 उपसंहृत, समाप्त 91 उपसंहृत, समाप्त 92 उपसंहृत, समाप्त 93 उपसंहृत, समाप्त 94 उपसंहृत, समाप्त 95 उपसंहृत, समाप्त 96 उपसंहृत, समाप्त 97 उपसंहृत, समाप्त 98 उपसंहृत, समाप्त 99 उपसंहृत, समाप्त 100 उपसंहृत, समाप्त

दर्शित, सौंपा गया —विश्वापितारम्भ इवावतस्थे – कु० ३।४२ 4 प्रति पूर्वक = वापिस सौंपा गया - प्रत्यर्पित-न्यास इव- मा० ।

अर्श,—र्शस्[ऋ+मन्]1 ओज का एक रोग 2 कश्मिस्तान ।

अर्शाः (ब० व०) खड़हर, कूड़ाकर्कट ।

अर्शंवाहः (पु०) [ऋ+वनिप्=अर्वन्+वह्+घञ्, स० त०] घुड़सवार आगच्छन् गुरुतरगर्वमर्वंवाहं —शिव० २४।६४ ।

अर्वाचीनतम (वि०) (अर्वाच्+तमप्) न पहुँचने वाला, परवर्ती, प्रकृतिपुरुषयोरविवेकाभिनिमित्तरूपाणां रूप—निरूपणम्—भाग० ५।३।४ ।

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] योग्य समर्थ न त्वा कुमि एमसीव भस्म भस्माहमेजमा—ऋ० ५।२२।२० ।

अर्हा [अर्ह्+घञ्+टाप्] सोना निघ० ।

अलक्तकाङ्क (वि०) [अलक्तक+अङ्क] अलक्तक से चिह्नित हैं अङ्क जिसके अलक्तकाङ्कानि पदानि पादयो —कु० ५ ।

अलक्षण (वि०) [न० ब०] जो समझ में न आवे—सेय विष्णोमहामायाजगद्धयाऽलक्षणा गया भाग० १२।६। २९ ।

अलक्षणम् (वि०) अशुभ लक्षणों से युक्त-अपलक्ष्य ग्रहारुढ-कुलक्षमाण दिवाकरम् महा० ६।१०२।२१ ।

अलङ्कारमण्डप [ष० त०] शृंगार कक्ष, वह स्थान जहाँ मन्दिर की मूर्तियों का शृंगार किया जाता है ।

अलमक (पु०) मेंढक, दे० 'अलिमक' ।

अलवण (वि०) [न० ब०] लवणरहित, बिना नमक की—महा० १३।११८।१४ ।

अलसगामिनी (स्त्री०) मनोज्ञ गति से चलने वाली महिला ।

अलसिका (स्त्री०) अधिक बार मल त्यागने के कारण उत्पन्न आलस्य या थकान ।

अलाक्षण (वि०) [न० ब०] निष्कलंक ।

अलातशान्तिः (स्त्री०) माण्डूक्योपनिषद् पर गौडपाद की टीका का चतुर्थ पाद ।

अलाबुवीणा (स्त्री०) तुम्बी के आकार की बनी वीणा ।

अलीकम् [अल्+कीक्न्] चिन्ता, शोक—अलीक मानस श्लोक रा० २।१९।६ ।

अलुप्तलक्षिणम् (वि०) [न० ब०] जिसकी अक्षुण्ण कीर्ति बनी हुई है ।

अलुप्तशासनम् (वि०) [न० ब०] जिसकी ख्याति लुप्त नहीं हुई है, यशस्वी ।

अलोकव्रतम् [न० त०] आध्यात्मिक वृत्ति के लिए अभिप्रेत व्रत जैसे ब्रह्मचर्य पालन, (इस व्रत की भावना भौतिक सुखों के विरुद्ध है) परलोकव्रतमाचर्यं वने भाग० ८।१।७ ।

अलोलक, अलोलिक (वि०) [न० ब०] जिसके बाल न उगने हों, बिना बालों का ।

अलोलः (पु) चौदह मात्राओं का एक छन्द ।

अल्प (वि०) [अल्+प] थोड़ा, मामूली, नगण्य (विप० महत्, गुरु) । सम०—अक्षरम् वह शब्द जिसमें अपेक्षाकृत दूसरे शब्द से कम वर्ण या मात्राएँ हों—या० २।२।३४,—कीचूकः एक प्रकार का गेहूँ जो बड़ा छोटा होता है,—मालिकः एक छोटी वनस्पति का दाना, मान० ३४।१०६,—मूल्य (वि०) जिसमें थोड़ा सा मूल्य नगण्य हो,—सत्त्व (वि०) दुर्बल, बलहीन,—सार (वि०) जिसका फल नहीं के बराबर हो ।

अल्पकम् (नपु०) धनिये का बीज ।

अल्पका (स्त्री०) धनिये का पौधा ।

अवतरम् (अ०) और आगे, आगे दूर—ऋ० १।१२९।६ ।

अवकीलक [अव+कील+कन्] अक्षर, खूँटी जो अक्षर ठोकी गई है—सूत्रिपातावकीलकम्—महा० १४।४५।३ ।

अवकुब्ज (वि०) [अव+कुब्+क्त] नीचे की ओर बढ़ा हुआ, नीचे की ओर झुका हुआ ।

अवकीर्ण (वि०) [अवकृ+क्त] अध्यवस्थित, व्यवस्थासापेक्ष —दृष्ट्वा तथावकीर्णं तु राष्ट्रम् महा० ५।४१।१६ ।

अवकाश् (स्वा० पर०) नीचे गिर जाना, फिसल जाना सौवर्णवल्ग्यमवागवलोकराद्यात्—शि० ८।३४ ।

अवग्रहणी (पु०) [न० ब०] दुराग्रही, हठी—कर्मण्यवग्रहणियो भगवन्निदाम —भाग० ४।७।२७ ।

अवघाटकम् (नपु०) एक प्रकार की माला जो आकार में छोटी होती चली जाय—कौ०, ब० २।११ ।

अवजात (वि०) दे० 'अवहत' के नीचे ।

अवजुष्ट (वि०) [अव+जुष्+क्त] पोषणा किया गया, अवमानना पूर्वक सुनाई दी गई ।

अवघ्रात (वि०) [अवघ्रा+क्त] सूँघा हुआ, चूमा गया —अवघ्रातश्च मूर्धनि—रा० २।२०।१ ।

अवघ्राणम् [अव+घ्रा+णिच्+ल्युट्] सुंघाना ।

अवचरः [अव+चर+अच्] खाईस—तुरगावचरं न शोभयिष्या—कु० ब० ५।६८ ।

अवचि (स्वा० पर०) परखना, चुनना, छाँटना ।

अवचिन्तोका [अव+चि+तन्+टाप्] अवहेलना करने की इच्छा – प्रेमदमा कुसुमावचिन्तीवया – शि० ६।१० ।

अवचूरिः, अवचूरिका वृत्ति, टीका, भाष्य, टिप्पणी ।

अवचेष्टा विनोदपरक चाल, लीलायुक्त गति—अवचेष्टा कापि कटाक्षस्य मे० १६।६४ ।

अवच्छेद्य (वि०) [अव+छिद्+णिच्+यत्] अलग किये जाने के योग्य, पृथक् किये जाने के लायक ।

अवतानः [अव+तन्+घञ्] तन्तु, सूत—वितावतानतः महा० २।२४।२६ ।

अवकृ (स्वा० पर०) पार करना—त्वयाऽवतीर्णोऽहं उत्तारयितुकाम —भाग० ३।२४।३४।

अवतरणमङ्गलम् (नपु०) हार्दिक स्वागत।

अवतरणिका (स्त्री०) संक्षिप्त विवरण।

अवतारहस्यम् (नपु०) अवतार लेने का भेद।

अवतारोद्देशः (अवतार+उद्देश) अवतार लेने का प्रयोजन।

अवतारणम् [अव+तॄ+णिच्+ल्युट्] उतार, अवतार पौष्ये पौलोममास्तीकमादिरशावतारणम्—महा० १।२।४२।

अवदत् (वि०) [अवदो+शतृ] तोड़ने वाला, शतशो विशिखानवदत्ते किं० १५।४८।

अवधि [अव+धा+कि] शासनादेश, अधिदेश -वयं तु भरतदेशाऽवधि कृत्वा हरीक्षेमहि—रा० ४।८।२५। सम० - ज्ञानम् जैन शब्दावली में ज्ञान की तीसरी अवस्था जिसमें इन्द्रियातीत विषयों का ज्ञान भी मनुष्य को हो जाता है।

अवधीरित (वि०) (वेद) [अव+धा+कत] मन्त्र, पवित्र —यिन कृणोत्यध्वरिणो देवान् हवेन—ऋ० १।१०५।१७।

अवधारणम् [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] (नाम का) उच्चारण करना न त्वा देवासह मन्ये राज सजावधारयात् रा० ५।३२।१०।

अवधृत (वि०) [अव+धृ+कत] 1 समझा हुआ, जाना हुआ 2 (ब० व०) इन्द्रियाँ (साख्य० में)।

अवधूय (स्वा० पर०) तिरस्कार करना- सोऽवधूयात्मसुरैरवम्—भाग० ३।२।२८।

अवधूतम् [अव+धू+क्त] तिरस्कार -यथा नरेमदवधूतमह भाग० ५।१०।८।

अवनि (स्त्री०) [अव अनि] 1 अग्नि, पृथ्वी 2 नदी। सम० ज मंगल ग्रह, जा सीता,- भृत् राजा पहाड़,—द्वारा केतु का पौधा।

अवनिष्ठीव (दिवा० पर०) [अव+नि+ष्ठीव] थूकना अवनिष्ठीवतां दर्पाद् ह्योष्ठौ श्वदशना मनु० ८।२८०।

अवनेय (वि०) [अव+नी+यत्] अनुसरण करने योग्य अनुधर्मानभिज्ञेऽवनेया भविष्यसि रा० ३।४६।२।

अवन्तिसुन्दरीकथा (स्त्री०) एक रचना जो दण्डी कवि की कृति बताई जाती है।

अवन्तिका (स्त्री०) 1 वर्तमान उज्जैन नगर 2 उज्जैन वासिनी का वाची।

अवन्ध्यकोप (वि०) [ब० व०] जिसका क्रोध प्रभाव रखने वाला है अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुराशिषाम् रघु० १।

अवपतित (वि०) [अवपत्+क्त] नीचे गिरा हुआ फलैर्वृक्षावपतितैः रा० २।२८।१२।

अवपानम् (वेद०) [अवपा+ल्यु] पीना मरुत्वान्मत्सखावपानात् - ऋ० १०।१०६।२।

अवपोषिका (स्त्री०) (पत्थर आदि कोई) वस्तु जो नगर की दीवार से नगर पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं पर फेंकी जाय महा०।

अवप्लु (स्वा० आ०) नीचे छलांग लगाना—स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवप्लुता रथस्थ भाग० १।९।३७।

अवबोधित (वि०) [अवबुध्+णिच्+क्त] जगाया हुआ —शमा रामावबोधिन रघु० १२।७३।

अवभञ्ज (वि०) [अवभञ्ज्+घञ्] टूटा हुआ, जिसकी हड्डी टूट गयी हो कुछ 1 छाँट देना 2 (नाक या कान का) बाधना।

अवमर्द [अव+मृद्+घञ्] 1 मर्दन, हत्यारा महात्मनामवमर्दात् रणावमर्दे रा० ५।४८।६ 2 एक प्रकार का वर्ण।

अवमर्दिन् (वि०) [अवमर्द+णिनि] हत्यारा महात्मनामवमर्दात् रणावमर्दिन रा० ५।३३।६५।

अवमर्शित (वि०) [अवमृश+णिच+क्त] 1 विनष्ट हुआ, नष्ट किया हुआ दृष्टो दक्ष कविर्यत् भद्रसत्राव मर्शितम् भाग० ४।७।४८।

अवमृजन (वि०) [अवमृज+शतृ] मल करके शुद्धि का गन्दा करने वाला अवमृजानो मरुत्वतीम् मनु० ८।२८०।

अवमेह [अवमिह्+घञ्] विष्ठा मल त्याग प्रवाहि जरि विश्वतमाऽवमेहम् भाग० ५।१०।२५।

अवयवप्रसिद्धि (स्त्री०) (शब्द के) अवयवों का निदर्शन, अवयविनश्च सावयवस्य न स्वावयवप्रसिद्धि॥ मम-टान्तप्रसिद्धिवत्—मी० सू० ६।८।३१ पर शा० भा०।

अवयुग्यनुवाद (पु०) किसी कथन की अशा में उल्लेख करना एक प्रकार का दुरुक्तदूषणोद्धारक प्रयोजनविशेष मी० सू० २।१।६१ पर शा० भा०।

अवरुग्णी अवरुग्ण+ङीष्, ह्रस्व] घोड़े को बाँधने का रस्सा—(वि०)।

अवरोहु [अवर+रुह्+कु, नलोप०] निकट आना स्वयमवरोहुमुत्सहे रघु० ९।६०।

अवरुद्धित (वि०) [अवरुध्+क्त] रुकावट के पानी के गिरने से अवरुद्ध हो गया हो अवरुद्धतीर्थसलिल तथा श्राद्ध न प्रवर्तेत महा० १।९१।८२।

अवरुद्ध (वि०) [अवरुध्+क्त] अन्तःपुरचारिणी स्त्री। अवरुद्धासु रा० ५।५२।२४

अवरोध [अवरुध्+घञ्] बाधा घेरा डालना शत्रु प्रजानामवरोधेन गृहस्थ कथ निरीक्षसे भाग० ५।८।१८। सम० गृह अन्तःपुर, जन अन्तःपुर की महिलाएँ।

अवरोपित [अवरुह्+णिच्+क्त] 1 सिंहासन से उतारा हुआ, निष्कासित पुरुहू वादिता राम

राज्यास्वादयरोपित—रा० ४।८।३७ 2 चढाया हुआ, ऊनीकृत इतरेत्वागमाद्धर्मं पादशस्त्ववरोपित—मनु० १।८२।

अवर्णसंयोग [ष० स०] 1. दो भिन्न ध्वनियों का मेल 2 किसी भी वर्ण से सबध का अभाव।

अवर्तमान (वि०) [न० ब०] जो वर्तमान समय से कोई सम्बन्ध न रखे।

अवलम्बित (वि०) [अवलम्ब् + क्त] चिपका हुआ, पकडा हुआ, आश्रित—समभिमृश्य रसादवलम्बित शि० ६।१०।

अवलेह्य (वि०) [अवलिह् + ण्यत्] चाटने के योग्य।

अवलेखा [अवलिख् + अ, स्त्रियां टाप्] रेखा खीचना, रेखाचित्र बनाना रेखाकृति।

अवलोकनम् [न० स०] दृष्टि, कटाक्ष।

अवशाप्त (वि०) [अवशप् + क्त] अभिशप्त—महा० १३।

अवसृ (भ्वा० पर०) 1 टूटना 2 चारों ओर बिखर जाना - स तस्या महिमा दृष्ट्वा समन्तादवशीर्यत रा० १।३७।१३।

अवशीर्ण (वि०) [अव + सृ + क्त] टूटा हुआ, चूर-चूर किया हुआ।

अवषट्कार (वि०) जिसमें 'वषट्' शब्द का उच्चारण न हो, जिसमें वेद के याज्ञिकीय मन्त्रों के उच्चारण की प्रक्रिया न हो।

अवसन्न (वि०) [अवसद् + क्त] बैठा हुआ, उपस्थित तत्रस्थावसन्नय सेनापतिम् एव्रजत् रा० ५।६।३८।

अवसरप्रतीक्षिन् (वि०) [ष० स०] जो किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो।

अवसरान्वेषिन् (वि०) [ष० स०] जो किसी अवसर की ताक में हो।

अवसाय [अव + सो + घञ्] जो समाप्त करता है—अवसायो भविष्यामि दुस्तरस्यास्य कर्मण भट्टि० ६।८१।

अवसायक (वि०) [अव + सो + ण्वुल्] विनाशात्मक—अवसादिनि शब्दा सायकैस्त्वसाय—कैकि० १५।३६।

अवस्कन्द [अव + स्कन्द् + घञ्] (विधि में) दोषारोपण, इलजाम।

अवस्कन्न (वि०) [अव + स्कन्द् + क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2 आक्रान्त।

अवस्कर: [अव + स्कृ + घञ्] हाथी के पेडरे का आगे को झार उभरा हुआ भाग मात० ५।८।१२।

अवस्थानम् [अव + स्था + ल्युट्] 1 सहारा - योऽवस्थानमनुग्रह भाग० ३।२७।१६ 2 स्थैर्य, स्थिरता - अलब्धावस्थान परिक्रामति - भाग० ५।२६।१७।

अवस्थित (वि०) [अव + स्था + क्त] जिसमें किसी ने स्थानकर लिया है, (अत) ।

अवस्फूर्ज् (भ्वा० पर०) खुरपी करना, 'खुरपी' करना —महा० ६।७।

अवहार [अव + हृ + घञ्] जो उडा कर ले जाता है न जीवस्यावहारा यां करोति सुखिन यम: भट्टि० ६।८१।

अवह्वे (स्वा० पर०) (वेद०) पुकारना, बुलाना विशो अद्य मरुतामवह्वये ऋ० ५।५६।१।

अवाक्षिप् (तुदा० पर०) फाड देना, छिन्न-भिन्न कर देना।

अवाक्शिरस् (वि०) [अवाच् + क्त] नीचे की ओर झुका हुआ।

अवाचीन (वि०) [अवाच् + ख] 1 जो नीची निगाह से देखता है दुर्योधनमवाचीन राज्यकामुकमातुरम् महा० ८।८।१७ 2 नीच, पापी—बुद्धि तव्यापकर्तृणि साध्वाचीनानि पश्यति महा० ५।३४।८१।

अवाचीन (वि०) जो दानशील न हो —सु०।

अवान्तरवाक्यम् (नपु०) मूल कथन के कुछ अशों को थाम कर, चयन की हुई उक्ति न च महावाक्ये अवान्तरवाक्यं प्रमाण भवति मै० स० ६।४।२५ पर शा० भा०।

अवारित (वि०) [अ + वृ + णिच् + क्त] जिसे रोका न गया हो —तम् (अ०) बिना किसी रुकावट के। सम०—कवाटद्वार (वि०) नहीं रोका हुआ अर्थात् खुला हुआ है द्वार जिसके लिए।

अवाह्य (वि०) [न—वह् + णिच् + ण्यत्] जो ले जाने के योग्य न हो।

अविकच (वि०) [न० ब०] जो खिला न हो, अर्थात् बन्द (फूल)।

अविकारिन् (वि०) [न + विकार + णिनि] 1 जिसमें कोई परिवर्तन न हो 2 स्वाभिमानी—स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूनविकारिण —मनु० ७।१९०।

अविकार्य (वि०) [न० त०] अपरिवर्त्य अविकार्योऽयमुच्यते भग० २।२५।

अविकिरणात्मक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वभाव अपरिवर्त्य हो, जिसकी प्रकृति न बदले।

अविक्षोभ्य (वि०) [न० त०] 1. जिसमें कोई हलचल न हो 2 जो जीते न जा सकें अविक्षोभ्यानि रक्षासि —रा० ६।५।१७।

अविक्लिन्न (वि०) [न० त०] अविभक्त, अविघटित।

अविकाश (वि०) [न० ब०] अपस्वर रहित (गायन)।

अविकीर्ण (वि०) [न० त०] विकल करने वाले स्वर जिस में न हो।

अविकृतात्म (वि०) [न० त०] 1 अकुण्ठित, जो चतुर न हो, 2 अनजान, नादानी।

अविक्षिप्त (वि०) [न+वि+क्षिप्+क्त] जो समझा न जा सके, जो समझ से बाहर हो।

अविशिष्टलक्ष (व०) [न० त०] साधारण, सामान्य न विशेषेण गन्तव्यमविशिष्टलक्षेण वा पुन —महा० १२।१५२।२२।
अविसर्कित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, जिसके लिए पहले कभी तर्कना न की हो।
अविसर्क्य (वि०) [न० त०] जिसका अनुमान न लगाया जा सके।
अविसृ (वि०) [अव्+क्विप्+तृच्] प्ररक्षक, —मातारमिन्द्रमविसारमिन्द्रम् - ऋ० ना० २०।३।
अविह (अ०) विस्मयादिद्योतक अव्यय—अयं हैं हन्त, अरेह —मृच्छ० १।
अविद् (वि०) [न+विद्+क्विप्] अनजान, अज्ञानी —अविदो भूरितमस्तो— भाग० ३।१०।२०।
अविद्रूपक (वि०) [न० त०] निरीह, भोलाभाला —अहितं चापि पुरुष न हिंस्युरविद्रूपकम्—रा० १।७।११।
अविद्रूषक (नपु०) [अवि+द्रुष पा० ३।२।३६ वा०] भेड़ का दूध।
अविद्रूषत्,—नास् (वि०) [न० ब०] (वह बैल) जिसके नाक में नकेल न डाली गई हो।
अविधायक (वि०) [न+विधा+ण्वुल्] जिसमें विधि या आदेश की शक्ति न हो—नहि विधायकाविधायकधर्मैरेकधाकरणत्व भवति—मी० सू० १०।८।२० पर शा० भा०।
अविनेय (वि०) [न० त०] 1 जो नियन्त्रण में न आ सके 2 जो शिष्य न बन सके।
अविनाशिन् (वि०) [न० त०] जिसका कभी नाश न हो, अमर।
अविनिर्णय: [न+विनिर्+नी+अच्] अनिर्णय, निर्णय का अभाव।
अविनीत (वि०) निष्कपट, निर्दोष।
अविपर्यय: [न० त०] विरोध का अभाव, संशय का अभाव, असन्दिग्ध स्थिति —अविपर्ययाद्विशुद्धम्—सा० का० ६४।
अविप्रतिपत्ति: (स्त्री०) [न०त०] मतविभिन्नता का अभाव —शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रपत्ति इन्द्रियजय —कौ० अ० १।६।
अविप्रयोग [न० त०] एकत्र रहना, घनिष्ठ मिलन।
अविप्रहृत (वि०) [न० त०] (वह जंगल या मार्ग) जहाँ किसी के पैर न पड़े हों।
अविप्लुत (वि०) [न० त०] अन्यूनीकृत, अविकृत।
अविभावित (वि०) [न० त०] जो हिसाब किताब में न लिया गया हो।
अविरल (वि०) [न० त०] विशाल, स्थूलकाय —अविरलबपुष सुरेन्द्रगोप कि० १०।२७।
अविरविकन्याय: (पु०) व्याकरण का एक न्याय जिसके आधार पर 'अवि' को 'अविक' हो जाता है।
अविरहित (वि०) [न० त०] अवियुक्त, जो कभी पृथक् न किया गया हो—अविरहितमनेकेनाकृष्यमाणा फलेन —कि० ५।५२।
अविलक्ष्य (वि०) [न० त०] गुप्त, जिसका मुकाबला न किया जा सके, जिसको रोका न जा सके—अविलक्ष्यमस्त्रमपरम् - कि० ६।४०।
अविवक्षितवाच्यध्वनि (स्त्री०) उन मन्त्रों की स्थिति जो अपना शाब्दिक अर्थ प्रकट करने के लिए अभिप्रेत नहीं होते।
अविवक्षितवाच्य (वि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक भेद जिसमें शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं है।
अविवेचक (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु के विवेचन की बुद्धि नहीं रखता।
अविवेचना [नवि+विच्+युच्+टाप्] विवेक बुद्धि का अभाव।
अविशङ्क [अव+शी+अच्] संदेह का अभाव यदि वा अविशङ्के नियम - मी० सू० ८।३।३१।
अविशेषवचन (वि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विवरण न दिया गया हो अविशेषितवचन शब्दो न विशेषेऽभ्यवस्थापितो भविष्यति—मी० सू० ४।३।१५।
अविश्वम्भ [न० त०] विश्वास का अभाव, अविश्वास, अप्रत्यय।
अविषक्त (वि०) [न० ब०] निरवरोध, अनियन्त्रित, जिस पर कोई प्रतिबन्ध न हो मुख्य नमस्तेऽस्त्वविषक्तवृष्टये भाग० १०।४०।१२, अविषक्तदेव कि० १३।२४।
अविषह्य (वि०) [न० ब०] 1 जिसका निर्णय करना कठिन हो—सीमायामविषह्यायाम्--मनु० ८।२६५ 2 जो सहा न जा सके अविषह्यव्यसनेन धूमिताम् -कि० ९।३० 3 जहाँ पर पहुँचना कठिन हो —कक्षमाविषह्यम् महा० १४।२०।१३।
अविसंवाद [न० त०] विरोध न प्रकट करना, अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करना।
अविहृस्त (वि०) [न० ब०] अनुद्विग्न, साहसी अब मुखमविहस्तस्तस्य कान्तारगर्भे—शिव० ३६।
अविहा (अ०) हन्त ! अहो !।
अविहित (वि०) [न+वि+धा+क्त] जो नियत न किया गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।
अवी (स्त्री०) [अवत्यात्मानं लज्जया अव्+ई] रजस्वला स्त्री —उणादि० ३।१५८।
अवीचिसंप्रतीपक: [अवीचि+सम्+प्रति+विच्+ण्वुल्] समाधि का विशेष प्रकार।
अवृष्टिसंरम्भ (वि०) [न० ब०] वारिश के तैयारी किये बिना आरम्भ करने वाला—अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बुवाहम् -कु०।

अवेक्षमाण (वि०) [अव+ईक्ष्+शानच्] सम्मान देखने वाला—अवेक्षमाणस्य महीं सवौत्सुक्यमन्धर्वसुत—रा०५।

अवेदविद् (वि०) [अवेद+विद्+क्विप्] वेदों को न जानने वाला।

अवेदविहित (वि०) [अवेद+वि+धा+क्त] जिसका वेद में विधान न हो।

अवेदना [न+विद्+युच्] पीड़ा का अभाव।

अवेद्यावस्यम् (नपुं०) लज्जाहीनता, लज्जा का अभाव रखना।

अवैशेषिक (वि०) [न+विशेष+ठक्] जो किसी विशेष परिणाम को दर्शाने वाला न हो, जिसका कोई फल न निकले—अवैशेषिकोऽयं हेतु—मी० सू० १।१।१ पर शा० भा०।

अव्यङ्ग्य (वि०, [न० ब०] 1. निरपराध 2 जिसमें ध्वनि या व्यञ्जना का अभाव हो (काव्य में)।

अव्यतिरेकः [न० त०] अपार्थक्य, निरपवाद, (वि०) [न० ब०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई भूल न करे।

अव्यपदेश्य (वि०) [अव्यपदिश्+ण्यत्] जिसकी परिभाषा न की जा सके।

अव्यवोह्य (वि०) [अव्यव]+वह+ण्यत्] जिसको सुलझाया न जा सके, जिससे इन्कार न किया जा सके।

अव्ययम् [न० त०] कुशलक्षेम, हित, कल्याण—युधिष्ठिरमधापृच्छत्सरहस्यं सुहृदोऽव्ययम्—भाग० १०।८३।१।

अव्यवच्छिन्न (वि०) [अव्यव+छिद्+क्त] न टूटा हुआ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो निर्बाध।

अव्यवसाय [अव्यव+सो+घञ्] निर्णायक शक्ति या संकल्प का अभाव।

अव्यवसायिन् (वि०) [अव्यवसाय+इनि] आलसी, जो निर्णायक बुद्धि से रहित है बहूनामप्यसाराणां समवायो ह्यसंहतः। तृणमावेष्टयत्येकं किमन्यद्बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् भग० २।४१।

अव्याधिकन्यायः (पुं०) दे० 'अधिरधिकन्याय', यद्यपि 'अवि' का ही 'अविक' बनता है, परन्तु 'अविक' से 'अधिक' (बकरी का मांस) जैसा कोई दूसरा शब्द 'अवि' से नहीं बनता।

अव्याक्षेपः [न+वि+आ+क्षिप्+घञ्] अनियमितता या आरम्भिक कठिनाई का अभाव—अव्याक्षेपो ह्यविघ्न्या कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६।

अव्याजकरुणा (स्त्री०) निष्कपट दया, स्वाभाविक सहानुभूति अव्याजकरुणामूर्ति ललि०।

अव्याहृतम् (नपुं०) [अव्या+हृ+क्त] चुप रहना, न बोलना—अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहु—महा० ५।३६।१२।

अशितम् (नपुं०) [अश्+क्त] 1 जो खाया जाय, खाद्य प्राङ्मुखस्तत्र भिक्षाद्यमशितं च तत्—भाग० १५४ ९।४।४० 2. वह स्थान जहाँ पर कोई खाया जाता है—अधिकरणवाचिनश्च—पा० २।३।६८।

अशकुनः,-नम् [न० त०] अशुभ शकुन, बुरा शकुन—कलत्रमपि सम्यद्योऽतस्त्वेऽशकुनेन स्वात्तिल्लेखरोऽपि—शि० ९।८३।

अशठ (वि०) [न+शठ्+अच्] जो ढीठ न हो, आज्ञाकारी—अजिह्मान्याशठस्य च दासवर्गस्य भाषणम्—मनु० ३।२४६, इह ते नातपस्काय नाशठाय भग०।

अशब्दार्थः (अशब्द+अर्थ) 1. शब्द द्वारा अनभिप्रेत अर्थ 2. वह अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीत (अभिहित) न होता हो अशब्दार्थोऽपि हि प्रतीयते—मै० स० ४।१।१४ पर शा० भा०।

अशब्द (वि०) [न+शब्द+अच्] जो शब्दों से प्रतीत न होता हो—मै० स० ५।१।५।

अशिक्षित (वि०) [न० ब०] 1 जो सीखा न हो, कच्चा हुआ 2 प्रभावशाली।

अशिशिर (वि०) [न० ब०] गर्म। सम०—करः, —किरणः, रश्मिः सूर्य—नीतोष्णाय मुहुरशिशिरश्वासमेवोरुवेः—शि० ५।३१।

अशीतल (वि०) [न० ब०] गर्म—दक्षत्वरोद्वहयमूर्वशीतलम्—शि० ९।८६।

अशौरिसूक्तम् (नपुं०) बयासी प्रथम जो कृष्णयजुर्वेद के सात काण्डों में विभक्त हैं।

अशुभसंशंसनम् [अशुभ+शंस्+ल्युट्] बुरा समाचार देना।

अशुभोदयः (अशुभ+उदय) [अशुभ+उद्+इ+अच्] अशुभ सूचक शकुन।

अशूकला (स्त्री०) एक प्रकार का चावल।

अशोकज (वि०) जो दुःख या शोक से पैदा न हुआ हो, हर्ष या खुशी से उत्पन्न—अशोकजैर्मन्युविन्दुभि—रा० ६।१२५।४२।

अशोधनम् [न+शुध्+ल्युट्] अपराध, त्रुटि, दोष—रामेण यदि ते प्राप्ते किञ्चिदकृतमशोधनम्—रा० २।३८।७।

आस्थापनं [न० त०] 1 ओले पड़ना 2 (शत्रु पर) पत्थर फेंकना।

अश्मयानम् [न+श्मन्+यत्] अशुभ का एक प्रकार जो जमा हुआ न हो—को० अ० २।११।

अश्लील [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत।

अश्लीलत्व (नपुं०) [अश्लील+ष्ण+अच्] अशुभ।

अश्वः [अश्नुते अध्वानं व्याप्नोति महाजनो वा भवति अश्+क्वन्] घोड़ा। सम०—चालकाध्यक्षः (पुं०) घोड़ों के लिए घास का संभरण करने वाला सचिवाकार,-चर्या घोड़े की देख-रेख करने वाला-तस्यास्वचर्यां कार्तुत्स दृढमन्या महाव्रतः (अनुमानकरोत्)—रा० १।३९।६७,—शीलः

बना,—बन्धुरा अश्वबल, रिघुः भैंसा—भा० प्र०, —लक्षणम् घोड़ों की भांति आचरण करने वाला अश्वलक्षणज्ञो हि मनुष्या —कौ० अ० २।९, सूत्रम् 'घोड़ों को पालने' के विषय पर एक पुस्तक।

अश्वत्थरीरथ. [रम्यतेऽत्रेन—रम्+कथन्] खञ्जरी द्वारा खींचा जाने वाला रथ।

अश्वत्थः [न श्वः तिष्ठति इति अश्व+स्था+क] पीपल का पेड़। सम०—नारायणः भगवान् विष्णु जिनकी पीपल के वृक्ष के रूप में पूजा की जाती है,—पूजा 'सभी देवता पीपल में रहते हैं' ऐसा समझ उसकी पूजा करना—मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे, अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः, प्रदक्षिणम् धार्मिक संस्क्रिया के रूप में पीपल की परिक्रमा करना।

अषडक्ष (वि०) [न+षट्+अक्षि] दे० 'अषडक्षीण'। 'ईन' प्रत्यय स्वार्थ को ही प्रकट करता है। अतः 'अषडक्ष' और 'अषडक्षीण' दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है।

अषडक्षीण (वि०) [न+षट्+अक्षि+ईन] जो छः आंखों से न देखा गया, अर्थात् केवल दो ही व्यक्तियों के द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिसमें तीसरा व्यक्ति सम्मिलित न हो), अस्त्र (नपुं०) रहस्य, गुप्त बात।

अष्टन् (वि०) [अश् व्याप्तौ कनिन् तुट् च] आठ (समस्त शब्दों में 'अष्टन्' के न का लोप हो जाता है)। सम०—अङ्गम् (अष्टाङ्ग) 1 आयुर्वेद पद्धति जिसमें निम्नांकित आठ अंग होते हैं—द्रव्याभिधान, गदनिश्चय, कायचिकित्सा, शल्यकर्म, भूतविद्या विषनिग्रह, बालचिकित्सा और रसायन 2 बुद्धि की आठ क्रियायें शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, चिन्तन, ऊहापोह, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान 3 योगाभ्यास के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि,—अधिकारः सामाजिक व्यवस्था में शक्ति की आठ स्थितियां—जल, स्थल, वायु, कुल, लेखन, ब्रह्मासन, दण्डविनियोग और पौरोहित्य, अध्यायी (अष्टाध्यायी) 1 पाणिनि का व्याकरण 2 शतपथ ब्राह्मण, अन्नानि भोजन के आठ प्रकार—भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, स्वाद्य, चर्व्य, निपेय, और भक्ष्य,—आयाम (वि०) आठगुना अष्टापाद्य तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्बिषम् मनु० ८।३३७,—उपनीधानि छोटे-छोटे आठ द्वीप—स्वर्णप्रस्थ, चन्द्राशुक्ल, आदर्शन, रमणक, मन्दरहरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का,—कुलाचलाः आठ मुख्य पर्वत—नील, निषध, गन्धमादन, मलय, विन्ध्य, गन्धमादन, हेमकूट और हिमालय, अर्घाधिनिधयः आठ मुख्य पहाड़, दे० ऊपर,—गन्धाः मन्दिरों में प्रस्तर मूर्ति की स्थापना के लिए लेई या गारा बनाने में प्रयुक्त आठ सुगन्धित द्रव्य—चन्दन, अगरु, देवदार, कोलिंजन, कुंकुम, शैलज, जटामांसी और गोरोचन,

चामरम् मूर्तिकला में प्रयुक्त होने वाला गज जिसकी लम्बाई उस मूर्ति के समान होती है जो अपने मुख से आठ गुना होती है,—देहाः स्थूल और सूक्ष्म शरीर जो गिनती में आठ होते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, विराट्, हिरण्य, अव्याकृत और मूलप्रकृति,

नागा 1 आठ सांप—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक पद्म और महापद्म 2 आठ दिग्गज—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम और सुप्रतीक **पक्ष** (वि०) (ऐसा कमरा या घर जिसमें) एक ही ओर आठ स्तम्भ लगे हुए हों, **प्रकृतयः** पांच महाभूत (अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश, वायु), मन, बुद्धि और अहंकार,

प्रधानाः राज्य के आठ प्रधान अधिकारी—पेशवा, उपाध्याय, सचिव, मन्त्री, प्रतिनिधि, राजाध्यक्ष, प्रधान और अमात्य, **भैरवाः** शिव के आठ गण असितांग, संहार रुरु, काल क्रोध, ताम्रचूड, चन्द्रचूड, और महाभैरव **भोगाः** सुखभय जीवन के आठ तत्त्व, अन्न उदक ताम्बूल, पुष्प चन्दन वसन, शय्या और अलंकार **मङ्गल्यद्रव्यम्** आयुर्वेद की आठ औषधियां मिला कर तैयार हुआ घी **ग्रहाः** ज्योतिष में ग्रहण विचार प्रणाली के लिए अपनाये गये आठ ग्रह—सूर्य आठ प्रकार का शहद-माक्षिक भ्रामर, क्षौद्र पौत्तिक छात्रक अर्घ्य, औद्दाल और दाल **चङ्क्रमणा** आयुर्वेद पद्धति के आठ रस

चैकान्तर्पाणि हिंगुल, पारा, हरिताल कान्तलोह अभ्रक स्वर्णमाक्षी और रोप्यमाक्षी, **रोगा** आयुर्वेद में वर्णित आठ प्रधान रोग—कायव्याधि अपस्मार, कुष्ठ, मेह उदर, भगन्दर अर्श और अश्मरी

वायुका परमाकिर के आठ अवतार वाराही, माहेश्वरी, कौमारी वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, कौबेरी और चामुण्डा, **शूलानि** आठ प्रकार की मूर्तियां—शैली, दारुमयी, लौही लेप्या, लेख्या मैत्री मनोमयी और गणेशमयी, **सौगन्धिकाः** आठ यौगिनियां जो पार्वती की सहेलियां थीं—मङ्गला, विमला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा, **अर्घः** एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विशेष समय पर ग्रहों की यथार्थ स्थिति दर्शाता है,—सिद्धयः दे० अष्टमहासिद्धय—अणिमा, महिमा, लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य, ईशिता, वशिता और प्राकाम्य।

अष्टमराशि [ब० स०] किसी व्यक्ति के जन्म की राशि से आठवीं राशि जो प्रायः अशुभ मानी जाती है।

अष्टाक्ष (वि०) [ब० स०] (मोती) जिसमें आठ ऐन

जुते हो, अष्टत कपाले हविषि, गवि च युक्ते—पा० ६।३।४६ वा०।

अष्टागवम् [अष्टानां गवां समाहारः] आठ गौओं का समूह।

अष्टादश (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम०—तत्त्वानि अठारह प्रधान तत्त्व जिनमें महत्, अहङ्कार, मन, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ गिनी जाती हैं, चत्वारि अठारह प्रकार का अन्न है—यजगाधूमश्यामाकाः तिला कङ्गुकुलत्थका, माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावा धान्यमर्षणा। गवेधुकाश्चणाश्चारा ओदनार्थाश्च सर्षपाः, चणकाढकीन कादर्वेव - धान्यान्यष्टादशैव तु पर्वाणि महाभारत के अठारह खण्ड आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासि, मौसल, महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहण।

अस् (दिवा० पर०) युद्ध करना युधोऽस्यन्ति बलिरिन्द्रेण वारकेण मुहोऽस्यत - भाग० ८।१०।२८।

अस्त [अस आधारे क्त, अस्यन्ते सूर्यं किरणा यत्र] 1 छिपना, पश्चिमाद्रि 2 सूर्य का छिपना। सम० निलय (वि०) अस्ताचल के पीछे छिपा हुआ -विडम्बयन्यस्तनिमग्नसूर्यम्—रघु० १६।११, अस्तक: शिखर-, अस्ताचल की चोटी, समय: सूर्य छिपने का समय, मृत्यु का समय—करजालमस्तसमयेऽपि गताम् - शि० ९।५।

अस्तिभार (वि०) [अस्ति क्षीरं यस्य—पा० २।२।२४ वा०] जिसके पास दूध हो, दूध रखने वाला।

असङ्काश्य [न +सम् + कम् + क्त] अधिमास, मलमास, लौंद का महीना।

असध्याज्य (वि०) [न + स + यज् + ण्यत्] जिसके साथ मिलकर किसी को यज्ञ करने की अनुमति न हो —मनु०।

असंयोग [न + सम् + युज् + घञ्] 1. सबध का अभाव 2 जो संयुक्त व्यञ्जन न हो पा० १।२।५।

असरम्भ [न + सम् + रभ् + घञ्] निर्भयता, निडरता - महा० १४।१८।२।

असरोध [न + सम् + रुध् + घञ्] अनावास।

असंवर (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके, दुर्निवार - अमवरे शवरवैरिविक्रमे -नै० १।५३।

असहार्य (वि०) [न + सम् + हृ + ण्यत्] 1. अजेय, जिसका मुकाबला न किया जा सके विधिर्बलवतां यस्मै ददाति पुरुषोत्तम रा० ५।३७।४ 2 जिसे सार्थभ्रष्ट न किया जा सके।

असङ्कल्पकल्पन [असङ्कल्प् + णिच् + ल्युट्] असन्तुष्टि, दोहरापना।

असङ्कुच [असङ्कुच् + भू + अप्] बात दे० स०।

असती (सती) [असत्+ङी, पा० ५।३।७१, कादेश] 1. यह या वह 2. यह दुष्ट— यार्यावं समवद्याय तस्यै सौनिकयेऽलकी—भट्टि० ४।१५।

असत्ति: (स्त्री०) [न+सञ्ज्+क्तिन्] सामान्य व्यवहारिक बातों की ओर मन का लगाव न होना असक्तिरनभिष्वङ्ग पुत्रदारगृहादिषु भग० १३।९।

असवर्ण: [न+सम्+वृ+अप्] विलगाव (विशेषकर जातियों में) का अनुभव।

असङ्कल्पित (वि०) [न+सम्+कृप्+क्त] जो कभी कल्पना न किया हो असङ्कल्पितमेवेह यत्कस्यात् प्रवर्तते रा० २।२२।२४।

असङ्कल्प (वि०)[न+सम्+यम्+क्त] निर्बाध, अनवरुद्ध —अस्ति क्षिप्तामसङ्कल्पताम्—रा० १।७०।१३४।

असदाचार: [असत्+आ+चर्+घञ्] अयोग्य व्यक्ति से सम्मिलन।

असद्वस्तु (नपु०) [क० स०] अविद्यमान चीज।

असद्भावित् (वि०) [असत्+भाव+णिनि] जो व्यक्ति किसी वस्तु या बात की असत्ता को स्थापित करना चाहता है।

असन्तुष्ट (वि०) [न+सम्+तुष्+क्त] अतृप्त, अप्रसन्न असन्तुष्टो द्विजो नष्ट—नीति०।

असन्तोष: [न+सम्+तुष्+घञ्] अतृप्ति, अप्रसन्नता।

असन्न्यास [न+सम्+आ+स्यूट्] 1 निरपेक्षता 2 विलगता, पार्थक्य।

असमकाय: [क० स०] जो समान रूप से नहीं बाँटा हुआ है।

असमाधृत (वि०) [नञ्+सम्+आ+धृ+क्त] जो भलीभाँति प्रतिष्ठित न किया गया हो।

असमिध्य (अ०) [न+सम्+इध्+ल्यप्] न जला कर।

असम्पोलोल (वि०) [न+सम्+अञ्च्+विच्+ड] जो खरा न हो, त्रुटिपूर्ण।

असम्पूर्ति: (स्त्री०) [न+सम्+पृ+क्तिन्] अपूर्णता का अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना - तत्रासमाप्तमभ्येत पूर्वोपरिरसंगृहीतम्... मनु० ४।१३७।

असम्प्राप्त (वि०) [न+सम्+आ+प्+क्त] जो अभी पहुँचा न हो, अनागत, अनुपस्थित—क्वचिदसम्प्राप्तपरिच्छद:—मनु० - ९।७०।

असम्प्राप्त (वि०) [न० ब०]अनुपस्थित, जो निकट न हो।

असम्भ्रम:[न+सम्+भ्रम्+घञ्] निर्भिकता, निडरपन, कार्य का एक साथ असम्भ्रमात् करिष्यामि इत्य शैलोत्तमधारिण्याम्—रा० १।६४।५९।

असम्भ्रान्तमनसावस्थान (वि०) जिसने अशांत बात को दीर्घ में आकर रोक दिया है—तस्यासम्भ्रान्तमनसावस्थानैकवासना—श्री० सू० ३।१।२१ पर गो० भा०।

असम्भोग: [न+सम्+भुज्+घञ्] समझ का अभाव।

असम्भवत् (वि०)[न+सम्+भू+शतृ] असम्भाव्य, अघटनीय।

असम्भावना [न+सम्+भू+णिच्+युच्+टाप्] सम्मान का अभाव।

असम्भाषित (वि०) [न+सम्+भू+णिच्+क्त] अयोग्य। सम०—अपना ऐसी समानता बतलाना जो असम्भव हो।

असम्भाष्य (वि०) [न+सम्+भाष्+ण्यत्] जिससे बात करना उचित न हो।

असम्भोज्य (वि०) [न+सम्+भुज्+णिच्+ण्यत्] जो सहभोज में सम्मिलित होने के योग्य न हो—मनु० ९।२२८।

असम्मोहः [न+सम्+मुह्+घञ्] 1 आशा या भ्रम से मुक्ति 2. आत्मसंवरण 3. तत्व ज्ञान।

असम्यक् प्रयोगः [असम्यञ्च् + प्र+युज्+घञ्] असंगत व्यवहार, संगत परिपाटी।

असव्य (वि०) [न० त०] दक्षिण पार्श्व।

असन्निधित्वम् [न+सन्निधि+ष्यञ्] असामीप्य, अनुपस्थिति—असन्निध्य कथं कृष्ण तवाक्षीद्वृष्णिनन्दन महा० ३।१४।११।

असन्मनस्कत्वम् [न+सन्मनस्+ष्यञ्] 1 असंतुष्टि 2 अनौचित्य।

असन्मतिव्यवहर्तृ (स्त्री०)[न+सन्मति+व्यवहृ+तृच्+टाप्] अनुचित व्यवहार करने की अवस्था।

असन्मार्गावलम्बिक (वि०) [न+सन्मार्ग+ठक्] जो लोकसम्मत न हो, जो परम्परा के विरुद्ध हो।

असन्यवहार (वि०) [न+सह्+अव+घञ्+ख्युट्] उपेक्षा करने वाला, प्रमादी, आलसी।

असहनशिल (वि०) [न+सहन+ठक्] जो सहन के साथ काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—न सहनशिलं बाहुबलमाहवेषु शि० ९।५९।

असिधर्मा [असि+धर्म+टाप्] तलवार चलाने का अभ्यास।

असिधेनुः (स्त्री०) तलवार का फल वसुधाधवसंघानां-शिरसाञ्छिता—शि० ९।५१।

असिधेनुकः [सं० ब०] जो दाहिने हाथ के तलवार से वार करता हो महा० ६।९०।४४ पर नील०।

असिपत्रवनी (स्त्री०) काली कपास का पौधा।

असिद्ध (वि०) [न+सिध्+क्त] (व्या० में) अनित्यात्मक प्रतिपन्न अर्थात् रद्द, अवयवशून्य - पूर्वमसिद्धम्—पा० ८।२।१।

असिद्धान्तः [न० त०] मनमत सिद्धान्त, मूर्खियों का सिद्धान्त।

असिद्धार्थ (वि०) [न० ब०] जिसने अपने उद्देश्य में सफलता न पाई हो।

असुतृप् (वि०) [असु+तृप्+क्विप्] जो अपने ही सुखोपभोग में मस्त हो, सांसारिक विषय वासनाओं में मग्न—प्रायेण क्षुद्रसुतृपो लुब्धा भाग० १०।१।६७।

असुगन्ध (वि०) [न० ब०] जिसमें खुशबू न आती हो।

असुतर (वि०) [न० त०] जो आसानी से पार न किया जाय, जिसमें अनायास सफलता प्राप्त न हो।

असुन्दर (वि०) [न० त०] जो खूबसूरत न हो।

असुर [असु+र, असुरता स्वार्थेषु न मुण्डरता, अथवा इन्यर्थं] राक्षस। सम०—अद्रुह् राक्षसों का रुधिर -असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते—दे० मा० ११,—गुरु 1 शुक्राचार्य 2 शुक्र नाम का ग्रह,—द्रुह्, राक्षसों का शत्रु अर्थात् देव पुर विलसन्ति क्षोम हि सैहिकेयोत्सुरद्रुहाम् - शि० २।३५।

असुषिर (वि०) [न+सुष्+किरच्, तस्य स] जिसमें कोई छिद्र न हो, जो पोला या कपटी न हो।

असूतपतिका [असूत+पतिका पा० ६।२।४२] वह स्त्री जो बिना किसी बच्चे को जन्म दिये ही बूढ़ी हो गई है।

असूर्य (वि०) [न० ब०] 1 अन्धकारयुक्त 2 अज्ञात, दूरवर्ती। सम०— रक्षांसि वे लोग जो सर्वथा अलग-अलग रहते हैं असूर्यंरक्षसो नाम धर्मारिभ्य महामति रा० १।३२।७।

असृज् (नपुं०) [न+सृज्+क्विन्] 1 रुधिर 2 अंगराग 3 आकाश। सम० ग्रह मंगलग्रह,—क्षित (वि०) खून से लथपथ।

असेवा [न० त०] अभ्यास का अभाव—न तर्कशास्त्राणि शास्त्राण्यधीयन्तासेवया—मनु० २।११६।

असस्य (वि०) [न० त०] 1 घुना 2 जो घमरी न हो, हल्की न हो- महा० ५।१२।

असंख्येय (वि०) [न० त०] जो थोड़ा न हो, बहुत अधिक।

असंतोष (वि०) [न+सन्+घञ्] बिना किसी अवांछित फल के अस्तोकसत्फलं च सुख पृथग्विधं विदुः, बिना किसी रोक टोक के।

असंयत [असंयते क्षिप्यते-असं+क्यप्] 1 फेंक कर मार करने वाला हथियार 2 तीर, तलवार 3 धनुष। सम०— पाणिन् (वि०) गोली मारने वाला- असंयत पातिभिरावृतम् कुमा० ४।१०३७,—मुख् जो तीर से घाता है, तीर धारण करने वाला, असंयत् धनुष, एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा तीरों की मार की जाय—महा० ९।५७।१८।

असंयतत्व [न+त०] अनावारण स्थान या प्रदेश—असंवार्यगोपनतामनुसंचरन्तु मेघा०।

असंयत्वर् (वि०) [न+संयत्+स्नु] चंचल, अधीर।

असंवि (नपुं०) [असं+क्विन्] 1 हड्डी 2 पुट्ठी, या किसी फल की गिरी। सम० कुम्भम् एक नरक का नाम, -कम्पम् स्नायु, कंडरा,—भेदिन् (वि०) जो हड्डी को भी छेद दे, अत्यन्त कठोर वाक्यसंविदभेदि-

वेदिन्.—महा० ३।३१२।३,—कर्मन् और्ध्वदैहिक क्रिया का एक भाग,—क्षित्य किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करना,—क्षारः, स्नेहः—वसा, मज्जा।

अस्नात (वि०) [न० त०] जिसने स्नान न किया हो।

अस्पृष्ट (वि०) [न+स्पृश्+क्त] जो (किसी कथन से) आवृत न हो, (उसके) अतर्गत न हो—अस्पृष्टपुरुषान्तर (अध्वन्)—कु० ६।७५।

अस्पृष्टमैथुना (वि०) [न० ब०] कुमारी, अक्षतयोनि।

अस्पृह (वि०) [न० ब०] निरीह, निरिच्छ, जिसे इच्छा न हो।

अस्फुट (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्फुटादधरबन्धेदलुन्दरम्—नारा०।

अस्मिमानः [त० स०] स्वाभिमान, अहंकार।

अस्मृत (वि०) [न० त०] 1 याद न किया हुआ 2 जिसका प्रामाणिक ग्रन्थों में उल्लेख न हो।

अस्वातन्त्र्य (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अन्यायीन नरादिव वर्धयति नरं दुरात्—रा० ३।३३।५।

अस्विन्न (वि०) [न० त०] जिसे कसी भांति उबाला न गया हो।

अस्वेद्य (वि०) [न+स्विद्+ण्यत्] जिसे पसीना लाने के उपयुक्त न समझा जाय।

अहत (वि०+हन्+क्त] जो बजाया न गया हो—अहतामां प्रवालशैर्याम्—का०।

अहम् (सर्व०) [अस्मद् का कर्तृकारक एक वचन] मैं। सम० चिन्त् (पु०) अहंकारी, जो केवल, अपना ही चिन्तन करे,—तत्त्वम् अहङ्कार, घमंड।

अहिच्छत्रम् [ष० त०] तान्त्रिकों का एक आदेश।

अहिविषहरा (स्त्री०) [अहिविष+अप+हृ+अच्+टाप्] एक पौधे का नाम जिसके सेवन से विष दूर हो जाता है।

अहोलाभकर (वि०) [अल्पेऽपि, अहोलाभो जात इति विस्मय कुर्वाण] थोड़े लाभ से ही सतुष्ट होने वाला व्यक्ति।

आ

आकल्पज (वि०) [आकल्प+जन्+ड] मलमास संबंधी।

आकण्ठम् (अव्य०) गले तक। सम० तृप्त (वि०) स्वादिष्ट भोजनों से गले तक छिका हुआ।

आकलना [आ+कल्+णिच्+युच्+टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य आँकना।

आकल्पम् } (अ०) चार युगों के चक्र की अवधि तक,
आकल्पान्तम् } जब तक संसार है तब तक।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अच्+टाप्] अपेक्षा, आशा—असत्यामाकाङ्क्षादावसन्निधानमकारणम्—मी० स० ६।४।२३ पर शा० भा०।

आकाशः,-शम् [आकाशन्ते सूर्यादयोऽत्र—आकाश्+घञ्] 1 आसमान 2, अन्तरिक्ष 3 मुक्त स्थान। सम०—चारिकः सूर्य, ब्रह्मदृष्टिः, ब्रह्मलक्ष, जो बिना उद्देश्य के इधर-उधर देखता है, दृष्टिक (ब० व०) जैन सम्प्रदाय के लोग, जो अपना मुँह आकाश की ओर रखते हैं, बुद्धिहलम् मूर्खता का कार्य जैसे आकाश की ओर धूंसा उठाना, व्यर्थ कार्य,—शयनम् खुली हवा में सोना।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] एक प्रकार का युद्ध-कौशल—शुक्र० ४।११००।

आकूतम् [आ+कू+क्त] (प्रायः समास के अन्त में अव्यय) प्रस्तुतीकरण—तु० धर्माकूतम्।

आकूतिः (स्त्री०) [आ+कू+क्तिन्] आकल्पना और मनु की एक कन्या का नाम।

आकृष्णारम् (नपु०) कुछ साम-मन्त्रों के नाम।

आकरकर्म (नपु०) [ष० त०] खनिकार्य—को० अ० २।

आकरबन्धः [ष० त०] मूलबन्ध, आदिबन्ध।

आकरबन्ध [ष० त०] रत्न, बढ़ाऊ गहना।

आकारवर्ण (वि०) [ष० ब०] रूप और आकार में वर्णनीय।

आकृत (वि०) [आ+कृ+क्त] लिखित, बना हुआ यद्वा समूहे अभ्याकृते गृहे ऋ० ८।१०।१।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1 रूप 2 (बनावट) बाईस की संख्या।

आकृतियोनिः [ष० त०] नक्षत्रपुंज।

आकर्षः [आ+कृष्+घञ्] 1 चतुर आकर्ष खारिफलके धूतेऽक्षे कार्षिकेऽपि च—हेम० 2 विवाहित पीड़ा—महा० ५।४०।१९।

आकृष्ट (वि०) [आ+कृष्+क्त] खींचा हुआ, आकर्षित किया हुआ, ऐंचा हुआ।

आकोपः [आ+कुप्+घञ्] चिड़चिड़ापन, चिड़चिड़ाहट।

आकौशलम् (नपु०) [आ+कुशल+अण्] विशेषता का अभाव, नैपुण्य की कमी विदरैतुमथान्यतस्तनो मुखमाकौशलमार्यचेतसाम्—शि० १६।३०।

आक्रमः [आ+क्रम्+घञ्] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा—क्रमेण यद्यमान स्वर्गं लोकयाक्रमते—बृ० ३।१।६।

आक्रान्त (वि०) [आ+क्रम्+क्त] 1. अभिभूत, दबा हुआ,—न खलु तरके द्वाराक्रान्तं धनस्तनमण्डलम् भर्तृ० १।६७ 2. आरूढ, चढ़ा हुआ—निर्यद्वस्तु-रगाक्रान्ता रा० ६।१२७।१३। सम०—चित्त (वि०) मन से पराजित, अत्यन्त प्रभावित।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] आक्रमण, लूटखसोट यो भूतानि धनाक्रान्तया यथास्वलेशाञ्च रक्षति—महा० १२।९७।८।

आक्रीडगिरिः, (र्वतः) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद प्रमोद के लिए पहाड़ - आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिता स्वेषु वेश्मसु - कु० २।४३।

आक्लिष्ट (वि०) [आ+क्लिद्+क्त] 1 स्निग्ध 2 दया से पसीजा हुआ।

आक्षपटलिकः [त० स०] 1. पुरातत्त्व और अभिलेखाधिकारी 2 लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आक्षर [अक्षर+अण्] वर्णमाला संबंधी।

आक्षिप्त [आ+क्षिप्+क्त] प्रक्षिप्त, ठूंसा हुआ।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] परास, (तीर की) पहुंच —लोऽयं प्राप्तस्तवाक्षेपम्—महा० ७।१०२।६। सम०—रूपकम् उपमा अलंकार का वह रूप जिसमें केवल उपमान ही संकेतित हो।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्—खण्ड्+डलच] इन्द्र। सम०—धनुस्, —धनुस् इन्द्रधनुष, सुतः इन्द्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन - अनुस्मृतास्वण्डलसूनुविक्रमम् —कि० १।२४।

आखनिकशाला [ष० त०] दस्तकार या शिल्पी का कारखाना।

आखुवाहनः [ष० त०] गणेश का नाम।

आखेटोपवनम् [त० स०] शिकार या मृगया के लिए राजकीय जंगल।

आख्या (स्त्री०) [आख्यायतेऽनया, आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. सूरत, शक्ल—न हि तस्य विकल्पाख्या सा च मद्दी-नया हृता—भाग० ११।१८।३७।२ सौन्दर्य, मनोज्ञता—वृणीष्व रुचिराख्यासु - रा० ७।६०।१२।

आख्यात (वि०) [आ+ख्या+क्त] पुकारा गया—सेवा स्वर्वृत्तिराख्याता मनु० ४।६।

आख्यातव्य [आ+ख्या+क्त] आरंभ करने का शुभ शकुन।

आगतत्वम् (नपुं०) [आगत+त्व] उद्गम, मूल, जन्मस्थान।

आगतसाध्वस (वि०) [न० ब०] डरा हुआ, भीत।

आगमः [आ०+गम्+घञ्] 1 जो बाद में आने वाला है आगमबन्धबलोप स्यात्—मी० सू० १०।५।१ 2 पूजा की एक रीति—लक्ष्मानुग्रह आचार्यनिष्ठ सन्दर्शितायम —भाग० ११।३।४८ 3 वाधा—आग-मास्ते शिवास्सन्तु रा० २।२५।२१। सम०—जन्मन् (वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाश हो जाने का हो, जिसका जन्ममरण होता है—आग-मापायिनोऽनित्या भग० २।१४, —शास्त्रम् (नपुं०) 1 'आगम' से संबंध रखने वाला शास्त्र 2 माण्डूक्य का परिशिष्ट, श्रुतिः (स्त्री०) परम्परा।

आगमित (वि०) [आगम्+णिच्+क्त] 1 सीखा हुआ, (किसी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतिस्थमेव निपुणा-गमितम शि० ९।७९, 2 पठित, जिसने पढ़ लिया है 3 निश्चय किया हुआ।

आगुलम् (नपुं०) जूता—हर्ष०।

अग्निहोत्रिक [अग्निहोत्र+ठक्] अग्निहोत्र से संबन्ध रखने वाला।

आग्रयणेष्टि (स्त्री०) [ष० त०] ऋतु के प्रथम फल की आहुति।

आङ्किक [अङ्क+ठक्] बूटनी में नीचे तक पहुंचने वाला कान।

आङ्गारिक [अङ्गार ठक्] कोयले को जलाने वाला मनु० १२।७१।७०।

आङ्गिरस (वि०) [अङ्गिरस+अण्] विशिष्टता में एक वेद का नाम आङ्गिरसवेदभेदे मुनिभेदे नदीभिन्नम् नाना०।

आचन्द्रतारकम् (अ०) जब तक संसार में चांद और तारे हैं अर्थात् सदा के लिए।

आचपराय (वि०) [आ+चञ्च्+क्विप्—परपूर्वक +अच्] इधर उधर घूमने वाला।

आचमनपात्रिन् (पुं०) [आचमन+पात्र+इनि] पानी निकालने वाला, पानी खींच कर निकालने वाला, पनि-हारा।

आचमनी (स्त्री०) [आ+चम्+ल्युट्+ङीष्] मुखशुद्धि के लिए आचमन करना।

आचरित (वि०) [आचर्+क्त] बताया हुआ, बना हुआ देशमूलादयस्यैनमगस्यावरित मुखम् रा० १।२५।१८।

आचारचक्रिन् [आचार+चक्र+इनि] वैष्णव संप्रदाय के सदस्य।

आचारपुष्पाञ्जलिः (स्त्री०) (प्रवेश करते समय घर के द्वार पर ही) धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पों का उपहार भेंट करना।

आचार्यदेवीय (वि०) [आचार्यदेव+छ] आचार्य के कुल नित्य पद का (आप्तकारिकों में इस उपाधि को उन विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिनकी उक्ति 'मन्त्र' के एक अंश को ही प्रकट करती है)।

आचार्यसवः [आचार्य+सु+अच्] एकाह—अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम।

आचार्यकम् [आचार्य+क] 1 आचार्य का पद—तान्यवाचार्यकं कुर्वन्निव क्रीडाशिलगिडनाम्—भा० १।११०६ 2 आचार्य का सम्मान करना यथाराचार्यकं तत्र कुन्तीपुत्रो धनञ्जय महा० ७।१४७।६ 3 भाष्यकर्ता या व्याख्याकार का कर्तव्य श्रुत्यन्धकाचार्यकम् विक्र० २८९।

आचेष्टित (वि०) [आ+चेष्ट्+क्त] उपकान्त, वचन दिया हुआ, तत् कार्यं, कृत्य, कार्यसम्पादन।

आच्छन्न (वि०) [आ+छद्+क्त] आवृत, ढका हुआ।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] बिस्तरे की चादर।

आजात (वि०) [आ+जन्+क्त] उच्च कुल में उत्पन्न या वे कश्चिदिहाजात क्षत्रिय क्षत्रकर्मणि—महा० ५।१६४।३८।

आजातिक (वि०) [आ=आया (जाति) स्वार्थे कन] जन्मजात, नैसर्गिक आजातिकगमभिता नै० १५।५६ अ० टी० ५।

आजपादम् (नपु०) पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र।

आजिमुखम् [ष० त०] युद्ध का प्रारम्भ।

आजीवितान्तम् (अ०) मरने तक मृत्युपर्यन्त।

आज्यपात्र [ष० त०] घी का कटोरा।

आज्यभाग [ष० त०] घी की आहुति का हिस्सा।

आञ्जनाभ्यञ्जने (नपु० द्वि० व०) आँखों का अंजन और पैरों का उबटन।

आञ्जलिक [अञ्जलि+ठक्] अर्धचन्द्र के आकार का एक तीर।

आटविक [अटव्या चरति भवो वा ठक्] जंगली जनजाति का चौधरी—कौ० अ० १।१०।

आड्यरोग [आ+ध्यै क पृषो०+रुज्+घञ्] गठिया या ग्रन्थिवात।

आण्डकोश [अण्ड+अण्+कोश] अण्डे का खोल।

आतङ्कम् [आ+तञ्च्+घञ्, कुत्वम्] भरणी नक्षत्र।

आतप्त (वि०) [आ+तप्+क्त] गर्म किया हुआ, आग में तपाया हुआ।

आतिशायिक (वि०) [अतिशय+ठक्] अतिशुद्ध, बहुत अधिक।

आतिष्ठद्गु (अ०) [निष्ठन्ति यस्मिन्काले दोषाय] उस समय तक जब तक कि चोरों द्वारा जाने के लिए उठती है (सायंकाल के बाद एक वेद घटा तक)—आतिष्ठद्गु अपरं मध्यम् भट्टि० ४।१४।

आत्मन् (पु०) [अत्+मनिन्] मानसिक गुण भावशुद्धिदया सत्यं समभवत्तस्यमक्रमः महा० १२।१६७।५। (समस्त शब्दों में आत्मन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। मम०—आप्त आत्मा को प्राप्त होने वाला परम सुख, परमानन्द,—औपम्यम् स्वसादृश्य, अपनी समानता—आत्मौपम्यम सर्वत्र भग० ६।३२,—कर्तव्य (नपु०) अपना कर्तव्य, ज्योतिः (नपु०) आत्मा की प्रभा, तेज तुष्ट (वि०) अपने में सन्तुष्ट—आत्मतृप्तश्च मानवः—भग० ३।१७, प्रत्यक्षिक (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला;—आत्मप्रत्यक्षिकं ज्ञानम् महा० १२।२४६।१३, भू कामदेव,—वर्ग (वि०) अपने दल या समुदाय से सम्बन्ध रखने वाला, उदाहरणा मुहुरिरे मुहुरात्मवर्गा—शि० ५।१५, स्थ (वि०) अपने पर ही दृष्टि जमाये हुए—आत्मस्थं मन कृत्वा भग० ६।२५, स्थात्व दे० आत्मन्त्वम्,—स्थ (वि०) जो अपने अधिकार में हो—आत्मस्थ कुरु शासनम्—रा० २।२१।१८।

आत्ययिक (वि०) [अत्यय+ठक्] विलम्बित, जिसमें पहले ही देर हो गई हो—कृत्यमात्ययिक स्मरन्—रा० ५।५८।४६।

आत्ययिकम् [अत्यय+ठक्] 1 कठिनाई संकट 2 अनिवार्य कर्तव्य।

आत्रेयी [अत्रेरपत्य ढक्, स्त्रियां ङीप्] गर्भिणी स्त्री महा० १।७१६५।५४, आत्रेयीमापन्नगर्भामन्यु मी० सू० ६।१।३ पर शा० भा०।

आदर्शनम् [आदर्शन+अच्] आश्चर्य मारण टोना, जादू।

आदष्ट (वि०) [आ+दंश्+क्त] कुतरा हुआ, चोच मारा हुआ, डसा हुआ।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] पराभूत करना, परास्त करना अथवा मन्त्रवद् दुष्टरात्मादानाय दुष्टेषम् महा० १२।७१२।

आदानसमिति (स्त्री०) जैनियों के पाँच सिद्धान्तों में से एक जिसमें वस्तु को इस प्रकार ग्रहण किया जाता है जिससे कि कोई जीवहत्या न हो।

आदानस्थम् निर्भयता महा० १२।१२०।५।

आदि [आ+दा+कि] 1 प्रथम, प्रारम्भिक 2 नाम के सात भेदों में से एक—अथ सप्तविधस्य खल्वादि सप्तविधस्य सामोपामोत्तम ··· यदेति स आदि—छा० २।८।१। सम०—दीपकम् दीपकालंकार का एक भेद (जहाँ क्रिया वाक्य के आरम्भ में हो) ·विपुला आर्या छन्द का एक भेद, वृक्ष एक प्रकार का पौधा।

आदित्यहृदयम् [ष० त०] एक मन्त्र जिसमें चार मास के बच्चे को सूर्य दर्शन कराया जाता है।

आदित्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम।

आदीनवदर्शी (वि०) [आ+दी+क्त+वा+क, दृश्+णिच्] पासे के खेल में अपने साथी खिलाड़ी के प्रति दुर्भावना रखने वाला।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] किसी कार्य को करने का संकल्प, यत—उद्धृत मे स्वय तोय इतादेशं करिष्यति

—रा० २।२२।२८। सम०—कृत् जो आज्ञा का पालन करता है उपादेयकृतोऽधिकारान्तु—रा० ५।५२।

आदेशिकः [आदेश+ठक] भविष्यवक्ता, ज्योतिषी—पुरा गह्वरिकैरादेशिकैरावृष्टा स्वप्न० १।

आद्यकालिक (वि०) [आदौ भवः यत् काल+ठक्] केवल वर्तमान को देखने वाला—आद्यकालिकया बुद्ध्या दूरे सत्य इति निर्णयः—महा० १२।३२१।१४।

आधमर्णिकः [अधम+ऋणिकः] कर्जदार, मूलात् द्विगुणा वृद्धि गृहीता चाधमर्णिकात् सुक्र० ४।८८०।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] मैथुन—तथापि मृत्युराधानादकृतघ्नश्च दर्शित भाग० ९।९३६।

आधिः [आ+धा+कि] दम्भ, एतमाधिं दापयिष्येऽहमात्मानेन मय कथंचित्—सुक्र० ४।६४१।

आधिमासिक (वि०) [अधिमास+ठक्] अधिमास या मलमास से सबध रखने वाला —करणाधिष्ठितमाधिमासिकम् को० अ० २।७।

आधिरथिः [अधिरथ+इञ्] अधिरथ का पुत्र, कर्ण —हत भीष्ममाधिरथिविदित्वा—महा० ७।२।१।

आधूत (वि०) [आ+धू+क्त] हिलाया, हुआ, क्षुब्ध —पवनाधूतलतासु विभ्रम रघु० ६।

आधार [आ+धृ+घञ्] किरण, आधार आलबाले-ऽम्बुदन्वे च किरणेऽपि च नाना०। सम०—चक्र रहस्यमय या अलौकिक चक्र जो शरीर के परवर्ती भाग पर स्थित हैं—इत्यगाधारचक्रे करुणमरुणगात्र चारणाख्य त्रिनेत्रम् मालती०।

आधारिकः [आ+नम्+क्त+ठ+अच्] उपहार, पारितोषिक।

आनद्धः [आ+नह्+क्त] ढोल या धपकी—अमानमानद्धनियतमाध्वनीत् नैष० १५।१६।

आनन्दकरः [आनन्द+कृ+अच्] चन्द्रमा,—काष्ठा यथानन्दकरः मनस्त भाग० १०।२।१८।

आनन्दतीर्थः द्वैतसम्प्रदाय का सस्थापक श्री माधवाचार्य।

आनन्दभैरवी सगीत का एक भेद।

आनर्तः, —र्त्त [आ+नृत्+घञ्] नाच।

आनुजीव्यम् [अनुजीवि+ष्यञ्] सेवक के प्रति नम्रता का व्यवहार—पशुपकुलनिवासादानुजीव्यानभिज्ञ —मुद्रा० १।३९।

आनुपथ्य (वि०) [अनुपथ+ष्यञ्] सडक के साथ-साथ चलने वाला।

आनुपूर्व्यवत् (वि०) [अनुपूर्व+ष्यञ्+मतुप्] निश्चित, नियत क्रम को रखने वाला।

आनुयात्रक [अनुयात्रा+अण्] दे० आनुयात्रिक।

आनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुचर, सेवक।

आनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठक्] 1 गौण कार्य 2 टिकाऊ।

आनृत् (दिवा० पर०) नाचना, उछालना—आनृत्यत विलज्जितो—अथ० ४।३७।७।

आनृशंस्यम् [अनृशंस+ष्यञ्] प्रजाके की आतुरता- स्त्री प्रधाष्टेति कारुण्यादाश्रितेत्यानृशंस्यत -रा० ५।१५।५०।

आन्तःपुरिक (वि०) [अन्तःपुर+ठक्] अन्तःपुर से सबध रखने वाला।

आन्तःपुरी [अन्तःपुरे भव अण्, स्त्रियां ङीष्] अन्तःपुर की सेविका, नौकरानी—नै० १९।६५ पर नारायण।

आन्तरागारिक [अन्तरागार+ठक्] कञ्चुकी।

आन्तर्वेदिक (वि०) [अन्तर्वेद+ठञ्] यज्ञवेदी के अन्दर वर्तमान।

आन्वीक्षिकी (वि०) [अन्वीक्षा+ठक्] किसी अन्य विचारधारा या सम्प्रदाय से सबध रखने वाला।

आपत्तिक (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला।

आपणः [आपण+अच्] व्यापारिक क्रियाकलाप, वाणिज्य पिहितापणोदया —रा० २।४८।३७। सम०—वीथिका बाजार, वेदिका विक्रयकक्ष।

आपदेव वरुण का नाम, एक मीमासक का नाम।

आपरपक्षीय (वि०) [अपरपक्ष+छ] कृष्णपक्ष से सबन्ध रखने वाला।

आपातस्थायिन् (वि०) अल्पस्थायी, क्षणमात्र रहने वाला।

आपाद्य (वि०) आक्रमण की इच्छा से आगे बढता हुआ, (किसी शत्रु पर) टूट पड़ने वाला आपाद्यसैनिकनिराकरणाकुलेन -शि० ५।१५।

आपृष्ट (वि०) [आ पृच्छ्+क्त] 1 सत्कृत 2 पूछा गया नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयात्।

आपोशान [ष० त०] एक प्रकार के प्रार्थना मत्र जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आचमन करते समय बोले जाते हैं नै० १९।२८।

आप्त (वि०) [आप्+क्त] लाभप्रद, उपयोगी अधिष्ठित हृदयेन मूर्तेनाप्तोपदेशिना -रा० ६।९०।१०। सम० अधीन (आप्ताधीन) (वि०) विश्वसनीय व्यक्ति पर निर्भर रहने वाला, आगम (आप्तागम) विश्वसनीय वैदिक भाष्य परोक्षमाप्तागमात् सिद्धम् भा० का० ६,—उक्ति (स्त्री०) (आप्तोक्ति) 1 आगम 2 अनुभूति 3 सामान्य कथन जो प्रमाण मान लिया गया हो, उपदेशः (आप्तोपदेश) किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा दी गई सलाह,—आप्तोर्याम एक प्रकार का यज्ञ।

आप्य (वि०)[आपो इद अण्, स्वार्थे ष्यञ्] पनडोका, एक प्रकार का घोडा जो पानी में ही उत्पन्न होता है।

आप्यायन् (भ्वा०) (प्रेर०) जल, पानी वृष्टिस्त्वाप्यतेऽद्भिरात्मानमिति श्रुतेः मालवि० २।१२।

आप्यायः [आप्य+घञ्] पूरा होना, फूलना, मोटा होना।

आप्याय्य (वि०) [आप्यै+क्यप्] सन्तुष्ट होने के योग्य, प्रसन्न होने के योग्य ।
आप्रपद (वि०) [आ+प्र+पद्+क्विप्] ईषत्प्रपन्न, कुछ झालीन, थोड़ा लिप्त ।
आप्लुत (वि०) [आप्लु+क्त] ग्रहणग्रस्त—अवाङ्मुखमथो दीप्त दृष्ट्वा सोममिवाप्लुतम् रा० ७।१०६।१ ।
आप्लुष्ट (वि०) [आप्लुष्+क्त] ईषद्दग्ध, झुलसा हुआ —दिवाकराप्लुष्टहिमूषलास्पदाम्—कु० ५।४८ ।
आबन्धक [आ+बन्ध+कन्] घेरा, बाड़ा वार्याबन्धक-पर्यन्ता पिबन्निक्षुमती नदीम् रा० १।७०।३ ।
आबीनम् (नपु०) अफीम ।
आबद्धवर्तुल } (वि०) [न० ब०] गोलाकार बद्ध बनाने
आबद्धवर्तुल } वाला ।
आबन्धुर (वि०) [आबन्ध्+उरच्] थोड़ा गहरा ।
आबालम् (अ०) बच्चे तक, बच्चे से लेकर । सम० गोपालम् (अ०) बच्चों और ग्वालों समेत, —वृद्धम् (अ०) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक ।
आबाह्य (अ०) बाहु तक ।
आबिम्बम् (नपु०) किसी मूर्ति की ढली हुई मुद्रा ।
आभात (वि०) [आभा+क्त] 1. चमकीला, देदीप्यमान 2 प्रतीयमान ।
आभास [आभास्+घञ्] 1 मूर्ति डालने के नौ पदार्थों में से एक 2 एक प्रकार का भवन 3 पूजा की एक अप्रामाणिक रीति विषमं परधर्मस्थ आभास उपमा छल, अधर्मशाखा एतस्मिन्ना धर्मज्ञोऽधर्मवत्त्यजेत् भाग० ७।१५।१२ ।
आभास्वर (पु०) निम्नांकित बारह विषयों का एक समूह नु०—आत्मा आत्मा दमो दान्त शान्तिर्ज्ञान शमस्तप काम क्रोधो मदो मोहो द्वादशा भास्वरा इमे -सारा०
आभिप्रायिक (वि०) [अभिप्राय+ठक्] ऐच्छिक, इच्छानुगामी ।
आभिमन्यव [अभिमन्यु+अण्] अभिमन्यु का पुत्र, परीक्षित ।
आभियोगिक (वि०) [अभियोग+ठक्] दक्षता से किया गया, चतुराई से युक्त ।
आभृत (वि०) [आ+भृ+क्त] 1 उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ भाग० ३।२६।६ 2 भरा पूरा, स्थिर - आभूतरमा मुनिः—माघ० ४।८।५६ ।
आभ्यागारिक (वि०) [अभ्यागार+ठक्] घर में रखने के योग्य ।
आभ्र (वि०) [अभ्र+अण्] अभ्रक से निर्मित अभ्राभमाभ्र तिलक इवामा—मै० ६।६२ ।
आमावेशाः [स० त०] कच्ची अवस्था में पैसा गया अन्न ।
आमन्त्रित (वि०) [आ+मन्त्र्+क्त] मन्त्र बोल कर पवित्र किया गया गराभाभामन्त्रितानाम् महा० ३।२०।२६ । सम० वचनम् संबोधन अर्थ में प्रयुक्त शब्द, विभक्तिः संबोधन अर्थ को प्रकट करने वाली विभक्ति ।
आमन्त्रितम् (नपु०) [आमन्त्र+क्त] 1 सम्बोधित करना 2. छलना 3 संबोधन की विभक्ति ।
आमलकः (पु०) पहाड़ी स्थान ।
आमिषार्थी (वि०) [आमिष टिषच् दीर्घश्च तमर्थयति इनि] मांस चाहनेवाला, मांस के लिए निवेदन करने वाला ।
आमुकुलित (वि०) [आमुकुल+इतच्] थोड़ा सा खुला हुआ ।
आमुक्तम् [आमुच्+क्त] कवच ।
आमूकः (पु०) काटेदार बाँस ।
आमोद (पु०) कवि की रचना की अंतिम पंक्ति जिसमें कवि का नाम बताया गया हो अर्थात् कविनामस्यात्र आमोद इतीरित —सगीत दामोदर ।
आम्र [अमुगन्धादिषु रन्दीर्घश्च] आम का वृक्ष । सम० —अस्थि आम की गुठली, आम का बीज, पञ्चमः संगीत का एक विशेष राग, फलप्रवालकम् आमों के रस से तैयार किया हुआ एक शीतल पेय ।
आम्रातकादिकम् [आम्रातक+कन्] इमली आदि पाँच (बेर, अनार, करौंदा, इमली और कमरख) फलों के रस से तैयार किया गया एक आयुर्वेदिक पदार्थ ।
आय [आ+इ+अच्, अय् वा घञ् वा] आमदनी का स्रोत —मार्गन्यायागतैरर्थान्—महा० १३।१६३।५ । सम० दर्शिन् (वि०) राजस्व-समाहर्ता, —मुखम् राजस्व के रूप को० ब० २।६, शरीरम् आय का शरीर को० ब० २।६ ।
आयकर्मक्षय, —क्षीण (नपु०) ऐसी स्थिति या अवस्था का होना जैसी पहले नहीं थी ।
आयत (वि०) [आयन्+क्त] लुप्त, सोया हुआ,—तं नायत बोधयेदित्याहु बृ० ४।३।१६ ।
आयति (स्त्री०) [आ+या+क्तिन्] वंश परम्परा, वंश-विस्तार पीढ़ी—दृश्यन्ति समरे बीरा अल्पभाग्याभिदायतौ —महा० ७।१५९।७१ ।
आयतनम् [आ+यत्+ल्युट्] महान् प्रयत्न, शक्ति का विस्तार न ते भविष्यमायत्तं संहिष्यति पुरात्ययात् - रा० ४।१६।१ ।
आयतनम् [आ+या+ल्युट्] घोड़े का आभूषण ।
आयुष्यमन्त्रः (पु०) ऋग्वेद का मन्त्र जो "यो ब्रह्मणाग्रह उज्जहार..." से आरंभ होता है ।
आयुष्यहोमः [आयुः प्रयोजनमस्य यत्, हु+मन्] यज्ञ विशेष जिसके अनुष्ठान से अभीष्ट दीर्घजीवी हो सकता है ।
आयोजनम् (अ०) एक योजन की दूरी तक ।
आयोधः (पु०) अयोध का पुत्र मुनि धौम्य ।

आरङ्कवः (पु०) मधुमक्खी (वेद०)—आरङ्गमरेव मध्वेरयध्वे—ऋ० १०।१०६।१०।

आरम्भकल्पाध्याय (नपु०) सामवेद का एक सूक्त।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1 शुरू 2. पहला कदम। सम०—आत्मत्वम् क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन की स्थिति—श्री० सू० ११।१।२०, चर्चिः किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को शुरू करने में रुचि, शूरः जो व्यक्ति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह दिखलाता है।

आरवडिण्डिमः [ष० त०] एक प्रकार का ढोल—चर्चिरसितरञ्जनारवडिण्डिमभिसर सरसमलज्जम् गीत० ११।६।

आरावः [आ+रु+घञ्] घोर शब्द।

आरीण (वि०) [आ+री+क्त] बिल्कुल सूखा हुआ—आरीण लवणजल भट्टि० १३।४।

आरुदितम् [आ+रुद्+क्त] क्रन्दन, विलाप, रोना-धोना निषेदुः क्षतशस्तत्र दारुणा दारुणार्दिताः रा० ६। १०६।३१।

आरुणेय [आरुणि+ढक्] आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु।

आरोग्यम् [अरोगस्य भावः—ष्यञ्] रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य। सम०—अम्बु (नपु०) स्वास्थ्यप्रद जल, —चिन्तामणिः आयुर्वेद के एक ग्रन्थ का नाम प्रतिपदव्रतम् स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए एक व्रत।

आरोपयितृ (वि०) [आ+रुह्+णिच्+तृच्] आरूढ करने वाला।

आर्कम् (अ०) [आ+अर्कम्] सूर्य तक आकल्पमार्कमहंन भगवन्नमस्ते भाग० १०।१४।४०।

आर्चायण (वि०) [न० त०] ऋचाओं में विद्यमान।

आर्चिकम् [अर्चा अस्यास्य अण्, स्वार्थे कन्] ऋग्वेद के मन्त्रों से युक्त, सामवेद।

आर्जवम् [ऋजोर्भावः अण्] सम्मुख भाग, (अधि० आर्जवे =सम्मुख भाग में सीधा) देवदत्तस्यार्जवे—मै० स० १।१।१५ पर शा० भा०।

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] असुविधाजनक - आर्ता यस्मिन् काले भवन्ति स आर्त्तः काल मै० स० ६।५। ३७ पर शा० भा०। सम०—त्राणम् जो कठिनाइयों में ग्रस्त हैं उनको बचाना।

आर्तवम् [ऋतुरस्य प्राप्त इति अण्] मासिक ऋतुस्राव, —निरिकायां प्रयच्छाधु ह्यस्या आर्तवमाहुः वै महा० १।६३।५५।

आर्द्र (वि०) [आ+अर्द्+रक्, दीर्घश्च] गीला, तर। सम०—एधांसि आग को गीली लकड़ियों द्वारा सुरक्षित रखी जाती हैं—यथैवार्द्रैधाग्नयः पृथग्भूता निस्सरन्ति शत०, ज्वरः उन्माद काल की दूसरी अवस्था में होती जब कि उसका वेडालक्षण बदले मद में गीला हो जाता है,—पत्रकः बाँस,—भावः 1. गीलापन 2 कृपा, मृदुता अमुमुर्तोऽभ्यस्य दयार्द्रभावम्—रघु० २।११।

आर्द्रिका (स्त्री०) हरा या गीला अदरक।

आर्द्रम् [ऋच्+अण्] प्रचुरता, बाहुल्य।

आर्द्धनारीश्वरम् [अर्धनारीश्वर+अण्] भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप से सम्बद्ध।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यावर्त का निवासी 2 योग्य, आदरणीय, सम्माननीय। सम०—आगमः (आर्या+आगमः) आर्य जाति की महिला के पास सम्भोग की इच्छा से पहुँचना अन्यस्यार्यागमे वधः याज्ञ० २।२९४, जुष्ट (वि०) आर्यजनों के द्वारा अनुमोदित तथा अनुगत,—धिषणः जिसकी बुद्धि बहुत अच्छी है, वाच् (वि०) आर्य जाति की भाषा बोलने वाला, शीलः उत्तम चरित्र से युक्त, अच्छे शील वाला, सिद्धान्तः आर्यभट्टकृत ग्रन्थ, स्त्री आर्यमहिला।

आर्षेयधर्म [ऋषेरिदं अण्, आर्ष+ठक्, तस्य ष्यञ्] आर्षेयधर्म वह धर्म जिसकी ऋषियों ने स्थापना की है।

आलक्तकचक्रम् (नपु०) एक प्रकार का युद्ध, प्रयोग—को० अ० २।१।

आलग्न (वि०) [आलग्+क्त] पालन करता हुआ, पालन किया हुआ अनुष्ठान।

आलम्बनम् [आलम्ब+ल्युट्] मन के अनुकूल धर्म।

आलम्बम् [आलम्बतेऽत्र आलो+ल्युट्] लगाव या स्थिरता का कोई (पेड़, खूँटा या रस्सी आदि) उत्तम वा अधिक मनो वा गोपाङ्गनाना कुचकुङ्कुमरुचां मुरारिनाम्न कलसस्य मूलमालालमालीत् कथमप्य भुवौ—कृष्ण०।

आलापः [आलप्+घञ्] संगीत की एक मधुर ध्वनि।

आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] संगीत आलाप करना, किसी एक राग की विशेषताओं का वर्णन।

आलिङ्गम् [आ+अल्+इङ्+कृत्+घञ्] एक प्रकार की संगीतरचना संगीतालिङ्गम्।

आलिजनम् [आलि+जन] सहेलियाँ।

आलेख्यगत (समर्पित) (वि०) [आलेख्ये गत—स० त०] चित्र में लिखित, चित्रित निलीयदीपा सहसा हतत्विषो बभूवुरालेख्यसमर्पिता इव रघु० ३।१५।।

आलिङ्गय (वि०) [आलिङ्ग्+ण्यत्] आलिङ्गन करने के योग्य मै० ७।६६।

आवासः [आवासीयतेऽस्मिन् आस्+घञ्] धाम, आवास, मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिता देवदानवाः —रा० ४।४०।२५।

आलोल (वि०) [आली+लच] बन्द, मुग्ध—अमरालीनपङ्कजम् ।

आलोला [आ+लिह्+क्त+टाप्] चाटुलती स्त्री—नाडीहृदा परिहृत भक्षपीत कदाचन—महा० १८।१०४।९०।

आवलित (वि०) [आवल्+क्त] क्षुब्ध, इधरउधर, जरा सा चंचराया हुआ ।

आवलेपनम् [आलिम्प्+णिच्+ल्युट्] 1 पानी मिला हुआ आटा जिससे घर का द्वार लीपा या आटा हुँ, विशेषत दक्षिण भारत में—विधुमालेपनपाण्डुरम् —मै० २।२६ 2. रगना या सफेदी लगाना आलेपनदानपण्डिता—मै० १५।१२ ।

आलोकः [आलोक्+घञ्] 1 केवल दर्शन आलोकमपि रामस्य न पश्यन्ति स्म दुखिता —रा० २।४७।२ ।

आलोकक: [आलोक्+ण्वुल्] दर्शक, देखने वाला ।

आवपनम् [आवप्+ल्युट्] 1 उद्गमस्थान—यस्य छन्दोमय ब्रह्म देह आवपन विभो - भाग १०।८० ।४५ 2 पटसन से निर्मित कपड़ा ।

आवापः [आवप्+घञ्] तान्त्रिकों के मतानुसार मन्त्र की बार-बार आवृत्ति जिससे अनेक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है—यस्तु आवृत्या उपकरोति स आवाप मै० ह० ११।१ पर शा० भा० ।

आवरणम् [आवृ+ल्युट्] 1 कवच कि० १७।५९ 2 भ्रम, भ्रान्ति ।

आवरीवस् (वि०) [आवृ—यङ्—वस्] छादन, चादर, ढकना—शतपथ० २३ ।

आवर्तक (वि०) [आवृत्+ण्वुल्] आकर्षक ।

आवर्तनम् [आवृत+ल्युट्] वर्ष, आवर्तनानि चत्वारि महा० १३।१०७।२५ ।

आवास्य (वि०) [आवस्+णिच्+क्यप्] बसा हुआ, व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ ईशावास्य मिद—ईश० १ ।

आवास् (चुरा० पर०) (आ पूर्वक वास्) सम्पन्न करना, वास युक्त करना—आवासयन्ती गन्धेन—रा० २।१०३ । ४१ ।

आविः (स्त्री०) [अवीरेव स्वार्थे अण्] पीड़ा, कष्ट, प्रसवपीड़ा ।

आविशत् (तना० आ०) व्याप्त होना,—शोल्लोकानाविशन्वाना भाग० ३।२०।३७ ।

आविश्त (वि०) [आविश+क्त] विद्यमान ।

आविद्ध (वि०) [आ+व्यध्+क्त] पास-पास रखा हुआ, छितराया हुआ स पाण्डुरादिद्धविमानमालिनीम् —रा० ५।२।५३ ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टि स्तृणाति विल् स्तृतौक धुधला, अस्पष्ट, जो देख न सके ।

आविर्भूत (वि०) [आविस्+भू+क्त] प्रकट हुआ हुआ, आविर्भूतप्रथममुकुला. कन्दलीरचायुकच्छम्—मेघ० ।

आविर्मण्डल (वि०) [ब० स०] जो वृत्त के रूप में दिखाई दे—विद्युति वनुराविर्मण्डल चापधूमली—कि० १४।६५ ।

आविर्हित (वि०) [आविस्+धा+क्त] जो दृश्य बना दिया गया हो ।

आवृणम् [आवृ+क्त] बार-बार प्रार्थना या नीति से देवता को सम्बोधित करना ।

आवृत्तयज्ञोपवीतम् (अ०) चूड़ों से लेकर बन्धो तक ।

आव्यक्त (वि०) [आवि+अञ्ज्+क्त] स्पष्ट, सुबोध, तद्वाक्यमाव्यक्तपदं निशम्य—रा० ७।८८।२० ।

आशत्रु (देर०) (अदा० आ०)दमन करना—भू० २।२८।९ ।

आशाम्बरत्व (वि०) [न० ब०] नग्न, नग्न ।

आशिक्षा [आशिक्ष्+अङ्+टाप्] सीखने की इच्छा, काव० ३०।१० ।

आशुकविः [क० स०] जो तुरन्त ही (बिना पहले से सोचे) काव्य रचना कर सके ।

आश्रमपरिग्रहः [ष० त०] सन्यास (चौथा आश्रम) ग्रहण करना ।

आश्रमवासिपर्वन् [ष० त०] महाभारत के पन्द्रहवें पर्व का प्रथम अनुभाग ।

आश्रयः [आश्रि+अच्] सांसारिक कष्ट,—सचिवकलत्रविचारमयाप शान्त प्रथम ध्यानमनाश्रयद्वयकारम् ब० च० ५।१० ।

आश्लेषणम् [आश्लिष्+ल्युट्] आसक्ति, अनुरक्ति ।

आश्वासिक (वि०) [आश्वास+ठक्] विश्वसनीय, विश्वासपात्र ।

आश्विनसिद्धिद्विसत्तम् (नपु०) शारदीय विषुव ।

आस् (आस:) (अ०) उदासीनता द्योतक अव्यय मनु आस्ते इत्यनुदेवने भवति । नावश्यमनुदेवने एव, औदासीन्येपि दृश्यते । मी० सू० ३।६।२४ पर शा० भा० ।

आसक्त (वि०) [आसञ्ज्+क्त] अवरुद्ध, बन्द —कार्तवीर्यबधुजासक्त तज्जल प्राप्य निर्मलम्—रा० ७।३२।५ ।

आसक्ति (वि०) [आसक्त+इतच्] जिसके साथ कोई समझौता हो गया हो सम्मिलित ।

आसद् (प्रेर०) बारबार करना, पहनना - आसाद्य कवच दिव्य २० ७।६।६४ ।

आसत्तिः (स्त्री०) [आसद्+क्तिन्] उपलब्धि यदाग्रहट न च ते क्वचिदासत्तिमुद्धे प्रादुर्भविष्यति— महा० १२।५२।१७ ।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1 हौदा, हाथी की पीठ और पीठ का मध्यवर्ती भाग जहां हस्त्यारोही बैठता है 2 तटस्थता—को० अ० ७।१ 3 पाशे के खेल में प्रयुक्त मोहरा । सम० बन्धुजनम् पीठ ।

आसन्न (वि०) [आस्+क्त] समीप, प्राप्त—आसन्नो-रक्षसां सोऽभिषाच ननन्द—रा० ५।६३।२३ । सम० —चर (वि०) आसपास ही घूमने वाला ।

आसमुद्रात्तम् (अ०) समुद्र के किनारे तक ।

आसुरायणः [आसुरि+फक्] 1 आसुरि की सन्तान 2. एक वैदिक सम्प्रदाय ।

आस्वेषणक (वि०) [आस्विष्+ल्युट्+कन्] अत्यन्त मनोहर जो असीम सन्तोष के देने वाला हो (उदाहरण तत नैषाखेषणकम्) दे० नैषध० (हिन्दी का संस्करण) पृष्ठ ५५९ ।

आस्तरकः [आ+स्तृ+ष्युल्] बिस्तर बिछाने वाला —को० अ० १।१२ ।

आस्तारकः [आस्तृ+घञ्, स्वार्थे कन्] अंगीठी में लगने वाली जाली, बगला ।

आस्तीर्ण (वि०) [आस्तृ+क्त] 1 बिखरा हुआ फैला हुआ 2 ढका हुआ ।

आस्थानपट्टः-ट्टम् [आस्थान+पट्+क्त] सिंहासन राजगद्दी—नै० १०।५७ ।

आस्थेय (वि०) [आस्था+ण्यत्] 1 श्रद्धेय, जिसके पास पहुँच की जाय, जिससे प्रार्थना की जाय 2. आदरणीय ।

आस्फुर् (भ्वा० पर०) आन्दोलन करना, हिलाना ।

आस्फोटितम् [आस्फुट्+क्त] तालियाँ बजाना, हस्ताघात से प्रहार करना—आस्फोटितनिनादाश्च—रा० ५। ४३।१२, तस्यास्फोटित शब्देन —रा० ५।४।७ ।

आस्फुत् (वि०) [आ+स्फिद्+क्त] सिला कर सीया हुआ ।

आस्रु (वि०) [आस्रु+क्विप्] खूब बहने वाला, धारा प्रवाह से रिसने वाला ।

आस्रुपयस् (वि०) [न० ब०] खूब दूध देने वाली गाय —अगाद्धङ्कृती रासुपया अवेन—भाग० १०।१३।३० ।

आस्वादित (वि०) [आ+स्वद्+णिच्+क्त] जिसने स्वाद ले लिया हो, अनुभवी—मधु गवमलास्वादित-रसम् रा० ।

आहत्य (अ०) [आहन्+ल्यप्] प्रहार करके, मार कर, पीट कर । सम०— वचस् (नपुं०) पारुष्य, कठोर वचन ।

आहारतेजस् (नपुं०) पारा, पारद ।

आहार्यशोभा (स्त्री०) बनावटी सौन्दर्य (विप० सहजिक शोभा) ।

आहितक [आ+धा+क्त, स्वार्थे कन्] आहे का —की० अ० २।१ ।

आहृत (वि०) [आ+हृ+क्त] कृत्रिम, बनावटी —अहृता हि विदर्भकन्यानां मानसोत्सवमम न लिम्पति —नै० १८।२ ।

इ

इक्षु [इष्+क्सु] एक प्रकार का बांस —मौक्तिकैरिक्षुकुक्षिजैः —नै० २०।२१(नारा० भाष्य० इक्ष्वंशविशेष)।

इक्षुमती (स्त्री०) [इक्षु+मतुप्+ङीप्] कुरुक्षेत्र प्रदेश में बहने वाली एक नदी ।

इक्ष्वारि(लि)कः [इक्षु+अल्+ष्वुल्] नरकुल, सरकंडा ।

इङ्गालः [इङ्ग+आलच्] कोयला—चितेर्नृङ्गालमिवायशः परे —सि० स०, इङ्गाल कारिकाम्बिविट् वैद्य० ।

इडा } [इल्+अच्, लस्य डत्व वा] यज्ञमान में प्रयुक्त
इला } स्तोत्र नामक संगीत ।

इडाघातः [ष० त०] गुम्मूल ।

इडीकः (पुं०) कलम चलने वाला चाकू ।

इतिः (स्त्री०) [इ+क्तिन्] 1 आना 2 जाना, गति —श० वि० ।

इतिक (वि०) [इति+कन्] अतिशुद्ध, चाल रखने वाला ।

इतिहासकथोद्धृत [त० स०] किसी पौराणिक आख्यान या महाकाव्य से ली गई कथावस्तु —इतिहासकथोद्धृतमितरद्वा सदाश्रयं, काव्यं कल्पान्तरस्थायि —काव्या० ।

इक्षुः (पुं०) एक प्रकार का बांस ।

इन्दीवरम् (नपुं०) नीलकमल विष० ।

इन्द्रा (अ०) विशद, प्रकट, स्पष्ट ।

इन्द्राग्नी [इन्द्र+अग्नि+टाप्] मृगशीर्षनक्षत्र पुंज में ऊपर रहने वाला तारा ।

इन्द्रिरारब्धः [इन्द्र+किरच्+टाप्+रम्+क्त] विष्णु अन्तरा सकलसुन्दरीभ्यमकमिन्दिरारब्धसङ्गरम् —नारा० ६५ ।

इन्दु [उन्द्+उ, नोदेरिच्च] 1 चन्द्रमा 2 अनुस्वार की परिभाषा । सम०—कुञ्जी कमल बेल, —कान्ती सोम का पौधा, —करिन् एक पौधे का नाम, सुतः, सूनुः बुधनामक ग्रह ।

इन्दुकः [इन्दु+कन्] दे० 'इन्दुसङ्करिन्' ।

इन्द्र [इन्दतीति इन्द+रन्] 1. देवों का स्वामी 2 ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय । सम०—आयुधम् 1. इन्द्रधनुष 2 हीरा, —कान्तः चारमंजिले भवन का एक प्रकार —भाग०—२१।६०।६८, —ध्वजः (इन्द्रध्वज) मोतियों की माला, —ध्वजः वालि, कर्ण, —धनुस् (नपुं०) शिखाजीत, खुमि चन्दन,—नदी वैदिक ऋषि, वैद्य आचार्य का विष्य, सखिनी पार्वती, —यज्ञः इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ—स्वोऽ

स्माक चौवस्त्रोचित इन्द्रवज्रो मानोत्थ भविष्यति —काल०१,-- कालवज्र हीरे का एक प्रकार, की० अ० २।११,-- सार्वभौमः चौदहवां मनु० ।

इन्द्रियः [इन्द्र+घ—इय] 1 शक्ति 2 ज्ञानेन्द्रिय । सम० —द्वारका ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,— ग्रामः विषयासक्ति, संग्रयोगः विषयों से सबद्ध ज्ञानेन्द्रियों की क्रिया ।

इन्द्रियम् [इन्द्र्+णिच्+क्युट्] इच्छावशेष, वासना - ये तु इन्द्रियन्यना लोके पुण्यपापविवर्जिता महा० १२। ३४८।२ ।

इन्द्रवर्णकः (पु०) 1 एक पौदा, तारवा एरड 2 यवक्षार ।

इन्द्रिवम् (वेद०) [इन्द्र+इवन्, किदिच्च] चौकन्ना होकर चलने की विशेष प्रकार की इन्द्रियों का बढ़ जाना—ऋ० १०।३४।११।

इन्द्रोमिति (पु०) कण्वकुल के एक ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई सूक्तों का द्रष्टा है ।

इन्दिनी (स्त्री०) मेधातिथि की पुत्री ।

इन्द्य (पु०) परलोक में होने वाला एक काल्पनिक वृक्ष - म आगच्छतीन्द्य वृक्षम् कौषी० १।५ ।

इवोपमा उपमा अलंकार जहां रचना में 'इव' शब्द का प्रयोग हुआ हो ।

इषीका हाथी की आंख की एक पुतली ।

इष् (तुदा० पर०) किसी काम को बहुधा करते रहना, बार-बार सम्पन्न करना ।

इच्छाकामम् (अ०) केवल इच्छा द्वारा उचित —इच्छाकामं प्रजाः सृष्टिः ।

इच्छाकृतम् (नप०) 1 मानवीकृत इच्छा 2 इच्छानुरूप बाना हुआ शरीर 3 दिव्य शक्ति की प्रथम अभिव्यक्ति ।

इच्छातादिन् (वि०) [इच्छा+मात+णिनि] जिसकी महत्त्वाकांक्षा पूरी हो गई है—अनुभवन्नाक्षयक्षिप्तजाविनम् रा० ६।९७।१७५ ।

इच्छिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] कविता के रूप में एक परिच्छेद, सङ्ग्रहश्लोक ऋ० १।१६६।१४ पर भाष्य । सम०—आद्धम् एक विशेष और्ध्वदैहिक क्रिया ।

इक्षिका, इक्षीका [इष् गत्यादौ क्वुन्, अत इत्वम्] एक कांटेदार पौधा—तत्रिकर्षादिक्षीकाभिर्मोचिता परमाद्भुतात् रा० २।८।३० ।

इक्षुगन्धा नील का पौधा ।

इक्षुमति (वेद०) प्रबल करना ।

इक्ष्वाकायाः ईंटों का आकार प्रकार ।

ई

ईक्षणमात्रम् (पु०) [ब० स०] सांप एक ऐसी नेत्रेन्द्रिय वृद्धि सर्वेषामीक्षणमात्रम - महा० १।३७।२९ ।

ईरः [ईर्+अच्] वायु, हवा । सम०-सूनुः-सुतः हनुमान् ।

ईलिनः (पु०) तनु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम ।

ईशः [ईश्+क] परमेश्वर, परमात्मा । सम०—आवास्यम् (ईशावास्यम्) ईशोपनिषद् (अपने प्रथमाक्षर के आधार पर)—गीता (स्त्री०) कूर्मपुराण का एक अनुभाग ईशः रथ के धुरे की मकड़ी ।

ईशानकल्पः चार युगों का एक चक्र ।

ईशितव्य (वि०) [ईश्+तव्य] शासन किये जाने के योग्य, नियन्त्रण में रखने के योग्य—ईशितव्यं किमस्माभि —काल० १०।२३।४५ ।

ईश्वरकालत्व(नपु०) एक मुहूर्त्त जिसका समस्त क्षेत्रफल ९६१ वर्ग में विभक्त हो जाता है—काल० ७।४६।४८ ।

ईश्वरकृष्णः (पु०) सांख्यकारिका का कर्ता ।

ईश्वरार्थ (वि०) [ईश्वर+इ+ष्यत्] जो थोड़े से प्रयत्न से सम्पन्न हो सके ईश्वरार्थो वयस्तस्य—महा० ५।७।१२६ ।

ईषत्कर (वि०) [ईषत्+कर्+अच्] आसानी से उपलब्ध होने वाला—वै० १२।९३ ।

ईषद्वीर्यः [ब० व०] बबूल का वृक्ष ।

ईषरारः (पु०) फलितज्योतिष में चौथा योग ।

ईहः (वेद०) [ईह्+अच्] स्तुति ।

उ

उक्षा (स्त्री०) अवरोध, बाधादृष्टा ।

उक्थम् (नपु०) [वच्+थक्] 1 जीवन, प्राण—उक्थेन रहितो छेद्य मृतक शोच्यते यथा—काल० १।१५।६ 2 उपादान कारण—एतदेवानुपश्यन्तो हि सर्वाणि साधनान्युपतिष्ठन्ति—बृ० १।६।१ ।

उक्थः (पु०) [वच्+थक्] अग्नि—उक्थो नाम महाबाहो त्रिभिरग्नैरधिष्ठितः—महा० ३।२१९।२९ ।

उक्थार्णवरथम् (नपु०) छन्दशास्त्रानुसार का उक्त अध्याय ।

उक्षः (पु०) [उक्षाणं संज्ञायां] एक वैदिकरथ का नाम ।

उत्खरम् (नपु०) खारी झील से निकला हुआ नमक, सांभर नमक।

उग्र (वि०) [उद्+रन्, पृषोदरादिः] 1. भीषण, क्रूर, दारुण, घोर, प्रचण्ड। सम०-काली दुर्गा का एक रूप,-नृसिंहः नृसिंह का एक रूप, -पीठम् एक भूपरिकल्पना जिसमें क्षेत्रफल ३६ सम भागों में विभक्त होता है—मान० ७।७, -वीर्य हीन,—श्रवस् रोमहर्षण के पुत्र का नाम।

उचित (वि०) [उच्+क्त] अन्तर्जात, नैसर्गिक उचित च महाबाहु न जही हर्षमात्मवान्-(उचित=स्वभावसिद्धम्)—रा० २।१९।३७। सम० ज्ञ (वि०) जो औचित्य को समझता है।

उच्च+नीच (उच्चावच) (वि०) [उत्कृष्ट च अपकृष्ट च] ऊँचा-नीचा, छोटा-बड़ा।

उच्चनीचः शाक्यमुनि का नाम।

उच्चटम् (नपु०) टीन धातु, कलई।

उच्चलक (भ्वा० पर०) टकटकी लगा कर देखना, निडर होकर देखना—भाग० ६।१६।४८।

उच्चयापचयौ [उच्चय अपचयश्च, द्व० स०] समृद्धि और क्षय, उत्थान और पतन।

उच्चाटित (वि०) [उद्+चट्+णिच्+क्त] उखाड़ा गया, दूर फेंक दिया गया दशकन्धरो "उच्चाटित —भाग० ५।२४।३७।

उच्चारप्रज्ञावस्थानम् (नपु०) शौचालय मण्डास।

उच्चार्यमाण (वि०) [उद्+चर्+णिच् कर्मणि शानच्] जो बोला जा रहा है।

उच्चुम्ब् (भ्वा० पर०) मुख ऊपर उठाकर चुम्बन करना।

उच्छिखण्ड (वि०) [ब० स०] (मोर की भाँति) अपने परों को ऊँचा किये हुए।

उच्छिष्ट (वि०) [उत्+शिष+क्त] जूठा, अपवित्र अशुद्ध उच्छिष्टमपि चामेध्यम् आहार रामसंप्रियम् —भाग०।

उच्छिष्टोदनम् (नपु०) मांड।

उच्छ्रितशृङ्ग (वि०) [उद्+शृङ्ग+इतच्] जिसने अपने सींग ऊपर को सीधे खड़े किए हुए हैं।

उच्छ्रय [उद्+श्रि+अच्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (रुद्रदामन का जूनागढ़स्थित शिलास्तम्भ एपि० इण्डि० तृतीय० भाग)।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1 आह (प्रेम कि समुद्र में)-मिन्नोरुच्छ्वासे पतत्यन्धुप्रणयम् रा० ७। ८६।४३ 2 बढ़ना, उभार होना।

उच्छ्वासित् (वि०) [उद्+श्वास+णिनि] विमुक्त, विभक्त।

उच्छ्वासन [उद्+श्वास् घञ्] उलटना उलटफेर।

उच्छ्रुङ्गित (वि०) [उद्+जूट्+क्त] जिसने अपने सिर के बाल जटा के रूप में सिला बाँधकर रक्खे हुए हैं।

उच्छ्रेदा (स्त्री०) एक प्रकार की छाती।

उज्झित (वि०) [उज्झ्+क्त] 1. परित्यक्त-चिरोज्झितालक्तकपाटलेन ते-कु० ५ 2 निष्कासित, उड़ेला हुआ—अविरतोज्झितवारि—कि० ५।६।

उट्टङ्कनम् [उत्+टङ्क्+ल्युट्] 1 छाप लगाना, या अक्षर खोदना 2 आधुनिक टाइप करने की क्रिया।

उडुगणाधिपः [स० स०] चन्द्रमा।

उडुगणाधिपम् (नपु०) मृगशीर्ष नक्षत्रपुञ्ज।

उड्डामरिन् (वि०) [उद्+डामर+णिनि] जो असाधारण रूप से बहुत कोलाहल करता है।

उड्डियानम् (नपु०) अंगुलियों की विशिष्टमुद्रा।

उडुप (नपु०) 1 जपा गुड़हल 2 पानी।

उत (वि०) [वे+क्त] बुना हुआ, सीया हुआ।

उत्कयति (ना० धा० पर०) बेचैन या आतुर बना देता है मनस्विनीरुत्कयितुं पटीयसा-शि० १।५९।

उत्कच (वि०) [उत्+कच] जिसके बाल नीचे ऊपर को खड़े हों।

उत्कूपिक (वि०) [प्रा० स०] जो कूची अपने हाथ में लेकर ऊपर को उठाये हुए है।

उत्कूलनिकूल (वि०) [उत्क्रान्तं निर्गतश्च कूलात्] किनारे से कभी नीचे कभी ऊपर होकर बहने वाला।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1 ऊपर को खींचना 2 छोड़ देना उखाड़ देना।

उत्कर्षिणी [उत्कर्षण+ङीप्] एक 'क्षत्रिय' का नाम।

उत्कृष्ट (वि०) [उद्+कृष्+क्त] 1 खुदा हुआ-ऐरावतविपाटनैरुत्कृष्टकिणवक्षसम् रा० ६।०।५५ 2 साधा हुआ उत्कृष्यमाणकमला--रा० ५।१९।१९ (उत्कृष्टानि=चुटितानि) 3 सीधा हुआ—महा० १४।५९।१०।

उत्कोच [उद्+कुच्+अच्] 1 रिश्वत, घूस-उत्कोचैर्वञ्चनाभिश्च कार्यान्नयन्विक्रियते च मद्यः महा० १२।५६। ५१ 2 दण्ड।

उत्कोचिन् (वि०) [उत्कोच+णिनि] जिसे रिश्वत दी जा सके, भ्रष्टाचार में ग्रस्त उत्कोचिना मृगयेवर्तिना वध्यकामा च या गतिः महा० ७।७३।-२।

उत्कोठः (पु०) [उत्कुट+घञ्] खाज, कुष्ठ का एक प्रकार।

उत्खन् (भ्वा० पर०) उखाड़ कर मन्थ निकालना, कर्म० उखाड़ा जाना (प्रेम में) उत्खनन किया जाना।

उत्तान (वि०) [उत्+तन्+घञ्] विस्तारयुक्त, फैला हुआ। सम०-अर्ध (वि०) ऊपरी, विस्तार, उत्तानं बहुलं फलं स्यद्द यत्तानपट्ट -(आद्र शिलालेख इण्डि० एण्टी० भाग ९), हृदय (वि०) उत्तम हृदय वाला।

उत्तपन [उत्+तप्+ल्युट्] देदीप्यमान ताप।
उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] बढ़िया, श्रेष्ठ,—मः (पु०) ध्रुव का सौतेला भाई। सम०—ज्ञानतालम् मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० सम प्रमाणों को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है - जयस्तम् जीवन की अन्तिम अवस्था - शत० १२। ९।१।८, ज्ञात पतिव्रता स्त्री हृदयस्थेव शोकाग्नि-सतप्तस्योत्तमस्त्रताम् भट्टि० ९।८७,—श्लोकः उच्चतम शिखा प्राप्त।
उत्तमर (वि) श्रेष्ठ।
उत्तम्भः [उद्+स्तम्भ्+घञ्] आयताकार संरचना —मक० ४७।२१।
उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1 उत्तर दिशा 2 ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा 3 बाद का 4 आयताकार सीधा - मनु० १३।६७ 5 आगे की कार्यवाही, अगली प्रक्रिया उत्तर कर्म यत्कार्यं—रा० ५।३ 6 आच्छादन, आवरण—महा० ६।६०।१ । सम०—अगारम् । (उत्तरागारम्) ऊपर का कमरा. अभिमुख (वि०) उत्तर दिशा की ओर मुड़ा हुआ मुंह जिसका,—तापनीयम् नृसिंहतापनीय उपनिषद् का उत्तर भाग. नारायणम् पुरुषसूक्त का उत्तर खण्ड,—वीथि (स्त्री०) उत्तरीय मार्ग।
उत्तरायण (वि०) उतावला, आतुर।
उत्तरस्त (वि०) [उद्+तस्+क्त] डरा हुआ, भयभीत।
उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1 उठ, विहार 2 युद्ध करने के लिए तैयार सेना की स्थिति युद्धानुकूल-व्यापार उत्थानमिति कीर्तितम् (शुक्र० १।३२५। सम० वीरः कर्मशील व्यक्ति,- शौल्किन् (वि०) सक्रिय, परिश्रमी।
उत्थापनिका (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्थाप+निपत' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभांति पकाओ) कहा जाय।
उत्थापनोकः [त० स०] कुंडलित ज्योतिष का एक योग।
उत्थानिपता (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पत (ऊपर को उड़ो) + निपत (नीचे उड़ो)' शब्दों को बार-बार कहा जाय।
उत्थानशतीकारः (शान्ति.) [ष० त०] अशुभ शकुनों से बचने के लिए शान्ति के उपायों का अवलम्बन, —की० अ० २।७।
उत्पत्तिः (स्त्री०) (वेद०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. यज्ञ —उत्पत्तिरिति यज्ञे मुख्य मी०सू० ७।१।३—७ पर शा० भा० 2. मूल विधि, वेद में आधारभूत आज्ञा-देश, इसे उत्पत्तिचोदना और उत्पत्तिविधि भी कहते हैं—मनु० ४।३।
उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्] एक बनी बूटी का नाम।
उत्पादित (वि०)[उद्+पद्+णिच्+क्त] पैदा किया गया।
उत्पाद्य (वि०) [उद्+पद्+णिच्+यत्] जो बनी पैदा किया जाना है - सामर्थ्य उत्पाद्य इवास्य यत्नः कु० १।३५।
उत्पलिनी [उत्पल+इनि, स्त्रियां ङीप्] एक सरकोष का नाम।
उत्प्रेक्षावयवः [ष० त०] एक प्रकार की उपमा।
उत्प्रेक्षावल्लभः एक कवि का नाम।
उत्प्रेक्षित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में की जाती है)।
उत्प्रेक्षितोपमा उपमा अलंकार का एक भेद।
उत्प्लुत (वि०) [उद्+प्लु+क्त] कूदा हुआ, ऊपर को उछला हुआ।
उत्फुल्ल (वि०) [उद्+फुल्+क्त] उद्धत ढीठ, धृष्टतापूर्ण।
उत्फुल्लिङ्ग (वि०) [उद्+स्फुल्लिङ्ग+इनि] जिसमें स्फुलिङ्ग निकले, चिंगारियों उगलने वाला।
उत्फुल्लकः [उद्+सञ्ज्+घञ्, स्वार्थे कन्] हाथ की विशेष मुद्रा।
उत्सक्त (वि०) [उद्+सञ्ज्+क्त] इधर संलग्न—उत्सक्ता पार्श्वयो नित्यम् महा० १।१।०।३।
उत्सक्तिः (स्त्री०) [उद्+सञ्ज्+क्तिन्] बाध, विनाश, क्षय।
उत्सक्तपुलकवर्मन् (वि०) [ब० स०] जिसकी शुक्र परम्पराएँ छिन्न-भिन्न हो गई हों—उत्सक्तपुलकवर्मणां मनुष्याणां जनार्दन, नरके निवत वासः—भग० १।४६।
उत्सङ्गोद्वहम् (नपु०) मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की ऊँचाई के अनुसार उसके बाल को इङ्गित करे—मान० ६।२१-२३।
उत्सङ्गविग्रहः [त० स०] अनुज के रूप में निकाली जाने वाली प्रतिमा, मूर्ति (विप० मूलविग्रह)।
उत्साहः [उद्+सह+घञ्] बलिष्ठता, उच्छृंखलता।
उत्साहयोगः [त० स०] अपनी सामर्थ्य का उपयोग करना धारेयोत्साहयोगेन- मनु० १।२९८।
उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] उत्साह,- बालकस्यात्र हंसस्य हुताशेकस्य सम्भव—महा० ८।७।१।
उत्सूर्यशायिन् (वि०) [उद्+सूर्य+शी+णिच्+णिनि] जो सूर्य निकल जाने पर भी सोता रहता है,—महा० १२।२२८।६४।
उत्सृतिः (उत्सृतिः) (स्त्री०) [उद्+सृ (सृ)+क्तिन्] उच्चतर जाति—मनु० ४।४०।
उत्सृज् (तुदा० पर०) अवतीर्ण करना, बनाना, निर्मित करना - आत्मानं पुरुषमुत्सृज्य स वशी उत्सृष्टवित्तः—महा० १२।१७।१०।

उत्कर्षः [उद्+कृष्+घञ्] 1 राशि, ढेर—अन्नस्य सुबहून् राजन् उत्सर्गान् पर्वतोपमान् - महा० १४।८५।३८ 2. (पुरोहितों की) सेवाएँ उपलब्ध करना—उत्सर्गे तु प्रधानत्वात् - मी० सू० ३।७।१९ (उत्सर्ग परिभ्रमः—शा० भा०)।

उत्सर्गोत्सर्गितिः (स्त्री०) जैनमत का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार अवधूतोत्सर्ग करते समय ऐसी सावधानी बरतना, जिससे कि किसी जीव जन्तु की हत्या न हो।

उत्सर्जनकामः, (—मना) (वि०) [उत्सृज्+तुमुन्+काम, मनो वा] उत्सर्ग करने की (आने भी दो, त्यागने भी दो) इच्छा वाला।

उत्सर्पिन् (वि०) [उत्+सर्प+णिनि] 1. किनारों के बाहर होकर बहने वाला—उत्सर्पिणी न किल तस्य तरङ्गिणी या—नै० ११।७७ 2 बढ़ाने वाला, उठाने वाला।

उत्स्नात (वि०) [उद्+स्ना+क्त] जो स्नान करके बाहर निकल आया है।

उत्स्नेहनम् [उद्+स्निह्+णिच्+ल्युट्] खिसकना, पिसलना, विचलित होना।

उत्स्मितम् [उद्+स्मि+क्त] मुस्कराहट।

उत्स्रोतस् (वि०) [उद्+स्रु+तसि] (जीवन में) ऊपर की ओर ध्यान रखने वाला।

उत्स्वापदिनिः (ब० व०) नींद में बोले गये शब्द—नै० १२।२५।

उदक् [उन्द्+अच्, नलोप] पानी, जल।

उदकम् [उन्द्+असुन्, नलोप] पानी, जल। सम०—अञ्जलिः 1. चुल्लूभर पानी 2. तर्पण करने के निमित्त जल,—क्रीडिका जलक्रीडा जिसमें परस्पर एक दूसरे पर जल छिड़का जाता है,—क्षेत्रम् जलसमाधि, जलप्रवाह,—भूमिः जलयुक्त या गीली भूमि,—मज्जारी (स्त्री०) वायुरोग का एक प्रकार, - वाहम् जलतरंग नामक एक वाद्ययंत्र जिसमें जल से भरे हुए प्याले छड़ी से छूए जाते हैं।

उदकमुत्सादयत् [उद्गतमस्य रसस्य+त्सद्+णिच्+क्त, तस्य भावः] तेज गति के कारण छलांगें लगाना - पश्चोदकमुत्सादयति बहुतरं स्तोकमूर्ध्वं प्रयाति—शा० १।७।

उदकशस् (वि०) [ष० व०] हस्ताञ्जलि बांधे हुए कायेन विनयोपेता मूर्ध्नोदकशस्तेन च—महा० ७।५४।६।

उदञ्चित (वि०) [उद्+अञ्च्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, - उदञ्चितभुदञ्चितनिकुञ्चितपदम्—पं० तं० लघु० १।

उदक्य (वि०) [उद्+अञ्च्+यत्] बहुत से अंडे देने वाला।

उदन् (नपुं०) [उन्द्+कनिन्] पानी, जल। सम०—आगमः झील, सरोवर—सरदुदागमे सायुजात-सरसिजोदरमीलनया दृशा—माघ० १०।३१।२, —कोष्ठः जलपात्र, जल कलश,—ज कमल—सर्वा-दवोऽङ्गयुदजयन्मधुतासव ते—भाग० १०।१४।१३, —व्यालः पानी की बाढ़।

उदवासः (उद्+अप्+अस्—दिवा० पर०) फेंक देना, परित्याग कर देना आने प्रवासमुदपास्य नमन्त एव —भाग० १०।१४।३।

उदरार्चिः [ष० त०] जठराग्नि, पाचक अग्नि।

उदराटः [उदर+अट्+घञ्, ष० त०] एक प्रकार का कीड़ा जो पेट के बल रेंगता है।

उदर्कः [उद्+कृच्+घञ्] वृद्धि—सर्वद्वयुपचयोदर्कम् —भाग० ३।२३।१९।

उदवसन (वि०) [उद्+अव+सो+ल्युट्] अन्तिम, आखिरी भाग० ४।७।५।६।

उदवसयति [उद्+अव+क्यच्+क्यङ्+ल्युट्] बकाना।

उदवसित (वि०) [उद्+अव+सो+क्त] बाहर निकला हुआ —परिश्रमदग्धाय उदवसितलोचन —भाग० ३।१९।२६।

उदवसात् (अ०) [उद्+अवसाति] ऊपर—विधूतबलकोऽव हरेरुदवसात्प्रयाति चक्र नृप वेगमुदारम्—भाग० २।२। २४।

उदात्तनायकः (पुं०) महाकाव्य के उपयुक्त नायक का एक भेद -चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम्—काव्य० १।

उदात्तराघव एक नाटक का नाम।

उदात्तवृहः (पुं०) एक प्रकार का जल काक।

उदावली (स्त्री० आ०) उठाना, ऊपर करना।

उदारधीर्य (वि०) विपुलशक्तिसम्पन्न, महाबलशाली।

उदारवृत्तार्थपद (वि०) [ब० व०] जिस (रचना) में शब्द, अर्थ और छन्द सभी उत्तम हों।

उदारसत्त्वाभिजन (वि०) [ब० व०] जिसका उत्तम कुल में जन्म हो तथा जिसका चरित्र भी अत्युत्तम हो - उदारसत्त्वाभिजनौ हनूमान्—रा० ४।४७।१८।

उदालकुः जनक का एक पुत्र।

उदयः [उद्+इ+अच्] 1 उठना, जमना, ऊपर आना 2 आरम्भ—अधिषन्धोदय तस्य कार्यस्य प्रत्यवेदयत् महा० ३।२८२।२७ 3 अभ्युदय, अभीप्सा - पर्याप्तः परधीरत्नयत्नस्यस्ते वशोदय रा० ५। ५६।११ 4 आयुष्यकर्म, दीर्घजीवी होने का यत्न —हस्ते गृहीत्वा सह रत्नमध्यात् नीत्वा न्यधार हृत-वत्सोदयम् भाग० १०।११।२० 5 पूर्वी क्षेत्र, प्रथम चान्द्रभवन, - इन्दुः इन्द्रस्य नगर पुरं कुलना-मुदयेन्दुनाम्नि—महा० ७।२३।२९,—उन्मुख (वि०) उदयाचल के द्वार पर, समृद्धि की देहली पर, आसन्नः एक प्रकार का कपूर नै० १८।१०३,—राशि लग्न-पुंज जिसमें कि एक ग्रह क्षितिज में उगता है।

उदित (वि०) [उद्+इ+क्त] 1 विख्यात, विश्रुत -विषयोदी समाख्यातो बन्धुजातिरवोदित महा०

१।१३९।१९ 2. आरब्ध, शुरू किया गया--प्रभु-मिरुचित आर्य-विश्व० २६ 3 उद्बुद्ध, जागा हुआ तां रात्रिमुचित राम सुखोदितमरिन्दमम्--रा० ६। १२१।१ ।

उदित्वर (वि०) 1. ऊपर जाने वाला, ऊपर उठने वाला अविचितगतिर्दैवोद्वेकादुदित्वरविक्रम — शिव० १४। १०६ 2 आगे बढ़ने वाला· मोघ्तु सौरिरुदित्वरत्वर उदेंद् ग्राहवहार्तं गजम् -विश्व० १८ ।

उदे (उद् + आ + इ—अदा० पर०) ऊपर आना, उठना, उन्नत होना ।

उदेयिवस् (वि०) [उद्+आ+इ (ईयिवस्)] उगा हुआ, उद्भूत, जात सख उदेयिवान् सारस्वता कुले --भाग० १०।३१।४ ।

उद्गण्डिका (स्त्री०) भुजकिर्या लेना—का० ।

उद्गल (वि०) [न० ब०] गर्दन ऊपर उठाये हुए ।

उद्गारकमणि [उद्+गृ+ण्वुल्+मण्+इन्] प्रवाल, मूँगा ।

उद्गार [उद्गृ+घञ्] (समुद्री) झाग । —पश्चिमेन तु तं दृष्ट्वा सागरोद्गारसन्निभम् -- रा० ७।३२।९ ।

उद्गारचूडः (पु०) एक प्रकार का पक्षी ।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गृ+क्त] 1. वान्त, वमन किया हुआ, निष्ठ्यूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयम् । काव्या० 2 बाहर निकाला हुआ, निष्कासित 3 प्रेरित, कराया हुआ--काकलीकलकण्ठोद्गीर्णकर्णज्वरा.-गीत० १।३६ 4 उठता हुआ, किनारे से बहता हुआ ---उद्गीर्णं इवार्णवौघैः- मै० १७।३६ ।

उद्गीथम् [उद्+गै+क्थुट्] सामगानों के उच्चारण में एक विशेष अवस्था ।

उद्गीथवत् (वि०) [उद् + गै+क्त+वत्] जो ऊँचे स्वर से गायन करता है ।

उद्घर्षणम् [उद्+ग्रह्+ल्युट्] बालों को संयुक्त करने के लिए घिन -साभिषेक्ष्य दिशं सर्वा वेण्युद्ग्रथन-मुत्तमम् रा० ५।९७।३० ।

उद्घोषिका [उद्+घोषा+इनि+कन्+टाप्] पंजों पर खड़े होना उद्घोषिकादानमिवाम्बुजम् (रोमाणि) मै० १४।५५ कामिनिधुवनिधुवनशीला दर्शनाय-निर्योद्घोषिकाशतदानलिप्सेषु · प्रदीपेषु— वास० ।

उद्घट्टनम् [उद् + घट्ट+ल्युट्] (अस्थाचार का) आरंभ ।

उद्घोण (वि०) [ब० स०] सूअर की भाँति जिसके नथुने ऊपर को हों—स्फुरदुद्घोणवदन -शिव० २२।१३ ।

उद्घोषित (वि०) [उद् घुष्+क्त] उठाया हुआ, घोषित किया० ।

उद्घ्यानाचार्य पन्द्रहवीं शताब्दी का तमिलदेशवासी एक महान् विद्वान् ।

उद्घ्वन (वि०) [उद्+ध्वन्+ल्युट्] ऊपर देने वाला ।

उद्घ्वनकायनः [उद्घ्वनक+फक्] उद्घ्वनक की सन्तान ।

उद्घ्वनक (वि०) [उद्+ध्वन्+क्त] फटा हुआ ।

उद्घ्वनकः [उद्+घ्वन्+ण्वुल्] पक्षिविशेष ।

उद्घ्वनका [उद्+घ्वन्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की चिड़िया ।

उद्घुष्य (अ०) [उद्+घुष्+क्त्वा (ल्यप्)] सार्वजनिक रूप से घोषणा करके या दोषारोपण करके वि० २।११३ ।

उद्घोषतः (अ०) [उद्घोष+तसिल्] संकेत करके, विशेषरूप से, मुख्य रूप से, स्पष्टरूप से—एष तूद्घोषतः प्रोक्त —मत्स्य० १०।४० ।

उद्घोषवत् [त० स०] वह शब्द जो कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त हो ये वचनमात्रा इत्युद्घोषपदम्—मी० सू० ६।६।२० पर शा० भा० ।

उद्घोषक (वि०) [उद्+घुष्+णिच्+ण्वुल्] सङ्केत करता हुआ, इंगित से दर्शाता हुआ ।

उद्घृत (वि०) [उद्+हृ+क्त] 1 भरपूर, भरा हुआ, समृद्ध ततस्तु कारोद्धृतमेघकल्प—रा० ६।६७।१४२ 2 चमकीला, जगमग होता हुआ, अन्योन्य रजसा तेन कीर्णयोद्धृतपाण्डुना—रा० ६।५५।१९ ।

उद्धर्ष (वि०) [ब० स०] अधिकता, प्राचुर्य—आपूर्यत बलैरुद्धर्षादुदेर्णवरिवार्णव —रा० ६।७४।३५ ।

उद्धत (वि०) [उद्+धृञ्+क्त] 1 फेंका हुआ, उछाला हुआ,—उद्धतमिव सागरम्— महा० ५।१९३।४ 2 अव्यवस्थित, बिखरा हुआ—आलीढनलिनोद्धृत स्त्रीवन रावणस्य तत्—रा० ५।९।६६ 3 ढँका, उन्नत देवदारुनिरुद्धूर्ध्वबाहुमिव स्थितम्—रा० ५।५६।२९ ।

उद्धृ (=उद्+हृ) विकृत करना, नष्ट करना—एष त्वां सञ्जनागात्यमुद्धरानि स्थिरो भव -महा० ५।१८९।२३ ।

उद्धर्षित (वि०) [उद्+हृष्+क्त] हर्ष के कारण जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों ।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] प्रतीक्षा करना, आशा करना -- अपि ते ब्राह्मणा मूलफलाः सोद्धरणाः गृहान् —महा० १३।६०।१४ ।

उद्धारकविधिः (पु०) [उद्+हृ+णिच्+ण्वुल्+वि +धा+कि] देने की या भुगतान करने की रीति —तत्कथय कथमस्योद्धारकविधिर्यस्मिन्नति-पञ्च० २ ।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. संकलन 2. (आने के परवत्) जो वाक्यों में बच जाय, उच्छिष्ट । सम० कोशः एक ग्रन्थ का नाम, विभागः अंशों के प्रभाग, विभाजन ।

उद्धारित (वि०) [उद्+हृ+णिच्+क्त] निष्कासित मुक्त, छुड़ाया हुआ ।

उद्बद्ध (वि०) [उद्+बन्ध्+क्त] 1 बाँधा हुआ 2 बाधित 3 दृढ़, सहत, कसा हुआ।

उद्बृंहण (वि०) [उद्+बृंह्+ल्युट्] बढ़ाने वाला, सशक्त करने वाला, सामर्थ्य देने वाला।

उद्भञ्जनः [उद्+भञ्ज्+ल्युट्] तोड़ कर पृथक् कर देना, वियुक्त कर देना।

उद्भू (भ्वा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना -- विक्रम० ९।१९।

उद्यतायुध (अस्त्र) (वि०) [ब० स०] जिसने अस्त्र हाथ में ले लिया है।

उद्यन्वा (स्त्री०) जंगल में या सूखी लकड़ी में रहने वाली एक काली चिऊँटी, दीमक।

उद्यापित (वि०) [उद्+यम्+णिच्+क्त] काम करने के लिए जिसे प्रेरित किया गया है आत्मनो मधुमदोद्यमितानाम्—कि० ९।६६।

उद्यापनिका [उद्+या+णिच्+युक्+ल्युट्+कन्+टाप्] यात्रा से वापिस घर आना।

उद्योजित (वि) [उद्+युज्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, एक चिह्न (जैसे कि बादल)।

उद्योतः (पु०) [उत्+द्युत्+घञ्] 1 चमक, उद्दीप्ति, उज्ज्वलता, 2 इस नाम का भाष्य जो रत्नावली, काव्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उपलब्ध है।

उद्योतकरः (पु०) महाभाष्यप्रदीप के भाष्यकार का नाम।

उद्योतनम् [उद्+द्युत्+णिच+ल्युट्] चमकने या प्रकाशित होने की क्रिया।

उद्रिक्तिः [उद्+रिच्+क्तिन्] आधिक्य—शिवमहिम्नस्तोत्र—३०।

उद्रेचक (वि०) [उद्+रिच्+ण्वुल्] बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उद्वामिन् (वि०) [उद्+वम्+णिनि] उलटी करने वाला।

उद्वहः [उद्+वह+अच्] कुल या वंश में प्रधान व्यक्ति, पुत्र (जैसा कि 'रघूद्वह' में)।

उद्वहर्क्षम् (उद्वाह+ऋक्षम्) [त० स०] विवाह के लिए शुभ नक्षत्र। उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय धर्मिष्ठा मनुसूदन —भाग० १०।५३।

उद्विज्ञ (वि०) [ब० स०] चिन्तातुरियों या अन्तिकल्प बरसाने वाला (जैसे कि जोंक)—उद्विज्ञजोचनम् शि० ४।२८।

उद्वाह विलाप करते हुए नाम लेना, आकाङ्क्षा के कारण रोने में नाम ले लेकर क्रन्दन करना - उद्वाहमानं पितरं सरामम्—भट्टि० ३।३२।

उद्विष् (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होश में लाना।

उद्वेगः [उद्+विज्+घञ्] तुषारी—मै० ७।४६।

उद्वेगकर उद्वेगकारक उद्वेगकारिन् } (वि०) [उद्वेग+कृ+अच्, ण्वुल्, णिनि वा] चिन्ताजनक, क्षोभ करने वाला, कष्ट कर या दुःखदायी।

उद्वेष्टनम् [उद्+वि+वृह्+ल्युट्] बचाना, निकालना, उठाना रसां गतायां मुख उद्विवर्हणम्—भाग० ३।१३।४३।

उद्वर्तः [उद्+वृत्+घञ्] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८।

उद्वृत्त (वि०) [उद्+वृत्+क्त] उलटा हुआ, उद्घाटित, प्रसारित।

उद्वृत्तः (पु०) नाचते समय हाथों की मुद्रा।

उद्वेष्टनीय (वि०) [उद्+वेष्ट्+अनीय] खोलने के योग्य, बन्धनमुक्त करने के साधक—आर्ते बद्धा विरहदिवसे या शिखादाम हित्वा, शापस्यान्ते विगलितशुचा तां मयोद्वेष्टनीयम् मेघ० ९३।

उद्वेसन (उद्+वि+उद्+अस् दिवा० पर०) पूर्णतः छोड़ देना, त्याग देना।

उद्वाद [उद्+नद्+घञ्] कुरुण के एक पुत्र का नाम।

उद्यत (वि०) [उद्+नम्+क्त] ओजस्वी, उत्साहपूर्ण, समाधाय समुद्यार्थां कर्मसिद्धिमिवोन्नता—रा० ५। ६१।५। सम० काल: छाया को माप कर समय निर्धारित करने की प्रणाली, —यन्त्र एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

उद्यति: [उद्+नम्+क्तिन्] दक्ष की पुत्री जिसका विवाह धर्म के साथ किया गया था।

उद्यह (वि०) [उत्+नह्+क्त] अनुबद्ध, खुला, मुक्त, बन्धन रहित—मन्मथस्यस्य विश्ववोन्मद्दनस्य नित्यम् भाग० ११।१।४।

उद्याह: [उद्+नह्+घञ्] धृष्टता, हेकड़ी, औद्धत्य, अहंकार।

उद्यिद (वि०) [उद्गता निद्रा यस्मात् ब० स०] 1. तेजस्वी, देदीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा) - सीत्वा निशेरमन्मथोत्सवरसैरुन्निद्रचन्द्रा सपा.— कलि० 2 (बालों की भाँति) सीधा खड़ा होने वाला, फैला हुआ।

उद्यिद्रकम् } उद्+निद्रा+कन्, टाप् वा] जागरूकता, उद्यिद्रता } जागते रहना।

उद्येय (वि०) [उद्+नी+यत्] साधनों के आधार पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो, —शि० म० १७।

उन्मणिः (पु०) [उत्क्रान्तो मणिम्—अत्या० स०] सतह पर पड़ा हुआ रत्न— तिरश्चो विद्रुमलतान्—भाग० १०।२७।२९।

उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] बिलो देना,- कूर्मे धृतोद्वीरमृतोन्मथने स्वपृष्ठे—भाग० ११।४।१८।

उन्मद (वि०) [उद्+मद्+क्त] 1. बहुत बड़ा, अहं-

भाव्य—उन्मत्तवेगा प्लवया—रा० ५।६२।१२, —तम् (नपुं०) धतूरे का फूल—उन्मत्तमाक्षीक हर स्मरध्वं मैं० ३।९८ (मा०)।

उन्मनीयु (स्वा० पर०) उत्तेजित होना, क्षुब्ध होना।

उन्मूलता [उन्मूल+ता] आलसी या प्रत्याशा की स्थिति।

उन्मृष्ट (वि०) [उद्+मृज्+क्त] 1 उद्दीप्त, सम्भ्रान्त 2 मूर्ख, मूढ़।

उन्मृद् (क्या० पर०) मसलना, मालिश करना।

उपकर्मन् (नपुं०) उपनयन संस्कार की एक प्रक्रिया जिसमें बालक का सिर मुंडा जाता है।

उपकल्पः [उप+कृप्+अच्, घञ् वा] आयोजन—तपोनोपकल्पम्—भाग० ३।१८।९।

उपकीचक [उप+कीच्+वुन् आच्छादितोपर्यंच] बांस के वृक्षों की उपशाखा—विराटनगरे राजन् कीचकानुपकीचकम् (यहाँ 'विराट' में 'वि+राट' श्लेष भी हो सकता है)।

उपक्रमः [उप+क्रम+घञ्] 1 शौर्य 2 उद्यान 3 व्यवहार प्रतिक्रिया।

उपक्रान्त (वि०) [उप+क्रम्+क्त] 1 आरब्ध 2 अधिगत 3 व्यवहृत।

उपक्षेपक (वि०) [उप+क्षिप्+ण्वुल्] संकेत देने वाला, सुझाव देने वाला।

उपक्षिप्तम् (नपुं०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट।

उपगम् (भ्वा० पर०) पूजा करना—सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत्—रा० २।६।१।

उपगमनम् [उप=गम्+ल्युट्] धारणा, स्वीकृति—अवाप्तस्य हि प्रापणमुपगमनम्—मी० सू० १२।१।२१ पर शा० भा०

उपगिरिगिरि (वि०) [उप+गम्+क्त+ठ] पास जाने का इच्छुक,—नीचैर्वास्यत्युपगिरिगिरिः—मेघ० ४४।

उपगूढ (वि०) [उप+गुह्+क्त] 1 ग्रस्त, अभीप्सित कन्योपगूढो नगरी हृतो विषयात्मक—भाव० ४।२८।६ 2. आच्छादित, ढका हुआ नखाक्षिपुष्पिताम्राम्बिकपनूढानि सर्वतः—रा० ४।१।९।

उपगायनम् [उपगै+ल्युट्] सहगामी संगीत।

उपगेयम् [उपगै+क्त्] गायन, गीत।

उपग्रह (भ्वा० पर०) निगलना, ग्रहण करना, ग्रहणग्रस्त होना।

उपघ्रा (भ्वा० पर०) सूंघना पर्यंघुरत्यन्तत मूर्धनि चोदयत्नी—रघु० १३।७०।

उपचतुर (वि०) सब्जन चार, चार के आसपास।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट जाना, सहचर्या।

उपचरितम् (नपुं०) वस्तु का विशेष विवरण।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1 सेवा, पूजा 2 शिष्टता, सौजन्य। सम० —छलम् आलंकारिक रूप से प्रयुक्त किसी उक्ति के शब्दार्थ का उल्लेख करके एक प्रकार का निराकरणीय आभासी अनुमान, —पदम् शिष्टता का शब्द, औपचारिक उच्चारण।

उपच्छन्न (वि०) [उप+छद्+क्त] गुप्त, छिपा हुआ।

उपजन् (पर०) क्षीण होना, पकड़ लेना।

उपजानु (वि०) [उप+जन्+कानुच्] घुटने के निकट।

उपजाल्यः [उप+तल्+ण] 1 ऊपर की मंजिल का कमरा 2 एक प्रकार की लकड़ी की चौकी या स्टूल।

उपतीर्थम् [उप+तॄ+थक्] 1 सरोवर या नदी का तट 2 निकटवर्ती प्रदेश—महा० ५।१५२।७।

उपत्यका [उप+त्यकन्+टाप्] पर्वत की तलहटी का निम्नदेश गिरेरुपत्यकारण्यवासिन समाप्ता शा० ५।

उपदर्शनम् [उप+दृश्+ल्युट्] प्रकरण, प्रसंग—मी० सू० ६।८।३५ पर शा० भा०।

उपदर्शितम् [उपदृश्+क्त] प्रकरण बताते हुए उल्लेख करना।

उपदातृ (वि०) [उप+दा+तृच्] देने वाला।

उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] लपेटना, लेप करना, चित्रित करना—देहोपदेहात्किरवैर्मनीनाम् मैं० १०।९७।

उपदेहिका [उपदेह+कन्+टाप्] दीमक।

उपद्रवः [उपद्रु+घञ्] 1 सम्पत्तिकर राज्य का छठा भाग। शा० २।८।२ 2. हानि, क्षीजन—अप्रस्तोपद्रव पश्य मृतो हि किंनसिष्यति रा० २।१०८।१४।

उपद्वारम् [अव्य० स०] पार्श्वद्वार।

उपधा (जुहो० उभ०) धोखा देना।

उपधानीयः [ष० त०] अन्तिम से पूर्व का लोप।

उपधानम् (वि०) [उपधा+ल्युट्] सहारा बढ़ाने के लिए वाद्ययन्त्र में के तारों के अंदर रखे हुए लकड़ी के टुकड़े—पाणोपधानां ज्यातन्त्रीम्—महा० ४।३५।१६।

उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] 1 तकिया, गद्देदार बिछावन 2. पायदान।

उपधाव् (भ्वा० उभ०) पूजा करना।

उपधितिः [उप+धा+क्तिन्] 1. झुकाव 2. वेग।

उपधेय (वि०) [उप+धा+य] आनेवाला, उपस्थित होने वाला।

उपनिबद्ध (वि०) [उप+नि+बन्ध्+क्त] 1 रचित 2. विरचित किंचिदुपनिबद्ध उत्तर० ७।

उपनिबोध् (भ्वा० पर० आ०) प्रस्तुत करना।

उपनिर्गमः [उप+निर्+गम्+घञ्] मुख्य सड़क, प्रधान मार्ग।

उपनिर्वपणम् [उप+निर्+वप्+ल्युट्] द्वार, दरवाजा।

उपनिह्नारः [उप+निर्+हृ+घञ्] आक्रमण, हमला —नेदानीमुपनिह्नारं राक्षसो वक्तुमर्हति— रा० ६।७५।२।

उपविविष्ट (वि०) [उप+नि+विश्+क्त] 1 घेरा डालने वाला रखने वाला, अधिकार करने वाला।
उपनिवेशः [उप+नि+विश्+घञ्] 1 देहात, उपनगर 2 स्थापना।
उपनिषद् [उपनि+सद्+क्विप्] सकेन्द्रण -सदेव सिद्धया करोति श्रद्धयोपनिषदा—छा० १।१।१०।
उपनिषेद् (म्वा० आ०) अपने आपको संलग्न करना।
उपनयः [उप+नी+अच्] (किसी भी शास्त्र में) दीक्षा।
उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] नियोजन, नियुक्ति, मनु प्रयोग।
उपनीत (वि०) [उप+नी+क्त] 1 विवाहित 2 ब्रह्मचर्य आश्रम में दीक्षित।
उपनुन्न (वि०) [उप+नुद्+क्त] उड़ा हुआ, लहरों में बहा हुआ —द्रुतमरदुपनुन्नं.—शि० ४।६८।
उपनेत्रम् [उप+नी+ष्ट्रन्] ऐनक, चश्मा।
उपन्यस्तम् [उप+नि+अस्+क्त] मल्लयुद्ध के समय हाथों की विशिष्ट मुद्रा—रा० ६।४०।२६।
उपपतित (वि०) [उप+पत्+क्त] उपपातक का किसी सामान्य पाप का अपराधी, नगण्य पाप का दोषी।
उपपत्तिः [उप+पद्+क्तिन्] 1 दुर्घटना, संपात—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु न तमो मम —महा० १२।२८८। ११ 2 उपयुक्त, तर्कसंगत—उपपत्तिमदुच्यतामथ नृपसूये वचन वृकोदर —कि० २।१।
उपपत्तिपरिवर्जित (वि०) [त० स०] अनिर्वाह्य, अप्रमाणित।
उपपत्तिसमः [त० स०] न्यायशास्त्र में वर्णित विरोध जहाँ दोनों विरुद्ध उक्तियाँ सिद्ध की जा सकती हैं।
उपपन्न (वि०) [उप+पद्+क्त] इच्छानुकूल, सविकर —उपपन्नेषु दारेषु पुत्रेषु च विधीयते—रा० २।१०१।१८।
उपपाद्य (वि०) [उप+पद्+णिच्] 1 अनुपालय 2 प्रमाणसापेक्ष 3. सत्ता में आने वाला।
उपपर्वन् (नपुं०) [प्रा० स०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व का दिन।
उपपातः [उप+पद्+घिञ्+घञ्] अतिरिक्त, सहस्य।
उपप्लवः [उप+प्लु+अच्] हानि, विपन्नता- मायया विरचितस्थिती न वेद स्वप्नुपप्लवात्—भाग० १०।८४।२५।
उपप्लव्य (नपुं०) मत्स्यदेश की राजधानी का नाम।
उपप्लुत (वि०) [उप+प्लु+क्त] दबाया हुआ, नोचा हुआ—कि० ८।१९।
उपबृंह् (बृंहो० उभ०) धारण करना, वहन करना।
उपभृत (वि०) [उप+भृ+क्त] सनूहीत, निकट लाया गया—शिष्याद्योपभृत तेषां—भाग० ८।१५।२९।
उपभोगः [उप+भुज्+घञ्] उप प्रभाव।
उपभ्रमयत् (वि०) (वेद०) [ब० स०] प्रसरत—यद्वा: स्थापितकपि कपीलानुपभ्रमयत्तनम्- ऋ० २।२३।१।
उपमन्त्रिन् (पुं०) [उपमन्त्र+इनि] 1. अवरपरामर्श दाता, या मन्त्री 2. उद्देशवाहक स्मरकथ उपमन्त्रिन् मन्त्रतावन्मन्त्रार्ता यान० १०।७१।२९।
उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] धर्मविरुद्ध सिद्धान्त —विषमे परधर्मस्य आभास उपमा छल —भाग० ७।१५।१२।
उपमानविरोध (पु०) तुलना और वैषम्य का संयोग।
उपमर्दनम् [उप+मृद्+ल्युट्] निग्रह, निरोध।
उपमेयत्वम् (अ०) [आ० स०] (पर्वत के) ढलान पर।
उपयापनम् [उप+या णिच्+ल्युट्] 1 निकट पहुँचाना 2. विवाह
उपयुक्तः [आ० स०] अधीनस्थ अधिकारी—की० अ० २।५।
उपयोक्तृ [उपयोग+अनुप्, अस्य वत्वम्] उपयोगी, काम का।
उपयोगशून्य (वि०) [ष० स०] व्यर्थ, निरर्थक।
उपयोज्य (वि०) [उप+युज्+ण्यत्] कार्य में लाने के योग्य।
उपरम्य (अ०) [उप+रञ्ज्+क्त (स्यप्)] काला कर के, मिटा कर।
उपरञ्जक (वि०) [उप+रञ्ज्+ण्वुल्] 1 रंगने वाला 2. प्रभावशाली।
उपरताग्निहोत्रिका (वि०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका नैत्यिक अग्नि होम बन्द हो चुका है।
उपरम्भ् (म्वा० पर०) प्रतिध्वनि करना, गुंजाना।
उपरि (अ०) [ऊर्ध्व+रिल्, उप आदेश] ऊपर, उपरान्त बाद। सम०- -खण्डम् बेंगलोर संहिता का तीसरा खण्ड,—तलम् छत्ता,—मूलम् मूली छत्ता का एक भेद, -स्थ (स्थ) ऊपर रक्खा हुआ।
उपरुद्धः [उप+रुध्+क्त] कैदी, रोका हुआ।
उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] उपरोध, लोप, निकाल देना आत्मपक्षाद्धि साक्षस्योपरोधः स्यात् -मी० सू० ८।४।१५। सम० कारिन् (वि०) विघ्नकारी, रुकावट डालने वाला।
उपलः [उप+ला+क] फलाँगी धनुष द्वारा फेंकी गई गोली। सम०—अशिन् (वि०) चक्की पर अनाज पीसने वाला,—वृष्टिः ओलों की वर्षा।
उपलब्धिसमः [उप+लभ्+क्विप्+सम्+अच्] न्याय शास्त्र का शब्द जो किसी तर्क का कुतर्क पूर्ण निराकरण बताता है—न्या० द०।
उपलम्भः [उप+लभ्+घञ्, मुम् च] देखना, दर्शन करना।
उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] सनावट, कुलपता।
उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] प्रतिवादियों से समर्थ व्यवहार की एक रचना।
उपलोहम् (नपुं०) [आ० स०] पीत धातु, सोनी धातु।

उपसञ्जनम् [उप+सञ्ज्+ल्युट्] दुबकना, नीचे झुक कर चलना, लेटकर खिसकना।
उपसन्नित (वि०) [उप+सञ्ज्+क्त] छोड़ा दिया गया, ठप्पा गया, निगला
उपसर्जनम् [उप+सृज्+ल्युट्] सेवा- स्वप्नोमेतदुपसर्जनमात्मनेव नै० ११।२८।
उपसर्जनम् [उप+वस्+ल्युट्] उपवास करना।
उपोषित (वि०) [उप+वस्+क्त] जिसने उपवास रख लिया है।
उपोषितम् (नपुं०) [उप+वस्+क्त] उपवास रखना।
उपोढा [उप+वह्+क्त+टाप्] छोटी पत्नी जो पति को अधिक प्रिय हो।
उपविद् (वि०) [उप+विद्+क्विप्] 1 लाभ उठाने वाला, प्राप्त करने वाला 2 जानने वाला, (स्त्री०) 1 अधिग्रहण 2 पृच्छा।
उपविष्ट (वि०) [उप+विश्+क्त] आसीन, अधिकृत।
उपविष्टक (वि०) [उप+विश्+क्त+कन्] जो अर्थात् पूर्ण होने पर भी अपने स्थान पर दृढ़ता से जमा हुआ है (जैसे कि गर्भाशय में भ्रूण)।
उपवीक्ष् (उप+वि+ईक्ष्) (आ०) 1 देखना 2 उचित या उपयुक्त समझना।
उपवसथम् (अ०) [प्रा० स०] ग्वालों की बस्ती के पास।
उपवृंह् (चिरा० उभ०) 1 यत्न करना, सहायता करना 2 जानना, पूछताछ करना 3 (स्वा० पर०) समर्थ या योग्य होना।
उपवेद [उप+गम्+घञ्] उपोनिषद में बीसवाँ मुहूर्त। सम०—व्रतः (जैन०) मूक रहकर कर्म नाश, कर्म न करना।
उपव्यय (वि०) [उपव्यय+स्वार्थे क] घात में लगा हुआ।
उपशीर्षकम् [उपशीर्ष+कन्] 1 ललाटिका रोग 2 मोतियों का हार।
उपशूरम् (अ०) [प्रा० स०] शौर्य की कमी से।
उपशूर (वि०) [प्रा० स०] जिसमें शौर्य की कमी हो।
उपशृतिः [उप+शृ+क्तिन्] 1 अभ्यर्थना, अभिलाषा —नोपशृतिं कटुकान् महा० ५।३०।५ 2. अन्तर्निविष्ट, समावेशन—अथा चयाना अर्थानां सकलतोपशृतिं पुरा महा० १२।६४।६ 3 एक देवी का नाम—महा० १२।३४२।४८।
उपश्लोकः [उप+श्लोक्+अच्] दसवें मनु के पिता का नाम।
उपश्लोकक (वि०) [उप+श्लोक्+अच्+कन्] सामर्थ्य देने वाला, पुनर्बलन देने वाला।
उपश्लोत (वि०) [उप+श्लक्+अच्+क्त] संयुक्त, पक्का जुड़ा हुआ।
उपसंसद् (स्वा० पर०) अन्दर कदम रखना। घुसना, प्रविष्ट होना।
उपसंसृष्ट (वि०) [उप+सम्+सृज्+क्त] 1 संयुक्त सम्मिलित 2 कष्टग्रस्त, अभिशप्त, निन्दित—ब्रह्मापोपसंसृष्टे स्वकुले—भाग० ११।३०।१२।
उपसंस्कृत (वि०) [उप+सम्+कृ+क्त] 1 निष्पन्न, पक्व, तैयार किया हुआ 2 अलंकृत, भरा हुआ—अमृतोपमतोजाभि सिद्धान्निरुपसंस्कृता—रा० ५।१४।२५।
उपसंहृतिः [उप+सम्+हृ+क्तिन्] 1. उपसंहार, अन्त 2 विपत्ति।
उपसंस्तृत (वि०) [उप+सम्+स्तृ+क्त] ऊपर जमाया हुआ—भाग० ४।९।५५।
उपसंग्रहः [उप+सम्+ग्रह+अच्] तकिया।
उपसञ्ज् (तुदा० आ०) संलग्न होना - अथापि नोपसज्जेत स्त्रीषु स्त्रैणेषु कार्यवित्—भाग० ११।२६।२२।
उपसदनम् [उपसद्+ल्युट्] आवास, स्थान (जैसा कि 'यज्ञोपसदन' में)।
उपसदनम् [उपसद्+णिच्+ल्युट्] नम्रता पूर्वक किसी के निकट जाना।
उपसन्यम् (अ०) [प्रा० स०] सव्य के निकट—उपसव्यश्चास्त तनु शार्ङ्गधनुः—शि० ९।५।
उपसद् (प्रेर० पर०) 1. दमन करना 2 सवारना, व्यवस्थित करना।
उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] बाधा से समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धय योग० ३।३९।
उपसर्गीकृत (वि०) [उपसर्जन+च्वि+कृ+क्त] दमन किया हुआ, दबाया हुआ, गौण बनाया हुआ अर्थात् सभी का तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो व्यनक्ति शब्दः।
उपसर्जित (वि०) [उप+सृज्+क्त] व्यस्त, गौण, किया किया हुआ—तक्षकादात्मनो मृत्यु द्विजपुत्रोपसर्जितात् भाग० १।१२।२७।
उपसृष्ट (वि०) [उप+सृज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ —अवध्यवाग्बाणसृष्टेन ब्रह्मदण्डौजसेवसा—भाग० १।१२।१ 2. बरबाद, ध्वस्त—कालोपसृष्टनिगमाचल भाग १०।८३।४।
उपसर्गः [उपसृज्+घञ्] तीव्र वर्ष का झोंका।
उपस्कन्न (वि०) [उप+स्कन्द्+क्त] संयोजित, कष्टग्रस्त, पराजित हुआ—स्नेहोपस्कन्नहृदया—रा० ६।१११।८७।
उपस्कारः [उप+कृ+घञ्] अचार, चटनी, मिर्च-मसाला।
उपस्तीर्ण [उप+स्तृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ, बिछाया हुआ 2. आच्छादित, ढका हुआ 3 उजेला हुआ।
उपस्थ (वि०) [उप+स्था+क] 1. निकटवर्ती,—स्थः

(पुं०) आसन एवमुक्त्वार्जुन सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत्—भग० १।४७ 2 सतह—स उत्थान धरोपस्थे —भाग० ७।१३।१२ ।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] न्यायालय का कक्ष उपस्थानगत कार्याधिनामद्वारासङ्ग कारयेत्—कौ० अ० १।१६ ।

उपस्थापना [उप+स्था+णिच्+युच्+टाप्] जैनसाधु की दीक्षा से सबद्ध सस्कार।

उपस्थितवक्तृ (पुं०) [उपस्थित+वच्+तृच्] आशुकवता।

उपस्तुत (वि०) [उप+स्तु+क्त] बहुत हुई, प्रवहण-शील—स्वय प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता कि० १।१८ ।

उपस्पर्शनम् [उप+स्पृश्+ल्युट्] उपहार ।

उपहासकम् [उपहास्+घञ्+कन्] खिल्लगी, हास्यपूर्ण उक्ति ।

उपहर्तृ (वि०) [उप+हृ+तृच्] उपहार प्रदान करने वाला, आतिथेयी ।

उपहा (जुहो० आ०) उतरना, नीचे आना - उपाजिहीर्षा न महीतल यदि—शि० १।३७ ।

उपहार्यम्
उपहारकः
उपहारिका } [उप+हृ+ण्यत्, ण्वुल्, स्त्रियां टाप् च] उपहार, भेंट ।

उपहिति (स्त्री०) [उप+धा+क्तिन्] निष्ठा, भक्ति ।

उपहूत (वि०) [उप+ह्वे+क्त] आमन्त्रित, बुलाया गया, आकाहन किया गया ।

उपांशु (अ०) [उपगता अशवा यत्र ब० स०] 1 मन्द आवाज में, कान में कहना । सम०- जप- मन ही मन में मन्त्रों का जप करना, होम- यज्ञ में निघाड कर निकाले हुए सामरस का परोक्षण, दण्ड- निजी रूप से दिया गया दण्ड,—वध- गुप्त हत्या ।

उपाकृत (वि०) [उप+आ+कृ+क्त] 1 अभिमन्त्रित 2 उपयोग में लाया गया— यज्ञोपपाकृत क्षित महा० १२।२६८।२२ ।

उपाक्रन् (म्वा० पर०) टूट पडना, हमला बोलना ।

उपाक्षा (म्वा० पर०) 1 सूँघना 2 चूमना (जैसा कि 'मूर्ध्न्युपाघ्राय में) ।

उपाङ्ग [प्रा० स०] जैनियो के धार्मिक ग्रथों का समूह ।

उपात्तविद्यः [ब० स०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली है—उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी रघु० ५।१ ।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] सांख्य शास्त्र में वर्णित चार अन्तर्वस्तुओं में से एक प्रकृत्युपादान-कारणमाख्या —सा० का० ५० ।

उपाधा (जुहो० उभ०) (किसी स्त्री को सतीत्वसमर्पण के लिए) फुसलाना, चरित्रभ्रष्ट करना ।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1 किसी क्रिया का गौण उत्पादन, आनुषंगिक प्रयोजन 2 स्थानापत्ति, प्रतिपत्र - उपाधिना मया कार्यो वनवासे जुगुप्सित रा० २।१११।२९ ।

उपाध्यर्युः [प्रा० स०] अध्वर्यु का सहायक ।

उपारम्भ [उप+आ+रभ्+अच्] समाप्ति, अन्त ।

उपारुद् (उदा० पर०) किसी बात के लिए रोना ।

उपार्जित (वि०) [उप+अर्ज्+क्त] 1 उपलब्ध किया हुआ अवाप्त ।

उपालब्ध (म्वा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मारने के लिए पकडना ।

उपावृत (वि०) [उप+आ+वृ+क्त] ढका हुआ, गुप्त ।

उपाश्लिष्ट (वि०) [उप+आ+श्लिष+क्त] जिसके आलिङ्गन किया है, या जिसने पकड लिया है ।

उपासीन (वि०) [उप+आस्+शानच्, ईत्व] 1 निकट स्थ, आसपास विद्यमान, उपासना करने वाला ।

उपास्थित (वि०) [उप+स्था+क्त] 1 सवार, चढा हुआ, 2 घटित, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'व्यसन समुपस्थित' में ।

उपायः [उप+अय्+घञ्] दीक्षा, यज्ञोपवीत सस्कार —उपायन प्रवसन्त् उपनयनेन सह प्रवसन्त्—मै० स० पर हा० भा० । सम०—विकल्पः वैकल्पिक तरकीब ।

उपेयिवस् (वि०) [उप+इण्+क्वसु—पा० ३।२।१०७] निकट आने वाला शि० २।११४ ।

उपेक्षणीय (वि०) [उप+ईक्ष्+अनीयर्] उपेक्षा करने के योग्य, नजर अन्दाज करने के लायक, परवाह न करने योग्य ।

उपेडकीय [ना० धा० पर० - उप+एडक+क्यच् —] ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड के साथ किया जाता है—पा० ६।१।९४ पर काशिका ।

उपेन्द्र [अदसस् ब० स०] कामदेव ।

उपायत (वि०) [उप+आ+दा+क्त] अर्पित, अर्जित - उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी—रघु० ५।१ ।

उभय (वि०) [उभ+अयट्] दोनों । सम०- अन्वयिन् (वि०) जो दोनों अवस्थाओं में साधु हो सके, -अलङ्कारः एक अलकार जिसमें अर्थ और ध्वनि दोनों घट सकें, जहाँपर दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं को दर्शाने वाला अलकार, -पदिन् (वि०) जिसमें परस्मै-आत्मने दोनों पद विद्यमान हों, विशुक्ला एक छन्द का नाम,—विभ्रष्ट (वि०) जो न यहाँ का रहे न वहाँ का, दोनों अनाहू से अलफल,—कल्पिनो-भयविभ्रष्टविच्छन्नाश्रमिव नश्यति—मनु० ६।३८, -स्नातक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और ब्रह्मचर्यव्रत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—मनु० ४।३१ पर कुल्लूक ।

उभयतः (अ) [उभय+तसिल्] दोनों ओर से । सम०

- बाहु (वि०) जिसके दोनों ओर बाल बिखरे हों, - पुच्छ (वि०) जिसके दोनों ओर पूँछ हो अक्ष (वि०) जो बाहर और भीतर दोनों ओर देख सके।

उभयाहोव्रतरूपम् (नपु०) शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रकार का एक धार्मिक व्रत।

उरगशयन [ब० स०] शेषनाग पर सोने वाला विष्णु।

उरस् (नपु०) [ऋ+असुन्, उच्च रपरत्व] छाती। सम० —कपाट: चौड़ी सबल छाती, —क्षत: तपेदिक, छाती का रोग, —स्तम्भ: दमा।

उरुक्रमाक्ष (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली।

उरुधा (अ०) [उरु+धा] नाना प्रकार से—पश्यत माययोरुधा भाग० १।१३।४७।

उर्वशीशाप [ष० त०] उर्वशी का अर्जुन को शाप, जिसके फल-स्वरूप वह हिजड़ा बन गया और यह स्थिति अज्ञातवास में बहुत उपयुक्त रही। (यह उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होती है जब प्रतीयमान हानिकर घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।

उल्लङ् (चुरा० पर० उल्लङ्घयति) बाहर फेंक देना, प्रक्षेपण (धातुपाठ)।

उलि, उल्ली (स्त्री०) सफेद प्याज।

उलूक [वस्+ऊ, सप्रसारण] एक ऋषि जिसे वैशेषिक का कर्ता कणाद समझा जाता है।

उलूकजित् (पु०) कौवा।

उलूखलि } (वि०) 1 ऊपर से चन्दन करने वाला, कोला-
उलूखल् } हलमय विवाहादि शुभ अवसरों पर मधुर समवेत गान, विशेषत: स्त्रियों का —नै० १४।५१, अथर्व० २।५५।

उल्बण (वि०) [उद्+ब (व) ल्+अच्, पृषो० साधु] 1 भयानक 2 पापमय। सम० —रव: सौंय।

उल्लक [उद्+लक्+अच्] एक प्रकार की शराब।

उल्लस् (भ्वा० पर० प्रेर०) हिलाना, लहराना - जिह्वा-शतान्युल्लासन्त्यजस्रम्—कि० १६।३७।

उल्लसत् (वि०) [उद्+लस्+शतृ] चमकता हुआ।

उल्लास (वि०) [उद्+ला+घञ्+क] चतुर, प्रसन्न, ब. (पु०) काली मिर्च।

उवट: (पु०) ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा यजुर्वेद का भाष्यकर्ता।

उशत् (वि०) [वस्+शतृ] 1 सुन्दर 2 प्रिय, प्यारा 3 पवित्र, निष्पाप 4 अश्लील वर्णवेदुशतीं वाचम् महा० १२।२३५।१०।

उशिज: (पु०) कक्षीवान् के पिता का नाम।

उष्णभु [ब० स०] सूर्य।

उष्णोष्ण (वि०) [उष्ण+उष्ण] अत्यन्त गर्म - उष्णोष्ण शीकरव्रज —शि० ५।४५।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] प्रभात, भोर। सम० करः चोर, —काक: मुर्गा, - पति: अनिरुद्ध, - पूजा पौषमास में प्रात: काल की जाने वाली उषा की विशेष पूजा।

उष्ट्रनिषदनम् (नपु०) योग का एक आसन।

उष्ट्रप्रमाण: (पु०) आठ पैर का 'शलभ' नामक एक जन्तु।

उष्ट्राक्ष [ब० स०] ऊँट जैसी आँखों वाला (घोड़ा), आलि०।

उष्णीष [उष्णीषमस्ति इष्+क] 1 पगड़ी 2 किसी भवन की चोटी।

उहार: (पु०) कछुवा।

ऊ

ऊढरा (ब० व०) शैव सम्प्रदाय।

ऊषरजम् (नपु०) 1 लवणयुक्त भूमि से तैयार किया गया नमक 2 यवक्षार, कलमीशोरा।

ऊति: (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] ऊनक, तौन।

ऊन् (चुरा० पर०) घटना घटाना।

ऊनातिरिक्त (वि०) अत्यधिक या अतिन्यून।

ऊनाब्दिकम् (नपु०) [ऊनाब्द+ठक्] वर्ष से पूर्व ही मनाया जाने वाला श्राद्ध।

ऊनमासिक (वि०) [ऊनमास+ठक्] नियमित मासिक संक्रियाओं के अतिरिक्त जो प्रतिमास श्राद्ध किये जाय तथा जो दिनों की संख्या गिनकर एक वर्ष के भीतर ही भीतर मनाये जाँय।

ऊर्ध्व+अङ्गम् (ऊर्ध्वाङ्गम्) (नपु०) ऊपरी शरीर, धड़।

ऊर्जमास: (पु०) कार्तिक महीना।

ऊर्जस्वल (वि०) [ब० म०] असाधारण बुद्धि से युक्त।

ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा+ड, पृषो० ऊर् आदेश] सीधा, उन्नत, उच्च, - ध्वम् (नपु०) ऊँचाई ऊपर। सम० —नख (पु०) अग्नि, —तिलक: मस्तक पर जातिसूचक खड़ा तिलक—सूर्यस्यविकिरीटमूर्ध्वतिलकप्रोद्भासि फालान्तरम्—नारायण० २।१। —वृक्ष (पु०) ककड़, केकड़ा, - प्लवाङ्ग: शीर्षलम्ब, उल्लंघन, —वालधि: चमरी हरिण की पूँछ, —शोषण: रीठे का वृक्ष।

ऊर्मिका [ऋ+मि अर्तेरुच्च, स्वार्थे कन् टाप् च] चिन्ता।

ऊर्ध्वभक्त (नपु०) अपराह्न भोजन।

ऊर्ध्वायनम् [ब० स०] ग्रीष्म ऋतु।

ऊहगानम् (नपु०) सामवेद के तीन प्रभागों में से एक।

ऊहगानिका (स्त्री०) सामवेदसंहिता का तीसरा अध्याय।

ऋ

ऋक्ष (स्वा० पर०) जान से मार देना।

ऋक्ष: [ऋच्+स किच्च] एक प्रकार का हरिण - रोहिद्भृता सोऽन्वधावदृक्षरूपी। हतत्रय. -भाग० ३।३१।३६। सम० **इष्टि**: (ऋक्षेष्टि) बहुमत, तारों के निमित्त यज्ञ, **जिह्वम्** एक प्रकार का कीड़ा, - **आकर**: एक प्रकार की गोलाकार संरचना या निर्माण अ० तु० १०४,—**प्रिय**: बैल,—**विडम्बिन्** (पु०) धोखा देने वाला ज्योतिषी।

ऋक्थब्राह्मणम् (ऋच्+ब्राह्मणम्) ऐतरेय ब्राह्मण।

ऋक्षकार्य: कश्यप मुनि।

ऋक्षकूलेखा सरलरेखा, सीधी लाइन।

ऋक्ष् (तना० पर०) जाना।

ऋक्षच्छेद [ऋक्ष+छिद्+घञ्] ऋण का परिशोध।

ऋक्षनिर्णयपत्रम् (ऋक्षपत्रम्) (नपु०) ऋण का स्वीकृति सूचक पत्र, रुक्का।

ऋक्षप्रदातृ [ऋण+प्र+दा+तृच्] साहूकार, रुपया उधार देने वाला।

ऋक्षसामन् (नपु०) एक साम का नाम

ऋक्षम्भरा [ऋ+क्त+भृ+अच्, मुमागम] बुद्धि, प्रज्ञा योग० १।४७।

ऋतु: [ऋ+तु किच्च] मौसम। सम० **धर्मा** (जीवधारियों का) ऋतु के अनुकूल व्यवहार,—**स्नाता** (स्त्री०) प्रजनन के उपयुक्त समय पर मैथुन में रत महिला, **यज्ञ**: ऋतु के अनुकूल यज्ञ में बलि दिये जाने वाला पशु।

ऋत्विज् [ऋच्+क्विप्] गाहने के पश्चात् अनाज का संग्रह करना।

ऋद्धित (वि०) [ऋद्ध+इतच्] समृद्ध बनाया गया—राजसूयजितांल्लोकान् स्वयमेवाप्नुहि ऋद्धितान्—महा० १८। ३।२५।

ऋष्यमूक: एक पर्वत का नाम।

ऋष्यशृङ्गक: (पु०) शंकराचार्य के जीवन से संबद्ध केरल में एक पर्वत पर स्थित मन्दिर।

ऋषिऋणम् (नपु०) ऋषियों के प्रति जनसाधारण का कर्तव्य, जन समाज पर ऋषियों का ऋण।

ऋषिका (स्त्री०) ऋग्मन्त्रों की द्रष्ट्री एक स्त्री।

ऋष्टि (स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र सतालवीणामुरजर्ष्टिवेणुभि- भाग० ३। १५।२१।

ए

एक: [इ+कन्] प्रजापति एक इति च प्रजापतेरभिधानमिति मै० स० १०।३।१३ पर शा० भा०,—**कम्** 1 मन—एक विनिन्ये स जुगोप सप्त -रघु० ८० २। ४१ 2 एकता। सम० **अक्षरम्** (एकाक्षरम्) पूनीत प्रणव, 'ओम्',—**अग्नि** (वि०) जो केवल एक ही अग्नि को रखता है, - **अङ्कम्** वह नाटक जिसमें एक ही अङ्क हो,—**अङ्गी** अपूर्ण, अधूरा,—°**रूपक** (अधूरा रूपक या उपमा), **अवयव**: अवाय: जिसमें एक अवयव कम हो, - **आहार्य** (वि०) एक सा भोजन करने वाला, जो प्रतिषिद्ध और अनुमत भोजन में विवेक न करे, - **एकशस्** अलग-अलग एक एक करके,—**ग्रामीण** (वि०) एक ही गाव का रहने वाला,—**चर**: तपस्वी, संन्यासी - भारत के अनपदे चरत्येकचरो यती—रा० २।६७।२३,—**ज्ञान** (वि०) जो केवल एक ही ज्ञान से शासित हो, जहाँ एक ही राजा का राज्य हो,—**जीववाद** (दर्शन में) केवल जीवात्मा का सिद्धान्त,—**दण्डिन्** (पु०) संन्यासियों की एक श्रेणी, **धुरीण** (वि०) एक ही भार को उठाने वाला—तत्कथमात्मैकधुरीणवीर्य—नै० ६।६५,—**नयन**: बृहस्पति, असुरों का गुरु शुक्राचार्य—(कहते हैं कि वामन ने इनकी एक आँख में तिनका चुभो दिया था), **निपात** एक अव्यय जो अकेला ही एक शब्द है, **पादिका** एक ही पैर का सहारा लेकर खड़े होना—अथावलम्ब्य क्षणमेकपादिकाम् नै० १।१२१,— **पार्थिव** एकमात्र शासक, संसार् —न केवल तद् गुरुरेकपार्थिव रघु० ३।३१,—**भावम्** काव्यरचना की दृष्टि से पूर्णितसमस्त वाक्य, **भाषक** (वि०) पर्यायवाची,— **भाव** (वि०) एक ही वस्त्र से आच्छादित,— **विजय** (वि०) इकौसवाँ, **विजय**: पूरी जीत की० अ० १२, **वीर**: 1 प्रमुख योद्धा 2 स्कन्द के नौ सहायकों में से एक, **व्यावहारिक** बौद्धों की एक शाखा,—**शेष**: एक ही जड़ का वृक्ष।

एकतन्त्र (नपु०) एक प्रतिज्ञात।

एकलव्य: (पु०) द्रोणाचार्य के एक शिष्य का नाम जिसने अपनी गुरुभक्ति के कारण धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की।

एकाष्टका (स्त्री०) माघ मास का आठवाँ दिन।

एकाष्ठी (स्त्री०) कपास का बीज, बिनौला।

एजत् (वि०) [एज्+शतृ] काँपता हुआ, हिलता हुआ।

एणविभुः (—आत्मकः) [ष० त०] हरिण का स्वामी, शीघ्र ।
एणाङ्कः [ष० त०] चन्द्रमा ।
एणाङ्कचूड [ष० त०] शिव की ।
एतत्तर (वि०) इस पर तुला हुआ, इसमें लीन ।
एतनः [आ+इ+तन] 1 निःश्वास, साँस 2 एक प्रकार की मछली ।
एतावन्मात्र (वि०) [एतद्+वतुप्+मात्रच्] इस स्थान तक, इस मात्रा का, इस अंश तक, ऐसा ।
एतावि (वि०) [ष० त०] कुछ आयुर्वेदिक औषधियों का पुञ्ज-जो इलायची से आरम्भ होती हैं ।
एलालुलित (वि०) इलायची की सुगन्ध से युक्त ।
एव (अ०) [इ+वन्] पुनः, फिर—एवमन्यत्र पुनरित्यर्थे भविष्यति—मी० सू० १०-८-३६ पर शा० भा० ।
एष् (स्वा० उभ०) जानना,—एषितु प्रेक्षितो वाक्षो—भट्टि० ५।८२ ।
एषिका [एष्+स्फुल्+टाप्] लोहे का सहतीर जिसमें कोई छल्ला या टोपी न हो ।
एष्टव्य (वि०) [एष्+तव्य] जिसके लिए प्रयत्न किया जाय, जिसकी आलसा हो, जिनके लिए लालायित हुआ जाय ।

ऐ

ऐककर्म्यम् [एककर्म+ष्यञ्] 1 कार्य की एकता 2. एक ही फल में अन्वयी होने की स्थिति - मी० सू० ११।१।१ पर शा० भा० ।
ऐकगुण्यम् [एकगुण+ष्यञ्] एक इकाई का मूल्य ।
ऐकभृत्यम् [एकभृत्य+ष्यञ्] 1 पूरा अधिकार 2. अधीनता ।
ऐकान्त्यम् [एकान्त+ष्यञ्] 1 एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तवास 2 मिश्रता ।
ऐकारोकः [ष० त०] समीकरण ।
ऐतशायनाः [ष० त०] अथर्ववेद का एक अनुभाग जिसका द्रष्टा ऐतश ऋषि था (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है ।
ऐन (वि०) [इन सूर्य, तस्य, इदम्—अण्] सूर्य सम्बन्धी —निर्बन्धं वर्जने मनागनैन—रा० च० ६।२५ ।
ऐन्दव (वि०) [इन्दु+अण्] चाँद का उपासक मै० ११।७६ । सम०—किशोरः शुक्ल का चाँद—ऐन्दव-किशोर शेखर ऐश्वर्यं चकास्ति विश्वमानाम् मुद्रा० ।
ऐरण् [इरा+अण्] राशि, ढेर ।
ऐश्वर्य [ईश्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, सर्वोच्चता ।
ऐश्व (वि०) [ईश्+अण्] ईश सम्बन्धी ।
ऐश्वरकारणिकः [ईश्वर+अण्+करण+ठक्] एक नैयायिक का नाम ।
ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] सर्वशक्तिमत्ता, तथा सर्वव्यापकता की शक्ति - महा० १२।१८४।४० ।

ओ

ओकस्य (वि०) [उक्+क, नि० षस्य क, तस्मिन् जायते —अण्+ड] घर में उत्पन्न या पले (जैसे आदि पशु) ।
ओकसी [ओ+कस्+अच्+ङीष्] सौभाग्यवती औरत ।
ओजः [उज्+असुन्, पृषो० ब०] तीन बाह्य विधियों में से एक—ताण्ड० १०।१।४ ।
ओजस् [उज्+असुन्, असोप, गुण] देव, शक्ति—एष क्षत्रियस्य वैश्ये रक्षेन पक्षौजसा—रा० ७।२९।१२ ।
ओजस्विन् [ना० धा० ओज+अ+क्त] साहसपूर्ण वल, हिम्मत से युक्त व्यवहार ।
ओजसः (वै०) तकिया, सहारा, अवलम्बन ।
ओजस्य् (स्वा० पर०) फेंक देना, उछाल देना ।
ओषधिः [ओष+धा+कि] 1 शोक का पौधा 2. कपूर ।
ओष्ठः [उष्+अन्] होठ । सम०—अवलोप्य (वि०) जो होठों से खाया या सके,—कोपः सरदी के कारण होठों का फटना ।
ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] ओष्ठ संबंधी, जो होठों पर रहे । सम०—जोनि (वि०) जो ओष्ठ्यध्वनि से उत्पन्न हो, - स्थान (वि०) जो होठों से उच्चारित हों ।

औ

औशनस: [उशनस+अण्] उशनस का पुत्र कवि।
औष्ण्यम् [उष्ण+ष्यञ्] देवास्त्र, (ग्रह की) दूरी।
औतथ्य (वि०) [उतथ्य+अण्] उतथ्य कुल से सबद्ध, उतथ्य कुल में उत्पन्न।
औत्तमर्णिकम् [उत्तमर्ण+ठक्] कर्ज, ऋण।
औत्थितासनिक: [उत्थितासन+ठक्] बैठने के लिए आसनों का प्रबंध करने वाला अधिकारी—ह० चि० १४९।
औत्पत्तिकम् [उत्पत्ति+ठक्] लक्षण, स्वभाव—औत्पत्तिकेनैव तद्दुष्कलोत्पेता:—भाग० ५।२।२१।
औदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तरी देश से संबंध रखने वाला।
औदुम्बरायण: [उदुम्बर+फक्] एक वैयाकरण का नाम।
औद्गात्रिक: [उद्गातृ+ठञ्] 'उद्गाता' अर्थात् कर का उपग्रहक —बोधा० २१०।
औदकुर्वाणक (वि०) [उपकुर्वाण+कक्] किसी नियत अवधि के ब्रह्मचारी 'उपकुर्वाण' से सबद्ध।
औद्धवि: (पु०) उद्धव—भाग० ३।४।२७।
औपपत्यम् [उपपति+ष्यञ्] उपपति या जार से प्राप्त होने वाला हर्ष।
औपकर्मिक (वि०) [उपक्रम्या+अण्] संध्या आरभ होने से पूर्व की क्रिया से सबद्ध —दर्शनविरोपसन्ध्यै: —मै० २२।५६।
औपस्थितिक: [उपस्थिति+ठक्] सेवक—एव मर्त्यपादधूला-दौपस्थितिको हंस:—प्रतिज्ञा० १।
औम (वि०) [उमा+अण्] उमा सबधी।
औरस (वि०) [उरसा निर्मित:—अण्] 1 शारीरिक—न ह्यतत्त्वारुद्ध वक्त्र—महा० ३।११।३१ 2 नैसर्गिक —शिखौरसक्षुत वक्त्र—महा० ७।३७।२०।
और्णनाभिक: [ऊर्णनाभ+ठक्] ऊन विभाग का अधिकारी।
औषधम् [औषधि+अण्] रोकथाम, मुकाबला, - अतिक्षुध निरधमनौषध वन. - शि० १७।७।
औषधिप्रतिनिधि: (पु०) किसी औषधि के स्थान में प्रयुक्त होने वाली जडी-बूटी।
औष्ट्रिक (वि०) [उष्ट्र+ठक्] ऊट सबधी।
औष्ट्रिक [उष्ट्र+ठक्] 1 ऊट के द्वारा (दुग्धादिक) 2 तेली महा० ८।४५।२५।

क

कम् [कै+ड] 1. बाल, केश 2 महिला का कन्या 3 बालो का गुच्छा 4 दूध 5 वियति 6 जहर 7 भय।
कश [क जल सेते अत्र] जलपात्र।
कसकुब [कस+कुच+अच्] श्रीकृष्ण का विशेषण —निवेदितान् कसकुच: प्रविष्टरे—शि० १।१६।
ककुदिन् (वि०) [ककुद्+इनि] नेता, स्वामी —आस्य विकृत्य ककुदी —महा० १२।२८९।१९।
कक्ष्यम् [कक्ष+यत्] सूखे घास की चरायाह—प्रवक्ष्यति यथा कक्ष्य विश्वभानुरिमान्यये —रा० ५।२८।८।
कक्षया [कक्ष+यत्+टाप्] 1 सेना का घेरा 2 प्रतिद्वन्द्विता 3 प्रतिज्ञा 4 शेष, अवशिष्ट।
कङ्कुवासस् (पु०) [ब० स०] बाण —असपत्न करिष्यन्ति चरन्त कङ्कुवाससम् —रा० ५।२१।२६।
कङ्कुवेरी (स्त्री) हरिद्रा, हल्दी।
कङ्कुमधारणम् [ष० त०] किसी बडे यज्ञ का उपक्रम सूचक मुख्य पुरोहित या यजमान की कलाई में सूत-बन्धन या कडा पहनाना।
कङ्केलि: (पु०) वृक्षविशेष जिसमें वसन्त ऋतु में फूल आते हैं —यद्यूनामीक्षान प्रमदवनकङ्केलितरवे —सी०।
कङ्केलिका (स्त्री०) केवल सिर भिगोना, सिर का स्नान।
कञ्चुक: [क+कञ्चो+क] बनी बनी हुई वस्तो।
कञ्चलिका (स्त्री०) पारे का बना चूर्ण।
कञ्चुकीय [कञ्चुक+छ] कञ्चुकी, अन्त पुराध्यक्ष।
कञ्जिनी [कञ्ज+इनि+ङीप] बेडया।
कट [कट्+अच्] 1 चटाई 2 कम्बा 3 बाण 4 लकडी का तख्ता 5 हाथी की कनपटी। सम० कुटि: (पु०) [ब० स०] फूस की छत वाली झोपडी —कृत् (पु०) चिनको की चटाई बुनने वाला,—कूर्च: हाथी जो अपनी मस्ती या कामोन्माद की पहली अवस्था में हो - भू हाथी की कनपटी का प्रदेश, -स्थानम् शव, लाश, -कार (पु०) जनसमुदाय-विशेष—कोके गोपालकमाणव कटजकमानवेति यस्यैषा सज्ञा भवति स आनायते महा० १।१।३, - कार वृक्ष, रिंगनी—उत्कोचेऽन्त्री कटफल —मेदि०।
कटारिका (स्त्री०) एक छोटी कटार, बर्छी।
कटिनी (पु०) हस्तिनी।
कण्डकूट: फुसी अदरक, सोठ।
कण्डट:]
कण्डू, (चुरा० पर०) एकत्र करना, मिट्टी से ढकना।

कड़ारिका (स्त्री०) कमाई की छुरी।
कठः [कठ्+अच्] एक ऋषि का नाम जो वैशम्पायन के शिष्य थे। सम०—उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम, —काशकः कठ और काशक की शाखाएँ —पा० २।४।३ पर महाभाष्य—के च ते कठकालापा: रा० २।३२।१८, —चूर्णिः यजुर्वेद की कठ शाखा में प्रवीण ब्राह्मण।
कठिनम् [कठ इनच्] 1. कुहासा—पश्ये कठिनकीर्णं च रा० २।५५।१७ 2. मिट्टी का बर्तन —महा० ३।२९७।१, 3 कवच पर चमड़ा हुआ ढक्कन या खोल जिससे ढका होता था रा० ४।४।७२।
कठिल्लक: (पु०) एक प्रकार का खेल।
कठुर (वि०) [कठ्+उरच्] कठोर, क्रूर।
कठोरित (वि०) [कठोर+इतच्] कड़ा किया गया, सख्त बनाया गया।
कड़ली (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल।
कड़ेर एक देश का नाम।
कण [कण्+अच्] मधुरध्वनि।
कणवीरक (पु०) एक प्रकार का खनिज।
कण्टक [कण्ट्+घञ्] मन दुखाने वाला आदमी।
कण्टकिल [कण्टक+इलच्] बाँस।
कण्टाफल: [कण्टा+फल्+अच्] बेलफल का फल, बेलफल का पेड़।
कण्ठ [कण्ठ्+अच्] गला, कण्ठ। सम० —कः हार, मुक्ताकलापकण्ठका: महा० ५।१४३।३९, —कालम् कण्ठ की नाली, वीणादेव, बाजा, एक राग का नाम जो प्रायः गले में होता है, रोचक् आवाज का कम करना।
कण्ठमणा (स्त्री०) बेंत से निर्मित एक टोकरी।
कण्ठिल (वि०) [कण्ठ्+इलच्] 1 पीड़ित हुए, शराबी, 2 चंचल, उच्छृङ्खल कण्ठिलकण्ठिका में प्रतिष्ठा प्रतिमा० ३।
कण्ठोपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।
कतालक्ष (पु०) पासे फेंकने का खेल अरे कतालक्षो निर्णयकस्य हरति हृदय - मृच्छ० २।५।
कथ् (चुरा० उभ०) स्तुतिगान करना।
कथकटीका (स्त्री०) रामायण पर टीका।
कथमता [कथम्+तल्] अवर्णनीय श्रेष्ठता।
कथामात्र (वि०) जो केवल कथा में ही रह गया हो, मृत।
कदम्ब [कद्+कम्बच्] 1. वृक्ष 2. सुरभि - कदम्ब पीत नीपे स्यात्तिनिशे कदम्बुके। कूपरा तबूहे कन्दे च नाना०। सम० —कुसुम् एक प्रकार शृङ्गारस का नाटक—दशरू०।
कदली [कदल+ङीष्] केला। सम० —कक्षा 1. एक प्रकार की कपड़ी 2. एक सुन्दर महिला, —वर्धः केले का वृक्ष।
कदम्बम् [कद+कुन्] सोना, —कः (पुं०) 1. कदम्ब वृक्ष 2. बढ़ई का पौधा। सम० - कदली एक प्रकार का केला जिस के पत्ते चूरे होते हैं मीठाकेल, कनक-कदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः मेघ० ७९,—कारः सुनार, —चूर्णम् कपड़ा जिस पर सोने या बूटी का काम हुआ हो - पीतं कनकपट्टाभं अस्त तद्वसन मुमम् रा० ५।१५।४५, —पर्वतः मेरु पहाड़।
कनकः [कनो दीप्तिर्गतिः सोका वा पाति स] एक प्रकार का धतूरा महा० ३।२०।३४।
कनिष्कः एक राजा जो पहली शताब्दी में हुआ।
कनिष्ठा [अतिशयेन युवा - युवन्+इष्ठन् कनादेशः] छोटी पत्नी।
कनीनिकम् [कनीन+कन्, ह्रस्वः] कुछ लालमनकों का समूह।
कनीयस् (पु०) [युवन्+ईयसुन्, कनादेशः] छोटा भाई —कनयसानाह् बाले कनीयांस मन्यस्व मे रघु० १२ 2 कामोन्मत्त, प्रेमी।
कन्तुः [कम्+तु] प्रेमी।
कन्दरालः [कन्दर+आलच्] अखरोट का वृक्ष।
कन्दर्पः [क कुत्सितो दर्पो यस्मात् —ब० स०] काम देव। सम० दर्पः कामदेव की शक्ति,- कण्डूः कामातुरता के कारण होने वाली गर्मी।
कन्याजः [ब० स०] जो कन्या उपार्जन करके जीविका चलाता है।
कन्युकघातः [ष० त०] वैद्य को उत्तेजना— आरामशीमनि च कन्युकघातलोलालोलायमानमयनाम्—नारा०।
कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वता] दुर्गा।
कन्यका परमेश्वरी कन्या कुमारी की अधिष्ठात्री देवता।
कन्यस् (वि०) 1 छोटा 2. निम्नतर, नीचे का।
कन्यसः (पु०) सबसे छोटा भाई, सा (स्त्री०) सबसे छोटी बेटी, —सी सबसे छोटी बहन।
कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1 अविवाहित लड़की या पुत्री 2. कुमारी 3. दुर्गा। सम०—वृषकः जो कुमारी कन्या से छेड़छाड़ या जबरदस्ती विवाह करता है, —वेश्मन् लड़की को उपहार के रूप में भेजना, —शतम् पारितोषिक में पाने योग्य सौ कन्याओं का समूह—कथा०।
कपाटसन्धानम् [ष० त०] दरवाजा बन्द करना।
कपालिका (स्त्री०) दरवाजा।
कपालमोक्षः [ष० त०] निर्वाण होने पर संन्यासी की कपालक्रिया जो उसके अन्त जीवन का सूचक है।
कपिलमुष्टिः (स्त्री०) बन्दर की बाँधी मुट्ठी, या तना हुआ घूसा, (आल०) कुछ रुपये।

कपित्थम् (नपु०) बन्दर की विशेषता—कपित्थमनवस्थितम्—रा० ५।

कपित्थवस्तु उस नगर का नाम जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।

कपिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में मिलती है।

कपोतवृत्ति (स्त्री०) [ब० स०] अपव्ययी स्वभाव होना, अपने भोजन का कुछ भी प्रबन्ध न करना महा० ३।२६०।५।

कपोलताडनम् (नपु०) अपनी त्रुटि को स्वीकार करने के चिह्न-स्वरूप अपने गालों को थपथपाना।

कपोलपत्रम् (नपु०) पत्ते से मिलता-जुलता एक चिह्न गालों पर अंकित करना।

कपोलपालिः (—ली) (स्त्री०) गाल का एक पार्श्व।

कबलः [क+बल् (बल्)+अच्] दे० 'कवल'।

कबलम् (नपु०) हाथियों का एक प्रकार का प्राकृतिक घाव।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] प्रेमी, पति उदयाचलशृङ्गं सङ्गत कमलिन्या कमन व्यभावयत् साहेन्द्र २।१०१।

कमला [कमल+अच्+टाप्] लक्ष्मी, सतरा।

कमलाक्षः [ब० स०] 1 कमल का बीज 2 कमल जैसी आँखों वाला 3 विष्णु।

कमलीका (स्त्री०) छोटा कमल।

कम्बल [कम्+कलच्] हाथी की झूल, गजप्रावरणे खल ...नाना०।

कम्य (वि०) 1 जलयुक्त 2 प्रसन्न।

कर [कृ+अप्, अच् वा] 1 हाथ 2 टैक्स, शुल्क। सम०—कच्छपिका (स्त्री०) योग की एक मुद्रा जिसमें हाथ कछुए से मिलते-जुलते हो जाते हैं—कृतास्त्वम् (वि०) दरिद्र, जिसका कठिनाई से निर्वाह हो—तलीकृ हथेली में रखना, चुल्लू की भाँति अञ्जलि में रखना तत करतलीकृत्य व्याधि हालाहलं विषम् —भाग० ८।७।४३,—पात्री 1 चमड़े का बना हुआ प्याला 2 जो भिक्षा अपने हाथ में ग्रहण करता है —अर्द,—अर्दी, अर्दक एक पौधे का नाम।

करकजातिः [ब० त०] ओलों का पानी कौ० अ० १।२०।

करटामुखम् (नपु०) हाथी की कनपटी पर एक छिद्र जिसमें से हाथी की मदोन्मत्तता के समय तरल पदार्थ बहता है।

करणम् (नपु०) [कृ+ल्युट्] ग्रहों की गति के विषय में वराहमिहिर की एक कृति। सम०—ग्रन्थः ज्योतिषशास्त्र का एक ग्रन्थ, विभक्तिः तृतीया विभक्तिः सूत्रम् करणेन करणविभक्तिसम्बन्धात् भी० सू० ३। २।१२ पर शा० भा०।

करभः [कृ+अभच्] ओषधि, कुलहा।

करम्भ (वि०) [क+रम्भ्+घञ्] भुना हुआ, तला हुआ—कामाधिवस्त्वयि रचिता न परमारोहन्ति यथा करम्भबीजानि भाग० ६।१६।३९।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] जिसके दाँत बाहर को निकले हुए हों।

करालित (वि०) [कराल+इतच्] 1. सताया हुआ 2 आघातित, प्रहार किया हुआ।

करिन् (पु०) [कर+इनि] 1 हाथी 2 'आठ' की संख्या। सम०—मुक्ता मोती,—रतम् सम्भोग के समय का विशेष आसन, रतिबन्ध—कि० ५।२३ पर टीका,—वल्लरिका जलसाल, पानी का छिद्र।

करीष(—क) (स्त्री०) 1 छींगर 2 हाथी के दाँत की जड़।

करुणाकरः [करुणा+कृ+अच्] दयालु, करुणा करने वाला।

करभः (पु०) गदहा, गदही, बैल, पाप निर्मलो निष्करुणश्च शुद्ध इन्दो यथाभवत् रा० १।२४।२१।

करूषाः (ब० व०) एक देश का नाम रा० १।२४।

कर्क (वि०) [कृ+क] 1 रत्न, मणि 2 नारियल के खोल से बनाया गया पात्र 3 कंजूस।

कर्करी (स्त्री०) सफेद घोड़ी।

कर्कन्धु (न्धू) (स्त्री०) [कर्कं कल्कं दधाति-धा+कु] दस दिन का भ्रूण—दशाहेन तु कर्कन्धू —भाग० ३।३१।२।

कर्कन्धु (पु०) बिना पानी का कुआँ उणादि० १।२८ पर भाष्य।

कर्करेटम् (नपु०) गर्दन से पकड़ना।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1 रूखा, निष्ठुर 2 दुर्व्यसनी, —म् (पु०) काले रंग का गन्ना।

कर्ण [कर्ण्+अप्] 1 कान की व्याप्ति 2 अन्तर्वर्ती प्रदेश, उपदिशा। सम०—अञ्जलः (—लम्) कर्णपालि, —कटु (वि०), कठोर (वि०), सुनने में कष्टप्रद, कर्णाय कान की मवाद - आपीयता कर्णकषायश्लेषान्—भाग० २।६।४६, कुहिका कानों की बाली, पुटम् कान का छिद्र, मलम् कान की मैल, मूल, —विष्णुकर्णमलोद्भूती दे० म०,—मूषकः कर्णाभूषण, स्रोतस् (नपु०) कान बहने पर कान से निकलने वाला मल, हस्तक पार्श्वस्थ बुर्जी।

कर्णेजपः (स्त्री०) कानाफूसी, कान में कोई रहस्य की बात कहना।

कर्णेजपः [कर्ण+जप्+अच् अलुक्समास] 1 कानाफूसी करना 2 मध्यस्थता समूचक तदापर्णं कर्णे जपनयनैशून्यशङ्किता भो०।

कर्तरी (स्त्री०) नृत्य का एक भेद।

कर्तृपदम् (नपु०) 'कर्ता' की दशाएँ बताने वाला शब्द।

कर्तृलिङ्ग (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सम्बद्ध।

कर्परी कर्परिका [कृप्+अरच् ङीप्, स्त्रियां कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] एक प्रकार का अंजन, सुरमा।

कर्पूरमञ्जरी (स्त्री०) राजशेखरकृत एक नाटक।

कर्पूरस्तवः [कर्पूर+स्तु+अप्] तन्त्रशास्त्र में वर्णित स्तुति-गान।

कर्मन् (नपु०) (कृ+मनिन्) 1 कार्य करने की इन्द्रिय —कर्मणि कर्मणि कुर्वन्-भाग० ११।३।६ 2 प्रक्रिया, अभ्यास को० अ० २।६। सम०— अन्त (कर्मान्त) कार्यकर्ता कश्चिदप्र सर्वे कर्मान्ता रा० २।१००। ५२, अन्तरम् (कर्मान्तरम्) दूसरा कार्य,—अपनुत्तिः कर्मापनुत्ति) (स्त्री) कर्म का नाश,- आख्या (कर्माख्या) कर्म के आधार पर नामकरण, आशय (कर्माशयः) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का संचयस्थान, गतिः पूर्वकृत कर्मों की दशा—सुखासुखी कर्मगतिप्रवृत्ती- सुभाष०, छेदः कर्तव्यकर्म पर उपस्थित न रहने के फलस्वरूप हानि—को० अ० २।७, देव, जिसने अपने धर्मपूर्ण कृत्यों के द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया है, नामधेयम् कुछ कारणों के आधार पर नाम रखना यूंही अपनी इच्छा से नहीं, निश्चयः किसी कार्य का निर्णय, -भूमि कार्य का अनुष्ठान करने वाली वैदिक उक्ति कर्मभूमि पुरार्धेन्वान्—मै० स० ११।२।६।

कर्पूरकः (पु०) अरक जैसा एक सुगन्धित पदार्थ जो औषधियों तथा सुगन्ध द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कचरा।

कर्ण (वि०) [कर्ण+घञ्] 1 प्रवण 2 (समासान्त में प्रयुक्त) पूर्ण, भरा हुआ दीनस्य तात्राश्रुकलस्य राज —रा० २।१३।२४। सम०- व्याघ्र- मेंदुआ और मादा चीता से उत्पन्न संकर नस्ल का जानवर, बाघ।

कर्णकण्डू (पु०) [कर्ण | विवप्, कर्ण चासौ कण्डूश्च कर्म० स०] सम्प्रदायसूचक मस्तक पर तिलक - कर्णकण्डू" तिलकेऽपि च मालवा०।

कर्णकण्डूयाद्य. (पु०) न्याय जिसके अनुसार किसी से संबद्ध निषेध उस कार्य का करने का प्रतिषेध करता है।

कर्णकण्डोपधन् } (स्त्री०) बालों के खेत
(-धी), ((धोपधिका) } की रखवाली के लिए नियुक्त स्त्री, - शि० ६।४९, मालती० ११।

कर्णकुलरसाल. एक पौधा, करंज।

कर्णा [कर्ण | कर्ण+टाप्] 1 हाथी की पूंछ के पास मांसल गद्दी 2 स्वरूप लीलया दधत कर्णा -भाग० १।१।१७ 3 आकाशगंगा शक्ति महत्य कालकर्णया-भाग० ११। १।१६। सम०—आरः लक्षितकर्णाधिद् कर्णाधिज्ञ।

कर्णाकर्णी (स्त्री०) [कर्णा+मतुप्+ङीप्] एक प्रकार की वीणा।

कर्णिकारकः (पु०) 1 करंज वृक्ष 2 पक्षिविशेष।

कर्णिका [कर्णि+कन्+टाप्] सर्वोत्तम कवि के लिए सम्मानसूचक उपाधि।

कर्णिल (वि०)[कर्ण+इलच्] 1. विकृत, संदूषित 2 छिद्रित, अनिश्चित— एतस्मात्कारणाच्छेय कर्णिलं प्रतिभाति मे—महा० १२।२८७।११।

कर्तृ (वि०) [कृत्+तृच्] 1 सदा, मैला। सम० नासन (वि०) अहंरोला, दुष्टि (वि०) बुरी दृष्टि से देखने वाला।

कल्किपुराणम् (नपु०) एक पुराण का नाम।

कल्पः [कल्प्+घञ्] व्यवस्था, विधान—लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारदः रा० २।१।२२। सम० वृक्षः, —तरुः कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर मात्रा में भलाई करे—निगमकल्पतरोर्गलितं फलं— भाग० १। १।३,—स्थानम् 1. औषधियों के निर्माण की कला 2 विषविज्ञान, जगदविज्ञान— सुश्रुत।

कल्पकः [कल्प्+ण्वुल्] 1 वृक्षविशेष, कल्पवृक्ष 2 (वि०) मानकस्वरूप, निश्चित नियमानुकूल—राजन्यिन्द्रायमेवैस्त्रिभिरुत्तमकल्पकैः भाग० १।८।६।

कल्पनाशक्तिः (स्त्री०) [ष० त०] विचार बनाने की सामर्थ्य, विचारों की मौलिकता, भावनाशक्ति।

कल्प्य (वि०) [कला+यत्] ललित कलाओं में दक्ष।

कल्पवाद (वि०) [कल्प+अच्+वद्+घञ्] अयार्थ, प्रमाणिक, युक्तियुक्त - कल्पवादी वत गायेय लौकिकी प्रतिभाति मे रा० ५।३४।६१ सम०—वृक्षकः वह घोड़ा जिसका मुख और पैर सफेद हो।

कल्हणः (पु०) राजतरंगिणी का रचयिता।

कवि (वि०) [कु+इ] 1 सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान्—विः (पु०) 1 विचारक, कविता करने वाला 2 वाल्मीकि 3 ब्रह्मा। सम० कल्पितम् कवि की कल्पना, परंपरा कवियों का अनुक्रम अतिविचित्रकविपरम्परायाहिनि संसार व्यर्था० १. हृदयम् कवि का वास्तविक आशय।

कविलम्बम् [कवि+स्व] 1 (वेद) बुद्धिमत्ता 2. कवि कौशल।

कवच. [कव्+अच्] वर्मी—कवचाब्धो मेदसि प्रसिद्ध मे० स० १।४।२२ पर मा० भा०।

कवाल. [कव+स्युट् पृषो० आत्वम्] मसखरा, दंड पैदा करने वाला लिङ्गाङ्गलोऽद्विपरिवर्तकवाणकम्-भाग० २।७।१३।

कषायवस्त्रम् [ष० त०] संन्यासियों की गेरुये से रंगी हुई वेशभूषा।

कषायस्तुक (पु०) सौतेली मां से उत्पन्न भाई।

कसरः [कस्+स्युट्] खांसी। सम० अन्तकः (पु०) एक पौधा जिसके रस के सेवन से खांसी दूर हो जाती है।

का (स्त्री०) 1 पृथ्वी, धरती 2. दुर्गा देवी।

कांस्यम् [कस+क (ईय)+यञ्, छलोप] कांसी का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का जलपात्र, गिलास। सम०—उपदोह (वि०) बर्तन भर कर दूध देने वाला —दोह (वि०),—दोहन (वि०) दे० 'कांस्योपदोह' —नीलम्, —नीली तुत्थाञ्जन, कासीस।

काक. [कै+कन्] 1. कौवा 2 पानी में केवल सिर डुबोकर नहाना। सम० अहमी गुञ्जा का पौधा,—उदुम्बरः उदुम्बरिका अंजीर का पेड़, मूलरः, जम्बुः गुलाब-जामुन का पेड़, तुण्डम् विशेष रूप से बनाई हुई बाण की नोक,—तिक्ता, तुण्डिका,—ताला,—तालिका वृक्षों के विभिन्न प्रकार,—चर्या (स्त्री०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने की कौवे की आदत का अनुसरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एवं गोमृगकाकचर्यया व्रजन् —भाग० ५।५।२४, तीर्थम् कौओं की पंक्ति जिसको देखने पर प्रायश्चित्त करना पड़ता है,—स्नानम् कौवे की भांति स्नान करना स्पर्शः 1 कौवे को छूना जिससे कि फिर स्नान करना पड़ता है 2 मृत्यु के पश्चात दसवां दिन जब पायस का पिण्ड कौवों को दिया जाता है।

काकिणिक (वि०) [काकिणी+ठक्] कौड़ी के मूल्य का (पदार्थ), अनुपयोगी।

काकोल (पु०) एक वृक्ष का नाम शोभाञ्जन, सहजना।

काक्ष [कक्ष+यञ्, कुत्वाभाव] वह मकान जिसमें दक्षिण और उत्तर की ओर कमरे बने हों ह० स० ५३।४०। सम० कामलम् आँख का एक रोग, काक्ष बिन्दु।

काक्षम (पु०) एक पवित्र वृक्ष (जो मन्दिर के पास उगाते हैं)।

काक्षिक [काक्षि+ठक्] कठोर में सम्बन्ध रखने वाला।

काक्षिक (वि०) सुगन्धयुक्त द्रव्यों का विक्रेता।

काक्षम (न०) मकड़ी की मादरी।

काञ्चीगुण [ष० त०] 1 मेखला की डोर 2 काञ्ची अर्थात् मेखला की समृद्धि काञ्चीगुणावधिनलावधेलोका —दशकु० कथारम्भे।

काठक (वि०) [कठ+वुञ्] कृष्ण यजुर्वेद की कठ संहिता से सम्बन्ध रखने वाला।

काण्डपुष्पम् (नपु०) कुन्द फूल।

काण्डमायन (पु०) एक वैयाकरण का नाम।

काण्डानुसमय. (पु०) पहले एक वस्तु, व्यक्ति या देवता से सम्बद्ध समस्त प्रक्रिया पूरा करना, फिर दूसरे से सम्बद्ध फिर तीसरे से इसी प्रकार चलते रहना।

काण्डेरुहा (स्त्री०) हल्दी का पौधा मञ्जिष्ठा का पौधा।

काण्वायनसूत्रम् (नपु०) काण्वायन का श्रौतसूत्र।

कादम्बरी बाण प्रणीत एक गद्य काव्य (उपन्यास)।

कादिभाष्यम् [क आदि+अ-अन्त] व्यञ्जन (क से लेकर ह् की समाप्ति तक जो अक्षर आम) कादि क्षान्तसमस्तवर्णजनकी अम्ब०।

कानिष्ठ्यम् [कनिष्ठ+ष्यञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति।

कानीलकम् (नपु०) चमड़े का एक भेद की० अ० २।११।

कान्तिः [कम्+क्तिन्] लक्ष्मी - दधौ कान्तिं मुखा लक्ष्मम् - भाग० १०।६५।२९।

कान्दिश (वि०) [काम् दिशम्] भगाया गया, (पुरा-दिनें डर कर) भागने वाला, दौड़ने वाला।

कापुरुष. [कुत्सित पुरुषः को कदादेश] नीच व्यक्ति कायर, ओछा आदमी।

कापेयम् [कपेर्भावः कर्म वा कपि+ढक्] बन्दर का व्यवहार या आदत।

काबन्धम् [कबन्ध+ष्यञ्] बिना सिर के धड़ का होना।

काम: [कम्+घञ्] 1. इच्छा, चाह 2 स्नेह, प्रेम 3 जीवन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ)। सम० आश्रमः वह आश्रम जहाँ कामदेव ने तपस्या की थी,—ईश्वरी कामाक्षी जिसने शिव में कामोत्तेजना जगाने के लिए कामदेव का रूप धारण किया। कार कार्य करने की स्वतन्त्रता अपनी इच्छा के अनुसार काम करना—सान्यत कामकारो ब्रीम्त पुरुषाश्रमनोश्वर —रा०२।१०१।१८, कोटिः (स्त्री०) 1 इच्छाओं की चरम सीमा 2 अभिलाषाओं की पराकाष्ठा 3 दक्षिण में काञ्चीपुरी में शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित आध्यात्मिक गद्दी। तन्त्रम् एक रचना, कृति, दहनम् फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला एक पर्व जिसमें शिव के द्वारा काम को फुलझड़ी की भस्म कर दिया जाता है, दानम् 1 दूध्यित पदार्थ का उपहार 2 वेश्याओं द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व —धर्म भू धार्मिक चेष्टा या व्यवहार भाक् विषय भोगों में भाग लेने वाला - कामभाजं करोमि कठ १-२।४।

कामठक [कमठ+अण्, स्वार्थेकन्] 1 धृतराष्ट्र का नाम 2 एक सौ का नाम जो 'सर्वसेन' में बदल दिया गया था।

कामन्दकि (पु०) कामन्दकीय नीति का प्रणेता।

कामला [कम्+णिच्+कनच्+टाप्] केले का पौधा।

कामिकागम (पु०) आगम आम्नाय का एक ग्रन्थ।

कामिनी (स्त्री०) [काम+इनि+ङीप्] मादक शराब।

कामीकः (पु०) एक प्रकार का सुपारी का वृक्ष।

कामुकिकः [कामुक+ठक्] दलिया, जौ की लपसी।

काम्बोजः [कम्बोज+अण्] 1 वृक्ष 2 पुराण नायक वृक्ष।

काम्यक (पु०) महाभारत में वर्णित एक वन का नाम।
काम्बिन् (वि०) [काय + इनि] बड़े आकार प्रकार का, समूलजाताम् पश्यामि निहतान् काम्बिनो द्रुमान् महा० १२।११३।४।
कायाधव. [कयाधु + अण्] कयाधु का पुत्र, प्रह्लाद।
कारकम् [कृ + ण्वुल्] 1 इन्द्रिय, अंग 2 (व्या० में) वाक्य में संज्ञा और समापिका क्रिया का मध्यवर्ती पदबंध। सम० विभक्ति संज्ञा और क्रिया के मध्य संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया।
कारणम् [कृ + णिच् + ल्युट्] हेतु, निमित्त पूर्व अन्य से आई हुई वस्तु, पूर्ववासना महा० १२।२११।६। सम० कारितम् (अ०) फलस्वरूप—यदि प्रवाजितो राघो लौभकारणकारितम् रा० २।५८।२८ अन्तरम् (कारणान्तरम्) 1 भिन्न प्रसंग, परिवर्तन शील हेतु 2 कारण पाक हेतु।
कारणता [कारण + तल् + टाप्] कारणपना, हेतुत्व —प्रलयादिनिमर्गणामेक कारणता गत —कु० २।६।
कारणिक [कार + आयक, ठ० म०] प्रबन्ध के निर्माण कार्य का अधीक्षक, काम की देखभाल करने वाला।
कारुषा (ब०व०) 1 एक देश का नाम 2 अन्तर्वर्ती जाति का (पिता वास्तवैदेह्य तथा माता धैवर) पुरुष।
कारुषम् (ना०, मल यालम) रा० १।२४।२०।
कारुकौशल्यम् [कृकलास + ष्यञ्] छिपकली की स्थिति।
कार्णाट भाषा (स्त्री०) कन्नड भाषा।
कार्तिक [कृत्तिका + अण्] स्कन्द का विशेषण।
कार्पटिक [कर्पट + ठक्] कपटी, धोखेबाज, ठग।
कार्पासवस्तु (नपुं०) [कर्पासी + अण् = कार्पासस्तस्य तन्तु ष० त०] कपड़े का धागा।
कार्मणत्वम् [कर्मन् + अण्, तस्य भाव त्वम्] जादू, टोना कार्मणत्वमसमम् रमणेषु—शि० १०।३७।
कार्यालिक. (पु०) उपाय ग्रन्थ और निर्माणकार्यों का अधीक्षक को० अ० १।१२।
कार्षापिक [कार्षापण + ठक्] बर्छी को० अ० २।३।
कार्यम् [कृ + ण्यत्] शरीर—कार्याधियिणश्च फललाभा (कार्यंशरीर)—सा० का० ४३। सम० - अवेक्षिन् (वि०) किसी विशेष कार्य को करने वाला, आश्रयिन् (वि०) शरीर का सहारा लेने वाला का० ४३, वशतस् (अ०) किसी प्रयोजन से, किसी काम से।
कालः [कलयति आयुः कल् + णिच् + अच्] 1 सांख्य कारिका में बताये चार पदार्थों में से एक प्रकृत्युपादानकालभागाख्या सां० का० ५० 2 समय का कोई भाग। सम०—अष्टमी 1. आषाढ मास कृष्णपक्ष के पहले आठदिन 2. काल भैरव का स्तोत्र जिससे शंकर की स्तुति की गई है,—आत्मिका पंचमास —आत्मः 1. आम का एक भेद, 2. एक टापू का नाम,—कण्ठम् नील कमल,—कण्ठी कालकण्ठ की पत्नी, पार्वती,—कर्णकः पनियाला सांप, जीवक जो समय पर मिले पतले भोजन से ही सन्तुष्ट हैं, —दग्धः जिसे मौत ने डस लिया है,—धौतम् (कलधौतम्) चांदी या सोना,—पर्वन् देरी, विलम्ब, बहुसंहर्षि सुगीव व्यतीत कालपर्ययें, पुरुषः यमराज का सेवक, —बाहः संसार का नष्ट करने के अपने अवतार रूप में विद्यमान रुद्र, मुख कुलत्थ, एक प्रकार की दाल, —संकर्षिनी मन्त्रविद्या जिससे समय की अवधि कम की जा सके, सङ्ग देरी, विलम्ब,—कार्यस्य च कालसङ्ग —रा० ४।३२।५३,—संज्ञपित, (—संज्ञायुक्त), मृत मरा हुआ।
कालकूटः (कालमयं), खांसी को भगाने वाली औषध।
कालन (वि०) [कल् + णिच् + ल्युट्] गणना करने वाला।
कालिका (स्त्री०) [काल + ठन्] 1 एक प्रकार की शाक भाजी 2 तेलन, तेली की स्त्री 3 कुहरा धुंध।
कालित (वि०) [काल + इतच्] मृत, मरा हुआ साधुना संस्थिं कालिता भाग० १०।५१।१८।
कालिदासः (पु०) 1 एक यशस्वी कवि और नाटककार का नाम 2 मलोदेव और श्रुतबोध के प्रणेताओं की भांति अन्य कवि।
कालिय (वि०) [काल + घ] 1 समय से संबद्ध 2 एक सांप का नाम जिसका कृष्ण ने दमन किया था।
कालीय (वि०) [काल + छ] किसी विशेष कालमान से संबद्ध।
कालेयक (पु०, ब० व०) [काली + ठक्] कृष्णयजुर्वेद की शाखा या सम्प्रदाय।
काली (पु०) कौवा।
काशिक (वि०) [काशी + ठक्] काशी में बना हुआ, रेशमी वस्त्र, बनारसी कपड़ा।
काशिकाशिन् (पु०) धन्वन्तरि।
काशेय (वि०) [काशी + ढक्] काशी का, काशी से संबंध रखने वाला।
काश्यकरण्डक (वि०) हीरो का एक भेद को० अ० २।११।
काश्यपेय (वि०) [कश्यप (अदिति) + ढक्] सूर्य, गरुड और बारह आदित्यों का विशेषण, —यः (पु०) दारुक, कृष्ण का सारथि।
काषाय (वि०) कच्चा, जो पका न हो।
काषायवासस् [ब० स०] भिक्षुक।
काष्ठम् [काश् + क्थन्] लकड़ी। सम० —अधिरोहणम् चिता में बैठना, पुञ्जः लकड़ियों का गट्ठर, भारः लकड़ियों का बोझ।

काष्ठा (स्त्री०) 1 पीला रंग 2 शारीरिक रूप या मुद्रा —काष्ठां भगवतो ध्यायेत् —भाग० ३।२८।१२ ।

काससंहारिणी [ष० त०] खांसी या दमे का नाश करने वाली औषधि का पौधा ।

काहन् (नपु०) [क+अहन्] ब्रह्मा का एक दिन (=१००० युग) ।

काहारकः (पु०) एक जाति का नाम जिसके लोग पालकियों में सवारियों को ढोते हैं ।

कि (जुहो० पर०) चिकेति, जानना ।

किंकिरिः (स्त्री०) [कि किरतीति -कृ+क, स्त्रियां-ङी] कोयल ।

किञ्चनम् [किञ्चन+ष्यञ्] सम्पत्ति—किञ्चन्ये नास्ति बन्धनम् महा० १२।३२०।५० ।

किट्टिमम् (नपु०) मैला पानी ।

किम् [कु+डिमु वा०] समासान्त शब्दों में प्रायः 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है, और तुच्छता 'घटियापन' दोष या ह्रास का अर्थ प्रकट करता है । सम० —कविका (स्त्री०) संदेह, संकोच, झूले (अ०) किंकर्तव्यविमूढ, —ज (वि०) जो कहीं उत्पन्न हुआ हो, जिसका नीचकुल में जन्म हुआ हो, तुच्छ 'कण्व' नामक काल के ग्यारह भागों में से एक, नु (अ०) परन्तु फिर भी, तो भी—किन्नु खिल मनुष्यापामनित्यमिति मे मतम् रा० २।४।२७, —पाक (वि०) अपरिपक्व, अज्ञानी, पाक. आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित एक जड़ी बूटी, —पुरुष 1 अर्धदेव 2 घटिया मनुष्य, —राजन् बुरा राजा, क्रियता निन्दा, बुराई ।

किंवर (पु०) मगरमच्छ, घड़ियाल ।

किंवीय (वि०) [किम्+छ] किसका, किससे संबंध रखने वाला ।

कियत् (वि०) [किमिदम्भ्यां घोच्] (पु० —कियान्, स्त्री० कियती, नपु० कियत्) 1 कितना अधिक, कितना बड़ा, कितना 2 कुछ, थोड़ा सा । सम० एतत् किम् महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अतिसामान्य, —मात्र: नगण्य, तुच्छ बात ।

किराटः (पु०) बेईमान सौदागर, निलंज्ज व्यापारी—भाग० १२।३।३५ ।

किरातकः [किर पर्वतभूमि अतति गच्छतीति,स्वार्थे कन्] किरात जाति का मनुष्य ।

किंशिरावृक्षः [ष० त०] शीशम का पेड़ ।

किलकिलितम् (नपु०) हर्षसूचक ध्वनियां ।

किलाटः (पु०) जमा हुआ दूध ।

किलातः (पु०) बौना, कद में छोटा ।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, कुक्] 1 संकट, पाप पितेव पुत्रं धर्माद्धि त्रातुमर्हसि किल्बिषात् रा० १।६२।७ 2 धोखा, जालसाजी ।

किल्लोरः [किम् +भृ +ओरन्, किमोस्पलादेशः, वातोत्क्षिप्तः लोप] किसी जानवर का बच्चा, शिशु, शावक ।

कीकट (वि०) [की+कट् + अच्] 1 निर्धन, बेचारा कंजूस, लालची ।

कीकटास्थि (नपु०) [की + कट् +अच्—ष० त०] कपोटका, मरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।

कीचक [कीच् +वुन्, आदन्तविपर्ययश्च] बांस जो हवा भर जाने पर शब्द करता है—कीचका वेणवस्ते स्युः ये स्वनन्त्यनिलोद्धता केवल 'बांस' के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त—स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः कु० १।८, रघु० २।१७ ।

कीचकवधः [ष० त० कीचक । हन् + अप्, वधादेशः] 1 भीम के द्वारा कीचक की हत्या 2 एक नाटक का नाम ।

कीट [कीट्+अच्] 1 कीड़ा । सम० अवपन्न (वि०) कोई वस्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से खाई हुई, -उत्कर वर्मी, -नद्य कीटाकरावकीर्णा कथा० १०।१।२९०।११, नाभा, पाचका,- पाची,-जाता (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।

कीनाश (वि०) [किलश् - कनन्, दीर्घः, लस्य नोपो नलयोः सवर्णत्वम्] 1 धनी जानने वाला 2 निर्धन, दरिद्र 3 क्रूर हत्या—उपायज्ञश्चातिनि -भाग० 4 क्रूर ।

कीरिजाता (स्त्री०) जूं ।

कीर्तनीय, कीर्त्य (वि०) [कृत् अनीयर् यत् वा] स्तुति किये जाने के योग्य, जिसके यश या कीर्ति का गान किया जाय

कीर्ति (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1 यश, ख्याति 2 कृपा प्रसाद । सम० शालशेष जो केवल ख्याति या यश के सहारे में ही जीवित है, मृत, स्वल्पः यश या ख्याति के कृत्य का स्वल्पा ।

कीर्तितव्य (वि०) [कृत् + तव्य] जिसकी स्तुति की जानी है ।

कीलः [कील् + घञ्] 1 जुआरी 2 मूर्ख, बेवकूफ ।

कीलप्रतिकीलन्याय, (पु०) एक न्याय जिसके अनुसार क्रिया एक में रहती है या प्रतिक्रिया दूसरी में रहती है पा० २।३।६ पर म० भा० ।

कीलालिन् [कीलाल - इनि] खिलखिली, गिरगिट ।

कीशपर्णः, (पर्णिन्) [ब० स०] अपामार्ग नाम का पौधा ।

कु (अ०) [कु+डु] बुराई, कुत्सा, अवमूल्य, पाप, अवज्ञापन और कमी को प्रकट करने वाला अव्यय । सम० -कर घृणित करने वाला, -अ, -कुत्सित, -अवमूल्य, -अवहेलन, -वाच (पु०) गीदड़, -कोशम् शरीरस्थ म मल द्रव्य, -तप 1 एक प्रकार का कम्बल जो पहाड़ी बकरियों के बालों से बनता है 2 दिन का आठवां मुहूर्त 3 दोहना

या भागना 4 सूर्य. द्वारम् पिछला दरवाजा, लवणम् बुरा नमक, भोंडे या मैले नमक,—नीतः गलत राय —पटः, पटम् चीवर, चिथड़ा,—पत्रम् अयोग्य व्यक्ति,—मेरुः दक्षिणी ध्रुवबिन्दु,—लक्षण (वि०) छोटे चिह्नों से युक्त, विक्षयः अस्थानप्रयुक्त शूरवीरता, वेशम् (पु०) बुरी आदत।

कुकूलाग्निः (पु०) भूसी या बुरादे से निर्मित आग, कथा० ११७।९६।

कुक्कुट [कुक्+क्विप्, केन कुटति कुट्+क] 1 मुर्गा, आग की चिनगारी। सम०—अण्डम् मुर्गी का अण्डा, आसः,—अहिः एक प्रकार का साँप, आसनम् योग का एक आसन।

कुक्षिगत (वि०) [कुक्ष्या गत इति त० स०] गर्भस्थ, दिष्टयाम्ब ते कुक्षिगत पुमान्—भाग० १०।

कुक्षः [कुक्ष्+क] स्तन, उरोज, चूची। सम०—कुम्भः तरुण युवती के स्तन,—कुड्मलम् कली के आकार का स्तन गोपाङ्गनानां कुचकुड्मल या—कृष्ण०, कुङ्कुमम् स्तन पर रोली या केसर का लेप।

कुजाष्टमः [ब० स०] ग्रहों की विशेष स्थिति जब कि मंगल लग्न से आठवें घर में हो।

कुञ्जरः [कुञ्ज+र] 1 हाथी 2 सिर 3 आभरण 4 आठ की संख्या। सम०—अरिः सिंह, आरोहः महावत, आख्यः (गजच्छाय) ज्योतिष का एक योग जिसमें चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त नक्षत्र में विराजमान होता है।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] कपटी, वक्र, टेढ़ा, बेईमान। सम० अलकम्, कुन्तलम् टेढ़ी अलकें, टेढ़ी जुल्फें कुटिलकुन्तल श्रीमुख च ते जड उद्योतना —भाग० १०।३५, चित्तम् कपटपूर्णमन, टेढ़ा मन —कुलेसयनिवसिनी कुटिलचित्तविद्वेषिणीम् -नव रत्न०।

कुटी (स्त्री०) [कुटि+ङीष्] झोंपड़ी।

कुटुम्बिनी [कुटुम्ब+इन्+ङीष्] 1 गृहिणी 2 घर की सेविका या नौकरानी।

कुटुम्बित्वम् [कुटुम्बिन्+ता. त्व] 1 गृहस्थ होने की स्थिति 2 पारिवारिक एकता या सम्बन्ध 3 एक परिवार की भाँति रहना।

कुट्टनम् [कुट्ट्+ल्युट्] 1 काटना 2 पीसना 3 मुक्का बद करके मस्तक के दोनों ओर थपथपाना, यह गणेश को प्रसन्न करने का चिह्न है।

कुट्टालः कुदाल, मिट्टी खोदने की फाली।

कुष्ठघातक (वि०) [कुष्ठ+हन्+ण्वुल्] मछली को खाने वाला।

कुडवी [कुड्+कपन्+ङीष्] एक छोटा पक्षी।

कुडाकः (पु०) एक देश का नाम—अथ कुडाकेषु महासागर मिव विराजन्तं नैकविजातिमण्डल जानकी० २०।

कुण्डः [कुण्+क] पानी का बर्तन, पानी का कलश। सम०—पायः [कुण्डेन पीयते अत्र ब्रह्मा] एक यज्ञ का नाम, भेदिन् (वि०) अनाड़ी, मूर्ख, चूहड़।

कुण्डकः [कुण्ड—कन्] बर्तन—कथा० ४।४७।

कुण्डलिका (स्त्री०) कुण्डली, वृत्त।

कुण्डलिन् (वि०) [कुण्डल+इनि] गोलाकार,—ली (पु०) सुनहरा पहाड़।

कुण्डलिनी (स्त्री०) [कुण्डलिन्+ङीष्] योग शास्त्र में एक नाड़ी का नाम।

कुण्डिका (स्त्री०) [कुण्ड+कन्+टाप्] एक छोटा जोहड़, पोखर तथा कण्डिका पा० ६।१।१४४ पर म० भा०।

कुतपसप्तकम् [ष० त०] सात वस्तुएँ जो श्राद्ध के अवसर पर मृतक के सम्मानार्थ दान की जायँ—यथा भृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्यधातु, कुशतृण, सवत्सा धेनु, अपराह्णकाल, और कृष्णतिल।

कुतपाष्टकम् [ष० त०] आठ वस्तुएँ जो श्राद्ध के लिए शुभ मानी जाती हैं यथा मध्याह्न, शृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्य, दर्भ, सवत्सा धेनु, तिल और दौहित्र।

कुतुकिन्, (—किन्) (वि०) [कुतुक+इनच्, इनि वा] उत्सुक, जिज्ञासु।

कुतृणम् (नपु०) पनीला पौधा।

कुतोनिमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को लिये हुए कुतोनिमित्त शोकस्ते रा० २।७४।२०।

कुत्सला (स्त्री०) नील का पौधा।

कुथकः [कुथ्+अच् स्वार्थे कन्] रंग-बिरंगा कपड़ा।

कुधिः (पु०) उल्लू।

कुन्थ् (चुरा० पर०) झूठ बोलना।

कुन्ददन्त (वि०) [ब० स०] जिसके दाँत कुन्द फूल की भाँति श्वेत तथा चमकीले हों।

कुपित (वि०) [कुप्+क्त] क्रोध दिलाया हुआ, क्रुद्ध, नाराज, क्रोधी।

कुप्यधौतम् [कुप्+क्यप्, कुप्य] चाँदी।

कुबेर (वि०) [कुत्सितः बेरः शरीरं यस्य, ब० स०] 1 महा. मह अङ्गों वाला।

कुभाषि (वि०) प्रकाशपराक्रमी कौ० अ० २।११।

कुमार् (चुरा० पर०) आग से खेलना।

कुमारः [कम्+आरन्, उत उपधायाः] एक धर्मशास्त्र का प्रणेता, रत्न (नपु०) विशुद्ध सोना। सम० —दासः, 'आमकीहरण' का प्रणेता, एक कवि का नाम, लीलिका (स्त्री०) 1 रंगरेली, मृदु कामक्रीडा 2 एक छन्द का नाम जिसके एक चरण में सात मात्राएँ होती हैं,—संभवम् कालिदासकृत एक काव्य का नाम।

कुमारिकापुरम् (नपुं०) कन्याओं की व्यायामशाला महा० ४।११।१२, दश० २।

कुमालकः (पु०) मालवदेश के एक प्रदेश का नाम।

कुमुदः,—दम् [को मोदते इति कुमुदम्] 1 सफेद कमल जो चन्द्रोदय होने पर खिलता कहा जाता है 2 लाल कमल 3 विष्णु का विशेषण 4. कपूर। सम०—आसव (वि०) चमेली, कुन्दा कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्पः (पु०) लूला, जिसके हाथ विकृत हों।

कुम्भकुटीरः (पु०) स्त्रियों के लिए सिर पर पहनने का वस्त्र।

कुम्भः [कु+उम्भ्+अच्] घड़ा, जलपात्र। सम०—उदर शिव का एक भूतगण, सेवक—रघु० २।३०। —उलूक उल्लू का एक भेद,—महा० १३।१२०। १०१, कुम्भकर्ण आला, ताक।

कुम्भिन् (वि०) [कुम्भ+इनि] आठ की संख्या।

कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन्+ङीप्] 1. पृथ्वी 2 जमीन गाड़े का पौधा।

कुम्भीनसी (स्त्री०) लवणासुर की माता, रावण की बहन।

कुम्भीमुखम् (नपु०) एक प्रकार का बाण, शस्त्र।

कुरङ्गनाभ्यम्भः [ब० स०] चन्द्रमा।

कुरण्डवाला (ब० व०) एक देश का नाम।

कुरण्डिन् (पु०) लालमणि, पद्मरागमणि।

कुरम् [कुर्+क] 1 वंश, परिवार 2 समूह 3 रेवड़। सम० अम्बास्था देवी का विशेषण,—आख्या, पारिवारिक नाम, वंशद्योतक नाम,—आवीक्षः,—क्षेक्षण परिवार की कीर्ति या यश, कार्यिकः आनुवंशिक लेखपाल या अधिकारी,—कल्पद्रु परिवार के लिए अभीष्ट,—कुण्डालया कौल वृत्त में स्थित, देवी का एक नाम, पांसिका (पु०) कुल का गौरव या मर्यादा बढ़ाने वाला उच्चकुल में उत्पन्न महिला,—कृत्य (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, नाशन (वि०) परिवार को नष्ट करने वाला, पांसनः जो अपने कुल को कलङ्कित करता है,—पालम् सन्तरा, नारङ्गी,—भरः (कुलम्भरः) परिवार का पालनपोषण करने वाला,—शैलः शिल्पी वंश का मूलिया,—सार्व कौलों का सिद्धान्त, सांक्षिकः (पु०) आदरणीय साक्षी की उपस्थिति—मी० सू० ८।१९४।२०१।

कुलकिलिका (स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया—को० अ० २।११।

कुलिकः (पु०) [कुल+ठन्] 1 एक कांटेदार पौधा 'भान्दि' 2 शिकारी—कुलिकस्तमिवाज्ञा कृष्णवरत्वा हरिष्य भाग० १०।६७।१९।

कुली (स्त्री०) परिवारों का समूह।

कुल्या (स्त्री०) नाल रूप का खंदिया, नलिका।

कुलटः (पु०) एक प्रकार की मछली।

कुलालचक्रम् [ष० त०] कुम्हार का चाक।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग्+अच्] 1. गरुड़—महा० १२। १०१।७ 2. हाथी—कुलिङ्गो भूमिभृन्माण्ड मत्तकुञ्जर-भुजङ्गयो -मेदिनी।

कुल्क (वेद०) टखना,—ऋ० ७।५०।२। सम० वत्त (वि०) टखने तक पहुंचा—शत० १२।

कुल्माष [कुल्+विच्, कुल् मायोऽस्मिन् ब० स०] 1. खिचड़ी जिसमें आधे उबले चावल और दाल हो 2. एक प्रकार का रोग।

कुल्लूकः (पु०) मनुस्मृति का एक टीकाकार।

कुल्ली [कुल+ङीष्] कूचर की लकड़ी का टुकड़ा जो स्तोत्र के अन्तर्गत छन्द मंत्रों की संख्या गिनने के काम आता है छन्दोऽक्षरोपयमनाय कुल्लूम्—नाना०।

कुल्यवृष्टिः [ष० त०] मूसलाधार वर्षा, कुआं वर्षा।

कुशिकाः (ब० व०) कुशिक मुनि की सन्तान।

कुशेशयनिवेशिनी (स्त्री०) लक्ष्मी देवी।

कुष्ठः [कुष्+क्थन्] कन्धे में पड़ा गड्ढा।

कुष्माण्डहोमः (पु) किसी भी बड़े धार्मिक आयोजन से पूर्व किया जाने वाला हवन।

कुसुमम् [कुस्+उम] 1. फूल 2 फूल। सम०—अञ्जलिः उदकशान्ति की एक रचना,—द्रुमः फूलों से भरपूर वृक्ष - धनुस् (कुसुमधनुस्) मधुमक्खी—उदलसदसमकुसुमबन्धे रा० च०।

कुसुमयति (कुसुम—ना० धा०, झट्) फूल उत्पन्न करता है, या फूलों से सजाता है।

कुसुम्भरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।

कुहकवत्ति (स्त्री०) फूलना, चालाकी।

कुहरः [कुह+रा+क] भीतरी खिड़की।

कुहूकाल [ष० त०] चान्द्रमास का अन्तिम दिन जबकि चन्द्रमा अदृश्य होता है।

कुहूमुख [ब० स०] 1. भारतीय कोयल 2 सकट।

कुहूमुखम् [ष० त०] नया चाँद।

कुहूस्वनः [कु+हूँ+स्वन्] अव्यक्त ध्वनि।

कूटम् [कूट+अच्] छोटा शिखर कूट हि निधानाना-मेव उपकारक वार्त्तानाम् मी० सू० ६।१।५२ पर शा० भा०। 1 छल० एकत्रित माल, ढाल ऐंच, लेखः जमाबंदी का झूठी दस्तावेज, - लक्षकालि. आधीरात बीतने पर छल सूर्य एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमण करता है, लेखम् जोड़ा गोना।

कूपः [कु+कप्, दीर्घश्च] 1 कुआं 2 छिद्र या रोम-कूप, 3 घड़ा। सम०—खनः, खनकः कुआं खोदने वाला, जलम् पानी का कुआ या पोखरा, द्रव्यम् मलमूत्र—कोशीकृत्यदण्ड, वध० १।१ स्थानम् कुएं का स्थान।

कुंजरस्कन्धः [ष० त०] गाड़ी में बैठने का स्थान।
कूर्म. [को भले ऊर्ध्वमेवोऽस्य—पृषो०] कछुवा। सम०
—आसनम् योग की एक विशेष मुद्रा,—द्वादशी पौषमास के शुक्लपक्ष का ग्यारहवाँ दिन,—पुराणम् एक पुराण का नाम।
कूर्मक (वि०) कछुवे जैसा बना हुआ।
कूर्मिका [कूर्म+कन् स्त्रियां टाप्, उपधाया इत्वम्] एक वाद्ययन्त्र।
कूलिका [कूल+कन् + टाप्, इत्वम्] बीणा का निचला भाग।
कृ (तना० उभ०) एकत्र करना, लेना—आदाने करोति शब्द मी० सू० ८।२।६।
कृकरच्छदः [ब० स०] आग।
कृकलासः (पु०) 1 एक प्रकार का तीतर 2 पाँच प्राणों में से एक।
कृच्छ्र (वि०) [कृत्+रक्] 1 कष्टप्रद दुःखदायी। सम० अर्ध केवल छ दिन तक रहने वाली तपश्चर्या, कृत् (वि०) तपस्वी -सान्तपनम् एक प्रकार का प्रायश्चित्तपरक व्रत।
कृतम् [कृ+क्त] जादू, टोना। सम०- अर्थ (वि०) कृतार्थ [ब० स०] जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है अब अब और कुछ करने में असमर्थ है -अकृतरूपा कृताय शब्द मी० सू० ८।२।८ पर शा० भा०, - कर (वि०) —कारिन् (वि०) किए हुए कार्य को करने वाला, निरर्थक कृतकरो हि विधिरनर्थक स्यात् - मी० सू० १०।५।७८ पर शा० भा०, -तीर्थ (वि०) जिसने मुनक्ष या आसान बना दिया, -दार (वि०) विवाहित -दूषणम् किये हुए का खराब करना, -अन्न (वि०) कटु, नागरु, -आत्मन् जितेन्द्रिय, -कारुण्यहरणं,—विद् (वि०) कृतज्ञ -कृतापराधसंशारण तव पादमूल विस्मर्यते कृतविदा भाग० ८।१।८, -शौच जिसने मलें भी साफ करा ली हैं,—संस्कार 1 जिसने शोधनात्मक सब प्रक्रियाएँ पूरी कर ली हैं 2 सज्जित, तैयार।
कृतवत् (वि०) [कृत+मतुप्] जिसने कार्य करा लिया है—कृतवानस्मि निष्क्रिय न मे - कु० ४।३।
कृतिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1 वर्णसंयोजन, संख्या, 2 क्रिया 3 चाकू, 4 जादूगरनी। सम० साध्यत्वम् प्रयत्न करके सफल होने की क्षमता।
कृत्यम् [कृ+क्यप्] 1 जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य 2 कार्य 3 प्रयोजन। सम० अकृत्यम् कर्तव्य अकर्तव्य में (विवेक करना), -विधिः (पु०) नियम, उपदेश,—ज्ञेय (वि०) जिसने अपना कार्य पूरा नहीं किया है।
कृत्यम् [कृत्+यत्] शस्त्रकार का एक उपकरण—महा० १।१९४।६।
कृत्यवत् (वि०) [कृत्य+मतुप्] 1 जिसके पास करने के लिए कार्य है 2 जिससे कोई प्रार्थना की गई है 3 चाहने वाला, प्रबल इच्छुक—रा० ७।९२।१५।
कृत्तलिका [कृत्त+स्वार्थे कन्+इत्वम्] एक छोटा चाकू।
कृत्या-चिन्ता (लोकोक्ति) प्राक्कल्पनापरक बात पर विचारविमर्श करना—मे० स० १०।२। ४९ और ६।८।४८ पर शा० भा०।
कृपा+आकर, -सागर, -सिन्धुः (पु०) अत्यन्त कृपालु।
कृश (वि०) [कृश्+क्त, नि०] 1 दुर्बल, बलहीन 2 नगण्य 3 निर्धन 4. तुच्छ। सम० अतिथि (वि०) जो आने अतिथियों को भूखा रखता है महा० १२।८।२४,—अन्नः जिसकी गौवें भूखी रहती हैं, भृत्य जिसके नौकर भूखे रहते हैं।
कृशानुसन्धानम् (नपु०) ताप।
कृष् (तुदा० पर०) खरचना, विरेचन करना।
कृषिविष्टः एक प्रकार का चिड़ा।
कृषिपाराशरः,-संग्रहः (पु०) कृषि शास्त्र पर एक संग्रह ग्रंथ।
कृष्ण (वि०) [कृष् नक्] 1 काला 2 दुष्ट 3 बुरा 4 भूरापन (रोग) जिसमें धोबी कपड़ा पर चिह्न लगाता है महा० १।१।२९।१९०। सम०- कज्जलकः काला धब्बा -छवि (स्त्री०) 1 वारुणिका की झाड़ 2 काला आदमी -कृष्णच्छविमया कृष्णा महा० ८।६।१५, -ताल एक प्रकार का घोड़ा जिसका ताल काला होता है द्वादशी आषाढ के कृष्णपक्ष में बारहवाँ दिन, -बीजम् तरबूज, -भस्मन् पारद -मृत्तिका 1 काली मिट्टी 2 बालू।
कृष्णा (स्त्री०) यमुना नदी।
कृष्णु (प्रेर०) ग्रहण करना, स्वीकार करना—नातो ऋत्यमकल्पयन् - रा० २।९१।५५।
केतुमाकः,-मत् जम्बू द्वीप का पाँचवाँ भाग।
केदारः [केन जलेन दारोऽस्य ब० स०] संगीत शास्त्र में एक राग का नाम।
केदारकः [केदार+स्वार्थे कन्] चावल का खेत।
केन्द्रम् (नपु०) जन्म कुण्डली में पहला, चौथा, सातवाँ एक दसवाँ स्थान।
केरलजातकम्, केरलतन्त्रम्, केरलशास्त्रम्, केरलसिद्धान्तः } ग्रन्थों के नाम।
केलिः (पु० स्त्री०) [केल्+इन्] हँसीमजाक, दिल्लगी, रसरेली। सम० -कलहः हँसी मजाक में झगड़ा, —सरस्सम् आमोद सरोवर,—सदनम् प्रमोदवन।

केवलव्यतिरेकिन् (पु०) न्याय सिद्धान्त के अनुसार अनुमान के केवल एक प्रकार से सम्बन्ध रखने वाला।

केवलाद्वैतम् (नपु०) दर्शन शास्त्र की एक शाखा।

केवलिन् (वि०) [केवल+इनि] (जैन०) जिसने उच्चतम ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केश: [किल्+अच् को लोपश्च] 1 बालक 2 सिर के बाल। सम०—आकर्षणम् चुटिया पकड़ कर किसी महिला को खींचना एवं उसका अपमान करना, —कारम् एक प्रकार का यन्त्र, कारिन् (वि०) जो बालों को सवारता है, ग्रन्थि: चुटिया बेणी, —धारणम् बाल रखना —कुञ्जक एक जैन साधु का नाम, वपनम् बाल कटवाना, मुण्डन कराना —व्यरोपणम् अपमान के चिह्नस्वरूप किसी दूसरे की चुटिया पकड़ना—रघु० ३।५६।

केशवस्वामिन् (पु०) एक वैयाकरण का नाम।

केश्य (वि०) [केश+य] 1 बालों की वृद्धि के अनुकूल 2 बालों में लगाया हुआ, —श्यम् (नपु०) सार्वजनिक निन्दा, बदनामी, लोकापवाद।

केसरराल (वि०) [केसर+आलच्] अयाल से समृद्ध, तन्तुबाहुल्य से युक्त।

केसरिणी [केसर+इनि, स्त्रियां ङीप्] सिंहिनी, शेरनी।

कैमर्थक्यम् (नपु०) [किमर्थक+ष्यञ्] प्रयोजन का अभाव—कैमर्थक्याभियमो भवति—पा० १।४।३ पर म० भा०।

कैमर्थ्यम् [किमर्थ+ष्यञ्] कारण, प्रयोजन।

कैयट: (पु०) पतञ्जलिकृत महाभाष्य के टीकाकार वैयाकरण का नाम।

कैलासकम् (नपु०) एक प्रकार का शहद, शराब।

कैशोरवयस् (वि०) [ब० स०] कुमार, किशोरावस्था का बालक।

कोकट (पु०) भारतीय लामट।

कोकपु (पु०) वनकपोत, जंगली कबूतर।

कोकनदिनी [कोकनद+इनि+ङीप्] लाल कमल का पौधा कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविद—कथा० ३०।७८।

कोकिलक: (पु०) एक छन्द का नाम।

कोट्टप:, पाल: (पु०) किले का संरक्षक, सेनानायक।

कोटि: (स्त्री०) [कुट्+इञ्] असंख्य, अगणित,—कोट्यतस्ते सुसूताश्च योधा—रा० ५।५१। सम०——होम: एक प्रकार का यज्ञीय अनुष्ठान।

कोणपरिसृप्त (नपु०) उत्तरपूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक फैला हुआ क्षीरपरिसृप्त या इसके विपरीत।

कोणशिर: (पु०) वह क्षत्रिय जिसको ब्राह्मण ने क्रुद्ध हो जाने का शाप दे दिया है।

कोणसम्भव (वि०) [ब० स०] कोण से उत्पन्न।

कोणाक्ष (वि०) [ब० स०] कोण के कारण नाम कोणाक्ष मुनिरधारयदक्षिकोणम् नील०।

कोमल (वि०) [कु०+कलच्, मुट्, नि० गुण] मृदु, मुलायम नरम, —लम् (नपु०) रजस्।

कोमला (स्त्री०) एक प्रकार का छुहारा।

कोरकित (वि०) [कोरक+इतच्] कलियों से आच्छादित नै० २।१२१।

कोलकम् [कुल्+अच्, स्वार्थे कन्] 1 एक प्रकार का नाप भाग० ९।४८६ 2 एक प्रकार का गड्ढा मान० १०।८१ 3 वे फलादिक जो नींव के गर्त में प्रयुक्त होते हैं।

कोश [कुश्+घञ्, अच् वा] 1 कमल का परिच्छद 2 भाग का टुकड़ा 3 वह प्याला जिसमें युद्धविराम के सन्धिपत्र को सत्यांकित करने के चिह्न स्वरूप पेय पदार्थ उंडेला जाता है—देवी कोशमयायत्—राज० ७।८। सम०—वेश्मन् कोशागार—भाष्ट च स्थापयामास सदीपे कोशवेश्मनि कथा० २४।१२३।

कोशालक [कोश+अण्+कन्] प्याला।

कोष्ठीकृ (तना० उभ०) घेरना, घेरा डालना—कोष्टीकृत्य च तं वीरम्—महा० ६।१०१।३२।

कोहल (वि०) [को हलति स्पर्धते अच् पृषो०] अस्पष्ट बोलनेवाला, —ल: (पु०) एक प्राकृत भाषा के वैयाकरण का नाम।

कौक्षक (वि०) एक प्रकार की हरी—को० अ० २।११।

कौञ्ज (वि०) [कुञ्ज+अण्] कुञ्ज अर्थात् मंगल से संबंध रखने वाला।

कौटुम्ब्यम् [कुटुम्बी+ष्यञ्] कुटुम्बी के द्वारा गवर्नियों को दुराचरण में प्रवृत्त कराना।

कौण्डिन्य: [कुण्डिन+ष्यञ्] एक ऋषि का नाम।

कौतुकवत् (अ०) [कुतुक+अच्, मतुप्] जिज्ञासा के रूप में।

कौथुम 1 सामवेद की एक शाखा का नाम 2 इस शाखा का अनुयायी ब्राह्मण।

कौमार (वि०) [कुमार+अण्] 1 मुख्य सृष्टि, मुख्य अवतार—स एव प्रथमं देव कौमारं सर्गमाश्रित भाग० १।३।६। सम०—तन्त्रम् आयुर्वेद शास्त्र का एक अनुभाग जिसमें बच्चों के पालनपोषण का वर्णन है,—व्रतम् ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना।

कौमार्य: (पु०) 1. आकाश 2 वायु 3 शिव 4 अग्नि 5 तपस्या में संलग्न।

कौमुदीगण्य: [कुमुद+अण्+मुद+घञ्, ष० त०] कौमुदी का सिद्धान्त।

कौलाल: [कुलाल+अण् स्वार्थे] कुम्हार।

कौशिकी [कुशिक+अण्, स्त्रियां ङीप्] कुशाहे की स्त्री।

कौशिक: [कुश+ठक्] सींग गुग्गुल, बरोहा।

कौशीतकी (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।
कौशीतकम् } (नपु०) एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
कौशीतकि }
कौस्तुभः [कुस्तुभ+अण्] घोड़े की गर्दन पर बालों का गुच्छा, अयाल।
कक्कटः (पु०) लंबा, बड़ूल (पक्षी)।
कक्षर्थः [त० स०] यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करने के लिए साधनभूत सामग्री—मैं० सू० ४।१।२ पर शा० भा०।
क्रतुफलम् [ष० स०] यज्ञ का फल।
क्रन् (म्वा० आ०) 1 चमकना जाना 2 दुःखी होना।
क्रप् (चुरा० पर० कल्पयति। स्पष्ट रूप से बोलना।
क्रमः [क्रम्+घञ्] 1 पग, कदम 2 पैर 3 वृत्ति, चाल। सम० - आविष् (वि०) उत्तरोत्तर, क्रमिक, - आख्या, देखो, - शिक्षा वेद पाठ करने की नाना प्रणालियाँ, योगेन (अ०) नियमित रूप से।
क्रियाकल्पकम् [कृ+कर्मणि यक्+स्वार्थे कन्, ह्रस्वः] सांप्रदायिक निबन्ध ब्रु० स० १।५।
क्रिया [कृ+श रिङ् आदेश इयङ्] संरचना, कर्म। सम० अर्थ (वि०) 1 वैदिक नियम जिसके द्वारा किसी कर्तव्य में लगने का निर्देश किया जाता है 2 किसी काम के लिए उपयोगी आवश्यक क्रियायें सुलभ संभिक्रियाम् कु० ५।३३ आरम्भ पकाना, सन्धम् चार तन्त्रों में से एक।
क्रयविक्रयिन् (वि०) [क्रयविक्रय इनि] जो कम मूल्य पर वस्तु खरीद कर अधिक मूल्य पर बेच देता है सौदा करने वाला।
क्रीडनकवत् (अ०) [क्रीड्+ल्युट्, स्वार्थे कन्, मत्व० वत्] किसी बात को खेल की वस्तु की भाँति समझना काम० ५।२६।३८।
क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1 संगीत में एक प्रकार की ताल 2 खेल का मैदान। सम० परिच्छद खिलौना।
क्रीडितम् [क्रीड्+क्त] खेल।
क्रोध [क्रुध्+घञ्] 1 रहस्यपूर्ण अक्षर 'हुम्' या 'हूम्' 2 संबरसंरक्षक में ५१ वाँ वर्ष ('क्रोधन' भी)।
क्रोश [क्रुश्+घञ्] ४८ मिनट का समय।
क्रूर (वि०) [कृत+रक् धातो ऋ] 1 कठोर, कटु 2 निर्दय 3 कर्कशध्वनि-क्रूरध्वनक्रूध्वनि-म०बी० १।३५ रस (नपु०) उदासी के साथ। सम० चरित (वि०) दारुण, भयानक।
क्रोडकान्ता (स्त्री०) पृथ्वी, धरती।
क्रोडीकृ [क्रोड+च्वि+कृ ञ्ना० उभ०] गले लगाना, आलिङ्गन करना।
क्रौड (वि०) [क्रोड+अण्] 1 सूअर से संबंध रखने वाला 2. वराह अवतार से सम्बन्ध रखने वाला।
क्लमक्लमम् (वि०) [ष० स०] विशाल, स्फूर्तिहीन।
क्लोदित (वि०) [क्लिद्+णिच्+क्त] आर्द्र, तुषित।
क्लिन्नक्लम् (वि०) [क्लिद्+ना+क्त] छुटाता हुआ, दूर करता हुआ—मुद्रा० ३।२०।
क्लिन्नद (वि०) [क्लिद्+क्त] दुःखदायी, कष्टकर।
क्लिन्नता (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताई हुई चित्त-वृत्ति का एक भेद।
क्वणन [क्वण्+ल्युट्] ध्वनि, स्वन।
क्वथित (वि०) [क्वथ्+क्त] 1 उबाला हुआ 2 गर्म, क्वम् (नपु०) आसव शराब।
क्षण,-क्षम् [क्षद्+अच्] निर्णय, संकल्प मनु भूमि कृतक्षणा—महा० १।६४।५१। सम० अर्धम् आधा मिनट,—अङ्कवादः घोड़ों का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु लगातार क्षीण होती रहती है - दीक्षम् शुभ समय।
क्षणेचाक्ष [अक्ष् समास] एक मिनट में पकी हुई वस्तु।
क्षतासवम् [ष० त०] रुधिर, शोणित।
क्षति (स्त्री०) [क्षद्+क्तिन्] मृत्यु निधन।
क्षत्तृ (पु०) [क्षद्+तृच्] रक्षक।
क्षत्रविद्या, (-वेदः) युद्धकला, युद्धशास्त्र।
क्षमायाचन [क्षमा ना० धा० णिच्+ल्युट्] क्षमा माँगना। सम० स्तोत्रम् क्षमा माँगते समय स्तुति-गान।
क्षम्य (वि०) [क्षमा+य] पृथ्वी में होने वाला, भौमिक गाधिन (वेद०)।
क्षारक्षत (वि०) [त० स०] खरक्षार से दूषणभावित।
क्षाराष्टकम् (नपु०) आयुर्वेदिक आठ क्षारों का समूह। इसी प्रकार (क्षारषट्क, तथा क्षाराष्टकवत्)।
क्षा (स्त्री०) 1 पृथ्वी, धरती 2 निद्रा, नींद।
क्षालनम् (नपु०) जलना जला हुआ स्थान।
क्षालेष्टिन्याय (पु०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार निमित्त को उत्पन्न करने हेतुभूतकारण की रचना इस प्रकार की जाय जिससे कि इसमें नित्य या अनिवार्य परिस्थिति को दूर रक्खा जा सके मी० सू० ६।४।१७-२१ पर शा० भा०।
क्षयतिथिः, (-अहः) सूर्योदय से न आरम्भ होने वाला भाग्य दिवस।
क्षयमासः [ष० त०] ('मलमास' भी) वह मास जिसमें दो संक्रान्तियाँ आ पड़ें, और जो किसी मंगल या धार्मिक कार्य के लिए शुभ न माना जाता हो।
क्षयोपक्रम: (पु०) [त० स०] संक्रिय रहने या होने की इच्छा को सर्वथा नष्ट करने की जैनियों की संकल्पना।
क्षितिः [क्षि+क्तिन्] संवृद्धि क्षिते रोह प्रवह, जलधर-देव—महा० १३।७६।१०। सम०—क्षमा धरती की भाँति सहनशील - क्षितिक्षमा पुष्करसन्निभाक्षी—रघु०

५.—स्पर्श: धरती छूना (जैसे कि सद्य प्रसूत बच्चे ने जन्म लेकर धरती छूई),—स्थ पृथ्वी या धरती का वासी भूमि पर रहने वाला।

क्षीणता [क्षि + क्त + तल् स्त्रियां टाप्] क्षय, कृशता तथा बलहीनता की दशा।

क्षिप् (तु० उभ०) 1 शीघ्रता से चलना 2 मर जाना 3 (गणित०) जोड़ना।

क्षिप्त (वि०) [क्षिप् + क्त] 1 फेंका गया, बखेरा गया 2 परित्यक्त 3 उपेक्षित। सम०—उत्तरम् ऐसा भाषण जो उत्तर के योग्य न हो - योषि. नीच जाति या उत्पन्न।

क्षिप्ति [क्षिप् + क्तिन्] रहस्य का भंडाफोड़ (नाटक में)।

क्षिप्रनिश्चय (वि०) [ब० स०] जो शीघ्र ही निश्चय कर लेता है *आहत्या मृगटोयज्ञस्तदन्त क्षिप्रनिःचय* - मनु० ७।७०।

क्षिप्रलन्धि (पु०) एक प्रकार की संधि जो दो सहवर्ती स्वरों में से पहले का अर्धस्वर में बदल कर हो सकती है।

क्षेपणिक [क्षेपण + ठक्] मल्लाह, नाविक।

क्षीर (—रम्) [क्षर् + ईरन्, उपधालोप परंतु कोश यह भी कहते हैं कि यह 'क्षीर' शब्द 'क्षर्' धातु से बना है] 1 दूध 2 रस 3 पानी। सम०— उत्तरा अथवा दुग्ध दूध, त्वच् नाड़ी मक्खन कुक्कुलम दुग्धपात्र- कथा० ६३।१४८ व्रतम् प्रतिज्ञा के फल स्वरूप केवल दूध पीकर निर्वाह करना।

क्षीरस्यति (ना० धा० पर०) दूध की इच्छा करना - क्षीरस्यति नामधातु. पा० ७।१।५१ पर म०भा०।

क्षु (क्या० उभ०) कूदना, उछलना (स्वा० पर० भी) —क्षुणोति च क्षुणीते च क्षुणोत्याप्लवनेऽपि च। क्षुन्दते क्षुन्दते चापि पदाप्लवनवाचिन इति भट्टमल्ल।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद् + रक्] 1 छोटा 2 सामान्य 3 तुच्छ 4 क्रूर 5 गरीब। सम०— ताल पिता का भाई, चाचा, - पक्ष्मन् लम्बाई नापने का एक यंत्र, शार्दूल चीता।

क्षुद्रक [क्षुद्र + कन्] 1 जो तिरस्कार करता है 2 एक प्रकार का बाण।

क्षोद [क्षुद् + घञ्] 1 बूंद 2 लोहा टुकड़ा 3 गोला।

क्षुधाशान्ति [भूख शान्त करना।
क्षुदशान्ति]

क्षुन्द् (स्वा० आ०) कूदना (दे० 'क्षु' भी)।

क्षुरकर्मन् (नपु०) जो क्षौरकर्म, या हजामत बनवाने के लिए सुमनस्क हो।

क्षेत्रलिप्ता (स्त्री०) [ष० त०] ज्यामिति की कला।

क्षेत्राग्र [ष० त०] ज्यामिति का अग्र या शीर्ष।

क्षेमेन्द्र (पु०) बृहत्कथामंजरी का प्रणेता एक कश्मीरी कवि।

क्षौद्रपक्वम् [क्षौद्रक + प्यञ्] सुश्रुत।

क्षौरपक्वम् (नपु०) मक्खनी में बनाया गया भक्ष्य।

क्ष्वाडलम् [ष० त०] क्षिप्तिज।

ख

खनुधि (पु०, स्त्री०) 1 तिरस्कारसूचक अभिव्यक्ति (समासान्त में) जैसा कि 'वैयाकरणखनुधि (बड़ा वैयाकरण जो अपने ज्ञान का भूल गया)।

खरिका (स्त्री०) भूख लगाने वाली औषधि।

खट्टक (पु०) [खट्ट + अच् स्वार्थे कन्] खाट, आसन।

खड्ग [खड् + गन्] तलवार। सम०- धारा तलवार का फलक, धारावत्तम् अत्यन्त कठिन कार्य —विद्या तलवार चलाने की कला।

खण्ड (वि०) [खण्ड् + घञ्] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ 2 दूषित पद:,—खण्ड महादेव, महादेव। सम० इन्दु दूज का चांद खण्डेन्दुकृतशेखरम् (शिवम्) वंदना०, ताल संगीत शास्त्र में ताल।

खण्डनखण्डखाद्यम् (नपु०) श्रीहर्ष एक वेदान्त शास्त्र का ग्रन्थ।

खण्डिकोपाध्याय (पु०) छात्र अध्यापक, उपेक्षित अध्यापक खण्डिकोपाध्याय शिष्याय शपेटिका ददाति पा० १।२।६१ पर म० भा०।

खण्डितनख (वि०) [ब० स०] जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है।

खण्डित्र (वि०) [खण्ड् + इत्रि] एक प्रकार की दाल, दाल मूंग।

खण्डोर (पु०) द० खण्डित्र।

खनमान (पु०) 1 खान 2 खोदना।

खनित्रा [खन् + इत्र स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्] फावड़ा, खान।

खर [खन् + अच् + क] 1 गधा, खच्चर 2 उदग्र, कटोर 3 तीक्ष्ण तेज 4 सघन 5 क्रूर 6 ६० वर्ष के चक्र में पचीसवां वर्ष। सम० कपूरकम्, कर्पूरादि का और अधिक करना, पेषक नम्रु, चर्मा (वि०) मजबूत चमड़ी वाला, वृषक (वि०) गधा, जघड़ि,- लोहक लोहा,—स्पर्श (वि०) तीखा, प्रचण्ड (आंधी, झक्कड़)। वायुर्वाति खरस्पर्श. मालवि० १।२४।१६।

खरक (वि०) जिसकी सतह खुरदरी हो ऐसा (मोती) की० अ० २।११।

खरोष्ठी (स्त्री०) एक प्रकार की वर्णमाला।

खर्जूरिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
खर्परम् (नपु०) नारियल की गिरी, गोला, खोपा।
खर्परम् (नपु०) 1 रेशम 2 क्षौम 3 कठोरता।
खर्वट [खर्व+अटच्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की तलहटी या नदी के किनारे बसी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय प्रायः वाणिज्य-व्यापार हो। यह गाँव और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है।
खर्वाट दे० 'खल्वाट' भीमसेन प्रभृतिनादुर्योधनबन्धिनी, शिखा खर्वाटकस्येव कर्णमूलमुपागता नाभ०।
खर्वित (वि०) [खर्व+इतच्] जो बौना बन गया हो।
खर्वोत्तर (वि०) [त० स०] जो नगण्य न हो, जो छोटा न हो।
खलिन् (वि०) [खल+इनि] खल से युक्त खलहट वाला, ली (पु०) शिव।
खलीकृत (वि०) [खल+च्वि+कृ+क्त] अपमानित बाह्मणस्वस्था खलीकृत -नाग० ३।
खलिशः } एक प्रकार की मछली।
खल्लिशः }
खल्वः (पु०) कनपटी, बाल।
खश [खश्+टाप्] 1 पार्वती 2 घरघी 3 लज्जा 4 बकवृत्ति खोखा क्षमा कमला च गौ एकार्थ०।
खाण्डवायनम् (नपु०) खाना पीना।
खादोदकः (पु०) नारियल का पेड़।
खुरशालः (पु०) खरशाल देश में उत्पन्न एक उत्तम नस्ल का घोड़ा शालि० ११८३।
खेचरकः (पु०) मोमबत्ती बाँस।
खेचरी (स्त्री०) एक प्रकार की योगसिद्धि जिसके द्वारा योगी आकाश में उड़ सके एवं मनोभिलषितोत्साह सम्पत्तिसिद्धिलोलुपा कथा० २०।१०५।
खेट [खिट् अच्, ये अटति खट् अच्] ग्राम गाँव।
खोरकः (पु०) किसी जानवर के खुर में होने वाला विशेष रोग।
ख्यातिः (स्त्री०) [ख्या+क्तिन्] दर्शनशास्त्र का एक सिद्धान्त विकल्प ख्यातिवादिनाद् - भाग० २।१।१६।८।

—

ग

ग [गै+क] 1 शिव 2 विष्णु - ग. प्रीतोऽस्य श्रीपतिरमम एकार्थ०
गगनम् [गच्छत्यस्मिन् गम्+ल्युट्, ग आदेश] 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 शून्य 3 स्वर्ग। सम० रोधस्- अभ्रकूटमिव व्यर्थ पदार्थ, लिह् (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला दे० अभ्रलिह्।
गङ्गासप्तमी (स्त्री०) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष का सातवाँ दिन।
गज [गज्+अच्] 1 हाथी 2 आठ की संख्या 3 लम्बाई नापने का गज 4 एक राक्षस जिसे शिव जी ने मार दिया था। सम० गतिका हथिनी जिसका प्रयोग जंगली हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता है रक्षनिबन्धनेन न प्रलोभ्य द्विपमिच्छ बन्धमिहोपनेतुकामा मणि गजगतिकेव चेष्टितासि - जानकी० २६।५२, गौरीव्रतम् भाद्रपद मास में स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, गवेक्षिका किसी वस्तु की ओर मुँह-मुँह देखना, जानबूझ कर न देखना,—बुद्धी एक लता का नाम गजपुटीमिश्रा फुल्लामुत्पाटय यत्नतः गजलक्षणम् रा० ४।१२।३९, बन्धः 1 कुंडी जिससे हाथी बाँधा जाता है 3 एक प्रकार की समाधि मद्रा 3 जंगली हाथी को पकड़ने की प्रक्रिया नाना०।
गजिन् (वि०) [गज+इनि] गजारोही हाथी की सवारी करने वाला।
गण्डकः [गण्ड, पृषो०] 1 तकिया 2 एक प्रकार का अस्त्र।
गणः [गण्+अच्] 1 समूह, संघ, समुदाय, झुंड, जत्था 2 श्रेणी 3 शिव के अनुचर जिनका अधिपति गणेश है, उपदेव 4 समाज 5. मण्डल 6. जाति। सम० रत्नकोशः व्याकरणशास्त्र पर वर्धमान कृत एक ग्रन्थ,-- सेनापतिः रा० २।८१।१०।
गणनपद्धतिका गणनाक्रम, जिसमें विशेष प्रकार के गणित अङ्कों को मात्राएँ दी हुई होती हैं राज० ६।३७।
गणितम् [गण्+क्त] व्यवहार बीजगणितं गजेन्द्र व्यायामगणितं महत् महा० १२।६२।१०।
गन्धस्थानम् [गण्+घञ् + स्थानम्] किसी रचना या निर्माण की सापेक्ष ऊँचाई।
गन्धः [गन्ध्+अच्] 1 गाल 2 हाथी की कनपटी 3 बुलबुला 4 फोड़ा, रसौली 5 ओढ़, गाँठ। सम०—कूपः पहाड़ की सतह, अधित्यका, ओषः घोर गन्धर्वदानवा घोरं जानन्त्यपि - अनि० २।
गन्धर्वः [गन्ध्+उवन्] एक प्रकार की अप्सरा।
गत (वि०) [गम्+क्त] 1 गया हुआ बीता हुआ 2 मृत,

3. ज्ञात । सम० – ज्ञानम् (गतागतम्) [द्व० स०] भूत और भविष्यत् (का वर्णन)—अवस्त्वस्य गतागतम्—रा० ७।५१।२१,—ज्ञस्क (वि०) मन्द, सीमा, ज्ञः (वि०) जो अपनी चढ़ाबट का ध्यान नहीं करता है ।

गतिमत् (वि०) [गति+मतुप्] उपायज्ञ, तरकीब या रीति का जानकार—महा० १२।२८६।७।

गत्वर (वि०) [गम्+क्वरप्, अनुनासिकलोप, तुक् च] तेज चलने वाला, —त्वरः (पु०) एक प्रकार का घोड़ा ।

गदः [गद्+अच्] 1. कृष्ण के भाई का नाम 2 कुबेर, 3. अश्वत्थ, हथियार—आयुर्वे बनड़े रोगे पुंसि कृष्णा नृपेऽपि च -अमर० ।

गदिः (स्त्री०) [गद्+इ] व्याख्यान, कथनता —एष गदिः कर्मणतिविस्तरं आप० ११।१२।१९।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1 गुणों में समानता, सम्बन्ध, बन्धुता 2. गन्धक 3 चन्दन चूरा 4 पड़ोसी । सम०—हस्तिन् हाथी जिसकी मधुर गन्ध इधर-उधर फैलती है, वह गुणों में उत्तम हाथी माना जाता है ।

गन्धकारिका (वि०) [ष० त०] सेविका जो गन्ध द्रव्य और चन्दन पीस कर तैयार करती है ।

गन्धि (वि०) [गन्ध्+इ] केवल नामधारी, बहाना करने वाला - सोऽपि स्वया हतस्तात रिपुणा भ्रातृगन्धिना —रा० ७।२४।२९।

गन्धर्वतैलम् (नपु०) [ति० स०] एरण्ड का तेल ।

ग (गा) न्धारः (पु०) 1 संगीत में तीसरा स्वर, एक विशेष प्रकार का राग ।

गमनम् [गम्+ल्युट्] जानना, समझना नाट्ये स्वरूपगमने प्रभवन्ति भूम्न भाग० ८।३।३४।

गर्गसंहिता (स्त्री०) गर्ग द्वारा प्रणीत एक ज्योतिष का ग्रन्थ ।

गर्जरम् (नपु०) एक प्रकार का घास ।

गर्भः [गृ+भन्] 1 गर्भाशय, पेट 2 भ्रूण, कलल 3 अग्नि 4 आहार । सम० -धारिका (स्त्री०) धात्री, दाई कथा० ३४, -स्रावः आधार रखना, नींव डालना -स्रावनम् नींव का गड्ढा, --संभवः गर्भाशय में जन्म होना ।

गर्भिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मल्ल या सदृश्य अल्प प्रवेश ।

गर्भेश्वरः) (वि०) [सप्तमी अलुक् समास] कायर, मन्द-गर्भेश्वर) बुद्धि, जड़ ।

गवः [गल्+अच्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक प्रकार की घास ।

गवेधुः (पु०) [गल्+उधुक्] एक प्रकार का धान्य ।

गवायनः (पु०) एक वर्ष तक रहने वाला सत्रयाग ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] गाय से मिलने वाला पदार्थ, घी, दूध आदि,—व्यम् (नपु०) गवामयनम् नाम का एक लौत यज्ञ—'गवामयन' देखो – मैं० स० ८।१।१८ पर शा० भा० ।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1 गहरा, सघन, जिनका 2 समझने में कठिन 3 ऐसा स्थान जो पार न किया जा सके ।

गह्वरी [गह्वर+ङीष्] पृथ्वी ।

गह्वरित (वि०) [गह्वर+इतच्] लीन, मग्न—यावत्सेन्या वच श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत्—महा० २। ६८।४५।

गाङ्गेय (वि०) [गङ्गा+ढक्] गङ्गा में, गङ्गा पर, या गङ्गा से उत्पन्न होने वाला, –य भीष्म, अग्नि 1 सोना 2. सोने का आभूषण ।

गाढतरम् (अ०) 1 अधिक कस कर, सटा कर 2 अपेक्षाकृत अधिक गहनता से ।

गाढवत् (पु०) [ब० स०] मेंढक ।

गाढावटी (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय शतरंज ।

गाणनिक्यम् [गणनिक+ष्यञ्] लेखाकार का कार्य —अञ्जपटले गाणनिक्याधिकार को० अ० २।७ ।

गाण्डी (स्त्री०) गंडा ।

गात्रकेण्डूयनम् (नपु०) आकर्षी संवेदन ।

गात्रिका (स्त्री०) चोली ।

गान्धर्वकला,-विद्या, } संगीत की ललित कला, संगीत का -वेदः,-शास्त्रम् } सिद्धान्त, संगीतविज्ञान ।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्य इञ्] 1 एक प्रकार का मादक द्रव्य 2 बाईं आँख की शिरा ।

गान्धारीग्राम (पु०) एक प्रकार का संगीतमान ।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1 मर्यादा 2 उदारता 3 संतुलन ।

गायरः (पु०) गायक ।

गार्हकर्मेधिका [गृहकर्मेधिन्+ठक्] गृहस्थ के धर्म, गृहस्थ के कर्तव्य ।

गिर् (गिरा) (स्त्री०) [गृ+क्विप् टाप् वा] 1 बुद्धि दे० गिर्धी एकार्थ० 2 सुना हुआ ज्ञान गिरा वाऽऽमामि तपसा ह्यनघो—महा० १।३।५३ (टीका) ।

गिरा [गृ+क्विप् टाप् वा] स्मृति (वेद०) ।

गिरित्र [गिरि+अत्र] शिव भाग० ८।६।१५ ।

गिरिधातु (पु०) गेरू ।

गिलत् (वि०) [गिल्+शतृ] निगलने वाला - गिलत्य इव जाज्वल्यानि—भाग० १०।१३।३१ ।

गीतगोविन्दम् (नपु०) जयदेव निर्मित एक गीतिकाव्य ।

गीतकल्पद्रुमः (नपु०) संगीत के सम्बन्ध पाठ के उपयुक्त एक महाकाव्य ।

गीतगोविन्द (पु०) किन्नर ।

गीतिः [गै+क्तिन्] एक छंद नाम ।

गुटिकाञ्जनम् (नपु०) 'Y' के आकार की एक यष्टिका जिसके साथ एक डोरी बंधी होती है, इससे पक्षियों पर पत्थर के टुकड़े फेंके जाते हैं इसका नाम है "गोफिया"।

गुटिकायन्त्रम् (नपुं०) बन्दूक, गुलिका।

गुड [गुड्+अच्] गोली, वटिका—शार्ङ्ग० १३।१।

गुण: [गुण्+अच्] 1 किसी वस्तु की विशेषता चाहे अच्छी हो या बुरी 2 धागा, डोरी 3. शरीर के (सत्त्व, रज तथा तम) धर्म। सम० कल्पना किसी वाक्य का अर्थ करते समय आलङ्कारिक भावना को सङ्कुचित करना,—कार: (गणित०) गुणक, गुणा करने वाला,—गौरी अपने उत्तम गुणों से देदीप्यमान महिला -अनुगिरि गुणगौरि मा कृथा मानम्—शि०, —भाव: किसी अन्य वस्तु की तुलना में गौण पद —परार्थता हि गुणभाव —मै० स० ४।३।१ पर शा० भा०,—वाद: 1 गौण अर्थ को सूचित करने वाली उक्ति 2 अन्य तर्कों का विरोध करने वाली उक्ति, —विभाग (वि०) [ब० स०] पदार्थ के अन्य पहलुओं में से किसी विशेषता का पृथक् करके दर्शाने वाला विशेष विशेष लक्षण, भिन्न प्रकार की विशेषता विशेष: बाहरी ज्ञानेन्द्रियों, मन और अहंकार गुणविशेषा बाह्येन्द्रियमनोऽहङ्कारगुणाश्च —सा० का० ३६, संग्रह: अच्छे गुणों का एकत्रीकरण।

गुणनिर्गम [ष० त०] अतीव रोष के कारण आँख बाहर निकल आना।

गुणगृह (नपु) शयनकक्ष, शयनागार।

गुणधनम् (नपु०) [कर्म० स०] छिपा हुआ धन।

गुणवती (स्त्री०) अवगुण्ठनवती महिला, बुर्के वाली स्त्री।

गुरु (वि०) [गृ+कु, उत्वम्] 1 भारी (विप० लघु) 2 बड़ा 3 लम्बा 4 कठिन 5 आदरणीय 6. शक्तिशाली,—रु: (पु०) 1 पिता, प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2 सम्माननीय महापुरुष 3 शिक्षक, अध्यापक 4 स्वामी 5 बृहस्पति। सम०- उपदेश: 1 अध्यापक द्वारा दीक्षा 2 शिक्षकों या बड़ों द्वारा दी गई नसीहत, कक्ष: पार, कुलम् 1 गुरु का वासस्थान सवास विद्यापीठ जहाँ अध्यापक और छात्र मिल कर रहें, कुलवास: गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना, -गृहम् 1 शिक्षक का घर 2 बृहस्पति का घर (ज्योतिष में), भाव: महत्त्व, गुरुत्व, चर्चोत्तम: नींबू, गलगल,—चर्तिता बड़ों के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित करना निवेद्य गुरवे राज्य भविष्ये गुरुचर्तिता—रा० २।११५।१९, श्रुति: गायत्रीमंत्र अपमानो गुरुस्मृतिम् महा० १३।३६।६, —स्थ: शिक्षक का पद, संपत्ति:।

गुलिका: (पु०) 1 एक उपग्रह (शनि का पुत्र) जो केरल देश में माना जाता है 2 बिच्छू 3 विषम —गुलिकोऽन्यतनये रसवद्धान्यदेशयो:, विश्वप्रकाशे नाना०। सम०—काल: प्रतिदिन का वह समय जो अशुभ माना जाता है।

गुलिका (स्त्री०) गोली- एकाऽपि गुलिका तव नलिका बन्धनिर्गता शिव०।

गुल्म: [गुड्+मक्, ह्रस्व ल:] 1 युद्धशिविर 2 सैनिक-तंबू। सम०—कृच्छ्रम् एक प्रकार का फोड़ा।

गुह्य (वि०) [गुह्+यत्] 1 छिपाने के योग्य 2. रहस्य, —ह्यम् (नपु०) गुप्त स्थान- मैथुन सततं धर्म्यं गुह्ये चैव समाचरेत्—महा० १२।१९३।१७। सम० —क्रिया गुप्त रूप से और लोगों से गुप्त रख कर —गुरुमन्त्र की दीक्षा देना अथवा अभ्यास कराना।

गुह्य (वि०) [गुह्+यत] 1 गुप्त, छिपा हुआ 2. आच्छादित 3 अदृश्य 4 रहस्य, ह्यम् (नपु०) एक शब्दालंकार। सम० अर्थ (वि०) आन्तर अर्थ रखने वाला, आलेख्यम् कूटलेख—कौ० अ० १।१२।

गृत्समद: (पु०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

गृद्ध (वि०) [गृध्+क्त] इच्छुक, लालायित, उत्सुक, किसी वस्तु को अत्यन्त चाहने वाला गृद्धा वासयन्ति सभ्यान्तां महा० १।७२।६।

गृद्धिन् (वि०) [गृद्ध+इन्] दे० 'गृद्ध'।

गृध्य (वि०) [गृध्+यत्] जिसे उत्सुकता पूर्वक बहुत चाहा जाय, जिसके लिए प्रबल लालसा की जाय।

गृह् (चुरा० आ०) स्वीकार करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना, मिलाना, लीन करना।

गृहम् [गृह्+क] 1 घर, आवास, भवन 2 पत्नी 3 गृहस्थ जीवन 4 जन्मकुंडली का घर 5. (शतरंज आदि खेल का) घर। सम० आरम्भ: घर का निर्माण,- ईश्वरी घर की स्वामिनी गृहिणी, चेतस्, —क्षत (वि०) अपने घर की याद करने वाला, जिसका मन अपने घर की ओर हो लगा हो, - दाह: (नपु०) घर में लगा खम्बा, स्तम्भ - नरपतिकुले पार्श्वायाते स्थित गृहदारुवत् महा० ४।३, —पति: 1 घर का स्वामी 2 गृहस्थ 3 गाँव का मुखिया —मृच्छ० २, मिक्षी भौंरा, भृंगराज,—योनक: भवन बनाने के लिए संकेतित स्थान,—योगक्षम् गृहस्थ का निर्वाह,—वाटिका 1 घर को झाड़ू से साफ करने वाली 2 बुहारी की मूठ, शालिक् (पु०) कबूतर।

गृहकम् [गृह+कन्] घर का बगीचा, वाटिका।

गृह्य (वि०) [गृह+क्यप्] 1 घरेलू 2. पालतू 3. ग्रहण-लक्ष्य, ग्रहणयोग्य—स्वेता० १।११, गृह्यम् (नपु०) घरेलू काम, गृहस्थ का वैधीय अनुष्ठान। सम०

—सूत्रम् सूत्रों का संकलन जिसमें गृह्य यज्ञों के विधान का वर्णन है जैसे कि आपस्तम्बगृह्यसूत्र या शौनकीय गृह्यसूत्र।

गातुः [गै+तुन्] 1 गीत 2 गायक 3 मधुमक्खी।

गाय. (वेद०) गीत (समास में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है 'स्तुति के योग्य' 'स्तुत्य' जैसा कि 'उद्गाय' में)।

गो (पु०, स्त्री०) [गम्+डो] 1 पशु 2 गौ 3 कोई भी पदार्थ जो गौ से प्राप्त हो 4 आकाश 5 इन्द्र का वज्र 6 प्रकाश, किरण 7 इन्द्रिय 8 स्वर्ग 9 बाण। सम० ग्रहणम् गौएँ पकड़ना, गौएँ चुराना,—चर्वी पशु की भाँति केवल अपना भौतिक सुख खोजना—जिह्विका काकलक, काग,—जीव (वि०) गोदुग्ध का व्यवसाय करने वाला, धोसी,—पथ. अथर्ववेद का एक ब्राह्मण,—पर्वतम् उस पहाड़ का नाम जहाँ पाणिनि ने तपस्या की थी अष्टा०, उप० ३।६८, मण्डीरः एक जल पक्षी, मध्यमम्य (वि०) छरहरा, पतली कमर वाला,—मूत्रक वैदूर्य नामक मणि, मूत्रकम् गदायुद्ध में पैंतरा बदल चाल -महा० ९।५८।२३, रोमिका सफेद दूब,—वरम् गाय के गोबर का कूरा,—विषाणिका गाय के सींग से निर्मित एक संगीत उपकरण (इसे 'शृंग' भी कहते हैं) - महा० ६।४४।१८,—साक्षिको गायत्रीमन्त्र, हरणम् दे० 'गोग्रहणम्'।

गोम् (चुरा० पर०) गोबर से लीपना, गोबर से फेरना।

गोमत् (वेद०) [गो+मतुप्] गौओं से समृद्ध स्थान।

गोमयपायसीयन्यायः (पु०) एक ही स्रोत से उत्पन्न दो वस्तुओं के गुणों की भिन्नता-जैसे दूध और गोबर।

गोमिन् [गम्+णिनि] वैद्य—गोमिन कार्यसंकल्पम् —महा० १२।८७।३५।

गोयिकाणः (पु०) एक प्रकार का घोड़ा ('गोयिकाण' नामक स्थान में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा)।

गोरी (स्त्री०) नासापट, नासिका के बीच का पर्दा।

गोरः [गुप्+घञ्] बैल।

गोरी [गौर+ङीष्] गाय।

गोरुतक्रीडा (स्त्री०) गेंद से खेलना, गद का खेल।

गोलबीजिका ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम।

गोलशास्त्रम् (नपु०) 1 भूगोल 2 गणित ज्योतिष।

गोवपः मैनाक पर्वत।

गौडपादः 'अद्वैतवाद' पर लिखने वाला प्रसिद्ध लेखक।

गौडमालवः (पु०) संगीतशास्त्र के एक राग का नाम।

गौवारः,-वेरः,-वेरः (पु०) गोह (जो प्रायः वृक्षों की दरारों में पाई जाती है)।

गौराङ्गः [ब० स०] 1 शिव 2 श्री चैतन्य देव, भक्त और गायक।

गौरी [गौर+ङीष्] 1 एक रागकन्या 2. एक नदी का नाम 3 रात 4 पार्वती। सम० पूजा माघ मास के शुक्लपक्ष के चौथे दिन मनायी जाने वाला पर्व।

गौह्यक (वि०) [गुह्यक+अण्] गुह्यकों से सम्बन्ध रखने वाला।

ग्रन्थि [ग्रन्थ् + इन्] 1 पुस्तक का कठिन स्थल ग्रन्थिं तदा चक्रे मुनिर्वृद्ध कुतूहलात् . महा० १।१।८० 2 घण्टी, जैसा-कथा० ६५।१६५। सम० उच्छेदकः एक प्रकार का फौलाद, इस्पात।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि + के + क] बाँस का अंकुर।

ग्रन्थिकम् (नपु०) 1. पीपलामूल 2 गुग्गुल।

ग्रामप्रमाणम् [ग्रस्+घञ्-ग्रामस्य प्रमाणम् ष० त०] एक ग्राम का माप।

ग्रह [ग्रह्+अच्] 1 युद्ध की तैयारी 2. अतिथि-सत्कार विद्वत्स्य ब्राह्मण्य महायज्ञे प्रदीयते -महा १३।१००। ६। सम० -अक्षरः चन्द्रमा, कुण्डलिनी, चक्रम्, स्थितिः अरिष्टकुण्डली, किसी भी समय ग्रहों की बनाई हुई दशा,—गणितम् फलित ज्योतिष का गणित भाग ग्रावली सूर्य.—चारनिबन्ध ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम, ज्ञानम् ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम,—स्वर संगीत गान का पहला स्वर।

ग्रहणीकपाट. [ष० त०] अतिसार की औषधि।

ग्राह [ग्रह्+घञ्] 1 भूत 2 मगरमच्छ।

ग्राह्यम् [ग्रह+ण्यत्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा संकल्पना का विषय।

ग्राह्यः [ग्रह+ण्यत्] एक प्रकार ग्रह।

ग्राम [ग्रस्+मन् आदेशलोपः] 1 गाँव, पल्ली 2 वर्ग समूहः 3 समुच्चय, संग्रह। सम०—कायस्थ ग्रामीण लिपिक गृह्यकः गाँव का बढ़ई,- णीः (पु०) सूर्य के अनुचरों की नेता, उपदेवता, -धर्मः गाँव की प्रथा, रीतिरिवाज,—धान्यम् गाँव में उत्पन्न अन्न, पुरुषः गाँव का मुखिया, विशेषः संगीत का विशिष्ट स्वर स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्छना—वि०, —वृद्ध गाँव का बड़ा बूढ़ा प्राप्यावन्तीनुदयनकथा-कोविदग्रामवृद्धान् मेघ० ३०।

ग्राम्यवादिन् (पु०) गाँव का आदमी, गाँव की ओर से बोलने वाला नै स० ७।३१।१८।

ग्रावस्तोमम् (नपु०) चन्दन का एक भेद।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रस+मनिन्] गर्म, उष्ण। ष्मः (पु०) ग्रीष्म ऋतु। सम० कालः उपवन या वाटिका जो ग्रीष्म ऋतु का विश्राम स्थल हो-कथा० १२२।६५, हायनम् मुलैठी बीज जो बीज्मों में हवा में इधर उधर उड़ते हैं।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्, पुक् ह्रस्वश्च] 1. मुर्झाना कुम्हलाना 2 विश्राम करना— ग्लपनोद्यानद्रुमाश्लक्ष्णल-विन्यस्त-स्वर-गीतविभ्रम = रघु० ४।१४।

ग्लपित (वि०) [ग्लै+णिच्+क्त, पुक्, ह्रस्वश्च] 1 ग्लानि, थकावट हुआ, शिथिलाया हुआ—कि० १४ | ६४, रघु० १६।३८ 2. टुकड़े टुकड़े किया हुआ —लाङ्गलग्लपितग्रीवा —रा० ७।७।४७।

घ

घट [घट्+अच्] 1 सिर—समाधिभेदे ना सिर फूट-कटेषु च—मेदिनी०, महा० १।१५५।३८ 2 मिट्टी का जलपात्र 3 कुम्भराशि। सम० उदरः गणेश का नाम,—कर्न्यृषि (नपु०) तान्त्रिक और शाक्तों की एक रस्म (इसमें विभिन्न महिलाओं की बोलियां एक घड़े में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित महानुभावों में से प्रत्येक एक एक बोली निकालता है, तथा जिस महिला की वह बोली होती है, उसके साथ उस पुरुष को सम्भोग करने की अनुमति है)—योनि, —भव, जन्मा अगस्त्य मुनि।

घटा [घट् भावे अङ्, स्त्रियां टाप्] लोहे की प्लेट जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

घटिकामण्डलम् (नपु०) विष्णुचक्र।

घटिकायन्त्रम् (नपु०) घटा।

घटीयन्त्रम् (नपु०) 1 रहट, पानी निकालने का यन्त्र 2 अतिसार भाव० ३।१६।२४।

घट्टित (वि०) [घट्ट्+क्त] 1 मथद्युक्त, कलफदार —पञ्च० ६।३ 2 दबाया हुआ, मींचा हुआ, पीसा हुआ।

घण्टाकर्णः (पु०) 1 शिव का एक गण 2 एक राक्षस का नाम।

घण्टारव (पु०) [ष० त०] 1 घण्टे की आवाज को-टरघण्टारव —हनु० 2 सब की एक जाति -घण्टा-रव शब्दमुखे घण्टानादे " नाना०।

घण्टिका (स्त्री०) [घण्ट्+ण्वुल्, इत्वम्] काग, काकल, उपजिह्वा।

घण्टारः [घण्ट्+आरच्] हाथी सूक्ति० ५।६६।

घण्टिकः [घण्ट+ठक्] घड़ियाल, मगरमच्छ।

घन (वि०) [हन् मूर्ता अप्, धनादेशश्च] 1 सघन, दृढ़, ठोस 2 मोटा, सटा हुआ 3 पूर्ण विकसित 4 गहरा 5 निर्दय 6 स्वामी 7 पूर्ण,+घनः (पु०) 1 बादल 2 लोहे की गदा 3 शरीर 4 कपूर 5 वेद का संस्कार पाठविशेष, घनम् (नपु०) 1 घंटा, गंग 2 लोहा 3 खाल, चमड़ा। सम०—अक्ष मोटी आंखों से युक्त महिला कुरु यत्नेन पत्नीं घनाक्षीं —वेणी० २।२०, —अम्बु (वि०) हथौड़े के आघात के उपयुक्त—भाव० ३।२६।५१,—आत्मन् किसी रचना का निर्माण का आसुरी भाव,—कोपिता बड़ी गोपनीयता।

घनता,] [घन+तल्+टाप्] 1. सघनता, सटा होना घनत्वम्] 2 दृढ़ता, ठोसपन।

घर्घरः (पु०) [घृ+घञ्—गुक्+अच्] मन्दिर का एक विशेष प्रकार का निर्माण।

घर्म (वि०) [घृ+मक्, नि० गुणः] गर्म,—र्मः (पु०) 1 गर्मी 2 ग्रीष्म ऋतु 3. पसीना 4 प्रवर्ग्य संस्कार 5 एक देवता का नाम—घर्मे स्वाङ्गतापे ग्रीष्मे प्रवर्ग्ये देवतान्तरे। सम०—जातिः पसीने से उत्पन्न जीव, दे० 'स्वेदज'।

घर्षणकः [घर्षण+कालच्] पीसने वाला, बट्टा, लोढ़ी।

घाटनम् [घट्+णिच्+ल्युट्] घटाना, कुढ़ा।

घातः [हन्+णिच्+घञ्] हथेर लगाना कोशाभिघि-तस्य कोशावच्छेदे घातु —कौ० अ० २।५। सम०—कृच्छ्रम् (नपु०) एक प्रकार का मूत्ररोग, विधिः बसुत दिन, जन्मनक्षत्र से सातवां नक्षत्र।

घुणक्षत, [घुण+क=घुण+क्षण (अद्) (क्षुद्)+क्त] घुणक्षत, कीड़े से खाया हुआ, घुण लगा हुआ—क्षीणिक्षित घुणक्षुण्ण - प्राप्तघुणक्षतैकवर्णोपमाधाध्यमस मसार्थ-वि० ३।५८।

घुणघुणित (वि०) [घुणघुण+इतच्] घुणखाया, घुरघुरा, घुणघुदार।

घृ नम् (नपु०) दियोरा पीट कर उसको जलदान करना मनु० ४।२०९।

घृत (वि०) [घृ+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. चमकीला, —तम् (नपु०) 1. घी 2. जलधन 3. जरायु - मधु-घृतौ घृतपृष्ठा - महा० १।९२।१५। सम०—अक्त (वि०) घी से चुपड़ा हुआ, घी से युक्त,—अन्नः बोड़ों का एक भेद जिसमें घी की मात्रा अधिक होती है, —अन्नः,—आशनम् घी पीना—प्लुत (वि०) घी से चुपड़ा हुआ,—हेतुः घनधन।

घृणा [घृ+नक्] दया की भावना।

घृणिन् [घृण+इनि] सन्तप्त, दयालु।

घोणा [घुण+अच्+टाप्] 1 (जन्तु की) चोंच 2 (रथ में) पहिये की नाभि।

घोषः [घुष्+घञ्] उच्चर शब्द, जयोच्चारण—कृताव शङ्खघोषेण विराये शङ्खराजाम् - प० ५। सम०—आभीर आनुष्ठिक कर से घोषकों के स्थान पर आना, आनुष्ठिक तीर्थ घाट, घर्ष घोष उच्चरण घाटा अधार, स्थल गुप्त या निर्जन अधार, -पुरः आभीर

स्थाने—हैवङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्—रघु० १।४५।

अंशु, अंशुः (वेद०) [अंश्+क्विप्, अंशु वा] सूर्य की गर्मी, चिलचिलाती धूप।

आंध (वि०) [आ+अंध] सूखा हुआ, धू,—धम् 1 गन्ध 2 गन्ध आना 3. नाक। स०—भुज् नकुला, —स्कन्ध नाक बजाना, सिनकना।

च

चकोरदृश्,—क्षस् (वि०) [ब० स०] चकोर जैसी आँखों वाला, सुन्दर आँखों वाला—अनुचकार चकोरदृशां यत्—शि० ६।४८।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ करणार्थे क, नि० इत्वम्] 1 गाड़ी का पहिया 2 कुम्हार का चाक 3 गोल गोपुर अस्त्र 4 तेल का कोल्हू 5 वृत्त। सम०—अरः, अरम् पहिये का आरा, अस्त्रम् एक प्रकार का पत्थर फेंकने का यन्त्र, —ईश्वरी जैनियों की विद्या देवी, सरस्वती, नभः गरजता हुआ बादल, —वर्मन् कश्मीर के एक राजा का नाम राज० ५।२८७।

चक्षुष्यम् [चक्षुष्+यत्] आँखों के लिए मलहम।

चञ्चूर्यमाण (वि०) अशिष्टता पूर्वक अंगविक्षेप करने वाला, अश्लील इंगित करने वाला—भट्टि० ४।१९।

चटकामुख [ब० स०] एक विशेष प्रकार का बाण।

चटुलय् (ना० धा० पर०) इधर-उधर घूमना—चञ्चपुट चटुलयन्ति चिर चकोरा—शार्ङ्ग० ८९।९९।

चतुर् (स० वि०) [चत्+उरन्] (रचना में 'चतुर्' का 'र' लुप्त कर विसर्ग, छ्, ष, या स् हो जाता है) चार। सम० अङ्गिकः (चतुरङ्गिक) एक घोड़ा जिसके मस्तक पर बालों के चार भँवर लहराते हों, —आश्रम् (चतुष्काष्ठम्) (अ०) चारों दिशाओं में, —चित्यः (चतुश्चित्य) उभरी हुई वर्गाकार बनी चौकोर—महा० १४।८४।३२, वादम् (चतुष्पादम्) वनस्पतिज्ञान जिसमें चार (ग्रहण, धारण, प्रयोग और प्रतिकार) भाग होते हैं, वेदः (चतुर्वेद) जिसने चार बड़े यज्ञों अश्वमेध, पुरुषमेध, पितृमेध और सर्वमेध का अनुष्ठान सम्पन्न कर लिया है, सन (चतुस्सन) सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चारों रूप धारण करने वाला विष्णु।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयव चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार की संख्या से युक्त, चार पायों वाला स्टूल, चौकी।

चन्दनरसः [ष० त०] चन्दन का लेप—हुताशनश्चन्दन-रसशीतल—भोज०।

चन्द्र (वि०) [चन्द्र+मिच्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. सुन्दर,—न्द्रः (पुं०) 1 चन्द्रमा, चाँद 2. कपूर 3 मोर की पूंछ का चन्दा 4 पानी। सम० कला एक प्रकार का छोल, कुल्या एक नदी का नाम,—प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) जैनियों का छठा उपाङ्ग ग्रन्थ, चबूतरा, खुली छत।

चन्द्रस् (पुं०) आयुर्वेद विषय पर प्राचीन ग्रन्थकर्ता मूलत भूमिका।

चन्द्रा (स्त्री०) गाय सी० मू० १०।३।८९ पर भा० भा०।

चन्द्रोदयी (स्त्री०) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का छठा दिन।

चमकसूक्तम् (नपुं०) वेद का एक सूक्त जिसके प्रत्येक मन्त्र में च में की आवृत्ति की जाती है।

चमसोद्भेद (पुं०) एक तीर्थस्थान जहां से सरस्वती नदी निकलती है।

चम्पा (स्त्री०) अङ्गदेश की राजधानी (वर्तमान भागलपुर)।

चयाट (पुं०) वध, वृद्धि—चयाटमल्लकम्पस्तनालायन्त्रम्-दुर्गम शिव० ९।५१।

चर [चर्+अच्] कायु, हवा—वयाहं तपोबलदहन-चरागन्निवार्यं सर्वेष्टतावहचटत्पविनिर्मितकाय.—भाग० १०।१४।११। सम० गृहम् मेष, कर्क, तुला और मकर के घर।

चरक (पुं०) भारतीय आयुर्वेद का एक प्रवर्तक तथा चरकसंहिता का लेखक।

चरणम् [चर+ल्युट्] 1 ब्रह्मचर्य के कड़े नियमों का पालन करने वाला अध्येता—महा० ५।३०।३ 2 पर। सम०—उपधानम् पायदान, व्यूहः एक ग्रन्थ जिसमें वेद की शाखाओं का वर्णन है।

चर्चरम् (नपुं०) दाँतों के कटकटाने का शब्द—सिंह दशद्दशनचक्रचण्डचरम्—शि० ५।५८।

चर्पट [चृप्+अटन्] चीथड़ा, चिथड़ा।

चर्मण्वत् (पुं०) (वेद०) चमड़े का कवच धारण करनेवाला योद्धा चर्मण्वा अभितो जनाः ऋक्० ८।५।३८।

चर्मरङ्गा (पुं० ब० व०) मध्य भारत की एक जाति —बृ० स० १४।

चलचञ्चुः [चलत्+चञ्चु] एक प्रकार की मछली।

चलहिंचः (पुं०) कोकिला, भारतीय कोयल।

चातुर्थकम् [चातुर्थ+यत्] एक प्रकार का ओझा का अंजन।

चातुरः [चतुर् एव, स्वार्थे अण्] एक छोटा गाड़ीनुमा लकिया।

चातुरन्त (वि०) [चतुरन्त+अण्] चारों समुद्रों तक समस्त पृथ्वी को अधिकार में करने वाला।

चातुरीक [चातुरी+कप्] 1 हल 2 एक प्रकार की बनावट —कलहंसे च कारण्डे चातुरीक पुमानयम् नाना०।

चार [चर एव, अण्] 1 गति, चाल, भ्रमण 2 पैदल सैर करना 3 कारागार 4 हथकड़ी बेड़ी 5 पीपल का वृक्ष, प्रियाल का पेड़।

चार्वा (स्त्री०) 1 पथ मार्ग आदि साथ चौड़ी सड़क —की० अ० २।३।

चार्वाक [चार लोकमनन चार्वाकोवाच्य सम्य पचा०] दर्शनशास्त्र की चार्वाक शाखा का अनुयायी।

चिकित्सना [चित् सन+अ स्त्रियां टाप्] इस प्रकार सम्यक् न करोति चिकित्सा इत्यर्थादिभिद्र अनवाया —भाग० २।१०।३।

चिकित्सु (वि०) [कित् + सन् + उ] वर्तमान चालाक अथ० १०।१।१।

चिकित्सान्नम् [ष० त०] रोगों से तैयार किया गया अन्न या ओल।

चित्तम् [चित्+क्त] 1 हृदय, मन 2 ज्ञान -चित्त चिन्मात्रमात्मा मुनिरामीत मयत। यच्चिन्त तन्मया हृदय गच्छतेत-मनानतम् महा० १४५।१२७। सम० अर्पित (वि०) दिल में प्रस्थापित चित्तार्पितनेपथे-श्वरा नैषध० १।३१, नाथ हृदय का स्वामी चित्तनाथमभिसारिकेव वसतिं शि० १०।८।

चित्ति (स्त्री०) [चित्+क्तिन] 1 मानसिक अवस्था —आकूतीना च चित्तीना प्रकाशक मनसामिह ने महा० ७।६३।१० 2 ज्ञानेन्द्रिय या चेतितामनुचिन्तय उच्चकर्ति —भाग० ६।१६।४८ 3 संख्यान, मनन चिति कुरु चित्तमाज्यम्—तै० आ० ३।१।

चित्य (वि०) [चिता+यत्] चिता से संबंध रखने वाला चित्यमाख्याकुरुतश्च आयसाभरकोऽभवत्— रा० ६।५८।११।

चित्रम् [चित्र्+अच्, चि+ष्ट्रन् वा] कमल का फूल मञ्जुले चित्रके हेम्नि पद्मे नपुंसकम् नाना०।

चित्रार्थवि (पु०) एक प्रकार का घोड़ा जिसकी गर्दन पर बाल का बड़ा चुचर हो।

चीचीकूची (स्त्री०) अनुकरणात्मक शब्द जो पक्षियों के कलरव का प्रकट करता है।

चोलदाह (पु०) दाग्नीनी।

चोरल्लिः (पु०) एक प्रकार की बड़ी मछली।

चोरी (स्त्री०) [चौरि+ङीष्] चोर (चौरीवाक' भी) इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।

चोदना [चुद्+युच्+टाप्] (पूर्वमीमांसा में) अपूर्व नामक अर्थों चोदनेत्यपूर्व क्रम मी० सू० - ७।१।७ पर शा० भा०।

चुचुम्बायनम् (नपु०) किसी बात में चुचलाहट होना सुश्रुत० १।४७।१२।

चूर्णुरि (पु०) एक राक्षस का नाम।

चेटिका जलाहों की एक उपजाति -तदेव चेटिका प्रोक्ता नाडरी तन्तुवायश्च कामिकागम २०।२५।६६ भाग० १०।८५-८८।

चैत्याग्नि: [ष० त०] पुनीत अग्नि दक्षीय अग्नि - यज्ञ० १।६।

चोलेय (वि०) [चोला+ढक्] केरल प्रदेश के पास 'चोला' नामक नदी में प्राप्त मोती की० अ० २।११।

च्यवन (पु०) [च्यु+णिच्+ल्युट्] एक ऋषि का नाम।

छ

छगोट्ट (छग+ष्वि+तना० उभ०) बकरी की भाँति प्रयत्न करना।

छन्दस् (नपु०) [छन्दयति-छन्द्+असुन्] एक वेद, ओंकार वेदे वाच्ये वृत्तभेदे उच्चवेऽपि नपुंसकम् नाना०।

छन्दश्छादनम् (अ०) विघ्न करने के लिए, जिससे कि सफलता न मिले कया० १२।४।

छन्दश्छर (वि०) [छन्दस्+कृ+अच्] नष्ट भ्रष्ट करने वाला, छरी (स्त्री०) एवा वोरनसा सन्ध्या लोक-छन्द (स्क) दूसरी प्रभो भाग० ३।१८।२६।

छन्दश्छारः [छन्दस्+कृ+घञ्] नाश, ध्वंस, विनाश।

छन्दः [छन्द्+असुन्] एक प्रकार का छलावा जिसमें अलग तर्कों का प्रयोग किया जाय।

छाया [छा+य+टाप्] प्राकृत मूल पाठ का संस्कृत भाषान्तर।

छिद्रम् [छिद्+रक्] 1 प्रशस्त भूमिसिद्धविधानम् की० अ० २।२ 2 स्थान भाग० ६।२६।३४ 3 आकाश, अन्तरिक्ष भाग० १२।४।३०।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] आयुर्वेद में एक प्रकार की शल्य-प्रक्रिया।

छुच्छुः (पु०) एक प्रकार का जन्तु—वृ० स० ८६।३७।

छुरिकम् [छुर्+कन्] काट, खरौंच।

छुरिका (स्त्री०) बोझ ढोने वाली गाय।

छेला (छेला) भवन के आधारतल में बना पक्वकोष्ठ व. तहखाना—कामिकागम० ११।७४।

अगद्गुरुः [ष० त०] श्री शंकराचार्य का नाम।
अगन्मालिका (स्त्री०) बृहत्संहिता पर भट्टोत्पलकृत एक टीका।
अगस्त्यव्रतम् (नपु०) विवेक का एक आश्चर्य पश्येदानीं अगस्त्यव्रतम्—रा० ७।३४।९।
अगतीपतिः [ष० त०] शासक, राजा त्रिःसप्तकृत्वो अगतीपतीनाम् कि० ३।१८।
अङ्कपाश (पु०) पलटबुद्धी।
अङ्कपालनम् [ष० त०] दुम दबा कर भागना।
अटापाठ (पु०) वेद मन्त्रों के मूलपाठ को सस्वर पढ़ने की एक रीति।
अटाभस्तम्भ (पु०) 'अटापाठ' की प्रणाली से वेदपाठ करने में प्रवीण विद्वान् पुरुष।
अत [अत्+अच्] 1 ज्ञानधारी, जीव 2 मनुष्य 3 एक व्यक्ति 4 राष्ट्र, जाति। सम०- आथर्वः विष्णुकुण्डी वंश के राजा की उपाधि, जिसे ज्ञानाश्रयी छन्दोविचिति का प्रणेता समझा जाता है,—अन्य लोकोक्ति, कहावत, किंवदन्ती और महामारी।
अतसह् (वि०) लोगों का दमन करने वाला—सत्राषाहो जनभक्षो जनसह—ऋक्० २।२१।३।
अतत् (वि०) [अप्+शतृ] सन्यासी (साधारणतया 'अपना वर' प्रयोग प्रचलित)।
अतम्भरिन् (पु०) रावण की सेना के एक राक्षस का नाम।
अतसाधक (वि०) आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाला—इति ते कथयन्ति स्म द्वाराणां अतसाधकाः—महा० ५। ६४।२०।
अतसक [अभ्+ण्वुल्, तुम्] 1 डोरी, विषवासक्षाती साधु भो अतसक साधु भूत० 2 औषधोपचार ५।६४।१६।
अतसिः (स्त्री०) सराज् की डण्डी।
अतसरि (वि०) (वेद०) सहारा देने वाला -मृण्मेव अतसरी तुफरी तु ऋक्० १०।१०६।६।
अतसम् [अत्+असुन्] 1 पानी 2 सुतवयुक्त औषध का पौधा 3 गाय का भ्रूण। सम०—आतसः वर्षा ऋतु, प्रभातः झरना, अतसेरा ओला, करका,—आव आँख का एक रोग।
अतसभेषज (वि०) [ब० स०] उपचारक औषधियाँ रखने वाला—एह अतसभेषजम्—ऋक्० १।४३।४।
अतस् (नपु०) [अत्+असुन्] (वेद०) गति, बाल, शीघ्रता, पयोभिर्यन्ति अपां अतसानि—ऋक्० ४।२१।८।
अतसकलशः (नपु०) अन्त्यकुण्डली, अन्त्यपत्रिका।
अतसिद्धः [ष० त०] अन्त का अन्त, अन्त से मुक्ति —सू० व० १।७४।
अतसिवृद्धिः (स्त्री०) [अति+वृध्+क्तिन्] अन्त सेना —अतसिवृद्धाधिपता—महा० ५।६०।९।
अतसुभर्मन् (वेद०) (वि०) सर्वस्व पोषण करने वाला- य अतसुभर्मा सहमान ओजः—ऋक्० १।१०३।३।
अतराजन्य [अतराज+ष्यञ्] प्रभुसत्ता—बाज० ९।४०।
अतवधुति (पु०) छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित एक राजा का नाम।
अतवदन्यः [अतवदग्नि+अण्] परशुराम।
अतातृजन्यकल्प (नपु०) स्त्रीधन, दहेज।
अतरण [अ+णिच्+ल्युट्] 1 क्षीण करना 2 धातुओं पर आरेय की पर्त चढ़ाना।
अतरण्य (वि०) 1 स्तुति के योग्य निरर्गलान् अतरण्यान् -महा० ९।४९।३ 2 जिसमें तीन बार दक्षिणा दी जाय अतरण्यान् त्रिगुणदक्षिणानित्यर्थः नीलकण्ठ महा० ३।२९१।७० पर टीका 3 अग्निहोपहार में समर्थ।
अतरक (नपु०) एक प्रकार का वृक्ष -भाग० ८।२।१९।
अतरोर (पु०) कश्मीर में एक अग्रहार—विहारमग्रहार च अतरोराख्य च निर्ममे राज० १।९८।
अत [जि+अच्] 1 महाभारत का एक विशेषण—देवी सरस्वती व्यास ततो अयमुदीरयेत्—महा० १।१।१ 2 अयअयकारों में पूर्व विजय अयेन वर्धयित्वा च रा० ७।२३।३। सम० (अय)—अवाप्ती (अवती) जीत तथा हार, अक्ष (वि०) जीतने वाला, विजयी उक्तविपरीतलक्षणसंपन्नो अयमतो विनिर्दिष्ट बृ० स० १७।१०।
अतहस्त (वि०) [ब० व०] जिसने अपने हाथ को अभ्यस्त कर लिया है।
अतिक [अ+क्वन्] एक उपकरण जिसके द्वारा जुते हुए खेत को समस्तर किया जाता है।
अतिलिका (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—महा० ६। ९।५९।
अतिहोत्र (वि०) [त० स०] जो आलसी न हो अतिहोत्रेषु तद्व्यवाप्यम् मै० ३।६।३।
अतिहित (वि०) [अति+इतच्] 1 व्याकुल - परिश्रम अतिहितेक्षणम् कि० १०।१० 2 टेढ़ा बनाया हुआ, झुका हुआ (जैसा कि 'अतिहानि' में)।
अतयुतप्रभ [ब० स०] एक प्रकार का रत्न -को० अ० २।११।
अतकोल (पु०) सूक्ष्म शरीर, लिङ्गशरीर भाग० १०।८२।४८।
अतवर्तिका (स्त्री०) [अत्+वृत्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, वत्व, ह्रस्वादेश] 1 सद्योजात शिशुओं की देखभाल करने वाली देवी 2 एक पौधे का नाम।

जीविका (स्त्री०) [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जिन्दगी कृपणा वर्तयिष्यामि कथं कृपणजीविका रा० २। २०।४७।

जुडुलम् (नपु०) सफेद बैंगन का पौधा।

जुगुप्सितम् [गुप्+सन्+क्त] घृणित कार्य, कुत्सितकर्म कृत्वा कर्मजुगुप्सितेन भाग० १।७।४२।

जूर्य (वेद०) (वि०) [जू+य] पुराना ऋक् ६।२।७।

जोषवाकः (पु०) निरर्थक बात करना जोषवाकं वदत —ऋक्० ६।५९।४।

जृतिः (स्त्री०) [जृ+क्तिन्] मन का संकल्पीकरण नैष० ३० ५।२।

जैमिनि (पु०) एक प्रसिद्ध मुनि जो दर्शन शास्त्र की पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक थे। सम०—भागवतम् भागवत का आधुनिक संस्करण, भारतम् महाभारत का आधुनिक संस्करण, शाखा सामवेद की एक शाखा,—सूत्रम् एक ग्रन्थ का नाम।

जैमिनीय (वि०) [जैमिनि+छ] जैमिनी द्वारा रचित या उनसे संबद्ध।

जैयट (पु०) कैयट के पिता का नाम।

जोत्स्ना (स्त्री०) जो।

जोषम् (अ०) [जुष् खज्] चुपचाप जैसे कि [जोषमास्व चुप रहो] म०।

जोष्य (वि) [जुष+ण्यत्] प्रिय स्नेहपूर्ण।

ज्ञानवत् (वि०) अपने आप को बुद्धिमान् समझने वाला।

ज्ञातायश (पु०) प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न होने वाला पुत्र।

ज्ञातिश्रेष्ठम् (नपु०) पाँच कुल में उत्पन्न व्यक्ति विभिन्न-कर्मोपलब्धिवाले कुल का या ज्ञातिश्रेष्ठ और कनिष्ठिक भृत्य मिट्ट० १।१७।

ज्ञातिसुताय (पु०) सहोदरा के लिए बनाए हुए आतिथ्यभोजन प्रथम हस्तावाप्तय ज्ञातिसुताय तदन्नाय मनु० ३।१८४।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] जानकारी का साधन मेधा ज्ञा० १।१।१ । सम्यग्ज्ञानम् यथार्थ ज्ञान। सम० अग्नि ज्ञान की अग्नि ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः गीता० ४।१९, —अन्न (पु०) बुद्धिजीवी ब्राह्मण। विज्ञानम् सामान्य तथा ज्ञानसाधन के साथ-साथ ज्ञान। ४।३।१२,—वृद्ध (वि०) खूब सोचा हुआ, पहले से पूरी जानकारी प्राप्त किए हुए, वृद्ध (वि०) ज्ञान या जानकारी में बड़ा-बूढ़ा।

ज्ञानिन् (वि०) [ज्ञान+इनि] बुद्धिमान्, समझदार, —(पु०) बुध ग्रह। ज्ञानी सर्वज्ञसौम्ययो—ज्ञाना०।

ज्यम् (वै०) पृथ्वी पर, धरती पर (केवल अधि० में प्रयोग) अग्निमुत्त्वेन्द्र भूरथज्यन—ऋक्० ७।२१।६।

ज्या [ज्या+अच्+टाप्] 1 एक प्रकार की लकड़ी की सोटी 2 सेना का पृष्ठभाग—ज्या भग्नमौर्व्यो दाम्याया वाहिन्या पृष्ठभागके नाना०।

ज्यायः [वृद्ध (प्रशस्य)+इयसुन्, ज्यादेश] 1 सबसे बड़ा 2 सर्वोत्तम 3 उच्चतम, (पु०) एक चान्द्र मास का नाम। सम० राज् (पु०) प्रभुसत्ता संपन्न राजा—ज्यैष्ठराज्यं महाराजो महाराज्यानि ऋक्० २।२३।१, साम्न् एक विशेष साम।

ज्यैष्ठी (स्त्री०) 1 लक्ष्मी देवी की बड़ी बहन दारिद्र्य 2 एक देवी का नाम।

ज्योक् (अ०) (वेद०) चिरकाल तक, दीर्घ समय तक —ज्योक् च सूर्यं दृशे ऋक्० १।२३।१०।

ज्योग्जीवनम् (नपु०) दीर्घकाल तक जीना, लम्बी आयु होना।

ज्योतिस् (नपु०) [द्युत् इसुन् आदेर्हस्य ज] 1 प्रकाश, कान्ति, आभा, चमक 2 बिजली 3 नाम—सी० मु० १।१।४९, पर शं० भा०।

ज्वर [ज्वर् अ] 1 ताप बुखार 2 मानसिक ताप। सम० अन्तक शिव का विशेष रूप अरि ज्वर नाशक औषधि हर (वि०) ज्वरप्रशामक, ज्वर नाशक।

ज्वलनमणिस् (पु०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वाला [ज्वल्+ण+टाप्] 1 आग की लपट, अग्नि-शिखा 2 दन्तमल। सम० मालिन् (पु०) शिव देवता, मालिनी (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप —ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा—ललिता०, मुखी (स्त्री०) दुर्गा का एक विशेष रूप ज्वालामुखी नखोद्भवा अभेद्या सर्वसन्निधु—दुर्गासप्त० पुराण में देवीकवच०, रालभकामव नाम वृक्ष।

झ

झक्षामिल (पु०) आदर की बुद्धि भाव के साथ आँख का घूरना।

झम्प, झम्पा [झम्प+अ, टाप्] 1 छलांग 2 मछली। सम० अशन (पु०) मछली खाने वाला सालः एक प्रकार का मछली की जाल, साधन की नाप सूत्रम् एक प्रकार का नाप।

झल्लझल्ल (झल्लझल्ल) (पु०) (आभूषणों की) घंटियाँ लगे वाली चमक।

डमरराज: [ष० त०] प्रमथगण।
डाङ्कारिन् (वि०) [डाङ्कार + इनि] 'डङ्कार' ध्वनि को करने वाला।
डि: 1 चन्द्रमा की कला 2 कन्दर।
डिण्डिम (पु०) एक वृष्णि का नाम।
डी (पु०) हाथी।

डु 1 ध्रुव तारा 2 समुद्र 3 अश्वत्थ देव।
डो कर्ण का नाम।
डौ. स्वर्ग।
डोलिक (अपु०) 1 पान आदि रखने का बक्स, पानदान 2 झोला, थैला।

ढ

ढ (पु०) 1 सायक 2 'गरगर' का शब्द 3 मोर 4 शुक 5 पांच की संख्या।

ढ

ढक्क: [ढक्क+घञ्, वा] 1 ढकना ढक्कोऽस्त्री ढक्कणे गुल्फे नाना० 2 (संगीत में) एक प्रकार का ताल, 3 टकसाल। मम० पति: टकसालाध्यक्ष, ज्ञाता टकसाल।
ढक्कित (वि०) [ढक्क+क्त+सत्] बांधा हुआ आकृष्ट व च ढक्कित - हनु०।
ढक्कुलत्व [ढक्कुल+त्व] ढक्कार ढक्कन।
ढोवर (पु०) छोटा बैल।

ढ

ढक्कक: (पु०) सौदागर, व्यापारी।
ढिल्ला (स्त्री०) [आधार—कृ ॰ सम्प्रतिष्ठायां किन-द्वात् स्त्रीत्वमागत] कथा० १२।१०१।

ढ

ढमरिन् (पु०) [ढमर+इनि] एक प्रकार का ढोल।
ढम्मर. [ढम्ब+अरच्] उच्चस्वर का घोष।
ढिक्का (स्त्री०) एक बहुत छोटा पक्षदार कीड़ा (जैसे कि पिस्सू)।
ढिण्ढ [ढिण्ढ+अच्] 1 गुजायमान शिखर, कालाग्नि-मय चोटी—मै० २२।५३ 2 शरीर - क्षोष्टा ढिण्ढ स्वावमद् शि० १८।३३ 3 वृषभ, बैल गण० ३।१०३२।
ढिण्ढम [ढिण्ढ+अम] पीधे का अंकुर, अंखुवा मै० ८।२।
ढेरिका (स्त्री०) छछूंदर।

ढ

ढौकनम् | ढौक्+ल्युट् | द्वार बन्द करना।
ढौकारी (स्त्री०) दुर्गा की मूर्ति की मासिक पूजा।
ढौकित (वि०) [ढौक्+क्त] निकट लाया हुआ।

तक्र्म् [तक्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—कूर्चिका रबड़ी, उबाली हुई छाछ, पिण्ड. छाछ (को कपड़े में से छानने के पश्चात् रहा अवशेष), पपड़ी।

तट [तट्+अच्] 1 ढलान, कगार, किनारा 2 क्षितिज। सम०—द्रुमः नदी किनारे का वृक्ष पातः किनारे का तोड़ कर गिराना, भू. किनारे की धरती।

तटिनीपतिः [ष० त०] नदियों का स्वामी, समुद्र।

तण्डुरीय [तण्डुर+छ] कीड़ा, कृमि, कीट।

तत्प्रख्यन्याय. (पु०) मीमांसा शास्त्र का एक नियम जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी अभिव्यक्ति के अनुकूल रक्खा जाता है।

तत्त्वम् (नपु०) शरीर महा० १२।२६७।९। सम० अभ्यासः वास्तविकता का बार बार अध्ययन एवं तदभ्यासात्—सा० का० ६४, वेदिन् (वि०) अन्तर्निहित को जानने वाला, आद्य प्रकृति, वास्तविक सत्ता, -संख्यानम् सांख्य सिद्धान्त का विशेषत्व —भाग० ३।२४।१०।

तथाकारिन् (वि०) [तथा+कार+इनि] वैसा होने का दावा करने वाला

तद् (सर्व० वि०) 1 किसी अनुपस्थित वस्तु या व्यक्ति का उल्लेख करने वाला सर्वनाम। सम० अन्य (वि०) उसको छोड़ कर कोई दूसरा, अपेक्ष (वि०) उसका ख्याल करने वाला,—कालीन (वि०) उसी काल से सम्बन्ध रखने वाला, -देशय (वि०) उसी देश से सम्बन्ध रखने वाला, धर्म्य (वि०) उसी गुण में भाग लेने वाला, भव (वि०) उसी संस्कृत से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद —तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेक प्राकृतक्रम —काव्या० १, रूप: (वि०) उसी प्रकार के रूप वाला, वादिन्. उसका ज्ञाता, किसी विशेष क्षेत्र में प्रामाणिकता रखने वाला, —सदृश (वि०) उस अंक के समान।

तदाधितलक्षणन्यायः (पु०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार उत्कर्ष की उक्ति में आरम्भ से लेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके लिए वह दिया जाता है और साथ ही अपकर्ष की उक्ति अन्त तक उस सभी विवरण पर लागू है जिसके लिए वह दिया जाता है।

तदाश्रयोपदेशन्याय (पु०) ऊपर बताये गये 'तत्प्रख्यन्याय' के समान।

तदुत्थम् (नपु०) सङ्गीत में आलाप को लम्बा करना, सङ्गीत की गति धीमी करना।

तनु (वि०) [तन्+उन्] 1 पतला, दुबला, कृश 2 सुकुमार 3. बढ़िया, नाजुक 4 थोड़ा, छोटा, स्वल्प,—(स्त्री०) 1 शरीर, व्यक्ति 2 प्रकृति 3 त्वचा, खाल। सम० उद्भूत पंख,—करणम् (तनूकरणम्) पतला करना, —वी ओछे मन वाला।

तनूकरणम् (नपु०) कातना, तार निकालना।

तनूकारणम् (नपु०) जाला।

तन्त्रम् [तन्त्र+अच्] 1 खड़की 2. धागा 3 सतत श्रेणी 4 रस्म, व्यवस्था, संस्कार आदि धार्मिक कार्यों का नियमित आदेश 5 मुख्य बात 6 प्रधान सिद्धान्त, नियम 7 ऐसे कृत्यों का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों में समान हो—यत्समूहकृतं बहूनामुपकरोति तत्तन्त्रमित्युच्यते—मै० स० ११।१।१ पर शा० भा० 2 विषय की व्यवस्था यत प्रवर्तते तन्त्रम् महा० १४।२।१४, - अ विशेषज्ञ,—युक्ति किसी एक सधि का आयोजन को० अ० १५।

तन्त्रिवाद्यम् (नपु०) [ष० त०] भारतीय वीणा।

तन्त्रिल (वि०) [तन्त्र+इलच्] प्रशासनकार्य में कुशल एवं तन्त्रिल सेनापती राज्ञ प्रत्ययित—मृच्छ० ६।१६।१७।

तपर्तु (तप+ऋतु) ग्रीष्म ऋतु—तपर्तुमूर्तावपि मेदसां भग—नै० १।४१।

तपस् (नपु०) [तप्+असुन्] 1 गर्मी, आग, प्रकाश 2 पीड़ा, कष्ट 3 तपस्या 4 दण्ड। सम०- अर्हणीय (वि०) तपश्चरण के लिए अभिप्रेत—तपोऽर्हणीय ब्राह्मणा यस्य गर्भम्—महा० ११।२६।५, कृच्छ्र (वि०) तपश्चरण के कारण दुर्बल, जुष्ट (वि०) तपस्या से उत्पन्न,—वृद्ध (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप बूढ़ा।

तप्त (वि०) [तप्+क्त] 1 तपा किया हुआ, जला हुआ 2. पिघला हुआ 3. पीड़ित, कष्टग्रस्त 4 अभ्यस्त। सम० कुम्भ,—कूप एक नरक का नाम, तप्त (वि०) बार बार उबाला हुआ, बार बार गरम किया हुआ,—मुद्रा किसी तप्त धातु की छाप से शरीर पर किसी दिव्य लक्षण के रूप में अधिकार चिह्न अंकित करना, तप्तम्, तप्तकम् घृत की हुई घाणी, —बालुका बालू के तपे कण।

तापिन् (वि०) [ताप+इनि] पीड़ा पहुँचाने वाला —कि० ०।४२।

तरङ्गवाहिन् (पु०) समुद्र।

तरङ्गवती नदी, दरिया।

तरलतरल (वि०) [ष० त०] चञ्चल तथा दुर्बल ज्ञानेन्द्रियों वाला।

तरुकोटरम् (नपु०) [ष० त०] वृक्ष की कोटर या खोखर।

तरुतूलिका | जमगीदड़।
तरुतूलिका |

तर्जना (स्त्री०) ताड़ना, धमकाना।
तर्जनिः (पु०) भिखारी, माँगने वाला।
तर्जनी (स्त्री०) हाथ की विशेष स्थिति।
तर्जोदरी (स्त्री०) गृहिणी, पत्नी।
तलवः (पु०) अपनी हथेली से वाद्ययन्त्र को बजाने वाला संगीतकार। सम०—**कारः** सामवेद की एक शाखा।
तलित (वि०) [तल्+क्त] 1. तला हुआ 2 तश्तरीदार।
तलिम (वि०) [तल्+इमन्] ढका हुआ -शिशुपाल० १४।६१। सम०—**उदरी** पतली कमर वाली महिला।
तवकः (पु०) धोखा, जालसाजी तवक कपटेऽपि च नाना०।
तसरिका (स्त्री०) बुनना, बुनावट।
तस्वी (स्त्री०) (ज्योतिष शास्त्र का शब्द) घट् कांड।
ताजिकः (पु०) 1 मध्यवर्ती एशिया में रहने वाली एक जाति 2 एक उत्तम प्रकार के घोड़े की नस्ल।
ताण्डयब्राह्मणम् (नपु०) सामवेद के एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
तात्कर्म्यम् (नपु०) [तत्कर्मन्-ष्यञ्] व्यवसाय की समानता।
तात्पर्यार्थः (पु०) किसी उक्ति का सही अर्थ।
तादात्विकः (पु०) अपव्ययी, यो यद् यद् उपलभते तत्तद् भक्षयति स तादात्विक कौ० अ० २।९।
तादर्थ्यम् (नपु०) [तदर्थ+ष्यञ्] गुणों में समानता।
तादृश्यम् (नपु०) [तादृश+ष्यञ्] रूप की समानता।
तापसकः [तापस+क] (= कुतापस) आचारभ्रष्ट संन्यासी।
तामसः (पु०) चौथे मनु का नाम।
तार (वि०) [तॄ+णिच्—अच्] 1. ऊँचा 2. प्रबल 3 चमकीला 4 उत्तम,—**रः** (पु०) धागा, तार।
तारजेय [तारका+ढक्] कन्या से उत्पन्न, कानीन, वर्ण 2 सूर्य का भक्त।
तारा [तार+टाप्] 1 आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक 2. संगीत के एक राग का नाम।
तारिका (स्त्री०) [तॄ णिच् +ण्वुल] एक प्रकार की शराब।
तालेयम् (नपु०) एक प्रकार का चन्दन जिसका रंग तांत के समान होता है कौ० अ० २।११।
ताल [तल् एव अण्] 1 ताड़ का वृक्ष 2. ताली बजाना 3 फट-फट करना 4 हाथ की हथेली 5 तलवार की मूठ 6 नाला, घटखनी। सम० —**ज्ञ** जो संगीतशास्त्र की लय का जानता है, **दारक** नर्तक, नाचने वाला, **नवमी** माघपद मास के शुक्लपक्ष का नवाँ दिन,—**फलम्** ताड़ के वृक्ष का फल, **भङ्गः** संगीत में गान की ताल व लय के मान को सुरक्षित रखने में त्रुटि, ताल का टूट जाना।
तावत्फल (वि०) [ब० स०] उतना सा ही फल भोगने वाला।
तिग्मांशु [ब० स०] सूर्य।
तिलतिलम् (नपु०) 1 ज्योतिषशास्त्र में एक करण 2 तिलों का चिउड़ा, चौले।
तिथि [अत्+इथिन्, पृषो०] 1 चान्द्रदिवस 2 पन्द्रह की संख्या। सम०—**अर्ध** (तिथ्यर्ध) एक करण (आधी तिथि), **संख्या** (ब० व०) किसी भी निर्दिष्ट अवधि में सौर और चान्द्र दिवसों का अन्तर।
तिमि [तिम्+इन्] 1 समुद्र 2 मीन राशि। सम० **-जातिन्** (वि०) मछलियाँ पकड़ने वाला, **-जित्** समुद्र।
तिमिला (स्त्री०) संगीत का एक उपकरण, तबला।
तिरस्कारिन् (वि०) [तिरस्कार+इनि] आगे बढ़ जाने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, देवि त्वन्मुखपङ्केन सादिन, शापातिरस्कारिणा रत्न० १।२४।
तिर्यक्, तिर्यञ्च (वि०) 1 टेढ़ा, तिरछा, बक्र 2 घुमावदार 3 अनार्यवर्ती, -(पु०), -(नपु०) 1 जानवर, जन्तु (टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, रेंग कर चलने वाला —सीधे खड़े होकर चलने वाले मनुष्य से भिन्न) 2 पक्षी 3 पौधे। सम०—**ज** (वि०) किसी जानवर से उत्पन्न जैसे टेढ़ी क्या।
तिल [तिल+क] तिल का पौधा। सम० —**कुट** तिलकुट,—**मयूर** मोर की एक जाति।
तिलक [तिल+क] 1 राम 2 बादल, भाग्य 3 धनुष 4 भण्डार।
तीक्ष्णकण्टक [ब० स०] तेज काँटेदार पौधा।
तीक्ष्णमार्ग [ब० स०] तलवार मासपर्जन्यमीक्षणमस्यस्य मार्गः शि० १४।२०।
तीर्थयात्रा (स्त्री०) [ष० त०] तीर्थ यात्रा।
तीव्रद्युति [ब० स०] सूर्य, सूरज।
तोडा (स्त्री०) 1 काला मच्छर 2 संगीत का एक स्वर।
तु (अ०) निस्सन्देह—तु शब्द एवार्थद्योतनार्थः मै० स० १०।२।७४ पर शा० भा०।
तुङ्ग (वि०) 1 ऊँचा 2 लम्बा 3 मुख्य 4 प्रबल, **तुङ्गः** (पु०) पुन्नाग वृक्ष नाना०।
तुङ्गिमन् (पु०) [तुङ्ग+इमनिच्] ऊँचाई- कृतनिश्चयो वन्द्यान्तुङ्गिमा नोपभुज्यते- पञ्च० २।१४६।
तुच्छहृदय (वि०) [ब० स०] दयारहित, निर्दय।
तुच्छाशय (वि०) [ब० स०] नगण्य।
तुज् (स्वा० पर०) निकालना, भीचकर निकालना, रस निकालना।

तुम्बः [तुम्ब्+अच्] दबाव।
तोदः [तुद्+घञ्] दबाव—बात० १।३१।
तुन्दिलित (वि०) [तुन्दिल+इतच्] जिसकी तोंद फूल गई है, मोटे पेट वाला।
तुम्बारम्(नपुं०) तुम्बा।
तुर्यवन्त्रम् (नपुं०) (कोणनापने का) पादमन्त्र।
तुला [तुल्+अच्] 1 घर की छत के नीचे की ओर ढलवां लगा हुआ शहतीर 2. तराजू की डंडी। सम० अधिरोहणम् मिलता-जुलता, अनुमानम् सादृश्य, सादृश्य पर आधारित अनुमान, आरूढम् तराजू पर रखना अर्थात् तोलना।
तुल्य (वि०) [तुलया समित यत्] 1 उसी प्रकार का, वैसा ही, मिलता-जुलता 2 उपयुक्त 3 अभिज्ञ, वही -ख्यम् (अ०) 1 एक साथ 2. समान रूप से। सम०—काल (वि०) समान, बराबर,—रात्रंदिन (वि०) 1. जब रात और दिन दोनों समान हों 2 रात और दिन में कोई भेद न करने वाला, निन्दास्तुति (वि०) अपनी प्रशंसा या अपयश दोनों की ओर से उदासीन, मूल्य (वि०) समान मूल्य का, एक सी कीमत का, योनि उसी वंश का, उसी कुल में उत्पन्न, —वयस् (वि०) समान आयु का, बराबर की उम्र का, संख्य (वि०) समान संख्या का।
तुल्यक्ष. (अ०) समान भागों में, बराबर बराबर।
तुलसि दे० तुलसी, (कविता में 'तुलसी' को 'तुलसि' भी लिख देते हैं)।
तुष (तुदा० पर०) चोट पहुंचाना, तंग करना, कष्ट देना, पीड़ित करना।
तूणी (स्त्री०) नीम का पौधा।
तूलकम् (नपुं०) नीला थोथा।
तूलपीठी,-लिका (स्त्री०) नक्काशी, कातते समय जिस पर लपेटा जाता है।
तूष्णींदेय (पु०) गुप्त रूप से दिया गया दण्ड—कौ० अ० २।११।
तृच, तचम् [त्रि+ऋच्] ऋग्वेद के तीन मन्त्रों का समूह।
तृण, न [तृद्+क्त, हलादिशेष] 1 घास 2 तिनका 3 तिनकों की बनी (चटाई आदि) कोई वस्तु। सम० तुल्य तिनके की भांति तुच्छ समझना तृण धनना गुणगणिगा धनेषु—विक्रमांक० ६।२८, पुलिकः मानवी गर्भस्राव चरक० ४।४।१,—भुज् (वि०) घास खाने वाला, तृण भक्षी, शाकः सुपारी का पेड़, वट्पत्रः एक प्रकार की मिर्च।
तृणता [तृण+तल्] 1 तिनके का गुण, विकम्पापन 2 धनुष -शि० १९।६१।
तृण्ण (वि०) (वेद०) [तृद्+क्त] कटा हुआ, फाड़ा हुआ।
तृप्तता [तृप्त+तल्] सन्तोष, तृप्ति।
तरपतिः [ष० त०] तरणी या नावों का अधीक्षक।
तरणितनया [ष० त०] यमुना नदी।
तारकम् [तृ+णिच्+ण्वुल्] तारा—ज्ञानसंजीवनारकम् —भाग० १३।३।१।
तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1. ओज 2. सूर्य। सम० कुम्भ प्रयागपुञ्ज, कान्ति का समूह।
तैजस (वि०) [तेजस्+अच्] राजस वृत्तियों से युक्त, —वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा—भाग० ३।५।३०।
तैजसम् (नपुं०) 1. ज्ञानेन्द्रियों का समूह 2. चेतन सृष्टि।
तैक्ष्ण्यम् (नपुं०) मन्दता, जाड्य, जड़ता।
तैर्यग्योन (वि०) [ष० स०] जीव जन्तुओं की सृष्टि से सम्बन्ध रखने वाला।
तैलम् [तिलस्य तत्सदृक्षस्य वा विकार अण्] 1 तेल 2 लोबान। सम०—अम्बुका तेलचट्टा नामक कीड़ा, —चिट्टकम् वही, पक्वः,-पाचिकः तेल पीने वाला कीड़ा, तेलचट्टा,+पूर (वि०) जो तेल से भरा हुआ हो अतैलपूरा सुरतप्रदीपा —कु० १।१०।
तोटक (वि०) [तोट+कन्] झगड़ालू,—कः (पुं०) शंकर का शिष्य, —कम् (छोटकम्) एक छन्द का नाम।
तोयम [तु+यत नि०] 1 पानी 2 पूर्वाषाढा नक्षत्रपुंज। सम० अग्नि. जलवर्षी आग, बाडवानल,—अञ्जलि देवों और पितरों को संतृप्त करने के निमित्त अञ्जलि भर जल से तर्पण करना।
तोरणम् [तुर्+युच्, आधारे ल्युट्] 1 फाटकदार द्वार 2 बाहरी दरवाजा 3 अलंकृत द्वार 4 तराजू को लटकाने के लिए एक त्रिकोणीय ढांचा।
तौल्यम् [तुल्य+ष्यञ्] तुल्यता, समानता।
तौरङ्गिक (वि०) [तुरङ्ग+ठक्] घुड़सवार।
तौरुष्किक (वि०) [तुरुष्क+ठक्] तुर्की जाति से सम्बद्ध।
त्यक्तविधि (वि०) [ब० स०] नियमों का उल्लङ्घन करने वाला।
त्यद् (सर्व० त्रि०) (कर्तृ० ए० व० स्यः (पु०) (वेद०) अदृश्य सख्य त्यच्चाजवत्—तै० उ०।
त्याजित (वि०) [त्यज्+णिच्+क्त] 1. वञ्चित धूपोष्मणा त्याजितमार्गभावम् कु० ७।१४ 2 निष्कासित।
त्रयी (स्त्री०) [त्रय+ङीप्] 1. वेदत्रयी (ऋग्यजुःसाम) 2 तिगुना 3 विवाहित स्त्री (माता) जिसका पति और बच्चे जीवित हैं। सम० अक्ष (वि०) जो

तीनों (वेदों) से युक्त एकत्र है, विद्य (वि०) जो तीनों वेदों में निष्णात है, -वेद्य (वि०) जो तीनों वेदों के द्वारा जाना जा सकता है —त्रयीवेद्य हृदय त्रिपुरहरस्याद्य त्रिनयनम् आनन्द० २,—संवरणम् छिपाने या गुप्त रखने की तीन बातें (स्वरन्ध्रगोपन, परस्त्रावेक्षणगोपन और मन्त्रगोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, शत्रु की दुर्बलता और अपनी नीति।

त्रि (स० वि०) [तृ+क्रि] तीन। सम०—अङ्गुलम् तीन अंगुल चौड़ाई की माप, आवृत्ति (ब० व०) 1. तीन पुरुष बहरा, गूंगा और अंधा 2. तीन ऋषियों से युक्त प्रवर, कटु (कटुकम्) सोंठ पीपर और मिर्च का समाहार —करणम् मन, वचन और कर्म से युक्त कार्यकलाप, करणी और से तिगुना लंबा किसी वर्ग का पार्श्व, -काण्डम् अमर कोश नामक ग्रन्थ, कृष्णाकृष्टम् तीन बार हल से कृष्ट, जिसमें तीन बार हल चल चुका है, कालम् तीन मसालों (जायफल, इलायची, दारचीनी) का मिश्रण,—खेलि (वि०) जिसमें तीन पुतिुयाँ लगी हों भाव० ३।८।२०,—गेयकल्प नारियल,—पिटकम् बौद्धों के तीन धार्मिक पुस्तकों के संग्रह,—भङ्गम् शरीर की ऐसी मुद्रा जिसमें तीन झुकाव हो,—भद तिगुना अहंकार, -मलम्, मल मूत्र और कफ तीनों मल,—मध (वि०) तौल में तीन जौ के बराबर, लोहकम् सोना, चाँदी और ताँबा तीन धातुएँ, वली (स्त्री०) (किसी महिला) के पेट की तीन बलियां, वली गुदा, वृत्ति यज्ञ, भैक्ष्य और अध्ययन के द्वारा जीविका,—शर्करा तीन प्रकार की शक्कर,- सवनम् (सवणम्) त्रैकालिक यज्ञ, सर मिला कर उबाले हुए, घृत, तिल और चावल साधन (वि०) तीन प्रकार के साधन जिसे प्राप्त हैं, सामन् (वि०) ऊह, रहस्य और प्रकृति नाम के तीनों सामों को गाने वाला, सुपर्ण, सुपर्णम् तीन ऋचाएँ ऋक्० १०।११४।३-५।

त्रिकटुकम् (नपु०) त्रिफला, त्रिकटु और त्रिमद का सम्मिश्रण।

त्रैराशिक (वि०) [त्रिराशि + ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद+ठक्] तीनों वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रस्च् (भ्वा० पर०) 1 जाना 2 सिकुड़ना।

त्वरता [त्वर + तल्] शीघ्रता।

त्वरम् (अ०) [त्वर्+अच्] जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।

त्वष्टि [त्वक्ष्+क्तिन्] बढ़ईगिरी।

त्वाष्ट्र (वि०) [त्वष्टृ+अण्] त्वष्टा से सम्बन्ध रखने वाला।

त्वाष्ट्री [त्वष्ट+ङीप्] 'चित्रा' नक्षत्र पुंज।

थ

थुड् (तुदा० पर०) 1 ढकना, पर्दा डालना 2 छिपाना, गुप्त रखना।

थोडनम् [थुड्+ल्युट्] 1 ढकना 2 लपेटना।

द

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] किसी विषय में दक्ष —दंशितो भव कर्मणि महा० १२।२२०।९।

दंश् (चुरा० उभ०) 1 डंक मारना 2. देखना।

दक्ष् (भ्वा० प्रेर०) 1 प्रसन्न करना 2 समर्थ बनाना —दक्षयन्निव जनकात्मजाम्—शि० १४।३५।

दक्षता [दक्ष्+तल्, मांचे तस्] कुशलता, नैपुण्य।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] अनुकूल।

दक्षिणाम्नायः (पुं०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाली तांत्रिक संप्रदाय की पवित्र पीठ।

दक्षिणा (अ०) [दक्षिण+टाप्] 1. दक्षिण की ओर, दाईं ओर 2 दक्षिणदेश में,—णा (स्त्री०) (यज्ञादि धार्मिक कृत्यों की समाप्ति पर) ब्राह्मणवर्ग को दी जाने वाली भेंट। सम० पथिक (वि०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाला,—प्रतीची दक्षिण-पश्चिम, प्रवण् (वि०) दक्षिण-पश्चिमी, मूर्तिः (पुं०) शिव का एक रूप।

दक्षः [दक्ष्+अच्] 1 डंडा, लाठी, मुद्गर, गदा 2 हाथी की सूंड 3 छुरी की मूठ 4 चुरकाना 5 हलश 6 राज्यलक्ष्मी० ब० १।५ 7. आघात चोट - न्यायी दण्डस्य भूतेषु—भाग० ७।१५।८। सम०

आघातः डंडे की चोट,—अजिनम् एक प्रकार का आसन, भूमि पर लम्बा लेट जाना, उद्यम. दण्डित करने की धमकी देना,—कण्डितम् मापने के गज की भांति बार-बार आवृत्ति करना भी० सू० १०।५। ८३ पर शा० भा०,—कर्म. दण्डवत् करना, दण्ड देना को० अ० ४,- निपातनम् क्षमा करना, लेखम् थोड़ा सा दण्ड मनु० ८।५१, वाचिक (वि०) वाग्दण्डिक या शाब्दिक (प्रहार), वारित (वि०) दण्डित होने के डर से कोई काम न करने वाला, दण्ड के डर से रुका हुआ।

दण्ड्य (वि०) ढीठ, साहसी, गुस्ताख मुद्रीवा निलदन् दण्ड्यक् भट्टि० ६।१२७।

दण्ड्य (पु०) यम का विशेषण।

दन्त [दम् + तन्] 1 दांत 2 हाथी का दांत 3 बाण की नोक 4 पहाड़ की चोटी 5 बत्तीस की संख्या। समः—उच्छिष्टम् दांतों में रखा हुआ भोजन का अंश, पत्रिका कर्णी, बीज अनार, (दन्तबीज भी) आधार हाथी के दांत का कार्य।

दन्तम्यमान (वि०) [दम् + यङ् + शानच्] भिन्न-भिन्न दिशाओं में चक्कर काटता हुआ कठ० १।२।५।

दन्तवक्त्र (पु०) एक राजा का नाम, शिशुपाल का पिता।

दन्तशठः (पु०) पञ्चतन्त्र की कहानियों में एक गीदड़ का नाम।

दन्तशठा (स्त्री०) [ष० त०] धोखा, छल, कपट का आचरण।

दन्तः [दृ + अप्] 1 विवर, कन्दरा 2 गर्त, (गा०) जरा सा कुछ। समः० इषित (वि०) जरा सा खुला हुआ, दृगा दर्शनीयता दन्तोन्मीलनकृत्ता —सौन्दर्य०,—क्षम (वि०) दयालु, जरा धीमा।

दन्तोलूखलम् [ष० त०] बाल काटने का यन्त्र।

दन्तिका (स्त्री०) आंखों का अंजन।

दन्तिन् [दन्त + इनि] हाथी। समः० और (वि०) जिसमें दस भाग दूध हो, वर्ष कन्द, पिप्पलि पोडशम् दन्ति पोडशक की दूरी।

दन्ती (स्त्री०) [दन्त + अच्, नि० ङीष्] 1 किसी कपड़े की किनारी, गोट, मगजी 2 लैरण की चन्दी 3 आयु 4 अवस्था 5 हालत 6 बहो की स्थिति। समः० अंशः,-भागः बुरा समय—रा० ३।७२।८, लक्षण जन्म पत्री में निर्देशित किसी विशेष समय का फल।

दग्ध (वि०) [दह् + क्त] 1 जला हुआ 2 शोकग्रस्त, दुखी 3 अभागा 4 सूखा। समः०—जठरम् जला पेट, भूखा पेट, बरीदी से मारा हुआ,—क्षत जल जाने से होने वाला घाव।

दत्त (वि०) [दा + क्त] दिया हुआ। समः०—काल (वि०) जिसे कोई अवसर दिया गया है,- दृष्टि (वि०) जिसने ध्यान लगाया हुआ है, जो देख रहा है।

दत्तकचन्द्रिका (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ।

दत्तातिः (पु०) स्वामित्व का परिवर्तन—अथ दत्तादि किलक्षणक इति—भी० सू० ८।२।८ पर शा० भा०।

दन्तक्षम् (दन्त + ऋक्षम्) (नपुं०) क्रत्तिका नक्षत्रपुंज।

दत्तम् [दा + क्त] 1 देना 2 सौंपना 3. उपहार 4 दान 5 हाथी के मदस्थल से बहने वाला रस। समः० परिमिता उदारता, दानशीलता की सीमा, दन्तिन् (वि०) मदोन्मत्त हाथी।

देय (वि०) [दा + यत्] समर्पण करने योग्य (मार्ग) पन्था देयो बरस्य मनु० २।१३८।

दाक्षिकन्या (स्त्री०) बाह्लीक देश में स्थित एक स्थान का नाम।

दाडिमशीजः (पु०) [ष० त०] अनार का बीज।

दाडी (स्त्री०) माला।

दाय [दा + घञ्] 1 उपहार 2 वैवाहिक उपहार 3 भाग 4. धरोहर, बरासत 5. सम्बन्धी, रिश्तेदार। समः० विभाग संपत्ति का बटवारा।

दारकर्मन् [ष० त०] विवाह।

दारकस्वाहृद्य. (पु०) चीता।

दारुहारः (पु०) लकड़हारा।

दारुणम् [दृ + णिच् + उनन्] 1 क्रूरता, भीषणता 2 कठोर, प्रतिकूल नक्षत्र मूल, मुल्य, उग्रेरुा और मूल।

दारोदर (वि०) जूए से सबद्ध, जूआ विषयक।

दार्विका (स्त्री०) एक प्रकार का आंखों का अंजन।

दार्वी (स्त्री०) [दारु + अच् + ङीप्] 1 दारुहल्दी 2 हल्दी का पौधा।

दार्षद (वि०) (ङी स्त्री०) [दृषद् + अण्] 1 पथरीला 2 जो पत्थर पर पीसा जाय।

दार्ष्टान्त (वि०) [दृष्टान्त + अण्] सादृश्य की सहायता से व्याख्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया गया।

दार्ष्टान्तिक (वि०) [दृष्टान्त + ठक्] जो उपमा देकर किसी बात को समझाता है।

दालक. (पु०) एक प्रकार का विष।

दालभ्यः (पु०) एक वैयाकरण का नाम।

दाशरथ (वि०) [दशरथ + अण्] 1 यज्ञ से सम्बन्ध रखने वाला -महा० १२।८।३७ पर टीका।

दाशराज्ञ (वि०) [दशराजन् + अण्] दस राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला।

दासगोपः (पु०) [दास गृहस्थ मिलते दासयन्ति वैयुना-

नियुक्ता दासस्य तल्प] उच्च वर्ण की स्त्री में शूद्र पिता के द्वारा उत्पादित पुत्र ।

दिनकृत्यम् (नपु०) [ष० त०] नित्य का कार्यक्रम ।

दिनपुत्र (नपु०) [दिनस्यपुत्र+क्विप्] चान्द्रदिवस जो सप्ताह के तीन दिनों के साथ मेल खाता है ।

दिनप्रावसानम् (नपु०) सन्ध्याकाल ।

दिवसीकृ (तना० उभ०) रात को दिन में परिवर्तन करना निशा दिवसीकृता मृच्छ० ४।३ ।

दिवातनम् (अ०) [द्वि० स०] दिन रात ।

दिव्यावदानम् (नपु०) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ ।

दिव्यधुनी (स्त्री०) गंगा नदी ।

दिवावस्थानम् [दिव्+अवस्थानम्] अन्तरिक्ष ।

दिग्भ्रम [दिश्+भ्रम] दिशा की भ्रान्ति होना ।

दिक्शूलम् [दिश्+शूलम्] दिशाशूल, यात्रियों को किसी विशिष्ट दिन में विशेष दिशाओं में जाने का प्रतिषेधक योग ।

दिष्ट (भू० क० कृ०) [दिश्+क्त] 1 संकेतित, दर्शाया हुआ 2 वर्णित, उल्लिखित 3 निश्चित, नियत, स्थिर (पु०) समय, -अन्त (नपु०) 1 नियतन 2 भाग्य । पद० गति, मृत्यु, वृक्ष न्यायकारी परमात्मा यस्य नृपाति दिष्टदृक् भाग० ४।२१।२, भाव (पु०) परमात्मा, -भुक् (वि०) जो अपने कर्मों का फल भोगता है ।

दिष्टिवृद्धि (स्त्री०) [ष० त०] बधाई, अभिनन्दन साधुवाद ।

देशना (स्त्री०) [दिश्+युच् टाप्] निर्देश अर्थात् वैकल्पीय देशनाम प्राप्त धर्मज्ञानमोहयते मी० सू० २।१।१६ पर शा० भा० ।

दोलना (स्त्री०) [दोल+णिच्+युच् टाप्] दुलाना, झुलाना ।

दोल् (स्वा० प्रेर० अ०) प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना, उत्तेजित करना दोलयति हि विद्वांसं स्वपक्षे दोषलक्षणं नै० १८।१०० ।

दोलागोविन्दोत्सव [दोलारूढ मूर्ति के पूजन के पश्चात् मनाया जाने वाला एक उत्सव ।

दोलाश्रम [ष० त०] झूलने का स्थान ।

दोलायुध [ष० त०] यज्ञ की स्थली ।

दोष [दुष्+घञ्] अवगुण, दुर्गुण, दुराचार । समा० अङ्कुर जैसे की लौ दीवे की लौ, -उच्छिखमद्य रात्रि की समाप्ति प्रातः दीवट, दीपक रखने की वस्तु ।

दोषण (वि०) [दोष+कर्तरि ल्युट्] 1 जला हुआ, प्रकाशित, सुलगाया हुआ 2 उत्तेजित, प्रोत्साहित 3. उपजाऊ -वर्ति (पु०) 1 सिर 2 नीम का पेड़, -स्नेह (नपु०) सोना । समा० अन्ध्य रात्रि, निर्दोष: निश्चित एवं वास्तविक परिणाम, निर्णय (वि०) जिसने अपना पक्का निर्णय कर लिया है ।

दीर्घकम् [दीर्घ+अच्+कन्] 1 मोर की शिखा 2 'दीपक' नाम का एक अलंकार, उसी का दूसरा नाम ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ् वा०] 1 लम्बा, दूरगामी 2 देर तक रहने वाला, टिकाऊ 3. गहरा 4 ऊँचा । समा० अपाङ्ग (वि०) बड़े कटाक्षों से युक्त (मुख) -अवेक्षिन् (वि०) निहारने करने वाला, मनोज, लाभवान्,—आयुरक: दीर्घायुष्मान्,- तमस् (पु०) एक ऋषि का नाम, दृष्टि (वि०) जो देर तक देर विरोध रखता है, पत्रक 1 गन्ना 2 एक प्रकार का लहसुन - पृष्ठक: साँप, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, बाहिका, घड़ियाल मगरमच्छ ।

दुःखम् [दुस्+खच्] 1 अप्रसन्नता कष्ट, पीड़ा 2. कठिनाई, असुविधा । समा० गतम् विपत्ति, संकट, जीविन् (वि०) कष्ट में जीवन व्यतीत करने वाला, -त्रयम् तीन प्रकार का दुःख आधिभौतिक आधिदैविक, और आध्यात्मिक, दुःखम् (अ०) बड़ी कठिनाई के साथ, -दुःखिन् (वि०) 1 जिसे दुःख पर दुःख उठाने पड़े 2. जो दूसरों के दुःख से दुःखी हो, सह्य (वि०) जो कठिनाई से काटा जा सके ।

दुःखाकुल (वि०) [दुःख+आ+कुल+क्त] अत्यन्त दुःखित, परेशान नै० २।१३८ ।

दुःखलम्बट (पु०) रेशमी पट्टा या सिर की पट्टी ।

दुःखबुद्धि (पु० स्त्री०) [दुःख+अच्+ङीष्] 1 एक प्रकार का बड़ा धान 2 विष्णु 3 कृष्ण 4 एक प्रकार का विष [पाठान्तर भद्र में प० ...] ।

दुर (अ०) [दृश् का पदान्त वाचक उपसर्ग दृ+क] घृणा उपेक्षा बड़ा तिरस्कार या कष्ट के भय को प्रकट करने के लिए नाम पद क्रिया (०) के पूर्व आदर भाव है । समा० अक्षरम् अभद्र सूचक पद अपवाद मिथ्यादोषारोपण, आरोपवाद, अक्षर (वि०) जिसका पूरा रखना कठिन है, अन्त (वि०) सौभाग्यहीन, अभाग, दो भाग्य न वाला ।

दुरन्त (वि०) निर्धन, अकिंचन, आर्य (पु०) 1 कष्ट, मानसिक चिन्ता 2 काम, आपूर (वि०) जिसका भरना कठिन हो, जिसको सन्तुष्ट न किया जा सके, आशय: दुर्गम्य, महाद्,- आसद (वि०) जिसे विश्वास न दिलाया जा सके जो किसी प्रकार अपने मतानुकूल न किया जा सके, आसद (वि०) 1 जिसे प्राप्त करना कठिन हो 2 अजेय, जिसपर आक्रमण न किया जा सके 3 जिसका सहन करना कठिन हो, -उदय (वि०) जो आसानी से प्रकट न हो सके, उदर्क (वि०) जिसका बुरा परिणाम हो, जिसका कोई फल न निकले, उपसदिन् (वि०) जो असावधानता पूर्वक पहुँच रहा है, जो सावधानी

से पास नहीं आता है,—बुद्धिमत् (नपु०) जिसका भलीप्रकार अध्ययन नहीं किया गया—शास्त्रं दुर्बुद्धितं यथा -अभि० २।४, -बोधी कुसगति, बदचलन, -मतिः 1. बुरी रणनीति 2 अनैतिकता 3. धृष्टता —मृत्युः बरा राजा —व्यवस्थ (वि०) दुर्व्यवस्थित, बाध (वि०) प्रतिरोधरहित, बुद्ध (वि०) दुर्मना, दुष्ट मन वाला, विषयत्वम् (नपु०) अधिकित्स्यता, असाध्यता—बृ० उ० ४।३।१४, अहनु (वि०) ढीठ, बाधा न मानने वाला, मरणम् (नपु०) कठिन मृत्यु, अप्राकृतिक मरण,—लक्षित (वि०) उकसाया हुआ, भड़काया हुआ,—शौच शत्रु, वैरी, शासः बाह्यों (अवहारोपजीवी) की बस्ती के पास बसा हुआ गाँव, -सिद्ध (वि०) जिसमें छिद्र ठीक प्रकार न हुआ हो (मोती), सिलक्ष्य (वि०) जिसकी परीक्षा करना कठिन हो, -विवाहः अनियमित विवाह, अभियोगः (स्त्री०) मिथ्या अभियोग, झूठा आरोप।

दुरोणम् (वेद०) आवास, अतिदिदुरोणसद् ऋक् ४।४०।५।

दुर्ज्ञय (वि०) [दुर्+ज्ञि+क्यप्] अधार्मिक, धर्महीन।

दोष [दुष्+घञ्] 1 अपराध, बट्टा, निन्दा, त्रुटि 2. पाप, जुर्म 3 अवगुण, दुःस्वभाव 4 वात पित्त कफ का विकार। सम० अवारणम् दोषारोपण, दोषारोप का शब्द – आविष्कारणम् दोषों को प्रकट करना,—विज्ञानम् त्रुटियों का संकेत करना।

दुस् [दु+सुक्] संज्ञा पदों के साथ, कभी-कभी क्रियापदों के साथ भी, लगने वाला उपसर्ग, इसका अर्थ है 'बुरा' 'दुष्ट' 'घटिया' 'कठिन' आदि ('दुस् का 'स्' स्वरों तथा ह्रस् वर्णों से पूर्व 'र्' में, क्ष् से पूर्व 'ष्' में तथा क् प् से पूर्व 'ष्' में बदल जाता है)। सम०- उपसद (वि०) असह्य, पहुँच के बाहर, -कुलम् असभ्य कुल —स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि -मनु० २।२१८,—कृत (वि०) पाखण्डी, दम्भी० बुद्ध १।१८, —कीर्त (वि०) जो उचित रूप से न खरीदा गया हो, -क्षितम् ज्योतिष शास्त्र में लग्न से तीसरी राशि,—क्षिप्ता लगभग अधिकार—राज० ८।४, ग्रहीक (वि०) पहचानने में कठिन—ग्रह (वि०) दुःखदायी, पीड़ाकर—ग्रह भोगा पक्षायन्तु दुग्रहास्ते दिवा दश—रा० २।१०६।२९,—जरम् असामयिक और दुःखद मृत्यु,—दृश: 1. कुत्ता 2. मूर्ख,—दर्शित (वि०) देखने में कुरूप, निन्द्य, कलङ्कयुक्त,—दृश्यम् (अ०) बुरा, अश्लील—दुस्सं सिध्यति यत्र यत्नसमुदा कर्तास्मि तच्छोभ्यसि अमरु०।

दुस्कृविका (स्त्री०) एक प्रकार की रोटी।

दुस्थाः (पु०) एक प्रकार की मूल्यवान् मणि।

दुहितृसिद्धिका (स्त्री०) एक प्रकार की आतशबाजी की आग जिस पर आग बहुत जल्दी होती है—की० अ० २।११।

दूतः [दु+क्त, दीर्घ.] 1. हरकारा 2. एलची, राजदूत। सम० आख्यम् 'दूतसम्प्रेषण' के विषय का काव्य, जैसे मेघदूत, ओघः (—घ्ना) दूत की हत्या करना —दूतवध्या विवर्हता—रा० ६।५३,—संप्रेषणम् दूत भेजना।

दूत्यम् [दूत+ष्यञ्] दूत का कार्य।

दूर (वि०) [दुर्+दृ+रक, धातोर्लोपः] 1 फासले पर, दूरी पर, दूर 2 अत्यन्त, बहुत अधिक। सम० -अपेत (वि०) प्रकरण से बाहर, अप्रासंगिक, अस्तत, आगत (वि०) दूरी से आये हुए, उत्सारित (वि०) दूर भगाया हुआ,—कर्षिन् (पु०) बाण, कर्ष, कर्षिन् (वि०) जो दूर से खिंचा हुआ लगा सकता है—तावच्चिरं दूरनाराच्या दूरपाती दृढ़व्रतः महा० ५।१६५।२५, कर्षणम् दूर तक खिंचाना लगाना, श्रवण्—श्रुतिः दूर से सुनना (एक 'सिद्धि' का भेद),—श्रवस् (वि०) दूर-दूर तक विख्यात।

दूरता,-त्वम् [दूर+तल्, त्व] दूरी, फासला।

दूरुखः (पु०) धरती में खोद कर बनाया हुआ चूल्हा।

दृढ (वि०) [दृह्+क्त, नि० नकोप] 1 स्थिर, अचल, अटल, अडिग, अचल 2 ठोस 3 पुष्टीकृत 4 धैर्यवान् 5 सटा हुआ। सम० धृति (वि०) दृढ़ निश्चय, साहसी, व्रतः अस्त्र का प्रभाव रोकने वाला मन्त्र रा० १।२९।५, भक्तिः दृढ़ भक्ति,—भूमिः यौगिक अभ्यास में जिसमें मन को केन्द्रित कर लिया है,—मौष्टिन्, -मौष्टिक (पु०) अच्छा तीरन्दाज, —मन्यु (वि०) प्रचण्ड क्रोधी—भार्गवाय दृढ़मन्यवे पुत्र -रघु० ११।६४ दृढ़ः नारियल का पेड़।

दृतिः (पु०, स्त्री०) [दृ+क्तिन् ह्रस्वः] पिचकारी या नल—ता देवरानुत सखीन्सिषिचुर्दृतीभिः,—भाग० १०।७५।१७।

दृतीकरणम् (स्त्री०) मसक चूर-चूर करना।

दृष्टंदृष्टम् (अ०) हर दृष्टि में, प्रत्येक दृष्टि में।

दृष्टार्थसंपत्तिन्याय: (पु०) ऐसा नियम जिसके आधार पर वह कार्य जो अनेक फलों का उत्पादक है, एक अवसर में केवल एक ही फल उत्पन्न कर सकता है, अनेक नहीं—शी० भू० ४।३।२५-२८।

दृष्टिः [दृश्+क्तिन्] 1 देखना 2. प्रकट करना 3 जानना 4. दृष्टि 5 निश्चयात्मक कथन, उक्ति —दर्शनादर्शनयोश्च दर्शनं प्रमाणम् मै० सं० १०।७। ३६ पर शा० भा०।

दर्शनीयतम (वि०) [दृश्+अनीयर्+तमप्] जो देखने में अत्यन्त सुन्दर है—दर्शनीयतमं शान्तम् काव्य०।

दर्शनीयमानिन् (वि०) [दर्शनीयमान+इनि] जो अपने सौन्दर्य का अभिमान करता है, घमंडी।

दिदृक्षा (स्त्री०) [दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा।

दिदृक्षु (वि०) [दृश्+सन्+उ] जो देखने का इच्छुक है।

दृश् (स्त्री०) [दृश्+क्विप्] 1. दृष्टि 2 आंख। सम०

अञ्चल, (दृगञ्चल) कटाक्ष, कनखी,—**अम्बु** (दृक्सलम्) पलक,—**निमीलनम्** (दृङ्निमीलनम्) आंख मिचौनी, बच्चों का एक खेल, **प्रसादा** (दृक्-प्रसादा) एक नीला पत्थर जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है, **सलम** दृष्टिपथ, नजर मिलना।

दृशानु (पु०) [दृश्+आनुच्] सूर्य।

दृश्यम् [दृश्+क्यप्] 1 देखे जाने योग्य 2 सुन्दर 3 काव्य का एक भेद जो देखने के उपयुक्त है (विप० श्रव्य)। सम०- **इतर** (वि०) जो दिखाई न दे, -**स्थापित** (वि०) आकर्षक रीति से रखा हुआ जिससे सभी उसका देख सकें दृश्यस्थापितमृद्भ-मिक्षाभाण्डमृगाजिनाम्—कथा० २४।९२।

दृष्टसार (वि०) [ब० स०] जिसका बल या सामर्थ्य प्रमाणित हो चुका है—दृष्टसारस्य रुद्रस्यार्कस्के रघु० ११।

दृष्टि (स्त्री०) [दृश्+क्तिन] 1 नजर, देखना 2. मानसिक रूप से देखना 3 जानना 4 आंख 5 सिद्धान्त (दे० दर्शन)। सम०—**प्रसादः** दृष्टि की कृपा, दर्शन का अनुग्रह -**मण्डलम्** 1 आंख की पुतली 2 दृष्टि-क्षेत्र, दृश्य आंख द्वारा प्रेमाभिव्यक्ति,—**भवन्तमन्त-रम् कौदृशोऽस्या दृष्टिरागम्** श० २।११-१२, -**सभेद पारम्पर्यिक अवलोकन-स्वयमपि न निरूपिता अनयोर्दृष्टिभेदः** महा० ७।

दृष्टवदनम् (पु०) बकरी का ऊपर का ओठ।

दृष्टसारम् [ब० स०] ताश। **दृष्टसारस्त-वामृतमपि**—म० वी० ६।५२।

देव (वि०) [दिव्+अच्] 1 दिव्य, स्वर्गीय 2 उज्ज्वल 3 पूजनीय, माननीय, **व.** (पु०) 1 देवता 2 वर्षा का देवता 3 दिव्य मनुष्य, ब्राह्मण- **व०** भूदेव 4 देवर पति का भाई, **अक्षम्** (नपु०) ज्ञानेन्द्रिय। सम०—**अर्चनम्** 1 देवों के प्रति उपहार 2. वेद—महा० १३।८६।१७ पर टीका, **कुसुमम्** इलायची, -**खातम्**, **खातकम्** 1 पहाड़ की कन्दरा 2 सरोवर 3 मन्दिर का निकटवर्ती तालाब, -**गान्धारी** संगीतशास्त्र में एक राग का नाम, **ग्रहः** भूत-प्रेतों की श्रेणी जो उन्माद पैदा करती है, **तर्पणम्** जल के उपहार से देवों को तृप्त करना, -**दैवत्य** (वि०) जो देवताओं का अधिष्ठाता हो, उनके भाग्य से लिखा हो,—**द्विषत्** देवों का शत्रु, विमान, **नक्षत्रम्** दक्षिणी दिशा में पहले चौदह नक्षत्रों का नाम,—**निन्दा** नास्तिकता, **निर्मा-ल्यम्** देवताओं को उपहार देने में प्रयुक्त (फूल, माला आदि),- **पुरोहितः** 1 देवों का अपना पुरोहित 2 बृहस्पति ग्रह,- **प्रसूतः** (वि०) प्रकृति से उत्पन्न (फल आदि), **भोगः** स्वर्गीय भोग, स्वर्गीय हर्ष, **माया** दिव्य भ्रम - **यां देवमायामिव वीरमोहिनीम्** भाग० १०, **वर्त्मन्** 1 वायु, अन्तरिक्ष 2 गुदा देवमार्गे च दक्षिणम् या० ५।९२, दाहिने पैरों-वाला का विशेषण,—**लक्षणम्** ब्राह्मणत्व का चिह्न, यज्ञो-पवीत **वसनम्** दिव्य सचाई,-**हूः** वायु काल—भाग० ८।२५।५१।

देवितव्य (वि०) [दिव्+तव्यत्] जूए में दांव पर लगाने योग्य।

देवीपुराणम् (नपु०) एक उपपुराण का नाम।

देवीभागवतम् (नपु०) एक महापुराण का नाम।

देवीमाहात्म्यम् (नपु०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग जिसे सप्तशती कहते हैं।

देश [दिश्+अच्] 1 स्थान 2 प्रदेश 3. क्षेत्र 4 प्रान्त 5 विभाग 6 संस्थान 7 अध्यादेश। सम० **अटनम्** किसी देश में भ्रमण करना,—**अन्तरम्** सामाजिक बराई देश की प्राप्ति में बाधक **कालज्ञ** (वि०) जो व्यक्ति कार्य करने के सही स्थान और समय को जानता है, **विद्** (वि०) ठीक तरह से किया हुआ (कोई) दर्शक की सापेक्ष स्थिति के आधार पर बना चाल चेहरा।

देशक [दिश्+ण्वुल्] संकेतक, आदेशक, अनुबोधक। सम० **पटुम** (नपु०) छलक, चुग्गी।

देशिकवधिनी (स्त्री०) अध्यापिका के रूप में देवी, ललिता का विशेषण।

देशिक्य (वि०) [दिश्+ण्यत्] इंगित या संकेतित किए जाने के योग्य।

देह,-**हम्** [दिह्+घञ्] 1. काया, शरीर 2. व्यक्ति 3 रूप। सम० **आत्मक** मूर्त, -**हम्** 1. पांच तत्त्व 2 पिता **अवच्छेदक देहकृत् भाग०** ९।७।४ -**त्याग** (वि०) शरीर छोड़ी, मृत्यु को प्राप्त करने वाला, **पातः** मृत्यु —**भेद** मृत्यु, **यापनम्** शरीर का पालन पोषण करना, **विसर्जनम्** मृत्यु,-**वृत्तम्** चाल, —**सार** मजबूत।

देहीडा (स्त्री०) एक प्रकार का क्रीडा।

दैव (वि०) [दीक्षा+अण्] 'अग्नीषोम' यज्ञ की दीक्षा लेने वाला।

दैव (वि०) [दीप्+अच्] दीपक से सम्बन्ध रखने वाला।

दैव (वि०) [देव+अण्] 1 देवताओं से सम्बन्ध रखने

वाला 2 दिव्य, स्वर्गीय 3 भाग्य पर निर्भर। सम० —ज्ञ (वि०) बृहस्पति के लिए पुनीत, ब्रह्मा 'दैव' विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री, चिन्ता भाग्यवाद,—रक्षित (वि०) अन्तर्जात, नैसर्गिक, —रक्षित (वि०) देवों से जिसकी रक्षा की गई है—अरक्षित विष्ठति दैवरक्षित—सुभाष०, विद् (पु०) ज्योतिषी, हत (वि०) जिससे देव रूठा बैठे हो, भाग्य का मारा।

देवनदी (स्त्री०) गंगा नदी।

दैवसिक (वि०) [दिवस+ठक्] एक दिन में जो घटित हो।

देवस्कार (पु०) 1 शनि ग्रह 2 यम 3 यमुना नदी।

दैशिक (वि०) [देश+ठक्] गुरु के द्वारा शिक्षा प्राप्त।

दोधकम् (नपु०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु को मिला कर दस वर्ण हों।

दोलाचलचित्तवृत्ति (वि०) जिसका मन हिंडोले की भाँति इधर उधर झूल रहा है।

दोलायन्त्रम् (नपु०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कुछ औषधियाँ तैयार की जाती हैं।

दोलालोल (वि०) अनिश्चित।

दोस् (पु०, नपु०) [दम्पतेऽनेन दम् दाऽसि अर्श०] [दाशन् शब्द का विकल्प से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन के पश्चात् 'दास्' आदेश हो जाता है] 1 भुजा 2 किसी वर्ग या त्रिकोण की भुजा 3 अठारह इंच की माप मात० १०।१०।

दोहदवती-अवलोकना (स्त्री०) गर्भावस्था का वाञ्छा—उपेत्य या दोहदवतीमवलोकताम् —रघु० ३।६।

दौःस्थ्यी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक्र ग्रह का चन्द्रमा के साथ समागम—ज्ञानकों के लिए अत्यन्त मङ्गलमय-समझा जाता है।

दौर्जन्य (वि०) [दुर्जन+अण्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध।

दौर्भिक्षम् (नपु०) [दुर्भिक्ष+अण्] अकाल पड़ना दुर्भिक्ष होना।

दौर्मुख्यम् (नपु०) [दुर्मुख+ष्यञ्] आज्ञा न मानना।

दौरस्थम् (नपु०) [दुस्थ+ष्यञ्] दुःखद स्थिति।

दौहदिकः [दोहद ठक्] प्राकृतिक दृश्यों का माली नै० ६।६१।

द्युपथ [ष० त०] हवाई मार्ग।

द्युरत्नम् (नपु०) सूर्य।

द्युसद्यम् (पु०) इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।

द्यूत-नम्] [दिव्+क्त, ऊठ् अर्श०] 1 जुआ खेलना, पासा से खेलना 2 युद्ध, संग्राम 3 जीता हुआ पारितोषिक। सम० —धर्म, जुआ खेलने के नियम, —सभाजयम् जुआघर, लेखकः जो जुए के खेल के प्राप्तांक लिखता है।

द्रोकार (पु०) स्थपति, वास्तुकार, सौधचित्री।

द्रङ्गः,—ङ्गा नगर, पुरी राज०।

द्रवत् (वि०) [द्रु+शतृ] 1 दौड़ता हुआ, बहता हुआ 2 चूता हुआ, टपकता हुआ, बूंद बूंद गिरता हुआ।

द्रविः (पु०) (वेद०) धातुओं को गलाने वाला।

द्रविडशिशुः (पु०) द्रविड देश का पुत्र, शैवसंप्रदाय का एक संत—दयावत्या दत्त द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्—सौन्दर्य०।

द्रविणोद (पु०) अग्नि, आग।

द्रविणोदसः [ष० त०] धन की प्राप्ति।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] ऋग्वेद का मन्त्र जो साम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—द्रव्यशब्दस्तु छन्दोगैः ऋक्षु आचष्टे मैं स० ७।२।१४ पर शा० भा०। सम० शुद्धिः धर्म कार्य के लिए प्रयुक्त पदार्थ की पवित्रता।

द्रष्टुकाम (वि०) दर्शनाभिलाषी, देखने का इच्छुक (पाणिनि के अनुसार 'काम और मनस्' के पूर्व 'तुम्' के 'म्' का लोप हो जाता है)।

द्रष्टुमनस् (वि०) दे० 'द्रष्टुकाम'।

द्राक्षेन्द्रध्व (नपुं०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से ग्रह की दूरी।

द्राक्षापाक (पुं०) काव्यशैली का एक प्रकार जिसमें रचना सरल और मधुर हो (विप० नारिकेलपाक)।

द्राक्षासव अंगूरों की शराब जो पुष्टिवर्धक के रूप में प्रयुक्त होती है।

द्राघिष्ठ (वि०) [दीर्घ+इष्ठन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त लम्बा।—ष्ठः (पु०) रीछ।

द्राह्यायण सामवेदियों के सम्प्रदाय के लिए लिखित श्रौतसूत्र के कर्ता का नाम।

द्रुपाद (वि०) लम्बे पैर वाला।

द्रुतगति (वि०) [ब० स०] द्रुत गति से आने वाला।

द्रुतमध्या दे० द्रुतविलम्बित।

द्रुमः [द्रु शाखाम्त्यस्य, म] 1. वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 धुस्तूर का विशेषण। सम० —अम्बुजम् कर्णिकार वृक्ष, कर्णिकार का पौधा, —उद्यः, —उद्यः वृक्षों की वाटिका, कुंज, —निर्यासः वृक्ष का रस, लोबान, वासिन् (पु०) बन्दर।

द्रेक्काणः
द्रेष्काणः } (पु) राशि की अवधि का तीसरा भाग।

द्रोणकम् (नपु०) [द्रुण्+अच्, कन्] समुद्र के किनारे का नगर जिसमें किलाबन्दी की गई हो।

द्रोणन्यय (वि०) आतिथ्य सत्कार करने में उदार।

द्रौणेयम् (नपु०) एक प्रकार का नमक।

द्रौहित्र (वि०) [दौहित्र+ठक्] सदैव घृणा का पात्र।
द्वन्द्व [द्वौ द्वौ समाहारस्यस्य द्वित्वं पूर्वपदस्य सम्प्रसारणं, उत्तरपदस्य नपुंसकत्व—नि०] एक ओर, एकान्त स्थान, - द्वन्द्वे श्रोतव्यं वक्तव्यम् रा० ७। १०३।१३,—आलापः दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, —अर्थ (वि०) बहुव्रीहि समास जिसके मध्य द्वन्द्व निहित हो,— दुःखम् हर्ष और शोक आदि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न दुख।
द्वार्य (वि०) [द्वार्+य] दरवाजे पर खड़ा हुआ।
द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1 दरवाजा 2 प्रवेश द्वार 3. शरीर के नौ द्वार। सम०—बाहुः (पु०) चौखट, —अर्गलः किवाड़ का पट या पल्ला, शब्द दरवाजा।
द्वि (स वि०) [द्वृ+कि] दो। सम० अन्तर (वि०) दो पटकों द्वारा अन्तरित, अवर (वि०) न्यूनातिन्यून दो,—आत्मज (वि०) दो बार जन्मित, - आह्निक (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुखार) —एकान्तरम् एक अंश या दो अंश से वियुक्त द्वयेकान्तरानु वाताला वर्त्म विज्ञादिव विविधम्—मनु० १०।७,—कर (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, —कार्षापणिक (वि०) दो कार्षापण के मूल्य का, —कुलकी: आँख में खराबी के कारण दो चन्द्रदर्शन की भ्रान्ति,—क: ब्रह्मचारी, जाति जिसके दो पत्नियाँ हैं, काण्डवृद्धः 1 दो ओर बँटे बाल 2 जिसने अपने बालों को कंघी करके दो भागों में बाँट दिया है, जातु. मनुष्य कथा० ५२।९४, —जातम् संध्या समय,- मुनि (ब०) दो मुनि - पाणिनि और कात्यायन, मुख दो मुँह वाला साँप, वर्ण: प्रकृति और पुरुष का जोड़ा, व्याम (वि०) बारह फुट लम्बा (व्याम ६ फुट) - रूप, (-प्प) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला —भवन्ति च द्विरूपाणि वाक्यानि बी० सू० ४।३,४ पर शा० भा०।
द्विक (वि०) [द्वि+क] 1 दोहरा, दो तह का 2 दूसरा 3 दूसरी बार घटित होने वाला,- क: 1 कौवा 2 चकवाक पक्षी। सम०—पृष्ठ दो कूबड़ वाला ऊँट।
द्वितीयगामिन् (वि०) जो दूसरे पदार्थ पर घटता हो। द्वितीयगामी न हि शब्द एव स रघु० ३।४९।
द्वेषस्य (वि०) घृणा करने वाला।
द्वीपवासिन् (वि०) टापू पर रहने वाला, वर्ती (पु०) कठफोड़ा पक्षी।
द्वंद्वीकरणम् (नपु०) दो भाग करना।
द्व्हकालव्रत (वि० सदैकालता, ऐककाल्य) दो दिन तक अनुष्ठान चलते रहने की विशेषता।

ध

धकिति (अ०) एक क्षण में, अकस्मात्।
धनम् [धन्+अच्] 1 सम्पत्ति, दौलत, कोष, रुपया पैसा 2 कोई भी मूल्यवान् सामान, प्रियतम कोष 3 हथियार का धन 4 पारितोषिक 5 धनिष्ठा नक्षत्र 6 मगर का चिह्न (विप० ऋण)। सम०—आदानम् धन ग्रहण करना, - आशा (स्त्री०) धन की इच्छा —आख्यम् रुपया पैसा तथा अनाज,—धुः (पु०) हिलाती पूँछ वाला किरौला नामक पक्षी, धूः (स्त्री०) वह माता जिसके कन्याएँ ही हों।
धनिन् (वि०) [धन+इनि] वैश्य जाति—ऊचुश्च धनिनो राजन्—महा० १२।२९६।६।
धनुराकृतिम् (नपु०) योगशास्त्र में वर्णित एक कायिक मुद्रा।
धनुर्ग्रहम् (नपु०) एक माप, २७ अंगुल की माप, एक हस्तपरिमाण की माप।
धन्वन् [धन्+क्वनिप्] 1. धनुष 2 इन्द्रधनुष 3 धनु राशि।
धन्वनम् (ना० धा०) धनवाना, जिनस बोना।
धरः [धृ+अच्] तलवार। सम०—रुद् (नपु०) बिल, कंदर।
धरणीतलम् [ष० त०] धरती की सतह।
धरणीविहीनः (पु०) [ष० त०] राजा।
धरा [धृ+अच्+टाप्] पृथ्वी, धरती। सम० उपरस्थ (पु०) पृथ्वीतल, धरती की सतह।
धरित्रीभृत् (पु०) [धरित्री+भृ+क्विप्] राजा।
धर्म [धृ+मन्] 1 किसी जाति के परम्परागत अनुष्ठान, 2 विधि, व्यवहार, प्रथा 3 नैतिक गुण 4 गुण, सचाई 5 चार पुरुषार्थों में से एक 6 कर्तव्य 7 न्याय। सम०- अक्षरम् पवित्र मंत्र, आस्था का नियम, अनुशेषः धर्मानुष्ठान का बहाना धर्मोपदेशात् स्वजनस्य राज्यम् रा० ५।३८, अंगम् विधि का अंग, आहृतम् (नपु०) कल जो बीत चुका, आकूतम् रामायण की एक टीका का नाम, - ईप्सु (वि०) धर्मलाभ प्राप्त करने की इच्छुक,- उपधायिन् (वि०) धर्मवृद्ध, धार्मिक,—कञ्चुकः धर्म का कपटपूर्ण उल्लङ्घन, दक्षिणा धर्मशिक्षा का शुल्क, परिणामः हृदय में सदाचरण का उद्बोधन,- प्रतिरूपक- कपटधर्म, छद्म धर्म,—प्रधान (वि०) पवित्राचरण में मुख्य, -प्रेक्षा (वि०) धार्मिक, गुणी, बाह्य (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी,— बुद्धिः आचरण की

पवित्रता,—समयः वेद द्वादित्व,—सूत्रम् जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा पर लिखा गया ग्रन्थ ।

धर्षणम् [धृष् + ल्युट्] 1 साहस, धृष्टता 2 हराना, पराजय धर्षण यत्र न प्राप्यो रावणो राक्षसेश्वर —रा० ७।३१।३ ।

धातु [धा + तुन्] 1 घटक, अवयव 2 तत्त्व, प्राथमिक द्रव्य 3 रस, अर्क । सम० मयी;,—स्तूप, भस्म रखने का पात्र, —चूर्णम् पिसा हुआ खनिज पदार्थ,—प्रवाद (वि०) रसायन कार्य में कुशल ।

धातुक ,-कम् शिलाजीत ।

धातृ (पु०) [धा + तृच्] भाग्य, किस्मत ।

धात्रीपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।

धान्यम् [धान + यत्] अनाज, अन्न । सम० खलः खलिहान,—धौरः अन्न धुराने वाला, मुट्ठी भर अनाज ।

धामच्छान्तिम् (वि०) [धामन् , शान्ति - इनि, मलोप] भौतिक सत्ता में विश्वास रखने वाला—नैवंशिनं प्रभुमुग्रं ईश्वरो धामशान्तिना भाग० ३।११।३८ ।

धामवत् (वि०) [धामन् + मतुप्] शक्तिशाली, मजबूत पुरस्सरा धामवता यशाधना कि० १।४३ ।

धारणा (स्त्री०) [सामिधेनी ऋच् या समिदाधान पढ़ते] 1 यज्ञाग्नि को सुलगाते समय गाया जाने वाला प्रार्थना मन्त्र 2 इन्द्रिय को बाह्य विषयों से हटाकर एकाग्र करना—धारयासमृतीषिम— ऋग्० ८।६, नै० १।५६ ।

धारणम् [धृ + णिच् + ल्युट्] पीड़ा को शान्त करने के लिए मन्त्र । सम० मन्त्रम् एक प्रकार का ताबीज ।

धारणा [धृ + णिच् + युच् + टाप्] योग का एक अङ्ग । सम० —मार्गक (वि०) जो अपने आपको आत्मा में सम्बन्धित या प्रशान्त कर लेता है ।

धारयिष्णुता [धृ + णिच् + इष्णुच् + तल्] सहनशक्ति, सहिष्णुता ।

धारा (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।

धारा [धृ + णिच् + अच् + टाप्] पानी की धार, गिरते हुए किसी तरल पदार्थ की पंक्ति 2 बौछार 3 लगातार पंक्ति 4 घड़े में छिद्र 5 किसी वस्तु का किनारा । सम० —आवर्त भंवर, फिरकी, - ईश्वर राजा भोज, संपात लगातार बौछार,—स्नात (वि०) धारोष्ण दूध ठंडा किया हुआ ।

धार्मिक [धर्म + ठक्] 1 न्यायकर्ता 2 धर्मात्मा, कट्टरपन्थी 3 बाजीगर ।

धार्मिन् (पु०) [धर्म + इनि] दौड़ने वाला घोड़ा धार्मिनार तुरङ्गान् - महा० ११।२६।५ ।

धित (वि०) [धा + क्त] 1. रक्खा गया, अर्पण किया गया 2 संतुष्ट, प्रसन्न ।

धिष्ण्यार्हः [धिष्ण् + यत् + अर्हः] अर्हतापूर्ण उचित, निष्ठा ।

धिष्ण्यित (वि०) [अधि + स्था + क्त, ष० णिच्चान] 1 सुस्थापित 2 आई में सुरक्षित - शाल्वो वैहायस धापि तत्पुर व्यूहविष्ठित—महा० ३।१५।३ 3 ठहरा हुआ, निश्चित ।

धी: [धर्म धारे क्विप् सम्प्रसारण थ] 1. बुद्धि 2 मन, 3 विचार 4 कल्पना 5 प्रार्थना 6 यज्ञ 7 (अग्नि-कुण्डली में) लग्न से पाँचवाँ घर । सम० - विभ्रमः दृष्टिभ्रम ।

धुन्धुकम् (नपु०) 1 लकड़ी में विशेष प्रकार का बोध 2 वृक्ष के तने में छिद्र जो उसके क्षय का चिह्न है ।

धुन्धुरिः, री (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, संगीत-उपकरण ।

धुर्यवाहः (पु०) बोझा ढोने वाला जानवर ।

धुर्यता [धुर वहति यत्, तस्य भाव, तल्] नेतृत्व ।

धूमकः (पु०) लोबान ।

धूतपाप्मा जिसने तीनों गुणों को पार कर लिया है, जो अब भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, सन्यासी ।

धूपः [धूप् + अच्] 1 सुगन्ध 2. सुगन्धयुक्त बाष्प या धूआँ । सम० —नेत्रम् घूमनलिका, हुक्के की नली, पत्तिः एक प्रकार की सिगरेट ।

धूमः [धू + मक्] 1 धूआँ 2 बाष्प 3 कुहरा, धुंध । सम० उपहत (वि०) धूएँ के कारण अंधा हुआ, —निर्गमनम् चिमनी जिसमें से धूआँ निकलता है, महिषी धुंध, कुहरा,—योनिः बादल ।

धूमरी (स्त्री०) धुंध, कुहरा ।

धूम्र [धूम तद्वर्ण राति रा + क] 1 धूएँ के रंग का 2 भूरा —ऊर्णः ऊँट ।

धूलिधूसरित (वि०) मिट्टी में लोटने से भूरा हुआ —गोधूलिधूसरितकोमलकुन्तलाग्रम् कुमा० ।

धृ (भ्वा०, तुदा० आ०) इरादा करना, मन करना ।

धृत [धृ + क्त] संकल्प किया हुआ, दृढ़,—रिपुनिग्रहे धृत —रा० ४।२७।४७ । सम० - अतेक (वि०) चमकदार, —एकवेणि (वि०) एक चोटी धारी—शि० ७।२१, —गर्भ (वि०) गर्भिणी, —चापल पक्के इरादे वाला, दृढ़मना ।

धृतिः [धृ + क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. अठारह की संख्या ।

धृष्टकेतुः (पु०) धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम ।

धृष्टकौशिक (वि०) निर्भीक होकर बोलने वाला ।

धेनुः [धयति सुतान्—धे + नु, इच्च] 1 गाय 2. दूध देने वाली दो 3 पृथ्वी 4. घोड़ी सं० सू० ७।४।७ पर सा० भा० ।

धेनुका (स्त्री०) 1. दुधिनी 2 दुधारू गाय 3. उपहार 4 वरुण 5. पार्वती ।

ध्येय (वि०) [धे+ण्यत्] कार्य में परिणेय, प्रयोज्य, – अव्याकुल प्रकृतमुत्तरधेय कर्म शि० ५।६०।

धैर्यम् [धीरस्य भाव – ष्यञ्] 1 दृढ़ता, सामर्थ्य, स्थिरता-पन 2. स्वस्थचित्तता, प्रशान्ति 3 साहस। सम० –कलित (वि०) धीर, अभीरु, बुद्धि धीरज से पूर्ण आचरण।

धौत (वि०) [धाव्+क्त] 1 धोया हुआ, प्रक्षालित स्वच्छ किया हुआ 2 उज्ज्वल किया हुआ, चमकाया हुआ 3. उज्ज्वल, चमकीला। सम० अपाङ्ग (वि०) जिसकी कनखियाँ चमकीली हों, आशय (वि०) पवित्र हृदय वाला।

धौतेयम् [धौति + ढक्] सेन्धव, पहाड़ी नमक लाहौरी नमक।

धौम्य (पु०) एक ऋषि का नाम।

ध्यानविधेय (वि०) ध्यान का अभ्यास करने के योग्य।

ध्यानमुद्रा [ष० त०] ध्यान या चिन्तन करने की विशेष स्थिति या मुद्रा।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] स्थिर, अचल, स्थायी, अनिवार्य, -वः (पु०) 1 खूँटी नाना० 2 ज्योतिष का एक योग 3 मूलबिन्दु 4 ध्रुव तारा, – वम् (नपु०) निश्चित किया बिन्दु वा (स्त्री०) धनुष की डोरी। सम० – केतुः एक प्रकार की उल्का, टूटा हुआ तारा, – गति निश्चित मार्ग, -मण्डलम् ध्रुवीय क्षेत्र, -यष्टि. ध्रुवों की धारा, शील (वि०) जिसका आवास निश्चित है।

ध्वंस [ध्वंस्+घञ्] 1 अध पतन, डूबना 2 लुप्त होना, आसन्न होना 3 नाश, विनाश, बरबादी। सम० अभाव पदार्थ के विनाश से उत्पन्न अभाव या सत्तारहितता –कारिन् (वि०) 1 नाश करने वाला 2 उत्पातन करने वाला।

ध्वस्ताक्ष (वि०) [ब० स०] जिसकी आँखें बन्द गई हों (जैसी कि मृत्यु के समय) प्रकीर्णकेश ध्वस्ताक्षम् मालवि० ४।२।३०।

ध्वज [ध्वज्+अच्] 1 लड़ाई का एक भाग 2 झंडा, 3 पूज्य व्यक्ति 4 ध्वजा की यष्टि 5 चिह्न प्रतीक। सम० आरोहणम् झंडा फहराना, आरोह झंडे पर एक प्रकार की सजावट, उच्छ्रय ध्वजा फहराना।

ध्वजिन् (वि०) [ध्वज+इनि] पूर्ण, पताकी–मालवि० १।१५।८।१८।

ध्वजिनीसखा (स्त्री०) 1 वीणा 2 एक प्रकार का लम्बा भाला, तलवार।

ध्वान्तध्वान्तम् रात्रि का आवरण अंधकार का समूह।

न

नक्तं (वि०) [नश्+तृच्] क्षतिकारक, विनाशक।

नहुषः [नमन्ति विकलन्ति ये इमां नमन्तो हन्ति येषां ते नहुषा] अपने भक्तों पर कृपा करने वाला महा० १।१७०।१५ पर टीका।

नकुल [नास्ति कुलं यस्य, समासे नञो लोपः प्रकृति-भावात्] नीच कुल में उत्पन्न -नकुल पाण्डुतनये सर्पभुक्कुलहीनयो नाना०। सम० ईशः तान्त्रिक पूजा की एक रीति,—द्वेषी साँप नकुलद्वेषी तथा पितृघ्न राम०।

नक्तञ्चर (वि०) [नक्त+चर] रात्रि में संबंध रखने वाला रात का।

नक्तञ्चरः [ष० स०] कामदेव।

नक्तञ्चारिका (स्त्री०) [ष० त०] जल की मछली।

नक्षत्रम् [नक्षति नभ्+अत्रन्] 1 तारा 2 तारापुंज, 3 मोती 4 सत्ताईस मोतियों की माला। सम० –दृष्टि एक यज्ञ का नाम, उपजीविन् (पु०) ज्योतिषी,—योग नक्षत्र की कालावधि,—लोकः तारों का प्रदेश।

नक्षत्रयन्त्रः [ष० स०] बालक अन्तर्विष्ट करना पढ़ा चुकेट देना।

नगरपद्धतिः (स्त्री०) पहाड़ी नदी।

नगनदी

नगरमर्दना (स्त्री०) वेश्या।

नगरिन् (पु०) [नगर–इनि] नगरपाल।

नग्नजित् (नपु०) आसव तैयार करने के लिए उठाया गया मांस, किण्वन।

नग्नव्रता (स्त्री०) नग्न रहने की प्रतिज्ञा।

नग्नाचार्य (पु०) जैन भाष्य, स्मृति लेखक।

नटनारायण (पु०) संगीत शास्त्र में वर्णित एक राग।

नटवत् (वि०) [नट+मतुप्] नाटक के पात्र की भाँति व्यवहार करने वाला।

नडमीनः (पु०) एक प्रकार की मछली।

नवनवनि (वि०) [ब० स०] सुकुमार, नन्हा नन्हा अविघ्टा नवनवनिरस्य राज्ञः तन्वी नवमालभारिव कु० १।३८।

नवयूहः (पु०) एक प्रकार का पक्षी रघु० २।५६।१।

नवम् (नपु०) एक प्रकार का नाच।

नदीकूलम् [ष० त०] नदी का किनारा, नदी तट।

नदीतर (वि०) [नदीं तरतीति तृ+अच्] नदी पार करने वाला।

नदीमार्गः [ष० त०] नदी का जलमार्ग।
नदीमुखम् [ष० त०] नदी का मुहाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान।
नदीभर्तृपतिः [ष० त०] समुद्र पति की बहन का पति।
नन्दक [नन्द्+ण्वुल्] एक रत्न का नाम कौ० अ० २।११।
नन्दन (वि०) [नन्द्+ल्युट्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला, न (पु०) 1 पुत्र 2 सेवक,—ना (स्त्री) पुत्री, नम् इन्द्र का नन्दन वन। सम० —वन पोली चन्दन की लकड़ी,—द्रुमः नन्दन वन का वृक्ष, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष,—वनम् दिव्य वाटिका, इन्द्र का उपवन।
नन्दि (पु०, स्त्री०) [नन्द्+इन् ; इत्वं, प्रसन्नता, खुशी,—दि (पु०) 1 विष्णु 2 शिव 3 शिव का गण 4 (नाटक में) मङ्गल का पाठ करने वाला। सम० —केशी हिमालय का एक चोटी —आवर्त एक लिपि (ललितवि०) का नाम, पुराणम् एक उपपुराण, वर्धनः सिंह।
नन्दिसुत [नन्दिन्+सुत, नलोप] कार्तिकेय मुनि।
नन्दी (स्त्री०) [नन्दि+ङीप्] दुर्गा देवी।
नभि [नभ्+इन्] पहिया।
नभोरूप (वि०) [नह्+असुन् बहुव्रीहिः—ब० स०] अन्धकारयुक्त, काला।
नभोवीथी [नभस्+वीथी] सूर्य का मार्ग हवाई मार्ग।
नमश्चमस (पु०) [नमस्+चमस] 1 एक प्रकार का यज्ञपात्र 2 चन्द्रमा।
नम्रनासिक (वि०) [ब० स०] चपटी और मोटी नाक वाला।
नयनम् [नी+ल्युट्] 1 नेतृत्व करना 2 निकट ले जाना 3 आँख। सम० —अञ्चल 1 आँख का कोना 2 कटाक्ष, कनखी, —अरिष्टम् 1 कटाक्ष, कनखी 2 दृक्पात, दृष्टिपात, —अम्बु आँसू, —बुद्बुदम् आँख का गोलक।
नर [नृ+अच्] 1 मनुष्य 2 व्यक्ति। सम०—चिह्नम् मूँछ, —वेद राजा।
नरकचतुर्दशी दीपावली का दिन।
नरकवास (पु०) नरक में रहना।
नराज (पु०) एक छन्द का नाम।
नर्कटकः (पु०) एक छन्द का नाम।
नर्मस्फोट [नर्मन्+स्फोट, नलोप] 1 प्रेम के आदि-चिह्न 2 मुहासा।
नर्मालाप [नर्मन्+आलाप, नलोप] प्रेम वार्ता, आमोद-प्रमोद की बातचीत।
नर्मोक्ति (स्त्री०) [नर्मन्+उक्ति, नलोप] हास्यपरक अभिव्यक्ति।
नर्मद (ना० धा०) रिझाना, दिल बहलाना।
नर्मालिङ्गम् [नर्मन्+लिङ्ग] खेल, क्रीड़ा।
नल (पु०) [नल्+अच्] 1 सरकण्डा 2 लम्बाई की माप जो चार हाथ के बराबर होती है। सम०—सूदः एक प्रकार का उत्तीय अन्न, पाक राजा नल द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ।
नलिका (स्त्री०) नली।
नलिनी (स्त्री०) [नल+इनि+ङीप्] 1 कमल का पौधा 2 कमलों से सुशोभित सरोवर 3 पुष्प 4 लक्ष्मी 5 इन्द्र पुरी, (शक्रपुरी)। सम०—दलम्,—पत्रम् कमल का पत्ता।
नवद्वीप (पु०) एक टापू का नाम। यह गङ्गा और जलङ्गी के संगम पर बंगाल में एक स्थान है जिसे आजकल 'नदिया' कहते हैं।
नवश्राद्धम् (नपु०) मृत्यु के पश्चात् नियम दिनों में अनुष्ठित श्राद्ध।
नवीभावः [नव+च्वि—भू+घञ्] नया होना।
नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन्, वा० गुणः] (ब० व०) नौ, नौ की संख्या। सम० —अक्षाः नौ कपाल जैसे ठीकरों में पकाए हुए पिण्ड का उपहार, —अङ्क (वि०) नौगुणा नौ तह का, —दुर्गिका (स्त्री०) दुर्गादेवी के नौ रूप (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, महागौरी, कालरात्रि और सिद्धिदा),—धातुः (पु०) नौ धातु (हेमतारारजतं रीतिकं लोहं च सीसकम्। कांस्यकं काललोहं च धातवो नव कीर्तिता), —नवम् विवाह के विषय में जन्मकुण्डली में एक अशुभ योग जब कि दुलहन की जन्मराशि दूल्हे की जन्मराशि से पाँचवें या नवें हो।
नष्ट (वि०) [नश्+क्त] 1 खोया हुआ अन्तर्हित, ओझल 2 मृत, ध्वस्त 3 विकृत, बिगड़ा हुआ 4 कुत्सित 5 भ्रष्ट,—ष्टम् (नपु०) 1 माया 2 अन्तर्धान। सम० —चन्द्रः भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि जब कि चन्द्रमा का देखना निषिद्ध है, —दृष्टि (वि०) अन्धा,—धी (वि०) भूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, —नीड (वि०) नपुंसक, पुत्रविहीन, —रूप (वि०) अदृश्य।
नशाकः (पु०) एक प्रकार का कौवा।
नाकः [न कम् दुःखम्, तत्प्रतिषेधः एव] 1. स्वर्ग 2 अन्तरिक्ष 3 सूर्य। सम०—गङ्गा स्वर्गीय नदी, स्वर्गंगा, नारी, अप्सरा,—लोकः स्वर्गलोक, दिव्यलोक।
नाकुः (पु०) वाल्मीकि मुनि।
नागः [न गच्छति इति अगः, न अग इति नागः] 1. साँप 2. हाथी 3. बादल 4. शिशुन,—गम् 1 टीन 2. जस्ता 3 राँगा 4. एक प्रकार का रतिबन्ध। सम०—अरातिः

(वि०) हाथी पर सवार, -केतुः कर्ण का विशेषण, --द्वीपम् भारत वर्ष का एक टापू, नासोरु (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सुन्दर जघाएँ आकार प्रकार में हाथी की सूंड से मिलती जुलती हैं, वर्धी पान का पौधा, -ह्वयः एक प्रकार का नाम, रिपुः गरुड़।

नगरकः [नगर+अण्, स्वार्थे कन्] नगर पिता।

नगराः परस्पर विरोधी ग्रह।

नगरवृत्ति [ष० त०] नागरिकों की शिष्टता, शिष्टाचार, शालीनता।

नागार्जुनः (पु०) एक बौद्ध शिक्षक का नाम।

नागोजिभट्टः (पु०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1 दृश्य काव्य 2 नाट्यरचना के मुख्य दस भेदों में प्रथम भेद। सम० प्रबन्धः नाटक करने की व्यवस्था, प्रयोगः नाटक का अभिनय करना, रङ्गः नाटक का रङ्गमञ्च, लक्षणम्, नाट्यरचना विषयक विविध नियम।

नाटयम् [नट+ष्यञ्] 1 नाच 2 नाटक प्रस्तुत करना, अभिनय करना 3 नृत्यकला 4 नाटक के पात्र की वेशभूषा। सम० अङ्गानि नृत्य के दस भाग, आगारम् नृत्यकक्ष, नाचघर, -रासकम् एक प्रकार का एकाङ्की नाटक,—वेदः नाट्यशास्त्र या नाट्यकला का विज्ञान।

नाडी [नह्+णिच्+इन्=नादि+ङीप्] 1 पौधे का नलिकामय डण्ठल 2 कमल का नालनुमा काण्ड 3. शरीर का नलिकायुक्त अंग (जैसे कि शिरा या धमनी)। सम० चक्रम् मूलाधार आदि शरीर के स्नायुओं के नन्हीं केन्द्रों का समूह, द्वारम् जलघड़ी, -ग्रन्थः ज्योतिष की नाड़ी शाखा पर एक पुस्तक।

नाणकम् (नपुं०) सिक्का, मुद्राङ्कित कोई वस्तु। सम० -परीक्षा सिक्कों की परखना, परीक्षिन् (वि०) सिक्कों का पारखी, परीक्षक।

नाथनम् [नाथ्+ल्युट्] माँग, प्रार्थना।

नादमात्र (वि०) [नद्+णिच्+शतृ] उच्च स्वर से शब्द करने वाला।

ना (अ०) [न+नाञ्] 1 भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न रीति से, विविध प्रकार से 2 स्पष्ट रूप से, पृथक् रूप से 3 बिना 4 (समस्त विशेषणों में प्रयुक्त) बहुत से। सम० आधार (वि०) जिसके बहुत से आधार या घर हैं, -ओघ (वि०) विविध ओघों से सम्बन्ध रखने वाला, कर्मन् (वि०) भिन्न रीति-रिवाजों वाला,—भाव (वि०) भिन्न प्रकृति वाला।

नानात्वम् (नपुं०) विविधता की स्थिति।

नाम (वि०) [नम्यते+अच्] झुकाव, हर्षोत्कर्ष - तैषां विनतिर्नाम हास्तदेतन्नाम्नत्वम् —ऐत० उप० ३।१२।

नामवत् (वि०) [नभस्वत्+अण्] वायु से सम्बन्ध रखने वाला।

नाभागः (पु०) एक राजा का नाम, वैवस्वत मनु का पुत्र, अम्बरीष का पिता।

नासिका-सी (पु० स्त्री०) [नस्+इकन्, भस्वान्नादेश] 1 सूई 2 सूई के समान कोई भी नुकीली - पु० 1 पहिए की नाभ 2 केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3 स्तन। सम० गन्धः कस्तूरी की बू या गन्ध, -वर्षम् जम्बू द्वीप के नौ वर्षों में से एक।

नाभोगः [न+आभोग] 1 रुकावट 2 सांप नाभोगमाश्रया हरिणाधिरूढ़ सोऽयं गरुत्मानिव राजतेन्दु रघु० ६।८४।

नामधेय (वि०) [ष० त०] जिसका केवल नाम ही रह गया है मृतक।

नायकायते (ना० धा० आ०) 1 नायक का अभिनय करना 2 मणियों के हार में केन्द्रीय रत्न या मणि का काम देना।

नारात्र [नरान् आचामति- आ+चम्+ड, स्वार्थे अण् नारम् आचामति वा] 1 पूर्वदिशा का जाने वाला सड़क 2 मूर्ति का, उसके स्थान पर जमाने के लिए धातु की बनी नटखनी या कील।

नारायणशास्त्रम् (नपुं०) एक अस्त्र का नाम।

नारायणसूक्तम् (नपुं०) अथर्वन् का पुरुष सूक्त।

नारीनाथ (वि०) [ष० त०] जिसके स्वामित्व अधिकार किसी स्त्री के पास हैं।

नारीमायिकः (स्त्री०) [ष० त०] स्त्रीत्व।

नालकाभ्यम् 1 नाप 2 नियम, नाली।

नासत्यौ (पु०, द्वि० व०) [नास्ति असत्यं ययोः, न० ब० तथा प्रकृतिवद्भावः] दोनों अश्विनीकुमार।

नासालिक (वि०) [नासा+अलिच्] नाक तक पहुँचने वाला (लकड़ी आदि)।

नासावेधः (पु०) [ष० त०] नाक का बींधना, नासिकाबन्ध संस्कार।

नासिकः (पु०) महाराष्ट्र प्रान्त में स्थित एक पुण्यस्थान।

नाहुकः (पु०) आखेटजीवी समुदाय का व्यक्ति, आखेटकुशल।

निःसङ्ग (वि०) [ब० स०] आसक्ति रहित।

निःसञ्चारु (वि०) [ब० स०] निडर, निर्भय, सकोचरहित।

निःसञ्ज्ञ (वि०) [ब० स०] शब्द रहित, जहाँ कोलाहल न हो।

निःसत्त्व (वि०) [ब० स०] सारहीन, जिसके पास कोई हथियार नहीं।

निःश्रेयसम् (नपुं०) [निश्चितं श्रेयः वि०] 1 मुक्ति, मोक्ष 2. आनन्द 3 आत्मा, विवेक।

निःसंशय (वि०) [ब० स०] निःसन्दिग्ध, निश्चित।

निःसंग (वि०) [ब० स०] 1 असामक्त 2 मुक्त 3 स्वार्थरहित।
निःसत्त्व (वि०) [ब० स०] 1 असार 2. बलहीन 3. नगण्य।
निःसीमन् (वि०) [ब० स०] सीमा रहित।
निःस्नेह (वि०) [ब० स०] 1 रूखा 2 भावशून्य।
निःस्पन्द (वि०) [ब० स०] निश्चल, गतिहीन।
निःस्पृह (वि०) [ब० स०] 1 इच्छारहित 2 सन्तुष्ट।
निःस्व (वि०) [ब० स०] धनहीन, निर्धन।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] निश्शब्द, शब्द रहित।
निःस्वन (पु०) [नि + स्वन् + अच्] शब्द, ध्वनि।
निकटवर्तिन् (वि०) [निकट+वृत् + णिनि] निकटस्थ, जो पास हो विद्यमान हो।
निकषण [नि+कष्+ल्युट्] दे० 'निकष' कसौटी।
निकषायित (वि०) [निकष + क्यङ + क्विप् + क्त] जो किसी बात के लिए प्रमाण या कसौटी मान लिया गया हो (उदा०—वेदैर्यन्निकषायितेयं समा)।
निकाश [नि + काश् + घञ्] 1 प्रकाश 2 रहस्य— निकाशम् प्रकाशे स्यात्स्यद्दो रहसि स्मृत नाना०।
निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० स०] जो निन्द्य कार्यों के करने में व्यस्त है।
निक्लिन्नित (वि०) [नि + क्लिद् + क्त] जिसने खूब क्रन्दन किया हो, जोर मचाया हो (दूषित स्वर से पाठ किया हो)।
निक्षिप्त (वि०) [नि + क्षिप् + क्त] नियुक्त।
निक्षिलेन (अ०) पूर्णत, सब मिलाकर।
निगद [नि + गद् + घञ्] सस्वर पाठ।
निगम [नि + गम् + अच्] 1 प्रतिज्ञा स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा मृतमधिकर्तुमवस्तो भाग० १।९।३७ 2 प्राप्ति—पन्था मन्निगम स्मृत भाग० ११। ११।४२।
निगमनसूत्रम् (नपु०) वह सूत्र जो किसी अनुमान वाक्य का उपसंहार करता है।
निगमात् (अ०) सारांशत, संक्षेप में भाग० १०।१३।३९।
निगुप् (स्वा० पर०) छिपाना गुप्त रखना।
निगूढचारिन् (वि०) [क० स०] अज्ञात होकर घूमने वाला।
निगोत्राहक: (पु०) विष्णु।
निग्रह: [नि + ग्रह् + अच्] अतिक्रमण—निग्रहाद्धर्मसाकल्यात् महा० १२।२४।१३।
निग्रहत्व [नि + ग्रह् + ल्युट्] पकड़, गहराई।
निघ्नाद (वि०) [नि + हन् + णाघञ्] नाशकर्ता, जो नष्ट करता है।
निचित [नि + चि + क्त] बद्धकोष्ठ, मलावरुद्ध।
निचुल [नि + चुल् + क] 1 कमल 2 नारियल का पेड़ —नाना०।
निचुलय् (चुरा उभ०) बंधक में रख करना, इकरार—निजां वाणी निचुलयति चोलेन निभृता —सौन्दर्य०।
निचुल्लक: [निचुल तल्यते कार्मुके – नि + तल्ल् + अच्] 1 कूल्हा 2 वीणा का स्वनशील फलक 3 हत्था 4 चट्टान।
निचुलवल्लिका (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा।
नित्य (वि०) [नियमेन भव – नि + त्यप्] 1 अनवरत लगातार, शाश्वत 2 अनश्वर 3 नियमित, स्थिर 4 आवश्यक 5 सामान्य (विप० नैमित्तिक) सम० - अनुबद्ध (वि०) सदैव संबद्ध,- अनुवाद तथ्य की लगातार पुनरुक्ति—मै० स० ४।१।४५, अभियुक्त (वि०) लगातार किसी न किसी कार्य में लीन -काल्यम् (अ०) सदैव, हर समय,—क्त (वि०), लगातार उत्पन्न अत्र चैनं नित्यजात भग० २।२१ -बुद्धि (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर जानने वाला, काल शाश्वतता, नैरन्तर्य, इस एक विचार कि सभी वस्तुएँ सदैव एक सदृश रहती हैं।
निदाघ [नि + दह् + घञ्, कुत्वम्] आन्तरिक गर्मी सम० कालम् (पु०) सूर्य निदाघकालार्तमिवार्कदीधितिभि: शि० १।२४।
निदर्शित (वि०) [नि + दृश् + णिच् + क्त] प्रदर्शित चित्रित, प्रदर्शित।
निदर्शिन् (वि०) [नि + दृश् + णिच् + णिनि] पक्षप्रदर्शन उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सता बुद्धि पुरस्कृत सर्वलोकनिदर्शिनीम् रा० २।१०८।१८।
निदारिद्र (वि०) [ब० स०] 'अनिन्द्य' रोग से ग्रस्त।
निधनम् (नपु०) [निधृत धन यस्मात् –इदाच् + कन्] जन्मकुंडली में लग्न से आठवीं राशि।
निधानम् [नि + धा + ल्युट्] धरोहर।
निन्दनोपमा (स्त्री०) निन्दोपलक्षित उपमा, ऐसी तुलना जिसमें निन्दा प्रकट हो।
निपत् (स्वा० पर०) विफल होना, अपरिपक्व अवस्था ही नष्ट हो जाना (जैसे गर्भपात)।
निपाक: [नि + पच् + घञ्] 1 पसीना 2 (कच्चे फल को) पकाना।
निपात [नि + पत् + घञ्] गिरकर जाना, समाप्त - यावान्मेऽद्य निपातेन कश्चन नाम जायते —महा १२।३२०।११५।
निपेचन (नपु०) अफीम।
निबर्हित (वि०) [नि + बर्ह् + क्त] नष्ट किया गया, दूर किया गया इत इत्यार्योऽस्मि निबर्हितोऽहम्—मि १।२९।
निबिडित (वि०) [नि + बिड (बि) ड् + क्त] 1 मुकुलित

भारी बनाया हुआ, भीड से युक्त, मोटा 2 बाबकर सटाया हुआ, भींचा हुआ लङ्काभर्तुर्निबिडित--वा० रा० ५।१९।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1 मरा हुआ 2 गुप्त 3 मूक 4 विनीत 5 दृढ़ 6 एकाकी 7 निष्क्रिय, आलसी। सम०—आधार (वि०) दृढ़ आधरण का व्यक्ति,—स्थित (वि०) गुप्तरूप से विद्यमान।

निभ (पु०) लकड़ी की खूटी, मेख।

निमित (वि०) [नि+मा+क्त] 1 दे० 'निर्मित' उत्पादित 2 मापा गया।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1 ज्ञान का साधन—तस्य निमित्तपरीष्ट—मी० सू० १।१।३ 2 कार्य, उत्सव —एतान्येव निमित्तानि मुनीनाम्चरेतसाम्—महा० १२।६१।६। सम० ज्ञः (पु०) शकुन के आधार पर भविष्यवाणी करने वाला ज्योतिषी—नैमित्तिकम् कार्य और कारण, आकस्मिक केवल उपकरण स्वरूप कारण—भाग० ११।२३।

निमेषान्तरम् [ष० त०] एक क्षण का अन्तराल।

निम्न (वि०) [नि—मा+क] 1 गहरा, नीचा 2. अधम कोटि—निम्नेष्वीहा करिष्यन्ति महा०, ३।१९०।२६। सम० अभिमुख (वि०) निम्नतर स्तर की ओर बहने वाला कु० ५।५।

निम्नित (वि०) [निम्न+इतच्] गहरा, डूबा हुआ।

निम्बपञ्चकम् (नपु०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पाँच पदार्थ —पत्र, फल, त्वचा, फूल और जड़।

निम्बूकपञ्चकम् (नपु०) नीबू के पाँच भेद (सन्तरा, मुसम्मी, नारंगी खट्टा या गलगल कागजी नीबू)।

नियत (वि०) [नि—यम्+क्त] 1 रोका हुआ, बाधा हुआ 2 बाधित 3 (व्या० में) अनुदात्त सहित उच्चरित।

नियमः [नि+यम्+अप्] 1 गुप्त रखना—मन्त्रस्य नियम कुर्यात् महा० ५।१४१।२० 2 प्रयत्न - महा० २।४६।२०। सम० हेतुः विनियमन का कारण, नियन्त्रण रखने का कारण।

नियुक्त (वि०) [नि+युज्+क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया।

नियोक्तव्य (वि०) [नि+युज्+तव्यत्] 1 जिसको कोई कार्य सौंपा जाय 2 नियुक्त किये जाने योग्य 3 जिस पर अभियोग चलाया जाय—मनु० ८।१२१।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1 अपरिहार्य नियम—न चैष नियोगो वृत्तिपक्षे नित्य समास इति - मी० सू० १०।६।५ पर शा० भा० 2 सही, यथार्थ—कि० २०।१६।

निरङ्क (क) (वि०) [निर्+अङ्क (क)] जो राशि बिना कुछ शेष रहे, पूरी पूरी बँट सके।

निरधिष्ठान (वि०) [ब० स०] 1 असहाय 2 स्वतन्त्र

निरनुग्रह (वि०) [ब० स०] निर्दय, कृपाशून्य, अकृपालु।

निरनुनासिक (वि०) जो वर्ण नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो।

निरनुनासिकम् (नपु०) नारायण भट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुनासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ।

निरन्धस् (वि०) [ब० स०] भूखा, निराहार।

निरपवाद (वि०) [ब० स०] 1 कलङ्करहित 2. जिसमें कोई अपवाद न हो।

निरलङ्कृतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलंकार का अभाव, सरलता।

निरवद्य (वि०) [ब० स०] प्रसन्न, खुश।

निरवधि (वि०) [ब० स०] जिसका अन्त दूर नहीं है निपुणा सत्यना निरादर कि० २।१४।

निरारम्भ (वि०) [ब० स०] सब प्रकार का कार्य करने से मुक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय।

निरावर्ण (वि०) [ब० स०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट।

निरुपभोग (वि०) [ब० स०] उपभोग शून्य।

निरुपाधिक (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई शर्त न हो, निरपेक्ष।

निरीक्षिण्य (वि०) [ब० स०] जिसमें शिष्टता या शालीनता न हो, अभद्र।

निरीक्षित (वि०) [निर्+चक्ष्+क्त] धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ—निरीक्षितदानामलसाधर्भाभि रघु० २।४३।

निरीक्षिक (वि०) [ब० स०] जिसका कोई नेता न हो।

निरीह (वि०) [ब० स०] नासमझ, नासमझ निरुद्यम।

निरुद्यम (वि०) [ब० स०] निष्क्रिय, निराश।

निरुद्यम (वि०) [ब० स०] 1 आत्मावलम्बन से हीन 2. जिसमें स्वाभिमान न हो।

निरुद्यम (वि०) [ब० स०] अदृश्य, जो दिखाई न दे।

निरुद्यम (वि०) [ब० स०] पूरी तरह कटा हुआ।

निरुद्यमस्त (वि०) [ब० स०] स्नेहहीन, जिसमें वात्सल्य का अभाव हो।

निरुद्यिग्न (वि०) [ब० स०] अनासक्त, उदासीन।

निरुद्यिति (स्त्री०) निष्प्रभता, निष्प्रभ।

निरुद्यम (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म।

निरुद्यवधान (वि०) [ब० स०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, खुला (स्थान)।

निरुद्यवस्थ (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई व्यवस्था न रहे, इधर उधर भटकने वाला, अनियत अनियन्त्रित।

निरुद्यवृत्ति (वि०) [ब० स०] जिसमें कुछ प्राप्ति न हो।

निरुद्यह (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म।

निरय. [निर् + इ + अच्] द० 'निरय' -- आवासनिरया-द्वारा निरयादिव सानुज —रा० च० २। सम० —अत्यय् (नपु०) मौलिक अस्तित्व—यावा गृहे निरयवदमेति बनता व —भाग० १०।८२।३१।

निरवसितसत्व (वि०) [ब० स०] अनन्त, असंख्य, अनगिनत।

निराकृत (वि०) [ब० स०] 1 निराकरण किया गया 2 तिरस्कृत।

निरुद्ध (वि०) [नि + रुध् + क्त] 1 अवरुद्ध 2 भरा पूरा, पूर्ण। सम० -वृत्ति (वि०) कार्य करने में जिसकी गति अवरुद्ध हो गई है वाग्यनिरुद्धवृत्ति-कल्पम्।

निरोध [नि + रुध् + घञ्] लय, बुझ जाना।

निरूपक (वि०) [नि + रूप् + ण्वुल्] 1 निरूपण करने वाला, पर्यवेक्षक 2 निश्चय करने वाला, घटक।

निरूपित (वि०) [नि + रूप् + क्त] 1 चिह्नित, अंकित 2 नियुक्त 3 निशाना बनाया गया, इंगित।

निर्ऋति (स्त्री०) [निर् + ऋ + क्तिन्] 1 मूल नक्षत्र 2 आठ वसुओं में से एक 3 ग्यारह रुद्रों में से एक।

निर्गलित (वि०) [निर् + गल् + क्त] 1 बहा हुआ 2 गला हुआ, पिघला हुआ।

निर्गलोपमा (स्त्री०) अनुमान पर आश्रित उपमा -- काव्या० २।२७।

निर्णिक्त (वि०) [निर्णिज् + क्त] 1 धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. प्रायश्चित्त किया हुआ। सम० -बाहुवलय (वि०) जिसके कंडे या चूड़ियाँ स्वच्छ करके चमका दी गई हों,—अक्ष (वि०) स्वच्छहृदय, निर्मल मन वाला।

निर्देश [निर् + दिश् + घञ्] करार, प्रतिज्ञा—महा० १३।२३।७०।

निर्देश्य (वि०) [निर् + दिश् + यत्] 1 संकेत किये जाने के योग्य 2 निश्चित किये जाने योग्य 3 उद्घोष्य 4 जिसमें पवित्रता होनी चाहिए सुरापान ब्रह्महत्या अनिर्देश्यानि मन्यन्ते महा० १२।१६५।३४।

निर्धूमनम् [निर् + धूम् + ल्युट्] दीर्घ निःश्वास, लहरों की भाँति उठना गिरना।

निर्बन्धपृष्ट (वि०) [ष० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई बात पूछी गई है।

निर्बन्धिन् (वि०) [निर्बन्ध + इनि] आग्रह करने वाला।

निर्भर्त्सनम् [निर् + भर्त्स् + ल्युट्] धमकी देना, अपशब्द कहना, झिड़की देना।

निर्मथिन् (वि०) [निर्मथ + इनि] कुचलने वाला, मिलाने वाला, पीस डालने वाला।

निर्मा [निर् + मा + अङ्] मूल्य, भाव, दाम।

निर्माणिक [निर् + मा + ल्युट्] बनना, जन्म होना—पूर्व-निर्माणबद्धा हि कालस्य गतिरीदृशी—रा० उ० १६।१२।

निर्यत् (वि०) [निर् + या + शतृ] बाहर जाता हुआ, निकलता हुआ।

निर्याणिक [निर् + या + ल्युट्] नगर से बाहर जाने का मार्ग।

निर्याणिक (वि०) [निर्याण + ठक्] मोक्ष की ओर ले जाने वाला।

निर्यापक [निर् + यम् + णिच् + ण्वुल्] सहायक।

निर्योग [निर् + युज् + घञ्] 1 पूरा करना, सम्पन्न करना, बनाव शृंगार करना—निर्योगात् भूषणान्माल्यात् सर्वेभ्योऽङ्गे प्रदाय मे—प्रति० १।२६ 2 गाय को खूंटे से बाँधने का रस्सा—भाग० १०।२१।१९।

निर्लोक्य (अ०) [निर् + लुच् + ल्यप्] सोचविचार कर।

निर्वचनम् [निर् + वच् + ल्युट्] स्तुति महा० १। १०९।२३।

निर्वपि. [निर् + वप् + घञ्] प्रदान करना, अर्पण करना।

निर्वापित (वि०) [निर् + वप् + णिच् + क्त] बुझाया हुआ।

निर्वासित (वि०) [निर् + वस् + णिच् + क्त] बहिष्कृत, निष्कासित।

निर्वास्य (वि०) [निर् + वस् + णिच् + यत्] बहिष्कार्य, देश से निकालने के योग्य।

निर्विश् (तुदा० पर०) 1 घर में बस जाना 2. प्रविष्ट होना 3 आगे जाना 4 ऋण परिशोध करना—निर्वेष्टव्य मया तत्र महा० ५।१४६।१५ 5 किसी के साथ रहना -सुभूषणे मामुपि निर्विशन्ताम् भाग० १।५।२३।

निर्विष्ट (वि०) [निर् + विश् + क्त] 1 घुसा हुआ, चिपका रहा, जुटा रहा 2 शिविर में अवस्थित, डेरा डाले हुए।

निर्वेश [निर् + विश् + घञ्] 1 प्रविष्ट होना - आत्म-निर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमूलकलम् - भाग० १०।१०।२६ 2 बदला लेना भाग० १०।४४।३९।

निर्वारित (वि०) [निर् + वृ + णिच् + क्त] हटाया हुआ, रोका हुआ।

निर्वृत्तसाध्य (वि०) जो अभी-अभी समाप्त किया हो।

निर्वेक्ष्यत् (वि०) [निर् + व्यच् + ण्वुल्] संकेत करता हुआ, निर्देशन करता हुआ—स्नेहस्य निर्व्यंक्ष्यकः - महावी० ५।६२।

निर्विद्ध (वि०) [निर् + व्यध् + क्त] 1 घायल 2 विमुक्त।

निर्घोषः [निर् + अव् + घञ्] 1. अन्दर घुस जाना 2. अन्तर्दृष्टि ।

निर्घृणित (वि०) [निर् + घृ + क्त + कन] अत्यन्त घिनौना, घृणित, अधीन ।

निर्ग्रूढ (वि०) [निर्गि + ऊह् + क्त] 1 समरूपमूह में व्यवस्थित 2 सफल 3 बाहर फेंका गया ।

निर्ग्रूढिः [निर्गि + ऊह् + क्तिन्] उच्चतम विन्दु या अंश ।

निर्ग्रूहः [निर्गि + ऊह् + अच्] छुटी-महा० ३।१६०।३९ ।

निर्हरणम् [निर् + हृ + ल्युट्] विघटन, विघटनात्मक ।

निर्हारः [निर् + हृ + घञ्] घटाना ।

निर्हारिन् (वि०) [निर्हार + इनि] 1 फेंकने वाला 2. एक प्रकार की सुगन्ध जो और सब सुगन्धों से बढ़िया हो ।

निर्हृतिः [निर् + हृत् + क्तिन्] छोटा करना, संकुचित करना ।

निलयनम् [नि + ली + ल्युट्] घर, आवास, निवास ।

निलायनम् [नि + ली + णिच् + ल्युट्] आँखमिचौनी का खेल खेलना—भाग० १०।११।५९ ।

निवहः [नि + वह् + अच्] हत्या, वध ।

निवातकवचाः (पु०) (ब० व०) एक जनजाति का नाम ।

निवाप [नि + वप् + घञ्] 1 बीज, अन्न के दाने 2. श्राद्ध के अवसर पर पितृतर्पण 3. उपहार । सम० —**अञ्जलि** तर्पण के लिए दोनों हाथों की अञ्जलि में लिया हुआ पानी,—**अन्न** यज्ञीय आहार ।

निवारक [नि + वृ + णिच् + ण्वुल्] प्रतिरक्षक ।

निवास [नि + वस् + घञ्] 1 घर, मकान, आवास । सम०—**भूमि** रहने का स्थान, रक्षक भवन, मंदिर, —**स्थानम्** रहने की जगह ।

निविश् (तुदा० आ०) 1 फेंकना, अन्यूक का निशाना बनाना 2. (मन को) प्रभावित करना ।

निविष्ट (वि०) [नि + विश् + क्त] कृष्ट, आवर्धित (देश) ।

निवृत् (भ्वा० आ०) 1 वापिस आना 2. भाग जाना 3. बच निकलना 4 समाप्त होना 5 सम्पन्न होना, पे० बाल छोटे करना ।

निवृत्त (वि०) [नि + वृत् + क्त] अया हुआ, व्यवस्थित, विनियमित (जैसे कि सूर्य) । सम० —**यौवन** (वि०) जिसे फिर जवानी दी गई हो, जिसकी जवानी लौट आई हो ।

निवारत्नम् [प० त०] 1 चन्द्रमा 2 कपूर ।

निशिचरः [सप्तम्यलुक् समास] निशाचर, राक्षस, पिशाच ।

निशाचः [निः + चि + घञ्] समाज, संगम ।

निश्चारद्रव्य [नि + चर् + ण्यत्] 1. पुरीषोत्सर्जन 2 वायु, हवा 3 धृष्टता, दुराग्रह, हठ ।

निश्चितार्थ (वि०) [ब० स०] 1. जिसने अपना मन पक्का कर लिया है 2. पक्का निश्चय करने वाला ।

निश्चयः [नि + चि + अनट्] मांस, सिल्ली, आच्छादक ।

निश्चयात्मकसंज्ञायाः (पु०) एक नियम जिसके आधार पर कर्मधारय और तत्पुरुष दोनों समासों की प्राप्ति होने पर, पूर्ववर्ती अर्थात् कर्मधारय ही बलीयान् होता है ।

निषेकः [नि + सिच् + घञ्] आसुत, अर्क, अर्क ।

निषेक्तृ (पु०) [नि + सिच् + तृच्] पिता, जनक ।

निषेधिन् (वि०) [निषेध + इनि] 1 प्रत्याख्यान करने वाला, वर्जन करने वाला 2 आगे बढ़ने वाला ।

निष्कम् [निष्क् + अच्] विदाई, प्रस्थान, रवानगी ।

निष्कल (वि०) [निष्कल् + अच्] (संगीत० में) अनुच्चरित या अव्यक्त (मात्रा) ।

निष्कासनम् [निष्कस् + णिच् + ल्युट्] दूर भगाना, हटाना ।

निष्कृतिः [नि + कृ + क्तिन्] भर्त्सना, जिसकी क्रियास्तत्कार्यकारिण्या निष्कृति व्याख्यानिका—महा० १४। ३४।३० ।

निष्कर्षणम् [नि + कृष् + अच्] टैक्स लेने के लिए प्रजा का उत्पीडन ।

निष्क्रान्त (वि०) [नि + क्रम् + क्त] 1 बाहर निकला हुआ 2 आगे आया हुआ—अर्धनिष्क्रान्त एकाङ्की—दु० स० ३।३४ ।

निष्टपः [नि + तप् + अच्] कराहना, आह भरना रा० ७।२१।१२ ।

निष्ठापित (वि०) [नि + स्था + णिच् + क्त] समाप्त पूरा किया गया—मालवि० ६ ।

निष्ठापित (वि०) [निष्ठान + इतच्] निर्माण समाप्त के ढाँचे से युक्त, आधार चटनी आदि सहित ।

निष्ठित (वि०) [नि + स्था + क्त] जिसके ऊपर थूका गया हो भाग० ११।२२।५९ ।

निष्पातः [नि + पत् + घञ्] झड़कना, कम्पन ।

निष्पन्द (वि०) [नि + स्पन्द् + अच्] गतिहीन, अचल, स्थिर, —**दः** (पुं०) निश्चला का बन्धन—आर्द्रोत्थ देवि निष्पन्दः रा० ३।५५।३५ ।

निष्पुनस् [नि + पुन + अस्] धर्मशाला, धर्मार्थ बना विश्रामभवन ।

निष्फोड (वि०) [ब० स०] बिना स्थाल का ।

निष्फलिक (वि०) [ब० स०] बिना किसी चालाकी के, ईमानदार, सच्चा ।

निष्पक्व (वि०) [निस् + पच् + क्त] भली-भाँति पकाया हुआ ।

निष्परामर्श (वि०) [ब० स०] जिसे कोई उपदेश न मिला हो, असहाय ।

निष्पुराण (वि०) [ब० स०] अभूतपूर्व, नया, नूतन ।

निष्प्रतिग्रह (वि०) [ब० स०] जो दान ग्रहण नहीं करता है, उपहार नहीं लेता है।
निष्प्रत्याश (वि०) [ब० स०] निराश, हताश।
निष्प्रभेदि (वि०) [ब० स०] जो बदबू से अलग आता है, नया (कपड़ा)।
निःशर्कर (वि०) [ब० स०] जिसमें कंकड़ न हो, रोड़े आदियों से मुक्त।
निःसह (वि०) [ब० स०] 1. बलहीन 2. असहिष्णु।
निःसूत्र (वि०) [ब० स०] असहाय, सहायताहीन।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।
निःस्पर्श (वि०) [ब० स०] कठोर, कड़ा, रूखा।
निसर्गनिपुण (वि०) [ष० त०] स्वभावतः चतुर।
निसृष्ट (वि०) [नि+सृज्+क्त] सुलझाया हुआ (जैसे बाल)।
निस्तुषत्वम् [ब० स०] तुषों का न होना, दोषराहित्य, दोषों का अभाव।
निस्तोदः [नि+तुद्+घञ्] चुभ जाना, घुस जाना, डंक मारना।
निस्त्रिंश (वि०) [नि+त्रि+क] (सेना की भाँति) कैम्प लगाए हुए, शिविरस्थ। सम०—हृदय (वि०) कोमल हृदय, कृपालु।
निह्नव [नि+हन्+अप्] 1. मुकर जाना 2 वचन-विरोध, विरोधाभास।
नीचगामिन् (वि०) अधम मार्ग का अनुसरण करने वाला।
नीतिशतकम् (नपु०) अंतर्हरिकृत नीतिविषयक सौ श्लोकों का संग्रह।
नीरन्ध्र (वि०) [न० स०] अन्दर में रहने वाला, अन्दर में घुसने वाला।
नीलपुरी (स्त्री०) दिल्ली।
नीलाञ्जिन (वि०) [शिर्+राज्+क्त] देवतार्चन के दीप तथा उपाधि से सुशोभित, प्रभामित।
नीलविद् (पु०) राजकीय प्रशस्तियों तथा समाचारों का संग्रह।
नीलस्नेहः (पु०) अतिशय प्रेम।
नीवि-वी (स्त्री०) [नि+व्ये+इञ्, य लोप, पूर्वस्व दीर्घ] कारागार- नीवी स्वाद्वन्धनागारे बन्धे स्त्री-बन्धबन्धने नाना०।
नुत्तिः [नुद्+क्तिन्] हटाना, दूर करना।
नूनंभावः (पु०) सम्भाव्यता, प्रायिकता।
नूनंभावात् (अ०) कदाचित्, सम्भवतः।
नृ [नी+ऋन् ित्त्व] (पु० कर्तृ० ए० ब० रूप) 1 मनुष्य, व्यक्ति (चाहे पुरुष हो या स्त्री) 2. मनुष्य जाति 3 पुल्लिंग शब्द 4 हंस। सम०-कार, मनुष्यांचित कार्य लोक, आत्म (वि०) मनुष्यजाती —वाह्यम् बड़ा भवन, बड़ा कमरा,—वाह्यम् दालान।
नृत्यम् } (नपु०) [नृत्+घञ्, यत् वा] नाच, अभिनय।
नृत्यम् } सम०- हस्तः नाचते समय हाथों की स्थिति।
नेती (स्त्री०) दोष की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मुंह में से निकालना।
नेत्रम् [नी+ष्ट्रन्] 1 वस्त्रमण्डप—नाना० 2 धनुष, बक्ष की छाल—नाना० 3 आँख। सम० कार्यत्रम् आँखों के लिए एक जादू,- चक्षुस् (वि०) जिसकी आँखें अधिक झपकती हों, आँखें झपकाने वाला,-वाक्यः आँखों की सूजन,—व्यधः 1 आँख सिकोड़ना मीचना 2 आँखों में धूल झोंकना, व्यधम् साँप।
नेत्र्यम् (नपु०) आँखों के लिए उपयुक्त।
नेदीयोमरण (वि०) [ब० स०] जिसकी मृत्यु निकट ही है, मरणासन्न—राज० ४।३१।
नेदिष्ठ (वि०) शब्दायमान, कोलाहल करने वाला।
नेपथ्यगृहम् (नपु०) शृंगार भवन, प्रसाधनकक्ष।
नेमिमुच्चारम् (नपु०) पहिए का घेरा और नाभि।
नेय (वि०) [नी+यत्] 1 ले जाये जाने के योग्य 2 शिक्षा दिये जाने के योग्य—अनेय शिक्षयितुम-योग्य —महा० ५।७४।४ पर टीका।
नैककोटिश्वरः (पु०) करोड़पति, कोट्यधीश।
नैगमः [निगम+अण्] वास्तविक निगमन का एक कारण। सम० काण्डः दे० 'नैगम'।
नैग्न (वि०) [निग्ना+अण्] 1. ढालू, निढाल 2 बन्द (फूल जिसकी पंखड़ी अभी बन्द हो)।
नैमित्तिक (वि०) [निमित्त+ठक्] 1 किसी कारण से सबद्ध 2. असाधारण। सम०—कर्मन् (नपु०) किसी विशेष कारण से होने वाला संस्कार (विप० नित्य-कर्म), व्यः बड़ा में लीन हो जाना, वाह्मलय (यह मत चार हजार वर्ष के उपरान्त होता है।
नैर्ऋत्य (वि०) [निर्ऋति+अण्] दक्षिण-पश्चिम दिशाओं से सबध रखने वाला।
नैश्चिन्त्यम् [निश्चिन्त+ष्यञ्] चिन्ता से मुक्त होना।
नैष्कर्तृक (वि०) [निष्कर्तृ+ठक्] लकड़ी काटने वाला।
नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] भौतिक सुखों के प्रति उदासीनता (बुद्ध०)।
नैष्ठिक (वि०) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, उपसंहार परक 2 निश्चित 3. उच्चतम, पूर्ण 4 आजीवन, अनि-वार्य महा० १२।६३।२२। सम० ब्रह्मचारिन् (वि०) जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाला।
नैहारः [नीहार+अण्] कुहरा या धुंध से सबन्ध रखने वाला।
नौकः [ए० त०] किश्तियों में बनाया गया पुल।

न्यन्त: [नि+अन्त] 1 सामीप्य, सन्निकटता 2. पश्चिमी पार्श्व—रा० २।६८।१२ ।

न्यक्षरग्रह: [नि+अक्ष+ग्रह्+अच्] समस्त शब्द के प्रथम खण्ड का अन्तिम स्वर जिस पर स्वराघात नहीं किया गया है ।

न्यस्त (वि०) [नि+अस्+क्त] 1 धारण किया हुआ, वस्त्र पहने हुए 2 (स्वर की भाँति) मन्दस्वर से युक्त । सम० अस्तव्य (वि०) रख दिए जाने के योग्य, स्थिर किये जाने योग्य, चिह्न (वि०) बाह्य चिह्न से मुक्त ।

न्यास: [नि+अस्+घञ्] लिखित पाठ्य या साहित्यिक मूल पाठ ।

न्याय [नि+इ+घञ्] 1 प्रणाली, रीति, नियम, व्यवस्था 2 औचित्य 3 विधि 4 धर्म 5. न्यायालय द्वारा उद्घोषित निर्णय 6 नीति 7 अच्छा प्रशासन 8 सादृश्य 9 विश्वसनीय निगम । सम०—आभास (वि०) ईमानदारी से प्रतीत, आभास मिथ्यातर्क जिसमें सत्य की झलक आती हो, एक प्रकार का आभास उपेत (वि०) न्यायानुसार, न्याय्य, अनुमति-प्राप्त, सही ढंग से माना हुआ, निदर्शन (वि०) यथार्थ वर्णन करने वाला,—विद्या,-शास्त्रम् तर्कविद्या, तर्कशास्त्र,—संगत (वि०) युक्तियुक्त, तर्कसंगत ।

न्यूनपञ्चाशद्भाव (पु०) ऐसा मूल्य व्यक्ति जिसमें मानवता के गुण पचास प्रतिशत से भी कम हों ।

न्यूनता (स्त्री०) 1 कमी, हीनता 2. घटियापन, अधूरापन ।

प

पक्ष्,-क्षि (म्वा० चुरा० पर०) स्पष्ट करना ।

पक्षित: [पक्ष्+क्तिन्] पवित्रीकरण,- शरीरसंस्कार कर्माणि—महा० १२।२७०।३८ ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य व] 1 पका हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ 2 पूर्णविकसित । सम० - कषाय (वि०) जिसके मनोवेग और विषय कामनाएँ शान्त हो गई हैं, गात्र (वि०) पके गात्र वाला, दुर्बल शरीर, क्षीणकाय ।

पङ्क्ति [पञ्च्+क्तिन्] 1 एक छन्द का नाम 2 लाइन, श्रेणी । सम० क्रम आनुपूर्व्य, परम्परा, क्रमिक अनुगमन ।

पङ्क्तिरथ (अ०) पंक्तिदार, लाइनों में ।

पङ्क्तिवासर: (पु०) शनिवार ।

पङ्क [पङ्क्+अच्] (वेद०) सूर्य, दे० ३।५३।१६ पर सायण० । सम०—अध्याय: तर्कशास्त्र,—विवेक: एक पक्ष का ही विचार करना, किसी का पक्षपात करना, —भेद: किसी तर्क के दोनों पहलुओं में विवेक करना, —घात: पक्षाघात, शरीर के एक पक्ष में लकवा, —वायु:,—वात: पक्षाघात, अर्धांग में फालिज, पक्षक: पक्षी ।

पक्षितीर्थम् (नपु०) दक्षिण भारत में एक पुण्य तीर्थ ।

पक्ष्मन् [पक्ष्+मनिन्] 1 बरौनी सिंहस्य पक्ष्माणि मुखात्लूनानि—महा० ३।२६८।६ 2 (हरिण के) बाल - निसर्गचित्रोज्ज्वलसूक्ष्मपक्ष्मणा—शि० १।८ ।

पक्ष्मलदृश् (स्त्री०) [पक्ष्मन्+दृश्+क्विप्] जिस स्त्री की पलकें लम्बी हों ।

पचयामक (वि०) [पच्+णामच्, स्वार्थे कन्] अपना भोजन स्वयं पकाने वाला ।

पञ्चकलिका (स्त्री०) हल का एक भाग ।

पञ्चन् (स० वि० सदैव ब० व०) [पञ्च्+कनिन्] (समास में 'पञ्चन्' के अन्तिम 'न्' का लोप हो जाता है) पाँच । सम० आनन:, -आस्य: 1 सिंह 2 किसी भी एक विषय में अत्यन्तम जैसे कि 'वेद पञ्चानन', आयतनम्, आयतनी पञ्च देवताओं (सूर्य, अम्बिका, विष्णु, गणपति और शङ्कर) का समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित हैं, उपचार पूजा के पाँच पदार्थ (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य), कृत्यम् दिव्य शक्तियों के पाँच कार्य-सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह,- क्षरम् एक छन्द का नाम,—क्षरक पाँचों तत्वों की सहायता से स्थिर या जीवित, क्षारिका शंकर के ब्रह्म सूत्रभाष्य पर पद्मपादाचार्य रचित टीका,—क्षल्म् (नपु०) 1 भासकृत एक नाटक का नाम, दर्शन शास्त्र पर नारद द्वारा रचित एक ग्रंथ, क्षीलम् सांघातिक आचरण के पाँच नियम जिन का प्रचार बुद्ध ने किया था, -मुखम् उत्तराखण्ड, शुक्लपक्ष, दिन, हरिद्वासर और मित्र क्षेत्र का संयोग, सिद्धान्ती (स्त्री०) ज्योतिष के पाँच सिद्धान्त ।

पञ्चम (°०) [पञ्चन्+डट्+मट्] पाँचवाँ । सम० —आस्य: कोयल, -स्वरम् संगीत के स्वर का नाम ।

पञ्चिका (स्त्री०) रजिस्टर या अभिलेख पुस्तिका ।

पञ्चीकरणम् [पञ्च+च्वि+कृ+ल्युट्] पाँचों तत्त्वों का मेल जिससे फिर नाना प्रकार के पदार्थों का निर्माण होता है।

पट-डम् [पट्+क] कपड़ा, वस्त्र। सम० अञ्चलः वस्त्र की गाट, आंचल,—उत्तरीयम् चुन्नी, चादर, ओढ़ने का वस्त्र,—वासस् मर्जीना, करतास, झाझ, —वासकः सुगन्धित चूर्ण।

पटकः,—कम् [पट्+कलच्, स्वार्थे कन् च] 1 पर्दा, घूघट 2 फिटकरी।

पटलिका (स्त्री०) राशि, समुच्चय जैसा कि 'धूलिपटलिका' में।

पटहवेला [ष० त०] वह समय जब कि ढोल बजाया जाता है।

पटुकरण (वि०) [ब० स०] जिसके अंग स्वस्थ हैं —सन्देशार्थां क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीया —मेघ० ५।

पट्ट,—टृम् [पट्+क्त, डित्वादि] 1 (लिखने के लिए) तख्ती 2 राजकीय प्रशस्ति 3 रेशम। सम० अंशुक रेशमी वस्त्र, कन्या, बन्धनम् सिर पर पगड़ी बांधना, या मुकुट बांधना।

पट्टकिल [पट्ट+कन्+इलच्] एक भूस्वामी का किराये पर जोतने वाला, पट्टेदार।

पण [पण्+अप्] 1 पासे से खेलना, दांव लगाकर खेलना 2 दांव लगा कर, या शर्त बद कर खेलना 3 दांव पर लगाई हुई वस्तु 4 शर्त 5 पैसा। सम० अम्ल लाभ ग्रहण करना,- क्रिया 1 दांव पर रखना 2. सघर्ष करना, मुकाबला करना।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1 बेचने के योग्य, विक्रेय पदार्थ 2 व्यापार, वाणिज्य 3 मूल्य। सम० -अङ्गना व्यापारी,- वाही भाड़े की मेविका, वनिताओं रखैल स्त्री, वस्त्रा बर्तनों की दुकान।

पणफरम् (नपु०) जन्मकुंडली में लग्न से दूसरा, आठवां, पांचवां और ग्यारहवां स्थान।

पण्डिती (स्त्री) विदुषी, बुद्धिमती।

पण्ड,- क (पु०) हीजड़ा, नपुंसक।

पतङ्ग [पतन् गच्छतीति गम्+ड नि०] 1 घोड़ा 2 सूर्य 3 चिड़िया 4 पारा 5 टिड्डा। सम० ध्वज पक्षी का बच्चा।

पतङ्गिका [पतङ्ग+कन्+टाप्, इत्वम्] (स्त्री०) 1 धनुष की डोरी 2 छोटा पक्षी 3 मधुमक्षिका।

पतत्प्रकर्ष (वि०) 1 जो लक्ष्यगत न हो 2 काव्य सौन्दर्य से रहित।

पताकः [पत्+आक] झण्डा, निशान लगाने वाली लम्बी लम्बी अंगुलियों की विशेष मुद्रा।

पताका [पत्+आक+टाप्] प्रचार, प्रसार—रत्या इति प्राप्तवतीः पताका'—वि० ३।५३। सम० - हस्त लम्बयष्टिका, झंडे का डंडा।

पताकिन् (वि०) [पताका+इनि] सदाचारी, पुं० रथ।

पतितगर्भा (स्त्री०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका गर्भ-पात हो गया हो।

पतितवृत्त (वि०) [ब० स०] लम्पटता का जीवन बिताने वाला, अय्याश।

पत्काविन् (पु०) पदाति, पैदल सिपाही।

पत्त्यध्यक्षः [पत्ति+अध्यक्ष] पैदल सेना का दलनायक, ब्रिगेडियर, उपसेनापति।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1 पत्ता (वृक्ष का) 2 (फूल की) पत्ती 3 पंख, चिट्ठी 4 पक्षी का वायु 5 तलवार या चाकू का फल। सम० —तण्डुला स्त्री, महिला, —द्वारकः आरा, लकड़ी आदि चीरने का यन्त्र, —न्यास बाण में तीर लगाना,—विन्यासिका पत्तों की बनी टोपी।

पत्रल (वि०) [पत्र+लच्] पत्ता से समृद्ध।

पथिकः [पथिन्+कन्] मार्ग चलने वाला, यात्री। सम० -जनः एक यात्री, या यात्रियों का समूह।

पथिन् (पु०) [पथ् + इनि] 1 मार्ग 2 यात्रा 3 पन्थ सम० अक्षतम् मार्ग में खाने के लिए भोज्य पदार्थ।

पदम् [पद् + अच्] 1. पैर 2 पग 3 पदचिह्न 4. सिक्का अष्टापद पदस्थाने दक्षमहेव लक्ष्यते महा० १२। -९८।४०। सम०—कमलम् चरण कमल, पैर रूपी कमल, —व्यूहः शब्द समूह,- रचना 1 साहित्यिक कृति 2 शब्द विन्यास, सन्धिः शब्दों का श्रुति-मधुर मेल।

पदातिकल्प (वि०) अतिनम्र, अत्यन्त विनीत।

पदीकृ (तना० उभ०) बंधनमुक्त निकालना।

पद्मम् [पद् + मन्] 1 कमल 2 शरीर की विशेषस्थिति, पद्मासन लगा कर बैठना 3 इन्द्रजाल से सम्बद्ध आठ प्रकार के कोषों में से 'पद्मिनी' नायक कोष। सम० प्रिया 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 ब्रह्माजी की पत्नी सरस्वती देवी, बुद्धा तन्त्रशास्त्र का प्रतीक।

पद्मशः (अ०) [पद्म+शस्] अरबों की संख्या में।

पद्मिनीकण्टक (पु०) एक प्रकार का फोड़ा।

पद्याः (पु०) [पद्+रक्] राज मार्ग।

पद्यस्य (वि०) प्रशंसा के योग्य बात प्रकट करने वाला, यशस्वी।

पद्मी (पु०) [पद्म+ई, द्विरुक्त निपात] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा।

पयोरयः [ष० त०] नदी की धारा।

पर (वि०) [पृ+अप्, अच् वा] 1 दूसरा 2. दूर का 3 इसके बाद का 4. उच्चतर श्रेष्ठ 5. उच्चतम,

अमुख 6 विदेशी 7 प्रतिकूल 8 अन्तिम, -रः (पुं०) 1 दूसरा 2 शत्रु 3 सर्वोत्तमात्मा, रम् (नपुं०) 1 उच्चतम बिन्दु 2 परमात्मा 3 मोक्ष 4 शब्द का गौण अर्थ 5 भावी लोक, इससे परे की दुनिया। सम०—अक्षरम् (परावरम्) 1 उच्चतम पदार्थ 2 माया 3 दृढ़ भक्ति, 4 धार्मिक आश्रम,—अर्थ 1 मुक्ति-महा० १२।२८८।९ 2 दूसरों के लिए उपयोगी पदार्थ यथात्-परार्थत्वात् सां० का० १७,—अर्थ (वि०) दिव्य—असावाटीत् सम्यं परार्थयंश्चन्—ऋक्० १।६४,—अवसन्नदायिन् (वि०) दूसरे के घर खाने वाला, आश्रित (वि०) दूसरों के द्वारा पालित पोषित, दास,—उद्वृत्तः कोयल,—उपसर्पणम् दूसरों के निकट जाना,—काल (वि०) भावी समय से संबंध रखने वाला,—तर्कः भिखारी, भिक्षुक, तल्पगामिन् (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने वाला,—परिग्रह दूसरों की संपत्ति (जैसे कि 'पत्नी') श० ५, परिभव दूसरों से अपमान या तिरस्कार प्राप्त करना, पाकनिवृत्त (वि०) जो दूसरों के यहां भोजन नहीं करता, पाकरत (वि०) जो अपने पालन पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर करता है—पाकरुचि दूसरों के घर पके भोजन की चाह करना।

परथा (अ०) [पर+थाल्] अन्यथा, वरना श्रीभ० ५।५।

परम (वि०) [पर परस्त्र मात्रि-क] 1 अन्तिम दूर का, अन्तिम 2 उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3 मुख्य, प्रमुख, प्रधान, -मम् (अ०) 1 अच्छा, बहुत अच्छा, हां 2 अत्यन्त। सम० अक्षरम् पुनीत प्रणव 'ॐ',—आयुधम् चक्र नामक शस्त्र शा० ६।५८।१२, —ओजस् अत्यन्तबल धारण,—गहन (वि०) अत्यन्त रहस्ययुक्त,—पुरुष परमात्मा, परमपुरुष, -भक्त (वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ राजः सर्वोपरि राजा,—सम्मत (वि०) अत्यन्त सफल, -सम्मत (वि०) परमादरणीय, अत्यन्त माननीय।

परम्परप्राप्त (वि०) [त० स०] परम्परा प्राप्त, क्रमानुसार प्राप्त।

परम्परसम्बन्ध (पुं०) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध।

परम्परित (वि०) [परम्परा इतच्] शृंखला के रूप में, श्रेणीबद्ध।

परम्परमुद्रा (स्त्री०) [त० स०] तन्त्रशास्त्र में वर्णित अंगस्थिति।

परम्परविरुद्धालङ्कार (वि०) काव्य में एक दूसरे का विरोध करने वाला।

परम्परव्याकृतिः (स्त्री०) आपसी तिरस्करण, पारस्परिक बहिष्करण।

परराज् दे० 'पराज्'।

पराङ्मुख (वि०) [परा+मुख्+क्त] तिरस्कृत, अप्रतिष्ठित, निरादृत।

परावक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्+क्त] उपेक्षापूर्वक, बलात् दूर किया गया।

परायः [परा+गम्+ड] युद्धोचित वर्म, युद्धरथ।

पराच् (वि०) [परा+अञ्च्+क्विप्] अनावृत, पीछे दोहराया न गया हो अनभ्यासे पराक् शब्दस्य तादर्थ्यात् मं० म० १०।५।४५ पर ना० भा०। सम० -दृश् (वि०) बहिर्मुखी, जिसने अपनी आंख बाहरी संसार की ओर लगाई हुई है।

परावीन (वि०) [पराच्+अ] 1 अनावृत 2 बाहरी।

परावृतम् [परा+वृ+स्यूट्] पीछे की ओर उलटा परावृत्तानि परावृतम्—महा० ८।४।१२७।

परावत्सः (पुं०) [परा+सृ+अप्] 1० वर्ष के अनन्तर एक में चालीसवां वर्ष।

परावसित (वि०) [परा+सिच्+क्त] फेंका हुआ, दूर डाला हुआ।

परावेदः (पुं०) बन्दी बनाना, कारागार में डालना।

परिवसित (वि०) [परि+वस्+क्त+स्यूट्] विभक्त, बँटा हुआ।

परिवाह [परि+वह्+घञ्] नदी के प्रवाह का अनुसरण करना। सम०—सह नदी।

परिवाहिका (स्त्री०) [प्रा० स०] व्यायाम करना।

परिवृत (वि०) [परि+वृञ्+क्त] वांछित, आहूत।

परिवृत्त् (चुरा० पर०) दुरा भला कहना - प्रजयाध्यात्मिमानाच्च परिवित्तेप रावणम्—रा० २।३०।२।

परिवाह (वि०) [परि+वह्+क्त] बहुत अधिक, अ-मूल्य।

परिवृत्तित (वि०) [परि+वृत्+क्त] 1. छोड़ कर या भला करके परिवर्तित 2 पुनरक्त, पुनरावृत्त।

परिवह [परि+वह्+अच्] 1 शरीर 2 प्रजाजन। सम०—पतियों की बड़ी संख्या—परिवहबहुत्वेपि हे प्रतिष्ठे—श० ३।

परिवाहित (वि०) [परि+वह्+णिच्+क्त] नजाता तथा शिष्टता पूर्वक सम्बोधित किये जाने के योग्य।

परिवज्र (वि०) [क० स०] लोहे की भांति भारी।

परिवस्तम्भः (पुं०) चौखट, दरवाजे की बाजू।

परिवा (जुहो० पर०) सर्वत्र घूमना करना।

परिवारसम्बन्ध (नपुं०) शादी के अनुष्ठान की विशेष रीति।

परिवारिक [परि+वर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] सेविका दासी, सेवा करने वाली नौकरानी।

परिष्वारितम् [परि+वर्+णिच्+क्त] आमोद, प्रमोद।

परिष्वलनम् [परि+श्वल्+ल्युट्] 1 पतित होना, गिर जाना 2 विचलित होना, भटकना।

परिष्वीर्ण (वि०) [परि+ज्+क्त] 1 घिसा हुआ, मुरझाया हुआ 2 पचाया हुआ।

परिणाम [परि+नम्+घञ्] 1 परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पचाना 3 फल 4 पकना, पूर्णत विकसित होना 5 अन्त, समाप्ति 6 बुढ़ापा। सम० जन्य अपच के कारण उत्पन्न उदर पीड़ा,—शूल (वि०) लक्षणों समाप्त होने को,—वाद विकासवाद का सांख्य सिद्धान्त।

परिणीतिः (स्त्री०) [परि+नी+क्तिन्] विवाह।

परिणेतव्य (वि०) [परि+नी+तव्यत्] 1 जिसका अभी विवाह होना है 2 जिसका विनिमय होना है।

परितापिन् (वि०) [परिताप+णिनि] तङ्ग करने वाला, उत्पीड़क, कष्ट देने वाला।

परितृप्ति [परि+तृप्+क्तिन्] पूर्ण सन्तोष।

परितृप्त (वि०) [परि+तृप्+क्त] लालायित, उत्सुक, आतुरतापूर्वक प्रबल इच्छा रखने वाला।

परित्यज् (भ्वा० पर०) किसी से उतरना।

परित्याज्य (वि०) [परि+त्यज्+णिच्+यत्] भुलाये जाने योग्य, त्याग दिए जाने के योग्य।

परिदिष्ट (वि०) [परि+दिश्+क्त] अनलाया गया, ध्यान दिलाया गया।

परिधिः [परि+धा+कि] 1 दीवार बाड़ 2 चन्द्र या सूर्य के चारों ओर घूमने आभास 3 क्षितिज दिशा। सम०—उदान्त (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है।

परिधारणा (स्त्री०) संयम, धैर्य।

परिधीर (वि०) [प्रा० स०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या शब्द)।

परिध्वंस [परि+ध्वंस+घञ्] 1 नष्ट करना 2 ग्रहण।

परिनिष्ठित (वि०) [परि+नि+स्था+क्त] 1 नितान्त पूर्ण 2 सम्पन्न परिनिष्ठितकार्यो हि महा० १२। २३८।१३।

परिपिच्छनम् (नपु०) मार का पक्ष, कन्धा, कन्धे को मजावट की दृष्टि से लगाना—गुच्छावसक्तपरिपिच्छनसम्मुखाय—भाग० १०।१४।१।

परिपृच्छिक (वि०) [परिपृच्छा+ठक्] जिसे कोई वस्तु माँगने पर ही मिलती है।

परिप्लवः [परिप्लु+घञ्] आन्तरिक वर्षा।

परिबर्हः [परिवृ(व) ह्+घञ्] सजावट का सामान, घर आदि सजाने की वस्तुएँ—भाग० ४।३।९।

परिबीढ [परिवृध्+क्त] तर्क, युक्ति, कारण।

परिभाव्यम् [परिभू+ण+अण्] गुरुत्व की आवश्यकता।

परिभू (भ्वा० पर०) 1 आगे बढ़ जाना 2 सुखा देना, सन्तृप्त करना एवमेकेन्द्रियग्रामं शनैः सपरिभावयेत्—महा० १२।१९५।१९।

परिभक्षणिकागम् [ष० त०] घृणा का पदार्थ, घृणा का पात्र।

परिभाषणा [परिभू+णिच्+युच्+टाप्] 1 घृणा 2 (नाटक०) जिज्ञासा का जगाने वाला शब्द।

परिभूत (वि०) [परि भू+क्त] 1 पराजित, हराया हुआ 2 अपमानित।

परिभृष्ट (वि०) [परि+भ्रस्ज्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ।

परिमण्डित (वि०) [परि+मण्ड्+क्त] अलङ्कृत, सुभूषित, सजाया हुआ।

परिमितवयस् (वि०) [ब० स०] बाल्य अवस्था का, छोटा, थोड़ी उम्र का।

परिमाटनम् [परिमट्+ल्युट्] घटकाना, फाड़ना, तोड़ना।

परिमन्थना [परि+मन्थ्+युच्+टाप्] प्रतिबन्ध, रोक।

परिरब्ध (वि०) [परि+रभ्+क्त] आलिङ्गित।

परिलङ्घनम् (नपु०) [परि+लङ्घ्+ल्युट्] 1 ऊपर से फाँदना 2 अतिक्रमण करना।

परिलीढ (वि०) [परि+लिह्+क्त] चारों ओर से चाटा हुआ।

परिलोलित (वि०) [परिलुल्+णिच्+क्त] उछाला हुआ।

परिवत्स (पु०) बछड़ा, गाय का बच्चा।

परि (री) वादकथा [ष० त०] निन्दनीय बात चीत, बदनामी की बातें।

परि (री) वादकर (पु०) [अपवाद, मिथ्यानिन्दा, कलंक।

परिवर्जित (वि०) [परि, वृज्+णिच्+क्त] लपटा हुआ, कुण्डलित किया हुआ, लच्छा बनाया हुआ। सम० लक्ष्य (वि०) असंलक्ष्य, अनभिनत।

परिविंशत् (वि०) पूरे बीस कम से कम बीस।

परिविष्ट (वि०) [परि+विश्+क्त] 1 घेरा हुआ 2 वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए 3 उपहृत (जैसे कि भोजन)।

परि (री) वृत्ति [परिवृत्+क्तिन्] अव्यवस्था, व्यतिक्रम।

परिवर्तित (वि०) [परिवृत्+क्त] 1. एक ओर किया हुआ, हटाया हुआ 2 पूरी तरह खोद किया गया।

परिवृक्ण (वि०) [परि+वृश्च्+क्त] विकृति, कटा-छटा, अङ्गित।

परिवे (भ्वा० उभ०) 1 अन्तर्ग्रथित करना, ओढ़ना 2 ढकना।

परिवेष्टित (वि०) [परिवेष्ट्+क्त] घिरा हुआ —मालवि० २।१८ ।

परिशङ्का [परिशङ्क्+अ+टाप्] 1 संशय, आशंका 2 आशा, प्रत्याशा ।

परिशङ्कित (वि०) [परिशङ्क्+क्त] सन्देहित, शंकित ।

परिशुश्रूषा [परिक्षु+सन्+टाप्, द्वित्वम] बिना विचार आज्ञापालन ।

परिस्पन्द (भ्वा० आ०) ग्रः [परिस्पन्द्+घञ्] शौर्य, पराक्रम ।

परिसंख्या (अदा० आ०) 1 पृथक् करना, निकाल देना मै० स० १।१।६१ पर शा० भा० 2 गिनना ।

परिसामन् (नपुं०) साममूलक जिसकी बिरल आवृत्ति होती है ।

परिसरः [परि+सृ+घ] शिरा, धमनी, वाहिनी ।

परिस्कन्दः [परि+स्कन्द्+घञ्] संग्रह, समुच्चय ।

परिस्तोम [परि+स्तोम्+अच्] 1 रंगीन कपड़ा जो हाथी पर डाला जाता है 2 यज्ञपात्र ।

परिस्रुत (वि०) [परि+स्रु+क्त] बहा हुआ, बूंद-बूंद करके टपका हुआ ।

परिहूत (वि०) [परि+ह्वे+क्त] आमन्त्रित, बुलाया हुआ ।

परिहृ (भ्वा० पर०) 1 निराकरण करना 2. आवृत्ति करना 3 पोषण करना ।

परिहारः [परि+हृ+घञ्] 1 त्यागना, छोड़ना 2. हटाना, दूर करना 3 निराकरण करना 4 टालना 5 शुल्क से मुक्ति । समः विशुद्धि (स्त्री०) तपश्चरण द्वारा पवित्रीकरण (जैन०),—भू वह गाय जो बहुत अधिक दिनों के पश्चात् बछड़ा सूती है ।

परीष्ट (वि०) [परि+इष्+क्त] वाञ्छनीय, उत्तम, बढ़िया—अन्ते परीष्टगतये हृषीके नमस्ते भाग० ६।९।४५ ।

परुषालापः [क० स०] कटोर शब्दों में व्यक्त किया गया आलेप, ऐतराज़ ।

परेतकल्पः (पु०) मृतप्राय, मरे हुए के समान ।

परेतकालः (पु०) मृत्यु का समय ।

परोक्षजित् (वि०) [परोक्ष+जि+क्विप्] जो विजय प्राप्त करता हुआ किसी से देखा नहीं जाता है, अदृष्ट-विजयी ।

परोक्षबुद्धि (वि०) [ब० स०] तटस्थ, उदासीन ।

पर्णकालः (पु०) पत्ते के रूप में डाक ।

पर्णकि [पर्ण+आलच्] 1 किश्ती 2 एकाकी संघर्ष ।

पर्णकीवलः [ष० स०] पर्णटिभिश्रित चावल ।

पर्णकुटक (वि०) [त० स०] वीरासन पर विराजमान ।

पर्णकुटिस्थित (वि०) [त० स०] मोढ़ा पर विद्यमान ।

पर्णघः [परि+हन्+अच्] हानि, नाश—स्कन्धपर्वसु —महा० १२।१५।२६ ।

पर्णवस्थित (वि०) [परि+अव+स्था+क्त] 1 पड़ाव डाला हुआ 2. अधिकृत 3. स्वस्थ, शान्त ।

पर्यवसानम् [परि+आ+सो+ल्युट्] अन्त, समाप्ति ।

पर्याप्तकाम (वि०) [ब० स०] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हों ।

पर्यापतत (वि०) [परि+आ+पत्+शतृ] शीघ्रता करता हुआ, तेजी के साथ दौड़ता हुआ ।

पर्यभ्यात (वि०) [परि+आ+म्या+क्त] विख्यात, प्रसिद्ध ।

पर्यय [परि+इ+घञ्] 1. अन्त—पर्ययकाले धर्मस्य प्रायो कलिरजायत - महा० ५।७४।१२ 2. एक अलंकार का नाम काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, सा० द० ७३३ । समः क्रमः परम्परा का सिलसिला ।

पर्यायत (वि०) [परि+आ+यम्+क्त] अत्यन्त लम्बा ।

पर्यायित (वि०) [परि+अय्+णिच्+क्त] रद्दी किया गया, नष्ट किया गया परैरपर्यायितबीर्यगर्वान् —कि० १।४१ ।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] 'नञ्' के प्रयोग द्वारा निषेधार्थककृति —(अब्राह्मणम् आनय) —दे० मै० स० १०।८।१-४ पर शा० भा० ।

पर्युपासीन (वि०) [परि+उप+आस्+शानच्, ईत्वम्] 1 बैठा हुआ 2 घिरा हुआ ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+णिच्+क्त] जिसके ऊपर से रात बीत गई हो, बासी, जो ताज़ा न हो (जैसे रात का रक्खा भोजन) । समः वाक्यम् वह वचन जिसका पालन न किया गया हो, टूटी हुई प्रतिज्ञा ।

पर्युष्ट (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी ।

पर्वत [पर्व+अतच्] 1 पहाड़ 2 एक ऋषि का नाम । समः उपत्यका पहाड़ की तलहटी में स्थित समतल भूमि,- रोधस् (नपुं०) पहाड़ी ढलान ।

पर्वन् (नपुं०) [पॄ+अनिप्] 1. गाँठ, जोड़ 2 पोरी, अंश 3 अंग 4 अनुभाग । समः—आस्फोट. अँगुलियाँ चटखाना (अभिशाप का चिह्न समझा जाता है), क्षपा चन्द्रमा ।

पलः [पल्+अच्] मूसी, छिलका, - कम् 1. मांस 2 ४ कर्ष का बट्टा 3. समय की माप 4 एक छोटी तौल । समः—अशन् मांस से मिले चावल ।

पलालः [पल्+आलच्] भूसी, तुष, तिनके । समः - भारकः तिनकों का बोझ, भूसी का भार ।

पलिः (स्त्री०) [पल्+इञ्] हाथी के मस्तक से ठीक ऊपर का भाग ।

पलित (वि०) [पल्+क्त] बूढ़ा, जिसके बाल पक गये हों, जिसके सिर के बाल सफ़ेद हो गये हों,—कम् 1 सफ़ेद बाल 2. सिर बाल । समः—अञ्जन् सफ़ेद

वालों का उड़ जाना—यौवनेषु सङ्क्रमेषाहु पलितछद्मना जरा—रघु० १२।२, **दर्शनम्** सफेद बालों का दिखाई देना।

पलयशत (पु०) बिच्छू।

पलल [पल्+क्विप्, ल+अप्, पल् चासौ ललश्च, क० स०] 1 अङ्कुर, 2 कली 3 विस्तार 4 शक्ति 5 घास की पत्ती 6 कङ्कण 7 वस्त्र का किनारा 8 प्रेम 9 कामकेलि 10 कहानी, कथा।

पललनम् [पल्+क्विप्, ल+ल्युट्, पल् चासौ ललनञ्च, क० स०] निरर्थक बकवास।

पवनम् [पू+ल्युट्] 1 पवित्र करना 2 छिड़कना 3 छलनी 4. पानी 5 कुम्हार का आँवा। सम० -**चक्रम्** बवंडर, भंवरा -पहली आकाश का प्रदेश।

पवमानसखा [ब० स०] अग्नि।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1 पावन, निष्पाप 2 मन को शुद्ध करने का साधन 3 सोमरस को छानने का वस्त्र, छलनी या पात्र।

पवित्रीकरणम् [पवित्र च्वि+कृ+ल्युट्] 1 पवित्र करना 2 पवित्र करने का साधन।

पश्य (अ०) [दृश्+कु, पशादेश] देखो! कितना अच्छा!, -शु (पु०) पालतू जानवर, मवेशी। सम० -**एकरूपन्याय** मीमांसा का नियम जिसके आधार पर बाकी का मुख्यार्थ क्रिया के द्वारा संयुक्त होकर अतिरिक्त वचन का अभिप्रेरण करता है, मैं० स० ४।१।१२।१६ पर शा० भा०, -**मिथ्या सिद्धान्त**, -**सामान्यम्** प्राणिजगत् के नामों का संग्रह।

पश्चाद्वह (अ०) [पश्चात्+अह, दीर्घश्च पदम्] पीछे।

पश्चात्बुद्धि (स्त्री०) [पश्चात्+बुद्धि] आत्मनि, दार्शनिक।

पश्चिमोत्तर (वि०) [ब० स०] उत्तर-पश्चिमी।

पश्चिमसन्ध्या (स्त्री०) सायंकालीन प्रार्थना।

पश्य (वि०) [दृश्+अच् पशादेश] जो केवल देखता रहता है, दर्शी पश्यामिव पुत्रम् -मैं० १६।१२२।

पश्यन्ती (स्त्री०) देवियों में से एक। महा० १३।१३।१३।

पानीय (वि०) [पा+अनीयर्] 1 पीने के योग्य, पेय 2 जल जिसे जाने के योग्य।

पायु [पा+कु दीर्घश्च] वर्ण वर्ण। सम०—**कोशनम्** रस से भरना, **पुष्टिक** (वि०) घास से भरा हुआ, **लवणम्** एक प्रकार का नमक।

पायक (वि०) [पा—णिच्+ण्वुल्] भ्रष्ट करने वाला, बिगाड़ने वाला।

पायस (पु०) बिल्लाग।

पार [पृ+घञ्] साथ, सूजन। सम० -**क्रिया** पक्षान को क्रिया।

पार्श्वास्थम् (नपु०) 1 जानवर का पेट 2 पार्श्व भाग।

पाञ्चरात्रम् (नपु०) 1 एक वैष्णव सम्प्रदाय तथा उसके सिद्धान्त, भक्तिमार्ग 2 पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के शास्त्र, आगम।

पाञ्चालेय [पाञ्चाली+ढक्] पाञ्चाली का पुत्र।

पाटलकीट (पु०) एक प्रकार का कीड़ा।

पाट्ययकर [पाटी+उपकर] मुख्य लेखाधिकारी।

पाठक्रम (पु०) [ब० त०] मूलपाठ के अनुक्रम के अनुसार निर्धारित पाठ।

पाठभेद [स० त०] मूलपाठ के रूपान्तर, अवान्तर पाठ।

पाठ्यपुस्तकम् (नपु०) किसी श्रेणी के लिए निर्धारित पुस्तक।

पाणि [पण्+इण्, आयाभाव] हाथ। सम०—**कच्छपिका** (स्त्री०) एक प्रकार की मुद्रा, -**गत** (वि०) निकट ही, -**दाक्षम्** हाथ की सफाई,—**वाद्य** 1 तालियाँ बजाना 2 ढोल बजाना 3 केरल प्रदेश के ढोलकियों का समुदाय।

पाण्डवश्रेष्ठ [ब० स०] कृष्ण का विशेषण।

पाण्डिमन् (पु०) [पाण्डु+इमनिच्] सफेदी।

पाण्डुलोहम् (नपु०) चाँदी।

पात [पत्+घञ्] (मल्हम, चाकू आदि का) प्रयोग।

पातालमूलम् (नपु०) पाताल लोक की निम्न सतह।

पात्र (वि०) [पातात् त्रायते इति] पापों से छुटकारा दिलाने वाला सर्वपापभेद पात्रत्राणां पापपात्र महेश्वर—ना० पा०।

पात्रम् [पा+ष्ट्रन्] 1 प्याला, कटोरा 2 बर्तन 3 आश्रय 4 योग्य व्यक्ति 5 नाटक में अभिनेता 6 राजा का मन्त्री 7 दरिया का पाट 8 योग्यता औचित्य। सम० **उपकरणम्** अलङ्करण के बर्तन, सजावट के पात्र जैसे चौरी आदि,—**प्रवेशः** (नाट० में) रङ्गमंच पर अभिनेता का आगमन, **भेदनम्** भिन्न-भिन्न प्रकार का अभिनय करने के लिए अभिनेताओं का एकत्रीकरण,—**शोधनम्** किसी उपहार को ग्रहण करने के योग्य व्यक्ति की योग्यता की परीक्षा करना,—**संस्कार** किसी पात्र या बर्तन को पवित्र करना।

पात्रकरणम् (नपु०) विवाह समय पाणीकरणेऽग्नि-साक्षिक मैं० ६।१।८।

पाद [पद्+घञ्] मशक की नली में छिद्र—तेनास्य धरति प्रज्ञां दृतेः पादादिवोदकम्—मनु० २।१९। सम० -**कृच्छ्रम्** एक प्रकार का व्रत जिसमें हर तीसरे दिन उपवास रखना पड़ता है, **निकेतः** पादपीठ, मूंढा, स्टूल,—**पद्धति** (स्त्री०) पदचिह्न, **परिचारकः** चरण सेवक, विनीत सेवक, **पदातिः** पैदल सिपाही, **स्थम्** पैर में चिपका हुआ,

संहिता कविता के चरणों का जोड़, होलाक्षतम् वह पानी जिसका कुछ अंश उबाला हुआ हो।
पाद्याकुलकम् (नपु०) एक छन्द का नाम।
पानीयपुष्पजा (स्त्री०) माधा नाम का घास जो पानी के किनारे उगता है।
पान्थदुर्गा (स्त्री०) [ष० त०] मार्गव्यापिनी देवी आलिङ्गय नीत्वाकृत पान्थ दुर्गाम् नै० २४।३७।
पाप (वि०) [पा+प] 1 बुरा, दुष्ट 2 अभिशप्त, विनाशकारी, शरारत से भरा हुआ 3 नीच, अधम। सम० अक्ष (वि०) नीच कुल में उत्पन्न, विनिग्रह दुष्टता को रोकना,—शमन (वि०) पाप कर्म को रोकने वाला।
पायसपिण्डारक (पु०) खीर खाने वाला।
पायित्नम् (नपु०) उदकदान, उपहार में दिया गया जल।
पारः [पृ-घञ्] 1 नदी का दूसरा किनारा 2 पार कर लेना 3 सम्पन्न करना 4 पारा 5 अन्त किनारा 6 परलोक तस्माद् भयाद् येन स नोऽस्तु पार - भाग० ६।९ २४२ अन्त महिम्न पार ते —म० स्त०। सम०—नेतृ (वि०) जो किसी व्यक्ति को किसी कार्य में दक्ष बना देता है।
पारतल्पिकम् [परतल्प+ठक्] व्यभिचार।
पारमार्थिकसत्ता (स्त्री०) परम सत्य का अस्तित्व।
पारमिता [पारम् इव प्राप्त - पारमिन - अनुक० स० स्त्रियां टाप्] सम्पूर्ण निष्पत्ति, पूर्णता।
पारमेश्वर (वि०) [परमेश्वर+अण्] परमेश्वर से सम्बद्ध।
पारम्पर्यक्रम [परम्परा+ष्यञ्] परम्परा-प्राप्त अनुक्रम।
पारषदम् (नपु०) सदस्यता, किसी सभा का सदस्य बनना। भाग० १।१६।१७।
पारस्करी (स्त्री०) सरस्वती नदी।
पारिणामिक (वि०) [परिणाम+ठक्] 1 पचने के योग्य, जो हजम हो सके 2 जिसमें विकार हो सके, परिवर्त्य।
पारिपन्थिक [परिपन्था+ठक्] चलती सड़क पर लूटने वाला, डाकू।
पारिप्लवदृष्टि (वि०) [ब० स०] चंचल आंखों वाला।
पारिप्लवमति (वि०) [ब० स०] चंचल मन वाला।
पारुषिक (वि०) [परुष+ठक्] कठोर, दारुण।
पार्यवसानिक (वि०) [पर्यवसान+ठक्] समाप्ति के निकट आने वाला।
पार्श्व (पु०) [पर्शु+अण्] 1 एक ऋषि, जैनियों के २३ वें तीर्थंकर का विशेषण 2 पार्श्वभाग। सम०—अवनत (वि०) एक ओर को झुका हुआ (हीरे का एक दोष), आत्तिः शरीर के पार्श्वभाग में पीड़ा, उपवीतम् (अ०) (इतना हंसना कि जिससे) पार्श्वभाग दुखने लगे,—कक्षः शिव का एक विशेषण।
पार्श्वांविग्रहः [ष० त०] सेना के विन्यास और आकार करना।
पालनम् [पाल+ल्युट्] (शस्त्रों को शाण पर रख कर तीक्ष्ण-तेज करना।
पालाशविधि [पलाश+अण् तस्य विधि] डाक लकड़ियों से मृतक का दाह संस्कार करना।
पालिध्वज (पु०) एक प्रकार का हथियार।
पाल्लविक (वि०) [पल्लव+ठक्] बिखरा हुआ, शिथिल, ढीला, विशृंखल।
पावकमणि (पु०) [ष० त०] सूर्यकान्त मणि।
पावकशिख (वि०) [ब० स०] आतशी, अग्निशिख, केसर।
पावकार्चि (स्त्री०) [ष० त०] अग्नि की ज्वाला।
पावित (वि०) [पू+णिच् क्त] पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
पाव्य (वि०) [पू+णिच्+ण्यत्] पवित्र किये जाने योग्य।
पाशिन् (पु०) [पाश+इनि] रस्सी, बेड़ी पाशीकर मायतामाचकर्ष शि० १८।५७।
पाशुपतव्रतम् (नपु०) पाशुपत सिद्धान्तों के लिए किया गया उपवास, व्रत।
पिककूजनम् (ष० त०) कोयल की कूक।
पिङ्गकूल (ब० स०) गाजर।
पिङ्गालम् (नपु०) गाजर।
पिङ्गाक्षाख्य (पु०) चिरौंजी वृक्ष।
पिङ्गाक्षिकम् (नपु०) एक प्रकार का संगीत-उपकरण।
पिटङ्काश (पु०) एक प्रकार की छोटी मछली।
पिठरपाक (पु०) कार्यकारण का मेल।
पिठरी (स्त्री०) कड़ाही, जिसमें कुछ उबाला जाय।
पिण्ड (वि०) [पिण्ड+अच्] 1 ठोस 2 सटा हुआ सघन। सम० अक्षर (वि०) संयुक्त व्यञ्जनों युक्त शब्द, निर्वृत्ति सपिण्ड बन्धुता की समाप्ति पितृयज्ञ- अमावस्या का मध्याह्नसमय पितरों के प्रा आहुति देना विधम (पु०) अपहरण की रीति गमन का तरीका कौ० अ० २।८।२६।
पितृदयिः (पु०) भाजन-प्रदाता (सोम का विशेषण)।
पितृत्रयम् [ष० त०] पिता, पितामह तथा प्रपितामह
पितृवासरपर्वन् (नपु०) पितरों की पूजा का शुभ समय
पित्तम् [अपि+दो+क्त, अपे अकारलोपः] एक तर पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है सम०—कर (वि०) पित्त प्रकृति का व्यक्ति,- ज्वर (स्त्री०) शरीर में पित्तप्रकोप।
पिधानीय (वि०) [अपि+धा+अनीयर्, अपेः अकारलोप बन्द किए जाने के योग्य।
पिन्वा (अ०) पहन कर।
पिप्पलः (पु०) हींग।

पिप्पलः (पु०) 1. पिप्पल नाम का वृक्ष 2 कर्मजन्य फल, कर्म का फल--मुण्ड० ३।१।१। सम०--अद 1 एक मुनि का नाम 'पिप्पलाद' 2 पिप्पल के बन्दरों खाने वाला 3 विषयवासना में लिप्त।

पिब (वि०) [पा+अप् पिबादेश] पीने वाला नक्षत्रायपिबापि दृष्टि--नै० ६।३४।

पिशितम् [पिश्+क्त] 1. मांस 2 अल्पांश। सम० पिण्ड 1 मांस का टुकड़ा 2 तिरस्कारसूचक शब्द जो शरीर को इंगित करे, अरोह मांस का उभार, स्तनौली।

पिशुनित (वि०) [पिशुन+इतच्] प्रकट किया गया, प्रदर्शित।

पिष्ट (वि०) [पिष्+क्त] 1 पीसा हुआ 2 गूंदा हुआ। सम० अन्न (वि०) आटा खाने वाला,--शाक पकाया हुआ आटा (रोटी, पूरी आदि)।

पिष्टात [पिष्ट+अत् अण्] सुगन्धित चूर्ण, अबीर जो होली के अवसर पर एक दूसरे पर छिड़क दिया जाता है।

पिप्सु (वि०) [पा+सन्+उ] 1 पीने की इच्छा वाला 2 आचमन करने का इच्छुक।

पीठाधिकार (पु०) [ष० त०] किसी पद पर नियुक्ति।

पीड् (चुरा० उभ०) शब्द करना। प्रतिसमधिकमुच्चै पञ्चम पीडयन्त शि० १४।१

पीडास्थानम् [ष० त०] (फ० रेडी० पै) ग्रह की किसी अशुभ स्थान पर स्थिति।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1 पीया हुआ 2 भिगोया हुआ 3 आप्लावित 4 छिड़का हुआ। सम० --उदका वह गाय जो पानी पी चुकी है पीतोदका अवधूता कठ०--सिक्त (वि०) तेल में डूबा हुआ, बासक एक प्रकार का सांप,--स्कोट सुअली।

पीयूषभानु (अमर) (पु०) [ष० स०] चन्द्रमा।

पुंस् (पु०) [पा डुमसुन्] 1 जीवित प्राणी 2 एक प्रकार का नरक--आरण्यमग्नि तं पुंसवाणात् महा० १४।९०।६३। सम० लक्षणम् मानवीरूप, मानवी मूर्त।

पुंगवक (पु०) द्वितीय वर्ष में चल रहा हाथी मनु० ५।३।

पुञ्जिकस्थला (स्त्री०) एक स्वर्गीय अप्सरा का नाम।

पुट [पुट्+क] 1 गड्ढा 2 अंजलि 3 दोना। सम०--अञ्जलि दोनों हथेलियों को मिला कर प्याले की भांति बना लेना,--भेदु बछड़े वाली गौ जिसका अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है।

पुटनम् [पुट्+ल्युट्] आच्छादित करना, ढकना।

पुण्डरीकम् [पुण्ड्+ईकन्, रक् नि०] एक बड़े का नाम।

पुण्य (वि०) [पू+यत् धुगागम, ह्रस्व] 1. पवित्र, पुनीत 2 अच्छा गुणयुक्त 3 मंगलमय, शुभ 4 सुन्दर, मनोज्ञ, रोचक 5 मधुर--ण्यम् (नपु०) 1 जन्मलग्न से सातवां घर 2 मेष, कर्क, तुला और मकर का संयोग। सम०--निबह (वि०) गुणयुक्त, गुणी, आला धर्मार्थ भवन, दान-घर, संचय धार्मिक गुणों का संग्रह।

पुत्रजवरः [स० त०] ज्येष्ठ पुत्र।

पुत्रसू (स्त्री०) [ष० त०] पुत्र की मां।

पोथित (वि०) [पुथ्+णिच्+क्त] आघात पहुंचाया हुआ, मारा हुआ, नष्ट किया हुआ।

पुनर् (अ०) [पत्+अर्, उत्वम्] फिर, दोबारा, नये सिर से। सम० अवाय वापसी लौटना कि वा मनोऽन्य पुनरन्वयमन्यलोकम्--भाग० ६।१४।५७ आगम दोबारा चले आना, उत्पादनम् फिर उपजाना, पैदा करना, क्रिया आहुति करना, दाहराना,--नवा एक प्रकार का शाक जिसकी पत्तियां गाल लाल रंग की होती हैं।--स्नानम् दोबारा नहाना।

पुनीषा [पू+स+अ धातोरित्वम्] पवित्र करने की इच्छा।

पुरन्ध्री (स्त्री०) [ष० त०] नगरवेश्या।

पुरन्ध्रिका (स्त्री०) [पुर्+ध्+रक्, स्वार्थे कन्] पत्नी।

पुरस्कार [पुरस्+कृ+घञ्] 1 प्रस्तुत करना, परिचय देना 2 अपने आपको प्रकट करना कर्मणेतुपुरस्कार भूतेषु परिवर्तते महा० १२।१९।१९।

पुरस्कृत्य (अ०) [पुरस्+कृ+ल्यप्] कृते, के विषय में उल्लेख करके, के कारण।

पुरोभक्तिका (स्त्री०) प्रातराश, नाश्ता।

पुराण (वि०) [पुरा भवम्--नि०] 1 पुराना 2 बूढ़ा 3 घिसा पिटा,--णम् 1 बीती हुई घटना 2 विख्यात धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं, तथा व्यास द्वारा रचित माने जाते हैं। सम०--अक्षरम् दूसरा पुराण। प्रोक्त (वि०) 1 पुराणों में कहा हुआ 2 प्राचीनों द्वारा बतलाया हुआ, विद्या, वेदः पुराणों का ज्ञान, पुराणों में वर्णित पाण्डित्य।

पुराणाद (वेद०) अनेकों का विजेता, बहुतों को हरानेवाला।

पुरीषभेदः [पृ+ईषन् किच्च, +भिद्+घञ्] अतिसार, दस्त लगना, संग्रहणी।

पुरुकृत्, पुरुकृत्वन् } (वि०) अचूक, प्रभावशाली।

पुरुषः [पुरि शेते शी+ड पृषो०] 1 नर, मनुष्य (विप० स्त्री) 2 आत्मा। सम० कारिन् (वि०) अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,--कीलकः एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रयोग चोर सेंध लगाने में करते हैं,--सारः श्रेष्ठतम नर।

पुल्कः [पुल्+क्वुल्] गुच्छा, झुंड।
पुल्लिंदः (पु०) शिकारी, (ब० व०) एक जंगली जाति।
पुल्कसः (पु०) एक मिश्रित जाति का नाम भाग० ९।२१।१०।
पुष्ट (वि०) [पुष्+क्त] 1 पाला पोसा 2 फलता फूलता 3 समृद्ध 4 पूर्ण। सम०- **अङ्ग** (वि०) मोटे अंगों वाला, जिसमें अच्छे पदार्थ भोजन में मिलते रहे हैं **अर्थ** (वि०) जो अर्थ की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो।
पुष्टिः [पुष्+क्तिन्] बहुत से अनुष्ठानों के नाम जो कल्याण की दृष्टि से किये जाते हैं, पुष्टिकर्म। सम० **मार्ग** वल्लभाचार्य द्वारा माने गये सिद्धान्तों का समुच्चय।
पुष्करम् [पुष्क पुष्टि रातिं-रा क] 1 नीला कमल 2 हाथी के सूंड का किनारा भाग० २।२। सम० - **विष्टरः** ब्रह्मा, परमेश्वर, **विष्टरा** लक्ष्मी देवी —पुष्टि कुरुष्व मम पुष्करविष्टरायां कनक०।
पुष्पम् [पुष्प्+अच्] 1 फूल 2. पुष्परागमणि 3 कुबेर का रथ। सम० **अस्त्र** फूलों का शहद, **आस्तरकः**, —**आस्तरणम्** फूलों से सजावट करने की कला, **वल्ली** कपाटिका, **यमकम्** अनुप्रास अलंकार का एक भेद।
पुष्पकः (पु०) जाति से बहिष्कृत महिला में ब्राह्मण द्वारा उत्पादित संतान।
पुष्परागः [ष० त०] एक प्रकार की मणि—को० अ० २।११।२९।
पुस्तम् [पुस्+अच्] 1. कोई वस्तु जो मिट्टी, लकड़ी या धातु की बनी हो 2 पुस्तक, हस्तलिखित, पांडुलिपि। सम०—**पालः** भू-अभिलेखों की सुरक्षा पूर्वक रखने वाला।
पुस्तक,—**कम्** [पुस्त+कन्] 1 पाण्डुलिपि 2 एक उभरा हुआ आभूषण। सम०- **आगारम्** पुस्तकालय, —**आस्तरणम्** बस्ता, वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें बाँधी जाती हैं,- **मुद्रा** एक प्रकार की तांत्रिक मुद्रा।
पुस्तकारुः [ब० स०] इन्द्र का विशेषण।
पुस्ती (स्त्री०) सुपारी का पेड़।
पूजा [पूज्+अ] आदर, सम्मान, पूजा। सम० **उपकरणम्** पूजा करने का सामान,—**गृहम्** गाय पूजा का स्थान।
पूयः [पू+अच्] मवाद, किसी फोड़े या फुंसी से निकलने वाला, पीप। सम०—**ह्रदः**, **वहः**, एक प्रकार का नरक।
पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1 भरने वाला, पूरा करने वाला,—**कः** (पु०) बाढ़, अलंकारिक-निश्चाङ्क नस्त्वत्पदरामृतपूरकेण—भाग० १०।२९।३५।
पूर्ण (वि०) [पूर्+क्त] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित। सम० **अभिषेकः** एक प्रकार का धार्मिक स्नान जिसका कौलतंत्र में विधान निहित है। **उत्सङ्गा** (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके आठ ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आसन्नप्रसवा,—**ज्ञ** (पु०) 1 जिसका ज्ञान पूर्णतः विकसित हो चुका हो 2 जैन संप्रदाय के प्रवर्तक माधव का विशेषण।
पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] 1 पहला, प्रथम 2 पूर्वी पूर्वदेश 3. प्राचीन, पहला। सम० **अवस्थायिन्** (वि०) जो बात पहले घटती है—पूर्वावस्थायित्वरूपं बलीयसी जघन्यावस्थायित्वम्—मै० स० १२।२।३४ पर शा० भा०। —**निर्दिष्ट** शकुन, **निर्दिष्ट** (वि०) जो पहले ही रचा हुआ है—मनु० ९।२८१, —**पश्चात्**, **पश्चिम** (अ०) पूर्व से लेकर पश्चिम तक, **मारिन्** (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला, **विद्** (वि०) जो भूतकाल की बात जानता है **विप्रतिषेध** पहली उक्ति का विरोध करने वाला कथन, **विहित** (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो।
पूषणभुजः [पूषन्+अनुज] वृष्टि का देवता शास्त्वद द्रोणसुतो वागान् वृष्टि पूषानुजो यथा महा० ८। २०।२९।
पृथाका (स्त्री०) किसी जानवर का मादा-बच्चा।
पृतनापतिः (पु०) [ष० त०] सेनापति।
पृथक् (अ०) [प्रथ्+अज्, किन्, मप्रत्ययश्च] 1 अलग 2 अलग-अलग 3 के बिना, के सिवाय। सम० —**कार्यम्** अलग काम, **वादिन्** (वि०) जो जैन सिद्धान्त को मानने वाला है,—**बीज** भिन्नावा, **योग-करणम्** एक व्याकरणनियम का दो भागों में जुदा जुदा करना।
पृथक्त्वनिवेशः (पु०) जुदाई पर डटे रहना सख्यायास्च पृथक्त्वनिवेशात्—मी० सू० १०।५।१७।
पृथिवीभृत् (पु०) [पृथिवीं बिभर्तीति भृ+क्विप्] पर्वत, पहाड़।
पृथु (वि०) [प्रथ्+कु, मप्रत्ययश्च] 1 विशाल, विस्तृत 2. प्रचुर पुष्कल 3. बड़ा, 4 असंख्य। सम० **कीर्ति** (वि०) दूर-दूर तक विख्यात,- **दर्शिन्** (वि०) दूरदर्शी, दीर्घदृष्टि।
पृश्नि (वि०) [स्पृश् नि० किच्च पृषो० सलोप] 1 ठिगना 2 सुकुमार 3 चितकबरा,—**श्निः** (स्त्री०) 1 चितकबरी गाय 2. पृथ्वी।
पृषतः [पृष्+अति=पृषत्+कन्] 1 गोल धब्बा 2 बाण की शरज्या।
पृष्ठम् [पृच्-(स्पृश्)+थक् नि०] 1 पीठ 2 पुस्तक के पत्र का एक पार्श्व 3 शेष। सम० **आलोक** पीठ में

बड़ी तीव्र पीड़ा,—गामिन् (वि०) स्वामिभक्त, अनुचर, —तापः मध्याह्न, दोपहर, —भङ्गः युद्ध में लड़ने की एक रीति।

पृष्ठ्यषड्ह [पृष्ठ+यत्] 1 मेरुदण्ड 2 सामसंग्रह।

पेचकः [पच्+घुन्, इत्वम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए शरणगृह मान०।

पेटारः,-रम् } टोकरी, पेटी।

पेटारकः,-कम् }

पेण्ड (पु०) मार्ग, रास्ता।

पेशिनी [पेश+इनि, स्त्रियां ङीप्] गोष्ठलोभी, पशुगोभी।

पेशस् (नपु०) [पेश+असिच्] 1 रूप 2 सोना 3 आभा 4 सजावट। सम० कारिन् 1 शिरं 2 सुनार, -कृत् (पु०) 1 हाथ 2 शिरं भाग० ७।१।२८।

पेशिः (स्त्री०) [पिस्+इन्] छाछ, तक्र।

पेषीङ् (तना० उभ०) कुचलना, पास देना।

पैङ्गलक [पिङ्गल+अण्] पिंगल का पुत्र या शिष्य।

पैङ्गलम् [पिङ्गल+अण्] पिङ्गल मुनि कृत पुस्तिका।

पैतापुत्रीय (वि०) [पितापुत्र+छ] पिता और पुत्र से संबंध रखने वाला।

पैप्पलादः [पिप्पलाद+अण्] अथर्ववेद की एक शाखा।

पैशुनिक (वि०) [पिशुन+ठक] मिथ्यानिन्दात्मक, अपवाद परक।

पोतावितम् (नपु०) [पू+तन्-पोत+क्यच्-क्त] 1 शिशु की भाँति आचरण करना 2 हाथ और तालु की सहायता से उत्क्षिप्त हाथी की चिंघाड़।

पोत्रिप्रवर [पू+त्र-पोत्र+इनि=पोत्रिन्, तत् प्रवर] विष्णु भगवान् वाराहावतार हिरण्याक्षे पोत्रिप्रवर-वपुषा देव भवता मारायणाय०।

पौनःपुनस्तात (वि०) [पुनः पुनः+ष्टानच्, द्वित्वम्] बार बार दौड़ता हुआ लगातार दौड़ने वाला या बहने वाला।

पौण्ड्रवर्धनः (पु०) बिहार प्रदेश का नाम।

पौष्पबीजिकम् (नपु०) पुष्प और पौधे के बीजों से बना ताबीज।

पौरन्ध्र (वि०) [पुरन्ध्र+अण्] स्त्रीविद्यी, नारीसंबंधी।

पौषकः (पु०) उपवास का दिन।

प्रञ्जनम् (नपु०) त्रिकोण।

प्रकच (वि०) [ब० स०] जिसके बाल सीधे खड़े हों।

प्रकाङ्क्षा [प्र-काङ्क्ष्+अङ्] भूख, बुभुक्षा।

प्रकाशः [प्र+काश्+घञ्] ज्ञान। सम० करः प्रकट करने वाला, व्यक्त करने वाला।

प्रकृ (तना० उभ०) विवेक करना, भेद करना—पौद्गात् प्रकुरुते भवान्—महा० ५।१६८।१८।

प्रकरः [प्र+कृ+अच्] फोना, सजाना, साफ करना अथामकप्रकरकरणे कर्मतेजसौ नियुक्ति—विक्र० १५४।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] प्रसंग। सम०-समः समान औचित्य और समान क्रम के दो तर्क।

प्रकर्म (नपु०) मैथुन, संभोग (जैसा कि की० अ० में कन्याप्रकर्म)।

प्रकृतिः [प्र+कृ+क्तिन्] परम पुरुष परमात्मा के आठ रूप—भग० ७।४। सम०-अभिजः सामान्य जन, स्वभाव (वि०) नैसर्गिक सौन्दर्य से युक्त, स्वाभाविक सुन्दर,—भोजनम् यथारीति आहार, यथावत् भोजन।

प्राकृतिक (वि०) [प्रकृति+अण्] 1 नैसर्गिक, सामान्य 2 सात्त्विक वृत्ति का महानुभाव रा० २।७७।२१।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श] (आयु० में) योग, तुस्का।

प्रकृष् (तुदा० पर०) बल से खींचना।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] विस्तृतवर्णन।

प्रकर्षित (वि०) [प्र+कृष्+णिच्+क्त] फैलाया हुआ, बाहर निकाला हुआ।

प्रक्रम [प्र+क्रम्+घञ्] चर्चा के बिन्दु पर पहुँचना। सम०-सिद्ध (वि०) आरंभ में ही तैयार किया हुआ।

प्रक्षपणम् [प्र+क्षि+णिच्+ल्युट्, प्रागागम] विनाश, -राज०।

प्रक्षया [प्र+क्ष्या+अङ्+टाप्] उज्ज्वलता, आभा, कान्ति।

प्रक्षीणु (प्रकृष+क्षि+भू क्या० पर०) अपने आपको शक्य बनाना, पात्रता प्राप्त करना।

प्रक्षह् [प्र+क्षह्+अप्] 1 राजसभासदों को उपहार —की० अ० २।७।२५ 2 जोड़ के रखना 3. धृष्टता।

प्रक्षलित (वि०) [प्र+क्षल्+क्त] भय के कारण थर-थर काँपता हुआ।

प्रक्षब्ध (वि०) [प्रा० स०] प्रखर, अत्यन्त तीव्र। सम० प्रतापः शक्तिशाली तेज,—भैरव, एक नाटक का नाम।

प्रक्षर्या [प्र+क्षर्+यत्+टाप्] प्रक्रिया।

प्रक्षारः [प्र+क्षर्+घञ्] सरकारी घोषणा, सार्वजनिक उद्घोष।

प्रक्षलित (वि०) [प्र+क्षल्+क्त] धबराया हुआ। -त्व (नपु०) विदाई, विसर्जन।

प्रक्षला (स्त्री०) [प्र+क्षल्+अच्+टाप्] सिरगिट।

प्रक्षुत्परिभवः [ष० स०] भारी अपमान, बड़ा तिरस्कार।

प्रक्षणक्षणवादः (पु०) वेदान्ती के वेश में छिपा हुआ बौद्ध।

प्रक्षयिष्णु (वि०) [प्र+क्षि+इष्णुच्] अल्पजीवी, सहज में टूट जाने वाला, भिदुर।

प्रक्षणकुशल (वि०) प्रवृत्ति कार्य में दक्ष।

प्रक्षा [प्र+क्षद्+ड+टाप्] सबसवेर भूख।

प्रक्षालरक्षम् [प्र+क्षाल्+ल्युट्] आगाह रहना।

प्रक्षुभ् (स्वा० आ०) जम्हाई लेना।

प्रज्ञप्त (वि०) [प्र+ज्ञा+णिच्+क्त] 1 आविष्ट, आज्ञा दिया हुआ 2 व्यवस्थित—बुद्ध०।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अङ्+टाप्] प्रहृष्ट बुद्धि बुद्ध०। सम० अक्षरम् 1 एक अक्षर का नाम 2 बुद्धि रूपी अक्षय, —अङ्ग केवल बुद्धि (जैसे चित्रकर्म), बारहवीं पारदर्शी गुण बुद्ध०, —आत्मा ज्ञानेन्द्रिय।

प्रणमित (वि०) [प्र+नम्+णिच्+क्त] झुकाया हुआ, नमस्कार करने के लिए जिसका सिर झुकाया गया है।

प्रणाम्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] योग्य उपयुक्त (वेद०)।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] हाथी को हांकने की रीति भाग० १२।६।८।

प्रणिधेयम् [प्र+नि+धा+यत्] 1 गुप्तचर भेजना 2 काम पर लगाना, उपयोग में लाना।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1 विवाह 2 मैत्री 3 अनुग्रह 4 विनय। सम० आत्मः प्रेम के कारण ईर्ष्या, विमुख (वि०) 1 प्रेम के विपरीत 2 मैत्री करने में अनुत्सुक।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1 (दण्ड) देना 2 (मतदाय) स्थापित करना।

प्रणीत (वि०) [प्र+नी+क्त] 1 प्रस्तुत किया हुआ 2 कार्यान्वित किया हुआ 3 सिखलाया हुआ 4 लिखा हुआ, रचा हुआ। सम० अग्निः यज्ञ के निमित्त अभिमन्त्रित की गई आग, आपः (ब० व०) पवित्र जल।

प्रतन (वि०) [प्र+टप्, नुट्] पुराना, प्राचीन। सम० -हविस् (नपु०) आहुति देने के लिए अभिप्रेत पुराना घी।

प्रताप [प्र+तप्+घञ्] प्रभाव, विस्तार, फैलाव।

प्रतपः [प्र+तप्+अच्] सूर्य की गर्मी, धूप।

प्रतापः [प्र+तप्+घञ्] अन्तिम खेताबली देना कौ० अ० १।१६।

प्रतरम् (अ०) विशेष रूप से, खास तौर से।

प्रति (अ०) [प्रथ्+इनि] 1 धातु के उपसर्ग होकर इसका अर्थ है (क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, बदले में, फिर (ग) के विरुद्ध, के प्रतिकूल (घ) ऊपर 2. शब्दों के पूर्व रख कर इसका अर्थ होता है (क) समानता, (ख) विरुद्ध, विरोध में लड़ा (ग) प्रतिनिधित्व। सम० अनुप्रास अनुप्रास का एक भेद,—अरिः मुकाबले का प्रतिपक्षी,—अर्थः झूठ-मूठ का मूल्य, बनावटी मूल्य,—आर्द्र (वि०) बिल्कुल गीला, आलङ्ग. संयोग, संबंध, आहुतिः गौण, प्रतिध्वनि, कर्मन् (नपु०) दान और उपवास,—कारः संस्कार करना—रा० २।३।१३ पर टीका कूलिक (वि०) विरोधी,—क्रिया व्यवहार, आचरण न हि युक्ता सर्वस्मिन् कार्य्येषु प्रतिक्रिया—रा० ३।१३।४ चक्रम् शत्रु की सेना,—दूतः बदले में भेजा गया दूत या संदेशवाहक, विषम् विषहर, विष को दूर करने वाली औषध,—वृषः विरोधी सांड।

प्रतिवद् (स्वा० पर०) उत्तर देना।

प्रतिवरः [प्रतिवृ+अच्] अलंकार का उत्तर देना —आश्रित्यध्वर्यु प्रतिवरं प्रतिगृह्णाति—सं० उ० १।८।१।

प्रतिवासः [प्रतिवस्+णिच्+अप्] 1 गवल की० अ० २।८।२६ 2 नाश, अवमान—भाग० ५।९।३।

प्रतिवासरः [प्रतिवस्+णिच्+घञ्] व्यक्तिगत बनाव शृंगार।

प्रतिज्ञा [प्रति+ज्ञा+अङ्+टाप्] निश्चित समझना, कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति भग० ९।३१। सम० परिपालनम्,-पालनम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना —पारणम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना।

प्रतिदुह् (नपु०) साफ दूध।

प्रतिदूषित (वि०) [प्रतिदुष्+णिच्+क्त] कलुषित, भ्रष्ट, बिलावटी।

प्रतिनियमः [प्रतिनि+यम्+अच्] पृथक् नियतीकरण —सा० का० १८।

प्रतिनिवर्तनम् [प्रतिनिवृत्+णी+अच्] प्रतिहिंसा, बदला लेना।

प्रतिनिष्क्रान्त (वि०) [प्रतिनिस्+क्रम्+क्त] साफ किया हुआ, पछाड़ा हुआ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रतिपद्+क्तिन्] 1 प्राप्ति अवाप्ति 2 प्रत्यक्षीकरण अवबोध 3 यथार्थ ज्ञान 4 स्वीकृति 5 आरम्भ 6 सम्मान 7 सदाचार 8 उपाय 9 बुद्धि 10 उन्नति 11 प्रयोग 12 प्रसिद्धि 13 विश्वासी सम० पराङ्मुख (वि०) ढीठ, न सहने वाला, —प्रवीण उन्नत पद अपना करना।

प्रतिपत्पाठः (पु०) प्रतिपदा वाले अनध्याय दिन के पढ़ना —प्रतिपत्पाठशीलस्य विशेष मनुना यमा रा० ५।

प्रतिपादित (वि०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] प्रकट किया गया।

प्रतिपाद्य (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+ण्यत्] चर्चा करने के योग्य, व्यवहार में लाने के योग्य।

प्रतिपाद्यमान (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+य+शानच्] 1 दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ 2 व्यवहृत किया जाता हुआ 3. चर्चा के अन्तर्गत।

प्रतिपानम् [प्रतिपा+ल्युट्] पीने का पात्री।

प्रतिपूर्ण (वि०) [प्रति पृ+क्त] प्रसारित, फैलाया हुआ, प्रसन्न।

प्रतिबद्ध(ब)ग्नी (स्त्री०) प्रज्वलित, प्रायुक्तर हुताग्निसन्ध प्रतिबद्धाग्निमुत्सृजेत् मनु० ९।१७।

प्रतिब्रू (अदा० पर०) 1 उत्तर देना, 2. (आ०) मुकर जाना।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] उच्चाटपना, ध्यानापकर्षण निद्रा च प्रतिभा चैव ज्ञानाभ्यासेन तत्त्यजेत् महा० १२।२७४।७।

प्रतिभोजनम् [प्रतिभुज्+ल्युट्] विहित पथ्य, नियत किया हुआ आहार।

प्रतिमागृहम् [ष० त०] मूर्तियों का घर।

प्रतियातनिद्र [(वि०) ब० स०] जागा हुआ, जागरूक।

प्रतियातबुद्धि (वि०) [ब० स०] जिसे (पिछली भूली बातें) याद आ गई हों।

प्रतियोग [प्रति युज्+घञ्] प्रत्युत्तर, प्रत्युक्तिवचन —ब्रा० च० ४।४१।

प्रतियोद्धृ [प्रति+युध्+तृच्] युद्ध में प्रतिपक्षी।

प्रतिरुद्ध (वि०) [प्रति रुध्+क्त] 1 प्रविष्ट, अधिकृत 2 स्थापित—भाग० १०।३०।२।

प्रतिवक्तव्य (वि०) [प्रति+वच्+तव्यत्] 1 उत्तर दिये जाने के योग्य 2 वादविवाद किये जाने के योग्य।

प्रतिविधातव्यम् (भाव० कि०) ध्यान (सावधानी) रखना चाहिए।

प्रतिविशेष [प्रा० स०] विशेषता, विलक्षणता।

प्रतिव्याहार [प्रति वि—आ+हृ+घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिशीर्षकम् [प्रा० स०] निष्कृतिधन, बन्दी मोचन धन। रा० २।५५ पर मल्लि०।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] आश्रम, मठ (जहां सदाव्रत लगा रहता है)।

प्रतिषेध [प्रति+सिध्+घञ्] 1 निषेधात्मकता का ध्यान दिलाना 2 बाधा।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] धन की पूर्ति।

प्रतिष्ठापनम् [प्रति+स्था+णिच्+ल्युट्] समर्थन।

प्रतिष्ठायु (वि०) [प्रति+स्था+यत्+उ] कहीं पर बस जाने का इच्छुक।

प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति+स्था+णिच्+क्त] पूरा किया हुआ महा० ३।८५।११४।

प्रतिसंयात (वि०) [प्रतिसम्+या+क्त] आक्रमणकारी, हमला करने वाला।

प्रतिसंरुद्ध (वि०) [प्रतिसम्+रुध+क्त] संकुचित किया हुआ।

प्रतिसंक्रम [प्रतिसम्+क्रम्+अच्] विच्छेद विघटन।

प्रतिसङ्ख्यानम् [प्रतिसम्+ख्या+ल्युट्] 1 किसी बात का शान्तिपूर्वक विचार करना 2 सांख्य दर्शन।

प्रतिसंधानम् [प्रतिसम्+धा+ल्युट्] 1. स्मृति, याद 2 उपचार, चिकित्सा।

प्रतिसमाधानित (वि०) [प्रतिसमाधान+इतच्] समीकृत, बराबर किया हुआ।

प्रतिसरबन्धः [ष० त०] किसी भी मंगलमय कार्य के आरंभ के अवसर पर हाथ की कलाई में रक्षी या पहुँची (पुनीत कलावा) बाँधना।

प्रतिस्वम् (अ०) एक-एक करके, एकैकशः।

प्रतिहत (वि०) [प्रति+हन् क्त] 1 चौंधियायी हुई (आँखें) 2 कुण्ठित, ठूंठा।

प्रतिहार [प्रति+हृ+घञ्] आगमन की सूचना देना —रा० ७।१।७।

प्रती (प्रति+इ—अदा० पर०) (शत्रु का) मुकाबला करना,—समैरभ्यागतं नाथं प्रतीयात् रजसूर्मिभि महा० ५।१७२।१३।

प्रतीतस्वम् [प्रति—इण+क्तात्वम्] विश्वस्त, दृढ़।

प्रतीकम् [प्रति+कन्+नि० दीर्घ] 1 चिह्न 2 प्रतिलिपि। सम० दर्शनम् चिह्नपरक संकल्पना।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च+य, अलोपः, नलोपः, दीर्घश्च] अन्तर्मुखी, अन्दर की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतीपदीपकम् (नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद।

प्रतृत्तिका (स्त्री०) एक प्रकार की समस्या।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1 आँखों को जो दिखाई दे, दर्शनीय 2 ज्ञानगोचर, 3 स्पष्ट, साफ़। सम०—कर (वि०) प्रत्यक्ष को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला, —विधानम् स्पष्ट विधि, स्पष्ट आदेश, विषयीभू दृष्टिपथ के अन्तर्गत आना।

प्रत्यक्षरम् (अ०) प्रत्येक अक्षर पर—प्रत्यक्षरश्लेषमय-प्रपञ्च वासव०।

प्रत्यक्प्रवण (प्रत्यञ्च्+प्रवण) (वि०) आत्मोन्मुख, एक आत्मा का भक्त।

प्रत्यभिज्ञादर्शनम् (नपुं०) शैवदर्शन पर लिखा गया एक ग्रन्थ।

प्रत्यभिनन्द् (स्वा० चुरा० पर०) 1 बदले में नमस्कार करना 2 स्वागत करना।

प्रत्यभ्युत्थानम् (नपुं०) [प्रति+अभि—उद्+स्था+ल्युट्] अतिथि का स्वागत करने के लिए अपने आसन से उठना।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] इन्द्रियों का कार्य—सर्वेन्द्रिय-गुणाभासे सर्वप्रत्ययहेतवे भाग० ८।३।१४।

प्रत्यवनमनम् [प्रति+अव+नम्+ल्युट्] बदले में नमस्कार करना।

प्रत्यवस्कन्दन (वि०) [प्रति+अव+स्कन्द्+ल्युट्] विध्वंसकर, संहारकारी।

प्रत्यवस्थानम् [प्रति+अव+स्था+णिच्+ल्युट्] सुलह, विवादनिदायक, स्मृतिजनक।

प्रत्यवेक्षणा (स्त्री०) [प्रति+अव+ईक्ष्+युच्+टाप्] पाँच प्रकार के ज्ञानों में से एक (बुद्ध० में)।

प्रत्यस्त (वि०) [प्रति+अस्+क्त] फेंका हुआ, छोड़ा हुआ—प्रत्यस्तव्यसने सास० १०।२१।

प्रत्याचक्षाणक (वि०) [प्रति+आ+चक्ष्+शानच्, स्वार्थे कन्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आक्षेप करने का इच्छुक।

प्रत्याचक्ष (वि०) [प्रति+आ+पद्+क्त] 1 वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2 बहुकाया हुआ, बदले हुए मन वाला, विपरीत बुद्धिकोण वाला। —महा० १२।२९१।८।

प्रत्यालसिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्विप्] प्रसन्नता हर्षोत्फुल्लता।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] प्रस्तावना या आमुख, का विशेष भाग (नाटय०)।

प्रत्युत्थजाति. (स्त्री०) गुणसहित समीकरण।

प्रत्युपस्थित (वि०) [प्रति+उप+स्था+क्त] 1 समूहगत 2 एकत्र होना, दबाव होना (जैसे मूत्रोत्सर्ग का) 3 विमुख, विपरीत हुआ—क्षेयसि प्रत्युपस्थिते महा० १२।३८, ७।५७।

प्रत्यूढ (वि०) [प्रति+वह्+क्त] 1 प्रत्याख्यात, अस्वीकृत 2. उपेक्षित 3 मान दिया हुआ।

प्रथमकविः (पु०) वाल्मीकि का विशेषण।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] चतुर, दक्ष, निपुण—तानुवाच विनीतात्मा सूतपुत्र प्रदक्षिणः - रा० २।१६।५।

प्रदा (जुहो० उभ०) ऋण परिशोध करना।

प्रदानम् [प्र+दो+ल्युट्] खण्डन करना, निराकरण करना असंदेह हि धर्मस्य प्रदानं धर्म आतुर —महा० १३।४५।८।

प्रदानकृपण (वि०) [प्र+दा+ल्युट्, प्रदाने कृपण त० स०] दरिद्र, उपहारादि समय पर न देने वाला।

प्रदेशः (पुं०) [प्र+दिश्+घञ्] स्वातन्त्र्य के क्षेत्र में एक वाक्य (जैन०)।

प्रदेहनम् [प्र+दिह्+ल्युट्] लीपना, पोतना।

प्रधनाङ्गणम् [ष० त०] युद्ध का अखाड़ा।

प्रधानकारणवादः (पु०) सांख्य का सिद्धान्त कि प्रधान ही मूल कारण है।

प्रधानकारणवादिन् (वि०) जो व्यक्ति सांख्य के प्रधानकारण को मानने वाला है।

प्रधानसिद्धिका (स्त्री०) बच कर निकल जाने का मार्ग।

प्रधानः [प्र+पच्+घञ्] हास्यात्मक वार्तालाप (नाटय०)।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] आक्रमण, धावा।

प्रपुराण (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त पुराना।

प्रपूरणम् [प्र+पृ+ल्युट्] धनुष की डोरी को झुकाना, और बाँध देना।

प्रपृक्तता [प्र+पृच्+क्त+टाप्] प्रजा, वृद्धि।

प्रभग्न (वि०) [प्र+भञ्ज्+क्त] टूट कर टुकड़े-टुकड़े हुआ, कुचला हुआ, हराया हुआ।

प्रभाकर (वि०) अत्यन्त सुन्दर।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] समृद्धि,—प्रभावार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्—महा० १२।१०९।१०।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] पद्मरागमणि। सम० —स्निग्ध (वि०) उज्ज्वल कि० १६।५८।

प्रभातकरणीयम् [स० त०] प्रातः काल अनुष्ठेय।

प्रभावन (वि०) [प्र+भू-णिच्+ल्युट्] 1 प्रमुख, प्रभावशाली 2 सृजनात्मक शक्ति, 3 मूल 4 चालने वाला तदस्य तस्य वीरस्य स्वर्गमार्गप्रभावनम् रा० ४।१७।८।

प्रभाषित (वि०) [प्र+भाष्+क्त] कथित, उद्घोषित।

प्रभुसम्मित (वि०) स्वामी के समान यद्वेदाप्रभुसम्मितात् —का० द०।

प्रभुत्वाक्षेपः (पु०) [ष० त०] आदेश के वचन द्वारा उठाया गया आक्षेप का० २।१३८।

प्रभेदः [प्र+भिद्+घञ्] उद्गम स्थान (जैसे नदी का)।

प्रभाविन् (वि०) [प्र+भव्+इनि] बाधियों में से रसों का उत्पादक।

प्रमद्वरा (स्त्री०) रुरु नामक मुनि की पत्नी।

प्रमहस् (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली, प्रतापी, तेजस्वी।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] एक प्रकार की माप (संगीत०)। जैसे द्रुतप्रमाण।

प्रमाणानुरूप (वि०) किसी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति और डीलडौल के अनुरूप।

प्रमाणतः (अ०) [प्रमाण+तसिल्] माप या तौल के अनुसार।

प्रमाणत्वम् (मनु०) निर्विकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान की यथार्थता।

प्रमितिः [प्र+मा+क्तिन्] एकटीकरण, अभिस्वीकृति।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] 1 गुणी पुरुष का हर्ष उल्लास (जैन०) 2 एक वर्ष का नाम।

प्रयत्नगौरवम् [ष० त०] यत्नों की गहनता, परिश्रम की गहराई।

प्रयतात्मन्, प्रयतात्मवत् (वि०) पुनीत मन वाला, जिसने अपने मन को संयत कर लिया है। भग० ९।२६।

प्रयतपाणि (वि०) [ब० स०] सम्मान में हाथ जोड़े हुए।

प्रयन्तृ (पुं०) चालक, उकसाने वाला, भड़काने वाला प्रेरक।

प्रया (अदा० पर०) प्रस्त होना, अपने ऊपर लेना उठाना।

प्रयुक्त (वि०) [प्रयुज्+क्त] 1 प्रकल्पित, उपाय द्वारा काम चलाया हुआ 2 चोरी हुई (जैसे तलवार)।

प्रयुक्तसंस्कार (वि०) [ब० स०] जिसका स्थानत संस्कार किया गया है प्रयुक्तसंस्कारविशेषमात्मजा न मां पर अवतिष्ठतुमर्हसि—कु० ५।

प्रयोक्तृ (पु०) [प्र+युज्+तृच्] प्रापक, समाहर्ता।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1 उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम 2 यथावत् रूप, सामान्य उपयोग 3 फेंकना, फेंक कर मार करना, (विप० संहार) 4 प्रदर्शन, अनुष्ठान 5 अभ्यास, परीक्षणात्मक उपयोग 6 प्रक्रिया क्रम 7 कार्य 8. सम्यक् पाठ 9 आरम्भ 10 योजना, तरकीब 11 साधन, उपाय। सम०—**ज्ञ** व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, **कुशल** (वि०), **निपुण** (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में होशियार, **-ज्ञान** कलाकुशल, **विद्** (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार को जानता है।

प्रलम्बबाहु } (वि०) [ब० स०] जिसकी भुजाएँ
प्रलम्बभुज } लम्बी हैं।

प्रलय [प्र+ली+अच्] 1 आध्यात्मिक लय 2 मूर्छा, बेहोशी।

प्रलापिता [प्रलाप+इनि—नस्+टाप्] प्रेम संबंधी बातचीत।

प्रलुप्त (वि०) [प्र+लुप्+क्त] लुटा हुआ।

प्रलुब्ध (वि०) [प्र+लुभ्+क्त] 1 ठगा, वञ्चक 2 लोभ में फंसाया हुआ।

प्रलोप [प्र लुप् घञ्] नाश, संहार।

प्रवणम् [प्रु+ल्युट्] पहुँच, पैठ।

प्रवर्णायितम् [प्रवर्ण+क्यच्+क्त] इच्छा, झुकाव।

प्रवाह [प्र+वह्+घञ्] मोटा आरोह शि० १।४४।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1 मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम 2 सबसे बड़ा, र (पु०) 1 बुलावा 2 अग्निहोत्र के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा अग्नि का विशेष आवाहन 3 पूर्वज 4 कुल, वंश 5 गोत्र प्रवर्तक ऋषि 6 सन्तति 7 चादर,—रा (स्त्री०) गोदावरी में गिरने वाली एक नदी,—रम् (नपु०) अगर की लकड़ी, चंदन। सम०—**धातु** मूल्यवान् धातु, **ललितम्** एक छन्द का नाम।

प्रवासवर (वि०) परदेश में रहने का स्वभावी।

प्रवास्य (वि०) [प्र+वस्+णिच्+ण्यत्] निर्वासित किये जाने के योग्य।

प्रवातशयनम् (नपु०) ऐसे स्थान पर सोना जहाँ खिड़की या वातायनों के द्वारा हवा खूब आती जाती हो।

प्रविचारः [प्र+वि+चर्+घञ्] विवेक, प्रकाश, जाति, प्रकार।

प्रविचारित (वि०) [प्रविचार+इतच्] परीक्षित, सावधानतापूर्वक विचार किया गया।

प्रविरत (वि०) [प्र+वि+रम्+क्त] जो किसी बात से पराङ्मुख हो गया हो, दूर रहने वाला।

प्रवेक [प्र+विश्+घञ्] 1 रीति, विन्यास 2 रोजमर्रा जैसा कि (मुसलप्रवेक) में।

प्रविषयः (पु०) क्षेत्र, परास, पहुँच।

प्रवृत्त (वि०) [प्र+वृ+क्त] 1 बहने वाला—**प्रवृत्तमुदकं वायुः** महा० १४।४६।१२ 2 आघात करने वाला, चोट पहुँचाने वाला 3 परिचारित, चुमाया हुआ। सम०—**वक्तृता** (स्त्री०) प्रसृतता—याज्ञ० १।२६६।

प्रवृत्ति [प्र+वृत्+क्तिन्] 1 गुणक (गणित०) 2 उदय, उद्गम 3 प्रकट होना 4 आरम्भ 5 आचरण 6 काम, रोजमर्रा 7 प्रयोग 8 सार्थकता, अर्थ 9. समाचार 10 भाग्य, किस्मत 11. प्रत्यक्ष ज्ञान। सम० **पुस्तक** समाचारों का अभिकर्ता लेखः अध्यादेश, **विज्ञानम्** बाहरी संसार का ज्ञान।

प्रव्याहरणम् [प्र+वि+आ+हृ+ल्युट्] वाक्शक्ति।

प्रव्रज्यायोग [ष० त०] ज्योतिष का एक योग जो संन्यास लेने का निर्देश करता है।

प्रशंस् (स्वा० आ०) भविष्यवाणी करना।

प्रशंसालापः [ष० त०] अभिनन्दन, जयघोष।

प्रशस्ति [प्र+शंस्+क्तिन्] प्रचार, विज्ञापन।

प्रशमनम् [प्र+शम्+ल्युट्] शान्ति की स्थापना (किसी राजनीतिक संकट के पश्चात्)।

प्रशून (वि०) [प्र+सू+क्त, तस्य नत्वम्] सूजा हुआ।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1 सवाल, पृच्छा, पूछताछ 2 न्यायिक पूछताछ 3 विवादास्पद बिन्दु 4 समस्या 5 किसी पुस्तक का छोटा अध्याय। सम०—**कथा** पूछताछ पर समाप्त होने वाली कहानी,—**वादिन्** ज्योतिषी, आगे होने वाली बात बताने वाला, **-विचारः** भविष्यकथन विषयक ज्योतिष की एक शाखा।

प्रसक्त (वि०) [प्र+सञ्ज्+क्त] अत्यन्त आसक्त, किसी बात से चिपका हुआ।

प्रसङ्ग [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1 बढ़ाया हुआ प्रयोग अन्यत्र कृतस्यान्यत्रासक्तिः प्रसङ्गः मी० सू० १२।१।१ पर शा० भा० 2 गौण घटना या कथावस्तु। सम०—**साध्यः** तर्कसंगत हेत्वाभास जहाँ स्वयं 'प्रमाण' भी सिद्ध किया जाता है।

प्रसञ्जित (वि०) [प्र+सञ्ज्+णिच्+क्त] सत्ताप्राप्त, अस्तित्व में आया हुआ—**प्रसञ्जिते वर्षासु ऋतौ प्रसञ्जिते**—मै० ९।१९६।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] भोजन पचने के पश्चात् उसका पोषक रस।

प्रसादित (वि०) [प्र+सद्+क्त] जो प्रसन्न हो चुका है।

प्रसन्नाक्षम् [प्र+सम्+दो+ल्युट्] रज्जु, रस्सी, बेड़ी।

प्रसह्य (अ०) [प्र+सह्+ल्यप्] 1. जीत कर 2. अवश्य ही, निश्चित रूप से। सम० **कारिन्** (वि०) भीषण कार्य करने वाला प्रबल वेग से क्रियाशील।

प्रसवकालः [ष० त०] प्रसूतिकाल, बच्चा जनने का समय।
प्रसूति [प्र+सू+क्तिन्] उद्भव, उत्पत्ति, कारण-कि० ४।३२।
प्रसृ (स्वा० पर०) 1 विषण्ण होना (जैसा कि शरीर के तीनों दोषों का) 2 अनुसरण करना 3 सम्प्रसारण अर्थात् अर्धस्वरों को उसके सवादी स्वर में बदलना।
प्रसरः [प्र+सृ+अप्] परास (जैसा कि 'दृष्टिप्रसर' में)।
प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1 व्यापारी की दुकान 2 (धूल) उड़ाना 3 फैलाव।
प्रसारितबाहु (वि०) [ब० स०] जिसके हाथ बहुत फैले हुए हों।
प्रसृप् (स्वा० पर०) छा जाना, फैल जाना (जैसे कि अन्धकार)।
प्रस्कन्न (वि०) [प्र+स्कन्द्+क्त] आक्रान्त, जिसके ऊपर धावा बोला गया हो।
प्रस्तरप्रहरणन्याय [ष० त०] मीमांसा का व्याख्याविषयक एक सिद्धान्त जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु की अपेक्षा कर्म द्वारा विहित वर्णन अधिक प्रबल होता है।
प्रस्ताव [प्र+स्तु+घञ्] 1 व्याख्यान का विषय, शीर्षक 2 नाटक की प्रस्तावना 3. साम के परिचायक शब्द।
प्रस्तोतृ (पु०) [प्र+स्तु+तृच्] उद्गाता की सहायता करने वाला यज्ञीय पुरोहित, ऋत्विज।
प्रस्तोभः [प्र+स्तुभ्+घञ्] मदमें, उल्लेख—मालवि० १।१९।२६।
प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. दर्शनशास्त्र की एक शाखा 2 धार्मिक भिक्षावृत्ति, प्रव्रज्या—सम्प्रस्थानाः क्षात्रधर्मा विशिष्टा—महा० १२।६४।२२। सम० मङ्गलम् यात्रा आरम्भ करते समय माङ्गलिक क्रियाएँ।
प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1 धारा (जैसे कि दूध की) 2 [ब० व०] आँसू 3 मूत्र।
प्रस्पर्धिन् (वि०) [प्र+स्पर्धा+इनि] होड़ करने वाला, बराबरी करने वाला।
प्रस्फार (वि०) [प्र+स्फर्+घञ्] सूजा हुआ फैला हुआ।
प्रहतमुरज (वि०) [ब० स०] जहाँ पर ढोल बजते हों—सगीताय प्रहतमुरजा—मेघ०।
प्रहृति [प्र+हृ+क्तिन्] आघात, चोट, कशाघात।
प्रहा (जुहो० पर०) छोड़ देना, हार जाना।
प्रहि (स्वा० पर०) भेजना, उन्मुख होना।
प्रहितहस्तम (वि०) सदेश लेकर जाने वाला।
प्रहरणकलिका (स्त्री०) एक छन्द का नाम।
प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1 युद्ध 2. हार (गले में पहनने का)।
प्राकृ [ब० स०] अगले कद का व्यक्ति, कहार प्राक्-लम्बे—रघु० १।२। सम० - प्राकार (वि०) जिसकी ऊँची दीवारें हों।
प्राकारवरणी [ष० त०] दीवार के ऊपर बना चबूतरा।
प्राकारस्थ (वि०) [स० त०] जो फसील पर खड़ा हो।
प्राकृतजनबुध [क० स०] साधारण मनुष्य।
प्राक्तन [वि०] [प्राक्+तन्] 1 पुराना, पिछला अन्य काल का 2 अतीत समय का, पहला, पहले जन्म का, भाग्य। सम० कर्मन् (नपु०) पूर्वजन्म में किया गया कार्य, भाग्य,—जन्मन् (नपु०) पूर्व जन्म।
प्राकल्भी [प्रगल्भ+अण्+ङीप्] 1 साहस 2 दृढ़ता।
प्राकल्भ्यम् (नपु०) [प्रगल्भ+ष्यञ्] प्रगल्भता, वीरता, चतुरता। सम० बुद्धिः (स्त्री०) निर्णय करने का साहस, न्याय-साहस।
प्राकृष्यम् [प्रकृष्ट+ष्यञ्] सही स्थिति, यथार्थ दशा दिशा, अनुदेश।
प्राकृतिका (स्त्री०) अतिथि सत्कार, पाहुना का स्वागत।
प्राक् (वि०) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1 सामने का आगे का 2 पूर्वी 3 पहला। सम० उत्पत्ति (किसी राग का) पहला दर्शन कथनम् प्राचीन उक्ति पहले का कथन।
प्राक्चार (वि०) सामान्य प्रथाओं के विरुद्ध, साधारण अनुष्ठान और सम्बन्धों के विपरीत।
प्राचार्य (पु०) [प्रकृष्ट आचार्य] 1 अध्यापक का अध्यापक 2 सेवानिवृत्त अध्यापक।
प्राचीनमूल (वि०) [ब० स०] जिसकी जड़ें पूर्व दिशा की ओर मुड़ी हुई हों।
प्राच्यावस्थिति (स्त्री०) एक नियम जिसके अनुसार अं से पूर्व किसी विशेष अवस्थाओं में ण अपरिवर्तित अवस्था में रहता है।
प्राजापत्या (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
प्राजापत्यम् [प्रजापति+ष्यञ्] 1 प्रजननात्मक शक्ति 2 एक यज्ञ का नाम।
प्राज्ञ (वि०) [प्रज्ञा+अच्—स्वार्थे अण्] 1 बुद्धिमान 2 समझदार, विद्वान ज्ञ (पु०) 1 बुद्धिमान् या विद्वान 2 एक प्रकार का नाग 3 व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता 4 परमेश्वर।
प्राज्ञता
प्राज्ञत्वम् [प्राज्ञ+तल्, त्व, वा] बुद्धिमत्ता।
प्राण [प्र+अन्+घञ्] 1 जीवन जान 2 आहार अन्न। सम० कर्मन् (नपु०) जीवन कार्य परित्रोल (वि०) जिसके जीवन का अन्त निकट है परित्राणम् किसी के जीवन की रक्षा करना, बचाना, बचाव प्राणक्रिया विद्या प्राणायाम का विद्या।
प्रात (अ०) [प्र अत्+अतच्] 1 पौ फटने पर प्रभात वेला में, तड़के, सवेरे 2 कल सवेरे। सम० अनुवाक

यह सूक्त जिससे प्रातः सवन का उपक्रम होता है, चन्द्र प्रभातकाल का चन्द्रमा।

प्रातिकामिन् (पु०) सेवक या दूत।

प्रातिनिधिक [प्रतिनिधि + ठक्] 1 स्थानापन्न 2 प्रतिनिधिकार, प्रतिनिधित्व।

प्रातीप्यम् [प्रतीप् + ष्यञ्] शत्रुता, विरोध।

प्रात्यक्षिक (वि०) [प्रत्यक्ष + ठक्] आँखों को दिखाई देने वाला।

प्रादेशमात्र (वि०) [प्रदेशमात्र + अण्] जरा सा, किंचित् मात्र देने के लिए, —त्रः(नपु०) एक बालिश्त की माप, पूरी अंगुलियों को फैलाकर अंगूठे के किनारे से तर्जनी अंगुली के किनारे तक की माप - उपपिपाय दर्शयेत् प्रादेशमात्रे प्रच्छिन्नानि न नखेन खादिरगृह्यसू० २।२।

प्राप्त (वि०) [प्रकृष्टाऽऽप्त अच् समास] 1 यात्रा पर गया हुआ 2 पूर्वोदाहरण निर्देशन 3 कथन।

प्राप्त [प्रकृष्टाऽऽप्त] 1 किनारा, तट 2 कोण (आँख ओष्ठ आदि का) 3 सीमा 4 अन्तिम किनारा। सम० निवासिन् सीमान्त प्रदेश का रहने वाला भूमौ (अ०) अन्त में, आखिर कार।

प्रापणम् [प्र - आप् ल्युट्] व्याख्या विवरण चित्रण।

प्रापयितृ (वि०) [प्र आप् णिच् तृन् + ङ] पहुँचाने की इच्छा वाला।

प्राप्त (वि०) [प्र आप + क्त] किसी पूर्वोदाहरण के अनुसार या पूर्वनर्क का अनुगामी। सम०- काल (वि०) योग्य, उपयुक्त, —आज्ञ (वि०) 1 बुद्धिमान् 2 सुन्दर।

प्राप्ति (स्त्री०) [प्र + आप क्तिन] 1 किसी वस्तु का निरीक्षण करने पर लगाया गया अनुमान 2 (ज्योति० में) ग्यारहवां वास्तुघर।

प्राप्य (अ०) [प्र + आप् - ल्यप्] प्राप्त करके, उपलब्ध करके। सम० कारिन् (वि०) कार्य में नियुक्त होकर ही प्रभावशाली, —रूप (वि०) अनायास ही प्राप्त होने वाला।

प्रायणम् [प्र + अय् + ल्युट्] दूध में तैयार किया हुआ भोजन।

प्रायत्यम् [प्रयत - ष्यञ्] पवित्रता, स्वच्छता।

प्रायुस् (नपु०) बढ़ी हुई जीवन शक्ति, दीघतर जीवन।

प्रारब्ध (वि०) [प्र + आ + रभ् + क्त] आरम्भ किया हुआ, शुरू किया हुआ। सम०— कर्मन्, कार्य (वि०) जिसने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है, कर्मन् (नपु०) वह कार्य जो फल देने लगा है।

प्रार्थयितृ (वि०) [प्र - अर्थ् + णिच् - तृच्] जो अनुदान देता है।

प्रार्थ् (चुरा० आ०) आश्रय लेना, सहारा लेना।

प्रार्थ्य (वि०) [प्र + अर्थ् - ण्यत्] 1 चाहने योग्य 2 वाञ्छनीय।

प्रालेयम् [प्रलय + अण्] प्रलय से सम्बन्ध रखने वाला।

प्रावर्तिक (वि०) [प्रवृत्त + ठक्] वह क्रम जो किसी कार्य पद्धति में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में पश्चवर्ती सभी कार्यों में अपनाया जाय, जिससे कि कार्य में पद्धति की एकता बनी रहे।

प्रावादुक [प्र + वद् + उकञ्] वाद-विवाद में प्रति पक्षी।

प्रासादः [प्र + सद् + घञ्] 1 महल, भवन 2 राज भवन 3 मन्दिर 4 चबूतरा 5 वेदिका। सम०— गर्भः महल का आन्तरिक कमरा, —शिखर महल की चोटी।

प्राहवनीय (वि०) [प्र + आ + ह्वे + अनीय] अतिथि की भाँति स्वागत किये जाने के योग्य।

प्राहुण [प्र + आ + घूर्ण् + क] अतिथि, पाहुना।

प्रिय (वि०) [प्री + क] 1 प्यारा, अनुकूल 2 सुखद, 3 अभिलषित 4 भक्त, अनुरक्त, यः (पु०) 1 प्रेमी, पति 2 हरिण 3. जामाता, या (स्त्री) 1 पत्नी 2 महिला 3 छोटी इलायची,—यम् (नपु०) 1 प्रेम 2 कृपा, प्रसाद 3 सुखद समाचार। सम० - आलापिन् (वि०) मिष्टभाषी, मीठा बोलने वाला, आसु (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी हो, जीवन को चाहने वाला, कलह (वि०) झगड़ालू,—जीविता प्राणों का प्रेम,—संग्रहार (वि०) मुकदमे बाजी को पसन्द करने वाला।

प्रियंवद (वि०) [प्रिय वदति - वद् + ट] अभीष्ट और सुखद वस्तु का दाता।

प्रीति [प्री + क्तिच्] 1 प्रबल इच्छा 2 संगीत की श्रुति। सम० संयोग, मैत्री सम्बन्ध, संगति मित्रों का सम्मिलन।

प्रेतः [प्र + इ + क्त] 1 नरक में रहने वाला 2 इस संसार से गया हुआ, मृत 3 पितर। सम०— अयन, एक विशेष नरक, —पात्रम् और्ध्वदेहिक क्रिया के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला बर्तन।

प्रेक्षणालम्भम् (नपु०) (स्त्रियों की ओर) देखना या (उन्हें) स्पर्श करना।

प्रेक्षा [प्र + ईक्ष् + अ + टाप्] कान्ति, आभा प्रेक्षा क्षिपन्त हरितोपलाद्रे माघ० ३।८।२४। सम० पूर्वम् (अ) देखभाल कर, जान बूझ कर, प्रपञ्चः रंगमञ्च पर खेला जाने वाला नाटक।

प्रेक्षार्द्र (वि०) [तृ० त० स०] प्रेम से पसीजा हुआ।

प्रेक्षकम् (नपु) एक प्रकार का चमड़ा को० अ० २।११।२९।

प्रेक्षणकम् (नपु०) सौन्दर्य, आकर्षण मै० ५।६६।

प्रेक्षणक (भ्वा० पर०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला।

प्रेक्षादना [प्र + उत् + घट् + णिच् + युच् + टाप्] 1 (भूतप्रेतादि को) भगाना 2 विनाश।

प्रोतवस्त्र (वि०) [ब० स०] बादलों में छुपा हुआ।
प्रोतशुक (वि०) [ब० स०] शलाका पर रखा हुआ।
प्रोतान (वि०) [प्र+उत्+तन्+क्त] फैलाया हुआ।
प्रोदात्त (वि०) [प्रकर्षणोदात्त---प्रा० स०] ऊँचे स्वर से बोलने वाला।
प्रोदर (वि०) [ब० स०] बड़े पेट वाला।
प्रोद्वीचि (वि०) [प्रा० स०] लहराता हुआ, घटबढ़ होता हुआ।
प्रोन्नमित (वि०) [प्र+उत्+नम्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, उभारा हुआ।
प्रोर्णु (अदा० उभ०) अच्छी तरह ढक लेना, चादर लपेट लेना।
प्रौढ (वि०) [प्र+ऊढ वह्+क्त] 1 विशाल, बड़ा 2 व्यस्त, घिरा हुआ। सम०---शिक्षः साहसी और विश्वास पात्र सखी,---सौरेरका सिद्धान्त कौमुदी पर एक टीका।
प्रौढिः [प्र+वह्+क्तिन्] औत्सुक्य, उत्कटता, (चरित्र की) गहराई।
प्रौढ्य (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त।
प्लक्ष द्वारम् (नपु०) पार्श्वद्वार, भवन के पक्ष का द्वार। ---म० पु० २६४।१५।
प्लवः [प्लु+अच्] 1 एक जलचर 2 एक संवत्सर का नाम। सम०---कुम्भः सैराक की सहायता के लिए बड़े जैसा बर्तन।
प्लवङ्गिन् (वि०) [प्लु+गिच्+गिनि] मल्लाह, नाविक।
प्लुतगतिः (पु०) एक प्रकार का छन्दों मात्र।

फ

फलभरः [फल बिभर्तीति-भृ+अच्] साँप।
फणितल्पः (पु०) विष्णु का विशेषण।
फणिर्जकः (पु०) तुलसी का एक भेद, सफेद तरवा।
फलण्डः (पु०) हरी प्याज।
फलम् [फल्+अच्] 1 क्षतिपूर्ति, प्रतिपूर्ति 2 स्कन्धास्थि, असफलक 3 उपज 4 फल 5 परिणाम 6 कृत्य 7 उद्देश्य, प्रयोजन 8 उपयोग, लाभ 9 सम्मान, 10 (तलवार का) फलक 11 तीर की नोक। सम०---अधिकारः परिश्रम का दावा, ---अनुबंधः यज्ञ का अदृष्ट परिणाम,---उपयोगः फल का आस्वाद लेना, ---ग्रन्थः 'ग्रहों का मानवकुल पर प्रभाव' विषयक ज्योतिष का एक ग्रन्थ,---ग्रहणम् परिणाम का अधिग्रहण,---मूलम् (पु०) बन्दर, मूलम् (नपु०) फल और जड़, वर्तिः (स्त्री०) कपड़े की बनी बत्ती जिसे चिकना करके अनीमा के लिए गुदा में रखना जाता है, स्थापनम् 'सीमन्तोन्नयन' नामक संस्कार।
फलकम् [फल+कन्] 1 तख्ता, पट्टा 2. टिकिया 3 कूल्हा 4 हाथ की हथेली 5 लाभ 6 बाण का मुंह 7 आरसी, दर्पण 8 लकड़ी का पटड़ा 9 (कपड़ा बुनने के लिए) वृक्ष की छाल · सन आदि। सम० ---धारिन् वस्त्रों के रूप में वृक्षछाल धारण करना।
फलिः (पु०) [फल्+इ] एक प्रकार की मछली।
फलीकरणम् मिथ्यापन, झूठपना।
फालिका (स्त्री०) घास, टुकड़ा ---मृदुभ्यञ्जनमांसफालिकाम् मै० १६।८२।
फाल्गुनेयः [फल्गुनी+ढक्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।
फिट्सूत्रम् व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसके रचयिता आत्रेयाचार्य थे।
फुल्लिका (स्त्री०) एक प्रकार का बना हुआ कपड़ा।
फूत्कृतिः (स्त्री०) [फूत्कृ+क्तिन्] फूंक मारना, 'सीसी' शब्द करना।
फूत्किङ्गः (पु०) [प्रा० फिरङ्ग] उपदंश, गर्मी का रोग।
फेनप्रख्य (वि०) [ब० स०] झागसदृश, क्षणिक दिखाई देने वाला।
फेरुण्डः (पु०) एक प्रकार का पक्षी।
फेनवर्मन् (वि०) झागभंगुर, क्षणस्थायी, बुलबुले की भांति अस्थिर---महा० ३।३५।२।
फेनाचितम् [प्रा० ष० फेन+चयच्+क्त] मुख के पार्श्ववर्ती भाग से की गई हाथी की कटकयुक्त गर्जन, चिंघाड़ मात० २।१३।
फेनुकः बड़कांव, फोता, मुष्क।

बकः [बक्+अच्, पृषो०] आग से धातुओं तथा अन्य खनिज पदार्थों को निकालने का एक उपकरण। सम०—**चिल्लका,**—**चिल्ली** एक प्रकार की मछली।

बकाली (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

बटुकः [बट्+कन्] 1 लड़का, बच्चा 2 मन्दबुद्धि बालक। सम०—**भैरवः** भैरव का एक रूप।

बडिशम् (नपु०) शल्योपयोगी उपकरण।

बत (अ०) यथार्थतः उक्त, ठीक कहा हुआ कल्याणी बत सायेयम् रा० ५।३४।६।

बद्धम् बड़ी संख्या (सायण के मत से सौ करोड़ की संख्या, औरों के मत से एक हजार करोड़)।

बन्दि [बन्द्+इ] 1 बन्धन, कैद 2 बन्दी, कैदी। सम०—**गृह** बन्दी बनाना, हाथ सेंध लगाने वाला—**ग्राहम्** (अ०) बन्दी के रूप में ग्रहण करना,—**पाल,** कारागार्ध्यक्ष, शूला वारांगना, वेश्या।

बद्ध (वि०) [बन्ध्+क्त] 1 परिरक्षित 2 बन्धा हुआ, 3 शृंखलित 4 प्रतिबद्ध 5. सहित 6 दृढ़ 7 जड़ा हुआ 8 रचित 9 संकुचित। सम०—**अवस्थिति** (वि०) सतत, अनवरत, आदर (वि०) व्यसनसम्—बद्धादरोऽपि परदारपरिग्रहे त्वम् रा० च० ५,—**अञ्जलि** (वि०) वर्तुलाकार, मछली में अवस्थित,—**मूत्र** (वि०) जिसने मूत्र रोक लिया है।

बन्ध [बन्ध्+घञ्] 1 बन्धन 2 केशबन्ध, चोटिला 3 शृंखला, बेड़ी। सम०—**कर्तृ** (पु०) बाँधने वाला,—**मुद्रा** बेड़ी की छाप।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] सामाजिकबन्धन (विप० मोक्ष)। सम०—**स्थित** (वि०) कारागाध्यक्ष।

बन्धनिक [बन्धन+ठन्] कारागाध्यक्ष।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1 रिश्तेदार, सम्बन्धी 2 एक दूसरे से सम्बद्ध, भाई 3 मित्र 4 नियामक, शासक 5 ज्योतिष की दृष्टि से सातवाँ घर। सम०—**दायाद** रिश्तेदार, उत्तराधिकारी,—**प्रिय** (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा।

बन्धुरित (वि०) [बन्धुर+इतच्] प्रवृत्त, मुड़ा हुआ।

बन्धूक (तना० उभ०) मित्र बनाना।

बन्धुर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1 नतोन्नत, लहरियादार 2 सुखद, प्रसन्नता देने वाला।

बभ्रुकः [भृ+कु, हिस्व, बभ्र+उ वा, स्वार्थे कन्+च] एक सर्पराज।

बर्बरः (पु०) 1 वह हाथी जिसने चौथे वर्ष में पदार्पण कर लिया है भाव० ५।५ 2 घुंघराला। सम०—**अलका** (स्त्री) वह स्त्री जिसके मस्तक के घुंघराले बाल हैं।

बर्बरीकम् (नपु०) 1. घुंघराले बाल 2 सफेद चन्दन की लकड़ी।

बर्हः,—र्हम् [बर्ह्+अच्] 1 मोर का पंख 2. पक्षी की पूंछ 3 मोर की पूंछ 4 पंख 5 वृन्द। सम०—**अवतंस** (वि०) जिसने सिर को पंख लगाकर अलंकृत किया हुआ है,—**नेत्रम्** मोर की पूंछ पर बना आँख जैसा चिह्न।

बर्हिष्मत्यः (पु०) मीमांसा का व्याख्याविषयक एक नियम जिसके आधार पर गौण अर्थ की अपेक्षा प्राथमिक अर्थ को प्रधानता दी जाती है—वी० सू० ३।२।१-२।

बर्हिणवाससम् (नपु०) पक्षों से बना बाण, वह तीर जिसमें पर लगा है।

बलम् [बल्+अच्] 1 शक्ति, सामर्थ्य 2 सेना 3 मोटापा 4 शरीर, आकृति 5 वीर्य 6. रुधिर 7 अंकुर 8 शक्ति का देवता 9 हाथ, ऋग्वेद विष्णुबले शक्र—महा० १२।३३९।८ 10. प्रयत्न। सम०—**अर्थिन्** (वि०) शक्ति या सामर्थ्य का इच्छुक,—**उपादानम्** सेना में भर्ती होना—को० अ०,—**तापन** इन्द्र का विशेषण,—**पुच्छकः** कौवा, पृच्छकः हरिण विशेष, **मुख्यः** सेनापति,—**वर्जित** (वि०) बलहीन, दुर्बल,—**समुत्थानम्** सशक्त सेना की भर्ती करना।

बलकः (पु०) स्वप्न।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. बलवान्, शक्ति सम्पन्न, प्रबल 2 सघन, मोटा 3. अधिक महत्त्वपूर्ण 4. ससैन्य (पु०) 1 आठवाँ मुहूर्त 2 श्लेष्मा, कफ, बलगम—**ती** (स्त्री०) छोटी इलायची।

बलासः (पु०) 1 एक प्रकार का रोग 2. क्षय, तपेदिक।

बलाहकः [बल+आ+हा+क्वनुप्] 1 बादल 2 एक पर्वत 3 विष्णु का एक घोड़ा 4 साँप की एक प्रकार।

बलिः [बल्+इन्] 1 यज्ञ में आहुति, उपहार 2 भूत यज्ञ 3 पूजा, अर्चना 4 उच्छिष्ट भोजन 5 देवता पर चढ़ाया गया उपहार 6 शुल्क, कर 7 चँवर का दस्ता 8. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। सम०—**चिह्नम्** मस्तक पर एक रेखा,—**बन्धनम्** एक नाटक का नाम जो पाणिनि द्वारा रचित समझा जाता है,—**बन्धनः** (पु०) विष्णु का विशेषण, **विधानम्** उपहार रूप में बलि देना,—**षड्भागः** आय का छठा भाग जो राजा को कर के रूप में दिया जाता है—अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम् मनु० ८।३०८,—**होम** अग्नि में आहुति देना।

बलीकः (पु०) 1 कौवा 2 चालाक, धूर्त, मक्कार।

बस्तशारम् (अ०) बकरे की हत्या के ढंग पर।

बस्तिः [बस्+इ, वकयोरभेदः] 1 मूत्राशय 2 सागर जीव से उत्पन्न नमक।

बस्तिकः (पु०) एक प्रकार का बाण जिसकी नोक शरीर से खींचते समय उसी में रह जाती है—महा० ७। १८९।११ पर भाष्य।

बहिस् (अ०) [बह्+इसुन्] 1 के बाहर, बाहर 2 घर के बाहर 3 बाह्यरूप से 4 पृथक् रूप से 5 सिवाय। सम०—अङ्ग (वि०) बाहरी, दूर से सबन्ध रखने वाला—अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्ग बलीय मैं० स० १२।२।२९ पर शा० भा०, —दृश (बहिर्दृश) (अ०) अतिरिक्त या फालतू दिखाई देने वाला, —पवमानम् सामयाग में प्रयुक्त सामगान, प्रज्ञ (वि०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, मनस् (वि०) जो मन से बाहर हो,—मनस्क (वि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो,—यूति (वि०) जो बाहर बँधा हुआ या रक्खा हुआ हो, वसिन् (वि०) बाहर रहने वाला,—व्यसनिन् (वि०) लंपट, कामुक, इन्द्रियपरायण, स्व,—स्थित (वि०) बाहरी, बाहर का, कार्य (वि०) निकाल बाहर फेंकने के योग्य।

बहु (वि०) [बर्ह्+कु, नलोप] (द्वि. द्वी. बहुम्, बहुतिष्ठ) 1 बहुत, पुष्कल, प्रचुर 2 बहुत से, असंख्य 3 बड़ा, विशाल। सम० उपयुक्त (वि०) जो कई प्रकार से काम का हो —क्षीरम् साबुन,—क्षीरा अधिक दूध देने वाली गाय, गुण जिसने अध्ययन बहुत कुछ किया है परन्तु भली प्रकार नहीं दीहला दे० बहुक्षीरा, बहुत दूध देने वाली गाय, गात्रिका शरीर, काया, प्रकृति (वि०) जिसमें क्रियापरक तत्त्व बहुत हों (जैसे समस्त शब्द), —प्रज्ञ (वि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा समझदार, प्रत्यर्थिक (वि०) जिसके प्रतियोगी और प्रतिद्वन्द्वी अनेक हों, प्रत्यवाय (वि०) जिसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हों, रजस् (वि०) बहुत धूल से भरा हुआ, —वादिन् (वि०) बहुत बोलने वाला, शस्त (वि०) बहुत उत्तम, सत्यक (वि०) अनगिनत, सत्त्व (वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों साहस्र (वि०) हजारों की संख्या में।

बहुल (वि०) [बर्ह्+कुलच्, नलोप] (स०—बहीयस्, उ० बहिष्ठ) 1 मोटा, सघन, सटा हुआ 2 चौड़ा पुष्कल 3 प्रचुर, यथेष्ट 4 असंख्य, अनगिनत 5 समृद्ध 6 काला, कृष्ण। सम०—अश्व एक राजा का नाम,—पक्षतिथिस्थ कृष्णपक्ष का अंधकार —कूजायुजा बहुलपल्लविनीमिव सन्ध्या—नै० २३।१२४।

बाण: [बण्+घञ्] 1 तीर 2 निशाना 3 बाण की नोक 4 ऐंन, औंही (गाय की) 5 शरीर 6 एक राक्षस, बलि का पुत्र 7 एक कवि का नाम जिसने कादम्बरी और हर्षचरित लिखे हैं 8 अग्नि 9 पाँच की संख्या का प्रतीक 10 बाण की शय्या। सम० —चिह्नित (वि०) बाण से बिंधा हुआ, पक्ष (पु०) एक पक्षी,—लिङ्गम् नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक श्वेत पत्थर जिसे शिवलिङ्ग के रूप में पूजा जाता है।

बादरि: (पु०) एक दार्शनिक का नाम।

बाधानिर्मुक्ति (स्त्री०) [ष० त०] भूत प्रेत की पीड़ा से मुक्ति।

बाधक (वि०) [बाध्+ण्वुल्] पीड़ादायक, छेड़छाड़ करने वाला।

बाधयितृ (पु०) [बाध्+णिच्+तृच्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

बाध्यबाधकता (स्त्री०) अत्याचारग्रस्त और अत्याचारी की अन्योन्यक्रिया, पीड़ित और पीड़क का पारस्परिक प्रभाव।

बान्धव [बन्धु अण्] हितैषी—पैतृष्वसेयप्रीत्यर्थं तद्गोत्रस्यात्मबान्धव भाग० १।१९।३५।

बार्हस्पत्य [बृहस्पति+यक्] राजनीति पर लिखने वालों की शाखा जिसका उल्लेख कौटिल्य ने किया है—कौ० अ० १।१५।

बाल (वि०) [बल्+ण, वाल्+अच्] 1 बालक, बच्चा 2 अविकसित (पुरुष या वस्तु) 3 नवोदित (जैसा कि सूर्य या उसकी किरणें) 4 अज्ञान, —ल: (पु०) 1 बच्चा 2 अवयस्क 3 सूर्य 4 भोलाभाला 5 पाँच वर्ष का हाथी 6 नारियल। सम०—अरिष्ट बच्चों का दाँत निकलने का कष्ट, आमय बच्चों की बीमारी, बालराग, चिकित्सा बच्चों के रोगों का इलाज चूम्बाल मछली, चूत आम का पौधा, —मनोरमा सिद्धान्तकौमुदी पर लिखी गई टीका —मरणम् मृत्यु की मृत्यु —यति, बालसन्यासी,—व्रत भट्टकुमार (बौद्धग्रन्थकार) का विशेषण।

बालक [बाल+कन्] 1 बालक बच्चा 2 अवयस्क 3 वृद्ध 4 बछड़ा 5 हाथी या घोड़े की पूँछ 6 बाल 7 पाँच वर्ष का हाथी—शि० ५।४७।

बाला [बाल+टाप्] दुर्गा का विशिष्ट रूप। सम०—मन्त्र बालादेवी का पूजनीय मंत्र।

बालिशबुद्धि (वि०) बच्चों जैसी छोटी बुद्धि वाला, बालबुद्धि।

बालेयशाक एक प्रकार का शाक।

बाष्कल एक अध्यापक, पैंग ऋषि का शिष्य, ऋग्वेदशाखा का संस्थापक।

बाष्पविप्लव (वि०) आँसुओं से अभिभूत।

बास्तिकम् [बास्त+ठक] बकरियों का झुंड—रा० २।७७।२।

बाह्लिकि: विदेशी, दूसरे देश का न च बाह्लिकान् कुर्यात् पुरराष्ट्रोपघातकान् कौ० अ० १।४।२२।

बाहु: [बाध्+कु, हकारादेश] 1 भुजा 2 चौखट का बाजू 3 पशु का अगला पाँव 4 (ज्या० में) समकोण त्रिकोण की आधार रेखा 5 रथ का पोल 6 सूर्य घड़ी पर शङ्कु की छाया 7 बारह अंगुल की नाप, एक हाथ की नाप 8 धनुष का अवयव। सम०

—अन्तरम् छाती - बाह्यान्तरे मयूजित चितकीन्युभे पा—कनक०, तरणम् भुजाओं से तैर कर नदी पार करना,—निःसृतम् युद्ध की एक विधा जिसके अनुसार शत्रु के हाथ की तलवार नीचे गिरवा दी जाती है, प्रचालकम् (अ०) भुजाएँ हिलाना, लोहम् घण्टी बनाने के काम आने वाला धातु, —विघट्टनम्, विघट्टितम् मल्लयुद्ध की एक विशेष मुद्रा।

बाह्य (वि०) [बहिर्भव.—यञ्] 1 बाहर का, बाहरी 2 जाति बहिष्कृत 3 सावर्जनिक, ह्यः (पु०) 1 विदेशी 2 बिरादरी से निष्कासित 3 प्रतिलोम संबंध से उत्पन्न सन्तान। सम० अर्थ शब्द का अतिरिक्त, फालतू अर्थ, कक्ष बाहर की ओर का कमरा, —करणम् बाहरी ज्ञानेन्द्रिय,—प्रयत्न ध्वनियों के उच्चारण के समय बाह्य प्रयत्न।

बिडम् (नपु०) आकाश निरु० ६।३०।

बिडालव्रतिक (वि०) [ब० स०] पाखण्डी कपटी, धूर्त।

बिन्दु [बिन्द+उ] 1 बूंद, कण 2 गोल चिह्न 3 हाथी के शरीर पर रंगीन निशान 4 शून्य सिफर 5 (ज्या० में) ऐसा चिह्न जिसकी लम्बाई चौड़ाई कुछ भी न हो 6 पानी की एक बूंद 7 अक्षर के ऊपर लगा बिन्दु जो अनुस्वार का कार्य करता है 8 पाण्डुलिपियों में मिटाये गये शब्द के ऊपर शून्य चिह्न (जो प्रकट करता है कि यह शब्द मिटाया नहीं जाना चाहिए था) 9 (नाटय० में) विशिष्ट चिह्न जो किसी गौण घटना का आकस्मिक विकास प्रकट करता है 10 (दर्शन० में) चित्तवृत्ति की विशिष्ट अवस्था। सम० च्युतक एक प्रकार की शब्दक्रीडा —नै० १।१०४,—प्रतिष्ठानम् (वि०) अनुस्वार पर आधारित,— आत्मन् विष्णु का रूप।

बिम्ब [बी+बन्, नि०] 1 सूर्य या चन्द्र का मण्डल 2 कोई भी थाली की भाँति गोल तश्तरी वस्तु 3 प्रतिमा, छाया, अक्स 4 दर्पण 5 सादृश्य 6 तुलित पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब) 7 मूर्ति, आकृति 8 साँचा, उभरा हुआ चित्र।

बिम्बिनी [बिम्ब+इन्+ङीप्] आँख की पुतली।

बिम्बिसार मगध के एक राजा का नाम जो गौतमबुद्ध का समसामयिक था।

बिरुदः 1 एक पदक या उपाधि जो श्रेष्ठता का द्योतक है 2 स्तुतिपाठ, प्रशस्ति।

बिलद्वारम् [ब० स०] अन्तर्भौमिक गुफा।

बिसम् [बिस्+क] 1 कमलतन्तु 2 कमल का तन्तुमय काण्ड 3 कमल का पौधा। सम०—ऊर्णा कमलतन्तु की ऊन, मुक्तः कमलतन्तुओं से बनी रस्सी, प्रसूनम् कमल फूल,—शक्तिः कमलतन्तु से बनी बर्छी।

बिसिनीपत्रम् कमल का पत्ता।

बीजम् [वि+अन्+ड, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बीज, बीज का दाना 2 बीजाणु, तत्त्व 3 मूल, स्रोत 4 वीर्य 5 कथावस्तु का बीज 6 बीजगणित 7. सचाई 8 आशय 9 प्राथमिक जनसाणु का सकलक 10 विश्लेषण 11 जन्म के समय शिशु के हाथों की मुद्रा। सम० अङ्कितः छोटे,—अर्थ (वि०) प्रजननार्थी, निर्वापणम् बीज बोना, प्ररोहिन् (वि०) बीज से उगने वाला,—वापः बीज बोना,—स्नेहः डाक का वृक्ष।

बीजावृत (वि०) (क्षेत्र) जिसमें बोने के पश्चात् हल चला दिया जाय।

बुद्ध (वि०) [बुध्+क्त] 1 ज्ञात 2 जागरित 3 प्रकाशित 4 विकसित,—द्धः (पु०) 1 विद्वान् पुरुष 2 (बुद्ध सनत्कुमार) वह व्यक्ति जिसने 'सत्य ज्ञान' जान लिया है तथा जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व संसार को मोक्ष का मार्ग बतलाता है 3 परमात्मा।

बुद्धि (स्त्री०) [बुध+क्तिन्] 1 प्रत्यक्षीकरण, समझ 2 प्रज्ञा, मति, मेधा 3 सूचना, जानकारी 4 विवेक 5 मन 6 मति, विश्वास, विचार 7 इरादा, प्रयोजन, अभिकल्प 8 होश में आना, सुबुद्ध प्राप्त करना 9 सांख्य के २५ पदार्थों में दूसरा 10 प्रकृति 11 उपाय 12 ज्योतिष की दृष्टि से पाँचवाँ घर। सम०—अधिक (वि०) श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त,—अहङ्कार बुद्धि की आत्मा पर प्रतिवर्त क्रिया,—आलम्बी समझ की स्वस्थता,—मोहः विचार मूढ़ता,—व्यवसाय निर्णयविषयक हलकापन, न्यायलक्षिका, तार्किकी, —वर्द्धित (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, वैभवम् बुद्धि की शक्ति, बुद्धि का ऐश्वर्य।

बुभुक्षु (वि०) [भुज्+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] 1 समृद्ध होने का इच्छुक 2 कल्याण चाहने वाला।

बुस्त (पु०) टोकरी बनाने वाला।

बुस्सा (स्त्री०) [बुस्+अच्+टाप्] (नाटय० में) छोटी बहन।

बृसय (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, वृषा वृसयशब्दो बलवन्नामधेयं गमयति मी० सू० १०।१।३२ पर शा० भा०।

बृहत् (वि०) [बृह्+अति] 1 बड़ा, विशाल 2 चौड़ा, प्रशस्त विस्तृत 3. पुष्कल 4 प्रबल, शक्तिशाली 5 लंबा, ऊँचा 6 पूर्ण विकसित 7 सघन, मटा हुआ 8 प्राचीनतम, सबसे पुराना 9 उज्ज्वल 10 स्पष्ट, (पु०) विष्णु;—ती (स्त्री०) 1. बड़ी वीणा 2. नारद की वीणा 3 छत्तीस की संख्या का प्रतीक 4 पीठ और छाती के बीच का भाग 5 आकाश 6 वाणी 7 सफेद संवाहकार वैदिक (नपु०) 1. वेद 2. ब्रह्म 3. वैदिक

ब्रह्मचर्य सांदिक प्राजापत्य च ब्राह्म याम बृहत्तथा —भाग० ३।१२।४२। सम० उत्तरतापिनी एक उपनिषद् का नाम,—तेजस् (पु०) बृहस्पति ग्रह,—देवता वैदिक देवता विषयक एक सूक्त,—भारद्वीयम् एक उपनिषद् का नाम, —संहिता वराहमिहिर रचित ज्योतिष का एक ग्रंथ,—साम्न् सामवेद का एक मंत्र —भग० १०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (नपु०) साठ वर्षों (संवत्सरों) का काल।

बिल (वि०) [बिल+अच्] बिलों में रहने वाला।

बोक्काणः (पु०) घोड़े की नाक पर लटकता हुआ थैला जिसमें उसका खाद्य पदार्थ रक्खा रहता है।

बोधायनः (पु०) एक सूत्रकार का नाम।

बोधिः [बुध+इन्] 1 पूर्ण ज्ञान या प्रकाश 2 बौद्ध श्रमण की उज्ज्वल बुद्धि 3 पुनीत अंजीर वृक्ष 4 मुर्गा 5 बुद्ध का विशेषण। सम०—अङ्गम् पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपेक्षित वस्तु।

बौद्धावतारः (पु०) बुद्ध के रूप में भगवान् का अवतार।

ब्रध्नः (पु०) 1 सूर्य 2 वृक्षमूल 3 दिन 4. आक या मदार का पौधा 5 सीसा 6 घोड़ा 7 शिव या ब्रह्मा का विशेषण 8 तीर की नोक 9 एक रोग का नाम। सम०—बिम्बम्, —मण्डलम्, सूर्यमण्डल।

ब्रह्मन् (नपु०) [बृह्+मनिन्, नकारस्याकारे ऋतोरत्वम्] 1 परमपुरुष, परमात्मा 2 अर्थवादपरक सूक्त 3 पुनीत पाठ 4 वेद 5 पुनीत अक्षर ॐ—एकाक्षर पर ब्रह्म मनु० २।८३ 6 ब्राह्मणजाति 7 ब्राह्मण की शक्ति 8 धार्मिक तपश्चरण 9 ब्रह्मचर्य, सतीत्व 10 मोक्ष 11 वेद का ब्राह्मणभाग 12 धन 13 आहार 14 सचाई 15 ब्राह्मण 16 ब्राह्मणत्व 17 आत्मा। सम०—क्रियाकृतम् ब्राह्मणों के प्रति किया गया अपराध, —कुल बड़ा विद्वान्, —गीता (स्त्री०) ब्रह्मा का उपदेश जैसा कि महा० के अनुशासनपर्व में दिया गया है,—जिज्ञासा परमात्मा को जानने की इच्छा, —तन्त्रम् वेद की शिक्षा, —दूषक (वि०) वेद के मूलपाठ को दूषित करने वाला, —पाशः सब प्रकार के पुनीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य, —बलम् ब्रह्म-विषयक शक्ति,—बिन्दु वेदपाठ करते समय मुख से निकली थूक की बूंद, —बुकिका एक प्रकार की मिर्च, —मुहूर्त दिन का आरम्भिक भाग, ब्राह्मवेला, —रात्र उच्च काम, —वाद परमात्मा से संबंध रखने वाला व्याख्यान, —श्री एक सामसंत्र का नाम।

ब्रह्मन्वत् (पु०) [ब्रह्मन्+मतुप्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मभूत (पु०) 1 जिसने ब्रह्मा के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया है (यह संन्यासियों के विषय में कहा गया है जो इस शरीर को त्याग देते हैं) 2 शंकराचार्य।

ब्राह्मनिधि (पु०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा राजकों के लिए बनाई गई निधि।

ब्राह्मण (वि०) [ब्रह्म वेदस्यैते वा ब्रह्म+अण्] 1 ब्राह्मण विषयक 2 ब्राह्मण के योग्य 3 ब्राह्मण द्वारा दिया गया, 4 धर्म पूजा विषयक 5 ब्रह्म को जानने वाला —ण 1 चारों वर्णों में से पहले वर्णों से संबद्ध 2. (पुरुष के मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण 3 पुरोहित 4 अग्नि का विशेषण 5 अट्ठाईसवां नक्षत्र, —म् 1 ब्राह्मणसमाज 2 वेद का वह भाग जिसमें विभिन्न यज्ञों के अवसर पर मन्त्रों के प्रयोग का विधान विहित है, यह मन्त्रभाग से बिल्कुल पृथक् है। सम० —अदर्शनम् ब्राह्मण भाग में विहित निर्देश का अभाव मनु० १०।४३, —अस्त्रम् 'ब्राह्मण' नाम,—आतिथेय पड़ोसी ब्राह्मण,—आत्व ब्राह्मण होने की स्थिति।

भ

भक्तम् [भज्+क्त] 1 भाग, अंश 2 आहार 3 भात, उबले हुए चावल 4 अनाज 5 पानी में उबाला हुआ अन्न 6 पूजा, अर्चा 7 वेतन, पारिश्रमिक 8 एक दिन का भोजन —यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृत्तये —मनु० ११।७। सम० —कालः, —काल्य न-हारशाला, अन्नपानगृह, —छन्दस् भोजन की तैयारी —दासनम् दाल की तश्तरी, —सिक्थम् भात का माड़।

भक्ति (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1 विभाजन 2 गौण अर्थ, आलंकारिक अर्थ 3 (किसी रोग के प्रति) शरीर की उन्मुखता। सम०—लभ्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सके, जहाँ श्रद्धा और भक्ति से पहुँचा जाय, —वन्ति (वि०) जिसमें भक्ति की गन्धमात्र हो अर्थात् थोड़ी भक्ति वाला व्यक्ति, —वश्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा वश में किया जा सके।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लिए उपयुक्त, —क्ष्यम् (नपु०) 1 खाने का पदार्थ, आहार, —भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विषस्येव कारणम्—हि० १।५५ 2 अन्न। सम० —अभक्ष्यम् अनुचित और निषिद्ध भोजन,—भोज्यम् सब प्रकार के भोजन से युक्त।

भग,-गम् [भज्+घ] 1 सूर्य 2 चाँद 3 शिव का रूप 4 सौभाग्य, प्रसन्नता 5 समृद्धि 6 धन, कीर्ति

7 सौन्दर्य 8 श्रेष्ठता 9. प्रेम, प्यार 10 कामदेव, 11 यज्ञ 12 गुण, धर्म 13. प्रयत्न 14 अग्नि, किरण 15 मोक्ष 16 सामर्थ्य 17 सर्वशक्तिमत्ता 18 प्रेम और विवाह की अधिष्ठात्री देवता आदित्य 19 ज्ञान 20 इच्छा 21 अणिमा। सम० ईश भाग्य का देवता, काम (वि०) संभोग के आनंद का इच्छुक, -वृत्ति (स्त्री०) वेश्यावृत्ति, वृत्ति (वि०) वेश्यावृत्ति से निर्वाह करने वाला।

भगवत्पाद आदि शंकराचार्य की सम्मान सूचक उपाधि।

भग्न (वि०) [भञ्ज+क्त] 1 टूटा हुआ 2 हताश, विफल 3 अवरुद्ध, स्थगित 4 नष्ट 5 ध्वस्त 6 डाया हुआ। सम० अस्थि (वि०) जिसकी हड्डियां टूट गई हैं,—कूबर (वि०) जिसका ऊपर का होंठ टूट गया है (जैसे रथ),—ताल: (संगीत०) एक प्रकार की ताल, —परिणाम (वि०) पूरा करने से रोकने वाला।

भङ्ग: [भञ्ज+घञ्] 1 (बुद्ध०) विश्व में निरन्तर होने वाला क्षय 2 (जैन०) 'स्यात्' से आरम्भ होने वाला तार्किक सूत्र।

भङ्गि. [भञ्ज+इन्, कुत्वम्, स्त्रियां ङीष्] 1 टूटना 2 हिलना 3. झुकना 4 तरंग 5 बाढ़ 6 विशिष्ट प्रथा, ढंग नानाश्रमललितपथ्यशब्दोरचितकुसुमकान्तम् भारत०। सम० भाषणम् कूटनीति से युक्त भाषण, विकार: अपनी मुखमुद्रा को विकृत करना।

भङ्गिनी [भङ्गिन्+ङीप्] नदी, दरिया —आस्यमौलिमणिकान्तिभङ्गिनीम् नै० १८।१३७।

भञ्जना [भञ्ज्+युच्+टाप्] व्यायाम।

भट्टनारायण: 'वेणीसंहार' नाटक का प्रणेता।

भट्टि 'भट्टि काव्य' का रचयिता।

भट्टोजि एक वैयाकरण का नाम।

भण्डुक एक प्रकार की मछली।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक, नलोप] 1 अच्छा, प्रसन्न, समृद्ध 2 शुभ, मांगलिक 3 श्रेष्ठ, प्रमुख 4 कृपालु 5 सुन्दर 6 सुन्दर 7 वांछनीय 8 प्रिय 9 दक्ष। सम०—काल: दैवी के अनुसार वर्तमान युग,—क्रिया: उपहार के लिए बने पात्र, ता (स्त्री०) शुभ अवसर, किरण एक छन्द का नाम।

भद्रक [भद्र+कन्] 1 सुन्दर 2 शुभ 3 सज्जन -कम् (नपु०) 1 बैठने का विशिष्ट आसन 2 अन्तःपुर।

भद्रकारकम् मुण्डन, समस्त सिर मुंडवाना।

भयालु (वि०) [भय+आलुच्] भीरु, कायर।

भर: [भृ+अप्] पराक्रम, श्रेष्ठता, प्रमुखता न खलु वयसा ज्ञानस्यैवं स्वकार्यमहो मर —वि० ५।१८।

भरतशास्त्रम् नाट्यकला।

भर्ग (नपु०) [भृज्+असुन्] आभा, कांति, चमक।

भर्तव्य (वि०) [भृ+तव्य] 1 सहन करने या होने योग्य 2 भाड़े के योग्य, पालन पोषण किये जाने के योग्य।

भर्तृ (पु०) [भृ+तृच्] 1 पति, 2 स्वामी 3. नेता, सेनापति 4 पालक पोषक, रक्षक 5 सृष्टिकर्ता 6 विष्णु। सम० चित्त (वि०) पति के विषय में सोचनेवाला, देवता पति को देवता मानना, लोक: पति का संसार,—हार्यधन (वि०) जिसकी संपत्ति उसके स्वामी द्वारा जब्त की जा सके, हीना पति द्वारा परित्यक्ता।

भव: [भू+अप्] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 जन्म, उत्पत्ति 3 जीव, उद्गम 4 सांसारिक सत्ता, सांसारिक जीवन 5 स्वास्थ्य, समृद्धि 6 देवता 7 शिव 8 अधिशेषण, प्राप्ति 9 श्रेष्ठता। सम० अग्र्य संसार का सबसे अधिक दूरवर्ती किनारा, अङ्ग: जन्म मरण से मुक्ति, —आयन (वि०) कल्याणकारी, ओघ (वि०) संसार के अस्तित्व से डरने वाला,—भोग: सांसारिक सुखों का आनन्द लेना, ईश्वर: ब्रह्मा,—लीन (वि०) भौतिक संसार में अनुरक्त,—संतति: (स्त्री०) जन्म मरण का ताता।

भवदीय (वि०) [ष० स०] धनवान्, दौलतमंद।

भवनम् [भू+ल्युट्] जन्मांग, जन्मकुंडली, जन्म-नक्षत्र।

भवन्मनस् (वि०) अच्छे संकल्पों वाला।

भवादिक (वि०) [भवत्+कन्] आप से संबंध रखने वाला भवादिकेषु चतुर्थीमेव प्रयुङ्क्ते रा० च० ७।२।

भषी (स्त्री०) कुतिया, भौंकने वाली।

भस्मन् (नपु०) [भस्+मनिन्] 1 राख 2 शरीर पर लगाई जाने वाली भभूत, राख। सम०—अङ्ग: एक प्रकार का कबूतर, अङ्गराग: शरीर पर भस्म रमाना, -अवलेप: शरीर पर भस्म लीपना—अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में बच गया है, —मुष्टिलम् शरीर पर भस्म पोतना,—राज: कामदेव, शुक्र राख का ढेर।

भा (अदा० पर०) 1 चमकना 2. फूंक मारना।

भाभी (भा धातु, लिट् लकार, प्र० पु०, ए० व०) 1 चमका 2 प्रसन्न हुआ 3 हुआ 4 हवा चली —भभौ मरुत्वान् विकृत स-मुद्रो, भभौ मरुत्वान् विकृत समुद्र, भभौ मरुत्वान् विकृत: समुद्रो, भभौ मरुत्वान् विकृत: समुद्र। (सभी अर्थों में प्रयुक्त) —भट्टि० १०।१९।

भाग: [भज्+घञ्] 1 अंश —को० अ० २।६।६४ 2 चार आध्यात्मिकों में से एक (सांख्य०) सां० का० ५० 3 ग्यारह की संख्या 4 भाग, अंश 5 भाग्य, किस्मत 6. चौथाई भाग। सम०—अन-

हारिन् जो अपना भाग ले लेता है,—धनम् काव, —पत्रम्—लेखम् विभाजन का दस्तावेज।

भागिन् (वि०) [भाग+इनि] अत्यन्त उपयोगी।

भागुरिः एक विख्यात वैयाकरण और स्मृतिकार का नाम।

भाग्य (वि०) [भज्+ण्यत्, कुत्वम्] 1 बाटे जाने के योग्य 2 हिस्से का अधिकारी 3 भाग्यशाली, किस्मत-वाला,—ग्यम् (नपु०) 1 भाग्य, किस्मत 2 अच्छी किस्मत, सौभाग्य 3 समृद्धि 4 कल्याण, सुख। सम०—लेखः बुरी किस्मत, उन्नति भाग्य का उदय होगा, फल्गुनी पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र।

भाङ्गुरक चौपड़ा।

भाजक् (अ०) जल्दी से, तेजी से।

भाजनविभवः गलत उपायों के द्वारा गबन करना—कौ० अ० २।८।२१।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्] 1 सामान 2 पूंजी, मूलधन 3 बर्तन। सम० मौण्डिकः बर्तन रखने वाला।

भातः (अ०) प्रतीति के परिणामस्वरूप।

भात्व (वि०) [भानु+अण्] सूर्यसम्बन्धी।

भानुजा यमुना नदी का विशेषण।

भामहः अलंकारशास्त्र का एक विख्यात लेखक।

भारः [भृ+घञ्] 1 बोझा 2 आधिक्य 3 परिश्रम 4 बड़ी राशि 5 किसी पर डाला गया कार्यभार। सम०—अवतरणम् बोझा कम करना,—आक्रान्ता एक छन्द का नाम,—उद्वहनम् बोझा उठाना, ऋद्धि (स्त्री०) भारवहन करना, बोझ उठाना,—ग खच्चर।

भारिका राशि, ढेर।

भारती 1 वक्तृता, शब्द, वाक्पटुता 2 वाणी की देवता 3 नाटकला 4 किसी पात्र की संस्कृत बोलना 5 संन्यासियों के दस भेदों में एक—गोस्वामिन्।

भारत (वि०) [भरतस्येदम्-अण्] भरतवंशी,—तः 1 भरतकुल में उत्पन्न (जैसे विदुर, धृतराष्ट्र, अर्जुन) 2 भारतवर्ष का निवासी 3 अग्नि,—तम् (नपु०) 1 भारतवर्ष देश 2 संस्कृत का एक महान् काव्य (इसके लेखक व्यास या कृष्णद्वैपायन माने जाते हैं) 3 संगीतशास्त्र तथा नाटकला। सम०—आख्यानम्, इतिहासः, कथा भरतकुल के राजाओं की कहानी, महाभारत काव्य,—सावित्री एक स्तोत्र का नाम इसे भारतसावित्री प्रातरुत्थाय यः पठेत्—महा० १८।५।६४।

भारद्वाजः [भरद्वाज+अण्] 1 भरद्वाज गोत्र से सम्बन्ध रखने वाला 2 राजनीति का एक लेखक जिसका कौटिल्य ने उल्लेख किया है।

भारविः किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता।

भार्गवः 1 अविवाहित वैश्य कन्या में वैश्यशास्त्र के द्वारा उत्पादित पुत्र 2 अग्नि की पूजा करने वाला।

भार्गवः [भृगु+अण्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता—भार्गवी शुक्रदेवता वेद०।

भार्यापतिसम्बन्धः दाम्पत्य सम्बन्ध।

भाल्लविः सामवेद की एक शाखा।

भावः [भू+घञ्] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 कल्याण—भावमिच्छति सर्वस्य—महा० ५।३६।१६ 3 प्रस्ताव-दोषस्याभावाभावे तु—महा० ७।२५।६४ 4 भाग्य 5 वासना, अतीत संकल्पनाओं की सूक्ष्म छाप 6 छः अवस्थाएं अस्ति, वर्धते, विपरिणमति आदि। सम० कर्तृक, भावबोधक क्रिया, गतिः (स्त्री) मानवी भावनाओं को प्रकट करने की शक्ति—भावगतिराकृतीनाम् प्रतिमा० ३,—चेष्टितम् प्रेमद्योतक संकेत या चेष्टाएं, निर्वृत्तिः भौतिक सृष्टि सां० का० ५२, —रूपिः एक प्रकार का नाच, संकलनम् नाना प्रकार की भावनाओं का मिश्रण।

भावगम्य (वि०) मनोहर, सुहावना।

भावयितृ (वि०) [भू+णिच्+तृच्] प्रेरक, प्रोत्साहक कामो भावयिता पुनः—महा० ३।२९।१।

भावित (वि०) [भू+णिच्+क्त] 1 अभिनिर्दिष्ट, स्थिर किया हुआ बताया हुआ 2 अधिकार में किया हुआ, गृही, पकड़ा हुआ—दुदुहुः पृथुभावितां गाम्—भाग० ४।१८।१३ 3 निमग्न, लीन, पूर्ण—रथाङ्गपाणेरनुभावभावितम्—भाग० १२।१०।४२ 4 प्रसन्न, तुष्ट। सम० भावज्ञ (वि०) स्वयं को आगे बढ़ाने वाला, तथा औरों की सहायता करने वाला।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1 भावी 2 जो सम्पन्न हो सके 3 सिद्ध दोष होना श्रवणं साक्षिभिर्भाव्यो नृपब्राह्मणसन्निधौ मनु० ८।६०।

भाषापत्रम् आवेदन पत्र शुक्र० २।३०९।

भाषालक्षणिन् वाणी का नियन्त्रण (जैन०)।

भाषिन् (वि०) [भाष्+तृच्] बोलने वाला, बातें करने वाला।

भाष्यभूत (वि०) टीका या भाष्य का काम देने वाला —भाष्यभूता भवन्तु मे शि० २।२४।

भास एक प्रसिद्ध नाटककार, स्वप्नवासवदत्तम् आदि नाटकों का प्रणेता।

भिक्षा [भिक्ष्+अ] 1 जीवन निर्वाह का एक साधन 2 याचना। सम०-भुज् (वि०) भिक्षावृत्ति से निर्वाह करने वाला।

भिक्षु [भिक्ष्+उ] 1 भिखारी 2 साधु 3 संन्यासी 4 श्रमण। सम०—धर्मः श्रमणता, साधुता।

भिण्डिपाली कम्बल का एक भेद—कौ० अ० २।११।२९।

भिद् (रुधा० पर०) 1 टुकड़े टुकड़े करना, काटना 2 व्याख्या करना—वचांसि योगप्रथितानि सांख्यो न नः श्रमस्ते गणयांचकार भेत्तुम्—भाग० ५।१०।८।

विद्यालयम् दुकानदार, कुबलखाना।

भिन्न (वि०) [भिद्+क्त] 1 टूटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ 2 पृथक् किया हुआ, बाटा हुआ 3 विकसित—भिन्नवृत्तिता—मनु० १२।३३ 4. रोमाञ्चित (जैसे रोंगटे खड़े हुए)—रा० ६।१०।१८ 5 जिसे घूस दी गई है। सम० —कर्ण (वि०) 1 जिसने कानों को बाट दिया है 2 जिसके कान बीच दिये गये हैं, —कृत्य: जिसने अपने अनिवार्य कर्तव्य (पितृयज्ञ आदि) सम्पन्न कर लिए हैं, —वृत्ति (स्त्री०) भिन्न राशियों का भाग।

भीत (वि०) [भी+क्त] 1 डरा हुआ, आतङ्कित 2 डरपोक, कायर 3 भयग्रस्त। सम०—आनन: लज्जाशील नायक, शर्मीला गाने वाला,—चारिन् (वि०) कातरभाव से व्यवहार करने वाला,—चित्त (वि०) मन में डरने वाला।

भीति [भी+क्तिन्] 1 डर, आशङ्का, त्रास 2 खतरा आशिष 3 कायरपी। सम० —कृत् (वि०) डर पैदा करने वाला, —जित् (वि०) डर दूर करने वाला।

भीम (वि०) [भी+मक्] भयानक, डरावना, भयपूर्ण, —म (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 परमपुरुष 3 भयानक रस 4 दूसरा पाण्डव, —मम् (नपु०) भय, त्रास। सम० —अन्नाद (वि०) भीषण शक्ति वाला, पाक पूरी तरह पका हुआ भोजन, रथ 1 धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2 श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भीष्म (वि०) [भी+णिच्+सुक्+मक्] डरावना, भयानक, भयपूर्ण,—ष्म 1 भयानक रस 2 राक्षस, पिशाच, भूतप्रेत 3 शिव का विशेषण 4 शन्तनु के द्वारा गङ्गा में उत्पादित पुत्र। सम० —पर्वन् महाभारत का छठा पर्व (अध्याय),—स्तवराज: महाभारत में शान्तिपर्व के ४७वें अध्याय में निहित भीष्म की प्रार्थना।

भुक्तवाद्दे (अ०) खाने के तुरन्त पश्चात्।

भुग्न (वि०) [भुज+क्त] 1 विनीत, नत 2 वक्रीकृत, मुड़ा हुआ 3 टूटा हुआ 4 हताश, विनम्रीकृत।

भुज: [भुज्+क] 1 बाहु, भुजा 2 हाथ 3. हाथी की सूंड 4 गणित में आकृति का एक पार्श्व जैसे त्रिभुज में 5. त्रिकोण का आधार 6 वृक्ष की शाखा। सम० —अङ्ग: आलिङ्गन,—अर्जनम् निर्वाह के अनुदान, —आक्रम्य: बल, छाया किसी की भुजाओं द्वारा दिया गया प्रश्रय,—वीर्य (वि०) प्रबल भुजाओं वाला।

भुजग [भुज्+क=भुज+गम्+ड] सांप, सर्प, की आश्लेषा नक्षत्र। सम० —अशन: कहे की भांति

फलाई में गोलाकार लिपटा हुआ सांप,—आसिन् विष्णु का विशेषण।

भुजंग: [भुज+गम्+अच्, पुम्] 1. सांप 2. चोर, प्रेमी 3 पति, स्वामी 4 आश्लेषा नक्षत्र 5. हथिनी 6. राधा का वस्त्रचल मित्र। सम०—प्रयातम् एक छन्द का नाम, ललिता एक छन्द का नाम, शिशु एक छन्द का नाम।

भुजा [भुज्+टाप्] ज्यामिति की आकृति का पार्श्व।

भुजाभुजि (अ०) हाथापाई, हाथों की (लड़ाई)।

भुवनम् [भू+क्युन्] 1 संसार, (संसार की संख्या तीन है या चौदह) त्रिभुवन, चतुर्दशभुवनानि 2. धरती 3 स्वर्ग 4. जन्तु, प्राणी 5 मानव। सम० —ईश्वरी पार्वती का रूप,—तलम् धरती की सतह,—भवन —सृष्टि का कर्ता।

भू (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1 पृथ्वी 2. विश्व 3 धरती। सम० —छाया, छायम् धरती की छाया,—कुम्भी एक प्रकार की ककड़ी, —पद्म एक प्रकार का चूहा, —भा पृथ्वी की छाया, ग्रहण,—भिङ्गसकुल पक्षियों की एक जाति—महा० १२।१६९।१०,—शय्या भूमि पर सोना,—स्फोट कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी।

भूत [भू+क्त] 1 होने वाला, वर्तमान 2 उत्पादित, निर्मित 3 वस्तुत होने वाला, सत्य 4. सही, उचित, उपयुक्त 5 अतीत, बीता हुआ 6. प्राप्त 7. निर्मित 8 समान। सम० अनुकथन बीती हुई बात, या निश्चित तथ्य का उल्लेख करना,—अधिकृत —आवेश: भूतप्रेत का किसी पर चढ़ना,—आत्मन् (पु०) जो सबको अवमानना करता है, सबसे घृणा करने वाला, —कोटि निरपेक्ष शून्यता, —तथा सचाई के साथ, —तत्त्व तत्त्वों का गुण,—धात्री सब प्राणियों की माता,—तन्मात्रम् सूक्ष्मतत्त्व,—पाल: रक्षित प्राणधारियों का संरक्षक,—भव्य (वि०) सभी प्राणियों में रहने वाला, भृत् (वि०) जन्तुओं या तत्त्वों का पालनपोषण करने वाला,—धात्री पृथ्वी,—भृत् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण।

भूति: (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 जन्म, उपज 3. कल्याण, कुशलमङ्गल, समृद्धि 4. सफलता 5. धन, दौलत 6 ज्ञान, आभा, कान्ति 7 राख। सम० अर्थम् (अ०) समृद्धि के लिए, कृत् (वि०) कल्याणोत्पादक।

भूमि (स्त्री०) [भू+मि] 1. ज्यामिति की आकृतियों की आधाररेखा 2 किसी चित्र का रेखाचित्र 3 धरती, पृथ्वी। सम०—अनुलम् भूमि के विषय में झूठी गवाही,—अर्जुरिका ऊपर घूम का एक प्रकार,—छत्रम् कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी, तलम् समतलसह,—परिमलम् धर्मनाप,—रुचिक भूमि पर

रथ हाँकने वाला,—अनीहल (वि०) भूमि जैसा बराबर किया हुआ, फर्श के साथ मिलाया हुआ, —अम्बु, —कुत 1 नरकासुर।

भूयस् (वि०) [बहु+इयसुन्] 1 अपेक्षाकृत अधिक 2 अधिक बड़ा 3 अधिक आवश्यक। सम०—अम्बु (वि०) बहुत अधिक इच्छुक,—आय वृद्धि, विकास, —आस्य अधिकतर अधिकांश।

भूरि (वि०) [भू+किन्] बहुत, पुष्कल, असंख्य, पुष्कल। सम०—कालम् (अ०) बहुत समय तक,—कृत्वस् (अ०) बहुत बार, बार-बार, पृष्ठ (वि०) 1 बहुत अधिक बढ़ता हुआ 2. जाति-भाँति के फल देनेवाला, —छेना पौधों की एक जाति, —भोज (वि०) नानाप्रकार से सुखोपभोग करने वाला।

भूरिशः (अ०) [भूरि+शस्] विविध प्रकार से, नाना प्रकार से।

भूषणवासांसि (नपु० द्व० व०) वस्त्र और आभूषण।

भृ (चुरा० उभ०) संतुलित रखना, समसंतुलन करना।

भृत्यक (वि०) [भृत+कन्] 1 पालन पोषण किया हुआ 2 किराये का, कः (पु०) भाड़े का सेवक। सम० —अध्यापकम् वैतनिक अध्यापक द्वारा दिया गया शिक्षण – भृतिः मजदूरी, पारिश्रमिक, किराया।

भृतिः [भृ+क्तिन्] 1 सहन करना, सहारना, सहारा देना 2 भरणपोषण 3 आहार 4 के जाना, नेतृत्व करना 5 मजदूरी 6 पारिश्रमिक। सम० अर्थम् निर्वाह के निमित्त, जीविका के लिए।

भृगुः (पु०) 1 एक मुनि का नाम 2 अग्नदग्नि का नाम 3 शुक्र का विशेषण 4 शुक्र नामक ग्रह 5 चट्टान 6 पठार 7 शिव का विशेषण 8. शुक्रवार। सम० - कच्छ - कच्छम् नर्मदा नदी पर एक तीर्थस्थान, —पतनम् चट्टान से गिरना,—प्रपातः चट्टान से कूदना, छलांग लगाना, भृङ्गः एक प्रकार का संगीत का माप,—श्रेष्ठः, वार का वृक्ष।

भृशदण्ड (वि०) कठोर दण्ड देने वाला।

भेदः [भिद्+घञ्] 1 दारुण पीड़ा 2 ग्रहों का योग 3 पक्षाघात 4 सिकुड़ना 5 समसंख्य त्रिकोण की कर्ण रेखा।

भेदक (वि०) [भिद+ण्वुल्] 1 विभाजक, विभाजक, तोड़ने वाला 2 नाशक 3 विदेधक 4 रेचक 5 (आंतों को) मोड़ने वाला 6 पदच्युत करने वाला।

भेदन (वि०) [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1 तोड़ने वाला, विभाजक 2 रेचक,—नम् (किसी पशु का) नासा-छेदन करना।

भेदनक (नपु०) गेरुआ।

भेषज (वि०) [भेषं रोगभयं जयति-जि+ड] स्वस्थ करने वाला, चिकित्सा किये जाने योग्य, जम् (नपु०) 1 औषधि 2 उपचार 3 रोगनाशक मंत्र। सम० —करणम् औषधियों का तैयार करना, शुद्ध (वि०) स्वस्थ किया हुआ, शैथिल्यम् औषधियों की स्वास्थ्यकर क्षमता।

भोगः [भुज्+घञ्] 1 खाना, खा लेना 2 सुखोपभोग 3. वस्तु 4 उपभोगिता, उपयोग 5. शासन करना 6 उपभोग, प्रयोग 7 सहन करना 8 अनुभव करना, संकल्पना 9 स्त्रीसंभोग 10 आनन्द लेना 11 आहार 12. काम 13 आय 14 धन। सम०—आयः पोषक, भरणपोषण करने वाला,—दण्डम् किराये का दण्ड-देय, —भुज् (वि०) सुखोपभोग करनेवाला।

भोगिरत्नम् [ष० त०] शेषनाग।

भोग्यवस्तु विलास की सामग्री।

भोज (वि०) [भुज्+अच्] 1 सुखोपभोग देने वाला 2 उदार, दानशील,—जः (पु०) 1 एक प्रसिद्ध राजा का नाम 2 विदर्भदेश का राजा। सम० —चम्पू भोज द्वारा रचित रामायण चम्पू, - प्रबन्धः दानशील की भोजविषयक कृति।

भोजः वैश्य द्वारा शूद्री में उत्पादित पुत्र।

भौजिष्यम् (नपु०) दासता, सेवकत्व।

भौत (वि०) [भू+अण्] 1 प्राणिसम्बन्धी 2 भौतिक 3 पागल, तः 1 भूत पिशाचों की पूजा करने वाला 2 भूतयज्ञ। सम० क्रिय (वि०) मूढ, दुर्बुद्धि।

भौमम् [भूमि+अण्] 1 तत्त्वविषयक वस्तु 2 फर्श 3 भवन की ऊपर की मंजिलें सप्तभौमाष्टभौमेषु – रा० ५।२१५०।

भौमी [भौम+ङीप्] सीता का विशेषण।

भ्रंशः [भ्रंश्+घञ्] 1 गिरना, फिसल जाना, अध:-पतन 2 ह्रास, मुर्झाना 3 नाश, ध्वंस 4 दूर भाग जाना 5 ओझल होना 6 (नाटय० में) उत्तेजना के कारण स्खलन।

भ्रष्ट (वि०)[भ्रंश+क्त] 1 गिरा हुआ, पतित 2 मुर्झाया हुआ 3. भागकर जो बच गया। सम०—अधिकार (वि०) जिससे अधिकार छीन लिये गये हों, पदभ्रष्ट, चित्त (वि०) जो विहित कर्म करने में असफल रहा,—शील (वि०) जो भक्ति से पतित हो गया हो।

भ्रम् (भ्वा०, दिवा० पर०) लड़खड़ाना, घबड़ाना।

भ्रम् (प्रेर०) 1 झिड़ोरा पीटना 2 अभ्यवस्थित करना।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1 छाता, छतरी 2 वृत्त।

भ्रमरः [भ्रम्+करन्] 1 मधुमक्खी 2 प्रेमी 3 कुम्हार का चाक 4 जवान 5 लट्टू। सम०—शिक्षा मधु-मक्खियों का छत्ता,—पदम् एक छन्द।

भ्रमरित (वि०) [भ्रमर+इतच्] जो पीला हो गया है –यदतिविमलनीलवेश्मरश्मिभ्रमरितजा—नै० २।१०३।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] मूर्छा, बेहोशी।
भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1 इधर-उधर घूमा हुआ 2 चक्कर खाया हुआ 3 भूला भटका 4. घबड़ाया हुआ। सम०—चित्त (वि०) मन में घबराया हुआ।
भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौं, आँख की भौं। सम०—विक्षेपम् भौंहों को मोड़ना, भौंहें चढ़ाना।

म

मकर [मं शिव किरति-कृ+अच्] 1 मगरमच्छ 2 मकर-राशि 3. मकर की आकृति का कुण्डल। सम० आसनम् एक प्रकार का योग का आसन,—ग्रहः बलवान्।
मकरन्द [मकर+दो+क, मुमादेश] 1 पुष्परस, मधु 2. चमेली का फूल 3 कोयल 4 सुगन्धयुक्त आम का वृक्ष 5 (संगीत० में) एक प्रकार का ताल।
मकरन्दिका एक छन्द का नाम।
मकूलक (पु०) 1 कली 2. दन्ती नाम का वृक्ष।
मखमृगाध्याय (पु०) शिव का विशेषण।
मखवः (पु०) कुसीदक, सूदखोर।
मगधदेशः (पु०) मगध नाम का देश।
मङ्गलुक (पु०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।
मङ्गल (वि०) [मङ्गम्+अलच्] 1 शुभ, सौभाग्यशाली 2 समृद्ध 3 वीर,—लम् (नपु०) 1 माङ्गलिकता, प्रसन्नता, कल्याण 2 शुभ शकुन 3 आशीर्वाद 4. सांस्कृतिक संस्कार (जैसे कि विवाह) 5 हल्दी, लः (पु०) 1 मङ्गलग्रह 2 अग्नि। सम०—आवह (वि०) शुभ,—ध्वनि. मांगलिक स्वर, —भेरी मांगलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल।
मङ्गलः [मङ्ग्+क्युट्] आठ वर्ष का हाथी—मात० ५।९।
मङ्गलतूर्यम् एक प्रकार का नाच।
मञ्जुनादः मधुर ध्वनि मञ्जीर मञ्जुनादैरिव पदभवन भेद इत्यालपनम्—नारा० १००।९।
मञ्जुघोषः एक जिन का नाम।
मञ्जुश्रीः एक बोधिसत्त्व का नाम।
मठाधिपतिः [ष० त०] 1 किसी धर्मसंघ का प्रधान 2 मठ का अधीक्षक।
मठाम्नायः [ष० त०] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से संबद्ध कोई रचना।
मणिः [मण्+इन्] 1 रत्न, जवाहर 2 आभूषण 3 सर्वोत्तम पदार्थ 4 चुम्बक 5. कलाई 6. अयस्कान्त मणि 7. स्फटिक। सम०—काञ्चनसंयोगः उपयुक्त वस्तुओं का विरल मेल,—सुवर्णौषधिः जड़ाऊ पात्रमेद,—प्रभा एक छन्द का नाम,—विद्ध (वि०) रत्नजटित।
मण्डयावानम् (नपु०) जमा हुआ दूध, दही।
मण्डपौष्टिका परकार के दो चतुर्थांश।
मण्डलकालः शृंगार (प्रसाधन) समय—राजसूय मण्डल-कालहानि—रघु० १३।
मण्डलभिद्रः (वि०) अलंकारप्रिय, आभूषणों का शौकीन।
मण्डलम् [मण्ड्+कलच्] 1 गोलाकार वस्तु, पहिया, अंगूठी, परिधि 2 सूर्य परिवेश, चन्द्र परिवेश 3. समुदाय, संग्रह, सेना 4 समाज 5 वर्तुलाकार गति 6. बूत पट्ट। सम०—आसन (वि०) वृत्त में बैठा हुआ,—कविः कठ कवि, तुकड़ कवि,—मात्रिः वृत्त का केन्द्र, शालः मंडवा, प्रशाला,—स्थः उद्यान।
मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1 बाण विद्या में वर्णित एक विशेष मुद्रा 2 आयु की शक्तियों से युक्त एक वृत्त।
मण्डूकम् हाथ की मूठ।
मण्डूकपर्णी ब्राह्मी की जाति का एक पौधा।
मण्डूकपर्णिका दे० 'मण्डूकपर्णी'।
मण्डूकपर्णी दे० 'मण्डूकपर्णी'।
मतभेदः [स० त०] मतों में अन्तर, सम्मतियों की भिन्नता।
मतिः [मन्+क्तिन्] 1 बुद्धि, समझ, ज्ञान, निर्णयशक्ति 2 मन, हृदय 3. विचार, विश्वास, सम्मति, दृष्टिकोण 4 इरादा प्रयोजन 5. प्रस्ताव, संकल्प 6 आदर, सम्मान 7 इच्छा 8 उपदेश 9. स्मृति 10 भक्ति, प्रार्थना। सम० कर्मन् बौद्धिक कार्य, पद्धतिः (स्त्री०) चिन्तन क्रम, शास्त्रम् विचारों का अध्ययन।
मत्तालीला एक छन्द का नाम।
मत्तवारणः,—कम् 1. किसी भवन को चहारदिवारी 2 छोटी या बैकेट 3 घारवाई, पलंग।
मात्स्यः [मत्स्य+स्यञ्] 1. मछली 2 मत्स्य देश का राजा। सम०—उद्धर्तनम् एक प्रकार का नाच,—जालीवः मछियारा, मछली का व्यापार करने वाला,—संस्कारिकः पकी हुई मछली चटनी के साथ।
मत्स्य (वि०) [मद्+क्यत्] मत्स्यन क्रिया के द्वारा प्राप्त, मथकर निकाला जाने वाला।
मदः [मद्+अच्] 1. सौन्दर्य 2 मन्मथकुंडली में सातवाँ घर 3 अभिमान 4. पागलपन 5. अत्यन्त आवेश 6. हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 7. प्रेम, नशा 8. सुरा,

शराब, 9 मधु 10 बीयं 11 सोम 12 मद्य। सम० —भङ्गः घमंड का टूट जाना,—लता एक छन्द का नाम।

मदनम् [मद्+ल्युट्] 1 नशा करना 2 उल्लास, हर्षातिरेक, मद 1 जन्मकुंडली में सातवां घर 2 एक प्रकार की संगीतमाप। सम०—आलयः नशे का आधिक्य, मदातिरेक।

मदिरालयाध्व (वि०) शराब पीकर धुत, अत्यंत नशे में।

मद्यकुम्भः शराब की सुराही, सुरा पात्र।

मद्यबीजम् खमीर उठाने के लिए औषधि।

मद्रदेशः मद्रों का देश।

मद्राक्षः एक शर्कर जाति।

मधु (नपु०) [मद्+उ, नस्य धः] 1 शहद 2 फूलों का रस 3 मधुमक्खियों का छत्ता 2 सोम। सम०—पाचा तरुण,—पात्रम् सुरापात्र, मांसम् शराब और मांस, —सखी 1 एक प्रकार का अंगूर 2 मीठा नीबू।

मधुकाश्रयम् सोम।

मधुमती [मधु+मतुप्+ङीप्] 1 एक नदी का नाम 2 एक देश का नाम 3 'मधु वाला ऋतायते' से आरंभ होने वाली तीन ऋचाएँ।

मधुरत्वम् [ब० स०] शक्कर।

मधुराम्लकः कषाय स्वाद, तीखा स्वाद।

मध्यमणिन्याय एक नियम जिसके आधार पर मुख्य वस्तु दोनों पार्श्वों के बीच में रहे जैसे कि हार में मणि।

मध्यमम् सामान्य सम्पत्ति।

मध्यम (वि०) [मध्ये भव म] 1 बीच का, केन्द्रीय 2 अन्तर्वर्ती 3 मध्यवर्ती,—मः 1 नितान्त बीच का पुत्र 2 राजपाल 3 सोम का विशेषण (मध्यमव्याडोग), मम् (नपु०) 1 जो अतिप्रशंसनीय न हो 2 ग्रहण का मध्यवर्ती बिन्दु। सम० —शक्तिः किसी ग्रह की औसत चाल, —सत्र (संगीत० में) मध्यवर्ती लय, —व्यायोगः भासकृत एक नाटक।

मध्यमीय (वि०) [मध्यम+छ] बीच का, केन्द्रीय।

मध्योदात्त (वि०) ऐसा शब्द जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर उदात्त स्वर हो।

मन् (दिवा० तना० आ०) स्वीकार करना, सहमत होना।

मनस् (नपु०) [मन्+असुन्] 1 मन, हृदय, समझ, बुद्धि 2 (दर्शन० में) महान् व प्रधान का एक अन्तर्वर्ती अंग, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के विषय आत्मा को प्रभावित करते हैं 3 अन्तःकरण 4 अभिकल्प 5 संकल्प। सम०—ग्राह्य (वि०) मन से ग्रहण किये जाने के योग्य,—ग्लानि मन का अवसाद,—चारणम् अनुग्रह की संयाचना करना —पर्याप्तः मन्य के प्रत्यक्षीकरण में अन्तिम के पूर्व की स्थिति (जैन०),—रागः हृदयानुराग, प्रेम,—वृद्धिः मन का संतोष,—संयमः मन का दमन।

मनुः [मन्+उ] मानसिक शक्तियाँ देहोऽसवोऽक्षा मनवो भूतमात्रा—भाग० ६।४।२५।

मनुस्मृति मनुसंहिता, मनु द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र।

मनुष्यवाहनम् [ष० त०] पालकी, शिविका।

मनुष्यसङ्कल्पः मानव की इच्छा।

मनोन्मनी दुर्गा का एक रूप।

मन्त्र [मन्त्र्+अच्] 1 विष्णु का नाम, शिव का नाम 2 जन्मकुंडली में पाँचवाँ घर 3 वैदिक सूक्त 4 वेद का वह भाग जिसमें संहिता सम्मिलित है 5 प्रार्थना 6 गुप्त योजना 7 नय, नीति। सम० —कर्कश (वि०) दुष्कर्मनीति का समर्थक, जागरः रात के जागरण के अवसर पर मन्त्रों का सस्वर पाठ, —दा किसी नीति विचार का रहस्य को गुप्त रखना, —संवरणम् किसी रहस्य, मन्त्रणा या नीति को गुप्त रखना,—स्नानम् स्नान करने के स्थान पर 'अघमर्षण' मन्त्रों का सस्वर पाठ करना।

मन्थ् (स्वा० क्रया० पर०) मिश्रित करना, मिला देना।

मन्थः [मन्थ्+घञ्] 1 मथना, बिलोना, हिलाना 2 मार डालना, नाश करना 3 मिश्रित पेय 4 रई, बिलोने का उपकरण, मन्थनदण्ड 5 सूर्य 6 आँखों के रोहे 7 पेय तैयार करने के लिए आयुर्वेद का एक योग। सम० —विलम्बक मन्थनदण्ड।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1 ढीला, शिथिल, निष्क्रियात्मक, अलस 2 शीतल, उदासीन 3 मूढ, दुर्बुद्धि, मूर्ख 4 नीचा गहरा, खोखला 5 मृदु, सुकुमार 6 छोटा 7 दुर्बल, मन्दः (पु०) 1 शनिग्रह 2 यम का विशेषण। सम० —आयस् मंथर, शिथिल, कर्मन् (वि०) काम करने में शिथिल,—चरः (वि०) शनैः शनैः चलने वाला, दुग्ध (वि०) दुर्गम्य-गम्य, बुद्धिविभव।

मन्दाकिनिः पानी भरने का बड़ा घड़ा।

मन्दिरम् [मन्द्+किरच्] 1 भवन 2. आवास 3 नगर 4 शिविर 5 देवालय 6 काया, शरीर।

मन्दुरा [मन्द्+उरच्] 1 अश्वशाला, अस्तबल, तबेला 2 शय्या, चटाई। सम० पतिः,—पालः अश्वशाला का प्रबन्धकर्ता, भुजङ्गम् अन्दरों की एक जाति।

मन्युसूक्तम् (नपु०) मन्यु नामक सूक्त जो ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ८३ व ८४वें सूक्त हैं।

मम्मताभुक्त (वि०) 1 अहम्मन्य 2 कामुक।

मम्मताभुज्य (वि०) 1 अहम्मन्य 2. अभिमानी।

मयिवसु (वि०) मेरे प्रति शुभ।

मयूखमालिन् (पु०) सूर्य, सूरज।

मयूरः [मी ऊरच्] 1 मोर 2. एक प्रकार का फूल 3 एक

कवि का नाम (सूर्यशतक का प्रणेता) 1 सम० मृत्युञ्जय मोर का नाम, पिच्छक मोर का पंखा।

मयूरिका (स्त्री०) 1 नख, नाक का छल्ला 2 एक जहरीला जंतु।

मरकतश्याम (वि०) पन्ने जैसा काला ऐसा काला जैसा कि मरकतमणि आया मरकतश्यामा मातृ: मदशालिनी श्याम०।

मरण्य [मृ + ल्युट्] 1 मरना मृत्यु 2 एक प्रकार का विष 3 अवसान 4 जन्मकुंडली में आठवां घर 5 मरण, क्षरणशील। सम० समय मृत्यु का समय, शील (वि०) मरणधर्मा।

मरीचि [मृ + ईचि] 1 प्रकाश की किरण 2 प्रकाशकण 3 प्रकाश 4 मृगतृष्णा 5 आग की चिंगारी। सम० —वत् (मरीचिमत्) ऋषिवर्ग जो सूर्य की किरणें पीकर जीवित रहते हैं —स० ३।६।२।

मरु [मृ + उ] 1 रेगिस्तान निर्जल प्रदेश 2 पहाड़, चट्टान 3 कुबेर का नाम का पौधा 4 मदमस्त का त्याग। सम० —प्रपातक पहाड़ से छलांग लगाना।

मरुत् (पु०) [मृ + उति] 1 वायु हवा समीर 2 प्राण वायु 3 वायु का देवता 4 देवता 5 मरुवक नाम का पौधा 6 सोंठ 7 सौन्दर्य। सम० वृद्धा, वृधा कावेरी नदी।

मर्यू (पु०) [मृज + ऊ] 1 घोड़ा 2 पांचमर्द (स्त्री०) सफाई, पवित्रता।

मर्मन् (नपु०) [मृ + मनिन्] 1 शरीर का महत्त्वपूर्ण भाग (शरीर का दुर्बल या सुकुमार अंग) 2 त्रुटि, विफलता 3 हृदय 4 मूल अर्थ 5 रहस्य 6 सत्यता। सम०—आहत मर्मस्थान पर आघात करना, -आम रुधिर।

मर्यादा [मर्या (क्षीमा) + दा + क] 1 सीमा 2 अन्त 3 किनारा, तट 4 किसी 5 नैतिकता की सीमा प्रचलित नियम, प्रचलन 6 औचित्य का सिद्धान्त 7. करार। सम० —स्थ: सीमा के अन्दर रहना, -व्यवहार सीमाविषयक व्यवस्था, —व्यतिक्रम: सीमा का उल्लंघन।

मल (वि०) [मृज् + कल, टिलोप] 1 मैला, गन्दा 2 अशुद्ध 3 दुष्ट, क: मलम् 1 मैल, गन्दगी, चूक अपवित्रता 2 विष्ठा, शौच 3 धातुओं का मोर्चा 4 शरीर के मल 5 कपूर 6 कमाया हुआ चमड़ा 7 वात, पित्त तथा कफ नामक दोष। सम०—अहा एक नदी का नाम,—चक्षुस् (वि०) चूक या गन्दगी से भरा हुआ।

मलयजाक्ष: (संपी०) एक प्रकार की माप।

महत् (वि०) (म० महीयस्, उ० महिष्ठ) [मह् + अति] 1 बड़ा, विशाल, विस्तृत 2. पुष्कल, अनल्प 3. दीर्घ, विस्तृत 4 प्रबल, बलशाली 5 महत्त्वपूर्ण, आवश्यक 6 ऊंचा, उन्नत, पूज्य। सम०—आयुधम् महान् शस्त्र, बड़ा भारी हथियार,—औषधि (स्त्री०) एक आश्चर्य जनक बूटी, कुलम् उत्तम घराना, ज्वर: सन्निक, अच्छा,—फल: बेल का वृक्ष,—व्यतिक्रम: 1 भारी अतिक्रमण 2 महान् पुरुष का अनादर।

महा (कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के आरंभ में 'महत्' शब्द का स्थानापन्न—इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं)। सम० अग्नि: बड़ा महानिलेख निशाचर रज कि० १४।५९, आरम्भ महान् कार्य, विशाल पैमाने पर कार्य का आरम्भ करना, आलय देवालय, मन्दिर, तीर्थ स्थान आलया-वस्था वह अवस्था जिससे महालयपक्ष आरम्भ होता है,—आलयपक्ष माघ और पौष मास का पुनीत पितृपक्ष, आलयश्राद्ध महालय पक्ष में श्राद्ध करना, ऊर्मिन् (पु०) समुद्र,—ओघ (वि०) अनेक धाराओं से युक्त,—कल्प ब्रह्मा के सौ वर्ष,—काल शक्ति को पूजा में रहस्यमय चक्र, काय: ऊंट,—क्रम बारह-मिला हुआ चिह्न,—क्षुद्र: बड़े व्याघ्र की एक जाति,—क्षुद्र महान् संकट, क्षेत्रम् एक प्रकार की तपस्या, —पुराणम् अठारह पुराणों में एक पुराण, प्रश्न एक जटिल सवाल, जिसे एक प्रकार का चमड़ा,—भाष्यम् मुख्य कोष, मृत्युञ्जय: 1 मृत्यु के विजेता शिव को प्रसन्न करने का मन्त्र 2 एक औषधि का नाम,—यानम् एक बड़ी सवारी (परवर्ती बौद्ध शिक्षण), रव: मेंढक, वक्त्र: (वि०) अत्यन्त दीर्घाकार, -स्वन: 1 महा प्रलय 2 परमपुरुष जिसमें सब महाभूत लीन हो जाते हैं,—विषम एक प्रकार का छन्द,—शिवरात्रि: फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष का चौदहवां दिन, शिवपूजा का सामूहिक दिवस, सत्त्वम् रेत, बालू,—सप्ति (पु०) एक प्रकार का संगीत मान,—सुरा चौदी।

महिमन् (नपु०) प्रभुसत्ता, उपनिवेश।

महिमन् (पु०) [महत् + इमनिच्] आठ सिद्धियों में से एक। महिमवत्तिनी दुर्गादेवी।

मही [मह + अच् + ङीष्] 1 पृथ्वी, धरती, भूमि 2 भूमण्डल, आयताद 3 देश, राजधानी 4 सम्भात को खाड़ी में गिरने वाली एक नदी 5. (ज्या० में) किसी आकृति की आधाररेखा 6 विशाल लेखा 7 गाय। सम० —क्षीता क्षितिज, -कृत्यम् धरातीतल, भूमि की सतह, —करोति बड़ा बनाता है, प्रोन्नत करता है।

मांसल [मस् + ल, दीर्घश्च] 1 मोटा, 2 मछली का मांस 3 फल का मांसल भाग,—ल: 1. कौवा 2. संकर जाति, जो मांस बेचती है। सम०—अन्न: मांस का शौकीन, -शिख: रसौली, चक्षु: नंगी आंख,—क्षीर-वर्धनम् मांस-भक्षण का त्याग।

मासौषधे (सा० धा० पर०) मास के लिए कालायित रहना।
मासिकधातुः एक प्रकार का खनिज धातु।
मास्यः [मगध+अण्] 1 मगध देश का राजा 2 साहित्य क्षेत्र में काव्यशैली का एक प्रकार।
मास्यकीर्तिका हस्तिविज्ञान पर एक कृति।
मास्यलाहिः एक प्रकार का साँप।
मातृ (स्त्री०) [मान्+तृच्, मलोप] 1. माता, जननी 2 स्त्रियों के प्रति आदर या सम्मान सूचक संबोधन 3 गाय 4 लक्ष्मी या दुर्गा का विशेषण 5 धरती माता। सम०—दोषः माता का दोष, -भक्तिः माता के प्रति आदर सम्मान, -भाक्तिकः मूर्खव्यक्ति, सीधा सादा, भोंदू।
मातृका शीतला की ८ सहेलियाँ, शिरएँ।
मातृतः (अ०) मातृपरक पक्ष की ओर।
मात्र (वि०) [मा+त्रन्] आरम्भिक विषय।
मात्रा [मात्र+टाप्] 1 परिमाण 2 क्षण 3 अणु 4 अंश 5. वृत्त, विचार 6 धन 7 तत्त्व 8 मौलिक संसार 9. नागरी अक्षरों में स्वरों का चिह्न 10 कान की बाली 11 आभूषण 12 इन्द्रियों का कार्य 13. विकार। सम० अङ्गुलम् लगभग एक इंच की माप।
मात्स्यन्यायः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को दबाता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।
मात्स्यविज्ञानम् आयुर्वेद की एक कृति।
मात्स्यी पशुओं की बहुतायत।
मान [मन्+घञ्] 1 आदर, सम्मान 2 घमंड, अभिमान, अहंकार 3 आत्माभिमान, आत्मगौरव, मद 1 माप 2 निश्चित मापदण्ड 3 आयाम। सम०—अन्ध (वि०) घमंड के कारण अंधा,—अर्ह (वि०) सम्मान के योग्य, आदर का अधिकारी, —अवमङ्ग प्रतिष्ठा भङ्ग होना, क्रोध का भाव,—क्रिया ठीक बाँटों से तोलकर या मिथ्या मापकर गबन करना, ठगना—कौ० अ० २।८।२६, -तार अभिमान की बड़ी मात्रा।
मानसपूजा मानसिक पूजा।
मानुषम् [मनोरयम्—अण् सुक् च] 1 मानवता, मनुष्यत्व 2 मनुष्य की परिपक्वावस्था, पूर्ण पुरुषत्व। सम० —अवस्था सोच पुरुष, ओछा मनुष्य।
मानोन्माद [ष० त०] रोग का बहाना।
माया 1. दुर्गा का नाम 2 दक्षता, कला।

य

यकृत् [य संयम करोति कृ+क्विप् तुक् च] जिगर। सम०—दरिद्र (पु०) जौंडिस का एक पीड़ा, रक्तरोहिड़ा।
यक्ष [यक्ष्+घञ्] 1 देवयोनि विशेष, जो कुबेर के सेवक हैं 2 भूतप्रेत 3 इन्द्र का महल 4 कुबेर 5 पूजा 6 कुत्ता। सम०—धूपः गूगल, लोबान।
यज्ञ [यज्+न] 1. यज्ञ, यज्ञीय संस्कार 2 पूजा की प्रक्रिया 3 अग्नि 4 विष्णु। सम०—आयुधम् यज्ञ में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण,—कुण्डम्, —पत्नी यजमान की पत्नी,—शिष्टम् यज्ञ का अवशिष्ट अंश—यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः —मनु० ३।२३, -संस्कार यज्ञ की वेदी की स्थापना तथा इष्टकाचयन।
यज्ञायनीयम् 1. सामसूक्त 2. यज्ञ के दोनों पंखों का प्रतीकात्मक नाम।
यज्ञियम् (वि०) क्रियाशील, परिश्रमी, प्रयत्न करने वाला।
यतवाक् (वि०) [ब० स०] चुप रहने वाला, जिसने अपनी वाणी को नियन्त्रित रखा है।
यतमैथुन (वि०) [ब० स०] जिसने मैथुन त्याग दिया है।
यतिधर्मादानम् विशेष प्रकार का तपश्चरण।
यथाकामम् (अ०) जहाँ किसी का मन चाहे, इच्छानुसार।
यथाकामावसायम् योग की एक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य अपने आपको जहाँ चाहे ले जा सकता है।
यथासंन्यूह (वि०) जहाँ सन्ध्या हो जाय या सूर्यास्त हो जाय वहीं ठहर जाने वाला व्यक्ति।
यथा (अ०) [यद् प्रकारे थाक्] जिस ढंग, जिस रीति से, जैसे, जिस प्रकार। सम०—अनुक्रमम् (अ०) जैसा कि बतलाया गया है, या निर्देश किया गया है—मया यथानुक्रममादिष्टे हते चेष्टितम् भाग० ३।१९।३२,—आचारम् (अ०) आचार के अनुसार—सां० का० ४१, उच्चैस्तात् (वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, —उपक्रमम् (अ०) आरोह अनुपात के अनुसार, —उपचारम् (अ०) औचित्य के अनुरूप, शिष्टाचारसापेक्ष, उपदिष्ट (वि०) जैसा निर्देश दिया गया हो, या जैसा परामर्श दिया गया हो,—कामम् (अ०) जिस किसी रीति से,—पा० ३।४।२८, -कल्पितम् (अ०) समुचित रीति से, क्षिप्रम् (अ०) जितनी जल्दी हो सके,—चित्तम् (अ०) अपनी इच्छा के अनुसार, तत्त्वम् (अ०) सचमुच, वास्तव में, —न्यासम् (अ०) जैसा कि दिखाया है, जैसा कि मूल पाठ में है,—न्यूनम् (वि०) जैसा कि धरती में डाला गया है,—न्यायम् (अ०) विशेष वस्तु के गुण के

अनुसार, अवस्थानम् (अ०) योग्यता के अनुसार --अविरुद्धम् (अ०) जैसा अनुकूल हो, जैसा कि उपयुक्त हो, —अवसरात्पूर्वम् (अ०) सबसे पहले उपयुक्त अवसर पर, अवसरम् (अ०) 1 अन्त में 2 प्रस्तुत विषय के अनुरूप,—औचित्यम् (अ०) उपयोगिता के अनुकूल,—औत्सर्गम् (अ०) सूत्र के अनुसार,—रसम् (अ०) रस या स्वाद के अनुकूल, कल्प (वि०) जैसा कि वस्तुतः प्राप्त हो चुका है, निर्दिष्टोद्देशम् (अ०) निर्दिष्ट प्राथमिकता के अनुसार,—बुद्धिसात्म्यम् (अ०) ज्ञान की गहराई के अनुकूल,—शब्दार्थम् शब्द के अर्थों के अनुसार - यथाशब्दार्थं प्रवृत्ति, मै० स० ११।१।२६ पर भाष्य,—संस्थम् (अ०) परिस्थिति के अनुकूल,—सत्त्वम् धातु के अनुकूल, सारम् गुण के अनुसार, स्वयम् (अ०) जैसा कि अतिरिक्त रीति से कहा गया है, स्व (वि०) अपने अपने आवास या स्थान के अनुसार।

यद्यपि (अ०) जिस समय से।

यद्वाक्य (वि०) जिस सत्ता परक।

यद्वद (वि०) इच्छानुसार बोलने वाला।

यदीय (वि०) [यद्+छ] जिसका, जिससे संबद्ध।

यन्त्रम् [यन्त्र+अच्] 1 जो रोकता, या बांधता है 2 सहारा, थूनी 3 बेड़ी, हथकड़ी 4 सत्य क्रिया का उपकरण (मन्त्र) 5 मशीन, समय 6 कुंडी, ताला, चाबी 7 प्रतिबन्ध, शक्ति 8 ताबीज 9 छिद्र करने की मशीन। सम०—आरूढ (वि०) घूमने वाली मशीन पर चढ़ा हुआ, भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया-भग०,—कोविद यन्त्रकार, मशीन पर कार्य करने वाला—रा० २।८०।२, —गृहम् यन्त्रागार, वह स्थान जहां किसी को यन्त्रणा दी जाती है, —धारागृहम् वह स्थान जहां फौवारा लगा हुआ हो, —पुत्रम् गुड़िया या पुत्तलिका को रखमच पर झिलाने वाली डोरी।

यन्त्रकम् [यन्त्र+कन्] 1 हाथ से चलायी जाने वाली मशीन, खैराद 2 सामान का बण्डल जिसे बैलगाड़ी में लादा जाता है—कि० १२।९।

यन्त्रिका [यन्त्र+ठक्+टाप्] छोटी साली, पत्नी की छोटी बहन।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र+क्त] 1 भड़काया हुआ 2 नियमों से नियन्त्रित या प्रतिबद्ध 3 तालाब को बढ़ाने के लिये निकाला हुआ 4 बाकृष्ट अथवा मर्यादितस्नेहाकृष्टयो यन्त्रिताक्षरा - काम० १०।२९।२३।

यम (वि०) [यम्+घञ्] 1. संयत, जोड़ा हुआ 2. दोहरा, —म 1. प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, दमन 2. आत्मसंयम 3. कोई नैतिक कर्तव्य (विप० नियम) 4. योग के आठ अङ्गों में से एक 5. मृत्यु का देवता 6. यमि 7. फीता 8. 'यों' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 9. जलाना 10 चालक, रथवान,—मम् 1. जोड़ा 2 संयुक्त व्यञ्जन,—मी यमुना नदी,- मौ (पुं०-द्वि० व०) 1 युगल, जोड़ा—वृत्ति संयमौ यमौ —कि० १।३६ 2 अश्विनीकुमार। सम० अनुजा यमुना नदी, अक्ष ज्योतिष का एक अशुभ योग, —द्रुम सप्तपर्ण वृक्ष, -पट, यवनिका कपड़े की एक पट्टी जिस पर यम, यम के अनुचर तथा नारकीय यातनाओं का चित्रण अङ्कित रहता है - याम्येतद् गृह प्रविश्य यमपट दर्शयन् पीडानि नाडीनि —मुद्रा० १।१८,—सदनम् 1. यम को प्रसन्न करने के लिए हत रखना 2. विशेष दण्ड विधान—मनु० ९।३०७,—सादन शिव, यमलोकनालयसमाचरस्पर्धसमाचार स.—रा० च० २।१२,—सादनम् यम का वासस्थान।

यमकाव्यम् यमक-प्रधान कविता, वह काव्य जिसमें यमक अलंकार की बहुतायत हो।

यमलार्जुनौ दो अर्जुन के वृक्ष (जिनको कृष्ण ने बचपन में उखाड़ दिया था)।

यमिका एक प्रकार की सूती साड़ी।

यमेका एक प्रकार का घण्टा जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

यम [यु+अच्] 1 जौ 2 महीने का पहला पक्ष 3 यति, बाल 4 ज्योतिष का एक योग 5 जव, बेर 6. कुबड़ा उन्नतोदर सीसा 7. एक टापू का नाम। सम० - द्वीप वर्तमान जावा टापू,—मातृ एक प्रकार का खांड पीसा।

यवनाचार्य ज्योतिष के 'तांत्रिक' नाम की कृति का विख्यात प्रणेता।

यवनिका —अवनी पर्दा।

यवस (नपुं०) [यव् स्तुतौ यवुल् वाडो स्युट् च] 1 कीर्ति ख्याति, प्रसिद्धि 2 पूज्य व्यक्ति 3. प्रसाद 4 धन 5 बाहार 6 अन्न 7 विरल शब्दों का एकत्र संग्रह 8 परोक्ष कीर्ति—छा० उ० ३।१८।३। सम० -दा कीर्ति प्रदान करने वाला।

यष्टि (स्त्री०) [यज्+क्तिन् लि० न सम्प्रसारणम्] 1 लकड़ी 2 गदा 3 स्तम्भ 4. सहारा, टेक 5. ध्वजदंड 6. डोरी, धागा 7. हार, लड़ी। सम०—आहत: डंडे की मार,—उत्थानम् लकड़ी की सहायता से उठना,—धारणम् समय को मापने के लिए ज्योतिष का एक साधन।

यस्मात् (अ०) 1. जिससे, जब से, जिस कारण से 2. यतः, जिससे कि।

या (अदा० पर०) विदा करना।

याग [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. यज्ञ, आहुति 2. उपहार

उपहार, प्रदान। सम०—कल्पक 1 बुरा यजमान 2 जो यज्ञ को बिगाड़ता है,—संग्रहणम् यज्ञीय पदार्थ को लेने वाला—पा० ४।२।२४ पर काशिका, —सूत्रम् यज्ञीय यज्ञोपवीत, जनेऊ।

याच्ञा [याच्+अङ्+टाप्] 1 माँगना। 2 साधना 3 प्रार्थना सम०—कौशिका,—कौशिनम् भिक्षावृत्ति पर जीने वाला,—भङ्ग प्रार्थना को ठुकरा देना।

याजुक यजमान, यज्ञ करने वाला।

याज्ञसेन } शिखण्डी का पैतृक नाम।

याज्ञसेनि } महा० ७।१४।४

याज्या [यज्+णिच्+यत्+टाप्] आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला यज्ञीय नियम।

यातिक [यात+ठक्] यात्री।

यातुधारी राक्षसी, पिशाचिनी वक्ष्यामि त्रिजगती या तु यातुधारी—रा० ब० ७।१०।

यात्य नरक में रहने वाला।

यात्राकर (वि०) जीवन का सहारा देने वाला (साधन)

यात्रादानम् यात्रा पर जाते समय दिया गया उपहार।

यात्रास्वम् [यदात्मा+ष्यञ्] वास्तविक स्वभाव या प्रयोजन।

यानम् [या+ल्युट्] 1 जलयान, पोत 2 जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का उपाय तु० महायान, हीनयान 3 सवारी रथ, हवाई गाड़ी। सम० —आस्तरणम् गाड़ी की गद्दी, बैठने का आसन—मुख्य०, स्वामिन् गाड़ी का मालिक।

याम (वि०) (स्त्री०—मी) [यम+अण्] यम से सम्बन्ध रखने वाला—यामिभिश्चर यामना—मनु० १०, —श (पु०) देवों का समुदाय—यामै परिवृतो देवै—भाग० ८।१।१८। सम० —वासिन् सुर्मा,—वत्सर समय पालक, ब्रह्म मत्स्य।

यामिकाचरः
यामिनीचरः } 1. राक्षस 2 उल्लू।

यामलम् नपुंसक।

यामि,—मी, [या+मि, ङीष् वा] 1 दक्षिणी दिशा 2. भरणी नामक नक्षत्र।

यावक—कम् [यव+अण्, स्वार्थे कन्] एक व्रत जिस में जौ खाकर रहना पड़ता है।

यावत्कथनम् (अ०) पढ़ने के समय, विद्यार्थी अवस्था में।

यावत्संपातम् (अ०) जहाँ तक समय हो।

यावत्तिथ (वि०) जहाँ तक, जिस बिन्दु तक, जिस अङ्क तक।

यावनीलिका पान की बेल।

यावसिक [यवस+ठक्] घसियारा, घास काटने वाला।

युक्त (वि०) [युज्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ बाँधा हुआ 2. जुए में जोड़ा हुआ 3. व्यवस्थित 4. तत्पर 5. सपन्न, भरा हुआ 6. स्थिर किया हुआ, जमाया हुआ 7 सबद्ध 8 सिद्ध, अनुमित 9 सक्रिय, परिश्रमी 10. (अर्थ०) सयुक्त, मिला हुआ। सम० —चेष्ट (वि०) उचित कार्य में सलग्न,—वादिन् (वि०) उपयुक्त बात कहने वाला।

युक्तकम् [युक्त+कन्] जोड़ा।

युक्तम् [युज्+क्त, कुत्व, न गुण] 1. जुआ 2 जोड़ा 3 चन्द्रमा की सापेक्ष स्थिति। सम० —धुर् (स्त्री०) जुए की कील, —मात्रम् जुए की लम्बाई के बराबर माप अर्थात् चार हाथ की लम्बाई, —वरत्रम् जुए का फीता या तस्मा।

युक्तधर,—रथ् गाड़ी की वह लकड़ी जिसमें जुआ लगा रहता है।

युक्तधरा एक देवी योगिनी योगदा योग्या योगासन्दा युक्तधरा—ललिता०।

युक्ती (स्त्री०) बहुतायत योधयुग्दा सूरसमृद्ध्या युजे रौवादिक कि युक्तमार्थम्—महाभाष्य ५।६३।१ पर टीका।

युग्म (वि०) [युज्+मक्] सम, दो से भाग होने वाली संख्या, —म्म् 1 जोड़ा 2 सम, अवगत 3 सगम 4 युगल 5 मिथुन राशि। सम०—चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में घूमने वाला—विपुला एक छंद का नाम, —सूत्रम् गणित में दो संख्याओं के बिन्दु।

युङ्क्ष्व्, } (म्वा० पर०) छोड़ देना, त्याग देना।
युञ्ज्व् }

युञ्जिन् (पु०) [युञ्ज्+इनि] एक संकर जाति।

युट, युट्ट् (म्वा० पर०) 1 भूल करना भटक जाना 2 विदा होना, चले जाना।

युद्धम् [युध्+क्त] 1 लड़ाई, संग्राम झड़प संघर्ष, समर 2. झगड़ों का विरोध या संघर्ष। सम० —अवहारिकम् युद्ध में जीतने पर प्राप्त सामग्री, सम्पत्ति, लूट—आतोद्य रणभेरी, युद्ध का गीत, —आसनम् युद्ध विज्ञान, सैनिक शिक्षा, —आस्फोट युद्ध का आह्वान, —कौशल (वि०) युद्ध भड़काने वाला,—व्यतिक्रम युद्ध कला के नियमों का उल्लंघन।

युद्धकम् [युद्ध+कन्] संग्राम, रण, समर, लड़ाई।

युद्धिक (वि०) [युध्+ठन्] लड़ाकू, योद्धा, लड़ने वाला।

योद्धृ (पु०) [युध्+तृच्] योद्धा, सिपाही।

युधुत्सुर चीता या तेंदुए की जाति का जन्तु, वृद्ध व्याघ्र, सिंह।

युवन् (वि०) [यु+कनिन्] 1 जवान 2. हृष्ट-पुष्ट 3 उत्तम,श्रेष्ठ(पुं० युवा)4 साठ वर्ष का हाथी 5. एक संवत्सर। सम० —जानि वह पुरुष जिसकी पत्नी जवान है, युवजानिर्वृषाक्षि, अदृष्टि० ५।१३, —पतित (वि०) समय से पूर्व सिर के बाल पके हुये हैं,—पा० २।१।६७ पर भाष्य,—भृत् विष्णु हत्या।

युवक [युवन् + कन्, नलोप] जवान,तरुण ।
युवानक (वि०) [युवन् + आनक न लोप.] तरुण, जवान ।
युवति [युवन् + ति] जवान स्त्री, तरुणी । सम०—इक्षा पीले रंग की चमेली,—जन तरुणी स्त्रियाँ ।
युष्मदर्थम् (अ०) आपके लिए, आपकी खातिर ।
युष्मदायत्त (वि०) जो कुछ आपके अधीन है, आपके नियन्त्रण में है ।
युष्मद्भाव्यम् (व्या०) मध्यम पुरुष ।
युष्मद्विध (वि०) आप जैसा, आपकी तरह का ।
युष्मदीय (वि०) आपका, आपसे सबद्ध रखने वाला ।
युष्मल्लिङ्गम् 1 जूं और उसका अण्डा (स्त्रीक) 2 स्त्रीलिंग ।
यूथ [यु+थक्, पुग० दीर्घ] रेवड़, लहंडा, समूह, समुदाय । सम० -चारिन् (वि०) जो सामूहिक रूप से (हाथियों की भाँति) घूमता है, किसी सेना में या लड़ने में,—परिभ्रष्ट (वि०) अपने समूह से भटका हुआ, अन्धा रेवड़, लहंडा ।
यूथशः (अ०) [यूथ + शस] रेवड़ में, लहंडे में, पंक्ति में ।
यूप. [यु + पक्, पुग० दीर्घ] 1 यज्ञीय स्तम्भ (जो प्रायः बिल्व या खैर की लकड़ी का होता है) जिसमें यज्ञीय पशु बाँध दिया जाता है 2 विजयस्तम्भ । सम०
कर्मन्याय वह नियम जिसके अनुसार निवृत्ति से सबद्ध किसी नियम का सम्बन्ध या उपकर्ण केवल उसी विधान तक लागू रहता जिससे कि तदादि-विधान्त न्याय का उपयोग न हो सके—मै० म० ५।१। २७ पर शा० भा० ।
योग [युज् + घञ्, कुत्वम्] 1 आत्मन · योगमाज्ञा-पयामास शिवस्य विषम प्रति शिव० १३।७, 2 सतत समर्पित लगातार विलासा—अपि चानन्य-योगेन भक्तिरव्यभिचारिणी—भग० १३।१० 3 समता साम्य—समत्व योग उच्यते—भग० २।४० 4 दुख के 'जो से छुटकारा—दुःखसंयोगवियोग योगसज्ञितम् भग० 5 मिलाना, जोड़ना 6 सपर्क 7 उपयोग 8 परिणाम 9 जुआ । सम० -अभ्यासिन् (वि०) जो योग का अभ्यास करता है, - आत्मन् केवल आकस्मिक सपर्क के कारण व्युत्पन्न नाम - एवा यौगाख्या योगमाधारेक्षा न भूतवर्तमान-भविष्यत्सबन्धापेक्षा पी० सू० १।३।२१ पर शा० भा० - आवर्तित प्रक्षालन में परिवर्तन,—क्षेम. 1. समृद्धि, सुरक्षा 2 कल्याण, भलाई 3 आत्मिक कार्यों के निमित्त कल्पित सपत्ति—भग० ९।२२, —दण्ड: योग की शक्ति से युक्त छड़ी या जादू की छड़ी,—नाडिका,—नाडिक, एक प्रकार की घड़ी, —पट्टम् स्वास्थ्यलाभ की स्थिति,—पानम् मूर्छा लाने वाले पदार्थों से युक्त सुरा, पीयक,—पेशल् योग का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा, —पुरुष: गुप्तचर,—यथा योगपुरुषैरन्धान् राजाधि-तिष्ठति—की० अ० १।२१, भ्रष्ट (वि०) जो योग के मार्ग से पतित हो गया है—लक्षीना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते—भग०,—यात्रा परमेश्वर से सायुज्य प्राप्त करने का मार्ग,—युक्त (वि०) योगमार्ग में सकल्प—योगयुक्तो मनार्जुन - भग० ८।२७,—वाहस्त नृप उपाय,कूटयुक्ति, कपटयोजना, की० अ० —वाहक (वि०) विघटनकारी (रसा-यण०),—विद्या योगशास्त्र,- संसिद्धि: योगाभ्यास में पूर्णसाफल्य प्राप्त करना, सिद्धिन्याय एक न्याय जिसके अनुसार नाना प्रकार के फलों को देने वाली एक विशिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही फल दे सकती है दूसरा फल प्राप्त करने के लिए उस प्रक्रिया का पृथक् रूप से दूसरा प्रयोग करना पड़ेगा मी० सू० ४।३।२७-२८ पर शा० भा० ।
यौगिक (वि०) [योग+ठक्] अभ्यास के लिए अनुकूल (जैसा कि 'यौगिक जाप' तीरन्दाजी अभ्यास प्राप्त करने के लिए अनुकूल) ।
योग्य (वि०) [युज्+क्यत्, योग+यत् वा] 1. उपयुक्त, समुचित 2 ठीक 3 उपयोगी, कामचलाऊ—म्य (पु०) 1 पुष्य नक्षत्र 2. बारबाही पशु,- म्यम् 1 सवारी, गाड़ी 2 चन्दन 3 रोटी 4 दूध ।
योग्या [योग्य+टाप्] 1 एक देवी का नाम - योगिनी योगदा योग्या -कालिका० 2 पृथ्वी 3 सूर्य की पत्नी का नाम ।
योजनम् [युज्+ल्युट्] 1 जोड़ना, मिलाना 2 तत्परता व्यवस्था 3. परमात्मा 4 अनुकी 5. चार कोस की दूरी ।
योजित (वि०) [युज्+णिच्+क्त] 1. जूए में जोता हुआ 2 अनुकूल, काम में लिया गया 3. मिला, सयुक्त 4 सम्पन्न ।
योद्धृक [योधा+कन्] 1 योद्धा, एक वर्ग का नाम ।
योनि (वि०) [योनि+अण्] वश या कुल से सबन्ध रखने वाला ।
योनि [यु+नि] 1. ऋग्वेद की वह आधारभूत ऋचा जिस पर 'साम' का निर्माण हुआ 2 तांबा 3 मूल कारण 4. जन्म का स्रोत—योनिर्हेतिकारणं 'वेदो-दितो धर्मोमूलं निबन्धादिनोक्तनिमित्तम्' —मी० सू० २।२५ पर शा० भा० 5 इच्छा —योनिपरातन्त्र-दुस्तरम् —महा० १२।२५०।१५ । सम०—भू: धर्मोद्भव का मूलस्थान से व्युत्पन्न पुत्र,—रोग: 1 योनिसबन्धी विकार 2 स्त्री की जननेन्द्रिय में कोई दोष,—मुक्त (वि०) जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पाये हुए,—मुद्रा अंगुलियों द्वारा देवी

विशिष्ट आकृति बनाना जो स्त्री की योनि से मिलती जुलती हो,—संवरणम्,—संकुचित योनि या भग को सिकोड़ना,—संस्कारः पुनर्भन्य ।

योनाग्राहः] विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मृतक
योनिग्राहः] व्यक्ति की पत्नी को ग्रहण करने वाला ।

यौनपद्यम् दे० यौगपद्यम् ।

यौनपद्यम् [युगपद्+य] भिन्न भिन्न स्थानों से एक ही साथ एक वस्तु को देखना—आदित्यवद्यौनपद्यम् वी० सू० १।१।५ ।

यौन (वि०) [योनि+अण्] (समास में) 1. मूल स्थान, उद्गमस्थान—यत्रास्मिन्यौनाश्च वसन्ति लोका—महा० १३।१०२।२५ 2 गर्भाधानसंस्कार । सम०—अनुबन्धः रक्तसम्बन्ध,—यौनानुबन्धं च समीक्ष्य कार्ये—की० अ० २।१०,—सम्बन्धः दे० यौनानुबन्ध ।

यौनिकः [योनि+ठक्] मध्यम बाहु, सुहावनी हवा ।

यौवनम् [युवन्+अण्] जवानी, वयस्कता । सम०—आगम (वि०) किशोर, वयस्क,—उद्भेदः 1 जवानी के आवेश का मादक उत्साह 2 यौन प्रेम, काम वासना 3 जवानी की कली का खिलना 4 वयस्कता प्राप्त करना—कण्डक, —कण्डकम्,—विधिका यौवनारम्भ का संकेत करने वाली चेहरे पर छोटी-छोटी किसियाँ, —द्वारः जवानी के किनारे पर,—श्रीः जवानी का सौन्दर्य ।

यौवनीय (वि०) युवक, तरुण ।

यावागूः चावलों का माड, पवागू ।

र

रक्षता (स्त्री०) कोढ़ का एक भेद ।

रक्त (वि०) [रञ्ज्+क्त] 1 रङ्गा हुआ, रंगीन 2 लाल 3 प्रिय, प्यारा 4. सुन्दर, सुहावना 5 अनुस्वार युक्त (स्वर),—क्तः (पुं०) 1 लाल रंग 2 मंगल ग्रह 3 शिव,—क्तम् (नपुं०) 1 रुधिर, खून 2. ताँबा 3 जाफरान 4 सिन्दूर 5. बालों का एक रोग 6 लाल चन्दन,—क्ता (स्त्री०) 1 लाल 2 मूंगा 3 आग की सात लपटों में से एक । सम०—कुमुदम् लाल कमलिनी,—क्षय (वि०) रक्त पर्यन्त बाहा, —चन्दनम् लाल कमल,—तोयः 1. एक राक्षस जिसको दुर्गा देवी ने मारा था 2. अनार का वृक्ष,—पित्तकः रुधिर का ह्रास,—पित्तिन् रुधिर दूषित करने वाला,—प्रसादः शरीर के अन्दर रक्त फट जाने से रक्त बहना ।

रक्ष् (भ्वा० पर०) सावधान होना, आवश्यक होना ।

रक्षा [रक्ष्+अ+टाप्] 1 बचाना, रक्षण 2 सावधानी, सुरक्षा 3. चौकीदारी 4 रक्षा ताबीज 5 कवच 6. रक्षाबन्धन, राखी 7 लाख । सम०—अधिकृत कलाई पर ताबीज की भाँति बाँधी जाने वाली राखी, रक्षाबन्धन,—कर्मन् विधिः रक्षा करने की धार्मिक अौपचारिकता ।

रक्षित्रम् [रक्ष्+क्त्र, स्वार्थे कन्] सुरक्षा ।

रघुः सूर्यवंश का एक प्रतापी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता । सम०—ग्रन्थः रघुवंश में वर्णित, राम,—कारः 'रघुवंश' नामक काव्य का प्रणेता कालिदास ।

रघ्व् (भ्वा० पर०) जाना ।

रङ्गः [रञ्ज्+घञ्] 1. रंग, वर्ण 2. मंच, प्रेक्षागार, नाटक का सार्वजनिक स्थान 3. क्रीड़ास्थल 4 रंगमंच 5 नाचना, गाना, अभिनय करना । सम०—द्वारः सुहागा,—नाथः एक प्रकार का संगीत का माप,—द्वः सुहागा,—नाथः, रायः, वासम्,—स्वामिन् विष्णु के विशेषण (श्रीरङ्गम् स्थान पर स्थित मन्दिर), अवतर रङ्गमञ्च पर पधारना, वेदी पर उपस्थित होना, अवतरणम् वेदी पर 'आवाहन' उत्सव मनाना ।

रङ्गम् [रञ्ज्+घञ्] 1 सोचना, उपाय 2 बाण में पंख लगाना ।

रचित (वि०) [रच्+क्त] आविष्कृत, निर्मित । सम०—पूर्व (वि०) जो पहले ही बन चुका है ।

रचयित्री [रञ्च्+तृच्+ङीप्] स्त्री निर्माता ।

रजस् (नपुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोपः] 1 धूल, गर्द 2 धूल की धूल, पराग 3 अन्धेरा 4 आवेश, मैथिक अन्धकार 5 तीनों गुणों में दूसरा 6. भाप 7 आदम का वर्षा का पानी 8 पाप—आदत्ते यः प्रजानां रज —रा० ४।८।३४ । सम०—गुण (वि०) रजोगुण से युक्त, क्षेत्र धूल का आदम —विमुक्त (वि०) धूल से पूरे रज का हुआ—यदि पुरारजो विमुञ्चति—भाग० १।९।३४ ।

रण, रणन् [रण्+अन्] 1 युद्ध, लड़ाई 2. युद्धक्षेत्र । सम०—अतिथि युद्ध चाहने वाला अतिथि—उत्साह आपदो रणातिथि पञ्च० २।१३,—कर्मन् युद्धक्षेत्र में लड़ने की रीति,—रणायित (वि०) 'रण-रण' शब्द करता हुआ,—रसिक (वि०) लड़ाई का रसिक —शूरः, सैनिकः युद्ध करने में प्रवीण ।

रणरणायित (वि०) जो यौवनारंभ वर्ष की आयु के पश्चात् विधुर हो जाता है ।

रतोत्सव कामकेलि सुखार परक क्रीडा।
रतोपरीतम् सम्भोग या मैथुन की प्रक्रिया जिसमें स्त्री पुरुष की भाँति आचरण करती है।
रतिः [रम्+क्तिन्] 1 हर्ष, आह्लाद 2 आसक्ति, अनुराग 3 यौनसुख 4. सम्भोग, मैथुन 5 कामदेव की पत्नी 6 चन्द्रमा की छठी कला। सम०- क्रीडः मैथुन करने से उत्पन्न थकावट, थकान,—क्रम्मः मैथुन करने की विशिष्ट रीति,—रहस्यम् कोक्कोक पंडित द्वारा प्रणीत 'कामशास्त्र',—सुखम् एक प्रकार का रतिबन्ध।
रतुः (स्त्री०) 1 दिव्यनदी, स्वर्गंगा 2 सत्य से युक्त शब्द या भाषण रतुस्यात् सत्यभाषक कोश०।
रत्नम् [रम्+न, तान्तादेश] 1. रत्न, जवाहर, मूल्यवान् पत्थर 2 कोई भी अमूल्य पदार्थ 3 कोई भी उत्तम या श्रेष्ठ वस्तु 4 जल 5 चुम्बक। सम०—अङ्गः मूंगा,—अचलः आख्यानों में वर्णित लंका में स्थित एक पहाड़,—कुम्भः रत्नों से भरा हुआ घड़ा, कूटः एक पहाड़ का नाम, गर्भः 1 कुबेर 2 समुद्र, —गर्भेशपतिः गणपति की एक विशेष मूर्ति,—च्छाया रत्नों की कान्ति रत्नच्छायाव्यतिकरमिव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्तात् - मेघ०,—धेनुः रत्नों के ढेर में (दान के लिए) दी जाने वाली प्रतीकात्मक गाय, पञ्चकम् पाँच रत्न—सोना, चाँदी, मोती, हीरा, और मूंगा, - वरम् सोना।
रथः [रम्+कथन्] 1. गाड़ी, बहली 2 पैर 3 अंग, भाग, 4 शरीर 5 हर्ष, आह्लाद। सम०- आरोहः जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है, उपस्थः,—उपस्थम् रथ का ढाँचा,- घोषः रथ के चलने का 'घरघर' शब्द,—चारकः शूद्र द्वारा वैश्यस्त्री में उत्पन्न पुत्र, - विद्यानम्, -विद्या रथ हाँकने की कला।
रथन्तरम् एक साम का नाम।
रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1 रथ में सवार 2 रथ का स्वामी, (पुं०) 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष 2 रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा।
रथ्या [रथ+यत्+टाप्] 1 सड़क 2 सड़कों का संगम स्थान 3. बहुत से रथ या गाड़ियाँ। सम०- द्वारम् किसी सड़क पर प्रविष्ट होने का द्वार,—वृत्तम् स्त्री का कुत्सा।
रदः [रद्+घञ्] दाँत।
रदनम् [रद्+ल्युट्] फाड़ना, कुतरना, नुरचना।
रदा (स्त्री०) गाय।
रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागम] 1 छिद्र 2 जन्मकुंडली में लग्न से आठवाँ घर। सम०—अन्वेषिन् दोषों या त्रुटियों का छिपाना।
रन्तः [रम्+अच्] विष्णु, अहर।
रन्तकः [रम्+ल्युट्, कन्] एक द्वीप का नाम।
रन्ध्या [रम्+यत्+टाप्] (संगीत०) श्रुति का एक भेद।
रन्ध्रः [रध्+रक्] 1 छेद 2. कोयल 3 मधुमक्खी 4. अग्नि 5 एक बड़ा क्षीरा।
रविः [रु+अच्(इ)] 1 सूर्य 2 पर्वत 3. मदार का पौधा 4 बारह की संख्या। सम०- इष्टः नारंगी, संतरा, —अहः दिन,—बिम्बः सूर्यमंडल,—वारः दिन 1 अवश्य 2 उच्च काल।
रशना [अश्+युट्, रशादेश] 1 रस्सी 2 लगाम 3 तगड़ी। सम०—ग्रहम् कूल्हा,—ग्राह रथवान, - सारिन् सूर्य।
रस [रस्+अच्] 1 (फलों का) रस 2. तरल पदार्थ 3 सुरा, पेय 4 घूंट, (दवा की) मात्रा 5. स्वाद, रस 6 प्रेम 7 प्रेम, अनुराग 8 हर्ष, आमोद 9 (साहित्यिक) रस 10 सत, अर्क 11 वीर्य 12. पारा 13 विष 14. गन्ने का रस 15 पिघला हुआ मक्खन 16 अमृत 17. रसा (शाक भाजी का) 18 हरा प्याज 19. सोना 20. छ की संख्या का प्रतीक 21 रसग्रहण करने का अंग जिह्वा भाग०८।२०।२७ 22 पिघली हुई धातु। सम०— इक्षु मधु,—ज्ञः (अल०) 1 रस की विज्ञप्ति 2 सजीवन रस की उपज, -ज्ञ (वि०) रस से भरा हुआ,—ज्ञानम् भैषज्यविज्ञान,- तन्मात्रम् रस या स्वाद का सूक्ष्म तत्व,—विज्ञप्तिः स्वाद का न होना, रसहीनता, —वेध पारे का निर्माण।
रसना [रस्+ल्युट्] जिह्वा। सम० अग्रम् जिह्वा का अग्रभाग, - मूलम् जिह्वा की जड़।
रसवत्ता [रस+मतुप्+तल्+टाप्] कला की परम-शा रसवत्ता विदुषां -वासव०।
रसातलम् [ष० त०] 1 सात लोकों में से एक, पृथ्वी के नीचे का लोक, पाताल 2 लग्न से (जन्मकुंडली में) चौथा घर।
रसा [रस्+यत्+टाप्] एक देवी का नाम।
रहस्यत्रयम् विशिष्ट द्वैत शाखा के तीन मुख्य सिद्धान्त (ईश्वर, चित् और अचित्)।
रहितात्मन् [ब० स०] जिसके आत्मा न हो (अर्थात् जो अपने आत्मा की बात का आदर न करता हो)।
राक्षस [रक्षस्+अण्] 1. भूत प्रेत, पिशाच 2 हिन्दुओं में आठ प्रकार के विवाहों में से एक 3 एक संवत्सर का नाम।
रास [रस्+घञ्] 1 प्रज्वलन 2 निर्वेशशाला 3. प्रेम, आवेश, यौनआवेग 4 लालिमा। सम०—क्रीडा एक प्रकार का (संगीत का) नाच।
राघवायणम् रामायण।
राघवीयम् राघव की एक रचना, कृति।

राजन् [राज्+कनिन्] सोम का पौधा—ऐक्ष्वाक विंशतिरुत्तरा राजा चाभिषुतोऽभवत् - रा० १।१४।६। सम०—उपसेवा, राजा की सेवा करना,—गुह्यम् ऊँचे दर्जे का रहस्य,—देयम् (भाव्यम्) राजकीय दावा, दक्षिणा (स्त्री०) बातचीत,—निघ्न राजा से आजीविका,—प्रसाद राजा का अनुग्रह, बहिर्भू पटरानी, सभ्यंग्य 1 (संगीत०) एक प्रकार की ताल 2 इस नाम का एक ग्रन्थ,—राज्यम् कुबेर का राज्य,—लिङ्गम् एक राजचिह्न, वर्त्मन् शाही मर्यादा, —वल्लभ राजा का प्रिय व्यक्ति, वृत्तम् राजा का आचरण,—स्थानीयः राजा का प्रतिनिधि, वाइसराय।

राजन्य (वि०) [राजन्+यत्] राजकीय, शाही, न्य क्षत्रिय जाति का पुरुष। सम० बन्धुः क्षत्रिय।

राज्यम् [राजन्+यत्, नलोपः] 1 राजकीय अधिकार, प्रभुसत्ता 2 राजधानी, देश, साम्राज्य 3 प्रशासन 4 सरकार। सम०—अधिदेवता राज्य की प्रधानता करने वाली देवता, अभिषेचकदेव, परिक्रिया प्रशासन, लक्ष्मीः—श्री, प्रभुसत्ता की कीर्ति, स्थिति, सरकार।

राजिः—ी (स्त्री०) [राज्+इन्, ङीप् वा] 1 पंक्ति 2 काली सरसों 3. धारीदार साँप 4 क्षेत्र 5 ताल जिह्वा, काकल। सम० सखा एक प्रकार की ककड़ी।

राजिलीय 1 एक आचार्य का नाम 2. वैदिक शाखा का प्रवर्तक।

राट (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त।

रात्रिः,—त्री [रा+त्रिप्, ङीप् वा] 1 रात 2. रात का अंधकार 3 हल्दी 4. ब्रह्मा के चार कल्पों में से एक 5 दिन रात—मैं० स० ८।१।१६ पर शा० भा०। सम०—आगमः रात का आना, ईशः सूर्य,—नाथः चन्द्रमा —मुखम्—आदिः चन्द्रमा,—शेषन्यायः मीमांसा का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार अर्थवाद में वर्णित फल ही ग्रहण किया जाता है जब कि विधि में कर्मफल का वर्णन न किया गया हो।

राका [राज्+अच्+टाप्] 1. वैशाख महीने की पूर्णिमा 2. अधिकता।

राम (वि०) [रम्+घञ्, ण वा] 1 आह्लादमय, सुखद, सुहावना 2. सुन्दर, लावण्यमय 3 श्वेत, पः तीन ख्याति प्राप्त व्यक्ति (क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जिसका भाई कृष्ण था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र, सीताराम। सम० काण्ड नगे का एक भेद, तापन, —तापनी, तापनीय उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम, —नवमी उत्तरभारत में नवरात्र के दिनों में 'रामायण' का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण।

रामणीयता [रम्+अनीय+तल्] सौन्दर्य, चारुता।

रामणीयकम् सौन्दर्य, मनोज्ञता।

रामा (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

रावितम् [रु+णिच्+क्त] ध्वनि, स्वन—स्वनत्नेभ्यश्च्युता वीरा शङ्खरावितदुर्बलाः रा० ७।७।१२।

राशिः [अश्+इञ्, आतोऽदागमश्च] 1 ढेर, संग्रह, समूह 2 संख्या (गणित में) 3 ज्योतिष का घर जिसमें २½ नक्षत्र सम्मिलित होते हैं। सम०—नाथ (वि०) बीजगणित विषयक, पः ज्योतिष के एक घर का स्वामी दे० राज्यधिप।

राष्ट्रकः [राष्ट्र+कन्] दे० राष्ट्रिक।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1 किसी देश का निवासी 2. राज्य का शासक 3 राज्यपाल।

रास [रास्+घञ्] 1 कोलाहल 2 शोर 3 वक्ता 4 एक प्रकार का नृत्य 5 शृङ्खला 6 खेल, नाटक। सम०—क्रीडा: वर्तुलाकार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकाएँ सम्मिलित होती हैं।

रासायन (वि०) [रसायन+अण्] रसायनसंबंधी।

रासायनिक (वि० [रसायन+ठक्] रसायन संबंधी।

रिक्थीकृ (तना० पर०) 1 रिक्त करना, खाली करना 2 ले जाना, चुरा लेना 2 घसीट जाना।

रिक्थाहरणम् (नपुं०) (किसी मृतक व्यक्ति की) समस्त संपत्ति नपुंस अस्ति।

रिष्टः [रिष्+क्त] तलवार, कृपाण।

रीतिः [री+क्तिन्] नैसर्गिक संपत्ति, स्वाभाविक गुण।

रुक्म (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] 1 उज्ज्वल, चमकदार 2 सुनहरी,—क्मः। स्वर्णाभूषण 2 कपूर। सम०—आभ (वि०) सोने की भाँति चमकीला—वाजी सुनहरी लहरी, पुङ्ख (वि०) 1 स्वर्णजटा से युक्त सुनहरी बाल वाला 2 सुनहरी पंख वाला।

रुक्मिन् (वि०) स्वादिष्ट, भूख लगाने वाला।

रुचिर (वि०) [रुच्+किरच्] सुहावना, सुखद अथ वासरोऽयं वर्णयन् रुचिरबहुलविलोचनम् कि० १२।१। सम०—अङ्गदः विष्णु का नाम।

रुचिष्य (वि०) [रुच्+किष्यन्] भूखवर्धक, भूख लगाने वाला।

रुद्रः [रुद्+रक्] घोड़ी और खच्चर के मेल से उत्पन्न।

रुद्र (वि०) [रुद्+रक्] 1 भयानक, भयंकर 2 विशाल —द्रः 1 ग्यारह देवगण, जो शिव का ही अपकृष्ट रूप है, शिव उनमें मुख्य हैं 2. अग्नि 3 ग्यारह की संख्या 4 यजुर्वेद का सूक्त जिसमें रुद्र की स्तुति की गयी है। सम० प्रयागः एक तीर्थकेन्द्र का नाम,—वाक्यम् एक तन्त्र ग्रन्थ का नाम,—वीणा एक प्रकार की वीणा।

रुद्रटः अलंकार शास्त्र के एक लेखक का नाम।

रुद्धा [रुध्+क्त+टाप्] घेरा डालना।
रुधिरभूय (वि०) [ब० स०] मूत्रावरोध से रुग्ण व्यक्ति।
रुधिर:,--रम् [रुध्+किरच्] 1 लाल रंग 2 मंगल ग्रह 3. खून, रक्त 4 जाफरान। सम० प्लावित (वि०) खून में भीगा हुआ।
रुधिरता [रुध्+क्त+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] अवरोध करने की इच्छा।
रुधिरः [रुध+अच्, कित्] कुत्ता।
रूढ (वि०) [रुह्+क्त] 1 चढ़ा हुआ, सवार, लदा हुआ 2 दूर-दूर तक विख्यात—आमवता मुरिव रूढा—कि० ११।७।७। सम० बुद्ध (वि०) उच्च कुल का,—अर्थ (वि०) जिसके घाव भर गये हों।
रूढि [रुह्+क्तिन्] 1 वृद्धि, विकास 2 जन्म 3 निर्णय 4 प्रथा, रिवाज 5 प्रचलित अर्थ।
रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1 कठोर रूखा 2 तीखा, चटपटा 3 चिकनाई से रहित (जैसे भोजन)—क्षः 1 वृक्ष 2 कठोरता, रूक्षापन,—क्षम् 1 दही की मोटी तह 2 काली मिर्च। सम० भाव रूखा भाव, अभिनय का रूखापन,—आलुकम् मधु मक्खियों से प्राप्त शहद।
रूक्षित (वि०) [रूक्ष्+क्त] कोपाविष्ट, क्रुद्ध।
रूप् (चुरा० उभ०) वर्णन करना सविस्मय रूपयतो नयनस्वरान्—कि० ८।२६।
रूपम् [रूप्+क, अच् वा] 1 सूरत, आकृति 2 रंग का भेद (काला, पीला आदि) 3 कोई भी दृश्य पदार्थ 4 नैसर्गिक स्थिति, प्राकृतिक दशा 5 सिक्का (जैसे कि रुपया)। सम०—उपजीवनम् सुन्दर या मोहक रूप के द्वारा जीविका लाभ करना महा० १२। २९४।५, —ऐश्वर्यम् सौन्दर्य, सब सूरती—परिवर्तनम् रूप धरना, रूप धारण करना,—भागापवाह किसी इकाई को भिन्नों में परिवर्तित करना, विभाग. किसी पूर्णांक को भिन्न राशियों में विभक्त करना—मूल्यम् एक प्रकार का नाप।
रूप्यम् [रूप्+यत्] 1 चाँदी 2 मुद्राङ्कित सिक्का 3 नेत्राञ्जन। सम० चौर्यम् चाँदी।
रूप्य (वि०) [रूप्+अच्] रूपवा।
रेखागणित्यम् (अ०) पंक्ति से भी, रेखा द्वारा भी।
रेणु (पु०, स्त्री०) [रीयते गच्] 1 धूल, धूल कण, रेत 2 फूलों की रज 3 एक विशेष माप-तौल। सम०—उत्थानः धूल का उठना,—घटी एक घंटे तक चलने वाली बालू की घड़ी।
रेणुकात्मज } [प० त०] परशुराम का विशेषण।
रेणुकासुत }
रेतस् (नपु०) [री+असुन्, तुट् च] 1 वीर्य, ओज 2 धारा, प्रवाह 3 प्रजा, सन्तान 4 पारा 5 पाप। सम० सेक संभोग, सम्भोग,—स्खलनम्, वीर्य का गिर जाना।
रेफ 1: 'बरर' शब्द 2 'र्' अक्षर 3 शब्द कण्ठे च सामानि समस्तरेफान्—भाग० ८।२०।२५। सम०—विद्युता एक छन्द का नाम, सन्धि 'र्' का श्रुति-मधुर मेल।
रैवत [रेवतो+अण्] 1 बादल 2 पाँचवें मनु का नाम।
रोधस् [रोध+असुन्] रुधिर, खून।
रोग [रुज्+घञ्] 1 बीमारी, कष्ट 2 रुग्ण स्थान। सम० आर्तवता रोगों का फूटना, —आर्तः डाक्टर, रोगियों का चिकित्सक,—आलयः रोग का निदान, —श्रेष्ठ बुखार,—शमः रोग का दूर हो जाना।
रोधक [रुध्+ण्वुल्] रोकने का काम करने वाला या कृत्रिम आमूवयों का निर्माता,—रा० २।८३।१३।
रोधस् (नपु०) [रुध्+असुन्] 1 तट, किनारा 2 पहाड़ का ढलान (जैसा कि 'पर्वतरोधस्' में)।
रोप [रुह्+णिच्, ह्रस्व प, कर्मणि अच्] 1. रोपण करना, पौध लगाना 2 स्थापित करना 3 बाण, तीर। सम०—शिखी बाणों से उत्पन्न अग्नि—मै० ४।८७।
रोपित (वि०) [रुह्+णिच्+क्त] 1 पौध लगाई हुई 2 जमा हुआ रस 3. निशाना बांधा हुआ (बाण)।
रोमन् (नपु०) [रु+मनिन्] 1 शरीर के बाल 2 पक्षियों के पंख 3 मछलियों की त्वचा। सम०—सूची बालों में लगाने की सूई।
रोमश (वि०) [रोम+अ] 1. बालों वाला, ऊनी 2 स्वरों के अशुद्ध उच्चारण से युक्त।
रोमशी [रोमश+ङीप्] भिलहरी।
रोमशाला [रोमश+तल्] कोष, तुरसा।
रोह [रुह्+अच्] 1. ऊँचाई 2. वृद्धि, विकास 3 कली, अंकुर 4. जननात्मक कारण।
रोहिणी [रोह+इनि+ङीप्] 1 लाल रंग की गाय 2 पाँच तारों का पुंज—रोहिणी नक्षत्र 3 वसुदेव की पत्नी और बलराम की माँ 4 बिजली 5. एक प्रकार का इस्पात। सम०—तनय बलराम, बोध रोहिणी का चन्द्रमा के साथ संयोग।
रौद्र (वि०) [रुद्र+अण्] 1. रुद्र की भाँति प्रचण्ड 2. भीषण भयंकर 3 रुद्र विषयक, रुद्र संबंधी।

लक्षण [लक्ष्+अच्] 1. एक लाख 2 चिह्न, निशान 3 दिखावा, बहाना, धोखा। सम०—अर्चनम् एक लाख फूलों के उपहार से पूजा करना,—दीपः मन्दिर में एक लाख दीपक एक साथ जलाना।

लक्षणम् [लक्ष्+ल्युट्] 1 चिह्न, संकेतक, टोकन 2 परिभाषा 3. शरीर पर सौभाग्यशाली चिह्न 4 नाम 5. उद्देश्य 6 मैथुनेन्द्रिय। सम०—कर्मन् (नपु०) परिभाषा।

लक्षणा 1 दुर्योधन की पुत्री का नाम 2 तीन शब्दशक्तियों में से एक।

लक्षितलक्षण्य संकेत द्योतक इंगित, गौण संकेत, एक ऐसा संकेत जिससे कोई अन्य संकेत मिले मैं० स० १०। ५।५८ पर शा० भा०।

लक्षण् (नपु०) [लक्ष्+अनिन्] 1. चिह्न 2 ध्वजा 3. परिभाषा 4 मुख्य, प्रधान 5 गोती।

लक्ष्मी [लक्ष्+ई, मुट् च] 1 सौन्दर्य, समृद्धि, धन 2. सौभाग्य, खुशकिस्मती 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति 4 धन की देवता। सम०—आशीः धन की देवता का आशीर्वाद, अनुग्रह, - नारायणः विष्णु का विशेषण, पिण्डः भाग्य का फेर, लक्षण (वि०) सौन्दर्य से युक्त, सौभाग्यशाली।

लक्ष्य [लक्ष्+यत्] 1 ध्येय, उद्देश्य 2 चिह्न, टोकन 3. वह वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4 गौण अर्थ, अप्रत्यक्ष अर्थ। सम० अभिहरणम् पारितोषिक, के उठना, ग्रहः निशाना बाँधना,—सिद्धिः, अपने उद्देश्य में सफलता।

लग्न (वि०) [लग्+क्त] शुभ, मांगलिक,—नम् 1 वह बिन्दु जहाँ ग्रहपथ मिलते हैं 2 क्रान्तिवृत्त का बिन्दु जो किसी दत्त काल में क्षितिज या याम्योत्तर रेखा पर होता है। सम०—पत्रिका जन्म समय या विवाह संस्कार के मुहूर्तादिक विवरण से युक्त एक मांगलिक पत्रिका, जन्मपत्रिका, या विवाह पत्रिका।

लग्नकः पलकों का एक विशेष रोग।

लग्नुहस्तः [ब० स०] दण्डधारी।

लघु (वि०) [लङ्घ्+कु, नलोपः] 1. हल्का 2 छोटा 3 थोड़ा, संक्षिप्त 4 मामूली 5 ओछा, अधम, 6 दुर्बल 7 चुस्त, फुर्तीला 8 द्रुत 9 आसान 10 मृदु 11. सुखद 12. प्रिय, सुन्दर 13 सब प्रकार के भारों से मुक्त - अनोकहायी लघुरल्पप्रचारः—महा० १। ११५। सम० कौमुदी (वि०) हल्के पेट वाला —कौमुदी व्याकरण की एक पुस्तक,—तालः संगीत की ताल का एक भेद,—यष्टिका छोटी लकड़ी, —पाक (वि०) आसानी से पचने योग्य,—प्रमाण (वि०) आकार प्रकार में छोटा सा, योगवासिष्ठम् मोक्ष-वासिष्ठ का सारसंग्रह, छोटा संगीत में एक ताल।

लघूक (ना० धा०) 1 हल्का करना, बोझ घटाना 2 छोटा करना, घटाना।

लघ्वी (स्त्री०) [लघु+ङीप्] छोटी, थोड़ी, कम सम्पूर्ण पुरा बुद्धिमती च परवाक्।

लङ्गनी [लङ्ग्+ल्युट्+ङीप्] लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े सुखाने के लिए लटका दिये जाँय।

लङ्घित्वन् [लङ्घ्+इमनिच्] 1 सौन्दर्य 2. सत्व, एकता।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1 अतिक्रमण 2 उपवास करना 3 मैथुन, गर्भाधान।

लज्जाकृति (स्त्री०) लज्जा का झूठ मूठ प्रदर्शन।

लज्जारवः (पु०) हाथी।

लब्ध (वि०) [लभ्+क्त] 1 प्राप्त, उपलब्ध 2 गृहीत 3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त, समझा गया 4 (भाव करने के फलस्वरूप) प्राप्त, उपलब्ध। सम०- अनुग्रह (वि०) जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है, - तीर्थ (वि०) जिसने अवसर से लाभ उठा लिया है, —प्रतिष्ठ (वि०) जिसने कीर्ति प्राप्त कर ली है, जिसने अपनी साख जमा ली है, सम्मानित, —प्रसर (वि०) स्वतंत्रतापूर्वक इधर-उधर घूमने वाला, प्रसाद (वि०) अनुग्रह-प्राप्त, प्रिय, - बुद्ध (वि०) विद्वान्, शब्द (वि०) जिसने सुशब्द प्राप्त कर ली है, जो होश में आ गया है।

लब्धकला एक प्रकार की मिर्च।

लब्धरा कम्बल का एक भेद।

लब्धा एक प्रकार का बाजा, बेर।

लब्धबुद्ध (वि०) (संगीत०) वह गाना जिसकी लय और ताल सही हो, जिसमें सामञ्जस्य हो।

ललन्तिका मस्तक के ऊपर पहना जाने वाला एक आभूषण झूमर, झूमरपट्टी—ललन्तिकालसत्फाला—(लक्षित० त्रिवेणी स्तोत्र)।

ललामन् [लल्+इमनिच्] 1 आभूषण, अलंकार 2. एक छन्द का नाम।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1 मनोरम, सुन्दर 2 सुखद, सुहावना। सम०—प्रिय (संगीत०) एक गान की लय या माप,—ललिता सुन्दर स्त्री, विस्तरः बुद्ध के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, विस्तारः एक छन्द का नाम।

ललिता संगीत की एक लय।

ललितान्तिका } ललिता देखो।
ललितावेधी }

ललितासहस्रनामन् ललिता के हजार नाम।

लवः [लू+अप्] 1 तोड़ना, काटना 2 खेती काटना,

लापनी करना। सम०—क्षम (वि०) खेती काटने का इच्छुक।

लवङ्ग: [लू+अङ्गच्] कील का पौधा,—क्षम् कील। सम० कालिका कील।

लवण [लू+ल्युट्, पृषो० मत्वम्] 1. नमकीन स्वाद 2 एक राक्षस का नाम 3 एक नरक का नाम, —क्षम् 1 नमक 2 कृत्रिम नमक। सम०—क्षालिका नमक की बैली, - क्षाम्बु नमकीन पानी।

लवणित (वि०) [लवण+इतच्] नमकीन, लवणयुक्त।

लवणाम्बु (वि०) [ब० स०] जिसकी किरणें नमकीन हैं।

लवणाम्बुधि समुद्र या समुद्र का राजा—लवणाम्बुधयर्णवा-लक्षिता त्रिवली स्तोत्र।

लाङ्गलम् [लक्ष्+कलच् पृषो० वृद्धि] 1 हल 2 हलकी आकृति का सहतीर 3 ताड़ का वृक्ष 4 वृक्ष से फल एकत्र करने का बांस 5 एक फूल का नाम।

लाङ्गला नारियल का पेड़।

लाङ्गली केवांच का वृक्ष, सम०पीपल—त्रिपुरतमृहमङ्गलिप्रं-मत एव मन्थास्तवन्तनद्वयमिवहपुः पथिक आतमुखी-वन इतोऽथ ववति स्फुट कुसुमहसनमुख्य सा भ्रमद-भ्रमरमण्डलव्यलिपेशला लाङ्गली--शाकी० ११। ५।

लाङ्गूलच्छालनम् / लाङ्गूलविक्षेप: } पूंछ हिलाना।

लाजदेवी भावल का आटा।

लाज [लस+घञ्] 1 पका हुआ धान मनु० १०। ११५ 2 फायदा, लाभ। सम०—विद् (वि०) जो यह समझता है कि लाभ क्या चीज है - लेभे लाभ विदा वर रा० च०।

लालाट अपस्मार, मिर्गी।

लाव लवा नामक पक्षी, बटेर।

लावाक्षक एक द्वीप का नाम।

लालनम् पकड़ना, ग्रहण करना—लोमराङ्कुशलालनै --महा० ७।१४२।४५।

लासिक (वि०) [लस+ठक्] नाचने वाला—शि० १३।६६।

लिखित (पु०) [लिख्+क्त] चित्रकार।

लिङ्ग [लिङ्+कु] 1 हरिण 2 मूर्ख, बुद्धू 3 ऋषि, मुनि।

लिङ्गन [लिङ्ग+ल्युट्] 1 चिह्न निशान 2 प्रतीक, विशिष्टता 2 रोग का लक्षण 4 शारीरिक सत्ता -यौगेन कुसुमशरत्वमुत्तो लिङ्ग व्यपोहेत् कुसलो-ग्रमाख्यम् -भाग० ५।५।१३। सम० अवतार वीर पीठों का समुदाय,—पीठम् 'शिवलिङ्ग' मूर्ति जिस पर विराजमान है वह पीठी, शास्त्रम् लिङ्ग शास्त्र पर व्याकरण का एक ग्रन्थ।

लिङ्गशरीरम् सूक्ष्मिका, छोटी मूछी।

लिपि [लिप्+इन्] 1. लेप 2 लेखा 3. अक्षर, वर्णमाला 4 अक्षरी सूरत। सम० कर्मन् (नपुं०) आलेख, चित्रण,—कौशल्य अक्षरों पर पड़ने वाली चोटों, रचनाचातुर्य।

लिखन् [लिख्+क्त] 1. लिखा हुआ, लेखा हुआ, 2 खोदा हुआ, 3 अङ्कित, रूपक। सम०—अक्षित लिखी हुई सुलझे से सुशोभित, हस्त (वि०) सने हुए हाथों वाला।

लुलितालोक जिसने अपने बाल छटवा कर छोटे करा लिए हैं।

लुलुभ् (चुरा० उभ०) ललचाना, चमकना।

लुण्ठनम् [लुण्ठ्+ल्युट्] 1 लूटना 2 विरोध करना, बाधा डालना।

लुप् (व्या० में) लुप्त होना, मिटना, अदृश्य होना।

लुप्तिमती वृक्ष का अन्यस्थान।

लुलायम् वस्त्र का किनारा।

लूलायक चीटा, मकोड़ा।

लून (वि०) [लू+क्त] 1 कटा हुआ 2. तोड़ा हुआ 3 (फूल आदि) एकत्र किये हुए। सम०—पाद, —पुच्छक जिसका पावों से छुटकारा हो चुका है, —शिख (वि०) जिसकी पूंछ में बिल लगा हो।

लेख: [लिख्+घञ्] 1 लेख, लिखित दस्तावेज 2 परमात्मा, देवता 3. करोंच। सम०—अनुयोक्तिन् अभियान् का लेखक,- प्रभु इन्द्र—लक्षं न लेखप्रभु-भाषि पातु नः २२।११८, —रचनिकम् लिपिकार से की गई अशुद्धि।

लेखिका थोड़ा आघात, सहलाना।

लेखित (वि०) [लिख्+णिच्+क्त] लिखाया गया।

लेखा (केवल करण कारक—लेख्या - के रूप में प्रयुक्त) कामना, हिलना।

लेखित्रक मच्छर।

लैङ्ग (वि०) [लिङ्ग+अण्] शब्द के लिङ्ग से संबंध रखने वाला,—क्षम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम। सम०—भूत: असली पुरोहित।

लोक [लोक्+घञ्] 1. संसार, विश्व का एक भाग 2 पृथ्वी, भूलोक 3. मनुष्य जाति 4 प्रजा 5 समूह 6 क्षेत्र 7 दृष्टि 8 वास्तविक स्थिति, प्रकाश --इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तत्वप्रमलोकाव-रणस्य मोक्षम्—भाग० ८।३।२५ 9. विषय, ज्ञेय-वस्तु —उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८।११। सम०—अनुग्रह: मनुष्य जाति की समृद्धि,—अनुवृत्तम् लोकमत के अनुसार, जनसाधारण की आज्ञाकारिता, - अधिकक्षित (वि०) जिसे जलना चाहे, जलाग्नि,—उपजीवनम् लोगों में बुरी अफवाहें

फैलाना– दश० २।२,—वञ्चक (वि०) समाज को धोखा देने वाला, सामाजिक ठग, धर्म सांसारिक कर्तव्य, नाथ सूर्य,—परोक्ष (वि०) संसार से छिपा हुआ, प्रपञ्च संसार का विस्तार, विद्वेष का प्राबल्य, भर्तृ (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, भद्र संसार के प्रति भला रहने की इच्छा लोकर्धर्मा महा० १०।१८।५ पर शा० भा०,—रञ्जन (वि०) संसार को कष्ट देने वाला—रा० ३।३३।१, —वर्तनम् लोकव्यवहार जिससे संसार की स्थिति बनी रहे, विरुद्ध (वि०) लोकमत के विपरीत, —विततः 1 संसार का अन्त 2 चौथा सृष्टि, —संघात जनसमुदाय,—सुन्दर (वि०) जिसके सौन्दर्य की सब लोग प्रशंसा करें।

लोकस्तात् (अ०) लोगों की भलाई के लिए।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. दर्शन, दृष्टि, ईक्षण 2 आँख। सम०—अञ्चल आँख की कोर, आवृतः ढकी, —आवरणम् पलक,—पथ (वि०) देखने में विकराल।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1 लालच, लालसा 2 इच्छा, प्रबल चाह 3 विस्मय, घबराहट, उलझन। सम० —अभिघातिन् (वि०) जो लालसा के कारण भागता है,—मोहित (वि०) लालच से अन्धा।

लोमशकः लोमड़।

लोमविध (वि०) [ब० स०] जिसके बालों में जहर भरा हो।

लोमशलक्ष, बिल में रहने वाले जन्तुओं की एक जाति।

लोलक्ष्य (वि०) प्रत्येक की सुनने वाला।

लोलम्ब भौंरा, भ्रमर।

लोष्टमृत्तिका मिट्टी की गोली।

लोष्टायते (ना० धा० आ०) ढेले के समान समझना।

लोहः [लूयतेऽनेन–लू+ह] 1 लोहा 2 इस्पात 3 ताँबा 4 सोना 5 अक्षर को अक्षरों। सम०—अग्रम् लोहे की नोक,—अभिध्वंसम् - उत्थम् सिद्धम् वलम् लोहे का जंग, कुल्सी लोहे की बढ़िया,—वर्मवत् धातु की तख्तरों से ढका हुआ शरीर वाला।

लोहित (वि०) [रुह्+इतन्, रस्य लः] 1 आँख की पलकों का एक रोग 2 एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर रत्न।

लोहपत्र पीतल।

लौकिक (वि०) [लोक+ठक्] 1 सांसारिक 2 सामान्य 3 दैनिक जीवन सम्बन्धी। सम०- अग्निः सामान्य आग जो यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त न होती हो, न्यायः सामान्यतः माना हुआ न्याय।

लौहशास्त्रम् धातुविज्ञान, धातुशोधन विद्या।

व

वंशः [वन्+श] 1 संगीत का एक विशेष स्वर 2 बाँस 3 अहंकार, अभिमान 4 कुल। सम०--कर्मन् बाँस की दस्तकारी, कृत्यम् बसरी बजाना, वर किसी कुल में उत्पन्न,—चक्रनिस्वनम् सत्रह मात्राओं का एक छन्द, पात्रम् बांस की बनी टोकरी, बाह्य कुल से निष्कासित,—ब्राह्मणम् सामवेद ब्राह्मण का मूल पाठ, लून (वि०) संसार में अकेला --वनम् बाँसों का जंगल, वर्धनः पुत्र,--विस्तर वंशावली —स्थविलम् एक छन्द का नाम।

वंशः बन्धु, सबंधी, अपने कुल का।

वक्तुकाम (वि०) बोलने की इच्छा वाला,

वक्तुकामः (वि०) बोलने का इच्छुक।

वक्तृप्रवीयस् (वि०) सिद्धान्तिक और प्रायोगिक (राजनीतिज्ञ)।

वक्र (वि०) [वञ्च्+रन् पृषो० भलोप] 1 टेढ़ा, मुड़ा हुआ 2 गोलमोल, अप्रत्यक्ष 3 घुंघराले 4. बेईमान, कपटी, जालसाज, क्रः— 1. समकोण 2. ज्ञानिह, वक्त्र 1 (ग्रह की) टेढ़ी चाल 2. नदी का मोड़। सम० आस्यम् टोन, अन्त,—इतर (वि०) सीधा, सौम्य, अकुटिल,—तुण्ड उँट,—दारु एक विशेष वाद्योपकरण, रेखा टेढ़ी लाइन।

वक्रेरिका, } चंगेरी, बाँस आदि की बनी टोकरी।
वक्रेरी }

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1 बोलने की क्रिया 2 वक्तृता 3 पाठ --चर्या 4 उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अंश 5 आज्ञा, आदेश 6. परामर्श, अनुदेश। सम० अवक्लेशः अपशब्दों से युक्त बात, उपन्यासः सुझावात्मक वक्तृता, क्रिया आज्ञाकारिता, कोविद (वि०) बात चीत का विषय बनाने वाला, गौरवम् शब्दों का आदर करना- पितुर्वचनगौरवात्—रा० १,—व्यक्तिः किसी उक्ति को यथार्थ सार्थकता।

वचोहरः दूत, राजदूत।

वचस्विन् (वि०) वाक्पटु, बोलने में चतुर—इतीरिते वचसि वचस्विनामुना शि० १७।१।

वज्रवर्जम् (अ०) सिवाय उसके को कह दिया है।

वज्रिन्: [वज्र+इनि] 1 न्याय, कहावत 2 वाक्य

3. वक्तृता, वक्तव्य, अभिव्यक्ति 3. शब्द की वाचक शक्ति।

वज्र: [वज्+रन्] 1 बिजली, इन्द्र का शस्त्र 2 रत्न की सूई 3 रत्न, जवाहर 4. एक प्रकार का कुश घास 5 एक प्रकार का सैन्य व्यूह। सम० अंशुकम् धारी दार कपड़ा, अङ्कित (वि०) 'वज्रायुध के चिह्न से मुद्रित —आकार (वि०), आकृति (वि०) वज्र की शक्ल वाला—कीट एक प्रकार का कीड़ा, -पञ्जर सुरक्षित आश्रयगृह, भृङ्ग: 1 एक प्रकार का कीड़ा 2 एक प्रकार की समाधि।

वज्रकम् [वज्र+कन्] हीरा, जवाहर।

वट: [वट्+अच्] 1 वड़ का पेड़ 2 गधक 3 सफेद की गोट। सम० दल,—पत्र, -पुटक वड़ का पत्ता।

वटधा [वल+वा+क+टाप्] 1 घोड़ी 2 एक नक्षत्र-पुंज जिसे 'घोड़ी के सिर' के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है।

वणिज् (पु०) [वण्+इजि, पस्य व] 1 व्यापारी, सौदागर 2 तुला राशि। सम० कटक काफिला, —वह ऊँट, बीथी बाजार।

वत् [मतुप्] अधिकरण अर्थ में तथा 'योग्य' अर्थ में लगने वाला मत्वर्थीय प्रत्यय- सं० स० १६।२।५१ पर सा० भा०।

वतु (अ०) विस्मयादि द्योतक अव्यय। 'सुनो' 'अब' 'खूब' अर्थ को प्रकट करता है।

वत्स [वद्+स] 1 बछड़ा 2 लड़का, पुत्र 3 सन्तान, बच्चा 4 वर्ष, 5 एक देश का नाम। सम० अनु सादृश्यो लघु और दीर्घ मात्रा का मध्यवर्ती क्रम भेद या अन्तर, पथम् तीर्थ, घाट, उतार।

वत्सतरित [वत्स+तर्प्+णिच्+क्त] बछड़े के रूप में परिवर्तित वत्सतरितकल्पमय गोपमणायितस्तस्म् —नारा०।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1 चेहरा 2 मुख 3 सूरत 4 सामने का पक्ष 5 पहली राशि 6 त्रिकोण का शिखर। सम० आलोदनविरत मुख में मधुरगंध से युक्त सुरा,—उदरम् जबड़ा, पङ्कजम् मुखारविन्द, कमल जैसा मुख, -पक्षम: दक्षम, सौम।

वध: [हन्+अप्, वधादेश] 1 भर्त्सना 2 (बीज० में) गुणनफल 3. हत्या, कतल। सम० राशि: जन्मराशि से छठा घर।

वधिक,-क: कस्तूरी, मृगमद।

वध्वाह्नक: वह समय जब कि कन्या दुलहिन बनती है।

वधूवरम् नवविवाहित दम्पति।

वध्यवासस् [ष० त०] लालरंग के वस्त्र जो प्राणदण्ड प्राप्त पुरुष को फांसी देने के समय पहिनाये जाते हैं।

वनम् [वन्+अच्] 1 जंगल 2. वृक्षों का झुंड 3. घर 4 फव्वारा 5. जल 6 लकड़ी का पात्र 7 प्रकाश की किरण 8 पर्वत। सम०—आश्र (वि०) केवल जल पीकर जीने वाला, उपल, गोबर के उपले, गोहे,—औषधि जंगली जड़ी बूटी, -कूपकी कोयल, हास काश नाम का घास।

वन्दनकम् सम्मानपूर्ण अभिवादन।

वन्य (वि०) [वन+यत्] 1 जंगली 2. लकड़ी का बना हुआ, श्व (पु०) बन्दर—अन्नुवंश्योऽस्य नैवृंता —रा० ३।२८७।२९। सम०- -वृत्ति (वि०) जंगली उपज पर ही रहने वाला।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1 बीज बोना 2. हजामत करना 3 बीर्य 4 क्षुर, उस्तरा 5. करीने से रखना, व्यवस्थित करना।

वपा [वप्+अच्+टाप्] 1 चर्बी 2 बिल, बिवर 3 दीमकों द्वारा बनी नयी 4 उभरी हुई मांसल नाभि।

वपुष्मत् (वि०) [वपुस्+मत्] 1 शरीर धारी 2 हृष्ट-पुष्ट 3 क्षतविक्षत, लक्षित।

वप्र-प्रम् [वप्+रन्] 1 फसील, परिवार, परकोटा 2 ढलान 3 समुच्चय 4 भवन की नींव।

वप्रा वाटिका की क्यारी।

वप्रिय [वप्+अधुच्] फांसी।

वयनम् [वय्+ल्युट्] 1 कपड़े का बीनना 2. बुनन, सुतली पटुआ।

वयोबाल (वि०) अवयस्क बालक, थोड़ी आयु का बालक।

वयुनम् [वय+वनन्] (वेद०) कर्म, कार्य—विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्—ईश० १८।

वर (वि०) [वृ+अप्] उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, बनमोल, —र 1 वरदान 2 उपहार पारितोषिक 3 इच्छा 4 प्रार्थना 5 दास 6 दूल्हा 7. जामाता। सम० अरणि माता - रा० ७।२३।२२, —ईक्षु: बैल, —इन्दी पुराना बीज भेद, —प्रेषणम् विवाह संस्कार का एक भाग जिसके अनुसार दुल्हे के मित्र किसी विशेष परिवार में दुलहन की खोज के लिए जाते हैं - मुख्या श्रेष्ठजन, लक्षणम् विवाह में संस्कार की बातें।

वरासि [ब० स०] खड्गधारी, तलवार रखने वाला।

वराहपुराणम् अठारह पुराणों में से एक।

वरिवस्कृत (वि०) [वृ+असुन्=वरिवस्+कृ+क्त] पूजा करने वाला—न तस्यिन्नं तस्मिन् वरिवस्कृतरि —ऋग्०

वरिवस्यति (ना० धा० पर०) अनुग्रह करना, कृपा करना।

वर्चस्वत् [ष० त०] अमदग्नि ऋषि का नाम।
वरेण्य गणेशमाहात्म्य में वर्णित एक राजा का नाम।
वर्णविद्यकम् [ष० त०] व्यंजनों के आठ समूह।
वर्णोत्तमत्व 1 अनुनासिक वर्ण 2 ज्योतिष में किसी ग्रह विशेष की उच्चता को प्रकट करने वाला शब्द।
वर्गीकृत (वि०) [वर्ग+च्वि+कृ+क्त] श्रेणियों में विभक्त जिसके समुदाय बने हुए हों।
वर्ग: [वर्ग+अच्] 1 रंग 2 सूरत, शक्ल 3 मनुष्यों की जाति 4 अक्षर, ध्वनि 5 शब्द, मात्रा 6 यश 7 प्रशंसा 8. चोगा 9 गीतक्रम। सम० अनुप्रास: अक्षरों का अनुप्रास अलंकार,—अन्तरम् 1 भिन्न जाति 2 स्थानापन्न अक्षर,—अवकृष्ट शूद्र—अवर (वि०) जाति की दृष्टि से अधम ओछा,—उत्तमम् ऊंचा कालीन,—परिचय संगीत में दक्षता, —भेदिनी मोटा अनाज, (बाजरा, कोदों), विभिक्षा 1 अक्षरों में परिवर्तन 2 जाति में परिवर्तन।
वर्णक [वर्ण+ण्वुल्] 1 वक्ता, वर्णन करने वाला 2 आदर्श, नमूना।
वर्णि [वर्ण्+इन्] 1 सोना 2 सुगन्ध।
वर्तनम् [वृत्+ल्युट्] 1 होना, रहना 2 ठहरना, बसना 3 कर्म, गति 4 जीविका 5 जीवित रहने का साधन 6 आचरण, व्यवहार 7 मजदूरी, वेतन 8 तकवा 9 जिससे रंगा जाय निहितमलक्तवर्तनाभिताम्रम् —कि० १०।४२ 10 बार बार दोहराया गया शब्द 11 काढ़ा बनाना। सम०—विनिमय मजदूरी बाँटना।
वर्तमानम् [वृत्+शानच्] विद्यमान काल, मौजूदा समय। सम०—आशय वर्तमान का विरोध,—काल मौजूदा समय।
वर्ति [वृत्+इन्] अस्थिमज्जा के कारक सूजन।
वर्तिका [वृत्+तिकन्] यष्टिका, लाठी—पलाशवर्तिकामेका बहुत सहतान् पथि महा० १।३१।८।
वर्तित [वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, लुढ़का हुआ 2. उत्पादित निष्पन्न 4 सम्पन्न किया हुआ, बीता हुआ।
वर्तिन् (वि०) [वृत्+णिनि] आज्ञा मानने वाला।
वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. पथ, मार्ग, रास्ता 2. कमरा, कक्ष 3 पलक 4 किनारा। सम० —आगमन यात्रा के परिणामस्वरूप थकान। —धारणम् ताक में रहना, ताड़ में रहना।
वर्त्स्यत् (वि०) [वृत्+स्य+शतृ] होने वाला, प्रगति करने के लिए तत्पर।
वर्धक [वर्ध्+अच्] चमड़े का तस्मा या फीता।
वर्धकी बेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री।
वर्धनक (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्, स्वार्थे कन्] आह्लादकर, हर्षप्रद, आनन्ददायक।
वर्धमान [वृध्+शानच्] 1 जैनियों का २४ वाँ तीर्थंकर 2. पूर्व दिशा का दिक्पाल हाथी। सम० —गृहम् आमोद घर—रा० २।१७।१८।
वर्धमानक [वर्धमान+कन्] हाथी में दीपक लेकर नाचने वालों की मण्डली।
वर्धापनिकम् 1 बधाई 2 बधाई के चिह्नस्वरूप उपहार
वर्धापिका परिचारिका, नर्स।
वर्ध्म हर्निया रोग।
वर्ष [वृष्+घञ्] 1 वर्षा होना 2 छिड़काव 3 (केवल नपुं० में) 4 महाद्वीप 5 बादल 6 —रा० ७।७३।५ पर टीका 7 वासस्थान। स —काल: बरसात की ऋतु, गण: वर्षों की ल शृंखला,—पद्म पद्मा, कलेण्डर, राज बरसा मौसम।
वर्षा [वर्ष्+अच्+टाप्] (स्त्रीलिंग ब० व० में प्रयु बरसात, वर्षा ऋतु। सम० —अम्बोद बड़ा मे —भू (पुं०) 1 मेंढक 2. इन्द्रवधू नामक की वीरबहूटी, मेघ मोर।
वर्षीयस (वि०) [वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेश] बहुत या पुराना।
वर्षीयस् (वि०) [वृष्+ईयसुन्] बौछार करने वा —तप कृशा देवमरीढा आसीद्यीयसी मही भा १०।२०।७।
वर्ष्मवीर्यम् [ष० त०] शरीर का बल।
वलना [वल्+युच्] घुमाव, फिराव।
वलितम् [वल्+क्त] काली मिर्च।
वलज अन्न का संग्रह कर्षकेण वलजान् पूपूषता—ऋ १४।७।
वलम्ब: [अव+लम्ब्+अच्, भागुरिमते अकारलोप लम्ब देखो।
वलयिनिवेश [ष० त०] ऊपर का कमरा।
वलयम् [वल्+अयच्] समुदाय।
वलि: [वल्+इन्] 1 तह, झुर्री (खाल पर) 2 पेट ऊपर के भाग में तह 3 चोरी की मूठ रत्नच्छा वलितवलिभिरम्बरै: कलान्तहस्ता मेघ० ३। सम० —दलितम् झुर्रियाँ और सफेद बाल (जो बु का चिह्न है), —भाल: बादल—नैष० १।१०।
वल्क [वल्+क] 1 वृक्ष की छाल, वल्कल 2 मृग की खाल 3 वस्त्र। सम० —कर: अनार का —वासस् (नपुं०) वल्कल की बनी हुई पोशाक।
वल्कलिन् (वि०) [वल्कल+णिनि] 1 वल्कल वाला (वृक्ष) 2. वल्कल से आच्छादित।
वल्गक [वल्ग्+अच्, स्वार्थे कन्] कूदने वाला, ना वाला।
वल्मीक [वल+ईक, पृषो० ध] 1 बमी, दीमकों

बनाया गया मिट्टी का बेर 2. शरीर के कुछ भागों में सूजन 3 वाल्मीकि महाकवि । सम०—अज,—जन्मा ऋषि वाल्मीकि का विशेषण,—ज्योत्स्ना, —राशि वही ।

वल्मलमणि कोयाकार ।

वल्लभजन स्वामिनी, प्रिया ।

वल्ला, शाखा, टहनी —अल्पफलमूल भुवनाद्रिप्रपेन्द्रमहीन्द्र-भोगैरधिवीतवल्शम्—भाग० ३'८।२९ ।

वशालोभ पालतू हथिनी को उपयोग में लाकर जंगली हाथी को पकड़ने की रीति मालवि० १०।७ ।

वशीकृत (वि०) [वश+च्वि+कृ+क्त] 1 अभिभूत 2 वश में किया हुआ ।

वशीभूत (वि०) [वश+च्वि : भू+क्त] आज्ञाकारी, वश में हुआ ।

वश्यम् [वश्+यत्] 1 जो वश में किया जा सके 2 लौंग ।

वश्या [वश्+युच्+टाप्] एक प्रकार का कंठाभूषण हार ।

वषट्कृत (वि०) अग्नि में उपहुत—आज्यमाज्यमसकृद्वष-ट्कृतम् शि० १४।२५ ।

वसतम [वस्+क्युट्] 1 घेरा 2 दालचीनी के वृक्ष का पत्ता 3. तगड़ी (स्त्रियों का एक आभूषण) 4 रहना, निवास करना । सम०—स्थान् तम्बू, टैंट ।

वसतस्तुती कोयल ।

वसतरोह. [ष० त०] एक प्रकार का मधुमेह ।

वसु [वस्+उन्] 1 घी, घृत (जैसा कि 'वसोर्धारा' में), 2 धन, दौलत, रत्न, जवाहर 3 सोना 4 जल । सम० उत्तम भीष्म,—धारिणी धरा, पृथ्वी, धामः राजा, भग धनिष्ठा नक्षत्र, रोहित् अग्नि ।

वसोर्धारा घर के निमित्त किए जाने वाले यज्ञ के अन्त में उपहुत हवि की अनवरत धारा ।

वस्ति. (पु०, स्त्री०) [वस्+तिच्] 1 बसना, रहना 2 मूत्राशय 3 श्रोणि, पेड़ू । सम०— कर्मन् (नपु०) मनीमा करना, गोह मूत्राशय,—छिद्रम् मूत्राशय का छिद्र, छिद्र, रन्ध्र ।

वस्तु (नपु०) [वस्+तुन्] 1 वास्तविकता 2 चीज 3 धन-धान्य 4 सामग्री (जिससे कोई वस्तु बनाई जाय 5 अभिकल्पना, योजना । सम० —अवात् (अ०) ठीक समय पर, तन्त्र (वि०) वस्तुनिष्ठ, विषयपरक, निर्देशः 1 विषय सूची 2 एक प्रकार की नाटकी,—पुरुषः नायक—अथवा सहस्तु पुरुष वहु-मानात् विक्रम० १।२,—भावः वास्तविकता,—मूल (वि०) सारयुक्त, तथ्यपूर्ण, सयार्थ,—विनिमयः अदल-बदल का व्यापार, —स्थितिः (अ०) परि-स्थितियों के कारण,—शून्य (वि०) अवास्तविक, —स्थिति वास्तविकता ।

वस्वल् (वि०) 1 अत्युत्तम 2 अधेलाहुत घनवान्, 3 श्रेष्ठ यान्, अधिक समृद्ध(वेद०) श्रेयान् वस्वोऽनसि स्वाहा तै० ब्रा० ।

वहा [वह्+अच्+टाप्] नदी, सरिता ।

वहनभङ्ग [ष० त०] वहाज का टूट जाना ।

वहित्रम् [वह्+इत्र] 1 किश्ती, पोत 2 चौकोर रथ, वर्गाकार या चतुष्कोण रथ ।

वह्नि [वह्+नि] 1. अग्नि 2 जठराग्नि 3 पावक अग्नि 4. सवारी 5 यजमान 6. भारवाही जन्तु 7. तीन की संख्या । सम०— उपासन अग्निमय उपासना,—कोण दक्षिणपूर्वी दिशा—कोष, दाहाग्नि, वासस् स्वयं अग्नि की चिता में बैठ कर आत्माहुति करना—बीजम् सोना,—मारकम् पानी, जल, शेखरम् केसर, कुंकुम, जाफरान, संस्कार दाहसंस्कार, अन्त्येष्टि क्रिया, —साक्षिकम् अग्नि का साक्षी करके ।

वह्निसात्कृ आग लगा देना, अग्नि में जला देना ।

वा (अ० अदा० पर०) सूंघना ।

वाक्कोपवाकम् दो व्यक्तियों की बातचीत, वक्तृता और उत्तर ।

वाक्कोवाक्यम् तर्क शास्त्र, न्यायशास्त्र ।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1 वक्तव्य 2. उक्ति 3 आदेश 4. सगाई । सम०—आडम्बरः बड़े-बड़े शब्दों से युक्त भाषा,—छद् जिह्वा में लकवे का होना, —परिसमाप्ति (स्त्री०) वक्तव्य की समाप्ति, विशेषः जिलाधिकारी, हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी, —शास्त्रिः अभिवक्ता, किसी की ओर से बोलने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) [वाच्+ग्मिन् चस्य कः तस्य लोपः] 1 वाकपटु 2. शब्दों से पूर्ण (पु०) 1. वक्ता, बोलने वाला 2. बृहस्पति 3. विष्णु 4 तोता ।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप्, दीर्घ] 1 वाणी की देवता सरस्वती । सम०— अगोचर (वि०) गूंगा,—आरम्भणी 1 सरस्वती के प्रसाद को प्राप्त कराने वाले ऋग् मन्त्रों का समूह 2. एक वैदिक ऋषि का नाम, —उत्तरम् वक्तव्य की समाप्ति या उपसंहार,—केलि, —केली बुद्धि की चतुराई के युक्त वार्तालाप,—युक्तः कोरी बातचीत,—योगः विद्रूपक, ठिठोलिया,—विलिखितम् किसी उक्ति से प्रयोजन या वेतावनी—तच्चाकर्म वाङ्निमित्तक पितरि सुतरां जीविताशां लिखिर्साचकार हर्ष० ५,—वधः वाणी का पराभव,—संयमः वाणी की चतुराई,—हारीतः अभिव्यक्ति के पराभव को पार कर जाने वाला व्यक्ति, वाणी में पारंगत, —भटः (वास्तव) 1. बादर्भव विषय का प्रसिद्ध लेखक 2 अलंकार शास्त्र का एक प्रणेता, विद् (वि०) तर्क और युक्तियाँ देने में प्रवीण, विनिमुक्त उक्तियों

के द्वारा प्रस्तुत,—विस्तरः वाग्विस्तार, वाक्प्रपञ्च, बहुभाषिता, सल्लापवत् सोपालम्भ उक्ति, व्यर्थवाक्य, —लक्ष्मः शतरञ्जी वक्तृता, बहुविध भाषण, स्तब्ध (वि०) जिसकी वाणी बन्द गई है, जो बोल नहीं सकता।

वाचयितृ (वि०) [वच्+णिच्+तृच्] जो सस्वर पाठ की व्यवस्था करता है।

वाचस्पतिः [षष्ठी अलुक् समास] 1. वाणी का स्वामी 2 बेद—महा० १४।२१।९ 3 एक कोशकार का नाम।

वाचस्पतिमिश्रः तत्त्ववार्तिक के प्रणेता का नाम।

वाच्य (वि०) [वच्+ण्यत्] 1 कहे जाने योग्य 2 अभिधा द्वारा प्रकट अर्थ 3 निन्दनीय। सम० लिङ्ग (वि०) विशेषणपरक, वलितम् कूटोक्ति, अभिधा शक्ति के द्वारा दुर्बोध उक्ति, वाचकत्वम् शब्द और अर्थ की स्थिति।

वाजित (वि०) [वाज+इतच्] पक्षयुक्त (जैसे कि बाण)।

वाजिन् (वि०) [वाज+इनि] 1 पक्षी प्राणिवाजिनिर्देवितम्—महा० ७।१४।१६ 2 सात की संख्या। सम०- कर्णः एक वृक्ष का नाम,- विल्वः बड़ का वृक्ष, गूलर।

वाट (वि०) [वट+अण्] बड़ का वृक्ष। ट (पु०) डिब्बा। सम० मुद्गुका बाड़।

वाडवहरणम् सांड घोड़े को दिया जाने वाला चारा।

वाडवहारकः समुद्री दानव।

वाणः [वण् + घञ्] ध्वनन—वार्षवर्णि समासक्तम् —कि० १५।१०। सम० - शब्दः बंसरी की आवाज।

वात (वि०) [वा + क्त] 1 हवा से उड़ाया हुआ 2 इच्छित, अभिलषित, तः 1 वायु 2 वायु की अधिष्ठात्री देवता 3 शरीर के तीन दोषों में से एक 4 गठिया 5 जोड़ों की सूजन 6 वायु सरना, शरीर से वायु का निकलना। सम०—अरि: बादाम का पेड़, अशन सांप - वातापानोद्भमिति कि विनतासुनुरुन्मथ श्वासानिलाय भुजग स्पृहयालुतालु —रा० च० ५, —आख्यम् ऐसा भवन जिसमें दो कमरे हों एक का मुंह दक्षिण की ओर दूसरे का पूर्व की ओर, - आहार (वि०) जो वायु के ही सहारे जीवित रहता है,—कोप शरीर में वायुप्रकोप के कारण हुआ रोग चक्रम् एरकार से गोलाकार चिह्न लगाना घट झंझावात का बादल, पुरीष: केरल में गुरुवायूर नामक स्थान पर देवता, रथ बादल, सम्भारः सूखी लकड़ी।

वातन्धय (वि०) [द्वितीया अलुक्] फूंक मारने वाला।

वातव्याधि (वि०) गठिया रोग से ग्रस्त।

वातिक (वि०) [वात+ठक्] 1 मोटापा या बादी से ग्रस्त 2 मुझक्कड़ी 3. वायुरोग 4 वातक पक्षी।

वादनक्षमवाक्यः मीमांसकों के आक्रमण का उत्तर देने वाला वेदान्त का ग्रन्थ।

वादित्रम् [वद्+णित्रन्] वाद्ययन्त्र, संगीत का उपकरण। सम० लकुट ढोलक बजाने की लकड़ी।

वाद्यकम् [वाद्य+कन्] संगीत का उपकरण।

वाद्यवाम् होठ।

वाधूलम् तैत्तिरीय शाखा का श्रौतसूत्र।

वानचित्रम् विविध रंग का कम्बल।

वानदण्डः जुलाहे की लकड़ी।

वान्त (वि०) [वम्+क्त] 1 उगला हुआ, थूका हुआ 2 उद्गमन किया हुआ 3 निराया हुआ। सम० ग्रह कुत्ता,- आशिन् (पु०) 1 राक्षस जो विष्ठा पर निर्वाह करता है 2 वह व्यक्ति जो भोजन के लिए अपना गोत्र या वंशावली का उद्धरण देता है, वृष्टि (वि०) वह बादल जो पानी बरसा चुका है मेघ०।

वापी [वप्+इञ्, ङीप्] बावड़ी, बड़ा कुआं। सम० जलम् तालाब का पानी।

वाम (वि०) [वम्+ण अथवा वा+मन्] 1 बांया 2 उल्टा, विपरीत, विरोधी 3 क्रूर, कठोर 4 दुष्ट 5 मनोरम,—मः 1 कामदेव 2 सांप 3 छाती, ऐन, बाँही 4 निषिद्ध कार्य (जैसे सुरापान), मम् 1 सम्पत्ति, दौलत 2 दुर्भाग्य, विपत्ति 3 कमनीय वस्तु। सम० अक्षी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, कामिनी, —इतर (वि०) दायाँ,- कुक्षि बाईं कोख,—नयना (स्त्री०) मनोहर आँखों वाली स्त्री, स्वभाव (वि०) उत्तम चरित्रयुक्त व्यक्ति—निरीक्ष्य कृष्णाकृत गुरोस्मृत वामस्वभावा कृपया ननाम च भाग० १।७।४२, हस्त बकरी के गले का निरर्थक स्तन।

वामदेव्यम् साममन्त्र समूह जिसका नाम उसके प्रवर्तक ऋषि वामदेव के नाम पर पड़ गया।

वामनीकृत (वि०) [वामन+च्वि+कृ+क्त] बौना बना हुआ, कद में छोटा बनाया हुआ।

वामशिक्षा शकुन की विद्या जो कौओं के निरीक्षण से जानी जाती है।

वायुकुम्भ हाथों के चेहरे का एक भाग मात० १०।१।

वायुभक्ष 1 जो वायु खाकर जीवित रहता है 2 सांप।

वायुस्कन्धः वायुप्रदेश।

वार्डहीलम् रहट, पानी निकालने का यन्त्र।

वार्धनी पानी की सुराही।

वारण (वि०) [वृ+णिच्+ल्युट्] हटाने वाली,—णम् 1 हटाना, रोकना 2 विघ्न, बाधा 3 दरवाजा, किवाड़, —णः 1 हाथी 2 कवच 3 हाथी की सूंड 4 अंकुश। सम० कृष्णः एक व्रत का नाम, —पुष्पः पौधे की एक जाति।

वारांनिधिः [वार्+राशि] समुद्र ।
वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1 पानी 2 तरल या पिघला हुआ या बहने वाला पदार्थ । सम०—कुक्षः गाँव के चारों ओर की खाई, परिखा, खिन्नः चट्टान का मेंढक, —जन्म शस्य, साम्यम् दूध ।
वारुणी [वरुण+अण्] शराब का विशेष प्रकार, वारुणी मदिरा पीत्वा—भाग० १।१५।२३ ।
वारुत्र. 1 समुद्रतट, समुद्रवेला 2 अग्नि 3 किनारे का वन ।
वार्तागुकर्मन्
वार्तावित
} 1 चर 2. दूत 3 वृत्तवाहक ।
वार्ताकर्मन् (नपुं०) खेती और पशु पालन का व्यवसाय ।
वार्तापति नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।
वार्त्तन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार विवरण यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न बने तो उसे सहायक सामग्री के साथ जोड़ दिया जाय—मा० सू० ३।१।२३ पर शा० भा० ।
वार्धरम् 1 रेशम 2 जल 3 दक्षिणावर्त शंख ।
वार्धरम् बरसात का दिन ।
वार्धेयम् एक प्रकार का नमक ।
वार्ध्राणसः 1 एक पक्षी 2 बूढ़ी बकरी ।
वालुकास्नानम् रेत से स्नान करना, शरीर पर रेत मलना ।
वावातः (वि०) प्रिय, प्रीतिभाजन, स्नेहभाजन ।
वास [वस्+घञ्] 1 सुगन्ध 2 रहना 3 आवास 4 एक दिन की यात्रा 5 बासना 6 स्वरूप, आकृति । सम०—पर्यय आवासस्थान का परिवर्तन, प्रासाद-मञ्चक ।
वासना [वास्+युच्+टाप्] (गणित०) प्रमाण, प्रदर्शन ।
वासनामय (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।
वासित (वि०) [वास्+क्त] पवित्रीकृत, शिक्षित, उन्नीत सुधारा गया नै० २२।१२९ ।
वासरः,-रम् [वास्+अरच्] दिन, रः 1. समय, बारी 2 एक नाग का नाम । सम०—कल्पता रात, द्रुमः, मणिः सूर्य ।
वासवः 1 इन्द्र का पुत्र अर्जुन 2 अर्जुन 3 बालि ।
वासवेयः [वासवी+ढक्] व्यास का नाम—महा० १।१।५९ ।
वासस् [वस्+णिच्+असुन्] 1 वस्त्र 2 कपड़ा 3. पर्दा । सम०—उदकम् वस्त्र को निचोड़ने पर उससे निकला हुआ पानी जो प्रेतात्माओं को उपहृत किया जाता है—वृक्ष आश्रयदाता, शरण प्रदान करने वाला पेड़ ।
वासिकम् रक्त, रुधिर, खून ।
वासिष्ठरामायणम् एक ग्रन्थ का नाम (यह ज्ञानवासिष्ठ के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।
वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुन्] 1. भवन बनाने के निमित्त नियत भूमिखण्ड 2. आवास 3 समाधान सम०—कर्मन् (नपुं०) 1 भवन निर्माण करना, भवन निर्माण का प्रारूप, शास्त्रम् वास्तु कला, भवन निर्माण का प्रारूप या अभिकल्प, देवता भवन की अधिष्ठात्री देवता, विद्या स्थापत्य कला, भवन-निर्माण विज्ञान,—विभागः भवन मरम्मत, ।
वास्तुक (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही सामग्री उलाचोलरतोऽभ्येत्य मयेद वास्तुक वसु—भाग० ९।४।६ ।
वास्र दिवस, दिन ।
वाह [वह्+घञ्] 1 ले जाने वाला 2 कुली 3 भार-वाहक 4 घोड़ा 5 बैल 6. भैंसा 7 सवारी । सम० वार घुड़सवार, रिपु भैंसा, वाह्य रथवान, रथ को हाँकने वाला—स्ववाहवाहोचितवेषपेशल -नै० १।६६,—वाहम् (पुं०) अग्नि ।
विराज् पक्षियों का राजा, बाज पक्षी ।
विल (वि०) [व० स०] 1 अलङ्घनीय 2 अप्रसन्न ।
विवक्ष (वि०) [विवक्+अच्] 1 खिला हुआ, खुला हुआ 2 फैला हुआ, बखेरा हुआ 3. केशकलाप, 4 चमकीला, देदीप्यमान—चन्द्रांशुविकचप्रकरम्—रा० २।५।९। सम०—अक्षि (वि०) उज्ज्वल आँख से युक्त, अनिन्द्य लावण्य से सम्पन्न ।
विकचित (वि०) [विकच+इतच्] खुला हुआ, खिला हुआ ।
विकटः कपोल,—टम् 1 रसौली 2. चन्दन, 3 सफेद सरसों ।
विकत्थन असभ्य बातें ।
विकर्तृ (वि०) [वि+कृ+तृच्] बाधा डालने वाला —राक्षसा ये विकर्तारः—रा० १।११।१० ।
विकलत्व (वि०) [ब० स०] कवचहीन, जिसके पास शिरस्त्राण न हो ।
विकाशनम् [वि+काशृ+ल्युट+टाप्] 1. मिथ्या उक्ति 2 इच्छा न होना 3. संकोच ।
विकत्थन [वि+कृ+ल्युट] अहं, अहंकार, अभिमान ।
विकाश [वि+काश्+घञ्] उज्ज्वलता ।
विकुक्षि (वि०) बड़े पेट वाला, उभरी हुई कोख वाला ।
विकूबर (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।
विकृ (तना० उभ०) बदनाम करना, कलङ्कित बनाना अनार्य इति माधवार्या ·· ····विकरिष्यन्ति—रा० २।१२।७८ ।
विकृत (वि०) [वि+कृ+क्त] 1. परिवर्तित, बदला हुआ 2. अपूर्ण, अधूरा 3 अप्राकृतिक 4 आश्चर्य-जनक 5. विरूप, —तम् (नपुं०) 1. परिवर्तन 2. रोग 3. अवधि 4 अनर्थकारी—मनु० १।२४७ 5. दुष्कृत्य—रा०—७।९१।३४ ।

विक्रमशिलाख्या 1 एक कवयित्री का नाम 2 डा० राघवन रचित 'एकांकी'।
विक्षुप्ति [वि+क्षु+क्तिन्] 1 चंचलता 2 आभास 3 गर्भपात 4. व्युत्पन्न (व्या० में)।
विक्षेपणम् [वि+क्षप्+ल्युट्] 1 भोजन से विरक्ति 2 अन्वेषण।
विक्षिप्तसीमान्त (वि०) जिसकी सीमाएँ वर्जित की गई हैं।
विक्ष् (तुदा० पर०) 1 उडेलना 2 (ठंडी साँस) आह भरना।
विकिर [वि+कृ+अच्] कुछ गौण पितरों को प्रसन्न करने के लिए बखेरा गया चावल।
विकिरालम् दे० 'विकिर'।
विकल्प् (भ्वा० आ०) 1 दुविधा का वर्णन करना 2 विचार करना।
विकल्प [विकल्प्+घञ्] 1 उत्पत्ति—भा० ११।२५। २७ 2 मान लेना, उक्ति 3 उत्प्रेक्षा, कल्पना।
विकल्पित (वि०) [विकल्प्+क्त] 1 तत्पर, व्यवस्थित 2 सदिग्ध, कल्पित 3 विचलित।
विकेशतारका धूमकेतु, पुच्छलतारा।
विक्रम् (भ्वा० आ०) पराक्रम दिखाना।
विक्रम [विक्रम्+घञ्] 1 कड़ा स्वर, उदात्त स्वराघात 2. जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर।
विक्रमशिलम् [विक्रम्+शिल्+क्त] पराक्रम, शौर्य।
विक्रिया [विकृ+श+टाप्] 1 चोट, आघात, हानि 2 लोप।
विक्रय [वि+क्री+अच्] 1 बिक्री 2 विक्रयमूल्य 3 मण्डी। सम० वचनम् बिक्री की दस्तावेज, वीथि बाजार।
विक्रीड [वि+क्रीड्+अच्] 1 खेल का मैदान 2 खिलौना।
विक्रोष्टृ (पु०) [विक्रुश्+तृच्] जो सहायता की पुकार करता है।
विक्लवम् [वि+क्लु+अच्] क्लेश—रा० २।४४।२५।
विक्लवता [विक्लव+तल्+टाप्] भीरुता, कायरता भवति हि विक्लवता गुणोज्झितानाम् शि० ७।४३।
विक्षिप् (तुदा० पर०) 1 दबाना 2 उछालना 3. (धनुष) झुकाना।
विक्षिप्त (वि०) [विक्षिप्+क्त] विस्तारित, प्रसारित फैलाया गया।
विक्षेप [विक्षिप्+घञ्] 1 अवहेलना (जैसा कि 'समय विक्षेप' में 2 विस्तार।
विगतकल्मष (वि०) [ब० स०] जिसकी बकाया दूर हो गई है।
विगतासु (वि०) [ब० स०] निष्प्राण, मृतक।
विगद (वि०) [ब० स०] रोग से मुक्त।
विगर्हिताचार (वि०) [ब० स०] जिसका आचरण निंद्य है, घृणित आचरण से युक्त।
विग्रहग्रहणम् [ष० त०] रूप धारण करना, शरीर या मूर्ति धारण करना।
विग्रहेच्छु [ष० त०] लड़ाई का इच्छुक।
विग्रहिन् (पु०) [विग्रह+इनि] युद्ध मंत्री।
विघसम [वि+अद्+अप्, घसादेश] 1 सोम 2 अवशेष कौर। सम० —आश (पु०) जो खाने से बचे हुए उच्छिष्ट भोजन को करता है, कौवा।
विघ्नोपशान्ति बाधाओं को हटाना।
विचक्ष (अदा० आ०) 1 कहना, घोषणा करना 2 प्रकट करना 3 सोचना, अटकल लगाना।
विचटनम् [विचट्+ल्युट्] तोड़ना।
विचन्द्र (वि०) [ब० स०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा से रहित।
विचर् (भ्वा० पर०) 1 चरना, घास खाना 2 भूल हो जाना गलती करना—हविषि व्यचरत्तेन वषट्कार गृहान् द्विज —भाग० ९।१।१५।
विचर (वि०) [विचर्+अच] भ्रान्त, विचलित- न स्व धर्मं विचर मज्जयेद्द महा० ५।२९।४।
विचारमूढ (वि०) 1 मूर्ख, 2 निर्णय करने में अज्ञानी।
विचक्षण (वि०) कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो।
विचलित (वि०) [विचल+क्त] 1 पथभ्रष्ट, सन्मार्ग से भटका हुआ 2 अवरुद्ध, अन्धा किया हुआ।
विचालिन् (वि०) [विचाल+इनि] अस्थिर, परिवर्त्य, अस्फुट,- विचालो हि अवत्सरशब्द —सी० सू० ६। ७।३८ पर शा० भा०।
विचिकित्सित (वि०) संदिग्ध, संदेह पूर्ण।
विचित्रित (वि०) [विचित्र+इतच्] रंगा हुआ, सजाया हुआ, रंगबिरंगा।
विचिन्तनम् [विचिन्त्+ल्युट्] 1 विचार, चिन्तनम् 2 देख-भाल, चिन्ता, फिक्र।
विचिन्ता [विचिन्त्+अच्+टाप्] दे० 'विचिन्तनम्'।
विचेयम् [विचि+यत्] अन्वेषणीय।
विचेष्टनम् [विचेष्ट्+ल्युट्] हाथ पैर हिलाना, प्रयास करना।
विचेष्टा [विचेष्ट्+अङ्+टाप्] 1 प्रयास 2 गति 3. संचरण।
विच्छिन्न (वि०) [विच्छिद्+क्त] 1 चीरा हुआ, फाड़ा हुआ 2 तोड़ा हुआ, काटा हुआ 3 विलकुल 4 समाप्त किया हुआ 5 लुप्त 6 उबटन आदि लेप किया हुआ। सम० -आहुति आहुति देना—भङ्ग करके, औपासनम् नित्य सन्ध्योपासना करना जिसका नैरन्तर्य भङ्ग हो गया हो—अर्थात् कभी करना

करी न करना, —ग्रहर (वि०) जिसकी प्रगति में बाधा पड़ गई है, मद्य (वि०) जिसने सुरापान छोड़ दिया है।

विच्छेद [विच्छिद्+घञ्] भेद, प्रकार।

विच्छुरण [विच्छुर्+ल्युट्] बिखेरना, छिड़काना, बुरकना।

विचक्रम (वि०) [ब० स०] जिसके पहिये न हों, चक्रहीन (रथ)।

विजाया (वि०) गर्भिणी।

विजल (वि०) [ब० स०] जलहीन, जहाँ पानी न हो।

विजर्जर (वि०) 1 जीर्णशीर्ण, टूटा-फूटा 2 विश्वास्त, उच्छिन्न।

विजय [विजि+अच्] 1 जीत, फ़तह् 2 एक विशिष्ट मुहूर्त 3 तीसरा महीना 4 एक प्रकार का सैन्यव्यूह। सम०—ऊर्जित (वि०) जीत (फ़तह) से प्रोत्साहित, —वध्य सेना की एक विशेष टुकड़ी।

विजिह्मित (वि०) [ब० स०] जिसकी मूछ नष्ट हो गई हो।

विजिहीर्षा [वि+हृ+सन्+अ+टाप्] इधर-उधर घूमने या खेलने की इच्छा।

विजृम्भिका 1. साँस लेने के लिए मुँह खोलना 2 जम्हाई लेना।

विजृम्भित [विजृम्भ्+क्त] 1 जो जम्हाई ले चुका है 2 जम्हाई लेने वाला।

विज्जिका एक कवयित्री का नाम नीलोत्पलदलश्यामां विज्जिकां मामजानता। दृष्ट्वैव दष्टिना प्रोक्ता सर्वशुक्ला सरस्वती॥ (उस कवयित्री का अब तक यही एक श्लोक उपलब्ध हुआ है)।

विज्ञानम् [विज्ञा+ल्युट्] 1 ज्ञान का अंग या वृद्धि 2 इन्द्रियातीत ज्ञान।

विज्ञानभिक्षु एक प्रौढ़ लेखक का नाम।

विज्ञानस्कन्ध बौद्ध दर्शन के पाँच स्कन्धों में से एक।

विज्ञेय (वि०) [वि ज्ञा+ण्यत्] 1 जानने के योग्य सज्ञेय 2 जिसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए 3 जिसका ध्यान रखा जाय।

विटप (वि०) [ब० स०] जिसमें डोरी या ज्या न हो (धनुष)।

विटकान्ता 1 हल्दी, हरिद्रा 2 हल्दी का पौधा।

विटङ्क (वि०) उत्तम, सुन्दर, मनोरम—केयूरकुण्डलकिरीटविटङ्कवेषौ भाग० ३।१५।२७।

विटप [विट+पा+क] लता, बेल (जैसा कि 'भूविटप' में)।

विडम्बक (वि०) [वि+डम्ब्+ण्वुल्] नक़ल करने वाला—परमसम्भ्रमकरम्बकविडम्बकरालम् —पतंजलि का शब्दस्तोम।

विडम्बनम् [विडम्ब्+ल्युट्] विदूषकी की पीड़, उपहास की वस्तु।

वितर्क [वितर्क्+अच्] 1 मिथ्या अनुमान 2. इरादा। सम०—शास्त्री अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत।

वितान:,—नम् [वितन+घञ्] 1. साधियाना, चंदोवा 2 राशि, ढेर 3 बहुतायत 4 अनुष्ठान 5 निष्पत्ति।

वितानक: [वितान+कन्] राशि, ढेर।

वितार (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसमें तारे न हों (आकाश) 2. धूमकेतु के सींगभाग से रहित।

वितृप्त (वि०) [वितृप्+क्त] सन्तुष्ट, सतृप्त।

वितरितवितरणम् मूल्यवान उपहारों का वितरण।

विदत् (वि०) [विद्+शतृ] 1 जानने वाला 2. समझदार।

विदितवेदम् (वि०) [ब० स०] 1. जो अपने आपको जानता है 2 प्रसिद्ध।

विदुर: [विद्+कुरच्] देखा, ज्ञाता।

विदुष: दे० 'विदुर'।

विदुषी जानने वाली, समझदार स्त्री।

विदग्ध (वि०) [विदह्+क्त] 1 परिपक्व 2 दक्ष 3 चतुर, धूर्तबाज़, कुछ-कुछ जला 4 जला हुआ, भस्मीभूत 5. पचा हुआ। सम०—परिषद् (स्त्री०) चतुर पुरुषों का समाज, —मुखमण्डनम् एक ग्रन्थ का नाम, वचन (वि०) वाग्मी, वाक्पटु।

विदण्ड दरवाज़े की कुंडी।

विदल (वि०) [ब० स०] जिसके मगजी या झालर अथवा किनारी न लगी हो, (वस्त्र)।

विदाब [फ़ारसी का शब्द] 1 विदा करना 2 प्रभात।

विदुरनीति } महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ से ४०
विदुरप्रजागर } तक अध्याय। यहाँ धृतराष्ट्र ने नीति पर व्याख्यान दिया है।

विदूर संज्ञक (वि०) जो दूर से सुनाई दे।

विदृति: (स्त्री०) झोपड़ी की सन्धि या सीवन।

विदेहज (वि०) विदेह में उत्पन्न।

विदेहमुक्ति: (स्त्री०) मोक्ष के कारण जन्म मरण से अर्थात् शरीर से छुटकारा।

विद्योत: [विद्युत्+घञ्] अतिरिक्त-ज्ञान।

विद्युल्लतानलिकाका हर्षदेवकृत एक नाटक।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1. दुर्गा देवी 2 सरस्वती देवी 3 ज्ञान, शिक्षा। सम०—आतुर (वि०) जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए उतावला हो—विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा—नीति०—ईश: शिव का नाम, —कोशगृहम्,—कोशसंग्रह,—कोशसम्भव, पुस्तकालय, —क्रम् धातु की शक्ति,—क्रान्त (वि०) शिक्षित, पढ़ालिखा,—केत: अध्ययन की किसी विशिष्टशाखा के अध्यापकों की वंशपरम्परानुसार सूची।

विद्युल्लतावलयम् (अ०)एक अलंकार, जिसमें चौड़ी चौड़ी रेखा है।

विद्योत (वि०) [विद्युत+घञ्] चकाचौंध करने वाला, चमचमाने वाला।
विद्रुति [वि+द्रु+क्तिन्] दौड़ जाना, भाग जाना।
विद्वान् (वि०) [वि+द्वा+क्त, मस्य वत्वम्] 1. जागरूक, निद्रारहित 2 निराश, उदास —द्रविण-विद्वान्मनिजि—हर्ष० ७।
विद्वत्सभा } विद्वान् पुरुषों की सभा विद्वन्मण्डली।
विद्वत्सदस् }
विधन (वि०) [ब्रा० ब०] निर्धन, धनहीन।
विधर्म (वि०) 1. अधर्मी, अन्यायी 2 अधर्मकार्य जो अच्छे आशय से किया गया हो।
विधर्मिन् (वि०) [विधर्म+इनि] 1. भिन्न धर्म से सम्बन्ध रखने वाला (विप० सधर्मिन्) 2 अधर्मी।
विधा (जुहो० उभ०) लीन करना, उपभोग करना।
विधा [वि+धा+क्विप्] उच्चारण।
विधात् (पु०) [वि+धा+तृच्] माया, भ्रान्ति।
विधानम् [विधा+ल्युट्] 1. प्रयत्न, प्रयास 2 उपचार 3. भाग्य, नियति 4. विधि 5 (नाटक०) विभिन्न रसों का सम्बन्ध।
विधि [वि+धा+कि] 1. उपयोग, प्रयोग 2 अनुष्ठान, अभ्यास 3 प्रणाली, रीति, ढंग 4 नियम 5. कानून (विप० अर्थवाद) 6 धर्मकृत्य 7 व्यवहार 8. आचरण 9 सृष्टि 10. निर्माण 11 भाग्य 12 हाथी का आहार 13. वैद्य 14 उपाय, तरकीब। सम० अङ्ग. विधिपरक मूल पाठ का उपसहारात्मक भाग, - अर्थ विधि का आशय, कर (वि०) विधान को कार्य में परिणत करने वाला,—यज्ञ विधिविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ,—व्यत्ययम् विधि का स्वरूप, लोप विधान का अतिक्रमण,-विपर्यय,—विपर्यास दुर्भाग्य, —विभक्ति (स्त्री०) विधिलिङ् के प्रत्यय —वशात् (अ०) भाग्य से,— विधिवशादुरवन्धुगतोहम् मेघ० ६।
विधु [व्यध्+कु] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 राक्षस 4 प्रायश्चित्ताहुति। सम० परिभवः चन्द्रग्रहण, भवनम् चन्द्रमा का परिवेश,—मास चान्द्र महीना।
विधुर (वि०) [विगता धूर्यस्य अच् सभा०] 1 विधवा, असहाय—प्रतिक्रियायै विधुर—कि० १७।४१ 2 अशक्त, अवसन्न—हयेषु विधुरोर्वः— महा० ७।१४६।२५।
विधूसर (वि०) [विधूर+इतच्] विवर्ण, कान्तिहीन।
विधून (वि०) [ब्रा० ब०] धूर्त से रहित।
विधारयत् [विधृ+णिच्+ल्युट्] विरचना करना, रचना।
विधि (वि०) [विगतं+कृ, भ [illegible]] निष्कलङ्क, कलंक-रहित।
विनक्त (वि०) [वि+नक्+क्त] बिल्कुल नंगा, विवस्त्र।
विनयिन् (वि०) [विनय्+णिनि] गरजने वाला (साम मन्त्रों के पाठ करने की एक रीति)।
विनय [वि+नी+अप्] 1 दण्ड - शीलबलमविज्ञाय वास्यामि विनय परम् महा० ३।३०६।१९ 2 कार्यालय।
विनयकर्मन् (नपु०) [ष० त०] निर्देश, शिक्षण।
विनाशकाल [ष० त०] विपत्ति का समय।
विनाशहेतु (वि०) [ष० स०] जो नाश का कारण हो।
विनाकृत (वि०) [विना+कृ+क्त] 1 वञ्चित, रहित, मुक्त 2 वियुक्त, एकाकी।
विनाभाव, वियोग —व्यक्त दैवादहं मन्ये राघवस्य विनाभवम् रा० ७।५०।४।
विनायक [वि+नी+ण्वुल्] नेता, अगुआ।
विनिकृत (वि०) [वि+नि+कृ+क्त] दुर्व्यवहारग्रस्त, आहत, विकलीकृत।
विनिगमना [वि+नि+गम्+युच्+टाप्] सकल्प, निश्चित उपसंहार, कुछ स्वीकार करके शेष को निकाल देना —मै० म० १०।५।५९ पर शा० भा०।
विनिर्हन् (वि०) [नि+नि+बर्ह्+क्विप्] परास्त करने वाला, हराने वाला।
विनिर्हृ (चुरा० उभ०) (बाण) छोड़ना, (बाण) मारना।
विनियोक्तृ (वि०) [वि+नि+युज्+तृच्] काम देने वाला, स्वामी।
विनियोग [वि+नि युज्+घञ्] 1 प्रयोग, उपयोग 2 सम्बन्ध।
विनिर्वृत्त (वि०) [वि नि +वृत्+क्त] 1 पैदा हुआ, निकल आया 2 समाप्त हुआ, पूरा हुआ।
विनिर्वेशनम् [विनि+विश्+णिच्+ल्युट्]उठान, निर्माण।
विनिहित (वि०) [विनि+धा+क्त] 1 रक्खा हुआ, पड़ा हुआ 2 नियुक्त 3 जड़ा हुआ।
विनिहृत (वि०) [विनि+हन्+क्त] 1 मुकरा हुआ, न अपनाया हुआ 2 छिपा हुआ, छिपाया हुआ।
विनी (भ्वा० पर०) दूर रहना, दूर करना—विनीय भयमात्मन'—महा० ९।३१।२९।
विनीत (वि०) [विनी+क्त] फैलाया हुआ।
विनीतवेष, सामान्य वेशभूषा।
विनेतृ: [वि+नी+तृच्] शिक्षक, ज्ञान विनीतविनेतृभूता।
विनोदयत् } क्रीडाशील, मनोरञ्जन में व्यस्त, आमोद-
विनोदयितृ: } प्रिय।
विनोदस्थानम् मनोरंजन का स्थान, वन विहार।
विन्यासनम् [विनि+अस्+ल्युट्] रखना, धरना।
विन्यासः [विनि+अस्+घञ्] 1. (अस्त्र) धारण करना 2. बीच में घुसेड़ना 3 वृद्धि, (अर्थों की) विवृति।

विपक्ष. [ष० ब०] 1 निष्पक्षता, तटस्थता 2 वह दिन जब कि चन्द्रमा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में संक्रमण करता है।

विपाट:[विपट्+घञ्]एक प्रकार का बाण, तीर विपाट-पञ्जरेण—शि० २०।१७।

विपाटित (वि०) [विपट्+णिच् क्त] फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विपण: [वि+पण्+अच्] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय—न तत्र विपणं कार्यं खरकरस्पृशम् हि तत्—महा० ३।३३।६६।

विपणिजीविका [ष० त०] क्रयविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवननिर्वाह करना।

विपणिवीथी [ष० त०] मण्डी, बाजार।

विपण्यु (वि०) 1 जिसने व्यवसाय छोड़ दिया है 2 तटस्थ, उदासीन।

विपत्ति [विपद्+क्तिन्] अवसान, समाप्ति।

विपत्तिकाल: [ष० त०] विपत्ति का समय।

विपत्प्रतीकाश (वि०) [ब० स०] कान्तिहीन, निष्प्रभ।

विपरिक्रान्त (वि०) साहसी, बलशाली।

विपर्यय: [वि+परि+इ+अच्] मिथ्याबोध, गलतफहमी—ईशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः—भाग० ११।२।३७।

विपर्यास: [विपरि+अस्+घञ्] 1 ह्रास 2 मृत्यु०। सम० उपमा, उल्टी उपमा।

विपाक. [वि०+पच्+घञ्] कुम्हलाना, मुरझाना। सम० दारुण (वि०) परिणाम में भयंकर,—दोषः अग्निमाद्य, अजीर्ण।

विपिनौकस् (पु०) [ब० स०] 1 बन्दर 2 जंगली जन्तु।

विपुंसक(वि०)[ष० ब०] पुंस्त्वहीन, जिसमें पौरुष न हो।

विपुलशोण (वि०) [ब० स०] लम्बी गर्दन वाला।

विपुष्ट (वि०) [वि+पुष्+क्त] जिसे पूरा आहार न मिला हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विपुष्पकम् [वि+पू+क्यप्, स्वार्थे कन् च] सड़ाध, दुर्गंध।

विप्र: [इष्+रन्, अत इत्वम्] भाद्रपद का महीना। सम० —आहाण माता पिता की बारज सन्तान।

विप्रकृ (तना० उभ०) नियत करना, (साक्षी के रूप में) स्वीकार करना।

विप्रकार: [विप्र+कृ+घञ्] 1 विपरीतता 2. दुष्कृत्य, गलत तरीका।

विप्रकृति. [वि+प्र+कृ+क्तिन्] परिवर्तन।

विप्रकर्ष [विप्र+कृष्+घञ्] 1 खींचकर दूर करना 2. (व्या० में) से व्यञ्जनों के बीच में कोई स्वर जो उन दोनों की भिन्नता बतावे।

विप्रतिषिध (दिवा० आ०) मिथ्या उत्तर देना।

विप्रतिषिद्धि. [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. विरोधी भावना 2. गलती, त्रुटि।

विप्रतिसक्त (वि०) [विप्रति+पद्+क्त] परस्पर संयुक्त, आपस में मिले हुए। सम०—बुद्धि (वि०) मिथ्या विचार या धारणा रखने वाला।

विप्रत्यय: [वि+प्रति+इ+अच्] अविश्वास,—यदि विप्रत्ययो होय—महा० १२।१११।५५।

विप्रथित (वि०) [वि+प्रथ्+क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी।

विप्रथय्. [विप्र+पृथ्+णिच्] तंग करना, सताना।

विप्रलब्धित (वि०) [विप्र+लभ्+क्त] 1. अपमानित 2 अतिक्रान्त।

विप्रलीन (वि०) [विप्र+ली+क्त] तितर-बितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ।

विप्रलुम्पक (वि०) [विप्र+लुप्+ण्वुल्, मुमागमः] लुटेरा, डाकू।

विप्रलोक: [विप्र+लोक्+घञ्] बहेलिया, चिड़ीमार।

विप्रवाद: [विप्र+वद्+घञ्] असहमति, मतविभिन्नता।

विप्रवसित (वि०) [विप्र+वस्+णिच्+क्त] प्रवास के लिए भेजा हुआ, जो परदेश में भेजा गया हो।

विप्रसृत (वि०) [विप्र+सृ+क्त] 1 पटक दिया हुआ, गिराया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

विप्रहीण (वि०) [विप्र+हा+क्त] वञ्चित, विरहित।

विप्रुष् (स्त्री०) बोलते समय मुंह से निकले थूक के कण।

विप्लव: [वि+प्लु+अच्] पोतभंग, जहाज का विनाश।

विप्लुतवाच्(वि०) असंगत बोलने वाला, हकलाने वाला।

विप्लुति: [वि+प्लु+क्तिन्] विनाश, ध्वंस।

विबन्धु (वि०) [ब० स०] बन्धुहीन, जिसका कोई संबन्धी न हो—भ्रातुर्वरिष्ठस्य सुतान् विबन्धून्—भाग० ३।१।६।

विबुध: [वि+बुध्+क] 1 बुद्धिमान्, विद्वान् पुरुष 2 देवता 3. चन्द्रमा। सम०—अनुचर: दिव्य सेवक, —आवास: देवमन्दिर,—द्विष: राक्षस।

विबुभूषा [वि+भू+सन्+अङ्+टाप्] अपने आप को प्रकट करने की इच्छा।

विभञ्ज् (भ्वा० उभ०) 1. अलग कर देना, दूर भगा देना —विभक्तरक्षः सवधम्—रा० ५।५३।७३ 2. तोड़ना 3. बांटना।

विभङ्ग: [वि+भञ्ज्+घञ्] लहर।

विभङ्गुर (वि०) [वि+भञ्ज्+उरच्] अस्थिर, चंचल।

विभव: [वि+भू+अच्] प्रलय, संहार—निखिलजगदुत्पादविभवप्रतिज्ञेषे—विद्ध०।

विभवना [विभा+अनङ्] छाया।

विभवरेखा [ष० त०] विभाजन रेखा।

विभावर (वि०) [विभा+वनिप्, र आदेशः] उज्ज्वल चमकदार, चमकीला—विभावरी सर्वभूतप्रतिष्ठां संधुक्षां वह्नाः—महा० १३।२६।८६।

विमिद् (रुधा० उभ०) अतिक्रमण करना, उल्लङ्घन करना ।
विमेद [विमिद्+घञ्] सिकुडन, (भौंहें) सिकोड़ना ।
विमी (वि०) निर्भय, निडर ।
विभीषण एक राक्षस का नाम, रावण का भाई ।
विभुता सर्वोपरि सत्ता, यश, कीर्ति ।
विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] मुड़ा हुआ, झुका हुआ, दमन किया हुआ ।
विभावसु [वि+भू+णिच्+ल्युट्] 1 विकास 2 प्रभा 3. दृष्टि, दर्शन ।
विभाव्य [विभू+णिच्+ण्यत्] चिन्तनीय, विचारणीय ।
विभूति [वि+भू+क्तिन्] 1 लक्ष्मी 2. योग्यताएं—क्षेत्रज्ञ एता मनसो विभूती --भाग० ५।११।१२ ।
विभ्रंश [वि+भ्रंस्+घञ्] 1 अतिसार, बार-बार दस्त आना 2. उलटफेर, अस्तव्यस्तता ।
विमद (वि०) [प्रा० ब०] मदपान से मुक्त ।
विमर्दनम् [वि+मृद्+ल्युट्] 1. सुश्रूषा, सुखद 2 परिमर्दन, थकावट, पीसना 3 समर्थ ।
विमर्षिन् (वि०) [विमृष्+णिनि] असहिष्णु, अनिच्छुक, विमनस्क ।
विमात्रा (वि०) मापतोल में बराबर ।
विमान: [वि+मा+ल्युट्] 1 खुली पालकी 2. जहाज में रहने वाली किश्ती । सम० वह: पालकी उठाने वाला ।
विमार्गदृष्टि (वि०) बुरी राह पर आँख रखने वाला, बुरे रास्ते को देखने वाला ।
विमुक्ति (वि०) [वि+मुच्+क्त] अन्वेषणरहित, शान्तचित्त, निरपेक्ष ।
विमुखतामेत्य (अ०) मोनव्रत करके ।
विमुनिशाप (वि०) [प्रा० ब०] शाप के प्रभाव से मुक्त ।
विमुहित (वि०) [ब० स०] चकराया हुआ, बेहोश ।
विमुहितवत् (वि०) [ब० स०] चकराया हुआ, बेहोश ।
विमूर्छित (वि०) [वि+मूर्छ्+क्त] 1 पूर्ण, सब मिला हुआ 2 जमा हुआ, मूर्छा में ग्रस्त ।
विमृश [वि+मृष्+अच्] अनुचिन्तन, सोचविचार, —माल० ४।२२।२१ ।
विमौद (वि०) बिल्कुल फल रहित, निष्फल ।
विमलप्रभाकर [ब० त०] बिजली ।
विमलाम्बर: [ब० त०] अन्तरिक्ष ।
विमलम् (अ०) अन्तराल पर अवकाश देकर ।
विमत्सर (वि०) [वि+मत्सर्+घञ्] ईर्ष्याकरहित, जिसमें डाह न हो ।
विमुच् (रुधा० आ०) 1. (प्रतिज्ञा) भंग करना 2. छुटना 3. छुटाना ।
विमुक्त [वि+मुच्+क्त] वियुक्त होकर, पृथक् एक एक करके व्यक्तिश: ।
विमोचनम् [वि+मुच्+ल्युट्] 1 वियोग 2 छुटाना ।
विमोनि मिश्र जाति की स्त्री—महा० १३।१४५।५२ ।
विमोनि (वि०) [प्रा० ब०] 1 नीच कुल में उत्पन्न 2 भगरहित ।
विमोहिन् पक्षी, परिंदा ।
विरजा एक नदी का नाम ।
विरजस्काकृति (वि०) [ब० स०] जिसकी प्रजा उदासीन हो, निर्लिप्त हो ।
विरल (वि०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, दूरतक फैला हुआ ।
विरल्या 1 दूसरा मार्ग 2 उपमार्ग, छोटी गली ।
विरसप्रसङ्ग वह बात या विषय जिसकी चर्चा बन्द हो गई हो
विरसव्रतिन् (वि०) नीरस, उकता देने वाला ।
विराज् [विराज्+क्विप्] ब्रह्माण्ड, विश्व । सम० -सुत (विराट्सुत) स्वर्गीय पितरों की एक श्रेणी ।
विरात्र, त्रम् [प्रा० ब०] रात का तीसरा पहर शुश्राव ब्रह्मघोषांश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्-रा० ५।२६ ।
विराधन (वि०) [वि+राध्+णिच्+ल्युट्] शोरगुल कराने वाला हल्लागुल्ला मचवाने वाला ।
विरिक्त (वि०) [वि+रिच्+क्त] जिसे दस्त करा दिये गये हों, खाली कराया हुआ ।
विरिक्ति [विरिच्+क्तिन्] विरेचन, दस्त करवाना ।
विरुज् (स्त्री०) [वि+रुज्+क्विप्] दारुण पीडा ।
विरुज् (वि०) नीरोग, स्वस्थ ।
विरुद्धालङ्कार एक अलङ्कार जहाँ उपमेय बिल्कुल समान न हो ।
विरोध [वि+रुध्+घञ्] 1 वैपरीत्य, बाधा, विघ्न 2 प्रतिबन्ध 3. शत्रुता 4 कलह 5 असहमति 6 संकट । सम० आभास वह अलङ्कार जहाँ विरोध प्रतीत होता हो, परन्तु वस्तुत. कोई विरोध न हो,—उपमा वैपरीत्य पर आधारित उपमा, —परिहार. 1. विरोध का दूर होना, सामञ्जस्य स्थापित होना 2 प्रतीयमान विरोध की व्याख्या ।
विरुप एक प्रकार का साँप ।
विरूढ (वि०) [वि+रुह्+क्त] (घाव) भरा हुआ, स्वस्थ 2. अंकुरित 3 बड़ा हुआ । सम० बोध (वि०) जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो ।
विरोचनम् [वि+रुच्+युच्] प्रकाश, चमक, दीप्ति ।
विरोचिष्णु (वि+रुच्+इष्णुच्) चमकीला उज्ज्वल ।
विरूप (वि०) [प्रा० ब०] 1 जिसका कोई विशेष चिह्न या लक्षण न हो 2 (पीर) जिसका निशाना चूक गया हो ।

विलग्न (वि०) [विलग्+क्त] 1 लटकता हुआ 2 पिंजरबद्ध (पक्षी)।
विलापयत् [वि+लप+णिच्+ल्युट्] रुलाने वाला, विलाप का कारण।
विलम्ब् (स्वा० आ०) सहारा लेना, निर्भर करना।
विलास [विलस्+घञ्] 1 सजीवता, हावभाव 2 काम-कला, लपटना।
विलास } [वि+ली+घञ्; चस्य लत्वं] घोल देना, मिलाना, (चीनी की भाँति)
विलासयत् } मिला, देना।
विलिङ्ग (वि०) [प्रा० ब०] भिन्न लिङ्ग का।
विलिम्पित (वि०) [विलिम्प्+क्त] सना हुआ, लिपा हुआ, लथा हुआ।
विलेपिन् (वि०) लथड़ा, चिपका हुआ।
विलीन (वि०) [विली+क्त] मन में बैठाया हुआ।
विलोप्तृ (पु०) [विलुप्+णिच्+तृच्] डाकू, लुटेरा।
विलोभनीय (वि०) [वि+लुभ्+अनीय] ललचाने वाला, मुग्ध करने वाला।
विलोचनपथः दृष्टि क्षेत्र, दृष्टि का परास।
विलोमपाठ विपरीत क्रम में मन्त्र पाठ।
विलोमविधि किसी कार्य के विपरीत अनुष्ठान का विधान करने वाला नियम।
विवक्षितान्यतरस्याध्यम् एक प्रकार का अव्ययार्थ।
विवदनम् [वि+वद्+ल्युट्] कलह, झगड़ा, मुकदमेबाजी।
विवधा [प्रा० स०] 1 बूझा 2 हथकड़ी, बेड़ी।
विवरम् [वि+वृ+अच्] पाताल लोक।
विवर्णित (वि०) [विवर्ण+इतच्] अननुमोदित, अस्वीकृत।
विवस्त् (स्त्री० पर०) कूदना, उछलना, फाँदना।
विवस्वती (स्त्री०) [विवस्वत्+ङीप्] सूर्य देव की नगरी।
विवाहनंवध्यम् दुकड़ों की बेसमझ।
विविक्त (वि०) [विविच्+क्त] जिसने समझ लिया, या गहो अनुमान लगा लिया विविक्त परम्यको -भाग० ५।२६।१७।
विविदिषा [विद्+सन्+अङ्+टाप्] जानने की इच्छा।
विवीताध्यक्षः चरभूमि का अधीक्षक।
विवृ (स्वा० क्या० उभ०) 1 म्यान से तलवार निकालना 2 कन्धे से (आलों की) माँस फाड़ना।
विवृतम् [विवृ+क्त] अनाहत, जिसके घाव नहीं हुआ।
विवृतपौरुष (वि०) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने वाला।
विवर्जित (वि०) [विवृज्+क्त] वह जिससे कोई वस्तु ले ली गयी, वञ्चित, विरहित।
विवृत् (स्वा० आ०) रूपान्तर करना उसे वह विवर्तते महा० १२।१७४।२२।
विवर्तनम् [विवृत्+ल्युट्] रूपान्तरण।
विवृत्तता [ब० स०] मूर्खता।
विवेकरूपरता निर्णय करने में असफलता।
विवेकविरहः अज्ञान, ज्ञान का अभाव।
विश् (तुदा० पर०) 1 रङ्गमञ्च पर प्रकट होना 2 सङ्कुल होना 3 आ पड़ना 4 (किसी कार्य में) व्यस्त हो जाना।
विश् (पु०) [विश+क्विप्] 1 बस्ती 2 सम्पत्ति, दौलत।
विशङ्कनीय (वि०) [वि+शङ्क्+अनीय] प्रश्नास्पद, पूछने के योग्य, शङ्का किये जाने के योग्य, जिस पर शङ्का की जा सके।
विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1 सुकुमार, मृदु 2 दक्ष।
विशल्यकरणी शस्त्रों के लगाने से उत्पन्न घावों को स्वस्थ करने की विशेष जड़ी-बूटी।
विशसनम् [विशस्+ल्युट्] 1. युद्ध 2. काटना 3 वध करना, हत्या करना।
विशारद (वि०) [विशाल+दा+क] 1. प्रवीण 2 बुद्धिमान्, 3 प्रसिद्ध 4. साहसी 5. सौन्दर्योपपन्न अरद् ऋतु सम्बन्धी 6. बकवृत्ति शक्ति से रहित।
विशालकुलम् उत्तम परिवार, प्रसिद्ध वंश।
विशिखा [विशिख+टाप्] रथाक्ष।
विशेषकरणम् उन्नति, सुधार।
विशेषधर्मः विशेष कर्तव्य, विशिष्ट धर्मकृत्य या यज्ञ-अनुष्ठान।
विशेषणासिद्धः एक प्रकार का हेत्वाभास।
विशेषणपदम् 1 विशेषता द्योतक शब्द 2. सम्मान सूचक उपाधि।
विशेषतः (अ०) अनुपात की दृष्टि से निश्चयेभ्यो देवेभ्यो दान विद्धा विशेषत —मनु० ११।२।
विशुद्धधी निर्मल मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला।
विशुद्धवृत्त (वि०) सच्चरित्र, सदाचारी।
विशुद्धिः [विशुध्+क्तिन्] 1. ऋण परिशोध करना 2 प्रायश्चित्त।
विशृङ्खला 'देवी' का विशेषण।
विशीर्ण (वि०) [विशृ+क्त] 1. रवड़ा हुआ 2. विफलीभूत 3 गिरा हुआ (गर्भ आदि)।
विश्रान्तकथ (वि०) [ब० स०] 1. बकवृत्ति शक्तिहीन, मूक 2 मृत।
विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] आराम करने का स्थान।
विश्रब्धालापिन् (वि०) विश्वस्त या खुले बातें करने वाला।
विश्रब्धालापिन् वाला।

विश्वस्तसुप्त (वि०) शान्ति पूर्वक सोने वाला।
विश्वि: [विश्+किन्] मृत्यु।
विश्वगोचर (वि०) सबके लिए सुगम, जहाँ सबकी पहुँच हो।
विश्वजीव: विश्वात्मा, ईश्वर।
विश्वाधार: विश्व का सहारा, ईश्वर।
विश्वेदेवा: पितरों की एक श्रेणी, देववर्ग।
विश्वकुमि अँतड़ियों में पड़ने वाला कीड़ा।
विश्वास: मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रावरोध।
विश्वसक्त: अतीसार, दस्तों का लगना।
विश्वभुज् (वि०) मल खाकर रहने वाला, गुबरैला।
विश्वम्भर भैंसा।
विषतन्त्रम् विषविज्ञान, (सर्पादि विषैले जन्तुओं का विष दूर करने की प्रक्रिया।
विषक्त (वि०) [वि+षञ्ज्+क्त] 1 व्यस्त, विपका हुआ 2 अतिविस्तारित।
विषादनम् [वि+षद्+णिच्+ल्युट्] कष्ट देना, सताना।
विषम (वि०) [प्रा० ब०] 1 जो पूरा न बँट सके 2 अनुपयुक्त। सम०—बाण कामदेव,—नेत्र शिव की तीसरी आँख —नेत्र शिव का एक विशेषण,—वृत्तम् छंद जिसके चरण सम न हों।
विषय [वि+सि+अच्, षत्वम्] 1 ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाला पदार्थ 2 भौतिक पदार्थ 3. इन्द्रियजन्य आनन्द। सम०—निवृत्ति किसी बात को मुकर जाना,—पराङ्मुख भौतिक विषय सुखों से विमुख।
विषयीकरणम् [विषय+च्वि+कृ+ल्युट्] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना।
विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] जीतने के योग्य।
विषाण [विष्+कानच्] 1 चोटी 2 चूची 3 अपनी प्रकार का उत्तमोत्तम।
विषुवत्काल: वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है।
विसंस्था (स्वा० क्रया० पर०) 1. समर्थन करना, प्रबल बनाना 2 व्याप्त होना, छा जाना।
विसिकर दासों का स्वामी, बेगार में पकड़े मजदूरों का स्वामी।
विसिकारिन् बेगार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिश्रमिक भी नहीं दिया जाता है।
विस्काशिन् [विष्ठा+आशिन्] सूअर, जो मल खाता है।
विष्णु [विष्+क्नु] 1 त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में दूसरा 2. अग्नि 3. पावन पुरुष 4 स्मृतिकार 5. एक वसु 6. अकल्प मलमपुंज (इसका अधिष्ठाता देवता विष्णु है) 7. चैत्र का महीना। सम०—कान्ता विभिन्न पौधों के नाम,—क्रान्त परीक्षित राजा का नाम,—धर्मोत्तरपुराणम् एक उपपुराण का नाम, प्रिया 1 तुलसी का पौधा 2 लक्ष्मी का नाम —लिङ्गी बटेर।
विष्वग्गति (वि०) [विष्वच्+गति] सर्वत्र जाने वाला प्रत्येक विषय में प्रविष्ट होने वाला।
विष्वग्लोप [विष्वच्+लोप] घबराहट, बाधा, विघ्न।
विसदृश (वि०) असमान, असमरूप।
विसम्मूढ (वि०) नितांत घबराया हुआ।
विसा कमल नाल (=बिसा)
विसृज् (तुदा० पर०) (आ० भी) (प्रेर०) प्रकट करना, भेद खोलना, (समाचार) प्रकाशित करना।
विसृज्यम् [विसृज्+यत्] जो मुक्त किये जाने के योग्य है, सृष्टि, संसार का रचना -काली वशीकृत-विसृज्य विसर्गशक्ति भाग० ७।९।२२।
विसर्ग [विसृज्+घञ्] विनाश, सृष्टि का लोप।
विसृप (स्वा० पर०) फैलाना प्रसारित करना।
विसर्पिन् [विसृप्+णिनि] 1 रेंगने वाला 2 फूट कर निकलने वाला 3 सरकने वाला 4 फैलने वाला (बेल की भाँति)।
विस्यन्द [विस्यन्द्+घञ्] बूंद, कण।
विस्फूर्ज [विस्फूर्ज्+घञ्] दहाड़ना चिंघाड़ना, गरजना।
विस्फोटक [विस्फुट्+ण्वुल्] 1 फोड़ा, फुंसी 2 एक प्रकार का कोढ़।
विस्मयपदम् आश्चर्य का विषय।
विस्रगन्ध कच्चे मांस की गन्ध।
विहति (स्त्री०) [वि+हन्+क्तिन्] प्रतिघात, अपमारण, विफलता, आशाभंग, मनोभि सोढ़ैर्ये प्रणय-- विहतिध्वस्तरुचय कि० १०।६३।
विहाय (अ०) [वि+हा+ल्यप्] 1 ...से अधिक, के अतिरिक्त 2. होते हुए भी 3 बिना, छोड़ कर।
विहित प्रतिषिद्ध (वि०) जिसका विधान और निषेध दोनों किये गये हों।
विहरणम् [वि+हृ—ल्युट्] खोलना, फैलाना।
विहार [वि+हृ+घञ्] (मीमांसा) अग्नित्रय, (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण)।
विहारभूमि गोचरभूमि, चरागाह।
विह्वलचेतस् (वि०) [ब० स०] उदास, खिन्नमना जिसका मन बहुत व्याकुल हो।
वीचिक्षोभ लहरों का उठना, तरंगों से उत्पन्न हलचल।
वीचिमालि: सारसभूमि।
वीतसंस्पृह (वि०) ईर्ष्या द्वेषादि से मुक्त।
वीरकाम (वि०) पुत्रेषी, पुत्र का इच्छुक।
वीरपत्नी [ष० त०] शूरवीर की पत्नी, नायिका।

रवाद [ष० त०] शक्ति का दावा, वीरता जन्य कीर्ति।
रवान (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, दृढ़ संकल्प वाला।
रक [वीर+कन्] 1 'करवीर' नाम का पौधा 2 नायक 3 एक शिवगण का नाम।
र्य [वीर्+यत्] 1. विष 2. सोना 3 पुरुत्व, जनन –शक्ति 4 बीज, धातु। सम०—आधानम् गर्भाधान,—शुल्क (वि०) चुनौती देकर युद्ध, शक्ति के बल पर ज्ञान।
रिद्रुम [ष० त०] सीमावर्ती वृक्ष।
रिमार्ग [ष० त०] ऐसी सड़क जिसके दोनों ओर बाड़ लगी हो।
रु [वृ+कन्] 1 भेड़िया 2 सूर्य।
रुतक 1 रीछ 2 गीदड़।
रुत्र [ष० त०] लाख, रेजन (बेरजा)।
रुत्व [वृत्+क्त] 1 रूपान्तरण 2 अधिचक्र।
रुबन्ध छन्दोबद्ध रचना।
रुयुक्त (वि०) गुणों से सम्पन्न।
रुयर्थम् (अ०) जीविका के लिए।
रुिमूलम् जीविका की व्यवस्था, जीविका का आधार।
रान्नम् [वृथा+अन्नम्] केवल एक व्यक्ति के अपने उपभोग के लिए आहार।
रामंथा [वृथा+आतंथा] बांझ स्त्री।
रुयुषति (स्त्री०) 1 कुट्टिनी 2 दाई, धात्री।
रुि (स्त्री०) [वृष्+क्तिन्] 1 आघात चोट (वृष् हिंसायाम्) 2 भूमि का ऊँचा करना 3 लम्बा करना।
रुम् [वृ+दन्, सुम्] गुच्छा, झुंड।
रु [वृष्+क] 1 जल 2 भवननिर्माण के लिए मुखड़ा 3 नरजन्तु 4 साँड़। सम०–लक्षणा मरदानी स्त्री, –तुलिका (पु०) भिंड।
रुशकटम् बैल गाड़ी।
रुक [वृष्+कलच्] 1 जोतने वाला 2 बैल।
रुकोदरम् [ष० त०] ओष्ठ की आकृति।
रिगवाल ग्वाला, गड़रिया।
रुवर सौन्दर्य का अभिमान।
रि [वेष्+इन्] 1. फिर संयुक्त की गई संपत्ति जो पहले से बटी हुई थी 2. जल प्रवाह, झरना।
रुषलम् वीर्य का कट्टा।
रुष. वीर्य का बादल, वासबीज।
रुसत्यकथिकाति पन्द्रह कहानियों की एक कृति।
द, [विद्+अच्, घञ् वा] 1 ज्ञान 2 हिन्दुओं की पुनीत धर्म पुस्तक –ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 3. 'कुश' का गुच्छा 4. विष्णु। सम०—अध्ययनम् वह अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, अग्रहर (वि०) 1. वेद के विपरीत 2 वेदाध्ययन के क्षेत्र से बाहर,—अग्र. वेदों के विषय में होने वाली धर्मान्ध व्यक्तियों की बहस वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः—भग०, श्रुति ईश्वरीय ज्ञान का दैवी संदेश।
रेवेलेखला वेदी के चारों ओर की सीमा को बाँधने वाली रस्सी।
रेश. (पु०) [विश+असुन्, गुण] ज्योतिष का पारिभाषिक शब्द जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण।
रेशातिक्रम [ष० त०] सीमा का उल्लंघन।
रेशातिग (वि०) किनारे से बाहर रहने वाला।
रेशपतिः [ष० त०] वार, वेश्या का पति।
रेशपुत्र. [ष० त०] वेश्या का पुत्र, अवैध पुत्र, हरामी।
रेशमन् [वेष्ट्+स्यट्] विस्तार, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फैलाव।
रैकारिक (वि०) [विकार+ठक्] 1. परिवर्तनीय 2 सत्त्व से संबद्ध –वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा—भाग० ३।५।३०।
रैकार्यम् विकार, परिवर्तन।
रैकृतम् [विकृत+अण्] कपट, धोखा।
रैजन्यम् [विजन+ष्यञ्] निर्जनता, एकान्त।
रैदूर्यम् एक प्रकार का रत्न।
रैतानसूत्रम् यज्ञविषयक कुश सूत्र।
रैदुरिकम् [विदुर+ठक्] विदुर का सिद्धान्त।
रैद्यविद्या [ष० त०] आयुर्वेद शास्त्र।
रैधर्म्यतः असमानता के कोणों पर आधारित तर्कदोषयुक्त भ्रान्ति, हेत्वाभास।
रैभाधर (वि०) [विभाधर+अण्] रात परक।
रैयवहारिक (वि०) [व्यवहार+ठक्] व्यवहारसिद्ध, रूढ़, प्रचलित।
रैयाकरणखसूचि केवल वैयाकरण का विशेषणसूचक शब्द।
रैरायितम् [वैर+क्यच्+क्त] शत्रुता, द्वेष, विरोध।
रैरम्यम् [विराग+ष्यञ्] वर्ण या रंग का लोप।
रैरम्यशतकम् भर्तृहरिकृत एक काव्यरचना।
रैवस्वतमन्वन्तरम् सातवाँ मन्वन्तर, वर्तमान समय।
रैशसम् [विशस+अण्] हिंसा भाग० ५।५।१५।
रैशसिकम् [विशसत+ष्यञ्] विषादपन।
रैहिकः बेचार करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़े।
रोलम्बशातकम् (नाटक०) रथचक्र पर लम्बे-लम्बे डग भर कर इधर-उधर टहलना।
रोधकः वार्ता, वैयर, वधंकर।

व्यक्त विपुलवत् रेखा, भूमध्यरेखा ।
व्यक्तकुक्ष (वि०) अनियंत्रित, निरंकुश ।
व्यक्तङ्ग [ब्रा० ब०] इस्पात ।
व्यक्तलक्षिका पक्षा छलना ।
व्यक्तवाक् शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनव्यक्तवाचा प्रेक्ष्य—रा० २।६४।११ ।
व्यक्तिकर 1 उत्तेजना, उकसाहट—माव० २।५।२२ 2 विनाश—माव० १।७।३२ ।
व्यतिक्रम [वि+अति+क्रम्+घञ्] उल्लंघन, अतिक्रमण -तयोर्व्यतिक्रमं दृष्ट्वा—महा० २।१२।३९ ।
व्यतिषङ्ग [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1 प्रतियुद्ध, झड़प से विरत 2 विनिमय ।
व्यथित (वि०) [व्यथ्+क्त] 1 कष्टग्रस्त, पीड़ित 2 क्षुब्ध, डरा हुआ ।
व्यपक्रमण [वि+अप+आ+इ+ल्युट्] अपगमन, पलायन, पीछे हटना ।
व्यपवर्ग [वि+अप+वृज्+घञ्] 1 प्रवास 2 समाप्ति ।
व्यपाश्रय [वि+अप+आ+श्रि+अच्] आश्रयस्थान, सहारा ।
व्यपोह् (भ्वा० पर०) 1 प्रायश्चित्त करना 2 स्वस्थ होना 3 दूर भगाना ।
व्यभिचारदुष्ट (वि०) अनुचित यौन संबंध करने वाला ।
व्यभिचारिन् (वि०) [वि+अभि+चर्+घञ्+णिनि] 1. कुमार्गगामी, दुश्चरित्र 2. अस्थायी ।
व्यय [वि+इ+अच्] (व्या० में) रूपान्तर, शब्द या धातु का विभक्ति में प्रत्यय लगा कर रूप बनाना ।
व्ययशेष खर्च काट कर बची हुई राशि, निवलशेष ।
व्यवच्छेद [वि+अव+छिद्+घञ्] विनाश ।
व्यवधायक [वि+अव+धा+ल्युट्] (मीमांसा) दुरुह रचना, विश्लिष्ट रचना ।
व्यवहित (वि०) [वि+अव+हा+क्त] दूर पार का, दूरवर्ती । सम० अन्वय शब्दों की एक रचना प्रणाली जिसमें एक दूसरे से विपुलत शब्दों को मिला कर एक वाक्य बनाया जाय ।
व्यवसर्ग [वि+अव+सृज्+घञ्] परित्याग ।
व्यवसायात्मक (वि०) उत्साह से पूर्ण ।
व्यवसायाधिनिका (स्त्री०) दृढ़संकल्प से युक्त ।
व्यवस्थान [वि+अव+स्था+ल्युट्] विश्चित सीमा ।
व्यवस्थितविकल्पः निश्चित विकल्प ।
व्यवहार: [वि+अव+हृ+घञ्] 1. संविदा 2 पक्षित के पास का धन 3 व्यापार 4. मुकदमा 5 प्रथा, रीतिरिवाज । सम०—अर्थिन् (वि०) वादी, मुद्दई, —दर्शिन् (वि०) जो प्रमाण के आधार पर तर्क करता है ।
व्यवहृतम् [वि+अव+हृ+क्त] व्यापारिक लेन-देन ।
व्यवाय: [वि+अव+अय्+घञ्] 1 दूरी, पार्थक्य 2 प्रवेश, घुसना ।
व्यसनसहायचारिन् (वि०) साथ-साथ दुःख भोगने वाला ।
व्यसनागार: विपत्ति का घर ।
व्यसनपुच्छ (वि०) फैलाई हुई पूँछ वाला ।
व्यस्तिका (अ०) बाहों को फैलाकर तथा पैरों को चौड़ा करके (खड़ा होना) ।
व्याङ्ग (तना० उभ०) भविष्यवाणी करना (बुद्ध०) ।
व्याकरणम् [वि+आ+कृ+ल्युट्] 1 भेद, अन्तर 2 भविष्यवाणी ।
व्याकोच (वि०) (फूल की भांति) खिला हुआ, पूर्ण विकसित ।
व्याकोप: [वि+आ+कुप्+घञ्] विरोध, खंडन ।
व्याक्रोश: [वि+आ+क्रुश्+घञ्] चिल्ला-चिल्ला कर गालियाँ देना, भर्त्सना करना ।
व्याघारित (वि०) जिस पर घी (या तेल) का छींटा दिया गया हो (इसी अर्थ में अभिघारित भी) ।
व्याघूर्णित (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+क्त] लुढ़का हुआ चक्कर खाया हुआ व्याघूर्णजगदब्धकुम्भकुहरो ब - नारा० ।
व्याघूर्णत् (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+शतृ] लुढ़कता हुआ, चक्कर खाता हुआ ।
व्याजनिद्रा झूठमूट की नींद, दंड मार कर सोना ।
व्याजव्यवहार: कौशलपूर्ण व्यवहार ।
व्याजिह्म (वि०) [वि : हा+मन्, द्वित्वादि नि०] कुटिल, तोड़ा-मरोड़ा हुआ, झुका हुआ घृमपटलव्याजिह्म-रलम्बिन् —नाग० ५।१७ ।
व्याधिनिग्रह: रोग को नियन्त्रित करना ।
व्याधिस्कामम् शरीर ।
व्याप्तिवाद: विश्वव्यापकता का सिद्धान्त ।
व्यापारक (वि०) [वि+आ+पृ+णिच्+ण्वुल्] व्यापारसम्बन्ध व्यवसाय में लगा हुआ ।
व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र्+अच्] 1. अमगत 2. मिला-जुला 3 संदिग्ध, भ्रामक—व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे -भग० ३।२ ।
व्यामिश्रक: [वि+आ+मिश्र्+क्वुन्] नाटकीय संवालाप जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग हुआ हो —रा० २।१।२७ पर टीका ।
व्यायाम: [वि+आ+यम्+घञ्] सैनिक अभ्यास, फौज की कवायद ।
व्यावर्जित (वि०) [वि+आ+वृज्+क्त] झुका हुआ ।
व्यावहारिकसत्ता भौतिक अस्तित्व ।
व्यावृत्त (वि०)[वि+आ+वृत्+क्त] परिवर्तित—महा० १२।१४१।१५ ।
व्यासपीठम् पुराणों के व्याख्याता का पद या गद्दी ।

व्यासपूजा गुरु और व्यास की पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमा को होती है।
व्यासमतानुसारी (वि० ब०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।
व्युत्कान्तजीवित (वि०) मृत, निर्जीव।
व्युत्था (भ्वा० आ०) 1 जीत लेना 2 दूर करना।
व्युपरत (वि०) [वि+उप+रम्+क्त] विश्रान्त, समाप्त, मृत।
व्यूहविभाग: सेना को भिन्न-भिन्न व्यूहों में बाँटना।
व्यूह (वि०) जिसमें एक कम हो।
व्योमरत्नम् सूर्य।
व्रीव्यसंभवा चितकबरी गाय।
व्रजभाषा मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।
व्रत:,-तम् [व्रज्+क, जस्य त.] मानसिक क्रिया कलाप व्रतमिति च मानसं कर्म उच्यते—मी० सू० ६।२।२० पर शा० भा०। सम०—धारणम् एक धार्मिक व्रत का धारण करना।
व्रतकाण्ड: अथर्ववेद का एक काण्ड।
व्रतचर्या आह्निकक्रिया या अवधूत का जीवन।
व्रीडावनम्र सकोच एवं नम्रतापूर्वक दिया गया उपहार।
व्रीहिप्रावण चावल की पीसा कुटाना।
व्लेक्क: पास, बाज।

श

शंस् (भ्वा० पर०) उन ऋग्मन्त्रों में स्तुति गान करना जो गायन के लिए निर्धारित नहीं किये गये—अप्रगीतेषु शंसति—मै० स० ७।२।१७ पर शा० भा०।
शंसित (वि०) [शंस्+क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया। जैसा कि "शंसितव्रत" में।
शंस्य (वि०) [शंस्+ण्यत्] 1 प्रशंसा के योग्य 2 ऊँचे स्वर से पठित।
शकटव्यूह एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह।
शकुलाक्षणी 1 भुकौटी, केंचुआ 2 एक जड़ीबूटी (कटकी)।
शक्तिषण्मुख कार्तिकेय।
शक्य (वि०) [शक्+ण्यत्] श्रुतिमधुर—शक्य प्रियवद प्रोक्त—इति हलायुध दश० २।५।
शक्रकाष्ठा पूर्व दिशा।
शङ्कासमाधान, दोषारोपण करना या संदेह करना।
शङ्करभाष्य वेदान्तदर्शन का महत्तम आचार्य, अद्वैतवाद का प्रवर्तक जिसने ब्राह्मण्य धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए मठमत की स्थापना की।
शङ्कुपुच्छम् (मधुमक्खी या भींड आदि) कौओं का झुंड।
शङ्कुवृक्ष खमी वृक्ष, जैंडी का वृक्ष।
शङ्ख: [शम्+घञ्] शंख का बना कंकण। सम०—आवर्त: शंख का झुकाव या मोलाई का मोड़, शंखकार्त, शंखक शंख से निर्मित कड़ा, जैसा शंखध्वनि के द्वारा संकेतित समय।
शतम् (नपु०) 1 सौ 2 कोई बड़ी संख्या। सम०—अङ्ग: तलवार या ढाल जो सौ चन्द्राकृतियों से सुसज्जित हो, चरण शतपदी, कनखजूरा,—धेनु: चलनी,—मयूख: चन्द्रमा,—लोचन: इन्द्र का विशेषण
शत्रु: [शद्+त्रुन्] 1. घातक, रिपु 2. विजेता, हराने वाला। सम०—निबर्हण (वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला,—पुरम् रिपु का घर,—सख (वि०) शत्रुओं को मारने वाला।
शनिचक्रम् 'शनि की स्थिति से' शुभाशुभ जानने का एक आलेख, चित्र।
शपित (वि०) [शप्+क्त] शाप दिया हुआ।
शपथकरणम् शपथ उठाना।
शपथपूर्वकम् (अ०) शपथ उठाकर (कहना या करना)।
शरावक: पेटी, बर्तन—हर्ष० ४।
शब्द: [शब्+घञ्] 1 आकाश (श्रुति विषय और आकाश का गुण) 2. ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. पद, सार्थक शब्द 4 व्याकरण 5 ख्याति सम्बन्धशब्देन कौशल्ये—रा० २।६३।११ 6. पुनीत प्रणव (ओम्)। सम०—अगोचर: पुनीत प्रणव,—इन्द्रियम् कान, बोधक: आणी का विषय 2. अक्ष, -वेध-शब्दम् अनुमिक शिक्षा,—शास्त्र व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द,—पा० १।१।६८,—स्मृति: (स्त्री०) भाषा विज्ञान।
शब्दात्मक (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।
शमोपायक: शान्ति के लिए बोलने वाला, शान्ति की वकालत करने वाला।
शमनीय (वि०) [शम्+अनीय] शान्ति देने योग्य, मन को शान्ति प्रदान करने योग्य।
शमीवृक्ष: वह सर्वथा अत कि शमी वृक्ष के फल आता है।
शम्भुलोकम् 1. शिव की छाया 2 स्कन्द का विशेषण।
शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1. लकड़ी या चौखट 2. जूए की कील 3. एक प्रकार की वीणा 4. यज्ञपात्र 5. एक प्रकार का शस्त्रचिकित्सापरक उपकरण। सम०—क्षेप:,—पात: दूरी जहाँ तक कोई लकड़ी फेंकी जा सके।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1 सोना, लेटना 2. बिस्तरा, खाट 3 सहवास, यौनसंबंध। सम०—पालिका सेविका जो राजा की शय्या बिछाती है,—भूमिः शयन कक्ष, सोने का कमरा।

शरक्षेपः बाण फेंकने की दूरी का परास।

शरणम् [शृ+ल्युट्] 1 प्रस्थान, सहायता 2 शरणागार, शरणाश्रम 3 आवास, घर 4 विश्रामस्थल 5. आहत करना, हत्या करना। सम०—आवलिः प्रस्थानार्थ पङ्क्तिबद्धता,—आलयः शरणगृह,—द (वि०),—द (वि०) शरण देने वाला।

शरज्ज्योत्स्ना [शरद्+ज्योत्स्ना] शरदृतु की चाँदनी, —शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुनजटाजूटमकुटाम्—सौन्दर्य लहरी।

शरीरक्रिया शरीर की देखभाल।

शरीरधातुः बुद्ध के शरीर की अवशिष्ट भस्म।

शरीरावयवः } शारीरिक दर्शन, देह का आकार-प्रकार,
शरीरसंस्थितिः } सूरत, शक्ल, शरीर का डीलडौल।

शर्करा [शृ+करन्, कस्य नेत्वम्] 1 लाल से निर्मित शक्कर 2 कङ्कड़ 3 पत्थरों के टुकड़ों से बहुल भूमि 4 रेत 5 ठीकरा 6 सुनहरी भूमि—सितमितजलो मणि-शङ्खशर्कर रा० २।८१।१६।

शर्करिल (वि०) [शर्करा+अलच्] कङ्कड़ के कणों से युक्त (जैसे कि रेतीले तट की हवा)।

शर्मण्य (वि०) [शर्मन्+य] शरण देने वाला, शरक्षण देने वाला।

शलाका [शल्+आक] 1 सूटी, कील 2 अंगुली—शलाकानखपातैश्च—महा० ४।१३।२९। सम०—परीक्षा विद्यार्थी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार पुस्तक में कहीं भी शलाका से संकेत किया जा सकता है,—युक्ता: ६३ दिव्य अंग, —यन्त्रम् शल्य चिकित्सा से संबद्ध एक उपकरण,—हर्तृ (पुं०) चरवाहा, शल्य-चिकित्सक,—क्रिया शरीर में घुसे हुए काँटे आदि किसी पदार्थ को बाहर निकालना, —पर्वन् महाभारत का नवाँ खण्ड (पर्व)।

शवशालम् श्मशानघाट।

शवशिबिका अर्थी, शव को ले जाने वाली पालकी।

शवशुन्धी एक प्रकार की मछली।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1 हथियार 2. लोहा 3. इस्पात 4 स्तोत्र। सम०—कर्मन् शस्त्रक्रिया,—चिकित्सितम् शस्त्रक्रिया,—व्यवहारः हथियार चलाने का अभ्यास।

शाकपार्थिवः लकुच, प्लक्ष जैसे एक कोटिवार वृक्ष।

शाकपार्थिवम् सब्जी की तश्तरी।

शाखा परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी विशेष शाखा द्वारा अनुसृत वेद पाठ जैसे शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम०—अध्येतृ वेद की किसी विशेष शाखा के पाठ का पढ़ने वाला विद्यार्थी, —वात वायु के कारण अंगों में पीड़ा।

शाङ्करपीठ शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित चार आध्यात्मिक केन्द्रों में से कोई सा एक।

शाङ्खायन वेद का एक अध्यापक।

शाण्डिल्यस्मृति शाण्डिल्य द्वारा प्रणीत एक धर्मग्रन्थ या विधि की पुस्तक।

शातक्रतव (वि०) [शतक्रतु+अण्] इन्द्र संबन्धी।

शातनम् [शो+णिच्, तक्+ल्युट्] पैनाना, तेज करना, चमकाना।

शान्त (वि०) [शम्+क्त] प्रभावहीन किया हुआ, ठंडा किया हुआ। सम०—मुख (वि०) उपरत, मृत —नृपे शान्तगुणे जाते रा० २।६५।२४,—रजस् (वि०) 1 धूल रहित 2 निरपेक्ष।

शान्ति (स्त्री०) [शम्+क्तिन] विनाश, अन्त। सम० —कर्मन् पाप को दूर करने का कोई धार्मिक अनुष्ठान, —वाचनम् ऐसे वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ जो पाप को दूर करने वाले समझे जाते हैं।

शापग्रस्त (वि०) शाप के दुष्प्रभाव से जकड़ा हुआ।

शाप्याम्बु } शाप का उच्चारण करते समय दिये जाने
शापोदकम् } वाले पानी के छींटे।

शाबरभाष्यम् मीमांसा सूत्रों पर किया गया भाष्य।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्रच्] पशु बलि देने का स्थान।

शाम्बरिक [शम्बर+ठक्] बाजीगर।

शारद (वि०) [शरद्+अण्] चतुर, निपुण।

शारदत 'कूप' का नाम।

शारिपुत्रकलक एक प्रकार का पासा, शतरंज खेलने की गोट।

शार्व (वि०) [शर्व+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला।

शालङ्कायन एक ऋषि का नाम।

शालङ्कि पाणिनि का नाम।

शास्त्र (वि०) [शास्त्र+अण्] शास्त्रीय से प्राप्त, शास्त्रीय सम्बन्धी।

शास्त्रम् [शास्+ष्ट्रन्] 1 धार्मिक सिद्धान्त 2 आदेश। सम०—दूषक (वि०) आदेश का पालन न करने वाला,—लङ्घनम् आज्ञा का उल्लंघन करना।

शास्त्रम् [शास्+ष्ट्रन्] 1 आदेश, आज्ञा 2 शासन, सिद्धान्त, वेद का आदेश 3 ज्ञान का कोई विभाग 4 किसी विषय का सैद्धान्तिक पहलू—इमं मा च शास्त्रे च विमृशतु—माल० १। सम०—अन्वित (वि०) शास्त्रीय नियमों के अनुकूल,—ज्ञ (पुं०) शास्त्रीय पुस्तकों का व्याख्याता,—विहित (वि०) सब प्रकार के नियम या विधि से युक्त,—व्यास शास्त्र के आधार पर दिया गया तर्क।

शिक्यरज्जुः छीका लटकाने के लिए रस्सी।
शिक्षा [शिक्ष्+अ+टाप्] 1 दण्ड 2. गुरु के निकट विद्याभ्यास 3. उपदेश 4. सलाह। सम०—आचार (वि०) (गुरु के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने वाला।
शिक्यबन्धक [शिक्यबन्ध+कन्] 1. कूल्हे के नीचे शरीर का मांसल भाग 2 शैवमत में मुक्ति की एक विशेष अवस्था।
शिखाबन्ध सिर के बालों का गुच्छा, चोटी बांधना।
शिखिन् (वि०) [शिखा+इनि] 1 चोकदार 2 चोटी-धारी 3. आग की चोटी पर पहुँचा हुआ 4 अभिमानी (पु०) 1 मोर 2 अग्नि। सम० कण, आग की चिनगारी,—भूः स्कन्द का नाम, - भृत् कामदेव।
शिलाक्षरम् 1. प्रस्तरमुद्रण, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया 2 शिलालेख, पत्थर पर खुदवाया हुआ अनुशासन।
शिलानिर्यास शिलाजतु, शीलाजीत।
शिलालिखित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ।
शिलीपद पादस्फीति, फील पाँव रोग।
शिल्पगेहम् शिल्पकार का कारखाना, कारीगर के काम करने का स्थान।
शिल्पजीविन् (वि०) कारीगरी का काम करके जीविकोपार्जन करने वाला व्यक्ति, शिल्पी।
शिव (वि०) [शो+वन् पृषो०] 1 शुभ, मंगलमय, सौभाग्यसूचक 2 स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पु०) 1. हिन्दुओं के त्रिदेव में से तीसरा 2 पारा 3 सुरा, स्पिरिट 4 समय 5 तक, छाछ। सम० अद्वैत शैवमत का दर्शनशास्त्र, अर्कमणिदीपिका अप्पय-दीक्षित द्वारा रचित शैवमत पर एक ग्रन्थ, -काञ्ची-सुन्दरी पार्वती का विशेषण, पदम् मोक्ष, मुक्ति, जीवन् पारा।
शिश्रयिषा [श्री+सन्+अङ्+टाप् यातोद्वित्वम्] सोने की इच्छा।
शिशिरनक्षित (वि०) सर्दी से ठिठुरा हुआ।
शिशुः [शो+कु, सन्वद्भाव, द्वित्वम्] 1 बच्चा, बालक 2 किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, बिलौटा आदि) 3 छठें वर्ष में हाथी। सम० -नागम् (पु०) ऊँट।
शिश्नमत्सर (वि०) विषयी, कामलोलुप।
शिष्टविगर्हणम् बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली निन्दा।
शिष्टसम्मत (वि०) विद्वान् पुरुषों द्वारा माना हुआ।
शीतक्रीडनम् बहुसंभोग से दूरी, फासला।
शीतवरिधिः (पु०) बहुसंभोग का अधिकथक।
शीभर (वि०) 1 मनोरम, रमणीय 2 आनन्दप्रद, सुखमय।
शीर्षच्छेदिक } (वि०) फांसी पर चढ़ाये जाने के योग्य,
शीर्षच्छेद्य } -शीर्षच्छेद्य स ते राम य हत्वा जीवय द्विजम्--उत्तर० २।२८।
शीर्षत्राणम् शिरस्त्राण, टोप।
शीर्षवेष्टक पगड़ी, साफा, पगड़ी।
शुकसप्तति: एक तोते के द्वारा अपनी स्वामिनी को सुनाई गई सत्तर कहानियों का संग्रह।
शुक्रम् [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. सोना धौलत 3 वीर्य 4. किसी चीज का सत् 5 पुस्तक-शक्ति, स्त्रीत्वशक्ति। सम०—कृच्छ्रम् मूत्रकृच्छ्र रोग,—दोष वीर्य का दोष।
शुक्लम् [शुच्+लुक्, कुत्वम्] 1 उज्ज्वलता 2 श्वेत धब्बा 3 चाँदी 4 आँख की सफेदी का रोग। सम०—जीरम् एक प्रकार का पौधा,—देह(वि०)पवित्र शरीर वाला।
शुक्रियन्त्रम् एक मशीन जिसके द्वारा आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है।
शुक्रिवल्लभ (पु०) विष्णु का नाम।
शुक्रिवह् (वि०) सन्मार्ग पर चलने वाला।
शुक्लमूषिका छछून्दर।
शुक्लहस्त्य हाथी का शूद।
शुद्ध (वि०) [शुध+क्त] 1 जांचा हुआ, आजमाया हुआ, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कलंक 3. ईमानदार, धर्मात्मा 4 विशुद्ध, खालिस जिसमें कुछ मिलावट न हो (विप० मिश्र)। सम०--अद्वैतम् अद्वैत की वह स्थिति जहां कि जीव और ईश्वर का सायुज्य मायारहित माना जाता है,—बोध (वि०) (वेदान्त०) विशुद्ध ज्ञान से युक्त, भाव (वि०) पवित्र मन वाला, विष्कम्भक नाटक का वह भाग जहाँ केवल संस्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दें।
शुद्धि [शुध्+क्तिन्] (गणित० में) शेष न छोड़ना।
शुभम्भुकम् सौभाग्य, कल्याण, अभ्युदय।
शुल्काध्यक्ष चुंगी का अध्यक्ष।
शुल्बसूत्रम् सूत्रग्रन्थ जिसमें यज्ञ वेदियों की विविध मापनप्रक्रिया समाविष्ट है।
शुष्ककास सूखी खाँसी।
शुष्कवदितम् ऐसा रोना जिसमें आँसू न आयें।
शूक [शिव+कक्, सम्प्रसारणम्] 1. प्रकिण्व, सुरासव 2 अबीर।
शूद्र [शुच्+रक्, पृषो० साध्य द. दीर्घत्वम्] हिन्दू समाज में चौथे वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह पुरुष के पैरों से उत्पन्न हुआ -पद्भ्यां शूद्रोऽजायत—ऋ० १०।९०।१२।)। सम०—अन्नम् शूद्र द्वारा दिया गया या परोसा गया भोजन, -घ्न (वि०) शूद्र की हत्या करने वाला, - वृत्तिः शूद्र का व्यवसाय, संस्कारः शूद्र से कम न होना।

शूर [शूर+अच्] 1. नायक, योद्धा 2. शेर 3. रीछ 4 सूर्य 5. साल का वृक्ष 6. मदार का पौधा 7. चिचक वृक्ष 8. कुत्ता 9. मुर्गा। सम०—ब्रह्मः बौद्धों का अनस्तित्व सिद्धांत।

शूलः [शूल्+क] 1 त्रिशूल 2. बेधने योग्य पदार्थ 3 नोकदार हथियार 4. लोहे की सलाख (जिस पर रख कर मांस भूना जाता है) 5. किसी भी प्रकार का दर्द 6 मृत्यु। सम०—अङ्कः शिव का विशेषण —ये समाराध्य शूलाङ्कं—महा० १०।७।४७, —आरोपित (वि०) सलाख पर लटकाया हुआ, सूली पर चढ़ाया हुआ,—आरोपः सूली पर चढ़ाना।

शूल्यमांसम् भुना हुआ मांस।

शूल (वि०) [शूल्+अच्] 1 कुशाग्रयुक्त 2 साहसी।

शृङ्गम् [शृ+गन् मुम् ह्रस्वश्च] 1 सींग 2. पर्वत की चोटी 3 ऊँचाई 4 स्त्री का स्तन 5 एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह। सम०—ग्राहिका 1 प्रत्यक्ष रीति 2. (तर्क० में) एक पक्ष लेना।

शृङ्गिन् (वि०) [शृङ्ग+इनि] सींगों वाला जानवर (पु०) बैल।

शृतपाक (वि०) पूर्णतः पका हुआ।

शृतशीत (वि०) उबाल कर ठंडा किया हुआ।

शेष [शिष्+अच्] 1 अवशिष्ट वस्तु 2 प्रसाद, कृपा।

शेषाचल } तिरुपति की पहाड़ियाँ।
शेषाद्रि }

शैल्य [शिल्प+अण्] 1 एक प्रकार का गोफिया 2. लटकाया हुआ बर्तन।

शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता 2 शिथिलता, सुस्ती 3. (दृष्टि की) धुन्धता 4 अवहेलना।

शैलमय (वि०) पहाड़ जैसा भारी।

शैलूषी [शिलूष+अण्+ङीष] नटी, नर्तकी।

शोकनिहत } (वि०) शोकपीड़ित, गम का मारा।
शोकाहत }

शोण [शोण्+अच्] लाल।

शोणितप (वि०) [शोणित+पा+क] रुधिर पीने वाला।

शोणितस्रिस् रुधिरस्राव।

शौच [शुच्+अण्] शुद्धि, सफ़ाई, विरेचन।

शौचनम् [शुच्+णिच्+ल्युट] 1. मार्जन, परिष्करण 2. पाप अपराधादि से शुद्धि।

शौचसदाचरितम् सुन्दर आचरण, सदाचरण।

शौरी हलदिया, पीली हल्दी।

शौरिभिषुः [शूर+इत्नुच्] सूर्य।

शौर्कः 1. गरुड़ 2 बाज, श्येन।

शौचम् [शुचि+अण्] (तर्पण के लिए) जल।

शौर्यवीर्यम् [शौर्यवीर+ष्यञ्] 1. शूरवीरता, पराक्रम 2. अभिमान, घमंड।

शौर्यकर्मन् (नपु०) शूरवीरता का कार्य।

शौव (वि०) [श्वन्+अण्, टिलोप] आगामी कल से सम्बन्ध रखने वाला।

श्मश्रुकर नाई, हजामत बनाने वाला।

श्मश्रुशेखर नारियल का पेड़।

श्यामः [श्यै+मक्] समाज का पेड़।

श्यामवल्ली काली मिर्च।

श्यामा दुर्गादेवी का तान्त्रिक रूप।

श्येनकपोतीय (वि०) आकस्मिक संकट।

श्येनपात बाज का झपट्टा।

श्रद्धाविश्वासम् अंध विश्वास।

श्रद्धेय (वि०) [श्रत्+धा+यत्] विश्वासपात्र,—श्रद्धेया विप्रलम्भार —कि० ११।३५।

श्रम् (प्रेर०—श्रम-श्रामयति) 1 थकाना 2 जीतना, हराना।

श्रमविनोद थकान दूर करना, विश्राम करना।

श्रमार्त (वि०) थक कर चूर-चूर, थकान से पीड़ित।

श्रवणम् कान की बाली।

श्रवस्, —नः [श्रु+ल्युट] 1 कान 2 त्रिकोण की एक रेखा 3 सुनने की क्रिया। सम०—सुखः कर्णविवर, पूरकः कान की बाली, कर्णफूल,—प्राघुणिकः श्रवण गोचर वस्तु, कानों में आना,—सुख (वि०) कहा गया।

श्राद्धमित्रः श्राद्ध के द्वारा बनाया गया मित्र।

श्राद्धार्ह } (वि०) श्राद्ध के लिए उपयुक्त।
श्राद्धेय }

श्रावकः [श्रु+ण्वुल्] वह ध्वनि जो दूर से सुनी जाय।

श्रितलक्ष (वि०)स्वस्थ, शान्त।

श्रितसत्त्व (वि०) जिसने साहस का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर।

श्री [श्रि+क्विप्, नि० दीर्घ.] वेदत्रयी, तीनों वेद।

श्रीसुवर्णम् सोना, स्वर्ण।

श्रीवत्स (पु०) 1 तोता 2 साँड।

श्रुतिः [श्रु+क्तिन्] 1. वाणी 2. कीर्ति 3 उपयोग, लाभ 4 विद्वत्ता, पांडित्य। सम० अर्थः वैदिक अर्थसूचक, —आदिः नाना प्रकार के दिक्स्वर, दुष्क (वि०) कानों को कष्ट देने वाला,—देव कान बींधना—शिरस् उपनिषदें श्रुतिशिरस्सीमन्तमुक्तामणिम् — प्रताप० १।१।

श्रेयोभिलाषिन् (वि०) कल्याण चाहने वाला।

श्रेष्ठवेधिका कस्तूरी।

श्रेष्ठाश्रय (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न।

श्रोणिबिम्बम् गोल नितम्ब —श्रोणिबिम्बफलदम्बर भजत रासकेलिरसडम्बरम्—गीत०।

श्रौतस्मार्त (वि० ष०) वेद और स्मृति से संबंध रखने वाला।
श्लथबन्धनम् 1. मुट्ठी का विश्राम देना 2 ढीली गाठ।
श्लाघाविपर्ययः शेखी बघारने का अभाव, प्रशंसा या चाटलूसी का न होना।
श्लिष्टरूपकम् श्लेषयुक्त रूपक अलंकार, जिस रूपक के एक से अधिक अर्थ होते हों।
श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, मैथुन 2. व्याकरण विषयक आगम संयोग 3 एक शब्दालंकार जहाँ एक शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है।
श्लेषोपमा उपमा अलंकार जिसके दो अर्थ होते हों।
श्लेष्मकटाहः थूकदान।
श्लोक्य (वि०) [श्लोक्+ण्यत्] प्रशंसनीय।
श्वलीविका कुत्ते का जीवन, दासता।
श्वदष्ट्रा 1 कुत्ते की दाढ़ 2 गोखरू का पौधा।
श्वपचः [श्वसते: क्विप्] चन्द्रमा।
श्वपुरगृहम् श्वमुरालय।
श्वसनसमीप (वि०) वायु और मन की भाँति चंचल।
श्वसनसरणम् (नाक का) गंधना।
श्वसनसमीरणम् श्वास, साँस।
श्वास [श्वस्+घञ्] व्यञ्जनों के उच्चारण में महाप्राणता।
श्वस्तनप्रभृति (अ०) आगामी कल से लेकर।
श्वेतकपीवत् (वि०) प्रसन्न, सुखी, मनोहरमन।
श्वेत [श्वित्+अच्, घञ् वा] 1 सफेद बकरी 2. चूहाकेतु, चुछुन्दारा 3 चाँदी का सिक्का 4 जौरे का दोष 5 शंख 6. सफेद रंग 7. शुक्र तारा। सम० बंधुः चन्द्रमा,—अश्व अर्जुन, कपोतः 1. एक प्रकार का चूहा 2 एक प्रकार का साँप,- आरः बबूलार, बोरा, —रसः छाछ और पानी बराबर-बराबर मिले हुए —वराहः कल्प का नाम जो आजकल बीत रहा है।

ष

षडङ्ग छठा भाग।
षडष्टकम् फलित ज्योतिष का एक योग।
षडूर्मि अस्तित्व की छ लहरें।
षट्पद 1 मधुमक्खी, भौंरा 2 द्वीपि छन्द।
षट्ऋतु (पु०, ष० ब०) छ ऋतुएँ।
षट्पदार्थवाद 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय' इन छ: द्रव्यों की स्वीकृति पर आधारित सिद्धान्त।
षाडव 1 रागों की एक जाति जिसमें केवल छ: स्वर आते हैं 2. सिंचाई, हलवाई का कार्य।
षोडशाहः आवश्यमाला का एक चक्र।

स

संयत् (स्त्री०) [सम्+यत्+क्विप्] युद्ध, लड़ाई, संग्राम। सम० ग्राम (वि०) उस सबको एकत्र करने वाला जो सुलह है।
संयन्त्रित (वि०) [सयन्त्र+इतच्] रोका हुआ, बन्द किया हुआ।
संयम् (भ्वा० पर०) 1 रोकना, दमन करना, दबाना 2 हटाना, मींचना।
संयतमैथुन (वि०) जिसने मैथुन करना त्याग दिया है।
संयति [सम्+यम्+क्तिन्] तपश्चर्या, निरोध, संयमन।
संयम [सम्+यम्+अप्] प्रयत्न, उद्योग।
संयोग [सम्+युज्+घञ्] 1 (दर्शन०) भौतिक संपर्क 2 शारीरिक संपर्क 3 योगफल। सम०—विधिः 1. सम्मिश्रण की प्रणाली 2 जीव और ईश्वर के सायुज्य को बतलानेवाली वेदान्त की उक्ति।
संयुति [सम्+यु+क्तिन्] (बधित०)दो या दो से अधिक संख्याओं का योगफल।
संरभ् (भ्वा० आ०) करना—प्रवृत्त रज इत्येव तम संरम्भ चिन्तयेत्—महा० १२।१९४।३२।
संरक्तलोच (वि०) जिसकी आँखें सुर्ख गई हों।
संरब्धमान (वि०) जिसके अभिमान को आघात लग चुका है।
संरम्भ [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. क्रोध, द्वेष—संरम्भयोगेन किमर्थे तत्त्वमन्यताम् भाग० ७।१।२८ 2. (युद्ध का) वेग, आक्रमण की प्रचण्डता।
संरम्भि [सम्+रभ्+क्तिन्] विह्वलता, अधीरता।
संरब्ध (वि०) [सम्+रभ्+क्त] 1. आवायुक्त (गति) —फाल्गुनो नाम संरब्धो देवदेवेन भारत—महा० ३। ३९।६२ 2. कारावरुद्ध।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] बंधन, कैद।
संरुद्ध (वि०) [सम्+रुह्+क्त] जो गहराई तक घुसा हुआ हो—नखी मांसविषक्तस्तं सक्थ्यक्षरविभ्रातम् – महा० ३।१७४।१।
संलक्षणविरोध एक वर्ष की क्षेत्र।
संलभ् (भ्वा० पर०) परस्पर मिलाना।
संलवनम् [संलव्+ल्युट्] लवेदा।
संलाप [सम्+लप्+घञ्] अभिशोष, मुद्रालमा।
संलक्ष्यविद्या (दर्शन०) अवलोकन या विश्लेषण का शास्त्र।
संवास [सम्+वस्+घञ्] सहवास।
संवाहनम् [सम्+वह्+ल्युट्] 1 मार्गदर्शन करना, नेतृत्व करना 2. प्रदर्शन करना, दिखलाना।
संविग्न (वि०) [सम्+विज्+क्त] 1 क्षुब्ध, उत्तेजित 2. भयभीत, डरा हुआ 3 इधर-उधर चक्कर लगाता हुआ।
संविज्ञानम् [सम्+वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. सहमति, अनुमोदन 3. सम्यक् ज्ञान 4 प्रत्यक्ष ज्ञान।
संविद् [सम्+विद्+क्विप्] 1 सर्वेक्य –स्तुतीरस्तमया-मासां संविद वेद निधिपतान् महा० १२।१५१।६ 2. मित्रता—संविदा देवम् तै० उ० १।११।१३।
संविद् (स्त्री०) [सम्+वि+धा+क्विप्] व्यवस्था–राक्षस संविधं चक्रे महा० १।२८४।२।
संविभक्त (वि०) [सम्+वि+भज्+क्त] बांटा हुआ, विभाजित, पृथक् किया हुआ।
संवेधः [सम्+विध्+घञ्] कुर्ती।
संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] सोना, नींद लेना संवेशनो-त्थापनयो.—प्रतिमा०।
संवोरः सम्+वृ+घञ्] ढाका, छिपना।
संवृतसंवार्य (वि०) जो गोपनीय बातों को गुप्त रखता है।
संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] निकोडना, सिकुड़न,—पर्यावात् क्षणवृष्टसष्टकदुक संवर्तविस्तारयो म० बी० ५।१।
संवर्तित (वि०) [सम्+वृत्+क्त] 1. लिपटा हुआ, लपेटा हुआ 2 बराबर आया हुआ।
संवृद्धिः [सम्+वृध्+क्तिन्] पूर्णवृद्धि, अभ्युदय, समृद्धि।
संवस् (दिवा० पर०) व्यवस्थित करना, एकत्र करना।
संवृहः [सम्+वि+ऊह्+घञ्] व्यवस्था, क्रम-स्थापन।
संवेदित (वि०) [सम्+वेद्+क्त] अपने अस्तित्व को पूर्णता पूर्वक निभाने वाला (जैसा कि 'संवेदितस्व' कहाई से साथ अपना व्रत पूरा करने वाला)।
संवेद्यसंवेद्य एक अलंकार जिसमें संदेह का निवारण उत्पन्न किया होता है।
संवेशितमना संदेह के रूप में स्थान लुप्तना।
संवृ (दिवा० पर०) ढक करना, सुरक्षित रखना (आक्रमण से)—संवोध्य विविध मार्गं—मनु० ७।१८५।
संवृद्धि (भ्वा० उभ०) सम्भोगसुख के लिए पहुंचना।
संवेधः [सम्+वि+धा+घञ्] 1 आसक्ति 2 किसी पदार्थ का कोई अंश।
संवेधस् (नपु०) [सम्+व्यध्+असुन्] पूरी फांसि या व्याप्ति।
संविभक्त (वि०) [सम्+विभज्+क्त] विभित, अव्यवस्थित,— भक्तम् (नपु०) राशि, ढेर।
संवेशन (वि०) [सम्+शक्+क्त] 1 विषयासक्त 2 अनुरक्त।
संवेशनशील (वि०) [सम्+शक्+शानच्] 1 साथ लगने वाला 2 संकोच करने वाला, सिकुड़ने वाला, —वाङ्मात्रेण न भावेन वाचा संवेशमानया—रा० २।२५।३९।
संवेशनम् [सम्+सद्+ल्युट्] बिस्तरा, शयनागार।
संविद्धिः [सम्+विध्+क्विप्] 1 अन्तिम परिणाम 2 अन्तिम शब्द।
संवृ (भ्वा० पर०) 1 स्थापित करना, उठा रखना 2 काम में लगाना।
संसारसागरः } जन्म मरण का समुद्र।
संसाराब्धिः }
संसारार्णवः }
संसारवृक्षः संसार रूपी झाड़।
संसारवृक्षः सांसारिक जीवन रूपी वृक्ष।
संसेव् (भ्वा० आ०) 1 सम्मिलन करना 2 सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना 3 अभ्यस्त होना।
संसेवा [सम्+सेव्+अङ्+टाप्] 1 (किसी सभा, समाज में) नित्यप्रति आना 2 उपयोग, काम में लगाना 3 आदर सत्कार, पूजा अर्चना।
संस्कृ (तना० उभ०) 1 संचय करना—ये पञ्चावरपञ्चदोष-संहिताः पापानि सञ्चिनुवंते—मनु० ९।४ 2 पवा-र्थता पर पहुंचना (अमि०)।
संस्कारवती (स्त्री) जिसे चमका कर झनझना कर दिया गया है —संस्कारवत्येव गिरा मनीषी – कु० १।२८।
संस्कारवत्त्व् प्रमार्जन, परिष्कार—कि० १७।९।
संस्कृतात्मन् (वि०) आध्यात्मिक अनुशासन, या धर्म-ग्रन्थों के द्वारा जिसने अपने आपको पवित्र कर लिया है।
संस्कृतिः [सम्+कृ+क्तिन्] 1. परिष्कार 2. तैयारी 3. पूर्णता 4. मनोविकास।
संस्कृत्यम् [सम्+स्कम्भ्+ल्युट्] रोकना, बंधन में डालना, पकड़ लेना।
संस्तीर्ण (वि०) [सम्+स्तृ+क्त] बिछाया हुआ, फैलाया हुआ—संस्तीर्णः प्रातः संस्तीर्णवर्भाः—श० ४।८।

संस्था (स्था० आ०—ष्ठे०) 1. (नगर) निर्माण करना 2 पुन स्थापित करना 3 दाह संस्कार करना, (जैसे अग्निसंस्थापनम्) अग्नि प्रवाहित करना, या अन्त्य समाधि देना।

संस्था [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1 सहमति कृता संस्थाव्यतिक्रान्ता —रा० ४।५३।१८ 2 दाह संस्कार 3 विपाशी, पुण्यतट।

संस्थानकः गले में लगा पौधा को० अ० १।२०।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1 आकार का संस्थित रहने का भाव —को० अ० २।७ 2 वास, प्रभाग, खण्ड 3 सौन्दर्य, कीर्ति।

संस्थित (वि०) [सम्—स्था+क्त] सुव्यवस्थित संस्थितदारिद्र्याग्नि —रा० ३।३१।४६।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्—स्था+क्तिन्] 1 एक ही अवस्था में स्थित बहु रहना 2 महत्त्व दशा 3 रूप, शकल 4 सामर्थ्य, नैरन्तर्य।

संहत (वि०) [सम्+हन्+क्त] 1 सुदृढ़ अंगों वाला 2 धारण किया।

संहतहस्त (वि०) एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए।

संहतिः [सम्+हन्+क्तिन्] 1 संधि, (कपड़े की) सीवन 2 मोटा होना, सुडौल।

संहृ (स्वा० प०) विनष्टकारी करना, भटकाना, भ्रष्ट करना—मुनयः संहरन्त्यन्यान्यपि—महा० १२।५७। २३ पर भारत।

संहारकः संहार करने वाला नट देवता।

संहत (वि०) 1 कर युवक, हृष्टा बाला 2 कर समाधि योग 3 किरणों से युक्त।

संहीन वह पुरुष जो इतना पुंस्त्वहीन है कि स्वयं संभोग करने के पूर्व अपनी स्त्री को पुरुषत्व के पास भेजता है।

संह्नस्नायिन् (वि०) केवल एक बार स्नान करने वाला मनु० ११।२१४।

संह्नस्नात (वि०) जो रात्रि एक किनारे में न झुकाकर एकसमान चुकाई गई हो।

संह्नस्पति: संभावनायाम्, केवल एक ही विकल्प।

संह्नहित (वि०) जो सुरक्षा प्रकट हो गया है।

संह्नसित (वि०) संबंधबोधक प्रत्यय से युक्त हुआ।

संह्नहरद्वादशी गणेश की पूजा करने का शुभ दिन माघ शुक्ल या भाद्रशुक्ल चतुर्थी।

संह्नहारम् [सम्+ह्न+णिच्+ल्युट्] दाहसंस्कार।

संह्नहूर्षक: [सम्+ह्न+ल्युट्] अहंकार।

संह्नहृत: [सम्+ह्न+क्त] गोबर।

संह्नहरण (वि०) जिसके आत्मोपिता भिन्न-भिन्न जाति के हों, जिस आत्मोपिता की संतान।

संह्नहीकरणम् जातियों का मिश्रण।

संह्नस्कृ (स्वा० प०) और्ध्वदैहिक कृत्य करना। अन्त्येष्टि करना।

संह्नस्कृतप्रसव (वि०) इच्छा से ही उत्पन्न, मानस —संह्नस्कृतप्रसवान् कामान् भग०।

संह्नस्कृतमूल (वि०) किसी इच्छा पर आधारित।

संह्नस्कन्द [सम्+स्कन्द्+घञ्] 1 युद्ध, लड़ाई 2 विलाप।

संह्नस्कन्दन् [सम्+स्कन्द्+ल्युट्] मृत्यु रा० २।१३।१२।

संह्नस्फोटः [सम्+स्फुट्+घञ्] ऊँचे स्वर से विलाप करना।

संह्नस्लिष्ट (वि०) [सम्+श्लिष्+क्त] 1. जिस पर खराश आ गई हो 2 जिस पर धब्बा आदि पड़ गया हो, धूमिल, मलिन।

संह्नस्रव: [सम्+स्रि+अच्] 1 शस्त्रागार, घर 2. मृत्यु।

संह्नस्रोप: [सम्+स्रिप्+घञ्] विलाप।

संह्नस्रोपनम् [सम्+स्रुप्+ल्युट्] चाक का प्रबल आघात, धक्का।

संह्नस्था [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1 युद्ध लड़ाई 2. नाम 3 स्थानिपिपक्क अन्न।

संह्नस्थानम् अंक।

संह्नस्तृ (स्वा० आ० प्रेर०) 1. ढेर देना, राशि देना 2 इक्ट्ठा करना।

संह्नस्तृत्त (वि०) जिसके शरीर में झुर्रियाँ पड़ गई हैं, या सिकुड़ गया है।

संह्नस्तृति [सम्+स्तृ+क्तिन्] (मीमांसा०) अधिकरण के पाँच अंगों में से एक।

संह्नस्तृप्ति [सम्+स्तृप्+क्तिन्] 1 प्रारम्भ 2. संपन्न, पूर्ण रचना।

संह्नस्तोषणम् [सम्+स्तुष्+ल्युट्] सर्वथा तुष्ट रखना।

संह्नस्तह [सम्+स्तह्+घञ्] छोड़े हुए संस्कारों को पुनः ग्रहण करना।

संह्नस्तारः (नपु०) युद्ध करना, लड़ाई लड़ना।

संह्नस्तारमुखम् (पु०) युद्ध का अग्रिम क्षेत्र।

संह्नस्तृतम् विवाह आदि संस्कारों का विधिवत् कार्य करने का ढंग (आचरण) को० अ० ११।

संह्नस्तार [सम्+स्तृ+घञ्] 1 प्रहार - अस्य संस्तिसंस्कारा —महा० १२।१८।११ 2 कठोर मार 3. युद्ध 4.हड्डी 5 पहनना 6. धनुष।

संह्नस्तारिन् (वि०) धनुष में विजय पाने वाला।

संह्नस्तारमृत्यु: लड़ते एकदम मृत्यु।

संह्नस्तारिमा कड़ा पत्थर विशेषतः (भारतीय शैली) धनुषें तोड़ी जाती हैं, पत्थर जैसा कठिन पदार्थ।

संह्नस्तुतः [सम्+स्तुप्+घञ्] 1. प्रशंसा 2. कामोत्तेजना।

संह्नस्तुती स्तरण आदि।

संह्नस्तर (वि०) सब तरह अच्छा धनुषों संबंध।

संह्नस्तर (वि०) आवश्यक, आवश्यक, उचित।

सज्ज (वि०) [सज्ज्+अच्] 1 सूत में पिरोया हुआ 2. धनुष की डोरी पर तानना हुआ।

सञ्जक [सञ्ज्+णि+ड, स्वार्थेकन्] खोआ (जैसा कि ईंट पाथने वाले प्रयुक्त करते हैं)।

सञ्जय [सम्+चर्+णिच्+घञ्] 1 मृत्यु करना —सञ्चार. अवलवर्शनात्मा परमोहनम्—महा० १२।५९।४८ पर भाष्य 2 (अंगली जानवरों के) पदचिह्न।

सञ्चयकारयितृ (वि०) सौचसंबंधी धर्मकृत्यों का अनुष्ठान कराने का इच्छुक।

सञ्जनन (वि०) [सम्+जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला उत्पादक।

सञ्जातनिर्वेद (वि०) खिन्न, अवसन्न, उदास।

सञ्जातविश्रम्भ (वि० विश्वस्त, भरोसे आला।

सञ्जप् (स्वा० पर०) प्रतिवेदन देना, बकझक देना।

सञ्जिहान (वि०) [सम्+हा+शानच् धातोर्द्वित्वम्] त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

सञ्ज्ञक (वि०) [सञ्ज्ञा+कन्] नाम करने वाला—कदा वयं करिष्याम सन्यासं दुःखसञ्ज्ञकम्—महा० १२।७९।३।

सञ्ज्ञपित (वि०) [सम्+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] बुझा दिया गया, नष्ट किया गया—भाग० ४।२८।२५।

सञ्ज्ञा [सम्+ज्ञा+क] 1. पदवाची, पदचिह्न 2 दिशा 3. पारिभाषिक शब्द।

सञ्ज्ञासूत्रम् वह सूत्र जिसके आधार पर किसी पारिभाषिक शब्द का निर्माण होता है।

सटाकोप अयाल (केसर) का लहराना—सटाकोपक्षिप्त-गगनसहनिः—दुर्गा० ७।

सटोप (वि०) पीड़ित, घुमन जैसी पीड़ा से ग्रस्त।

सत्तिक्रिया समारोह, अनुष्ठान।

सत्तम (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ (समस्त शब्दों के अन्त में प्रयुक्त जैसे आचार्यसत्तम)।

सत्तमम् [सद्+डतमच्] बनावटी रूप, छद्मवेष।

सत्तिथ (पुं०) [सप्त+इति] 1. सप्तपदी की० अ० १।११ 2. विवेकशील राजदूत।

सत्त्वम् [सद्+त्व] 1. बुद्धि 2. सूक्ष्म शरीर।

सत्त्वसाक्षः विष्णु का विशेषण।

सत्त्वसोगः 1 सर्वांश 2. जीवन-अकाजन, प्राण प्रदान —विभो विशेषय परिकल्पितसत्त्वयोगा—शि० २।१०।

सत्यम् [सत्+यत्] 1 मोक्ष 2. सचाई 3 निष्कपटता 4. पवित्रता 5. प्रतिज्ञा 6 ब्रह्म 7 ईश्वर। सम०—आग्रहः सत्याग्रह,—क्रिया, शपथ ग्रहण करना, —जीवित् (वि०) प्रतिज्ञा भंग करने वाला,—तत्त्वम् वास्तविक भाव,—दीक्षितम् आध्यात्मिक और दीक्षित क्रियाएं,—दर्शिन् (वि०) सच बोलने वाला, —संधः सच्चा, सत्यनिष्ठ,—सङ्कल्प (वि०) जिसका प्रयोजन या धारणा सत्य है।

सत्याषाढः मीमांसा का एक नियम जिसके आधार पर एक से अधिक स्वामियों द्वारा अनुष्ठान होने पर यज्ञ में एक ही स्वामी को प्रतिनिधित्व दिया जाता है की० सू० ६।३।२२ पर शा० भा०।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] सहयोगी, सहपाठी।

सत्पर्व मुख्य विषय या प्रकरण।

सद् [सद्+क्विप्] सभा—भाग० ७।१।२१।

सदोजिरम् [सदस्+अजिरम्] दालान, बहलीज।

सदस्पतिः [मध्यम समास] सभापति।

सदोत्थायिन् (वि०) सदैव सक्रिय।

सदाभव (वि०) सदा रहने वाला, शाश्वत।

सदृक्षविधिनिषेध (वि०) समान विषयों में भूल करने वाला।

सद्गुरु वास्तविक कर्णधार।

सद्यस्कार (वि०) तुरन्त ही अनुष्ठित होने वाला।

सद्यस्काल (वि०) जिसके पास केवल एक ही दिन की भोजन सामग्री विद्यमान है—सद्य प्रक्षाल्को वा स्यात्सद्यस्कश्चयिकोपि वा—मनु० ६।१८।

सनत्सुजाता ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में एक।

सनत्सुजातीयम् महाभारत का एक अध्याय जिसमें सनत्सुजात का दार्शनिक व्याख्यान निहित है।

सनातनधर्म वेदों में प्रतिपादित अत्यन्त प्राचीन धर्म।

सनिकारः (वि०) अपमानजनक।

सनालकः [सम्+नल्+घञ्+कन्] 1 स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक, कल्पतरु या उसका फूल 2. लोक-विशेष।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] सुख देना, प्रसन्नता देना, संतुष्ट करना।

सन्तुलन (वि०) [सम्+तुल्+क्त] संतुलन, मिलाकर बांधा हुआ।

सन्तारः [सम्+तृ+घञ्] 1. पार करना 2 तीर्थ, घाट।

सन्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1 पुस्तक का एक अनुभाग 2. गाँव का एक किनारा।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] हाथी के गण्डस्थल का वह भाग जहाँ से दान झरता है।

सन्देशवचनानि संदेश के शब्द।

सन्दिग्धानुपलब्धत्वम् (अव्य०) अनिश्चयता के कारण बाधारा कहना।

सन्देहान्वयः अलंकार विशेष जिसमें संदेह बना रहता है।

सन्देहुक (वि०) [सम्+दिह्+क्त] संदिग्ध, संदेह से पूर्ण।

सन्दुष्ट (वि०) [सम्+दुष्+क्त] बिगाड़कर खाने में विरोधी हुआ।

सम्प्रतीतिः [सम्+प्रति+इण्+क्तिन्] प्रतीति, वृत्ति ।
सम्प्रयोगः [सम्+प्र+युज्+घञ्] काम, उपयोग ।
सन्धिः [सम्+धा+कि] मुखड़ा जो मन्दिर के लिए समर्पण दिया गया हो चौल० १ में डा० राघवन की टिप्पणी वृत्तिसन्धिप्रतिपादकः ।
सन्धिन् (पु०) [सम्+धा+इनि] संधि इत्यादि का काम करने वाला मन्त्री ।
सन्ध्यासमयः संध्याकालीन आहक ।
सप्तजिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा बंधी हुई है, जो चुप है ।
सप्तपी (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन ।
सप्तप्रकाश (वि०) विराज ।
सप्तप्रकाश् (वि०) मन्द स्वर से बोलने वाला ।
सप्तप्रादः [सप्त+नद्+घञ्] शोरगुल, हुल्लड़ ।
सप्तप्त (वि०) [सम्+नम्+क्त] पूर्ण, भरा हुआ --परमानन्दसप्तप्तौ मग्नौ दश० १।३ ।
सप्तप्तपाणी झुके हुए शरीर वाली महिला ।
सप्तप्तभ्रू (वि०) भृकुटिविलासयुक्त, त्यौरी चढ़ाए हुए ।
सप्तप्तमीन (वि०) जिसकी सेवा लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है ।
सप्तप्तिर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1 आधुनिक विषय या विचार वेदार्थेके सप्तिकर्षं पुरुषाक्या--मी० सू० १।१।२७ ।
सप्तप्तिर्षम् (अ०) [सम्+नि+पत+य (क्त्वा)], तुरन्त, प्रत्यक्ष, सीधे ।
सप्तप्तिर्षोपकारिन् (वि०) भाग या अङ्ग जो सीधा प्रधान का काम दे--मी० सू० १२।१।१९ पर शा० भा० ।
सप्तप्तिपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1 मैथुन 2. युद्ध 3 ग्रहों का विशेष संयोग ।
सप्तप्तिपातिन् (वि०) [सप्तिपात+इनि] तेजी अंग जो प्रधान का कार्य करे- सन्दाक्ष्य सप्तिपातित्वात् -मी० सू० १२।१।१९ ।
सप्तप्तिभ्रम (वि०) [सम्+नि+भू+क्त] 1 मूल 2 चतुर, शिष्ट ।
सप्तप्तिरुद्ध (वि०) [सम्+नि+रुध्+क्त] 1 नियन्त्रित, रोका हुआ 2 पूर्ण, भरा हुआ ।
सप्तप्तिरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] 1. कैद 2. सङ्कीर्णता ।
सप्तप्तिवायः [सम्+नि+वे+घञ्] सम्मिश्रण, समुच्चय ।
सप्तप्तिवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] डेरा डालना, शिविर स्थापित करना (जैसा कि "सेनासन्निवेश") ।
सप्तप्तिर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्]अच्छा स्वभाव, भलमनसाहत, उदाराशयता ।
सप्तपी (स्था० पर०) भरना, पूर्ण करना ।
सप्तप्तारः [सम्+नि+सृ+घञ्] छुटकारा, करार ।
सप्तप्तारुद्ध (वि०) आवश्यक चीजों से सुसज्जित ।
सप्तपरिष्कृत (वि०) आवश्यक वस्तुओं से सुसज्जित, दलबल के साथ ।
सप्तपरिहारम् (अ०) आरक्षण सहित ।
सप्तपर्णपर्यायः पूजाकुन्दों की माला--सकलमिदमातपार्पचद्वुद्धा सपर्णापर्यायस्तव जनमि यते विलसितम् - सौन्दर्य० ।
सप्तपकोण (वि०) सात कोनों वाला ।
सप्तपपातालम् सात पातालों का समूह ।
सप्तपर्चिस् } अग्नि, आग ।
सप्तपर्चिष् }
सप्तपस्वरः संगीत के सात स्वर (अर्थात्--षा, रि, ग, म, प, ध, नी) ।
सप्तपाश्र (वि०) सात कोनों वाला ।
सप्तप्रच्छातम् दे० 'सप्तप्रच्छातम्' ।
सप्तप्रतीक्षम् (अ०) बहुत प्रतीक्षा के पश्चात् ।
सप्तप्रमाण (वि०) 1 सांविकारिक 2 समान आकार-प्रकार का ।
सप्तप्रेव्य (वि०) अनुचरों द्वारा सेवित ।
सप्तप्रभ एक ही भोजनशाला में भोजन करने वाला, सहभोजी ।
सप्तभा [सह+भा+क+टाप्, सहस्य सः] 1. याचियों के लिए अतिथिशाला 2. भोजनशाला ।
सप्तभागृहम् } सभा भवन ।
सप्तभागार }
सप्तभायै (अ०) सभा में ।
सप्तभायोग्य (वि०) सभा के लिए उपयुक्त ।
सप्तभासित (वि०) [सभाज्+क्त] सम्मानित ।
सप्तभोद्देशः (सभा+उद्देश) सभाभवन के आसपास का स्थान ।
सम (वि०) [सम्+अच्] 1. नियमित, सामान्य 2. सरल, सुविधाजनक 3 बराबर, वैसा ही । सम०--अङ्घ्रिक (वि०) समान रूप से पैरों पर खड़ा हुआ,--अक्षिन् (वि०) समानता चाहने वाला,--आत्मक (वि०) समान से युक्त,--कक्ष (वि०) समान भार वाला, जिनके उत्तरदायित्व एक से हों,--कारि वायु, सर्वत्र समान रूप से गति करने वाला--मृत्युरवायरिहारकान् समगति कालेन--महा० १२।२९८।१५,--कर्मन् (वि०) एक से स्वभाव वाला,--काय (वि०) एक से डीलडौल का, एक सी आकृति का --कीर्तिन् (वि०) 1 निष्पक्ष 2. समान दूरी पर होने वाला, --क्षितल (वि०) समान रूप से बँटा हुआ, --क्षितिज ऊबड़खाबड़, कहीं से नीचा तो कहीं से ऊँचा, क्षुण्ण (वि०) समान अन्तराल से युक्त (संगीत०),--क्षौम: सीधी गति, अपनी राह से आगे रहने वाला, - क्षेमिकम (वि०) 1. सम्पूर्ण में से चुना हुआ 2. जो अतीत हो गया, गुजरा हुआ

3. उल्लंघन किया हुआ,—अधिपः पूरी समझ, —अनुवर्तिन् (वि०) आज्ञाकारी,—अभिद्रुत (वि०) मिल पड़ने वाला,—अभ्यासः निकटता, उपस्थिति।

समयच्युतिः होक समय का चूकना।

समयज्ञः 1 उपयुक्त समय का ज्ञाता 2 जो अपने मूल वचनों को याद रखता है।

समयविद्या ज्योतिष, भविष्यज्ञान।

समरभरः लड़ाई का फूट पड़ना।

समर्थकः (वि०) [समर्थ+ण्वुल्] 1 समर्थन करने वाला, प्रमाणित करने वाला 2 सक्षम, योग्य,—कम् (नपुं०) अगर काष्ठ, चन्दन की लकड़ी।

समर्थनम् [समर्थ्+ल्युट्] किसी हानि या अपराध की क्षति पूर्ति करना।

समर्थम् (अ०) निश्चय से, यथार्थ रूप से।

समवस्कन्दः [सम्+अव+स्कन्द्+घञ्] दुर्गप्राचीर, परकोटा।

समवहारः [सम्+अव+हृ+घञ्] मिश्रण, संग्रह।

समवेक्षणम् [सम्+अव+ईक्ष्+ल्युट्] निरीक्षण, मुआयना।

समवेतार्थ (वि०) सार्थक, शिक्षाप्रद, बोधगम्य।

समस्यापूरणम् } किसी ऐसे श्लोक की पूर्ति करना जिसका
समस्यापूर्तिः } पहला चरण दिया गया हो।

समागति (वि०) एक वर्ष से अधिक आयु का, जो एक वर्ष पूरा कर चुका है।

समाक्रान्त (वि०) [सम्+आ+क्रम्+क्त] 1 रौंदा हुआ, कुचला हुआ 2 जिस पर आक्रमण कर दिया गया है।

समाजिक (वि०) संगृहीत मिला हुआ पदार्थ।

समाख्या [सम्+आ+ख्या+अङ्+टाप्] व्याख्या।

समाचेष्टितम् [सम्+आ+चेष्ट्+क्त] 1 व्यवहार 2 प्रक्रिया।

समाजः [सम्+आ+अज्+घञ्] समागम, समुदाय, —भाग० १०।६०।३८।

समाततः (वि०) [सम्+आ+तन्+क्त] 1 बिस्तारित फैलाया हुआ 2 लगातार।

समादिष्ट [सम्+दिश्+क्त] निर्देशित, आदिष्ट।

समादृत (वि०) पू० फ०) 1. (वस्त्र) पहनना 2 कष्ट झेलना 3 [illegible] करना 4 स्वीकार करना।

समाधानम् [समा+धा+ल्युट्] 1. (किसी उलझन का) सुलझाना 2. समझौता कर लेना, समस्या का हल कर लेना।

समाधानालंकारः एक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उक्ति का औचित्य सम्मिलित होता है।

समाधिपतिः (पुं०) ध्यान में लीन, समाधि में स्थित।

समाधिभेदः ध्यान-भंग का अभ्यास।

समानूत (वि०) [समा+धूञ्+क्त] झकोरा हुआ।

समान (वि०) [सम+अन्+अच्] 1 साधारण 2. समस्त (संख्या०) 3 बराबर का, वैसा ही। सम०—कर्ण (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला, एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर)।

समानप्रतिपत्ति (वि०) 1 समान अनुराग वाला 2. व्यवहार कुशल, बुद्धिमान्।

समानमान (वि०) समान रूप से सम्मानित।

समानवधि (वि०) एक सी अवधि वाला।

समाधिका शब्द अर्थ का वह भाव जो वाक्य की पूर्ति करता है।

समाधिः [सम्+आप्+किति] (शरीर का) विघटन, मृत्यु मनु० ७।२४४।

समापत्तिः [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1 मूल रूप का धारण करना 2 संपूर्ति।

समाम्नात (वि०) [सम्+आ+म्ना+क्त] 1 दोहराया गया, साथ ही वर्णन किया गया 2 परम्परा से प्राप्त।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+घञ्] 1 सामान्यतः वेदपाठ 2 परम्परा से प्राप्त शास्त्रीय वचनों का संग्रह।

समारम्भ [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] मांगलिक कार्य का आरंभ, माङ्गलिपूर्ण कार्य।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, आराधना।

समारूढ (वि०) [सम्+आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ।

समारोपितकार्मुक (वि०) जिसने धनुष तान लिया है।

समार्ष (वि०) एक ही प्रवर से संबद्ध, समान प्रवर वाला।

समालोकनम् [सम्+आ+लोक्+ल्युट्] 1 निरीक्षण 2 अभिचार, मंत्रन।

समाविद्ध (वि०) [सम्+आ+व्यध्+क्त, संप्रसारणम्] 1 कम्पित, क्षुब्ध 2. प्रहृत, आघात प्राप्त।

समाविष्ट (वि०) [सम्+आ+विश्+क्त] भरा हुआ, युक्त (जैसाकि 'कौतूहलसमाविष्ट')।

समाश्वसत (वि०) [सम्+आ+श्वस्+क्त] 1 ढाढस बंधाया हुआ, सांत्वना दी हुई 2 विश्वास करने वाला।

समाहृत (वि०) [सम्+आ+हृ+क्त] खींचा हुआ (जैसे धनुष की डोरी)।

समाहृत्य (अ०) [सम्+आ+हृ+ल्यप् (क्त्वा)] सब एक दम मिल कर।

समाहित (वि०) [सम्+आ+धा+क्त] 1. समान, साधारण 2. स्थिरता जुटाना 3. ईप्सित।

समितिः [सम्+इ+क्तिन्] संवाचरण का नियम (जैन०)।

समिधाधानम् 1 यज्ञाग्नि पर समिधाएं रखना 2 ब्रह्मचारी के लिए विहित दैनिक अग्निहोत्र ।
समीक्षा [सम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. देखने की इच्छा, दिदृक्षा 2. आध्यात्मिक ज्ञान ।
समीरय [सम्+ईर्+घिण्+क्यूट्] पाँच की संख्या ।
समुच्चयालङ्कार एक अलंकार का नाम ।
समुच्चयोक्ति समुच्चयालंकार के कर्ता उपमा ।
समुच्छ्राय [सम्+उत्+श्रि+घञ्] 1 ऊपर 2 वृद्धि, बढ़ाई 3 वृद्धि, विकास ।
समुच्छ्रित (वि०) [सम्+उद्+श्रि+क्त] 1. खूब उठाया हुआ 2 हिलोरें लेता हुआ ।
समुच्छ्रय (वि०) ऊँचा, समुन्नत ।
समुच्छ्रायक [सम्+उत्+श्रा+ण्वुट्] 1. उल्लेख —महा० १२।२३।१० 2. (झंडा) लहराना 3 (पेट की) सूजन ।
समुदायवाचक (वि०) वस्तुओं के समूह को प्रकट करने वाला (शब्द) ।
समुदायशब्द: 'समूह' की अभिव्यक्ति करने वाला शब्द ।
समुद्गत (वि०) [सम्+उद्+गम्+क्त] महान्, प्रचण्ड,
समुद्गत (वि०) [सम्+उद्+अञ्+क्त] 1 उठाया हुआ, समुन्नत 2. तैयार, तत्पर 3. निष्पन्न ।
समुद्र: अत्यन्त ऊँची संख्या ।
समुद्रदयिता
समुद्र पत्नी
समुद्र शोभित्
} नदी, सरिता ।
समुपबृंहण [सम्+उप+बृंह्+ल्युट्] सहारा, ८२३ टीक ।
सम्पात [सम्+पत्+घञ्] संक्षेपण (जैसा कि 'घृत-सम्पात' में) ।
सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] अभिसहृत्य ।
सम्पन्नतम् [सम्+पद्+क्त] पर्याप्त (खाद के पश्चात् संतोष का चिह्न) ।
सम्परेत (वि०) [सम्+पर+इ+क्त] मृत ।
सम्पुट [सम्+पुट्+क] गोलार्द्ध ।
सम्पूर्णकाम (वि०) जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।
सम्पूर्णकामत्व (वि०) पूरा फल पाने वाला ।
सम्पूर्ति: [सम्+पृ+क्तिन्] पीनकरण ।
सम्पृक्त (वि०) [सम्+पृच्+क्त] मिश्र बना हुआ ।
सम्प्रज्ञात [सम्+प्र+ज्ञा+क्त] योग की एक समाधि जिसमें मनन का विषय स्पष्ट रहता है (विप०) असंप्रज्ञात) ।
सम्प्रतिपत्ति: [सम्+प्र+पद्+क्तिन्] अभ्युपगमसिद्ध ।
सम्प्रदायपरम्परा: वैदिक परम्परा की शृंखला आदि —सम्प्रदायपरम्परानां मनुष्याणामवेहि पारम्पर्यकम् ।
सम्प्रदायविच्छेद: परम्परा का लोप ।
सम्प्रयुक्त (वि०) [सम्+प्र+युज्+क्त] प्रेरित, प्रोत्साहित ।
सम्प्रयोग: (वि०) [सम्+प्र+युज्+घञ्] (ज्योति०) चन्द्रमा और नक्षत्रों का संयोग ।
सम्प्रसाद: [सम्+प्र+सद्+घञ्] मानसिक शान्ति ।
सम्प्राप्त (वि०) [सम्+प्र+आप्+क्त] पहुँचा हुआ, प्रकट हुआ, अधिगत ।
सम्प्राप्य [सम्+प्र+आप्+ल्यप्] 1. अवाप्तव्या 2 अवगति 3 सुमेल 4 अन्त, समाप्ति ।
सम्भिन्न (वि०) [सम्+भिद्+क्त] 1. दोष, मरा हुआ 2 द्रोही, देशद्रोही ।
सम्भेद [सम्+भिद्+घञ्] 1 मुट्ठी भींचना, मुक्का तानना 2 विद्रोह 3 बगावत, देशद्रोह ।
सम्भोगवेश्मन् रखैल का घर ।
सम्भव [सम्+भू+अप्] 1. अच्छा बात 2 सम्पत्ति, धन महा० १३।६४।११ 3 ज्ञान ईशोप० १३ ।
सम्भाविन् (वि०)[सम्+भू+इष्णुच्] उत्पादक रचयिता ।
सम्भावित (वि०) [सम्+भू+णिच्+क्त] जिसके घटने की आशा हो—त्वयि सम्भावितमिति पौरवम् कि० २।७ ।
सम्भावितम् अनुमान ।
सम्भृ(जुहो० उभ०) उठाना—वसिष्ठं वसिष्ठः कामे सम्भृत्य स्वयम्भू तदा—महा० ६।९७।८२ ।
सम्भृत (वि०) [सम्+भृ+क्त] 1. सम्भावित 2 ऊँची (ध्वनि) ।
सम्भृतभृत (वि०) ज्ञान से युक्त ।
सम्भृतसंभार(वि०) सर्वथा उद्यत, पूरी तरह तैयार ।
सम्भृतस्नेह (वि०) अनुराग से युक्त, अनुरक्त ।
सम्भ्रान्तचक्षस् (वि०) घबराये हुए मन वाला ।
सम्भ्रान्ति: [सम्+भ्रम्+क्तिन्] सम्भ्रान्त होना ।
सम्भ्रान्तिनिवारणम् न्यायाधिकरण का निर्णय—सुश्रु०२।३०४ ।
सम्मित (वि०) [सम्+मा+क्त] 1. समान महत्त्व का —पुराण बहुसम्मितम्—भाग० १।३।४० 2. आत्मवेत्ता —महा० ५।६८।१ ।
सम्मृक्षीय (वि०) [सम्मृज्+अनीयर्] योग्य, उपयुक्त ।
सम्मृक्षीयम् [सम्+मृज्+ल्युट्] विधान ।
सम्मर्द: [सम्मृद्+घञ्] (अक्षरों की) टक्कर ।
सम्यक्ज्ञानम् सही ज्ञान, सच्ची जानकारी ।
सम्यग्दृष्टि: अन्तर्दृष्टि, अन्तरवलोकन ।
सम्र: [सृ+अप्] (काव्य०) ह्रस्व स्वर ।
सम्रब्ध (वि०) आवेश से परिपूर्ण—सम्रब्धिनीं सरस-विसपरां मृणालवाम्—शिशुपाल० १०० ।
सर्ग: [सृज्+घञ्] 1. अक्षरसमों का उत्पादन,—सर्गाणां वाच्यवैशम्यम् महा० १२।५९।४४ 2. शब्द के अन्त में महाप्राणता (विसर्ग की) ।

सर्पत्वचि [ष० त०] साँप की खाल, (कुश्ती का दाव-पेच में प्रयोग)।
सर्पविद्या कौशल, विधि, सूक्ष्मबुद्धि।
सर्व (सर्वं० वि०) [सृतमनेन विश्वम्—सृ+व] 1 सब, प्रत्येक 2. समस्त, सब मिल कर। सम०—अभाव सब का अनस्तित्व, सब की विफलता, अर्थक्रियाकारित्व, महाप्रलयात्मक,—अस्तिन् (वि०) सब कुछ का खाने वाला,—अस्तिवाद: एक सिद्धान्त जिसके आधार पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं,—आत्मन् जिससे सब प्रेम करें, दृश् (वि०) सब कुछ देखने वाला, —अग्रतस् (अ०) सबसे पहले,—वेदिन् (पु०) नट, नाटक का पात्र,—ईश्वर (वि०) सर्वव्यापक,—एकऋषि-वाक्यों पर्यंत उत सर्वसंस्तेषराशि—शाव० १०। ८५।४५ सम्पात: यह सब जो अवशिष्ट बचा है, —स्वार एक वैदिक साम जिसमें असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए आत्मबलिदान का विधान है।
सर्वंकष (वि०) सर्वव्यापक, विश्वव्यापी।
सर्वंचा (अ०) [सर्व+धाल्] सब प्रकार से।
सर्वंजनीन (नपुं०) सब से सम्बन्ध।
सर्वंजित्र सुबर।
सर्वंजिरथ: [ष० त०] जल के प्रवाह की अवधि।
सर्वज्ञ [सू—सु+क्त] (वेद०) आदेश, आज्ञा।
सर्वज्ञकर्मन् (नपुं०) नित्य होने वाला पुनीत वैदिक कर्मकृत्य—अग्निहोत्रादिक।
सर्वज्ञ (वि०) समान 'हर' वाली विभक्तियों।
सर्वज्ञार (वि०) 1 अपनी सब उपज बेचने वाला 2. सड़ने वाला, जो सड़ गल रहा हो।
सर्वज्ञिहस्तक: [ष० त०] अनि यह।
सर्वज्ञिहोमक्रम् हस्त लक्षण।
सर्वज्ञिहोमकालम् (अ०) सन्ध्या के साथ, पखवाड़े का उपवास के साथ।
सर्वत (वि०) [सु+क्त] अनभिभूत, जिस पर की न छिड़का गया हो, सूक्त—श्री० सू० ४।१।११ पर शा० भा०।
सर्वतोभद्र (वि०) 1 बायाँ और दायाँ 2. तान्त्रिक पूजा की स्थायी तथा कील रीतियाँ—सर्वतोभद्र-मार्चनम्—अर्चित०।
सर्वतोमुख: ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला।
सर्वतोमुख: खेत का रखवाला।
सर्वतोमुखी अनाज की बाल।
सर्वतोषा: कृषिविज्ञान।
सर्वतृणम् अनाज (जई की जाति) का डंठल, अनाज की डाल।
सर्व (वि०) [सह+अप्] 1. वीर 2. शक्तिमान्, सु (पुं०) मार्गशीर्ष का महीना, सुम (नपुं०) एक प्रकार का मसाला (अ०) के साथ, सहित। सम०—अवसान (वि०) असहमत होने वाला, आलाप, समालाप, मिल कर बातचीत करना,—आवहित् (वि०) विद्रोही, षड्यन्त्रकारी, कर्तृ (पुं०) सहकारी —कट्यासनम् एक ही खाट पर मिलकर बैठना,—भाव. 1. साहचर्य 2 सहानुभूतिता,—संबन्ध सांसारिक संपर्क।
सहजाद्वृद्ध: गोद लिया हुआ पुत्र।
सहस्रम् [समान हसति—हस्+र] 1 हजार 2. बड़ी संख्या। सम०—कर, अरक् सिर की चोटी में उलटे कमल के समान गर्त जो आत्मा का आसन माना जाता है, भु इन्द्र का विशेषण, सूर्य का विशेषण,—दलम् कमल का फूल,—होमम् विष्णु के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना (प्रायश्चित्त कर्म)। —भिद् (पुं०) कस्तूरी,—वेधिन् (पुं०) कस्तूरी
सहस्रार्थम् (अ०) लाभ के लिए, सहायता के लिए।
सहस्रिक (वि०) प्रत्येक काम से सम्बन्ध रखने वाला।
सहस्रिक (वि०) [सहस्र+ठक्] सहस्र से उत्पन्न सूत के (रोम)।
सांस्कारिक (वि०) [संस्कार+ठक्] 1. संस्कारों से सम्बन्ध रखने वाला 2 (आधुनिक बोल चाल में) सांस्कृतिक।
सांस्कारिकन्याय मीमांसा का एक नियम जब कि विकृति में उसकी अपनी प्रकृति के गुण या धर्म नहीं पाये जाते मी० सू० ५।१।१९-२२ पर शा० भा०।
सांस्कृतिनिधान सार्वक मुस्कराहट।
सांस्थानिकता अन्तर्ज्ञान परक प्रत्यक्षज्ञान।
सांस्थितपरीक्षा मार्गों का परीक्षण।
सांस्थितवाद: सांस्थितसिद्धान्त।
सांस्थरोद्भवा पृथ्वी, धरती।
सांस्थरोद्भवा लक्ष्मी।
सांस्थरावर्त: समुद्र की खाड़ी।
सांकेतिकम् [संकेत+ष्यञ्] 1. सहमति 2 एककार्य 3. चिह्न, का उपनाम—सांकेतिक परिहास्य का · · · संकेतनामसहस्रम् शाव०६।२।
सांख्यकारिका सांख्यदर्शन पर ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित एक ग्रन्थ।
सांगोपांग (वि०) अपने मुख्य तथा सहायक अंगों सहित (वेद०)।
सांतिष्ठावेद (अव्य०) स्वीकृति के बदले एक आलेखी।
सांतिष्ठिक (वि०) अन्तर्धिक, मोक्षप्रद।
सांस्थ (वि०) स्वाभाविक, प्रकृति के अनुकूल।
सांस्थ: 1. आदत, स्वभाव 2. प्रकृति के अनुकूल होने का भाव।

साम्यम् समता, बराबरी।
सारदिकः [सरद+ठक्] शरद् ऋतु की रात्रि।
सारम्भः 1. यज्ञ 2. पांचरात्र शास्त्र से संबंध रखने वाला।
सारम्भर्यम् कुम्भ का विशेषण।
सारयक (वि०) [साद्+ण्वुल्] उपसंहारात्मक, उपसंहार परक।
सारम्भम् [साद्+ल्युट्] 1. उपकरण, अभिकरण 2 तैयारी 3 संलग्नता।
सारभीयू (म्वा० पर०) साधन होना, उपाय होना।
सारभनीय (वि०) [साद्+अनीय] 1 सिद्ध करने योग्य, कार्य को संपन्न करने के लिए उपयोगी 2 प्राप्त करने योग्य।
सारभितसारभक (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अन्तर्हित तत्त्व के लिए तर्कशास्त्र का पारिभाषिक शब्द।
सारभर्यसमः झूठमूठ का आक्षेप (तर्क०)।
सारारणः न्याय में एक नियम जो मध्यवर्ती हो और सर्वत्र समान रूप से लागू हो।
सारारणधर्मः समान घटक, मध्यवर्ती तथ्य।
सारारणीयू (भ्वा० पर०) समान होना।
सारु (वि०) [साद्+उन्] 1 अच्छा, उत्तम 2 योग्य, उचित 3. भला, दयालु 4 सही 5 खुशबूदार। सम०-कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ,-देवी साध्वी,—भाव (वि०) सुविचारित, शील (वि०) धर्मात्मा,—सेवित (वि०) भले व्यक्तियों को मान्य।
सारुतरात (वि०) [ब० स०] अन्तराल या अवकाश सहित।
सारुतात्मिक [सन्तान+ठक्] सन्तान का इच्छुक - साहं त्वां धर्मतस्तात कुर्यां विद्धि सान्तानिकं सुतं मनु० ९।१४।९।
सारुतापर्ण (वि०) जो छूने में मृदु हो, चिपचिपा हो।
सारुतानिक सान्तानिक सुख —सान्तानिकानां बालोपचारकरणानुपपत्तिम् शारी० १।१।
सारुदृष्टम् [समद-क्तक्त] कस्बाव, कुशलक्षेम—अपि सकलमेतत्सारा. सारुदृष्टं प्राप्तवानसि—रा० ३।५७।२०।
सारुन् (नपु०) [सो+अनिन्] आवाज, शब्द, ध्वनि स्वरः सारुनर्थक लोके अनिवीयते—मी० सू० ७।२।७ पर शा० भा०। सम० -क्षयम् बिन्दु के स्वर में,—क्षयम (वि०) धूमंत कृपालु या स्निग्धमधुर,—विक्षयम् 1. एक ब्राह्मण का मूल पाठ 2. साम का प्रदोष।
सारुन्यराज्यम् अधीनस्थ राजाओं का मण्डल।
सारुन्यसारिन् (वि०) पड़ोसी।
सारुस्यम् [सदृश+ष्यञ्] 1 समानता 2. सपत्ति विषयक तेलनम।
सारुान्यम् [समान+ष्यञ्] 1 सामान्य अवस्था 2 एक अर्थालंकार 3. सार्वजनिक कार्य 4 साधारण लक्षण 5 पहचान। सम० धर्मः (अर्थ०) (उपमान और उपमेय) का समान गुण,—वादिन् (वि०) समानता को कहने वाला,—शास्त्रम् वह आज्ञा जो सब पर लागू हो।
सारिध (वि०) आंसयुक्त।
सारुदायिक (वि०) [समुदाय+ठक्] समूह से संबंध रखने वाला, सामूहिक।
सारुपरायः 1 सहायक 2 आवश्यकता, 3 संकट।
सारुपरायिक (वि०) [अपराध+ठक्] 1 पारलौकिक, 2 दाहकर्म संबंधी- रा० ४।३।४०।
सारुयम् [सम+ष्यञ्] 1 पाप 2 समय।
सारुय [सो+घञ्] 1 समाप्ति, अन्त 2. संख्या 3. ज्ञान। सम०-कालः सायंकाल का जीवन,—पूर्वः 1. छठ 2 चन्द्रमा,—वन्दनम् सूर्यास्त।
सारुन्तात्त (अ०) सवेरे शाम।
सारुंतनम् सायंकालीन धर्मानुष्ठान।
सारुयुध (वि०) सशस्त्र।
सारः एक [सृ+घञ् अथ वा] 1 क्रम, गति 2. मुखमंडल 3 नीवर 4 मवाद, पस। सम०—वाह (वि०) सबल अश्वों वाला,—सूक्तः प्रधानसूक्त या वर्ग सूक्त (वि०) बोझल, बोझ के कारण भारी,—क्षम (वि०) बढ़िया और घटिया, उपयोगी और अर्थ,—सारंचम् सूखे या बंजर का खोदना।
सारङ्गी संगीत का एक विशेष राग।
सारङ्गिकम् कटेरा, डाकू।
सारथिः [सृ+अथिन्, सह रखेन सरथः (घोटक: तथ नियुक्त) इण् वा] 1 रथवान् 2 पथप्रदर्शक।
सारसम् एक प्रकार का लाख।
सारसाक्षी कमल जैसा सुन्दर आँखों वाली महिला, पद्मलोचना।
सारसम् वक्षस्त्राण, कवच।
सारसीन (वि०) समूह से छूटा हुआ, यूथभ्रष्ट।
सारसंवत्सरिक (वि०) डेढ़ वर्ष तक रहने वाला।
सारसंवत्सरम् डेढ़ वर्ष।
सारसङ्कार (वि०) सुसज्जित, अलंकारों से युक्त।
सारसंहार (वि०) सीमित, नियन्त्रित।
सारसंहारजीवित (वि०) जिसका जीवन अभी शेष है, जिसने अभी, और जीना है।
सारसम्मार्जनवत्तु वह भवन, जिसके दोनों ओर की खुली पार्श्वभीतियाँ (खुले दालान) हों।
सारसंवीतम् यज्ञोपवीत।
सारसर्वस्व (वि०) सारवर्धयुक्त आचरण वाला।
सारसहि (वि०) [सह+घञ्] 1. सहनशील 2. जो अतिथियों का सत्कारपूर्वक कर सके 3. सीखने वाला।
सारसिन (वि०) हड्डियों से युक्त।

सांसिद्धिकम् (अ०) हड्डियों की चटखने की ध्वनि के साथ।
साहसकरणम् प्रचण्ड कर्म, अभाषुध काम करना।
साहसिकम् उत्प्लवनपन।
साहस (वि०)[सहस+अण्] हठकारी, असभ्य, अनुशासित।
साहाय्यकर (वि०) सहायता करने वाला।
साहाय्यदानम् सहायता देना।
सिंह [हिंस्+अच् पृषो०] एक प्रकार की संगीत ध्वनि।
सिंहध्वनम् एक प्रकार का पीतल।
सिच् (तुदा० उभ०) सिंगोना, डुबकी लेना।
सिञ्जिनी [सिञ्ज्+इनि, पृषो०] धनुष की ज्या या डोरी।
सिता [सो+क्त, स्त्रियां टाप्] 1 चीनी, खांड 2 गंगा।
सितासित (वि०) श्वेत और काला मिला हुआ।
सितकण्ठ सफेद गरदन वाला, चातक पक्षी, जलकुक्कुट।
सितकण्ठ राजहंस, मराल, हंसनी।
सितकण्ठः हंस, मराल, हंसनी।
सितकरण सफेदहाथी, सितकुञ्जर।
सितकाण्ड एक प्रकार की ऊख, मिस्री का डला।
सिद्ध (वि०) [सिध्+क्त] 1 सिद्धिप्राप्त, अपरिवर्तनीय 2. विशिष्ट, पक्का 3 सफल,—द्धः (पुं०) जिसे इसी जीवन में सिद्धि प्राप्त हो गई है। सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन (कहते हैं, इसके प्रयोग से भूगर्भ की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं),—अन्नम् सफेद सरसों, आदेश 1 ऋषि की भविष्य वाणी 2. भविष्य कथन, ज्योतिषी,—औषधम् विशिष्ट औषधोपचार, काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई है,—पक्वः आकाश—सिद्ध पूर्णतः अचूक, —होम शुद्ध स्वर्ण लगा सोना।
सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] अचूकपना, पर्याप्ति।
सिद्धिविनायक गणेश का एक रूप।
सिन्दूरपात्रवति गणेश की मूर्ति।
सिन्दूरपात्रम् सेंदा नमक।
सिन्धुसौवीरा सिन्धु नदी के आसपास के प्रदेश में रहने वाले।
सिन्धुपत्रः पीपल का वृक्ष।
सिन्धुमूलम् नाभि।
सिरालु (वि०) [सिरा+आलच्] अनन्त नसों वाला, रक्त-वाहिनियों के जाल से युक्त।
सिस्नासु (वि०) [स्ना+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] स्नान करने की इच्छा वाला।
सिसिक्षा [सिच्+सन्+आ, धातोर्द्वित्वम्] सिंचने की इच्छा।
सीक्षणयन्त्रम् कृषिका अवीक्षक।
सीधुपानम् मद्यपान, शराब पीना।
सीमाज्ञानम् [सीमा+अज्ञानम्] सीमा की जानकारी न होना।
सीमाकृषाण (वि०) सीमाचिह्न के किनारे हल चलाने वाला।
सीमासेतु पर्वतशृंखला या बांध आदि जो सीमा का काम दे।
सीरयन्त्रक हलवाहा, कृषक, खेतिहर।
सुकण्डु शुक्रांसी।
सुकल्प (वि०) दक्ष, सुयोग्य।
सुकल्पित (वि०) सुसज्जित, हथियारों से लैस।
सुकृत्य अच्छा सौदा।
सुकेत (वि०) अच्छी कोख से उत्पन्न।
सुकोप (वि०) मधुरध्वनि से युक्त, मीठी आवाज वाला।
सुखसंज्ञ मूर्ख पुरुष, भोंदूपन।
सुतप्त (वि०) 1 अत्यन्त पीड़ित 2 कष्टग्रस्त 3 अत्यन्त कठोर (तपश्चरण)।
सुतान (वि०) सुरीला, मधुरध्वनि से युक्त।
सुतार (वि०) 1 अत्यन्त उज्ज्वल 2 बहुत ऊँचे स्वर वाला 3 जिसकी आँखों की पुतलियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं।
सुतारा मौन-वीकृति के दो भेदों में से एक (साध्य०)।
सुदक्षिण (वि०) 1 अत्यन्त कुशल 2 अतिविनम्र।
सुदुष्कर (वि०) सुदुर्गम, जो बड़ी कठिनाई से किया जा सके।
सुदुश्चिकित्स्य (वि०) असाध्य रोग से ग्रस्त, जिसके रोग की प्रायः चिकित्सा न हो सके।
सुदेशिक अच्छा पथप्रदर्शक या अध्यापक।
सुनाभम् बलराम की गदा।
सुनिर्मित (वि०) भली प्रकार चमकाया हुआ।
सुपक्व (वि०) सुपाच्य, जो पचा जा सके।
सुपर्ण पक्षी, परिंदा।
सुपेशस् (वि०) सुन्दर, सुकुमार।
सुप्रमाण (वि०) बहुत बड़े आकार का।
सुबभ्रु (वि०) गहरा भूरा, धूसर।
सुभगा 1 सुहागिन 2 कस्तूरी।
सुभीषकम् चाँदी।
सुमूर्ति [सु+मृ+क्तिन्] 1 सबल समृद्धि 2. तीतर पक्षी।
सुमन्दमन्द (वि०) अत्यंत सुमन्थरपूर्वक।
सुमर्कट (वि०) [सु+मृष्+स्युट्] बहुसहीस्य।
सुमुख (वि०) बिल्कुल ठण्डा, बिल्कुल मुर्दा।
सुमनः शुभ मुहूर्त।
सुमर्मज्ञः सारथि।
सुमिथ्यक (वि०) अत्यन्त चतुर।
सुमिश्र (वि०) पूर्ण विकसित।
सुमिश्रित (वि०) 1 अकेला 2. निर्जीव।

सुसंवृतिः (स्त्री०) [सु+सम्+वृ+क्तिन्] भली प्रकार छिपाना।
सुसंश्रुत (वि०) अपने वचन का पालन करने वाला।
सुसंहत (वि०) ठीक बिठाने पर लगा (तीर आदि)।
सुसेव्य (वि०) सेवा किए जाने योग्य, जिसका आसानी से अनुसरण किया जा सके।
सुखाधिष्ठानम् आनन्द का स्थान।
सुखाभियोज्य (वि०) जिस पर आसानी से चढ़ाई की जा सके।
सुखाराध्य (वि०) जिसकी सेवा आसानी से की जा सके, जो आसानी से प्रसन्न किया जा सके।
सुखप्रश्नः कुशलक्षेम पूछना।
सुखबद्ध (वि०) मनोरम, प्रिय, प्यारा।
सुखवेदनम् आनन्द की अनुभूति।
सुखसेव्य (वि०) दे० 'सुसेव्य' सुनम्।
सुधाकण्ठ कोयल।
सुधाकार, सफेदी (चूना) करने वाला।
सुधाकालित (वि०) सफेदी किया हुआ।
सुधायोनिः चन्द्रमा।
सुधाश्मकंर चूने का पत्थर।
सुनका ज्योतिषशास्त्र का एक योग।
सुनीत (वि०) [सु+नी+क्त] विवेकपूर्ण व्यवहार से युक्त, दूरदर्शी, मनीषी।
सुन्दरकाण्डम् रामायण का पाँचवाँ काण्ड।
सुपत्नघ्न -घातक सात हूण का मारने वाला, धोखेबाज, दुष्टात्मा।
सुपर्वतः] मेरु पर्वत, सुमेर पहाड़।
सुपर्वतः]
सुपेश (सु+दृश) सुन्दराकृत दाढ़ी।
सुपेशः (सु+दृष्ट) बाल का बच्चा।
सुपोषण (वि०) (सु+उपम) देखभाल।
सुप्तपद, एक प्रकार का फोड़ा, छिड़ाबूंद, बहरबाद।
सुप्तसिन्धी-सप्तसिन्धी-सुन्धी-सप्तधी-सप्तरित्-आपदा (स्त्री०) सप्तनदी।
सुफलायकः कल्पवृक्ष।
सुबलिसालिनी अप्सरा।
सुबलेखा छिपकली।
सुबालकोच्च पशु, गौएँ, बैल।
सुबालोचिन् (वि०) बुराई देखने वाला, कृतघ्न।
सुबालाप्तः मधीर।
सुबर्णचौरिका सोने की चोरी।
सुबर्णवेणुः स्वर्ण विभिन्न नाम जो उपहार में दी जाय।
सुबर्णसाधनम् स्वर्णमुद्रा।
सुबरोमन् (पु०) सुनहरी रोमों वाला मेष।
सुबर्णसानुः मेरु पर्वत।
सुषिः (स्त्री०) छिद्र, सुराख ('सुषिर' का वैदिक रूप)
सुषुप्सा [स्वप्+सन्+अ+टाप् अनार्द्रित्वम्] सोने की इच्छा।
सुषुम्ना [सुष्+मन् सुक् च नेट्] 1. दांत का कोखलापन 2 नाड़ी, नसों 3 कण। सम०—इड़ाः नसों,—सूक्ष्म सूक्ष्म तत्त्व, अति (वि०) तीक्ष्णबुद्धिवाला, —शरीरम् सूक्ष्म शरीर (विप० स्थूल शरीर), स्फोटः एक प्रकार का फोड़।
सुषुमी विषयों की तालिका या सूचि।
सुषुरे [सूच्+क्विप्] (दरजी की) चटखनी।
सुषीकर्मन् (नपु०) सिलाई का कार्य।
सुषीरत्न नेवला।
सुषीसिका सूई की नोक।
सुषीकर्ण, सूई का छिद्र।
सुषीसूत्रम् सीने के लिए धागा।
सूत सञ्जय।
सूतपौराणिकः पुराणों में वर्णित चारण (कहते हैं कि उसने ही समस्त महाभारत और पुराण सुनाए थे)।
सूतिमारुतः प्रसव वेदना।
सूत्रम् [सूत्र+अच्] 1 मसाला 2. रेखाचित्र, नारेल 3 मकान आमूल 4 धागा, डोरा 5 रेखा। सम०—अध्यक्षः वस्त्राध्यक्ष, बुनाई का अधीक्षक, -क्रीडा रस्सियों का खेल, (६४ कलाओं में से एक)। ग्रन्थ सूत्रों की पुस्तक, वृक्ष (पु०) 1. सूत्रधार शिल्पी 2 रंगमंच का प्रबन्धक, पातः 1. माप वाले सूत्र से मापने का कार्य करना 2. कार्य का आरम्भ —स्थानम् आयुर्वेद के एक ग्रंथ का प्रथम खण्ड।
सूत्राम्बरः प्रधान रसोइया।
सूत्रारम्भम् पाक विज्ञान।
सूनसायक-शूरः कामदेव—सूनसायकनिर्देशविधूर्यैरधनीत-चरवेदनोदयम् नै० १८।१२९ ('सूनसायक' पाठ भी मिलता है)।
सूनाध्यक्षः (सूना+अध्यक्ष) बूचड़ खाने का अधीक्षक।
सूनखेड़ः सूअर, मृग की पत्नी।
सूनाय (सु+उपाय) अच्छा साधन, तरकीब।
सूरि [सू+क्रिन्] बृहस्पति।
सूर्यद्वारम् उत्तरायण मार्ग।
सूर्यवारः रविवार, आदित्यवार।
सूर्यपत्नी सूर्य की पत्नी।
सृ (भ्वा०, क्र्या० पर०) पार करना, आर-पार जाना, प्रेर० प्रकट करना, व्यक्त करना।
सृका [सृ+कक्+टाप्] 1. गोखड़ 2. तारस।
सृक्वणी (स्त्री०) 1 झल-झल करती हुई रत्नों की लड़ी 2. आर्द्र, गीला।
सृणिः [सृ+क्विन्] 1. अंकुश-नरम का चक—स्थानीय

तथाऽभिप्रेतस्य वृष्टिनिष्पादनस्या—शाव० १०।६०। ४३ 2. वृष्टि।

सेकः [सिच्+घञ्] नहाने के लिए फौवारा।

सेचनम् [सिच्+ल्युट्] 1. सिंचन, छिड़काव 2. अभिषेक।

सेतुः [सि+तुन्] 1. बलाबन्ध, बरोबर 2. व्याख्यात्मक ग्रन्थ।

सेतुबन्धम् तीर्थविशेष।

सैन्यपथम् सेना पति का पथ।

सैन्यवाह् सेनापति, सेनाध्यक्ष।

सैन्यस्थ सैनिक, सिपाही।

सेवनी 1. सूई 2. सीवन, टांका 3 सिर की दो हड्डियों का जोड़।

सेविन् (वि०) [सेव्+णिनि] अनुरागी, उपासक, आराधक।

सेश्वर (वि०) ईश्वर की सत्ता मानने वाला।

सेश्वरवाद ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क।

सेश्वरसाङ्ख्यम् सांख्य की एक शाखा जो ईश्वर की सत्ता को मानती है।

सैकतिनी [सिकता+इन्+ङीप्] रेत से भरी हुई।

सैन्यम् [सेना+ष्यञ्] शिविर।

सैन्यविप्लव सेना का विद्रोह।

सोत्प्रेक्षम् (अ०) असावधानी से, उदासीनता के साथ।

सोत्प्रेक्ष (वि०) अभिमानी, घमंडी।

सोदय (वि०) : उदय से सबंध रखने वाला 2. सूद सहित, ब्याज के साथ।

सोपचारम् (अ०) मैत्रीपूर्ण ढंग से।

सोपस्कर (वि०) सहायक वस्तुओं से युक्त।

सोपस्कार (वि०) सामग्री से युक्त।

सोम [सू+मन्] 1 अमृत 2 एक पितर 3 सोमवार।

सोमयाजकः सोमयाग के लिए पुरोहितों को नियत करने के अधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति।

सोमराज् (पु०) पितरों की एक विशेष शाखा।

सोमवल्लिः (स्त्री०) जिसकी दोनों गाँठों के बीच में डालों का एक वृत्त है।

सौप्तिकपर्व (वि०) [सुप्तरात्रि+ठक्] जो दूसरे व्यक्ति को पूछता है कि तुम रात को सो सुख से सोये हो।

सौधिकः [सूध+ठन्] 1. चूनाहा 2. धुला हुआ कपड़ा।

सौधोत्सङ्गः [ष० त०] महल की उभरी हुई खुली छत।

सौनशैलिः शास्त्रों का राजा।

सौभाग्यकल्पद्रुमः [सुभगकुल+ष्यञ्] सौभाग्य की सफलतम स्थिति, कल्याण, समृद्धि।

सौम्य (वि०) [सोम+अण्] उत्तर दिशा से सबंध रखने वाला।

सौम्यः [सोम+अण्] 1 ब्राह्मण को संबोधित करने का उपयुक्त विशेषण—आयुष्मान् सह सौम्येति ब्राह्मणो विशेषविषयाणाम्—मनु० २।१२५ 2. कुल का 3 विनीत शान्त 4 बारहों हाथ 5. मार्गशीर्ष का महीना।

सौरभाख्यम् [ष० त०] सूर्य की गति पर आधारित ज्योतिष की गणना।

सौरस (वि०) [सुरस+अण्] सगोत्र सबंधी।

सौस्वर्यम् [सुस्वर+ष्यञ्] सुस्वरता, स्वरमाधुर्य, स्वरयोजना।

स्कन्दः [स्कन्द्+अच्] 1 छलना 2. प्लव।

स्कन्दजननी पार्वती।

स्कन्दसुतः स्कन्द का बेटा (चोर के लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम)।

स्कन्धः [स्कन्द्+घञ्] 1 कंधा 2. वृक्ष, तना, भाग 3. पेड़ का तना 4. वृक्ष का अध्याय 5 सेना का कोई भाग 6 पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के विषय।

स्कन्धकः सन्नाह मी० सू० १।१।५ पर शा० भा०।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] दीर्घपात।

स्खलित (वि०) [स्खल्+क्त] 1 घायल 2 अपूर्ण अधूरा।

स्खलित्वम् (नपु०) क्षति, विलास।

स्तनः- बूंद, कण, तैलस्य घृतस्य वा स्तनका —मी० सू० १।२।२७ पर शा० भा०।

स्तनकुड्मलम् स्त्री के उठते हुए स्तन।

स्तनचूचुकम् चूची, डेपनी।

स्तनाग्रम् चूची, डेपनी।

स्तनान्तरम् दोनों स्तनों के बीच का अन्तराल।

स्तनापायी (वि०) अपने स्तनों से दूध पिलाने वाला पशु (गाय)।

स्तनितकुमाराः (बहु०) देवताओं की एक श्रेणी।

स्तनितसुखम् (अ०) सुखद गर्जनध्वनि के साथ।

स्तनपः (वि०) स्तन पान करने वाला, दुधमुँहा बच्चा।

स्तब्धपाद (वि०) जिसके पैर गतिहीन हो गये हों, अकड़ गये हों।

स्तब्धकर,-हस्त (वि०) जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों।

स्तब्धबुद्धि (वि०) जिसकी बुद्धि कुण्ठित हो गई हो, मन्दबुद्धि।

स्तम्भ् (भ्वा० आ०) अधिकार करना, फैलाना, घेरना, बढ़ाना, रोकना।

स्तम्भ [स्तम्भ्+घञ्] 1 अकड़ाहट, निश्चेष्टता 2 घराव, धरती।

स्तम्भितस्तम्भवृत्ति (वि०) जिसने अधःपात रोक लिया, आगे रोकने वाला।

स्तम्भितास्तम्भयोनिः बादल जिसने समस्त पानी को अपने अन्दर रोक लिया है—मेघ०।

स्तम्भेरकः [स्तम्भेरम्+अण्] हाथी के संबंध रखने वाला।

स्तम्भितोदकम् (वि०) उमड़ती हुई जल वर्षा को रोकते हुए।

स्तिमितप्रवह् (वि०) बहुत धीमी गति से बहने वाला।
स्तीभि: [स्तृ+क्विन्] भय, डर।
स्तेन् (चुरा० उभ०) असत्य भाषण के द्वारा को अपवित्र करना—ता तु य स्तेनयेद्वाचम् मनु० ४।२५६।
स्तोकतमस् (वि०) कुछ काला, जिसमें थोड़ा अंधेरा हो।
स्तोकायुस् (वि०) थोड़ी आयु वाला।
स्तोभ 'साम' के रूप में गाये जाने वाले ऋक् मन्त्रों की साम की अपेक्षा विविक्तध्वनि—य ऋचस्तरेभ्योऽधिको न च मैं सकर्म स स्तोभो साम बी० सु० ९।२।३९ पर शा० भा०।
स्तोभकार सामुन।
स्त्री [स्त्यै+ङीष्] दीमक, सफेद चींटी।
स्त्रीकितव: स्त्रियों को फुसला कर छलने वाला।
स्त्रीविषय मैथुन।
स्थपत्य कञ्चुकी—स्थपत्यमुद्धास्य अन: परीता—आनन्दी० ७।१।
स्थलकमल: (पु०) स्थलपद्म, (ला०ब०) भूकमल, स्थल पर उगने वाला कमल पुष्प।
स्थलीशायिन् (वि०) बिना कुछ बिछाये (जोरदे) भूमि पर सोने वाला।
स्थविरवृत्ति (वि०) बूढ़ों की मर्यादा रखने वाला।
स्थाणु: [स्था+नु, पृषो० साधुत्वम्] 1 तना, पेड़ का ठूंठ 2 बैठने की एक विशेष मुद्रा।
स्थाणुभूत (वि०) जो पेड़ के ठूंठ की तरह गति हीन हो गया हो।
स्थानम [स्था+ल्युट्] 1. जीवन क्रम 2 जीवित रहना 3 युद्ध में आक्रमण की एक रीति 4 ज्ञानेन्द्रिय।
स्थानकुटिकासनम् घर छोड़कर झोंपड़ी में रहना शिरसो मुण्डनाद्यापि न स्थानकुटिकासनात् —महा० ३।२००। १०४।
स्थानप्रेषित (वि०) [अलुक्समास] दूसरे के स्थान पर अधिकार करने वाला।
स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागम:] 1. बांधना 2. धीर्घायु होना 3. आभार।
स्थापना [स्थापन+टाप्] 1. नाटक की प्रस्तावना या आमुख 2 अलंकार प्रकरण।
स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+यत्] 1. बंध किये जाने या कैद किये जाने योग्य 2. (लोक में) दूर जाने योग्य।
स्थायिता 1 नैरन्तर्य 2 टिकाऊपन।
स्थालीपुरीषन्याय पाकपात्र की सभी में बनी तरीक या ढंग।
स्थितप्रज्ञ (वि०) वह पुरुष जिसका चित्त उत्तेजनात्मक में है।
स्थितप्रज्ञेश, —शंसिन् (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला।
स्थितिज्ञ (वि०) नैतिकता की सीमा को जानने वाला।
स्थितिविद् (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाला।
स्थिर (वि०) [स्था+किरच्] 1 दृढ़, जमा हुआ 2. अचल, निश्चेष्ट 3 स्थायी 4 निरवेग 5 कठोर बना 6. ठोस 7. मजबूत। सम० -अध्व (वि०) अवधीक्ष, जिसका निरंतर ह्रास हो रहा है, -आयति (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला, —बाह् (वि०) जिसकी बात का विश्वास किया जाय,—विक्रम (वि०) दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाने वाला।
स्थूणाकर्ण: 1. एक प्रकार का सैन्यव्यूह 2. रुद्र का एक रूप 3. शिव का एक अनुचर।
स्थूरीपुच्छ: वह घोड़ा जो अभी सवारी करने के काम न आया हो—वि० १८।२२।
स्थूल (वि०) [स्थूल्+अच्] जो बारीकी या ब्यौरे (व्याख्या या विवरण) के साथ न देकर मोटे तौर पर दिया गया हो, भौतिक। सम० इच्छ (वि०) जिसकी इच्छाएँ बहुत बढ़ी हुई हों,—कण्टालि: स्थकाशि, पेड़ के उगते हुए तने की आग,—प्रवण भौतिक उत्तार।
स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] इन्द्रियों का दमन या नियन्त्रण।
स्नानकलश:, कुम्भ: नहाने के लिये जल का घड़ा।
स्नानतीर्थम् नहाने के लिए पुण्यस्थान, घाट।
स्नानद्रोणी नहाने का बर्तन, जलोदन्य।
स्नायुकल्प: धनुष की डोरी, ज्या।
स्नायुपत्र: नाड़ी।
स्नेहकुम्भ: तेल रखने का बर्तन।
स्नेहकोशिन् (पु०) एरण्ड।
स्नेहोपेतांग (वि०) जिसके शरीर में तेल मला गया हो।
स्पन्द् (स्पा० आ०) अकस्मात् फिर आन आ जाना, नाड़ी चलने लगना।
स्पर्शानुकूल (वि०) छूने पर अच्छा लगने वाला।
स्पर्शोत्पादन,—कर (वि०) छूने में कला या पीड़ा कर।
स्पर्शोष्म: [ष० त०] छूने का गुण (जैसे कि वायु का।
स्पष्टाक्षर (वि०) स्पष्टरूप से बोला गया।
स्पृष्टपूर्व (वि०) जिसे पहले छू चुके हैं।
स्पृष्टमात्र (वि०) जिसे केवल छूआ ही गया है।
स्फीत (वि०) [स्फाय्+क्त, स्फीभाव:] बड़ा हुआ, फूला हुआ।
स्फीतालम्ब (वि०) अत्यन्त प्रसन्न, परम आनन्दित।
स्फुट् (स्वा० तुदा० पर०) 1. फूट पड़ना, फटना, टूटना 2 खिलना, फूलना 3. (रोग) शान्त होना।
स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] अद्भुत असाधारण।
स्फुटत्वम् [स्फुट्+त्व्] फूलना, बढ़ना, विस्तृत होना।

स्फूर्ति (स्त्री०) [स्फुर्+क्तिन्] आत्मश्लाघा करना, डींग मारना, शेखी बघारना।
स्मरोद्दीपन (वि०) कामोद्दीपक, प्रेम का जगाने वाला।
स्मरकला प्रणयालाप, प्रेमालाप।
स्मरज्ञानतन्त्रम् कामशास्त्र।
स्मार्तविधि, प्रायेण: स्मृतियों में विहित प्रक्रिया।
स्मयदानम् दिखावटी दान।
स्मयभृति: गर्व चूर करना।
स्मरवान (वि०) जो आश्चर्य करता है।
स्मृ (भ्वा० पर०) शिक्षा देना।
स्मृतम् [स्मृ+क्त] स्मरण, याद।
स्मृतमात्र (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो, ज्योंही सोचा त्योंही।
स्मृतिसन्धानम् विधिवन्ध।
स्मृतिविघात: अपने कर्तव्य का ध्यान दिलाने के लिए अभिप्रेत डांट फटकार।
स्यन्द: [स्यन्द्+घञ्] 1. बूंद-बूंद टपकना, पसीना 2 आंख का रोग विशेष 3 चन्द्रमा।
स्यंद् (भ्वा० आ०) नष्ट होना ठहरना।
स्यन्दहस्त (वि०) जिसने पकड़ ढीली कर दी हो।
स्यन्दमध्य: मूल्यवान् रत्न जिसके बीच से पानी झरता दिखाई देता है।
स्यन्दिवह्नि: अग्नि, आग।
स्यौतम् (नपु०) 1 शरीर के रक्त (जो पुरुषों में ९ तथा स्त्रियों में ११ होते हैं) 2 वंश परम्परा।
स्वार्जित (वि०) अपना कमाया हुआ।
स्वात्मन: अपने, आप में आनन्द।
स्वकर्मस्थ (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त।
स्वकृतम् अपना किया हुआ कार्य।
स्वकोटर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित।
स्वकीय: आत्मा।
स्वकल्पना अपना मत या विचार।
स्वकृति: आचारसंहिता जो कर्म तथा लक्ष्य रेखा के सिरों को मिलाती है।
स्वतन्त्रता 1. स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2. मौलिकता।
स्वतन्त्रचित्तम् स्वप्नकालिक चेतना।
स्वतप्त (वि०) नीर में उत्पन्न।
स्वतमधिगत (वि०) 1. सूर प्राप्त किया हुआ 2 स्वयं पढ़ा हुआ।
स्वतमीश्वर: वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर।
स्वतयुक्त (वि०) स्वेच्छा से तैयार।
स्वरतिक्रम: स्वर्ग को लांघकर मैकुण्ठ पहुँचना।
स्वर्गगति: सूर्य।
स्वर्गजित् मृत्यु।
स्वर्गीयित् अप्सरा।
स्वरग्रह: एक प्रकार की संगीत रचना।
स्वरोच्चयत: स्वरसंघ।
स्वरक्रम: स्वर का हिलना।
स्वरच्छिद्रम् बांसुरी का स्वरवाला छेद।
स्वरग्रहण नारदमुनि,
स्वरविभक्ति: स्वरों का पथक्करण।
स्वरशास्त्रम् ध्वनिविज्ञान, स्वरविज्ञान।
स्वरित (वि०) [स्वर+इतच्] 1. गत, मिश्रित 2. उच्चरित, ध्वनित 3. उदात्त अनुदात्त के बीच का स्वर, मध्यमस्वर।
स्वर्गमति:—गमनम् मृत्यु, स्वर्ग चले जाना।
स्वर्गमार्ग: 1 स्वर्ग जाने का मार्ग 2 स्वर्गगंगा।
स्वर्गरेतस् (पु०) सूर्य।
स्वलम्बमूलि: कनिष्ठिका, कनिष्ठा अंगुलि।
स्वल्पबुद्धि (वि०) अदूरदर्शी
स्वल्पस्मृति (वि०) जिसे बहुत कम याद रहे।
स्वस्तिवाचनम् (नपु०) कल्याण करना।
स्वस्तिवाचक स्वस्ति का उच्चारण करने वाला बंदी, चारण।
स्वस्तिक: स्वस्तिपाठ करने वाला, चारण।
स्वास्थ्यप्रश्न मिलने पर स्वास्थ्यादि के संबंध में पूछना, कुशल क्षेम की पृच्छा।
स्वाद: (काव्य के अवगम या पठन से) रसानुभव।
स्वादुचिन्ता विलम्बकर।
स्वादुकुक्षी मीठा नींबू।
स्वापमूढ़ता निद्रालुता।
स्वामिन् (पु०) 1. यज्ञ का यजमान 2 मन्दिर में स्थापित देवमूर्ति।
स्वास्थ्यम् (शरीर और आत्मा की) स्वस्थ स्थिति।
स्वायत्त (वि०) जो अपने ही अधीन हो, अपने ही अधिकार में हो।
स्विन्नित (वि०) 1 जिसे पसीना निकल आया हो, पसीने से तर 2. भिगोया हुआ पसीजा हुआ।
स्विष्ट (वि०) वांछित, प्रिय, सुपूजित।
स्वेदवस्त्रम् जिससे पंखारा दिया जाय, पसीना लाने वाला वस्त्र।
स्वैरकथा अबाधित वार्तालाप।
स्वैरविहारिन् इच्छानुसार भ्रमण करने वाला।
स्वैरिणी व्यभिचारिणी।

ह

हंसः [हस् + अच्, पृषो० वर्णागम] 1. घोड़ा 2 उत्तम, श्रेष्ठ (प्रायः समासान्त में प्रयुक्त हो) 3 चांदी 4 बड़ी बड़ी झीलों में रहने वाला एक जलपक्षी 5 आत्मा, जीवात्मा। सम०—उदकम् एक प्रकार की पुष्टिदायक मदिरा, पदम् मोती, द्वारम् मानस झील के पास की एक घाटी हमद्वार मृगुपतिसगोत्रम् यत्कीर्त्यारब्धम्—मेघ०—संदेशः वेदान्तदेशिक द्वारा रचित एक गीतिकाव्य।

हंस्कहंस्क चुनौती, ललकार।

हट्ट [हट्ट + ट, टस्य नेत्वम्] मंडी, बाजार, मेला। सम० अध्यक्ष मंडी का अधीक्षक, वाहिनी बाजार में बनी हुई पानी निकलने की नाली, वेश्यालयी बाजार की गली।

हठपर्णी 1 मोथा 2 जंवाल।

हठवादिन् (पु०) जो हिंसा का प्रचार करता है।

हन् (अदा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हत (वि०) [हन् + क्त] 1 पीड़ित, घायल 2 बलात्कार किया हुआ, भ्रष्ट किया हुआ 3 अदाय 4 शापग्रस्त, विपद्ग्रस्त। सम०-उत्तर (वि०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके,—किल्बिष (वि०) जिसके पाप नष्ट हो गये हों अप (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म चित्त (वि०) जिसमें चिपटता न हो, बेशर्म।

हनुभेद 1 जबड़े का खुलना 2 एक प्रकार का ग्रहण

हनुस्वन जबड़े से निकलनेवाला स्वर।

हनुमज्जयन्ती चैत्रशुक्ला पूर्णा जो हनुमान् जी का मांगलिक दिवस है।

हय [हय् + अच्] 1 धनुराशि 2 घोड़ा। सम०-अङ्ग धनुराशि,- आलय, शाला घुड़साल, अस्तबल अश्वशाला,—उद्धता अश्वदल, ग्रीव मुखः वदन 1 विष्णु का एक रूप 2 एक राक्षस का नाम।

हयि (पु०) [हय् + इन्] कामना, इच्छा, अभिलाषा।

हर [हृ + अच्] 1 शिव 2 अग्नि 3 गधा 4 भाजक 5 पकड़ना, लेना। सम०—अद्रि कैलास पर्वत, - वल्लभ धतूरे का फल,— सखः कुबेर।

हरि [हृ + इन्] 1 विष्णु 2 इन्द्र 3 सूर्य 4 अग्नि 4 वायु 6 सिंह 7 घोड़ा 8 बन्दर 9 कोयल 10. सांप 11 मोर 12 सिंह राशि। सम०— चाप इन्द्रधनुष,- जीवन हरताल, वेध (पु०) विष्णु।

हरिचन्दनम् पीतचन्दन।

हरिस्पति दिशा का स्वामी।

हरितकपिश (वि०) पीलापन लिये हुए भूरा।

हरितोपल मरकतमणि।

हरिद्राङ्कः हरिताल पक्षी, एक प्रकार का कबूतर।

हर्म्यट 1 सूर्य 2 कछुवा।

हर्म्यतलम्, पृष्ठम्,- वलभी चौबारा, मकान की ऊपर की मंजिल।

हर्ष [हृष् + घञ्] 1 जननेन्द्रिय की उत्तेजना 2. प्रबल इच्छा 3 प्रसन्नता। सम० जम् वीर्य, संभव एक प्रकार का रतिबंध,- स्वन आनन्द ध्वनि।

हल्म् [हल् + क] 1. हल 2. कुकपक्षा 3. बाधा 4. कलह सम०—उद्धत् (स्त्री०) हल का वह भाग जिस निचले भाग में फाली लगी होती है,- दण्ड हत्था, हल की लम्बी लकड़ी जिसमें जूआ लगाते हैं,—भार्ग जुताई से बनी लकीर, खूड, मुखम् फाल।

हविष्मती कामधेनु का विशेषण।

हस्ती 1 दीवट 2 एक प्रकार की परी।

हस्त [हस् + तन्] 1 हाथ 2. हाथी का सूंड 3 हस्त नक्षत्र 4 भुजा। सम०—क्षिप्तः (वि०) जो हाथ निकला हो,—गोचरम् (अ०) हाथों में, वाम (वि०) बाईं ओर स्थित, विन्यासः हाथों की स्थिति —स्वस्तिक हाथों को स्वस्तिक की शक्ल में रखना।

हस्त्यारोह पीलवान, हस्तिव्यवसायी।

हस्तिशुण्डा हाथी की सूंड।

हस्तिमुख —वक्त्र, वदनः गणेश।

हाकार विस्मयादिद्योतक 'हा' ध्वनि।

हात (वि०) [हा + क्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

हानम् [हा + ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना 2 हानि, विफलता 3 अभाव, कमी 4 पराक्रमण, बल 5 विश्रान्ति, विराम, अवसान।

हाटकहाटिका मिट्टी का बर्तन।

हारित (वि०) [हृ + णिच् + क्त] 1 जीता गया, चुराया हुआ 2 मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

हारिद्र एक काल्पनिक विष।

हार्य (वि०) [हृ + ण्यत्] 1. हटाये जाने योग्य 2 मनोहर, आकर्षक।

हालिकः खेत का साथी, सह कीलक।

हिंसनीय (वि०) [हिंस् + अनीय] मार डाले जाने योग्य, हिंसा से पीड़ित किये जाने योग्य।

हिंसास्पदम् प्रहार्य, आक्रमणीय।

हिंसाप्रिय (वि०) बहुधा हानिकारक।

हिंसः [हिंस् + र] दूसरों के उत्पीड़न में आनन्द मानने वाला व्यक्ति।

हिक्किका, हिक्कितम् } हिचकी का रोग।
हिक्का

हितार्थिता 1 भला चाहना 2. अभिनन्दन, बधाई।

हितमधुल (वि०) भलाई में लगा हुआ।
हितवाद मैत्रीपूर्ण परामर्श, सत्परामर्श, भलाई की बात।
हिन्दुधर्म हिन्द (भारत) देश में रहने वालों का धर्म।
हिम [हि+मक्] 1 पाला, कुहरा 2 ठंड 3 कमल 4. ताजा मक्खन 5. मोती 6 रात 7 चंदन। सम० —अद्रिः कपूर, ऋतुः जाड़े का मौसम, जलम् ओला, द्योतित् चन्द्रमा,—वृष्टिः धुंध, कोहरा, —शर्करा एक प्रकार की खांड।
हिरण्यकर्तृ,—कारः स्वर्णकार, सुनार।
हिरण्यवर्चस् (वि०) सुनहरी आभा से युक्त।
हीन (वि०) [हा+क्त, तस्य न, ईत्वं च] 1 जो मुकदमा हार गया है 2. यूथभ्रष्ट 3 परित्यक्त, भुलाया हुआ 4 क्षीण। सम० पक्ष (वि०) अरक्षित पु० दलील की दृष्टि से कमजोर पक्ष,—सामन्त. गद्दी से उतारा हुआ अधीनस्थ राजा, सन्धिः अधम राजा के साथ की गई सन्धि।
हुतशेषम् यज्ञशेष, हवन का बचा हुआ अन्न।
हुतभुक् (पु०) (स्त्री०) [हुत्+इन्] पिंडित ओदन।
हृद् (नपु०) [हृत्, पृषो० तस्य द] (इस शब्द के पहले पाँच रूप नहीं होते, शेष वचनों में यह विकल्प से 'हृदय' के स्थान में आदेश होता है) 1 मन, दिल 2. आत्मा 3. किसी भी वस्तु का सत् 4 छाती। सम०—आमयः हृदय का रोग,—क्षोभण (वि०) दिल को तोड़ने वाला,—दारः साहस, हिम्मत, स्तम्भः हृदय को लकवा मार जाना, स्फोटः हृदय का विदीर्ण होना।
हृदयम् [हृ+कयन, दुकागमश्च] 1 मन, दिल, आत्मा 2 छाती 3. प्रेम, अनुराग 3. दिव्य ज्ञान 4 वस्तु का सत् 5 इच्छा, प्रयोजन। सम० उपघातकः साहस करना, —उद्वेष्टनम् दिल का सिकुड़ना, कोषः दिल की धड़कन, जः पुत्र, ज्ञ जो दिल की बात जानता है, —दौर्बल्यम् दिल की कमजोरी, - ह्रविक्लवम् विषण्णता, अवसाद।
हृद्य (वि०) [हृद्+यत्] स्वादिष्ट, रुचिकर।
हृष्टित (वि०) [हृष्+क्त, आ० इट्] कुंठित, ठूंठा।
हेतिः (पु०) (स्त्री०) [हन्+क्तिन्, नि०] नया अंकुर।
हेतुः [हि+तुन्] 1. प्रेरणार्थक क्रिया का अभिकर्ता—पा० १।४।५५ 2. प्राथमिक कारण (बुद्ध०) 3 बाह्य संसार और उसके विषय (पाशुपत०) 4 मूल्य, कीमत —धान्यसंहारोक्ये हेतु—राज० ५।७१ 5 कारण। सम० अपधारणम् तर्क करना (नाटक), उपमा तर्क युक्त उपमा अलंकार, तर्क संगत तुलना,—दृष्टिः कारण की परीक्षा, - न्यासम् एक प्रकार का रूपकालंकार,—विद्योत्तिः एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों का अंतर तर्क देकर बतलाया जाता है काव्य० २।३२८-९।
हेतुनिबन्धन, वेद के मूल पाठ का लेखाश जिसके साथ प्रयोजन भी दिया गया हो मी० सू० ४।२।४२ पर शा० भा०।
हेमन् (नपु०) [हि मनिन्] 1 स्वर्ण, सोना 2 जल 3. बर्फ 4 धतूरा 5 केसर का फूल 6. बृहस्पति 7 जाड़े की ऋतु। सम०—कलशः सोने की कलशी, स्वर्ण निर्मित शृंगकलश,—गर्भ (वि०) जिसके अंदर सोना हो,—जम् सीसा,—त्वक् हल्दी, मालिकम् सोनामाखी (एक उपधातु),—व्याकरणम् हेमचन्द्र प्रणीत व्याकरण का एक ग्रन्थ।
हैडिम्ब } [हिडिम्बा+अण्, इञ् वा] हिडिंबा का पुत्र,
हैडिम्बि } घटोत्कच।
होतृकर्मन् यज्ञ में होता का कार्य।
होतृप्रवर होता का वरण करना।
होतृसद(क)नम् होता का आसन।
होलाकाधिकरणन्यायः मीमांसा का एक नियम। इसके अनुसार यदि स्मृति या कल्पसूत्र को कोई उक्ति श्रुति द्वारा समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी, तो उसके समर्थन में वेद का कोई अन्य सामान्य मंत्र, अनुमान के आधार पर ढूंढना चाहिए मी० सू० २।३।२५ २८।
ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्] जो महत्त्वपूर्ण न हो, अनावश्यक, नगण्य।
ह्रासः [ह्रस्+घञ्] 1 ध्वनि, आवाज 2 क्षय, क्षीणता, अभाव, कमी 3 छोटी संख्या।
ह्रीका [ह्री+कक] 1. लज्जा 2 भय,—क (पु०) 1. पिता 2 नवला।
ह्रीपदम् लज्जा का कारण।

वीर सेवा मन्दिर
पुस्तकालय
काल नं० 030.C आप्टे
लेखक आप्टे, श्रीराम वामन.
शीर्षक संस्कृत हिन्दी कोश
खण्ड ५५१६ क्रम संख्या